

নামক পয়ট কেব

ভারত প্রমোদ

ଆହୁରି ମଧ୍ୟ

ପ୍ରଥମ ଶ୍ରେଣୀର ଶିକ୍ଷକ

[illegible]



প্রকাশিকা

শ্রীমতী গীতা দত্ত

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ-১৩২, ১৩৩ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭

ডি টি পি সেটিং

এ পি সি লেজার

৬১ মহাত্মা গান্ধী রোড □ কলকাতা-৭০০ ০০৯

মুদ্রাকর

শ্রীকার্তিক কুণ্ড ও শ্রী তরুণ কুণ্ড

ইউনিক কলার প্রিন্টার্স

২০এ পটুয়াটোলা লেন □ কলকাতা-৭০০ ০০৯

প্রচ্ছদ ও ম্যাপ মুদ্রণ

শ্রীঅমিতাভ দাশগুপ্ত

সান লিথোগ্রাফিক কোম্পানি □ পি-২০ সি আই টি রোড

কলকাতা-৭০০ ০১০

রঙিন ছবি মুদ্রণ

শ্রীতিমিরকান্তি পাল

তিমির প্রিন্টিং ওয়ার্কস প্রা. লি. □ ১ চাঁদনি অ্যাপ্রোচ

কলকাতা-৭০০ ০৭২

বাঁধাই

বিদ্যুৎ বাইন্ডিং ওয়ার্কস

কলকাতা-৭০০ ০০৯

প্রচ্ছদ

শ্রীবিদ্যুৎ চক্রবর্তী

কলকাতা-৭০০ ০২৬

অঙ্গসজ্জা

শ্রীরমেন আচার্য

শ্রীসুব্রত ভট্টাচার্য ও শ্রীমৃত্যঞ্জয় দিন্দা

প্রথম প্রকাশ

রজত জয়ন্তী বর্ষ

আশ্বিন ১, ১৩৮৫

সেপ্টেম্বর ১৮, ১৯৭৮

উনবিংশ সংস্করণ

১৫০তম মুদ্রণ

মাঘ ১৪, ১৪০৪

জানুয়ারি ২৮, ১৯৯৮

ভ্রমণ সঙ্গী □ ১৯৯৮

বিশ্ব ভ্রমণে প্রতি ৮ জন পর্যটকের মধ্যে ১ জন জার্মানি—আর, ভারত ভ্রমণে প্রতি ১০ জন ভারতীয় পর্যটকের মধ্যে ৬ জন বাঙালি। ক্রম হারে বাঙালির পরই গুজরাট ও পাঞ্জাবের স্থান। ভারত ভ্রমণে বিশ্ব পর্যটকের স্থান উল্লেখ্য না হলেও ভারতের তাজ বিশ্ব ভ্রমণ মানচিত্রে দ্রুততার সাথে দেশ-দেশান্তর থেকে পর্যটক আকর্ষণ করে। শুধু তাজই বা কেন—অজন্তা, ইলোরা, দিলওয়ারা, বারাগমী, দার্জিলিং, রবীন্দ্র ও বিদ্যাসাগর সেতু (হুগলী নদী), মীনাক্ষী মন্দির, খাজুরাহোর মন্দিররাজি, হিমালয়ের শিবরাজি অর্দ্রানে বিশ্ব দর্শন অপূর্ণ থাকে যেন। পর্যটকও আসছেন এদের আকর্ষণে দেশ-দেশান্তর থেকে। অতীত রেকর্ড স্মান করা ১৯৯৩-৯৪ খ্রিস্টাব্দে ভারত ভ্রমণে বিশ্ব পর্যটকদের সংখ্যাটিও উল্লেখ্য।

ভারত ভ্রমণে উৎসাহ যোগাতে ১৯৯১ বর্ষটি পালিত হয় পর্যটন বছর রূপে। আর ওই পর্যটন বছরেই ভ্রমণ সঙ্গীর ১০০০০০ কপি মুদ্রণ মহীয়ান করে রেখেছে ভ্রমণ সঙ্গী-কে।

তবে পরিচালকের বিষয়—ভ্রমণ সঙ্গীর সুনামকে বেসাতি করে বেশ কিছু প্রকাশন সংস্থা ভাষার মারপ্যাচে সবার প্রিয় ভারত ভ্রমণের অপরিহার্য গাইড বুক ভ্রমণ সঙ্গী শিরোনামটি ব্যবহার করছেন নানান ছলে। ফলে বিভ্রান্তি বেড়েছে ভ্রমণ সঙ্গীর শুভানুধ্যায়ীদের। এমনই এক বই-এর লেখক তিনি তো আমাদের অনুকরণ করতে গিয়ে কল্লোকে গল্প ফেঁদেছেন এঁদো গলির বদ্ধ কূপে বসে। নানান তথ্যের-বিকৃতিও ঘটেছে অনভিজ্ঞতার দোষে। এ ব্যাপারে পাঠক বন্ধুদের যথেষ্ট সচেতন হতে অনুরোধ রাখব।

নিঃসন্দেহে বলা যেতে পারে ভারত রাষ্ট্রে পর্যটনে বাঙালি আজ অগ্রগণ্য। সেই অগ্রগতির ধারাকে অক্ষুণ্ণ রাখতে ভ্রমণ সঙ্গীর আত্মপ্রকাশ। ভ্রমণকে সহজ সরল ও সুন্দরতর করে তুলতে ভারত ভ্রমণের পথে ভ্রমণ সঙ্গী অপরিহার্য। ভ্রমণ সঙ্গী ১৯৭৮ থেকে বছরের পর বছর যথেষ্ট পরিমার্জিত, পরিবর্ধিত হয়ে নতুন নতুন আঙ্গিকে প্রকাশ পেয়ে আসছে। অতীতের প্রতিটি সংস্করণের গৌরবকে সঙ্গী করে স্বাধীনতার সুবর্ণ জয়ন্তী-বর্ষে ভ্রমণ সঙ্গীর ১৫০তম মুদ্রণ ১৯৯৮ বের হল। নতুন নতুন ছবি, নতুন নতুন ম্যাপ আর তত্ত্ব ও তথ্যের সংযোজন ১৯৯৮-এ বিশেষভাবে উল্লেখ্য।

তবুও বলব ভ্রমণ কাহিনী বলতে যাঁরা রমা-উপন্যাস বা কল্পলোকের গল্পকথা বোঝেন তাঁদের জন্য নয় এ-বই। ভ্রমণ-সাহিত্যও নয় ভ্রমণ সঙ্গী। পথে বেরিয়ে চেনা-অচেনা হাজার রকমের সমস্যা সমাধানের পথ বাতলে দিতে সঙ্গী হতে চায় ভ্রমণ সঙ্গী। এতে সহজ সরল ভাষায় রাজ্যের পটভূমিকা, জায়গার মাহাত্ম্য, সহজভাবে বেড়াবার পথনির্দেশ, থাকার হোটেল-হলিডে হোম-ধরমশালা-সরকারি আবাসন ছাড়াও পাবেন অল্পখরচে স্বাস্থ্যশ্রমের সঙ্গে বেড়াবার সবরকম নির্দেশিকা।

তার চেয়েও বড় কথা অচেনা-অজানা জায়গায় যাবার আগে বা পৌঁছে ভ্রমণার্থীদের যাতে করে দৃষ্টিভঙ্গি দুর্ভাবনার নিরসন হয় সেদিকে দৃষ্টি রেখেই রচিত হয়েছে ভ্রমণ সঙ্গী। বাহ্যিক বর্জিত নিত্য কাজের কথাটুকুই স্থান পেয়েছে এ-বই-এ।

পরিশেষে অধীকার করার নয়, ভ্রমণ সঙ্গী প্রকাশে উৎসাহ যুগিয়েছে বেশ কিছু ভ্রমণ সাহিত্য—যা পদে পদে বিভ্রান্তি বাড়ায় পর্যটকদের। আর সহায়তা করেছেন আমাদের অগণিত পর্যটক বন্ধু—তাঁদের অভিজ্ঞতার ভাণ্ডার উজাড় করে দিয়ে অমূল্য সময়ের বিনিময়ে। বিশেষ করে শ্রীঅশোককুমার মিত্র, শ্রীমাণিকা মুখোপাধ্যায়, শ্রীপ্রদ্যোৎকুমার মুখার্জী, শ্রীশ্যামলেন্দু পাল, শ্রীচন্দনকুমার ঠাকুরতা, শ্রীনেত্রনারায়ণ দত্ত, শ্রীসুমন চট্টোপাধ্যায়, শ্রীনিতাই রায়, শ্রীদেবজ্যোতি দে, শ্রীরাজকুমার ঘোষ, শ্রীমতী অরুন্ধতী দে, শ্রীগৌরীশঙ্কর ভট্টাচার্য, শ্রীললিতারঞ্জন বসু, শ্রীসুখময় মুখোপাধ্যায়—এঁদের সহযোগিতা উল্লেখ্য। ঠিক তেমনই ছবিতে সহযোগিতা করেছেন—শ্রীবিশ্বরঞ্জন রক্ষিত, শ্রীসুব্রত পত্রনবীশ, শ্রীঅশোক বসু, শ্রীমোনা চৌধুরী, শ্রীশ্যামল মৈত্র, শ্রীবিকাস দাস, শ্রীবিজয় সেনগুপ্ত, শ্রীরাঙ্গী বসু, শ্রীশৈলেন্দ্র মাল, শ্রীকল্যাণ দে, ডা. সীতাংগু মৈত্র, শ্রীঅশোক দে, শ্রীমতী স্মৃতি সেনগুপ্ত, শ্রীসোমনাথ ঘোষ, শ্রীনির্মলেন্দু সামুই, শ্রীইন্দ্রনীল ঘোষ, শ্রীদেবাঞ্জন প্রামাণিক। আমরা কিছু ছবি নিয়েছি ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরের নাম-না-জানা নানান চিত্রশিল্পীর সংগ্রহ থেকে। তাঁদের প্রত্যেকের জন্য রইল আমাদের আন্তরিক কৃতজ্ঞতা। আর ভ্রমণ সঙ্গীর অঙ্গসজ্জায় শিল্পীবন্ধু শ্রীরমেন আচার্যের ঐকান্তিক সহযোগিতাও ভুলবার নয়। তেমনই সহযোগিতা পেয়েছি শ্রীসত্যব্রত দাস, শ্রীতরুণ বসু, শ্রীঅপূর্ব দাস, শ্রীমতী কল্পনা হালদার, শ্রীজগন্নাথ ভট্টাচার্য মহাশয়ের কাছ থেকেও ভ্রমণ সঙ্গীকে নির্ভুল রূপ দিতে। সহযোগিতা পেয়েছি শিল্পীবন্ধু শ্রীবিদ্যুৎ চক্রবর্তী ও শ্রীবিমল দাস মহাশয়ের কাছ থেকেও ভ্রমণ সঙ্গীর শ্রীবৃদ্ধিতে। এশিয়ার ও এ পি সি লেক্সার কর্মীদের সহযোগিতাও ভ্রমণ সঙ্গীর সূচী রূপায়ণ সম্ভব করে তুলেছে। সবশেষে কৃতজ্ঞ থাকব সেই সব পাঠক-বন্ধুদের কাছে যদি তাঁরাও এগিয়ে আসেন ভুলত্রুটি সংশোধন বা আরও নতুন নতুন দিশার বার্তা পৌঁছে দিয়ে। খুশি হব ভাবীকালের পর্যটকদের স্বার্থে তাঁদের এই সহযোগিতা পেলে।

CLIMATE

Average Temperature in °c & Rainfall in mm

| Month : | | J | F | M | A | M | J | J | A | S | O | N | D |
|--------------------------------|------|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|
| Agra 169m | Maxi | 22 | 26 | 32 | 38 | 42 | 41 | 35 | 33 | 33 | 33 | 30 | 22 |
| | Mini | 7 | 10 | 16 | 20 | 27 | 29 | 27 | 26 | 24 | 19 | 12 | 8 |
| | Rain | 15 | 10 | 11 | 5 | 10 | 60 | 210 | 265 | 152 | 25 | 2 | 4 |
| Ahmedabad 53m | Maxi | 28 | 31 | 36 | 40 | 41 | 37 | 33 | 32 | 33 | 35 | 33 | 30 |
| | Mini | 11 | 14 | 18 | 23 | 26 | 27 | 26 | 24 | 23 | 21 | 16 | 12 |
| | Rain | 4 | - | 1 | 2 | 5 | 100 | 315 | 213 | 164 | 13 | 5 | 1 |
| Ajanta/ Ellora 275m | Maxi | 28 | 31 | 36 | 38 | 40 | 35 | 30 | 29 | 30 | 32 | 30 | 29 |
| | Mini | 12 | 14 | 20 | 24 | 25 | 24 | 22 | 21 | 21 | 20 | 16 | 14 |
| | Rain | 3 | 3 | 4 | 7 | 16 | 140 | 190 | 145 | 180 | 63 | 32 | 9 |
| Amritsar 234m | Maxi | 18 | 22 | 28 | 34 | 39 | 40 | 36 | 34 | 34 | 32 | 27 | 20 |
| | Mini | 5 | 7 | 12 | 16 | 22 | 25 | 26 | 25 | 25 | 17 | 9 | 5 |
| | Rain | 38 | 10 | 26 | 10 | 11 | 32 | 168 | 168 | 106 | 55 | 10 | 15 |
| Bangalore 920m | Maxi | 25 | 30 | 32 | 33 | 33 | 29 | 27 | 27 | 28 | 28 | 26 | 25 |
| | Mini | 14 | 16 | 18 | 21 | 21 | 20 | 18 | 19 | 19 | 19 | 16 | 15 |
| | Rain | 3 | 10 | 6 | 45 | 117 | 80 | 117 | 147 | 144 | 185 | 54 | 16 |
| Bhopal 523m | Maxi | 26 | 29 | 34 | 38 | 41 | 37 | 32 | 29 | 30 | 31 | 29 | 26 |
| | Mini | 10 | 12 | 16 | 21 | 26 | 25 | 23 | 23 | 22 | 64 | 12 | 11 |
| | Rain | 17 | 5 | 10 | 3 | 11 | 137 | 430 | 308 | 230 | 37 | 15 | 6 |
| Bhubane- swar 45m | Maxi | 27 | 32 | 35 | 38 | 39 | 35 | 32 | 31 | 31 | 31 | 29 | 28 |
| | Mini | 14 | 18 | 22 | 25 | 27 | 26 | 25 | 25 | 25 | 23 | 18 | 15 |
| | Rain | 12 | 25 | 16 | 12 | 61 | 225 | 302 | 336 | 305 | 265 | 51 | 3 |
| Bombay 11m | Maxi | 28 | 29 | 30 | 32 | 33 | 32 | 30 | 30 | 30 | 32 | 32 | 31 |
| | Mini | 19 | 19 | 22 | 24 | 27 | 26 | 25 | 24 | 24 | 25 | 23 | 21 |
| | Rain | 2 | 1 | - | 2 | 16 | 522 | 710 | 440 | 295 | 88 | 21 | 2 |
| Calcutta 6m | Maxi | 27 | 30 | 34 | 36 | 36 | 34 | 32 | 32 | 32 | 32 | 29 | 27 |
| | Mini | 12 | 17 | 22 | 25 | 27 | 27 | 26 | 26 | 26 | 24 | 18 | 13 |
| | Rain | 14 | 24 | 26 | 44 | 121 | 258 | 301 | 305 | 291 | 160 | 35 | 3 |
| Kochi (Cochin) Sea-Level | Maxi | 31 | 31 | 31 | 31 | 32 | 29 | 28 | 28 | 28 | 29 | 30 | 30 |
| | Mini | 22 | 23 | 26 | 26 | 26 | 23 | 24 | 24 | 24 | 24 | 24 | 23 |
| | Rain | 10 | 34 | 50 | 140 | 364 | 756 | 572 | 385 | 235 | 333 | 185 | 36 |
| Darjeeling 2134m | Maxi | 8 | 11 | 15 | 18 | 19 | 19 | 20 | 20 | 20 | 18 | 15 | 11 |
| | Mini | 1 | 3 | 8 | 11 | 14 | 14 | 14 | 15 | 15 | 12 | 7 | 3 |
| | Rain | 22 | 27 | 52 | 107 | 185 | 522 | 714 | 572 | 416 | 116 | 14 | 5 |
| Delhi 216m | Maxi | 21 | 24 | 31 | 36 | 41 | 39 | 35 | 34 | 34 | 35 | 29 | 23 |
| | Mini | 7 | 10 | 14 | 20 | 26 | 28 | 27 | 26 | 24 | 18 | 11 | 8 |
| | Rain | 23 | 18 | 13 | 8 | 12 | 74 | 185 | 172 | 117 | 10 | 2 | 10 |

বেনারসী ও সিদ্ধ শাড়ী

শুশ্রীয়াত মিন্দ শাউম

কলেজ স্ট্রীট মার্কেট
কলিকাতা

উৎসবে



| Month : | | J | F | M | A | M | J | J | A | S | O | N | D |
|---------------------------|------|----|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Gaya/Rajgir Bodhgaya | Maxi | 22 | 26 | 34 | 39 | 41 | 40 | 36 | 34 | 33 | 31 | 29 | 24 |
| | Mini | 8 | 10 | 17 | 23 | 27 | 27 | 26 | 26 | 26 | 23 | 13 | 9 |
| | Rain | 24 | 21 | 10 | 6 | 18 | 108 | 288 | 364 | 194 | 51 | 6 | 50 |
| *Gir Forest 157m | Maxi | 28 | 29 | 31 | 32 | 31 | 31 | 30 | 29 | 30 | 33 | 33 | 29 |
| | Mini | 12 | 14 | 18 | 22 | 26 | 28 | 26 | 26 | 25 | 22 | 19 | 15 |
| | Rain | 1 | 1 | - | 5 | 5 | 130 | 305 | 146 | 70 | 29 | 5 | 1 |
| Hydrabad 563m | Maxi | 29 | 30 | 35 | 38 | 39 | 34 | 31 | 30 | 30 | 29 | 27 | 27 |
| | Mini | 12 | 16 | 20 | 24 | 26 | 24 | 23 | 22 | 22 | 21 | 16 | 12 |
| | Rain | 2 | 11 | 13 | 25 | 32 | 106 | 161 | 145 | 165 | 71 | 25 | 6 |
| Jaipur 390m | Maxi | 22 | 24 | 31 | 36 | 41 | 40 | 34 | 32 | 33 | 33 | 29 | 24 |
| | Mini | 7 | 10 | 16 | 21 | 26 | 27 | 26 | 24 | 23 | 18 | 12 | 8 |
| | Rain | 14 | 10 | 10 | 4 | 10 | 52 | 155 | 240 | 90 | 20 | 3 | 4 |
| Jaisalmir 242m | Maxi | 23 | 27 | 32 | 38 | 42 | 42 | 38 | 36 | 36 | 36 | 31 | 25 |
| | Mini | 7 | 10 | 17 | 21 | 26 | 27 | 27 | 26 | 25 | 20 | 13 | 8 |
| | Rain | 2 | 1 | 3 | 2 | 4 | 6 | 90 | 85 | 14 | 1 | 5 | 2 |
| Jodhpur 224m | Maxi | 25 | 28 | 33 | 38 | 42 | 41 | 36 | 34 | 35 | 36 | 31 | 26 |
| | Mini | 10 | 11 | 16 | 22 | 27 | 29 | 27 | 25 | 24 | 20 | 14 | 10 |
| | Rain | 6 | 5 | 2 | 2 | 6 | 32 | 122 | 145 | 46 | 7 | 3 | 2 |
| Kathmandu 1331m | Maxi | 18 | 20 | 24 | 27 | 29 | 29 | 27 | 28 | 27 | 26 | 22 | 19 |
| | Mini | 1 | 3 | 7 | 11 | 14 | 19 | 20 | 20 | 18 | 13 | 6 | 1 |
| | Rain | 16 | 26 | 31 | 62 | 69 | 285 | 318 | 360 | 365 | 63 | 13 | 3 |
| Leh 3521m | Maxi | -3 | 1 | 6 | 12 | 16 | 20 | 25 | 24 | 21 | 15 | 8 | 2 |
| | Mini | 14 | 12 | -6 | -2 | 1 | 7 | 10 | 10 | 5 | -1 | -7 | -11 |
| | Rain | 10 | 8 | 8 | 5 | 5 | 5 | 13 | 15 | 8 | 3 | 3 | 5 |
| Lucknow 111m | Maxi | 23 | 25 | 33 | 38 | 41 | 39 | 35 | 33 | 33 | 33 | 30 | 24 |
| | Mini | 8 | 11 | 16 | 21 | 26 | 27 | 26 | 26 | 25 | 20 | 13 | 9 |
| | Rain | 24 | 17 | 9 | 6 | 12 | 95 | 298 | 302 | 182 | 40 | 1 | 5 |
| Madras 16m | Maxi | 29 | 31 | 33 | 35 | 38 | 38 | 36 | 35 | 34 | 32 | 29 | 29 |
| | Mini | 10 | 20 | 23 | 26 | 28 | 27 | 26 | 26 | 25 | 24 | 22 | 21 |
| | Rain | 24 | 7 | 15 | 25 | 52 | 85 | 124 | 117 | 266 | 309 | 140 | |
| Mandu 634m | Maxi | 24 | 28 | 34 | 38 | 40 | 36 | 32 | 28 | 29 | 31 | 28 | 26 |
| | Mini | 8 | 10 | 15 | 20 | 26 | 24 | 23 | 22 | 21 | 18 | 12 | 9 |
| | Rain | 8 | 1 | 4 | 4 | 12 | 146 | 315 | 268 | 221 | 48 | 22 | 3 |
| Mount Abu 1195m | Maxi | 18 | 21 | 25 | 29 | 32 | 29 | 24 | 23 | 24 | 27 | 24 | 21 |
| | Mini | 6 | 11 | 16 | 20 | 22 | 21 | 18 | 18 | 18 | 17 | 14 | 11 |
| | Rain | 6 | 7 | 60 | 67 | 11 | 90 | 632 | 665 | 249 | 13 | 8 | 3 |
| Mysore 770m | Maxi | 27 | 31 | 34 | 34 | 33 | 29 | 27 | 28 | 29 | 28 | 27 | 26 |
| | Mini | 16 | 17 | 20 | 21 | 21 | 20 | 20 | 20 | 19 | 20 | 18 | 16 |
| | Rain | 3 | 6 | 12 | 65 | 156 | 61 | 72 | 80 | 150 | 180 | 67 | 15 |
| Udhagamandalam Ooty 2286m | Maxi | 18 | 20 | 22 | 22 | 22 | 18 | 20 | 17 | 18 | 19 | 18 | 18 |
| | Mini | 4 | 5 | 8 | 10 | 11 | 11 | 11 | 11 | 10 | 10 | 8 | 6 |
| | Rain | 26 | 12 | 30 | 108 | 173 | 139 | 177 | 128 | 110 | 214 | 127 | 59 |

বরনীয় লেখকদের স্মরণীয় লেখার সম্ভার:

স্ব স্ব খণ্ডে
সম্পূর্ণ

ছোটদের অমনিবাস

প্রতিটি বই-এর দাম:
১০০.০০ টাকা

যোগীন্দ্রনাথ সরকার □ অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ হেমেন্দ্রকুমার রায় □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য
□ শিবরাম চক্রবর্তী □ পরিমল গোস্বামী □ খগেন্দ্রনাথ মিত্র □ সুকুমার দে সরকার

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

| Month : | | J | F | M | A | M | J | J | A | S | O | N | D |
|--|----------------------|----------------|----------------|----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|
| Port Blair 79m | Maxi Mini Rain | 31 20 2 | 31 29 4 | 32 23 4 | 33 25 17 | 33 27 18 | 31 25 500 | 29 24 900 | 29 24 345 | 29 24 277 | 31 24 122 | 33 24 20 | 32 21 37 |
| Port Blair 79m | Maxi Mini Rain | 29 23 29 | 32 20 26 | 32 23 3 | 32 25 71 | 31 26 363 | 34 29 590 | 29 24 485 | 29 25 437 | 29 24 516 | 29 24 329 | 29 24 205 | 29 23 157 |
| Pune 559m | Maxi Mini Rain | 31 11 2 | 33 12 2 | 36 17 2 | 38 21 16 | 37 22 35 | 32 23 185 | 28 22 105 | 28 22 126 | 30 21 92 | 32 19 27 | 31 15 37 | 30 12 5 |
| Puri Sea-Level | Maxi Mini Rain | 26 16 9 | 28 20 20 | 30 24 14 | 31 27 12 | 32 28 63 | 32 27 186 | 30 26 295 | 31 26 256 | 31 26 258 | 31 25 242 | 29 21 75 | 27 17 8 |
| Shillong 1496m | Maxi Mini Rain | 15 4 15 | 16 5 29 | 22 11 60 | 24 14 136 | 24 16 325 | 24 17 545 | 24 18 395 | 24 17 335 | 24 13 315 | 22 13 220 | 19 8 35 | 16 5 6 |
| Shimla 2213m | Maxi Mini Rain | 8 1 65 | 10 3 48 | 14 7 57 | 19 11 38 | 23 15 54 | 24 16 148 | 21 15 415 | 20 15 385 | 20 14 195 | 18 11 45 | 15 7 7 | 10 2 24 |
| Srinagar 1768m | Maxi Mini Rain | 5 2 74 | 7 1 71 | 14 3 91 | 19 7 94 | 24 11 61 | 29 14 35 | 31 18 58 | 30 18 60 | 28 12 38 | 22 5 30 | 15 0 10 | 10 2 33 |
| Trichy 88m | Maxi Mini Rain | 29 21 18 | 33 21 8 | 36 23 8 | 38 27 70 | 38 27 80 | 36 27 34 | 36 26 42 | 35 25 107 | 34 25 108 | 32 24 175 | 30 23 160 | 28 21 71 |
| Thiruvana- nthapuram Trivandrum Sea-Level | Maxi Mini Rain | 30 20 20 | 31 22 20 | 33 24 44 | 32 25 122 | 32 25 249 | 29 24 331 | 29 23 215 | 29 23 165 | 30 23 123 | 30 23 271 | 29 22 207 | 30 21 73 |
| Udaipur 582m | Maxi Mini Rain | 23 7 9 | 28 9 4 | 32 15 4 | 36 20 3 | 39 25 5 | 36 25 87 | 32 24 195 | 29 23 205 | 31 22 120 | 32 19 16 | 29 11 5 | 26 8 3 |
| Varanasi 76m | Maxi Mini Rain | 23 8 19 | 27 12 18 | 33 17 9 | 39 22 5 | 42 27 14 | 39 27 116 | 36 26 301 | 32 26 305 | 33 25 185 | 33 21 55 | 29 12 9 | 23 9 7 |
| Visakha- patnam 3 m | Maxi Mini Rain | 27 17 7 | 28 18 15 | 31 23 9 | 34 26 13 | 35 28 54 | 34 27 88 | 32 26 22 | 32 26 132 | 32 26 165 | 31 25 259 | 29 21 91 | 28 18 18 |

ব্রহ্মণেরসঙ্গী গোপালের গেঞ্জি®

Gopal

VEST BRIEF SOCK T-SHIRT
GOPAL HOSIERY CALCUTTA-700 032

ভারত কথা



বিশাল দেশ ভারত। তাই দেশ না বলে উপমহাদেশও বলে থাকে লোকে মহামানবের তীর্থভূমি ভারতকে। বিশ্বের বৃহত্তম গণতন্ত্রের দেশও আমাদের ভারত। তবে, আয়তনে বিশ্বের ৭ম আর এশিয়ার বৃহত্তম রাষ্ট্র ভারত। জনসংখ্যায় বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম—চীনের পরেই ভারতের স্থান। ব্যাপ্তি এর ৩.২৮ মিলিয়ন বর্গ কিমি—উত্তর-দক্ষিণে ৩২২০, আর পূব থেকে পশ্চিমে ২৯৮০ কিমি। পাহাড়-পর্বত-মরু সবেই সমন্বয় ঘটেছে দক্ষিণ এশিয়ার এই ভারত-ভূমে। আর সমুদ্র—সে তো পূব-পশ্চিম-দক্ষিণ জুড়ে। মিলন ঘটেছে ভারতের দক্ষিণ বিন্দু কন্যাকুমারিকায় বঙ্গোপসাগর, আরব সাগর ও ভারত মহাসাগরের। ৬১০০ কিমি ভটরেখা ভারতের পূব-পশ্চিম-দক্ষিণে। উত্তর জুড়ে গিরিরাঙ্গ হিমালয় আকাশকে বিদীর্ণ করে রক্ত-শুভ্র কিরীট ভালে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। তারই ঢালে ভারতের উত্তর-পূব জুড়ে চীন-নেপাল-ভূটানের অবস্থান, পূবে বার্মাদেশ, দক্ষিণ-পূবে বাংলাদেশ, উত্তর-পশ্চিমে পাকিস্তান। কৌটিল্যের অর্থশাস্ত্রে প্রথম বনের উল্লেখ মিললেও বন কেটে বসত গড়ে তোলা হয়েছে আজ। স্বাভাবিক বনাঞ্চল ৩৩ শতাংশ হলেও ভারত রাষ্ট্রে বনভূমির ব্যাপ্তি মাত্র ১৪ শতাংশ। তবুও, ভারতের মতো বৈচিত্র্য বিশ্বের দ্বিতীয় কোনো দেশে দুলভ। চিরহরিৎ, পর্ণমোচি ও পার্বত্য সব ধরনের অরণ্য ভারতে মেলে। ৩৫০ জাতীয় স্তন্যপায়ী, ২১০০ ধরনের পাখি, ৩৫০ রকমের সরীসৃপের দর্শন মেলে ভারতের অরণ্যে। ৮০০টি জাতীয় অভয়ারণ্য, ৪৪১টি পানিবালয়, ২৩টি ব্যায় প্রকল্প রয়েছে ভারতে।

৮৪ কোটি ৩৯ লক্ষ ৩০ হাজার ৮৬১ মানুষের বাস ভারত রাষ্ট্রে। জাতীয়তায় ভারতীয় হলেও ধর্মে ও বর্ণে নানান ব্যবধান। আহার-বিহার-বসনেও স্ব স্ব স্বাতন্ত্র্য উল্লেখ্য। ভাষাও এদের বিবিধ—অধিকাংশের ভাষা না হয়েও একক গরিষ্ঠ রূপে রাষ্ট্রীয় ভাষা হিন্দি। আর সংবিধান স্বীকৃত ভাষা ১৫ হলেও দেবনাগরী হরফে হিন্দি সরকারি ক্রিয়া-কর্মে রাষ্ট্রীয় ভাষারূপে গৃহীত। স্বীকৃত পনের—অসমীয়া, উর্দু, ওড়িয়া, কানাড়া, কাশ্মীরি, গুজরাতি, তামিল, তেলুগু, পাঞ্জাবি, বাংলা, মারাঠি, মালয়ালম, সংস্কৃত, সিন্ধি, হিন্দি। স্বীকৃত ভাষা হলেও সরকারি ভাষারূপে প্রচলন নেই কাশ্মীরি, সংস্কৃত ও সিন্ধি এই ত্রয়ীর। তেমনই পাঞ্জাবি স্বীকৃত ভাষা হলেও লেখার মাধ্যম ১৬ শতকে গুরু অঙ্গদের সৃষ্ট গুরুমুখী। ভাষায় স্বকীয়তা থাকলেও নাগরী লিপির সঙ্গে সাদৃশ্য মেলে। উপভাষা ১৬৫২, লেখার মাধ্যম মূলত ১৩ ধর্মী হরফ সারা ভারতে। ইংরেজিও সরকারি ক্রিয়াকর্মে স্বীকৃত ভাষা—তবে শহরাঞ্চলে মাত্র ৩% ভারতীয় ইংরেজি বলে। ৮২.৬৪% হিন্দু, ১১.৩৫% মুসলিম, ২.৪৩% খ্রিস্টান, ১.৯৬% শিখ, ০.৭১% বৌদ্ধ, ০.৪৮% জৈন, ০.৪২% বিবিধের (০.০১% অনুন্নেষিত) বাস এই ভারতের মহামানবের সাগরতীরে। শুধু আহার-বিহার-বসন আর মুখের ভাষাই বা কেন, বৈচিত্র্য আছে এর প্রকৃতিতেও। এমন বৈচিত্র্যের দেশে বিশ্ব দ্বিতীয়টি বুঁজে মেলা ভার। *India is the Epitoph of the World*. পৌরাণিক হিন্দু রাজা চন্দ্রবংশীয় দুষ্যন্ত-শকুন্তলা সূত প্রথিতযশা নৃপতি ভরত থেকে ভারত (ভারতবর্ষ) নামকরণ। আর গ্রিকরা নাম দেন ইন্ডিয়া ভারতকে। তেমনই মধ্যপ্রাচ্যে, এমনকি পাকিস্তানে লোকে আজও হিন্দুস্তান বলে থাকে ভারতকে।

অকোরে ধারায় বৃষ্টি ঝরে (বছরে ৫০০") মেঘালয়ের চেরাপুঞ্জিতে, পথ-ঘাটে জল জমে শহর কলকাতায়; দুকূল ভাসিয়ে সৃষ্টি ধ্বংস করে গঙ্গা-যমুনা-কৃষ্ণা-কাবেরী-নর্মদা-ব্রহ্মপুত্র ছাড়াও নানান নদ-নদী। তেমনই অনাবৃষ্টির জন্য আক্ষেপ করে রাজস্থানের মরুবাসী। সারা উত্তর-পূবে যখন শৈত্য প্রবাহ—সুদূর দক্ষিণ-পশ্চিমে তখন মেলে ক্রান্তির আবহাওয়া। হিমালয়ও গৌরবান্বিত করেছে ভারতকে। সুদূর পূবে বার্মা সীমান্তে ভারতে ঢুকে মিনি তিব্বত লাডাকে ভারত ছেড়ে হিন্দুকুশ/আফগানিস্তান হয়ে মধ্য প্রাচ্যের প্রান্ত পর্যন্ত বিস্তার ঘটলেও নানান নয়ন মনোহর শিখরের অবস্থান ভারতে। তিব্বত চীনের দখলে যেতে লাসা থেকে আসা দলাই লামাও মঠ গড়েছেন হিমালয়ের ধরমশালা পাহাড়ে। তেমনই পৌরাণিক যুগ থেকে নানান হিন্দুদেবতার বাস হিমালয়ের গিরিকন্দরে।

হেথায় আর্থ, হেথায় অনার্থ, হেথায় ব্রাবিড় চীন—
শক ছনদল পাঠান মোগল এক দেহে হল লীন।

যুগে যুগে দেশ-দেশান্তর থেকে নানান জাতি-উপজাতি এসে ভারতআশ্রায় সঙ্গে একীভূত হয়েছে। Neolithic agri-culturist-রা ভারতের উত্তর-পশ্চিমে বালুচিস্তানের পাহাড়ে এসে জনপদ গড়ে। সিদ্ধুর অববাহিকা জুড়ে চাষবাসে শুম্ভি আসে। কালে কালে প্রগতির সাথে শিক্ষাদীক্ষায়ও যথেষ্ট উন্নত হয় এরা। এমনকি বিশ্বের ডাইনিং টেবিলে Chicken অর্থাৎ মুরগির জোগান এদেরই কালে। ইরান ও মেসোপটেমিয়া থেকে হিন্দুকুশ পেরিয়ে ভারতে আসে আর্থ জাতি। বসতি গড়ে পঞ্চনদের দেশ পাঞ্জাবে। তবে, ধ্বংস পায় অতীত বার বার সিদ্ধুর খারা পরিবর্তনে; আর সবশেষে খ্রিপূ ১৭০০র ভূমিকম্প। নিদর্শন মিলেছে তার (খ্রিপূ ৩৫০০-২৫০০) অথবা পাকিস্তানের হরম্মা ও মহেজোদডোয়। স্থানীয়দের

(কাল) যুদ্ধে হারিয়ে দাস করে বশে রাখে নতুন বাসভূমে আর্থার। ধর্মে এরাও হিন্দু। রাজার অনুপস্থিতিতে পুরোহিতরাই সমাজ চালাত প্রাক আর্থ কালে। ব্রাহ্মণীকাল হিন্দুত্বের সঙ্গে মিলে মিশে কালে কালে শ্রেণী ভেদ, বর্ণ ভেদ, ধর্ম ভেদ গড়ে ওঠে আর্থ সমাজে। গোড়াতে যোদ্ধা, ব্রাহ্মণ ও সাধারণ—৩ স্তরে বিভক্ত ছিল আর্থ সমাজ। দাসদের উদ্ভবে নবরূপে বর্ণ ভেদের সূচনা ঘটে—ক্ষত্রিয় (যোদ্ধার জাত), বৈশ্য (কৃষি ও বাণিজ্য), শূদ্র (ভূমিদাস)—এ। আরও পরে (খ্রি পূ ১৫০০-১০০০) জাতিভেদ আসে আর্থসমাজে। যার বিষয়ময় ফল কলুষিত করছে ভারতবর্ষকে আজও। প্রসারও ঘটে পঞ্চনদের দেশ ছাড়িয়ে গঙ্গা-যমুনার অববাহিকা ধরে আর্থ সাম্রাজ্যের। ভারতীয় আর্থজাতির প্রাচীনতম ধর্মক্ষেত্র কুরুক্ষেত্র। তেমনই ত্রেতাযুগের আর এক তীর্থ অযোধ্যার পুণ্যভূমে শ্রীরামচন্দ্রের জন্মক্ষেত্র। সারা বিশ্বে এক আলোড়িত নামও আজ অযোধ্যার শ্রীরামমন্দির। লিখিত হয় ঋগবেদ, পুরাণ, মহাভারত, রামায়ণ—হিন্দু ধর্মের চার ক্লাসিক গ্রন্থ তদানীন্তন সমাজ-ব্যবস্থার প্রতিচ্ছবিরূপে। ৩৩০ মিলিয়ন দেবতার উদ্দেশ্যে মেলে হিন্দু পূরণে। তবে, সৃষ্টি-স্থিতি-লয়ের তিন দেবতা ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বরের মুখ্য ত্রয়ী। হিন্দু পূরণের দেবতারার বার বার নেমে এসেছেন স্বর্গ থেকে মর্ত্যধামে ভক্তদের বাঙ্খাপূরণে। মৎস্য, কূর্ম, বরাহ, নৃসিংহ, বামন, পরশুরাম, রামচন্দ্র, শ্রীকৃষ্ণ, বুদ্ধ, কব্জি—দশ অবতাররূপে বিষ্ণুর আবির্ভাবে সঙ্কট কেটেছে বারবার। দেবতাদের সে আখ্যানও ছড়িয়ে রয়েছে সারা ভারতময়। আর সেই থেকে আজও বিশ্বের প্রাচীনতম চলমান ধর্ম হিন্দুধর্মের বৈজয়ন্তী উদ্ভীল ভারতের আকাশে। দর্শন তার আদ্যার বিনাশ নেই—জন্ম-মৃত্যু-পুনর্জন্ম ঘটে চলেছে পর্যায়ক্রমে। কর্মফলই প্রভাব ফেলে পরজন্মে।

আর দক্ষিণে আগে-ভাগেই (4000 BC) বসতি গড়েছে মধ্য-পূর্ব ও মধ্য এশিয়া থেকে এসে দ্রাবিড়ীয়রা। ধর্মে এরাও হিন্দু। তবে, পোশাক-আশাক, আহার-বিহার এমনকি ভাষাও এদের ভিন্ন। প্রসারও ঘটে সারা দক্ষিণী অববাহিকায় দ্রাবিড়ীয় সাম্রাজ্যের।

আর রাজতন্ত্রের জন্ম খ্রি পূ ৬০০তে গঙ্গার অববাহিকায়। ব্রাহ্মণদের প্রতিপত্তি ও রাজতন্ত্রের পেয়ণে জর্জরিত হিন্দু সাম্রাজ্যে খ্রিস্ট জন্মের ৫৬৩ বছর আগে অধুনা নেপাল রাষ্ট্রের লুম্বিনীতে কপিলাবস্তুর শাকা বংশীয় রাজা শুদ্ধোধন সূত বিষ্ণুর ৯ম অবতাররূপী সিদ্ধার্থের জন্ম। এক সন্তানের জনক সিদ্ধার্থ (563-483 BC) একদা পরিক্রমায় বেরিয়ে জরাগ্রস্ত, বৃদ্ধ, শব ও যোগী দর্শনে বিচলিত হয়ে মোক্ষলাভের পথের সন্ধানে ২৯ বছর বয়সে রাজ্যপাট ছেড়ে ৩৫ বছর গয়র অনতিদূরে ৪৯ দিনের ধ্যানে দিব্যজ্ঞান প্রাপ্ত হন। ৪৫ বছর বয়সে—বুদ্ধ শরণ গচ্ছামি, ধর্ম শরণ গচ্ছামি, সত্ত্ব শরণ গচ্ছামি—অর্থাৎ বৌদ্ধধর্মের মর্মকন্ধ্যা জীবনক্ষয়ী হিংসা নিরোধে বৌদ্ধধর্মের উন্মেষ ঘটে সারনাথে। প্রসারও পায় বৌদ্ধধর্ম ভারত ছাড়িয়ে বহির্ভারতে। আর ৮০ বছর বয়সে কুশীনগরে বুদ্ধের পরিনির্বাণ। সম্রাট অশোকের কালে রাজধর্মের রূপ নিতে বৌদ্ধধর্মের রমরমা, পরবর্তীকালে বৌদ্ধধর্ম Hinayana ও Mahayana দুটি শাখায় টুকরো হয়। মৌর্য ও সাতবাহন কালে হীনযান মূর্তি বিরোধী বৌদ্ধধর্ম প্রতীকে অর্থাৎ গুপ্তকালের স্বর্ণযুগের প্রতীক থেকে সরে এসে প্রতিকৃতিতে অর্থাৎ মহাযান যুগের সূচনা। কিছুটা স্তিমিত হলেও প্রভাব তার আজও বিশ্বের দিগ্বিদিকে।

বুদ্ধেরও আগে অহিংসা পরম ধর্ম বাণী শোনালেন ২৪তম জৈন তীর্থঙ্কর (শেষ) বর্ধমান মহাবীর (550-475 BC)। প্রাচীন গণতান্ত্রিক রাজ্য বৈশালীর উপকণ্ঠে কুষ্ঠ গ্রামে খ্রিস্ট জন্মেরও সাড়ে পাঁচ শ বছর আগে বর্ধমান মহাবীরের জন্ম। পিতা—ক্ষত্রিয় নায়কের পুত্র সিদ্ধার্থ, আর মাতা রাজকন্যা ত্রিশলা। বিয়েও করেন মহাবীর। স্ত্রী যশোধরা, আর কন্যা অনুজা। ৩০ বছর বয়সে গৃহত্যাগ করে সন্ন্যাস নেন মহাবীর। দীর্ঘ ১২ বছরের কঠিন তপস্যায় কাম-ক্রোধ-লোভ-মোহ জয় করে জিতেল্লী অর্থাৎ জীন হলেন মহাবীর। আর জীন থেকে তাঁর ধর্মমতের নাম হয় জৈন। অতীতে আরও ২৩ জন [১. ঋষভনাথ (আদিনাথ), ২. অজিতনাথ, ৩. সম্ভবনাথ, ৪. অভিনন্দন, ৫. সমুত্তিরাথ, ৬. পদ্মপ্রভু, ৭. সুপার্ষনাথ, ৮. চন্দ্রপ্রভু, ৯. সুবিনাথ, ১০. শীতলানাথ, ১১. শ্রোয়ংশনাথ, ১২. বাসুপূজা, ১৩. বিমলনাথ, ১৪. অনন্তনাথ, ১৫. ধর্মনাথ, ১৬. শান্তিনাথ, ১৭. কুণ্ডনাথ, ১৮. অরিনাথ, ১৯. মল্লিনাথ, ২০. মনিসুরত, ২১. নেমিনাথ, ২২. অরিস্টনেমি, ২৩. পার্শ্বনাথ,



প্রেমের ফাঁদ পাতা ছুবনে—
কে কোথা ধরা পড়ে কে জানে। —রবীন্দ্রনাথ

চিরকালীন ভালবাসা

গম্পা [২২৫.০০] বক্সি [১২৫.০০]



সম্পাদনা : বিষ্ণু বসু ও অশোককুমার মিত্র • প্রচ্ছদ ও অলঙ্করণ : পূর্ণেন্দু পত্নী

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

২৪. মহাবীর। তীর্থঙ্কর মানবান্দ্যার মোক্ষলাভের উপায় বাতলালেন। ধর্ম নয়—দর্শনই এদের মুখ্য উপজীব্য। সঠিক শব্দটিও এদের চিন্তাধারার মূলে। তবে, মহাবীরের মৃত্যুর পর দিগম্বর ও ষ্ঠেতাষ্বর ২টি ধারায় বিভক্ত হয়ে পড়ে জৈনধর্ম। উন্মেষ ভারতে যেমন, এর পরিকাঠামোও ভারতে সীমিত। তবে, আজ ক্ষয়িষ্ণু হলেও বিদ্যমান।

খ্রিস্টধর্মের অনুপ্রবেশ ঘটেছে দক্ষিণ ভারতের গৌড়া হিন্দু সাম্রাজ্যে। খ্রীশুর মৃত্যুর পর (52 AD) খ্রীশুর দ্বাদশ শিষ্যের অন্যতম সেন্ট টমাস (গৃহীনাম ডাইডিমাস) ভারতে আসেন প্রভুর ধর্ম প্রচারে। তবে, মধুর নয় সে আখ্যান। জীবন দিতে হয় ঘাতকের হাতে সেন্ট টমাসকে। ইসলাম ধর্মের প্রবর্তক prophet Mohammed-এর জন্ম ৫৭০ খ্রিস্টাব্দে আজকের সৌদি আরবের মক্কায়। আন্নার প্রত্যাদেশ (revelation) পান ৬১০-এ মোহাম্মদ—যা বাণী হয়ে সম্বলিত হয় পবিত্র মুসলিম গ্রন্থ কোরাণে। মূর্তি পূজার বিরুদ্ধে প্রচার করলেন মোহাম্মদ। মক্কাবাসীদের পছন্দ নয়—প্রতিবাদে ৬২২-এ মক্কা ছেড়ে মেদিনা (Medina) গেলেন। ৬৩০-এ অনুগামীর সংখ্যা বাড়তে মক্কায় ফেরেন মোহাম্মদ। ৬৩২-এ মৃত্যু ঘটে মোহাম্মদের। মৃত্যুর দুই দশকের মধ্যে সারা আরব দুনিয়ায় ছড়িয়ে পড়ে ইসলাম ধর্ম। ভারতের দক্ষিণ-পশ্চিমে ক্রান্তানোরে ইসলামধর্মের আগমন ঘটে বাগদাদ থেকে। কালিকটের হিন্দুরাজার আনুকূল্যে প্রচারও পায় ইসলামধর্ম হিন্দু প্রজাদের মাঝে। আর ৭১১য় আরবের বাণিজ্য জাহাজ ভারতীয় (Chaldea) জলদস্যুর হাতে লুণ্ঠিত হতে ইরাকী গভর্নর ৬০০০ ঘোড়া, ৬০০০ উটের বাহিনী পাঠায় সিদ্ধ অভিযানে। ফরমান তার—হয় যুদ্ধ করে মর, না-হয় ইসলাম হয়ে জান বাঁচাও। ধীরে ধীরে মোগল কালেও বহু হিন্দু ধর্মান্তরিত হয়ে দীক্ষা নেয় ইসলামে। ছড়িয়ে পড়ে ইসলাম ধর্ম ভারতময় কালে কালে। পরে ইসলাম ধর্মও টুকরো হয় ২টি ভাগে—সিয়া ও সুন্নি (Shia & Sunnite) দুই সম্প্রদায়েরই প্রচলন দেখতে মেলে ভারতরাষ্ট্রে।

বিশ্বের প্রাচীনতম ধর্মমত Zorathustranism. প্রবক্তা Zorathustra—আজকের আফগানিস্তানের Mazar-i-Sharif-এ ৬-৭ খ্রিস্টপূর্ব। অগ্নির উপাসক এরা। ইসলাম থেকে ধর্ম বাঁচাতে পারস্য হতে জরথুষ্ট্রিয়ানরা ভারতে আসে ৭ শতকে গুজরাটের সঞ্জনে। নানান ঘাত-প্রতিঘাতের মাঝ দিয়ে ভারতীয়দের সাথে মিলেমিশে সংখ্যায় উন্মেষ্য না হয়েও ভারতীয় ব্যবসা-বাণিজ্যে উল্লেখযোগ্য ভূমিকা নিয়েছে আজ। আগমন পারস্য (ইরান) থেকে, তাই ভারতে এরা পার্সি নামে খ্যাত। আর ১৫ শতকে গুরু নানকের শিখধর্মেও প্রবর্তন। দেবতা ও মানুষে মেলবন্ধনই উদ্দেশ্য তাঁর। সবশেষে এক জাতি এক প্রাণ একতাকে রূপ দিতে বাহাইধর্মের উন্মেষ ১৮৪৪এ পারস্যে। ভারতে আগমন ১৮৭২এ বিশ্বের সর্বকনিষ্ঠ ধর্ম বাহাই-এর।

পারস্যীয় ব্যবসায়ীদের উদ্যোগে খ্রিপূ ৫৩০এ ভারতীয় ব্যবসা-বাণিজ্যে পারস্যীয় মুদ্রার প্রচলন আর এক উল্লেখযোগ্য ঘটনা। হয়ত-বা উত্তরকালে সম্রাট অশোকের শিলালিপি পারস্য-সম্রাট দরায়ুসের পাহাড় লিখনের প্রতিফলন। খ্রিপূ ৫১৪-৫১২য় ভারত অভিযানে এসে পাঞ্জাব দখল করে পারস্যের রাজা দরায়ুস। তবে খ্রিপূ ৩২৭-৩২৫এ ম্যাসিডোনিয়ার রাজা আলেকজান্ডারের ভারত অভিযানে বিদায় নেয় পারস্যীয়ান প্রভুত্ব ভারত থেকে। আলেকজান্ডারের সেনাবাহিনীর একটা অংশ ভারতে থেকে গেলেও হাতির পিঠের সুদৃশ্য হাওদা ছাড়া গ্রিক প্রভাব ভারতে মেলে না আজ আর। তবে, গ্রিক শিল্পকলার সাথে বৌদ্ধ শৈলীর মিশ্রণে গম্বর্ব চিত্রকলার উদ্ভব ঘটে ভারতে।

পূর্ব ভারতে রাজা বিস্তারে বাধার সাথে মনসুনের প্রতিকূলতা ও পেটের পীড়ায় বিফল মনোরথ আলেকজান্ডারের প্রত্যাগমনে মৌর্য সম্রাট চন্দ্রগুপ্ত জয় করে চলেন পূর্ব থেকে পশ্চিমে। বিশ্বের বৃহত্তম নগরীও ছিল সেকালে চন্দ্রগুপ্তের রাজধানী পাটলিপুত্র। সাম্রাজ্য বিস্তারে সফলতা পেলেও বৈরাগ্য আসে ভোগ-বিলাসে। অহিংসাকে সারমর্ম করে জৈন

Religious Members in INDIA

| Religions | Membership | Percentage |
|----------------------|-------------|------------|
| Hindus | 549,779,481 | 82.64 |
| Muslims | 75,512,439 | 11.35 |
| Christians | 16,165,447 | 2.43 |
| Sikhs | 13,078,146 | 1.96 |
| Buddhists | 4,719,796 | 0.71 |
| Jains | 3,206,038 | 0.48 |
| Other Religions | 2,766,285 | 0.42 |
| Religions not stated | 60,217 | 0.01 |

বেনারসী ও সিল্ক শাড়ী

ইণ্ডিয়ান সিল্ক হাউস

কলেজ স্ট্রীট মার্কেট
কলিকাতা

উৎসর্গ



বরণীয় লেখকদের স্মরণীয় লেখার সম্ভার ছোটদের অমনিবাস

মুদ্রণ পারিপাট্যে অনবদ্য □ ডি টি পি কম্পোজ □ ম্যাপলিথো কাগজ □
রয়্যাল অক্টোভো সাইজ □ অফসেটে মুদ্রণ □ পাতায় পাতায় ছবি

১৩৩০ সাল—মৌচাক
মাসিক পত্রে যকের ধন
উপন্যাস বেরুতেই শিশুমহলে
সাদা পড়ে গেল। সরল সহজ
ভাষায় রহস্য, রোমাঞ্চ আর
আতঙ্ক তিন রাজ্যের সম্রাট
হেমেন্দ্রকুমার রায় আজও
শ্রেষ্ঠত্বের আসনে সমাসীন।
সেই হেমেন্দ্রকুমারের রচনার
সম্ভার খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত
হচ্ছে—

**হেমেন্দ্রকুমার রায়
রচনাবলী**

১ থেকে ১৬ খণ্ড □ প্রতি খণ্ড ৫০

| | |
|---------------------|--------|
| অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর | ১০০.০০ |
| মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য | ১০০.০০ |
| শিবরাম চক্রবর্তী | ১০০.০০ |
| সুকুমার দে সরকার | ১০০.০০ |
| যোগীন্দ্রনাথ সরকার | ১০০.০০ |
| পরিমল গোস্বামী | ১০০.০০ |
| খগেন্দ্রনাথ মিত্র | ১০০.০০ |
| হেমেন্দ্রকুমার রায় | ১০০.০০ |
| চোর ডাকাত বোম্বেটে | |
| অমনিবাস | ১০০.০০ |
| ফ্যান্টাসি অমনিবাস | ১০০.০০ |
| হরর অমনিবাস | ১০০.০০ |

ভারত নেপাল ভূটান ভ্রমণের
অপরিসর্য গাইড বুক
বাংলা □ ইংরেজি □ হিন্দি

ভ্রমণ সঙ্গী

সমগ্র ভারত : বাংলা ২৫০ / ২৭৫
ইংরেজি ও হিন্দি ২২৫ / ২৫০
বাংলা বর্জিত নিত্য কাজের কথায়
অচেনা-অজানা জায়গায় যাবার আগে
বা গিয়ে পৌছে ভ্রমণার্থীদের দৃষ্টিভঙ্গি-
দূর্ভাবনা নিরসন করতে ভ্রমণ সঙ্গী
অপরিসর্য গাইড বুক।

উইক এন্ড ট্যুর ৫০
নেপাল ও ভূটান ৪০

সুন্দর মুখের জয় সর্বত্র
সেই সুন্দরের চাবিকাঠি
রূপচর্চা ৩০.০০

আরও বই :
পাগলা দাস ২৫.০০
আবোল ভাবোল ২৫.০০
মহাভারতের গল্প ২০.০০
সোনালী রূপকথা ২৫.০০
বীরবলের গল্প ২০.০০
পঞ্চাননের হাতি ২০.০০

বাঁচার জন্য ঋণ—
আর সেই ঋণ্যকে সুবাদ মুখরোচক করতে
**হাজারো রান্নার
অমনিবাস ১০০.০০**

আরও নতুন নতুন বই :
চিরকালীন ভালবাসা
গল্প সংকলন ২২৫.০০
কবিতা সংকলন ১২৫.০০
ঘরোয়া চিকিৎসা ৭০.০০
উপেন্দ্র কিশোর রচনাবলী ১৫০.০০
সুকুমার রায় রচনাবলী ১৫০.০০
গ্রিম ভাইদের রচনাবলী ১০০.০০
লুইস ক্যারল রচনাবলী ১০০.০০
ছবি ছড়ার দেশে ৫০.০০
রোশনাই ১০০.০০

স্বাধীনতার
৫০ বর্ষের
পূণ্য লগ্নে

ইংরেজ শাসনে

কবিতা □ নাটক □ উপন্যাস □
শ্রুতিকথা □ প্রবন্ধের সংকলন

সম্পাদনার : বিষ্ণু বসু ও অশোককুমার মিত্র

**বাজেয়াপু
বই**

১ম খণ্ড : ২৫০.০০
২য় খণ্ড : ছাপা চলছে

এসিয়া পাবলিশিং কোম্পানি □ এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭ ☎ : ২৪১-২৩৮৬/৪৬০৮

হলেন চন্দ্রগুপ্ত (321-297 BC)। অনশনে মৃত্যুও বরণ করেন শ্রবণবেলগোলায় সম্রাট। আরও পরে খ্রিষ্টপূ ২৬২তে মৌর্য বংশেরই আর এক শাসক সম্রাট অশোক (269-232 BC) কলিঙ্গ যুদ্ধের রক্তক্ষয়ে বিচলিত হয়ে ধর্ম নেন বুজের। ব্রত হয় সম্রাটের—অসি নয় শ্রেম আর ভালবাসাই হবে জয়ের মন্ত্র। আর গড়েন ৮০০০ স্তূপ, যুদ্ধ জয়ের মর্মবেদনা লেখেন শিলায় (সাঁতী, ভুবনেশ্বর, জ্ঞানগড়, সারনাথ, দিল্লী)—যা আজও ভারত পৃথিবীতে অনন্য দ্রষ্টব্য।

খ্রিষ্টপূ ২৩২-এ অশোকের মৃত্যু হতে মৌর্য সাম্রাজ্য (321-185 BC) টুকরো হয়ে হয়ে খ্রিষ্টপূ ১৮৪তে পতন ঘটে। ভারত

আবার বিদেশী শক্তির লালসার শিকার হয়। ইরান থেকে এসে পহুব আর গ্রিকরা শাকা হল ভারতে। গাঙ্গেয় উপত্যকায় ক্ষমতা দখলের লড়াই চলতে থাকে পরস্পরে। এমনই দিনে মধ্য-এশিয়া থেকে আসা আর এক যাযাবর Yuchi-chi-সীমান্ত জুড়ে দখল কায়ম করে। Yuchi-chi-এর সাথে শাকাদের সংঘাতের সুযোগে (78 AD) কুষাণরাজ কণিষ্ক সাম্রাজ্য গড়লেন উত্তর ভারত থেকে মধ্য-এশিয়া জুড়ে। সেই সাথে চীন ও পাশ্চাত্যের ব্যবসা-বাণিজ্যের কেন্দ্রবিন্দু হয়ে ওঠে ভারত। শিল্পের পূজারী কণিষ্ক প্রথম মূর্তি গড়েন পাথর ও ব্রোঞ্জ বুজের। আর বৌদ্ধ ও জৈন ব্যবসায়ীরা গড়ে তোলেন নানান গুহামন্দির দাক্ষিণাত্যের গিরিকন্দরে।

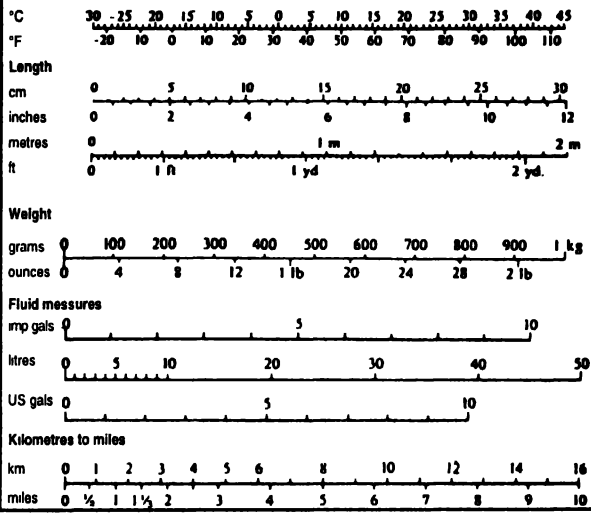
৩১৯ খ্রিস্টাব্দে চন্দ্রগুপ্ত ২-এর

হাতে গুপ্ত বংশের (310-606 AD) প্রতিষ্ঠা। রাজ্যপাটের স্থানান্তর ঘটে পাটলিপুত্র (পাটনা) থেকে অবন্তিকায় (আজকের উজ্জয়িন)। প্রসারও পায় রাজ্য ভারতের পূর্ব-উত্তর-দক্ষিণ জুড়ে। এই বংশের রণকুশলী রাজা সমুদ্রগুপ্তর কালে গুপ্ত সাম্রাজ্যে স্বর্ণযুগ আসে। প্রথম হানায় বিতাড়িত হনদের দ্বিতীয় আক্রমণে লুপ্ত হয় গুপ্ত বৈভব। গান্ধারীও বিতাড়িত হতে পাঞ্জাব, কাশ্মীর, পশ্চিম ভারতের গাঙ্গেয় উপত্যকা দখলে যায় হনদের। ৭ শতকে হর্ষবর্ধন—আর এক প্রতাপশালী সম্রাটের সাম্রাজ্য প্রসার পায় সারা উত্তর-ভারতে। তবে, ভোগ-বিলাস ছেড়ে প্রজাদের হিতার্থে যথাসর্বব্যয় দান করেন রাজা। প্রয়াগের স্নান-যাত্রার উদগাতাও এই হর্ষবর্ধন।

দক্ষিণেও শাসক তখন নানান। মন্দির-তীর্থ কাঞ্চীপুরমে পহুবরাজদের (700-900 AD) ব্যারক শৈলীর অবিদ্যমান মন্দিররাজি আজও ভারত পৃথিবীতে দর্শন তালিকায় উল্লেখ্য। মহাবলীর সাগরবেলায় রক টেম্পল পহুবরাজদের আর এক সৃষ্টি। তেমনই কাষোড়িয়ার ওঙ্কারভাট, জাভার বোরোবুদুর এঁদের অবিদ্যমান সৃষ্টি। আর কাবেরী উপত্যকায় সাংস্কৃতিক

WEIGHTS AND MEASURES

India uses the metric system everywhere
Temperature



উল • ক্যাশমিলান •
ফেন্সি নিটিং ইয়ান

৭, কৃপানাথ লেন □ কলকাতা-৭০০০০৫
ফোন : ৫৫৪-২০৬৮

কেন্দ্র গড়ে তোলে চোল রাজারা (৪৫০-১৩৫০ AD)—রাজধানী হয় তাদের তাম্বোর। প্রসার পায় চোল সাম্রাজ্য দক্ষিণ ছাড়িয়ে সুদূর বার্মা, শ্রীলঙ্কা, দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ায়। মন্দিরও গড়েন চোল রাজারা দেশ-দেশান্তরে। তাম্বোরের বৃহদেশ্বর আজও অবিনশ্বর। এমনকি হিন্দু ক্লাসিক রামায়ণও প্রভাব ফেলে দ-পূ এশিয়ার জনমানসে। তেমনই বাদামীতে রাজধানী গড়েন আর এক প্রতাপশালী হিন্দু রাজা চালুক্য সাম্রাজ্যের। সারা দক্ষিণাঞ্চলে ছুড়ে রাজত্ব করেন চোল রাজারা ৫৫০-৭৫০ ও ৯৭২-১১৯০ খ্রিস্টাব্দে। দ্রাবিড় সংস্কৃতির পীঠস্থান মাদুরাই-এ খ্রিস্ট জন্মেরও আগে পাণ্ডু রাজারা রাজ্য গড়েন। ১০ শতকে পাণ্ডু থেকে চোলদের হাতে দখল গেলেও ১২ শতকে পাণ্ডাদের হাতে দখল ফেরে মাদুরাই-এর আবার। ১৪ শতকে মালিক কাফুর দখল করে মাদুরাই। কাফুরকে হঠিয়ে আবার হিন্দুরাজা প্রতিষ্ঠা করেন বিজয়নগরের রাজারা মাদুরাইতে। অবশেষে ১৫৬৫তে টালিকোটার যুদ্ধে বিজয়নগরের পতনে নায়ক রাজাদের দখলে যায় মাদুরাই। এঁদের অনবদ্য সৃষ্টি ভারতের দ্বিতীয় বৃহত্তম ভাস্কর্যময় মীনাক্ষী মন্দির।

উত্তর ভারতে ক্ষয়িষ্ণু বৌদ্ধধর্ম দক্ষিণে হিন্দু রাজাদের হিন্দু সাম্রাজ্যে প্রসার পাচ্ছিল। আর উত্তরে হানা দিচ্ছিল মুসলিমরা একে একে দেশান্তর থেকে এসে। ৭১২ শতকে প্রথম মুসলিম হানায় সিদ্ধ (মরু এলাকা) দখল করে বাগদাদের খলিফার সেনাপতি মোহাম্মদ-বিন-কাশিম। আর ১০০১এ Sword of Islam সুলতান মামুদ এল গজনি থেকে এক হাতে তরবারি, অন্য হাতে কোরাণ নিয়ে। উদ্দেশ্য—হয় যুদ্ধ করে মর, না-হয় বশ মান ইসলাম হয়ে। ধ্বংস করে নানান হিন্দু মন্দির মামুদ; দখলও করে পেশোয়ার থেকে পাঞ্জাবের আধা। লুটনের নেশায় মেতে বারবার মামুদ এসেছে সম্পদ আহরণে ভারতে। ১০৩৩এ মামুদের মৃত্যুতে তার উত্তরসূরী বারাণসীও দখল করে। তবে, ১০৩৮এ গজনি বিপন্ন হতে ভারত থেকে দেশে ফেরে তারা।

১১৭৩এ ঘোরি থেকে সুলতান মোহাম্মদ ভারতে পৌছান। সঙ্গে তার আফগান বাহিনী ও জেনারেল (দাস) কুতবুদ্দিন আইবক (Mamluke) (Slave) General Qutb-ud-din-Aybak। পেশোয়ার, লাহোর, দিল্লী দখল করে সুলতান। কালে কালে বারাণসী থেকে আজমের প্রসার পায় সাম্রাজ্য। আরও পরে ১২০২এ ফৌজ চলে বাংলা দখলে। চলার পথে ধ্বংস করে নানান কিছু। এমনকি নালন্দাও ধ্বংস হয় সুলতানী ফৌজী বাহিনীর হাতে। কুতবকে দখল ছেড়ে গজনি ফেরে মোহাম্মদ। ১২০৬এ মোহাম্মদকে হত্যা করে দাস থেকে দিল্লীর সুলতান হলেন কুতব। ভারতের হিন্দু সাম্রাজ্যে প্রথম মুসলিম শাসনের পতনও কুতবের হাতে দিল্লীর মসনদে। চলেও দীর্ঘ ৩২০ বছর সুলতানী শাসন। তবে, মাত্র ৪ বছরের সুলতানী জীবনে পোলো খেলতে গিয়ে ঘোড়া থেকে পড়ে মৃত্যু ঘটে কুতবের। আর দিল্লী জয়ের স্মারকরূপে মিনারও গড়েন কুতব, নাম রাখেন তার—নিজ নামে কুতব মিনার। যা আজ দিল্লী পর্যটনে অন্যতম দ্রষ্টব্য। আর দিল্লীর প্রগতিরও শুরু কুতবের কালে সুলতান আমলে। পথঘাট হতে শুরু করে দিল্লী নগরীতে। পারসীয় শিল্প-সংস্কৃতি-স্থাপত্যও প্রভাব ফেলে উত্তর ভারতের জনমানসে। এমনকি সংস্কৃত নির্ভর উত্তর ভারতীয় ভাষায় পার্সি শব্দের সমন্বয় ঘটিয়ে হিন্দুস্তানি ভাষার উদ্ভব ঘটে। ইসলাম ধর্ম গ্রহণ করেন নানানজনা রাজদরবারের আনুকূল্য পেতে। সুলতানি কালের আর এক উল্লেখ্য চরিত্র কুতবের নাটনি সুলতান রিজিয়া (Raziyya)। ভারত রাষ্ট্রে প্রথম ও শেষ মুসলিম নারী ৩ বছরের সূশাসনের গুণে ইতিহাসখ্যাত। তবে, নারী জন্মের অপরাধে প্রাণ দিতে হয় ঘাতকের হাতে রিজিয়াকে। ১৪ শতকের আরব্য পর্যটক ইবন বতুতা বিশ্বের মুসলিম রাষ্ট্রের মধ্যে দিল্লীকে অন্যতম সুন্দরী নগরী বলে আখ্যায়িত করেন।

১২৯৭এ আলাউদ্দিন খিলজীর ভারত অভিযান আর এক কলঙ্কময় আখ্যান। সুদূর দক্ষিণে গুজরাটের সোমনাথ মন্দিরের ধনরত্নের সাথে সোনার দেবমূর্তিও সঙ্গে যায় আলাউদ্দিনের। চিতোরগড়ের আজকের পরিণতিও আলাউদ্দিনের লালসার শিকার। আলাউদ্দিনের সেনাপতি মালিক কাফুরও ১৩১২য় অভিযানে চলে দক্ষিণে। সুদূর রামেশ্বরমেও পৌছান কাফুর। খোয়ালি রাজা মোহাম্মদ-বিন-তুঘলক দিল্লী থেকে দেবগিরি গেলেন রাজ্যপাট নিয়ে ১৩০৮এ। তবে প্রত্যাভর্তন ঘটে স্বল্পকালের ব্যবধানে দেবগিরি থেকে আবার দিল্লীতে। রাজকোষ শূন্য হতে মৃত্যুও ছাপেন মোহাম্মদ। সেও আর এক



রহস্য রোমাঞ্চ আর আতঙ্ক—
তিন রাজ্যের সম্রাট হেমেন্দ্রকুমারের কিশোর সম্ভার
হেমেন্দ্রকুমার রায় রচনাবলী

১ থেকে ১৬ খণ্ড □ প্রতি খণ্ড ৫০.০০



এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১-২৩৮৬/৪৬০৮

বিত্রাট ডেকে আনে দক্ষুতীকারীদের হাতে মুদ্রা জাল হয়ে। আর ১৩৯৮এ সমরখন্দের নায়ক তৈমুর লঙ এলেন মৃত্যুর পরোয়ানা নিয়ে ঘোড়া ছুটিয়ে ভারতের সম্পদ আহরণে।

উত্তর ভারত যখন একের পর এক বিদেশী হানায় বিব্রত দক্ষিণ তখনও শান্ত। স্বাধীভাবে রাজ্যও গড়েন কোন বিদেশী শক্তি দক্ষিণে। আর্য প্রভাব থেকেও মুক্ত দক্ষিণ। তবে, প্রতিদ্বন্দ্বিতা পৌছেছে—মুসলিম শক্তিও গড়ে উঠেছে দক্ষিণে। প্রতিযাশা হোসলরাজাদের (1000-1300 AD) পতন ঘটে মোহম্মদ-বিন-তুঘলকের হাতে। তবে, মন্দিরতীর্থ বেলেড়, হ্যালেবিদ, সোমনাথপুর আজও হোসলরাজাদের মন্দির স্থাপত্যের অনন্য নিদর্শন। (হোসলরাজাদের পতনে হুকা ও বুকুর হাতে আর এক হিন্দু সাম্রাজ্য গড়ে ওঠে কর্ণাটকেই তুঙ্গভদ্রার পাড়ে হস্তিনাবতী বা বিজয়নগর তথা আজকের হাস্পীতে ১৩৩৬-এ।) সুদক্ষ শাসক, রণনিপুণ কৃষ্ণদেব রায়ের (1509-29) কালে রাজ্যের শ্রীবৃদ্ধি। প্রসার পায় রাজ্য কৃষ্ণা ও তুঙ্গভদ্রার দক্ষিণ জুড়ে। লাগোয়া উত্তরে আর এক শক্তিশালী মুসলিম সাম্রাজ্য ১৩৪৭এ গড়া বাহমনি রাজ্য। ১৪৮২তে সাম্রাজ্য ভেঙে টুকরো হয়ে গড়ে ওঠে বিদ্যার, আহমেদনগর, বিজাপুর, গোলকুণ্ডা, বেরার—এই ৫ স্বাধীন রাষ্ট্রে। ১৫২৮এ কৃষ্ণদেব রায় জয় করেন বিদ্যার। ঐতিহাসিকদের মতে বিশ্বের অন্যতম নগরী ছিল সেনাকাল বিজয়নগর। তবে, ১৫৬৫র ২৩শে জানুয়ারি টালিকোটার যুদ্ধে সম্মিলিত মুসলিম শক্তির কাছে পতন ঘটে বিজয়নগরের। দেশ-দেশান্তর থেকে পর্যটক যাচ্ছেন আজও বিজয়নগরের ধ্বংসস্থূপের মাঝে অতীত গরিমার সন্ধানে।

অধিক ক্ষমতার লোভে অসন্তোষ উত্তর ভারতের দিকে দিকে। সিদ্ধ ও পাঞ্জাবের গভর্নররা চক্রান্ত করে কাবুলি বাঘ সমরখন্দের সফট বাবরকে আমন্ত্রণ জানায় ভারতে। তৈমুরের উত্তর-পুরুষ, আব্বার মায়ের দিক থেকে ট্রেসিজের রক্ত যার ধমনীতে সেই বাবর ১৫২৬-এর ২১শে এপ্রিল পানিপথের (১ম) যুদ্ধে ইব্রাহীম লোদীকে হারিয়ে মসনদ দখল করেন দিল্লীর। অর্থাৎ সুলতানী শাসনের অবসানে মোগল শাসন কায়েম হয় ভারতে। অন্ধকালেই রাজপুতদের দমন করে, বাংলা ও বিহারের আফগান নায়ককে জয় করে উত্তর থেকে পূবে প্রসারও পায় মোগল শাসন। বংশ পরম্পরায় শাসন করেন বাবর (১৫২৬-১৫৩০), হুমায়ুন (১৫৩০-১৫৫৬), আকবর (১৫৫৬-১৬০৫), জাহাঙ্গীর (১৬০৫-১৬২৭), শাজাহান (১৬২৭-১৬৫৮), ঔরঙ্গজেব (১৬৫৮-১৭০৭) ছাড়াও নানান। প্রতিষ্ঠাতা বাবর হলেও তাজ গড়ে অমরত্ব পেয়েছেন শাজাহান। আর নিরক্ষর আকবরের কালে সুশাসনের গুণে মোগল সাম্রাজ্যের প্রসার ঘটে। আফিম প্রিয় হুমায়ুনকে হারিয়ে সাময়িকভাবে (১৫৪০-১৫৪৫) দখল যায় বাবরের জেনারেল আফগান নায়ক শের শাহ সুরীর হাতে দিল্লীর। সুশাসক শের শাহর কীর্তি যশোর থেকে পেশোয়ার সড়ক সৃষ্টি। রাজকীয় ডাক দপ্তরও গড়েন শের শাহ। ১৫৪৫এ যুদ্ধক্ষেত্রে শের শাহ সুরীর মৃত্যুতে পুত্র ইসলাম শাহ মসনদে বসেন। আর হুমায়ুন পারসিয় ফৌজসহ কাবুল থেকে ফিরে দখল করেন দিল্লী ১৫৫৫য় নতুন করে। হুমায়ুনের মৃত্যুতে পিতার আসনে বসেন ১৪ বছরের বালক জালাল-উদ্দিন মোহম্মদ আকবর। রণদক্ষতার সাথে সর্ব-ধর্মের সমন্বয় ঘটিয়ে মনোরঞ্জন করেন প্রজা সাধারণের। পূর্ব-সুরীদের ঐতিহ্য ভেঙে ১৫৬৪তে হিন্দুদের ওপর আরোপিত জিজিয়া বা পোল ট্যাক্স রদ-এর সাথে নানান হিন্দুকে দক্ষতার গুণে মোগল দরবারে ঠাই দেন মহামতী আকবর। শাদিও করেন হিন্দু-রমণী ষোণাবাসিকে সফট। আকবরের নবরত্ন সভা—সেও এক ইতিহাসের কিংবদন্তী। দরবারে বসতেন নিরক্ষর সফট সর্বধর্মের পণ্ডিতদের নিয়ে। আকবরের আর এক সৃষ্টি—সর্ব ধর্মের সারমর্ম নিয়ে নতুন এক ধর্মমত দিন-ই-ইলাহী-র প্রবর্তন। গোড়া ইসলামিরা শঙ্কিত হয়ে পড়েন—আশঙ্কা, ইসলাম বিপন্ন। প্রতিবাদও ওঠে সাম্রাজ্যের দিকে দিকে। বিক্ষোভ দেখা দেয় বাংলা, বিহার, পাঞ্জাবে। এমনই দিনে ১৬০১এ দাক্ষিণাত্যে যুদ্ধে ব্যস্ত সফট—পিতার অনুপস্থিতিতে সিংহাসনের দখল নেয় পুত্র। দখল ফিরলেও মৃত্যু ঘটে পুত্রেরই হাতে বিবক্রিয়ায় ১৬০৫এ সফটের।

পুত্র জাহাঙ্গীরের (World Seizer) নিসর্গপ্রেম যথেষ্ট প্রসিদ্ধি পেলেও শাসকরূপে গরিমা যেন স্তিমিত। বেগম নূরজাহানের উপর রাজ্যভার সঁপে কাব্যচর্চা ও বিলাস-ব্যসনেই মগ্ন ছিলেন সফট। কামীর ছিল তাঁর নয়নের মণি। এমনকি মৃত্যুও ঘটে কামীর থেকে ফেরার পথে—সমাধিহীন হন লাহোরে। আর, শাজাহানের বৈভব—সেও ভো ইতিহাসের কিংবদন্তী। আকবর



টুরিস্ট কর্ণার

‘মার্কেটাইল বিল্ডিং’, ৯ লালবাজার স্ট্রীট, ব্লক-‘বি’, ২য় তল, কলিকাতা-১
ফোন : ২৪৮-৯০৪৯, ৬৬৭-১৩৪৮, ৬৮-২১২২

পেলিং, গ্যাটক, দার্জিলিং, মানসলী, দীঘা, পুরী, রংপুর, শান্তিনিকেতন, বাবুগোলা, চাঁদপুর, হলদিয়া, ঘটগোলা, কাঠমাণ্ডু ও পোখরাণ্ডা হিলস্‌তে হোম ও হোটেল বুকিং হয়।

★ আপনাদের ব্যাজেট ও পছন্দ অনুযায়ী কন্ডাক্টেড টুরের ব্যবস্থা করা হয় ★

Union of India: Basic Data

| Region | Capital | Area (sq km) | Population (1991) | |
|------------------------------|--------------------|-----------------|----------------------|----------------------------|
| INDIA | New Delhi | 3,287,263@ | 843,930,861 | |
| States : | Capital : | Area (sq km) | Population (1991) | Percentage to All India |
| 1. Andhra Pradesh | Hyderabad | 275,068 | 66,304,854 | 7.85 |
| 2. Arunachal Pradesh | Itanagar | 88,743 | 858,392 | 0.10 |
| 3. Assam | Dispur | 78,438 | 22,294,562 | 2.64 |
| 4. Bihar ● | Patna | 173,877 | 86,338,853 | 10.23 |
| 5. Goa | Panaji | 3,702 | 1,168,622 | 0.13 |
| 6. Gujarat | Gandhinagar | 196,024 | 41,174,060 | 4.87 |
| 7. Haryana | Chandigarh | 44,212 | 16,317,715 | 1.93 |
| 8. Himachal Pradesh | Shimla | 55,673 | 5,111,079 | 0.60 |
| 9. Jammu & Kashmir | Srinagar/Jammu* | 222,236 | 7,718,700 | 0.91 |
| 10. Karnataka | Bangalore | 191,791 | 44,817,398 | 5.31 |
| 11. Kerala | Thiruvananthapuram | 38,863 | 29,011,237 | 3.43 |
| 12. Madhya Pradesh ● | Bhopal | 443,446 | 66,135,862 | 7.83 |
| 13. Maharashtra | Mumbai | 307,690 | 78,706,719 | 9.32 |
| 14. Manipur | Imphal | 22,327 | 1,826,714 | 0.21 |
| 15. Meghalaya | Shillong | 22,429 | 1,760,626 | 0.20 |
| 16. Mizoram | Aizawl | 21,081 | 686,217 | 0.80 |
| 17. Nagaland | Kohima | 16,579 | 1,215,573 | 0.14 |
| 18. Orissa | Bhubaneswar | 155,707 | 31,512,070 | 3.73 |
| 19. Punjab | Chandigarh | 50,362 | 20,190,795 | 2.39 |
| 20. Rajasthan | Jaipur | 342,239 | 43,880,640 | 5.19 |
| 21. Sikkim | Gangtok | 7,096 | 403,612 | 0.04 |
| 22. Tamil Nadu | Chennai | 130,058 | 55,638,318 | 6.59 |
| 23. Tripura | Agartala | 10,486 | 2,744,827 | 0.32 |
| 24. Uttar Pradesh ● | Lucknow | 294,411 | 138,760,417 | 16.44 |
| 25. West Bengal | Calcutta | 88,752 | 67,982,732 | 8.05 |
| Union Territories | Headquarters | Area (sq km) | Population 1981 | Percentage to All India |
| 1. Andaman & Nicobar Islands | Port Blair | 8,249 | 277,989 | 0.03 |
| 2. Chandigarh | Chandigarh | 114 | 640,725 | 0.07 |
| 3. Dadra & Nagar Haveli | Silvassa | 491 | 138,542 | 0.01 |
| 4. Daman & Diu | Daman | 112 | 101,439 | 0.01 |
| 5. Delhi | Delhi | 1,483 | 9,370,475 | 1.11 |
| 6. Lakshadweep | Kavaratti | 32 | 51,681 | 0.00 |
| 7. Pondicherry | Pondicherry | 492 | 789,416 | 0.09 |

* Srinagar : (Summer Capital). Jammu : (Winter Capital)

● Uttar Pradesh, Bihar and Madhya Pradesh account for 31.2 percent or more than one-third of the total population of India.

● The total area of the country represents provisional geographical area as on 31st March 1982, supplied by the Survey of India. The area includes 78,114 sq km under illegal occupation of Pakistan 5,180 sq km illegally handed over by Pakistan to China and 37,555 sq km under illegal occupation of China.

The 1991 Census has not yet been conducted in Jammu & Kashmir. The figures are as per projections prepared by the Standing Committee of Experts on Population Projections, October, 1989.

বাংলা
বিহার
ওড়িশা
স্রমণে

উইক এন্ড ট্যুর

কোথায় যাবেন—কিভাবে যাবেন—কি দেখবেন—কোথায়
থাকবেন—সবেরই জবাব পেতে অনন্য গাইড বুক

৫০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট • কলকাতা-৭০০ ০০৭ • ফোন ২৪১-২৩৮৬/২৪১-৪৬০৮

আগ্রা ছেড়ে ফতেপুর সিক্রি ঘুরে লাহোর গেলেও আগ্রায় ফেরেন আবার। আর শাজাহান আগ্রা ছেড়ে দিল্লী এলেন রাজ্যপাট নিয়ে। যমুনা কিনারে দুর্গ গড়লেন—লালকোটা। মণি-মুক্তা খচিত নানান প্রাসাদ, মসজিদ, ময়ূর সিংহাসন আজও ইতিহাসের কিংবদন্তী। আর বেগম মমতাজ মহলের জাকাল সমাধি তাজমহল—সে তো নিজেই এক ইতিহাস। তবে প্রজাতিত্যাগনে রাজকোষ হ্রাসস্বচিহ্নিত। এমনকি ১৬৩১এর প্লেগ ও দুর্ভিক্ষ মহামারীতে রাজকোষ থেকে সাপ্তাহিক বরাদ্দ ছিল ৫০০০ টাকা মাত্র। আর বৈভব-বিদেহী ঔরঙ্গজেব পিতাকে (শাজাহান) বন্দী করে আগ্রায় পাঠান। জীবনের শেষ ৮ বছর বন্দীজীবন কাটান আগ্রা দুর্গে শাজাহান। সুদূর দাক্ষিণাত্যে সাম্রাজ্যের প্রসার ঘটলেও গৌড়া নিষ্ঠাবান মুসলিম ঔরঙ্গজেব নানান হিন্দু মন্দির ধ্বংস করে মসজিদ গড়েন রাজ্যময়। নতুন করে জিজিয়া করও আরোপিত হয়, রাজস্বও অমুসলিমদের অধিক হারে ধার্য হয়। যার বিষময় ফল হয়ত—বা সুদূর প্রসারী হয়ে মোগল সাম্রাজ্যের পতনকে ত্বরান্বিত করে ১৭০৭এ ঔরঙ্গজেবের মৃত্যুর সাথে সাথে। পরবর্তী শাসকদের শাসনকালে মোগল সাম্রাজ্যের দুর্বলতার সুযোগে ১৭৩৯এ পারস্য থেকে নাদির শাহ এসে দিল্লী দখল করেন। তবে, মসনদ ছেড়ে লুণ্ঠের মালে তুষ্ট হয়ে দেশে ফেরেন নাদির। সঙ্গে যায় ময়ূর সিংহাসন ছাড়াও নানান মণিমুক্তা ও বিপুল পরিমাণ ধনদৌলত। আর সবশেষে দীর্ঘ ৩০০ বছরের মোগল শাসনের অবসান ঘটে ব্রিটিশের হাতে। নামকাওয়াস্তে মোগল শাসকরা আরও শতাধিক বছর মসনদে বসলেও কার্যত গরিমা হারিয়ে ব্রিটিশের ক্রীড়নক হয়ে শোভাবর্ধন করে তারা। ১৮৫৭য় সিপাহী বিদ্রোহের অপরাধে শেষ মোগল সম্রাট বাহাদুর শাহকে মসনদ থেকে বিতাড়িত করে বার্মায় নির্বাসনে পাঠায় ব্রিটিশ। আর ১৮৫৬য় অযোধ্যার শেষ (১০) নবাব ওয়াজেদ আলি শাহকে অলস আর অমিতব্যয়িতার দায়ে নির্বাসনে পাঠায় কলকাতায়। তবে, ব্রিটিশের প্রভুত্ব মেনে মিত্ররাজ্যও থেকে যায় নানান।

১৭ শতকের মধ্যভাগে ডাচদের সাথে সাথে ব্রিটিশও ভারতে আসে বাণিজ্য করতে। আর পর্তুগিজ ভাস্কো-ডা-গামা আবিষ্কারের নেশায় গোয়ায় পৌঁছান ১৪৯৮এ। মসলার গন্ধে ব্যবসায়ীরাও আসে পিছে পিছে। আর আসেন মানব সেবায় উৎসর্গিত প্রাণ ক্যাথলিক মিশনারীরা মালাবার তটভূমির গোয়ায়। পর্তুগিজ আধিপত্য ভেঙে সুরাটে ঘাঁটি গড়ে ব্রিটিশ অর্থাৎ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি। পর্তুগিজ রাজকন্যা ক্যাথারিনকে বিয়ের সুবাদে ডাউরিরূপে বধেও দখলে আসে ব্রিটিশরাজ চার্লস দ্বিতীয়ের। আর ফরাসিদের হটিয়ে ১৬৪২এ Mandaruz অর্থাৎ মাদ্রাজ দখল করেন লর্ড ক্লাইভ তথা ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি। তেমনই ১৬৯৮-এর ফরমান বলে কলকাতাতেও প্রভুত্ব গড়ে কোম্পানি। জুন ২০, ১৭৫৬য় বাংলার নবাব সিরাজ-উদ-দৌল্লা জয় করে নেয় ব্রিটিশের গড়া দুর্গ কলকাতায়। তবে ১৭৫৭য় পলাশীর আমবাগানে চাতুর্ঘ্যের সাথে সিরাজ তথা মোগল ভাইসরয়ের ফৌজকে হারিয়ে বাংলাতে ব্রিটিশ সাম্রাজ্যের ভিত গড়ে কোম্পানি। ১৭৬৪তে বঙ্গারের যুদ্ধে কেন্দ্রীয় ফৌজকে হারিয়ে বাংলা-বিহার-ওড়িশা দখল করে কোম্পানি। পূব-পশ্চিম-দক্ষিণে ব্রিটিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির দখল কয়েম হলেও

Prime Ministers and Presidents of India since 1947

| Period | Prime Ministers | Presidents |
|---------|---------------------|---------------------------|
| 1947-64 | Jawaharlal Nehru | |
| 1950-62 | | Rajendra Prasad (2 terms) |
| 1962-67 | | S Radhakrishnan |
| 1964-66 | Lal Bahadur Shastri | |
| 1966-77 | Indira Gandhi | |
| 1967-69 | | Zakir Hussain |
| 1969-74 | | V V Giri |
| 1974-77 | | Fakraddin Ali Ahammed |
| 1977-79 | Morarji Desai | |
| 1977-82 | | Neelam Sanjiva Reddy |
| 1979-80 | Charan Singh | |
| 1980-84 | Indira Gandhi | |
| 1982-87 | | Zail Singh |
| 1987-92 | | R Venkataraman |
| 1984-89 | Rajib Gandhi | |
| 1989-90 | V P Singh | |
| 1990-91 | S Chandrasekhar | |
| 1991-96 | P V Narasimha Rao | S D Sharma |
| 1992-97 | | |
| 1996-96 | Atal Behari Bajpaee | |
| 1996-97 | H D Deve Gowda | |
| 1997 | Indira Kumar Gujral | |
| 1997 | | K R Narayanan |

ব্রহ্মণের সঙ্গী গোপালের গোল্ডি®

GOPAL

VEST BRIEF SOCK T-SHIRT
GOPAL HOSIERY CALCUTTA-700 032

সংঘাত চলে দক্ষিণী শার্পল টিপু সুলতান ও হিন্দু সাম্রাজ্যের রূপকার মারাঠী বীর শিবাজী মহারাজের উত্তরপুরুষদের সাথে। ব্রিটিশের সাথে বারবার সংঘাতে হীনবল মারাঠা শক্তি পরাভূত হয় ১৭৬১তে আফগান শাসক আহম্মদ শা দুরানীর হাতে পানিপথে। ১৭৯৯এ টিপুর পতন, আর ১৮০৩এ মারাঠা শক্তির বিনাশ ঘটে ব্রিটিশের কাছে। তেমনই আর এক স্বাধীনচেতা যোদ্ধার জাত রাজস্থানের রাজপুতদের সাথে বারবার সংঘাত ঘটে দিল্লীর মসনদের। তবে, সুচতুর ব্রিটিশ মিত্রতার সুদ্রে রাগাদের হাতে স্বাধীনতা ছেড়ে রাজপুতানা গড়ে। অবশেষে শেষ স্বাধীন রাজ্য পাঞ্জাবও ব্রিটিশের দখলে আসে ১৮৪৮এ। কয়েম হয় সারা ভারত জুড়ে ব্রিটিশরাজ। ইতিপূর্বেই ১৮১৮য় ব্রিটিশ দরবারের অঙ্গীভূত হয়েছে ভারত। শাসন চলে দীর্ঘ ১৩০ (১৮১৮-১৯৪৭) বছর ভারতে ব্রিটিশরাজের। ১৮৩৪এ আঞ্চলিক মুদ্রায় মোগল শাসকের মুখ খোদিত হলেও ১৮৩৫এ ব্রিটিশ রাজের মুখ খোদিত জাতীয় মুদ্রার প্রচলন করে ব্রিটিশ। গড়ে ওঠে রাস্তাঘাট, রেল ভারতভূমে। ১৬১২য় প্রথম শিল্পও গড়ে ওজরাটের সুরাটে ব্রিটিশ।

তবে, ব্রিটিশের আগেই (১৪৯৮) ভারতে পৌছান ইয়োরোপেরই পর্তুগাল থেকে ডাঙ্কো-ডা-গামা। গড়ে ওঠে ব্যবসা-বাণিজ্য ভারতের সাথে পর্তুগালের। ১৫১০এ গোয়া দখল করে পর্তুগিজরা। দখল থাকে ১৯৬১ পর্যন্ত পর্তুগিজদের হাতে গোয়া দমন দিউ-এর। কেবল পর্তুগিজ আর ব্রিটিশই নয়—ইয়োরোপ থেকে ফরাসি ও দিনেমাররাও ভারতে আসে পরে পরে।

ব্রিটিশের অত্যাচার আর অনাচারে দেশময় অসন্তোষ গড়ে ওঠে। তারই সাথে যোগ হয় শূকরের চর্বি লাগানো বন্দুকের টোটা ব্যবহারের বাধ্যবাধকতা। শূকর হিন্দু ও মুসলিম উভয় সম্প্রদায়ের কাছে অম্পশ্য। স্বাধীনতার স্বপ্নে বিভোর সেনানীরা বিদ্রোহ ঘোষণা করে সারা ভারতে। সূত্রপাত দিল্লীর ৪০ কিমি উত্তরে মীরাটে। ১৮৫৭র এই বিদ্রোহ সিপাহী-বিদ্রোহ নামে পরিচিতি পেলেও প্রকৃতপক্ষে ভারতের প্রথম স্বাধীনতা সংগ্রাম এই জন-জাগরণ। ভীত সন্ত্রস্ত ব্রিটিশ কর্তার হস্তে বিদ্রোহ দমনের সাথে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি থেকে ভাইসরয় নিয়োগ কবে সরাসরি রাজতন্ত্র কয়েম করে ভারতে। নানান জনমুখী কর্মসূচীও নেয় ব্রিটিশ। ১৮৭৬এ এমপ্রেস অব ইন্ডিয়া অর্থাৎ ভারত সম্রাজ্ঞী হলেন মহারানী ভিক্টোরিয়া। তেমনই ব্রিটিশের অনাচার প্রতিরোধে ভারতবাসীও একজোট হয়ে ১৮৮৫তে ভারতীয় জাতীয় কংগ্রেস গঠন করে। ১৯০৫এ বাংলার শক্তিকে খর্ব করতে বঙ্গভঙ্গ করে ব্রিটিশ। আন্দোলনে গর্জে ওঠে সারা বাংলা। ১৯০৬এ স্বরাজের দাবি তোলে ভারত। ১৯১৫য় মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধী দক্ষিণ আফ্রিকা থেকে দেশে ফিরে প্রতিবাদে মুখর হলেন। ১৯১৯এ অহিংস আন্দোলন—নেতৃত্ব দিলেন গান্ধীজী। বাংলার কবি রবীন্দ্রনাথ মহাত্মা অর্থাৎ মহান আত্মার শিরোপা পরালেন গান্ধীজীর শিরে। ১৯১৯এর ১৩ই এপ্রিল সমগ্র বিশ্বকে স্তম্ভিত করে পাঞ্জাবে নিরস্ত্র জনতার উপর ডায়ারের গুলি চালনা সঙ্ঘবন্ধ করল সারা ভারতকে। ১৯২২এ গান্ধী হলেন বন্দী। আর এক ব্রাহ্মণ সন্তান জওহরলাল নেহরুও তখন জেলে। বিলেতে লেখাপড়া করা যথেষ্ট ব্যুৎপত্তির জন্য পণ্ডিত হয়েছেন মহাত্মার প্রিয় জওহরলাল। দেশকে নেতৃত্ব দিতে ডাক পড়ে নেহরুর। ১৯৩০এ ব্রিটিশের লবণ আইনের প্রতিবাদে ডাণ্ডী পদযাত্রা, বিদেশী বস্ত্র বর্জনের আওয়াজও তোলেন গান্ধীজী। ১৯৩০-এই মুসলিম কবি মোহাম্মদ ইকবাল প্রস্তাব তোলেন মুসলিম হোমল্যান্ড পাকিস্তান (পাক অর্থ পবিত্র, স্তান অর্থাৎ দেশ)—এর। এমনই দিনে ১৯৩৮এ সংঘাত দেখা দেয় কংগ্রেসে। পাওয়ার পলিটিক্সের প্রতিবাদে চরমপন্থীর বাম সংহতি সাধনে ফরোয়ার্ড ব্লক গড়েন ১৯৩৯এ। পূর্ণাঙ্গ জাতীয় স্বাধীনতা অর্জনের আপসহীন সাম্রাজ্যবাদ-বিরোধী বীর সেনানী নেতাজী সুভাষচন্দ্র বসু অন্তরীণ অবস্থায় ব্রিটিশের চোখে ধুলো দিয়ে ভারত থেকে কাবুলে গেলেন ১৯৪১এ। ১৯৪২এ প্রথম ভাষণ দিলেন দেশবাসীর উদ্দেশ্যে আজাদ হিন্দ রেডিও থেকে নেতাজী সুভাষ—“তোমরা আমাকে রক্ত দাও, আমি তোমাদের স্বাধীনতা দেব।...” ইতালি, জার্মানি ও জাপান সরকারের সহযোগিতায় আজাদ হিন্দ ফৌজের বীর সেনানীরা জাতীয় পতাকাও তোলেন ১৯৪৩এ আন্দামানের পোর্ট ব্লেয়ারে, ১৯৪৪এ মণিপুরের ময়রাং-এ। স্বাধীনতার উবাকালে মোহাম্মদ আলি জিন্নার নেতৃত্বে মুসলিম লিগের ভারত ভাগের আওয়াজ ওঠে: *I will have India divided, or India destroyed—Jinnah* ১৯৪২এর ৮ই আগস্ট নিখিল ভারত কংগ্রেস কমিটির বোম্বাই অধিবেশনে প্রস্তাব ওঠে—ব্রিটিশ, ভারত ছাড়ে। ৯ই আগস্ট সকাল থেকেই সারা ভারত আন্দোলনের শরিক হয়। ব্রিটিশের দমননীতির কাছে সাময়িকভাবে আন্দোলন স্তম্ভিত হলেও ৫ বছর পর ১৯৪৭এ স্বাধীনতা আসে ভারতভূমে। ধর্মের কৃপাণে বি-খতিত হয়ে ১৯৪৭এর ১৫ই আগস্ট ভারতের স্বাধীনতা প্রাপ্তি ঘটে। ক্রমশঃ নেয় ভারত থেকে টুকরো হয়ে পাকিস্তান নামে নতুন রাষ্ট্র। অবস্থানের তারতম্য নাম তাদের পূর্ব পাকিস্তান ও পশ্চিম পাকিস্তান। তবে, বিপ্লবের মাঝ দিয়ে নতুন করে পালাবদল ঘটে—১৯৭১এ পূর্ব পাকিস্তান হয়েছিল স্বাধীন রাষ্ট্র—বাংলাদেশ। আর ভারত ভারতই রয়েছে—যা দ্বিতীয় মুসলিম স্বাধীনতার ৫০ বছর পূর্তি। মুসলিম জরাজীর্ণ ১৯৭৭-এর ১৫ই আগস্ট। তবে, *India* নামে আজ বিশ্বব্যাপী পরিচিতি রয়েছে।

পশ্চিমবঙ্গে ভ্রমণার্থীদের জন্য সবই আছে পর্বত,
সমুদ্র, জঙ্গল, নদী, তীর্থক্ষেত্র, ঐতিহাসিক স্থান
এবং ডাব্লু বি টি ডি সির লজ



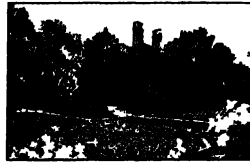
হিমালয় পর্বতমালা

সৌন্দর্যময় বৈচিত্র্যে ভরপুর এই
পশ্চিমবঙ্গ। দীঘা, বকখালি বা গঙ্গা-
সাগরের সোনালী সমুদ্রতট। পৃথিবীর
বৃহত্তম উপকূলবর্তী বনাঞ্চল সুন্দরবন।
বিশাল শুভ্র হিমালয়। গণ্ডার, হাতি, হরিণ
সমৃদ্ধ ডুমুরের ঘন সবুজ বনাঞ্চল।
মন্দিরনগরী বিষ্ণুপুর আর ইতিহাস প্রসিদ্ধ
গৌড়, পাণ্ডুয়া, হাজারদুয়ারী। শাক্তপীঠ ও
বৈষ্ণব তীর্থক্ষেত্রগুলি ধর্মপ্রাণ পর্যটকদের
বিশেষভাবে টানে।

স্নাগঙ্গী পশ্চিমবঙ্গকে উপভোগ করুন
পশ্চিমবঙ্গের ডাব্লু বি টি ডি সির ট্যুরিস্ট
লজে থেকে। এবং আমাদের বিলাস বহুল
জলখান এম. ডি. চিঠি রেখায় সুন্দরবন
ভ্রমণ আপনাদের রোমাঞ্চিত করবে। আর
এম. ডি. সর্বজন্মায় গঙ্গা বক্ষে ভ্রমণ, বার্থ
ডে পার্টি ও কনকারেশন-এর সববিধ সুবিধা
আপনাদের দেবে স্মরণীয় অভিজ্ঞতা।



উদয়ন (শাক্তিনিকেতন)



কালিম্পাং ট্যুরিস্ট লজ



west bengal
tourism

বিশদ জানতে যোগাযোগ করুন

ট্যুরিজম সেন্টার

৩/২, বি বি ডি বাগ-ইস্ট কলিকতা-৭০০০০১

ফোন : ২৪৮-৫১৬৮/৫১১৭/২১০-৩১১৯

ফ্যাক্স : ২৪৮-৫১৬৮

অথবা

ওয়েস্ট বেঙ্গল ট্যুরিজম ডেভ : কর্পোঃ লিঃ

(পশ্চিমবঙ্গ সরকারের একটি সংস্থা)

নেতাজী ইন্ডিয়ান স্টেডিয়াম, ওয়েস্ট ব্লক, ইন্ডিয়ান পার্কে, কলিকতা-৭০০০২১

ফোন : ২৪৮-৮৫৮৬/৭৩০২/৮২৪২ ফ্যাক্স : ২৪৮-৮২৪০



ভারত সরকারের পর্যটন ও অসামরিক পরিবহন
বিভাগ কর্তৃক অনুমোদিত একমাত্র আন্তর্জাতিক
মানের অভিজাত স্টার হোটেল

হোটেল
সী-হক

দীঘা (পশ্চিমবঙ্গ)

ফোন : দীঘা (03220) 66235/66246/66247



অগ্রিম ঘর সংরক্ষণের জন্য যোগাযোগ করুন

সী-হক (ইন্ডিয়া) প্রাইভেট লিঃ

৩৩৪ যশোহর রোড □ কলকাতা-৭০০ ০৮৯

ফোন : ৫৩৪-৩৩৮২/২০৪৮ ফ্যাক্স : (০৩৩) ৫২১-৪১৪৫

বুকিং অফিস

পি ১১১, কালিন্দী হাউসিং এস্টেট

(কালিন্দী বাস স্টপের কাছে

কলকাতা-৭০০ ০৮৯ □ ফোন : ৫৩৪-২৮৩৪

শহরের অন্যান্য সংরক্ষণ কার্যালয়

প্রযত্নে মডার্ন এক্সচেঞ্জ

১২-বি রাসেল স্ট্রীট □ কলিকাতা-৭০০ ০৭১

ফোন : ২৯-০৭৫৬

প্রযত্নে জে সুর এন্ড কোম্পানী প্রা. লিমিটেড

১০ ওল্ড কোর্ট হাউস স্ট্রীট □ কলিকাতা-৭০০ ০০১

ফোন : ২৪৮-৩৯৪০, ২৪৮-৪৫২৮

রাজ্যভিত্তিক সূচীপত্র



| | |
|------------------------------|---------|
| পশ্চিমবঙ্গ | ৪৯—১৫৬ |
| সিকিম | ১৫৭—১৭৪ |
| বিহার | ১৭৫—২১৫ |
| ত্রিপুরা | ২১৬—২২২ |
| মিজোরাম | ২২৩—২২৬ |
| মণিপুর | ২২৭—২৩১ |
| নাগাল্যান্ড | ২৩২—২৩৬ |
| অসম | ২৩৭—২৫৩ |
| মেঘালয় | ২৫৪—২৬১ |
| অরুণাচল | ২৬২—২৭০ |
| আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ | ২৭১—২৮১ |
| ওড়িশা | ২৮২—৩২১ |
| তামিলনাড়ু | ৩২২—৩৬৯ |
| পণ্ডিচেরী | ৩৭০—৩৭৫ |
| কেরল | ৩৭৬—৪০১ |

স্থাপিত-১৯৮৬

দূরভাষ : ৪৬৪-৪১৪৪

পাঞ্জাবী পাজামা জগতে এক অবিস্মরণীয় নাই

কিংবদন্তী

১৯৬/১, রাসবিহারী এডিটিং, কলকাতা-৭০০০৬৯

(বান্ধী মেবী কলেক্টর বিপন্নিত)

।। আমাদের কোন শাখা নেই।।



ঐতিহ্য, আধুনিকতা, রুচিবোধ

এছাড়াও পাবেন বালুচরী নক্সায় বহুবর্ণে
রেশমী বালুচরী, সোনামুখী সিল্ক, তসর
ও কাঁথাস্টিচ শাড়ী।



খুচবা ও পাইকাবীর একমাত্র বিক্রয় কেন্দ্রে

! নব !
বালুচরী
বিভিন্ন নক্সায় সাজানো - বিভিন্ন উৎসবের

আপনার জীবনের ছন্দে ও স্বচ্ছন্দ্যের সঙ্গী।



বালুচরী





| | |
|--------------------|---------|
| লাংকাধীপ | ৪০২—৪০৬ |
| কর্ণাটক | ৪০৭—৪৪৮ |
| অন্ধ্র প্রদেশ | ৪৪৯—৪৭৩ |
| মহারাষ্ট্র | ৪৭৪—৫২৩ |
| গোয়া | ৫২৪—৫৩৯ |
| গুজরাট | ৫৪০—৫৭৩ |
| দমন দিউ | ৫৭৪—৫৭৮ |
| দাদরা ও নগর হাভেলী | ৫৭৯ |
| মধ্য প্রদেশ | ৫৮০—৬২৩ |
| বাজহান | ৬২৪—৬৭০ |
| উত্তর প্রদেশ | ৬৭১—৭৬৪ |
| হরিয়ানা | ৭৬৫—৭৬৮ |
| দিল্লী | ৭৬৯—৭৯০ |
| পাঞ্জাব | ৭৯১—৮০২ |
| হিমাচল প্রদেশ | ৮০৩—৮৩৮ |
| জম্মু ও কাশ্মীর | ৮৩৯—৮৭০ |

পাঞ্জাবী পাজামা ও ধুতির—প্রাচীন ও
আধুনিক ডিজাইনের বিপুল সমারোহ

কবিতা স্টোর্স

১৯৮, রাসবিহারী এডিনিউ, কলকাতা-৭০০০২৯
(বাসন্তী দেবী কলেজের বিপরীতে)

আমাদের কোন শাখা নেই





SUBODH BROTHERS

B-22, COLLEGE STREET MARKET

CALCUTTA-700007

Branch Office

**Durgachawk
Haldia**

**B. D. Market
Bidhannagar**

ছোটদের মনিবাস

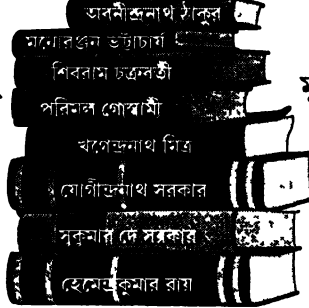
অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য □ শিবরাম চক্রবর্তী □
 পরিমল গোস্বামী □ খগেন্দ্রনাথ মিত্র □ যোগীন্দ্রনাথ সরকার □
 সুকুমার দে সরকার □ হেমেন্দ্রকুমার রায় □

বরণীয় লেখকদের

স্মরণীয় লেখার

স্বয়ং সম্পূর্ণ খণ্ড

প্রতি খণ্ড ১০০.০০



মুদ্রণ পারিপাট্যে অনবদ্য □

ডি টি পি কম্পোজ □

ম্যাপলিথো কাগজ □

রয়্যাল অক্টোভো সাইজ □

অফসেটে মুদ্রণ □

পাতায় পাতায় ছবি □

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি □ এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট
 কলকাতা-৭০০০০৭ ☎ : ২৪১২৩৮৬/২৪১৪৬০৮

স্কুলের ছেলেমেয়েদের নিত্যসঙ্গী

Kanak® & Kiran®

এলুমিনিয়াম
 স্কুল বক্স ও লাঞ্চ বক্স



প্রস্তুতকারক :

পি এল মেটাল ম্যানুফ্যাকচারিং কোর্প

কলিকাতা - ৫





আদি ঢাকেশ্বরী'র শাড়ি মস্তার



| | |
|-------------------------|----------------|
| ঢাকাই (বালুচরী ডিজাইন) | ৫০০০ টাকা থেকে |
| ঢাকাই হাফ তসর | ৫০০ টাকা থেকে |
| ঢাকাইলি গোল্ড প্রিন্ট | ২৫০ টাকা থেকে |
| ধনেখালি খোল্ড প্রিন্ট | ২০০ টাকা থেকে |
| কাশ্মীরী সফট সিল্ক | ৮০০ থেকে |
| পিওর সিল্ক | ৪৫০ টাকা থেকে |
| ক্রপ সিল্ক | ১০০০ টাকা থেকে |
| কাটুরার কাজ সিল্ক ও তসর | ২২০০ টাকা থেকে |
| জামেবার সিল্ক শাড়ি | ২০০০ টাকা থেকে |
| কাঁথা স্টাচ | ১৮০০ টাকা থেকে |
| কাশ্মীরীপুরম | ১৬০০ টাকা থেকে |
| কাশ্মীরী কাঁথাবুটি | ১০৫০ টাকা থেকে |
| সবলপুরী সিল্ক কটকি | ১২০০ টাকা থেকে |
| কটন | ৮০০ টাকা থেকে |
| বালুচরী | ২৪০০ টাকা থেকে |
| সবলপুরী বোমকাই | ২৭০০ টাকা থেকে |
| সামার সিল্ক | ১৫০০ টাকা থেকে |
| গুজরাটি ঘরচুলা শাড়ি | ১৬৫০ টাকা থেকে |
| বর্ণকাতন | ১০০০ টাকা থেকে |
| রাজকোট সিল্ক | ১৭০০ টাকা থেকে |
| পৈতান সিল্ক | ১৫০০ টাকা থেকে |
| ওয়াল কালাম | ৪০০০ টাকা থেকে |
| রাশিপুরম | ৩১০০ টাকা থেকে |

আদি ঢাকেশ্বরী বস্ত্রালয়

(শীতাতপ নিয়ন্ত্রিত)

১৯৯৬ এ. প্রসিদ্ধিপ্রাপ্ত প্রতিষ্ঠান, গড়িয়াহাট জংশন, কলিকাতা-৭০০০১৯

ফোন : ৪৬৪-৩৯০৩

আমাদের কোন শাখা নেই।

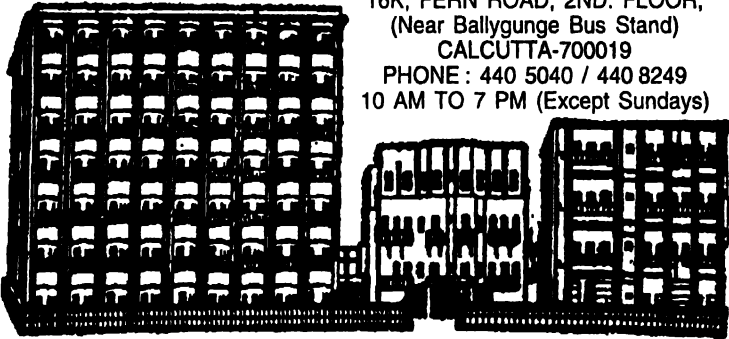
PURI HOTEL

Prize Winner as Best Economic
Resort in India

PVT. LTD.
SEA BEACH, PURI, ORISSA
POST BOX 1, PIN-752001
PHONE : 22114, 22744, 23809 & 23810
STD CODE : 06752
FAX : (06752) 22744

CALCUTTA BOOKING OFFICE

16K, FERN ROAD, 2ND. FLOOR,
(Near Ballygunge Bus Stand)
CALCUTTA-700019
PHONE : 440 5040 / 440 8249
10 AM TO 7 PM (Except Sundays)



The biggest middle class Hotel in Orissa on the Sea beach. Three, Four and Seven storied building with automatic Lifts and Elegant Conference Hall. With multicuisine Restaurant. Every room is with attached bath and balcony. 24 Hours Water, Generator, Cable T.V. in rooms, Video Entertainment daily, Video Games, Parlour, Car Parking Space, Telephone & Music Channel in every room, Medical facility, Postal & Laundry Services, sight seeing, Railway & Air Ticket Arrangement. FREE CONVEYANCE SERVICE: PURI HOTEL BUS. Attends arrival and departure of JAGANNATH EXP, PURI EXP, NEELACHAL EXP & UTKAL EXPRESS. Those willing to come to PURI HOTEL and back to station by PURI HOTEL BUS may avail the service without any charge. We accept advance booking on remittance of even one single day's charge either by A/C Payee Bank Draft or by M. O. with exact date & time of arrival and category of room. Accommodation will be kept reserved and no further correspondence will be required.

DELUXE HOTEL in Modern facilities

লিপিকা ইন্

৬৮/১ সূর্য সেন স্ট্রীট, কলিকাতা-৯
(পুরী সিনেমা এবং মেডিক্যাল কলেজ হাসপাতালের কাছে)
ফোন : ২৪১-৮৬৮৫ / ৮২২২২
অন্যান্য সুবিধা : বিমান ও রেল টিকিট, গাড়ী,
S.T.D., I.S.D., FAX ইত্যাদি

উত্তরের হিমালয় অথবা মক্কা, দক্ষিণ-পশ্চিমের সমুদ্রতট,
পূর্বের গাছা অথবা জঙ্গল যেখানেই যান
আপনার সহায়তায়

পূর্বা ট্রাভেলস

৪, চাঁদনী চক স্ট্রীট (দোতলা)
কলিকাতা-৭২, (সাবির রেষ্টুরেন্ট-এর নিকট)

ভ্রমণের সঙ্গী!

আর সি হোমিয়ার—দ্রুত কার্যকরী—
ডায়রিলজ (ডায়রিয়া ও আমাশার জন্য)
পাইরিটজ (সর্দি ও জ্বরের জন্য)
রি-জাইমজ (হজমের জন্য)
গ্যাসট্রোজেনজ (গ্যাসের জন্য)

রায়চৌধুরী এন্ড কোং

১৩৫ বি. বি. গঙ্গুলী স্ট্রীট, কলি-১২, ফোন ২২৭৫৭৬৪

মধ্যবিন্ত বাঙালীর রুচি সম্পন্ন প্রতিষ্ঠান :—

দার্জিলিং : হিলকুইন ঐ চিতেন ঐ
হোটেল মায়ী

গ্যাংটক : ট্রাভেল লজ

যোগাযোগ :

গোপাল বোস

এ-৪ কনসেজ স্ট্রাট মার্কেট, কলিকাতা-৭
ফোন : ২৪১-০০৫৬

হিমাচল, তামিলনাড়ু ও কেরালা সরকার পরিচালিত সমগ্র টুরিস্ট লজ
এবং উত্তর প্রদেশ সরকার অনুমোদিত নৈনীতাল, কৌশানি, আলমোড়া,
রানীক্ষেত, হরিদ্বার, আগ্রা, মুসোরীতে বিভিন্ন হোটেলের বুকিং। ঘরের
কাছে দার্জিলিং, গ্যাংটক, পেলিং ও পুরীর বুকিং-এর সুযোগের সঙ্গে
রয়েছে সুদূর মানালীতে সম্পূর্ণ বাঙালি পরিবেশে সঞ্জয় সরকারের
হোটেল গীতাঞ্জলীতে থাকা ও খাওয়ার সুব্যবস্থা।



DIAMOND TOURS & TRAVELS

Tour Consultants & Travel Agents

30, Jadunath Dey Road

(Opp. Indian Airlines Office) Calcutta-700 012

Phones : 225-9639, 27 6714, Fax : 91 33 276714



Hotel Host

**A DELUXE CATEGORY BEACH RESORT AT
BARRISTER COLONY, OLD DIGHA, MIDNAPUR.**

Kshanika Holiday Resort

JAMBONI BUS STAND, BOLPUR, SANTINIKETAN.

**A/C, NON A/C ROOMS AVAILABLE WITH FACILITY
OF CONFERENCE & MULTICUISINE RESTAURANT.**

FOR ADVANCE BOOKING PLEASE CONTACT :

Samcon Resort & Hotel (P) Ltd.

AA-7, SALT LAKE CITY, CALCUTTA-700064

PHONE : 337-2931, 358-2100

FAX :91-33-337-9712

অলঙ্কার যেখানে শিল্প এবং সোনার
বিশুদ্ধতা যেখানে সার কথা!

মহামায়া জুয়েলারী
এন্ড কোং (প্রাঃ) লি:



(খাঁটি গ্রহরত্ন বিক্রেতা)
৯০৭বি, বিপিন বিহারী গাঙ্গুলী স্ট্রীট
কলকাতা-৭০০০১২ ☐ ফোন-২৭-৩৭৯৯

ইংরেজ শাসনে

ব জেয়াপ্ত
কৈ

নাটক-উপন্যাস
গল্প-কবিতা
প্রবন্ধ-রম্য
রচনার সঙ্কলন

২৫০.০০

সম্পাদনায় : বিষ্ণু বসু ☐ অশোককুমার মিত্র

এশিয়া
পাবলিশিং
কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট
কলকাতা-৭০০ ০০৭
ফোন : ২৪১ ৪৬০৮

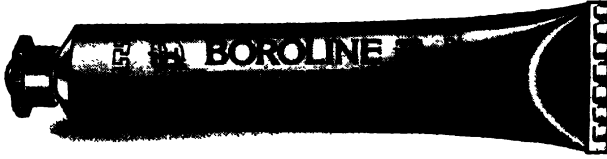
TRAVEL INDIA

1A, HAZRA ROAD
CALCUTTA-700 026
PH : 474-5102

Pager : 9622504007
SPECIALIST IN EDUCATIONAL/
EXCURSION
GROUP TOUR FOR ALL OVER

**INDIA, NEPAL, BHUTAN
AND BANGLADESH.**

বোরোলীন
চিরদিন...



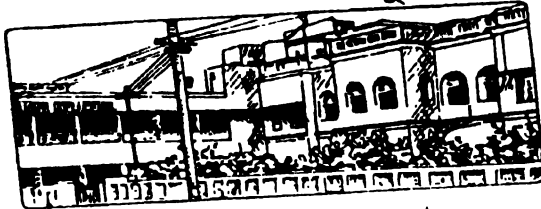
বোরোলীন
সুরভিত অ্যান্টিসেপ্টিক ক্রীম

জীবনের নানা ওঠাপড়ায়
কিছু কথা থেকে যায় চিরদিন।
স্নেহ, ভালবাসা। আর বোরোলীন।
প্রকৃতি যখন নিষ্ঠুর...
শীতের রুক্ষ আক্রমণ
হাতে, পায়ে, ঠোঁটে।
তাছাড়া রোজকার কাটাছড়া।
অসাবধানের আঘাত।
ছেটখাটো বিপর্যয়।
বোরোলীনের স্নেহের প্রলেপে
ধীরে ধীরে সে সব স্মৃতি।
কোমল মাধুর্যে ভরা।



জি ডি ফার্মাসিউটিক্যালস
কলকাতা ৭০০০৫৩

পয়টন শিল্পে ৯০ বছর
ভিক্টোরিয়া ক্লাব হোটেল
• সী-বীচ রোড, পুরী •



- খোলামেলা ঘর ○ ২৪ ঘণ্টা জল
○ সংলগ্ন বাথরুম ○ সম্পূর্ণ বাঙালি
পরিবেশে খাওয়া থাকার সুবন্দোবস্ত

অফ সিজনে বিশেষ ছাড়

স্থাপিত : ১৯০৭ • ফোন : ২২০০৫/ ২২৯২০/ ২২৫৮৩

ভারত ও নেপাল ভ্রমণে আকর্ষণীয় নানান হোটেল বুকিং ও প্যাকেজ ট্যুর-এ অনন্য



LINKAGE

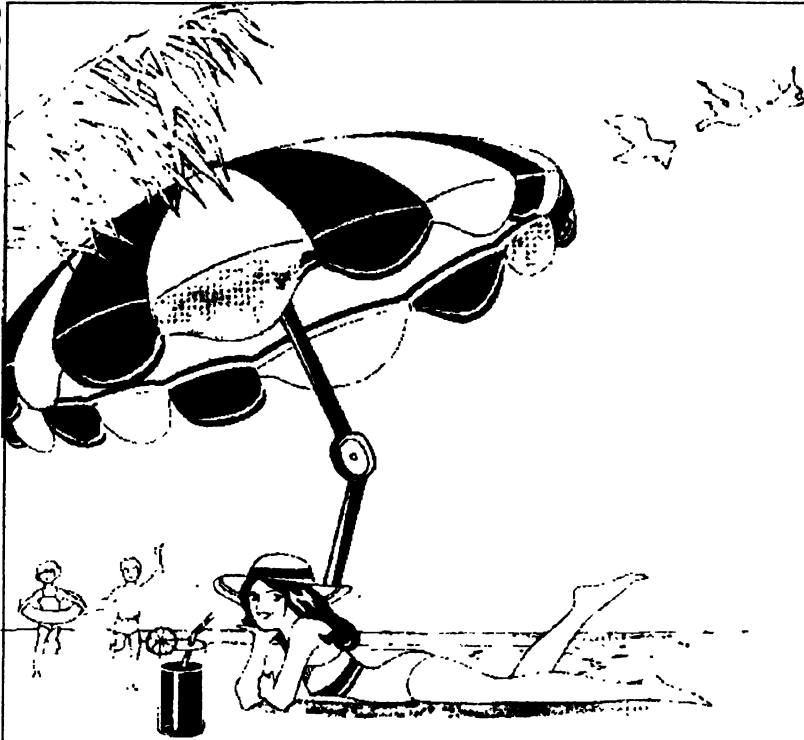
Tours & Travel Division

পাহাড়—জঙ্গল—সমুদ্র—মরুভূমি
সর্বত্রই আমাদের সুব্যবস্থা আছে।

দার্জিলিং, গ্যাংটক, পেলিং, কালিম্পং, লাভা, সিমলা, মানালি,
ডালহাউসী, ধর্মশালা, হরিদ্বার, দেৱাদুন, মুসৌরী, নৈনিতাল, কৌসানী,
আগ্রা, দিল্লী, মুম্বাই, গোয়া, পুরী, গোপালপুর, দীঘা, কাঠমাণ্ডু, পোখরা
ও অন্যত্র বিভিন্ন বাজেটের হোটেলের অনুমোদিত এজেন্ট। এছাড়াও
কেরালা-তামিলনাড়ু - হিমাচল ও গোয়া ট্যুরিজমের হোটেল বুকিং হয়।

124B: Lenin Sarani, Calcutta-700 013 (Near Maulali)

Phone : 2465171/ 3379970 Fax : 2452766



মহেন্দ্র দত্ত এণ্ড সন্স

কোম্পানীর নিজস্ব শোরুম

৪৯-বি, মহাত্মা গান্ধী রোড, কলিকাতা-৭০০০০৯

দূরাভাষ : ২৪১-০২৭৭

অফিস ও পাইকারী বিক্রয়কেন্দ্র

৩, নরেন্দ্র সেন স্কোয়ার □ কলিকাতা-৯

দূরাভাষ : (০৩৩) ২৪১-৩২৯৬/২৫২১

Fax (91-33) 2412100 MIF-35

GRAM: UMBRELLA



চার পুরুষ ধরে আপনাদের সেবায় নিয়োজিত

প্রত্যেক ছাতায় রঙিন 3D ফ্লোগ্রাম দেখে নিন

গুণগত মান ও অভিনবত্বের প্রথম দাবিদার!



দি সুরভী
ম্যানসন্
জুয়েলার্স

১৯৫/৩বি, রাসবিহারী এভিনিউ, কলকাতা ৭০০ ০১৯

ফোন-৪৪০-৫৭৬৭ ও ৪৪০-৬৩৯৩

১৫০

বছরের পথে

বেনারসী,

পিওর সিল্ক ছাপা;

সাউথ ইন্ডিয়ান, তাঁত, নামী মিলের

প্যাণ্টপিস, শার্টপিস, কাশ্মীরী শাল

বড়বাজারে সোনাপট্টির মোড়ে

শতাব্দীর বিশ্বস্ত বস্ত্রপ্রতিষ্ঠান

ঈশ্বরচন্দ্র পাল গঙ্গাপ্রসাদ পাল

২০৭/৩ মহাত্মা গান্ধী রোড

সোনাপট্টির মোড়, বড়বাজার

কলিকাতা-৭০০ ০০৭

আমরা ও স্টেট ব্যাঙ্ক



আমরা হলাম সুজয়
আর রীনা। আমরা চাষী
পরিবার। গায়ে থাকি।
দু'জনে কাঁধে কাঁধ লাগিয়ে
হাসিমুখে সারাদিন
পরিশ্রম করি। একজন
দেখি জমি-জায়গা, চাষ-
আবাদ এইসব। অন্যজনা
গরু-বলদ, হাঁস-মুরগী,
সজ্জী বাগান ইত্যাদি।
পুজোর কটা দিন বড়
আনন্দের। দুর্গাপ্রতিমা
আসেন সোনার বাংলায়।
নদীর ধারে কাশ ফোটে,
ধানের ক্ষেতে ঢেউ ওঠে।
আর, মানুষের ঘরে ঘরে
শারদীয়া উৎসবের
আয়োজন!

আমাদের পরিবারের
অতি প্রিয় আপনজন
হলো স্টেট ব্যাঙ্ক। আমরা
সেখান থেকে পাই কৃষি
ঋণ। আজকাল তো
চাষবাস কতো উন্নত
মানের হয়েছে। তাই,
ফসল ফলাবার প্রতি পদে
পদে আমরা পাই স্টেট
ব্যাঙ্কের নানারকম
সহযোগিতা। আমাদের
সমৃদ্ধি এবং সুখে
একাকার হয়ে জড়িয়ে
আছে স্টেট ব্যাঙ্ক।

Indo Aryan/SBI/87



স্টেট ব্যাঙ্ক



- গোয়া ট্যুরিজম
- মহারাষ্ট্র ট্যুরিজম
- তামিলনাড়ু ট্যুরিজম
- কেরালা ট্যুরিজম
- মেঘালয় ট্যুরিজম
- পঃ বঙ্গ ট্যুরিজম

অনুমোদিত

রাজস্থান □ হিমাচল প্রদেশ □ মধ্যপ্রদেশ
ও উড়িষ্যার সরকারি ট্যুরিস্ট লজ বুকিং।

বিজি ব্যাজেটে, বিজি ট্যুরের জন্য যোগাযোগ করুন ।।

HIMALCHURA TRAVELS & TOURS

P263, C.I.T. ROAD, SCH-IV(M)
CALCUTTA-700 010

☎ 353 0390/350 8004/1616 (FAX)

জয়রামবাটি, কামারপুকুর, বিষ্ণুপুর, মুকুটমণিপুর, বিলিমিলি, শুগুনিয়া—
পাহাড়, নদী, স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের সমন্বয়ে ছোট্ট শহর বাঁকুড়া।
এসি, নন এসি রুম, এসি রেস্টুরেন্ট, ডিলাক্স বার, কনফারেন্স হল-এর সুবিধাযুক্ত একমাত্র ডিলাক্স হোটেল

সপ্তর্ষি

এছাড়া মুকুটমণিপুরে থাকা ও খাওয়ার জন্য আমাদের নিজস্ব হোটেল

আশপালী

কলকাতা থেকে সরাসরি বাস বা ট্রেনে বাঁকুড়া অথবা দুর্গাপুর হয়ে বাঁকুড়া (এই পথে আসাই ভাল)

যোগাযোগ

কলকাতা বুকিং

রিক কনসালটেন্সি

১৯এ, জাস্টিস মন্ডল মুখার্জি রো

কলকাতা-৭০০০০৯

(সুরেন্দ্রনাথ ওমেনস কলেজের বিপরীতে)

দূরভাষ : ৩৫০-৬২৬৩ (১২টা—৯টা)

ফ্যাক্স : ৩৫১-০৫৭৮

(হোম বুকিং হয়)

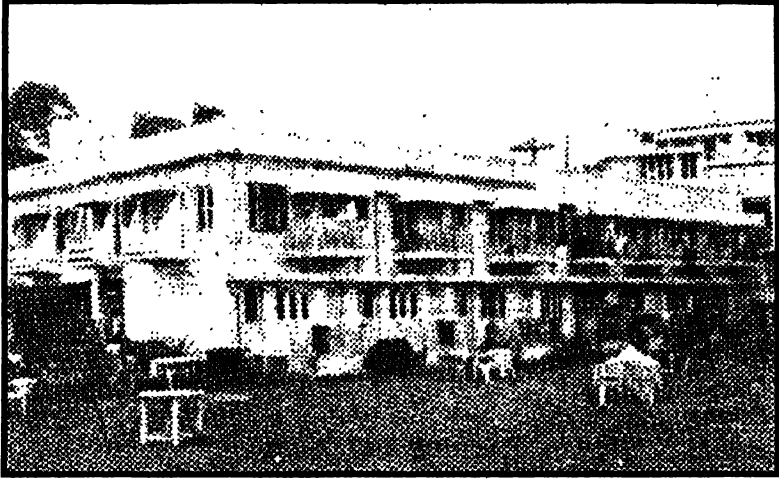
হোটেল সপ্তর্ষি

লালবাজার, বাঁকুড়া

দূরভাষ : (০৩২৪২) ৫৩৩৯৭/

৫১০৫২/৫৩২৭২

মুকুটমণিপুর : (০৩২৪৩) ৫৩২০৮



ড ল ফি ন

গ্রুপ অফ
হোটেলস্

| | | |
|-----------|---|-------------------|
| দীঘা | ★ | Dolphin & Seagull |
| পুরী | ★ | The Seagull |
| দার্জিলিং | ★ | Alice Villa |
| গ্যাংটক | ★ | Mount Olive |
| বকখালি | ★ | Balaka |



হেড অফিস ও কলিকাতা বুকিং অফিস

৪৭, ভূপেন বোস এভিনিউ

কলিকাতা ৭০০ ০০৪

ফোন : ৫৫৫-০৭০২, ৪৬৫২

● MANALI ● GANGTOK ● DARJEELING ● PELLING ● MUMBAI ●
PUNE ● AJANTA ● ELLORA ● AURANGABAD ●

**We honour
National
the Golden
of**



HINDUSTAN TRAVELS

**the Spirit of
Integrity on
Jubilee year
independence**

HOTEL OWNER & TOUR OPERATOR
*Authorised Booking Agent of Maharashtra Tourism
 Development Corporation*

Spread the Smile to Smiles

M/s. Nan & Co. (P) Ltd.
 9A, B. B. D. Bag. (East)
 Calcutta-700 001
 Phone : 220-6625

Sanskriti Building
 183/2, Lenin Sarani (2nd Floor)
 Esplanade, Calcutta-700 013
 Phone : 26-3753, 27-4893


Fax : (033) 478-2038

Email : ITBPC @ GEMS. VSNL. NET. IN Mem No. 126

PAYING GUEST ACCOMMODATION AT SOUTH CALCUTTA


● MAHABALESHWAR ● MATHERAN ● SHIRDI ●

রক্তের কোন বিকল্প নেই—নেই কোন জাত




আপনি যখন রক্তদান করেন, তখন আপনি কারোর বাবা, স্বামী, বোন, ভাই বা কারোর ছেলেকে দেন নতুন জীবন। জীবন দান করে আপনি এক পরিবারকে অসহায়তা ও বিয়োগ ব্যথার হাত থেকে অব্যাহতি দেন। মুছিয়ে দেন আপনজনদের চোখের জল। হতাশায় ভেঙ্গে পড়া জীবনে সঞ্চারিত করেন আশা। জীবনদানের ক্ষেত্রে রক্তদানই শ্রেষ্ঠ দান। রক্তদানেই আছে আত্মতৃপ্তির অনন্য সুখানুভূতি।

নিরাপদ রক্ত সঞ্চালনে একমাত্র সরকার পরিচালিত ব্লাড ব্যাঙ্কগুলি অতুলনীয় ভূমিকা পালন করে। মনে রাখবেন রক্তদান আমাদের সামাজিক দায়িত্ব ও কর্তব্য।



ইনস্টিটিউট অব ব্লাড ট্রান্সফিউশন
মেডিসিন এন্ড ইমিউনোহিমাটোলজি
 (পূর্বতন : সেন্ট্রাল ব্লাড ব্যাঙ্ক)
 পশ্চিমবঙ্গ সরকার

২০৫, বিবেকানন্দ রোড, মানিকতলা, কলিকাতা-৭০০০০৬
 দূরভাষ : ৩৫১-০৬১৯/৩৫১-০৬২০



এডিডি/৩১/৯৭-৯৮

আমার ছোট সোনা
কে সি দাশ-এর রকমারি মিষ্টি পেয়ে
আহ্লাদে আটখানা



উৎসবের দিন
প্রিয়জনের
আনাগোনা
মানেই মিষ্টিমুখ

K. C. Das.

১১, এসপ্লানেড ইস্ট, কলকাতা-৭০০০৬৯, ফোন : ২৪৮-৫৯২০

৩, সেন্ট মার্কস রোড, ব্যাঙ্গালোর-৫৬০০০১, ফোন : ৫৫৮-৫৬৭২/৫৫৮-৭০০৩

রুচিকা রেস্টুরেন্ট

(লাইট হাউস সিনেমার বিপরীতে)

ফোন : ২৪৯-১৬৪৫

নবীন চন্দ্র দাশ

(শ্যামবাজার এ. ডি. স্কুলের বিপরীতে)

ফোন : ৫৫৪-৫৬৮৯

সৌন্দর্য্যই
অলংকারের
অহংকার!



ক্যালকাটা
জুয়েলারী
২০৮/৮ রাসবিহারী এভিনিউ
কলিকাতা-৭০০০২৯
গড়িয়াহাট
ফোন : ৪৬৪-২৯৭৪

SPAN TOURS 'N' TRAVELS
PRINCIPAL SALES AGENT
HIMACHAL TOURISM

FOR INSTANT RESERVATION OF ALL HOTELS AND
TRANSPORT IN HIMACHAL AND SPECIAL OFFER OF
CONFERENCE PACKAGES TO NEPAL, BANGKOK-
PATTAYA-SINGAPORE AND PLANNERS OF ROMANTIC
HONEYMOON PACKAGES TO ALL DESTINATIONS.

CONTACT : **MRS. ANUSUYA SEN**
6/2A, A.J.C. BOSE ROAD, CALCUTTA-700 017
(NEAR A.J.C BOSE ROAD AND BECKBAGAN CROSSING)
NEXT TO MOUCHAK
PHONE : 247-4020, 280-1209 FAX : 240-9218

আকর্ষণীয় সুন্দর বাংলার তাঁতের শাড়ি!
যার—আজও বিকল্প নেই।



- ধনেখালি
- টাঙ্গাইল
- কাঁথা স্টিচ
- বালুচরী
- ঢাকাই জামদানী

রাজকুমার ভড়

নিজস্ব চিন্তাধারায়—৫০ বছরের অভিজ্ঞতায়, নজর
কাড়া ডিজাইনের শাড়ি তৈরী করাই আমাদের বৈশিষ্ট্য
পাইকারী ও খুচরা শাড়ি বিক্রয় কেন্দ্র

২০০/২বি, রাসবিহারী এডিন্যু, কলকতা-৭০০ ০২৯, ফোন ৪৬ ৮৮৩৪

(বাসন্তী দেবী কলেজের বিপরীতে, গড়িয়াহাট মোড়ের কাছে)

The Best Address in India's UNIQUE BEACH

HOTEL SHUBHAM

(DIVISION OF SHUBHO SWAGATAM PVT. LTD.)

CHANDIPORE - ON - SEA

DT : BALASORE 756025 ☐ PHONE : (06782) 72025

(FOR ROOMS & CONFERENCE ARRANGEMENT)

PLEASE CONTACT :

| | | | |
|--------------------|------------------|--------------------|--------------------------------|
| DAS GUPTA | BASU | RAY | HAWKS EYE ADVERTISING |
| 9D/1 Meghamaller | CE 224 Sector 1 | Ranipatna | C/o, Sri S. Agarwal |
| 18/3 Gariahat Road | Salt Lake City | PO&Dist : Balasore | 132, Cotton Street (2nd Floor) |
| Calcutta-700 019 | Calcutta-700 064 | Onssa-756001 | Calcutta-700007 |
| ☎ (033) 4407178 | ☎ (033) 3217059 | ☎ (06782) 62939 | ☎ (033) 2325749 |

(Between 10-00 to 13-00 & 16-00 to 19-00 hrs)

Ananya

GOVERNMENT REGISTERED
L.T.C., L.L.T.C., L.F.C. APPROVED

SPECIAL

ভ্রমণসূচী

উত্তর ভারত ✱ দক্ষিণ ভারত ✱ রাজস্থান ও গুজরাট ✱ মধ্য প্রদেশ ✱ মুম্বাই-গোয়া-
অজন্তা-ইলোরা-মহাবালেশ্বর ✱ কদার-বদ্রীনাথ-যমুনোত্রী-গঙ্গোত্রী ✱ ভূটান ও নেপাল ✱
দার্জিলিং-গ্যাংটক ✱ নৈনিতাল-রানীক্ষেত-আলমোড়া-কৌশানী-লঙ্কো ✱ সিমলা-
মানালী ডালহৌসি-ধর্মশালা ✱ আন্দামান ও নিকোবর ✱ অমরনাথ-সহ ভূ-স্বর্গ কাশ্মীর।
স্কুল-কলেজ ও অফিস [L. T. C.] যাত্রীদের জন্য বিশেষ ব্যবস্থা আছে।

পরিচালনায় : **নির্মল কৃষ্ণ গোপ**

অফিস : ১৪, ওয়েস্টন স্ট্রিট, কলিকাতা-৭০০ ০১৩, দূরভাষ-৫৫৬ ৮৯৩৯

বালসমুহ ও শিশুদের
এক আদর্শ সংমিশ্রণ

লিভোনিয়া

লিভার ও পেট সুস্থ রাখার উৎকৃষ্ট টনিক

মানব শরীরের গুরুত্বপূর্ণ অঙ্গ লিভার।
অসুস্থ লিভার শরীরের রোগ প্রতিরোধ ক্ষমতা কমায়।
ফলে বদহজম, ক্ষুধামন্দ, অরুচি, কোষ্ঠকাঠিন্য, জননিস
ইত্যাদি জটিল রোগে আক্রান্ত হয় শরীর।

ভারতীয় বনৌষধির সঠিক সংমিশ্রণে সম্পূর্ণ আধুনিক
প্রক্রিয়ায় তৈরী লিভোনিয়া। লিভোনিয়ার প্রভাবে
লিভার থাকে সতেজ ফলে রোগ প্রতিরোধ ক্ষমতা বৃদ্ধি
পায়। মানব শরীর থাকে সুস্থ-সবল।



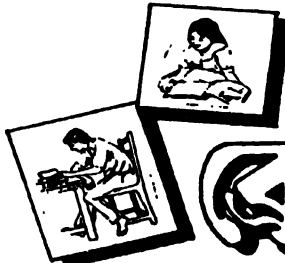
লিভোনিয়া

সুস্থ সবল ডবিষাতের সাথী

বিশদ বিবরণ ও পুস্তিকার জন্য লিখুন

ব্রেনোলিয়া কেমিক্যাল ওয়ার্কস

১৩, মহারাজা ঠাকুর রোড, কলিকাতা-৭০০ ০৩১



শুভশক্তি ও
বাল্য সন্তোষ রক্ষার
উৎকৃষ্ট টনিক

ব্রেনোলিয়া

ব্রান্সী, শতমূলী, বেড়েলা, অম্বগন্ধা, যষ্টিমধু,
আলকুশী ইত্যাদি ভারতীয় বনৌষধীর যথার্থ
প্রয়োগে তৈরী ব্রেনোলিয়া। শুভশক্তি,
চিন্তাশক্তি, মানসিক একাগ্রতা বাড়াতে এবং
শরীর সুস্থ, সবল ও কার্যকর রাখতে
ব্রেনোলিয়ার ভূলনা নেই।

ব্রেনোলিয়া
কেমিক্যাল ওয়ার্কস

১৩, মহারাজা ঠাকুর রোড,
কলিকাতা-৭০০ ০৩১

বিশদ বিবরণ পুস্তিকার জন্য লিখুন।



পুরীর সাগর তীরে সেরা রেস্তোরাঁ
শুচি সাথে রুচি মিটে নাম রুচিরা
চল সবে এত কাছে চলগো ত্বরা
খাও আর ঢেউ দেখ রসেতে ভরা।।

রেস্টুরেন্ট রুচিরা

হোটেল সোনালীর নীচুতলায়
মধ্যবিস্তৃত বাঙালির কচিকব আহাব পবিত্রেশক
রুচিরার নবতম শীতাতপ বিভাগ

CLASSIC ROOM RUCHIRA

মোগলাই • চাইনীজ • কন্টিনেন্টাল আহার্য পবিত্রেশবায় অনন্য

সী বীচ • পুরী • ফোন ২৩৫৪৫

“ওই যে নগরী/জনঅরণ্য শত বাজপথ গৃহ অগণ্য
কতই বিপত্তি কতই গণ্য কত কোলাহল কাকলি”

—রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

কোলাহল মুখর জনঅরণ্য
কলকাতা শহরের
নাগরিক স্বাচ্ছন্দ্যকে
উন্নততর করতে
আমরা সতত সজাগ

—তথ্য ও জনসংযোগ বিভাগ
কলকাতা পুরসভা

Order No -149/ IPF/ 97-98

আলোচিত উপবাসিত



Jamini
SAREES

পাশ্চাত্য শিল্পের স্বপ্নের অন্বেষণ

রামকৃষ্ণ ট্রাভেলস্

(ভ্রমণে নিরাপত্তা ও বিশ্বস্ততার প্রতীক)

ওড়িশা ট্যুরিজম্ ডেভেলপমেন্ট কর্পোরেশন অনুমোদিত
প্রতিমাসে ওড়িশা, রাজস্থান, দক্ষিণ ভারত, উত্তর ভারত, মুম্বাই, গোয়া,
মধ্য প্রদেশ, সিমলা, মানালী, পুরী, রাজগীর, দার্জিলিং, আন্দামান প্যাকেজ।

হোটেল বুকিং-এর সুব্যবস্থাও পাবেন নিম্নলিখিত স্থানগুলিতে :—

ও. টি. ডি. সি. অনুমোদিত ওড়িশায় পাছনিবাস হোটেলগুলি। এছাড়া, নৈনিতাল,
দিল্লী, আগ্রা, হরিদ্বার, জয়পুর, যোধপুর, মানালী, দীঘা, দার্জিলিং এবং রাজগীর।

RAMKRISHNA TRAVELS

রেজি অফিস—৩৯, মহাত্মা গান্ধী রোড, কলিকাতা-৭০০ ০০৯, ফোন : ৩৫০ ৯১৯৯

রবি গান্ধুলি পরিচালিত

দূরভাষ : ২৭-৯৮৭৬

সেন্ট্রাল ট্রাভেলস্ অফ ইন্ডিয়া

(এল. টি. সি. অনুমোদিত)

ভ্রমণসূচী

উত্তর ভারত ● দক্ষিণ ভারত ● রাজস্থান-গুজরাট ● মধ্য প্রদেশ ● মুম্বাই-
গোয়া ● মহাবালেশ্বর ● কদারনাথ-বদ্রীনাথ-যমুনোত্রী-গঙ্গোত্রী ● ভূটান ও
নেপাল ● দার্জিলিং-গ্যাংটক ● নৈনিতাল-রানীক্ষেত-আলমোড়া-লঙ্কৌ ●
সিমলা-মানালী-ডালহৌসি-ধর্মশালা ● অমরনাথ ও আন্দামান নিকোবর।
এছাড়াও স্কুল-কলেজ ও অফিস প্যাকেজ ট্রয়ের যাত্রীদের জন্য বিশেষ ব্যবস্থা আছে।

অফিস : ৬৪, বি. বি. গান্ধুলী স্ট্রীট, তৃতীয় তল।

কলিকাতা-৭০০ ০১৯

(বিবরণ্য কালো বাড়ার বিপরীতে।)



শহর অথবা গ্রাম দেশ জুড়ে একটি নাম



ইউনাইটেড ব্যাংক অফ ইণ্ডিয়া

আপনার ব্যাংক

প্রতিদিনের নাম-খাম ছীন বিবর্ণ জীবনকে দূরে সরিয়ে
নিজের মনকে ছুটিয়ে নিয়ে চলুন গভীর বনানী, শুষ্ক মরু,
নীল সাগর অথবা দুর্গম গিরিতে আমাদের সঙ্গী হয়ে —



TRUST ME TRAVELS

30/12, Selimpur Road (1st floor)
(Beside Selimpur Level Crossing)
Dhakuria, Calcutta - 700 031
Phone : 538-6389

যেসব স্থানে আমাদের হোটেল বুকিং করা হয় :-

পুরী, দীঘা, চাঁদপুর, গোপালপুর, বিশাখাপত্তনম, রাজগীর,
গ্যাংটক, পেলিং, কালিম্পং, দার্জিলিং, সিমলা, কুলু, মানালি,
ডালহৌসি, নৈনিতাল, কৌশানী, দিল্লী, আগ্রা, হরিদ্বার,
মুসৌরী ও নেপাল (পার্বত্য অঞ্চলে শীতকালীন ছাড় ২০%-৫০%)

এছাড়া গ্রুপটির এবং বিমানের টিকিট বুকিং- এর সুব্যবস্থা আছে

M/S, MITRA ENTERPRISE

(Paper & Board Merchants)

61, Mahatma Gandhi Road
Calcutta-700 009

☎ : 241 1043 (Off.) 479 6891 (Resi.)

AUTHORISED DEALER

M/s. HINDUSTAN PAPER CORPORATION LTD.

M/s. SUPREME PAPER MILLS LTD.

M/s. KONARK PAPER & INDUSTRIES LTD.

“ মৎস্যকন্যা দিচ্ছে ডাক
দীঘায় চলো যাওয়া যাক ”

HOTEL BELA NIBAS

(SARADA BOARDING EXTENSION HOUSE)

DIGHA ☐ MIDNAPORE ☐ WEST BENGAL

PIN CODE : 721428

DIAL : STD 03220, DIGHA 66243

CALCUTTA BOOKING OFFICE

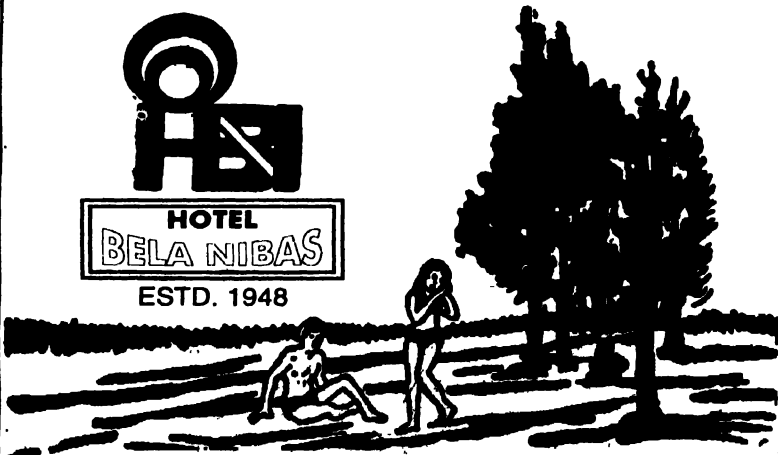
EX-SERVICEMEN'S DEPENDENT TOURIST SERVICE

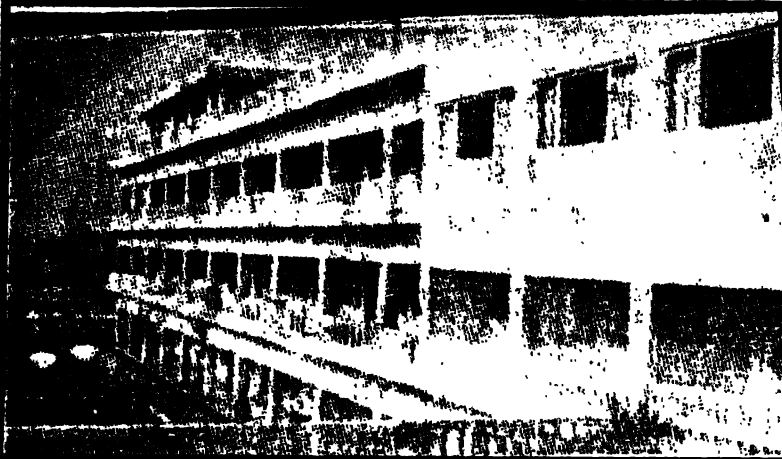
Opposite : C. S. T. C. Bus Terminus ☐ Esplanade,
Calcutta-700001 ☐ Dial : 350 4256



HOTEL
BELA NIBAS

ESTD. 1948





পুরীর সমুদ্র সৈকতে আসুন ছুটি কাটাতে হোটেল নিউ সি-ইক পুরী

আমাদের কোনো শাখা নেই

স্বর্গদ্বার, পুরী-৭৫২০০১, ফোন : ২৩১৬৮/ ২৩৫০০ (এস টি ডি ০৬৭৫২)

নতুন মেরিন ড্রাইভের ওপর। হাত বাড়ালেই সমুদ্র। নিজস্ব রেস্টোরাঁর সুস্বাদু ব্রেকফাস্ট-লাঞ্চ-ডিনার। মনোরম সাজানো লন। নীলাকাশের নিচে সবুজে মোড়া শিশুউদ্যান। গাড়ী পার্কিং-এর সুব্যবস্থা। সামনেই নীলিমায় নীল উত্তাল সমুদ্র! ঘরে বসে চোখ মেলুন আর ভাবুন! আহা কি বাহার!!

৩৩ % ছাড়!

ফেব্রুয়ারি, মার্চ, এপ্রিল, জুলাই, আগস্ট, সেপ্টেম্বর

কলকাতা-কুর্নিল :

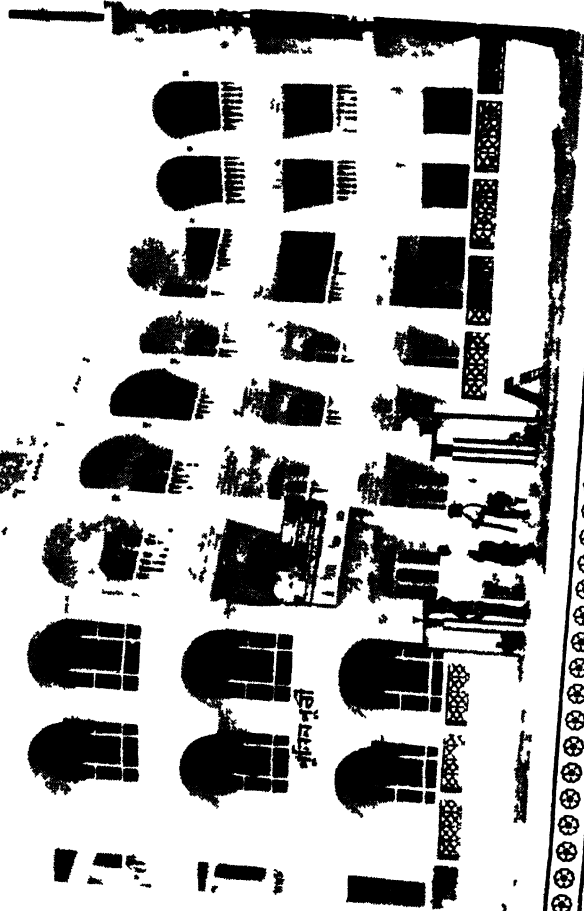
৪৮-এ. ডা. সুন্দরীমোহন এভিনিউ, (লেডিস পার্কের বিপরীতে)

কলকাতা-৭০০ ০১৪, ফোন ২৪৫০৫৭৮

সকাল ৯-৩০ থেকে সন্ধ্যা ৭-০০টায়

পুরী ভ্রমণে হোটেল পুলিনপুরী

পুরী ভ্রমণে হোটেল পুলিনপুরী



পুলিনপুরী

বগদাব ০ পুরী-৭৫২০০১
ফোন - ২২০৬০ (৩৬ লাইন)

নিজস্ব জেনারেটর



যে যত্নে চিহ্নিত

কলকাতা মুনি

৪৮এ, ডা সুন্দরীমোহন এডিনিউ

(সেভিস পার্কের বিপদ)

মিহির ভল ০ কলকাতা ৭০০০১৪

ফোন ২৪৫-০৫৭৮



একটি ঐতিহাসালী ভ্রমণ সংস্থার কথা—

পর্যটন শিল্পের পথিকৃৎ প্রয়াত শ্রীপতিচরণ কুণ্ডু প্রতিষ্ঠিত কুণ্ডু স্পেশ্যাল। ভারতের সর্বপ্রথম ভ্রমণ সংস্থাই নয়, জনপ্রিয়তায় আজও—সবার উপরে।

এ পর্যন্ত লক্ষ লক্ষ তীর্থযাত্রী ও পর্যটক কুণ্ডু স্পেশ্যালের মাধ্যমে ভ্রমণ করে তৃপ্ত হয়েছেন। কলকাতা তথা পশ্চিমবঙ্গের বহু বিশিষ্ট নাগরিক পুরুষানুক্রমে কুণ্ডু স্পেশ্যালের নিয়মিত যাত্রী। পশ্চিমবঙ্গের বিভিন্ন জেলা ও ভারতের বিভিন্ন প্রদেশে এবং বিশ্বের বিভিন্ন প্রান্তে যে সব প্রবাসী বাঙালি থাকেন তারাও ভ্রমণের ব্যাপারে কুণ্ডু স্পেশ্যালের সঙ্গে নিয়মিত যোগাযোগ করেন।

ভারতের দুর্গম তীর্থস্থানগুলি, যেমন—কেদারবদ্রী, যমুনোত্রী, গঙ্গোত্রী, গোমুখ, অমরনাথ, নন্দনকানন, যেখানেই কুণ্ডু স্পেশ্যালের সঙ্গে যাবেন—তাদের সুব্যবস্থার জন্য সেই দুর্গমতা সহজ সরল হয়ে যায়। শুধুমাত্র দুর্গম তীর্থস্থানগুলিই নয়, কুণ্ডু স্পেশ্যাল দেশ বিদেশের নানান জায়গায় মানুষের “ভ্রমণ সঙ্গী” হিসাবে তাদের সকল দায়-দায়িত্ব নিজের হাতে নিয়ে, সেই ভ্রমণকে নির্বিকল ও স্বচ্ছন্দ্যময় করে তোলে।

অনেকের ধারণা, সাধারণত বয়স্ক, অভিভাবকহীন, অশক্ত মানুষেরই কুণ্ডু স্পেশ্যালে যাওয়া সুবিধা, মোটেই তা’ নয়—কুণ্ডু স্পেশ্যালে মেলে রেলের রিজার্ভেশনের সুবিধা, ভালো হোটলে থাকার সুবিধা, এমনকি ভালো বাঙালি খাবারের আয়োজনও করে থাকেন এরাই। সর্বোপরি বাইরে বেড়াতে যাবার জন্য সারা বছরই বিভিন্ন ধরনের প্রোগ্রামের কথা চিন্তা করেন বলেই আজ সব বয়সের, সব ধর্মের মানুষ কুণ্ডু স্পেশ্যালের সঙ্গী হচ্ছেন।

তাছাড়া কুণ্ডু স্পেশ্যালের পুরানো ঐতিহ্যকে বজায় রেখে এখন অনেক আধুনিকতা এনেছেন—সদ্য বিবাহিতরা যাচ্ছেন হনিমুনে, তাদের ইচ্ছানুযায়ী প্রোগ্রামের ব্যবস্থা করা, প্রত্যেক পরিবার অনুযায়ী আলাদা ঘর দেওয়ার ব্যবস্থাও করে এরা। এমনকি অবিবাহিত ছেলেমেয়েরাও আজ কুণ্ডু স্পেশ্যালের নিয়মিত ভ্রমণের সঙ্গী।

ভ্রমণার্থীদের জন্য নিত্য-নতুন ট্যুর প্রোগ্রাম তৈরী করাই এদের বৈশিষ্ট্য। পরিশেষে বলি : কুণ্ডু স্পেশ্যালের সাফল্যে উৎসাহিত হয়ে বর্তমানে বহু ভ্রমণ সংস্থা গজিয়ে উঠেছে। তাদের নানান অব্যবস্থা থেকে ভ্রমণ পিপাসুরা সাবধান হোন। পর্যটন শিল্পের পরিষেবায় কুণ্ডু স্পেশ্যালের সুনাম এবং সাফল্য আজও জনপ্রিয়তার শীর্ষে। কুণ্ডু স্পেশ্যালে ভ্রমণ করতে হলে—

১, চিত্তরঞ্জন অ্যাভিনিউ, কলিকাতা-৭০০ ০৭২, ফোন : ২৭-৬৭৬৭/ ২৬-৩৭৭৭

৪০/১, ষ্ট্যাণ্ড রোড, কলিকাতা-৭০০ ০০১, ফোন : ২৪৩-১২৪২

সরাসরি যোগাযোগ করুন। কুণ্ডু স্পেশ্যালের কোন এজেন্ট নেই।



ভ্রমণ
পিয়াসিদের



দি মহেন্দ্র দত্ত গ্র্যান্ডসন

১০১, ব্রিটিশ টাওয়ার রোড
কলিকাতা-১০০ ৩২৩৮
ফোন ২১৩
মুদ্রিত: মণি হা. পাবনা রোড
কলিকাতা-১০০ ২০০৩



বিষয়ভিত্তিক সূচী

| | |
|------------------------------------|--------------------|
| বই প্রসঙ্গে | ৩ |
| ভারতের নানান শহরে তাপমান ও বৃষ্টি | ৪ |
| ভারতকথা | ৭ |
| ধর্মভিত্তিক ভারতে বাস | ৯ |
| ভারতীয় পরিমাপ ও ওজন | ১১ |
| ভারতের পরিসংখ্যান | ১৪ |
| ভারতের প্রধানমন্ত্রী ও রাষ্ট্রপতি | ১৫ |
| কলকাতায় নানান রাজ্য পর্যটন দপ্তর | ৪৬ |
| কলকাতা থেকে ভারতীয় রেল পরিষেবা | ৫৩, ১০৫, ১০৭ |
| ৩০০ বছরের কলকাতা | ৫৬ |
| কলকাতা থেকে দূরপাল্লার বাস সার্ভিস | ৫৬ |
| ভারতের পর্যটন কেন্দ্র | ১৭৪ |
| পথের পাঁচালী-১ | ২১৫ |
| পথের পাঁচালী-২ | ২৬১ |
| পথের পাঁচালী-৩ | ২৭০ |
| কুস্ত মেলা | ২৬৯, ৫১৮, ৭০১, ৭২২ |
| দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গ | ২৬৯ |
| ভারত রাষ্ট্রে কেরলের উল্লেখ্য | ৩৭৮ |
| ভারতীয় বায়ু প্রকল্প-১৮ | ৪২৪-৪২৫ |
| মহান করেছে মহারাষ্ট্রকে | ৪৮১ |
| একাল সতীপীঠ | ৫৭২ |
| পর্যটক প্রিয় মনোরম পাহাড়ী শহর | ৫৭৮ |
| মালয়ালম—টুরিস্টদের জন্য | ৪০৬, ৬২৩ |
| কুমায়ুন | ৬৭৯ |
| হিমালয়ান পিক | ৬৮৩ |
| চারধাম | ৭২৯ |
| বদরী থেকে কেন্দ্রের বিকল্প পথ | ৭৩৪ |
| মহান বৌদ্ধভূমি | ৭৬২ |
| ৮০০০ ফুট উঁচুতে পালমোনারি ইন্ডিয়া | ৭৮৯ |
| মানালি থেকে লে | ৮২০ |
| লাডাক ভ্রমণে পালনী | ৮৬১ |
| পথ চলতি লাডাকি | ৮৬৫ |

| | |
|------------------------------------|-----|
| পাহাড়ী পথের প্রস্তুতি | ৭৬৮ |
| না বলা কথা | ৮৭১ |
| ইয়ুথ হোস্টেল | ৮৭৪ |
| ভারত ভ্রমণে যানবাহন | ৮৭৫ |
| যাত্রীসেবায় ভারতীয় রেল | ৮৭৬ |
| ইন্ডিয়ান এয়ারলাইন্সের নেটওয়ার্ক | ৮৭৯ |
| বর্ণনাত্মক সূচী | ৮৮১ |

প্রস্তাবিত ভ্রমণ সূচী

| | |
|---|------|
| ১০ দিনে বেড়িয়ে আসুন বীরভূম | ১০৬ |
| উইক এন্ডে চলুন দেবী দর্শনে | ১১৬ |
| শিলিগুড়ি-কাঁকরভিটা-কাঠমাণ্ডু-পোখরা | ১২৮ |
| চলুন যাই ভুটান | ১৩৩ |
| ১৫ দিনে সিকিম ভ্রমণ | ১৬১ |
| দার্জিলিং থেকে ট্রেক করে গ্যাংটক | ১৬২ |
| ইয়ুমথান অ্যালপাইন প্যাকেজ ট্রা | ১৬৭ |
| হাওয়া বদলে পশ্চিম | ১৯২ |
| বনবাসে চলুন ১৪ দিনের | ২০২ |
| ১৫ দিনে বেড়িয়ে আসুন বিহার-নেপাল | ২০৮ |
| নেপাল ভ্রমণে | ২০৯ |
| ২১ দিনে ভারতের পূর্বাঞ্চল | ২১৯ |
| ১০ দিনে ওড়িশা | ২৯২ |
| ১ মাসে দক্ষিণী সফর | ৩৩২ |
| কাক্সনময় টিপ সিংহল দ্বীপ | ৩৫৭ |
| ৫ দিনে কর্ণাটক | ৪৪৬ |
| চেন্নাই থেকে তিরুপতি | ৩৯২ |
| ১০ দিনে বেড়িয়ে আসুন অন্ধ্র-ওড়িশা-মধ্য প্রদেশ | ৪৬৩ |
| সার্কুলার ট্রায়ে দক্ষিণী বিহার | |
| গোয়া পৌছান মুম্বাই হয়ে | ৪৯১ |
| ১৫ দিনে মহারাষ্ট্র ও গোয়া ভ্রমণ | ৫২২ |
| বন্য গাধা দর্শনে জাইনাবাদ | ৫৭১ |
| ২০ দিনে মধ্য প্রদেশ | ৫৮৫ |
| ভূপাল থেকে | ৬১২ |
| ১০ দিনে বেড়িয়ে আসুন অমরকন্টক-বাক্সবগড়- | |
| জবলপুর-কানহা-খাজুরাহো | ৬১৫ |
| প্যাকেজ ট্রায়ে M P Temptations | ৬২২ |
| ৩ সপ্তাহে রাজস্থান | ৬৩০ |
| ৭ দিন ৮ রাতের মহারাষ্ট্র | ৬৬২ |
| ১৫ দিনে বেড়িয়ে আসুন কুমায়ুন হিমালয় | ৬৮৯ |
| ১০ দিনে এলাহাবাদ | ৭০০ |
| গাড়োয়াল হিমালয়ের নানান প্যাকেজ | ৭২৪ |
| ৩ সপ্তাহে—চারখাম | ৭২৪ |
| ৮৪ ক্রোশ বনপরিভ্রমণ | ৭৬১ |
| নন্দনকানন ও হেমকুণ্ড সাহিব | ৭৩৩ |
| ২১ দিনে হিমাচল দর্শন | ৮১০ |
| দিল্লী-মানালী-লে ভ্রমণ | ৮২০ |
| ধরমশালা থেকে কাংড়াভ্যালি | ৮৩২ |
| ১ মাসে কৈলাস ও মানস সরোবর | ৮৯২ |

ভাগ্যবানেরাই ভ্রমণ করেন।

পার্থ মুখোপাধ্যায়

ভাগ্যে ভ্রমণ যোগ না থাকলে— কিছুতেই ভ্রমণ করা যায় না। পায়ে-পায়ে বাধা। টিকিট কেটেও ট্রেনে ওঠা হয় না। অসুখ-বিসুখ বা এমন আকস্মিক বিপদ এসে হাজির হয়ে যায়, যাওয়াই হয়ে ওঠে না। এমন মানুষ দেখেছি, কোটি কোটি টাকা নিয়ে বসে আছেন। কাজ-কারবার করছেন। সব ঠিক আছে—ভ্রমণের নামে কেমন যেন গুটিয়ে যান, আবার সামান্য চাকরী করেন প্রতি বছর ঠিক বেরিয়ে পড়ছেন। আপনার ভাগ্যে দেশ বিদেশ ভ্রমণ যোগ আছে কি? জানতে হলে ডি. কে. চন্দ্র জুয়েলার্সে গিয়ে ৩৪ বি. বি. গাঙ্গুলী স্ট্রিট, কলি-১২, ফোন ২৬৮৫৩৯—লক্ষ্মীশ্রী চ্যাটার্জী বা কার্তিক চট্টোপাধ্যায়কে বলতে পারেন। হাত ও কুষ্ঠি দেখে তখনই বলে দেবেন। ভ্রমণে বাধা থাকলেও আসল গ্রহরত্ন ধারণ করিয়ে—পথ পরিষ্কার করে দেবেন। ডি. কে. চন্দ্রতেই খাঁটি গ্রহরত্ন উচিৎ দামে পাবেন। আমিও সেখানেই জগন্নাথ নাটান্ট, পুষ্টি, যোগ, সাহিত্য, তীর্থ দর্শন ক'জনের ভাগ্যে ঘটে? ভ্রমণের আনন্দ—যে ভ্রমণ করেনি—সে কি বুঝবে?

ভ্রমণ সঙ্গী



১. কলিকাতায় একমাত্র প্রতিষ্ঠান যেখানে কর্তৃপক্ষ নিজেরা হাজির না থাকলে প্রোগ্রাম হয় না।
২. কলিকাতায় একমাত্র প্রতিষ্ঠান যারা ওয়েস্ট বেঙ্গল ট্যুরিজম ডেভেলপমেন্ট কর্পোরেশন লিমিটেডের সঙ্গে যৌথভাবে পশ্চিম বঙ্গের বাইরে ভ্রমণের ব্যবস্থা করে।
৩. “ভ্রমণ সঙ্গী” একমাত্র প্রতিষ্ঠান যেখানে প্রতিটি পরিবারকে বিনা খরচে আলাদাভাবে বাথরুম সহ ঘর দেওয়া হয়।
৪. গত ২৫ বছর ধরে প্রত্যক্ষভাবে ভ্রমণার্থীদের সেবায় এরা নিযুক্ত।
৫. “ভ্রমণ সঙ্গী” নিজস্ব পরিচালনায় নেপাল, গ্যাংটক ও পুরীতে হোটেল—ভ্রমণার্থীদের সেবার অপেক্ষায় আছে। প্রতিটি ভ্রমণার্থীকে আমরা আমাদের পারিবারিক বন্ধু হিসাবে মনে করি।

ভ্রমণ সঙ্গী

৩, চিত্রকেন এডিনিউ (মিডল), কলি-৭০০০৭২

Office : 26-2942/2516

Resi : 468-0733.

কলিকাতায় নানান রাজ্য পর্যটন দপ্তর

Govt of India Tourist Office

4, Shakespeare Sarani, Cal-71 ☎ 2421402

ITDC

Embassy, 4 Shakespeare Sarani, Cal-71 ☎ 2421402

Delhi Tourism

4 Shakespeare Sarani, Cal-71 ☎ 2425454

Darjeeling Gorkha Hill Council

4 Shakespeare Sarani, Cal-71 ☎ 2425454/1402

Govt of West Bengal Tourism

3-2 B B D Bag (E), Cal-1 ☎ 2488271

West Bengal Tourism Development Corpn

Netaji Indoor Stadium, Cal-1 ☎ 2487318/2487302

Tourism Centre-WBTDC

3-2 B B D Bag (E), Cal-1 ☎ 2485917/5168

Uttar Pradesh Tourism

12-A, N S Bose Rd, 2nd Floor, Cal-1 ☎ 2207855

GMVN ☎ 2206798

Assam Tourism

8 Russel Street, Cal-71 ☎ 298331/32/35

Meghalaya Tourism Development Corpn

9 Russel Street, Cal-71 ☎ 290797/1775/1776

Bihar Tourism Information Centre

26 Camac Street, 1st Floor, F-Block, Cal-16

☎ 2470821

M P Tourism Development Corpn

230A, A J C Bose Road, 6th Floor, Room 7, Cal-20

☎ 2478543

Orissa Tourism

55 Lenn Sarani, Cal-13 ☎ 2443653

Tripura Tourist Information Centre

3 Pretoria Street, Cal-71 ☎ 2425703

Nagaland Tourist Information Centre

11 Shakespeare Sarani, Cal-71 ☎ 2425247/5269

Jammu & Kashmir Tourist Information Centre

12 Jawaharlal Nehru Road, Cal-13 ☎ 2485791

Arunachal Tourist Information Centre

4B, Chowringhee Place, Roxy Cinema Building

Cal-13 ☎ 2286500

Sikkim Information Centre

Poonam Building, 4th Floor, 5/2 Russel Street,

Cal-71 ☎ 297516/6716/8983

Rajasthan Tourist Information Centre

2 Ganesh Chandra Avenue, 1st Floor, Cal-13

☎ 279740

Andaman & Nicobar Islands

3A, Auckland Place, Cal-17 ☎ 2472604

Manipur Tourism

25 Ashutosh Sastri Rd, Cal-10 ☎ 3505019

Mizoram Tourism

24 Old Ballygunj Road, Cal-19 ☎ 4757034 / 4757887

Tamilnadu Tourism

G-26, Dakshinapan, 2 Gariahat Road (South)

Dhakuria, Cal-68 ☎ 4720432

Himachal Tourism

1/1A, Biplabi Anukul Chandra St (2nd Floor), Cal-72

☎ 271792

Tourism Corporation of Gujarat Ltd

8 Ho-Chi-Minh Sarani, 1st floor, Cal-71 ☎ 2820923

or

Information Inc, Travel Division

17 Justice Dwarakanath Rd, Cal-20 ☎ 4754502

মানচিত্র সূচী

| | |
|--|-----------|
| বিধান নগর (সস্ট লেক সিটি) | ৫৪ |
| পশ্চিমবঙ্গ | F ৬৪ |
| ভারতীয় রেল | C ৬৪-৬৫ |
| বিহার | F ৬৫ |
| আরারউস্ত ক্যালকাটা | ৭৪ |
| অঞ্চলভিত্তিক পশ্চিমবঙ্গ | ৯৪ |
| শিলিগুড়ি | ১২৪ |
| দার্জিলিং | ১৩৮ |
| মিনহাটা থেকে থিম্পু | ১৪৩ |
| বাগডোগরা-ফালুট-নাথুলা-থিম্পু | ১৪৫ |
| সুন্দরবন | ১৫৩ |
| গ্যাংটক | ১৬৫ |
| সিকিম | ১৭২ |
| পাটনা | ১৭৭ |
| পাটনা-কাঠমাণ্ডু | ২০৯ |
| গুয়াহাটি থেকে নর্থ লখিমপুর | ২৩০ |
| গুয়াহাটি | ২৪২ |
| মানস ব্যাঘ্র প্রকল্প | ২৪৫ |
| কালিগ্রাসা জাতীয় উদ্যান | ২৪৭ |
| শিলং | ২৫৭ |
| পোর্ট ব্লেয়ার | ২৭৩ |
| আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ | ২৭৬ |
| ভুবনেশ্বর | ২৮৪ |
| খুর্দা থেকে সখলপুর | ৩০৩ |
| সিমলিপাল জাতীয় উদ্যান | ৩১৩ |
| ওড়িশা | F ৩২০ |
| তামিলনাড়ু ও পণ্ডিচেরী | C ৩২০-৩২১ |
| চেন্নাই | C ৩২০-৩২১ |
| কেরল ও লাক্ষাদ্বীপ | F ৩২১ |
| মহাবলীপুরম | ৩৩৮ |
| কোয়েম্বাটুর থেকে ব্যাসালোর | ৩৬০ |
| উত্তরামণ্ড | ৩৬৭ |
| পণ্ডিচেরী | ৩৭২ |
| ত্রিবাঙ্গুর/তিরুতনঙ্গুরম | ৩৭৯ |
| কোচি-এর্নাকুলম | ৩৯৩ |
| লাকা দ্বীপপুঞ্জ | ৪০৫ |
| মহীশূর | ৪১০ |
| পুলিকাট-মহীশূর | ৪২৪-৪২৫ |
| পেরিয়ার ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ড্রুয়ারি | ৪২৪ |
| মুম্বাই-বন্যজন্তু সংগ্রহালয় | ৪২৫ |
| কর্ণাটক | F ৪৩২ |
| মাদ্রাজ (চেন্নাই)-কন্যাঙ্কুমারি | C ৪৩২-৪৩৩ |
| দিল্লী-শ্রীনগর | C ৪৩২-৪৩৩ |
| বাসাসলোর | F ৪৩৩ |
| হাসান থেকে চারপাশ | ৪৩৫ |
| হায়দ্রাবাদ-সেকেন্দ্রাবাদ | F ৪৬৪ |
| মহারাষ্ট্র | C ৪৬৪-৪৬৫ |
| মুম্বাই | F ৪৬৫ |
| কারলা ও ডাঙ্গা | ৪৯৫ |
| পুনে | ৪৯৭ |
| ওরঙ্গাবাদ | ৫১২ |
| আমেরাবাদ | ৫৪৪ |
| দমন | ৫৭৫ |
| দিউ | ৫৭৬ |
| খাছুরাহো | ৫৮৪ |
| গোয়ালপুর | ৫৯০ |
| তুপাল | ৬০৫ |
| গোয়া | F ৬২৪ |
| রাজস্থান | C ৬২৪-৬২৫ |

ধ্রুমে সঞ্চে লেখন
ক্রেমল সিল্ক শাড়ি,
সুতিনয়।

সিল্ক
ডুজলে হালকা.
সুটকেসে ত্রানেক ধরে.
মহজে ভাঁজ দাড়েনা.
মহজে চাপুলা হয়না.



464 4113

464 6170

দ্রুমে সঞ্চে
সিল্ক শাড়ি

২১০/১এ রাসবিহারী এভেন্যু

কলিকাতা-৭০০ ০২৯

এমনেব্র আনন্দ পুরোপুরি পেতে এমন করুন শাস্তা হাতে

সম্মুখে নিন
প্রিয় গোপাল বিশ্বাসীর
নানা ডিজাইনের
রুচিশীল সিন্ধু শাড়ী
ও মোহোটার



PRASAD

প্রিয় গোপাল বিশ্বাসী

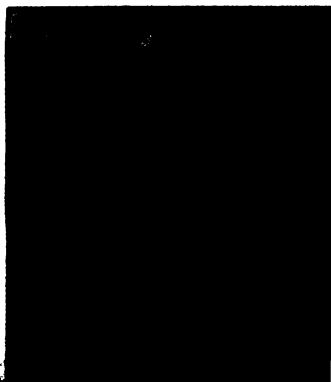
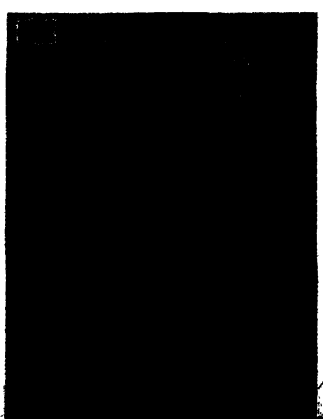
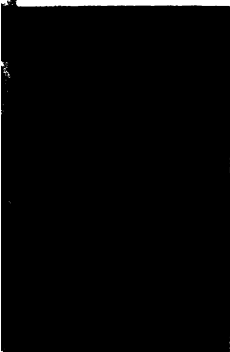
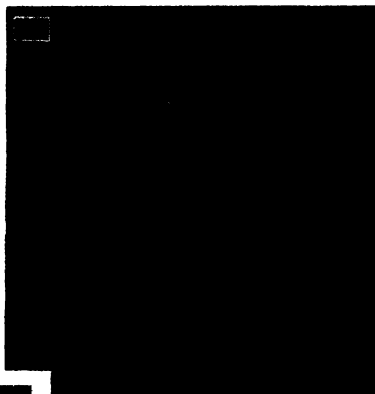
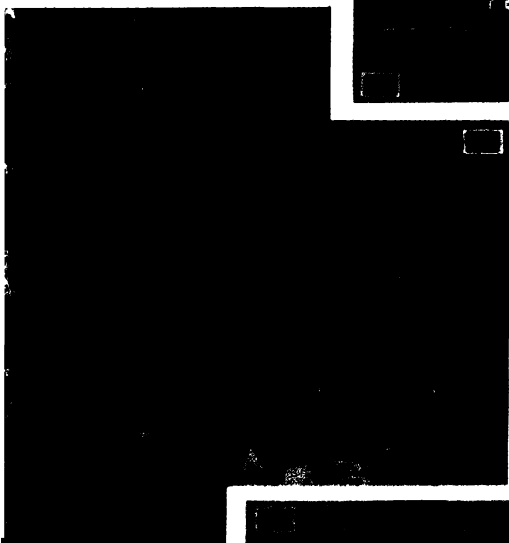
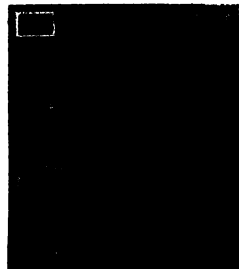
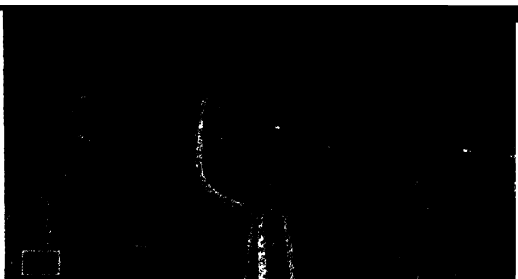
৭০, পণ্ডিত পুরুষোত্তম রায় স্ট্রীট, বড়বাজার,
কলিকাতা-৭০০ ০০৭। ফোনঃ ২৩৮-৬৪০২/২৮০৩

| | |
|------------------------------|-----------|
| দিল্লীর চারপাশ | F ৬২৫ |
| বোধপুর | ৬৩৪ |
| আবু পর্বত | ৬৩৭ |
| জয়পুর | ৬৬০ |
| লক্ষৌ | ৬৭৪ |
| কববেট | ৬৯৩ |
| বাবাশসী | ৭০৯ |
| বাবাশসী থেকে বোধপথা | ৭১৯ |
| হবিহার | ৭২১ |
| কুমায়ুন ও গাড়োয়াল হিমালয় | ৭৩১ |
| আগ্রা | ৭৫৩ |
| ফতেপুর সিক্রি | ৭৫৮ |
| দিল্লী | F ৭৬৮ |
| উত্তর প্রদেশ | C ৭৬৮-৭৬৯ |
| হবিবানা | F ৭৬৯ |
| চণ্ডীগড় | ৭৯৩ |
| সিমলা | ৮০৫ |
| হিমাচল প্রদেশ | F ৮১৬ |
| ভারতীয় সড়ক | C ৮১৬-৮১৭ |
| শ্রীনগর | F ৮১৭ |
| কলু | ৮১৭ |
| দিল্লী থেকে লে | ৮২০ |
| বিলাসপুৰ থেকে উদয়পুর | ৮২২ |
| মানালী | ৮২৪ |
| ধবমশালা | ৮৩০ |
| কমু | ৮৪১ |
| জম্মু থেকে শ্রীনগর সড়ক | ৮৪৪ |
| জাঁসকব উপত্যকা | ৮৬৩ |

চিত্রসূচী: এক

১ ওজনাটের হস্তশিল্প ছবি পর্বটন দপ্তর ২ জাতীয় সাজে
ওজনাটি ললনা ছবি পর্বটন দপ্তর ৩ সূচি শিল্পে নিপুণা
কুশৌরী কলি ছবি পর্বটন দপ্তর ৪ কোভাপালির পুতল
ছবি পর্বটন দপ্তর ৫ কোভাপালির পুতল ছবি পর্বটন
দপ্তর ৬ অঙ্কুর বিদ্যারি শিল্প ছবি পর্বটন দপ্তর ৭ বিহারের
দায়শিল্প ছবি পর্বটন দপ্তর ৮ হস্তশিল্পের হাতি—জয়পুর
ছবি পর্বটন দপ্তর ৯ কুশটিকের বিদ্যারি শিল্প ছবি পর্বটন
দপ্তর ১০ অঙ্কুর বিদ্যারি শিল্প ছবি পর্বটন দপ্তর
১১ সাজের ডিজাইনিং—ছবি অশোক দে ১২ সাজের
শরীর মিনার ছবি অশোক দে ১৩ বিকুপ মেলা শিল্পের
সবির ছবি অশোক দে ১৪ কোড় মন ছবি বিশ্বর
সেনগুপ্ত ১৫ হাজার হাজার ছবি মোনা চৌধুরী
১৬ মাড়মদির—ভারতীয় ছবি কৃষ্ণা নন্দ ১৭ তিউ
টাওয়ার—সুন্দরবন ছবি অশোক দে

আরও ছবি : ৯৬, ১৬০, ২২৫, ২৮৯, ৩৫৩,
৪১৭, ৪৮০, ৫৪৫, ৬০৮, ৬৭৩, ৭৩৭





পশ্চিমবঙ্গ

এত ভঙ্গ বঙ্গদেশে তবু রঙ্গে ভরা।

রঙ্গ বাংলার আকাশে-বাতাসে। রঙ্গ বাঙালির রঙ্গে
রঙ্গে। সেই রঙ্গ বলেই এগিয়ে চলেছে বাংলা, মহামতি
গোখলের অবিস্মরণীয় উক্তি:

*What Bengal thinks to-day
India thinks to-morrow
or other World thinks day after to-morrow !*

কে শিরোপা করে।

বাংলা আজকের নয়। ঋষিদের অনুগামী ঐতরেয়
আরণ্যক, বৌধায়ন সূত্র, পাতঞ্জল মহাভাষ্য, রামায়ণ,
মহাভারত, ভাগবত, হরিবংশ, মনুসংহিতা, বিষ্ণুপুরাণ,
মৎস্যপুরাণ, বায়ুপুরাণ প্রভৃতি মহাপুরাণ ও নানান উপ-
পুরাণে, শক্তিসঙ্গমতন্ত্রে, কালিদাসকৃত রঘুবংশে এবং বরাহ
মিহিরের বৃহৎসংহিতাপ্রভৃতি গ্রন্থে বঙ্গদেশের উল্লেখ মেলে।
মন্ত্রদ্বষ্টা ঋষি গৌতমের বরে বলিরাজার মহিষী সুদেষ্ণার
গর্ভে অঙ্গ, বঙ্গ, কলিঙ্গ, সুলা ও পুন্ড্র নামে ৫ পরাক্রমশালী
পুত্রের জন্ম। উত্তরকালে এই ৫ ভ্রাতার নামে ভারতের ৫
জনপদের নামকরণ। ভারতের আজকের মানচিত্রে এদের
উল্লেখ না মিললেও অঙ্গের অবস্থান বিহারের ভাগলপুরে,
বঙ্গ বাংলার ঢাকায়, কলিঙ্গ দক্ষিণ ওড়িশায়, সুলা রাঢ়দেশ
বা বর্ধমানে আর পুন্ড্রের অবস্থান উত্তরবঙ্গ বা রাজশাহী
বিভাগে। মহাভারতে মেলে তিন বাঙালি রাজা পাণিপ্রার্থীর
লিঙ্গা নিয়ে হাজির ছিলেন দ্রৌপদীর স্বয়ংবর সভায়। শুধু
কি তাই—গ্রিক বীর আলেকজান্ডারকেও বাঙালির
(গঙ্গারিডি) বিক্রমের কাছে ভারত জয়ের স্বপ্ন ভুলতে
হয়েছিল সেদিন। বাংলার শাসকরা বিস্তার করেছিল তাদের
সাম্রাজ্য সারা আর্যাবর্ত ও দক্ষিণাভ্য জুড়ে। এমনকি
কুরুক্ষেত্রের ধর্মযুদ্ধেও কৌরব পক্ষে অংশ নিয়েছেন
বঙ্গাধিপতি। গৌড়ের রাজা বাসুদেব কৃষ্ণর সঙ্গে যুদ্ধও করেন
ছারকায়। সুদূর লঙ্কাত্তেও রাজ্য বিস্তার করেছিলেন বাংলার
বিজয়সিংহ। এই সেদিনও বাংলা বিহার ও ওড়িশার সার্বভৌম
রাজা শশাঙ্কর কাছে উত্তরাখণ্ডের অধীশ্বর হর্ষবর্ধন রাজ্য
বিস্তারে বাধা পান। ৮ থেকে ১২ শতকে পাল রাজাদের
কালে বাংলার রমরমা আজও ইতিহাসখ্যাত। মোগল কালে
আকবর জয় করলেও বাংলা স্বতন্ত্র প্রতিপে রূপ নেয়। আর
১৭০৭-এ উরঙ্গজেবের মৃত্যুর পর বাংলা হয় স্বাধীন মুসলিম
রাজ্য। আবার বাংলায়ই যুকে শেষ স্বাধীন সূর্য অশ্বমিত্র হয়
পলাশীর আমবাগানে ১৭৫৭তে লর্ড ক্লাইভের কাছে
সিরাজের পতনে। তবে ৭ বছর চলে শৈত শাসন—চাঁড়ী
করে সিরাজকে হারাবার ইমাম খরাপ সিরাজের খুড়োতথা
সেনাপতি মিরজাফর আর মিরকাশিমের সহযোগে
প্রথম সঙ্গী: ১৭-১৮/৪

ব্রিটিশের। ১৭৬৪তে বঙ্গারের যুদ্ধে উৎখাত হলেন
মিরকাশিম; বাংলা গেল ব্রিটিশ শাসনে।

শুধু শৌর্য আর বীর্যই বা কেন—অতীতে বাংলা ছিল
কৃষিপ্রধান দেশ। বাংলার বস্ত্রশিল্পেরও খ্যাতি ছিল সারা বিশ্ব
জুড়ে। এমনকি বাংলার চা বাগাবন্দি হয়ে আমেরিকায়
যেত—বাস্টন বন্দরে সেই চায়ের বাগ্ন সমুদ্রে নিক্ষেপ
থেকেই আমেরিকার স্বাধীনতার যুদ্ধের গুরু—কালে কালে
জর্জ ওয়াশিংটনের নেতৃত্বে স্বাধীনতা লাভ। সেও আর এক
চমকপ্রদ ঘটনাপ্রবাহ। বাংলার বণিক চাঁদ সওদাগরের
সপ্তভিঙা বাংলার পণ্য নিয়ে ভিড়ত বিশ্বের বাজারে। তেমনই
গ্রিস, চীন ও পারস্য থেকে বণিকরা এসেছে বাণিজ্যের তরে
বাংলায়। তাম্রলিপ্ত ছিল সেকালের সমৃদ্ধ বন্দর-নগরী। সম্রাট
অশোকের ভ্রাতা (সিংহলী মতে পুত্র) মহেন্দ্র ভঙ্গী সঞ্জ-
মিত্রকে সঙ্গী করে তাম্রলিপ্ত থেকেই লঙ্কায় গিয়েছিলে।
বৌদ্ধধর্মের বার্তা নিয়ে। হরপ্পার সমসাময়িক আর এক
হারানো অতীতের সন্ধানও মিলেছে কলকাতারই উপকণ্ঠে
চন্দ্রকেতুগড়ে।

এমনকি প্রকৃতিও মহিমাম্বিত করে গড়ে তুলেছে
বাংলাকে। ভারত রাষ্ট্রের উপকূলবর্তী ৯ রাজ্যের মধ্যে
একমাত্র পশ্চিমবঙ্গেই পর্বত-সমুদ্র-অরণ্য এই তিনের
সমন্বয় ঘটেছে। উখান তার বঙ্গোপসাগরের জলে, আর
খেতে-শুভ্র হিমালয় কিরীট হয়েছে ভালে। সারা উত্তর জুড়ে
নগাধিরাজ হিমালয়—সিকিম তার বিউটি স্পট; দক্ষিণে
বঙ্গোপসাগর, পূবে বাংলাদেশ, অসম আর পশ্চিম জুড়ে
বিহার, ওড়িশা ও নেপাল।

বাংলার মাটি খণ্ডিত হয়েছে বার বার। ব্রিটিশের গড়া
Bengal Province-এ সেদিন ছিল বাংলা, বিহার, ওড়িশা
এমনকি আগ্রা পর্যন্ত। ১৮৬৩তে আগ্রা ছেঁটে আনা হল
অসমকে। আর ১৮৭৪এ নতুন করে প্রদেশ হল অসম।
১৯০৫এ লর্ড কার্জন আবার সীমারেখায় বদল ঘটালেন
বাংলাকে ছেদ করে অসম এবং পূর্ব বাংলা পৃথকভাবে প্রদেশ
গড়ে—ঢাকা হল তার রাজধানী। বাংলা রইল বিহার ও
ওড়িশার অংশ নিয়ে। জনগণকে উদ্বুদ্ধ করতে পথে নামলেন
বাংলার কবি রবীন্দ্রনাথ—গড়ে উঠল ভারত। রদ হল
বঙ্গভঙ্গ। তবে বাংলার রাজনৈতিক চেতনায় শক্তিত ব্রিটিশ
১৯১১-য় ভারতের রাজধানী কলকাতা থেকে দিল্লী স্থান-
ান্তরের সিদ্ধান্ত নিল। ১৯১২র ১লা এপ্রিল সাধিতও হল এই
স্থানান্তর। রাজনৈতিক চেতনাবোধ আজও বাংলার আকাশ
ছেয়ে—তবে, তেরজার বদলে কম্যুনিজম (মার্কসবাদ)—এর
প্রভু প্রাণাঙ্ক হারাবার ইমাম খরাপ সিরাজের খুড়োতথা
এর সাম্প্রদায়িক দাঙ্গার ক্ষত শুকোতে না শুকোতে খণ্ড

করেছে স্বাধীনতার ছুরি ১৯৪৭-এ বাংলাকে আবার। শুধু খণ্ডই বা কেন—নামেও অলংকার জুড়ে বাংলা হয়েছে পশ্চিমবঙ্গ (West Bengal) কলকাতাকে রাজধানী করে। সঙ্গে এল স্বাধীন রাজ্য কোচবিহার ১৯৫০-এ; আর ফরাসি অধিকৃত চন্দননগর অক্টোবর ২, ১৯৫৪-র পশ্চিমবাংলায়। আরও পরের কথা—ভাষার ভিত্তিতে আন্দোলনের ফলে বিহার থেকে মানভূম এল পশ্চিমবাংলায় পুরুলিয়া জেলা হয়ে। বাংলার ভাষা বঙ্গভাষা বা বাংলা। ইন্দো-এরিয়ান ভাষার সংস্কৃতনির্ভর মাগধী থেকে উদ্ভব। উত্তরকালেও নানান দেশী-বিদেশী ভাষা থেকে শব্দাবলী বাংলাকে সমৃদ্ধ করেছে।

রাজধানী □ কলকাতা। আয়তন: ৮৭৮৫৩ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৬৭৯৮২৭৩২। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৮.৫%। পুরুষ: ৩৫৪৬১৮৯৮। নারী: ৩২৫২০৮৩৪। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ১৩৪০২০৮৫। বৃদ্ধির হার: ২৪.৫৫%। প্রতি বর্গকিমিতে বাস: ৭৬৬। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯১৭। সাক্ষরের হার: ৫৭.৭২%। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৩৯৬৩.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। বেড়াবার মরসুম: সারা বছর। তবে অক্টোবর থেকে মার্চ মাস মনোরম। মে-জুনে গরম আর জুলাই-সেপ্টেম্বরে বৃষ্টি বিঘ্ন ঘটায় ভ্রমণে। তবে, অঞ্চলভেদে বৃষ্টির তারতম্য ১২০—৪০০ সেমি হলেও গড় বৃষ্টিপাত ১৭৫ সেমি।

১৭ দিনে উত্তরবঙ্গ—মিরিক ১ দার্জিলিং ৩ কালিম্পং-লাভা-লোলেগাঁও ৩ গ্যাংটক ২ পেলিং ২ জলদাপাড়া ১ ফুন্টশোলিং ১ পথচলায় ৪ দিন। দফায় দফায় সপ্তাহান্তিক ছুটিতে—মুর্শিদাবাদ, মালদহ-গৌড় পাণ্ডুয়া-কুলিক, বিষ্ণুপুর-মুকুটমণিপুর, নবাবীপ-মায়াপুর-কৃষ্ণনগর, দীঘা-চন্দ্রনন্দন-তালশেরী-জুনপট-শঙ্করপুর, অযোধ্যা পাহাড়, সুন্দরবন, বকখালি-সাগরদীপ; আর কলকাতা দেখুন প্রতিদিন।

কলকাতা

গঙ্গা বা ভাগীরথীর পূব পারে পশ্চিমবঙ্গের রাজধানী শহর কলকাতা। বয়স তার ৩০৮ বছর। কেউ-বা বলেন আজব শহর, কেউ-বা বলেন মিছিল নগরী, আবার কারো কারো মতে বস্তির শহর কলকাতা। প্রাসাদ নগরী বলেও আখ্যায়িত হয়েছে কলকাতা। তাই কলকাতা কলকাতাই। সে কম্বোলিনী, তিলোত্তমা—সিটি অব জয়। এর ইথারে ভেসে ওঠে সারা বিশ্বের হৃৎস্পন্দন। নানান কিংবদন্তী আছে কলকাতা নামটি ঘিরে। কারো কারো মতে, সাহেবী মুখে বাংলা ভাষা কাল কাটাই নাকি হয়েছে কলকাতা। আবার শোনা যায়, ১৭৪২এ শহরের তিন দিকে কাটা খাল অর্থাৎ খাল কাটা থেকেই নাকি কলকাতা নামের উৎপত্তি। কেউ-বা বলেছেন কলকাতা নামটি এসেছে কালিকট নামের সাথে সমতা রেখে। তবে যে যাই বলুক কলকাতা আজকের নয়। ১৪৯৫ খ্রিস্টাব্দে রচিত বিপ্রদাসের মনসামঙ্গলকাব্যে সর্ব-প্রথম উল্লেখ মেলে কলকাতার। মুকুন্দরামের চণ্ডীমঙ্গলেও উল্লিখিত হয়েছে কলকাতার নাম। ১৬ শতকের শেষভাগে লেখা আবুল ফজলের আইন-ই-আকবরী গ্রন্থেও উল্লেখ মেলে কলকাতা নামের। তাই সন্দেহ জেগেছে গবেষকদের। সম্ভবত আরও অতীতে কলকাতা গ্রামের আদি বাসিন্দা কোল সম্প্রদায়ের কোলকাহোতা থেকেই নাম হয়েছে সেদিনের কোলকাতা, কালে কালে কলকাতা বা কলিকাতা। নামে কি বা আসে যায়—ব্রিটিশের ই স্তি শহর কলকাতা। শহর লুণ্ঠনের অপরাধে নবাবী ফৌজ এড়িয়ে ১৬৮৬তে হুগলি ছেড়ে ১৬৯০ খ্রিস্টাব্দের ২৪শে আগস্ট জোব চার্ণক এলেন হুগলি (গঙ্গা) নদী বয়ে সেদিনের সূতানুটি গ্রামে। পণ্ডিতদের বিধান সেই থেকে জন্ম হল কলকাতার। বিয়েও করেন সতী হতে-যাওয়া এক ব্রাহ্মণীকে চার্ণক। ১৬৯২-এর ১০ই জানুয়ারি চার্ণকের মৃত্যু আর ১৬৯৮-এর জুলাই মাসে ১৬০০০ টাকায় কলকাতা, সূতানুটি ও গোবিন্দপুর—৩ গ্রামের জমিদারী স্বত্ব কেনে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি। ১৬৯৯-এ ফোর্ট উইলিয়াম দুর্গও গড়ে আজকের GPO-র পাশে বিদ্যাবাগে কোম্পানি। আর ১৭১৭য় দিল্লীর মোগল বাদশাহ ফারুকশিয়ারের ফরমান পেয়ে আরও ৩৮ খানা জমি কিনে সাম্রাজ্যের বিনিয়াদ গড়ে কোম্পানি অর্থাৎ ব্রিটিশ। ১৭৫৬য় বাংলার নবাব সিরাজ-উদ-দৌলার কাছে পরাজয় ঘটলেও ১৭৫৭র প্রথমেই নবাবের সঙ্গে শান্তি-চুক্তিতে দখল ফেরে কলকাতার। আর ঐ বছরেই সিরাজকে হারিয়ে ব্রিটিশ সাম্রাজ্যের ভিত মজবুত করেন লর্ড ক্লাইভ। আর ১৭৭২-এর প্রথম গভর্নর ওয়ারেন হেস্টিংস ভারতে ব্রিটিশরাজের রাজধানী গড়েন কলকাতায়। নবজাগরণও ঘটে কলকাতায় ১৭৮০-১৮২০তে।

কলকাতা সার্বজনীন শহর। পরকে আপন করে অতি সহজেই কলকাতা। সারা বিশ্ব থেকে প্রতিনিধি এসেছেন

এর নগরজীবনে। ভারতে প্রথম আর বিশ্বের চতুর্থ বৃহত্তম শহরও এই কলকাতা। টেকিও, নিউইয়র্ক আর লন্ডনের পরেই কলকাতার স্থান। তবে, বসতির ঘনত্বে কলকাতা আজ দ্বিতীয়—মুম্বাইর পরে স্থান এর। অতীতে লন্ডনের পরেই ছিল কলকাতা। বাসও ছিল সেকালের কলকাতায় ৫০% ব্রিটিশ নাগরিকের। আর আজ রাজ্য থেকে ভিন রাজ্যের নাগরিকের বাস আধারও বেশি কলকাতায়। ১১ মিলিয়ন লোকের বাস শহরে। আর বিশ্বের দরবারের সঙ্গে বন্দর হিসাবে প্রতিনিধিত্ব করেছে সারা পূর্ব ভারতের হয়ে কলকাতা। তবে সেও যেন কিংবদন্তীর গাথা। ফারাক্কা বাঁধের জলে গঙ্গায় লক্ষ চললেও পোতাশ্রয়ের অভাব—পলি পড়ে পড়ে নাব্যতা হারিয়েছে রাস। বড় জাহাজের বন্দর থেকে সমুদ্রে চলা দুরূহ আজ।

কলকাতার আর এক বিব্রম তার নামের বদল। স্বাধীনোত্তর ভারতে নতুনদের অভাবে পুরাতনের তকমা খুলে নামান্তরিত হচ্ছে নতুন করে। তবে, নতুন আর পুরাতনের জগাখিচুড়ি চলছে আজও সমানে। পুরাতন *হারিসন রোড* হয়েছে মহাত্মা গান্ধী রোড, *চৌরঙ্গী রোড* হয়েছে জওহরলাল নেহরু রোড, *থিয়েটার রোড* হয়েছে শেক্সপিয়ার সরণী, *ওয়েলিংটন স্ট্রিট* হয়েছে নির্মলচন্দ্র স্ট্রিট, *হারিংটন স্ট্রিট* হয়েছে হো-চি মিন সরণী, *রেড রোড* হয়েছে ইন্দিরা গান্ধী সরণী, *বৌবাজার স্ট্রিট* হয়েছে বিপিন বিহারী গান্ধী স্ট্রিট, *চিৎপুর রোড* হয়েছে রবীন্দ্র সরণী, *কন-ওয়ালিস স্ট্রিট* হয়েছে বিধান সরণী, *লোয়ার সার্কুলার রোড* হয়েছে আচার্য জগদীশচন্দ্র বসু রোড, *ল্যান্ডাউন রোড* হয়েছে শরৎ বসু রোড, *বালিগঞ্জ স্টোর রোড* হয়েছে গুরুসদয় রোড, *ওয়েলসলি স্ট্রিট* হয়েছে রফি আহমেদ কিদোয়াই রোড, *ফ্রি স্কুল স্ট্রিট* হয়েছে মির্জা গালিব স্ট্রিট, *গড়িয়াহাট রোড* হয়েছে সি ডি রামন রোড, ছাড়াও নানান।

কথায় বলে ভাড়া কুলো লাগে ছাই ফেলতে। তেমনই সারা ভারত থেকে উপেক্ষিতের ঠাই মেলে শহর কলকাতায়। এমনকি স্বাধীনোত্তর ভারতের বৃহত্তম সমস্যা—পূর্ববাংলা (পূর্ব পাকিস্তান) থেকে উদ্ধাস্ত অনুপ্রবেশে কলকাতা আজও সমস্যাশীর্ণ। উদ্বাস্ত এসেছে আবার বাংলাদেশের স্বাধীনতার আন্দোলন কালে ১৯৭১-এ নতুন করে।

এত সবের মাঝেও কলকাতার আকাশে বাতাস বয়— সে বাতাসে ভেসে বেড়ায় কলকাতার সৃষ্টি বাঙালি কৃষ্টি। সাহিত্যপ্রিয় বাঙালি—আড্ডাও তার রক্তে মিশে। উত্তর মেরু থেকে উত্তর হিমালয় তার আড্ডার বিষয়। তেমনই অংশ পায় ভারতবর্ষ সত্যজিৎ রায় থেকে লর্ডসের মাঠে ভারতীয় ক্রিকেটে বাংলার মহারাজ সৌরভ গাঙ্গুলীর অভিব্যক্তি। কর্মবিমুখতা, ক্রমে অসন্তোষ—শিল্প ও বাণিজ্যে সঙ্কট বাড়িয়েছে। না পাওয়ার বেদনা কমুনিজমের প্রসার ঘটিয়েছে। মূর্তি বসেছে লেনিন, মার্কস, এঙ্গেলস, হো-চি মিনের কলকাতার রাজপথে। পথঘাটও নামান্তরিত হয়েছে।

ব্রিটিশরাজকে মুছে দিয়ে কম্যুনিষ্ট তাত্ত্বিকদের নামে। আবার অভাব-যাতনা হেলায় ভুলে বাঁপিয়েও পড়ে পরহিতার্থে কলকাতা। সমস্যা আছে যানবাহনের, রাস্তাঘাটের কলকাতায়। আকাশ ঢাকা কলকাতার বাতাসও যেন দূষিত। ফুটপাথ—সেও যেন লুকোচুরি খেলে হকার আর পুলিশে। গাড়িও থমকে দাঁড়ায় ফাঁক-ফোকর পেতে। মডার্ন সিটিতে ৩০% হলেও কলকাতা শহরে পথের বহুর ৬% মাত্র। তেমনই আদর্শনগরীতে প্রতি বর্গকিমিতে গাছের সংখ্যা ১০০ হলেও কলকাতায় সংখ্যা মাত্র ২১। পূর্ব এলাকা ১০৪ বর্গকিমি। জনসংখ্যা ১০.৮ মিলিয়ন। মাথা পিছু খোলা জায়গা—কলকাতায় ২০ বর্গফুট, লন্ডনে ২৫০ বর্গফুট, মস্কোয় ৪৫০ বর্গ ফুট। হোড শেডিং অর্থাৎ পাওয়ার কাট আজ কিছুটা প্রশমিত হলেও সেও যেন আর এক বিভ্রমের কলকাতার।

তবুও, কলকাতা অদর্শনে ভারতদর্শন অসম্পূর্ণ থেকে যায়। আর, পর্যটক আকর্ষণও কলকাতা শহরের অচিন্তনীয়, আয়োজনের ক্রটি নেই তার। ভারত রাষ্ট্রের বিভিন্ন প্রান্তের সঙ্গে সরাসরি সংযোগ রয়েছে কলকাতার। সারা উত্তর-পূর্ব ভারতের তারগন্ধার কলকাতা।



অবস্থান মাহাত্ম্যে কলকাতা বিমানবন্দর দমদম বিমানবন্দর হলেও আবার নামান্তর ঘটে সুভাষচন্দ্র বসু বিমানবন্দর হয়েছে। ১৪টি বিদেশী বিমান সংস্থা কলকাতা থেকে পাড়ি দিচ্ছে বিশ্বের দিগ্বিদিকে। আন্তর্জাতিক ও অভ্যন্তরীণ দুইয়েরই টারমিনাল একই কমপ্লেক্সের ভিন্ন চত্বরে। ব্যাঙ্ক, পোস্ট অফিস, হোটেল-রেস্তোরাঁ, কফি বার, ট্যাক্সি স্টপ, যাত্রীসেবার পাণ্ডাই ব্যস্ত। IAC-র বিমান, সহযোগী যানবাহন ও নানান প্রাইভেট সংস্থার বিমান সংযোগ গড়েছে কলকাতার সাথে ভারতের নানান শহরের। বিমান যাচ্ছে ১৩৪৫৬ দিন ৯-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ২৭৭০/২১২৫ টাকায় ১১ ঘণ্টায় নেপালের রাজধানী কাঠমান্ডু। ফেরে ১৩৪৫৬ দিন ১১-৩৫এ। আর রয়্যাল নেপাল এয়ার যাচ্ছে বাকি দিনগুলিতে কলকাতা থেকে কাঠমান্ডু। ঢাকা যাচ্ছে IAC-র বিমান ১৩৪৫৬ দিন ১৩-৩০এ ছেড়ে ১-১০ মিনিটে। চট্টগ্রাম যাচ্ছে প্রতি সোমবার ১১-২০এ ছেড়ে ১-২০ মিনিটে। ফেরেও এরা একই দিনগুলিতে। বাংলাদেশ বিমানও যাচ্ছে কলকাতা থেকে ঢাকায়। আর সিঙ্গাপুর যাচ্ছে ৬ ঘণ্টায় ২৪৬ দিন, বেঙ্গলুর যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় ৩৭ দিন, ব্যাঙ্কক যাচ্ছে ৪ ঘণ্টায় ২৪৫৭ দিন IAC-র উড়ান; ফেরেও একই দিনগুলিতে কলকাতায়।

পোর্ট ব্লয়ার যাচ্ছে ১৩৫ দিন ৫-৩০এ কলকাতা ছেড়ে ৭-৩০এ; ফেরে ২৪৬ দিন ৮-১৫য়।

আগরতলা যাচ্ছে ৫০ মিনিটে ১৩৬ দিন ৬-২০এ, ২৭ দিন ৯-২০এ, ২৩৪৫৬৭ দিন ১৩-০০টায়; ফেরে ১৪৭ দিন ৯-৩০, ২৭ দিন ১১-০০, ২৩৪৫৬৭ দিন ১৪-৩০এ আগরতলা থেকে। ভাড়া ১৮৯৫/১৩০এ। ১৩৫ দিন ৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ৭-২০এ শিলচর পৌঁছে ইক্ষল যাচ্ছে ৮-২৫এ, ৪৬ দিন ৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ৭-২০এ শিলচর যাচ্ছে ৮-১৫য় ফেরে ৭-২০এ শিলচর পৌঁছে জোড়হাট যাচ্ছে ৮-২৫এ; ফেরে যথাক্রমে ১০-০০/৭-৫০/৭-৫০এ। ডিমাপুর যাচ্ছে ১৩৫ দিন; ইক্ষল যাচ্ছে শিলচর হয়ে ১৩৫ দিন ২৪৬৭ দিন সরাসরি IAC-র

উড়ান; ফেরেও এরা একই দিনগুলিতে কলকাতায়। ১২.৩.৫৬ দিন ১০-০০টায়, ৪.৬ দিন ১০-০০টায়, ১.৪.৭ দিন ৬-২০এ কলকাতা ছেড়ে ১-১০ ঘট্টায় গুয়াহাটি যাচ্ছে IAC-র উড়ান। ১.২.৩.৪.৫.৬ দিন ৬-৪৫ কলকাতা ছেড়ে ৮-৩০এ আইজল পৌঁছে ১০-০০টায় গুয়াহাটি যাচ্ছে বায়ুদূতের বিমান। ফেরে গুয়াহাটি থেকে ১২.৩.৫৬ দিন ১২-০০, ৪.৭ দিন ১২-০০, ১.৩.৬ দিন ৯-২০, ৪.৭ দিন ১২-০০, ১.৩.৬ দিন ৯-২০, ৪.৭ দিন ১৬-০০টায় ছেড়ে সরাসরি; ১.৩ দিন ১৩-২০, ২.৪.৫ দিন ১২-৪০, শনিবার ১০-২০এ গুয়াহাটি ছেড়ে ১-১০ ঘট্টায় আইজল পৌঁছে কলকাতায় আসছে বায়ুদূত। ১.৩.৭ দিন ১১-৪৫এ কলকাতা ছেড়ে ১২-৩০এ তেজপুর গিয়ে ১৪-০০টায় ডিমাপুর পৌঁছে ১৪-৩০এ ডিমাপুর ছেড়ে ১৫-৪০এ সরাসরি কলকাতায়। বাগডোগরা যাচ্ছে ১.২.৭ দিন ১২-০০টায় বৃহস্পতিবার ১০-০০, শনিবার ১১-০০টায় ছেড়ে ৫৫ মিনিটে; ফেরে যথাক্রমে ১৪-০৫/১১-২৫/১২-৩৫এ।

১.৩.৬ দিন ১৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ভুবনেশ্বর ১৭-১০, নাগপুর ১৯-১০, হায়দ্রাবাদ ২০-৫৫য় পৌঁছে কলকাতায় ফেরে একই দিনগুলিতে হায়দ্রাবাদ ১৭-১৫, নাগপুর ১৮-৫৫, ভুবনেশ্বর ২০-৫৫এ ছেড়ে ২১-৪৫এ। ২.৪ দিন ১৭-৪০এ কলকাতা ছেড়ে ১৮-৩৫এ ভুবনেশ্বর পৌঁছে ফেরে ১৯-০৫এ ভুবনেশ্বর ছেড়ে ২০-০০টায় কলকাতায়। ২.৪ দিন ১৭-০০টায় কলকাতা ছেড়ে হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ১৯-০৫এ সরাসরি; ফেরে ১৯-৫০এ হায়দ্রাবাদ ছেড়ে ২১-৫৫য় কলকাতায়। চেন্নাই যাচ্ছে প্রতিদিন ১৭-২০এ ছেড়ে ১৯-২৫এ সরাসরি; ফেরে চেন্নাই থেকে ২০-১৫য়। ২.৪.৬ দিন ১১-৩০এ ছেড়ে বিশাখাপতনম ১২-৫০এ পৌঁছে চেন্নাই যাচ্ছে ১৪-২৫এ; ফেরে ১১-০০টায় চেন্নাই ছেড়ে একইভাবে। প্রতিদিন ৬-০০টায় কলকাতা ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৮-২৫এ সরাসরি; ফেরে ৯-১৫য় ব্যাঙ্গালোর থেকে।

মুম্বাই যাচ্ছে প্রতিদিন ৭-৩০ ও ১৯-৪৫এ কলকাতা ছেড়ে যথাক্রমে ১০-১০/২২-২৫এ। মুম্বাই ছেড়ে কলকাতায় আসছে ৬-০০ ও ১৬-৩০এ। ১.৩.৫ দিন ১৬-০০টায় ছেড়ে ১৮-২০এ জয়পুর, আমেদাবাদ ২০-০০টায় পৌঁছে মুম্বাই যাচ্ছে ২১-৪০এ; ফেরে ১৬-২০এ মুম্বাই ছেড়ে আমেদাবাদ ১৭-২০, জয়পুর ১৯-১০এ পৌঁছে ২২-০৫এ কলকাতায়।

প্রতিদিন ৭-০০, ১৭-১৫, ৪.৭ দিন ১৮-৩০এ কলকাতা ছেড়ে দিল্লী যাচ্ছে ৯-০৫/১৯-২০/২০-৩৫এ সরাসরি। ১.৩.৫ দিন ১৭-৩০এ ছেড়ে পাটনা ১৮-২৫, লক্ষ্ণৌ ১৯-৫০এ পৌঁছে দিল্লী যাচ্ছে ২১-১৫য়। দিল্লী থেকে কলকাতায় আসছে প্রতিদিন ৭-০০, ১৮-৪৫, ১.৩.৫ দিন ১৭-৩০এ ছেড়ে লক্ষ্ণৌ ১৮-২৫, পাটনা ১৯-৫০এ পৌঁছে ২১-১৫য়। ২.৪.৬ দিন ৬-১০এ কলকাতা ছেড়ে ৭-০৫এ রাঁচি পৌঁছে পাটনা যাচ্ছে ৮-৩০এ; ফেরে ৯-১০এ পাটনা ছেড়ে ১০-০৫এ সরাসরি কলকাতায়। এছাড়া বিমান যাচ্ছে ২.৪.৬ দিন আমেদাবাদ; ৪.৭ দিন দিল্লী; ১.৩.৫ দিন ডিব্রুগড়; ১.২.৫ দিন জোড়হাট; ফেরেও এরা একই দিনগুলিতে কলকাতায়।

প্রাইভেট বিমান সংস্থা : NEPC Airlines @ 4755660, Modiluft @ 299864, Jet Airways @ 290247, Sahara India Airlines @ 2427686, East West Air Service @ 3755167/299257, Damania Airways @ 4757090, City Link—এদের বিমানও কলকাতা থেকে মুম্বাই, দিল্লী, চেন্নাই, ব্যাঙ্গালোর, গোয়া, জয়পুর, আমেদাবাদ, জম্মু, বারাণসী, ইন্দোর,

পুনে, হায়দ্রাবাদ, আগরতলা, গুয়াহাটি, জোড়হাট ছাড়াও ভারতের নানান শহরের সংযোগ গড়েছে। ভাড়াতেও কিছুটা সাশ্রয় মেলে প্রাইভেট বিমানে। আর গুয়াহাটি থেকে বিমান যাচ্ছে উত্তর-পূর্ব ভারতের জোড়হাট, লীলাবাড়ি, তেজপুর, ডিমাপুর, ইম্ফল, ডিব্রুগড় ছাড়াও নানান।

শহর থেকে ১৩ কিমি দূরে পূর্বাঞ্চল বসু বিমানবন্দর। বাস যাচ্ছে বিমানযাত্রী নিয়ে IAC-র সিটি অফিসে। CSTC-র S15, S10, L30B প্রাইভেট বাস 30B, 45, 45A ও মিনিবাস সংযোগ গড়েছে বিমানবন্দর থেকে শহরের। প্রিপেড ও মিটারে টাক্সিও মেলে যাতায়াতে।



১৮৫৪-র ১৫ই আগস্ট হাওড়া থেকে প্রথম ট্রেন চলে হুগলি পর্যন্ত। সেই থেকে কলকাতার রেল সংযোগ গড়ে উঠেছে ভারতের নানান প্রান্তের সঙ্গে। ইস্টার্ন ও সাউথ ইস্টার্ন রেলওয়ে দুইয়েরই সদর দপ্তর বসেছে কলকাতায়। পাড়িও দিচ্ছে শিয়ালদহ থেকে ইস্টার্ন ও হাওড়া থেকে উত্তর রেলের ক্রান্তগামী সুপার ফাস্ট এক্স, শীতাতপ, মেল, এক্স ও সাধারণ যাত্রী গাড়ি (বিস্তারিত রেল পরিষেবা দেখুন)। আসছেও এরা যাত্রী নিয়ে ভারতের নানান প্রান্ত থেকে কলকাতার দুই প্রবেশ তোরণ শিয়ালদহ ও গঙ্গার পশ্চিম পাড়ে হাওড়া স্টেশনে। হাওড়া স্টেশন লাগোয়া রবীন্দ্র সেতু ও ২ কিমি দক্ষিণে বিদ্যাসাগর সেতু সংযোগ গড়েছে হাওড়া ও কলকাতার। টাক্সি, বাস ও মিনিবাস যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে। জলযানও যাচ্ছে হাওড়া স্টেশন থেকে গঙ্গার পূবে কলকাতার উত্তর ও দক্ষিণে।

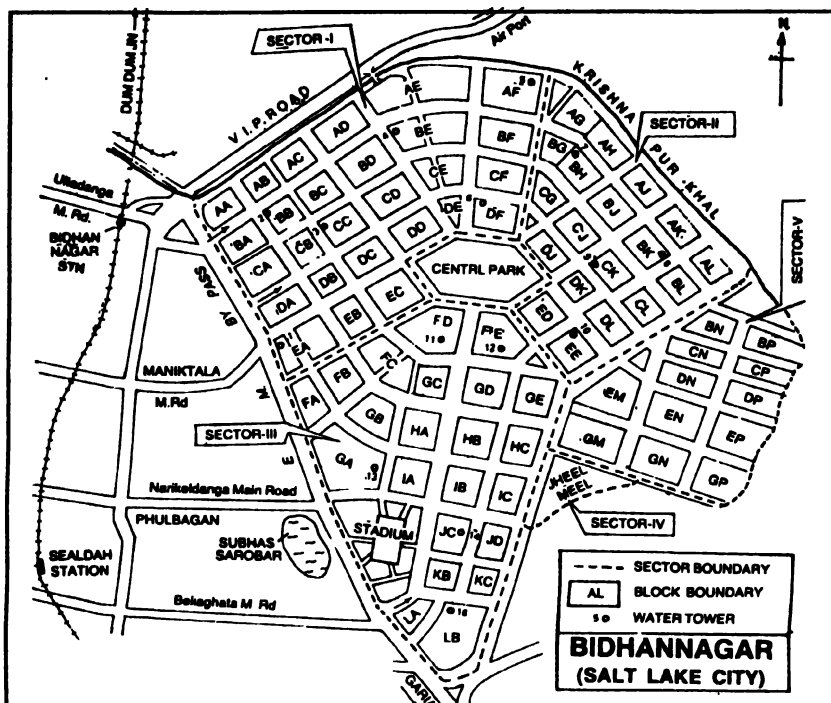


রাষ্ট্রা জুড়ে বাস যাচ্ছে CSTC (কলকাতা স্টেট ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন), CTC (কলকাতা ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন), ভূতল পরিবহণ (Surface Transport), SBSTC (সাউথ বেঙ্গল স্টেট ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন)-এর কলকাতার বাবুঘাট ও শহীদ মিনারের পাদদেশ থেকে। এমনকি প্রতিবেশী রাজ্যগুলির সঙ্গেও বাস সংযোগ গড়েছে কলকাতার। পাটনা, গয়া, ঘাটশিলা, টাটা, রাঁচি, ধানবাদ, জমিদী, দেওঘর, দুমকা, ছাপড়া, হাজারিবাগ, রাজগীর, গোপালপুর-অন-সী, পুরী, বারিগাঙ্গা, কটক, বারবিল, কেওন-ঝাড়ের সঙ্গেও বাসপথে কলকাতা যুক্ত। বাস যাচ্ছে বিহার, ওড়িশা ও পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পরিবহণের। বাস ছাড়াই ময়দানের উত্তর প্রান্তে শহীদ মিনারের পাদদেশে CSTC-র গুমটি থেকে 'অগ্রিম টিকিট'ও মেলে বিশেষ বিশেষ বাসে। তবে, চূড়ান্ত অব্যবস্থা এদের বুকিং বুথে। দিনের ওরুলতে সে যেন আরও পীড়াদায়ক হয়ে পড়ে। সর্দীর্ণ প্রবেশ পথ, সারি চলে একে থেকে টিকিট কাউন্টারে। দীর্ঘ প্রতীক্ষায় টিকিট মিললেও নিশ্চয়ই বাস মেলা সেও দূর। পকেটমারদের মক্কাগরীও যেন এই বাস গুমটি।

এছাড়া, উত্তরবঙ্গ রাষ্ট্রীয় পরিবহণের বাসও যাচ্ছে এসম্প্রান্ডে বাস গুমটি ও উন্টোডাঙা ভি আই পি রোড বাস টার্মিনাল থেকে মালদহ, রায়গঞ্জ, বালুরঘাট, হিজলি, কোচবিহার, জলপাইগুড়ি, শিলিগুড়িতে। এমনকি সরাসরি দার্জিলিং-এরও টিকিট মেলে NBSTC-র বাসে। ৮ দিন আগে থেকে অগ্রিম বুকিং উন্টোডাঙায় VIP Rd Terminal-এ। CSTC ও SBSTC-র রক্টেও এক্স বাস যাচ্ছে ময়দান থেকে শিলিগুড়ি। বাস যাচ্ছে ভূটানের ফুটপাশিঙ, সিকিমের গ্যাংটক, নেপালের জনকপুর ও কলকাতা থেকে। আর যাচ্ছে নানান প্রাইভেট সংস্থার শীতাতপ, Video, ডিলাক্স, সুপার

কনকাতা থেকে ভারতীয় রেলের পরিষেবা

| ট্রেনের নাম | সার্ভিস | ট্রেনের নম্বর | পটিকা | ভাঙ্গা | উৎস সময় | পটিকা সেইদিন |
|----------------------------|-------------|------------------|-----------------------------|---|-------------|-----------------|
| রামপুরহাট এক্স | Daily | 3017 | রামপুরহাট | বর্ধমান/বোলপুর via II B Chord | ৬-০০ | ১১-১৫ |
| সত্যাব্দী এক্স | 1 2 3 4 5 6 | 2019 | বোকাঝা স্টিল সিটি | আসানসোল/ধানবাড় | ৬-০৫ | ১১-১৫ |
| ব্র্যাক ভাষমন্ড | D | 3317 | ধানবাড় | আসানসোল/বাকাব | ৬-১৫ | ১১-০০ |
| *আজিমগঞ্জ প্যা | D | 333 | আজিমগঞ্জ | ব্যাঙেল/কাটোয়া via BAK Loop | ৬-৩৫ | ১৩-৫০ |
| *ফস্ট প্যাসেঞ্জার | D | 311 | মজুমদারপুর্ব | নৈয়াটি/আসানসোল/মধুপুর্ব | ৭-২৫ | ২৩-৫৫ |
| *ফস্ট প্যাসেঞ্জার | D | 329 | খারভাঙ্গা | বোলপুর/সাহেবগঞ্জ লুপ | ৭-১৫ | ১৩-৫৫ |
| *কাজানজকুয়া এক্স | D | 5657 | ওয়াহাটি | সাহেবগঞ্জ লুপ/বোলপুর/মালদহ | ৬-২৫ | ১৮-১০ |
| কামাকপ এক্স | D | 5659 | ওয়াহাটি | বাঙে ন/আজিমগঞ্জ/মালদহ/এন জে পি | ১৫-২৫ | ১৬-০০ |
| সবাইয়াট এক্স | 2 3 6 | 3045 | ওয়াহাটি | বর্ধমান/মালদহ/এন জে পি | ২২-০০ | ১৬-৫৫ |
| *গাজিলিং মেল | D | 3143 | নিউ জলপাইগুড়ি | বর্ধমান/বোলপুর/মালদহ | ১২-১৫ | ৮-১৫ |
| কোচি-ওয়াহাটি এক্স | 2 | 5623 | ওয়াহাটি | মালদহ/এন জে পি | ১৪-০৫ | ১২-১৫ |
| ডিক্রডনকপুর্ব-ওয়াহাটি | 4 | 6321 | ওয়াহাটি | মালদহ/এন জে পি | ১৪-০৫ | ১২-১৫ |
| ঝাংলাগো-ওয়াহাটি | 6 7 | 5625 | ওয়াহাটি | মালদহ/এন জে পি | ১৪-০৫ | ১২-১৫ |
| *তিজা-তোবাঙ্গা এক্স | D | 3141 | হলদিবাড়ি/অলিপুরদুয়ার | BAK Loop/মালদহ/এন জে পি | ১৬-৪০ | ৭-০০ |
| মালদহ ফস্ট প্যা | D | 347 | মালদহ | ব্যাঙেল/কাটোয়া/আজিমগঞ্জ/ঝারকা | ২১-১০ | ৭-৫৫ |
| *গৌড় এক্স | D | 3153 | মালদহ | ব্যাঙেল/বোলপুর/নিউ মালদহ | ২২-০০ | ৬-০০ |
| পূর্বা এক্স | 3 4 7 | 2381 | নিউ দিল্লী | ধানবাড়/গয়া/ঝাংলাগো/এলাহাবাদ | ২-১৫ | ৮-৫৫ |
| পূর্বা এক্স | 1 2 5 6 | 2303 | নিউ দিল্লী | পাটনা/মোগলসরাই/এলাহাবাদ | ২-১৫ | ৮-৫৫ |
| গাওখানী এক্স | 3 7 | 2305 | নিউ দিল্লী | মধুপুর্ব/পাটনা/এলাহাবাদ | ১০-৪৫ | ১০-০০ |
| বাজখানী এক্স | 1 2 4 5 6 | 2301 | নিউ দিল্লী | গয়া/মোগলসরাই/এলাহাবাদ | ১৭-০০ | ২-৪০ |
| বাজখানী এক্স | 3 7 | 2421 | ভুবনেশ্বর-হাওড়া-নিউ দিল্লী | ভুবনেশ্বর-হাওড়া/মুন্সেবাই | ১৭-০০ | ২-৪০ |
| কালকা মেল | D | 2311 | দিল্লী জং-কালকা | মুর্গাপুর/গয়া/মোগলসরাই/এলাহাবাদ | ১০-১৫ | ৫-০০ |
| জলতা এক্স | D | 3039 | দিল্লী জং | মধুপুর্ব/পাটনা/এলাহাবাদ/ভুগুলা | ২১-০০ | ৮-৫৫ |
| উদ্যান আভা ভূমণ | D | 3007 | ঐগমানগব | মধুপুর্ব/পাটনা/এলাহাবাদ/আগ্রা ফাস্ট/মধুবা/নতুন দিল্লী | ৮-৫৫ | ৮-৫৫ |
| *লাল কেশা এক্স | D | 3111 | দিল্লী জং | পাটনা/এলাহাবাদ/কানপুর | ২০-১৫ | ৮-৫৫ |
| লায়নিকেন্স এক্স | D | 3015 | বোলপুর | বর্ধমান/ভূমকবা | ৮-৫৫ | ১২-২৫ |
| *জম্মু ভাওয়াই এক্স | D | 3151 | জম্মু | গয়া/ঝাংলাগো/লক্ষ্মী | ১১-৫৫ | ৮-২০ |
| হিমালি এক্স | 2 5 6 | 3073 | জম্মু | পাটনা/ঝাংলাগো/লক্ষ্মী/মোহালাবাদ | ২০-০০ | ১২-৫৫ |
| ফাস্ট প্যাসেঞ্জার | D | 327 | দানাপুর্ব | বোলপুর/সাহেবগঞ্জ/ভাগলপুর | ১১-১০ | ৮-৪০ |
| *প্যাসেঞ্জার | D | 337 | বামপুর্বহাট | বোলপুর/সাইখিয়া | ১১-০০ | ১২-৪০ |
| পূর্বোদন এক্স | 1 3 5 7 | 5047 | গোবকপুর্ব | মুর্গাপুর্ব/জলিঙ/বরাহুনি | ১৬-০০ | ৬-২৫ |
| *গঙ্গা সাগর এক্স | 2 4 6 | 5285 | খারভাঙ্গা | আসানসোল/জলিঙ/বরাহুনি | ১২-৪০ | ৬-২৫ |
| প্যাসেঞ্জার | D | 345 | বাবহাঙ্গোয়া | কাটোয়া/আজিমগঞ্জ via BAK Loop | ১০-৫৫ | ২৩-৫০ |
| সজিগুজ এক্স | D | 1448 | জরকপুর্ব | ধানবাড়/জলিঙগঞ্জ/আপান/সিংহবালি | ১৪-৫০ | ১৩-০০ |
| চম্বল এক্স | 5 | 1181 | আগ্রা ফাস্ট | গয়া/এলাহাবাদ/কাঁসী/গোয়ালিয়র | ১৪-১৫ | ১৩-৫৫ |
| চম্বল এক্স | 1 2 4 | 1159 | গোয়ালিয়র | গয়া/এলাহাবাদ/কাঁসী/মুর্গাপুর্ব/কাঁসী | ১৪-১৫ | ১৮-০০ |
| শিপ্রা এক্স | 3 6 7 | 9306 | ইন্দোর | ধানবাড়/গয়া/এলাহাবাদ/সাতনা/ভূপাল/উজ্জয়িন | ১৫-১৫ | ৪-০০ |
| প্যাসেঞ্জার | D | 331 | আজিমগঞ্জ | ব্যাঙেল/কালনা/কাটোয়া/সালাব | ১৫-৪২ | ৮-১০ |
| মিথিলা এক্স | D | 3021 | রস্তৌল | মধুপুর্ব/কিউল/বরাহুনি/সমারিপুর | ১৬-০০ | ৮-৫০ |
| অমৃতসর মেল | D | 3005 | অমৃতসর | পাটনা/ঝাংলাগো/লক্ষ্মী/মোহালাবাদ | ১২-২০ | ৮-৫৫ |
| অমৃতসর এক্স | D | 3049 | অমৃতসর | পাটনা/লক্ষ্মী/মোহালাবাদ | ১০-১০ | ২৩-৫৫ |
| বিখ্যাত-বীট ফস্ট প্যা | D | 315 | বামপুর্বহাট | বর্ধমান/বোলপুর | ১৬-৫৫ | ২১-৫৫ |
| মধুবা-বীট ফস্ট প্যা | D | 55 | রামপুরহাট | অঙাল/ভূবনাঙ্গসোল/সীতাঝামপুর | ১৬-৫৫ | ২২-২০ |
| কোল ফিস্ট এক্স | D | 3029 | ধানবাড় | মুর্গাপুর্ব/আসানসোল/সীতাঝামপুর | ১৭-১১ | ২২-২০ |
| আসানসোল এক্স | D | 3035 | আসানসোল | বর্ধমান/মুর্গাপুর্ব/অঙাল | ১৮-২০ | ২১-৫৫ |
| মুর্গাই মেল | D | 3003 | মুর্গাই | গয়া/এলাহাবাদ/সাতনা/হিটারসি | ২০-০০ | ১১-৫৫ |
| ভুন এক্স | D | 3009 | সেরদুন | ধানবাড়/গয়া/ঝাংলাগো/লক্ষ্মী | ২০-১৫ | ৭-১৫ |
| দানাপুর্ব এক্স | D | 3231 | দানাপুর্ব | মধুপুর্ব/মোকামা/বর্ধমিরপুর/পাটনা | ২১-০৫ | ৮-১০ |
| *মোগলসরাই এক্স | D | 3133 | মোগলসরাই | বোলপুর/ঝাংলাগো/সাহেবগঞ্জ | ২২-৫৫ | ১৮-২৫ |
| কাঠগোলাম এক্স | D | 3019 | কাঠগোলাম | মধুপুর্ব/কিউল/বরাহুনি/গোবকপুর্ব/লক্ষ্মী/বেরিলী | ২১-৪৫ | ৮-৫৫ |
| ঝামালপুর এক্স | D | 3071 | ঝামালপুর | বোলপুর/সাহেবগঞ্জ/ভাগলপুর | ২২-৫০ | ১৮-০০ |
| মোকামা প্যা | D | 319 | মোকামা জং | আসানসোল/মধুপুর্ব/কিউল | ২২-৪০ | ১০-৫৫ |
| গোবকপুর্ব সাপ্তাহিক এক্স | 4 | 5049 | গোবকপুর্ব | মুর্গাপুর্ব/ঝাংলাগো/পাটনা/ঝাংলাগো | ২০-০০ | ২১-২৫ |
| মোহনপুর এক্স | D | 2307 | মোহনপুর | পাটনা/মোগলসরাই/সতনা/মোহনপুর/সেরদুন | ২৩-৫০ | ১০-০০ |
| জম্বক প্যা | D | 467 | জম্বক | বকুলপুর/ঝাংলাগো | ২৩-৫৫ | ২৩-৫৫ |
| পুন্ডলিয়া এক্স | D | 8017 | পুন্ডলিয়া | বকুলপুর/বিক্রপুর/ঝাংলাগো/আগ্রা | ১৬-৪৫ | ২৩-৫৫ |
| চম্বলপুর/বোকাঝা স্টিল সিটি | D | 315 | পুন্ডলিয়া | আগ্রা/পুন্ডলিয়া | ২২-১৫ | |



| | | | | | | |
|------------------------|-----|------|---------------------|---|-------|-------|
| লাতীয়া এন্ড | | 2021 | বাউবাকেনা | খড়াপুৰ/টিটা/চক্ৰবৰ্ত্তপুৰ | ৬-০০ | ১২-২৫ |
| মৌনী এন্ড | D | 2821 | ভুবনেশ্বৰ | বালাসোৰ/ভক্তৰ/কটক | ৬-১৫ | ১৩-৫৫ |
| ইশান্দ্ৰ এন্ড | D | 8011 | সমলপুর | গাড়্যদ্রাম/ঘাটশিলা/টিটা/ বাউবাকেনা | ৬-০০ | ১৮-১০ |
| কাৰলা এন্ড | D | 8030 | কাৰলা (মুম্বাই) | ঘাটশিলা/বাতিসাৰ/নাগপুৰ/জলপাইগাঁও | ১০-৪৫ | ৬-০০ |
| মুম্বাই সেল | D | 8002 | মুম্বাই | বিলাসপুৰ/নাগপুৰ/জলপাইগাঁও/মানমাধ | ১১-২০ | ৭-০০ |
| গীতাঞ্জলী এন্ড | D | 2860 | মুম্বাই | টিটা/নাগপুৰ/নাগপুৰ/ভূমুখাল | ১২-২৫ | ২১-৪০ |
| আজানা হিম্ব এন্ড | 7 | 1030 | পুনে | টিটা/বারপুৰ/নাগপুৰ/মানমাধ | ১৪-৫৫ | ৪-৫০ |
| করমন্তল এন্ড | D | 2841 | চেহাই সেন্ট্রাল | ভুবনেশ্বৰ/বেৰহামপুৰ/কোলাপাতনম/বিঃএংওয়াডা | ১৪-০০ | ১৭-৫০ |
| চেহাই সেল | D | 6003 | চেহাই সেন্ট্রাল | ভুবনেশ্বৰ/বিজয়গড়া/ভূমুখ | ২০-১৫ | ৪-৫৫ |
| ব্যাসলোর এন্ড | 17 | 5626 | ওয়ার্ডাটি-ব্যাসলোৰ | ভুবনেশ্বৰ/চেহাই/জলাবণ্টেট | ৬-৫০ | ২০-০০ |
| কেটি এন্ড | 56 | 5624 | কেটি | ভুবনেশ্বৰ/চেহাই/সোনম/কোয়েয়াটুৰ | ২২-৩৫ | ১৭-০০ |
| ডিভিন্দৰ পুৰম এন্ড | 2.3 | 6324 | ডিভিন্দৰ পুৰম | চেহাই/সোনম/কোয়েয়াটুৰ/পালপাট | ২২-৩৫ | ২০-৫৫ |
| কলকত্তা এন্ড | D | 2703 | সেক্সট্রাবাদ | খড়াপুৰ/ভুবনেশ্বৰ/বেহেমপুৰ/বিশাখাপতনম/ বিজয়গড়া/ভূমুখ | ৭-৫৫ | ১১-০০ |
| ইক ফোর্টে এন্ড | D | 8045 | হায়দ্রাবাদ | ভুবনেশ্বৰ/বিশাখাপতনম/সেক্সট্রাবাদ | ১০-১৫ | ১৯-০৫ |
| ডিপ্পতি এন্ড | D | 8079 | ডিপ্পতি | বালাসোৰ/খুৰ্ণি বোড/বিজয়গড়া/ভূমুখ/কৌণ্টা | ২৬-০০ | ১৫-২৫ |
| পুৰী এন্ড | D | 8007 | পুৰী | খড়াপুৰ/বালাসোৰ/কটক/খুৰ্ণি বোড | ১২-০০ | ৮-২০ |
| ঔষধপাৰা এন্ড | D | 8409 | পুৰী | খড়াপুৰ/ঝাজপুৰ-কেনেলড/ভুবনেশ্বৰ/খুৰ্ণি বোড | ২২-০০ | ৬-০৫ |
| পুৰী প্যাসেঞ্জার | D | 201 | পুৰী | খড়াপুৰ/কটক/ভুবনেশ্বৰ | ২০-১৫ | ৬-০০ |
| ফিল এন্ড | D | 8013 | ঢটিনগৰ | খড়াপুৰ/ঝাজপুৰ/ঘাটশিলা | ১৭-০০ | ২১-৪৫ |
| হাতিয়া এন্ড | D | 8015 | হাতিয়া | খড়াপুৰ/ঘাটশিলা/টিটা/রাঁঠি | ২১-৩৫ | ৮-১০ |
| সমলপুৰ/স্নাগগাড়া এন্ড | D | 8005 | সমলপুৰ | ঝাজপুৰ/টিটা/বানপুৰগা | ২০-৪০ | ১৭-০০ |
| আমেদাবাদ এন্ড | D | 8034 | আমেদাবাদ | টিটা/নাগপুৰ/জলপাইগাঁও/মুম্বাই/ভাসোদৰা | ২০-৩০ | ১৫-২৫ |
| কলিকাতা এন্ড | D | 5663 | কলিকাতা | কটিকা/আমিৰগা/আলাহাবাদ | ২০-০০ | ৭-৫৫ |
| জাৰ্মানী এন্ড | D | 3103 | লালগোলা | আনাঘাট/কুনগুৰ/বহন্নপুৰ/কিৰীগঞ্জ | ১৮-২০ | ২০-২৫ |

লেখকঃ নিৰ্মিত দ্ৰষ্টা ট্ৰেন হাওড়া ঃ শিয়ালপহৰ। * চিহ্নিত ট্ৰেনগুলি শিয়ালপহৰ থেকে অন্যান্য ট্ৰেনগুলি হাওড়া থেকে ছাড়ে। এছাড়াও প্রস্তাব থেকে গভীর রাতে লোকাল ট্ৰেন থাকে শিয়ালপহৰ ও হাওড়া থেকে।

ডিলাস নানানধর্মী বাস রাজ্য তথা প্রতিবেশী রাজ্যের নিবিলিকে কলকাতার শহীদ মিনার, বাবুঘাট ও হাওড়া স্টেশন থেকে।

সারা শহর জুড়ে মাঝড়সার জালের মতো CSTC-র S অর্থাৎ Special, L অর্থাৎ Limited Stop Service, CTC ও CSTC/ SBSTC-র মিডি ও সাধারণ বাসের সঙ্গে সহস্রাধিক প্রাইভেট বাস যাত্রী নিয়ে ভোর থেকে গভীর রাত পর্যন্ত চলছে। আর চলছে মিনি বাস, অটো ও ট্যাক্সি; শহর ছাড়িয়ে গ্রামে-গঞ্জে ছুটে চলেছে এরা। তবুও যেন কিছুটা বিব্রাতি আছে কলকাতার ট্যাক্সিতে। গন্তব্য অগচ্ছন্দে চলতে অসম্মতি জানায় এরা। তবে রেল স্টেশন ও বিমানবন্দরে কিউ প্রথায়ে যেতে বাধ্য হয় ট্যাক্সি। সেক্ষেত্রে মিটার ডাউন ৫ টাকায়, পেয়েন্ট প্রতি ৫০ পরসায় ১.০০ হারে; অর্থাৎ ডাবল। অটো রিকশাও একইভাবে মিটারে চলতে অস্বীকৃত হয়ে পেয়েন্ট-টু-পেয়েন্ট অর্থাৎ শেয়ার প্রথায় যাত্রী নিয়ে চলে। এছাড়াও শহরে চলছে বৈদ্যুতিক ট্রাম। ভাবতের অন্যরো আজ আর ট্রামের চল নেই। পর্যটক স্পেশাল ডিলাস ট্রামও চলছে রাজপথে পাঁতা লাইন ধরে। আর চলছে মানুষের (অমানবিক) টানা রিকশা। প্রচলন যদিও ১৮ শতকে চীন থেকে আসা শরণার্থীদের জীবিকার অন্বেষণে—তবে আজ চীনা চালক বদল হলেও হাজার ত্রিশ রিকশা চলছে শহরে। ১৯৮৪-র ২৪শে অক্টোবর শুরু হয়ে ভারতের একমাত্র শহর কলকাতার মাটির তলা দিয়ে ডিউব রেল অর্থাৎ মেট্রো রেলও চলছে (সোম থেকে শনিবার ৭-১৫—২১-২০, ববিবার ১৫-০০—২০-৩০) টালিগঞ্জ থেকে দমদম। কলকাতা শ্রমণার্থীদের শ্রমণ তালিকায় আজ মুখ্য স্থান নিয়েছে মেট্রো রেল অর্থাৎ পাতাল শ্রমণ। এছাড়া চলছে ১৯৮৫ থেকে চক্র না হয়েও সার্কুলার রেল উত্তর কলকাতার দমদম জং থেকে উল্টোটাড়ায় রোড বাগবাড়ার হয়ে গঙ্গার তীর ধরে প্রিন্সেপ ঘাট পর্যন্ত। জলপথেও সংযোগ গড়ে উঠেছে শহরতলী থেকে গঙ্গাবন্ধে—লঞ্চ আসছে যাত্রী নিয়ে উত্তর-দক্ষিণ-পশ্চিম থেকে বাবুঘাটে।

কলডাকটেড ট্রার : পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পর্যটন, ৩/২ বি বা দী বাগ থেকে সকাল ৭-৩০এ গিয়ে—ইডেন গার্ডেনস, বেলেড় মঠ, দক্ষিণেশ্বর, আদ্যাপীঠ, ভিক্টোরিয়া মেমোরিয়াল দেখিয়ে ১১-৪০এ ফেরে অটোর সামনে ময়দানে। ১ ঘণ্টার লাঞ্চ ব্রেক। আবার দ্বিতীয় দফায় ১২-৪০এ ছেড়ে—ইন্ডিয়ান মিউজিয়ম, অ্যাকাডেমি অব ফাইন আর্টস, নেহরু চিলড্রেনস মিউজিয়ম, চিড়িয়াখানা, জাতীয় গ্রন্থাগার, গঙ্গা দেখিয়ে এসপ্লানডেড ফেরে ১৭-০০টায়। ভাড়া ৭৫। তেমনই প্রতিদিন ৮-৩০এ গিয়ে ইডেন গার্ডেনস, সেন্ট পলস ক্যাথিড্রাল, জৈন মন্দির, মুব ভারতী, নিকো পার্ক, বিজ্ঞান ইন্সটিটিউট মিউজিয়ম, নেহরু চিলড্রেনস মিউজিয়ম, মেরিন মিউজিয়ম, বটানিক্যাল গার্ডেন, বিদ্যাসাগর সেতু দেখিয়ে এসপ্লানডেড ফেরে ১৭-৪৫এ। এ ট্রারেরও ভাড়া ৭৫। প্রবেশ মূল্য স্বতন্ত্র। তবে সোমবার মিউজিয়ম ও ভিক্টোরিয়া বন্ধ থাকায় নেতাজী ভবন ও কালীঘাট মাতৃমন্দির দেখিয়ে আনে রাজ্য পর্যটন।

টিকি—Tourist Centre, 3/2 Benoy-Badal-Dinesh Bag (Dalhousie Sqr East), Calcutta-1, ৩ 2488271/72 ও হাওড়া রেল স্টেশন বুথে মেলে। শহর বেড়াবার জন্য নানানধর্মী গাড়ীও ভাড়া হয় মেলে এদের কাছে। কমপক্ষে ৩০ যাত্রী হলে ১৭—২০-০০টায় ৬০ টাকায়, আর রবিবার ১৬-৩০—২১-০০টায় লঞ্চ বিহারে স্বাধ্যৈ দেখাতেও যাচ্ছে ডিনার সহ ১৬৫ শিও ১১০; সন্ধ্যাবন যাচ্ছে অক্টোবর থেকে মার্চ মাসে নানান

প্যাকেজে; ১ রাতের অবস্থানে জলখানে গাদিয়ারা-ডায়মন্ড-হারবারও যাচ্ছে পর্যটন দপ্তর।

আর ITDC-র ট্রাভেল ইউনিট—Ashoke Travels & Tours, Embassy, 4 Shakespeare Sarani, Cal-71, ৩ 2421402/2420901 থেকে যাচ্ছে—সোমবার ছাড়া প্রতিদিন সকাল ৮-০০টায় গিয়ে বেলেড় মঠ, দক্ষিণেশ্বর মাতৃমন্দির, জৈন মন্দির, নিকো পার্ক, যাদুঘর, ভিক্টোরিয়া মেমোরিয়াল, চিড়িয়াখানা, জওহর শিওভন দেখিয়ে ১৭-৩০টায় ফেরে। লাঞ্চ ব্রেক নিকো পার্কে। টিকিট ৭৫ করে। তবে নিকো পার্কের প্রবেশ ফ্রি হলেও অন্যান্য স্বতন্ত্র। এদের কাছেও নানানধর্মী টুরিস্ট কার ভাড়া মেলে। বুকিং: ৭-৩০—১৮-০০টায়, ছুটির দিনে ৭-৩০—১৩-০০টায়।

এছাড়া ছুটি ও উৎসবে প্যাকেজ ট্যুরে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে পশ্চিমবঙ্গ তথা ভারত পর্যটন রাজ্য পর্যটন দপ্তর। দীঘায় যাচ্ছে এদের বাস প্রতিদিন ৭-১৫য়, এক পিঠের ভাড়া ৪০। আর যাচ্ছে কলকাতা ও শহরতলি থেকে বেশ কিছু Travel Agent বাংলা তথা ভারত বেড়িয়ে আনতে প্যাকেজ ট্যুরে। বিদেশেও পাড়ি দিচ্ছে এদের নানানজনা।

তেমনই Travel Makers Pvt Ltd, 34-A, Sarat Bose Rd, Cal-20, ৩ 4761951 থেকে শীতাতপ লঞ্চে প্রতি শনি ও রবিবার ১৭-৩০—১৯-০০টায় ৬০ টাকায় গঙ্গা বিহার; প্রতি মঙ্গল ও বৃহস্পতিবার ১৫-৩০এ ১৫০ টাকায় বেলেড় বেড়িয়ে আনে। লঞ্চও ভাড়াই মেলে এদের কাছে। বুকিং: ইডেন গার্ডেনের পিছে আউটরাম জেটি নম্বর ২-এ মেলে।

কিছুকাল আগেও কলকাতায় ছিল ভারত রাষ্ট্রের রাজধানী। বাংলার দেশাত্মবোধে ভীত ব্রিটিশরাজ ১৯১১-র সিদ্ধান্ত মতো পরের বছর কলকাতা থেকে দপ্তর তুলে নতুন করে রাজধানী গড়ে নতুন দিল্লীতে। সেই থেকে কলকাতা কেবল বাংলার রাজধানী। জ্যোতি কমলেও দ্যুতি কমেই শহর কলকাতার। ১৯৪৭এ বাংলা ভাগের পর কলকাতার গুরুত্ব বেড়েছে আরও বেশি।

কলকাতাতেই গবেষণা করে ডা. রোনাল্ড রস ম্যালেরিয়ার প্রতিষেধক আবিষ্কার করে চিকিৎসা বিজ্ঞানে নোবেল পুরস্কার পান ১৯০২ খ্রিস্টাব্দে, সাহিত্যে নোবেল পান রবীন্দ্রনাথ ১৯১৩য়, কাব্যেরী উপভূত্যা ভাঙ্কোরে জন্ম হলেও কলকাতায় কর্ম—স্যার ভেঙ্কটরমন নোবেল পান পদার্থ বিজ্ঞানে ১৯৩০এ, আর ১৯৭৯তে শান্তির জন্য নোবেল গেলেন মাদার টেরিজা—এদের প্রত্যেকেরই কর্মকাণ্ড এই শহর কলকাতার। মাদার টেরিজা তথা কলকাতা মিশনের নিরলস মানবসেবা কলকাতাবাসীর আর এক গর্ব। কলকাতার পাহাড় প্রমাণ সমস্যার প্রতি বিশ্ববাসীর দৃষ্টি আকর্ষণও করেছেন মাদার। ইস্টালি মার্কেটের অদূরে ৫৪-এ, আচার্য জগদীশচন্দ্র বসু রোডে *নির্মল হৃদয়ে কর্মযজ্ঞ* চলছে মিশনের। ১৯১০এ Serbiaতে জন্ম, ১৯২৯এ Irish Order of Loreto Nunsএ যোগদান, দার্জিলিংএ আগমন শিক্ষিকা হয়ে, ১৯৩৭এ কলকাতায় স্থানান্তর মাদার টেরিজার। কলকাতার দারিদ্র্য পীড়া দেখে মাদারকে ১৯৪৮এ

When you are in Calcutta

Calcutta State Transport Corporation (CSTC)
 Local Service Enquiry ☎ 261970/271212
 Long Distance Enquiry CTO ☎ 2481916
 Babughat ☎ 2489996
 South Bengal State Transport Corporation (SBSTC)
 CTO ☎ 5530340/5530440 (10—17-00 hrs)
 Esplanade ☎ 2486259
 Durgapur ☎ 4662
 North Bengal State Transport Corporation (NBSTC)
 Uladanga ☎ 361687/3504766
 Esplanade ☎ 2430736
 Surface Transport
 Esplanade ☎ 4716388/3737
 Sikkim Nationalized Transport (SNT)
 22 Rabindra Sarani ☎ 268593
 Bhutan Govt Bus ☎ 2487734
 Railway Enquiry :
 Howrah Station ☎ 6603535/2581
 Howrah Stn
 New Complex ☎ 6602217
 Scaldah Station ☎ 3503535
 Central Enquiry ☎ 2203535-44
 Reservation Enquiry :
 Eastern Rly ☎ 135/2203496
 SE Rly ☎ 2203500
 Train Service
 Automatic Announcement ☎ 1331
 Information ☎ 131
 Computerised Enquiry ☎ 135
 Reservation position—Hindi ☎ 137
 Reservation position—English ☎ 136
 Reservation position—Bengali ☎ 138
 Indian Airlines:
 City ☎ 26-4433, 26-2548 (9-00 am to 7-00 pm),
 26-0730, 26-0810, 26-0870
 Reservation: ☎ 26-3135 (7am to 7 pm), ☎ 26-6859
 Airport: ☎ 511-9433, 511-9637, 220-4433, 26-7007
 Flight Enquiry: ☎ 511-9841-44
 Reservation: ☎ 511-9638
 Jet : City: ☎ 240-8192, 240-8079
 Airport: ☎ 511-8767-87 (Extn: 4263-65), 511-8836
 (Dir)
 Sahara: ☎ 242-7686/8969.
 Vayudoot: City: ☎ 26-0730, 26-0810,
 (Extn: 4613, 4713)
 Airport: ☎ 511-9360/3, 511-8787 (Extn. 4244).
 Modiluft : ☎ 299864
 Damania Airways: ☎ 4757090
 Royal Nepal Airlines:
 41, J.L. Nehru Rd. Cal-16, ☎ 298549
 Druk Air (Bhutan)
 51 Tivoli Court
 1-A, Ballygunj Circular Rd. Cal-19 ☎ 4402419
 Bangladesh Biman:
 30-C, J.L. Nehru Rd. Cal-71, ☎ 292844
 Automobile Association of Eastern India
 13 Promothesh Barua Sarani, ☎ 4755131

কলকাতার বস্তুতে এককভাবে মাদারের মানব সেবা শুরু
 আর ১৯৫০এ Missionaries of Charity গঠন—আজ
 ১০০০-এরও বেশি সিস্টার উৎসর্গিত। ৮১টি স্কুল, ৩২৫
 ড্রাম্যাম চিকিৎসালয়, ২৮ ফ্যামিলি প্ল্যানিং সেন্টার, ৬৭
 কুষ্ঠ চিকিৎসা কেন্দ্র, ৩২ অফান হোম গড়েন মাদার।
 তিরোধানও ঘটেছে ১৯৯৭-র ১০ই আগস্ট কলকাতায়
 মাদারের। সমাহিতও হয়েছেন নির্মল হৃদয়ে মাদার। আজও
 দেশ-দেশান্তর থেকে শ্রদ্ধা জানাতে আসছেন বিশ্বজননী
 টেরিজাকে মাতৃ মন্দির তথা নির্মল হৃদয়ে। বিকালে
 (১৬—১৮-০০) দেখে নেওয়া যায়।

কলকাতার আর এক গর্ব—ভারতরত্ন, বিশেষ অস্কারে
 ভূষিত, চলচ্চিত্রের প্রবাদপুরুষ বিশ্ববরেন্দ্র সত্যজিৎ রায়।
 ২৩শে এপ্রিল, ১৯৯২ প্রয়াণ ঘটলেও চলচ্চিত্র, শিল্প ও
 সাহিত্য সৃজনের মাঝে তিনি আজও ভারত তথা বিশ্বে
 সমুন্নত শিরে শাশ্বত। নন্দন-এ সত্যজিৎ আকহিৎ অর্থাৎ
 চলচ্চিত্র, শিল্প, সাহিত্য তথা ব্যক্তি-জীবনের নানান সম্ভার
 নিয়ে গবেষণাগার বসেছে। এটিও আজ কলকাতা দর্শনে
 অন্যতম সংযোজন।

কলকাতায় বারো মাসে তেরো পার্বণ। সেপ্টেম্বর-
 অক্টোবরে ৫ দিন ব্যাপী জাতীয় উৎসব দুর্গাপূজা আর
 অক্টোবর-নভেম্বরে কালীপূজার পর্যটকআকর্ষণ অনব্বিকার্য।
 সারা শহর সেজে ওঠে উৎসবের সাজে। সাময়িক মন্দির
 তথা প্যাভেল গড়ে ওঠে। দেবী আসেন বলমলে সাজে
 কুমোরটুলি থেকে। প্রতিযোগিতা চলে পাড়ায় পাড়ায়—
 প্যাভেল, আলোকসজ্জা ও দেবীমূর্তিতে। চন্দননগরের
 কারিগরদের আলোর কারিকুরি মুগ্ধ করে দর্শকে। রাতভর
 দর্শক চলে প্যাভেল থেকে প্যাভেলে দেবীদর্শনে। বিশেষ
 গাড়িরও ব্যবস্থা থাকে উৎসবের রাতগুলোতে। স্কুল-
 কলেজ, অফিস-কাছারি, ব্যবসা জগৎ বন্ধ থাকে উৎসবে
 অংশ নিতে। শেষ দিনের জাঁকজমকপূর্ণ নিরঞ্জন শোভাযাত্রা
 —সেও এক রমণীয় দৃশ্য। দূর-দূরান্ত থেকে প্রবাসী বাঙালিরা
 তখন গৃহাভিমুখী। আসেন দর্শকরা দেশ-দেশান্তর থেকে।

আর রয়েছে মন্দির, মসজিদ ও গির্জা—শহরের
 অলিতে গলিতে। এক সমীক্ষায় দেখা গেছে, ১৯৬৫-৬৯
 খ্রিস্টাব্দের মধ্যে ২৩৫টি মন্দির গড়ে উঠেছে কলকাতা
 শহরে। এদের মধ্যে তীর্থযাত্রী তথা পর্যটকমুখর মন্দিরের
 সংখ্যাও কম নয়। আর প্রাচীনতম মন্দিরটি রয়েছে উত্তর
 কলকাতার চিৎপুরে গান ফাউন্টারি রোডে। জোব চার্চের
 কলকাতা আগমনের ৭০ বছর আগে ১৬২০এ চিত্তে
 ডাকাতের হাতে গড়ে ওঠে মন্দির। দেবী এখানে কালী—
 নাম তার চিত্তেশ্বরী। আর প্রাচীনতম মসজিদটি ধর্মতলায়
 টিপু সুলতানের মসজিদ।

কালীঘাটের কালীমন্দির: দেশময় মন্দির—শিব ও
 কালীর, তার মধ্যে কালীঘাটের কালীমন্দির অন্যতম।
 প্রজাদের মঙ্গলার্থে বড়িশার শিবদেব রায়চৌধুরীর হাতে

ওরু হয়ে শেষ হয় পুত্র রামলাল ও ভ্রাতৃপুত্র লক্ষ্মীকান্তর হাতে। ১৮০৯ খ্রিস্টাব্দে তৈরি আটচালা এই মন্দিরের পোড়ামাটির কাজ কালের কবলে আজ নষ্ট হয়েছে। তবে পরবর্তীকালে জনৈক সন্তোষ রায়ের হাতে সংস্কার হয় মন্দির। আর ১৯৭১এ মন্দিরের তোরণটি তৈরি করেন বিড়লা সংস্থা। সংস্কারও হয় নতুন করে ৯০ ফুট উঁচু মন্দির বিড়লাদের হাতে। তবে, তারও অতীতে যশোহররাজ প্রতাপাদিত্যের খুল্লতাত রাজা বসন্ত রায়ের গড়া আদি মন্দিরটি লুপ্ত।

আদি গঙ্গার পাবে কালীঘাটের দেবী কালিকা খুবই জাগ্রত। ভৈরব তার নকুলেশ্বর। মহায়োগী গোরক্ষনাথ-জীর প্রতিষ্ঠিত দেবীর অখোভাগ দৃশ্যমান নয়। মুখ কালো পাথরে তৈরি। জিভ, দাঁত, হাত, সোনার পাতে মোড়া। দেবীর হাতের খড়্গটি রূপায় তৈরি। মুণ্ডটি রূপার, গলার মুণ্ডমালা সোনা ও রূপায়, মুকুট সোনায়ে তৈরি। আর রয়েছে রূপার ছাতা ও রূপার চালচিত্র। শিবমূর্তিও রূপায় তৈরি। প্রতি বছর মানযাত্রার দিন মান করেন দেবী। চোখ বাঁধা কন্দল্লার কক্ষ্মে মান করান প্রধান পুরোহিত। ৫১ সতী পীঠের এক পীঠও এই মন্দির। সতীর দক্ষিণ পদাঙ্গুলি পড়ে এখানে। রাসবিহারী এভিন্যুগামী যে-কোনও ট্রামে-বাসে বা মেট্রো রেলের কালীঘাট পৌঁছে মন্দির চলা যায়। পাণ্ডাদের উৎপীড়ন আছে মন্দিরে। ৫০ টাকার টিকিটে দেবী দর্শনের বিশেষ ব্যবস্থাও প্রচলন হয়েছে। অদূরে কেওড়াতলা মহাশ্মশান। বাংলার বাঘ আওতোষ, দেশবন্ধু চিত্তরঞ্জন প্রমুখ মনীষীর নম্বর দেহ পঞ্চভূতে বিলীন হয় এখানেই—স্মারক সৌধও হয়েছে। ভূকৈলাসের মন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য।

ফিরিঙ্গি কালীবাড়ি: বিপিনবিহারী গাঙ্গুলি স্ট্রিট ও সেন্ট্রাল এভিনিউর সংযোগে গড়ে উঠেছে এই মন্দির। দেবী এখানে সিন্ধেশ্বরী মাতারূপে পূজিতা। মন্দিরটি বাংলা ৯০৫ সনে তৈরি। অতীতে কলেরা মহামারীরূপে দেখা দিতে দেবীর আশিসে আরোগ্য পেতে অর্ঘ্য নিয়ে ফিরিঙ্গি সাহেবরাও এসেছে মন্দিরে। সেই থেকে ফিরিঙ্গি কালী-বাড়িও বলে থাকে লোকে একে। বিগ্রহটি স্থানীয় পালদের। শিব, কালী, অষ্টধাতুর দুর্গা, শালগ্রাম শিলা, শীতলা, মনসা, গণেশ, রাধাকৃষ্ণ, জগদ্ধাত্রী, মহাবীর ও দামোদর নারায়ণ শিলাও রয়েছে মন্দিরে।

ঠনঠনিয়া কালীমন্দির: কলেজ স্ট্রিট-মহাদ্বা গান্ধী রোড থেকে শ্যামবাজার গামী বিধান সরণীতে এই মন্দির। বাংলা ১১১০ সনে শঙ্কর ঘোষ তৈরি করান। দেবী এখানে সিন্ধেশ্বরী, মূর্তি হয়েছে মাটির। প্রতি বৎসরই সংস্কার হয় দেবীমূর্তির। মন্দির সংলগ্ন রয়েছে আটচালা শিবমন্দির। অদূরেই সিমলার গৌরমোহন মুখার্জি স্ট্রিটে স্বামী বিবেকানন্দর জন্মভিটা আর এক তীর্থমন্দির।

সামান্য উত্তরে বিধান সরণীতে ছবি ও ভাস্কর্যে বাংলার লোকশিল্পের প্রদর্শনশালা কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের

আওতোষ মিউজিয়াম। পুরাতত্ত্বের নানান সন্ডারও আকর্ষণ বাড়িয়েছে—ভারতে বিশ্ববিদ্যালয়ের গড়া প্রথম এই মিউজিয়ামে। সোম থেকে শুক্র ১০-৩০—১৬-৩০, শনিবার ১০-৩০—১৫-০০টায় খোলা।

মদনমোহন মন্দির: বাগবাজারের এই মন্দিরকে ঘিরে নানান জনশ্রুতি আছে। আর্থিক সঙ্কটে পড়ে বিষ্ণুপুররাজ চৈতন্য সিং বাগবাজারের গোকুল মিত্রর কাছে ১ লক্ষ টাকা কর্জের বিনিময়ে বন্ধক রাখেন বিগ্রহকে। অকটারলোনি মনুমেন্ট থেকেও উচ্চ ১৭৩০এ গড়া মন্দিরে অধিষ্ঠিত হন রূপার সিংহাসনে দেড় ফুট উঁচু অষ্টধাতুর দেবতা। ১৮২০-র ভূমিকম্পে মন্দিরটি ধ্বংস পেতে মন্দির হয় নতুন করে। মন্দিরের বাইরের অষ্টভূজাকৃতি ৯ চুড়ার রাসমঞ্চটিও সুন্দর।

পরেশনাথ মন্দির: কলকাতার উত্তর-পূবে বদ্রীদাস টেম্পল স্ট্রিটে (গৌরীবাড়ি) জৈন তীর্থ পরেশনাথ মন্দির। নামে পরেশনাথ হলেও আসলে ১৮৬৭তে রায় বদ্রীদাস মুকিম বাহাদুরের হাতে তৈরি ২৪ জৈন তীর্থঙ্করের অন্যতম শীতলানাথজীর (১০ম) মন্দির এটি। আর পরের বছর সুখলাল জহরী গড়ান জৈন শ্বেতাশ্বর মন্দির। মন্দির রয়েছে আরও নানান। শ্বেতমর্মরের বিগ্রহ, ক্রিস্টাল, ডায়মন্ড, রুবি, মুক্তা, কোরাল ছাড়াও মূল্যবান সব ধাতু, রঙিন কাচ আর মন্দির স্থাপত্যের সুস্পষ্ট কারুকার্য দর্শকদের মুগ্ধ করে। শিল্পী গণেশ মুসকরের আঁকা ছবিগুলিও সুন্দর। সারা মন্দিরময় পর্যটক বিমোহন বাগিচা। ফোয়াবা, ভলাশয়, রঙিন মাছ, মর্মর মূর্তি, সবকিছু মিলিয়ে নন্দনকানন সম। মন্দিরের মূল মূর্তি শীতলানাথজীর ভালের বিরাটাকার ডায়মন্ডটি দর্শকদের দৃষ্টির বিভ্রম ঘটায়। রাসপূর্ণিমায় জাঁকালো উৎসব, ঝলমলে মিছিল বেরোয়। ৬—১২-০০ ও ১৫—১৯-০০টায় মন্দির খোলা। বেলগাছিয়া ব্রিজের কাছে দিগম্বর জৈন মন্দিরটির পর্যটক আকর্ষণও কম নয়।

নাখোদা মসজিদ: মহাদ্বা গান্ধী রোড থেকে চিৎপুর ধরে দক্ষিণমুখী ৫ মিনিটের পথে জ্যাকেরিয়া স্ট্রিট সংযোগে নাখোদা মসজিদ। অতীতে আকারে ছোট ছিল মসজিদ। ১৯২৬ খ্রিস্টাব্দে কচ্ছবাসী আবদার রহিম ওসমান ১.৫ মিলিয়ন টাকায় গড়ে তোলেন কলকাতার বৃহত্তম মসজিদ নাখোদা। আগ্রার সিকান্দ্রাতে তৈরি আকবরের সমাধির আদলে ইন্দো-সেরাসেনিক শৈলীতে লাল বেলেপাথরে রূপ পেয়েছে। শিঁয়াজখর্দী গোলাকার গম্বুজ, ৪৬ মি উঁচু ২টি মিনারেট। ১০০০০ ধর্মার্থী একেই নামাজ পড়তে পারেন। মহরমে উৎসবের সাজে সেজে ওঠে এলাকা। সুসজ্জিত দুলদুল সহ তাজিয়া নিয়ে মিছিল বেরোয়—সঙ্গে চলে লাঠি খেলা ও অস্ত্রখেলায় প্রদর্শনী।

পাশেই রয়েছে সিঁদুরিয়া পট্টিতে হাফিজ জালাল-উদ্দিনের মসজিদ। আর সুন্দর কারুকার্যময় মুশ্দিবাবয়ের নবাবের তৈরি মানিকতলায় কারবালা মসজিদটির আকর্ষণও

কম নয়। টিপু সুলতানের বংশধরদের তৈরি মসজিদ ১৩টিও উল্লেখ্য। এদের মধ্যে ১৮৪২এ টিপুর পুত্র প্রিন্স গোলাম মহম্মদের তৈরি ধর্মতলার মসজিদটি টিপু সুলতানের মসজিদ নামে প্রসিদ্ধি।

আর্মেনিয়ান চার্চ: Aga Nazar-এর উদ্যোগে আর্মেনিয়ানদের আর্থিক সাহায্যে ১৭০৭ খ্রিস্টাব্দে তৈরি। দ্বিমতে, ১৭২৫এ তৈরি আর্মেনিয়ান চার্চ। এর মুখ্য স্থপতি আসেন সুদূর পারস্য থেকে। রবীন্দ্র-সাহিত্যে আমনি গির্জা নামে খ্যাত। আর্মেনিয়ান স্ট্রিটের এই চার্চের পাশেই ছিল ১৫৯০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি আর্মেনিয়ানদের উপাসনালয় অর্থাৎ কাঠের চ্যাপেল। জনৈক আর্মেনিয়ান মহিলা রেজা বিবির সমাধিও রয়েছে—সম্ভবত কলকাতায় প্রাচীনতম সমাধি এটি।

সেন্ট পলস ক্যাথিড্রাল: শহরের গির্জাগুলির মধ্যে এটি অন্যতম। ময়দানের দক্ষিণ-পূর্ব প্রান্তে ভিক্টোরিয়ার বামে প্লানেটেরিয়াম ও রবীন্দ্রসদনের মাঝে ক্যাথিড্রাল রোডে এই ক্যাথলিক চার্চ। ১৮৪৭এ বিশপ উইলসনের উদ্যোগে শুরু হয়ে ৫ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ইন্দো গথিক শৈলীতে ক্যাথলিক-বৈরি ক্যাথেড্রালের রেনেসাঁরূপে গড়ে ওঠে। দৈর্ঘ্য-প্রস্থে ২৪৭x৮১ ফুট উচ্চতা ২০১ ফুট। ১৮৪৭ খ্রিস্টাব্দের ৮ই অক্টোবর প্রাচ্যের প্রথম Episcopal Church-এর মর্যাদা পায় সেন্ট পলস। ১৮৯৭ সালের ভূমিকম্প ক্ষতিগ্রস্ত চূড়োটির সংস্কার হয় সঙ্গে সঙ্গে। ১৯৩৪এর ভূমিকম্পের কতকগুলো সারিয়ে তোলা হয়। বিশপ উইলসনের উৎসাহে দেওয়া মহারানী ভিক্টোরিয়ার কমিউনিয়ন স্টেটটিও স্থান পেয়েছে সেন্ট পলসে। ক্যাথিড্রালের পূর্ব দেওয়ালের রঙিন কারুকার্য সুন্দর। সূর্যাস্তে পশ্চিমের জানালায় রঙবেরঙের (stained glass) কাচে সূর্যালোকের প্রতিফলন মনোহর। আর ফ্লোরেন্টাইন ফ্রেস্কো দুটি অনবদ্য। নানান বিপ্লবে নিহত ব্রিটিশদের স্মারকরূপে স্নানও বসেছে দেওয়ালে। যে-কোনও অনুষ্ঠানে ক্যাথিড্রালের হল সহ প্রাঙ্গণ ভাড়াই মেলে। ৯—১২-০০ ও ১৫—১৮-০০টায় খোলা।

সেন্ট জেমস চার্চ: এটি আজ লোকমুখে জোড়াগির্জা নামে খ্যাত। ইংলিশ বাজারের দক্ষিণপাশে ১৮৬৪ খ্রিস্টাব্দে তৈরি গির্জা দুটির আকর্ষণও কম নয় পর্যটকদের কাছে।

সেন্ট জনস চার্চ: কলকাতা শহরের প্রাণকেন্দ্রে বি বা দী বাগের দক্ষিণে কাউন্সিল হাউস স্ট্রিটে সেন্ট জনস চার্চ বা পাথুরে গির্জা। জোব চার্চের সমাধি অঙ্গনে ১৭৮৪তে শুরু হয়ে ২ লক্ষ টাকা ব্যয়ে গ্রিক স্থাপত্যশৈলীতে শেষ হয় ১৭৮৭তে। মেঝে হয়েছে গৌড়ের ধ্বংসস্থাপ থেকে আনা পাথরে, চুনার থেকেও পাথর এসেছে। এমনকি এর ১৭৪ ফুট উঁচু চূড়োটিও পাথরে তৈরি। এর আর এক আকর্ষণ দক্ষিণের গলিপথে জোফারির আঁকা তেলচিত্র *The Last Supper* ছবিটি। চার্চের আর এক আকর্ষণ কলকাতা শহরের স্থপতি, ১৬৯২এর ১০ই জানুয়ারি মৃত, জোব চার্চের অষ্টকোণী সমাধিটি ১৬৯৫এ গড়ে ওঠে। ভারতে ব্রিটিশের

প্রাচীনতম masonry-ও চার্চক সাহেবের এই সমাধি। এছাড়াও সমাধি রয়েছে চার্চক-দুহিতাদের ও ১৭৫৭য় কলকাতা দখলের নায়ক ব্রিটিশ অ্যাডমিরাল ওয়াটসনের সেন্ট জনসে।

শহীদ মিনার: ১৮১৪-১৬ খ্রিস্টাব্দে ব্রিটিশের নেপাল জয়ের স্মারক রূপে গড়া অকটোরলোনি মনুমেন্ট ১৯৬৯এ ভারতীয় স্বাধীনতা সংগ্রামীদের স্মরণে নামান্তরিত হয়ে হয়েছে শহীদ মিনার। ময়দানের উত্তর-পূর্বে ২১৮ ধাপের সিঁড়ি বেয়ে ৫২ মি অর্থাৎ ১৫৮ ফুট উঁচু মিনারে চড়ে শহর কলকাতা সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। ডেপুটি কমিশনার অব পুলিশ, পুলিশ হেড কোয়ার্টার্স, ৩য় তল, লালবাজার থেকে *মনুমেন্ট পাস* নিয়ে অর্থাৎ নিজ দায়িত্বে নিজে উঠছেন—হলফনামা দিয়ে সোম থেকে শুক্রবার উপরে ওঠার অনুমতি মেলে।

যুদ্ধজয়ের নায়ক স্যার ডেভিড অকটোরলোনির সম্মানে ১৮২৮এ ৮২টি ১০ ইঞ্চি মোটা ২০ ফুট লম্বা শালবল্লা ৮ ফুট মাটির গভীরে গেঁথে জেপি পারকারের তৈরি মিনারের কলামটি সিরিয়ান, পাদদেশ ইঞ্জিপশিয়ান আর ডোমটি হয়েছে তুর্কি স্থাপত্য-শৈলীতে। আলাকিতও হচ্ছে প্রতি রাতে শ্বেত-শুভ্র মিনার। বাসও যাচ্ছে শহর তথা পূর্ব ভারতের দিকে দিকে শহীদ মিনারের পাদদেশ থেকে। বাঁয়ে চৌরঙ্গী রোড তথা জওহরলাল নেহরু রোড, দোকান-পাট, হোটেল, সিনেমা হল, ইংরেজিয়ানার ঢোল। শহরের ব্যস্ততম শপিং সেন্টারও এই চৌরঙ্গী। ব্রিটিশের অবর্তমানে পাঁচমিশেলির বাস। লাগোয়া কেনাকাটার মক্কা—নিউ মার্কেট।

ইন্ডিয়ান মিউজিয়াম—যাদুঘর: ভারতীয় মিউজিয়াম-গুলির মধ্যে অনন্য সংগ্রহের অধিকারী কলকাতার মিউজিয়াম। এশিয়ার অন্যতম এই মিউজিয়াম যাদুঘর রূপে সমধিক খ্যাত। চৌরঙ্গি-পার্ক স্ট্রিটের সন্নিকটে প্রাগৈতিহাসিক যুগ থেকে হাল আমলের নানান ধর্মী অমূল্য সব সংগ্রহ স্থান পেয়েছে এই যাদুঘরে। আর জুওলজিক্যাল ও জিওলজিক্যাল সংগ্রহের জন্য এর বিশ্বখ্যাতি আছে। ১৮১৪ খ্রিস্টাব্দে এশিয়াটিক সোসাইটির বাড়িতে এর যাত্রা শুরু। আর ১৮৭৮এ ইতালীয় স্থাপত্য রীতিতে রূপ পায় বর্তমানের প্রাসাদোপম অট্টালিকা। ফসিল ও স্টাফড জন্তুর সংগ্রহ—বিশেষ করে তিমির চোয়াল, বৃহদাকার কুমির ও কচ্ছপের ফসিল দুটি উল্লেখ্য। এক কথায় বলা যেতে পারে ভারতীয় সংস্কৃতির ক্রমপরিণাম প্রদর্শিত হয়েছে কলকাতা যাদুঘরে। চার হাজার বছরের মিশরীয় মমি, ঘর জোড়া উষ্ণকিশি তথা এশিয়ার অন্যতম ৪১৪টি সংগ্রহ—বৃহত্তমটির ওজন ৫৬২৮৭ গ্রাম—পতন ঘটে ১৯২০এ, মুদ্রার সংগ্রহ মূল্যবান জহরত, ১২ ফুট লম্বা কাকডার ফসিল, শাজাহানের পান্নার পেয়লা, বুদ্ধের অস্থির আধার—এগুলিও মর্যাদা বাড়িয়েছে সংগ্রহের। শ্রীপু ২ শতকের Bharhut Gallery, বৌদ্ধ স্থাপত্যের নানান ধর্মী ভাস্কর্যের সংগ্রহ Gandhara Gallery-ও উল্লেখ্য।

তেমনই ছবির সম্ভারও মিউজিয়মের আর এক গৌরব। যাদুঘরে ঢুকতেই বায়ের বিক্রয়কেন্দ্রটিও আদরণীয় হবে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় খোলা, ৩ ৪৪০৪১৫. দশনী ২ শুক্রবার ফ্রি, ১২ বছর পর্যন্ত প্রতিদিন ফ্রি।

১৭৮৪তে স্যার উইলিয়াম জোস প্রতিষ্ঠিত (ভারতে প্রাচীনতম) এশিয়াটিক সোসাইটি অব বেঙ্গল লাইব্রেরির সংগ্রহও উল্লেখ্য। পার্ক স্ট্রিট-চৌরঙ্গি সংযোগে সংস্কৃত, আরবি, পার্সি, হিন্দী ভাষার ২০ হাজার অমূল্য গ্রন্থ ও পাণ্ডুলিপির সঙ্গে কয়েন, জার্নাল, পেইন্টিং রয়েছে। জ্ঞান-পিপাসুদের কাছে এর আকর্ষণও কম নয়। সোম থেকে শুক্রবার ১২—১৯-০০টায় খোলা।

জওহর শিশু ভবন: চৌরঙ্গী-লোয়ার সার্কুলার রোড সংযোগে রামায়ণ, মহাভারত, দেশ-বিদেশের পুতুলের প্রদর্শনশালা নিয়ে জওহর শিশু ভবন। শিশু চিত্র বিনোদনের নানান পসরার সাথে বিজ্ঞানের মডেলও স্থান পেয়েছে এই শিশু ভবনে। সোম ছাড়া ১২—২০-০০টায় খোলা, ৩ ২৪৪৩১৫৭. প্রবেশমূল্য ২ করে, ১২ বছরের কম ১।

নেতাজী মিউজিয়ম: সামান্য দক্ষিণে এলগিন রোড অর্থাৎ লালার লাজপত রায় সরণীতে নেতাজী সুভাষচন্দ্র বসুর পৈতৃক বাড়িতে অস্ত্রীণ থাকাকালীন ১৯৪১ এ ব্রিটিশের চোখ এড়িয়ে ঐতিহাসিক নিক্রমণে বের হন সুভাষচন্দ্র। স্মারকরূপে নেতাজীর ব্যবহৃত নানান জিনিস, চিঠি, ছবির মিউজিয়ম বসেছে। এটিও আজ কলকাতা দর্শনে অন্যতম।

এম পি বিড়লা প্ল্যানেটেরিয়াম: এটিও কলকাতার অনন্য। চৌরঙ্গী ও থিয়েটার রোড সংযোগে ভিক্টোরিয়ার পূর্বে রূপ পেয়েছে। ২০ লক্ষ টাকা ব্যয়ে তৈরি হয়েছে বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম। এই প্ল্যানেটেরিয়াম বা তারামণ্ডল ১৯৬২ খ্রিস্টাব্দের ২৯শে সেপ্টেম্বর। দিগন্তবিস্তৃত দিকচক্রবাল রেখার মতো দু-প্রান্ত মিলেছে মেঝেতে গিয়ে। সাঁচির বৌদ্ধ-স্থূপের ধরনে গোলাকার একতলা এই তারামণ্ডলটির মাঝের ব্যাস ২৩ মি। দিনের বেলায় ছত্রাকার ছাদে নামে আসে বিশ্বরক্ষাণী। ইংরেজি, বাংলা ও হিন্দী ভাষায় ধারাবাহ্যে সৌরজগৎকে চিনিয়ে দেওয়া হয় নিয়মিত প্রদর্শনীতে। সপ্তাহের প্রতিদিনই ১২-৩০ থেকে ঘণ্টায় ঘণ্টায় প্রদর্শন। ছুটির দিনগুলিতে অতিরিক্ত প্রদর্শনীর ব্যবস্থাও থাকে। দশনী ৮ করে, ৩ ২৪৪১৫১৫. কলকাতা দর্শনে অবশ্যই দেখে নেওয়া উচিত। চিত্রে ও ভাস্কর্যে জ্যোতির্বিদ ও জ্যোতির্বিদ্যার প্রদর্শনও বসেছে অলিন্দে। প্রদর্শনী শুক্রবার আগেই আসন গ্রহণ বাধ্যতামূলক।

ভিক্টোরিয়া মেমোরিয়াল: প্ল্যানেটেরিয়ামের বিপরীতে ময়দানের দক্ষিণে জানুয়ারি ৪, ১৯০৬এ প্রিন্স অব ওয়েলস, উত্তরকালের রাজা পঞ্চম জর্জের হাতে ভিড়ি স্থাপন। ডিসেম্বর ২১, ১৯২১এ আর এক প্রিন্স ডিউক অব উইন্ডসর উদ্বোধন করেন ভারতের নকল তাজ ভিক্টোরিয়া মেমো-

রিয়াল। ১৯০১এ কুইন ভিক্টোরিয়ার মৃত্যুর পর লর্ড কার্জনের উদ্যোগে ব্রিটিশকে তুষ্ট করতে রাজা-মহারাজাদের দানে ১০ কোটি টাকা ব্যয়ে ১৫ বছর ধরে ২৬ হেক্টর জমি জুড়ে মহারানী ভিক্টোরিয়ার স্মারক রূপে গড়ে উঠেছে শ্বেত মর্মরে ২০০ ফুট উঁচু এই সৌধ। আসলে ভারতে ব্রিটিশরাজ মিউজিয়ম বললেও অত্যাক্তি হয় না। মহারানীর সংস্পর্শে আসা ৩৫০০ জিনিস প্রদর্শিত হয়েছে এর ২৫টি কক্ষে। ব্রিটিশ স্থাপত্যধারার সাথে মোগলী শৈলীর সমন্বয় ঘটেছে এর স্থাপত্যে। অপূর্ব এর কারুকার্য। প্রেরণা যুগিয়েছে তাজ। পাথরও এসেছে তাজ তৈরিতে ব্যবহৃত রাজস্থানের মারকানা থেকে। সিঁড়ি দিয়ে উঠতেই ব্রোঞ্জ মূর্তি হয়েছে মহারানীর। আর চুড়োয় ইতালিতে তৈরি ৪.৯ মি উঁচু ৩ টনের ব্রোঞ্জের ঘূর্ণায়মান পরী 'ভিক্টরি' মূর্তি।

আর ভেতরে প্রদর্শিত হয়েছে—ছবি ও মূর্তিতে সেইসব ব্রিটিশ প্রতিনিধি যারা সেকালের ভারত শাসনে অংশ নিয়েছিলেন। প্রদর্শিত হয়েছে জলরঙে আঁকা নানান যুদ্ধকাহিনী, রেখাচিত্রে তৎকালীন কলকাতা, পলাশীর যুদ্ধ, ১৮৭৬-এ রাজা সপ্তম এডওয়ার্ডের জয়পুর ভ্রমণ, রানীর করোনেশন, আলবার্টকে বিয়ের দৃশ্য, মহারানীর বসন-ভূষণ, গোলাপ কাঠের পিয়ানো, ম্যুরাল অলঙ্করণ, চিঠিপত্রের পাণ্ডুলিপি, গম্বুজের হুঁসপারিং গ্যালারি, ফোর্ট উইলিয়াম দুর্গের মিনি মডেল, সিরাজের কালো-পাথরের সিংহাসন, পলাশীর যুদ্ধে সিরাজের ব্যবহৃত ফরাসি কামান, আগ্নেয়াস্ত্র ছাড়াও নানান কিছু। প্রাসাদ সংলগ্ন চত্বরটিও কলকাতার হাওয়া-বিলাসীদের কাছে রমণীয়। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন মার্চ-অক্টোবর ১০—১৭-০০, নভেম্বর-ফেব্রুয়ারি ১০—১৬-০০টায় খোলা মেমোরিয়াল। ৩ ২৪৪০৭১৫. টিকিট ২; শিশু, ছাত্র, প্রতিবন্ধী ও জওয়ানদের ১ করে। আর দলবদ্ধ ছাত্রদের টিকিট লাগে না।

জানুয়ারি ৬, ১৯৮৭ থেকে টাটা স্টিলের ব্যবস্থাপনায় আলোকসজ্জায় রমণীয় করে তোলা হয়েছে এই সৌধ। সৌধের নবতম (এপ্রিল ১৯, ১৯৯২) আকর্ষণ ফটোপ্রিন্ট ৩০০ বছরের গৌরব-গাথা নিয়ে কলকাতা গ্যালারি। নীল আকাশের নিচে আলোও ধ্বনির প্রদর্শনী *Son-et Lumiere*-এ কলকাতার ৩০০ বছরের গৌরব ও গরিমার প্রদর্শনীও বসেছে সোমবার ছাড়া প্রতি সন্ধ্যায় শীতে ১৮-৪৫/১৯-৪৫এ আর গ্রীষ্মে ১৯-১৫য় বাংলা, ২০-১৫য় ইংরেজি ধারাবাহ্যে ভিক্টোরিয়া অঙ্গনে। টিকিট ৫ ও ১০। ১৬—২০-০০টায় টিকিট মেলে, ৩ ২৪৪০৭১৫. কিউরেটরের অনুমতিতে দলবদ্ধ ছাত্রদের রিবেট মেলে। বর্ষা ঋতুতে বন্ধ থাকে প্রদর্শন। আর বিপরীতে CESC-র উপহার সঙ্গীতের (বিঠোফেন ও জাতীয় স্তোত্র) তালে তালে Musical Fountain অর্থাৎ ঝরনা ও আলোর মূর্দনা প্রতি সন্ধ্যায় শহরের অন্যতম আকর্ষণ।

ভাসমান যাদুঘর: তেমনই ৩১শে জুলাই ১৯৯৩এ রূপ পেয়েছে Man-Of-War জেটিতে কলকাতার গঙ্গায় বিশ্বের

প্রথম ভাসমান নৌ-বিষয়ক যাদুঘর রিভার গঙ্গা। কলকাতা বন্দর কর্তৃপক্ষের উদ্যোগে দ্বিপ্রত্যাহিক নানানধর্মী প্রদর্শনের সাথে ৩০০ বছরের কলকাতার সচিত্র ইতিহাস তুলে ধরা হয়েছে ভাসমান জাহাজ রিভার গঙ্গায়। ছোটদের মনোরঞ্জন নানান ব্যবস্থা। ক্যান্টিনও হয়েছে। সোম ছাড়া প্রতিদিন ১১—১৭-০০টায় খোলা। টিকিট ২, শিশু ১।

রেস কোর্স: ভিক্টোরিয়া মেমোরিয়ালের পশ্চিমে রেস কোর্স অর্থাৎ ঘোড়দৌড়ের মাঠ। জুলাই থেকে সেপ্টেম্বর ও নভেম্বর থেকে মার্চ মাসে শনিবারের বারবেলায় আসর বসে রেসের। সারা কলকাতা তখন একমুখী, গম্ভব্য তাদের রেসে। ১৮১৯ থেকে Royal Calcutta Turf Club-এর পরিচালনায় বসছে এই আসর। পোলা খেলারও আসর বসে রেস কোর্স ময়দানে।

জুওলজিক্যাল গার্ডেন—চিড়িয়াখানা: ময়দানের দক্ষিণে বেলভেডিয়ার রোড ধরে সামান্য যেতেই কলকাতা চিড়িয়াখানা। জন্ম এর ১৮৭৬ খ্রিস্টাব্দে। বয়সে যেমন প্রবীণ, আকারে ও সংগ্রহেও এটি ভারতে অন্যতম। ৪৫ একর ভূমি জুড়ে রূপ পেয়েছে। এর সরীসৃপের ঘর, সাদা বাঘ, বাঘ ও সিংহের সঙ্ঘের টাইগন, শিশু উদ্যান, লেকের বুকে পাখির বাসর বিশেষভাবে উল্লেখ্য। এছাড়াও জীবজন্তু এসেছে সারা বিশ্ব থেকে। শীতের দিনে দেশ-দেশান্তর থেকে উড়ে আসা পাখিরও পরিবেশকে রমণীয় করে তোলে। ১২০০ মাছের আকোয়ারিয়ামও বসছে প্রবেশ দ্বারের বিপরীতে। ছোট বড় সকলের কাছে এর আকর্ষণ অদ্বিতীয়। বৃহস্পতি ছাড়া প্রতিদিন ৯—১৭-০০টায় খোলা, ৫ ৪৭৯১১৫০। তবে, বৃহস্পতিবার ছুটির দিন হলে খোলা থেকে বন্ধ হবে পরের দিন চিড়িয়াখানার দরজা। প্রবেশ মূল্য ৩.০০ টাকা।

অদূরে জাতীয় গ্রন্থাগারের পিছে ১ আলিপুর রোডে ১৮২০এ জন্ম অ্যাগ্ৰো হারটিকালচারাল সোসাইটি গার্ডেন-টিও দেখে নেওয়া যায়। এদের বিশাল নাসারিটি দেখবার মতো। চেনা-অচেনা হাজারো ফুল ও ফলের গাছের সাথে ম্যাডট্রি, পদ্মভরা পুকুর। ৬৩ বিঘা ব্যাপ্ত জুড়ে সবুজ ওয়েসিস গাছের কিনতেও মেলে ফুল-ফলের চারা ছাড়াও বাগিচার টুকটাকি এদের ফ্রোরিস্ট ফুল। এমনকি যে কোনও উৎসব-অনুষ্ঠানে আপনার হয়ে পৌঁছেও দেয় ফুলের বোকে ঐক্যিত প্রিয়জনের হাতে। শিক্ষা লাভেরও কোর্স চালু। মানুষ ও প্রকৃতি, জীব ও পরিবেশের মধ্যে সমন্বয় সাধন এদের ব্রত। গ্রন্থাগারটিও সোসাইটির আর এক সম্পদ। বৃহস্পতিবার ছাড়া ৭—১০-০০ ও ১৪—১৮-০০টায় খোলা।

জাতীয় গ্রন্থাগার: আনুষ্ঠানিকভাবে ১৯০৩ খ্রিস্টাব্দের ৩০শে জানুয়ারি মেটকাফ হল-এ ইম্পিরিয়াল লাইব্রেরির উদ্বোধন করেন লর্ড কার্জন। তবে, কলকাতার পাবলিক লাইব্রেরির গোড়াপত্তন তারও আগে ১৮৩৬-এর ২১শে মার্চ। আর ১৯৪৮-এ সেদিনের ইম্পিরিয়াল হয় জাতীয় গ্রন্থাগার। নামের সঙ্গে জায়গারও বদল ঘটল আজকের

বেলভেডিয়ায়। তবে বাড়িটি তৈরি হয় বাংলার লেফটেন্যান্ট গভর্নরের বাসের (১৮৫৮-১৯১২) জন্য। তবে তারও আগে ১৭০০ খ্রিস্টাব্দে ঔরঙ্গজেবের পৌত্র মুগয়া ভবন গড়ে বেলভেডিয়ায়। ১৭ লক্ষ বই আর ৫ লক্ষ নথিপত্র আছে এর সংগ্রহে। দৈনিক পাঠকের সদস্য সংখ্যা ১৮ হাজার। প্রতিদিন সাতশ থেকে হাজার পাঠক আসেন এর পাঠাগারে। চিড়িয়াখানার দক্ষিণ প্রান্তে বেলভেডিয়ার রোডের উপর এই গ্রন্থাগার। এর শাণ্ড মিশ্র পরিবেশও সুন্দর।

ফোর্ট উইলিয়াম: গড়ের মাঠ অর্থাৎ মাঠের নিচুতে অষ্টভূজবিশিষ্ট, পরিখা বেষ্টিত গড় বসেছে। গড় তো নয় রীতিমত শহর এক! ১০০০০ জওয়ানের জন্য রয়েছে—প্রমোদ ভবন, সিনেমা হল, বাজার-ঘাট, দোকান-রেস্তোরাঁ, ধোবিখানা, খেলার মাঠ, সুইমিং পুল, স্টেডিয়াম, ডাকঘর, লাইব্রেরি মায় ব্যাঙ্ক পর্যন্ত। ১৭৫৬য় সিরাজের কলকাতা জয়ে পরাজিত ব্রিটিশ Treaty of Alinagar স্বাক্ষর করে আলিগর অর্থাৎ আজকের আলিপুরে। আর ১৭৫৭য় সিরাজকে হারিয়ে ১৭৫৮য় গোবিন্দপুরে ভিত গেড়ে ১৭৭৩এ ২ মিলিয়ন ব্রিটিশ পাউন্ড বায়ে গড়ে তোলে এই গড় ব্রিটিশরাজ। রাজা তৃতীয় উইলিয়ামের নামে নাম হয় ফোর্ট উইলিয়াম। ৭টি গেট হয়েছে প্রবেশের—ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির বীর সেনানীদের নামে নাম। ৫৩২ বিঘা জমিতে গড়া পূর্ব ভারতের প্রহরী ফোর্ট উইলিয়ামে ইস্টার্ন কম্যান্ডের সদর দপ্তর বসেছে। তবে খুবই আনন্দ সংবাদ, আজ পর্যন্ত একটিও গোলা খরচ হয়নি শত্রুসেনার জন্য এই গড় থেকে। অফিসার কম্যান্ডিং-এর বিশেষ অনুমতিতে বা বিশেষ বিশেষ দিনে সাধারণের প্রবেশাধিকার মেলে। সম্প্রতি সাধারণ দর্শকের জন্য দ্বার খুলেছে ফোর্ট উইলিয়াম।

মার্বেল প্যালেস: রাজা রাজেন্দ্র মল্লিক বাহাদুরের একক সংগ্রহ নিয়ে গড়ে উঠেছে ব্রিটিশ ভজনার এই মিউজিয়াম। আকারে ও সংগ্রহে সালার জং আরও ব্যাপক হলেও উদ্দেশ্য একই। মহাত্মা গান্ধী রোড থেকে উত্তরগামী সেন্ট্রাল এডিন্‌ব্রোতে মহাজাতিসদন পেরুতেই রাম মন্দিরের বিপরীতে চোরবাগানে ৪৬ মুক্তারামবাবু স্ট্রিট। উত্তরমুখী বাম হাতে মার্বেল প্যালেস—নামকরণ লর্ড মিল্টোর। স্থপতি এসেছেন দেশ-বিদেশ থেকে। ১২ একর ভূমিতে ১৮৫৫ খ্রিস্টাব্দে ১২৬৬৭৭ মার্বেলে ৫০০০ কারিগরের ৫ বছরের শ্রমে রূপ পায় প্যালেস।

বিখ্যাত শিল্পীদের আঁকা ছবি, মর্মর মূর্তি, ঝরনা, অলঙ্কৃত চতুর্দিক ঘড়ি, কাচের আসবাবপত্রের সংগ্রহ দর্শকদের মুগ্ধ করে। এমনকি রুবেন্সের আঁকা সেন্ট ক্যাথারিনের বিয়ের ছবি, দ্য লাস্ট সাপার, ব্যাটেল অব আমাজনস, হর্সকোয়ার মর্যাদা বাড়িয়েছে সংগ্রহের। সারা বিশ্বের ৯০টি দেশ থেকে আহৃত সেরা সংগ্রহ নিয়ে মার্বেল প্যালেস। কৃত্রিম পাহাড়, পার্ক, মিনি চিড়িয়াখানাও বসেছে পামের ছায়ায় সবুজ

মখমলের লন জুড়ে চম্ভরে। উত্তর-পশ্চিমে মিনি লেক, লেকের মাঝে ফোয়ারা—দেবতারাত্মক এসেছেন গ্রিক পুরাণ থেকে। প্রচারের অভাবে দর্শক কম। সোম ও বৃহস্পতিবার ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা। দর্শনী ফ্রি, তবে অনুমতি লাগে পশ্চিমবঙ্গ বা ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর থেকে। বাসও করছেন মল্লিক পরিবার প্রাসাদের অংশে।

জোড়াসাঁকোর ঠাকুরবাড়ি: কলকাতা দর্শনাধীনের কাছে ঠাকুরবাড়ির আকর্ষণও কম নয়। কবিগুরু রবীন্দ্রনাথের জন্ম ও মৃত্যু দুই-ই ঘটে এই বাড়িতে। বাংলা সংস্কৃতির ধারক ও বাহক ঠাকুর পরিবারের নানান ঐতিহাসিক স্মৃতিও জড়িয়ে রয়েছে। ঘরে বাইরে লেখার ঘরখানি, দক্ষিণের বারান্দা আজও যেন জীবন্ত হয়ে ওঠে। প্রতি ২৫শে বৈশাখ রবীন্দ্র-পূজারীদেব সমাগমে মুখর হয়ে ওঠে আজও। চিংপুর রোড ও বিবেকানন্দ রোডের সংযোগে এই ঠাকুরবাড়ি। রবীন্দ্র-ভারতী বিশ্ববিদ্যালয়ের দপ্তরও বসেছে। আর বসেছে মিউজিয়ম রবীন্দ্র স্মারক নিয়ে। সোম থেকে শুক্র ১০—১৯-০০, শনিবার ১০—১৩-০০, রবিবার ১১—১৪-০০টায় খোলা। জাতীয় ঐতিহ্য ও সংস্কৃতির অন্যতম কেন্দ্ররূপে জাতীয় স্মৃতিসৌধে রূপ পেতে চলেছে ঠাকুরবাড়ি। পুরাতন পরিকাঠামো অক্ষুণ্ণ রেখে বাতানুকূল সংগ্রহশালা, গবেষণাগার, গেস্ট হাউস, আর্ট গ্যালারি, লাইব্রেরি, লাইট অ্যান্ড সাউন্ড, বাগিচা গড়ে তোলা হচ্ছে। অদূরেই নিমতলা মহা-শ্মশানে কবিগুরুর সমাধি মন্দির। আর আছে আনন্দময়ী কালী, অতিকায় শিবলিঙ্গ নিমতলায়।

রবীন্দ্র সরোবর: শহরের দক্ষিণ প্রান্তে রূপ পেয়েছে এই কৃত্রিম লেক। কিছুকাল আগেও নাম ছিল এর ঢাকুরিয়া লেক। শান্ত সুমধুর লেকের পরিবেশ শহরবাসীকে প্রলুব্ধ করে সকাল-সাঁঝে। লেকের দক্ষিণ প্রান্তে ছোট্ট দ্বীপ। কাঠের সেতুতে পারাপার। সেতু থেকে মাছেদের জলকেলি দেখা সেও এক মনোহর। এছাড়াও লেকের পাড়ে হয়েছে রোয়িং ক্লাব, মূল লেকের দক্ষিণতটে জাপানিজ বৌদ্ধ মন্দির, সুইমিং পুল, রবীন্দ্র স্টেডিয়াম। আর হয়েছে শিশুচিত্তি বিনোদনের জন্য ট্রেন ও চিলড্রেন্স পার্ক। তেমনই আর এক নবতম আকর্ষণ তার মুক্তমঞ্চ। এদেরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। চড়েইভাতিরও মনোরম পরিবেশ এই সরোবর। বিপরীতে বিড়লা অ্যাকাডেমি অব আর্ট অ্যান্ড কালচার, ১০৯ সাদার্ন এভিনিউ। সোম ছাড়া প্রতিদিন ১৬-৩০—১৯-০০টায় মডার্ন আর্ট ও ভাস্কর্যের নানান সংগ্রহ দেখে নেওয়া যায়। মূর্তিও হয়েছে ৬০ ফুট উঁচু ২০০টন ওজনের ভগবান শ্রীকৃষ্ণর। অদূরেই গোলপার্কে রামকৃষ্ণ মিশন ইনস্টিটিউট অব কলাচার।

বিড়লা ইন্ডাস্ট্রিয়াল মিউজিয়ম: গড়িয়াহাট ছেড়ে সৈয়দ আমীর আলি এভিনিউ ধরে পার্কসার্কাসমুখী যেতে গুরুসদয় রোড সংযোগে বিড়লা ইন্ডাস্ট্রিয়াল অ্যান্ড টেকনোলজিক্যাল মিউজিয়ম। বিজ্ঞানের নানান কারিকুরি মডেলে প্রদর্শিত

হয়েছে। এমনকি কয়লাখনি দর্শনের স্বাদও মেটায় এই মিউজিয়ম। সোম ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা।

বিড়লা মন্দির: গড়িয়াহাটের অদূরে বালীগঞ্জ পোস্ট অফিসের বিপরীতে কলকাতা দর্শনে আর এক সংযোজন বিড়লা মন্দির তথা রাধাকৃষ্ণ মন্দির। ২৬ বছর ধরে ১৮ কোটি টাকা ব্যয়ে ৪৪ কাঠার উপর ১৬০ ফুট উঁচু মন্দির হয়েছে ২১শে ফেব্রুয়ারি ১৯৯৬এ। বিষ্ণুপুর ও সোমপুরা শৈলীর সমন্বয়ে তৈরি মন্দিরে বহির্ভাগ পান্না থেকে আনা স্যান্ড স্টোন, অন্দর মারকানার শ্বেত মর্মরে। ইতালিয়ান মার্বেলও ব্যবহৃত হয়েছে ভূষণ বাড়িতে। সনাতন শৈলীর সঙ্গে আধুনিক প্রযুক্তি বিদ্যার সমন্বয়ে গড়া কারুকার্যময় মন্দিরটির ভাস্কর্যে অভিনবত্ব আছে। ভাস্কর এসেছে আগ্রা, মির্জাপুর, মজঃফরপুর থেকে। দরজার উপরে রূপোর কাজ, থামগুলির মাথায় সুস্বন্দ্র কাজ, গর্ভগৃহে বেলজিয়াম কাচের ঝাড় অনবদ্য। দেবতা—রাধা, কৃষ্ণ, শিব ও দুর্গা মন্দিরে। গীতার আলোখ্যও মূর্ত হয়েছে মর্মরে। পূজার বিধানও বৈচিত্র্য আছে। প্রণামী বান্ধে দেওয়া রীতি। তেমনই সাঁঝে ফিলিপস সংস্থার আলোর দূতি ও সুর মায়াজাল গড়েছে। প্রতিদিন ৫-৩০—১১-০০ আবার ১৬-৩০—২১-০০টায় মন্দির খোলা।

রাজভবন: ময়দানের উত্তর প্রান্তে গভর্নর হাউস বা রাজভবন। লর্ড মারকুইস ওয়েলসলির হাতে ২ মিলিয়ন টাকায় ১৭৯৮-১৮০৫এ লর্ড কার্জনর পূর্বপুরুষদের ডার্বিশায়ারের বাড়ি কেডলিসটন হল-এর রেনেসাঁরূপে তৈরি। সেই থেকে ব্রিটিশ গভর্নর জেনারেলের বাস ছিল। নানান দুলভ সংগ্রহের সঙ্গে এর থ্রোনরুম টিপু সুলতানের সিংহাসনটি রয়েছে। সাধারণের প্রবেশাধিকার নেই।

বিবাদী বাগ: পশ্চিমবঙ্গ তথা পূর্ব ভারতের ব্যবসাজগৎ বসেছে কলকাতায় বিনয়-বাদল-দীনেশ বাগকে কেন্দ্র করে। অতীতে নাম ছিল এর ট্যাক স্কোয়ার, আরও পরে হয় ডালহাউসি স্কোয়ার। মাঝে তার ট্যাক স্কোয়ার বা লালদিঘি। জোব চার্ণকের এই ট্যাক থেকেই সকালে জল যেত ভিত্তিতে ব্রিটিশের ঘরে ঘরে। বাগের উত্তর পাড়ে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের কেন্দ্রীয় দপ্তর রাইটার্স বিল্ডিং। ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির ক্লাব অর্থাৎ রাইটার্সদের বাসস্থানরূপে তৈরি হয় ১৭৮০তে এই ভবন। পশ্চিমে আধুনিকতার জয়যাত্রা রিজার্ভ ব্যাঙ্ক। পাশেই করিহিয়ান শৈলীর পিলারওয়ালা গম্বুজ শিরে ১৮৬৪তে শুরু হয়ে ৪ বছর ধরে গড়া জিপিও। ফিলাটেলিক ব্যুরো ছাড়াও ১৯৭৯তে রূপ পেয়েছে GPO লাগোয়া পোস্টাল মিউজিয়ম। ডাকও তার দপ্তরের অতীত ইতিহাস প্রদর্শিত হয়েছে। এদের মাঝে ছিল ১৬৯৬ খ্রিস্টাব্দে তৈরি ব্রিটিশের প্রথম মূর্গ। ১৭৫৬র ২০শে জুন বাংলায় নবাব সিরাজ জয় করে নেন দুর্গ। এখানেই ব্রিটিশের মনগড়া অঙ্কুশ হত্যা বা ব্ল্যাক হোল ট্রাজেডি অর্থাৎ গার্ড রুমে আশ্রয় নেওয়া শতাধিক (১২৩) ব্রিটিশের শ্বাসরুদ্ধ হয়ে

মৃত্যু ঘটে। ১৭৫৭র ফেব্রুয়ারি মাসে সন্ধি-চুক্তি মতো কলকাতা ফেরে ক্লাইভের হাতে। GPO-র উত্তর-পূবে দুর্গের ফলকটি আজও দেখতে মেলে। দক্ষিণে টেলিফোন ডবন। আর পূবে সওদাগরি অফিস ও পশ্চিমবঙ্গ সরকারের পর্যটন দপ্তর। নতুন করে মূর্তি হয়েছে ডাক্তার বিধানচন্দ্র রায়ের লালদিঘির উত্তরে। তারই পাশে মূর্তি হয়েছে বাংলার তিন বীর সন্তান—বিনয়-বালা-দীনেশের। আর হয়েছে সিপাহী বিদ্রোহের অন্যতম নায়ক মঙ্গল পাণ্ডের স্মারকস্তম্ভ। দিনের বেলায় খুবই কর্মচঞ্চল থাকে এলাকা। বাস, মিনিবাস, ট্রাম, মেট্রো ও সার্কুলার রেল সংযোগ গড়েছে শহরের বিভিন্ন প্রান্তের সঙ্গে। লক্ষ্যে জলপথ পেরিয়েও আসছেন অগণিত যাত্রী গঙ্গার এপার-ওপার উভয় পার থেকে। এমনকি লক্ষ লক্ষ যাত্রী পায়ে হেঁটে পাড়ি দিচ্ছেন সম দূরত্বের রেল সংযোগকারী দুই স্টেশন শিয়ালদহ ও হাওড়া থেকে।

বাগের পূবে বেনটিক স্ট্রিটে চীনাঙ্গের ছতোর দোকান সারি দাঁড়িয়ে। অদূরে টেরেটি বাজার, লাগোয়া অতীতখ্যাত চায়না টাউন। চীনারা ট্যাংরায় স্থানান্তরিত হলেও Sea Ip Temple আজও রয়েছে। চীনা বাজার থেকেও চীনা দোকান হটে গেছে। তবে, গুজরাটি জৈন মন্দির, পার্সিদের ফায়ার টেম্পল ও মুসলিম মসজিদ রয়েছে।

ময়দান: এটি কলকাতার অনন্য। শহরের প্রাণকেন্দ্রে এত ব্যাপক সবুজের সমারোহ ভারত তথা বিশ্বে দ্বিতীয়টি খুঁজে মেলা ভার। উত্তরে নেতাজীর হস্ত সঞ্চালনে যার খাড়া শুরু দক্ষিণে রেস কোর্স ছাড়িয়ে স্বামীজীর চরণবন্দনায় তার সমাপ্তি। পূবে জনাকীর্ণ চৌরঙ্গি রোড (কালীঘাটের দেবী কালীর পূজারী সাধু চৌরঙ্গীনাথের নামে নাম) পশ্চিমে গঙ্গা। ভারতীয় রাজনীতির মকান গরীও এই ময়দান। দিনের শেষভাগে মুখর করে তোলেন রাজনীতিবিদরা ময়দানের আকাশ-বাতাস। যান স্তব্ব করে মিছিল চলে পায়ে পায়ে কলকাতার দিগ্বিদিক থেকে ময়দানে। এও যেন কলকাতার একান্তই নিজস্ব। জীবন বাচাতে ধ্বংসুরির গুণাগুণ ব্যাখ্যা দিচ্ছেন বিদ্রোহী—বিধের লণ্ডভণ্ড রোধ করতেও তার বক্তা অব্যর্থ। তেমনই ধর্মকথার আসর বসান সাধু-সন্তর দল ময়দানের দিগ্বিদিকে।

এই বিস্তীর্ণ (৩০×১ কিমি) ভূ-ভাগে গড়ে উঠেছে গড়ের মাঠ। এরই বুকে বসেছে খেলার জগৎ। বিশ্বনন্দিত ক্রিকেট-স্বর্ণ রঞ্জি স্টেডিয়ামটিও এই গড়ের মাঠে। ১৮০২এ ভারতীয় ক্রিকেটের প্রথম আসরও বসে ময়দানে। আর ১৯৮৭র ৮ই নভেম্বর বিশ্বকাপ ক্রিকেটের ফাইনালও অনুষ্ঠিত হয় ইডেনে। ১৯৯৬র ১৩ই মার্চ সেমিফাইনালও হয়ে গেল আর এক বিশ্বকাপ ক্রিকেটের ইডেন উদ্যানে। তারও পশ্চিমে ১৮৪০এ জন্ম ভ্রমণবিলাসীদে ইডেন উদ্যানে। অকল্যাণ্ডের বোন ইডেনের নামে নাম। কলকাতার আর এক গর্ব এশিয়ার বৃহত্তম নেতাজী ইনডোর স্টেডিয়ামটিও রূপ পেয়েছে এই ইডেনে। বার্মা (মায়ানমার-Myanmar) দেশ জয় বরণীয়

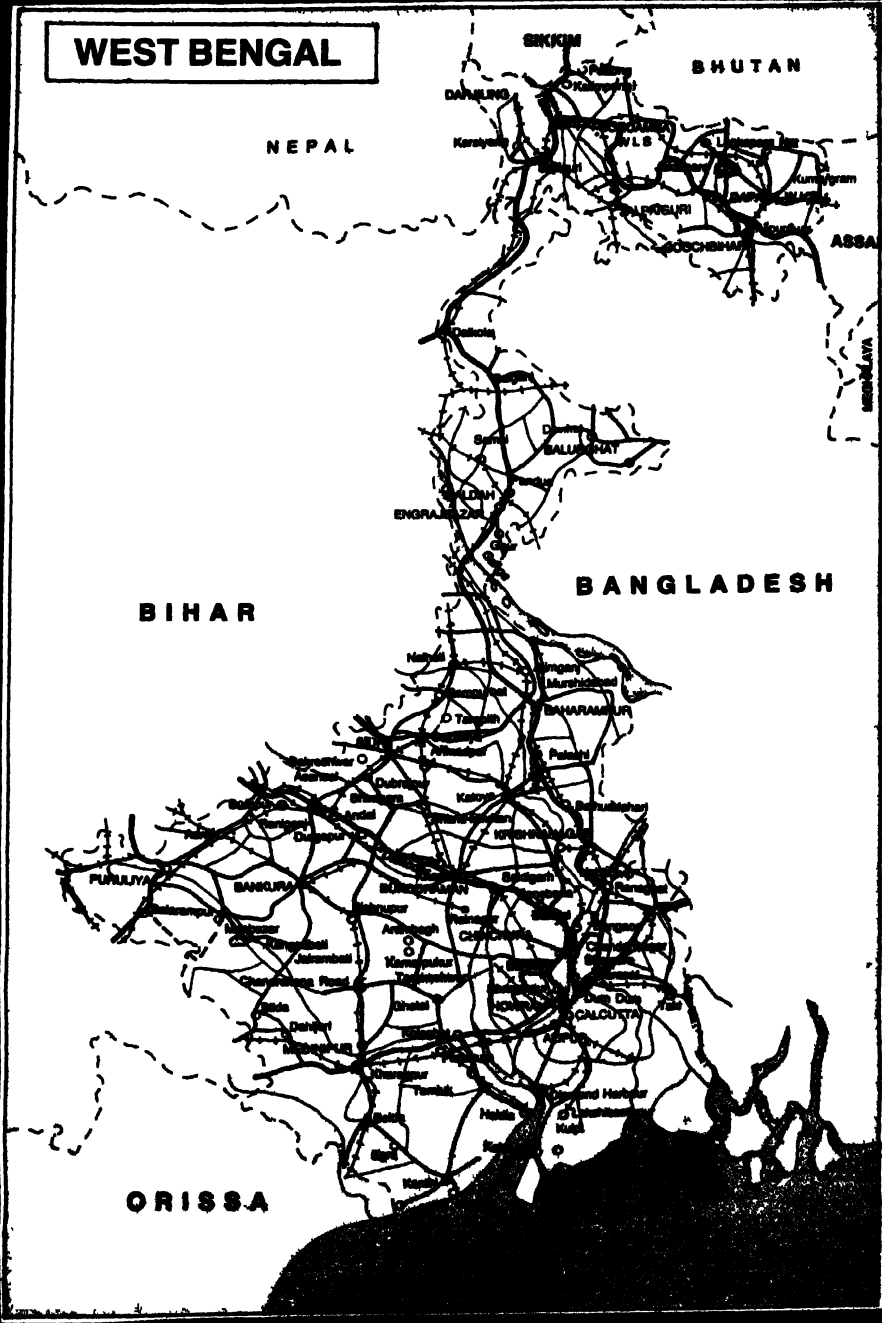
করে তুলতে ১৮৫৬য় প্রোম নগরী থেকে লর্ড ডালহৌসী বার্মিজ পাগোডা তুলে এনে ইডেনে বসান। পাগোডাটি লুপ্ত হলেও সংস্কার হচ্ছে নতুন করে। তবে, ব্যান্ড স্ট্যান্ডটি আজও প্রতি সন্ধ্যায় কলকাকলিতে মুখর হয়ে ওঠে। একটি লেকও সর্পিলা গতিতে বয়ে চলেছে উদ্যানের মাঝ দিয়ে।

এরই উত্তর-পশ্চিমে ১৮৭২এ সেরাসেনিক শৈলীতে বেলজিয়ামের ইয়েঙ্গ টাউন হলের রেন্সিকা রূপে তৈরি হয়েছে হাইকোর্ট ভবন—চূড়াটি তার ৫৫মি উঁচু; তারই পাশে ১৮১৪য় তৈরি ডোরিক স্টাইলে টাউন হল, সামনে এর বিধানসভা ভবন, তার সামনে আকাশবাণী, এগুলিও কলকাতা দর্শনার্থীদের কাছে কম আকর্ষণীয় নয়। আর বাংলার সংস্কৃতির ধারক ও বাহক অ্যাকাডেমি অব ফাইন আর্টস, রবীন্দ্র সদন মুখর হয়ে ওঠে প্রতি সন্ধ্যায় ময়দানের দক্ষিণ-পূর্ব কোণে চৌরঙ্গি ও লোয়ার সার্কুলার রোডের সংযোগে ক্যাথিড্রাল রোডে। সোমবার ছাড়া নানান ধর্মী প্রদর্শনীর নিয়মিত আসরও (১৫—১৮-০০) বসে অ্যাকাডেমিতে। আর আসর বসে কলামন্দিরে, থিয়েটার রোড অর্থাৎ শেক্সপিয়ার সরণিতে। তেমনই বাংলার আর এক কৃষ্টি তার নন্দন সৃষ্টি। রবীন্দ্রসদনের পিছনে কলকাতার এই নন্দনকাননে নিয়মিত সাংস্কৃতিক আসর বসছে। নন্দনে সত্যজিৎ আকীইভ—সেও আর এক দর্শন। লাগোয়া শিশির মঞ্চ, কলকাতা ইনফর্মেশন সেন্টার; বিপরীতে ক্যালকাটা ক্লাব। কলকাতার আর এক কৃষ্টি বাংলা নাটক। প্রতি বৃহস্পতি, শনি, রবি ও ছুটির দিনগুলিতে বিকালে আসর বসে স্টার (বিশ্বংসী অয়িকাণ্ডে গত কিছুকাল বন্ধ); অদূরে রঙমহল (বিধান সরণী); বামহাতি রাজা রাজবিশেষ স্ট্রিটে—বিশ্বরূপা, বিজন, রঙ্গনা, সারকারিণা; মিনার্ভা (বিডন স্ট্রিট); অহীন্দ্র মঞ্চ (বেহালা); তপন, কাশী বিশ্বনাথ, প্রতাপ, নেতাজী, মুক্তঅঙ্গন, সৃজাতা, উত্তম, আণ্ডতোয় ছাড়াও আরও নানান মঞ্চে নাটক অভিনয়ের।

এছাড়া কলকাতা ভ্রমণে অবশ্যই উচিত হবে সারা বিশ্বের অন্যতম সাহিত্য বাসর—কলেজ স্ট্রিট বেড়িয়ে নেওয়া। এতবড় বই বাজার দ্বিতীয়টি খুঁজে মেলা ভার। পুরনো বই-এর অমূল্য রতন মিলবে প্রেসিডেন্সি কলেজ-রেলিংয়ে। স্কুল, কলেজ, এমনকি কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়টিও এই কলেজ স্ট্রিটে। তেমনই রয়েছে ইন্ডিয়ান কফি হাউস বই জগতের শিরোমণি হয়ে প্রেসিডেন্সি কলেজের বিপরীতে। কফির কাপে তৃপ্তান তোলে কলকাতার ছাত্র থেকে বিশ্বজ্ঞানসমাজ দিনভর। এমনকি এই কফি হাউসের আলবার্ট হল—এ ১৮৮৫তে জাতীয় কংগ্রেসের সম্মেলনও বসে। বাজলির বারো মাসে তেরো পার্বণের সাথে পার্বণ বেড়েছে আরও এক—ময়দানে জানুয়ারির শেষ বৃহবার শুরু হয়ে ১২দিন ব্যাপী কলিকাতা পুস্তক মেলা মাতোয়ারা করে তোলে কলকাতা কে।

কেনাকাটা: কলকাতার আর এক কৃষ্টি তার মিঠাই সৃষ্টি।

WEST BENGAL



BIHAR

UTTAR
PRADESH

NEPAL

MADHYA
PRADESH

WEST
BENGAL

ORISSA

BAY OF
BENGAL



পদ্মপুকুর রোডের বলরাম মল্লিক ও রাধারমণ মল্লিকের (ভবানীপুর) সন্দেশ ছাড়াও নানান কিছু, কে সি দাসের রসোমালাই, সন্দেশের (কলেজ স্ট্রিট) দই, শর্মার (গিরীশ পার্ক) রাবড়ি, ভীমনাগের সন্দেশ, চিত্তরঞ্জনর (এডি স্কুল) রসগোল্লা, তেওয়ারির গোলাপজাম, নকুড়ের (হেদুয়া) কড়াপাক, গান্ধারামের মিষ্টি দই, অমৃত (শ্যামবাজার)-র মিষ্টি দই আজও রসনা মেটায় কলকাতা ভ্রমণে। তাঁত শিল্পেও বাংলা অদ্বিতীয়। রাঙা সরকারের তত্ত্বজ্ঞ ও তত্ত্বশ্রী তাঁতজাত বস্ত্রের সম্ভার নিয়ে বিপণী খুলেছে সারা শহরময়। এদেরও পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

তেমনই কলকাতার আর এক আকর্ষণ Auction House দর্শন। প্রতি রবিবার সকালে সমাজ-সংসারের A to Z কিনতে মেলে ঠৌরঙ্গী রোড-পার্ক স্ট্রিট-রাসেল স্ট্রিট এলাকার নানান অকসান মাঠে। ক্রেতারাই দাম নিরূপণ করে এখানে। হাতুড়ি পিটুনির ছন্দে সাথে দামও উঠতে থাকে পছন্দের নিরীক্ষে। কিনতেও মেলে Antique-এর বেড়াঝাল ডিঙিয়ে অতীত দিনের নানানকিছু। আগ্রহীরা Modern Exchange. 12-B, Russell St; Russell Exchange. 12-C, Russell St; Dalhousie Exchange. 13-F, Russell St; Suman's Exchange. 2/1, Russell St; Chowringhee Sales Bureau. 12-B, Park St; ছাড়াও নানান।

আগুনের লেলিহান শিখায় (১৯৮৫) পুড়ে যেতে নব সাজে, নতুনভাবে অতীতের পুলিশ কমিশনার স্যার স্টুয়ার্ট হগ স্থাপিত ঐতিহ্যশালী হগ মার্কেট তথা নিউ মার্কেট আজ হয়েছে নিউ নিউ মার্কেট। কেনাকাটায় আজও অগ্রগণ্য। কার্পেট থেকে হ্যান্ডিক্রাফ্টস সবই মেলে নিউ মার্কেটের দ্বিসহস্রাধিক দোকানে। তবুও যেন মান ও দামে সাবধানতা পালনীয়। কলকাতার নতুন আকর্ষণ তার *পাতাল বাজার*। সত্যনারায়ণ পার্কের পাতাল বাজারটি ইতিমধ্যেই কলকাতা ভ্রমণার্থীদের কেনাকাটায় আদরণীয় হয়ে উঠেছে। অদূরে *বড়বাজার*—বসন-ভূষণের নানান সম্ভার নিয়ে অভিজাত *রামকানাই রমণীকান্ত পাল*; স্বল্পদূরে কলেজ স্ট্রিটে *ইন্ডিয়ান সিল্ক হাউস* সংস্থা। তেমনই আছে দক্ষিণ কলকাতার গড়িয়াহাটায় পাঁচ দশকের ঐতিহ্যবাহী বস্ত্রবিপণী *ট্রেডার্স অ্যাসোসিয়েশন*। আর এক অভিজাত বস্ত্র বিপণী *আদি ঢাকেশ্বরীর* শাড়ির সম্ভারও উল্লেখ্য। তেমনই ইতিহাস গড়েছে পাজামা-পাঞ্জাবী খ্যাত *কিংবদন্তী, নিউ পাঞ্জাবী স্টোর্স* গড়িয়াহাটায়। আর হয়েছে ভারত রাষ্ট্রের ২৭টি রাজ্যের এসম্পারিয়ামের সাথে শতাধিক প্রাইভেট মালিকানাধীন দোকানপাটের কমপ্লেক্স—দক্ষিণ কলকাতার গোলপার্কের সন্নিকটে *দক্ষিণাপণ* ও উত্তর কলকাতায় বিধান শিশু উদ্যানের বিপরীতে VIP রোডে *ন্যাপশনাল হ্যান্ডলুম হাউস*। হস্তজাত শিল্পের কারিকুরির জন্য—মঞ্চবার নানান বিপণী, রিফিউজি হ্যান্ডিক্রাফট—গড়িয়াহাট-বন্ডেল রোড জং, খাদি প্রামোদ্যোগ ভবন—

জমশ সঙ্গী: ১৭-১৮/৫

চিত্তরঞ্জন এভিনিউ-মিশন রো জং ছাড়াও নানান সংস্থায় চলা যেতে পারে। স্বর্ণালঙ্কারের জন্য চলা যেতে পারে বিপিনবিহারী গান্ধলী স্ট্রিটে—ডিক জুয়েলার্স, রাজলক্ষ্মী, সেনকো, বি সরকার জহরী, পি সি চন্দ্র বা রাসবিহারী এভিনিউর কালকাটা জুয়েলারীতে। তেমনই বিদেশী পণ্যের নানান সম্ভার মেলে খিদিরপুরের ফ্যান্সী বাজারের দোকানপাটে। এছাড়াও দোকানপাট রয়েছে সারা শহর জুড়ে কলকাতায়। উচিতও হবে মুর্শিদাবাদের সিল্ক, হাতির দাঁতের নানান সম্ভার, বিষ্ণুপুরের বালুচরী, শান্তিপুর ও ধনেশালির টাঙ্গাইল, জামদানী, কাঁথা স্টিচ, বাঁকুড়ার ঘোড়া বাংলা ভ্রমণের স্মারক রূপে সঙ্গী করা। তবে, রবিবার বন্ধ থাকে কলকাতার দোকানপাট।

সন্টলেস স্টিচ: কলকাতার আর এক আকর্ষণ তার নতুন গড়ে ওঠা উপনগরী বিধাননগর বা সন্টলেস স্টিচ। শহরের উত্তর-পূর্বে পরিকল্পিত শহর রূপ পাচ্ছে। এরও প্রশস্তি আজ পর্যটকদের মুখে মুখে। নতুন চিলড্রেন পার্ক ঝিলমিল-ও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। নব সাজে নতুন রূপে আকর্ষণ বাড়িয়ে তোলা হয়েছে ঝিলমিলের। ঝিলমিলের আর এক আকর্ষণ নিক্কো পার্ক। ৪০ একর জমি জুড়ে শিশু চিত্ত বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে গড়ে উঠেছে। টয় ট্রেন, কেবল কার অর্থাৎ রোপওয়ে, মুনরেকার, ওয়াটার গুটে ছাড়াও আরও কত কি শিশুদের জন্য জল, ফল ও খাদ্য গ্রাহ্য হলেও সাধারণের সঙ্গে খাবার নেওয়া মানা—আহার মেলে ফুড পার্কে। পার্কের সময়: ১১—২০-৩০টা, রাইডের সময় ১১-৩০—২০-০০টা। টিকিট ২০ করে। এছাড়াও টিকিট লাগে পার্ক অদরের নানান দর্শনে। ৫০-এর অধিক দলে কাক্সের দিনগুলিতে ছাত্র-ছাত্রীদের ৫০% রিবেট মেলে। যোগাযোগ ৩ 334-6052. C-2, T4, C8, MS35, M6, 35-C, S18, S22, 215A এবং সন্টলেসের করুণাময়ী বাই এম বাইপাসের সুকান্তনগর পৌঁছে নিক্কো পার্কের শাটল বাস মেলে। নগরীর আর এক আকর্ষণ এশিয়ার বৃহত্তম ঘূর্ণ ভারতী ক্রীড়াঙ্গন ইতিমধ্যেই ক্রীড়ার সিকদের প্রিয় হয়ে পড়েছে। তেমনই এশিয়ার সর্বপ্রথম ইন্টেলিজেন্ট স্টিচ ও গড়ে উঠেছে সন্টলেসে।

সন্টলেসের আর এক আকর্ষণ সবুজ মল্লদ্যান—বনবিজ্ঞান। অতীতের সেট্রাল পার্কের অংশ ৫০ একর জুড়ে ১৯৯২-এ রূপ পেয়েছে। করুণাময়ীমুখী বাসে বিকাশভবন নেমে বিপরীতে বনবিজ্ঞান। বনবিজ্ঞানের মূল আকর্ষণ U-শেপের ঝিল অর্থাৎ লেক, শীতে দেশী-বিদেশী পাখিরাজ আকর্ষণ বাড়ায়। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে মৎস্য শিকারিদেরও স্বর্ণ এই লেক। প্রবেশভারের বায়ে হাজার দেড়েক গোলাপ ঝঞ্জে রঙবেরঙের গোলাপের সৌরভ আমোদিত করে। তেমনই চড়ুইভাতিরও স্বর্ণ রিঞ্জ পেরিয়ে প্যাগোডা স্থাপ। চিলড্রেন পার্কে আবোলতাবোলের চরিত্ররা কসরৎ দেখাতে ব্যস্ত, রিপারীতে প্রিমিটিভ হাউস, রেস্ট রুম

কোজিনুক, কৃত্রিম পাহাড়, রাক্ষসমুখী ঝরনা, চেনা-অচেনা রকমারি পাছের নার্সারি ছাড়াও নানানকিছু আকর্ষণ বাড়িয়েছে বনবিভানের। শীতে যাত্রীর আধিক্য ঘটলেও সারা বছর ধরে চলা যায় বনবিভান। ৮-০০টা থেকে সূর্যাস্তে সাধারণের জন্য দ্বার খোলা। ছোট ও ছাত্রদের রিবেট মেলে দর্শনীতে।

বাংলার প্রাক্তন মুখ্যমন্ত্রী ডা. বিধানচন্দ্র রায়ের স্মৃতিতে আর এক বরণ্য অতুল্য ঘোষের উদ্যোগে ১৯৭৬ খ্রিস্টাব্দের ১লা ফেব্রুয়ারি তদানীন্তন রাষ্ট্রপতি ফকরুদ্দিন আলি আহমেদ উদ্বোধন করেন বিধান শিশু উদ্যান। এটিও আজ কলকাতা দর্শনে উল্লেখ্য। কলকাতার উত্তর-পূর্ব প্রান্তে ভি আই পি রোডে ৬৪ বিঘা জমিনি নিয়ে রূপ পেয়েছে শিয়ালদহ-দমদমের মাঝে বিধাননগর রোড রেল স্টেশনের বিপরীতে শিশুদের প্রতিভার সৃষ্ট বিকাশসাধনের উদ্দেশ্যে গড়ে তোলা হয়েছে এই উদ্যান। অডিটোরিয়াম, পাঠাগার, খেলাধুলা, অ্যাথলেটিকসের নিয়মিত আসর বসে। এর ফুলবাগিচাটিও সুন্দর। কেবল ছোটদের সাথে বড়দের প্রবেশাধিকার মেলে। তবে গত কিছুকাল এটিও শিকার হয়েছে হাল-আমলের।

বিজ্ঞাননগরী: কলকাতার গর্ব এশিয়ার একমাত্র বিজ্ঞাননগরী রূপ পেয়েছে ই এম বাইপাস ও পার্ক সার্কাস সংযোগে কলকাতা-৭০০০৪৬, ৩ ৩৪৩৪৩৪৩-এ। আজব হলেও বিজ্ঞানের কারিকুরিতে ত্রাস, আনন্দ ও শিহরণে ভরা জুরাসিক অরণ্যে ডায়নোসর, সেরেসেটির নিবিড় অরণ্যে জীবজন্তু, মহাশূন্যে প্রাণের সন্ধান, টাইম মেশিনে মহাকাশ অভিযান, আগ্নেয়গিরির অভ্যন্তর, পায়ের তলার মাটি কাঁপছে ভূমিকম্প, চোরাবালির গোলকধাঁধা, ঘূর্ণিঝড়, বাজনার তালে আলো ঝলমল ফোয়ারার নাচ, চেনা-অচেনা পাখির সাথে প্রজাপতি-পঙ্গপাল-মৌমাছি ছাড়াও আরও কত কি। এমনকি গুহামানবের সঙ্গে পৌঁছে যান সৌর-জগতের নানান গ্রহে। প্রবেশ মূল্য ১০, স্পেস থিয়েটার ৩০, টাইম মেশিন ১০। ছাত্র-ছাত্রীদের রিবেট মেলে কমপক্ষে ৫০ হলে। বাস যাচ্ছে S19, C2, C3, C8, রবীন্দ্রবন্দন থেকে S23, গড়িয়া-বাগবাজার S2। ছাড়াও নানান বিজ্ঞান নগরী হয়ে। ছুটি ও রবিবার সহ প্রতিদিন ৯—২১-০০টায় খোলা।

দক্ষিণেশ্বর: দক্ষিণেশ্বর আজ তার কালীমন্দিরের জন্য খ্যাত। কাশী চলার পথে স্বপ্নাদিষ্ট হয়ে কেবর্তের মেয়ে জ্ঞানবাজারের রানী রাসমণি ৯ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ২৫ একর জমির উপর ১৮৪৭এ শুরু করে ১৮৫৫য় গড়ে তোলেন এই মন্দির। মূল অর্থাৎ নবরত্ন মন্দিরে সহস্র পাণ্ডুর রৌপ্য পদ্মের উপর শিব দেবী কালীকে বৃকে নিয়ে শায়িত। একখণ্ড পাথর কুঁসে তৈরি হয়েছে দেবীমূর্তি। আর আছে দ্বাদশ শিব মন্দির গঙ্গার পাড় ধরে। পঞ্চবাটি (অশ্বখ, বিষ্ণু, বট, অশোক, আমলকী) বেদীটিও দর্শনার্থীদের নিবিড় শান্তি যোগায়।

সাধক রামকৃষ্ণ পরমহংসদেবের স্মৃতি জড়িয়ে রয়েছে দক্ষিণেশ্বরের সঙ্গে। বাসও করতেন রামকৃষ্ণদেব-এই

মন্দিরের উত্তর-পশ্চিম কোণের একটি ঘরে। ঘরটিতে আজও ভক্তজনদের সমাগম ঘটে চলেছে। এছাড়া মন্দির হয়েছে প্রবেশদ্বারে রানী রাসমণির। আর রয়েছে International Guest House. লাগোয়া মন্দির হয়েছে ঠাকুর শ্রীরামকৃষ্ণর নতুন করে। কলতরু বিশেষ উৎসব দক্ষিণেশ্বরে। ৫-৩০—১০-৩০ ও ১৬-৩০—১৯-৩০টায় খোলা মেলে মন্দির।

আদ্যাপীঠ: অদূরেই আর এক হিন্দু-তীর্থ আদ্যামায়ের মন্দির। মানুষকে প্রেম ও আদর্শে দীক্ষিত করতে বাংলা ১৩৪০এ শুরু হয়ে ১৩৭৫ সনের মকর সংক্রান্তিতে স্বপ্নে দেখা মন্দির গড়েন শ্রীঅন্নদা ঠাকুর। ৩ চূড়োওয়ালা ধাপে ধাপে ৩ ধাপে গড়া মন্দিরের প্রথম ধাপে উপবিষ্ট শ্রীরামকৃষ্ণ, বেদীতে লেখা গুরু। দ্বিতীয় ধাপে ইন্ডেন গার্ডেনের ঝিলে পাওয়া আদ্যামায়ের আদলে পদ্মাসনে শায়িত শিবের বৃকে অষ্টধাতুর দেবীমূর্তি, বেদীতে লেখা জ্ঞান ও কর্ম। তৃতীয় ধাপে রাখাকৃষ্ণর যুগল মূর্তি, বেদীতে লেখা প্রেম। সূর্যোদয়ের ১ ঘণ্টা আগে মঙ্গলারতি, সকাল ১০-৩০টায় ভোগারতি, সূর্যাস্তের ১১ ঘণ্টা পর শীতলারতি। বছরে ৫২ দিন মঙ্গলারতি থেকে ১২-০০, আবার ১৫-০০টা থেকে শীতলারতি পর্যন্ত খোলা থাকে মন্দির। অন্যান্য দিন পূজাপাঠের কালে দর্শন মেলে। সম্মুখস্থ দর্শন মণ্ডপ থেকে দেখার প্রথা। বাকি সময় দ্বার রুদ্ধ—দর্শনও মানা। দুপুরে ভক্তদের অন্নপ্রসাদ মেলে প্রণামীতে।

এসপ্লানেড থেকে বাস যাচ্ছে শ্যামবাজার হয়ে S17, ৩৪, ৩২ ও মিনিবাস। আর ট্রেন যাচ্ছে শিয়ালদহ থেকে ডানকুনি শাখায় ১৪ কিমি দূরের দক্ষিণেশ্বর হয়ে। অভ্যুৎসাহীরা যে কোনও বাসে বরানগর বাজার পৌঁছে শ্রীরামকৃষ্ণ মহাশ্মশানটিও দেখে নিতে পারেন। ঠাকুর রামকৃষ্ণর নম্বর দেহ পুতায়িতে বিলীন হয় এই মহাশ্মশানে। ফিরতি পথে রতনাবু রোড ধরে বামহাতি চন্দ্রকুমার রায় লেনের দশমহাবিদ্যা মন্দিরে দারুনির্মিত দেবী কালী, তারা, ষোড়শী, ভুবনেশ্বরী, ভৈরবী, ছিন্নমস্তা, ধূমাবতী, বগলা, মাতঙ্গী, কমলা দর্শন করে যেতে পারেন। এমনকি রামকৃষ্ণদেবও আসতেন মাতৃদর্শনে। অদূরে কাশীপুর রোডে ঠাকুরের স্মৃতি বিজড়িত উদ্যানবাটি-ও রামকৃষ্ণ-ভক্তদের আর এক তীর্থ। ১ কিমি দূরে মালিপাড়ায় বৈষ্ণব পাটবাড়িও আর এক দ্রষ্টব্য। শ্রীচৈতন্যদেব ও শ্রীপাট এসেছেন পাটবাড়ির পূণ্যতীর্থে। মন্দিরে গৌর-নিতাই-এর বিগ্রহ। আর আছে শ্রীগৌরানন্দ গ্রন্থ মন্দির ও বৈষ্ণব মিউজিয়াম। শ্রীচৈতন্যদেবের হস্তাক্ষরও দেখে নেওয়া যায়।

বেলুড় মঠ: দক্ষিণেশ্বর থেকে গঙ্গার অপর (পশ্চিম) পারে জি টি রোডে গড়ে উঠেছে মঠ বেলুড়ে। শহর থেকে দূরত্ব ১০ কিমি আর হাওড়া থেকে ৬ কিমি মতো। বাস ও মিনিবাস যাচ্ছে এসপ্লানেড থেকে হাওড়া হয়ে। তবে দক্ষিণেশ্বর ভ্রমণার্থীদের নৌকায় বেলুড় যাওয়াই সুবিধার। নৌকা থেকে ১৯২৭-৩২এ তৈরি বিবেকানন্দ (ওয়েলিংডন

ব্রিজ) সেতুটির সৌন্দর্যও দেখে চলা যায়। বাসও যাচ্ছে ৫১ ও ৫৬ রুটের দক্ষিণেখর হয়ে বেলুড়ে।

১৮৮৬তে প্রয়াত ঠাকুরের পুত্র অহি ৯ই ডিসেম্বর ১৮৯৮ স্বামী বিবেকানন্দ কাঁধে করে বয়ে এনে প্রতিষ্ঠা করেন বেলুড়ে। আর ১৯৩৮ খ্রিস্টাব্দের ১৪ই জানুয়ারি ৮ লক্ষ টাকা ব্যয়ে স্বামী বিবেকানন্দ পরিকল্পিত এই মঠ রূপ পায় সেই পূণ্য ভূমে। মঠের স্থাপত্যে বিশ্ব ভ্রাতৃত্বের নিদর্শন রয়েছে। চার্চ, মসজিদ আর মন্দির—এই তিনের সমন্বয়ে রূপ পেয়েছে বেলুড় মঠ। মঠটি পরিচালনা করেন ১৮৯৭ সালে স্বামী বিবেকানন্দ প্রতিষ্ঠিত রামকৃষ্ণ মিশন। মিশনের মূল দপ্তরও এই মঠে। মাত্র ৩৮ বছর বয়সে ১৯০২এর ৪ঠা জুলাই সেহ রাখন বিবেকানন্দ। সমাধিও হয়েছে মঠপ্রাঙ্গণে। মঠের উত্তর-পূবে গঙ্গার তীরে দ্বিতল বাড়ি—স্বামী বিবেকানন্দ বাস করতেন; স্মারকরূপে স্বামীজীর ব্যবহৃত জিনিসপত্রের প্রদর্শনী বসেছে। আর আছে গঙ্গার পাড়েই ব্রহ্মানন্দ মন্দির, মাতৃ মন্দির, স্বামীজীর মন্দির ও রামকৃষ্ণ শিষ্যদের সমাধি পীঠ।

মঠের আর এক আকর্ষণ (মে ১৩, ১৯৯৪) ন্যাশানাল কাউন্সিল অব সায়েন্স মিউজিয়মের সহায়তায় গড়া শ্রীরামকৃষ্ণ মিউজিয়ম। শ্রীরামকৃষ্ণ, মা সারদা, স্বামী বিবেকানন্দ ছাড়াও নানান শিষ্যের স্মৃতিপূত সন্মারের সাথে তদানীন্তন পরিবেশ নিপুণভাবে ফুটিয়ে তোলা হয়েছে মিউজিয়মে।

আর হয়েছে মঠের মূল প্রবেশ পথ GTRএ শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন সারদা মন্দির। সারদা মন্দিরের অন্যতম আকর্ষণ রামকৃষ্ণ দর্শন অর্থাৎ ছবি ও পুতুলে ঠাকুরের কথামৃত রূপ পেয়েছে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৩-০০ আবার ১৪—১৮-০০টায় ৫০ পয়সার টিকিটে দেখে নেওয়া যায়। মিশনের বিক্রয়কেন্দ্রও বসেছে রামকৃষ্ণ দর্শনের নিচুতে। সকাল ৬-৩০ থেকে ১০-৩০ আবার ১৫-৩০ থেকে ১৯-৩০টায় খোলা থাকে বেলুড় মঠ।

বটানিক্যাল গার্ডেন: শহরের উপকণ্ঠে হাওড়া রেল স্টেশন থেকে ৪ কিমি দক্ষিণে হাওড়া জেলার শিবপুরে হংগলি নদীর পশ্চিম তীরে রূপ পেয়েছে বটানিক্যাল গার্ডেন। ভারতের প্রাচীনতম এই বটানিক্যাল গার্ডেন ১৭৮৬র ৬ই জুলাই কর্নেল কিডের হাতে গ্নেজার রিট্রিট রূপে জন্ম নেয়। ২৭২ একর ব্যাপ্তি গার্ডেনে ৩৫০০০ ফুল ও ফল ছাড়াও ১৫০০০ নানানধর্মী গাছ স্থান পেয়েছে। ৬৫ রকম তার বিশেষী। এর মূল আকর্ষণ ২৫০ বছরের প্রাচীন বটবৃক্ষ। ১৮৬৪-৬৭তে ঘূর্ণি ঝড়ে ব্যাপক ক্ষতির পর মূল গুঁড়িটি ফ্যান্সার ধরায় ১৯৪৫এ অপসারিত হলেও ২৪½ মি উঁচু ৪০৪ মি (১.২ হেক্টর) ভূমি জুড়ে ১৮২৫টি খুরি নেনেছে বিশ্বের বৃহত্তম এই বটবৃক্ষের। তেমনিই জলাশয়ের নানান জলজ উদ্ভিদ—সেও আর এক আকর্ষণ। ডিস্টোরিয়া অ্যামাজোনিকা অর্থাৎ কাঁটা পদ্মের বিশালাকার পাতায়

বৃচ্ছদে একটি শিশু বসিয়ে রাখা চলে। আর আছে সিনিলি দ্বীপ থেকে আনা ডাবল কোকোনাট বা জোড়া নারকেল, রঙবেরঙের বাঁশ, ব্রাজিল থেকে আনা শাখা-প্রশাখাওয়ালা তালগাছ, ম্যাড ট্রি অর্থাৎ পাগলা গাছ, নানানধর্মী ক্যাকটাস, অর্কিড ও ফুলের সস্তার। এমনকি চীন থেকে আনা চায়ের গাছ এখানেই প্রথম বড় হয়ে দাঙ্গিলিং ও অসম যায়। সর্পিল গতিতে গার্ডেনের বৃক চিরে বয়ে চলেছে লেক। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে। বটানিকসের বই-এরও অমূল্য সংগ্রহ রয়েছে এর লাইব্রেরিতে। তেমনিই অফিস লাগোয়া চরক উদ্যানের আয়ুর্বেদিক গাছপালাও উল্লেখ্য। সারাদিনের ছুটি কাটাবার সুন্দর পরিবেশ; চড়ুইভাতিরও আদর্শ জায়গা। চড়ুইভাতির জন্য কটেজও ভাড়াই মেলে অগ্রিম বুকিংএ। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্ত খোলা থাকে গার্ডেন। শহীদ মিনার থেকে ৫৫ রুটের বাস ও মিনিবাস যাচ্ছে হাওড়া স্টেশন হয়ে বটানিক্যালে। হাওড়া স্টেশন থেকে ৬১, ৬১এ, ৬২; সশ্টলেক থেকে বকুলতলার মিনিবাস যাচ্ছে গার্ডেন হয়ে। CTC-র বাস মেলে শ্যামবাজার, রাজাবাজার, সিথি ও ধরমতলা ট্রাম গুমটি থেকে বিদ্যাসাগর সেতু হয়ে গার্ডেনের। নিজস্ব ব্যবস্থায় বিদ্যাসাগর সেতু হয়ে যাতায়াত সুবিধা। চাঁদপাল বাতজাঘাট থেকে ফেরিতেও গঙ্গা পেরিয়ে যাওয়া চলে বটানিক্যালে। অদূরে শিবপুর ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজ।

রবীন্দ্র ও বিদ্যাসাগর সেতু: কলকাতা শহরের প্রবেশ তোরণ হাওড়া সেতু। নতুন করে নাম হয়েছে রবীন্দ্র সেতু। কলকাতার পূবে আর হাওড়ার পশ্চিমে প্রবাহিত হংগলি (গঙ্গা) নদীর উপর ১৯৩৯এ শুরু হয়ে ২৮শে ফেব্রুয়ারি ১৯৪৩এ শেষ হয় এর নির্মাণ। ২১৫০ ফুট দীর্ঘ, ৭১ ফুট প্রস্থ বিশ্বের তৃতীয় বৃহত্তম ক্যান্টিলিভার সেতুর উচ্চতা ১৯৬ ফুট। ২৬৫০০ টন ইস্পাতে গড়া—থাম নেই একটিও। ৮ সারি গাড়ি চলতে পারে একত্রে পাশাপাশি। এছাড়া রয়েছে পায়ে চলার পথ দুপাশে। ৫৭০০০ গাড়ি আর ২ মিলিয়ন যাত্রী পারাপার হয় বিশ্বের ব্যস্ততম এই সেতু দিয়ে। ১৯৪৩ থেকে গাড়িও চলছে দুদাম বেগে সেতু দিয়ে। তার আগে ১৮৭৪ থেকে নৌকা সাজিয়ে পাটাতন (পনটুন ব্রিজ) গড়ে গাড়ি পেরুত গঙ্গা। এটি আধুনিক বিজ্ঞানের এক বিশ্বরেকর্ড উপহার। এর সৌন্দর্য উপভোগ করতে যে-কোন দর্শনার্থীকে মাঝ গঙ্গায় যেতে হবে। গ্রীষ্মের খরতাপে প্রতিদিন ৪ ফুট বেড়ে গিয়ে আবার স্বাভাবিকতা পায় রাতে। সেতুর ছবি তোলা নিষেধ। সেতুর চাপ লাঘব করতে দীর্ঘ ২২ বছর ধরে ২ কিমি দক্ষিণে ১০ই অক্টোবর, ১৯৯২এ তৈরি হয়েছে এশিয়ার দীর্ঘতম, বিশ্বের তৃতীয় বৃহত্তম কেবল স্টেড ব্রিজ অর্থাৎ দ্বিতীয় হংগলি সেতু গঙ্গায়। ৪৫৭.২০ মি লম্বা X ১১৫ মি চওড়া এই সেতু ৪টি পাইলন অর্থাৎ স্তম্ভে ১২১টি তারের রশিতে ঝুলন্ত। ভিত্তি এর ১০০ ফুট গভীরে। ৩৮৮ কোটি টাকা ব্যয়ে তৈরি প্রযুক্তিগত উদ্বোধনের এক উজ্জ্বল প্রতীক দ্বিতীয় হংগলি সেতু বা বিদ্যাসাগর সেতু।



তারকাখচিত হোটেলের সংখ্যা সীমিত হলেও সাধারণ হোটেলের অভাব নেই শহর কলকাতায়। বিভিন্ন মানের বিবিধ দামের হোটেল রয়েছে সারা শহরময়। শিয়ালদহ ও হাওড়া দুই রেল স্টেশন ঘিরেই সাধারণ হোটেলের অবস্থান। আর পাশ্চাত্যধর্মী হোটেলের অবস্থান ময়দান অর্থাৎ এসপ্লানেড-এর চারপাশে।

শহর থেকে ১১ কিলোমিটারের বিমান বন্দরের সন্নিবিষ্ট ITDC-র *Airport Ashok, Netaji Subhas Airport-700052, ৩ 5529111, S ৪২০০ D ৪৯০০ সুইট ৭৫০০-৯৫০০; Air Link GH, Air Port Gate No 2, 2/11 Jessore Rd-81, ৩ 5118340, S ১৫০ D ২২৫ A/c D ৪৫০; Continental L, Air Port Gate No 2, Cal-81, ৩ 5119380, SAB ১৭৫ DAB ২২৫; Mariot L, Airport Gate 2, SAB ১২৫ DAB ১৭৫ A/c D ৩৫০; L Oasis, Airport Gate-2, SAB ২২৫ DAB ২৭৫ A/c D ৪৫০; Airways L, Jessore Rd-81, ৩ 5118280, S ১৭৫ D ২০০ A/c S ২৫০ D ৩০০; L Titan, Airport Gate-2, ৩ 5119250, S ১৫০ ১৭৫ D ২০০ ২৫০ A/c S ৩০০ D ৫৫০ ৬৫০; Raj G H, Airport Gate No 2, ৩ 5119964, SAB ১৭৫ DAB ২৫০; VIP GH, VIP Rd-81, D ২৭৫ A/c D ৪৫০; Paragon Inn, 550/1, P K Guha Rd-28, near Airport Gate 1, ৩ 5119743, SAB ১৫০ DAB ২৭৫; Airport Plaza, Tarun Sengupta Sarani-79, SAB ১৫০ DAB ২৫০ A/c D ৪৫০; H Banerjee International, Baguihati, VIP Rd, Cal-59, ৩ 592097; Titumeer G H, near Airport, Kaikhalir Morh, ৩ 593438/2401555, SAB ৫০০ DAB ৩০০ A/c S ৬০০-৭০০ D ৬০০-৮৫০; H Host International, Tegharia, VIP Rd-59, ৩ 596617, S ৩৯০ D ৫০০ A/c S ৪৫০ D ৭২৫ সুইট ১০০০; Apama Resorts, 121 Lake Town, Block B, Cal-89; North Star II, 66/1, Dum Dum Rd, Cal-74, ৩ 5514171, S ২৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; Airport R H, Lake Town.

শহরের অন্যতম অভিজাত এলাকা আলিপুরে তাজ গ্রুপের *Taj Bengal, 34-B, Belvedere Rd-27, ৩ 2483939, A/c S ১৯০-২০০ D ২১০-২২৫ সুইট ২৭৫-৫৫০ US\$। কৌলিন্যো অপ্রতিদ্বন্দ্বী ময়দানের বুকে ধরমওয়ায় *H Oberoi Grand, 15 J N Rd-13, ৩ 2492323, A/c S ২০০ D ২২০ US\$। পার্শ্বেই *Peerless Inn, 12 J N Rd-13, ৩ 2280301, A/c S ১৭৫০ D ২১৫০ ২৮০০ সুইট ৩৫০০; নানানধর্মী আশ্রয়ার্থী সাথের বাঙালি খানাতোঙ যথেষ্ট সুনাম এদের। *H Hindusthan International, 235/1, Acharjya J C Bose Rd-20, ৩ 2472394, A/c S ১৩০ D ১৬০ সুইট ২৫০ US\$; Sourya Continental H 233/3 A/C Bose Rd-20, ৩ 2476850, A/c S ৪৯৫ D ৫৯৫ সুইট ৬৯৫-৮৯৫; H Circular, 177/A, A/C Bose Rd-14, ৩ 2441533, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c S ২৫৫ D ৬৫০-১০০০। পশ্চিমবঙ্গ সরকারের *Great Eastern H, 1-3, Old Court House St-69, ৩ 2482311, SAB ৭৮৭ DAB ৯৮৮ A/c S ১২৭৭ D ১৮১৫, মিল চার্জ: ডেজ/নন ডেজ ৩৮৫; *Kenilworth H, 1-2, Little Russel St-71, ৩ 2828394, A/c S ২৪০০ D ২৮০০ সুইট ৩৬০০-৪০০০; *Park H, 17 Park St-16, ৩ 2497336,

A/c S ৪৯৫০ D ৫৫৫০ সুইট ৬৫৫০-৭৫০০; H Gulshan International, 21B, Royd St-16, ৩ 290566, A/c S ৭০০ D ৮০০ ৮৫০; *H Rutt Deen, 21-B, Loudon St-16, ৩ 2475240, A/c S ৮০০-৮৫০ D ৯৫০-১১০০; The Astor H, 15 Shakespeare Sarani-71, ৩ 2429957, A/c S ৯৫০ ১১৭৫ ১১৯৫ D ১০৫০ ১১৭৫ ১১৯৫ সুইট S ১২৯৫ D ১৫৫০; Akash Ganga G H, 1 Orient Row, near Park Circus Maidan, Cal-17, ৩ 2473341, A 16R7, A/c S ৫০০ D ৬৫০ ৭৫০ সুইট ৯৫০; H Restoria, 13/L, Bright St-17, A/c S ৩২৫-৪৫০ D ৪৫০-৬৭৫ সুইট ৬৫০-৮৫০; Marble Palace GH, 5, Beck Bagan Row-17, S ৩০০ D ৪৫০ A/c D ৬৫০; East West GH, 15 Circus Avenue-17, S ২৫০ D ৩৫০ A/c D ৩০০; H Executive Tower, 52 Ananda Palit Rd-14, ৩ 2451348, A/c S ৫৫০ ৭০০ D ৮০০ ৯৫০।

কলকাতা শহরের প্রাণকেন্দ্রে ময়দানকে ঘিরে, H Majestic, 4/C, Madan St-72, ৩ 271089, S ৬০০ D ৭০০ ৯০০ A/c S ৭০০ ৮০০ ১০০০; H Holiday Home, 16 Princep St-72, S ২৪০-২৮০ D ৩৪৫-৩৭০ A/c D ৫১০-৫৫০; H Prince, 133/1, S N Banerjee Rd-13, ৩ 2441137, SAB ১৬০ DAB ২০০; New Lodge H, 137/11, S N Banerjee Rd-13, S ৭০ ৮০ D ১০০ ২০০; H Sana, 6-A, S N Banerjee Rd-87, ৩ 2446210, SAB ২০০ ২৫০ DAB ৩০০ A/c S ৪০০ D ৫০০; একই বাড়িতে H Ramak, SAB ১৭৫ DAB ২৫০ TAB ৩০০; H Atlantic, 6-A, S N Banerjee Rd-87, ৩ 2447517, SAB ২০০ DAB ২৫০, একই বাড়িতে A/c D ৪০০; H Arshi, DAB ২৫০; Meenu GH, ৩ 2441696, S ২৪০ D ২৯৫ A/c D ৪৫০; H Henna, 6-A, S N Banerjee Rd-87, ৩ 2447421, DAB ২৫০ TAB ৩০০; একই বাড়িতে H Saveria, opp Society Cinema, ৩ 2451763, SAB ২০০ DAB ২৫০; Central G H, (6A), ৩ 2443707, DAB ২৫০ TAB ৩৭৫; *H Shalimar, 3 S N Banerjee Rd-13, opp USIS Library, ৩ 2485030, A/c S ৫২৫ D ৬৫০-৯৫০; H Ganga, (133/1), near Elite Cinema, ৩ 2298449, S ১৬০ D ২২৫ T ৩২৫; H Paradise, 5 Lenin Sarani-13, SAB ১৩০ DAB ১৭০-২২৫; একই বাড়িতে H Kapoor Cottage, SCB ১২০ SAB ১৮০ DAB ২৫০ A/c D ৪৫০; *H Regal, 5 Lenin Sarani-13, ৩ 2282805, SAB ১৭৫ DAB ২৫০ A/c D ৪৫০; H Apsara, 7/7 Lenin Sarani-13, S ১৫০ ২০০ D ২০০ ২৫০; H Mayur, 157/C, Lenin Sarani-13, ৩ 271162, S ১৫০ D ২২৫; H Sunshine, 167/1 Lenin Sarani-13, ৩ 276868, SAB ১৭৫ DAB ২৫০; H Basera, 171A, Lenin Sarani-13, S ১২০ D ১৭৫ ২০০; H Kapoor, 172 Lenin Sarani-13, ৩ 278405, SCB ৮০ DCB ১২৫; H Dinar, 17 Prafulla Sarkar St-72, DAB ৩০০ A/c D ৪০০; Central GH, 18 Prafulla Sarkar St-72, ৩ 274876, S ১৯০ D ২৭৫-৩৫০; H Capital, 11-B, Chowringhee Rd-13, ৩ 2450598, S ১৫০-২০০ D ২৫০-৩০০; H Palace, 13 Chowringhee Lane-16, SAB ১৭৫ DAB ২৫০ ৩০০ A/c D ৫৫০; H Chowringhee, 1 J N Rd-13, ৩ 2487905, SCB ৮০ SAB ১৫০ DAB ২২৫-২৭৫ TAB ২০০-৩০০;

Raman's GH, 2 J N Rd-13, @ 2484105, S ১০০ D ১৭৫ ডর্মি ৪৫; Kamala Vilas, 4-B, J N Rd-13, S ১০০ ১৭৫ D ১৪০ ২০০; *Calton H, 2 Chowringhee Rd-13, AP-S ১৭০-২৫০ D ৩৫০-৪৫০; Calcutta GH, 3 Chowringhee Rd-16, DCB ১৫০ DAB ২০০ ২৫০ TCB ২৫০ TAB ৩০০; H Continental, 2 Chowringhee Place-13; *Lindsay GH & H, 8-B, Lindsay St-87, @ 2441039, SAB ৪৫০ DAB ৬৫০ A/c S ৬২৫ ৮৫০ D ৮০০-১২৫০; CKT Inn, 12/1 Lindsay St-87, A/c S ৪৭৫ D ৬৫০; Camac GH, 3F, Camac Court-16; ত্রিপুরকা সমর H Victoria, 1-B, Victoria Terrace, off Camac St-17, @ 2404063; H Bel-Air, 12 Russel St-16; Metropole H, 4 Dacers Lane; Gulshan L, 115/2, Collin St-16, @ 2447599, SAB ১২৫ DAB ২২৫; H Heera International, 115 Ripon St-16, @ 295954, A/c S ৮০০ ৯০০ ৯৫০ D ১০০০ ১২০০ সুইট ১৫০০; Heera Holiday Inn, 51 Elliot Rd-16, @ 291642, S ২০০ D ৩০০ A/c S ৩৫০-৪৭৫ D ৪০০-৬০০ সুইট ৭৫০।

Dr M Ishaque Rd-17—East End H, 9/1, Kyd St-16, @ 298921, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c D ৬০০; বিপরীতে Neelam H, S ১৭৫ D ২৭৫ A/c D ৪৫০; স্বর্ণ ঘোড়ে Classic H, 6/1A, Kyd St-16, @ 297390, SAB ১৫০ DAB ২৬০ A/c D ৫৫০; Waverly H, 11 Kyd St; International GH, 11/1 Kyd St-16, @ 291477, SCB ১২৫ SAB ১৫০ DCB ১৭৫ DAB ২০০; H Crystal, @ 2266400, SAB ৩০০ DAB ৪২৫ A/c D ৭৫০; H Oscar, 26-H, Grant St-13, SCB ৯০ DCB ১৩০ SAB ১২০ DAB ১৫০; H Blue Moon, 26-H, Grant St-13, @ 2285932, SAB ১২৫ DAB ১৭৫; H Heera, 28 Grant St-13, @ 2288516, SAB ৩০০ DAB ৩৭৫ A/c S ৫৫০ D ৭০০ সুইট ৮৫০; Deluxe L, ৪7/B, Grant St-13, SCB ৮০ DCB ১২৫।

অতীতের ফ্রি স্কুল স্ট্রিট বর্তমান Mirza Ghalib St, Cal-16-তে—Deeba GH, (18), DAB ১৫০ ২০০; Continental G H, (30-A), @ 2450663, SCB ১২০ DCB ১৫০ SAB ১৭০ ১৮০ DAB ২০০ ২৫০; H Green Land, (33/3), @ 295918; H Shahnam, (B/33/H/4), @ 296061, SAB ১৭০ DAB ২৫০ TAB ৩২৫; H Deluxe, (B/33/H/4), @ 292703, SAB ১৮০ DAB ২০০; H Royal Palace, (30F), @ 2455168, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ TAB ৪৫০ A/c D ৪৫০ ৬৫০; Khaja Habib H, (33), @ 293305, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c D ৫৫০; H Ruby, (B/33/H/4), @ 297529, D ২৭৫ T ৩২৫; Hotel VIP International, (51), @ 290345, A/c D ১০৪৫-১০৯৫; Centre Point GH, (20), @ 2448184, SAB ১৩৫ DAB ১৭৫; Sonali GH, (21-A), SAB ২০০ DAB ৩০০ A/c D ৫৫০; H Paramount, (B/33/H/4), @ 290066, S ২৭৫ D ৩২৫। Merquies St-16-য়—Paradise GH, (18), @ 2450778, SAB ১৫০ DAB ২২৫-২৭৫ TAB ২৭৫-৩২৫ ডর্মি ৬০; Mansukh GH, SAB ২৭৫ DAB ৩০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; Taj L, (17/1-E), SCB ৩০ SAB ১০০ DAB ১৭৫-২৫০। H Green Inn, 17 Rafi Ahmed Kidwai Rd-13, near Majestic Cinema, S ৯০ D ২০০ সুইট ৩৫৫ A/c ৩৫০/

৪৫০/ ৬৫০; H Aafreen, @ 2444146, SAB ১৫০ DAB ২২৫ A/c S ২৫০ D ৩৫০; Wasim L, (22), @ 2452564, SCB ৭০ DCB ১৪০ DAB ১৫০; Shuheen L, (22), S ৫৫-৮৫ D ৯৫-১৫০; Amira L, 22 RAK Rd-16, S ১০০ D ২০০; H Wellesley, 28 R A K Rd-16, near New Market, @ 2449114, D ৫০০ A/c ৬০০ ৭০০। Calcutta GH, 3 Cowia Lane-16, @ 2447990, DCB ১৩০ DAB ১৫০ ২০০; Timestar H, 2 Tottee Lane-16, @ 2450028, SAB ১২০ DAB ২০০ TAB ২৫০। Woodland GH, 5 Mustaq Ahmed St-16, @ 2444201, DCB ২০০ DAB ২৫০।

কলকাতা যাদুঘর লাগোয়া উত্তরে চৌরসি রোড থেকে ডানহাতি Sudder Street, Cal-16-য়, বেশ কিছু সাধারণ হোটেল—যথেষ্ট পপুলার Salvation Army Red Shield GH, @ 2450599, DCB ১২৫ DAB ১৫০-৩০০ A/c D ৭০০ ডর্মি ৫০; H Modern L, SCB ১০০ DCB ১২০ DAB ২০০; Times G H, (3), @ 2451796; Tourist Inn, (4/1), S ১০০ D ১৫০ F ২৫০; Hilton H, (5/A), @ 2451512, S ২০০ D ২৭৫ T ৩২৫ সুইট ৬০০; লাগোয়া H Maria, (5/1), @ 2459936, SCB ১০০ DCB ১৫০ SAB ৩০০ DAB ৩৫০ ডর্মি ৬০; H Astoria, (6-2/3), @ 2450241, A/c S ৬৬০ D ৭৭০; Hilson H (4), @ 2490864, SCB ১৫০ DCB ২৫০ DAB ৩৫০; সাহেব বাড়িতে সাহেবি পরিচালনায় *Fairlawn H, (13/A), @ 2451510, S ৪০/৪৫ D ৫০/৫৫/৬৫ US\$; H White Hall, (5/1); *Lytton H, (14), A/c S ১২৯০ D ১৮০০ ডিলাক্স ২০০০ সুইট ২৫০০; বসন্ত বাড়িতে H Diplomat, (10), S ১৫০-১৭৫ D ১৭৫-৩০০; H Plaza, (10), @ 2492435, A/c D ৩৭৫ ৪৭৫ ৭৫০; Continental GH, 30-A, Free School St-16, S ৮০ D ১০০-১৭৫; পার্শ্বে Stuart Lane-এ—Modern L (1), DCB ১৫০ DAB ২০০; লাগোয়া একই মানের H Paragon (2), SCB ১০০ DCB ১৪৫ DAB ১৬০-২৫০; H Galaxy (3), DAB ৪৫০ ৫৫০ হোটেল দুটি বিদেশী বাজেট ট্যুরিস্টদের কাছে খুবই পপুলার।

দক্ষিণ কলকাতায়—H Suptarshl, 23 Gariahat Rd-29, @ 4405907, (বেড এবং ব্রেকফাস্ট) SAB ৩০০ DAB ৪০০ ৪৫০ TAB ৪৩০-৫০০; South Calcutta H, 19 S P Mukherjee Rd-25, S ১০০ D ১৬০; H Swagath, 37 Hazra Rd-29, @ 4756150, SAB ৪০০ DAB ৪৫০ A/c S ৫১৫ D ৫৫০-৬৫০; *H The Samilton, 37 Sarat Bose Rd-29, @ 4648805, S ৩০০ ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮০০ সুইট ১১০০; Chandras GH, 64 South End Park-29, D ২৭৫-৩৫০ A/c ৪৫০-১৫০০; Transit House, Raja Basanta Roy Rd-26, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; H Tristar, 89 Sarat Bose Rd-26, S ১৭৫-২২৫ D ২৭৫-৩৫০; Anita Luxury GH, 122/A, Southern Avenue-29, SAB ৩৫০ ৪০০ DAB ৪৫০ ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইট ৮০০-১০০০; H Saroj Deep, 16/1, Hindusthan Rd-29, @ 4643895, S ২০০-২৫০ D ৩৫০-৪৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০। আর হস্ত যথেষ্ট ভাসমান পাঁচডালা হোটেল কলকাতার পল্লয়।

International GH, Ramkrishna Mission, Golpark, Calcutta-700029, অফ: The Secretary @ 4641303; H

Southway, P-401 Keyatala Lane-29, ④ 4642372, S ২২০, ২৮০ ২২০, D ৩১০ ৪১৫ ৫০০; *Sharani L.* 1/B, Ramani Chatterjee Rd-29, ④ 4664826, SCB ২৫০ DCB ২৭৫, SAB ৩০০ DAB ৩৭৫ A/c S ৪৫০ D ৩০০; *Lake View GH*, 4-D, Panchanantala Rd-29, ④ 4405495, SCB ১৩৫ DCB ২৫০, SAB ২০০ DAB ৩০০-৩৫০ A/c D ৫৫০; *Atiulhi GH*, 4-H, Panchanantala Rd-29, ④ 4408567, DAB ৪৫০ A/c ৮০০; *Golpark GH*, 132-B, Meghnad Saha Sarani-29, ④ 4640444, SCB ১৪৫ DCB ২৪৫; *H Asia*, 11/A, Jamir Lane-19, S ১০০ D ২০০; *Eldorado GH*, 8 Dover Lane-29, ④ 4643245, S ১০০ ১৫০ D ২০০ ৩০০; *Dover G H*, 8/1, Dover Lane-29, ④ 4663446, SAB ১৫০ DCB ২০০ DAB ২৫০-৩৫০ TCB ২৭৫; *Regency G H*, opp Birla Temple, Ballygunj, ④ 2406848; *Park GH*, 20/C, Gariahat Rd (S)-31, ④ 4731126, S ১৫৩ D ২০৪-৩০৬; *Sunview GH*, 20/1/1A, Ballygunj Stn Rd-19, SAB ১৫০ DCB ২০০ TAB ২৫০ A/c D ৩০০; *Ballygunj GH*, 19/A, Jatin Das Road-29, DCB ২০০ DAB ২৫০; *H Bliss*, 5 Jatin Das Rd-29, ④ 4664833, A22R10B4, SAB ২৭০-৩৫০ DAB ৩৪০ ৪১৫ A/c S ৫০০ D ৩০০; *Maharashtra Niwas*, 15 Hazra Rd, Cal-26, DAB ২২৫; *H Florence*, 53/1/3 Hazra Rd-19, DAB ১৫০-২৫০; *H Siddharth*, 113-1A Hazra Rd-26, ④ 4555822, DAB ৩০০ ৪০০ ৫০০ ৫৫০; *H Southway*, 128 Hazra Rd-26, ④ 4553027, SAB ২২০ DAB ৩০০; *H Trumoori*, 24 Royd St-20, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ৩০০ D ৩৫০; *H Homelyraj*, 10/2 Monoharpukur Rd, ④ 4754344, S ৪৭৫; ৫৫০ D ৬২৫ A/c ৬৭৫ ৭২৫ D ৭৫০ ৮২৫; *Kamalahavilas*, 73 Rashbehari Ave-26, ④ 4641960, SCB ১৮৫ DAB ৩৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০ ৪২৫ ৩০০; *H Bliss*, 193/2 R B Ave-19, ④ 4404637, S ২৬০-৩৫০ D ৩০০-৪৫০ A/c S ৫০০ D ৬০০। দক্ষিণ শহরতলী ছাড়িয়ে কলকাতার উপকণ্ঠে *Omur H Resort*, Diamond Harbour Rd, Joka, ④ 2427607, A35R23B19, D ৩০০ A/c D ৬০০ সুইট ১৮০০; *Palm Village*, Joka-Bhasa, কলা বক্সি: ④ 2421846; শহরের বন্দর এলাকা খিলিরপুর্বে *Port View GH*, 23 Satya Doctor Rd-23, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৪০০ D ৬৫০। *H Eastern View*, Santoshpur Avenue, near Santoshpur Mini Bus Stand, Cal-75, ④ 4724462, SAB ১০০ DAB ১৫০ ১৭৫ ২৫০।

আর রয়েছে শিয়ালদহ রেল স্টেশনের বিপরীতে—*Ashoka H*, 133 A J C Bose Rd-14, ④ 2275904, S ৮০ D ১৩০ ১৪০ ১৫০; *Purna L*, 134/1, A J C Bose Rd-14, SCB ৬৫ DCB ১১৫ DAB ১৫০; *S B Lodge*, 68/A, Serpentine Lane-14, opp N R S Hospital, DCB ১২৫ DAB ১৩৫; *Tower H*, 27 A P C Rd-9, ④ 3501680, AP-S ১৩৪ D ২৪০; *Beauty L*, 29, APC Rd-9, DCB ১৫০ DAB ১৮০; *Modern L*, 53/1, Surya Sen St-9, SCB ৪০ DCB ১০০; *Tower L*, 53/A, Surya Sen St-9, SCB ২৫ SAB ৩৫ DCB ৪৮ DAB ৬৫-৮৫; *Central Lodging House*, 6/A, Dr Orbindra Mukherjee Row-9, SCB ৫৫ DCB ৮৫ DAB ১২০; *Para-*

dise L, 10 Dr Devendra Mukherjee Row-9, SCB ২৭-৩২ DCB ৫২-৬২ ড্রি ২৪; *New Tajmahal H*, 8/2, A P C Rd-14, SCB ৬০ DCB ১২০; *New Calcutta H*, 12 A P C Rd-9, DCB ১৬০ ড্রি ৪০; *Purburag H*, 28 APC Rd-9, opp Sealdah Rly Stn, ④ 3500553, SCB ৮০ SAB ১০০ DAB ১৭০-২০০; *Santinibab H*, 1 M G Rd-9, DCB ১১০ DAB ১২৫ ড্রি ৩০; *Anurag*, 2/A, M G Rd-9, SCB ৫০ SAB ৬৬ DAB ১১০; *Pantha Nibas*, 9/1A, MG Rd-9, AP-S ৮৫ D ১৫০; *Kalyani L*, 13 M G Rd-9, ④ 3515480, SCB ১০০ SAB ১২৫ DCB ১৪০ DAB ১৬০-২৭৫; *Fly-Over L*, 11 M G Rd-9, SCB ১২০ SAB ১৫০ DCB ১৮০ DAB ২০০। ডিনাহাতি Manindra Mitra Row-9এ—*H Niketan*, ④ 3507950, S ৭০ D ১২০ T ১৫০; *Midland H*, S ৫০ ৭০ D ১০০ ১২৫; *H The Cozy*, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB ৮৫ DAB ১৩০; *Lovely L*, S ৭০ D ১১০-১২৫; *H De Bengal*, 17 M G Rd-9, S ৮০ D ১২৫; *Palace H*, 31/2, M.G.Rd-9, SCB ১০০ DCB ২০০।

দুই রেল স্টেশন হাওড়া ও শিয়ালদহের সংযোগকারী Mahatma Gandhi Rd-এ—*City Boarding*, 27 M G Rd-9, SCB ৪৫ DCB ৮৫; *Sealdah L*, 152 B B Ganguly St-12, SCB ৪৫ DCB ৬৫ DAB ৮৫; *Santiniketan H*, 16/B, M G Rd-9, ④ 3501661, SCB ৮০ SAB ১৪০ DCB ১৬০ DAB ২০০ ড্রি ৬০; *Bengal Boarding House*, 46/7 MG Rd-9, SCB ৫০ DCB ৮০; *India H*, 62 Surya Sen St-9, SCB ৯০ SAB ১৭৫ DCB ১৫০ DAB ২০০-২৫০; *Hottellers & Associate*, 37 M G Rd-9, ④ 3500360, SAB ১২০-১৮০ DAB ১৮০-৩৫০ A/c D ৪৫০; *Ideal Home*, 63/2A, Surya Sen St-9, SCB ৮০-৯০ DCB ১২০-১৫০ DAB ১৮০-২০০ TAB ২৪০; *Lipika Inn*, 68/1 Surya Sen St-9, ④ 2418222, SAB ২০০ DAB ২০০ ৩০০ A/c S ৩০০ D ৪০০; *Touring G H*, 6-B, Ramanath Mazumdar St-9, ④ 2416382, SAB ১৫০ DAB ১৭৫ ২০০ ২৫০ ৩০০; *Imperial L*, 28 MGRd-9, SAB ১৫০ DAB ১৫০ ২২০ ২৫০ ৩৫০; *Paramount Boarding*, 44/3 M G Rd-9, SCB ৩৫ DCB ৬০ FR ৯০; *H Bengal L*, 7 Baithak Khana Ist Lane-9, D ১৩০-১৮০ ড্রি ৩৫; *H Deluxe*, 145 Raja Rammohan Sarani-9, ④ 2417004, SCB ৬০ DCB ১০০; *Crown L*, 27/A-C, Amherst St-9, SCB ৪০-৫০ SAB ৭০ DCB ১০০ DAB ১২৫; *H Alkapuri*, 101 MGRd-7, S ৫০-৬০ D ৮০-৯০; *Raja H*, 8/2 Bhawani Dutta Lane, Cal-73, ④ 2413827, SAB ২৯০ DAB ৩৭৫ A/c S ৪০০ ৫০০ D ৫৫০ ৬৫০; *Service GH*, 108, MGRd-7, SCB ৮৫ DCB ১৫০ DAB ২০০ TAB ২৫০; *H Himalaya*, 134/1 M G Rd-7, ④ 2381961, A15R2, S ৬২৫ D ৭৫০ A/c S ৭৭৫ D ৯০০; *A V Hotels*, 1 Sambhu Mullick Lane-7, ④ 2387740, S ১৭৫-২৭৫ D ২২০-৩৫০; *Plaza G H*, 6 Botai Dutta St-73, ④ 250100, SCB ১০০ DCB ১৬০ FR ১৮০; *Kunja H*, 18 Black Burn Lane-73, ④ 272970, SAB ১০০ DAB ১৫০; *Ambassador GH*, 3/5 Rajmohan St-73, near Krishna Cinema, SCB ৭০ DCB ১৪০ DAB ২১০; *H Samrat*, 144 MGRd-7, SCB ৭৫ DCB ১২৫; *H Cecil*, opp

Medical College, 52/1/1 College St-73, SCB ৫০ DCB ৮০; *H Savoy*, 27 Sashi Bhushan Dey St-12, ৩ 273216, SCB ৮০, SAB ১৩৫ DCB ১৫০, DAB ২০০ A/c D ৩৫০; *Tarun H*, 149/2, B B Ganguly St-12, SCB ৩৫-৬৫, DCB ৪৫-৮০; *Tirupati L*, 126-A, B B Ganguly St-12, SCB ৬০ DCB ৮০; *Oriental Home*, 135 B B Ganguly St-12, SCB ৬০ DCB ১০০, SAB ১১০-১৫০, DAB ১১০-২৫০; *Madhumita H*, 151-B, B B Ganguly St-12, S ৮০ ১০০।

মধ্য কলকাতায়—*H Embassy*, 27 Princep St-72, ৩ 279040, SAB ৩০০, DAB ৩৫০, A/c S ৩৭৫ D ৫০০-৮০০; *Asia GH*, 65 Bentinck St-69, ৩ 276214, S ২১০-২৫০, D ৩১০-৩৫০; *Central Calcutta H*, 64 Bentinck St-69, ৩ 269328, S ৭৫ D ১২৫; *H Penguin*, 18 Jadunath Dey Rd-12, opp Airlines City Office, ৩ 275312, DAB ২৫০ ৩০০, TAB ৪০০, A/c D ৪০০ T ৫০০; *H Airlines*, 2 Kapaltitala Lane-12, ৩ 264167, S ২৫০ ৩৫০ D ৪০০, A/c S ৪৫০ D ৬০০; *Broadway H*, 27/A, Ganesh Ch Ave-13, ৩ 263930, SCB ১৬০, SAB ২২০, DAB ২৭৫-৩২০, সুইট ৫০০; *H Minerva*, 11 G C Ave-13, ৩ 264505, S ৫৫০ D ৬০০, A/c S ৮০০ D ১০০০; *Cosmos GH*, 9 C R Ave-72, opp Hindusthan Building, ৩ 261383, SCB ৯০, SAB ১৬০, DAB ২০০ ২৫০ ৩২৫; একই বাড়িতে *City Heart*, S ১১৫-২৫০ D ৩০০-৩৫০, A/c S ৩৬০ D ৪০০ ৪৫০; একই বাড়ির ৪র্থ তলে *H Avenue*, 95/A, C R Ave-72, ৩ 2257337, A/c S ৫৭৫ ৭০০ ৮৯০ ৯৯০ D ৬৭৫ ৯৯০ ১০৯০; *Central Imperial H*, 47/A, C R Ave-12, ৩ 274020, SCB ১২৫, SAB ১৫০ DCB ২০০, DAB ২৫০; *New Central H*, 90 C R Ave-12, ৩ 272360, SAB ১৬০, DAB ২২৫-৩০০; *H Ananda Bhawan*, 95 C R Ave-73, ৩ 274014, SAB ১২৫, DAB ১৫০-২২৫; *Tip Top G H*, 29-B, Rabindra Sarani-73, ৩ 258908, SAB ১১৫, DAB ১৫০, FR ২৫০; *Metro GH*, 52 Rabindra Sarani-73, ৩ 261701; *Star G H*, 44-A, Rabindra Sarani-73, ৩ 276786, SAB ১২৫, DAB ২০০; *New India GH*, 104 Rabindra Sarani-73, S ৪৫-১০০, D ৮০-১৫০; *Rajasthan GH*, 19 Zakaria St-73, ৩ 253407, S ১৫০-২৫০ D ২৭৫-৩৫০, সুইট ৪০০-৬০০, A/c S ৩৫০ D ৪৭৫, সুইট ৫০০-৬৫০; *H Moon GH*, 17 Zakaria St-73, ৩ 252212, S ২৫০ D ৩৫০, A/c D ৪৫০-৬০০; *Motimahal G H*, 22 Zakaria St-73, DCB ১২৫-২০০; *Deluxe G H*, (15), ৩ 254276, SAB ১২০, DAB ২২০; *H Circular*, 177/A, A/C Bose Rd-14, ৩ 2441533, S ৪২৫ D ৫৫০, A/c S ৬৫৫ D ৮০০, সুইট ১২০০; *Executive Tower*, 52 Ananda Palit Rd-14, A/c S ৫০০-৬৭৫ D ৬৫০-৮২৫; *Larica Holiday Resort*, 11 East Topsis Rd-46, SAB ২৯৫, DAB ৪২৫, A/c S ৩৯৫ D ৬০০।

হুজুড়ারেল স্টেশনের বিপরীতে—*H Shivam*, P-19 Dobson Lane, Howrah-711101, ৩ 6666071, SAB ১১০, DAB ২২৫, A/c D ৩৮৫; *Ashoka H*, P-24 Dobson Lane-1, ৩ 6665222, DAB ১৭৫, A/c S ৪০০, D ৫০০; *H Casy*, P-12, Debson Lane-1, SAB ১০০, DAB ১৫০, A/c D ৩০০;

Centaur H, P-11 Dobson Lane-1, ৩ 6662577, DAB ১৫০; *Nataraj H*, 5 Dobson Lane-1, ৩ 6662536, DAB ২৭৫-৩৫০, A/c D ৩৮৫ ৪৫০; *Howrah H*, 1 Mukram Kanoria Rd-1, ৩ 6603877, SCB ৬০, DCB ১২০, SAB ১০৫, DAB ১৮০-২৫০, A/c D ৩৫০; *New Ashoka H*, 19/1/1/4 Mukram Kanoria Rd-1, ৩ 6663667, SAB ১১০, DAB ১৬০ ২০০, A/c D ৩৫০; *H Balaji*, 21 Mukram Kanoria Rd-1, SCB ১০০, SAB ১৫০, DCB ১৭০, DAB ২১০, ডর্মি ৬০; **H Manish*, P-1 Dobson Lane-1, ৩ 6666317, DAB ৪০০, A/c D ৬৫০-৮৫০, সুইট ৮৫০-১২৫০; *H Meghdoot*, P-3A, Dobson Lane, Howrah-1, ৩ 6664018, SAB ১২৫, DAB ১৬৫-২২৫, A/c D ৩০০, ৪০০; *H Saket*, 23 M K Rd-1, ৩ 6664054, SCB ১০০, SAB ১২৫, DCB ১২৫, DAB ২২০, A/c D ৩৮৫; *Bhim Sain H*, 2 Rishi Bankim Ch Rd-1, SCB ৮০, SAB ১২০, DCB ১৩০, DAB ২০০-২২৫, TAB ২৫০, ডর্মি ৫০; *Luxmi L*, 13 Moulana Abul Kalam Azad Rd-1, ৩ 6662976, SCB ৭০, DCB ১০০, FR ১২০; *Banzara L*, M K Rd-1, ৩ 6605444, SCB ৬০, DCB ১২০; *R S Lodge*, 30 M K Rd-1, SCB ৭০, DCB ১৪০; *H Akash*, 171 C Bose Rd-1, SAB ১৬০, DAB ২০০, A/c D ৩৫০; *Vinade L*, 1/1, C Bose Rd-1, SCB ৪০, DCB ৮০; *Chandraloke H*, 71 Hari Mohan Bose Rd, SCB ৬০, DCB ১২০; *Bridge I*, 71 H M Bose Rd-1, SCB ৮০, DCB ১৬০, SAB ১২০, DAB ১৫০-২০০, ডর্মি ৪০; *Lovely L*, Moulana Abul Kalam Azad Rd (Dobson)-1, ৩ 6662404, SCB ৮৫, DCB ১৫০, ডর্মি ৪০।

এছাড়াও হোটেল রয়েছে আরও নানান সারা শহরময়। আর মেলে *Paying Guest* প্রথা। থাকার ব্যবস্থা কলকাতায়। *Mr Avinash Jain*, 90/C, Alipur Rd, Calcutta-700027, ৩ 2480263, S ৩০০ D ৪০০, A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *Mrs P Sen*, 47/A, Lake Avenue-26, ৩ ঘরের সেট ৪০০; *Mrs Kalpana Basu*, Arona Villa, 42/150 New Ballygunj Rd-39, ৩ 4409731, S ৩০০ D ৪০০, A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *Mr Kamal Roy*, 8/A-1A, Ekdalia Place-19, ৩ 4408030, S ২৫০ D ৩০০, A/c S ৩৫০ D ৪০০; *Mrs Nandita Sen*, Flat 52, Shalimar Apartment, 42-B, Shakespeare Sarani-71, ৩ 2476834, S ৩৫০ D ৪০০, A/c S ৪০০ D ৫৫০; *Mrs Niva Rani Sinha*, Ellora Apartment, Flat-31, Gariahat Rd (South)-68, ৩ 4736624, S ৩০০ D ৩৫০, A/c S ৪০০ D ৪৫০; *Smt Saroj Kapoor*, 107/4A, Satyendranath Mazumdar Sarani (Manohar Pukur Rd)-26, S ৩০০ D ৩৫০, A/c S ৪৫০ D ৫৫০; *Mr Rabindranath Sen*, 52-C, Avinash Chandra Banerjee Lane-10, ৩ 3506907, S ২০০ D ২৫০, A/c S ৩০০ D ৪৫০; *Mrs Manjusree Mukherjee*, 4/B, Gopal Banerjee St-25, ৩ 2483031, S ৩০০ D ৩৫০, A/c S ৩৫০ D ৪০০; *Smt K Bhattacharya*, AA-39 Sakt Lake-64, ৩ 3375332, S ২৫০ D ৩০০, A/c S ৩৫০ D ৩৬০; *Mrs Sujjan Jain*, Geetanjali Buildings, Flat-5G, 8B, Middleton St-71, ৩ 2991119, S ৩৫০ D ৪০০, A/c S ৫০০, D ৬০০; *Sri Partha Dutta*, IB-60, Sector-III, Salt Lake City-91, ৩ 3340621, S ২০০ D ৩০০। এদের সন্মিলন বা Govt of

India Tourist Office, 4 Shakespeare Sarani-71, ৩ 2421402-কে যোগাযোগ করে চলি উচিত হবে।

আর আছে Shyam Dev Bhakta Dharamshala, 150 M G Rd-7; Seth Jamundus Tibrawalia Dharamshala, 164 C R Avenue-7; Babulal Dharamshala, 169/A, M G Rd-7; Bara Sikh Sangat, 172 M G Rd-7; Binani Dharamshala, 81 Pathuriaghata St-5. অব্: Organiser, Binani Trust, 38 Strand Rd-1; Dhansukhdas Jaithmull Jain Dharamshala (for Jains), 44 Badridas Temple St-4; Daga Dharamshala, 41 Kali Krishna Tagore St-6; Digambar Jain Bhawan Dharamshala, 10/1 Madan Mohan Burman St-7; Kalighat Gurudwara, 31 Rashbehari Avenue-26; Netram Bazar Dharamshala, 25 Battala St-7; ছাড়াও নানান ধর্মশালা কলকাতায়।

এছাড়া রেল যাত্রীদের জন্য আছে রিটার্নস রুম শিয়ালদহ ও হাওড়া রেল স্টেশনে। তেমনি ভারতীয় রেলও হোটেল গড়েছে ১৫ বেডের রেল যাত্রী নিবাস—যাত্রিক হাওড়ায়। SE Rly ও Eastern Rly দুই স্টেশনের মাঝে গঙ্গামুখী মনোরম পরিবেশ, DAB ২০০ TAB ২২৫ A/C D ৩০০ ডরমি ৫০ করে। তবে ঘর পেতে রেল টিকিটও লাগে এদের। বিমান যাত্রীদের জন্য Air Port Rest House আছে বিমান বন্দরে। Automobile Association of Eastern India, 13 Pramohesh Barua Sarani-তে সদস্যদের থাকার ব্যবস্থা আছে। Tollygunj Club, 120 Deshapran Shasmal Rd, Cal-700033, সাময়িক সদস্য হয়ে রমণীয় পরিবেশে ৪৪ হেক্টর জুড়ে নানান ব্যবস্থা নিয়ে থাকার সুব্যবস্থা, DAB ৪৫০ কটেজ ৭৫০-৮৫০, সুইট ১০০০ থেকে। YMCA-র দুটি শাখা আছে ধর্মমতলা এলাকায়—25 J N Rd ও 42 S N Banerjee Rd-এ; বেডটি-ব্রেকফাস্ট-ডিনার সহ রেট এদের, S ২৫০ D ৩৫০ A/C S ৪৫০ D ৬০০ ডরমি ১৪০-১৫০; YWCA-র দুটি শাখা—134 S N Banerjee Rd ও 1 Middleton Row-এ; তবে স্বকালীন থাকার এদের পছন্দ নয়, কম পক্ষে সপ্তাহের ডিঙিতে ঘর মেলে। আর হয়েছে রাজ্য পর্যটনের ৮৬ বেডের Udayachal T L, DG Block, Sector II, Salt Lake-91, ৩ 3378246, DCB ২০০ ২৫০ DAB ৩০০ TCB ৩০০ TAB ৩২৫ A/C D ৬০০ ডরমি ৬০। আর আছে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের ইয়ুথ সার্ভিসের ইয়ুথ হোটেলে রাজ্য যুবকেন্দ্র, মৌলানী ও বিধাননগর যুবভারতী স্টেডিয়ামে। শহর থেকে দূরে হাওড়ায় 10 Dr J B Anonda Dutta Lane ৩ 6604338, Youth Hostel-এ ভ্রমি প্রণালী বেড ১৫। বাস যাত্রের শ্যামাঝী সিনেমা অর্থাৎ ইয়ুথ হোটেলে হয়ে ৫২ ও ৫৮ রুটের হাওড়া স্টেশন থেকে।

আহার্যেও বৈচিত্র্য মেলে কলকাতার হোটেল-রেস্তোরাঁয়। তবে, পার্টিমিশেনার ভিড়ে বাঙালির স্বকীয়তা কেন যেন হারিয়ে বসেছে আজ। বাঙালিয়ানার অভাবে দেশী-বিদেশী মেনু সাজিয়েছেন এরা। পাঞ্জাবি, উত্তর ও দক্ষিণ ভারতীয় মিলের সাথে মোগলশাই খায়ও মেলে। আর সারা শহরময় আলো-আঁধারির চীনা রেস্তোরাঁ গড়ে উঠলেও চীনা স্বকীয়তা পেতে পূর্ব কলকাতার টায়বায় চলুন। চায়না টাউন থেকে চীনারা আজ টাংরায়া হুয়াঙডির হয়ে উপনিবেশ গড়েছে। কয়েকটি পারিবারিক চীনা রেস্তোরাঁও হয়েছে টাংরায়া। চীনা স্বকীয়তার রন্ধন তথা মেনুর রকমকমে যথেষ্ট খ্যাতি এরা। কলকাতায় আর এক পপুলার

ডিশ—মোগলশাই খানা। বাবরের সাথে সমরকন্দ থেকে ভারতে এলেও কলকাতায় আগমন ১৮৫৬য় অবাধ্যতার নবাব ওয়াজেদ আলির সঙ্গে লঙ্কৌ হয়ে মোগলী কৃষ্টির এই রন্ধন-প্রণালী।

মাদ-ভাতের দেশ বাংলা। মাছেরও রকমভেদ উল্লেখ্য। বিশেষ করে—দই-ইলিশ, ইলিশ-পাতুরি, স্নোকড ইলিশ স্বাদে অতুলনীয়। তেমনই দই মাছের গঙ্গা-যমুনা অর্থাৎ একই মাছের দু'পিঠে দুই স্বাদ—অনবদ্য। রুই মাছের কালিয়া, চিংড়ি মাছের মালািকারি ছাড়াও রকমারি মেনুতে মুখ্য। আহা রাস্তে মুখমিষ্টিরও নানান ব্যবস্থা। বাংলার নিজস্ব কুটি পায়ের-মিষ্টান্ন বা সন্দেশ-রসগোল্লা-মিষ্টি দই। তারও পরে মিঠা পানের প্রচলন। মাছের এত রমরমা থাকলেও নিরামিষ আহার্যও অমিল নয়। সকাল থেকে গভীর রাতে ২৫ থেকে ১৫০ টাকার মিলও মেলে এইসব হোটেলে। তবুও যেন উচিত হবে Suruchi, 89 Elliot Rd বা Peerless Inn-এর Aaheli, 12 J L Nehru Rd-13-তে বাঙালির নিজস্ব খাবারের স্বাদ নেওয়া। এসপ্লান্ডে এলাকাকে ঘিরেও নানান হোটেল-রেস্তোরাঁ কলকাতায়। দেশি বিশেষি নানান মেনু এদের খাদ্য-তালিকা জুড়ে। পিয়ারলেস ইন-এর নিশিনিদ, ১২ জওহরলাল নেহরু রোড-১৩, ৩ ২৪৩০৩০১—দিন-রাত্রি জুড়ে সার্ভিস এদের। পুরো বাঙালি খানার সাথে অসামান্য সব মেনুর রকমকমের—চিকেন লালিপপ খাদ্য রসিকদের দুরাত্ত থেকে টেনে আনে। পার্ক হোটেল-এর জেন, পার্ক স্ট্রিট—চীনা আহার্যে যথেষ্ট সুনাম। চীনা, ইন্দোনেশিয়া, বার্মা, থাইল্যান্ড, সিঙ্গাপুর, হংকং ছাড়াও পুরো এশিয়া মহাদেশটাই এদের কম্পিউটারাইজড কিচেনে ভরা। রিমোট কন্ট্রোল আহারও হাজির। কফিও মেলে ১২ রকমের পার্কের জেন-এ। তবে, দামে কিছুটা অধিক। মেনু! রয়েল ইন্ডিয়ান হোটেল, ১৪৭ রবীন্দ্র সরণী-৭৩, (মহাশা গান্ধী রোডের সামান্য দক্ষিণে চিংপুর রোডে) ৩ ২৩৮১০৭৩—কলকাতা ভ্রমণে রয়েলের চাপ সর্বজনপ্রিয়। তেমনি এদের মেনুতে রয়েছে নানান মোগলশাই খানার রকমারি। আলিয়া, ৩১ বেকিট স্ট্রিট-৬৯, ৩ ২৪৮৮৮৫৮—ওয়াটারলু স্ট্রিটের মুখে আলিয়ার চিকেন বিরিয়ানির সুবাসে মাতামোরা হয়ে ওঠেন পথ চলতে শহরবাসী। সানার, ২/১ মেরিদিট স্ট্রিট-৬৯, ৩ ২৭৭৯৭৯—তন্দুরির রকমভেদে এদের সুনাম সারা শহর জুড়ে। প্রন তন্দুরিতে এদের জুড়ি মেলা ভার। আমেনিয়া, ৬-এ, এস এন ব্যানার্জী রোড-১৩, ৩ ২৪৪১৩১৮—এলিট সিনেমার বিপরীতে মোগলশাই খানার জন্য এদের প্রশস্তি। চিকেন তন্দুরি, মুরগা মুসাল্লম, কুমালি রুটি, আরও কত কি। বান্দা, ৫ লিডসে স্ট্রিট-৮৭, ৩ ২৪৯৭২৬১—গ্রোব সিনেমার কাছে রোলার রকমভেদে প্রকৃতই বান্দা। এরা। কলকাতায় আজ ফাস্ট ফুডে রোল যথেষ্ট পপুলার। কটিটা মোড়কে মাদ-মাংস-ডিমের পুরে তৈরি। চিকেন বিরিয়ানির জন্য সিরাজ, ৫৬ পার্ক স্ট্রিট, কল-১৭, ৩ ২৪৭৭৭০২, এসেরও খ্যাতি আজ শহর জুড়ে। মুন্সো শাসনের সঙ্গে টাউজলদি আহার রূপে গড়ে উঠেছে রোল কর্নার সান্না শহর জুড়ে। তবুও যেন নিউ মার্কেটের নিজাম যথেষ্ট খ্যাত রোল ও কাঠি কাবাবের জন্য। দি ফোটিং রেস্টুরেন্ট ওয়েল-বুক সারথী, আউট্রাম ঘাট, জেটি নং ২-২১, ৩ ২৪৩০৪৬৭—রাজ্য পর্যটন ও ওয়েলকুকুর যৌথ প্ররাসে গঙ্গাবকে ভাসমান ত্রিভলিকা সারথী আকর্ষণে অনবদ্য। গঙ্গার গোষ্ঠার সাথে আছে বৈচিত্র্য আছে। তবে, লাগামছাড়া দাম বিকর্ষণ ঘটায়। আন্সের হোটেল, ১৫ শেত্রগিয়ার সরণী-৭১, ৩ ২৪২১৯৫০—নীল আকাশের নীচে বসে কাবাবের রকমারিতে এদের জুড়ি নেই। রোলও এসের সুনাম যথেষ্ট।

তেমনই বিধান সরণী-বিবেকানন্দ রোড সংযোগে *চাচার হোটেল* পূর্ণিমার চাঁদের মতো ফাউল কাটলেটে পুরাতন ঐতিহ্য আজও ধরে রেখেছে। গ্রেট্টি-চিৎরঞ্জন অভিনিউর সংযোগে *মির কাকের* ফাউল কবিরাজি কাটলেট—সেও এক অভুলনীয়; বিধান সরণী-গ্রেট্টি সংযোগে *মল্ল-র* ফিশ কবিরাজি আজও তুলনাহীন। বিধান স্ট্রিট-চিৎপুর সংযোগে *অ্যালেন হোটেলের* প্রন কবিরাজি স্বাদেও গন্ধে ম-ম করে—উচিতও হবে চলতে-ফিরতে পরখ করা।

তেমনই গ্রেট ইস্টার্ন হোটেলের পরিচালনাধীন *Ambar*, (11—23-00), 11 Waterloo St-এ মোগলাই খানা; *Chang Wah* (11—22-30), 13A, C.R Ave. near The Statesman; *Golden Dragon*, Park St; *Waldorf*, Park St; বা *Nanking*, 22 Blackburn Lane বা *Peiping*, 1/1 Park St-এ চীনা ভিশের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। *Peter Cat Restaurant* (10-30)—23-30), 18 Park St; *Mokambo Restaurant* (11—23-00), 25-B, Park St; *Blue Fox* (11—23-00), 55 Park St; *Shamiana* (11—23-00), 17-G, Mirza Ghalib St; *Hindusthan Restaurant*, (10—22-00), 20 J.N Rd; *Kwality Restaurant* (10—24-00), 17 Park St; বন্ডেল রোড ও গড়িয়াহাট ক্রসিং-এ *Kwality Restaurant* (10—23-00), 2-A, Gariahat Rd; *Trincas Restaurant* (11—23-00), 178 Park St; লোয়ার সার্কুলার রোড-পার্ক স্ট্রিট কর্নারে মোগলাই খানার জন্য *Rehmania*; কোয়ালিটি আইসক্রিমের ব্যবস্থাপনায় *Gay Rendezvous* (11—23-00), 71 Strand Rd; *Sky Room* (10-30—24-00), 57 Park St; *Maninder Singh's Dhaba*, Ballygunj Phanri; এদের প্রত্যেকেরই যথেষ্ট সুনাম দেশীয়, মহাদেশীয়, তদ্বহী পরিবেশনে। ১৮ পার্ক স্ট্রিটের আর এক আশ্চর্য *Flury's*-র (6-30—20-00) রকমারি পেপ্টি চলতে ফিরতে স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। তেমনই নানান দোকান খুলেছে *Kathleens* তার পেপ্টি ও কেকের পসরা নিয়ে। আর কলকাতার পথে-ঘাটে *Kwality* বা *Magnolia*-র Ice Cream-এরও স্বাদ নেওয়া উচিত হবে। তবে, *Kwality*-র সুনামকে বেসাতি করে বানানোর হেরফেরে নানান সংস্থার ব্যবসায়িক চাতুরী থেকে সদা সতর্কতা দরকার। অতি সম্প্রতি সাত সমুদ্র তেরো নদী পেরিয়ে কলকাতায় পৌঁছেছে *মন্গিনি* (monginis)—সোকানও খুলেছে আন্তর্জাতিক মানের কেক-পেপ্তির পসরা নিয়ে।

শ্রীরামপুর

কলকাতা থেকে ২৪ কিমি দূরে ভাগীরথীর তীরে অতীতে দিনে-মাঝের কলোনি গড়ে উঠেছিল শ্রীরামপুরে। ১৭৯৩ থেকে ১৮৩৪ পর্যন্ত তাদের কীর্তি-কলাপের নিদর্শন আজও শ্রীরামপুরকে গৌরবাধিত করে রেখেছে। এমনকি বাংলা হরফের জন্মও এই শ্রীরামপুরে ড. উইলিয়াম কেরীর উদ্যোগে গণ্যমান কর্মকারের ছেনিতে। পটে আঁকা ছবি কেরী সাহেবের গড়া ভারতের প্রথম বট্যানিক্যাল গার্ডেনে কালে কালে কলোজ বাড়িটিও রূপ পায় মিশনারিদের হাতে। প্রথম বাংলা সংবাদপত্র *সমাচার দর্পণ*, প্রথম বাংলা গ্রন্থ *রাজা প্রতাপাদিত্য চরিত্র*-র প্রকাশও এই পৃথক্কে। দিনে-মাঝের সরকারের বাড়িঘর, চার্চ ও সমাধিক্ষেত্র আজও পর্যটকদের

অতীত রোমন্থন করায়। দিনে-মাঝের গভর্নরের প্রাসাদ বাড়িতে এস ডি ও কোর্ট বসেছে। অতীত লুপ্ত হলেও তার গণি আজও রয়েছে। অদূরে ১৮০৮-এ তৈরি প্রটেক্ট্যান্ট চার্চ সেন্ট ওলফ গির্জা। চার্চের সামনে ত্রিকোণ পার্কে দিনে-মাঝের ব্যবহৃত ডজনখানেক কামানও দেখে নেওয়া যায়। তেমনই রেল স্টেশনের কাছে সন্ধীর্ণ গলিপথে শায়িত রয়েছেন উইলিয়াম কেরী ছাড়াও সেদিনের নানান দিকপাল শ্রীরামপুরের সমাধিক্ষেত্রে। ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির হাতে দখল যায় ১৮৪৫-এ শ্রীরামপুরের ৩৩ কিমি দূরে মাহেশের রথ-এরও প্রশস্তি আজ সারা ভারতজুড়ে। ৬০১ বছরের প্রাচীন এই রথযাত্রা। তবে ১১২ বছর আগে ২০ হাজার টাকায় লৌহে নির্মিত ৪৫ ফুট উঁচু ১২৫ টনের বর্তমান রথটি তৈরি করেন হুগলির দেওয়ান কৃষ্ণচন্দ্র বসু। বহেরা বা তিলক উৎসবে রথ চলে মাহেশ থেকে জি টি রোড ধরে বনভূপুরের রাধাবনভূ জিউ মন্দিরে। দেববিগ্রহও ৬০১ বছরের প্রাচীন। আকারও মাহাশ্যো পুরীর রথের পরেই মাহেশের স্থান। দূর-দূরান্ত থেকে তীর্থযাত্রী আসেন। শ্রীচৈতন্যও এসেছেন—রথ টেনেছেন মাহেশের। তেমনই, অতীতের বৈষ্ণব তীর্থ শ্রীরামপুরের চাতরায় শ্রীগৌরাস্ত জিউর মন্দির, রঙ্গকালী মন্দির, শিবমন্দির, শীতলামন্দির দেখে নেওয়া যায়। বনভূপুরের আটচালা রাধাবনভূ জিউর মন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য। এরই পূর্বে মার্টিনস প্যাগোডা নামে খ্যাত বাংলা চালা স্থাপত্যের আকর্ষণ নিদর্শন অতীতের রাধাবনভূ জিউর মন্দিরটি আজ দীর্ণ।

হাওড়া থেকে লোকাল ট্রেন যাচ্ছে ভোর থেকে গভীর রাতে, ২ থেকে ১০ মিনিটের ব্যবধানে। SBSTC-র বাস SS 4, গ্রাইভেট বাস 3 ও মিনিবাস যাচ্ছে শ্যামবাজার হয়ে শ্রীরামপুরে।

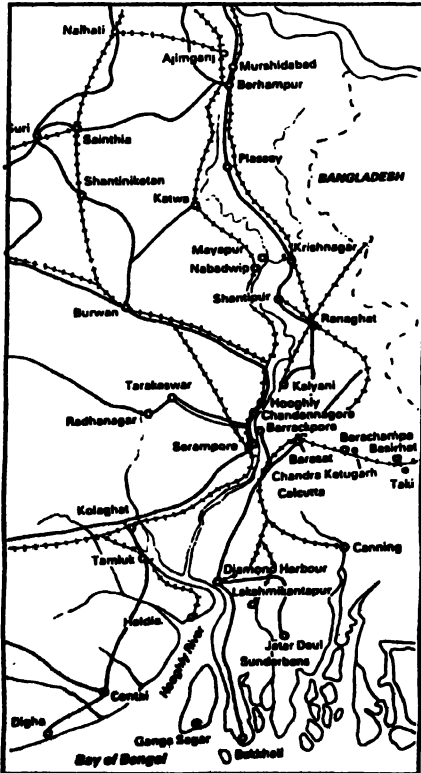
চন্দননগর

শ্রীরামপুর থেকে ১৩ কিমি দূরে চন্দননগর—কলকাতা থেকে দূরত্ব ৩৭ কিমি। অতীতে ফরাসিদের কলোনি ছিল। আগমন ১৬৭৩-এ ঘটলেও গুঁরঙ্গজেবের সনদ বলে ১৬৮৮ খ্রিস্টাব্দে মসিঁয়ে দেলান্দ—খলসানি, বোড়ো ও গোলন্দাজা তিন গ্রাম কিনে গঙ্গার পাড়ে চন্দননগরের ভিত গড়েন। দুর্গও গড়ে গঙ্গাতীরে আলিয়া দুর্গ ফরাসিরা। আর উত্তর-কালে ফরাসি গভর্নর দুয়ারের কর্মকণ্ডলয় চন্দননগরের শ্রীবৃদ্ধি। অবশেষে ১৯৪৭-এ ভারতের স্বাধীনতা প্রাপ্তিতে জনরোষে ১৯৪৯-এর গণভোটে ভারত রাষ্ট্রে (২রা মে, ১৯৫০) শামিল হয়ে ১৯৫৪-র ২রা অক্টোবর পশ্চিমবঙ্গের অংশ হয় চন্দননগর। অতীতকালে বন্দরনগরী রূপেও প্রসিদ্ধি ছিল চন্দননগরের। তেমনই চন্দনকাঠের পণ্যে রমরমা ছিল সেকালে—হয়তো বা নামকরণও সেই থেকে করে থাকবে ফরাসিরা। আবার ফরাসিভাঙাও বলে থাকে লোকে চন্দননগরকে। তবে অতীত লুপ্ত হলেও আজও সুন্দর সাজানো শহর চন্দননগর। এর শান্তি-রিক্স পরিবেশ খুবই পর্যটকপ্রিয়। চন্দননগরের হুগলি নদী (গঙ্গা) আজও পয়ে পয়ে খেঁড়াবার স্বর্গবিশেষ।

গঙ্গার ধারে স্ট্যান্ড লাগোয়া দক্ষিণে রবীন্দ্রস্মৃতি বিজড়িত পাতাল বাড়িটিও অতীত রোমন্থন করায়। কবি বারবার এসেছেন, অবস্থানও করেছেন, সঞ্চয়িতার নানান কবিতাও এই বাড়িতে লেখেন কবি। ফরাসিদের তৈরি ইন্ডিজিউত দে মিউজিয়ম, চার্চ, কনভেন্ট ও সমাধিভূমির পর্যটক আকর্ষণও অনস্বীকার্য। আর রয়েছে মন্দির—নন্দমূলল ও দেবী ভুবনেশ্বরীর। এছাড়া চন্দননগরের আর এক আকর্ষণ তার জগদ্ধাত্রী পূজা। চালচিৎ নিয়ে ২০ থেকে ৩০ ফুট উঁচু বিরাটাকার দেবী জগদ্ধাত্রীর মূর্তি হয় মণ্ডপে মণ্ডপে, সোনার সাজে সজ্জিতা দেবী। আলোর মালা পরে সারা শহর। বৈচিত্র্যও আছে এই আলোর সাজে। সপ্তমী-অষ্টমীতে গাড়ি চললেও নবমী ও দশমীর রাতে গাড়ির চল নেই চন্দননগরে। পায়ে পায়ে ১০-১২ কিমি পরিক্রমায় সাজ করতে হয় দেবী দর্শন। রেল স্টেশনের পূবে শীতলাতলা আর পশ্চিমে খলিসানি, ফটকগোড়া, মধ্যাঞ্চল, বাগবাজার, বড়বাজার, উর্মিবাজার, লক্ষ্মীগঞ্জ, বিদ্যালঙ্কার, পালপাড়া, সন্তান সজ্জ

ছাড়াও শতাধিক পূজা হয় ভগ্নেশ্বর থেকে চন্দননগর জুড়ে। তবুও যেন দশমীর রাতভর রঙবেরঙ আলোর রোশনাই—এ নানান ট্যাবলোর সজ্জিত শতাধিক দেবীর শহর পরিক্রমা অর্থাৎ নয়নলোভন নিরঞ্জন শোভাযাত্রা সত্যই মনোহর। দর্শনার্থীও আসেন দূর-দূরান্ত থেকে লক্ষ লক্ষ দশমীর রাতে চন্দননগরে। এমনকি ITDC ও WB Tourism কলকাতা থেকে গিয়ে ঠাকুর দেখিয়ে আনে। দুর্গাপূজার এক মাস পরে হয় জগদ্ধাত্রী পূজা। তেমনই খ্যাত চন্দননগরের মিষ্টি—জলভরা ও ভাপানো সদেশ। সূর্য মোদকের দোকানে স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। আর সম্প্রতি ফরাসি সরকারের উদ্যোগে অতীত রোমন্থনের বহুমুখী পরিকল্পনা রূপ পেতে চলেছে চন্দননগরে। রিকশায় ৩০-৪০, অটোয় ৬০-৮৫ টাকায় সাজ করা যায় চন্দননগর দর্শন। থাকারও ব্যবস্থা মেলে রবীন্দ্রভবন সংলগ্ন Municipal G H-এ, বুকিং: চন্দননগর পৌরসভা।

Around Calcutta



ব্যাঙেল

যে কোন ভ্রমণার্থীর কাছে ব্যাঙেলের আকর্ষণ বহুমুখী। সঙ্গে আহার্য নিয়ে সারাদিনের ছুটি কাটাতে চলন ব্যাঙেলে। চড়ুইভাতিরও মনোরম পরিবেশ এই ব্যাঙেলে। ১৫৩৭এ পর্তুগিজরা ফ্যাক্টরির সাথে কলোনি গড়ে। ১৫৯৯এ তাদেরই গড়া চার্চ ও মনাস্থি পর্যটকদের অন্যতম আকর্ষণ। দীর্ঘ অবরোধের পর ১৬৩২এ পর্তুগিজদের হারিয়ে দেয় শাহজাহান। তবে ফিরেও আসে পর্তুগিজরা পরের বছর আবার। আর শাহজাহানের হাতে ধ্বংস হলেও নতুন করে গড়ে ওঠে ১৬৪০এ চার্চ। বাংলার মাটিতে সুন্দর কারুকার্য-মণ্ডিত এটিই প্রাচীনতম চার্চ। সম্মুখভাগ গ্রিসের ডোরিক স্থাপত্যে গড়া। Nossa Senhora di Rozario'র নামে উৎসর্গীকৃত। কাচের আধারে মূর্তিও রয়েছে Rozario-র। পূবে লুড গুহা। আজকাল স্কুল বসেছে একটা অংশে। কলকাতারও আগে হুগলির প্রসিদ্ধি ছিল বাণিজ্যকেন্দ্র রূপে। তারও আগে থেকে হুগলির ১০ কিমি উত্তরে সপ্তগ্রাম ছিল বাংলার মুখ্য বন্দর। আর ব্রিটিশ অর্থাৎ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি আসে হুগলির নদী তটে—কারখানাও গড়ে ১৬৫১য় গৌরী সেনের দেশে। তবে অতীতের বন্দরনগরী ও ব্রিটিশের প্রথম উপনিবেশ তথা হুগলির অতীত গৌরব লীন হলেও চার্চ থেকে ২ কিমি দূরে ১৮৬১তে পৌনে তিন লক্ষ টাকা ব্যয়ে দানবীর হাজী মহম্মদ মহসীনের তৈরি মুসলিম তীর্থ ইমামবাড়া আজও অনবদ্য। এর সূর্য ঘড়ি ও টাওয়ার ক্লক দুই-ই দর্শনীয়। ১ কিমি দক্ষিণে চুচুড়ারও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। ডাচ কলোনি গড়ে উঠেছিল ১৭ শতকের মাঝে চুচুড়ায়। ১৬৭৮এ তৈরি অষ্টকোণী ডাচ চার্চ, ডাচ সিমেট্রি ও ডাচ General Perren-এর বসতবাড়ি তথা আজকের মহসীন কলেজ দেখে নেওয়া যায়। ডাচরা চুচুড়া

ছাড়ে ১৮২৫এ ব্রিটিশের কাছ থেকে বদলিরূপে সুমাত্রা পেয়ে। চুঁচুড়ার আর এক আকর্ষণ জোড়াঘাটে বন্দেমাতরম বাড়ি—হুগলির ডেপুটি ম্যাজিস্ট্রেট থাকাকালীন সাহিত্য সম্রাট বঙ্কিমচন্দ্রের এই বাড়িতেই বন্দেমাতরম সৃষ্টি।

ব্যাঙেল থেকে ৪ কিমি উত্তরে অতীতের বন্দর নগরী সপ্তগ্রাম আজ হয়েছে বাঁশবেড়িয়া। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা এর বাসুদেব ও হংসেশ্বরী মন্দিরের পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য। বাসুদেব মন্দিরটি ১৬৭৯ খ্রিস্টাব্দে রাজা রামেশ্বর দত্তের তৈরি। বাঁশবেড়িয়া মন্দির নামেও সমধিক খ্যাত বাসুদেব। মন্দিরের পোড়ামাটির কাজ খুবই চিত্তাকর্ষক। কৃষ্ণলীলা, রামায়ণ ও মহাভারতের আখ্যান উৎকীর্ণ হয়েছে একরত্ন শৈলীর মন্দিরে। গর্তগৃহে দেবতা বাসুদেব অর্থাৎ বিষ্ণু, চারপাশের ঘরগুলিতে শিবলিঙ্গ। আর বাসুদেবের পাশেই রাজবাড়ির অঙ্গনে ১৮০১এ বাঁশবেড়ের রাজা নুসিংহদেবের হাতে শুরু হয়ে ১৮১৪য় ছোট রানী শঙ্করীর হাতে শেষ হয় ৫ লক্ষ টাকা ব্যয়ে হংসেশ্বরী মন্দির। তদ্রূপে তৈরি মন্দিরের ৫টি তলা মনুষ্যদেহের ইড়া, পিঙ্গলা, বজ্রাঙ্ক, সুষ্মা ও চিত্রিণী পাঁচ নাতীর ইঙ্গিত বহন করছে। মন্দিরের ইট, কাঠ ও পাথরের কাজ অতুলনীয়। পাথর এসেছে চুনার থেকে আর কারিগর জয়পুরের। পোড়ামাটির কাজও রয়েছে। ২১ মি উঁচু এই মন্দিরে সহস্র পাপড়ির পাথুরে চূড়া তথা ১৩টি মিনার—রূপ তার না ফোটা কমল। মন্দির স্থাপত্যে এটি অনন্য। দেবী এখানে দক্ষিণাকালীর বীজ হংসেশ্বরী—নিমকাঠে তৈরি নীলরঙা চতুর্ভুজা। ১১—১৫-০০টায় দ্বার বন্ধ থাকে মন্দিরের।

এবার চলুন সেবানন্দপুর। রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি দূরে গড়ে উঠেছে বাংলা সাহিত্য-প্রেমিকদের আর এক তীর্থ। কথাসাহিত্যিক শরৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের জন্ম এই সেবানন্দপুরে। খুবই পরিভ্রমণের বিষয় বাড়িটির মালিকানা অতীতেই হস্তান্তরিত হয়েছে। তবে শরৎ স্মৃতিতে লাইব্রেরি ও মিউজিয়াম বসেছে। বুধবার বন্ধ থাকে মিউজিয়াম।



ডোর থেকে গভীর রাত পর্যন্ত হাওড়া থেকে ব্যাঙেল ও বর্ধমানের লোকাল ট্রেন যাচ্ছে মুম্বই। এক ঘণ্টার পথে ব্যাঙেল, দূরত্ব ৪৩ কিমি। ব্যাঙেল পৌঁছে চুক্তিতে রিকশা নিয়ে সাজ করা যেতে পারে এ-পরিক্রমা। আবার হাওড়া-ব্যাঙেল-কাটোয়া (BAK Loop) লাইনের বাঁশবেড়িয়া পৌঁছেও সাজ করা যায় এ-সফর। G T Road-ও চলেছে হুগলি চিরে ব্যাঙেল হয়ে। তেমনি ট্রেন নৈহাটি পৌঁছেও ফেরিতে গঙ্গা পেরিয়ে চলা যেতে পারে হুগলি তথা ব্যাঙেল।

সবুজ ধীপ: হুগলি জেলা পরিষদ ও মৎস্য দপ্তরের যৌথ উদ্যোগে কলকাতা থেকে ৭৫ কিমি দূরে ১৯৯৩ খ্রিস্টাব্দে গড়ে উঠেছে স্বপ্নে ঘেরা, মায়াময় সবুজ ধীপ। বেঙ্গলা ও হুগলি (গঙ্গা) নদীর সঙ্গমে চর জেগে রূপ পেয়েছে ২ কিমি দীর্ঘ, ৪০ ফুট প্রশস্ত, ১৮০ বিঘা ব্যাপ্ত ঝাঁট, আকাশমণি, পাম, ইউক্যালিপটাস, অর্জুন, শাল, সেতু, মেহগনী, সুপারি, নারকেল, দেবদারু ছাড়াও নানান বৃক্ষ অরণ্যময় সবুজ

ছাওয়া ধীপভূমি—নামটিও তাই সবুজ ধীপ। সূর্যলোকচুরি খেলে গাছ-গাছালির পাতার ফাঁকে ফাঁকে—চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। শীতের মিষ্টি রোদ্দরে কোন এক ছুটির সকালে চলুন যাই সবুজ ধীপে চড়ুইভাতিতে। দক্ষিণ থেকে উত্তরে ধীপ চিরে পথ—দুপাশে নারকেলের সারি। টিলড্রেন পার্ক, ভিউ টাওয়ারও হয়েছে ধীপে। আর আছে দুটি হোটেল, রাজা ও তৃপ্তি—ভাত থেকে চায়ের সঙ্গে টা মেলে। ৯—১৩-০০টায় প্রবেশাধিকার, অবস্থান ১৬-৩০টা পর্যন্ত। টিকিট ১০, ছাত্র-ছাত্রী ৫ (প্রধান শিক্ষকের সুপারিশ লাগে)। চড়ুইভাতির (হুগলি জেলা পরিষদ, চুঁচুড়া, ৩ ৪০২১৩৯ বা বলাগড় পঞ্চায়েত সমিতি, সোমড়া বা মীন ভবন, রবীন্দ্র-নগর, চুঁচুড়া, ৩ ৪০২৬৯২-এর অনুমতি সাপেক্ষে) ফি ২০। সোমড়াবাজার রেল স্টেশন থেকে ১০ মিনিটের পথে সুখরিয়া গ্রাম তথা সবুজ ধীপ ঘাট—লঞ্চ বা যন্ত্রচালিত নৌকায় পারাপার।

চলার পথে সুখরিয়া জমিদার বাড়িতে টেরাকোটায় সমৃদ্ধ ৩০০ বছরের প্রাচীন সুউচ্চ আনন্দময়ীর মন্দিরটিও দেখে চলা যায়। আর আছে দ্বাদশ শিব মন্দির, হরসুন্দরী ও নিস্তারিণীর মন্দির আনন্দময়ীকে ঘিরে। তেমনিই রিকশায় চলা যায় শ্রীপুর জমিদার বাড়িতে দারুণ তৈরি কারুকার্যময় আটচালার দুর্গামণ্ডপ দর্শনে। রাধাগোবিন্দ জিউর মন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য। শ্রীপুর বাজারে নৌ-শিল্পের কারখানাগুলিও আর এক দর্শন। তেমনিই বৃন্দাবনচন্দ্রের মন্দির তথা শুণ্ডি-পাড়ার রথেরও যথেষ্ট প্রশস্তি।



হাওড়া থেকে ৪০ কিমি দূরে ব্যাঙেল হয়ে BAK Loop লাইনে ত্রিবেণী ৪৮, বলাগড় ৬৫, সোমড়াবাজার ৬৮ কিমি অর্থাৎ ত্রিমুখী ৩ প্রবেশ দ্বারে পৌঁছে পামে বা রিকশায় সুখরিয়া ঘাট গিয়ে ট্রারের চলা যেতে পারে সবুজধীপ। সরাসরি ট্রেনও যাচ্ছে ৬-৩৫এ হাওড়া ছেড়ে হাওড়া-আজিমগঞ্জ প্যা. ব্যাঙেল ৭-৩৭, ত্রিবেণী ৮-১০, বলাগড় ৮-৫৬, সোমড়াবাজার ৯-০১এ পৌঁছে কাটোয়া/বাজারসাই হয়ে আজিমগঞ্জ; আর শিয়ালদহ থেকে ৭-৪৫এ ছেড়ে বাজারসাই প্যা. যাচ্ছে ব্যাঙেল ৯-১৬, ত্রিবেণী ৯-৪২, বলাগড় ১০-০৮, সোমড়াবাজার ১০-১২য়। ব্যাঙেল-নলহাটি, হাওড়া-বারহাড়োয়া, হাওড়া-আজিমগঞ্জ, হাওড়া-শালদহ টাউন ফাস্ট প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে এপথে। ফেরার পথে উচিত হবে নলহাটি-ব্যাঙেল প্যাসেঞ্জারে ১৮-০৩এ সোমড়াবাজার ছেড়ে ১৯-১৫এ ব্যাঙেল পৌঁছে এমু লোকালে ২০-৩০টায় কলকাতায় ফেরা। এছাড়াও ট্রেন মেলে ১২-২০, ১৯-১৮, ২০-৪৯এ সোমড়াবাজার থেকে কলকাতার। চুঁচুড়া-কালনা (৮ ফুটের) বাসে কোড়ালার মোড়ে নেমেও ১০/১২ মিনিটে চলা যায় সুখরিয়া ফেরি ঘাটে।

আঁটপুর

বর্ধমান পরগনার দেওয়ান আটোর খাঁ-র নামানুসারে অতীতের বিষখানির নাম হয়েছে আঁটপুর। শান্তিপুর, ধনেখালির মতো আঁটপুরও তাঁতবস্ত্রের জন্য খ্যাত। তবে

হুগলি জেলার আটপুরের খ্যাতি মূলত ১৭০৮ খ্রিস্টাব্দে বর্ধমান রাজ্যের দেওয়ান কৃষ্ণরাম মিত্রের গঙ্গাজল, গঙ্গামাটি আর ইটে পাঁখা ১০০ ফুট উঁচু রাধাগোবিন্দ জিউর মন্দিরের জন্য। বাস থেকে নামতেই ডাইনে আয়তাকার পূর্বমুখী এই মন্দিরের টেরাকোটার কাজ অতুলনীয়। বাঙলার নিজস্ব শৈলীতে চার চালা ছাদ, চারটি খিলান সমৃদ্ধ স্তম্ভের উপর দাঁড়িয়ে। তবে সবচেয়ে আকর্ষণীয় মন্দিরের সম্মুখভাগ ও দুই পাশের দেওয়ালে পোড়ামাটির অঙ্কন প্যানেল। প্যানেলের ভাস্কর্য ও বিষয়বস্তু বৈচিত্র্যে ভরা। নানান পৌরাণিক আখ্যানের সঙ্গে তদানীন্তন সমাজ জীবন মূর্ত হয়েছে সুন্দর ভাস্কর্যে। দু'একটি ইট সম্প্রতি বদল হলেও অধিকাংশ প্যানেলই আজও অক্ষত। মন্দিরের দোল মঞ্চটিও সুন্দর। মন্দির লাগোয়া চণ্ডীমণ্ডপের কারুকর্মও মুগ্ধ করে দর্শকদের। কাঁঠাল কাঠে তৈরি, সুন্দর কারুকর্ম-খচিত, নির্মাণ ও আঙ্গিকের দিক থেকেও অনবদ্য। কাঠের ফ্রেমের উপর রাধাকৃষ্ণর যুগল মূর্তি। এছাড়াও মন্দির আছে টেরাকোটায় সমৃদ্ধ বাণেশ্বর, রামেশ্বর, জলেশ্বর, ফুলেশ্বর। বিপরীতে সারদা ভবন; সকাল ৯টার মধ্যে কুপন সংগ্রহে ভ্রমভোগের ব্যবস্থা মেলে। অদূরেই ঠাকুর শ্রীরামকৃষ্ণ ও শ্রীমা সারদা দেবীর স্মৃতিপূত রামকৃষ্ণ মিশনের অন্যতম প্রতিষ্ঠাতা স্বামী প্রেমানন্দ অর্থাৎ বাবুরাম ঘোষদের দুর্গা-বাড়ি। এই বাড়িতেই ১২৯৩ সনের ১০ই পৌষ (১৮৮৬র ২৪শে ডিসেম্বর) শ্রীরামকৃষ্ণদেবের পদাশ্রিত ও বিশেষ কৃপাপুণ্ড ৯ যুবক—নরেন্দ্র বিবেকানন্দ, বাবুরাম প্রেমানন্দ, শরৎ সারদানন্দ, শশী রামকৃষ্ণানন্দ, তারক শিবানন্দ, কালী অভেদানন্দ, নিরঞ্জন নিরঞ্জনানন্দ, গঙ্গাধর অখণ্ডানন্দ, সারদা ত্রিগুণাভিনন্দ প্রজ্জ্বলিত খুনির লেলিহান শিখাকে সাক্ষী রেখে জগতের কল্যাণে মানব সমাজকে উদ্ধারের ব্রতে সন্ন্যাস গ্রহণের সঙ্কল্প নেন। সেই অচিহ্ননীয় ঘটনার স্মরণে মন্দির হয়েছে। উৎসব হয় আজও এদিনে।

আর রয়েছে বাজার থেকে বামহাতি পথে মিনিট পনেরোর পায়ে হাঁটা দূরত্বে গৌড়ীয় বৈষ্ণব তীর্থ রূপে চিহ্নিত আটপুরের দ্বাদশ গোপালের অন্যতম পরমেশ্বর দাস ঠাকুরের শ্রীপাট, মন্দিরে নিভ্যানন্দ মহাপ্রভুর সেবিত ঋদ্ধাহর আদি শ্রীশ্রীশ্যামসুন্দর দেবের বিগ্রহ। দেবমূর্তি সুন্দর। তিন শতাধিক বছরের পুরাতন বকুল গাছটিও দৃশ্যনীয়। তবে ১২—১৫-৩০টায় বন্ধ থাকে প্রতিটি মন্দির আটপুরের। চলাপথে তাঁতবস্ত্রও দেখে নেওয়া যেতে পারে বাজারের দোকানপাটে।

আটপুরের ৬ কিমি দূরে রাজবলহাটও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা বাসে বা রিকশায়। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা চতুর্ভুজা মৃন্ময়ী দেবী রাজবলভীর মাহাত্ম্য অবর্ণনীয়। অপক্লান্ত এই দেবীর বামহাড়ে রুধির পাত্র, ডানহাড়ে ছুরি। দক্ষায়মান দেবীর এক পা ভৈরবের বৃকে অপর পা বিরপাক্ষ মহাদেবের মন্ডকে অঙ্গীন। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও

নানান রাজবলহাটে। রাজবলহাট থেকে বাসে সরাসরি কলকাতা বা হরিপাল বা আটপুরে ফিরে ফেরা যেতে পারে ঘরপানে।

চলার পথে কৌশিকী নদীর পাড়ে হরিপাল-এর রায়-পাড়ায় নানান মন্দির দেখে চলা যেতে পারে। ৪০০ থেকে ১০০০ বছরের প্রাচীন এই সব মন্দিরও টেরাকোটায় সমৃদ্ধ। রাধাগোবিন্দ মন্দির, শিবমন্দির এগুলির মধ্যে অন্যতম। থাকারও ব্যবস্থা মেলে হরিপালের ধরমশালায়। ততমই হরিপাল থেকে ১২ কিমি দূরে টেরাকোটার আর এক গীঠস্থান দ্বারহাটায় ১৭২৯-এ তৈরি রাজ-রাজেশ্বর মন্দির ছাড়াও নানান মন্দির দেখে নেওয়া যেতে পারে রিকশা বা ৯, ৯এ, ১০ রুটের বাসে।

হাওড়া-তারকেশ্বর লোকালে হবিপাল পৌছে রসিদপুরের বাসে যাওয়া যেতে পারে আটপুরে। তবে কলকাতার বাবুখাট থেকে CSTC-র বাস যাচ্ছে ৭-১৫, ১২-৩০, ১৮-৩০টায়। সময় নেয় ১ ঘ ৪০ মিনিট, দূরত্ব ৪৭ কিমি। আর হাওড়া স্টেশন থেকে প্রাইভেট বাস যাচ্ছে ৮—১৮-৩০এ ২০ মিনিট অন্তর। ভাড়া ৮.৮০। আটপুর থেকে CSTC ফেরে ৭-৪৫, ৯-৩০, ১৪-৪৫এ; আর প্রাইভেট ৪-৪৫এ প্রথম ছেড়ে ১৭-১৫য় শেষ বাস। ৭-৪৫ ও ১৩-৩০এ কলকাতা ছেড়ে রাজবলহাটেও যাচ্ছে আটপুর হয়ে CSTC-র বাস। ফেরে ১০-৩০ ও ১৬-১৫য় রাজবলহাট থেকে। সময় এক নিলেও ভাড়া কম প্রাইভেট। ডোমজুড়/ বড়গাছিয়া/ জাঙ্গিপাড়া হয়ে পথ গিয়েছে। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই আটপুরে। উচিতও হবে বাসে বাসে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা। তবে, গত কিছুকাল CSTC সার্ভিস স্থগিত।

তারকেশ্বর

অনাদি স্বয়ম্ভু দেবতা আদিনাথ। আবিষ্কার মুকুন্দ ঘোষের আর স্বপাদিস্তি রাজা ভারামন্ড জঙ্গল কেটে মন্দির গড়েন ১৭২৯এ তারকনাথের। রেল স্টেশন থেকে ৫ মিনিটের পথে আজকের আটচালা মন্দিরটি শিখাখালার গোবর্ধন রক্ষিতের তৈরি। খুবই জাগ্রত এই দেবতা। আর আছেন মন্দিরে বাসু-দেব, ভ্রমতে ব্রহ্মা। দেশ-দেশান্তর থেকে তীর্থযাত্রী আসেন, বিশেষ করে শিবরাত্রি ও চৈত্র সংক্রান্তিতে। আর আসছেন শ্রাবণের প্রতি সোমবার পায়ে ছেঁটে শেওড়াফুল হয়ে গঙ্গার জল নিয়ে পূণ্যার্থীর দল। মন্দির লাগোয়া দুধপুকুরে স্নানে পূণ্য হয়। লাগোয়া রাজবাড়িটিও দেখে নেওয়া যায়।

থাকার জন্য সাধারণ হোটেল, ধরমশালা ও পাণ্ডা ঠাকুরদের বাড়িতে ঘর মেলে। আর হয়েছে দুধপুকুরের উত্তর পাড়ে Tarakeswar Municipal Guest House, DCB ৪০ DAB ৮০ ডর্মি বেড ১০ হার, পৃথক মূলে একটি মিল বাধ্যতামূলক। থাকা ও আহাৰ্যে অনন্য এই গেস্ট হাউস। স্টেশন লাগোয়া কানোরিয়া হাওড়া ডবলট্রাক থাকার পক্ষে রমণীয়।

হাওড়া থেকে বিনভর (৪-৩০—২২-৫৫) লোকাল ট্রেন যাচ্ছে তারকেশ্বর। ফেরার ৩-৫৫য় প্রথম ছেড়ে ২২-০২এ শেষ ট্রেনটি তারকেশ্বর ছেড়ে হাওড়া আসছে। দূরত্ব ৫৮ কিমি। ঘণ্টা দুয়েকের পথ। CSTC-র আশ্রমবাগের বাসও যাচ্ছে শ্রীদ মিলার

থেকে। তারকেশ্বর থেকে বাসে বাসে ২৮ কিমি দূরের আরামবাগ হয়ে কামারপুকুর ৪৫ ও জয়রামবাটি ৫১ কিমি বেড়িয়ে নেওয়া যায়। যুগ্মবাস ও মিনি বাস যাচ্ছে রেল স্টেশনের বিপরীতের বাস স্ট্যান্ড থেকে।

রাধানগর

তারকেশ্বর থেকে বাসেই চলুন ৪৫ কিমি দূরের রাধানগর। আরামবাগ-কামারপুকুর পথের মায়াপুর হয়ে রামনগর পৌঁছে রিকশা/অটোয় শেষ ৩ কিমি গিয়ে রাধানগর। কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ৪ ঘণ্টায় CSTC-র বাস যাচ্ছে ১৬-১৫য়, আর প্রাইভেট ১৪-২০এ; ফেরে ৬-৩০/৬-০০এ যথাক্রমে। রাজা রামমোহন রায়ের জন্মভূমি (১৭৭২) রাধানগর আজ পর্যটন মানচিত্রে স্থান পেয়েছে। দামোদর নদের পাড়ে গ্রাম বাংলার আকর্ষণও কম নয় রাধানগরে।

কামারপুকুর



কলকাতা থেকে ১০৪, তারকেশ্বর ৪৫, আরামবাগের ১৬ কিমি দূরে কামারপুকুর। আর বিষ্ণুপুর ৪৬, বাঁকুড়া ৮৫, বর্ধমানের দূরত্ব ৫৮ কিমি। কলকাতার শহীদ মিনার থেকে CSTC-র বাস যাচ্ছে কামারপুকুর ১৫-১৫ ও জয়রামবাটি। আবার জয়পুর, বিষ্ণুপুর, বাঁকুড়া, মুকুটমণিপুর, গুণনিয়া, সাঁওতালদি, দুর্গাপুরের নানান (CSTC, SBSTC, প্রাইভেট) বাসও কামারপুকুর-জয়রামবাটি হয়ে যাচ্ছে। বাস মেলে দিনভর; ৪ ঘট্টা অন্তর, ৩ ঘট্টার পথ। তেমনই বাসে আরামবাগ পৌঁছে আবার বাসে চলা যেতে পারে কামারপুকুর। নিকটতম রেল সংযোগকারী স্টেশন তারকেশ্বর, বিষ্ণুপুর ও বর্ধমান। বাস সংযোগ গড়েছে অরী থেকে কামারপুকুরের। মিনিবাসও চলে তারকেশ্বর থেকে আরামবাগ/ কামারপুকুর হয়ে জয়রামবাটি। আর ফেরার পথে ৫-১৫য় প্রথম ছেড়ে ১৭-০০টায় শেষ বাসটি কলকাতায় আসছে কামারপুকুর থেকে। আর দূরান্ত থেকে আসা বাসের ভিড় এড়িয়ে কামারপুকুর বা জয়রামবাটি বা জয়পুরের বাসে কলকাতা ফেরাই উচিত হবে।

কামারপুকুর আজ এক বিশ্ব-তীর্থ। ১৮৩৬ খ্রিস্টাব্দের ১৭ই ফেব্রুয়ারি ঠাকুর শ্রীশ্রীরামকৃষ্ণদেবের জন্ম এই কামারপুকুরে। শিল্পী নন্দলাল বসুর পরিকল্পিত অনুপম মন্দির (৪৫ ফুট উঁচু) হয়েছে ১৯৫১ খ্রিস্টাব্দের ১১ই মে রামকৃষ্ণদেবের জন্মভিটা তথা টেকশিলে, মূর্তিও হয়েছে শ্রেষ্ঠকর্মরে কমলে-আসীন শ্রীশ্রীরামকৃষ্ণর। লাগোয়া বাঁয়ে রঘুবীর মন্দির, ঠাকুরের বসভাড়াই ও ঠাকুরের সহস্রোপিত আশ্র-বৃক্ষ। শীতে ৬-৩০—১১-৩০ আবার ১৫-৩০—২০-৩০, গ্রীষ্মে ৬—১১-০০ ও ১৬—২১-০০টায় শোলা থাকে শ্রীরামকৃষ্ণ মঠ। তবে, মঙ্গলারতি দর্শনের বিশেষ ব্যবস্থা মেলে ভোর ৪-০০টায়। আর রয়েছে মঠের প্রবেশ ফটকে কিংবদন্তীতে ঘেরা বোগী শিবমন্দির। কথিত আছে এই শিবলিঙ্গ থেকে বিকীর্ণ দৃষ্টিতে মাতা চন্দ্রমণি দেবীর সন্তান ধারণ ও শ্রীরামকৃষ্ণর আবির্ভাব। মঠের বিপরীতে ঠাকুরের

স্মৃতিপূত হালদার পুকুর। মঠ রেখে ডানহাতি—লাহাবাবুদের বাড়ি ও পাঠশালা, গোপেশ্বর শিবমন্দির, সীতানাথ পাইনের বাড়ি, অপর্যবেক্ষিত ঠাকুরের ডিক্রামাতা ধনী কামারনীর বাড়ি, প্রগাঢ় ভগবদ ভক্ত শ্রীনিবাস অর্থাৎ চিনু শাঁখারির বাসভিটা। প্রতিটিই পায়ে পায়ে ১ ঘণ্টায় দেখে নেওয়া যায়। তবে দর্শন নয়, অনুভবই শ্রীরামকৃষ্ণ মঠের উৎস। আর বসে মেলা ১৫ দিনের—ফাঘুন মাসের শুক্লা দ্বিতীয়ার ঠাকুরের আবির্ভাব তিথিতে কামারপুকুরে।

রিপ্লাই কার্ডে President Maharaj. Sri Ramkrishna Math. Kamarpukur, Hooghly. WB-712612. ☎ (03211) 44221-এর অনুমতি সাপেক্ষে শ্রীরামকৃষ্ণ মঠের গেস্ট হাউসে, থাকা ও অন্নপ্রসাদ (আহার্য) মেলে দিনভর। আর আছে গ্রাম বাংলার চার চালার আদলে ডমিটির প্রথায় দ্বিধাভিক্রম বেড়ের অতিথি ভবন ও মেঝেতে থাকার ব্যবস্থা নিয়ে যাত্রী নিবাস। ৯-৩০টার মধ্যে কুপন সংগ্রহে ১১-৩০টায় অন্নপ্রসাদ মেলে। সবই প্রণামী প্রথায় শ্রীরামকৃষ্ণ মঠে। আর বাস স্ট্যান্ডেই আছে প্রাইভেট মালিকানায় কামারপুকুর ট্যারিস্ট লজ, D ৫০ ৬০ ও ১ কিমি দূরে হাসপাতালের কাছে জিলা পরিষদ ডাকবাংলো। আর আছে ঠাকুরের প্রিয় কামারপুকুরের বৌদে ও সাদা জিলাপি; স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। আরামবাগমুখী পথে ২ কিমি দূরে মুকুন্দপুরের শিবমন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন অভ্যুৎসাহীরা।

তেমনই আরামবাগমুখী ৬ কিমি গিয়ে কামারপুকুর চটি থেকে ১১ কিমি বাসে বাসে চলা যায় আর এক হারানো অতীত গড় মান্দারণ। পাশেই রয়েছে আর এক গড়—ভিতরগড়। তবে গড় দুটিই আজ মাটির নিচে চাপা। বাস রাস্তার অদূরে ওড়িশা গেটে মোগলী দুর্গের প্রবেশ। মোরাম বিছানো পথে ২ কিমি যেতে টিলার টঙে গাজী ও গীর সাহেবের দরগা। পাথরের সমাধি হয়েছে—গৌড়াধীপ হোসেন শাহর, সেনাপতি ইসমাইল গাজির। হিন্দুরা আজও ধর্মঠাকুরের ঘোড়া দেন আর মুসলমানেরা বাতি জ্বালেন সমাধিতে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে আমোদর নদী। ১ কিমি দূরের তালগাছকে নিশানা করে আলপথে মাঠ পেরিয়ে দেবী মালিনী পাষণ। অদূরে কাজলা দিঘি। আর পথেই পড়ে পিকক কর্নার, ডিয়ার পার্ক, লেক, দেওয়ান পীরের আস্তানা পর পর। বোটং-এরও ব্যবস্থা আছে লক্ষ্মীজলা লেকের জলে। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে চড়াইভাতির মনোরম পরিবেশ গড় মান্দারণ। এবার গ্রাম্য পথে চটি-আরামবাগ বাসপথের কাঁঠালীতে পৌঁছে আয়েবা-জগৎ সিংহর শৈলেশ্বর শিব মন্দির বেড়িয়ে বাসেই ফিরুন শ্রীরামকৃষ্ণ মঠ। প্রাপ্তি ফুসে ইতিহাস রোমন্থন করে নেওয়া যেতে পারে। শীতে দুধ-সুগন্ধ থেকে পাখিরা আসে গড় মান্দারণে। তেমনই যাতায়াতের পথে আরামবাগ বাস স্ট্যান্ডে অবিচ্ছিন্ন ভাঙতোর স্মার নেওয়া যেতে পারে রিসর্ভেজন মিটাই-এর। থাকলও ঘর মেলে H Anandimayee, Arambagh-এ।

জয়রামবাটি

কামারপুকুর থেকে ৬ কিমি আর বিষ্ণুপুর থেকে ৪৩ কিমি দূরে বাঁকুড়া জেলায় জয়রামবাটি। কামারপুকুর থেকে বাস, মিনিবাস বারিকলায় জয়রামবাটি পৌছান। তারকেশ্বর, আরামবাগ, বিষ্ণুপুর, বাঁকুড়া থেকেও মুম্বই বাস আসছে জয়রামবাটি। বাস আসছে দুর্গাপুর, বর্ধমান, শুশুনিয়া তথা রাজোর দিখিদি থেকেও জয়রামবাটিতে। তবে, শীতের ছুটি ছাটায় কলকাতা থেকে কনডাকটে ট্রারে তারকেশ্বর/কামারপুকুর/জয়রামবাটি একই দিনে বেড়িয়ে ফেরার ব্যবস্থাও থাকে West Bengal Tourism ও ITDC-র Ashoke Travels & Tours-এর। CSTC-র বাসও যাচ্ছে ৬-৩০, ৭-৩০, ১০-০০, ১৫-৪৫, ১৬-৪৫ শহীদ মিনার ছেড়ে কামারপুকুর হয়ে জয়রামবাটি। ভাড়া ২৩.০০ টাকা। এছাড়া বাঁকুড়া, বিষ্ণুপুরের নানান বাসও যাচ্ছে কামারপুকুর/জয়রামবাটি হয়ে। ডানলপ থেকেও বাস মেলে কামারপুকুর-জয়রামবাটি হয়ে দুরান্ডের নানান দিকের। বিষ্ণুপুর থেকেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাসে বাসে জয়রামবাটি/কামারপুকুর।

অতীতের অখ্যাত গ্রাম জয়রামবাটিও আজ শ্রীরামকৃষ্ণ ভক্তদের এক মহান তীর্থ। ১৮৫৩র ২২শে ডিসেম্বর ঠাকুর শ্রীশ্রীরামকৃষ্ণের সহধর্মিণী শ্রীশ্রীমা সারদামণির জন্ম। পিতা—রামচন্দ্র, মাতা—শ্যামাসুন্দরী। মাতৃমন্দির হয়েছে জন্ম-ভিটায় ১৯২৩র ১৯শে এপ্রিল শুভ অক্ষয় তৃতীয়ায়। মূর্তি হয়েছে মর্মের মায়ের। অক্টোবর থেকে মার্চ ৪-৩০—১১-০০ ও ১৫-৩০—২০-০০, আর এপ্রিল থেকে সেপ্টেম্বরে ৪—১১-০০ ও ১৬—২০-৩০টা খোলা থাকে মন্দির। প্রতি বছর অক্ষয় তৃতীয়ায় মহাসমারোহে পালিত হয় মন্দির প্রতিষ্ঠার উৎসব। আর আছে ১৮৬৩—১৯১৫ পর্যন্ত মায়ের বাসগৃহ—পুরানো বাড়ি। বিপরীতে ১৯১৬—১৯২০র বাসগৃহ অর্থাৎ নতুন বাড়ি; লাগোয়া মায়ের ব্যবহারপূত পুণ্যপুকুর; তারই পাড়ে মায়ের কুলদেবতা সুন্দর নারায়ণ ও শ্রীশ্রী শীতলাদেবীর মন্দির, অদূরে বাস স্ট্যান্ডে মায়ের গঙ্গাঘাট। আর রয়েছে দেবী সিংহবাহিনী সর্দার গলিপথে গ্রাম অপদরে। সিংহবাহিনীর মাটি আজও ধ্বংসরি। সপরিবারে ও নানান ব্যাধির উপশম ঘটায়। অদূরেই হয়েছে রামকৃষ্ণ-মিবেনকানন্দ মিশন পরিচালিত বিবেকানন্দ মঠ তথা নর-নারায়ণ মন্দির জয়রামবাটিতে। শিবজ্ঞানে জীব সেবার আদর্শে কুমার পূজার প্রথাও আছে মন্দিরে, ৭—১২-০০ আবার ১৬—২০-০০টা খোলা।



খালরও ব্যবহা মেলে মাতৃমন্দিরের যাত্রী নিবাসে। রিলাই কার্ডে অখ্যাত মহারাজ, শ্রীশ্রীমাতৃমন্দির, জয়রামবাটি, বাঁকুড়া-722161, ০ (03211) 44222-কে লেখা যেতে পারে। মৃণুরে ভক্তদের অন্নপ্রসাদও মেলে সকল ৬-০০টার মধ্যে অগ্নির কুশন সংগ্রহে। তবে সবই জনহিতার্থে—প্রার্থী নয়। আর আছে বিবেক মিশনের রেস্ট হাউস, থাকা-খাওয়া ৪০ প্রতি জন। আইডেট হোটেল Sarada

Tourist L. ০ 44263, SCB ৮৫ DAB ১৫০-১৮৫ ডর্মি বেড ৫০, কল বুকিং: DA 127, Sector 1, Salt Lake-64, ০ 3341081; সাধারণ সঙ্গে নীলাচল লজ, মায়ের ঘাট বাস স্ট্যান্ড, DCB ৮৫ DAB ১০০; জয়রামবাটি অতিথি নিবাস জয়রামবাটিতে।

তেমনই জয়রামবাটির ৩ কিমি দূরে শিহড় গ্রামের বামুনপাড়ায় ঠাকুরের ভায়ে হাদে বা হদয় মুখার্জিদের পৈতৃক ভিটে। আজও তালপাতায় ঠাকুরের স্বহস্তে লেখা চণ্ডীর গুণি দেখে নিতে পারেন রিকশা বা পায়ে গিয়ে। আর আছেন ঠাকুরের পুজিত শান্তিনাথ শিব শিহড়ে। মাকড়া পাথরে তৈরি শিবরথমণী ওড়িশি মন্দিরটি ভাস্কর্যময়। আবার বাসে বিষ্ণুপুরমুখী ৮ কিমি গিয়ে কোয়ালপাড়ায় মায়ের বৈঠকখানা অর্থাৎ কলকাতায় যাতায়াতের পথে মায়ের বিশ্রামস্থল দেখে চলতে পারেন উৎসাহীরা।

বিষ্ণুপুর



কামারপুকুর, জয়রামবাটি বেড়িয়ে বাসেই চলল বিষ্ণুপুর। প্রাইভেট, SBSTC ও CSTC-র বাস যাচ্ছে। কলকাতা থেকে দূরত্ব: রেল ২১০, সড়ক পথে ১৫১ কিমি। ঝড়াপুরের দূরত্ব ৮১, জয়রামবাটি ৪৩ কিমি। বাস সংযোগ রেখেছে নিয়মিত। আর কলকাতার শহীদ মিনার থেকেও ৪ ঘণ্টায় ৩৪.০০ টাকায় CSTC-র বাস যাচ্ছে ৫-৩০, ৬-০০, ৬-৩০, ৭-৩০, ৭-৪৫, ৮-৪৫, ১০-০০, ১১-৩০, ১১-৪৫, ১২-৪৫, ১৪-০০, ১৪-৩০, ১৫-২০, ১৬-০০, ১৬-৪৫, ২২-০০টা বিষ্ণুপুরের। আর SBSTC-র বাস যাচ্ছে ৫-১৫, ৫-৪৫, ৫-৫০, ১১-৩০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৫-১৫, ১৬-১৫, ২২-০০টা ছেড়ে বিষ্ণুপুর হয়ে নানান দিকে। প্রাইভেট বাস যাচ্ছে ৫-৪৫, ৬-৩০, ৮-১৫, ১৫-২০। ট্রেনও যাচ্ছে ২২-১৫য় হাওড়া-আত্রা-চন্দ্রপুর প্যাসেঞ্জার ও শনিবার ছাড়া প্রতিদিন ১৬-৪৫এ ৪০17 পুন্ডিয়া এক্স হাওড়া থেকে। বিষ্ণুপুর পৌছায় যথাক্রমে ৩-১০ ও ২০-২৫। আবার ট্রেনে দুর্গাপুর গিয়েও বাসে বিষ্ণুপুর চলা যায়। বাস ও মিনিবাস চলছে মুম্বই দুর্গাপুর থেকে ৮১ কিমি দূরের বিষ্ণুপুরে। কলকাতায় ফেরার বাস ৫-৪০এ প্রথম ছেড়ে দিন-রাতি জুড়ে বিষ্ণুপুরে মেলে।

১৪ শতকে উনবিংশে মন্মরাজ জগৎমন্মর অতীতের প্রদ্যুম্নপুর থেকে সরে এসে রাজধানী গড়েন লালমাটির দেশে বিষ্ণুপুরে। সেই মন্মরাজদের ঐতিহাসিক কীর্তিকলাপ, ললিতকলা, টেরাকোটায় সমৃদ্ধ প্রাচীন বাংলার মন্দির স্থাপত্য পর্বত মানচিত্রে বিষ্ণুপুরকে আজ অনন্য করে তুলেছে। পোড়ামাটির ভাস্কর্যের শৈল্পিক আকর্ষণ অনবদ্য। মন্দিরের বিলানগুলিও শিল্পকর্মে সমৃদ্ধ। মানব-মানবী, সমাজজীবন, ঘোড়া-পালকি-গরুর পাড়িতে যাত্রী, ফুল-লতা-পাতা, শিকার, পশুপাখির নানান মোটিক, রামায়ণ ও কৃষ্ণলীলার আখ্যানও মূর্তি হয়েছে মন্দির গায়ে টেরাকোটায়। কলাটিপ, লালকী, মদনগোপাল, রাধামাধব, রাধাগোবিন্দ, রাধাশ্যাম, নন্দলাল মন্দিরগুলি ল্যাটেরাইট পাথরে গড়া; আর মন্মরাজ, মদনমোহন, মুরলীমোহন, শ্যাম

রায়, জোড় বাংলা ইটে তৈরি। প্রতিটা মন্দির স্ব স্ব মাহাঘ্যে সমৃদ্ধ, দুর্গিনন্দন টেরাকোট। অর্থাৎ পোড়ামাটির অলঙ্করণে অতুলনীয়। ইটের কার্টিং-এর কাজও মনোহর। মন্দিরাজা বীর সিংহের আর এক কীর্তি সাধারণ মানুষ ও দুর্গের জলাভাণ্ড মেটাতে খনন করা বিশালাকার দিঘি তথা বাঁধ। লালবাঁধ, কৃষ্ণবাঁধ, যমুনাবাঁধ, কালিন্দীবাঁধ, শ্যামবাঁধ, শোকাবাঁধ, চৌখনবাঁধ বিশেষভাবে উল্লেখ্য।

কার্যত বীর হাশির, বীর সিংহ, রঘুনাথ সিংহ প্রমুখ মন্দিরাজাদের কালে প্রাচীন বঙ্গের সংস্কৃতি ও সভ্যতার অন্যতম পীঠস্থানও হয়ে ওঠে বিষ্ণুপুর। সঙ্গীত জগতে বিষ্ণুপুর ঘরানা আজও প্রশস্তি কুড়ায়। সঙ্গীতাত্যর্ঘ্য যদুভট্ট, রাধিকাপ্রসাদ গোস্বামী নিজস্ব ঘরানাকে পৌছে দিয়েছেন সঙ্গীতের জলসাপ্তাহে। বিষ্ণুপুরের নবতম আকর্ষণ বিষ্ণুপুর মেলা। ৭ই পৌষ শুরু হয়ে (ডিসেম্বরের শেষ সপ্তাহ) জম্পেশ শীতে সপ্তাহব্যাপী পূর্ব ভারতের সংস্কৃতি তথা মিলনমেলা আজ জাতীয় মেলায় স্বীকৃতি পেয়েছে। তেমনই শ্রাবণ সংক্রান্তিতে ঝাপান অর্থাৎ সাপুড়ীদের সাপ খেলার প্রতিযোগিতা—সেও আর এক অদ্ব্য আকর্ষণ। রাজ্য-পাটের সাথে মন্দিরাজাদের রাজপ্রাসাদটি বিধ্বস্ত হলেও মন্দিরগুলি রয়েছে আজও। ১৬ শতকের শেষ থেকে ১৯ শতকের মধ্যে তৈরি হয়েছে বিষ্ণুপুরের মন্দিররাজি মন্দিরাজাদেরই হাতে। পরবর্তীকালে মন্দিরাজাদের রাজত্ব যায় বর্ধমানরাজদের দখলে।

বিষ্ণুপুরের দক্ষিণে ট্যুরিস্ট লঞ্চার পিছনে লালবাঁধের পথে দলমাদল কামানটি দর্শনীয়। ১৭৪২ খ্রিস্টাব্দে রাজা গোপাল সিংহের রাজত্বকালে এই কামান দিয়েই বগী আক্রমণ প্রতিহত করা হয়। কিংবদন্তী, স্বয়ং কুলদেবতা মদনমোহন কামান দাগেন। বগীর দল মর্দনকারী কামান তাই নাম এর দলমর্দন, কালে কালে দলমাদল। আকারে ৩.৮ মি লম্বা, নলের ব্যাস ১১ ১/২ ইঞ্চি। ৬৩টি লৌহবলয় ছিল সেকালে, ওজন ২৯৬ মণ। কামানটির কারুকার্যও দক্ষতার নিদর্শন মেলে। পাশেই হয়েছে নতুন করে দেবী ছিন্নমস্তার মন্দির।

মানিকলাল সিংহর প্রচেষ্টায় গড়ে ওঠা যোগেশচন্দ্র পুরাঙ্গীর্ষি ভবনটিও বিষ্ণুপুর পর্যটকদের দেখে নেওয়া উচিত। পশ্চিম রাঢ় তথা মন্দিরাজাদের ঐতিহাসিক শিল্প-সভ্যতার নানান সংগ্রহ স্থান পেয়েছে। আর রয়েছে অতীত কালের প্রত্নতত্ত্বের নানান সন্ধান এই ভবনে। ১০—১২-০০ আবার ১৫—১৮-০০টায় খোলা থাকে। উচিত হবে লঞ্চার বিপরীতে বিষ্ণুপুরের বঙ্গীয় সাহিত্য পরিষদ শাখাটিও বেড়িয়ে নেওয়া। এর বিপরীতে লালবাঁধ অর্থাৎ দিঘি। তারই পাড়ে অনাড়ম্বর, কারুকাঁথীন দেবী সর্বমঙ্গলার মন্দির। বিপরীতে শ্রীমায়াকৃষ্ণ মিশন আশ্রম। লাগোয়া রামানন্দ কলেজ।

তবুও বৈচিত্র্যে অনবধ্য, অলঙ্করণে অনন্য, পঙ্খব্রহ্ম শৈলীতে ১৬৪৩ খ্রিস্টাব্দে নাবাব সিংহ যেভাবে স্মৃতিতত্ত্ব মন্দিরাজ রঘুনাথ সিংহের তৈরি শ্যামরায় মন্দির। গোপ-

গোপিনী সহ শ্রীকৃষ্ণর রাসলীলা, হিন্দু পুরাণের দেব-দেবীরা মূর্ত হয়েছেন দেওয়াল-গায়ে হ্রদোময় টেরাকোটায়। উৎকর্ষতা অনুপম করে তুলেছে শ্যামরায়কে।

১৬৫৫তে মন্দিরাজ রঘুনাথ দেব সিংহর তৈরি স্বয়ম্ভু মন্দির জোড়বাংলা। বাংলা চালায় ছাঁদে তৈরি শিখর এর বৈশিষ্ট্য। মন্দির গায়ে টেরাকোটার কাজও অনবধ্য। স্বয়ম্ভুর বিপরীতে ১৭৫৮তে চৈতন্য সিংহর তৈরি রাধেশ্যাম মন্দির। বাংলা চালায় ছাঁদে মাকড়া পাথরের ভাস্কর্য যেমন মহীয়ান করেছে তেমনই একরত্ন মন্দিরের এক শ্রেষ্ঠ নিদর্শন এই রাধেশ্যাম মন্দির। পোড়ামাটির ব্যঞ্জন অনুপস্থিত, কলি-চূনের প্রলেপে রূপ পেয়েছে এর স্থাপত্য। (পৌছে যান ছোট ও বড় পাথর-সরজা দিয়ে কীর্তিনা মন্দিরাজদের গড় অর্থাৎ রাজবাড়ির চত্বরে। রাজবাড়ি আজ বিধ্বস্ত, পাশেই আড়ম্বর ও ভাস্কর্যহীন মুখ্যী অর্থাৎ দেবী দুর্গার শ্রীমন্দির। তবে, আজও এর দুর্গাপূজার অভিনবত্ব আছে। দশমীতে মাটির তৈরি রাণকোট—সেও বৈচিত্র্যময়। অতীতে মহাসমারোহে রাস উৎসব উদযাপিত হত। চত্বরে ৯ বৃক্কের একীভূত রূপ—সেও আর এক দ্রষ্টব্য। তেমনই উচিত হবে একমাত্র শিবমন্দির রেখ দেউলের অনন্য নিদর্শন মঙ্গেশ্বর দেখে নেওয়া। রাজবাড়ির বিপরীতে রাখাল জিউর মন্দির। ১৬৫৮তে বীর সিংহর কালে মাকড়া পাথরে তৈরি। কারুকাঁথীন মন্দিরের দেবতা স্থানান্তরিত হয়েছে শহরের পশ্চিমে হাটতলায় নতুন মন্দিরে। মন্দির আজ রুদ্ধ। তবে, পাথরের বিশাল রথটি আজও অতীত কীর্তন করছে।

শাঁখারি বাজারে ১৬৯৪এ মন্দিরাজ দুর্জন সিংহর তৈরি মদনমোহনের শ্রীমন্দিরটিও অনবধ্য টেরাকোটায় সমৃদ্ধ। তবে অষ্টধাতুর মূলদেবতা আজ কলকাতাবাসী হলেও নতুন করে দেববিগ্রহ হয়েছে। ট্যুরিস্ট লঞ্চার বিপরীতে বাংলার চালাঘর আর মিশরীয় পিরামিডের সমন্বয়ে বামাপাথরে তৈরি রাসমঞ্চটিও অভিনবত্ব আছে। ৩টি গ্যালারি সমন্বিত ত্রিস্তরের ৬৪ প্রকোষ্ঠ বিশিষ্ট ৩৫ ফুট উঁচু আর দৈর্ঘ্য-প্রস্থে ৮০ ফুটের এই মঞ্চটি সম্ভবত ১৫৮৭তে বীরহাশিরের তৈরি। মন্দিরাজদের কালে রাস উৎসবের আসর বসত এই মঞ্চ। উচিত হবে ঘণ্টা ভিনেকের স্তম্ভিতে ২৫-৩০ টাকার রিকশায় বিষ্ণুপুর দেখে নেওয়া। গত কিছুকাল প্রতি শনি, রবি ও ছুটির দিনে ১৮—২১-০০টার আলোকিত হচ্ছে শ্যামরায়, জোড়বাংলা, রাধেশ্যাম, রাসমঞ্চ। সাজ হল বিষ্ণুপুর কর্ণ। এবার সঙ্গী করুন বিষ্ণুপুরের বালুচরী, মন্দিরশাডি, তসর সিক, শখশিল্লের নানান সন্ধান, পাঁচভূড়ার মৃৎশিল্প তথা পোড়ামাটির ঘোড়া, খোঁকরা শিল্পের নানান কিছু বিষ্ণুপুর ভ্রমণের স্মারক রূপে। কেনাকাটার চলা যেতে পারে রঘুনাথ সায়ের-এর সিক খাদি সেবামণ্ডল-এ। বিষ্ণুপুরের আর এক সুহৃৎকর হিন্দু পুরাণের দেব-দেবীদের প্রতিকৃতি আঁকা ১২২০ তাসের দশাবতার তাস। বর্ণচিত্রেও উজ্জ্বল, দুর্গিনন্দন এই তাস তৈরিও দেখা যেতে পারে মদনমোহন মন্দিরের কাছে

শাখারিবাঙ্গারের ফৌজদার বাড়িতে। আবার বিষ্ণুপুর থেকেই বাসে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় কামারপুকুর ও জয়রামবাটি। মুকুটমণিপুরও বেড়িয়ে ফেরা অসম্ভব নয় বিষ্ণুপুর থেকে বাসে বাসে দিনে দিনে।



WBTDC-র ২৪ বেডের ট্যুরিস্ট লজ হয়েছে বিষ্ণুপুরে, DAB ২২৫ ২৫০ A/C D ৩৭৫ ৪০০ ডর্মি ৬০ করে; অব: Manager, PC-722122. ① (03244) 52013 বা Tourist Centre, BBD Bag, Cal-1. পাশেই পৌরসভার ২৪ বেডের পৌর পর্যটন আবাস, কলেজ রোড, ① 52200, ১টি বাথ সংলগ্ন ডাবল বেডের ঘর ৭০ দশ বেডের (২টি) হলে বেড ৩০, বাস পার্টিদের ৩০০ টাকায় ঘর মেলে দশ বেডের। রান্নার জন্য অতিরিক্ত ৫০। PWD IB, কংসাবতী প্রজেক্ট রেস্ট হাউস; ছাড়াও লালবাথের কাছে প্রাইভেট H Udayan, লারগোয়া একই মালিকানাধীন B Bishnupur. College Rd, ① 52243, DCB ৮০ ৯০ ১০০ DAB ১২৫ ১৫০ ১৭৫ FAB ২০০ ২৫০ ছয় বেডের ঘর ২৫০; ১০ মিনিটের পথে শহরের কেন্দ্রস্থলে বিষ্ণুপুর লজ, বৈলাপাড়া, ① 52173, DAB ১০০-১৫০; অদূরে রেস্ট আন্ড গেস্ট হোটেল; হোটেল রসিনী, চকবাজার, ① 52296, D ১০০-১০০ ডর্মি ৪০; পরিবেশের জন্য চকবাজারের লালী হোটেলটি এড়িয়ে ললা উচিত হবে; রসিকগঞ্জে বাস স্ট্যান্ডের কাছে মনভূম লজ, ① 52765, D ৮০-১২৫; মেঘমলার হোটেল, ① 52258, DCB ১০০ DAB ১২৫; তারা মা লজ, সতাপুরী তলা, ① 52350, DCB ৮০ DAB ১০০-১৫০ ডর্মি ৩৫। তবুও সেনা থাকা ও আহার্য ট্যুরিস্ট লজ, পর্যটন আবাস, উদয়ন আন্ড সেরা বিষ্ণুপুরে।

মুকুটমণিপুর

স্বর্গ কোথাও আছে কিনা জানি না, কিন্তু স্বর্গে থাকার স্বাদ পাওয়া যায় মুকুটমণিপুরে জ্যোৎস্নালোকিত রাত কাটালে। অনুচ্চ ও পাহাড়ী টিলায় থাকারও ব্যবস্থা হয়েছে মুকুটমণিপুরে। লক গোট পেরুতেই কংসাবতী ভবন, বায়ে তার ইয়ুথ হোস্টেল। অদূরেই বিপরীতে ট্যুরিস্ট লজ। লজের সামনে কেয়ারি করা প্রশস্ত লন, তারই সামনে কুমারী ও কংসাবতীর বাঁধ। ১০০৯৮ মি দীর্ঘ ৩৮ মি উচ্চ বাঁধে বশ মেনেছে কংসাবতী। জলাধার হয়েছে ৮৬ বর্গ কিমির, সূর্যাস্ত সুন্দর দেখায়। গ্রাম বাংলার নয়নাভিরাম প্রকৃতির ক্রোড়ে সবুজ ছাওয়া লেকের নীল জলে ছোট ছোট ডেউ। মূইস পোটের ছাড়া-জলে খরনার মিষ্টি-মধুর তান স্বর্গের নন্দন-কানন সম। আঁকা-বাঁকা, পায়ে চলা পথ পাহাড়ের গা বেয়ে উখাও। দিকচক্রবাল রেখা—সেও ঢাকা পড়েছে অনুচ্চ পাহাড়ী টিলায়। সূর্যোদয়েরও প্রশস্তি আছে মুকুটমণিপুরে।

মেট্রো পথে ও আর ড্যাম উপ-রোড ধরে ৬ কিমি গিয়ে কংসাবতী ও কুমারী নদীর সঙ্গে পরেশনাথ পাহাড়ী টিলায় হিন্দুর দেবতা শিব ও জৈন দেবতা ক্রোয়াইট পাথরের পার্শ্বনাথবাঈ। এছাড়াও মূর্তি রয়েছে নানান। তবে, অতীত আজ লুপ্ত। ফেরিতে দলী পেরিয়ে পরপারে আরও ১১ কিমি গিয়ে জলাধারের মাঝে মহারা, কেন্দু, পলাপ, আমলকীতে

ছাওয়া সবুজ ভীপ বনপুকুরিয়া মৃগদ্বারাটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে। শীতে বোটও যাচ্ছে, ঘণ্টা চারেকের যাতায়াত—২৫ হারে। ট্যুরিস্ট লজ থেকে গোরাবাড়ি পেরিয়ে ৪ কিমি দূরে অম্বিকান নগর—জৈন সংস্কৃতির অতীত গীর্জাভূমি। আর আছে দেশপ্রেমে উদ্বুদ্ধ রাজা রহিচরণ ধরল দেবের বিধ্বস্ত রাজবাড়ি। দেবতাও রয়েছে অম্বিকা দেবী ও সাবিত্রী দেবী—স্ব-স্ব মন্দিরে অম্বিকান নগরে। রাজার পৃষ্ঠপোষকতায় অগ্নিযুগের বিপ্লবী ক্ষুদিরাম, নরেন গোসাই ও প্রফুল্ল চাকীরের স্মরণার্থে তথা অনুশীলন কেন্দ্র গড়ে ওঠে ঝিলিমিলি থেকে ১৯ কিমি দূরে ছোদাপাথরে। খাতড়া-ঝিলিমিলি পথের রানীবাঁধ থেকেও পথ গিয়েছে। বাসও যাচ্ছে দুপুর ১২-০০টায় বাঁকড়া ছেড়ে খাতড়া/ রানীবাঁধ হয়ে বারিকুলে। বারিকুল থেকে ৮/১০ কিমি হেঁটে ছোদাপাথর। তবে ভীপ চলে। রানীবাঁধে জেলা পরিষদের বাংলো আছে থাকার।



বিষ্ণুপুর বা কলকাতা থেকে বাসে বাঁকড়া পৌছান। ট্রেনও যাচ্ছে হাওড়া থেকে ১৬-৪৫এ পুরুলিয়া এক্স, ২২-১৫য় হাওড়া-চক্রধরপুর প্যা। বিষ্ণুপুর হয়ে ২০-৫০/৮-০০টায় বাঁকড়া। রাতের প্যাসেঞ্জার sleeper class-ও মেলে। আবার এমু লোকালে ২১ ঘণ্টায় খড়্গপুর পৌছে খড়্গপুর থেকে ৪-৫০এ খড়্গপুর-আসানসোল, ৮-২০এ খড়্গপুর-হাতিয়া, ১৩-৪০এ খড়্গপুর-গোমো, ১৭-১০এ খড়্গপুর-আদ্রা, ২০-০০টায় খড়্গপুর-আদ্রা প্যাসেঞ্জার ২ ঘণ্টায় বিষ্ণুপুর পৌছে বাঁকড়া চলা যেতে পারে। আর বাঁকড়ার মাতানতলা থেকে ৮-৪৫এ প্রথম ছেড়ে ১৭-১৫য় শেষ বাসটি মুকুটমণিপুর ছেড়ে। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস, দূরত্ব ৫৬ কিমি আর বিষ্ণুপুর থেকে ৮২ কিমি। খাতড়া হয়ে যাচ্ছে বাস, খাতড়া থেকে দূরত্ব ১১ কিমি। আবার দুর্গাপুর স্টেশন থেকেও ৮-০০, ১০-১৫, ১১-০৫, ১৩-২০, ১৪-৪৫, ১৬-০০, ১৯-০০টায় সরাসরি বাস যাচ্ছে SBSTC ও প্রাইভেট দুর্গাপুর ব্যারজ/ বাঁকড়া/খাতড়া/মুকুটমণিপুর হয়ে গোড়াবাড়ির। ফেরার পথে ৫-০০টায় প্রথম আর ১৭-৪৫এ শেষ বাস মুকুটমণিপুর থেকে বাঁকড়ার। দুর্গাপুর যাচ্ছে ৫-০০, ৫-২০, ৭-৪০, ১২-১৫, ১৪-২০এ। তাই কলকাতা যাত্রীদের ৬-১৫র র‌্যাক ডায়মন্ডে ৯-০৯এ দুর্গাপুর পৌছে ১০-১৫র বাসে মুকুটমণিপুরে যাওয়াই সুবিধার। সরাসরি বাসের অমিলে বাঁকড়া হয়েও চলা যেতে পারে। ট্রেন যাচ্ছে আরও নানান হাওড়া থেকে দুর্গাপুরে। তবে সরাসরি বাসও যাচ্ছে CSTC-র কলকাতা থেকে ৭-০০, ৯-০০ ও ২১-০০টায় আরামবাগ/ বিষ্ণুপুর/ বাঁকড়া/ খাতড়া হয়ে ১০ ঘণ্টায় মুকুটমণিপুরে। ফেরে ৪-৪৫, ৯-০০ ও ২২-০০টায়। দূরত্ব ২৪৪ কিমি, ভাড়া ৫১.০০/৫৬.০০। আর SBSTC-র বাস রাতভর জারিতে ২২-০০টায় শহীদ মিনার ছেড়ে ভোর ৪-৩৫এ মুকুটমণিপুর পৌছে ঝিলিমিলি যাচ্ছে ৬-০০টায়। ফেরে ২১-১৫য় ঝিলিমিলি ছেড়ে ২১-৪৫এ মুকুটমণিপুর হয়ে SBSTC। এছাড়াও CSTC, SBSTC ও নানান প্রাইভেট বাস যাচ্ছে কলকাতা থেকে বিষ্ণুপুর হয়ে বাঁকড়ায়।



থাকার জন্য সেও জলপথ দপ্তরের সুসজ্জিত ৮ ঘরের কংসাবতী ভবনে DAB ২০০ A/C ৩০০, অব: Supdt Engr. Kansabati Project, Bankura বাইরিগেশন অ্যান্ড ওয়ার্কের সারাই ডিপার্টমেন্ট, রাইসার্ট বিজিলে,

কলকাতা। আর আছে ডমিটির প্রথায় ৩২ বেডের *ইয়ুথ হোস্টেল*, বেড ১৫, অবু: অধিকর্তা, যুব কল্যাণ দপ্তর, ৩২/১ বি বা দী বাগ (দক্ষিণ), ৩ 2480626. রাজ্য পর্যটনের *ট্যুরিস্ট লজ*, DAB ৫০ ডমিটে ১০ করে; আহারও মেলে লজের ক্যাটিনে। অবু: রাজ্য পর্যটন দপ্তর, ৩/২ বি বা দী বাগ, কলকাতা-১। আর হয়েছে *H Amratali*, DAB ৩০০ ডিলাল্ল ৩৫০ রাত্র বেডের ঘর ৪০০ ডর্মি ৭৫, অবু: Rik, 19-A. Justice Monmotho Mukherjee Row, Cal-9, ৩ 3506263. *ওপেন এয়ার রেস্তোরাঁ*ও গড়েছে আশপাশী বাঁধ-টপে। আর আছে লেকের অপর পাড়ে দিনভর বিশ্রামের ব্যবস্থা সহ ১২ ঘরের পিয়ারলেস হোটেলস অ্যান্ড ট্রাভেলস-এর *পিয়ারলেস রিসর্ট*, DAB ৩৫০.৩৭৫ A/c D 8৫০ ডর্মি বেড ৫০, অবু: ট্রাভেল ডিভিশন, ১ টোরসি স্কোয়ার, কল-৬৯, ৩ 2487181. গোড়াবাড়ি গ্রাম পঞ্চায়েত ভবন-এও থাকার ব্যবস্থা মেলে। আর হচ্ছে সেম্ভাল পাবলিক ওয়েলফেয়ার ডিপার্টমেন্টের *ট্যুরিস্ট লজ* মুকুটমণিপুরে। ২ রাত ৩ দিনের প্যাকেজ ট্যুরেও আছে পিয়ারলেস ট্রাভেল ডিভিশন বিষ্ণুপুর, কামারপুকুর, জয়রামবাটি, মুকুটমণিপুর দর্শনে।

রানীবাঁধ: বাঁকুড়া থেকে বিলিমিলির পথে রানীবাঁধ—শাল, মধ্যা, শিশু, কেন্দ্র, পলাশের সাথে অর্জুন, বহেড়া, আমলকী, পিয়ালশালের অরণ্যে সাঁওতাল, তুমিজ, মণ্ডা, ওরাঁও আদিবাসীদের বাস। অদূরে পাহাড় টঙে আদিবাসী-দের দেবতা। পাহাড় থেকে কংসাবতীর জলাধারও দৃশ্যমান। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *রানীবাঁধ ফরেস্ট রেস্ট হাউসে*; অবু: DFO, Bankura. রানীবাঁধ হয়েই পথ চলেছে বিলিমিলি পেরিয়ে বাঁশপাহাড়ি-তামাজুড়ি-শিয়ারবেঁদা-ভোলাবেদা-বেলপাহাড়ি-শিলাদা-ঝাড়গ্রাম। কাঁকড়াঝোড়েরও পথ গিয়েছে শিয়ারবেঁদা ও ভোলাবেদা দুই-ই থেকে।

বিলিমিলি: বাঁকুড়া, পুরুলিয়া ও মেদিনীপুর জেলার প্রান্তসীমায় বিলিমিলি। নামেতেই মাধুর্য আছে। প্রকৃতিও নামের সঙ্গে সঙ্গতিপূর্ণ। বিলিমিলির আকাশ ছাওয়া সূর্য-তারা; সেও যেন চাপা পড়ে আমলকী, হরিতকী, বহেরা, শাল, পিয়ালের শাখায়। তারই মাঝে মিষ্টি মধুর তানে বয়ে চলেছে কাঁসাই নদী। শান্ত-মিষ্টি সমীরে ছোট ছোট ডেউ—সূর্যালোকে বিলিমিলি ঝিলমিল করে। পৌষ মাসের মকর সংক্রান্তিতে বাঁকুড়া-পুরুলিয়া-মেদিনীপুর জেলায় নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা আদিবাসীদের দেবী চুসুকে ঘিরে চুসু পরব—সে এক বৈচিত্র্যের গাথা। মেলা বসে চুসুর কংসা-বতীর তীরে বিলিমিলিতে। দূর-দূরান্ত থেকে আদিবাসীরা আসে তাদের পসরা সাজিয়ে। মাদলের তানের সাথে নাচ-গানের আসর বসে। চেনা-অচেনা পাখির কুজন—এমনকি শীতে দলমা পাহাড় থেকে হাতিরাও নেমে আসে রূপসী বিলিমিলির রূপের খোঁজে। ওয়াচ টাওয়ার থেকে এদৃশ্য সভাই নয়নলোভন। খাতড়া থেকে রানীবাঁধ পেরিয়ে বিলিমিলি। বাঁকুড়া থেকে বাস যাচ্ছে মুহূর্তে। মুকুটমণিপুর থেকে বাস বাট্রোকে খাতড়া ফিরেও সে বাস চলা যায় বিলিমিলি। অদূরে গাছগাছালিতে ছাওয়া ছোট্ট টিলা দিয়ে ঘেরা তালবেড়িয়ার বিশাল জলাধারটিও চতুর্ভুজিতার আদর্শ স্থান।

এমণ সঙ্গী: ৯৭-৯৮/৬

এপথে আরও যেতে কাঁকড়াঝোড়-বেলপাহাড়ী-ঝাড়গ্রাম। আবার মশক পাহাড়ে শিব মন্দিরটিও দেখে চলা যায় খাতড়ায়। সাধারণ সাজে *বাণী লজ*, *রুগ্মিণী লজ*, *শান্তি-নিকেতন লজ* আছে খাতড়ায়। খাতড়া-বাঁকুড়া বাসপথে হাতিরামপুরের বাঁয়ে ক্যানাল পথের শিলাবতী নদীতে বাঁধ পড়েছে কদম দেউল-এ। মুকুটমণিপুরের তুল্যা মনোরম প্রকৃতি দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। সেচ দপ্তরের *রেস্ট হাউস*ও আছে।



রাষ্ট্রিকালীন সার্ভিসে SBSTC-র বাস যাচ্ছে ২২-০০টায় কলকাতা (খর্মতলা) ছেড়ে ৩-২০এ বাঁকুড়ায় পৌছে ৪-৩৫এ মুকুটমণিপুর গিয়ে রানীবাঁধ হয়ে ৫-১০এ বিলিমিলি। ফেরে একইভাবে ২১-০০টায় বিলিমিলি ছেড়ে পরদিন ৬-০০টায় কলকাতায়। ঝাড়গ্রাম-বিলিমিলি বাসও যাচ্ছে মুকুটমণিপুর/ আখোটা হয়ে। আর ঝাড়গ্রাম-রঘুনাথপুর বাস যাচ্ছে মুকুটমণিপুর/ বিলিমিলি/ বাঘমুণ্ডি হয়ে। দূরত্ব—খাতড়া ৩৬, মুকুটমণিপুর ৪৩ আর বাঁকুড়া ৮১ কিমি। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *ফরেস্ট রেস্ট হাউস*-এ বিলিমিলিতে।

শুশুনিয়া

ট্রেন বা বাসে বাঁকুড়া-আত্রা পথে বাঁকুড়া থেকে ১৩ কিমি দূরের ছাতনায় পৌছে আরও ৭ কিমি উত্তরমুখী যেতে পূর্ব থেকে পশ্চিমে ৩.২ কিমি ব্যাপ্ত ৪৪০ মি উঁচু শুশুনিয়া পাহাড়। বয়সে হিমালয় থেকেও প্রাচীন। শিরে ছোটবড় পাথর জড়ো করে নাম হয়েছে তার পশিগ পিক। আর নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে গন্ধেশ্বরী নদী। ৪ শতকে রাজস্থানের যোধপুর জেলার পুষ্করণা (পোখরান)-র অধিপতি চন্দ্রবর্মা বঙ্গ জয় করে আরণ্যক শুশুনিয়া পাহাড়ে এক দুর্গ গড়েন। আর, ৪র্থ শতকের শেষভাগে শুশু সেন্সট সমুদ্রগুপ্তের সঙ্গে যুদ্ধে মৃত্যু ঘটে চন্দ্রবর্মার। এমনকি বৌদ্ধকালেও শুশুনিয়ার প্রশস্তির উল্লেখ মেলে। আর আজ প্রতি বছর নভেম্বর থেকে রক ক্রাইসিং কোর্সের শিক্ষার্থীদের ট্রেনিং সেন্টার শুশুনিয়া। এখানে চন্দ্রবর্মার শিলালিপি ও নানান পুরাকীর্তির খোঁজ মিলেছে। সবুজে ছাওয়া পাহাড়ের পাদদেশে বরনা, বিপরীতে ৫ ফুট উঁচু বীরগুপ্ত—সিন্দূরে চর্চিত এই শিলামূর্তি স্থানীয়দের কাছে নৃসিংহদেব রূপে পূজা পান। বারুণী রানে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। পাথরে তৈরি শুশুনিয়ার স্থানীয় শিল্পীদের হস্তশিল্পেরও বিখ্যাতি আছে।

শুশুনিয়া যাতায়াতের পথে অতীতের সামন্তভূমের রাজধানী ছাতনায় বিশালাকী (বাসুলি) দেবীর প্রাচীন মন্দিরটিও দেখে চলা যেতে পারে। স্বপ্নাদিষ্ট রাজা হামীর উত্তরের প্রতিষ্ঠিত দেবীর পূজারী ছিলেন বড় চণ্ডীদাস। উত্তরকালে মূল দেবী বীরভূমের দুবরাজপুরে স্থানান্তরে তেল-সিন্দূরে চর্চিত ভগ্ন একশিলাখণ্ড দেবীর প্রতীকে পূজা পাচ্ছেন।



সরাসরি বাস আসছে পাহাড়তলিতে বাঁকুড়া থেকে। বাস আসছে ঝড়াপুর থেকেও শুণনিয়ার। বিষ্ণুপুর থেকেও সকাল ৭-০০টায় একমাত্র বাস মেলে সরাসরি শুণনিয়ার। তাই ৬-১৫ বা ৭-১৫র বাস এসে শুণনিয়া অভিযান সেরে ১৫-০০টায় ফেরাও যায় বাঁকুড়ায়। থাকার জন্য ইয়ুথ হোস্টেল, পঞ্চায়ত রেস্ট হাউস, কোলে রেস্ট হাউস আছে শুণনিয়ার বাস সড়কে।

আর বাঁকুড়া শহরে আছে H Siddhartha, Rashtala Morh, RLB; ④ 4813, SCB ৪৫ SAB ৮০-১০০ DAB ১১০-১২৫ TAB ১৫০ A/c D ৩০০। Cinema Rd-এ পরপর—Adhunik L, DCB ৮৭ DAB ১০০; Chowdhury L, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-১৭৫ A/c D ৪০০; Ma Sankari L, DCB ৭০ DAB ১০০ ডরি ৩০; H Blue Star, Station Morh, ④ 3341, SAB ৮০-১০০ DCB ১০০ DAB ১২৫-১৭৫ A/c D ৩০০; বাঁকুড়ায় সেরা H Saptarshi, Lalbazar Morh, Bankura-722101, ④ (03242) 4183, SAB ১০০ DAB ২৫০, ৩০০ A/c D ৪৫০ ৬০০ ডরি ৭৫, প্যাকেজ ট্রায়েরও নানান ব্যবস্থা মেলে এদের কাছে। ১৬ যাত্রীর মিনিবাসও মেলে অগ্রিম যোগাযোগে। কল বুকিং: Rik, 19-A, Justice Monmotho Mukherjee Row, Cal-9, ④ 3506263 Ext 35. আর আছে সাধারণ সাজে Gauranga L, Patpur; Famous L, Machantala; Punjab H, Sri Sarada L, H Aristocrat, Rashtala Morh; Mrinalini L, Sreenu L, Baro Kalitola; বিপরীতে Banerjee Booking, এদের কাছে ১৩০-৬৫ D ৮০-১২৫ টাকায় মেলে। বুকিং: Manager, Bankura-722101. আর আহরে Saptarshi ও সিনেমা রোডের Luvni H দৃষ্টি ভালই। আর হয়েছে খ্রিস্টিয়ান কলেজের বিপরীতে জেলা পরিষদের অভিযানশালা ও শহরের প্রাণকেন্দ্রে প্রভাণ বাগানে ক্রীড়া ও যুবকল্যাণ দপ্তরের ইয়ুথ হোস্টেল বাঁকুড়ায়।

পর্যটন মানচিত্রে বাঁকুড়ার স্থান উল্লেখ্য না হলেও যাতায়াতের পথে জংশন স্টেশন রূপে বাঁকুড়ার আবেদন অগ্রাধিকার পাবে। SBSTC-র বাস যাচ্ছে বাঁকুড়া থেকে—শিলিগুড়ি, রায়গঞ্জ, মালদা, দীঘা, চিত্তরঞ্জন, দুর্গাপুর, পুরুলিয়া, বর্ধমান, তারকেশ্বর, টাটা ভায়া ঘাটশিলা, নামখানা, কলকাতা ছাড়াও নানান। প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে কলকাতা তথা বালো ও বিহারের নানানদিকে বাঁকুড়া থেকে। বাঁকুড়া জেলায় পুরাকীর্তির আখ্যা ঘটলেও জেলাসদর বাঁকুড়া শহরে তার অভাব আছে পড়বার মতো। তবে, শহরতলীর বিকলাগ্রামের ডোকরা শিল্পের বিশ্বপ্রশস্তি আছে। আর আছে ৩ কিমি দূরে ১০ম শতকের সূর্য মন্দির, ৫ কিমি দূরে একতম্বর আর এক প্রাচীন মন্দির।

তবুও যেন যাতায়াতের পথে বাঁকুড়ার এক রাত অবস্থান করে অত্যাৎসাহীরা অমরকাননের বাসে ২৪ কিমি গিয়ে কাজী নজরুল ইসলামের স্মৃতি বিজড়িত শ'চারেক ফুট উঁচু সবুজে মোড়া কোকো পাহাড় অভিযান করে নিতে পারেন। গ্রাটীরে ঘেরা দুর্গা অর্থাৎ অষ্টভুজা দেবী পাণ্ডুর মন্দিরও রয়েছে। মন্দিরের পিছনে পাথরের শিবলিঙ্গ ও বাহন নদী। মন্দিরের পেছন থেকে দূরে বহুদূরে শালি নদীর গাংদুয়া ডাম (৮

কিমি), শুণনিয়া পাহাড় (১২ কিমি)ও দৃশ্যমান। আর আছে পাহাড়তলিতে তপোবন আশ্রম। তেমনই আছে স্বাধীনতা আন্দোলনের প্রাণকেন্দ্র অমর-কাননে সেবা ও স্বনির্ভরতার প্রতীক রামকৃষ্ণ সেবাদল আশ্রম। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে পাহাড়-নদী-জঙ্গল-আশ্রম-মন্দির সবে মিলে সত্যিই স্বর্গের অমরকানন গড়িয়ে। চড়ুইভাতির আদর্শ জায়গা। সরাসরি যাত্রায় দুর্গাপুর-বাঁকুড়া ভায়া মালিয়াড়া SBSTC-র বাসও প্রাইভেট মিনিবাস যাচ্ছে অমরকানন দ্বীপে। দূরত্ব—দুর্গাপুর ৩৯, বাঁকুড়া ২২ কিমি। থাকারও ব্যবস্থা মেলে রামকৃষ্ণ সেবাদল আশ্রমের গেস্ট হাউস, মন্দির গেস্ট হাউস ও ফরেষ্ট বাংলোয়; বাংলোর বুকিং: DFO, Bankura North Division. আবার বাঁকুড়া-শালতোড়া-তিলুড়ি বা বাঁকুড়া-মধুকুণ্ডা বাসে তিলুড়ি পৌঁছে ১০ কিমি গিয়ে গিয়ে ৪৪৮ মি উঁচু ক্রৌঞ্চ পর্বতে নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা বিহারীনাথ শিব মন্দিরটিও দেখে ফিরতে পারেন ভক্তজনেরা।

তেমনই বাঁকুড়া-দুর্গাপুর/বর্ধমান বাসপথে বাঁকুড়া থেকে ২১ কিমি উত্তর-পূবে মিলিয়ে নিতে পারেন প্রখ্যাত শিল্পী যামিনী রায়ের পটে আঁকা ছবির সঙ্গে শিল্পীর জন্মভূমি বেলিয়াতোড়ের ছান্দার গ্রাম। সেখানই তারে-এর কিংবদন্তী ভাস্কর রামকিঙ্কর বেইজ-এর জন্মও বাঁকুড়ার যোগীপাড়া। দুইয়েরই স্মারকরূপে যাদুপুরী গড়েছে সত্তর দশকে অধ্যাপক উৎপল চক্রবর্তীর উদ্যোগে স্থানীয় সংস্থা অভিযুক্তি। যামিনী রায় ও রামকিঙ্কর বেইজ-এর শিল্প-কলার সঙ্গে সাধারণের পরিচয় আর গ্রামবাসীদের হাতের কাজে উন্নত করে নীলাকাশের নিচে রাঙামাটির পটে লোকশিল্পের স্থায়ী মেলা—আডিনায় ভাস্কর্য, দেওয়ালে তুলির পরশ, যন্ত্রতন্ত্র কাটুম-কুটুম, আরও কতকি। ছান্দার বাস স্ট্যান্ড থেকে পায়ে হাঁটা পথে বাগানে ঘেরা শিল্পমহল। ভাস্কর্যও আলপনায় সুসজ্জিত ক্ষীরোদপ্রসাদ বিদ্যাবিনোদ মঞ্চ হয়েছে নীল আকাশের চাঁদোয়া তলে। অদূরে রামকিঙ্কর ও যামিনী রায়ের পাশাপাশি অবস্থান। মূর্তির নিচে যামিনী রায় ভবনে লোকশিল্পের সম্ভার আর রামকিঙ্কর ভবনে অভিযুক্তির শিল্প নিদর্শনের সংগ্রহশালা বসেছে। আর আছে ধর্মরাজের মন্দির ৩ কিমি দূরে বেলিয়াতোড়ে। চলার পথে একটা বাস ছেড়ে পায়ে পায়ে/অটো বা রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় ব্রহ্মী। বাঁকুড়ার আর এক কৃষ্টি তার মিঠাই সৃষ্টি। বাঁকুড়ার কালাকাঁদ, চিত্তরঞ্জন এবং নিখুঁতি সেও যেন এক পুরাকীর্তি।

অযোধ্যা পাহাড়

পশ্চিমবঙ্গের দ্বিতীয় পাহাড়ী শহরের রূপরেখা একেছিলেন অযোধ্যা বুরুঅর্থী পাহাড়কে দেখে ডা. বিধান-চন্দ্র রায়। বাস্তবে রূপ না পেলেও পাহাড়ে চড়ার শিক্ষা দেওয়া হচ্ছে অযোধ্যায়। বাঁকুড়া থেকে বেড়িয়ে নেওয়া যায় পুরুলিয়া জেলায় বিহার সীমান্তে দলমা পাহাড়ের অংশ হাজার দুয়েক ফুট উঁচু অযোধ্যা পাহাড়। বাঁকুড়া থেকে ট্রেন

ও বাস যাচ্ছে পূরুলিয়ায়। পূরুলিয়া থেকে আবার বাসে বিশ্বম্ভী পথে চলা যেতে পারে অযোধ্যা পাহাড়ে। অযোধ্যা পাহাড়ের পূর্ব দ্বার সিরকাবাদ আর পশ্চিমদ্বার বাঘ-মুণ্ডিতে। পূরুলিয়া থেকে বাসে ২৬ কিমি দূরের সিরকাবাদ পৌঁছে ১২ কিমি ট্রেক করে চলা যায় অযোধ্যায়। নিজস্ব ব্যবস্থায় বাস/মিনিবাসও পৌঁছে যাচ্ছে এপথে। অনিয়মিত হলেও পূরুলিয়া বাস স্ট্যান্ড থেকে ১৬-২০এ ছেড়ে সিরকাবাদে বাসু নদীতে সেতু পেরিয়ে ১৮-০০টায় অযোধ্যায় যাচ্ছে ২৬ আসনের মিনিবাস; ফেরে পরদিন সকাল ৭-০০টায় অযোধ্যা পাহাড় থেকে। সিরকাবাদেও অরণ্যের স্বাদ মেলে। থাকারও ঠাই মেলে ফরেস্ট হাউসে; বুকিং: DFO, Purulia. তবে পথ নির্জন, চড়াই-এর আধিক্য; প্রাকৃতিক শোভারও ঘাটতি এপথে। তাই ট্রেকারদের উচিত হবে এপথ পরিহার করে পূরুলিয়া থেকে বাসে বলরামপুর ৩১-মাঠা ১৯-বাঘমুণ্ডি ৬ কিমি গিয়ে ৯ কিমি ট্রেক করে অযোধ্যা পাহাড়ে চলা। পাহাড়ী বাঁক, টুরগা ড্যাম, ড্যামের জলে লেকও বামনী নদীর জলপ্রপাত আকর্ষণ বাড়িয়েছে এপথের। পাহাড়, অরণ্য ও ড্যামের জল—মিলে মিশে চটুইভাতির সুন্দর পরিবেশ গড়েছে টুরগা।

কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় হাওড়া-চক্রধরপুর পাসেঞ্জারে বলরামপুর বা হাওড়া-রাঁচি-হাতিয়া এক্সপ্রেস সুইসা পৌঁছে বাসে ২৫ কিমি দূরের বাঘমুণ্ডি গিয়ে পাহাড় চড়া উচিত হবে। নিকটতম রেল স্টেশনও হাওড়া-রাঁচি রেলপথের সুইসা। নিজস্ব ব্যবস্থায় ভ্যান/জিপও মেলে শ'দুয়েক টাকায় বাঘমুণ্ডি থেকে ১৬ কিমির গাড়িপথে অযোধ্যা চলায়। বাঘমুণ্ডির আর এক আকর্ষণ সুইসা মুখী ৩ কিমি দূরে মুখোশ শিল্পের পাঁঠস্থান চড়িলা বা চোড়লা গ্রাম। মুখোশ তৈরি দেখা ও কেনার ব্যবস্থা মেলে। তেমনই চৈত্র সংক্রান্তির ১ দিন আগে অযোধ্যার মোড় থেকে ৪ কিমি দূরে ২ দিন ব্যাপ্ত লহরিয়া বাবার চড়ক মেলাও দেখে নিতে পারেন। ছৌ-নাচের প্রতিযোগিতা মুখ্য আকর্ষণ মেলায়। আর মুকুটমণিপুর ফেরৎ যাত্রীরা খাতড়া থেকে ৭-০০ ও ১৬-০০টার বাসে বিলিমিলি হয়ে ঘণ্টা চারেকে বলরামপুর পৌঁছে বাঘমুণ্ডি হয়ে অযোধ্যায় পৌঁছান।

তেমনই বাঘমুণ্ডি থেকে ৬ আর পূরুলিয়ার ৪০ কিমি দূরে আর এক বুক মাঠা। সামনে পাহাড়—পাহাড় ভাইনে-বাইয়ে-চারপাশে। অসংখ্য ছোট ছোট পাহাড়, নীলাকাশ, সবুজ বন—মিলেমিশে মনোরম পরিবেশ। খুবই দুর্লভ মাঠার খাঁড়া পাহাড় চড়া। স্থানীয়রাও মাঠাকে এড়িয়ে বাঘমুণ্ডি হয়ে অযোধ্যায় চলে।

সবুজে ছাওয়া—নিখর-নিষ্পন্দ অধিত্যাকা অযোধ্যা পাহাড়। শাল-শিরীষ-সেগুন ছাওয়া অরণ্যভূমি—খতু-ভেদে রঙ বদলায় অযোধ্যায়। গহীন বন, ছোট-বড় পাহাড়ী বোরা, অসংখ্য গিরিশিরা—উচ্চতম এদের অধি বাগের-গা-বুক (২৮৫০ ফুট) শিখর। পাহাড় ঢালে অদিবাসীদের (১৬০০০) বাস। চাষ-আবাদ হচ্ছে। ৩৪৫১৭ একর ব্যাপ্ত পাহাড়ী অরণ্যে হাতি, হরিণ, বন-বরা, নেকড়ে, চিতাবাঘের দর্শন মেলে। কিংবদন্তী, অজ্ঞাতবাসকালে দণ্ডকের পথে

রামচন্দ্রও আসেন সীতাদেবী সহ অযোধ্যা পাহাড়ে। সীতাদেবীর তৃষ্ণা মেটাতে পাতালভেদী বাণে জল তোলেন শ্রীরাম—রূপ নেয় কূপে। আজও বুদ্ধ-পুণ্ড্রিমার *দিসুস সেন্সা* অর্থাৎ শিকার-উৎসবে দূর-দূরান্ত থেকে আসা অদিবাসী যুব সম্প্রদায় তৃপ্তা ও বামনী জলপ্রপাতে স্নান সেরে সীতা কুণ্ডের জল পান করে পবিত্র হয়ে মেতে ওঠে শিকারে। শিকারে পসার বাড়়ে সমাজে। তেমনই বুরবুরি পেরিয়ে কুণ্ডের সামনে শালবনে দেখে নেওয়া যায় কেশ বিন্যাস-কালে উড়ে গিয়ে শালের শাখে জড়িয়ে যাওয়া সীতাদেবীর কেশ। আবার টুরিস্ট হোস্টেলের বাঁয়ে পায়ে পায়ে যোগিনী অর্থাৎ ময়ূরী পাহাড় চড়েও দেখে নেওয়া যায় অযোধ্যার প্রকৃতি। পাইন-শাল-শিমুলের শনশন আওয়াজ, দূরান্ত থেকে ভেসে আসা মাদলের তান, চাঁদিনী রাতে আরগ্যক শোভা প্রকৃতি প্রেমিকদের মাতোয়ারা করে তোলে। ভাতুংসাহীর ৫ কিমি দূরে আরগ্যক পরিবেশে বীধঘটতে জলবিদ্যুৎ প্রকল্পটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। রেশম চাষও হচ্ছে আজ অযোধ্যা পাহাড়ে।

থাকার জন্য রাজ্য পর্যটনের ৫০ বেডের অযোধ্যা হিল টুরিস্ট হোস্টেল-এ বেড ৮, ২ বেডের ৮টি কন্টেইন ৫০ করে; অব: WB Tourism, 3/2 B B D Bag, Calcutta-1, ☎ 2488271। কিছুইহীন পাহাড়ে সৌরশক্তিতে আলো জ্বলছে লজ্জ—তবে হেবাল অবস্থা। আর আছে বন দপ্তরের ২ ঘরের ফরেস্ট বাংলো, অব: DFO, Purulia বা CFO, Calcutta-1; Comprehensive Area Development Corps (CADC)-র ৩ ঘরের বাংলো, অব: 6 Subodh Mallick Sqr. Cal. এদের ২৫ বেডের ডমিটির হতে চলছে। আর আছে কফি কর্ণার CADC-র। আহার মেলে হোস্টেল লাগোয়া অরুণ সিং সর্দারের ক্যান্টিনে। তবুও যেন আহা-বাসস্থান-যাতায়াত ত্রয়ীর ব্যবস্থা অপূত্রল। আর বাঘ-মুণ্ডিতে আছে সেচ দপ্তরের বাংলো। অনন্যোপায়ীরা সম্মেলনীক্সকেও ঠাই পেতে পারেন বাঘমুণ্ডিতে। মাঠার মামাবী পরিবেশেও FRH আছে। ফেরার পথেও উচিত হবে বক্টা দু'য়েকে বাঘমুণ্ডি নিয়ে ১৬-০০টার শেষ বাসে বলরামপুর বা পূরুলিয়া গিয়ে চক্রধরপুর-হাওড়া পাসেঞ্জারে ঘর পানে চলা। আবার পূরুলিয়া থেকে নানান বাসে দুর্গাপুর বা বর্ধমান গিয়েও ফেরা যেতে পারে ঘরপানে।



ট্রেনও যাচ্ছে হাওড়া থেকে ১৬-৪৫এ পূরুলিয়া এক্স (শনি ছাড়া) খড়্গাপুর/বিশ্বপুর/বীক্ষুড়া হয়ে ২৩-০৫এ পূরুলিয়ায়। আর ২২-১৫য় হাওড়া ছেড়ে পরদিন ৭-২০এ যাচ্ছে হাওড়া-চক্রধরপুর প্যা। কলকাতার ফেরে পূরুলিয়া-হাওড়া এক্স ৫-০৮, চক্রধরপুর-হাওড়া প্যা ২০-১৭; আসানসোল যাচ্ছে ১০-৫০, ১৪-১৫; নতুন দিল্লী যাচ্ছে পূর্ববাস্তম এক্স, রাঁচি যাচ্ছে ১৪-৫৫য় খড়্গাপুর-হাতিয়া প্যা; টাটা যাচ্ছে ছাপরা/কাটিহার-টাটা এক্স; টাটা-ঝানবান প্যা, চক্রধরপুর-গোমো পাসেঞ্জারও যাচ্ছে পূরুলিয়া হয়ে।



বাসও যাচ্ছে কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ৮ ঘট্টার CSTC-র ১০-৪৫ ও SBSTC-র ৫-২০, ৯-০০, ১৩-৩৫, ১৮-৫০, ২২-০০টার বীক্ষুড়া/বরাভূম হয়ে পূরুলিয়ায়। গ্রাইডেট বাসও চলে এপথে। কলকাতার

ফেরে CSTC ৬-১৫, SBSTC ৪-৩০, ৬-৩০, ১১-৩০, ১৬-৩০, ১৯-৪৫। বাস যাচ্ছে পূরুলিয়া থেকে SBSTC-র দাঁড়া ৬-০০, ১৫-৩০; কৃষ্ণনগর ৫-১৫, ১৩-২০; ঝাড়গ্রাম ১২-৩০, ১৭-০০; বর্ধমান ১০-৫০, ১২-৩০, ১৩-৩০, ১৭-০৫, ১৮-০০, ১৮-৪৫; ভারতেশ্বর (৪ বাস); মালদা ৫-১৫, ১৭-১৫; হাজারীবাগ ১৩-১৫, ১৮-৩০; বহরমপুর ৫-৪৫, ১৫-১০। H Oasis, Bus Std. DAB ১১০-১৭৫; H Mayur, D ১০০-১৫০; H Aristocrat, Chowk Bazar, DAB ৮০-১৫০; Sree H, S N Sarkar Rd, near GPO, D ৮৫-২২৫; H Dikshit, Barakar Rd, D ৮০-১২০; ছাড়াও হোটেল আছে নানান পূরুলিয়ায়।

তেমনিই পূরুলিয়া শহরে সাহেববাঁধ অর্থাৎ ১৮৪৩এ শুরু হয়ে ১৮৪৮এ মানভূম জেলার ডেপুটি কালেক্টর কর্নেল টিক্‌সের উদ্যোগে জেলখানার কয়েদিদের দিয়ে খনন করা ৫০ একর ব্যাণ্ড জলাশয়ে চিকার থেকেও বিচিত্র ও ব্যাপক সংখ্যক পাখি দেশ-দেশান্তর থেকে শীতে এসে আবাস গড়ে। উত্তর ইউরোপ থেকে পিনটাইল, বালুচিস্তান থেকে লাল ঝুটি শোচার, সাহিবেরিয়া থেকে গড়ওয়াল, দুশ্পাণ্য গাগেনি, শোভলাল ছাড়াও নানান বর্ণের নানান ধর্মের পরিযায়ী পাখি দেখে নেওয়া যায়। আর আছে বিড়লা ইন্ডাস্ট্রিয়াল মিউজিয়ামের ধাঁচে গড়া বিজ্ঞান ভবন পূরুলিয়ায়। তারামণ্ডলও বসেছে মিউজিয়মে। মডেলে বিজ্ঞানের নানান কারিকুরিও দেখে নেওয়া যায়।

অত্যাংশহীরা পূরুলিয়া থেকে ঝালদাগামী বাসে গড়-জমণপুর পৌঁছে পায়ে পায়ে তুলনায় সুবর্ণরেখা নদীর তীরে গড়ের ধ্বংসাবশেষ ও কয়েকটি প্রাচীন মন্দির দেখে নিতে পারেন।

গাদিয়ারা

যে কোনও সকালে ফোর্ট মনিংটন অর্থাৎ ক্লাইভের দুর্গে চলুন। তবে, দুর্গটি পরিত্যক্ত হয় উত্তরকালে, আর বিধ্বস্ত হয় ১৯৪২-এর ভয়াবহ বন্যায়। কলকাতার উপকণ্ঠে হাওড়া জেলায় নয়নলোভন হুগলি নদীর তীরে মনোরম পর্যটন কেন্দ্র গাদিয়ারা। গঙ্গা অর্থাৎ হুগলি নদীর ব্যাপ্তি যথেষ্ট গাদিয়ারায়। রূপনারায়ণ নদও এসে মিলেছে হুগলি নদীতে। অদূরে গড়চুক্কের দিক থেকে দানোদরও মিলেছে এসে হুগলি নদীতে। দিগন্তবিস্তৃত জলরাশি—রূপ নিয়েছে মিনি সমুদ্রের। বৈচিত্র্যের অভাব ঘটলেও শান্ত-বিন্ম গাদিয়ারার প্রকৃতিও সুন্দর। দূষণহীন নির্মল বাতাস। বাঁধের পাড় ধরে ইট্টিন—জলে ধোয়া সোঁদা সোঁদা গন্ধ। তবে, অতীতের নির্জনতা গোপ পেয়ে কিছুটা যেন বিজ্ঞিতাভ গাদিয়ারায় আজ। প্রাইভেট হোটেলগুলিও পরিবেশকে ভারাক্রান্ত করে তুলেছে। অদূরেই রূপনারায়ণে স্টি মন্ডা-চর। নৌকায় বেড়িয়ে নেওয়া যায়। তেমনিই অভিনয় কর ফেঁদা যায় লজের বাঁয়ে লাইট হাউসটি। গাদিয়ারার সূর্যোদয়ও সূর্যাস্তও সুন্দর। আরও সুন্দর গাদিয়ারা থেকে লক্ষ্য নূরপুর গিয়ে

নূরপুর থেকে ফেরি লক্ষ্য গৌওখালি পৌঁছে আবার লক্ষ্য গাদিয়ারায় ফেরা। নিয়মিত লক্ষ সার্ভিস চলছে ত্রিমুখী তিন জেলা—হাওড়া, দক্ষিণ ২৪ পরগনা ও মেদিনীপুর-এর মাঝে। ঘণ্টা দুয়েকে ২.৩০ + ১.৫০ + ২.০০ টাকায় সাঙ্গ করা যায় চিত্ত-বিমোহন এ জলবিহার।

চড়ুইভাতিও মনোরম পরিবেশ গাদিয়ারা। টুরিস্ট লজ চত্বরে ২টি শেডও হয়েছে পিকনিকের। ৫০-এর অনধিক দলের (৪টি) জন্য শেড প্রতি ভাড়া ১৫০ আর নীলাকাশের নিচে ১০০ হারে। বুকিং: টুরিস্ট পয়েন্ট, কলকাতা-১।



খাকারও ব্যবস্থা হয়েছে সঙ্গম-পাড়ে WBTDC-র ৩৫ ঘরের রূপনারায়ণ টুরিস্ট লজ, DAB ১৭৫ ২০০, ২২৫ A/c ৩৫০ TAB ২৭৫ FAB ৩০০ কটেজ ২০০ আর ৬ বেডের ডর্মিটে বেড ৬০ করে। অব: টুরিস্ট সেন্টার, ৩/২ বিবিদী বাগ, কলকাতা-১, ৫ 2488271. আর হয়েছে বাস স্ট্যান্ডে চলতি টুরিস্ট লজ, DAB ৬০। বন্ধ যেতে রামকৃষ্ণ লজ, ৫ (03172)2307, DCB ৮০-১৫০, কেলারেরে আলো জ্বলছে; পিকনিক পার্টিদের নানান ব্যবস্থা—আনুষঙ্গিক জিনিসপত্রও মেলে রামকৃষ্ণে। বিপরীতে দ্রিয়ার লজ, DAB ৮০—বিজলীর অভাবে হারিকেন নির্ভর দ্রিয়ার।



প্রাইভেট বাস যাচ্ছে গাদিয়ারায় হাওড়া স্টেশন (হাওড়া বাস স্ট্যান্ড) থেকে ৫-৫০এ প্রথম ছেড়ে ১৮-০০টায় শেষ। ৬ নম্বর জাতীয় সড়ক ধরে বাগনানে লেবেল ক্রসিং পেরিয়ে শ্যামপুর হয়ে যাচ্ছে বাস। আধঘণ্টা অন্তর সার্ভিস, সময় নেয় ৩১ ঘণ্টা; ভাড়া ৮.৮০ টাকা। ফেরার পথে ৩-৪০এ প্রথম ছেড়ে ১৮-০০টায় শেষ বাস গাদিয়ারা থেকে হাওড়ার। আর যাচ্ছে ডোর থেকে গভীর রাতে দক্ষিণ-পূর্ব রেলের হাওড়া-খড়াপুর শাখায় লোকাল ট্রেন ৪৬ কিমি দূরের বাগনানে। বাগনান থেকে হাওড়া ছেড়ে আসা বাসে ২৭ কিমি দূরের শ্যামপুর হয়ে আরও ৫ কিমি গিয়ে গাদিয়ারা অর্থাৎ শিবপুরে চলা শেষ। শিবপুর তথা গাদিয়ারা বাস স্ট্যান্ড থেকে বাঁহাতি পথে ১ কিমি যেতে টুরিস্ট লজ।

আবার কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ১১-০০ ও ১৬-৩০এ CSTC-র বাসে সরিষা হয়ে ১½ ঘণ্টায় ৫২ কিমি দূরের নূরপুর পৌঁছেও ফেরি লক্ষ্য চলা যেতে পারে গাদিয়ারা। ৬-৩০ থেকে ১৯-৩০টায় ১ ঘণ্টা অন্তর লক্ষ্য মেলে নূরপুর থেকে গাদিয়ারায়। সময় নেয় ১০ মিনিট, ভাড়া ২.৩০ টাকা। এপথে অর্ধে সামান্য আধিক্য লাগলেও সময়ে ঘণ্টা সেডেক সাশ্রয় মেলে। লজের সামনেই ফেরিঘাট, ইটটারও বন্ধি নেই এপথে। নূরপুর থেকে কলকাতায় ফেরে ১৩-৪০ ও ১৯-০০টায় CSTC-র বাস। আর CTC-র এক্স বাস যাচ্ছে ৫-০০—১৮-৪৫এ ১ ঘণ্টা ১৫ মিনিট অন্তর এসপ্লানেড ট্রাম ওয়াগন থেকে নূরপুরে। ভাড়ায় আধিক্য লাগলেও সময়ে সাশ্রয় মেলে CTC-র বাসে। সরাসরি গাদিয়ারা যাচ্ছে এসপ্লানেড ওয়াগন থেকেই ৪-৪৫—১৯-০০টায় ২ ঘণ্টা অন্তর ছেড়ে বিল্যাসাগর সেতুতে গঙ্গা পেরিয়ে বাগনান হয়ে CTC. আবার শহীদ মিনার থেকে United Transport Co, CTC বা SBSTC-র রায়চকের বাসে রায়চকের মোড় পৌঁছেও লোকাল বাস বা ড্যান রিকশায় নূরপুর চলা যেতে পারে। ডায়মন্ডহারবারের বাসে সরিষা পৌঁছেও চক্কা যায় ডায়মন্ডহারবার-নূরপুর লোকাল বাসে।

নুরপুরও যেন শান্ত নদীর পটে আঁকা আর এক ছবি। অতীতে জলদস্যুদের আশ্রয় ছিল। বাধের মুখে স্বচ্ছকটা সাহেব-মেমের সমাধি। বাস থেকে নামতেই নারিকেল বাঁধিকায় আকাশ ঢাকা মিশনারিদের অরফানেজ। চোখ চাইতেই হুগলি নদী। ভেসে চলেছে লঞ্চ, পাল তুলে দেশি নৌকা, ভটভটি হুগলি নদী বেয়ে। তারই মাঝে পাড়ি দিচ্ছে দেশী-বিদেশী নানান জাহাজ গভীর সমুদ্রে। এ দৃশ্যও নয়ন মনোহর।

গেঁওখালি: পরপারে মেদিনীপুরের গেঁওখালি—সেও আর এক পটে আঁকা ছবি। গাদিয়ারা আজ বাণিজ্যকেন্দ্রিক হয়ে পড়ায় মিশ্র সমীরের পরশ পেতে পর্যটক যাচ্ছেন গেঁওখালিতে। থাকারও নানান ব্যবস্থা—হুগলি নদীর তটে হলদিয়া ডেভেলপমেন্ট অথরিটির *Triveni Sangam Tourist Complex*-এ DAB ১৫০, ২০০ A/c ৪০০ দু'ঘরে চার বেডের সুইট ৩০০, ৪০০, আহাৰ্য গঙ্গা ক্যান্টিনে; অবু: গ্রামবাসী ট্রাভেলস্, ৯ লালবাজার স্ট্রিট, মার্কেটহিল বিল্ডিং, ৩য় তল, ব্লক-সি, কল-১, ও ২২০ ৪৪০১. আর আছে *সেচ দপ্তরের বাংলাজেটি* ঘাটের ডাইনে। অবস্থান মাহাঘোড়াইক এন্ড ট্যুরে ত্রিবেণী আজ মনোরম। যাতায়াত নুরপুর হয়ে। ফেরি লঞ্চ যাচ্ছে ৫-৩০—১৯-৩৫এ, ষষ্ঠা অস্তুর সার্ভিস, ভাড়া ১.৫০ টাকা। বাজার পেরুতেই বাস স্ট্যান্ড। বাস যাচ্ছে মেদিনীপুরের নানানদিকে। মিনিট বিশেকের পথে মহিষদল রাজবাড়িও বেড়িয়ে নিতে পারেন গেঁওখালি থেকে বাসে। আর ট্রেনে মেচেনা পৌঁছেও বাসে চলা যায় গেঁওখালি।

বাগনান থেকে ৫ আর হাওড়া থেকে কোলাঘাটমুখী দক্ষিণ-পূর্ব রেলে ৫১ কিমি দূরের দেউলটি স্টেশনে নেমে রিকশায় পানিত্রাস বা সামতাবেড়ে শরৎতীর্থও বেড়িয়ে নেওয়া যায় যে কোনও ছুটির সকালে। অতীতের রূপ-নারায়ণ আজ সরে গেলেও শরৎচন্দ্রের দ্বিতল বাড়িতে মিউজিয়ম বসেছে। প্রতি বছর ৩১শে ভাদ্র সপ্তাহব্যাপী জন্মোৎসব পালিত হয় কথাসাহিত্যিকের।

আমুরে চড়ইভাতির আর একতীর্থ রূপনারায়ণের তীরে কোলাঘাট। নীলাকাশের নিচে কৃষ্ণচূড়া, গুলমোহের ছাড়া ধরে দাঁড়িয়ে। সূর্যাস্তের পরে সারা কোলাঘাট। দামোদরের জলেও রঙ ধরায় বিদায়ী সূর্য। ছল ছল শব্দে জেলে নৌকা কুলায় ফেরে। চেনা-অচেনা নানান পাখির কুজন মুখরিত করে তোলে বিশ্বভুবন। তারই মাঝে পায়ে পায়ে হাঁটুন দামোদরের পাড় ধরে—সত্যই নয়নান্ধারাম দামোদরের-এ-সৌন্দর্য। উৎসাহীরা অনুমতি সাপেক্ষে কোলাঘাট তাপবিদ্যুৎ প্রকল্পটিও দেখে নিতে পারেন। থাকারও ব্যবস্থা মেলে কোলাঘাট রেল স্টেশন থেকে রিকশায় ১০ মিনিটের পথে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে রূপনারায়ণের পাড়ে সেনান-এ *সেচ দপ্তরের বাংলায়ে*। আর আছে PWD (Roads) Bungalow কোলাঘাটে।

তেমনই চড়ইভাতির মনোরম পরিবেশ তথা পায়ে পায়ে

বেড়াবার আর এক স্বর্ণ গড়চুমুক। গড়চুমুকের পূর্বে হুগলি নদী, পশ্চিমে দামোদর নদ। ৫৮টি সুইস গেট—বোটিং-এরও ব্যবস্থা মেলে। খালের পাড় ধরে ৩ হেক্টর জুড়ে সংরক্ষিত বন, ডিয়ার পার্ক।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে গড়চুমুকে—*হাওড়া জেলা পরিষদের* ৩ ঘরের *হলিডে হোম*, অবু: সেক্রেটারি, হাওড়া জেলা পরিষদ, ১০ বিপ্লবী হীরেন্দ্রনাথ ঘোষ সরণী (দ্বিতল), হাওড়া-৭১১০১। আর আছে *সেচ দপ্তরের বাংলায়ে*, অবু: এলেকট্রিটিটি ইঞ্জিনিয়ার, লোয়ার দামোদর কনস্ট্রাকশন—হাওড়া ডিভিশন, উলুবেড়িয়া, হাওড়া। আর হচ্ছে জেলা পরিষদের *গেট হাউস* গড়চুমুকের গঙ্গা তীরে।

কলকাতা থেকে ট্রেন বা বাসে উলুবেড়িয়া গিয়ে কোট বাস স্ট্যান্ড থেকে ৭০ রুটের বাসে উলুঘাটা ৫৮ নম্বর গেট স্টপেজ পৌঁছে লাগেয়া গড়চুমুক।

দীঘা

কলকাতা থেকে মেচেনা/নরঘাট হয়ে ১৮৩, খড়্গাপুর হয়ে ২৩৪ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে বঙ্গোপসাগরের বুকে পশ্চিম-বাংলার অন্যতম পর্যটন কেন্দ্র দীঘা। *ব্রাইটন অফ দি ইস্ট*—দীঘা বীচ। খড়্গাপুরের দূরত্ব ১২৩, কটাই ৩১ কিমি দীঘা থেকে। দীঘার সমুদ্র আজ বিশ্ববাসীর দৃষ্টি আকর্ষণ করেছে। সপ্তাহান্তিক ছুটি কাটাবার মনোরম পরিবেশ দীঘা। কিছুকাল আগেও প্লেন নেমেছে দীঘা বীচে। তবে, গাড়ি আজও চলে দীঘা বীচে ভাঁটার কালে। এর শান্ত সমাহিত রূপটি ধীরে ধীরে উদ্ভাৱন হয়ে উঠছে। সমুদ্র এগিয়ে আসছে—গ্রাস করছে নগরজীবন। বড় বড় পাথরখণ্ডে রোধ করা হয়েছে সামুদ্রিক গ্রাস। তবুও যেন ঢেউ-এর তালে তালে দেহটা নাচিয়ে তুলে অতি সহজেই উপভোগ করা যায় সমুদ্র-স্নান। বাজারের নিচু দিয়ে মাইলখানেক জুড়ে চলে স্নানের দৌরাঘা। মাইল পাঁচেক দীর্ঘ সাগরবেলাটি আজ নতুন করে জীবন পেয়েছে। জোয়ারের জলে স্নাত এই সাগরবেলা ভেসে ওঠে ভাঁটার। নতুন করে মাথা তুলেছে ঝাঁউ-বীধিকা আজ দীঘা বীচে। সাগরের বেলায় বিজলী আলোয় সমুদ্রের চিকমিকানি হাসি পর্যটকদের ঘর থেকে টেনে আনে বেলাভূমিতে। এমনকি বিদায়ী সূর্যের সোনালি দীপ্তি পশ্চিম আধাকে ঞ্চেতগুপ্ত; আর বাকি আধা সমুদ্রকে নীলাভ করে তোলে। বর্ষময় আলো-আঁধারির এই বর্ণালী দীঘার এক অনন্য প্রাপ্তি। তেমনি আকর্ষণ দীঘার সূর্যোদয়ের। অসীম নীলাকাশ আর সীমাহীন বারিধি—তারই পাড়ে লোক হয়েছে—সীমান্তের পথে কৃত্রিমতা দোবে দৃষ্ট অমরাবতী। বোটিং-এরও ব্যবস্থা মেলে লেকের জলে। অমরাবতীর কাজলাদিঘিতে দুর্বল সংগ্রহের সর্প উদ্যান গড়েছেন সর্প বিশারদ দীপক মিত্র। আর হয়েছে এশিয়ার বৃহত্তম ম্যারিন অ্যাকোয়ারিয়াম নতুন আর পুরাতনের মাশপথে হাসপাতালের বিপরীতে। শহরও প্রসার পাচ্ছে সীমান্তমুখী ২ কিমি জুড়ে পুরাতন থেকে নতুন—নামও তার নিউ

দীঘা। দীঘার প্রশস্তি যদিও আজ লোকের মুখে মুখে, তবে অতীতে ওয়ারেন হেস্টিংসের হাতেই এর আবিষ্কার। আর নবজন্ম পায় ডা. বিধানচন্দ্র রায়ের হাতে। তবুও যেন পুরনো দীঘা আজ চটকহীন, ডিড়ে টাইটস্বর।

শঙ্করপুর: দীঘা থেকে ১৩ কিমি দূরে নতুন গড়ে তোলা মৎস্য প্রকল্পটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাসে। লোকাল বাস যাচ্ছে দীঘা-কলকাতা সড়কে ৮ কিমি দূরে রামনগর পেরিয়ে আরও ১ কিমি দূরে চোন্দমাইল হয়ে। চোন্দমাইল থেকে ভ্যান রিকশা যাচ্ছে চম্পাখালের বুক বেয়ে ৪ কিমি দূরে শঙ্করপুরে। কলকাতা-দীঘা ১০-৩০টার বাসটি সরাসরি শঙ্করপুর হয়ে যাচ্ছে যাচ্ছে। আর ৯-০০টায় দীঘা ছেড়ে শঙ্করপুর হয়ে কলকাতায় আসছে CSTC-র একমাত্র বাস। ভ্যান স্ট্যান্ডের ডাইনে শঙ্করপুর ফিশিং হারবার প্রোজেক্ট। সিনে যেতে সাগরবেলা। দুইয়ের মাঝে ব্যবধান ১ কিমি। বাঁয়ে H Ashoka, (03220) 64275, DAB ১৫০-২৫০, আহর মেলে ক্যান্টিনে, অবু: ম্যানেজার, পো-রামনগর, শঙ্করপুর বা কল বুকিং: H Penguin (P) Ltd, 18 Jadunath Dey Rd. Cal-12, (0275312: Saikatsree Hotel & Lodge, (064344, DAB ২০০-৩০০, কল বুকিং: Linkage (02464485; আর মৎস্য প্রকল্পে আছে ওয়েস্ট বেঙ্গল ফিশারিজ কর্পোরেশনের মৎস্যগজা রেস্ট হাউস, D ১৭৫ A/c ৩৫০ ডর্মি ২৫; অবু: শঙ্করপুর ফিশিং হারবার, পো-বোধড়া, জেলা-মেদিনীপুর, (03220) 64300. অদূরে বেনফিশের কিনারা গেস্ট হাউস, D ১০০৩০০ সুইট ৪০০, ১০টি কটেজ ও গড়েছে বেনফিশ শঙ্করপুরে; অবু: বেনফিশ, ৪র্থ তল, P-161 VIP Rd, Cal-54, (03344931.

ঝাউ ও ক্যায় ছাওয়া সবুজের বনানী, ধু-খু করছে চারপাশ—রূপালি বালিয়াড়ি। সামনে দিগন্তবিস্তৃত নীল আকাশের নীলে গোলা বঙ্গোপসাগরের সুনীল জলরাশি। নিরালা সাগরবেলায় ভারতের বৃহত্তম জেটি হয়েছে মৎস্য প্রকল্পের শঙ্করপুরে। ট্রলার ও জেলে নৌকার আনাগোনা, কর্মযজ্ঞ চলছে মাছেদের নিয়ে। তেমনি সাথী খোঁজে হারমিট ক্র্যাব বা সম্মাসী কঁকড়া সারা বীচে। প্রশস্ত বীচ, মাটি শক্ত; ঘন সন্নিবিষ্ট ঝাউবীথিকা—উঁচু উঁচু বালিয়াড়ি। টাটা শিল্প সংস্থার তাজ হোটেল গ্রুপ রূপ দিতে চলেছে Tourist Village শঙ্করপুরে। আর গড়তে চলেছে সিঙ্গাপুরের একসংস্থা, রাজ্য পর্যটন উন্নয়ন নিগম ও ন্যাশানাল বিল্ডিং কর্পোরেশন—ত্রয়ীর উদ্যোগে ১২০ কোটি টাকা ব্যয়ে ১২ কিমি ব্যাপ্ত পর্যটক নগরী শঙ্করপুরে।

দীঘা-কাঁথির মাঝপথের চাউলখোলা থেকে ডাইনে ৭ কিমি যেতে বেঙ্গল স্টম্প ফ্যাক্টরি—লবণ তৈরি হচ্ছে প্রাক স্বাধীনতার কাল থেকে। প্রাচীন হলেও বহল প্রচলিত প্রথায় লবণ তৈরি দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

চন্দ্রেশ্বর: দীঘা যাত্রীরা স্বচ্ছন্দে ওড়িশাও বেড়িয়ে আসতে পারেন—চন্দ্রেশ্বর শিবমন্দির গিয়ে। সেবতা

এখানে নিরাকার। খুবই জাগ্রত। দূর-দূরান্ত থেকে যাত্রী সমাগম ঘটে। জাঁকালো মেলা হয় চৈত্রে। থাকার জন্য পাণ্ডা ঠাকুরদের বাড়ি ছাড়াও হোটেল বিলমিল DAB ৮০ হয়েছে চন্দ্রেশ্বরে। বাস যাচ্ছে মুম্বই দীঘা থেকে ৩ কিমি দূরে কিয়ানগেড়িয়া অর্থাৎ ওড়িশা সীমান্তে। ওড়িশা রাজ্যের ৩ কিমিতে ভ্যান রিকশা মেলে। পথ পাশে কাজ বাদামের বন। তবে, দীঘা থেকে রিকশাও যাচ্ছে, যাতায়াত ভাড়া ২০-২৫ টাকা। আর যাচ্ছে হাওড়া-চন্দ্রেশ্বর, হাওড়া-বালেশোর ও দীঘা-বারিপাদা বাস দীঘা/চন্দ্রেশ্বর হয়ে। আর চন্দ্রেশ্বর থেকে মেলে ওড়িশার দিগ্বিদিকের বাস। তাই দীঘা ভ্রমণার্থীরা চন্দ্রেশ্বর বেড়িয়ে চাঁদপুরও যেতে পারেন বাসে বাসে।

তালশেরী: চন্দ্রেশ্বর থেকে রিকশায় ৪ কিমি দূরে শান্ত-শিখ সাগরবেলা তালশেরীও বেড়িয়ে নিতে পারেন। স্বচ্ছ নীল জল—পাড় ধরে শাল-পিয়াল-ঝাউয়ের অরণ্য। লুটোপুটি খায় সফেন উর্মিমালা সাগরবেলায়। সাগর আর ঝাউবনে রোমান্টিক মিতালি—নির্জনতা যাদের পছন্দ তাদের কাছে তালশেরী অনবদ্য। সূর্যের উদয় ও অস্ত দুইয়েরই প্রশস্তি আছে তালশেরীতে। তবে, চর পড়ে সূর্যাস্ত আজ আর দৃশ্যমান নয় সাগরবেলায়। নৌকায় গিয়ে অভিযানের সাথে সূর্যাস্ত দেখে নেওয়া যায় চর থেকে। দোকানপাটের অভাব—ক্ষণে ক্ষণে জেলে নৌকার আনাগোনা। ভাটায় জল যায় সরে ১৫ কিমি অন্তরে। দখল নেয় ঝিনুকখচিত বালুকায় তটভূমি সম্মাসী কঁকড়া। সবুজের শ্যামলিমা, চারপাশে ধু ধু বালিয়াড়ি—তারই মাঝে তালশেরী সাগর-বেলায় ওড়িশা টুরিজমের পাঞ্চশালাটি থাকার পক্ষে রমণীয়। এদের ভাড়া DAB ১০০ তিন বেডের ডর্মি ২০ বেড, আহাও মেলে ক্যান্টিনে; অবু: Asst Tourist Officer, Panthasala, Talasari, PO-Chandaneswar, Orissa-756039, (06781) 7528.

তালশেরী থেকে ফেরার পথে ডাইনে ওড়িশা বাঁয়ে পশ্চিমবঙ্গ ধরে ১ কিমি গিয়ে নবতম সাগরবেলা উদয়পুরও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। নিরালা-নির্জনে ঝাউবীথিকায় ছাওয়া নীলাকাশের নিচে প্রশস্ত বীচে লাল কঁকড়ার লুকাচুরি। জেলে নৌকার আনাগোনা। থাকার কোন হোটেল নেই উদয়পুরে। বনবাংলো মেলে ওড়িশা সরকারের।

জুনপুট: দীঘার নবজন্মের আগে পশ্চিমবাংলার সৈকতনগরী খুঁজে পেতে জল্লাকল্পনা যখন চলছে তখন দীঘার পাশে প্রতিদ্বন্দ্বী জুনপুটের প্রতী রায় ছিল নানান জন্মের। তবে, ভাটার কালে জল সরে যাওয়ায় ভেটো পড়ে জুনপুটের বিকল্পে। কালে কালে সামুদ্রিক মাছের উপনিবেশ গড়ে উঠেছে জুনপুটে। গবেষণা হচ্ছে মাছ নিয়ে, আর হচ্ছে গুটিকি মাছ। মিউজিয়ামও বসেছে মৎস্য দপ্তরের। প্রচার, বিমুখ, সবুজে ছাওয়া, ঝাউয়ে ঘেরা সমুদ্রের বিরাট বোভুমিটি বৈচিত্র্যের স্বাদ আনে। ভাটায় জল নেমে যেতে ব্যাপ্তি বাড়ে কয়েক মাইল দীর্ঘ বোভুমির। কর্মযজ্ঞ

জুনপুটের বেলাভূমি। তবে, জোয়ারের কালে জল আসে কিনারা ছাপিয়ে। থাকার জন্য আছে একমাত্র *বাংলোমৎস্য* দপ্তরের। আর, কন্টাই অর্থাৎ কাঁথিতে আছে একাধিক *সাধারণ হোটেল ও পূর্ত দপ্তরের বাংলো*। তাই দীঘা থেকে বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে জুনপুট। বাস আসছে অবিরাম দীঘা থেকে ৩২ কিমি দূরের কন্টাই-এ। কন্টাই থেকে নতুন করে ৯ কিমি গিয়ে জুনপুট। বাস চলেছে—রসুলপুর-কন্টাই-জুনপুটের। অটো, রিকশাতেও চলা যায়। বাস স্বল্পতায় উচিতও হবে কন্টাই থেকে চুক্তিতে অটো বা রিকশা নিয়ে জুনপুট বেড়িয়ে ফেরা।

আবার দরিয়াপুরের লাইট হাউস লাগোয়া ঋষি বঙ্কিম-চন্দ্রের কপালকুণ্ডলার মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন জুনপুট থেকেই রসুলপুরের বাসে পেট্রিয়াতে নেমে শেষ ৩ কিমি পায়ে গিয়ে। বঙ্কিমের বাংলো আজ লীন হলেও ২৬শে চৈত্র বঙ্কিমমেলা বসছে দরিয়াপুরে। কন্টাই হয়েই যাচ্ছে এই বাস। কন্টাই থেকে দূরত্ব ১৫ কিমি। দিনে দিনে বেড়িয়েও ফেরা যায় দীঘায়।

এছাড়া কন্টাই থেকে বাসে খেজুরি সমুদ্রসৈকত বেড়িয়ে রিকশায় অতীতের বন্দর নগরী হিজলিও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। রসুলপুর নদী ও গঙ্গার সম্মিলনের দক্ষিণ তীরে দরিয়াপুর আর উত্তর তীরে হিজলি। অতীতের বন্দর নগরী হিজলির অন্যতম দ্রষ্টব্য ১৬৪৮-৪৯এ তৈরি *মসজিদ-ই-আলা মসজিদ* অর্থাৎ যাহার আসন উচ্চে। আর এই হিজলিতেই ১৬৮৭ খ্রিস্টাব্দে জোব চার্লস চাটুরীর সাথে যুদ্ধ জিতে ভারতে ব্রিটিশরাজের বীজ বপন করেন। গঙ্গাও যথেষ্ট প্রশস্ত। পরপারে সাগরদ্বীপ। থাকারও ব্যবস্থা মেলে পূর্ত দপ্তরের *বাংলোয়*। নির্জন হলেও মনোরম হিজলির সমুদ্রসৈকত। আবার কন্টাই-এ এক রাত কাটিয়ে কিয়-গেড়িয়ার বাসে মারিশদায় পৌঁছে ৩ কিমি মেঠো পথে ৪০০ বছরের প্রাচীন জগন্নাথদেবের জোড়া মন্দির, এগরার বাসপথে আলমগিরি নামে অদূরেই পায়ে হাঁটা পথে রাখা-বিনোদ ও বড়ভুজ মন্দির, এগরার দিঘির পাড়ে ১৫৬০-৬২তে তৈরি শিব মন্দিরগুলিও দেখে নিতে পারেন অত্যা-সাহীরা। প্রতিটা মন্দিরই অলঙ্কৃত। জীর্ণ হলেও ওড়িশা ও বাংলার শিল্প-সুখমামণ্ডিত। প্রাচীন বাংলার রাজধানী তথা ত্রিপুর কালের বন্দরনগরী তাম্রলিপ্ত—আজকের তমলুকও বেড়িয়ে নিতে পারেন চলার পথে। দীঘা-মেচোদা বাসও যাচ্ছে তমলুক হয়ে। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা তমলুকের বর্গভীমা মন্দিরে প্রাচীন তারামুর্তি রয়েছে। পৌষ সংক্রান্তিতে বার্ষিকী মেলা মন্দিরের আকর্ষণীয় উৎসব। আর আছে তাম্রলিপ্ত মিউজিয়াম ও শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন তমলুকে। থাকারও হোটেল আছে পৌরভবনের কাছে *ইনিকেতন* ও হাসপাতালের কাছে *ক্রাসিক লজ*। মুম্বই বাস যাচ্ছে ১৬ কিমি দূরের মহিষাদল, আরও ৮ কিমি যেতে গৌণখালি।

তেমনই তমলুকের ১৬ কিমি দূরে পরিখায় ঘেরা দ্বীপ

অতীতের ময়নাগড়-ও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। পূর্ব ও উত্তর জুড়ে কংসাবতী, দক্ষিণে কেলমাই আর পশ্চিমে চণ্ডিয়া নদী। পরিখায় ঘেরা বৌদ্ধ নরপতি মহাবীর লাউসেনের রাজধানী ময়নাগড়ে বৌদ্ধ সম্ভারামও গড়ে ওঠে সেকালে। তবে, অতীত লুপ্ত হয়ে আজকের ময়নাগড় খ্যাত রাসমেলার জন্য। রাসপূর্ণিমায় সপ্তাহব্যাপী প্রতি রাতে শ্যামসুন্দর জিউ আসেন আলোয় ঝলমল সুসজ্জিত নৌকায় চড়ে গড় থেকে রাসমঞ্চে। যাত্রীও আসেন দূর-দূরান্ত থেকে শ্যামসুন্দরের শোভাযাত্রার সাথে অতীত ইতিহাস রোমন্থন করতে। থাকার কোন ব্যবস্থা নেই ময়নাগড়ে—নির্কতম হোটেল তমলুকে। সরাসরি যাত্রায় হাওড়া থেকে ট্রেনে মেচোদা (৫৯ কিমি) পৌঁছে বাসে শ্রীরামপুর (২৬ কিমি) হয়ে চলায় দূরত্ব কমে। শ্রীরামপুর থেকে ১ কিমি দূরে ময়নাগড়। হাওড়া রেল স্টেশন থেকে বাসও মেলে ৯২ কিমি দূরের শ্রীরামপুরের। ঘণ্টা তিনেকের পথ। দিনে দিনে ফেরাও যায় ময়নাগড় বেড়িয়ে কলকাতায়।



নরঘাটে ঝলি নদীতে মাতঙ্গিনী সেতু হতে কলকাতা-দীঘা পথের দূরত্ব কমে আজ হয়েছে ১৭৪ কিমি। অতীতে খড়াপুর হয়ে দূরত্ব ছিল ২৩৪ কিমি। কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ৬-১৫, ৬-৪৫, ৭-৪৫, ৮-৪৫, ৯-০০, ১০-১৫, ১১-০০, ১২-০০, ১৩-০০, ১৪-০০, ১৪-৩০, ১৫-১৫, ১৬-৩০; উল্টাভাঙ্গা থেকে ৬-১৫; রথতলা থেকে ৭-১৫; ঢাকুরিয়া থেকে ১২-১৫, ১৩-০০টায়; গড়িয়া থেকে ৪-১৫, ৪-৩০, ৫-০০, ৫-৪৫, ৬-০০, ৬-১৫, ৬-৩০, ৬-৪৫, ৭-০০, ৮-০০, ৮-৩০টায় ছেড়ে এসপ্লানেড হয়ে CSTC-র বাস যাচ্ছে ৪২ ঘটায় দীঘায়। ভাড়া ৩৭.৫০ টাকা। দীঘা থেকে ফেরে ৫-০০, ৬-০০, ৭-১৫, ৮-০০, ১১-৩০, ১১-৩৫, ১২-৩০, ১২-৫০, ১৩-০০, ১৩-১০, ১৪-০০, ১৪-৩০, ১৫-৩০, ১৬-৩০। রিটার্ন টিকিটও মেলে—৭ দিন আগে থেকে অগ্রিম বুকিং এসের। তবে দীঘায় ২দিন আগে মেলে অগ্রিম টিকিট। ছুটিছাটার এক্স/নন স্টপ সার্ভিসে বিশেষ বাসও মেলে এসের। এছাড়া CSTC-র বাস যাচ্ছে কল্যাণী, ব্যারাকপুর, দমদম, বসিরহাট ও নামখানা থেকেও দীঘায়। এমনকি রাত্রিকালীন সার্ভিসেও বাস যাচ্ছে ২১-৩০এ কলকাতা ছেড়ে কোলাঘাট/ঝড়াপুর/বেলদা হয়ে দীঘায়। দীঘা থেকে ফেরে ২২-৩০এ, ভাড়া ৬৫.০০ টাকা।

শহীদ মিনারের বিপরীত থেকে ইউনাইটেড টুরিস্ট সার্ভিস-এর ৬-৪৫এ, এরই পাশ থেকে বাস যাচ্ছে প্রাক্তন সৈনিকদের সমবায় সংস্থার সকাল ৭টায়; এসের দীঘা বুকিং হোটেল বেলা নিবাসে। আর হিজলি সমবায়ের বাস যাচ্ছে ৭১ সেনিন সরদী থেকে ১৫-৪৫এ তালতলা ছেড়ে ১৬-০০টায় বারুঘাট পৌঁছে ২৩-০০টায় দীঘায়। এসেরও ভাড়া ৪০। এছাড়া প্রতিদিন ৬-৩০এ গোলাপার্ক ছেড়ে দীঘা যাচ্ছে ১১-৩০এ, এসের যাত্রারাত টিকিট ৮০। MIG সংহারও একটি সুপার ডিলাক্স বাস যাত্রায়াত্র করে দীঘায়। পটকটরাও যাচ্ছেন মেচোদা/নরঘাট/কন্টাই হয়ে ৫ ঘটায় দীঘা।

আর যাচ্ছে দীঘা হয়ে নিউ দীঘায় হাওড়া রেল স্টেশন থেকে সাউথ বেঙ্গল স্টেট ট্রান্সপোর্ট ৫-১৫য় প্রথম ছেড়ে ১৫-৩০এ শেষ বাস, ২ ঘটায় অন্তর সার্ভিস এসের, সময় নেয় ৫ ঘটায়; ভাড়া ৩২.৫০।

দীঘা ছেড়ে আসে ১৬-৩০টায় শেষ বাসটি এসে। কলকাতা ময়দান থেকে SBSTC-র ৮-০০ টায় রকেট, ১০-০০টায় লন্দনখরের বাসটিও দীঘা/নিউ দীঘা হয়ে যাচ্ছে। SBSTC-র বাস যাচ্ছে উল্টোভাড়া থেকে ৫-০০, ৫-৩০, ৬-০০, ৭-১৫, ৭-৪৫এ বেলঘরিয়া ডিপো থেকে; ৫-০০, ৫-৩০, ৬-০০, ৭-১৫, ৭-৪৫এ ছেড়ে হাওড়া হয়ে দীঘায়। ভাড়া ৩৯। SBSTC বেলঘরিয়া ফেরে ১২-১৫, ১২-৫০, ১৩-২০, ১৩-৫০, ১৪-২০, ১৪-৫০এ; পুরুলিয়া ৫-৪৫; হলদিয়া ৮-২০, ১৭-০০; দুর্গাপুর ৯-০০টায়। আর প্রাইভেট বাস যাচ্ছে হাওড়া স্টেশন থেকে সকাল ৫-০০টায় প্রথম ছেড়ে ১৮-০০টায় শেষ বাস দীঘায়। অগ্রিম টিকিট না মিললেও ফেরার বাস মোলে ৪-১৫য় প্রথম ছেড়ে ১৬-১৫য় শেষ বাসটি দীঘা থেকে হাওড়ার। ১৫ থেকে ৪৫ মিনিটের ব্যবধানে সার্ভিস এদের, সময় নেয় ৪ ঘ ৪৫ মিনিট। ভাড়া ৩২।

আর যাচ্ছে রাজ্য পর্যটন দপ্তর প্রতিদিন ৭-১৫য়, এদের ভাড়া ৪০, যাতায়াত ৮০। রিটার্ন টিকিটও মেলে অগ্রিম বুকিং-এ। যাতায়াতে আদরশীলও হবে এদের বাস।

আর সময়ে সাশ্রয় না মিললেও প্রায় আধা ভাড়ায় দীঘা চলা যেতে পারে। হাওড়া থেকে মুহুমুহ লোকাল ট্রেন যাচ্ছে দক্ষিণ-পূর্ব রেলের মেচেন্দ্রা/পাশকুড়/খড়াপুর/মেদিনীপুরের। ৫৯ কিমি দূরের মেচেন্দ্রা পৌঁছে বাসে ৯৯ কিমি দূরের দীঘায় পৌঁছান কন্টাই হয়ে। জোর ৪-০০টায় দিনের প্রথম বাস আর শেষ বাসটি মেচেন্দ্রা ছাড়ে রাত ২১-০০টায়; দীঘা থেকে সকাল ৫-০০টায় প্রথম ছেড়ে সন্ধ্যা ১৮-০০টায় শেষ বাসটি মেচেন্দ্রায় ফেরে। ২০ মিনিট অন্তর সার্ভিস এদের।

এছাড়াও বাস যাচ্ছে ১০ ঘণ্টায় আসানসোল, ৮ ঘণ্টায় দুর্গাপুর, বাঁকুড়া, পুরুলিয়া, বেলপুর, বর্ধমান, বালাসোর হয়ে বারিপাদা ছাড়াও খাড়াগ্রাম, মেদিনীপুর, খড়াপুর মুহুমুহ দীঘা থেকে।

আর প্রস্তুতি চলছে জলপথে ক্রান্তগামী কাটাম্যারান যোগে ৩২ ঘণ্টায় কলকাতা থেকে দীঘা সার্ভিসের। অতি শীঘ্রই চালু হতে চলেছে এই কাটাম্যারান সার্ভিস।

আবার, নুরপুর-পৌখালি-মহিষাদল-নন্দকুমার-কাঁধি হয়ে নবতম পথে হলদি নদী পেরিয়ে ৫৫ কিমি পথ কয়মেই ১ ঘণ্টা সময় বাঁচিয়ে সহজতম পথ পৌছানো কলকাতা থেকে দীঘায়। গাড়ি পারাপারের ব্যবস্থাও হচ্ছে কার ফেরি বা ভেসেলে।



Digha-721428. STD 03220-য় পর্যটকদের প্রথমেই আকর্ষণ করে শহরে ঢুকতেই দীঘা ডেভেলপমেন্ট বোর্ডের সৈকতাবাস। ভোয়ালে ছাড়া সম্ভিত দুই বেডের ঘর বাথসহ দ্বিতলে ৬০ একতলায় ৫০, তিন বেডের ঘর ৬০/৭০, আর ২ ঘরে ৪ বেডের সুইট দ্বিতলে ৯০ একতলায় ১০০; কটেজ (গুস্ত) — ভূপরাতিতা, চার বেডের ৬০, দুই বেডের ৫০; কটেজ (নিউ) — নবগীতিকার, কিচেন সহ চার বেডের ৮০, দুই বেডের ৫০; লোকের পাড়ে নিরালায়, ৪ বেডের ফ্ল্যাট ১ তলায় ৫০ দ্বিতলে ৭০ ত্রিতলে ৬০; নিরালায় সামনে মালিক, তিন বেডের ইউনিট ৬০ করে; টীপ ক্যানটিন লাগোয়া সপ্তসোজিনও হায়ানটেডর্মি প্রথা বেড একতলায় ৮.২৫ দ্বিতলে ১১.২৫; নিউ টাউনে সাগর পাড়ে কৃষিকার মেঝেতে দিনভর বিশ্রাম ও হায়ে প্রতিভা। ৩ মাস আগে থেকেই বুকিং এদের। ৬০% টাকার অগ্রিম পাঠিয়ে ১০ দিনের বুক করা যায়: The Administrator, Digha Development Board, Digha, Midnapur-721428কে লিখুন।

আরও স্বাস্থ্য নিয়ে রয়েছে শহরে ঢোকার মুখে বাঁচ থেকে সামান্য দূরে WBTD-র Tourist L. বার সহ, SAB ২০০ DAB ২০০ ২৫০ ৩০০ TAB ২৭৫ ৩০০ সুইট ৩৭৫ ৪০০ ডর্মিতে ৬০ A/C ৪০০/৫০০, রাতেই মিল ও ব্রেকফাস্ট পৃথক মূল্যে বাধ্যতামূলক। অতিরিক্ত একজন থাকার যায় ২৫ বেশি দিয়ে সিঙ্গেল বেডের ঘরে। এদের বুকিং: Manager ৩ (03220) 66256; বা Tourist Centre, 3/2 B B D Bag, Cal-1. সৈকতাবাস ও কটেজের আংশিক বুকিংও করে থাকে Tourist Centre. ভাই টারিস্ট লজ, সৈকতাবাস বা কটেজ অগ্রিম বুক করে দীঘা চলাই উচিত হবে। আর আছে বাকের মুখে রমণীয় পরিবেশে রান্নার ব্যবস্থা সহ ২ ঘরে ৬ জন থাকার কল্যাণ কুটির রেস্ট হাউস ৩০ টাকায়। অব্: Directorate of Social Welfare —Govt of WB, 45 Ganesh Ch Ave, Cal-13, 2nd Floor/ SDO—Contai/ Asst Secretary—S W Dept. Writers Buildings, Cal-1 থেকে আংশিক বুকিং মেলে।

ও কিমি ব্যাপ্ত শহরে দীঘা ও নিউ দীঘার প্রাইভেট হোটেল-রাজি। বাসও চলছে দীঘা (গুস্ত) হয়ে নিউ দীঘা পেরিয়ে ৪ কিমি দূরের সীমান্ত অর্ধাৎ কিয়গেডিয়ায়। শহরের মুখে পাশাপাশি অবস্থানে SBI HH, Model Cooperative Credit Society HH, ESI (64 G C Avenue, Cal-13) HH, Jardine Anderson Staff HH (4 Clive Row, Cal-1), Batemagar Recreation Club HH, H Gaurab, Sagar L D ১৮৫-৩৫০; WBSEB-র HH. টারিস্ট লজের পিছে ভবা পাগলা সহনীতে—H Purbasha DAB ২০০ ৩০০ ৩৫০, কল বুকিং: Rumani, ৩ 23687, Abakash L Chowdhury L, behind Tourist Lodge, Id ১৫০-২২৫; Uma L.

শহর ঢুকতেই সৈকতাবাসের পিছে Barister Colony-তে সমুদ্র বিলাসীদের কাছে বিশেষভাবে আদৃত—*H Sea Hawk, ৩ 66246. DAB এক তলায় ৮০ ১১০ ২৩০ ২৪০ ২৬০ দ্বিতলে ১২০ ১৬০ ২০০ ২৩০ ৩০০ ৩৬০ ত্রিতলে ১৬০ ১৮০ ৩৭০ TAB ২৩০ চার বেডের সুইট ৩০০ ৪০০ ৪৩০ ৪৭৫ ৫৫০ পাঁচ বেডের ৫৫০ ৬০০ ৭৫০ ছয় বেডের ৬৫০ তিন ঘরে সাত বেডের ৮৫০ ১০০০ পনেরো বেডের ডর্মি ৪০০, অব্: Manager, Digha ৩ 66235 বা Kalindi Housing Estate, Kalindi Housing Bus Stop, Calcutta-89, ৩ 3342834/ 628৪ বা সাউথ ইলেকট্রিক এম্প্লয়ারিয়াম, ৪৬/৭০ গড়িয়াহাট রোড, কল-১৯; বা Modern Exchange, 12B, Russel St-71, ৩ 290756; Sahu L: Krishna L, D ১৫০-২২৫; H Dolphin, D একতলায় ২০০ ২৮০ ৩৭০ দ্বিতলে ২০০ ২৫০ ২৭৫ ৩৩০ ৩৭০ ৪০০ ৪৫০ ৮০০ TAB ৩০০ ৩৭০ FAB ৪৩০ কটেজ ৪০০ A/C ৫৫০ A/C D ৫৫০ ১২০০, কল বুকিং: 47 Bhupen Bose Avenue, Cal-4, ৩ 5554652/ Modern Travels, 309 B B Ganguly St-12, Room 4, ৩ 274582; Samudra Villa, D ১২৫ ১৫০ ২০০ ২২৫ T ১৭৫ ২০০ ২৫০ ৩২৫ F ২২৫ ২৫০, কল বুকিং: ডলফিন-এর মত বা Prallava Cinema, 10 B T Rd, Khardaha, ৩ 5531437. H Apsara, *H Omega, ৩ 66325. DAB ২৫০-৬০০ A/C ৮০০, কল বুকিং: ৬৬ দমরম রোড, কলি-৭৪, ৩ 5512132; *H Host, DAB ২৭৫ ৩০০ ৩৫০ ৪০০ ৪৫০ ৬০০ A/C-র জন্য ৩০০ অতিরিক্ত, কল বুকিং: Tourist Point, WBTD, 3/2 BBD Bag (E)-1, ৩ 2485917/

Samcon Resort, AA-7 Salt Lake City, Cal-64, ③ 3372931; *H Kanishka*, D ২৫০-৩০০; *Indian Oil HH*, *The Waves*, D ৪০০, কলি বুকিং: *Friends Mills Stores*, 38 Strand Rd., ③ 250815; **H Sea Coast*, DAB লন ফেসিং ৬০০, হিতলে ৮০০ A/c ১০০০, সুইট ২০০০, কল বুকিং: Linkage ③ 2464485/22/1B, Ballygunj Stn Rd-19, ③ 4404092.

ট্যুরিস্ট রিসেপশন দিশারী পেরিয়ে ডাইনে—*Ajanta H*, DCB ১২০, DAB ১৮০-২৫০; লাগোয়া গলিপথে রাজবাড়ি কমপ্লেক্সে *Duke H*, (অজন্তার পিছে) DAB ১৮০-৪৫০; পাশেই *H Pushpak*, D ২০০-৩০০, অবু: *Bina Jewellers*, 77 Ekdalia Rd-19, ③ 4405450/4733835/Linkage ③ 2464485; *H Suryamani*, D ১৫০-২৭৫; *Williamson Magor Institute H H*, 4 Mango Lane, Cal: *CESC-Main HH*; *Bina L*, D ১৫০-২৭৫; *Bantra Cooperative Bank HH*; *Boral Union Bank HH*; *Dunlop Recreation Club HH*—হোটেলে পুথপকে এদের অবস্থান; *Staff Welfare Society HH*—Jadavpur University, মূলপথে বিপরীতে পাশাপাশি *পূর্বপা/পারিজাত/বালুচরী* পাইস হোটেলে অবস্থান।

● গলিপথে দোকানপাট রেখে সাগরমুখী রমণীয় পরিবেশে দীঘার অনন্য *H Blue View*, ③ 66219, DAB ২২০, ২৪০, সমুদ্রমুখী ৩৫০, ৪০০ সুইট: *দোলনা* ৩৭৫, *হিন্মুন* ৪৫০ A/c ৫৫০ ৬৫০, অবু: ম্যানেজার বা দে'জ পাবলিশিং, ১৩ বঙ্কিম চ্যাটার্জী স্ট্রিট কলকাতা-৭৩, ③ 2412330/2419266; বিপরীতে *Cafeteria I*, DAB ১৫০-২৫০, কল বুকিং: *S Mallick*, B C Roy Poly Clinic, ③ 262492; অপর পাড়ে *Baluka L*, D ১৭৫-৪০০; বলাকায় *Bokaro Steel Employees' HH*, 13 Camac St ও *UCO Bank HH*, 2 India Exchange, কাছেই মেইন রোড ও শিবালয় রোড ক্রসিং-এ *Sandhyadweep L*, D ২০০-৪৫০।

ডানহাতি *Shibalaya Rd*-এ—*Gouri L*, DAB ১৮০-২৭৫; *H Sea Queen*, D ২০০-৩২৫; *H Kichlukshan*, D ২০০-৩৫০; *H Shantinivas*, ③ 66306, D ১৫০-২৭৫, অবু: মডার্ন অ্যাসবেসটস, বালটিস্কুরি, বকুলতলা, হাওড়া; *H Suvashree*, D ২০০-৩২৫; *UBI Sealdah Branch HH*, *New Barrackpur Municipality HH*, *Income Tax HH*, *Ashirbad H*, *Rajbari Complex*, ③ 66337, D ২৫০-৫৫০, অবু: *Rumani*, ③ 273686; *Ekanta Apan L*, D ১৮০-২৫০; *Sindhu Nivas L*, D ১৭৫-২২৫; *Anandam L*, D ১৭৫-৩৫০; *Cozy H*, D ১৭৫-৫৫০, অবু: ৪4 AJC Bose Rd., ③ 2444831; *Chalanika H*, D ১৮০-৪০০; *Sun N Sea H*, opp Super Mkt, D ২০০-৪৫০, অবু: *Universal Tourist Co*; কোজির পাশে নবসাজে *Sathi H*, D ১৫০-৩৫০, A/c ৬০০, অবু: *Dev Associates*, 2/1A, *Hindustan Park*, Cal-29, ③ 742774 বা সাধী ট্রাভেলস, সোদপুর, ③ 5535679; কোজির পিছে *H Samudra Samrat*, D ১৪০-৩৫০, T ৩০০-৪০০, FR ৪৫০, কল বুকিং: 47 Bhupen Bose Ave, Cal-4, ③ 5550702; লাগোয়া *Shyam Sundar Abash*, D ১৫০-৩২৫; এপসেই *Annapurna Resort & L*, কল বুকিং: উজ্জল বুক স্টোর্স, ৬-এ, শ্যামাচরণ সে স্ট্রিট-৭৩, ③ 2416258; *Bank of Baroda* (MG Rd Branch)

HH; *UBI Barasat Branch HH*; *CSTC Employees' HH*; *LIC Employees' HH*, 16 C R Avenue, Cal-12, *H Satyabhanu*, *Baranagar Cooperative Bank HH*.

মূলপথে বাঁয়ে *Vivekananda Niwas*, D ১৫০-৪০০; পাশেই *Neelachal L*, D ১৭৫-৩০০; বিপরীতে *Nehru Market* পেরুতেই *H Sarada*, D ১২৫-২৫০, অবু: এয়ারলাইন্স ট্রাভেল, ৬৪ বি বি গান্ধী স্ট্রিট-১২, ③ 265438; *Saikatshree H*, D ১৫০-৩৫০; *H Bela Niwas* DAB একতলায় ৯৫ ১০৫ কিতলে ১০৫ ১১৫ ১২৫ ১৫৫ ২২৫ কিতলে ১২৫ ১৬৫ ২৫৫ ২৬৫ A/c ৩৬৫, ৫০ টাকা অতিরিক্তে TV মেলে, অবু: ম্যানেজার, ③ 66243 বা Ex Servicemen Tourist Service, opp CSTC Bus Std, Esplanade, Calcutta. বিপরীতে পুরাতন কটেজ ছায়ানট ও সংযোজন। প্রবেশদ্বারে CSTC-র Bus Stand তথা বুকিং কাউন্টার। সামান্য যেতে পুলিশ স্টেশন, লাগোয়া *H Ranjana*, D ২০০-৩০০; পাশেই *H Sea Bird*, D ১৭৫-৩৫০; লাগোয়া *Forest HH*; বিপরীতে Marine Aquarium and Research Centre—তবে, দ্বার রুদ্ধ আজও। তেমনই হতে চলছে *Larica India Pvt Ltd*-এর বাবস্থাপনায় WBTD নির্মিত ভবনে *Larica Inn*, কল বুকিং: *Larica*, 74 Park St-17, ③ 2403583. অদূরে Water Supply রেখে প্রস্তাবিত দীঘা রেল স্টেশন। বিপরীতে SBSTC-র Bus Stand.

দিশারী থেকে ২ কিমি যেতে নিউ বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া নিউ দীঘায়—*H Asha*, *H Priyadarshini*, *New Moti L*, *DVC Holiday Home*, *H Holiday Inn*, *Sunny H*, ③ 66302; *H Casurina*, ③ 66282, DAB ১৫০-৩৫০, FR ৪৫০, কল বুকিং: Linkage ③ 2464485/Classic Travels, 2 & 3 Stephen House, 1st floor, North Block, 4 BBD Bag (E), Cal-1, ③ 2483166; *H Holiday Home*, D ৮০-২৫০, কল বুকিং: *S D Enterprnse*, 3 Mango Lane, 1st floor, Cal-1 ③ 2481378; *H Ocean View*, *H Mallika*, S ১৫০ D ১৭৫ থেকে; *H Sea Voyage*, ③ 66203, DAB ২০০-৩২৫, FAB ৪০০, কল বুকিং: ③ 4680260; *H South End*, ③ 66202, DAB ২২৫-৩৫০, সুইট ৪০০, কল বুকিং: ৪ NN Banerjee Rd, Panihati-734176, ③ 5532503; *H Serena*, ③ 66353, DAB ২২৫ ডর্মি ৫০, কল বুকিং: *Iswar Ch Paul Ganga Prasad Paul & Co*, 225 MG Rd, Cal-7, ③ 2381977 বা 73 Kankulia Rd, Cal-29, ③ 4406743 বা 349-B, *Jodhpur Park*, Cal-68, ③ 4736217; *H Manasi*, DAB ১৭৫-৩৫০; *H Duffodil*, ③ 66229, DAB ১৫০-২৭৫, TAB ২৫০-৩২৫, কল বুকিং: 6 Ashok Garh (E), Cal-35; নিউ দীঘায় অনন্য *H Gitanjali*, DAB ১৭৫ ২৫০ সুইট (৪ বেড) ৪৫০, বুকিং: ম্যানেজার বা 63 Seal Tagore Bari Rd, (অজন্তা-ভারতলার মাঝে), *Behala*, Cal-38, ③ 4786188 বা *Mayur Travels*, *Mayurmahal Restaurant*, *Yashoda Bhawan*, 2 Gariahat Jn, ③ 4406722; *Allahabad Bank HH*; *H Manakanya*, ③ 66213, ২ শিশু সহ ২ জনার ৩৫০। বিপরীতে নিউ কটেজ, *নিরালা*। অমরাবতী লেক পেরিয়ে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের ইয়ুথ সাউন্ডের ইয়ুথ হোস্টেল; অদূরেই সীমান্তবর্তী শ্রমিক-জনতা নিবাস। আহারও মেলে বাঙালি খাবা ছাড়াও নানান হোটেলে নিউ দীঘায়।

এছাড়াও হোটেল আছে নানান ছড়িয়ে-ছিটিয়ে দীঘায়—*The Sagarika*, D ১৭৫-২৫০; সৈকতবাসের পথে *Sea View Lodge*, D ২০০-৩৫০; *Sagar Kanya*, D ২২৫-৩৫০; *Shivam Kuthi*, D ১৫০-৩৫০; *Oceania L*, D ১৫০-৩০০; *Anbar H*, behind Nehru Mkt, D ১৭৫-৩২৫; *Annapurna L*, D ১৮০-৩২৫; *Ashok H*, Rajbari, D ২০০-৩০০; *Amit H*, D ১৭৫-৩৭৫; *Blue Birds H*, D ২৫০-৩৫০; *Daisy H*, D ২০০-৪৫০; *Digha L*, Barister Colony, D ২২৫-৩২৫; *Hemangini L*, D ১৫০-২৭৫; *Jayunidhi L*, D ১৫০-৩০০; *Janhabi Bhawan*, D ১৫০-২৫০; *Kanyakumari L*, D ১৪০-২২৫।

আর আছে *PWD Roads*, সেচ দপ্তর ও মৎস্য দপ্তরের ডাকবাংলো ও নানান বাণিজ্যিক সংস্থার হলিডে হোম দীঘায়। বাবারের জন্য পারিষদ, সৈকতস্রী, পূর্বশাম্প নয়। টুরিস্ট লজ, ব্লু ভিউ, সী হকের ক্যান্টিন ওটিরও আহাৰ্বে সুনাম আছে।



দীঘায় হলিডে হোম

UBI Staff Recreation Club behind Tourist Lodge
CB: 15 India Exchange Place-1, ☎ 2206867.

All India Allahabad Bank Employees' at New Digha.
CB: 14 India Exchange Place-1, ☎ 2208375-Ext 133.

UBI Employees' Cooperative Cr Society Ltd
beside Irrigation Bungalow

CB: 4 N C Dutta Sarani-1, 4th floor, ☎ 2200841.
Mancha Bharati

CB: Bank of India, 23A, N S Rd-1, ☎ 2202301.

CESC Construction Dept Recreation Club
CB: 18 Rabindra Sarani, Poddar Building
(2nd Floor)-I ☎ 2253550-Ext 249

Standard Chartered Bank Recreation Club
at Shibhalaya Rd ☐ CB: 4 N S Rd-1, ☎ 2206902.

Standard Chartered Bank Cooperative Society
CB: 4 N S Rd-1, ☎ 2206902.

RBI Employees' Co-op Cr Society
behind Saikatabas ☐ CB: 13 N S Rd-1.

UBI Staff Recreation Club near Tourist Lodge
CB: 226/A, APC Road-4, ☎ 5546590.

Kamarhati Municipality Employees' Welfare Society
at Raj Bari Complex, Shibhalaya Rd

CB: 1 M M Feeder Rd, Belghorra-700 056, ☎ 5531646

Union Bank Employees' Co-op Credit Society
CB: Indian Exchange Place-1, ☎ 2206868.

Allahabad Bank Recreation Club at Shibhalaya Rd
CB: 14 India Exchange Place-1, ☎ 2208376

(Draft Dept).

All India Allahabad Bank National Employees' Federation
CB: 14 India Exchange Place-1, ☎ 2208375.

Shawalace Institute H H

CB: 4 Bankshal St-1, ☎ 2485601.

Aajkal Recreation Club at Hotel Ajanta

CB: 96 Raja Rammohan Sarani-9, ☎ 3509803.

IOB Employees' Co-op Society

at Hotel Priyadarshini, opp Amarabati Lake, N D

CB: P-35 India Exchange Place-1, ☎ 2254055.

Grindlays Bank Employees Co-op Cr Society

at Sagar Nibas, Barister Colony

CB: 6 Church Lane-1 (16—18-30).

Indian Overseas Bank H H

CB: P-35 India Exchange Place-1, ☎ 2253187.

Steel Authority of India Employees' Co-op Cr Society
at New Digha Holiday Home Sector

CB: 2 Fairlie Place-1, ☎ 2208129-Ext 325/430.

PNB Employees' Union, at New Digha Holiday Home Sector

CB: 8 Lyons Range-1, ☎ 2202181 (RCC).

Syndicate Bank Staff Recreation Club at Shibhalaya Hotel

CB: 3-B, Lalbazar St-1, 2nd floor, ☎ 2486055.

Canara Bank Staff Recreation Club at Shibhalaya Rd

CB: 25 Princep St-73, ☎ 275306.

Indian Bank Employees' Co-op Cr Society Ltd
at New Digha Holiday Home Sector

CB: 3/1 R N Mukherjee Rd-1, ☎ 2207675/2484325.

UCO Bank Staff Club at Shibhalaya Rd

CB: 10 Brabourne Rd-1, 2nd floor,

☎ 2254120-28, Ext 227, 231.

Punjab And Sind Bank Employees Union (WB)

CB: 27/5, Waterloo St-1, ☎ 2485990.

Union Bank Employees' Co-op Cr Society Ltd
at Shibhalaya Rd

CB: 38 Strand Rd-1, ☎ 2206868

Panihati Municipal Employees' Co-op Cr Society
at New Digha

Abk: B T Road near Mina Cinema, Sodepur, ☎ 5532903.

Bantra Co-operative Bank Ltd near Bus Stop, Old Digha

Abk: 10 Narasimha Dutta Rd, Howrah-1.

CSTC Employees' Co-op Cr Society Ltd at Shibhalaya Rd

CB: 45 Ganesh Ch Avenue-13, ☎ 271212.

ABTA at New Digha

CB: P-14 Ganesh Chandra Avenue-13, ☎ 268856.

SBI Recreation Club at Shibhalaya Rd

CB: 8 N S Rd-1, ☎ 2202875.

Bank of Baroda Zonal Office Staff Recreation Club
at Shibhalaya Rd

CB: 2/7 Sarat Bose Rd-20, 3rd floor, ☎ 4757255.

Bank of Baroda Employees' Association
near Petrol Pump,

CB: 172 M G Rd-7, ☎ 2388834

The Burn Standard Employees' Co-op Cr Society Ltd
at Shibhalaya Rd.

Abk: 20 Nityadhan Mukherjee Rd, Howrah-711011,
☎ 6602601-Ext 61.

Tata Sports Club at Shantinibas,

CB: Tata Centre, 43 Chowringhee Rd-71, ☎ 2479251.

Tea Board H H Committee at Shibhalaya Rd

CB: 14 Brabourne Rd-1.

Central Bank of India Employees' Co-op Society Ltd
at Hotel Puspak, Rajbari,

CB: 10 Lindsay St-87, ☎ 2446789.

Howrah Municipal Corporation Recreation Club
at Shibhalaya Rd

Abk: 4 Mahatma Gandhi Rd, Howrah-1, ☎ 6603123.

UCO Bank Employees' Co-op Cr Society at Hotel Puspak
CB: 3 Lindsay St-87.

CESC Main Staff Association at Shibhalaya Rd

CB: 18 Rabindra Sarani (2nd floor), ☎ 2253550.

UBI (Royal Exchange Branch) Recreation Club

at Old Digha, opp SBI

CB: 10 N S Rd-1, ☎ 2207652.

UBI (Dharmatala Branch) Employees' H H Committee
behind Tourist Lodge

CB: 39 Lenin Sarani-1, ☎ 2441101.
 UBI (Gariahat Branch) Employees' H H Society at Madhuban
 CB: 26 Hindusthan Park-29, ☎ 4643392.
 SBI Staff Association at Shibhalaya Rd
 CB: Calcutta Main Unit ☐ I Strand Rd-1, ☎ 2202215-Ext 58.
 Shitpur Co-operative Bank Ltd at Barister Colony
 Abk: 173 Shitpur Rd, Howrah-2, ☎ 6602058.
 Kasundia Co-operative Bank Ltd at Shibhalaya Rd
 Abk: 122/I Swami Vivekananda Rd, Howrah-1, ☎ 6602654.
 Gramophone Co of India Ltd at New Digha
 CB: 33 Jessore Rd-28, ☎ 5514773.
 Uttarpara-Kotrang Municipality at New Digha
 Abk: Uttarpara, Hooghly, ☎ 642298.
 UBI (Belgharia Branch) Friends' H H at Shibhalaya Rd
 CB: 17 M B Rd, Belghoria, ☎ 5392210
 Registration Directorate Recreation Club HH
 near New Digha Bus Stand
 CB: F-Block, Top Floor, Writers' Building, Cal-1, ☎ 2155601.
 Ext 383.

ঝাড়গ্রাম



দীঘা থেকে সরাসরি বাস যাচ্ছে ঝাড়গ্রাম। CSTC-র বাস যাচ্ছে ৯ ঘণ্টায় কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ১২-০০টায় ছেড়ে কলকাতা-মুম্বাই NH 6 ধরে ২৪৬ কিমি দূরের লোখাগুলি থেকে ডানহাতি পথে ১৪ কিমি গিয়ে ঝাড়গ্রামে। ফেরে ভোর ৫০০টায়। ভাড়া ৪৭। আর হাওড়া স্টেশন থেকে ১৯০ কিমির সড়ক দূরত্বে ট্রাইভেট বাস যাচ্ছে ৫-৫০, ৬-৪৫, ১২-৫০, ১৫-২০এ; ফেরে ৫-৩০, ৯-৫০, ১১-৫০, ১৩-১৫য়। সময় নেয় ৮½ ঘণ্টা।



হাওড়া থেকে দক্ষিণ-পূর্ব রেলের ট্রেনও যাচ্ছে ২½ ঘণ্টায় ১৫৫ কিমি দূরের ঝাড়গ্রামে। ৬-৫০এ ইস্পাত এক্স, ১০-৪৫এ কারলা এক্স, ১৭-৩০এ স্টিল এক্স, ২১-৩৫এ হাওড়া-হাতিয়া এক্স, ২০-৪০এ হাওড়া-সফলপুর-রায়গাড়া এক্স যাচ্ছে হাওড়া থেকে ঝড়াপুর/ঝাড়গ্রাম হয়ে। আর বেলপাহাড়ী/কাঁকড়াঝোড় যাত্রায় ৬-৫৫র মেদিনীপুর লোকালে ঝড়াপুর সৌছে ঝড়াপুর থেকে ৯-৫০এর টাটা প্যাসেঞ্জারে ১০-৪৪এ ঝাড়গ্রাম গিয়ে ১২-৩০এ SBSTC-র পূর্ণচলিয়ার বাসে চলা যেতে পারে।

শাল, পিয়াল আর মধ্যার দেশ ঝাড়গ্রাম। কাজুও হচ্ছে। আর হয়েছে নতুন করে ডিয়ার পার্ক, চিড়িয়াখানা ঝাড়গ্রামে। জলবায়ু স্বাস্থ্য প্রদ। ঝাড়গ্রামের জল উদয়চিহ্নিত ব্যাধিতে মহৌষধির কাজ করে। ঋতুভেদে বদলও ঘটে প্রকৃতিতে। গ্রীষ্মের দিনগুলিতে মধ্যার মৌতাত বাতাসকে ভারী করে তোলে। আর বর্ষায় মঞ্জুরী ধরে শালের শাখে শাখে। বর্ষার রিমঝিমতান—সেও যেন মৌতাত ধরায় ঝাড়গ্রামের মাধুর্যে। মাধুর্য বাড়ে আরও যেন বেশি চাঁদনি রাতে। শাল-পিয়ালের গা বাঁচিয়ে লাল কাঁকুরে পথচাট। শহরের উপকণ্ঠে ঝাড়গ্রাম রাজবাড়ি। মন্দিরও আছে ঝাড়গ্রামের গড়ে সবিতার দাসী সাবিত্রীর। মূর্তিহীন মন্দিরে ঝড়া ও মানবী দেবীর কেশগুচ্ছ পুজিত হচ্ছে আজও। আর আছেন চতুমুখী শিব, লোকেশ্বর বিষ্ণু, মনসা দেবী মন্দিরে। ৩৪.৫ হেক্টর ব্যাপ্ত মধুবনে বিশাল এক দিগির পাড়ে ঝাড়গ্রাম মৃগদাব তথা মিনি চিড়িয়াখানা।

রেল স্টেশন থেকে ১০ কিমি দূরে জঙ্গলমহল হাটকালচার উদ্যানটিও আর এক দ্রষ্টব্য। রংবেরঙের শতাব্দিক প্রজাতির গোলাপ মাতোয়ারা করে তোলে। রাজবাড়ির পূবে ডুলুং নদী পেরিয়ে গহন অরণ্যের মাঝে কনকদুর্গার মন্দির। আদিবাসী সংস্কৃতি পরিষদটিও চলতে ফিরতে দেখে নেওয়া যায়। বসতও গড়ে উঠেছে শাল-পিয়ালের ফাঁকে ফাঁকে। তবুও যেন প্রকৃতিই মুখ্য দ্রষ্টব্য ঝাড়গ্রামে। অনুমতি নিয়ে রাজবাড়িটিও দেখে নেওয়া যায়।



মহরাজাদের রাজবাড়িতে ৩১ বেডের ট্যুরিস্ট লজ হয়েছে। আর আছে শান্তিনিকেতন বোর্ডিং, আবাসিক, অশোকা হোটেল ও শালবীথি গেস্ট হাউস—রঘুনাথপুর; ওয়েসিং—কলেজ মোড়; জয়দীপ গেস্ট হাউস—শালবানী, কল বুকিং: ☎ 5558824; নিরিবিলি ও সফট—বাহুরডোবা, ঝাড়গ্রামে। নিরিবিলিলজটি থাকার পক্ষে ভালই। ডাবল বেডের ঘরও মেলে ১০০-২২৫ টাকায় এদের কাছে। থাকা ও আহরে শান্তিনিকেতনেরও যথেষ্ট প্রশস্তি। এছাড়া আছে UCO Bank Officers Congress HH, বুকিং: ১৬এ, গ্রাবোর্ন রোড, কল-১, ৩য় তল, PWD IB, FIB, অগসেন ধরমশালা।

তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় গিধনিগামী বাসে লোখাগুলি সড়কে ২ কিমি গিয়ে ডানহাতি ১১ কিমি দূরের জামবনী। আধ ঘণ্টার পথ। জামবনীর প্রশস্তি চিলকিগড় বা জঙ্গলমহল দুর্গ, মন্দির ও দিগির জন্য। অতীতের পঞ্চরত্ন মন্দিরটি পরিত্যক্ত হতে ১৩৪৮এ নতুন গড়া মন্দিরে অশ্বারূঢ়া, ত্রিনয়না, চতুর্ভুজা দেবী কনকদুর্গা। অতীতে প্রতি অমাবস্যা় নরবলির প্রথা ছিল। আর আজ ছাগ ও মহিষ বলি হয় নবমীর রাতে কনকদুর্গা সকাশে। আঁকাবাঁকা গলিপথ, আরণ্যক পরিবেশ; বয়ে চলেছে ডুলুং নদী—স্বর্গীয় স্বপ্নরাজ্য যেন।

ঝাড়গ্রামের পরের স্টেশন গিধনি। রেল দূরত্ব ১৫ কিমি। গিধনির প্রকৃতিও আপন মহিমায় উজ্জ্বল। রাজ্য পথের বাঁকে বাঁকে ছোট গ্রাম, মেটে বাড়ি। পুটুশ, বনতুলসি, কুসুম, মধ্যা বনে মুতা, সীওতাল, মহালি, শবরদের বাস। ১৯৫৫র ১লা এপ্রিল ২২ হেক্টর বনভূমি ৩ বিটো ভাগ হয়ে নাম হয়েছে তার আমতোলিয়া, কানাইসোল আর গদরাসোল। গিধনি রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে কানাইসোল বাংলোর অদূরে একমিকে পড়িহাটি অপরদিকে চিলকিগড়, জামনি ছুয়ে ঝাড়গ্রাম। অদূরে দলমা পাহাড়—ভালুক, হাতি, হায়নারা অভিসারে নামে পাহাড় থেকে। থাকার জন্য FIB আছে গিধনিতে, বুকিং: DFO, Midnapur-W, Jhargram. ঝাড়গ্রাম-শালবানী-লোখাগুলি পথে গোলাপ বাগিচা তথা চিড়িয়াখানাটিও আর এক দ্রষ্টব্য।

বেলপাহাড়ী

ঝাড়গ্রাম থেকে বাসে চলল বেলপাহাড়ী। নিয়মিত বাস মেলে বেলপাহাড়ী, তামাজুড়ি ও বিলিমিলি-র। ঝাড়গ্রাম

থেকে ৪৫ কিমি দূরে শালে ছাওয়া সুন্দর পাহাড়ী অধিত্যকায় বেলপাহাড়ী। মহুয়া, পিয়াল, ইউক্যালিপটাস, সোনাখুরি, ঝাউ আর শিরীষও রয়েছে। সুন্দর নৈসর্গিক শোভার মাঝে সহজ সরল মানুষজন। ছোট্ট বাজার। বাজারের পিছনে বনদপ্তরের তিন ঘরের ফরেস্ট বাংলো, অব: DFO, West Midnapur Division, P O-Jhargram, Midnapur। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে সপ্তাহান্তিক ছুটি কাটাবার মনোরম পরিবেশ।

২৫ কিমি দূরে প্রকৃতির আর এক লীলাভূমি বাঁশ-পাহাড়ী। পাহাড়-জঙ্গল-আদিবাসীদের বাস। থাকারও ব্যবস্থা মেলে FIB-তে।

আর আছে বেলপাহাড়ী থেকে মিনিট চল্লিশের ট্রেক পথে ৯ কিমি দূরে আর এক স্বপ্নপূরী ঘাঘরা। শাল ও ইউক্যালিপটাসের গহন অরণ্যানী—চারপাশে পাহাড়। তারই মাঝে এলোমেলো পাথরখণ্ডে ৬০ ফুট উঁচু থেকে তারারফেনির অনাবিল জলধারা নিস্তব্ধতা ভাঙছে মৌন বনভূমির। স্বল্পদূরে তারাকেনি ব্যারেল। আরণ্যক শোভার আকর্ষণেও উচিত হবে ঘাঘরা বেড়িয়ে নেওয়া। বনা-হাতিরাও মাঝে-মাঝে অভিসারে বেরায় এপথে।

বেলপাহাড়ী-ঝাড়গ্রাম ভায়া বিনপূর বাসপথে ৮ কিমি যেতে আদিবাসী অধ্যুষিত শিলদা। গিধনি থেকে দূরত্ব ৯ কিমি। অটো যাচ্ছে। জঙ্গলমহলের বিখ্যাত চুয়াড় বিদ্রোহের অন্যতম ঘাঁটি ছিল শিলদা। আর আছে রাজ্যের গড়বাড়ি, নানান মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ, শিলদা বাঁধ অর্থাৎ দিঘি। তেমনই প্রশস্তি আছে দশমীতে ভৈরব মেলার শিলদায়। ধামসা বাজ্রে, মাদল বাজ্রে—যৌবন নাচে তার সঙ্গে। বিকাল থেকে পাহাড়-বন পেরিয়ে চল নামে মানুষের বাংলা-বিহার-ওড়িশা থেকে। গভীর রাতে দেবী রণকিনীও আসেন ঘাটশিলা থেকে ভৈরবের সঙ্গে মিলিত হতে। শুক্রবারের হাটেরও বৈচিত্র্য আছে শিলদায়।

কাঁকড়াঝোড়

বেলপাহাড়ী পেরিয়ে আরও ১০ কিমি যেতে তামাজুড়ির বাসপথে পড়ে ভোলাবেদা। ভোলাবেদা থেকে ১৮ কিমি সাইকেল বা পায়ে হেঁটে যাওয়া যায় কাঁকড়া অর্থ পাহাড় আর ঝোড় হচ্ছে জঙ্গল অর্থাৎ কাঁকড়াঝোড় ফরেস্ট রেস্ট হাউসে। কাঁকড়াঝোড়ের শালবনের মাতাল করা বিহুলরূপ পর্যটকদের স্বপ্নময় করে তোলে। বন দপ্তরের ট্রাক মেলাও অস্বাভাবিক নয় এপথে। অগ্রিম বুকিং না থাকলে ভোলাবেদা বা বেলপাহাড়ী রেল অফিস থেকেও রেস্ট হাউসের বুকিং মেলে। রেস্ট হাউসে বিছানা, বাসনপত্র সবই আছে। রাতে কেবাসিনের আলো। টর্চ সঙ্গে নেওয়া ভাল। আর জিপের পথ গিয়েছে ভোলাবেদা রেখে বাঁশপাহাড়ীর পথে আরও ১৮ কিমি এগিয়ে শিয়রবেদা থেকে। শিয়রবেদা থেকেও রেস্ট হাউসের দূরত্ব ১৮ কিমি। অ্যাংসাডার গাড়িও সন্তর্কতার সাথে পাড়ি দেয় এপথ। ৭৬ কিমি দূরের ঝাড়গ্রাম

(ট্যুরিস্ট লজ) থেকে ২টি জিপ মেলে ভাড়া। যাতায়াত ৬০০, রাতের অবস্থান ৫০। মাঝে মাঝে চড়াই ও উতরাই পেরুতে হয়। পথ বন্ধুর, দু'পাশে গহীন বন। মানুষজনের হৃদিস মেলে না সারা পথে। পথভুলের আশঙ্কাও তাই পদে পদে। রেস্ট হাউসের সান্বেতিক বোর্ড থাকলে পথ চলতে সুবিধা।

কুসুম, শাল, সেগুন, মহুয়া, আকাশমণিতে ছাওয়া ৯০০০ হেক্টরের এই গহীন বনে ভান্ডুক, বুনো শুয়ার চরে বেড়ায়। রাতের বেলায় কেন্দু ও মহুয়া খেতে আসে এরা। কখনও-সখনও বাঘ, লেপার্ড আর হাতিও বিহারে বেরায় বিহারের দলমা পাহাড় থেকে। রাতের বেলায় দলমা পাহাড় থেকে ভেসে আসে আদিবাসীদের মুদঙ্গ ও মাদলের তান। কাভু, কফি ও কমলারও চাষ হচ্ছে কাঁকড়াঝোড়ে। শীতকাল মনোরম হলেও প্রখর গ্রীষ্ম এড়িয়ে বছরের যে কোনও চাঁদনি রাতে বেড়িয়ে আসুন কাঁকড়াঝোড়। ছোট্ট অবকাশ যাপনের কুহকী পরিবেশ। পাহাড়ী নদীর পাড়ে পাড়ে শতাধিক পরিবারে ৭৫০-এর মত মুণ্ডা, সাঁওতাল, ভূমিজ উপজাতির বাস কাঁকড়াঝোড়ে। জীবিকা এদের চাষবাস। মুরগি চরতে দেখা যায়, কিনতে মেলে না, ডিমও অমিল। খাবারের সব-রকম ব্যবস্থা সঙ্গে নিতে হয় নিকটতম বড় বাজার ঝাড়গ্রাম থেকে। রান্নার জন্য খানসামা অর্থাৎ চৌকিদার ভরসা।

ফরেস্ট রেস্ট হাউসে সার্ভিস চার্জে থাকা। আর হচ্ছে বন দপ্তরের পর্যটক আবাস FRH-এর পিছে। রাজ্য পর্যটনের ১১ বেডের ট্যুরিস্ট হোস্টেলে ডর্মি প্রথা ১০ বেড। তবে, অগ্রিম বুকিং ছাড়া যাওয়া উচিত নয়। আর হয়েছে অতি সাধারণ সাজে গোপীনাথ মাহাতোর চটিং হোটেল। ৯ ঘরের মাহাতো লজ-এ চাটাই বালিশ ও কুশল সম্বল। আহাৰ্যও মেলে অতি সাধারণ মানের। কাঁকড়াঝোড়ে বিশ্রাম নিয়ে বিহারের ঘাটশিলাও চলা যেতে পারে ৭ কিমি পায় হেঁটে হলুম পৌছে সেখান থেকে বাসে আরও ১৫ কিমি গিয়ে। রান্নার ব্যবস্থা জিপও চলে এপথে। সরাসরি কাঁকড়াঝোড় যাত্রায় যাতায়াতে ঘাটশিলা আদরণীয় হবে।

পারমাদান মৃগমেলা

ছলাং ছল, ঘাটের কাছে
গল করে ইছামতীর জল।

কলকাতা থেকে ৭৭ কিমি দূরে ভারত-বাংলাদেশ সীমান্ত শহর বনগা থেকে আরও ২৮ কিমি নদীয়া মুখী যেতে নলডুগরি। সরাসরি বাসও যাচ্ছে সকাল ৮-৩০টায়ে CSTC ও ১৩-০০টায়ে প্রাইভেট শহীদ মিনার থেকে বারাসাত/বনগা/হেলেকা/নলডুগরি হয়ে দত্তফুলিয়ায়। ৩ ঘণ্টার পথ, ভাড়া ২১.৫০ টাকা। CSTC ফেরে ১২-২০এ নলডুগরি থেকে। নলডুগরি থেকে ভ্যান রিকশায় ৫ কিমি দূরে পারমাদান মৃগ মেলা। নিরুপ ব্যবস্থায় গাড়িও পাড়ি দেয় এপথ। আর সরাসরি বাসের অমিল হলে শিয়ালদহ-বনগা

শাখা রেল ২½ ঘণ্টায় বনগাঁ পৌছে রিকশায় মতিগঞ্জ বাস স্ট্যাণ্ডে গিয়ে দশফুলিয়ার বাসে ১½ ঘণ্টায় নলডুগিরি পৌছে ড্যান রিকশায় পারমাদান। CSTC ও প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে শহীদ মিনার থেকে বনগাঁ। আবার শিয়ালদহ থেকে ৭৪ কিমি দূরে রানাঘাট পৌছে, রিকশায় বাস স্ট্যাণ্ডে গিয়ে বাসে দশফুলিয়া পৌছে বনগাঁর বাসে নলডুগিরি চলা যেতে পারে। ভাড়া সামান্য অধিক্য লাগলেও সময়ে সাস্থ্য মেনে রানাঘাট/দশফুলিয়া/নলডুগিরি পথে। ট্রেন ও বাসের চলও বেশি এপথে।

অতীতের পারমাদান ২৮-৩-৮৫তে নতুন করে নাম হয়েছে বরণ্য সাহিত্যিক পথের পাঁচালীর স্ট্রাটার নামে বিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায় সংরক্ষণালয়। তবে, সরকারি নথিপত্রে, লোকমুখে আজও এর পরিচিতি পারমাদান ডিয়ার পার্ক বলে। শিশু, বাঁশ, মিনজিরি, তুঁত, অর্জুন, শিমূল, শিরীষে ছাওয়া ৬৪০ হেক্টর বনভূমিতে তিন শতাব্দিক স্পটেড ডিয়ার অর্থাৎ হরিণের বাস। সোনা-ঝরা মিঠে রোদে খেলে বেড়ায় হরিণেরা, গাছ থেকে গাছে লাফিয়ে বেড়ায় বানরেরা; তারই মাঝে মিস্ত্রিমধুর তান ধরে সবজি বসন্ত-বৈরী, সোনালী কাঠোকেরা, শঙ্খচিল, নীলকণ্ঠ, ফুলটুসি ছাড়াও চেনা-অচেনা হাজারো পাখি পারমাদানের বৃক্ষশাখে। সকাল ৯-০০ ও বিকাল ১৫-০০টায় হরিণদের আহার খেতে আসার দৃশ্যও পূলকিত করে দেহ-মন। পূর্ণিমা রাতে লজের ছাদ থেকে আরণ্যক শোভাও মনকে উদাস করে। শিশু উদ্যান, মিনি চিড়িয়াখানাও বসেছে পারমাদানে। উত্তর-দক্ষিণ-পশ্চিম বেঁটন করে বয়ে চলেছে ইছামতী নদী—ধীর স্থির তার গতি। টিকিট ৪ ছাত্র ২ লাগে পারমাদান দর্শনে।



খাকার ব্যবস্থা প্রবেশ ফটকের বাঁয়ে রাজ্য পর্যটনের Tourist Hostel-এ DAB ১০০ ডর্মি ২৫, অব: টুরিস্ট সেন্টার, ৩/২ বি বা দী বাগ, কলকাতা-১, ৩ 2488271. আর আছে ভাইনে বন দপ্তরের অফিস পেরুতেই ইছামতীর ঘাটে ৩ ঘরের DFO Rest House পারমাদানে, D ১২৫ সরকারি কর্মী ৮ হারে; অব: The Conservator of Forests, Central Circle, Survey Building, 35 Gopalnagar Rd, Cal-700027. তবে, আহাৰ নিজ ব্যবস্থায় সঙ্গে নিতে হয়। বাসনপত্র, রাসার সাজ-সরঞ্জাম, পাচকও মেলে সার্ভিস চার্জে।

তেমনই চলার পথে বনগাঁ ইছামতীর পাড়ে সুন্দর পরিবেশে CH. যশোহর রোডে হোটেল পাছনিবাস, বা সাধারণ হোটেল এক রাত কাটিয়ে ছঘরিয়া গ্রামে দেখে নেওয়া যায় প্রকৃতভিত্তিক রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায়ের দীর্ঘ রাজভাড়ি; চাকদহগামী বাসে ব্যারাকপুরে সাহিত্যিক বিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়ের বাড়ি, একইপথের বেলে গ্রামে রাজা কৃষ্ণচন্দ্র বা ভবানন্দ মজুমদারের প্রাচীন রাজধানীতে গোপালভাঁড়ের মন্দির, নগরউখড়াগামী বাসে চৌবেড়িয়া গ্রামে নীলদর্পণ রচয়িতা দীনবন্ধু মিত্রের বাড়ি, গোবরাপুরে শ্রোব নারসিং; চৈত্র সংক্রান্তিতে চরুক উৎসব, ডাকাঁত সাত ভাই-এর কলীডলা, কলকাতামুখী ঠাকুরনগরে শ্রীশ্রীহরিচাঁদ

ঠাকুরের হরিমন্দির তথা চৈত্র মাসের বারুণী তিথিতে ঠাকুরের ৪ দিন ব্যাপী জম্মোৎসব একে একে।

ব্যারাকপুর

কলকাতা থেকে ২৫ কিমি দূরে ব্যারাকপুর রিভার সাইড রোডে গাঙ্গীঘাট। গাঙ্গীজীর চিত্রাত্ম্য বিসর্জিত হয় এখানেও। স্মারকরূপে গঙ্গার পাড়ে ১৯৬৬র ৭ই মে গড়ে তোলা হয়েছে গাঙ্গী স্মৃতি-মন্দির অর্থাৎ মিউজিয়াম। গাঙ্গী-জীবনের নানান অধ্যায় রূপ পেয়েছে কারুকার্যে। ৬টি মনোরম গ্যালারি ও ৭০০০ গ্রন্থের লাইব্রেরি নিয়ে এই সংগ্রহশালা। ধীরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের আঁকা ১০০ ফুটের দেওয়ালচিত্রে জন্ম থেকে মৃত্যু—গাঙ্গীজীবন ভুলে ধরা হয়েছে। আলোকচিত্র ও নানান তথ্যে গাঙ্গীজী তথা তৎকালীন ভারতের নেতৃবৃন্দের গ্যালারিটিও অনবদ্য। গ্যালারিতে নানান মনীয় ৩৮টি তৈলচিত্রও শোভা বর্ধন করেছে। এছাড়া গাঙ্গীজীর হাতে লেখা চিঠি, নানান ছবি, গাঙ্গীজীর স্মৃতি-পুত আসবাবপত্র, মডেলে নোয়াখালি অভিযান ছাড়াও নানান সস্তার আকর্ষণ বাড়িয়েছে সংগ্রহশালায়। বুধবার ছাড়া প্রতিদিন ১১—১৭-০০টায় খোলা। স্বল্প দূরে গঙ্গার পাড়েই রানী রাসমণির কালীমন্দির।

এমনকি ১৮৫৭র সিপাহী বিদ্রোহ অর্থাৎ প্রথম স্বাধীনতা সংগ্রামেও অংশ নেয় ক্যান্টনমেন্ট নগরী এই ব্যারাকপুর। ফাঁসি দেয় সেদিনের ব্রিটিশ রাজ বিদ্রোহের নায়ক মঙ্গল পাণ্ডেকে ব্যারাকপুরের লাটবাগান তথা আজকের আর্মড পুলিশ ব্যারাকের বটবৃক্ষে। সেই স্মৃতিতে শহীদ স্মারক হয়েছে বি টি রোডের ধুবিঘাটে। আর হয়েছে মঙ্গল পাণ্ডে উদ্যান রিভার সাইড রোডে। রাষ্ট্রগুরু সুরেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের জন্মও ব্যারাকপুরের মণিরামপুরে। পথেই পড়ে স্বামী মহাদেবানন্দ গিরির আশ্রম। অদূরে পলতা ওয়াটার ওয়ার্কস।

যে কোনও বিকালে শহীদ মিনারের বাসওমটি থেকে CSTC-র L20, S11; আর শ্যামবাজার থেকে L20A, SBSTC-র M6, ৭৮ রুটের প্রাইভেট বাস; হাওড়া স্টেশন থেকে SBSTC-র S32; সপ্ট লেক থেকে M6 বাসে ধুবিঘাট পৌছে ৫-৭ মিনিটে পায় পায় বা রিকশায় গাঙ্গীঘাট চলা যেতে পারে। ট্রেনও যাচ্ছে শিয়ালদহ থেকে ভোর থেকে গভীর রাতে ব্যারাকপুরে। অপর পাড়ে শ্রীরামপুর। থাকারও ব্যবস্থা হয়েছে গাঙ্গীঘাটের অদূরে গঙ্গার পাড়ে WBTD-র মালঞ্চ টুরিস্ট লজ, DAB ২২৫। আহাৰও মেলে মালঞ্চে। অব: Manager, Barrackpur-743101, ৩ 5601982 বা টুরিস্ট সেন্টার, ৩/২ বি বা দী বাগ, কলকাতা-১, ৩ 2485917.

কল্যাণী

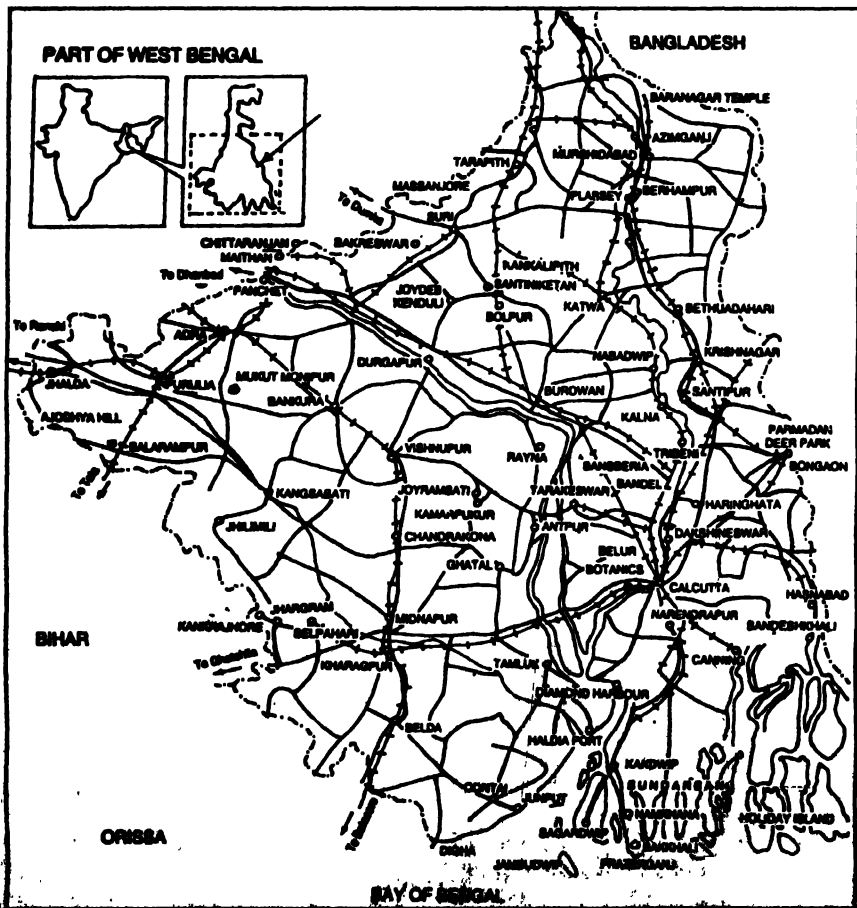
যে কোনও ছুটির সকালে গিয়ে সন্ধ্যায় ফিরুন কল্যাণী বেড়িয়ে। কলকাতা থেকে দূরত্ব ৪৮ কিমি। পশ্চিম বাংলার প্রাক্তন মুখ্যমন্ত্রী ডা. বিধানচন্দ্র রায়ের মানসকন্যা এই কল্যাণী উপনগরী। এর নগর-পরিকল্পনা, কল্যাণী বিশ্ববিদ্যালয়,

সেন্ট্রাল পার্ক, পিকনিক গার্ডেনগুলির পর্যটক আকর্ষণ করণ নয়। আর রয়েছে কল্যাণী-সীমান্ত শাখা রেলের বোম্বপাড়ায় কর্তৃত্বাঙ্গী সম্প্রদায়ের শ্রীক্ষেত্র। অমোঘ মন্ত্র এসে—ডেড নাই মানুষে মানুষে, খেদ কেন ভাই এ-দেশে। বৈষ্ণবদের বিশ্বাস মানুষকে ধৈর্য্য ধর্মশিক্ষা দিতে শ্রীচৈতন্যদেবের নীলাচলে লীন হয়ে আউলটাদের মাঝে নবরূপে প্রকাশ। আউলটাদের অন্যতম শিষ্য রামশরণ পাল। রামশরণের পত্নী সরস্বতী দেবী হয়েছেন সতীমা। নানান অলৌকিক মাছাছো ভরা হিমসাগরে স্নানে দুরারোগ্য ব্যাধির উপশম মেলে। তেমনই সতীমায়ের সিদ্ধপীঠ ডালিমতলায় মানত করেন, টিল বাঁধেন ভক্তের দল। মনোবাঞ্ছা পূরণ হয় দেবীর আশিসে। দোল অনন্য উৎসব। মেলাও বসে জাঁকালো। দূর-দূরান্ত থেকে বাড়িলেরা আসেন উৎসবে। শিয়ালদহ থেকে

(৩-৩৫—২৩-৪০) লোকাল ট্রেন ও বাবুঘাট থেকে (৫-৪৫—২০-১৫) গ্রাইভেট বাস মুহূর্ত্ত য়াচ্ছে কলকাতা থেকে কল্যাণী। শিয়ালদহ থেকে সীমান্তের ও সরাসরি ট্রেন মেলে। ট্রেনে ১২ ঘণ্টা, বাসে ২২ ঘণ্টার পথ।

কৃষ্ণনগর

লোকজ্ঞতি, অতীতকালে সবে দ্বীপ জেগেছে গঙ্গায়—বসতিও গড়া শুরু হয়েছে। এক সম্যাসী প্রতিদিন ন দীয়া অর্থাৎ নয়টি প্রণীপ ছেলে তন্ত্র সাধনা করতেন। আর এই ন দীয়া-ই কালে কালে নদীয়া, জেলাসদর কৃষ্ণনগর। অতীতে নাম ছিল রেউই। আর কৃষ্ণনগর নামকরণ মহারাজ রুদ্রর। সেকালে বাস ছিল শ্রীকৃষ্ণ-ভক্ত গোপ সম্প্রদায়ের রেউই-এ। তবে মহারাজা কৃষ্ণচন্দ্রর কালে উন্নতির চরম



শিখরে ওঠেন নীরা রাজা। সিরাজের বিরুদ্ধে পলাশীর যুদ্ধে ক্লাইভের পক্ষ নিয়ে রাজরাজেশ্বর বাহাদুর উপাধি পান কৃষ্ণচন্দ্র। এমনকি ভেট রূপে পাওয়া পলাশীর যুদ্ধে ব্যবহৃত বেশ কয়েকটি কামান রয়েছে রাজবাড়ির অঙ্গনে।



কলকাতা থেকে রেল দূরত্ব ১০০ কিমি, আর NH 34 ধরে ১১৮ কিমি। শিয়ালদহ থেকে কৃষ্ণনগর লোকাল, বহরমপুর ও লালগোলা ট্রেনগুলি যাচ্ছে কৃষ্ণনগরে। ঘট্টা আড়াইয়ের পথ।



বাসও আছে কলকাতা থেকে CSTC, SBSTC ও NBSTC-র কৃষ্ণনগর, বহরমপুর ছাড়াও উত্তর বাংলার নানান দিকের জাতীয় সড়ক ধরে কৃষ্ণনগর হয়ে। আর মুম্বই বাস আছে শান্তিপুর, ফুলিয়া হয়ে রানাঘাট, বেথুয়াডহরী হয়ে বহরমপুর, ধুবুলিয়া হয়ে মায়াপুর, নবদ্বীপ ছাড়াও বর্ধমান, বীরভূম, পুরুলিয়া, মুর্শিদাবাদ-এর দিঘিদিগে কৃষ্ণনগর থেকে। রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে বাস স্ট্যান্ড। সিটি বাস ও রিকশা দুই-ই চলেছে। শীত ও গ্রীষ্ম দুইয়েরই আধিক্য আছে কৃষ্ণনগরে।

কৃষ্ণনগরের মূল আকর্ষণ তার মৃৎশিল্প। সারা জগৎ জুড়ে এর প্রশস্তি। জলঙ্গী নদীর পাড়ে ঘূর্ণিতে বসেছে মৃৎশিল্পের আসর। খ্যাতনামা শিল্পীরা নিপুণ হাতে কাজ করছেন—বিজ্ঞয়েরও ব্যবস্থা আছে। হিউম্যান ফিগার তৈরিতে এদের দক্ষতা বিশ্ব-বিশ্রুত। এছাড়া কৃষ্ণনগরের রাজবাড়িটিও কম আকর্ষণীয় নয়। রাজপরিবারের বীরত্বের গাথা আজও নদের কাব্যে গাথা হয়ে ফেরে। শুধু বীরত্বই বা কেন, জ্ঞান ও গুণেরও কদর ছিল সেকালের রাজদরবারে। চত্বরের দুর্গা মন্দিরটিও সুন্দর। কৃষ্ণচন্দ্র যোয়ের পঙ্খের শেষ কাজ শোভিত নাটমন্দিরটি আজ লুপ্ত হতে বসেছে। চারমিনার বিশিষ্ট কারুকার্য শোভিত রাজবাড়ির প্রবেশ তোরণ সেও আজ অবক্ষয়ের পথে। প্রতি বছর—চৈত্র (এপ্রিল) মাসে বারোদোল অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণের দ্বাদশ বিগ্রহ সেলায় বসে। মেলা বসে রাজবাড়িকে ঘিরে। জগদ্ধাত্রী পূজারও প্রশস্তি আছে কৃষ্ণনগরের। কৃষ্ণনগরের আর এক আকর্ষণ তার রোমান ক্যাথলিক চার্চ। স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে অনন্য। ২৭টি তৈলচিত্রে বীণ-কাহিনী বর্ণিত হয়েছে। ইতালীয় ভাস্করদের তৈরি কাঠের মূর্তিগুলিও সুন্দর। এছাড়া হয়েছে মাতৃ (মারিয়া) স্মৃতি ১৯৮৮র ১৫ই আগস্ট চার্চ অঙ্গনে।

আর আছে রবীন্দ্র-স্মৃতিধনা সাহিত্যিক প্রমথ চৌধুরীর পৈতৃক বসতবাড়ি রানী কুটির, ১৮৪৬এ প্রতিষ্ঠিত কলেজ ভবন, ১৮৫৬র পাবলিক লাইব্রেরি, রামতনু লাহিড়ীর বাড়িতে কৃষ্ণনগর একাডেমি, প্রোটেষ্ট্যান্ট চার্চ কৃষ্ণনগরে। রেল স্টেশনের বিপরীতে বিজ্ঞানপ্রদর্শন সারের বসতবাড়ি আজ লুপ্ত। আর আছে আধুনিক ভাস্কর্যের নিদর্শন রূপে জাতীয় সড়কের ধারে স্থাপত্য বা ভাস্কর্য বাগান। কৃষ্ণনগরের সরভাজা ও সরপুরিয়ারও খ্যাতি আছে ভ্রমণার্থীদের রসনা তৃষ্ণির জন্য। নেদিয়ার পাড়ার অঞ্চলটিকে দাসের দোকানে (৩ 52139) বাস নেওয়া যেতে পারে।

তেমনই কৃষ্ণনগরের আর এক আকর্ষণ গেঙ্গে-

মাজদিয়া-ভাঙ্গনঘাটের বাসে ১১ ঘট্টা ২৪ কিমি দূরের শিবনিবাস দর্শন। আড়াইশো বছরের অতীত—বগীর আক্রমণ থেকে রাজা বাঁচাতে চুপাঁর পাড়ে রাজধানী গড়েন রাজা কৃষ্ণচন্দ্র রায়। নগরীর নিরাপত্তা বাড়াতে কল্লনাকারে পরিখা গড়ে চুপাঁ। তবে, কালের গ্রাসে রাজধানী বিধ্বস্ত হলেও রাজরাজেশ্বরের শিবমন্দির (১৭৫৪), বাগীশ্বর শিব মন্দির (১৭৬২), রাম-সীতার মন্দির (১৭৬২)এ পূজা হয় আজও। আর আছে সাধক জাফর খাঁর দরগা তথা সমাধি-ভূমি। হিন্দু-মুসলিম নির্বিশেষে সিমি চড়ায়, বাতি দেয় আজও সাধকের উদ্দেশে।



ধাকার জন্য প্রথমেই আদরনীর বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া ৭ ঘরের *Krishnanagar Municipal Tourist L*, Dr Sachin Sen Rd. Krishnanagar-741101, ৩ (03472) 52080, SAB ৪০ DAB ৬০ ডর্মি বেড ২৫, অর্ধ-ম্যানেজার। অদূরেই *H Basashree*, Rabindranath Tagore Rd, SCB ২৫ SAB ৪০-৬০ DCB ৬০ DAB ৮০-১২০। আর আছে *সাব্বনা হোটেল অ্যান্ড লজ্জি*, হাই স্ট্রিট, ৩ 52485; *লজ্জি শিবম*, বিট মার্কেট, চাষাপাড়া মোড়; *পূর্বসি গেস্ট হাউস*, হাই স্ট্রিট, ৩ 52730; *গোস্বেন লজ্জি*, আমিন বাজার, ৩ 53472; বাস স্ট্যান্ডেই সাধারণ সাজে *হোটেল অপোকা*, *বাসতী ছাড়াও ডাক বাংলা* ও *সার্কিট হাউস* কৃষ্ণনগরে। আহাৰ্যের জন্য বাস স্ট্যান্ডে *সেবা হোটেল*টি মন্দ নয়। উচিতও হবে *ট্যুরিস্ট লজ্জি* ২ রাত অবস্থান করে প্রথম দিনে কৃষ্ণনগর শহর, শিবনিবাস ও বেথুয়াডহরী, দ্বিতীয় দিনে মায়াপুর ও নবদ্বীপ, তৃতীয় দিনে শান্তিপুর ও ফুলিয়া বেড়িয়ে রানাঘাট বা শান্তিপুর বা কৃষ্ণনগর থেকেই ঘরপানে ফেরা।

বেথুয়াডহরী

পশ্চিমবাংলার অভ্যন্তরীণ বেথুয়াডহরী। কৃষ্ণনগর থেকে ২৮ কিমি পেরিয়ে বহরমপুরের পথে বেথুয়াডহরী রেল স্টেশন। কলকাতা থেকে রেল দূরত্ব ১২৭ কিমি, সড়ক দূরত্ব ১৪৮ কিমি। ভাগীরথী এন্ড লালগোলার প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে শিয়ালদহ থেকে কৃষ্ণনগর/বেথুয়াডহরী হয়ে। বাসও আছে কলকাতা থেকে CSTC, SBSTC, NBSTC, নানান প্রাইভেট পলাশী, বহরমপুর ছাড়াও উত্তর বাংলার নানান—জাতীয় সড়ক ৩৪ ধরে বেথুয়াডহরী হয়ে। আর কৃষ্ণনগর থেকে সরকারি ও বেসরকারি বাস আছে, ঘট্টা দেড়েকের পথ।

রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে NH 34-এ বেথুয়াডহরী অভ্যন্তরীণ। নামে অভ্যন্তরীণ হলেও মূলত মুগ উদ্যান এটি। ১৬৫ একর ভূমি জুড়ে টিক, অর্জুন, সেগুন, শিরীষ, বাবলা, শিত, মেহগনি, শেওড়া, ভাটের বনভূমিতে ৫৫০ হরিণের বাস। শিংয়েল হরিণ, চিত্রল হরিণ ছাড়াও রয়েছে দেশী খরগোশ, বনবিড়াল, হুমুন ও শব্দর। বর্ষায় সাপেরও দেখা মেলে অভ্যন্তরীণে। মিনি চিড়িয়াখানাও হয়েছে। পায়ে পায়ে সাদা করতে হয় বনবিহার। ৮—১৬-০০টার দর্শনের জন্য ছাত্র খোশা। টিকিট ৪, ছাত্র ২ করে।

চাঁদনি রাস্তে রেস্ট হাউসের দরজায় হরিণের আনা-গোনা শিল্পের খেলায় দেখে-মনে। তেমনই ৭-০০ ও ১৫-০০টার দর্শনের খাবার বেতে আসার দৃশ্যও পুষ্টিকর করে

তোলে। গ্রীষ্ম এড়িয়ে যে কোন ছুটির দিনে আপনিও বেড়িয়ে আসুন বেধুয়াডহরী।

থাকার জন্য ২টি FRH আছে। জাতীয় সড়ক লাগোয়া প্রবেশ ঘারে রেস্ট হাউস ১, আর আধ কিমি অশ্বরে রেস্ট হাউস ২-এ চার বেডের ঘর ১২৫ করে। আহার নিজ ব্যবস্থায়। থাকার পক্ষে ২ নম্বর রেস্ট হাউসটি রমণীয়। অবঃ পারমাদানের মত। ডে সেক্টর-ও হয়েছে WBTD-র জাতীয় সড়কে—আহার মেলে।

মায়াপুর

পৃথিবীতে বড় আছে নগরাদি গ্রাম,
যেথা হতে সর্বত্র প্রচার হইবে মোর নাম।

পশ্চিমবঙ্গের পর্বটন মানচিত্রে মায়াপুর আজ স্বীয় মহিমায় প্রতিষ্ঠা পেয়েছে। অতীতের মিয়াপুর আজ হয়েছে মায়াপুর। আজ থেকে ৫০০ বছর আগে অশ্বৈত আচার্যর কঠোর সাধনায় মহাপ্রভুর মর্ত্যে আবির্ভাব। দ্বীপাকার মায়াপুরেই জন্ম শ্রীচৈতন্য—যোগপীঠ অর্থাৎ আবির্ভাব স্থানে শ্রীশ্রী যোগপীঠ মন্দির গড়ে উঠেছে। মতান্তরও আছে অতীত আর বর্তমানের মায়াপুরের অবস্থান তথা জন্মভূমি নিয়ে। তবে, বৈষ্ণবশাস্ত্রে মেলে, গঙ্গার পূর্বতটে নবদ্বীপের অবস্থান ছিল সেকালে। ব্যাপক চত্বর জুড়ে কর্মকাণ্ড চলছে ISKCON অর্থাৎ International Society for Krishna Consciousness-এর। মায়াপুরের মূল আকর্ষণও ISKCON-এর তৈরি চন্দ্রোদয় মন্দির। ঢুকতেই ডাইনে প্রভুপাদের সমাধি মন্দির তথা ১৪ বছর ধরে ১০ কোটিরও অধিক টাকা ব্যয়ে ইকনের প্রতিষ্ঠাতা শ্রীল প্রভুপাদের জন্মশতবার্ষিকীতে (২৬শে ফেব্রুয়ারি ১৯৯৫) গড়া বর্ণাঢ্য ভক্তিবন্দ্য স্বামী শ্রুতিমন্দির। মনোহর বাগিচা পেরিয়ে চন্দ্রোদয়ে মূর্তিতে শ্রীকৃষ্ণ আখ্যানও প্রদর্শিত হয়েছে। ৪-১৫ (শীতে ৪-৩০) মঙ্গল আরতি, ৭-১৫ দর্শন আরতি, ৮-০০ ভাগবৎ পাঠ, ১২-০০ ভোগ আরতি, ১৬-০০ ধূপ আরতি, ১৮-৩০ (শীতে ১৮-০০) সন্ধ্যা আরতি, ১৯-৩০ ভাগবৎ গীতা পাঠ, ২০-১৫য় শয়ন আরতি নানান ধর্মী প্রসাদও কিনতে মেলে চন্দ্রোদয় মন্দিরে। অদূরে বিষ্ণু প্রদর্শনী—ম্যাজিক আয়নায় কিছুভক্তিকার মূর্তি দেখে নিন নিজের। রাতে আলোর বর্ণালী সেও আর এক দ্রষ্টব্য।

আর রয়েছে ভক্তি সারঙ্গ গোবর্ধী মহারাজ মঠ; জন্মভিটা তথা শ্রীমন্দির; খোলভাঙ্গার ডাক্তা বা শ্রী বাস অঙ্গন; অশ্বৈত ভবন; ২৯ চুড়োর শ্রীচৈতন্য মঠ, বিপরীতে পুণ্ড্রপুকুর শ্যামকুণ্ড; শ্রীচৈতন্য মঠ, একই চত্বরে—রাধাকুণ্ড, গোবর্ধন, বৃন্দাবনের তমালবৃক্ষ, চৈতন্যলীলার প্রদর্শনশালায় মাসি ও মসৌর মন্দির। অদূরে বামনপুকুরে টাঁদকাজীর (মৌলানা সিরাজুদ্দিন) সমাধিপীঠ তথা ৫০০ বছরের গোলকটীপা ফুলগাছটিও ভক্তপ্রাণদের দেখে নেওয়া উচিত। জনশ্রুতি, এই টাঁদকাজি খোর বিরোধী ছিলেন শ্রীচৈতন্যর। নামকীর্তনও বন্ধ করেন কাজী। নিষেধাজ্ঞা অমান্য করে মশাল মিছিল তথা সংকীর্তন শোভাযাত্রা নিয়ে কাজীর বাড়ি মান শ্রীচৈতন্য।

যুক্তি-তর্কে পরাক্রান্ত হয়ে ভক্ত হন শ্রীচৈতন্যর কাজীসাহেব। সমাধি পীঠের ৬ কিমি দূরে লাজারের পেছনে আর এক অতীত বম্বাল সেনের ৪০০ ফুট লম্বা, ৩০ ফুট উচ্চ টিপিটিও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। খননে প্রাসাদপুরী আবিষ্কৃত হয়েছে বম্বাল সেনের। চন্দ্রোদয় ১৩-০০টায় বন্ধ হলেও অন্যান্য মন্দির ১২—১৬-০০টায় বন্ধ থাকে মায়াপুরে। চন্দ্রোদয় থেকে ৩ কিমির মধ্যে অবস্থান এদের। পায়ে পায়ে বা ২০-২৫ টাকার চুক্তিতে রিকশায় দেখে নেওয়া যায় মায়াপুর। শ্রীচৈতন্যর জন্মদিন ফাঙ্কুনী (দোল) পুর্ণিমা রমণীয় উৎসব।

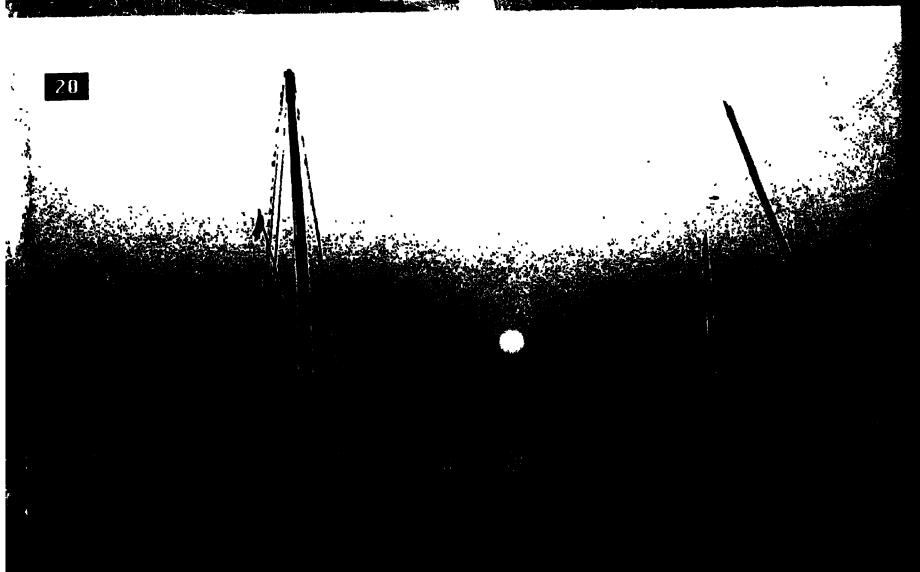
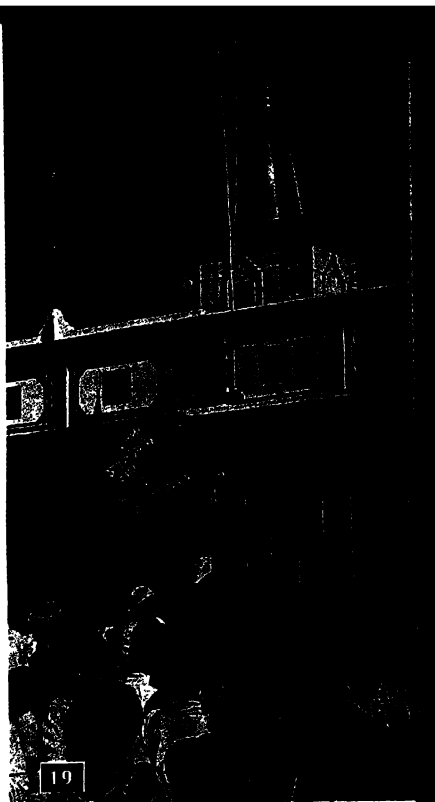
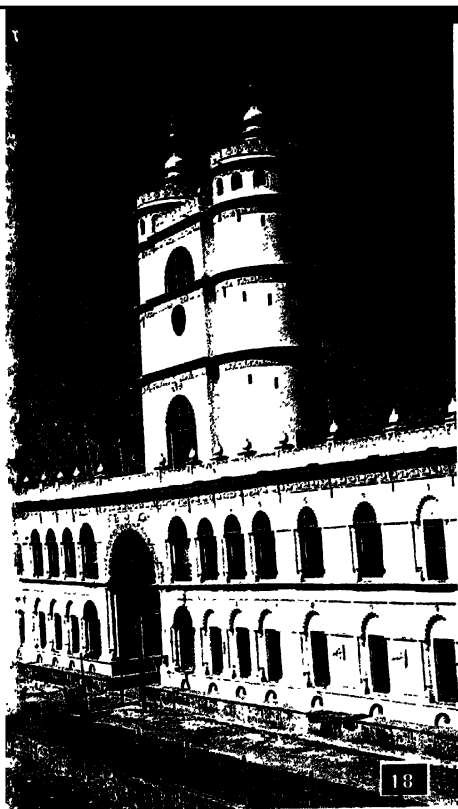


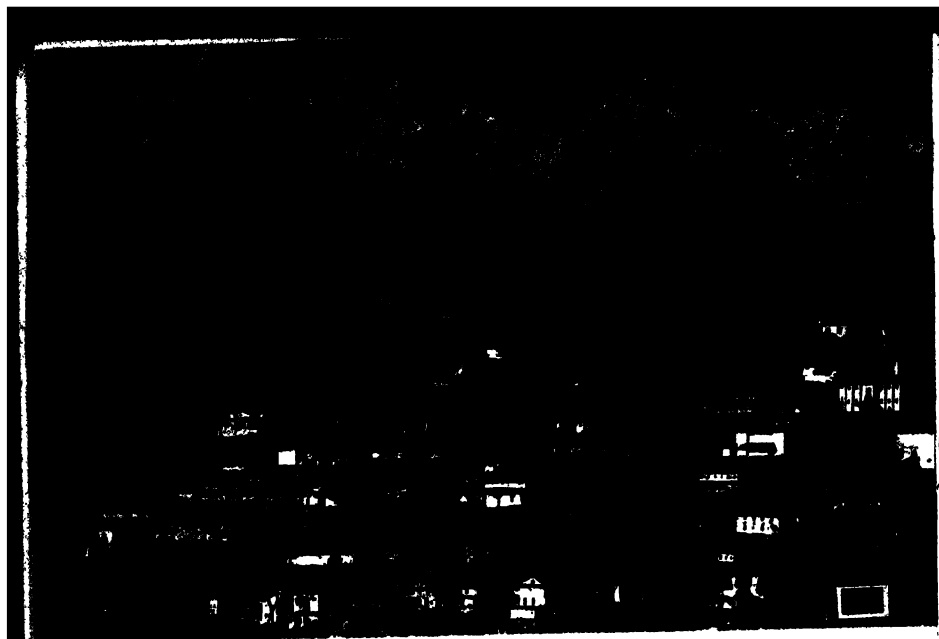
থাকারও নানান ব্যবস্থা ISKCON-এর International GH-এ শব্দ, চক্রে, গলা ও পদ্মচার বাড়িতে। চন্দ্রোদয়ের দক্ষিণে শব্দে—VIP, পদ্মে—লাইফ মেম্বর, চক্রে—সাধারণ, গলায়—ডব্লি প্রধায় থাকার ব্যবস্থা। রিসেপশন তথা থাকা ও আহারের বুকিং মেলে চক্রের ১১১ নম্বর ঘরে। ঘর ৭০ ১০০ ১৬৫ ২৬৫ A/C ৬০০, ধরমশালাও আছে এদের। আহার মেলে ক্যান্টিনে ব্রেক ফাস্ট ১২ মিল ২০ করে। জনতা প্রসাদও মেলে গেটের ডাইনে দুপুরে। ISKCON, Mayapur © (03472) 45250 Ext 211; কল বুকিং: 3C অ্যালবার্ট রোড, কল-১৭, © 2473757. আর আছে শ্রীচৈতন্য গোড়ায় মঠ, অকিঞ্চন কুটীর যাত্রী নিবাস, বিড়লা গেস্ট হাউস মায়াপুরে। এছাড়া আছে সাধারণ মানের নানান খাবার হোটেল চন্দ্রোদয়ের বিপরীতে ও ছলার ঘাটে। নবদ্বীপ পঞ্চায়েত সমিতিও হোটেল গড়েছে নীলাঙ্গল লজ, DCB ৪০ ডব্লি ১৫ ছলার ঘাটে।

চিক্রসূচী: দুই

১৮ ইমামবাড়া—হুগলী ছবি মোনা চৌধুরী ১৯ গঙ্গাসাগর
মোনা ছবি অশোক বসু ২০ রক্তমাখিত সুবাস্তি ছবি রাজীব
বসু ২১ ব্রহ্মচর্যম—শান্তিনিকেতন ছবি অশোক বসু
২২ কালিঙ্গা পুত্র ছবি সুশীল দত্ত ২৩ ইয়ুথফাং-এর
প্রতিকৃতি—কটীত ছবি সুশীল দত্ত ২৪ কটীত-এর পথে ছবি
সুশীল দত্ত ২৫ দুর্ধিলিক-ককনজঙ্গা ছবি সুশীল দত্ত
২৬ ইয়ুথফাং ছবি সুশীল দত্ত

কৃষ্ণনগর থেকে সরাসরি বাস বা মিনিবাসে মায়াপুর চলুন। ধুবুরিয়া হয়ে যাচ্ছে বাস, ঘট্টা দেড়েকের পথ কৃষ্ণনগর থেকে। আবার কৃষ্ণনগর থেকে বাসে নবদ্বীপ পৌছে বড়াল ঘাটে ফেরি নৌকায় ভাগীরথী পেরিয়েও চলা যেতে পারে ছলার ঘাট অর্থাৎ শ্রীধাম মায়াপুর। CSTC-র বাসও যাচ্ছে কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ৬-০০, ৭-০০ ও ১৪-০০টায় ছেড়ে বারাসাত/কৃষ্ণনগর হয়ে; ভাড়া ২৯.০০ টাকা। CSTC ফেরে ৬-০০, ১০-৩০ ও ১৫-০০টায় মায়াপুর থেকে। আর যাচ্ছে টেন—হাওড়া থেকে ব্যাটেল-কটোয়া-আজিমগঞ্জ-বারহারোয়া (BAK) দুপ লাইনের নবদ্বীপধাম; নদী পারাপারে মায়াপুর। EMU Local-ও চলছে ব্যাণ্ডেল থেকে নবদ্বীপধাম হয়ে কটোয়া। এছাড়া প্রতিদিন যাচ্ছে মায়াপুর দেখাতে এক রাত্ত থাকা ও প্রসাদ সহ ১৫০ কেবল





বাতারাত ৭৫ টাকায় ওসি অ্যান্ডার্ট রোড, কলকাতা-১৭, ৩ 2473757/6075/8242 থেকে ISKCON.

পক্ষী প্রেমিকরা ডিসেম্বর থেকে মার্চ মাসে মায়াপুর থেকে ২ কিমি জলখানে গঙ্গার চরে শঙ্করপুরে দেশ-দেশান্তর থেকে আসা হাজারো পরিযায়ী পাখির সন্ধ্যা দেখে নিতে পারেন। পাখির রকমভেদে রঙের বর্ণালীতে মাধুর্য বাড়ে। আবার হাওড়া-আজিমগঞ্জ প্যা. ৬-৩৫, হাওড়া-বারহারোয়া প্যা. ১৩-০৫ আর শিয়ালদহ থেকে ৭-৪৫এর আজিমগঞ্জ প্যাসেঞ্জারে যথাক্রমে ৯-৫০, ১৫-৪৮, ১১-০০টায় পূর্বস্থলী পৌঁছেও নৌকায় চলা যেতে পারে রিভার স্যাঙ্কচুয়ারি শঙ্করপুরে। দিনভর বেড়িয়ে কাটিয়ে পূর্বস্থলীতে ফেরার ট্রেন মেলে ১৯-০৩এ আজিমগঞ্জ প্যা., ১৭-৪৭এ রাজারসাঁউ প্যা।

নব্বীপ

ফাও খেলত গোরা বিষ্ণুপ্রিয়া সবে।

কুমকুম মারত দুই পৌছা সোহা ॥

ঘরে নদীর ঘাটে ফেরি নৌকা চেপে ভাগীরথী পেরিয়ে দীপভূমি মায়াপুর থেকে 'গৌর গঙ্গার দেশ' নব্বীপ পৌছান। জলস্রীর জলে জেগে ওঠা নব্বীপ—কালে কালে নব্বীপ। হিমতে, গঙ্গার পূর্ব পাড়ে ৪টি দ্বীপ (অন্ত, সীমন্ত, গোক্রম, মধ্য); আর পশ্চিম পাড়ে ৫টি দ্বীপ (কোল, ঋতু, মোদক্রম, জহু ও রুদ্র) এই ৯-এর সমন্বয়ে নব্বীপ। শৈব-বৌদ্ধ-শাক্ত-বৈষ্ণব ধর্মের সমন্বয়ও ঘটেছে নব্বীপে।

সরাসরি বাস আসছে গৌরাস সেতু পেরিয়ে কৃষ্ণনগর থেকে নব্বীপে। ঘন্টা খানেকের পথ, মুহূর্ত্ত বাসও চলে কৃষ্ণনগর থেকে নব্বীপ। বাস যাচ্ছে বর্ষমান, বীরভূম, পুরুলিয়া ছাড়াও পশ্চিম-বাংলার দিকে-দিগন্তের নব্বীপ থেকে। আবার কৃষ্ণনগর থেকে ন্যারো গেজের রেলের নব্বীপ ঘাটে পৌঁছে ফেরি পেরিয়েও চলা যেতে পারে নব্বীপ। ট্রেন যাচ্ছে শান্তিপুরেও নব্বীপ ঘাট থেকে।

ভাগীরথীর পাড়ে নব্বীপে ১৪৮৬ খ্রিস্টাব্দের দোল পূর্ণিমায় শ্রীচৈতন্যদেবের জন্ম। গঙ্গার প্রবাহ বদলে বিভ্রান্তি ঘটেছে জন্মভিটায়। তবে, শ্রীচৈতন্যের বিত্তীয়া পত্নী বিষ্ণুপ্রিয়া দেবীর জন্ম আজকের নব্বীপে। জন্মভিটায় বিভ্রান্তি ঘটলেও ঘরে ঘরে গৌরাস মহাপ্রভুর মন্দির। অন্যতম বৈষ্ণবতীর্থও নব্বীপ। বিষ্ণুপ্রিয়া দেবীর প্রতিষ্ঠিত দারুণ নির্মিত মহাপ্রভুর বিগ্রহ মন্দির, বুড়ো শিব, হরিসভা, পোড়া-মাতলা, মহাপ্রভু মন্দির, অদ্বৈতপ্রভু মন্দির, জগাই-মাধাই, শতীমাতা-বিষ্ণু-প্রিয়ার জন্মভিটায় নিত্যানন্দ প্রভুর মন্দির, বড় আখড়া, শ্রীশ্রীগোবিন্দ জিউ, সোনার গৌরাস, বড়ভুজ মহাপ্রভু, শ্রীবাস অঙ্গন পাড়ার সোনার মূল গৌরাস, সমাজবাড়ি, বড়রাধেশ্যাম, রাধাবাজারে শ্রীসারস্বত গৌড়ীয় আসন, স্বেদানন্দ গৌড়ীয় মঠ, মণিপুর পাড়ায় সোনার গৌরাস, বঙ্গবাণীতে শ্রীঅরবিন্দ আশ্রম, বিতর্কিত শ্রীচৈতন্যের জন্মভিটা ছাড়াও মন্দির রয়েছে নানান নব্বীপে। গৌরমুন্ডার রেকর্ড মেলে ১৮৩টি মন্দির নব্বীপে। দশনীও লামে প্রতিষ্ঠা মন্দিরে। এখানে ডাক্তারের বিয়াম নেই—চরিশ

অথব সঙ্গী: ৯৭-১৮/৭

ঘন্টাই চলে এই দেবভজন। অতীতে সংস্কৃত ও বৈষ্ণব দর্শনের পীঠস্থানও ছিল এই নব্বীপ। লক্ষ্মণ সেন গৌড় থেকে রাজ্যপাট তুলে রাজধানী গড়েন নব্বীপে। ১১ ও ১২ শতকে বাংলার রাজধানীও ছিল নব্বীপে।

নব্বীপের আর এক আকর্ষণ তার রাস উৎসব। নব্বীপ ও শান্তিপুরের রাস মেলা সে তো বঙ্গ সংস্কৃতির অঙ্গ। কার্তিক-অগ্রহায়ণ মাসের রাসে মূর্তি পূজায় বেচিত্তা আছে নব্বীপে। রাসকালে শাক্তমতে পূজার্না সেও আর এক বৈশিষ্ট্য। নানানরূপে বিশালাকার শাক্ত দেবী দুর্গা, কালী ছাড়াও অন্যান্য দেবদেবীও পূজিত হচ্ছেন রাসে। যোগনাথ-তলার গৌরাসী, তেতড়িপাড়ার বড় শ্যামা, বঙ্গপাড়ার নীল বিদ্যাবাসিনী, ব্যাদরাপাড়ার শবশিবা, আমড়াতলার মহিষ-মর্দিনী, রামসীতাপাড়ার প্রাচীনতমা মহিষমর্দিনী ও বামা-কালী, চারিচারাপাড়ার ভদ্রকালী, দশপাণিতলার মুক্তকেশী, ফাঁসিতলাঘাটের কৃষ্ণকালী, উডবান রোডের কমলেকামিনী, ব্যানার্জিপাড়ার দেবীগোষ্ঠ, মহাপ্রভুপাড়ার গৌসাইগঙ্গা; আর বৈষ্ণবী রাস রাধাকৃষ্ণের মিলন—শ্রীবাস অঙ্গনের কাছে সমাজবাড়ি, হরিসভা, নতুন আখড়া, বড় আখড়া, রাসলীলা মঠ উল্লেখ্য। নিরঞ্জন শোভাযাত্রা বের হয় পরদিন দুপুর থেকে সন্ধ্যায় পোড়ামাতলা রোড ধরে। নাচ-গান-বাজনায় মুখরিত ভাসান মিছিলে খেমটা নাচও অংশ নেয় নব্বীপে। দূর-দুরান্ত থেকে দর্শক আসেন ভাঙা রাসের মিছিলে দেখতে। নব্বীপের আর এক প্রাণটি তার চন্দ্রচূড় দই-এর জন্য। পায়ে পায়ে বা টাকা পনেরোর চুক্তিতে রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় নব্বীপের মন্দিররাজি।



ধাকার দরকার হয় না—মন্দির দেখে নব্বীপ ধাম থেকে BAK লুপ লাইনে কাটোয়া/ব্যাণ্ডেল হয়ে বা কৃষ্ণনগর হয়ে ঘরপানে ফেরা উচিত হবে। তবে হোটেলও আছে—*নদীয়া লজ, বৈশাখী লজ, গ্যাস্টেল ভিউ লজ* ৩ 40607, *নব্বীপ লজ, হোটেল ইন্ডিজিৎ* ভাগীরথীর পাড়ে বড়াল ঘাটে। এদের কাছে কমন বাথের ঘর ৬০-৮৫ টাকায় মেলে। আর বাথ সংলগ্ন ঘর মেলে রাধাবাজারের *লক্ষ্মী বোর্ডিং* ৩ 40264-এ DAB ১৫০। আর আছে নেতাঙ্গী সুভাষ রোডে *ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ*; রাধাবাজারে *অখিনী দাস*, শ্রীবাস অঙ্গন পাড়ায় *সমাজবাড়ি* ছাড়াও নানান ধরমশালা। তবুও যেন নব্বীপপথ রেল স্টেশনের কাছে বাস স্ট্যাণ্ডে *Nabadwip Municipal Tourist Lodge* টি থাকার পক্ষে শ্রেয়।

ফুলিয়া

গ্রামস্বর ফুলিয়া জগতে বাখানি।

দক্ষিণে পশ্চিমে বহে গঙ্গা তরলিনী ॥

কৃষ্ণনগর থেকে রানাঘাটের বাসে কুণ্ডিবাসের জন্মস্থান ফুলিয়াপাড়ায় চলুন। দূরত্ব ২৬ কিমি, আর কলকাতা থেকে ৯২ কিমি। শান্তিপুর হয়ে বাস যাচ্ছে, মুহূর্ত্ত বাস চলে NH-34 ধরে। জাতীয় সড়কেই শ্রীকানাই দেউড়ি-কৃত্ত ভোরণ পেরিয়ে ১.১ কিমি যেতে কুণ্ডিবাসের (১৪৪০এ জন্ম)

বাস্তুশিল্পীরা লাইব্রেরি তথা কৃত্তিবাস তথ্যকেন্দ্রে বসেছে। লাগোয়া হরিদাস ঠাকুরের সাধনপীঠ ভজনস্থলী মন্দির। মুসলমান হয়ে বৈষ্ণবীয় ক্রিয়াকর্মে লিপ্ত থাকার অপরাধে প্রাদেশিক শাসকের বিচারে বাইশ বাজারে বেড়াবাচত সয়েও বীতরমত প্রার্থনা মাগেন—*এসব জীবেরে প্রভু করহ প্রসাদ। মোরে দোহে নহ এ সবার অপরাধ॥* তরুকুল শোভিত সাধনপীঠে মন্দিরও হয়েছে হরিদাসের। সামনে দিয়ে বয়ে যেত গঙ্গা সেকালে। চলার পথেই খেলার মাঠে বেদী করে বেড়া ঐতিহাসিক বটবৃক্ষ (বিতর্কিত)—যার মিষ্টি ছায়ায় বসে কবি বালায় *রামায়ণ* লেখেন। প্রতি মাঘ মাসের শেষ রবিবার কৃত্তিবাস জমোৎসব সাড়ম্বরে পালিত হচ্ছে আজও। আর হয়েছে রাধাগোবিন্দর মন্দির চলার পথেই।

পাশেই বাংলার টাঙ্গাইল শাড়ি তৈরি হচ্ছে ফুলিয়া তাঁত-কেন্দ্রে অর্থাৎ ফুলিয়া গ্রামে। তাঁতিদের হাতে তৈরি দেখা ও কেন্দ্র দুইয়েরই ব্যবস্থা আছে। ফুলিয়া থেকে বাসে ১০ কিমি দূরের রানাঘাট বা শান্তিপুর হয়ে বা কৃষ্ণনগর হয়ে গৃহপানে ফিরুন। তবে, উচিত হবে এই পরিক্রমায় দুটি রাত কৃষ্ণনগরে অবস্থান করে বেথুয়াডহরী, ফুলিয়া, শান্তিপুর, কৃষ্ণনগর ও নবদ্বীপ বেড়িয়ে নেওয়া। অতীতসাহারী বিখ্যাত যুগলকিশোর মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন আড়ংঘাটায়।

চলার পথে চুর্ণী নদীর তীরে দস্যু সর্পার রণার ঘাঁটি অর্থাৎ রাশাঘাট পৌছে পান্ডয়ার স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। রণার প্রতিষ্ঠিত দেবী সিদ্ধেশ্বরীও রয়েছেন রাশাঘাটে।

শান্তিপুর

কৃষ্ণনগর থেকে ২০ কিমি দূরে শান্তিপুর। মুহুর্ত বাস যাচ্ছে NH-34 ধরে কৃষ্ণনগর থেকে শান্তিপুরে। কৃষ্ণনগর-রানাঘাট বাসও যাচ্ছে শান্তিপুর, ফুলিয়া হয়ে। ফুলিয়ার দূরত্ব ১৬, রানাঘাট ১৬, কলকাতা ১০১ আর কালনা ঘাটের দূরত্ব ৯ কিমি। দিনভর লোকাল ট্রেনও যাচ্ছে শিয়ালদহ থেকে রানাঘাট/ফুলিয়া হয়ে শান্তিপুরে। ঘন্টা আড়াইয়ের পথ। বাসও যাচ্ছে NBSTC, SBSTC, CSTC-র কলকাতা থেকে বহরমপুর, হাজারদুয়ারী, কৃষ্ণনগর, পলাশী ছাড়াও উত্তরবাংলার নানান দিকের NH-34 ধরে ফুলিয়া, শান্তিপুর হয়ে। আর শান্তিপুর থেকে নারো গেজের রেল যাচ্ছে ১৯ কিমি দূরের নবদ্বীপ ঘাটে। ভাগীরথী পারে ময়ূরপুর।

শান্তমুনির বাসস্থান শান্তপুর বা শান্তিপুর। নবদ্বীপ, ময়ূরপুরের মত শান্তিপুরও বৈষ্ণব ধর্মের আর এক পীঠস্থান। ১৪৩৪ খ্রি শ্রীহট্টের নবগ্রামে কমলাক্ষর জন্ম। বেদচতুষ্টয় অধ্যয়ন করে বেদ-পঞ্চানন বা অষ্টোত্ত আচার্য হন কমলাক্ষ। সেহত্যাগ ১২৫ বছরে আচার্যের। আচার্যের ৫২ বছর বয়সে কটকের সাধনায় আকৃষ্ট হয়ে মহাপ্রভু শ্রীকৃষ্ণচৈতন্য ধরায় নামেম নবদ্বীপে। গৌরান্দ, নিত্যানন্দ ও অষ্টোত্তাচার্যের মহামিলনেও হটে বাঁকলা গ্রামের শ্রীপাটে। এমনকি সাধক বিজয়কৃষ্ণ গোস্বামী তথা জটীয়া বাবার জন্মও এই শান্তিপুরের অষ্টমত বংশে। শ্যামচাঁদ, গোবিন্দচাঁদ, জলেশ্বর ছাড়াও মন্দির আছে নানান শান্তিপুরে। তাঁতবস্ত্রের জন্যও প্রসিদ্ধি

আছে শান্তিপুরের। শান্তিপুরের আর এক আকর্ষণ কার্তিক পূর্ণিমায় (নবদ্বীপের পরদিন) রাস উৎসব। ৪ দিন ধরে চলে উৎসব, ৩য় রাতে ভাঙা রাসের বর্ণাঢ্য মিছিলের প্রশস্তি আজ ভারত ছাড়িয়ে সারা বিশ্ব জুড়ে। নানান পৌরাণিক আখ্যান বর্ণিত মৃৎ-মূর্তি, সত্তরগুণী নানান অবতার, ১০৮ ঢাকির নাচ, ময়ূরপঙ্খীতে বৈষ্ণব-বৈষ্ণবী, সুসজ্জিত নানান হাওদা, অভিনব আলোকসজ্জা মাতোয়ারা করে তোলে শান্তিপুরকে ঐ রাতে। কুমারী মেয়েরা দেবীর সঙ্গে সজ্জিত হয়ে আসন নেয় হাওদায়। অভিনবত্ব আছে অন্যতম আকর্ষণীয় রহিরাঙ্গা হাওদার। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *Municipal GH-*এ শান্তিপুরে। শান্তিপুরের নিখুঁতিও যথেষ্ট সুবিদিত।

পলাশী

লাখে লাখে পলাশের রক্তিম আঙনে সমগ্র জাতির ললাটে লেপে দেয় মসি পলাশী। কলকাতা থেকে NH-34 ধরে ১৭২ কিমি উত্তরে আর বহরমপুরের ৩৯ কিমি দক্ষিণে নদীয়া জেলায় পলাশী। বামহাতি পথে ২ কিমি যেতে ঐতিহাসিক যুদ্ধক্ষেত্র। অস্ত্র যায় বাংলার স্বাধীনতা সূর্য—ক্লাইভের সাহেব নিরজাফরের গোপন আঁতাতে ফরাসি সাহায্যপুষ্ট সিরাজের পরাজয়ে (২৩শে জুন, বৃহস্পতিবার) ১৭৫৭তে। রানী ভবানীর (লাখে) আমবাগান আজ আর নেই, শেষ আমগাছটির শুকনো গুড়ি ১৮৭৯তে পলাশী বিজয়ের স্মারকরূপে বিলতে যায়। পলাশও ফোটে না, তবে নির্বাক মুখে ১৫ মি উঁচু ব্রিটিশের গড়া বিজয় মিনারটি রোমন্থন করায় ইতিহাসের সে-গ্রানি।

শিয়ালদহ-লালগোলা ট্রেন যাচ্ছে পলাশী হয়ে। আর যাচ্ছে CSTC-র বাস শহীদ মিনার থেকে ৮-০০টায় ছেড়ে ৪; ঘন্টায় পলাশী, ফেরে ১৩-০০টায় পলাশী ছেড়ে কলকাতায়। ভাড়া ৩১। এছাড়াও বহরমপুর ও উত্তর বাংলার বাসও যাচ্ছে NH-34 ধরে পলাশীপাড়া হয়ে। থাকার জন্য *PWD DB* আছে মিনারের কাছে।

মুর্শিদাবাদ

জেলা মুর্শিদাবাদ—নবাবদের রাজ্যপাট লালবাগ আর ব্রিটিশের রাজধানী শহর বহরমপুর। মহম্মদী বেগের তরোয়ালের কোপে নিহত সিরাজের আর্ডনাদ আজও ভারাক্রান্ত করে তোলে বাংলা-বিহার-ওড়িশার রাজধানী মুর্শিদাবাদের আকাশ-বাতাস।

জনকর্তৃ বৈষ্ণব ধিমতে নানকপন্থী সম্মানী মুকসুদন দাসের নামানুসারে মুকসুদাবাদ নামকরণ। গোঁড়েশ্বর হুসেন শাহ'র অসুখ সারিয়ে ভেটপান বিপুল ভূসম্পত্তি—সেই থেকে নাম। ভিন্নমতে বলিচ-পুত্র মুকসুদ খাঁন থেকে মুকসুদাবাদ। আর আকবরনামায় মেলে বাংলার শাসক সারোদ খাঁ'র ভাই মুকসুদ খাঁর নাম থেকে নামকরণ। ১৬০০ খ্রিস্টাব্দে মোগল সেনাপতি মানসিংহের হাতে পাঠানপন্থি পরাস্ত হতে রাজমহলে রাজধানী বসে বাংলার। তবে জাহাঙ্গীরের কালে

ঢাকার রাজধানী স্থানান্তরিত হলেও দরিদ্র ব্রাহ্মণ বংশে জাত ইরান দেশীয় বণিকের কাছে লালিত স্বীয় বুদ্ধিবৃত্তির বাংলার সেওয়ান হয়ে মুর্শিদকুলী খাঁ ১৭০৪ খ্রিস্টাব্দে সুবা বাংলার রাজধানী ঢাকা থেকে সরিয়ে এনে ভাগীরথীর পশ্চিম তীরে ঢাকা (পূর্ববঙ্গীয় মুখে ঢাছা) পাড়া বা মহল্লা গড়ে পত্তন করেন। কালে কালে ডাছা পাড়া। আরও পরে রাজনৈতিক-বাণিজ্যিক-সাংস্কৃতিক কর্মকাণ্ড ভাগীরথী পেরিয়ে পশ্চিম থেকে পূর্বে মুকুন্দপাশে এসে আশ্রিত হয়। নামান্তরও ঘটে—নিজের নামে নাম করেন শহরের মুর্শিদাবাদ। বাদশাহ ঔরঙ্গজেবের কাছ থেকে দেওয়ানির সঙ্গে খেতাবও মেলে—মুর্শিদকুলী মতিমন্ডল মুকুন্দ আলাউদ্দৌলা জাফর খাঁ নাসিরী নাসির জঙ্গ। তার ৪০ স্তম্ভের উপর *চোহল সেতুন* কেল্লা দরবার তথা প্রাসাদটি আজ লুপ্ত। আর ১৭৫৩র ৯ই এপ্রিল আলিবর্দী খাঁর মৃত্যু হতে বাংলা-বিহার-ওড়িশার মসনদে বসেন সিরাজ-উদ্-দৌল্লা।

কলকাতা থেকে ১৯৭ কিমি দূরে বাংলার শেষ স্বাধীন নবাবের স্মৃতি বিজড়িত মুর্শিদাবাদের পর্যটক আকর্ষণ আজ দুর্নিবার। এই মুর্শিদাবাদ থেকে কলকাতামুখী ৫৩ কিমি যেতে পলাশীর আশবাগানে মিরজাফরের শতভায় বাংলার শেষ স্বাধীন নবাব সিরাজের পরাজয় ঘটে ছুন ২৩, ১৭৫৭য়। সিরাজের পতনে মিরজাফর সিংহাসনে বসেন। তবে, মধুর নয় নবাবীজীবন। ইংরেজ থেকে নিজেকে মুক্ত করার প্রয়াস পান মিরজাফর। ইংরেজও মিরজাফরকে হঠিয়ে জামাতা মীরকাশিমকে মসনদে বসান। মীরকাশিম রাজধানী স্থানান্তর ঘটান মুর্শিদাবাদ থেকে মুসেরে। স্বাধীনচেতা নবাবের পরাজয় ঘটে ১৭৬৩ খ্রিস্টাব্দের ১লা আগস্ট মুর্শিদাবাদের ৩২ কিমি উত্তরে সূতীর কাছে গিরিয়ার প্রান্তরে। গিরিয়ায় হেরে উধুয়া নালায় শিবির গড়ে নবাবী ফৌজ। অবশেষে ৫ই সেপ্টেম্বর (১৭৬৩) প্রাতে ইংরেজ অতর্কিত হানায় জয় করে নেয় নবাবী শিবির। আবার নবাব মিরজাফর—তবে, কায়ম হয় ব্রিটিশরাজ বাংলায়। ভারতে ব্রিটিশরাজের প্রথম রাজধানীও গড়ে ওঠে মুর্শিদাবাদের ১৪ কিমি দূরে বহরমপুরে। নবাবদের আর এক কুষ্টি—আশ্রকাননে ১০৮ রকমের আম সৃষ্টি। তবে সেও আজ লোপ পেয়েছে।



শিয়ালদহ থেকে লালগোলা প্যাসেঞ্জার ঘণ্টা পাঁচেকের পথে বহরমপুর। দ্রুততম ভাগীরথী এক্স ১৮-২০এ শিয়ালদহ ছেড়ে ২২-২৩এ বহরমপুর কোট, ২২-৩৭এ মুর্শিদাবাদ পৌঁছে লালগোলা যাচ্ছে ২৩-২৫এ। ভাগীরথী ফেরে ৫-৩৫এ লালগোলা, ৬-২৭এ বহরমপুর ছেড়ে ১০-২৫এ শিয়ালদহে। এছাড়া যাচ্ছে ৪-০০, ৭-৫৫, ১২-২০, ১৪-১০, ১৭-২৫, ২২-৫৫এ শিয়ালদহ ছেড়ে বহরমপুর হয়ে লালগোলা প্যাসেঞ্জার।



আর, বাস যাচ্ছে শহীদ মিনার থেকে ৫২ ঘটায় CSTC-র ৬-৩০, ৬-৪৫, ৭-০০, ৮-০০, ৮-৩০, ৯-১৫, ১০-০০, ১০-৩০, ১১-১৫, ১২-০০, ১৩-০০, ১৩-৪৫, ১৫-০০, ১৬-৩০টায়। ভাড়া ৩২। NBSTC যাচ্ছে

৬-৪৫, ১২-০০ ছাড়াও উত্তরবঙ্গমুখী নানান বাস। আর প্রাইভেট বাস যাচ্ছে সকাল ৪-২০ থেকে ১৭-৩০এ প্রতি ২৫ মিনিট অন্তর ছাড়াও ২২-০০ ও ২২-৩০টায়, এদের ভাড়া ৪৫। আর যাচ্ছে SBSTC-র দুর্গাপুর-লালগোলা, দুর্গাপুর-শিকারপুর, দুর্গাপুর-বহরমপুর ছাড়াও উত্তরবঙ্গমুখী নানান বাস NBSTC, CSTC, SBSTC ও প্রাইভেট বহরমপুর হয়ে। ৩২ ঘটায় মালদহ, ৭ ঘটায় শিলিগুড়ি, ৪ ঘটায় শান্তিনিকেতন যাচ্ছে বাস বহরমপুর থেকে। আর প্রস্তুতি চলছে জলপথে দ্রুতগামী ক্যাটাম্যারান সার্ভিসে কলকাতা থেকে বহরমপুরের সংযোগ গড়ার। রানাঘাট, শান্তিপুর থেকে বহরমপুর পৌঁছাবে ৪২ ঘটায় ক্যাটাম্যারান।

Calcutta-Malda-Siliguri-Guwahati NH-34

| | | | |
|-----|----|------------------------|--------|
| 0 | KM | Calcutta | |
| 28 | " | Barasat | |
| 82 | " | Ranaghat | |
| 92 | " | Fulia | |
| 101 | " | Santipur | |
| 116 | " | Krishnagar | |
| 148 | " | Bethuadahari | |
| 172 | " | Palasi | |
| 211 | " | Baharampur | |
| | | To Murshidabad | 14 km |
| 245 | " | Morgram | |
| | | To Kiritewari | 19 km |
| | | " Baranagar | 25 km |
| 314 | " | Farakka | |
| 349 | " | Malda | |
| | | To Gour | 21 km |
| 369 | " | Adina | |
| 425 | " | Raiganj | |
| 474 | " | Dalkhola | |
| 533 | " | Islampur | |
| 597 | " | Bagdogra | |
| 606 | " | Siliguri | |
| | | To Mirik | 52 km |
| | | " Darjeeling | 80 km |
| | | " Kalimpong | 69 km |
| | | " Gangtok | 114 km |
| | | " Kathmandu | 550 km |
| 0 | " | Siliguri | |
| 44 | " | Jalpaiguri | |
| 55 | " | Maynaguri | |
| | | To Garumara Sanctuary | 33 km |
| 64 | " | Jaldhaka | |
| 97 | " | Birpara | |
| 112 | " | Madarihat | |
| | | To Jaldapara W.L.S. | 7 km |
| | | " Phuntsholling | 26 km |
| 120 | " | Torsha | |
| 316 | " | Manas River | |
| 343 | " | Barpeta | |
| | | To Manas National Park | 40 km |
| 411 | " | Guwahati | |
| | | To Kaziranga N. P. | 217 km |
| | | " Shillong | 103 km |
| | | " Kohima | 342 km |
| | | " Aizal | 538 km |
| | | " Imphal | 487 km |
| | | " Itanagar | 420 km |



থাকার জন্য বহরমপুর কোর্ট রেল স্টেশন থেকে রিকশায় ১৫ মিনিটের পথে WBTD-র Tourist L আছে বহরমপুরে, DAB ২২৫ A/c D ৪০০, ৪৭৫ চার বেডের ঘরে ডব্লি প্রথায় বেড ৬০, একটি মিল বাথডায়ামলক; অব্: Manager, Berhampur-742101, ☎ (03482) 50439 বা Tourist Centre, 3/2, BBD Bag-E, Cal-1, ☎ 2485917. বিপরীতে Modern H, 6 Krishnanath Rd, ☎ 20220, SCB ৪০ SAB ৬০ DCB ৬৫ DAB ৮০-১২৫ ডব্লি ৩০; স্টেশনমুখী Ideal L, 30 K N Rd, SCB ৩০ SAB ৪০ DCB ৪৫ DAB ৬৫-৮৫; H Samrat, NH-34, Panchanantala, ☎ 21147, SAB ১২০-২০০ DAB ১৫০-২৭৫ A/c D ৩৭৫-৫০০; Baharampur L, 5 R N Tagore Rd, Laldighi, ☎ 52952, SAB ৬০-১০০ DAB ১২৬-১৪৭; একই মালিকানায় লাগোয়া Baharampur L Pvt Ltd, ☎ 21830, SAB ১২৫ DAB ১৭৫-২৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; গার্শেই Laldighi H, S ৪৫ D ৮০; Nivedita L, Near Rly Stn, SAB ৪৫ DAB ৮৫। টুরিস্ট লজের বিপরীতে কাদাই বাজারে কলনা সিনেমাকে ঘিরে—Basanta Niwas, Munul H; অদূরে খাগড়া বাজারে Travellers' L এসের রোড S ৪০-৬০ D ৮০-১২৫। H Mayur, 92/8 Pilkhana Rd, ☎ 21276, SAB ৮৫ DAB ১৫০; H Sagar, RJB 1½, SCB ৪৫ SAB ৬০ DCB ৮৫ DAB ১২৫; Manindur Abasik H, Stn Rd, SAB ৩০-৪৫ DAB ৬৫-১০০; H Prince, 30 K N Rd, SCB ৪৫ SAB ৬৫ DCB ৮৫ DAB ১০০-১২৫ ডব্লি ২৫; Mulan H, 49/1 R M Sen Rd, DCB ৬০ DAB ৮৫-১২০; একই পথে Pullav H, R2B1, SCB ৩০ DCB ৬০ DAB ৮৫; Basanta Niwas, SCB ৪০ DCB ৮০; H Ashirbad, 77 Vivekananda Rd, ☎ 55214। তবুও যেন থাকা ও আহ্বারের WBTD-র Tourist Lটি আজও রমণীয়। Modern H, H Samrat, Baharampur L-ত্রয়ীও থাকার পক্ষে ভালই।

আর আছে হাজারদুয়ারীর বিপরীতে থাকা ও আহ্বারের ব্যবস্থা নিয়ে—H Manjusha, Lalbagh, Murshidabad-742149, ☎ (03483) 55321, SAB ১০০ DAB ১২৫-২০০; H Anurag, DCB ৫০ ৬০ ৭০ DAB ৭৫ ১০০; H Yatrik, H Omrao, H Historical ছাড়াও পশ্চিমবঙ্গ সরকারের যুগ্ম সার্ভিসের Youth Hostel, এছাড়া PWD Rest Shed, নতুন ও পুরাতন ২টি Circuit Lodgeও আছে ব্যারাককে ঘিরে বহরমপুরে। Municipal Tourist Lodgeও হয়েছে opp SBI হাজারদুয়ারীতে। আর আছে রেলের রিটায়ারিং রুম—বহরমপুরকোর্ট ও মূর্শিাবাদে।

বহরমপুর কোর্ট থেকে ১½, বাস স্ট্যান্ড থেকে ২ কিমি পশ্চিমে আর খাগড়া ঘাট রোড স্টেশনের ৩ কিমি পূর্ব-দক্ষিণে ব্যারাকের মাঠ। জাতীয় সড়ক 34 যাচ্ছে ব্যারাকের মাঠের বুক বেয়ে। ব্রিটিশের হাতে গড়ে ওঠে সেনানিবাস ১৭৬৭তে; রমরমাও সেই থেকে ব্যারাকের মাঠকে ঘিরে বহরমপুরে। নয়নলোভন ঝিঙ্ক-সুমধুর পরিবেশে বৃক্ষরাজি হাতা ধরেছে সারি করে দাঁড়িয়ে। এমনটি আর খুঁজে পাওয়া যায় দ্বিতীয় কোন জেলাসদরে। কোর্ট-কাহারি, জেল, হাসপাতাল ছাড়াও নানান সরকারি দপ্তরও বসেছে ব্রিটিশের গড়া অস্ত্রীতের ব্রিটিশ সেনানিবাসের বাড়ি-ঘরে ব্যারাকের

মাঠকে ঘিরে। এমনকি আজকের সার্কিট হাউসে লর্ড ক্লাইভ ও ওয়ারেন হেস্টিংসও বাস করে গেছেন সেকালে। আবার ১৮৫৭র ২৬শে ফেব্রুয়ারি প্রথম স্বাধীনতা সংগ্রাম অর্থাৎ সিপাহী বিদ্রোহে সবার আগে গর্জ্জে ওঠে এই ব্যারাকের মাঠ। সেই স্মৃতিতে শহীদ স্মারক হয়েছে শতবর্ষ পরে ১৯৫৭র ১৫ই আগস্ট ব্যারাকের মাঠের উত্তর-পশ্চিমে। আরও উত্তরে টুরিস্ট লজ আর দক্ষিণে সেনানিবাসের প্রধান বাজার গোরাবাজার।

মূর্শিাবাদ রেল স্টেশন থেকে ২½আর টুরিস্ট লজ থেকে ১৪ কিমি দূরে শহরের মধ্যাংশ লালবাগে ভাগীরথীর উত্তরপাড়ে অতীতের নিজামত কেম্ভার মূর্শিাবাদের অন্যতম আকর্ষণ হাজারদুয়ারী। ১৮-২৯এর ২৫শে আগস্ট ভিত্তি স্থাপন করে ১৮ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৮৩৭ সালে তদানীন্তন নবাব নাজিম হুমায়ুন জাঁর বাসের জন্য ব্রিটিশ স্থপতি স্যার ডানকান ম্যাকলিয়ডের নকশায় ব্রিটিশরাজ তৈরি করান ইতালিয়ান শৈলীতে ৮০ ফুট উঁচু ৪২৫x২০০ ফুটের ত্রিতলিকা গুচ্ছওয়ালা এই প্রাসাদ। ৮টি গ্যালারি সহ ১১৪ ঘরের এই প্রাসাদের ১০০০টি দরজা থেকে নাম হয়েছে হাজারদুয়ারী। তবে, প্রকৃত দরজার সংখ্যা ৯০০, বাকি ১০০ কৃত্রিম। গথিক শৈলীর অন্যতম নিদর্শন হাজারদুয়ারী নবাব প্রাসাদনিয়ে খ্যাত হলেও সেদিনের নবাবকিন্তু বয়স্কত্ব করেন বাসগৃহ রূপে একে। তবে, দরবারে বসতেন নবাব রূপোর সিংহাসনে মহারানী ভিক্টোরিয়ার পুরস্কার দেওয়া ১৬১টি ঝাড়যুক্ত বিশাল ঝাড়বাতির নিচে দ্বিতলে। মন্ত্রশাক্ষের লুকোচুরি আয়না, মেহগনি কাঠের আসবাবপত্র, আঁট গ্যালারিতে দেশ-বিদেশ থেকে সংগ্রহ করা বিশ্বখ্যাত মার্শাল, টিশিয়ান, র্যাফেল, ভ্যান ডাইক ছাড়াও নানান শিল্পীর আঁকা চার শতাধিক অয়েল পেন্টিং, মর্মর মূর্তি, ফুলদানি, রকমারি ঘড়ির সংগ্রহ সে যুগে অনন্য করে তোলে একে। সুবে বাংলার নবাবী আমলের ঐতিহাসিক নিদর্শন ও পুঁথিপত্রের অমূল্য সংগ্রহশালা—মূর্শিাবাদের অন্যতম আকর্ষণ হাজারদুয়ারীর সংস্কারও হয়েছে ১৯৯১এ। নবাবদের ব্যবহৃত জিনিসপত্রের প্রদর্শনী দেখতে পর্যটক আসেন দেশ-দেশান্তর থেকে। চাইনিজ পোসেলিন প্লেটগুলিও অভিনবত্বে ভরা। নবাবরা যেতেন এই প্লেটে। খাবারে বিশ্ব থাকলে প্লেটটি ফেটে যাবে। মূর্শিদকুলি খাঁ থেকে সর্বশেষ নবাব—তৈলচিহ্নে বংশ-পরম্পরা তুলে ধরা হয়েছে। এছাড়া নিচুতলার অস্ত্রাগারে ২৭০০ অস্ত্রের সস্তার, এমনকি সিরাজকে খুন করা মহম্মদী বেগের ছুরি, সিরাজ ও আলিবর্দীর ব্যবহৃত তরোয়াল আকর্ষণ বাড়িয়েছে। দ্বিতলে ইংরেজি ও পার্শি ভাষায় লেখা লাইব্রেরির ১০৭৯২টি বই, ৩৭৯১টি পাণ্ডুলিপি সংগ্রহও উল্লেখ্য। সোনা দিয়ে মোড়া কোরাণ শরীফ, আবুল ফজল লিখিত আইন-ই-আকবরীর পাণ্ডুলিপি, নবাবী চিঠিপত্র উল্লেখ্য। ১০—১৬-৩০টায় খোলা; প্রতি শুক্র ও ইংরেজি মাসের দ্বিতীয় বুধবার বন্ধ থাকে হাজারদুয়ারী। দর্শনী ৫০ পয়সা।

আর রয়েছে প্রাসাদেরই সামনে—কারবালা থেকে আনা মাটিতে সিরাজের তৈরি মেদিনা মসজিদ, ঘড়িঘর। আর আছে ১৬৪৭এ জনার্দন কর্মকারের তৈরি ১৮ ফুট দীর্ঘ, ১৬৮৮০ পাউন্ডের কামান। ১৮ সের বারুদ লাগত একবার তোপ দাগতে। জনশ্রুতি, একদা কামানের বিকট আওয়াজে গর্বভরী নারীর সন্তান প্রসব হতে নাম হয় এর বাজাওয়ালি কামান। আর চত্বর পেরিয়ে প্রাসাদের বিপরীতে বড় ইমামবাড়া। সিরাজের তৈরি দারুণ ইমামবাড়াটি ১৮৪৬এ ভস্মীভূত হতে ৭ লক্ষাধিক টাকায় ১৮৪৮এ তৈরি করেন বাংলার বৃহত্তম (২০৭ মি) এই ইমামবাড়া নবাব নাজিম মনসুর আলি। এর মাঝের মেদিনা অংশ খুবই সুন্দর। চীনা ও ওলন্দাজি রঙিন টালিতে দেওয়াল অলঙ্কৃত। আর পশ্চিমের বিশালাকার কক্ষে হজরত মহম্মদের কবরের নানান রেলিকিও দর্শনীয়। তেমনই রয়েছে সঙ্করজাত অদ্ভুত সব জীবজন্তুর নানান মূর্তি। তবে, দর্শন কেবল মহরমের কালে ১০ দিনের তরে মেলে। হাজারদুয়ারীর পিছে দক্ষিণে যেতে বাঁয়ে নিউ প্যালেস তথা ওয়াসেফ মঞ্জিল।

হাজারদুয়ারী থেকে ৩ কিমি উত্তরে মহিমাপুরে পাঞ্জাব থেকে আসা যোধপুর নিবাসী জগৎশেঠ উপাধি ভূষিত মানিকচাঁদ-ফতেচাঁদদের কুঠি বাড়ি ঘেঁষে পথ গিয়েছে কাঠগোলায়। কেবল উপাধিই নয় জগৎদের অন্যতম শেঠও ছিলেন এই জৈন পরিবার—জগৎশেঠের বিশাল আর্থ-নীতিক সাম্রাজ্যের নিদর্শন মিলবে কুঠি বাড়িতে। অদূরে কাঠগোলা। ১৮৭৩এ জিয়াগঞ্জের ধনকুবের ধনপৎ সিং দুগার ও লক্ষ্মীপৎ সিং দুগার সুরমা প্রাসাদের সাথে আদিনাথের মন্দির গড়ে। সুন্দর তোরণ পেরিয়ে উদ্যান ধরে পূর্বমুখী যেতে মনোহর নন্দনকাননে ৪তলা প্রাসাদ। পাশ্চাত্য-শৈলীর নানান বিলাস-সামগ্রী যাদুপুরী করে তুলেছে প্রাসাদকে। ঠিক তেমনই সুন্দর ১৭৮০তে মর্মরে গড়া কারুকার্যময় আদিনাথ মহারাজ মন্দির।

আখড়ার সামান্য উত্তরে জগৎশেঠের বাড়ির কাছেই উনিশ শতকের দ্বিতীয়ার্ধে রাজা কীর্তিচাঁদ বাহাদুরের তৈরি হাজারদুয়ারীর মিনি সংস্করণ নসীপুর রাজপ্রাসাদ। রাজ-বাড়িটি জীর্ণ হলেও হিন্দু-পুরাণের নানান দেব-দেবীর অবস্থানে দেবালয়ের রূপ নিয়েছে। নসীপুরের খুলনেরও প্রসিদ্ধি আছে। অদূরেই মোহনদাসের আশ্রম। আরও যেতে জাকরাগঞ্জ দেউড়ি অর্থাৎ মিরজাফরের প্রাসাদ। তবে সে আজ লীন—একই চত্বরে মিরনের বাড়ি। ১৭৭৭র ২রা জুলাই মাত্র ২০ বছর বয়সে সিরাজ-উদ্-দৌলা এই বাড়িতেই খুন হন মহম্মদী বেগের হাতে। তবে, গৃহটি বিধ্বস্ত হতে প্রাচীর বেষ্টিত হয়ে মুকমুখে দাঁড়িয়ে। আর সেই থেকে নাম হয়েছে জাকরাগঞ্জের—নিমকহারাম দেউড়ি সিরাজের বিরুদ্ধে চক্রান্তের ব্র-প্রিন্টও তৈরি হয় এই বাড়িতে। ব্রিটিশের কাছ থেকে মিরজাফরের ভেট পাওয়া কামান দুটিও দেখে নেওয়া যায় চত্বরে। গঙ্গার অপর পাড়ে সিরাজের গড়া

হীরাখিল অর্থাৎ মনোরম বিলাসভবন তথা লালগড় প্রাসাদ ভাগীরথীর ক্রালা প্রাসে বিধ্বস্ত।

দেউড়ির বিপরীতে জাকরাগঞ্জ সমাধিক্ষেত্র। মিরজাফর ও তাঁর বংশের সহস্রাধিক সমাধি হয়েছে। গেট বরাবর শেখ (পূর্ব) থেকে তৃতীয়ে শায়িত রয়েছেন বাংলার মিরজাফর। মিরজাফরের বিবি মনি বেগম, বকু বেগম—এরাও শায়িত রয়েছেন সমাধিভূমে।

অদূরে মহিমাপুরে মুর্শিদকুলি-কন্যা আজিমউদ্দিনার সমাধি। পিতার পদাঙ্ক অনুসরণ করে কন্যাও সমাহিত হয়েছেন ১৭৩০এ সোপানতলে। সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত মসজিদও ছিল সেকালে। তবে, লীন হয়েছে ভাগীরথীর জলে। ৪টি তোরণের ১টি আজও অতীত রোমন্থন করায়।

অদূরেই কাটরা অর্থাৎ বাজারঘাট ছিল অতীতে। কাটারার পথে রেললাইন পেরুতেই কদম শরীফ। অতীতে মহম্মদের পদচিহ্ন ছিল—যা আজ গৌড়ে দৃশ্যমান। মসজিদটি আজ পরিত্যক্ত হলেও এর গঠন-নৈপুণ্য চলার পথে দৃষ্টি আকর্ষণ করে। স্বল্প যেতে মুর্শিদাবাদ রেল স্টেশনের ১½ কিমি উত্তর-পূর্বে শহরাঙ্গে কাটরা মসজিদ। মক্কার কাবা মসজিদের অনুকরণে ১৭২৩এ মুর্শিদকুলি খাঁর হাতে রূপ পায় ৪০×৭½ মি ব্যাপ্ত সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত এই মসজিদ। উপাদান এসেছে এলাকার নানান হিন্দু মন্দির থেকে। ৬৭ ধাপ উঠে ২২ মি উঁচু চারকোণে চারের ২টি বিধ্বস্ত হলেও অবশিষ্ট দুই মিনার চড়ে চারপাশের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। ৩টি বিধ্বস্ত হলেও ১৫ মি ব্যাসের ২টি গম্বুজ রয়েছে ছাদে। এর নির্মাণশৈলী ভাবতেও বিস্ময় জাগে। ৭০০ কারী অর্থাৎ কোরাণ পাঠকের বাস ছিল। কালো পাথরের খিলানযুক্ত বিশাল প্রবেশ দ্বারের শিরে ইরানি ভাষায় লেখা: স্বর্গমর্ত উভয় লোকের যিনি গৌরব, আরবের মহম্মদের জয় হউক। যে ব্যক্তি তাঁহার দ্বারের ধূলি নেহে, তাঁহার মস্তকে ধূলিবৃষ্টি হউক। অতীতের চন্দ্রাতপটি লীন হলেও পূর্বের ১৪ ধাপের সিঁড়ির নিচুতে সমাহিত রয়েছেন ১৭২৫এ মৃত নবাব মুর্শিদকুলি খাঁ। তবে, ১৮৯৭-র ভূমিকম্পে ভীষণভাবে বিধ্বস্ত হয় কাটরা মসজিদ। আর আছে চারচালা শিব মন্দির মসজিদ চত্বরের ডাইনে কাটারায়।

কাটরা থেকে ১ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে গোবরনালায় তীরে দেশের সুরক্ষার্থে গড়ে ওঠে দুর্গ তথা *তোপখানা*। তারই নিদর্শন মেলে ১৬৩৭এ জনার্দন কর্মকারের তৈরি জাহান-কোহা অর্থাৎ বিশ্বজয়ী কামানে। ৫.৩৫ মি দীর্ঘ জাহানকোবার বেড় ১.৩৫মি, আর মুখের বেড় ৪৫.৫ সেমি, ওজন ৮ টনের মত। বারুদ লাগে গোলা ছুঁতে ৩০ কেজি প্রতিবারে। তবে, দেবজ্ঞানে পূজা করেন স্থানীয়রা জাহানকোহাকে।

হাজারদুয়ারীর ২ কিমি দক্ষিণে সদরঘাটে ভাগীরথী পেরিয়ে ১½ কিমি দক্ষিণে যেতে নবাব পরিবারের সমাধি-ক্ষেত্র খোশাবাগ অর্থাৎ তার আনন্দের বাগিচা। পাঁচ-বিধ-

সুমধুর পরিবেশে নবাব আলিবর্দী, নবাব সিরাজ, বেগম লুৎফা-উমেয়া ছাড়াও নবাব পরিবারের নানানজন চিরনিদ্রায় শায়িত রয়েছেন। আর রয়েছে জাতীয় বিশ্বাসহতা ব্রিটিশের বিচারে মৃত্যুদণ্ড প্রাপ্ত সেই দানশাহ ফকির—যার সহায়তায় সিরাজ ক্ষত হন রাজমহলে। যাত্রী-নিবাসও হয়েছে খোশবাসে। অদূরে বর্গীর নেতা ভাস্কর পণ্ডিতের শিবমন্দির। রোশনীবাগ অর্থাৎ সুশোভিত উদ্যানের মাঝে ১৭৩০এ মসজিদ গড়েন নবাব আলিবর্দী খাঁ। সমাহিতও রয়েছেন সাজউদ্দৌলা ছাড়াও নবাব পরিবারের নানান জনা। সামান্য উত্তরে সুজার তৈরি ফর্হাবাগবা সুখকাননটি আজ বিধ্বস্ত। তেমনই দেখে নেওয়া যায়—১৭৯৯এ কলকাতায় গেলেও রাজধানী-মুর্শিদাবাদের শেষ নিদর্শন টাকশালের ধ্বংসস্তুপ। রিকশা চলছে এপারে। অদূরে ব্যাণ্ডেল-খাগড়া ঘাট-আজিমগঞ্জ শাখা রেলের লালবাগ কোর্ট স্টেশন।

হাজারদুয়ারী থেকে ৩ আর লালবাগের ১ কিমি দক্ষিণে বহরমপুর সড়কে মোতিঝিল। অশ্বকুরাকৃতি মোতির ঝিল অর্থাৎ লেকের পাড়ে সুন্দর পরিবেশে সাংহীদালান অর্থাৎ ব্রিতল প্রাসাদ গড়েন আলিবর্দীর জ্যেষ্ঠ জামাতা নবাব নওয়াজেস মহম্মদ খাঁ। উত্তরকালে নওয়াজেসের মৃত্যু হতে বেগম মেহেরউমিবা (আলিবর্দীর জ্যেষ্ঠা কন্যা) অর্থাৎ ঘসেটি বেগমের প্রাসাদ হয় মোতিঝিল। সেকালে মোতির চাষও হত ঝিলে। পরবর্তীকালে ব্রিটিশের সঙ্গে যোগসূত্রের বশে নবাব সিরাজ বন্দী করেন পিসি মেহেরউমিষাকে। সিরাজের পতনের পর ১৭৬৫তে ক্রাইডের অভিযেক, আরও পরে ইংরেজের রেসিডেন্সী বসে মোতিঝিলের সাংহীদালান প্রাসাদে। তবে, আজ বিধ্বস্ত। রূপসী ঝিলটিও আজ এঁদো পুকুরে রূপ নিয়েছে। আর আছে মসজিদ ও দরজা-জানালাহীন স্তুপাকার কিংবদন্তীর টিপি। জনশ্রুতি, যেক্ষণে নবাব আজও নাকি সঞ্চিত রয়েছে টিপিতে। উজ্জারে গিয়ে রক্ত উঠে মৃত্যুও ঘটেছে নাকি নানানজনের। সূর্যাস্ত সুন্দর দৃশ্যমান মোতিঝিলে।

নবাবী মুর্শিদাবাদে স্বাধীনতার সূর্য অস্ত গলেও পর্যটক-প্রিয় জয়কালী মন্দির রয়েছে টারিস্ট লজের সামনে জাতীয় সড়ক পেরিয়ে উত্তরমুখী নতুনবাজারে। কষ্টিপাথরে সুন্দর মূর্তি হয়েছে দেবী মহিষমর্দিনীর। জনশ্রুতি, সেন আমলের দেবী এই দশভুজা। দশভুজা থেকে ১ কিমি উত্তর-পূর্বে চন্দ্রেশ্বর মুখার্জি রোডে ১৮ শতকের বড়ো শিব-মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন চলতে-ফিরতে। পথ চলে আরও উত্তরে—ডাইনে-বামে খাগড়া বাজার। একাডই উচিত হবে খাগড়ার দোকানপাটে কাঁসার বাসনপত্র, মুর্শিদাবাদের রেশমী বসন, সুস্বাদু কারুকার্যময় হাতির ঝাঁতের ভূষণ তথা নানান কিছু স্মারক রূপে সঙ্গী করা। সরকারি সিদ্ধ রিসার্চ সেন্টারটিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া।

বাজার ছাড়িয়ে আরও উত্তরে মুর্শিদাবাদ অর্থাৎ হাজারদুয়ারীর পথে সৈদাবাদ। বহরমপুরের প্রাচীন জনপদ

সৈদাবাদ। এককালে ফরাসিরাও উপনিবেশ গড়েছিল। এমনকি ডুপ্লেক্স (Duplex) বাস করে গেছেন কিছুকাল এই সৈদাবাদে। ইংরেজদের সাথে প্রতিযোগিতায় হার আর ১৮২৯এ সড়ক তৈরি করতে ফরাসি উপনিবেশের বিলুপ্তি ঘটলেও জায়গার নাম ফরাসিভাঙা সে সাক্ষ্য বহন করছে আজও। তবে তাদেরও আগে ১৬৬৫তে আর্মেনীয় বণিকদের আগমন ঘটে সৈদাবাদে ফরাসিভাঙার পূর্বে। তাদেরই গড়া প্রাচীন গির্জার পূর্বে ১৭৫৮য় গড়া সুবৃহৎ আর্মেনি গির্জাটি। এর অলঙ্করণ অনবদ্য। সমাধিও রয়েছে নানান গির্জা চত্বরে—আর্মেনীয় ভাষায় ফলকও দেখতে মেলে। আর সৈদাবাদের রাজবাড়িটি বিধ্বস্ত হলেও সামনের ঝিলানের অভিনবত্ব আজও দেখে নেওয়া যায়। তেমনই রয়েছে নানান মন্দির—শিবই মুখ্য দেবতা। রাজবাড়ি থেকে সামান্য উত্তরে পঞ্চমুখী শিব। আবার উত্তর-পূর্বে মুর্শিদাবাদের বৃহত্তম চার-চালা শিবমন্দিরটির অলঙ্করণও অভিনবত্ব আছে।

সৈদাবাদ বাজার পেরুতেই ডাইনে নবাব মিরজাফরের দেওয়ান নন্দকুমারের জামাতার কুঞ্জঘাটা রাজবাড়ি। মিরজাফরের উম্মেদারিতে দিল্লীর বাদশাহ মহারাজা উপাধি প্রদান করেন নন্দকুমারকে। ১৭৭৫এ নন্দকুমার কিছুকাল বাসও করেন। নন্দকুমারের চিঠি, শাল, উত্তরীয়, অঙ্গবস্ত্র, বাল্যপোশাক, তরবারি ছাড়াও নানান কিছু প্রদর্শিত হয়েছে স্মারকরূপে। আর আছে নন্দকুমারের উপহার পাওয়া চৈতন্যদেবের জীবদ্দশায় আঁকা তৈলচিত্র এক। মূল প্রাসাদটি বিধ্বস্ত হলেও সুস্বভাগ, দুর্গা দালান—শিব, লক্ষ্মীনারায়ণ ও বৃন্দাবনচন্দ্রের মন্দিরত্রয় দেখে নেওয়া যায়।

তেমনই আছে সৈদাবাদের পূর্বে কাশিমবাজার রেল স্টেশন টপকে লাইন পেরিয়ে আরও উত্তরে যেতে কাশিমবাজার ছোট রাজবাড়ি, কাটরা মসজিদের অনুকরণে ১৮ শতকে তৈরি মসজিদ, ১৭৮৮তে চটজলদি পথে সংযোগকারী কাটা খাল কাটিগঙ্গার কাছে দশ শিবমন্দির, রাজবাড়ির উত্তরে ভাগীরথীর মজে বাওয়া বাঁওড়ের কাছে রেসিডেন্সীর ভগ্নাবশেষ ও সমাধিভূমি, ১ কিমি দক্ষিণে মহারাজা মণীন্দ্রচন্দ্র নন্দীর কাশিমবাজার রাজবাড়ি। পথ্য, ভাগীরথী, জলস্রীতে বেষ্টিত অতীতের বন্দরনগরী কাশিমবাজার আজ পর্যটকদের কাছে উপেক্ষিত। অতীতের বাণিজ্যকেন্দ্র তথা রেশমের রমরমা আজ লোপ পেয়েছে। সেকালে এত ঘন সন্নিবিষ্ট বাড়ি ছিল যে একের পর এক ছাদ ডিঙিয়ে ৮-১০ কিমি চলা যেত। ১৬৫৮য় জোঁব চার্পক ৩০০ বেতনে সহ অধ্যক্ষের চাকরিত্ব করেন কাশিমবাজার কুঠির। ১৭৫৬য় সিরাজ জয় করে নেয় কাশিমবাজার। তবে, কাশিমবাজার রাজবাড়ির ঠাকুর দালান ও হিতলের লক্ষ্মীনারায়ণ মন্দিরটির অভিনবত্ব আছে। কারুকার্যময় ১০০ খাম ও ৫০ খিলানে শোভিত অলিঙ্গটি সুন্দর। টেরাকোটো ও পল্লের অলঙ্করণও শোভা বর্ধন করেছে। অভিনবত্ব আছে মন্দির

তথা প্রাসাদপূরীর। মহাজনটুলির নেমিনাথ জৈন মন্দিরে ২৪ জৈন তীর্থঙ্করের মূর্তি ও পদচিহ্ন আর এক দৃষ্টব্য।

অতীতের নীলকর সাহেবদের দৌরাঘাট গঙ্গার পলি চাপা পড়লেও পঞ্চাননতলায় অপূর্ণ কারুকার্যমণ্ডিত নীল-কুঠিতে আজ জেলা পরিষদ বসেছে। অক্সফোর্ড বিশ্ব-বিদ্যালয়ের রেলিকা ১৮৬৯-এ ব্রিটিশের গড়া বহরমপুরের কৃষ্ণনাথ কলেজ বাড়িটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে। আবার ভাগীরথীর পাড়ে লাল বাঁধ ধরেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় সকালে ও সাঁঝে পায়ে পায়ে বহরমপুরে।

ভাত্রমাসের শেষ বৃহস্পতিবার ১৬—২৩-০০টায় জলদেবতা খোজা ও খিজিরের উদ্দেশ্যে কলার-ভেলা ভাসানো হয় ভাগীরথীর পূণ্য সলিলে। বর্গাটা, কারুকার্যময় রকমারি ভেলা ও আলোর বর্ণালী দেখতে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে খোজা খিজির বা বেরা (ভাসান) উৎসবে। আতসবাজি গোড়ে। মহরমও আর এক বরণীয় উৎসব মুর্শিদাবাদে। নবাবরাই এর উদ্যোক্তা।

বহরমপুর দর্শনে টাঙা মিললেও রিকশাই সহজতম যান। ৩৫ থেকে ৪৫ টাকার চুক্তিতে রিকশা নিয়ে সকাল ৭-০০টায় বেরিয়ে বিকাল ১৭-০০টায় সাস করা যায় বহরমপুর/মুর্শিদাবাদ/কশিমবাজার দর্শন। তবে, কেবল নবাবী মুর্শিদাবাদ দর্শন ঘণ্টা পাঁচেকের সাস করাও অসম্ভব নয়। সেক্ষেত্রে মুর্শিদাবাদ স্টেশনে নেমে চলাই শ্রেয়। সময়, অর্থ ও দূরত্ব—ত্রয়ীতেই সাশ্রয় মেলে। শ'দেশের টাকায় অটোতেও শেষ করা যায় এ-সফর। মিটারহীন প্রাইভেট কারও ভাড়াই মেলে বহরমপুরে। কারের যাত্রীরা একই দিনে ত্রয়ীর সাথে ডাহাপাড়া/কিরীটেশ্বরী/বড়নগরও জুড়ে নিতে পারেন।

আবার হাজারদুয়ারী ১ কিমি উত্তরে ডাহাপাড়া ঘাটে ফেরিতে ভাগীরথী পেরিয়ে রিকশায় বা পায়ে পায়ে জগবন্ধু ধাম ও মুর্শিদাবাদ জেলার প্রাচীনতম মন্দির কিরীটেশ্বরী দেখে ফেরা যেতে পারে বহরমপুরে। রেলও যাচ্ছে BAK লুপ লাইনে খাগড়া ঘাট রোড রেল স্টেশন থেকে ৭-১৯, ১০-১৩, ১১-১২, ১৩-০৯এ লালবাগ/ ডাহাপাড়া ধাম হয়ে আজিমগঞ্জে। ডাহাপাড়া রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি দূরে মন্দির। সতীর কিরীট অর্থাৎ মুকুট পড়ে এখানে। তাই সতীপীঠ বলে খ্যাত হলেও উপনীঠও বলে থাকে লোকে। খুবই জাগ্রতা এই দেবী, পূণ্য হিন্দু তীর্থও এই কিরীটেশ্বরী। নাম ছিল অতীতে কিরীটকণা এর। ১৪০৫এর মূল মন্দিরটি ধ্বংস হলেও কারুকার্যময় প্রস্তর বেদীটি আজও অতীত সাক্ষ্য বহন করছে। আর বর্তমান মন্দিরটি ১৮ শতকে বঙ্গাধিকারী দর্পনারায়ণের তৈরি। দেবীর কোন মূর্তি নেই—দেবীর কিরীট পূজিত হত মন্দিরে। তবে কিরীটও স্থানান্তরিত হয়েছে পথের বিপরীতে রানী ভবানীর তৈরি গুপ্তমঠে। *সেতর-উল-মুতাকারিনে* উল্লেখ মেলে কৃষ্ণ রোগগ্রস্ত মিরজাফর অভিমুখে ছালা জুড়তে দেবীর চরণামৃত পান করেছিলেন। এছাড়াও রয়েছে আরও নানান মন্দিরের ভগ্নাবশেষ ও দেবদেবীর ভাঙা মর্তি কালীসায়র দিঘির পাড়ে

কিরীটেশ্বরীর চত্বর জুড়ে। থাকার কোন ব্যবস্থা নেই কিরীটেশ্বরী মন্দিরে। তবে ৪ কিমি পূর্বে ডাহাপাড়ায় জগবন্ধু ধামে ২৮ ঘরের *ভক্তাবাসে* থাকার ব্যবস্থা মেলে। আবার ১৫-২১ বা ১৮-১১এর ট্রেনে খাগড়া ঘাট বা আজিমগঞ্জেও চলা যেতে পারে বড়নগর দর্শনে। আজিমগঞ্জ থেকেও রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় ডাহাপাড়া। তেমনই খোশবাগ সফরেও রিকশায় দেখে নেওয়া যায় ডাহাপাড়ার আশ্রম ও মন্দির। ডাহাপাড়ার আর এক অতীত সূজা খাঁর গড়া *ফরহাবাগ* বা সুখকানন। অতীতে স্বর্ণমুদ্রাও তৈরি হত ডাহাপাড়ায়—তার নিদর্শন আজও ভাগীরথীর তীরে ভগ্নগৃহে মেলে।

উৎসাহীরা বহরমপুরের বাস স্ট্যান্ড থেকে সালারগামী বাসে ১১ কিমি গিয়ে রাজমাটি অর্থাৎ গৌড়েশ্বর শশাঙ্কের রাজধানী (৭ শতক) কিংবদন্তীতে ঘেরা অতীতের কর্ণসূবর্ণও বেড়িয়ে নিতে পারেন। এমনকি বুদ্ধদেবও এক সপ্তাহ অবস্থান করেন এখানে—স্মারক রূপে গড়ে ওঠে বৌদ্ধ-বিহার। আর সেই বৌদ্ধবিহারকে বরণীয় করে তুলতে স্থপ গড়েন সশ্রুতি অশোক। কর্ণসূবর্ণে থাকার কোন ব্যবস্থা নেই। দিনাতো বহরমপুর ফিরন।

পাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৭-২০, ১০-১৩, ১১-১৫, ১৩-১১, ১৪-০৬, ২-৩৮এ খাগড়া ঘাট রোড থেকে ১২ কিমি দূরের কর্ণসূবর্ণ স্টেশনে। ১৯৩ কিমি দূরের হাওড়া থেকেও নানান ট্রেন আসছে ব্যাঙেল, কাটোয়া হয়ে BAK লুপ লাইনের কর্ণসূবর্ণে। রেল স্টেশন থেকে ১২ কিমি পায়ের হাঁটা পথে ৬ থেকে ৮ মি উঁচু ঢিপির নিচে ১৯৬২তে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের উদ্যোগে উৎখননে আবিষ্কৃত হয়েছে দীর্ঘকালের (খ্রিস্টীয় ২—১৩) হারানো অতীত। ৭৭ বর্গ কিমি জুড়ে বাকুহারা অতীতের গৌড়েশ্বরের রাজধানীর সঠিক নির্ণয় সম্ভব না হলেও রাজবাড়িডাঙার পরিখাবেষ্টিত দেওয়ালে ঘেরা রক্ত-মৃত্তিকা বৌদ্ধ বিহারটি রাজধানীর অংশবিশেষ বলে বিধান মিলেছে পণ্ডিতদের। যাতায়াতের সুব্যবস্থা গড়ে না ওঠায় পর্যটন মানচিত্রে আজও অবহেলিত কর্ণসূবর্ণ। উৎসাহীরা কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের আন্তঃতাত্ত্বিক মিউজিয়ামের প্রদর্শনশালায় দেখে নিতে পারেন খননে পাওয়া সম্ভার।

আবার খাগড়া ঘাট রোড স্টেশন থেকে ট্রেনে আজিমগঞ্জ সিটি পৌছে মাইল খানেকের হাঁটা পথে গঙ্গার তীরে বাংলার কানী বড়নগরের মন্দিররাজি দেখে নিতে পারেন। ১৮ শতকের দ্বিতীয়ার্ধে নাটোরের রানী ভবানীর (১৭১৪-৯৩) হাতে মন্দিরের পর মন্দির গড়ে ওঠে নাটোর রাজ-পরিবারের গঙ্গাবাস বড়নগরে। বঙ্গেশ্বরীর ইচ্ছা ছিল কানী-বাঘের সমর পর্বতে বড়নগরকে গড়ে তোলা। সামনে ভাগীরথী—ওপারে মুর্শিদাবাদ, বড়নগরও ছিল বিশাল গঞ্জ সেকালে। ২ কিমি জুড়ে ডজনখানেক মন্দিরের টেম্পল কমপ্লেক্স বড়নগর। চলার পথে সর্বদক্ষিণে এক বাংলা পঞ্চানন শিব। শিব ঠাকুর এখানে মূর্তিতে—পাঁচটি আনন তাঁর। শিলানে পোড়ামাটির কাজ। উত্তরমুখী সামান্য যেতে বড়নগরের

অনন্য কীর্তি, ১৭৬০এ তৈরি চারবাংলা মন্দির। তিন ফিলানবৃত্ত প্রবেশপথে চতুষ্কোণ চত্বরের চার পাশে চার মন্দির—১মি উঁচু ভিতরে উপর মুখোমুখি অবস্থান। দেবতা শিবঠাকুর, প্রতিটি মন্দিরে তিন জন। টেরাকোটায় আবৃত মন্দির, অলঙ্করণেও বৈচিত্র্য আছে। রামায়ণ, মহাভারত ছাড়াও নানান পৌরাণিক আখ্যান ভাস্কর্যে মূর্ত হয়েছে চারবাংলায়।

এসেরই উত্তর-পশ্চিমে অষ্টকোণী ভবানীশ্বর শিবমন্দির, মুর্শিদাবাদের নিজস্ব শৈলীতে ১৭৫৫য় রানী ভবানীর অনন্য কীর্তি এই ভবানীশ্বর। ১৮ মি উঁচু মন্দিরের ছাদের গম্বুজটি উষ্টানো কমল যেন। তার শিরে পন্নের পাপড়ি ৮ দিকে বিকশিত। প্রবেশ দ্বারও এর আট। ভাস্কর্যময় মন্দিরকে ঘিরে অলিঙ্গও হয়েছে চারপাশে। অদূরেই পথের বাঁকে রানী ভবানীর কন্যা তারাসুন্দরীর তৈরি গোপালমন্দিরটি আজ জীর্ণ। দেবতাও স্থানান্তরিত হয়েছেন রাজবাড়িতে। দু'পাশে ভয় দুই শিবমন্দির। এসেরই বাঁয়ে রানী ভবানীর রাজ-রাজেশ্বরী মন্দির। অনাড়ম্বর মন্দিরে অষ্টধাতুর মূর্তি হয়েছে পুত্র-কন্যাসহ মহিষমর্দিনী দুর্গার। ৬'৩০" প্যানেলের ভেতর এমন সুন্দর দুর্গা মূর্তি অনবদ্য। নিখুঁত তার কারুকার্য। অলঙ্করণ ও রংসজ্জার অতুলনীয়। এছাড়া দেবতা রয়েছেন—দার্কনির্মিত মদনগোপাল, জয়দুর্গা, করুণাময়ী মহালক্ষ্মী, ঘোড়ার মত গ্রীবাযুক্ত বিষ্ণু রাজরাজেশ্বরী মন্দিরে। সামান্য উত্তরে অতীতের রাজবাড়িটি আজ বিধ্বস্ত। এই বাড়িতেই ৭৯ বছর বয়সে ১৭৯৫ খ্রি তিরোধান ঘটে রানী ভবানীর। বাসও করছেন রাজপরিবারের উত্তর পুরুষ আংশিক সংস্কার করে রাজবাড়ি। তেলচিহ্নে রাজপরিবারের বংশ পরম্পরাও দেখে নেওয়া যায়। রাজবাড়ি রেখে আরও উত্তরমুখী যেতে জোড়বাংলা শিবমন্দির। মন্দিরের টেরাকোটার কাজ খুবই সুন্দর। আরও উত্তরে রানী ভবানীর গুরুবংশের মঠবাড়ি। বিপরীতে জোড়বাংলা—টেরাকোটায় সমৃদ্ধ গঙ্গেশ্বর শিবমন্দির। কস্তুরীশ্বর শিবও রয়েছেন গঙ্গেশ্বর চত্বরে। আরও উত্তরে দেবতার অবর্তমানে টেরাকোটায় সমৃদ্ধ নাগেশ্বর মন্দিরটিও সুন্দর। মন্দিরের শেষ নেই বড়ন গরে—মন্দির রয়েছে ছড়িয়ে ছিটিয়ে বড়নগরের পথেঘাটে আরও নানান। বড়নগরের আর এক কুটি তার পেতল-কাসার শিল্পী সৃষ্টি। তবে সেও যেন অতীত আজ।

সাজ হল নবাবী দর্শন—এবার ঘরে ফেরার পালা। আজিমগঞ্জ থেকে খাগড়া ঘাট হয়ে বহরমপুর বা সরাসরি কলকাতায় চলা যেতে পারে রাতের ট্রেনে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে আজিমগঞ্জ সিটিতে একমাত্র হোটেল অন্নপূর্ণায়। মেহো বাঙালিদের কাছে দ্বার রুদ্ধ হলেও জৈন ধরমশালা আছে আজিমগঞ্জে। অতীতকালে বহিরাগত জৈন ব্যবসায়ীদের কৃতিত্বে অন্যতম বাণিজ্যকেন্দ্রের রূপ নেয় আজিমগঞ্জ। জৈন প্রভাবও শহরে। তবে, বাঙালিরা না এসে চাল-চলনে, কথোপকথনে, সমাজ জীবনে। নওলাকা, নাহার, কোঠারি,

দুধোরিয়া, জৈন ব্যবসায়ীদের প্রাসাদোপম বাড়িগুলিও চলতে ফিরতে দেখে নেওয়া যায়। তেমনই আছে মসজিদরানী জৈন মন্দির, বহু চূড়ায় শোভিত নিমনাথজী মহারাজ মন্দির আজিমগঞ্জে। তবে বাঙালি দর্শক অচ্ছুৎ যেন এই সব মন্দিরে।

আবার ফেরি নৌকায় ভাগীরথী পেরিয়ে চলা যেতে পারে জৈন ব্যবসায়ীদের আর এক বাণিজ্যনগরী জিয়াগঞ্জ দর্শনে। নেহালিয়া, দুগার, সিংহাসের বাস। এসেরই কর্তৃত্ব গড়ে উঠেছিল নানান জৈন মন্দির জিয়াগঞ্জে। বিশালাকার আদিনাথের মন্দির, পাথরের বহু চূড়োয়ালী বিমলনাথজী, শঙ্খনাথজী এসের মধ্যে উল্লেখ্য। অবস্থানও এদের জিয়াগঞ্জ বাজারে। বিষ্ণুচালের পাণ্ডা বংশীয় বৃদ্ধা জিয়া থেকে অতীতের গাষ্টীলা হয় জিয়াগঞ্জ। গাষ্টীলা শ্রীপাট আজও পবিত্র বৈষ্ণবতীর্থ। শিষ্য গঙ্গানারায়ণ চক্রবর্তীর প্রার্থনায় নরোত্তম দাস ঠাকুর চিতা থেকে উঠে আসেন। এই গাষ্টীলা পাটে অন্তর্ধানও ঘটে সাধকের। আর আছে শহরের দক্ষিণে চোংরাবালি গ্রামে মুর্শিদাবাদের অন্যতম মস্তুরাম সাধকের বৈষ্ণব আখড়া সাধকবাগ। নানান অবতাররূপী বিষ্ণুর ৫০০ মূর্তি ও সহস্রাধিক শালগ্রাম শিলার সংগ্রহ উল্লেখ্য। জিয়াগঞ্জের নবতম আকর্ষণ মুর্শিদাবাদ প্রত্নতত্ত্ব সংগ্রহশালা।

তেমনই মুর্শিদাবাদের মিষ্টিও যথেষ্ট সুবিদিত। স্বাদও নেওয়া যেতে পারে—আজিমগঞ্জে বরফি সন্দেশ, রেজিনগরে পটলের মেরোবা, খাগড়ায় ছানাবড়া, রঘুনাথগঞ্জে রসকদম্ব, ধুলিয়ানে কোয়া চমচম-ক্ষীরমোহন-কমলা রসগোল্লা-জোড়ামন্দা ছাড়াও নানান কিছু।

জিয়াগঞ্জে থাকার কোন হোটেল নেই। জৈন ধরমশালায় মেহো বাঙালি অচ্ছুৎ জিয়াগঞ্জেও। তাই উচিত হবে জিয়াগঞ্জ থেকে ২২-১২র প্যাসেঞ্জারে ঘর পানে ফেরা। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ৪-৩৩, ৬-০১ (ক্রতগামী ভাগীরথী এক্স), ৭-৩৫, ৯-১৫, ১০-৫০, ১৩-৫৭য় জিয়াগঞ্জ ছেড়ে মুর্শিদাবাদ, বহরমপুর হয়ে যক্টা হয়েকে ২১৭ কিমি দূরের শিয়ালদহে লালগোলা প্যাসেঞ্জার। CSTC-র বাসও ১৩-০০টায় কলকাতা ছেড়ে ১৮-৪৫এ জিয়াগঞ্জ পৌছে ফেরে পরদিন সকাল ৭-৩০টায়। ভাড়া ৪০.৫০ টাকা। যে কোনও উইক এন্ডে সাজ করা যেতে পারে এই-সময়।

বর্ধমান

হাওড়া থেকে ৯৫ কিমি দূরে নামোদর নদের তীরে বর্ধমান শহর। G.T Road চলেছে শহরকে বিদীর্ণ করে। মুখুর্ধে (৪-১০এ প্রথম ছেড়ে ২৩-০৭এ শেষ) লোকাল ট্রেন যাচ্ছে শিয়ালদহ ও হাওড়া থেকে বর্ধমানে। আবার হাওড়া থেকে দুটি পৃথক রুটে—মেন ও কর্ড লাইনে ট্রেন যাচ্ছে বর্ধমানে। ২১ ঘণ্টার পথ। আর বর্ধমান থেকে ট্রেন যাচ্ছে ন্যারো গেজে কাটোয়ায়। ট্রেন যাচ্ছে বর্ধমান-রামপুরহাট প্যা বোলপুর হয়ে। আর SBSTC-র বাস যাচ্ছে বর্ধমান সদর থেকে মালদহ, দীঘা, মেদিনীপুর, পুরুলিয়া, হলদিয়া, বারাকর, নবদ্বীপ, সোনামুখী ছাড়াও বর্ধমান, বীরভূম ও নদীয়া জেলায় নানান লিকে। প্রথিতোত বাসও চলছে বর্ধমান থেকে লিকে লিকে।

২৪৩তম জৈন মহাবীর তীর্থঙ্কর (৫১০-৪৭৫ BC) বর্ধমান

কলকাতা থেকে নানান ট্রেন যাচ্ছে বর্ধমান/দুর্গাপুর/আসানসোল

| | হাওড়া | | বর্ধমান | | দুর্গাপুর | | আসানসোল | |
|--------------------------------|--------------|----|-------------|----|-------------|----|-------------|----|
| | UP | DN | UP | DN | UP | DN | UP | DN |
| বোকারো স্টিল সিটি শতাব্দী এক্স | ৬-০৫/২১-১০ | | | | ৭-৫৮/১৮-৫১ | | ৮-৩২/১৮-২৩ | |
| ব্রাক ডায়মন্ড | ৬-১৫/২১-১৫ | | ৮-১১/১৯-২৩ | | ৮-১২/১৮-১৬ | | ১০-১০/১৭-২৮ | |
| শিয়ালদহ-মজুমদারপুর ফাস্ট প্যা | *৫-৪৫/০০-১৫ | | ৮-৫৩/০০-১২ | | ১০-০১/২০-০০ | | ১১-২০/২১-৩৫ | |
| পূর্বা এক্স | ৯-১৫/১৬-১৫ | | ১০-৩৩/১৪-৪১ | | ১১-২২/১৩-৪৭ | | ১১-৫৭/১৩-১৫ | |
| উদ্যান আডা তুফান | ৯-৪৫/১৮-১০ | | ১১-৪৫/১৫-২৬ | | ১২-৪৭/১৪-১৩ | | ১৪-০০/১৩-২৫ | |
| পূর্বাচল এক্স (1 3 5 7) | ১৩-০০/০৪-১৫ | | ১৫-১১/০১-২৫ | | ১৫-৫৯/০০-১০ | | ১৬-৫৩/২৩-৩৫ | |
| গঙ্গাসাগর এক্স (2 4 6) | *১২-৪০/০৪-২৫ | | ১৫-১১/০১-২৫ | | ১৫-৫৯/০০-১০ | | ১৬-৫৩/২৩-৩৫ | |
| অমৃতসর এক্স | ১৩-১০/১৫-৩০ | | ১৫-৪৩/১২-৪৯ | | ১৭-০১/১১-৩৫ | | ১৮-২৫/১০-৪৩ | |
| শক্তিপূঞ্জ এক্স | ১৪-৩০/০৪-৩০ | | ১৫-৫৮/০২-৩০ | | ১৬-৫২/০১-৩০ | | ১৭-৪৩/০০-৫০ | |
| চব্বল/শিপ্রা এক্স | ১৫-১৫/০৭-৫৫ | | ১৭-২৩/০৫-৫০ | | ১৮-২১/০৪-৩০ | | ১৯-৩০/০৩-৩৬ | |
| মিথিলা এক্স | ১৬-০০/০৫-০০ | | ১৮-১৬/০১-৫৯ | | ১৯-১১/০০-৫৬ | | ২০-০৩/০৩-৩৬ | |
| কোল ফিল্ড এক্স | ১৭-১১/১০-৩০ | | | | ১৯-৩৩/০৭-৪৮ | | ২০-৫১/০৬-৫৯ | |
| আসানসোল এক্স | ১৮-২০/০৮-৪৫ | | ১৯-৪৫/০৭-১৫ | | ২০-৪৪/০৬-১৯ | | ২১-৫০/০৫-৩৫ | |
| কালকা মেল | ১৯-১০/০৬-৪৫ | | ২০-৪৮/০৫-০৬ | | ২১-৩৯/০৪-১৫ | | ২২-১৫/০১-৫০ | |
| অমৃতসর মেল | ১৯-২০/০৭-৩৫ | | ২১-১০/০৫-৩৫ | | ২২-০৫/০৪-৩৬ | | ২২-৫০/০৪-০০ | |
| মুম্বাই মেল | ২০-০০/০৬-১৫ | | ২১-৩৫/১০-৫২ | | ২২-৪০/০৯-৪৯ | | ২৩-৩০/০৮-৫০ | |
| ডুন এক্স | ২০-১৫/০৭-০০ | | ২২-৪৭/০৪-২৬ | | ২৩-৫৪/০৩-২৪ | | ০০-৩৯/০২-৪৫ | |
| লাল কেম্পা এক্স | *২০-১৫/০৭-১৫ | | ২২-২০/০৩-৩২ | | | | ০০-১৫/০১-৫০ | |
| দিল্লী জনতা এক্স | ২১-০০/০৫-১৫ | | ২৩-১৭/০২-৩৫ | | ০০-০৯/০১-১৮ | | ০১-১৫/০০-৩০ | |
| দাদাপুর এক্স | ২১-০৫/০৬-৩০ | | ২২-৩৭/০৪-০৬ | | ২৩-৩৭/০৩-০৪ | | ০০-৪৮/০২-২৫ | |
| কাঠীগোদাম এক্স | ২১-৪৫/১১-৫৫ | | ২৩-৫৫/০৯-২৮ | | ০০-৫৯/০৮-০০ | | ০২-০৭/০৭-১০ | |
| মোকাম পা | ২২-৪০/০৩-০০ | | ২১-২২/২৩-৫০ | | ০২-২৩/২২-০১ | | ০৪-০২/২০-৪০ | |
| জম্মু তাওয়ী এক্স | *১১-৪৫/১৫-৫০ | | ১৩-৫৪/১৩-২৫ | | ১৪-৫২/১২-২০ | | ১৫-৪৭/১১-৩৫ | |

প্রথম ধর্মপ্রচার করেন এখানেই। তীর্থঙ্করের নাম থেকে নামও হয় জায়গার বর্ধমান। তবে, আলেকজান্ডারের কালে পার্থেনিস নাম ছিল আজকের বর্ধমান। আধুনিকতার গোড়াপত্তন ১৫৬৭তে সুলেমান কররানীর হাতে দুর্গ হতে। আর ১৭ শতকে পাঞ্জাব থেকে সঙ্গম রায় এলেন ব্যবসা করতে বর্ধমানে। রায় বংশের কৃষ্ণরাম রায় ঔরঙ্গজেবের ফরমান বলে জমিদার হলেন বর্ধমানের। কালে কালে রাজা খেতাবে জমিদারি করে রায় বংশ ১৯৫৫ পর্যন্ত।

১৯০৩ খ্রিস্টাব্দের কথা, লর্ড কার্জনের সম্মানে তৈরি হয় কার্জন গেট অর্থাৎ তোরণ। সুন্দর স্থাপত্যশৈলীর নিদর্শন এই তোরণ। কালে কালে নির্মাতার নামে নামান্তরিত হয়—বিজয় তোরণ। সংস্কারের সাথে আলোর সাজ পরেছে তোরণ। ১ কিমি দূরে রাজপ্রাসাদে আজ মেয়েদের কলেজ ও বিশ্ববিদ্যালয়ের দপ্তর বসেছে। পীর বাহারামে বর্ধমানের জয়গীরদার নূরজাহানের ভূতপূর্ব স্বামী শের আফগানের সমাধিটি আজও ভারাক্রান্ত করে তোলে বাতাসকে। উপেক্ষা আর অবহেলায় অবলম্বিত অশেষক্ষয় মোগল যুগের দুই সেনাপতি খাজা আনোয়ার ও খাজা আবুল কাশেমের স্মৃতি-সৌধ, প্রাসাদ, মসজিদ, জলাশয়ের মাঝে হাওয়া ভরুল তথা নবাববাড়ি মধ্যযুগীয় সৌধের স্মারক রূপে আকর্ষণীয় হয়ে পারত। আর আছে বোরহাটে কমলাকঙ্কর সাধনালী তথা দেবী কালী, শহরান্তের কাঞ্চননগরে ককালীকালী,

সদরঘাটের পথে আলমগঞ্জ অনাদিকালের বিপুলাকার বর্ধমানেশ্বর শিব, অষ্টাদশভুজা সিংহবাহিনী, দেবী সর্বমঙ্গলা, তেজগঞ্জে বিদ্যাসুন্দর কালীবাড়ি।

আর রয়েছে রেল স্টেশন থেকে ৪ কিমি উত্তর-পশ্চিমে বর্ধমান-গুসকরা রোডে নবাবহাটায় ১০৮ শিব মন্দির। ১৭৮৯তে রানী বিষ্ণুকুমারী গ্রাম বাংলার মাটির ঘরের আদলে তৈরি করান এই মন্দিররাজি। মেলা হয় শিবরাত্রিতে। অদূরেই ৩ কিমি বিস্তৃত পরিখাবেষ্টিত তালিতগড় দুর্গে বর্গী হামলাকার আশ্রয় নিতেন রাজ পরিবার।

এছাড়া রেল স্টেশন থেকে পশ্চিমমুখী জিটি রোড যেতে বামহাতি পথ বেরিয়েছে গোলাপবাগের। অতীতে গোলাপ ফুটলেও আজ আম-জাম-পলাশ, শিমুল-ঝাউ-ইউক্যালিপ্টাসে ছাওয়া গোলাপবাগে বর্ধমান বিশ্ববিদ্যালয়ের ক্লাস বসেছে। অতীতের রাজ্যের হাওয়ায় মেল, কৃষ্ণসায়র হ্রদ আজও তৃপ্ত করে পর্যটকদের। কৃষ্ণসায়রের দু'পাশ ঘিরে মাটির প্রাচীর আজও দৃশ্যমান। এই প্রাচীরে কামান বসিয়ে বর্গীর হানা প্রতিহত করা হত। নতুন করে মুগ উদ্যানও বসেছে গোলাপবাগে। পাশেই বিশ্ববিদ্যালয় চত্বরে রাজ্যের দ্বিতীয় মেঘনাদ সাহা তারামণ্ডল—৯ই জানুয়ারি ১৯৯৪এ উদ্বোধন হয়ে নিরমিত প্রদর্শন চলছে। বিশ্ববিদ্যালয়ের আর এক গৌরব তার বিজ্ঞানকেন্দ্র। সোমবার ছাড়া ১১-৩০—১৯-০০টার বিজ্ঞানের নানানকিছু দেখে নেওয়া যায়। প্রাণী

জগৎপরিবেশবিজ্ঞান, যাদুর খেলায় অভিনবত্ব আছে। আর হুগোভে অ্যাটলেনারিয়াম ১৯৯৫এ বর্ষমানে। রমনার বাগানে নবনির্মিত চিড়িয়াখানা ও পক্ষীনিবাসটিও আকর্ষণীয় হয়ে উঠেছে বর্ষমানে। বর্ষমানের আর এক লোভনীয়—তার সীতা ভোগ ও মিহিানা। বড়বাজারে ভৈরব মিস্ট্রাম ভাণ্ডার, তেঁতুলতলা বাজারে গণেশ মিস্ট্রাম ভাণ্ডার, বি সি রোডে দেশবন্ধু মিস্ট্রাম ভাণ্ডারে স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। চুক্তিতে রিকশা করে বর্ষমান দেখে সেসে কুলায় ফিরন দিনান্তে। ফোর শেষ ট্রেনটি ২১-৪৫এ ব্যাণ্ডেল হয়ে আর ২১-৪৮এ ডানকুনি হয়ে হাওড়া আসছে। তবুও যেন উচিত হবে ১৯-২৩র ব্ল্যাক ডায়মন্ডে বর্ষমান ছেড়ে ২১-২৫এ হাওড়ায় ফেরা।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে শহরের প্রাণকেন্দ্র বিজয় তোরণে—
H Nataraj, H Kalyani, H Braibhi, Burdwan Boarding,
H Anila—Cinema Lane, Annapurna H, Stn Bzr : Jyoti
H, opp Rly Stn : Burdwan Bhawan, opp Rly Stn. ভাষণ
বেডের ঘরও মেলে এদের কাছে ৮৫-২২৫ টাকায়।

দুর্গাপুর

পূর্ব ভারতের রাড় দুর্গাপুর। কলকাতা থেকে ১৬১ কিমি
দূরে গড়ে উঠেছে আধুনিক শিল্পনগরী দুর্গাপুরে। অ্যালয়
স্টিল প্রোজেক্ট, এ ভি বি, দুর্গাপুর কোক ওভেন প্রোজেক্ট,
মাইনিং অ্যান্ড অ্যালয়েড মেশিনারিজ কর্পোরেশন, দুর্গাপুর
স্টিল প্ল্যান্ট বিশেষভাবে উল্লেখ্য। এছাড়া রয়েছে নানান
সরকারি ও বেসরকারি প্রতিষ্ঠান দুর্গাপুরে।

আর হয়েছে রেল স্টেশন থেকে ৬ কিমি দূরে ১৯৫৫য়
দামোদর ভ্যালি করপোরেশনের দুর্গাপুর ব্যারেজ। ৬৯২
মি লম্বা এই বাঁধ ২৪৮০ কিমি খালপথে জল সিঁছে চাবে।
আর হচ্ছে তাপবিদ্যুৎ DVC-র দুর্গাপুর প্রকল্পে। শীতে দেশ-
দেশান্তর থেকে পাখিরা থেকে এসে ভিড় করে ব্যারেজের
জলাধারে। অপর পাড়েই বাঁকড়া জেলা। পরিবেশ সুন্দর।
দুর্গাপুর টাউন-শিপেরও তুলনা মেলে না। লেক, বাগিচা,
ডিমার পার্ক, টম ট্রেনে তিলাভাষা করে তোলা হয়েছে
নগরীকে। সমুদ্রাঙ্গিক ছুটি কটাবার রমণীয় পরিবেশ। তবে,
সকালের দিকে দুর্গাপুর পৌঁছে দিনে দিনে দুর্গাপুর বেড়িয়ে
সন্ধ্যায় বিষ্ণুপুরও চলা যেতে পারে। নিরমিত বাসও চলে
এপথে। স্টিল প্ল্যান্ট দর্শনাধীনের PRO, Durgapur Steel
Plant থেকে অনুমতি লাগে। এমনকি, রাজ্য পর্বতনের
টুরিস্ট লজ থেকে কনডাক্টেড ট্যুরে দুর্গাপুর দর্শনের
ব্যবস্থা মেলে। গাড়িও ভাড়া মেলে লজে।



বিতারকা *Peerless Inn, City Centre-713216,
৩ (0343)546601, S ৬০০ ৭৭৫ ৯৫০ D ৮০০
৯৭৫ ১১৫০, অব: কল ৩ 2487181/মুখাই
৩ 2651500/ দিলী ৩ 3747034; H Samrat, Benachity,
Durgapur-713213, SAB ১৫০ DAB ২২৫-৩৫০ A/c S
৩৭৫ D ৪৭৫ সুইট ৮০০; H Kasino International, Nachan

Rd-13, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮০০;
Qaiser H, Nachan Rd, S ১২৫ D ২০০ A/c D ৩৫০; *H
Maharaja International, City Centre-16, R9, A/c S ৪৫০
D ৬০০ সুইট ৮০০; Durgapur L. Near Rly Stn; Kvalitiy
H, Near Steel Plant; Visitor L, Stn Rd; H Paradise,
Bhiringhi Morh, G T Rd; Gourishankar L, Benachity-
13; Sweet Grill Boarding House, Stn Rd. এছাড়া
Durgapur House, অব: PRO, Durgapur Steel Plant;
WBTD-র Durgapur Tourist L, Durgapur-2, ৩ 555760,
DAB ২০০ ২৫০ A/c D ৪০০, এসেরই Pathik Motel, Gandhi
Morh, Durgapur-713216, ৩ 546399, A/c D ৫৫০ ৬৫০;
অব: Manager বা Tourist Centre, Cal-1; Tagore House,
অব: PRO, D S P; Youth Hostel, near Rly Stn; শীতাতপ
*H Rajmahal, Bhiringhi-13, R8B1, A/c D ৪৫০ ছাড়াও
হোটেল আছে নানান দুর্গাপুরে।

১০ দিনে বেড়িয়ে আসুন বীরভূম

কলকাতা থেকে ট্রেনে ২০৭ কিমি দূরের রামপুরহাট গিয়ে
অটো/মিনি/বাসে ১১ কিমি দূরের তারাপীঠ পৌঁছান। ১ দিনই
একচক্রগ্রাম ও বীরচন্দ্রপুরও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে
রিকশায় বা বাসে বাসে। রাতের অবস্থান তারাপীঠ বা
রামপুরহাটে। ২য় দিন চলুন সতীপীঠের আর এক পীঠ ১৬ কিমি
দূরে নলহাটের নলাটেম্বরী দর্শনে। দেবী দেখে নলহাট থেকে
আবার বাসে ১২ কিমি দূরের ভদ্রপুর পৌঁছে শুখাকালী ও
আকালীকালী দেখে বাসেই ফিরন সাঁইখিয়ায়। সাঁইখিয়ায়
নন্দীকেশ্বরী দেখে মিনি বা বাসে সিউড়ি হয়ে বক্রেশ্বর পৌঁছে
যান বা সাঁইখিয়ায় রাত কাটিয়ে ৩য় দিন চলুন বক্রেশ্বর। ৪র্থ
দিন বক্রেশ্বর থেকে দুবরাজপুর বেড়িয়ে নিন বাসে। ৫ম দিন
বক্রেশ্বর থেকে বাসে বাসে সিউড়ি হয়ে মঙ্গলজোড় বেড়িয়ে
মঙ্গলজোড়/ সিউড়ি/ বক্রেশ্বরে রাতের অবস্থান। ৬ষ্ঠ দিন
বক্রেশ্বরের ৩২ কিমি দূরের কেশুলী হয়ে আরও ৪১ কিমি গিয়ে
বোলপুর পৌঁছে যান। ৭ম দিন কল্লালীতলা ও শান্তিনিকেতন
বেড়িয়ে রাতের অবস্থান বোলপুরে। ৮ম দিন বোলপুর থেকে
রেল বা বাসে ২০ কিমি দূরের আহমদপুর পৌঁছে ৩-৩৫, ৭-
১৫, ১২-৩০, ১৬-৩০, ২০-০০টায় আহমদপুর-কাটোয়া ন্যারো
গেজ রেল ১২ কিমি দূরের লাভপুর পৌঁছে ফুলরা দর্শন সেরে
লাভপুর থেকে কাটোয়ায় ২৪ কিমি দূরের নিরোল গিয়ে
অট্টহাসও দেখে ফেরা যেতে পারে বোলপুরে। ৯ম দিন বোলপুর
থেকে বাসে গিয়ে নানুর দেখে পরের বাসে কেতুগ্রামের দেবী
বহলা দর্শন সেরে উদ্ধারগুপ্তের ঘাট মহাশ্মশান বেড়িয়ে কাটোয়া
যাওয়া যেতে পারে ফেরিতে গঙ্গা পেরিয়ে। ১০ম দিনে বাসে বা
৩-০৫, ৭-৩৫, ১২-০০, ১৬-১০, ১৯-৩৫-র কাটোয়া-বর্ষমান
ন্যারো গেজ রেল ১৭ কিমি দূরের কৈটার স্টেশনের অদূরে
শ্রীরগ্রামের যোগাদা উমা দর্শন সেরে বাসে বাসে নবদ্বীপখাম
পৌঁছে যান কাটোয়া থেকেই ট্রেনে বা বাসে কুলায় ফিরন।



আর বাস যাচ্ছে CSTC ও SBSTC-র ৫-৪৫, ৬-
৩০, ৭-০০, ৮-১৫, ৯-৩০ ও ১৪-০০টায়
কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ৬ ঘণ্টার দুর্গাপুরে।
আর SBSTC-র বাস যাচ্ছে দুর্গাপুর, থেকে—জামসেদপুর,

বোকারো, খানবাদ, রাঁচি, শিলিগুড়ি, মালদহ, বালুরঘাট, সিউড়ি, শিকারপুর, কৃষ্ণনগর, মায়াপুর, নবদ্বীপ, বহরমপুর, বোলপুর, দীঘা, বাঁকুড়া, পলাশী, ঝাড়গ্রাম, পুরুলিয়া, ভারকেশ্বর, মুক্‌টেশ্বরপুর ছাড়াও বাংলা ও বিহারের বিধিকে।

আসানসোল

চিত্তরঞ্জন ও দুর্গাপুরের মাঝপথে আসানসোল। ট্রেন ও বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে ত্রয়ীর মাঝে। বাস যাচ্ছে শহীদ মিনার থেকে CSTC-র ৭-০০ ও ১০-২০এ আসানসোল হয়ে ৭½ ঘট্টায় চিত্তরঞ্জন। ফেরে ৭-০০ ও ১০-০০টায়। ভাড়া ৫৪.০০। সরাসরি যাত্রায় ৬-০৫এ শতাব্দী, ৬-১৫য় ব্ল্যাকডায়মন্ড, ১৭-১১য় কোন্ড-ফিল্ড, ১৮-২০এ হাওড়া-আসানসোল বিধান এক্সে যাতায়াত আদরণীয় হবে। আর SBSTC-র বাস যাচ্ছে শিলিগুড়ি, বোলপুর, বহরমপুর, দীঘা, বাঁকুড়া, হলদিয়া, বসিরহাট, বনগাঁ, ঝাড়গ্রাম, মালদহ ছাড়াও নানান আসানসোল থেকে। আবার লোকাল ট্রেনে বর্ধমান পৌঁছে কোর্ট স্ট্যান্ড থেকে বাসে ৩ ঘট্টায় আসানসোল পৌঁছে মিনিবাসে চুরুলিয়া বা মাইথন চলা যেতে পারে।

কলকাতার দেশ আসানসোল, শিল্পনগরীও বটে। আসানসোলকে কেন্দ্র করে ৪ কিমি দূরে বানপুর শিল্পনগরী তথা নেহরু পার্ক, নানান কলকারখনি; ১১ কিমি দূরে অজয়ের তীরে চুরুলিয়ায় বিদ্রোহী কবি কাজী নজরুল ইসলামের জন্মভূমে (১১ই জ্যৈষ্ঠ ১৩০৬ ইং ২৪শে মে ১৮৯৯) নজরুল আকাদেমি—৭দিন ব্যাপী মেলাও আকর্ষণ আছে জ্যৈষ্ঠ ১১—১৭-য়; ২৪ কিমি দূরে DVC-র মাইথন ড্যাম, তেমনই DVC-র আর এক প্রকল্পপক্ষেত ড্যামটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। উইক এন্ডে দুর্গাপুর/ আসানসোল/ চিত্তরঞ্জন বেড়িয়ে ফেরা যায়।



Asansol-713301, STD 0341-A নানান হোটেল—H Ari, 7 GT Rd, 206455; H Taj Residency, 206746; H Sassi, 357 GT Rd-1, 203143; *H Asansol International, 66 GT Rd (E)-3, 204162, R2B1, A/c S 330 D 890 290; H Classic, Bastin Bazar, 202355; H Atitih, 1 GT Rd-1, 204760, S 180 D 250, A/c S 350 D 850; লাগোয়া Mahuraju H, DAB 200-325; ছাড়াও হোটেল আছে নানান আসানসোলে। আর আছে Burnpur H, 20 Crescent, Bumpur-713325, R8, SAB 300 DAB 850 A/c S 350-895 D 550-650। আর যুব আবাস হতে চলেছে চুরুলিয়ায়।

চিত্তরঞ্জন

আসানসোল থেকে ২৫, দুর্গাপুর ৬৭ আর কলকাতা থেকে ২২৫ কিমি দূরে গড়ে উঠেছে আর এক শিল্পনগরী চিত্তরঞ্জন। ট্রেন ও বাস দুইই যাচ্ছে দুর্গাপুর ও আসানসোল থেকে। কলকাতা থেকে শিয়ালদহ-মজুমদারপুর প্যা, পূর্বা এক্স, তুফান, পূর্বচিল, গঙ্গাসাগর, অমৃতসর এক্স, মিথিলা এক্স, দিল্লী জনতা, দানাপুর এক্স, কাঠগোদাম এক্স, মোকামা প্যা, হিমগিরি ছাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে দুর্গাপুর ও আসানসোল হয়ে মেনই লাইনে চিত্তরঞ্জন। ৭½ ঘট্টায় বাসও যাচ্ছে CSTC-র ৭-১৫য় শহীদ মিনার থেকে। কলকাতায় ফেরে ৬-০০টায় চিত্তরঞ্জন থেকে। ভাড়া ৫৯.০০ টাকা।

চিত্তরঞ্জন লোকোমোটিভ ওয়ার্কশপে রেলের ইঞ্জিন তৈরি হচ্ছে। Administrative Officer-এর অনুমতি নিয়ে ওয়ার্কশপ দেখারও ব্যবস্থা মেলে। থাকার জন্য আছে সাধারণ হোটেল, চিত্তরঞ্জন হাউস ও মিহিভাম হাউস চিত্তরঞ্জনে। অব্: Public Relations Estate Officer, Chittaranjan, Burdwan.

হাওড়া থেকে সাহেবগঞ্জ লুপ হয়ে ট্রেন যাচ্ছে

| | হাওড়া | | বর্ধমান | | বোলপুর | | রামপুরহাট | |
|----------------------------|--------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| | UP | DN | UP | DN | UP | DN | UP | DN |
| গঙ্গসেবতা (রামপুরহাট) এক্স | ৬-০০/২১-৪৫ | ০৭-৫৭/১৯-৩২ | ০৮-৫০/১৮-৩০ | ১০-২০/১৭-১০ | ১০-২০/১৭-১০ | ১০-২০/১৭-১০ | ১০-২০/১৭-১০ | ১০-২০/১৭-১০ |
| খারভাঙ্গা প্যা | ০৭-১৫/০২-৩০ | ১০-০৩/২৩-৩০ | ১১-২১/২১-০০ | ১৩-২০/১৯-৩০ | ১৩-২০/১৯-৩০ | ১৩-২০/১৯-৩০ | ১৩-২০/১৯-৩০ | ১৩-২০/১৯-৩০ |
| শান্তিনিকেতন এক্স | ০৯-৫৫/১৫-৪০ | ১১-২০/১৪-০২ | ১২-২৫/১৩-০০ | ... | ... | ... | ... | ... |
| দানাপুর ফা প্যা | ১১-১০/১১-৪৫ | ১৩-৫৮/০৭-২০ | ১৫-০৩/০৫-২৬ | ১৭-১০/০৪-১০ | ১৭-১০/০৪-১০ | ১৭-১০/০৪-১০ | ১৭-১০/০৪-১০ | ১৭-১০/০৪-১০ |
| রামপুরহাট প্যা | *১৩-০০/২২-৪৫ | ১৬-০৫/১৯-৩০ | ১৮-০৩/১৭-৩৪ | ১৯-০৮/১৬-০০ | ১৯-০৮/১৬-০০ | ১৯-০৮/১৬-০০ | ১৯-০৮/১৬-০০ | ১৯-০৮/১৬-০০ |
| বর্ধমান-রামপুরহাট প্যা | ... | ১৭-২০/০৮-৪৫ | ১৮-০৩/০৭-৩২ | ২০-০৫/০৮-০৫ | ২০-০৫/০৮-০৫ | ২০-০৫/০৮-০৫ | ২০-০৫/০৮-০৫ | ২০-০৫/০৮-০৫ |
| কিছভারতী ফা প্যা | ১৬-৩৫/১০-০০ | ১৮-৩৭/০৮-০০ | ১৯-৫৭/০৬-১৬ | ২১-৫০/০৪-৫০ | ২১-৫০/০৪-৫০ | ২১-৫০/০৪-৫০ | ২১-৫০/০৪-৫০ | ২১-৫০/০৪-৫০ |
| বর্ধমান-রামপুরহাট প্যা | ... | ২০-১০/১২-৩৫ | ২১-২০/১১-০৪ | ২২-৫৫/০৯-৩০ | ২২-৫৫/০৯-৩০ | ২২-৫৫/০৯-৩০ | ২২-৫৫/০৯-৩০ | ২২-৫৫/০৯-৩০ |
| দার্জিলিং মেল | *১৯-১৫/৮-৪৫ | ২১-৪০/০৬-২২ | ২২-০২/০৪-১৬ | ২৩-৫০/০৩-০৮ | ২৩-৫০/০৩-০৮ | ২৩-৫০/০৩-০৮ | ২৩-৫০/০৩-০৮ | ২৩-৫০/০৩-০৮ |
| মোগলসরাই এক্স | *২০-৫৫/১২-৩০ | ২৩-০৪/১০-১০ | ২৪-০৭/০৮-২০ | ০১-২৪/০৬-৪৮ | ০১-২৪/০৬-৪৮ | ০১-২৪/০৬-৪৮ | ০১-২৪/০৬-৪৮ | ০১-২৪/০৬-৪৮ |
| সরহাট এক্স (2.3.6) | ২২-০০/০৬-০০ | ২৩-৩৯/০৩-৫২ | ০০-৩৩/০২-৪০ | ... | ... | ... | ... | ... |
| জামালপুর এক্স | ২২-৩০/০৫-১০ | ০০-১৫/০৩-৩১ | ০১-১৫/০২-১৪ | ০২-২৮/০০-৪৮ | ০২-২৮/০০-৪৮ | ০২-২৮/০০-৪৮ | ০২-২৮/০০-৪৮ | ০২-২৮/০০-৪৮ |
| গৌড় এক্স | *২২-০০/০৫-১৫ | ০০-৫০/০২-২৩ | ০১-৫৪/০০-৫০ | ০৩-১৩/২৩-৩৪ | ০৩-১৩/২৩-৩৪ | ০৩-১৩/২৩-৩৪ | ০৩-১৩/২৩-৩৪ | ০৩-১৩/২৩-৩৪ |
| ভারানীঠ প্যা | ... | ০৯-০৫/১৭-০৫ | ১০-১২/১৫-৪০ | ১১-৫৫/১৪-১৫ | ১১-৫৫/১৪-১৫ | ১১-৫৫/১৪-১৫ | ১১-৫৫/১৪-১৫ | ১১-৫৫/১৪-১৫ |
| বারহাটপায়া প্যা | ... | ০৫-৪৫/২১-০০ | ০৭-১১/১৯-০৭ | ০৯-২০/১৭-৩০ | ০৯-২০/১৭-৩০ | ০৯-২০/১৭-৩০ | ০৯-২০/১৭-৩০ | ০৯-২০/১৭-৩০ |
| কাকদুলজায়া এক্স | *০৬-২৫/২০-৩৫ | ০৮-৪৫/১৭-৫৫ | ০৯-৩১/১৬-২৯ | ১০-৪৫/১৫-২৪ | ১০-৪৫/১৫-২৪ | ১০-৪৫/১৫-২৪ | ১০-৪৫/১৫-২৪ | ১০-৪৫/১৫-২৪ |

রামপুরহাট থেকে নলহাট যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ০৮-৪৫, ১৪-৫০, ১৭-৩০, ২২-১৫য়।

শান্তিনিকেতন

পূর্বরেলপথের সাহেবগঞ্জ লুপ লাইনে বোলপুর স্টেশন। বয়ে চলেছে অজয় নদ। রেল স্টেশন থেকে জয়দেব রোড ধরে ইলামবাজার যেতে সুপুর, রায়পুর, কাঁকুটিয়া ও পেউলির অবস্থান। রিকশা বা বাসে একে একে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ৪ কিমি দূরে ইতিহাস ও কিংবদন্তীর মিলনক্ষেত্র সুপুর। ইলামবাজারমুখী যে কোনও বাসে শিবতলায় নেমে রাজা সুরথের তৈরি সুরথেশ্বর শিব মন্দির দেখে ৩ কিমি পশ্চিমে শান্ত ও বৈষ্ণবতীর্থ কাঁকুটিয়ায় বানাক্ষ্যাপার স্মৃতি বিজড়িত হটপুকুর কালীবাড়ি ও লোচনদাস প্রতিষ্ঠিত মহাপ্রভুর মন্দির দেখে নেওয়া যায়। দ্বীপাধিতা কালীপূজার রাতে দূর-দূরান্ত থেকে ভক্তের দল আসেন। কাঁকুটিয়া গ্রাম পেরিয়ে অজয় নদের তীরে শৈবতীর্থ দেউলীর খ্যাতি সুপ্রাচীন দেউলীশ্বর শিব মন্দিরের জন্য। হালকা গোলাপী রঙের মন্দিরের ডাইনে বৈষ্ণব কবি গোচন দাসের সিদ্ধাসন। জনশ্রুতি, এখানে বসেই চৈতন্যমঙ্গল রচনা করেন কবি। আর রায়পুরের জমিদার বাড়ি আজ দীর্ঘ হলেও লাগোয়া নারায়ণ মন্দির, গৌড়ীয় মঠ, গোপীনাথ ধর্মঠাকুরের গড় দেখে নেওয়া যায়।

মার্কণ্ডেয় পুরাণে মেলে, ভাগ্য বিপর্যয়ে সর্বধ্বস্ত হয়ে দেবীর আরাধনায় হতসম্পদ ফিরে পেতে স্বপূরের মহারাজা সুরথ লক্ষ বলি ভোট দেন দেবী চণ্ডী (কালী)-কে। সেই থেকে জয়গার নাম হয় বলিপুর। কালে কালে বোলপুর। দ্বিমতে, স্বপূরের অপভ্রংশ।

কলকাতা থেকে রেলে ১৩৬ কিমি দূরে শান্তির স্বর্গ বসেছে বোলপুর থেকে ৩ কিমি গিয়ে শান্তিনিকেতনে। ১৮৬১তে রবীন্দ্রনাথের পিতা মহর্ষি দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুর রায়পুরের জমিদারের কাছ থেকে নিকড়াঙ্গায় ২০ বিঘা জমি কিনে পরের বছর শান্তির নীড় গড়েন, নাম রাখেন শান্তিনিকেতন। কালে কালে বাড়ি থেকে জয়গারও নাম হয় শান্তিনিকেতন। অবশেষে দেবেন্দ্রনাথের গড়ে তোলা আশ্রমটি ১৯০১এর ২২শে ডিসেম্বর (৭ই পৌষ) রবীন্দ্রনাথের (১৮৬১-১৯৪১) হাতে ৫টি ছাত্র নিয়ে রূপ পায় ব্রহ্মচর্যাশ্রমে। ইটে গড়া বাড়িগুলি থেকে দূরে নীল আকাশের নিচে সেদিনের সেই ব্রহ্মচর্যাশ্রমটি আজ সারা বিশ্বে বন্দিত। পড়ুয়া আসছে দেশ-দেশান্তর থেকে। ১৯২২এর ১৬ই মে গড়ে ওঠে বিশ্বভারতী বিশ্ববিদ্যালয়—এরও প্রশস্তি আজ দুনিয়া জুড়ে। বিশ্ব এখানে এক। জগৎ সংসারের প্রতিটি বিষয় শিক্ষা দেওয়া হয় এখানে। আজও ক্লাস বসছে শাল-বকুল-আশ্রুকুঞ্জের ছায়ায় নীলাকাশের নিচে। সহশিক্ষার প্রথা চালু। আর রয়েছে দীর্ঘ ৪০ বছরের রবীন্দ্র-স্মৃতি (প্রথম আগমন ১৮৭৩এ) শান্তিনিকেতনের আকাশ-বাতাসে। ১৯৪১এর ৭ই আগস্ট রবীন্দ্র প্রয়াণে ভারত সরকার অধিগ্রহণ করে। আর ১৯৫১র ১৪ই মে কেন্দ্রীয় বিশ্ববিদ্যালয়ের স্বীকৃতি মেলে বিশ্বভারতীর। পশ্চিমবাংলা তথা ভারত পর্যটকদের কাছে শান্তিনিকেতনের আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

শান্তিনিকেতনের মূল আকর্ষণ রবীন্দ্রনাথের শেষ জীবনের আবাস উত্তরায়ণ। বেশ কয়েকটি ভবনের সমষ্টি উত্তরায়ণের বিচিত্রা ভবনে বসেছে রবীন্দ্র মিউজিয়াম। নোবেল পুরস্কার (১৯১৩) ছাড়াও নানান পুরস্কার পাওয়া পদক, কবির ব্যবহৃত চিট-জোকা-কলম, বসন, ভূষণ, ছবি, পাণ্ডুলিপি প্রদর্শিত হয়েছে এখানে। ১৯১৫য় নটিংহাম শিরোপা দেন কবিকে ব্রিটিশরাজ। তবে ১৯১৯এর জালিয়ানওয়ালাবাগের নৃশংস হত্যাকাণ্ডের প্রতিবাদে ব্যথিত রবীন্দ্রনাথ ফেরত দেন ব্রিটিশরাজের খেতাব। আর এক অংশে বসেছে গবেষণা কেন্দ্র। কবির ব্যবহৃত অস্টিন গাড়িটিও প্রদর্শিত হয়েছে চত্বরে। পাশেই রবীন্দ্রভবন। আর রয়েছে রবীন্দ্র-স্মৃতি বিজড়িত উদয়ন, কোনার্ক, শ্যামলী, পুনশ্চ, উদীচী। কবির স্বহস্তে রোপিত মালতীলতা আজও কোনোকের সামনে শিরীষ গাছে স্মারক হয়ে বিকশিত। উদীচীর ডাইনে গোলাপবাগিচা। অদূরে স্টুডিও চিত্রভানু—সাধারণের কাছে দ্বার রুদ্ধ হলেও রবীন্দ্রনাথের জন্মদিন ২৩শে নভেম্বর দর্শন মেলে। ২ টাকার টিকিট লাগে উত্তরায়ণ দেখতে। ৬ ইঞ্চির অধিক দীর্ঘ ব্যাগ, ক্যামেরা ও অন্যান্য কাউন্টারে জমা রাখার প্রথা। এছাড়া মহর্ষির সাধনবেদী ছাতিমতলাটিও আর এক দ্রষ্টব্য—সপ্তপর্ণী বৃক্ষের স্নিগ্ধ ছায়ায় শ্বেতমর্মরের বেদীতে বসে মহর্ষি লাভ করেছিলেন প্রাণের আরাম, মনের শান্তি, জীবনের পরিপূর্তা। অদূরে ১৮৮১তে তৈরি ব্রহ্মচর্যাশ্রম অর্থাৎ রঙিন কাচে তৈরি উপাসনা মন্দির। আজও উপাসনা হয় প্রতি বৃথবার প্রত্যুষে। সংস্কারও হয়েছে সম্প্রতি। এছাড়া কলাভবনে শিল্পী নন্দলাল বসুর মুরাল ও অঙ্গন জুড়ে রামকিঙ্কর বেইজের স্টুকো ভাস্কর্য, চীন ভবনে প্রাচীন বৌদ্ধ-জৈন পুথির সংগ্রহ, সম্মীত-ভবন, নন্দন-প্রদর্শনশালা, মূল পাঠাগার ভবন, বহুবিচিত্র মূর্তি খোদিত কালোবাড়ি ছাত্রাবাস—এদেরও পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

শান্তিনিকেতনের জন্মদিন ৭ই পৌষ (২২শে ডিসেম্বর, ১৯০১), উৎসব হয় জাঁকালো—মেলা বসে, আতশবাজি পোড়ে আকাশকে রঙিয়ে দিয়ে—এরই নাম পৌষমেলা। খুবই আকর্ষণীয় এই পৌষমেলা—আজ জাতীয় উৎসবের চেহারা নিয়েছে। দিন-রাত ধরে বিকিকিনি চলে। বাড়লেরাও আসে গ্রাম-গঞ্জ থেকে—তান ধরে, গান গায় তিন দিন তিন রাত মেলার আসরে। আর ঋতুরাজ বসন্তে শান্তিনিকেতনের আর এক আকর্ষণীয় উৎসব—আজি বসন্ত জাগ্রত ঘরে—বসন্তোৎসব বা হোলির সূচনা। প্রত্যুষ থেকে গানে গানে মুখরিত হয়ে ওঠে আকাশ-বাতাস। ফাগ ওড়ে বাতাসে। এরও খ্যাতি আছে পর্যটক মহলে। পর্যটকদের একান্তই উচ্চিৎ হবে সময় কাচে এই উৎসব দুটি দেখে নেওয়া। তবে, শান্তিনিকেতনের দপ্তরগুলি বন্ধ থাকে উৎসবকালে। এছাড়াও উৎসব আছে বর্ষশেষ, নববর্ষ, খ্রিস্টোৎসব, মাঘোৎসব শান্তিনিকেতনে। দেখার সময়—বৃহস্পতিবার থেকে সোমবার

১০-৩০—১৬-৩০টা, মঙ্গলবার ১০-৩০—১২-৩০টা, বুধবার বন্ধ। মে-জুনে গরমের ছুটিতে ৭—১১-০০টায় পর্যটকদের দেখার ব্যবস্থা থাকে। আর আধ ঘণ্টার নোটসে PRO-র বিশেষ ব্যবস্থায় ১৪-৩০—১৬-৩০টায় শান্তিনিকেতন ও ১০—১২-৩০টায় শ্রীনিকেতন দেখে নেওয়া যেতে পারে। ছবি তোলায়ও অনুমতি লাগে PRO থেকে।

শান্তিনিকেতনের আর এক আকর্ষণ—উত্তরাঞ্চল পেরুতেই ত্রিমুখী বাকের মুখে তালম্বজ। আরও যেতে ক্যানালের পাড়ে বল্লভপুর অভয়ারণ্য বা ডিমার পার্ক। ১৯৭৭এর ১১ই জুলাই ৭০০ একর জমি জুড়ে শাল, পিয়াল, শিত, কাকু, হরিতকী, আমলাকী, বহেরা, শিরীষ, জাম, মহুয়া, সোনাখুরি, আকাশমণিতে ছাওয়া পার্কে শতাধিক চিতল হরিণ, বিশেষও অধিক কুম্ভসার, ময়ূর ছাড়াও খরগোশ, বেজি, শেয়াল, সাপ ও পাখির বাস। সকাল ৮টা ও বিকাল ১৫টায় দলবদ্ধভাবে খাবার খেতে আসে এরা। শান্তিনিকেতন ভ্রমণার্থীদের কাছে এরও আকর্ষণ দিনের পর দিন বেড়েই চলেছে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে FRH-এ, অব্: DFO, Birbhun Divn, Suri, Birbhun. আর হয়েছে বার্ড স্যান্ডচুয়ারি শান্তিনিকেতনে। ডিমার পার্ক লাগোয়া ঝিলের বৃক্কে শীতের দিনগুলিতে বালিহাঁস, মরাল, পানডুবি, মেটোহাঁস, জলপিপি, তিতির, মাছরাঙা ছাড়াও হনবিল, পোকার্ড, গ্যাডওয়াল, শোভেলার, পিনটেল, ইগ্রেট ও হাজরো পরিযায়ী পাখির মেলা বসে। দিনান্তে কুলায় ফেরার দৃশ্য খুবই চিত্তগ্রাহী। আর আছে অজস্র কচ্ছপ ঝিলের জলে। তেমনই সকাল-সাঁকে পায়ে-পায়ে খোয়াই-এর পাড়ে পাড়ে দেখে কাতান উমিল লাল কাঁকরের নিস্তব্ধ তোলপাড়। আর আছে প্রতিবেশিনী কোপাই—শান্তিনিকেতনের আর এক উচ্ছল কবিতা।

শান্তিনিকেতন থেকে ৩ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে শ্রী-নিকেতন অর্থাৎ অতীতের সুরুলে ১৯২৩এ গড়ে উঠেছে বিশ্বভারতীর পল্লী শিক্ষাকেন্দ্র বিভাগ। এর কৃষি গবেষণা ক্ষেত্রের প্রশান্তি আজ সারা ভারত জুড়ে। অতীতে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি নীল চাষ ও চিনি তৈরি করত সুরুলে। ঠিক তেমনই প্রশান্তি এর হস্তজাত শিল্পপণ্যের ভারত তথা বিশ্বজুড়ে। তৈরি দেখা ও কেনা দুইয়েরই ব্যবস্থা আছে। উচিতও হবে স্মারক রূপে এদের হস্তজাত পণ্য সঙ্গী করা। বোলা ব্যাগ, কার্ফ-কার্যময় মোড়া, শান্তিনিকেতনের একান্তই আপন। বাস চললেও রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। পথে পড়ে পিয়াসন পল্লী, অ্যান্ড্রুজ ভবন, বিনয় ভবন, কালীসায়র।

কবির ১২৫তম জন্মবার্ষিক বোলপুর রেল স্টেশনের ২ নম্বর প্ল্যাটফর্মটিও দেওয়াল-চিহ্নে অলঙ্কৃত হয়েছে। আর ১ নম্বর প্ল্যাটফর্ম বসেছে আর্ট গ্যালারি—কবির স্মৃতিপূত নানান সত্তার নিয়ে। এমনকি কবিতার বোলপুর থেকে হাওড়ায় শেষ যাত্রার সেলুনকারটিও প্রদর্শিত হয়েছে রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই সুন্দর মণ্ডপ গড়ে।



Bolpur-731204, STD 03463-তে হোটেল আছে নানান। বোলপুর-শান্তিনিকেতন পথের পূর্বপল্লী তথা ভুবনভাস্য—WBTD-র ৯৭ বেডের

Shantiniketan Tourist L. ৩ 52699, DAB ২২৫ ২৫০, তিন বেডের ঘর ৩০০ A/c D ৫০০ ৬০০ ৬৫০ ডমি ৬০; অব্: Manager বা Tourist Centre, 3/2 BBD Bag-1. বিপরীতে Bolpur L. D ১৫০ ২০০ সুইট ৩৫০ A/c D ৪৫০। সন্নিকটে H Ranganati, D ২০০-৩৫০, কল বুকিং: ৩ 3343857. এছাড়া বিশ্ববিদ্যালয় কর্তৃকক্ষের Ratan Kutli GH (for VIP's), Ratanpally; সাধারণের জন্য Purbapally GH, International GH; Foreigners' GH; ছাড়াও অগ্রিম বুকিং-এ ১৫ ও ৪৫ কন্টের ২টি ডমিটির মেলে। অব্: PRO. Visva-Bharati, Santiniketan.

বোলপুর রেল স্টেশন থেকে শান্তিনিকেতন মুখী Santiniketan Road-এ—Advaita L, opp Rly Stn; Chaiti L, Chitrati L ৩ 52111, Kabiguru L ৩ 52267, Chowdhury L ৩ 52101, Dream L, Santiniketan Lodging Cottage, Suravi L, Ghare Baire L ৩ 52081, Manasi L ৩ 53200, কল বুকিং: 491688; শান্তিনিকেতনের সন্নিকটে প্রথম গেটে H Nisha ৩ 53101, D ১৫০ T ২০০ F ২৫০।

| বন্ধের থেকে সড়ক দূরত্ব | আর আছে—Khealaghar |
|-------------------------|--------------------------------------|
| সিউড়ি | ১৯ কিমি R/H, Purbapally. অব্: Bolpur |
| দুবরাজপুর | ১৩ " ৩ (03463) 52544. Delhi |
| শান্তিনিকেতন | ৫৯ " ৩ (011) 8536759. Mumbai |
| জয়দেব-কেন্দুলি | ৩৩ " ৩ (022) 7669144, Calcutta |
| সাঁইখিয়া | ৩৯ " ৩ 3373140; Bansari, |
| মসানজোড় | ৫৭ " Ratanpally, কল বুকিং: |
| দুমকা | ৮৮ " ৩ 2828607; উত্তরাঞ্চলের |
| দেওঘর | ১৫৩ " বিপরীতে Paushtali, Sripally, |
| ভারাপাঠ | ৭৪ " AP-S ১২৫-২২৫; আরও যেতে |
| নলহাটি | ৮৫ " Park G H, near Deer Park, |
| ইলামবাজার | ২১ " ৩ 52866, কল বুকিং: 270786; |
| কলকাতা | ২২৯ " .Santiniketan Tourist Centre, |

Ratanpally: মেজর বোম্বের Akshaya Janalaya, ঘরোয়া পরিবেশ, আহারও মেলে অগ্রিম অর্ডারে; ক্ষণিকা হলিডে রিসর্ট, কল বুকিং: AA7 Salt Lake, ৩ 3372931/3582100, Chhui Holiday Resort, চারুপল্লী, কটেজখমী DAB ৪৫০, অব্: Manager বা Ilaco House, 1-3 Brabourne Rd. Cal-1, ৩ 2208305-07; শান্তিনিকেতনের আর এক আকর্ষণ রিসর্ট আয়োজিত Sun-et Lumiere প্রদর্শনীতে রবীন্দ্র রোমন্থন। Mayurakshi H, D ৪৫০ A/c D ৬৫০ সুইট ৮৫০, অব্: Manager বা 5/2 Garstin Place, Calcutta-1, ৩ 2482887 বা Instant Holidays, ৩ 2482817; Prantik, D ২০০; লাল পাহাড়ী গেস্ট হাউস, সীমান্ত পল্লী, কল বুকিং: ৩ 4759336; বনপুলক গেস্ট হাউস, শ্যামবাটি, ৩ 53193; Ratanpally GH, behind Market, কল বুকিং: 1/4/H1A, Selimpur Rd, Cal-31; Dreamland GH, NRI Complex, Prantik, অব্: G/R Industries, 222, A J C Bose Rd, Calcutta; নবতম Camellia Hotel & Resort, Prantik, DAB ৪০০ A/c

৬৫০, সাইট ১০০০, কল বুকিং: Trust House, 32A, C R Avenue, 7th floor, Cal-12, ☎ 271007; Mark Meadows, DAB ৬৫০, A/C D ১৫০, ১২০০, কল বুকিং: 48-A, Sundari Mohan Avenue, Cal-14, ☎ 2448254 বা WBTD, BBD Bag, Cal-1. আর হয়েছে—বাস স্ট্যাণ্ডে নবতম *ক্লগিকা ডে সেন্টার* দিনভর বিজ্ঞান ও বাথকমের ব্যবস্থার নিয়ে। *ক্রীত্ৰীমোহনানন্দ যাত্রী নিবাস*, প্রভাত সরণী, বোলপুর, ☎ 53084; এসের কল বুকিং: 252266. বোলপুর রেল স্টেশনে *বোলপুর আবাসিক* ছাড়াও রয়েছে সাধারণ সাজে *রঙ্গোলা লজ*, *হোটেল মহামায়া*, *বিমদা বোর্ডিং*। আর *গেস্ট হাউস* আছে *Public Health Engineering, Forest, Irrigation, CESC, District Board, PWD*-র বোলপুরে। *রেলের রিটার্নিং রুম* আর *ইয়ুথ হোস্টেল*ও আছে বোলপুরে।



হাওড়া থেকে বর্তমান হয়ে সাহেবগঞ্জ লুপ লাইনে ট্রেন যাচ্ছে বোলপুরে। ঘণ্টা চারেকের পথ। যাতায়াতে শান্তিনিকেতন এক্স ট্রেনটি আদরণীয় হবে। তবুও যেন আধা ভাড়াই হাওড়া/শিয়ালদহ থেকে লোকালে বর্তমান পৌঁছে প্যাসেঞ্জার বোলপুর চলা যেতে পারে। আর পানাগড় হয়ে সড়ক সংযোগ গড়ে উঠেছে সারা ভারতের সঙ্গে শান্তিনিকেতনের। বাসও আসছে রাজ্যের নানান প্রান্ত থেকে শান্তিনিকেতনে। CSTC-র বাস যাচ্ছে শহীদ মিনার থেকে ৯-০০টায় ছেড়ে ২১২ কিমি দূরের শান্তিনিকেতন, ফেরেও সকাল ৯-০০টায় শান্তিনিকেতন থেকে।

অতীতসাহারী চলার পথে গুসকরা থেকে রিকশায় ৫ কিমি গিয়ে ডোকরা শিল্পীদের নিজস্ব গ্রাম ডরিয়াপুরে লোকশিল্পের শিক্ষকতা তথা জীবজন্তু ও দেব-দেবীর মূর্তি তৈরি দেখার সাথে কিনতে পারেন স্মারক রূপে।

কঙ্কালী পীঠ

কাক্ষিসেশে পড়িল কাঁকালি অভিরাম,
বেদগর্ভা দেবতা ভৈরব রূপ নাম।

বোলপুর রেষে পরের স্টেশন প্রান্তিক। রেল স্টেশন থেকে মাঠ পেরুতেই পিচ ঢালা পথ গিয়েছে সোজা কঙ্কালী পীঠ। পথ যদিও পিচের তবে পায়ে হেঁটে যেতে হয়, কোনও গাড়ির চল নেই প্রান্তিক থেকে। তাই শান্তিনিকেতন ভ্রমণার্থীদের পায়ে পায়ে বা রিকশায় যাওয়া সুবিধার। দূরত্ব ৮ কিমি, যাতায়াতে রিকশা ভাড়া ২৫/৩০। আবার বোলপুর থেকেও রিকশায় বা আধ ঘণ্টা অন্তর সঁইথিয়া ও লাভপুরের বাসে কঙ্কালী পীঠ যাওয়া চলে।

গ্রামের নাম বেসুটিয়া। নতুন মন্দির হয়েছে কুণ্ডের পাড়ে। দেবীর প্রতীকসঙ্গী দেবতা ত্রিশূল, আর আছে পটে কালীরঙ্গী কঙ্কালী। মূল দেবী জলমগ্না। মন্দির লাগোয়া কুণ্ডেই অবস্থান তাঁর। খুবই জাগ্রতা এই দেবী। ৫১ পীঠের শেষ পীঠও এই কঙ্কালী পীঠ। সতীর কাঁকাল অর্থাৎ কোমর পড়ে এখানে। চৈত্র সংক্রান্তিতে উৎসব হয়। লাগোয়া ঋশ্মনভূমি—বয়ে চলেছে স্বচ্ছসলিলা উত্তরবাহিনী কোপাই নদী। অদূরেই কাঙ্কালী শিব ও দেবীর রূক্ষ ভৈরবথান।

বক্রেখ্বর

শান্তিনিকেতন থেকে ৫৯ কিমি দূরে বক্রেখ্বর, আর সিউড়ির দূরত্ব ১৯ কিমি। বাসেই চলুন শান্তিনিকেতন থেকে সিউড়ি হয়ে বক্রেখ্বরে। তারাপীঠ যাত্রীদের ৫-৩০, ৬-২০র বাসে সরাসরি বা রামপুরহাট ও সিউড়ি বাস বদল করে যাওয়াই উচিত হবে। আবার ৫-০০, ৮-০০, ৯-০০, ৯-২০, ১০-১৫, ১৪-০০, ১৫-৩০এ বোলপুর থেকে রাজনগরের বাস যাচ্ছে বক্রেখ্বর হয়ে। ঘণ্টা আড়াইয়ের পথ। তাই, বোলপুর থেকে সিউড়ি বদল করে বাসে বাসে বক্রেখ্বর চলায় সুবিধা। বাসও মেলে এপথে মুহূর্ত্ত। সময়েও ঘণ্টাখানেক সাশ্রয় মেলে সিউড়ি হয়ে বক্রেখ্বর চলায়। তবে, সরাসরি বক্রেখ্বর যাত্রায় হাওড়া থেকে ময়ূরাক্ষী এক্সে অণ্ডাল হয়ে সিউড়ি বা দুবরাজপুরে নেমে বাসে বা সাহেবগঞ্জ লুপ লাইনের সঁইথিয়া থেকে বাসে বা অণ্ডাল শাখা রেল দুবরাজপুর পৌঁছে ১৩ কিমি বাসে যাওয়াই সুবিধার। আমোলপুর থেকেও সিউড়ি হয়ে চলা যেতে পারে বাসে বাসে। তবে, সংযোগকারী বাসের অভাব ঘটে ময়ূরাক্ষী যাত্রীদের বক্রেখ্বর যাত্রায়। আর যাচ্ছে কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ৬-৩০টায় CSTC-র সিউড়ির বাস ডানকুনি/ বর্তমান/ পানাগড়/ ইলামবাজার হয়ে ৬ ঘণ্টায় ২২৯ কিমি দূরের বক্রেখ্বর পৌঁছে সিউড়ি। তবে গত কিছুকাল বক্রেখ্বর যাতায়াত স্থগিত। সিউড়ির দ্বিতীয় বাসটি ১১-৩০টায় কলকাতা ছেড়ে দুবরাজপুর হয়ে যাচ্ছে। তেমনি ৯-৫৫র শান্তিনিকেতন এক্সে হাওড়া ছেড়ে ১২-২৫এ বোলপুর পৌঁছে বাসে চলা যেতে পারে বক্রেখ্বর। তবুও যেন সরাসরি যাত্রায় কলকাতা যাত্রীদের সিউড়ির প্রথম বাসটির যাত্রী হওয়াই উচিত হবে। তবে, গত কিছুকাল অজ্ঞান কারণে বাসটি অনিয়মিত।

চলার পথে নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা মামা-ভায়ের পাহাড়টিও দেখে নিন দুবরাজপুরে। একটার পর একটা পাথর সাজিয়ে রূপ পেয়েছে যেন। ওরাওঁদের বাস পাহাড়-ভূমে। আর আছে পাহাড় শিরে মামা-ভায়ে দুই তালগাছ এক পায়ে দাঁড়িয়ে। রামায়ণ-মহাভারতেও উল্লেখ মেলে মামা-ভায়ে পাহাড়ের। কিংবদন্তী, বনবাসকালে পাণ্ডবরা যুধিষ্ঠিরকে এখানেই যুবরাজ পদে অভিষিক্ত করেন—সেই থেকে নাম হয় জায়গার যুবরাজপুর; কালে কালে দুবরাজপুর। তেমনিই আছে সীতাদেবীর ব্যবহৃত সখিত জল পাহাড়ে। বাঘেরা না থাকলেও বাঘসুনি গুহা ছাড়াও গুহা রয়েছে আরও নানান। চড়ুইভাতির আদর্শ স্থান মামা-ভায়ে পাহাড়। আর আছে পাহাড়ী পথে পাহাড়েশ্বর শিব ও বিপুলাকার ঋশ্মনকালীর মন্দির। জনশ্রুতি রঘু ডাকাতের আরাধ্যা এই দেবী। অদূরেই দরবেশ আশ্রম। মহোৎসব হয় মাঘ মাসের ৪ তারিখে আশ্রমে। আজও গোখুলি লগ্নে আনন্দকাননের *শিবভোগ* অর্থাৎ শিয়াল ও কুকুরের একত্রে ভোগ গ্রহণ দর্শনীয়। মন্দিরও আছে নানান—শিবই মুখ্য। মুদিপাড়ায় টেরাকোটার মন্দির ৩টিও দ্রষ্টব্য। বিষয় বৈচিত্র্যে অভিনবত্ব আছে। মাহাতো পাড়ায় বিধ্বস্ত মোগল কুঠিও দেখে নেওয়া যায়। বাজারের কাছে ১২৯৬ বঙ্গাব্দে ইটে গড়া টেরাকোটায় সমৃদ্ধ ১৩-চুড়োর ত্রয়োদশরত্ন শিবমন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য। নমোপাড়ায় পাশাপাশি ৫

শিবমন্দিরেও অভিনবত্ব আছে। জেলার অন্যতম বাণিজ্য কেন্দ্রও এই দুবরাজপুর।

আর হতে যাচ্ছে বক্রেশ্বর থেকে ১৩ কিমি দূরে দুবরাজপুরের উপকণ্ঠে সিউড়ির বাসপথে মুখাবেড়িয়ায় পশ্চিম বাংলার আধার দুরীকরণে রক্ত দিয়ে গড়া বক্রেশ্বর তাপ বিদ্যুৎ প্রকল্প।

দুবরাজপুর থেকে ৩ কিমি দূরে দুবরাজপুর-সিউড়ি সড়কে হেতমপুরও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। ট্রেন, বাস, রিকশা যাচ্ছে। মুর্শিদাবাদের হাজারদুয়ারীর আদলে রাজা রামরঞ্জন চক্রবর্তী বাহাদুরের প্রাসাদবাড়ি রঞ্জন প্যালেসটি দর্শনীয়। নানান চিত্রকলা ও আসবাবপত্রের সংগ্রহ উল্লেখ্য। অনুমতিতে দেখে নেওয়া যায় প্রাসাদ। বীরভূম জেলার প্রাচীনতম কৃষ্ণচন্দ্র কলেজটিও হেতমপুরে। সামনে বিশালাকার লালদিঘি বা সায়র। দিঘির ভাইনে কদমতলায় ৫টি শিবমন্দির—অদূরে আরও ৩ শিবমন্দির। আর প্রাচীনকালের রাজবাড়িতে স্থল বসেছে। রাজপরিবারের গৃহদেবতা রাধাবল্লভ জিউ-এর মন্দিরও হয়েছে বিশাল চত্বর জুড়ে রাজবাড়ির অঙ্গনে।

তবু যেন বাতাসকে ভারী করে তোলে হেতমপুরের দক্ষিণ প্রান্তের গড়ের মাঠ। শেরিনা-হাফেজের প্রেম-আখ্যান আজও গাথা হয়ে ফেরে হেতমপুরের জনমুখে। সুলতান আহমেদ শাহ'র রূপবতী কন্যা শেরিনা আব্বাজানের ইচ্ছার বিরুদ্ধে দীর্ঘায়ত্রীভাঙ্গী হাফেজকে শাদি করে যোড়া ছুটিয়ে বোলপুর পেরিয়ে আশ্রয় নেয় হেতমপুরে গড়ে। সৈনিকের চাকরি নেয় হাফেজ। হাতেম খাঁর মৃত্যুতে স্বীয় অধ্যবসায় ও নৈপুণ্যে হাতেমের প্রিয়পাত্র হাফেজ সর্বাধিনায়ক হয় গড়ের। তেমনই আব্বাজানের পছন্দের পাত্র হোসেনও খুঁজে বেড়ায় শেরিনাকে। অবশেষে মারাঠাদের সাথে যোগসাজসে গড় আক্রমণ করে হোসেন। যুদ্ধে হাফেজ নিহত হতে শেরিনা আসেন প্রতিরোধ গড়ে তুলতে। শত্রুসেনার মাঝে হোসেনকে দেখে শেরিনা মেরে হাফেজ নাম নিয়ে কাঁপিয়ে পড়েন দিঘির জলে। আর বার্থ প্রেমিক হোসেন সৌধ গড়েন শেরিনার কবরে গড়ের মাঠে। মাধুর্যে স্নান হলেও মহিমায় বাংলার তাজ শেরিনা বিবির কবরে বাতি জ্বালে মেয়েরা আজও।

হেতমপুরের আর এক দিঘি গোবিন্দ সায়রের পাড়ে অষ্টকোণাকৃতি শিব মন্দিরটিও অভিনবত্ব ভরা। অদূরে দেওয়ানজী শিব মন্দিরটি টেরাকাটায় সমৃদ্ধ। সম্প্রতি প্রস্তরযুগের নানান নিদর্শনও মিলেছে হেতমপুরের গিরি-ভাঙার প্রান্তরে। হোটেল নেই হেতমপুরে। তবে গড়ের মাঠের মনোরম পরিবেশে বনদপ্তরের ফরেস্ট বাংলোয় ঘর মেলে ভ্রমণার্থীদেরও।

তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় বোলপুর থেকে ১৮, বক্রেশ্বর থেকে ২১ কিমি দূরের ইলামবাজার। দুবরাজপুরমুখী ২ কিমি যেতে ডাইনে বাকুইপুর গ্রামের পুকুর পাড়ে বিশাল এক বটবৃক্ষতলে লাউসেনের যজ্ঞাগার। দেবতাহীন

সাদামাটা মন্দিরে পূজিত হচ্ছে লাউসেনের চিতাভঙ্গ। প্রতি বছর বৈশাখী পূর্ণিমায় সাড়শরে পূজা ও মেলা বসে। মানত করে ভক্তের দল—পুরণও হয় তাদের সে মনস্কামনা।

নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা মহান-তীর্থ বক্রেশ্বর ধাম। মাহাত্ম্য এর অপরিমীম। শৈব তীর্থ বলে খ্যাত হলেও উষ্ণ জলের প্রসবণের জন্য অধিকতর প্রসিদ্ধি বক্রেশ্বরের। তেমনই একাঙ্গ পীঠের অন্যতম পীঠও এই বক্রেশ্বর। সতীর ভূ-মধ্যস্থ মনঃ পড়ে বক্রেশ্বরে। মন্দির চত্বরের পাশে ছোট্ট এক পাথুরে গর্তের অতি সঙ্গীর্ণ রত্নপাথে হাত দিলে পরণও মেলে দেবীর সূ-র। পূব আর উত্তর ধরে বক্রেশ্বর নদী আর দক্ষিণে বয়ে চলেছে পাপহরা নদী বক্রেশ্বরের।

সৌরাগিক আখ্যান—সত্যযুগে সুরতমুনি লক্ষ্মীর স্বয়ম্বর সভায় যথাযথ সমাদর না পেতে অপমানে ক্রুদ্ধ মুনির দেহের অষ্ট অঙ্গ বঁকে-চুরে যায়। নামও সেই থেকে মুনির অষ্টাবক্র। উপশম পেতে নানান তীর্থ ঘুরে স্বগ্নাশেষে গৌড় দেশের গুপ্তকান্দী অর্থাৎ বক্রেশ্বরে এসে তপস্যায় বসেন মুনি অষ্টাবক্র। গহীন অরণ্যে কঠোর তপস্যায় সিদ্ধিলাভ করেন মুনি। মুনির তপস্যায় তুষ্ট মহাদেবের আবির্ভাব ঘটে বক্রেশ্বরে। বক্রেশ্বর তাই সিদ্ধপীঠ। তপস্যায় তুষ্ট শিবের আশিষে আরোগ্য লাভ করেন মুনি—কালে কালে মুনির সাধনপীঠ বক্রেশ্বর হয়ে ওঠে সিদ্ধপীঠ বক্রেশ্বর। হিমতে, ভগবান নারায়ণ নৃসিংহ অবতার রূপে হিরণ্যকশিপুকে বধ করেন। ভক্ত-হত্যার পাশে জ্বালা ধরে নারায়ণের হাতে-পায়ে। অষ্টাবক্রমুনি নিজ শিরে খারণ করেন নারায়ণের সে-জ্বালা। ভক্তের জ্বালায় উপশম ঘটলেও মুনির জ্বালা অসহনীয় হতে থাকে। নারায়ণের পরামর্শে মুনি বক্রেশ্বরে এসে আরাধনায় বসেন শিবের। ভূষ্ট শিবের নির্দেশে সমস্ত তীর্থের বারি সৃষ্টিপথে এসে মুনির শিরে পড়তেই সেই জ্বালার উপশম ঘটে। আর মুনির জ্বালার পরশে জল তপ্ত হয়ে গিয়ে পড়ে পাপহরা নদীতে। সেই তপ্ত জলেই সৃষ্ট বক্রেশ্বরের তপ্ত কুণ্ড।

বক্রেশ্বরে উষ্ণ জলের প্রসবণ খুবই পর্যটকপ্রিয়। ব্রহ্মকুণ্ড, অগ্নিকুণ্ড, জীবিতকুণ্ড, চন্দ্রকুণ্ড বা সৌভাগ্য কুণ্ড, সূর্যকুণ্ড, খরকুণ্ড, ভৈরবকুণ্ড—মন্দিরকে ভর করে পাশাপাশি অবস্থান এদের। জলের উষ্ণতা ৩৬ থেকে ৭২° সেন্টিগ্রেড। অগ্নিকুণ্ডের জলপানে অন্ন রোগের নিরাময় মেলে—গরম বেশি অগ্নিকুণ্ডের জল। বিক্রিও হচ্ছে গ্রাসে। ৭২° সেল-সিয়াসের তপ্ত জল। এমনকি দূর-দূরান্তের দোকান-পাটেও কিনতে মেলে বক্রেশ্বরের তীর্থসিঁলি। খরকুণ্ডের জল যথেষ্ট গরম। আর জীবিতকুণ্ডের জল ঠাণ্ডা। সন্তান কামনার্থে বদ্বা নারীরা জীবিতকুণ্ডে স্নান করেন। সৌভাগ্যকুণ্ডের জল ঈষৎ উষ্ণ। প্রত্যুষে সূর্যোদয়ের পূর্বমুহূর্ত পর্যন্ত সৌভাগ্যের জল মুখের মত সাদা থাকে। তবে, সূর্যোদয়ের সাথে সাথে স্বাভাবিক রঙ নেয় দুধবসল সৌভাগ্য।

কুণ্ডের জলে সালকার আছে। গবেষণাও চলছে সাল-

ফার নিয়ে। হিলিয়াম গ্যাসেরও সন্ধান মিলেছে বক্রেশ্বরের অয়িকুণ্ডে। স্থানের ব্যবস্থা আছে—নারী ও পুরুষ পৃথক পৃথক বৈতরণী গঙ্গা অর্থাৎ কুণ্ডের ঘেরাটোপে। জল আসছে পাইপে কুণ্ড থেকে। বাতজ ব্যাধির উপশমও মেলে কুণ্ডের জলে স্নানে।

নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা শৈব ও শাক্ত তীর্থ বক্রেশ্বরে মন্দিরও আছে নানান। মূল মন্দিরটি বক্রনাথ শিবের। রাজ-নগরের পাঠান জায়গীরদার আসাদুল্লা খানের দানের জমিতে ওড়িশার রেখ দেউলের শৈলীতে বক্রনাথ শিবের বক্রেশ্বর ধাম মন্দির, লাগোয়া ধাতুময়ী দশভুজা মহিষমর্দিনী মন্দির দুটিতে ভিড় হয় তীর্থযাত্রীদের। মূল মন্দিরের সামনে পঞ্চ-শিব। আর আছে অক্ষয় বটের নিচুতে কালাপাহাড়ের বিনষ্ট করা হর-গৌরীর ভাঙা শিলামূর্তি। বিপরীতে নিত্যানন্দ মহাপ্রভুর পদচিহ্ন রক্ষিত ছোট্ট মন্দির ও বৈতরণীর অপর পাড়ে শ্মশানভূমি—তন্ত্রসাধনার পীঠস্থান। মন্দিরও হয়েছে শ্মশান লাগোয়া দেবী রক্তচণ্ডীর। আর আছে ক্ষেত্রপাল বটক ভৈরব ও শ্বেতগঙ্গার উত্তর পাড়ে চতুর্ভুজা হরিশ্চন্দ্রী কালী। ফাঙ্কনের শিবচতুর্দশী তিথিতে বক্রনাথ শিবের উৎসব ও চৈত্রের শিবরাত্রি বক্রেশ্বরের বরণীয় উৎসব। জাঁকালো মেলাও বসে উৎসবকালে। যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। আর শীতে উৎসব লাগে পর্যটকদের বক্রেশ্বরে।

তেমনই বক্রেশ্বরের অদূরে তাঁতিপাড়ায় তসর কিনতে পারেন স্নানক রূপে। রসগোল্লারও খাদ নিতে পারেন চলার পথে দুবরাজপুরে।



থাকার জন্য কুণ্ডের বাঁয়ে ১½ কিমি দূরে Youth Hostel. দ্রুত ও আহার্যের আবাবহার জন্য বজনিয়। এদেরই মাঝপথে অতীতের Tourist Lিট আজ হয়েছে Larica Hot Spring Plaza, DAB ১৯০, ডিল্লার সুইট ৪৪০ ডর্রি বেড ৬০, কল বুকিং: Larica, 74 Park St. Cal-17. ☎ 2403583; পাশেই Panchanan Villa, DAB ১২৫-১৭৫; ডাইনে H Ashirvad, H Madhabi Alaya, DCB ৬০, DAB ১০০-১৫০; Bakreshwar L, DCB ১০০, DAB ১২৫; Radha Gobinda L. কুণ্ডমুখী পথে অতি সাধারণ হোটেল—Pratima, Sreema, Maya, Tripti, Tirthashree, Mukherjee. আর আছে PWD (Roads) Bungalow ও ABTA-র Holiday Home বক্রেশ্বরে। খাবার হোটেল কুণ্ডমুখী পথের ডাইনে—বাঁয়ে যথেষ্ট মিললেও থাকা ও আহার্যে পারিকা রমণীয়; পল ছাড়িয়ে হোটেল আশীর্বাদও যথেষ্ট ভাল। মাধবী আলয়-এর বুকিং কলকাতায় মনিকটসার মোড়ে মাধবী আলয় বাসনের দোকান করা চলে।

তেমনই যে কোনও সকালে বোলপুর-বীরনগর ভায়া বক্রেশ্বর বাসে ৯ কিমি পশ্চিমে বীররাজার রাজধানী বীরনগরও বেড়িয়ে ফেরা যায়। তবে, সবই আজ অতীত—রাজধানীও বিধ্বস্ত। রাজার রাজ্যে যাব বৃদ্ধা তরুণী ভার্যার লালসার শিকারে। চক্রান্ত করে রাজাকে মেরে রাজা হন পাঠান সেনাপতি জোনেদ খান। রানী রানীই রইলেন জোনেদের কণ্ঠভরণ হয়ে। জনশ্রুতি, সেন বংশের বন্মাল সেনের পুত্র লক্ষ্মণ থেকে নাগর—কালে কালে রাজনগর

বা বীরনগর হয়ে থাকবে। তবে, ১৮ শতকে বীরকাশিমকে সহযোগিতার সোবে ব্রিটিশের রোবানলে রাজ্য ও রাজধানী দুই-ই ধ্বংস পায়। অতীত লোপ পেলেও বীররাজার বীরত্ব গাথা হয়ে ফেরে জনমুখে আজও। হাটতলার কাছে বিধ্বস্ত ভিতল ইমামবাড়ায় আজও শায়িত রয়েছেন সিরাজের কলকাতা জয়ের দুই সেনানি—আহম্মদ উল জমা খাঁ ও মহম্মদ আলিনকি খাঁ। তেমনই রয়েছে কালাদহ—বিরাতিকার মজা দিঘি; অতীতকালের দেবী কালিকার মন্দিরটিও বিধ্বস্ত। আর রয়েছে বোপ-জঙ্গলে আকীর্ণ হিন্দু-মুসলিম স্থাপত্যধারায় গড়া বিধ্বস্ত মতিচূড়া মসজিদ। থাকার কোন হোটেল নেই, ঘণ্টা দুরেকে অতীত রোমহন করে বাসে ফ্রিকন বক্রেশ্বরে।

এবার ঘরে ফেরার পালা। দুপুর ১২-৩০টায় সিউড়ি ছেড়ে ১৩-০০টায় বক্রেশ্বর পৌছে ১৮-০০টায় কলকাতায় যাচ্ছে CSTC-র বাস। আর ময়ূরাক্ষী এক্স ৬-২৯এ সিউড়ি, ৬-৫২য় দুবরাজপুর, ৮-০০টায় অভাল ছেড়ে হাওড়ায় পৌছায় ১১-৩০এ। আবার বাসে বোলপুর পৌছেও চলা যেতে পারে ঘরগানে। নানান ট্রেন যাচ্ছে বোলপুর থেকে কলকাতায়। তবুও যেন ১৩-০০টার শান্তিনিকেতন এক্সে বোলপুর ছেড়ে ১৫-৪০এ হাওড়া চলায় সুবিধা।

মসানজোড়

বক্রেশ্বর বা শান্তিনিকেতন থেকে সিউড়ি পৌছে দেওঘর/দুমকাগামী বাসে ৪০ কিমি দূরের মসানজোড়ও বেড়িয়ে ফেরা যায় দিনে দিনে। চলার পথে সিউড়ির সোনাডোড় পাড়ায় দিশত বছরের প্রাচীন দামোদর মন্দিরটি দেখে নিতে পারেন। বিগ্রহহীন ৩৫ ফুট উঁচু মন্দিরে তিন শতকের অধিক টেরাকোটার প্লেটে রাধা-কৃষ্ণের যুগল মূর্তি অনবদ্য। অবশ্য আর অবহেলায় মন্দিরটি আজ জীর্ণ—ফটলও রয়েছে যত্রতত্র। বাউড়ি পাড়ায় সাঁউডালি পুজোর গানে নিমগাছের দেবতা বৌটেনি বুড়ির ভরে নিজের ভূত-ভবিষ্যৎ-বর্তমান জেনে নিতে পারেন উৎসাহীরা। আর শহরান্তে তিলপাড়া ব্যারেকজটও দেখে চলা যায় বাসে বসেই। নানান হোটেলও আছে সিউড়িতে। বাস যাচ্ছে মসানজোড় থেকে শান্তিনিকেতন ৭৭, বক্রেশ্বর ৫৯, সাঁইথিয়া ৫০, তারাপীঠ ৭০, রামপুরহাট ৬২, দুমকা ৩০, দেওঘর ৯৮ কিমি ছাড়ও নানান। এমনকি কলকাতার বাবুঘাট থেকে বিহার সরকারের বাস ১৯-৩০টায় ছেড়ে বর্ধমান/সিউড়ি হয়ে পরদিন ভোর ৪-১৫য় মসানজোড় পৌছে দুমকা যাচ্ছে ৫-০০টায়। ফেরে ২০-০০টায় দুমকা ছেড়ে মসানজোড় হয়ে পরদিন ৪-০০টায় কলকাতায়। থাকারও নানান ব্যবস্থা মসানজোড়ে মেলে।

ব্যারেকজ থেকে ২ কিমি দুমকামুখী সুন্দর পরিবেশে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের ইয়ুথ সার্ভিসের ইয়ুথ হোস্টেল; আর আছে মাঝ পথে টিলার টঙে ময়ূরাক্ষী ডবন বাংলো; বাংলোর বুকিং: Dy Secretary, I & W Dept, Writers' Buildings, Calcutta-1. আর আছে বাস স্টপের বাঁয়ের ঘুণে আর এক টিলার বিহার সরকারের ইরিগেশন ইনস্পেকশন বাংলো, অব: Superintendent Engineer, Irrigation Dept, Dumka, Bihar. প্রাইভেট হোটেল নেই মসানজোড়ে। তবে, আহার্য মেলে চায়ের দোকানপাটে।

ছোট অবকাশ যাপনের মনোরম পদবিশেষ মসানজোড়। ময়ূরাক্ষী নদীতে বাঁধ পড়েছে বিহারের সাঁওতাল পরগনায়। ১১৩ ফুট উঁচুতে ২১টি লকে ২০০০ ফুট দীর্ঘ কানাডা সরকারের সাহায্যে গড়া এই বাঁধ কানাডা ড্যাম নামেও সমধিক খ্যাত। বিদ্যুৎ তৈরি হচ্ছে, আর জল যাচ্ছে কৃষিতে। এর জলাধার ও পার্কটিও সুন্দর। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা, সবুজ প্রকৃতির মাঝে নয়নাভিরাম পরিবেশ। বাঁধ থেকে চারপাশের শোভা স্বর্গের নন্দনকানন সম। চড়ুইভাতির আদর্শ জায়গা।

কেন্দুবিষ

অজয় নদের পাড়ে কেন্দুবিষ বা কেন্দুলী গ্রাম, গীত-গোবিন্দের কবি জয়দেবের জন্মস্থান—জয়দেব কেঁদুলী নামে সমধিক খ্যাত। বোলপুর স্টেশন থেকে বাস যাচ্ছে, ঘন্টা দেড়েকের পথ; দূরত্ব ৪৩ কিমি। আর সিউড়ির দূরত্ব ৩৫ কিমি, ইলামবাজার ১৩ কিমি দূরে। বাস আসছে পানাগড়, দুর্গাপুর থেকেও ঘন্টাখানেকে। দক্ষিণ ধরে বয়ে চলেছে অজয় নদ। বহরভর গঙ্গানান করে মকর সংক্রান্তির পূণ্য লগ্নে গঙ্গায় যেতে না পারার ব্যথায় কাতর কবি জয়দেব। দুমের মধ্যে স্বপ্নে দেখেন—মা গঙ্গাই অবতীর্ণ সম্মুখে তার। বলছেন—*তোমার মানে ব্যাঘাত ঘটবে না, আমিই কাল হাজির হব কদম্বখণ্ডির ঘাটে। দেখবে উজানে পদ্ম বইছে—বুঝবে আমি এসেছি।* সেই কিংবদন্তীকে গাথা করে স্নান চলছে আজও। তবে কদম্বখণ্ডির ঘাটে আজ আর পদ্ম বয় না অজয়ের উজানে মকর সংক্রান্তিতে, মেলারও স্থানান্তর ঘটেছে অজয়ের বালুচর থেকে গ্রাম জুড়ে। মেলা বসে আজ রাজা সরকারের ব্যবস্থাপনায় পৌষ মাসের মকর সংক্রান্তিতে জয়দেবের হোস্তার অর্থাৎ বৃন্দাবনে দেবদেহে লীন স্মরণে। জম্পেশ শীতে ২রা মাঘ ধুলোট হয়ে মেলা শেষ হয় তৃতীয় দিনে। তবে সরকারিভাবে তিন হলেও মেলার রেশ চলে দিন পনেরো ধরে। সনাতনী টানে অংশ নেয় গ্রাম-গঞ্জ থেকে বাউলের দল, আর আসে পর্যটক দূর-দূরান্ত থেকে। জয়দেবের ভিটের উপর রাখাবিনোদের নয়চুড়ো নবরত্ন মন্দিরের টেরাকোটার কাজ সুন্দর। রামায়ণ ও মহাভারতের কাহিনী ছাড়াও শিব, বিষ্ণু, ব্রহ্মা, বায়ু, যম, ইন্দ্র ও দশাবতার-গণের প্রতিকৃতি উৎকীর্ণ হয়েছে। ১৭০২-৪০এ বর্ধমানেশ্বরী রানী ব্রজসুন্দরীর তৈরি। তেমনই রয়েছে কুশেশ্বর শিব ছাড়াও আরও নানান মন্দির ও বাউলের আখড়া কেন্দুলীতে। জয়দেবের সিদ্ধিপ্রাপ্ত অষ্টদল পদ্মাক্রিত পাষাণখণ্ড আজও দৃশ্যমান কুশেশ্বরে। আর আছে ফুলেশ্বর ঘাটের কাছে জয়দেবের 'সিদ্ধাসন' পাথরখণ্ড। এই সিদ্ধাসনেই গৌড়ীশীপ লক্ষ্মণ সেনের সভাকবি জয়দেবের গীতগোবিন্দমের অসম্পূর্ণ শ্লোক পূর্ণতা পায়—*দেহি পদ পদম মুদারম্বেত*। রাখাগোবিন্দের হাতে। তেমনই বিশ্বমঙ্গলের টিপি তথা বসন্তবাড়ির লুপ্তাবশেষ আজও দেখে নেওয়া যায়। স্নানেও

পূণ্য হয় অজয়ের জলে মকর সংক্রান্তিতে। থাকার সুব্যবস্থা নেই কেন্দুলীতে। মেলাকালে সাময়িক তাঁবু পড়ে পর্যটন দপ্তরের; আর মেলে বসন্তবাটি ও আখড়া অতি সাধারণ মানের। আহারও মেলে পংক্তি ভোজনে নানান আখড়ায়।

এপথের আর এক আকর্ষণ মরুভূমির বুকে বাবলি ওয়েসিস। উঁচু-নিচু টিলার টপে ৩ একর জুড়ে স্থানীয়দের স্বনির্ভরতা দিতে রুক্ষ রাত্তিমিকে চাষযোগ্য করে বহুমুখী কর্মকাণ্ডের স্বল্প-সফল মরুদ্যান বাবলি। নিঃশেষ প্রকৃতির কোলে নিরলা-নির্জনে চেনা-অচেনা পাখির কলকালিতে মুখর স্বপ্নমেদুর বাবলিতে থাকারও ব্যবস্থা মেলে। ডাবল বেডের কটেজধর্মী ঘর ১৫০; আহার মেলে পুথকভাবে। অবু: Babli, Dwaronda, via Sreeniketan, PS-Illambazar, Birbhum; কল বুকিং: ৩ 4747822।

অজয়ের অপর পাড়ে বর্ধমান জেলার শিবপুর। ঘাট থেকে ৫ কিমি যেতে শ্যামরূপা মোড়। মোড় থেকে আরও ৫ কিমি গিয়ে দেবী দুর্গা অর্থাৎ শ্যামরূপা মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। আর আছে গহন অরণ্যে থোলা আকাশের নিচে শক্তির উপাসক ইছাই ঘোবের দুর্গা ও নারায়ণ মন্দিরের ধ্বংসস্তুপ। জনশ্রুতি, আজও নাকি রহস্যময় ভোপধ্বনি হয় অষ্টমী তিথিতে। বাসও চলছে দুর্গাপুর (১৮ কিমি), শিবপুর (৫ কিমি) শ্যামরূপা মোড় হয়ে।

নানুর

বোলপুর-কীর্ণহার বাসপথে বোলপুর থেকে ২৩, কীর্ণহারের ৯ কিমি দূরে নানুর। নিয়মিত বাস চলছে এপথে। বাস যাচ্ছে লাভপুর, আহমদপুর, সিউড়ি, নেলোর, কাটোয়া ছাড়াও বীরভূম ও বর্ধমানের দিকে দিকে। অতীতে নানুর ছিল নানোর। তবে লোকমুখে অজয় নদ নামে খ্যাত হলেও সরকারি নথিপত্রে চণ্ডীদাস-নানুর নাম রয়েছে আজও। নানা মুনির নানা মত—তেমনই দ্বিধা চণ্ডীদাসের জন্মস্থান নিয়ে গবেষকরা আজও বিধাষিত। তবে, নানুর ও কীর্ণহারের বাতাসে চণ্ডীদাসের রজকিনী প্রেম কাহিনী, চণ্ডীদাসের সাধন-ভজন আখ্যান, চণ্ডীদাসের মৃত্যু, কিংবদন্তীর গাথা হয়ে ফেরে। জনশ্রুতি ১৪ শতকের কবি চণ্ডীদাসের জন্ম এই নানুরেই। সেই স্মৃতিতে নানুরও এক পূণ্য তীর্থ। প্রথম জীবনে কবি ছিলেন শক্তির উপাসক। বাজার লাগোয়া থানার সামনে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে কবির আরাধ্যা দেবী বিশালাক্ষীর মন্দির। চারচালা দেউলে ললিতাসনে উপবিষ্টা দেবী এখানে *পুত্তাক্ষমালিকাহস্তা বীণাহস্তা সরস্বতী*—দুই হাতে বীণা, অপর দুই হাতে বই ও অক্ষমালা। এছাড়া মন্দির রয়েছে চব্বরে শিবঠাকুরের ডজনখানেক। লাগোয়া টিপিটি আজও কবির বসন্তবাড়ির সাক্ষা বহন করছে। জনশ্রুতি, কীর্ণহারের নবাব কীরগীজ খাঁ-র কন্যা (মতান্তরে স্ত্রী) কবির কীর্তনে আকৃষ্ট হতে রুপ্ত নবাব কামানের গোলায় ধ্বংস করেন কবির বাড়ি—কবিরও মৃত্যু ঘটে। আর আছে থানার ডাইনে রানী

ধোপানির পাট ও রক্ষাকালী মন্দির। সম্ভ্রতি খননে মধ্যযুগীয় সংস্কৃতির নানান নিদর্শনও মিলেছে নানুরে। আধিনে দুর্গাপূজার কালে বিশালাকী পূজা ও কার্তিকে উত্থান তিথিতে ৯ দিন ধরে চতীদাস স্মরণোৎসব নানুরের বরগীর উৎসব।

নিরোলে অট্টহাস

নানুর বেড়িয়ে উদ্ধারনগর বা কাটোয়ার বাসে কীর্ণহার হয়ে নিরোলে গ্রাম হস্ট চলুন। সরাসরি বাসের অমিলে কীর্ণহার বদল করেও চলা যেতে পারে নিরোলে। দূরত্ব কীর্ণহার থেকে ১৫, আর কাটোয়া আরও ১৫ কিমি দূরে। বাস থেকে ৪ কিমি যেতে ঈশানী নদীর পাড়ে আরণ্যক পরিবেশে দক্ষিণদিগি গ্রামে দেবী অট্টহাস মন্দির। দেবীর কোন মূর্তি নেই মন্দিরে—ঠোটই তার প্রতিভূ। সতীপীঠের অন্যতমও এই অট্টহাস—দেবীর ঠোট পড়ে এখানে। আর আছে দেবীর ভৈরব বিশ্লেষণ শিব। থাকার অতি সাধারণ ব্যবস্থা, অন্নপ্রসাদও মেলে মন্দিরে। পথ দুর্গম—রিকশা মেলে নিরোলে, মন্দির যাতায়াত ১৫-২০।

উদ্ধারনগর ঘাট মহাশ্মশান

অট্টহাস দেখে নিরোলে ফিরে বাসেই চলুন উদ্ধারনগর ঘাট মহাশ্মশান। কাটোয়ামুখী ২ কিমি যেতে পাচগুটি থেকে বামহাতি পথে ১১ কিমি গিয়ে উদ্ধারনগর। নিকটতম রেল স্টেশন ৬ কিমি দূরের কাটোয়া। ভটভটি যাচ্ছে উদ্ধারনগর পূরের বাঁধাঘাটে কাটোয়া থেকে। সরাসরি ভটভটির অমিল হলে ফেরি নৌকায় শাঁখাই ঘাটে পৌছেও বাস বা রিকশায় চলা যেতে পারে উদ্ধারনগরে। তাই নিরোলে থেকে কাটোয়া পৌছেও চলা যেতে পারে উদ্ধারনগর দর্শনে।

৫০০ বছরের অতীত। দিবাকর দত্ত বৈষ্ণব হলেন, নামেরও বদল হল—উদ্ধারণ দত্ত। সেই থেকে গঙ্গাভীরবতী রাধাকৈষ্টপুত্র হয়েছে উদ্ধারণপুত্র। নানান কিংবদন্তিতে ঘেরা মহাশ্মশান ও নিত্যনন্দর প্রিয় শিষ্য ছাদশ গোপালের অন্যতম সুবাহ অর্থাৎ উদ্ধারণ দত্ত প্রতিষ্ঠিত গৌরান্দ্র মন্দির ও সমাধি রয়েছে বাঁধাঘাটের ডাইনে-বাঁয়ে। তবে, সবই আজ অতীত। দারু নির্মিত গৌরান্দ্রদেব ও সারাবছর সোনানন্দী রাজবাড়িতে কাটিয়ে মন্দিরে ফেরেন ২৮শে পৌষ ৮ দিনের তরে। আজও ১লা মাঘ মংসা উৎসব ও মেলা বসে। থাকার কোন ব্যবস্থা নেই উদ্ধারণপূরে। উচিতও হবে দিনভর দেখে দিনান্তে গঙ্গা পেরিয়ে কাটোয়া পৌছে বিশ্রাম নেওয়া। আর আছে ১ কিমি দূরে শ্রীমদ ব্রহ্মানন্দ সজ্জের মন্দির শাঁখারিঘাটে। শাঁখারিঘাট থেকেও ফেরি মেলে কাটোয়ার।

কাটোয়া

নিরোলে থেকে সরাসরি ১৯ কিমি দূরের কাটোয়ায় চলা যেতে পারে বাসে। এছাড়াও বাস আসছে নগীয়া, বর্ধমান, বীরভূম, মুর্শিদাবাদের দিগদিগ থেকে কাটোয়ার। ন্যায়ে গাছে খেলনা ট্রেনও চলছে কাটোয়া থেকে ৫৩ কিমি দূরের বর্ধমান ও ৫২ কিমি

দূরে বীরভূম জেলার আহমদপুরে। এমনকি ৭-২৫এ কলকাতা (শহীদ মিনার) ছেড়ে বাসাসা/ রানাঘাট/ শান্তিপুর/ গৌরান্দ্র সেতু/ নবদ্বীপ হয়ে ১১-২০এ কাটোয়ায় যাচ্ছে CSTC-র বাস। কাটোয়া ছেড়ে কলকাতায় ফেরে ১৩-৩০টায়। ভাড়া ৩২।



ট্রেনও আসছে ঘন্টা পাঁচকে ১৪৪ কিমি দূরের হাওড়া থেকে ৬-৩৫এ আজিমগঞ্জ প্যা, ১৩-০৫এ বারহারোয়া প্যা, ১৫-২৫এ কামরাপ এক্স, ১৫-৪২এ আজিমগঞ্জ প্যা, ২১-২০এ মালদা টাউন ফা প্যা আর শিয়ালদহ থেকে ৭-৪৫এ বাজারসাউ প্যা, ১৩-৪০এ তিষ্ঠা-তোরাঙ্গ, ২০-০০টায় কাটিহার এক্স ব্যাণ্ডেল/নবদ্বীপখাম হয়ে BAK Loopলাইনের কাটোয়ায়। ৪ জোড়া EMU Train-ও চলছে নবদ্বীপখাম হয়ে ব্যাণ্ডেল-কাটোয়া-ব্যাণ্ডেল। কলকাতায় ফেরে যথাক্রমে ২৩-০৫, ১০-১৫, ৩-০০, ২৩-০৭, ০০-৪০, ১৭-০০, ২-০০, ২৩-৪০এ কাটোয়া থেকে।

বর্ধমান জেলার এক প্রাচীন নগর কাটোয়া। পূণ্যতোয়া দুই নদী ভাগীরথী ও অজয়ের সঙ্গমে অতীতের কণ্টকদ্বীপ বা কাঁটাদিয়া কালে কালে কাটোয়া হয়ে থাকবে। বয়েও চলেছে এরা কাটোয়াকে ঘিরে—রূপও যেন তাই দ্বীপাকার। গঙ্গা সরে গেলেও মহাপ্রভু পাড়ার গৌরান্দ্রবাড়ি আজও মহান বৈষ্ণবতীর্থ। রেলতথা বাস স্ট্যান্ড থেকে স্টেশন রোড/ কাছারি রোড টপকে মহাপ্রভু পাড়ার বাজার রেখে সন্ধীর্ণ গলিপথে গৌরান্দ্রবাড়ি। নিমাই এলেন নবদ্বীপ থেকে দ্বিতীয় দফার দীক্ষা নিতে গুরু কেশব ভারতীর কাছে কাটোয়ায়। মধু পরামণিকের কাছে মস্তক মুড়িয়ে গঙ্গায় স্নান সেতের সম্মান নেন নিমাই। নাম দিলেন গুরু শ্রীকৃষ্ণ-চৈতন্যগিরি—হেঁটে হল শ্রীচৈতন্য। তারই প্রতিচ্ছবি এই গৌরান্দ্রবাড়ি।

গেট দিয়ে ঢুকতেই ডাইনে অন্যতম পার্শ্ব দাস গদাধর, মধু পরামণিকের সমাধি, আর বাঁয়ে মস্তক মুগুনের স্থান—তারই পাশে সম্মান গ্রহণ ও নাম প্রকাশের স্থান। আরও বাঁয়ে শ্রীচৈতন্যর গুরু কেশব ভারতীর সমাধি ছাড়াও গুরু-শিষ্যের পায়ে ছাপ রয়েছে মর্মরে। মূর্তিও হয়েছে মন্দিরে মহাপ্রভু শ্রীচৈতন্য ও শ্রীনিত্যানন্দর। ভোর ৪—২১-০০টায় খোলা, তবে ১২—১৬-০০টায় বন্ধ থাকে মন্দির। ৯-০০টার মধ্যে টিকিটে অন্নপ্রসাদও মেলে।

অদূরে বাগনিয়া পাড়ায় দিল্লী থেকে আসা সৈয়দ শাহ আলমের গড়া বড় মসজিদ। তেমনই আছে শহরের আর এক প্রান্তে রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে মাধাই-তলা—অর্থাৎ প্রাচীরে ঘেরা মঠবাড়ি। নবদ্বীপ থেকে গঙ্গা পেরিয়ে ঘোষহাটের গঙ্গার ঘাটে মাধবীতলায় বিশ্রাম নেন নিমাই। মূর্তিও হয়েছে নিমাই অর্থাৎ শ্রীচৈতন্যর। জগাই-মাধাইয়ের বাড়িটিও এই মাধবীতলা অর্থাৎ আজকের মঠপ্রাঙ্গণে। ব্যাপকচত্বর জুড়ে মঠবাড়ি—নাম কীর্তন চলছে হাজার বছরের তরে নাটমন্দিরে। এরই পেছনে শ্রীমন্দির। গৌর-নিতাই, রাধা-গোবিন্দ, গোপীনাথ রয়েছে স্ব-স্ব মন্দিরে আর চতুর্দ মন্দিরে মাধাই সমাধিও। শ্রীমন্দিরের পেছনে গুরুকুঞ্জ। লাগোয়া নাটমন্দিরে ছবিতে মহাপ্রভু ও শ্রীকৃষ্ণলীলা মূর্ত হয়েছে। সকাল ৯টার মধ্যে টিকিট নিলে

এখানেও অন্নপ্রসাদ মেলে। থাকার অতি সাধারণ ব্যবস্থা মঠবাড়িতে। চলার পথে আর এক তীর্থ দাঁইহাট রোডে মনোহর বাগিচার মাঝে গুরু নানক গুরদ্বারায়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে গুরদ্বারায়। চলতে-ফিরতে মন্দির রয়েছে আরও নানান কাটোয়ার পথে-প্রান্তরে।



মনোরম পরিবেশে গৌরান্দবাড়ির পথে মণ্ডল-পাড়ায় Municipal R H—Shrabani, DAB ৬০ ডর্মি বেড ২০; আহার্য হোটেল নির্ভর হলেও অর্ডারে ঘরেও মেলে। আর আছে রেল ও বাস স্টেশনের সন্নিহিতে H Satyam, SCB ৪০-৬৫ DAB ৮০-১২৫ ডর্মি ২০; H Nirala, Stn Rd; PWD IB; District Board IB ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল আছে কাটোয়ার।

ক্ষীরগ্রামে দেবী যোগাদ্যা

কাটোয়া-বর্ধমান ন্যারো গেজ রেলপথে কাটোয়া থেকে ১৭ আর বর্ধমানের ৩৬ কিমি দূরে কৈচর স্টেশন। বাস বা রিকশায় কৈচর থেকে ৪ কিমি যেতে ক্ষীরগ্রামের পশ্চিমে দেবী যোগাদ্যা উমা অর্থাৎ সিংহপুষ্ঠে আসীন দশভুজা মহিষ-মর্দিনী। মন্দির লাগোয়া ক্ষীরদিঘির জলে দেবীর বাস। বছরে একদিন বৈশাখ মাসের সংক্রান্তির প্রভাত্রে জল থেকে ডাঙায় ওঠেন দেবী। অবিস্তান করেন গ্রামের মধ্যমণি প্রাচীরে ঘেরা মন্দিরে—পূজা হয় মহাসমারোহে। বসে মেলা!—আসেন ভক্তের দল দূর-দূরান্ত থেকে।

জল থেকে উঠতেই ছাগবলি দিয়ে দেবীর বোধন। অতীতে নরবলির প্রথা ছিল দেবীর স্বপ্নাদেশ মত। রহিতও হয় নরবলি দেবীরই বিধানে। তারপর পূজাপাঠ, হোম, বলিদান—এমনকি মহিষও বলি হয় দুপুরে। দিন-রাত ধরে পূজা চলে নানান উপাচারে। পরদিন প্রভাত্রে আবার দেবীর জলযাত্রা। ৪ঠা জ্যৈষ্ঠও দেবীকে তোলা হয় জল থেকে। অভিষেক, পূজা ও বলি হতেই আবার শয়নে যান দেবী। এছাড়া আরও পাঁচ তিথির গভীর নিশীথে: আষাঢ়-নবমী, বিজয়াদশমী, ১৫ই পৌষ, মকর সংক্রান্তি ও পাটনভান অর্থাৎ বৈশাখী সংক্রান্তির দু'দিন আগে দেবী ডাঙায় ওঠেন রুধির পানে। পূজা ও বলি-অন্তে দেবীর জলযাত্রা। তবে সাধারণের দেবী দর্শন মাত্রা এই ৫ তিথিতে।

অদূরে দেবীর ভৈরব ক্ষীরকষ্ঠ শিব—অনুচ্চ এক টিলার টঙের মন্দিরে। ভাইনে ক্ষীরদিঘি রেখে আরও যেতে জল শুধু জল—বিশালাকার ধামাসদিঘি। পুরাণখ্যাত শাঁখা পরেছিলেন উমা যুবতীর বেশে এই ধামাসদিঘির ঘাটে। সেই থেকে শাঁখা পরেন দেবী প্রতি বছর উৎসবের দিনে। শাঁখা পরেন ক্ষীরগ্রামের এয়ো বধুরা সারা বছর প্রতীক্ষায় থেকে। একাদ্র সতীপাঠের এক পাঠ—চন্ডারিং মহাপীঠ ক্ষীরগ্রাম। দেবীর ডান পায়ের আঙুল পড়ে এখানে।

লোকশ্রুতি, রাবণবধের পর শ্রবণের গড়া মন্দিরে বীর হনুর প্রতিষ্ঠিত মূল দেবীমূর্তির অনুপস্থিতিতে নতুন করে মূর্তি গড়েন দাঁইহাটের ভাস্কর নবীনচন্দ্র। দ্বিমতে বৌদ্ধ-

তান্ত্রিক মহাযান দেবী মূর্তি অতীতে ক্ষীরদিঘির জলে ঝুঁজে না পেয়ে রাজাজ্যায় মূর্তি গড়েন ভাস্কর নবীনচন্দ্র। থাকারও ব্যবস্থা মেলে মন্দিরের অতি সাধারণ যাত্রীনিবাস-এ। উচিত হবে কাটোয়া থেকে বাসে এসে ক্ষীরগ্রাম দেখে বাসে কাটোয়ায় গিয়ে রাতের বিশ্রাম নেওয়া। বাসও মেলে মুম্বুই এপথে। বাসপথ থেকে ১ কিমির মধ্যে অবস্থান এদের। আবার, ট্রেন বা বাসে বর্ধমান গিয়েও চলা যেতে পারে ঘরপানে। কাটোয়া-বর্ধমান বাসও চলছে ক্ষীরগ্রাম/কৈচর হয়ে। আবার কাটোয়া থেকে বাসে ১৬ কিমি দূরের কেতুগ্রাম পৌছে দেবী বহুলা দর্শন সেরেও চলা যেতে পারে। জন-শ্রুতি, কেতুগ্রামও সতীপাঠ, দেবীর বাম পা পড়ে এখানে।

কালনা

গঙ্গার এক পাড়ে কালনা অপর পাড়ে শান্তিপুর। বৈষ্ণব ও শাক্ত তীর্থ কালনা অর্থাৎ অম্বিকা কালনা। দার্জিলিং পাহাড় সূচনার আগে বন্দরনগরী কালনায় বর্ধমান রাজাদের গ্রীষ্মাবাসও ছিল।

কাটোয়া থেকে নবদ্বীপ পেরিয়ে কলকাতামুখী ৫৭ কিমি দূরের কালনাও বেড়িয়ে চলা যায় একই যাত্রায়। ঘণ্টা দুয়েকের পথ। সরাসরি বাসের অমিলে ট্রেনে চলাই সুবিধাব। সড়ক, রেল ও জলপথে ৮২ কিমি দূরের কলকাতার সঙ্গেও সংযোগ গড়েছে কালনা। হাওড়া-কাটোয়ার প্রতিটি ট্রেন কালনা হয়ে যাচ্ছে। ১০-১৫য় বারহারোয়া-হাওড়া প্যা, ১৫-৪৫য় নলহাটি-ব্যাঙেল, ১৭-০০টায় আজিমগঞ্জ-শিয়ালদহ প্যা, ১৮-১৫য় আজিমগঞ্জ-হাওড়া প্যা, ২৩-০৭য় আজিমগঞ্জ-হাওড়া প্যা, ২৩-৪০য় কাটিহার-শিয়ালদহ এক্স, ০-৪০য় মালদহ-হাওড়া ফা প্যা, ২-০০টায় তিহা-তেরসা এক্স, ৩-০০টায় কামরূপ এক্স কাটোয়া ছেড়ে নবদ্বীপধাম-কালনা-ব্যাঙেল হয়ে যাচ্ছে। চার জোড়া এমু লোকালও চলছে কাটোয়া থেকে নবদ্বীপধাম-অম্বিকা কালনা হয়ে ব্যাঙেল। আর সরাসরি যাত্রায় ৬-৩৫য় আজিমগঞ্জ প্যাসেঞ্জারে হাওড়া, ৭-৪৫য় বাজারসড়ি প্যাসেঞ্জারে শিয়ালদহ ছেড়ে ৯-১৮/১০-২৯য় চলা যেতে পারে অম্বিকা কালনায়। ২৫-৩০ টাকার চুক্তিতে রিকশায় ঘণ্টা চারেকের মধ্যে সারা যায় কালনা।

মনোহর বারিচায় ঘেরা গৃহী সাধক ভবা পাগলা তথা ভবেন্দ্রমোহন চৌধুরীর আরাধ্যা দেবী ভবানীর পঞ্চাশ দশকের ছোট্ট মন্দিরে বিশেষ পূজা হয় বৈশাখের শেষ শনিবার। ভবা-বাবার নিজ হাতে তৈরি নানান সূচীশিল্প ও অমৃতকথা আকর্ষণ বাড়িয়েছে।

অদূরে দ্বাদশ গোপালের অন্যতম গৌরীদাস পণ্ডিতের শ্রীপাট অর্থাৎ শ্রীগৌরান্দ্র মন্দির। জনশ্রুতি, নবদ্বীপে যে নিম বৃক্ষতলে জন্ম হয়েছিল নিমাই—এর সেই নিম দারুতে তৈরি শ্রীচৈতন্য বিগ্রহে আজও নাকি আবির্ভাব ঘটে মহাপ্রভুর। কথাও বলত দারুমূর্তি অতীতে গৌরীদাসের সনে। কলকদর্শনে সেবদর্শন প্রথা। মহাপ্রভুর নামের বৈঠা, পাদুকা ও হাতে লেখা পুঁথি সযত্নে রক্ষিত। লাগোয়া শ্রীশ্রীমহাপ্রভুর বিশ্রামস্থল অমলীতলায় পায়ের ছাপ আজও দৃশ্যমান।

৬৮৮ শকাব্দে সাধক অম্বরীশ দেবী অধিকার কৃপায় সিদ্ধিলাভ করেন। সেই সুবাসে সিদ্ধিধাত্রী দেবী কালী সিদ্ধেশ্বরী নামে খ্যাত। ১৭৫১য় মন্দির হয়েছে গঙ্গামুখী যেতে ভাদুড়ীপাড়ায় বর্ধমানেশ্বর মহারাজ চিত্র সেনের তৈরি দেবী অধিকার। খুবই জাগ্রত এই দেবীর নাম থেকেই কালনা হয়েছে অধিকা কালনা। তবে, পুরাতত্ত্ববিদদের মতে, জৈন দেবী অধিকা কালে কালে হিন্দুদেবীতে রূপান্তরিত হয়েছেন। তেমনই আছে ১৭৪০এ গড়া প্রাঙ্গণ জুড়ে ৫ শিব মন্দির। শ্রীশ্রীশ্যামসুন্দর-নিতাই-গৌরের শ্রীমন্দিরেও দেবতা রয়েছেন নিতাই-গৌর-শ্যামসুন্দর-বসুধা-সূর্যদাস পণ্ডিত-বলাই ছাড়াও নানান।

উইক এন্ডে চন্দন দেবী দর্শনে

হাওড়া থেকে ৭-১৫র দ্বারভাড়া প্যাসেঞ্জারে ১৩-৩৯এ নলহাট পৌছান। রিকশায় বা পায়ে নলটেক্ষরী দেবী দর্শন করে বাসে চন্দন ১২ কিমি দূরের ভদ্রপুরে। ভদ্রপুরে ভদ্রকালী আর বাস স্ট্যান্ড লাগেয়া আকালীপুরে আকালী কালী দর্শন সেয়ে সরাসরি বা নাগরার মোড়ে এসে বাসে রামপুরহাট পৌছে যান ঘণ্টা দেড়েক। রাতের অবস্থান রামপুরহাটে বা ১১ কিমি দূরের তারাপীঠে। দ্বিতীয় দিন সকালে সাঁইথিয়া পৌছে নন্দীকেশ্বরী দর্শন করে সাঁইথিয়া থেকে ১৪-৪৮এর তারাপীঠ (বামদেব) প্যাসেঞ্জারে ১৭-০৫এ বর্ধমান এসে লোকাল পেপে কলকাতা পৌছান ২০-০০টায়। আর সাঁইথিয়া থেকে ১৫-৫১য় কাক্সনজঙ্ঘা, ১৬-৩৭এ রামপুরহাট প্যাসেঞ্জার শিয়ালদহ যাচ্ছে সরাসরি ২০-৩৫ ও ২২-৪৫এ। আবার সাঁইথিয়া থেকে নন্দীকেশ্বরী দেখা সেয়ে রামপুরহাটের বাসে কোটাসুর পৌছে আবার বাসে বীরচন্দ্রপুর বেড়িয়ে পরের বাসে তারাপীঠ চলা যেতে পারে। তেমনই সাঁইথিয়ার অবস্থান করণে দেখে নেওয়া যায় ঐশী।

কালনার আর এক অনন্য দ্রষ্টব্য তার নবকৈলাস বা ১০৮ শিব মন্দির। ১৮০৯এ বর্ধমানরাজ তেজবাহাদুরের গড়া শিল্প-সুযমমণ্ডিত গঠনশৈলী ও স্থাপত্যে অনবদ্য—প্রাচীরে ঘেরা দুই সারিতে বৃত্তাকারে মন্দির হয়েছে। প্রথম বৃত্তে ৭৪—একটি খেত মর্মরে একটি কালো পাথরের লিঙ্গে শিবচাকুর। দ্বিতীয় বৃত্তের ৩৪টি মন্দিরে সবই খেতমর্মরের শিবচাকুর। অবস্থান মাহাশ্মে চত্বরের কেন্দ্রস্থলে দাঁড়ালে প্রতিটি লিঙ্গ মূর্তিই একযোগে দৃশ্যমান। বিপরীতে লালজির বাটী বা প্রতাপেশ্বর মন্দির। ১৭৫১-৫২য় তৈরি প্রাচীরে ঘেরা সুউচ্চ পঁচিশ চুড়োর কৃষ্ণচন্দ্র মন্দির ত্রয়ীর ভাস্কর্যে ও স্থাপত্যে অভিনবত্ব আছে। নানান পৌরাণিক আখ্যান রূপ পেয়েছে টেরাকোটায়। তবে দুপুর ১৩-—১৬-০০টায় দ্বার বন্ধ থাকে প্রতিটি মন্দিরের। লাগেয়া রাজবাটী—অন্দরে প্রতাপেশ্বর শিব মন্দিরটিও টেরাকোটায় সমৃদ্ধ। নানান পৌরাণিক আখ্যানের সাথে অন্তঃপুরিকাদের রাজেন্দ্র-নাচ্য রূপ পেয়েছে। সাধক কমলাকান্তর জন্মও এই কালনার বিদ্যাবাগীশপাড়ায়। আর আছে ঠাকুর রামকৃষ্ণর পদস্পর্শ-পুত্ৰ সিদ্ধ সাধক ভগবানদাস বাবাজীর আশ্রম ব্রহ্মবাড়ি

চকবাজারে, বুদ্ধমন্দির কালীন গরপাড়া, পাঠান কালের মসজিদের ধ্বংসাবশেষ কালনায়। কালনার নবতম আকর্ষণ শীতে দূর-দূরান্ত থেকে পরিযায়ী পাখিরা উড়ে এসে জুড়ে বসে গঙ্গার বুকে জাগা বিশাল চরে।

খাকার ব্যবস্থা মেলে পৌরসভার ট্যুরিস্ট লজ, PWD IB ও H Relax, H Maluxni, ৩ (03454) 55367. কল বুকিং: ৩ 4737549; H Durga-য়। দিনান্তে ১১-৫৯, ১৭-৪৪, ১৮-৪৯, ২০-২৯, ০-৩৮, ০-৫৯, ২-০৩, ৩-২১, ৪-০০) ট্রেনে কলকাতায় ফিরুন কালনা থেকে। তবুও যেন উচিত হবে কাটোয়া ও কালনার মাঝে নদীয়া জেলার নবদ্বীপধাম একই ট্রায়ে দেখে নেওয়া।

ফুল্লরা

বোলপুর থেকে নানুর/কীর্ণহার হয়ে নানান বাসে লাভপুরে নেমে ফুল্লরা চলুন। মুহূর্মুহ বাস মেলে। ঘণ্টা দুয়েকের পথ। দূরত্ব ৫০ কিমি। আবার আমোদপুর জংশন থেকেও বাসে বা আমোদপুর-কাটোয়া শাখা রেলো আধ ঘণ্টায় চলা যেতে পারে ফুল্লরায়। বাস আসছে সাঁইথিয়া, সিউড়ি, কাটোয়া থেকেও। সতীর ওষ্ঠ পড়ে, ৫১ পীঠের এক পীঠ এই ফুল্লরা। রেল ও বাসের অদূরে ১৩০২ বঙ্গাব্দে তৈরি মন্দিরে দেবীর কোন বিগ্রহ নেই। সিন্দুরে চর্চিত কচ্ছপাকৃতি শিলাখণ্ডই দেবীর প্রতিভা। জয়দুর্গার স্বরূপে পূজা হয় দেবীর। বিশেষ তারভেরব। মাঘী পূর্ণিমা ১০ দিন ধরে উৎসব হয় জাঁকালো, মেলাও বসে। মন্দির লাগেয়া দেবীদহ। লোকশ্রুতি, রামচন্দ্রের মহাপূজার জন্য বীর হনু ১০৮টি নীলপদ্ম এখান থেকেই সংগ্রহ করে। এমনকি ৩ কিমি দূরে দ্ববসো গোপালপুরে দুর্বাসা মূনির আশ্রমও ছিল অতীতকালে। মন্দিরের অদূরে লাভপুরে বরণ্য সাহিত্যিক তারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যায়ের জন্মভিটা ধাত্রীদেবতায় সংগ্রহশালা গড়তে চলেছে লাভপুর পঞ্চায়েত সমিতি। খাকারও ব্যবস্থা মেলে লাভপুর গেস্ট হাউসে। তেমনই উৎসাহীরা আমোদপুর স্টেশন থেকে রিকশায় ৩ কিমি দূরের বেলে-ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ধর্মরাজের মন্দিরের জন্য বেলের প্রসিদ্ধি। দূর-দূরান্ত থেকে বাতজ ব্যাগ্রস্তেরা আসেন মন্দির লাগেয়া দিঘির জলে স্নানান্তে দেব (দ্রব্য) গুণ সম্পন্ন তেল মালিশে আরোগ্য পেতে।

নন্দীকেশ্বরী মন্দির

এছাড়াও পীঠ রয়েছে বীরভূমে আরও এক। হাওড়া থেকে ১৭৯ কিমি দূরে সাঁইথিয়া রেল স্টেশন চত্বর পেরুতেই বিপরীতে দেবী নন্দিনী মন্দির। বোলপুর থেকে ট্রেনে তারা-পীঠের পথে বেড়িয়ে নেওয়া চলে। পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও ভক্তজনের সমাগম ঘটে চলে আজও। ১৩১০ বঙ্গাব্দে তৈরি মন্দিরের অঙ্গনটি পাথরের টালিতে বাঁধান। অশ্বখ ও বটবৃক্ষের বাঁধান বেদীর প্রকোষ্ঠে তেল-সিন্দুরে চর্চিত ত্রিকোণাকার এক শিলাখণ্ডই দেবী প্রতিভা। দেবীর

ভৈরব নন্দীকেশ্বর ও মূর্তিহীন—বৃক্ষঘরের কোটরে শিব-জ্ঞানে পূজা পান নন্দীকেশ্বর। দেবতা রয়েছেন কালীয়দমন মূর্তিতে শ্রীকৃষ্ণ, শীতলা, গণেশ, গৌরী ছাড়াও নানান। শারদীয়া বিজয়াদশমী মন্দিরের বরণীয় উৎসব। আর রয়েছেন অদূরে রক্ষাকালী, নন্দীকেশ্বরীর বিপরীতে। সাঁইথিয়াও একান্ন সতীপীঠের এক পীঠ—সতীর কঠনালী পড়ে এখানে। হিমতে, সতীর কঠহাড় পড়েছিল অতীতের নন্দীপুর অর্থাৎ আজকের সাঁইথিয়ায়।

থাকার জন্য PWD-র বাংলা, সাধারণ সাজে দপ্তর বোর্ডিং হাউস, হ্যাপি লজ আছে। আর আছে বাথসংলগ্ন ২০ ঘরের শ্রীশ্রীনন্দীকেশ্বরী মাতা বালানন্দ তীর্থশ্রম, ঘর ৪০, বিছানাও মেলে ১০ টাকায় সেট। থাকার পক্ষে সাঁইথিয়াব সেরা এই তীর্থশ্রম যাত্রীনবাস।

তারাপীঠ

উত্তর বাহিনী দ্বারকা নদীর পূব পাড়ে অতীতের চণ্ডীপুর আজ হয়েছে তারাপীঠ। কারও কারও মতে একান্ন পীঠের এক পীঠ—তবে, সতীর চোখের তারা পড়ায় সতীপীঠ নয়, মহাপীঠ তথা শক্তিপীঠ বলে খ্যাত তারাপীঠ। সাধক বশিষ্ঠ দ্বারকার কুলে মহাশ্মশানের শ্বেত শিমুলের তলে পঞ্চমুণ্ডির (শৃগলা-সর্প-সারমেয়-বৃষ-নৃশূণ্ড) আসনে বসে তারামায়ের সাধনায় সিদ্ধিলাভ করেন। তবে অতীতের শিমুল বৃক্ষ আজ আর নেই। নেই সেই খরস্রোতা দ্বারকা নদীও। মহাশ্মশানের ভয়াবহতাও লোপ পেয়েছে জনারণ্যে। বশিষ্ঠের সিদ্ধপীঠ এই তারাপীঠে—কমলাকান্ত, রাজা রামকৃষ্ণ, বিশেষ্যাপা, আনন্দনাথ, মোক্ষদানন্দ, কৈলাসপতিবাবা, শঙ্করবাবা, ন্যাংটাবাবা ছাড়াও নানান সাধক সিদ্ধিলাভ করেছেন। সিদ্ধিলাভ করেছিলেন বামাঙ্ক্যাপাও এই তারাপীঠ। তারামায়ের প্রাচীন মন্দিরটি আজ বিধ্বস্ত। উত্তরমুখী আঁটচালা বর্তমান মন্দিরটি ১২২৫ বঙ্গাব্দে মল্লারপুরের জগন্নাথ রায় তৈরি করান। মন্দিরটি অলঙ্কৃতও—প্রবেশ পথের খিলানের উপর দেবী মহিষাসুরমর্দিনী সপরিবারে উৎকীর্ণ। বামে কুরুক্ষেত্রের যুদ্ধ, ডাইনে রামায়ণ বর্ণিত হয়েছে। আর রয়েছে নানান পৌরাণিক আখ্যান মন্দিরে। দেবী এখানে তারাময়ী কালী—মুখমণ্ডল ছাড়া সারা অঙ্গ বসনে আবৃত। আর সাঁইবে দর্শন মেলে বশিষ্ঠকে দর্শন দেওয়া কষ্টিপাথরের মহাকাল (শিব) মহাকালীর স্তন্যপায়ী যুগে পানে রত মূল মূর্তি।

নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা জীবিত কুণ্ড ও বিরাম মন্দিরটিও দর্শনীয়। বামাঙ্ক্যাপার পর্ণকূটরে মূর্তি হয়েছে সাধকের। মন্দির হয়েছে মুণ্ডমালীতলায়—অর্থাৎ তারামা গলার মুণ্ডমালা যেখানে রেখে দ্বারকায় স্নানে যেতেন। পঞ্চমুণ্ডির আসনপাতা মহাশ্মশান আজ তাত্ত্বিক, সাধু-ফকিরদের উপনিবেশে রূপান্তরিত। পরিবেশও কিছুটা যেন কলুষিত। আনন্দময়ী মার আশ্রমও হয়েছে আজকের তারাপীঠে। ১৩১৮ বঙ্গাব্দের ২রা শ্রাবণকে স্মরণ করে

বামাঙ্ক্যাপার তিরোধান উৎসব হয় আজও। আশ্বিন মাসের শুক্লা চতুর্দশীতে ৭ দিনের মেলা ছাড়াও উৎসব রয়েছে সারা বছর জুড়ে তারাপীঠে।



শান্তি নিকেতন থেকে দূরত্ব ৭৮ কিমি, আর কলকাতা থেকে ২৯৪ কিমি। CSTC-র বাস যাচ্ছে শহীদ মিনার থেকে সকাল ৮-০০টা ঘেড়ে বর্ধমান/শান্তিনিকেতন/ সিউড়ি/ তারাপীঠ হয়ে, আর ৭-০০ ও ৯-০০টা ঘেড়ে শহীদ মিনার ছেড়ে বারাসাত/ কৃষ্ণনগর/ বহরমপুর/সাঁইথিয়া/ তারাপীঠ হয়ে ৮ ঘটায় রামপুরহাটে। কলকাতায় ফেরে রামপুরহাট থেকে ৬-৩০ ও ৮-০০টা ঘেড়ে CSTC-র আবার বেলপুর আগত যেকোন ট্রেনে রামপুরহাট গিয়ে রেল স্টেশন থেকেই ৯ কিমি সড়ক পথে ট্রেকার, অটো, মিনি, বাসে তারাপীঠ যাওয়া চলে। আর তারাপীঠ থেকে বাস যাচ্ছে ১১-৩০এ ছেড়ে দুমকা হয়ে দেওঘরে। সিউড়ি হয়ে ৩২ ঘটায় বরেন্দ্রপুর যাচ্ছে ৫-০০, ৫-২৫, ৮-২০এ; সাঁইথিয়া, নলহাটি যাচ্ছে নানান বাস। কৃষ্ণনগর যাচ্ছে বহরমপুর হয়ে ১১-৪০, ১২-২০; কলকাতায় যাচ্ছে ৬-২০, ৭-১০এ; বহরমপুর যাচ্ছে ৬-২০ ও ৭-১০ ছাড়াও কৃষ্ণনগর ও কলকাতার বাস। রামপুরহাট রেল স্টেশন যাচ্ছে প্রতাপ থেকে গভীর রাতে মুহূর্ত। তবুও যেন রামপুরহাট থেকে বাসের আধিক্য মেলে। দূরত্ব রামপুরহাট থেকে—নলহাটি ১৬, নলহাট থেকে ১৮, কোটাসুর ৩৭, সিউড়ি ৫১, দুমকা ৬২, দেওঘর ১২৯ কিমি। দুমকা যাচ্ছে রেল স্টেশন থেকে ৪-০০টায় প্রথম ছেড়ে ১৭-৪০এ শেষ বাস, আধ ঘট্টা অন্তর সার্ভিস, ভাড়া ১৫—সময় নেয় ২২ ঘট্টা। রামপুরহাট ফেরে দুমকা থেকে ৫-১৫য় প্রথম ছেড়ে ২০-০০টায় শেষ বাস।



থাকার জন্য নানান হোটেল তারাপীঠে। অবস্থানও বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫ মিনিটের পথে। ভাড়া এদের লাগাম ছাড়া। অমাবস্যা ও উইক এন্ডে ১৫০-১৫০০ টাকায় চড়লেও উইক ডেজে ৭৫-২৫০ টাকায় ঘর মেলে তারাপীঠের হোটেলে। তবুও যেন পরিবেশের আকর্ষণে ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘ (ডোনেশন প্রথায়) বা নাগেন বাবার আশ্রমে DCB ১০/২০ টাকায় থাকা যেতে পারে; বাস স্ট্যান্ড থেকে মন্দিরের পথে—H Suvam, New Binapani L, Binapani L, Satima Niwas, Tirthabas L, Dhiren Saila Dharamshala, Sankar L, মন্দির পেরিয়ে Rasanti L, Sabitri L, Ramkanai Junini Dharamshala।

মন্দিরের বিপরীতে বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে—Mohan L, Ashirbad L, Keshari L, Sabitri Bhavan, Nataraj L, H Santinivas, Ma Tara L, Sandip L, Shailabas, Bharat Sebashran Sangha, Nagen Baba Ashram।

বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া দ্বারকা নদীর পুল পেরিয়ে বাস সড়কে—Dwaraka L, Hotel Smriti L, Mahadev Bhavan L, H Chhuti, H Purbasha, Tarapith G H, Renuka L, Asha L, H Alaka, H Sathi, H Shelter, Upasana L, Dreamland L। আর আছে ভিড়ে তাঁসা মন্দিরের পথে জয় মা কালী সন্তান সঙ্ঘ, শ্রমণের পানেই বামা মিশনের নয়্য নিবাস, সুনীডকুমার, বামদেব সঙ্ঘ, তারাপীঠ সঙ্ঘ, শিবানন্দ আশ্রম ছাড়াও নানান। যানোজায়ের লিখে অগ্রিম বুক করা যায়। শৈলাবাসের কল বুকিং: শৈল স্যুইটস, লেকটাউন থেকে মেলে। আর খাবারের হোটেল অল্প তারাপীঠে।

আর আছে জেলা পরিষদ ও সেচ দপ্তরের বাংলা, রেলের রিটারিং রুম আছে রামপুরহাটে। আর আছে বাস স্ট্যান্ডে—মুখাজী লজ, নিউ সিটি লজ; রেল স্টেশনের কাছে—রামপুরহাট লজ; হোটেল প্রাচী, বলরাম লজ, রাধা লজ, অনিবার্ণ লজ ছাড়াও নানান। সাঁওতাল বিশ্রোহকালীন হ্যামটন সাহেবের তৈরি গোল-ঘরটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে রামপুরহাটে।

উৎসাহীরা তারাপীঠ থেকে বাসে সাঁইথিয়ামুখী ১০ কিমি গিয়ে নিত্যানন্দ মহাপ্রভুর জন্মস্থান (১৩৯৫ শকাব্দের মাঘ মাসের শুক্লা ত্রয়োদশী) গর্ভাবাস নামে প্রসিদ্ধ বৈষ্ণবতীর্থ বীরচন্দ্রপুরও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বাস সড়কের ডাইনে নিত্যানন্দর আরাধ্য দেবতা বাকরায়ের আটচালা মন্দির। আর হয়েছে বসন্তীতলা, বিশ্বরূপতলা, শ্রীক্ষেত্রের দেবতা জগন্নাথদেবের মন্দির চলার পথেই। মূর্তিটিও সুন্দর। ভক্তদের প্রসাদ মেলে। মহাভারতের পাণ্ডবরা অজ্ঞাতবাস কালে ব্রাহ্মণের ছদ্মবেশে এখানেও নাকি অবস্থান করে-ছিলেন। নাম ছিল সেকালে এর একচক্রগ্রাম। সাঁইথিয়ামুখী আরও ৪ কিমি যেতে সাঁইথিয়ার ৮ কিমি উত্তর-পূর্বে ঝেঁটাসুর। মদনেশ্বর শিব মন্দির প্রাঙ্গণে প্রদীপাকার প্রস্তরখণ্ড আজও কুন্তীদেবীর প্রদীপ নামে অভিহিত। আর আছে বকরাঙ্কসের মালিহাট। ২টি শিবমন্দিরও রয়েছে প্রাঙ্গণে। এছাড়াও আছে সূর্য ও বিষ্ণুর কষ্টিপাথরের সুদর্শন মূর্তি মদনেশ্বর চত্বরে। লোকশ্রুতি, ভীম এখানেই বকরাঙ্কসকে বধ করে হিড়িম্বাকে বিয়ে করে।

নলহাটি

সাহেবগঞ্জ লুপ লাইনে কলকাতা থেকে বোলপুর/সাঁইথিয়া/তারাপীঠ/রামপুরহাট হয়ে ট্রেন যাচ্ছে নলহাটি। দূরত্ব নলহাটি থেকে কলকাতা ২২১, বোলপুর ৭৫, রামপুরহাট ১৪ কিমি। আর শান্তিনিকেতনের সড়ক দূরত্ব ৯১ কিমি। রেল স্টেশন থেকে ১ আর বাস থেকে ২ কিমি দূরে অনুচ্চ টিলার ঢালে দেবী পার্বতী অর্থাৎ নলাটেশ্বরী মন্দিরের জন্য নলহাটির প্রসিদ্ধি। চারচালা মন্দিরে পাষণ খণ্ডের মাঝে দেবী বিরাজিত। সতীর নলা পড়ে এখানে। স্বপ্নাদেশে আবিষ্কার করেন কামদেব ২৫২ বঙ্গাব্দে। আর মন্দিরটি গড়েন রানী ভবানী। দ্বিমতে রামশরণ শর্মা স্বপ্নাদিষ্ট হন—মন্দির তৈরি করেন বাণিজ্য করতে বেরিয়ে সওদা-গরুরা। ৫১ পীঠের এক পীঠ। অতীতে একটি প্রবণ ছিল। গড়ও ছিল সেকালে। আর আছে মন্দিরের পিছনে টিলার টপে বগীবৃক্ষে শহীদ পীর কেবলা আনা শহীদ মাজার শরীফ। চোখ ভরে দেখে নেওয়া যায় টিলা থেকে বাংলার শেষ স্থায়ী নবাব মিরকাশিমের সঙ্গে ব্রিটিশের লড়াই ক্ষেত্র উদুয়ানালায় মাঠ। টিলার আর এক আকর্ষণ তার প্রাচীন-কালের নিমগাছ। গাছের বৈশিষ্ট্য—এর মন্দিরমুখী ডালের পাতা স্বাভাবিক তেতোআর মাজারমুখী ডালের পাতা মিষ্টি না হলেও তেতো নয়। টিলার পশ্চিমে খনন ১৯৬৪ সালে আবিষ্কৃত হয়েছে প্রাচীন, মধ্য ও প্রস্তরযুগের নানান অস্ত্রশস্ত্র। উৎসাহীরা

কলকাতার যাদুঘরে দেখেও নিতে পারেন সে নিদর্শন। থাকার ব্যবস্থা আছে মন্দিরে। আর আছে রেল স্টেশনের কাছেই ইন্দ্রপুরী হোটেল ও পূর্ব দপ্তরের বাংলা নলহাটিতে।

উৎসাহীরা নলহাটি থেকে ভদ্রপুরের বাসে বা NH-2 ধরে বহরমপুরগামী যে-কোনও বাসে নগরার মোড়ে নেমে দেখে নিতে পারেন নন্দকুমারের জন্মস্থান (১৭০০) ভদ্রপুর। ভদ্রপুর বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে আকালীপুরে দেবী আকালীর মন্দির। মহারাজ নন্দকুমারের স্বপ্নে পাওয়া দেবী কালীর মূর্তিতে বৈচিত্র্য আছে। সর্পাসীনা, সর্পাভরণ, বরাভয়দায়িনী বিভূজা, শ্মশানবাসিনী। জগন্নাথাতীত্রী গৃহকালিকার মূর্তি হয়েছে কষ্টিপাথরে। মন্দিরটি নির্মাণকালেই বিদীর্ণ হয় এর দেওয়াল। উত্তরদিকের ফাটলটি আজও সে সাক্ষ্য বহন করছে। ওয়ারেন হেস্টিংসের অসাধুতার প্রতিবাদ করায় মন্দিরটির অসম্পূর্ণ অবস্থাতেই ফাঁসি হয় নন্দকুমারের। সংস্কারের অভাবে মন্দিরটি আজ জীর্ণ। জনশ্রুতি, মগধরাজ জরাসন্ধের পূজিত দেবীকে ওয়ারেন হেস্টিংস বাংলায় আনেন উত্তর ভারত থেকে। প্রাথমিক সখ্যতার সুবাদে মূর্তি পান নন্দকুমার। অত্যাৎসাহীরা বাস স্ট্যান্ডের বাঁয়ে হাট-তলায় বগীদের হাতে খণ্ডিত ভদ্রকালী ও অদূরে গ্রামান্তরে নন্দকুমারের প্রাসাদের ধ্বংসস্থলও দেখে নিতে পারেন। মুক-মুখে দাঁড়িয়ে আছে মহারাজ নন্দকুমারের প্রাসাদবাড়ির দেওয়ানখানা ও অন্দর মহলের কিছু অংশ। তবে সেও আজ জরাজীর্ণ, কোপ-ঝাড় গ্রাস করেছে প্রাসাদকে। অদূরে ব্রাহ্মণী নদী তীরে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির রেশম কুঠিটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে পায়ে পায়ে। এবার ফিরন ১২ কিমি দূরে নলহাটি বা আরও ১৪ কিমি গিয়ে রামপুরহাট হয়ে তারাপীঠে। মুহম্মদ বাসও চলে এপথে।

বাস/মিনি বাস যাচ্ছে রামপুরহাট রেল স্টেশন থেকে প্রত্যুষ থেকে গভীর রাতে তারাপীঠের। ৫-৩০ ও ৬-২০এ যাচ্ছে বক্রেশ্বরে; নলহাটি হয়ে ভদ্রপুর যাচ্ছে ৬-০০, ৭-২৫, ৮-২০, ৯-০০, ৯-৪০, ১৫-১৫, ১৬-১৫, ১৭-২০, ১৭-৫০, ১৮-১৫য়। বাস যাচ্ছে নলহাটি, সাঁইথিয়া, সিউড়ি, বোলপুর, দুমকা, দেওঘর, ফারাকা, বহরমপুরেও রামপুরহাট থেকে।

মালদহ

পর্বটন মানচিত্রে আজ গৌড় ও পাণ্ডুয়া কিছুটা স্তিমিত হলেও মালদহ যথেষ্ট আদৃত। মালদহরই দক্ষিণে গৌড় আর উত্তরে পাণ্ডুয়ার অবস্থান। তাই উচিতও হবে মালদহকে বুড়ি করে মালদহ-গৌড়-পাণ্ডুয়া বেড়িয়ে নেওয়া। অতীতে বাংলার রাজধানী ছিল মালদহর উপকণ্ঠে গৌড়ে। আর সেই মধ্যযুগীয় ধ্বংসাবশেষ আজও পর্বটক আকর্ষণ করে চলেছে। মালদহ শহরটিও আজকের নয়। গৌড় ও পাণ্ডুয়া থেকে একে একে মুসলিমরাজ্য লোপ পেতে মালদহ শহরের পত্তন। ১৭০৫এ গৌড় ও পাণ্ডুয়ার মাঝে রেশম কারবারের সুবিধার্থে ছোট এক গ্রাম কিনে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি কুঠি গড়ে। নাম হয় তার ইংলেজাবাদ অর্থাৎ ইংরেজের আবাদ। কালে কালে

ইংলেজাবাদই হয় ইংলিশবাজার। ব্যবসার স্বার্থে তাঁতি ও জেলায় এসে বসতি গড়ে কুঠিকে ঘিরে। আর ১৭৭১এ কুঠি থেকে দুর্গ গড়ে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি অর্থাৎ ব্রিটিশ। নেমে আসে ব্রিটিশরাজসেদিনের মালদহতে। ১৯৩৭এ জন্ম মালদহ মিউজিয়মে গৌড় ও পাণ্ডুর প্রত্নতত্ত্বের নানান সংগ্রহও উল্লেখ্য। তেমনই রেল স্টেশন চত্বরে পূর্ব রেলের তৈরি পার্কটি স্থানীয়দের সান্নাধ্য ভ্রমণের মনোরম পরিবেশ। আর আছে গোলাম হুসেনের কবর, চিত্রশালা, শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন ও জহরতলা থান অর্থাৎ শক্তিপীঠ। তবুও যেন আজকের মালদহ আমাদের কাছে সমধিক খ্যাত তার ফজলি আশুর জন্য। তেমনই মালদহ আর এক কুঠি তার গম্ভীরা সৃষ্টি।

গৌড় : জনশ্রুতি, অতীতে গুড় ব্যবসার প্রসিদ্ধির জন্য গুড় থেকে গৌড় নামকরণ। তবে, পুরাণে মেলে সূর্যবংশীয় রাজা মাক্ষাতার দৌহিত্র গৌড় এই ভূখণ্ডের রাজা ছিলেন।

মালদহ থেকে NH-34 ধরে ফারাক্কাঘাট ৩ কিমি যেতে বামহাতি বাংলাদেশ সীমান্তের মহদীপুর পথে ৭ কিমি গিয়ে পিয়াস বারি বা পিয়াজবাড়ি। পিয়াস বারি থেকে ডানহাতি পথে ৩ কিমি জুড়ে গৌড়ের অতীত রাজধানীর ধ্বংসাবশেষ। গৌড়ের নিজস্ব কোনো বাস না থাকলেও মালদহ বাস স্ট্যান্ড থেকে ৬-০০, ৭-০০, ৮-০০, ৯-৩০, ১০-১৫, ১১-০০, ১২-০০, ১৪-৩০, ১৫-৩০, ১৭-০০, ১৮-০০, ১৯-৩০টায়ে মহদীপুরের বাসে পিয়াস বারি পৌঁছে পায় পায় ৫ কিমি পরিক্রমায় সাঙ্গ করা যায় বৌদ্ধ-হিন্দু-নবাবী রাজধানী গৌড় দর্শন। লুকোচুরি গোট হয়ে পথ পৌঁছায় মহদীপুর-মালদহ বাস সড়কে। ফেরাও যেতে পারে শহরে ফিরতি বাসে। তবে ইটিতে বিমুখ যাত্রীদের উচিত হবে মালদহ থেকে ১০০ টাকায় টাঙ্গা, ২০০ টাকায় ট্যাক্সিতে ঘণ্টা তিনেক গৌড় বেড়িয়ে ফেরা। রিকশাতেও সাঙ্গ করা যায় গৌড় দর্শন। *জেলা পরিষদের ট্যারিস্ট লজ*ও হয়েছে পিয়াস বারিতে।

দীর্ঘ অতীতে শবর, পুলিন্দ প্রভৃতি দ্রাবিড় ও প্রাক আর্য কোমেরা বাস করত গঙ্গার নিম্ন অববাহিকা ও করোতোয়ার দোয়াবে। গুপ্ত যুগের সুবর্ণময় কালে তৃতীয় চন্দ্রগুপ্ত বা বিক্রমাদিত্য মগধ থেকে রাজধানী স্থানান্তর করেন উত্তর ভারতের উজ্জয়িনীতে। আর সংঘাতেরও শুরু সেই থেকে আজকের গৌড় অর্থাৎ সেকালের বৌদ্ধ সাম্রাজ্য পুণ্ড্রবর্ধন রাজ্যে। ইতিহাসের নানান টলমটালের মধ্য দিয়ে সামন্ত-রাজা শশাঙ্কের অভ্যুত্থান। তরুণ শশাঙ্ক রাজা হয়েই স্বাধীনতা ঘোষণা করে নামের বদল ঘটান রাজ্যের। পুণ্ড্রবর্ধন হল স্বাধীন গৌড়রাজ্য ৬০২ খ্রিস্টাব্দে। রাজধানী তার কর্ণসূর্য। শশাঙ্কের মৃত্যুর পর শতবর্ষের অনাচার দূর করতে গৌড়বাসী রাষ্ট্রপ্রধান নিয়োগ করলেন পুণ্ড্রবর্ধনের উত্তরপুরুষ গোপাল-দেবকে। গোপালদেব রাজ্য পেয়ে রাজধানী গড়েন কালিন্দী নদীর তীরে গৌড়ে। গোপালদেবের পুত্র ধর্মপাল ও ধর্মপালের পুত্র দেবপালের কালে গৌড়ের রমরমা। গড়ে ওঠে মন্দিরের পর মন্দির গৌড়ের আকাশ ছেঁয়ে। তাদেরই কালে দুই বিশিষ্ট ভাস্কর ধীমান ও বাঁটপালের অনুপম ভাস্কর্য মহীয়ান

করে তোলে গৌড়কে। রাজ্যও প্রসার পায় ধর্মপাল ও দেবপালের কালে—উত্তরে হিমালয় থেকে দক্ষিণে সেতুবন্ধ আর পশ্চিমে আরবসাগর থেকে পূবে বঙ্গোপসাগর। ১১২০এ বংশের শেষ রাজা রামপালের মৃত্যুতে গৌড় যায় বৌদ্ধ থেকে হিন্দু রাজ্য সেন বংশের হাতে। ১২শতকে বঙ্গাল সেনের রাজত্বকালে শিক্ষা ও সংস্কৃতিতে গৌড়ের প্রশস্তি ছিল সারা বিশ্ব জুড়ে। ১২০২এ শেষ হিন্দুরাজা লক্ষ্মণ সেনের কালে গৌড় যায় বখতিয়ার খিলজির দখলে। হিন্দু-রাজলোপ পেয়ে শুরু হয় মুসলিম নবাবী শাসন গৌড়ে। আজকের গৌড়ের স্মৃতিসৌধগুলি তাঁদেরই কীর্তিকলাপের স্মারক হয়ে অতীত রোমন্থন করায়।

মালদহ-মহদীপুর বাস সড়কে গৌড় দর্শনার্থীদের প্রথম দ্রষ্টব্য পিয়াস বারি বা পিয়াজবাড়ি। বাড়িটি আজ লুপ্ত হলেও ৩৩ একর ব্যাপ্ত দিঘির *পিয়াস বারি* আজও নসরৎ শাহর নির্মমতার কাহিনী শোনায়। অভিনব ভাবে মৃত্যুদণ্ড দিতেন সব্রাট। আকর্ষণ মিষ্টি খাইয়ে বন্ধ ঘর থেকে দিঘির জল দেখে পিয়াস যেতে বেড়ে। শেষ পর্যন্ত মৃত্যু। আকবর-নামায় মেলে—দিঘির জলও ছিল বিবাক্ত।

পিয়াস বারির ডাইনে বাঁক খাওয়া গ্রাম্য পথের পশ্চিমে যেতে রামকেলি। ১৫০৬এর জ্যৈষ্ঠ সংক্রান্তিতে বৃন্দাবনের পথে শ্রীচৈতন্যদেব আসেন গৌড়ে। অবস্থান করেন মহাপ্রভু কয়েকদিনের তরে এখানে। পদচিহ্ন রয়েছে পাথরের বুকে চৈতন্যদেবের তমালতলের ছোট্ট মন্দির। একই বেদীতে ২টি তমাল ও ২টি কদম্ব বৃক্ষ আজও রয়েছে যার নিচে গৌড়ে অবস্থানকালে বসতেন শ্রীচৈতন্য। হুসেন শাহর দুই মন্ত্রী: সাকর মল্লিক—*রূপ* আর দবীর খান—*সনাতন* সান্নিধ্যে আসেন চৈতন্যদেবের। দীক্ষা নেন তাঁরা তমালতলে চৈতন্যদেবের কাছে বৈষ্ণবধর্মে। মন্দিরও গড়েন রূপ ও সনাতন শ্রীশ্রীমদনমোহন জিউ-এর। তবে, সেটি ধ্বংস হতে ১৩৪৫ বঙ্গাব্দে বর্তমান মন্দিরটি গড়ে ওঠে। দেবতা—শ্রীশ্রীমদনমোহন, শ্রীরাধিকা ছাড়াও নানান। রূপসাগর, শ্যামকুণ্ড, রাধাকুণ্ড, ললিতাকুণ্ড, বিশাখাকুণ্ড, সুরভীকুণ্ড, রঞ্জাকুণ্ড, ইন্দুলেখাকুণ্ড—৮টি কুণ্ডও রয়েছে মন্দিরের ডাইনে-বাঁয়ে। এগুলিও খনন করেন রূপ ও সনাতন বৃন্দাবনী চণ্ডে। আজও প্রতি বছর জ্যৈষ্ঠ সংক্রান্তিতে স্মরণোৎসব পালিত হয় শ্রীচৈতন্যর। জাঁকালো মেলা বসে ৭ দিন ধরে। পরম পবিত্র বৈষ্ণবতীর্থ রামকেলিকে গুপ্ত বৃন্দাবনও বলে থাকে লোকে।

রামকেলি থেকে ২ কিমি দক্ষিণে বারোদুয়ারী। গৌড়ের স্মৃতিসৌধগুলির মধ্যে অন্যতম আর বৃহত্তমও বটে এই বারোদুয়ারী। নামে বারো দুয়ারী হলেও আসলে এটি এগারো দুয়ারী। ১৬৮৭এ ফুট ব্যাপ্ত ৪০ ফুট উঁচু মসজিদ আলউদ্দিন হুসেন শাহর হাতে শুরু হয়ে শেষ হয় ১৫২৬এ তারই পুত্র নাসিরুদ্দিন নসরৎ শাহর হাতে। চারধারের বারান্দা খিলানের কাজে সমৃদ্ধ। সুন্দর কারুকার্যময় চতুষ্কোণ মসজিদটি ইটে

শুরু হয়ে সম্পূর্ণতা পায় পাথরে। ইন্দো ও আরবীয় শৈলীতে তৈরি মসজিদের নির্মাণ ও অলঙ্করণ পর্যটকদের অভিভূত করে। পাথরখণ্ডগুলি এমনই নিখুঁতভাবে বসানো যে জোড় খুঁজে পাওয়া ভার। সম্ভবত বাদশাহ আসতেন এই বারো-দুয়ারীতে নামাজ পড়তে। উত্তর দেওয়ালের মোকিন মঞ্চটি বাদশাহর নামাজস্থল হয়ে থাকবে। আর মুয়াজ্জিন দক্ষিণের এক পীঠ থেকে ঘোষিত হত। মহিলাদের প্রকোষ্ঠটিও বিধ্বস্ত। ৪৪টির মধ্যে ১১টি গম্বুজ আজও অতীত রোমন্থন করায়। গম্বুজের সোনালি চিকন কাজের জন্য সোনা মসজিদ আর আকারে বড় থেকে বড় সোনা মসজিদও বলে থাকে একে। খানোয় বিনিময়ে শ্রম প্রথায় তৈরি হয়েছিল গৌড়ের সর্বোৎকৃষ্ট এই হর্ম।

পরিখাত্ত প্রাচীরে ঘেরা হাভেলী খাস প্রাসাদের মূল প্রবেশ পথে ছিল উত্তরমুখী দাখিল দরওয়াজা। ফারসি শব্দ দাখিল—অর্থ তার প্রবেশ। অতীতে কামান দাগা হত এরই কাছ থেকে। তাই সালামী দরওয়াজা নামেও খ্যাত এটি। ৭০ ফুট উঁচু, ১১৩ ফুট প্রশস্ত পোড়ামাটি ও লাল ইটে তৈরি দাখিল দরওয়াজার নির্মাণ ও অলঙ্করণশৈলী অনন্য করে তুলেছে একে। বিশ্বের সুন্দরতম ইটের কাজ বলে স্বীকৃতিও দিয়েছে *The Cambridge History of India* দাখিল দরওয়াজাকে। ১৪২৫এ বারবাক শাহর হাতে তৈরি মনোহর এই দাখিল দরওয়াজা। পেরুতেই খরস্রোতা পরিখা, গভীর জল—কুমিরে আকীর্ণ। পারাপার ছিল ভাঁজ করা সাঁকো ফেলে সকালে। ভাঁজ খুলে তুলে নিলে পারাপার অসাধ্য।

দাখিল দরওয়াজা থেকে ১ কিমি দূরে কুতবের আদলে তৈরি ২৬ মি উঁচু ৫ তলার ফিরোজ মিনারটি গৌড়ের আর এক দ্রষ্টব্য। বারবাক শাহকে হত্যা করে গৌড় জয়ের স্মারক রূপে তৈরি করেন হাবসি সুলতান সৈয়ফ উদ্দিন ফিরোজ শাহ ১৪৮৫-৮৯ খ্রিস্টাব্দে। পীর-আশা-মিনার বা চিরাগদানিও বলে থাকে একে। আলোর ইশারায় সংবাদ আদান-প্রদান হতো অতীতে। ৮৪ ধাপের ঘোরানো সিঁড়ি উঠে জয় করে নেওয়া যায় মিনার। তুঘলকশৈলীতে তৈরি, দেওয়াল টেরাকোটায় সমৃদ্ধ। নীল ও সালা মীনা করা টালিতে অলঙ্কৃত। এমনকি এর চমৎকারিখে মুখ্য ফিরোজ নিজ গলা থেকে মোতির মালা খুলে শিল্পী পিরু মিস্ত্রিকে পরিয়ে দেন। দিশেহারা পিরুর নির্বুদ্ধিতার সোষে দাস্তিক রাজার বিধানে প্রাণও দিতে হয় তাকে মিনারের চূড়ো থেকে পড়ে।

ফিরোজ থেকে ১ কিমি যেতে কদম রসুল মসজিদ। কদম অর্থ পদ আর রসুল হচ্ছেন পয়গম্বর (হজরত মহম্মদ) অর্থাৎ পাথরের বৃক্ক যুগল পদচিহ্ন রয়েছে পয়গম্বরের। জনশ্রুতি, সুলতান আল-উদ্দিন হুসেন শাহ মদিনা থেকে আনেন হজরত মহম্মদের এই পায়েয় ছাপ। তবে দিনভর কদম রসুলে অবস্থান করে দিনান্তে মহদীপুরে ফিরে যায় মহম্মদের পায়েয় ছাপ। আর ১৫৩০এ কারুকার্যমণ্ডিত মসজিদটি গড়েন সুলতান নাসিরউদ্দিন নসরত শাহ। চারকোণে কালো মর্মরে

চার মিনার, শিরে গম্বুজ। কদম রসুল লাগোয়া বিপরীতে বাংলার দোচালার ঢঙে ইটে তৈরি মসজিদে আওরঙ্গজেবের সেনাপতি দিলওয়ারের পুত্র ফতে খাঁ শায়িত রয়েছেন। মৃত্যু ঘটে রক্ত বমি করে ফতে খাঁর।

কদম রসুল থেকে বেরিয়ে বায়ে নেক বিবির সমাধি। নানান অলৌকিক ক্রিয়াকলাপে নিপুণা ছিলেন নেক বিবি। ভক্তের বাহ্মা পূরণ হয় আজও।

১৪৭৫এ ফকিরের সম্মানে সুলতান ইউসুফ শাহর তৈরি বিরাটাকার এক গম্বুজওয়ালা চিকা মসজিদ। চিকা অর্থাৎ বাদুড়দের বাস ছিল সেকালে। সুন্দর চাকচিক্যময় অলঙ্করণের জন্য চামখানা নামেও খ্যাত আছে এর। অলঙ্করণে হিন্দু মন্দির স্থাপত্যের নিদর্শন মেলে। প্রবেশ দ্বারের বায়ে দেওয়ালের পাথর থেকে গণেশ মূর্তিটি টেঁছে তোলায় প্রচেষ্টা আজও পরিস্ফুট। মসজিদ নয়—সম্ভবত রাজ দরবার বসত সুন্দর-সুশোভিত ৯৫ মি দৈর্ঘ্যপ্রস্থের চিকা অর্থাৎ চামখানে। দ্বিমতে, মামুদ শাহ সমাধিস্থ চামখানায়। তবে, রূপ ও সনাতনের বন্দী জীবন কাটে এই চামখানায়। সুড়ঙ্গপথও ছিল সেকালে চিকা থেকে গুমটি ঘরের। এরই পাশে দাতন মসজিদ।

চিকার উত্তর-পশ্চিমে ১৫১২-য় হুসেন শাহর তৈরি গুমটি দরওয়াজা। রঙবেরঙের কারুকার্যমণ্ডিত ইট ও টেরাকোটায় সুশোভিত গুমটি দরওয়াজা আজ রুদ্ধ। রঙবেরঙের নকশাও লুপ্ত হতে বসেছে। শোনা কথা হলেও সোনারও নাকি প্রলেপ ছিল এর অলঙ্করণে।

কদম রসুলের দক্ষিণ-পূবে ১৬৫৫য় শাহ সুলজার হাতে মোগলী ধাঁচে তৈরি লুকোচুরি গোট বালকুছিপি দরওয়াজা। দ্বিমতে ১৫২২-এ হুসেন শাহর তৈরি এই দরজা। কার্যত রয়্যাল গোট ছিল দুর্গের পূর্ব দ্বার ৬৫x৪২.৪ ফুটের দ্বিতল এই গোট। অবকাশে লুকোচুরি খেলতেন সুলতান বেগমদের সাথে। দুশাপে শ্রেয়ীকক্ষ, নকরখানা, দ্বিতলে নহবত ছিল—বাজনাও বাজত সকাল-সাঁঝে। স্থাপত্যে অভিনবত্ব আছে।

১৫ শতকে যদু অর্থাৎ জালালউদ্দিনের মৃত্যুর পর পাঠান সেনাপতি নাসিরুদ্দিন গৌড় দখল করেন। তার পুত্র বারবাক শাহ প্রাসাদ গড়েন নতুন করে। প্রাসাদ সুরক্ষার্থে ২২ গজ উঁচু প্রাচীরও গড়েন ১৪৬০এ চিকার ১ কিমি পশ্চিমে। অভিনব এই প্রাচীর নিচুতে ১৫ ফুট, ক্রমশ সুরু হয়ে উপরের দিক ৮ ফুট ১০ ইঞ্চি। বোড়ায় চড়ে কোতোয়াল পাহারা দিত বাইশ গজী প্রাচীরে। কার্যত, ত্রি-স্তরে বিন্যস্ত ছিল রাজপ্রাসাদ এই বাইশ-গজী প্রাচীর থেকে। মূল প্রবেশপথ দাখিল দরওয়াজা হয়ে চাঁদ দরওয়াজা পেরিয়ে নিম্ন দরওয়াজা দিয়ে রঙবেরঙের টালিতে অলঙ্কৃত মনোহর দরবার হলের পথও ছিল। দ্বিতীয় অংশে সুলতানের বাস। দ্বারের মহল তথা বেগমদেরও বাস ছিল এই দ্বিতীয় অংশে। তবে, আদার আর অবহেলায় লুটেরাদের পণ্য হয়ে প্রাসাদপুরী আজ লুপ্ত।

কোতোয়ালী দরওয়াজা রেখে ২ কিমি দক্ষিণে বদলা

সেনের দিঘি পেরিয়ে আরও ২ কিমি দক্ষিণে যেতে শহরতলি ফিরোজপুরে ১৫৫৯-এ সুলেমান কররানির কালে গড়া নিয়াম-উল্লাহ মসজিদ। অদূরে টাকশাল, দিঘির ধারে সুনন্দা নদী। খোদিত গৌড়ের মণি পাথরের ছোট সোনা মসজিদ।

অবশেষে বাঁক খাওয়া গৌড়ীয় পথ গিয়ে মিলেছে মহদীপুরের বাস সড়কে। লুকাচুরি গেট থেকে ১২ কিমি যেতে তাঁতিপাড়া মসজিদ। উমর কাজীর স্মৃতিতে ১৪৮০তে সুলতান মিরশাদ খানের তৈরি। বিপুলাকার চারকোণা ১০ গম্বুজ বিশিষ্ট তরঙ্গায়িত ছাদের সুস্বন্দর কারুকার্যময় টেরাকোটায় সমৃদ্ধ এই মসজিদ গৌড়ের অন্যতম সুন্দর মসজিদ ছিল সেকালে। তবে, ১৮৮৫র ভূমিকম্প ধ্বংস করে একে। ১৩ ফুট চওড়া দেওয়াল ৪টি মুকমুখে আজও অতীত রোমহন করায়।

তাঁতিপাড়া থেকে মহদীপুরমুখী ১ কিমি যেতে বাস সড়কে লোটন মসজিদ। চতুষ্কোণ কক্ষের লোটন মসজিদ ১৪৭৫এ তৈরি করেন সুলতান শমস উদ্দিন ইউসুফ। ব্রহ্মতে, রাজদরবারের নর্তকীর তৈরি। অষ্টভুজ স্তম্ভের উপর ধনুকাকারে ছাদ ও গম্বুজ। সবুজ, নীল, হলুদ, পীত ও সাদা রঙে মিনা করা টালিতে দেওয়াল। সূর্যালোকে রঙের বর্ণালীতে দূর থেকে মনে হবে নৃত্যের তালে তালে এক নর্তকী চলেছে দেব-অভিনয়ে। ভেতরেও রঙের বর্ণালী। স্থাপত্যে ও ভাস্কর্যে সূক্ষ্মতার অভাব ঘটলেও চিত্রক অলঙ্করণের উৎকর্ষতা অনন্য করে তুলেছে একে।

লোটনের বিপরীতে ১ কিমি মোরাম পথে পায়ে গিয়ে গুণমস্ত মসজিদটিও দেখে ফেরা যায়। অতীতে ভাগীরথীও বয়ে যেত লোটনের নিচ দিয়ে। কালে পাথরের বিশালাকার মসজিদটির খিলান ও গম্বুজ হয়েছে ইটে। ফতে শাহর তৈরি গুণমস্ত আদিনার আদল মিললেও লুটেরাদের পণ্য হয়ে ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত।

লোটন থেকে শহরমুখী ফিরতে তাঁতিপাড়া/লুকাচুরি রেখে ২ কিমি উত্তরে চামকাটি মসজিদ। এটিও তৈরি করেন ১৪৭৫এ সুলতান ইউসুফ শাহ দানশীল এক ফকিরের আরক রূপে।

সুলতান ইউসুফের আর এক কীর্তি—ফজলি আম সৃষ্টি। সুলতানের প্রিয় নর্তকী ছিলেন ফজলবিবি। ইউসুফ তাকে খুঁজে পেতে নিবাস গড়ে দেন অশ্রুনাশনে। বিলাস-ব্যাসনে মগ্ন হয়ে পড়েন বিবিসাহেবা। অতি অল্পকালেই ফুলে ফেঁপে বণু হয়ে ওঠে বিপুলাকার। ফজলবিবির আবাস লাগোয়া কাননের কোন এক বৃক্ষ আমও ফলত বিপুল আকারের। ফজলবিবির অঙ্গকে বাস করে লোকে বলত ফজল বা ফজলি আম। ফজলবিবি আজ আর নেই, তবে ফজলি আম হচ্ছে মালদহতে গাছে গাছে বিপুলহারে।

১৫৩৯এ স্বাধীন সুলতানীরাজের অবসানে বাংলা যায় শেরশাহের দখলে। ১৫৪৫এ শেরশাহর মৃত্যু হতে দাউদ কররানী হলেন বাংলার সুবেদার। আর দাউদের সেনাপতি

অতীতের গোড়া ব্রাহ্মণ সন্তান কালাচাঁদ রায় ইসলাম ধর্মে ধর্মান্তরিত হয়ে কালাপাহাড়নামে সারা পূর্ব-ভারতের সাথে গোড় ও পাণ্ডুয়ায় এসে ধ্বংস করে হিন্দুর মন্দিররাজি। শহরমুখী যেতে NH-34 সংযোগের পশ্চিমে মালতীপুরে কালাপাহাড়ের গড়টিও দেখে নিতে পারেন অভ্যুৎসাহীরা। তেমনই শহরমুখী আরও যেতে যদুপুরের বাঁয়ে শাদুমা পুরমুখী ৩ কিমি গিয়ে বম্বাল সেনের আর এক কীর্তি বড় সাগরদিঘিও দেখে চলা যায়। সম্প্রতি সংস্কার করে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের মৎস্য দপ্তর মৎস্য নিয়ে পরীক্ষা-নিরীক্ষা করছে। তেমনই দেখতে মেলে বম্বাল ডিটা অর্থাৎ বম্বাল সেনের দুর্গ ও মাটির প্রাকারের ধ্বংসাবশেষ আজও। আর ছোট সাগরদিঘির অবস্থান লোটনের উত্তর-পূর্বে—রাজপ্রাসাদে জল যেত এই দিঘি থেকে। এমনকি ধনপতি চাঁদ সওদাগরের বাসও ছিল দিঘির পাড়ে।

পাণ্ডুয়া : গোড় দর্শন সাজ করে শহরে ফিরে হানাহার সেরে মালদহ থেকে NH-34 ধরে মহানন্দা নদী পেরিয়ে ১৬ কিমি উত্তরে পাণ্ডুয়া চলুন। ট্যান্ডি যাচ্ছে ঘণ্টা দু'য়েকের সফরে ১৫০-২০০ টাকায়। টাঙাও মেলে ১২৫ টাকায় যাতায়াত। আর যাচ্ছে বাস—সরকারি/বেসরকারি জাতীয় সড়ক ধরে পাণ্ডুয়া হয়ে উত্তরবঙ্গের দিকে দিকে মালদহ থেকে। মুহূর্তে বাস মেলে এ-পথে। পাণ্ডুয়াতেও গৌড়ের মতই বাঁহাতি বাঁক খাওয়া ৩ কিমি দীর্ঘ এক গ্রাম্যপথে ছড়িয়ে রয়েছে ইতিহাসের ধ্বংসাবশেষ। দরগা শরীফ বাস সড়ক ছেড়ে গ্রাম্যপথ ঘুরে-ফিরে আদিনা হয়ে মিলেছে আবার জাতীয় সড়ক অর্থাৎ বাসপথে। নির্ভরতা কম হলেও এই পরিক্রমায় ভ্যান রিকশা মেলে পাণ্ডুয়ায়। তবে, হাঁটতে বিমুখ যাত্রীদের উচিত হবে মালদহ থেকে ট্যান্ডি নিয়েই পাণ্ডুয়া চলা। রাত্রিবাসের কোন ব্যবস্থা নেই পাণ্ডুয়ায়। দিন-রাত বাস মেলে আদিনা/পাণ্ডুয়া থেকে মালদহে ফেরার।

পাণ্ডুয়াতেও বসেছিল অতীতকালে বাংলার রাজধানী। সেইসব মুসলিম শাসকদের কীর্তিকলাপের নানান ধ্বংসাবশেষ আজও অতীত রোমহন করায়। পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও ঐতিহাসিক মূল্য এর অপরিমিত। আগে নাম ছিল এর পাণ্ডুনগর। সম্ভবত মহাভারতের পাণ্ডুরাজার রাজত্ব ছিল সেকালে। আজও পাণ্ডুরাজ দালান নামে বাড়ি আছে এক।

পাণ্ডুয়ার প্রথম দ্রষ্টব্য বড় দরগা—NH-34 অর্থাৎ বাস সড়কেই অবস্থান। ১৩৪২এ সুলতান আলাউদ্দিন আলি শাহর হাতে রূপ পায় হিন্দু সাহাজো মুসলিম ধর্মের প্রচারক পারস্য থেকে আগত পীর সৈয়দ মখদুম শাহ জালাল তব্রিজীর নকল সমাধি। ১৪১৪য় মৃত্যু হয় পীর সাহেবের। আর ১৪৫৮য় দরগাহটি গড়েন সুলতান শমসউদ্দিন ইউসুফ শাহ। শিরে ৩টি গম্বুজ। এরই পূর্বে দীর্ঘ *মুরিদখানা*—অতীতে হিন্দুদের ইসলাম ধর্মে দীক্ষিত করা হত। জলের উপর দিয়ে গঙ্গা পার ছাড়াও সৈয়দ শাহর নানান অলৌকিক ঘটনায়

মুখ্য হিন্দু রাজা লক্ষ্মণ সেন দরগা শরীফের জুম্মা মসজিদটি গড়ে তাঁকে ভেট দেন। আর সেন রাজা ২২০০০ টাকা আয়ের উপযোগী জমি ফকিরকে। ফকির সাহেবের ব্যবহৃত নানান জিনিস রয়েছে মসজিদে। আর আছে উত্তরে সিরাজের হাতে রূপোর বেটনীতে ঘেরা ফকির সাহেবের আসন তথা তপস্যাবেদী বা চিল্লাখানা, ভান্দুরখানা, চাঁদ খানের সমাধি, হাজি ইব্রাহিমের সমাধি, ছাড়াও নানান বাড়ি-ঘর দরগা শরীফে। চত্বরের দাড়িষ গাছে বন্ধা নারীরা সন্তান কামনায় ইট বাঁধেন আজও। প্রতি বছর আরবি রজব মাসে ফকিরের ক্ষতিগ্রস্ত অর্থার্থ মৃত্যুবাহিনী পালিত হয় ২২ দিন ধরে। সুলতান আলাউদ্দিনের আর এক কীর্তি তাবরেজির সম্মানে ইট আর পাথরে ১৩৪২এ তৈরি সালামী দরওয়াজা। ২২ ফুট দীর্ঘ, ৭ ফুট ৯ ইঞ্চি প্রশস্ত সালামী দরওয়াজা অর্থার্থ পাথুরার প্রবেশ দ্বার আজও স্বাগত জানায় যাত্রীদের। অদূরে মিঠা তালাও ডাইনে রয়েছে কাজী মসজিদ। বাঁয়ে ১৫০-রও অধিক সমাধি বেদী, সালামী দরজা পেরুতেই দরগা শরীফ অর্থার্থ বড় দরগাহ। আর এরই ২ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ১৩৯৮এ তৈরি নূর কুতব-উল আলমের মাজার তথা ছোট দরগাহ। নূর কুতব-উল আলম ছিলেন সিদ্ধ পীর। নানান অলৌকিক ঘটনায় দক্ষ ছিলেন তিনিও। এমনকি হিন্দু রাজা গণেশের পুত্র যদুনারায়ণ মুসলিম ধর্ম গ্রহণ করেন এই পীর সাহেবের কাছে। ১৩২৫এ অধুনা বাংলাদেশের সিলেটে মৃত্যু ঘটে তাবরেজির।

ছোট দরগা থেকে আরও উত্তর-পশ্চিমে যেতে একলাখী মসজিদ। স্থানীয়রা এক লক্ষ্মীও বলে থাকেন একে। হিন্দুরাজা যদু ইসলাম ধর্মে ধর্মান্তরিত হয়ে জালালউদ্দিন মহম্মদ শাহ হলেন। স্বীয় নিষ্ঠা প্রতিপন্ন করতে এক লাখ টাকা ব্যয়ে ১৪১৪-২৮এ গড়ে তোলেন মসজিদ। গৌড়ের চিকা মসজিদের আদলে তৈরি, টেরাকোটায় সমৃদ্ধ—কারুকার্য সুন্দর। বাংলার পাঠান সুলতানদের স্থাপত্য শিল্পের অতি উৎকৃষ্ট নিদর্শন। সমাধিহীন রয়েছে জালালউদ্দিন একলাখীতে। আর আছে পূর্ব ও তাদের মাঝে বেগম সাহেবা। হিন্দু ও বৌদ্ধ মন্দিরের নানান উপকরণও ব্যবহৃত হয়েছে একলাখীতে। জনশ্রুতি হিন্দুরাজা কংসের দালানই মসজিদে রূপান্তর ঘটে থাকবে।

একলাখী লাগোয়া চত্বরে ১৫৮৪তে ইট আর পাথরে গড়ে উঠেছে ১০ ডোমের কুতবশাহী মসজিদ। মুসলিম ধর্মগুরু নূর কুতব-উল আলমের সম্মানে তাঁরই উত্তরপুরুষ মুখদুম উবেদকাজির তৈরি। উজ্জ্বল নীল রঙ ইটে গম্বুজ-গুলি মোড়া ছিল সেকালে। সূর্যালোকে স্বর্ণাভ দেখাত—তাই, সোনা মসজিদও বলে থাকে একে। আর আকারে ছোট বলে ছোট সোনা মসজিদও বলে সমধিক খ্যাত। এরও কারুকার্যে হিন্দুপ্রভাব আজও বিদ্যমান। ভেতরে বামে পাথরের সিংহাসনে পীর সাহেব বাণী দিচ্ছেন ভক্তদের।

তবে পাথুরার অন্যতম দ্রষ্টব্য ৭৭০ হিজরি অর্থার্থ

১৩৪৭ খ্রিস্টাব্দে সিকন্দর শাহর হাতে শুরু হয়ে পূত্র গিয়াস-উদ্দিন আজম শাহর হাতে ১৩৬০এ সমাপ্ত আদিনা মসজিদ। ৩ দিক বিধ্বস্ত হলেও পশ্চিম আজও মধ্যযুগীয় স্থাপত্যের অনন্য নিদর্শন হয়ে অতীত কীর্তন করছে। ৪০০টি স্তম্ভে ৩৭০টি গম্বুজওয়ালা চতুষ্কোণ ৫০৭x২৮৫ ফুটের বিশালাকার মসজিদটি আকার-আয়তন-অনুরূপে দামাঙ্কাসের জুম্মা মসজিদের মতো। ১২৭টি সমভূজ বিভক্ত ছিল—১২০০০ ধর্মার্থী একত্রে নামাজ পড়তে পারেন। মেঝে থেকে ৮ ফুট উচুতে রথাকার কালো পাথরের বেদীতে বাদশাহকী তখত। ৩টি মেহেরাব ও ২টি দরজা। কক্ষপ্রাচীর গায়ে ভোগরা হরফে কোরাণের বয়েত লিখিত—*মর্তবাসী! তোমরা মাথা নামাইয়া ভূমিতে লুপ্ত হইয়া আল্লাহর উপাসনা কর।* তেমনই রয়েছে হিন্দু, বৌদ্ধ ও জৈন মন্দিরের নানান ভাস্কর্য এর স্থাপত্যে। এমনকি হিন্দুর দেব-দেবীও মূর্তি হয়েছেন অঙ্গ সৌষ্ঠবে। উপাসনা বেদীর সোপানের সর্বোচ্চাঙ্গে হিন্দু দেব-মূর্তি মূর্তি। সম্ভবত গৌড়ের হিন্দুমন্দির ও প্রাসাদ ভেঙে উপকরণ আসে এর। পশ্চিম দরজা দিয়ে ঢুকতেই সিকান্দার শাহর সমাধি। ফারসি ভাষায় *আদিনা* অর্থ জুম্মা বার অর্থ নামাজ পড়ার দিন। দ্বিমতে আরবের মুসলিম তীর্থ মদিনার সাথে সাদৃশ্য রয়েছে আদিনা নামকরণ। এমনও শোনা যায় হিন্দুরাজা গণেশের দেবতা আদিনাথ শিবের মন্দির ছিল অতীতে এখানে। আর আদিনাথ থেকেই আদিনা নাম। তবে এর বিশালত্ব অভিভূত করে। খিলান ও বেদীর চারপাশের কারুকার্য অতীব সুন্দর। তেমনই বাখিত করে ১৪০০ খ্রিস্টাব্দের ভূমিকম্পে আদিনার ব্যাপক ক্ষয়ক্ষতি। ১৯৩২এর সাঁওতাল বিদ্রোহেও ক্ষতিগ্রস্ত হয় আদিনা। আজ ভবধ্বরেদের রেস্ট রুমে পর্যবসিত হয়েছে আদিনা।

আদিনা দেখে জাতীয় সড়ক পেরিয়ে ১ কিমি পূবে বন-অন্দরে সাতাশ ঘরা অর্থার্থ সুলতান সিকান্দার শাহর ২৭ ঘরের ধ্বংসস্তুপ। গড়ও ছিল সেকালে প্রাসাদকে ঘিরে। আর আছে রাজা গণেশের খনিজ দিঘি প্রাসাদ দ্বারেই। সম্প্রতি বন দপ্তরের কর্মকর্তা চলছে এলাকা জুড়ে। ডিয়ার পার্ক হয়েছে শাল-শিঙা-সেগুন ছাওয়া ধ্বংসস্তুপে।

শহরে ফেরার পথে সেতুর মুখে কালিন্দী ও মহানন্দার সঙ্গমে অতীতকালে ছিল পাণ্ডুরা রাজাদের বন্দরনগরী প্রাকারে ঘেরা নিমাসরাই। সেকালে রেশম বা সূতি কাপড়ের বিখ্যাত গম্ব ছিল। প্রথমে ওলন্দাজ এবং পরে পরে ইংরেজ ও ফরাসি ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি কুঠি গড়ে। ১৬৫৬য় প্রথম ব্রিটিশ ফ্যাক্টরিও গড়ে ওঠে নিমাসরাই-এ। আর ১৭৭০এ ইংরেজ কুঠি স্থানান্তরিত হয় ইংরেজ বাজারে। আজ গুপ্ত মালদহ নামে পরিচিত সেকালের বন্দরনগরী।

১৯৮৭ খ্রিস্টাব্দের ১৩ই মার্চ ১১ কেজি ৯০০ গ্রামের তাম্রশাসন প্রাপ্তিতে ব্যাপক এলাকা জুড়ে খননে মালদহর জগজীবনপুর গ্রামের তুলাভিটায় পশ্চিমবঙ্গের বৃহত্তম বৌদ্ধ পুরাকীর্তির সন্ধান মিলেছে। মূল বিহার এলাকায় আংশিক

খননে ৯ম শতকের প্রায় ৮০টি পোড়ামাটির ভাস্কর্যখচিত ফলক পাওয়া গেছে। আরও নানান কিছু খননের অপেক্ষায়। গৌড়-পাণ্ডুয়া-জগজীবনপুর ত্রয়ীকে জুড়ে পর্যটন কেন্দ্রও গড়ে চলেছে মালদহে।



রেল থেকে ২ কিমি দূরে শহরের মাঝে বাস স্ট্যান্ড। হোটেলগুলিও গড়ে উঠেছে এই দুইয়ের সংযোগকারী NH-34 ও রবীন্দ্র এভিনিউ, Maldah-732101. STD 03512-এ। শহরের দক্ষিণে মহানন্দামুখী জাতীয় সড়কে H Purbachal, Sukanta Morh, NH-34, Maldah, ৬৬১৮৩. RIB2, SAB ১৭৫ DAB ২৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; অব্: Manager বা D Chakraborty, 18 N S Road, 3rd Floor, Cal-1, ৬২২০৪২৯, H Mayur, NH-34, D ১০০-১৫০। শব্দমুখী—H Meghdoot, NH-34; পাশেই Joy L, H Samrat, Rathbari, NH-34, DAB ১২৫-১৭৫; বিপরীতে WBTD-র Malda Tourist L, ৬৬১২৩, DCB ১২৫ DAB ২৫০ A/c D ৪০০ ৫০০ অব্: Manager, Maldah-732101 বা Tourist Centre, 3/2 BBI Bag-1. আর হয়েছে আধুনিক সাজে লিফট সহ নবতম H Continental, 21 K T Sanyal Rd, near NBSTC Bus Stand, ৬২৩৪৪, SAB ৮৫-১৫৫ DAB ১৫০-৩৩০।

উড়ালপুল পেরুতেই Rabindra Avenue-তে—Holiday Inn, H Nataraj, SAB ৪৫-৮৫ DAB ৮৫-১৭৫ A/c S ২২৫ D ৩২৫; Maldah L, SAB ৬০ DAB ৮৫-১৫০; বামহাতি গলিপথে Central L, আবার রবীন্দ্র এভিনিউতে—Sanjibani L, Bangashree H, H Inn, Raj H, Paradise H, H Indrani. সাধারণ সাজের এই হোটেলগুলিতে S ৪৫-৮০ D ৮৫-১৫০ টাকায় মেলে। অবস্থানও এদের বাস থেকে ৫-১০ মিনিটের হাঁটা দূরত্বে রবীন্দ্র এভিনিউতে। আর আছে স্টেশন বোডে—H Navarun, মধ্যমপুরে—H Santiniketan, নেতাজী সূভাষ রোডে—অন্নপূর্ণা, নিউ তৃপ্তি, আদর্শ ছাড়াও নানান হোটেল মালদহে। WB Govt Youth Services-এর যুব আবাসও হয়েছে মালদহের শিবরাম ভবনে। বেড ছাত্র ১৫ টা ৭০। রেলের রিটায়ারিং রুমও আছে মালদা টাউন রেল স্টেশনে। আর আছে সার্কিট হাউস, মহানন্দা ভবন, গৌড় ভবন মালদহে। তেমনই সন্ডাট, কন্টিনেন্টাল ও ট্যুরিস্ট লঞ্জে দেশী-বিদেশী নানান ধর্মী আহার্য মেলে। থাকা বা পক্ষে ট্যুরিস্ট লঞ্জে আদরণীয় হবে মালদহে।



শিয়ালদহ থেকে কাঞ্চনজঙ্ঘা এক্স ৬-২৫, দার্জিলিং মেল ১৯-১৫, কাটিহার এক্স ২০-০০, তিস্তা-তোরসা এক্স ১৩-৪০; আর হাওড়া থেকে কামরূপ এক্স ১৫-২৫, ২৩৬ দিন সুপারফাস্ট সরাইঘাট এক্স ২২-০০, ১২৪৬ দিন ত্রিভুজনগপুরম/কোচি/ ব্যাঙ্গালোর-গুয়াহাটি এক্স ১৪-০৫এ ছেড়ে ২১৬ কিমি দূরের মালদহ যাচ্ছে যথাক্রমে ১৩-৪৫, ৩-১৫, ৫-০৫, ২২-৪৫, ০-১০, ৪-৫০, ২১-১০এ। আর যাচ্ছে গৌড় এক্স ২২-০০টার শিয়ালদহ ছেড়ে পরদিন ৬-৩০এ মালদহে। শিয়ালদহ ফেরে মালদহ থেকে ২০-৩০এ গৌড় এক্স, ১২-৪২এ কাঞ্চনজঙ্ঘা এক্স। এছাড়া ট্রেন যাচ্ছে হাওড়া-মালদহ ফা প্যা, সাহেবগঞ্জ-মালদহ ফা প্যা, মালদহ-ভিওয়ানি ফারাকা এক্স, দিল্লী-ভিক্রগড় ব্রহ্মপুত্র মেল, দিল্লী-গুয়াহাটি, গৌড়ের

যাত্রী নিয়ে কাটিহার যাচ্ছে আদিনা এক্স ও ফাস্ট প্যাসেঞ্জার, সাহেবগঞ্জ-মালদহ ফা প্যা, নিউ জলপাইগুড়ি যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার মালদহ থেকে।



আর শীতাতপ, রকেট, ডিলাক্স ও এক্স বাস যাচ্ছে নর্থ বেঙ্গল স্টেট ট্রান্সপোর্ট—NBSTC, SBSTC, CSTC ছাড়াও নানান প্রাইভেট সংস্থার কলকাতা থেকে বহরমপুর হয়ে ৮ খন্ডায় মালদহ পৌছে উত্তরবঙ্গের দিকে দিকে দিন-রাত্রি জুড়ে। মালদহর নিজস্ব বাসও যাচ্ছে CSTC-র ৪-১৫, ১৬-০০, ১৮-০০, ২০-০০, রকেট ২০-০০টায়; নর্থ বেঙ্গল স্টেট ট্রান্সপোর্টের ৬-৩০, ৯-০০, ১০-০০, ২১-৩০, রকেট ২১-৩০এ; কলকাতা ময়দান ও উল্টাডাঙার ভি আই পি টার্মিনাস থেকে। ভাড়া ৬৯.৫০/ ৭৬.০০/ ৯০.০০। তবুও মালদহ যাতায়াতে কাঞ্চনজঙ্ঘা এক্স ও গৌড় এক্স ট্রেন দুটি আদরণীয় হবে। আর মালদহ থেকে NBSTC-র বাস যাচ্ছে—কলকাতা ৫-০০, ৬-০০, ৭-০০, ২২-০০; শিলিগুড়ি ৫-০০, ২২-০০; বহরমপুর ৫-৩০, ১২-৪৫; বালুরঘাট ১০-০০, ১৭-০০, ১৮-০০; ছাড়াও কোচবিহার, বঁকাড়া, পুরুলিয়া, আসানসোল, বসিরহাট, বনগাঁ, ইঁচুড়া ছাড়াও বাংলা ও বিহারের নানানদিকে।

তেমনই পাণ্ডুয়া থেকে ৫৬ আর মালদহর ৭৩ কিমি দূরে রায়গঞ্জের বাস পথে কুলীক নদীর পাড়ে কুলীক পক্ষী আলয়টিও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে বাসে। উত্তরবঙ্গগামী নানান বাসও যাচ্ছে কলকাতা থেকে মালদহ-কুলীক-রায়গঞ্জ অর্থাৎ জাতীয় সড়ক ট্রাফিক ধরে। জুলাই থেকে সেপ্টেম্বরে হাজার হাজার পরিযায়ী অর্থাৎ মাইগ্রেটরি পাখির দর্শন মেলে জাতীয় সড়ক লাগোয়া সেগুন, পাকুড়, খয়ের, কদম, শিশু, জারুল গাছে ছাওয়া রায়গঞ্জ বিলে। ১৪০.২২ একর জুড়ে দোয়েল, কোয়েল, বুলবুলি, বড় কথা কও ফিড়ে, ছাতারে, বক, জলপিপি, মাছরাঙার সাথে ওপন-বিস্ট-স্টরক বা শামুকখোল, নাইট হেরন, ওয়াকার, বড় করমোরেসেন্ট, এগ্রেস্টস ছাড়াও নানানধর্মী পরিযায়ী পাখির সাময়িক আবাস গড়ে। নীড় বাঁধে গাছ থেকে গাছে—আসে এরা দেশ-দেশান্তর থেকে। ডিম পাড়া থেকে পাখিদের রোজনামচা দেখে নেওয়া যায় কুলীকের বনবাসে ওয়াচ টাওয়ার থেকে। পরিবেশও সুন্দর। জল ভরা কালো মেঘের ক্যানভাসে পাখি ওড়ে বাকৈ বাকৈ। আকাশও ঢাকা পড়ে তাদের রঙবেরঙের পাখনায়। দিন-রাত জুড়ে পাখিদের কাকলি মুখরিত করে তোলে। তারই মাঝে বিনিক বিনিক আওয়াজে বয়ে চলে কুলীক নদী।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে পক্ষী আলয় লাগোয়া WBTD-র ২০ বেডের Raiganj Tourist L, PO- Madhupur via Raiganj, Uttar Dinajpur, PC-733134, ৬ (03523) 52177, DAB ২৭৫ ডমিতে ৬০; FRH ও PWD (Roads) IB-তে। আর আছে সাধারণ হোটেল ৫ কিমি দূরে রায়গঞ্জ শহরে।

তেমনই মালদহ যাত্রীরা ঘরপানে যেতে ফারাকা ব্যারিজটিও দেখে চলতে পারেন। ডাক্তার বিধানচন্দ্র রায়ের স্বপ্ন, আর এক মুখ্য স্থপতি দেবেন্দ্র মুখার্জির নেতৃত্বে ভারতীয়

কলাকুশলীর শ্রেম রূপ পেয়েছেন নতুন ভারতের নতুন তীর্থ ফারাকা। কলকাতা থেকে ৩১৪, বহরমপুরের ১০৩ কিমি উত্তরে আর মালদহর ৩৫ কিমি দক্ষিণে মুর্শিদাবাদ জেলায় সেতুবন্ধন ঘটেছে গঙ্গায়। INH-34 গঙ্গাপেরুচ্ছে, রেলও গঙ্গা পেরুচ্ছে ব্যারেজ চড়ে ফারাকায়। অনেক সুগমও হয়েছে ভারতের বিস্তীর্ণ উত্তর-পূর্বাঞ্চল ব্যারেজ হতে কলকাতা থেকে। আর বেড়েছে নাব্যতা বহুভর গঙ্গায়। তেমনই ফলন বাড়ছে কৃষিক্ষেত্রে বাঁধ থেকে জল পেয়ে। NTPC-র থার্মাল পাওয়ার প্রোজেক্টের চিমনিও আকাশ ছুঁই ছুঁই।

ব্যারেজকে ঘিরে ছবির মত পটে আঁকা শহরও গড়ে উঠেছে ফারাকায়। ৩৫০০ বাসভবন হয়েছে কর্মীদের। তেমনই NTPC-র আর এক উপনগরী ব্যারেজ পেরিয়ে মালদা ভূমে। ব্যারেজ ধরে হাঁটুন, মন প্রফুল্ল হবে স্নিগ্ধ সমীরণের পরশে। ব্যারেজের নীল জলে মাছদের জলকেলি—সেও আর এক মনোহর দৃশ্য। গঙ্গায় বিহারও করা যেতে পারে নৌকা বা ফেরি স্টিমারে। শীতের দিনগুলিতে চড়াইভাতিরও ধুম পড়ে ফারাকায়।

ব্যারেজ থেকে ৩ কিমি উত্তরে শুমানী নদী ও গঙ্গার সঙ্গমে এক দ্বীপাকার ভূমে নীলকৃষ্টির ভগ্নাবশেষ আজও দৃশ্যমান। পার্ক হয়েছে—হরিণ না মিললেও নাম তার ডিয়ার পার্ক। গঙ্গার নাব্যতা বাড়তে গিয়ে মাটি কাটতে আবিল্লিত হয়েছে আর এক হারানো অতীত। খননে মিলেছে—নানান মূর্তি, মৃৎপাত্র, টেরাকোটার মাতৃকামূর্তি, মুদ্রা, মোগল যুগের অস্ত্রশস্ত্র ছাড়াও নানান কিছু। প্রত্নতাত্ত্বিকেরা রায় দিয়েছেন সুদূর অতীত কাল থেকে ১৬ শতক পর্যন্ত ফারাকা ছিল সমৃদ্ধ এক নগরী। মোগলযুগে নাম ছিল এর ফারাকাবাদ।



থাকারও নানান ব্যবস্থা ফারাকায়। ব্যারেজ নগরীতে VIP Guest House-এ SAB ৪২; Field Hostel-এ SAB ২২, ডর্মি বেড ১৬/১৪ করে। আহার্য পৃথক মূল্যে ক্যান্টিনে মেলে। অবু: Estate Cell Officer, Farakka Barrage, Farakka-742212. তবে, বুকিং থাকা সত্ত্বেও ঘরের সন্ধান কখনও-সখনও দুহুর হয়ে পড়ে। সাধারণের কাছে দ্বার রুদ্ধ হলেও রেল থেকে ১ কিমি দূরে তালডলা ঘাটে সুন্দর পরিবেশে NTPC-র VIP Guest House-টি রমণীয়। আর আছে এসেরই Tourist Camp, Field Hostel ফারাকায়। এছাড়া ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘের যাত্রী নিবাসও হয়েছে ব্যারেজ নগরীতে। আর আছে রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি কলকাতামুখী পথে H Daffodil, SAB ৮০ DAB ১৫০-২৫০ A/C D ৩৫০ ডর্মি ৫০; অবু: Manager, PO- Nabarun, Farakka-742236.

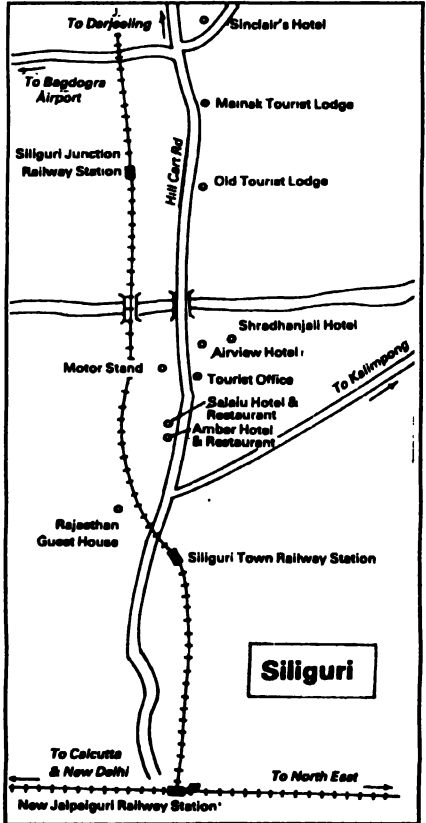
কলকাতা থেকে মালদহর প্রতিটা ট্রেন নিউ ফারাকা হয়ে যাচ্ছে। ৬-২৫৫ শিয়ালদহ ছেড়ে ১২-৫১য় ফারাকায় পৌঁছে মালদহ যাচ্ছে ১৩-৪৫৫ কাঞ্চনজঙ্ঘা। কাঞ্চনজঙ্ঘা ফেরে ১৩-২১৫ ফারাকা ছেড়ে ২০-৩৫৫ শিয়ালদহে। আর বাস দিন-রাত জুড়ে ছুটে চলেছে জাতীয় সড়ক ৩৪ ধরে ফারাকা হয়ে কলকাতা তথা দিকে-দিকান্তরে। CSTC-র বাস ১০-৩০ ও ১২-০০টায় কলকাতা ছেড়ে বারাসাত/ রানাবাট/ কৃষ্ণনগর/ বেথুয়াডহরী/ পলানী/ বহরমপুর/ খুলিয়ান হয়ে ফারাকা যাচ্ছে ৭২ ঘণ্টায়, ফেরে

সকাল ৬-০০ ও ৮-৩০৫ ফারাকা ছেড়ে কলকাতায়। NBSTC-র মালদহর ১০-৩০, ১৩-৩০টায় বাস দুটি ফারাকা কলানী হয়ে যাচ্ছে। তবে, উচিত হবে কাঞ্চনজঙ্ঘায় ফারাকা পৌঁছে দিনভর বেড়িয়ে কাটিয়ে দিনান্তে মালদহ পৌঁছে রাতের বিশ্রাম মালদহতে; দ্বিতীয় সকালে গৌড় ও পাণ্ডুয়া দেখে রাতের গৌড় এসে কলকাতায় ফেরা।

শিলিগুড়ি



IAC-র বিমান ১২ দিন ১২-৩০, বৃহস্পতিবার ১০-০০, শনিবার ১১-০০টায়। কলকাতা ছেড়ে বাগডোগরা যাচ্ছে ৫৫ মিনিটে; ফেরে যথাক্রমে ১৪-০৫/১১-২৫/১২-৩৫৫। ১.৩৫ দিন IAC-র দিল্লী-গুয়াহাটি উড়নও বাগডোগরা হয়ে যাচ্ছে। বাগডোগরা বিমানবন্দর থেকে ১৪ কিমি দূরে শিলিগুড়ি শহর। IAC-র দপ্তর বসেছে Hotel Sinclair. ৩ 23201 শিলিগুড়িতে। Skyline NEPC, Jet Airways-ও শিলিগুড়ি থেকে সার্ভিস গড়েছে উত্তর-পূর্ব



ভারতের। বাস ও ট্যাক্সি মেলে বিমানবন্দর থেকে শিলিগুড়ি, দার্জিলিং, কালিম্পং ও গ্যাংটক যাতায়াতে। DGHC Tourism ও Mintri Travels এর মিনিবাস যাচ্ছে বিমানবন্দর থেকে দার্জিলিং ও গ্যাংটকে। আর IAC-র কোচ যাত্রী নিয়ে শহরে যাচ্ছে বাগডোগরা থেকে।



নর্থ-ইস্ট ফ্রন্টিয়ার মিটার গেজ রেল শিলিগুড়ির নিজস্ব স্টেশন শিলিগুড়ি জং। রেল যাচ্ছে জং থেকে লক্ষ্মী, কাটিহার, গুয়াহাটি। তবুও যেন যাতায়াতে ৭ কিমি দূরে ব্রডগেজ রেল নিউ জলপাইগুড়ি জং (NJP) আদরনীয় হবে। ট্রেন যাচ্ছে কাঞ্চনজঙ্ঘা এক্স প্রতিদিন সকাল ৬-২৫এ শিয়ালদহ ছেড়ে বর্ধমান/ বোলপুর/ রামপুরহাট/ নিউ ফারাকা/ মালদহ/ বারসোই/ কিষণগঞ্জ হয়ে ১৮-১০এ NJP। তবে, দ্রুতগতিতে গিয়ে পৌঁছালেও পাহাড়ী যাত্রীরা NJP বা শিলিগুড়িতে রাত কাটিয়ে যেতে বাধ্য হন। তাই পাহাড়ী যাত্রীদের শিয়ালদহ থেকে ১৯-১৫য় ছাড়া দার্জিলিং মেল আজও অগ্রগণ্য। আর যাচ্ছে হাওড়া থেকে কামরূপ এক্স ১৫-২৫, ২৩.৬ দিন ২২-০০টায় হাওড়া-গুয়াহাটি সুপারফাস্ট সবাইঘাট এক্স, ১২.৬ দিন ১৪-০৫এ তিরুভনন্তপুরম/ কোচি/ ব্যাসালোর-গুয়াহাটি এক্স, NJP পৌঁছায় পরদিন যথাক্রমে ৮-১৫, ৫-৩০, ৯-২৫, ২-০৫এ। কলকাতায় ফেরে কাঞ্চনজঙ্ঘা ৮-০০, দার্জিলিং মেল ১৯-০০, কামরূপ এক্স ১৬-৪৫, গুয়াহাটি-কোচি এক্স মঙ্গলবার ১৫-০০, গুয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম রবিবার ১৫-০০, গুয়াহাটি-ব্যাসালোর বুধ ও শনিবার ১৫-০০এ NJP থেকে। আর যাচ্ছে তিস্তা-তোরসা এক্স ১৩-৪০এ শিয়ালদহ ছেড়ে পরদিন ৪-১৫য় NJP পৌঁছে ৭-০০টায় হলদিবাড়ি। তিস্তা-তোরসা শিয়ালদহ ফেরে ১৩-৩০এ হলদিবাড়ি ছেড়ে ১৫-৩০এ NJP পৌঁছে পরদিন ৬-৩৫এ শিয়ালদহে। তিস্তা-তোরসার এক অংশ আলিপুরদুয়ার যাচ্ছে জলপাইগুড়িতে পৃথক হয়ে।

১৩.৫ দিন গুয়াহাটি-নিউদিল্লী রাজধানী এক্স, NE Exp যাচ্ছে NJP/কাটিহার/বরাউনি/পাটনা/মুগলসরাই/এলাহাবাদ/কানপুর হয়ে গুয়াহাটি-নিউদিল্লী, Avadh-Assam Exp যাচ্ছে NJP/কাটিহার/মজফরপুর/গোরক্ষপুর/লক্ষ্মী হয়ে গুয়াহাটি-দিল্লী, ব্রহ্মপুত্র মেল যাচ্ছে মালদহ/পাটনা/এলাহাবাদ হয়ে তিরুভনন্তপুরম-দিল্লী জং। দূরভ্রম—বরায়ুনি হয়ে ১৫০৩, ফারাকা হয়ে ১৬২৮ কিমি NJP থেকে দিল্লী জং। সময় নেয় ২০½ থেকে ৩৩ ঘণ্টা। আর ৪২৩ কিমি দূরের গুয়াহাটি পৌঁছায় ৬½ থেকে ১১ ঘণ্টায়। North East Exp এদের মধ্যে রাজধানীর পরেই দ্বিতীয় দ্রুততম। আর NJP থেকে Link Exp কাটিহারে গিয়ে মহানন্দার সাথে জুড়ে বরায়ুনি/পাটনা/মুগলসরাই/এলাহাবাদ হয়ে দিল্লী জং যাচ্ছে।

১৪ দিন NJP বরায়ুনি/পাটনা/মুগলসরাই/এলাহাবাদ/জবলপুর/ইটারসি/নাসিক হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে গুয়াহাটি-দাদার এক্স; দাদার ছাড়ে ৩.৬ দিন ৭-৫৫য় দাদার-গুয়াহাটি এক্স। সাপ্তাহিক হোহাতি এক্স (সোম) গুয়াহাটি-জম্মু যাচ্ছে NJP হয়ে। NJP/লালিচ/মেলমখর/ওয়ালরোমার/চেন্নাই হয়ে তিরুভনন্তপুরম (৭) কোচি (২) ব্যাসালোর (৩.৬ দিন) যাচ্ছে গুয়াহাটি এক্স। আর মিটার গেজে সমষ্টিপুর-আলিপুরদুয়ার ৫৭১৬ এক্স যাচ্ছে ১২-১০এ শিলিগুড়ি ছেড়ে ১৬-৪৫এ আলিপুরদুয়ার, ১৪-১০এ ছেড়ে ১৯-৩৫এ কাটিহার হয়ে সমষ্টিপুর। আলিপুরদুয়ার থেকে লিঙ্ক এক্স ও প্যাসেঞ্জার যাচ্ছে রঙ্গিয়ায়। ৫-১০এ শিলিগুড়ি ছেড়ে ইটারসি যাচ্ছে ১১-০০টায় কাটিহার, প্যাসেঞ্জার ট্রেনও

যাচ্ছে মিটার গেজে শিলিগুড়ি থেকে কাটিহার জং। ১৭-০০টায় শিলিগুড়ি ছেড়ে নিউ মাল-হাসিমারা-রাজাজাতখাওয়া হয়ে ২১-১০এ আলিপুরদুয়ার থেকে। ৯-০০টায় আলিপুরদুয়ার ছেড়ে ১৩-২৫এ শিলিগুড়ি আসছে ৫৭১৫ সমষ্টিপুর এক্স। দার্জিলিং যাচ্ছে ন্যারোগেজে ৭-৩০ ও ৯-০০টায় NJP ছেড়ে ১৫-৫০/১৭-১৫য়। রেলের এনকোয়ারি: NJP ০ ২১১৭৭, শিলিগুড়ি জং ০ ২০০১৭।



NJP থেকে শিলিগুড়ি শহর যাচ্ছে আধ ঘণ্টায়—রিকশা ১৫ ট্যাক্সি ৩০ বাস ২ টাকায়। NJP থেকে ৫ কিমি উত্তরে শিলিগুড়ি টাউন রেল স্টেশন তথা বাণিজ্যিক শহরের শুরু। আরও ২ কিমি উত্তরে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের ট্যুরিস্ট অফিস রেখে হিলকারি রোড অর্থাৎ মেরিন রোড ধরে মহানন্দা সেতু পেরিয়ে শিলিগুড়ি জং ও তেনজিং নোরেগে সেতুদ্বারা বাস স্ট্যান্ড মুখোমুখি দাঁড়িয়ে। নর্থ বেঙ্গল স্টেট ট্রান্সপোর্টের বাস যাচ্ছে উত্তর-পূর্ব ভারতের দিকে-দিগন্তরে। CSTC, SBSTC, Assam State Transport-এর বাসও ছাড়ছে সেতুদ্বারা বাস স্ট্যান্ড থেকে। সিকিম ন্যাশানালিজড ট্রান্সপোর্ট (SNT)-র বাস যাচ্ছে সেতুদ্বারা স্ট্যান্ডের বিপরীত থেকে। আর ভূটান রাষ্ট্রীয় বাস যাচ্ছে মহানন্দা পেরিয়ে বর্ধমান রোড থেকে। আর দার্জিলিং, কার্শিয়াং, কালিম্পং, মিরিক, গ্যাংটক, জোরখাং অর্থাৎ Hilly Region Mini Bus Owners' Association-এর বাসও ছাড়ছে সেতুদ্বারা স্ট্যান্ড থেকে। দোকানপাট, হোটেল সবেরই অবস্থান হিলকারি রোড ও সেবক রোডে।

| শিলিগুড়ি থেকে দূরত্ব: | আর কলকাতা ময়দানের |
|------------------------|---|
| মিরিক ৫২ কিমি | বাস গুমটি ও উল্টোজাঙ্গা (VIP Rd) বাস টার্মিনাল থেকে |
| দার্জিলিং ৮০ " | NBSTC-র ডজনখানেক বাস |
| কালিকোরা ২৭ " | সকাল ও সাঁঝে দিন-রাতের |
| মংপু ৪৯ " | সার্ভিসে (৬-০০, ১৮-০০, ১৯-০০, ২০-০০টায় এক্স, সুপার |
| কালিম্পং ৬৯ " | এক্স, রকেট ও শীতাতপ) ১২ |
| লাড়া ১০৩ " | ঘণ্টায় শিলিগুড়ি যাচ্ছে। ভাড়া |
| লোলেগাঁও ১২২ " | এক্স ১১৫ সুপার এক্স ১৩২.৫০ |
| গ্যাংটক ১১৪ " | রকেট ১৫২। শিলিগুড়ি সেতুদ্বারা |
| পেলিং ১২২ " | বাস স্ট্যান্ড থেকে ছাড়বে ও এরা |
| গুরুমারা ৭৮ " | একইভাবে। আর যাচ্ছে CSTC |
| জলদাপাড়া ১২১ " | ৪-১৫, ১৬-০০, ১৮-০০, ২০-০০, ২০-০০ রকেট ও |
| আলিপুরদুয়ার ১৮০ " | SBSTC-র ৪-৪৫, ৬-১৫, ১৭-৩০, ২০-০০টায় সুপার ফাস্ট ও |
| বক্সা পাহাড় ২১০ " | রকেট বাস কলকাতা থেকে |
| জয়গাঁও ১৬০ " | শিলিগুড়ি। ফেরে ও এরা |
| ফুটসোলিং ১৬১ " | শিলিগুড়ি সেতুদ্বারা বাস স্ট্যান্ড |
| গুয়াহাটি ৫১৩ " | থেকে একইভাবে। এদের ভাড়া |
| মালদহ ২৫৭ " | ১৩২.৫০ ১৫২, অগ্রিম টিকিটও |
| বহরমপুর ৩৮৪ " | মেনে ১৪—২০-০০টায় |
| কলকাতা ৬৫১ " | কাঠমাঠ |
| পাটনা ৪৬৬ " | ৬০০ " |
| কাকারভিটা ৩৭ " | |
| কাঠমাঠ ৬০০ " | |

এছাড়াও কলকাতা থেকে কোচবিহার, জলপাইগুড়ি, ময়নাগুড়ি, মালবাজার, জয়গাঁও, ফুটসোলিং, গ্যাংটক, আলিপুরদুয়ার, দিনহাটার বাস যাচ্ছে শিলিগুড়ি হয়ে। এমনকি নানান প্রাইভেট সংস্থার ডিলাক্স, Video ও A/C বাসও যাচ্ছে কলকাতা থেকে

শিলিগুড়ি। এদের ভাড়া ১২৫ থেকে ২২৫। তবে যাত্রী সমাগমে প্রাইভেট বাসের ভাড়া যাত্রাস-বৃদ্ধি ঘটে। ফেরেও এরা সেট্রাল বাস স্ট্যান্ডের চারপাশ থেকে।

শিলিগুড়ি থেকে SBSTC-র বাস যাচ্ছে দুর্গাপুর ১৫-৩০, ২০-০০টায়; আনানসোল যাচ্ছে ১৬-০০, ১৭-০০টায়; বোলপুর যাচ্ছে ১৭-০০; বাঁকুড়া যাচ্ছে ১৮-৩০টায়; কলকাতা যাচ্ছে ১৭-৩০, ২০-০০টায়। CSTC কলকাতায় যাচ্ছে ৫-১৫, ১৬-০০, ১৮-০০, ১৮-৩০, ২০-০০টায়। NBSTC কলকাতায় যাচ্ছে ৬-০০, ১৮-০০, ১৯-০০, ২০-০০টা ছাড়াও দুরান্ত থেকে আসা নানান বাস। অসম স্টেট ট্রান্সপোর্ট কর্পোরেশনের বাস যাচ্ছে গুয়াহাটি ৭-৩০, ১৭-০০; শিলং যাচ্ছে ১৬-০০; বঙ্গাইগাঁও ৭-০০, দুবড়ী ৮-৩০, ১৩-৩০; তেজপুৰ ১৪-০০টায়। মালদহ যাচ্ছে ৫ ঘট্টায়, বহরমপুর যাচ্ছে ৭ ঘট্টায় CSTC/SBSTC/NBSTC-র নানান বাস। ফুটসোলিং তথা জয়গাঁও যাচ্ছে ৭-০০, ১০-৩০, ১২-৩০, ১৫-৩০এ NBSTC-র বাস; প্রাইভেট বাস যাচ্ছে বিধান মার্কেট থেকে ৬-৩০—১৪-৩০টায়, আর ভূটান ট্রান্সপোর্ট সার্ভিস যাচ্ছে ৭-৩০, ১২-০০, ১৫-০০টায় ছেড়ে ৩২ টাকায়, এদের ডিলাঞ্জ মিনি যাচ্ছে ১৬-০০টায় ছেড়ে ৫০ টাকায় জয়গাঁও-এ তোরশ শেরিয়ে ফুটসোলিং-এ। আলিপুরদুয়ার যাচ্ছে ৬-০০, ৭-০০, ১০-৩০, ১৩-৩০, ১৪-৩০, ১৫-৩০; বসিরহাট ১৫-৩০; সিউড়ি ৫-৩০; রানাঘাট ১৮-০০; ঝালং ৭-০, ১৪-৪৫। এছাড়া নানান প্রাইভেট ডিলাঞ্জ ও Video বাস যাচ্ছে পূর্ব-ভারতের নানান দিকে শিলিগুড়ি থেকে—পাটনা যাচ্ছে ১১ ঘট্টায়, শিলং যাচ্ছে ১৪ ঘট্টায়, গুয়াহাটি যাচ্ছে ১২ ঘট্টায়, কাঠমাণ্ডু যাচ্ছে ১৮ ঘট্টায়, পোখরা যাচ্ছে ১৫ ঘট্টায়।

আর শিলিগুড়ি থেকে আস্ত: রাজ্য সার্ভিসে NBSTC যাচ্ছে—তেজপুৰ ১৪-০০ (রকেট); গুয়াহাটি ৭-৩০, ১৭-০০; দুবড়ী ৭-০০; রাঁচি ১১-০০; দ্বারভাঙ্গা ১৫-০০; পাটনা ১৬-০০; মতিহারী ১৫-০০; ঠাকুরগঞ্জ ৬-০০, ১০-৩০, ১৪-৩০; গ্যাংক ৬-০০, ৭-০০; ছাড়াও উত্তর-পূর্ব ভারতের নানান দিকে। আর পাহাড়ী যাত্রী নিয়ে টয় ট্রেন যাচ্ছে ৭-১৫ ও ৯-০০টায় NJP ছেড়ে শিলিগুড়ি টাউন/জং/কার্শিয়াং হয়ে দার্জিলিং পাহাড়ে। আর বাস NJP ও শিলিগুড়ির সেট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫২ কিমি দূরের মিরিক যাচ্ছে ৬-৪৫, ৭-০০*, ৮-৩০, ১২-০৫, ১২-৪৫, ১৩-৩৫, ১৪-২০, ১৪-৩০*, ১৫-০০, ১৫-৩০, ১৬-০০টায়, সময় নেয় ২; ঘট্টা; ভাড়া ২৫। ফেরে ৬-৩০এ প্রথম ছেড়ে ১৪-৪৫ শেষ বাসটি মিরিক থেকে। ৬৯ কিমি দূরের কালিম্পং যাচ্ছে ৬-১৫য় প্রথম ছেড়ে ১৬-৩৫এ শেষ বাসটি, ৪০ মিনিট অন্তর সার্ভিস এদের, সময় নেয় ২; ঘট্টা—ভাড়া ৩০ টাকা। স্বরাজ মাজন্দা মিনিও যাচ্ছে শিলিগুড়ি থেকে কালিম্পং-এ। ৮০ কিমি দূরের দার্জিলিং যাচ্ছে ৩৪ টাকায় ৩; ঘট্টায় ৩০ মিনিট অন্তর ৫-৪০এ প্রথম ছেড়ে ১৬-০০টায় শেষ বাসটি। টাঙ্গি ও ল্যান্ডরোভারও চলে শোয়ায়ে এপথে। ৫; ঘট্টায় ১১৬ কিমি দূরের গ্যাংক যাচ্ছে ৫৮ টাকায় ৬-৩০, ৭-১৫, ৮-০০, ৯-০০, ৯-৩০, ১৩-০০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৪-৩০, ১৫-০০টায়। আর ৭-০০, ৮-৩০, ১১-০০, ১২-১০, ১৩-০০, ১৪-০০টায় যাচ্ছে সিকিম ন্যাশনাল ইন্ডিয়ান ট্রান্সপোর্টের বাস; ভাড়া ৪৭ ৮০। পেলিং/পেমিয়ানি অর্থায় গেজিং যাচ্ছে SNT-র মিনি বাস ১২-০০টায় ছেড়ে ৬ ঘট্টায়; নামচি যাচ্ছে ১৩-০০টায় ছেড়ে ৪ ঘট্টায়; কুমথং, জোরথং যাচ্ছে নানান বাস।

কনডাক্টর ট্রার : রাজ্য পর্যটন দপ্তর বসেছে হিল কার্ট রোডে। যথেষ্ট যাত্রী সমাগমে প্যাকেজ ট্রারে হুলং বাংলায় এক রাতের অবস্থানে ৭০০, মাদারিহাট টুরিস্ট লঞ্জে অবস্থানে ৬৪০ (শিও ৬২০/ ৫৬০) টাকায় জলদাপাড়া, ফুটসোলিং সহ ডুমার্স; জলঢাকা-জলদাপাড়া-বঙ্গা-জয়ন্তি-ভূটানঘাট যাচ্ছে ৬ দিনের ট্রারে; মিরিক-দার্জিলিং যাচ্ছে ৪ দিনের ট্রারে। নভেম্বর থেকে মার্চে প্রতি রবিবার ১২-৩০—১৭-৩০টায় ৭৫ টাকায় যাচ্ছে মহানন্দা অভয়ারণ্য; দিনভর ভ্রমণে মিরিক যাচ্ছে ৭৫ টাকায় এরা। বুকিং : West Bengal Tourism, NJP Rly Stn বা Mainak Tourist Lodge বা H C Rd, Siliguri, ৩ 431974.

পর্যটন মানচিত্রে শিলিগুড়ির আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও উত্তর ভারতের তোরণদ্বার এই শিলিগুড়ি। শুধু উত্তর বাংলাই বাকেন ভারত রাস্তার সবচেয়ে স্পর্শকাতর এলাকা—উত্তর-পূর্ব ভারতের সড়ক সংযোগও গড়ে উঠেছে শিলিগুড়ি হয়ে। নেপাল, চীন, ভূটান, বাংলাদেশ পরিবৃত সিকিম, অসম, মেঘালয়, অরুণাচল, নাগাল্যান্ড, মণিপুর, মিজোরাম, ত্রিপুরার পথ গিয়েছে ৩৯২ ফুট উঁচু শিলিগুড়ি হয়ে। শিলিগুড়ি থেকেই পথ গিয়েছে মিরিক, দার্জিলিং, মংপু, কালিম্পং, লোলেগাঁও, লাভা, গ্যাংক, জলদাপাড়া। বাস, ল্যান্ডরোভার ও জিপও যাচ্ছে প্রতিটি পাহাড়ী শহরে শিলিগুড়ি থেকে। আর ৬০৬ কিমি দূরের কলকাতায় যাচ্ছে বিমান, রেল ও বাস শিলিগুড়ি থেকে।

চা ও কমলালেবুর জন্য শিলিগুড়ির শ্রীবৃদ্ধি। অরুণ্য সম্পদও সমৃদ্ধি এনেছে শিলিগুড়ির ব্যবসা-বাণিজ্যে। সঙ্গীও করা যেতে পারে চা-আনারস-কমলালেবু শিলিগুড়ির দোকানপাটে। পরপর কয়েকটি আন্তর্জাতিক খেলার আসর বসায় আধুনিকতার সাজ পরেছে শিলিগুড়ি। স্টেডিয়াম হয়েছে শহরের প্রাণকেন্দ্রে কাছারি রোডের সন্নিকটে। করপোরেশনও গড়েছে—প্রশস্ত হয়েছে পথ-ঘাট, গড়ে উঠেছে নতুন নতুন বাড়ি-ঘর রাজপথের দু'পাশে। শিলি-গুড়ির আর এক আকর্ষণ তার হংকং মার্কেট। বিদেশী পণ্যের সম্ভার নিয়ে দোকান সাজিয়েছে হিল কার্ট রোড ও সেবাকের সংযোগে। নর্থবেঙ্গল ইউনিভার্সিটি-ও রূপ পেয়েছে শহরের যিঞ্জিভাব কাটিয়ে বাগডোণার পথে শিলিগুড়িতে। তবুও কেন যেন গাড়ি-ঘোড়ায় ঠাসা যিঞ্জিভাব বাণিজ্যিক শহর শিলিগুড়ির। টুরিস্টও তাই পালাই পালাই ভাব গন্তব্যমুখী যান পেয়ে।



অতীতের Hill Cart Road নতুন করে নাম হয়েছে Tenjing Norgy Sadak. তবে, জনমুখে আজও অতীত নামে খ্যাত—শিলিগুড়ির প্রাণকেন্দ্রও এই হিল কার্ট রোড। বাসও পৌছায় হিল কার্ট রোডকে ঘিরে চারপাশে। হোটেলগুলিও গড়ে উঠেছে Hill Cart Rd ও Sevoke Rd, Siliguri, STD-0353, PC-734401-এ। H Nataraj, Station Rd Morh, ৩ 431714, SAB ৮০, DAB ১২০-১৫০, TAB ১৫০ FAB ১৮০; Venus H, ৩ 431723, SCB ৪৫-৫০, SAB ৭০ ৮০, ১২০ DCB ৯০, ১০০ DAB ১৪০, ১৭৫ ২০০, ৩৫০, A/c ৬০; Anita L; বিপরীতে Shushashi L; H Savoy; DCB

১২৫ ডর্রি ৫০; *New Ranjit H.* SAB ৮৫ ১০০ DCB ১০০, ১২০ DAB ১৫০ ২০০ ২৫০ ৩০০ TAB ৩০০ FAB ৪০০; *Ranjit H & L.* মান ও দাম একই। বিপরীতে *H Prakash*, ৩ 436368, SAB ১০০ ১২৫ DAB ১৮০ ২০০ ২২৫ ২৫০ TAB ২৮০ ৩০০; *Everest L, H Blue Star.* সেবকের মুখে *H Samrat*, SCB ৭০ ১০০ DAB ২০০ ২২৫; *H Chancellor*, SAB ৯৫ DAB ১৮০ ১৯৫ TAB ২৩০ FAB ২৯০; বিপরীতে *H Vinayak*, ৩ 431130, DAB ৩০০ ৪০০ ৫০০ A/C ৬৫০; মূল শ্রবেশপথ এক হলেও বাঁয়ে *H Saluja*, ৩ 431684, SCB ৭০ DCB ১২০ SAB ১১০ ১৭৫ ৩৫০ DAB ১৭৫ ২৫০ ৪৫০ TAB ২৭৫ FAB ৩৫০ A/C S ৫৫০ D ৭৫০; মাঝে *Saluja Boarding*, SAB ৮০ ১০০ ১২৫ DAB ১৮০ ২০০ ২২৫ TAB ২৫০; ডাইনে *H Kabira*, ৩ 431706, SAB ২৭৫ ৩৭৫ DAB ৪২৫ ৬০০ A/C D ৬৫০ ৭০০; বিপরীতে *Mahabir GH*, S ৪৫-৬৫ D ৮০-১২৫ T ১০০-১৫০; *H Air View*, ৩ 431533, SAB ১৫০ ২০০ ২৫০ DAB ২০০ ৩০০ ৫৫০ TAB ২৫০। বামহাতি *Nabin Sen Rd*-এ—*H Shradhanjali-1*, ৩ 431508, SAB ৮০ DAB ১৬০-২৫০ TAB ২৫০ FAB ৩০০।

মহানন্দা নদী পেরিয়ে শিলিগুড়ি জং ও সেতুল বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে *Pradhannagar*, Siliguri-734403এ—WBTD-র *H Yatrika, TSA Guest House*, (0353) 430872, D ১৫০-৩৫০, কল বুকিং: ৩ 2485029; *H Hill View, Delhi H, H Simla, H Sharada, H Kanchanjanga, Siliguri L*, এদের ভাড়া S ৬০-১২৫ D ১২০-২২৫। সামান্য পূর্বে বামহাতি *Patel Rd*-এ—*H Apsara*, D ১৭৫ T ২৫০; বিপরীতে *H Kusturi*, D ২৫০ ৩২৫; বাস স্ট্যান্ডের উত্তরে *Hill Cart Rd*-এ—*H Padma*, ৩ 434974, S ৮৫ D ১২৫-১৫০ T ২০০; পাশেই *H Mount View*, DAB ৩০০ ৩৫০ ৪৫০ A/C D ৬৫০। **H Sinclairs*, *Pradhannagar*, Siliguri-734403, ৩ 522674, SAB ৬০০ DAB ৭২৫ A/C S ১২০০ D ১৬০০ সুইট ২৫০০, কল বুকিং: 56/A, Mirza Ghalib St-16, ৩ 295261; *H Hindusthan*, *Pradhannagar*; *H Payasi*, Tea Auction Rd-3, ৩ 432614, SAB ৩২৫ DAB ৫০০ A/C S ৬০০ D ৮৪০ ১০২০ ১২০০ সুইট ২২০০, কল বুকিং: S K Biswas, A Tosh & Sons, P-32 India Exchange Place, Cal-1, ৩ 2251899; WBTD-র *Mainak Tourist L*, *Pradhannagar*-734401, ৩ 432830, DAB ৪০০ ৪৫০ A/C D ৬০০ ৭০০ ৮৫০ সুইট ১২০০; *H Viramma Resorts*, *Hill Cart Road*-3, ৩ 432497, S ৩৯০ D ৫৩০ A/C S ৬৩০ D ৮৫০-৯৫০ সুইট ১২৫০-১৫৫০, কল বুকিং: 8-C Alipur Rd, Cal-27, ৩ 4791360; *H Godawari*, ৩ 530337, DAB ২৫০ TAB ৩০০ FAB ৩৫০, কল বুকিং: Kolay Travel, 15/A, Clive Row, Cal-1, ৩ 2204297.

বাস স্ট্যান্ডের অনতিদূরে হিলকার্ট রোডের বাঁয়ে *Sevoke Road*-734401এ—*H Chancellor*, SAB ৮৫ DAB ১৫০; বিপরীতে *H Samrat*, SAB ৮৫ DAB ১২৫-১৭৫; *Mahabir, G H*, 31/A, K C Dey Rd, *Sevoke Morh*, ৩ 433496, S ৬০-১০০ D ৮৫-১২৫; *H Sabera*, SCB ৩৫ SAB ৬০ DCB ৬৫ DAB ৮৫-১২৫ TCB ১০০ TAB ১৫০; *H Sevoke*, SCB

৪০ SAB ৬০ DCB ৮০ DAB ১২৫; *H Ratna, L Anurdeep*, SCB ৩৫ SAB ৪৫ DCB ৬০ DAB ৮৫ TCB ৮৫ TAB ১০০; *H Mayur*, ৩ 432085, SAB ১১০ ১৮০ DAB ১৫০ ১৮০; *H Gateway*, ৩ 430041, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০; *Tera H*, SCB ৪০-৬৫ DCB ৬০-৮০ DAB ৮৫-১৫০ TCB ১০০ TAB ১৫০; *H Cindrella*, 3rd Mile, SAB ৫৫০ DAB ৭৫০ A/C S ৭৫০ D ৯৫০; কল বুকিং: *Himalayan Holidays Tours*, 309 B B Ganguly St, 1st floor, Cal-12, ৩ 263506/2201338.

Bidhan Market-এ—*H Broadway*, DAB ৮০-১২৫ TAB ৮৫-১৫০; *Prince H*, মৌর স্ট্যান্ডের বামে *Burdwan Rd*-এ—*Priyo L, Sovaraj H*, SAB ৬০ DAB ৮৫-১৫০। Siliguri Town Stn, near Rail Gate—*Harivana GH*, *Khalpara*, SAB ৪০-৬৫ DAB ৬৫-১২৫ TAB ১২৫ ডর্রি ২৫; *Rajasthan H*, near Rail Gate, SAB ৪৫ DAB ৮৫-১৫০; *Rajasthan GH*, *Mongtoram Compound*, SAB ৬০-৮৫ DAB ৮৫-১৫০। *Gitanjali H*, SAB ৪৫ DAB ৮৫ TAB ১০০ A/C S ১৫০ D ২৫০ T ৩০০; *Puntha Niwas*, opp Municipality Office, D ৬০ ডর্রি ২০, ছাড়াও হোটেল আছে নানান শিলিগুড়িতে।

শিলিগুড়ি জং ও সেতুল বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে নানান হোটেল শিলিগুড়িতে। তেমনই হোটেল হয়েছে হিলকার্ট রোড ও সেবক রোডকে ভর করে নানান। মৈনাক ট্যুরিস্ট লজ, হোটেল, সিনক্রেয়ার, হোটেল পদ্মা, হোটেল নটবাগ, হোটেল প্রকাশ, হোটেল বিনায়ক, TSA গেস্ট হাউস, হোটেল শ্রদ্ধাঞ্জলি, হোটেল এয়াব ডিউ, হোটেল গৌণ্ডয়ে শিলিগুড়ি অবস্থানে আদরণীয় হবে। *Rajasthan GH*-টিও থাকার পক্ষে মন্দ নয়।

আর আছে ধরমশালা—খালপাড়াতে *Mahevwari Bhawan* ও *Agra Bhawan*; মহানন্দা পুল পেরুতেই *Arya Samaj Mandir* ধরমশালা তথা গেস্ট হাউস; দার্জিলিং জিলা পরিষদ *IB* রয়েছে হাকিমপাড়ায়, *PWD HB* হয়েছে কোর্ট রোডে; আর আছে *Municipal Panthanibas*, *Bagha Jatin Rd*, D ৪০, অব: পৌর ভবন, ৩ 22250; *Youth Hostel*-এ সভা ১০ সাধারণ ২০ D ৪০ T ৭৫, কলেজ রোড শিলিগুড়িতে। এছাড়া রেলের *রিটায়ারিং কম*ও আছে শিলিগুড়ি জং ও নিউ জলপাইগুড়ি রেল স্টেশনে। তেমনই বাসযাত্রীদের জন্য হয়েছে ডেনজিং নোয়গে সেতুল বাস স্ট্যান্ডে *রিটায়ারিং কম*। DCB ৭৫ DAB ১১২ A/C ২০০ ২২৫ চল্লিশ বেডের ডর্রিতে ২০, প্রতি ডিন ঘন্টার বিশ্রাম ৫ হারে প্রতিজ্ঞা। তবুও যেন যাত্রী সমাগমের তারতম্যে শিলিগুড়ির হোটেলগুলিতে ক্ষণে ক্ষণে বদল ঘটে চলে রেটে।

খাবার হোটেলও নানান শিলিগুড়িতে। হিলকার্ট রোডের এয়ার ডিউ-এর খাবারের ব্যবস্থা ভালই। অদূরে অম্বর, সালুজা, শেরে পাঁজরা এদেরও আহাৰ্যে যথেষ্ট সুনাম। আর নিরামিষ আহাৰ্যের জন্য *রাজহান গেস্ট হাউসটি*ও যথেষ্ট খ্যাত। মৈনাক ট্যুরিস্ট লজের রেক্সোৱারিটির যথেষ্ট স্থান্যতি আছে আহাৰে। শিলিগুড়ি অবস্থানে কীরের নিজড়ার স্বাদ নেওয়াও উচিত হবে যাত্রীদের। ঠিক তেমনই দই-এর স্বাদ নিন সৃষ্টিশরের লোকানে শিলিগুড়ি রেলগেটে বা হিল কার্ট রোডে হীরালাল ঘোষের জলযোগ মিষ্টান্ন ভাণ্ডারে।

শিলিগুড়ি-কাঁকরভিটা-কাঠমাণ্ডু/পোখরা

শিলিগুড়ি কাছারি বাস স্ট্যান্ড থেকে দিনভর বাস যাচ্ছে নেপালের যাত্রী নিয়ে তিব্বতীয় ভাষায় শিকারের উপযুক্ত নকশাবাড়ি হয়ে ভারত সীমান্তের পানিটাঙ্কি। উৎসাহীরা নকশাবাড়ির পথে ৮ কিমি আগে বেলগাছি মোড় পৌঁছে ৮ কিমি দূরের লোহাগড় বেড়িয়ে নিতে পারেন পায়ে পায়ে। পাহাড়ি ঢালে চা বাগিচা, মনোরম প্রকৃতি—আদিবাসীদের বাস। মেহি নদীর এপারের পানিটাঙ্কি থেকে রিকশায় প্রশস্ত পূলে নদী পেরিয়ে অপরপারে নেপালের কাঁকরভিটা। ঘণ্টা দুয়েকের পথ, ভাড়া ৭.০০+৪.০০=১১.০০ টাকা। আর শিলিগুড়ি জংশন রেল স্টেশন থেকে অটো, জিপ ও ট্যাক্সি যাচ্ছে সেতুতে মেহি নদী পেরিয়ে সরাসরি কাঁকরভিটার, সময় নেয় ঘণ্টা দেড়েক, ভাড়া শেষয়ারে ১০.১৫+২০।NBSTC-র বাসও যাচ্ছে ১১-২০এ শিলিগুড়ি থেকে। বিদেশী পণ্যের দোকানপাট, হোটেলও আছে কাঁকরভিটার। এমনকি ট্যুরিস্ট অফিসও বসেছে নেপাল রাষ্ট্রের কাঁকরভিটা থেকে ডঙ্কন খানেক বাস যাচ্ছে রাতভর জার্নিতে প্রতিদিন ১৬—১৭-০০টায় ছেড়ে ১৫ ঘণ্টায় ২৫০ টাকায় কাঠমাণ্ডু। পোখরা যাচ্ছে ৩ খানা বাস ১৬—১৭-০০টায় ১৪ ঘণ্টায় ২০০ টাকায়। বীরগঞ্জ যাচ্ছে ১৫০ টাকায় ১০ ঘণ্টায় সকাল ও সন্ধ্যায়। জনকপুর যাচ্ছে সকাল, দুপুর ও বিকালে, ঘণ্টা আটকে ১২৫ টাকায়। এছাড়াও বাস যাচ্ছে বিরাতনগর তথা নেপালের নানানদিকে কাঁকরভিটা থেকে। শিলিগুড়িতে টিকিট মেলে এইসব বাসের। উৎসাহীরা Tourist Service India, behind Delhi Hotel, Pradhannagar দেখতে পারেন। বাস জানির থকল কমাতে কাঁকরভিটা থেকে বাসে বিরাতনগর পৌঁছে রয়্যাল নেপালের বিমানে কাঠমাণ্ডু চলা যেতে পারে। আবার কাঁকরভিটা থেকে ৬ কিমি দূরে বিদেশী পণ্যের জমজমাট বাজার খোলাবাড়িও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। বাস, মিনি ও টেম্পো যাচ্ছে মুম্বাই। হোটেলও আছে নানান কাঁকরভিটার। বাস স্ট্যান্ডেই—H New Sher-e-Punjab, DAB ২০০-৩০০, থাকা ও খাবারের জন্য অনন্য। অদূরে বাজারের পেছনে ABC L, DCB ১৫০, Everest L, DCB ১২৫-১৭৫; Apsara L, DCB ১৫০; Basanti L, পায়ে পায়ে ৩—৫ মিনিটের দূরত্বে প্রতিটি হোটেল। কাঁকরভিটা অংশে উল্লিখিত টাকার অঙ্ক নেপালি কারেন্সীতে।

শিলিগুড়ি থেকে ১৮ কিমি দূরে তিস্তা ও মহানন্দার মাঝে পাহাড় ঢালে ধাপে ধাপে ১৫০ থেকে ১৩০০ মি উঁচুতে প্রকৃতির গড়া বটানিকাল গার্ডেন ও চিড়িয়াখানার সমন্বয়ে ১২৭.২২ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত মহানন্দা ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ড-চুয়ারিটিও দেখে চলা যেতে পারে। ১৯৭৬এ অভয়ারণ্যের শিরোপা চেপেছে মহানন্দার শিরে। সুকনা হয়ে পথ গিয়েছে—প্রবেশ তোরণও সুকনায়। NH-31ও চলেছে স্যান্ডচুয়ারির বুক চিরে। বাঘেরা (১১) চরে বেড়ায়, দর্শন না মিললেও গর্জন শোনা অসম্ভব নয় বাঘের। আর রয়েছে চিতাবাঘ, শশুর, নানানধর্মী হরিণ, বন্য গুয়ার হাড়াও নানান জন্তু। এমনকি শীতে চেনা-অচেনা নানান পাখি, হিমালয়ান ব্ল্যাক বিয়ার, হাতিসহ দর্শন মেলে মহানন্দায়। নেচার ইন্টার-প্রিটেশন সেন্টারের আরণ্যক সংগ্রহশালাটিও উল্লেখ্য।

নভেম্বর থেকে মার্চে প্রতি রবিবার রাজ্য পর্যটন শিলিগুড়ি থেকে ১২-৩০টায় গিয়ে ১৭-৩০টায় ফেরে মহানন্দা দেখিয়ে। জলখাবার ও প্রবেশ মূল্য সহ টিকিট ৭৫। থাকারও ব্যবস্থা মেলে সুকনা ও কালিকোয়ারয় ফরেস্ট বাংলোয়। অব: DFO, Kurseong.

তেমনই মিরিক পথে কিমি দশেক যেতে চড়ুইভাতির আর এক নন্দনকানন মধুবন। হরিণ, ময়ূর ছাড়াও নানান জন্তু আকর্ষণ বাড়িয়েছে মধুবনের। তেমনই তিস্তা ব্যারেজ ও সুকনা লেকও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাস/অটো/ট্যাক্সিতে শিলিগুড়ি থেকে।

কোচবিহার

কিছুটা বিবর্ণ হলেও ছবির মত সাজানো ছোট্ট শহর কোচবিহার। কোচরাজারের করদ মিত্র স্বাধীন রাজ্য ১৯৪৯-এর ১২ই সেপ্টেম্বর ভারতভুক্তি হতে কামতা (অতীতের সৌমার পীঠ) বা কোচবিহার একটি জেলায় রূপ পেয়েছে। জেলার সদরও বসেছে কোচবিহারে। ১৫২২এ বিশ্ব সিংহর হাতে রাজ্যের পতন হলেও রায়কতশিরোপায় ভূষিত শিশু সিংহর হাতে ১৫৩৩এ রায়কত বংশের প্রতিষ্ঠা।

পশ্চিমবঙ্গের সুন্দরতম জেলা শহর কোচবিহার। অসংখ্য দিঘি শহরের অন্যতম বৈশিষ্ট্য। শহরের প্রাণকেন্দ্রে সাগরদিঘি—শীতে পরিযায়ী পাখিরা ভেসে বেড়ায়। বোটিং-এর ব্যবস্থা মেলে। আলোকিতও হচ্ছে আজকাল। পুরসভার উদ্যোগে সকাল ও সাঁঝে রবীন্দ্রসঙ্গীতে সুরমেদুর করে তোলা হচ্ছে দিঘিকে। তেমনই বসেছে প্রশাসনিক নানান দপ্তর সাগরদিঘির পাড়ে। ভূপবাহাদুর নৃপেন্দ্রনারায়ণের হাতে গড়া শহর কোচবিহার। ১৮৮৭ খ্রিস্টাব্দে রোমের সেন্ট পিটার্সের অনুকরণে এফ বার্কলের তৈরি ইতালীয় শৈলীর অনুপম নিদর্শন কোচবিহারের রাজবাড়িটি আজ ঝরাজীর্ণ হলেও সেকালে অনন্য ছিল। সারা বিশ্ব থেকে আসবাব এসেছে একে অলঙ্কৃত করতে। প্রাসাদের দরবার হলটি অনবদ্য। তবে, ভ্রমণার্থীদের প্রাসাদ দর্শন আজও প্রতিকূল হয়ে আছে। আর আছে দেবী-বাড়ি, মদনমোহন মন্দির, বৈরাগীদিঘি, পার্ক, ১৭ শতকের কামেতেস্বরীর মন্দির কোচবিহারে। বৈরাগীদিঘির উত্তরপাড়ে চারচালা শৈলীতে ১৮৮৯ খ্রিস্টাব্দে তৈরি মদনমোহন মন্দিরের দ্বিশত বছরের প্রাচীন স্বর্ণ ও অগ্নিধাতুর মূল বিগ্রহ রাজপরিবারের কুল দেবতা জোড়া মদনমোহন অপহৃত হতে সারা শহর আজও মুহাম্মান। কার্তিক মাসের রাস পূর্ণিমার প্রশান্তি আছে। চলতে-ফিরতে নিউ ডিসপেনসন চার্চ, পুরাণী মসজিদ, জেফকিনস স্কুলও উচিত হবে দেখে নেওয়া। কোচবিহারের আর এক আকর্ষণ ধুলিয়াবাড়ি ও ঘুঘুয়ারির সুন্দর মোটিফ ও রঙবেরঙের শীতলপাটি। কোচবিহার জেলা প্রশাসন বঙ্গাপাহাড় সফারিও গড়তে চলেছে। তেমনই প্রাকৃতিক ভারসাম্য বজায় রাখতে ইকোট্যুরিজম প্রবর্তনের ব্যবস্থা হচ্ছে। ৩টি ট্যুরিস্ট লজও গড়তে চলেছে রাজাভাত-খাওয়াম।



হাসিমারা থেকে বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে। শিলিগুড়ি থেকেও বাস ও মিনিবাস যাচ্ছে কোচবিহারে। আর কলকাতার উল্টাডাঙা VIP

স্ট্যান্ড থেকে ১৪-০০, ১৮-০০, ১৯-০০ ও ২০-০০টায় নানান বাস ও ময়দানের বাস গুমতি থেকে ১৮-০০টায় এক্স, ২০-০০টায় সুপার/ ভিডিও কোচ/ রকেট যাচ্ছে ১৩৩ ১৫২, ১৬৫ ১৭২ টাকায় NBSTC-র মালদহ/ শিলিগুড়ি/ জলপাইগুড়ি হয়ে ১৭ ঘণ্টায় কোচবিহার। কোচবিহার থেকে ফেরে সকাল ১১-৩০টায় এক্স, ১৪-০০, ১৫-০০, ১৬-০০টায় সুপার, রকেট ও ভিডিও। কোচবিহার সেট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে সুবর্ণজয়ন্তী এক্স বাস যাচ্ছে কলকাতা হয়ে দীঘায়। এছাড়াও NBSTC-র বাস যাচ্ছে কোচবিহার থেকে—মজঃফরপুর ৮-০০, ৯-১৫, ১১-৩০, ১৭-৩০, ২০-০০; জয়গাঁও ৫-০০, ৬-০০, ৮-০০; নিউডি ১৪-০০; নবদ্বীপ ১২-০০; ধাপড়া ১৫-০০, ১৬-০০; শিলিগুড়ি ৫-৩০, ৭-০০, ৮-৩০, ১২-৩০; মালদহ ৮-৩০; বালুরঘাট ৭-০০, ১১-০০; ধুবড়ী ৬-৩০, ৯-৩০, ১৩-০০; বশদিগাঁও ৭-১৫; তেজপুর ১৭-৫০; নর্থ লখিমপুর ১৩-০০; শুয়াঘাট ৯-৩০; ২০-০০; ছাড়াও উত্তর-পূর্ব ভারতের দিখিদি। শিয়ালদহ থেকে তিস্তা-তোরাঙ্গা ও হাওড়া থেকে কামরূপ ও ১২৩৭ দিন তিরুভনন্তপুরম/ কোচ/ বাঙ্গালোর-শুয়াঘাট এক্সে নিউ কোচবিহার পৌছে রিকশায় চলুন শহরে। আবার দার্জিলিং মেলে NJP পৌছেও ট্রেনে বা রেল স্টেশন থেকে দিনহাটার বাসে কোচবিহার যাওয়া চলে।



সার্কিট হাউস, পৌরসভার পায়নিবাস, জেলা পরিষদের রেস্ট হাউস, PWI-র IH ছাড়াও কোচবিহার হোটেল, সারাদা, ড্রুপি, হোটেল বি ডি, আশোক ও পার্ক আছে। এদের কাছে S ৪০-১২৫ D ৮০-২২৫ টাকায় মেলে। উৎসাহীরা কোচবিহার থেকে বাসে দিনহাটা পৌছে অতীতের বিক্ষমত কামতানগরের গৌসানী দেবীর মন্দির, ৬০০ বছরের প্রাচীন গৌসানীমারির রাজ্যগাট বেড়িয়ে নিতে পারেন। এমনকি আটমারচার বিলে নৌকাবিহারও করে নেওয়া যায় একই যাত্রায়। NBSTC-র কলকাতা-দিনহাটা বাসও ১১-৩০এ ছেড়ে ১৭২ টাকায় যাচ্ছে মালদহ/ শিলিগুড়ি/ কোচবিহার হয়ে।

তেমনই দিনহাটা-আলিপুরদুয়ার পথে বাণেশ্বর শিব মন্দির, কোচবিহার-ফালাকাটা পথে বৈষ্ণবতীর্থ মধুপুরও বেড়িয়ে নিতে পারেন অভ্যুৎসাহীরা। তুফানগঞ্জে নাগুরহাট জঙ্গলের রসিকবিলে রঙবেরঙের পাখিও দেখে নেওয়া যায় কোচবিহার থেকে।

বক্সাপাহাড়

কোচবিহার থেকে বাস/মিনি/ট্যাক্সিতে ২৪ কিমি দূরের আলিপুরদুয়ার পৌছে আলিপুরদুয়ার থেকে ৭-০০ ও ১৪-০০টায় NBSTC-র জয়ন্তীর বাসে ১১ কিমি দূরে বক্সা-জয়ন্তী-রায়ডাক বন পরিদ্রুমার গৈটওয়ে রাজ্যভাষাওয়া হয়ে আরও ১০ কিমি দূরে বক্সা মোড় পৌছে গাড়ি-চলা ৪ কিমি আরণ্যক পথে সাতলাবাড়ি গিয়ে আরও ৫ কিমি পাহাড় বেয়ে সিন্ধুলা পাহাড়ের ৮৬৭ মি উঁচুতে ভারত-ভূটান সীমান্তের বক্সাপাহাড় পৌছান। কলকাতা থেকে সরাসরি তিস্তা-তোরাঙ্গা, কামরূপ বা শুয়াঘাট এক্সে নিউ আলিপুরদুয়ার বা ১৯-০০টায় NBSTC-র বাসে ৮-৩০টায় আলিপুরদুয়ার পৌছে রিকশায় চৌপাখি গিয়ে বাসে

শায়কখোলা পৌছে ভূটানঘাট/রায়ডাক বা সরাসরি বাসে জয়ন্তী। ১৭-০০টায় শিলিগুড়ি জং ছেড়ে নিউ মাল, চালসা, বানারহাট, হাসিমারা, রাজাভাতখাওয়া হয়ে মিটার গেজে ২১-১০এ আলিপুরদুয়ার জং পৌছে ২১-৪৫এ আলিপুরদুয়ার যাচ্ছে ৫৭৪। Intercity Exp। এছাড়াও ৬-০০টায় প্যাসেঞ্জার, ১২-১০এ সমষ্টিপুর-আলিপুরদুয়ার এক্সও আসছে শিলিগুড়ি থেকে আলিপুরদুয়ার। NJP থেকেও শিলিগুড়ি/আলিপুরদুয়ার হয়ে একইভাবে চলা যেতে পারে বক্সা। আর জলদাপাড়া দর্শনাধীরা মাদারীহাট থেকেও গাড়ি নিয়ে বেড়িয়ে নিতে পারেন ৬০ কিমি দূরের বক্সা। জয়ন্তীর দূরত্ব ৭৫, ভূটানঘাট ৮৫ কিমি মাদারীহাট থেকে। মার্চ-মে আবার সেপ্টেম্বর-নভেম্বর বেড়াবার মরসুম।

১৮৬৪র ৭ই ডিসেম্বর ভূটিয়াদের হঠিয়ে বক্সাগিরি দুর্গের দখল নেয় ব্রিটিশ। আর ১৯৩০এ সংস্কার করে বন্দী-শিবির গড়ে ত্রৈলোক্য মহারাজ, ভূপেন দত্ত, হেমচন্দ্র ঘোষ, ভূপতি মজুমদার, নিকুঞ্জ সেন প্রমুখ অগ্নিযুগের স্বাধীনতা সংগ্রামীদের আটক রাখে ব্রিটিশ। আজ স্বাধীনতা সংগ্রামের ঐতিহাসিক স্মৃতি বিজড়িত বক্সাদুয়ার বিধ্বস্ত হলও স্বদেশী বন্দীদের অতীত রোমন্থন কায়। স্বাধীনতার ৫০ বছর পূর্তিতে নেবোদ্যমে মিউজিয়াম হচ্ছে দুর্গে। এমনকি ১৯৫৯এ দালাই লামার সাথে আসা তিব্বতীয় শরণার্থীদের আশ্রয়-স্থলও হয় বক্সাদুয়ার। ১৯৭০এ তিব্বতীয়দের স্থানান্তরের সাথে বক্সাদুয়ারের অবক্ষয়ের শুরু। আর ১৯৯৩-এর ভয়াবহ বৃষ্টিতে ও প্রশাসনের উদাসীনতায় তরায়িত হয় ধ্বংস। একে ঘিরেই ১৯৮৩তে রূপ পেয়েছে বক্সা টাইগার রিজার্ভ। জাতীয় উদ্যানের শিরোপা চেপেছে ১৯৯২তে চিলপাতা বনাঞ্চলের বক্সার শিরে। শিমুল, শাল, সেগুন, শিশু, দেবদারুণের সাথে গুল্মে আবৃত ৭৬৫ বর্গ কিমির মৌসুমী অরণ্যে ৬৭ প্রজাতির স্তন্যপায়ীর দর্শন মেলে—২৩ তার বিলুপ্ত গোষ্ঠীর অন্তর্ভুক্ত। অরণ্য বৈচিত্র্যেও বক্সা অনন্য। কোর এলাকা তার ৩০৪ বর্গ কিমি। ৯৫এর সুমারি মতে ৩১ বাঘ, ১০০ চিতা, ১২৫ হাতির সাথে নানান বনচরের বাস। ২৩০ প্রজাতির পাখিরও দর্শন মেলে বক্সায়। তেমনই ১৫০ রকমের বৃক্ষরাজি, ৩২ রকমের লতা, ১১২ ধরনের অর্কিড, ৩৬ ধর্মী ঘাস, ৭ রকমের বাঁশ, ৬ ধরনের বেতের সহাবস্থান ঘটেছে বক্সায়। বক্সা অরণ্যে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ৩৬টি গ্রামে ভূকপাদের বাস। আর মেলে ডলোমাইট; চা-ও হচ্ছে বক্সায়। বয়ে চলেছে রায়ডাক নদী অরণ্যটিরে। পায়ে পায়ে অভিসার করে নিন বক্সাপাহাড়।

এমনকি ভারত-ভূটান সীমান্ত সিন্ধুলাও বেড়িয়ে ফেরা যায় বক্সায়। তেমনই সীমান্ত পেরিয়ে নৈসর্গিক সৌন্দর্যের আকর রূপম উপত্যকাও অভিযান করে আসা যায় ট্রেক করে। তবে যাত্রীর আনাগোনা কম এপথে। পূর্ব গিয়ে মিলাছে মানস অভয়ারণ্যে। মানস নদী বয়ে চলেছে দুইয়ের মাঝে। আর উত্তরে ভূটান পাহাড় প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। পথেই পড়ে ডিমা, বালা ও জয়ন্তী নদী। শীতে কমলা সাজ পরে কালঙ নদী কমলা লেবুর রঙে। এদৃশ্যও অনুপম।

আলিপুরদুয়ার থেকে ৪০ কিমি দূরে তুরতুরি চা বাগিচা, আরও ৮কিমি আরণ্যক পথে মনোরম প্রকৃতির মাঝে রায়-ডাক নর্থ রেঞ্জের ভূটানঘাটও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। পাহাড় আর জঙ্গল, পক্ষীকুলের সম্রাজ্ঞা ভূটানঘাট। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে রায়ডাক নদী। জল তার নীলাভ। বনচরেরা আসে নদীতটে—কখনও তুষা মেটায় কখনও নুন চাটে। তেমনিই তুরতুরি চা বাগিচার পাশ দিয়ে পথ গিয়েছে আর এক অরণ্য রায়ডাক। সবুজ চা বাগিচার মাঝে রাভাদের বাস। চেনা-অচেনা হাজারো পাখির সাথে হাতিরও খেলায় মাতে রায়ডাক অরণ্যে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ২ ঘরের রায়ডাক ফরেস্ট বাংলোয়। সরাসরি যাত্রায় আলিপুরদুয়ার থেকে বাসে শামুকখোলায় নেমে আরণ্যক পথে ৩কিমি দূরে রায়ডাক বন বাংলো। আর ভূটানঘাট বাংলোর দূরত্ব ৪কিমি শামুকখোলা থেকে। তবুও যেন যাতায়াতে আলিপুরদুয়ার থেকে গাড়ি নিয়ে সরাসরি বনবাংলোয় চলা সুবিধার। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ভারত-ভূটান সীমান্তে ভারত রাষ্ট্রের ভূটানঘাট ফরেস্ট বাংলোয়, অবু: DFO, Baxa T P, Alipurduar-736122.

শীতের দিনে ভূটানঘাট বাংলো থেকে ৫ কিমি দূরে রায়ডাক নদী পেরিয়ে আরও ৫ কিমি গিয়ে কমলালেবুর সাময়িক আড়ত সাখিয়াবাজারও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। শিশিৎ খেলার রোমাঞ্চিক পরিবেশ সেও এক নয়নেলাভন দৃশ্য। তেমনিই বেড়িয়ে নেওয়া যায় বক্সামুয়ার থেকে ১৩ কিমি বন পথে জয়ন্তী। পাহাড়-অরণ্য-নদী, বন্যারন ছন্দোময় কলতান—তারই সাথে হাজারো পাখির সুমধুর কাকলি মাতোয়ারা করে তোলে জয়ন্তী। আকাশ ছেয়ে শাল-সেওন-শিমুল-পলাশ-শিরীষ—নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে শীর্ণকায় জয়ন্তী নদী। নদীর পশ্চিমে বনবাংলো; পূর্ব জুড়ে পাহাড় আর জঙ্গলে আকীর্ণ বক্সা টাইগার প্রজেক্ট। ঘণ্টা দুয়েকের দূরগম হাঁটা পথে পাহাড় শিরে আরণ্যক পরিবেশে সতীর বামজঙ্গল পড়ে—একদম পিঠের এক পীঠও জয়ন্তী। দেবীও এখানে জয়ন্তী, ভৈরব তার ক্রমদীপ্ত। আর আছে তিন গুহায় মহাকাল মন্দির। একটিতে ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর, দ্বিতীয়ে ভোলানাথ আর তৃতীয়ে মহাকালী। শিবরাত্রিতে জাঁকালো উৎসব হয়। বাস আসছে আলিপুরদুয়ার থেকে জয়ন্তী।



থাকার জন্য সজ্জিত ফরেস্ট বাংলো আছে বক্সা পাহাড়ে। জয়ন্তী, রাজভাড়াখাওয়া, ভূটানঘাট, সন্ধ্যা, রায়ডাকও ফরেস্ট বাংলো মেলে। অবু: যিস্ত ডাইরেক্টর, বক্সা টাইগার রিজার্ভ, আলিপুরদুয়ার-736122. রাস্তার সরঞ্জাম মিলেও আহার নিজ ব্যবস্থায় সঙ্গে নিতে হয়। আর আছে Nature Lovers Expedition ও RMC-র রেস্ট হাউস বক্সা পাহাড়ে। এদের বুকিং: নেচার লাবার, রেড ক্রস বিল্ডিং, কাছারি রোড, শিলিগুড়ি; RMC-র বুকিং: North Bengal Explorers Club থেকে। বক্সার শব্দার্থবরও মেলে এদের থেকে। আর জয়ন্তীতে CESC-র Holiday Home আছে। অবু: CESC, 18 Rabindra Sarani, 2nd floor, Cal-I. 0 2253550 Ext 249. ডেস্টার হাচ্ছে রাজভাড়াখাওয়ায়। আর শামুকতলা রোড,

চৌপাখি, আলিপুরদুয়ারে আছে—H Elite, বিপরীতে Santoshi H, অদূরে Gama L. Kanchanjanga H; স্টেশন রোডে Raj Luxmi H। পর্যটক আবাসও গড়তে চলেছে আলিপুরদুয়ারে। এমনকি আলিপুরদুয়ারে অবস্থান করে শ'চারেক টাকায় গাড়িতে বেড়িয়ে ফেরা যায় বক্সা।

জলদাপাড়া অভয়ারণ্য

জয়ন্তী থেকে ৭০ আর শিলিগুড়ি থেকে ১১৯ কিমি দূরে ৬১ মি উচ্চে জলপাইগুড়ি জেলায় ১১৪ বর্গ কিমি জুড়ে ১৯৪১ হ্রিস্টাব্দে গড়ে উঠেছে এই অভয়ারণ্য। হাসিমারার ১২ কিমি দূরে মাদারিহাটে অভয়ারণ্যের প্রবেশদ্বার। নিয়মিত বাস ও মিনিবাস আসছে জলপাইগুড়ি, শিলিগুড়ি, কোচবিহার, জয়গাঁও তথা ফুন্টসোলিং থেকে হাসিমারায়। মাদারিহাট হয়েও যাচ্ছে এর কোন কোন গাড়ি। পথ পাশে বুক উচুতে উতলে বিতীর্ণ চা-বাগিচা। রঙবেরঙের সাজে পিঠে চুপড়ি চাপিয়ে দুটি পাতা একটি কুঁড়ি তুলছে দিনভর। চলার পথে এও আর এক নয়নেলাভন দৃশ্য।

সবুজের বাসর বসেছে হলং ডাকবাংলোকে ঘিরে—গহীন অরণ্য, বয়ে চলেছে পাহাড়ী নদী তোরসা ও মালঙ্গী পূর্ব থেকে পশ্চিমে। নদী পারে স্ট লিক—বন্যপ্রাণীর আসে নুন ও জল খেতে। পরদিন সকালে হাতির পিঠে যাত্রীরা যান বনাজন্ত দেখতে। এক শৃঙ্গী গণ্ডার দর্শন তালিকায় মুখ্য। তবে, সংখ্যা কমতে বসেছে। শোনা যায়, খাবারের অভাব এর কারণ। ২৭.৪.৯২এর গণনা মতে ৩৩টি গণ্ডার আছে জলদাপাড়ায়। আর আছে নানান প্রজাতির হরিণ, ময়ূর, বাঘ, লেপার্ড, বন্য হাতি, শশ্বর, গুয়ারা, ছাড়াও নানান। আর হয়েছে চিতাবাঘ পালন কেন্দ্র। কাছেই অভয়ারণ্যের অফিস, মিউজিয়ম তথা ইন্টারপ্রিটেশন সেন্টার মাদারিহাটে। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মে মাস। জুনের ১৫ থেকে সেপ্টেম্বর ১৫ বন্ধ থাকে জলদাপাড়ার দ্বার।

কলকাতা থেকে সরাসরি জলদাপাড়া যাত্রায় বিমানে বাগডোগরা আর রেল দার্জিলিং মেল, তিস্তা-তোরসা, কাকজঙ্গলা বা কামরূপ এক্সপ্রেস NJP পৌছে রিকশায় শিলিগুড়ির বিধান মার্কেট গিয়ে কোচবিহার, জয়গাঁও, আলিপুরদুয়ারের বাস বা মিনিবাসে মাদারিহাট পৌছান। তবে, CSTC ও পশ্চিমবঙ্গ ট্যুরিজমের কলকাতা-জয়গাঁও বাস ১৮-০০টায় ও কলকাতা-ফুন্টসোলিং ভূটান যাত্রীর বাস ২০-০০টায় ছেড়ে মাদারিহাট হয়ে যাচ্ছে। আবার শিলিগুড়ি থেকে মিটারগেজ রেল হাসিমারা পৌছেও ট্যাক্সিতে হলং বাংলো চলা যেতে পারে। পূর্ব ব্যবস্থা না থাকলে হাসিমারা থেকে ট্যাক্সি নিয়ে অভয়ারণ্যের ৬ কিমি অন্তরে Hollong Forest Lodge, 0 62228, যাওয়াই উচিত হবে। ৭ ঘরের সুসজ্জিত লঞ্জে দু'জনের থাকা ভারতীয় ৩৫০ অভ্যন্তরীণ ৮০০, ডিনার ও ব্রেকফাস্ট ১৫০ টাকায় প্রতিজনা বাধ্যতামূলক। আগে থেকে জানিয়ে এলে ফরেস্ট ডিপার্টমেন্টের গাড়ি যাত্রী নেওয়া-আনা করে। গহীন অরণ্য, পঞ্চও দীর্ঘ—তাই পায়ে হেঁটে যাওয়া উচিত নয়। আর মাদারিহাট বাস সড়কে WBTD-র Jaldapara Tourist Lodge, AP প্রথম ডাব ৭০০, ১০ বেডের

ডর্মিতে ২১০ প্রতী জন। অব: Manager, ① (03563) 62230 বা Tourist Centre, 3/2 B B D Bag, Cal-1, ① 2485917. সকালে টুরিস্ট লজ থেকে গাড়িতে ৭ কিমি দূরের হাতি পয়েন্টে যাতায়াত ১২৫, দশের বেশি যাত্রী হলে প্রতিজনা ২৮। আর, হলং ফরেস্ট লজ থেকে যাত্রী নিয়ে হাতি যাচ্ছে ১১ ঘণ্টার সফরে, প্রতিজনা ৬৫ শিশু ৫০ অভ্যন্তরীণ ১১৫। আর লাগে প্রবেশ দক্ষিণা, গাড়ি, পারমিট ও ক্যামেরার চার্জ, মান হারে ভিন্ন ভিন্ন।

আবার ফরেস্টের আর এক শ্রাভ ৪ কিমি দূরের নীলপাড়ায় ২ ঘরের ফরেস্ট বাংলো; ১৬ কিমি দূরে ৩ ঘরের বরোদাবাড়ি ফরেস্ট বাংলো ও বরোদাবাড়ি ইয়ুথ হোস্টেলেও যাত্রী থাকার ব্যবস্থা মেলবে। হলং ফরেস্ট লজ ও অন্যান্যের আংশিক বৃকিং: W B Tourism, Hill Cart Rd. Siliguri. ① 431974 বা W B Tourism, 3/2 B B D Bag, Cal-1. ① 2488271 বা Divisional Forest Utilisation Officer, 8 Lyons Range, Cal বা DFO, Cooch Behar থেকে মেলবে। বৃকিং ছাড়া যাওয়া নিরাপদ নয়।

ডুমার্স

ডুমার্স অর্থাৎ ভূটানের ডুমার্স। জলপাইগুড়ি ও কোচ-বিহার জেলা সীমান্তে ৪৭৫০ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে T' অর্থাৎ Tea, Timber, Tourism দুনিয়া ডুমার্সে। রোমাঞ্চে ভরা এর পথঘাট, ১৫২টি চা-বাগিচা; ১২৫০ কিমি বনভূমিতে হাজারো পাখির কলকাকলি, নানানধর্মী অর্কিড মন্ত্রমুগ্ধ করে তোলে। বয়ে চলেছে তোরসা, তিস্তা, জলঢাকা, রায়ডাক, সঙ্কোষ, কালজানি ছাড়াও নানান পাহাড়ী নদী ডুমার্সের উপর দিয়ে। ওয়ার্ড, মুণ্ডা, রাভা, টোটো ছাড়াও নানান উপজাতির বাস। জলদাপাড়া, গুরুমারা ও চাপরামাড়ি—তিন অভয়ারগাই ডুমার্সে। এমনকি ভূটানের রাজপথও গিয়েছে এই ডুমার্সের উপর দিয়ে। তেমনই লুকিয়ে রয়েছে আর এক অতীত আলিপুরদুমারের পশ্চিমে বুড়া তোরসার পূবপাড়ে অর্থাৎ জলদাপাড়ার কাছে চিলাপাতার জঙ্গলে। ১.২৯৫ বর্গ কিমি জুড়ে গুপ্তযুগের (৪-৬ শতক) নলরাজ্যার গড় ব্রিটিশের মেন্দাবাড়ি আজও জঙ্গলাকীর্ণ।

মালবাজার থেকে ১১ কিমি দূরে বিস্তীর্ণ চা-বাগিচার মাঝে আঙ্গু গোলাপ আর নানানধর্মী মরসুমী ফুলের কাননে অর্কিড হাউস। কানন লাগোয়া মালবাজার বাস স্ট্যান্ডেই WBTDG-র ২৯ বেডের *Mulbazar Tourist L*, Mal-735221. ① (03562) 55183. DAB ৩০০ A/c ৪৫০ ডর্মি বেড ৬০। NBSTC-র বাসও যাচ্ছে কলকাতা থেকে ৫-০০, ১৮-৩০এ শিলিগুড়ি হয়ে মালবাজার। এছাড়াও বাস যাচ্ছে কলকাতা তথা শিলিগুড়ি থেকে মালবাজার হয়ে নানান। বাস যাচ্ছে ডুমার্সের উপর দিয়ে—জলপাইগুড়ি, শিলিগুড়ি, কোচ-বিহার, আলিপুরদুমার, জয়গাঁও তথা ফুন্টসোলিং-এ। মালবাজার টুরিস্ট লজ থেকে দিনে দিনে গুরুমারা বেড়িয়ে আসে লাক সহ ১৮০ টাকায়। এমনকি Apex Tours, 21A, Rani Sankari Lane, Cal-26. ① 485236 কলকাতা থেকে ডুমার্স প্যাকেজে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে।

মংপং: শিলিগুড়ি থেকে ২৫ কিমি দূরে দামাল নদ তিস্তার পাড়ে প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের লীলাভূমি মংপং। বাস যাচ্ছে বিধান মার্কেট স্ট্যান্ড থেকে NH 31 ধরে মহানন্দা ওয়াইন্ড লাইফ স্যাক্চুরারির মাঝ দিয়ে দিনভর মুহূর্মুহ। ১ ঘণ্টার পথ। আজও অনাবিল প্রকৃতির আদম মাধুর্যের স্বাদ মেলে মংপং-এ। পশ্চিমে সিভোক পাহাড়, উত্তর ও পূবে মালভূমি জুড়ে গহন অরণ্য। আর দক্ষিণে অস্তহীন নীলাকাশ। বন্য হাতি, বাইসন, হরিণ চরে বেড়ায়। তেমনই বনটিয়া, তিতির, ময়না, বনমোরগ, হরিয়াল ছাড়াও চেনা-অচেনা নানান পাখির আনাগোনা মধুময় করে তোলে পরিবেশকে। করোনেশন ব্রিজে তিস্তা পেরিয়ে ডুমার্সমুখী ৩ কিমি যেতে মংপং ফরেস্ট চেকপোস্ট। পথপাশে বিটাবুর অফিসে ১২ বার্থের লগ হাটের স্পট বৃকিং মেলে। বার্থ ৪০, ব্যবস্থাপনা ভালই। আর আছে সুসজ্জিত ফরেস্ট বাংলো, DAB ৪০০; অব: DFO, Kalimpong. অবস্থান হিসাবে লগ হাটটি আদরনীয় হবে। দু'য়েরই অবস্থান বিট অফিস থেকে ২ মিনিটের পথে। তেমনই আছে খেলাধুলা ও বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে মংপং পিকনিক স্পট—চড়ুইভাতির আদর্শ জায়গা। দিনভর দেখে শুনে দিনাভে মালবাজার তথা ডুমার্স বা শিলিগুড়ি ফেরা যেতে পারে। আবার করোনেশন ব্রিজ পৌঁছে বাসে মংপং, কালিম্পং বা গ্যাংটকও চলা যেতে পারে।

চলার পথে হাসিমারা-জলপাইগুড়ি বাস পথে গুরুমারা স্যাক্চুরারিটিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। ১৯৪০-৪১এর সংরক্ষিত শিকারভূমি ১৯৭৬এ ৮.৬১ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত গুরুমারা অভয়ারণ্যের শিরোপা পরে। আবার শিরোপা বদল—গুরুমারা হয়েছে পশ্চিমবঙ্গের ৫ম জাতীয় উদ্যান। আয়তন বেড়ে গুরুমারা আঙ্গ ৭৯.৪৫ বর্গ কিমি। ওদার, বহেড়া, কাটুস, লালী, সিধা, জাম, শিমুল, শিরীষের জঙ্গলে ১৪টি একশুরী গুহার, ৫০এরও অধিক হাতি, ৩০০ বাইসন, ২৫ চিতাবাঘ, গৌর, বাঘ, শম্বর, নানান প্রজাতির হরিণের দর্শন মেলে। শীতে বিরল প্রজাতির ময়ূরেরা নাচ দেখায় পেখম মেলে। পক্ষীকুলও আকর্ষণ বাড়ায়। বয়ে চলেছে মূর্তি ও রায়ঢাকা নদী, দূরে দূরান্তরে পাহাড়শ্রেণী—আরও দূরে কাঞ্চনজঙ্ঘা। থাকারও ব্যবস্থা আছে ৪ কিমি অরণ্য অন্তরে ফরেস্ট ডিফেন্স, বেড ১০০ হারে, আহারও মেলে ক্যান্টিনে; অব: DFO, Jalpaiguri. ① 22838।

গুরুমারার ঠিক নিচে দক্ষিণ লাগোয়া চাপরামারি। গুরুমারা থেকে ১২ কিমি দূরের চালসা পৌঁছে চাপরামারি হয়ে চলা যেতে পারে নানানদিকে। আর সরাসরি যাত্রায় ৭৮ কিমি দূরের শিলিগুড়ি থেকে NBSTC-র বিদ্যুর বাসে চলা যায় NH 31-এ সেবকব্রিজ, মালবাজার, চালসা, খুনিয়ার মোড় ছাড়িয়ে বাঁয়ে আরও ৪ কিমি দূরের চাপরামারির তোরণধারে। তবে, চালসা যাতায়াতে বাসের অধিক মেলে। চালসা থেকে একটা পথ বঁকে গেছে ডানদিকে বজার দিকে।

চালসার কিছুটা আগে পথ ধিমুখী হয়ে বায়ে যেতে সংরক্ষিত বনাঞ্চল আর ডাইনে গরুমারা। রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে চাপরামারি পয়েন্ট। ১.৫ কিমি অরণ্য অন্দরে বনবাংলো। অরণ্যের শোভা সুন্দর দৃশ্যমান বাংলা থেকে। কাঞ্চনজঙ্ঘাও দৃশ্যমান বাংলার সামনে থেকে। চাঁদিনীরাতে নয়নলোভন এ-দৃশ্য মুগ্ধ করে দর্শককে। ৯.৬০ বর্গকিমি ব্যাপ্ত ১৯৭৬এ ঘোষিত পর্ণমোচি বৃক্ষের চাপরামারি অভয়ারণ্যেও গরুমারার প্রতিচ্ছবি মেলে। অরণ্যের জলায় দিনান্তে বন্য বরাহ, নীলগাই ছাড়াও নানান অরণ্যচরেরা আসে জল খেতে—মান করে হাতির দল। গরুমারা লাগোয়া মাটিয়া ড্যাম অর্থাৎ জলাশয়। বয়ে চলেছে ন্যাওরা নদী একদিকে, আর বামনি ও মূর্তি অপরদিকে; ওরার, মুণ্ডা ও রাজবংশীদের বাস। তারই মাঝে বিহারে বেরয় গুণার, হাতি, গৌর ছাড়াও নানান অরণ্যচর লেকক ঘিরে। বামনিঝোরা হয়ে পথ গিয়েছে। শীতে হেম ট্যারিজম শিলিগুড়ি থেকে ডুয়ার্স সফারিতে বামনিঝোরাও যাচ্ছে।

তেমনই গরুমারার অদূরে অভয়ারণ্যের পিছে গড়তে যাচ্ছে রাজা পর্যটন ও সিনক্রোয়ার্স হোটেল গ্রন্থপের উদ্যোগে শিলিগুড়ি-গুয়াহাটি সড়কের চালসা পাহাড়ে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ২৫ একর জুড়ে হলিডে রিসর্ট অর্থাৎ ১০০টি কটেজ, ভিলা, রেস্টোরা, বার, কফি শপ, শপিং সেন্টার ছাড়াও নৌকাবিহারের ব্যবস্থা নিয়ে নয়ন মনোহর লেক। চালসা হয়ে ভূটান বর্গের কাছে মনোরম প্রকৃতির মাঝে সামসিং-ও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

চালসা থেকে ৮২ কিমি দূরে সামসিং-এর প্রশস্তি তার নয়নলোভন প্রাকৃতিক শোভার জন্য। মিনিবাস যাচ্ছে বিধান মার্কেট থেকে মালবাজার রেখে ১০ কিমি দূরে চালসা মোড়—বায়ে পথ উঠেছে সামসিং, ডাইনে গরুমারা হয়ে জলপাইগুড়ি। আর সোজা পথ চলে চাপড়ামারি অভয়ারণ্য চিরে বানারহাট, বীরপাড়া হয়ে আলিপুরদুয়ার। চালসা থেকে চা বাগিচার বুক বেয়ে পথ ওঠে ৮ কিমি দূরের মেটেলি হয়ে আরও ১০ কিমি দূরের সামসিং। অদূরে ভূটান পাহাড় মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। ভিউ পয়েন্ট থেকে দেখে নেওয়া যায় মনোরম প্রকৃতি—গাছে গাছে কমলালেবু ফলে, বয়ে চলেছে মূর্তি নদী। অপর পাড়ে জলঢাকা পাহাড়। DGHC-র ট্যুরিস্ট লজ হয়েছে। দিনে দিনে শিলিগুড়ি বা মালবাজার থেকে বেড়িয়ে ফেরা যেতে পারে মিনি বা নিজস্ব ব্যবস্থায় গাড়িতে।

আবার গরুমারা থেকে বামনিঝোরা হয়ে ঢলা যেতে পারে ডুয়ার্সের আর এক রূপসী কন্যা লাটাগুড়ি। লাটাগুড়ির আরণ্যক শোভাও মনোরম। বনচরেরা বিহারে বেরয়। ফরেস্ট বাংলাও আছে লাটাগুড়িতে। লাটাগুড়ি থেকে বেড়িয়ে নেওয়া যায় বামনিঝোরা। নদী আর নির্জনতা এখানে মিলে মিশে কাব্য গড়েছে। হাতিরাও আসে গাছে গাছে ফুটে থাকা ফুলের বাহার দেখতে। তেমনই গাছে গাছে অর্কিডের মেলা। অদূরে মূর্তি নদী।

আবার ময়নাগুড়ি বাজার থেকে ৩ কিমি গিয়ে উত্তর বঙ্গের বিখ্যাত শৈবতীর্থ জলেশ্বর শিবমন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। প্রাগজ্যোতিষপুরের রাজা জলেশ্বর শিকারের পথে ১ শতকে আবিষ্কার করেন জলমগ্ন ভূগর্ভস্থ এই অনাদি শিব-লিঙ্গ। প্রাচীন মন্দির ধ্বংস পেতে ১৬৬৫তে কোচবিহারের রাজা প্রাণনারায়ণের তৈরি মন্দিরে মুসলিম স্থাপত্য শৈলীর নিদর্শন মেলে। জলেশ্বর থেকে জলপাইগুড়ির দূরত্ব ১৫ কিমি। রাত্রিবাসেরও নানান ব্যবস্থা মেলে জেলাসদর জলপাইগুড়িতে। কদমতলায়—*রুবিবার্ডিং, হোটেল রেণুকা, ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ; প্রভাত হোটেল*—ডি বি সি রোড; *মিউনিসিপ্যাল গেস্ট হাউস* ছাড়াও নানান।

কালিম্পং

দার্জিলিং থেকে ৫১, গ্যাংটক ৭৫ আর শিলিগুড়ি থেকে ৬৯ কিমি দূরে ১২৫০ মি উঁচুতে পাহাড়ী শহর সুন্দরী কালিম্পং। দার্জিলিঙের মতো উচ্ছলতা নেই। তবে, আয়তন ও আয়োজনে পর্যটক সমাগম উল্লেখ্য না হলেও দেলো ও দুর্গিন্দারা দুই পাহাড়ের মাঝে ফারে ছাওয়া ফুল আর অর্কিডের দেশ কালিম্পং-এর শান্ত-বিশ্রাম-প্রশান্ত রূপটি অবকাশ যাপনের পক্ষে মনোরম। জলবায়ু স্বাস্থ্য প্রদ। উত্তরে সেকেন্দার পর্বতমালায় পিছে কাঞ্চনজঙ্ঘা ছাড়াও তুষারাবৃত কাং, জানু, কাক্র, পানডিম, সিমভু, সিনিয়লচু, চোমিও মো, নানান শিখর। দিনভর রূপালি, সূর্যাস্তে ক্ষণে ক্ষণে রঙ বদলায়—আগুন-লাল থেকে তামা, তামা থেকে সীসা। উত্তর-পূর্ব আকাশ জুড়ে রঙের বদল বিশ্বের অন্যত্র বিরল। পশ্চিমে গ্রেট রঙ্গিতের শ্যামল উপত্যকা, দক্ষিণ-পশ্চিমে জঙ্গলাকীর্ণ সিঞ্চল পাহাড়, দক্ষিণে বাংলার সমতল, পূর্বে রেলি নদীর সুন্দর উপত্যকা, তারও পিছে নিবিড় অরণ্যে ছাওয়া পর্বতমালা—কালিম্পংকে নৈসর্গিক সৌন্দর্যের লীলাভূমি করে তুলেছে। তিস্তা বাজারে ১৯৯৬-এ গড়ানতুন ব্রিজ তিস্তা পেরিয়ে ১ কিমি যেতেই ডানহাতি পথ উঠেছে পাহাড় বেয়ে হাজার থেকে চারহাজার ফুট উঁচু পাহাড়ী হ্যামলেট কালিম্পং-এ। আর সোজা উর্ধ্বমুখী গ্যাংটক। দার্জিলিং থেকে চলার কাল ঘুম পেরুতেই পূর্বমুখী সাইটেমারিয়া, শাল, ওক, ম্যাপেলের গহীন অরণ্যের মাঝ দিয়ে, হ্যাপি ভ্যালি ও লোপচু চা বাগিচার বুক চিরে, রঙ্গিত ও তিস্তা নদীর কাঁধে ভর দিয়ে পথ চলে নেমে। প্রথম আধায় পথ নামে আট হাজার থেকে এক হাজার ফুটে। মিলনও ঘটেছে রঙ্গিম সলিলের রঙ্গিত ও তিস্তার পথিমধ্যে, পথশোভা মনোহর। কালিম্পং থেকে ২০ কিমি দূরে ভিউ পয়েন্টও হয়েছে।

অতীতে সিকিম রাজের দখলে ছিল কালিম্পং। ১৭০৬এ কালিম্পং-এর অংশ দখল করে ভূটান। ভূটানিজ গভর্নরের মূল দপ্তরও বসে কালিম্পং-এ। নামটিও নাকি সেই থেকে, *A Kileen* অর্থ রাজার মন্ত্রী আর *pong* হচ্ছে দুর্গ। হিমতে,

কৌলিম গাছ থেকে নাকি অতীতের ডালিংকোট হয়েছে কালিম্পং। আবার ব্ল্যাক স্পার থেকে কালিবং-ও বলে থাকে স্থানীয় লোকে। আর লেপচা ভাষায় দুই পাহাড়ের মাঝে খেলার মাঠ অর্থাৎ কালিম্পং। ১৭৮০তে বাকি অংশ দখল করে গোঁথার। আর ১৯ শতকে ব্রিটিশের দখল যায় কালিম্পং। অর্থাৎ কালিম্পং আসে বেঙ্গলে—কালে কালে পশ্চিমবাংলায়। অতীতে সিক্কিম তথা তিব্বতের সঙ্গে ভারতীয় বাণিজ্যের মূল ঘাট ছিল কালিম্পং। ৩.৫ বর্গকিমি ব্যাপ্ত শহরে ৪০০০০ নেপালি, তিব্বতীয়, ভূটানিজ ও লেপচাদের বাস।

চুটান যাই ভূটান

হাসিমারা/জলদাপাড়া থেকে বিদেশ ভ্রমণও করে নিতে পারেন। নিয়মিত শেয়ার টাঙ্ক, বাস ও মিনিবাস যাচ্ছে হাসিমারা থেকে ভারত সীমান্ত জয়পীও। পথের দূরত্ব ১৬ কিমি। তোরগ শেরলেই ভূটান রাষ্ট্রের ওরু। ভূটানের সহজতম সড়কও ভারত থেকে হাসিমারা হয়ে ফুন্টসোলিং যাচ্ছে। আর শিলিগুড়ি জংশন রেল স্টেশনের অদূরে Tourist Bureau—Govt of WB-এর বিপরীতে বর্ধমান রোড থেকে রয়্যাল ভূটান ট্রান্সপোর্টের বাস যাচ্ছে ৩২ টাকায় ৭-৩০, ১২-০০, ১৫-০০, ১৬-০০টায় (ডিলান্স ৫০); প্রাইভেট বাস যাচ্ছে বিধান মার্কেট থেকে মুম্বাই; NBSTC যাচ্ছে সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে ৭-০০, ১০-৩০, ১২-৩০ ও ১৫-০০টায়। পথের দূরত্ব ১৫০ কিমি। বাস যাচ্ছে কালিম্পং থেকেও ফুন্টসোলিং-এ। এমনকি কলকাতার ধরমতলা বাস গুমটি থেকে ভূটান ট্রান্সপোর্ট সার্ভিসের বাস বৃহস্পতি ছাড়া প্রতিদিন ১৯-০০টায় ছেড়ে ২০৫ টাকায় শিলিগুড়ি হয়ে ফুন্টসোলিং যাচ্ছে।

ভূটান যেহেতু বিদেশ—টাকায় রূপায়ের ঘন্টাই। ভারতীয় মুদ্রার তুল্য ভূটানি মুদ্রা নগরট্রম। ভারতীয় মুদ্রারও চল আছে সারা ভূটান রাষ্ট্রে। তেমনই ইংরেজির থেকে হিন্দী সরগরম বেশি সারা ভূটানে। তবে, ভারতমা ঘটে সময়ে—ভারতীয় সময় ১২-০০টা আধ ঘন্টা পিছিয়ে ভূটানে তখন ১১-৩০টা।

ভারতীয়দের কাছে ফুন্টসোলিং-এর ঘর অব্যবহৃত। তবে বিস্পৃ য়েতে অনুমতি লাগে। ফুন্টসোলিং অতি আধুনিক শহর, বাণিজ্যিক শহরও বটে। বিদেশী পণ্য ধরে-বিধরে আসা। নিটু দিয়ে বয়ে চলেছে তোরসা নদী। থাকার জন্য Welcom group-এর H Druk, Phuntsholing, Bhutan, S ৬০০ D ৮০০ A/c S ৭৬০ D ৮৭০ A/c সুইট ২৫০০; H Kuenga, DAB ১৫০-২৫০ TAB ১৭৫-২৭৫; H Blue Dragon, DCB ১০০ DAB ১২৫-১৭৫; Madras H, DCB ৬৫ DAB ৮৫-১৫০; H Rigya, DAB ১০০-১৭৫; H Paradise, DAB ১২০-১৫০; H Dechhun, S ৬৫ D ১২০ T ১৮০; ছাড়াও হোটেল রয়েছে নানান।

ফুন্টসোলিং থেকে ১৭২ কিমি দূরে ৭৯৫০ ফুট উচ্চ রাজধানী শহর থিম্পু বাস যাচ্ছে ৭-৩০, ৮-৩০ ও ৯-৩০টায়। সময় নেয় ৮ ঘন্টা, ভাড়া ৯০। BGTS-এর মিনিবাস যাচ্ছে ৭-০০ ও ১৪-০০টায় ছেড়ে ৬ ঘন্টায়, এদের ভাড়া ১১৫। Dendrup Travels যাচ্ছে ৭-০০ ও ১১-০০টায়, এদের ভাড়া ৮৫। যথেষ্ট

শীতবস্ত্রও সঙ্গে নিতে হয়। উচ্চতার তুলনায় শীতের আবহাওয়া থিম্পু শহরে।

হোটেলও আছে থিম্পুতে—H Takshang, H Kaysang, DCB ১০০ DAB ১২৫-২০০; H Riawang, DCB ৮০-১২৫ DAB ১০০-১৫০; H Rignum DCB ৮৫ DAB ১২৫; L. Rabzel, DCB ৮০-১২৫; H Methopem, D ৮৫-১৫০; H Degong, DCB ১০০। আর আছে Welcomgroup-এর H Druk, D (009752) 22966, A/c S ৮৫০ D ১২৫০ ১৮৫০ সুইট ৩০০০; H Keylong, S ৪৫০ D ৬৫০; ভূটান ট্যারিজমের Motithang H ছাড়াও নানান। আর আছে হোটেল গেশিং, SCB ১০০ SAB ১২৫ DCB ১৬০ DAB ২২৫ TAB ২৫০; হোটেল চমস, SCB ৮০ DCB ১৫০; হোটেল নো লায়ন, SCB ৮০ DCB ১২৫ TCB ১৫০।

থিম্পুর ৩১ কিমি আগেই পঞ্চগিয়েছে পারোয়। থিম্পু থেকে এসে দিনে দিনে পারোও বেড়িয়ে নিতে পারেন। পারোয় মিডিজিয়মটি খুবই আকর্ষণীয়। বেড়াবার উপযুক্ত সময় মার্চ থেকে মে, আবার মধ্য সেপ্টেম্বর থেকে নভেম্বর মাস। হোটেলও আছে H Olathang, D ৬০০; H Kinlay Penjore, D ৪০০-৬৫০ পারোয়। আর পুনায় H Langthog Pelri, D ১১০০। আরও তথ্যের জন্য ভ্রমণ সঙ্গী: নেপাল ও ভূটান দেখুন। তবে, Liaison Officer, India House, Phuntsholing, Bhutan এর কাছ থেকে ভারতীয়দের থিম্পু যাবার পারমিট নেওয়া বাধ্যতামূলক হলেও সহজেই প্রাপ্য। শনি, রবি ও ছুটি ছাড়া ৯-৩০—১১-৩০ ও ১৬—১৭-০০টায় খোলা। পাসপোর্টহীন যাত্রীদের উচিত হবে ভারতীয় নাগরিকত্বের নিদর্শন স্বরূপ রেশন কার্ড বা নিবর্তন কমিশনের পরিচয় পত্রের জেরক্স কপি সঙ্গে করা।

শহর থেকে ২ কিমি দক্ষিণে দুর্গিনদারা (১৩৭২ মি) পাহাড় চূড়োয় বলমলে সাজে ৩ তলা জং দর পারলি তিব্বতীয় বুদ্ধিস্ট মনাস্টি। হলুদ টুপি সম্প্রদায়ের (Gelukpa) এই মনাস্টি ১৯৩৭এ তৈরি। ১৯৭৬এ মহামায়া দালাই লামার দেওয়া উপহার ১০৮ খণ্ডের কাঙ্কুর ধর্মগ্রন্থ মনাস্টির আর এক সম্পদ। ছাদ থেকে চারপাশের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্য-মান। সামনেই জলাধার, তারও সামনে দুর্গিনদারা ভিউ পয়েন্ট—বয়ে চলেছে তিস্তা, রেলি, রিয়াং, ছাড়াও নানান পাহাড় চূড়ো। তেমনই নীলাকাশ, রক্তশুক্ল কাঞ্চনজঙ্ঘা, অসীম শূন্যতা এক অপার প্রশান্তি এনে দেয় দর্শক মনে। ঢালে সবুজে ছাওয়া সেনাবাহিনীর তৈরি গম্ফ কোর্স। শহর থেকে ২ কিমি দূরে পথেই পড়ে রবীন্দ্রনাথের স্মৃতি বিজড়িত গৌরীপুর ভবন—চিত্রভানু। এই বাড়ি থেকেই ২৫শে বৈশাখ ১৩৪৫ বঙ্গাব্দে জন্মদিন কবিতা আকাশবাণীতে আবৃত্তি শোনান টেলিফোনে কবি। সম্প্রতি সমবায় ট্রেনিং ইনস্টিটিউট বসেছে গৌরীপুর ভবনে।

এপথেই ১ কিমি উত্তরে ১৭০৪ মি উচ্চ দেলো (Deolo) পাহাড়ে ড. গ্রাহামসন হোম। ১৯০০ খ্রিস্টাব্দে ৩৫টি দুকুং ও অনাথ আশ্রম—ইন্ডিয়ান শিশুদের নিয়ে ড. জন আন্ডারসন গ্রাহামসনের প্রতিষ্ঠিত অনাথ আশ্রম। কালক্রমে বেড়ে বেড়ে

৫০০ একর জমিতে ৭০০-রও অধিক ছাত্রের পঠন-পাঠনের সাথে নানানধর্মী হাতের কাজ শিক্ষা দেওয়া হয়। ১৯৪২এ ড. গ্রাহামের মৃত্যুও ঘটে কালিম্পং-এ। আর রয়েছে, সেলোর উপরে নেওড়াখোলা জলপ্রকল্প। পাহাড়-তলীতে ১৬৯২এ তৈরি তংসা বা ভূটানিজ গুম্ফা অর্থাৎ মনাস্টি কালিম্পং-এ। তবে, মূল মনাস্টি গোখাঁদের হাতে ধ্বংস পেতে নতুন করে তৈরি হয় এটি।

ফুল আর ক্যাকটাসের জন্যও কালিম্পঙের বিশ্বপ্রশস্তি আছে। প্রতিটা বাড়িতেই বাগিচা—আর হয়েছে নয়ন-লোভন নার্সারি। কালিম্পং পর্যটকদের কাছে ৭০০ রকমের অভিনব ক্যাকটাসের পাইন ভিউ নার্সারি আকর্ষণে অনবদ্য। কিনতেও মেলে ৮০ থেকে ৮০০০০০ টাকায়। আর আছে ঋষি রোডে ইউনিভার্সাল, স্ট্যান্ডার্ড, বৃন্দাবন, সাংগিলা, প্রিন্স হিল, শান্তিকুঞ্জ, টুইন ব্রাদার্স, তুলসী প্রধান, গণেশ মনি প্রধান নার্সারি ছাড়াও নানান। ১৯৫৬ খ্রিস্টাব্দে প্রতিষ্ঠিত বাঙালির দেবী কালীর মন্দিরটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে চলতে ফিরতে। তেমনি আছে অকিউ ফুল আর পাইনে ছাওয়া ঋষি বঙ্কিমচন্দ্র পার্ক, শান্ত-শ্রদ্ধ-মনোরম পরিবেশে মঙ্গলধাম, ১৮০৭এ গড়া ভূটানিজ পেদং মনাস্টি, তিব্বতীয় মনাস্টির আদলে গড়া ক্যাথলিক চার্চ, কাঠমাতুর স্বয়ম্ভূনাথের আদলে গড়া নেপালি বৌদ্ধদের ধর্মোদয় বিহার। কিংবদন্তী খ্যাত সুইস মিশনারী-দের সুইস ওয়েলফেয়ার ডেয়ারিটি আজ আব্দোলালেন শহীদ হয়েছে। হাতের কাজ দেখা ও ক্রয়ের ব্যবস্থা রয়েছে মোটর স্ট্যান্ডের বিপরীতে হাঁটা দূরত্বে ১৮৯৭ খ্রিস্টাব্দে লেডি ক্যাথারিন গ্রাহামের গড়া কোথপারেটিভ হস্তশিল্প কেন্দ্র—কালিম্পং আর্টস অ্যান্ড ক্রাফটস সেন্টারে। পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নিন কালিম্পং শহর। আবার বাঁ-হাতি পথে সামান্য যেতেই হাসপাতাল ছাড়িয়ে হিলডিয়াম হোম ভিউ পয়েন্ট। চোখ ভরে দেখে নিন সর্পিণ গতিতে বয়ে চলা দামাল নদী তিস্তা ও তার চারপাশ। এমনকি বৃধ ও শনিবারের কালিম্পং ভ্রমণার্থীরা মোটর স্ট্যান্ডের নিচুতে রাজা সোরজে হাটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। জাতীয় সাজে সম্ভ্রান্ত হয়ে স্থানীয়রা আসেন কেনা-বোচা করতে।

পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নিন কালিম্পং শহর। আবার Himalayan Travels, ৫ 55023, Kalimpong Motor Transport ৫ 55719, Mintri Transport, Main Rd., ৫ 55741 থেকে ৩০০-৩৫০ টাকায় মারুতি ভ্যান, জিপ ৪০০-৪৫০ টাকায় ভাড়ায়ে মেলে শহর দেখার। রেল না পৌঁছালেও রেলের আউট এজেন্সীর বুকিং দপ্তর বসেছে কালিম্পঙের মোটর স্ট্যান্ডে। বাসও যাচ্ছে রেলের শিলিগুড়ি-কালিম্পং-শিলিগুড়ি।



Kalimpong, STD 03552, PC-734301-এ শহরে ঢোকার মুখে বাস পথে সিনেয়ার আগেই বামহাতি ঢালপথে মধ্যমানে অনন্য DGHC-র Shrangila Tourist Lodge, ৫ 55230, AP প্রধায় DAB ৪৭৫ TAB ৫৫৫ ভূমি ১৯০, আর আছে এদেরই বিলাসবহুল Morgan House Tourist L, Durpin Hill, ৫ 55384, AP S ৬৫০,

D ১১০০, ১২৫০, ১৭০০; একই চত্বরে TashiDing Tourist L, ৫ 55929, AP-S ৬০০, ৬৫০ D ১১৫০; Hill Top Tourist L, ৫ 55654, AP D ৬০০, ৮৫০ ভূমি বেড ২১০; আর আছে ২৫ বেডের Youth Hostel, 1B ও DB কালিম্পং-এ। অবু: Manager, Kalimpong, PC-734301 বা Tourist Centre, 3/ 2 B B D Bag, Cal-I. আর হয়েছে শহর থেকে দূরে সেলা পাহাড়ের চূড়ায় DGHC-র নবতম Tourist L কালিম্পং-এ।

আর আছে মোটর তথা বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে Ongden Rd-এ অতি সাধারণ—Kohinoor L, Pradhan L, Kozy Nook L, Janakee L, Classic L, Himalshree L, Sherpa L; এদের কাছে S ৬০-১২৫ D ১২০-২০০ টাকায় মেলে। তবে নালে জলের অভাব এইসব সাধারণ হোটেল। মোটর স্ট্যান্ড থেকে বামহাতি ঢাল নেমে গলিমুখে Crown L, Mugihatta, DAB ৩৫০ TAB ৪৫০; বিপরীতে Ongden Rd-এ Mayuri H., ৫ 55858, DAB ২৫০, ৩০০, ৩৫০; হোটেল দু'টি ভালই। অগ্রিম অর্ডারে আহারও মেলে ময়ুরীতে। H Classic, opp Mayuri Hotel। Panchabati L, ৫ 56165, D ১৫০-২২৫। L Himalshree, Ongden Rd, S ৮৫-১২৫, D ১৫০-২৫০, T ২৫০-৩৫০; Kosy Nook, ৫ 55541, DAB ১৫০, ২০০ TAB ২৭৫; Janakee L, ৫ 55479, D ১২৫-২৫০; Pungtab L, D ১২৫-২০০। সামনেই মেইন রোডে—অতি সাধারণ সাজে বাঙালির Tripti H., ৫ 55885, SCB ৭৫ SAB ১২৫ DAB ২৫০ TAB ৩০০; H Gompu's, ৫ 55818, DAB ২০০, ২৫০ TAB ৩০০ FAB ৪০০। অবস্থানে মনোরম। বামহাতি মাঝি রোডে—Munal L, ৫ 55404, DAB ৪০০, ৪০০ TAB ৪০০ সুইট ৮০০; Flower L, Rinkingpong Rd-734301-এ Kalimpong Park H., ৫ 55304, A80R70B1, S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০, কল বুকিং: ভায়মন্ড ট্রাস, ৩০ যদুনাথ দে রোড, কল-১২, ৫ 276714. H Madhuban, কটেজ ২২৫-৩৫০। Rishi Rd-এ—L Moyal Lyang, ৫ 55333, SAB ১২৫ DAB ২৫০; H Norling, DAB ২৫০; মিউনিসিপ্যাল অফিসের বিপরীতে প্রাইভেট লিজে মিউনিসিপ্যাল রেস্ট হাউস তথা H Kalimpong Delight, ৫ 56199, DAB ১৫০, ১৭৫, ২০০; পোস্ট অফিসের শিরে পাথরে গড়া নানান কীর্তিখ্যাত David Macdonald-এর বসতবাড়িতে Himalayan H, Upper Cart Rd., ৫ 55248, AP-S ১৪০০ D ২২০০; কাঞ্চনজঙ্ঘাও দৃশ্যমান হোটেল থেকে। অদূরে এস ডি ও বাংলার কাছে U Cart Rd-এ H Gardenreach, ৫ 55091, S ১২৫-২০০ D ২৫০-৩৫০ T ৩০০-৪২৫; Mount View G H, ৫ 55466, D ২৫০-৩৭৫।

Novelty Cinema-র অদূরে শাংগিলায় পথে Drolma H, ৫ 55909, D ৩০০-৪৫০; স্বল্প দূরে Sood's G H, ৫ 56207, দুই বেডের কটেজধর্মী ঘর ৫০০, ৬০০, ৬৫০ AP-I) ৮৫০। আর আছে JP Lodge, near Fire Brigade, প্রাক্তন অধ্যক্ষ মহাশয়ের Manjuri L, Gurudongma House, Hill Top Rd., ৫ 55204, S ৬০০ D ৮০০ তাঁবু ১০০; Diamond L, B1; Deki L, B1; Ongden Rd-এ—Sherpa L; Pritam Rd-এ—H Sunnydale, Maa L, Hillside H, Paradise, ১২৫-১৭৫ টাকায় দু'বেডের ঘর মেলে এদের কাছে। মোটর স্ট্যান্ডের নিচুতে রয়েছে রতিরাম বংশীলাল ধরমশালা কালিম্পং-এ। আর শহর থেকে পোস্ট

অফিসের মাফপাশ *H Silver Oaks, ৩ 55296, AP-S ২১০০, D ২৫০০, কল বুকিং: 47 Park St-16, ৩ 2269878; H Chimal, ৩ 55776, DAB ২৫০ ৩৫০, এরও বুকিং ডায়মন্ড টারস-এ মেলে। Thakuri Guest Cottages, ৩ 55955; Daffodils, ৩ 55823; Panchavati L। তবুও থাকার জন্য সাংখিলা, ময়ূরী, ক্রাউন ও মুনাল লজ অগ্রগণ্য কালিম্পং-এ। অগ্রিম বুকিংয়ের জন্য Manager, Kalimpong-734301কে লিখুন।



খাবার হোটেলও নানান কালিম্পং-এ। বাঙালি মিলের জন্য মেইন রোডে বাটার পাশে কলতরু, বিপরীতে মাসীমার হোটেল আছে। তেমনই তোরাস্তায় H Gumpu's-এরও যথেষ্ট সুনাম ভারতীয়-চীনা-তিব্বতীয় আহার পরিষেবায়। বাস স্ট্যান্ডে Mandarin Restaurant-টি চীনা মিলে যথেষ্ট খ্যাত। লজ কোজি নুকের নিচে Pure Vegi Punjab Restaurantটির ব্যবস্থাপনা ভালই। L. Mayal Lyang এরও যথেষ্ট সুনাম চীনা মিল পরিষেবায়। পাহাড়ী শহর কালিম্পংএ সুরাপানের কোন বিধিনিষেধ নেই। কিন্তও মেলে যত্রতত্র হোটেল-রেস্তোরাঁয়।



দার্জিলিং থেকে ২½ ঘণ্টায় ৭—১৫-০০টায় ৪৫/৫৫ টাকায় জিপ ও ল্যান্ডরোভার যাবে কালিম্পং। আর DGHC-র বাস যাবে মংপু হয়ে ৩½ ঘণ্টায় ৬-৪০, ৭-৩০ ও ১২-২০এ। ঘুম পেরিয়ে ১২ কিমিতে পথ নামে ৭৪০৭ থেকে ৭০০ ফুটে তিস্তা বাজারে। কাঁচা সবুজ এলাচ বাগানের মাঝ দিয়ে, চা বাগানের বগল ঘেঁষে পথ চল পাহাড় পেঁচিয়ে। ঘন ঘন বাঁক এপথে। আর কলকাতা থেকে সরাসরি কালিম্পং যাত্রায় শিলিগুড়ি সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে Hilly Region Mini Bus Owners' Association-এর ৬-১৫, ৬-৪৫, ৭-৩০, ৮-১৫, ৮-৫৫, ৯-৪০, ১০-৪০, ১১-২০, ১২-০০, ১২-২৫, ১২-৫০, ১৩-১৫, ১৩-৪০, ১৪-০৫, ১৪-৩০, ১৪-৫৫, ১৫-২০, ১৫-৪৫, ১৬-০৫, ১৬-৩৫এর মিনি বাসে তিস্তা বাজারে উত্তর সিকিমের Tsolhanu Lake থেকে জাত দিসতাং অর্থাৎ তিস্তা পেরিয়ে দার্জিলিং-কালিম্পং সড়ক ধরে কালিম্পং চলুন ২½ ঘণ্টায়। জিপ ও ল্যান্ডরোভার যাবে ২ ঘণ্টায় বাস স্ট্যান্ডের চারপাশ থেকে কালিম্পং-এ। আর যাবে NBSTC-র বাস ৭-০০, ১০-০০, ১৩-৩০ ও ১৫-০০টায় শিলিগুড়ি সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে কালিম্পং। বাসের ভাড়া ৩০; ল্যান্ডরোভারে ৫০ ৬০ শ্রেণীভেদে। আর নিকটতম রেল স্টেশন ৭২ কিমি দূরে শিলিগুড়ি জং, বিমান ৭৮ কিমি দূরে বাগডোগারায়। বাস যাবে বিমান যাত্রী নিয়ে Mintri Travels-এর কালিম্পং-বাগডোগরা-কালিম্পং-এ। দার্জিলিং মেলের যাত্রীদের NJP থেকেই কালিম্পংয়ের গাড়ি মেলে।

আবার গ্যাংটকও চলা যেতে পারে কালিম্পং থেকে। সিকিম রাষ্ট্রীয় (SNT) জিপ যাবে ৬-০০, ৬-৩০, ৭-০০, ৮-০০, ১০-৩০, ১৩-২০, ১৪-১০, ১৪-৪৫এ, ভাড়া ৫৫; বাস যাবে ৭-১৫ ও ১৩-০০টায়; ভাড়া ৩৭। NBSTC-র বাস যাবে ৭-০০টায় ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় ৩৫ টাকায়। Guransh Travel-এর জিপ যাবে ৬-০০, ৭-৩০, ১৩-২০, ১৪-১৫, ১৪-৪৫এ কালিম্পং ছেড়ে ২½ ঘণ্টায় ৫৫ টাকায়। প্রাইভেট বাস যাবে ৭-৩০, ৮-০০, ৮-৩০, ১৩-৩০, ১৪-০০টায়। বাস যাবে ২০৯ কিমি দূরে ভূটানের ফুন্টসোলিং-ও কালিম্পং থেকে প্রতি বুধ, শুক্র ও রবিবার সকাল ৯-০০টায় ছেড়ে ৬ ঘণ্টায় প্রাইভেট আর NBSTC-র বাস যাবে

৮-৪০এ প্রতিদিন। পানিটাঙ্কি যাবে NBSTCর বাস ৬-১৫য় ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় ৩৬ টাকায়; শিলিগুড়ি যাবে ৬-১৫, ১৪-১৫য় ছেড়ে ২½ ঘণ্টায় ৩০ টাকায়; জলডাকায় যাবে ১৪-০০টায় ছেড়ে ৪ ঘণ্টায় ৩২ টাকায়; দার্জিলিং যাবে ১২-০০টায় ছেড়ে মংপু হয়ে ৪ ঘণ্টায় ৩৫ টাকায়। Kalimpong Motor Transport Syndicate, ৩ 55719-এর জিপ দার্জিলিং যাবে ৭-০০, ৮-০০, ৯-০০, ১০-০০, ১১-০০, ১৩-০০, ১৪-০০, ১৫-০০টায় ছেড়ে ৪৫/৫৫ টাকায়; পুরো জিপ যাবে ৬৫০ টাকায় কালিম্পং থেকে দার্জিলিং। ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে। শিলিগুড়ি যাবে প্রাইভেট ডিলাঙ্গ বাস ৭-১৫, ৮-১৫, ৯-১৫, ১১-৩০, ১৩-৩০ রেল বাস, ১৫-৩০, ১৬-৩০এ কালিম্পং থেকে। এমনকি শিলিগুড়ি থেকে ছাড়া কলকাতার রকেট বাসেরও টিকিট মেলে NBSTC মোটর স্ট্যান্ডে কালিম্পং।

মংপু: কালিম্পং-শিলিগুড়ি সড়কের রাশি থেকে ডান-হাতি ৯ কিমি গিয়ে পাহাড়ের উপত্যকার খাঁজে আর এক রমণীয় পাহাড়ী শহর মংপু। রবীন্দ্রস্মৃতি বিজড়িত মংপুর উচ্চতা ৩৭৫৯ ফুট। বিখ্যাত কবিতা জন্মদিন এখানেই লেখেন মৈত্রেয়ী দেবীর বাড়িতে অবস্থানকালে কবি। সিনকোনার চাষ হচ্ছে—ছাল থেকে হচ্ছে কুইনাইন। দুরন্ত কালিম্পং থেকে ৩৮, শিলিগুড়ি ৪৯ আর দার্জিলিং ৫৭ কিমি। সরকারিও বেসরকারি বাসে নিয়মিত সংযোগ রয়েছে ত্রীয়ার সঙ্গে মংপুর। বাস যাবে গ্যাংটকও মংপু থেকে। রাশি থেকে আরও ১৩ কিমি নেমে শিলিগুড়ির ২৭ কিমি আগেই কালীঝোরা। পাহাড় আর অরণ্য, ৫৫০ ফুট উঁচু থেকে ধারা নামছে—জলের রঙ কৃষ্ণভ। বয়ে চলেছে তিস্তা—নৈসর্গিক শোভার জন্য কালীঝোরার প্রশস্তি। থাকার জন্য কালীঝোরায় আছে PWDIB, অব: EE, PWD, Darjeeling ও FRH, অব: DFO, Kurseong.

লাভা: উৎসাহীরা কালিম্পং থেকে ডামডিম পথে ঘণ্টা দুয়েকে ৩৪ কিমি গিয়ে ২১৯৫ মি উঁচু লাভাও বেড়িয়ে নিতে পারেন। পাহাড় আর জঙ্গল—চারপাশের নৈসর্গিক শোভা মনকে আবিষ্ট করে লাভায়। আর আছে ছোট বাজার ও বৌদ্ধ মনাস্তুি লাভায়। লাভার বৈশিষ্ট্য ৩ কিমি দূরে শেরপা ভিউ পয়েন্ট থেকে কাঞ্চনজঙ্ঘা ছাড়াও তুষারমৌলী নানান শিখর যেমন দৃশ্যমান তেমনই সমতল মালবাজার দেখে নেওয়া যায়। মাঁ-এপ্রিলে চাঁপ, চাঁটল, ক্রিপটোমারিয়া বনজ ফুলেদের সাথে নানান ধর্মী অর্কিডে আরও সুন্দর করে তোলে লাভাকে। জনপ্রিয়তায় লাভা অগ্রগণ্য হলেও সৌন্দর্যে লোলেগাঁও এগিয়ে। লাভার ১০ কিমি দূরে রেচিলা পাহাড়ে নেওড়া ভ্যালি ন্যাশানাল পার্কটিও আর এক দ্রষ্টব্য। বন্য-বরাহ, ভালুক, হরিণ, দেখতে মেলে। ১২ কিমি দূরে রোকলো পাস। পথেই পড়ে কালিম্পং থেকে ২০ কিমি দূরে Rissisum চড়ুইভাতির মন্ডা। তুষারখবল পর্বতরাজিও সুন্দর দৃশ্যমান।



থাকার জন্য বাস স্ট্যান্ডের শিরে Lava-734301এ Forest Rest House, D ২৫০ ৪৫০, লাগোয়া রাস্তার ব্যবস্থা নিয়ে ২ বেডের লগ হাউস (ইগমি) ৪৫০, বিশ বেডের ডমিতে বেড ৮০, নিরালো নির্জনে ঢাল নেমে

মনোরম আরণ্যক পরিবেশে দু'বেডের তাঁবু ২২৫; আংশিক বুকিং: Divisional Manager, WB Forest Development Corpn Ltd, Kalimpong Division, Kalimpong, ৩ 55783/ Administrative Officer, WB Forest Development Corpn, 6-A, Subodh Mullick Sqr, Cal-13, ৩ 270060/WBTD, 3/2, BBD Bagh, Cal-1/Siliguri থেকে মেলে। আহাংরও মেলে রেস্ট হাউসে। আর আছে প্রাইভেট হাটেল রেস্ট হাউসের নিচুতে বাস স্ট্যাণ্ডে—Neora L; বামহাতি Yankee Resort, DAB 84০; Unique L লাভা বাজারে। তবে মানের তুলনায় দামে আধিক্য ঘর ও আহাংরে।



বাস যাচ্ছে ১৩-০০টায় কালিম্পং ছেড়ে ২ ঘণ্টায় লাভা পৌঁছে ১৬-৩০এ লোলেগাঁও-এ। আর যাচ্ছে ১২-০০টায় শিলিগুড়ি (পানিটাকি), ১৪-০০টায় কালিম্পং ছেড়ে ১৬-০০টায় লাভায়। অনিয়মিত হলেও জিপও যাচ্ছে কালিম্পং থেকে লাভা হয়ে লোলেগাঁও-এ। দূরত্ব কালিম্পং থেকে লাভা ৩৪, লাভা থেকে লোলেগাঁও ২২, ডামডিম ১৩, গুরুবাথান ৪২ কিমি। লাভা থেকে কালিম্পং ফেরে বাস ৮-০০, ৮-৩০ ও ৯-০০টায়; শিলিগুড়ি যাচ্ছে লাভা থেকে সকাল ৮-০০টায়। কালিম্পং-লাভা-গুরুবাথান বাসও যাচ্ছে। আবার গুরুবাথান পৌঁছেও আধ ঘণ্টা অন্তর বাস মেলে শিলিগুড়ির। আর মেলে জিপ ৭—৯-০০টায় লাভা থেকে কালিম্পং-এর। লাভাও যাচ্ছে একইভাবে শিলিগুড়ি থেকে কালিম্পং হয়ে।

লোলেগাঁও: ঘন খুপিবন, নির্জন পাহাড়, আরণ্যক শোভা—তারাই মাঝে ধ্যান মৌনী লোলেগাঁও অর্থাৎ আনন্দের গ্রাম। পর্যটন মানচিত্রে লোলেগাঁও হলেও স্থানীয় মুখে Kaffer নামেই সমধিক খ্যাত। সুপুঞ্জ পাহাড় চারপাশ ঘিরে ব্যুহ গড়েছে লোলেগাঁও-এ। টোপার হয়ে কাঞ্চন-জঙ্ঘার অপরূপা তুষারচূড়ো। ন্যাচারাল ট্র্যাক্সলাইজার-এর জন্য লোলেগাঁও-এর প্রসিদ্ধি। কালিম্পং থেকে লাভার ২ কিমি আগেই ডানহাতি পথে ২০ কিমি যেতে লোলেগাঁও। দিনের একমাত্র বাস ১৩-০০টায় কালিম্পং ছেড়ে লাভা হয়ে চার ঘণ্টায় লোলেগাঁও অর্থাৎ Kaffer যাচ্ছে। ভাড়া ২৭। জিপও যাচ্ছে ১৩—১৪-০০টায় খানিতিকৈ। আর মারুতি ভ্যান যাচ্ছে ৭০০ টাকায় কালিম্পং থেকে লোলেগাঁও। কালিম্পং থেকে আসা বাসেও চলা যেতে পারে লাভা থেকে লোলেগাঁও। আর, ঘণ্টা সেড়েকে জিপ, ল্যান্ডরোভার, ট্যাক্সি মেলে শ'তিনেক টাকায় লাভা থেকে ৫৬০০ ফুট উঁচু লোলেগাঁও-এর। তেমনই কালিম্পং থেকে জিপ ৯ কিমি দূরের রেলির ঝোলা ব্রিজে পৌঁছে ঘণ্টা পাকেকে ট্রেক করেও চড়া যেতে পারে লোলেগাঁও। বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে ক্ষতবিক্ষত চড়াই পথে ৪ কিমি গিয়ে লোলেগাঁও-এর সানরাইজ পয়েন্ট ঝাণ্ডি-গাঁড়া থেকে সূর্যোদয়ের মোহিনী রূপ টাইগার হিলকেও হার মানায়। পূর্ব হিমালয়ের তুষারশৃঙ্গে সূর্যাস্তও নয়নাভিরাম লোলেগাঁও-এ। কুম্ভকর্ণ, রোতাং, কান্ধ, তালুং, কাঞ্চনজঙ্ঘা, পাণ্ডিম, জোপুনো, শিষ্টো, নারসিং, সিনিয়লচু সুন্দর দৃশ্যমান।

ধাকার জন্য বাস স্ট্যান্ডের পিছে পশ্চিম ঢালে ৭ ঘরের

Forest Rest House-এ DAB ২৫০ ৩৫০, TAB ৪৫০; রেস্ট হাউসের নিচুতে দু'বেডের তাঁবু ২২৫। আহাংর মিললেও রেশন সঙ্গে নেওয়া ভাল। রান্নার বাসনপত্র মেলে। বুকিং: লাভারই মত। আর আছে Councillor's Hotel, কমন বাথের ঘরে বেড ১০০। রেস্ট হাউসের আরও নিচে DGHC-র Tourist LIT আজও ঝারোদঘাটনের অপেক্ষায়।

সামথার: লোলেগাঁও থেকে জিপে ৩০ কিমি দূরে সবুজে মোড়া সামথার। পথ ক্ষতবিক্ষত, চড়াই-এর আধিক্য। ঘণ্টা তিনেকে ট্রেক করে চলা যায় লোলেগাঁও থেকে সামথার। রোমাঞ্চে ভরা সামথারের প্রকৃতি। ধাকার জন্য আছে প্রাইভেট Tourist Resort & The Farm House Inn, Santhar, DAB ৩৫০ ৬০০ ৮৫০ তাঁবু ১০০। অনন্যোপায়ীরা হাসপাতালের গেস্ট হাউসেও রাত কাটাতে পারেন সামথায়। ১৪০০ মি উঁচু সামথার-এর আকর্ষণ তার নৈসর্গিক শোভা। মেঘেরাও নেমে আসে পাহাড়-অরণ্য-নদীর ত্রিবেণী সঙ্গম ছোট্ট গ্রাম সামথার-এ। সামথার থেকে ১২ কিমি ট্রেক করে উতরাই নেমে সেপখোলা। সারাপথে ছিপিছিপে নদী রেলিখোলা সঙ্গ দেয়। সামকো রোপওয়ে চলছে সেপখোলা থেকে ২৭ মাইল। জিপ ও বাস মেলে ২৭ মাইল থেকে ৩৮ কিমি দূরের শিলিগুড়ির।

কাশিয়াং

১৮৩৫এ খার্সাং যৌতুক দিয়ে ব্রিটিশের অধীনতা মেনে নেয় সিকিমের রাজা। নেপালি ভাষা খার্সাং অর্থাৎ ভোরের ধ্রুবতারা ব্রিটিশের মুখে হয়েছে কাশিয়াং। দ্বিমতে, Karsan Rup অর্থাৎ সাদা ফুলের স্থান কাশিয়াং। শিলিগুড়ি-দার্জিলিং পথে দার্জিলিং থেকে ৩২ কিমি আগেই ১৪৫৮ মি উঁচুতে পাইন, ফার আর বার্চে ছাওয়া কাশিয়াং। শিলিগুড়ির দূরত্ব ৪৮ কিমি। পাখ্যাবাড়ি রোড হয়ে মিরিকের দূরত্ব ৪৬, ঘুম হয়ে ৭৬ কিমি। শিলিগুড়ি-পাখ্যাবাড়ি-দার্জিলিং পথেরও মিলন ঘটেছে কাশিয়াঙে। ১৮৮০র ২৩শে আগস্ট রেল পৌঁছাতে গুরুত্ব বাড়ে কাশিয়াঙের। যাতায়াতের পথে জংশন স্টেশন কাশিয়াং—টয় ট্রেন ও অন্যান্য যান বিগ্রাম নেয়। শহরের জনকোলাহল থেকে বেশ কিছুটা নিরালায় সিস্টার নিবেদিতা, রবীন্দ্রনাথ, অবনীন্দ্রনাথ, নেতাজী সুভাষ, অতুল-প্রসাদের স্মৃতিবিজড়িত মনোরম স্বাস্থ্যনিবাস কাশিয়াং। জলবায়ুর গুণে প্রসার পাচ্ছে শহর। সাহেবিয়ানা আছে—এমনকি মার্ক টোয়েন ১৮৮৫তে কিছুকাল কাশিয়াঙে অবস্থান করেন। ভারতের বেশ কয়েকটি সেরা ফুলের অবস্থানও কাশিয়াঙে। ঢালে ঢালে চা বাগিচা। তেমনই ফুল থেকে ফুলে রঙের বর্ণালী কাশিয়াঙের বাড়িঘরে। অর্কিডের শহর বলেও খ্যাতি আছে কাশিয়াঙের। বিশ্বের ৩য় উচ্চতম কাঞ্চনজঙ্ঘাও প্রথম দৃশ্যমান কাশিয়াঙে। রেল স্টেশনের শিরে ১ কিমি চড়াই উঠে Eagle's Crag থেকে সমতল বাংলায় দৃশ্য, কাঞ্চনজঙ্ঘা ছাড়াও তুষার কিরীট শোভিত নানান

গিরিশঙ্কর সুন্দর দৃশ্যমান। Constantia. Castleton Tea Estate উচিত হবে দেখে নেওয়া। পাহাড় চড়ে ১২ কিমি উত্তর-পূর্বের ডাউহিল থেকে সুন্দর নৈসর্গিক শোভা দেখে নেওয়া যায়। ফরেস্ট মিউজিয়াম, ফরেস্ট স্কুল ও হয়েছে ডাউহিলে। পথে ৪ কিমি যেতে ডাউহিলের ঢালে ডিমার পার্ক ও মিনি অ্যামিউজমেন্ট পার্ক। শহর থেকে ২ কিমি দূরে হিলকার্ট রোডে ১৯৩৬এ নেতাজী রকারবাসের স্মৃতি বিজড়িত গিন্দা-পাহাড়। মন্দিরও হয়েছে শিবের। ৪ কিমি দূরে বিখ্যাত মকাইবাড়ি টি এস্টেট। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন চা পাতার কর্মপ্রণালী দেখার সাথে কেনা যেতে পারে। আর আছে নানান গির্জা, মন্দির ও মসজিদ কার্শিয়াঙে। গয়াবাড়ি স্টেশন পেরুতেই দার্জিলিং পথের নয়নাভিরাম পাগলাঝোরা জলপ্রপাত।



থাকার জন্য WBTC-র Kurseong Tourist L-এ DAB ৪৫০, ৫০০, অব: Manager. ০ (03554) 44409, PC-734203; New Plaza H. T N Rd; Shyams Baido H. HC Rd; L M B Lodge, HC Rd. ০ 44522; H Shyams, HC Rd. ০ 44620; Snow View, Youth Hostel; Amarjeet H ছাড়াও হোটেল ও রেস্তোরাঁ আছে নানান কার্শিয়াঙে। সবেসরই অবস্থান রেল স্টেশনকে ভর করে হিল কার্ট রোডে। রেলেরও ক্যান্টিন আছে বাথরুমের ব্যবস্থা নিয়ে স্টেশনে। রাজ্য পর্যটনের ট্যুরিস্ট সেন্টারও বসেছে হিল কার্ট রোডে।

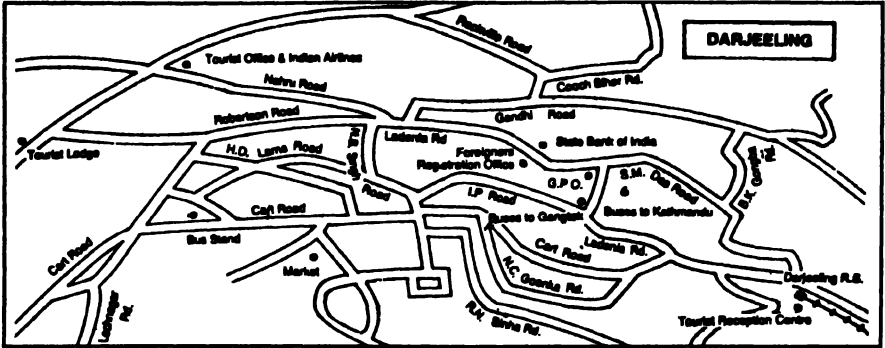
মেমনই কার্শিয়াং-দার্জিলিং পথে কার্শিয়াং থেকে ২২ আর দার্জিলিং-এর ১০ কিমি আগেই ৬০০০ ফুট উঁচু সোনাদা-তেও কালু রিনপোচে প্রতিষ্ঠিত দুর্জয় চোলিং গুমফাটি দেখে চলা যায়। দেবতা—সোনায় তৈরি শাশ্বির দূত সুবিশাল বুদ্ধ মূর্তি। গুমফায় থন্সাস ছাড়াও সিদ্ধ কাপড়ে আঁকা নানান দেব-দেবী তথা জাতককাহিনী উদ্ভেখ। আর আছে বুদ্ধমূর্তির পাশে এক কাচের বাস্কে হীরে-মুক্তো খচিত মামি। সাঁঝে হাজার হাজার প্রদীপের আলোয় উদ্ভাসিত হয় দুর্জয় চোলিং গুমফা। ট্রেন ও বাস দুই-ই চলছে সোনাদা হয়ে দার্জিলিং-কার্শিয়াং-শিলিগুড়ি।

সন্দকফু

মাউন্ট এডারেস্টের শৈল সৌন্দর্য উপভোগের জন্য সিঙ্গলীলা পর্বতে সন্দকফুর আকর্ষণ অধিতী। সন্দকফু থেকে সূর্যোদয়ের খ্যাতি আছে পর্যটক মহলে। আকাশকে রাঙিয়ে দিয়ে সোনালি সূর্য ফাগু খেলে সারা হিমালয়ের সাথে। রূপসী কাঞ্চনবর্ণী কাঞ্চনজঙ্ঘা কাঁচা সোনা রঙে বকমকিয়ে ওঠে। তবুও যেন শনশনে হিমেল হাওয়া আর মেঘঘেরে সৌরাস্রো ঢাকা পড়ে সন্দকফু অহরহ। তাই নির্মেষ আকাশ পেতে নভেম্বর মাস সন্দকফু অর্থাৎ উঁচুতে বিযাক্ত গাছ পরিক্রমার মাহেন্দ্রক্ষণ। দার্জিলিং থেকে দূরত্ব ৫৮ কিমি। পথ গিয়েছে প্রকৃতির গড়া বটানিক্যাল ও জ্বালজিক্যাল গার্ডেনের মাধ্যমে দিয়ে। ম্যাগনোলিয়া, রডোডেনড্রন (গোলি গুরাস), পাইন আর সিলভার ফারে ছাওয়া এপথে চেনা-অচেনা পাখির কুজন ক্লাঙি ভোলায়। চমরি গাইয়েরও দর্শন

মেলে চলার পথে। পথ বন্ধুর—চড়াই ও উত্তরাই-এর সমন্বয় ঘটেছে সারা পথে। ল্যান্ডরোভারও যাচ্ছে ঘণ্টা পাঁচকে দার্জিলিং থেকে সন্দকফু। এক রাতের অবস্থানসহ ২৭৫০ টাকায় যাতায়াত। তবে গাড়ি চলে হরিণ শিশুর মত লাফিয়ে লাফিয়ে বোস্তারের উপর দিয়ে। তাই গাড়ি পরিহার করে পায়ে হাঁটাই শ্রেয়। উচিতও হবে দার্জিলিং থেকে বাসে সুখীয়া পোখরি (শুকনো পুকুর) হয়ে ১ ঘণ্টায় ২৪½ কিমি দূরে ২১৩৪ মি উঁচু মানেভনজং পৌছে দু'দিনে ১০/১২ ঘণ্টায় ২৮ কিমি ট্রেক করে ট্রেকারদের স্বর্ণ সন্দকফুতে পৌছে যাওয়া। ৭-৩০, ১২-৩০, ১৩-০০টায় বাস যাচ্ছে দার্জিলিং থেকে মানেভনজং। পোর্টারের কাজ গাইডও মেলে মানেভনজং-এ। তবে, অনিশ্চয়তার উপর না থেকে দার্জিলিং থেকেই ট্যুরিস্ট অফিস বা ইয়ুথ হোস্টেল বা সরকার অনুমোদিত ট্রাভেল এজেন্ট (Himalayan Travels, Hotel Sinclairs; Trek Mate, Nehru Rd. etc) থেকে পোর্টার/গাইড সঙ্গী করা উচিত হবে। চার্জ ৮০/১৫০ প্রতিদিন।

১ম রাত কাটান ২১৩৪ মি উঁচু মানেভনজং-এর ইয়ুথ হোস্টেল, ট্রেকার্স হাট বা ফরেস্ট বাংলোয়। বিজলীও পৌছেছে মানেভনজং-এ। ২য় দিন সকাল ৬টায় পায়ে হাঁটা শুরু। ৮ কিমি চড়াই ভেঙে ২৮৯৫ মি উঁচু মেঘমথ চায়ের দোকান ও হোটেল পাবেন। মেঘমা থেকে গাড়ির পথ গিয়েছে ৩০৭০মি অর্থাৎ ১০০৫১ ফুট উঁচু টংল হয়ে। টংলতে ডি আই বাংলো, ইয়ুথ হোস্টেল ও ট্রেকার্স হাট আছে। সারা দার্জিলিং পাহাড় তথা কাঞ্চনজঙ্ঘা সহ নানান গিরিশিখর সুন্দর দৃশ্যমান টংল থেকে। তবুও টংলের স্তম্ভে না উঠে মেঘমথ থেকেই বাঁহাতি পথে আরও ৫ কিমি গিয়ে জৌবাড়িতে দুপুরের আহার সারুন। রাত্রিবাসের জন্য আছে এডারেস্ট, ইন্দ্রিাও টিচাল লজ জৌবাড়িতে। আরও ২ কিমি উত্তরাই নেমে ২৬৮২ মি উঁচু গৈরীবাসে দ্বিতীয় রাতের বিশ্রাম নিন ফরেস্ট বাংলো, ট্রেকার্স হাট, ইয়ুথ হোস্টেল বা চন্দ্রকুমার তামাং-এর হোটেলে। বিজলী না পৌছালেও আহাৰ্য মেলে। ৩য় দিনে ২ কিমি চড়াই পেরিয়ে কয়াকাটাং চায়ের গ্রাসে উষ্ণ হয়ে আবার চড়াই—৪কিমি গিয়ে ৩১৭০ মি উঁচু কালপোখরি। থাকাও যেতে পারে কালপোখরির কে বি হোটেলে। কালপোখরি থেকে ৪ কিমি দূরে বিকেভঙ্গন। বিকেভঙ্গনেও হোটেল আছে শেরপালজ। বিকেভঙ্গন থেকে সন্দকফুর দূরত্ব আরও ৩ কিমি। শেষ ৪ কিমিতে প্রাণান্তকর খাড়া চড়াই নানান ধর্মী রডোডেনড্রন ও ম্যাগনোলিয়ার ঘন অরণ্যের মাঝ দিয়ে পেরুতে হয়। আর ফিরুন কালপোখরির পথে ২ কিমি চড়াই বেয়ে পাকদণ্ডী পথ ধরে উত্তরাই নেমে ঘণ্টা পাঁচকে ১৬ কিমি দূরে রিষিকে। তবে লোকালয় বা দোকানপাট নেই এপথে। গাইড ছাড়া পথভ্রান্তির সম্ভাবনাও পড়ে পারে। ফরেস্ট বাংলো, ট্রেকার্স হাট ও ইয়ুথ হোস্টেল আছে রিষিকে। তবে এসের পিছনে রেখে আরও ২ কিমি উত্তরাই নেমে ২২৮৬ মি উঁচু রিষিকি বাজারে পৌছে



শিবপ্রধান হোটেলে (রিষিকি, দার্জিলিং-734201) আস্তানা নেওয়াই উচিত হবে বাস যাত্রীদের। গুয়াডাড়া বাস স্ট্যান্ডেও শেরপা হোটেল, তেনজিং শেরপা হোটেল ছাড়াও সাধারণ হোটেল আছে। রিষিকি থেকে দার্জিলিং শহরও বরফে মোড়া নওলেখ সুন্দর দৃশ্যমান। নৈসর্গিক শোভাও রিষিকির নয়নাভিরাম। লোকালয়ের মাঝে অলৌকিকত্বের স্বাদ মেলে রিষিকি। ৪র্থ দিন ১২ কিমি উতরাই নেমে গুয়াডাড়া থেকে ৬-৩০ বা ৭-০০টার বাসে ৪২ ঘটায় দার্জিলিং চলুন। তবে দ্বিতীয় বাসটি NBSTC-র, দেরিতে ছেড়েও দার্জিলিং পৌছায় আগে। পরিস্থিতি প্রতিকূল হলে মেঘমা/জোবাড়ি/কাগেশ্বরিতেও রাতের বিশ্রাম নেওয়া যেতে পারে। সাধারণ হোটেলে থাকা ও আহাৰ্য দুই-ই মেলে। আবার দার্জিলিং থেকে বাসে লোধামা পৌছেও পায়ে হাঁটা শুরু করা যেতে পারে—গৈরীবাস হয়ে সন্দকফু। DGHC-র ১৫ বাস্কের ট্রেকার্স হাটেও হয়েছে মানেভনজং, টংলু, গৈরীবাস, ধোটে, সন্দকফু, রামাম ও রিষিকি—বেড ১০ করে।

আর পায়ে হাঁটতে উৎসাহীরা রিষিকি থেকে লোধামা (৮ কিমি) হয়ে ১৭ কিমি দূরের ১৬২৪ মি উঁচু থেপি পৌছে ফরেস্ট বাংলো বা সাধারণ হোটেলে ৪র্থ রাতের বিশ্রাম নিয়ে ৫ম দিনে ৮ কিমি গিয়ে বিজনবাড়ি PWD বাংলো, ফরেস্ট বাংলো বা সাধারণ হোটেলে রাত কাটিয়ে ৬ষ্ঠ দিন আরও ৮ কিমি পায়ে সিংখাম ফটক হয়ে দার্জিলিং পৌছে যান। থেপিতে অনিয়মিত বাসও মেলে বিজনবাড়ির। আর বিজনবাড়ি থেকে ঘুরপথে গাড়িও যাচ্ছে দার্জিলিং। কালে কালে ৩৮ কিমি দূরের ৭৬২ মি উঁচু বিজনবাড়িও রমণীয় পর্যটন কেন্দ্রে রূপ পেতে চলেছে। বিজনবাড়ির শিরে ৮ কিমি দূরে কাইজলিয়া—পথ বন্ধুর, চড়াই-এর আধিক্য। তবে রডোডেনড্রন, মন্দার, চিমল, পাছাড়া ফুলের বর্ণালী এপথের ক্রান্তি ভোলায়। দতেনই, হিমালয়ের নানান শৃঙ্গও সুন্দর দৃশ্যমান কাইজলিয়ায়। থাকার কোন ব্যবস্থা নেই কাইজলিয়ায়। উচিতও হবে দিনান্তে দার্জিলিং ফেরা।

৩৬৫৮ মি অর্থাৎ ১১৯২৯ ফুট উঁচুতে ডজনখানেক বাড়ি নিয়ে সন্দকফু। এপ্রিল/মে মাসে ফুলেরা সাজিয়ে তোলে

সন্দকফুকে আরও সুন্দর করে। রূপ যেন তার ফেটে পড়ে। নির্মঘ আকাশে মাকালুর পিছে হিমালয়ের সর্বোচ্চ শৃঙ্গ মাউন্ট এভারেস্ট (২৯০২৮ ফুট)ও সুন্দর দৃশ্যমান। পাখি-ওড়া দূরত্ব—১৪০ কিমি। এছাড়াও পরপর দাঁড়িয়ে থাকা নাপসে ২৫৭০০, লোটসে ২৭৮৯০, এভারেস্ট, মাকালু ২৭৭৯০, কোকতাং ২০১৬২, জানু ২৫২৯৪, কুম্ভকর্ণ ২৫২৮৮, কাক্র সাউথ ২৪১৪৬, কাক্র নর্থ ২৪২১৫, কাঞ্চন-জঙ্ঘা ২৮১৫৬, পাণ্ডিম ২২০১০, নারসিং ১৯১৩০, নও-লেখ ২১৫২২, চামলাঙ ২৪০১২, ডোম মাখেরি ২৭৭৯০ ফুট উঁচু শৃঙ্গগুলিও সন্দকফু থেকে সুন্দর দৃশ্যমান। তুব্বার-মৌলী হিমালয়ের এ-দৃশ্য দর্শকদের মত্তমুগ্ধ করে তোলে।



থাকারও নানান ব্যবস্থা সন্দকফুতে। PWD IB, অব: EE, PWD; DI Bungalow, অব: Deputy Commissioner, Darjeeling Improvement Fund Department, Darjeeling. ট্রেকার্স হাট, অব: পর্যটন দপ্তর; Youth Hostel ও Forest Bungalow-র অব: Divisional Manager of W B Forest Development Corporation, Darjeeling. DGHC-ও বাংলা গড়েছে সন্দকফুতে। তবুও, PWD ও DI বাংলা দু'টি থাকার পক্ষে রমণীয়। বিছানা পত্র, আহাৰ্যও মেলে প্রতিটি বাংলায়। আহাৰ্য সারা পথে মিললেও রেশন সঙ্গে নেওয়া ভাল। ট্রেকার্স হাটে বেড ২৫ মিল ১৫ হারে মেলে। কেবাসিনের আরো মিললে মেমবাতি, টর্চ সঙ্গে নেওয়া উচিত। শীতবস্ত্র যথেষ্ট পরিমাণে সঙ্গে নেওয়া দরকার। একটি রেইনকোটও সঙ্গে থাক ভাল। এমনকি, ট্রেক পথের যাত্রীরা দার্জিলিংয়ের ইয়ুথ হোস্টেল বা Trek Mate, Nehru Rd; U-Trek, N B Singh Rd ছাড়াও নানান ট্রাভেল এজেন্ট থেকে ভাড়ায় রুকস্যাক, ত্রিশিং ব্যাগ, এয়ার ম্যাট্রাস, বেড রোল, তাঁবু, সঙ্গী করতে পারেন। ফাল্ট যাত্রায় তাঁবু সঙ্গে থাকা উচিত। একটা রাত সন্দকফুতে কাটিয়ে প-দিন ফাল্ট বেড়িয়ে দার্জিলিং ফিরুন।

ফাল্ট

সন্দকফু থেকে ২৩ কিমি দূরে ৩৬০০ মি উঁচুতে ফাল-লুট বা ফাল্ট অর্থাৎ খোলা ছড়ানা পাহাড়। পথে পড়ে আর এক সুন্দর সুবিন্যস্ত দি লস্ট ড্যান্স—Samanden

*ভিলেজ ফাল্টে*ও থাকার নানান ব্যবস্থা। *ডি আই বাংলোটি* ক্ষতবিক্ষত। বাংলোর বুকিং: D C. Darjeeling. আর আছে *ট্রেকার্স হাট*ও ১২ বাক্সের *ইয়ুথ হোস্টেল* ফাল্টে। এছাড়া ফাল্টে-রামাম পথের Molle-তেও *Didi's H* আছে—থাকা ও আহার মেলে। সন্দকফু থেকে ঘণ্টা পাঁচকে মোলে পৌছে ৪র্থ রাতের বিশ্রাম। ৫ম দিনে ফাল্টু দেখে ঘণ্টা ছয়কে গোর্কে পৌছে DGHC-র *ট্রেকার্স হাট*ে রাতের অবস্থান। গোর্কে থেকে রিষিক পৌছান ঘণ্টা সাতকে পরদিন।

সন্দকফু থেকে ৩ কিমি উতরাই গিয়ে পথ হয়েছে সমতল। আবার শেষ ৫ কিমিতে হাঙ্কা চড়াই চড়তেই ফাল্টু। আর মোলেয় অবস্থানকারীরা সাবারকুম ফিরে ঘণ্টা দু'য়েকে ফাল্টু পৌছান। পুরো পথটাই পায়ের হাঁটা। দার্জিলিং ও সিকিম প্রান্তসীমায় নেপাল সীমান্তে ফাল্টুর অবস্থান। হিমালয়ের নয়নাভিরাম সৌন্দর্য উপভোগের জন্য ফাল্টুর প্রশস্তি। পাখি-ওড়া পথে ১৪৪ কিমি দূরের কাঞ্চনজঙ্ঘার মোহিনী রূপ পাগলপারা করে তোলে। নির্মেষ আকাশে উত্তর-পশ্চিমে এভারেস্টও দৃশ্যমান ফাল্টুতে। পথশোভারও তুলনা হয় না। ফাল্টুর সূর্যোদয়েরও খ্যাতি আছে। সবরকম প্রকৃতি সঙ্গে নিতে হয়। সন্দকফু-ফাল্টু যাত্রীরা চতুর্থ রাত ফাল্টুতে কাটিয়ে পঞ্চম দিনে ১৬ কিমি গিয়ে ২৫৬০ মি উঁচু রামামে *ট্রেকার্স হাট*, *ফরেস্ট বাংলো*, *ইয়ুথ হোস্টেল* বা *সাধারণ হোস্টেল* রাতের বিশ্রাম নিন। রামামে *শেরপা হোস্টেল*টি থাকার পক্ষে ভালই। আর ৫ম দিনে পথ যাচ্ছে গহীন বনের মাঝ দিয়ে রামাম থেকে ফাল্টু। রডোডেনড্রন, সিলভার ফার, ওক, ম্যাগনোলিয়া, হেমলোক, আরও সব বনফুলেরা চলার পথকে মধুময় করে তোলে। নানান অর্কিডও দেখতে মেলে এপথে। তেমনই পাখিরাও কোরাস গায় সারাপথে। মাঝপথে আর এক সুন্দর Sirikhola-র দোকানপাটে বিশ্রামের সাথে আহারও মেলে। ৬ষ্ঠ দিনে ১৯ কিমি দূরের রিষিক পৌছে যান খোটেপাস হয়ে। রিষিক থেকে সন্দকফুর মতই অর্থাৎ সপ্তম দিনে দার্জিলিং ফিরুন। এপথে *Trekkers Hut* মেলে—Tonglu, Gairibas, Sandakphu, Molley, Phalut, Gorkhey, Siri-khola, Rimick-এ।

দার্জিলিং

ভারত রাষ্ট্রে পাহাড়ের রানীর স্বয়ম্বরায় সিমলা, মুন্সেরি, শিলং, উটি, দার্জিলিং ছাড়াও প্রতিযোগী নানান। তবুও যেন ভারতীয় শৈলশ্রহণগুলির মধ্যে দার্জিলিং অন্যতম। পাহাড়ী শহরের রানীর কিরীট চেপেছে দার্জিলিং-এর শিরে। কলকাতা থেকে ৬৬৩ আর শিলিগুড়ি থেকে ৮০ কিমি দূরে ২১৮৫ মি অর্থাৎ ৭১০০ ফুট উঁচুতে পশ্চিমবাংলার শিরে কোহিনুর মণি হয়ে দার্জিলিং-এর অবস্থান। রূপসী দার্জিলিং-এর রূপের তুলনা হয় না। মেঘেরা এখানে কানে কানে কথা কয়। ঘুরেতেও হানা দেয় জানালা খোলা পেলে। সামনেই চিরহরিৎবর্ণ ঘনপল্লব বিটপী মণ্ডিত পর্বতরাজি বেষ্টিত

দিগন্ত প্রসারিত সূমহান কাঞ্চনজঙ্ঘা। সারাবছরই বরফে মোড়া—ঘরে বসেই এর রূপে পাগলপারা হয়ে ওঠেন পর্যটকরা। তেমনই বার্চহিল থেকে সূর্যাস্তও মনোরম। এমনটি আর খুঁজে মেলা ভার। দার্জিলিং অপরূপা, দার্জিলিং অনন্যা—কাঞ্চনজঙ্ঘা প্রাণের আনন্দ, আত্মার শান্তি।

বেড়াবার মনোরম সময় এপ্রিল-মে আবার মাঝ সেপ্টেম্বর থেকে নভেম্বর মাস। এপ্রিল-মে মাসে বৃষ্টি মাঝে মাঝে বাদ সাধলেও ম্যাগনোলিয়া ও রডোডেনড্রন ফুলেরা মধুময় করে তোলে। আর জুন থেকে সেপ্টেম্বর-এর মধ্যভাগে বৃষ্টি বিয় ঘটায় দার্জিলিং ভ্রমণে। পাহাড় ছেয়ে থাকে মেঘে। ঠিক তেমনই পথঘাটে ধস নামে অতি বৃষ্টিতে। গাড়ি-ঘোড়াও স্তব্ধ হয়ে পড়ে পাহাড়ী পথ চলতে। সেপ্টেম্বর-অক্টোবরের প্রথমভাগেও গগনবিহারী মেঘেদের আনাগোনা ঘটে চলে। অক্টোবরের শেষেও নভেম্বরে দার্জিলিং নির্মেষ থাকে। তবে শীতের প্রকোপ আছে। ডিসেম্বর থেকে বরফ পড়াও অস্বাভাবিক নয় দার্জিলিং-এ। নভেম্বরে যথেষ্ট উলেন সঙ্গে নেওয়া দরকার। গ্রীষ্মে ৮.৫°-১৮.৫° আর শীতে ১°-১১° সেটি গ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান।

দার্জিলিং নামটিতেও বৈচিত্র্য আছে। *দোজর্জ* অর্থাৎ বজ্র থেকেই দোরজি লিং বা বজ্রপাতের দেশ (Land of Thunder bolt) থেকেই দার্জিলিং নামের উৎপত্তি। হিমতে *দুজয়লিঙ্গ* (অবজারভেটরি হিল) বা তিব্বতী ভাষায় বড় পাহাড়ই হল দার্জিলিং। আবার কেউ বা বলেন, লেপচা ভাষায় ভগবানের বাসস্থান অর্থাৎ পৃথিবীর স্বর্গ *দার্জুলাঙ্গ* থেকেই দার্জিলিং নামের রূপান্তর।

সিকিম রাজ্যের অধীন ছিল দার্জিলিং। ১৭৮০তে নেপাল থেকে গোখারী এসে দখল নেয় দার্জিলিং-এর। আর ১৮২৮এ হঠাৎই আগমন ঘটে Lloyd ও Grant নামে দুই ব্রিটিশের সেদিনের সাংগ্ৰিলায়। দেখে শুনে দুই ব্রিটিশ অফিসার প্রেমে পড়ে দার্জিলিং-এর। বাসনা জাগে স্যানাটোরিয়াম ও হিল স্টেশন রূপে দার্জিলিং পেতে। শুধু হিল স্টেশন কেন নেপাল ও তিব্বতের চাবিকাঠি রূপেও দার্জিলিং-এর গুরুত্ব উপলব্ধি করে এরা। অবশেষে ১৮৩৫এ সুচতুর ব্রিটিশ গোখারী হঠাৎে সিকিম রাজ্যের সাহায্যে গিয়ে চাহিনা মত পারিতোষিক রূপে দখল নেয় দার্জিলিং-এর বার্ষিক ৩০০০ টাকার বৃত্তিতে। অর্থাৎ দার্জিলিং আসে ব্রিটিশ ভারতে সিকিম থেকে। বয়স তাই ১৬৪ বছর দার্জিলিং পাহাড়ের। ১৮৪০এ চোরাপথে চায়ের বীজও আনে ব্রিটিশ চীন থেকে। কুশলীও আসে চীন থেকে আর শ্রমিক আসে নেপাল থেকে। শুরু হয় চায়ের চাষ দার্জিলিং পাহাড়ে। আর আজ ভারতীয় চায়ের ২৫% তৈরি হচ্ছে ৭৮টি চা-বাগিচায় দার্জিলিং-এ। স্বাদে গন্ধে অতুলনীয় দার্জিলিং-এর চা। দার্জিলিং-এর চায়ের বিশ্বপ্রশস্তিও আছে। পাড়িও দিচ্ছে বিদেশের বাজারে দার্জিলিং-এর চা। এমনকি ১৯৯১এ জাপানের নিলামে প্রতি কেজি চা ৬০১০ (২৭৫ US\$) টাকায় বিক্রি হয়ে বিশ্বরেকর্ডও গড়েছে। উচিতও হবে

ব্রহ্মণের স্মারক রূপে সঙ্গী করা। চল্লিশেই দ্রুত গতিতে গড়ে ওঠে রাস্তা-ঘাট, বাড়ি-ঘর-হোটেল—রূপ পায় স্যানা-টেরিয়াম ব্রিটিশ রাজের। বসতিও বাড়ে ১০০ থেকে ১০০০০ লোকে ১৮৪৯এ দার্জিলিং পাহাড়ে। কালে কালে চা বাগানের কাজে নেপালিদের আগমন বেড়েই চলে। যার অবশ্যস্বার্থী পরিণতি দেখা দেয় ১৯৮০র মধ্যভাগে। ভারতীয় সংবিধানে নেপালি ভাষার স্বীকৃতি লাভ, সরকারি ক্রিয়াকর্মে নেপালিদের অবাধ সুযোগ দানের সাথে পৃথক রাষ্ট্র গোষ্ঠীল্যান্ডের দাবীতে Gurkha National Liberation Front (GNLF) আন্দোলনের শরিক হয়। শান্ত-সুনিবিড়-শান্তির নীড়ে রক্ত ঝরে, আত্মনের লেলিহান শিখায় ঘর পোড়ে, বাকুদেরও গন্ধ মেলে দার্জিলিং-এর হিমেল বাতাসে। শতাধিক জীবনও আন্দোলনে শহীদ হয় নেপালি অধ্যুষিত পশ্চিমবাংলার নানান পাহাড়ে।

দীর্ঘ ২২ বছরের আন্দোলন প্রশমিত হয়েছে দার্জিলিং পাহাড়ে। ৫ই সেপ্টেম্বর ১৯৮৮ দার্জিলিং-এর ৩টি পাহাড়ী মহকুমার সাথে শিলিগুড়ির নেপালী অধ্যুষিত এলাকা জুড়ে গঠিত হয়েছে পশ্চিমবাংলারই অংশ রূপে দার্জিলিং গোষ্ঠী পার্বত্য পরিষদ অর্থাৎ হিল কাউন্সিল। গাঙ্গী রোড শেষ হতে আচার্য জগদীশচন্দ্র বসু রোড গিয়ে মিলেছে দার্জিলিং-এর নবতম আকর্ষণ নব সাজের লালকুঠিতে। যে ১৯, ১৯৮৯ দার্জিলিং গোষ্ঠী হিল কাউন্সিলের সদর দপ্তর বসেছে কোচবিহারের মহারাজার অতীতের গ্রীষ্মাবাস লালকুঠিতে। কুঠির অন্দরমহল সাধারণের কাছে রুদ্ধ হলেও সুন্দর নৈসর্গিক পরিবেশে মনোরম লালকুঠি চত্বর ঘুরে দেখে নেওয়া যায়। চারপাশে পাহাড়ী ঢাল—ঢাল জুড়ে বসতি। দূরে-দূরান্তরে পথ চলেছে সর্পিলা গতিতে। এপথেই আরও যেতে শহর থেকে ৫ কিমি দূরে ১৯৭২এ জাপানি বৌদ্ধদের তৈরি Nipponzan Myohoji Temple। আর ১৯৯২এর ১লা নভেম্বর শান্তি স্থাপন হয়েছে মন্দিরে। কাঞ্চনজঙ্ঘাও সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে। কার্ট রোড ছেড়ে ম্যালমুখী গাড়ির পথে ম্যান্ট এভারেস্ট হোটেলের নিচে স্যার যুনাথ সরকারের বাড়ি তথা ১৯৫৪ খ্রিস্টাব্দে তেজস্বিনী নোরগের বাসভবনে মিউজিয়াম বসেছে। তবে, আজকের যুব সম্প্রদায় হতাশা আর রাজনৈতিক অস্থিরতার শিকার হতে দার্জিলিং তার সামাজিক পরিবেশ হারিয়ে ফেলেছে। শিকারও হচ্ছেন নানান অছিলায় পর্যটকরা। দার্জিলিং পাহাড়ে। তাই অযোযিত আধারি কার্য যেন আজ দার্জিলিং-এ। সূর্য পাটে যেতে যাত্রীদের উচিত হবে ডেরায় ফেরা।

রেল স্টেশনে শহরের শুরু। বাসও গাড়ি পৌঁছায় আরও এগিয়ে বাজার স্ট্যাণ্ডে। দুইয়েরই অবস্থান হিল কার্ট রোডে। এদেরই কাঁধে ভর দিয়ে এলোমেলো ভাবে শহর উঠেছে ধাপে ধাপে পশ্চিমমুখী এক শৈলশিখর। সবার উপরে দার্জিলিং পাহাড়ে কটাপাহাড়। তার নিচুতে আঙনে জলা-জঙ্গল জলাপাহাড়। শহরের কাঁধ বরাবর ম্যাল—

দোকান পাট-হোটেল অর্থাৎ পর্যটকদের চিষ্ট বিনোদনের সবরকম পসরা নিয়ে গড়ে উঠেছে। ট্যুরিস্ট অফিসটিও ম্যাল লাগোয়া ল্যান্ডেন-লা রোড তথা আজকের নেহরু রোডে। তাই উচিতও হবে ম্যালকে ভর করে হোটেল বেছে নেওয়া। তবে, নিচের ধাপের হোটেল রেন্ট নামতে থাকে নিচুতে। জিপিও, সিকিম ন্যাশানাল ইজু ট্রান্সপোর্ট (SNT), কাঠমাণ্ডুর নানান বাস, ফরেনার্স রেজিষ্ট্রেশন অফিস সবেরই অবস্থান ল্যান্ডেন-লা রোডে। ইন্ডিয়ান এয়ার লাইনসের অফিস বসেছে ম্যাল তথা চৌরাস্তায় Bellevue Hotel বাড়িতে। সবুজ ছাওয়া শহর। পূর্ব নেপাল থেকে গোষ্ঠীরা, পশ্চিম নেপাল থেকে গুরু, আর তিব্বত থেকে তিব্বতীরা এসে আস্তানা গেড়েছে দার্জিলিং-এ। এদের হাতের কাজ পর্যটকদের লোলুপ দৃষ্টি আকর্ষণ করে। এছাড়া বছরের বিভিন্ন ঋতুতে চেনা-অচেনা হাজার চারেক ধর্মী পাহাড়ী ফুলের সাজ পরে মোহিনী দার্জিলিং। তিন শতাধিক বৃক্ষরাজিও রয়েছে দার্জিলিং পাহাড়ে। মেক্সিকো থেকে পাইনেরা এসে আকাশ ঢেকেছে শহর জুড়ে। বানর, বন বিড়াল, বাঘ, লেপার্ড, শিয়াল, খট্টাশ দর্শনও আনন্দ বাড়ায় পর্যটকদের।

ম্যাল লাগোয়া চৌরাস্তা জুড়ে দোকান-পাট, পশমে তৈরি নানান বসন, পাহাড়ী ভূষণের নানান কিছু, থঙ্কাস (Thankas), জপমালা, ব্রাসের নানান মূর্তি, গোষ্ঠী ছুরি খুরি, রকম-সকম কিউরিওর পসরা সাজিয়ে ভুটিয়ারা বসে পথপাশে। বিদেশী পণ্যও মিলছে দোকান পাটে। তেমনই নেহরু রোডে GPO-কে ঘিরেও নানান দোকান। এমনকি পশ্চিমবঙ্গ সরকারের মঞ্জুরাও পসরা সাজিয়েছে হস্তজাত পাহাড়ী পণ্যের নেহরু রোডে। Hayden Hall-এও চলা যেতে পারে মহিলাদের সমবায় North Point Alumni Association এর হাতে বোনা উলেন টুপি, সোয়েটার, ব্যাগ, কার্পেট ছাড়াও নানান কিছুর আকর্ষণে। আবার হিল কার্ট রোডে বাস ও ট্যাক্সি স্ট্যান্ডের অদূরে উলেন বসনও বিদেশী পণ্য কিনতে মেলে বাজারের দোকান পাশে। দামেও সুবিধা মেলে। তবে, কেনাকাটার মান ও দামে সাবধানতা পালনীয়। তবুও যেন সবকিছু ছাপিয়ে সুবাস মেলে দার্জিলিং চায়ের। একাউই উচিত হবে চলতে-ফিরতে সঙ্গী করা।



ভারতের যে কোনও প্রান্ত থেকে শিলিগুড়ি বা নিউ জলপাইগুড়ি পৌঁছান। NJP থেকে ন্যারো গেজের পাহাড়ী ট্রেন ৭-৩০ ও ৯-০০টায় যাবে শিলিগুড়ি টাউন-জং/সুকনা/তিনধারিয়া/ কাশিয়া/সোনাদা হয়ে দার্জিলিং। দার্জিলিং পৌঁছায় ১৫-৫০ ও ১৭-১৫য়। ৮ বছরের পরীক্ষা-নিরীক্ষায় রেল বসায় ব্রিটিশ দার্জিলিং পাহাড়ে। ১৮৭৯তে কাজ শুরু হয়ে শেষ হয় ১৮৮১-র ৪ঠা জুলাই ইস্টবেঙ্গল রেলওয়ের এজেন্ট Franklin Prestage-র হাতে। আর ১৮৮৫তে ১ কিমি দীর্ঘ হয়ে রেল বাজারে পৌঁছলেও এখন ১ কিমি আগেই চলায় বিরতি টানে রেল। ১৫ই সেপ্টেম্বর ১৮৮১ রূপ পায় Darjeeling Steam Tramway Co— চলতেও শুরু করে ট্রেন শিলিগুড়ি

থেকে দার্জিলিং পাহাড়ে। আঁকাবাঁকা পাহাড়ী পথ, গহন বন। কখনও হারিয়ে যাচ্ছে ট্রেন গহীন বনের মাঝে। পথহারা ট্রেন আতঙ্কে হইসল বাজিয়ে চা-বাগিচার গা বাঁচিয়ে শাল, চীনা সীডার, টিকের মাঝে ফোকর খুঁজে বেরিয়ে আসছে আবার। এ ট্রেন চড়ায় রোমাঞ্চ আছে। আরও রোমাঞ্চ একটিও টানেল নেই এপথে। তবে সময়ে অধিক লাগে। লোকেও টয় ট্রেন বলে থাকে একে। একাডুই উচিত হবে পাহাড়ে চড়ার কালে মজা আর কৌতুকে ভরা টয় ট্রেনের যাত্রী হওয়া। সময়ের অপ্রতুলতায় টয় ট্রেনে Joy Ride অর্থাৎ দার্জিলিং-ঘুম-দার্জিলিং বেড়িয়েও উপভোগ করা যায় হিমালয়ান রেল। ৩ বগির ট্রেন যাচ্ছে, যাতায়াত ভাড়া ৬০।



তাই নিউ জলপাইগুড়ি রেল স্টেশন বা শিলিগুড়ি স্টেশনাল বাস স্ট্যান্ড থেকে বাস, মিনিবাস, ট্যাক্সি বা ল্যান্ডরোভারে দার্জিলিং যাওয়াই উচিত হবে। ৫-৪০—১৬-০০টায় ৩৪ টাকায় প্রতি ৩০ মিনিট অন্তর Hilly Region Mini Bus Owners' Association-এর মিনিবাস যাচ্ছে স্ট্যান্ড থেকে। মরসুমে পর্যটন দপ্তরের বিশেষ বাসও চলে এপথে। এমনকি স্টেণ্ডাভাড়া VIP টার্মিনাল থেকে NBSTC-র বাসে সরাসরি টিকিট কেটে শিলিগুড়ি থেকে লিঙ্ক বাসে চলা যেতে পারে দার্জিলিং। ফেরার পথেও একইভাবে শিলিগুড়ি হয়ে কলকাতার সরাসরি টিকিট মেলে NBSTC, 1st floor, Super Market দার্জিলিং থেকে। ৪ দিন আগে থেকে এদের বুকিং। নিয়মিত সার্ভিস বাসও চলেছে সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে (৪-০০, ১০-৩০, ১১-৩০) NBSTC-র। শিলিগুড়ি থেকে দূরত্ব ৮০ কিমি। সময় নেয় ৪ ঘণ্টা। আর যাচ্ছে ট্যাক্সি ৮-৫০ টাকায় ৩½ ঘণ্টায়; ল্যান্ডরোভারে ৬০-৯০ প্রতিজনা। তবে অনিয়ম আর অনাচার পাহাড়ী পথের যানবাহনে কিছুটা যেন অস্বস্তিক। নিকটতম বিমান বন্দর শিলিগুড়ির বাগডোগরায়। বিমান-যাত্রী নিয়ে মরসুমে ৮-০০টায় বাগডোগরায় যাচ্ছে DGHC-র ট্যুরিস্ট বাস। ফেরেও শহরে বাগডোগরা থেকে একইভাবে। তবে, ট্রেন চালুর আগে ১৮৪০এ সব পথ হয়েছে পাহাড় কেটে। পথ যেত গরুর গাড়িতে শিলিগুড়ি থেকে দার্জিলিং পাহাড়ে। নামটিও তাই রয়ে গেছে সেকালের *হিল কার্ট রোড*। সম্প্রতি নামের বদল ঘটে—হিল কার্ট রোড হয়েছে *ভেনজিং নোরগে সড়ক*।

কনভার্টেড ট্রার : মরসুমী পর্যটকদের দার্জিলিং পাহাড়, টাইগার হিল ও মিরিক দেখাবার ব্যবস্থা আছে দার্জিলিং গোষ্ঠী পার্বত্য পরিবহন পরিচালিত Tourist Bureau, DGHC Tourism, 1 Nehru Rd. Chowrasta, Darjeeling-734101, ☎ 54214 (রবি ছাড়া ১০—১৬-৩০) থেকে। সিকোনা অর্থাৎ মংপু ট্রারেও যাচ্ছে DGHC। নানান প্রাইভেট কোম্পানিও দার্জিলিং/মিরিক-পওপতিগুর/টাইগার হিল দেখিয়ে আনে। গাড়িও ল্যান্ডরোভারও ভাড়া মেনে এদের কাছে। সুপার বাজারেও নানান ট্রাভেল এজেন্ট—যাচ্ছেও এরা শহর দেখাতে। কালিম্পং, গ্যাংটক, কাঠমাণ্ডুও গাড়ি যাচ্ছে এদের। পায়ে পায়ে শহর বেড়ান—ল্যান্ডরোভার ও জিপ মেনে।

শহর থেকে ৩ কিমি দূরে রক্তিত উপত্যকায় প্রথম ভারতীয় যাত্রী রোপওয়ের জন্ম। চা বাগিচার উপর দিয়ে, রক্তিতনদী পেরিয়ে ৮ কিমি দীর্ঘ ৬ যাত্রীর ৪ কেবিনের এই রোপওয়ে ৪৫ মিনিটে সিঙ্গলা বাজারের সাথে সংযোগ

গড়েছে দার্জিলিং-এর। রবিও ছুটি ছাড়া ৮-৩০, ৯-৩০, ১০-৩০, ১২-৩০, ১৩-৩০, ১৪-৩০টায় সিংমারী ছেড়ে; ফেরে ৯-০০টায় প্রথম ছেড়ে ১৫-০০টায় শেষ রোপওয়ে। মাঝে ৩টি স্টেশন—যাত্রী ওঠা-নামা করে। প্রাকৃতিক দৃশ্য সুন্দর। টিকিটের প্রচুর চাহিদা। তবে, বিদ্যুতের অভাব হেতু সম্প্রতি ৩০ টাকায় ১টি কেবিন ১ স্টেশন পর্যন্ত যাতায়াত করে। ১ দিন আগে Officer-in-Charge, Darjeeling-Rangpo Valley Ropeway Station, North Point, Darjeeling, ☎ 52731 থেকে বুকিং এদের। রোপওয়ে স্টেশন সিংমারী পর্যন্ত বাসও যাচ্ছে শহরের বাজার স্ট্যান্ড থেকে। পথেই পড়ে মেলা পোড়ো ব্রিডিং ফার্ম। উৎসাহীরা ৯—১১-০০, ১৪—১৬-০০টায় দেখে নিতে পারেন। আর মরসুমে একাডুই উচিত হবে হিমা-লয়ান রেলে দার্জিলিং-ঘুম-দার্জিলিং Joy Ride করে নেওয়া।

দার্জিলিং থেকে কাঠমাণ্ডু যাত্রায় সরাসরি টিকিট না মিললেও সিট মেলে অগ্রিম বুকিংএ। বুকিংও করছে নানান সংস্থা দার্জিলিং থেকে কাঠমাণ্ডুর। নিজস্ব বাসের অভাবে আংশিক ভাড়া নিয়ে সিট সম্পর্কে নিশ্চয়তা দেয় এরা। যাত্রীদের পৌছাতেও হয় এককভাবে—দার্জিলিং থেকে শিলিগুড়ি হয়ে বাসে পানিটাঙ্কি (ভারত), পানিটাঙ্কি থেকে রিকশায় কাঁকরভিটা (নেপাল)। কাঁকরভিটা থেকে বাস যাচ্ছে কাঠমাণ্ডু ও পোখরার। তবুও যেন ল্যাণ্ডেন-লা রোডে GPO-র কাছে Assam Valley Tours & Travels বা Mohendra Tours দেখা যেতে পারে। আবার এককভাবে কাঁকরভিটা পৌছাতেও চলা যেতে পারে পোখরা বা কাঠমাণ্ডু। নানান বাস, ১৬—১৭-০০টায় কাঁকরভিটা ছেড়ে পরদিন ৯—১১-০০টায় কাঠমাণ্ডু যাচ্ছে। তেমনই গ্যাংটক চলায় SNT-র মিনিবাসে অগ্রিম (৭ দিন) বুক করা উচিত হবে।

দার্জিলিং ভ্রমণার্থীদের কাছে শহর থেকে ১১ কিমি দূরে ২৫৯০ মি উঁচু টাইগার হিল-এর আকর্ষণ অন্যতম। ওক, ম্যাগনোলিয়ায় ছাওয়া ঘুম হয়ে পথ গিয়েছে। এর সূর্যোদয়ের সৌন্দর্য দেশ-দেশান্তর থেকে পর্যটক আকর্ষণ করে। ক্ষণে ক্ষণে রঙের বদল, উদিত সূর্যালোকে গোলাপি থেকে পিঙ্ক, যার দ্বিতীয়টি নেই সারা বিশ্বভুবনে। ৬৪ কিমি উত্তরে ৮৫৯৭মি উঁচু ৫ শিখরের কাঞ্চনজঙ্ঘায় এর প্রতিফলন সত্যই অনুপম। আরও দূরে (২২৫ কিমি) কাঞ্চনজঙ্ঘার উত্তরে খাঁজ কাটা মাউন্ট এভারেস্টও দৃশ্যমান নির্মেষ দিলে। আর দৃশ্যমান কাক্র, জানো, পাতিম, নরসিং, মাকালু, লোটসে; ১৩৫ কিমি উত্তর-পূবে চুমলহারি ছাড়াও নানান তিব্বতীয় শৈলমালা। জিপ যাচ্ছে ডোর ৪—৪-৩০টেয় শহর থেকে যাত্রী নিয়ে। আগের রাতে হোটেল হোটেল হানা দেয় যাত্রীর খোঁজে জিপ। পর্যটন দপ্তরও যাচ্ছে টাইগার হিল প্যাকেজে। তবে, অনেক পর্যটকের মুখে শোনা যায় বার বার গিয়েও তাঁরা সূর্যোদয় দেখতে পাননি; মেঘেরা বাদ মাথে। সূর্যোদয় দেখার পক্ষে মার্চ/এপ্রিল ও অক্টোবর/নভেম্বর মাস মনোরম। তবে, শীতের অধিকা আছে। সম্প্রতি দর্শনী প্রথা

চালু হয়েছে ভিউ টাওয়ারে ২ ও উচ্চ VIP লাউঞ্জে ৭ হারে। রেস্তোরাঁও বসেছে নিচুতে। থাকারও সুন্দর ব্যবস্থা আছে DGHC-র Tiger Hill Tourist L-এ, ভূমি প্রধায় বেড ১০০। আর হয়েছে WBTC-র তাঁবুর কলোনি টাইগার হিলে। অব্: Tourist Office, Darjeeling বা Tourist Centre, 3/2 B B D Bag, Cal-1. উচিতও হবে একটা রাত শহর থেকে দূরে প্রকৃতির রাজ্যে কাটিয়ে চোখ ভরে উদিত সূর্যের বর্ণালী দেখে পরদিন পায়ে পায়ে ঘূমে ফিরে টয় ট্রেন বা পথ চলতি গাড়ি ধরে দার্জিলিং ফেরা।

দার্জিলিংবাসীদের টালা ট্যাক্স অর্থাৎ শহরের জল আসছে ১০ কিমি দক্ষিণ-পূর্বের কৃত্রিম লেক সিঞ্চল থেকে। পাশাপাশি ৩টি লেক, পরিবেশ সুন্দর। আর এই লেককে ঘিরেই ১৯১৫য় রূপ পেয়েছে সিঞ্চল গেম স্যান্টুয়ারি। ওক, কাপাসি, কাটুস, কাওলায় ছাওয়া বার্কিং ডিয়ার, বন্য শুয়ার ও কালো ভান্ডুদের বাস। যাত্রীবাসের জন্য Tourist Lodge হয়েছে। আর হয়েছে বিশ্বের সর্বোচ্চে গম্ফ কোর্স সিঞ্চলে। টিকিটও লাগে লেক দর্শনে।

সূর্যোদয় দেখে ফেরার পথে প্যাকেজ ট্রারের দ্বিতীয় দর্শন ঘুম বুদ্ধ মনাস্টি। শহর থেকে ৮ কিমি দূরে সীমানা/শিলিগুড়ি/কালিম্পং-দার্জিলিং ত্রিরাস্তার সঙ্গমে সুন্দর পরিবেশে ঘুম রেল স্টেশনের নিচুতে গড়ে উঠেছে গেলুগ-পা সম্প্রদায়ের তিব্বতীয় বুদ্ধিস্ত মনাস্টি ঘূমে। ধর্মে মহান, আকারে বৃহত্তম—১৮৫০-এ মঙ্গোলিয়ান লামা সারা ইয়াংচেন-র তৈরি মনাস্টিতে ১৫ ফুট উঁচু মৈত্রেয় বুদ্ধের মূর্তিও হয়েছে। অদূরে নিচুম্বী পথে হলদু টুপি সম্প্রদায়ের নিউ ঘুম মনাস্টি। সবার তরে মনাস্টির দরজা খোলা। ৭৪০৭ ফুট উঁচুতে রেলও উঠেছে, এমনকি বিশ্বের সবচেয়ে উঁচুতে রেল স্টেশনটিও এই ঘূমে। ঘূমের নবতম আকর্ষণ অত্যাধুনিক স্টারলিং রিসর্ট। এভারেস্টও দৃশ্যমান এদের রেস্তোরাঁ থেকে।

ঘুম থেকে ৩ আর শহরের ৫ কিমি আগেই ট্রেন পথকে ১৮৭৯তে অতি আশ্চর্যজনকভাবে ঘুরিয়ে তোলা হয়েছে। নাম তার বাতাসিয়া লুপ—এই অভিনব চলার পথ শহর-বাসীদের আকর্ষণ করে। লুপ থেকে দার্জিলিং শহর প্রথম দর্শন ও কাঞ্চনজঙ্ঘার মনোহর দৃশ্য বিমোহিত করে। ট্রেন যাত্রীরাও চলন্ত ট্রেন থেকে নেমে নেমে এর অভিনবত্ব উপভোগ করেন আবার চলন্ত ট্রেনেই উঠে পড়েন, তবে খুবই নিপজ্ঞানক এই গুঠা-নামা।

দার্জিলিং ভ্রমণার্থীদের কাছে ম্যাল-এর আকর্ষণ অনস্বীকার্য। অবজারভেটরি হিলের সামনে, চৌরাস্তা জুড়ে শহরের প্রাণকেন্দ্রে পর্যটক বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে গড়ে উঠেছে ম্যাল। দোকান-পাটে ঠাসা, হোটেল-রেস্তোরাঁ মায় টুরিস্ট অফিসটিও এই ম্যাল লাগোয়া। বোড়া চলেছে পায়ে পায়ে যাত্রী নিয়ে—ঘূরে আরও দূরে কাঞ্চনজঙ্ঘা প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। চৌরাস্তার সামান্য ডাইনে থেকে বিশ্বের তৃতীয় উচ্চতম কাঞ্চনজঙ্ঘা সুন্দর দৃশ্যমান। সকাল-

বিকালে ভ্রমণার্থীদের রঙবেরঙ সাজে রামধনু ফোটে ম্যালে। চারপাশ রেলিং-এ ঘেরা। বেশ হয়েছে বসার জন্য। রীতিমত প্রতিযোগিতা লেগে যায় খালি আসনটির দখল পেতে। স্থানীয় ও ভ্রমণার্থী দুইয়েরই মিলনস্থল এই ম্যাল। ম্যাল লাগোয়া অবজারভেটরি হিল। অতীতের মান মন্দির আজ লোপ পেলেও এর অন্যতম আকর্ষণ কাঞ্চনজঙ্ঘার শোভা। পূর্বে দার্জিলিং শহরও দেখে নেওয়া যায়। এমনকি রাতে কালিম্পং-এর আলোকমালাও দৃশ্যমান। অবজারভেটরি হিলের আর এক আকর্ষণ মহাকাল ওস্থ্য অর্থাৎ শিব মন্দির। অতীতে লাল টুপি বুদ্ধিস্তদের মনাস্টি ছিল—ধ্বংস হয় ১৯ শতকে। রঙবেরঙের অসংখ্য প্রেয়ার ফ্লাগ—বানরেরা ট্র্যাপিজ দেখায়।

| শিলিগুড়ি থেকে সড়ক দূরত্ব | | | |
|----------------------------|---------|-----------|-------------|
| দার্জিলিং | ৮০ কিমি | ট্রেন/বাস | ৭২/৩২ ঘণ্টা |
| কার্শিয়াং | ৪৮ | " " | ৩২ |
| কালিম্পং | ৬৯ | " " | ২২ |
| লাডা | ১০১ | " " | ২২ |
| মিরিক | ৫২ | " " | ২২ |
| মংপু | ৪৯ | " " | ২২ |
| গ্যাংটক | ১১৪ | " " | ৫২ |
| গেজিং | ১২২ | " " | ৫২ |
| পেমিয়াংশি | ১২৯ | " " | ৬ |
| জলদাপাড়া | ১২১ | " " | ৩ |
| ফুন্টসোলিং | ১৬১ | " " | ৩২ |
| থিম্পু | ৩৩২ | " " | ১২ |
| কাংকরভিট্রা | ৩৭ | " " | ১ |
| (ভারত-নেপাল সীমান্ত) | | | |
| কাঠমাণ্ডু | ৫৫০ | " " | ১৮ ঘণ্টা |
| গুয়াহাটি | ৪১১ | " " | ১৪ |
| শিলং | ৫৭৮ | " " | ১০/১২ |
| পাটনা | ৪৬৬ | " " | ১১ |
| মাদাদহ | ২৫৭ | " " | ৫/৪২ |
| কলকাতা | ৬০৬ | " " | ১২২/১২ |

আর দার্জিলিং মোটর স্ট্যান্ড (বাজার) থেকে বাস যাচ্ছে নানান পাহাড়ী শহরে : মিরিক ৪৯ কিমি ২২ ঘণ্টায়, কালিম্পং ৫১ কিমি ২২ ঘণ্টায়, গ্যাংটক ৯৭ কিমি ৫ ঘণ্টায়।

ম্যাল থেকেই পথ নেমেছে ভূটিয়া বস্তির। মিনিট পনেরোর হাঁটা দূরত্বে বৌদ্ধ মঠ বা গোস্ফা দেখে নেওয়া যায়। তৈরি যদিও সিকিমের ফোদং মনাস্টির শাখা রূপে তবে মনাস্টি হয়েছে Nygmpa সম্প্রদায়ের। ম্যাল থেকে ৩ মিনিটের পথে স্টেপ অ্যাসাইন্ড। স্বাস্থ্য উদ্ধারে এসে জুন ১৬, ১৯২৫এ মৃত্যু ঘটে দেশবন্ধু চিত্তরঞ্জন দাশের এই বাড়িতে। এমনকি এই বাড়িতেই বিবক্রিয়ায় জঙ্ঘরিত হয়ে মারা যান ডাওয়াল সন্ন্যাসী। সম্প্রতি মাতৃসদন বসেছে নিচুতে।

ম্যাল থেকে ২ কিমি পশ্চিমে জুহর পর্বতে ১৯৫৪য় গড়ে উঠেছে ভারতের প্রথম পর্বতারোহণ প্রশিক্ষণ কেন্দ্র

হিমালয়ান মাউন্টেনিয়ারিং ইনস্টিটিউট। এটিও ডা. বিধান-চন্দ্রের সৃষ্টি। পাহাড়ের চড়ার শিক্ষা দেওয়া হয়। যদিও উত্তর-কালে উত্তরকাশী, মানালি ও কাশ্মীরেও ট্রেনিং ইনস্টিটিউট রূপ পেয়েছে। ১৯৫৩র মে মাসে প্রথম এডভারেস্ট বিজয়ী তেনজিং নোরগে (এডমন্ড হিলারির সঙ্গে) ছিলেন শিক্ষক-তায়। ১৯৫৪য় নামের বলল ঘটে হিমালয়ান হয়েছে তেনজিং নোরগে মাউন্টেনিয়ারিং ইনস্টিটিউট। এর এডভারেস্ট মিউজিয়ামটি সাধারণের কাছে খুবই আদরণীয়। পাহাড়ের চড়ার প্রণালী ও সাজ সরঞ্জামের সাথে ১৮৫৭ থেকে হিমালয়ের নানান শিখর অভিযান পর্যায়ক্রমে তুলে ধরা হয়েছে। তেমনিই উদ্ভিদ ও প্রাণীর সংগ্রহও উল্লেখ্য। ক্ষিম্ম শো ছাড়াও টেলি-স্কোপে কাঞ্চনজঙ্ঘা দেখে নেওয়া যায়। মঙ্গলবার ছাড়া ৯—১৩-০০ আবার ১৪—১৬-৩০টায়ে খোলা।

মাউন্টেনিয়ারিং ইনস্টিটিউট লাগোয়া গড়ে উঠেছে পদ্মজা নাইডু হিমালয়ান জ্যুলাজিক্যাল গার্ডেন অর্থাৎ চিড়িয়াখানা। সাইবেরিয়ান টাইগার, হিমালয়ান ব্ল্যাক বিয়ার, পাণ্ডা, হরিণ, পাহাড়ার, লেপার্ড দর্শকদের মনোরঞ্জন করে। ৮—১৬-০০টায়ে খোলা।

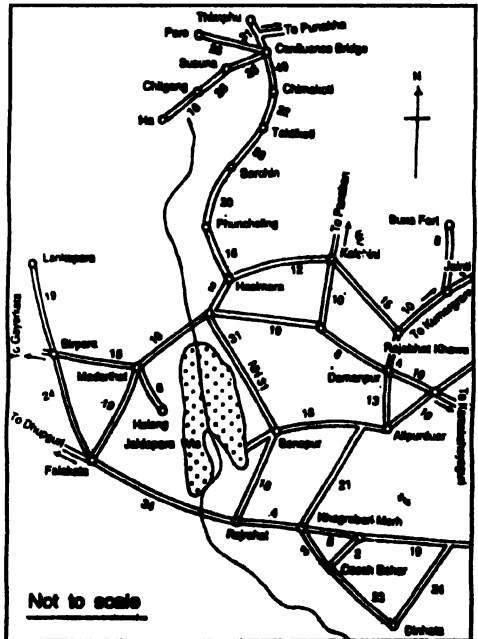
যদিও আকারে ছোট তবে বিশ্বের সর্বোচ্চ (১৮০৯ মি) ম্যাল থেকে নির্জন ছায়াচ্ছন্ন পথে ৮ কিমি যেতে ১৮৮৫র প্যারেড গ্রাউন্ডে রেস কোর্স বসে লেবং অর্থাৎ আলিবং-এ। পরিবেশ সুন্দর। মার্চ থেকে জুন ও অক্টোবর-নভেম্বর মাসে রেসের আসর বসত অতীতে। পথেই পড়ে অবজার-ভেশন পয়েন্ট। থরে-বিথরে দাঁড়িয়ে আছে পাহাড়শ্রেণী। সূর্যাস্তে ফাগ খেলে কাঞ্চনজঙ্ঘা। দূরে আরও দূরে খেতগুজ কাক, কুম্ভকর্ণ, পাণ্ডিম, জানো, নরসিং পাহাড়চুড়োয় সোনা রঙ ধরে। খুবই নয়নাভিরাম রঙবদলের এদৃশ্য। সূর্যোদয়েও অরুণ-রাগে অপূর্ব দ্যুতিমান হয়ে ওঠে হিমালয়ের শিখর-রাজি। পথেই পড়ে গোখা স্টেডিয়াম।

এছাড়া রয়েছে বাস স্ট্যান্ডের নিচুতে বাজারের কাছে পর্যটক আকর্ষণীয় ১৮৭৮এ Mr W. Lloydএর দেওয়া ১৬ হেক্টর জমিতে Sir Ashley Eden গড়ে তোলেন লয়েড বট্যানিক্যাল গার্ডেন। ২৫০০ ধর্মী পাহাড়ী তরু, ২০০০ অর্কিড ও পাহাড়ী ফুল পরিবেশকে মধুময় করে রেখেছে। ৬—১৭-০০টায়ে খোলা। অদূরে ভিক্টোরিয়া ফলস। তবে, ভারতের প্রথম হাইডেল প্রোজেক্ট গড়ায় ধারা কমে বিদ্যুৎ হচ্ছে। ম্যাল থেকে ৩মিনিটের পথে ১৯০৩এ গড়া ন্যাচারাল হিস্টরি মিউজিয়মে বৃহৎপতি ছাড়া ১০—১৬-০০টায়ে (বুধ ১০—১৩-০০) মথ, প্রজাপতি, সরীসৃপ, পাখি ছাড়াও নানান ধর্মী চার হাজারেরও অধিক মৃত জীবের জীবন্ত রূপ; শহরের পথে ২ কিমি দূরে আভা দেবীর আঁকা ছবি ও এমব্রয়ডারি সস্তারের প্রদর্শনশালা আভা আর্ট গ্যালারি, শহর থেকে ২ কিমি দূরে হ্যাশি ভ্যালি টি এন্সটেটে চায়ের রকমারি কর্মপ্রণালী Curling, Tearing and Crushing অর্থাৎ CTC রবি ও সোম ছাড়া ৮—১৬-৩০টায়ে দেখে নেওয়া

যায়। কিনতেও মেলে চা। পশুপতিনাথ মন্দিরের আদলে ১৯৩৯এ গড়া রেল স্টেশনের নিচুতে হিন্দু মন্দির ধীরধাম, এদেরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়।

চীনের ভিক্তব দখলে দলাই লামার সাথে আসা উদ্ধাস্তদের পুনর্বাসন দিতে ১৯৫৯এ গড়ে ওঠা তিব্বতীয় রিক্রিজি সেন্টার-এ তিব্বতীয়দের হাতের কাজ দেখা ও কেনার ব্যবস্থা মেলে। কার্পেট, পশম-জাত বসন, কাঠ ও চামড়ার নানান সস্তার, উড কার্টিং, থঙ্কাস, তিব্বতীয় মুদ্রা ছাড়াও নানান কিউরিও কিনতে মেলে। এমনকি ১৯১৯-২২এ ভারত সফরকালে ১৩তম দলাই লামা এখানেই অবস্থান করেন। নৈসর্গিক শোভার আকর্ষণেও উচিত হবে চৌরাস্তা থেকেই ষ্টায়া ঢাল নেমে বেড়িয়ে নেওয়া। জলা-পাহাড়ের পথে ইয়ুথ হোস্টেল ছাড়িয়ে ছুটিয়া মনাস্টিটিও দেখে নিতে পারেন পায়ে পায়ে। সিক্কিমের ফোলং থেকে স্থানান্তর ঘটে ১৮৭৯তে Nygmara Sect-র এই মনাস্টি। আবার নেপালের পশুপতিনগর বেড়িয়ে আসতে পারেন মিরিক টারে সকালে গিয়ে দিনে দিনে। জিপ ও ল্যান্ডরোভার যাচ্ছে বাজার স্ট্যান্ড থেকে। বিদেশী পণ্যের সস্তার আকর্ষণ করে যাত্রীদের। তবে যথেষ্ট ক্রয়ে বিপদ আছে সীমান্ত পারাপার থেকে সারা পথে। পথশোভার আকর্ষণও কম নয়।

হিমালয়ের নৈসর্গিক শোভার জন্য ছদ্মকপূরের আকর্ষণ আজ টাইগার হিলকেও ছাপিয়ে যাচ্ছে। টাইগার হিল থেকেও



সামান্য অধিক উঠে আর এক অসামান্য অবজারডেটরি বড়া দুর্গপিন। তেমনই চলা যায় ওম্ব মিলিটারি রোড ধরে সোনাদার শিরে সানডাহ-এ। সানডাহ থেকে রবীন্দ্রস্মৃতি বিজড়িত সুরেল ডাকবাংলো বেড়িয়ে নিন—বাংলোয় অবস্থানকালে এখানেও নানান কবিতা লেখেন কবি।



হোটেল হয়েছো নানান দার্জিলিং পাহাড়ে। তুয়ারমৌলি কাঞ্চনজঙ্ঘাও দৃশ্যমান বিভিন্ন হোটেলের নানান ঘর থেকে। দুর্দম বেগ দার্জিলিং পাহাড়ে যাত্রী সমাগম বেড়ে চললেও জলাভাব সঙ্কট তৈরি করে গ্রীষ্মের দিনগুলিতে আজ। উচিতও হবে দেখে শুনে হোটেল নির্বাচন করা। জুলাই, আগস্ট, নভেম্বর ১৫ থেকে মার্চ ১৫য় অফ সিজন্—২৫ থেকে ৫০% রিবেটও মেলে দার্জিলিং-এর হোটেল। বছরের বাকি সময়টা সিজন্। তাপমানের সাথে সাথে রেটও ওঠানামা করে দার্জিলিং পাহাড়ে। অফ সিজন্ যাত্রীকেই উদ্যোগ নিতে হয় রেট নির্ধারণের টাগ অব ওয়ারে।

ম্যাল লাগোয়া WBTDC-র Darjeeling Tourist L, Bhanu Sarani, © (0354) 54411, ডাবল বেডের ঘরে প্রতি ২ জনার ১২৫০ ১৫০০। Maple Tourist L © 54413, Old Kutchery Rd, DAB AP প্রথায় প্রতি দু'জনা ৬০০ ৮০০ ৯০০ AP-T ১১০০, কিচেন সহ ঘরও মেলে এদের; তবে গত কিছুকাল DGHC-র দপ্তর বসেছে ম্যাগেলে। রেল স্টেশনের নিচুতে Dr S K Paul Rd-এ ঐতিহ্যপূর্ণ স্যানাটোরিয়ার্মি নতুন করে হয়েছে Lawis Jubilee Complex, DCB ১০০ DAB ১৫০ ছয় বেডের ঘর ১৮০, পৃথক মূল্যে আহ্লার বাধ্যতামূলক। অংশ বিশেষে লজ বসলেও Dept of Tourism, Darjeeling Gorkha Hill Council, © 54525 ছাড়াও নানান দপ্তর বসেছে কমপ্লেক্সে। আর হয়েছে ২০ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ৪৪ বেডের নবতম সাগরমাথা পর্যটন কেন্দ্রদার্জিলিংয়ের চকবাজারে। রেল স্টেশন থেকে জলাপাহাড়ের পথে মিনিট পনেরো যেতে পাহাড়শিরে Dr Zakir Hussain Rd-এর Youth Hostel-এ বেড : সজা ১৫ সাধারণ ৩০। ২টি ঘরও আছে ডাবল বেডের ৪০ হারে। আহার্য মেলে ক্যান্টিনে। অবস্থান ও ব্যবস্থাপনা ভালই। ট্রেক রুটের বসন-ভূষণও ভাড়ায় মেলে এদের কাছে।

পান্ডাভা প্রথায় : Gandhi Rd, Darjeeling, STD 0354, PC-734101-এ—*H Oberoi Mount Everest, AP-S ১৬৫০ D ২৭০০, সুইট ৩৫০০; *H Sinclair, © 56431, AP-D ২০০০-৩৮০০, কল বুকিং: 56/A, Mirza Ghalib St-16, © 295261; H Pradhan, AP-S ৭৫০ D ১২৫০; Swiss H (B-B) DAB ৮৫০; H Lumar, © 54195, SAB ৬৫০ DAB ৮৫০। ম্যাল লাগোয়া Nehru Rd-এ—*H Bellevue, © 54075, DAB ৬৫০-৮৫০; H Cosy Home, (B-B), D ৬০০-৮০০; অতীতের Tea Planters Club-এ বসেছে Darjeeling Club, S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; ম্যাল লাগোয়া Pineridge H, I Nehru Rd, © 54074, S ৪২৫-৬৫০ D ৬৫০-৮৫০, কল বুকিং: ক্রিস্টি ট্রাভেলস © 2388676. H Camino, near Mall, D ৬৫০ T ৮৫০, কল বুকিং: Camino Tour, Kamalaya Centre, Room 225, 2nd Floor, © 267123; H Shumbala, © 52715, কল বুকিং: Diamond © 2259639। H D Lama Rd-এ—*H Mohit, © 54818,

S ৬০০ D ১২০০ ১৫০০ সুইট ২৫০০, কল বুকিং: © Linkage 2464485; H Mishra, 11 H D Lama Rd, © 54499, EP-D ৬০০-৭০০ T ১১০০-১২০০, কল বুকিং: 3216127/3344641; *H Seven Seventeen, © 52717, AP প্রথায় S ৯০০-১২৫০ D ১২৫০-১৫০০।

Rockville Rd-এ—H Valentino, © 52228, (B-B) S ৭০০ D ৯০০-১০৫০, কল বুকিং: New Embassy Restaurant, 53 Chowringhee Rd-16, © 2470670, Robertson Rd-এ—H Chanakya, DAB ৪০০-৮৫০, কল বুকিং: © Linkage © 2448087; *Central H, © 54480, AP-S ১২০০ D ১৭৫০, কল বুকিং: Chatterjee International, 19th floor, R-10, Cal-72, 290013/0401. H D Lama Rd-এ—*New Elgin H, © 54114, AP-S ১১০০ D ২৫০০, কল বুকিং: © 2269878; মোহিত, নিউ এলগিন, চাঞ্চা ও সেটালের কল বুকিং: Peerless Travels, © 2487181. Alice Villa H, © 54181, DAB ৬৫০ TAB ৭৫০, কল বুকিং: 47 Bhupen Bose Avenue, Cal-4, © 5554652. GPO-র বিপরীতে নবতম H Chancellor, SSM Das Rd, © 52935, AP প্রথায় S ১০০০ D ১৯০০ T ২৫০০-৩১০০, কল বুকিং: Royal Travels, 25-A, Circus Avenue, Cal-17, © 2409972/Linkage © 2464485; H Mahakal Palace, © 54026, S ১২৫০ D ১৭৫০, কল বুকিং: Linkage © 2465171; Pradhan's H Polynia, DAB ৬৫০-৮৫০ সুইট ৮৫০-১৫০০, কল বুকিং: © 297045। Bhanu Sarani-তে—*Windamere H, © 54041, AP-S ৮৫০ D ১২৫০ T ১৪৫ US\$. Franklyn Prestige Rd-এ—Tiffuni H, © 54390, S ৪৫০ D ৬৫০। Laden La Rd-এ—Apsara H, © 54486, EP-D ৬০০-১২০০; H Garuda, © 54562, AP-S ১০০০ D ২০০০ T ২৮০০, কল বুকিং: Chamba Lama, F60 New Market, Cal-87, © 2446408. Upper Beachwood Rd-এ—Shamrock H; H Shambhu, 73 Gandhi Rd, © 54350, AP-D ১২৬০। শহর থেকে দূরে ঘূমে Sterling Holiday Resorts, Ghoom Monastery Rd-734102, © (0354) 2691, A/c D ১৫৫০ সুইট ২২০০।

ভারতীয় প্রথায় : দার্জিলিং-এর হোটেলগুলিতে AP প্রথায় অর্থাৎ থাকা ও খাওয়া মিলিয়ে রেট, দিনের গুরুত্ব দুপুর ১২-০০টা এদের। শহরে ঢুকতেই রেল স্টেশনকে ঘিরে Hill Cart Rd-734101-এ—Kanchenjunga H, S ১২৫-২৭৫; H Angel, AP প্রথায় প্রতিজনা ১৪০-১৮৫, অবু: পাল ট্রাভেলস, ১২৩/১ কাশীনাথ দত্ত রোড, কল-৩৬; H Anandam, 1/1 Tenzing Norgye Rd, © 55063, AP-D ৪০০-৬৫০, কল বুকিং: © 2487160/2259639/2448087; H Purni, 2/1 Tenzing Norgye Rd, AP-S ২০০-৩২৫, কল বুকিং: Ramkrishna Travels, 39 M G Rd-9, © 3509199; Snow View H, AP-D ৩০০-৪৫০; Kailash H, AP-S ১৫০ D ২৫০; Darjeeling H, Belebmbre Rd, S ১৪০-১৭৫; Pratima GH, AP-S ১২৫-২২৫; Wayside Inn, S ১৪৫; Mitan H, S ১৪০; H New Pratima, Chota Kakjhora, near Rly Stn, AP-D ৩২৫-৪৫০; H Magnolia, S ১৬০। N C Goenka Rd-এ—Central Boarding, AP-S ১২৫-২০০; Laden La Rd-এ—Asia H, AP-S ১৭৫-২২৫; Buddhist L, AP-S ১৭৫-

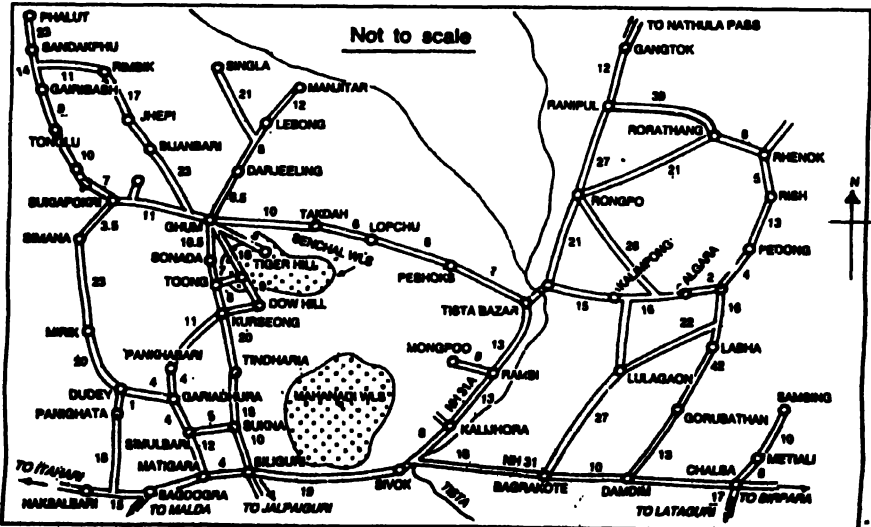
Dragon L, AP-S ২২৫-৪৫০; Janta L, AP-S ২২৫-৫০; Timber L, D ২৫০-৪০০ কেবল থাকা; Taj H, AP-S ২২৫-৫০; Shrestha L, AP-S ১৫০-২৫০; একইমানের একই নামে H Himalchuly; Penang L, AP-S ৩০০-৩৫০; Hindu Boarding, Chachan Mansion, AP-S ২২৫; Prestige H, AP-S ২৭৫-৩৫০; Shubnam H, S ১৭৫; H Godawari, 4 Belembr Rd, near Rly Stn, AP-S ১৭৫-২২৫ ডমিতে ১২৫, কল বুকিং: Kolay Travel, 15-A, Clive Row (GF) Cal-1, 2204297; H Hill Prince, H Grand View, D ২২৫-৩০০, দুইয়েরই অব: Mitra Special, 62 Bentinck St-69. ক্যাপিটল সিনেমার শিরে Gandhi Rd-এ—Rex H, S ১৪৫-২২৫; Mayfair, DAB ৩০০-৫০০, কল বুকিং: Mayfair Travels, 299315; Capital H, AP-D ৪৫০-৬০০; Kadambari H, AP-S ১৭৫-২৫০; H Nirvana, AP-S ১৪৫-২২৫; Spring Burn H, AP-S ২৭৫, D ৫৫০ T ৬৫০; Tara H, AP-S ২০০-২৭৫।

এদের মাথার উপর Rockville Rd-এ—Kundus H, AP-S ২২৫-২৭৫; Ashoka H, AP-S ১৮৫-২৫০, কল বুকিং: Rumani Tours, 273687; Anamika H; H Continental, D ৩০০-৪৫০; Hotel d' Kundu, AP প্রণয় DAB ৩২৫-৪৫০, অব: কুণ্ডু স্পেশাল, ১ চিত্তরঞ্জন এভিনিউ-৭২, 271785; *H Sudarshun, AP-S ২০০-৩২৫; H Daffodil, AP-S ২৫০-৩৫০; Gitanjali H, S ১০০-২২৫, অব: Yubraj Travels, 9 Lalbazar St, Block-A, 4th floor, Cal-1, 2482406; Himland H, AP-S ১৪০-১৮৫ D ২৭৫-৩৫০ T ৩৫০-৪৫০; Labella H, AP-S ১৭৫; Pinewood H, AP-S ১২৫-২২৫; Rockvill H, AP-S ২২৫-৩৫০। ডাইনে Cooch Bihar Rd-এ—Broadway H, S ২৫০-৩৫০; Purnima H, AP-S ২৫০-

৩০০। জলাপাহাড়ের পথে Dr ZH Rd-এ—Sunrise H, AP-S ১৫০-২২৫, কল বুকিং: শুইন ট্রাভেলস, ৫৯ বেষ্টিক স্ট্রিট, 271976; H Hill Top, AP-S ১২৫-১৮৫; H New Galaxy, AP-S ২২৫; H Tashi Deelek, Clark Rd-এ—Summer Boon H, AP-S ১৫০-২৫০। ইয়ুথ হোস্টেলের বিপরীতে Triveni GH, D ২৫০ ডর্মি বেড ৬০; এরই নিচুতে Nabin L, মান ও দাম একই। অদূরে T V Tower-এর কাছে সাধারণ হলেও যথেষ্ট পপুলার H Tower View, DAB ২২৫-২৭৫ (B&B); এখানেই স্বল্প নমের মানের পরিবেশে View Point Lodging, D ১৭৫-২৫০।

আর কেবল থাকার জন্য ম্যাল লাগোয়া Chowrasta-য়—H Sunflower, 54991, EP-D ১২০০-১৫০০ T: ৮০০-২৫০০, কল বুকিং: Voyage Tours, P-39 Princep St, Cal-72, 275896; H Araniko, AP D ৪৫০-৬৫০, কল বুকিং: Linkage 2464485; Chalet H, DAB ২২৫ TAB ৩২৫; H Valley View, S ১৫০-২২৫, অব: রাশী ট্রাভেলস, ১৫৮ লেনিন সরণী-১৩, 268833. বিপরীতে Nehru Rd-এ—Shangrila, AP-S ২২৫-৩৫০; Dekeling, AP-D ৫৫০। Robertson Rd-এ—Society H, AP-S ২২৫-৩০০। Botanical Garden Rd-এ—মসজিদ লাগোয়া Anjuman-E-Islamia GH, 52971, DAB ৮০ চার বেডের ঘর ১৫০। B M Chatterjee Rd-এ—DCM Lodge, D ১৯০-৩৭৫।

আর আছে: H Siddhartha, Mall, কল বুকিং: Kohinoor Travels, 185 Santoshpur, 4724462 বা Darjeeling Playmate, 46/70 Gariahat, 4125299; H Gourab, কল বুকিং: 2204736; H Crown, The Mall, AP প্রণয় ডাবল বেডের ঘরে প্রতিজনা ২৫০, তিন বেডের ঘরে প্রতিজনা ২০০, কল বুকিং: রামকৃষ্ণ ট্রাভেলস, ৩৯ এম জি রোড, কল-৯,



৩ 3509199; *H Sakura*, কল বুকিং: 2483166; *H Moon Star*, Mall, কল বুকিং: 28 Waterloo St, Cal-69, ৩ 2485677; *H Dikila*, AP-D ৫০০, কল বুকিং: Diamond Tours, 30 Jadunath Dey Rd, Cal-12, ৩ 2796339; *H Mount Meridian*, D ৪৫০-৬৫০, T ৮০০, কল বুকিং: Linkage ৩ 2464485/City Wings Travel, 10 K S Roy Rd-1, ৩ 2485030; *H Ashirwad*, 2 Lower Beach Wood, Behind Rink Cinema, AP-S ১৭৫; *Beachwood GH*, S ১২৫-১৭৫; *Grand View H*, Rockwood, S ১৫০-২২৫; *Hill View H*, Anna Cot, EP-S ১৫০-২২৫; *H Flora*, S M Das Rd, AP-S ২৫০; R K Kussari Rd-এ—*Everest Glory H*, AP-S ১৭৫-২২৫; *Samrat H*, AP-S ১৮০-২২৫; *New Star H*, AP-S ১৪০-২২৫; *Shree L*, Ballenvilla Rd, R₁ B0, DAB ২২৫ চার বেডের সুইট ৪৫০; *Evergreen H*—Burdwan Rd, SCB ১০০ DCB ২০০ DAB ২২৫-২২৫; *Majestic H*, 2 MCRd, AP-S ১৭৫; *New Mount View H*, M N Banerjee Rd, AP-S ১৫০-২২৫; *Nataraj H*, Rockwood, AP-S ১৫০-২২৫; *H Aristocrat*, T B Monastery Rd, AP-S ১৮৫-২৫০; অব্: G S Dhar & Sons, 4-A, Jackson Lane, Cal-1; *H Crystal* ও *H Monalisa*, Toong Soong Rd, AP-D ২৫০-৪২৫; *H Raat-Din*, অব্: জেকানিচাঁপ, ২৬৮ বি বি গাঙ্গুলি স্ট্রিট, ৩ 274163; *H Kanchanview*, J N Kussari Rd, AP-S ১৮৫-২৫০; *Panorama H*, 18 T B M Road, *H Moti*, near R K B T College, AP-S ১৫০-২২৫।

এছাড়াও হোটেল আছে আরও নানান দার্জিলিং পাহাড়ে: *Hindusthan GH*, CR Das Rd, near Mall, ৩ 54118, AP প্রখায় ১৬০, ১৭০, ২০০ ডরমিটে ১০০ প্রতি জনা, কল বুকিং: *Hindusthan Travels*, 183/2 Lenin Sarani-13, ৩ 274893; *Morning Glory*, AP-D ৪০০-৪৫০, কল বুকিং: Sujana Chatterjee ৩ 2429757/Linkage ৩ 2464485; *H Blue Diamond*, 6/1, S M Das Rd, AP-S ২২৫-২৭৫, কল বুকিং: Bishnu Tours, Room F/66, Kamalalaya Centre, ৩ 269501; *H Alakapuri*, 8 A J C Bose Rd, DAB ৪৫০, FAB ৬০০, অব্: Kosseli, 5 Nandi St, Cal-29; *H Regal*, AP-S ১৫০-২২৫; *Hingiri L*, AP-S ২০০-২৭৫; *H Sujata*, AP-S ১৭৫; *Pagoda H*, Upper Beechwood, AP-S ১৮৫; *Rup Khang*, 5 N B Singh Rd, AP-S ১৮০-২৫০; *Orchard GH*, 15 MCRd, AP-S ১৮৫; *Tshring Denzongpa*, DAB ৩০০-৪৫০; *Emperul H*, 204 T N Rd; *Dreamland H*, Toong Soong Rd; *Darjeeling GH*, 16 DB Giri Rd; *Agarwala H*, Dr S M Das Rd; *H Hill Queen*, 51 Tenzing Norgey Rd, AP-S ২২৫-৩৫০, কল বুকিং: কুণ্ডল হোটেল বুকিং, ৬২ বেটিং স্ট্রিট, ৩ 273525; *H Konark*, কল বুকিং: Ramkrish ৩ 3509199.

ম্যালের ডাইনে ঘোড়ার আতাবল পেরিয়ে ৫ জাকির হোসেন রোড-এ সাধারণ সাজে *H Abhi Surya*, AP-S ১৭৫-২৫০; হোটেলটি অতি সাধারণ মানের হলেও কাকানজক্কা কোনও কোনও ঘর থেকে দৃশ্যমান। আর আছে *H Deepak*, *Sonali*, *Snow Peak Cottage*, *Asha GH*, *H Monalisa*, *Golden Orchids GH*, *Gujarati GH* ছাড়াও নানান। যাত্রী সমাগমে এসের রেটের ওঠানার বিশেষভাবে উদ্দেশ্য।

তবুও থাকা ও খাবারের জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির

সাথে গান্ধী রোডের *Spring Burn*, হিল কার্ট রোডের *স্নো ডিউ*, *রবার্টসন* রোডের *চাপকাও সেন্ট্রাল*, আর কেবল থাকার জন্য বাস স্ট্যান্ডের শিরে *Anjuman-E-Islamia Guest House*-টি মন্দ নয়। দরজা এর সবার তরে খোলা। রান্না করেও খাবার ব্যবস্থা করা যায়, বাসনপত্রও মেলে আত্মমানে। আর সরকারি হোটেলগুলি তিন মাস আগে থেকে শুরু হয়ে সাতদিন আগে পর্যন্ত Tourist Centre, 3/2 B B D Bag, Cal-1-এ অগ্রিম বুকিং-এর ব্যবস্থা আছে। এছাড়া প্রাইভেট বাড়ি-ঘরও ভাড়া মেলে দার্জিলিং-এ—*Shri Bulu Mustaffi*, Chachan Mansion, Darjeeling; *Shri S M Roy*, 21 Beechwood, Laden La Rd—এসের যোগাযোগ করা যেতে পারে।



তেমনি নানান বাণিজ্যিক সংস্থাও *হিলিডে হোম* খুলেছেন দার্জিলিং পাহাড়ে। এদের কাছে ঘর নিয়ে থাকা ও রান্নার ব্যবস্থা করে স্বল্পবিশেষ চিত্ত বিনোদনের সুব্যবস্থা মেলে। ২ থেকে ৫ বেডের ঘর বা সুইট রান্নার বাসনপত্র সহ ৬০ থেকে ১৫০ টাকায় মেলে। বুকিং এদের কলকাতা মূল কেন্দ্রে। ম্যালের ডাইনে ড. জাকির হোসেন রোডে—*Allahabad Bank H H*, 2 N S Rd, Cal-1; *Steel Authority of India Employees' C C Society*, near Mall, CB: 2 Fairlie Place, Cal-1, ৩ 2202371-79 Ext 325; *Alloy Steel of India H H*; *UBI H H*—Tivoli Court, 225-C, Acharaya J C Bose Road, Cal-20, ৩ 2472860; *Macneil Major Co-operative H H*, Majerhat; *Shawlee Institute H H*, 4 Bank Shall St, Cal-1, ৩ 2485601.

জলাপাহাড়মুখী তেনজিং নোরগে সড়কে—*Jessop Employees H H*, ম্যালের ঘোড়ার আতাবলের সমীকটে, CB: *Jessop & Co*, 63 N S Rd-1, ৩ 2432041 (PRO—*Dipankar Chatterjee*); *UBI Employees Association H H*, CB: 16 Old Court House St (4th Flr), Cal-1, ৩ 2487471 Ext 211, 207; *UBI—Garahat Branch Employees Welfare Society H H*, 26 Hindusthan Park, Cal-29; *UBI Staff Recreation & Cultural Society H H*, 45/3 South Rd, Cal-75, ৩ 2475100; *Central Bank of India Employees' Co-operative Society Ltd H H*, 10 Lindsay St, Cal-87, ৩ 2446789; *Lovelock & Lewes Employees' Co-operative Credit Society H H*, CB: 4 Lyons Range (5th flr.), Cal-1, ৩ 2204794-95.

ম্যাল থেকে ১; কিমি দূরে লালকুঠীমুখী আচার্য জগদীশচন্দ্র বসু রোডে—*UBI Employees' Co-operative H H*, CB: 4 N C Dutta Sarani (4th flr), Cal-1, ৩ 2200841; *Burn Standard Co-operative Credit Society H H*, 10/C, Hunger Ford St, ৩ 2471067. *Damodar Valley Corporation H H*; *UBI—Royal Exchange Branch Recreation Club H H*, 10 N S Rd, Cal-1, ৩ 2207452.

ডি বি গিরি রোডে—*British Paints Employees Mutual Benefit Fund H H*, 32, Chowringhee Rd, Cal-71, ৩ 299724; *Capexil Recreation Club World Trade Centre H H*, CB: 14/1 Ezra St (3rd flr), Cal-1, ৩ 2258216; *Industrial Reconstruction Bank of India Employees' H H*, 19 N S Rd, Cal-1, ৩ 2209941; *Bank of India Staff Recreation Club H H*, 8 Lindsay St, Cal-87, ৩ 2445817.

বাসপথ হিল কার্ট রোডে—*Kristi Chakra Tran Ways (CTC) Recreation Club H H*, 12, R N Mukherjee Rd, Cal-1, ② 2482681; *Burns Sports Club H H*, 20 Nityadhan Mukherjee Rd, Howrah-711001, ② 672601; *UBI-Bidhan Sarani Club*, at Hotel Gay-Lord, CB: UBI, 203/1/1 Bidhan Sarani, Cal-6, ② 2414557; *Indian Bank Employees' Union H H*, 17 Brabourne Rd, Cal-1, ② 261111/12; *National & Grindlays Bank Staff Benefit Trust H H*, 19 N S Rd, Cal-1; *RBI Supervisors Staff H H*, at Chhota Kakijhora, CB: RBI (Cal) 7th floor, ② 2208337 Ext 167; *Reserve Bank of India Workers Co-operative Credit Society H H*, CB: RBI, ② 2208331 Ext-PDO.

পথ থেকে উঠে কাকবোড়ায়—*UCO Bank Staff Recreation Club H H*, CB: 10 Brabourne Rd, Cal-1, ② 2254120-28 Ext 220; *Punjab & Sind Bank Employees' Union (WB) H H*, CB: 83-85 N S Rd, Cal-1, ② 2431416. রেল স্টেশনের অদূরে মহতাচাঁদ রোডে—*Canara Bank Staff Recreation Club H H*, CB: 2 Brabourne Rd, Cal-1, ② 2254966; *Syndicate Bank Staff Recreation Club*, CB: 3-B, Lalbazar St, 2nd floor, Cal-1, ② 2486055; এদের আর একটি শাখা টেলিফোন এক্সচেঞ্জের পিছে হোটেল ভ্যালেনটিনোর পাশে রকভিল রোড-এ। *New Bank of India Employees' Union H H*, 6 Princep St, Cal-72, ② 272705; *Syndicate Bank Employees' Trust Mutual Club H H*, 6 N S Rd, Cal-1, ② 2480985; *Indian Overseas Bank H H*, Cal Main, CB: P-35 India Exchange Place, Cal-1, ② 2253187.

আর আছে ছড়িয়ে ছিড়িয়ে সারা শহর জুড়ে—*UBI H H*, 28 APC Rd, Cal-9, ② 3506857 at Hindustan GH; *PNB Employees' Union*, Kachhari Rd, CB: PNB-RCC, 8 Lyons Range, Cal-1, ② 2202181; *Union Bank Employees Cooperative Credit Society*, Beside Maple Tourist Lodge, CB: 38 Strand Rd, Cal-1, ② 2206868; *Allahabad Bank Employees' R W Society*, Gandhi Rd, CB: 7 Red Cross Place, Cal-1, ② 2482823; *Union Bank Em Co-op Credit Society*, CB: 15 India Exchange Place, Cal-1, ② 2202701; *All India Allahabad Bank National Employees' Federation*, Tenzing Norgay Rd, CB: 14 India Exchange Place, Cal-1, ② 2208375; *Allahabad Bank Recreation Club* at Mall, CB: 14 India Exchange Place, Cal-1, ② 2208376 (Draft Dept); *Kamarhati Municipal Employees' Welfare Society*, Tenzing Norgay Rd, CB: 1 MM Feeder Rd, Cal-56, ② 5531646; *Dena Bank Employees' Association*, at Ashoka Hotel, CB: Dena Bank, 16-A, Brabourne Rd, Cal-1, ② 251387; *Standard Chartered Bank Recreation Club*, CB: 4 N S Rd, Cal-1, ② 2206902; *UCO Bank Office Congress*, CB: 16/A, Brabourne Rd (3rd Floor), Cal-1, ② 251778; *Allahabad Bank H H*, CB: 2/13-A, B B Ganguly St, Cal-12, ② 274915; *New Bank of India Employees' Union*, CB: 6

Princep St, Cal-1, ② 272705; *PNB Employees' Union*, CB: 6 Princep St, ② 272705; *Bank of India Employees' Recreation Club*, 8/9 Bankim Chatterjee St, Cal-73, ② 2415179; *SBI Staff Holiday Home*, 2-A, Girish Avenue, Cal-3, ② 5556815; *SBI Staff Association*, 50-A, Gariahat Rd, Cal-19, ② 4758701; *SBI Staff Association Commercial Branch Unit*, 24 Park St, Cal-16, ② 295454 Ext 46.

বটানিকালের কাছে ফরেস্ট রোডের ভূত বাংলায়—*Bank of Baroda Employees' Association H H*, Ruby House, 8 India Exchange Place, Cal-1, ② 2426692; *PNB Employees' Union H H*, 31 C R Avenue, Cal-72, ② 268201; *CTC Engineering Recreational Club H H*, 183 J C Bose Rd, Cal-14, ② 292317. এছাড়াও হলিডে হোম রয়েছে আরও নানান দার্জিলিং পাহাড়ে। তবে সবাইকে টেকা দিয়ে শহরের মধ্যমণি হয়ে রেল স্টেশনের দিগন্তে হলিডে হোম গড়েছে রেল দপ্তর তার নিজস্ব কর্মীদের জন্য। সাধারণের কাছে দ্বার রুদ্ধ এর। তেমনই অবস্থান মাহাশো *Steel Authority H H*, *DVC H H*, *UBI*—*Dunlop Branch H H* গুলিও রমণীয়।

চলতে-ফিরতে নেহরু রোডে টিফিনের সাথে দুধের কাপে গলা ভেজান *Kev's* অর্থাৎ *Kaveter's Snack Bar* এ। আহারের সাথে নৈসর্গিক গোড়া দেখুন দু'নয়ন ভরে কাভেটটারে। তেমনই নেহরু রোডে *Dekevas Restaurant*, *Glenary*, *Shangri-La*, *Hasty Tasty*—এদেরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি দেশী-বিদেশী নানান আহাৰ্য পরিবেশায়। আর চৌরাস্তায় মানের সঙ্গে দামে উন্নত চীনা মিলের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে *Snow Lion Restaurant*-এ। আর *ফাস্ট ফুডের* জন্য চৌরাস্তার *Amigo*-রও যথেষ্ট সুনাম। তবুও যেন চীনা মেনুতে হোটেল ভ্যালেনটিনোর *New Embassy Chinese Restaurant*-টি দার্জিলিং পাহাড়ে আজও অনন্য। নীল আকাশের নিচে দক্ষিণ ভারতীয় আহাৰ্যের জন্য চৌরাস্তার *Star Dust Restaurant*-ও যথেষ্ট খ্যাত। আহাৰ-বিহারে *বেনিজ কাপ*-এরও প্রসিদ্ধি আছে; *রিগাল হোটেল*টিও স্বল্পমূল্যের আহাৰ্যে যথেষ্ট খ্যাত দার্জিলিং পাহাড়ে। আর নিরামিষ আহাৰ্যে *N C Goenka Rd* এ *ম্যাডেয়ারি ভোজনালয়*টিরও সুনাম যথেষ্ট। তবে, গ্রীষ্মের দিনগুলিতে জলাভাব আজ প্রকট হয়ে দেখা দিয়েছে দার্জিলিং-এ।

মিরিক

দার্জিলিং-এর ভিড় এড়িয়ে শৈলসৌন্দর্য আহ্বাদনে ১৯৭৯তে নতুন করে গড়ে উঠেছে হিল স্টেশন মিরিক। কাশিয়াং-তিনথারিয়া পথে না গিয়ে গারিখুরা-মিরিক-সীমানা সড়ক ধরে শিলিগুড়ি থেকে দার্জিলিং যেতে প্রায় মাঝামাঝি দূরত্বে গড়ে উঠেছে এই শৈলশহর। দার্জিলিং থেকে ফেরার পথেও চলা বায় ভূম পেরিয়ে সুখিয়া/সীমানা হয়ে মিরিকে। চা বাগিচার মাঝ দিয়ে পাহাড়ী ঢাল ঘেরে পথ চলেছে দার্জিলিং থেকে। পথের আকর্ষণেও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। দার্জিলিং থেকে দূরত্ব ৪৯, ভূম ৪১, কাশিয়াং ৪৬, বাগডোগরা ৫৫, শিলিগুড়ি ৫২ কিমি।

সিংহলীলা পাহাড়ের বৃকে ১৭৬৭ মি উঁচুতে ছোট উপত্যকা মিরিক। মিরিকের মূল আকর্ষণ তার পাঁচ একর ব্যাপী সমতল ভূমি আর তারই মাঝে প্রকৃতিদত্ত সামেন্দু ধাপ। অর্থ যার: সা=মাটি, মেন্দু=নেই, ধাপ=পুকুর বা জলা বা লেক। সামেন্দু লেক পেরিয়ে পাহাড় চড়ে রামিতেদাঁড়ায় কাঞ্চনজঙ্ঘার রজতগুণ নয়নাভিরাম তুষার চূড়ো অনেক স্পষ্ট দেখা যায় মিরিকে। রামিতেদাঁড়া অর্থাৎ পাহাড় চড়ে সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তও সুন্দর দৃশ্যমান। উপত্যকাও সুন্দর দেখে নেওয়া যায় রামিতেদাঁড়া থেকে। আর এক অবজ্ঞারটেটরি পয়েন্ট দেওসিরাড়া। তেমনই মিরিকের পানীয় জল আসছে আর এক দৃষ্টিনন্দন রাইধাপ থেকে। মিরিকের আবহাওয়াও মনোরম। গ্রীষ্মে তাপমান ওঠে ২৯° আর শীতে নামে ১৩° সেন্টিগ্রেডে। দার্জিলিং-এর মতো হিমশীতল নয় মিরিক। ১৬০০০ লোকের বাস মিরিকে।

মিরিকের মূল আকর্ষণ পাহাড়ী ঝোরা, বর্ষার জলে পুষ্ট লেক। এমনকি প্রতিফলনও ঘটে ১.২৫ কিমি লেকের জলে কাঞ্চনজঙ্ঘার। জলের গভীরতায় তার তন্ময় আছে—ও থেকে ২৬ ফুটে। ৪০ টাকায় (৪ যাত্রী) আধঘন্টা বোট করে নেওয়া যায় লেকে। আর আছে মাহেদের জলকলি লেকের জলে। লেকের পাড়ে মনোহর বাগিচা। পশ্চিম পাড়ে সু-উচ্চ পর্বতমালা—ঢালে তার কমলা, এলাচ ও জাপানি সিঁজার বৃক্ষ তথা পাইনের ঘন সবুজ বন। দার্জিলিং-এর কমলা লেবুর সিংহভাগই মিরিকে হচ্ছে। বিপরীতে মন্দির—দেবী সিংহলীলার। আর আছে বাস স্টপের বিপরীতে মিরিক গুম্ফা—উচিত হবে পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া। মিরিক যাত্রীদের আর এক আকর্ষণ ১১ কিমি দূরে নেপালের পশুপতি নগর। বিদেশী পণ্যের সস্তার নিয়ে পসরা সাজিয়েছেন দোকানী।

দার্জিলিং-ঘুম-মিরিক পথে নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে জোড়াপুকুর অর্থাৎ জোড়পোখরি। সীমানা অর্থাৎ পশুপতি নগর (নেপাল)-এর পথও পৃথক হয়েছে জোড়পোখরি থেকে। সন্দকফুর যাত্রীও যাচ্ছেন ঘুম-জোড়পোখরি-সুকিয়াপোখরি-মানেভনজং হয়ে। DGHC-র Tourist LTও সবুজ পাহাড় জোড়পোখরির নবতম আকর্ষণ। পথেই পড়ে দার্জিলিং থেকে ১৩ কিমি এসে নীল আকাশের নিচে আদিগন্ত সমুদ্রে মোড়া লেপচা জগৎ। FRH আছে লেপচা জগতে।



মিরিকে দার্জিলিং গোর্খা পার্বত্য পরিষদের ডে-সেন্টার হয়েছে লেকের পাড়ে। বিশ্বাণ ও আহাৰ্য মেলে। আর হয়েছে Tourist Cottage. D ৭৫০.

অব: West Bengal Tourism, 3/2 BBD Bag, Cal-1. ৬০ বেডের Tourist Hostel-এ সুসজ্জিত ২ বেডের ২টি ঘর ৩৫০ ডর্মি বেড ৩০ করে, অব: DGHC. আর আছে: ১ কিমি দূরে মিরিক বাজার-734214-এ Vastun H, DCB ১৫০ DAB ২০০, অব: মিত্র স্পেশাল, ৬২ বেস্টিক স্ট্রিট-৬১; H Map VII, D ১৫৫-২২৫; Bharati H, D D Hotel. লেকের শিলিগুড়ি প্রান্তে Manjusha H, D ১৮০-২২৫, অব: 24 Strand Rd-I. আর আছে H Samjhana. Chandrama, Ashirwad, Mrigaya, Parijat,

Chinhari, Hitaishi L, এদের কাছে S ৬৫-১২৫ D ১২৫-২২৫ টাকায় মেলে। Zilla Parishad DB-ও আছে মিরিকে; অব: Administrator, Zilla Parishad, Darjeeling। আহাৰ্য কটজ লাগোয়া DGHC-র ক্যান্টিন বা Day Centre বা জগজিৎ আদরণীয় হবে। আর হয়েছে মিরিক-শিলিগুড়ি পথের দুধিয়ায় DGHC-র Gukul Wayside Inn-আহার ও থাকার ব্যবস্থা নিয়ে।

ছেউ অবকাশ যাপনের মনোরম পরিবেশ মিরিক। আবার দার্জিলিং বা শিলিগুড়ি থেকেও দিনে দিনে বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে মিরিক। এমনকি দার্জিলিং থেকে সকালে এসে মিরিক বেড়িয়ে বিকালে শিলিগুড়িও ফেরা যেতে পারে। শিলিগুড়ি তেনজিং নারগে সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে Hilly Region Mini Bus Owners Association-এর মিনিবাস যাচ্ছে ৬-৪৫, ৮-৩০, ১২-০৫, ১২-৪৫, ১৩-৩৫, ১৪-২০, ১৫-০০, ১৫-৩০, ১৬-০০টায়; সময় নেয় ২½ ঘন্টা ভাড়া ২৫। আর NBSTC-র বাস যাচ্ছে ৭-০০ ও ১৪-০০টায়। শিলিগুড়ি ফেরে ৬-৩০টায় প্রথম ছেড়ে ১৫-০০টায় শেষ বাসটি মিরিক থেকে। দার্জিলিং যাচ্ছে ২½ ঘন্টায় ৭-০০, ৭-৩০, ৭-৪৫, ৮-০০, ১৩-০০ ও ১৩-৩০টায় মিরিক থেকে। দার্জিলিং থেকে মিরিক আসছে ৮-৩০, ৯-০০, ১৩-০০, ১৩-৩০, ১৪-০০ ও ১৫-০০টায়। ভাড়া ২৫ করে। এছাড়া মরসুমী পর্যটকদের প্যাকেজ ট্যুরে বেড়িয়েও আনে DGHC/WB Tourism—দার্জিলিং/শিলিগুড়ি দুইই থেকে। ভাড়া দার্জিলিং থেকে ১০০, শিলিগুড়ি থেকেও ১০০; টিকিট ট্রান্সিট অফিসে। মিরিকের পথে পশুপতিনগরও বেড়িয়ে আনে এরা। একাধিক প্রাইভেট কোম্পানিও যাচ্ছে প্যাকেজ ট্যুরে মিরিক দর্শনে। আর যাচ্ছে অজব ল্যান্ডরোভার দার্জিলিং থেকে মিরিক ও পশুপতি-নগর প্যাকেজে। যাতায়াত ১২৫-১৫০।

তেমনই মিরিক-শিলিগুড়ি পথে স্বপ্নপুরী গোকুলও দেখে চলতে পারেন অভ্যুৎসাহীরা। রক্তি থেকে বামনপোখরি হয়ে পথ গিয়েছে গোকুলের। গয়াবাড়ি চা-বাগানের কোলে পাহাড়-অরণ্য-নদীর সমন্বয়ে পটে আঁকা ছবি গোকুল। ভিউ পয়েন্ট থেকেও দেখে নেওয়া যায় গোকুলের মনোরম প্রকৃতি। পথশোভাও সুন্দর। পথপাশে Wayside Inn. থাকারও ব্যবস্থা মেলে, আহার মেলে রেস্তোরাঁয়। তবে, খরচ-খরচা সাধারণের নাগাল ছাড়া।

ডায়মন্ডহারবার

অতীতের হাজিপুর—ব্রিটিশের ডায়মন্ডহারবার অর্থাৎ হীরক বন্দরের অতীত গৌরব ম্লান হলেও কলকাতা থেকে ৪৮ কিমি দূরে আজ চড়ুইভাড়ির মনোরম পরিবেশ। অতীতের লাইভ হাউস, প্রাচীন পূর্তুগিজ দুর্গের ধ্বংসাবশেষ আজও দৃশ্যমান। ডায়মন্ডহারবারের নবতম আবিষ্কার কুলপিতে প্রাপ্ত প্রাচীন লিপি—অভ্যুৎসাহীরা জয়নগরে কালিদাস দত্তের সংগ্রহশালায় দেখে নিতে পারেন। তেমনই রায়দিঘি জেলার কঙ্কনাদিঘি গ্রামে মিলেছে ১১-১২ শতকের কষ্টিপাথরের বুদ্ধমূর্তি, মহাবীরের মূর্তি, মহিষমর্দিনী, বিষ্ণু মূর্তি, পোড়ামাটির তৈজসপত্র, প্রাচীন লিপি ছাড়াও প্রত্নতত্ত্বের নানানকিছু। শীতের ছুটিছাটায় প্যাকেট লাঞ্চ সঙ্গে নিয়ে দিনভর বেড়িয়ে-কাটিয়ে দিনান্তে কুলায় ফিরুন আনবিল আনন্দ সাথী করে। গঙ্গা এখানে প্রশস্ত, গতিও তার বদল

হয়েছে দক্ষিণে সাগরমুখী। নৌকা বিহারের ব্যবস্থাও আছে গঙ্গাবন্দে। আবার ফেরি লঞ্চ যাচ্ছে অপর পাড়ের কুঁকড়াহাটি। কুঁকড়াহাটি থেকে বাসে হলদিয়া বন্দর নগরীও চলা যেতে পারে।



শিয়ালদহ (দক্ষিণ) থেকে লোকাল ট্রেন যাচ্ছে ৩-৪৫এ প্রথম ছেড়ে ২৩-৪২এ শেষ ট্রেন। ডায়মন্ডহারবারের। ডায়মন্ডহারবার থেকে শিয়ালদহে আসছে ২-৫৫য় প্রথম ছেড়ে ২২-১০এ শেষ ট্রেন। ঘন্টা দেড়েকের পথ। আর CSTC.SBSTC. ভূতল পরিবহণের বাস যাচ্ছে মুহূর্তে শহীদ মিনার থেকে ডায়মন্ডহারবারে। এছাড়া রায়দিঘি, লট নং ৮, কাকদ্বীপ ও নামখানার বাসগুলিও যাচ্ছে ডায়মন্ডহারবার হয়ে। আর বেসরকারি বাস যাচ্ছে ৭৬ রুটের বাবুঘাট থেকে সরিষা হয়ে ডায়মন্ডহারবারে।



খাকার জন্য Diamond Harbour, STD 0317455. P C-743331-এ আছে WBTD-র Sagarika Tourist L. DAB ২০০. ২৫০. ৩০০. A/c ৪০০. ৪৫০. ৫৫০ ডর্মিহেড ৪০; অব: Manager, Diamond Harbour, South 24 Parganas. ৫ 55246 বা Tourist Centre. 3/2 BBD Bagh, Cal-1.

ডাবল বেডের ৮ ঘরের জেলা পরিষদ বাংলোয়, DAB ৫০, অব: ৫ 4791385; PWD-র ডাকবাংলোতেও খাকার ব্যবস্থা মেলে। আর আছে গঙ্গাতীরে H Hangsharaj, ৫ 55461, H Ambhi, Omar H. H Priyasa, H Mahuya ডায়মন্ডহারবারে। গঙ্গার পাড় ধরে খাবার হোটেলও অজস্র। চলার পথে আর এক তীর্থনিড় সরিষা রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রমটিও দেখে ফেরা যায়।

ফলতা

ভাগীরথীর পূর্বপাড়ে পশ্চিমবঙ্গের নবতম বাণিজ্য নগরী ফলতা। বন্দর নগরীও বটে ফলতা। গঙ্গাও যথেষ্ট প্রসারিত—অদূরে দামোদর নদের মিলন ঘটেছে গঙ্গায়। ১৭৫৬য় ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি সিরাজের কাছে হেরে গিয়ে ফলতায় ঘাঁটি গড়ে—গোলাকার দুর্গও গড়ে সঙ্গম মুখে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি। তবে, তারও আগে ওলন্দাজরা কুঠি ও পোতাশ্রয় গড়ে ফলতায়। তবুও যেন বিজ্ঞানার্চ্য স্যার জগদীশচন্দ্র বসুর মায়াপুরী কানন আজও ফলতার অন্যতম দ্রষ্টব্য। গঙ্গার পাড়ে মনোরম পরিবেশে গাছেরও প্রাণ আছে আবিষ্কার করেন বিজ্ঞানী। CSTC-র বাস কলকাতা বাবুঘাট থেকে ৬-৪৫, ৭-১৫, ৭-৩০, ৯-০০, ১০-৩০, ১২-৪৫, ১৯-৪৫; তারাতলা থেকে ৭-৩০, ১১-৪৫, ১৫-৪৫এ ছেড়ে ৫১ কিমি দূরের ফলতায় যাচ্ছে ২ ঘন্টা। ফেরেও হয়ে নিয়মিত। আর যাচ্ছে দিনভর ৮৩ রুটের প্রাইভেট বাস বাবুঘাট থেকে ফলতায়।

খাকারও ব্যবস্থা মেলে মিত্রতারকা সহ H Rajhans, Falta Industrial Growth Centre, Sector IV, S-24 Parganas-743504, ৫ (03172)2403, SAB ৩০০. ৫০০. DAB ৪০০. ৬০০. A/c S ৭০০. D ৮০০, কল বুকিং: 59 Gangapuri, Cal-93, ৫ 4710398/0961; দক্ষিণ ২৪ পরগণা জেলা পরিষদ বাংলোয় DAB ৫০, কল বুকিং: 4791385।

কলকাতা থেকে ৬০ কিমি দূরে দক্ষিণে হলদিয়া, উত্তরে ফলতা দুই শিল্পনগরীর মাঝে রায়চকে গম্ব কোর্স গড়তে চলেছে ১৩০০ কোটি টাকা ব্যয়ে রিসর্ট লিমিটেড ও আমেরিকার র‍্যাডিসন গোষ্ঠী। বিত্তীয় বিশ্ব সময়ে জাপ আক্রমণে বিশ্বস্ত ব্রিটিশের রায়চক দুর্গের আদলে র‍্যাণ পেয়েছে আন্তর্জাতিক মানের শতাধিক ঘরের এই রিসর্ট। ১৮ কোটি টাকা ব্যয়ে গড়া দুর্গজালী বিলাসবহুল ৫ তারা রায়চক রিসর্ট-এ ন্যূনতম ২৫০ টাকার মধ্যাহ্নভোজে দুর্গ দেখে দিনান্তে কুলায় ফেরা যেতে পারে। বিলাস আর বিশ্রান্তিতে রাত কাটানোর নিয়মও এই রায়চক রিসর্ট, ৫ (03174) 75444 বা কল অফিস: র‍্যাডিসন গ্রুপ, ২১৬ লোয়ার সার্কুলার রোড, ৫ 2472193.

আব আছে H Roychawk, near Fish Harbour, Roychawk, PO-Maheswara, ৫ Nurpur 224; কল বুকিং: Mr. Mazumder, 4/2A, Waterloo St, Cal-69, ৫ 2489888. সাধারণ হোটেলও আছে জেটিঘাটে—আহার মেলে। পথে পড়ে Omar H & Resort, Vasa, Diamond Harbour Rd. near Joka, DAB ৪০০. A/c D ৬৫০-৮৫০. সুইট ১৫০০; কল বুকিং: 135 Biplabi Rash Behari Bose Rd, Cal-1, ৫ 2427607. Gupta Garden, Joka, কল বুকিং: Gupta Garden, ৫ 2421329.

হলদিয়া

কলকাতা বন্দরের হ্রত গৌরব পুনরুদ্ধারে কলকাতার ৯৬ কিমি দক্ষিণে হুগলি নদীতে গড়ে তোলা হয়েছে নতুন করে বন্দর হলদিয়ায়। বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম লক গেটটিও হলদিয়া পোতাশ্রয়ে—দৈর্ঘ্যে ১০১০, প্রস্থে ১৩০ আর গভীরতায় ৪৮ ফুট এটি। কনডেমার প্রাথম্য পণ্য তোলা-নামার ব্যবস্থা। তেমনিই গড়ে উঠেছে ব্যাপক চত্বর ছুড়ে হলদিয়া রিফাইনারি, হলদিয়া ফারটিলাইজার, পেট্রোকেমিক্যাল ছাড়াও নানান কারখানা। বন্দরের জওহর টাওয়ার থেকে দেখে নেওয়া যায় পটে আঁকা ছবি হলদিয়া বন্দর নগরী। তবে, অনুমতি লাগে এদের দর্শনে। বন্দরের সাথে সাথে পর্যটন মানচিত্রেও যথেষ্ট খ্যাতি পেতে চলেছে হলদিয়া। টাউনশিপের দক্ষিণে হুগলি নদী আর পশ্চিম ধরে বয়ে চলেছে কাঁসাই ও কেলোঘি নদীদ্বয়ের জলে পুষ্ট হলদী নদী। নামটিও এসেছে হলদী থেকে হলদিয়া। হুগলি নদীর স্নিগ্ধ সমীরে সকাল-সাঁঝে পায় পায় বেড়াবার মনোরম পরিবেশ। তেমনিই সেন্টিনারি পার্কটিও দেখে নেওয়া যায় হলদিয়া টাউনশিপে। ছোট্ট অবকাশ্যে যাপনে হলদিয়া আঙ্গুনবদ। হলদিয়ার আর এক আকর্ষণ তার হলদিয়া উৎসব।



নানানপথে যাওয়া চলে কলকাতা থেকে হলদিয়া বন্দর নগরীতে। ডায়মন্ডহারবার ভ্রমণ পথেও বেড়িয়ে ফেরা যায় হলদিয়া। আবার গৈওখালি যাত্রীরা ভ্যান রিকশায় তেতন্যপূর্ণ পৌছে বাসে চলুন হলদিয়া, এপথের দূরত্ব ৭১৩ = ২০কিমি।

কলকাতা ধর্মতলা বাস ভূমি থেকে CSTC-র বাস যাচ্ছে ৬-৪৫, ৭-৪৫, ৯-৩০, ১১-৪৫, ১৫-৩০, ১৭-১৫য় কোলাঘাট হয়ে ৩১ ঘন্টায় হলদিয়ায়। আর প্রাইভেট বাস যাচ্ছে United

Transport Co-র ২১০ কন্ট্রি ৫-৫০—১৮-২৫এ প্রতি আধ ঘন্টা অন্তর শহীদ মিনার থেকে সরিষা হয়ে রায়চকে। এদের ফেরার বাস মেলে ৬—১৯-৩০এ। ফেরি লঞ্চে গঙ্গা শেরিয়ে অপর পাড়ের কুঁকড়াহাটি থেকে আবার বাসে হলদিয়া। সরাসরি টিকিটও মেলে এদের বাসে। আর যাচ্ছে CTC-র বাস এসপ্লানডে ট্রাম ভিপো থেকে প্রতি আধ ঘন্টা অন্তর সকাল থেকে সন্ধ্যা। ধরমতলা থেকে SBSTC-র বাসও চলেছে ৫-৩০—১৮-৩০এ প্রতি ৪০ মিনিট অন্তর। কলকাতা থেকে সহজতম পথও এই রায়চক/কুঁকড়াহাটি হয়ে ৩ ঘন্টায় হলদিয়ায় চলা।

আর যাচ্ছে হাওড়া স্টেশন থেকে SBSTC-র বাস ১২-৩০ ও ১৬-২০এ; ফেরে ৬-০০ ও ১৪-০০টায়। বেলঘরিয়া থেকে SBSTC-র বাস যাচ্ছে ১১-৪০এ, ফেরে ৫-০০টায়। প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে ঘন্টায় ঘন্টায় হাওড়া স্টেশন থেকে ৭-০০টায় প্রথম ছেড়ে ৪ ঘন্টায় হলদিয়া। আর হলদিয়া থেকে SBSTC-র বাস যাচ্ছে—আসানসোল, বর্ধমান, চিত্তুরঞ্জন, বাঁকড়া, বেলপাহাড়ি, মগরাহাট ছাড়াও নানানদিকে। ট্রেনও যাচ্ছে ৫-৪৫ ও ১৮-২০এ হাওড়া ছেড়ে পাঁশকুড়া হয়ে ৩ ঘন্টায় হলদিয়ায়; ফেরে ৫-৩৫ ও ১৭-১০এ হলদিয়া থেকে। আর ১৪-৪০এ পাঁশকুড়া ছেড়ে ১৬-৩৫এ হলদিয়া যাচ্ছে পাঁশকুড়া-হলদিয়া লোকাল। আবার বাস যাত্রার ধলকা এড়াতে হাওড়া-ঝড়াপুর শাখা রেলের মোচলা পৌছে SBSTC বা প্রাইভেট বাসে চলা যেতে পারে হলদিয়ায়।

তবুও যেন হলদিয়া যাত্রায়তে Silverjet Travel-এর শীতাতপ বিলাসবহুল Catamaran Service নতুন দিগন্তের সন্ধান দিয়েছে কলকাতা-হলদিয়া জলপথে। সোম থেকে শুক্রবার প্রতিদিন ৭-৪৫ ও ১৬-০০টায় ১৪ নম্বর গেট স্ট্যান্ড রোড ও হোয়ার স্ট্রিটের মোড় থেকে কলকাতা ছেড়ে ৯-৩০ ও ১৭-৪৫এ হলদিয়া যাচ্ছে। হলদিয়া ছাড়ে ৯-৫০ ও ১৮-০০টায় হলদি নদীর উপর ইন্ডিয়ান অয়েল টাউনশিপের বিপরীত থেকে। ভাড়া: ইকনমি ৪০০ (মেইন ডেক), বিজনেস ৫৫০ (মেইন ডেক), ফার্স্ট ক্লাস ১০০০ (আপার ডেক)। বুকিং: কলকাতায়—Caravan Travels @ 295658, Everett (I) Pvt Ltd @ 2486295, Mercury Travels @ 2423555, Peerless Travel @ 2471052, Sita World Travels @ 291025, হলদিয়ায়—Development Consultants Ltd, New Market Complex, Durgachawk; Anirban Transport Service, Chiranjibpur, আরও তথ্যের জন্য: Development Consultants Ltd, 24-B, Park St, Cal-16, @ 2497603.



আর Haldia, STD 03224-এ আছে শহর দুকতেই Port Land H, near Manjusha Cinema; টাউনশিপমুখী বাসপথে Durgachawk-721602-এ—H East Coast, @ 74161, RIB; SAB ১৫০ DAB ২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০ সাইট ৬৫০; বিপরীতে India H, @ 74450, SAB ৮০ DAB ১৫০ TAB ১৭৫ ডার্সি ৪৫, এনএল লজে SCB ৪০ DCB ৮০ TCB ১০০; ডানহাতি গলিপথে Ananda L, SAB ১২৫ DAB ২২৫; বিপরীতে Samrat L, SAB ৮০ DAB ১৫০; Haldia L, @ 74185, শহরমুখী ১ কিমি দূরে Ranichawk-এ মিত্রাকার সম H Balaji Continental, @ 52156, SAB ৩০০ DAB ৩৫০ A/c S ৫২৫ D ২২৫-৮২৫; কল বুকিং: Embassy Travels, 9 Lalbazar St, Cal-1, @ 2208495, হলদী নদীর পাড়ে HFC Guest House-এ H Embassy, @ 63252, D ৩০০ A/c ৫০০ সাইট ৭৫০, অব: Embassy, Cal-1, @ 2208495.

Modern Continental, I.O.C. Gate No.2, সবশেষে টাউনশিপে হলদিয়া ডেভেলপমেন্ট অথরিটির Haldia Bhawan, Makhan Babu Bazar, @ 63438-এ প্রাইভেট লীজে Neptune H বাসেছে, DAB ৪২৫ সাইট ৬৫০ A/c ৬০০/৮৫০, কল বুকিং: @ 2156041/2151749 (অফিস সময়ের পরে)। সিভিলভার জেট-এর টিকিটও মেলে এদের কাছে। আর আছে Township Bazar-এ Tripiti L বা Hotel: ৬৫০; বাস স্ট্যান্ড ছাড়িয়ে হলদী নদীর তটে Indian Oil-এর Rest House, তবুও যেন ভ্রমণার্থীদের থাকার জন্য হলদিয়া ভবন অবস্থান মাছায়ে অনবদ্য। তেমনই আহাৰ্যে দুর্গাচক সমাজ কল্যাণ মহিলা সমিতি পরিচালিত H Ruchira মান ও দামে সর্বজনগ্রাহ্য।

কাকদ্বীপ

ডায়মন্ডহারবার থেকে বাসে চলুন কাকদ্বীপ। দূরত্ব ৪৩ কিমি। প্রশান্ততা আরও বেড়েছে গঙ্গার। ইউক্যালিপটাস আর খাউ বাঁধিকা পরিবেশকে মধুময় করে তুলেছে। দিগন্ত বিস্তৃত নীল জল উথালি-পাথালি করে। তেমনই অবিভক্ত বাংলায় তে-ভাগা আন্দোলনের শীঠস্থান কাকদ্বীপ আজ অধিকতর খ্যাত তার জলযানের সংযোগকারী জংশন রূপে।

থাকার জন্য PWD-র সুসজ্জিত ডাকবাংলো আছে। জেলা পরিষদের ডাকবাংলোটি ক্ষতিবিক্ষত। আর হয়েছে H Arundum, H Sagar কাকদ্বীপে।

শহীদ মিনার থেকে CSTC-র নামখানার বাসে বা ৬-১৫, ৭-৩০, ৮-২০, ১০-০০টায়; গড়িয়া থেকে ৬-৩০, ৭-৩০, ১৩-১৫, ১৪-২৫এ কাকদ্বীপের বাসে সরাসরি যাওয়া চলে। কলকাতা থেকে দূরত্ব ৯১ কিমি, ২½ ঘন্টার পথ, ভাড়া ১৬.৫০।

সাগর দ্বীপে সাগর মেলা

সব তীর্থ বার বার গঙ্গাসাগর একবার। কপিলমুনির দর্শনে প্রকৃতি ও পুরুষ, দুই-ই অসীম—সেই অসীমতার প্রাপ্তি ঘটে সাগরতটে। বার বার নয় এ প্রাপ্তি একবার।

ভারতীয় হিন্দু তীর্থগুলির মধ্যে অতি পবিত্র তীর্থ এই গঙ্গাসাগর। প্রবর্তন অযোধ্যার ঈশ্বাকু বংশের রাজাদের কালে গঙ্গাসাগর তীর্থের। চারপাশে জল মাঝে পড়েছে চর—নাম তার সাগরদ্বীপ। ছোটবড় ৫১টি দ্বীপের সমন্বয়ে সাগরদ্বীপ—আয়তনে ৫৮০.৯ বর্গ কিমি। ১৬৮৮র জল-প্রাবনে জনহীন, শ্রীভট্ট সাগরদ্বীপে লোক নেই, জন নেই, না আছে পথঘাট; ধু-ধু করছে বালু আর বালু। ১৮২২-এ সরকারের দৃষ্টি পড়ে সাগর দ্বীপে। আরাকানের ৫টি মগ পরিবার পাঠিয়ে জনবসতি গড়ে তোলার প্রস্ততি নেয় সেদিনের ব্রিটিশরাজ। পরিকল্পনা সফল হয়। সেদিনের ৫ আজ দাঁড়িয়েছে ২৫ হাজার পরিবারে, লোকসংখ্যা লাখ তিনেক। তবে, ১৮৩৩ ও ১৮৬৪র সাইক্লোন ধ্বংসের সাথে জীবনহানি ঘটে বিপুল হারে। মেত্র মহাশয়ের সাগর সঙ্গমের সেই ভয়াবহতা আজ আর নেই—তবে, পথ দুর্গম, আর রয়েছে জানা-অজানা বিপদ সারা পথে ওত পেতে।

ঘণ্টাভিনেকে সরকারি বাস যাচ্ছে কলকাতা থেকে ১০৫ কিমি দূরের নামখানায়। নামখানা থেকে মেলার যাত্রী নিয়ে লঞ্চ যাচ্ছে চেমাগুড়িতে। চেমাগুড়ি থেকে ১১ কিমি পথ পায়ে হেঁটে ছয়ের ঘেরি। ছয়ের ঘেরি থেকে বাস বা তিন চাকার ভানে ৯ কিমি পেরিয়ে মেলা প্রাঙ্গণ। আবার চেমাগুড়ি থেকে পায়ে হেঁটেও ৬ কিমি দূরের মেলায় যাওয়া চলে শ্রীধাম হয়ে। মেলার যাত্রীদের জন্য বিশেষ বাসের ব্যবস্থাও থাকে কলকাতার আউটরাম ঘাট ও হাওড়া স্টেশন থেকে। লঞ্চও যাচ্ছে কলকাতা থেকে সাগরমেলায় মেলাকালে সরাসরি।

আবার কাকদ্বীপ হয়েও যাওয়া চলে সাগরে। এপথে হাঁটার ঝুঁকি নেই। কলকাতা থেকে একই পথে এসে নামখানার ১৪ কিমি আগেই কাকদ্বীপ। আরও ৪ কিমি আগে হারউড পয়েন্ট ফেরিঘাট স্টপে নেমে লোকাল বাস বা রিকশায় ৩ কিমি দূরের Harwod Point Lot No ৪ পৌঁছে ৫-৩০—১৯-৫৫য় ফেরি ভেসেলে গঙ্গা পেরিয়ে পর পায়ে কচুবেড়িয়া। কচুবেড়িয়া থেকে বাস যাচ্ছে ৩০ কিমি দূরের সাগরমেলায়। আর চলে ট্রেকার—৮ প্রতি জনা। যাতায়াতে এপথই সুবিধার। জোয়ারে গাড়ি পারাপারের (কার/ট্যাক্সি/জিপ ১৫০ মিনি বাস ১৫০, বাস ৩০০) ব্যবস্থাও মেলে। তবে, শহীদ মিনার থেকে বাস যাচ্ছে—CSTC-র ৭-৪০, ৮-৪৫, ১১-২০, ১১-৩০, ১৫-২০, ১৬-৩০; ভূতল পরিবহণ ৬-৩০, ৭-৩০, ৯-৩০, ১১-৩০, ১৩-৩০, ১৪-৪৫, ১৫-১৫, ১৬-১৫, ১৭-১৫য় ছেড়েও ঘণ্টায় সরাসরি হারউড পয়েন্ট ৮ নম্বর লট ঘাটে। তবুও যেন দূরত্বের অনুপাতে সময়ের আধিক্য (৫½ ঘ) লাগে। ভাড়া ১৬.৫০ + ১.৩০ + ৩.০০ টাকা কলকাতা থেকে সাগরের। ফেরার পথে ভেসেলে মেলে ৫-৩০—১৯-৫৫য় কচুবেড়িয়া থেকে লট ৮-এর। আর বাস মেলে কলকাতার ৬-১৫ থেকে ১৭-০০টায় CSTC ও ভূতলের আধ ঘণ্টার ব্যবধানে লট ৮ থেকে।

পৌষ সংক্রান্তির পিঠে-পুলির মতো সাগর মেলাও সাজতে শুরু করে মাসখানেক আগে থেকে। ৩ একর জমি জুড়ে ঘর ওঠে হোগলার, গড়ে ওঠে দোকানপাট, জমে ওঠে সাগর মেলা। মন্দির সংলগ্ন সাগরতটে মকর সংক্রান্তির আগে-পিছে দিন সাতেক ধরে চলে কেনা-বেচা। আর পাঁচটা গ্রামা মেলার চেহারা নেয় সাগর মেলা। সবার উপরে তীর্থ। লক্ষ লক্ষ তীর্থযাত্রী আসেন সারা ভারত থেকে সাগর সঙ্গমে স্নানের তরে। গঙ্গা যেদিন সাগরে মিলেছে সেই দিন সেই মোহনায় মকর সংক্রান্তির ভোর না হতেই স্নান শুরু হয় পূণ্যার্থীদের। হিন্দুদের পরম মুক্তিপ্রার্থী এই গঙ্গাসাগর সঙ্গমের স্নানে। অশ্বমেধ যজ্ঞের পূণ্য হয়।

অতীতে কপিলমুনির আশ্রমটিও ছিল আজকের মোহনায়। কপিলমুনিও কঠোর তপোশর্চর্য্য অতীষ্টে সিদ্ধিলাভ করে স্থানকে পূত করেন। পুরাণে মেলে রামচন্দ্রর ১৩শ পিতৃপুরুষ অযোধ্যারাজ সগর শততম অশ্বমেধ যজ্ঞের প্রস্তুতি নেন। ১০০ অশ্বমেধ যজ্ঞের একমাত্র অধিকারী

দেবরাজ ইন্দ্র ঈর্ষান্বিত হয়ে যজ্ঞের ঘোড়া ধরে কপিলমুনির আশ্রমে বেঁধে আসেন। ঘোড়ার অশ্বমেধে বেরিয়ে সগর রাজার বাটহাজার সন্তান ক্রান্ত-শ্রান্ত হয়ে আশ্রমে ঘোড়া দেখে মুনিকে চোর সাব্যস্ত করে কটুক্তি করে। ধ্যানে ব্যাঘাত ঘটায় কুপিত মূনির শাপে ভস্মীভূত হয়ে নরকে পতিত হয় বাট হাজার সগর-সন্তান। আর গঙ্গার স্বর্ণ ছেড়ে মর্ত্যে আগমন সেই বাট হাজার সন্তানের নম্বর দেখে জীবন দিতে। সপ্তধারায় স্বর্ণ থেকে মর্ত্যে নামেন গঙ্গা। ৩টি ধারা—সূচক্ষু, সীতা ও সিদ্ধ পূর্ব দিকে প্রবাহিত; আর হলদীনি, পার্বণী ও নন্দিনী ত্রিধারা পশ্চিম প্রবাহিণী। আর মূল ধারা গঙ্গা—ভগীরথের পিছু পিছু এসে মোহনায় সগর-সন্তানদের নম্বর দেখে জীবন দিয়ে নিজেকে বিলীন করে দেয় সমুদ্রে। কপিলমুনির সেদিনের সেই আশ্রম আজ আর নেই। গ্রাস করেছে সমুদ্র তাকে। নতুন মন্দির হয়েছে ১৯৪৭ খ্রিস্টাব্দে সাগর বেলা থেকে বালিয়াড়ি পেরিয়ে বেশ কিছুটা দূরে।

দেবতা যোগাসনে উপবিষ্ট মনুর দৌহিত্র সাংখ্যদর্শন প্রণেতা কপিলমুনি। জপমালা হাতে ডানহাত ওপরে তোলা, বামহাতে কমণ্ডলু। ডাইনে মকরবাহিনী চতুর্ভুজা গঙ্গাদেবী। দেবীর ডাইনে গঙ্গা হস্তে বীর হনুমান। আর কপিলমুনির বাঁয়ে সগররাজা। তাঁর বাঁয়ে সিংহবাহিনী অষ্টভুজা দেবী বিশালাক্ষী ও ইন্দ্রদেব-শ্যামকর্ণ ঘোড়া। মন্দিরের সেবাহিত অযোধ্যার Akhil Bharatiya Pancha Sree Ramanandiya Nirbani Akhara থেকে নিযুক্ত।

মেলাকালে সাময়িক যাত্রীকলোনী, হাসপাতাল, পানীয় জল, পয়ঃপ্রণালী সবেরই সুব্যবস্থা গড়ে ওঠে সরকার থেকে। তবুও লক্ষ লক্ষ লোকের সমাগমে অনাচার হবেই। তাই মেলায় যেতে টিকা ও কলেরার ইন্জেকশন নিয়ে চলা বাধ্যতামূলক। সার্টিফিকেটও দেখাতে হয় চেকপোস্টে। বছরের অন্যান্য সময়ও কাকদ্বীপ হয়ে যাওয়া চলে একইভাবে সাগর দ্বীপে। টিকাদিরও বিধি নেই মেলা ছাড়া অনাসাগর সাগরে যেতে। আলো জ্বলে জেনারেলটরে রাতভর সাগরে।

| | | |
|------------------|---------|--------------------------|
| সাগর থেকে দূরত্ব | | থাকার জন্য মেলা |
| কচুবেড়িয়া | ৩০ কিমি | বাস স্ট্যাণ্ডে |
| কাকদ্বীপ | ৩৮ " | আছে কলকাতা |
| ডায়মন্ডহারবার | ৭৮ " | বস্ত্র ব্যবসায়ী সমিতির |
| কলকাতা | ১২৮ " | ধরমশালা, কল বুকিং: সদস্য |
| | | কটিবা, বড় বাজার; বাস |

স্ট্যাণ্ডে ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ, ওঙ্কারনাথ আশ্রম; PWD IB, অব: EE, PWD Roads, Diamond Harbour; সেচ দপ্তরের বাংলা, Public Health Engineering-এর IB—উমিমুখর; বিপরীতে D M Bungalow. অদূরে Zilla Parishad Bangalor, কল বুকিং: ০ 4791385; বিপরীতে সাগরমুখী ইয়ুথ হোটেলে, পাছে পঞ্চায়তের যাত্রী নিবাস। আর হয়েছে লারিকা গ্রুপের H Larica Sagar Vihar, Sagar Island, STD 03210 ০ 40226. DAB ২৪০ ২৮৫ ভূমি/বেড ৬০; কল বুকিং: Larica, 74 Park St-17, ০ 2403583. আর হচ্ছে ভারতীয় যাত্রী নিবাস সমিতির যাত্রিকা

ও লোকস্বামী যাত্রী নিবাস সাগরে। আহাৰ ও মেলে প্রায় সৰ্বত্র—আৰ হৈছে সাধাৰণ মানৱে *ৰাজেশ্বৰী*, *অমৰ্পূৰ্ণা* ছাড়াও নানান হোটেল আহাৰেৰে ব্যবস্থা নিয়ে বাস স্ট্যাণ্ডকে ভৰ কৰে সাগরে। আবার, কাকতালি সাহিত্যে পৰদিন সাত সকালে গঙ্গা পেরিয়ে গঙ্গাসাগৰ বেড়িয়ে কলকাতায় ফেরাও যেতে পারে এদিনে।

বকখালি

কলকাতা থেকে ১৩০ ডায়মন্ডহাৰবাৰ থেকে ৮২ আৰ নামখানার ২৫ কিমি দূৰে সৰ্বজ্ঞ ছাওয়া ঝাড়বীথিকা আৰ নীল আকাশী চাঁদোয়া মাথায় নিয়ে বঙ্গোপসাগরের পূব পাড়ে পশ্চিমবাংলার দ্বিতীয় সমুদ্র সৈকত—বকখালি। সোনারা মিঠে রোদে দূৰ থেকে মনে হয় রূপালি পাতে মুড়ে দেওয়া হয়েছে বকখালির সাগরবেলা। এর শান্ত-মিষ্ণু পরিবেশ পর্যটকদের মন জয় করে। সরকারি প্রশাসন একটু যত্নবান হলে দীঘাকেও হাৰ মানাবে কালে কালে। পশ্চাৎস্থিত ছুটি কাটাৰ মানৱেৰ পৰিবেশ। তবে নানান গাছের গুঁড়ি আৰ কৰ্মমন্ডল এটেল মাটি—দুইয়ে মিলে সমুদ্রমানে কিছুটা যেন ব্যাঘাত সৃষ্টি করছে বকখালিতে। লাল সন্ধ্যা কীৰ্ত্তি সাধে লোকচুরি খেলে পায়ে পায়ে ২ কিমি দূৰে ফ্রেজারগঞ্জ (নারায়ণীতলা) বেড়িয়ে নিন বকখালি থেকে ডানহাতি বাঁচ ধরে। নামখানার বাসও যাচ্ছে ফ্রেজারগঞ্জ হয়ে।

বাংলার হোটেল এনডু ফ্রেজার প্রেমে পড়েন সেদিনের নারায়ণতলার। নামান্তর ঘটে ১৫x৫ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত দ্বীপাকার নারায়ণতলা—সাহেবের নামে নাম হয় ফ্রেজারগঞ্জ। সাহেবের উদ্যমে গড়ে ওঠে সৈকতনগরী, রূপ পায় স্বাস্থ্যবাসে। আকাশ ভরা সূর্য-তারা সেও ঢাকা পড়ে নারিকেল বীথিকায়। তবে ফ্রেজার সাহেবের নারিকেলকুঞ্জ আজ সমুদ্রগর্ভে বিলীন। দোকানপাট, পথ-ঘাট, স্বাস্থ্যবাস সেও সমুদ্র গ্রাস করেছে। তবুও যেন ফ্রেজারগঞ্জের সাগরবেলা অনেক বেশি মোহময়। জেলে নৌকার আনাগোনা—ফিশিং হাৰবাৰ হৈছে ১৯৯৫র ২২শে এপ্রিল ফ্রেজারগঞ্জের ভাঙাহাটে। মৎস্যদপ্তরের শীতাতপ সাগরকন্যা রেস্ট হাউস ও ১০টি কটেজ আছে ফ্রেজারগঞ্জে, কল বুকিং: বেনফিশ, ৪র্থ তল, P-161, VIP Rd. Cal-54, ☎ 3344931. আৰ হৈছে বাস সড়কে *ইন্সকানন রিস্ট*, DAB ২৫০৩০০; কল বুকিং: 298136/4671190।

আবার উৎসাহীরা শীতের দিনে ভটভটিতে সমুদ্র বিহারেরও স্বাদ পেতে পারেন বকখালির দক্ষিণ-পশ্চিমে জম্বুদ্বীপ বেড়িয়ে। নীলজল আৰ নীলাকাশ—দুইয়ে মিলে জম্বুদ্বীপ ৮x২ কিমি ব্যাপ্ত গৈও, গরান, কেওড়া, হৈতালের ম্যানগ্রোভ অরণ্যে বনা শস্যের, চিতল, শম্বর, চৌশিঙা দেখতে মেলে। তেমনই মেলে শীখামুটি, করাটিয়া, গোন্ধুৱা, কেউটে, পাইথন জম্বুদ্বীপে। পাখিদের রকমফেরও উল্লেখ্য। অগুণ্ঠিত সামুদ্রিক লাল কীৰ্ত্তি আৰাধন বিচরণ। তরঙ্গ-বিক্ষুব্ধ নীরব নির্জন অনাবিল প্রাকৃতিক সৌন্দর্যে ভরপুর ছোট দ্বীপ জম্বু। অক্টোবর থেকে জানুয়ারি মাসে জেলের

উপনিবেশ বসে আরণ্যক জম্বুদ্বীপে। মৎস্যই এদের জীবিকা—শুটকি হচ্ছে, বাতাসও ভারি হয়ে ওঠে শুটকির কট গন্ধে। দেবী আছে নীলাকাশী ও বনবিবি মন্দিরে। অদূরে পরিত্যক্ত লাইট হাউস। ভটভটি যাচ্ছে বকখালির ৪ কিমি আগে ডানহাতি ১ কিমি যেতে ফ্রেজারগঞ্জের ফিশিং হাৰবাৰ প্রোজেক্ট জেটি থেকে সকাল ৯-০০ ও ১০-৩০টায় ছেড়ে এডওয়ার্ড ক্রিক হয়ে ১ ঘণ্টায় ১০ কিমি জলপথে জম্বুদ্বীপের চারশো বিশ গ্রামে। ভাড়া ৮। ফেব্রু ১২-৩০ ও ১৩-৩০টায় জম্বু থেকে ফ্রেজারগঞ্জে। আৰ যাচ্ছে ভটভটি প্রতিদিন ১৩-০০টায় নামখানায়, বৃহস্পতিবার ও রবিবার ১২-০০টায় সাগর যাচ্ছে জম্বু থেকে। তবে জোয়ারের কালে ১ ফাৰলং ইটু-জল পেরুনা বাধ্যতামূলক, আৰ ভাঁটায় ১ কিমিরও অধিক ইটু-কাদা পেরিয়ে জলযান জম্বুদ্বীপে।

তেমনই বকখালি বাস স্ট্যান্ডের পিছে সাঁকো পেরিয়ে বা বাঁচ ধরে পায়ে পায়ে জয় করে নিন সংরক্ষিত বন, ইঞ্জিন খাল, ম্যানগ্রোভ অরণ্য বকখালিতে। সুন্দরবনের সুন্দরীদের সাথে ডিয়ার পার্ক, কুমির প্রকল্প, কচ্ছপ প্রকল্পও দেখে নেওয়া যায়। তেমনই সকাল ৯-০০টায় কুমিরদের খাবার খেতে দেওয়ার দৃশ্যও আনন্দ বৰ্ধন করে।



ধাকার জন্য বকখালিতে আছে WBTD-C-B Bakkhali Tourist L. PO-Lakshmipur Prabartak, via Namkhana, S 24 Parganas. ☎ (03210) 44284, DAB ২০০, অটো বেডের ঘরে (৮x৩) ডর্মি প্রথায় বেড ৬০। ১টি মিল ও ব্রেক ফাস্ট পুখৰ মূলে লধের স্বাগত কাটিনে বাধ্যতামূলক। আৰ আছে বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে প্রাইভেট হোটেল—*Baluka L.* DAB ১২৫ ১৫০ ২০০ TAB ১৭৫ ২০০ ২৫০, কল বুকিং: হোটেল ডলফিন, ৪৭ ভূপেন বোস এভিনিউ, কল-৪, ☎ 5554652; *Bay View Tourist L.* DAB ১৭৫ TAB ২২৫ ডর্মি ৫০, অব: Dosh Medical, 150 B B Ganguly St, Cal-12 বা PNB, Regional Collection Centre, 8 Lyons Range, Cal-1, ☎ 2203155; PNB-র *Holiday Home*-ও বসেছে বে ভিডি লঞ্জে। দুইয়ের মাঝে অতি সাধাৰণ—*Rajbala Tourist L.*, *Sahana L.*, *Narayani L.*, *Ma Kali L.* এদের কাছে কমনাখোর ডাবল বেডের ঘর ৮০-১২৫ টাকায় মেলে। তবুও থাকা ও খাবার বাস স্ট্যান্ডের বামহাতি *Bakkhali Tourist L.*-এর আবেদন সৰ্বাঙ্গে। বিকল্পে *Bay View*, *Baluka* চলা যেতে পারে। সাধাৰণ সাজে খাবার হোটেল *বনশ্রী*, *ওয়েসিস* ছাড়াও *রাজবালা*, *সাগরকন্যা*, *নিরলা* আছে বাস স্ট্যান্ডে। সবেদই অবস্থান বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে-বাঁয়ে। *বনশ্রী* এদের মধ্যে কুলীনশ্রেষ্ঠ। বাঁচটিও ট্যুরিস্ট লজ লাগোয়া বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫ মিনিটের পথে।

তেমনই আছে বাস স্ট্যান্ডের পাশে পশ্চিমবঙ্গ শ্রমিক কল্যাণ পৰ্শদের *ইলিডে হোম*—অবসারিকা, কল বুকিং: ৩৭ কলটোলা স্ট্রিট, ৩য় তল, কল-৭৩; *ফরেস্ট রেস্ট শেড*, বুকিং: DFO, 24 Parganas (S), Survey Building, Gopalnagar, Alipur, Cal-27, Central Bank of India Employees' Co op Society Ltd, CB: 10 Lindsay St-87, ☎ 2446789; *The Shibpur Co-operative Bank Ltd*, CB: 173 Shibpur Rd, Howrah-2,

© 6602058; Bantra Co-operative Bank Ltd, CB : 10 Narasingha Dutta Rd, Howrah-1, Kasundia Co-operative Bank Ltd, CB : 122/1 Swami Vivekananda Rd, Howrah-1, © 6602654.

আর PWD Roads-এর সুসজ্জিত বাংলা আছে নামখানাতে। অগ্রিম অনুমতিতে থাকার ব্যবস্থা মেলে।



কলকাতার শহীদ মিনার থেকে সকাল ৬-০০ থেকে সন্ধ্যা ১৮-৩০টায় আধ ঘণ্টা অন্তর CSTC-র বাসে নামখানায় পৌঁছে ৬-২০-০০টায় নৌকায় হাতানিয়া-পোয়ানিয়া নদী পেরিয়ে অপর পাড়ে প্রাইভেট বাস চেপে বকখালি। গড়িয়া থেকে বাস যাচ্ছে ৬-০০, ১৩-৩০এ; হাওড়া থেকে ৬-৪৫, ১২-২০, ১৫-৩০এ CSTC-র। আর SBSTC-র বাস যাচ্ছে ৫-০০, ৫-১৫, ৫-৩০, ৬-০০, ১৩-০০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৪-৪৫এ বেলঘরিয়া ছেড়ে নামখানায়। ঘণ্টা চারেকের পথ কলকাতা থেকে। ভাড়া ১৯.০০ + ০.২০ + ২.৭০ = ২১.৯০ টাকা। ট্রিকারও মেলে শেষারের ৮ হারে নামখানা থেকে বকখালি। ফেরার পথে ৫-০০টায় প্রথম আর ১৯-১৫য় শেষ বাসটি নামখানা ছেড়ে কলকাতায় আসে। SBSTC বেলঘরিয়ায় ফেরে ৮-৪৫, ৯-০০, ৯-৪৫, ১৬-৪৫, ১৭-১৫, ১৭-৪৫, ১৮-৩০এ নামখানা থেকে। যাতায়াত সুগম করতে ৩ কোটি ১১ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৯৯৬এ গাড়ি পারাপারের এল টি সি বার্ডও বসেছে, জেটিও হয়েছে বার্ড পারাপারের হাতানিয়া-দোয়ানিয়ায়। বাস ও গাড়িও নদী পেরুচ্ছে মৎস্য নিগমের উদ্যোগে গড়া ভূতল পরিবহণের ব্যবস্থাপনায় বার্ড চেপে ২৬.২৯৭ থেকে। আর নামখানা থেকে বকখালি যাচ্ছে ৫-১৫য় প্রথম ছেড়ে ২১-১৫য় শেষ বাসটি। ৪৫ মিনিট অন্তর এদের সার্ভিস, সময় নেয় ১½ ঘণ্টা। ফেরার পথে ৪-৪৫এ প্রথম ছেড়ে ২০-১৫য় শেষ বাসটি বকখালি ছেড়ে নামখানা আসে। দিনে দিনে বেড়িয়েও ফেরা যায় বকখালি এককভাবে বা কনডাক্টেড ট্রারে। আবার শিয়ালদহ-করঞ্জিয়া লোকাল ট্রেনে করঞ্জিয়া পৌঁছেও বাসে নামখানা চলা যায়। ট্রেনও পৌঁছতে যাচ্ছে অদূর ভবিষ্যতে নামখানায়।

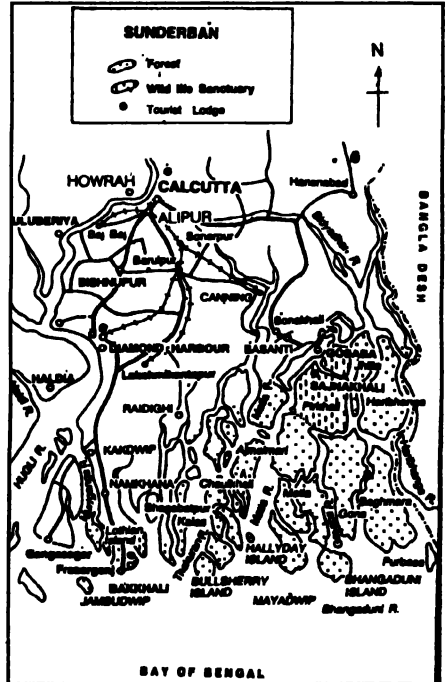
সুন্দরবন জাতীয় উদ্যান

বিভিন্ন নদীর মোহনায় অসংখ্য ছোট-বড় দ্বীপের জলাভূমিতে আপনা থেকে গড়া ম্যানগ্রোভ ঘন অরণ্যানীর নাম সুন্দরবন। সুন্দরবনের মোহময়ী প্রাকৃতিক সৌন্দর্য এক কথায় রহস্যময়। প্রকৃতি প্রেমিকদের কাছে সুন্দরবনের আকর্ষণ দুর্নিবার।

সবুজে ছাওয়া দ্বীপভূমি—ডাঙায় বাঘ জলে কুমির—তার সঙ্গে হাঙর, কামট ও আরও কত কি। তেমনই আছে খানা-গর্তে বিষধর কেউটে, গোখরো, কালনাগিনী আর গাছে গাছে লাফিয়ে বেড়ায় লাউডগা, বেতসি, গেছো বোড়া ছাড়াও নানান সর্পকুল। এমনকি বিশ্বের সাত প্রজাতির সামুদ্রিক কচ্ছপের পাঁচখমীর দর্শন মেলে সুন্দরবনে। সুদূর অতলাঙ্গ মহাসাগর, ভারত মহাসাগরীয় অঞ্চল থেকে অলিভ রিডলে সামুদ্রিক কচ্ছপ শীতে এসে ঘর-সংসার পাতে সুন্দরবনের কলস ও হ্যালিডে দ্বীপে। কলকাতার কাছাকাছি আরণ্যক আকর্ষণ এই সুন্দরবন। ভারতের আর কোনও মহানগরী

এত কাছে এমন নয়নাভিরাম আরণ্যক সৌন্দর্যের খনি নেই। ১৯৮৪তে জাতীয় উদ্যানের শিরোপা চেপেছে ২৫৮৫ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত ২৪২ (১৯৯৪-৯৫এর সূমারি মতে) রয়্যাল বেঙ্গল টাইগারের বাসভূমি ৯ম ব্যাপ্ত প্রকল্প সুন্দরবনের শিরে। ভারতের বৃহত্তম ম্যানগ্রোভ অরণ্য সুন্দরবনের কোর এলাকা ১৩৩০ বর্গ কিমি। ১০০টি দ্বীপের ৩০টিতে বসতিও গড়ে উঠেছে।

কলকাতার ৪০ কিমি দক্ষিণ-পূবে ক্যানিং শহরকে বলা হয় গেটওয়ে অব সুন্দরবন। যে কোনও সকালে শিয়ালদহ (সাউথ) থেকে ক্যানিংগামী লোকাল ট্রেনে ১ ঘণ্টায় ক্যানিং পৌঁছে লঞ্চ বা ভটভটিতে মাতলা-পুরন্দর পেরিয়ে ডক ঘাট থেকে ভ্যান/শেয়ার অটো/বাসে সোনাখালি গিয়ে আবার ভটভটিতে ১½ ঘণ্টায় বিদ্যধরী নদীর তীরে সুন্দরবনের পূর্ব প্রান্তিক গেটওয়ে গোসাবা দ্বীপে পৌঁছান। গোসাবা থেকে দুপুর ১৩-০০টায় ছেড়ে একমাত্র ভটভটি ১৬-০০টায় সজনেখালি ট্যুরিস্ট লজ পৌঁছে সাত-জেলিয়ায় যাচ্ছে। তাই উচিত হবে পায়ে পায়ে জমজমট গোসাবা বাজার টপকে ভ্যান রিকশায় দ্বীপের অপর প্রান্তের পাখিরালয় গ্রামে গিয়ে ৭—১৮-০০টায় ভটভটিতে মাতলা পেরিয়ে পরপারে গোমতী ও পাঁচখালি নদীর সঙ্গে সুন্দরবন ব্যাপ্ত প্রকল্পের—দ্বীপাকার সজনেখালি পৌঁছে যাওয়া। ওঠা-নামার খল এড়াতে উচিত হবে কলকাতার বাবুঘাট থেকে ৬-৩০টায় CSTC-র বাসভূমি বাসে ১০-০০টায় সোনাখালি পৌঁছে গোসাবা/পাখিরালয়



হয়ে সজনেখালি চলা। সময়েও সাশ্রয় মেলে বর্ষা দুয়েক এপথে। ভাটার কালে ক্যানিং-এ কর্মমাত্র চরও পেরুতে হয়। এছাড়াও বাস যাচ্ছে ৬-০০, ৭-৩০, ৭-৪৫, ৮-৩০, ৮-৪৫, ৯-০০, ১০-০০, ১০-৩০, ১১-০০, ১১-৩০, ১১-৪৫, ১৪-৩০, ১৫-৩৫, ১৬-৩০, ১৭-০০ টায় বাবুঘাট থেকে সোনাখালি। আর ফেরার বাস ৬-৩০, ৭-০০, ৭-৩০, ১০-০০, ১০-৩০, ১১-৩০, ১২-০০, ১২-৩০, ১৩-১৫, ১৪-০০, ১৪-৩০, ১৫-০০, ১৫-৩০, ১৫-৪৫ এ সোনাখালি ছেড়ে কলকাতায় আসছে।

সজনেখালি জেটি ঘাটেই রাজ্য পর্যটনের ২৯ ঘরের *Sajne-khali Tourist L, Gosaba, S 24 Parganas*, ১টি মিল ও ব্রেক ফাস্ট সহ প্রতি ২ জনা ৩৫০, ডব্লি ১৫০, অব: ট্যুরিস্ট সেন্টার, ৩/২ বি বা দী বাগ, কলকাতা-১। বসতি নেই, দোকানপাটও নেই সজনেখালি ধাপে। আহাৰ্য লজের ক্যান্টিননির্ভর। সোনার এনার্জিতে আলো জ্বলছে সজনেখালি লজে। সজনেখালি পৌছে লাগোয়া বন দপ্তরের বীট অফিস থেকে অভয়ারণ্যে অবস্থানের পারমিট করে নিতে হয়। ভারতীয়দের প্রথম দিন ৫ পরের দিনগুলি ২ হারে।

আর আছে লজ ও বীট অফিসের মাঝে কুমির পুকুর, কচ্ছপ পুকুর, কামট পুকুর। প্রতি বিকালে আহাৰ্য দেওয়া হয় এদের। তেমনই আসে হরিণেরা বেকালীন আহাৰ্যে কুমির পুকুরের পাড়ে। ম্যানগ্রোভ ইন্টারপ্রেটেশন সেন্টার অর্থাৎ মিডজিয়মটিও সজনেখালির আর এক দর্শন। যথেষ্ট যাত্রী হলে Video Film Show-এ দেখে নেওয়া যায় অরণ্যচরদের রোজনাচা মিডজিয়মের অডিটোরিয়ামে। ১৯৯১ এ ২টি বাঘও রাত কাটায় লজের লনে। আর সঙ্গী করুন সুন্দরবনের মধু—বন দপ্তরের বীট অফিসে কিনতে মেলে।

লজ লাগোয়া পাখিরালয়। ভটভটিতে যাতায়াত। জুন থেকে অক্টোবরে দেশ-দেশান্তর থেকে পাখিরা এসে নীড় বাঁধে, ডিম থেকে শাবক—সেও এক মনোহর দৃশ্য। হাজার হাজার বিচিত্র পাখির কলকাকলিতে মুখরিত বনভূমি। পাখিদের পাখায় নানান রংয়ের বর্ণালী। হেতাল, গরান, হোগলা, সুন্দরী গাছের বাসায় বক, কান্তেচরা, শামুকখোল, পানকৌড়ি, টিউবি, সাদা কাক, জংহিল, গরান, বাটাস, টিয়া, খঞ্জনি, মিনিভেট ছাড়াও ৫০০রও অধিক প্রজাতির পাখির ভিড়। আর ভিড় রঙিন প্রজাপতি। কত রকমের যে প্রজাপতি এখানে দেখতে মেলে সেও গুণে শেষ করা যায়

না। ভটভটিতে চলতে চলতে বাটাওয়ার থেকে দেখে নেওয়া যায়। তবে, নিরস্ত্র ও অসতর্ক অবস্থায় জলযান ছেড়ে ডাঙায় ওঠা নিরাপদ নয়। সাপের লেখা কি বাঘের দেখা কোনটাই অস্বাভাবিক নয় অভয়ারণ্যে। তেমনই কুমির ও কামট থেকেও সদা সাবধানতা দরকার চলতে-ফিরতে জলযানে।

অদূরে সুধন্যখালি নদীর পাড়ে সুধন্যখালি ওয়াচ টাওয়ার। জল আর জঙ্গলে ভরা খাঁচার মাঝ দিয়ে পথ উঠেছে টাওয়ারে। দৃষ্টিও অগম্য গহীন বনের গহন অরণ্যে। ৬৬ধর্মী উদ্ভিদও রয়েছে সুন্দরবনে। ৬ থেকে ১২ ফুট উঁচু ম্যানগ্রোভ এরা—রয়্যাল বেঙ্গল টাইগারদের ন্যাচারাল হ্যাবিট্যাট। তারই মাঝে ওয়াচ টাওয়ারের নিচুতে মিঠা জলের পুকুরে বনচরুরা আসে তৃষ্ণা মেটাতে। এমনকি, বাঘেরও দর্শন মেলা অস্বাভাবিক নয় সুধন্যখালির টাওয়ার থেকে। শদেড়েক টাকায় ঘণ্টা তিনেকের সফরে ভটভটিতে সাঙ্গ করা যায় এ-সফর। চলা যায় দিনভর মিনি লঞ্চ সফরে শ পাঁচেক টাকায় সড়কখাল হয়ে গাজিখালি, পঞ্চমখালি, নেতিধোপানি, সুধন্যখালি। ১০০ টাকায় গাইড নেওয়া বাধ্যতামূলক। ক্যামেরারও চার্জ লাগে। তেমনই ডেসে পড়া যায় অক্টোবর থেকে মার্চে সোনা ঝরা মিঠে রোদে ভটভটি বা লঞ্চে সুন্দরবনের দিগ্বিদিকে। ২৫১ বাঘের সাথে ত্রিশ সহস্রাধিক চিতল হরিণের বাস সুন্দরবনের বাদাবনে। সব ধরনের সতর্কতা নিয়ে এখানকার বনভূমিতে যেতে হয়। ওয়াচ টাওয়ার হয়েছে—সজনেখালি, নেতিধোপানি, হলদিবাড়ি, বুড়িরখাবরি, চোরা-গাজিখালিতে। আর জ্বরদণ্ড লঞ্চার ব্যবস্থা থাকলে বঙ্গোপসাগরের মুখেও বেড়িয়ে আসতে পারেন এই সুযোগে।

ক্যানিং ছাড়া কাকদ্বীপ/ নামখানা/ বাসন্তী/ রায়দিঘি থেকেও সুন্দরবনে যাওয়া চলে। নিয়মিত বাস সংযোগও রয়েছে প্রত্যেকের সঙ্গে কলকাতার। ঠাকরুন নদীপথে শেষ দ্বীপ বঙ্গোপসাগরের কোলে বাঘের রাজ্য ২৪৮৫৪ একরের কলস দ্বীপ। অদূরে ঢুলিভাসানি ও মাতলা নদীর সঙ্গম। ডাইনে যেতে বিশাল বালিয়াড়ি। মায়াময় কুহকী এই বালিয়াড়ি হাতছানি দেয়—চড়ুইভাতির সুন্দর পরিবেশ। অন্দরে নারিকেল বীথিকায় ছাওয়া মিষ্টিজলের পুকুর।

নির্বাচিত



১০০.০০

১৯৬৭-১৯৮৫

শিশু ও কিশোরদের ঘুম
কেড়ে নেওয়া মাসিক পত্রিকা
রোশনাই-এর নির্বাচিত সঞ্চলন

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রীট মার্কেট ● কলকাতা-৭০০০০৭ ●

ফোন ২৪১-২৩৮৬/২৪১-৪৬০৮

বাঘেরা আসে তৃষ্ণা মেটাতে। বিপদও তাই পদে পদে। তবে, ভাটার কালে জঙ্গল যায় সরে—চর বাড়ে, নামা যেতে পারে বালিয়াড়িতে। উত্তর-পূর্ব বরাবর মাতলা নদী-মুখে হ্যালিডে দ্বীপের অভয়ারণ্যেও এই পথে যাওয়া যেতে পারে। শীতের অমাবস্যা ও পূর্ণিমার ২-৩ দিন আগে-পরে সামুদ্রিক কচ্ছিরেরা ডিম পাড়তে আসে হ্যালিডে ও কলস দ্বীপে। হ্যালিডে ছেড়ে উত্তরে যেতে প্রশস্ত হয়েছে মাতলা নদী। এপথেই ডাইনে বাঁক নিতে নেতিথোপানির ঘাট। চাঁদ সওদাগরের শিব মন্দিরের ধ্বংসস্থলে আজ নাকি বাঘেরা মজলিস বসায়। ছোট ছোট নদী আর সরু সরু ভারালি হয়ে পঞ্চমুখানি, গাজিখালি, চোরাগাজিখালি, সুন্দাখালি হয়ে চলা যেতে পারে সজনেখালি। তেমনই সোনাখালি থেকে লক্ষে বা ভটভটিতে বিদ্যাধরী নদী পেরিয়ে অপর পাড়ে বাসন্তীও বেড়িয়ে চলা যেতে পারে। বাসন্তী থেকে মিনি/অটোয় মসজিদবাড়ি গিয়ে ভটভটিতে গোসাবা পৌছেও চলা যেতে পারে সজনেখালি। আদর্শ পল্লীরাপে অতীতে খ্যাতি ছিল গোসাবার। এমনকি আঞ্চলিক লেনদেনে গোসাবার কারেন্সি নোটেরও প্রচলন ছিল হ্যামিলটন সাহেবের কালে।

গোসাবাতে সাধারণ সাজে হোটেলও আছে—*অন্নপূর্ণা, ভাগ্যলক্ষ্মী, জয় মা তাবা*। আর আছে *PWD ও সেচ দপ্তরের বাংলা* গোসাবায়। স্কটল্যান্ডের সন্ধান স্যার ড্যানিয়েল হ্যামিলটন সাহেব ১৯১৬ খ্রিস্টাব্দে সমবায়ের মাধ্যমে গ্রামীণ উন্নয়নের কর্মসূচী শুরু করেন গোসাবায়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *সাহেবের বাংলায়* গোসাবা ও হ্যামিলটনগঞ্জে। আর হয়েছে ৬কিমি দূরে গৌমর নদীর তীরে গোসাবা দ্বীপের পাখিরালয় গ্রামে *জেলা পরিষদের ১৬ বেডের ট্যুরিস্ট লজ*, DAB ১২৫ ডর্মি বেড ৩৫; আহারও মেলে—*আলোও জ্বলাছে সোলারে*। অব্: South 24 Parganas Zilla Parishad, New Administrative Building, 2nd floor, 12 Biplobi Kanai Bhattacharya Sarani, Cal-27, ০ 4791385। আর আছে বিকশা স্ট্যান্ডার্ডের পাখিরালয়ের *Indrakanan Resort & Hotel*, DAB ২০০ ডর্মি বেড ৫০; অব্: Ajit Kr Shill, Chatterjee International, 33A, J L Nehru Rd, Room No 7-A, 12th floor, Cal-71, ০ 298136/4671190।

বাসে নামখানা পৌছে ফেরি লক্ষেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় সুন্দরবনের দিগ্বিদিক। নামখানা থেকে ২০ কিমির জলদূরত্বে লোথিয়ান দ্বীপের ভাগবতপুরে কুমির প্রকল্প হয়েছে। কুমিরের চাষ হচ্ছে প্রকল্পে। ডিম থেকে ৩-৪ বছরের কুমির শাবকদের দর্শন মেলে। আর মৎস্য প্রকল্প হয়েছে ধাপ্তি ফরেস্টে। ভ্রমণের সঙ্গে এসবের আকর্ষণও কম নয়। যাত্রী ভটভটি যাচ্ছে ১৩-০০, ১৪-৩০, ১৫-০০টায়। ভটভটি যাত্রীদের কুমির প্রকল্প দেখে সে-রাত্রে নামখানায় ফেরা সম্ভব নয়। তবে শীতের ছুটিছটায় ভটভটি মেলে যাতায়াতে। থাকার ব্যবস্থা অতি সাধারণ ২ ঘরে নামখানাপুরে। তাই অভ্যুৎসাহীরা কাকদ্বীপ সেচ দপ্তর থেকে সীতারামপুর বাংলা বুক করে একটার ভটভটিতে নামখানা ছেড়ে ভাগবতপুরে পৌছে এক ঘণ্টায় প্রকল্প দেখে ভাগবতপুর থেকে নামখানা

ছেড়ে আসা দ্বিতীয় ভটভটি চেপে দিনান্তে সীতারামপুর পৌছে সেচ দপ্তরের বাংলায় রাতের বিশ্রাম নিতে পারেন। দ্বিতীয় সকালে একই ভটভটিতে নামখানা ফিরে বাসে কলকাতায়।

পথেই পড়ে সুন্দরবনের তিন অভয়ারণ্যর অন্যতম সপ্তমুখী নদীর পাড়ে লোথিয়ান দ্বীপ। বাঘের অভাব ঘটলেও সাপের আধিকা জনবসতিহীন লোথিয়ানে। ১৪৪৪ বর্গকিমি ব্যাপ্ত লোথিয়ানে ম্যানগ্রোভ বটানিক্যাল গার্ডেন গড়ে উঠতে যাচ্ছে। নামখানা থেকে পাথর প্রতিমার জলখানে ১½ ঘণ্টায় চলা যেতে পারে লোথিয়ানে। ১ ঘরের *রেস্ট শেড* আছে; বুকিং: DFO, দক্ষিণ ২৪ পরগণা।

সুন্দরবনের আর এক অংশ বসিরহাটের দিকে—হাসনাবাদ ৮০ কিমি ও ন্যাজট ৯৪ কিমি হয়েও চলা যেতে পারে সুন্দরবনের অন্দরে। তবে এদিকের পথঘাট পর্যটনে আজও তত জনপ্রিয় হয়ে ওঠেনি।

তেমনই কলকাতা থেকে ৬০ কিমি দূরে ২ ঘণ্টার পথে নীল আকাশের নিচে পিয়ালি নদীতে ঘেরা স্বপ্নময় দ্বীপ পিয়ালি। জনহীন এই দ্বীপে সৃষ্টিাকুর লুকাচুরি খেলে বাদাবনের সাথে। নবোদ্যমে পর্যটন কেন্দ্র রূপে গড়ে উঠলেও আজ যেন রাজহীন রাজবাড়ির মত উদাসীন। শিয়ালদহ সাউথ থেকে ট্রেনে বা ধরমতলা থেকে বারুই-পুরের বাসে দোসরাহাট পৌছে লক্ষে পিয়ালি। রাজা পর্যটনের ট্যুরিস্ট কটেজগুলি সম্পূর্ণতা পেয়েও দ্বার আজও রুদ্ধ পিয়ালি দ্বীপে। তাঁবু মেলে রাতের অবস্থানে। এমনকি বিলাস ভ্রমণের জন্য তৈরি যন্ত্রচালিত সুসজ্জিত জাহুবি ও ভাগীরথী বোট দুটিও পড়ে পড়ে বেহাল আজ।

শীতকাল সুন্দরবন ভ্রমণের মনোরম সময়। তবে, পাখিরালয় দর্শনার্থীদের উচিত হবে জুন থেকে সেপ্টেম্বর মাসে চলা। তেমনই প্রতি বছর বৈশাখ মাসের শেষ মঙ্গলবার বনের দেবী বনবিবির পূজোতে অংশ নেয় হিন্দু-মুসলিম নির্বিচারে সুন্দরবনে। নিজেদের ব্যবস্থায় ভেসে পড়তে পারেন ভাড়াই লক্ষ নিয়ে আপনজনদের সঙ্গী করে। পর্যাপ্ত খাবার সঙ্গে নিন। আমোদ-প্রমোদের টুকটাকিও সঙ্গী করুন। তবে, সুন্দরবনে প্রবেশে অনুমতি লাগে—Chief Conservator of Forest, Govt of WB, 3rd Floor, P-16 India Exchange Place, Cal-1 বা Field Director, Sundarban Tiger Reserve, Canning, South 24 Parganas থেকে। টিকিট লাগে প্রকল্প দর্শনার্থীদের, ছবি তোলায়ও অনুমতি লাগে বনবিভাগ থেকে। ওয়াচটাওয়ারে রাত কাটাতেও বিশেষ অনুমতি লাগে Forest Secretary বা Chief Conservator-এর। আর সেপ্টেম্বর থেকে মার্চ মাসে রাজা পর্যটন নানান ধর্মী সফরে সুন্দরবনের হলুদ নদী আর সবুজ বনের পরশ পাওয়ার ব্যবস্থা করে। চেনা যায় সেই মানুষদের, যারা বাঘের সঙ্গে লড়াই করে বেঁচে আছে কিংবা সাপের মাথায় নাচে—বাঙালি নামক জাতির এক অংশকে—যাদের জীবনযাত্রা আজও আপনার অজানা। মরসুমে ক্যানিং থেকেও প্রাইভেট লক্ষ যাচ্ছে

নানানধর্মী প্যাকেজে। টিকিটও মেলে সহজে। ভাড়া য় সুবিধা মেলে প্রাইভেট লঞ্চে।

চন্দ্রকেতুগড়

কলকাতা থেকে ২৮ কিমি দূরের বাসাসত পেরিয়ে উত্তর ২৪ পরগনা জেলায় আরও ৪৩ কিমি গিয়ে বসিরহাট। দুইয়ের মাঝপথে বেড়াটাঁপা। বাস থেকে নেমে ডাইনে হাড়োয়ামুখী পথে ১৫ মিনিট যেতে চন্দ্রকেতুগড়ে ১৯৫৫য় আবিষ্কৃত হয়েছে মহেশ্বেদোড়োরই সমকালের এক বন্দর-নগরী তথা রাজ্য চন্দ্রকেতুর গড়। দেবালয়, হাজিপুর, শান-পুকুর, ঝিকড়া প্রভৃতি গ্রামের ৩ বর্গ কিমি জুড়ে ২৫ ফুট উঁচু চন্দ্রকেতুগড় টিপি। মৌর্য, কুষাণ, গুপ্ত, সেন ও পাল যুগের নিদর্শন মিলেছে এই টিপির নিচে। মিলেছে মাটির পাইপ, নর্দমা, ছাচে ঢালা তামার মুদ্রা, হাতির দাঁতের বলয় ও মালা, দর্পণ হাতে ব্রোঞ্জের নারীমূর্তি, মিথুন মূর্তি, পোড়ামাটির ফলকে নৃত্যরতা নারী, মাটির পাত্র, হিন্দু পুরাণের নানান দেব-দেবী, পোড়ামাটির নাগদেবী, নানানধর্মী সিলমোহর, নিত্যব্যবহার্য টুকিটাকি, টেরাকোটার রাবণ কর্তৃক সীতা-হরণের আখ্যান, অশোকবনে সীতা ও হনু, যক্ষিণী মূর্তি, গাছে চড়ছে পুরুষ, বৌদ্ধ সম্মাসী ছাড়াও ৪৫ ফুটের খ্রিস্টপূর্ব ৭-৬ শতকের বর্গাকার উপাসনা গৃহ, আরও কত কি! এমনকি (খ্রি পূ ৬-৪ শতকের) খরোষ্টি লিপিও মিলেছে চন্দ্রকেতুগড়ে। বিধান মিলেছে—২৫০০ বছরের অতীত টলেমির গঙ্গারিডিসি আজকের চন্দ্রকেতুগড় বলে। গঙ্গার শাখা আজকের কালিন্দী বয়ে যেত নগরীর পাশ দিয়ে। ঘোড়ার ব্যবসার অন্যতম কেন্দ্রও চন্দ্রকেতুগড়। তবে, পরিতাপের বিষয় অনাদর আর অবহেলায় চন্দ্রকেতুগড়ের হারানো মানিক আজও লোকচক্ষুর অগোচরে। উৎসাহীরা কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের আশুতোষ মিউজিয়াম (বিধান সরণী)-এ দেখে নিতে পারেন খননে পাওয়া নানান সন্টার। ঠিক তেমনই স্থানীয় অনুসন্ধিৎসু হাড়োয়ার আব্দুল জব্বারের ব্যক্তিগত সংগ্রহে বা বেড়াটাঁপা বাস স্ট্যান্ডের কাছে দেবালয়ে দিলীপকুমার মৈত্রে-র সংগ্রহশালায় প্রতি রবিবার দেখে নেওয়া যায় চন্দ্রকেতুগড়ের পুরাতত্ত্বের নানান নিদর্শন। পরিতাপের বিষয় টিপি সর্বস্ব চন্দ্রকেতুগড়ে আজও কোনো প্রদর্শনশালা গড়ে ওঠেনি। নিত্য-নতুন আবিষ্কারও ব্যক্তি স্বার্থের পণ্য হয়ে হারিয়ে যাচ্ছে চিরতরে। তেমনই আবিষ্কৃত হয়েছে বাসপথের বায়ে গুপ্তযুগের মন্দির, অমৃতকুণ্ড, বহুবুজ ইমারত দমদমা তথা বিক্রমাদিত্যের নবরত্ন সভার অন্যতম জ্যোতির্বিদ বরাহমিহির ও তার স্ত্রী ভারতখ্যাত খনার খনা-মিহিরের টিপি বেড়াটাঁপায়।



শ্যামবাজার (খালপাড়) থেকে ৭৯, ৭৯এ, ৭৯সি বা দক্ষিণেশ্বর থেকে বা ধরমতলা থেকে ২৪৮ রুটের লাক্সারি বাস, CSTC-র হাসনাবাদ/ন্যাঙ্গাট/বসিরহাটের ৩০ খানা বাসে ১:১৫ ঘণ্টায় চলা যেতে পারে

বেড়াটাঁপায়। ট্রেনও যাচ্ছে শিয়ালদহ/ বাসাসত থেকে হাড়োয়া/ বসিরহাট/ টাকি হয়ে ১:১৫ ঘণ্টায় হাসনাবাদ। হাড়োয়া রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি দূরে চন্দ্রকেতুগড়। দর্শন না মিললেও রোমন্থন করে আসা যায় সে যুগের জীবন-আলেখ্য চন্দ্রকেতুগড়ে। থাকার কোনও ব্যবস্থা নেই চন্দ্রকেতুগড়ে। দিনান্তে কুলায় ফিরুন বাসে।

বেড়াটাঁপার ৮ কিমি দূরে ত্রিকালদর্শী ব্রহ্মাঙ্ক মহাপুরুষ শ্রীশ্রী লোকনাথ ব্রহ্মচারী বাবার আবির্ভাব ঘটে ১১৩৭ বঙ্গাব্দে চাকলা গ্রামে। মন্দির হয়েছে ভ্রমণ মানচিত্রের নতুন তীর্থ পুণ্যভূমি চাকলায়। *যাত্রীনিবাস*ও আছে লোকনাথ মন্দিরে। শিয়ালদহ-বনগ্রাম শাখা রেলের গুমা থেকেও পথ এসেছে চাকলায়। ভান রিকশা চলছে বেড়াটাঁপা ও গুমা থেকে। গাড়িও পৌছে যায় নিজস্ব ব্যবস্থায়।

তবুও যেন উচিত হবে বসিরহাট থেকে ১৮ কিমি দূরে প্রশস্ত ইছামতীর পাড়ে টাকি মিউনিসিপ্যালিটির *নৃপেন্দ্র অতিথিশালায়* DAB একতলায় ৮০-১০০ দ্বিতলে ১০০-১২৫; একরাত কাটিয়ে অপর পাড়ে বাংলাদেশের (খুলনা জেলার সাতক্ষীরা) পরশ নিয়ে ফেরা (বুঁকিং: চেয়ারম্যান, টাকি পৌরসভা, টাকি, পিন-৭৪৩৪২৯)। ভাটা এড়িয়ে অতিথিশালার মুখের ফেরি ঘাট থেকে ভটভটিতে আধ ঘণ্টায় ভেসে চলা যায় ইছামতীর ভালেচ্ছাসে স্ট্রট রাজনগর দ্বীপে। বসতিহীন ছোট দ্বীপ—থাকার কোনও ব্যবস্থা নেই রাজনগরে। টাকির রাজবাড়িটিও ইছামতী গ্রাস করেছে। ভারতের প্রাক্তন সেনাপ্রধান শঙ্কর রায়চৌধুরীর পেঁচুক বাড়িটিও আজ ইছামতীর কবলে। অদূরে রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ টাকির ইছামতী তথা শতীন্দ্র বন বীথি পিকনিক স্পট। বোটিং-এরও ব্যবস্থা মেলে ইছামতীর জলে। দিনভর চড়ুইভাতির ব্যবস্থা সহ *রাজবাড়ি পিকনিক সেন্টার*, ৩ (03217) 47227. সুইট ২০০, ২৫০, ৩৫০, ৪৫০ পাঁচ জনের থাকার কমন বাথ ১৫০ বাথ সংলগ্ন ২০০। CSTC-র বাসও যাচ্ছে ৭-০০, ১০-১৫, ১৪-০০ টায় ধরমতলা থেকে; ফেরে ৬-৪৫, ১০-২৫, ১৪-০০ টায় টাকি থেকে কলকাতায়। তেমনই উচিত হবে সুন্দরবনের দুই তোরণ-দ্বার দানশা নদীর পাড়ে হাসনাবাদ ৮০ কিমি ও ন্যাঙ্গাট ৯৪ কিমি বেড়িয়ে নেওয়া। ফেরি নৌকায় দানশা পেরিয়ে চলা যায় পাড় হাসনাবাদ হয়ে হিঙ্গলগঞ্জ বা সন্দেখখালি ছাড়াও নানানদিকে। হিঙ্গলগঞ্জের রাধাগোবিন্দ মন্দিরটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। থাকারও হোটেল মেলে সাধারণ সাজে, খাবার হোটেল অজস্র হাসনাবাদ ও ন্যাঙ্গাট-এ। আর হিঙ্গলগঞ্জে জেলা পরিষদের ৩২ বেডের ২টি *পর্যটক আবাস* হয়েছে ১২ লক্ষ টাকা ব্যয়ে। ন্যাঙ্গাট, হাসনাবাদ, টাকি থেকে বসিরহাট হয়ে বাস আসছে কলকাতায়। চলার ফাঁকে শাহী মসজিদটি দেখে নেওয়া যায় বসিরহাটে। থাকারও হোটেল আছে *Town H, New Town H* বসিরহাটে। ট্রেনও যাচ্ছে হাসনাবাদ থেকে টাকি/বসিরহাট/বাসাসত হয়ে শিয়ালদহে।

সিকিম

হিমালয়ের বিউটি স্পট সিকিম। পশ্চিমবাংলার শিরে কিরীট হয়ে অবস্থান সিকিমের। আর কিরীটের মধ্যমণি বিশ্বের তৃতীয় উচ্চতম শৃঙ্গ কাঞ্চনজঙ্ঘায় বিচ্ছুরিত জ্যোতির্ময়ী আলোয় দীপ্ত পূব, পশ্চিম, উত্তর, দক্ষিণ—চার জেলায় গড়া সিকিম রাজ্য। তেমনই বৌদ্ধ স্থাপত্যের নিদর্শন সারা রাজ্য জুড়ে। ধর্মই এদের সমাজ-জীবন প্রভাবিত করে। ১৯৪৮টা মনান্তি ও মণি লাখাং সারা রাজ্য জুড়ে। তবে, উল্লেখ্য এদের মধ্যে পশ্চিম সিকিমের Pemayangtse এবং Tashiding; পূর্ব সিকিমের গ্যাংটকে Enchy ও Rumtek; দক্ষিণ সিকিমে Ralong; আর উত্তর সিকিমে Phodong ও Tolung. আয়তনে ভারত রাষ্ট্রের দ্বিতীয় ক্ষুদ্রতম রাজ্যও এই সিকিম। রাজধানী তার গ্যাংটক। পুরো রাজ্যটাই পাহাড়ী—উত্তর-দক্ষিণে ১০০ কিমি আর পূর্ব-পশ্চিমে ৬০ কিমি এর বিস্তার। সমুদ্রপৃষ্ঠ থেকে এলাকাভেদে ২৪৪ থেকে ৮৫৪০ মি এর উচ্চতা। দক্ষিণে পশ্চিম বাংলার দার্জিলিং গোখা হিল কাউন্সিল, উত্তরে কাঞ্চনজঙ্ঘা ও তিব্বত, পূর্বেও তিব্বত ও ভূটান আর পশ্চিমে নেপাল। তিস্তা নদ বয়ে চলেছে এই নয়নলোভন প্রকৃতির মাঝ দিয়ে। অনিন্দ্যসুন্দর প্রাকৃতিক দৃশ্যের অধিকারী পাহাড়ী রাজ্য সিকিমের তুলনা হয় না। চলার পথেও বারবার চোখ ধাঁধায় Sikkim is Jewel in the Crown of India. তেমনই চোখে পড়ে বৈচিত্র্যের নানান গাঁথা—Keep your nerves on a sharp curve. It is better to be 15 minutes late in this world. than to be 15 minutes earlier in the next. Drive on horse power, not on rum power পথপাশের পাথরের ফলকে।

দীর্ঘকাল ধরে সিকিম ছিল ভারতেরই আশ্রিত রাজ্য। শাসক যদিও মহারাজা তবে বিদেশনীতি ও প্রতিরক্ষা ছিল ভারতের হাতে, এমনকি তার দেওয়ান অর্থাৎ প্রধানমন্ত্রী নিয়োগ করত ভারত সরকার। ১৮৬১ থেকে চলে আসা এই প্রধার বিলুপ্তি ঘটেছে ২৬শে এপ্রিল ১৯৭৫এ সিকিমের ভারতভুক্তিতে। ভারতীয়দের কাছে সিকিমের দরজা অব্যাহত হলেও পূর্বে রোংলি ও উত্তর সিকিমের ফোডং-এর পর দ্বার আজও রুদ্ধ—Restricted Area Permit লাগে। আর বিদেশীদের স্পেশাল এরিয়া পারমিট লাগে সিকিম ভ্রমণে। Sikkim Tourist Information Centre, Mahatma Gandhi Marg, Gangtok, ৩২০০৬৪, Fax ২৩৪২৫ বা ১৪ Panchasheel Marg, Chanakyapuri, New Delhi-110021, ৩০১৫৩৪৬ বা SNT Colony, HCRd, Pradhan Nagar, Siliguri, ৩২৪০২ বা Bagdogra Airport বা ৪-C, Poonam Building, ৫/২ Russel St, Calcutta-700017, ৩২৭৫১৬ বা Immigration Office—Delhi, Mumbai,

Calcutta, Chennai Airport-কে পাসপোর্টসহ ১ কপি ছবি দিয়ে আবেদনের প্রথা। অনুমতিও মেলে ১৫ দিনের যথাসত্ত্ব। তবে, উত্তর ও পূর্ব সিকিমে বিধি-নিষেধ আছে। ৪ থেকে ২০ জনের দলের ট্রেকিং-এর অনুমতি মেলে পশ্চিম সিকিমে (Dzongri Region). Foreigners' Registration Office, Gangtok থেকে ট্রেকিং-এর অনুমতির সাথে সময়ও মেলে অতিরিক্ত।

সিকিমের ৩৬% বনাঞ্চল। শাল, শিমুল, টোনি, ফার, ওক, বার্চ, ম্যাপেল, নানানধর্মী বাঁশ প্রভৃতি বনজ সম্পদে খুবই সমৃদ্ধ সিকিম। ৪০০০ধর্মী বৃক্ষ-তরু, ৬৫০ রকমের ফুল ফোটে সিকিমে। রঙবেরঙের রঙেডেনড্রন, প্রিমুলা ও অ্যালপাইন ফুল এপ্রিল থেকে জুনে রমণীয় করে তোলে উপত্যকা। সঙ্গে মেলে ৬০০ধর্মী অর্কিড ও ক্যাকটাসের স্বর্গীয় সুসমা। বড় এলাচ, কমলাও হচ্ছে সিকিমে। তেমনই রয়েছে নাম না-জানা ৫৫০ রকমের পাখি ও ৬০০ ধরনের প্রজাপতি। যে-কোনও পর্যটকের চোখ ও কানকে তৃপ্ত করে প্রকৃতি রানীর নিপুণ হাতে গড়া সুন্দর এই উপত্যকা। লোকসংখ্যা প্রতি বর্গ কিমি-তে মাত্র ৪৪। মোট জনসংখ্যার ৭৫% নেপালী, লেপচা ১৮%, ভুটিয়া ৬% আর ভারতের অন্যান্য রাজ্যের ব্যবসায়ীরা পূরণ করেছেন বাকি ১ ভাগ। ৬০% হিন্দু, ২৮% বৌদ্ধের বাস সিকিমে। কিংবদন্তী আর পৌরাণিক আখ্যান আজও এদের সমাজ জীবনকে প্রভাবিত করে। ইয়েতিরি ভয়ে ভীত এরা আজও।

১৫ ও ১৬ শতকে লামাতন্ত্রে সংঘাত বাধে তিব্বতে। দালাই লামা পঞ্চী Galuk-pa অর্থাৎ হলুদ টুপি প্রতিপত্তি তিব্বতে। সিকিমে তখন লাল টুপি অর্থাৎ Nyingma-pa বৌদ্ধধর্মের প্রভাব। তাই সংঘাতে জর্জরিত লাল টুপি বুদ্ধিস্টরা তিব্বত ছেড়ে এসে সিকিমে আশ্রয় নেয়। পরবাসে, নতুন দেশে গড়ে তোলে লিখু ভাষায় Su Khim অর্থাৎ নতুন রাজগৃহ বা প্যালেস। কালে কালে অতীতের দেনজং বা দেমাজং তিব্বতীয়দের সুখিম বা সু-হিম ব্রিটিশের কলমে সিকিম হয়েছে। দ্বিমতে নেপাল রাজকন্যার সুখের ঘর সু-হিম থেকেই সিকিম হয়ে থাকবে। ১৩ শতকে অসমের পাহাড় থেকে এসে লেপচারাই প্রথম বসতি গড়ে Nye-mac-el Paradise অর্থাৎ সিকিমে। আর ১৬৪১এ লাসার দালাই লামা নিয়োগ করলেন গিয়ালপো অর্থাৎ প্রথম বৌদ্ধ রাজা সিকিমের রাজনৈতিক ইতিহাসে। দ্বিমতে, Lhasun Namkha Jigme তিব্বত থেকে সিকিম অর্থাৎ জোংরি হয়ে ইয়াকসাম এলেন ১৬৪১এ। অভ্যর্থনা জানাতে প্রধান লামারাও এলেন ইয়াকসামে। সেই ভিন প্রধান লামা পূর্ব থেকে আসা Phuntsog Namgyal কে প্রথম চোগিয়াল

মনোনীত করেন সিকিমের। আজও দেখে নেওয়া যায় সেদিনের সেই পাথুরে করোনেশন থ্রোন ইয়াকসামে। রাজ্যও ছিল আরও বিস্তৃত সকালে। এমনকি নেপালের পূর্বাংশ, তিব্বতের চুখী উপত্যকা, ভূটানের হা উপত্যকা, ভারতের সমতল তরাই অঞ্চলের সাথে দার্জিলিং ও কালিম্পং জেলাও ছিল সিকিম রাজ্যের অংশ।

১৭১৭-৩৪এ সিকিমের ৪র্থ রাজার কালে নানান যুদ্ধে জিতে ভূটান দখল করে দক্ষিণী পাহাড়তলীর সাথে কালিম্পং। পূর্বও দখল করে তিব্বত থেকে ভূটিয়ারা এসে। আর ১৭৮০তে নেপাল থেকে আসা গোখারী দখল নেয় পশ্চিম সিকিমের। চীনের নেতৃত্বে ভূটান ও লেপচাদের সম্মিলিত বাহিনীর কাছে নাস্তানাবুদ হয়ে দক্ষিণে যেতে ভারতে ব্রিটিশের সঙ্গে সংঘাতে জড়িয়ে পড়ে গোখারীরা। ১৮১৭য় ব্রিটিশের সঙ্গে সন্ধিতে বসে নেপালের সীমানা গড়ে গোখারী। সিকিম রাজ্যের অধিকৃত অঞ্চলও ছেড়ে দেয় তারা। ভূটানও দখল ছাড়ে সিকিম-রাজকে। সংঘাত মেটে প্রতিবেশীদের সাথে নেপাল-তিব্বত-ভূটানের মাঝে বাফার রাষ্ট্র সিকিমের।

সিকিম □ রাজধানী: গ্যাংটক। আয়তন: ৭০৯৬ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৪০৩৬১২। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.০৪%। পুরুষ: ২১৪৭২৩। নারী: ১৮৮৮৮৯। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৮৭২২%। বৃদ্ধির হার: ২৭.৫৭%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৫৭। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৮৮০। সাক্ষরের হার: ৫৬.৫৬%। প্রধান ভাষা: সিকিমীজ ও গোখালী। লেপচা, লিম্বু, ভূটিয়া, ইংরেজি ও হিন্দীর চল আছে সিকিমে। মাথা পিছু বাৎসরিক আয়: ৪৩৯৬.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। সারা রাজ্যটাই পাহাড়ী। বেড়াবার মরসুম: মার্চ থেকে জুন। আবার অক্টোবর থেকে ডিসেম্বরের মধ্যভাগ। তবে, এপ্রিল থেকে জুন ও অক্টোবর থেকে ডিসেম্বরের প্রথম ফুলেরা রমণীয় করে তোলে সারা সিকিম রাজ্য। এপ্রিল-মে ও সেপ্টেম্বর-অক্টোবর মাসে হাঙ্কা উলেন বসন চললেও শীতের দিনগুলিতে ভারী উলেন প্রয়োজন গ্যাংটক ভ্রমণে। তাপমান: গ্রীষ্মে ২৮—৩৩.১° আর শীতে ১৮.৫—০.৪° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে।

দিন সাতকে বেড়িয়ে আসুন সিকিম। তবুও যেন দার্জিলিং ভ্রমণ-পথে কালিম্পং থেকে গ্যাংটক আর শিলিগুড়ি থেকেই সরাসরি পেলিং অর্থাৎ পেমিয়াং-শি চলাই সুবিধার।

আর ১৮৩৫এ শৈলাবাসের চাহিদা পূরণে ছলে-বলে-কৌশলে ব্রিটিশ পেল দার্জিলিং বাৎসরিক ৩০০০ টাকা বৃত্তির বিনিময়ে। ১৮৪৬এ বৃত্তি বাড়ে—৩ থেকে ৬০০০ টাকায়। তিব্বতের সীমান্তরাজ্য তথা বাণিজ্যপথে সিকিমের এই হস্তান্তরে তিব্বত প্রতিবাদে মুখর হয়। এমনকি ইতিহাসের কালের কিংবদন্তীর আলোছায়ায় ঘেরা ৭০০০ মহিল দীর্ঘ রেশমি পথ বা *সিঙ্ক রুটটি*ও সিকিমের সীমান্ত জুড়ে বিস্তৃত ছিল চীন থেকে ভূমধ্যসাগরীয় অঞ্চলে।

ব্রিটিশের ঔদ্ধত্যে বিরক্ত সিকিম রাজ ১৮৪৯এ বন্দী করলেন লাচেন এলাকায় ব্রিটিশের অনুসন্ধানী দলকে। নিঃশর্তে মুক্তিও মেলে ১ মাস পরে বন্দীদের। আবার ১৮৫৯এ সুচতুর ব্রিটিশের লিঙ্গা প্রতিহত হল সিকিম-রাজের হাতে। প্রতিশোধ-লিঙ্গু ব্রিটিশ দখল নিল দার্জিলিং ও মোরাঙের। বন্ধ করল বৃত্তি দান রাজাকে। ১৮৬১-র পারস্পরিক সন্ধি চুক্তিতে সিকিমে ব্রিটিশ ভারতের সার্বভৌমত্ব স্বীকৃত হল। বৃত্তিও চালু হয় বর্ধিত হারে সিকিম-রাজের। ৬ হয় ৯০০০, আর ১৮৭৪এ ৯ থেকে ১২০০০ টাকায়। এমনকি সিকিমের সমতল খণ্ড ব্রিটিশ ভারতে জুড়ে নিতে সিকিম বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ে সমতল থেকে। ব্রিটিশের আচরণে ক্ষুব্ধ তিব্বত ১৮৮৬তে সিকিমে হানা দেয়। তিব্বতী হানা প্রতিহত করে বদলা নিতে ব্রিটিশ ফৌজ যায় লাসায় ১৮৮৮তে। আবার খর্ব হয় শক্তি সিকিম-রাজের।

প্রথম রাজনৈতিক অফিসার নিয়োগ করল ব্রিটিশ ১৮৮৯তে সিকিমে। শক্তির পরাভবে বিমর্ষ রাজা পালিয়ে গিয়ে আশ্রয় নিলেন লাসায় ১৮৯২এ। অবশ্য ব্রিটিশ ফিরিয়েও আনে রাজাকে প্রত্যয় জন্মিয়ে। এতসব কাণ্ড ঘটলেও ব্রিটিশ ক্ষমতা ছাড়েনি সিকিম-রাজকে। আর সেই ক্ষমতা বলেই স্বাধীন ভারতেও সিকিমের উপর ভারতের কর্তৃত্ব স্বীকৃত হল। নবীকরণ হল চুক্তি ডিসেম্বর ৫, ১৯৫০এ। নাগরিক অধিকারের দাবি প্রশমিত হতেই ১৯৬৫তে সিকিম-রাজ চোগিয়ালের আমেরিকান মহিলা বিবাহ, স্বাধীনতার স্বপ্ন গৃহযুদ্ধের চেহারা নেয়। উড়ে এলেন রাজা ভারত রাষ্ট্রে আশ্রয় পেতে। আর চুক্তিমত ভারতীয় ফৌজ গেল ১৯৭৩-এর এপ্রিলে চোগিয়ালের বিরুদ্ধে গৃহযুদ্ধ দমনে। মে মাসের ৮, স্বীকৃত হল শাসন ক্ষমতায় জনগণের অধিকার। ১৯৭৩-এর ২৩শে এপ্রিল প্রথম সাধারণ নির্বাচন। আর ২৬শে এপ্রিল ১৯৭৫ গণ-রায়ে (৯৭%) সিকিম হল ভারতের ২২-তম রাজ্য।

সীমান্ত রাজ্য তিব্বত আজ চীনের দখলে। তাই প্রতিরক্ষার স্বার্থে অসামান্য গুরুত্ব পেয়েছে সিকিম। গড়ে উঠেছে রাজপথ সীমান্ত বরাবর। ছুটেও চলেছে ব্যস্ততম সামরিক যান এপথে। এমনকি সিকিমের পথে সামরিক কারাভানকে জায়গা দিতে থমকে দাঁড়ায় যাত্রীগাড়ি চলতে-ফিরতে। এই কিছুকাল আগের হিমালয়ের এক শ্যাংগ্রিলা সিকিমে আজ নবোদ্যমে রাস্তা-ঘাট, বাড়ি-ঘর, বিদ্যুৎ, জল, কৃষি, শিল্প, বাণিজ্য অতি দ্রুতগতিতে গড়ে উঠছে।

পথশোভা মনোরম। মহানন্দা স্যাকচুরারির মাঝ দিয়ে গাড়ি চলে। করোনেশন রিজ, সেবক রিজকে পাশ কাটিয়ে কালীঝোরা পেরিয়ে গাড়ি পৌঁছায় তিস্তা বাজারে। নতুন রিজ তিস্তা পেরিয়ে আরও এগিয়ে পশ্চিমবঙ্গ শেষ হতে রূপুতে সিকিম রাজ্যের শুরু। এপথে আরও যেতে সিংভাং। এই সিংভাং হয়েই পথ গিয়েছে উত্তর-দক্ষিণ-পূর্ব-পশ্চিম অর্থাৎ সিকিমের দিকে দিগন্তরে। সারি সারি উষ্টে রাখা ইক্বানের মতো নিখর ঝাউ, সপ্রতিভ বার্চ, প্রগলভ পাইন, আর বিষল দেবদারুর ফাঁকে ফাঁকে দূরে-দূরাণ্ডে শ্বেত-শুভ্র কিরীট ভালে পাহাড়শ্রেণী। সূর্যোদয়ের মনোহারিত্ব চিত্ত জয় করে। উদিত সূর্য ফাগ খেলে সারা হিমালয়ের সাথে সিকিমে।



আর বিমান যাত্রীদের ১১৫ দিন ১০-৩০, ৪৭ দিন ১২-৫০এ কলকাতা ছেড়ে ৫৫ মিনিটে ২৬৪০/১৭৮৪ টাকায় বাগডোগারায় পৌঁছে সিকিম ট্যুরিজমের বাসে বা প্রাইভেট বাসে বা ট্যাক্সিতে ১২৪ কিমি দূরের গ্যাটেক যাবার ব্যবস্থা। ফেরার পথে সকাল ৭-০০টায় গ্যাটেক ছেড়ে বাগডোগারায় আসছে বাস। বিমান আসছে ওয়াহাটি/ইক্ষল/ দিল্লী থেকেও বাগডোগারায়। IAC-র দপ্তর বসেছে গ্যাটেকের Tibet Rd, ৩ 23099-এ। আর ২৪৬ দিন বায়ুদূতের উড়ান যাচ্ছে ১০-৩০এ কলকাতা ছেড়ে ১১-৫০এ কোচবিহার গৌঁছে ১২-৩০এ বাগডোগারায়। ফেরেও এরা একই দিনগুলিতে।



বেল পৌছায়নি সিকিমে। তবে, রেলের সিটি বুকিং বসেছে (৯-৩০—১১-৩০ ও ১৩-৩০—১৪-৩০) SNT বাস স্ট্যান্ডে, ৩ 22016। ট্রেন যাচ্ছে গ্যাটেকের রেল সংযোগকারী স্টেশন পশ্চিমবঙ্গের নিউ জলপাইগুড়ি ও শিলিগুড়ি জং হয়ে ভারত রাষ্ট্রের দিথিকৈ। শিলিগুড়ি থেকে জাতীয় সড়ক ৩১ এসে সেবকে ৩১-এ হয়ে তিস্তাবাজারে তিস্তা পেরিয়ে আরও ১ কিমি যেতে ডানহাতি কালিম্পঙের পথ ছেড়ে সোজা উর্ধ্বমুখী পথ গিয়েছে গ্যাটেক। তিস্তা সেতু পেরিয়ে ২৫ কিমি যেতে Rangpoতে সিকিম রাজ্যের শুরু। দার্জিলিং থেকেও পথ এসে মিলেছে তিস্তাবাজারে। সরকারি ও বেসরকারি বাসে সংযোগও গড়েছে ত্রয়ীর সঙ্গে গ্যাটেকের। দূরত্ব—শিলিগুড়ি ১১৪, দার্জিলিং ৯৭ আর কালিম্পং ৭৫ কিমি।



শিলিগুড়ির তেনজিং নোরগে সেট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে NBSTC-র বাস যাচ্ছে ৬-০০ ও ১৫-০০টায় গ্যাটেক। আর একই স্ট্যান্ড থেকে ৬-৩০, ৭-১৫, ৮-০০, ৯-০০, ৯-৩০, ১৩-০০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৪-৩০, ১৫-০০টায় Hill Region Mini Bus Owners Association-এর সিকিম বিউটি, সিকিম প্রায়ী, অঙ্গরা, জয়শ্রী যাচ্ছে ৭-০০ ডিলাঙ্গ, ৮-৩০, ১১-০০, ১২-১০, ১৩-০০, ১৩-৩০ ডিলাঙ্গ, ৮-৩০, ১১-০০, ১২-১০, ১৩-৩০, ১৪-০০ ডিলাঙ্গ, ৮-৩০, ১১-০০, ১২-১০, ১৩-৩০, ১৪-০০ ডিলাঙ্গ, ১৪-৩০টায়; শিলিগুড়ি ফেরে SNT-র বাস ৬-২০, ৬-৩০, ৭-০০, ৭-৩০, ৮-০০ ডিলাঙ্গ, ১০-০০, ১১-০০ ডিলাঙ্গ, ১২-১৫য়; সময় নেয়

পাঁচ ঘণ্টা। দুই বাস স্ট্যান্ডের মাঝ থেকে জিপ যাচ্ছে শেষারে ৮০.০০ টাকায় প্রতিজ্ঞা। মারুতি ড্যান যাচ্ছে ৮৫০-১০০০ টাকায় শিলিগুড়ি থেকে গ্যাটেক।

দার্জিলিং- GPO-র কাছ থেকে SNT-র বাস আসছে ১৩-০০টায় ছেড়ে ৫ ঘণ্টায় ৬৫ টাকায়, বিপরীত থেকে প্রাইভেট বাস যাচ্ছে সকাল ৭-০০টায়। টিকিটের যথেষ্ট চাহিদা এপথে। সুপারবাজার থেকেও নানান প্রাইভেট সংস্থা যাচ্ছে গ্যাটেক। প্রাইভেট দিনে দিনে, আর SNT-র বাসে ৭ দিন আগে থেকে অগ্রিম বুকিং। কালিম্পং থেকে SNT-র জিপ যাচ্ছে ৬-০০, ৬-৩০, ৭-০০, ৮-০০, ১০-৩০, ১৩-২০, ১৪-১০, ১৪-৩৫এ; বাস যাচ্ছে ৭-১৫, ১৩-০০টায়। সময় নেয় জিপে ২½, বাসে ৩½ ঘণ্টা; ভাড়া ৩৭/৫৫। প্রাইভেট Guransh Travel-এর জিপ যাচ্ছে ৬-০০, ৭-৩০, ১৩-২০, ১৪-১৫, ১৪-৪৫এ। এদেরও ভাড়া ৫৫; সময় লাগে একই। ফেরেও নিয়মিত গ্যাটেক থেকে এরা। আর মেলে ল্যান্ডরোভার এপথে। এমনকি ১২৫ কিমি দূরের NJP থেকে জিপ/ল্যান্ডরোভার মেলাও অস্বাভাবিক নয় দার্জিলিং মেলের যাত্রীদের। জিপ ও ল্যান্ডরোভারে দুটি শ্রেণী। প্রথম শ্রেণীতে বসে চলার পথ সুন্দর দেখতে মেলে। ড্রাইভারের পাশেও আগোভাগে আসন নিতে পারেন। আর পেছনের সিটে ভাড়ায় কিছুটা সস্তায় মিললেও দর্শনে ঘাটতি ঘটে।

এমনকি SNT-র বাস প্রতিদিন ১৯-৩০টায় কলকাতা (ধরমতলা) ছেড়ে শিলিগুড়িতে লিঙ্ক ধরে ২১০ টাকায় গ্যাটেক যাচ্ছে ১৬½ ঘণ্টায়; ফেরে ১৪-০০টায় গ্যাটেক ছেড়ে পরদিন সকাল ৭-০০টায় কলকাতায়। এসের টিকিট: Sikkim Tourism, 4-C, Poonam Building, 5/2 Russel St, Cal-17, (৪ দিন আগে) বা SNT, 22 Rabindra Sarani, ৩ 268593 (১ দিন আগে) আর গ্যাটেকে Hotel Tashi Delek, M G Marg-এ মেলে। শহরে চলছে মিটারহীন মারুতি ট্যাক্সি, জিপ, মিনি বাস ও ড্যান-ট্যাক্সি।

গ্যাটেক

সিকিমের নতুন রাজ্যপাট বসেছে ৯৫৪ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত পূর্ব সিকিমে ১৫৪৭ মি উঁচু গ্যাটেক অর্থাৎ মহিমাষিত পাহাড় চূড়ায়। তবে অতীতে রাজ্যপাট ছিল ২১ কিমি দূরের Tumlong-এ। ছোট্ট শহর গ্যাটেক, সাজানো গোছানো পটে আঁকা ছবি যেন। পুরো শহরটাই সোজা গিয়ে ডাইনে বাক নিয়েছে। ঘণ্টা তিনেকের দেখে ফুরিয়ে ফেলা যায়। তবে এর আকর্ষণ প্রাকৃতিক শোভা—যার কোনো শেষ নেই। শহর থেকে সামান্য পশ্চিমে গেলে বিশ্বখ্যাত কাঞ্চনজঙ্ঘাকে নিবিড়ভাবে দেখতে মেলে। তুষারচ্ছন্ন গিরিশিখর—পানদিম, নরসিং, সিনোল চু-ও দৃশ্যমান। সিকিমের আর এক আকর্ষণ গুম্ফা। সারা রাজ্যে গুম্ফার সংখ্যা ১৪০। শহরের সূচনাও ১৭১৬য় গুম্ফা গড়তে। শহর থেকে জহর মার্গ ধরে ৫২ কিমি যেতে তিব্বত সীমান্ত। ১৪৩০০ ফুট উঁচু নাথু-লা পাসের দূরত্ব ৫৯ কিমি। ভারতভূতির পর পর্যটক আকর্ষণ বাড়ছে দুর্দম বেগে। আর বাড়ছে শহর—আশপাশ চারপাশকে গ্রাস করে। ২৫০০০ লোকের বাস

শহরে। গ্রীষ্মে তাপমান থাকে ২০.৭°—১৩.১°, শীতে ১৪.৯°—৭.৭°সেন্টিগ্রেডে।

বাস থেকে নামতেই ৩ কিমি দূরে পাহাড় চূড়ায় টুরিস্ট লঞ্চার শিরে জেল পেরুতেই ১৮৪০এ তৈরি এনচে (Enchey) মনাস্ত্রি অর্থাৎ গুম্ফা। তৈরি হয়েছে তান্ত্রিক গুরু Lama Druptab Karpa-র পূণ্যভূমে। ঝলমলে সাজে নানান দেবদেবীর সমাবেশ ঘটেছে। দ্বিতলে লাইব্রেরিও বসেছে এনচে অর্থাৎ দ্য প্রেস অব সলিটুড-এ। লামা নৃত্যের মুখোশের সংগ্রহ উল্লেখ্য। ডিসেম্বরে ছাম(Chaam) অর্থাৎ লামা নৃত্যের উৎসবও হয়। লঞ্চার নিচুতে ব্রিটিশ তথা ইন্ডিয়ান রেসিডেন্সি। অনতিদূরে ছাপাখানার কাঁধে ভর করে সেক্রেটারিয়েটের নিচুতে পাহাড় ঢালে সারনাথের রেল্লিকা রূপে গড়ে তোলা হয়েছে মৃগ উদ্যান। মূর্তিও হয়েছে সারনাথী মূত্রায় বৃদ্ধের। আর হয়েছে মিউজিয়াম মৃগ উদ্যানে। দ্বার রুদ্ধ হলেও অদূরেই মহারাজার (চোগিয়াল) প্রাসাদ, পাশেই রয়্যাল চ্যাপেল (Tsuk-La-Khang), দরবার হল অর্থাৎ মহারাজার বিধানসভা। এদের শিরে রাজভবন। কর্মজগৎ দেখার সুযোগ না থাকলেও হস্তজাত পণ্যের সস্তার দেখাও কেনা যেতে পারে সরকারি ইনস্টিটিউট অব কটেক্স ইনডাস্ট্রিজের সেলস এম্পোরিয়ামে—দ্বিতীয় শনিবার, ছুটি ও রবিবার ছাড়া ৯-৩০—১২-৩০ ও ১০—১৫-৩০টায়। এদের তৈরি কার্পেট, শাল, কয়ল, কাপড়ের পুতুল, মুখোশ, কাঠের নানান সস্তার, আসবাবপত্র (Bakus), ফোন্ডিং টেবিল চোকসে (Chuktye) সিকিমিজ স্বকীয়তায় স্বতন্ত্র। এপথে সাইবাবার মন্দির রেখে আরও উত্তরমুখী যেতে শহর থেকে ৮ কিমি দূরে নর্থ সিকিম সড়কে তাম্বী ভিউ পয়েন্ট থেকে কাঞ্চনজঙ্ঘা, মাউন্ট সিনিয়লচু তথা নৈসর্গিক শোভা দেখে নেওয়া যায়। সুযোদিয়ে এদৃশ্য আরও মনোরম। DO-TA-BU অর্থাৎ পাথরের বাড়ি, তৈরি হয়েছে ১৯৫৫এ। বহুমূল্য স্মৃতিসম্ভারে গড়ে উঠেছে এই স্থাপ। তিব্বতীয় লালটুপি অর্থাৎ Nymgma-pa বৌদ্ধদের তীর্থবিশেষ। ১০৮ প্রয়ার হইল সমৃদ্ধ করেছে, আগনিও প্রদক্ষিণ করে পাপস্ফালন করে নিন। লাগোয়া মনাস্ত্রি—মূর্তি হয়েছে ভারতীয় বৌদ্ধ গুরু পরমসম্ভবার। পাথুরে বাড়ি অর্থাৎ স্থপের অদূরেই রূপ পেয়েছে বিশ্বের তৃতীয় বৃহত্তম তিব্বতীয় গ্রন্থের সস্তার নিয়ে রিসার্চ ইনস্টিটিউট অব টিবেটলজি। ফেব্রুয়ারি ১০, ১৯৫৭য় দালাই লামার হাতে ভিত্তিপ্রস্তর স্থাপন, আর অক্টোবর ১, ১৯৫৮-য় পণ্ডিত জওহরলাল নেহরুর হাতে এর উদ্বোধন। ব্রিতল এই জ্ঞানভাণ্ডারে গবেষণা চলছে সারা বিশ্ব থেকে আসা জ্ঞানতাপসদের। একতলায় কিংবদন্তীতে ভরা সিক্কের এমব্রয়ডারি করা তাম্বা, মূর্তি, নানান তিব্বতীয় সংগ্রহ, দ্বিতলে বিশ্বের অন্যতম সংগ্রহ মহাবান বৌদ্ধধর্মের ৩০০০০ পুঁথি; আর ত্রিতলে অভ্যস্তা শৈলীর দেওয়াল চিত্র খুবই চমকপ্রদ। ছুটি ও রবিবার ছাড়া ১০—১৬-০০টায় খোলা। এর নিচুতে অর্কিড ফার্মিটিও দর্শন তালিকায় অংশ

জুড়েছে। সংগ্রহ উঁচু মানের না হলেও ৪০০-এরও অধিক ধর্মী অর্কিড দেখে নেওয়া যায়। শহর থেকে ১৪ কিমি দূরে রুমটেকের পথে অর্কিডোরিয়াম তথা ট্রপিক্যাল গাছ-গাছালির বাসর সাজিয়েছেন বন দপ্তর। পাহাড় চূড়ায় TV Tower লাগোয়া গণেশ মন্দিরটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। শহরের দৃশ্যও সুন্দর দেখে নেওয়া যায় পাহাড় থেকে। সিকিমের প্রথম ব্রিটিশ পলিটিক্যাল অফিসার Claude White-এর স্মারক রূপে ১৯৩২এ গড়া ওয়াইট হলে আজ অফিসারস ক্লাব বসেছে।

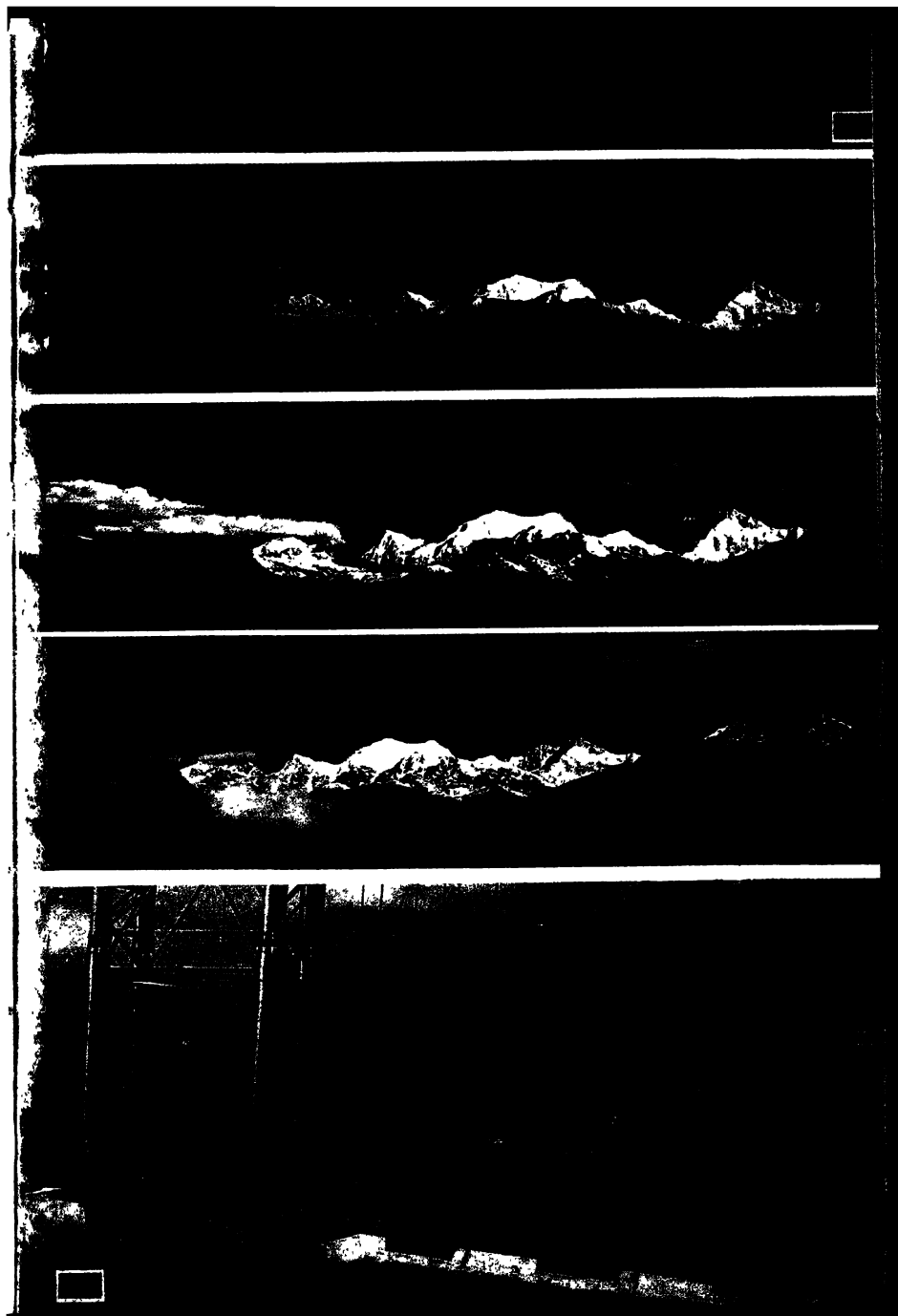
| গ্যাংটক থেকে সড়ক পথে | | তেমনই মার্চ থেকে মে |
|-----------------------|----------|-----------------------------|
| শিলিগুড়ি | ১১৪ কিমি | মাসে গ্যাংটক ফ্লাওয়ার |
| বাগডোগরা | ১২৪ " | ফেস্টিভ্যালও আর এক |
| কালিম্পং | ৭৫ " | দ্রষ্টব্য শহরের। ৬০০ধর্মী |
| দার্জিলিং | ৯৭ " | অর্কিড, ২৪০ধর্মী গাছ- |
| গেজিং | ১১২ " | গাছালি, ৪৬ধর্মী রডোডেন- |
| মঙ্গন | ৬৫ " | ড্রন, ১৫০ধর্মী প্রাণ্ডিওলি, |
| ইয়ুমথাং | ১৪১ " | নানানধর্মী ম্যাগনোলিয়া |
| রুমটেক | ২৪ " | ছাড়াও নানানকিছু অংশ নেয় |
| হঙ্গু লেক | ৩৫ " | ফেস্টিভ্যালে। গ্যাংটকের |
| নাথু-লা | ৫২ " | অন্যতম লাল টুকটুকে পপি |
| জোরথাং | ৮৫ " | ফুলও আকর্ষণ বাড়ায় |
| রংপু | ৪০ " | প্রদর্শনীর। |
| সিংতাম | ২৮ " | গ্যাংটকের আর এক |

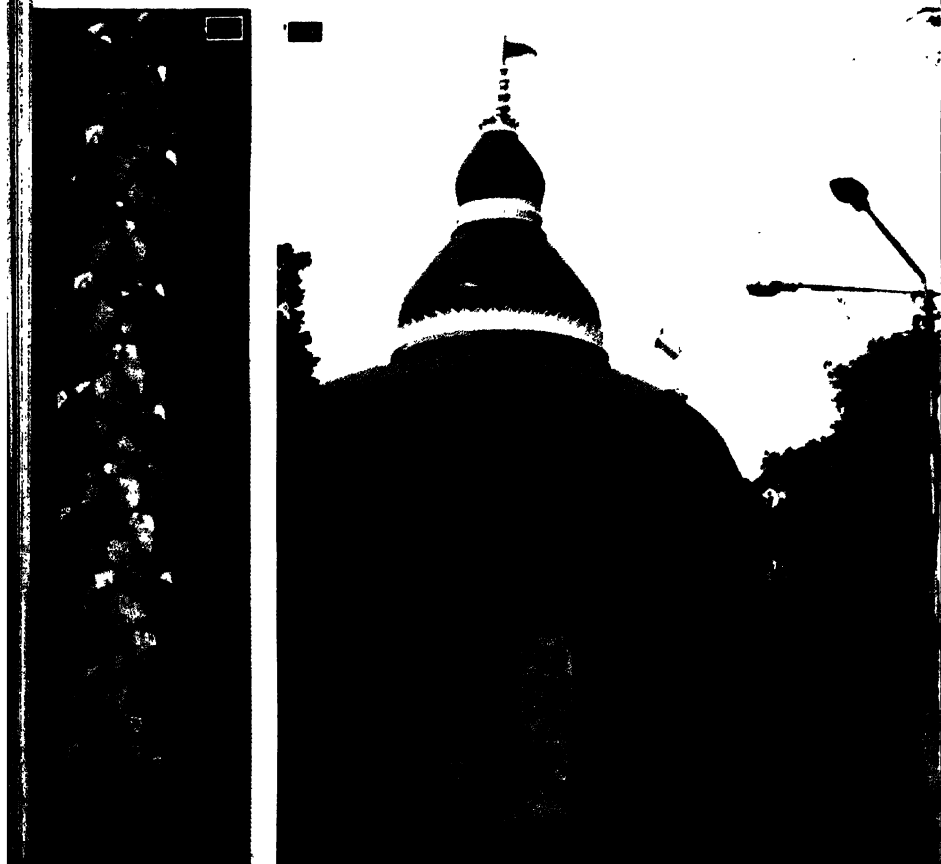
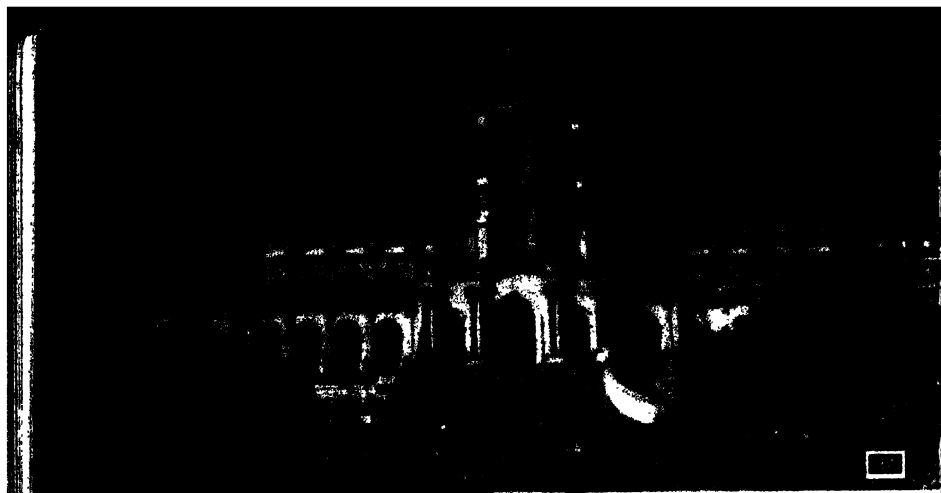
আকর্ষণ ১৯৯২এ গড়া ভারতের একমাত্র প্রজাপতি পার্ক। চার শতাধিক ধর্মী রঙবেরঙের প্রজাপতির আকর্ষণে অনবদ্য।

চিত্রস্টা: তিন

২৭ সেপ্টেম্বর-এ সুযোদয় ছবি দেবাজ্ঞান প্রামাণিক ২৮ নবেম্বর-
ব্রিক ছবি মুগাল দস্ত ২৯ জানুয়ারি-এ পথের কল্যাণেশ্বর
মোন ছবি হিন্দুস্তান টাইটেলস ৩০ এলাবি মসজিদ ছবি
মুগাল দস্ত ৩১ রুমটেকের মনাস্ত্রি ছবি মুগাল দস্ত
৩২ বিশ্বশান্তি হুগ-সামসীর ছবি পর্যটন দপ্তর
৩৩ পোলবর-পটনা ছবি পর্যটন দপ্তর ৩৪ পাওয়াপুর্ন ছবি
পর্যটন দপ্তর ৩৫ মালদার লস্করবোম্ব ছবি বিশ্বরঞ্জন রক্ষিত
৩৬ পটনা শহর ছবি পর্যটন দপ্তর ৩৭ আগরতলা প্রাসাদ
তথা জ্যোসেফী ছবি অশোক বসু ৩৮ বসমের পেরে অর্কিড
ছবি পর্যটন দপ্তর ৩৯ কিশোরগঞ্জ সঙ্গী ছবি অশোক বসু।

পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া অসম্ভব নয় গ্যাংটক শহর। আবার শ'আড়াই টাকার চুক্তিতে প্রাইভেট ট্যাক্সি নিয়ে ঘণ্টা তিনেকের সাজ করা যায় শহর দর্শন। আর SNT বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে সিকিম টুরিজমের Tourist Information





Centre, M G Road, ৩ ২২০৬৪ (রবি ছাড়া প্রতিদিন ৮-০০-১৬-০০টায় খোলা), মিনি কোচ বা কার ১৫ই এপ্রিল থেকে ১৫ই জুন আবার ১৫ই সেপ্টেম্বর থেকে ১৫ই নভেম্বরের মরসুমী পর্যটকদের সকাল ৯-৩০এ গিয়ে ১২-৩০টায় ফিরে শহর দেখিয়ে আনে। ভাড়া ৫০। আর বিকালে ১৩-৩০টায় গিয়ে রুমটেক ও অর্কিডোরিয়াম দেখিয়ে ফেরে ১৬-৩০টায়। এ-টারেরও ভাড়া ৬০ করে। তাশী ভিউ পয়েন্ট যাচ্ছে ২৫ টাকায়। নাথু-লা মুখী ৩৫ কিমি দূরের ১২৪০০ ফুট উঁচু ছঙ্গ লেক যাচ্ছে (৮—১৪-৩০) ১৩০ টাকায় এরা। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়াই মেলে এদের কাছে। তবুও কেমন যেন এলোমেলো। এদের পর্যটন দপ্তর, তেমনই অনাচার আর অনিয়মে ভরা SNT-র ট্রান্সপোর্ট সার্ভিস। তবে সহজ, সরল, বন্ধু বৎসল সিকিমের মানুষজন। শিলিগুড়িতেও দপ্তর বসেছে Sikkim Tourist Information Centre, SNT Colony, Siliguri, ৩ ২৪৬০২-এ। এছাড়া M G Road ও Tibet Rd থেকে নানান ট্র্যাভেল এজেন্ট—ব্লু স্কাই ট্যুরস ৩ ২৩৩৩০, মার্কোপোলো ওয়াশ্‌ব্র ট্রাভেলস ৩ ২৪১১৬, মৈনাক ট্যুরস অ্যান্ড ট্র্যাভেলস ৩ ২৫১২৭, ময়ূরস ট্যুরস অ্যান্ড ট্র্যাভেলস ৩ ২৪৪৬২, সিনিয়লচু ট্যুরস অ্যান্ড ট্র্যাভেলস ৩ ২৪২১৩, এভারেস্ট ট্যুরস অ্যান্ড ট্রেকস ৩ ২২৫৫৬, পোঁটালো ট্যুরস অ্যান্ড ট্রেকস ৩ ২৪৪৩৪ যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে সিকিম প্যাকেজে। গাড়িও ভাড়াই মেলে এদের কাছে।

১৫ দিনে সিকিম ভ্রমণ

১ম দিন কালিম্পং/দার্জিলিং/শিলিগুড়ি থেকে বাস বা জিপে ঘণ্টা পাঁচকে গ্যাংটেক পৌঁছান। বিকালে শহর বেড়ানো। ২য় দিন সকাল ৯-০০টায় গিয়ে ছঙ্গ বিহার করে শহরে ফিরুন ১৫-০০টায়। ৩য় সকালে শহর আর বিকালে রুমটেক বেড়িয়ে নিন শ'পাঁচেক টাকায় মারুতি ভানে। ৪র্থ সকালে জিপে ৩ দিন ২ রাতের উত্তর সিকিম প্যাকেজে লাচুং-ইয়ুমখাং-কাটাও বেড়িয়ে ৬ষ্ঠ দিন সাঁঝে গ্যাংটেক ফিরে রাতের অবস্থান। ৭ম দিন রাবাংলা পৌঁছান ঘণ্টা তিনেকে। ৮ম দিন মৈনাম পর্বত বেড়িয়ে নিন রাবাংলা থেকে ট্রেক করে। ৯ম দিন সকালে পেলিং চলুন বাস বা জিপে লেগশিপ/গোজিং/পেরিয়াং-শি হয়ে ১০ম দিন পেলিং শহর দর্শন কনডাকটেড ট্যুরে। ১১শ দিন পায়ে পায়ে হিমালয় দর্শন। ১২শ দিন সকালের জিপে শিলিগুড়ি/NJP ফিরে ট্রেন ধরুন ঘর পানের। উৎসাহীরা আরও ৩ দিন গ্রেস জুড়ে ফুলের উপত্যকা ভার্শে বেড়িয়ে নিন পেলিং বা জোরখাং থেকে। সিকিমের রডোডেনড্রন ফুল তোলার লোভ সম্বরণ করুন চলার পথে। সিকিমের জাতীয় বৃক্ষ রডোডেনড্রন—ফুল তোলায় ৫০০ জরিমানা। জাতীয় পাখি এদের—রেড ফেজেন্ট; আর জাতীয় পশু—রেড পাণ্ডা।

রুমটেক গুম্ফা: গ্যাংটেক থেকে ২৪ কিমি পশ্চিমে

শহরের বিপরীতে Ranipool Valley-র শিরে ৫৫০০ ফুট উচ্চে বিশ্বের অন্যতম সম্পদশালী রুমটেক ধর্মচক্র সেন্টার তথা গুম্ফা।

গ্যাংটেক থেকে দিনের একমাত্র বাস যাচ্ছে প্রতিদিন ১৬-০০টায় ছেড়ে ১ ঘণ্টায় রুমটেকে; ফেরে পরদিন সকাল ৮-০০টায়। বাসযাত্রায় দু'রাত থাকে বাধ্যতামূলক হয়ে পড়ে রুমটেক দেখে ফিরতে। তাই উচিত হবে রাজ্য পর্যটনের প্যাকেজ ট্যুরে বা ৩০০ টাকায় ট্যাক্সিতে রুমটেক দেখে ফেরা। ৮৫-১৫০ টাকায় সাধারণ মানের হোটেলও আছে রুমটেকে। মনাস্টি চত্বরে The Kunga Delak H. বাথ সংলগ্ন ঘর মিললেও জলাভাব নোংরা করে তুলেছে সারা হোটেলকে। সামান্য নিচুতে H Sangay, বিজ্ঞানাপত্র সবই মেলে; দুইয়ের মধ্যে ভালই। আর হয়েছে নবতম Shambala Mountain Resort, ৩ (03592) 30766, AP-S ১৮০০ D ২৫০০।

চতুর্থ চোগিয়ালের তৈরি মূল মনাস্টি ভূমিকম্পে বিনষ্ট হতে মনাস্টি হয়েছে নতুন করে রুমটেকে। ১৯৬০এ চীনের দখলে তিব্বত যেতে তিব্বত থেকে এসে Kagyu-pa সম্প্রদায়ের ১৬তম গুরু গেলওয়া কর্মা পাঁ (Gyalwa Karma-pa) আশ্রয় নেন সিকিমে। মৃত্যুও ঘটে গুরুর ১৯৮২তে রুমটেকে। চোগিয়ালের দেওয়া ভূমিতে ১৯৬৮তে গড়ে তোলেন তিব্বতের ছোফুক গুম্ফার রেন্সিকা রাপে মনাস্টি রুমটেকের পাছা ডালে ধাপে ধাপে। গুম্ফার পিছে গুম্ফা—মাঝে ছোট আর এক। ধর্মচক্র হয়েছে, আর হয়েছে দু'টি স্বর্ণহরিণ, সোনার বুদ্ধ ও বহুমূল্য মণিযুক্ত রচিত সোনার মূর্তি। চূড়াও সোনায়ে মোড়া। তেমনই আধারি প্রার্থনা ঘরটির গাভীরও আকর্ষণ করে। তিব্বতীয় বৌদ্ধধর্মের নানান পাখা মুরালি রূপ পেয়েছে ১৭১৭ সালে তৈরি বর্ণাট এই মনাস্টিতে। সম্প্রতি ধর্মচক্র সম্প্রদায়ের মূল দপ্তর বসেছে। আর আছে ১৯৬০এ গড়া বৌদ্ধ ধর্ম ও শিল্প-সংস্কৃতির Rumtek Dharma Chakra Centre. জুনে সো চু ছাম ছাড়াও উৎসব লেগে আছে বছরভর রুমটেকে। লামাদের মুখোশ নাচ উৎসবের আর এক অঙ্গ। প্রকৃতির গড়া বটানিক্যাল গার্ডেন তথা চিড়িয়াখানা মধুময় করে তুলেছে পরিবেশকে। নতুন মনাস্টির ১ কিমি দূরে ৪র্থ চোগিয়ালের কালের পুরাতন মনাস্টিও উচিত হবে পায়ে পায়ে দেখে নেওয়া। সংস্কার হয়েছে ১৯৮৩তে, চিত্রিতও হয়েছে নতুন করে। ৯ শতকের গুরু পদ্মসন্তবার পায়ের ছাপও রয়েছে পাথর খণ্ডে।

ছঙ্গ লেক: গ্যাংটেক ভ্রমণে অন্যতম আকর্ষণ ১২৪০০ ফুট উঁচুতে Tssango Lake. চীন (তিব্বত) সীমান্তের নাথু-লা মুখী ৩৫ কিমি দূরে গ্যাংটেক-নাথু-লা হাইওয়ের বরফ রাজ্যের নয়মালোভন প্রকৃতির মাঝে মাইলখানেক লম্বা, আধ মাইল চওড়া; ৫০ ফুট গভীর পবিত্র এই লেক। লেক থেকে ১৭ কিমি দূরে ১৪৪০০ ফুট উঁচু নাথু-লা গিরিবর্ষ অর্থাৎ তিব্বত তথা চীন সীমানা। সারাপথে চড়াই-এর আধিক্য—মেঘেরা নেমে এসে পথ রোধ করে; ২৫ ঘণ্টার

পথ। মে-আগস্টে রডোডেনড্রন, প্রিমলা, পপি ফুলেরা রমণীয় করে তোলে এপথ। চারপাশে প্রাচীর হয়ে তুষারমৌলী পাহাড়শ্রেণী—স্বচ্ছ টলটলে জল, লেকের জলেও বরফ ভাসে। ১৯৮৮-৮৯এ একই দিনে ১২৫ cm বরফ পড়ে রেকর্ডও গড়েছে ছসু। আর আছে ছসুবাবার মন্দির, নানা রঙের প্রেয়ার ফ্লাগ, দুষ্প্রাপ্য অর্কিডের প্রিমলা গার্ডেন। লেকের ধারে প্রার্থনা করে সাঁকোতে রঙিন রুমাল বাঁধায় প্রার্থনাও ফলে। সাঁকো পেরিয়ে বিচরণ করুন বরফ রাজ্যে। বরফে চলার সাজ-সরঞ্জাম ভাড়ায় মেলে ৫০-এরও অধিক সেকানে। চমরী গাই অর্থাৎ ইয়াক ও পনি মেলে—বিহার করুন পিঠে চেপে। উচ্চতা হেতু শীতের আধিক্য। জনবসতি নেই। মরসুমে চা ও আহার মেলে। আর হচ্ছে ITDC-র উদ্যোগে সিকিম রাজ্য পর্যটনের ব্যবস্থাপনায় *কাফেটেরিয়া*। তবুও উচিত হবে ছসু যাত্রায় শহর থেকে প্যাকেট লাঞ্চ সঙ্গী করা। আর হয়েছে Kyongnosla Alpine Sanctuary বরফ রাজ্যের জীব-জন্তু-ফুল আর তরুর সঙ্গার নিয়ে ছসুকে ঘিরে।

সীমান্তবর্তী এলাকা—ছবি তোলায় নানান মানা। চলা-ফেরায়ও বিধিনিষেধ নানান। Restricted Area Permit লাগে ভারতীয়দের Superintendent of Police, Gangtok, আর বিদেশীদের Department of Tourism, Govt of Sikkim, M G Marg, Gangtok থেকে। আর, কলকাতার ফোর্ট উইলিয়াম থেকে আঞ্চলিক সেনা প্রধানের বিশেষ অনুমতিতে নাথ-লার দর্শন মেলে। মরসুমে শহর থেকে শতাধিক জিপ ও মার্কুতি ভ্যান যাচ্ছে ১৩০ টাকায় ৯—১৪-০০টায় ছসু বেড়াতে। প্রয়োজনীয় RAP সংগ্রহ করে চালকেরা একদিন আগের বুকিং-এ। এককভাবে ৮৫০ টাকায় জিপ, ৬০০ টাকায় ৩ যাত্রীর মার্কুতি ভ্যান মেলে ছসু বিহারে।

দার্জিলিং থেকে ট্রেক করে গ্যাংটক: এছাড়া হিমালয়কে যারা আরও নিবিড় করে পেতে চান তাঁদের জন্য হাটা পথ গিয়েছে দার্জিলিং থেকে গ্যাংটক। এমন পথও আছে ৩টি। তিন রাত পথে কাটিয়ে চতুর্থ দিনে গ্যাংটক পৌঁছানো যায় এপথে। দার্জিলিং থেকে প্রথম ১৩ কিমি উতরাই নেমে বাদামতাম হয়ে চড়াই পথে ১৬ কিমি গিয়ে সিকিম রাজ্যে ৫২০০ ফুট উঁচু নামচিত্রে সিকিম সরকারের ডাকবাংলো/ প্রাইভেট হোটেল ১ম রাত, নামচি থেকে ১৮ কিমি দূরে ৪৮৮০ ফুট উঁচু টেমির বাংলায়ে ২য় রাত। অরণ্যের শোভা তৃপ্ত করে যাত্রীদের এপথে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে Rathong হিমবাহ থেকে জাত রঙ্গীত নদী—সবশেষে নাথ-লাও ক্লাস্তি দূর করে পথশ্রমের; টেমি থেকে ১১ কিমি উতরাই নেমে সেতুতে তিজা পেরিয়ে আরও ৮ কিমি গিয়ে ৪৫০০ ফুট উঁচু সাং-এর বাংলায়ে ৩য় রাত কাটিয়ে ৪র্থ দিনে ১০ কিমি চড়াই পরে রুমটেক পৌঁছে আরও ১৪ কিমি গিয়ে গ্যাংটক পৌঁছে যান। সারা পথের নৈসর্গিক শোভা অতুলনীয়।

উৎসাহীরা গ্যাংটক থেকে ২০ কিমি দূরের ৫২৮০ হেক্টর ব্যাণ্ড ফামবাংলো (Fambong Lho) ওয়াইল্ড লাইফ স্যাক্চুরারিটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বাস ও জিপ যাচ্ছে এপথের ১৪ কিমি দূরের পাংথাং গ্রামে। পাংথাং থেকে ৬ কিমি ট্রেক করে স্যাক্চুরারি। ৭০০০ ফুট উচ্চে কাঠের টাওয়ার থেকে রেড পাভা, হিমালয়ান ব্ল্যাক বিয়ার ছাড়াও নানান জন্তু দেখে নেওয়া যায়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ২ ঘরের বনবাংলোয়। বাংলোর বুকিং ও স্যাক্চুরারি প্রবেশের অনুমতি পেতে—ডিভিশনাল ফরেস্ট অফিসার, ফাম-বাংলো ওয়াইল্ড লাইফ স্যাক্চুরারি, দেওরালি, গ্যাংটক, সিকিম, PC-737102কে লেখা যেতে পারে। গাইডও মেলে বনবাংলোয়। তবে, জিপ বা বাসে পাংথাং পৌঁছে ঘণ্টা পাঁচকে যাতায়াতে ১২ কিমি ট্রেক করে দিনান্তে গ্যাংটক ফেরা যেতে পারে।



দার্জিলিং পাহাড় আজ স্বাভাবিকতা পেতে পর্যটক চলেছেন দার্জিলিং বেড়িয়ে সিকিমে। যাত্রী সমাগম অস্বাভাবিক বেড়ে যেতে সাধারণ মানেও গেল রেটও আজ আকাশছোঁয়া। হোটেলও হচ্ছে নিত্য নতুন গ্যাংটক শহরে। শহবে টোকর মুখে ১ কিমি আগে Gangtok, STD 03592, PC- 737101এ—*Kanchan View*, NH-31A, ☎ 22762, SAB ১৫০, DAB ২৫০, TAB ৩০০ থেকে, তারও আগে *Dolphin Inn*, S ১৫০, D ২২৫-৩৫০। *H Panda International*, DAB ৬৫০, ৮৫০, ১২৫০, কল বুকিং: শিবশক্তি ট্রাভেলস, ☎ 261416/4408124, পাস থেকে নামভেই বিপরীতে *Paradise L*, SAB ৮৫, DAB ১৭৫-২৫০, TAB ২৭৫; বামহাতি *H Woodlands*, M G Rd, ☎ 23414, SAB ১৫০, DAB ২৭৫, TAB ২৫০ থেকে, কল বুকিং: ☎ 4756051/277006; এদের কোনো কোনো ঘর থেকে কাঞ্চনজঙ্ঘা দেখা গেলেও অব্যবস্থা যেন পদে পদে। বিপরীতে বিধানসভা, বামে *H Hungry Jack*, ☎ 22276, DAB ৩৫০-৪২৫, কল বুকিং ☎ 4714633, লাগোয়া *Sunny GH*, DAB ৩৫০-৪৫০, TAB ৪৫০; অবস্থানও ব্যবস্থাপনা ভালই। *Ace's GH*, AP-S ২৫০, ২৭৫, ৩৫০, কল বুকিং: ☎ 5515811/5503905/2206953/5579204; বামে *H Sher-E Punjab* SCB ১৫০, DCB ২০০, DAB ৩০০, TAB ৩৫০; *H Central*, NH-31A, ☎ 22105, SAB ৬৫০, DAB ৯০০-১২৫০, সুইট ১৫০০; কল বুকিং: ☎ 2260401; *View Point L*, below Bus Stand, ☎ 22549, DAB ৩০০-৪৫০; বাজলির ব্যবস্থাপনায় *Lotus L*, below Bus Std, DAB ২৭৫-৪২৫, আহাৰ্যেও বাজলিয়ানা এদের; কল বুকিং: *Kundus Hotel Booking*, ☎ 275959/5509128.

আসেসলী হাউসের কাছে Kazi Rd-এ—*Canaan L*, ☎ 23363, AP-D ৫০০, ৫৫০ AP প্রথায় ছয় বেডের সুইটে ২০০ প্রতিজনা, গ্রুপে রিটেমে মেলে, কল বুকিং: *Hindusthan Travels*, 183/2, Lenin Sarani, 2nd floor, Canal-13, ☎ 274893; *H Gochala*, ☎ 22344, কল বুকিং: ☎ 276714. *H Blue Heaven*, Hospital Point, ☎ 23837, DAB ৪৫০, ৬৫০, TAB ৫৫০ ডর্মি বেড ১০০, কল বুকিং: *Anjan Banerjee*, Tourist Information Centre, 4-C, Poonam Building,

5/2 Russell St-17, 298933/Guwahati 560120/Delhi 3015346.

SNT বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে Paljor Stadium Rd-737101-এ বাঁয়ে হাসপাতাল/GPO বোর্ড—Tendong L; H Lhakhar, DAB ১২৫-২৫০; H Asia, 23814, DAB ২৫০ ৪৫০ ৬০০, বাঙালিবি আহার ও মেলে এদের রেস্তোরাঁয়। H Vinayak, 23474, DAB ৭০০; H Palkhil, DAB ৩০০ ৩৫০ TAB ৪৫০; ঢাল নেমে বাঁয়ে H Alankar Lodge, DAB ২০০ ২৫০ ৩০০ TAB ৩০০ ৩৫০, AP প্রথা—৩ জনেব দলে ১৬০ চারজনের দলে ১৫০, প্রতিজনা। H Mount View, 23647, DAB ৩৭৫-৬৫০; H Starlit, H Norkhil, beside Stadium, 23186, AP-S ২৪০০ D ২৮০০ সুইট ৩০০০, কল বুকিং: 47 Park St, 5 Park Row, above Oasis Restaurant-16, 2269878. বাস স্ট্যান্ডের বাঁয়ে H Kasturi, 24639, DCB ৩৫০ DAB ৪৫০ ৪৭৫ ৫৭৫, কল বুকিং: Linkage 2465171; H Chumila, 23361, SAB ১৫০ DAB ২০০ TAB ৩০০; *H Norbu Gang, 50566, SAB ৪৫০ ৫০০ DAB ৫৫০ ৬০০ ৭০০, কল বুকিং: Diamond 276714/2443779, তিব্বতীয় শৈলীতে গড়া বাড়িতে *H Tibet, 22523, Fax (03592) 22707, SAB ৫২০ ৬৩০ ৭৫০ ৭৭৫ ১৩১০ DAB ৬৯৫ ৮৫০ ১০০০ ১০৩০ ১৭৫০, অব: Kathinandu 470378, New Delhi 3713309, লাগোয়া সিকিম ট্যুরিজমের H Mayur, 22825, DAB ৪৫০-৮৫০, তবে হোটেলটি সাময়িকভাবে বন্ধ; H Dreamland, SAB ২০০ DCB ১৫০ DAB ৩০০, অব: পাল ইলেকট্রিকস, চৌরাঙা, অশোকনগর, নর্থ ২৪ পরগনা: H Mt Jopuno, 23502, SAB ৪০০ ৫০০ DAB ৪৫০ ৫৫০; Swagat L, 24295, DCB ৩০০-৫০০ DAB ৪৫০-৭০০।

SNT বাস স্ট্যান্ডের শিবে বামহাতি NH31A অর্থাৎ হাইকোর্টের পথে—H Kharka, 22395, DAB ৩০০ ৪০০ TAB ৩৫০ FAB ৪০০, AP প্রথা প্রতিজনা ২০০ ২২৫ ২৭৫, কল বুকিং: Linkage 2465171; লাগোয়া H Top, 23936, DAB ৪৫০ TAB ৫৫০, AP-S ২২৫ ৩০০; Urbashu L, DAB ৩৮০, বাঙালিবি আহার ও মেলে এদের রেস্তোরাঁয়; Rambasera G H, H Mount Olive; near Community Hall, 25717, AP প্রথা ২৭০ ৩২০, কল বুকিং: 47, Bhupen Bose Avenue-4, 5550702, এপথেই আরও যেতে Holiday Inn, Development Area, 22707, D ৩২৫ ৩৭৫ ৪৭৫ ৫৫০ T ৪২৫ ৬৫০ F ৬৫০ সুইট ১২৫০, কল বুকিং: Biwi Travels, 57 Canal St. Cal 48; H Paramount, Development Area, 23896, AP-S ২২৫ ২৫০ ৩০০, EP প্রথা D ৪০০ T ৪৭৫ F ৫৫০ S ৭০০, কল বুকিং: 47 Bhupen Bose Avenue-4, 5554652; শহরের কেন্দ্রবিন্দু TNHIS Rd—WBTD-র H Mandar Tourist Lodge, Development Area, 24314, AP প্রথা DCB ৭০০ DAB ৮০০ ৯০০ ১২৫০, অব: WBTD, কলকাতা/শিলিগুড়ি/দার্জিলিং।

বাস থেকে ১ কিমি দূরে Baluakhali, NH31-Aতে—বাঙালিবি ব্যবস্থাপনা H Cauvery, 22697, AP-S ২০০ ২৫০ ৩০০; H Diplomat, 23003, AP-S ২২৫-৩০০, দুইয়েরই কল বুকিং: Dolphin Travels 278968; H

Madhavi, 23820, S ২৫০-৪৫০ D ৩৫০-৬৫০, কল বুকিং: 276714/2465171/2389476; H Malancha; H Midway; H Meenakshi, 26059, DAB ২২৫ ২৭৫ ৩০০, কল বুকিং: A Gupta, 123/1B, B B Ganguly St-12, 276708; H New Green, North Sikkim HW-737101, D ২৭৫-৫৫০।

প্রাইভেট বাসের শিরে SNT বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে বাঁক নিয়ে New Market তথা M G Marg-এর মুখে Gangtok L, DAB ৪৫০। ট্যুরিস্ট ইনফরমেশন সেন্টার রেখে Green H, 22011, DCB ২০০, TCB ১৫০, SAB ১৫০ DAB ৩০০ ৪৫০ TAB ৪৫০, অতি সাধারণ মানের হোটেলটি অবস্থান ভাষা সঙ্গী বাস্তব। বিপরীতে আর এক সাধারণ H Kanchanjunga, DCB ১৫০ TCB ২০০; অদূরে *H Karma, 24258, DCB ১৫০ DAB ২০০ ২২৫ TAB ৩৫০, সাধারণ হলেও ব্যবস্থাপনা ভাল, কাঞ্চনজঙ্ঘাও দৃশ্যমান তিনতলার নানান ঘর থেকে; পাশেই অতি সাধারণ Rajasthan L, বামহাতি ঢাল উঠে H Rendezvous, behind Telephone Exchange, NH-31A, 22199, Fax 03592-24626, SAB ৩০০ ৫০০ DAB ৫০০ ৭০০ TAB ৬০০, অর্ধ: Help Tourism, Cal 294610

Star Cinema-ব কাছে এম জি বোডে হোটেল ভবন, বিপরীতে সিডি উল্টে টেঙে অর্থাৎ Nam Nang Rd—The Retreat, 24671, AP-S ৩৫০ D ৪৫০, ঘরোয়া পরিবেশ—আহারে অভুলনীয়, অব: Blue Sky Travels, Calcutta 4746704; আর এক বাঙালিবি H Tashi Thondup, 24260, DAB ৪০০-৬০০, কল বুকিং: Horizon Travels, AA 265 Salt Lake City, Sector-1, 3342852/ Wonderlust, Golpark, 4640284, H Teesta Rangit, AP-D ২৫০ ৩০০ ৩৫০, কল বুকিং: Ruman 265438; Sushanta Awards, 22110, D ২২৫-৩০০; Sukkam G H, 22277, D ৪৫০-৬০০।

বিপরীতে ঢাল নেমে Jayashree L, SCB ৪০-৮০ DCB ৬৫-১২৫ TCB ৮৫-১৬০; মুখোমুখি New Jayashree L, মান ও দাম একই। নিরামিষ আহারের জন্য দুই-এরই সুনাম আছে।

পরিবেশ মধুর না হলেও লালবাজারে Deeki H, 22402, DCB ১৭৫ DAB ২৫০ TCB ২৫০; বাজারের মাঝে Ladenla II, SCB ৮০ DCB ১৫০; পাশেই Sonam H, H Lhasa, Denzong Cinema Rd, DCB ১২৫ TCB ১৭৫ FCB ২২৫। Green Hills, Denzong Cinema Rd, Lall Bazar, D ৪৫০ T ৫৫০ ডর্মি ১০০; H Margold, NH-1A, 24089, S ৩৫০ D ৪৫০ Denzong Inn, Denzong Cinema Complex, 22692, S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ১২৫০-২৫০০, কল বুকিং: 268593/2489014; বাস স্ট্যান্ড থেকে ১০ মিনিটের পায়ে হাঁটা দূরত্বে অবস্থান এদের।

H Orchid, 23151, DCB ২০০ DAB ২৫০-৩৫০ FAB ৩২৫-৪৫০, কাঞ্চনজঙ্ঘাও দৃশ্যমান এদের ঘরের জানালায়, কল বুকিং: 4680639; H Norbu Samphel, 22980, SCB ৩৫০ DCB ৪৫০; H Bayul, DAB ৪৫০ ৫৫০ ৬০০; H Quality,

বাঁয়ে খাপ উঠে Tibbet Rd, সিনে চলেছে M G Rd, বাঁকের মুখে ডাইনে H Geetanjali, near Taxi Stand, Tibbet Rd-1৫ H New Merigold, কল বুকিং: 2465171/2487181; H Lhakpa, DCB ১৫০ TCB ১৭৫ DAB ২২৫ TAB ২৫০; H

Mig Tin, DCB ১৫০, DAB ২৫০, ডর্মি ৪৫; *H Palbher*, ② 24254, D ৪৫০; *H Sonam Delek*, ② 22566, S ২২৫-৩৫০, D ৩৫০-৪৫০; *Modern Central H*, ② 24317, DAB ৩৫০, ৪৫০, কল বুকিং: ② 290401; *H Blue Sky*, DAB ২৫০, ৩৫০, ৪৫০, কল বুকিং: ② 2426592/2465171/4660536/455236/2485677; *H Sunflower*, DCB ২৫০, DAB ৩০০, ৪৫০, TAB ৪৫০, ৫৫০, কল বুকিং: S Chatterjee, 1st floor, R No-53, 14/2 Old Chinabazar St-1, ② 2429757.

এছাড়াও হোটেল আছে শহর জুড়ে আরও নানান। M G Marg-এ—**H Tashi Delek*, ② 22991, AP-S ২০০০, D ২৫০০, সুইট ৩০০০-৩৫০০, কল বুকিং: ② 2465171/268593; বিপরীতে বাজলির *H Ben*, ② 24322, DAB ৩৫০, ৫০০, ৬০০, TAB ৪০০, কল বুকিং: Dolly Roy, 1 Nepal Bhattacharya St-26, ② 4666584/264476; বাজলি মালিকানায় *Subash L*, কল বুকিং: Mitra Special ৬২ বেস্টিক স্ট্রিট-৬৯, ② 4644707/277006; *H Doma*, DAB ২৫০, ৩০০, TCB ২৫০; *H Hill View*, New Market, ② 22669, S ৪৫০, D ৫৫০, ৬৫০; *H Himalchuli*, NH-31A, ② 22714, SAB ৪৫০, DAB ৬৫০, সুইট ১০০০; *H Sherny* M G Marg, D ৩৫০, T ৪৫০, কল বুকিং: Mou Travels, 14 N S Rd, 1st Floor, Cal-1, ② 2201919; *H Dongkheala*, D ৫০০, ৬০০, ৬৫০, কল বুকিং: ② 4714633; *H YunThang*, Church Rd, ② 23841, D ৩৫০-৬০০, কল বুকিং: ② 4714633; *H Anola*, M G Marg, ② 24233, SAB ৫০০, ৫৫০, D ৬০০, ৭০০, সুইট ১২০০, কল বুকিং: Linkage, ② 2465171/Diamond ② 276714; *Red Ruby*, D ৩৫০, ৪৫০; *H Siddhartha*, M G Marg, D ৩২৫, T ৪৫০, কল বুকিং: ② 2280025; *Glenz L*, কল বুকিং: 268/A, B B Ganguly St-12, ② 4405492/271976; *H Satyam*, NH 31A, Panihouse, S ৪৫০, D ৬৫০; *H Sunakhari*, Diesel P H Rd, S ২২৫-২৭৫, D ৩৭৫-৪৫০; *Holiday Home*, NH31A, ② 23076, S ৩০০, D ৪৫০; PS Rd-এ—*H Orient*, S ২০০, D ৩০০; অভি সাধারণ *H Sikkim*, D ২৫০, ৩০০; *Yuma Lodge*, near SNT Bus Std, কল বুকিং: Rumani, ② 265438; *H Soyang*, M G Marg, ② 22331, D ৬৫০, ৮৫০, ১২৫০, কল বুকিং: Diamond ② 276714; *H Four Seasons*, DAB ৪৫০, ৫৫০, ৬৫০, কল বুকিং: ② 2465171/276714; *Bassera G H*, ② 22677, DAB ৩০০-৪৫০; *Crown L*, New Market, SCB ১২৫, DCB ২২৫; *Sunshine L*, New Market, DCB ২২৫, DAB ৩৫০; *H Hill Queen*, কল বুকিং: Ramkrishna Travels ② 3509199; দুইয়েরই অগ্রিম বুকিং—কলকাতা ② 4680237/5557182/4700407; *Neelam H*, *Shanti Bhawan*, অব: দার্জিলিং স্টোরস; *H Valley View*, D ৩০০-৪০০, কল বুকিং: ② 5534397/2465171; *Annapurna H*, কল বুকিং: ② 262119/5523227/5514862; *H Oasis*, কল বুকিং: ② 2312935/6602235; *H Sukham*, কল বুকিং: Picon Travels, 87 Lenin Sarani-13, ② 2446339; *H Blue Star*, Diesel Power House Rd, ② 23023, DAB ৩০০, ৪৫০, ৫০০, কল বুকিং: Sujon Chatterjee, ② 2429757/Linkage ② 2465171/ Diamond ② 2259639; *H Sherna*, কল বুকিং: Guin ② 271976; *H Prantik*, Diesel Power House Rd, DAB ২৫০,

TAB ৩০০, কল বুকিং: Linkage ② 2448087; *Gyado Tshang*, ছাড়াও নানান। আর আছে *সিকিম গডনমেন্ট গেস্ট হাউস*ও *সার্কিট হাউস* গ্যারান্টি।

নির্জনতা বাঁদের পছন্দ তাঁদের জন্য রয়েছে বাস স্ট্যান্ড থেকে ৩ কিমি দূরে রাজবাড়ির শিরে সিকিম টুরিজমের *Siniolchu L*, ② 22074, SAB ১২৫, DAB ২২৫, অব: Dy Director, Tourist Information Centre, M G Rd, Gangtok-737001, ② 22064; থাকার পক্ষে মনোরম, সুখোদয়ও সুন্দর দৃশ্যমান নানান ঘবে। সকালে ও বিকালে নামা-ওঠায় নিখরচায় টুরিজম থেকে গাড়ির ব্যবস্থা মিললেও যাতায়াত মূলত ৬৫-৮০ টাকার ট্যাক্সি নির্ভর হয়ে পড়ায় স্বল্পকালীন অবস্থানে টেঙে উঠতে অনুৎসাহীদের উচিত হবে এড়িয়ে চলা। তেমনই সিকিম টুরিজমের অদূরে *H Ben*, *Retreat*, *H Norbu Gang*, *H Mt Jopuno*, *H Tashi Thondup*, *H Rendezvous*, *Canuan L*, *Alankar L*, *H Karma*, *H Orchid*, *Sunny GH*, *H Hungry Jack*, *H Tibet*, *Kanchan View*, *H Mayur*-কে নির্বাচন করা যেতে পারে গ্যারান্টি অবস্থানে। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য হোটেল ম্যানেজারদের লিখুন। আর আছে বাস থেকে ৫ মিনিটের পথে বাজলির *H Sherna*, M G Marg, Opp Star Cinema, ② 22384, এদের কল বুকিং: ডলফিন ট্রাভেলস, ২৬/২এ, শশীভূষণ দে স্ট্রিট-২২, ② 278968.



হলিডে হোম: আর আছে নানান বাণিজ্যিক সংস্থার হলিডে হোম গ্যারান্টি শহরে। বুকিং এদের মূল দপ্তরে। *UBI Employees' H H* at Hotel Cauvery, CB : 4 N C Dutta Sarani, 4th floor, Cal-1, ② 2200841; *Bank of Baroda H H*, CB : 4 India Exchange Place, Cal-1, ② 2201475; *Standard Chartered Bank Cooperative Society H H*, CB : 4 N S Rd-1, ② 2206902; *Standard Chartered Bank Recreation Club H H*, CB : 4 N S Rd-1, ② 2206902; *Uco Bank Employees' Credit Society*, CB : 3-4 Lindsay St-87; *Dena Bank Employees (W.B) H H*, opp S T Bus Stand, CB : 11 Brabourne Rd-1, ② 2421113; *Syndicate Bank Staff Recreation Club H H*, Lall Market, CB : 3-B, Lalbazar St, 2nd floor, Cal-1, ② 2486055; *Indian Overseas Bank H H*, CB : P-35 Indian Exchange Place-1, ② 2253187; *IOB Employees' Cooperative Society H H*, Development Area, CB : P-35 India Exchange Place-1, ② 2254055; *Calcutta Reserve Bank Workers' Credit Society H H*, CB : RBI, PDO (3rd floor), ② 2208331; *RBI Employees Credit Society H H* at Alankar L, Cal RBI Supervisor Staff H H, Development Area, CB : RBI, 7th floor, ② 2208331 Ext 167; *Canara Bank Staff Recreation Club H H*, (no cooking arrangement) M G Marg ও Development Areaয় ২টি ইউনিট এদের, CB : 2 Brabourne Rd-1, ② 2254966; *Kumarhati Municipal Employees' Welfare Society*, near SNT Bus Stand, CB : 1, M M Feedar Rd, Cal-56, ② 5531646; *Bank of India Officers' Association H H*, Lall Market, CB : 23A-B, N S Bose Rd-1, ② 2204446; *Punjab & Sind Bank Staff Federation H H*, near Govt Bus Stand, 8, Old Court House St, Cal-1, ② 2430954; *Uco Bank Officers' Asso-*

ciation H.H. near SNT Bus Stand, CB : 1. R.N Mukherjee Rd, 4th floor, Cal-1, ☎ 2480277 ছাড়াও নানান।

আর আহাৰ্যের জন্য M.G Marg-এ Blue Sheep বা H Orchid বা হোটেল তিব্বতের Snow Lion-এ চীনা ডিশের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। তেমনই স্থান মহাশ্যো ভারতীয়, চীনা ও তিব্বতীয় আহাৰ্যের জন্য H Green, বিপন্নীতে House of Bamboo যথেষ্ট পপুলার। আর নিরামিষ আহাৰ্যের জন্য জয়শ্রীর Maṛwari Bhojanalaya বা নিউ জয়শ্রীর Sri Ganesh চলনসই। M.G Marg ও NH31A-র সংযোগে Khoo-Chi-Restaurant-টির যথেষ্ট সুনাম চীনা ডিশ পরিবেশনে। Taxi Stand-এ Sip N Bite-ও চলা যেতে পারে দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহাৰ্যের জন্য। প্রাইভেট লিজে SNT বাস স্ট্যান্ডের ক্যান্টিনটিও আহাৰ্য পরিষেবা আদরণীয় হবে। আর সিকিম আহাৰ্যের স্বাদ দিন ময়ুর হোটেলের Shaepi বা তাশি ডেলেকের Blue Poppy-তে। তেমনই চলতে ফিরতে জলপান সাক্ষর M.G Marg-এ দে'জ সুইটস বা নারায়ণ দাসের দোকানে। আর ট্যুরিস্ট অফিসের পাথে NH 31A-তে Metro's Fast Food-সদাই ব্যস্ত চা-কফি-আইসক্রিমের সঙ্গে নিরামিষ ফাস্ট ফুড পরিষেবা। কেনাকাটার জন্য নিউ মার্কেট বা লাল মার্কেটে চলুন। তবে, মঙ্গলবার বন্ধ থাকে গ্যাংটকের দোকানপাট।

সিকিমের হস্তশিল্পের যথেষ্ট প্রশস্তি আছে পর্যটক মহলে। কেনাকাটায় সরকারি ইনস্টিটিউট অব কট্টেজ ইনডাস্ট্রিজ দেখা যেতে পারে। ফারের টুপি, রকমারি জুতা, চেয়ার ও সোফার কাপেট সস্তা করতে পারেন স্মারক রূপে। আর মেলে দেওয়াল চিত্র, রূপার তৈরি আভরণ, টেমি বাগিচার চা, বড় এলাচ, গ্যাংটকের দোকানপাটে। তবে, সরকারি দোকানে দাম ফিক্সড হলেও প্রাইভেট দোকানে টাগ-অব-ওয়ার চলে দাম নিয়ে।

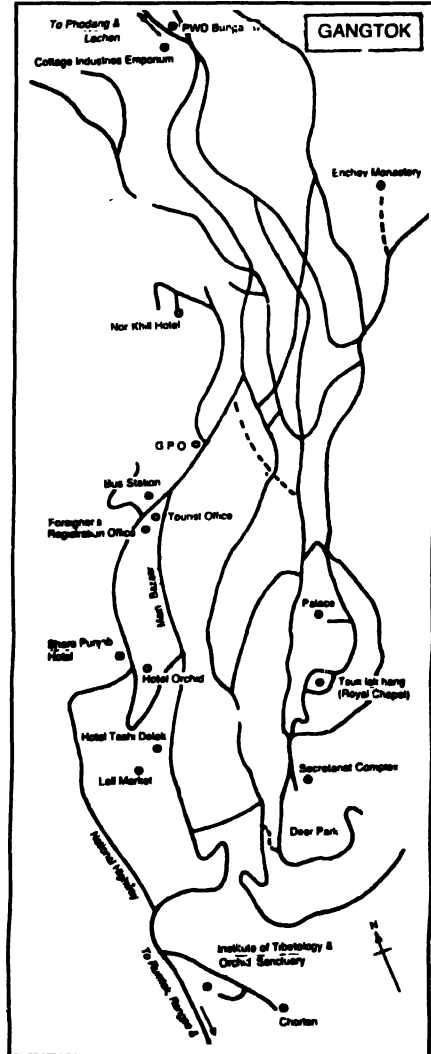
সিকিমে সুরাপানে কোনও বিধি-নিষেধ নেই। সিকিমের Rangpo-তে তৈরি সুরা যেমন দামে সস্তা তেমনই সহজলভ্যও। তবে রাজ্যের বাইরে নেওয়া আইনে মানা। অনুমতিতে সীমিত পরিমাণ সঙ্গে আনা যায়। স্বাদ নিতে পারেন মোমোর সঙ্গে ছাং পানীয়ের গ্যাংটকের রেস্তোরাঁয়।

এবার ঘরে ফেরার পালা। গ্যাংটক থেকে ৪½ ঘণ্টায় শিলিগুড়ি যাচ্ছে SNT-র বাস ৬-২০, ৬-৩০, ৭-০০, ৭-৩০, ১০-০০, ১২-১৫য়; ডিলাক্স যাচ্ছে ৮-০০, ১১-০০টায়; কালিম্পং যাচ্ছে ৭-১৫, ১২-৩০এ; দার্জিলিং ৭-০০; বাগডোগরা ৭-০০; কলকাতা ১৪-০০; জোরখা ৭-০০, ১৪-০০; নামচি যাচ্ছে ৭-৩০, ১৪-০০; গেজিং যাচ্ছে ৭-০০ ও ১৩-০০টায় গ্যাংটক থেকে। এছাড়া প্রাইভেট বাস, স্বরাজ মাজদা লাক্সারি বাস, জিপ ও ল্যান্ডরোভার যাচ্ছে গ্যাংটক থেকে কালিম্পং, শিলিগুড়ি ও দার্জিলিং-এ। তবুও যেন টিকিটের হাফাকার। এমনকি কাউন্টারের প্রথমে থেকেও আগে-ভাগে টিকিট মিলবে সে সম্ভাবনাও সুদূর পরাহত। তাই উচিত হবে (৯-১২-০০ ও ১৩-১৫-০০টায়) আগ্রিম টিকিট কেটে যাত্রাকে সুনিশ্চিত করে রাখা।

উত্তর সিকিম

সিকিম পর্যটনে মুখ্য স্থান নিয়েছে আজ উত্তর সিকিম। ফুলে ভরা উপত্যকা, ৫০০রও অধিক জলপ্রপাত, উষ্ণ

প্রস্রবণ, হিমবাহ, তুষারমৌলী হিমালয়—সবে মিলে উত্তর সিকিম আজ স্বর্গের নন্দনকানন সম। যাত্রীও যাচ্ছেন Gangtok-Kabi 23-Phodong 40-Mangan 67-Singhik 72-Chungthang 98-Lachung 117 কিমি হয়ে ১৪১ কিমি দূরের ফুলের উপত্যকা ইয়ুমথ্যাং (Yumthang)। পথে পড়ে সিনবা (Singha) রডোডেনড্রন স্যাকচুয়ারি। SNT-র বাসও যাচ্ছে গ্যাংটক থেকে ৮-০০ ও ১৩-০০টায় ছেড়ে মঙ্গল পৌছে আরও ৫ কিমি এগিয়ে সিংঘিক। চুংথাং যাচ্ছে সকাল ৮-



০০টায় মেল বাস, লাচুং যাচ্ছে সকাল ৯-০০টায় আর্মি বাস। তবে, খুবই অনিয়মিত এপথের বাস চলা। মঙ্গল-সিংঘিক হয়ে টুং ব্রিজ পর্যন্ত ভারতীয়দের যাতায়াত অবাধ হলেও টুং ব্রিজের উত্তরে যেতে Superintendent of Police, Gangtok থেকে RAP লাগে।

ফোদং: গ্যাংটক থেকে পাহাড় পৌঁচানো পথে ৪০কিমি উত্তরে ৫৭০০ফুট উঁচু থামলঙে ফোদং মনাস্টি বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। ১৭৪০এ তৈরি মনাস্টি সংস্কার হয়েছে সম্প্রতি। পর্বতিন মানচিত্রে উল্লেখ্য না হলেও সুন্দর প্রকৃতির মাঝে সিকিমের অন্যতম সুন্দর মনাস্টির প্রাচীন ম্যুরাল চিত্র অনন্য করে তুলেছে একে। মনাস্টির শিরে ২ কিমি দূরে অতীতের লাবরাঙ গুম্ফাটিও ট্রেক করে আধ ঘণ্টায় দেখে নেওয়া যায় ফোদং থেকে। সিকিম-রাজ্যের তৃতীয় রাজধানী বিধ্বস্ত হলেও নতুন করে ১৯ শতকের প্রথমভাগে রাজ্যপাট বসে সিকিমের Tumlongএ।

মঙ্গন: ফোদং থেকে ২৭ কিমি যেতে ৩৯৫০ ফুট উচ্চ উত্তর সিকিমের জেলা সদর মঙ্গন। মঙ্গন থেকে ৫ কিমি গিয়ে সিংঘিক। নয়নলোভন কাঞ্চনজঙ্ঘার নয়নাভিরাম শোভা সুন্দর দৃশ্যমান। তেমনই আছে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে পাহাড় ঘড়োয় সিংঘিক গুম্ফা ও চোর্টেন। গুম্ফার শিল্পকর্ম, ফ্রেস্কো চিত্র, নানান মূর্তি অনবদ্য।

চুংথাং: সিংঘিক থেকে ২৬ কিমি আর গ্যাংটক থেকে ৯৮ কিমি উত্তরে ৩৫০০ ফুট উচ্চ মিলিটারি ছাউনি চুংথাং। পাজাবিতে চান্সি থা অর্থাৎ সুন্দর জায়গা সিকিম গেজেটি-রারে হয়েছে চুংথাং—অর্থ তার দুই নদীর বিকে। মঙ্গনের অদূরে জেমি হিমবাহ থেকে জাত লাচেন চুও লাচুং চু দুই পাহাড়ী নদীর সঙ্গম। লাচেন ও লাচুং-এর মিলিত ধারায় পুষ্ট হয়েছে তিব্বত সীমান্তে উত্তর সিকিমের সোলামু হ্রদ (Tsolhamu lake) থেকে জাত দিসতাং বা তিস্তা নদ। দ্বিমতে আত্রৈয়ী, পুনর্ভবা ও করতোয়া-র ত্রিমোতা-ই হল তিস্তা। সঙ্গমের মনোহর পরিবেশে PWD Bungalow আছে চুংথাং-এ। আরও উত্তরে ২০ কিমি যেতে ৯৫০০ ফুট উঁচুতে লাচেন গ্রামেও মনাস্টি আছে—দেবতা স্বর্ণকান্তি গৌতম বুদ্ধ। বাংলাও আছে লাচেন-এ। উত্তর সিকিমে পথের শেষ ১৩০০০ ফুট উঁচু ঝাংগু-র বরফরাজ্যে। এরপর তিব্বতি

মালভূমির অপার বিস্তৃতি। আর আছে কনকনে উত্তরে হাওয়া ঝাংগু-তে। বসতি নেই, থাকার ব্যবস্থা মেলে ঝাংগু-র একমাত্র ডাকবাংলোয়।

গ্যাংটক থেকে নিয়মিত বাস যাচ্ছে ফোদং-এ। ঘণ্টা আড়াইয়ের পথ। দিনে দিনে ফোদং বেড়িয়ে ফেরাও যেতে পারে গ্যাংটকে। এমনকি মঙ্গনও যাচ্ছে ৮-০০, ১৩-০০, ১৬-০০টায় ছেড়ে ঘণ্টা পাঁচকে বাস। আবার শ'চারেক টাকায় জিপ নিয়েও কাঞ্চনজঙ্ঘা ও মনাস্টি দেখে ফেরা যায় ঘণ্টা পাঁচকে। তবে, বিকাল ১৬-০০টায় গ্যাংটকের শেষ বাসটি ফোদং ছেড়ে যাচ্ছে। দিনে দিনে দর্শনে সময়ের সঙ্গে ভারসাম্য রেখে লাবরাঙ-ও চলা যেতে পারে।

লাচুং: গ্যাংটক থেকে ১১৭ কিমি দূরে নয়নলোভন প্রকৃতির মাঝে ছোট্ট উপত্যকা লাচুং। *দিমোস্ট পিকচারাব্লি ভিলেজ*—চিত্রময়ী লাচুং-এ ভূটিয়াদের বাস। বার্লির আটা বা ছাম্পা আর মাংসের তৈরি *স্যাফলে* এদের প্রিয় খাদ্য। তেমনই মাখন চায়ের প্রচলন আছে এদের বাড়ি-ঘরে। শীতের সঙ্গে শ্রান্তি ও ক্লান্তি কমাতে ইয়াকের দুধে তৈরি ছুরপি এদের মুখে মুখে। জীবনধারায় তিব্বতের ছাপ। গৃহের কর্মী এদের জননী। ভূমারখবল পাহাড় চক্রগারের ব্যুহ গড়েছে। রঙেরও বদল ঘটে পাহাড়ে। প্রত্যাষের নীলাভ থেকে ধীরে ধীরে সাদা ও সবজে রঙ ধরে পাহাড়। গভীর রাতে রঙ নেয় পাহাড় গৈরিকে। ২৭৩৪ মি উঁচু লাচুং-এ হাজার পা অর্থাৎ লোকের বাস। দোকানপাটের অভাব। তবে এপ্রিল-মে মাসে নানান বর্ষের ২৪ ধর্মী রডোডেনড্রন ফোটে বটানিক্যাল অডিসি লাচুং-এ। লাচুং-এর মুখ্য আকর্ষণ ইয়ুমথাং প্যাকেজ যাত্রায় রাজীবাসের জংশনরপে। বয়ে চলেছে লাচুং নদী। সমুখেই ধরিত্রী কাঁপিয়ে পাহাড় বেয়ে ঝরনা নামছে—ছুমাজং। বর্ষায় জৌকের উপদ্রব আছে লাচুং-এ। আর আছে মনাস্টি নদী পারে লাচুং-এ।

মার্চ থেকে জুন আবার অক্টোবর থেকে ডিসেম্বর (প্রথম) মাসে গ্যাংটক থেকে যাত্রী আসছেন প্যাকেজ ট্যারে। রাজিবাস লাচুং-এ। ২ দিন ১ রাত ১২০০-১৪০০; ৩ দিন ২ রাত ১৯০০-২৫০০; ৪ দিন ৩ রাত প্যাকেজের ভাড়া ৩০০০.০০ টাকা। কোম্পানি ও বিলাস-বাসনের তারতম্যে ভাড়া ব্যতিক্রম ঘটে। ৪ দিন ৩ রাতের সফরে ইয়ুমথাং-এর সঙ্গে কাটাও জুড়ে সূচি। তবে মে-জুন ও অক্টোবর-



ইয়ুমথাং অ্যালপাইন প্যাকেজ ট্যার

পাহাড় পর্বতে ঘেরা বরফ রাজ্যে প্রকৃতির স্বর্গলোক লাচুং-এর শিরে অ্যালপাইন ফুলের উপত্যকা ইয়ুমথাং আর ডাইনে নয়নলোভন কাটাও প্যাকেজ ভ্রমণে যাতায়াত, থাকা-খাওয়ায় অদ্বিতীয়।

মার্কো পোলো ওয়ার্ল্ড ট্র্যাভেলস

পালজোর স্টেডিয়াম রোড □ গ্যাংটক □ পূর্ব সিকিম

ডায়াল: (০৩৫৯২) ২৪১১৬/২৫২১৩, বাড়ি: ২৫০৭৪, ফ্যাক্স: (৯১)০৩৫৯২-২৫০৭৮,

২২৭০৭ Attn. MWT

কলকাতা অফিস: ডায়মন্ড ট্যারস এ্যান্ড ট্র্যাভেলস, ৩০ যদুনাথ দে রোড, ইন্ডিয়ান এয়ারলাইন্স-এর বিপরীতে, কলকাতা-৭০০ ০১২, ফোন: ২২৫ ৯৬৩৯/২৭ ৬৭১৪, ফ্যাক্স: ৯১ ৩৩ ২৭৬৭১৪

ডিসেম্বর মাসের প্রথমপাদে কাটাও দর্শনে চলা গেলেও মার্চ-এপ্রিলে এপথ রুদ্ধ থাকে বরফে। যাতায়াত-আহার-অবস্থান জুড়ে প্যাকেজ ভাড়া। প্যাকেজ যাত্রায় RAP-রও ব্যবস্থা করে স্ব ট্রাভেল এজেন্ট।

উৎসাহীরা (ক) Blue Sky Tours & Travels, Tibet Rd, Gangtok-737101, ☎ 23330, Fax 03592-23330; সিকিম ট্যুরিস্ট ইনফরমেশন সেন্টারের কাছেও শাখা বসেছে ব্লু স্কাই-এর। এদের কলকাতা দপ্তর 53/24B, Hazra Rd, Cal-19, ☎ 4746704. (খ) Marcopolo World Travels, P S Rd, Gangtok, ☎ 24116, Fax 03592-22707. এদের কলকাতায় যোগাযোগ: 30 Jadunath Dey Rd, (2nd Floor) off IAC, Cal-12, ☎ 2259639. (গ) Khangri Tours & Travels, Tibet Rd, Gangtok, ☎ 22556; ছাড়াও নানান ট্রাভেল এজেন্ট উত্তর সিকিম প্যাকেজে যাত্রী বুক করে থাকে গ্যাংটকে।

তবুও যেন উচিত হবে মিডিয়া পরিহার করে সরাসরি ত্রয়ীর সঙ্গে যোগাযোগ গড়া। লাচুং-এ রাব্রিবাসের রিস্টওগুলি এই ত্রয়ীর দখলে। আহরও মেলে প্রতিটা রিস্টে। লাচুং-এ আছে—Blue Sky-এর: The Apple Valley Inn (২০), Alpyne Resort (১৬), Blue Khang G H (১০), Lali Guras (৯), Yakshiy Resort (১৪), Laxoxay Resort; Marcopolo-র: Snow Line Resort (২৮); Khangri Travels-এর: Dubla Inn (৩০)। বন্ধুরা মধ্যে শয্যা সংখ্যা। আর এক প্রাইভেট বাড়িতে থাকার ব্যবস্থা মেলে লাচুং-এ। এমনকি বাড়িলি মালিকানাধীন Hotel Ben ও Sanyal Hotel গ্যাংটক থেকে ৩ দিন ২ রাতের প্যাকেজে ইয়ুমথাং বেড়িয়ে আনে। এছাড়াও থাকার নানান ব্যবস্থা মেলে উত্তর সিকিমের সারা পথে।

ফোদাং-এ আছে মনাস্টির ভাইনে সিকিম ট্যুরিজমের Tourist L. ২ কিমি দূরে আছে Yak & Yeti, Evergreen H; মাংশিলায় আছে সিকিম ট্যুরিজমের Tourist L. মঙ্গনে আছে Himalaya L. অতি সাধারণ Ganga, Assam H ও PWD Bungalow. সিংখিক-এ আছে সিকিম ট্যুরিজমের Tourist L. আর Forest Log Hut আছে লাচুং, ফনি ও ইয়াকসে। আহার সর্বত্র মিললেও লাচুং থেকে ১৮ কিমি দূরে ইয়ুমথাং-এর ৬ কিমি আগে অনিন্দ্যসুন্দর নৈসর্গিক শোভার মাঝে ৯০০০ ফুট উচ্চ ইয়াকসে-র ফরেস্ট লগ হাটে আহার ও শয্যার অভাব। তবুও যেন ভোজনবিলাসীদের উচিত হবে রেশন ও টুর্কিকি গ্যাংটক থেকে সঙ্গী করা।

ইয়ুমথাং অ্যানপাইন প্যাকেজ ট্যুর

তবুও যেন উচিত হবে ইয়ুমথাং-এর সঙ্গে কাটাও জুড়ে প্যাকেজ ট্যুরে বেড়িয়ে নেওয়া। ৩ দিন ২ রাতের সফরে প্রথম দিন গ্যাংটক থেকে যাত্রা করে লাচুং পৌঁছে রাতের বিশ্রাম। দ্বিতীয় সকালে ব্রেকফাস্ট সেরে ইয়ুমথাং বেড়িয়ে লাচুং ফিরে অবস্থান। তৃতীয় সকালে আবহাওয়া অনুকূল হলে কাটাও ও লাচুং মনাস্ত্রি দেখে মঙ্গনে লাঞ্চ সেরে গ্যাংটক চলা। ইয়ুমথাং যাত্রায়—মার্চ-জুন, সেপ্টেম্বর-ডিসেম্বর মাসের প্রথম চলা গেলেও মার্চ ও অক্টোবর-ডিসেম্বর (প্রথম ভাগ) মাস উজ্জ্বল নীলাকাশ আকর্ষণ বাড়ায়। তবে, মার্চ-এপ্রিল মাসে বরফাচ্ছাদিত থাকায় কাটাও যাত্রীদের মেন-জুন ও সেপ্টেম্বর-নভেম্বর চলা উচিত হবে। ইয়ুমথাং প্যাকেজ যাত্রায় উচিতও হবে লাচুং-এ পৌঁছে জিপি চালকের সঙ্গে শ'পাঁচেক টাকায় কাটাও দেখে ফেরা। আর একক যাত্রায় Superintendent of Police, Gangtok থেকে Restricted Area Permit করে নিতে হয়। কমান্ডার জিপও নিজস্ব ব্যবস্থায় হাজার তিনেক টাকায় মেলে। জিপে লজিং ব্যবস্থা সময়ে সময়ে সঙ্কট হয়ে দেখা দেয় লাচুং-এ। নির্ভরতা কম হলেও স্থানীয় বাড়ি-ঘর ভরসা একক যাত্রায়। লজিং হাউসগুলি প্যাকেজ প্রোগ্রামে ফুল থাকে মবসমে। শীতের আধিকা আছে এপথে। ভারী উলেন সঙ্গী করা দরকার। দোকানপাট মিললেও চাহিদাভিত্তিক নয় লাচুং-এ। ইয়ুমথাং ও কাটাও দুইয়েরই অদূরে চীন (তিব্বত) সীমান্ত। সাময়িক ঘাঁটি সারাপথে—ছবি তোলা মানা। কামেরা ও জমা রাখতে হয় ইয়ুমথাং-এর পথে লাচুং থেকে ১ কিমি দূরের মিলিটারি চেকপোস্টে। কাটাও হিমবাহে ছবি তোলায় মানা নেই কোনও। তবে ২ দিন ১ রাতের সফর যাত্রায় কাটাও দেখার সময় সম্মুলান অসম্ভব হয়ে পড়ে। হিমবাহের অদূরে মিলিটারি চেকপোস্ট—সাধারণের প্রবেশ মানা।

ইয়ুমথাং: প্রকৃতির স্বর্গলোক ইয়ুমথাং। হিমালয় প্রেমিকদের অন্যতম আকর্ষণ গ্যাংটক থেকে ১৪১ কিমি

বরফের দেশে ফুলের জঙ্গলে

উত্তর সিকিমের রডোডেনড্রন ফোটে এপ্রিল থেকে জুন পর্যন্ত। সেপ্টেম্বর থেকে ডিসেম্বর সিকিমের পরিষ্কার আকাশে ধরা দেয় হিমালয়ের বিভিন্ন শৃঙ্গের বিচিত্র শোভা। লাচুং, পেমিয়াংশির সে এক অপূর্ব রূপ। ইয়ুমথাং-এর রাস্তায় প্রকৃতি যেন তার সমস্ত সপশর উজাড় করে মেলে ধরে। এছাড়া আছে ছোট্ট শহর গ্যাংটক থেকে সঙ্গী কাঞ্চনজঙ্ঘা, বরক মোড়া ছাদু লেক আর পশ্চিম সিকিমের অসাধারণ সৌন্দর্য।



সব দায়িত্ব নিয়ে আনন্দ দেবে—
BLUE SKY TOURS & TRAVELS [Iaas Member]

Lachung, Khangsar, Tibet Road, Gangtok.

Visit
SIKKIM
with us

for Booking Contact: **Blue Sky Tours & Travels, Regd. & Recognised by the Govt. of Sikkim**
Calcutta Office: 53/2/4B, Hazra Road (Near Ballygunge Phanri, Philips Service Centre)
Tel: 474-6704, Fax: 91-33-4746704

দূরে উত্তর সিকিমে ৩৬৪৫ মি উঁচুতে অনিন্দ্যাসুন্দর অ্যালপাইন ফুলের উপত্যকা ইয়ুমথাং। প্রাইমুলা ফুলের কার্পেট মোড়া সারা উপত্যকা। হিমালয়ের অপার সৌন্দর্য, তেমনই উষ্ণ প্রবণ, হিমবাহ, শিবমন্দির, জলপ্রপাত—সবে মিলে সিকিম ভ্রমণে আজ অদম্য।

খরস্রোতা তিস্তা নদের পাড় ধরে সবুজ অরণ্যে ছাওয়া পাহাড়-পর্বত বিদীর্ণ করে অনিন্দ্যাসুন্দর প্রকৃতির মাঝ দিয়ে জিপ চলে এগিয়ে। ৬৭ কিমি দূরের মঙ্গন হয়ে সিংখিক পেরিয়ে টুং রিজের RAP দেখাতে হয়।

দ্বিতীয় সকালে লাচুং থেকে জিপ চলে একেবের্কে পাহাড় থেকে পাহাড়ে। এপ্রিল-মে মাসে প্রাইমুলা ফুলের জাজিমে মোড়া উপত্যকায় রঙবেরঙের রডোডেনড্রন, চেরি, গুক, মেপল, ম্যাগনোলিয়া, জুনিপার, পাইন ছাড়া ধরে এপথে। রঙবেরঙের ফুলের সঙ্গে অর্কিডের বর্ণালী রোমাঞ্চিত করে সারা পথে। আর আছে কাঞ্চনজঙ্ঘা—লুকোচুরি খেলে যাত্রীর সঙ্গে। হিমবাহেরও গুরু লাচুং-এর ১৮ কিমি দূরে ইয়াকসে-য়। ডাইনে-বায়ো-সমুখপানে বরফ শুধু বরফ। গাড়িও চলে বরফ মাড়িয়ে মার্চ-এপ্রিলে এপথে। পথের শেষ আরও ৬ কিমি গিয়ে ইয়ুমথাং-এ বিচিত্র বর্ণের ঘাসের জাজিমে মোড়া দিগন্ত বিস্তৃত উপত্যকায়। অদূরে ডানহাতি কাঠের সেতুতে চুপেরিয়ে সাচু বাউস প্রবণ। জলে গন্ধক আছে। স্নানেরও ব্যবস্থা মেলে। বয়ে চলেছে লাচুং হু অর্থাৎ নদী। নদীর ধার ধরে পায়ে পায়ে পৌঁছান ভ্যালি অব ফ্লাওয়ারস বা অ্যালপাইন ফুলের জলসায়। মে-জুনে ৩৩ রকমের রডোডেনড্রনের সঙ্গে অ্যালপাইন ফুলেরা ফাগ খেলে সারা ইয়ুমথাং-এ ইয়াকেরা চরে বেড়ায়—দূর-দূরান্তে শ্বেত-গুপ্ত হিমালয় ফুলের সুবাস নেয়। আর, আছে ফুলে ফুলে উড়ে বসা বাহারি প্রজাপতি, মথ ও মৌমাছি। নিকট-দূরে তুষার কিরীট ভালে হিমালয়ের শিখররাজি। তারও ওপরে চাঁদোয়া হয়ে নীলাকাশ। ডিসেম্বরে ছাম-লো সুও আকর্ষণীয় উৎসব লাচুং-এ।

কাটাও: হিমালয়ের হিম সৌন্দর্য আবাদনে ইয়ুমথাং-এর প্রতিদ্বন্দ্বী রাপে কাটাও আজ সমধিক খ্যাত। লাচুং নদী পেরিয়ে লাচুং-এর শিরে ২৪ কিমি দূরে ১২৬৬৬ ফুট উচু কাটাও। প্রকৃতিতে ইয়ুমথাং সম—তবে আধিকা ঘটেছে ফুল ও বরফে। ইয়ুমথাং-এর মতোই প্রিমুলা ফুলের জাজিমে রঙবেরঙের লাখে রডোডেনড্রনের বর্ণালী সারাপথকে রমণীয় করে তোলে। ইয়াকেরা চরে বেড়ায়। বরফে মোড়া পাহাড়রাজি ব্যারিকেড গড়ে। চলতে ফিরতে বরফ, বরফ ডাইনে-বায়ো ফসিল হয়ে। মে মাসেও গাড়ি চলে বরফ শুড়িয়ে এপথে। নয়নলোভন এ-প্রকৃতির মাঝে যাত্রীও যেন দিশেহারা। কেউবা স্লিপ খাচ্ছেন বরফরাজ্যে—কেউবা বরফ হুঁড়ছেন তাল পাকিয়ে সহযাত্রীদের দিকে। অদূরে মিলিটারি চেকপোস্ট—সাধারণের প্রবেশাধিকার নেই। উচিত হবে ইয়ুমথাং প্যাকেজ টুরে জিপ চালকের সঙ্গে সমঝোতায পৌঁছে কাটাও বেড়িয়ে নেওয়া।

দক্ষিণ সিকিম

রাবাংলা: সিকিমের আর এক দিগন্ত পড়ে রয়েছে রাবাংলাকে কেন্দ্র করে দক্ষিণ সিকিমে। গ্যাংটক-গেজিং পথের মাঝ দূরত্বে ৮০০০ ফুট উঁচুতে রাবাংলার অবস্থান। দুইয়েরই দূরত্ব ৬৬ কিমি রাবাংলা থেকে। গ্যাংটক-গেজিং/পেলিং বাস/জিপ যাচ্ছে রাবাংলা হয়ে। আবার শিলিগুড়ি SNT বাস স্ট্যান্ড থেকে বাস বা জিপে ৮৪ কিমি দূরের সিংতাম পৌঁছে নতুন করে ৩৭ কিমি দূরের রাবাংলা চলা যায় জিপে। দিনভর জিপ মেলে—শেষ জিপ ১৫-০০টায় সিংতাম ছেড়ে রাবাংলা যায়। আর সপ্তাহের ১২৪৫৬দিন ১৪-০০টায় শিলিগুড়ি থেকে সরাসরি জিপ মেলে রাবাংলার। তেমনই SNT-র বাসে ১৩-০০টায় শিলিগুড়ি ছেড়ে ৪ ঘন্টা ৯৬ কিমি দূরে পটে আঁকা ছবি দক্ষিণ সিকিমের জেলা সদর নামচি পৌঁছেও বাস বা জিপে চলা যায় ২৬ কিমি দূরের রাবাংলায়। গ্যাংটক থেকেও ৭-৩০ ও ১৪-০০টায় বাস আসছে নামচি। H Susagatam, কল বুকিং: ৩ 440712৪ ছাড়াও হোটেল আছে নানান নামচিত।

সবুজে ছাওয়া রাবাংলা ঋতুভেদে রং বদলায়। মার্চ-এপ্রিল-মে মাসে চেনা-অচেনা নানান ফুলের বর্ণালী রমণীয় করে তোলে রাবাংলাকে। শীতে বরফ পড়ে রাবাংলার শিরে। চলতে-ফিরতে সংগ্রহ করা যায় তিব্বতীয়দের হাতে বোনা কার্পেট ও দারু-শিল্প রাবাংলার স্মারকরূপে। প্রতি বুধবার হাট বসে। ১৮০ খাপের সিঁড়ি উঠে মনাস্টি থেকেও দেখে নেওয়া যায় রাবাংলার প্রকৃতি। ঘন্টা চারেকের ১২ কিমি ট্রেক করে ১০৬০০ ফুট উঁচু মেনাম পর্বতচূড়ো থেকে কাঞ্চনজঙ্ঘার শোভাও নয়নাভিরাম। সূর্যোদয়ে ক্ষণে ক্ষণে রঙের বদল—ফাগ খেলে সারা পর্বতমালা। সূর্যাস্তও মনোরম। আর আছে নিরালো নির্জনে দারু তৈরি ক্ষয়িষ্ণু মনাস্টিতে উপবিষ্ট ধ্যানমগ্ন বুদ্ধ। আগস্টের শেষ ও সেপ্টেম্বরের শুরুতে পূজো হয় কাঞ্চনজঙ্ঘার—দূরদূরান্ত থেকে ভক্তরা আসেন, বসে মেলা; নাচ-গান-বজ্রাণে মেতে ওঠে রাবাংলা। কাঞ্চনজঙ্ঘাও দৃশ্যমান এই বিশেষ দিনে। পথ এসেছে ৩৫ কিমি ব্যাপ্ত মেনাম ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি হয়ে। ব্র্যাড ফেজেন্ট, ব্র্যাক ইগল, রেড পাভা, লেপার্ড ক্যাট ছাড়াও নানান জন্তু দেখে নেওয়া যায় মেনামে।

মনাস্টি রেখে আধ ঘন্টা ১৬ কিমি ট্রেক করে একই শৈলশিরায় ভালেদুঙ্গা চলা যায়। দূরান্ত থেকে দেখে নেওয়া যায় মোরগের মাথার মতো ক্রিফ সম ভালেদুঙ্গা পাহাড়। কাঞ্চনজঙ্ঘাও সুন্দর দৃশ্যমান ভালেদুঙ্গায়। তেমনই সুদূর শিলিগুড়িও দেখে নেওয়া যায়—বয়ে চলেছে পট্টধন রাপী তিস্তা। মেনাম ফরেস্ট লগ হাটি কৃতবিক্ষত। রাত্রি বাসে আগ্রহীদের উচিত হবে তাঁবু সঙ্গে নেওয়া। আহাঙ্গাদি নিজস্ব ব্যবস্থায়। রাবাংলা থেকে ১৬ কিমি দূরে টেমির চা-বাগান—পথের আকর্ষণেও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ডামথাং হয়ে পথ

গিয়েছে। নামটি থেকে ১৪ কিমি দূরে ডামথাং। তেমনই ডামথাং থেকে ৯ কিমি ট্রেক করে ১০৮০০ ফুট উঁচুতে মৃত আশ্বেয়গিরি টেনডং-ও দেখে নেওয়া যায়। টেনডং অভয়ারণ্য চিরে পথ চলেছে। পশ্চিম জুড়ে সিঙ্গলীলা, কাঞ্চনজঙ্ঘা ছাড়াও দিগন্তবিশ্ত পাহাড়শ্রেণী দৃষ্টি রোধ করে টেনডং-এ। আর দক্ষিণে শিলিগুড়ির সমতলও দৃশ্যমান। এমনকি পেলিং-ও দৃশ্যমান সিকিমের অন্যতম ভিউ পয়েন্ট টেনডং থেকে। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তে রূপ বাড়ে টেনডং-এর। তবে, থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই টেনডং-এ। দিনে দিনে নামটি ফিরে যাওয়া উচিত হবে। রাত্রিযাপনে আগ্রহীদের তাঁবু সঙ্গে নেওয়া উচিত। আবার রাবাংলা থেকেই বেড়িয়ে নেওয়া যায় ২৬ কিমি দূরে রোরং উষ্ণ প্রবণ। পথে পড়ে রালং গুম্ফা। ডিসেম্বরের শেষ সপ্তাহে নতুন বছরের সমৃদ্ধি কামনায় কাগিয়াং নৃত্যোৎসবেরও প্রশস্তি আছে রালং-এ। গুম্ফাও হচ্ছে নতুন করে ১০ কোটিরও অধিক টাকা ব্যয়ে রালং-এ। রাবাংলা থেকে ২৬ কিমি দূরে রঙ্গীত নদীর পাড়ে লেগশিপের আকর্ষণ তার উষ্ণ প্রবণের জন্য-শিব মন্দিরও আছে লেগশিপে। পথও পৃথক হয়েছে-ত্রিমুখী পথ গিয়েছে রাবাংলা হয়ে গ্যাংটক, গেজিং হয়ে পেলিং, জোরথাং/মেলি হয়ে শিলিগুড়ি।



হোটেলও আছে নানান রাবাংলায়। H Mainam, Kewsing Rd, PO-Rabangla, Dist-South Sikkim-737134, ☎ (03592) 60862 থাকার পক্ষে ভাল। এদের DCB ২৫০ ৩০০ ৩৫০ DAB ৩৫০ ৪০০ ৪৫০ ডর্মি বেড ১০০ করে। ট্রেকিং-এরও ব্যবস্থা মেলে হোটেল মৈনাম-এ; কল বুকিং: Sumit Dey ☎ 2433337.

পশ্চিম সিকিম

প্রকৃতি প্রেমিকদের আর এক স্বর্গ পড়ে রয়েছে সিকিমের পশ্চিমে। NH-31A ধরে সিংখাম, রংপো, নামথাং, নামটি, রাবাংলা, লেগশিপ, গেজিং হয়ে পথ গিয়েছে পশ্চিম সিকিমের। পথের শেষ হাজার পাঁচকে ফুট উঁচু গেজিং-এ। দূরত্ব-মেলি/জোরথাং হয়ে ১৩৮, আর রাবাংলা হয়ে ১১২ কিমি গ্যাংটক থেকে গেজিং। দুই পথেরই মিলন ঘটেছে লেগশিপে। কমান্ডার জিপ আসছে ১০০ টাকায় প্রতিজনা গ্যাংটক থেকে গেজিং হয়ে পেলিং। বাস যাচ্ছে গ্যাংটক থেকে গেজিং ৭-০০ ও ১৩-০০টায়। ঘণ্টা পাঁচকের পথ।

পথ এসেছে পশ্চিমবাংলার শিলিগুড়ি থেকেও গেজিং-এ। করোনেশন ব্রিজ/তিস্তা বাজার/মেলি/জোরথাং/নয়াবাজার/লেগশিপ হয়ে। এপথের দূরত্ব ১২২ কিমি। SNT-র বাস যাচ্ছে ১২-০০টায় শিলিগুড়ি ছেড়ে ৬ ঘণ্টায় গেজিং, ভাড়া ৫০। কমান্ডার জিপ যাচ্ছে ১০০ টাকায় শেয়ারে।

শিয়ালদহ থেকে কাঞ্চনজঙ্ঘা এক্স, দার্জিলিং মেল, তিস্তা-তোরসা এক্স; আর হাওড়া থেকে কামরাপ এক্স, ত্রিসান্তাহিক গুয়াহাটি এক্স, ত্রিসান্তাহিক গুয়াহাটি সরাইঘাট এক্সে NJP পৌঁছে শিলিগুড়ি হয়ে চলা যেতে পারে গেজিং তথা সিকিমের দিখিদিকে। বেড়বার মরসুম মার্চ থেকে জুন; আবার অক্টোবর-নভেম্বর মাস। মার্চ-এপ্রিলে ফুলের জলসা বসে পাহাড়ে।

গেজিং: ছোট্ট জেলা শহর গেজিং (Gyazing)। কিছুকাল আগেও নাম ছিল এর গিয়ালসিং (Gyalshing)। দোকানপাট, হাটবাজার বসেছে। TV, Video সেন্টারও পৌঁছেছে। হোটেলও আছে নানান গেজিং-এ। আবার পায়ে পায়ে বা ১৪-০০টার বাসে বা জিপে পেমিয়াং-শি গিয়ে সূর্যাস্ত দেখে পেলিং-ও চলা যেতে পারে একই দিনে।



থাকা ও আহার্য দুই-এরই ব্যবস্থা মেলে গেজিং-এ সাধারণ, পেমিয়াং-শিতে উচ্চ ও পেলিং-এ মিশ্র-মানের হোটেল-রেস্তোরাঁ। গেজিং বাজার স্ট্যাণ্ডে No Name H টি চলনসই। বাথ সলঙ্গ ঘর মেলে, D ১২৫ T ১৫০ টাকায়। লাগোয়া H West End, ডাইনে H Mayalu, আর আছে H Orchid এদেরই মাঝে। এছাড়া পেমিয়াং-শি মুখী জিপ পথে ২ কিমি যেতে PWD-র RH, থাকার পক্ষে রমণীয়। পথেই হয়েছে গেজিং-এর অন্যতম H Atri, D ৩০০-৫৫০।



পথ গিয়েছে কাঞ্চনজঙ্ঘার অঙ্গরমহলে গেজিং থেকে। বাস যাচ্ছে দুপুর ১৪-০০টায় গেজিং ছেড়ে পেমিয়াং-শি ৭, পেলিং ৯ হয়ে ৪৫ কিমি দূরের ইয়াকসাম (Yaksom)-এ। এছাড়াও বাস যাচ্ছে আরও নানান গেজিং থেকে ইয়াকসাম। পাহাড় ঘুরে পথ উঠেছে বাস স্ট্যান্ড তথা বাজার শিরে। ৪ কিমি জুড়ে শহরের বিস্তার। শহর শেষ হতে আরও ৩ কিমি আরণ্যক পথ পেরিয়ে আর এক পাহাড় শিরে মনোহর পরিবেশে PWD-র বাংলো, অবস্থানে অনবদ্য। লাগোয়া সিকিম টুরিজমের টুরিস্ট লজ H Mi Pandim, Pemayangtse, ☎ (03593) 756, DAB ৫৫০, অব: Manager বা Sikkim Tourism, Gangtok. বা সিকিম ইনফরমেশন সেন্টার, ৫ম তল, পুনম বিল্ডিং, ৫/২ রাসেল স্ট্রিট, কল-৭১, ☎ 291576। আর আছে শয্যাহীন অতি সাধারণ ট্রাকস হাট পাণ্ডিমের নিচুতে।

অগ্রিম বুকিং চলছে

যেমন সুন্দর পেলিং

তেমন সুন্দর পোমাচেন

৬৬বি মানিকতলা স্ট্রীট

যোগাযোগ: কলকাতা-৭০০ ০০৬

ফোন: ৩৫১-৪৩১৬

জানারান্নাতে বিস্ময় ত্রাণ

হোটেল পোমাচেন

পেমিয়াং-শি: দিগন্ত বিস্তৃত পাহাড়শ্রেণী। সারা উত্তর জুড়ে খেত-শুশ শাল মুড়ে গিরিরাজ হিমালয়ের কোকতাং ৬১৪৭ মি, কুন্তকর্ণ ৭৭১০, রাতোং ৬৬৭৯, কাক্র সাউথ ৭৩৩৮, কাক্র নর্থ ৭৩৩৮, কাক্র ডোম ৬৬০০, তালং ৭৩৪৯, কাঞ্চনজঙ্ঘা ৮৫৮৫, পান্ডিম ৬৬৮০, জোপুনো ৫৯৩৬, সিঙ্ডো ৬৮১১, নারসিং ৫৮২৫, সিনিয়লচু ৬৮৮৭ ছাড়াও নানান শৃঙ্গ প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। দেশ-দেশান্তর থেকে পর্যটক আসছেন ২০৭৬.৬৪ মি উঁচু পেমিয়াং-শিতে কাঞ্চনজঙ্ঘা ও মাউন্ট পান্ডিম কাছ থেকে পেতে। হয়তো-বা হাত বাড়ালেই নাগালও মেলে।

আর রয়েছে পেমিয়াং-শিতে বাংলার বিপরীতে আর এক টিলার টঙ্গে বুক্টিস্ট মনাস্টি। ৯ শতকের গুরু পদ্মসম্ভবা (রিমপোচে)-র প্রবর্তিত তান্ত্রিক নিম্ভমা পা (লাল টুপি) সম্প্রদায়ের কাছে খুবই পবিত্র এই মনাস্টি। সম্ভবত সিকিমের প্রথম চোগিয়ালের কালে ১৭০৫-এ তৈরি। বয়সে সিকিমের দ্বিতীয় প্রাচীন। তবে, শৈল্পিক নিদর্শনে অন্যতম এই মনাস্টি। ১৯১৩ ও ১৯৬০-এর ভূমিকম্পে ক্ষতিগ্রস্ত হলেও সংস্কার হয়েছে বার বার। নানান মূর্তি, দেওয়ালও চিত্রিত; পরিবেশ রমণীয়। তিন তলায় ৫ বছর ধরে ডানজিন রিমপোচের হাতে দারুতে তৈরি মহাগুরুর প্যারাডাইস *Sangthopalri*-রও অভিনবত্ব আছে। ফেব্রুয়ারির মাঝামাঝি দ্রাগমার ছাম উৎসবে দূরদূরান্ত থেকে ভক্তের দল আসেন, আসর বসে নাচের, মেতে ওঠে পেমিয়াং-শি উৎসবের সাজে।

আর পেমিয়াং-শি যাত্রীদের উচিত হবে পেমিয়াং-শিতে অবস্থান এড়িয়ে গেজিং-এর হোটেলে রাত্রিবাস করা। মান ও দাম দুই-ই সাধারণ। বাসও যাচ্ছে ইয়াকসামের ১৪-০০টায় গেজিং ছেড়ে পেমিয়াং-শি/পেলিং হয়ে। আর দিনভর জিপ যাচ্ছে শেয়ারে ১৫ হারে গেজিং থেকে পেলিং। আধ ঘন্টায় পেমিয়াং-শি পৌঁছে বাংলাে চত্বরে শুয়ে-বসে দিনভর কাঞ্চনজঙ্ঘা দেখে সূর্যাস্তে জিপের পথে উতরাই নেমে এক ঘন্টায় গেজিং ফেরা যায়। গেজিং-এর শেষ বাসটি পেমিয়াং-শি ছেড়ে আসে ১৬-০০টায়। জিপের পথটি কেটে-ছেটে ২২ কিমি সংক্ষিপ্ত হলেও প্রাণান্তকর চড়াই হেতু ট্রেকারদেরও উচিত হবে ওঠার কালে সংক্ষিপ্ত পথটি পরিহার করে বাস সড়ক ধরে এগিয়ে চলা। মিতব্যয়ীদের

আহার্যও সঙ্গে আনা উচিত হবে এ-সফরে গেজিং থেকে। *Mt Pandim*-এর ক্যান্টিন ছাড়া দ্বিতীয় কোনো দোকানপাট নেই পেমিয়াং-শিতে।

পেলিং: গেজিং থেকে পেমিয়াং-শি পেরিয়ে আরও ৩ কিমি যেতে ২০৮৫ মি উঁচু ছোট পাহাড়ী জনপদ পেলিং। বাম থেকে ডাইনে সারি দিয়ে দাঁড়িয়ে—কোকতাং, কুন্তকর্ণ, রাতোং, কাক্র ডোম, কাঞ্চনজঙ্ঘা, পান্ডিম, জোপুনো, সিঙ্ডো, নারসিং, সিনিয়লচু ছাড়াও খ্যাত-অখ্যাত নানান শিখর। দিন-রাত জুড়ে ক্ষণে ক্ষণে কাঞ্চনজঙ্ঘার মোহিনী রূপ পাগলপারা করে তোলে। উদ্ভিত সূর্যের মায়াজাল দেখুন কাঞ্চনজঙ্ঘায়। গাড়িপথে কাঞ্চনজঙ্ঘা দর্শনের সবচেয়ে কাছে আর যথেষ্ট পপুলার এই পেলিং। বসন্তে ফুলেরা মোহময় করে তোলে পেলিং-এর প্রকৃতি। আর পাঁচটা পাহাড়ী শহরের মতো ম্যালের অভাব পেলিং-এ। তবে হেলিপ্যাড অভাব পূরণ করেছে ম্যালের। দোকানপাটেরও অভাব পেলিং-এ। চলতে ফিরতে পায়ে পায়ে দেখুন লোয়ার পেলিং-এ কটেজ ইনস্টিটিউট ট্রেনিং সেন্টার। সেট ব্যাক্সের শাখাও বসেছে লোয়ার পেলিং-এ। তেমনই হেলিপ্যাডের দক্ষিণ-পশ্চিমে ঘন্টা খানেক ৪ কিমি ট্রেক করে ৯০০০ ফুট উঁচু পাহাড় চূড়ায় সিকিমের দ্বিতীয় প্রাচীন (১৬৮৭) সাঙ্গা চোলিং (*Sanga Choeling*) মনাস্টি দেখে নেওয়া যায়। ১৬৯৭-এ তৈরি মনাস্টির ধ্বংসস্তুপের পাশে ঝলমলে সাজের নবতম মনাস্টিটি আকর্ষণে অনবদ্য। কাঞ্চনজঙ্ঘাও দৃশ্যমান। রডোডেনড্রন ছাড়াও নানান ফুলে-ফলে ছাওয়া পথপাশ। তেমনই হেমলক, ম্যাগনোলিয়া, রডোডেনড্রন ফুলের উপত্যকা ভার্সে (*Varshay*)ও দৃশ্যমান মনাস্টি থেকে। পেলিং থেকে ট্রেক করে ৩ দিনে বেড়িয়ে নেওয়া যায় ভার্সে।

তবে দিনভর জিপটুরে যাত্রী প্রতি ২০০ টাকা হারে দেখে নেওয়া যায় একে একে—পেলিং থেকে ১২ কিমি দূরে রিমবি ফলস। বয়ে চলেছে রিমবি নদী। পাশেই রিমবি হাইড্রো-ইলেকট্রিক প্রোজেক্ট। রিমবি থেকে ১৪, পেলিং থেকে ২৯ কিমি দূরে কিংবদন্তীর হোলি লেক কেচিপেরি (*Khechopalri*) বা উইশিং (*Wishing*) লেক। ইচ্ছা পূরণের জন্য খ্যাত ১৮২০ মি উঁচু কেচিপেরির চারপাশ প্রেয়ার ম্ল্যাগ ও গাছ-গাছালিতে ছাওয়া। তবে, পাতা পড়না লেকের জলে। পড়লেও পাখিরা

ঘর থেকে কাঞ্চনজঙ্ঘা উপভোগ করুন

হোটেল রু স্টার

(opp. SNT Bus Stand)

গ্যাংটক, সিকিম

(০৩৫৯২)-২৪৮৬৭

হোটেল সান

খেচুপেরী রোড

পেলিং, সিকিম

যোগাযোগ: সুজন চ্যাটার্জী, রুম ৫২ ও ৫৩, ১৪/২, গুল্লু চীনা বাজার স্ট্রীট, কলি-১, ফোন ২৪২ ৬৫৯২/৯৭৫৭

ভুলে নেয় সঙ্গে সঙ্গে। নানৈ পুণ্য হয়— নানান ব্যাধির উপশমও মেলে লেকের স্বচ্ছ জলে। জনশ্রুতি। যে কোনও কামনা পূরণ হয় উইশিং লেক কেচি-পেরিতে। আর আছে ছোট্ট গুপ্তা লেকের পাড়ে। ফেব্রুয়ারি-মার্চের উৎসবে হিন্দু ও বৌদ্ধরা প্রার্থনার সাথে কাঠের খোলায় মাখনের প্রদীপ ভাসায়। জিপে ঘণ্টা দেড়েকের পথ পেমিয়াং-শি থেকে। তবে, পাকদণ্ডী পথে ঘণ্টা চারেকেক ট্রেক করেও চলা যেতে পারে কেচিপেরি। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *Pilgrim Hut* ও *Trekkers Hut* এ। আহারও মেলে সাধারণ রেস্টোরাঁ। জিপ ট্রায়ে পেলিং থেকে ২৯ কিমি দূরে ২টি পাহাড়ের খাঁজে ৩০০ ফুট উঁচু থেকে নামা কাঞ্চনজঙ্ঘা বা রেইনবো ফলস; আকর্ষণে অনবদ্য। আবিষ্কার এটি জিপ চালক Topzor Bhutta-র। কাঞ্চনজঙ্ঘা থেকে ৬ কিমি দূরে ইয়াকসাম। দেখে নেওয়া যায় জিপ ট্রায়ে ২৭ কিমি দূরের ডেনডামে জানুয়ারি ২০, ১৯৯৩এ তৈরি এশিয়ার দ্বিতীয় গভীরতম গর্জ সেতু Singshote Bridge—পথে পড়ে Sangay Falls. আর মেলে সারাপাথে ফুল-ফলে ভরা বড় এলাচ গাছ জিপ ট্রায়ে।



থাকারও নানান হোটেল Pelling-737113, STD 03593-এ। ১ কিমি পরিসরে পেলিং-এর হোটেলরাজি। শহরে ঢুকতেই পেলিং-এ—H Kabur, DAB ৩৫০-৬০০; পবপর সারি দিয়ে H Pradhan, ৫ 50615, DCB ১৫০, TCB ১৮০ FCB ২০০; Window Park GH, ৫ 50614, DAB ২৮০, TAB ৩৮০, কল বুকিং: Tourist Corner ৫ 2489049; Sikkim Tourist Centre, AP প্রথায় ডাবল বেডের ঘরে দু'জনা ৮৫০ ৯০০ FR ১২৫০, গাড়ি ছাড়াও ট্রেকিং-এর সাজ-সবজ্ঞাম ভাড়ায় মেলে এসের কাছে। অব: Manager ৫ 50855 বা Help Tourism, 143 Hill Cart Rd, Siliguni-734401, ৫ 433683 বা Help Tourism, 15 Stephen Court, 4th Floor, Lift 2, 18A, Park St.-71, ৫ 294610, H Norbu Gang, DAB ৫৫০ ৬০০ ৭০০, কল বুকিং: Linkage ৫ 2464485/Diamond Tours ৫ 276714, H Garuda, ৫ 50614, DAB ২৬০ ২৮০ ৩০০, AP S ১৯০-২৮০, কল বুকিং: Tourist Corner, ৫ 2489049; Family G H, DCB ১৬০ ডর্মি ৫০; H Kulu bakra, স্বল্প যেতে হেলিপ্যাডে H View Point, ৫ 50638, DAB ৩০০ ৩৫০, TAB ৪৫০ ৫০০, কল বুকিং: Apex Tours, 21A, Rani Sankari Lane-26.

৫ 4555236; ঘর আশানুরূপ না হলেও অবস্থানে মনোরম, আহারে অনবদ্য Hindusthan G H, ৫ 50813, AP প্রথায় ডাবল বেডের ঘরে ২৫০ ২৭৫ তিন বেডের ঘরে ২১০ ২৩০ পাঁচ বেডের ঘরে ১৫০ ১৮০ প্রতি জনা; কল বুকিং: Hindusthan Travels, 183/2 Lenin Sarani, 2nd floor, Cal-13, ৫ 263753/ Nan & Co. 9-A, B B D Bagh (E), Cal-1, ৫ 2206625.

নিচুর ধাপে অর্থাৎ লোয়ার পেলিং-এ—H Parozang, ৫ 50621, AP-S ২৭৫ ৩০০ ৩২৫, কল বুকিং: Dolphin Travels, ৫ 278968; সাধারণ Shenga G H, DCB ১০০; H Pelling, ৫ 50707, AP প্রথায় ২৭৫ ৩০০ ৩২৫ প্রতিজন, কল বুকিং: New Mitra Special, 62 Bentink St, Cal-69, ৫ 277066; Magnolia L, DAB ৪০০, TAB ৫০০, সারাদিনের আহার ১০০ প্রতিজন, কল বুকিং: Pariosh Tarafdar, 9/12 Lalbazar St-1, Block-C, 2nd floor, ৫ 2481672; Resort Stellate, DCB ৩০০, DAB ৩৫০ ৪০০, TAB ৫৫০, কল বুকিং: Tapashu Roy, Block-BC, 36/5 Salt Lake City-64, ৫ 3375075 বা Linkage ৫ 2464485, H Tashuling, ৫ 50683, DAB ২৫০ ৩০০, AP-S ২৫০, কল বুকিং: Hotel Tours, 28 Waterloo St, (GF), Cal-69, ৫ 2485677; H Samten Ling, DCB ১০০ FCB ২৫০; H Butan, ৫ 50682, DAB ৩০০ ৪০০, TAB ২৫০ ৫৫০ ৬০০, FAB ৫০০, সারাদিনের আহার ১৫০ প্রতিজন, কল বুকিং: Mrs Dolly Roy, 1 Nepal Bhattacharya St-26, ৫ 4666584; ঘর ও আহার দুইয়েবই প্রশংসা জনমুখে। H Silver Peak, DAB ৪৫০ ৫০০, অব: কল ৫ 2429757; H Pemachen, DCB ২০০, DAB ২৫০-৪০০, TCB ২৫০, TAB ৩৫০, কল বুকিং: S B Associates, 66-B, Maniktala St-6, ৫ 3503612/Salt Lake ৫ 3348323/Howrah ৫ 6603700; H Khechupari, ৫ 50681, DCB ৩৫০, DAB ৪০০, TAB ৫৫০, দিনের আহার্য ১২৫ প্রতিজন, কল বুকিং: Linkage ৫ 2464485, SBI-এর বিপরীতে H Sun, DAB ৪৫০ ৫৫০, TAB ৬০০, কল বুকিং: S Chatterjee, 14/2 Old China Bazar St-1, Room-52, ৫ 2429757; H Panchhak, কল বুকিং: ৫ 4405654; Mandal L, ৫ 50684, DAB ২৫০, TAB ৩৫০। প্রায় প্রতিটা হোটলেই কোনো কোনো ঘর থেকে শিখররাজি সুন্দর দেখতে মেলে। তাই উচিত হবে ঘর দেখে হোটেল নির্বাচন করা। তেমনিই জিপে শেয়ার যাত্রীদেব একই ভাড়ায় নির্ধারিত হোটলে পৌঁছে দেওয়া কানুন পেলিং-এ।

সিকিম ভ্রমণের সেরা ঠিকানা



LINKAGE Tours & Travels

সুন্দরী সিকিমের প্রতিটি স্থানে হোটেল বুকিং/প্যাকেজ ট্যার

গ্যাটক :- হোটেল পাইনরীজ, হোটেল আনোলা, হোটেল ব্রু স্টার
পেলিং :- হোটেল নরবুগ্যাং, দি টুরিস্টো, রিসোর্ট স্টেলেট

রাবালো :- হোটেল মেনাম, ইয়াকসাম :- হোটেল ডানিগ্যাং
লাচুং-ইয়ুমথ্যাং :- অ্যালপাইন প্যাকেজ

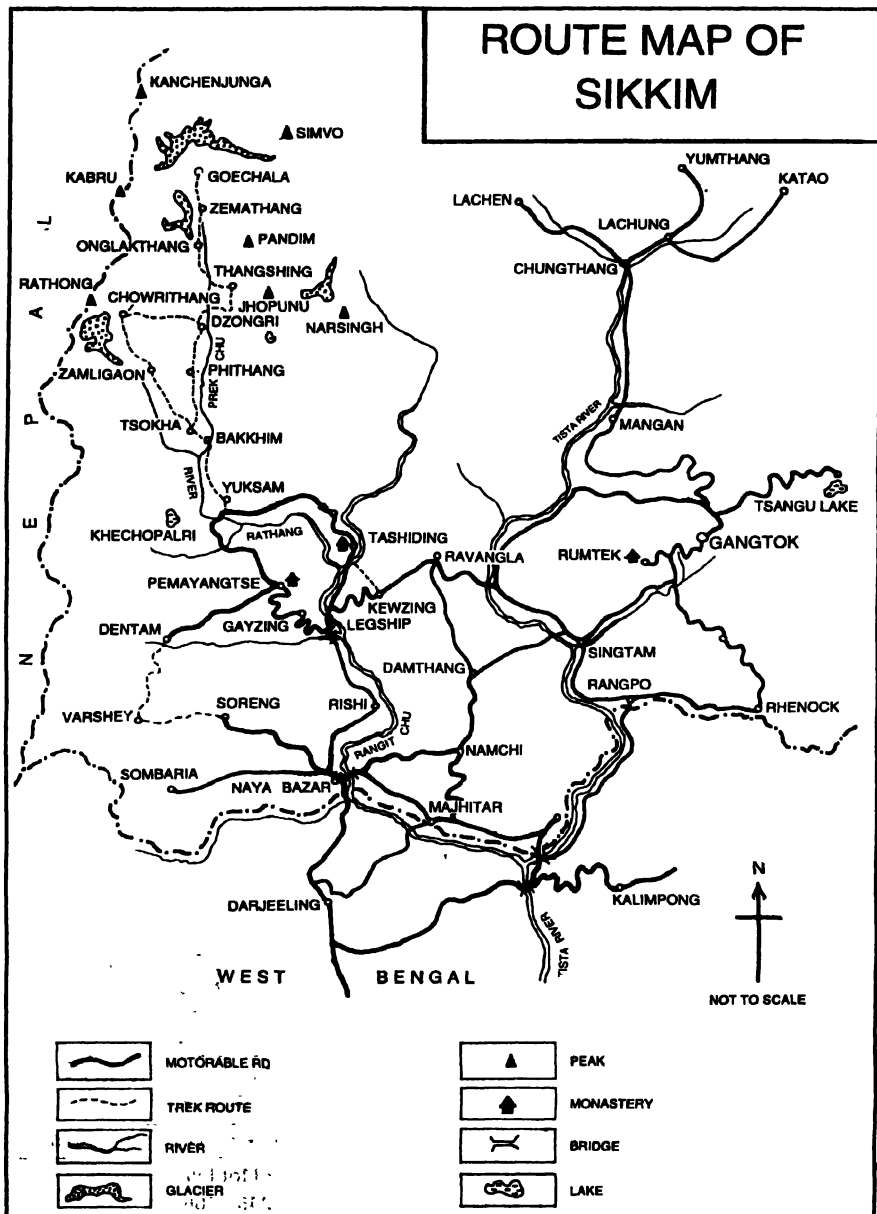
শিলিগুড়ি/ NJP Stn থেকে যেকোন গাড়ীর ব্যবস্থা • কমপক্ষে ৮ জনের জন্যে গ্রুপ ট্রাভেলের ব্যবস্থা

124B, Lenin Sarani, Calcutta-700 013 (Near Moulali)

দূরভাষ: 246-5171, 337-9970, 246-4485 ফ্যাক্স: 245-2766

ইয়াকসাম: ১৪-০০টায় গেজিং ছেড়ে আসা বাসে পেলিং থেকে ঘণ্টা চারেক ইয়াকসাম (Yaksom) চলুন। বাস যাচ্ছে

লেগশিপ হয়েও গেজিং থেকে ইয়াকসাম। মনোরম পাহাড়ী উপত্যকায় তিন লামার মিলন স্থল অর্থাৎ ইয়াকসামে



সিকিমের প্রথম রাজধানীও ছিল অতীতকালে। সিকিম রাষ্ট্র চোগিয়ালের (রাজার) পত্তনও ১৬৪১-এ ইয়াকসামের নরবুগাং-এ। তবে স্থানান্তর ঘটে রাজ্যপাট ১৬৭০-এ ইয়াকসাম থেকে পেমিয়াং-শির অদূরে রাবডাংসে-য়। আজও দেখে নেওয়া যায় প্রথম চোগিয়ালের (Chogyal Phenstok Namgyal) করোনেশন স্টোন সুপ্রাচীন বৃক্ষতলে। চোর্টেনও হয়েছে নরবুগাং। আর আছে পাহাড় টঙ্গে সিকিমের প্রাচীনতম দুবদি (Dubdi) গুম্ফা ও কাটোক লেক ইয়াকসামে। ট্রেকারদেরও স্বর্গরাজ্য এই ইয়াকসাম। থাকারও নানান ব্যবস্থা—H Tashigang, ☎ 03593-50587, কল বুকিং: Ganguli Commercial Point, 79 Lenin Sarani, Room 502, Cal-13, ☎ 2451875/3505451; Trekkers Hut, FRH, Dzongrila H, Demazong H, H Norbu Gang আছে ইয়াকসামে। আহারেরও নানান হোটেল ইয়াকসামে। ইয়াকসাম থেকে পায়ে হাঁটা পথ গিয়েছে কাঞ্চনজঙ্ঘার অন্দরমহলে। হিমালয়ান মাউন্টেনিয়ারিং ইনস্টিটিউটের পাহাড় চড়ার ট্রেনিং কোর্সের কর্মকাণ্ড চলছে ইয়াকসামকে কেন্দ্র করে জোংরি বেস ক্যাম্প।

জোংরি : ইয়াকসাম থেকে ১৬ কিমি দূরে ৯০০০ ফুট উঁচু বাখিম, আরও ২ কিমি পেরিয়ে ১০০০০ ফুট উঁচু ছোকা (Tsoka); এপথের শেষ বসতিও ছোকা। ট্রেকারদের উচিত হবে বাখিম ফরেস্ট বাংলা/ট্রেকার্স হাট বা ছোকা ট্রেকার্স হাট/লঞ্চে প্রথম রাত কাটিয়ে দ্বিতীয় দিনে ৮ কিমিতে হাজার পাঁচেক ফুট চড়ে জোংরি (Dzongri) পৌঁছে যাওয়া। ৩৯৩৯ মি উঁচু জোংরির সামনেই জোংরি পিক। তেমনই ডান থেকে বাঁয়ে মাউন্ট পাভিম, জানু, কাঞ্চনজঙ্ঘা, কাক্র, র্যাক কাক্র, ডোম ছাড়াও নানান গিরিশিখর সুন্দর দৃশ্যমান। বামে ১৪ কিমি দূরে গোচা-লা (Goecha-La) গিরি-সঙ্কট। সূর্যাস্তের তরঙ্গায়িত বর্ণচ্ছটা শ্বাসরোধ করায় পর্যটকদের। তেমনই সূর্যোদয়ে জোংরি পিক থেকেও দেখে নেওয়া যায় মহান হিমালয়ের মোহিনী রূপ। জোংরির বৃক্কের উড়নিও কাঁপিয়ে তোলে কাঞ্চনজঙ্ঘার শ্বাস-প্রশ্বাস। সারা পথের নৈসর্গিক শোভারও তুলনা হয় না। পাহাড় আর পাহাড়, গহন অরণ্যের মাঝ দিয়ে পথ এসেছে ইয়াকসাম থেকে। পথ দুস্তর না হলেও বন্ধুর। চড়াই-এরও অধিকাংশ ছোকার পথে। তবে, ২০-এরও অধিক ধর্মী রঙবেরঙের রডোডেনড্রন পথপাশে ফাগ খেলে। এমনকি অরণ্যচরদের দর্শন লাভ সেও যেন স্মৃতিস্তম্ভ করে তোলে দেহ-মন। জোংরিতেও ট্রেকার্স হাট ও বাড়ি-ঘরে থাকার ব্যবস্থা মেলে। উচিতও হবে দ্বিতীয় রাত জোংরিতে কাটিয়ে তৃতীয় দিনে ৯ কিমি দূরের বেস ক্যাম্প ট্রেক করে জোংরিতে ফিরে রাতের অবস্থান করা। আহার্যও মেলে সারাপথের দোকানপাটে। তবে, ভোজনবিলাসীদের উচিত হবে পানীয় জল ও আহার্য সঙ্গে নেওয়া। চতুর্থ দিনে ইয়াকসাম পৌঁছে রাতের অবস্থান। তবে অভিযাত্রীরা ৬৮৯০মি উঁচু মাউন্ট পাভিমও যাচ্ছেন জোংরি থেকে।

অত্যাশীরা ইয়াকসাম থেকে ১৯ কিমি ট্রেক করে টাসিডিং (Tashiding)ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। চলার পথে দেখে চলা যায় নরবুগাং চোর্টেন (১ কিমি), ডুবডি মনাস্টি (৪ কিমি), ফামরাং জলপ্রপাত (৫ কিমি)। ১৬ কিমি দূরের লেগশিপ থেকেও পথ এসেছে টাসিডিং-এ। বাস আসছে গেজিং থেকেও লেগশিপ হয়ে। নিজস্ব ব্যবস্থায় জিপও চলে এপথে। গহীন অরণ্যানীর মাঝে এক পাহাড় চূড়ায় নয়নাভিরাম পরিবেশে ৩য় চোগিয়ালের কালে ১৭১৬য় তৈরি টাসিডিং মনাস্টি পবিত্র বৌদ্ধতীর্থ। দু'পাশ দিয়ে বয়ে চলেছে রঙ্গীত ও রোটিং নদী।

বসন্তের (তিব্বতীয় ক্যালেন্ডারের প্রথম মাসের ১৪ ও ১৫) বুমচু (Bumchu) উৎসবে দূর-দূরান্ত থেকে ভক্তের দল আসেন। বুমচু অর্থাৎ বিরাটাকার পাথরের জারের মুখ খোলা হয় এক বছর পর পর উৎসবকালে। ৩০০ বছরের এই জারের জল আজও অফুরন্ত। বৌদ্ধদের কাছে ধ্বংসুরি। রীতিমতো ভিড়ও পড়ে পবিত্র এই জলের জন্য। বাস যাত্রায় এক রাত থাকতে হয় টাসিডিং-এ। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ট্রেকার্স হাট, ফরেস্ট রেস্ট হাউস-এ। মনাস্টি-তেও যাত্রী সেবার ব্যবস্থা মেলে। এবার লেগশিপ হয়ে ঘর-পানে ফেরাই উচিত হবে। লেগশিপের অদূরে উষ্ণ জলের প্রস্রবণ ফুরসাচুও দেখে নেওয়া যায়। রঙ্গীত নদীর পাড়ে লেগশিপে হোটেল আছে নানান বা ইয়াকসাম ফিরে রাতের বিশ্রাম নিয়ে পরদিন সকালের বাসে গেজিং চলুন বা পাকদী পথে পেলিং-ও চলা যেতে পারে দিনভর ট্রেক করে।

শীতের অধিকাংশ থাকলেও ফেব্রুয়ারি থেকে মে, আবার অক্টোবর থেকে ডিসেম্বর জোংরি অভিযানের মনোরম সময়। প্রয়োজনীয় ট্রেকিং সম্ভার—তাঁবু, স্লিপিং ব্যাগ, জ্যাকেট, কুলি, গাইড ছাড়াও ট্রেক পথের মন্ত্রণাপেতে গ্যাংটকে Yak & Yeti Travels, National Highway, ☎ 22714; Bigfoot Tours & Treks, opp Hotel Tibet, Paljor Stadium Rd; Snow Lion Travels, Sikkim Himalayan Adventure, Gangtok-737101-কে যোগাযোগ করা যেতে পারে। নানান ট্রেক টুরেও যাচ্ছে এরা।

উৎসাহীরা পেলিং থেকে পায়ে ১ ঘণ্টায় ৪ কিমি দূরে পেমিয়াং-শি-গেজিং বাস ও জিপ পথের সঙ্গম Tigjuk-এর অদূরে রাবডাংসের (Rabdentse) ধ্বংসাবশেষও দেখে চলতে পারেন। অতীতের চোর্টেনটি ভগ্ন অবস্থায় আজও দাঁড়িয়ে। ইয়াকসামের পরে রাবডাংস-এ দ্বিতীয় চোগিয়ালের রাজধানী গড়ে ওঠে ১৭ শতকের শেষভাগে। লাগোয়া Dra Lhagang. সাঙ্গ হল পশ্চিম সিকিম দর্শন। এবার ঘরে ফেরার পালা। দিনের একমাত্র বাস যাচ্ছে সকাল ৬-৩০টায় গেজিং ছেড়ে লেগশিপ/জোংরাং/মেলিবার্জার হয়ে সাসপেনসন ব্রিজে রঙ্গীত নদী (সীমান্ত) পেরিয়ে পশ্চিম-বঙ্গের শিলিগুড়ি। ৬-০০ ও ৭-০০টায় জিপ যাচ্ছে পেলিং থেকে শিলিগুড়ি। গ্যাংটকও যাচ্ছে সকালে নানান জিপ

পেলিং থেকে। শিলিগুড়ি/গ্যাংটকের ভাড়া ১০ যাত্রীর কমান্ডারে ১০০ প্রতিজনা। যাত্রীর আধিক্যে বিশেষ জিপও মেলে—সেক্ষেত্রে ভাড়াই আধিক্য লাগে। আর একক রিজার্ভেশনে কমান্ডার জিপ মেলে পেলিং থেকে গ্যাংটক ১২৫০ দার্জিলিং ১২৫০, শিলিগুড়ি ১৫০০ টাকায়। শিলিগুড়িতে অমরলীপ সার্ভিস, ৩৭ সেবকরোড (গুরদ্বারার কাছে) থেকেও জিপ মেলে পেলিং যাতায়াতে। ভাড়ায় কিছুটা সুবিধা মেলে শিলিগুড়ি থেকে পেলিং যেতে। আর N J P রেল স্টেশন থেকে জিপ যাচ্ছে পেলিং-এ ৭-৩০ ও ১০-০০টায়। পেলিং থেকে N J P ফেরে ৭-৩০ ও ৮-০০টায়। ভাড়া ১২৫ প্রতি জন। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য Topor Bhutia, Mt Simvo Travels, Lower Pelling-এ যোগাযোগ করা যেতে পারে। মারুতি ভ্যানও পাড়ি দেয় এপথ—ভাড়ায় সাশ্রয় মেলে ভ্যানে। তেমনই শিলিগুড়ি যাত্রায় টিকিটের অমিলে গেজিং থেকে সরাসরি বা জোরথাং ফিরে নানান বাসে চলা যেতে পারে শিলিগুড়ি। মরসুমে প্রতি বিকালে শেয়ারেও যাচ্ছে জিপ পেলিং-শিলিগুড়ি-পেলিং। জোরথাং যাচ্ছে ৮-০০, ১০-০০, ১১-০০, ১৬-০০টায় ছেড়ে ২ ঘণ্টায়; আর গ্যাংটকের বাস যাচ্ছে ৮-০০ ও ১৩-০০টায় গেজিং থেকে। শিলিগুড়ির তেনজিং নোরগে, স্টেডাল বাস স্ট্যান্ড থেকে ৭-৩০, ৯-০০ ও ১৪-০০টায় বাস মেলে জোরথাং-এর। ৪১ ঘণ্টার পথ। দূরত্ব ৮৪ কিমি। ভাড়া ৩৫। দক্ষিণ-পশ্চিম ঘিরে বয়ে চলেছে বঙ্গীত নদী জোরথাং-এর। পশ্চিম সিকিমের বাস জংশন জোরথাং-এর ১২ কিমি আগে পাহাড়ী ঘোরা ও গাছপালায় ঘেরা সুন্দর উপত্যকা মানপুং। ২১ কিমি দূরের নামচিরও পথ গিয়েছে মানপুং থেকে। জোরথাং থেকে গেজিং-এর নানান বাস। এপথের দূরত্ব ৪২ কিমি। ৭৮ কিমি দূরের ইয়াকসাম যাচ্ছে ৭-৩০-এ জোরথাং

ছেড়ে গেজিং/পেলিং হয়ে ৭১ ঘণ্টায়। শেয়ার ট্যাক্সিও চলে জোরথাং থেকে ইয়াকসাম। তেমনই পেলিং বা গেজিং থেকে দার্জিলিং যাত্রায় উচিত হবে সকালের বাসে গেজিং ছেড়ে ২ ঘণ্টায় জোরথাং পৌঁছে জোরথাং থেকে শেয়ার জিপে ১১ ঘণ্টায় ২৬ কিমি দূরের দার্জিলিং চলা। দুপুরের পর থেকে জিপ অমিল হয়ে পড়ে—বাসের চল নেই এপথে। বাস স্ট্যান্ডে হোটেল নামগিয়াল, অদূরে হোটেল স্পেট ইন, জোংরি, পুষ্পাঞ্জলি ছাড়াও হোটেল আছে নানান বাণিজ্যিক শহর জোরথাং-এ। আহারে মাড়োয়ারি ভোজনালয়, আপনি পসক আদর্শ।

তেমনই জোরথাং থেকে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে রমণীয় ভার্সে-ও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। বাস যাচ্ছে জোরথাং থেকে ১৩-০০টায় ছেড়ে ৫ ঘণ্টায় ৫২ কিমি দূরের রিবদি। রিবদি থেকে ৮ কিমি চড়াই বেয়ে ঘণ্টা ৮০রেক পৌঁছে যান ১০৫০০ ফুট উঁচু ভার্সে-য়। এপ্রিল-মে মাসে রঙবেরঙের হেমলক, ম্যাগনোলিয়া, গুঁরাস অর্থাৎ রডোডেনড্রন পরিবেশকে মধুময় করে তোলে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে পর্যটন দপ্তর ও পঞ্চায়তের যৌথ উদ্যোগে গড়া গুঁরাসকুঞ্জ অতিথি নিবাস-এ। প্রাইভেট লজও আছে ভার্সে-য়। আহারও মেলে।

ভার্সে থেকে দিনে দিনে ডেন্টাস (১৪ কিমি), সোরেং (১০ কিমি), বুরিকহোপ (৯ কিমি) পায়ে পায়ে ট্রেক করে নিন একে একে। এদের প্রশস্তি নৈসর্গিক শোভার জন্য। তেমনই ৪ কিমি ট্রেক করে ১০১০০ ফুট উঁচু হিলে হয়ে আরও ৯ কিমি গিয়ে রিবদি-জোরথাং পথের ওখর-এ গিয়েও চড়া যায় ৫ কিমি দূরের রিবদি থেকে আসা বাসে। তবে, জোরথাং থেকে জিপে সরাসরি হিলে পৌঁছে ৪ কিমি ট্রেক করে চড়া যায় ভার্সে। সারা পথের নৈসর্গিক শোভা নয়নাভিরাম।

ভারতে পর্যটন কেন্দ্র

তামিলনাড়ু—চেন্নাই, মহাবলীপুরম, তাজ্রাভুর, ত্রিচি, ইয়ারকাদ, কোদাইকানাল, মাদুরাই, রামেশ্বরম, তিরুচেন্দুর, কন্যাকুমারী, উতকামণ্ড, মুধুমালাই। পশ্চিমবঙ্গ—পুর্নোন্ডা, অরোড়ি। কেরল—তিরুভনন্তপুরম, কোভলম, পোন্নমুড়ী, পেরিয়্যার, কোচি। লাক্ষাদ্বীপ—কর্ণাটক—মহীশূর, ব্যাসালোর, বেলুড়, হ্যালেবিদ, শ্রবণ বেলগোলা, বিজাপুর, বাদামী-পাট্টাডাকাল-আইহোল, যোগ, হাসপী। অন্ধ্রপ্রদেশ—হায়দ্রাবাদ, তিরুপতি, আকুঁভ্যালি, অমরাবতী। মহারাষ্ট্র—অজন্তা, ইলোরা, পুনে, মহাবলেশ্বর, মুম্বাই। গোয়া—পানাজি। দমন ও দিউ। গুজরাত—আমেদাবাদ, জুনাগড়, গীর, সোমনাথ, পোরবন্দর, দ্বারকা। রাজস্থান—বিকানের, যোধপুর, আবু পাহাড়, উদয়পুর, চিতোর, আজমের, জয়পুর, ভরতপুর। মধ্য প্রদেশ—খাজুরাহো, অমরকন্টক, বৈষ্ণোদেবী, বান্দবগড়, কানহা, জব্বলপুর, পাঁচমাড়ী, ভূপাল, সীতা, ইন্দোর, মাণ্ডু, উজ্জয়িন। দিল্লী—নতুন দিল্লী, পুরানো দিল্লী। জম্মু ও কাশ্মীর—চিত্রকোট, শ্রীনগর, পহেলগাঁও, গুলমার্গ, লে। পঞ্জাব—অমৃতসর, পাতিয়ালা। হরিয়ানা—চণ্ডীগড়, বুরুক্ষেত্র। হিমাচল প্রদেশ—সিমলা, মানালী, ডালহৌসী, কাংড়া ভ্যালি। উত্তর প্রদেশ—লঙ্কো, নৈনীতাল, কৌশানী, রানীক্ষেত, আলমোড়া, বিনসার, মায়াবতী, চৌকোরি, করবটে, এলাহাবাদ, অযোধ্যা, বারাণসী, আগ্রা, বৃন্দাবন, হরিদ্বার, মুন্সৌরী, যমুনোত্রী, গঙ্গোত্রী, কোদার, বদরী, হৃষীকেশ। বিহার—পাটনা, গয়া, বৃদ্ধগয়া, নালন্দা, রাজগীর, রাঁচি, নেভারহাট, পালামৌ, হাজারীবাগ। ওড়িশা—ভুবনেশ্বর, কোণারক, পুরী, গোপালপুর-অন-সী, টাঙ্গিপু, সিমিলিপালি, কেকোনঝড়। অসম—গুৱাহাটী, কাজিরাঙ্গা, হাফলঙ, মানস। মণিপুর—ইম্ফল। মেঘালয়—শিলং, চেরাপুঞ্জি। সিকিম—গ্যাংটক, ইয়মথং, পেলিং। আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ—পোর্ট ব্লেয়ার। পশ্চিমবঙ্গ—কলকাতা, শান্তিনিকেতন, দীঘা, সুন্দরবন, বিষ্ণুপুর, অযোধ্যা পাহাড়, বকখালি, মুর্শিদাবাদ, মালদহ, মিরিক, দার্জিলিং, কালিম্পং, জলদাপাড়া, বক্সা।

বিহার

বৌদ্ধ মঠ বা মনাস্টি *Vihara* থেকেই নাম এসেছে বিহার। হিন্দু, বৌদ্ধ, জৈন, মুসলিম ও শিখ ধর্মের পুণ্যধাম বিহার। সারা পূর্ব জুড়ে রয়েছে পশ্চিমবাংলা, উত্তরে নেপাল, পশ্চিমে উত্তর প্রদেশ ও মধ্য প্রদেশ আর দক্ষিণে ওড়িশা। বিহার রাজ্যের সদর দপ্তর বসেছে পাটনায়। পাটনা আজকের নয়—অতীতে নাম ছিল এর পাটলিপুত্র। আড়াই হাজার বছর আগে মৌর্যদের রাজধানীও ছিল এই পাটলিপুত্রে। তারও আগে রাজ্য প্রসার পেতে অজাতশত্রু রাজগৃহ থেকে রাজধানী স্থানান্তর করেন পাটালি গ্রামে। সম্রাট অশোকও তাঁর ঐতিহাসিক রাজ্যজ্ঞা এখান থেকেই পৌঁছে দেন প্রজাদের কাছে, দিকে দিকে মিশনও পাঠান বৌদ্ধধর্মের বার্তা দিয়ে। বুদ্ধের কর্মজীবনের বড় একটা অংশও এই বিহারেই অতিবাহিত হয়। নিরঞ্জনার তীরে উরুবিশ্ব গ্রামে পিপুল গাছের নিচে সিদ্ধিলাভও করেন বুদ্ধ আজকের বুদ্ধগয়ায়। খ্রিস্টপূর্ব দিনগুলিতে জৈন ধর্মও যথেষ্ট প্রসার পেয়েছিল সেকালের বিহারে। এমনকি, ২৪তম জৈন তীর্থঙ্কর মহাবীরের জন্ম ৫ শতকের বিষ্ণুখ্যাত বৌদ্ধ বিশ্ববিদ্যালয় নালন্দার অনতিদূরে কুশনপুরে। ১০ম শিখ গুরু গোবিন্দ সিংহ-র জন্মও বিহারের পাটনায় ১৬৬৬তে। মৌর্যদের পর গুপ্তরাজাদের হাতে যায় বিহার। সে যুগে বিহার ছিল ভারতীয় সংস্কৃতির পীঠস্থান। এরপর বিহার যায় মোগল সম্রাট আকবরের দখলে ১৫৭৪ খ্রিস্টাব্দে। আর তখন থেকেই গড়ে ওঠে হিন্দু ও মুসলিম সংস্কৃতির সমন্বয়ে নতুন এক সংস্কৃতি যা বিহারের একাডেমি আপন। মোগলদের পর বিহার যায় বাংলার নবাবদের হাতে। সিরাজের মৃত্যুর পর ১৭৬৪তে বঙ্গারের যুদ্ধে মীরকাশিমের পরাজয়ে বিহারের দখল যায় ব্রিটিশের হাতে। বিহার তখন বাংলা প্রভিন্সের মধ্যে। ১৯১১য় বিহার ও ওড়িশাকে পৃথক করা হয় বাংলা থেকে ছেঁটে। আর, ১৯৩৬এ প্রভিন্স রূপে স্বতন্ত্র মর্যাদা পায় বিহার। আয়তনে ভারত রাষ্ট্রের নবম বৃহত্তম রাজ্য হলেও জনসংখ্যায় দ্বিতীয় বৃহত্তম অর্থাৎ উত্তর প্রদেশের পরেই এর স্থান। আর সাক্ষরতায় ভারতের ২৭তম স্থানে বিহার রাজ্য। মুখের ভাষা মৈথিলী, ভোজপুরী, মাগধী ও ঝাড়খণ্ডী। ছট বা সূর্য পূজা বিহারের জাতীয় উৎসব। প্রাকৃতিক বিপর্যয় বিহারের বাৎসরিক সূচী। শীতে শৈত্য-প্রবাহ, গ্রীষ্মে খরা আর বর্ষায় প্লাবন বিহারের নিত্যসঙ্গী। বুদ্ধের ভবিষ্যদ্বাণী *feud and fire and flood* আজও ঘটে চলেছে বিহারে। ১৯৭৫-এর সেই ভয়াবহ দিনগুলি আজও শিহরন জাগায়—জানুয়ারিতে শৈত্যপ্রবাহে বলি ২৫০, মে মাসে সর্দিগমিতে বলি ৫০; হাজারীবাগে ৪২° সেন্টিগ্রেড রেকর্ড তাপমান; আর জুলাইতে—বাঘমতী, বাকীয়া, বুরহী,

গন্ধক, কোশী নদীর জলে রাজ্য জুড়ে প্লাবন। ১৯৯২এ জাতি-বিশ্বেশ্বের শিকার হয়েছে ৩৪ জন গায়ার অনতিদূরে বরা গ্রামে। তবুও ভারতের পর্যটন মানচিত্রে আজ উল্লেখ-যোগ্য স্থান দখল করেছে বিহার। তেমনই ভারতের রুচি বিহারের ছোট্টনাগপুর। নানান আকরিক সম্পদের সাথে বাকহারী অতীত আজও সারা বিহার ভূমে লোকচক্ষুর অগোচরে। বিহারের মাটিতে রয়েছে ভারতের ৪১% ধাতব সম্পদ। তেমনই স্বর্ণগর্ভাও এই বিহার। খননে রাঁচির কাছে সুবর্ণরেখা ও বাম্বিকীনগরের গোবর্ধন নদী তটে আবিষ্কৃত হতে চলেছে ভারতের বৃহত্তম স্বর্ণভাণ্ডার।

পাটনা

বিহার রাজ্যের রাজধানী শহর পাটনা। আফগান নায়ক শের শাহ সূরী হুমায়ুনের বিরুদ্ধে বিদ্রোহ করে ১৬ শতকে আজকের শহর গড়েন। তাঁর রাজধানীও ছিল সেদিনের পাটলিপুত্রে। তবে, খ্রি পূ ৩ শতকে সম্রাট অশোকের রাজধানীও ছিল এই পাটলিপুত্রে। গঙ্গার পাড় ধরে ৩×১২ কিমি ব্যাপ্ত নগরী ছিল সেকালে। এমনকি গ্রিক দূত মেগাস্থিনিসের বিবরণে মেলে ৫ শতকে মগধ সম্রাট অজাতশত্রু রাজগীর থেকে রাজধানীর স্থানান্তর ঘটান পাটলিপুত্রে অর্থাৎ অতীতের আজিমাবাদে। ১০০০ বছর ধরে সমৃদ্ধ নগরীও ছিল পাটলিপুত্র। তবে সে আজ ইতিহাসই বটে। আর ১৯ শতকে ব্রিটিশ আফিম চাষের মূল ঘাটি গড়ে পটনায়। আর পটনার অতীত বেশ কিছুটা ধ্বংস হয় ১৯৩৪-এর বিধ্বংসী ভূমিকম্পে।

আজকের রাজধানী শহর নতুন করে গড়ে উঠেছে গঙ্গা ও শোন নদীর বুকে ইতিহাসের কুসুমপুরে। গঙ্গার দক্ষিণ তীর ধরে ১৫ কিমি ব্যাপ্ত শহর। সুন্দর পরিকল্পিত শহর। প্রশস্ত রাজপথ। লাখ এগারো লোকের বাস ৫৩ মি উঁচু শহরে। নতুন নতুন প্রাসাদোপম অট্টালিকা রূপ পাচ্ছে অতীত দিনের স্থাপত্য শৈলীকে অক্ষুণ্ণ রেখে। মিউজিয়ম, খুদাবক্স ওরিয়েন্টাল লাইব্রেরি, গোলঘর—এর উল্লেখ-যোগ্য নিদর্শন।

রেল স্টেশন ও বিমান বন্দর দুইয়েরই অবস্থান শহরের পশ্চিমপ্রান্তে বাকীপুরে, আর ইতিহাসের পাটনা আজকের শহরের পূর্বে। শহরের হৃৎপিণ্ড—গান্ধী ময়দান। দোকান-পাট, বাজার-ঘাট, তথা পর্যটক দুনিয়াও এই গান্ধী ময়দান লাগোয়া অশোক রাজপথ জুড়ে। বিহার রাজ্য পর্যটনের ট্যুরিস্ট ইনফরমেশন অফিস, ৩ ২২৫২৯৫ বসেছে রেল স্টেশন লাগোয়া ফ্রেজার রোড অর্থাৎ আজকের মজহারুল হক পথে। রেল স্টেশনেও দপ্তর বসেছে এদের। আর ভারত

সরকারের পর্যটন দপ্তর বীরচাঁদ প্যাটেল মার্গে বিহার ট্যুরিজমের পর্যটন ভবনে।

গুণ শহর নয়—পাটনা থেকে ত্রয়োদশ সপ্তক করছেন পর্যটকেরা রাজ্যের দিকে দিকে। এমনকি পপুলার বৌদ্ধ সার্কিটের সংযোগকারী সহজতম পথও এই পাটনা। প্রতিবেশী রাষ্ট্র নেপালের রাজধানী কাঠমাণ্ডু যাবার পক্ষেও পাটনা আদরণীয় হবে। শহর বেড়াবার জন্য টাঙ্গা, সাইকেল রিকশা, অটো ও ট্যাক্সি মেলে। আর চলছে সিটি বাস সারা শহর জুড়ে।

বিহার □ রাজধানী: পাটনা। আয়তন: ১৭৩৮৭৭

বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৮৬৩৮৮৫৩। ভারতের

লোকসংখ্যার হারে: ১০.২৩%। পুরুষ:

৪৫১৪৭২৮০। নারী: ৪১১৯১৫৭৩। ১৯৮১-

৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ১৬৪২৪১১৯। বৃদ্ধির হার:

২৩.২৯%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৪৯৭। প্রতি

১০০০ পুরুষে নারী: ৯১২। সাক্ষরের হার:

৩৮.৫৪%। প্রধান ভাষা: হিন্দী। অঞ্চলভেদে বাংলা

ও ইংরেজিরও চল আছে। মাথাপিছু বাৎসরিক

আয়: ২১২২.০০টাকা (১৯৮৯-৯০)। শীত ও

গ্রীষ্ম দুইয়েরই আধিক্য আছে। বর্ষাকালে প্রাবন

অবশ্যজ্ঞাবী এলাকা বিশেষে। সারা বছর জুড়ে

পর্যটক সমাগম ঘটে চললেও বিহার বেড়াবার

মনোরম সময় অক্টোবর থেকে মার্চ মাস।

১৫ দিনে বিহার করুন: পাটনা ২ গয়া ১ বোধগয়া

১ রাজগীর-নালন্দা-পাওয়াপুরী ও বৈশালী ১

নেপাল ৫ পথ চলায় ২ দিন। ১০ দিনে বেড়ান:

শিমুলতলা-জসিদি-দেওঘর-দুমকা-পেরেশনাথ-

মধুপুর। ১৪ দিনের বনবাসে: হাজারীবাগ-

রাজরাধা-পালামৌ-নেতারহাট-রাঁচি-দশম-ছড়ু-

গৌতমধারা-টাটা-ঘাটশিলা। ৭ দিনের সফরে:

কিংবদন্তীর গাথা সারাণ্ডার জঙ্গল সঙ্গে কিরিবুরু-

চাইবাসা জুড়ে সাজ করুন বিহার দর্শন।

NEPC-র বিমান যাচ্ছে ৩ ৫ দিন কলকাতা-পাটনা-বারাণসীর মাঝে।

ডেমনই আর এক পর্যটকপ্রিয় পাটনা-কাঠমাণ্ডু রয়্যাল নেপাল এয়ার লাইনসের বিমানও চলেছে পাটনা থেকে। কাঠমাণ্ডু যাত্রায় পাটনা থেকে ট্রেনে মজফরপুর হয়ে রক্সৌল চলা যেতে পারে। তবে সময়ের আধিক্য হেতু উচিত হবে পাটনা থেকে বাসে ঘন্টা পাঁচকে রক্সৌল চলা। সকাল থেকে রাতে সরকারি ও বেসরকারি নানান বাস পাটনা ছেড়ে মজফরপুর হয়ে রক্সৌল তথা নেপাল সীমান্তে যাচ্ছে। রাতভর সার্ভিসেও বাস যাচ্ছে এপথে। ভারত ভূমে রক্সৌল, আর নেপালের সীমান্ত শহর বীরগঞ্জ। রিকশায় যাতায়াত, আধ ঘণ্টার পথ। সীমান্তও খোলা মেলে ভোর ৪-০০টে থেকে রাত ২২-০০টা পর্যন্ত। হোটেলও আছে নানান রক্সৌল ও বীরগঞ্জে।

মজফরপুর-রক্সৌল-বীরগঞ্জ ছাড়াও আরও ২টি ভিন্ন পথেও চলা যেতে পারে পাটনা থেকে নেপালে। নিয়মিত বাসও চলছে পাটনা থেকে সীতামাটি হয়ে জনকপুরে বা পাটনা থেকে গোরক্ষপুর-সোনেউলি হয়ে ভৈরোয়া অর্থাৎ নেপালে।



কলকাতা-দিল্লী মেন লাইনে পাটনা জংশন স্টেশন। হাওড়া থেকে ৫৪৫ আর দিল্লীর দূরত্ব ৯০৮ কিমি পাটনা থেকে। ট্রেনও যাচ্ছে কলকাতা থেকে। ১ ২ ৫ ৬ দিন ২৩০৩ পূর্বা এক্স ৯-১৫, দিল্লী জনতা ২১-০০, তুফান উদ্যান আভা এক্স ৯-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে কম-বেশি ৮-১৫ ঘণ্টায় পাটনা পৌঁছে ১৪ থেকে ১৭ ঘণ্টায় দিল্লী। আর ৩ ৭ দিন ১৩-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে মধুপুর হয়ে ২০-৫০এ পাটনা যাচ্ছে ২৩০৫ রাজধানী এক্স। অমৃতসর মেল ১৯-২০, অমৃতসর এক্স ১৩-১০এ হাওড়া ছেড়ে পরদিন যথাক্রমে ৪-৫০ / ২-১৫য় পাটনা পৌঁছে অমৃতসর যাচ্ছে। ২ ৫ ৬ দিন ৩০৭৩ হিমগিরি এক্স ২৩-০০টায়, ৩২৩১ হাওড়া-দানাপুর এক্স ২১-০৫; আর শিয়ালদহ থেকে ২-১৫য় ৩১১১ শিয়ালদহ-দিল্লী লালকেদা এক্স, ২০-৫৫য় ৩১৩৩ শিয়ালদহ-মোগলসরাই এক্সও পাটনা হয়ে যাচ্ছে।

ভাগলপুর থেকে আসা বিক্রমশীলার অংশ জুড়ে ২৩৯১ মগধ-বিক্রমশীলা এক্স ১৯-১০এ, পাটনা-নিউ দিল্লী ২৪০১ শ্রমজীবী ১১-১০এ পাটনা ছেড়ে নতুন দিল্লী; আর দিল্লী জং যাচ্ছে ৬-১৫য় ৩৪৮৩/৩৪১৩ মালদহ-ভিয়ারি-মালদহ ফারাকা এক্স। ২ ৪ ৭ দিন নতুন দিল্লী-গুয়াহাটি রাজধানী এক্স, নতুন দিল্লী-গুয়াহাটি NE Exp. দিল্লী জং-গুয়াহাটি-লামডিং-ডিমাপুর-ডিব্রুগড়-ব্রহ্মপুত্র এক্স, দিল্লী জং-নিউ জলপাইগুড়ি যাচ্ছে লিঙ্ক এক্সের সাথে জুড়ে মহানন্দা এক্স পাটনা হয়ে। ৩ ৭ দিন গুয়াহাটি-দাদার এক্স, ১ ২ ৬ দিন ভাগলপুর-দাদার এক্স, ২৩-২০এ পাটনা-কারলা এক্স, ৩ ৫ ৭ দিন ছাপরা-কারলা এক্স, প্রতি মঙ্গলবার মজফরপুর-দাদার শ্রমশক্তি এক্স মুম্বাই যাচ্ছে পাটনা হয়ে।

প্রতি ২ ৬ দিন ১৯-০০টায় পাটনা ছেড়ে ২৩০৭ রাজধানী এক্স বারানসী/ লক্ষৌ/ কানপুর হয়ে নতুন দিল্লী যাচ্ছে পরদিন ১০-০০টায়; নতুন দিল্লী ছাড়ে ৪ ৭ দিন ১৭-০০টায় ২৩১০ রাজধানী এক্স। ৩ ৭ দিন যাচ্ছে কলকাতা রাজধানী এক্স, ২ ৪ ৬ দিন যাচ্ছে ডিব্রুগড় রাজধানী এক্স পাটনা হয়ে; অর্থাৎ সপ্তাহের প্রতিদিন রাজধানী এক্স যাচ্ছে পাটনা থেকে নতুন দিল্লী।

প্রতি যুগ্মসেবায় ১৩-০০টায় পাটনা-কেটি এক্স যাচ্ছে মধুপুর/আসানসোল/খড়গপুর/চেন্নাই হয়ে। ৪ ৬ দিন ১৪-৪৫এ পাটনা-চেন্নাই এক্স যাচ্ছে মোগলসরাই/ জবলপুর/ ইতারসি/



IAC-র উড়ান ১ ৩ ৫ ৭ দিন ২০-২০এ, ২ ৪ ৬ দিন ৯-১০এ ছেড়ে ৫৫ মিনিটে কলকাতায় যাচ্ছে সরাসরি; কলকাতা ছেড়ে পাটনা আসছে ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১৭-৩০এ সরাসরি, ২ ৪ ৬ দিন ৬-১০এ ছেড়ে ৭-০৫এ রাঁচি পৌঁছে ৮-৩০এ। প্রতিদিন ১২-০৫এ পাটনা ছেড়ে ১২-৫০এ রাঁচি পৌঁছে দিল্লী যাচ্ছে ১৫-১০এ; ১ ৩ ৫ ৬ দিন ১৮-৫৫য় পাটনা ছেড়ে ১৮-৫০এ লক্ষৌ পৌঁছে দিল্লী যাচ্ছে ২১-১৫য়। পাটনা ফেরে দিল্লী থেকে প্রতিদিন ১০-০০টায় ছেড়ে ১২-৫০এ; ১ ৩ ৫ ৬ দিন ১৭-৩০এ ছেড়ে ১৮-২৫এ লক্ষৌ পৌঁছে ১৯-৫০এ। আর Skyline

সেতু তৈরি হওয়ার সড়কপথে উত্তর বিহার যাতায়াত অনেক সুগম হয়েছে। পটনা থেকে। সময়ও কম লাগে ট্রেন থেকে বাসে যেতে। বাস যাচ্ছে পটনা জং রেল স্টেশনের বামে GPO তথা হার্ডিঞ্জ পার্কের বিপরীত থেকে উত্তর বিহার তথা রাজ্যের দিকে দিকে। আর সরকারি পরিবহন নিগম ছাড়াই রেল স্টেশনের ডাইনে থেকে। বাস যাচ্ছে—গয়া ৩ঘ, রাঁচি ৮ঘ, সাহারাম ৪½ ঘ, বৈশালী ৩ঘ, রজৌল ৫ঘ, বিহার শরীফ ২½ ঘ, ডালটনগঞ্জ ৮ ঘ, মজফরপুর, সীতামাটি, হারভান্সা, সমষ্টিপুর, বাম্বীকিনিগর, রাজনগর, মধুবনী, রাজগীর, পাওয়াপুরী, বরায়ুনি, খানবাং, টাটা, দেওঘর, হাজারীবাগ, ভাগলপুর, জসিদি ছাড়াও রাজ্যের নানানদিকে। নানান ট্রাভেল এজেন্সীরও ডিলাক্স বাস যাচ্ছে রাতভর সার্ভিসে। অগ্রিম টিকিটও মেলে এইসব বাসে। এমনকি দার্জিলিং-এর যাত্রী নিয়ে ১২ ঘন্টায় শিলিগুড়িও যাচ্ছে দিন-রাতের সার্ভিসে বাস; বাস যাচ্ছে কলকাতাতেও পটনা থেকে। আর শহরে চলছে রিকশা, অটো, ট্যাক্সি ও বাস।

| পটনা থেকে দূরত্ব | | কনডাক্টেড ট্রা: | |
|------------------|---------|--------------------------|---|
| গয়া | ৯২ কিমি | বিহার রাজ্য পর্যটন বিকাশ | নিগম, বীরচাঁদ প্যাটেল |
| বোধগয়া | ১০৪ " | মার্গ, পটনা-৮০০০০১ | থেকে সকাল ৭-৩০টায় |
| নালন্দা | ৮৯ " | গিয়ে ৬৫ টাকায় পটনা | শহর, রাজগীর, নালন্দা ও |
| পাওয়াপুরী | ৮০ " | পাওয়াপুরী বেড়িয়ে ফেরে | ১৯-৩০টায়। যথেষ্ট যাত্রী |
| রাজগীর | ১০২ " | হলে পটনা শহর | দেখাবারও ব্যবস্থা আছে |
| বৈশালী | ৫৪ " | BTDC-র রাঁচি, রজৌল, | বারাণসী, হারভান্সাও যাচ্ছে |
| মজফরপুর | ৭২ " | BTDC-র ডিলাক্স বাস | পটনা থেকে। আবার |
| রজৌল | ২০৬ " | ITDC-ও শহর দেখাতে | যাচ্ছে Hotel Patliputra |
| কাশিয়ার | ২৩২ " | Ashok থেকে কনডাক্টেড | ট্রায়ে। এমনকি মরসুমে |
| বখতিয়ারপুর | ৪৯ " | ভারতীয় রেলের | সহযোগিতায় বিহার |
| রাঁচি | ৩২৬ " | কলকাতা থেকে ৫৭৯ | ট্রায়েক্স কলকাতা থেকে |
| সাহারাম | ১৫২ " | " বখতিয়ারপুর হয়ে ৩৭৯ | প্যাকেজ ট্রায়ে রাজগীর ও বেতলা-নোতারহাট-তিলাইয়া-দেওঘর-বোধগয়া বেড়িয়ে আনে। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। গ্রীষ্মে ২০-৪৩° আর শীতে তাপমান থাকে ৬-২১° সেন্টিগ্রেডে। |

অশোকেরও (274-237BC) আগে চন্দ্রগুপ্ত মৌর্য (321-297BC), বিম্বিসার (297-274BC) ও অজাতশত্রু (491-459BC)-র রাজধানী ছিল পটলিপুত্রে। পর্যটন ভবন থেকে ৮ কিমি দক্ষিণে পটনা বাইপাসে মাটির নিচুতে তার ধ্বংসাবশেষ মিলেছে কুমারাহর গ্রামে। মৌর্য কালের প্রাসাদ তথা অ্যাসেম্বলি (Stumps of 80 Wooden Pillar) হলু আবিষ্কৃত হয়েছে। রাজপ্রাসাদের কঙ্কালসার ঘরগুলি আজও পর্যটকদের অতীত রোমন্থন করায়। ইট তৈরি বৌদ্ধ মনাস্টি

—আনন্দ বিহারেরও ধ্বংসাবশেষ মিলেছে খননে। খ্রিস্টপূর্ব ৬০০ থেকে ৬০০ খ্রিস্টাব্দ পর্যন্ত অতীত দিনের সংগ্রহ নিয়ে মিউজিয়ামও হয়েছে। সোমবার ছাড়া ৯—১৭-০০টায় খোলা।

১৭৭০-এর মধ্যভরুর বিত্তবিকায় সম্ভ্রান্ত ব্রিটিশরাজ ব্রিটিশ ফৌজের খাদ্যশস্য সংগ্রহের উদ্দেশ্যে ১৭৮৬ খ্রিস্টাব্দের ২০শে জুলাই ক্যান্টেন জন গারস্টিন আজকের গান্ধী ময়দানের পূবে গঙ্গার তীরে পাটনায় ১৪০০০০ টনের সংগ্রহশালা SILO অর্থাৎ গোলাঘর গড়ে তোলেন। আজ এটি কেন্দ্রীয় শস্যগার। এশিয়ার সর্বপ্রথম, বিশ্বের বৃহত্তম এই গোলাঘরের স্থাপত্যও অভিনবত্ব আছে। আকার তার মৌচাকের মতো। গোল। পিলারহীন ৩.৬ মি চওড়া দেওয়ালের গোলাঘর উচ্চতায় ২৯মি। খনুকাঝর সিঁড়ি পথে ১৪৫ ধাপ উঠে উপর থেকে পটনা শহরও দেখে নেওয়া যায়। এর ইইসপারিং গ্যালারিটিও অনবদ্য। প্রস্তুতি চলছে Son-et Lumiere-এর গোলাঘর চত্বরে। বিপরীতে গান্ধী সংগ্রহালয়।

অদূরে ভারতের প্রথম রাষ্ট্রপতি ডক্টর রাজেন্দ্রপ্রসাদের বসতবাটি সদ্যাকৃত আশ্রম। এর মিউজিয়ামে রাষ্ট্রপতির ব্যবহৃত ও পুরস্কার পাওয়া নানান সম্ভার প্রদর্শিত হয়েছে। ১৯২১এ এই বাড়িতে জাতীয় বিশ্ববিদ্যালয়ের বিহার বিদ্যাপীঠ স্থাপিত হয়। স্বাধীনতা সংগ্রামে বিহার শাখার কেন্দ্রমণিও ছিল এই সদ্যাকৃত আশ্রম।

ভবন থেকে ১ কিমি দূরে বুধমাগি মোগল ও রাজপুত শৈলীতে তৈরি পটনা মিউজিয়ামে ১৭ মি উঁচু বিশ্বের বৃহত্তম ফসিল বৃক্ষটি রক্ষিত। বয়স এর ২০০ মিলিয়ন বছরেরও বেশি। ভারতের প্রথম রাষ্ট্রপতি ড. রাজেন্দ্রপ্রসাদের পুরস্কার পাওয়া নানান সম্ভার আকর্ষণ বাড়িয়েছে মিউজিয়ামের। মৌর্য (খ্রিপূ ৩ শতকে) ও গুপ্ত (৫—৭ খ্রিস্টাব্দে) যুগের স্থাপত্য, নানান মূর্তি, টেরাকোটা, মুদ্রা, ব্রোঞ্জ ও মিনিয়চার পেইন্টিংও সমৃদ্ধ করেছে মিউজিয়ামকে। স্টাফড জীবজন্তু, নালন্দার নানান সংগ্রহ প্রদর্শিত হয়েছে মিউজিয়ামে। খিতলে চীনা ও তিব্বতীয় পেইন্টিং ও থঙ্কাস আকর্ষণ বাড়িয়েছে। সোমবার ছাড়া ১০—১৬-৩০টায় খোলা।

জংশন থেকে ১০ কিমি দূরে পটনা সিটি রেল স্টেশনের পাশে নবাব শহীদ-কি-মকবারা। বাংলার নবাব সিরাজ-উদৌল্লা তাঁর পিতার স্মারক রূপে সাদা-কালো মর্মরে তৈরি করান এটি।

১০ম বা শেষ শিখ গুরু গোবিন্দ সিংহ-র জন্মস্থান (ডিসেম্বর ২২, ১৬৬৬)-কে ঘিরে পুরনো পাটনার খাউগঞ্জে (চক) গড়ে উঠেছে পবিত্র শিখতীর্থ তথ্যত শ্রীহরমন্দির সাহিব বা পাটনা সাহিব। পবিত্রতম পাঁচ তথ্যতের অন্যতমও এই হরমন্দিরজী। স্বর্ণমন্দিরের পরেই এর স্থান। স্থাপত্যও সুন্দর। তবে, অতীতের হরমন্দির আগুনে পুড়ে যেতে নবরূপে খেত মর্মরে গড়ে তোলেন মহারাজা রণজিৎ সিং ১৮৩৯এ। সেটিও ধ্বংস পায় ১৯৩৪-এর ভূমিকম্পে।

আবার নতুন করে গড়ে ওঠে ১৯৫৪য় আজকের হরমন্দির। মিউজিয়ামও হয়েছে নিচের তলায়—ছবিতে শিখ ধর্মের পরম্পরা, গুরুর পাদুকা, দোলনা ছাড়াও নানান স্মারক নিয়ে। গ্রন্থসাহিব পাঠ চলছে দ্বিতলে। গুরুর জন্মোৎসব পালিত হয় সাড়ম্বরে। খালি পায়ে, মাথা ঢেকে ঢোকা বাধ্যতামূলক; ব্যবস্থায় মেলে শ্রবশ্বারে। গলিপথের দোকানপাটে বাঁশ ও চর্মজাত নানান পণ্য কিনতে মেলে। ১ কিমি পশ্চিমে ব্রিটিশ সিমেন্টটিও দেখে চলা যেতে পারে।

হরমন্দির লাগোয়া দুর্গের ধ্বংসাবশেষের উপর আফ-গান স্থাপত্যে শের শাহ সুরির গড়া প্রাচীনতম (১৫৪৫) মসজিদ—শের শাহী মসজিদ আজও অনন্য। রাস্তা জুড়ে শের শাহর কিম্বা হাউস। বিশেষ অনুমতিতে ব্যক্তিগত সংগ্রহের জালান মিউজিয়মে অতীত দিনের চীনা, মোগলী ও আফগান শৈলীর নানান স্থাপত্য, পোস্টেলিনের বাসন পত্র দেখে চলা যায়। আর আছে শহর জুড়ে ১৮ শতকের রোমান ক্যাথলিক চার্চ—পাদরি কি হাভেলি; ১৬২১এ জাহাঙ্গীর-পুত্র পারভেজ শাহ-র তৈরি—হরমন্দির লাগোয়া গঙ্গার কিনারে সঙ্গী খানের মসজিদ বা পাখথর-কি-মসজিদ; গান্ধী ময়দান; রেল স্টেশন থেকে বেরতেই পবন-পুত্রের (হনুমান) মহাবীর মন্দির। জাতীয় গ্রন্থাগার তথা ১৯০০ খ্রিস্টাব্দে প্রতিষ্ঠিত খুদাবক্স ওরিয়েন্টাল পাবলিক লাইব্রেরিতে মোগল ও রাজপুত শৈলীর ছবি, আরবি ও পার্শী পাণ্ডুলিপি, স্পেনের করডোভা বিশ্ববিদ্যালয়ের উদ্ধার করা একমাত্র বই, এক ইঞ্চি চওড়া কোরান ছাড়াও একক সংগ্রহের বই ও পাণ্ডুলিপির সম্ভার উন্মোখ। শহরের পূবে গুলজারবাগে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির আফিমের গুদামে বিহার সরকারের ছাপাখানা; বাকিপুত্রের লক্ষ্মীনারায়ণ তথা বিড়লা মন্দির; ভবন থেকে ডানহাতি ৫ কিমি দূরে বিধানসভা, তার সামনে ভাস্কর দেবীপ্রসাদ রায়চৌধুরীর তৈরি ১৯৪২-এর কুইট ইন্ডিয়া আন্দোলনে আত্মাঘটি দেওয়া ৭ শহীদের শহীদ স্মারক; বিধানসভার পেছনে পুরনো সেক্রেটারিয়েট—অদূরে রাজভবন, বায়োলজিক্যাল পার্ক তথা চিড়িয়াখানা; ভবনের ১ কিমি উত্তরে বীরচাঁদ প্যাটেল মার্গে ২মি চওড়া প্রাচীরে ঘেরা ওল্ড ওয়াটার টাওয়ারটিও চলতে-ফিরতে দেখে নেওয়া যায় পায়ে পায়ে।

আর রয়েছে শহরান্তে পশ্চিম দরওয়াজা, ছোট পাটল-দেবী, বড়ি পাটলদেবী, গান্ধী সেতু, নতুন গুরদ্বারা, আগম কুমা (জনশ্রুতি, সম্রাট অশোক তাঁর ছয় ভাইকে হত্যা করে এই কুয়োয় ফেলে সিংহাসনে বসেন)। একে একে দেখে নেওয়া যায় অটোয় ঘণ্টা পাঁচ-ছয়কে অতীতের পাটলিপুত্র তথা আজকের রাজধানীকে। অটো ভাড়া—প্রতিঘণ্টা ৪০-৪৫ হারে। তবে, সদাকত আশ্রম, গোলঘর, গান্ধী সংগ্রহালয়, গান্ধী ময়দান, মিউজিয়ম, স্বাধীনতার স্বপ্ন, বিধানসভা, সেক্রেটারিয়েট, হাইকোর্ট, কুমারহর, হরমন্দিরজী দেখেও সন্তুষ্ট হতে পারে পাটনা দর্শন।

পাটনা থেকে ২৯ কিমি দূরে মানার-এ ১৩ শতকের সুফী সন্ত পীর হজরত মাখদাম আহিয়া মানেবীর বাস। শায়িতও রয়েছে পীর সাহেব। সেই স্মৃতিতে হয়েছে দরগা অর্থাৎ বড়ি দরগা শরীফ। শিবা শাহ দৌলতের স্মারকরূপে গড়া ছোট দরগা শরীফও পবিত্র মুসলিম তীর্থ। ১২ দিক বিশিষ্ট টাওয়ার, ডোম ও বারান্দার ভাস্কর্যও সুন্দর।



রেল স্টেশনের ডাইনে Majharul Haque Path অর্থাৎ অতীতের Frazer Rd, Patna-800001, STD 0612-এর ডাক বাংলা চকে মেলা বসছে সাধারণ হোটেলের—H Rajasthan, R1B2, DAB ১৫০-২০০, A/c D ৩৫০, থাকা ও ভেজ মিলে সুনাম আছে এদের; H Ruby, SP Verma Rd-1, SAB ১০০, DAB ১৭৫; H Park; Grand H, DAB ১২৫-১৭৫; Avanti H, A6R1B½, ৩ 221959, SAB ৩০০, DAB ৪০০, ৪৫০, সুইট ৬০০, ৬৫০, A/c S ৪৫০, D ৬৫০; Ananda Bhawan H, H Mayur, SAB ১৫০, DAB ২৫০, A/c S ৩২৫, D ৪০০; *H Samrat International, ৩ 220560, A5R1, SAB ৪০০, DAB ৬০০, A/c S ৬৫০, D ৮০০, সুইট ৮০০-১২৫০; H Satkar International, ৩ 220551, A/c S ৫৫০-৭৫০, DAB ৬৫০-৮৫০, সুইট ১২৫০; H Five Diamond, S ১২৫, D ২০০; *H Sheodar Sadan; H Marwari Awaz Griha, ৩ 220625, SAB ১৫০-২৭৫, DAB ২২৫-৩৫০, A/c S ৪৫০, D ৬৫০, সুইট ৮০০-১০০০; Sreepakash H, S ৮০-১৫০, D ১৫০-২২৫, Off Frazer Rd-1এ; H President, A6R½, ৩ 220600, SAB ৩০০, D ৪০০, A/c S ৫২৫, D ৮০০, সুইট ১৭৫০।

রেল স্টেশনের কাছেই H Anandalok, ৩ 223960, DAB ২৫০, ৩০০, ৩৫০, A/c-র জন্য ১০০ অতিরিক্ত; স্বল্পদূরে বীণা সিনেমা লাগোয়া বাজলির Patna H, D ১০০-১৭৫; H Central, H Ajit, H Meenakshi, D ১৫০-২২৫; Bihar H, D ১২৫-২০০; H Suraj, D ৬৫-১২৫; H Adarsha, D ১২৫-১৭৫; H Blue Star, H Rajkamal, D ১২৫-২০০; H Amin, H New Welcome, Flora H, Hotel D Light ছাড়াও নানান।

Dak Bungalow Road-1এ—H Rajdhani, D ১৫০-৩২৫, মধ্যমানে থাকার পক্ষে ভালই; বিপরীতে H Daichi S ৬৫, D ১২৫; H Princess S ৮০, D ১৫০। ডানহাতি Exhibition Rd নতুন নামে Braja Kishore Path-1এ H Vikram, S ৬৫, D ১২৫-২০০, A/c S ২৭৫, D ৩২৫; H Gita; *H Republic, ৩ 655021, A5R1B1, SAB ৪৫০, DAB ৬৫০, A/c S ৬৫০, D ৮৫০, সুইট ১২৫০; Shyama H, SAB ৬৫-১২৫, DAB ১২৫-২২৫; একই মানে একই নামে Rajkumar H. Welcomgroup's *H Maurya Patna, South Gandhi Maidan, ৩ 222060, FRd-1, A6R2, A/c S ১৫৯৫-২১৫০, D ২২৫০-৩০০০, সুইট ৪৫০০-৬০০০; India H, SAB ৬০-১২৫, DAB ১০০-২২৫।

East Gandhi Maidan তথা ময়দানের পূবে Asoke Rajpath-4এ—H Ajanta, S ৬০-৮৫, D ১০০-১৭৫; H Tulsi, Bankipur; H Ritz, Kankarbagh Rd-এ—H Jayasamin, S ১৭৫, D ২৭৫, A/c D ৪৫০; H Sunway, Kadamkuan-র H Menka, S ৮৫, D ১৫০; H Anupam, H Tara, H Apsara,

DAB ২০০-২৭৫। রেল স্টেশনের বাইরে প্রাইভেট বাস স্ট্যান্ড পেয়েই অজীভের Gardiner Rd আজকের Birchand Marg Path-800001-এ: *H Chanakya @ 223141, A5R1, A/c S ৯৫০-১২৫০ D ১২৫০-১৭৫০ সুইট ১৭৫০-২২৫০; BTDC-র H Kautiyya Vihar, A5R1, @ 225411, DAB ২২৫ ২৭৫, A/c D 8০০ ভূমি বেড ৬০, হোটেল কোটিল্যে অবস্থানে আহার্য ও মেলে রিক্টে মূল্যে নিচের কান্ডিনে। আহাৰ্যে যথেষ্ট সুনাম এদের। ITDC-র *H Patliputra Ashok, @ 226270, A/c S ১১৯৫, D ১৮০০ সুইট ২২৫০; কেবল দিনের বিশ্রামেও ঘর মেলে রিক্টে মূল্যে। H Meghdoot, Sahid Nagar. S ২৭৫, D 8০০, A/c S 8৫০, D ৬৫০ সুইট ৮৫০; H Sujata ছাড়াও হোটেল আছে নানান পাটনায়।

অজ্ঞাত হোটেল, অমর হোটেল, গেলড হোটেল, হোটেল জয়পুর, হোটেল কৃষ্ণা, প্রদীপ হোটেল, সূর্য হোটেল, হোটেল ললিতা, মমতা হোটেল—এদের কাছেও ঘর মেলে S 8০-১৫০, D ৮০-২২৫ টাকায়। আর আছে রেলের রিটায়ারিং রুম পাটনা জংশনে; Automobile Association of Eastern India; ইয়ুথ হোটেলস রাজেন্দ্রনগর ও গান্ধী ময়দানের দক্ষিণে, বীরচাঁদ প্যাটেল মার্গে সার্কিট হাউস; PWD-র রেস্ট হাউস এয়ারপোর্টে আর ডাকবাংলো বাকিপুরে—এদের কাছেও ঘর মেলে পাটনা ভ্রমণে। আর আছে—বিড়লা ধরমশালা, সবজিবাগ-৪; হরমন্দিরজী ওরষারা, পাটনা সাহিব; পাটলিপুত্র ধরমশালা, সবজিবাগ-৪; কলমকুয়া ধরমশালা, পাটনা-৩; ছাড়াও নানান ধরমশালা পাটনায়। আহাৰ্যেরও নানান হোটেল পাটনায়। ইস্ট গান্ধী ময়দানে Gokul Mini Restaurant, @ 653120-এর মিক্স শেকস-আইসক্রিম-মিঠাইএ যথেষ্ট সুনাম। ফ্রেজার রোডে Navneet Restaurant, @ 221270, (৬-৩০—১০-৩০ ও ১৬-৩০—২২-৩০টা) থালি প্রথায নিরামিষ আহাৰ্য; Mantia Restaurant, Ashoka Restaurant-এরও ননভেজ মিলে যথেষ্ট সুখ্যাতি। চিকেন কাবাবের জন্য চলা যেতে পারে Jai Annapurna Restaurant-এ।

পাটনা শহর দেখার জন্য একটা দিন যথেষ্ট। তবে, দু'দিনের বেশি থাকার দরকার হয় না পাটনায়। সময় স্বল্পতায় দিনে দিনে শহর দেখে ২০-১৫-র পালামৌ এক্সে বা ২১-১৫-র হাতিয়া এক্সে বা ২৩-০০-টার গঙ্গা-দামোদর এক্সে পাটনা ছেড়ে ২২-৩০/২৩-৩০/১-১৫য় গয়ায় পৌঁছান। আর ১০-০৫-এর পাটনা-হাতিয়া এক্স গয়া পৌঁছায় ১২-২০এ। এছাড়া ৬-৩৫, ৮-৪৫, ১০-৪০, ১৩-২০, ১৫-৪০, ১৬-৩৫, ১৮-৩০, ২১-১০এ গ্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ও বটায়। বাসও যাচ্ছে মুম্বাই পাটনা থেকে গয়ায়।

গয়া

ব্রাহ্মাযোনী, রামশিলা ও প্রেতশিলা—তিন পাহাড়ে ঘেরা গয়া। ভারতীয় হিন্দুতীর্থগুলির মধ্যে গয়া অন্যতম। অনাদিকাল ধরে সারা ভারত থেকে হিন্দু যাত্রী আসেন পঞ্চকোশী গয়াক্ষেত্রে তাঁদের মৃত বারো পুরুষের আত্মার শান্তি কামনার্থে পিণ্ডদান করতে। স্বর্গবাসের অধিক সম্ভাবনায় পিতৃপঙ্ক—আখিরের ১—১৫ই যাত্রী আসেন লক্ষ লক্ষ। মেলাও বসে পিতৃপঙ্ক। কথিত আছে, গয়ায় পিণ্ডদান করলে আত্মার স্বর্গারোহণ ঘটে।

বায়ুপুরাণে মেলে, দেবতা আর অসুরের অশান্তি লেগেই ছিল। শিব বধ করলেন ত্রিপুরাসুরকে। ব্রহ্মার বরে পবিত্রতম ত্রিপুরাসুরের ছেলে মহাপরাক্রমশালী গয়াসুর পিতৃহত্যার প্রতিশোধ নিতে দেবভূমি আক্রমণ করতে দেবতার। হেরে গেলেন যুদ্ধে। স্বয়ং নারায়ণ এলেন যুদ্ধ করতে। যুদ্ধ চলল গয়াসুর আর নারায়ণের মাঝে শ'খানেক বছর ধরে। তখন গয়াসুর শান্তি প্রস্তাব রাখল নারায়ণের কাছে। নারায়ণের ইচ্ছামত গয়াসুর পাষণে রূপান্তরিত হল। মাথা তার গয়া অর্থাৎ বিষ্ণুক্ষেত্রে, অস্ত্রের পিঠাপুরমে পদযুগল, ওড়িশার বিরজাক্ষেত্রে নাভি। তবে, স্বর্গে যেতে অনিচ্ছুক গয়াসুর। গয়াসুরের ইচ্ছা দু'টিও পূরণ করলেন নারায়ণ। গয়াসুরের পাষণ মূর্তির মাথায় পদযুগল রাখা আর এই পদচিহ্নে যে আত্মার জন্য পিণ্ডদান করা হবে তাঁর স্বর্গপ্রাপ্তি। নারায়ণের তথাক্ত বাস্তবে রূপ পেল। আর এই গয়াসুর থেকেই শহরের নাম গয়া।

সেই থেকে গয়াসুর পাথর হয়ে রয়েছে নারায়ণের পায়ে ছাপ মাথায় নিয়ে। আর পিণ্ডদান প্রথাও চলে আসছে মৃত আত্মার স্বর্গপ্রাপ্তির জন্যে। কালে কালে ৪৩টি বেদিতে পিণ্ডদান প্রথা চালু হলেও ফল্লুর বালুচরে, বিষ্ণুপাদপদ্মে ও অক্ষয় বট পিণ্ডদান করা হয়। এখানে পিণ্ডদানের জন্যে ও মাগা অর্থাৎ পুরোহিত মেলে। আনুসঙ্গিক জিনিসপত্রও মেলে পাশের বাজারে। ভবুও ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘের ব্যবস্থাপনায় পিণ্ডদানের আয়োজন করাই শ্রেয়। থাকারও ব্যবস্থা আছে সঙ্ঘের ধরমশালায়।

অন্তঃসলিলা ফল্লুর পশ্চিমপাড়ে বিষ্ণুপাদমন্দির। ৩০মি উঁচু অষ্টকোণী চূড়া—রূপোর আধারে মোড়া। ভিতরে পাথরের বৃক ৪০ সেমি দীর্ঘ বিষ্ণুর পায়ে ছাপ। হিন্দু তীর্থযাত্রীদের কাছে খুবই পবিত্র। পরিবেশও সুন্দর। ১৭৮৭ খ্রিস্টাব্দে ইন্দোরের মহারানী অহল্যাবাদী মন্দিরটির সংস্কার করেন। তৈরি এটি কলকাতার শোভাবাজারের রাজা রাধাকান্ত দেবের। রেল স্টেশন থেকে টাঙা ও রিকশা যাচ্ছে ২.৪ কিমি দূরের মন্দিরে।

বিষ্ণুপাদমন্দিরের ১ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ১০০০ সিঁড়ি উঠে ব্রাহ্মাযোনী পাহাড় চূড়ায় শিব মন্দির আর নিচুতে অক্ষয়বট। রামায়ণের সীতাদেবীর আশীর্বাদন্থা এই বট-বৃক্ষতলে পিণ্ডদান সমাধা হয়। একদা ফল্লুও বয়ে যেত নিচু দিয়ে। সীতাদেবীর শাপে সে অন্তঃসলিলা।

গয়ার উত্তরে রামশিলা পর্বত—চূড়ায় পাতালেখর মন্দির। আর আছে প্রেতশিলা। অপঘাতে মৃতদের পিণ্ডদান হয় এই প্রেতশিলায়।

গয়ায় ২০ কিমি দূরে বিষ্ণুপাদ মন্দিরের উত্তরে শোন নদীর তীরে দেও-এর সূর্যমন্দিরটিও তীর্থযাত্রীদের কাছে আর এক পূণ্য তীর্থ। দেওয়ালির ৬ দিন পর (নভেম্বর) পূণ্যার্থীরা গয়ায় কোমর জলে দাঁড়িয়ে নতুন কাটা ফসল, ফল-মূল আর ঘরে তৈরি মিষ্টাদি দিয়ে দেবতা সূর্যের অর্চনা

করেন। নাম তার ছোট পূজা। জাঁকালো মেলাও বসে ছোট পূজার কার্য। তেমনই GTRd-এর মদনপুরেও আর এক প্রাচীন সূর্যমন্দির দেখে চলা যায়।

মহায়া গাছীর স্মৃতিতে গড়ে তোলা গাছী মণ্ডপটিও পর্যটকদের আর এক দ্রষ্টব্য গম্য।

৫ কিমি উত্তর-পূবে কুরকিহর গ্রামে জুপাকৃতি নানান ধ্বংসাবশেষ মিলেছে খননে। প্রত্নতাত্ত্বিকদের মতে, ৭ শতকে হিউয়েন সাং-এর উল্লিখিত কুকুটপদগিরি বা Cock's Foot Mountain হয়ে থাকবে আজকের কুরকিহর। পাটনা মিউজিয়মে এর নিদর্শন প্রদর্শিত হয়েছে।

বরাবর গুহা: গয়া থেকে ২০ কিমি উত্তরে বেলা স্টেশন। বেলা থেকে পায়ে হাঁটা পথে ৭ কিমি আর টাঙা বা রিকশায় ১০ কিমি যেতে বৌদ্ধ গুহা বরাবর। গয়া-পাটনা লোকালে গয়ার দু'টি স্টেশন পর বেলায় নেমে রিকশায় চলুন। যাতায়াত ভাড়া ৩০-৪৫। সরাসরি বাসও আছে গয়ার কিনারি ঘাট থেকে বেলা হয়ে বরাবর গুহায়। EM Forster-এর বিখ্যাত উপন্যাস *Passage to India*-য় উল্লিখিত হয়েছে বরাবর আখ্যান।

সম্রাট অশোকের (খ্রি পূ ২০০) কালে পাহাড় কেটে তৈরি এই গুহা। গুহা হয়েছে পরবর্তীকালেও। জ্ঞাতকের আখ্যান উদ্ধৃত হয়েছে এর শিলায়। সংখ্যায় শতাধিক হবে। তবে জঙ্গলাকীর্ণ ও কালের কবলে বিনষ্ট হয়েছে গুহা। ৭টি আজ প্রত্নতত্ত্ব বিভাগের তত্ত্বাবধানে। তিন ধরনের গুহা আছে বরাবর: (১) নাগাজুনিয়—অর্থাৎ আকারে বড়। প্রবেশপথে ধনুকাকৃতি খিলান। ভিতর পালিশ করা, চক্রাকার, হলঘর, মিনি গুহাও আছে। আর হয় echo অর্থাৎ প্রতিধ্বনি নাগার্জুনে। স্থাপত্য সুন্দর। লোমশ ও সুদামা এই পর্যায়ের গুহা; (২) পঞ্চ পাণ্ডব গুহা—আকারে ছোট, বনবাসকালে অবস্থান করেন পাণ্ডবেরা; (৩) হাট-কেড গুহা—কুটির আকার, একদিক খোলা, তিনদিকে পাথুরে দেওয়াল। আর আছে সিদ্ধেশ্বর পাহাড়ে সিদ্ধনাথ শিব বরাবরে।

জনশ্রুতি, বরাবর পাহাড়ের অঙ্কুরী গুম্ফায় আজ ডাক্তার, ঠগী আর লুটেরাদের ঘাঁটি। তবে, কেবল সোমবার যাত্রী সমাগম ঘটে দূর-দূরান্ত থেকে। বসে দোকানপাট। তবুও উচিত হবে নিরাপত্তার অভাব স্বেচ্ছা বরাবর পরিহার করে চলা। থাকারও কোনো ব্যবস্থা নেই বরাবর বা বেলায়।



প্যাসেঞ্জার ট্রেন, এক ও বাস নিয়মিত সংযোগ রেখেছে পাটনা থেকে গয়ার। ২১-৩ ঘণ্টার পথ। দূরত্ব ৯২ কিমি। কলকাতা-দিল্লী গ্রান্ড কর্ড লাইনে গয়া জংশন। হাওড়া থেকে ১২৪৫৬ দিন ১৭-০০টার রাজধানী এক্স, ১৯-১৫য় হাওড়া-দিল্লী-কালকা মেল, ৩৪৭ দিন ৯-১৫য় 2381 পূর্বা এক্স, ২০-০০টার মুর্খাই মেল ডাঙ্গা এলাহাবাদ, ২৩-৩০এ যোধপুর এক্স, ২০-১৫য় দূন এক্স, ১৫-১৫য় শিপ্রা এক্স-চম্বল এক্স; আর শিলালদহ থেকে ১১-৪৫এ জম্মু তওয়ারি এক্স গয়া হয়ে যাচ্ছে। কলকাতা থেকে ঘণ্টা আটকের পথ, দূরত্ব ৪৫৮ কিমি। পাটনা-বরকলকা পালামৌ এক্স, খানবাস-পাটনা গলা

দামোদর এক্স, পাটনা-হাতিরা এক্স, খানবাস-মুখিয়ানা গলা শতদ্রু এক্স, প্রতিটি ট্রেনই গয়া হয়ে যাচ্ছে। ৫৮৯ কিমি দূরের পুরী যাচ্ছে ১৪ ঘণ্টায় নিউ দিল্লী-পুরী পুরুষোত্তম এক্স, ২৪৫৭ দিন নিউ দিল্লী-পুরী এক্স, ১৩৬ দিন নিউ দিল্লী-পুরী নীলাচল এক্স। আর ২২০ কিমি দূরের বারাণসী যাচ্ছে নানান ট্রেন ৪ থেকে ৬ ঘণ্টায় গয়া থেকে। ৬-৩০এ আসানসোল থেকে; ১৬-৪৫এ হাজারীবাগ থেকে; ৫-১৫, ৯-২৫, ১৩-৩০, ১৮-৩৩, ২০-৪৫এ কিউল থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে গয়ায়।



কিরানি ঘাট থেকে প্রাইভেট বাস যাচ্ছে রাজগীর, বেলা, বরাবর গুহা। গাছী ময়দান থেকে রাষ্ট্রীয় পরিবহণের বাস যাচ্ছে—গিরিডি, দেওঘর, চাইবাসা, মজফরপুর, হাজীপুর, রাচি (৭ ঘণ্টায়), হাজারীবাগ, টাটা, খানবাস, খেবী ৩০, রাজগীর (২ ঘণ্টায়) ৬৬, পাওয়াপুরী ৮৩, পাটনা (৩ ঘণ্টায়) ৯৭ কিমি ছাড়াও রাজ্যের দিকে দিকে। প্রাইভেট ডিলাক্স যাচ্ছে TV স্টেশনের কাছ থেকে রাজ্যের নানান দিকে। বাস যাচ্ছে জাহানাবাগ-কলকাতা ১৮-২০তে ছেড়ে রাতভর জর্নিতে কলকাতায়। কলকাতা ছাড়ে ১৭-৩০টা, গয়ার নিকটতম বিমানবন্দর পাটনায়। রিকশা ও অটো চলছে শহরে।



স্টেশন চত্বর পেরুতেই Station Road, STD 0631, Gaya-823001এ—Ajatshatru H, opp Rly Stn, ৩ 21514, DAB ১৭৫-২৫০; Anand H; Station View H, Pal R H, H Madras, Ajit R H, Punjab R H, H Satkar, Punjab H, H Saluja, এদের কাছে S ৬০-১২৫ D ৮৫-২২৫ টাকার মেলে। H Siddhartha International, Stn Rd, Gaya-2, ৩ 21480, SAB ৬৫০-৮৫০, DAB ১০০০-১২৫০ A/c S ১২৫০ D ১৫০০ সুইট ২০০০।

১৫ কিমি দূরে Swarajpuri Road-1এ—H Samrat, DAB ২০০-২৭৫; Bharat Sevashram Sangha, ৩ 20579, দান ভিত্তিতে ভক্তদের থাকার ব্যবস্থা; H Chanakya; Abantika H. বাস স্ট্যান্ডের কাছে: Church Rd-1এ—H Sarogi, RIBO, SCB ৬০, SAB ৮০, DAB ১৫০; কাছেই Lodging House Committee-র Rest House-এ DAB ১০০, এদেরই আর এক শাখা বিকুঝাটে Ashok Yatri Niwas, DAB ১২৫, থাকার পক্ষে মনোরম; লজিং কমিটির রেস্ট হাউসের কাছেই Sainik Rest House-এও থাকার ব্যবস্থা মেলে। রেল স্টেশন থেকে মিনিট দশেকের পথ কিরানি ঘাট বাস স্ট্যান্ড লাগিয়ে Gandhi Chowk তথা Krishna Prakash Path এ—Motimahal H, H Raman, Veez H, Kripal L, Kamala L, Indira Basa—এদের কাছে S ৬০-১০০ D ৮৫-১৭৫ টাকার মেলে। এছাড়াও হোটেল আছে সারা শহরময়—H Raman, Gandhi Chowk-1, SAB ৮৫, DAB ১৫০ A/c S ২৭৫ D ৩৫০; H Surjya, Dakbanglow Rd, ৩ 24004, DAB ২৭৫ ৩৫০ ৪৫০; H Anandalok, 66 Law Rd, Chowk, RIB1, SAB ৮০, DAB ১৫০ A/c S ২২৫ D ৩০০; H Shyam, Ramna Rd; Gopal Niwas, Sahid Rd; Kalpana R H, Cachari Rd; Narayan R H, H Rajpal, SCB ৪৫, SAB ৬৫, DCB ৮৫, DAB ১২৫; Sri Kailash GH, North Azad Park (FBS Rd), Gaya-823001; ছাড়াও নানান।

আর আছে সার্কিট হাউস, PWD 1B, অব: EE, PWD-Building; District Board D B, Civil Lines, অব: District Board; ১০ দিন আগে লিখতে হয়। বাস স্ট্যান্ডে Lodging

House Committee Rest House ছাড়াও রেলের বিটারিং রুম আছে গয়ায়। এছাড়া ভারত সেবাব্রহ্ম সম্বন্ধে, জৈন ধর্মশালা, মারোয়াড়ি ধর্মশালা, পঞ্চায়তি ধর্মশালা, স্টেশন ধর্মশালা, তিস্তা ধর্মশালাতেও ঘর মেলে থাকার। তবে বাঙালি যাত্রীদের ভিড় বেশি রেল স্টেশন থেকে এক মাইল দূরে স্বরাজপুরী রোডের ভারত সেবাব্রহ্ম সঙ্ঘে। রেল স্টেশনেও দ্বিতীয় শ্রেণীর টিকিট কাউন্টারের কাছে *পিলগ্রিমস ওয়েলফেয়ার এনকোয়ারি অফিস* বসেছে সঙ্ঘঘর। গয়ায় হোটেল নির্বাচনে সতর্কতাও দরকার। এমনকি দু'নম্বরী নিউ ভারত সেবাব্রহ্ম সঙ্ঘ নামেও একটি সংস্থা গড়ে উঠেছে গয়ায়।

বুদ্ধগয়া

নেপালের লুম্বিনীতে বুদ্ধের জন্ম, বারাণসীর অদূরে সারনাথে বৌদ্ধ-ধর্মের উন্মেষ, গৌরক্ষপুরের কাছে কুশী-নগরে বুদ্ধের মহাপরিনির্বাণ আর বুদ্ধগয়ায় বুদ্ধজ লাভ অর্থাৎ সিদ্ধার্থের দিব্যজ্ঞান বা বোধের উন্মেষ ঘটে। এই চার পূণ্যধাম বৌদ্ধধর্মীদের কাছে তীর্থ বিশেষ। তবুও যেন বিশ্বের অন্যতম বৌদ্ধ তীর্থ বুদ্ধগয়া। এমনকি প্রতি ডিসেম্বরে দলিহি লামাও আসেন ধর্মশালা থেকে বুদ্ধগয়ায়।

গয়া থেকে বাস, অটোরিকশা বা ট্যাক্সিতে চলুন সেকালের মগধ সাম্রাজ্যের বৃক্ষে গড়ে ওঠা বুদ্ধগয়ায়। বাসের চলা অনিয়মিত হলেও ভারত সেবাব্রহ্মের অদূরে কাছারি চক থেকে মুমূর্ষু অটো যাচ্ছে শেষায়ে; ভাড়া ৬ করে। পিণ্ডানার অনুষ্ঠান না থাকলে বুদ্ধগয়াতে অবস্থান করা সব রকমে ভাল। থাকার ব্যবস্থাও গয়ায় থেকে বুদ্ধগয়ায় ভাল। বুদ্ধগয়ার নিকটতম রেল স্টেশন ১২ কিমি দূরের গয়া জংশন। তবে, রাতে এপথে যাতায়াত এড়িয়ে চলা উচিত হবে।

২৫০০ বছরের অতীত—নিরঞ্জন নদীর পাড়ে উরুবিশ্ব গ্রামে পিপুল গাছের নিচে একাসনে বসে সিদ্ধার্থ তপস্যা করে ৪৯ দিনে বৈশাখ মাসের পূর্ণিমায় সিদ্ধি লাভ করেন। কালে কালে নিরঞ্জনার নাম হয়েছে ফল্লু, উরুবিশ্ব হয়েছে বুদ্ধগয়া, আর পিপুল আজ বোধিবৃক্ষ নামে খ্যাত। বুদ্ধের স্মৃতিকে ঘিরে বুদ্ধগয়া। সম্রাট অশোকও আসেন উত্তর-কালে। বেড়াবার মনোরম সময় অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। তবে গরমের আধিক্য হেতু গ্রীষ্ম এড়িয়ে চলা যেতে পারে। মে মাসের বুদ্ধজয়ন্তীতে দেশ-দেশান্তর থেকে ভক্তের দল আসেন। রূপ নেয় বুদ্ধগয়া জাঁকালো উৎসবের।

যে পিপুল গাছের নিচে অনিমেঘলোচন জুপ অর্থাৎ মহাপরিনির্বাণ হলে বসে সিদ্ধার্থের দিব্যজ্ঞান বা বোধের নবোদয় ঘটে, পরবর্তীকালে সেই গাছের একটি চারা সম্রাট অশোক শীলঙ্কায় পাঠান কন্যা সম্ভবমিত্রার সাথে। মূল গাছটি মারা যেতে শীলঙ্কা (অনুরাধাপুরা) থেকে চারা এনে বুদ্ধগয়ায় রোপিত হয়। মূলের ৪র্থ প্রজন্ম আজকের এই বোধিবৃক্ষ। বৃক্ষতলে লাল বেলেপাথরের পদ্মাকার বজ্রাসন অর্থাৎ ডায়মন্ড স্টোন—এ ধ্যানে বসতেন বুদ্ধ। পাথরে পায়ের ছাপ বুদ্ধের উপস্থিতি, আর পাথরের পদ্মাকার পানপাত্রে বুদ্ধজ্ঞ প্রাপ্তির পর বুদ্ধের পদক্ষেপের প্রকাশ। পাশেই সুজাতা

দিঘি। জনশ্রুতি, এই দিঘির জলে স্নান করে সুজাতা পায়ের নিবেদন করেন বুদ্ধদেবকে।

৬০ ফুট চওড়া, ১৮০ ফুট উঁচু পিরামিডধর্মী চূড়াওয়ালা দ্বিতল মহাবোধি মন্দিরের নিচুতে রয়েছে বিশাল বুদ্ধমূর্তি, আর দ্বিতলে উপাসনা গৃহ। পূর্বে দক্ষিণ ভারতীয় শৈলীতে গড়া বৌদ্ধধারার তোরণে প্রবেশ। চার কোণে চার চূড়া—নানান ভঙ্গিমায় বুদ্ধ, পদ্ম, পাখি ও বিভিন্ন জীব-জন্তুর সঙ্গে জাতকের কাহিনীও অলঙ্কৃত হয়েছে দেওয়ালে। প্রাচীন হিন্দু স্থাপত্যের অন্যতম নিদর্শন এই মন্দির। মন্দিরের পাথরের দেওয়াল—সেও অশোকের কালের; দ্বিমতে সুন্দর (১৮৪-১৭২ BC) কালে তৈরি। মূল মন্দিরের সঠিক জন্ম ইতিহাস না মিললেও পণ্ডিতরা বলেন ২৪৯ BC-তে সম্রাট অশোকের হাতে তৈরি হয়েছিল মন্দির এখানে। চীনা পর্যটক Hiuen Tsang (635 AD)-এর বিবরণীতে মন্দিরের উল্লেখ মেলে। আর ১১০৫ খ্রিস্টাব্দে এটির সংস্কার করেন ব্রহ্মদেশীয় বৌদ্ধরা। দিব্যজ্ঞান প্রাপ্ত বুদ্ধের মূর্তিটি সেই থেকে। ১৮৮০ খ্রিস্টাব্দে জেনারেল কানিংহাম ২ লক্ষ টাকা ব্যয়ে সংস্কার করেন মন্দির। সম্প্রতিও আমূল সংস্কার হয়েছে মন্দিরের।

এছাড়া মন্দিরের উত্তরে চক্রমাণা, ঘেরা প্রান্তণে অনিমেঘলোচন চৈত্য, মোহান্তর মনাস্থি, রত্নাগার, এগুলিও দ্রষ্টব্য। আর ২ কিমি দূরে নিরঞ্জন নদী-তীরে রোপ-জঙ্গলে আকর্ষণীয় স্থপতি নাকি গোপবালা সুজাতার গৃহ। ৩ কিমি দূরে মুচলিন্দ সরোবর। সর্পরাজ মুচলিন্দ ফণা মেলে ছাতা ধরে ধ্যানস্থ বুদ্ধকে ঝড়-জল-বৃষ্টি থেকে রক্ষা করত। এই লেকের পাড়েই গড়ে উঠেছিল সেকালের মগধ বিশ্ব-বিদ্যালয়। তবে আজ বিধ্বস্ত।

দেব মহাশ্যে মহাবোধি মন্দিরের আকর্ষণ অন্যতম হলেও বুদ্ধের ২৫০০ বর্ষ পূর্তিতে বিশ্ব থেকে আসা বিত্ত ও শিল্প সুবহুময় বুদ্ধগয়া আজ অনন্য হয়ে উঠেছে। মহাবোধি মন্দিরের পশ্চিমে বাজার পেরুতেই ১৯৩৪এ তৈরি তিব্বতীয় মনাস্থি। দ্বিতল মন্দিরের অলঙ্কারগণের গুচ্ছল্য আকর্ষণীয়। দেবতা বুদ্ধ। আর রয়েছে ২০০ কুইন্টাল ওজনের পিতলের ধর্মচক্র। বাম থেকে ডাইনে তিন পাক ঘুরিয়ে অতীত পাপের বোঝা হালকা করে নিন আপনিও। অদূরেই ১৯৪৫এ তৈরি ইন্দো-চীনা শৈলীর সফেদ রঙা চীনা বুদ্ধিস্ট মন্দির। বুদ্ধের মূর্তিটি এসেছে চীন থেকে। বিপরীতে চিড়িয়াখানা তথা প্রত্নতাত্ত্বিক মিউজিয়ামে বৌদ্ধ স্থাপত্যের নানান কিছু দেখে নেওয়া যায়। শুক্র ছাড়া ১০—১৭-০০টা খোলা। সামান্য এগুতেই খাই মনাস্থি। ১৯৬৭তে খাই সরকারের তৈরি প্যাগোডাধর্মী মন্দিরে প্রাসে বুদ্ধমূর্তি। মন্দিরের স্থাপত্যও অভিনবত্ব আছে। এরপর ছুটান মনাস্থি—এটিও প্যাগোডাধর্মী, মন্দিরের স্থাপত্যও সুন্দর। তবে, অন্দরের অলঙ্কারে আধিক্য হেতু জড়তা এসেছে। লাগোয়া International Buddhist Brotherhood Association-এর নানানধর্মী কর্মযজ্ঞের দপ্তর। দেবতা বুদ্ধও

রয়েছেন মন্দিরে। বিপরীতে Janyang Khyentse Wangpo Monastery অর্থাৎ তিব্বতীয় বুদ্ধ মন্দির। লাগোয়া Daijokyo Buddhist Temple. এটি জাপানি বুদ্ধ মন্দির। রঙের ঔজ্জ্বল্যের অভাব মিটিয়েছে সাদামাটা প্যাগোডাধর্মী মন্দিরের শিল্প-নৈপুণ্য। ১৫০ ফুট উঁচু ধ্যানস্থ বুদ্ধের সুন্দর মূর্তিটিও এসেছে জাপান থেকে। বার্মাও মনাস্টি গড়েছে ১৯৩৬এ। শ্রীলঙ্কা, ভিয়েতনামও মনাস্টি গড়েছে বুদ্ধগয়ায়। Jai Bodhi Kham মনাস্টিটি অসম ও অরুণাচলের বৌদ্ধদের যুগ্ম উদ্যোগ। তেমনই সর্বশেষ Nepalese Temang মনাস্টিটি ১৯৯২এ-নেপালের তৈরি। লাওস-ও মনাস্টি গড়েছে বুদ্ধগয়ায়। শঙ্করাচার্য মঠও মন্দির গড়েছে বৌদ্ধতীর্থে। বিশাল বিশাল চত্বর নিয়ে রূপ পেয়েছে প্রতিটি মন্দির। পথের শেষ—সেও আর এক আকাশচুম্বী বুদ্ধ মূর্তিতে। নীল আকাশের নিচে ২৫মি উঁচু বুদ্ধ মূর্তিটি উন্মোচন করেন ১৯৮৯এ দালাই লামা। তেমনই বিশ্বশান্তির প্রতীক রূপে মৈত্রেয় বুদ্ধের মূর্তিও হয়েছে বুদ্ধগয়ায়। ঠিকমত দেখতে কম করে একটা দিন বোধগয়ায় দেওয়া উচিত হবে। পায়ে পায়ে বা রিকশায় দেখে নেওয়া যায় ৩ কিমি ব্যাপ্ত বুদ্ধগয়া। তবে, ১২—১৪-০০টায় দ্বার বন্ধ থাকে মহাবোধির।



ধাকার জন্য আছে ITDC-র H Bodhgaya Ashok, Bodhgaya-824231, ৩ 2270২, S ৯৫০, D ১৪৫০ A/C S ১১৯৫ D ২৩৫০ সুইট ২৩৯৫, এপ্রিল থেকে সেপ্টেম্বরে রিটেট মেলে। BTDC-র ৪৮ বেডের H Buddha Vihar, ৩ 400445, ডর্মি প্রথায় বেড ৪৫ করে; আর এদেরই H Siddhartha Vihar, DAB ২০০ A/C D ২৭৫ ডর্মি বেড ৪৫ করে; অব্: Manager বা Bihar Tourism, 26-B, Camac St, Calcutta-16. PWD-র IB, অব্: EE, West Division, Gaya. আর আছে হোটেল অশোকের বিপরীতে H Niranjana, DAB ৬৫০ A/C D ৮৫০-১০০০; ছাড়াও H Moti-mahal, Ramlakshan Singh Lodging House, H Kuntika, H Amar, H Sashi. BTDC-র Youth Hostel-ও আছে বুদ্ধগয়ায়। এছাড়া বিভূলা ধরমশালা, মহাবোধি রেস্ট হাউস, শ্রীলঙ্কা গেস্ট হাউস, জাপানিজ রেস্ট হাউস, থাই রেস্ট হাউস, ভূটান রেস্ট হাউস, টিব্বিট রেস্ট হাউস, বার্মিজ মনাস্টি, চীনা মনাস্টি, ইন্টারন্যাশনাল বুদ্ধিস্ট হাউস, এদের কাছেও ঘর মেলে ডোনেশনে।

দেশী-বিশেষী নানান মেনু বোধগয়ায় হোটেল। শ্রীলঙ্কা গেস্ট

হাউসের মহাবোধি ক্যান্টিনের যথেষ্ট সুখ্যাতি চীনা মিল পরিষেবায়।

রাজগীর

বুদ্ধগয়া থেকে বাসে রাজগীর চলুন। গয়া হয়েই বাস যাচ্ছে। তাই গয়া থেকেও যাওয়া চলে। ট্রেনে যাবার বাকি নানান, বাসই সুবিধার। গয়া থেকে ৬৬, আর বুদ্ধগয়ার দূরত্ব ৭৮ কিমি। বাস আসছে পাটনা ছাড়াও রাজ্যের নানান শহর থেকেও রাজগীরে। তবুও যেন পাটনা-রাজগীর যাতায়াতে বিহারশরীফ হয়ে বাসের আধিক্য মেলে। বাস যাচ্ছে বিহার সরকারের রাত ২০-০০টায় কলকাতার শহীদ মিনার ও ১৭-০০টায় বাবুঘাট ছেড়ে ধানবাদ/নওদা হয়ে ১৪ ঘটায় রাজগীর পৌঁছে বিহারশরীফ/নওদায়; ফেরে ১৬-৩০টায় রাজগীর থেকে। নানান প্রাইভেট ডিলাক্সও চলে এপথে। আর CSTC-র বাস যাচ্ছে ১৫-৩০এ ছেড়ে ১৩ ঘটায়, ফেরেও ১৫-৩০এ রাজগীর ছেড়ে কলকাতায়। এদের ডাড়া ১০৪।

ট্রেন যাচ্ছে হাওড়া থেকে—ভূফান ৯-৪৫, হাওড়া-দানাপুর ফা প্যা ১১-১০, অমৃতসর এক্স ১৩-১০, অমৃতসর মেল ১৯-২০, হাওড়া-দিল্লী জনতা এক্স ২১-০০, হাওড়া-দানাপুর এক্স ২১-০৫; আর শিয়ালদহ থেকে লালকেলা এক্স ২০-১৫, মোগলসারী এক্স ২০-৫৫য় ছেড়ে যথাক্রমে ১৯-৩৯, ৫-৫৩, ০-৫৫, ৩-৪৮, ৭-২৫, ৬-০১, ৫-৪০, ১১-২০এ মেন লাইনে ৪৮৭ কিমি দূরের বখতিয়ারপুর জং পৌঁছায়। ট্রেন যাচ্ছে কাটিহার-দানাপুর ক্যাপিটাল এক্স, কিউল-দানাপুর প্যা, মালদহ-ভিওয়ানি ফারাকা এক্স, বখতিয়ারপুর-দানাপুর প্যা, মোকামা-দানাপুর প্যা, দ্বারভাঙ্গা-পাটনা প্যা, রাজগীর-দানাপুর প্যা, রাউরকেলা-পাটনা সাউথ বিহার এক্স, হাতিয়া-পাটনা প্যাটিলপুর এক্স, মোকামা-পাটনা প্যা, পাটনা-হাতিয়া প্যাটিলপুর এক্স, ভাগলপুর-দানাপুর এক্স, গুয়াহাটি-দানাপুর এক্স, কিউল-পাটনা প্যা, বিক্রমশীলা এক্স বখতিয়ারপুর জং হয়ে। আর বখতিয়ারপুর থেকে ৮-৩৫, ১৭-২৬এ দানাপুর-রাজগীর প্যাসেঞ্জার যাচ্ছে ২২ ঘটায় ৫৫ কিমি দূরের রাজগীরে। বিহার-শরীফ/পাওয়াপূরী/নালন্দা হয়ে যাচ্ছে ট্রেন। সরাসরি মিশ্রার ক্লাসও যাচ্ছে 3111 শিয়ালদহ-দিল্লী লালকেলা এক্সে, বখতিয়ারপুর থেকে ৮-৩৫এ 2DBR লোকাল হয়ে ১১-০০টায় রাজগীরে। বখতিয়ারপুর বা বিহারশরীফ থেকে শেয়ার টাক্সি, ট্রেকার, বাসও যাচ্ছে রাজগীরে। রাজগীর থেকে কলকাতার দূরত্ব ৫৪০, বখতিয়ারপুর ৫৫, বিহারশরীফ ২৩ আর পাটনা ১০২ কিমি। ধাকার জন্য বাথ সংলগ্ন ২০ ঘরের Mamata H আছে বখতিয়ারপুরে।

Ph: 5201/5005

Fax: 5210

Code No. : 06119

রাজগীরে হোটেল

সারদা, মহালক্ষ্মী এবং হিল ভিউ

পো-রাজগীর, জিলা-নালন্দা, বিহার, পিন কো: 803116

পরিচালনা: বাবলু কোলে

আমাদের এখানে থাকা এবং খাওয়ার সুন্দর ব্যবস্থা আছে। এছাড়াও আমরা একসাথে ৭/৮টি বাস বা গ্রুপ পার্টি রাখার ব্যবস্থা করে দিই।

কলিকাতায় নিজস্ব বুকিং অফিস- C/o H. D. GHOSH & CO., 62 Bentink Street, Cal-69, Ph: 27 4548

কনডাক্টেড ট্যুর : রাজগীর থেকে Nalanda Travels, 2 Kunda Market, opp Sri Ramkrishna Math, সকাল ৭-৪৫, ৮-০০, ১৩-৩০ ও ১৪-০০টার ৫ ঘট্টার সফরে ৮০ টাকার নালন্দা ও পাণ্ড্যাপুরী বেড়িয়ে আসে। নানানখ্যাঁ গাড়ির ব্যবস্থা এদের। গয়া ও বুদ্ধগয়ায় যাচ্ছে সকাল ৮-০০টার ১১০ টাকার। ৭৫ কিমি দূরের কাকোলাত ওয়াটার ফলস বেড়িয়ে আসে এরা ৮০টাকার। Rajgir Travels, Paradise Travels ছাড়াও আরও নানান সংস্থা যাচ্ছে প্যাকেজ ট্যুরে।

অতীতে রাজগীরের নাম ছিল রাজগৃহ অর্থাৎ *দিরয়াল প্যালেস*। আর অজাতশত্রু নাম রাখেন এর গিরিব্রজ। পাঁচপাহাড়ীও বলে থাকে লোকে রাজগীরকে। খ্রিপূ ৫ শতকে অজাতশত্রু রাজগীর থেকে পাটিলপুত্রে রাজধানী স্থানান্তর ঘটান। সেকালে রাজগৃহ ছিল ভারতের এক সমৃদ্ধ নগর। বৈভার, বিপুল, রত্নগিরি, উদয়গিরি, শোনগিরি—পাঁচপাহাড়ে চক্রাকারে ঘেরা ছিল সেকালে। মগধরাজ জরাসন্ধের রাজধানীও ছিল রাজগৃহে। মহাভারতের দ্বিতীয় পাত্তবতীরের হাতে মৃত্যু ঘটে জরাসন্ধর। এমনকি রামায়ণেও উল্লেখ মেলে রাজগৃহের আখ্যান। বুদ্ধের রাজগৃহ আগমনে মৌর্য সম্রাট বিশিয়ার দীক্ষা নেন বৌদ্ধ ধর্মে। বুদ্ধের কর্মজীবনের সঙ্গেও রাজগৃহ ও নালন্দা অঙ্গাঙ্গীভাবে জড়িয়ে। ১২ বছর বাসও করেন বুদ্ধদেব রাজগীরে। তেমনই ২৪তম অর্থাৎ শেষ জৈন তীর্থঙ্কর বর্ধমান মহাবীর তাঁর কর্মজীবনের ১৪টি বছর এখানে কাটান। বিপুল পর্বতে প্রথম ধর্মভাণ্ড করেন মহাবীর। মহাবীর পাঠও দিতেন শিষ্যদের এখানে। স্মারক রূপে দিগম্বরী জৈন তীর্থ মন্দির হয়েছে পাহাড় চূড়ায়। ত্রিপিটকও লেখা হয় এখানে। সপ্তর্ষী কুণ্ড থেকেই সিঁড়ি উঠেছে বিপুল শিরে। খণ্ডা সেড়েছে অভিযান করে নেওয়া যায় ১৮০০ ফুট উঁচু বিপুল পর্বত। বিপরীতে বৈভার পর্বত। তবে অতীত থেকে সরে এসে নতুন শহর গড়ে উঠেছে রাজগীরে। আজকের রাজগীরের অন্যতম আকর্ষণ বেণুবনের দক্ষিণ-পূবে সরস্বতী নদী পেরিয়ে সপ্তর্ষি ও ব্রহ্মকুণ্ড। ভূগর্ভস্থ মন্দিরে মূর্তি হয়েছে গৌতম, ভরদ্বাজ, বিখামির, জমদ্যাগ্নি, দুর্বাসা, বশিষ্ঠ ও পরাশর অর্থাৎ সপ্তর্ষির। আর পাহাড় ঢালে উষ্ণ জলের প্রবলধ—৭টি ধারায় বেরিয়ে আসছে জল। প্রতিটাতেই উষ্ণতার তারতম্য আছে। প্রথমই বাঁয়ে ব্রহ্মার তপস্যায় সৃষ্ট ব্রহ্মকুণ্ড—জল ৪৫° সে গরম। অন্য ধারাগুলি হল—শতধারা, শালীগ্রাম, সপ্তর্ষি, সীতারাম, গণেশ ও সূর্যকুণ্ড। নিচেও একটি কুণ্ড হয়েছে স্নানের। জলে সাঁলফার আছে। এমনকি কুণ্ডের জলে স্নানে চর্মরোগ ও বাতজ ব্যাধির নিরাময় ঘটে। তবে এক লাগোয়া ৫ সেকেন্ড আর বার বার মিলিয়ে সারাদিনে ২০ সেকেন্ডের বেশি জলের ধারা মাখায় দেওয়া উচিত নয়। তেমনই স্নানের আগে গায়ে তেল মাখাও উচিত নয়। স্নানের পর কিছু সময় বিশ্রাম নিয়ে কুণ্ডের বাহিরে যাওয়া বিধেয়। শীতের দিনে স্নানান্তে বনান পরিধান করা উচিত। আবার প্রবলশের উষ্ণ জলে খালি পেটে স্নান অনুচিত। জলবায়ুও

বাস্থ্যপ্রদ, তাই বায়ু উদ্ধারে হাজার হাজার ভ্রমণার্থী আসেন বছরের পর বছর—সারা বছর ধরে রাজগীরে। তবে অক্টোবর থেকে মার্চ মাস রাজগীর ভ্রমণের মনোরম সময়। রাজগীরের খাজারও প্রশস্তি আছে।

প্রাচীন মগধ রাজ্যের রাজধানী রাজগৃহে রাজা বিশিয়ারের পুত্র অজাতশত্রু খ্রিস্টজন্মেরও ৬০০ বছর আগে দুর্গ গড়েন। নামটিও তাই অজাতশত্রু দুর্গ। ধ্বংসাবশেষ আজও অতীত রোমহ্নন করায়। ৬.৫ বর্গ মি জমির উপর অজাতশত্রু দুর্গটিও অজাতশত্রুর তৈরি। সম্ভবত বুদ্ধের নথ ছিল এই স্থানে।

আর আম্বন বা জীবকের আমবাগানটি ছিল মগধ-রাজের গৃহচিকিৎসক জীবকের ডাক্তারখানা। বুদ্ধ একদা চিকিৎসার জন্য জীবকের কাছে আসেন।

পুত্র অজাতশত্রুর হাতে বন্দী হয়েছিলেন মগধরাজ বিশিয়ার। ১.৮মি পুরু দেওয়ালে ঘেরা ১৮.৫৮ বর্গমি জমির উপর তৈরি জেলে বন্দী ছিলেন বিশিয়ার। নামটিও তাই বিশিয়ারের জেল। অদূরেই গৃহকূট পাহাড়ে দেখতেও পেরেন বুদ্ধকে জেলে বসে বন্দী রাজা বিশিয়ার।

মগধরাজ বিশিয়ারের খাজাঞ্চিখানা অর্থাৎ স্বর্ণভাণ্ডার—আকার অনেকটা গুহার মতো। দ্বিতল ছিল সেকালে। তবে দ্বিতলটি আজ বিধ্বস্ত, সিঁড়িটি আজও অতীত রোমহ্নন করায় ভগ্ন অবস্থায় দাঁড়িয়ে।

পাহাড়ের নিচুতে সমতলে এক উদ্যানভূমি। অতীতে রাজসূয় ও অশ্বমেধ যজ্ঞ হত। কিংবদন্তী, ২৮ দিন ধরে দ্বন্দ্বযুদ্ধও চলে ভীম আর জরাসন্ধে জরাসন্ধর আখড়ায়। মৃত্যুও ঘটে ভীমের হাতে জরাসন্ধর। আরও পরে এক সাধু এসে আশ্রম গড়েন। সাধু আজ লোকান্তরিত। তবে তাঁর স্মৃতিকে ধরে রেখেছে রাজগীর—জয়গার নাম মণিয়ার মঠ রেখে। বিপরীতে জয়প্রকাশ নারায়ণ পার্ক। অদূরে জরাসন্ধর ধনাগার শোন-ভাণ্ডার। লোকশ্রুতি, এই গুহার পেছনে ধনরত্ন লুকানো আছে। দেওয়ালের ৩২টি লিপিতে ধনরত্নের হদিশ লেখা—যার পাঠোদ্ধার হয়নি আজও।

মগধরাজ বিশিয়ার বুদ্ধর প্রতি আকৃষ্ট ছিলেন। বুদ্ধর বাসের জন্য রাজা তাঁর প্রমোদ কাননে বেণুবন মনান্তি গড়ে ভেট দেন। এটিই ছিল রাজার প্রথম গুরুদক্ষিণা। বাসও করেন বেশ কয়েকটি বর্ষা ঋতু এই বেণুবনে বুদ্ধ।

কুণ্ডের বাঁয়ে বীরাহ্মতন ব্রাহ্মী কলা মন্দিরম। ৬ টাকার টিকেটই ঋণমলে সঙ্গে ৯৫টি আধারে পুতুলে মহাবীরের জীবন-আখ্যান দেখে নেওয়া যায়। পথেই পড়ে জাপানিজ মন্দির।

রাজগৃহের উত্তরে গৃহকূট পাহাড়। তবে আজ যেমন দুর্গম তেমনই বিপদসঙ্কুল। পাহাড় চূড়ায় আছে দু'টি গুহা ও বিধ্বস্ত এক চত্বর—দীর্ঘকাল বাসও করেন বুদ্ধদেব ও প্রিয় শিষ্য এখানে। কথিত আছে, সুজাতার হাতে মিষ্টান্ন এখানেই গ্রহণ করেন বুদ্ধ। এমনকি মগধরাজ বিশিয়ারও

নিয়মিত আসতেন এখানে। অসি ছেড়ে অহিংসা ব্রতে দীক্ষাও নেন বিশ্বিসার গৃধকূটে। রথে এসে যে জায়গায় নামতেন তিনি আজও লোকে তাকে বলে রথকে উত্তোর।

প্রথম জীবনে বিরাগ থাকলেও উত্তরকালে তথাগতর ভক্ত হয়ে পড়েন অজাতশত্রু। আর অজাতশত্রুর পৃষ্ঠ-পোষকতায় প্রথম বৌদ্ধ কাউন্সিল বসে বুদ্ধের পরিনির্বাণের পর শহর থেকে ১২ কিমি দক্ষিণে রত্নগিরি পাহাড়ের সপ্তপর্ণী গুহায়। সেই স্মৃতিতে জাপানের বৌদ্ধসমাজ বুদ্ধের ২৫০০ বছর পূর্তি উপলক্ষে ১৮ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৮ মাস ধরে রত্নগিরি পাহাড় চূড়ায় তৈরি করেছে সুন্দর এক স্থাপ। মনোহর পরিবেশে ১২৫ ফুট উচ্চ ১৪৪ ফুট ব্যাসের বিশ্বশাস্তি স্থূপের ডোমটির ব্যাস ৭২ ফুট। মন্দিরও হয়েছে বুদ্ধের। শহর থেকে কুণ্ড পেরিয়ে ৫ কিমি দূরের গৃধকূট পাহাড় থেকে বৈদ্যুতিক রোপণে চড়ে যেতে হয়। খোলা চেয়ারে ১৫ মিনিটের এই রোপণে ভ্রমণ সেও আর এক রোমাঞ্চ ভরা। বৃহস্পতিবার ছাড়া প্রতিদিন ৯-১৫—১৩-০০ আবার ১৪—১৭-০০ টায় চালু থাকে রোপণে। টিকিট ১০ করে। পায়ে হাঁটা পথও উঠেছে বিশ্বশাস্তি স্থূপে।

এছাড়াও রাজগীরে রয়েছে বলমলে সাজে জৈন মন্দির—শ্বেতাশ্বর ও দিগম্বর উভয় সম্প্রদায়ের, বাগিচায় ঘেরা সুন্দর পরিবেশে বার্মিজ মন্দির, বুদ্ধ মন্দির, আনন্দ-ময়ী মার আশ্রম, শ্রীরামকৃষ্ণ মঠ, ডিমার পার্ক, পূর্ণা স্নানের জন্য মুসলিম তীর্থ মুকদুমকুণ্ড, ছোট্ট শহর ও অতীত দিনের নানান স্মৃতি সারা শহরময়। ৭০-৮০ টাকার চুক্তিতে রিকশা বা ১২৫ টাকায় টাভায় ঘণ্টা চারেক দেখে নেওয়া যায় রাজগীর। কেনাকাটায় Magadh Handicrafts Emporium টি আদরণীয় হবে।



Rajgir-803116, STD 06119-এ নানান হোটেল। শহরে ঢুকতেই BTDC-র H Gautam Vihar, ৫273, DAB ১৭৫ A/C D ২৭৫ ডর্মি ৪৫; প্রমবর্ষণে পথে এসেই ৪৮ বেডের H Ajjatshatru Vihar-এ ডর্মি প্রথায় বেড ৪৫; আর হয়েছে H Tathagat Vihar. ৫273, DAB ২০০, অবু: Manager বা Bihar Tourism, 26/B, Camac St, Cal-16, ৫2470821. হোটেল গৌতমের বিপরীতে H Basera, D ১২৫-২০০। অদূরে বাজার বাস স্ট্যান্ডের বায়ে Dharamshala Road-এ—H Ajjatshatru, AP-S ১৩০-১৮৫; H Anand, SCB ৬০, DCB ১০০; H Rajgir, R₁B₁, SAB ৬০-১২০, DAB ১২৫-১৮৫; H Mamta, AP-S ১৪৫-২০০, কল বুকিং: Ramkrishna Travels ৫3509199; Triptee H, R₁B₁, AP-S ১৪০-১৮০। Bus Stand-এ—H Prince, একই মালিকানায H Grand View, AP-S ২০০, ঘরও মেলে কেবল থাকার; H Meghdoot, D ১৫০-২০০, কল বুকিং: Rumani Tours, ৫273687; H Vandana, বাথ সলেন্স রান্নাঘর সহ চার বেডের ঘর ১০০, কল বুকিং: ট্রাইপ্টে কর্নার ৫2489049; Ananda Bhawan L; H Abakas, SCB ৬০, SAB ৮০, DAB ১৫০। Main Road-এ—L Piku; H Aroma; H Sarada, AP-S ১৪০-১৮০; H Hill View, এসের রোটে সারপা ডুল্য; Bidesh

Ghar, Opp Police Station, AP প্রথায় থাকার; কল বুকিং: S B B Ganguly St-12, ৫260833. H Royal India; H Siddhartha, Near Hot Spring, R₁B₁, SCB ৫৫, SAB ৮০, DCB ১০০, DAB ১৫০, FR ১৭৫। H Samrat, AP-S ১৪০-১৮৫, অবু: কল বুকিং: Rumani Tours, ৫273687; H Raj, D ১৪০-১৭৫; H Goodwish, D ১৫০-২০০, অবু: EP/3, Prafulla Kanan, Keshtapur-VIP Crossing, Cal-59; H Luxmi Palace, Bengali Para, DAB ২২৫-২৭৫; H Sujata, DAB ১৬০-২৫০। তবুও থাকার জন্য H Grand View, H Rajgir, H Prince ও Tripti H ভালই। মহালক্ষ্মী, অজাতশত্রু, সারদা ও হিল ভিউ-র কল বুকিং: মিত্র স্পেশ্যাল, ৬২ বৈচিত্র্য স্ট্রিট কলকাতা-৬৯, ৫277006. আর হয়েছে বীরামজনের পাশে পাশ্চাত্য প্রথায় *H The Centour Hokke, ৫245, R2B1, S ৭৮ D ১১২ US\$ রাজগীরে। District Board IB-র নতুন ও পুরাতন দুটি বাংলো, অবু: District Engineer, District Board, Nalanda. সার্কিট হাউসের অবু: SDO, PWD, Ministerial R H এ কিনে সহ দুই ঘরের ফ্ল্যাট, অবু: EE, PWD, Rajgir; FRH, Youth Hostel, রেলের রিটায়ারিং ক্লবও আছে রাজগীরে। সরকারি ব্যবস্থায় ঘর পেতে ১০ দিন আগেই বুকিং-এর জন্য Superintendent Engineer, PWD, Patna-কে লিখুন।



হলিডে হোমও গড়েছেন নানান বাণিজ্যিক সংস্থা রাজগীরে, থানার কাছে Syndicate Bank Staff Recreation Club, CB: Central Accounts Office, 3B Lalbazar St, 2nd floor, Cal-1, ৫2486055; Kamarhati Municipal Employees' Welfare Society: CB-1 M M Feedar Rd, Cal-56, ৫5531646; Andhra Bank Employees' Forum: CB-14/1B, Ezra St, Cal-1, ৫250352; UBI Employees' Co-operative: CB-4 N C Dutta Sarani, Cal-1, ৫2200841; Canara Bank Staff Recreation, ২টি ইউনিট এসের, CB: Subir Sen, 2 Brabourne Rd, Cal-1, ৫2254966; Grindlays Bank Employees' Co-op Credit Society, 6 Church Lane, Cal-1; Friends Association-UBI Bowbazar Branch, 235/2 B B Ganguly St, Cal-12, ৫271471; Shawdace Institute, CB: 4 Bank Shall St, Cal-1, ৫2485601; Bank of Baroda Staff Recreation Club-Brabourne Rd Branch, 4 Brabourne Rd, Cal-1, ৫2254553; Cal Reserve Bank Employees' Co-op Credit Society, N S Rd, Cal-1, ৫2208331 Ext-PDO; UBI-Gurpur Branch, ৫307648-এর ৩ ভল্যায় ২ ঘরের, UBI-Hazra Rd Branch, Cal-26, ৫4754768; UBI Employees' Association, Old Court House St Branch, CB: 16 Old Court House St, Cal-1, ৫2487471 (Ext 211); UBI Employees' Union, 57/A, N S Rd, Cal-1, ৫2431716; UBI Staff Recreation Club, 226/A, APC Rd, Cal-4 ৫5546590; Allahabad Bank Recreation Club, 14 India Exchange Place, Cal-1, ৫2208375-6 (Draft Sec); CSTCs' Employees' Co-operative, 45 Ganesh Ch Ave, Cal-13, ৫271212, Ext-40; Union Bank Employees' Co-operative Society, CB: 15 India Exchange Place, Cal-1, ৫2206868; CTC Recreation Club, CB: 12 R N

Mukherjee Rd, Cal-1, ☎ 2482681; PNB Staff Recreation, 5 Clive Row, Cal-1, ☎ 2209370; Standard Chartered Bank Recreation Club H H, 4 NS Rd, Cal-1, ☎ 2206902; Bank of India Recreation Club, 44 Chowringhee Rd, Cal-71, ☎ 2427856; UCO Bank Staff Club H H, 10 Brabourne Rd, Cal-1, ☎ 225 4120 Ext-220.

আর রয়েছে ধরমশালা—বাঙালি তীর্থ কালীবাড়ি, অব: চন্দ্র স্যানিটারি, ১৪১ অরবিন্দ সরণী, কল-৬, ☎ 5556684; বারীসঙ্গত ধরমশালা, বুদ্ধিস্ট টেম্পল, বার্মিজ টেম্পল, বার্মাওয়াল ধরমশালা—(কুণ্ডের পাশে); দিগম্বর জৈন ধরমশালা, গোরব্রহ্মী জৈন ধরমশালা। মেইন রোডে—শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন মঠ টারিস্ট রেস্ট হাউস, ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ, সনাতন ধরমশালা, সারদা আশ্রম (পুলিশ স্টেশন), ছাড়া আরও বেশ কিছু ধরমশালা রাজগীরে। আবার প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়ায় রাজগীরে থাকার জন্য। বিজয় ভবন, বীরেন্দ্র ভবন, নাগেশ্বর ভবন, রাজেন্দ্র ভবন, বুদ্ধদেব ভবন দেখা যেতে পারে। এমনকি পশ্চিমবঙ্গ সরকারের যুব কল্যাণ দপ্তরের ইয়ুথ হোস্টেলও হয়েছে রাজগীরে।

নালন্দা

রাজগীর থেকে (৫-৪০ ও ১৬-০০) ট্রেন ও বাস যাচ্ছে নালন্দায়। শেয়ারে ট্রেকারও মেলে রাজগীর থেকে ১১ কিমি উত্তরের নালন্দায়। রাজগীর-বখতিয়ারপুর শাখা রেলো নালন্দা স্টেশন। আর নিকটতম বিমান ৯০ কিমি দূরব পটনায়। বাস আসছে রাজ্যের দিগ্বিদিক থেকেও নালন্দায়।

অতীতের বিশ্বখ্যাত বিশ্ববিদ্যালয়ের জন্য নালন্দার প্রশস্তি। তবে, আজ তা ধ্বংসস্থাপে পরিণত। এই ধ্বংসস্থাপ দেখতে সারা বিশ্ব থেকে পর্যটক আসেন ৬৭ মিউচু নালন্দায়। *নালম* অর্থ পদ্ম আর *দা* হচ্ছে প্রদত্ত। পদ্ম জ্ঞানের প্রতীক। অর্থাৎ জ্ঞান বিতরণের কেন্দ্র নালন্দা। সম্রাট অশোকের হাতে খ্রিষ্ট ৩ শতকে এর পতন। আর গুপ্ত রাজাদের কালে ৬০০ বছর পর বিশ্বের অন্যতম শিক্ষাকেন্দ্রের রূপ নেয় কুষাণ স্থাপত্যে গড়া নালন্দা বিশ্ববিদ্যালয়। শুধু বৌদ্ধশাস্ত্র নয়, সাহিত্য-দর্শন-বেদ-ন্যায়-ব্যাকরণ-শব্দশাস্ত্র-অলঙ্কার-জ্যোতিষ-রসায়ন-আয়ুর্বেদ সূচরুরূপে পঠন-পাঠন হত। বিদ্যাণী এসেছে সারা বিশ্ব থেকে। এমনকি ভারত ভ্রমণে এসে ৬৩৭ খ্রিস্টাব্দে চীনা পরিব্রাজক হিউয়েন সাঙ নালন্দায় আসেন—৫ বছর অধ্যয়নও করেন নালন্দায় তিনি। হিউয়েন সাঙের বিবরণীতে মেলে—সেকালে ছাত্র সংখ্যা ছিল ১০০০০, অধ্যাপক ২০০০ আর প্রধান আচার্য ছিলেন ধর্মপালের ছাত্র সর্বশাস্ত্রে বিশারদ শীলভদ্র। সম্রাট হর্ষবর্ধন উপদ্রৌকন দেন ২৬ মিউচু বুদ্ধের তাম্র মূর্তি। বিভিন্ন রাজার দানে ১২০০টি গ্রামও আসে বিশ্ববিদ্যালয়ের হাতে সেকালে। এরই আয় থেকে চলেছে বিশ্ববিদ্যালয়। ১৩ শতকের শেষভাগে অগ্নিদাহে ক্ষতিগ্রস্ত হলে রাজা মহীপাল পুনর্নির্মাণ করেন মহাবিহার। ১২০৫ খ্রিস্টাব্দে কুতুবুদ্দিন আইবকের সেনাপতি বখতিয়ারের হাতে ধ্বংসপ্রাপ্তি পর্যন্ত শিখরদানে এটি ছিল অগ্রগণ্য। বখতিয়ারের ধ্বংসের পর মূর্তিভদ্র

নামে এক ভিক্ষু সংস্কার করেন। আবার আগুন লাগায় দুই ক্ষুদ্র ব্রাহ্মণ নালন্দায়।

ভারতের বৌদ্ধধর্মের শেষ লীলাভূমি নালন্দার ধ্বংস-বশেষের মধ্যে রয়েছে মঠ, মূর্তি, বুদ্ধমূর্তি, ছাত্রাবাস, ক্লাসঘর, মন্দির, চৈত্য, সজ্জারাম, আরও নানান কিছু।

প্রবেশপথ পশ্চিমে, রেল স্টেশন দক্ষিণে, পূর্বে মিউজিয়াম আর উত্তর জুড়ে বড়গাঁও সড়ক—এই বিস্তীর্ণ ভূভাগ জুড়ে নালন্দার ধ্বংসাবশেষ। পশ্চিম দিয়ে প্রবেশ করে সোজা দক্ষিণের সজ্জারাম দু'টির বড়টিতে ক্লাসঘর, ছোটটিতে বাসস্থান ছিল। এরই সামনে প্রধান মূর্তি। এক একটি মূর্তির ধ্বংসাবশেষের উপর বারবার নির্মাণে মূর্তি মন্দিরে রূপ পেয়েছে। বর্তমান মন্দিরটি ষষ্ঠের ধ্বংসাবশেষের উপর গড়া। তারাদেবী ছিলেন নালন্দার মুখ্য উপাস্য দেবী সেকালে। চারকোণে ছিল সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত চারটি বুরুজ। দু'টির ধ্বংসাবশেষ আজও সে সাক্ষ্য বহন করছে। গর্ভমন্দিরে নানান দেব-দেবীর মূর্তি। প্রদক্ষিণ পথও হয়েছে মন্দিরে। সম্রাট হর্ষবর্ধনের গড়া প্রাচীরে ঘেরা ছিল মন্দির তথা মহাবিহার সেকালে। প্রধান মূর্তির উপর থেকে দেখে নেওয়া যায় নালন্দার ধ্বংসাবশেষ। বিশ্ববিদ্যালয়কে নিয়ে এত বড় লোকালয় সেযুগে বিরল। আর বিশ্ববিদ্যালয়কে ঘিরে গড়ে উঠেছে উদ্যান, মনুমেন্ট, নব নালন্দা মহাবিহার ও আর্ট গ্যালারি। ৩২ একর জমি খুঁড়ে ধ্বংসস্থাপ থেকে পাওয়া নানান সম্ভারের প্রত্নতাত্ত্বিক মিউজিয়াম হয়েছে (শুক্রবার বন্ধ) প্রবেশপথের ডাইনে। বৌদ্ধধর্মের গবেষণাকেন্দ্রও বসেছে ১৯৫১য় নালন্দায়। আর হয়েছে নতুন করে ইন্দিরা গান্ধী মুক্তাঙ্গন বিশ্ববিদ্যালয়, ভূটানীদের তৈরি Hiuen Tsang Memorial Hall.

এমনকি বুদ্ধশিষ্য সারিপুত্র ও মৌদগল্যায়নের জন্মও এই নালন্দায়। দিগম্বরী মতে ১৮ কিমি দূরে কুন্দনপুরে (দ্বিমতে বৈশালীর উপকণ্ঠে) ২৪তম জৈন তীর্থঙ্কর মহাবীরের জন্ম। সেই স্মৃতিতে জৈন তীর্থ। ২ কিমি দূরে সুরষপুর-বাড়গাঁও গ্রামের সূর্য মন্দির ও লেকটি দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। ছাত্র বরণীয় উৎসব। অক্টোবর/নভেম্বর ও এপ্রিল/মে মাসে মেলা বসে।

নালন্দায় কোনো হোটেল নেই। তবে, PWD IB, অব: Superintendent. Archaeological Survey of India; Nalanda R H, অব: SDO, PWD; Pali Institute Hostel, নিখরচায় কেবল ছাত্রদের থাকা, অব: Director; Youth Hostel-ও আছে নালন্দায়। আর আছে বার্মিজ, জাপানিজ, জৈন রেস্ট হাউস।

পাওয়াপুর্নী

পাটনা থেকে ৮০ কিমি পূর্বে পাটনা-রাচি সড়কে পাওয়াপুর্নী বা অণাপুর্নী। রাজগীর থেকে বখতিয়ারপুরের ট্রেনে পাওয়াপুর্নী রোড চলুন। দূরত্ব রাজগীর থেকে ৩১, নালন্দা ১৮, আর বখতিয়ারপুর থেকে ২৩ কিমি। বাস ও ট্রেকার যাচ্ছে রাজগীর

থেকে। এছাড়াও কোডার্মা, নওয়াদা, গয়া, পাটনা, মোকামা, বখতিয়ারপুর থেকেও বাস আসছে পাওয়াপুরীতে।

জৈন তীর্থগুলির মধ্যে পাওয়াপুরী অন্যতম। এখানকার কমল সরোবরের জলমন্দিরটি খুবই পবিত্র। পয়ষে ভরা বিশাল সরোবর, মনোহর পরিবেশ—তারই মাঝে শ্বেত-মর্মরে শ্বেতাশ্বর মন্দির। ভাস্কর্য অতুলনীয়। আর আছে অজস্র পাখি লেকের জলে। কথিত আছে, জৈন ধর্মের প্রবর্তক শেষ জৈন তীর্থঙ্কর বর্ধমান মহাবীর এইখানেই নিবারণ লাভ করেন খ্রি:পূ ৪৯০এ। জনশ্রুতি, মহাবীরের অশ্রোষ্টি হতে পুতায়ি অর্থাৎ পবিত্র ভস্ম তুলে নেন ভক্তের দল। ভস্মের ঘাটতি ঘটায় টান পড়ে মাটিতে। ওঠে জল, রূপ নেয় জলাশয়ে; কালে কালে সরোবর। সেই স্মৃতিতে মর্মরে জলমন্দির হয়েছে কমল সরোবরে। পদচিহ্ন রয়েছে মহাবীরের—ডাইনে-বামে দুই শিষ্যের। মহাবীরের জন্মদিন—দীপাবলীর রাতে পদচিহ্নের ঢাকনা আপনা থেকে সরে যায়—উপস্থিতি ঘটে ভগবান মহাবীরের। দূর-দূরান্ত থেকে আসেন ভক্তের দল এই বিশেষ দিনে দেব দর্শনে।

জল মন্দির থেকে ১ কিমি দূরে পঁচিশ শ বছর আগে (556 BC-তে) জ্ঞানপ্রাপ্তির পর প্রথম উপদেশ (Sermon) দেন মহাবীর—সেই স্মৃতিতে স্থপ গড়েন মহাবীরভ্রাতা রাজা নন্দীবর্ধন। জৈন শ্বেতাশ্বর মন্দিরও হয়েছে শ্বেতমর্মরে। তারই পিছে অতীতকালের স্থপ। মন্দিরও হচ্ছে আরও নানান—বিপরীতে। রিকশা ও টাঙা যাচ্ছে জল মন্দির থেকে। আর আছে গুগুন্ধান মন্দির, গৌণ মন্দির, নয়া মন্দির, সমাশরণ মন্দির পাওয়াপুরীতে। পাওয়াপুরীতে কোনও হোটেল নেই, জৈন ধরমশালা আছে; তাই রাজগীরে ফিরে যাওয়াই উচিত হবে।

উৎসাহীরা বখতিয়ারপুরমুখী ১২ কিমি দূরের বিহার-শরীফও বেড়িয়ে নিতে পারেন। জনশ্রুতি, এখানকার গীরপাহাড়ী পাহাড়ে বুদ্ধও বাস করেছেন, এসছেন হিউয়েন সাঙ-ও বিহারশরীফে। গুপ্তযুগের একটি স্তম্ভও আছে। বাংলার পাল বংশের প্রতিষ্ঠাতা গোপালের তৈরি বিহার থেকে জায়গা তথা রাজ্যের নাম হয়েছে বিহার। আর শরীফ এসেছে ১৪ শতকের শরীফ আদমী গীর মখদুম শাহ থেকে। মালিক ইব্রাহিম বায়া সাহেবের সমাধি তথা মাজারটিও সর্বধর্মাবলম্বীর মহান তীর্থ।

রাজগীর থেকে কনডাকটেড ট্যুরে নালন্দা ও পাওয়া-পুরী বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আবার সার্ভিস বাসে গিয়ে দিনে দিনে নালন্দা, বিহারশরীফ ও পাওয়াপুরী বেড়িয়ে ফেরা যেতে পারে। সেক্ষেত্রে নালন্দা দেখে, বিহারশরীফ পৌঁছে, পাওয়াপুরী বেড়িয়ে রাজগীর ফেরাই উচিত। মুহুর্ত বাস, ট্রেকার ও জিপ চলে শেষারে এপথে।

শোনপুর মেলা

উৎসাহীরা গান্ধী সেতুতে গঙ্গা পেরিয়ে পাটনা থেকে ২৫ কিমি

দূরের শোনপুরে গঙ্গা ও গণ্ডক নদীর সঙ্গমে কার্তিক পূর্ণিমায় এশিয়ার বৃহত্তম পশু মেলাটি দেখে নিতে পারেন। কলকাতা থেকে কাঠগোদাম এক্স যাচ্ছে ১৫ ঘণ্টায় ৬৪৭ কিমি দূরের শোনপুর হয়ে। দিল্লী-গুয়াহাটি আয়ুধ অসম এক্স, জম্মু-গুয়াহাটি লোহিত এক্স, দিল্লী-মজফরপুর লিঙ্কবি এক্স, হাতিয়া-গোরক্ষপুর মৌখ এক্স, টাটা-ছাপরা এক্স, শোনপুর-কাটিহার হরিরহর নাথ এক্স, শোনপুর-ফরবেশগঞ্জ কৌশী এক্স, নতুন দিল্লী-মজফরপুর সদ্যভাবনা এক্স, নতুন দিল্লী-বরাযুনি বৈশালী এক্স, লঙ্কো-বরাযুনি এক্স, অমৃতসর-বরাযুনি এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে শোনপুর হয়ে। দূরত্ব—গোরক্ষপুর ১৩৫, বরাউনি ৯২, মজফরপুর ৫৯, ছাপরা ৫৬, কাটিহার ২৭২ কিমি।

সমাজ-সংসারের প্রতিটা জিনিস বিকিকিনি হয় শোনপুরের মেলায়। পশুপাখি, গাছপালা, জীবজন্তু মায় হাতি, ঘোড়া, উট, ভালুক কিনতে মেলে। এমনকি বাঘ আর মানুষও নাকি কিনতে মেলে চুপিসারে শোনপুর মেলায়। একমাস ধরে চলে এই মেলা মজফরপুরের ৫৯ কিমি দূরে হরিরহর মন্দিরকে ঘিরে। মন্দিরে দেবতা হরি ও হরের সহ অবস্থান। তাই হরিরহরক্ষেত্র নামেও প্রসিদ্ধি আছে এর। লক্ষ লক্ষ যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। দ্বান করেন গঙ্গা ও নারায়ণীর সঙ্গমে—পূজা দেন হরি (বিষ্ণু) ও হর (মহাদেব)—এর। এছাড়াও দেবতা রয়েছেন আরও নানান। আর আছে চ্যাবনকুণ্ড মন্দির লাগোয়া। অতীতে শালগ্রাম শিলাও মিলত মন্দির লাগোয়া গঙ্গায়। শুধু বৃহত্তম মেলা নয়—ভারতের দীর্ঘতম রেল সেতুটিও হয়েছে শোননদীতে ডেহরীঅন শোন-এ। দৈর্ঘ্যে ১০০৫২ ফুট। বিশ্বের বৃহত্তমটি সুইডেনের স্টরভিক, ১০৫২৭ ফুট। জি টি রোডও শোন নদী পেরুচ্ছে এই সেতুতে। থাকারও সাময়িক ব্যবস্থা গড়ে ওঠে মেলাকালে রাজ্য পর্যটনের তাঁবুর কটেজে। আর ৯ কিমি দূরের হাজিপুরে সাধারণ হোটেল মেলে বছরভর।

বৈশালী

কলকাতা থেকে কাঠগোদাম, মিথিলা, গোরক্ষপুর, রঞ্জনাল ও মজফরপুর প্যা / এক্সে মজফরপুর চলুন। দূরত্ব ৫৮৭ কিমি। ট্রেন আসছে পাটনা, ধানবাদ, বরাযুনি, রঞ্জনাল, শোনপুর, টাটানগর, আমোদাবাদ, মুঘাই, কানপুর, লঙ্কো, নারকাটিয়াগঞ্জ, দিল্লী থেকেও মজফরপুরে। নিকটতম রেলস্টেশন হাজীপুর ৩৬ কিমি বা মজফরপুর ৩৪ কিমি থেকে বৈশালী চলার সুবিধা। চলার পথে হাজিপুরে ফুল-ফলের বারোমাসে বাগিচা জরুহা দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। বিহার রাষ্ট্রীয় পরিবহণের বাস মজফরপুর থেকে বৈশালী যাচ্ছে। বাস আসছে রাজ্যের নানান শহর থেকেও বৈশালীতে। রাজগীর ভ্রমণার্থীরা রাজগীর থেকে বিহারশরীফ পৌঁছে সকালের বাসে মজফরপুর এসে বৈশালী যেতে পারেন। আবার বিহারশরীফ, বরাযুনিতে বদল করেও মজফরপুর যাওয়া চলে বাসে বাসে। তবে, সহজতম পথ পাটনা হয়ে। বাসও আসছে পাটনা হার্ডিঞ্জ পার্কের বিপরীত থেকে ঘণ্টা তিনেকের ৫৪ কিমি উজ্জয়ের বৈশালীতে। নিকটতম বিমানবন্দরও পাটনায়। নেপাল ভ্রমণার্থীরাও মজফরপুর থেকে বৈশালী বেড়িয়ে

রঙ্গোল যেতে পারেন। বাস ও ট্রেন দুই-ই আছে। আবার জনকপুর হয়েও চলা যেতে পারে নেপালে।

বৈশালী আজকের নয়, খ্রিষ্ট ৬০০ বছর আগে গণতান্ত্রিক রাজ্য রূপে বৈশালীর খ্যাতির কথা রামায়ণে মেলে। লিচ্ছবি-রাজ ইক্ষ্বাকুর পুত্র বিশাল-এর নাম থেকে রাজ্যের নাম বিশালপুরী—কালে কালে বৈশালী। ভগবান বুদ্ধ বার বার ৩ বার বৈশালী এসেছেন—তার জীবনের বেশ কিছুকাল কাটে এখানেই। শেষ বাণীটিও দেন বুদ্ধ গন্ধকী নদীর বায় পাড়ে ৫২ মি উঁচু বৈশালীর উপকণ্ঠে কলহাতে। স্মারক রূপে বুদ্ধের নিবারণের ১০০ বছর পরে দ্বিতীয় বৌদ্ধ কাউনসিলও বসে বৈশালীতে। এই বৈশালীকে ঘিরেই ১৩টি বৌদ্ধ স্থাপত্য গড়ে উঠেছিল বার ৬টির ধ্বংসাবশেষ আজও অতীত রোমন্থন করায়। রাজনৈতিক আশ্রয়পালী আশ্রয়কানন যৌতুক দেন বুদ্ধকে—সন্ন্যাসও নেন বৌদ্ধধর্মে এই বৈশালীতে। এমনকি, জৈন ধর্মের প্রবর্তক বর্ধমান মহাবীর (১ম জৈন তীর্থঙ্কর) খ্রিষ্ট ৫৫০এ বৈশালীর উপকণ্ঠে কুন্তগ্রামে জন্মগ্রহণ করেন।

বৈশালী থেকে ৪ কিমি দূরে কলহায় রয়েছে সম্রাট অশোকের তৈরি অশোক পিলার। লায়ন পিলার বা ভীমসেন কি লাঠি নামেও খ্যাত এটি। লাল বেলেপাথরের ১৮মি উঁচু পিলারের মাথায় সিংহ মূর্তি—তৈরি হয়েছে বুদ্ধের শেষ বাণী প্রচারের স্মারকরূপে। সামনে বৌদ্ধস্থাপত্য ১৮ শতকের স্বয়ম্বু দেবতা চতুমূর্তী মহাদেবও রয়েছে অদূরে। সামান্য যেতে মিউজিয়মের পথে ১৯৫৮য় আবিস্কৃত বৌদ্ধস্থাপত্য ২। লিচ্ছবি রাজাদের কালের স্থাপত্য আজ বিনষ্ট। এছাড়াও আবিস্কৃত হয়েছে খননে বুদ্ধের ভাস্কর্য, তাম্র মূর্তি, কাঠের বিডস, সোনার টুকরো ছাড়াও নানান কিছু। মিউজিয়মটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে ১০—১৭-০০টায়। খননে পাওয়া প্রত্নতত্ত্বের নানান সম্ভার প্রদর্শিত হয়েছে মিউজিয়মে। আর হয়েছে জাপানি বৌদ্ধ মন্দির। সামনেই করোনেশন ট্যাঙ্ক অর্থাৎ অভিষেক পুষ্করীণী। এর পবিত্র জলে পূত হয়ে শপথ নিত সেকালে বৈশালী রাজরা। কিংবদন্তী, বানরেরা খনন করে ভেট দেয় এটি বুদ্ধকে। পরিবেশ মনোরম।

আর রয়েছে বাস স্ট্যান্ডের পিছে রাজা বিশাল কা গড়া আজ মাটির স্থাপত্য প্রতীকমান হলেও ৭৫০৭ সালের পার্লামেন্ট হাউস ছিল অতীতে এই গড়ে। গড় থেকে ১ কিমি গিয়ে অনুচ্চ এক টিলার টপে ১৫ শতকের দরবেশ শেখ মহম্মদ কাজিম-এর কবর মিরণ জি কি দরগা। অদূরেই হরিকটোর মন্দিরে রাম-লক্ষ্মণ-সীতা। আর আছেন দেবতা কার্তিক মন্দিরে। ১৯৩৪এর ভূমিকম্পে মন্দিরটি বিধ্বস্ত হলেও দেবতার আঁট রয়েছেন। সামান্য যেতে পাল যুগের বাওয়ান পোখর অর্থাৎ ৫২ তীরের জল এনে সঞ্চিত হয়েছিল ৫২ কুণ্ড—কালে কালে কুণ্ড থেকে পুকুর হয়েছে এক। এরই পাড়ে জৈন মন্দির। ৪০ টাকার চুক্তিতে রিকশায় ঘণ্টা তিনেক সাঙ্গ করা যায় বৈশালী দর্শন। ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউসের ডাইনে-বায়ে ১ কিমির মধ্যে

অবস্থান এদের। তবে অশোক পিলারের অবস্থান ৪ কিমি বামে।



থাকার জন্য বাস স্ট্যাণ্ডে Tourist R H, DAB ১৫০ ভর্মি ৪০, অব: Tourist Officer; ভবন নির্মাণ বিভাগের বিজ্ঞান ভবন ও ইয়ুথ হোস্টেল আছে মিউজিয়মের ডাইনে-বায়ে বৈশালীতে। বৈশালী থেকে ১১-০০টার বাসে মজফরপুর গৌড়ে ১৪-০০টায় মজফরপুর ছেড়ে ১৫-৪৫এ সীতামাটি চলা যেতে পারে। মুহূর্ত্ত বাস। পথের দূরত্ব বৈশালী থেকে মজফরপুর ৩৪ কিমি, মজফরপুর থেকে সীতামাটি ৬৪ কিমি। পথ গিয়েছে আরও এগিয়ে ভিটা মোড়ে ভারত সীমান্ত পেরিয়ে জনকপুর অর্থাৎ নেপাল রাষ্ট্রে। বাসও মেলে জনকপুর থেকে—কাঠমাণ্ডু, পোখরা, বীরগঞ্জের। সীতামাটি বাস স্ট্যাণ্ডের ৪ কিমি আগেই ডুমরায় বিহার পর্যটনের পর্যটক ভবন, DAB ৪০, থাকার পক্ষে ভালই। আর বাস স্ট্যাণ্ডে আছে H Sitayan, DAB ১০০-১৭৫।

পূর্ব ভারত থেকে নেপাল যাত্রায় জংশন স্টেশন মজফরপুর। থাকারও নানান ব্যবস্থা মজফরপুরে। রেল স্টেশনের কাছে H Elite, Saraiya Ganj-842001, ASR ১; H Deepak, ছাড়াও সাধারণ হোটেল আছে নানান মজফরপুরে। আর আছে ধরমশালা, PWD RH ও Rest Shed; অব: SDO, PWD, Hajipur বা EE, PWD, Muzaffarpur.

ঘণ্টা চারেক বৈশালী বেড়িয়ে বাসে মজফরপুর ফিরে বাস বা রাতের ট্রেনে রঞ্জোল হয়ে নেপাল যাওয়া যেতে পারে। তখনই চলা যেতে পারে গোরক্ষপুর, বরায়ুনি ১০০, সমস্তিপুর ৪৯, হাজিপুর ৫৬, শোনপুর ৬১, রঞ্জোল ১৩০, দ্বারভাঙ্গা ৬০, মধুবনী ১০০, জনকপুর ১৩৬ কিমি মজফরপুর থেকে দিন-রাত্রি ছুড়ে নানান ট্রেন বা বাসে। আবার বাসে সীতামাটিও চলা যেতে পারে। কলকাতারও ট্রেন আছে মিথিলা এক্স ১৩-৫৫, কাঠগাদাম এক্স ২০-৫০, ২ ৬ ৭ দিন পূর্বচল এক্স ১৫-৪৯, দ্বারভাঙ্গা-হাওড়া প্যাসেঞ্জার ২১-৩০; ১ ৩ ৫ দিন দ্বারভাঙ্গা-শিয়ালদহ গঙ্গা সাগর এক্স ১৫-৫৫, শিয়ালদহ প্যাসেঞ্জার ৭-০০তে মজফরপুর থেকে বরায়ুনি হয়ে। এছাড়াও ট্রেন আছে—গুয়াহাটি/গোরক্ষপুর/বরায়ুনি-জম্মু এক্স, গোরক্ষপুর-হাতিয়া এক্স, শোনপুর-টাটা এক্স, আমুধ-অসম এক্স, বরায়ুনি-লক্ষৌ এক্স, ছাপরা-টাটা এক্স, মজফরপুর-আমোদাবাদ সবরমতী এক্স, নতুন দিল্লী-বরায়ুনি বৈশালী এক্স, দিল্লী-মজফরপুর লিচ্ছবি এক্স, অমৃতসর-বরায়ুনি এক্স, মজফরপুর-ভাগলপুর জনসেবা এক্স ছাড়াও দিল্লী, কান্দালা, দাদার অর্থাৎ ভারতের দিকে দিগন্তরে মজফরপুর থেকে। কলকাতার পথে শিমুলতলা, জসিদি, দেওঘর, মধুপুর, গিরিডি বেড়িয়েও ফেরা যেতে পারে।

শিমুলতলা

রেল স্টেশন থেকে বেরতেই ডাইনে-বায়ে স্টেশন রোডে অতীতকালে গড়ে উঠেছিল স্বাস্থ্য গড়ার আনন্দ-নিকেন্তন। টিলা টিলা শিমুলতলায় ভিলা ভিলা বাড়ি। বায়ে সেকালের হাউস অব লর্ডস অর্থাৎ লর্ড এস পি সিংহর বাড়ি আর ডাইনে হাউস অব কমন্স। চারপাশ ঘিরে প্রহরী হয়ে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে পাছাডল্লী—দিকচক্রবাল রেখা থেকে। খুবই শান্ত, শিথল, নির্জন পরিবেশে স্বাস্থ্যকর স্থান শিমুলতলা।

প্রকৃতিও মনোরম, জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ। তাই শহর থেকে দূরে—প্রকৃতির ডাকে ছুটে যান স্বাস্থ্যসেবীর দল আজও। অবকাশ যাপনের মনোরম জায়গা অধুনা মুন্সের জেলার শিমুলতলা।

পাহাড়, টিলা, শাল, মহয়ার অরণ্যে প্রাকৃতিকজনের গ্রাম দেখতে দেখতে হারিয়ে যান ভোরের শিশির ভেজা লাল মোরামের পথে পথে। দিনান্তে স্টেশন জুড়ে চেঞ্জারবাবুদের হটোপাটি—রঙবেরঙের পোশাকে রামধনু ফোটে চত্বর জুড়ে। পাহাড়ী ম্যালের মতো শিমুলতলার এই রেল স্টেশন। তেমনই ভিড় বাড়ে বাঙালি চেঞ্জারবাবুদের গুপ্তর মিঠাইয়ের দোকানে। বাড়ি ফেরে পায়ে পায়ে আকাশটা যখন নেমে আসে কাছে।

রেল স্টেশনের মুখোমুখি ১২ কিমি দূরে শিমুলতলার মূল আকর্ষণ লাটুপাহাড়। টিলার টঙে দুর্গাকার পাটনা লজ, রাজবাড়ি, সেন সাহেবদের লন টেনিস কোর্টকে নিশানা করে মাঠ পেরিয়ে পায়ে পায়ে অভিযান করে ফেরা যায় ১০০০ ফুট উঁচু লাটুপাহাড়। উপরে উঠে দেখে নেওয়া যায় আদিবাসীদের দেবতাদের থান। সূর্যাস্তও মনোরম লাটুপাহাড়ে। স্টেশন রোডেই বাজারঘাট, সোকানপাট। আর আছে ৫ কিমি দূরে টেলবা বাজার। উৎসাহীরা ৬ কিমি দূরে পাহাড় ও অরণ্যের সহ অবস্থানে মনোরম পরিবেশে হলদি ফলস, আরও ২ কিমি গিয়ে লীলাবরণ ফলস—চলার পথে সিকে-টিয়া আশ্রম, অটো বা জিপে ১৭ কিমি দূরে টেলবা নদী পেরিয়ে ভঁয়রোগজ পৌঁছে শেষে ২ কিমি পায়ে গিয়ে ধীরহারা ফলস, এগুলিও দেখে নিতে পারেন। অরণ্যচরদেরও দর্শন মেলা অস্বাভাবিক নয় ফলস পরিক্রমা পথে। রিকশা, টাঙ্কা, অটো ও ট্রেকার চলছে শিমুলতলায়।



আবাসিক হোটেলও হয়েছে রেল স্টেশন থেকে ৫ মিনিটের পথে—হোটেল দেহলী, DCB ১০০ DAB ১৫০, আহার্য মেলে রেস্তোরাঁয়, কল বুকিং: বিদ্যুৎ সেন, ৪৪ রামকান্ত বোস স্ট্রিট, কল-৩, ০ ৫৫৫৩৬০৭. আর আছে রেলস্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে নৃপর বীড়জ্যের সূজনী হোটেল। কল বুকিং: কুণ্ডজ হোটেল, ৬২ বেস্টিকে স্ট্রিট, কল-৭০০০৬৯, ০ ২৭৩৫২৫; শ্রীমা হলিডে হোম, DAB ১৫০-২৭৫, অব: NR Sengupta & Co, 11/A, Bose-para Lane, Cal-3, ০ ৫৫৫ ৪৭৩৫ (৭—11-00 & 17—19-00 Hrs) বা ৪১-বিকালী স্টেম্পল রোড, কল-২৬; ডিস্ট্রিট বোর্ডের ডাকবাংলো ও ধরমশালা।



আর হলিডে হোম গড়েছে—Bank of Baroda Staff Recreation Club, 4 India Exchange Place, Cal-1, ০ ২২০১৪৭৫; Reserve Bank Employees' Co-operative Credit Society, N S Rd. Cal-1; Lancelock & Lewes Employees' Co-operative Credit Society Ltd, 5th Floor, 4 Lyons Range, Cal-1, ০ ২২০৪৭৭৪; UBI Employees' Association, Baranagar, Branch, 57 Cossipur Rd, Cal-36, ০ ৫৫৭৩০৭৮; New Bank of India Employees' Union, 6 Princep St, Cal-1, ০ ২৭২০৫; Syndicate Bank Recreation Club H H, 6 N S Bose Rd-1,

০ ২৪৪০৯৮৫; Syndicate Bank Recreation Club, 3B, Lalbazar St, Cal-1, ০ ২৪৪৬০৫৫, Kilburn Employees' Co-operative Credit Society Ltd, 2 Fairly Place, Cal-1, ০ ২২০১৩৪০; PNB Office Staff Recreation Club, Zonal Office, 15 Park St, 4th floor, Cal-16, ০ ২৯৯৫২৩; Hongkong Bank Employees Association, 31 B B D Bagh, Cal-1; Jyotsna Holiday Home, কল বুকিং: S M Enterprise, 4 BBD Bag, Cal-1 ০ ২২০৭০৯৪; সৌম্যধাম, ৮ জন থাকার ঘর ১২০, ৪ জনের ঘর ৫০, অব: বাম্বা রায় চৌধুরী, ৯ কর্নফিল্ড রোড, কল-১৯। দৈনিক ৬০-১২৫ টাকায় প্রাইভেট বাড়ি-ঘরও ভাড়া মেনে শিমুলতলায়। উচিতও হবে স্টেশনে পৌঁছে দেখতে নে নিবচিন কল। প্রয়োজনে—Arun Singh/Dilip Singh, Sweet Shop/Kishen Yadav, Lakshmi Niwas, Simultala, Mongher, Bihar-কে ঘরের জন্য লেখা যেতে পারে। গঙ্গা-মুনা, বেঙ্গল, কাজল ডেকরেটরদেরও লেখা যেতে পারে ঘরের জন্য শিমুলতলায়। অগ্রিম অর্ডারে আহারও মেনে আরাধনা ও তৃপ্তি হোটলে।



মজফরপুর থেকে কলকাতাগামী ট্রেন এসে শিমুলতলায় নামুন। কলকাতা থেকেও অনেকগুলি ট্রেন যাচ্ছে মেইন লাইনে ৩৪৩ কিমি দূরের শিমুলতলা হয়ে। তবে, শিমুলতলা যাত্রায় তুফান এক্স ৯-৪৫, অমৃতসর এক্স ১০-১০, শিয়ালদহ-মজফরপুর ফাস্ট পাসেঞ্জার ৫-৪৫এ ছেড়ে যথাক্রমে ১৬-২৯, ২১-০৪, ১৫-১০এ শিমুলতলায় পৌঁছান। আর যাচ্ছে হাওড়া-মোকামা পাসেঞ্জার ২২-৪০এ, হাওড়া-দিল্লী জনতা এক্স ২১-০০ টায় ছেড়ে পরদিন ৭-২৭, ০৩-৩৪এ শিমুলতলায়। এছাড়া দ্রুতগামী নানান মেল বা এক্স আসানসোল বা জসিদি বা খাঁবায় নেমেও চলা যেতে পারে শিমুলতলায়। জসিদি-ঝাঁকা ১০-০৫, ১৭-৫৫; জসিদি-কিউল ১১-২৫এ ছেড়েই ঘটায় শিমুলতলা হয়ে যাচ্ছে। রবিবার ছাড়া প্রতিদিন ৯-৩৫এ আসানসোল ছেড়ে মধুপুর-জসিদি-শিমুলতলা হয়ে ঝাঁকা যাচ্ছে DMU পাসেঞ্জার। হাতিয়া-পাটনা পাটলিপুত্র এক্সও যাচ্ছে শিমুলতলা হয়ে। দেওঘর থেকেও জসিদি হয়ে ১০-০৫এর ট্রেন এসে দিনভর শিমুলতলায় কাটিয়ে দিনান্তে ১৬-০৪, ১৬-২০, ১৬-২১, ১৭-১০, ২০-২২, ২১-৪৭এর ট্রেনে ফেরা যেতে পারে দেওঘরে। বাসের চল নেই দেওঘর থেকে শিমুলতলার। তবে, সুন্দর পার্বত্য পথ গিয়েছে সাঁওতাল পরগনার মাঝ দিয়ে দুমকা পাহাড়ের উপর দিয়ে। কলকাতা থেকে গাড়ি করেও যাওয়া চলে শিমুলতলায়। তেমনই দিনে দিনে যাত্রায় তুফান এক্স ট্রেনটি আদরণীয় হবে।

জসিদি



শিমুলতলা থেকে কলকাতামুখী ২৫ কিমি গিয়ে জসিদি। আর কলকাতার দূরত্ব ৩২৩ কিমি। ট্রেনে চলুন শিমুলতলা থেকে। হাওড়া থেকেও নানান ট্রেন যাচ্ছে জসিদি জর হয়ে। শিমুলতলার প্রতিটি ট্রেনই জসিদি হয়ে যাচ্ছে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ১ ২ ৫ ৬ দিন ২৩০৩ পূর্বা এক্স ৯-১৫, মিথিলা এক্স ১৬-০০, অমৃতসর এক্স ১৯-২০, শিয়ালদহ-দিল্লী লালকোয়া এক্স ২০-১৫, হাওড়া-কামোগোদাম এক্স ২১-৪৫, ১ ৩ ৫ ৭ দিন হাওড়া-গোরকপুর-সুখিয়ানা পূর্বচল এক্স ১৬-০০, হাওড়া-দানাপুর এক্স ২১-০৫, হাওড়া-গোরকপুর এক্স (বৃহস্পতিবার)

২৩-০০, ত্রিসাংগাহিক হাওড়া-জম্মু হিমগিরি এক্স ২৩-০০, ২৪ ৬ দিন শিয়ালদহ-গোরক্ষপুর গঙ্গাসাগর এক্স ১২-৪০ জম্মুদি পৌছায় ৫ থেকে ৭ ঘণ্টায়। রাউরকেলা-পাটনা সাউথ বিহার এক্স, হাতিয়া-গোরক্ষপুর মৌর্য এক্স, টাটা-ছাপরা এক্স, সাপ্তাহিক পুরী-পাটনা এক্স, টাটা-পাটনা এক্স, টাটা-গোরক্ষপুর এক্সও যাচ্ছে জম্মুদি হয়ে।

আর আসানসোল থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৭-৫০, ৯-৩৫, ১০-১৭, ১৭-১০৫ ছেড়ে ২½ ঘণ্টায় জম্মুদি জং। ফেরেও নিয়মিত এরা জম্মুদি থেকে।

শিমুলতলার মতো জম্মুদির পর্যটক আকর্ষণ উন্মেষ্টা না হলেও জল-হাওয়ার গুণে স্বাস্থ্যার্থেবীর কাছে আদর্শ জায়গা। এস পি চ্যাটার্জির গোলাপ বাগিচাটিও জম্মুদির অনন্য আকর্ষণ। আর আছে রতন পাহাড়, নবাব কুটার, বরদা কুটার, ডাবর ফ্যাক্টরি, পাগলাবাবার আশ্রম, হিল ভিউ, কালীবাড়ি ও দিবাড়িয়া পাহাড় জম্মুদিতে। স্বদেশী কালে বিপ্লবীদের ঘাঁটিও ছিল জম্মুদির অরণ্য। দেওঘরের সংযোগ-কারী রেল স্টেশনও এই জম্মুদি জংশন।

জম্মুদিতেও হোটেলের অভাব। খোলামেলা প্রকৃতির মাঝে প্রাইভেট বাড়ি, ঘর ভাড়া নিয়ে স্বাস্থ্যার্থেবীর থাকিই শ্রেয়। আর আছে জম্মুদি আরোগ্য ভবন, কটেজ থর্মী ঘর, কল বুকিং: ৩৬ এক্সা স্ট্রিট, তিসরি মঞ্জিল, কল, ৩ ২৫২০৭৪; Garden Resort, Paglababa Rd, ৩ ৭০২৫৪. DAB ২৫০, থাকার পক্ষে রমণীয়, কল বুকিং: ৩ ৪৭৬০২৭১; যুগলকিশোর ধরমশালাও Bank of India, ২৩৮-৩, NS Rd, Cal-1-এর Holiday Home জম্মুদিতে।

দেওঘর



কলকাতা থেকে দেওঘরের দূরত্ব ৩২৯ কিমি। মেন লাইনে ৬ কিমি দূরের জম্মুদি জং হয়ে রেল যাচ্ছে। আর জম্মুদি থেকে শাখা রেল, বাস, ট্রেকার ও অটো যাচ্ছে দেওঘর অর্থাৎ বৈদ্যনাথধামে। ১৭-১০৫ ছেড়ে আসানসোল-বৈদ্যনাথধাম ডি এম ইউ প্যাসেঞ্জার ২½ ঘণ্টায় সরাসরি দেওঘর যাচ্ছে। পুরী-পাটনা এক্স (সাপ্তাহিক)ও যাচ্ছে দেওঘর/আসানসোল/খড়াপুর হয়ে। আর বাস যাচ্ছে টাটা, আসানসোল, মাইথন, ৮-১৫৫ ছেড়ে ৬½ ঘণ্টায় সিউড়ি, ৫-৪৫এ ছেড়ে ৬ ঘণ্টায় বর্ধমান, মুর্খমুখ যাচ্ছে ধানবাদ, চিত্তরঞ্জন, মধুপুর, দুমকা, গিরিডি ছাড়াও বাংলা ও বিহারের দিকে দিকে দেওঘর থেকে। এমনকি CSTC-র বাস সকাল ৮-০০টায় কলকাতা ছেড়ে ১১ ঘণ্টায় দেওঘর যাচ্ছে। ট্রেকারও চলছে ধানবাদ, দুমকা ছাড়াও নানান দিকে দেওঘর থেকে।

সাঁওতাল পরগনা জেলার দেবগুহ অর্থাৎ দেবতার ঘর আজ হয়েছে দেওঘর। বৈদ্যনাথধাম নামেও সমধিক খ্যাতি। কিংবদন্তী, ব্রাহ্মণ বরে মহাপরাক্রমশালী লঙ্কাধিপতি রাণ কৈলাস থেকে শিব নিয়ে শ্রীলঙ্কা যাচ্ছে প্রতিষ্ঠার মানসে। শিবের শ্রীলঙ্কা। যেতে অনীহায় বরুণের হলদায় বিভ্রান্ত রাবণ শর্ত ভেঙে কাঁধ থেকে দেবতাকে নামান এই দেওঘরে। অনাদি দেবতার অবস্থান নাকি সেই থেকে। লর্ড শিবের মন্দিরটি এক মহান হিন্দু তীর্থ। চকবন্দী, গোলাকার মন্দিরে—পুষ্পমাল্যে ভূষিত দেবতার স্বরূপ দর্শন মেলে সন্ধ্যায় স্নান-অভিষেক-কালে। আর রয়েছে মুখোমুখি অমর্ণা ছাড়াও বৈদ্যনাথ,

সিদ্ধিনাথ, কেশরানাথ, ইন্দ্রেশ্বর, গণপতেশ্বর, কাশীর বিষ্ণেশ্বর, রাবণেশ্বর, ভূতেশ্বর ও মহাকাল অর্থাৎ ৯ অনাদি শিব ছাড়াও নানান দেবদেবী মন্দির চত্বরে। তেমনই আছে মন্দিরের উত্তরে ১৫০ সিঁড়ির ক্ষীরগঙ্গা দিঘি। ক্ষীরগঙ্গার জলে দেবতাকে স্নান করিয়ে দর্শনে সহস্র জপের ফল মেলে। পাণ্ডুরও উৎপাত আছে দেবমন্দিরে। ১৫ থেকে নানান অঙ্কের পূজায় দেব-প্রসাদ মেলে। প্রসাদ পেতে আগ্রহীদের অফিসে টাকা জমা দেওয়া উচিত হবে। ৫—১৫-০০ আবার ১৮—২১-০০টায় মন্দির খোলা। ৫১ পীঠের এক পীঠও দেওঘর—সতীর হৃদয় পড়ে এখানে।

সারা ভারত থেকে তীর্থযাত্রীদের সঙ্গে পর্যটক আসেন দেওঘরে। আবার স্বাস্থ্যার্থেবীদেরও ভিড় লাগে দেওঘরে। স্টেশন রোড গিয়ে মিলেছে কলকাতার এসপ্লানেড সমষ্টি টাওয়ারে। শহরের মধ্যমণি দেওঘরের প্রাণকেন্দ্র ২৫ ফুট উঁচু কলকাতাওয়ারকে ঘিরে গড়ে উঠেছে বাজারঘাট অর্থাৎ পুরনো শহর। তারই চারপাশে চার প্রধান সড়কে প্রসার পেয়েছে নতুন শহর—ক্যাস্টার টাউন, উইলিয়ামস টাউন, বম্পাস টাউন এবং বিলাসী টাউন। এদের বাগিচায় ঘেরা ফুলে ফলে ভরা বাংলা ধরনের বাড়িগুলিও সৌন্দর্য বাড়িয়েছে শহরের।

কলকাতার থেকে ৬ কিমি দূরে শহরের উপকণ্ঠে তপোবন। চলার পথে শহর থেকে ২ কিমি যেতে জগবন্ধু আশ্রম রেখে নওলাক্ষা মন্দির। আরও ১ কিমি যেতে বীর হনুমানের মূর্তির ডাইনে ৬ কিমি যেতে দেবী কুণ্ডেশ্বরী। আর হনুমান মূর্তির বামহাতি পথ ৩ কিমি গিয়ে শেষ হয়েছে তপোবনে। উঁচু-নিচুর সমন্বয়ে পথ। তাই যাতায়াতে শ থাকবে টাকায় অটো বা টাঙাই শ্রেয়। রিকশাও যাচ্ছে এপথে। নওলাক্ষা, তপোবন ও কুণ্ডেশ্বরী বেড়িয়েও ফেরা যায় ঘণ্টা চারেক। পথশোভাও সুন্দর।

তপোবনের ছোট্ট ভজন গুহায় (১৮৪৮ খ্রি) বালানন্দ ব্রহ্মচারী মহারাজ তপস্যা করে সিদ্ধিলাভ করেন। প্রহরী ছিল বাথ। গোলকধাঁধা সম তপোবনের নয়নাভিরাম প্রকৃতি মোহিত করে। সঙ্গীর্ গুহা পথে সরু ফটল পেরুনো সেও যেন দেওতা কী কীরপা। স্মারকরূপে শহরমুখী করণীবাগে ১৩৪৮ বঙ্গাব্দে মন্দির হয়েছে বালানন্দর। হাঙ্গা লাল আভার পাথরে সুন্দর এই মন্দিরটি নয় লাখ টাকায় তৈরি বলে নওলাক্ষা মন্দিরও বলে থাকে লোকে। মূর্তি হয়েছে শ্বেত মর্মে বালানন্দ ব্রহ্মচারীজীর। আর প্রবেশ দ্বারে মন্দির নির্মাতা চারুশীলা দেবীর মর্মর মূর্তি। আশ্রমও হয়েছে মন্দির লাগোয়া। ১২—১৪-০০টায় দ্বার বন্ধ থাকে মন্দিরের।

১৮৪৪এ স্বপ্নাদিষ্ট রামময় বন্দ্যোপাধ্যায় কুণ্ড থেকে উদ্ধার করে মন্দির গড়েন দেবী কুণ্ডেশ্বরী। দেবী এখানে চতুর্ভুজা, করিসাসুরের পিঠে সিংহাসিনী—জগদ্ধাত্রী। খুবই সুন্দর দেবীমূর্তি, জাগ্রতাও বটে। আর হয়েছে ১৩৬০এ টাওয়ার থেকে ৩ কিমি দূরে বম্পাস টাউনে নবদুর্গা মন্দির। সিংহের পিঠে দাঁড়িয়ে দেবী দুর্গা ছাড়াও দেবতা রয়েছে

আরও নানান। অষ্টমাতৃকারাও স্থান পেয়েছেন দেওয়াল চিত্রে। ৬—১০-০০ আবার ১৫—২০-০০টায় খোলা থাকে মন্দির।

স্বাস্থ্য, চরিত্র আর শিক্ষা এই তিন ব্রত নিয়ে গড়ে উঠেছে শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম বিদ্যালয় ক্লব টাওয়ার থেকে ২ কিমি ডাইনে উইলিয়ামস টাউনে। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে আবাসিক এই বিদ্যালয় দেওঘরের আর এক মুখ্য আকর্ষণ। মন্দিরও হয়েছে ঠাকুর শ্রীরামকৃষ্ণর।

যে-কোনও সকালে ক্লব টাওয়ার থেকে দুমকার বাস বা ট্রেকারে দুমকারোডে ১৬ কিমি গিয়ে ত্রিকুট পাহাড় অভিযান করে নেওয়া যায়। তবে বাসযাত্রায় ২ কিমি হাঁটতে হয়, ট্রেকার পৌঁছায় পাহাড়ী পাদদেশে। পাহাড় চড়ায় রোমাঞ্চ আছে অরণ্যের গিরিশৃঙ্খল আর অরণ্যের যুগলবন্দী বারবার আকৃষ্ট করে পর্যটককে। নানান জীবজন্তুও চরে বেড়ায় পাহাড়ভূমে। গাইড নেওয়া উচিত হবে ৫৫০০ ফুট উচ্চ ত্রিকুট অভিযানে। তেমনই ক্লব টাওয়ার থেকে ৪ কিমি গিয়ে কাছারি রোডে অনুচ্চ নন্দন পাহাড়ও জয় করে ফেরা যায় যে-কোনও সকাল বা বিকেলে। পথেই পড়ে টাওয়ার থেকে রেল স্টেশন-মুখী ৩ কিমি দূরে সংসদ নগর অর্থাৎ ঠাকুর অনুকূলচন্দ্রর আশ্রম। মনোরম পরিবেশে ঠাকুরের সমাধিবেদীতে ভক্তেরা আসেন দিনভর। এছাড়াও চলছে নানান কর্মকাণ্ড ব্যাপক চতুর জুড়ে আশ্রমে। আন্তর্জাতিক খ্যাতিসম্পন্ন এই আশ্রমের মূল কেন্দ্রও দেওঘরে। তবে, আশ্রমটি আজ টুকরো হয়েছে। বিরাগও যেন পরম্পরে।



রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে ক্লব টাওয়ারকে ঘিরে নানান হোটেল দেওঘরে। Clock Tower, Deoghhar-814112এ—H Yatrik, DAB ১৫০-২২৫ TAB ২৫০ A/c D ৪৫০; H Baseera, DCB ১০০ DAB ১৫০; H Indralaya; H Rohit, DCB ৮০ DAB ১০০; H Jyoti, S ৮০ D ১৭৫ T ২২৫ সুইট ৪৫০; H Vijay, DAB ১২৫-১৫০ A/c ৪০০; H Gupta, SAB ৬০ DAB ১০০-১৫০; H Rambha, DCB ৬০ DAB ১০০-১৫০; Singh H; H Chandrayoti, Anamika H; Deoghhar H; H Sarita, H K Sah Lane, SAB ৬০ DAB ১০০-১৭৫।

Station Roadএ—রেল স্টেশনের বিপরীতে বাজলির Sen L, S ৬৫ D ১০০ T ১২৫ F ১৫০; H Grand (New), DCB ৮০ DAB ১২৫; H Aman, S ৪৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫; H Baidyanath, SAB ৬৫ DAB ১২৫ TAB ১৫০; H Babadham, DAB ১২০-১৭৫ TAB ১৫০; Kailash H. Upper Bazarএ—Shital Chhayya, D ১০০; Aram L; Prince L; H Chetna, Near Bus St. DAB ১৫০-২০০। Old Mina Bzrএ—H Suvidha, Palika Bzr, R1B0, DCB ১২৫ DAB ১৫০-২২৫ ডর্মি ৫০; H Prava, Assam Exchange Rd, কল বুকিং: 31 Kishanlal Barman Rd, Salkia, ৩ 665917, Court Rdএ—H Neelkamal; Khalsa L, S ৪৫-৮০ D ১০০-১৫০; H Manorama. নির্জনতা যাত্রা পছন্দ করেন তাদের জন্য আদর্শ Drem-land H, Williams Town-814112, R3C2T, opp RKM, DAB

১৫০-৩০০ চার বেডের ঘর ৪০০। Ashok H, D ১৫০-২২৫; H Siddhartha বজরসবলী চক, DAB ১৪০-২০০।

আর আছে BTDC-র H Nataraj Vihar, Old Mina Bzr, opp Bus St. D, ৩ (06432) 22422, DAB ১২৫ A/c D ২০০ ডর্মি ৪৫। বিহার পর্যটনের ট্যুরিস্ট অফিসটিও বসেছে নটরাজে। এদেরই H Baidyanath Vihar, Castor Town, Near Rly Stn, DCB ৭০ ডর্মি ৩৫ সুইট ১৫০, অব: Manager; এদের কলকাতা দপ্তরেও আংশিক বুকিং-এর ব্যবস্থা মেলে। ৬০ দিন আগে থেকে সরকারি হোটেলে বুকিং-এর প্রথা।

ধরমশালাও আছে নানান দেওঘরে—Marwari Kunoar Sang, near Lord Shiva Temple; Luxmi Narayan Kamaria, Kamaria Rd; Ghanashyam Ramchandra, near Sabji Mkt; Bengali Dharmanshala, near Rly Stn; Doodhwala, Stn Rd; Barnal, Court Rd; Kesharwani Ashram, Sabji Mkt ছাড়াও নানান। PWD-র JB আর DB-ও আছে দেওঘরে।



হলিডে হোমও গড়েছে কলকাতার Canara Bank Staff Recreation Club—2 Brabourne Rd, Cal-1, ৩ 2254966; Calcutta Tram Co Engineering Recreation Club, 183 A J C Bose Rd, Cal-14, ৩ 292317; Reserve Bank Employees' Union, RBI, Cal-1, ৩ 2208331 Ext 262; UBI Employees' Co-operative, 4 N C Dutta Rd, Cal-1, ৩ 2000841; Shawalace Institute, 4 Bankshall St, Cal-1, ৩ 2485601; Grindlays Bank Employees' Co-operative Credit Society, 6 Church Lane, Cal-1 (16—18-30 hrs); Bank of Baroda Recreation Club, 8 India Exchange Place, Cal-1, ৩ 2422697; The Burns Employees' Co-operative Credit Society Ltd, 20 Nityadhan Mukherjee Rd, Howrah-711101, ৩ 6602601; Ira Holiday Home, Sankar HH, দুইয়েরই কল বুকিং: Eastern, 4 BBD Bag(E)-I, ৩ 2208452. এছাড়া বেশ কিছু প্রাইভেট বাড়িও ভাড়া মেলে দেওঘরে। তবুও থাকার জন্য যাত্রিক, সরিতা, বৈদ্যনাথ, বাবাবাম, চেতনা, সুবিধা, ড্রিমল্যান্ড ও BTDC-র হোটেল নটরাজ আদরলীয় হবে। ঠিক তেমনই উচিত হবে ক্লব টাওয়ারের অদূরে S B Roy Road-এর অব্যক্তিকা মিষ্টান্ন ভাণ্ডার বা গৌরাস মিষ্টান্ন ভাণ্ডারে রসগোল্লার স্বাদ নেওয়া। আর প্যাঁড়ার জন্য প্যাঁড়া গলিতে—ভাগীরথ শা, কানাই শা, ছোট শা-র যথেষ্ট সুখ্যাতি। তেমনই দেওঘরের মুখুন্দিরও যথেষ্ট সুনাম। সলী করা যেতে পারে আমলা রসায়ন মুখুন্দি দেওঘর থেকে।

মধুপুর

এবার চলুন মধুপুর। দেওঘর থেকে জসিদি হয়ে রেল যাচ্ছে মধুপুর, দূরত্ব ৩৫ কিমি। আর কলকাতা থেকে ২৯৪ কিমি। জসিদির প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে মধুপুর হয়ে। বাসও যাচ্ছে মুখুন্দি দেওঘরের ওস্তাদ মিনা বাজার বাস স্ট্যান্ড থেকে মধুপুরে। যাতায়াতে বাসই সুবিধার।

তীর্থের সাথে জলবায়ুর গুণে দেওঘর অধিক খ্যাতি হলেও স্বাস্থ্যসেবীদের কাছে স্বাস্থ্যকর জায়গা রূপে মধুপুর

অধিক প্রিয়। তবে, অতীতের শাল, শিমূল ও মহুয়া আজ আর নেই। মধুও হয় না মৌচাক গেছে গেছে। তবুও, মিষ্টি জল ও স্নিগ্ধ সমীরের আকর্ষণ হাওয়া বিলাসী বাবুরা আজও আসেন অক্টোবর থেকে মার্চে মধুপুরের মধুপানে। তবে চিমনিও বসেছে গ্রাস কারখানার, ধূলাকীর্ণ স্টেশন রোডটিও যথেষ্ট বিক্সিরূপ নিয়েছে মধুপুরে আজ।

‘নানান ছাপের জমলো শিশি
নানান মাপের কোটা হলো জড়ো
ব্যথির চেয়ে আঁধি হলো বড়ো

ডাক্তারেরা বললে তখন হাওয়া বদল করো।’

স্বপ্ননারায়ণের তীরে মিহিজাম অর্থাৎ আজকের চিত্ররঞ্জন থেকে শিমূলতলা পেরিয়ে ঝাঁঝ পর্যন্ত বিস্তৃত ছিল স্বাস্থ্য গড়ার আনন্দ-নিকেন্ডন অর্থাৎ সেকালের পশ্চিম। শাল, সেতুন, মহুয়া, পলাশে ছাওয়া ৫৪.৭০ বর্গমাইল জুড়ে পাহাড়ী মালভূমি সাঁওতাল পরগনায় কোল, ভীল, সাঁওতাল আদিবাসীদের বাস। অবস্থানও ছিল সেকালে এর বাংলার মানচিত্রে। ১৯১২য় বাংলা থেকে ছোট্ট বিহার রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত হয় সাঁওতাল পরগনা। মাজা-বধা হয়েছে বার বার পরেও আবার।

১৮৭১ খ্রিস্টাব্দ। মধুপুর থেকে গিরিডি রেললাইনের টিকাদারি কাজে বাংলার ছেলে বিজয়নারায়ণ কুণ্ডু এলেন মধুপুরে। মধুপুরের জল-হাওয়ার জাদুওশে হতবাহ্য পুনরুদ্ধারে মন্ত্রমুগ্ধ বিজয়নারায়ণ গড়ে তোলেন স্বাস্থ্যাবাস। পশ্চিমী হাওয়া পৌঁছে দেয় সে বারতা বাংলার আকাশে। গুরু হয় চেঞ্জারবাবুদের আনাগোনা সাঁওতাল পরগনার দিকে দিকে। গড়ে ওঠে বাংলা ধরনের সুন্দর সুন্দর বাড়ি-ঘর অবকাশ যাপনের জন্য। সেকালের আদিবাসীদের সরলতা, মিষ্টি জল, মধুর পশ্চিমা বাতাস—অক্টোবর থেকে মার্চে চেঞ্জারবাবুদের আগমনে মুখর হয়ে উঠত সাঁওতাল পরগনা। কালের আবর্তে পশ্চিমের সেই রমরমাভাব আজ আর নেই। ডাম চিপ অর্থাৎ ‘ড্যানচিবাবুরা’ও আজ আর আসেন না আগের মতো। বাড়িগুলিও আজ জীর্ণ-শীর্ণ, দেখে বেন মনে হয়—

‘স্মৃতি ভারে আমি পড়েআছি
ভার মুক্ত সে এখানে নাই।’

সবুজে ছাওয়া পাহাড়, পাথুরে-প্রাকৃতিক পরিবেশ যেমন শান্ত, নির্জন, তেমনই মনোরম। জলবায়ুও স্বাস্থ্যপ্রদ। এখানকার জলের ঐশ্বর্যজালিক ক্ষমতা আছে—যে-কোনো উদরঘটিত ব্যাধিতে অব্যর্থ ফল লাভ। তাই ভ্রমণবিলাসীদের থেকেও স্বাস্থ্যবেদীদের ভিড় আজও বেশি। অছাপের শিশির পড়ার সঙ্গে সঙ্গে প্রকৃতি-পর্বও শুরু হয় পশ্চিম যাত্রায় আজও। বাড়ি ভাড়া করে থাকা আর রান্না করে খাওয়ায় স্বরত-স্বরচাও কম। তবে, মশার উৎপাত আছে সারা সাঁওতাল পরগনায়। ঠিক তেমনই রাতের অতিথির উৎপীড়ন থেকে অব্যাহতি পেতে নির্জনতা পরিহার করে লোকালয়ে অবস্থান করা উচিত হবে। আপনিও বেরিয়ে পড়ুন দিন পনেরোর অবকাশে শিমূলতলা, জসিদি, দেওঘর, মধুপুর, গিরিডি, জামতারা, মিহিজাম বা অন্য কোথা অন্য কোনোখানে। তবে, পর্যটন মানচিত্রে বাঙালির সেকেন্ড হোম তথা সেকালের বাবুদের পশ্চিম বাবুও অবহেলিত, রাজ্য পর্যটনের অনীহা—সেও বেন নীড়াদায়ক।

রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই বামহাতি ডালমিয়া কূপ। ডাইনে কালীপুর। আরও এগিয়ে প্রাচীনতম পাথরচাপটি ছাড়িয়ে বৃহত্তম তথা নিকটতম বাহাম বিঘার একান্তে কাপিল মঠ। সামনে শেখপুরা অর্থাৎ হাওয়া বিলাসী চেঞ্জারবাবুদের তীর্থনীড়। এমনকি বাংলার বাঘ স্যার আশুতোষের গঙ্গা-প্রসাদ ভবনটিও এই শেখপুরায়। তবে, বাড়িটির মালিকানা আজ হস্তান্তরিত হয়েছে। বাজার ছাড়িয়ে রেল লাইন পেরুতেই ডালমিয়া কূপ। ডাইনে থেকে দিনভর বাস যাচ্ছে দেওঘরে। দেওঘরমুখী লালগড়ের পথেও চেঞ্জারবাবুদের বাড়ি-ঘর গড়ে উঠেছিল সেকালে। এপথেই ৬ কিমি যেতে পাতরোলে। মন্দিরও হয়েছে দেউলধর্মী—অতীতের শ্মশানভূমিতে। বেদিটি স্বল্পত্ব। ৩০০ বছরেরও প্রাচীন এই দেবী খুবই জাগ্রত। শনি-মঙ্গলে যাত্রী সমাগমে রীতিমত মেলা বসে। এছাড়াও দেবতা রয়েছেন—শিব, পার্বতী, নীতলা, রাম-লক্ষ্মণ-সীতা, স্ব-স্ব মন্দিরে। কাছেই অতীতের রাজবাড়ি। বাসে বাসে, টাঙা বা রিকশায় সাঙ্গ করা যায় দেবী দর্শন। রিকশা বা টাঙায় পাতরোলে দেবী দর্শন সেরে শেখপুরা/হরলাটার বেড়িয়ে কালীপুর হয়ে বাহাম বিঘা দেখে ঘণ্টা পাঁচেকে সাঙ্গ করা যেতে পারে মধুপুর দর্শন। তবে, দর্শন নয় উদরঘটিত ব্যাধিতে মধুপুরের জল অত্যন্তাশ্রয় ফল দেয় আজও। তাই স্বাস্থ্যোদ্ধারে যান স্বাস্থ্যবেদীর দল মধুপুরে বিশ্রাম লাভের জন্য। গড়েও তোলেন ফুলে-ফুলে ছাওয়া বাংলা শৈলীর বাড়িগুলি কলকাতার বিত্তবানরা অতীতকালে।

তেমনই অত্যাশ্রয়ী মধুপুর থেকে গিরিডি পথে ৮ কিমি দূরে বোকালিয়া খরনা, ৫১ কিমি দূরে বুরাই পাহাড়ও বেড়িয়ে নিতে পারেন।



থাকার জন্য আছে রেল স্টেশনের পেছনে মিনিট তিনেকের পথে মহারাজা প্রসাদকুমার ঠাকুরের টেগার কটে বাঙালির হোটেল—Rajbari R H. SCB ৫০, DCB ১০০, DAB ১২৫-১৭৫; আর স্টেশন থেকে মিনিট দশেকের পথে ডালমিয়া কূপের বাঁয়ে Moon G.H. DCB ১০০, DAB ১৫০। আর আছে Embassy H; রেল স্টেশনে রিটারারিং রুম; স্টেশনের বিপরীতে ওভারব্রিজ থেকে নামতেই PWD-র বাংলা ও ডালমিয়া কূপে ধরমশালা—Agarsan Bhawan, Mudarnal Ramchand Dalmia.



হলিডে হোমও হয়েছে—Union Bank Employees' Congress H.H. at Patharchapti, 15 India Exchange Place, Cal-1, ☎ 2206867; Standard Chartered Bank Recreation Club, 4 NS Rd, Cal-1, ☎ 2206902; JCI Recreation Club, 1 Shakespeare Sarani, 5th floor, Cal-71, ☎ 2428831. Skill India Employees' Co-operative Credit Society Ltd, Transport Depot Rd, Majerhat, Cal-88. এমনকি গ্রাইডেট বাড়ি-ঘরও ভাড়া মেলে স্বল্পকালীন অবস্থানে মধুপুরে।

Calcutta-Allahabad-Mathura-Delhi
NH-2

| | | | |
|------|----|----------------------|--------|
| 0 | Km | Calcutta | |
| 34 | " | Baidyabati | |
| 70 | " | Panduah | |
| 119 | " | Burdwan | |
| 166 | " | To Santiniketan | 46 km |
| | " | " Bakreshwar | 63 km |
| | " | " Messanjore | 110 km |
| | " | " Tarapith | 114 km |
| 182 | " | Durgapur | |
| | " | To Bankura | 47 km |
| | " | " Vishnupur | 81 km |
| 223 | " | Asansol | |
| 234 | " | Niamatpur | |
| | " | To Dumka | 118 km |
| 274 | " | Govindpur | |
| | " | To Giridih | 52 km |
| 308 | " | Topchanchi | |
| 319 | " | Nemiaghat | |
| | " | To Parsanath | 12 km |
| 350 | " | Bagodar | |
| | " | To Hazaribagh | 53 km |
| | " | " Konar Dam | 24 km |
| 400 | " | Barhi | |
| | " | To Hazaribagh Town | 37 km |
| | " | " Tilaya Dam | 18 km |
| 460 | " | Dhobi | |
| | " | To Gaya | 30 km |
| | " | " Patna | 198 km |
| 519 | " | Aurangabad | |
| | " | To Palamau N P | 117 km |
| 666 | " | Mughalsarai | |
| | " | To Chandraprava | |
| | " | W L S | 49 km |
| 681 | " | Varanasi | |
| 806 | " | Allahabad | |
| | " | To Chitrakoot | 133 km |
| | " | " Vindhyachal | 83 km |
| | " | " Kausambi | 40 km |
| | " | " Ajodhya | 175 km |
| 1001 | " | Kanpur | |
| | " | To Lucknow | 77 km |
| 1287 | " | Agra | |
| 1343 | " | Mathura | |
| | " | To Vrindavan | 10 km |
| 1395 | " | UP-Haryana Border | |
| 1461 | " | Faridabad | |
| 1470 | " | Haryana-Delhi Border | |
| 1490 | " | Delhi (New Delhi) | |

গিরিডি

মেন লাইনে গিরিডির রেল সংযোগকারী স্টেশন ৩৭ কিমি দূরের মধুপুর। হাওড়া থেকে 3031 UP/32 DN হাওড়া-দানাপুর এক্সপ্রেস ট্রেন, প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীর সরাসরি বগিও যাচ্ছে মধুপুর হয়ে গিরিডি। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে মধুপুর থেকে ৪-০৫, ৮-৩০, ১৬-২০, ২১-২০এ; ১ ঘণ্টার পথ।

এমনকি গিরিডি থেকে গোবিন্দপুর হয়ে ৩২১ কিমি দূরের কলকাতায় বিহার সরকারের বাসও যাচ্ছে বিকাল ১৬-০০টায় ছেড়ে ১২ঘণ্টায়। কলকাতা ছাড়ে ১৯-৩০টায় বাবুবাটি থেকে। আবার ব্ল্যাক ডায়মন্ড বা যে-কোনও ট্রেনে ধানবাদ পৌঁছেও রিকশায় বাস স্ট্যাণ্ডে গিয়ে বাসেও চলা যেতে পারে গিরিডি। কলকাতা থেকে গিরিডি যাতায়াতে এগুণটি আদরগীর্য হবে।

সারা পশ্চিমের মতো গিরিডিতেও চোঁয়ারবাবুদের আনন্দ নিকেতন গড়ে উঠেছিল রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে বারগাওয়া। বাঙালি উপনিবেশ নতুন বারগাওয়া। শ্রীমাতৃ নিকেতন অর্থাৎ সারদেশ্বরী আশ্রমের ডাইনে প্রশান্তচন্দ্র মহলানবিশের *মহায়া* শ্রীরামকৃষ্ণ মহিলা বিদ্যালয় বসেছে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে উত্তী নদী। অদূরে খাণ্ডোলী পাড়া। তার নিচুতে শিরশিরা ঝিল—পানীয় জল আসছে শহরে। যোগীন্দ্রনাথ সরকারের *গোলকুঠি*, রবীন্দ্রনাথ, নলিনীরঞ্জন সরকার, সুনির্মল বসুর স্মৃতিধনা অতীত আজ লোপ পেলেও জেলখানার বিপরীতে জেলা জজ অমৃতনাথ মিত্রের একতলা *শান্তিনিবাসে* মাইকা এক্সপোজিট অ্যাসোসিয়েশনের দপ্তর বসেছে। স্যার জগদীশচন্দ্র হাওয়া বদল করতে আসতেন শান্তিনিবাসে। এমনকি ১৯৩৭এ মারাও যান বিজ্ঞানী এই বাড়িতে।

মনে পড়ে অতীতের স্মৃতি অনাবিল,

উত্তী নদীর জল করে ঝিলমিল,

আমলকি বনে বনে ছায়া কাঁপে কুশে কুশে

শিরশির করে ওঠে শিরশিরা ঝিল।

নানান পটবদলের মাঝ দিয়ে বিহার রাজ্যের নতুন জেলা গিরিডির জেলা সদরও এই গিরিডি। অশ্রু, তামা ও কয়লায় সমৃদ্ধ গিরিডির মিষ্টি জল ও মধুর বাতাস আজও অক্টোবর থেকে মার্চে চোঁয়ারবাবুদের স্বপ্নমেদুর করে তোলে। কলকারখানা মাথা তুলছে, শহরও প্রসার পাচ্ছে বিজ্ঞিতভাবে—তবুও গিরিডির জলবায়ুর অত্যাম্ভব যাদুবলে আজও হ্রত-স্বাস্থ্য পুনরুদ্ধারে দূর-দূরান্ত থেকে আসেন স্বাস্থ্যসেবীর দল গিরিডিতে।

শহর থেকে ধানবাদ-ফুলটি সড়কে ৭ কিমি গিয়ে ডাইনে লালমাটির বনজ পথে আরও ৪ কিমি যেতে গিরিডির অন্যতম পর্যটক আকর্ষণ উত্তী ফলস। চলায় পথে দূরে বহুদূরে পরেশনাথ পাড়াও দৃশ্যমান। শান্ত-নিট নদীর জল পাছাড়া চলে পাথরখণ্ডের ঘাট-প্রতিঘাটে দুর্লভ বেগোনাফলে তট খায়। বর্ষায় গতি বাড়ে আর শীতে বাড়ে বাষ্মী। দোকান-পাটও বসে শীতের দিনগুলিতে উত্তীতে। শ'মেড়েও টাকায়

ঘণ্টা পাঁচকে টাঙ্কায় বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ট্যান্ডিতে ২৫০-৩০০ টাকায় যাতায়াত। আর রয়েছে ২৪ কিমি দূরে অতীতের কারমাতার, নতুন করে নাম হয়েছে বিদ্যাসাগর। জলবায়ুর গুণে পণ্ডিত ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগর শেষ জীবনে বাস করেন। মৃত্যুও ঘটে বিদ্যাসাগরের কারমাতারে। রেল স্টেশনের ওপারে সঙ্গীর্ণ বিদ্যাসাগরের স্মৃতি বিজড়িত নন্দনকাননে মেয়েদের স্কুল বসেছে। অনুমতিতে দর্শন মেলে। হোটেল নেই কারমাতারে। মধুপুর থেকে দিনে দিনে বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। আবার কারমাতার বেড়িয়ে বিদ্যাসাগর স্টেশন থেকে ১৫-১৬, ১৮-৪২, ১৯-১৯এ বা সকালের নানান প্যাসেঞ্জারে চিত্তরঞ্জন ও ২ বা আসানসোল ৫৭ কিমি চলা যেতে পারে জামতারা হয়ে। তেমনই গিরিডি থেকে ৩৮ কিমি দূরে জৈনতীর্থ পরেশনাথ পাহাড়ও চলা যেতে পারে। জিপও চড়ে পাহাড়ে নিজস্ব ব্যবস্থা। উৎসাহীরা পরেশনাথের পথে তোপচাঁচি লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। গিরিডি থেকে ৩৫০-৪০০ টাকায় ট্যান্ডি নিয়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায় উল্লী, পরেশনাথ ও তোপচাঁচি দিনে দিনে।



থাকার জন্য হোটেলও আছে নানান গিরিডিতে। রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে মইন রোডের কালীবাড়ি চকে Chandouri Rd-815301-এ—Apna R H, SCB ৪৫-৬৫, DCB ৮০-১০০; Kanak R H, SCB ৪০, SAB ৬০, DCB ৮০, DAB ১০০-১২৫; Anand H; Alka R H, S ৪৫, DAB ৮৫। চকের বাঁয়ে Rest Inn, DAB ১৫০; H Swagat, Kalimanda Rd-1, ০ 2977. Court Rd-815301—Khalsa L, R ½ B0, SCB ৪০, SAB ৬০, DCB ৮০, DAB ১২০; Mourya R H; Ranjit R H, S ৪৫-৬০, D ৮০-১২৫; H Nikhar, SAB ১২৫, DAB ২০০-৩২৫। আর আছে ধরমশালা, PWD-র রেন্ট হাউসও বাংলাদেশ রেল স্টেশনের অদূরে। এমনকি প্রাইভেট বাড়ি-ঘরও স্বল্পকালীন অবস্থানে ভাড়াই মেলে গিরিডিতে। তবুও থাকার জন্য কোঠের কাছে নিখার ও কালীবাড়ি চকের অদূরে কনক রেন্ট হাউসবা হোটেল যোগতমন্দ নয়। আর জলপানের জন্য কালীবাড়ি চকে তৃপ্তি জলপান ও আহাৰ্যের জন্য হোটেল নিখারভাঙ্গ। এমনকি শ্রীমাত নিকেতন সারদেবরী আশ্রম রেন্ট হাউসও থাকার ব্যবস্থা মেলে—কলকাতা দপ্তরের অনুমতি সাপেক্ষে।

তোপচাঁচি লেক / ওয়াইন্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি

জাতীয় সড়ক দুই-এ বাজার থেকে ১ কিমি দূরে হোটেল ওলসান লাগোয়া ডাইনে পথ গিয়েছে বৃন্তাকার পাহাড়ে ঘেরা কৃত্রিম লেক তোপচাঁচি। ১৯১৫তে ঝরিয়াকে জল দিতে তৈরি হয় পরেশনাথ পাহাড়ের ঢালে তোপচাঁচি লেক। শান্ত-মিষ্ণ মনোহর পরিবেশ। সকালে পাতাড়ের পেছন থেকে উঁকি মারে সূর্য, হাসির গমকে অস্ত ছড়ায় লেকের জলে। সাঁঝেরও মাধুর্য আছে। বাতাস ভারী হয়ে ওঠে পলাশ ও মম্বার মিষ্টি সৌভাগ্যে। অতীত গরিমা ম্লান গেলেও

তোপচাঁচি আঙ্গও প্রকৃতি প্রেমিকদের স্বর্গ বিশেষ। তেমনই লেককে ঘিরে পাহাড়ী অরণ্য গড়ে উঠেছে ওয়াইন্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি। বাঘেরাও নাকি প্রকৃতির শোভার সাথে মিশি জলের স্বাদে বিহারে আসে লেকে।

অদূরে তোপচাঁচির রেল সংযোগকারী গোমো স্টেশন। এই গোমো থেকেই নেতাজী সুভাষচন্দ্র বসু ১৯৪১-এর ১৮ই জানুয়ারি ঐতিহাসিক নিকুমণের পথে ট্রেন চাপেন। স্মারক রূপে মূর্তি হয়েছে তোপচাঁচি বাজারে নেতাজীর। পথেরও নামাস্তর ঘটেছে—অতীতের স্টেশন রোড হয়েছে নেতাজী সুভাষ রোড।



ধানবাদ থেকে দূরত্ব ৩৭, মাইন ৫৮, গোমো ৬, আর কলকাতার দূরত্ব ৩০৩কিমি। হাওড়া থেকে ৬-১৫র ব্যাক ডায়মন্ডে ১১-৩০এ ধানবাদ পৌঁছে তোপচাঁচি লেক বেড়িয়ে দিনে দিনে হাজারীবাগও চলা যেতে পারে বাস। চট্টলজলি যাত্রীরা কলকাতায়ও ফিরতে পারেন DN 3318 ব্যাক ডায়মন্ডে ১৬-২০এ ধানবাদ ছেড়ে ২১-২৫এ। আর কোলফিন্ড ৫-৫০এ ধানবাদ ছেড়ে হাওড়ায় পৌঁছায় ১০-৩০এ। হাওড়া-বোকারো শতাব্দী এক্সপ্রেস ৬-০৫এ হাওড়া ছেড়ে ৯-১১য় ধানবাদ পৌঁছে ফেরে ১৭-৪৩এ ধানবাদ ছেড়ে ২১-১০এ হাওড়ায়। এছাড়া জসিদি, শিমুলতলার প্রতিটি ট্রেন যাচ্ছে ঝাঝা-কিউল-মোকামা জং হয়ে।



থাকার নানান ব্যবস্থা তোপচাঁচি লেকে। CMADA-র Lake Palace, DAB ৭৫ A/c ১০০; লাগোয়া Rest Houseএ DAB ৪০, অব: Secretary, Coal Mining Area Development Authority, Dhanbad; বাথরুমহীন ৬ বেডের Youth Hostel-এ বেড ১; G T Rdএ ডাকবাংলো ও H Gulshan, DAB ১৫০-২২৫।

আর পর্যাপ্ত ব্যবস্থা মেলে ধানবাদে। কয়লাকূঠার দেশ তথা শিল্পকেন্দ্রিক বাণিজ্যিক শহর ধানবাদ। নিচুতে ভারত খ্যাত ঝরিয়ার কয়লাখনি, উপরে জনপদ। *H Skylark, Bank Morh, Dhanbad, PC-826001, STD 0326, ০ 303024, A5R2, S ৩২৫ D ৪০০, A/c S ৫৫০ D ৬৫০, Suite ৮০০; *H Black Rock, Bank Morh-1, ০ 302027, A5R2, S ৩৭৫-৪৫০ D ৫২৫-৬৫০, A/c S ৬৭৫ D ৮৫০; Ajanta H, Bank Morh, Super Mkt-1, S ১৭৫ D ২৫০; H Bonanza, Katras Rd-1; Everest H, Naya Bzr; Kunar H, opp Rly Sun; H Kohinoor, Tacker Market; H Woodland, Hirapur; *Savoy H; ছাড়াও নানান হোটেল আছে ধানবাদে। আর আছে BTDC-র H Ratna Vihar, DAB ১২৫ ধানবাদে। তবে সরাসরি লেক যাত্রায় হাওড়া-দিল্লী গ্রান্ড কর্ড লাইনের গোমো পৌঁছে লেকে চলাই সুবিধার। ট্রেনও যাচ্ছে ঘণ্টা হ'য়েকে হাওড়া থেকে ৬-০৫এ বোকারো স্টিল সিটি শতাব্দী ৬-০৫, চম্বল/শ্রীপ্রা এক্স ১৫-১৫, কালকা মেল ১৯-১৫, মেগালসরাই ২০-০০, ডুন এক্স ২০-১৫; শিয়ালদহ থেকে জম্মু তাওয়াই ১১-৪৫; আসানসোল থেকে ৫-২০, ৮-৫০, ১৮-৪০এ প্যাসেঞ্জার। ফেরেও অন্য নিয়মিত বাসও আসছে রাজ্যের সিঁধিক থেকে তোপচাঁচি ও ধানবাদে।

পরেশনাথ পাহাড়

গিরিডি-ডুমুরি সড়কে গিরিডি থেকে ২৬, গ্রান্ড ট্রাঙ্ক রোডের

ডুমুরি থেকে ১৬ কিমি দূরে বাঁহাতি আরও ৪ কিমি গিয়ে মধুবন। মধুবন থেকে ৯ কিমি পাহাড়ী পথ পেরিয়ে ১৩৬৬ মি উঁচুতে জৈনতীর্থ পরেশনাথ পাহাড়। তবে, জিপও যাচ্ছে ঘুরপথে ১৬ কিমি দূরের ওয়ারলেস সেন্টার ঘারে। আরও ১ কিমি গিয়ে পার্শ্বনাথস্বামী মন্দির। ডুলিও মেলে যাতায়াতে—২৫০-৩৫০ টাকায়, যাত্রীর ওজনের তারতম্যে ভাড়ায় ব্যবধান। যাত্রীও যাচ্ছেন প্রতি রাত ২টায় দলবদ্ধ হয়ে মধুবন থেকে। গহন বনের মাঝ দিয়ে পথ, চড়াই-এর আধিক্য; শেষ ৩ কিমিতে প্রাণান্তকর চড়াই পেরুতে হয়।

সরাসরি যাত্রায় কলকাতা থেকে গ্র্যান্ড কর্ড লাইনে ধানবাদ/গোমো পেরিয়ে ৩০৬ কিমি পশ্চিমে পরেশনাথ স্টেশন। নিমাইয়াস্ট ৭, গোমো জং ১৮, ধানবাদ ৪৭ কিমি কলকাতামুখী পূবে। আর হাজারীবাগ রোড ২৭, কোডারমা ৭৬, গয়া ১৫২ কিমি পশ্চিমে পরেশনাথ থেকে। কলকাতা থেকে জম্মু তাওয়াই, শিপ্রা এক্স, চম্বল এক্স, ডুন এক্স, যোধপুর এক্স, মুম্বাই মেল ভায়া এলাহাবাদ ট্রেনে ঘণ্টা সাতকের পথ। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে আসানসোল-মোগলসরাই প্যা, ধানবাদ-গয়া প্যা, ধানবাদ-হাজারীবাগ প্যা, আসানসোল-বারাণসী প্যা, পুরী-নিউ দিল্লী নীলাচল, হাতিয়া-পাটনা এক্স, ধানবাদ-হাজারীবাগ প্যা, ধানবাদ-মোগলসরাই গঙ্গা-শতভ্রম এক্স, ধানবাদ-পাটনা গঙ্গা-দামোদর পরেশনাথ হয়ে।

রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই ১ কিমি দীর্ঘ স্টেশন রোডে নানান ধরমশালা। বাস যাচ্ছে দিগম্বর জৈন ট্রাস্টের সকল ও বিকালে ২৫ কিমি দূরের মধুবনে। যাত্রীর আধিক্যে প্রাইভেট বাসও মেলে। স্টেশন রোড শেষ হতে জি টি রোড ক্রুশিং-এ Isri Bazar. বাজার লাগোয়া জি টি রোড-এ আছে H Bhuvan. অদূরে বাস স্ট্যান্ড—গিরিডির বাসে গিয়ে শেষ ৫ কিমি নিয়মিত যানের অভাবে পায়ে পায়ে চলা যেতে পারে মধুবন। ধানবাদ থেকেও গিরিডির বাসে একইভাবে চলা যেতে পারে। তবে নিজস্ব ব্যবস্থায় ধানবাদ বা ইসরি বাজারে জিপ/ট্যাক্সি/অটো মেলে ভাড়ায়। আবার কলকাতা থেকে তোপচাটি পেরুতেই ৩১৯ কিমি দূরে G T Rd-এর নিমাইয়াস্ট থেকে ১২ কিমি পাহাড় বেয়েও চড়া যায় পরেশনাথে।

আর মধুবনে শ্রীসম্মতশিখর দিগম্বর জৈন ধরমশালাকে ভর করে ১ কিমি জুড়ে পোকানপাট, ব্যাক্স, ধরমশালা। দিগম্বর ও শ্বেতাশ্বর জৈনদের ডজনখানেক ধরমশালায় হাজার দেড়েক ঘরে যাত্রীবাসের ব্যবস্থা। ১০-৫১ টাকায় ঘর। তবে, দিগম্বরে দিগম্বরী জৈনদের ঘর পেতে অগ্রাধিকার মেলে। আর আহার্যে দিগম্বর কোঠার মারোয়াড়ি বাসার নিরামিষ আহার খাসা।

মধুবনের শিরে টোপের হয়ে পাহাড়। ২৩তম জৈন তীর্থঙ্কর পার্শ্বনাথ স্বামী ১০০ বছর বয়সে শ্রাবণ মাসের শুক্লাষ্টমী এই পাহাড়ে এসে দেহ রাখেন। সেই থেকে তাঁরই নামে নাম হয়েছে পরেশনাথ পাহাড়। তবে, জৈন পৃথিতে সম্মতশিখর নামে সমধিক খ্যাত। পাহাড়ের অন্যতম আকর্ষণ পার্শ্বনাথ স্বামীর মন্দির। মন্দিরে পাথরের বৃকে

পায়ের ছাপ—দেবতার প্রতিভূ হয়ে পজিত হচ্ছেন আজও। মন্দির রয়েছে আরও চব্বিশ—প্রতিটাতেই পায়ের ছাপ তীর্থঙ্করদের। তবে, জল মন্দিরে মূর্তি হয়েছে তীর্থঙ্করদের। আর আছে পাহাড়ের প্রবেশদ্বারে গৌতম স্বামীর সমাধি মন্দির জৈন তীর্থ পরেশনাথে।

যাত্রীও চলেছেন প্রতিটা মন্দির দর্শন করে ৯ কিমি পরিক্রমা সেরে পার্শ্বনাথে। পার্শ্বনাথ থেকে বিকল্প পথ নেমেছে সীতা নালায়। কেবল পার্শ্বনাথ স্বামী দর্শনার্থীদের উচিত হবে মাঝপথের সীতা নালা থেকে ডানহাতি পথে যাতায়াত করা। আর ধর্মার্থীরা সীতা নালা থেকে সিন্ধে পথে গিয়ে যাতায়াতে ৯+৯+৯ কিমি পরিক্রমায় ঘণ্টা দশকে নেমে আসেন মধুবনে। তীর্থযাত্রী ও ভ্রমণার্থী দুইয়ের কাছেই অতি পবিত্র আর মনোরম এই পরেশনাথ।

দুমকা

দেওঘর থেকে বাসে চলুন ৫৮ কিমি দূরের দুমকা পাহাড়ে। চক্রাকারে পাহাড় শ্রেণী—শাল, মহুয়া, পলাশে ছাওয়া সাঁওতাল পরগনার জেলা সদর দুমকাও বাহ্যিকর স্থান। জলে হজমি গোলা। বসন্তে প্রকৃতি মাতোয়ারা করে তোলে—সারা পাহাড়ে আগুন ধরায় পলাশ তার রক্তিম আভাষ দুমকায়। বাস স্ট্যান্ড থেকে ১২ কিমি দূরে শহরান্তে শিব পাহাড়ে মন্দির হয়েছে শিব ঠাকুরের। আর আছেন কালী, হনু, নাগদেবী লাগোয়া মন্দিরে। রিকশা যাচ্ছে ৫ টাকায়।



থাকার জন্য Dumka-814101, STD 06434 বাস স্ট্যান্ডের অদূরে বাজারকে ভর করে Main Rd-এ—H Suman, H Sangam, H Raj, ৩ 23311, D ১৩০, ১৭০ A-c ২২৫, ২৫০, ৩৫০; H Kanak, H Suvidha, ৩ 22155, DAB ১২৫, ১৫০; H Anand, ৩ 22322, DCB ৯০, DAB ১৫০, ২০০; H Satyadarshi, ছাড়াও কাবেরী, ভোজপুর, সঙ্গম আছে। এদের রেট S ৪০-৬৫ D ৬০-১২৫ টকা। আর আছে PWD Bungalow দুমকায়। আহারে সঙ্গম ও গ্রিনের সুনাম আছে। আর হোটেল সুবিধায় আছে মারোয়াড়ি ডোজনালয়। দিনে ভাত ও রুটি মিললেও রাতে সঙ্গম ও মারোয়াড়িতে কেবল রুটির প্রথা। গ্রিনে দিনে-রাতে নন-ভেজ মেনুর সাথে ভাত ও রুটি দুই-ই মেলে।



কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় বিহার সরকারের বাসে ১৯-৩০টায় বাবুঘাট ছেড়ে বর্ধমান/সিউড়ি/পানাগড় হয়ে বা ৬-০০টায় হাওড়া-রামপুরহাট গণদেবতা এক্স, ৬-২৫এ শিম্বালদহ-নিউ জলপাইগুড়ি কানুনজঙ্গা এক্স, ৭-১৫য় হাওড়া ঘরভাঙ্গা প্যা, ১১-১০এ হাওড়া-মানাপুর ফা প্যা, ১৩-০০টায় শিম্বালদহ-রামপুরহাট প্যা, ১৬-৩৫এ বিশ্বভারতী ফা প্যা, ১৯-১৫য় দাঙ্গিলাং মেল, ২০-৫৫য় শিম্বালদহ-মোগলসরাই এক্স, ২২-৩০এ হাওড়া-জামালপুর এক্স, ২২-০০টায় গৌড় এক্স যথাক্রমে ১০-২০, ১০-৪৩, ১৩-০০, ১৭-০২, ১৯-৪০, ২১-৫০, ২৩-৪৫, ১-১৯, ২-২৩, ৩-০৮এ বা ৬-২০এর হাওড়া-বর্ধমান লোকালে ৮-৪০এ বর্ধমান

গিয়ে বর্ধমান থেকে ৯-০৫এর তারাদীপী প্যাসেঞ্জারে ১০-১০এ বোলপুর, ১১-৫এয় রামপুরহাট পৌঁছে বাসে ৬২ কিমি দূরের দুমকা যাওয়াই সুবিধার। রেল স্টেশন লাগোয়া বাস স্ট্যান্ড থেকে আধ ঘণ্টা অন্তর ৪-০০টায় প্রথম ছেড়ে ১৭-৪০এ শেষ বাসটি রামপুরহাট ছেড়ে দুমকা যাচ্ছে। ২২ ঘণ্টার পথ। আর দুমকা থেকে মুরখুঁ বাস যাচ্ছে রামপুরহাট ও দেওঘর। বাস যাচ্ছে সিউড়ি, সিউড়ি হয়ে বোলপুর, পাকুন্, বর্ধমান, খানবাদ, চট্টা, রাঁচি, পাটনা, ভাগলপুর, গিরিডি ছাড়াও বিহার রাজ্যের নানানদিকে দুমকা থেকে। বীরভূমের সীমান্ত পার হলেও লাল মাটি সঙ্গ ছাড়ে না—শাল, সেগুন, মহুয়া ও কেন্দু গাছের গহন অরণ্যের মাঝ দিয়ে পাহাড়ের পর পাহাড় উপকে বাস চলে। অবগ্য-আদিবাসী-টিলা সব মিলিয়ে রোমাঞ্চে ভরা এপথে বাসে চলা।

রামপুরহাট-দুমকা বাসে ১২ কিমি যেতে সিউড়ীয়ার মোড় থেকে বায়ে ৪ কিমি গিয়ে বাংলা-বিহার সীমান্তে শক্তি সাধকদেব তত্ত্বভূমি মালুটি গ্রাম। রামপুরহাট থেকে মিনিবাস যাচ্ছে মালুটি। অতীতের শতাব্দিক মন্দিরের মধ্যে টোকাটোয় সমৃদ্ধ ৭২টি শিব-পার্বতী-বিষ্ণু-গজলক্ষ্মীর দীর্ঘ মন্দির দেখে নিতে পারেন শাল, আমলকী, মহুয়া ছাওয়া মালুটিতে। তবুও যেন মালুটির অন্যতম আকর্ষণ শ্যামাপূজা। শ্যামাপূজার রাতে সেজে ওঠে সারা মালুটি গ্রাম উৎসবের সাজে। বাজি পোড়ে—পূজা হয় দেবী মৌলীক্ষা কালী, রাজরাজেশ্বরী কালী, ভয়াল ভয়ঙ্করী শ্মশানের অধিষ্ঠাত্রী শ্মশান কালী ছাড়াও নানান। ভক্তের সাথে দর্শক আসেন এ রাতে দূরদূরান্ত থেকে। এমনকি বামাদেবও আসেন পুরোহিত হয়ে—সিদ্ধান্ত করেন তারার বোন মৌলীক্ষার (মৌলী অর্থ মন্তক আর ঈক্ষা হচ্ছে দেখতে পাওয়া) পঙ্কমুণ্ডার আসনে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে Govt G.H. Malutiতে।

তেনমনি দুমকা থেকে ৫ কিমি দূরে আদিবাসীদের গ্রাম কক্সা। কক্সার প্রপতি তার বনস্পতি উদ্যান তথা বটানিকাল গার্ডেন বা সাধকতার পাহাড় সৃষ্টি। সহস্রাব্দিক নিরক্ষর দরিদ্র গ্রামবাসীর কঠোর শ্রমে নিরক্ষরতা দূরীভূত হয়েছে ৭০০ ফুট উঁচু পাহাড় থেকে। পাথরের পর পাথর সাজিয়ে অনুচ্চ পাহাড় ঘিরে প্রাচীর। ১০১ হেক্টর জায়গা জুড়ে হাজার দ্যুয়ক গাছের সৃষ্টির নিচুতে মেডিসিন্যাল প্লান্ট আর ওপর অংশে ক্যাকটাস। সূর্যাস্তেও মনোরম পশ্চিমের ভিউ পর্যট থেকে। মন্দিরও আছে দুর্গা, কালী, পার্বতী, মহাদেব, বজ্রবলীর পেছনের পাহাড় চালে। চতুর্ভুজার মনোরম পরিবেশ। তবে, রান্না মানা সৃষ্টি পাহাড়ে। হোটেল নেই—থাকা ও আহায়ে মেলে মন্দির-আশ্রমে। তবে, পরিতাপের বিষয় বক্তৃতাার্থের শিকার হয়ে সৃষ্টিও আজ আশুনে পুড়ে ধ্বংস হয়েছে।

মুন্সের

মহাভারতের মোদগিরি আজ হয়েছে মুন্সের। বিহারের শেখনাবাব মীরকাশিমের রাজধানীও ছিল মুন্সেরে। ১৯৩৪-এর ভূমিকম্পে বিধ্বস্ত হয় অতীত। তারই মাঝে রয়েছে—মীরকাশিমের বিধ্বস্ত দুর্গ। লোকশ্রুতি, দুর্গটি মহাভারতের কালের। আজ অফিস-কাছারি-জেল বসছে। গঙ্গার কষ্টহারিণী বাটে নানো আজও কষ্ট হরণ হয়। বাট থেকে দৃশ্যমান জলে ঘেরা পাহাড়ী টিলার সীতাচরণ মন্দির। নৌকায় যাতায়াত। বাটের সামনে মীরকাশিমের গুহা, শাহ সুজার প্রাসাদ। দুর্গের পূর্বদ্বারে জয় প্রকাশ উদ্যান—শিশু চিত্র

বিনোদনের সুন্দর পরিবেশ। মূল ফটকের বাঁ-হাতি পথে গোয়েন্ডা হাসপাতাল ও ধরমশালা লাগোয়া জলে ঘেরা শিব মন্দিরটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে। এরই পাশে যোগবিদ্যার স্কুল। শহরের ৬ কিমি পূবে মুন্সেরের মূল আকর্ষণ সীতাকুণ্ড। রাম, ভরত ছাড়াও কুণ্ড রয়েছে আরও বেশ কয়েকটি। লোক-শ্রুতি, সীতাদেবীর অগ্নিপরীক্ষার কালে এই কুণ্ডের উদ্ভব। বিরামহীন ফুটছে জল সেই থেকে। হাত দিলে ছালা অনুভব হলেও জ্বলে না। তবে পাণ্ডার জ্বালাতন আছে। অত্যাংসহীরা ঘুরপথে পীর পাহাড়ে পীরসাহেবের সমাধিটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। শহরের পথে সিগারেট কোম্পানি পেরিয়ে নেতাঙ্গী চক হয়ে চাণক্য মন্দিরটি দেখে নিন। খুবই সুন্দর এই মন্দির। মূর্তি রয়েছে দেবী চণ্ডীর, দ্বিতলে কালী ও শিব ঠাকুরও রয়েছে। চুক্তিতে রিকশা নিয়ে দিনে দিনে সাঙ্গ করা যায় এ পরিক্রমা। বরিয়ারণের পথে সীতাকুণ্ড ছাড়িয়ে আরও ১০ কিমি দক্ষিণে আরণ্যক পরিবেশে গরম জলের প্রয়বণ ঋষিকুণ্ডটিও চিত্তাকর্ষক। তবে, লোকমুখে বিহারের চম্বল বলে পরিচিতি এর। শহর থেকে ৪৩ কিমি দূরে বরিয়ারণ হয়ে খড়গপুর পৌঁছে দুর্গামন্দির, মসজিদ, লেক, টিলার টাঙে শিবমন্দিরটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে। পাহাড়ে ঘেরা লেক, পরিবেশ সুন্দর। বাসে বাসে বেড়িয়ে নিন মুন্সের থেকে।



রেল অঙ্গের রাজধানী মুন্সের পৌঁছালেও শিয়ালদহ থেকে ২০-৫৫য় ৩১৩৩ মোগলসরাই এক্সপ্রেস পরদিন সকাল ৮-১০এ জামালপুর পৌঁছে ট্যান্ড্রি/ট্রাকার/বাস বা অটোয় ৯ কিমি দূরের মুন্সের চলুন। আর যাচ্ছে ৩০৭। জামালপুর এক্স ২২-৩০এ হাওড়া ছেড়ে পরদিন ৮-৫০এ জামালপুরে। হাওড়া-কিউল সাহেবগঞ্জ লুপ লাইনে হাওড়া থেকে ৪৬৬, ভাগলপুর থেকে ৫৩, কিউলের দুমুখ ৪৩ আর পাটনার ৭৯ কিমি দূরে জামালপুর জং। হাওড়া-দানাপুর ফা প্যা, হাওড়া-হারভাঙ্গা প্যা, সাহেবগঞ্জ-জামালপুর প্যা, ফারাকা এক্স, ব্রহ্মপুত্র মেল ছাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে জামালপুরে। আর জামালপুর থেকে মুন্সের যাচ্ছে ৫-২০, ৭-২০, ৮-৫০, ১০-২৫, ১২-১০, ১৪-২০, ১৭-৫০, ২০-৩০এ।

হিরণ্য পর্বতমালায় চেউখেলানো অপরূপ শোভার মাঝে জামালপুর। জামালপুরেও কালীপাহাড় অর্থাৎ পাহাড়ী টাঙে কালীমন্দির, শিব ও গণেশ মন্দির দেখে নিতে পারেন। জামালপুর শহরও সুন্দর দৃশ্যমান পাহাড় থেকে। আর আছে রেলের গুয়ার্কিশপ জামালপুরে।

থাকার জন্য ভারত রেস্ট হাউস, দীপক রেস্ট হাউস, সিঙ্গি হোটেল, অ্যাপেলো রেস্ট হাউস, মায়েরায়া বাসা, CH. 1B, DB ছাড়াও বৈদ্যনাথ, গোয়েন্ডা ও জৈন ধরমশালা আছে Monghyr-এ।

ভাগলপুর

সাহেবগঞ্জ লুপ লাইনে কলকাতার ৪১৩ কিমি দূরে ভাগলপুর জং। মুন্সের থেকে ট্রেন বা বাসে চলুন ৬২ কিমি দূরে রবীন্দ্র-শরৎ-বনমূলের স্মৃতি-রঞ্জিত ভাগলপুরে। স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে

রবীন্দ্রভবনে রবীন্দ্র মিউজিয়ম বসেছে। আর বাঙালি টোলায় গঙ্গার ধারে মাতুলালয়ে মামার উত্তরসূরীরা বাস করছেন। জনশ্রুতি, অজ্ঞাতবাসকালে পাণ্ডবরাও ভাগলপুরে আসেন। অবস্থান করেন গঙ্গার ধারে যোগসারে ছাপর যুগের ব্যুনাথের মন্দিরে। মন্দিরটি আজও বর্তমান। কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় জামালপুরের প্রতিটা ট্রেনে চলা যেতে পারে ভাগলপুরে।

রেল স্টেশনকে ঘিরে নানান হোটেল ভাগলপুরে। স্টেশনের বিপরীতে H Gaylord, Station Chowk, Bhagalpur-812002, SCB ৪৫ SAB ৬০-৮৫ DCB ৬৫-৮৫ DAB ১০০-১৫০; *H Nihar, Shiv Mkt-I, Q 21116, R2B2, S ১৫০ D ২৫০-৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০-৬২৫; অলকা, নির্মল, ছাড়াও হোটেল আছে নানান ভাগলপুরে।

চুক্তিতে রিকশা নিয়ে ভাগলপুর শহরটা বেড়িয়ে নিন। উঁচু টাওয়ার রেখে দশেশ্বর মহাদেবের মন্দির দেখে, বিশ্ব-বিদ্যালয় পেরিয়ে দাঙ্গার শহর বলে খ্যাত নাথনগরে জৈন তীর্থঙ্কর বাসুপুঞ্জ-এর জন্মস্থানে দিগম্বর মন্দিরটিও দেখে নিন। অন্যতম জৈন-তীর্থ নাথনগরে ২৪ জন তীর্থঙ্করের মূর্তি রয়েছে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে মন্দিরে। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ৪ কিমি দূরের নাথনগরে। দর্শন সেরে শহরে ফিরে পুলিশ চৌকির পাশ দিয়ে রিকশাতেই চলুন গঙ্গার তীরে মনোমর পরিবেশে কুপমা ঘাট আশ্রম দর্শনে। ফেরার পথে কৃষি কলেজটিও দেখে নিন। ভাগলপুরের সিঙ্কেরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। পরদিন ৫-৪০০এর প্যাসেঞ্জার (রবি ছাড়া) বা ৬-৫৪০র শিয়ালদহ-মোগলসরাই এক্স বা ৭-৩৫এর হাওড়া-জামালপুর এক্স বা ৯-৫০এর প্যাসেঞ্জারে ২৫ কিমি দূরের সুলতানগঞ্জ পৌঁছান ৬-১৩/৭-২৪, ৮-৫০/১১-১০এ। গঙ্গার মাঝে শৈল শিখরে মন্দির হয়েছে আজগৈবিনাথ অর্থাৎ শিবের। দেবতা রয়েছেন আরও নানান। নৌকায় পারাপার। বাস/মিনিবাসও আসছে ভাগলপুর ও ২৩ কিমি দূরের মুঙ্গের থেকে। তাই মুঙ্গের যাত্রীরা যাতায়াতের পথে দেবদর্শন করে নিতে পারেন।

তেমনই বাসুপুঞ্জের সাধনক্ষেত্র ১৫০০ ফুট উঁচু মান্দার হিল-ও আর এক জৈন-তীর্থ। মান্দার হিল টপেও মন্দির হয়েছে দিগম্বর জৈনের। মন্দিরে রয়েছে বাসুপুঞ্জের পদ-যুগলের ছাপ। মনসামঙ্গলের চাঁদ সদাগরের দাসভূমিও এই নাথনগর। লোহার বাসরঘর আজ মাটি চাপা পড়লেও চাঁদ সদাগরের পুজিতা দেবী মনসার মন্দিরটি আজও দৃশ্যমান।

তেমনই আছে পাহাড় ২০ ফুটের বুদ্ধমূর্তি, ৫ ফুটের বিষ্ণু, শাকম্ভরী দেবী, জৈন তীর্থঙ্করদের নানান মূর্তি। পাহাড়ের পথে জলাশয়ের ধারে জেলা পরিষদের বাংলাটিও থাকার পক্ষে রমণীয়। ট্রেন যাচ্ছে ভাগলপুর থেকে শাখা রেলে ৫-০০, ১৫-৩০, ২১-০০টায় ছেড়ে ২½ ঘণ্টায় ৫০ কিমি দূরের মান্দার হিল। ভাগলপুর ফেরে ৭-৪৫, ১৮-১৫, ২৩-৪৫এ মান্দার হিল থেকে। বাসও যাচ্ছে ভাগলপুর থেকে মান্দার হিল। ভাগলপুর-মুমকা বাসে বংশী নেমেও চলা যেতে পারে মান্দার রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি দূরের

পাহাড়ী সানুদেশে। পায়ের চলতে অক্ষম যাত্রীদের জন্য ডুলী মেলে শ'তিনেক টাকায়। ২টি ধরমশালাও আছে রেল স্টেশনের কাছে মান্দার হিলে। সরাসরি কলকাতা যাত্রায় বংশী থেকে বাসে মুমকা হয়ে রামপুরহাট থেকেও ট্রেন চড়া যায় ঘরপানের।

পরদিন ৫-২০, ৯-০০ বা ১০-৩০এর প্যাসেঞ্জারে ১ ঘণ্টায় হাওড়ামুখী ৩৬ কিমি দূরের বিক্রমশীলা হস্ট পৌঁছে টাঙায় রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি দূরে ধর্মপালের তৈরি ধ্বংসপ্রাপ্ত বিক্রমশীলা বিশ্ববিদ্যালয়ের হারানো অতীত রোমন্থন করে আসুন ঘণ্টা দু'য়েকে। সেকালে পূর্ব ভারতের অন্যতম শিক্ষাকেন্দ্র ছিল বিক্রমশীলা। দেশ-দেশান্তর থেকে ছাত্র এসেছে পাঠ নিতে। ছাত্রের সংখ্যা ৮০০০ আর পণ্ডিত ছিলেন ১০৮ জন। সেন বংশের রাজত্বকালে বখতিয়ার খিলজির হাতে দুর্গ প্রমে ধ্বংস পায় বিক্রমশীলা। ১৯৬২তে ২৫০ একর জুড়ে ২০ বছরের খননে আবিষ্কৃত হয়েছে পোড়ামাটির টেরাকোটা, প্রাচীন স্থাপত্য, বুদ্ধের ছোট-বড় নানান মূর্তি, ১০০ ফুট উঁচু স্তূপ, জলাশয়, ছাত্রদের আবাসস্থল তথা ২০৮টি ঘর, লাইব্রেরি ছাড়াও নানান কিছু। সংগ্রহশালাও বসেছে খননে পাওয়া প্রত্নতত্ত্বের সম্ভার নিয়ে। তবে দর্শনার্থীদের জন্য সুব্যবস্থা আজও গড়ে ওঠেনি। থাকারও কোনো ব্যবস্থা নেই। পরের স্টেশন কয়েলগাঁও-এ একটি হোটেল মেলে। ১৬-২১এর সাহেবগঞ্জ-জামালপুর প্যাসেঞ্জারে ভাগলপুর ফিরে ২০-০০টায় জামালপুর-হাওড়া এক্স বা ২০-৫০-এ দানাপুর-হাওড়া প্যা বা ২৩-৫৪য় মোগলসরাই-শিয়ালদহ এক্সে কলকাতা পৌঁছান পরদিন ৫-১০/১১-৪৫/১২-৩০এ।

আবার বিক্রমশীলা থেকে ১০-১১, ১২-০০, ১৪-৩৪এর প্যাসেঞ্জারে ১½ ঘণ্টায় ৬৮ কিমি দূরের সাহেবগঞ্জ চলা যেতে পারে আর এক ইতিহাস সন্দর্শনে। অতীতে সাহেবগঞ্জের ৩ কিমি দূরে ছিক্কোরগড়ের সন্ধীর্ণ গিরিবন্থাই ছিল বাংলা-বিহারের প্রবেশদ্বার। তবে, সবই আজ অতীত—গড় বিধ্বস্ত, নামেরও বদল ঘটেছে, ছিক্কোরগড় আজ হয়েছে শাকরগড়। বয়ে চলেছে গঙ্গা—পবপারে পুর্ণিয়া জেলায়।

সাহেবগঞ্জের আগের স্টেশন ৯ কিমি দূরে করমাটোলা—নিরালা-নির্জন করমাটোলার চারপাশ ঘিরে পাহাড় আর পাহাড়। স্টেশনের শিরে টোপর হয়ে তেলিয়াগাড়ির দুর্গ। সেকালে বাংলার বিস্তারও ছিল এই দুর্গ পর্যন্ত। নানান যুদ্ধ জেতা দুর্গ আজ দীর্ণ। ৭৪ ফুট উঁচু প্রাচীরে ঘেরা—ছড়িয়ে-ছিটিয়ে স্মারক হয়ে অতীত রোমন্থন করায়। থাকারও নানান হোটেল মেলে সাহেবগঞ্জে—ধরমশালাও আছে বাটার মোড়ে।

সাহেবগঞ্জ থেকে ২-৩০, ৪-০০, ৫-০০, ৬-০০, ১২-০০, ১৪-১৫, ১৪-৪৫, ১৭-০০, ১৯-৪০, ২১-৫০, ২৩-৩০এ ট্রেন যাচ্ছে ৩৭ কিমি দূরের তিনপাহাড় জং।

ঘণ্টাখানেকের রেলপথ। পটে আঁকা ছবি তিনপাহাড়ের চারপাশ ঘিরে বাহু গড়েছে পাহাড়—পাহাড় কেটে পাথর হচ্ছে। তবুও যেন তিনপাহাড়ের অন্যতম আকর্ষণ রাজবাড়ি বা রাজার মহল তথা রাজমহলের জন্য। ট্রেন যাচ্ছে ৬-২০, ৯-৫০, ১৩-৩০, ১৭-১৫, ১৯-৩৪, ০-৩০এ তিনপাহাড় ছেড়ে আধ ঘণ্টায় ১২ কিমি দূরের রাজমহল-এ। দুইয়েরই অবস্থান তিনপাহাড়-রাজমহল রেঞ্জে। সুবেদার মানসিংহের রাজ্যপাট বসে মুসলিম অধ্যুষিত রাজমহলে। বাংলা-বিহার-ওড়িশা-অসমের রাজ্যপাটও ছিল মোগল-কালে ১৫৯২এ। ভারতের শ্রেষ্ঠ নগরীও ছিল সেকালে রাজমহল। আজ গঙ্গার গর্ভে লীন হতে বসেছে। তেমনই লীন পেতে বসেছে নানানকিছু আদার আর অবহেলায়। মানসিংহের তৈরি বিশাল শিব মন্দিরটি আজও রয়েছে। বয়ে চলেছে গঙ্গা রাজমহলের উপর দিয়ে। কালো মর্মরে ১৫৮০তে তৈরি সিংহী দালান থেকে গঙ্গার শোভা দর্শন তথা অভ্যাগতদের সমাদর জানাতেই রাজা।

রেল স্টেশন থেকে ৬ কিমি দূরে মোগলী স্থাপত্যে গড়া জুম্মা মসজিদটি আজও অনন্য। এছাড়াও নানান মন্দির, নানান মসজিদ ছড়িয়ে-ছিটিয়ে রয়েছে রাজমহলে। মিরণও শায়িত রয়েছেন মুর্শিদাবাদ থেকে এসে রাজমহলে। তবে, অতীত আজ মুক মুখে দীর্ঘ হয়ে দাঁড়িয়ে। তেমনই রাজমহলের আর এক অনুপম তার পাথরের চাল-ডাল-গম ছাড়াও নানানকিছু। স্মারকরূপে সঙ্গী করা যায় চলতে-ফিরতে পথে-প্রান্তরে। জলবায়ুও স্বাস্থ্যপ্রদ রাজমহল ও তিনপাহাড়ের। শ্রীচৈতন্যদেবও এসেছেন রাজমহলে—পদযুগলের ছাপ স্মারকরূপে অতীত রোমন্থন করায় পাহাড়ী মন্দিরে।

টাকা মেলে ৭০-৮০ টাকায়—ঘণ্টা তিনেক সাগুও করা যায় রাজমহল দর্শন। থাকারও ব্যবস্থা মেলে গঙ্গা কিনারে PWD-র বাংলোয়। তবে, ৩-০০, ৭-১০, ১১-৪২, ১৪-৫৫, ১৮-০৫, ২০-২৪এর ট্রেনে তিনপাহাড় ফিরে চড়া যেতে পারে ঘরপানের ট্রেন।



হাওড়া-কিউল সাহেবগঞ্জ লুপ লাইনে হাওড়া থেকে বোলপুর ১৪৬, রামপুরহাট ২০৭, বারহারোয়া ২৮৫, তিনপাহাড় ৩০২, সাহেবগঞ্জ ৩৩৯, বিক্রমশীলা ৩৭৭, ভাগলপুর ৪১৩, জামালপুর ৪৬৬, কিউল ৫০৯ কিমি দূরে পর পর দাঁড়িয়ে। ট্রেনও যাচ্ছে হাওড়া থেকে ৭-১৫য় ঝারভাঙ্গা প্যা, ১১-১০এ দানাপুর ফা প্যা, ২২-৩০এ জামালপুর এক্স, ২০-৫৫য় শিয়ালদহ-মোগলসরাই এক্স এপথে। সাহেবগঞ্জ-জামালপুর প্যা, শিয়ালদহ-রামপুরহাট-ভাগলপুর-গয়া প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে সাহেবগঞ্জ লুপ লাইন ধরে। রামপুরহাট-সাহেবগঞ্জ প্যা, সাহেবগঞ্জ-মালদহ টাউন প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে তিনপাহাড়/বার-হারোয়া হয়ে। ফেরেও প্রতিটা ট্রেন ডাউন হয়ে। তবে, প্যাসেঞ্জারে সময়ের আধিক্য হেতু যাতায়াতে ৩০৭। হাওড়া-জামালপুর এক্স ও ৩১৩৩ শিয়ালদহ-মোগলসরাই এক্স ট্রেন দু'টি আদরগায় হবে।

ভীমবাঁধ অরণ্য

জামালপুর থেকে জামালপুর-খড়াপুর-জামুই বাসে ৫৬

কিমি দূরে খড়াপুর পাহাড়ের কোলে সুম্যামস্তিত রহস্যময় ভীমবাঁধ অরণ্য। জিপ, ট্রেকার, ট্যাক্সি ও বাস চলে এপথে। তবে, বাস যাত্রায় জিলোরিয়া মোড়ে নেমে শেষ ১০ কিমি ট্রেক করে চলতে হয়। তেমনই ভাগলপুর থেকে ৭-৩৫এর হাওড়া-জামালপুর এক্সে ৮-১৭য় ৪২ কিমি দূরের বারিমারপুর পৌঁছে রেল স্টেশন থেকে বাস স্ট্যান্ডে গিয়ে মিডি বাসে ৪১ কিমি দূরের খড়াপুর চলা যেতে পারে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ৫-৪০, ৬-৫৪, ৯-১৫, ৯-৫০, ১১-৫৫, ১২-৪০, ১৩-২০, ১৭-৫০, ২২-২৮, ২৩-৫৭, ০-৪৬এ ভাগলপুর থেকে। খড়াপুর থেকে জামালপুরের দূরত্ব ১১, কলকাতা ৪৫৫ কিমি। আর খড়াপুর থেকে জিপে ৩০ কিমি দূরে ভীমবাঁধ ফরেস্ট বাংলো। জিলোরিয়ায় ফরেস্ট চেকপোস্ট বসেছে। বনবিহারের অনুমতি ছাড়া প্রবেশমান। পথ-ভুলেরও সম্ভাবনা পদে পদে বনপথে—গাইড সঙ্গে থাকা ভাল। বেড়াবার মরসুম নভেম্বর থেকে মার্চ। চলার পথে বন-বিহারের অনুমতির সাথে ফরেস্ট বাংলোর বুকিং করে নেওয়া যায় খড়াপুরে বনদপ্তরের অফিসে।

খড়াপুর থেকে জিপে ৩০ কিমি দূরে মহাদেব পাহাড়ের পাদদেশে মনোরম আরণ্যক পরিবেশে ২ ঘরের নতুন ভীমবাঁধ ফরেস্ট বাংলো। লাগোয়া পুরাতন বাংলো। আরও ২টি বনবাংলো হতে যাচ্ছে বনে। দুইয়েরই বুকিং: ডি এফ ও, পো-খড়াপুর, জে-মুঙ্গের, বিহার থেকে মেলে। পাশেই উষ্ণকুণ্ডে জল টগবগ করে ফুটছে। কুণ্ডের জল নালা দিয়ে গিয়ে পড়ছে অদূরের ভীম সরোবর, গান্ধী সরোবর, মানস সরোবরে। স্নানেরও সুব্যবস্থা আছে। বাংলোর শিরে মহাদেব পাহাড়ে ২ কিমি চড়ে শিব মন্দিরটিও দেখে নেওয়া যায়। তেমনই চলতে-ফিরতে নানান কুণ্ড, পাহাড়ী ঝোরা-নদী-নালা হিরণ্য পর্বত জুড়ে।

জনশ্রুতি, বনবাসকালে পাণ্ডবব্রাতা ভীমবাঁধ গড়ে জল ধরে সুজলা-সুফলা করেন এলাকাকে। নামও তাই ভীম বাঁধ। শাল-মহুয়া-শিমুল-পলাশ-কুসুম-কার্পাস-বহেড়া-আমলকী-হরীতকী-অর্জুনে ছাওয়া ৬৮১ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত অভয়ারণ্যে চিতা-নেকড়ে-ভালুক-শশুর-বাইসন-চিত্রল ছাড়াও নানান অরণ্যচরদের বাস। তেমনই কুন্ডন শোনায় মৌচুসি-তিতরি-বসন্তবৌরি-দোয়েল-পরগা-ছাতার-শামুকখোল-কাদাখোঁচা-ধনেশ ছাড়াও চেনা-অচেনা হাজারো পাখি দিন-রাত্রি জুড়ে। সঙ্গে জিপ থাকলে সকাল-বিকাল বিহার করুন—উপভোগ করুন রোমাঞ্চের সাথে অরণ্যের মনমোহিনী রূপ। তবে, সাঁঝের আগে ক্লান্ত ফেরা একাঙাই উচিত হবে। বিজলীহীন বাংলায় আহারও নিজ ব্যবস্থায় খড়াপুর থেকে সঙ্গী করতে হয়।

জিলোরিয়ার বিপরীতে ৯ কিমি যেতে লছিমপুর—দোকানপাট মেলে। তেমনই বেড়িয়ে ফেরা যায় ডাকাতদের মক্কাগরী গুম্ফারা ২০ কিমি, বসরা ২৮ কিমি বনবাংলো থেকে। যাতায়াতের পথে খড়াপুর বাজার থেকে ৪ কিমি

দূরে মনোরম পরিবেশে পাহাড়ের কোল ঘেষে বাক নেওয়া সুন্দর লেকটিও দেখে নেওয়া যায়। নৌকা বিহারও করা যেতে পারে লেকে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *ইরিগেশন বাংলায়*। অব: সার্কেল অফিসার, ইরিগেশন ডিপার্টমেন্ট, মুঙ্গের, বিহার। আবার জামালপুরের পথে লেক থেকে ৫ কিমি দূরে পঞ্চকুমারী ফলসটি দেখে বারিয়ারপুর বা রেল-শিল্প নগরী জামালপুর ফিরে ট্রেন চড়া যায় ঘরপানের।

সীতামাটি

সমস্তিপুর-দ্বারভাঙ্গা-রক্সৌল রেল পথে সীতামাটি স্টেশন। ৬৪ কিমি দূরে মজফরপুর থেকে বাসে ২ ঘণ্টায় চলা যায় সীতামাটি। বাস আসছে, পাটনা, টাটা, রাচি ছাড়াও রাজ্যের দিঘিদিগ থেকে।



থাকার জন্য শহরে ঢুকতে ৪ কিমি আগে ডুমরায় BTDC-র *H Janki Bihar*, DAB ৪০; বাস স্ট্যান্ডে *H Sitavan*, DAB ১২৫-১৭৫; বাজারে *H Bishram*, *H Rajkumar*, DAB ৮০-১৫০ আছে সীতামাটিতে। ধরমশালাও আছে সীতামাটিতে—*অর্জুন দাস*, চতুর্ভুজ, খেমকা, ভারতীয় ও বিজ্ঞানশ্রম/আর আছে *D B* অব: Administrator, District Board; PWD IB অব: EE PWD; *Bagmati RH*, অব: EE, Bagmati Project. তবুও থাকার পক্ষে *পার্টিক ভবন ও হোটেল সীতায়ন* ভালই।

সীতামাটি বাস স্ট্যান্ডের ২ কিমি দূরে জানকী মন্দির। মন্দিরে দেবতা—রাম-লক্ষ্মণ-সীতা, পাশেই কুণ্ড। জনকপুরধাম (নেপাল) থেকে বৈদ্যনাথধাম পর্যন্ত ছিল রাজর্ষি জনকের রাজ্য সেকালে। হলকর্ণধর কালে রাজর্ষির সীতাদেবীকে প্রাপ্তি সীতামাটির কুণ্ডস্থলে। লালনও করেন সীতাকে এই সীতামাটিতে রাজর্ষি। সেই স্মৃতিতে মন্দির। রামনবমীতে ৭ দিন ব্যাপী মেলা বসে মন্দিরকে ঘিরে।

ঘণ্টাখানেকে মন্দির দেখে বাসে ভারত সীমান্তের বিঠা মোড় পৌঁছে বিদেশ ভ্রমণও করে নিতে পারেন নেপালের জনকপুরে। পুণ্য হিন্দুতীর্থ—মিথিলার রাজধানী জনকপুর-ধামে আছে রাম-সীতার বিবাহ বাসর, লাগোয়া প্যাগোডা-ধর্মী মন্দির—১৮৯৫এর স্বপ্নাদেশ মতো মধ্য প্রদেশের টিকমগড়ের রানীর তৈরি শ্বেতমর্মরে সীতাজনকী মন্দির ছাড়াও মন্দির রয়েছে নানান। সীতার স্বয়ম্বর সভায় শ্রীরাম ধনুকে গুণ চড়াবার কালে ধনুক ভেঙে এক টুকরো গিয়ে পড়ে ধনুধামে—আধ ঘণ্টার বাসে ধনুবাণ গিয়ে দেখে নেওয়া যায় হরধনুর মধ্যভাগ। আবার রক্সৌলও চলা যেতে পারে ট্রেন বা বাসে। বাস যাচ্ছে নেপালের রাজধানী কাঠমাণ্ডু ও পোখরায়ও জনকপুর থেকে। RNAC-র বিমানও যাচ্ছে জনকপুর থেকে কাঠমাণ্ডু। আবার, জনকপুর থেকে ঘণ্টা দেড়েক ভারতের জয়নগরও চলা যেতে পারে নেপালি রেল। জয়নগর থেকে ২২ কিমি দূরে রাজনগর। রাজনগরের রাজপ্রাসাদটি দর্শনীয়। প্রস্তরের চার হস্তীপুষ্টে এই প্রাসাদপূরী দাঁড়িয়ে। সরকার অধিগ্রহণ করে কলেজ

বসিয়েছে। আর আছে দুর্গা মন্দির। শ্বেত মর্মরে তৈরি মন্দিরে দেবী কালী—খুবই সুন্দর।

রাজনগর থেকে ট্রেনে বা বাসে ১০ কিমি গিয়ে আর এক যাদুপুরী মধুবনী দেখে নেওয়া যেতে পারে। রেল স্টেশন থেকে শুরু করে পথে-ঘাটে, ঘরে-বাইরে মৈথিলী সংস্কৃতির ঐতিহ্যবাহী চিত্রকলা—সামাজিক, ধর্মীয় ও মাস্টলিক অনুরূপাদির চিত্র আজও একে চলেছেন বংশপরম্পরায় মধুবনীর মহিলা শিল্পীরা। আর রয়েছে কালী ও কপিলেশ্বর মন্দির মধুবনীতে। অত্যাংসাহীরা মধুবনী থেকে রিকশায় ৮ কিমি দূরে সৌরাটে মোহিনীদের স্বয়ম্বর সভায় দিনক্ষণ (জুন-জুলাইএ পক্ষকালব্যাপী) জেনে হাজিরও হয়ে যেতে পারেন। মিথিলাপুরীর মৈথিলী ব্রাহ্মণরা আসেন ছেলে ও মেয়ের শাদি নিখরিশে। বসে *গাছি* অর্থাৎ *কুঞ্জবন* বা বিয়ের বরের স্বয়ম্বর সভা। পাত্র খুঁজে পেতে *পঞ্জিকাকারের* সিদ্ধান্ত মেনে দুতিয়ালী শুরু হয় ঘটকের। চূড়ান্ত হয় পাত্র-পাত্রী বরপণের নিরিখে। ট্রেন বা বাসে দ্বারভাঙ্গা/মজফরপুর ফিরে ট্রেন ধরেন ঘর পানের বা নেপাল চলুন জয়নগর থেকেই।

আবার মৈথিলী সংস্কৃতি ও হস্তজাত শিল্পে সমৃদ্ধ দ্বারভাঙ্গা থেকে ৯২ কিমি দূরে রামায়ণের লব ও কুশের স্মৃতিমণ্ডিত বাম্মীকিনগরও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে। মন্দির হয়েছে লব-কুশের। বয়ে চলেছে পুরাণখ্যাত ৩ নদী—তমসা, গন্ধক ও নারায়ণী। অদূরেই হাতছানি দেয় হিমালয়। এই সুন্দর নৈসর্গিক শোভায় বসে রামায়ণ লেখেন মুনি বাম্মীকি। আর আছে অতীতখ্যাত জটাসন্ধর শিব মন্দির ও মকবারা। একালের গন্ধক প্রোজেক্টটিও রূপ পেয়েছে বাম্মীকিনগরে।

থাকার জন্য BTDC-র *H Basuki Vihar*, DAB ১৫০ ও গন্ধক প্রোজেক্টের *IB* আছে বাম্মীকিনগরে। আর মধুবনীতে আছে—*হোটেল সুমন্ত*, *হোটেল দীপক*, *হোটেল এলাচি*, *হোটেল আরাদনা* ছাড়াও নানান।

দামোদর ভ্যালি কর্পোরেশন—(ডি ভি সি)

বহুরের পর বছর দামোদর তার ভয়াল মূর্তি নিয়ে ঝাঁপিয়ে পড়েছে, ধ্বংস করেছে জনপদ, বিনষ্ট হয়েছে শস্য-সম্পদ। তাই বিংশ শতাব্দীর বিজ্ঞান এগিয়ে এল ভাগ্যহত মানুষের কাছে আশীর্বাদ হয়ে। ১৯৪৩এ বরেন্দ্র বৈজ্ঞানিক ড. মেঘনাদ সাহার সুপারিশে বিশেষজ্ঞ এলেন W L Vourdwinn of Tennessee Valley Authority, USA থেকে। বিশেষজ্ঞের রায়ে টেনেসী ভ্যালির খাঁচে স্বাধীনোত্তর ভারতে ১৯৪৮-এর ৭ জুলাই গঠিত হয় দামোদর ভ্যালি কর্পোরেশন বা DVC. পরিকল্পিতভাবে সে আট্টেপুষ্টে বেঁধে ফেলল ৪৯২ কিমি দীর্ঘ দামাল নদ দামোদরকে। কোথাও-বা বাঁধ দিয়ে জলাধার হল—সেই জল গেল কৃষিক্ষেত্রে। আবার কোথাও বা জলবিদ্যুৎ তৈরি করে কলকারখানার

যন্ত্রচালাল। এই পরিকল্পনায় চারটি বাঁধ পড়েছে—তিলাইয়া ও মাইথনে বরাকর নদে, কোনারে কোনার ও পাঞ্চেতে মূল দামোদর নদে। এছাড়া তাপবিদ্যুৎ তৈরি হচ্ছে বোকারো, চম্পনুরা, দুর্গাপুর ও মেজিয়ায়। আর জলবিদ্যুৎ হচ্ছে মাইথন, তিলাইয়া ও পাঞ্চেতে।

মাইথন: পশ্চিম বাংলা ও বিহার সীমান্তে ১৫৭১২ ফুট লম্বা আর ১৬৫ ফুট উঁচু কংক্রিটের বাঁধ গড়ে ৬৬ বর্গকিমি ব্যাপ্ত জলাধার হয়েছে বরাকর নদে। উদ্বোধন করেন ১৯৫৭য় তদানীন্তন প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত জওহরলাল নেহরু। আর বাঁধের নিচুতে হয়েছে ৬০MW জলবিদ্যুৎ তৈরির প্রকল্প অর্থাৎ হাইডেল পাওয়ার স্টেশন। পাছাড়ের অন্তরে ১৩৫ ফুট গভীরে এই প্রকল্প। এছাড়া আছে বাঁধের নিচুতে ডিম্যার পার্ক আর শীতের দিনে—উড়ে এসে জুড়ে বসা পাখিদের বার্ড স্যান্ডচুয়ারি মাইথনে। তবে প্রকল্প দেখতে অনুমতি লাগে APRO-র। গাইডও মেলে এদের কাছে। আর আছে টিলা—লেকের জলে মাথা ডুবে দাঁড়িয়ে। DVC-র মোটের লক্ষ্য হচ্ছে ১০ হারে কমপক্ষে ১৪ যাত্রী নিয়ে ১৫ মিনিটের লেক বিহারে। প্রাইভেট নৌকাও মেলে ৫০ টাকায় ১ ঘণ্টার লেক বিহারে। তারই ফাঁকে পায়ে পায়ে ব্যারেন্ড ডিঙিয়ে বেড়িয়ে নিন বিহার। জলাধারটিও বিহার রাজ্যে।

আর আছে *মন্ড্রুমে রা শিবরত্নমে পা ট্যুরিস্ট লজ* থেকে ১ কিমি বরাকরমুখী বরাকর-দেদুয়া ভায়া মাইথন বাসপথে—হ্যাংলা পাহাড়ে পাঁচশ' বছরের প্রাচীন কল্যাণেশ্বরী মাতার মন্দির। জনশ্রুতি কুবাণদের তাড়া খেয়ে ৩ শতকে হরিগুপ্ত পালিয়ে এসে রাজ্য গড়েন হ্যাংলা পাহাড়ে। মন্দিরও গড়েন তিনি। তবে, বর্তমান মন্দিরটি পঞ্চাশটির রাজার তৈরি। অতীতে নরবলিরও প্রথা ছিল দেবীর থানে। কালে কালে এই মায়ের থান থেকেই সেকালের সালনপুর হয়েছে মাইথন। কৃত্রিম গুহামন্দির দেবীর। গুহার দ্বার রুদ্ধ। গুহামুখে অষ্টধাতুর মূর্তি হয়েছে দেবীর। আর অন্তরে সোনার তৈরি দেবীর মূল মূর্তি। মন্দিরের উত্তরে শ্রোতস্থিতী চালনার পাড়ে দেবী কল্যাণেশ্বরী (শ্যামা) যেখানে শাঁখা পরেন স্মারক রূপে মন্দির হয়েছে। পায়ের ছাপও আছে পাঁচাণ বেদীতে দেবীর। আর রয়েছে চতুর্দশ শিবমন্দির মন্দির-চত্বরে। শীতলা মায়ের থানে মনস্কামনা পূরণে ঢিলও বাঁধেন ভক্তের দল। শ্রীরামকৃষ্ণ মন্দিরও হয়েছে নতুন করে কল্যাণেশ্বরীর প্রবেশ পথে। জমজমাট বাজারও বসেছে বাস স্ট্যান্ডকে জুড়ে।

খাকার জন্য *H Samrat*, ধরমশালা ও *PHE Guest House* আছে, অব্: EE, Public Health Engineering, Asansol.

আর মাইথনে আছে পশ্চিমবাংলা প্রান্তে টিলার টুও পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পর্যটনের ১৮ বেডের *Tourist Lodge*, SAB ২৫ DAB ৩৫ সুইট ৫০ চার বেডের ডমিতি ১০; অব্: ট্যুরিস্ট যুয়ে, বিবালী বাগ, কলকাতা-১। মূলপথে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের হাইওয়ে স্ট্রিক্সের *Youth Hostel*, অব্: 32/1 BBD Bag, Cal-1; *FRH*, অব্: DFO, Burdwan. আর লেকের জলে বীপাকারে

DVC-র অতীতের *Janata* হয়েছে *Majumdar Niwas*, DAB ৪০ সুইট: কল্যাণী ৭৫ রাজগীর ১০০ মহারাজা ১৫০, অব্: Maithon Dam Division, Maithon, Burdwan বা ৫টি ঘরের বুকিং: CPRO, DVC Towers, CIT Housing Complex, VIP Rd, Cal-54, ৩ 3215402 (সূচনা বিভাগ) আর বিহার প্রান্তের টাউনশিপে আছে DVC-র *IB—ট্যুরিস্ট উইং*-এর বুকিং: মজুমদার নিবাসের মতো।

পাঁচ রেল সংযোগকারী স্টেশন—আসানসোল ২৪, বরাকর ৮, কুমারভূবি ১১, চিত্তরঞ্জন ২৬, খানবাদ ৫০ কিমি থেকে বাস, মিনিবাস, ট্রেকার সংযোগ গড়েছে মাইথনের। এমনকি দেওঘরেরও সরাসরি বাস মেলে মাইথন থেকে। আর দেদুয়ার মোড় থেকে বাস যাচ্ছে পশ্চিমবাংলা ও বিহারের দিকে দিকে মাইথন থেকে। তবে নিকটতম রেল স্টেশন পশ্চিমবঙ্গের বরাকর থেকে ৪০-৪৫ টাকায় অটো বা স্টেশনের অদূরে বেগুনিয়া মোড় বাস স্ট্যান্ড থেকে বাসে চলা যেতে পারে। ঠিক তেমনি বিহারের কুমারভূবি থেকেও শোয়ারে ট্রেকার যাচ্ছে মুষ্ণুখ মাইথনে। তবুও যেন আসানসোল রেল স্টেশন থেকে মিনিবাসে মাইথন যাওয়ায় সুবিধা। উচিতও হবে কলকাতা যাত্রীদের ৬-১৫-এর ব্ল্যাক ডায়মন্ডে ১০-০৬এ ২০০ কিমি দূরের আসানসোল পৌঁছে মিনিবাসে ১ ঘণ্টার মাইথন চলা। ব্ল্যাক ডায়মন্ড ২১৮কিমি দূরের বরাকর যাচ্ছে ১০-০৭, ২২১ কিমি দূরের কুমারভূবি ১০-৪৪এ। হাওড়া-বোকারো সিলি সিটি শতাব্দী এক্স যাচ্ছে ৬-০৫এ হাওড়া ছেড়ে ৮-৩১এ আসানসোল ৯-১১য় খানবাদ পৌঁছে বোকারো যাচ্ছে ১১-১৫য়। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে হাওড়া ও শিয়ালদহ থেকে আসানসোল/বরাকর/কুমারভূবি/চিত্তরঞ্জন হয়ে নানান।

পাঞ্চেৎ বাঁধ: ১৯৫৬ খ্রিস্টাব্দে দামোদর নদের উপর রূপ পেয়েছে ১৩৪ ফুট উঁচু, ২২১৫৫ ফুট দীর্ঘ বাঁধ পাঞ্চেৎ। মাইথনের মতো পর্যটক বিনোদনে নৈচিত্র্যের অভাব ঘটলেও ডি ভি সি-র প্রকল্পগুলির মধ্যে পাঞ্চেৎ বৃহত্তম। ১৯ কোটি টাকা ব্যয়ে তৈরি। ১২১৪০০০ একর ফুট জল ধরে রাখার ক্ষমতা এর জলাধারের। 40MW জলবিদ্যুৎ তৈরি হচ্ছে এর হাইডেল পাওয়ার স্টেশনে। নিকটতম রেল স্টেশন—কুমারভূবি ১০, বরাকর ১২, আসানসোল ৩১, খানবাদ ৫০ কিমি থেকে নিয়মিত বাস ও ট্রেকার আসছে পাঞ্চেতে। বাস আসছে ১৬ কিমি দূরের মাইথন থেকেও। কয়লাকূটির উপর দিয়ে পথ—বৈচিত্র্যও মেলে সারাপথে। তবে, পথের ধূলা সে যেন কয়লার গুড়ো। বাতাসও যেন কয়লার রঙে কালা। মাইথন থেকে সরাসরি বাসের অমিল হলে কলেজ মোড় তথা বাইপাসে গিয়ে বাস ধরা যেতে পারে পাঞ্চেতের বা কল্যাণেশ্বরী দেবী দর্শনাতে বাস/ট্রেকার/অটোয় বরাকর অর্থাৎ বেগুনিয়া মোড় পৌঁছে পায়ে বারিকশাম নদী পেরিয়ে বিহার রাজ্যের চিরকুণ্ডা গিয়ে শোয়ারে অটো বা বাসে চলা যেতে পারে পাঞ্চেৎ বাঁধে। মুষ্ণুখ যানও মেলে এপথে। সাধারণের কাছে দ্বার রুদ্ধ হলেও DVC-র *IB* আছে পাঞ্চেতে।

তিলাইয়া বাঁধ: জাতীয় সড়ক ২, ৩১ ও ৩৩ সংযোগের বারহী থেকে ১৮, কোডারমা ১৬, হাজারীবাগ শহর থেকে ৫৩ কিমি দূরে বরাকর নদীতে DVC-র প্রথম প্রকল্প

তিলিহায়া বাঁধ। জানুয়ারি ১৯৫০এ শুরু হয়ে ফেব্রুয়ারি ১৯৫৩এ তৈরি হয়েছে ১৪ গেটে ১২০০ ফুট দীর্ঘ ৯৯ ফুট উঁচু এই বাঁধ। ৩২০০০০ একর ফুট জল ধরে রাখার ক্ষমতা এর জলাধার অর্থাৎ লেকের। ৪টি পাওয়ার প্ল্যান্টে জলবিদ্যুৎ তৈরি হচ্ছে তিলিহায়ায়। আর হয়েছে জলাধারে স্বগম্বীপ, পাহাড়ী অধিত্যকায় বাগিচা তিলিহায়ায়। বোটিংও করা যেতে পারে লেকের জলে। ঘণ্টা খানেক জলবিহারের সাথে Whispering Islandটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। লেকের জলে বৃহত্তম দ্বীপ ছইসপারিং—নতুন করে নাম হয়েছে চাচা নেহরু দ্বীপ। অরণ্যময় দ্বীপে কুমির প্রকল্প গড়ে উঠেছে। চড়ুইভাতিরও স্বর্গ চাচা নেহরু অইল্যান্ড। বোটো যাতায়াত। বাংলালাগোয়া ডিয়ার পার্কটিও দেখে নেওয়া যায় চলতে-ফিরতে। আর হয়েছে সৈনিক স্কুল ডাম কলোনিতে।



কলকাতা বা মইথন থেকে কোডারমা হয়ে চলায় সুবিধা। ১৩৪ দিন ৯-১৫য় হাওড়া ছেড়ে ৬ ঘণ্টায় ৩৮২ কিমি দূরের কোডারমা যাচ্ছে ২৩৪। পূর্বা এক্স। সিটি রিজার্ভেশন মেলে। বিফল সাধারণ বগিতে ন্যূনতম দূরত্ব ৪৮০ কিমির টিকিট কেটে চলা যেতে পারে কোডারমায়। আর যাচ্ছে ঘণ্টা সাতকে—১১-৪৫এ শিয়ালদহ-জম্মু তাওয়াই, ১৩৬ দিন ১৫-১৫য় শিপ্রা এক্স, ১২৪ ৫ দিন ১৫-১৫য় চমল এক্স, ২৩-৩০এ হাওড়া-যোধপুর এক্স, ১৯-১৫য় কালকা মেল, ২০-০০টায় ৩০০৩ মুম্বাই মেল ভায়া এলাহাবাদ, ২০-১৫য় দুন এক্স হাওড়া ছেড়ে আসানসোল/ বরাকর/ ধানবাদ/ গোমো/ পরেশনাথ/ হাজারীবাগ রোড তথা গ্র্যান্ড কর্ড লাইনে কোডারমা হয়ে। আবার ৬-১৫-এর ব্র্যাক ডায়মন্ড এক্স হাওড়া ছেড়ে ১১-৩০এ ধানবাদ পৌঁছে সংযোগকারী একমাত্র মিনিবাসে চলা যেতে পারে তিলিহায়ায়। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে পূর্বী-দিল্লী নীলাচল এক্স, পূর্বী-দিল্লী পুরুষোত্তম এক্স, পূর্বী-নিউ দিল্লী এক্স, হাতিয়া-পাটনা এক্স, গঙ্গা-দামোদর এক্স, গঙ্গা-শতদ্রু এক্স, আসানসোল-বারাগম্ভী প্যাসেঞ্জার, হাজারীবাগ-গম্ভী প্যাসেঞ্জার কোডারমা হয়ে।

কোডারমা রেল স্টেশনের অদূরে বাস স্ট্যান্ড—ট্রেকার যাচ্ছে দিনভর (৬—১৮-০০), ৫ টাকা হারে শেষায়ে। তিলিহায়া বাস স্ট্যান্ডের শিরে টিলার টঙে লেকের পাড়ের মনোহর পরিবেশে DVC-র Tourist Bungalow; ৮ ঘরের Gent Bhagat House, DAB ৮০ A/C D ১২০, আহাওরও মেলে অগ্রিম অর্ডারে। সিঁড়ি উঠেছে খাড়া, আর গাড়ি যাচ্ছে ২ কিমি দীর্ঘ পাহাড় পেঁচানো পথে। ১ মাস আগে থেকে ২টি ঘরের বুকিং মেলে CPRO, DVCTowers, CIT Housing Complex, VIP Rd, Cal-54, © 3215402 থেকে। আর আছে স্পট বুকিং প্রথায় নিচুতে সাধারণ সাজে ৬ ঘরের Tourist Bungalow No 2-এ ৫ হারে প্রতিজনা; বুকিং: Tilaiya Power House, © 2307. আর রেল স্টেশনের বিপরীতে H Sheetal Chhaya, Sundar H আছে কোডারমায়।

তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় যাতায়াতের পথে ধান-বাদের বাসে ৩৯ কিমি দূরে NH 2-এ বারকাঠায় উচ্চ জলের প্রবণ সুর্যকুণ্ড। পাথরে ঘেরা মূল কুণ্ড থেকে অবিরাম বাষ্প উঠছে। জলে সালফার আছে। জলের তাপ ৮৮° সেন্টিগ্রেড। আর আছে সীতাকুণ্ড, লক্ষ্মীকুণ্ড, ভরতকুণ্ড, ব্রহ্মাকুণ্ড। লাগোয়া জীর্ণ বিষ্ণু মন্দির। অদূরে নবতম সুর্যমন্দির।

কুণ্ডের স্বল্প দূরে জেলা বোর্ডের ৩ ঘরের বাংলা আছে। আবার চলা যেতে পারে হাজারীবাগ ৫৩, পরেশনাথ পাহাড় ১১০, তোপচাটি ১০০, বোকারো ১১৭, কানার ৯৩, ধানবাদ ১৫০, মইথন ১৭৭, রাঁচি ১৪৫, পাটনা ১৮৪ কিমি তিলিহায়া থেকে। ৭ কিমি দূরের উরমা হয়েও বাস যাচ্ছে দিকে দিকে। তবুও যেন উচিত হবে পরেশনাথ ও তোপচাটি বেড়িয়ে গোমো থেকে শাখা লাইনে ১৭ কিমি দূরের চম্পুরায় গিয়ে বোকারো স্টিল সিটি বা ৪৩ কিমি দূরের বোকারো থার্মাল পৌঁছে বোকারো ও কানার বেড়িয়ে রাতের আপ শক্তিপুঞ্জ বেতলা বা ডাউন শক্তিপুঞ্জ কলকাতায় ফেরা। অত্যাৎসাহীরা কোডারমা রেল স্টেশন থেকে ১২ কিমি দূরে (Jhumri-Tilaiya) চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ তথা Tourist Complex Worama বেড়িয়ে নিতে পারেন। রূপসী তিলিহায়ার রূপও সুন্দর দৃশ্যমান, আর আছে লেক—বোটিং-এর ব্যবস্থা মেলে; কুমির প্রকল্পও হয়েছে ওড়ামা-য়।

বোকারো থার্মাল পাওয়ার: হাজারীবাগ শহর থেকে ৭৩ কিমি দূরে ১৯৫৩ খ্রিস্টাব্দে বোকারোতে গড়ে ওঠে এই তাপবিদ্যুৎ প্রকল্প। এখানকার প্রকৃতিও সুন্দর। কলকাতা থেকে হাওড়া-দিল্লী রুটের গোমো স্টেশনে পৌঁছে শাখা লাইনের রেলে বা শক্তিপুঞ্জ এক্সে ২১-০৬এ সরাসরি বোকারো থার্মাল স্টেশনে যাওয়া চলে। হাওড়া থেকে দূরত্ব ৩৩১ কিমি। গোমো-চোপানা প্যা. গোমো-বারওয়াদি প্যা. গোমো-বরকাকানা প্যা. বোকাকানা থার্মাল হয়ে যাচ্ছে।



থাকার জন্য DVC-র GH, IB ও Director's Bungalow আছে; অব: Chief Engineer, P O-Bokaro Thermal, Hazaribagh. আর আছে ১১ কিমি দূরে Kathara-য় প্রাইভেট মালিকানা Tourist I ও Blue Bird H বোকারোয়।



তেমনই চলা যায় বোকারো থার্মাল পাওয়ার থেকে ৯০ কিমি দূরে গোমো-রাঁচি পথে SAIL-এর স্টিল প্ল্যান্ট (৪ মিলিয়ন টন) বোকারোতে। স্টিল প্ল্যান্টের সহজতম পথ গিয়েছে ধানবাদ থেকে। ধানবাদ থেকে দূরত্ব ৫০, গোমো ৫১, কলকাতা ৩০৬ কিমি।



নিয়মিত বাসও যাচ্ছে এপথে। আর প্রতিদিন দুপুর ১৪-৩০এ হাওড়া ছেড়ে হাওড়া-জব্বলপুর 3327 শক্তিপুঞ্জ এক্সপ্রেস ধানবাদ ১৯-০০, কাতরাসগড় ১৯-৪৪এ গিয়ে ২১ কিমি দূরের চম্পুরায় ২০-২৭এ পৌঁছে বোকারো থার্মাল/বরকাকানা/ম্যাকলাসকিগঞ্জ/ ডালটনগঞ্জ/ চোপান হয়ে জব্বলপুর যাচ্ছে। শক্তিপুঞ্জ হাওড়া ফেরে রাত ২১-৪৩এ চম্পুরা থেকে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে পূর্বী-দিল্লী নীলাচল এক্স, হাওড়া-ধানবাদ-বোকারো স্টিল সিটি শতাব্দী এক্স, পাটনা-হাতিয়া এক্স, গোরক্ষপুর-হাতিয়া মৌঘ এক্স, ধানবাদ-হাতিয়া প্যা, বোকারো-চেন্নাই-আলেক্সী, বোকারো স্টিল সিটি হয়ে।



থাকার জন্য Bokaro Steel City-তে আছে *H Blue Diamond, Western Avenue-DAB ৩০০, © 40277, A1R7B0, SAB ৪৫৫, SAB ৬৫০, A/C S ৬৫০-১০০০, D ৮৫০-১৫০০, সুইচ ১২৫০-১৭৫০; *H

Limcas, Sector I Market, AIR12B0, SAB ৩০০ DAB ৪৭৫ A/C S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; Gujarat Lodging & Boarding, Chas, R5B3, SCB ৪০ SAB ৬০-৮৫ DCB ৮০ DAB ১০০-১৭৫; H Hindusthan, Main Rd, Bokaro Steel City, PO-Chas, Dist-Dhanbad, S ১৫০ D ২৫০ A/C S ৪০০ D ৬০০; হাড়াও নানান হোটেল।

কোনার: বোকারো থামাল থেকে ৩০ কিমি দূরে অক্টোবর ১৯৫৫য় কোনার নদীতে বাঁধ পড়েছে কোনারে। দৈর্ঘ্য ১২০৮০ ফুট (১১১৭০ ফুট মাটি আর ৯১০ ফুট কংক্রিট)। মনোহর প্রকৃতির মাঝে ১৭ বর্গ কিমি জুড়ে জলাধারে ২৭০০০০ একর ফুট জল ধরে রাখার ক্ষমতা এর। জল যাচ্ছে কৃষিতে।



তিলাইয়া থেকে গোমো পৌঁছে শাখা লাইনের গাড়িতে বোকারো থামাল বা গুমিয়া হয়ে কোনারে চলা যেতে পারে, দূরত্ব তিলাইয়া থেকে ১১৭ কিমি। কলকাতা থেকেও সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে ৩৭৩ কিমি দূরের কোনারে। ৩৯ কিমি দূরের হাজারীবাগ রোড, ৫১ কিমি দূরের হাজারীবাগ শহর থেকেও বাস ও ট্রেকার মেলে। থাকারও ব্যবস্থা চার ঘরের DVC-র Rest House-এ, বুকিং: EE. Konar Dam, DVC, Konar. আর লেকের ভালে টিলার টাঙে FRHT থাকার পক্ষে রমণীয়। বুকিং: DFO, Hazaribagh. তবে, দুই-ই মূলত অফিসিয়ালদের জন্য সংরক্ষিত। তাই, উচিত হবে বোকারো থামালে অবস্থান করে বাস বা ট্রেকার কোনার বেড়িয়ে নেওয়া।

দুর্গাপুর: দুর্গাপুর রেল স্টেশন থেকে ৬ আর কলকাতা থেকে ১৬১ কিমি দূরে ভারতের রূঢ় দুর্গাপুরে ১৯৫৫য় বাঁধ পড়ে দামোদর নদে। ৬৯২ ফুট লম্বা বাঁধে ২৪৮০ কিমি খালপথে জল যাচ্ছে চাষে। আর হচ্ছে তাপবিদ্যুৎ DVC-র দুর্গাপুর প্রকল্পে। চড়ুইভাতিরও মনোরম পরিবেশ।

মেজিয়া: DVC-র নবতম প্রয়াস মেজিয়া তাপবিদ্যুৎ প্রকল্প। দুর্গাপুর ব্যারেজ থেকে ১৫ কিমি, কলকাতা থেকে ২০০ কিমি পশ্চিমে পশ্চিমবঙ্গের বাঁকুড়া জেলায় বাঁধ পড়েছে দামাল নদ দামোদরে। তৈরি হচ্ছে ৩x২১০ MW তাপবিদ্যুৎ মেজিয়ায়।

চন্দ্রপুরা: DVC-র আর এক প্রকল্প ধানবাদ থেকে ৫১, মাইথন থেকে ১০০, বোকারোর ১০৮ কিমি দূরে চন্দ্রপুরায় রূপ পেয়েছে। ১৬০০ MW ক্ষমতাসম্পন্ন চন্দ্রপুরা তাপবিদ্যুৎ প্রকল্প বায়ু ও জলদূষণ রোধেও উদ্বেগ।

সিক্তি সার কারখানা

ভারত তথা এশিয়ার বৃহত্তম সার কারখানাটি হয়েছে ধানবাদ থেকে ২৭ কিমি দূরে সিক্তিতে। ট্রেন যাচ্ছে ৬-৪০, ১০-০৫, ১৩-০৫, ১৮-১০এ ধানবাদ থেকে সিক্তি। ১ ঘণ্টার পথ। ধানবাদ ফেরে সিক্তি থেকে ৮-৪০, ১১-২৫, ১৪-৪৫, ২০-০৫এ। বাস, ট্যাক্সিও সংযোগ গড়েছে ধানবাদ থেকে সিক্তি। মাইথন থেকে ৭৭ কিমি দূরে সিক্তি। অতি আধুনিক পদ্ধতিতে গড়ে উঠেছে সিক্তি সার কারখানা। ১৯৫১ থেকে

অ্যামোনিয়াম সালফেট সার তৈরি হচ্ছে সিক্তিতে। বিশেষ অনুমতি নিয়ে কারখানা দেখা যেতে পারে। সিক্তির লেকের পাড়ও কম আকর্ষণীয় নয়। সান্ধ্য ভ্রমণে রমণীয়।

হাজারীবাগ

মাত্র ৬১৫ মি উঁচুতে ছোটনাগপুরের পাহাড়ী অধিত্য-কায় ব্রিটিশের গড়া পটে আঁকা শহর হাজার বাগ অর্থাৎ হাজারীবাগ। প্রহরী হয়ে চারপাশ ঘিরে ধূসর পাহাড়। স্বাস্থ্যকর জায়গা বলেও এর প্রশংসা। ভিড়ও তাই বেশি পর্যটক থেকে স্বাস্থ্যস্বার্থী। তবে, হাজারীবাগ জাতীয় উদ্যানের পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য। আর হাজারীবাগের নবতম আবিষ্কার শহর থেকে ৪০ কিমি দূরে বিশ্বের প্রাচীনতম গুহাচিত্র ইসকো।

বনবাসে চলুন ১৪ দিনের

সকাল ৬-১৫এর ব্যাক ডায়মন্ডে হাওড়া ছেড়ে ধানবাদ পৌঁছান ১১-৩০এ। রেল স্টেশন থেকেই বাস যাচ্ছে—ঘণ্টা তিনেক হাজারীবাগ পৌঁছে যান। অত্যাশ্চর্য্য তাপচাচি লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন ধানবাদ থেকেই। ২য় সকালে হাজারীবাগ থেকে ৬-০০টায় সরকারি বাসে সরাসরি রাজরাঙ্গা। ঘণ্টা তিনেকের বিরাম মেলে মন্দির দর্শনের। ফেরে ১২-০০টায় রাজরাঙ্গা থেকে হাজারীবাগ। বা রামগড় বদল করেও যাওয়া চলে রাজরাঙ্গা। মুহূর্ত্ত বাস ও ট্রেকার চলে হাজারীবাগ-রামগড় ও রামগড়-রাজরাঙ্গার মাঝে। ৩য় দিন শহর বেড়িয়ে সন্ধ্যায় চলুন জাতীয় উদ্যান দর্শনে। ৪র্থ দিন ৫-৩০-এর একমাত্র বাসে ঘণ্টা ছয়কে ডালটনগঞ্জ পৌঁছে—ডালটনগঞ্জ থেকে ৬-০০, ৮-০০, ১২-০০ ও ১৪-৩০-এর বাসে বেতলা অর্থাৎ পালামৌ জাতীয় উদ্যানের তোরণঘাটে। সময় নেয় ৪৫ মিনিট। প্রত্যুষে বা গোপুলিতে জানানোর দেখুন পালামৌ জাতীয় উদ্যানে। ৫ম দিন বেতলায় কাটিয়ে ৬ষ্ঠ দিন বেতলা থেকেই বাসে চলুন ৭২ কিমি দূরের মহষাডার। সরাসরি বাসের অমিলে মহষাডার থেকে নফুন করে বাস চেপে ৪৩ কিমি দূরের নেতারহাট পৌঁছে যান ৭ম দিনে। সূর্যাস্ত দেখুন ঐ সন্ধ্যায়। ৮ম দিন সূর্যোদয় দেখে পায় পায় বেড়িয়ে কাটিয়ে বিশ্রাম নেতারহাটে। ৯ম দিন রাত্টি চলুন নেতারহাট থেকে বাসেই। ১০ম দিন শহর বেড়িয়ে নিন। ১১শ দিন প্যাকেজ ট্যুরে ফলস অর্থাৎ দশম/হুড়া/জোনা বেড়িয়ে আসুন। ১২শ দিন সকাল ৭-টায় ডিল্লান্ন বাস বা সরকারি বাসে টাটা পৌঁছান ঘণ্টা তিনেক। টেম্পোয় ডিম্না লেক ও জুবিলী পার্ক বেড়িয়ে ১৪-৫০এর টাটা-খড়াপুর লোকালে ১৭-৪০এ খড়াপুর পৌঁছে খড়াপুর থেকে ১৮-৩০এর মেদিনীপুর-হাওড়া লোকালে ২১-০৫এ কলকাতা। বা ১৬-৪০এর স্বর্নলপুর-হাওড়া ইম্পাত এন্ডে ২১-৩৫এ সরাসরি কলকাতায়। শতাব্দী আসছে ১৭-০৫এ টাটা ছেড়ে ২১-০০টায় কলকাতায়। তবে ১২শ দিনের লোকালে বা বাসে ৬০কিমি দূরের ঘাটশিলায় যাত্রায় বিরতি টেনে আরও একটা দিন কাটিয়ে যেতে পারেন। ১৪শ দিন ৬-০০টায় টাটা হাড়া সিল এন্ডে ৬-৩৬এ ঘাটশিলায় চেপে কলকাতায় চলুন ১০-২০এ।

শহরে রয়েছে ক্যানারী পাহাড় বা অবজারভেটরি হিলস। রিকশায় ৫ কিমি গিয়ে ৫০০ সিডি উঠে শহরের দৃশ্য, সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত দেখে নেওয়া যায় পাহাড় থেকে। ফরেস্ট বাংলাও আছে ক্যানারী পাহাড়ে। চলার পথের দৃশ্যও সুন্দর। পথেই পড়ে হাজারীবাগের লেক অর্থাৎ ঝিল। সাব-সকালে পায়ে পায়ে বেড়াবার মনোরম পরিবেশ। গ্রীষ্মের লু এড়িয়ে চলাও যেতে পারে বছরভর হাজারীবাগে।

হাজারীবাগ শহর থেকে NH-33 ধরে বারহীমুখী ১৭ কিমি যেতে পোখারিয়া অর্থাৎ জাতীয় উদ্যানের প্রবেশ তোরণ। উদ্যান অন্দরে ১০ কিমি গিয়ে রেস্ট হাউস। নিজস্ব গাড়ি ছাড়া পায়ে চলায় বিপদ। তবে ৩ কিমি আগেই শালপর্ণী নেমেও চলা যেতে পারে জাতীয় উদ্যানে। শালপর্ণী থেকে ডানহাতি যেতে ৪ ঘরের ফরেস্ট রেস্ট হাউস, DAB ৫৩। আহার্য মেলে আগ্রিম অর্ডারে ক্যান্টিনে। আর ১৪ কিমি দূরে রাজদেবওয়ারায় Tourist RH-এ ৪ বেডের কটেজখর্মী ঘর ৮৪ চব্বিশ (৪x৬) বেডের ডর্মিটরিতে বেড ৭। অব: DFO, Hazaribagh-West Forest Division, Hazaribagh-825301, ৩ (06546) 22339 (near Private Bus Std). আর আছে রেস্ট হাউস লাগোয়া রাজ্য পর্যটনের টুরিস্ট লজ জাতীয় উদ্যানে। হাজারীবাগ ভ্রমণার্থীদের মূল আকর্ষণও এই জাতীয় উদ্যান। ১৯৫৪ খ্রিস্টাব্দে রামগড়ের মহারাজার মৃগয়াভূমি—১৮৩.৮৯ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে। গড় উচ্চতা এর ১৮০০ ফুট। উদ্যান সফরের মনোরম সময় অক্টোবর থেকে এপ্রিল মাস। ৮—২১-০০টায় খোলা থাকে জাতীয় উদ্যানের প্রবেশদ্বার।

দশের অধিক যাত্রী হলে শহর থেকে বন দপ্তর যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে জাতীয় উদ্যান দেখাতে। বেলা ১৭-০০টায় বন দপ্তর থেকে মিনি বাস যাচ্ছে, ঘণ্টা তিনেকের প্যাকেজ, ভাড়া ৩৫ প্রতি জন। আর নিজ ব্যবস্থায় শ'পাঁচেক টাকায় জিপে ১ রাত উদ্যানে অবস্থানের সাথে শহর ও জাতীয় উদ্যান দেখে নেওয়া যায়। স্পট লাইটও সঙ্গে নিতে হয়—ভাড়া ৭ করে। আর লাগে টোল উদ্যান প্রবেশে—মিনিবাস ৭৫ স্টেশন ওয়ান/ট্রেকার ৫০ গাড়ি ২৫ বাস ১০০ ফুটার/মোটর সাইকেল ৪ যাত্রী ৫০ পয়সা হারে। ১০টি ভিউ টাওয়ারও হয়েছে সারা উদ্যানে জন্তু দেখার জন্য। কোনো-রকম আগ্নেয়াস্ত্র সঙ্গে নেওয়া নিষেধ।

ফেব্রুয়ারি-মার্চ মাস মনোরম হলেও বসন্তের সমাগমে রমণীয় হয়ে ওঠে উদ্যান তথা হাজারীবাগ ভ্রমণ। দিগন্ত জুড়ে আশুপ্ত জ্বলে পলাশের শাখে শাখে। শাল, শিমুল ছাড়াও নানান বনজ বৃক্ষের সবুজের পসরা সাজায়। তারই মাঝে অন্তর্নতি নানান প্রজাতির হরিণ, ৪০০ শব্দর, ৪০০ চিলে, ভান্দুক, নীলগাই, বাইসন, প্যাছার, বুনো শুয়োর রাতের অভিসারে বেরোয়। গাড়িতে চলতে চলতে এ-দৃশ্য নয়নকে তৃপ্ত করে। আবার কখনও-সখনও বাঘ ও চিতাবাঘের দর্শনও মেলে চলার পথে।



কলকাতা থেকে সরাসরি রেলও যাচ্ছে গ্র্যান্ড কর্ড লাইনের হাজারীবাগ রোড স্টেশনে। হাওড়া থেকে মুন এক্স, কলকা মেল, শিপ্রা ও চম্বল এক্স, মুম্বাই মেল (ভায়া এলাহাবাদ); আর শিয়ালদহ থেকে জম্মু-তাওয়ারিই এক্স যাচ্ছে হাজারীবাগ রোড হয়ে। ৬-৭ ঘণ্টার পথ কলকাতা থেকে। দূরত্ব ৩৩৩ কিমি। আসানসোল-বারাণসী প্যা, ধানবাদ-হাজারীবাগ প্যা, হাজারীবাগ-গয়া প্যা, হাতিয়া-পাটনা এক্স, গঙ্গা-শতদ্রু এক্সও যাচ্ছে হাজারীবাগ রোড হয়ে। রেল স্টেশন থেকে শহরের দূরত্ব ৬৬ কিমি। বাস ও ট্রেকার যাচ্ছে রেল স্টেশন থেকে ২ ঘণ্টায় শহরে। তবুও যেন কলকাতা থেকে ৩৮২ কিমি দূরের কোডারমায় পৌঁছে বাসে/ ট্রেকারে চলা যেতে পারে সমদ্রুতের হাজারীবাগ শহব। চম্বল, শিপ্রা, ৩৪৭ দিন পূর্বাঞ্ছেরও স্টপেজ আছে কোডারমায়। বাস পথেও হাজারীবাগ রাজ্যের বিভিন্ন শহরের সঙ্গে যুক্ত। বাস যাচ্ছে—পাটনা, গয়া, রাঁচি মুম্বাই। এমনকি কলকাতার বাবুঘাট থেকে ৮-৩০ ও ১৯-০০টায় ছেড়ে বিহার রাষ্ট্রীয় পরিবহণের বাস ৯ ঘণ্টায় হাজারীবাগ যাচ্ছে। ফেরেও সকাল ও সাঁঝে হাজারীবাগ থেকে। আর CSTC-র বাস যাচ্ছে ৬-৩০এ কলকাতা ছেড়ে ১০ ঘণ্টায় পানাগড়/আসানসোল/ গোপটচি/ বাগোদব হয়ে। ফেরে ৬-৪৫এ হাজারীবাগ থেকে CSTC; এদের ভাড়া ৮৩। তবুও যেন কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় ব্ল্যাক ডায়মন্ডে ধানবাদ পৌঁছে বাসে ১৩৪ কিমি দূরের হাজারীবাগ চলায় সুবিধা।



পাশ্চাত্য প্রথার কোনো হোটেল নেই হাজারীবাগে। ভারতীয় প্রণায় স্কট সাহেবের বাংলায়—H Prince, Club Rd, near Bus Std, SCB ৪০-৬৭, DCB ৬৫-৮৫ DAB ১০০-১৫০; H Samrat, Matoary, SAB ৮০, DAB ১২৫-১৭৫; H Upkar, Barhi Rd, ভাড়া ও মানে সম্রাট ভুল। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের কাছেই Ajanta RH, SCB ৪৫, SAB ৬৫, DCB ১০০, DAB ১২৫-১৫০; Ashoka H, Rabindra Path, মান ও দাম অজস্তা ভুল; H Pagoda, SCB ৪৫, SAB ৬০, DCB ৮০, DAB ১০০-১৫০; Mahua R H, DAB ১২৫; Devi R H, S ৪০, DCB ১০০, DAB ১০০, TAB ১২৫; Standard H, S ৫০-৭৫, D ৮০-১২৫; H Naturaj, SAB ৬০, DAB ১০০; H Satkar, H Royal, Mourya H, Rose H ছাড়াও নানান হোটেল হাজারীবাগে। আর আছে CH, DB, Forest IB, অব: DCHazaribagh, PWD-র IBও DVC-রও বাংলা আছে হাজারীবাগে। তবুও থাকার জন্য সম্রাট ও প্রিন্সের আবেদন অগ্রণী। আর যেমনই বনবিহারের সাথে একটা রাত জাতীয় উদ্যানে কাটিয়ে যাওয়া উচিত হবে।

রাজরাণা

NH-33এ হাজারীবাগ থেকে ৪৮ আর রাঁচি থেকে ৪৩ কিমি অর্থাৎ হাজারীবাগ-রাঁচির মাঝপথে রামগড় থেকে আরও ৩২ কিমি গিয়ে রাজরাণা জলপ্রপাত। হাজারীবাগ থেকে দিনের একমাত্র বাস যাচ্ছে সকাল ৬-০০টায়—রামগড়/চিন্তারপুর/গোলা হয়ে। গোলা যাত্রীদের ভেরা নদীর হাটু জল পেরিয়ে মন্দিরে যেতে হয়। আর চিন্তারপুরের পথটি মন্দির চত্বরে পৌঁছে দেয়। এছাড়া মুম্বই বাস ও ট্রেকার যাচ্ছে হাজারীবাগ থেকে পশ্চিম শহর রামগড়ে।

রামগড় বদল করেও চলা যেতে পারে রাজরামায়। তেমনিই হাজারীবাগ-রাঁচি যাতায়াতেও রামগড় হয়ে ট্রেকার/বাসের আধিক্য মেলে। বাস ও ট্রেকার যাচ্ছে রামগড় থেকে বিহার রাজ্যের দিকে-দিগন্তের। ঘণ্টা তিনকে মন্দির দেখে রাঁচি বা হাজারীবাগ ফিরুন। রাঁচি থেকে প্যাকেজ টুরেরও ব্যবস্থা থাকে বিহার টুরিজমের। Maurya Travels, Main Rd, Ranchi-834001ও রাজরামায় আসছে ১ দিনের প্যাকেজে।

ভেরা অর্থাৎ ভৈরবী নদী গিয়ে পড়ছে দামোদর নদে। আর এরই সঙ্গমে মন্দির হয়েছে অনুচ্চ পাহাড়ী টিলায় রাজরামায়। ৫১ পীঠের এক পীঠ। দেবী এখানে ছিন্নমস্তা কালী দশ মহাবিদ্যার অন্যতম। মুণ্ডমালা বিভূষিতা হয়ে রতি ও কামের উপর দাঁড়িয়ে বাম করে নিজের ছিন্ন মস্তক ধারণ করে লোল জিহ্বায় নিজেরই কণ্ঠ নিঃসৃত শোণিতধারা পানরতা। বাম ও দক্ষিণ হস্তে নরকপাল ও কর্তরী, গলায় নাগ যজ্ঞোপবীত ও মুণ্ডমালা। প্রচণ্ড চণ্ডিকা নামেও খ্যাতি আছে দেবী ছিন্নমস্তার। দেবীর চুটিতে ভক্তের শিবধ্ব প্রাপ্তি ঘটে। তেমনিই মনোবাঞ্ছাও পূরণ হয় দেবীর আশিষে। এছাড়াও অষ্টমাতৃকা, দক্ষিণা কালী ছাড়াও মন্দির হয়েছে আরও নানান রাজরামায়। প্রকৃতিও সুন্দর রাজরামায়। থাকার জন্য ২টি ধরমশালা আছে। সোরেনবাবুর ধরমশালাটি ভালই।

উৎসাহীরা হাজারীবাগ থেকে ৭২ কিমি দূরের NH-2এ বারকাঠিয়ায় সুরযকুণ্ড উষ্ম জলের প্রবণটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ৫৫ কিমি দূরের তিলাইয়া, ৫১ কিমি দূরের কৌনার বাঁধটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় হাজারীবাগ থেকে বাস বা ট্রেকারে। রাঁচি যাত্রীরা চলার পথে ক্রোকাডাইল ফার্মটিও দেখে চলতে পারেন। আদিবাসী অধ্যুষিত আরণ্যক পরিবেশে নিরানাল ভিড়তে রূপ পেয়েছে এই কুমির প্রকল্প।

পালামৌ জাতীয় উদ্যান



হাজারীবাগ মোহন টকিজ থেকে ভোর ৫-৩০টায় দিনের একমাত্র বাসে ১৮২ কিমি দূরের ডালটনগঞ্জ পৌঁছান ৫½ ঘণ্টায়। ৬-০০, ৮-০০, ১২-০০ ও ১৪-৩০টায় বাস যাচ্ছে ডালটনগঞ্জ থেকে রাঁচি মুখী ১০ কিমি গিয়ে খুদিয়া মোড় থেকে ডানহাতি আরও ১৪ কিমি দূরের বেতলা অর্থাৎ পালামৌ জাতীয় উদ্যানের তোরণদ্বারে। হাজারীবাগ থেকে রাঁচি হয়েও চলা যেতে পারে ডালটনগঞ্জ সৌঁছে বেতলায়। পথের দূরত্ব ২৫৮ কিমি, মুহূর্ত্ত বাস মেলে এপথে। পাটনা থেকে সরকারি-বেসরকারি নানান বাস আসছে ডালটনগঞ্জ। নানান ট্রাভেল এজেন্সীর ডিলাক্স বাসও চলছে রাতভর সার্ভিসে ৮-১০ ঘটায় পাটনা থেকে ডালটনগঞ্জ। বেতলার নিকটতম রেলস্টেশন ডালটনগঞ্জ।



কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় প্রতিদিন দুপুর ১৪-৩০এ 144৪ শক্তিপূঞ্জ এক্সপ্রেস হাওড়া ছেড়ে হাওড়া-বর্ধমান কর্ড লাইনে পরদিন ৩-৩৫এ ৫৭৪ কিমি দূরের ডালটনগঞ্জ সৌঁছে বাসে বেতলা চলুন। শক্তিপূঞ্জ যাচ্ছে চোপান/সিংরৌলি হয়ে জব্বলপুর। শক্তিপূঞ্জ ফেরে বিকাল

১৪-১৯এ ডালটনগঞ্জ ছেড়ে পরদিন ৪-৩০এ হাওড়ায়। টাটা-হাতিয়া-পাটানকোট এক্স, পাটনা-দিল্লী পালামৌ এক্স, বারওয়াদি-চুনার প্যা, বারওয়াদি-দেহরি-অন-শোন প্যা, গোমো-চোপান প্যা, বরকাকানা-মোগলসরাই প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ডালটনগঞ্জ হয়ে। আবার রাঁচি বা খানবাদ থেকেও চলা যেতে পারে বাসে বাসে বেতলায়। সময়েও সাশ্রয় মেলে এপথে। নিকটতম বিমান রাঁচিতে।



বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে-বামে গড়ে উঠেছে সরকারি আবাস বেতলায়। বন দপ্তরের কার্যালয়টিও এই বাস স্ট্যান্ডে। বিপরীতে চার ঘরের Tourist L, DAB ১০০, ক্যান্টিনটিও টুরিস্ট লজ লাগোয়া, আহার্য মেলে। সাময়িক বন্ধ থাকলেও পাশেই হয়েছে গাছের টঙে দু'বেডের অভিনব Tree House. আর অদূরেই বাস্তব বিপরীতে FRH-এ ঘর ১০০; Tourist Cottage, DAB ৭৫; Janata L T ৪৫; ১৫ বেডের ডর্মি ১৮০; বিছানা ছাড়া ১০ জনের দুটি Swiss টেন্টও আছে। আর আছে ৯ কিমি দূরে Kerh FRH, DAB ৭৫। এদের বুকিং: Field Director, Tiger Project, Palamou National Park, Daltonganj-822101। এছাড়া বিহার টুরিজমের H Van Vihar, (06562) 68513, DAB ১৫০ ১৭৫ A/c D ২২৫; থাকার পক্ষে অনান্য। অব: Manager, Beta NP, PC-822111 বা বিহার টুরিজম, ২৬ বি ক্যামাক স্ট্রিট-১৬, (0) 2476847.

আর আছে বাস স্ট্যান্ডেই *H Debjani, SAB ১৩৫ DAB ১৭৫ ডর্মি বেড ৪০; অব: Debon Housing, 143 Santoshpur Avenue, Cal-75, (0) 723157; H Sunrise, D ১৫০-২২৫; অদূরে H Naitar, (0) 65662 86508, DAB ২৭৫ A/c ৩৫০ ডর্মি ৮৫, কল বুকিং: 22B, Suren Tagore Rd, Cal-19, (0) 4407527; Engineering Co-operative Society-র Madhuvan H, DAB ১৫০-২২৫; অব: Sardeo Agarwalla, Ispat Factory, Daltonganj. থাকার পক্ষে বন দপ্তরের Tourist L, BTDC-র H Van Vihar, বাঙালি মালিকানাধীন H Debjani ও Naitar ভালই।

এছাড়া জাতীয় উদ্যানকে ঘিরে ২৩ কিমি দূরে Mundu FRH, ৪৬ কিমি দূরে Lat FRH, ১১ কিমি দূরে আরণ্যক পরিবেশ কোয়েল ও গুঁরাঙ্গা নদীর সঙ্গমে Ketchki FRH, Aks FRH, Dokmatary FRH, ১৪ কিমি দূরে Barwadih FRH-এও থাকা যেতে পারে। এদের বুকিং: DFO, Daltonganj South F Dn, Daltonganj, Palamou-822101, (0) 6562 22993 থেকে।

আবার ডালটনগঞ্জেও থাকার ব্যবস্থা মেলে সাধারণ সাজের একাধিক প্রাইভেট হোটেলে। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Jyotloke, DAB ১৭৫-২৭৫; স্বল্প যেতে H Pink Palace, DAB ২০০-৪৫০; বাজারের কাছে Amrapali R H, Gitanjali G H, H Manas, Punjab, Sarogi, Maharaja, Tourist RH, Rajdhani হাড়াও নানান। রৌও এদের S ৬০-৮৫ D ৮০-১৫০। এমনকি ডালটনগঞ্জে অবস্থান করে জিপ বা ট্রেকারে যাতায়াত-বিহার নিয়ে ৪৫০-৫০০ টাকায় বেড়িয়ে ফেরা যায় বেতলা। বা বাসে বেতলা সৌঁছে বেতলা থেকেও জিপ নিয়ে চলা যেতে পারে অরণ্য সাফারি-তে।

ছোটনাগপুরের অধিত্যাক্য পালামৌ জেলায় ১৯৭৪এ ৯৩০ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে ভারতীয় অষ্টাদশ ব্যায় প্রকল্পের অন্যতম পালামৌ বা বেতলা ব্যায় প্রকল্প। কোর

এলাকা ২০০ বর্গ কিমি। তবে জাতীয় উদ্যানের আয়তন ২১৬ বর্গ কিমি। পর্যটকদের কাছে উন্মুক্ত ৩৫ বর্গ কিমি। উত্তর থেকে দক্ষিণে ৬০ বর্গ কিমি বিস্তৃত শাল, মধ্যা, পলাশে ছাওয়া পালামো। গহীন বন, গহন অরণ্য—গড় উচ্চতা ১০০০ ফুট। সারা বছরই খোলা থাকে পর্যটকদের কাছে পালামো। তবে অক্টোবর থেকে এপ্রিল জন্তু দেখার মরসুম হলেও ফেব্রুয়ারি থেকে মার্চ মাস অতীব মনোরম। লালে লাল সাজ পরে অরণ্যানী। পর্ণমোচী বৃক্ষের পাতায় পাতায় রঙের বর্ণালী মোহময় করে তোলে। গালচে পাতে বনদেবী অরণ্য জুড়ে বহুবর্ণ মুচমুচে শুকনো পাতায়। তাপমান: গ্রীষ্মে ৪০° থেকে শীতে ৩° সে-তে ৩০° নামা করে। প্রতিদিন ৫—১৮-০০টায় খোলা থাকে জাতীয় উদ্যানের প্রবেশদ্বার। বেরবার দরজা খোলা মেলে আরও কিছুকাল।

জিপ যাচ্ছে বন দপ্তরের ৩০ বর্গ কিমিতে ৪০ হারে—নিজস্ব গাড়িতেও যাওয়া চলে অরণ্যবিহারে। গাড়ির প্রবেশ টোল ৪০, জিপের ৪০, মিনিবাস/ভ্যান ৬০, বাস ১০০, সঙ্গে নিতে হয় স্পট লাইট—৭ টাকায় মেলে। গাইডও মেলে ঘণ্টা প্রতি ১৫ হারে। আর বন দপ্তরের গাড়ি নিলে ভাড়া কিমি প্রতি—৬ যাত্রীর জিপ ৯, ১৬ যাত্রীর মিনিবাস ১৫ হারে। হাতিও যাচ্ছে সকাল ৬-০০ ও ৭-০০টায় ৪ যাত্রী নিয়ে ঘণ্টা ৫০ টাকা হারে। আর লাগে কামেরার চার্জ মান হারে। তবে জন্তু দেখার পক্ষে জিপই ভাল—গোধূলি বা উষাকালে।

সুন্দর প্রকৃতির মাঝে বন্য জন্তুর বিহার দেখবার মতো। সকালের ঘুম ভাঙায় হরিণেরা এসে টুরিস্ট লজের দ্বারে দ্বারে। তেমনই রয়েছে অজস্র হাতি, বাইসন, শম্বর, নীলগাই, গৌর, চিত্রল, বনবিড়াল, লাস্কুল, পাহাড়ী শিয়াল, ভান্ডুক, শজারু, চিংকারা আরও কত কি। আর রয়েছে বাঘ, চিত্রা বাঘ, নেকড়ে বাঘ জাতীয় উদ্যানে। শতাধিক ধর্মী পক্ষীকুলও আন্তান্না গেড়েছে জাতীয় উদ্যানের গাছের শাখে। গাড়িতে চলার পথে এদের দর্শন লাভে ভীতি ও আনন্দ-মিশ্রিত অভিযুক্তি মাতোয়ারা করে। এটি টাওয়ারও হয়েছে জাতীয় উদ্যানে জন্তু দেখার জন্য। তবে, বনবিহারে কয়েকটি বনাচার মেনে চলা উচিত যাত্রীদের—বসনের ক্ষেত্রে সাদা বা উজ্জ্বল রঙা বাতিল করে অলিভ গ্রিন বা খাকি রঙা শ্রেয়, নীরবতা অবশ্যই পালনীয়, ধূমপান বজ্রনীয়, কোনো রকম আগ্নেয়াস্ত্র সঙ্গে নেওয়া মানা।

পরদিন ৫ কিমি উত্তর-পূবে চেরো রাজা মেদিনী রায়ের বিশ্বস্ত দুর্গটি বেড়িয়ে নিন পায়ে পায়ে বা গাড়িতে। অনতিদূরে ঔরঙ্গা নদীর পাড়ে ৫ কিমি জুড়ে রয়েছে ১৫ শতকের আর এক বিশ্বস্ত কেন্দ্র। উচিত হবে বেতলা থেকে বাসে বা জিপে ৯ কিমি দূরের কেচকি বেড়িয়ে নেওয়া। আর ১৯ কিমি দূরের ডালটনগঞ্জ থেকে জিপ, বাস, প্যাসেঞ্জার ট্রেন আসছে কেচকি। শক্তিপুল্লের স্টপ নেই কেচকিতে। নিরালা-নির্জন ছবির মতো সুন্দর ছোট্ট স্টেশন কেচকি। রেস্ট

হাউসের সামনে কোয়েল ও ঔরঙ্গা নদীর সঙ্গম—আশ্চর্য সুন্দর তার প্রকৃতি। টিলা টিলা সবুজে ছাওয়া আরণ্যক পরিবেশ—জঙ্গল তেমন ঘন নয়। লেবেল ক্রসিং পেরিয়ে মিনিট বিশেকের পথে মায়াময় পরিবেশে রেল স্টেশনের কাছে CESC Holiday Home গড়েছে কেচকিতে। বৃকিং: Electro Urban Cooperative Cr Society Ltd, CESC, Victoria House, Cal. আর মনোরম পরিবেশে Forest Rest House টি নিরাপত্তার অভাবে পরিত্যক্ত। অবু: DFO, Daltonganj South, Daltonganj-822101, দুরন্ত কোয়েল নদী সঙ্গ নেয় সারা কেচকিতে। আবার কেচকি থেকে বেতলা ফিরে কের-ও চলা যায়। ৫ কিমি দূরে আরণ্যক পরিবেশে ছিমছাম কের ফরেস্ট রেস্ট হাউস। বিপরীতে গহন বন। চলতে-ফিরতে বনচরদের (হরিণ, হাতি, বাইসন) দর্শন মেলা অস্বাভাবিক নয় এপথে। চলচ্চিত্রের প্রবাদপুরুষ সত্যজিৎ রায়—এর অরণ্যের দিনরাত্রি-র নানান দৃশ্য কেচকিতেই গৃহীত হয়। আর রয়েছে ফরেস্ট মিউজিয়াম বেতলাতেই, ৬-৩০—৯-৩০ ও ১৫-৩০—১৮-৩০টায় খোলা মেলে।

ডালটনগঞ্জ-বেতলা-মহাডার-নেতারহাট বাসও চলছে জাতীয় উদ্যান ছুঁয়ে। বেতলা-মহাডার বাস পথে বেতলা, কেডু, মাধু, মারোমার, বারেসাঁড়। বারেসাঁড় থেকে ১১ কিমি অরণ্য অন্তরে সুগাবাঁধ জলপ্রপাত। সেও আর এক দ্রষ্টব্য। তবে ডাকাতির দৌরাখ্য বিতীষিকা গড়েছে আজ এপথে। যাত্রীও চলেন আর্ম গার্ড পরিবেষ্টিত হয়ে বেতলা থেকে ৩১ কিমি দূরের গারু পর্যন্ত।

নেতারহাট

বেতলা থেকে ৭-০০টার বাসে ৭২ কিমি দূরের মহাডার গিয়ে আবার নতুন করে বাস চেপে ৪৩ কিমি দূরের নেতারহাট পৌঁছান। ৩১ ঘণ্টার পথ। তবে সংযোগকারী বাসের অভাবে Janata L, SCB ৪৫ DCB ৮৫ FCB ১২৫ ডর্মি ২৫ টাকায় থাকাও যেতে পারে মহাডারে। সরাসরি বাসও যাচ্ছে দিনে ২টি বেতলা থেকে ঘণ্টা ছ'য়েকে নেতারহাটে। তবে, বেতলায় সিট মেলা দুষ্কর। আবার ডালটনগঞ্জ গিয়ে রাঁচি হয়েও যাওয়া চলে নেতারহাটে। এপথের দূরত্ব (২৪+১৬৭+১৫৬) ৩৪৭ কিমি। তবে ডালটনগঞ্জ-কুরু-রাঁচি পথে রাঁচির ৫৫ কিমি আগে কুরুতে নেমেও রাঁচি-কুরু-নেতারহাটের বাস ধরা যেতে পারে। বেতলা-ডালটনগঞ্জ-কুরু-নেতারহাট হয়ে পথের দূরত্ব (২৪+১১২+১০১) ২৩৭ কিমি। আর সরাসরি হাওয়া রাঁচি হয়ে চলায় সুবিধা। রাঁচি রেলস্টেশনের বিপরীত থেকে সরকারি বাস যাচ্ছে ৭-১৫ ও ১১-০০টায়, আর রাত্তি রোড থেকে প্রাইভেট বাস যাচ্ছে ১০-৩০, ১২-৩০ ও ১৩-৩০ টায়। ঘণ্টা পাঁচেকের পথ। দূরত্ব ১৫৫ কিমি। প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে রাজ্য পর্যটন ও নানান প্রাইভেট ট্রাভেল এজেন্ট রাঁচি থেকে নেতারহাটে।

হেটনাগপুর পাছাড়ের অধিত্যাকায়, মধ্য প্রশংশ সীমান্তে পালামো জেলায় ১২৫০মি উঁচুতে শাল-মধ্যা-পলাশে ছাওয়া পাহিন আর ইউক্যালিপটাসের শহর নেতারহাট।

তবে, অতীতে নেতা অর্থাৎ বাঁশের গহীন ঝাড় ছিল, নামটিও সেই থেকে। শাউ-ব্রিঙ্ক পাহাড়ী শহর। বৈচিত্র্য আছে এর প্রকৃতিতে। আর পাঁচটা পাহাড়ী শহরের মতো কলকোলাহল নেই, না আছে দোকানপাট, না জনতার ভিড় নেতারহাটে। ছোট্ট অবকাশ যাপনের মনোরম পরিবেশ। সাহেবী মুখে নেতারহাট হল কুইন অব ছেটনাগপুর। ১০ কিমি দূরের ম্যাগনোলিয়া পয়েন্ট থেকে সুয্যন্ত আর টুরিস্ট বাংলা বা পালামৌ বাংলা থেকে সুয্যন্ত দেখতে (অনিয়মিত) গাড়িও যাচ্ছে। পায়ে হেঁটে পাবলিক স্কুল থেকেও দেখে নেওয়া যায় সূর্যের অস্ত। সূর্যের উদয় ও অস্ত নেতারহাটের মূল আকর্ষণও বটে। বাস থেকে নামতেই টুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার। বামহাতি পথে এগুতেই বিহার রাজ্যের রাজ্যপালের গ্রীষ্মাবাস, ডাইনে গিয়ে রাজ্য সরকারের আবাসিক স্কুল। ম্যাগনোলিয়ার পথে ২ কিমি যেতে কোয়েল নদীর সুন্দর দৃশ্যও দেখে নেওয়া যায় পায়ে পায়ে। আর রয়েছে আরগ্যক শোভা সারা নেতারহাটে। গ্রীষ্মের শীতলতা, বর্ষার জলভরা মেঘের ঘনঘটা, এমনকি শীতের দিনগুলিও বৈচিত্র্যে ভরা নেতারহাটে। শীতে সর্বনিম্ন ১° আর গ্রীষ্মে সর্বোচ্চ ৩৮° সেন্টিগ্রেডে ঠানানামা করে তাপমান। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ। পর্যটক সমাগম ঘটেও চলে বছরভর নেতারহাটে। তবুও যেন বিহার পর্যটনের অবহেলায় নেতারহাট আজও দুর্যোরানীর মতো অবহেলিত।



বাস স্ট্যাণ্ডে অর্থাৎ টুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার থেকে ১½ কিমি পায়ে হাটা দূরত্বে কেন্দ্রীভূত হয়েছে নেতারহাটের সরকারি ও বেসরকারি আবাসগৃহ। হাটায়তে কুলিই ভরসা—বিকল্প কোনো যান নেই, যথেষ্ট হোটেলেরও অভাব নেতারহাটে। BTDC-র ৪৮ বেডের H Parvat Vilhar, SAB ১২৫ DAB ১৮৫ ডিলাক্স ২৬০ ডর্মি বেড ৪৫, অব্: Manager, Netarhat-835218; এদের কলকাতা অফিসেও আংশিক বুকিং মেলে। ১০ বেডের FRH-এর অব্: DFO, West Division, opp Ranchi Club, Main Rd, Ranchi; ১২ বেডের PWD IB, অব্: EE, PWD, Building Division, Doranda, Ranchi; ৮ বেডের Palamou Dak Bungulow, অব্: Administrator, District Board—Palamou, Daltonganj; ৪ বেডের Revenue Bungalow, অব্: SDO, Civil Latahar, Palamou; PHED RH, অব্: EE, PHED, Daltonganj; ২০ বেডের Youth Hostel-এ ডর্মি প্রথায় বেড ২৫; ছাড়াও রয়েছে প্রাইভেট Netarhat R H Cum Panchayat Canteen, Bhagawat H, Valley View নেতারহাটে। এদের কাছে ঘর ১২৫-২৫০ টাকায় মেলে। হোটেল পর্বত বিহারে ক্যান্টিন থাকলেও খাবার পজারেতে ভালো।

অতুৎসাহীরা ৬ কিমি দূরে আপার ঘাঘরি জলপ্রপাত, আরও ১ কিমি দূরে লোয়ার ঘাঘরি, ৩৫ কিমি দূরে সগিলাকার সিধনী জলপ্রপাত, ৬১ কিমি দূরে ৪৬৮ফুট উঁচু থেকে নামা লোধ জলপ্রপাতটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন জিপ বা গাড়িতে। আবার একরাত মধ্যাডারে কাটিয়েও দেখে নেওয়া যায় সবুজ লাণঘনয় পাহাড়ে বিহারের উচ্চতম লোধ, সিধনী ও সুখা বাঁধ। স্থানীয় ভাষায় সুখা তথা সুখা অর্থাৎ

টিয়াপাখি। টিয়ায় ভরা পাহাড়ে ঝাঁপিয়ে নামছে সুখা—পুষ্ট হয়েছে সুখার জলে কোয়েল নদী। তেমনই বেতলা থেকে ৬০, মধ্যাডারের ১২ কিমি দূরে বেতলা-মধ্যাডার বাস সড়কে অগ্নি নদীর পাড়ে অগ্নি ফরেস্ট বাংলাতেও এক রাত বিশ্রাম নেওয়া যেতে পারে। আরগ্যক পরিবেশ, দূরে-দূরান্তে অনুচ্চ পাহাড়শ্রেণী মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। বাংলার বুকিং: DFO, South Forest Division, Daltonganj, Palamou-822101, ৩ (06562) 22993 থেকে।

রাটি-কুস্ক-নেতারহাট পথে রাটি থেকে ৩০ কিমি যেতে মাণ্ডার। আর মাণ্ডার থেকে ২ কিমি দূরে বিজুপাড়া হয়ে আরও ২৮ কিমি গিয়ে ম্যাক্লাসকিগঞ্জ। ডালটনগঞ্জ থেকে নানান ট্রেন—দূরত্ব ১২২ কিমি, ঘণ্টা তিনেকের পথ। তবে, কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় ১৪-৩০-এর শক্তিপূঞ্জ এক্সপ্রেস পরদিন ১-০৯এ ৪৫২ কিমি দূরে ম্যাক্লাসকিগঞ্জ চলায় সুবিধা। তেমনই ডুন এক্সপ্রেস বরকাননা কোচে বরকানায় পৌঁছে চোপান এক্সপ্রেস সাথে চলা যায় ম্যাক্লাসকিগঞ্জ। ট্রেন যাচ্ছে বরকাননা-মোগলসরাই প্যা, গোমো-চোপান প্যা, গোমো-বারওয়াদি প্যা, পালামৌ এক্স, টাটা-পাঠানকোট এক্স গোমো/বোকারো থার্মাল/বরকাননা/ম্যাক্লাসকিগঞ্জ/বারওয়াদি হয়ে।

বিলেতের আদলে ম্যাক্লাসকি সাহেবের স্বপ্নে গড়া মিনি ইংল্যান্ড ম্যাক্লাসকিগঞ্জ। শালবন, লালমাটি, আরগ্যক ম্যাক্লাসকিগঞ্জ, নীরবে-নিভুতে ছোট্ট অবকাশ যাপনের মনোরম পরিবেশ। অ্যাংলো-ইন্ডিয়ানদের মুখে MaCluskies nose নামে খ্যাত হলেও স্থানীয়রা ম্যাক্লাসকি বলে থাকে একে। অতীতে অ্যাংলোদের প্রিয়ও ছিল MaCluskieganj. আদিবাসীদের বাস। জল-হাওয়া তুলনাহীন। এমনকি এপ্রিল মাসেও শীতের আমেজ মেলে বাতাসে। ভরা বর্ষায় মালভূমির রুম্বুতা ও শ্যামলিমা, বসন্তে শিমুল-মাদার-পলাশ-কৃষ্ণভূড়ার লালের সাথে জাকারান্ডার বেগুনি হাসি ও অমলতাসের হলুদ-সোনালী মুড়ে দেয় ম্যাক্লাসকিকে। বাতাসের গুনগুনানি, ছেঁড়া ছেঁড়া সাদা মেঘ নীলাকাশে চাঁদোয়া হয়ে অরগ্যানীর শিরে ছাতা মেলে দাঁড়িয়ে। দূরে-দূরান্তে কুহকী অরণ্যের মায়াবী জাদু। তারই মাঝে রেল লাইন ধরে পশ্চিমে বয়ে চলে মিষ্টি-মধুর তানে ছোট্ট নদী চট্টা।



Queens Cottage, D ১২৫-১৭৫, অব্: R Mitra, McCluskieganj, Dist-Palamou, PC-829208; Shantiniketan GH, অব্: Amit Ghosh; মিলার সাহেবের গেস্ট হাউস ছাড়াও বেশ কিছু সাহেবী বাংলায় ঘর মেলে ভাড়া।

রাটি



সকাল ৭-০০ ও ১৩-০০টায় সরকারি; আর ৬-০০, ৭-১৫, ৮-০০ ও ১২-০০টায় বেসরকারি বাস যাচ্ছে নেতারহাট থেকে রাটি। ঘণ্টা পাঁচেকের পথ। আর সরাসরি যাত্রায় হাওড়া থেকে ২১-৩৫-এর ৪০১৫ হাওড়া-রাটি-হাতিয়া এক্সপ্রেস রাটি পৌঁছান পরদিন ৮-০০টায়। দূরত্ব ৪১৯ কিমি। ফেরে ১৯-৩৫এ রাটি থেকে হাওড়ায়। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে বোকারো স্টিল সিটি-চেন্নাই-আলোরি এক্স, হাতিয়া-পাটনা

পাটলিপুর এক্স, হাতিয়া-কালকা এক্স, টাটা-অমৃতসর এক্স, হাতিয়া-পাটনা এক্স, ধানবাদ-হাতিয়া-গোরক্ষপুর মৌফ এক্স—প্রতিটা ট্রেনই যাচ্ছে রাঁচি হয়ে ভারতের নানানদিকে। আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন মেলে আত্রা-বরকাকানা, খারসুগুদা-রাঁচি, লোহারডাঙ্গা-রাঁচি, ধানবাদ-চন্দ্রপুরা, বর্ধমান-হাতিয়া, খড়্গপুর-হাতিয়া, হাড়াও গোমো থেকে রাঁচি পাহাড়ের।



আর রেল স্টেশনের বিপরীতের বাস স্ট্যান্ড থেকে রাজ্য পরিবহণের বাস রাজ্যের নানান শহরের সঙ্গে সংযোগ গড়েছে রাঁচির। বাস যাচ্ছে নেতারহাট ৫ ঘ, হাজারীবাগ ৩ ঘ, গয়া ৭ ঘ, পাটনা ৮ ঘন্টায় রাঁচি থেকে। এমনকি রাজ্য ছাড়িয়ে প্রতিবেশী রাজ্যেও বাস যাচ্ছে রাঁচি থেকে। পুরী থেকে ১৫ ঘন্টায় বাস আসছে রাঁচি। বাস আসছে দুর্গাপুর থেকেও বাকুড়া/পুলিয়া হয়ে। আর যাচ্ছে কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ৭-১৫য় CSTC, ২০-৩০টায় বিহার সরকারের বাস ঘাটশিলা/টাটা হয়ে ৯ ঘন্টায় রাঁচি। ভাড়া ৮৩। এমনকি প্রতি সন্ধ্যায় নানান প্রাইভেট ডিলাক্স/ভিডিও/শীতাতপ কোচও যাচ্ছে শহীদ মিনার থেকে রাঁচি। রাঁচির মেইন রোড থেকে ছাড়ে প্রাইভেট ডিলাক্স।



আর IAC-র বিমান কলকাতা থেকে ২৪ দিন ৬-১০এ ছেড়ে ৭-১০এ রাঁচি পৌঁছে পাটনা যাচ্ছে ৮-৩০এ। কলকাতায় ফেরে পাটনা থেকে সরাসরি। ১০-৩০টায় দিল্লী ছেড়ে ১১-২৫এ পাটনায় পৌঁছে ১২-৫০এ রাঁচি এসে একইভাবে দিল্লী ফেরে ১৩-৩০এ রাঁচি থেকে প্রতিদিন IAC-র উড়ান।



Ranchi-834001, STD 0651-এ পাশ্চাত্য প্রধায় —*S E Railway H, Stn Rd-1, 0208048, S ২২৫ ২৫৮ D ২৫০ ৩১৬ AP প্রধায় S ২৯৫ ৫০০ D ৩৯০ ৬০০ A/c S ৩৯০ ৪০৫ D ৪৭৫ ৫০৫ (প্রথম শ্রেণীর রেল-যাত্রীর টিকিটের সঙ্গে হোটেলও বুক করার ব্যবস্থা আছে এদের); কল বুকিং: Asst Commercial Manager (Reservation), 3 Koilaghat St, Cal-1, 02489494. *H Yubaraj, Doranda-2, 0300403, A2R1B1, SAB ৩০০-৪০০ DAB ৪৫০-৬০০ A/c S ৪৫০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০ সুইট ৮০০ ১০০০; *Yubaraj Palace, 0500326, A/c S ৯৫০-১২৫০ D ১২৫০-১৭৫০ সুইট ১৭৫০-২০০০; ITDC-র *H Ranchi Ashok, Doranda-2, 0300337, A5R3, A/c S ৭৫০ D ১০৫০ ১২০০, সুইট ১৫০০; *H Arya, H B Rd, Lalpur-1, 0209000, A6R3B1, SAB ৪৫০ DAB ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০।

ভারতীয় প্রধায়—রেল স্টেশনের বিপরীতে: H Mount, Old Hazaribagh Rd-1, SAB ৮০ DAB ১৫০; H Highland Inn, near Rly Stn, 0309537, S ১৫০ D ২৫০ A/c সুইট ৪৫০-৬০০; রেল আর বাস স্টেশনের মাঝে Station Road-1এ: H Ashoka, 0311082, D ১৫০-২০০; H Embassy; H Satkar, SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২০০ TAB ২২৫; H Konark, H Anrit, SAB ৯০-১৪০ DAB ১২৫-২২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; H Ambassador, D ১২৫-২০০; H Nataraj, D ২৫০; H Rajdhani, D ১০০-১৭৫; Kwaliti Inn, 0305128, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬৫০ D ৮৭৫ সুইট ১২৫০।

জনহাতি Main Road-834001এ—H Baseera, D ২২৫; H Monarch, DAB ১৫০-২২৫; H Jayasree; Raj H, SAB

১৫০ DAB ২৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; India H, SCB ৬০ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১২৫-২২৫; H Blue Heaven, H Arya Nivas, SCB ৬০ SAB ৮০ DCB ১২৫ DAB ১৭৫; H Hindusthan, Makhija Towers-1, 0303988, A5R2, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৭৫ D ৬০০-৭৫০ H Chinar, 0304372, A8R3, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট S ৮৫০ D ১০০০।

Central Street-1এ—Shanti Nibash H, SCB ৬৫ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১২৫-২৫০; H Samrat, SAB ৬৫-৮৫ DAB ১২৫-১৭৫; Midland H, Doranda-2; H Maharaja, Radium Rd, R4B4, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A/c S ৩০০ D ৪২৫; Palace H; H Akashdweep, Kadru; H Akashbani, Ratu Rd Bus Std, SCB ৬০ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১২৫-২০০; Central H, Purulia Rd; Kamala H, Bumala H.

আর রয়েছে—বিনোদ আশ্রম, আনন্দ হোটেল, H The Retreat, Gujarati H, Main Rd Taxi Stand, A4R4B3, SCB ৬৫ SAB ৮০-১২৫ DCB ১০০ DAB ১২৫-২২৫; সঙ্গম হোটেল, প্যালেস হোটেল, অলকা হোটেল, Radium Rd, near Court, R4B3, SCB ৪৫ SAB ৬৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫-১৭৫; চারুবালা হোটেল রাঁচিতে। এদের কাছে কেবল থাকা S ৬৫-১২৫ D ১২০-২২৫ টাকায় মেলে। আর আছে BTDC-র Hotel Virsa Vihar, CH, IB, রেলের রিটার্নয়ারি রুম, ধরমশালা ও রাঁচি রেস্ট হাউস, মেইন রোড-1-এ।

ছোটগঙ্গাপুর পাহাড়ের অধিকায় ৬৫২ মি উঁচুতে রাঁচি শহর। পশ্চিমে রাঁচি পাহাড় আর উত্তরে মোরাবাদী অর্থাৎ টেগোর হিল। তারই মাঝে রাঁচি লেকের কাঁধে ভর করে গড়ে উঠেছে শহর। লেকের মাঝের দ্বীপগুলিও সৌন্দর্য বাড়িয়েছে শহরের। সূর্যাস্তে পারিপার্শ্বিক সৌন্দর্য মুগ্ধ করে পর্যটকদের। জলবায়ুও স্বাস্থ্যপ্রদ রাঁচি পাহাড়ের। গ্রীষ্মে ২০.৬° থেকে ৩৭.২° আর শীতে ১০.৩° থেকে ২২.৯° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। তবে, বর্ষা এড়িয়ে সারা বছরই চলা যেতে পারে রাঁচি পাহাড়ে।

রাঁচি এগিয়ে চলেছে শিক্ষনগরীর রূপ নিতে। তবে শহরের যিঞ্জিভাব, অপরিচ্ছন্নতায়েনে গীড়াগেয় পর্যটকদের। শহর থেকে ৮ কিমি উত্তরে কঁকেতে রাঁচির অন্যতম উল্লেখ্য উন্মাদ আশ্রম অর্থাৎ মানসিক রোগীদের হাসপাতাল। বিশেষ অনুমতিতে দেখার ব্যবস্থা। তবুও যেন উচিত হবে আশ্রম দর্শনে গিয়ে অমথা পরিবেশকে ভাৱাক্রান্ত না করে তোলা। শহরমুখী ফিরতেই ডাইনে জাহাজবাড়ি। লাগোয়া হয়েছে প্লেন বাড়ি। আরও এগিয়ে কঁকেড্যাম অর্থাৎ বাঁধ। পরিবেশ রমণীয়।

শহর থেকে ৪ কিমি উত্তরে প্রহরী হয়ে পাড়িয়ে আছে মোরাবাদী পাহাড়। এটি টেগোর হিল নামেও সমধিক পরিচিত। এরই শিরে রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের জ্যেষ্ঠভ্রাতা জ্যোতিরিন্দ্রনাথ ঠাকুরের স্মৃতি-বিজড়িত ভবন। বাসও করতেন জ্যোতিরিন্দ্রনাথ। বাড়িটির পরিবেশ সুন্দর।

সম্প্রতি গান্ধী শান্তি কমিটির দপ্তর বসেছে। অতীত আঙ্গ বিশ্বস্তির পথে। পাহাড়তলীতে শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম।

রাতি লেকের কাঁখে ভর করে শহরের প্রাণকেন্দ্রে দাঁড়িয়ে আছে রাতি হিলস। মন্দির হয়েছে শিবের—সেবতা রয়েছে নানার আরাও নানান পাহাড় শিরে। শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে। আর আছে রাতির উপকণ্ঠে ৬ কিমি দূরে নামকুম। ইতিউতি পাহাড়, গাছগাছালিতে ছাওয়া; কার্টন-মেন্ট এলাকা। স্বাস্থ্যকর জায়গা বলে রাতির থেকেও প্রশস্তি এর বেশি। দশম যাত্রীরা চলার পথেই দেখে নিতে পারেন। অত্যাশ্চর্যসাহীরা ১৩ কিমি দূরের রামকৃষ্ণ মিশন পরিচালিত টিবি স্যানাটোরিয়াম, ১২ কিমি দূরে হাতিয়া বাঁধ, ১১ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে হেভি ইঞ্জিনিয়ারিং করপোরেশন তথা বাঁধ, ৬ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে আকারে ছোট হলেও পুরীর আদলে তৈরি জগন্নাথ মন্দির, শহরের নবতম সান টেম্পল, মহলিঘর, মিউজিয়াম, ডিয়ার পার্ক, চিড়িয়াখানা ট্রাইবাল রিসার্চ ইনস্টিটিউটও বেড়িয়ে নিতে পারেন অটো বা বাসে বাসে।

পরদিন চলুন প্যাকেজ টুরে ফলস অর্থাৎ দশম/হুদু/সীতা/জোনা দর্শনে। রাজ্য পর্যটন, রাতি চক, ৩ ২০৪২৬; Maurya Darshan, Overbridge, Main Rd; Maruti Travels, Station Rd : ছাড়াও নানান সংস্থা ১০০ টাকায় দেখিয়ে আনে সকালে গিয়ে সন্ধ্যায় ফিরে। সঙ্গে প্যাকেট লাঞ্চ নেওয়া যেতে পারে। তবে হুদুতে দোকানপাট ও সাধারণ হোটেল আছে—আহার্য মেলে। শহর দর্শনে লাঞ্চে ৮০, হাজারীবাগ ৮৫, রাজরাশী ১২০ দলমা-ডিমনা থেকে ১২৫ নালন্দা-রাজগীর-পাওয়াপুরী-বোধগয়া ৩৫০ নেতারহাট ২০০; এমনকি নেতারহাট/বেতলাও বেড়িয়ে আনে এরা ২ দিনের প্যাকেজে। তবুও যেন অটো বা ট্যাক্সিতে এককভাবে দেখে নেওয়ায় অর্থ ও সময়ে সাশ্রয় মেলে।

শহর থেকে নামকুম হয়ে রাতি-টাটা সড়কে ২৬ কিমি গিয়ে ডানহাতি পথে আরও ৯ কিমি যেতে দশম জলপ্রপাত। কাঞ্চি নদী পড়ছে ১৪৪ ফুট উঁচু থেকে, গিয়ে মিলেছে সুবর্ণরেখায়। পাহাড় থেকে নামছে দশ ধারায়, নামও তাই দশম। হুদুর জলধারা রুদ্ধ হওয়ায় দশমই আজ পর্যটক বিনোদনে মুখ্য ভূমিকা নিয়েছে; পরিবেশ সুন্দর। থাকারও ব্যবস্থা আছে FIB-তে দশমে।

দশম থেকে ৬৯ আর শহরের উত্তর-পূর্বে হুদুর দুর্গ ৪৩ কিমি। জলবিদ্যুৎ তৈরির জন্য বাঁধ তৈরিতে জলের ধারা কমলেও আকর্ষণ আজও এর অধীতীয়। ৩২০ ফুট উঁচু থেকে জলধারা পড়ছে সুবর্ণরেখায়। চারপাশে বড়বড় পাথরখণ্ড। বিপদ তাই পদে পদে। নামতেও হয় ত্রয়ীর মধ্যে বেশি। সাবধানতা পালনীয়। চড়ুইভাতির সুন্দর পরিবেশ। বাসও আছে শহর থেকে নিয়মিত হুদু ফলসে।

আকারে ছোট হলেও নবতম সীতা ফলস অনবদ্য। গহীন জঙ্গলের মধ্যে আরণ্যক পরিবেশ মোহময় করে তোলে।

হুদু থেকে ৩৩ আর শহর থেকে ৩৮ কিমি দূরে নিধর-নির্জনে সৌতমধারা জলপ্রপাত। রাতি-পুলিয়া রোডে

জোনা হয়ে পথ গিয়েছে। অতীতে নামও ছিল এর জোনা ফলস। ১৪০ ফুট উঁচু থেকে জলের ধারা পড়ছে। ২৮০টি সিঁড়ি ভেঙে, সেই জল ডিঙিয়ে পথ গিয়েছে আদিবাসীদের গায়ে। মন্দিরও হয়েছে গৌতম বুদ্ধের—মূর্তি হয়েছে মর্মরে। ট্রেন ও বাস দুই-ই আছে শহর থেকে সৌতমধারায়।

১৫ দিনে বেড়িয়ে আসুন

১ম ও ২য় দিন পাটনা, ২য় দিন সন্ধ্যায় গয়া চলুন। ৩য় দিন সকালে গয়া বেড়িয়ে বিকালে বুদ্ধগয়াও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ইচ্ছা করলে বিশ্রামও নিতে পারেন বুদ্ধগয়ায়। ৪র্থ দিন সকালে রাজগীর চলুন। ৪র্থ, ৫ম, ৬ষ্ঠ দিন রাজগীরকে বৃত্তি করে বিশ্রাম ও বেড়া। ৭ম দিন সকালের বাসে মজফরপুরে পৌঁছে বৈশালী দেখে রাত ১৬-৫৫য় হিসাপ্তাহিক দিল্লী-মজফরপুর-রাজৌল এক্সে মজফরপুর থেকে সাগাউলি ১৯-৫৫, রাজৌল ২১-০৫এ পৌঁছান। মজফরপুর-রাজৌল এক্স যাচ্ছে ১৬-৪৫এ মজফরপুর থেকে। সরাসরি নেপাল যাত্রীরা হাওড়া থেকে ১৬-০০টার হাওড়া-রাজৌল মিথিলা এক্স আসানসোল ২০-১২, কিউল ০-৫৪, বরাণসি ২-৪০, সমষ্টিপুর ৪-০৮, মজফরপুর ৫-৪০এ পৌঁছে রাজৌল পৌঁছান ৮-৫০এ। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ২১-৫০এ কাঠগোদাম এক্স, ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১০-০০টায় হাওড়া-গোরক্ষপুর পূর্বাচল এক্স, ৫-৪৫এ শিয়ালদহ-মজফরপুর-বারভাঙ্গা গঙ্গা সাগর এক্স, ৫-৪৫এ শিয়ালদহ-মজফরপুর ফাস্ট প্যাসেঞ্জার, ৭-১৫য় হাওড়া-বারভাঙ্গা প্যাসেঞ্জার-এ যথাক্রমে ১০-৩১, ০-১১, ০-৪৫, ৯-৩৫এ মজফরপুর পৌঁছে মজফরপুর থেকে ৬-০৫, ৭-০০, ১২-০৫, ১৫-৪৫, ১৮-৩৫এর ট্রেনে রাজৌল পৌঁছান ৯-১৫, ১১-৪৫, ১৬-৩০, ১৯-২০, ২২-৪০এ। আলিপুরদুয়ার-নারকাটিয়াগঞ্জ এক্স যাচ্ছে সমষ্টিপুর/বারভাঙ্গা/জনকপুর/সীতামাটি/রাজৌল হয়ে। রাজৌল বা বীরগঞ্জের রাতের অবস্থান। রাজৌলে—H Taj, Main Rd; H Kaveri, Ajanta H, Ashram Rd, Raxaul-845305, E. Champaran, ৩ (06255) 22019; এদের কাছে S ৬-১২৫ D ৮-৫-১৫ টাকায় মেলে। আর নেপাল-সীমান্ত শহর বীরগঞ্জে—H Kailash, H Diyaul, H Suraj ছাড়াও প্রকাশ লজ, ভগবতী লজ, কৃষ্ণা লজ, হোটেল সমঝানা, মাড়োয়াড়ি সেবা সদন ছাড়াও হোটেল আছে নানান। ৮ম দিন রাজৌল রেল স্টেশন থেকে টাঙ্গুর ৩ কিমি গিয়ে বীরগঞ্জ পৌঁছে বাসে ২০০ কিমি দূরের কাঠমাণ্ডু পৌঁছান সাঁবে। ভারতীয় সীমান্তের চেক পোস্টে বিদেশী ক্যামেরা, ঘড়ি বা অন্য কিছু সঙ্গে থাকলে Customs Office-এ রেজিস্ট্রি করিয়ে নিন। H Mahakal, Lagan; H Crystal, New Rd; H Del Annapurna, Durbar Marg; Yak & Yeti; Central H; H Rara, কল বুকিং: DLS Express, 24 Lansdowne Terrace, ৩ ২৪২৬৪৬২; ছাড়াও হোটেলে আছে অজস্র বিবিধ ধরনের বিভিন্ন ধরনের কাঠমাণ্ডুতে। তবুও হোটেল মহাকাল, মাড়োয়াড়ি সেবা সমিতির ধরমশালাতে আগে থেকেই ঘর বুক করে কাঠমাণ্ডু চলা যেতে পারে। ৩ দিনে কাঠমাণ্ডু, ২ দিনে পোখরা বেড়িয়ে রাজৌল/মজফরপুর বা সমষ্টিপুর হয়ে অথবা বাসে ককিরডিটা/শিলিগুড়ি বা ভৈরোয়া/সোনডিগু/গোরক্ষপুর হয়ে কলকাতা ফিরুন। পথ চলতে ৪ দিন অর্থাৎ ১৫ দিনে কলকাতা।

নেপাল ভ্রমণে

সারা বিশ্বের কাছে নেপালের দ্বার অব্যাহত হলেও পাসপোর্ট ও ভিসা দুইয়েরই প্রয়োজন। তবে ৩০ দিনের জন্য ট্যুরিস্ট ভিসা করে নিতে পারেন Royal Nepal Embassy বা Consulate থেকে। আর বিমান যাত্রায় কাঠমাণ্ডু পৌঁছে ত্রিভুবন বিমান বন্দর বা নেপালের যে-কোনও সীমান্তের প্রবেশদ্বারে ৭ দিনের ভিসা করে নেওয়া যায়। প্রয়োজনে ভিসাকে ৩ মাস পর্যন্ত দীর্ঘায়িত করানো যেতে পারে। তারও অধিক কালের ক্ষেত্রে Home and Panchayat Ministry, HMG-এর বিশেষ অনুমতি লাগে। যোগাযোগ: Central Immigration Office, Maiti Devi (Dilli Bazar), Kathmandu, ☎ 412337. যেখানে Immigration Office নেই সেখানে Police Office থেকেও ৭ দিনের জন্য বাড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে ভিসা। তবে, ভারতীয়দের জন্য দ্বার অব্যাহত। পাসপোর্ট ও ভিসা ভারতীয়দের ক্ষেত্রে প্রযোজ্য নয়। তবে, Municipal Magistrate বা District Magistrate-এর কাছ থেকে একটি Identity Card করে নেওয়া যুক্তিযুক্ত। আইনধর্মিত প্রব্রের মোকাবিলায় এটি সঙ্গে থাকা ভাল। স্মল পত্র, টাইফয়েড ও কলেরার ইন্জেকশন নেওয়া আইনানুগ হলেও তেমন বাধ্যতামূলক নয়। তবে, ট্রেকিং বা মাউন্টেনিয়ারিং রুটের বিশেষ অনুমতি লাগে—Central Immigration Office, Maiti Devi (Delli Bazar-Old Airport Rd), Kathmandu থেকে। ৩ দিন আগেই ২খানি পাসপোর্ট ফটো-সহ নিশ্চিত ফি (১,০০+ ৬০,০০ হারে প্রথম মাসের প্রতি সপ্তাহ+ ৭৫,০০ হারে পরবর্তী সপ্তাহ) সঙ্গে দিয়ে লিখুন। শনিবার বন্ধ থাকে অফিস-কাছারি, ব্যাঙ্ক ও সরকারি দপ্তর—রবিবার কাজের দিন নেপালে।

নেপাল যেতে মোট ১২টি প্রবেশ পথ রয়েছে ভারত রাষ্ট্রের নানানদিকে : (১) কাকারভিটা—উত্তরবঙ্গ, সিকিম, অসম, এমনকি কলকাতা যাত্রীদেরও সহজতম পথ নিউ জলপাইগুড়ি, শিলিগুড়ি, নকশালবাড়ি হয়ে কাকারভিটা; (২) রানী সিকাঙ্গী—যোগবানী/ বিরটনগর; (৩) জলেশ্বর—সীতামাটী/ জনকপুর পথে; (৪) বীরগঞ্জ—কলকাতা, পাটনা থেকে মজফরপুর/ রঞ্জনাল হয়ে; (৫) সোনাউলি—বারাণসী/ গোরক্ষপুর/ভৈরোয়া, (৬) কাকারগুয়া—লক্ষ্ণৌ, বজ্জি, লুধিয়ানী পথে; (৭) নেপালগঞ্জ; (৮) কৈলাস—রাস্তা জোন; (৯) থানগঙ্গী—সেতি জোন; (১০) মহেন্দ্রনগর—মহাকালী জোন; (১১) কোডারি—ভিক্ট সীমান্তে; (১২) ত্রিভুবন বিমানবন্দর—কাঠমাণ্ডু। তবে, ভারতীয়দের কাছে কাকারভিটা, বীরগঞ্জ ও সোনাউলি এই তিনের আকর্ষণ বেশি। আর কলকাতা থেকে যাত্রায় কাকারভিটা বা বীরগঞ্জ হয়ে নেপাল যাওয়াই সুবিধার। প্রতিটি সীমান্ত শহর থেকেই সকাল ও বিকালে বাস যাচ্ছে কাঠমাণ্ডু ও পোখরায়া।

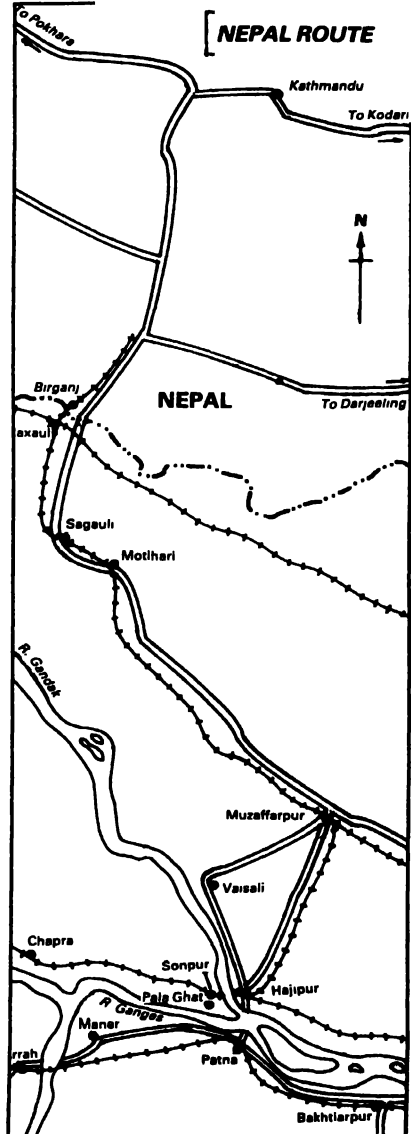
Useful ☎ Numbers :

Royal Nepal Airlines

Kantipath ☎ 220757

Biman Bangladesh Airlines ☎ 422669

ভ্রমণ সঙ্গী: ৯৭-৯৮/১৪



Indian Airlines, Hattisar ☎ 419649

Tourist Guide Association of Nepal ☎ 225102

Trekking Agents Association of Nepal ☎ 419245

Nepal Airways, Hattisar ☎ 410099

Embassy of India, Laimchaur @ 411811
Hotel Association Nepal, Thamel @ 412705
Tourist Information Centres,
Basantapur-Kathmandu @ 220818
Tribhuvan International Airport @ 470537
Pokhara @ 20028.

জামসেদপুর/টটানগর



পরদিন ৭-০০টার ডিলাক্স বাসে ৩ ঘণ্টায়, পাহাড়, অরণ্য, হ্রদ, নদী অর্থাৎ দলমা-ডিমনা-জুবিলি দর্শনে ইম্পাতনগরী জামসেদপুরে চলুন। রেল স্টেশনের বিপরীতে বাস স্ট্যান্ড থেকেও মুখমুখ সরকারি বাস যাচ্ছে জামসেদপুর তথা টটানগরে। আর যাচ্ছে প্রাইভেট বাস, মিনি ও ট্রেকার রাচি থেকে ১৩১ কিমি দূরে টটানগরে। কলকাতা থেকে ২৫১ কিমি দূরে দক্ষিণ-পূর্ব রেলের মুখাইগামী রেলপথে টটানগর স্টেশন। হাওড়া-সম্বলপুর ইম্পাত এক্স ৬-৫০, স্টিল এক্স ১৭-৩০, রাচি/হাতিয়া এক্স ২১-৩৫, হাওড়া-সম্বলপুর-রায়গাড়া এক্স ৩০-৪০, আমদাবাদ এক্স ২০-৩০, মুখাই মেল ১৯-২০, কারলা এক্স ১০-৪৫, হাওড়া-রাউরকেলা শতাব্দী এক্স ৬-০০টায় হাওড়া ছেড়ে টটানগর পৌঁছায় যথাক্রমে ১০-৫৫, ২১-৪৫, ১-৫৫, ১-৩৫, ০-৫৫, ২৩-১২, ১৬-০০, ৯-৪০এ। ১৩৫ দিন পুরুষোত্তম এক্স, নীলাচল এক্স, উৎকল কলিঙ্গ এক্সও যাচ্ছে পুরী থেকে এসে টটানগর/খড়াপুর/গোমো হয়ে দিল্লী। সপ্তাহের বাকি দিনগুলিতে নীলাচল যাচ্ছে খড়াপুর/গোমো হয়ে দিল্লী। রেল যাচ্ছে—হাওড়া-মুখাই গীতাঞ্জলী এক্স, হাওড়া-পুনে সাপ্তাহিক (৭) আজাদ হিন্দ এক্স, টটা-রাউরকেলা-আলেঙ্গি এক্স, পাটনা-টটা-রাউরকেলা এক্স, টটা-পাটনাকোট এক্স, কাটিহার-ছাপরা-টটা, ধানবাদ-টটা এক্স, টটা হয়ে। আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে খড়াপুর-টটা ৫-২৫, ৯-৫০, ১৪-৪০, ১৭-৫৫; টটা-বাদামপাহাড় ৬-০০; টটা-শুয়া ৮-১৫; টটা-বারবিল ১৬-৪৫; টটা-চক্রধরপুর ১৮-৩০; টটা-নাগপুর ৬-১০, ১৭-০০; টটা-আসানসোল ৮-৩০; টটা-বরকাননা ১৫-৪৫এ। রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে শহর। বাস ও অটো যাচ্ছে শহরের দুই প্রান্ত—সাকচি ও বিষ্টপুরে।

রাজ্য পরিবহণের বাস সংযোগ গড়েছে সাকচি থেকে রাজ্য তথা প্রতিবেশী রাজ্যের বিসিহিকেরে। কলকাতা-রাচির বাসও যাচ্ছে টটানগর হয়ে।



Main Rd, Bishtupur, Tatanagar-831001,
STD 0657-এ—Marwari Boarding; Modern
H; H Siddhartha, @ 425435, S ৩৫০ D ৪৫০
A/c S ৫৫০ D ৮৫০; Nalanda H, @ 425201, SAB ২০০
DAB ৩০০ A/c S ৪০০ D ৬০০; H Rajhans, @ 426186; H
Nataraj, @ 426061; Kohinoor H, Baby H, Mid Town H,
11 J Road, Bistupur, @ 432979, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S
৪০০ D ৬০০; *H Centre Point, 2 Inner Circle Rd-1,
@ 431324, A/c S ১০৫০-১৫৫০ D ১২৫০-১৭৫০; Bou-
levard H, Bistupur-1, @ 425321, A3R, SAB ৩৫০ DAB
৪৫০ A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইট ৮৫০/১০৫০; Station Road—
H Saubhagya, S ১২৫-১৭৫ D ১৭৫-২৫০ A/c S ৩৫০-

৪৫০ D ৪৫০-৬০০; H Raj; H Ashoka Green; Rani Board-
ing; Ganesh Star. Sakchi-তে—Man Sarovar, @ 428652,
H Virat, New Kalimati Rd, Sakchi-831001, SAB ১৫০-
২২৫ DAB ২০০-৩৫০ A/c S ৪২৫ D ৬০০; H Trimurti.
আর আছে Gujarat Boarding, Hindu Boarding, Rekhi, The
Kanchan H, 51 Thakurbari Rd, @ 428033; H Basun-
dhara, @ 430231; H Neelkamal, New Kalimati Rd,
Sakchi-1, @ 429949, H Abhishek, H Asian Inn, Dhatkidi-
5; ছাড়াও নানান হোটেল টটানগরে। এদের কাছে S ৬৫-১৭৫ D
১২৫-২৫০ টাকার মেলে। তেমনই আছে CH, DB, IB, FRH,
Tata Steel GH, Dinner Lake House, রেলের রিটায়ারিং ক্রম
ও বেশ কয়েকটি ধরমশালা টটানগরে।

এই সেদিনের কথা—জামসেদপুর তথা টটানগর ছিল
আদিবাসী অধুষিত এক অখ্যাত গ্রাম, নাম তার সাকোহী।
১৯০৮ খ্রিস্টাব্দে ভারতের প্রথম ইম্পাত কারখানাটি জন্ম
নেয় সাকোহীতে। আজ বিশ্বের ইম্পাত কারখানাগুলির মধ্যে
TISCO অন্যতম। ম্যানেজারের অনুমতিতে দেখে নেওয়া
যায় কারখানা। TISCO-র প্রতিষ্ঠাতা জামসেদজী টটার নামে
গড়ে উঠেছে জামসেদপুর বা টটানগর। ছবির মতো পটে
আঁকা সুন্দর শহর। যেতে ওঠে উৎসবের সঙ্গে টটাজীর
জন্মদিন ৩রা মার্চ সারা টটানগর।

দলমা পাহাড়, ডিমনা লেক, সুবর্ণরেখা ও খড়কাইনদীতে
ঘেরা জামসেদপুরের মূল আকর্ষণ মহিশুরের বৃন্দাবন
গার্ডেনের খাঁচে খাঁচে গড়া জুবিলী পার্ক। পার্কে রয়েছে
চিলড্রেন পার্ক, গোলাপ বাগিচা, বিলের পাশে গাছগাছালির
নার্সারি ও ওপেন এয়ার জু। প্রতি রবি, মঙ্গল ও শনিবার
সাঁথে আলোয় বলমল ফোয়ারাগুলিও আকর্ষণ বাড়ায়
পার্কের। জুবিলির পাশেই টটা স্পোর্টস কমপ্লেক্স ও কিনান
স্টেডিয়াম। শহর থেকে ১১ কিমি দূরে দলমা পাহাড়ের কোলে
ডিমনার লেকটিও টটার আর এক দ্রষ্টব্য। জল যাচ্ছে শহরে।
লেকের পাড়েরি হয়েছে ডিমনার লেক হাউস। থাকার পক্ষে
রমণীয়। TISCO-র অনুমতিতে ঘর মেলে থাকার। সুবর্ণরেখা
নদীর পরিবেশও সুন্দর। অত্যাৎসাহীরা সাকচি থেকে বাসে
বা অটোয় গিয়ে দোমোহানিতে সুর্যাস্তও দেখে আসতে
পারেন। সুবর্ণরেখা ও খড়কাইনদীর মিলনও ঘটেছে
দোমোহানিতে। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। ১০ কিমি
দূরের ছতকো ড্যামটিও আর এক দ্রষ্টব্য টটায়।

এই তো সেদিন কাগজের শিরোনাম হয়েছিল দলমা।
বন থেকে বেরিয়ে পশ্চিমবাংলা দাপিয়ে গেল হাতির যুথ।
বাঁকুড়া-পুর্লিয়া-টটা NH-33-এ পুর্লিয়া থেকে ৬৮ কিমি
যেতে গেটওয়ায়ে টু দলমা। বাঁহাতি ২১ কিমি পাহাড়ী পথে
জিপ যাচ্ছে। টোলের বিনিময়ে অনুমতি মেলে দলমা পাহাড়ে।
টটার দূরত্ব (২১+২২) ৪৩ কিমি। টটা থেকে মানগো হয়ে
পাঞ্জি বা পারিডি মোড়ে হাইওয়ে ধরে বায়ে চান্ডিল/রাচি
মুখী ৪ কিমি যেতে দলমা পাহাড়ের পদপ্রান্তে মনোরম

পরিবেশে হিল ভিউ রিসর্ট তথা দলমার প্রবেশ তোরণ। তোরণেরিয়ে ৯ কিমি চড়াই বেয়ে পথ উঠেছে পশ্চিমবাংলা লাগোয়া ৩০৬০ ফুট উঁচু দলমা পাহাড়ে। একদিকে কাটাসনি, অপরদিকে চম্—দুই পাহাড়। মহুয়া, পলাশ, কুমুম, শিমুল, কুর্চি, বনচামেলি, করঞ্জ, বন গন্ধারাজে ছাওয়া নানান রঙের ফুলে-ফলে ভরা ১৯৩ বর্গ কিমির গহন অরণ্যে বছরভর সূর্য অনুপস্থিত। গা ছমছম করা আরণ্যক পরিবেশে পাহাড়ী গুহায় শিবমন্দির। আর হয়েছে টিলার টঙে হনুমানজীর মন্দির। নিবিড় আরণ্যক শোভা, আদিবাসী ও অসংখ্য বন্য হাতি, ভান্ডুক, শেয়াল ছাড়াও নানান বনচরদের সহাবস্থান পরিবেশকে মোহময় করে তুলেছে। গহন বনের মাঝে হয়েছে বড়কাবাঁধ, মেজকাবাঁধ, ছোটকাবাঁধ, বিজলিখাঁটি, সস্ট লিক ও ওয়াটার হোল দলমায়। বনচরেরা আজও আসে নুন ও জলের তৃষ্ণা মেটাতে। এমনকি গ্রীষ্মের দিনগুলিতে অযোধ্যা পাহাড় থেকে বিহারে আসে বন্য হাতির দল। তেমনই চেনা-অচেনা পক্ষীকুলও নীড় বাঁধে শীতের দিনে দলমার বৃক্ষ শাখে। স্যাক্সচুয়ারিও হয়েছে ১৯৭৬-এর ডিসেম্বরে দলমায়। রক ক্রাইসিং—এর আসরও বসেছে দলমা পাহাড়ে। আর হয়েছে পাহাড়ী পথে অরণ্য অপরে চেনার ইন্টারপ্ৰিটেশন সেন্টার ও বিপরীতে ডিমার ব্রিডিং সেন্টার।

থাকার জন্য আছে বনদপ্তরের মডকাল ফরেস্ট রেস্ট হাউস, মডকাল বাংলো, কনকদশা রেস্ট হাউস, টাটার দলমা রেস্ট হাউস ছাড়াও নানান। এদের বৃকিং: ডি এফ ও, বন্যপ্রাণী প্রমুখল, নেপাল হাউস, ডোরাগু, রীচি-৪৩৪০০২ বাফরেস্ট রেঞ্জার, দলমা বন্যপ্রাণী আশ্রয়ালী, ফরেস্ট কলেজি, মানগো, জামসেদপুর-৪৩১০১১। আর হয়েছে ভীম (দলমা) বাবার আশ্রম—অনন্যোপায়ীদের রাত্রিবাসের ব্যবস্থাও মেলে। দলমা পাহাড়ের পদপ্রান্তে ফাদলাগোড়া, NH-৩৩এ মনোরম হিল ভিউ হিলিডে রিসর্টে DAB ৩০০, অব: ৩ TATA ২৪৭৬২, কলকাতা ৩ ২৩৯৫৭৯০। আর আছে Motel Highway, Ramgarh, NH-৩৩; H Shakuntalam, Kandrabera, NH-৩৩এ। অনিয়মিত বাস যাচ্ছে NH-৩৩ ধরে। তবে নিজস্ব ব্যবস্থায় জিপ ও দিন তিনেকের আহার্য সঙ্গী করে চলা যেতে পারে দলমা অভিসারে শীত বা বসন্তে।

রাচি থেকে এসে ভরদুপুরে একটা অটোয় চেপে টাটানগর বেড়িয়ে বিকাল ১৪-৫০এর টাটা-খড়াপুর লোকালে ১৭-৪০এ খড়াপুর পৌঁছে ১৮-২৫এর মেদিনীপুর/খড়াপুর-হাওড়া লোকালে

কলকাতা পৌঁছে যান রাত ২১-০৫এ। তবে একটা রাত টাটায় কাটিয়ে পরদিন সকাল ৬-০০টার সিল এক্সে ঘরপানে চলাই উচিত হবে। আবার চলার পথে ৩৬ কিমি দূরের ঘাটশিলায় জার্নি ব্রেক করে আরও ২/১টা দিন বিশ্রাম নিয়ে ফেরা যেতে পারে ঘর পানে।

ঘাটশিলা



টাটা থেকে ৬-০০টায় সিল এক্স, ২৩-৫৫য় রায়গাপা-হাওড়া এক্স, ১-৪৫এ হাতিয়া-হাওড়া, ১৬-৩৫এ ইম্পাত, ১০-৪০এ কারলা-হাওড়া এক্স, ৪-১৫, ৯-০০, ১৪-৫০, ১৮-৩০এ টাটা-খড়াপুর প্যাসেঞ্জার, ২২-৪৫এ কলিং-উৎকল এক্সে আধ ঘণ্টায় ঘাটশিলা পৌঁছান। দূরত্ব ৩৬ কিমি। এছাড়া বাস ও ট্রেকারও আসছে টাটানগর থেকে ঘাটশিলায়। আর কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় হাওড়া-টাটার যে-কোনও ট্রেনে চলা যেতে পারে ঘাটশিলায়। ৩ ঘণ্টার পথ, দূরত্ব ২১৫ কিমি। আবার লোকাল ট্রেনে খড়াপুর পৌঁছে ৫-২৫, ৯-৫০, ১৪-৪০, ১৭-৫৫-র খড়াপুর-টাটা প্যাসেঞ্জারে ২ ঘণ্টায় ঘাটশিলায় চলা যেতে পারে। প্যাসেঞ্জারে ১ ঘণ্টা সময় বেশি লাগে—তবে, ভাড়া লাগে আধা। কলিং-উৎকল এক্সও যাচ্ছে খড়াপুর/ ঘাটশিলা/ টাটা হয়ে। এমনকি কলকাতা-রাচি বাসও যাচ্ছে ঘাটশিলা হয়ে।



Ghatsila-832303, STD 06585-য় নানান হোটেল। রেল স্টেশন থেকে বেরতেই বামে মারোয়াড়ী ধরমশালা, ঘর ১৫ শয্যা সম্ভার ১০ হারে; ডাইনে Snehalata H, DCB ১২০ DAB ১৫০ ১৭৫ TAB ২০০। আর রেল স্টেশনের ডাইনে ১ থেকে ১৫ কিমি পশ্চিমে Main Rd, Dohigora-3এ—Mukul Bhawan G/H, R1, DCB ১০০ FAB ২২৫, তবে হোটেলটি আজটুকরা হয়েছে; Japani L, R1½, DAB একতলায় ১০০ দ্বিতলে ১৫০ ত্রিতলে ১৭৫; পথ ছেড়ে বাঁয়ে অপূর পথ—Safari L, R1½, SCB ৬০ DAB ১২৫ FAB ১৭৫ A/c D ৩০০; লাগোয়া H Anandita, R1½, DCB ৮০ DAB ১০০-১৭৫ A/c D ৩৫০; অতীতের বাগানবাড়িতে Matridham, এদের ছাদ থেকে সুবর্ণরেখা দৃশ্যমান; বিপরীতে হোটেল আরণ্যক; আরও দূরে পাহাড়শ্রেণী—পরিবেশ রমণীয়। আর হয়েছে H Shalimar, DAB ১৫০-২০০ FAB ২২৫ ডর্মি বেড ৪৫, কুলারও মেলে অভিরিক্তে; H Jyoti Palace, Shankar Talkies Complex, DAB ১২৫-১৭৫; H Green, DCB ১০০ TCB ১২৫ DAB ১৫০; H Abhishek. লোকাল ক্রসিং পেরিয়ে ফুলাভূমীর পথে বিহুতি সস্কৃতি পরিব্রমুখী যেতে

শতবর্ষে এশিয়ার শ্রদ্ধার্থ্য

ছোটদের নিবাস

পরিমল গোস্বামী

১০০.০০

খগেন্দ্রনাথ মিত্র

১০০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

হনুমান মন্দিরের বিপরীতে Sananda L, SAB ১০০, DAB ১২৫ ডমি ৪০, কল বুকিং: বনগলি, ৫ 5573572. বা Linkage ৫ 2464485. এপথে আরও যেতে H Oasis, R1, DAB ১২০-১৭৫ FAB ২৫০; H Aranyak, আর আছে সারদা লজ, জাপানির পাশে শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন গেস্ট হাউস, NH 44-এ হোল্টেলরনখাওয়া ও ফুলডুঙ্গরী পাহাড়ের সুন্দর পরিবেশে ফরেস্ট রেস্ট হাউস ঘাটশিলায়। তবুও যেন থাকার পক্ষে সানন্দা, ওয়েসিস, শালিমার, নেহলতা/আজ্ঞাও রমণীয় ঘাটশিলায়।



হলিডে হোম-ও হয়েছে নানান ঘাটশিলায়। UCO Bank, Staff Recreation Club, 10 Brabourne Rd, Cal-1, ৫ 2254120 (Ext 58), ৩য়তল; UBI Employees' Association, 10 N S Rd, Cal-1, ৫ 2207652/2205875; Bank of Baroda Staff Recreation Club, বুকিং: 4 Brabourne Rd, Cal-1, ৫ 2254553; Bank of Madura Em-ployees' Association, 19 Synagouge St, Cal-1, ৫ 254721/259123; UBI Employees' Co-operative, 4 N C Dutta Sarani, Cal-1, ৫ 2200841; Bank of India, 23 A-B, N S Rd, Cal-1, ৫ 2202301; Syndicate Bank Staff Recreation Club, বুকিং: 3B, Lalbazar St (2nd floor) Cal-1, ৫ 2486055; আর, হাওয়া বদল করতে যেতে চান যারা তাদের জন্য স্বল্পকালীন মেয়াদে প্রাইভেট ঘর-বাড়িও ভাড়া মেনে ঘাটশিলায়।

আজ্ঞাও নাকি সোনা মেলে বালুতটে—দেখতেও মেলে নদী-চরে সকাল-সাঁঝে। নামও তাই নদীর সুবর্ণরেখা। সেই সুবর্ণরেখার ঘাটে শিলা অর্থাৎ ঘাটশিলা। চন্দ্রালোকে দূর থেকে শায়িত হাতি বলে বিব্রম ঘটায় এই শত শত শিলাখণ্ড। দূরে—আরও দূরে প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে পাহাড়-শ্রেণী। বাঁয়ে মৌভাগুরে চিমনি উঠেছে আকাশ ফুঁড়ে ব্রিটিশের গড়া হিন্দুস্থান কপারের। মোসাবনী ছাড়াও নানান খনি থেকে তাম্র আকর আসছে। পাথর গুড়িয়ে তাম্র মিলছে—এমনকি সোনা ছাড়াও মিলছে নানান ধাতু পাথর থেকে। ক্ষাপা খুঁজে ফেরে পরশপাথর। কেবল শনিবার বারবেলায় ইনডেমনিটি বন্ড সই করে কারখানা ও ৩০০০ ফুট নিচে নেমে খনি দেখার অনুমতি মেলে যাত্রীদের। তারই মাঝে গুটি গুটি পা ফেলে কুমারমঙ্গলম সেতু দিয়ে মিলিয়ে যায় আদিবাসী রমণী। সত্যিই স্বপ্নে দেখা ইন্দ্রলোকের গটে আঁকা ছবি যেন। ছড়িয়ে ছিটিয়ে আদিবাসী গ্রাম। চলুন যাই শীতের ছুটিছটায় দিন সাতেকের বিশ্রামে ঘাটশিলায়। স্বাস্থ্যকর জায়গা, জলে হজমি গোলা। উচিতও হবে আদিবাসী গায়ে পাহাড়তলির আরণ্যক পরিবেশে ছোট্ট কুণ্ডের হজমি গোলা জল পান করে ফেরা।

রেল লাইনের সাথে, সমান্তরালভাবে বয়ে চলেছে সুবর্ণরেখা—মাঝে তাদের রাজপথ। আর সুবর্ণরেখা নদীকে ভর করে শহরের বিস্তার। বাজারঘাট রেল স্টেশন জুড়ে। দহিজোড়া মুখী বাঁহাতি অপর পথে বিভূতিভূষণের বসত-বাড়ি। অদূরে পঞ্চপাণ্ডব টিলায় বনবাসের কিছুকাল বাসও করেন পাণ্ডবরা। শাল, আমলকিতে ছাওয়া দহিজোড়া ও মোসাবনীর পরিবেশও সুন্দর। দূরে-দূরান্তরে পাহাড়ী টিলা,

নিচুতে তার সুবর্ণরেখা নদী। নদীর জল রক্তিম-নীলাভ। ধীর-স্থির তার প্রবাহ। রিকশা, অটো বা বাসে দহিজোড়া/মোসাবনী তথা শহর পেরিয়ে মোহন কুমারমঙ্গলম সেতুতে সুবর্ণরেখা ডিঙিয়ে ডানহাতি পথে আরও ১ কিমি যেতে রাতমোহনা অর্থাৎ পাহাড়ী টিলায় সূর্যাস্ত দেখা সেও আর এক রমণীয়। অন্তর্গামী সূর্যের রক্তিম আভা সোনা রঙ ধরায় প্রকৃতিকে। সুবর্ণরেখার নিম্নরঙ্গ জলে সে দৃশ্যও অভূতপূর্ব। তবে নির্জনতা হেতু টিলার টঙ রাতের আঁধারে নানান ব্যভিচারে দুষ্ট। আর বাঁয়ে ২কিমি দূরে ঘাটশিলা রাজাদের প্রাসাদপুরীতে, আজ আদালত বসেছে। অদূরে সুবর্ণরেখার সুন্দর প্রকৃতি।

রেল স্টেশনের পূর্বে থানা লাগোয়া পশ্চিমে আদিবাসীদের দেবী কালী অর্থাৎ রণকিনীর মন্দির। বৈচিত্র্য আছে দেবীমূর্তিতে। অতীতে গালুড়ির জঙ্গলে অধিষ্ঠিত ছিলেন দেবী। শিশুবলির প্রথাও ছিল দেবীর থানে সেকালে। ব্রিটিশই সে-প্রথার রোধ মানসে নানান সংঘাতের মাঝ দিয়ে দেবীকে তুলে এনে মন্দির গড়ে পূজার প্রথা চালু করে শহরে। কালে কালে দেবী আজ ভক্ষক থেকে শিশুদের রক্ষক। আশ্বিনে বিশেষ পূজা—মহিষও বলি হয় দুর্গা পূজার ১৫ দিন আগে। তেমনই হয়েছে ঠাকুর শ্রীরামকৃষ্ণ মন্দির দহিজোড়ায়। আর রয়েছে বিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়ের স্মৃতি-বিজড়িত বিভূতিসংস্কৃতি পরিষদ। পায়ে পায়ে ২ কিমি গিয়ে ফুলডুঙ্গরী টিলাটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ব্যর্থ প্রেমিকদের মনস্কামনা পূরণে খ্যাতি আছে ফুলডুঙ্গরীর। ঘাটশিলার প্রকৃতিও সুন্দর দৃশ্যমান টিলার টঙ থেকে।

শহর থেকে ৯ কিমি দূরে বুরুড়িতে ড্যাম অর্থাৎ বাঁধ গড়ে পাহাড়ী ঝোয়ার জল ধরে তৈরি হয়েছে লেক। জল যাচ্ছে চাষের কাজে। চারপাশে পাহাড়—পরিবেশ রমণীয়। অটোয় ১০০-১২৫ টাকায় যাতায়াত—সকাল বা সাঁঝে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। তেমনই শ'দেড়েক টাকায় অটো, টেম্পো বা জিপে বুরুড়ির সাথে জুড়ে ১৪ কিমি দূরে খারাগিরি জলপ্রপাতটিও দেখে ফেরা যায় ঘাটশিলা থেকে। বন্য-হাতিরও দর্শন মেলা অস্বাভাবিক নয় এপথে। মছারায় মৌতাতে ভালুকও চরে বেড়ায়। বুরুড়ি ছাড়িয়ে ৩টি পাহাড় ডিঙিয়ে পথ চলে খারাগিরি। চারপাশে পাহাড়, গিরি থেকে খারা নামছে—পারিপার্শ্বিক পরিবেশ রোমাঞ্চকর। গরুর গাড়িতে দিনভর প্রোগ্রামে পাহাড় পাহাড়—আরণ্যক পরিবেশে চড়াইভাতিও সেরে আসা যায় সওয়া শ' টাকায়। যাত্রিক পান শেষ ১ কিমি চলতে অক্ষম। আরণ্যক পথে পায়ে চলায় পথ ভুলের সম্ভাবনা—চলার পথে বাসাডেরা গ্রাম থেকে গাইড সঙ্গী করা ভাল।

৮ কিমি দূরে সিংভূম জেলার গালুড়িও আর এক স্বাস্থ্যকর স্থান। জলবায়ুর গুণে শীতের দিনগুলিতে স্বাস্থ্যোদ্ধারে আসেন দূর-দূরান্ত থেকে স্বাস্থ্যার্থীরা। পাহাড় আর অরণ্য, বয়ে চলেছে সুবর্ণরেখা, পশ্চিমে যদুগোড়া মাইনস।

ঘাটশিলা-টাটা বাস যাচ্ছে গালুডি হয়ে; রেলও যাচ্ছে ঘাটশিলার পনের স্টেশন গালুডিতে। অটো, জিপও মেলে শ'খানেক টাকায় যাতায়াতে। H Subarnarekha Resorts হয়েছে গালুডি ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্সে। আহার্যও মেলে। IDAB ৩৫০-৪৫০ FAB ৪৫০ ডর্মি ৬০ A/c D ৫৫০ ৬০০, কল বুকিং: World Express Travels & Tours, 2/2 Nirmal Ch Street, Cal-12, 02 278625/5553367/Linkage 0 2464485. আর আছে হোটেল সরমন্দিরা, কল বুকিং: 4710117/2443109. শীতের দিনে প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে WBTDG গালুডি-ঘাটশিলা-টাটা সফরে। আবার প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়া গালুডিতে। তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় ঘাটশিলা থেকে মোসাবনীর বাসে ক্রসিং পৌঁছে যুগগোড়ার বাসে গিয়ে আর এক জাগ্রতা অনার্যদের দেবী উগ্ররূপার রণকিনির মন্দির। মূর্তিতে বৈচিত্র্য আছে। শহর থেকে দূরত্ব ২২ কিমি। আবার রেল বা বাসে ঝাড়গ্রামমুখী ১২ কিমি গিয়ে আদিবাসী অধ্যুষিত শাল ও সেগুনে ছাওয়া পাহাড়ী অধিত্যকা ধলভূমগড়ের সুন্দর প্রকৃতির সাথে অরণ্যের মাঝে ধল রাজাদের প্রাসাদটি উচিত হবে দেখে চলা। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ধলভূমগড়ের শালের বনে FIB-তে; অবু: DFO, Jamshedpur, Bihar.

অত্যাশাহীরা ৭৫ কিমি দূরে ৩০৬০ ফুট উঁচু হেসাডি গিয়ে নিরালা-নির্জন দুর্গম ৩২ কিমি দূরের হিরণী জল-প্রপাতটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। দুধসাদা প্রপাতের জল ২৫০০ ফুট উঁচু থেকে পাথরে পড়ে সহস্রধারায় ঝরে পড়ছে। বাস যাচ্ছে। দিনে দিনে ফেরাও যেতে পারে হিরণী বেড়িয়ে ঘাটশিলায়। থাকাও যেতে পারে বিদ্যুৎহীন হেসাডি FRII-এ, অবু: EE, PWD Roads, Chaibasa Sadar. তেমনই হেসাডি থেকে ১২ কিমি দূরে টেবো পাহাড়ও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। চক্রধরপুর (সিকোপি) থেকে ২৫ আর রাঁচির ৮৯ কিমি দূরে হাজার তিনেক ফুট উঁচুতে অরণ্যময় পাহাড় টেবো। টেবোর খ্যাতি তার আদিম প্রকৃতি ও স্বাস্থ্যকর জল-হাওয়ার জন্য। টেবো থেকে ১৫ কিমি ট্রেক করে শাল, কেন্দু, পলাশে ছাওয়া রোগদণ্ড অভিযান করে নিতে পারেন অত্যাশাহীরা। এই রোগদণ্ড পাহাড় থেকেই বীরসা মুণ্ডা ব্রিটিশ রাজের বিরুদ্ধে লড়াই করে। রোগদণ্ডের বনবাংলোটো আজ শহীদ হয়েছে ঝাড়খণ্ডীদের সংগ্রামের লেলিহান শিখায়। চলতে-ফিরতে বনচরদের দর্শনও মেলে এপথে।

আবার চলা যেতে পারে ২২ কিমি দূরে পশ্চিমবাংলার কাঁকড়াঝোড়া ঘাটশিলা থেকে। মুম্বাই রোডে বাস যাচ্ছে হুম্মু হয়ে ঘাটশিলা থেকে। আধঘণ্টার পথ। হুম্মু থেকে ৭ কিমি পায়ে গিয়ে কাঁকড়াঝোড়া ফরেস্ট বাংলো। জিপ ছাড়া চলতে কলকাতা যাত্রীরাও যেতে পারেন এপথে কাঁকড়াঝোড়া। জিপও মেলে শ'চারেক টাকায় যাতায়াতে। এমনকি টাটানগরও বেড়িয়ে নেওয়া যায় ঘাটশিলা থেকে প্যাকেজ ট্যুরে দিনে দিনে।

সারাগু

প্রকৃতির পূজারীরা নৈসর্গিক সৌন্দর্যের শীলাভূমি সারাগুর জঙ্গলও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ঘাটশিলা থেকে বাস বা ট্রেনে টাটা পৌঁছে ৮-১৫, ১৬-৪৫এর টাটা-গুয়া/বরবিল প্যাসেঞ্জারে ৯-৪৫/১৮-০০টায় চাইবাসা, ১২-০১/২০-২৩এ বড় জামদা পৌঁছে প্রথম ট্রেনটি ১২-৩০এ গুয়া আর দ্বিতীয় ট্রেনটি ২১-০০টায় বরবিল যাচ্ছে। তেমনই টাটা-নাগপুর প্যাসেঞ্জারে ৬-১০, ১৭-০০এ টাটা ছেড়ে ঘন্টা তিনেকে মনোপুর পৌঁছেও চলা যায় সারাগুয়। কিরিবুরুর নিকটতম রেল স্টেশন গুয়া (২১ কিমি) হলেও যাতায়াতে ৩০ কিমি দূরে বড় জামদা আদরণীয় হবে। গুয়াতে বাসের অভাব।

আর, বাস যাচ্ছে ঘাটশিলা থেকে চাইবাসায় বদল করে বড় জামদা হয়ে সরাসরি কিরিবুরু। ১ ঘণ্টার পথ জামদা থেকে, বাসও মেলে ৭—১৯-০০টায় ঘন্টায় ঘন্টায়। এছাড়াও বাস আসছে টাটা, বোকারো, চক্রধরপুর, রাঁচি থেকেও বড় জামদা হয়ে কিরিবুরু পাহাড়ে। সারা শহর পরিক্রমা সেরে হোস্টেলের সামনে দিয়ে বাস পৌঁছায় বাজারে। তেমনই কলকাতা (বাবুঘাট) থেকে ১৭-৩০টায় OBT-র বারবিলের বাসে রাতভব জার্নিতে কেওনঝড় বা বারবিল পৌঁছেও বাসে চলা যেতে পারে কিরিবুরু। বাস যাচ্ছে ঠাকুরানী পাহাড়ের নিচে ওড়িশাব হালফিল শহর বারবিল থেকে কিরিবুরু পাহাড়ে। জিপও মেলে এপথে। আর কিরিবুরু থেকে বাস যাচ্ছে—টাটা ৪-৩০, ৬-৫০, ১২-৪৫, ১৬-৩০; বোকারো যাচ্ছে ৬-৫০; চক্রধরপুর ৫-০০, ৫-৩০, ৮-০০, ৮-৪৫, ১৪-৪৫; রাঁচি যাচ্ছে ৫-০০, ৭-৩০; চাইবাসা যাচ্ছে রাঁচি ও টাটার প্রতিটা বাস।

কিরিবুরু : হো ভাষায় মেঘাতুবুরু অর্থ জমিট বাধা মেঘেরের মতো জমিটি বুরু অর্থাৎ জঙ্গল। তেমনই ছিল কিরিদের বুরু অর্থাৎ পোকাদের জঙ্গল কিরিবুরুতে। কিরিদের সাথে সাথে বুরুতেও আজ টান ধরেছে। দুই-এরই অবস্থান পাশাপাশি একই শৈল শিখরে সারাগুর জঙ্গলে। মেঘাতুবুরুতে (Meghatuburu) বোকারো স্টিল আর কিরিবুরুতে কিরিবুরু আয়রন ওর কোম্পানির কারখানায় পাথর গুড়িয়ে লৌহ মিলছে। লৌহ যাচ্ছে বোকারো ছাড়াও ভারতের নানান ইম্পাত প্রকল্পে। এদেরই কর্মকাণ্ড চলছে বিহার ও ওড়িশা সীমান্তের সারাগু ঘেঁষা ২৯৫০ ফুট উঁচু অরণ্যে ছাওয়া কিরিবুরু ও মেঘাতুবুরুতে।

পাহাড় আর পাহাড়, থরে-বিথরে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে; আর আছে গহীন অরণ্য কিরিবুরুতে। তারই শিরে নীল চাঁদোয়া হয়ে নীলাকাশ। গরমের আধিক্য নেই, শীতেরও প্রকোপ কম। জলবায়ু নাতিশীতোষ্ণ। ভবে, ক্ষণে ক্ষণে আবহাওয়ার বদল ঘটে চলে দিনে রাতে কিরিবুরুতে। মেঘেরাও নেমে এসে ছাটা ধরে বৃষ্টির শাখে শাখে। পাহাড়ী শহরের মাদকতার অভাব ঘটলেও নিরালা নিভুতেআরণ্যক পরিবেশে ছোট্ট অবকাশ কাটাবার মনোহর পরিবেশ কিরিবুরু। মার্চ ও অক্টোবরে হাফা উলেন আর শীতে ভারী উলেন দরকার হয়ে পড়ে কিরিবুরু ভ্রমণে।

গেস্ট হাউস লাগোয়া ভিউ পয়েন্ট থেকে জলে ভাসা

মরালের মতো ৭০০ পাহাড়চূড়া শুণে নেওয়া যায় একে একে। দেখে যেন মনে হয় সামুদ্রিক টেড-এর মতো পাহাড়ী টাইফুন আছড়ে পড়বে গেস্ট হাউসের দেওয়ালে। তেমনই পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায় ৫ কিমি দূরের হিল টপ অর্থাৎ খনি এলাকা। হিলটপে ওয়াচ টাওয়ার থেকে পুরো সারাণা দৃশ্যমান। উচিত হবে সকাল বা সাঁঝে শহরটা পাক খেয়ে নেওয়া। মন্দিরও হয়েছে দেবী কালীর হোস্টেলের অদূরে।

প্রাইভেট হোস্টেলের অভাব। তবে, একান্তই অফি-সিয়ালদের জন্য হলেও অগ্রিম অনুমতিতে যাত্রীদেরও থাকার ব্যবস্থা মেলে Meghahatuburu Bokaro Steel Plant Hostel ও ১ কিমির ব্যবধানে এদেরই শীতাতপ Guest House-এ। হোস্টেলে বাথ সংলগ্ন ডাবল বেডের ঘরে বেড ৮ হারে। আর গেস্ট হাউসে ২০ হারে প্রতিজনা। হোস্টেলে ক্যান্টিনের অভাব। মিনিট দেশেকের পায়ে হটা পথে আহার্য মেলে দোকানপাটে। তবে গেস্ট হাউসের ক্যান্টিনেও সাঙ্গ করা যায় আহরপর্ব। Hostel বা GH-এর বুকিং: Incharge, Sail Hostel/GH, Meghahatuburu, Singhbhum, Bihar. PC-833233. এদের কলকাতা বুকিং—Sail, 10 Camac St, Cal. আর আছে PWD IB ও GH কিরিবুরুতে। এবার ঘরে ফেরার পালা—৪-৩০টায় কিরিবুরু ছেড়ে টাটা পৌছে মুখাই-হাওড়া এক্সে বা খড়াপুর প্যাসেঞ্জারে টাটা ছেড়ে কলকাতায় ফিরন দিনান্তে।

আবার কিরিবুরু থেকে জিপে ঘণ্টা চারেকের সারাণার বন অভিযানও করে আসা যায় থলকোবাদ, শশাংবুরু ও কুমডি অরণ্য বেড়িয়ে। হাজার দুয়েক ফুট উঁচুতে চলতে ফিরতে বনা হাতি, বন্যকুকুর, শম্বর, ভালুক, বাইসন, চিতা ছাড়াও নানান বনচরদের দর্শন লাভ অস্বাভাবিক নয় থলকোবাদ ও কুমডিতে। বড় জামদা থেকে ৫০ কিমি দূরে থলকোবাদ; কুমডির দূরত্ব ৩০ কিমি। চেকপোস্টের অদূরে টিলার টঙ্গে (১৮০০ ফুট) থলকোবাদ বাংলা—থাকার পক্ষে মনোরম। বাংলা লাগোয়া ভিউ পয়েন্ট। বাংলা থেকে ৫ কিমি দূরে টোয়েবু ফলস্। তেমনই অভিযানগ্রিয়রা থলকোবাদ থেকে আরণ্যক পথে ৪০ কিমি গিয়ে সিমলিপালও পৌছে যেতে পারেন জিপে। ভার্জিন অরণ্যের মায়াবী রূপ ও জন্তু দর্শনে রোমাঞ্চ মিললেও পথ ভুলের সম্ভাবনা পদে পদে সারাণায়। ছুটে চলেছে কোয়না নদী মরচে লাল জল বুকে নিয়ে। বাঁধ পড়েছে অদূরে। বনবিভাগের রেস্ট হাউসও আছে শালে ছাওয়া-শান্ত নির্জনতায় আচ্ছন্ন থলকোবাদ ও কুমডি অরণ্যে। এছাড়াও ফরেস্ট বাংলা আছে আরও ৯—সারাণার জঙ্গলে। কিরিবুরু রেঞ্জে—বরাইবুরু, করমপদা, কুমডি; কোয়না রেঞ্জে—মনোহরপুর, সালাই, আনুকুয়া, ছোটনাগরা, পোঙ্গা; সামটা রেঞ্জে—সেরাইকেলা, তিরিনপোসি, থলকোবাদ।

আর বড় জামদা থেকে ৬ কিমি দূরে মূল জঙ্গলের প্রবেশ তোরণ ঘোড়ার জিনের মতো—স্যাডেলপয়েন্ট। সাঁকোতে কোনো নদী পেরিয়ে আরণ্যক পরিবেশে বরাইবুরুর টিলার টঙ্গে ডাকবাংলো মেলে। ডাইনে গুয়া পাহাড়, বাঁয়ে কিরিবুরু; সমুখপানে গহন অরণ্য—ল্যান্ডস অব সেভেন হান্ড্রেড হিলস সারাণা। অরণ্যচররাও নেমে আসে সারাণা থেকে ডাক-বাংলার চারপাশে।

তেমনই রঙবেরঙের নানান ফুল, নানা পাখি পরিবেশকে রমণীয় করে তোলে। এমনকি ৮ বছর অন্তর ফোঁটা হুতিতি ফুল—এরও দর্শন মেলে সারাণার গভীরে। কুমডি থেকে কয়েক মাইল দূরে আদিম উপজাতি বিরহড়দের গ্রাম। আধুনিক জীবন মানে অনভ্যস্ত এরা—চাষ-আবাদ পৌছায়নি, বানর-ডুমির (উই পোকো)—পিপড়ের ডিম এদের খাদ্য। আর ভিয়েন (হাঁড়িয়া), আরকি (মহুয়া জাত মদ) এদের অপরিহার্য পানীয়।

থলকোবাদ থেকে ৪০ কিমি গিয়ে কোয়না রেঞ্জের সালাই বাংলা। গহন বনের মাঝে মালভূমির টঙ্গে ২ ঘর, ১ আউট হাউস নিয়ে বাংলা। অদূরে বয়ে চলেছে কোরা নদী। গিয়ে মিলেছে কোয়ালের সঙ্গে। প্রকৃতিতে থলকোবাদ থেকেও সালাই আরও আদিম। হিংস্রতম বন্যকুকুর, চিতা, বন্য ভালুক যত্রতত্র দেখতে মেলে। আর আছে নদী পারে চিড়িয়া মাইনস। চলার পথে ঝোরা, প্রপাত, মহাশাল, বিজা, খাতুপ সম্ভাষণ জানায়। সালাই থেকে গুয়া ফিরে চলা যেতে পারে ঘরপানে।

৭০০ পাহাড়ের দেশ ৫০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত বিহারের সিংভূম জেলার সারাণার জঙ্গল। অনাবিল-অকৃত্রিম-আদিম অরণ্যভূমে হে-দের বাস। শাল-পিয়াল-জারুল-আমলা-মহলের সবুজ সান্নিধ্য সূর্যেরও প্রবেশ মানা। তাই পথের নিশানা পেতে একান্তই উচিত হবে জামদা থেকে সারাণায় চলা। তেমনই উচিত হবে শ'আড়াই কিমি পরিক্রমায় ও থেকে ৫ দিনের প্রোগ্রামে রেশন-ব্যানস চাইবাসা বা বড় জামদা থেকে সঙ্গী করা। জিপও ভাড়াই মেলে বড় জামদায়। তবে, বনবাসের বাংলা বুকিং: District Forest Officer, Chaibasa, Singhbhum, Bihar-833201 থেকে। অনুমতিও লাগে সারাণার জঙ্গলে যেতে DFO, Chaibasa-র। উচিতও হবে চলার পথে বা আগে ভাগেই সংগ্রহ করে নেওয়া।

অরণ্যময় পাহাড়ভূমির আর এক আকর্ষণ আদি-বাসীদের দেশ চাইবাসা। সিংভূম জেলার সদরও বসেছে চাইবাসায়। ছোট ছোট টিলা, ভিলাধর্মী বাড়িঘর। শাল সেগুনে ছাওয়া উঁচু-নিচু পথ-ঘাট। যেন পটে আঁকা ছবি এক। ওরাও মুণ্ডাদের বাস—আওয়াজও উঠেছে ঝাড়খণ্ডের দেশের চাইবাসার আকাশে। বাঙালিয়ানাও আছে শহরে। চাইবাসার জল সেও যেন এক ধবন্তুরি। জলে যেন হজমি গোলা। ক্ষিদে বাড়ে চাইবাসার জলে। দিঘির পর দিঘি, নাম তার বাঁধ—

মধুবাঁধ, রানীবাঁধ, শিববাঁধ, জুবিলি বা সাহেববাঁধ। এরাও পরিবেশকে মধুময় করে তুলেছে। বোটিং, চিলড্রেন পার্কও গড়ে উঠেছে পর্যটক বিনোদনে সাহেববাঁধে। তেমনই চাইবাসার আর এক আকর্ষণ মুদ্রালাল রুটে। গার্ডেন।



হোটেলও আছে নানান চাইবাসায়। থাকার জন্য H Akash, near Jail, চাইবাসায় সেরা; শীতাতপ ঘরও মেলে। H Annapurna, Sadar Bazar, Chaibasa-

833201, SCB ৪০ DCB ৮০ SAB ৬৫ DAB ১০০-১৫০। ঘর এদের অতি সাধারণ নানের, তবে হোটেল অন্নপূর্ণাখাবারের ব্যবস্থা ভালই। আর আছে রঘুহোটেল, অতি সাধারণ সাজে জনতা লজ, মধু বাজার; ভারত লজ, রুথ মার্কেট; ট্রাই লজ ছাড়াও মারোয়াড়ি ধরমশালা ও রুটে। গেস্ট হাউস, জৈন মার্কেট। PWD-র IB-ও আছে কাছারিব বিপরীতে চাইবাসায়। বাংলাব বুকিং: EE, PWD, Chaibasa, Bihar, PC-833201, আর হাওয়া বিলাসীদের প্রাইভেট বাড়ি ঘরও ভাড়া মেনে চাইবাসায়।

কলকাতা যাত্রীদের চাইবাসায় যেতে সহজতম পথ দক্ষিণ-

পূর্ব রেলের হাওড়া-রাউরকেলা রেল পথের ত্রিমুখী তিন রেল সংযোগকারী স্টেশন—টানগর ২৫১, রাজখারসওয়ান ২৯৩, চক্রধরপুর ৩১৪ কিমি। ট্রেনও যাচ্ছে ইম্পাত এক্স, মুর্খাই এক্স, তিতলাগড় এক্স ত্রয়ী হয়ে। ইম্পাত থামে না রাজখারসওয়ানে। বাসও যাচ্ছে প্রতিটি রেল সংযোগকারী স্টেশন থেকে চাইবাসায়। তবে, ৬৫ কিমি দূরের টাটা থেকে বাসের আধিক্য মেলে চাইবাসা যেতে। তেমনই ট্রেন যাচ্ছে নানান কলকাতা থেকে টাটা। সরাসরি যাত্রায় উচিতও হবে টাটা হয়ে চাইবাসায় চলা। প্রতি বিকালে কলকাতার এসপ্লানেড থেকে বিহার সরকারের বাসও যাচ্ছে পরদিন সকালে চাইবাসা/বড় জামদায় পৌঁছে বরবিলে। ঠাকুরানী পাহাড়ের নিচে হালফিল শহর ওড়িশার বরবিল। চাইবাসা ছাড়িয়ে ৭৭ কিমি যেতে জামদা অর্থাৎ বড় জামদা। বন-পাহাড়েরে ঘেরা স্টেশন। বায়ে বিহার রাজ্য ডাইনে ওড়িশা—বিচিত্র মেলবন্ধন ঘটেছে দুই-এ। কিরিবুরকর বাস যাচ্ছে বড় জামদা হয়ে। সারাণার সিংহহারও এই বড় জামদা। জিপও যাচ্ছে বড় জামদা থেকে সারাণা জঙ্গলে। রেলের রিটার্নিং রুমে থাকারও ব্যবস্থা মেলে বড় জামদায়।

পথের পাঁচালী—১

Namastay.
Tourist afis kahan hai?
Yahan kaunsi jagah
dekhne ki hain?
Mujhe shahar ka
naksha chahiye.
Shukriya.
Namastay.
Hotal kitni dur hai?
Mujhe wahan lc chalo.
Duri ke hisab se kya
kiraya hai?
Mujhe singal kamra
chahiye.
Mujhe yeh kamra
pasand hai.
Iska kiraya kya hai?
Portar ko bulao.
Mere pas ek suitcase
aur ek beg hai
Yeh bas kahan jayegi?
Main Qutb jana chahta
hun.

Good Morning.
Where is the tourist office?
What are the places worth
visiting?
I want a city guide
map.
Thank you.
Bye Bye
How far is the hotel?
Take me there.
What is the fare by the
distance?
I want a single room.
This room suits me.
What is the rent?
Call a porter.
I have a suitcase and
a bag.
Where does this bus go?
I want to go to the Qutb
Minar.

শুভ প্রভাত।
ট্যুরিস্ট অফিসটি কোথায়?
এখানে দেখার উল্লেখযোগ্য
কি কি আছে?
আমি শহরের একটি গাইড
ম্যাপ চাই।
ধন্যবাদ।
বিদায়কালীন সম্ভাষণ
হোটেলটি কতদূর?
আমাকে সেখানে নিয়ে চল।
ভাড়া কত এই দূরত্বের?
আমি একটি সিঙ্গেল বেডের
ঘর চাই।
আমার এ ঘরটি পছন্দ হয়েছে।
ভাড়া কত?
একটি কুলী ডাকুন।
আমার একটি সুটকেস ও
একটি ব্যাগ আছে।
এ বাসটি কোথায় যাবে?
আমি কুতব মিনার যেতে চাই।

ত্রিপুরা

ত্রিপুরা বলতে আগরতলাকেই বুঝি আমরা। অতীতে মহারাজাদের স্বাধীন রাজ্য ছিল ত্রিপুরা। দীর্ঘ ১৩০০ বছর ধরে স্বাধীনভাবে রাজত্বও করে এই রাজবংশ। গৌড়ের সুলতান শামসুদ্দিন মাণিকা খেতাবে ভূষিত করেন ত্রিপুরারাজাদের। তবে ১৭৮৪তে প্রাচীন রাজধানী উদয়পুর শামসের গাজির দখলে যেতে মহারাজা কৃষ্ণমাণিকা উদয়পুর ছেড়ে আগরতলায় এসে প্রাসাদ গড়েন। সংস্কৃতির ধারক ও বাহক হিসাবেও যথেষ্ট খ্যাতি ছিল এই মহারাজাদের। এমনকি কবিগুরু রবীন্দ্রনাথের যোগসূত্রও গড়ে উঠেছিল ত্রিপুরার রাজপরিবারের সঙ্গে। স্বাধীনতার পর ১৯৪৯-এর ১৫ই অক্টোবর ভারত যুক্তরাষ্ট্রের শামিল হয় ত্রিপুরা। ১৯৫৭-র ১লা নভেম্বর কেন্দ্রশাসিত আর ১৯৭২-এর ২১শে জানুয়ারি রাজ্যের মর্যাদা পায় ত্রিপুরা। আয়তনে ভারত রাষ্ট্রে চতুর্থ ক্ষুদ্রতম রাজ্য ত্রিপুরা। মূলত আদিবাসীদের দেশ ত্রিপুরা। তবে জাতিগত প্রভেদ নানান—সমাজ-সংস্কৃতিও ভিন্ন এদের। আর, স্বাধীনোত্তর কালে পূর্ব পাকিস্তান থেকে আগত বাঙালি উদ্বাস্তুরাই মুখ্য অংশ নিয়েছে এর নগর জীবনে। তেমনি আছে ৫৮৬টি চা-বাগিচা শিল্পবিমুক্ত রাজ্য ত্রিপুরায়।

প্রকৃতি অতি সুন্দরভাবে সাজিয়ে তুলেছে ত্রিপুরাকে। এর পাহাড় অরণ্য ও প্রাকৃতিক দৃশ্যের পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য। সারা রাজ্যটাই বটানিক্যাল গার্ডেনে রূপ নিয়েছে। Deotamura অর্থাৎ দেবতাদের পাহাড় উদয়পুর থেকে অমরপুর দ্রুত রূপ নিচ্ছে পর্যটন কেন্দ্রে। তেমনই গুমতীর বাম পাড়ে বাংলাদেশ সীমান্তের সোনামুড়ায় সন্ধান মিলেছে প্রত্নতত্ত্বের। ৩৫৮৮ বর্গকিমি ব্যাপ্ত রিজার্ভ ফরেস্ট সারা রাজ্য জুড়ে। ৪টি ওয়াইল্ডলাইফ স্যান্ডচুয়ারিও হয়েছে ত্রিপুরায়। উত্তর ত্রিপুরায় Rowa WLS, পশ্চিম ত্রিপুরা জেলায় Sepahijala WLS; আর দক্ষিণ ত্রিপুরা জেলায় Trishna WLS ও Gumti WLS-এর অবস্থান। ত্রিপুরার হাতের কাজেরও সমাদর আছে শিল্পরসিক মহলে। নানান বর্ণের নানান ঢঙের ফ্যাব্রিক শাড়ি, শীতলপাটি, বাঁশ-কাঠ-বেতের নানান সস্তার পর্যটকদের লোলুপ দৃষ্টির শিকার হয়।

তবে, ত্রিপুরার ভৌগোলিক অবস্থান পর্যটক বিমুক্ত করে তুলেছে পর্যটকদের। অবিতস্ত ভারতে আগরতলার রেল সংযোগকারী স্টেশন ১০ কিমি দূরের আখাউরা জং আজ বাংলাদেশে। ত্রিপুরার উত্তর-পশ্চিম-দক্ষিণ এমনকি দক্ষিণ-পূর্বও ঘিরে রেখেছে বাংলাদেশ। আর খাপে ঢাকা বাঁকা তলোয়ারের মতো কুলে রয়েছে ত্রিপুরা উত্তর-পূর্ব ভারত অর্থাৎ অসম ও মিজোরামের কটিবন্ধে।

তবে, ত্রিপুরার অতীত ইতিহাসও যথেষ্ট গৌরবময়।

মহাভারতেও এর উল্লেখ মেলে। পৌরাণিক রাজা যযাতির পুত্র দ্রুহ্য কিরাত দেশ থেকে বিতাড়িত হয়ে রাজ্য গড়ে তোলেন সেকালের ত্রিপুরায়। আর দ্রুহ্যর ৪০তম উত্তর-সুরি মহারাজ ত্রিপুরের নাম থেকেই নামান্তর ঘটে রাজ্যের—ত্রিপুরা। এমনকি ত্রিপুর-পুত্র ত্রিলোচন মহাভারতের যুধিষ্ঠিরের রাজসূয় যজ্ঞে ডেলিগেট রূপে হাজির ছিলেন। জনশ্রুতি, রাজপরিবারের কুলদেবতা চতুর্দশ বিগ্রহ মহারাজ ত্রিলোচনই স্বপ্নাদিষ্ট হয়ে প্রতিষ্ঠা করেন।

পর্যটনের স্বার্থে ত্রিপুরার দ্বার আজ বিশ্ববাসীর কাছে অব্যাহত। অতীতের RAP প্রথাও রদ হয়েছে ত্রিপুরা থেকে আজ।

আগরতলা

ত্রিপুরা রাজ্যের রাজধানী শহর আগরতলা। ১২.৮০মি উঁচুতে সুন্দর ছবির মতো শহর, শহরের প্রাণকেন্দ্রে মহারাজাদের প্রাসাদ। এই প্রাসাদ থেকেই প্রশস্ত রাজপথ গিয়েছে তিনটি। রাজপথের দু'পাশে বাড়ি-ঘর, দোকানপাট, মায় আগরতলা শহর। বাড়িগুলিতেও বেশিষ্টি আছে। স্থাপত্যও অভিনব—৪৫ এদের সাদা, সামনে বারান্দা প্রতিটি বাড়িতে। দূর থেকে মনে হয় একটাই বারান্দা চলেছে পথপাশে দু'পাশ জুড়ে।



আগরতলা যাত্রীদের বিমানই সহজতম যান। ১৩ ৬ দিন ৬-২০এ, ২৭ দিন ৯-২০এ, ২৩ ৪ ৫ ৬ ৭ দিন ১৩-০০টায় কলকাতা ছেড়ে ৫০ মিনিটে আগরতলায় যাচ্ছে IAC-র উড়ান। ফেবে। ১৪ ৭ দিন ৯-৩০, ২ ৭ দিন ১১-০০, ২ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ দিন ১৪-৩০এ আগরতলা থেকে কলকাতায়। ১ ৩ ৬ দিন ৭-৫৫য় আগরতলা ছেড়ে গুয়াহাটি যাচ্ছে ৮-৩৫এ; গুয়াহাটি থেকে আগরতলা আসছে। ১ ৪ ৭ দিন ৮-১০এ ছেড়ে ৮-৫০এ IAC-র বিমান। Skyline NEPC ৪ ৫ ৭ দিন আগরতলা থেকে গুয়াহাটি যাচ্ছে সকাল ৭-৩৫এ। বিমানবন্দর থেকে ১০ কিমি দূরে আগরতলা শহর। IAC-র বাস, ট্যাক্সি, অটো যাচ্ছে বিমানবন্দর থেকে শহরে। শেরারোও যাচ্ছে ট্যাক্সি ও অটো এপথে।



আর রেল যদিও পৌছেছে ত্রিপুরায়, তবে আগরতলার নিকটবর্তী রেল স্টেশন ১৩২ কিমি দূরে কুমারঘাট। N F Rail যাচ্ছে। কলকাতা থেকে গুয়াহাটি/লামডিং/লোয়ার হাফলু/বদরপুর হয়ে গিয়েছে এই রেল। ৪০১৬ ব্রহ্মপুত্র মেল ১৪-১৫য় গুয়াহাটি ছেড়ে ১৮-১৫য় লামডিং পৌছে ডিমাপুর-তিনসুকিয়া হয়ে ডিব্রুগড় যাচ্ছে। ১৩-০০টায় গুয়াহাটি-লামডিং এক্স, ১৯-০০টায় গুয়াহাটি-তিনসুকিয়া ইস্টার্নসিটি এক্সও যাচ্ছে গুয়াহাটি থেকে যথাক্রমে ১৭-১৫/২৪-৩০এ লামডিং। ১৩ ৪ ৭ দিন ১৮-০০টায় গুয়াহাটি ছেড়ে ২১-১৮য় লামডিং পৌছে ডিব্রুগড় যাচ্ছে ২৪২৪ ডিব্রুগড় রাজধানী এক্স।

গুয়াহাটি-লামডিং প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে ৬-৩০এ গুয়াহাটি ছেড়ে ১৩-০০টায় লামডিং। আর লামডিং থেকে ৪-০০টায় ছেড়ে ২০৪ ত্রিপুরা প্যাসেঞ্জার লোয়ার হাফলং ৯-৩০, বদরপুর ১৫-২০, করিমগঞ্জ ১৬-২০, ধর্মনিগর ১৯-১০এ পৌছে কুমারঘাট যাচ্ছে ২১-২০এ। কলকাতা থেকে পথের দূরত্ব ১৪৮৮ কিমি। সময় নেয় ২½ দিন। তাই থকল, সময় ও খরচ-খরচা—এই তিনের যোগফল বিমান ভাড়ার থেকে কম নয়।

ত্রিপুরা □ রাজধানী: আগরতলা। আয়তন: ১০৪৯১ বর্গ কিমি। লোক সংখ্যা: ২৭৫৭২০৫। ভারতের লোকসংখ্যার: ০.৩২%। পুরুষ: ১৪১০৫৪৫। নারী: ১৩৩৪২৮২। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৬৯১৭৬৯। বৃদ্ধির হার: ৩৩.৬৯%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২৬২। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৪৬। সাক্ষরের হার: ৬০.৩৯%। প্রধান ভাষা: বাংলা। সঙ্গে চলে ককবরক ও মণিপুরি; হিন্দি ও ইংরেজিরও চল আছে রাজ্য জুড়ে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ২৮৬৬.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)।

বেড়ার মরসুম: সেপ্টেম্বর থেকে মার্চ মাস। গ্রীষ্মে সাধারণ সূতি আর শীতে উলেন বসন লাগে ত্রিপুরা ভ্রমণে। শীতের আধিক্যও আছে ডিসেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে। শীতলতম দিনগুলিতে ২৭° থেকে ৪.২° আর গ্রীষ্মে ৩৮° থেকে ১৬.৬° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। আর জুন থেকে আগস্ট মাসে বৃষ্টির পরিমাণ ২২৪.৬ মিমি। রাজ্যের ৬০ ভাগ পাহাড়ী, বাকি অংশ বন। শিল্পে বিমুখ, অরণ্য সম্পদে যথেষ্ট সমৃদ্ধ ত্রিপুরা রাজ্য।

৭ দিনে ত্রিপুরা রাজ্য—তবুও যেন উচিত হবে উত্তর-পূর্ব ভারত ভ্রমণের সাথে জুড়ে ত্রিপুরা বেড়িয়ে নেওয়া।



আগরতলা শহর থেকে বাসও যাচ্ছে সুন্দর পাহাড়ীপথ ধরে রাজ্যের দিকে দিকে। এমনকি ত্রিপুরা রোড ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন ও নানান ট্রান্সপোর্ট এজেন্সির বাস যাচ্ছে অসমের শিলচরে। সড়ক পথে কলকাতার দূরত্ব ১৮০৮, গুয়াহাটি ৫৯৭, শিলং ৪৯৬, শিলচর ৩০৮ কিমি আগরতলা থেকে।



Agartala, STD 0381-এ শহরের কেন্দ্রস্থলে—H Radha International, 54 Central Road, Agartala-799001, ☎ 224530, S ১৫০-২২৫ D ২৫০-৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৬০০ সাইট ৬৫০ ১০০০; Royal GH, Palace Compound (West), A10B, ☎ 225652,

SAB ১৫০-২২৫ DAB ২৫০-৩৭৫ A/c S ৪০০ D ৫৫০-৮০০; Broadway GH, Palace Compound, Colonel Chowmohani, ☎ 225613, DAB ১৫০-২৭৫ A/c D ৪৫০; H Kakali, Post Office Chowmohani, ☎ 223234, SAB ১২৫ DAB ২২৫ TAB ২৫০ FAB ২৭৫; Rajdhani H, B K Rd, ☎ 223387, S ১৭০-২৭৫ D ২৫০-৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০-৬০০; Tripura G H, Mantribari Rd, ☎ 227995, S ১২৫ D ২০০ A/c D ৩০০; Indian GH, Mantribari Rd; H Ambar, Sakuntala Rd, ☎ 223587, SAB ৮৫-১৭৫ DAB ১৫০-২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০; Hotel A B, Chittaranjan Rd, SAB ৮০ DAB ১৫০; Sagarika GH, Sakuntala Rd, S ১০০ D ১৫০; H Minakshi, H G Basak Rd, ☎ 223430, SAB ৮৫-১৭৫ DAB ১৫০-২৭৫ A/c S ২৫০ D ৪০০; H Heaven, H G Basak Rd, ☎ 225737, S ১৬৫-২৫০ D ২৫০-৪৫০; Ritz H, SCB ৬০ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০ FAB ২০০; Hotel O K, H G Basak Rd, S ৪০-৮৫ D ৮০-১৫০; Saurashtra H, H G Basak Rd, S ৩৫-৬০ D ৬৫-১২৫; Moon Light H, opp Rabindra Bhavan, SCB ৪৫ DCB ৮৫; Greetanjali GH, Office Lane, SCB ৬৫ DCB ১২৫ SAB ৮৫ DAB ১৫০-২২৫; Jay Ram G H, Office Lane, ☎ 227994, S ৮০-১২৫ D ১২৫-১৭৫; Deep G H, L N Bari Rd, ☎ 227482, S ১২৫ D ২২৫; মেট্রী পেস্ট হাউস, বটতলা; অজন্তা হোটেল। গান্ধীঘাটের বামে NS Rd-1এ—New Sankar H, SCB ৬০ DCB ১০০; Sankar GH, S ৪৫ D ৮৫; Kalpataru G H; Ashoke G H, S ৪০-৬৫ D ৮৫-১২৫; Uttarayan GH, DAB ১০০-১৫০। Motor Stand Rd-এ—Santi H, H Janata, H Tripuri, Vivekananda H-এ থাকার ব্যবস্থা মেলে।

এছাড়া এয়ারপোর্ট থেকে শহরের পথে ৩ কিমি আগেই কুঞ্জবনে হয়েছে Agartala Club-cum-GH, PC-799005, DAB ২০০; Sonali RH, S ১৫০ D ২০০-৩২৫; সার্কিট হাউস, অব: D M, Tripura-West : রাজ্য পর্যটনের Tourist Lodge, DAB ৮০ A/c D ১৫০; Yatrika, রাজ্য পর্যটনের Rajarshree Yatri Niwas, ☎ 225930, DAB ১৫০ ২০০ ডিলাক্স A/c D ৪০০ চার বেডের ঘরে প্রতিজনা ৬৫, ৬ বেডের ঘরে ৫০, কুঞ্জবনে। Bhagat Singh Youth Hostel, ☎ 225432, D ৩০ ভর্মি ১০; ২টি MLA Hostel, PWD-র ডাকবাংলোতে আছে আগরতলায়। তবে পর্যটকদের কাছে সরকারি আবাসের দ্বার আজও রুদ্ধ। তাই শহরে ঢুকতেই Radha, Royal, Broadway, Rajdhani, বা হকার্স কর্নারের পাশে Minakshi-তে অগ্রিম ঘর বুক করে চলা যেতে পারে আগরতলায়। আর খাবারের জন্য ঘরোয়া পরিবেশে রয়ালের আকর্ষণ কম নয়। এছাড়া নিউ শহর, মীনাক্ষী, ওজরারি হোটেল বা চন্দনাত্তেও রসনা তৃপ্ত করা যেতে পারে। আর উচিত হবে অগ্রিম অর্ডারে বািশের কোঁড় ও পুটি মাছের গুটিকির মিশ্রণে তৈরি অভিজাত চটনি গোন্ধক-এর স্বাদ নেওয়া আগরতলায় হোটেল-রেস্তোরাঁয়।

আর কেনাকাটায়—Tantumita-য় তাঁতজাত বস্ত্র; Purbasha, M B Sarani-তে বাঁশ-কাঠ-বেতের আসবাবপত্র; Altorna-তে হ্যাডলুম ও হ্যাডিক্রাফটস্ দুই-ই মেলে। তেমনই বিদেশী পণ্যে আগ্রহীদের উচিত হবে বটতলায় চলা।

কনডাক্টেড ট্যুর : Tour No 1 : ১৯-সিটের লাক্সারি মিনিবাস কনডাক্টেড ট্যুরে যাত্রী নিয়ে প্রতি রবি ও ছুটির দিনে সকাল ৮-০০টায় গিয়ে সিপাহীজলা ও নীরমহল দেখিয়ে আনে ৪৮ টাকা।

T No. 2: প্রতি শুক্রবার সকাল ৮-০০টায় যাচ্ছে সিপাহীজলা, মাতাবাড়ি; ভাড়া ৫২।

T No. 3: শুক্র ছাড়া প্রতিদিন ১৩-০০টায় গিয়ে সিপাহীজলা দেখিয়ে ১৭-০০টায় ফেরে রাজ্য পর্যটন। ভাড়া ৪০।

T No. 4: নীরমহল ও মাতাবাড়ি যাচ্ছে রাজ্য পর্যটন ৬২ টাকা।

T No. 5: কমলাসাগর ও নীরমহল যাচ্ছে ৫২ টাকা।

T No. 6: জম্পুইপাহাড় যাচ্ছে ২ রাতের অবস্থানে ২১৫ টাকা।

T No. 7: জম্পুই-উনকোটি যাচ্ছে ২ দিনের প্যাকেজ ২৫৫ টাকা।

Directorate of Information, Cultural Affairs & Tourism, Swetmahal, Gandhighat, Agartala-799001, (0381) 225930 থেকে বাস ছাড়ে এদের। অগ্রিম টিকিটও মেলে। আগরতলা ভ্রমণার্থীদের ১নম্বর ট্যুরটি বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। কমপক্ষে ১০ জন যাত্রী হলে বিশেষ ট্যুরের ব্যবস্থাও করে পর্যটন দপ্তর।

এছাড়া রাজ্য পর্যটন ১২ জনের দলে ৬ দিন ৫ রাত ১২৪০ ও ৪ দিন ৩ রাতের প্যাকেজ ট্যুরে ৫১৪ টাকায় ত্রিপুরা দর্শনের ব্যবস্থাও করে। শিশুদের (৫-১০) ২৫% রিবেট মেলে। এয়ার-পোর্ট থেকে এয়ারপোর্ট—যাতায়াত ও থাকা নিয়ে এদের ভাড়া। আগ্রহীদের উচিত হবে Tourist Information Centre, Tripura Bhawan, 1 Pretoria St, Calcutta-71, 02425703কে যোগাযোগ করা। দিল্লীতে—Resident Commissioner, Tripura Bhawan, Kautilya Marg, Chanakyapuri, New Delhi-110021, 03014607.

উজ্জয়ন্ত প্রাসাদ: ১৮৯৭ খ্রিস্টাব্দের বিধ্বংসী ভূমিকম্প শহর থেকে ১০ কিমি দূরে অতীতের রাজপ্রাসাদটি ধ্বংস হতে শহরের প্রাণকেন্দ্রে এক বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে এই প্রাসাদপুরী। ত্রিতলিকা প্রাসাদ শিরে গম্বুজ। আয়তনে যেমন বিরাট, স্থাপত্যও এর অভিনব। গ্রিক স্থাপত্যশৈলীতে ১৯০১ খ্রিস্টাব্দে ১০ লক্ষ টাকা ব্যয়ে মহারাজা রাধাকিশোর মাণিক্য বাহাদুরের হাতে তৈরি। চীনা রুমের সিলিং অনবদ্য। দু'টি জলাশয় সৌন্দর্য বাড়িয়েছে প্রাসাদের, মোগলি গার্ডেনের ধাঁচে বাগিচাও হয়েছে। প্রাসাদের চারপাশে লক্ষ্মী-নারায়ণ, উমা-মহেশ্বর, কালী, জগন্নাথ মন্দির। এদেরও পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য। অতীতের রাজপুরীতে আজ ত্রিপুরা রাজ্যের বিধানসভা বসেছে। প্রাসাদের নবতম আকর্ষণ মিউজিক্যাল ফাউন্টেন অর্থাৎ বাজনার তালে তালে ঝরনার নৃত্য। রঙবেরঙের আলোর বর্ণালীও রমণীয়।

মহারাজা বীর বিক্রম কলেজ : বটতলা থেকে ২ রুটের বাসে এক ঝলকে বেড়িয়ে আসা যায়—কলেজ টিলা। প্রাসাদ থেকে ৩ কিমি দূরে শহরের পূর্ব প্রান্তে এক টিলার টপে সুন্দর পরিবেশে গড়ে উঠেছে কলেজ। বিক্ষিপ্তভাবে ছড়িয়ে ছিটিয়ে বাড়ির পর বাড়ি। তৈরি যদিও মহারাজা

বীর বিক্রমের হাতে, তবে আনুষ্ঠানিক ভাবে উদ্বোধন করেন মহারানী কাঞ্চনপ্রভা দেবী ১৯৪৭-এ। এর ল্যাবরেটরি ও লাইব্রেরির সংগ্রহ উল্লেখ্য। স্থাপত্য ও ভাস্কর্যেও অভিনবত্ব আছে। ঝিলটিও পরিবেশকে মোহময় করে তুলেছে।

চতুর্দশ দেবতা বাড়ি : গোলবাজার থেকে ১ নম্বর রুটের বাসে খয়েরপুর নেমে বেড়িয়ে ফেরা যায়। আবার অটো বা ট্যাক্সিতেও দেখে নেওয়া যায় ১৪ দেবতার বাড়ি ও অতীত দিনের বিধ্বস্ত প্রাসাদ। শহর থেকে দূরত্ব ১০ কিমি। খুবই জাগ্রত এই দেবতারা। জুলাই মাসের শুক্লা সপ্তমীতে জাঁকালো উৎসব হয়। ত্রিপুরার জাতীয় উৎসব খাচিররূপ নিয়েছে এই উৎসব। দেবতারা আসেন দূর-দূরান্ত থেকে উপজাতিদের। সংখ্যায় চোদ্দ তারা, নামটিও তাই চতুর্দশ দেবতা বাড়ি। তবে শিব ও বুদ্ধ এই দুই দেবতা সারা বছরই অবস্থান করেন মন্দিরে। একটি নাটমণ্ডপ ও গর্ভগৃহ নিয়ে মূল মন্দির—শিরে গম্বুজ। মূর্তি হয়েছে অষ্টধাতুর অর্থাৎ—সোনা, রূপা, সীসা, কাঁসা, পিতল, লোহা, তামা ও দস্তারমিশ্রণে। এছাড়াও উৎসব রয়েছে সারা বছর জুড়ে ত্রিপুরা রাজ্যে। চোদ্দ দেবতার দেশ বলেও পরিচিতি আছে ত্রিপুরার।

এছাড়া শহর পর্যটকদের কাছে কুঞ্জবনে রাজাদের অবসর বিনোদনের জন্য তৈরি মালঞ্চ-ও উল্লেখ্য। ১৯১৯এ র বীরেন্দ্রনাথও বাস করেন এই মালঞ্চ নিবাসে। অতীতে সুদৃশ্য পথও ছিল উজ্জয়ন্ত প্রাসাদের সাথে মালঞ্চের। আর আছে রাজভবন—অতীতের পুষ্পবস্ত্র প্রাসাদ তথা কুঞ্জবন। পথপাশে বুদ্ধমন্দির—বেণুবনবিহার, নেতাজী সুভাষ হাইস্কুল, পোস্ট অফিস, চৌমুহনীতে মিউজিয়ম, বাজার, বটতলায় বিদেশী পণ্যের পসরা—এদেরও আকর্ষণ কম নয়। এমনকি বিশ্ববিদ্যালয়ও বসেছে আগরতলায় ২রা নভেম্বর ১৯৮৭তে।

সিপাহীজলা: শহর থেকে ৩৫ কিমি দূরে ১৮.৫৩ বর্গ কিমি জুড়ে রূপ পেয়েছে সিপাহীজলা। অতীতে মহারাজা বীর বিক্রম উপটৌকন দেন জলাসমেত এই জমি কোনো এক সিপাহীকে। নামটিও তাই সিপাহীজলা। সুন্দর আরণ্যক পরিবেশে কৃত্রিম লেক, ওয়াইল্ডলাইফ স্যান্কচুয়ারি, জুলজি-ক্যাল ও বটানিক্যাল গার্ডেনের সমন্বয় ঘটেছে সিপাহীজলায়। তক্ষক, হুম্বাক, ভান্ডুক, চশমা বানর, কাঁকড়াভোজী নেউল, নীলগাই ছাড়াও নানান কিছু দেখতে মেলে। তেমনই সাপেদেরও স্বর্গরাজ্য সিপাহীজলা। পর্যটক বিনোদনে হাতি ও টয়ট্রেন চলেছে। লেকের জলে বোটিং—এরও ব্যবস্থা আছে। ১৯৭২ খ্রিস্টাব্দে রূপ দেওয়া মৃগ উদ্যানটিও যথেষ্ট পর্যটক-প্রিয় হয়ে পড়েছে। চলার পথে দু'পাশের রবার-বাগিচা ভ্রমণকে আরও মধুময় করে তোলে। পানপাতার মতো দেখতে গোলমরিচ গাছেরও চাষ হচ্ছে সিপাহীজলায়। শুনীয়দের কাছে চতুর্ভাতির মনোরম পরিবেশ সিপাহীজলা। শহর থেকে এক ঘণ্টার পথ। কনডাক্টেড ট্যুরে বা ট্যাক্সি করে সেপ্টেম্বর থেকে এপ্রিল মাসে বেড়িয়ে নেওয়া

যায়। এছাড়া প্রতি রবিবার ও ছুটির দিনে সরকারি বাস যাচ্ছে সকাল থেকে সন্ধ্যায় শহর থেকে সিপাহীজলায়। তেমনই বটতলা থেকে সার্ভিস বাসে বিশালগড় পৌছে রিকশা বা অটোয় ৩ কিমি দূরের সিপাহীজলায় চলা যায়। থাকারও ব্যবস্থা আছে লেকের পাড়ে ১৩ বেডের *Abasrika Forest Lodge*-এ; অব: Chief Conservator of Forest, Kunjaban, Agartala. বা Wildlife Sanctuary, Sepahijala ☎ (0381) 225649.

উদয়পুর: সিপাহীজলা থেকে ৩৫ আর আগরতলা থেকে ৪৫ কিমি দূরে উদয়পুর। কনডাকটেড ট্রারে বা সার্ভিস বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। পথ গিয়েছে বিশ্রামগঞ্জ হয়ে। সোনামুড়া থেকে উদয়পুর সড়ক তৈরি কালে অসুস্থ হয়ে পড়েন মহারাজ। অসুস্থ মহারাজ বিশ্রাম নেন এখানে। সেই থেকে জায়গার নাম হয় বিশ্রামগঞ্জ। যাত্রীদেরও বিশ্রাম দেয় গাড়ি বিশ্রামগঞ্জে।

২১ দিনে ভারতের পূর্বাঞ্চল

১ম দিন বিমানে আগরতলায় পৌছে শহর বেড়িয়ে নিন। ২য় দিন সিপাহীজলা-উদয়পুর-নীরমহল বেড়িয়ে আসুন। ৩য় দিন সকালে বাসে ধরমনগর পৌছে ট্রেন/বাসে বা সরাসরি বাসে শিলচর পৌছে যান বা বিমানে চলুন শিলচর। ৪র্থ দিন শিলচর বেড়ানো, মিজোরামের ইনার লাইন পারমিট, বাস টিকিটের ব্যবস্থা ও ইক্ষলের এয়ার টিকিট করে রাখুন। আবার শিলং-ও যেতে পারেন শিলচর থেকে বাসে। ৫ম দিন সকালে রওনা হয়ে বিকালে আইজল। ৬ষ্ঠ দিন আইজলে কাটিয়ে ৭ম দিনে শিলচর ফিরুন। ৮ম দিন সকালের বিমানে ইক্ষল পৌছে শহর বেড়ানো ও কনাকটা। ৯ম দিন বিষ্ণুপুর বেড়িয়ে আসুন বাসে বাসে। ১০ম দিন ইক্ষল থেকে সকালে নাগাল্যান্ড রাজ্য সরকারের বাসে কোহিমা পৌছে শহর বেড়িয়ে নিন। ইনার লাইন পারমিট লাগে নাগাল্যান্ডে। ১১শ দিন বিকালের বাসে চলুন ডিমাপুর। ডিমাপুর থেকে রাতের ট্রেনে রওনা হয়ে শিমুলগুড়ি হয়ে ১২শ দিনে সকালে শিবসাগর পৌছান। দিনে দিনে শিবসাগর বেড়িয়ে নিন। ১৩শ দিন সকালের বাসে জোড়হাট হয়ে কাজিরাঙ্গা পৌছান দুপুরে। ১৪শ দিন সকালে কাজিরাঙ্গা জাতীয় উদ্যান বেড়িয়ে সন্ধ্যায় গুয়াহাটি পৌছে যান। ১৫শ দিন সকালে কামাখ্যা ও শহর দর্শন। ১৬শ দিনে চলুন শিলং পাহাড়ে। চেরাপুঞ্জি বেড়িয়ে আসুন ১৭শ দিনে। ১৮শ দিন পায় পায় বেড়িয়ে কাটিয়ে ১৯তম দিনটিও বিশ্রাম নিন শিলং পাহাড়ে। ২০তম দিনে তুরা, মানস বা তেজপুুর বেড়িয়ে নিতে পারেন গুয়াহাটি হয়ে বা শিলং পাহাড় থেকে সরাসরি টিকিট কেটে গুয়াহাটি/তেজপুুর হয়ে ইটানগর চলুন ২০তম দিনে। ইটানগর থেকে বাসে বমডি-লা। বমডি-লা থেকে তাওয়াং বেড়িয়ে নিন। আবার পাশিঘাটেরও বাস মেলে ইটানগর থেকে। পাশিঘাট বেড়িয়ে মারকংশেলেক বা শিলাপাথর হয়ে গুহাভিমুখী পথ ধরুন। ইনার লাইন পারমিট লাগে অরুণাচলে যেতে। অথবা ২০তম দিনে গুয়াহাটি-নিউ বঙ্গাইগাঁও হয়ে ট্রেনে কলকাতা পৌছান ২১তম দিনে।

দিঘি আর মন্দির এই দুয়ে মিলে উদয়পুর। মন্দিরের শহর বলেও খ্যাতি আছে উদয়পুরের। অতীতের সব মন্দির

আজ আর নেই। তবুও মন্দির রয়েছে উদয়পুরের পথে প্রান্তরে। তবে, কোনোটি তার পরিত্যক্ত, কোনোটিতে দেবতা আসীন; প্রত্যেকেরই দীনবেশ। দেবতাও শিব, দুর্গা, বিষ্ণু অর্থাৎ শৈব-শাক্ত-বৈষ্ণবধর্মের প্রতিভূ। উদয়পুর শহরের ৫ কিমি দূরে মাতাবাড়িতে অনুচ্চ পাহাড়ী টিলায় ত্রিপুরা-সুন্দরী বা ত্রিপুরেশ্বরী মন্দির। রাজ্যের নামটিও নাকি দেবীর নাম থেকে। তবে, দ্বিমতও আছে এই নাম নিয়ে। ত্রিপুরী ভাষায় *Tui* মানে জল, আর *Pra* হচ্ছে কাছ। অর্থাৎ *Taipra* থেকেই নাকি *ত্রিপুরা* নামের উদ্ভব। দৃষ্টিনন্দন ৬টি বিশাল দিঘিও সৌন্দর্য বাড়িয়েছে উদয়পুরের।

ইতিহাসগ্রাহ্য না হলেও রাজমালা-র মতে, যযাতির পুত্র ক্রম্বার হাতে প্রতিষ্ঠা পায় রাজ্য। আর ক্রম্বার পুত্র ত্রিপুর থেকেই নাকি রাজ্যের নামকরণ। নামও ছিল সেকালে রাজ্যমাটি। বাস পৌছায় মন্দিরের পাদদেশে। মহারাজা ধান্য মাণিকা ১৫০১-এ তৈরি করেন এই মন্দির। বাংলার চালাঘরের আদলে ৭৫ ফুট উঁচু মন্দিরের শিরে স্তূপ—তার ওপর কলস। আর বজ্রাঘাতে ক্ষতিগ্রস্ত মন্দিরের সন্ধ্যার হয় ১৬৮১তে। অনেক কিংবদন্তী আছে এই মন্দিরকে ঘিরে। দেবতা এখানে কালী। কষ্টিপাথরে বিগ্রহ হয়েছে দেবীর। বিগ্রহও হয়েছে দুই মন্দিরে দুই। মূল দেবীমূর্তি ২ ফুট উঁচু ছোট মা, দ্বিতীয় দেবী ৫ ফুটের। খুবই জাগ্রতা এই দেবী। দূর-দূরান্ত থেকে ভক্তেরা আসেন। পূজা হয় ১১—১২—০০টায়। ৫১ পীঠের এক পীঠও এই দেবী মন্দির। বিষ্ণু চক্র খণ্ডিত সতীর ডান পা পড়ে এখানে। দীপাবলীতে জাঁকালো মেলা বসে। মন্দির লাগোয়া কল্যাণ সাগরে স্নানেও পুণ্য হয়। কনডাকটেড ট্রারের বাস ১ ঘণ্টা অবস্থান করে মন্দিরে। আর লাঞ্চ-ব্রেক দেয় মন্দির দেখে ফিরে উদয়পুর শহরে। নিয়মিত বাস সার্ভিসও আছে আগরতলা থেকে উদয়পুরের। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *Gouri H, Joy Govinda H, Udaipur DB*. শহর থেকে ৮ কিমি দূরে *Peratia FRH*-এ উদয়পুরে। আর আছে ত্রিপুরা ট্যুরিজমের *Matabari Pantha Niwas*, *Matabari, Udaipur*, ☎ (03821) 22432, বেড ৩০ হারে।

অষ্টাদশ (১৭৮৪ খ্রি) শতকে শামসের গাজির আক্রমণের আগে উদয়পুরই ছিল ত্রিপুরার রাজধানী। ১৭৭০এ কৃষ্ণ মাণিক্যের হাতে পুরাতন আগরতলায় রাজ্যপাট স্থানান্তরের সাথে অতীতও ধ্বংস পায় গাজির হাতে। তবে, ১৮৩০এ আবার উদয়পুর জয় করে নেন মহারাজা কৃষ্ণ মাণিকা। লাঞ্চ অস্ত্রে উৎসাহীরা ৩ কিমি দূরে গুমতী নদীর দক্ষিণ পাড়ে টিলার টপে মহারাজা গোবিন্দ মাণিক্যের তৈরি বিধবস্ত ভুবনেশ্বরী মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। মন্দিরের অদূরে অতীতের রাজপ্রাসাদের ধ্বংস্তুপ আজও দেখে নেওয়া যায়। ধ্বংসস্তুপের দক্ষিণে জরাজীর্ণ বিষ্ণুমন্দির, গুণবতী মন্দিরেও দেবতা বিষ্ণু, পথেই পড়ে পীরের সমাধি। তবে, পায়ে হাঁটা পথ। তাই ভুবনেশ্বরী বা প্রাসাদ না গিয়ে জগন্নাথ দিঘি, দিঘির দক্ষিণ-পশ্চিম তীরে

বিধ্বস্ত জগন্নাথ মন্দির, বিজয়সাগরের তীরে ত্রিপুরেশ্বরীর ভৈরব অর্থাৎ শিব মন্দির (বলিরও প্রথা আছে শিব তথা ভৈরব মন্দিরে), দেবতাহীন চতুর্দশ দেবতার মন্দির ছাড়াও নানান মন্দিরের সাথে শহর দেখে বিশ্রাম নিব বাসে।

নীরমহল : উদয়পুর থেকে ৩৯ আর বাংলাদেশ সীমান্ত শহর সোনামুড়া থেকে ৮ কিমি দূরে রুদ্রসাগর লেকের দ্বীপে গড়ে উঠেছে নীরমহল প্যালেস। ৫০ কিমি দূরের আগরতলা থেকেও নিয়মিত বাস আসছে। চলতি শতকের প্রথম ভাগে মহারাজা বীর বিক্রমকিশোর মাণিকা বাহাদুরের হাতে তৈরি হয় নীরমহল বা প্যালেস অব ওয়াটার— প্রমোদভবন রূপে। নামকরণ রবীন্দ্রনাথের। চারপাশে জল টল-টল নীরমহল। আধ ঘণ্টার জলপথ। ৮ যাত্রীর ফেরি নৌকা যাচ্ছে যাতায়াত ভাড়া ৭ প্রতি জন। অপেক্ষাও করে নৌকা নীরমহলে। অতীতে জলযান পৌছত প্যালেসের অন্দরমহলে। বিজলি বাতিও জ্বলত সেকালে। নীরমহলের জলে সূর্যাস্তের দৃশ্যও নয়নাভিরাম। তবে খুবই পরিতাপের বিষয়, অযত্ন আর অবহেলায় এই নয়নাভিরাম বিলাসবহুল নীরমহল আজ ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত। চরও জাগছে জল সরিয়ে রুদ্রসাগরে। পর্যটক মাত্রই হতাশার নিঃশ্বাস ফেলেন এই ধ্বংসস্থলে পৌঁছে। চড়ইভাতির সুন্দর পরিবেশ। টিকিও লাগে ২, শিশু ১ নীরমহল দর্শনে। থাকার জন্য আছে রাজ্য পর্যটনের ৪৪ বেডের *Sagarnahal Tourist L.*, McLaugh, Sonamura, ৩ ২২৫৩০. SAB ৫০ DAB ৮০ ডর্মি বেড ৩০ A/c D ১৫০ টাকায়। আহারও মেলে লজের ক্যান্টিনে।

ডুবুর ফলস : ত্রিপুরা পর্যটকদের কাছে ডুবুর ফলসের আকর্ষণ বহুবিধ। পাহাড় থেকে নামছে ঝরনা—গুমতী নদীর মুখে। জলের নিনাদে মৃদঙ্গের সুর বাজে। খুবই নয়নাভিরাম এ-দৃশ্য। পথশোভাও সুন্দর। পাশেই গুমতীর উৎস—গৌমুখ বা তীর্থমুখ। প্রবাদ, বিষ্ণুর পদচিহ্ন রয়েছে তীর্থমুখে। নানো পূণ্য হয়। পৌষ সংক্রান্তিতে উপজাতিদের ৩ দিনের *খাচিউৎসব*—সেও আর এক রমণীয়। মেলা বসে জাঁকালো। দূর-দূরান্ত থেকে জাতীয় সাজে সজ্জিত হয়ে উপজাতীয়রা আসে উৎসবে।

আগরতলা থেকে ১১০ কিমি দূরে ত্রিপুরার প্রথম হাইডেল প্রোজেক্টটিও রূপ পেয়েছে গুমতীতে। বাঁধ পড়েছে, তৈরি হয়েছে কৃত্রিম লেক ৪০ বর্গকিমি জুড়ে। লেকের জলে ৪৮টি দ্বীপ। লিচু, আনারস, নারকেল, কমলার চাষ হচ্ছে অরুণ্যময় দ্বীপ থেকে দ্বীপে। অন্তর্মিত সূর্য রাঙিয়ে তোলে ডুবুরকে। সেও এক মনোহর দৃশ্য। লেকের জলে মিষ্টি-মধুর তান। দেশী নৌকা ও মোটর বাটের ব্যবস্থা আছে। ঠাঁদনী রাতে ভেসে পড়ুন ঢেউ তোলা স্বচ্ছ নীল লেকের জলে। পর্যটন কেন্দ্র হিসেবে দ্রুত রূপ পাচ্ছে ডুবুর। *কাফেটেরিয়া* হয়েছে ৪ কিমি দূরে নারিকেল কুঞ্জে ছাওয়া লেকের এক দ্বীপে। আর হয়েছে *Mandirghat Tourist Complex* তীর্থমুখের বাট-ঘাটে; অবু: Dy Director— Tourism, Agartala,

৩ ২২৫৩০. আর যতনবাড়িতে আছে *Raima Tourist Lodge*, Jatanbari, DAB ৮০ A/c D ১৫০; *FRH* ও *JB* কবিগুরু রবীন্দ্রনাথও বরণীয় করে রেখেছেন গুমতীকে তাঁর বিসর্জন নাটকে। গুমতীর অন্যতম আকর্ষণ ত্রিপুরার বৃহত্তম অভয়ারণ্য ৩৮৯.৫৪ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত গুমতী অভয়ারণ্যে বাইসন, বন্য শুয়োর ছাড়াও নানান জন্তু-জানোয়ার দর্শন।

আগরতলা থেকে বাসে উদয়পুর গিয়ে উদয়পুর থেকে আবার নতুন করে বাসে অমরবাড়ি হয়ে যতনবাড়ি পৌছান। মহকুমা সদর অমরপুরেও রাজধানী বসে ১৫৩তম মহারাজা অমর মাণিক্যের। পুরোনো কেল্লা, চণ্ডীমন্দির, রাজবাড়ির ধ্বংসাবশেষ আজও দেখতে মেলে। আর আছে বিশালাকার দুই দিঘি—অমরসাগর ও ফটিকসাগর অমরপুরে। অমর-পুর থেকে ২২ কিমি যেতে যতনবাড়ি। গুমতীর কাঁধে ভর দিয়ে আরও ৭ কিমি দূরে চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা বিশালাকার কুণ্ড গৌমুখ বা তীর্থমুখ। তীর্থমুখ থেকে ৩ কিমি গাড়ির পথে মন্দিরঘাট। মন্দিরঘাট থেকে মোটরবাট/দেশী নৌকায় ঘন্টা দু'য়েকে ডুবুর লেকের নারিকেলকুঞ্জে পৌছান। ত্রিপুরা ট্যুরিজমের *Tourist Lodge*ও হচ্ছে নারিকেলকুঞ্জে ছাওয়া দ্বীপে। যতনবাড়ি থেকে নিয়মিত যানের অভাব। *PWD* ও *Project*-এর গাড়ি চলার পথে যাত্রী নিয়ে চলে। তবে, আগরতলা থেকে ৫০০ টাকায় ট্যাক্সি নিয়েও সিপাহীজলা, উদয়পুর, ডুবুর, নীরমহল বেড়িয়ে ফেরা যায় দিনে দিনে। কনডাক্টে ট্যুরেও দেখে নেওয়া যায় ডুবুর ছাড়া ত্রয়ী।

যতনবাড়িতে থাকারও নানান ব্যবস্থা। শতাধিক বেডের *Inspection Bungalow*, অবু: The Sub-Divisional Officer, IB- Power and Electric Supply, Govt of Tripura, Jatanbari, Amarpur Sub-Division, Tripura (South), 799101.

পিলক: ত্রিপুরা রাজ্যের দক্ষিণে বাংলাদেশ সীমান্তে প্রত্নরত্ন ভাণ্ডার পিলক। উদয়পুর থেকে ২৬, আগরতলা থেকে ১০০ কিমি দূরে ৮ থেকে ১০ শতকের হিন্দু ও বৌদ্ধ স্থাপত্যের সন্ধান মিলেছে পিলকে। পূর্ব ও পশ্চিম পিলকে ছড়িয়ে আছে অমূল্য সব প্রত্নতাত্ত্বিক ঐশ্বর্য। তবে, অযত্ন আর ওদাসীন্যে হারিয়ে যেতে বসেছে পোড়ামাটির অমূল্য রতন—নানান টেরাকোটার মন্দির, স্তূপ, ৮ হাতের শক্তি, নৃসিংহ, অবলোকিতেশ্বর, প্রাচীন মূর্তা ছাড়াও নানান কিছু। আরাকান, বার্মিজ স্থাপত্যেরও নিদর্শন মেলে পিলকের ভাস্কর্যে। আগরতলা মিউজিয়মেও দেখতে মেলে পিলক সম্ভার। বাস যাচ্ছে আগরতলা থেকে। থাকার নিকটতম ব্যবস্থা মেলে *Belonia DB* ও *PWD IB*-তে। তেমনই খোয়াইও বেড়িয়ে ফিরতে পারেন আগরতলা থেকে সকালের বাসে গিয়ে দিনে দিনে। উচিত হবে আখাউরা রোড ধরে রিকশা বা পায়ে পায়ে ৩ কিমি গিয়ে বাংলাদেশ সীমান্ত দেখে নেওয়া।

কসবা: অতীতের কমলাসাগর আজ হয়েছে কসবা। সাময়িকভাবে রাজ্যপাটও বসে কমলাসাগরে। শহর থেকে ২৭ কিমি দূরে ১৫ শতকে মহারাজা ধান্য মাণিক্যের কাটা বিশালাকার লেক কমলাসাগর। লেকের পাড়ে টিলার টঙে

১৬ শতকের মন্দিরে বেলে পাথরের দেবী মহিষাসুরমর্দিনী কালী রূপে পূজা পান। শহর থেকে সার্ভিস বাস বা প্যাকেজ ট্যুরে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

ব্রহ্মাকুণ্ড: শহর থেকে ৪৮ কিমি উত্তরে ব্রহ্মাকুণ্ড। আগরতলা-সিমলা বাস যাচ্ছে ব্রহ্মাকুণ্ড হয়ে। চা বাগিচার মাঝ দিয়ে পথ, পথশোভা সুন্দর। লর্ড শিবের মন্দিরের জন্য ব্রহ্মাকুণ্ডের প্রসিদ্ধি। তেমনই এপ্রিল ও নভেম্বরের উৎসবেরও যথেষ্ট প্রশস্তি। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই ব্রহ্মাকুণ্ডে।

তৃষা ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি: বেলোনিয়া থেকে ১৮ কিমি দূরে দক্ষিণ ত্রিপুরা জেলায় জল আর জঙ্গলে ১৯০.৭ বর্গ কিমি জুড়ে তৃষা বনা জন্তু সংগ্রহালয় আর এক দ্রষ্টব্য। বানরের রকমফের তৃষার বিশেষত্ব। চশমা বানর, সোনালী বানর, লজ্জাবতী বানর, গুহাবানর, অসমিয়া বানর, উল্লুক ছাড়াও নানান জন্তু-জানোয়ারের বাস। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *FRH*-এ তৃষায়। অব: Chief Wildlife Warden, Agartala.

দেবতামুড়া: আগরতলা থেকে বাসে ৯০ কিমি দূরের অমরপুর পৌঁছে নৌকায় গুমতীর জলে যাতায়াতে ঘন্টা ছয়কে দেখে ফেরা যায় ১৫-১৬ শতকের অভিনব ভাস্কর্যের সত্তার। গুমতীর তীরে ক্যানভাস হয়ে বেলে পাথরের অনুচ্চ পাহাড়। পাহাড় খুঁড়ে মূর্ত হয়েছে হিন্দু পুরাণের নানান দেব-দেবীর সাথে তদানীন্তন সমাজ-জীবন, ৪০ ফুট উঁচু ক্যানভাসে শিব-বুদ্ধ-নরসিংহ—তিন দেবমূর্তি। স্বপ্ন যেতে সমান্তরাল ও সারিতে ৩৭টি ভাস্কর্যে অভিনবত্ব আছে। বৈচিত্র্য আছে ষণ্ডপুষ্ঠে শিব, পাছরা (ত্রিপুরী বসন) পরিহিতা দশভুজা মহিষাসুরমর্দিনী দুর্গার ভাস্কর্যে। তবে, কালের কবলে আর অনাদরে আজ ধ্বংসের কাল গুনছে মধ্যযুগের এই অমূল্য ভাস্কর্য। আগ্রহীদের উচিত হবে যাতায়াতে ১ রাত অমরপুর বা উদয়পুরে অবস্থান করে দেবতামুড়া দর্শনে চলা। অমরপুরে *ডাকবাংলো* আছে। আহারও মেলে চৌকিদারের ব্যবস্থাপনায়। অব: SDO, Amarpur, Tripura South. P.C - 799101. আর আছে প্রাইভেট হোটেল উদয়পুরে।

উনকোটি

ত্রিপুরা রাজ্যের আর এক দিগন্ত পড়ে রয়েছে ধর্মনগরকে ঘিরে ত্রিপুরার উত্তর-পশ্চিমে। আগরতলা থেকে ৮-৩০-এর বাসে উত্তর ত্রিপুরা জেলার জেলাসদর কৈলাশহর পৌঁছে কৈলাশহর থেকে ধর্মনগরের বাসে আরও ১০ কিমি গিয়ে উনকোটি। আগরতলা থেকে দূরত্ব ১৭৫ কিমি। আবার সকাল ৫-৪৫, ৬-০০, ৬-০৫, ৭-০০, ১০-০০, ১৩-০০টার বাসে আগরতলা থেকে ধর্মনগর গিয়েও কৈলাশহরের বাসে উনকোটি চলা যায়। এ-পথের দূরত্ব আগরতলা থেকে ধর্মনগর ২০০ আর ধর্মনগর থেকে উনকোটি ১৯ অর্থাৎ ২১৯ কিমি। ঘন্টা সাতকের পথ। নিকটতম রেল স্টেশন কুমারঘাট থেকে ডানহাতি পথ গিয়েছে জাতীয় সড়ক-৪৪ ছেড়ে উনকোটি। আগরতলা থেকে জাতীয় সড়ক

চলেছে অসমে। তেলিয়ামোড়, আঠারমুড়া, লঙতরাই—তিন পাহাড় পেরুতে পথ নিয়েছে সর্পিলাকার। ঘন ঘন বাঁক, বিশেষ করে আঠারমুড়ায় বাঁকের আধিক্য। বমি এপথে সংক্রামক হয়ে দেখা দেয় যাত্রীদের। তাই একটি অ্যাডোমিন খেয়ে বাসে ওঠা উচিত হবে।

কোটি থেকে এক কম অর্থাৎ উনকোটি—মাহাশ্মে দেবী কালীর কোটি তীর্থের পরেই এর স্থান। ৪৫ মি উঁচু রঘুনন্দন পাহাড় কেটে খোদিত ও প্রোথিত মূর্তিময় পূণ্য হিন্দুতীর্থ উনকোটি। অতীতে নাম ছিল এর ছাঙ্গল। শাল, সেগুন, দেবদারু আর আগরে ছাওয়া বৌদ্ধ ও হিন্দু আমলের (৮-৯ শতক) অরণ্যময় এই শৈব তীর্থে পূর্বে পাহাড়টাই ভাস্কর্যময়। মূর্তি হয়েছে শিব, হরগৌরী, সিংহবাহিনী দুর্গা, পঞ্চমুখী শিব, বিষ্ণুপদ, ৩০ ফুট মুখমণ্ডলের বিশালাকার কালভৈরব-বাসুদেব, রাম-লক্ষ্মণ, হনুমান, গণপতি ছাড়াও নানান পৌরাণিক দেব-দেবীর সারা পাহাড় জুড়ে। ১২ মি উঁচু জটাভূটধারী শিব এখানে কালভৈরব নামে খ্যাত। অনুপম ভাস্কর্যের নিদর্শন ও মি দীর্ঘ শিবের নিখুঁত জটা আজও অবনদ। শিবের বাহন ও ষাঁড়ের মূর্তি মাটি ফুঁড়ে দাঁড়িয়ে। এলাকা থেকে পাওয়া নানান শিলামূর্তিও রয়েছে পাহাড় চূড়োয়। তেমনই বেগবতী ঝোরা নামছে পাহাড় থেকে। ঝোরার জলে সৃষ্ট শিব, সতী ও ব্রহ্মাকুণ্ডের জলে স্নানে পূণ্য হয়। আর আছে উষ্ণ প্রস্রবণ এক। বসন্তে মেলা বসে অশোকাস্তমী তিথিতে। শিবরাত্রি, মকর সংক্রান্তিতেও পূণ্যার্থীরা আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। অদূরে গহন জঙ্গলে ৩ ফুট উঁচু চার মুখের শিব রয়েছেন। কিংবদন্তী, কৈলাস থেকে কাশী যাবার পথে পথশ্রমে ক্লান্ত শ্রান্ত দেবতাদের অনুরোধে পারিষদবর্গসহ শিব বিদ্রাম নেন এখানে। পরদিন যাত্রার সময় পেরিয়ে যেতেও দেবতারার ঘুমে কাতর। শিব ব্রাহ্মমূর্তিতে কাশীর পথে রওয়ানা দিলেন একা। বাকিরা দিবাকরের আবির্ভাবে পাখিদের কলরব শুনে পাশাণে রূপান্তরিত হয়। সেই থেকে *কৈলাস হর* কালে কালে কৈলাশহর। দ্বিমতে, রাজ পরিবারের ইতিহাস রাজমালায় মেলে—স্বপ্নাদিষ্ট হয়ে স্থানীয় ভাস্কর কালু কামার এক রাতের মধ্যে রঘুনন্দন পাহাড়ে ১ কোটি দেব-মূর্তি করে নব কাশীধাম গড়তে গিয়ে কম থেকে যায় এক। আর্থ-অনার্থ দেবতারী মেলোমিশে এক হয়েছেন এখানে। তবে, ১৮৯৭ ও ১৯৫০এর ভূমিকম্পের সাথে নানান প্রাকৃতিক বিপর্যয়ে উনকোটি আজ ধ্বংসের কাল গুনছে।

উনকোটিতে হোটেল নেই। তবে, ত্রিপুরা পর্যটনের *Unakuti Tourist Lodge* (Hulplongcherra), DAB ৮০ আছে। আর কৈলাশহরে *Sri Krishna*, *Sri Durga*, *Tripureswari H*, *Shova H* ছাড়াও *CH, DB, FRH* ত্রিপুরা টুরিজমের উত্তরমেষ পর্যটক নিবাস আছে। আহারে *শোভা হোটেলটি* ভালই।

জম্মুই পাহাড়

উনকোটি বেড়িয়ে ধর্মনগরের বাসে প্যাচারথল

পৌছান। প্যাঁচারথল থেকে বাস, অটো বা জিপে কাঞ্চনপুর PWD IBTতে পৌছে রাতের বিশ্রাম। পরদিন জিপে চলুন চির বসন্তের দেশ জম্পুই পাহাড়ে। চলার পথে উৎসাহীরা বৌদ্ধ মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন প্যাঁচারথল-এ। আগরতলা থেকেও সরাসরি বাস মেলে জম্পুই পাহাড়ের।

আগরতলা থেকে ২৫০ কিমি দূরে ৩০০০ ফুট উঁচুতে চির বসন্তের দেশ জম্পুই পাহাড়। ৬টি পাহাড় নিয়ে জম্পুই। লুসাইদের বাস, ধর্মে খ্রিস্টান এরা, পাশ্চাত্যের ভাবধারায় গড়ে উঠেছে এদের সমাজ-জীবন। প্রাকৃতিক পরিবেশ মনোহর। শীতের আগমনে ঝলমলে সাজ পরে জম্পুই পাহাড়। পাহাড়ী ঢালে ঢালে গাছে গাছে থরে থরে রঙ থরে কমলায়। রঙবেরঙের অর্কিড আর আদিগন্ত প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের সাথে হাত মেলায় লুসাই মেয়েদের রঙ-বেরঙের জাতীয় সাজ। গান ধরে খুশির নেশায়। সবুজে মোড়া চির বসন্তের দেশ জম্পুই-এর ভুলনা হয় না। উদ্যোগের অভাবে পর্যটক কম। থাকার জন্য ভাল হোটেলেরও অভাব জম্পুই পাহাড়ে। তবে ত্রিপুরা ট্যুরিজমের Eden Tourist Lodge, Vanghmun, Jampui Hills, O (03824) 225930, DAB ৮০; সাধারণ হোটেল, DB ও FRH আছে। সূর্যোদয়ও সুন্দর দৃশ্যমান ইডেন লজ থেকে। আর সূর্যাস্তের দৃশ্য দেখুন ভান্সমুন হেলিপ্যাড থেকে। আর হয়েছে Uttarayan Pantha Niwas, near Rail Stn, ডর্মি বেড ৩০ কুমারঘাটে। জম্পুই পাহাড়ের Vanghmun এবং Phuldunsai-তেও Tourist Lodge হয়েছে

রাজ্য পর্যটনের। ভান্সমুন থেকে সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত দুই-ই সুন্দর। তেমনই মিজোরামও দৃশ্যমান ভান্সমুনে। আরও উত্তরে পাহাড় শিরে ফুলডুঙ্গসাই—মিজোতে অর্থ তার লম্বা ঘাসের বন। পথ গিয়েছে ফুলডুঙ্গসাই থেকে মিজোরামের আইজলে। বাংলাদেশ সীমান্তও মিলেছে এসে বেতলিঙ-সাই-এ। সেবতাও রয়েছে বেতলিঙ শিব পাহাড়ে। আবার জম্পুই পাহাড় বেড়িয়ে দিনে দিনে ধর্মনগরে ফেরাও যেতে পারে। হোটেল মন্দিরা, হোটেল এ কে, রেলের রিটার্নিং রুম আছে ধর্মনগরে। আর আছে H Sun, D ১৫০ ডর্মি বেড ৪০ থেকে। রাজ্য পর্যটনের Uttarmegh T L, Hulplong-cherra, D ৮০ হয়েছে শহর থেকে ২ কিমি দূরে ধর্মনগরে।

আর কুমারঘাট রেল স্টেশনের অদূরে Wayside Amenity, Pabiacherra-য় চার বেডের ঘরে ডর্মি প্রথায় বেড ৩০ গড়েছে ত্রিপুরা ট্যুরিজম।

তবে, পূর্ব ভারত ভ্রমণার্থীরা দিনের প্রথম ৩টি বাসে (৫-৪৫, ৬-০০, ৬-০৫) আগরতলা থেকে ধর্মনগর পৌছে ১৫-০৫এর প্যাসেঞ্জারে ২১-০০টায় শিলচর পৌছান বা ১৭-৪৮এ করিমগঞ্জ পৌছে ট্রেন, বাস বা শেয়ার ট্যাক্সিতে শিলচর চলুন। রেলে ঘন্টা তিনেক, ট্যাক্সিতে দু'ঘন্টার পথ করিমগঞ্জ থেকে শিলচর। তবে, আগরতলা থেকে ৬-০০টায় সরকারি ও বেসরকারি বাসও যাচ্ছে ১০ ঘন্টায় শিলচরে। রাতেও যাচ্ছে বাস এপথে। পরদিন সকালের বাসে মিজোরাম চলুন শিলচর থেকে।



প্রেমের ফাঁদ পাতা ভুবনে—

কে কোথা ধরা পড়ে কে জানে। —রবীন্দ্রনাথ

ঐক্যবান্ধবী ওলম্বাশা



সম্পাদনা : বিষ্ণু বসু ও অশোককুমার মিত্র ● প্রচ্ছদ ও অলঙ্করণ : পূর্ণেন্দু পত্নী

দুই বাংলার প্রেমের গল্প ও প্রেমের কবিতার নির্বাচিত সম্ভার

সম্পদ ২২৫.০০

কবিতা ১০০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০০০৭ ☎ : ২৪১৪৬০৮

মিজোরাম

মি হচ্ছে মানুষ, জো মানে উচ্চভূমি বা পাহাড় আর রাম অর্থ দেশ। মি-জো-রাম—লুসাই ভাষায় অর্থ তার পাহাড়ী মানুষের দেশ। তিনটি জেলা নিয়ে মিজোরাম। উত্তর থেকে দক্ষিণে এর বিস্তৃতি, গড় উচ্চতা ৯০০ মিটারের মতো। উত্তরে অসম, উত্তর-পূর্বে মণিপুর, দক্ষিণ-পূর্বে মায়ানমার (বার্মা) আর পশ্চিমে ত্রিপুরা ও বাংলাদেশ। বাংলাদেশ ও বার্মার সাথে ১০০৮ কিমি জুড়ে মিজোরাম সীমান্ত। এই বিস্তীর্ণ ভূখণ্ডে লু অর্থাৎ উপজাতিদের বাস। ১৭ শতকের শেষে বা ১৮ শতকের গোড়ায় ব্রহ্মদেশের শান রাজ্য থেকে কয়েকটি লু এসে ডেরা বাঁধে পশ্চিম সীমান্তের চীন পাহাড়ে। কালে কালে আরও পশ্চিমে গড়ে তোলে বসতি এরা। সংখ্যায় এরা সে অর্থাৎ লু সে = দশ উপজাতি। আরও পরে লুসে হয় লুসাই। মূলত মিজো, পাওয়ি, লাখের ও চাকমা সম্প্রদায়ের বাস। অতীতের অসম রাজ্যের এক জেলা লুসাই পাহাড়কেনিয়ে গড়ে উঠেছে মিজো হিলস ডিভিশন ১৯৫৪য়। ১৯৫৫য় গণতান্ত্রিক প্রথা নির্বাচিত হয় গ্রাম পরিষদ সেদিনের মিজো পাহাড়ে। লুসাইরাও আজ মিজো নামে গর্ব বোধ করে। নানান কিংবদন্তীও আছে লুসেদের যিরে। যেমন যুদ্ধপটু, তেমনই কষ্টসহিষ্ণু এরা। অতীতে ব্রিটিশ রাজও পৃথুদন্ত হয়েছে বার বার এদেরই হাতে। স্বাধীনচেতা এরা।

১৯৫৯ খ্রিস্টাব্দের দুর্ভিক্ষ ঘূতাহতি দেয় এদের পৃথক রাষ্ট্রের লিপ্সাকে। দুর্ভিক্ষের দুর্দিনে লালডেঙ্গার গড়া রিলিফ দল মিজো ন্যাশানাল ফেমিন ফ্রন্ট থেকে ফেমিন ছেঁটে ১৯৬১-র ২২শে অক্টোবর মিজো ন্যাশানাল ফ্রন্ট বা এম এন এফ রাজনৈতিক দলের আবির্ভাব। ১৯৬৬র ১লা মার্চ ভারত রাষ্ট্রের বিরুদ্ধে সশস্ত্র বিদ্রোহ ঘোষণা করে স্বাধীন মিজোরাম রাষ্ট্রের দাবিতে এম এন এফ। সামাল দেয় ভারতীয় জওয়ান। নিষিদ্ধ হয় এম এন এফ। ১৯৭২-এর ২১শে জানুয়ারি অসম থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে ইউনিয়ন টেরিটরি মর্যাদা পায় মিজোরাম। তবুও বাকুদের গন্ধ মেলায় না বাতাস থেকে। অবশেষে দীর্ঘ ২০ বছরের অশান্ত মিজোরাম ১৯৮৬র ৭ই আগস্ট সংবিধান সংশোধনী বলে অনুমোদন পেয়ে ১৯৮৭র ২০শে ফেব্রুয়ারি ভারত রাষ্ট্রের ২৩তম রাজ্যরূপে গড়ে ওঠে। পৃথক রাষ্ট্রের দাবি ছেড়ে স্বতন্ত্র রাজ্যরূপে প্রথম নির্বাচনও হয় ১৯৮৭-র ১৬ই ফেব্রুয়ারি। মিজো ন্যাশানাল ফ্রন্টের নেতা লালডেঙ্গার নেতৃত্বে গঠিত হয় মন্ত্রিসভা। পরিতাপের বিষয় লালডেঙ্গা আজ লোকান্তরিত।

মনোরম প্রকৃতির মাঝে বর্ষময় সংস্কৃতির দেশ মিজো-রাম। প্রকৃতি অতি নিপুণ হাতে সুন্দর করে সাজিয়ে তুলেছে

মিজোরামকে। প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের তুলনা হয় না। তবে, জলাভাব আছে সারা মিজোরামে। প্রতিটি বাড়িতে নল নেমেছে টিনের চাল থেকে রিজার্ভারে। বৃষ্টির জল সংরক্ষণ করে রাখে এরা। সেই জলেই চলে সারা বছর। বনজ সম্পদেও খুবই সমৃদ্ধ মিজোরাম। রাজ্যের এক-তৃতীয়াংশ বনাঞ্চল। তেমনই আছে নানান রকম আয়ুর্বেদিক গাছপালা মিজোরামের পাহাড়ে। মিজোরামের আদা দূর দূরান্তের রান্নাঘরে পৌঁছাচ্ছে আজ। আর আছে দুগ্ধাপ্য সব অর্কিড ও বনজ ফুলের বাসর। ‘বটানিস্টস পার্যাডাইস’ নামেও প্রসিদ্ধি আছে মিজোরামের। তিন শতাধিক প্রজাতির প্রজাপতিও দেখতে মেলে মিজোরামে। শুধু নানান বর্ণের প্রজাপতি আর পাখিই নয় ফুলও ফোটে নানান বর্ণের নানান ধর্মের মিজোরামে। তেমনই রঙ-বেরঙের উপজাতিও দেখতে মেলে মিজোরামের গ্রামে-গঞ্জে।

নাগাল্যান্ডের মতো মিজোরামেও প্রতিটা গ্রামে একটি করে যুদ্ধশিবির অর্থাৎ জেলবুক ছিল অতীতে। বাড়ির যুবকেরা জেলবুক থেকে যুদ্ধবিদ্যা শিক্ষা নিত। প্রতিটা জেলবুকের প্রবেশ পথে বাঁশের পোলে নরমুণ্ড ঝোলানো। আর নরমুণ্ডের সংখ্যাধিকে জেলবুকের শ্রেষ্ঠত্ব যাচাই হত। আজও সেলিং (Seling)-এ দেখতে মেলে অপূর্ব শিল্পকর্মের নিদর্শন মিজো শৈলীতে গড়া বাঁশের বাড়িঘর। পুরো বাড়িটাই বাঁশের তৈরি—মেঝে, দেওয়াল, চাল এমনকি আসবাবপত্রও বাঁশের। মিজোরামের আর এক কৃষ্টি ইয়ং মিজো অ্যাসোসিয়েশন অর্থাৎ অরাজনৈতিক YMA সৃষ্টি। মিজোরামের প্রতিটা গ্রামে এদের শাখা মেলে। সামাজিক ক্রিয়াকলাপে এদের অবদান উল্লেখ্য।

সীমান্তবর্তী রাজ্য—তাই প্রবেশাধিকারও সীমিত মিজোরামে। Inner Line Permit লাগে মিজোরামে যেতে। ভারতীয় পর্যটকদের কোনো নিষেধাজ্ঞা নেই পারমিট পেতে। ২ খানা পাসপোর্ট সাইজ ফটোসহ নির্ধারিত ফর্মে সকালে দিয়ে বিকালে সংগ্রহ করা যেতে পারে চলার পথে শিলচরে —Liaison Officer, Mizoram House, Rangir Kharia, Sonai Rd, Silchar-5, Assam, PC-788005, ☎ 20142 বা Christian Basti, G S Rd, Guwahati-5, ☎ 564626 বা Tripura Castle Rd, Shillong-793003, ☎ 225068 বা Mizoram House, Circular Rd, Chanakyapuri, New Delhi-110021, ☎ 3016408 বা Teen Murti Lane, ☎ 3016697. পারমিট ফি পাঁচ টাকা লাগে। আর IAC-র যাত্রীরা নাম, বয়স, পিতার নাম, ঠিকানা, ২ কপি পাসপোর্ট ফটো স্বাক্ষরাতে, ৫ ফি সহ নির্ধারিত ফর্মে লিখে যাবার কারণ ও থাকার সময়-সীমা জানিয়ে সোম থেকে শুক্রবার ১১—১২-৩০টায় Deputy

Director of Supply, Govt of Mizoram, 24 Old Ballygunge Rd, Calcutta-19, ☎ 4757034 বা Mizoram House, Salt Lake City, Block-IB, Plot 168, Sector 3, Calcutta-700091, ☎ 3343209-কে জমা দিয়ে পরদিন ১৫—১৬-০০ টায় ILP পেতে পারেন। তবে, ভারত সরকারের কর্মীদের আইডেনটিটি কার্ড ILP-র পরিবর্তরূপে গ্রাহ্য। আর বিদেশীদের কমপক্ষে ৪ জনের দলের Restricted Area Permit (পতে Resident Commissioner, Chanakyapuri, New Delhi-21 বা Ministry of Home Affairs—Govt of India-কে লিখুন।

মিজোরাম □ রাজধানী: আইজল। আয়তন: ২১০৮১ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৬৮৯৭৫৬। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.৮০%। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ১৯২৪৬০। বৃদ্ধির হার: ৩৮.৯৮%। পুরুষ: ৩৫৬৬৭২। নারী: ৩২৯৫৪৫। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৩৩। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯২৪। প্রধান ভাষা: মিজো। সঙ্গে চলে ইংরেজি। সাক্ষরের হার: ৮৭.৪৯%। মাথা পিছু বাৎসরিক আয়: ৪০৭৭.০০ টাকা (১৯৮৭-৮৮)। তাপমান: শীতে ১০.৮-২১.৩° সে, গ্রীষ্মে ২০.৩৮-২৯.৮° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। বর্ষার ব্যাপ্তি বেশি। মে থেকে অক্টোবর মাসে দক্ষিণ-পশ্চিম মৌসুমী বায়ুতে বৃষ্টি হয় মিজোরামে। বৃষ্টির গড়: ২৫৪ সেমি। তবে, আইজলে ২০৮ সেমি, লুঙ্গলেই ৩০৮ সেমি। শীত ও গ্রীষ্ম দুইয়েরই আধিকা কম। শীতে যেমন বৃষ্টি নেই—বরফও পড়ে না মিজো-রামে। বেড়াবার মরসুম সারাবছর হলেও অক্টোবর থেকে মার্চ মনোরম। আর জুন-সেপ্টেম্বরের বৃষ্টি এড়িয়ে চলা উচিত হবে মিজোরাম ভ্রমণে।

৫ দিনে এককভাবে বা পূর্ব ভারতের সঙ্গে জুড়ে মিজোরাম বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে।

মিজোদের বিশ্বাস ১৭০০ খ্রিস্টাব্দে আপার বার্মা থেকে আসে এরা বসবাসের জন্য। তারও আগে দক্ষিণ-পশ্চিম চীন থেকে বার্মায় এসে বসতি গড়ে পূর্বপুরুষরা। মঙ্গোলিয়ানদের উত্তরপুরুষ এরা। হিমতে ইহুদি রাজা মেনাসিয়া খ্রিপু ৬৮৭-৫৪২ অসিরীয় আক্রমণে পারস্যে গিয়ে বসতি গড়ে। দীর্ঘ পরে আলেকজান্ডারের আক্রমণে খ্রিপু ৩১৩য় পারস্য ছেড়ে আফগানিস্থানে যায় ইহুদিরা। আরও পরে খ্রিপু ২৩১এ চীনে যায় এরা। চীন থেকে বার্মা ঘুরে থিতু হয় ভারতের অসমে। তবে নানান সম্প্রদায়ের উপজাতির বাস। আরও পরে ১৮৯১-এ ব্রিটিশের আগমনে খ্রিস্টীয় প্রভাবে

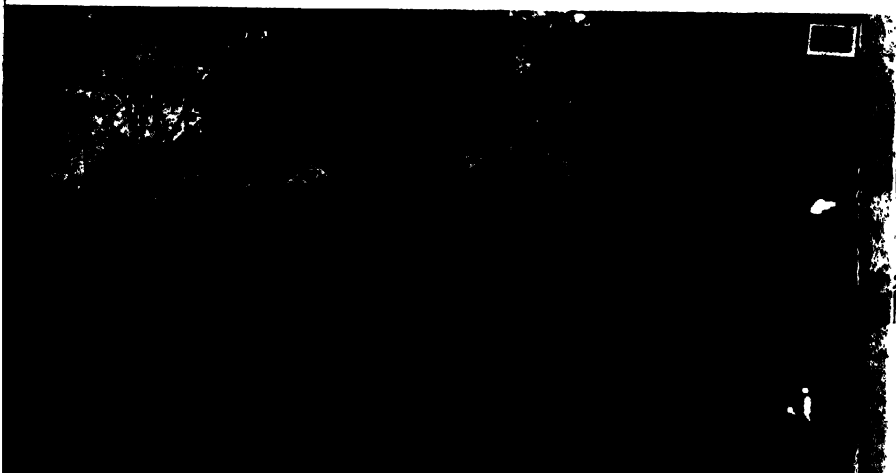
সংস্কারমুক্ত হয় এরা, প্রসার পায় শিক্ষাদীক্ষা। পাশ্চাত্য সংস্কৃতির অনুরাগী ও অনুসারীও বটে মিজোবাসী। আচার-ব্যবহারে অত্যন্ত ভদ্র, নম্র এবং মার্জিত—অতিথি-বৎসলও এরা। জুম চাষ জীবিকা এদের। আজও এদের সামাজিক ক্রিয়াকলাপে কুমিউন প্রথায়ে উৎসব হয়। ধর্ম ৯৫% খ্রিস্টান—মাতা মেরী ও যীশু এদের উপাস্য দেবতা। মুখের ভাষা মিজো—লেখার মাধ্যম রোমান স্ক্রিপ্ট। মেয়েরা পোয়ান পরে লুসির মতো করে, অনেকটা বার্মিজ ঢঙে। তবে, বৈচিত্র্য আছে বাংলাদেশ সীমান্তবর্তী চাকমা সম্প্রদায়ের মধ্যে। এরা ধর্মে যেমন বৌদ্ধ, মুখের ভাষাও তেমন বাংলা। বোধিসত্ত্ব ও হিন্দুর দেবী গঙ্গা, লক্ষ্মী ছাড়াও নিজস্ব আদি দেবতা সুগোলঙের উপাসক এরা। বিবাহ প্রথাতেও বৈচিত্র্য আছে মিজো সমাজে। তরুণরা বেরিয়ে পড়ে নুলারিম অর্থাৎ দমিতার খোঁজে। খুঁজে পেতে অভিভাবকরা এগিয়ে আসেন। ছেলে পক্ষের কনে-পণ দেওয়ার প্রথা বিচ্ছেদও অতি সহজে মেলে—আর পছন্দ নয় বললেই পাট চোকে এদের। কনেও পারে বিচ্ছেদ আনতে—সেক্ষেত্রে কনে-পণ ফেরত দেওয়া রীতি। সঙ্গীতপ্রিয় এরা। মিজো মেয়েদের চেহারা (Cheraw) নাদেরও প্রশংসা আজ সারা ভারত জুড়ে। বার্ষ চৌকো করে সাজিয়ে তারই ফাঁকে ফাঁকে অতি নিপুণভাবে তালে তালে নাচে মিজো মেয়েরা দলবদ্ধভাবে—সঙ্গে চলে বাজনা। মিজো শব্দ Kut অর্থ উৎসব—নাচে-গানে মুখরিত হয়ে ওঠে মিজোরামের আকাশ-বাতাস। ৩টি মুখ্য Kut এদের সমাজে। আগস্ট-সেপ্টেম্বরে ফসল তোলার Mim Kut, মার্চে জুম কেটে ঘরে তোলার উৎসব Chapchar Kut অর্থাৎ বসন্তোৎসব; আর আছে ডিসেম্বরে Pawl Kut. আনন্দ আর উচ্ছ্বাসের Chheihlam নৃত্যেরও যথেষ্ট খ্যাতি আছে। আর চালের চোলাই স্থানীয় মদ জু এদের প্রিয় পানীয়।



রেল মিজোরামে পৌঁছালেও কোলা শিবের অদূরে বৈরিতে তার চলা শেষ। নিকটতম বিমান বন্দর ও রেল স্টেশন দুই-ই শিলচরে। কলকাতা থেকে গুয়াহাটি হয়ে রেল গিয়েছে শিলচর। আড়াই দিনের পথ (গুয়াহাটি শিলচর রত্ব)। তাই কলকাতা থেকে প্রতিদিন ৬-১৫য় IAC-র উড়ানে ১৬ ৫ মিনিটে শিলচর পৌঁছে সড়ক পথে মিজোরাম অর্থাৎ আইজল যাওয়া উচিত হবে। জোড়হাট, ইম্ফল থেকেও IAC-র সার্ভিস মেলে শিলচরের। (শিলচর দেখুন।) Skyline NEPC-ও ত্রিাণ্ডাহিক সার্ভিস গড়েছে শিলচর-গুয়াহাটি-ইম্ফলে।

আর IAC-র সহযোগী সংস্থা বায়ুদূতের উড়ান 1 2 3 4 5 6 দিন ৬-৪৫-এ কলকাতা ছেড়ে ৮-৩০-এ আইজল পৌঁছে ফেরে। 3 দিন ১৪-৫০, 2 4 5 দিন ১৪-১০, 6 দিন ১১-৫০এ আইজল থেকে কলকাতায়। গুয়াহাটি যাচ্ছে 1 2 3 4 5 6 দিন ৮-৫০এ আইজল ছেড়ে ১০-০০টায়। আইজল আসছে গুয়াহাটি থেকে। 3 দিন ১৩-২০, 2 4 5 দিন ১২-৪০, 6 দিন ১০-২০এ। এছাড়াও উড়ান যাচ্ছে পূর্ব ভারতের নানানদিকে আইজল থেকে। তবে, আবহাওয়া খুবই অনিয়মিত করে তোলে বায়ুদূতের আইজল সার্ভিস। আর ফড়িং-এর মতো উড়ে উড়ে মিজোরামের সর্বোচ্চ





(৭১০০ ফুট) চূড়ো রু মাউন্টেন অর্থাৎ ফাওয়াংপুই-কে পাক মেয়ে পালক হ্রদের জল ছুঁয়ে বিমান নামে শহর থেকে ২৫ কিমি দূরের ভুইরিয়াল বিমান বন্দরের ছোট্ট রানওয়েতে। প্রথম থেকে শেষ অবধি থ্রিল-এ ডরা এস-ফর।



সমতল ভারতের সঙ্গে মিজোরামের সংযোগকারী একমাত্র জাতীয় সড়ক NH-54 গিয়েছে অসমের শিলচর থেকে। প্রতিদিন সকাল ৬-৩০-এ ডিলাঙ্গ, ৭-৩০ ও ১০-৩০-এ সাধারণ বাস যাচ্ছে মিজোরাম স্টেট ট্রান্সপোর্ট (MST) সোনাই রোড থেকে। আর প্রাইভেট ডিলাঙ্গ যাচ্ছে শিলচরের কদম সিনেমা থেকে আইজল। রাজিকালীন সার্ভিসেও বাস যাচ্ছে শিলচর থেকে আইজল। তবে, ভ্রমণার্থীদের উচিত দিনের বাসে চলা। চলার পথের নৈসর্গিক শোভা তুলনাহীন। পথের দূরত্ব ১৮০ কিমি। সময় নেয় ৮—১০ ঘণ্টা। ভাড়া: ৭০-২২৫। বাস টিকিটের যথেষ্ট চাহিদা। যাত্রার আগের দিন যাত্রী তালিকায় নাম লেখাবার প্রথা চালু আছে শিলচরে। যাত্রার এক ঘণ্টা আগে টিকিট মেলে সরকারি বাসে। তবে, আইজলে অগ্রিম টিকিট মেলে বাসের। পর্যটকদের ইনার লাইন পারমিট ও বাস টিকিটের জন্য অগ্রিম লিখে যাওয়াই উচিত হবে। আর মোতি ট্রাভেলস, গ্রীন ভ্যালী ট্রাভেলস, ক্যাপিটাল ট্রাভেলসের নানানধর্মী বাস শিলচর, শিলং, গুয়াহাটি যাচ্ছে আইজল থেকে। ট্যাক্সিও যাচ্ছে শিলচর থেকে আইজল—২ দিন অবস্থানে যাতায়াত ৩০০০ কেবল যাওয়া ২৫০০।

শিলচর থেকে ৪৩ কিমি দূরে ভাগাবাজার পেরুতেই মিজোরাম রাজ্যের শুরু। পাহাড়ের ও গুরু সীমান্ত পেরুতেই। চেকপোস্ট বসেছে আরও ৩ কিমি এগিয়ে ভাইরেল (Vaireng)। ৯৫ কিমি এগিয়ে কোলাশি (Kolasib)-এ যাতায়াতের পথে লাঞ্চ-ব্রেক নেয় বাস। নেপালি অর্থাৎ গোর্খা হোটেল আছে, আর আছে মিজো হোটেল। তবে, পানীয় জল থেকে সতর্কতা পদে পদে পালনীয়। রেস্ট হাউসও হয়েছে ৩ ঘরের কোলাশিবে। বিক্রাম ও পানীয় জল মেলে। থাকার দরকার পড়বে না কোলাশিবে।

আইজল

আই মানে ফল আর জল হচ্ছে বাগান। সেই আই অর্থাৎ ফলের বাগানে বসেছে নতুন রাজ্য মিজোরামের সদর দপ্তর। ছোট্ট পাহাড়ী শহর আইজল। হাজার চারেক ফুট উঁচুতে ধাপে ধাপে—পাহাড়ের খাঁজে খাঁজে উঁচু থেকে নিচে নেমেছে শহর। ছবির মতো সাজানো, প্রাকৃতিক সৌন্দর্য তুলনাহীন। ২ লক্ষ লোকের বাস শহরে। অতিথি-বৎসল এরা। মূলত নন ভেজ—ভাত এদের মূল্য খাদ্য।

কেবল লুসাই থেকে মিজো নয়—পরিবহন এসেছে সমাজ-জীবনেও এদের। কিছুকাল আগেও মিজোরা ছিল অন্ধ সংস্কারাচ্ছন্ন। ধারণা ছিল এদের, পাখিয়ান পৃথিবীর মঙ্গল করে, আর দানবেরা করে অমঙ্গল। ১৮৯৪ খ্রিস্টাব্দে ব্রিটিশ মিশনারীদের সংস্পর্শে আসার পর থেকে অতি দ্রুত পরিবর্তন আসে মিজো সমাজে। মিজোরা আজ অনেক সভ্য, অনেক উন্নত।

রাজ্য-ঘাটে হাটে-বাজারে মিজো মেয়েদের দেখা মিলবে

বেশি। এমনকি মিজো মেয়েরা হোমগার্ডের উর্দি পরে দায়িত্ব নিয়েছে গাড়ির গতি নিয়ন্ত্রণের। ভারতের অন্যত্র এ-দৃশ্য চোখে পড়ে না। শহরে কুলির অভাব। যানবাহন বলতে একমাত্র সড়কে সিটি বাস। আর মেলে মিটারহীন ট্যাক্সি—মার্কিতির আধিকা। কলা ও পেঁপে প্রথমেই নজরে পড়ে আইজলের দোকানপাটে। তেমনিই আতার মতো সেখতে টক-মিষ্টি-সুগন্ধী Passion fruit-এরও কদর আছে আইজলে। আর নজর কাড়ে বিদেশী বসনভূষণ। চেহারায় সতেজ হলেও—দামে ততটা নয়। তেমনিই স্মারকরূপে সঙ্গী করতে পারেন ধুমপানের পাইপ, মিজো কাপ লাফুম, হ্যান্ডিক্রাফট এম্পোরিয়ামে বাঁশের তৈরি নানান জিনিস। আজও টাকাকে টিমা বলে এরা। তবে বেলা চারটেয় বাঁপ পড়তে শুরু করে দোকানপাটে। পাঁচটার মধ্যে ঘরে ফেরা অলিখিত ধারা মিজোরামে। রবিবার বন্ধ থাকে আইজলের দোকানপাট।

চিত্রসূচী: চার

৪০ জাতীয় সাজে মিজো মেয়েরা ছবি অশোক বসু
৪১ খাইরয়াও বাজার-ইফল ছবি অশোক বসু
৪২ কোহিমা শহর ছবি পর্টন দপ্তর
৪৩ জাতীয় সাজে সেমা মঙ্গাতি ছবি
পর্টন দপ্তর
৪৪ কোহিমা শহর ছবি পর্টন দপ্তর
৪৫ সূজের অপেক্ষা-সেমা নাগা ছবি পর্টন দপ্তর
৪৬ নুভোরই ডালে ডালে ছবি পর্টন দপ্তর
৪৭ রায়ের ইটানগর ছবি অশোক বসু
৪৮ সামাজিক প্রতিপত্তি নির্দশন বাড়িতে মহিষের শিং ছবি অশোক বসু
৪৯ নিখুঁত পাইপ ছবি পর্টন দপ্তর
৫০ যাত্রা হলো শুরু ছবি পর্টন দপ্তর
৫১ নিখুঁত ক্যুটেজ ছবি পর্টন দপ্তর
৫২ সেলুলার জেল ছবি পর্টন দপ্তর
৫৩ অসমের তা বাগানে ছবি সুপার দত্ত।

শহরের উত্তর প্রান্তে সবচেয়ে উঁচুতে হ্যালি টিলা ছাড়িয়ে ডার্টল্যাঙ (Durtlang) হিলস আর দক্ষিণে খাটলা বাজার অর্থাৎ অতীতের শিবাজী টিলাটিও ভাল লাগবে দর্শকদের। ট্যাক্সি, সিটি বাস বা পায়ে হেঁটে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। জ্যুলজি-ক্যাল গার্ডেন অর্থাৎ চিড়িয়াখানাও বসেছে আইজলের বেথেলহামে। সার্কিট হাউসের মাথার উপর রাজভবন, আয়েসখলি হাউস, সরকারি দপ্তর, স্টেট ট্রান্সপোর্ট অফিস। আর রয়েছে প্রথম বিশ্বযুদ্ধে নিহত অসম রাইফেলসের সেই সব বীর সেনানীর শহীদ স্মৃতি যারা দেশের জন্য প্রাণ দিয়েছিলেন সেদিন। আর উচিত হবে ভিউ পয়েন্ট থেকে রাতের আইজল শহর দেখে নেওয়া। সুর্যাস্তও সুন্দর দৃশ্যমান আইজলে। উচিত হবে মিজো সংস্কৃতির সংগ্রহশালা Macdonald Hill-এর Babu Tlang-এ স্টেট মিউজিয়ামটি দেখে নেওয়া। মঙ্গল থেকে শুক্র ৯-৩০—১৬-০০, সোমবার

১২—১৬-০০, শনি ও রবিবার বন্ধ থাকে মিউজিয়াম। মিউজিয়ামের বিপরীতে ম্যাকডোনাল্ড পাহাড়ে গোসপেল গির্জাটিও আর এক দৃষ্টব্য।

বিমানবন্দরের পথে ১৫ কিমি দূরে চডুইভাতির মনোরম পরিবেশ Bung; ১৬ কিমি দূরে Paikhai-এরও প্রশস্তি চডুইভাতির জন্য—নেসগিক শোভাও মনোরম এসেছে। তেমনই Kut এদের জাতীয় উৎসবের চেহারা নিয়েছে। উদযাপিতও হয় মার্চ, আগস্ট ও ডিসেম্বর মাসে। স্টেট ব্যাঙ্কের শাখাও বসেছে মিজোরাম ক্লাবের বিপরীতে সার্কিট হাউসের পথে। Govt of Mizoram Tourist Information Office-ও বসেছে আইজলে। আর Directorate of Tourism, Govt of Mizoram, Chandmari, Aizawl-796007, ৩ (03832) 23161-এ।

আইজল থেকে মিজোরাম রাষ্ট্রীয় পরিবহণের বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিকে দিকে। লাখের উপজাতি অধ্যুষিত ২৩৫ কিমি দূরের দক্ষিণ মিজোরামের জেলা সদর মনোরম পাহাড়ী শহর লুঙ্গলেই (Lunglei) পৌছে আরও ৮৫ কিমি দূরের বাংলাদেশ সীমান্তের লাবাং (Tlabung) বা দেমাগিরি, আবার মহকুমা শহর লুঙ্গলেই থেকে বার্মা সীমান্ত শহর ১৪০ কিমি দূরের সাইহা (Saiha)-ও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ৪ ঘরের IB আছে সাইহা-তে। আর লুঙ্গলেই-এ রাজ্য পর্যটনের Tourist Lodge, Zotlang, ৩ (03833) 21365, সাধারণ হোটেলে, সার্কিট হাউস আছে। আবার আইজল থেকে সরকারি বাস (৬-০০) বা জিপে ঘণ্টা দশকে ২০৪ কিমি দূরে আর এক বার্মা (Myanmar) সীমান্ত-শহর চম্পাই (Champhai)-ও বেড়িয়ে ফেরা যায়। রাজ্য পর্যটনের Tourist Lodge ও PWD-র IB আছে চম্পাই-এ। আর নাইট সার্ভিসে বাস যাচ্ছে: Champhai ও Lunglei—Samuel Travels, Khatla Bazar থেকে; Capital Travels-এর বাস যাচ্ছে Lunglei ছাড়াও রাজ্যের নানান দিকে। Lunglei যাচ্ছে Lunglei হয়ে Benjamin Travels. পথশোভা অতীব সুন্দর। তবে সাধারণ পর্যটকদের জন্য নয় এপথ।

তেমনই ১৯৭৬-এ গড়া জাম্পা অভয়ারণ্যও চলা যেতে পারে আরণ্যক শোভার সাথে হরিণ, বাঘ, হাতি, চিতা দর্শনে। আর মিজোরামের উচ্চতম জলপ্রপাতটির অবস্থান আইজল থেকে ১৩৭ কিমি দূরে ভানতোয়াং (Vantawng)-এ। ৫ কিমি দূরে মনোরম শৈলাবাস খেনজাউল।

ভানতোয়াং জলপ্রপাতটির আকর্ষণও অনবদ্য। আইজল থেকে ২৩৫ কিমি দূরে ৭৫০ ফুট উঁচু থেকে ধারা নামছে, আরণ্যক পরিবেশ। আইজল থেকে লুঙ্গলেই-এর পথে ৭৫ কিমি দূরে তামডিল (Tamdil) লেকটির পর্যটক আকর্ষণও অনস্বীকার্য। ছোট্ট লেক, চারপাশ ঘিরে ব্যুহ গড়েছে পাহাড়। লেকের পাড়ে ট্যুরিস্ট লজও হয়েছে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকে। পথপাশ শাল, সেগুন, বাঁশ, কলায় ছাওয়া—পথশোভা মনোরম। চলার পথে ৮ কিমি আগে সাইটল। তেমনই চলা যেতে পারে থিয়ানজল (Thenzawl) পার্বত্য শহর-এ। হস্তশিল্প কেন্দ্র রাপে থিয়ানজলের প্রসিদ্ধি। থাকারও ব্যবস্থা মালে Saitual-এর ট্যুরিস্ট কটেজে।



থাকার জন্য সার্কিট হাউস ও ডাকবাংলো আছে আইজলে। অব: D C, Aizawl, Mizoram. আর আছে *H Moonlight, Chattlang, D ৪০০, A/c D ৬০০ সুইট ৮৫০; H Sangchia, Zarkawt, ৩ 26287; Rrajji H, Treasury Sqr, S ৩০০ D ৪৫০ ডরি ১০০; H Embassy, Chandmari, S ১০০ D ১৫০-২২৫; Deluxe H, D ২০০-২৭৫; H Rajdoot, Treasury Sqr, DAB ২২৫-৩৫০; H Raj International, S ৮৫-১৫০ D ২২৫-৩৫০; H Chowlhra, Zarkawt, S ১১০ D ১৭৫; বাঙালি মালিকানায় Peru H, S ৬৫ D ১২৫; H Shungrila, Bara Bazar, D ১৫০-২২৫; H Ritz, Bara Bazar-1, ৩ 23131, S ১২৫ D ২২৫ সুইট ৪৫০; H Ahimas, Zarkawt-1, ৩ 23446, D ৪০০-৬৫০; এছাড়া অতি সাধারণ সাজে বাঙালির হোটেলে H Hill View, S ৪৫-৬৫ D ৮০-১৫০; Ashoka H, S ৬০ D ১০০। খাবারের জন্য বাঙালি মালিকানার টোপাঙ্ক-কে বেছে নেওয়া যেতে পারে। থাকারও ব্যবস্থা আছে এদের। MLA Hostel, Air Lines Hostel, Aizawl Club Rest House-ও আছে আইজলে। শহরান্তে Chattlang পাহাড়ের মনোরম পরিবেশে Tourist Lodge, ৩ 23526, D ১৫০-৩০০, অব: Director, P R & Tourism, Govt of Mizoram, Aizawl-796001, ৩ (03832) 23161; এদেরই Yatri Niwas, Luangmual, ৩ 32263, D ৮০ ডরি বেড ২৫। ট্যুরিস্ট লজের ক্যান্টিনটির আহার্যও উপাদেয়। সূর্যাস্তও সুন্দর দৃশ্যমান লজের ছাদ থেকে। তেমনই Zarkawt-এ—Ahimsa Tandoor; Treasury Sqr-এ—Vayudoot, H Rrajji; Hospital Rd-এ—New Plaza-এদেরও সুনাম যথেষ্ট আহার্য পরিবেশায়।

আবার নতুন হয়ে—

হবি
ছড়ায়
দেঙ্গে

সম্পাদনা: শৈলশেখর মিত্র

৫০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

মণিপুর


কেউ বলেন—A Little Paradise on Earth, কেউ বা বলেন Switzerland of the East, কারো কারো মতে, The Jewel of India, বা A Flower on Lofty Heights. তবে মণিপুর অর্থ—A Jewelled Land. সবুজ পাহাড়ের ডিম্বাকার মণিপুরের প্রাকৃতিক সৌন্দর্য নয়নাভিরাম। প্রকৃতি তার ভাণ্ডার উজাড় করে সাজিয়ে তুলেছে মণিপুরকে। এর সৌন্দর্যে বিমোহিত হয়ে পণ্ডিত জওহরলাল নেহরু পুর্বের কাশ্মীর বলেছিলেন মণিপুরকে। ছোট্ট পাহাড়ী রাজ্য মণিপুর। নীল-সবজে পাহাড়, নিচুতে ফুলের জাজিম পাতা—চাঁদোয়া হয়েছে নীলাকাশ। তারই মাঝ দিয়ে বয়ে চলেছে পাহাড়ী ঝোরা-নদী-নালা সারা উপত্যকা জুড়ে।


তবে, রাজ্যটি আজকের নয়। খ্রিস্টপূর্ব কালেও মণিপুরের অস্তিত্বের কথা জানা যায়। মহাভারতে এর উল্লেখ মেলে—কখনও মনফুর, কখনও বা মনলুর, আবার কখনও বা মনয়ুর নামে। অজুর্ন-পত্নী চিত্রাঙ্গদার দেশ মণিপুর। দীর্ঘকাল ধরে স্বাধীন রাজ্য ছিল মণিপুর। স্বাধীনতার সে ইতিহাস বড়ই বেদনাময়। কলহ যুদ্ধবিগ্রহ আর রক্তক্ষয় কলঙ্কিত করেছে সেই ইতিহাসকে। 17 years devastation অর্থাৎ ১৮১৯ থেকে ১৮২৬-এর যুদ্ধে মণিপুরের দখল যায় ব্রহ্মদেশের হাতে। ১৮৯১ এ ব্রিটিশের হাতে শেষ স্বাধীন রাজ্য টিকে রাখার ফাঁসির পর মণিপুর যায় ব্রিটিশ দখলে। ১৯৪৭-এ মণিপুরের শাসনভার আসে ভারতের হাতে। কিছুকাল মণিপুর ছিল মুখ্য প্রশাসকের অধীন। ১৯৫০-এ মণিপুর হয় 'গ' শ্রেণীর রাজ্য। ১৯৫৬-তে রাজ্য পুনর্গঠনের সময় মণিপুর যায় কেন্দ্রীয় শাসনাধীনে। আর ১৯৭২-এর ২১শে জানুয়ারি রাজ্যের মর্যাদা পায় মণিপুর। সারা ভারত থেকে যোগসূত্র বিচ্ছিন্ন মণিপুর ভারত ইতিহাসের পাতায় প্রথম স্থান পায় ১৮৯১ খ্রিস্টাব্দে।

ভারতের সীমান্ত রাজ্য মণিপুর। পূবে বার্মা, উত্তরে নাগাল্যান্ড, পশ্চিমে অসম আর দক্ষিণে মিজোরাম। আয়তনে ২২,৩৫৬ বর্গ কিমি। ৫টি জেলা নিয়ে গড়ে উঠেছে আজকের মণিপুর। এর ১০% সমতল হলেও মোটামুটি সারা রাজ্যটিই পাহাড়ী। সমতলে মৈতেই সম্প্রদায়ের বৈষ্ণবী হিন্দু আর পাহাড় অঞ্চলে মুখ্যত ২৯টি উপজাতি সম্প্রদায়ের বাস। ধর্ম খ্রিস্টান এরা। তবে মণিপুরও আজ জড়িয়ে পড়েছে সমতল আর পাহাড়ী সংঘাত।

গুণ্ড প্রাকৃতিক সম্পদই নয়—মণিপুরি নৃত্য আজ ভারত ছাড়িয়ে সারা বিশ্বের নৃত্য রসিকদের মনোরঞ্জন করে চলেছে। রাস জাতীয় উৎসবের চেহারা নিয়েছে মণিপুরে। দেবতা শ্রীগোবিন্দজীকে শ্রদ্ধা জানাতে রাজা ভাগ্যচন্দ্রের চিত্তা-প্রসূত ক্লাসিকাল নাচ রাসলীলা—গোপীবালাদের সাথে

শ্রীকৃষ্ণের লীলা থেকে উদ্ভব। তেমনই এপ্রিল-মে মাসে ফসল ঘরে তোলার উৎসব লাই-হারোবা (Lai-Haroba) নৃত্যও জাতীয় উৎসবের ভূমিকা নিয়েছে। ১০ দিনের হলৎকা অর্থাৎ বসন্তোৎসব (ফাল্গুনের শুক্লা একাদশী থেকে কৃষ্ণা পঞ্চমী) আর এক মন রাজানো উৎসব। সারা বিশ্বের খেলাধুলার দরবারে পোলো খেলাটি উপহার দিয়েছে এই মণিপুর। আজও অক্টোবর-নভেম্বরে আসর বসে রাজকীয় খেলা পোলোর। ঘরে ঘরে তাঁত—ঘরোয়া শিল্পের রূপ নিয়েছে তাঁতশিল্প। তেমনই প্রশস্তি আছে মণিপুরী হস্তশিল্পের। বেত ও বাঁশের নানান জিনিস, টেবল ম্যাট, মনোহারী ব্যাগ, বিছানার চাদর ছাড়াও নানান আসবাবপত্র পর্যটকদের বিভ্রম্নয় ফেলে ছেড়ে আসতে। হ্যান্ডলুম আজ গৃহশিল্পের রূপ নিয়েছে মণিপুরে। শতকরা ৬৮% জমিতে বন হলেও কৃষি এদের মুখ্য জীবিকা। ৫০০-রও অধিক ধর্মী অর্কিড দেখতে মেলে মণিপুরের বনাঞ্চলে।

১৯৪২-এর ১০ই মে, জাপান বোমা ফেলে ইম্ফলে। মণিপুর তখন দ্বিতীয় বিশ্বসমরের মূল রণাঙ্গনে জড়িয়ে পড়ে। এমনকি নেতাজী সুভাষের আজাদ হিন্দ ফৌজ (ইন্ডিয়ান ন্যাশানাল আর্মি) জাতীয় পতাকা তুলে ব্রিটিশের হাত থেকে মণিপুরের একটা অংশ মুক্ত করে নেয় সেদিন।
 অতীতে ভারতের সঙ্গে যোগাযোগের একমাত্র সড়কপথ ছিল কাছাড় রোড। আজও এপথ রয়েছে শিলচর থেকে মণিপুর যেতে। শিলচর থেকে জিরিঘাটে জিরি নদী পেরুতেই অপর পারে জিরিবাম অর্থাৎ মণিপুর রাজ্যের শুরু। ট্রেন চলেছে শিলচর থেকে সকাল ৭-৪৫এ শতাধিক সেতুতে নদী পেরিয়ে ৩ ঘণ্টায় ৪৭ কিমি দূরে জিরিবামে। শিলচর ফেরে ১১-৫৫য় জিরিবাম থেকে। সরাসরি বাসও চলেছে শিলচর থেকে ইম্ফলে। ঘণ্টা দশেকের পথ, দূরত্ব ২২৪ কিমি। পাহাড়ী পথ, পথ বন্ধুরও।

 135 দিন ৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ৭-২০এ শিলচর পৌঁছে ইম্ফল যাচ্ছে ৮-২৫এ, 47 দিন ১২-৪০এ ছেড়ে ইম্ফল যাচ্ছে ১৩-৪৫এ, 2 দিন ৬-১৫য় ছেড়ে ৭-২০, 6 দিন ৯-৩০এ ছেড়ে সরাসরি ইম্ফল যাচ্ছে ১০-৩৫এ IAC-র উড়ান। কলকাতায় ফেরে। 35 দিন ৮-৫৫য় ইম্ফল ছেড়ে ৯-৩০এ শিলচর পৌঁছে ১১-০৫এ, 47 দিন ১৪-২৫এ ছেড়ে ১৫-১৫য় গুয়াহাটি পৌঁছে ১৭-১০এ, 2 দিন ৭-৫০এ ছেড়ে ৮-২০এ জোড়হাট পৌঁছে ১০-১৫য়, 6 দিন ১১-০৫এ ছেড়ে ১২-১০এ সরাসরি। দিল্লী যাচ্ছে 26 দিন ১৪-২৫এ ইম্ফল ছেড়ে ১৭-৩৫এ সরাসরি। ভাড়া ইম্ফল থেকে শিলচর ৬২৫, কলকাতা ৩০৫৫/২১১৫, দিল্লী ৯৮০৫/ ৬৯৯৫। ৬ কিমি দূরে এয়ারপোর্ট থেকে IAC-র বাস বা পেমার ট্যাক্সি শহরে পৌঁছান। আর শহরে রিকশা, অটো ও ট্যাক্সি চলেছে।

আর Skyline NEPC প্রতিদিন ১০-১৫য় কলকাতা ছেড়ে

২৩৫৭ দিন গুয়াহাটি ১১-২০ জোড়হাট ১৫-০৫, ডিমাপুর ১৬-০৫এ পৌছে ২০-১৫য় ইম্ফল যাচ্ছে; ১৪৬ দিন গুয়াহাটি ১৩-৪০এ পৌছে ইম্ফল যাচ্ছে। ২৪৬৭ দিন ১০-১৫য় ছেড়ে ৪৫ মিনিটে লিফটর যাচ্ছে NEPC-র উড়ান। ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে।

মণিপুর □ রাজধানী: ইম্ফল। আয়তন: ২২৩২৭ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ১৮২৬৭১৪। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.২১%। পুরুষ: ৯১৩৫১১। নারী: ৮৯৫২০৩। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৪০৫৭৬১। বৃদ্ধির হার: ২৮.৫৬%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৮২। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৬১। সাক্ষরের হার: ৬০.৯৬%। প্রধান ভাষা: মণিপুরী। সঙ্গে চালু ইংরেজি। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৩৫০২.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। বেড়াবার মরসুম: অক্টোবর থেকে এপ্রিল। তবে দুর্গাপূজা/রাসলীলা/দোলে মণিপুর ভ্রমণ আরও মধুর হয়ে ওঠে। নভেম্বর-ফেব্রুয়ারি মাসে উলেন, অন্যান্য সময় সুতি বসনই যথেষ্ট মণিপুর ভ্রমণে। বৃষ্টির গড় ২০২ সেমি।

উত্তর-পূর্ব ভারত ভ্রমণকালে বা এককভাবে ১ম দিন ইম্ফল পৌঁছে বিশ্রাম ও শহর বেড়ানো। ২য় দিন লোকতাক-ময়রাং-বিষ্ণুপুর, ৩য় দিন সিমোটি-মন্দির-কেনাকাটা সারুন ইম্ফলে, ৪র্থ দিন উম্বুল, ৫ম দিন কায়না, ৬ষ্ঠ দিন মোরে-প্যারেল-খংগজম, ৭ম দিনে আকাশপথে কলকাতা বা সড়কপথে কোহিমা অর্থাৎ নাগাল্যান্ড চলুন।



আবার নতুন জাতীয় সড়ক (NH 39) হয়েছে ডিমাপুর রোড থেকে নাগাল্যান্ডের উপর দিয়ে রাজধানী শহর ইম্ফলের। পাহাড়ী পথ, পথ উঠেছে ৭০০০ ফুট উঁচুতে মাও-এ। চেনা-অনো গাছের সাথে লতা-গুম্ম-অর্কিডের সমাবেশে পথশোভা নয়নাভিরাম। নাগাল্যান্ড ও মণিপুর রাজ্য পরিবহণের সুপার ডিলাক্স, এল ও সাধারণ বাস ৮৫-২২৫ টাকায় ৭ ঘণ্টায় প্রতিদিন সকালে ডিমাপুর ছেড়ে ইম্ফল যাচ্ছে। এ-পথের দূরত্ব ২১৯ কিমি। কলকাতা থেকে গুয়াহাটি হয়ে লামডিং পৌঁছে, গুয়াহাটি থেকে ২৫০ কিমি দূরে গুয়াহাটি-লামডিং-তিনসুকিয়া রেলপথের মধ্যবর্তী স্টেশন ডিমাপুর রোড। ব্রডগেজ রেলও পৌঁছেছে ডিমাপুর হয়ে ডিব্রুগড়ে। (ডিমাপুর অংশে বন্ধন)। ফস্টা আটকে রেল ও বাস দুই-ই আসছে গুয়াহাটি থেকে ডিমাপুরে। নাগাল্যান্ডের উপর দিয়ে যেতে নাগাল্যান্ড সরকারের ILP লাগে। আর ভারতীয়দের কাছে ঘার অব্যবহৃত হলেও বিদেশীদের মণিপুরে যেতে অনুমতি লাগে—Ministry of Foreign Affairs, New Delhi থেকে।

ইম্ফল/ইম্ফাল

ইম্ফলের মাটিতে পা দিতেই বাংলা হরফে লেখা বোর্ডগুলো যতটা উৎফুল্ল করবে ঠিক ততোধিক বিস্ময়ের উদ্বেগ ঘটাবে ওদের মুখের কথা। মণিপুরি এদের মাতৃভাষা। লেখার মাধ্যম বাংলা হরফ। ধুতির সঙ্গে কোট পরেন পুরুষেরা। গলায় চাদর। তবে, প্যাটের ও চলন যুবসমাজে দৃশ্যমান। আর মেয়েরা পরেন ফানেক (Fanck) অর্থাৎ রঙিন লম্বা জামা। মণিপুরের রাজধানী শহর ইম্ফল। স্থানীয়রা বলেন ইম্ফাল। নামটি এসেছে যুম-ফল অর্থ যার—যুম অর্থ বাড়ি আর ফল হচ্ছে সংগ্রহ—অর্থাৎ ঘরবাড়ির সংগ্রহ থেকে। ডিম্বাকার মণিপুরের কেন্দ্রস্থলে, ৭৯০ মি উঁচু উপত্যকায় বসেছে রাজধানী শহর। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা, সুন্দর ছবির মতো সাজানো ছোট্ট শহর। বিমানে বসেই দেখে ফুরিয়ে ফেলা যায় পুরো শহরটা। ১৭.৪৮ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত শহরে লাখদু'য়েক লোকের বাস। শহরটি আজকের নয়। ভারতের অন্যান্য রাজধানী শহরগুলির মধ্যে ইম্ফল খুবই প্রাচীন, জন্ম এর ৩৩ খ্রিস্টাব্দে। রাজ্যের সাংস্কৃতিক ও বাণিজ্যিক কেন্দ্রও এই ইম্ফল। তবুও কেন যেন অতৃপ্তির বেদনা ভারাক্রান্ত করে তোলে ইম্ফল পর্যটকদের।

শহরের কেন্দ্রস্থলে নীল আকাশের নিচে গড়ে উঠেছে অভিনব খবাইরামবন্ড (Khwairamband) বাজার বা Imma Market. ইম্ফলের এক বিশেষ আকর্ষণও এই বাজার। ৩০০০ ইমাস অর্থাৎ মণিপুরি মেয়েরা রকমারি দোকান সাজিয়ে বসে। মণিপুরি তাঁতবস্ত্র ও হস্তজাত শিল্প বিশেষ করে বেডকুভার, ব্যাগ, বাঁশ ও বেতের নানান সস্তার পর্যটকদের লোলুপ দৃষ্টির শিকার হয়। সম্ভবত ভারতে এটিই একমাত্র মহিলা পরিচালিত বাজার। তবে ভাষা কখনও কখনও প্রতি-বন্ধকতার আবরণ গড়ে। আর পাইকারি বাজারে মারোয়াড়ি প্রভাব বিদ্যমান। তবুও যেন দোকানপাটের রমরমা তখনল বাজার ও পাওনা বাজার-এ।

শহর থেকে ৮ কিমি দূরে ইন্দো-বার্মা সড়কে লংখালে রয়েছে মণিপুরের প্রাচীন রাজপ্রাসাদ। বেশ কয়েকটি মন্দিরও রয়েছে লংখালে। কাঁঠাল আর পাইন বনের মাঝে মন্দিররাজি। পাশেই নেহরু ইউনিভার্সিটি সেন্টার। সিটি বাস, অটো, ট্যাক্সি বা রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

রাজপ্রাসাদ সংলগ্ন সুবর্ণ মন্দির শ্রীগোবিন্দজী মন্দির-এর আকর্ষণও কম নয় পর্যটকদের কাছে। দেবতা—বলরাম, শ্রীকৃষ্ণ ও জগন্নাথ। বৈষ্ণবধর্মের শীঠস্থান এই মন্দিরের রাসলীলা, গোষ্ঠলীলাও পর্যটকদের আর এক আকর্ষণ। নিয়মিত নাচের আসরও বসে। দুপুর ১২—১৫-০০টায় দ্বার বন্ধ থাকে মন্দিরের। মন্দির থেকে পায়ে হটা দূরত্বে বাঁয়ের পাড়ে মধ্যবলী ঠাকুরের মন্দিরটিও দেখে নেওয়া যায়। তবে, হনু থেকে সতর্কতা দরকার।

পোলো গ্রাউন্ডের কাছে মণিপুর স্টেট মিউজিয়ামটির

আকর্ষণও কম নয় ভ্রমণার্থীদের কাছে। প্রাণীতত্ত্ব, ছবি, পোশাক ছাড়াও নানান সংগ্রহ রয়েছে। রবি ও ছুটি ছাড়া ১০—১৬-৩০টা খোলা। তেমনই আর এক আকর্ষণ প্রত্নতত্ত্ব, শিল্পকলা, মূর্তা ও বয়নশিল্পের ব্যক্তিগত সংগ্রহ-শালা মুটুয়া মিউজিয়াম। ১৮৯১-এ ব্রিটিশের সাথে স্বাধীনতার যুদ্ধে নিহত শহীদদের স্মরণে শহরের প্রাণকেন্দ্রে শহীদ মিনারও হয়েছে বীর টিকেজ্রিৎ পার্কে।

শহরান্তে NH 39 থেকে সরে ডিমাপুর রোডে ট্যারিস্ট লজ ছাড়িয়ে গড়ে তোলা হয়েছে মণিপুর ভ্রমণার্থীদের আর এক তীর্থ—ইম্ফল ওয়ার সিমেন্টে। দূর-দূরান্ত থেকে আসা দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধে নিহত ব্রিটিশ মিত্র বাহিনীর সৈনিকরা শায়িত রয়েছেন ইম্ফলের মাটিতে—কমনওয়েলথ ওয়ার গ্রেন্ড কমিশন-এর তদারকিতে। এছাড়া গান্ধী মেমোরিয়াল হলটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে পায়ে পায়ে।

ডিমাপুর রোড থেকে সিটি বাসে NH-39এ ১২ কিমি দূরের খোনাং পার্কে নেমে অর্কিড (Khonghampat Orchidarium) ফার্মটিও দেখে নেওয়া উচিত। ২০০ একর ব্যাপ্ত পার্কে শতাধিক ধর্মী অর্কিড দেখতে মেলে। ৬ কিমি দূরের চিড়িয়াখানাটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে সময় করে। এক শিং নাচুনে হরিণের জন্য এর প্রশস্তি। তেমনই সেপ্টেম্বরে Heikra Hitong-ba বোট রেসের পর্যটক আকর্ষণও কম নয়।

বিষ্ণুপুর

ইম্ফলের ২৭ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ময়রাং-এর পথে পাহাড়ের পাদদেশে ছবির মতো ছোট্ট শহর বিষ্ণুপুর। ১৪৬৭-তে চীনা শৈলীতে তৈরি বিষ্ণুমন্দিরের জন্য খ্যাত। অতীতের একমাত্র সড়ক পথ কাছাড় রোডটি বিষ্ণুপুর থেকেই শুরু হয়েছে। বাস যাচ্ছে শহর থেকে।

ময়রাং/লোকতাক

বিষ্ণুপুর থেকে ১৮ কিমি পেরিয়ে ময়রাং, ইম্ফলের দূরত্ব ৪৫ কিমি। মণিপুর ভ্রমণার্থীদের মূল আকর্ষণও ইন্দো-বার্মাসড়কের এই ময়রাং। লোকের পাড়ে শহর। দ্বীপও হয়েছে লেকের বুকে। ঝাঝা ও যৌইবীর অমর প্রেমের গাঁথা ঝাঝা-যৌইবী নৃত্যকলার উদ্ভাবকও এই ময়রাং। আজও গীত হয়ে ফেরে এদের প্রেমকাহিনী। তেমনই রয়েছে বনদেবতা থংজিং-এর প্রাচীন মন্দির। মে মাসে জাঁকালো উৎসব বসে। প্রাচীন মণিপুরি লোক সংস্কৃতির পীঠস্থান ময়রাং-এর আর এক প্রসিদ্ধি নেতাজী সুভাষচন্দ্রের আজাদ হিন্দ ফৌজ অর্থাৎ ভারতীয় জাতীয় বাহিনীর জন্য। মূল দপ্তর বসে ফৌজের। এমনকি ব্রিটিশ ভারতে মূল ভূখণ্ডের ময়রাং-এ জাতীয় বাহিনী প্রথম জাতীয় পতাকাও তোলে ১৯৪৪-এর ১৪ই এপ্রিল। স্মারক রূপে স্মৃতিসৌধ হয়েছে। মূর্তিও হয়েছে সুভাষচন্দ্রের আই এন এ মেমোরিয়ালের সামনে। খোপিত

রয়েছে INA Memorial-এ—The Indian tri-colour flag was hoisted here for the first time on the sacred soil of India by the Indian National Army on the 14th April 1944. তবে অতি সম্প্রতি মূর্তিটি ধ্বংস হয়েছে দুষ্কর্তীদের হাতে। ১৯৪৫-এ সিঙ্গাপুরে প্রতিষ্ঠিত প্রস্তরলিপির প্রতিলিপিও বসেছে। আর হয়েছে লাইব্রেরি ও নেতাজী তথা আজাদ হিন্দ ফৌজের নানান স্মারক নিয়ে মিউজিয়াম। সোমবার বন্ধ থাকে মিউজিয়াম। নিয়মিত বাস যাচ্ছে শহর থেকে। সকালের বাসে গিয়ে ময়রাং দেখে ফেরার পথে বিষ্ণুপুর বেড়িয়ে দিনে দিনে ফেরাও যায় ইম্ফলে। আবার ট্যারিস্টেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় শ'তিনেক টাকায় একই দিনে বিষ্ণুপুর/ময়রাং/লোকতাক লেক।

ময়রাং ভ্রমণে অন্যতম আকর্ষণ লোকতাক লেক। উত্তর-পূর্ব ভারতের বৃহত্তম লেকও এই লোকতাক। আয়তন এর ৬৪ বর্গ কিমি, বর্ষায় ব্যাপ্তি বেড়ে হয় ১০৩ বর্গ কিমি। শুটিং ও মাছ ধরার ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। পাখিরও আসে দেশ-দেশান্তর থেকে, নীড় বাঁধে লেকের পাড়ের বৃক্ষ শাখে। আর হয়েছে ফুমদি অর্থাৎ ছোট-বড় নানান আকারের দ্বীপ লেকের বুকে। পর্যটক আকর্ষণ বাড়িয়ে তুলতে বাগিচা হয়েছে দ্বীপ থেকে দ্বীপে। মাথা তুলেছে পাহাড়ী টিলা নানান দ্বীপে। উচ্চতম টিলাটি ১৪১ মি। এমন কি বনা জন্তুরও আসে ভাসমান ফুমদিত শিকার ধরতে। নৌকা বিহারেরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে—বিহার করুন দ্বীপ থেকে দ্বীপে। নিয়মিত বাস যাচ্ছে শহর থেকে। দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায়। আবার থাকারও ব্যবস্থা মেলে লেকের বুকে সেন্দ্রা দ্বীপের টিলার টঙের মনোরম পরিবেশে চার ঘরের Sendra Tourist Home-এ; অবু: Dy Director, Tourism, Imphal.

লোকতাকের দক্ষিণ-পশ্চিমে ৪০ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে আর এক বিশ্বায়—বিশ্বের একমাত্র ভাসমান ন্যাশানাল পার্ক Keibul Lamjao National Park. কেইবুল লামজাও অর্থাৎ তার ব্যায় সম্মূল বিশ্বত অঞ্চল। ১৯৬৬তে অভয়ারণ্য আর ১৯৭৭-এ জাতীয় উদ্যানে রূপ পায়। ১৯৯৩-এর সমীক্ষা মতে সারা বিশ্বে লুপ্ত হতে যাওয়া ৯৬টি সাঙ্গাই অর্থাৎ শিং-ওয়ালা নাচুনে হরিনীর বাস। আর রয়েছে বনা শুয়োর ও প্যাঙ্কার জাতীয় উদ্যানে। বিলের জলে নানান গাছগাছালি আর ফুমদি গুশ্মে সাঙ্গাই, হণ ডিয়ার, ভোদড, বনা ভালুক ছাড়াও নানান জন্তু চরে বেড়ায়। শীতকাল জন্তু দেখার মনোরম সময়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ফরেস্ট রেস্ট হাউসে। জাতীয় উদ্যানে প্রবেশ ও রেস্ট হাউসের বুকিং: ডিভিশন্যাল ফরেস্ট অফিসার—ওয়াইন্ড লাইফ, কেইবুল লামজাও ন্যাশানাল পার্ক থেকে মেলে। রাজ্য পর্যটন কনভাক্টেড ট্যুরে জাতীয় উদ্যান দেখিয়েও আনে ইম্ফল থেকে। লোকতাকের পশ্চিমে নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে আর এক মনোরম Phubala Tourist Complex.

মোরে

ইক্ষফল থেকে ১১০ কিমি দূরে ভারত-বার্মা সীমান্তে সীমান্ত শহর মোরে। বাস যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে। ঘন্টা পাঁচকের পথ। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *IB* ও *ধরমশালায়*। পথে পড়ে প্যালেস। আজাদ হিন্দ ফৌজের হাতে প্রথম মুক্তির স্বাদ পায় এই প্যালেস। প্রাকৃতিক পরিবেশ সুন্দর। ইক্ষফল থেকে ৩৭ আর প্যালেস থেকে ১৮ কিমি দূরে এই পথেই পড়ে ঝংগজয়। প্যালেস থেকে পথও হয়েছে পাহাড়ী। আর এক শহীদেবীর বীরত্ব-গাথা মিশে রয়েছে এর মাটিতে। ১৮৯১-এ আগ্রাসী ব্রিটিশ সৈন্যের হাতে প্রাণ দেন মেজর জেনারেল পাওন ঝংগজয়ে।

কাঞ্চিপুর

অতীতে জয় সিং ও গম্ভীর সিং-এর কালে মণিপুরের রাজধানী ছিল ইক্ষফলের শহরতলি এই কাঞ্চিপুরে। ভারত-বার্মা সড়কে নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে। মণিপুর বিশ্ববিদ্যালয়টিও এই কাঞ্চিপুরে।

খৌবাল

১৮৯১-এ ব্রিটিশের সঙ্গে মণিপুর রাজ্যের যুদ্ধের স্মৃতি নিয়ে দাঁড়িয়ে আছে এই সাবডিভিশনাল শহর। ভারত-

বার্মা জাতীয় সড়কে নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে ইক্ষফল থেকে খৌবালের।

ককচিং

ছেট্টি শহর। অষ্টাদশ ও উনবিংশ শতকে বার্মার সঙ্গে মণিপুরের একের পর এক যুদ্ধ ঘটে এখানে।

কায়না

ইক্ষফল থেকে ২৯ কিমি উত্তর-পূর্বে ৯২১ মি উঁচুতে কায়না আর এক বৈষ্ণব তীর্থ। কথিত আছে শ্রীশ্রী-গোবিন্দজী দর্শন দেন মহারাজ জয় সিংকে এই কায়নায়। আর গোবিন্দজীর ইচ্ছামতো মন্দিরও হয় কাঁঠালগাছে ঘেরা কায়নায়। পরিবেশ সুন্দর। নিয়মিত বাস যাচ্ছে। এক ঘন্টার পথ। থাকার জন্য *Kaina Tourist Home* আছে।

উথুল

ইক্ষফল থেকে ৭১ কিমি উত্তর-পূর্বে ৬০০০ ফুট উঁচুতে মণিপুরের মনোরম শৈলাবাস। জলবায়ুর সঙ্গে সিমলার আদল মেলে। উথুলের আর এক বৈশিষ্ট্য—থরে থরে ফুটে থাকা লিলি ফুল। টাংখুল নাগাদের বাস উথুলে, ধর্মে খ্রিস্টান, যুদ্ধপটুও এরা। খ্রিস্টমাসে সারা উথুল সেজে ওঠে উৎসবের সঙ্গে। বাস যাচ্ছে ইক্ষফল থেকে। ঘন্টা তিনেকের পথ। পথশোভাও সুন্দর। রাজ্য পর্যটন শহর থেকে বেড়িয়েও আনে উথুল। থাকার জন্য *PWD IB* আছে। অব: EE, Ukhrul Divn-I.

কাংচুপ

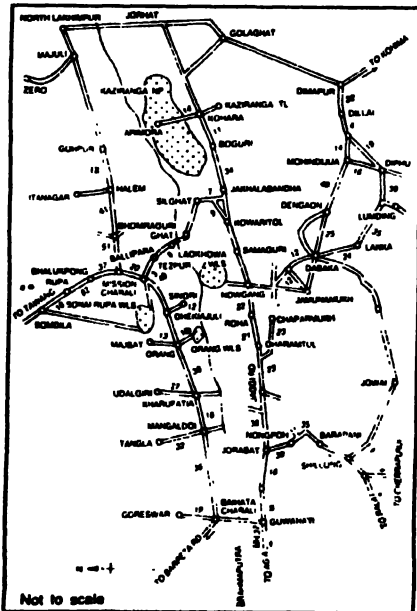
ইক্ষফল থেকে ১৬ কিমি পশ্চিমে ৯২১ মি উঁচুতে সুন্দর স্বাস্থ্যকর জায়গা। চারপাশের প্রকৃতি খুবই সুন্দর। বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে শহর থেকে। থাকার জন্য *PWD IB* আছে।

মাও

ইক্ষফল-ডিমাপুর জাতীয় সড়কে মাও। ইক্ষফল থেকে দূরত্ব ১০৬ কিমি, উচ্চতা ১৭৮৮ মি। সীমান্তবর্তী শহর। চেকপোস্ট বসেছে। ডিমাপুর বা কোহিমা থেকে ইক্ষফল যাতায়াতের পথে লাঞ্চ ব্রেকও দেয় গাড়ি। মাও নাগাদের বাস। জাতীয় সড়কও সবচেয়ে উঁচুতে উঠেছে এই মাও-এ। মেঘেরা এখানে কানে কানে কথা কয়। স্বাস্থ্যকর স্থান, জলবায়ু সুন্দর। তাই উচিত হবে চলার পথে দু'চোখ ভরে মাওকে উপভোগ করে নেওয়া।

চুরাচাঁদপুর

ইক্ষফল থেকে ৬০ কিমি দক্ষিণে মনোরম প্রকৃতির মাঝে অন্যতম সাংস্কৃতিক তথা বাণিজ্যিক শহর চুরাচাঁদপুর।



উপজাতিদের বাস। চুরাচাঁদপুরের ৩২ কিমি দূরে টঙলন গুহাটির পর্যটক আকর্ষণও অদম্য। নানান জন্তু-জানোয়ারও আবাস গড়েছে টঙলনে। খুগা উপত্যকার পর্যটক আকর্ষণও উল্লেখ্য।



তিন তারা হোটেলের বিলাস নিয়ে শহরাঙ্কে ডিমাপুর রোডে হয়েছে H Imphal, ৩ 220459, S ২২৫-৩৭৫ D ৪২৫-৬০০, সুইট ৮৫০; অব: Manager, Imphal সার্কিট হাউস-এও ঘর মেলে থাকার, অব: DC-Central, Imphal. Youth Hostelও হয়েছে Khumanhampak-এ। এছাড়া প্রাইভেট হোটেলও আছে নানান বিভিন্ন মানের বিবিধ দামের মণিপুরে। Grand H, SCB ৬০, SAB ৮০-১২৫ DCB ১০০ DAB ১২৫-২০০ TCB ১৭৫; বাঙালি মালিকানায় অতি সাধারণ সাজে H Neela, S ৪৫ D ৮৫-১২৫; Oriental L, H Cineview; Imphal Tourist H, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-১৭৫; Gil Gal, Ambassador, Raj H, Guest House, প্রতিটিই Paona Bazar Road-এ।

Polo View, H Diplomat—Sir Tikendrajit Rd, opp Bus Stand, SAB ৬০-৮৫ DCB ১০০ DAB ১২৫-২৫০। H Pintu, A T Line, North AOC, ৩ 222703, S ১২৫-২০০ D ২২৫-৩৭৫; Nataraj H, H Deesh Deluxe, S ১২৫ D ২২৫; H Ranjit, SAB ৮৫-১৫০ DCB ১০০ DAB ১২৫-২৫০; H Eastern Star, Nagamapal, ৩ 222154, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫; H Ananda Continental, ৩ 223433; H Excellency, ৩ 223231; H White Palace, M G Avenue, ৩ 220599, S ১০০-১৭৫ D ২০০-৩২৫ সুইট ৬০০; H Prince, Thangal Bzr, ৩ 220587, S ৩০০ D ৬০০ সুইট ৮৫০; A/c S ৪৫০ D ৮০০ সুইট ১০০০; Air Lines H ছাড়াও

রয়েছে বেশ কিছু সাধারণ হোটেল Thangal Bazar-এ। IAC ৩ 220999-র অফিসটিও থঙ্গল বাজারে। আর রয়েছে Shri Marwari Dharamshala থঙ্গল বাজারে; খাট-বিছানা সহ দু-বেডের ঘর ১৬। ক্যামিলি নিয়ে ৩ দিন থাকার পক্ষে ভালই। অব: The Secretary, Marwari Dharamshala Trust, Imphal-কে লিখুন।

আহার্যেও বৈচিত্র্য আছে মণিপুরের হোটেল। ভাতের সঙ্গে মাংসের প্রতিপত্তি মণিপুরে। ফ্রায়েড রাইস Kabok অধিক প্রিয় মণিপুরিদের কাছে। সঙ্গে মেলে মাছের চাটনি Iromba. উৎসাহীরা স্বাদ নিতে পারেন চলতে ফিরতে ইম্ফলের হোটেল-রেস্তোরাঁয়। তাই বলে দেশী-বিদেশী আহাৰ্যও অমিল নয় ইম্ফলে।

তেমনই সংস্কৃতি-প্রবণ পর্যটকদের উচিত হবে Rupamahala Artists' Association, B T Rd; Manipur Dramatic Union, Police Line বা Manipur State Kala Akademy-র যে-কোনো অনুষ্ঠান দেখে নেওয়া ইম্ফল অবস্থানকালে। আর কেনাকাটায় পাওনা বাজারে Manipur Handloom & Handicrafts, Manipur State Handloom বা Eastern Handloom Handicrafts-এ নির্ভরতা বেশি।

Director of Tourism, Govt of Manipur, Imphal থেকে কনডাক্টেড ট্যুরে City, Keibul Lamjao National Park ও Ukhrul বেড়িয়ে আনে। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেলবে এদের কাছে। প্রয়োজনে Tourist Information Centre, Directorate of Tourism, Imphal, ৩ 20802কে যোগাযোগ করা যেতে পারে। বিমানবন্দরেও দপ্তর বসেছে এদের। আর কলকাতায় দপ্তর এদের 25 Ashutosh Shastri Rd, Cal-700010, ৩ 365012/3505019-এ। ভারত সরকারের ট্যুরিস্ট অফিস বসেছে Old Lambulance, Jail Rd, Manipur-795001, ৩ 22113-এ।

বরনীয় লেখকদের স্মরণীয় লেখার সন্ধান:

স্ব স্ব খণ্ডে
সম্পূর্ণ

ছোটদের অমনিবাস

প্রতিটি বই-এর দাম:
১০০.০০ টাকা

যোগীন্দ্রনাথ সরকার □ অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ হেমেন্দ্রকুমার রায় □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য
□ শিবরাম চক্রবর্তী □ পরিমল গোস্বামী □ খগেন্দ্রনাথ মিত্র □ সুকুমার দে সরকার

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

নাগাল্যান্ড

নাগাদের রাজ্য নাগাল্যান্ড, রাজধানী তার কোহিমা। সাতটি লেক আর সাত তোরণের গাঁও বলে খ্যাতি ছিল অতীতে কোহিমার। মহাভারতেও উল্লেখ মেলে নাগরাজ্যের কথা। এমনকি বনবাসকালে অর্জুন নাগকন্যা উলূপীকে বিয়ে করেন। আর উইনছরো গড়ে তোলেন বসতি কোহিমাতে। তবে কবে কোথা থেকে এসেছিল এই উইনছরো—সেকথা আজ বিস্মৃত। কিছুকালের জন্য মণিপুরের দখলে গেলেও ব্রিটিশ আসে ১৮৭৯তে নাগাল্যান্ডে। উত্তর-পশ্চিমে অসম, দক্ষিণে মণিপুর আর সারা পূর্ব বার্মায় (মায়ানমার) বেষ্টিত। ৬৩৬৬ বর্গ মাইল পার্বত্যভূমি নিয়ে গড়ে উঠেছে এই নাগা রাজ্য। এই সেদিনও ছিল অসমেরই একটি পার্বত্য জেলা। অতীতের নেফা থেকেও এসেছে তিয়েংসাং এলাকা নাগা রাজ্যে। ১৯৫৭ খ্রিস্টাব্দে পৃথক প্রশাসন গড়ে ওঠে নাগা ভূমিতে। খুশিনয় নাগারা। দাবি ওঠে পৃথক রাষ্ট্রের। সুত্রপাত যদিও তারও আগে—প্রথম বিশ্বযুদ্ধের দামামা মিলেছে সবে। ১৯১৯এ ব্রিটিশকালে ফ্রান্স থেকে ঘরে ফেরে একদল নাগা মিলিটারি অফিসার। দেশে ফিরে মিলিটারি ক্লাব গড়ে অফিসাররা। কালে কালে ক্লাবের সদস্য বাড়ে গ্রাম থেকে গ্রামে। ১৯২৯এ সাইমন কমিশনের কাছে সনদও পেশ করে স্বতন্ত্র রাষ্ট্ররূপে নাগাল্যান্ডের। আজকের বৈরিতার মূল সূত্রটিও এই সনদ থেকে। ১৯৫৪ খ্রিস্টাব্দের সেপ্টেম্বরে বিদ্রোহী নাগারা স্বাধীন নাগারাস্ট্র ঘোষণা করে হংকিনের নেতৃত্বে। তারপর ফিজোর নেতৃত্বে শশান্ত বিদ্রোহ। এমনকি বৈরী নাগারা ফিজোর নেতৃত্বে নাগা ফেডারেল গভর্নমেন্ট গঠন করে ১৯৫৬-র মার্চে—স্বাধীনতাও ঘোষণা করে ফিজো। আর, ১৯৬২ খ্রিস্টাব্দের ২৮শে আগস্ট লোকসভায় গৃহীত বিল মতো ১৯৬৩ খ্রিস্টাব্দের ১লা ডিসেম্বর কোহিমাকে রাজধানী করে গড়ে ওঠে ভারতের ১৬তম রাজ্য নাগাল্যান্ড অসম থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে।

পাতলে সামান্য সমতল ছাড়া পাহাড়ী রাজ্য নাগাল্যান্ড। চতুর্দশ উপজাতির দেশও এই নাগাল্যান্ড। গায়ের রং রক্তিম, আর্থ ও মসেলিয়ান রক্ত রয়েছে এদের ধর্মীতে। নাসিকা আর্ধদেহ মতো। সুবাস্যের অধিকারী নাগা নারী ও পুরুষ। ধূসর নীল পাহাড়, অসংখ্য নদী-ঝোরা। রঙবেরঙের ফুলের সঙ্গে অর্কিডের রঙের বগলী, সর্বাঙ্গের উজ্জ্বল বেচিত্রায়ম পোশাকে নাগা নারী-পুরুষ—নাগাল্যান্ডকে আকর্ষণীয় করে তোলে। পথের দুর্গমতা প্রকৃতির সৌন্দর্যের কাছে হার মানেন। পথজ্ঞানি দূর করে নয়নলোভন প্রকৃতি। তবুও যেন এক জেলা থেকে আর এক জেলায় যাতায়াতে দুর্ভেদ্য তুলনায় সময় লাগে অধিক, যানেরও অপ্রতুলতা পীড়া দেয় সময়ে সময়ে। দুই থেকে দশ হাজার ফুটের মধ্যে নাগাল্যান্ডের

অবস্থান। ৭টি জেলায় ৮৬০টি গ্রামে বাস করে লাখ সাতকে নাগাবাসী। গ্রামগুলি বিক্ষিপ্তভাবে গড়ে উঠেছে পাহাড়ী টাঙে। গাছপালা নেই বললেই চলে। প্রাকৃতিক সৌন্দর্য সুন্দর। জাতে নাগা, ধর্মে খ্রিস্টান—কিরাতদের বংশোদ্ভূত এরা। রাজ্যের প্রধান ভাষা রোমান লিপিতে নাগামিজ। মূলে ১৬ হলেও বেশ কিছু শাখা উপজাতি বা সম্প্রদায় রয়েছে নাগাল্যান্ডে। অঙ্গামি, চাকাছাং, কাছারী, জেলিয়াং ও কুকি সম্প্রদায়ের বাস কোহিমে; ওখাতে লোথা; মককচুং—এ আও; জানুবট—এ সেমা; মন—এ কনিয়াক; ফেক—এ চাকাছাং; আর তুয়েংসাং জেলায় ছাং, ইমচুংগার, খেমুইসাং, ফোম ও সাংতাম সম্প্রদায়ের বাস। প্রত্যেক সম্প্রদায়ের আচার-ব্যবহার, বেশবাস, এমনকি ভাষাও এদের বিবিধ। রোমান খ্রিস্ট মূল মাধ্যম। ডিভাইড অ্যান্ড রুল পলিসি অনুযায়ী ব্যাপটিস্ট মিশনারীরা এদের অক্ষর শেখায়। অঙ্গামি নাগারা সংখ্যা যেন বেশি তেমনই লেখাপড়া ও আধুনিকতায় উন্নত এরা। পাশ্চাত্য প্রথা গড়ে উঠেছে এদের সমাজ জীবন। চলতে-ফিরতে হ্যান্ডশেকে সেলাম জানায় পরস্পরে। তবে, সামাজিক আচার-আচরণে আজও জাতীয় সংস্কৃতি মেনে চলে এরা।

রঙবেরঙের বসনের সঙ্গে ভূষণও পরে নাগাবাসী। পাখির পালক থেকে শুরু করে হাতির দাঁত, শুয়েয়ের দাঁত ও বাঁশের তৈরি কংগন পরে এরা। মালাও পরে নানান বর্ণের—*দেওমণি* অর্থাৎ পাথর ছাড়াও নানান কিছু। গলার হার আর হাতের চূড়িতে ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায়ের পরিচয় মেলে। চুরি-ডাকাতি-রাহজানি নেই নাগা সমাজে। তালাচাবির প্রচলনও তাই এদের অজানা। দরজায় এক টুকরো বাঁশের *কামি* অর্থাৎ খিল দিয়ে যাচ্ছে এরা দূরে-দূরান্তরে। তবে ঘৃণা রাজনীতির ব্যাপারীরা কিছুটা যেন কলুষিত করেছে এদেরও আজ।

এদের বাড়িঘরগুলিও আশ্চর্য্যের জন্য অভিনব ভাবে তৈরি, একতলা কাঠের বাংলাধর্মী—রঙ সাদা। প্রতিটা বাড়ির সামনে মরসুমি ফুলের কেয়ারি। প্রবেশপথ খুবই সংকীর্ণ। গ্রামগুলিতেও একটি করে প্রবেশপথ। প্রবেশপথে হয়েছে *মরুঙ্গ*। গ্রামের অবিবাহিত ছেলেরা থাকে এই *মরুঙ্গ*। অনেকটা Civil Defence-এর ঢঙে গড়া। গ্রামকে রক্ষা করার জন্য অস্ত্রশস্ত্রও থাকে *মরুঙ্গ*। এরা যেমন যুদ্ধপটু তেমনই স্বাধীনচেতা, সাহসী, সচরিত্র আর সত্যবাদী। সহজ ও সরল জীবনে অভ্যস্ত এরা। অতিথিপরায়াণও বটে নাগাজাতি। নারী জাতির সম্মান দেয় নাগাবাসী। নারী এদের কাছে ধরিত্রীর প্রতীক। কিরাতদেশের রাজেন্দ্রনন্দিনীরা আজও পিঠে কাপড় দিয়ে বাচ্চা বেঁধে পথ চলে। ঘরে-বাহিরে কঠোর পরিশ্রম করে চিত্রাঙ্গদার দেশের মেয়েরা।

নাগাল্যান্ড □ রাজধানী: কোহিমা। আয়তন: ১৬৫৭৯ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ১২১৫৫৭৩।

ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.১৪%। পুরুষ: ৬৪৩২৭৩। নারী: ৫৭২৩০০। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৪৪০৬৪৩। বৃদ্ধির হার: ৫৬.৮৬%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৭৩। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৮৯০। সাক্ষরের হার: ৬১.৩০%। প্রধান ভাষা: আও, কোনিয়াক, অঙ্গামি, সীমা, লোথা। ইংরাজিরও চল আছে রাজ্য জুড়ে। তবে, ডিমাপুরে বাংলার প্রচলন উল্লেখ্য। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৩৪৬৪.০০ টাকা (১৯৮৮-৮৯)।

শীত ও বৃষ্টি দুইয়েরই অধিক আছে নাগাল্যান্ডে। বেড়াবার মরসুম মার্চ-মে ও সেপ্টেম্বর-অক্টোবর মাস। তবে, ফেব্রুয়ারির সেকেন্ডি খুবই জমকালো উৎসব। এরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। জুন-সেপ্টেম্বরে তাপমান ৩১—১৬° আর অক্টোবর-ফেব্রুয়ারি মাসে ২৪.৮—৪° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। বৃষ্টির গড় ২৫০ মিমি।

৭ দিনে এককভাবে তবুও যেন অসম ও মণিপুরের সঙ্গে জুড়ে বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধা নাগাল্যান্ড রাজ্য।

নাগারাজ্যে যেতে Inner Line Permit লাগে। ভারতীয়দের টুরিস্ট পারমিট পেতে কোনোরকম নিষেধাজ্ঞা নেই। পারমিট প্রতি ৫ M.O. যোগে পাঠিয়ে Addl Deputy Commissioner, Govt of Nagaland, Dimapur-কে লিখুন। তবে ডাকে পারমিট পাওয়া দুরাশা। তাই চলার পথে ডিমাপুর থেকে সংগ্রহ করে চলাই উচিত হবে। আবার Deputy Resident Commissioner, Nagaland House, 11 Shakespeare Sarani, Calcutta-71, ☎ 2425247/2421967 থেকেও ভারতীয়দের ৭ দিনের জন্য ILP মেলে। নির্বাচন কমিশনের Identity Card বা রেশন কার্ডের জেরক্স কপি সঙ্গে দিয়ে আবেদনের প্রথা। তেমনই Asstt Resident Commissioner, Nagaland House, Nongrim Hills, Shillong-3, ☎ 23839 বা Deputy Resident Commissioner, Nagaland House, 29 Aurangzeb Rd, New Delhi, ☎ 3024289 থেকেও ভারতীয়দের ILP মেলে। আর মণিপুর ভ্রমণার্থীরা SDO, Imphal-এর কাছ থেকে জাতীয় সড়ক ধরে নাগাল্যান্ডে চলার পারমিট করে যেতে পারেন কোহিমায়।

কোহিমায় পৌঁছে DC-র কাছ থেকে নতুন করে আন্তঃরাজ্য ILP করে নেওয়া যেতে পারে। আর বিদেশীদের Restrict-ed Area Permit-এর জন্য Secretary, Ministry of Home Affairs, Govt of India, North Block, New Delhi-110001-কে নাম, জীবিকা, জন্মসাল, স্থান, যাবার উদ্দেশ্য ও থাকার সময় সীমা বিস্তারিত লিখে আবেদন করতে হয়।



15 দিন ১১-৪৫এ কলকাতা ছেড়ে ১৩-০৫এ জোড়হাট পৌঁছে ডিমাপুর যাচ্ছে ১৪-০০টায় IAC-র উড়ান। ফেরে ১৪-৩০এ ডিমাপুর ছেড়ে ১৫-৪০এ সরাসরি কলকাতায়। 137 দিন ১১-৪৫এ কলকাতা ছেড়ে ১৩-০০টায় তেজপুর পৌঁছে ডিমাপুর যাচ্ছে ১৩-০৫এ; ফেরে ১৪-৩০এ ডিমাপুর ছেড়ে ১৫-৪০ সরাসরি কলকাতায়। আর Skyline NEPC 2357 দিন ৬-৩০এ কলকাতা ছেড়ে গুয়াহাটি/জোড়হাট হয়ে ডিমাপুর যাচ্ছে ১৬-০৫এ; ফেরে ১৬-৩০এ ডিমাপুর থেকে। ডিমাপুর থেকে সড়ক পথে কোহিমা। আবার বিমানে ইম্ফল পৌঁছেও কোহিমা চলা যেতে পারে সড়ক পথে।



রেল আসছে ভারতের নানান প্রান্ত থেকে অসমের গুয়াহাটিতে। গুয়াহাটি থেকে ব্রডগেজে কোহিমার রেল সংযোগকারী স্টেশন ডিমাপুর। হাওড়া থেকে কামরাপ এক্স, 236 দিন সরিহাট এক্স, 2467 দিন গুয়াহাটি এক্সে গুয়াহাটি পৌঁছে গুয়াহাটি থেকে ১৪-১৫য় দিল্লী-ডিব্রুগড় ব্রহ্মপুত্র মেল, ১৯-০০টায় গুয়াহাটি-তিনসুকিয়া ইন্টারসিটি এক্স, 347 দিন ডিব্রুগড় রাজধানী এক্সে লামডিং হয়ে ডিমাপুর পৌঁছান যথাক্রমে ২০-০০/০-১০/২২-৪০এ ডিমাপুর পৌছান। ডিমাপুর থেকে ৭০ কিমি দূরে লামডিং আর গুয়াহাটির দূরত্ব ২৫১ কিমি।



বাসও যাচ্ছে নাগাল্যান্ড ও অসম রাজ্য পরিবহণের গুয়াহাটি থেকে ৮ ঘণ্টায় ২৮০ কিমি দূরের ডিমাপুরে। ডিমাপুর থেকে NH-39 ধরে ৭৪ কিমি দূরে কোহিমা। সকাল ৭ থেকে ১৬-০০টায় ঘণ্টায় কলকাতা, সময় নেয় ২১ ঘণ্টা। ডিমাপুর-মণিপুর বাসও কোহিমা হয়ে যাচ্ছে। ডিমাপুর থেকে ১৪ কিমি যেতে চুমুকেডিমা চেকপোস্টে ILP দেখাতে হয়। চেকপোস্ট পেরুতেই পথ ওঠে পাহাড় বেয়ে। স্রোতস্বিনী পাহাড়ী নদী ধানসিরি লুকাচুরি খেলে সারা পথে। দু'পাশে রুক্ষ পাহাড়, গাছপালার অভাব—মাঝে মাঝে লাগোন্দা, বন্য কলা গাছ। তিরতিরে বরনা নামছে পাহাড় বেয়ে। কোহিমার ১৬ কিমি আগেই জুবজা সেতু, বাকি ঘুরতেই দেখে নেওয়া যায় পটে আঁকা ছবি—কোহিমা সিটি।

ইম্ফল থেকেও নিয়মিত সড়ক সংযোগ রয়েছে কোহিমার। এপথের দূরত্ব ১৪৫ কিমি। গহীন বনের মাঝ দিয়ে পথ—দুর্ভিনন্দন পাহাড়ী পথ। বনজ ফুলেরা রাঙিয়ে তোলে পথপাশ, তোরণ সাজায় অর্কিডের দল। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে বরসোতা ডিফু নদী। দূরে, বহুদূরে পাহাড়ী টিলায় নাগা গাঁও। পথশোভা নয়নাভিরাম—ভারতে অস্বাভাবিক। তেমনই সড়কটিও বিতীয়া মহাসমরে উল্লেখযোগ্য ভূমিকা নেয়। ব্রিটিশ এপথেই কোহিমা ও ইম্ফলে জাপ শক্তিপুষ্ট আজাদ হিন্দ যৌজাকে প্রতিহত করে। আবার ৩৪২ কিমি দূরের গুয়াহাটি (পল্টন বাজার) থেকে ব্রু হিলস ট্রান্সেলসের ডিলাল বাস ২০-০০, ২০-১৫, ২০-৩০এ ছেড়ে ১৩ ঘণ্টায় NH-39 ধরে সরাসরি কোহিমা যাচ্ছে। তবুও যেন কলকাতা

যাত্রীদের সরাসরি যাত্রায় উচিত হবে সরাইঘাট বা গুয়াহাটি এঙ্গে গুয়াহাটি পৌঁছে ইন্টারসিটি এক্স বা সরাসরি বাসে কোহিমা বা ডিমাপুর এসে আবার বাসে কোহিমা চলা।

আর ইম্ফল থেকে কোহিমায় যেতে নাগাল্যান্ড স্টেট ট্রান্সপোর্টের বাসে চলা উচিত হবে। ৬-৪৫এ কোহিমার একটি বিশেষ বাসও যাচ্ছে ইম্ফল থেকে। তাছাড়া, ডিমাপুরের বাসেও কোহিমার টিকিট মেলে। আর মণিপুর রাজ্য পরিবহণের বাসে কোহিমার কোনো টিকিট না মিললেও ডিমাপুরের টিকিট কেটে কোহিমায় নামা যেতে পারে। এদেরও গাড়ি ডিমাপুর রোড থেকে ছাড়ে।

কোহিমা

নাগাল্যান্ড রাজ্যের সদর দপ্তর বসেছে ১৪৯৫ মি উঁচু পাহাড়ী শহর কোহিমায়। বৈচিত্র্যে ভরা কোহিমার পর্যটক আকর্ষণ বহুবিধ। জাপানি সহযোগিতায় আর নাগাদের পৃষ্ঠপোষকতায় নেতাজী সুভাষচন্দ্রের আজাদ হিন্দ ফৌজের মুক্তিসংগ্রাম ঘটেছিল এই কোহিমায়। তবে, সত্য বিকৃত হয়ে ব্রিটিশের ভাষায় খোদিত হয়ে আছে পাথরের গায়ে—Here Invasion of India by Japan was halted, March 1943. পর্যটকমাত্রই অভিভূত হয়ে পড়েন। কোহিমা শহরের মূল আকর্ষণও কোহিমার সিমেন্ট্রি। কমনওয়েলথ ওয়ার প্রেভেন্স কমিশনের ব্যবস্থাপনায় সারা বিশ্ব থেকে আসা মুক্তিসংগ্রামে নিহত ১৪২১ জন ব্রিটিশ মিত্রশক্তির সৈনিক শায়িত রয়েছেন ধাপে ধাপে।

ততোধিক বিশ্বয় অপেক্ষা করে আছে পথের অপর পাশে ডেপুটি কমিশনারের বাংলোর টেনিস কোর্ট। টেনিস কোর্ট আজ কবরখানা হয়েছে যুদ্ধে নিহত ব্রিটিশ সৈনিকদের।

WHEN YOU GO HOME TELL THEM
OF US AND SAY FOR YOUR TO-MORROW
WE GAVE OUR TO-DAY.

ইতিহাসের পাতায় পূর্বের সুইজারল্যান্ড কোহিমা বিশ্বের পট পরিবর্তনের মূল ভূমিকা হয়ে থাকবে।

ডাকবাংলো রেখে সামান্য এগুতেই কোহিমা বাজার, পথের দু'পাশে গড়ে উঠেছে কাঠের একতলা বাড়ি। বাড়িগুলি অতি সাধারণ। আধুনিক ইমারতও মাথা তুলেছে এরই ফাঁকে ফাঁকে। নিচুতলায় দোকানপাট। নাগা, বাঙালি, পাঞ্জাবি ও মণিপুরিরা পসরা সাজিয়ে বসেছে। তারই মাঝে জাতীয় পোশাক পরে নাগা দোকানিও রয়েছে। সংখ্যায় নগণ্য এরা। ক্রোতাদের মাঝে জাতীয় পোশাকের সঙ্গে অতি আধুনিক সাজেও দেখা যাবে নাগাবাসীদের। সাপ, ব্যাঙ, বাদর সবেরই মাংস খায় এরা। মদ অর্থাৎ মধু এদের প্রিয় পানীয়। তেমনই বাঁশের কোঁড় এদের প্রিয় খাদ্য। ভিক্ষাবৃত্তি নাগাবাসীদের স্বভাববিরুদ্ধ। আজ অমিল হলেও বাঁশের তৈরি মগ বা পুতুল নাগাল্যান্ড ভ্রমণের স্মারকরূপে সঙ্গী হতে পারে পর্যটকদের। নাগা শালেরও যথেষ্ট প্রাপ্তি পর্যটক

মহলে। NST বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে নাগা এম্পোরিয়ামে কিনতে মেলে।

বাজার রেখেই বসতি এলাকা—স্কুল, কলেজ, বিশ্ব-বিদ্যালয়। ক্লাবও গড়ে উঠেছে ইনডোর গেমের ব্যবস্থা নিয়ে। ক্লাবঘরে দেখা মিলবে ভারতের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে আসা ভারতবাসীর; শিক্ষকতার কাজে রয়েছেন বাঙালি ও অসমীয়া, প্রতিরক্ষায় পাঞ্জাবি। বাঙালির দেবী দুর্গা ও কালী পূজাও পৌঁছেছে প্রবাসী বাঙালিদের উদ্যোগে কোহিমায়। নাগাল্যান্ডের ফুলের সমারোহ পর্যটকদের আর এক আকর্ষণ। দেশী-বিদেশী নানান ফুল সৌন্দর্য বাড়িয়েছে কোহিমার। জলবায়ুও স্বাস্থ্যপ্রদ সারা নাগাল্যান্ডের।

ছোট শহর কোহিমা। ধাপে ধাপে গড়ে উঠেছে। সরকারি স্কুল থেকে শহরের শুরু, আর শেষ হয়েছে মুখ্যমন্ত্রীর নিবাস পেরিয়ে। ৮ কিমির মতো বিস্তৃতি। একদিনে শহর বেড়িয়ে নেওয়াও অসম্ভব নয়। মিটারহীন অটো ও ট্যাক্সি চলছে শহরে। সকালেই দেখুন শহরের প্রাণকেন্দ্রে কোহিমা সিমেন্ট্রি। ভারতীয়দের কাছে আজ এক মহান তীর্থ এই সিমেন্ট্রি। জীবন-মৃত্যুকে পায়ের ভূত্য করে ব্রিটিশদের হারিয়ে স্বাধীন ভারতের জাতীয় পতাকা তুলেছিল নেতাজী সুভাষের বীর জওয়ানরা। পরিতাপের বিষয় সরকারি উদ্যোগের অভাবে অতীত লোপ পেতে বসেছে। আর সত্য চাপা পড়ে ব্রিটিশের ভাষায়—*ব্রিটিশ সেনা জাপানি অভিযান প্রতিহত করে* এখানে। ১০-০০টায় চলুন ৩ কিমি দূরে অতীতের নাগা সংস্কৃতির প্রদর্শনশালা স্টেট মিউজিয়াম। বাংলার কৃষকগণের শিল্পীদের অনবদ্য মডেলে সংস্কৃতির সাথে উপকথা ও ইতিহাস দেখে নেওয়া যায়। চ্যাং কারেশির মুদ্রাও প্রদর্শিত হয়েছে মিউজিয়ামে, যার সালতামামি আজও অজ্ঞাত। বেসমেন্টে উত্তর-পূর্ব ভারতের জীব-জন্তুর প্রদর্শন কক্ষটিও অনবদ্য। দর্শন সেরে শহরে ফিরে আহার ও বিশ্রাম।

ROUTES WITH DISTANCES :

| | |
|--------------------------------------|---------|
| Dimapur-Kohima | 74 km. |
| Dimapur-Wokha via Kohima | 154 km. |
| Dimapur-Imphal (Manipur) | 216 km. |
| Dimapur-Marani-Mokokchung | 208 km. |
| Dimapur-Mon via Jorhat Namtola | 286 km. |
| Dimapur-Amguri | 178 km. |
| Dimapur-Peren | 76 km. |
| Kohima-Meluri | 170 km. |
| Kohima-Phek | 134 km. |
| Kohima-Zunheboto | 150 km. |
| Kohima-Tuensang via Wokha/Mokokchung | 270 km. |
| Kohima-Mokokchung | 162 km. |
| Dimapur-Guwahati | 292 km. |
| Dimapur-Zunheboto via Chazouba | 225 km. |

এবার শহর দেখুন চলতে ফিরতে ডাইনে বাঁয়ে। এশিয়ার মধ্যে বৃহত্তম আর সবচেয়ে ঘন বসতিপূর্ণ *Barra* অর্থাৎ গ্রাম কোহিমা ভিলেজ বা বড়াবত্তি। পায়ে হেঁটে বেড়িয়ে নেওয়া

যায়। নাগা সংস্কৃতির ধারক—নাগা যোদ্ধা, অস্ত্র, মিথুনের শিং, মানুষের মুণ্ডশোভিত বিশাল তোরণ হয়েছে কাঠের। বাড়িওলিও কাঠের। সমাজের উচ্চ সম্প্রদায় আজও বাড়ির ত্রিকোণ অংশে আড়াআড়িভাবে মিথুনের শিং ঝুলিয়ে রাখে। আধুনিকতা নাগাল্যান্ডে পৌঁছালেও, বলমলে জাতীয় সাজ আজও এদের প্রিয়। সমতলের উপর বিরাগ আছে নাগাল্যান্ডেও। তাই সূর্যাস্তের আগেই কলায় ফিরুন। পর্যাপ্ত সময় থাকলে আরও একটা দিন বিশ্রাম নিন কোহিমায়ে।

কোহিমার ১৫ কিমি দক্ষিণে ৩০৪৩ মি উঁচু জাপুফ চুড়ো থেকে কোহিমা শহরের শোভা ও বরফে মোড়া রজতশুল হিমালয় দৃশ্যমান।

আর, আও নাগা সংস্কৃতির সঙ্গে পরিচয় করতে উৎসাহীরা ১৩২৫ মি উঁচু মককচুং-এ একটা রাত কাটিয়ে পরদিন তুয়েংসাং বেড়িয়ে আসতে পারেন বাসে বাসে। কোহিমা থেকে ৬-৩০ ও ৭-৩০এ বাস যাচ্ছে ১৫৪ কিমি দূরের জেলা সদর মককচুং-এ। ১০৬ কিমি দূরের জোড়হাট থেকেও বাস আসছে, বাস আসছে ২০৭ কিমি দূরের ডিমাপুর থেকেও মরিয়ানি হয়ে মককচুং-এ। ডিমাপুর থেকে ১০৮, শিমালগুড়ির ৫৪ কিমি দূরে ডিমাপুর-তিনমুকিয়া রেলপথে মরিয়ানি জংশন। নিকটতম রেল স্টেশনও এই মরিয়ানি। বাস আসছে তুয়েংসাং ১১০, ওখা ৮০ কিমি থেকেও মককচুং-এ। মন (Mon) থেকেও বাস মেলে সোনারি ও আমগুরি হয়ে মককচুং-এর।

ছোট্ট শহর মককচুং। বাস স্ট্যান্ডকে কেন্দ্রমণি করে শহরের বিস্তার। পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায় ঘণ্টা দু'য়েকে। বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে নাগা এম্পোরিয়াম তথা বাজার, বাঁয়ে DCO Office; অদূরে SBI. কমলালেবুর জন্যও প্রশস্তি আছে মককচুং-এর। আবার মককচুং থেকে বাসে আও নাগাদের বাস প্রথম নাগা গ্রাম উলুমাও বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

রাতের বিশ্রাম শহরের প্রাণকেন্দ্রে টাউন পার্কের পাশেই সরকারি Tourist Lodge-এ। আর আছে CH, Madras H, Grace H, Secret Inn, Step Inn, Magnet H, Monega, Kitu, Solty, Rainbow, Quinol মককচুং-এ। এদের কাছে S ৬৫-১০৫ D ৮০-১৭৫ টিকায় মেলে।

মককচুং থেকে ৮০, আবার কোহিমারও ৮০ কিমি দূরে ওখা। ১৩১৩ মি উঁচু ওখার প্রসিদ্ধি তার নয়নলোভন বলমলে নাগা শালের জন্য।

মককচুং থেকে বাসে তুয়েংসাং চলুন। এ-পথের দূরত্ব ১০৩ কিমি। অতীতের নেফা থেকে এসেছে এই তুয়েংসাং জেলা নাগা রাজ্যে। জেলা সদর ১৩৭১ মি উঁচু তুয়েংসাং-এ। বিভিন্ন সম্প্রদায়ের উপজাতির বাস। Tourist Lodge-ও হয়েছে তুয়েংসাং-এ। তবে, মককচুং বা তুয়েংসাং যাবার আগে কোহিমায়ে Directorate of Tourism, Govt of Nagaland, A G Junction, Kohima-797001, 021607 থেকে সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে যাওয়াই যুক্তিসূচক।

এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিকে দিকে কোহিমা থেকে। সকালে গিয়ে বিকালে ফিরেও আসা যায় কোহিমায়ে ৬৫ কিমি দূরের ৮৯৭.৬৪ মি উঁচু মন বেড়িয়ে। কনিয়াকদের মুখের উচ্চি, পাখনার টুপি, কানের রিং খুবই আকর্ষণীয়।

কোহিমা থেকে ১৩৪ কিমি দূরে ফেক-চাকাং নাগাদের বাস। মার্চ-এপ্রিলের উৎসবের সাথে নানানধর্মী অর্কিডের জন্য ফেকের প্রসিদ্ধি।

নাগাল্যান্ডের আর এক আকর্ষণ নাগা নৃত্য। সারা বিশ্ব জুড়ে প্রশস্তি এর। তেমনই নানান উৎসব বছরভর নাগাল্যান্ডে। ফেব্রুয়ারির শেষে ১০ দিন ধরে সৌভাগ্য-এর Sekreny উৎসব চলে অঙ্গামি নাগাদের; সেমাদের ফসল ভালর Tuluni উৎসব ৮ই জুলাই শুরু হয়ে চলে ৫ দিন ধরে; আগস্ট মাসে আও নাগাদের ফসল কাটার Tsungrem Mong; আর নভেম্বরের ৭ শুরু হয় লোখা নাগাদের ফসল কাটার উৎসব Tokhu Emong. নাচ-গান-বাজনার সঙ্গে ভোজ চলে উৎসবে। এরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। তেমনই রাজ্য পর্যটনের ব্যবস্থাপনায় মে মাসে ১০ দিনের সামার ফেস্টিভ্যাল ও অক্টোবরে ১০ দিনের অটাম ফেস্টিভ্যাল-দুই-এরই পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য। নানান সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানের সঙ্গে সামারে পুষ্প প্রদর্শনী ও অটামে অর্কিড প্রদর্শনী আকর্ষণে অনবদ্য।



পর্যটন দপ্তরের ১৬ ঘরের Tourist Lodge, New Ministry Hill, 022417৫ S ১০০ D ১৫০। থাকার পক্ষে উত্তম হলেও শহর থেকে ৩ কিমি দূরে টিলার টপে এই লজ। যানবাহনের অভাব যাতায়াতে বিঘ্ন ঘটায়। রান্না করে খাবার ব্যবস্থাও মেলে লজে। আর আছে Yatri Niwas, 022708, S ৬০ D ৮০; CH, DB, IB; Officers' Mess, VIP Guest House; অব: Deputy Secretary (Home), Kohima. ৩২ ঘরের MLA Hostel-এও ঘর মেলে পর্যটকদের; অব: Secretary, Assembly, Govt of Nagaland, 022280.

আর আছে নাগাল্যান্ড সরকারের H Japfu, P R Hill, 022721, B1, S ৭৫০ D ১০০০ ১২৫০, স্যুইট ১৬০০; H Ambassador, D ৩৭৫-৫২৫; Moyase H, Old NST Rd, S ১৫০ D ৩০০; H Capital, S ১০০-১৫০ D ১৮০-২৫০; H Amba, S ২২৫ D ২২৫ ৩৫০; H Vally View, Old NST Rd, S ২০০ D ৩২৫; H Pine, near Transport Commissioners' Office, S ২৫০ D ৪৫০।

বাথসংলগ্ন ঘরের অভাব কোহিমার সাধারণ হোটেল। তবে সিমেন্টার পাশে Regal H, opp MLA Hostel-797001-এ ফ্যামিলি নিয়ে থাকার পক্ষে ভালই, S ৮০-১২৫ D ১০০-২২৫। Travel L, below MLA Hostel, S ১২৫ D ২০০। শহরের অপর প্রান্তে Razhu H-টিও মন্দ নয়। এদের খাবারের ব্যবস্থা আরও ভাল, SCB ৬০, SAB ৮০, DCB ১০০, DAB ১৫০-২২৫, TAB ১৭৫-২৫০। বাস স্ট্যান্ডে Friend H, S ৬০ D ১০০; Evergreen H, SCB ৪০, DCB ৮০, DAB ১২৫; H West View, opp NST Bus Stand, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫; H Concorde, হাড়াও হোটেল রয়েছে—Stay Inn H, Bob, Sharon, Royal, Naga, Gracia Annex, Hill Men, Oking, Brook,

Tip-Top, Woodland, Moon Light, Sunny, Ramu, West Inn, Everest, Zion, Gilead; এদের ব্যবস্থাপনা, খরচ-খরচা দুই-ই জতি সাধারণ। ঘরও মেলে S ৪০-৮৫ D ৮০-১৫০ টাকায়।

ডিমাপুর

কোহিমা থেকে বাসে চলুন ডিমাপুর। দূরত্ব ৭৪ কিমি, ২২ ঘণ্টার পথ। নাগাল্যান্ড রাজ্যটি পাহাড়ী হলেও ডিমাপুর সমতলে, উচ্চতা মাত্র ১৯৫মি। বাণিজ্যিক কেন্দ্ররূপে ডিমাপুরের সমৃদ্ধি। সারা ভারত থেকে প্রতিনিধি এসেছে এর নগরজীবনে। তবে বাঙালিয়ানা মুখ্য ভূমিকা নিয়েছে ডিমাপুরে। নাগাল্যান্ডের একমাত্র ফিজো বিমান ঘাটিটিও ডিমাপুরে। বিমান ও রেল সংযোগ গড়েছে গুয়াহাটি ও কলকাতা হয়ে সারা ভারতের সঙ্গে ডিমাপুর (কোহিমা অংশে দেখুন) তথা নাগাল্যান্ডের। দিল্লী-ডিব্রুগড় ব্রহ্মপুত্র মেল, গুয়াহাটি-তিনসুকিয়া ইন্টারসিটি এক্স, ত্রিসাপ্তাহিক রাজধানী এক্স, লামডিং-তিনসুকিয়া প্যাসেঞ্জার সরাসরি ডিমাপুর যাচ্ছে গুয়াহাটি/লামডিং হয়ে। কলকাতার দূরত্ব ১২৪৮, তিনসুকিয়া ২৬৩, ডিফু ৫৬, কাজিরাসা ১৫৫, শিলং ৪৩৬, ইম্ফল ২১৯ কিমি। ট্রেনে ফারকোট গিয়ে কাজিরাসায়ও চলা যেতে পারে ডিমাপুর থেকে। ডিমাপুর থেকে রেল যাচ্ছে মেন লাইনের শিমলুগুড়ি হয়ে শাখা লাইনে অসমের শিবসাগর। পথের দূরত্ব ১৬৩+১৫=১৭৮ কিমি ডিমাপুর থেকে শিবসাগরের। এছাড়া সরকারি বাস যাচ্ছে ১৭৪ কিমি দূরের জোড়হাটে প্রতিদিন সকাল ৭-০০টায় ডিমাপুর থেকে। জোড়হাট থেকেও নিয়মিত শিবসাগরের বাস মেলে। আর জাতীয় সড়ক ৩৯ গিয়েছে ডিমাপুর থেকে রাজ্যের রাজধানী কোহিমা হয়ে মণিপুরের রাজধানী ইম্ফলে। সকাল ৬-৩০টায় পরপর যাচ্ছে নাগাল্যান্ড ও মণিপুর রাজ্য পরিবহণের এক্স ও সুপার এক্স বাস ইম্ফলে। আর ৭-১৬-০০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে কোহিমায়। কোহিমা থেকে ফেরও এরা একইভাবে। রবিবার গাড়ির সংখ্যা কম থাকে এপথে। এমনকি গুয়াহাটিও যাচ্ছে ৮ ঘণ্টায় নাগাল্যান্ড রাজ্য পরিবহণের বাস ডিমাপুর থেকে।



অসম বেড়িয়ে নাগাল্যান্ড বা মণিপুর যাত্রীদের একটা রাত থাকার দরকার হয়ে পড়ে ডিমাপুরে। নাগাল্যান্ডের পারমিট সংগ্রহ আর সকালে বাস মণিপুরের। তাই হোটেলও হয়েছে বিভিন্ন মানের বিবিধ দামের

ডিমাপুরে। পাশ্চাত্য প্রথায়—H Tragopan, Circular Rd-797112, ② 21416, A2½ R½, A/c S ৩৫০-৮৫০ D ৪৫০-১২৫০; H Saramati, ② 20054, SAB ২৫০-৪৫০ DAB ৪০০-৬৫০; H Nagi, ② 21043, SAB ২৫০-৩২৫ DAB ৩৫০-৪৫০; City Tower, Circular Rd, ② 20173, S ৪২৫ D ৪৫০-৮০০; H Senti, ② 20659, SAB ৩০০ DAB ৪৫০; H Swagat, Circular Rd, ② 20157, D ৪৫০-৬০০, শীতাতপ ঘরও মেলে য়াগতে। H Kunga, Hazi Park, ② 21630, S ২২৫ D ৩০০; H Yak, Station Rd, ② 20703, S ২০০-২৭৫ D ২৫০-৩২৫।

ভারতীয় প্রথায়—H Amber, ② 22273, SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০ TAB ১৭৫; H International, S ৬৫ D ১২৫; H Fantasy, ② 22476, S ৩০০-৪৫০ D ৪২৫-৬৫০; H Siddharth, ② 22779; H North East, ② 23301; H Galaxy, ② 20714, S ৮৫ D ১৫০; H Changsang, ② 22973; Crown H, DAB ১৫০; H Maharaja, SCB ৪৫ SAB ৬৫ DCB ৮০ DAB ১২৫; Palace H, S ৬০ D ১০০; ট্যুরিস্ট হোটেল, পাঞ্জাব হোটেল, হোটেল ডিলাক্স, ভেনাস, ইডেন, মাদ্রাজ, ভ্যালিভিউ, টাউন ডাউন, ওবিয়েন্ট, পার্ক হোটেল, রাজপুতানা হোটেল, শের-ই পাঞ্জাব, হোটেল সাধনা, জনতা, মন্দিরা হোটেল ছাড়াও হোটেল আছে আরও নানান ডিমাপুরে; S ৪০-৮৫ D ৬০-১৫০ টাকায় মেলে। রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ড দুইয়েরই কাছে নাগাল্যান্ড ট্যুরিজমের ট্যুরিস্ট লজ, অব: Caretaker, ② 22147. অদূরেই সার্কিট হাউস, অব: Adl Deputy Commissioner, Dimapur-৭ দিন আগেই লিখুন।

উৎসাহীরা ট্যাক্সি বা অটোয় শহরটা বেড়িয়ে নিতে পারেন। রিকশাও চলছে। বেশ কিছু ঐতিহাসিক স্মৃতিস্তম্ভও রয়েছে ডিমাপুরকে ঘিরে। অতীতে দিমাসা কাছারি-রাজাদের রাজধানীও ছিল ডিমাপুরে। রেল স্টেশনের অদূরে প্রাসাদের ধ্বংসাবশেষ—ভীমাকৃতি স্তম্ভ, খিলান আকৃৎ দেখে নেওয়া যায়। আর রয়েছে খানসিরি নদী, ৫ কিমি দূরে চা-বাগিচা, নিউ মার্কেট, নাগা এস্পোরিয়াম ডিমাপুরে।

ডিমাপুর থেকে ৩৭ আর কোহিমার ১১১ কিমি দূরে Intaki Wildlife Sanctuary-টিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। ভারতে বেবুন ও গিবনের একমাত্র বাস ইনটাকি বন্যজন্তু স্যাচুয়ারিতে। এছাড়াও হাতি, শম্বর, ভান্দুক, উড়ন্ত কাঠবিড়ালি ছাড়াও নানান জন্তু দেখতে মেলে। বাঘও আছে ইনটাকিতে। নানানধর্মী পাখিও মৃধময় করে তোলে ইনটাকি-কে।

বাংলা
বিশ্বার

ওড়িশা
ব্রহ্মপল্লী

উইক এন্ড ট্যুর ৫০.০০

কোথায় যাবেন—কিভাবে যাবেন—কি দেখবেন—কোথায়
থাকবেন—সবেরই জবাব পেতে অনন্য গাইড বুক

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট • কলকাতা-৭০০ ০০৭ • ফোন ২৪১-২৩৮৬/২৪১-৪৬০৮

অসম

ব্রিটিশের আসাম থেকে '১' হেঁটে নতুন করে হয়েছে অসম। অসম আজকের নয়। অনেক পৌরাণিক গ্রন্থে অসম ভূখণ্ডের নামোল্লেখ মেলে। কালিকাপুরাণ ও যোগিনীতন্ত্রে এর গোড়াপত্তনের ইতিহাসে দেখা যায়, তখন নাম ছিল এর প্রাগজ্যোতিষপুর। স্বনামধন্য রাজা নরাকা-র হাতে রাজ্যের প্রতিষ্ঠা। এই নরাকা-র পুত্র ভগদত্ত বিরাট হস্তিবাহিনীসহ অংশ নেন কৌরবপক্ষে কুরুক্ষেত্রের যুদ্ধে। তারও আগের কথা, সতীর দেহত্যাগের পর শোকাভূত শিব নীলাচল (মদন কামদেব) পাহাড়ে গভীর ধ্যানে বসেন। ইন্দ্রের ইচ্ছায় কামদেব এলেন শিবের মনে কামের উদ্রেক ঘটিয়ে ধ্যানে ব্যাঘাত ঘটাতে। ক্ষুব্ধ শিব ভষ্ম করেন প্রেমের দেবতা কামদেবকে। কামদেবের ত্ত্বী রতিদেবীর প্রতি ভূট্ট শিব নতুন করে রূপ দিলেন কামের। অর্থাৎ কাম পেল রূপ আর সেই থেকে ভারতের উত্তর-পূর্বের এই ভূখণ্ডের নামও হয় কামরূপ। প্রাগজ্যোতিষপুর নামটি অসমের আজকের মানচিত্র থেকে মুছে গেলেও কামরূপ নামটি জেলা রূপে রয়ে গেছে আজও।

যুগে যুগে বিভিন্ন বংশের রাজারা রাজত্বও করে গেছেন হিমালয়ের এই তরাই অঞ্চলে। ছোট ছোট স্বাধীন রাজাদের পরাজিত করে ব্রহ্মদেশ থেকে অহোমরা এসে ১৩ শতকে দখল করে অসম ভূখণ্ড। পরবর্তীকালের অসম নামটি নাকি এই অহোমের অপভ্রংশ। দ্বিমতে সংস্কৃত শব্দ অ-সম অঞ্চল থেকেই নাম হয়ে থাকবে অসম। ১৮২৬ পর্যন্ত অহোমদের দখলেও থাকে অসম।

সুশাসনের জন্য ভাইসরয় নিয়োগ করেন অহোমরাজ। ক্ষমতালিপ্সু, অযোগ্য শেষ ভাইসরয় বদনচন্দ্র সাহায্য চাইল বর্মারা। সাহায্যে এসে বিতাড়িত করল বদনচন্দ্রকেই বর্মারা। নিরুপায় হয়ে ব্রিটিশের সাহায্য প্রার্থী হল ভাইসরয়। একের পর এক যুদ্ধে পরাজিত বর্মারা ১৮২৬-এর সন্ধিস্থিতে অসম ছাড়ে—আর কার্যত দখল যায় ব্রিটিশের হাতে অসমের। ১৮৩২এ কাছাড়, ১৮৩৫এ জয়ন্তিয়া পাহাড় এল অসমে। আর ১৮৩৯এ আপার অসম গেল বাংলায়। চীফ কমিশনারের শাসনাধীনে ১৮৭৪এ প্রতিভূ রূপ পায় অসম। ১৯০৫এ বঙ্গ-ভঙ্গ—অর্থাৎ বাংলার পূর্বাঞ্চলের সঙ্গে অসমের মিলন ঘটায় সেদিনের ব্রিটিশরাজ। স্বাধীনোত্তর ভারতেও অঙ্গচ্ছেদ হয়েছে বার বার অসম রাজ্যের। অতীতের ২ লক্ষ থেকে হেঁটে হেঁটে ৭৮৫২৩ বর্গ কিমি, অর্থাৎ ২ ভাগ গিয়ে একে দাঁড়িয়েছে অসম। ১৯৪৭-এর স্বাধীনতায় করিমগঞ্জ ছেড়ে সিলেট গেল পূর্ব-পাকিস্তান তথা আজকের বাংলাদেশে। ১৯৪৮এ উত্তর-পূর্ব সীমান্ত সুদৃঢ় করতে NEFA-র জন্ম। আর উত্তর কামরূপের দেয়ানগিরি

যৌতুক পেল ভূটান ১৯৫১য়। এখানেই শেষ নয়, খতিত হল অসম আবার—১৯৬৩তে অসম থেকেই বিচ্ছিন্ন হয়ে জন্ম নিল নাগাল্যান্ড রাজ্য, ১৯৭২-এর ২১শে জানুয়ারি, মেঘালয় রাজ্য ও কেন্দ্রীয় শাসনাধীন মিজোরাম। যদিও প্রত্যেকেই এরা আজ স্বতন্ত্র রাজ্য, তবে এদের প্রত্যেকেরই সড়ক সংযোগ ঘটেছে অসমের উপর দিয়ে পশ্চিমবঙ্গের শিলিগুড়ি করিডর হয়ে ভারত রাষ্ট্রের দিগ্বিদিকের সঙ্গে। নেপাল, চীন, ভূটান, মায়ানমার (বার্মা), বাংলাদেশ পরিবৃত্ত খুবই স্পর্শকাতর এলাকা উত্তর-পূর্ব ভারতের অসম, মেঘালয়, অরুণাচল, নাগাল্যান্ড, মণিপুর, মিজোরাম, ত্রিপুরা। অতীতের Restricted Area Permit রদ হয়ে বিদেশীদের কাছে দ্বার খুলেছে অসম-মেঘালয়-ত্রিপুরা ভ্রমণের। তবে, অরুণাচল, নাগাল্যান্ড, মিজোরাম যেতে ভারতীয়দের ILP মিললেও ত্রায়ী সঙ্গে মণিপুর জুড়ে বিদেশীদের কাছে দ্বার আজও রুদ্ধ।

১৯৮৩র পর গণ-আন্দোলন কিছুটা প্রশমিত হলেও বঙাল তথা বিদেশী অর্থাৎ প্রতিবেশী রাষ্ট্র বাংলাদেশ থেকে আগত বাঙালি (বাংলাদেশী?) উচ্ছেদ আজও অব্যাহত। বিদেশীর সঠিক সংজ্ঞা আজও অনাবিস্কৃত। তাই, বিদেশী সমস্যায় সমস্যা-কীর্ণ আজও অসমের জনজীবন। তেমনই আছে বর্ষাকালের ভয়াবহতা সারা অসমে। ভূমিকম্পের ভয়াবহতাকমলেও বন্যা অসমের ফি-বছরের রুটিনমাসফিক যেন। দু-কূল ভাসিয়ে বয়ে চলে চীনের (তিব্বত) মানস সরোবর থেকে জাত বিশ্বের দীর্ঘতম (১৮০০ মাইল) ব্রহ্মপুত্র নদ ও বরাক নদী। অসম তখন জলে ভাসে—বিনষ্ট হয় শস্যসম্পদ, বিপন্ন হয় মানুষ-জন। অসন্তোষ আছে রাষ্ট্রাঘাট, যানবাহন নিয়েও অসমে।

প্রাকৃতিক সম্পদেও অসম ভারত যুক্তরাষ্ট্রে গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা দখল করে রয়েছে। কয়লা, চুনাপাথর, পেট্রোল, প্রাকৃতিক গ্যাস, সিমেন্ট অফুরন্ত। বনজ-সম্পদেও সমৃদ্ধ অসম। রাজ্যের ৩০ শতাংশ বনাঞ্চল। ঠিক তেমনই বনচরদেরও স্বর্গরাজ্য এই অসম। সারা রাজ্যটাই যেন প্রকৃতির গড়া চিড়িয়াখানা। নথিভুক্ত ৪১৪খী ভারতীয় বন্যজন্তুর মধ্যে ২০ রকমের দর্শন মেলে অসমে। গুয়ার, হাতি, বন্য মহিষ দেখতে আজও যেতে হয় অসমের কাজি-রাঙ্গা বা মানসে। কাগজ কলও বসেছে অসমে। ২টি পাতা ১টি কুঁড়ির দেশেও অসম। আদিগন্ত চা বাগিচা—৮০এরও অধিক টি-এসেট ভারতীয় চায়ের ৫৫% আর বিশ্বের ৬ ভাগ চা অসমেই হচ্ছে। স্বাদে দার্জিলিং অগ্রগণ্য হলেও লিকারে আধিক্য মেলে অসম চায়ে। তেমনই ভারতে চা-নীলামের বৃহত্তম ঘরটিও অসমের গুয়াহাটতে। CTC চায়ের নিলাম

ঘর রূপেও গুয়াহাটি বিশেষ বৃহত্তম। ভারত থেকে প্রথম বিদেশ (লন্ডন) পাড়িও দেয় অসম-জাত চ পেটি চা। প্রকৃতি সাজিয়ে রেখেছে অতি নিপুণভাবে দক্ষ শিল্পীর মতো অসমকে। পাহাড়, নদ-নদী আর বন—এই ত্রয়ীর সমন্বয়ে পর্যটকদের স্বপ্নরাজ্য ভারতের উত্তর-পূর্ব সীমান্তের অসম। অসমের মঙ্গলসূত্র ব্রহ্মপুত্রের সুবিস্তীর্ণ উপত্যকা যেমন নানান উপজাতীয় সংস্কৃতিতে সমৃদ্ধ তেমনিই অসমের কামাখ্যাও এক অনন্য তীর্থ। কামরূপের খাজুরাহো মদন কামদেবের ভাস্কর্য তথা মন্দিররাজি—সেও আর এক দ্রষ্টব্য।

অসম □ রাজধানী: ডিসপুর। আয়তন: ৭৮৫২৩ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ২২২৯৪৫৬২। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ২.৬%। পুরুষ: ১১৫৭৯৬৯৩। নারী: ১০৭১৪৮৬৯। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২৮৪। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯২৫। সাক্ষরের হার: ৫৩.৪২%। প্রধান ভাষা: অসমিয়া। তবে, বাংলা, হিন্দি ও ইংরেজিরও চল আছে অসম রাজ্যে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৩১৭৯.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)।

বেড়াবার মরসুম: অক্টোবর থেকে এপ্রিল হলেও সারাবছর ধরেই পর্যটক সমাগম ঘটে চলে অসমে। তবে, বর্ষাকাল এড়িয়ে অসম যাওয়াই উচিত হবে। বর্ষাকালে অসম ভয়ঙ্কর রূপ নেয়। প্রাবন অবশ্যাস্তাবী—বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ে পথ-ঘাট, স্তব্ধ হয়ে পড়ে যানবাহন সারা রাজ্য জুড়ে। অসমের আর এক ভীতি ভূমিকম্প। বছরে বার বার আসে বিধ্বংসী রূপ নিয়ে সারা অসমে।

গুয়াহাটি ২ মানস ১ কাজিরাঙ্গা ১ জোড়হাট ১ শিবসাগর ১ ডিব্রুগড় ১ পথ চলতে ৪ দিন, অর্থাৎ ১১ দিনে বেড়িয়ে আসুন অসম রাজ্য। তবে অসমের পথে মেঘালয়ের শিলং পাহাড়ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। ঠিক তেমনিই উচিত হবে অরুণাচল/নাগাল্যান্ড/মণিপুর/মিজোরামও বেড়িয়ে নেওয়া অসম সফরের সঙ্গে জুড়ে।

তেমনই দৃষ্টিনন্দন অসমের কারুশিল্প। লোকশিল্পের আখ্যান তুলে ধরেছেন শিল্পীরা তাদের হাতের যাদুতে। জিপসি রমণীদের সূচিশিল্প নজর কাড়ে পর্যটকদের। আর আছে পিতলের নানান সন্টার, ব্রিডি, রূপোর খালরের কারু-কাজ, নানান আভরণ, বাঁশ-বেত-কাঠের নানান কিছু, চিত্র-কলা, পাথরের দেবদেবী, হাতির দাঁত ও মোষের শিঙা-এর নানান সন্টার। ব্রহ্মপুত্রের তীরে গোমালপাড়ায় বাংলা পাঁচ-মুড়ার ইঁতুলা পোড়ামাটি ও শোলায় পৌরাণিক আখ্যান রূপ পাচ্ছে। অসম ভ্রমণের স্মারকরূপে সঙ্গী হতে পারে এসব।

বসন্তে দোল উৎসব হোলিরই আঞ্চলিক রূপান্তর। তেমনিই কৃষি উৎসব বিহএদের জাতীয় উৎসব। সংস্কৃতির পূজারী কিংবদন্তীর রাজা Bishwa Singh এর প্রবর্তিত—নামটিও হয়েছে Bishwa থেকে Bihu। তেঁর সংক্রান্তিতে ৩ দিন ধরে ফসল বোনার উৎসব বোহাগ বা রঙালি তথা বৈশাখ বিহু; কাঙালি বা কাটি বিহু অর্থাৎ ফসল কাটার উৎসব আখিন সংক্রান্তিতে শুরু হয়ে চলে সারা কার্তিক জুড়ে—তাই কার্তিক বিহুও বলে থাকে একে। আর ফসল তোলার উৎসব ভোগালি বা মাঘ বিহু চলে আখিন সংক্রান্তিতে ২ দিন ধরে সারা অসমে। তবে রঙালির মাদকতা বেশি, নাচে-গানে চলেও মাসভর রঙালির রেশ। অসম পর্যটনে বোহাগ বিহু (আমোদ-আহ্লাদের) বা রঙালির বর্ণালী মাদুর্ঘ্য বাড়ায়। এতসবের মাঝেও অসম আজ অশান্ত। আগুয়াজ উঠেছে বোড়োল্যান্ডের অসম মানচিত্রে। রক্তও বরছে নানান অহিলায় অসমের সবুজ জাজিয়ে।

গুয়াহাটি

অতীতের প্রাগজ্যোতিষপুর আজ হয়েছে গুয়াহাটি শহর। গুয়া অর্থ সুপারি আর হাটি হচ্ছে হাট অর্থাৎ সুপারির হাট গুয়াহাটি। অসম তথা সারা উত্তর-পূর্ব ভারতের প্রবেশ-দ্বারও এই গুয়াহাটি বা গুরাহাটি। ব্রহ্মার পুত্র দামাল নদ ব্রহ্মপুত্রের দক্ষিণ তীরে ৫৫ মি উঁচুতে গড়ে উঠেছে শহর। ব্রহ্মপুত্রের শোভাও খুবই সুন্দর। গ্রীষ্মে সর্বোচ্চ তাপমান ৩২.২° আর শীতে নামে ১০° সেন্টিগ্রেডে। বৃষ্টির গড় ১৬৮cms. পাহাড়ী রাজ্য মেঘালয় জন্ম নিতে ১৮৭৪ থেকে ১৯৭৫ (জানুয়ারি) চলে আসা রাজধানী শহর শিলং থেকে রাজ্যপাট গুটিয়ে গুয়াহাটির উপকণ্ঠে ১০ কিমি দূরে গুয়াহাটি-শিলং পথের ডিসপুরে বসেছে নতুন করে রাজধানী। শহর গড়ে উঠেছে পরিকল্পিতভাবে ডিসপুরে। এরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। শিলং চলার পথে এক ঝলকে দেখে নেওয়া যায়। তবে আবার স্থানান্তর হতে চলেছে রাজধানী—গুয়াহাটি থেকে ২০ কিমি দূরে অপরূপ প্রাকৃতিক সৌন্দর্যমণ্ডিত চম্পুপুরে। সাংস্কৃতিক ও বাণিজ্যিক শহর-রূপেও পূর্ব-ভারতে খ্যাতি আছে গুয়াহাটির। অতি দ্রুত আধুনিক সাজে প্রসার পাচ্ছে শহর। সর্বধর্মের—শৈব, বৈষ্ণব, তন্ত্র (শক্তি), বৌদ্ধ, ইসলাম ও খ্রিস্ট ধর্মের সহাবস্থান ঘটেছে অসমের গুয়াহাটিতে। শহরের উপকণ্ঠে N F Rail-এর সদর দপ্তর পাণ্ডু, ব্রহ্মপুত্রের উপর স্থিত সেতুটিও পর্যটক তালিকায় জায়গা করে নিয়েছে। জল, স্থল ও আকাশপথে সারা পূর্ব-ভারতের সঙ্গে গুয়াহাটি যুক্ত।



Indian Airlines, East West Airlines, Jet Airways, Damania, Skyline NEPC-র বিমান নিয়মিত সার্ভিস গড়েছে উত্তর-পূর্ব ভারতের নানান শহরের সঙ্গে গুয়াহাটির। ১ ২ ৩ ৫ ৬ দিন ১০-০০টায় কলকাতা ছেড়ে ১-১০ মিনিটে গুয়াহাটি পৌঁছে ১২-০০টায় গুয়াহাটি ছেড়ে কলকাতায় ফেরে ১৩-১০এ; ১ ৪ ৭ দিন ৬-২০এ কলকাতা ছেড়ে

৭-৩০এ গুয়াহাটি পৌছে ফেবে ১ ৩ ৬ দিন ৯-২০এ, ৪ ৭ দিন ১০-০০টায় কলকাতা ছেড়ে ১১-১০এ গুয়াহাটি, ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন ৬-৪৫এ কলকাতা ছেড়ে ৮-৩০এ আইজল পৌছে গুয়াহাটি যাচ্ছে ১০-০০টায়; ফেব্রুৱাৰী একইভাবে আইজল হয়ে কলকাতায় IAC-ৰ উড়ান। লীলাবাড়ি যাচ্ছে ১ ৩ দিন ১০-২০এ ছেড়ে ১১-৩০, ডিমাপুৰ যাচ্ছে ২ ৪ ৫ দিন ১০-২০এ ছেড়ে ১১-১০এ গুয়াহাটি থেকে বায়ুদূতের বিমান। আগরতলা যাচ্ছে ১ ৪ ৭ দিন ৮-১০এ ছেড়ে ৪০ মিনিটে, ফেবে ১ ৩ ৬ দিন ৭-৫৫য় আগরতলা থেকে। ইম্ফল যাচ্ছে ২ ৬ দিন ১২-৫৫য় ছেড়ে ৫০ মিনিটে; ফেবে ৪ ৭ দিন ১৪-২৫এ ইম্ফল থেকে। দিল্লী যাচ্ছে ২ ৬ দিন ১২-৫৫য় ছেড়ে ১৭-৩৫এ, ১ ৩ ৫ দিন ১০-২৫এ ছেড়ে ১৩-০০টায় সরাসরি; দিল্লী থেকে গুয়াহাটি ফেবে ২ ৬ দিন ১০-০০টায় ছেড়ে ১২-১৫য় সরাসরি; ১ ৩ ৫ দিন ৬-২০এ ছেড়ে ৮-১৫য় বাগডোগরায় পৌছে ৯-৪৫এ গুয়াহাটি।

আর প্রাইভেট বিমান Skyline NEPC প্রতিদিন গুয়াহাটি থেকে ১৮-৩০এ কলকাতা; প্রতিদিন ৮-৪৫এ ইম্ফল; ২ ৩ ৫ ৭ দিন ১৪-১৫য় ছেড়ে জোড়হাট ১৫-০৫এ পৌছে ডিমাপুৰ যাচ্ছে ১৬-০৫এ; ১ ৪ ৬ দিন ১৪-১০এ ছেড়ে লীলাবাড়ি ১৫-১৫, ডিব্ৰুগড় ১৬-২০এ; ৩ ৫ ৭ দিন তেজপুৰ যাচ্ছে ১১-৫০এ; ১ ৪ ৬ দিন শিলচর যাচ্ছে ৮-৪৫এ; ফেব্রুৱাৰী এয়া নিয়মিত গুয়াহাটিতে। ২ ৪ ৬ ৭ দিন সাহাৰা ইন্ডিয়া এয়াৰলাইনস সার্ভিস গড়েছে দিল্লী-গুয়াহাটি-ডিব্ৰুগড়-গুয়াহাটি-দিল্লীৰ মাঝে। শহৰ থেকে ২৫ কিমি দূৰে Borjhar Airport. ট্যাক্সি মেলে ৩০০ টাকায় বিমান বন্দৰ থেকে শহৰে যেতে। শোমৰেও ট্যাক্সি মেলে এয়াৰপোর্ট থেকে শহৰে যেতে। বাসও যাচ্ছে IAC ও Rhino Travels-এর। দপ্তৰ বসেছে—IAC, Guwahati-Shillong Rd, Palant Bazar, ⑥ 563630; Vayudoot, Chatrabari Rd, NEPC-ৰ দপ্তৰ বসেছে G S Rd, near Medical College, ⑥ 566437.



নৰ্থ ইষ্ট ফ্ৰণ্টিয়াৰ ৱেল গুয়াহাটি জংছন। ব্ৰড গেজ ও মিটাৰ গেজ ৱেল দুই-এরই প্রচলন। ৱেল যাচ্ছে ১৫-২৫এ হাওড়া ছেড়ে ৬৬৫৭ কামৰূপ এন্ড পৰদিন NJP ৫-৩০, নিউ কোচবিহাৰ ৮-২৫, নিউ আল্পপুৰদুৱাৰ ৮-৪৮, নিউ বঙ্গাইগাঁও ১১-৪৫এ পৌছে ৯৯১ কিমি দূৰে গুয়াহাটি যাচ্ছে ১৬-০০টায়। ২ ৩ ৬ দিন সুপাৰ ফাস্ট 3045 সৰাইঘাট এন্ড যাচ্ছে ২২-০০টায় হাওড়া ছেড়ে পৰদিন ১৬-৪৫এ গুয়াহাটি। আৰ 6321 তিব্ৰুভনস্তুপুৰম-গুয়াহাটি এক্স শনিবাৰ ১৪-০৫, 5625 কোচি-গুয়াহাটি এক্স মঙ্গলবাৰ ১৪-০৫, 5625 ব্যাঙ্গালোৰ-গুয়াহাটি এক্স ৬ ৭ দিন ১৪-০৫এ হাওড়া ছেড়ে NJP হয়ে গুয়াহাটি যাচ্ছে পৰদিন ১২-১৫য়। ফেবে গুয়াহাটি থেকে ৭-০০টায় কামৰূপ এন্ড, ১ ৪ ৫ দিন ১০-০০টায় সৰাইঘাট এন্ড, শনিবাৰ ৫-০০টায় তিব্ৰুভনস্তুপুৰম এন্ড, সোমবাৰ ৫-০০টায় কোচি এন্ড, মঙ্গল ও শুক্ৰবাৰ ৫-০০টায় ব্যাঙ্গালোৰ এন্ড গুয়াহাটি ছেড়ে হাওড়া-ভুবনেশ্বৰ-চেন্নাই হয়ে যাচ্ছে।

গুয়াহাটি-ডিমাপুৰ-ডিব্ৰুগড় ৱেল ব্ৰডগেজ হওয়ায় দিল্লী-ডিব্ৰুগড় ব্ৰহ্মপুৰ মেলে ১৪-১৫য় গুয়াহাটি ছেড়ে ডিমাপুৰ হয়ে ৩৮০ কিমি দূৰে ডিব্ৰুগড় যাচ্ছে পৰদিন ৬-৪৫এ সরাসরি। ১ ৩ ৪ ৭ দিন ডিব্ৰুগড় ৰাজধানী এন্ড ১৮-০০টায় গুয়াহাটি ছেড়ে লামডিং ২১-১৮, ডিমাপুৰ ২২-৪০, মৰিয়ানি ০১-১৫, নিউ তিনসুকিয়া ৬-০০টায় পৌছে ডিব্ৰুগড় যাচ্ছে ৭-৪০এ। এছাড়াও ট্ৰেন যাচ্ছে ৬-৩০এ লামডিং প্যাসেঞ্জাৰ, ১৯-০০টায় গুয়াহাটি

ছেড়ে লামডিং ২২-৩০, ডিব্ৰু ২৩-১১, ডিমাপুৰ ০-১০, মৰিয়ানি ২-৪৫, শিমালগুড়ি ৪-২৫এ পৌছে নিউ তিনসুকিয়া যাচ্ছে ৭-৪৫এ ইন্টাৰসিটি এন্ড। ১৩-০০টায় গুয়াহাটি-লামডিং এন্ড; চাপাৰমুখ হয়ে হাইবাৰগাঁও যাচ্ছে ১০-৩০এ ফাস্ট প্যাসেঞ্জাৰ, ১৭-৩০এ এন্ড। আৰ লামডিং থেকে ৭-০০টায় ছেড়ে ১৩ ঘট্টায় নিউ তিনসুকিয়া যাচ্ছে প্যাসেঞ্জাৰ ট্ৰেন। ট্ৰেন যাচ্ছে লামডিং থেকে ১৯-৩০এ 5801 কাছাড় এন্ড, ৯-০০টায় 5811 বৰাকভাৰী এন্ড মিটাৰ গেজে লোয়াৰ হাফলং/ হাফলং/বদৰপুৰ হয়ে ২১৬ কিমি দূৰে শিলচর যাচ্ছে ১১ ঘট্টায়; ৪-০০টায় লামডিং ছেড়ে 204 ত্ৰিপুৰা প্যাসেঞ্জাৰ ২১-২০এ কুমাৰঘাট যাচ্ছে লোয়াৰ হাফলং/ হাফলং/ হিল/ বদৰপুৰ/কৰিমগঞ্জ/ধৰ্মনগৰ হয়ে।

| গুয়াহাটি থেকে সড়ক দূৰত্ব | | প্রতি ২৪ ঘণ্টা |
|----------------------------|----------|---------------------------------|
| কাজিৰাসা | ২১৭ কিমি | গুয়াহাটি ছেড়ে হাওড়া/ |
| ডিব্ৰুগড় | ৪৪৫ " | ভুবনেশ্বৰ/ গুয়াহাটিয়াৰ/ |
| শিবসাগৰ | ৩৬৯ " | চেন্নাই/ কোয়েম্বাটুৰ/ কুইলন |
| মানস | ১৭৬ " | হয়ে ৩৫৭৪ কিমি দূৰে |
| খিম্পু | ৫৪৯ " | তিব্ৰুভনস্তুপুৰম যাচ্ছে বৃহদাৰ |
| ওৰাং | ১৪০ " | ৭-৪৫এ 6322 গুয়াহাটি- |
| লামডিং | ২২১ " | তিব্ৰুভনস্তুপুৰম এন্ড; বৃহদাৰ |
| হাফলং | ৩৫৫ " | ৫-০০টায় গুয়াহাটি ছেড়ে একই |
| ডিব্ৰু | ২৬৯ " | পথে কোচি যাচ্ছে শনিবাৰ ৩- |
| দৰং | ১০০ " | ৩০এ 5624 কোচি এন্ড; মঙ্গল |
| শিলচর | ৩৯৮ " | ও শনিবাৰ ৫-০০টায় গুয়াহাটি |
| আইজল | ৫৩৮ " | ছেড়ে ব্যাঙ্গালোৰ যাচ্ছে তৃতীয় |
| আগরতলা | ৫৯৭ " | দিন ২০-২০এ 5626 গুয়াহাটি- |
| ডিমাপুৰ | ২৮০ " | ব্যাঙ্গালোৰ এন্ড। ফেবে |
| কোহিমা | ৩৪২ " | মঙ্গলবাৰ ১২-০০টায় ডিব্ৰু- |
| ইম্ফল | ৪৮৭ " | ভনস্তুপুৰম, ২১-৪০এ |
| পৰশুৰামকুণ্ড | ৬১৩ " | কোচি, বৃহৎপতি ও শুক্ৰবাৰ |
| লেডো | ৫৬৭ " | ২৩-৩০এ ব্যাঙ্গালোৰ থেকে |
| মাৰকংশেলেক | ৪৭৫ " | গুয়াহাটি এন্ড। |
| জিৰো | ৪৮০ " | প্রতি দিন ১২-০০টায় |
| নগাঁও | ১২০ " | গুয়াহাটি ছেড়ে নিউ জল- |
| তাওয়াং | ৫৩২ " | পাইগুড়ি/ কাটিহাৰ/ বৰামুনি/ |
| তেজপুৰ | ১৮১ " | গোৰক্ষপুৰ/ লক্ষ্ণৌ হয়ে দিল্লী |
| নৰ্থ লখিমপুৰ | ৪১৫ " | যাচ্ছে 5609 আয়ুধ-অসম এন্ড; |
| ইটানগৰ | ৪২০ " | ৪-৩০এ গুয়াহাটি ছেড়ে নিউ |
| বমডিলা | ৩৪২ " | জলপাইগুড়ি/ কাটিহাৰ/ |
| শিলং | ১০৩ " | বৰামুনি/ পাটনা/ এলাহাবাদ/ |
| তুৱা | ২৮৪ " | কানপুৰ/ তুণ্ডলা হয়ে ৩৬৬ ৩৫ |
| শিলিগুড়ি | ৫১৩ " | মিনিটে নিউ দিল্লী যাচ্ছে 5621 |
| দাৰ্জিলিং | ৫৮৭ " | নৰ্থ ইষ্ট এন্ড; ১৭-০০টায় |
| গ্যাংটক | ৩২৪ " | ডিব্ৰুগড় ছেড়ে ডিমাপুৰ ৩-৩০, |
| কলকাতা | ১১৬৪ " | লামডিং ৫-৪৫, গুয়াহাটি ১০- |
| দিল্লী | ২১৬০ " | ৩০এ ছেড়ে নিউ জলপাইগুড়ি/ |

মালাদহ/ নিউ ফাৰাকা/ ভাগলপুৰ/ পাটনা/ এলাহাবাদ/ তুণ্ডলা হয়ে দিল্লী যাচ্ছে তৃতীয় দিন ৫-৩০এ 4055 ব্ৰহ্মপুৰ মেলে। ২ ৪ ৭ দিন ১৫-০০টায় ডিব্ৰুগড় ছেড়ে পৰদিন ৪-৪৫এ গুয়াহাটি পৌছে নিউ বঙ্গাইগাঁও-নিউ জলপাইগুড়ি-কাটিহাৰ-বৰামুনি-পাটনা-মোগলসৰাই-

কানপুর থেকে ৪৩ ঘণ্টায় নতুন দিল্লী যাচ্ছে 2423 ডিক্রগড় রাজধানী এক্স, গুয়াহাটি থেকে দিল্লীর দূরত্ব ২০৫০ কিমি। দ্রুততম এদের মধ্যে নর্থ ইস্ট এক্স। ফেরে দিল্লী জং থেকে ৮-৪০এ আয়ুধ-অসম, ২১-০৫এ ব্রহ্মপুত্র মেল; আর নতুন দিল্লী থেকে 2 3 6 দিন ১৪-০০টায় ডিক্রগড় রাজধানী এক্স, ২৩-৪০এ নর্থ ইস্ট এক্স।

মুঘাই অর্থাৎ দাদার যাচ্ছে 3 7 দিন 5646 গুয়াহাটি-দাদার এক্স ১১-১৫য় গুয়াহাটি ছেড়ে নিউ জলপাইগুড়ি/বরায়ুনি/পাটনা/জব্বলপুর/ইটানসি/ভুসুয়াল/মানমাদ হয়ে ৩৬ ঘণ্টায়। দাদার ছাড়ে 3 6 দিন ৭-৫৫য় দাদার-গুয়াহাটি এক্স। জন্মু যাচ্ছে 5651 লোহিত এক্স প্রতি সোমবার ১১-০০টায় গুয়াহাটি থেকে; লোহিত ফেরে বুধবার ২২-১০এ জন্মু থেকে।

১৯-৪৫এ তেজপুর ছেড়ে রাঙ্গাপাড়া নর্থ ২০-৪৫, রদিয়া ০-৩০, নিউ বঙ্গাইগাঁও ৪-৫০, আলিপুরদুয়ার জং ৯-০০, শিলিগুড়ি ১৩-২৫, কাটিহার ১৯-৪০, সহর ০-৩০এ পৌঁছে সমস্তিপুর যাচ্ছে ৬-০০টায় 5715 তেজপুর-সমস্তিপুর এক্স; তেজপুর ফেরে সমস্তিপুর থেকে ২০-৪৫এ। তবে, গত কিছুকাল সমস্তিপুর-আলিপুরদুয়ারের মাঝে 5715 এক্স যাতায়াত করছে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ভারতের দিকে দিকে গুয়াহাটি থেকে।



সড়ক পথেও NH. 31, 37 ও 40-এর সংযোগে গুয়াহাটি শহর। বাস যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে রাজা তথা উত্তর-পূর্ব ভারতের দিকে দিকে গুয়াহাটি থেকে। বাস যাচ্ছে অসম, মেঘালয়, অরুণাচল, নাগাল্যান্ড, নর্থ বেঙ্গল টেট ট্রান্সপোর্টের এক্স ও সুপার এক্স সরকারি বাস। ৩ঃ ঘণ্টায় শিলং ১০৩, তুরা ৩০৮, মানস ১৭৬, কাজিরাঙ্গা ২১৭ কিমি ছাড়াও বাস যাচ্ছে শিলচর, তেজপুর, ইটানগর, বমডিলা, ডিমাপুর, জোড়হাট, শিবসাগর, ডিক্রগড়ও গুয়াহাটি থেকে। তবে সারা অসমে বাসের টিকিট যত্নে রাখবেন। নামবার কালে সরকারি বাসে টিকিট ফেরত দেওয়া কানুন এদের। পশ্চিমবাজার থেকে নেটওয়ার্ক ট্র্যাভেলস, অসম ভ্যালি ট্র্যাভেলস ও রু হিলস ট্র্যাভেলসের ডিলাঞ্জ বাস যাচ্ছে পূর্ব ভারতের নানান দিকে। শহরে চলছে মিটারহীন ট্যাক্সি ও অটো, রিকশা, সিটি বাস। ফেরে লঞ্চও যাচ্ছে গুয়াহাটি থেকে ব্রহ্মপুত্র পেরিয়ে নানানদিকে।

উত্তরবঙ্গ ভ্রমণার্থীরা নিউ জলপাইগুড়ি, আলিপুরদুয়ার বা নিউ কোচবিহার থেকে ট্রেন ধরুন গুয়াহাটির। আর, দার্জিলিং ভ্রমণার্থীরা শিলিগুড়ি বা নিউ জলপাইগুড়ি হয়ে গুয়াহাটি যেতে পারেন—দূরত্ব ৫৭৩ কিমি। রেল, বাস ও বিমান যাচ্ছে শিলিগুড়ি থেকে গুয়াহাটি।



Guwahati, STD-0361এ নানান হোটেল। ওভার ব্রিজ পেরুতেই ASTC বাস স্ট্যান্ডের সামনে গুয়াহাটি-শিলং রোড। ডানহাতি Paltan Bazar, Guwahati-700008-এ ভারতীয় প্রথাম—H Tourist, S ৬০-৮৫ D ১২৫-১৭৫; H Vandana, ৫ 643475, SCB ৬৫ DCB ১০০ SAB ৮৫-১৫০ DAB ১৫০-২০০ A/C S ৩০০ D 8৫০; অতি সাধারণ H Apurba; H Mayur, ৫ 541115, S ৮৫-১২০ D ১২৫-১৬৫ T ১৫০-২০০; H Bob, SCB ৪০ SAB ৬০ DCB ৮০ DAB ১২৫; H Eden, SAB ৮০ DAB ১৫০ TAB ২০০; H Metro, DCB ৮৫ DAB ১০০-১৫০ TAB ১৬৫ FAB ২০০; গলিপথ Md Shah Rd-8এ H Starline, ৫ 542450, SAB ২০০-২৫০ DAB ২৫০-৩৫০ FAB ৩৫০-৪৫০ A/C S ৪০০ D ৫৫০; মূলপথে Vikash L, S ৬০ D ১০০

থেকে; H Rajmahal, Aara Kashan (A T) Rd-1, ৫ 522476, S ৬৫০-১২০০ D ৮৫০-১৫০০ সুইট ১৮০০- ২৫৫০। বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫ মিনিটের মধ্যে অবস্থান এদের।

ওভার ব্রিজ থেকে নেমে বামহাতি K C Sen Rd, Paltan Bazar, Guwahati-781008এ সারি দিয়ে—H Indira, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৫০-২২৫; সাধারণ সাজে H Vaishali; H Ambassador, ৫ 554886, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB ১১০-১৭৫ DAB ১৫০-২৫০ TAB ২২৫-২৭৫ A/C D ৩৫০; H Embassy, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB ১৫০ DAB ২০০ TAB ২৫০; H Rajdoot, ৫ 542661. SAB ৮৫-১৫০ DAB ১৫০-২৫০ TAB ২২৫; H Sukhamani, ৫ 522160, SAB ৮০-১২৫ DAB ১২৫-২৫০ TAB ২২৫-২৭৫; H Joydurga, ৫ 541138, SCB ৬৫ DCB ১০০ TCB ১৫০ SAB ৮৫ ১০০ DAB ১২৫-১৭৫ TAB ১৬৫; গলিপথে H Greatway, H Sodhi; মূলপথে H Prince, ৫ 510128, S ৮৫-১৫০ D ১৫০-৩২৫ T ১২০-৩৭৫ F ৩৫০-৬৫০ শীতাতপের জন্য ৭৫ অতিরিক্ত।

ওভার ব্রিজ থেকে নেমে ৫ মিনিটের সোজাপথে G S Rd-781008এ—সাধারণ সাজে Hotel K K, একই বাড়িতে অতি সাধারণ H Orion, H Kanchanjanga, H Arolla, বিপরীতে H Gangotri, DAB ১২৫-১৭৫; Hotel M M, ৫ 520659, S ৮৫-১২০ D ১৪৫-১৭৫; H Gitanjali; H Maharaja, ৫ 542176, SAB ১৫০ DAB ২২৫ A/C S ৩২৫ D 8৫০; H Trimurti International, ৫ 542169, S ১২৫-১৭৫ D ২২৫-৩০০ T ২৭৫; *H Nandan ৫ 540855, SAB ৩৫০- ৪৫০ DAB ৫০০-৬৫০ A/C S ৫৭৫-৭৫০ D ৭৫০-১০৫০ সুইট ১২৫০; লাগোয়া গলিপথে H Chilarai Regency, H P Bramachari Rd, Paltan Bazar-8, ৫ 546877, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/C S ৫০০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০। তবে G S Road-এর হোটেলগুলিতে প্রত্যথ থেকে গভীর রাতে যন্ত্রশব্দের নিনাদ পরিবেশকে ভারী করে রাখে।

রেল স্টেশন থেকে বেরিয়ে চত্বর পেরুতেই Station Rd-781001এ—অসম পর্যটনের Tourist Lodge, SAB ১০০ DAB ১৭০ ডর্মি বেড ১৫/৩০; অব্: Tourist Officer, Assam Tourism, Guwahati-1, ৫ 544475. রাজ্য পর্যটনের টুরিস্ট অফিসটিও বসেছে লঞ্জে। আর আছে PWD-র বাংলা লজ চত্বরে।

রেল ওভার ব্রিজ থেকে নামতেই Panbazar-781001এ—H Silver Line; বিপরীতে Broadview L, ৫ 523338, SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০ TAB ২০০; লাগোয়া Space L, SCB ৬৫ DCB ১০০ SAB ৮৫ DAB ১৫০ TAB ২০০; মুম্বোমুখি H Broadview, ৫ 520250, DAB ৩২৫-৪২৫ A/C D ৪৫০-৮০০ সুইট ৮০০-১০৫০; বামহাতি গলিপথে Malabar H, M N Rd; মূলপথে Ananda L, ৫ 544832, SCB ৪৫-৬৫ DCB ৬০-৮৫ DAB ১২৫; গলিপথে Vijay H; মূলপথে জেজি মিলের H Suradevi, ৫ 545050, SCB ৮০ DCB ১২৫ SAB ১০০ DAB ১৫০ TAB ১৭৫ FAB ২৫০। রিজার্ভ ব্যাঙ্কের বিপরীতে পানবাজারের G N B Rd-1এ—Strand H, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB ৮০ DAB ১২৫-১৭৫; Premier L, S ৬৫-১০০ D ১২০-১৫০; H Regal, S ৬০ D

১০০; *H President*, S ১৭৫-২৫০ D ২৫০-৩৫০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; **H Prag Continental*, @ 540850, R₁, S ২৫০-৪২৫ D ৪০০-৬৫০ A/c S ৪২৫-৫৫০ D ৬৫০-১২৫০; *H Abhinandan*; *H Kalpana*, S ৬০-৮০ D ১০০-১৫০ FR ১৭৫, একটি মিল বাণ্যভাস্মূলক কল্পনায়। *H Blue Diamond*, Jasobant Bazar, D ১২৫-২৫০; *H Tiende* (টিএনডি), D ১৫০-২৭৫; *H Comfort*, S ৮৫-১৫০ D ১৫০-২৭৫; S SRd-1৫—*H Gajraj*, Lakhtokia-1, SAB ১২০ DAB ২০০ TAB ২৫০; **H The Dynasty*, @ 510496, A21R1, S ১০৫০-২০৫০ D ১৬৫০-২৫০০ সুইট S ৩০০০-৪৫০০ D ৩৫০০-৬০০০। পানবাজারের দ্বাভ ও কল্পনা হোটেল দুটি বাঙালি মালিকানাধীন।

রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে Fancy Bazar-781001এ—*H Nova*, @ 523464, SAB ১৭৫ ২০০ ৩০০ DAB ২৫০ ৩৫০ ৪০০ ৪৭৫ A/c-র জন্য ১২০ অতিৰিক্ত। নোভার বিপরীতে *H Urvasi*, near Urvasi Cinema, SCB ৮০ DCB ১২০ SAB ১৫০ DAB ২২৫; উৰ্ৱশী সিনেমাকে ঘিরে সাধারণ সাজে *H Mahaluxmi*, *Rajasthan H*, *Rajhans H*, *Matri Hindu H*; *H Maruti*, @ 512142, Radha Bazar, S ১৯০ ২১০ D ২৭০ ২৯০ A/c S ২৯০ D ৩৭০ সুইট ৭০০; *H Nishu*, S SRd-1, @ 522971; *H Kuber International*, Hem Barua Rd, @ 520807/541465, SAB ৩০০-৪৫০ DAB ৩২৫-৫৫০ A/c Suite ৬০০-১২৫০; *H Rituraj*, Kedar Rd, A20R1, @ 522495, S ৪০০ D ৫০০ A/c S ৫৫০ ৬০০ D ৬৫০ ৭০০ সুইট ১১০০; *H Siddhartha*, H B Rd, R1, S ২৫০ D ৩৭৫-৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; *H Empire*, H B Rd, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮০০-১০৫০; *H Nav-Alka*, S C B Rd, @ 541074, DAB ২৫০ A/c ৪৫০; *H Amber*, H B Rd-1, SCB ৮০ DCB ১২৫ SAB ১০০ DAB ১৫০-২২৫; *H East India*, G R Rd, opp Apsara Cinema, D ১২৫-২০০। আর আছে *H Alka*, M S Rd, R1B1, SAB ১৫০ DCB ১৭৫ DAB ২৫০; *H Luit*, Machkhowa, SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ১৭৫; *H Broadway*, Machkhowa, M G Rd-9, S ১২৫ D ২০০; *H Appola*, Balarmukh, T R Phookun Rd-9, S ৬৫-১২৫ D ১২৫-১৭৫ T ২০০; *H Gaylord*, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০; *H Alankar*, Chandmari, SAB ৮৫ DAB ১২০-১৭৫; *H Kirandeep*, Beltala, SAB ৮৫ DAB ১৫০; **H Samrat*, A T Rd, Santipur-9, A 20R3B1, SAB ২০০ DAB ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০।

আর আছে সারা শহরময় ছড়িয়ে ছিটিয়ে নানান হোটেল: গুয়াহাটিতে। পাশ্চাত্য প্রথায়: হাইকোর্টের বিপরীতে ITDC-র বিলাসবহুল **H Brahma Putra Ashok*, M G Rd-781001, A23R1, @ 541064, S ১১৯৫ D ১৪০০ সুইট ২০০০; **Belle View H*, M G Rd-1, @ 504848, A24R4B2, A/c S ৬৫০ D ৮৫০; *H Oberoi*, G S Rd, Ulubari-7, SAB ২৭৫ DAB ৪২৫; *Urvasi*, @ 882219; *Airport H*, Borjhar-15, @ 82292, S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ১২৫০; **H North Eastern*, G N Bardoloi Rd, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ১৫০-২৭৫ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; *H Princes*, NH-37, Jawahar Nagar-28, S ২৫০ D ৩২৫-৪০০; *H East Inn*, Zoo-Narengi Rd-

24, DAB ২২৫-৩৫০ A/c D ৪৫০; *H Pragytosh*, Manipuri Basti, G S Rd-7, near Rly Stn., SAB ১৫০-২৭৫ DAB ২৫০-৩২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; *R G Barua G H-7*, SAB ২২৫ DAB ৩০০ A/c S ৩০০ D ৫৫০; *H Orchid*, opp Indoor Stadium GH, @ 544471; কল বুকিং: @ 3370662; *H Shyamalee*, Mangaldai, near Circuit House, @ (03713) 22247 ছাড়াও নানান।

ডিসপুৰে—*H Shib*, *Bilas*, *Rajhangsha*, *Royal*, *Rajmal*, *Star*, এদের রেট D ১৫০-২৭৫। এছাড়াও হোটেল আছে নানান গুয়াহাটিতে। আর আছে ২টি সার্কিট হাউস—হাইকোর্টের বিপরীতে ও উজানবাজার ঘাটে, অবু: Special Officer, near High Court, Guwahati-1; *FIB*, *AOC GH*, *YMCA*, (Pan Bazar), *YWCA* ও রেলের বিটায়ারিং কম গুয়াহাটিতে।

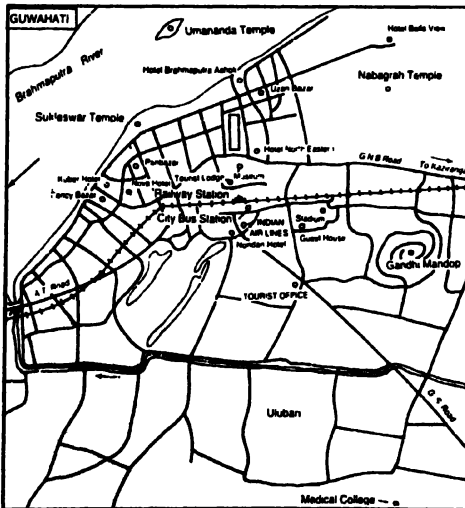
বাংলার মতো ভাত-ডাল-মাছের দেশ অসম। তবে, মশলার আধিক্য নেই বাংলার মতো। স্বকীয়তাও মেলে *খার*, *খারালি*, *খরিসা* নানান আহার্যে। তেমনই নানানখান *পিঠা* (মিষ্টান্ন)—রও ভক্ত অহোমবাসী। স্বাদও নেওয়া যেতে পারে চলার পথে নানান রেস্তোরাঁয়। *H Paradise*, *Sungmari*-রও খাতি আছে আকর্ষক আহাৰ্য পরিবেশনে। দক্ষিণ ভারতীয় ডিসের জন্য *Noodlandi—Ulubari* চলা যেতে পারে। আর *চীনা*, *মোগলাই*, *তন্দুরী*, *কন্টিনেন্টাল* মিলের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে হোটেল নন্দন কমপ্লেক্সের *Utsab*, G S Rd-এ। ফ্যান্সিবাঙ্গার, পানবাজার, জি এস রোডও খাবার হোটেল আছে নানান।

কনডাক্টেড ট্যুর: যথেষ্ট যাত্রী হলে (কমপক্ষে ১০) রাজ্য পর্যটন Tourist Information Office, Station Road, Guwahati-781001, @ 547102/544475, near Rly Stn থেকে কনডাক্টেড ট্যুরে প্রতিদিন শহর দেখাবার ব্যবস্থা আছে। সকাল ৯টায় গিয়ে কামাখ্যা, ভুবনেশ্বরী মন্দির, মিউজিয়ম, কটেজ ইনডাসট্রিজ এম্পোরিয়াম, জু, গান্ধী মণ্ডপ, ডিসপুৰ, বশিষ্ঠ আশ্রম, ব্রহ্মপুত্রের সরাইঘাট সেতু ও সূর্যাস্ত দেখিয়ে শহরে ফেরে গাড়ি। টিকিট ৫০, শিশু ৪০। আবার নভেম্বর থেকে এপ্রিল মাসে প্রতি সোম, বুধ, বৃহস্পতি, শনি ও রবিবার ৯-১০টায় গিয়ে পরদিন ১৭-৩০টায় ফেরে কনডাক্টেড ট্যুরে কাজিরাঙ্গা দেখিয়ে; থাকা-খাওয়া-যাতায়াতে ৪৭০, বারো বছর পর্যন্ত শিশুদের ৩৬৫। শিলং ও বেড়িয়ে আনে দিনে দিনে রাজ্য পর্যটন প্রতি বুধ ও রবিবার ১৫০ (শিশু ১০০) টাকায়। হাফো, গুয়ালাহাট ও মদন কামসেব যাচ্ছে প্রতি রবি, ২য় শনি ও ৪র্থ শনিবার ৮০, শিশু ৭০ টাকায়। প্রতি বুধবার হিল প্যাকেজে যাচ্ছে ৩ দিনের ট্যুরে দিম্ফু-হাফলঙ-জাভিঙ্গা দর্শনে অসম টুরিজম ১০০০ শিশু ৬০০ টাকায়। এক রাতের অবস্থানে তেজপুৰ-ভালুকপাড়া যাচ্ছে ২ দিনের ট্যুরে ৫২০/৪০০ টাকায়। দীর্ঘ বিরতির পর মানস অভয়ারণ্যও যাচ্ছে ATDC ট্যুরিস্ট ট্যাক্সিও ভাড়া মেলে এদের কাছে। ITDC, Ulubari, @ 547407—এদের কাছেও গাড়ি মেলে ভাড়া। Govt of India Tourist Information Office বসেছে B K Kakati Rd, Ulubari, @ 547407-এ। রেল স্টেশন ও বিমানবন্দরেও সন্তর বসেছে অসম টুরিজম ও ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরের। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ওকলেব্রার ঘাট (আমিনপাও পার ঘাট) থেকে ATDC-র জলপলী লঞ্চ যাচ্ছে ১৫-০০ ও ১৬-০০টার ৩৫ টাকায় ১ ঘণ্টার জলবিহারে।

| গুয়াহাটিক: | |
|--|-------------|
| Indian Airlines—City Office | ☎ 563630 |
| Borjhar Airport | ☎ 84265 |
| Vayudoot | ☎ 331941 |
| Air India | ☎ 561881 |
| Damania | ☎ 566093 |
| Skyline NEPC | ☎ 566437 |
| East West Airlines | ☎ 543330 |
| Sahara India Airlines | ☎ 54867 |
| Jet Airways | ☎ 520202 |
| Rail Station Enquiry | ☎ 540330/29 |
| Recorded Information | ☎ 131/133 |
| Assam State Transport | ☎ 544709 |
| Meghalaya State Transport | ☎ 547668 |
| Tourist Office—Assam | ☎ 544475 |
| Govt of India Tourist Office, Ulubari | ☎ 547407 |
| Directorate of Tourism—Govt of Assam | ☎ 547102 |
| Govt of Meghalaya Tourist Information Office—Meghalaya | ☎ 547668 |

তেমনই অসম ভ্রমণে থাকা-খাওয়া-চাৰিৰ প্ল্যানিং—বহুমুখী সহযোগিতা ম্যেলে য়েচ্ছাসেবী সংগঠন Destination, Md Tayabullah Rd, Dighalipukhuri (East), Guwahati-781001, ☎ 31080/33566 থেকে। আগ্রহীদের উচিত হবে সরাসরি যোগাযোগ করা।

আবার Blue Hill Travels, Paltan Bazar, Guwahati-781008, ☎ (0361) 520604/547911 থেকে North Eastern Exposition-এ যাচ্ছে নানানধর্মী প্যাকেজে—৫ রাতের অবস্থানে গুয়াহাটি-শিলং-মানস; ১ রাতের অবস্থানে কাজিরাঙ্গা; ১ রাতের অবস্থানে শিলং, ৩ রাত ৪ দিনের প্যাকেজে বমডিলা; ৬ রাত ৫ দিনের সফরে গুয়াহাটি-তেজপুৰ-ভালুকপং-টিপি-বমডিলা-তাওয়াং-সেলাপাস; ৪ রাত ৩ দিনে জোয়াই-শিলং-মানস-



গুয়াহাটি; হাজো-গুয়ালকুটি; গুয়াহাটি শহর-কামাখ্যা মন্দির টুরেও যাচ্ছে রু হিল ট্রাভেল।

| তেমনই যাচ্ছে নানান ট্রাভেল এজেন্ট গুয়াহাটি থেকে দিন-রাতের সার্ভিসে অসম তথা প্রতিবেশী রাজ্যের দিগ্বিদিকে : | |
|--|----------|
| Net Work Travels, Paltanbazar, | ☎ 522007 |
| Green Valley Travels, Paltanbazar, | ☎ 543646 |
| Blue Hill Travels, Rehabari, | ☎ 547911 |
| Assam Valley Travels, Paltanbazar, | ☎ 546133 |
| Pelican Travels, Hotel Brahmaputra Ashok, | ☎ 541064 |
| Rhyno Travel, Panbazar, | ☎ 540666 |

গুয়াহাটি শহরের প্রাণকেন্দ্রে নেহরু পার্কের বিপরীতে ব্রহ্মপুত্রের তীরে কাছারি প্রাঙ্গণ। আদালতের বিপরীতে ব্রহ্মপুত্রের জলে অতীতের ভাস্চাল বা ভস্কুট আজ হয়েছে পিকক আইল্যান্ড বা উমানন্দ দ্বীপ। এই পাহাড়ী দ্বীপে টিলার টেজে ১৬৬৪ খ্রিস্টাব্দে তৈরি মন্দিরে শিব উপাস্য দেবতা। জনশ্রুতি, এখানেই শিবের ক্রোধান্বিতে কামদেব ভস্মীভূত হয়। শিবরাত্রিতে উৎসব হয়। মন্দির রয়েছে আরো ২টি অহোম রাণাদের কালের। তবে আজ অবহেলিত। কয়েক ধাপ নামতেই সফটমোচন হনুমানমন্দির। কাছারি ঘাট থেকে যাত্রিক বেটি বা লঞ্চে পারাপার। ভাড়া ২৫/৩০। জলপথের মাঝ-দূরত্বে অতীতের উর্বশী আজ বিধবস্ত।

গুয়াহাটির প্রাণকেন্দ্র ব্রহ্মপুত্রের শুকলেশ্বর ঘাটের কাছে শুকলেশ্বর টিলায় হিন্দু ও বৌদ্ধ স্থাপত্যের নিদর্শন জনার্দন মন্দিরটিও উচিত হবে দেখে চলা।

অদূরেই পানবাজার—অসম সিদ্ধ-এন্ডি-পাটজাত ও মুগার বসন কোমাকাটা করা যেতে পারে। তেমনই বাঁশ ও বেতের তৈরি নানান বিলাসপণ্য ও হস্তশিল্পও কেনা যেতে পারে। ফ্যান্সিবাাজারের দোকানপাটে বা অসম স্পান সিদ্ধ মিলের শোরুম—গণেশপুরী বা জি এন বরদলুই রোডের পূর্বদিক থেকেও সংগ্রহ করা যেতে পারে অসম ভ্রমণের স্মারক।

শহরের আমবাড়িতে হয়েছে ট্যুরিস্ট লজ লাগোয়া রিজার্ভ ব্যাঙ্কের পিছনে অতীত অসমের নিদর্শন নিয়ে অসম স্টেট মিউজিয়াম। সোমবার, দ্বিতীয় ও চতুর্থ শনিবার ছাড়া অন্যান্য দিন গ্রীষ্মে ১০—১৭-০০ শীতে ১০—১৬-১৫য় খোলা।

তেমনই উজানবাজারে গুয়াহাটি তারাবর (প্লানে-টারিয়ার) ☎ 548962, প্রতিদিন ১১—১৯-০০টা ১ ঘন্টার প্রদর্শনীতে দেখে নেওয়া যায়; টিকিট ১০।

অসমের শিল্প সংস্কৃতি আর প্রাচীন সম্পদের অনন্য সংগ্রহশালা অসম রাজ্যিক সংগ্রহালয় বসেছে দিঘলিপুকুর, গুয়াহাটি-১-এ। শীতে ১০—১৬-১৫, গ্রীষ্মে ১০—১৭-০০, দেওবারে ৯—১৩-০০টা খোলা। সোমবার বন্ধ। ছাত্র-ছাত্রীদের দর্শনী লাগে না।

এমনকি উত্তর-পূর্বাঞ্চলের প্রথম বিজ্ঞান সংগ্রহালয় আঞ্চলিক বিজ্ঞান কেন্দ্র (☎ 561699) বসেছে খানাপায়ায়—সোম ছাড়া প্রতিদিন অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে ৯-

৩০—১৭-০০ আৰু মাৰ্চৰ পৰা ১০-৩০—১৮-০০ টায় দেখে নেওয়া যায় ভাৰামণ্ডল, মহাকাশ, নদী উপত্যকা, সাগৰীয় তরঙ্গ, ভূমিকম্প, বিজ্ঞান ও চলচ্চিত্ৰ প্ৰদৰ্শন, আকাশ নিৰীক্ষণ ছাড়াও নানান কিছু।

আৰু রয়েছে শহরের ৩ কিমি পূবে চিত্ৰাচল পাহাড়ের পশ্চিমে নবগ্ৰহৰ মন্দিৰ। নবগ্ৰহৰ প্ৰতীকস্বৰূপ পাথৰেৰ ৯ মনোনিখ মূৰ্তি হয়েছে মন্দিৰে। অতীতে জ্যোতিষশাস্ত্ৰেৰ চৰ্চা হত। আৰু এই জ্যোতিষশাস্ত্ৰ থেকেই নাম হয়েছিল সেকালে প্ৰাগজ্যোতিষপুৰ।

শহৰ থেকে ১০ কিমি দূৰে নীলাচল পাহাড়ে ৫২৫ ফুট উচুতে কামাখ্যা মন্দিৰ। তত্ত্বসাধনৰ পীঠস্থান কামাখ্যা, পুণ্য শক্তিপীঠ। দৈত্যৰাজ নৰকাসুৰেৰ তৈৰি মূল মন্দিৰটি ১৫৫৩য় কালপাহাড়ের কালো হাতে বিনষ্ট হত নতুন করে মন্দিৰ গড়েন ১৬৬৫ খ্ৰিস্টাব্দে কোচবিহারেৰ ৰাজা নব-নাৰায়ণ। ডিম্বাকার মৌচাকের আদলে শিখৰ—৭টি চূড়া, প্ৰস্ফুটিত পদ্মেৰ উপৰ ৩টি স্বৰ্ণকলস, তাৰ উপৰ সোনাৰ তৈৰি ত্ৰিশূল। মন্দিৰটি কাৰুকাৰ্যময়—হিন্দুপুৰাণেৰ দেব-দেবীৰ মূৰ্তি হয়েছেন দেওয়ালে। এমনকি দাড়িগোঁফওয়ালা শিবও রয়েছে মন্দিৰে। প্ৰাচীন অহোম স্থাপত্যেৰ নিদৰ্শন এই মন্দিৰে দুৰ্গা, কালী, তারা, কমলা, উমা ও চামুণ্ডাৰ প্ৰতিভূৰূপে পূজিতা হচ্ছেন পঞ্চৰত্নেৰ সিংহাসনে অষ্টধাতুৰ দেবী কামাখ্যা। খুবই জাগ্ৰতা এই দেবী। ৫১ পীঠেৰ এক পীঠ। বিষুৱচক্ৰে খণ্ডিত সতীৰ যোনি পড়ে এখানে। আলো-আঁধাৰিতে সিঁড়ি নেমে দেবীৰ অবস্থান অন্তঃপুৰে। সুন্দৰভাবে বাঁধানো যোনি-বেদীৰ ফাটল ফুঁড়ে বেরিয়ে আসা জলে থৈ-থৈ অন্তঃপুৰ অৰ্থাৎ দেবীকুণ্ড। অনুবাচীতে (আবাড় ৭ই/আগস্ট) দেবী ঋতুমতী হন। জলেৰ ও বন্ধ বদলে লাল হয়। এই জলপানে নানান দুৰাৰোগ ব্যাধিৰ নিৰাময় ঘটে। দেবীৰ রক্তবস্ত্ৰেৰ মাহাত্ম্যও অপৰিসীম। অনুবাচীতে মহাসমারোহে উৎসব হয়। প্ৰদীপেৰ আলোয় দেখে নিতে হয় লাল সালুতে ঢাকা দেবী অৰ্থাৎ যোনিমূৰ্তি। মহিষ বলি হয় উৎসবে। সারা ভাৰত থেকে তীৰ্থযাত্ৰী আসেন, ভিড় জমে পৰ্যটকদেৰও। তবে, ৩ দিন বন্ধ থাকে মন্দিৰ অনুবাচীতে। কামেশ্বৰেৰ সঙ্গে দেবীৰ বিবাহ উৎসব পৌষ বিয়া, বসন্তে বাসন্তী উৎসব ছাড়াও উৎসব আছে নানান কামাখ্যায়। থাকার জন্য *পাণ্ডা/ঠাকুৰদেৰ বাড়ি* ভৰসা কামাখ্যায়। নানান সংস্কার, ভীতি, রোমাঞ্চ ও রহস্যে ঘেঁৰা এই দেবীমন্দিৰ। কিংবদন্তী, পুৰুষৰা ভেড়া বনে কামাখ্যা পাহাড়ে। দেবী রুষ্ঠ হলে বংশলোপেৰ আশঙ্কা। আবার বন্ধ্যা নারী সন্তানসম্ভবা হয় দেবীৰ আশিস পেলে। সকাল ৮-০০টা থেকে সূৰ্যাস্ত খোলা; তবে দুপুৰ ১৩-০০ টায় ঘণ্টা দুয়েকেৰ জন্য বন্ধ হয় মন্দিৰদ্বাৰ। আৰু আছে মন্দিৰেৰ সামনে ছোট জলাশয়—সৌভাগ্যকুণ্ড। তেমনই আছে কামাখ্যা মন্দিৰকে ঘিৰে ছড়িয়ে-ছিটিয়ে দশমহাবিদ্যা, সিদ্ধেশ্বৰ, কামেশ্বৰ ছাড়াও নানান মন্দিৰ।

কামাখ্যা বাস স্ট্যান্ডেৰ বিপৰীতে উমাচল আশ্ৰম তথা

স্বামী শিবানন্দ সরস্বতী মহাৰাজেৰ প্ৰতিষ্ঠিত পূৰ্ব ভাৰতে প্ৰথম যোগবলে রোগ আৰোগ্যেৰ শিবানন্দ যৌগিক হাসপাতালটিও আৰু এক দৰ্শন।

কামাখ্যা মন্দিৰ থেকে ১৬৫ ফুট উচে পাহাড় চূড়ায় ছোট সফেদ বঙা ভুবনেশ্বৰী মন্দিৰ। মন্দিৰ অন্দরে এক গহুৰে রক্ত প্ৰস্তরে দেবী বিৰাজ করছেন। ফুলে ফুলে ঢাকা—বলিও প্ৰথা আছে মন্দিৰে। ভুবনেশ্বৰী চত্বৰ থেকে গুয়াহাটি শহৰেৰ দৃশ্যও সুন্দৰ দৃশ্যমান। তেমনই ব্ৰহ্মপুত্ৰে সূৰ্যাস্তেৰ দৃশ্যও পাহাড় থেকে মনোহৰ। কামাখ্যা বাস স্ট্যান্ড থেকে মিনিট পনেৰোৰ পায়ে হাঁটা পথে ভুবনেশ্বৰী। ট্যাক্সি যাচ্ছে, ৩৫ টাকায় যাতায়াত কামাখ্যা মন্দিৰ থেকে ভুবনেশ্বৰী। কাছাৰি অৰ্থাৎ নেহৰু পাৰ্ক থেকে সকাল ৭টা থেকে ঘণ্টায় ঘণ্টায় সরকারি বাস যাচ্ছে কামাখ্যা মন্দিৰদ্বাৰে। ট্যাক্সিও যাচ্ছে ১২৫ টাকায়। শেয়াৰেও মেলে ট্যাক্সি। আবার পাণ্ডুগামী বাসে পাহাড়ের পাদদেশে নেমে পায়ে হেঁটেও চড়া যায় মন্দিৰে। অটোও যাচ্ছে পাহাড়ে।

অদূৰে রেল উপনগৰী পাণ্ডু। পাণ্ডুৰাজ্যৰ নামে নাম। মন্দিৰও আছে টিলাৰ টঙে পাণ্ডুনাথ। এমনকি বনবাস-কালে পাণ্ডবৰা আসেন—বাসও করেন গণেশেৰ ছদ্মবেশে। মূৰ্তিও হয়েছে গণেশৰূপী পঞ্চপাণ্ডবেৰ। এছাড়াও মূৰ্তি হয়েছে আৰুও নানান। বৈচিত্ৰ্য আছে নৃসিংহ অবতাৰেৰ মূৰ্তিতে। তবে, অযত্ন আৰু অবহেলায় ধ্বংসেৰ কাল গুনেছ পাণ্ডুৰ এই অতীত ভাৰ্হব্য। আৰুও পশ্চিমে ব্ৰহ্মপুত্ৰ নদে সূৰ্যাস্ত মনোৰম।

শহৰ থেকে ১২ কিমি দক্ষিণে সন্ধ্যাচল পাহাড়ে বশিষ্ঠ আশ্ৰম। লোকশ্ৰুতি, মহৰ্ষি বশিষ্ঠদেবেৰ তপোবন ছিল এখানে। পায়েৰ ছাপ রয়েছে, মূৰ্তিও হয়েছে মুনিৰ। আশ্ৰমেৰ পাশ দিয়ে দামাল তিন পাহাড়ী নদী—সন্ধ্যা, ললিতা ও কান্তা বয়ে চলেছে। মিলেছেও এৰা আশ্ৰমেৰ কাছে—মিলিত ধাৰাই বশিষ্ঠ গঙ্গা। এই গঙ্গায় অবগাহন করে বশিষ্ঠ মুনি শাপমুক্ত হন। কাশ্মীৰেৰ গ্ৰামেৰ পথে যেতে পাথৰেৰ হাতিৰ মূৰ্তিতেও বৈচিত্ৰ্য আছে। পেটেৰ গহুৰে ছোট গণেশ। পৰ্যটকেৰে জন্য বিশ্ৰামগৃহও আছে। আশ্ৰম শিৰে শিব-মন্দিৰ। আৰু পথেই পড়ে গুৰদ্বাৰ ও ৰাধাকৃষ্ণ মন্দিৰ।

কাছাৰি স্ট্যান্ড থেকে বাস, কনডাক্টেড ট্ৰায়ে বা অটোয়ে (৮০/১০০ টাকায়) ৫ কিমি দূৰে আৰু জি বড়ুয়া রোডে মনোৰম পাহাড়ী পৰিবেশ অসম ষ্টেট জু-এৰ বন্যজন্তুৰ সংগ্ৰহও পৰ্যটকেৰে মনোৰঞ্জন করে। ৭—১৫-০০ টায় খোলা, শুক্ৰবাৰ বন্ধ। লাগোয়া বটানিকাল গাৰ্ডেন। তেমনই চলতে ফিৰতে দেখে নেওয়া যায় অতীতেৰ আশ্ৰমে ১৯৪৮এ গড়া গুয়াহাটি বিশ্ববিদ্যালয়ে নৃবিদ্যা সংগ্ৰহৰ মিউজিয়ম, দিখালিপুকুৰে ডিম্বেষ্ট লাইব্ৰেৰী, লাইব্ৰেৰিতেই আৰ্ট গ্যালারি, গান্ধী মণ্ডপ, বি বড়ুয়া রাইড স্টেডিয়াম, কমপ্লেক্সে নেহৰু স্টেডিয়াম, কনকলতা ইন্ডোৰ স্টেডিয়াম, আবিতা ইন্ডোৰ স্টেডিয়াম, বি পি চালিহা সুইমিং পুল,

নুরুল আমিন টেনিস কমপ্লেক্স, আমবাড়িতে ১০—২০—০০টাং দিঘালিপুখুরিতে (লেক) বোটিং, নুনমাটি তৈল শোধনাগার, পেট্রোলজাত নানান পণ্য, ১০ কিমি দূরে ডিসপুর রাজধানী শহর, ১২ কিমি দূরের আশ্রম, কাছারির সন্নিকটে নেহরু পার্কে আবালবৃদ্ধবণিতার মনোরঞ্জন নৃত্যরতা থ্রনা, বাঁশ-দড়ির সাঁকো, মুস্তান্ন রেস্তোরাঁ, মজার খেলা—বেলুনের সমুদ্র ছাড়াও মনোরঞ্জন নানান ব্যবস্থা মেলে ৫ টাকার টিকিটে। তেমনই শহরের অন্যতম আকর্ষণ ব্রহ্মপুত্র। সকাল-সাঁঝে পাড় ধরে হাঁটুন। বোটিং বা ফেরিতে জলবিহারের সঙ্গে স্থানীয়দের সমাজ-জীবন দেখুন দ্বীপ থেকে দ্বীপে। সূর্যাস্ত—সেও এক রমণীয় ব্রহ্মপুত্রে।

হাজো: শহর থেকে সরাইয়াঘাট সেতু পেরিয়ে শিডি-মারীচক হয়ে ২৫ কিমি দূরে ব্রহ্মপুত্রের উত্তর পাড়ে মনোরম প্রকৃতির মাঝে ৮ কিমির ব্যবধানে দুই পাশাড়ে হিন্দু-বৌদ্ধ-মুসলিম তীর্থ হাজো। তেমনই গিতল-কাঁসা-তাঁতবন্ধের জন্যও হাজো যথেষ্ট খ্যাত। এমনকি মোগল ঘাঁটিও ছিল মধ্যযুগে হাজোয়। মার্কণ্ডেয় পুরাণে (4AD) মণিকুট, কাপিকা-পুরাণে (11AD) অপরুর্ভম, বৈষ্ণবশাস্ত্রে (15 AD)-ও উল্লিখিত হয়েছে হাজো। তবে, হাজার নামকরণে নানান বিভ্রান্তি—যোগেন্দ্র মুনির আর্তনাদ হত যোগইনাকি হাজো হয়ে থাকবে। হিমতে গৌতমবুদ্ধ এই পুণ্যভূমে (মাধব মন্দির) নির্বাপ লাভ করতে শোকাক্টি শিষ্যের দলের হজ-হজ-জু (সূর্য) গেল আত্মচন্দ্রে। আর্তনাদ থেকেই নাকি হাজো নামের উদ্ভব। আবার ভিন্নমতে ১৫ শতকের রাজা হাজু থেকেই নাকি হাজো নামকরণ।

তেমনই শুনতে মেলে মক্কা য়েতে অক্ষম মুসলিমরা হজ করতে আসতেন ১৩ শতকের তারিখ থেকে আগত পীর গিয়াসুদ্দিন আউলিয়ার তৈরি মসজিদ তথা মাজারে। মক্কা থেকে এক পোয়া মাটি এনে ভিতও গড়া হয় মসজিদের। পবিত্রতায় মক্কার এক-চতুর্থাংশ অর্থাৎ পোয়া মক্কা (poa Mecca) গুরুত্বপূর্ণ পাশাড়ের এই মসজিদ।

নামে কিবা আসে যায়—হাজো-র মূল আকর্ষণ ৯৩টি ধাপ উঠে ৩০০ ফুট উঁচু পাশাড় চুড়োয় ৫-৬ শতকের খ্রীষ্টীয়গ্রীষ্মমাধব সেবারায়। দেবতা বিষ্ণু হাস্যরস দৈত্যকে বধ করে ঠাই নেন এখানে। গর্ভগৃহে পাথরের উঁচু বেদীতে দেবতা—বাঁয়ে বুঢ়ামাধব ও বাসুদেব, ডাইনে জগন্নাথ, দ্বিতীয় মাধব ও গুরুদ, দশভূজা দেবী দুর্গা, পাথরের মঠাকৃতি দৌলগৃহ ছাড়াও নানান কিছু মাধব চত্বরে। আর আছে বসতি ছাড়িয়ে গ্রাম পেরিয়ে একই চত্বরে অর্ধনারীশ্বররূপী লিঙ্গ-মূর্তি কেশবশ্রবণ ও কমলেশ্বর, লিঙ্গরূপী কামেশ্বর, বিশপ্নীতে গণেশ মন্দির হাজোয়। তাই পঞ্চতীর্থও বলে থাকে লোকে হাজোকে। গণেশ পথপাশে হলেও অন্য যেতারা সবাই লিঙ্গের টপে। তবে, প্রকৃতির করাল গ্রাসে অতীত ধ্বংস হতে মন্দির হয়েছে বার বার। হাজার নানান ধ্বংসাবশেষ

দেখে নেওয়া যায় মিনি মিউজিয়মে। সর্বধর্মাবলম্বীদের কাছেই হাজো এক মহান তীর্থ। শহরের মাছখাওয়া স্ট্যান্ড থেকে বাস যাচ্ছে। মুহূর্তে বাস মিললেও শেষ বাস ১৮-৩০টাং হাজো ছেড়ে গুয়াহাটি আসছে। থাকার অতি সাধারণ হোটেল মেলে হাজো বাস স্ট্যান্ডে।

গুয়ালকুচি: হাজো থেকে ২০ কিমি দূরে উত্তর ব্রহ্মপুত্রের পাড়ে গুয়ালকুচি সিন্ধু সেন্টার। ফেরি সার্ভিস ও বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে ২৪ কিমি দূরের গুয়াহাটি থেকে গুয়ালকুচির। পথপাশে ঘরে ঘরে ড্রুবি অর্থাৎ তাঁত—তৈরি হচ্ছে এন্ডি, মুগা, পাটজাত বসনের নানান সস্তার। দোকানও হয়েছে প্রতিটি বাড়িতে। দেখা ও কেনার ব্যবস্থা মেলে।

মদন কামদেব: গুয়াহাটি থেকে NH-51 ধরে ৩৪ কিমি গিয়ে রঙ্গিয়া-তেজপুর পথে বাইহাটা চারিআলি অর্থাৎ চৌরাস্তায় পৌঁছে ডানহাতি ১২ কিমি দক্ষিণ-পূর্বের তোরণ থেকে আরও ৩২ কিমি যেতে শাল ও সেগুনে ছাওয়া এক টিলায় কামরূপের খাজুরাহো—২৪টিরও অধিক মন্দিরের কমপ্লেক্স মদন কামদেব বেড়িয়ে ফেরা যায়। পূর্বে বরনদী, পশ্চিমে NH-31, উত্তরে SH-52 আর দক্ষিণে ব্রহ্মপুত্র নদ। সঠিক জন্ম ইতিহাস না মিললেও ১০ থেকে ১২ শতকে পালরাজাদের কালে ব্রহ্মপুত্র উপত্যকায় অপরূপ প্রকৃতির মাঝে ৫ ভাগে গড়ে উঠেছে মদন কামদেব বা পঞ্চরথ। ভাস্কর্যমণ্ডিত মন্দিরে নাগারা শৈলীতে গড়া একশিলার নানান মূর্তি ব্যবহৃত হয়েছে। শৃঙ্গার মূর্তিও রূপ পেয়েছে এর অলঙ্করণে। উমা ও মহেশ্বর (শিব) উপাস্য দেবতা। এছাড়াও দেবতা রয়েছে ছয় মাথার ভৈরব, চতুর্ভুজ শিব, বিকট দর্পনের রাক্ষস, নরনারী ছাড়াও নানান। মদন-রতির মন্দিরে আজও পূজা পাচ্ছেন দেবতা। পূর্ণিমা রাতে চন্দ্রালোকে মদন কামদেব স্বর্গের অমরাবতী সম। অন্যদিক আর অবলোয় লুপ্ত হয়েছে নানান কিছু। মন্দিরগুলি বিধ্বস্ত হলেও ধ্বংসস্থল আজও অবগুণ্ঠিত অতীত রোমন্থন করছে। নতুন করে Assam Bio Research Centre বসেছে পাঁহাড়ে। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই মদন কামদেবে। উচিতও হবে গুয়াহাটি থেকে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা। মুহূর্তে বাস যাচ্ছে গুয়াহাটি থেকে বাইহাটা চারিআলি। মিনিবাসও চলে এপথে। রঙ্গিয়া ও তেজপুর বাসও যাচ্ছে বাইহাটা চারিআলি হয়ে।

চান্দডুবি: গুয়াহাটি থেকে গোয়ালপাড়ার পথে ৬৪ কিমি যেতে চান্দডুবি লেক। এর গভীরতা কম হেতু লেক বা হ্রদ না বলে সেগুন বা উপহ্রদ বলা উচিত হবে। নৌকাবিহার ও মাছ ধরার ব্যবস্থা আছে লেকে। প্রাকৃতিক শোভা মনোরম। লেকের পাড়ে অসম ট্যুরিজমের Tourist L-এ DAB ১৭০ টাকায় থাকা। আর আছে শিকনিক কট্টেজ চান্দডুবিতে। ৮০ কিমি দূরে ভূটান সীমান্তে দরং-এর অবস্থান। ভূটানিজ জিনিসপত্র কিনতে মেলে।

মানস



অসম ভ্রমণে বড়পেটা দিয়ে অসম দৰ্শন শুরু করা যেতে পারে। নিউ বঙ্গাইগাঁও থেকে ৪৫ কিমি পূর্বে বড়পেটা রোড। হাওড়া ছেড়ে যাওয়া কামরূপ এল্ল পরদিন ১৩-০০টায় বড়পেটায় যাচ্ছে। তিরুভনন্তপুরম/কোচি/ব্যাঙ্গালোর-গুয়াহাটি এল্ল ৯-০২এ বড়পেটা পৌছায়। ত্রিসাপ্তাহিক সরাইঘাট এক্সপ্রেস স্টপ নেই বরপেটায়। আয়ুধ-অসম ৮-১০, ব্রহ্মপুত্র এল্ল ১০-৩৫, দাদার-গুয়াহাটি এল্ল ৯-২৮, নিউ বঙ্গাইগাঁও-গুয়াহাটি প্যাসেঞ্জার ৬-০৩এ, আলিপুরদুয়ার-রঙ্গিয়া প্যাসেঞ্জার ১২-০০টায় বরপেটা ছেড়ে যাচ্ছে। বড়পেটা রোড থেকে NH-31 ধরে গুয়াহাটির দূরত্ব ১৭৬, শিলিগুড়ি ৩৪৬ কিমি। বাস নিয়মিত যাচ্ছে গুয়াহাটি থেকে বড়পেটা রোডে। ৪২ ঘণ্টার পথ। নিকটতম বিমানবন্দর গুয়াহাটিতে।

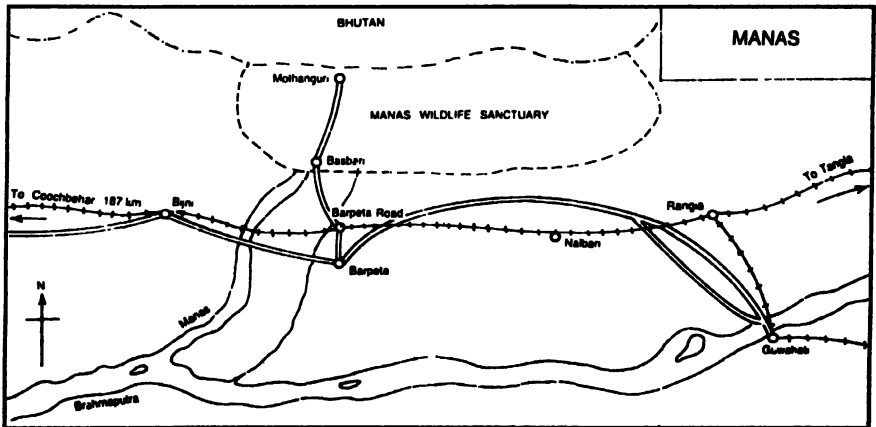
বহুবিধ আকর্ষণ রয়েছে বড়পেটায়। বৈষ্ণব মঠের জন্যও খ্যাতি আছে এর। আচার্য মাধবদেবের মূর্তি রয়েছে মঠে। মঠ ও কীর্তনঘর দর্শনীয়। সাব-ডিভিশন্যাল টাউন বড়পেটা হয়েই সড়ক গিয়েছে মাথানগুড়ি অর্থাৎ মানস বন্যজন্তু সংগ্রহশালার। দূরত্ব ৪০ কিমি। নিয়মিত যানের অভাব। জিপ ও ট্যাক্সি মেলে শ'পাঁচেক টাকায় বড়পেটা থেকে মানস যাতায়াতে। আর যাত্রী বাস যাচ্ছে বড়পেটা থেকে মানসমুখী ২০ কিমি দূরের বাঁশবাড়িতে। বাঁশবাড়ি থেকে মানসের দূরত্ব আরও ২০ কিমি। প্রতি শুক্রবার অসম পর্যটন ২২৫ টাকায় মানস আসছে গুয়াহাটি থেকে। উচিতও হবে প্যাকেজ ট্রারের যাত্রী হয়ে মানস দেখে নেওয়া। ব্লু হিলস ট্রাভেলস-ও প্যাকেজ ট্রারে যাচ্ছে জোয়াই ও শিলিগুড়ির সাথে জুড়ে মানস দেখাতে। তবে, গত কিছুকাল পরিস্থিতি জনিত কারণে ট্রারটি বিয়তিত।

গুয়াহাটির উত্তর-পশ্চিমে ভূটান সীমান্তে হিমালয়ের পাদদেশে মানস নদীর পাড়ে ৭০ মি উচুতে গড়ে উঠেছে

বিধের সুন্দরতম স্যান্ডচুয়ারি মানস অভয়ারণ্য। ১৯২৮এ ঘোষিত রিজার্ভ ফরেস্ট মানস ১৯৭৩এ রূপান্তরিত হয় ব্যাঘ্র প্রকল্পে। অর্থাৎ ভারত রাষ্ট্রের ১৮টি ব্যাঘ্র প্রকল্পের মধ্যে মানস ৯ম। আয়তনে ৫৪০ বর্গ কিমি। মানস ও তার শাখা নদী বেকী ও হাকুমারীসীমান্ত টেনেছে ভারত ও ভূটানের মাঝে, আর পশ্চিমে সংকোশ, পূর্বে ধানসিরি নদী। বেড়াবার মরসুম নভেম্বর থেকে এপ্রিল হলেও, জানুয়ারি থেকে মার্চ মনোরম। মে থেকে অক্টোবরের বর্ষায় বন্যজন্তুর দর্শন দুর্লভ হলেও প্রাকৃতিক শোভার আকর্ষণে বছরের যে-কোনো সময় যাওয়া চলে মানস। ফেব্রুয়ারি-মার্চে মৎস্যশিকারীদেরও স্বর্ণ মানস। আবহাওয়া কাজিরাসারই মতো। তবে, গত কিছুকাল উপক্রত এলাকা ঘোষিত হওয়ায় মানসের দ্বার পর্যটকদের কাছে রুদ্ধ।

গণ্ডার, হাতি, বন্যমহিষ, গোভেন্দ লাঙ্গুর (লম্বা লেজ-ওয়ালা বানর), নানান প্রজাতির হরিণ, শম্বর, শুয়োর, বাইসন, ক্লাউডেড লেপার্ড, হিসপিড হেয়ার, পিগমি হগ ছাড়াও ১৪০ বাঘের বাস শিমুল, খয়ের, সিদা, বহেরা, কাঞ্চনে ছাওয়া মানস বনভূমে। শীতের পক্ষীকুলও মানসের আর এক সম্পদ। নীড় বাঁধে নদীর পাড়ে গাছের শাখে শতাধিক প্রজাতির নানান বর্ণের পাখ-পাখালি। সকালে চিত্র-বিচিত্র ধনেশ পাখিরা ভূটানে উড়ে যায় খাবারের খোঁজে। দিনান্তে কুলায় ফেরে দল বেঁধে এরা। খুবই তৃপ্তি-দায়ক এই আসা-যাওয়ার দৃশ্য। তেমনই আছে প্রজাপতি, রেপটাইল ছাড়াও নানান বন্যপ্রাণী পর্যটক প্রিয় মানসে। আবার নদীর জলে বোটিং ও মাছ ধরার ব্যবস্থাও আছে।

হাতির পিঠে চেপে বন্যজন্তু দেখার ব্যবস্থা আছে মানসে। সকাল ৫-৩০ ও ১৫-০০টায় হাতি যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে বনবিহারে। যাত্রী প্রতি ভাড়া ৪০। দর্শনার সাথে ক্যামেরারও চার্জ লাগে মান হারে। ছাত্রদের রিবেট মেলে।





খাকার জন্য বিদ্যুৎহীন ২টি *Forest Bungalow* আছে পার্ক-অন্বেষণে মাখানওড়িতে। টিলার উত্তর মনোরম পরিবেশে আপার বাংলায় আপার ফ্লোর DAB ৮০ লোয়ার ফ্লোর DAB ৮০; আর লোয়ার বাংলায় আপার ফ্লোর DAB ৬০; কটেজ কেবল তক্তপাশে জনা প্রতি ১৫। তাঁতুও ভাড়া মসে। খাবার নিজ ব্যবস্থায়। আর হচ্ছে মাখানওড়ির পথে ২০ কিমি আগে বাঁশবাড়িতে ATDC-র *Tourist L* প্রয়োজনে Field Director, Tiger Project, Manas, P O-Barpeta Rd, Kamrup, Assam, ৩ 153-কে লিখুন। আবার শ্রমণবন্ধু Tapan Roy Chowdhury, Barpeta Road-781315-কেও যোগাযোগ করা যেতে পারে।

আর বড়পেটা রোডে আছে দুই ঘরের *Tourist Information Office-cum-Tourist Camp*, ৩ 49, বোড ১০০, DAB ১৭০। গাড়ির ব্যবস্থাও মেলে টুরিস্ট অফিস থেকে। আর আছে *R R R, Irrigation RH; Forest IB, PWD IB, Doh H, H Casino, H Chandraprabha* ছাড়াও সাধারণ হোটেল-বড়পেটা। এদের কাছে *S ৪৫-৮৫ D ৮৫-১৭৫* টাকায় মেলে।

নওগাঁ



১৪-১৫য় ব্রহ্মপুত্র মেল, ১৩-০০টায় গুয়াহাটী-লামডিং এক্স, ১৯-০০টায় গুয়াহাটী-তিনসুকিয়া ইন্টারসিটি এক্স, ৬-৩০, ১০-৩০, ১৭-৩০এ প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ব্রডগেজে গুয়াহাটী থেকে নওগাঁয়। *ASTC* ও নানান প্রাইভেট ডিলাক্স বাস যাচ্ছে দিন-রাত্রি জুড়ে গুয়াহাটী থেকে নওগাঁ হয়ে তেজপুর, ডিমাপুর, কাজিরাঙ্গা, জোড়হাট, শিবসাগর, তিনসুকিয়া, ডিব্রুগড় ছাড়াও দূর-দূরান্তেব নানান দিকে। শেয়ার ট্যাক্সি, মিনি বাসও চলে গুয়াহাটী-নওগাঁ-এর মাঝে। দিনে একমাত্র *ASTC*-র বাস সকাল ১০-০০টায় নওগাঁ ছেড়ে ৮ ঘটায় হাফলঙ যাচ্ছে। আর *Net Work*-এর নাইট সুপার গুয়াহাটী থেকে নওগাঁ হয়ে হাফলঙ যাচ্ছে ১০ ঘটায়। জাতীয় সড়ক এ টি রোড ধরে দূরত্ব ১২০ কিমি।



খাকার জন্য *CH, DB* আছে; অব: *D.C. Nowgang*। আর আছে বাস স্ট্যান্ড থেকে বেরিয়ে বামহাতি *H Bidisha*, *A TRd*, *DAB ১৭৫-২৫০*; বাস থেকে সোজা *H Relax*, *J M Rd*, *D ৮০ ৯০ ১০০ ১২৫*; *H Bahagi*, *Barabazar*, ৩ 22188, *SAB ৮৫ DCB ১২৫ DAB ২০০*; বিপরীতে গলিপথে *Chowdhury L D ৮০*; *Neelachal L; Boras Inn*, near *D C Office*, *SAB ১৫০ DAB ২২৫-৩২৫ A/c S ৩২৫ D ৪২৫*; *Amber, Devagiri, H Nataraj, H Bharali, Shree Rajasthun H* ছাড়াও নানান নওগাঁয়। এদের কাছে *S ৪৫-৮৫ D ৮০-১৫০* টাকায় মেলে। *অসম টুরিজমের টুরিস্ট লজ*ও আছে নওগাঁয়, *S ১০০ D ১৭০*। আর হয়েছে বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে ট্যাক্সি স্ট্যান্ডে *Rest House* নওগাঁয়।

নিজস্ব পর্যটন আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও নওগাঁর ১১ কিমি দূরে বরদুয়ার বৈষ্ণব আচার্য শঙ্করদেবের জন্ম। সেই স্মৃতিতে বৈষ্ণবতীর্থ—মন্দিরও নামঘর আছে। নওগাঁ থেকে ৪৮ কিমি দূরে জাতীয় সড়ক এ টি রোডে পটটি কপ্ৰিয় ডবকার অবস্থান। স্থানীয় খেদা প্রথা বন্য হাতি ধরা দেখা ও ইতিহাসের নানান ধ্বংসাবশেষের জন্য ডবকার প্রশস্তি।

কাজিরাঙ্গা

নওগাঁ থেকে ৯৩ কিমি দূরে *NH-37*এ কাজিরাঙ্গা জাতীয় উদ্যান। জোড়হাট ৯০, গুয়াহাটী ২১৭, কলকাতা থেকে ১৪২৭ কিমি দূরে কাজিরাঙ্গা ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডুয়ারি। কলকাতা যাত্রীদের সরাসরি যাত্রায় ব্রহ্মপুত্র পেরিয়ে গুয়াহাটী পৌঁছে বাসে ৪½ ঘটায় কাজিরাঙ্গা চলায় সুবিধা। তেমনই শিবসাগর বা জোড়হাট থেকেও ২ ঘটায় বাস আসছে কাজিরাঙ্গায়।



আবার গুয়াহাটী-লামডিং-ডিমাপুর ব্রডগেজ রেলের দিল্লী থেকে আসা 4056 ব্রহ্মপুত্র মেল ও ত্রিসাপ্তাহিক রাজধানী এক্স গুয়াহাটী ছেড়ে লামডিং পৌঁছে ডিমাপুর হয়ে ডিব্রুগড় যাচ্ছে। হাওড়া থেকে কামরূপ, ত্রিসাপ্তাহিক সরাইহাট, তিরুভনন্তপুরম/ কোচি/ ব্যাঙ্গালোর-গুয়াহাটী এক্স গুয়াহাটী পৌঁছে ব্রহ্মপুত্র মেল ১৪-১৫, রাজধানী এক্স ১৮-০০, ইন্টারসিটি এক্স ১৯-০০টায় যথাক্রমে ২০-০০/২২-৪০/০-১০এ ডিমাপুর পৌঁছে ব্রডগেজে লামডিং-তিনসুকিয়া প্যাসেঞ্জারে ৩ ঘটায় ৭০ কিমি দূরের ফারকেটিং পৌঁছে বাসে চলা যেতে পারে ৭২ কিমি দূরের সড়ক দূরত্বের কাজিরাঙ্গায়। তেমনই গুয়াহাটী-লামডিং রেলের চাপারমুখ নেমেও চাপারমুখ-শিলঘাট শাখা রেলের ৭৩ কিমি দূরের বাকলাবাঙ্গায় পৌঁছেও ৪৫ কিমি বাসে চলা যেতে পারে কাজিরাঙ্গায়। নিকটতম রেল স্টেশনও বাকলাবাঙ্গা। তবে গড় কিছুকাল সার্ভিস স্থগিত।



ট্রেন বদলের বন্ধি থেকে অব্যাহতি পেতে বাসে চলাই উচিত হবে গুয়াহাটী বা জোড়হাট থেকে কাজিরাঙ্গায়। সরকারি ও বেসরকারি নানান বাস যাচ্ছে দিন ও রাতের সার্ভিসে গুয়াহাটী, নওগাঁ, তেজপুর থেকে *NH-37* ধরে জোড়হাট, শিবসাগর, তিনসুকিয়া, ডিব্রুগড়—কাজিরাঙ্গা অর্থাৎ জাতীয় সড়ক সংযোগকারী কোহরা হয়ে। এক্স, সুপার এক্স বাসও চলে এপথে। যাতায়াতে এক্স বাসে সময় ও অর্থ দুইয়েতেই সাশ্রয় মেলে।

নিকটতম বিমানবন্দর জোড়হাট ৯০, গুয়াহাটী ২১৭ কিমি দূরে। *IAC* সংযোগ গড়েছে কলকাতা তথা পূর্ব ভারতের নানান শহরের সঙ্গে গুয়াহাটী ও জোড়হাটের। প্রাইভেট বিমানও সার্ভিস গড়েছে গুয়াহাটী ও জোড়হাটের সারা পূর্ব ভারতের সঙ্গে। ট্যাক্সি, টুরিস্ট ট্যাক্সিও মেলে গুয়াহাটী, জোড়হাট ও গেলঘাট থেকে কাজিরাঙ্গায়। আর ফেরার পক্ষে *Tourist Officer*-এর সহযোগিতা নিন কাজিরাঙ্গায়।

আবার গুয়াহাটী থেকে রাজা পর্যটন নভেম্বর থেকে এপ্রিলের প্রতি সোম, বুধ-শনি, শনি ও রবিবার এক রাতের অবস্থান আহার ও বিহার সহ ৪৭০ টাকায় (শিশু ৩৬৫) প্যাকেজ ট্যুরে কাজিরাঙ্গা দেখিয়ে ফেরে। জোড়হাট থেকে প্রতি রবিবার, তেজপুর থেকে প্রতি বুধবার প্যাকেজ ট্যুরের ব্যবস্থাও করে অসম পর্যটন।



কোহরা বাস স্ট্যান্ড থেকে পায়ে হাঁটা পথে ১ কিমিরও কম দূরত্বে কোহরা নদীর পাড়ে টিলার চালে সুন্দর পরিবেশে গড়ে উঠেছে রাজ্য পর্যটনের *Tourist L*। নিচ দিয়ে বিস্তীর্ণ ভূভাগ জুড়ে চা-বাগিচা, অবকাশ যাপনের মনোরম পরিবেশ। টিলার উটে *Bonani L*; পাশ্চাত্য

জোড়হাট



ফারকেটিং-মরিয়ানী শাখা রেল জোড়হাট স্টেশন। প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে। LAC-র বিমান ১৫ দিন ১১-৪৫এ কলকাতা ছেড়ে ১৩-০৫এ জোড়হাট পৌঁছে ডিমাপুর যাচ্ছে; ২ দিন ৬-১৫এ ছেড়ে ইক্ষল হয়ে ৮-২০এ, ৭ দিন ৬-১৫এ ছেড়ে শিলচর হয়ে ৮-২৫এ জোড়হাট যাচ্ছে। কলকাতায় ফেরে ১৩-৩৫/৮-৫৫য়। প্রাইভেট বিমানও যাচ্ছে জোড়হাট থেকে পূর্ব ভারতের নানান দিকে। তবে, কাজিরাঙ্গা দেখে বাসেই চলুন NH-37 থরে ৯০ কিমি দূরের জোড়হাটে।

অহোম রাজাদের অতীতের রাজধানী জোড়হাটের সাংস্কৃতিক ঐতিহ্য উল্লেখ্য। আর আছে বুড়িগোহানির মন্দির, ব্রিটিশের গড়া নানান স্মারক, জেলখানার সামনে স্বাধীনতা সংগ্রামীদের ফাঁসির মঞ্চ ছাড়াও নানান কিছু। তেমনই জলবায়ুর গুণে চায়ের শহর জোড়হাট। চা নিয়ে গবেষণা হচ্ছে ৫ কিমি দূরের টিমানারাতে।

আর হয়েছে ব্রহ্মপুত্র নদস্তু ৭৭৬ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত মাঝালি অর্থাৎ জলের মাঝে চর তথা বিশ্বের বৃহত্তম দ্বীপ মাজুলী। অতীতে আয়তন ছিল ২৮২১৬৫ একর। নানান মঠ, নানান আখড়া—অন্যতম বৈষ্ণবতীর্থ মাজুলী। শঙ্করদেব ও মাধবদেবের মিলনও ঘটে এখানে। ব্রহ্মপুত্রের জলাচ্ছাদে আয়তনের সাথে সত্র কমে কমে ২২-এ দাঁড়িয়েছে। কমলাবাড়ি মাজুলীর প্রধান কেন্দ্র। জোড়হাট থেকে বাস বা ট্যাক্সিতে নিরামতিঘাট পৌঁছে উভতি বা লঞ্চে পারাপা। গাড়িও নদী পেরোয় ফেরী বাটে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে কমলাবাড়ি ঘাট থেকে গড়মুরে সার্কিট হাউস, PWD IB ও কমলাবাড়ি স্ট্রের গেস্ট হাউসে। সার্কিট হাউসের বুকিং: SDO-Civil, Majuli, Assam, © (03775)425 থেকে। দ্বীপের উত্তরে লখিমপুর, উত্তর-পশ্চিমে শোণিতপুর, দক্ষিণে গোলঘাট/জোড়হাট, পূর্বে শিবসাগর। বিহু, রাসযাত্রা, জন্মাষ্টমী, বিষ্ণুপূজার উৎসবে মেতে ওঠে মাজুলী দ্বীপ। নানানধর্মী সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানও দেখাতে মেলে উৎসবে।



থাকার জন্য Jorhat-785001, STD 0376-এ—CH, DB, PWD RH ছাড়াও Tourist Information Office-cum Tourist L-এ SAB ১০০ DAB ১৭০ ডরি ৩০/৪০; *H Paradise, Solicitor's Rd, © 321521, ASRI, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/C D ৬০০; H Eastern, Gar Ali-1, SAB ২০০ DAB ২৫০-৩৫০ A/C S ৪০০ D ৬০০; H Solace, Phikan Rd, SAB ১৫০ DAB ২৫০; Baruna Travellers L, ATRd, SAB ১৫০ DAB ২৫০। আর আছে সাধারণ সাজে Broadway, S ৪৫-৮০, D ১০০-১৭৫; H Pabitra, S ৪৫-৮৫ D ১০০-১৭৫; Bedi, H Dilip, Solicitor's Rd-1, © 321610, S ১৫০ D ২২৫ A/C S ৩০০ D ৪৫০; H Neera, H Madras, H Majuli, ছাড়াও নানান হোটেলে।

জোড়হাট থেকে ৫০ কিমি দূরে গোলাঘাট সাব-ডিভিশনাল টাউন। হোটেলও আছে গোলাঘাটের জেল রোডে—H Madhuban, S ৬০-১০০ D ১২৫-১৭৫ T ২০০। ট্রেন ও

বাস দুই-ই আছে। তেজপুরের বাস মেলে গোলাঘাট থেকে। আবার গোলাঘাট থেকে NH-39 থরে ৭২ কিমি যেতে নাগাল্যান্ড রাজ্যের ডিমাপুর। পথে পড়ে গরম জলের প্রবণ—গরমপানি। আর ডিমাপুর থেকে পথ গিয়েছে নাগাল্যান্ড রাজ্যের রাজধানী শহর কোহিমায়। দূরত্ব ৭৪ কিমি। পথ গিয়েছে মণিপুরেও ডিমাপুর থেকে কোহিমা হয়ে।

শিবসাগর

অতীতের অহোম রাজাদের রাজধানী শহর—নাম ছিল তার রঙ্গপুর। জোড়হাট থেকে দূরত্ব ৫৬ কিমি। নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে। আর রেলে শুয়াহাটি-লামডিং-তিনসুকিয়া ব্রডগেজ রেলের শিমালগুড়ি থেকে ১৬ কিমি দূরে শিবসাগর। ট্রেন যাচ্ছে ব্রহ্মপুত্র মেল, শুয়াহাটি-তিনসুকিয়া ইস্টারসিটি এক্স, লামডিং-তিনসুকিয়া প্যাসেঞ্জার ব্রডগেজে, ডিমাপুর-ফারকেটিং-শিমালগুড়ি হয়ে তিনসুকিয়ায়। আর শিমালগুড়ি থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেন, বাস, অটো, ট্যাক্সি যাচ্ছে শিবসাগর। শিবসাগর দেখার জন্য একটা বেলা যথেষ্ট। ৩/৪ ঘণ্টার চুক্তিতে রিকশায় বেড়িয়ে নিন শিবসাগর। বিকালে চলুন ডিব্রুগড় বা শুয়াহাটি। বা পরদিন সকালের বাসে কাজিরাঙ্গা বা তেজপুরও চলা যেতে পারে।

শিব আর সাগর এই দুয়ে মিলে শিবসাগর। ১২৯ একর ব্যাপ্ত দুইশত বছরেরও অধিক প্রাচীন এই শিবসাগর অর্থাৎ জলাশয়। আকারে সাগরেরই মতো। তারই পাড়ে শিবডোল অর্থাৎ শিবমন্দির। শিবসিংহর রানী মাদামবুকা ১৭৩৪ খ্রিস্টাব্দে তৈরি করান। সম্ভবত ভারতীয় শিবমন্দিরগুলির মধ্যে এটিই উচ্চতম (১০৪ ফুট)। শিবরাত্রিতে দূর-দূরান্ত থেকে তীর্থযাত্রীরা আসেন। এই দুইয়েরই বস্টা অহোমরাজ শিবসিংহ। এরই ডাইনে-বাঁয়ে বিকুডোল ও দেবীডোল অর্থাৎ দুর্গা মন্দির।

দুই সাগরের মাঝপথে দিখৌ নদী, পেরুতেই ডিঘাকার দ্বিতল রঙঘর। এটি অহোমরাজ প্রমত্ত সিংহ ১৭৪৪এ তৈরি করান। এই রঙঘর প্যাভিলিয়নে বসে হাতির যুদ্ধ ও নানান জন্তুর খেলা অর্থাৎ রঙ্গ দেখতেন রাজা। আজ জাঁকজমকপূর্ণ বিহু উৎসবের আসর বসে এখানে।

শিবসাগর থেকে ৫ কিমি দূরে ৩১৮ একর জমি নিয়ে জল টলটল জয়সাগর। মাতৃস্মৃতিতে ১৬৯৭ খ্রিস্টাব্দে অহোম রাজ রুদ্র সিংহর হাতে ৪৫ দিনে তৈরি হয় জয়সাগর। আকারে শিবসাগরের থেকেও বড়। এরই পাড়ে বসেছে কলেজ, মৎস্য গবেষণা কেন্দ্র ও মন্দিররাজি—জয়ডোল ও শিবডোল। আর আছে বাঙালি স্থপতি ঘনশ্যামের ডেরা বা নিত গৌসাই। জয়সাগর থেকে ১৬ কিমি দক্ষিণে গৌরীসাগর। ১৫০ একর ব্যাপ্ত গৌরীসাগর খনন করান শিবসিংহর প্রথমত্বী রানী ফুলেশ্বরী ১৭২৩এ। মন্দিরও হয়েছে দেবী দুর্গার গৌরী-সাগরের পাড়ে।

শিবসাগর থেকে ১৩ কিমি পূর্বে গড়গাঁওয়ে অতীতের ক্যারোল ঘর অর্থাৎ সিরামিডখানী রাজপ্রাসাদটিও দেখে নেওয়া

যেতে পারে বাসে গিয়ে। অতীতের কার্যকর্য বিনষ্ট হলেও ভাষ্কর্য সুন্দর। ১৫৪০ খ্রিস্টাব্দে স্বর্গদেব চাও চুকেনমুঙে কাঠ আর পাথরে গড়েন ৭ তলার এই প্রাসাদ। এর সিংহ-দরজাটি প্রমত্ত সিংহের তৈরি। আর বর্তমান রূপ পায় ১৭৫২য় রাজেশ্বরের সিংহের হাতে। তবে, ১৬৯৯ খ্রিস্টাব্দে অহোমরাজ রুদ্র সিংহ স্থানান্তর ঘটান রাজধানীর—তৈরি করেন নতুন করে কারেস্ক ঘর, রঙঘরের অদূরে পথের বিপরীতে। তলাতল ঘর নামেও সমধিক খ্যাত এটি। এরও ৪টি তলা ওপরে, ৩টি তলা মাটির তলে। মাটির তলে ছিল সেনানিবাস, রানী মহল—এমনকি ২টি সূড়ঙ্গপথও ছিল সেকালে। একটিতে গড়গাঁওয়ের কারেস্ক ঘর, দ্বিতীয়টিতে দিখৌ নদীর সঙ্গে সংযোগ ঘটে। তবে আজ সূড়ঙ্গের মুখ বন্ধ।

শিবসাগরের মিকির উপজাতির জীবনযাত্রাও পর্যটকদের কাছে বৈচিত্র্যের স্বাদ আনে। ২৮ কিমি দূরে প্রথম অহোমরাজ সুখাফার (১২২৯) রাজধানী শহরটিও বাসে গিয়ে বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। ২২ কিমি দূরে আজান পীর দরগা ছাড়াও শিবসাগরকে ঘিরে ছড়িয়ে রয়েছে নানান অতীত। বাসে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। তেমনই চাও তেলের জন্যও আধুনিকতা পেয়েছে জেলা-সদর শিবসাগর। ২২ কিমি দূরে আজান পীর দরগা শরীফ ভক্ত-জনেদের সমাগমে মুখর হয়ে ওঠে উরস উৎসবে আজও।



শিবসাগরের পাড়ে অসম ট্যুরিজমের *Tourist Lodge*, SAB ১২৫ DAB ২৩০, অব্: Asstt Tourist Officer, Sibhsagar, © 2994. *CH, DB*ও আছে; অব্: SDO. আর আছে—*H Brahmaputra*, B G Rd, SAB ১৫০ DAB ১৭৫-২৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; *Kareng H*, Dolomukh, RIB_১, S ৬০-১২৫ D ১০০-১৭৫; *H Piccolo*, Boarding Rd, SCB ৪৫ SAB ৬০-৮৫ DCB ৮০ DAB ১২৫-২০০; *H Brindavan*, A T Rd-785640, © 2974, SAB ২৫০ DAB ৪৫০ A/c D ৬০০ সুইট ৮৫০; *H Priya*, *Amaravati* ছাড়াও নানান হোটেল।

ডিব্রুগড়

লখিমপুর জেলার সদর চা-বাগিচায় ঘেরা, সবুজে ছাওয়া, বাঙালি অধ্যুষিত ডিব্রুগড়। বাণিজ্যিক শহর রূপেও খ্যাতি আছে এর। পর্যটক আকর্ষণ উদ্দেশ্য না হলেও Assam Medical College-কে ঘিরে পরিকল্পিত শহর গড়ে উঠেছে বারবাড়িতে। আর আছে ব্রহ্মপুত্রের বিধবংসী বন্যা থেকে শহর বাঁচাতে বিপুল অর্থ ব্যয়ে তৈরি বাঁধ, পরিবেশ সুন্দর।



দিল্লী-ডিব্রুগড় ব্রহ্মপুত্র এন্ড, ২ ৩ ৬ সিন ডিব্রুগড় রাজধানী এন্ড সরাসরি ডিব্রুগড় যাচ্ছে নবতম ব্রডগেজে গুয়াহাটি-লামডিং-ডিমাপুর-তিনসুকিয়া হয়ে। গুয়াহাটি-তিনসুকিয়া ইন্টারসিটি এন্ড, লামডিং-তিনসুকিয়া প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে এপথে। গুয়াহাটি থেকে ১৭-০০টায় ব্রহ্মপুত্র এন্ড, ২ ৪ ৭ সিন ১৫-০০টায় রাজধানী এন্ড ডিব্রুগড় থেকে; ১৭-৩০এ ইন্টারসিটি এন্ড তিনসুকিয়া থেকে। প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ১৭-২০এ তিনসুকিয়া ছেড়ে ২ ঘটরা ডিব্রুগড়ে। বাসও যাচ্ছে

নানান গুয়াহাটি থেকে ৫৫৮ কিমি দূরে ডিব্রুগড়ে। এছাড়াও বাস ও ট্রেন আছে রাজ্যের নানান শহর থেকেও ডিব্রুগড়ে। আর জোড়হাট ১৩৬, শিবসাগর ৮০ কিমি থেকেও নিয়মিত বাস যাচ্ছে ডিব্রুগড়ে।



IAC-র বিমান ১ ৩ ৫ সিন ১১-৩০এ কলকাতা ছেড়ে সরাসরি ডিব্রুগড় যাচ্ছে ১৩-০০টায়; ফেরে ১৩-৪০এ ডিব্রুগড় ছেড়ে ১৫-১০এ কলকাতায়। Sahara India Airlines-ও সার্ভিস গড়েছে দিল্লী-গুয়াহাটি-ডিব্রুগড়-গুয়াহাটি-দিল্লীর মাঝে। আর Skyline NEPC-র উড়ান চলছে ২ ৪ ৬ ৭ সিন ডিব্রুগড়-কলকাতা, ১ ৪ ৬ সিন গুয়াহাটি-ডিব্রুগড়ের মাঝে।



খাকারও নানান হোটেল Dibrugarh-786001, STD 0373এ। *CH, DB*-ও আছে; অব্: D C, Dibrugarh. আর New Market-এ আছে—*H Monalisa*, S ১৭৫ D ২৫০-৩৫০ সুইট ৬০০; *Sunrise H*, S ৪০-৮৫ D ৮০-১২৫; *H Ellora*, S ৪৫-৮৫ D ১০০-১৫০; *H Manas*, S ৪০-৬০ D ৮০-১২৫; *H East End*, New Market, © 220098, A12R_১, SAB ১৫০-২৭৫ DAB ২৫০-৪২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০। আর আছে *Goswami GH*, Chowkidinghee, S ৮৫-১২৫ D ১৫০-২৭৫; *H Nataraj*, H S Rd, © 21275, A17R_১, S ১৬৫-২৭৫ D ২৫০-৩৫০ A/c S ৩৫০ D ৬০০ সুইট ১০০০; *হিন্দুস্থান, অপর, রিভার ভিউ, নিউ ফুসুম, আশা, ডায়মন্ড* ছাড়াও নানান হোটেল ডিব্রুগড়ে।

ডিগবয়

তেলের শহর ডিগবয়। ১৮৮৯ খ্রিস্টাব্দে অসম অয়েল কোম্পানি প্রথম শোধানাগারটি গড়ে ডিগবয়ে। আরও পরে বার্মা অয়েল কোম্পানির সঙ্গে মিলে যেতে অতি আধুনিক তৈল শোধানাগারের রূপ নেয় ডিগবয়। *ক্লড অয়েল* শোধান হচ্ছে। তেমনই হচ্ছে ৩৪ ধর্মী নানান *বাই-প্রোডাক্ট* তেল থেকে। মোম থেকে জাত নানান পুতুলও হচ্ছে ডিগবয়ে। শোধানাগারকে নিয়েই শহর। ব্রিটিশের গড়া শহরটি পটে আঁকা ছবির মতো। শহরাতে আরণ্যক পরিবেশ। বন্য হাতির মাটিয়ে বেড়ায়। একদা এক হাতির চলার কালে পায়ের চাপে তেলের প্রথম সন্ধান মেলে ডিগবয়ে। এমনকি বাঘ, গুণ্ডার দর্শনও অস্বাভাবিক নয় শহরান্তর বনাঞ্চলে। ডিগবয়ের ৩২ কিমি দূরে নাহারকাটিয়াতে তৈলখনি আবিষ্কৃত হয়েছে। ১৫ কিমি দূরে আর এক তেলের শহর দুর্লিয়ায়ান। আর ভারত ও বার্মার মাঝে দেওয়াল হয়ে দাঁড়িয়ে থাকা পাহাড়গুলোর পাদদেশে অসম-অরুণাচল সীমান্তে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ছোট কোলিয়ারি লেডা ও মার্গারিটা। ডিগবয়ে হোটেলের অভাব। সাধারণ সাজে—*Niraja* ও *Golden H* আছে। অসম অয়েল কোম্পানির *গেস্ট হাউস* পর্যটকদেরও ঘর মেলে অগ্রিম অনুমতিতে।

আর, ডিব্রুগড় ও ডিগবয়ের মাঝে তিনসুকিয়া। তিনসুকিয়া থেকেও বেড়িয়ে নেওয়া যায়—ডিব্রুগড় ৪৭, ডিগবয় ৩৩, অরুণাচলের তেজু ১০৮, পরগুন্ডাম কুণ্ড ১২৯ কিমি। ডিব্রুগড়-লেডো ব্রডগেজ রেল ৭-০০টায় ডিব্রুগড়

ছেড়ে নিউ তিনসুকিয়া ৯-০০, ডিগবয় ১০-৫৪য় পৌছে ১২-১৫য় ১০৪ কিমি দূরের লেডো যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন/১৪-০০টায় লেডো, ১৪-৫৭য় ডিগবয় ছেড়ে ডিব্রুগড় ফেরে প্যাসেঞ্জার। বাসও সংযোগ গড়েছে ডিব্রুগড়ের সাথে তিনসুকিয়া হয়ে ডিগবয়ের।



থাকার জন্য Tinsukia-786125, STD 0374এ আছে—H Palace, A T Rd, SAB ১৭৫ DAB ২৫০, A/c S ৩০০, D ৩৫০-৫০০; Kamakhya H, near Rly Stn; Madras H, S ৪৫-৮৫ D ১০০-১৫০; Deluxe, Hong Kong, Jyoti, Rex, Mim—এদের কাছে S ৪৫-৮৫, D ৮০-১৫০ টাকায় মেলে। *H Highway, A T Rd-5, ৩ 22820, S ৩০০ D ৪৫০, A/c S ৪০০, সুইট ৮০০; H Bullerim, A T Rd, S ৬০-১২৫ D ১০০-১৭৫; H Ritz, Shiv Bari Rd, S ৮০ D ১৫০, A/c D ২৫০; H President, Stn Rd, S ৬৫-১২৫ D ৮৫-১৮০; H Ashok International, Chirwapatty Rd-5, ৩ 21912, R_১, S ৩০০ D ৪৫০, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ১০০০-১২৫০; *H Urnila Continental, Rangogara Rd, Tinsukia-786125, ৩ 22990, S ৩২৫ D ৪৫০, A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ৩৫০০-৫৫০০।

তেজপুর

অসমের আর এক দিগন্ত পড়ে রয়েছে ব্রহ্মপুত্রের উত্তরপাড়ে তেজপুরে। তেজপুরের দু'পাশ ঘিরে বয়ে চলেছে ব্রহ্মপুত্র নদ। অতীতের দর-আজ হয়েছে শোণিতপুর—শোণিতপুর জেলার সদরও এই তেজপুর। কিংবদন্তী, শিবের অবতার ভৈরবনাথের উপাসক অসুর-রাজ বাণের রাজত্ব ছিল অতীতে। অসুররাজ বাণের রূপসী কন্যা উষা স্বপ্নে দেখেন দয়িতকে। সখি চিত্রলেখা রূপ দেয় চিত্রে—যুঁজেও মেলে স্বপ্নে দেখা রাজকুমার দ্বারকাধিপতি শ্রীকৃষ্ণের নাতি অনিরুদ্ধকে। বিয়ে হয় গান্ধর্ব মতে উষা ও অনিরুদ্ধর। বাণ জানতে পেরে কারাগারে পাঠায় অনিরুদ্ধকে। দ্বারকা থেকে শ্রীকৃষ্ণ (হরি) আসেন নাতি উদ্ধারে। এদিকে শিবও (হর) আসেন ভক্ত বাণের আহ্বানে। মিনতি বিফলে অসি যুদ্ধ—হরি আর হরের যুদ্ধে রক্ত খরে সারা শহরে, সেই থেকে নাম হয় শোণিত বা তেজপুর অর্থাৎ রক্তের শহর। বাসা বাঁধে উষা ও অনিরুদ্ধ শহর থেকে ৫ কিমি দূরে বামুনী পাহাড়ে। ৭টি মন্দির ছিল সেকালে—শিব ও বিষ্ণু উপাস্য দেবতা। তেমনই পাহাড় চূড়ায় উষা হরণের নানান আখ্যান।

আর শহরে D C Office-এর পিছে ব্রহ্মপুত্রের স্নানঘাটে মন্দির হয়েছে সিদ্ধিলাভা গণেশের। পাথর কুঁসে তৈরি গণেশ মূর্তিটি সুন্দর। ঘাট থেকে ব্রহ্মপুত্রের দৃশ্যও মনোহর। বিপরীতে উষা ও অনিরুদ্ধ পরিবেশ উদ্যান অর্থাৎ মনোহর বাগিচা, মূর্তি হয়েছে উষা ও অনিরুদ্ধের। তবে, টিলাটিও আজ চুকুরো হয়ে DC Bungalow বসেছে আখ্য। এর সমুখে আর এক টিলা অর্থাৎ অগ্নিগড়া। ১৭৫ খাপ উঠে দামাল নদ ব্রহ্মপুত্রের শোভা টেনে আনে শহরবাসীকে। সাঁঝের সূর্যাস্তে

পশ্চিমাংশে অন্তর্গামী সূর্যের রঙের বর্ণালী আর এক নয়নলোভন দৃশ্য। মূর্তি হয়েছে—উষা ও সখি পত্রলেখার। তেমনই টারিস্ট লজের সামনে কোল পার্কটিও স্বর্গের নন্দন কানন সম। কাছারির কাছে District Museumটিও চলতে ফিরতে দেখে নেওয়া যায় সোম ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায়। শহরের অপর প্রান্তে মহাভৈরব শিবমন্দিরটিও যথেষ্ট আদৃত ভক্তজনের কাছে। তেজপুরের ৫১ কিমি পশ্চিমে বিশ্ণুনাথ মন্দিরটির ভগ্নস্থপ আজও পর্যটকদের অতীত রোমন্থন করায়। লেক, পার্ক আর গাছ-গাছালিতে ছাওয়া সুন্দর সাজানো শহর তেজপুরের প্রকৃতিও সুন্দর। শীত ও গ্রীষ্ম কারোরই আধিকা নেই, জলবায়ুও স্বাস্থ্যপ্রদ তেজপুরে। জলবায়ুর গুণে তেজপুরও চায়ের কেন্দ্র হয়েছে। ৫৫টি চা বাগিচা রয়েছে শোণিতপুর জেলায়। এককালে ব্রিটিশেরও প্রিয় ছিল তেজপুর। রেস কোর্স, পোলো গ্রাউন্ড ব্রিটিশেরই গড়া। তেমনই ১৯৪২এ জাতীয় পতাকা তুলে ব্রিটিশের বুলেটে শহীদ হন ১৪ বছরের কনকলতা। তেজপুরের অদূরে গহপুরে। তেজপুরের মানসিক রোগের হাসপাতালটিরও প্রশস্তি আছে।



কলকাতা তথা সারা ভারত থেকে নিউ বঙ্গাইগাও-গুয়াহাটি রেলপথের রঙ্গিয়া জংশন পৌছে ১১-০০টার প্যাসেঞ্জারে, ১৭-০০টায় তেজপুর চলায় সুবিধা। গত কিছুকাল গুয়াহাটি-তেজপুর, আলিপুরদুয়ার-রাসাপাড়া নর্থ ট্রেন সার্ভিস স্থগিত। এমনকি সমষ্টিপুর-তেজপুর এক্সপ্রেস আলিপুরদুয়ারে যাত্রায় বিরতি টানছে। সেকারণে সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে উচিত হবে এপথে চলা। পরিস্থিতি হেতু বাসই এপথের একমাত্র যান। দিনে দিনে শহর দেখে বাসে রঙ্গিয়ায় ফিরুন বা রাতে বাসে ইটানগর চলুন তেজপুর থেকে বা মানস ব্যাঘ্র প্রকল্প বেড়িয়ে বাসেই চলুন তেজপুর। বড়পেটা রোড থেকে রঙ্গিয়ার দূরত্ব ৫৭ কিমি। আবার তেজপুর থেকে ৩.৫ কিমি দীর্ঘ কলিয়া ডোমরা সেতুতে ব্রহ্মপুত্র পেরিয়ে শিলাবাড়ি হয়ে নওগাঁ চলা যেতে পারে বাসে। রাজ্য পরিবহণের বাস সরাসরি সংযোগও গড়েছে কাজিরাঙ্গা, জোড়হাট, শিবসাগরের সঙ্গে তেজপুরের। বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিকে দিকে তেজপুর থেকে। আর দিনভর নানান বাস যাচ্ছে ১৯০ কিমি দূরের গুয়াহাটিতে তেজপুর থেকে। শিলিগুড়িরও বাস মেলে তেজপুর থেকে। আবার অরুণাচলের সহজতম পথও গিয়েছে এই তেজপুর হয়ে। ইটানগর ২১২ কিমি, বমডিলা ১৬০ কিমি, তাওয়া ৩০০ কিমি—দিন ও রাতে বাস যাচ্ছে তেজপুর থেকে। তাওয়া যাচ্ছে ১ দিন অন্তর রাতে অরুণাচল রাজ্য পরিবহণ ও প্রাইভেট নাইট সুপার বমডিলা হয়ে। তবুও বেশ বেশ কিছুটা অনিশ্চিত এপথে বাসের চলা। বাস এলে টিকিট মেলে। প্রাইভেট বাসে পূর্ণব্যাক সিট—ভাড়া আধিক্য লাগে। আর অরুণাচলের রেল গিয়েছে ৮-৩০টায় রঙ্গিয়া ছেড়ে ৪২ ঘটায় ২৬ কিমি দূরের রাসাপাড়া নর্থ।



আর IAC-র বিমান ৩৭ মিনি ১১-৪৫এ কলকাতা ছেড়ে ১৩-০০টায় তেজপুর পৌছে ডিমাপুর যাচ্ছে ১৩-৫৫য়। ফেরে ১৪-৩০এ ডিমাপুর ছেড়ে ১৫-৪০এ সরাসরি কলকাতায়। আর NEPC সার্ভিস গড়েছে ৩১৭ দিন কলকাতা-গুয়াহাটি-তেজপুরের।



থাকাৰও নানান বাবস্থা Tezpur-784001, STD-03712। CH, DB, PWD RH ছাড়াও অৰুণাচল সরকারের সার্কিট হাউসও হয়েছে তেজপুৰে। আর হয়েছে—অসম ট্যুরিজমের Tourist I, ৩ 21016, SAB ১০০ DAB ১৭০ ডৰ্মি বেড ৩০ তেজপুৰে। আর প্রাইভেট হোটেল—H Luit, Ranu Singh Rd, Tezpur, R1B0.5, ৩ 21220, new wing : S ৩৫০ D ৪৫০ A/C S ৪২৫ D ৬০০ সুপার ডিলাক্স S ৬৫০ D ৮০০, old wing : S ১০০-১৫০ D ১৬০-২০০; অদূৰে H Parijat, Main Rd, ৩ 20565, SAB ৮০ DAB ১২৫ TAB ১৫০, আহাৰ্যেও যথেষ্ট সুনাম এদের; H Tawang, M C Rd, ৩ 30686, SAB ৮৫ DCB ১২০ DAB ১৫০; লাগোয়া H Chaliha's Inn, দামে ও মানে ভাওয়াই তুল্য। H Basanti, Main Rd, ৩ 30831, SCB ৮৫ DCB ১২৫ SAB ১২৫ DAB ১৭৫-২৫০; H Meghdoot, Cemetery Rd, ৩ 20714, SCB ৬০ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১২৫-২৫০ TCB ১২৫ TAB ১৭৫; লাগোয়া সাধাৰণ সাজে H Rest House, D ১০০-১২৫; Blue Star, SCB ৬০ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১৭৫; H Frontier, H Himalaya, N C Rd, SCB ৪৫ DCB ৮৫ TCB ১২৫; Central L, Binu Raj Rd, SCB ৬০ SAB ৮৫ DCB ১০০-১২৫ DAB ১৫০-২২৫; H International, Masjid Rd, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২০-১৭৫ A/C D ৩৫০; H Kanyapur, Hati Pilkhana, SAB ৮০ DAB ১৫০; ছাড়াও হোটেল আছে নানান তেজপুৰে।

এছাড়া তেজপুৰ থেকে ৬০ কিমি দূৰে পাহাড়-পাহাড় সবুজে ছাওয়া আৱণ্যক ভালুকপঙ-ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। হিমালয়ের পাদদেশে শোণিতপুৰ জেলায় আর এক বন্যজন্তু সংগ্রহালয় ১৭৫ বৰ্গকিমি ব্যাপ্ত সোনাই ও রূপাই-এর উপর দিয়ে পথ গিয়েছে অসম ও অৰুণাচল ৰাজ্যের সীমান্ত জোড়া শহর ভালুকপঙ। অৰুণাচলের প্ৰবেশ তোরণ তথা চেকপোস্ট বসেছে ভালুকপঙ। বমডিলা যাত্ৰীদেৱ ILP এনট্ৰি কৰাতে হয়। নীল খৰসোতা দামাল নদী জিয়াভৱলি অৰ্থাৎ জীবন্ত নদী বয়ে চলেছে। সুন্দৰ নৈসৰ্গিক পৰিবেশে বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া দুই ৰাজ্যের সীমান্তে অসম পৰ্যটনের ট্যুরিস্ট লঞ্জে DAB ১৭০ টাকায় থাকাৰ ব্যবস্থা। লোকাল বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে শহর থেকে। আর প্যাসেঞ্জার ট্ৰেন যাচ্ছে মিটারগেজে ৫-৩০এ ৪৫ কিমি দূৰে ৰাস্তাপাড়া নৰ্থ ছেড়ে ৭-০৫এ ভালুকপঙ পৌঁছে ফেৰে ৭-৪৫এ। তেজপুৰ-ভালুকপঙ পথে তেজপুৰ থেকে ২৪ কিমি, আর ভালুকপঙের ৩৬ কিমি দূৰে বালিপাড়া চাৰিআলি। বালিপাড়া থেকে পথ গিয়েছে ৰাঙাপাড়া নৰ্থ ১২ কিমি, মিশামাৰী ২০ কিমি, বি চাৰিআলি ৫০ কিমি, নৰ্থ লখিমপুৰ ১৯১ কিমি। বাসও চলে তেজপুৰ থেকে বালিপাড়া হয়ে দিকে দিকে।

পথ গিয়েছে ভালুকপঙ ছাড়িয়ে আরও এগিয়ে ১০০ কিমি দূৰে বমডিলায়। উৎসাহীরা রেভিনিউ অফিসাৰ—অৰুণাচল, পাৰ্বতীনগৰ থেকে ILP কৰে বেড়িয়ে নিতে পাৱেন অৰুণাচল ৰাজ্য।

ওৱাং: তেজপুৰ থেকে বাসে তেজপুৰ-গুয়াহাটী সড়কে

৪৫ কিমি পশ্চিমে ওৱাং চাৰিআলি পৌঁছে চাৰিআলি থেকে ১৮ কিমি দক্ষিণে ওৱাং বন্যজন্তু সংগ্রহালয়। চাৰিআলি থেকে সকাল ও সাঁবে ২টি বাস যাচ্ছে ওৱাং। বাস যাত্ৰায় একৱাত ওৱাং-এ থাকা বাধ্যতামূলক। তবে তেজপুৰ থেকে শ'ছয়েক টাকায় জিপে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেৰা যায় ওৱাং। তবে, ১৯৯২এৰ ১লা অক্টোবৰ নামান্তৰ ঘটে ৰাজীৱ গান্ধী অভয়াৰণ্য হয়েছে ওৱাং। এপথে গুয়াহাটীমুখী আৰুও যেতে বাইহাটা চাৰিআলি থেকেও পথ গিয়েছে ১৮ কিমি দূৰে ওৱাং। তেজপুৰ থেকে ওৱাং চাৰিআলি হয়ে ওৱাং-এৰ দূৰত্ব ৯০ কিমি। আৰ গুয়াহাটী থেকে বাইহাটা চাৰিআলি হয়ে ১৩২ কিমি দূৰে ওৱাং।

শাল-সেগুন-শিমুল-ইউক্যালিপটাসে ছাওয়া ৭২ বৰ্গ কিমি জুড়ে এক শৃঙ্গী গুতাৰ, হাতি, লেপাৰ্ড, শম্বৰ, অন্তনতি হৰিণ ছাড়াও নানান প্ৰজাতিৰ বনচৰদেৱ বাস। কাজিৰাসাৰ মিনি সংস্কৰণ এই ওৱাং। শীতে দূৰ-দূৰান্ত থেকে চেনা-অচেনা পাখিৰা এসে নীড় বাঁধে অৱণ্য জুড়ে বৃক্ষ শাখে। দুধ সাদা পেলিকানোৱাও আসে সুদূৰ আমেৰিকা থেকে। বিদ্যুৎহীন, আধুনিকতা বৰ্জিত ওৱাং-এৰ ২টি ফরেস্ট বাংলোয় ৰাতের অবস্থান—সেও এক ৰোমাঞ্চ ভৱা। অৱণ্যের প্ৰবেশ পথে শিলবিড়ি ফরেস্ট বাংলোটি অবস্থানে মনোৱম। আৰ ৫ কিমি অৱণ্য অন্দৰে সাত শিমুল বাংলো। আহাৰ্য নিজ ব্যবস্থায়। দুয়েৰই বুকিং: IDFO, Western Assam Wildlife Division, Tezpur থেকে। আৰ হচ্ছে অসম ট্যুরিজমের Tourist Cottage ওৱাং-এ। অৱণ্য অন্দৰে পায়ে চলা মানা। জিপে যাতায়াত।

হাফলঙ

শিলং পাহাড় অসম ছাড়া হওয়াতে ৰাজ্যের নতুন পাহাড়ী শহর গড়ে উঠেছে ৬৮০ মি উঁচু আপাৰ হাফলঙে। ভাষা এদের দিমাশী। দিমাশী ভাষায় হাঁফলাও (হাফলং) অৰ্থ উইয়ের টিপি। সবুজে ছাওয়া—দৃষ্টিনন্দন নীল অৰ্কিডের দেশ হাফলঙ। নাশপাতি, আনাৱস, কমলা হচ্ছে। হাফলঙের প্ৰকৃতিই মূল আকৰ্ষণ। ২টি লেকও সৌন্দৰ্য বাড়িয়েছে শৈল শহরের। নৰ্থ কাছাড় হিল ডিষ্ট্ৰিক্টের সদৰ দপ্তৰও আপাৰ হাফলঙে। শহরের হৃৎপিণ্ড তাৰ চক। লেকের জলে বোটিং, উষ্ণজলের প্ৰসৰণ—গৰমপানি, চুড়ো থেকে সুন্দৰ নৈসৰ্গিক দৃশ্য পৰ্যটকদের মন হৰণ কৰে। আগস্ট থেকে নভেম্বৰে ৯ কিমি দূৰে blue vandas অৰ্কিডে ছাওয়া হাফলঙ-শিখরে জাটিকাৰ্য্য দূৰ-দূৰান্ত থেকে উড়ে আসা নানান প্ৰজাতিৰ পৰিযায়ী পাখিৰ মেলা ৰমণীয় কৰে তোলে। জাটিকাৰ্য্য আৰ এক আকৰ্ষণ বছরের পৰ বছৰ সেপ্টে ব্ৰ-অক্টোবৰে বিভিন্ন প্ৰজাতিৰ অজস্ৰ পাখিৰ আগনে ৰাঁপ দিয়ে আশ্বহনন।

তবুও যেন পৰ্যটক বিনোদনের নানান ঘাটতি পাহাড়ী শহর আপাৰ হাফলঙে। ছোট্ট শহর—চক অৰ্থাৎ বাস স্ট্যান্ড থেকে শুকু হয়ে ডি সি অফিস ছাড়িয়ে লেক পৰ্যন্ত এৰ ব্যাপ্তি।

আধ ঘণ্টায় পায়ে পায়ে দেখে নেওয়া যায় আপার হাফলঙ শহর।



গুয়াহাটি-লামডিং-লোয়ার হাফলঙ-হাফলঙ হিল-বদরপুর-খরমনগর-কুমারঘাট রেলপথে গুয়াহাটি থেকে ২৯৭ কিমি দূরে হাফলঙ হিল স্টেশন। ১১৬ কিমি দূরে লামডিং থেকে ৯-০০টায় বরাক ভ্যালি ও ১৯-৩০এ কাছাড় এন্ড যাচ্ছে পাহাড়ী শহর আপার হাফলঙের রেল সযোগকারী স্টেশন হাফলঙ হিল হয়ে। ৪১ ঘণ্টার পথ। ৪-০০টায় লামডিং ছেড়ে ৯-৩০এ লোয়ার হাফলঙ, ১০-২১এ হাফলঙ হিল পৌঁছে রিপুয়া প্যাসেঞ্জার ও যাচ্ছে এপথে। সর্পিলা গতিতে ট্রেন চলে একেবেকে লামডিং থেকে বদরপুরে। আলো-আঁধারির সাথে লুকোচুরি খেলে ট্রেন চলে ৩৬টি সুড়ঙ্গ পেরিয়ে। রোমাঞ্চ ভরা এপথে ট্রেন চলা। পাহাড়ী শহর আপার হাফলঙ থেকে ৩ কিমি দূরে হাফলঙ হিল রেল স্টেশন, লোয়ার হাফলঙের দূরত্ব ৫ কিমি। দূরপাল্লার বাস লোয়ার হাফলঙ, হাফলঙ হিল হয়ে পাহাড় চড়ে। আর যাচ্ছে অটো ও জিপ রেল স্টেশন থেকে পাহাড়ে।



বাসও যাচ্ছে ASTC-র গুয়াহাটি থেকে Karbi Anglong জেলার সদর ২৭১ কিমি দূরের দীক্ষু। দীক্ষু থেকে ১৩-০০টায় যাচ্ছে হাফলঙের বাস। ফেরে সকাল ৭-০০টায় হাফলঙ ছেড়ে ৭ ঘণ্টায় দীক্ষু। দীক্ষু থেকে হাফলঙের দূরত্ব ১৭২ কিমি। ২০২ কিমি দূরে নওগাঁ থেকে সকাল ১০-০০টায় ASTC-র একমাত্র বাস ৮ ঘণ্টায় ৪৪ টাকায় আপার হাফলঙ আসছে লম্বা হয়ে। ৩৫০ কিমি দূরে গুয়াহাটি থেকে Net Work Travels-এর নাইট সুপার আসছে নওগাঁ হয়ে ১০ ঘণ্টায় ১৫০ টাকায় আপার হাফলঙে। আর আপার হাফলঙ অর্থাৎ চক থেকে ASTC-র বাস নওগাঁ যাচ্ছে ৭-০০টায়; ৫ ঘণ্টায় ১১০ কিমি দূরে শিলচর যাচ্ছে ৬-০০, ১৩-০০টায়; ১৭৮ কিমি দূরে দীক্ষু যাচ্ছে ৬-০০টায়; গুয়াহাটি যাচ্ছে ২০-০০; ১১২ কিমি দূরে উমরাঙসো যাচ্ছে ৭-০০ ও ১৩-০০টায় ছেড়ে ৪ ঘণ্টায়। Blue Hills Travels-এর বাস যাচ্ছে লামডিং ১৪১/দীক্ষু ১৭৮ হয়ে ২৫৮ কিমি দূরে ডিমাপুৰ ৬-১৫; শিলচর ৬-০০; উমরাঙসো ৬-০০ ও ১১-৪৫এ। Net Work Travels-এর নাইট সুপার গুয়াহাটি যাচ্ছে ২০-০০টায় ছেড়ে নওগাঁ হয়ে ১০ ঘণ্টায়।



থাকার জন্য আছে—অসম পর্যটনের Tourist L, ☎ (03673) 2468, DAB ১৭০; সুন্দর প্রকৃতির মাঝে সার্কিট হাউস ও ডাক বাংলো; অব্: DC, Halflong-788819, ☎ 2223; District Council GH আর RHও আছে হাফলঙে। আর আছে প্রাইভেট হোটেল—শহরে টুকেডই সিনেমা হল লাগোয়া H Elite, SAB ১০০, DAB ১৭৫; বাঁক নিয়ে চক্কর মুখে H Joyeswary, Main Rd, S ৮৫-১২৫ D ১২০ ১৭৫; চক্ক পেরিয়ে DC Office-এর পাশে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে H Eastern, DCB ৮০, DAB ১২৫; চক-কে ঘিরে সাধারণ সাজে Anand H, Opp UBI; Barail H, Market; Romario H, Hill Halflong Rd; Halflong H ছাড়াও নানান হোটেল আপার হাফলঙে।

আর দীক্ষুতে আছে অসম পর্যটনের Tourist L, বেড ১০০, DAB ১৭০। আর আছে প্রাইভেট হোটেল—H Hill View, Sivbari Rd, Diphu-782460, R 1½, SCB ৬০, SAB ৮০, DCB

১০০, DAB ১৫০, FR ১৭৫; H Enterprise, H Kamakhya, Ideal H, Labina H, Stn Rd, Matri H, Bharat L, Sunrise L ছাড়াও নানান সাধারণ হোটেল দীক্ষুতে। এদের কাছে S ৪০-১২৫, D ৮০-২২৫ টাকায় মেলে।

চলার পথে লামডিং-এও H Swagata, H Veshah, H New Grand ছাড়াও হোটেল মেলে নানান।

উমরাঙসো

হাফলঙ থেকে ১১২ কিমি দূরে অসম ও মেঘালয় সীমান্তে উমরাঙসো। বাস যাচ্ছে আপার হাফলঙ থেকে ৭-০০ ও ১৩-০০টায় ASTC; ৬-০০ ও ১১-৪৫এ Blue Hills Travels-এর। ৪ ঘণ্টার পথ। নর্থ কাছাড় হিলস-এর নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝ দিয়ে পথ গিয়েছে। পথের আকর্ষণেও উচিত হবে হাফলঙ পাহাড় থেকে উমরাঙসো বেড়িয়ে জোয়াই হয়ে শিলঙ পাহাড় চলা।

উমরাঙসোর ৭ কিমি দূরে মেঘালয় রাজ্যের অতীতের গরমপানি প্রবণটির আজ সলিল সমাধি হয়েছে Kapili Hydro Electric Project-এর জলের তলায়। বাঁধ পড়েছে কপিলি নদীতে দুই প্রস্তে। উমরাঙসো থেকে গরমপানি ১৯ কিমি জুড়ে কর্মকাণ্ড চলছে প্রোজেক্টের। লোক হয়েছে। বিদ্যুৎ হচ্ছে 250 MW, আঁধার দূরীভূত হয়েছে সমগ্র উত্তর-পূর্ব ভারতের। পটে আঁকা আর এক ছবি প্রোজেক্টের উপনগরী।

হাফলঙ থেকে জোয়াই হয়ে শিলং বাস যাত্রায় ১ রাত উমরাঙসোতে অবস্থান বাধ্যতামূলক হয়ে পড়ে। হোটেলও আছে Umrangso-788931এ Lily H, SCB ৩৫, ৪৫, DCB ৬০, ৮০, DAB ১০০ টাকায়। বাজারে সমমানের Purabi H. আর আছে প্রোজেক্টের Inspection Bungalow, বেড ৪০ হারে। অসম পর্যটনের Tourist Lodge-ও হয়েছে IB-র বিপরীতে কপিলি নদীর পাড়ে বাস স্ট্যাণ্ড থেকে ১ কিমি দূরে।

বাসও যাচ্ছে উমরাঙসো থেকে—হাফলঙ ৭-০০, ১২-০০টায় ASTC; ৬-০০, ১১-৩০এ Blue Hills; শিলং যাচ্ছে ৬-০০টায় জোয়াই হয়ে; জোয়াই যাচ্ছে ৫-১৫, ৬-০০ ও ১৩-০০টায়।

শিলচর

কাছাড় জেলার সদর দপ্তর বসেছে শিলচরে। বাঙালি প্রধান এলাকা। বরাক নদী বয়ে চলেছে শহরের পূর্ব প্রান্ত দিয়ে। মনোরম প্রকৃতির মাঝে সূর্যোদয়ও সুন্দর Surma Valley-র শিলচরে। পাহাড়ের পিছু থেকে উদিত সূর্যের প্রথম কিরণ নদীর জলে ক্ষণে ক্ষণে রঙ বদলায়।

শিলচর থেকে এয়ারপোর্টের পথে ১৭ কিমি গিয়ে উদারবন্দে শ্রীকীৰ্ত্তিকান্তি দেবীর মন্দিরটি বেড়িয়ে নেওয়া যায়। খুবই জাগ্রতা এই দেবী। দুর্গা ও কালীর সমন্বয়ে এই দেবী। ১৮০৬ খ্রিস্টাব্দে স্বপ্নাদিষ্ট রাজা দেবীর চতুর্ভুজা

স্বর্ণমূৰ্তি প্রতিষ্ঠা করেন। নানান কিংবদন্তীও আছে দেবীকে ঘিরে। প্রতি রবিবার পূজা হয়। ১৮১৮ খ্রি পৰ্বত মহালায়াতে নরবলির প্রথাও ছিল মন্দিরে। অতীতের মন্দিরটি আজ আর নেই। নতুন মন্দির হয়েছে দেবীর। আরও ২ কিমি এগিয়ে ব্রজমোহন গোস্বামী আশ্রমের স্বর্ণাঙ্গি বৃক্ষতলে মনস্কামনা বৃথা হবার নয়। দুপুরে আহার্যও মেলে ভক্তজনদের। সেও আর এক কিংবদন্তীর গাথা।

আশ্রম থেকে বামহাতি পথে আরও ৩ কিমি গিয়ে খাসপুর। ১৬৯০ খ্রিস্টাব্দে কাছাড় রাজাদের রাজধানীর ধ্বংসাবশেষ দেখতে আজও উৎসাহীদের ভিড় জমে। মূল প্রাসাদ লুপ্ত হলেও সিংহদ্বার, সূর্যদ্বার, দেবালয় রয়েছে আজও। প্রতিটি প্রবেশ তোরণ হাতির চড়ে। সিঁটি বাসে শাল গলায় নেমে বা ট্যান্ডি/অটোয় বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

৫০ কিমি দূরে ভুবন পাহাড়ে ভুবনেশ্বর মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। দেবতা এখানে হর-পার্বতী। শিলচর থেকে ৩৭ কিমি দূরে ভুবননগর পৰ্বত বাসে গিয়ে বাকিটা পায়ে হাঁটা পাহাড়ীপথ। মন্দির থেকে আরও ৫ কিমি উত্তরে গেলে মণিহরণ সূড়ঙ্গ—ভগবান শ্রীকৃষ্ণ এই সূড়ঙ্গ ব্যবহার করতেন বলে জনশ্রুতি। সূড়ঙ্গের পাশ দিয়ে বয়ে চলেছে পূণ্যতোয়া ত্রিবেণী নদী। আর রয়েছে মন্দির বেশ কয়েকটি। মন্দিরে রাম, লক্ষ্মণ, গরুড়, হনুমানের পূজা হয়। দোলপূর্ণিমা, বারুণী ও শিবরাত্রিতে উৎসব হয়।

এছাড়া রিকশায় ঘন্টা দুয়েকে শহরটাও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে পর্যটকদের। বিশেষ করে নতুন গড়ে তোলা মেডিক্যাল কলেজ, লেকের পাড়ে গান্ধীবাগে ভাষা আন্দোলনে (১৯৬৪) ১১ শহীদের রক্তে রাঙা শহীদ স্তম্ভটি পর্যটকদের সসন্ত্রম দৃষ্টি আকর্ষণ করে। ১১টি স্তম্ভ হয়েছে ১১ শহীদের স্মরণে। অদূরে হরিসভাও দেবী লক্ষ্মীর মন্দির।



IAC-র বিমান ১৩৫ দিন ৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ৭-২০৫ শিলচর পৌঁছে কলকাতায় ফেরে শিলচর থেকে ১০-০০টায়। ৪৬ দিন ৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ৭-২০৫ শিলচর পৌঁছে ৭-৫০৫ শিলচর ছেড়ে কলকাতায় আসছে ৮-৫৫য়। ৭ দিন ৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে শিলচর হয়ে ৮-২৫৫ জোড়হাট পৌঁছে কলকাতায় ফেরে ৮-৫৫য় জোড়হাট ছেড়ে ১০-১৫য় সরাসরি। প্রাইভেট বিমান NEPC ১৩৫ দিন শিলচর-গুয়াহাটি, ১৪৬ দিন শিলচর-ইম্ফল সার্ভিস গড়েছে। ২৫ কিমি দূরের কুতীর গ্রাম এয়ারপোর্ট থেকে IAC-র বাস, যাত্রীবাস ও ট্যান্ডি আছে শহরে।



আর ট্রেন আছে কলকাতা থেকে ঘুরপথে গুয়াহাটি-লামডিং হয়ে শিলচরে। ৯-০০টায় ৫৪১১ বরাক ভ্যালি এক্স, ১৯-৩০৫ ৫৪০১ কাছাড় এক্স লামডিং ছেড়ে হাফলঙ/বদরপুর হয়ে ২টি ভিন্ন পথে ২১৬ কিমি

দূরের শিলচর পৌঁছায় ১৭-৩০/পরদিন ৬-৩০৫। পাহাড় কেটে রেল গিয়েছে। টানেলের আয়িক এপথে। লামডিং ফেরে ৯-৪৫৫ বরাক ভ্যালি, ১৮-৩০৫ কাছাড় এক্স শিলচর থেকে। করিমগঞ্জ বাচ্ছে ৫-১৫ ও ১৩-০০টায় শিলচর ছেড়ে ২১ ঘণ্টায় গ্যাসেঞ্জার।



সড়ক পথ আছে শিলং / জোয়াই হয়ে গুয়াহাটি থেকে শিলচরে। বাসও চলে এপথে। অসম রাজ্য পরিবহণের (ASTC) দ্বিপাণ্ডাংক রাজধানী এক্স বাস আছে গুয়াহাটি থেকে শিলচরে। আর সকাল ৭-৩০, ১০-০০টায় ASTC-ও রাত ২২-০০টায় প্রাইভেট সুপার ডিলাক্স আছে শিলং থেকে ৯১ ঘণ্টায় ২৪০ কিমি দূরের শিলচরে। মেঘালয় রাষ্ট্রীয় পরিবহণের (MTC) বাসও চলেছে শিলং থেকে শিলচর। গুয়াহাটিও আছে প্রাইভেট সুপার ডিলাক্স। ত্রিপুরার সঙ্গেও সড়ক ও রেল সংযোগ রয়েছে ধর্মনগর/কুমারঘাট হয়ে শিলচরের। প্রাইভেটও রাষ্ট্রীয় পরিবহণের বাস আছে সরাসরি শিলচর থেকে আগরতলায়। রেলও সড়ক সংযোগ রয়েছে মণিপুরেরও শিলচর থেকে। আর, ১৩৫ দিন ৩৫ মিনিটে আকাশী বিমান শিলচর থেকে ৬২৫ টাকায় মণিপুরের রাজধানী ইম্ফল যাচ্ছে। খুবই পর্যটকপ্রিয় এই আকাশী উড়ন। মিজোরামেরও প্রবেশ তোরণ এই শিলচরে। এতসব মিলে শিলচরের পর্যটক আকর্ষণ অপরিহার্য। আর পূর্ব ভারত ভ্রমণার্থীদের আগরতলা বেড়িয়ে শিলচর যাওয়াই উচিত হবে।



রেল স্টেশন থেকে ২ আর এয়ারপোর্ট থেকে ২৫ কিমি দূরে শহরের মধ্যমণি গান্ধীবাগকে ঘিরে গড়ে উঠেছে হোটেলরাজি শিলচরে। বামহাতি Club Rd-788001-এ—H Geetanjali, SAB ১৫০ DAB ২২৫ A/c S ২৭৫ D ৪৫০; H Ellora, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৫০-২২৫; Cuchar Club-এ কমন বাথের ঘরে AP প্রথায় ১৫০-২২৫ প্রতিজনা। ডাইনে Central Rd-1এ—H Swagat, SAB ৮০ DAB ১৫০; অদূরেই Kusumananda H, Tulapatty-1, SAB ৮০ DAB ১৫০; বিপরীতে Maya H, DCB ১০০; Bani H, SCB ৪৫ DCB ৮৫ SAB ৮০ DAB ১৫০; Happy L, Shillongpatty-1, SCB ৪০ DCB ৮০; Ajanta H, S ৪০-৬৫ D ৮০-১২৫; H Great Eastern, Premtala-1, SCB ৪৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫; H Renu, Panpatty-1, SAB ৬০ DAB ১২৫; H Maradona, Lakhipur Rd-1, SCB ৪০ SAB ৬০ DAB ১০০-১৭৫ TAB ২০০ ডর্মিতে ৩০; H Rajmahal, Ukilpatty-1, SAB ৮০-১২৫ DAB ১০০-১৭৫; Bassi, Grand, Joy Lakshmi, Tripti, Gautam, Ashoka ছাড়াও হোটেল আছে নানান শিলচরে। বরাকের পাড়ে Paradise H টিও রমণীয়। আর আছে সার্কিট হাউস, ডাকবাংলো, অব্: D C, Silchar. ভবুও থাকার জন্য কুসুমানন্দ আর খাবারের জন্য কুসুমানন্দ ও মারা আদরনীয় হবে। অসম ট্যুরিজমের ট্যুরিস্ট লজ, SAB ১০০ DAB ১৭০ হয়েছে রেল স্টেশন থেকে শহরের পথে শিলচরে। আর হয়েছে রয়্যাল লাক্সারি—H Monoranjan, Steamer Ghat Rd-এ।

মেঘালয়

মেঘেদের আলয়—মেঘালয়। মেঘেদের স্বর্গরাজ্যও (Abode of the clouds) এই মেঘালয়। ১৯৭২এর ২১শে জানুয়ারি অসম থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে পাঁচটি জেলা নিয়ে জন্ম হয় ভারতের ২১তম রাজ্য মেঘালয়ের। তবে সংখ্যায বেড়ে জেলা আজ সাত মেঘালয় রাজ্যে। সারা রাজ্যটিই পাহাড়ী—১২০০ থেকে ১৯৬৫মি উঁচুতে মেঘালয়ের অবস্থান। পাহাড়, বন আর ভূগভূমি ত্রয়ীরই সমন্বয় ঘটেছে মেঘালয়ে। ২টি ন্যাশানাল পার্ক—Nokrek N P ও Balpakram N P, ২টি ওয়াইল্ডলাইফ স্যাক্রুয়ারি—Nongkhyllem ও Siju WLS রূপ পেয়েছে মেঘালয়ে। ফুলে-ফলে ভরা, অরণ্য সম্পদে যথেষ্ট মহীয়ান—বৈচিত্র্য আছে প্রাণীসম্পদ ও উদ্ভিদকুলেও। তেমনই হাজারো ধর্মী মথ ও প্রজাপতির সঙ্গে নানান ধর্মী অর্কিড দেখতে মেলে। খাসি, জয়ন্তীয়া আর গারো পাহাড় নিয়ে গড়া মেঘালয় রাজ্যে খাসি, জয়ন্তীয়া ও গারো সম্প্রদায়ের বাস। ফুল এদের অতি প্রিয়, প্রতিটি বাড়িঘরে ফুলের সৌরভ মেলে। সারা বিশ্বে ১৭০০০, ভারতে ১২৫০ মিললেও মেঘালয়ে ৩০০০ ধর্মী অর্কিড দৃশ্যমান। নাচে-গানে আনন্দোচ্ছল এরা। গানের সাথে গীটার বাজায় প্রতিটি মেঘালয় বাসী। বন্ধু বৎসলও এরা। এদের সমাজজীবন আজও মাতৃতান্ত্রিক, গৃহকর্তৃভ মেয়েদের হাতে। মেয়েরাই গৃহকর্ত্বী, মেয়েদের পদবিতে চলছে সমাজ-সংসার। মেয়েরাই করছে হাটবাজার, ছেলেরা এখানে গৃহাসক্ত।

খাসি পাহাড়ের সংস্কৃতির পীঠস্থান ১১ কিমি দূরের স্মিট গ্রামে আগস্ট-সেপ্টেম্বর মাসে খাসিদের দেশীয় রাজ্য হিমার স্মারকরূপে শস্যসম্পদ ও সমৃদ্ধির কামনায় ৫ দিন ব্যাপী নংক্রেম (Nongkrem) নৃত্যের পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। এপ্রিলে শিলং পাহাড়ে বসে নংক্রেম নাচের অনুকরণে Seng Khasi-দের ২ দিনের Shad Sukmyn stem নাচের আসর। সারাদিন ধরে চলে জাতীয় সাজে সজ্জিত হয়ে নাচ-গান-বাজনা। উদ্দেশ্য—জাতীয়তাবোধে উদ্বুদ্ধ করা। গুয়োরের মাসে সহ জাডো অর্থাৎ ফ্রয়েড রাইস এদের প্রিয় খাদ্য। আর খায় এরা চায়ের সঙ্গে পুথারো বা পুমলয় অর্থাৎ ইডলি; চালের তৈরি কাকিয়াদ এদের প্রিয় পানীয়। আর প্রিয়—পান ও কাঁচা সুপরি সারা মেঘালয়ে। সমতল ভারতের সঙ্গে সংযোগকারী একমাত্র সড়ক গিয়েছে অসমের গুয়াহাটি হয়ে। অবিভক্ত অসমের রাজধানী শহর শিলংয়েই বসেছে মেঘালয় রাজ্যের সদর দপ্তর। আন্তঃ-রাজ্য পাহাড়ী সড়ক গড়ে উঠলেও আজও গারো পাহাড়ের যোগসূত্র শিলং থেকে অসমের গুয়াহাটি/গোয়ালপাড়া হয়ে। মেঘালয়ের উত্তরে অসমের গোয়ালপাড়া ও কামরূপ জেলা, পূবে অসমের কাছাড় জেলা, দক্ষিণে বাংলাদেশের

ময়মনসিংহ ও সিলেট জেলা আর পশ্চিমও মিলেছে গিয়ে বাংলাদেশ সীমান্তে।

শিলং

গৃহদেবতা Shulong চাষীর ঘরে জন্ম নিয়ে স্বীয় দক্ষতায় রাজ্য গড়ে Shyllong (Hima Shyllong)। ১৮৩০এ টুকরো হয় রাজ্য—Mylliem ও Khyrim দুই রাষ্ট্রে। আর কালে কালে শিলং। ভারতের শৈল শহরগুলির মধ্যে শিলং পাহাড়ের আকর্ষণ অন্যতম। পাইন ও ফারে ছাওয়া—ফুল ও ফলে শোভিত ১৪৯৬ মি উঁচুতে মেঘালয়ের রাজধানী পপুলার শৈলশহর শিলং। অবিভক্ত অসমের রাজধানীও ছিল (১৮৭৪-১৯৭৪) শিলং পাহাড়। ৬৪৩৬ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত শহরে ২৫ লাখ লোকের বাস। নাচ-গান-বাজনা অতি প্রিয় এদের। শিলং পাহাড়ের নৈসর্গিক শোভা অতীব সুন্দর। জলবায়ুও মনোরম। শীতে যেমন বরফ পড়ে না—গ্রীষ্মে তেমনই অধিকা নেই গ্রমের। বসন্তের পরশ মেলে শীতের দিনগুলিতে, আর বর্ষায় মেঘেরা লুকোচুরি খেলে পাইনের সাথে—তেমনই বর্ষায় ফলস অর্থাৎ জলপ্রপাতগুলি মাদুর্ঘ্য বাড়ায় শিলং পাহাড়ে। বেড়াবার মনোরম সময় মার্চ থেকে জুন—আবার অক্টোবর-নভেম্বর হলেও সারা বছরই যাওয়া চলে শিলং পাহাড়ে। এককালে সাহেবদের খুব প্রিয় ছিল শিলং। শিলং ছিল তাদের কাছে Scotland of Orient খাসি পাহাড়ের এই পার্বত্য শহর সাহেবদের যেমন প্রিয় ছিল তেমনই প্রিয় ছিল কবিগুরু রবীন্দ্রনাথেরও। নানান রবীন্দ্রমুর্তি জড়িয়ে রয়েছে শিলং পাহাড়ের সঙ্গে। শেষের কবিতার যন্ত্র সংঘর্ষও ঘটেছিল এই শিলং পাহাড়ে। রবীন্দ্র-নাথের বসতবাটি রিবং-এ পাইনে ছাওয়া মালঞ্চ আজও অতীত রোমন্থন করায়। তবে, মেঘালয় সরকারের Art & Craft Centre বসলেও স্বেতমর্মরে Here lived Rabindranath Tagore in Oct 1919 লেখা দেখতে মেলে। প্রিয় ছিল ডাক্তার বিধানচন্দ্র রায়েরও শিলং পাহাড়। তাঁরই বাড়িতে বসেছে আজকের সার্কিট হাউস। যদিও খাসিদের শহর শিলং—তবে, অধুনা বাংলাদেশ থেকে আগত বাঙালি সম্প্রদায়ও উল্লেখযোগ্য ভূমিকা নিয়েছে নগরজীবনে। শিলং পাহাড়ের আর এক বৈশিষ্ট্য—খাসি মেয়েরাই দোকানি শহরের দোকানপাটে।

অতীতের বাঙালি প্রভাব খর্ব হলেও বাঙালিয়ানা আজও রয়েছে শিলং পাহাড়ে, বাংলাও সহজবোধ্য শিলং পাহাড়ের হাটে-বাজারে, দোকানপাটে। শিলং-সুন্দরী পাইন ও ফারেরা আজ বিদায় নিচ্ছে—গড়ে উঠছে নতুন নতুন অট্টালিকা। আধুনিকতার জয় হলেও রাপে যেন ঘাটতি

ঘটছে। শুধু তাই বা কেন জিনিসপত্রের দামও অট্টালিকার সাথে পাল্লা দিচ্ছে শিলং-এ আজ। গলফ খেলারও রমরমা গিয়েছে। পোলো আর রেস সে তো অনেক আগেই বিদায় নিয়েছে শিলং থেকে। আর আছে জলাভাব গ্রীষ্মের দিনগুলিতে শিলং-এ। পর্যটন দপ্তরের অনীহা প্রকট হয়ে দেখা দেয় শিলং পাহাড়ে। তেমনিই যেন সমতলের প্রতি বিদ্রোহ সংঘাতে রূপ নিচ্ছে শিলং পাহাড়ে আজ।



IAC সংযোগকারী নিকটতম বিমানবন্দর ১২৭ কিমি দূরে অসমের গুয়াহাটর সঙ্গে কলকাতা ছাড়াও সংযোগ রয়েছে বাগদোগরা ও দিল্লীর। [গুয়াহাটি দেখুন] আর বায়ুদূতের কলকাতা-শিলং ও গুয়াহাটি-শিলং সার্ভিস গত কিছুকাল স্থগিত। তবে, নানান প্রাইভেট বিমান সংস্থা সার্ভিস গড়েছে কলকাতা ও গুয়াহাটর সঙ্গে শিলং পাহাড়ের। শিলং শহর থেকে ৩২ কিমি দূরে উমরয়-এ বিমান বন্দর। মেঘালয় পর্যটনের ডিলাক্স বাস বিমানযাত্রীদের নিয়ে গুয়াহাটি ও উমরয় বিমানবন্দর থেকে শহরে যাচ্ছে। ট্যাক্সিও মেলে যাতায়াতে, তবে ট্যাক্সির ভাড়া লাগাম ছাড়া।

মেঘালয় □ রাজধানী: শিলং। আয়তন: ২২৪২৯ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ১৭৭৪৭৭৮। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.২০%। পুরুষ: ৯০৪৩০৮। নারী: ৮৫৬৩১৮। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৪২৪৮১০। বৃদ্ধির হার: ৩১.৮০%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৭৮। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৪৭। সাক্ষরের হার: ৪৮.২৬%। প্রধান ভাষা: খাসি, জয়ন্তিয়া, গারো। বাংলারও চল আছে সারা রাজ্যে। তেমনিই চলে ইংরেজি ও হিন্দি মেঘালয়ে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৩২৫০.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)।

২৫°-২৬.১৫° উত্তর অক্ষাংশে আর ৮৯.৪৫°-৯২.৪৭° পূর্ব দ্রাঘিমাংশে মেঘালয়ের অবস্থান। তাপমান—গ্রীষ্মে ২৩.৩-১৫° আর শীতে ১৫.৬-৩.৯° সেন্টিগ্রেডে ঠান্ডানা করা। বৃষ্টির গড়: ১০০০-১২৭০ সেমি মেঘালয়ে। তবে নজিরবিহীন ২৩০০ সেমি বৃষ্টিও হয়ে থাকে কোনো এক বছর মেঘালয়ে। আর শিলং-এ বৃষ্টির গড় ২৪১.৫ সেমি। গ্রীষ্মে হালকা বসন (ট্রপিক্যাল) চললেও শীতে ভারী উলেন দরকার শিলং পাহাড় বেড়াতে। বেড়াবার মরসুম: মার্চ ১ থেকে জুলাই ১৫ অব্যাব সেপ্টেম্বর ১৬ থেকে নভেম্বর ১৫। সম্প্রতি বিশ্বমানবের কাছে দরজাও খুলেছে মেঘালয় রাজ্যের।

৫-৭ দিনে বেড়িয়ে আসুন শিলং পাহাড়। তবুও যেন অসমের সাথে জুড়ে বেড়িয়ে নেওয়াই উচিত হবে।



রেল সংযোগকারী স্টেশনও অসমের গুয়াহাটি। কলকাতা যাত্রীদের হাওড়া থেকে কামরূপ/ত্রিশপাণ্ডাংহিক সরাইঘাট বা সপ্তাহে ৪ দিন গুয়াহাটি এল্লো কমবেশি ২৪ ঘণ্টায় গুয়াহাটি পৌঁছে সড়ক পথে শিলং। কলকাতা থেকে দূরত্ব ১৩১২ আর শিলিগুড়ি থেকে ৬৬১ কিমি। মেঘালয়ে রেল না পৌঁছালেও রেলের আউট এজেন্সী বসেছে Meghalaya Road Transport Corporation স্ট্যান্ডে, ৩ ২২৩০০।



গুয়াহাটি রেল স্টেশনের বিপরীতে বাস স্ট্যান্ড থেকে মেঘালয় রাজ্য পরিবহণ ও অসম রাজ্য পরিবহণের বাস ৬—১৭-০০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায় গুয়াহাটি ছেড়ে শিলং যাচ্ছে NH-40 ধরে। পথের দূরত্ব ১০৩ কিমি, সময় নেয় ৩২ ঘণ্টা। ভাড়া ৩৮ ৪০ ৮০। অগ্রিম টিকিটও মেলে ১০-৩০ থেকে ১৫-০০টায়। আর যাচ্ছে একাধিক ট্রাভেল এজেন্সির ডিলাক্স কোচ গুয়াহাটি থেকে শিলং পাহাড়ে। ট্যাক্সিও যাচ্ছে ৮০০, শেয়ারে ২৫০ হারে রেল স্টেশন লাগোয়া A T Rd থেকে শিলং-এ। আজকাল পথ প্রশস্ত হয়েছে। অতীতের লক গিট প্রথা অর্থাৎ একমুখী যান দ্বিমুখী হয়েছে। মনোরম পাহাড়ী পথ, মাঝপথে নগ্নপুতে বিশ্রাম দেয় গাড়ি।

আর শিলং পাহাড় থেকে M T C-র বাস যাচ্ছে—গুয়াহাটি, দিনভর নানান বাস; তুরায় ৭-০০ ও ১৭-০০টায়; শিলচর ৭-০০ ও ১৮-০০টায়; আইজল ১৬-০০টায়; করিমগঞ্জ ১৮-০০টায়। ASTC-র বাস যাচ্ছে—শিলিগুড়ি ১৪-০০টায় ছেড়ে ২০০ টাকার নাইট সুপার; গুয়াহাটি ৭—১৬-০০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায়; আগরতলা প্রতি বুধবার; শিলচর ২১-৪০এ গুয়াহাটি থেকে আসা রাজধানী এক্স। Assam Valley Travels-র বাস যাচ্ছে—তুরা ১৬-৩০এ ছেড়ে ১১০ টাকার ১২ ঘণ্টায়; গুয়াহাটি ১০-৪০, ১৩-৪৫, ১৪-৪৫, ১৫-৩০, ১৬-৩০এ। DD Travels-এর বাস যাচ্ছে তুরায়। Net Works-এর বাস যাচ্ছে—গুয়াহাটি ৯-৪৫, ১১-৩০, ১২-১৫, ১৩-০০, ১৩-৪৫, ১৪-৩০, ১৫-১৫, ১৫-৪৫, ১৬-৩০এ; ডিমাপুর ১৬-০০; ধরমপুর ১৭-০০; ৪৮৭ কিমি দূরের আগরতলাতেও যাচ্ছে ২২৫ টাকায়। Blue Hills Travels-এর বাস যাচ্ছে—গুয়াহাটি ১১-১৫, ১৩-০০, ১৪-০০, ১৫-০০; ডিমাপুর ১৬-০০; ইম্ফল ১৬-০০; মিজোরাম স্টেট ট্রান্সপোর্ট আইজল যাচ্ছে ত্রিশপাণ্ডাংহিক সার্ভিসে। রাতভর জার্নিতে শিলং থেকে ২৪০ কিমি দূরের শিলচর যাচ্ছে ৯২ ঘণ্টায় প্রাইভেট সুপার ডিলাক্স। এছাড়াও নানান বাস যাচ্ছে পূর্ব ভারতের দিকে দিকে শিলং পাহাড় থেকে। আর শহরে চলছে সিটি বাস, মিটারহীন ট্যাক্সি। পয়েন্ট-টু-পয়েন্ট ভাড়ার শেয়ারেও ট্যাক্সি মেলে। তবুও পায় পায় বেড়িয়ে উপভোগ করুন শহরের মাধুরিমা।



পথটিকসের শহর শিলং—হোটেলও হয়েছে নানান পুলিশ বাজারকে ভর করে শিলং পাহাড়ে। শহরে চুকতেই পুলিশ পয়েন্ট। সাতমুখী সাত পথ বেরিয়েছে পুলিশ পয়েন্ট থেকে। গুয়াহাটি-শিলং রোড অর্থাৎ G S Rd ধরে শহরে প্রবেশ, ডাইনে পরপর Keating Rd, Kachari Rd, G S Rd Approach, Jail Rd, Thana Rd, Khyadailad অর্থাৎ Police বাজারের অবস্থান। হোটেলগুলিও পুলিশ পয়েন্ট তথা বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ থেকে ১০ মিনিটের পথে Shillong-793001, STD 0364এ গড়ে উঠেছে। G S Rd-1এ—H Centre Point, ৩ ২২৫১০, SAB ৪০০ ৪৫০ ৫৭৫ ৭৫০ DAB

৪৫০, ৫২৫, ৬৫০, ৮৫০; H Monsoon, ② 227106, SAB ১২৫-১৭৫, DAB ১৭৫-৩২৫; H Broadway, ② 226996, SCB ১০০ SAB ১৫০-২২৫, DAB ২৭৫-৪০০; বিপরীতে বাজলি মালিকানায় Neo Hotel, ② 224363, SAB ১২৫-২০০, DAB ১৭৫-২৫০; H Lotus, ② 227182, S ৮৫-১৫০, D ১৬০-২৭৫; H Blue Pine, ② 225910, S ১৭৫, D ৩৫০; H Grand, ② 223622, SCB ৬৫, DCB ১২৫, DAB ১৫০, TAB ১৭৫; H Indiana, S ৬৫-১০০, D ১২৫-২০০।

G S Rd সিধে গিয়ে G S Rd Approach তথা Police Bazar-এ পুলিশ টেকির মুখে—H Magmam, ② 227797, SAB ২০০-২৭৫, DAB ৩৫০-৪৫০; সাধারণ সাজে ম্যাগনামের পাশে Happy Lodge H; স্বল্প খেতে H Pegasus Crown, ② 220667, SAB ৩৫০, ৪৭৫, ৬০০, ৭৫০, DAB ৪২৫, ৫৭৫, ৬২৫, ৮০০; অদূরে মনোরম পরিবেশে অতীতের T B Sanatoriumটি আজ হয়েছে The Earle Holiday Home, ② 228614, DAB ১৫০; আরও নেমে হোটেল পোলো টাওয়ার।

বাসমাস্থি Jail Rd-1এ—H Utsav, opp Bus Std, ② 226715, S ১৫০-২০০, D ২৫০-৩২৫, কিছুটা যেন অব্যবহার সাথে বাস স্ট্যান্ডের যন্ত্রনিদান বাতাস ভারী করে রেখেছে। অতীতের Quinton Rd আজকের Thana Rd-1এ—H Seven Sister, H Hariom, S ৬০-৮৫, D ১০০-১৫০; Anand H, S ৬৫, D ১২৫, T ১৫০; Garden H, ② 226775, SCB ৬০, SAB ১০০, DCB ১০০, DAB ১৫০-২২৫, TAB ২৫০; H Nataraj, ② 222137, SCB ৫০, DCB ১০০, TCB ১২০, FCB ১৫০; *H Alpine Continental, ② 220991, SAB ৩৭৫-৬৫০, DAB ৬০০-৮৫০, Suite S ১০০০, D ১২৫০; Poyal Tourist H, S ১৭৫, D ২৭৫, T ৩০০; বিপরীতে Anuradha H, S ১২৫, D ২০০, T ২২৫; Rajasthan H, ② 223724, S ৬৫-১০০, D ১২৫-১৭৫, T ১৫০-২০০।

Khydaillad অর্থাৎ Police Bazar-1এ—H Pine Borough, ② 227523, SAB ১৫০-২২৫, DAB ২৫০-৪০০; H Marwari Basa, A C Lane, SCB ৬০, DCB ১০০; বিপরীতে H Ashoka, S ৬৫, D ১০০; H Embassy, ② 223164, Sri Guru Sabha Mkt Complex, DAB ১৭৫-৩৫০, একক থাকায় 20% রিভেট মেলে; বিপরীতে Delhi H, S ৮০, D ১৫০, T ১৭৫; Rajhans H, ② 229581, S ৮৫, D ১২৫-২০০, T ১৫০-২২৫। Keating Rd-এ—Society H, Sunny H, Shantiniketan H. ডাইনে অ্যাসেম্বলি/ হাইকোর্ট/ লোক পেরুতেই Kachari Rd-1এ—

লেকের পাড়ি Shillong Club, ② 225497, SAB ২৫০, DAB ৩৭৫, সুইট ৪৭৫; কাছারির পিছে Peak H.

লেকের পিছে Ritu Rd-1এ—MTDC-র ব্যবস্থাপনায় *H Pinewood, European Ward, ② 223116, S ৫৫০, ৮৮০, D ৮২৫, ১১৫৫, কটেজ S ৭১৫, D ১০৪৫। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে Jail Rd ধরে মিনিট দশেক উত্তরাই নেমে Polo Hills-এ MTDC-র Orchid H, ② 224933, SAB ১৫১, ২৭০, DAB ২২২, ৩৭৫; আর এসেই Orchid Lake Resort হয়েছে উমিয়ম লেকে, SAB ৩৫২, ৪৪০, DAB ৪৬২, ৫৫০; শাবার ত্রয়ীতেই পৃথক মূল্যে মেলে। থাকার পক্ষে ভালই। এসের বুকিং: Manager Orchid Hotel, MTDC, Shillong-793001, ② 224933 বা Tourist Officer, MTDC, 9 Russel St, Cal-71, ② 290819 থেকেও আংশিক বুকিং হয়ে থাকে ত্রয়ী। অর্কিড হোটেলের নিচুতে ত্রিভারকাসম *H Polo Towers, Polo Grounds-1, ② 222341, S ৪৯৫-৬৯৫, D ৬৫০-৮৫০, সুইট ১২৫০-১৮০০; কল বুকিং: 30 C R Avenue, Ground floor, Cal-12, ② 227902. এছাড়াও হোটেল রয়েছে আরও নানান শিলং পাছাই। অবস্থান এসের বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫-৭ মিনিটের পায়ে হটা দূরত্বে। ঘরও মেলে এসের কাছে SCB ৬০-৮৫, SAB ৮০-১৭৫, DCB ১০০-১৫০, DAB ১৫০-৩২৫ টাকায়। তবে যাত্রী সমাগমে রেটে হেরফের ঘটে চলে শিলং-এর হোটেল।

সারা শহরময় ছড়িয়ে-ছিটিয়ে শিলং পাছাই—Lake View Cottage, Barapani; Park, Ashoke, Monorama Pice H, Prakash, H Lotus, ② 227182, S ১০০-১৫০, D ১৭৫-২৫০; H Liza, Malki, S ১০০-১৫০, D ১৭৫-৩০০; Abhinandan H, Dhankheti, S ৮৫, D ১৫০, T ১৭৫; Mount Elite G H, Labang-4, D ৩০০, সুইট ৬৫০; Godwin H, S ১৫০-২২৫, D ১৭৫-৩২৫; Highway I, S ৮০, D ১৫০, T ২০০; H I Rani, Mowlong Hat, near Jowai Bus Std-2, D ১২৫-২৫০ ছাড়াও নানান। আহাৰ্যও মেলে এসের কাছে পৃথক মূল্যে। আগ্রহ বুকিংএর জন্য স্ব স্ব Manager-দের চিঠি লিখে চিঠির কপি Tourist Officer, Govt of Meghalaya, 9 Russel St, Calcutta-700071, ② 290797 বা Tourist Officer, Meghalaya House, 9 Aurangzeb Rd, ND-110011, ② (011) 3014417-কে পাঠানো যেতে পারে।

আর আছে লাংবাং-এ—D B ও C H অব্: DC; পুলিশ বাজারে M L A Hostel, অব্: Secretary, Meghalaya Legislative Assembly; বিবেকানন্দ রোডে Youth Hostel, অব্:

ছোটদের নিয়মনিবাস

অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য □ শিবরাম চক্রবর্তী

স্ব স্ব লেখকের প্রতিটি বই ১০০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

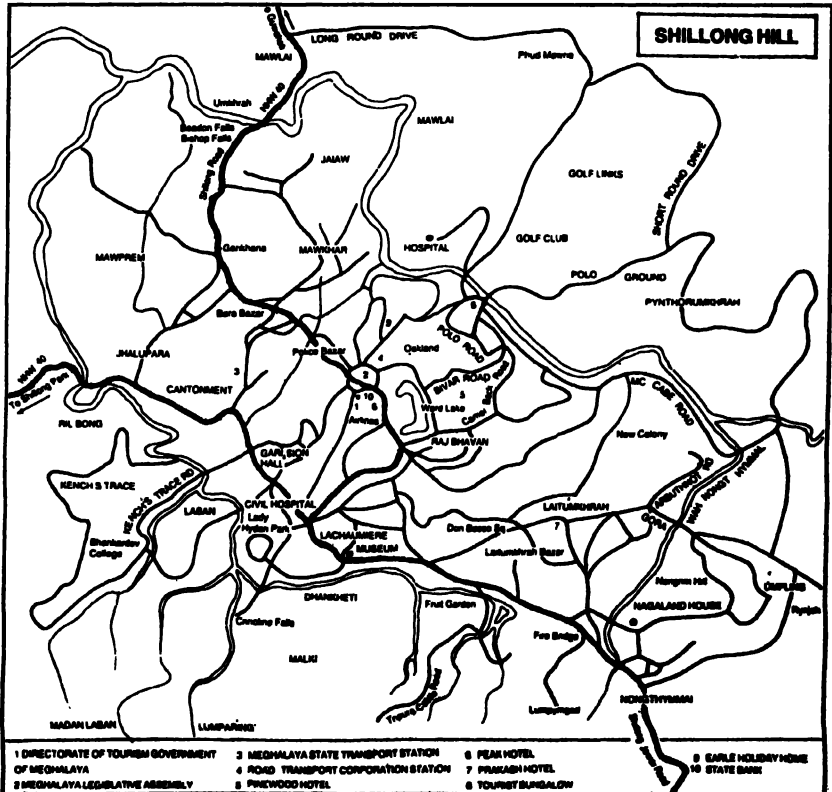
এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

Warden, ② 22246; YMCA, Main Rd; YWCA, Mawkharr Main Rd-2, ③ 225461; Railway GH, Kench's Terrace-4, ④ 224469; Indian Bank H H, Nongrim Hills-3; Oil India GH, Barik Point-1, ⑤ 224148; North Eastern Hill University GH, Mawlai-2, ⑥ 760026; SBI Guest House, Lummawarie-3, ⑦ 225687; North Eastern Electric Power Corp GH, Risa Colony, ⑧ 226453.

আহারেরও নানান ব্যবস্থা শিলং পাহাড়। খাসিদের প্রিয় খাদ্য শুয়োরের মাংস ও ভাত। সঙ্গে চলে *Tung Tap* অর্থাৎ চাটনি জারানো ভাজা মাছ। তেমনই প্রিয় *জাডো* অর্থাৎ ফ্রায়েড রাইস। উৎসব-অনুষ্ঠানে বিশেষ মেনু শিমাঞ্জ-রসুনে রান্না করা শুয়োরের মাথা। সঙ্গে চলে চালে তৈরি *ককিয়াদ* ও *কাটি* সুরা। আগ্রহীদের উচিত হবে বড়বাজারের সাধারণ হোটেল খাসি ডিসের স্বাদ নেওয়া। আর টুরিস্টদের শহর শিলং-এর পুলিশ বাজার। প্রায় প্রতিটি বাড়িতেই হোটেল-রেস্তোরাঁ-বার। আহারও মেলে ভারতীয়, চীনা ও অন্তর্দেশীয়। G S Rd-এর বাজালির নিও হোটলে বাজালিয়ানা মেলে। তেমনই চীনা ডিসের জন্য G S Rd-এ—

Abba's, New World, Hongkong আজও সেরা। আর ভারতীয় ভেজ মিলের জন্য G S Rd-এ—Chiraaq, Orchid-এর প্রশস্তি যথেষ্ট। তেমনই পাঁচমিলের সাথে কটিনেটাল মিলের ষোঁজে —Polo Towers, Centre Point, Hotel Alpine Continental, Hotel Pinewood-এ চলা যেতে পারে।

কনডাক্টেড টুর : দেশের অধিক যাত্রী হলে মেঘালয় পর্বতন উন্নয়ন দপ্তর (MTDC), Police Bazar, opp Bus Stand, ⑨ 226220; বা Orchid Hotel, ⑩ 224933 থেকে কনডাক্টেড টুরে সপ্তাহের রবি/ বুধবার সকাল ৮-৩০টায় গিয়ে ৫৫ টাকায় ৩½ ঘণ্টায় শিলং পাহাড়; শনি/মঙ্গলবার ৭৫ টাকায় চেরাপুঞ্জি; নারটিআঙ ও থাডলাসকেনও বেড়িয়ে আনে এরা। আবার ৩৫০-৪০০ টাকার চুক্তিতে ট্যাক্সি নিয়েও সাঙ্গ করা যায় শহর দর্শন। চেরাপুঞ্জি প্যাকেজে ট্যাক্সি যাচ্ছে ৭০০ টাকায়। যাত্রীর আধিক্যে বিশেষ টুরের ব্যবস্থাও করে MTDC. নানানধর্মী গাড়িও ভাড়ায় মেলে এদের কাছে। গাড়ির জন্য: Transport Control Room, Orchid Hotel, ⑪ 222129. আরও প্রয়োজনে Tourist Information Centre, Directorate of Tourism—Govt of



Meghalaya, Transport Building, Bus Std, Police Bazar, Shillong 793001, ☎ 223206/226054কে যোগাযোগ করা যেতে পারে। আর Govt of India Tourist Office বসেছে G S Rd, Police Bazar-1, ☎ 225632এ।

শিলং পাহাড়ের আর এক আকর্ষণ গলফ ক্লাব। শহরাংশে নিচের ধাপে পাইন বনে ঘেরা গলফ মাঠ—১৮৮৯এ গড়া ৯ হোলে ১৯২৪এ রূপান্তর ঘটে ১৮ হোলে। এশিয়ার দ্বিতীয় বৃহত্তম এই Gleneagle of the East. পাশেই এর রেস কোর্স/পোলো গ্রাউন্ড। পোলো শিলং থেকে বিদায় নিলেও তীরন্দাজদের প্রতিযোগিতার আসর বসে পোলো গ্রাউন্ডে আজও। বাক্সিও ধরা হয় নিশানার উপর। খুবই আকর্ষণীয় কারনিভ্যালধর্মী এই প্রতিযোগিতা। ত্রয়ীরই ঐষ্টা ব্রিটিশ। আর হয়েছে পোলো গ্রাউন্ডের বিপরীতে ট্যুরিস্ট লজের নিচুতে পাহাড় ঢালে ১৩৬২ বঙ্গাব্দে বাঙালির দেবী কালীর মন্দির।

শহরের প্রাণকেন্দ্রে ১৮৯৩-৯৪এ অসমের চিফ কমিশনার William Ward গড়ে তোলেন বাগিচাসহ ওয়ার্ড লেক। কৃত্রিম এই লেকের মাঝে দ্বীপ—কাঠের সেতুতে পারাপার। সেতু থেকে মাছের জলকেলি খুবই চিত্তাকর্ষক। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। লেকের বুক বেয়ে রাজপথ চলেছে। ওপারে বটানিকাল গার্ডেন তথা বটানিকাল মিউজিয়ম, মুখ্যমন্ত্রীর বাংলা, রাজভবনও আকর্ষণ বাড়িয়েছে ওয়ার্ড লেকের।

শিলং পাহাড়ের আর এক অভিনব আকর্ষণ ডেলিমোর ওয়াংখার প্রজাপতির মিউজিয়ম। নানান বর্ণের, নানান ধর্মের সহস্রাধিক প্রজাপতি দর্শকদের মনোরঞ্জন করে। বিদেশেও পাড়ি দিচ্ছে রঙবেরঙের এই প্রজাপতি। রবিবার ছাড়া ১০—১৬-০০টায় খোলা।

তেমনই বসেছে G S Rd-এ মেঘালয়ের সংস্কৃতি ও উপজাতীয় সমাজ জীবনের প্রদর্শনশালা স্টেট মিউজিয়ম, মেঘালয় কস্টেজ ইন্ডাস্ট্রিজ অদূরের সেন্ট্রাল লাইব্রেরি কমপ্লেক্সে। রাজ্যের সংস্কৃতি, হস্তশিল্প, অস্ত্রশস্ত্র, প্রাণী ও উদ্ভিদ জগতের সাথে পুরাতত্ত্বের নানান সম্ভার প্রদর্শিত হয়েছে।

শহরের অন্যপ্রান্তে বড়বাজার অর্থাৎ *le duh*. খাসিয়া মেয়েরা দোকানি এখানে। এদের হাতের কাজ, বিশেষ করে লাল-সাদা ডুরে কাটা মিজো শাল, মধু, বাঁশের তৈরি নানান জিনিস পর্যটকদের বিমোহিত করে। পুলিশ বাজারে বাস স্ট্যান্ডের সামনে কেনাকাটার জন্য সাপ্তাহিক হাট বসে। আর আছে পুলিশ বাজার বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে।

এয়ার ফোর্সের ক্যান্টনমেন্ট এলাকার মাঝ দিয়ে ১০ কিমি যেতে আপার শিলংয়ে ১৯৬৫ মি উঁচুতে শিলং পিক। মেঘালয়ের উচ্চতম এই শিলং পিক চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। পায়ে হেঁটে বেড়িয়ে নেওয়া যায়; বাস চলছে, ট্যাক্সিও যাচ্ছে শহর থেকে শিলং পিকে। পিক থেকে শিলং পাহাড় সুন্দর দেখায়। নির্মল দিনগুলিতে হিমালয়ের শৃঙ্গরাজিও দৃশ্যমান শিলং পিক থেকে। বসডে *U Shylong*

উৎসবেরও খ্যাতি আছে। জোয়াই/শিলচর সড়কটিও গিয়েছে আপার শিলং হয়ে পিকের পাশ কাটিয়ে।

পরিক্রমার দ্বিতীয় সফরে শহরাংশে হেলিপ্যাড রেখে শিলং-চেরাপুঞ্জি পথে ১২ কিমি যেতে এলিফ্যান্ট ফলস। ১৭৭ ধাপ সিঁড়ি ভেঙে পথ নেমেছে। অনন্য সুন্দর এর প্রকৃতি। বিপরীতে দুই পাহাড় জুড়ে সেতু, নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে মিষ্টিমধুর তানে ঝরনা। তারই সাথে তান ধরে চেনা-অচেনা নানান পাখি। তবুও যেন শ্রমের তুলনায় প্রাপ্তি কম।

ঝলমলে Cathedral of Mary Help of Christians বা ডল বসকো ক্যাথিড্রালটিও দর্শন তালিকায় উল্লেখ্য। তৈলচিত্রে বীণাস্রিস্টের নানান আখ্যান আকর্ষণ বাড়িয়েছে। রঙিন কাচে আলোর বিচ্ছুরণ মনোরম করে তুলেছে। ৬—১৮-০০টায় খোলা। Lady Hydary Park, মিনি Zoo, Forest Museum আকর্ষণে উল্লেখ্য না হলেও একই ক্যাম্পাসে ২ টাকার টিকিটে দেখে নেওয়া যায়। ক্যামেরার চার্জ ১০। জাপানি প্রথার উদ্যানে ক্যামেলিয়া গাছ ও ফুল দেখতে মেলে। প্যাকেজ ট্যুরের বাস চলে ওয়ার্ড লেক, গলফ ক্লাব দেখিয়ে শহরাংশে ৫ কিমি দূরের বিডন ও বিশপ জলপ্রপাত দেখাতে। পাহাড় বেয়ে ধারা নামছে—বায়ে বিডন, ডাইনে বিশপ। ৬ কিমি দূরে গানার্স ফলস। শ'খানেক ফুট উঁচু থেকে পড়ে মিলেছে ৫ কিমি দূরের বিশপের সাথে। এই মিলিত ধারা থেকে উমিয়ম নদীর জন্ম। বাঁধ পড়েছে, লেক হয়েছে উমিয়মে। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা—মনোরম পরিবেশ। দাঁড় টানা নৌকা থেকে ওয়াটার স্কুটার উমিয়মের জলে চলছে। তেমনই মৎস্য শিকারীরা অনুমতি নিয়ে ছিপ ফেলে বসে যেতে পারেন মৎস্য (Mahaseers) শিকারে। শিলং পাহাড়ের আধার দুরীকরণে জলবিদ্যুৎ হচ্ছে উমিয়মে। আর হয়েছে ভারতে প্রথম ওয়াটার স্পোর্টস কমপ্লেক্স শহর থেকে ১৬ কিমি দূরে শিলং-গুয়াহাটি সড়কের উমিয়ম লেকে।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে MTDC-র *Orchid Lake Resort, Umiam (Barapani)*, PC-793103, ☎ 64258এ। ফ্লোটিং বেস্টুরেন্ট উমিয়মের আর এক অনন্য সৃষ্টি। এমনকি অ্যাকোয়ারিয়াম ও মিউজিক্যাল ফাউন্টেন-এরও প্রস্তুতি চলছে পার্কে। রিসর্ট লাগোয়া লাম (Lun) নেহরু পার্কের ফুল ও ফলের বাগিচাও রমণীয় করে তুলেছে পরিবেশকে।

এছাড়াও ফলস অর্থাৎ জলপ্রপাত রয়েছে আরও বেশ কয়েকটি শিলং পাহাড়কে ঘিরে। এদের মধ্যে শহর থেকে ১৬ কিমি দূরে ক্রিনোলাইন ফলস বিশেষভাবে উল্লেখ্য। শহরাংশে ১৬ কিমি দূরে হ্যাপি ভ্যালীর কাছে সাউথ ফলস—বহরভর জলধারা খাসরোধ করে দর্শকদের। রবীন্দ্র-নাথের নামকরণ শ্রেষ্ঠ ঈগল ফলস, রেস কোর্সের পাশে সতী ফলস পায়ে পায়ে দেখে নেওয়া যায়।

মঞ্চলা

বালাটের পথে আপার শিলং অর্থাৎ আট মাইল ছাড়িয়ে

বামহাতি চেরাপুঞ্জি/ডাওকি সড়ক রেখে ডানহাতি এলিফ্যান্ট পেরিয়ে আরও এগিয়ে শিলং থেকে ২৪ কিমি দূরে মফলং। নানানধর্মী ব্রহ্মরাজি ও অর্কিডের সাথে নৈসর্গিক শোভার জন্য এর প্রশস্তি। চলার পথের পথশোভাও মুগ্ধ করে। নিয়মিত বাস যাচ্ছে শিলং থেকে। পথেই পড়ে ১৮৯৭এর ভূমিকম্পে সৃষ্ট সঙ্গী গিরিসঙ্কট—পর্বতদের আর এক দ্রষ্টব্য।

চেরাপুঞ্জি

শিলং থেকে ৫৪ কিমি দক্ষিণে ১৩০০ মি উঁচুতে চেরাপুঞ্জি—শিলং ভ্রমণার্থীদের একদিনের ভ্রমণে মুখ্য স্থান দখল করে। চেরাপুঞ্জিও ব্রিটিশের অবদান। এমনকি উত্তর-পূর্বের সদর দপ্তর বসে ব্রিটিশের এই চেরাপুঞ্জিতে। খাসি সাহিত্য ও সংস্কৃতির পীঠস্থানও এই চেরাপুঞ্জি। তেমনই চেরাপুঞ্জি খ্যাত তার চুনাপাথরের গুহা, কয়লা, কমলা ও মধুর জন্য। খাসি লিপির জন্মও মিশনারিদের হাতে এখানে। চেরাবাজারকে ঘিরে গড়ে উঠেছে বসতি। সুন্দর এই খাসি গ্রামটির নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে। সকালে গিয়ে বিকালে ফিরেও আসা যায় শিলংয়ে। তবে, লোকাল যানের অভাবে উচিত হবে MTDC-র কনডাক্টেড ট্রায়ে চেরাপুঞ্জি বেড়িয়ে নেওয়া। সবুজ পাইনের গা বাঁচিয়ে একের পর এক পাহাড় নপকে মাওজং, মাওপেং, নিমপো, সাইসোপেন, মাওফাঙ-কে পাশে রেখে পথ চলে এগিয়ে। আধাআধি পথ পেরুতেই সবুজ গালচেয় মোড়া পাহাড় চূড়া মরালের মতো মাথা ভুলে দাঁড়িয়ে। বাস চলে তারই কাঁধে ভর রেখে তির তির করে এগিয়ে। চলার পথের নয়নাভিরাম নৈসর্গিক শোভার তুলনা হয় না। তবে পথপাশের গভীর খাদ কিছুটা যেন ভীতির সঞ্চার করে।

বিশ্বের সবচেয়ে বেশি বৃষ্টি হয় চেরাপুঞ্জিতে। ঐতিহাসিক রেকর্ড রয়েছে বছরে ৫০০ ইঞ্চির মতো। জুলাইতেই বৃষ্টি হয় ৩৬৬” অর্থাৎ সিংহভাগ। ১৮৬১ খ্রিস্টাব্দে বৃষ্টিপাতের পরিমাণ ছিল ৯০৫ ইঞ্চি। তবে গত কিছুকাল চেরাপুঞ্জিতেও বৃষ্টি অনিয়মিত হয়ে পড়েছে।

শিলং থেকে ৫৫ কিমি দূরে চেরাপুঞ্জির কাছে খাসি পাহাড়ের দক্ষিণ ঢালের মাওসিনরাম (Mawsynram) বছরে ২৩০০ cm বৃষ্টি হয়ে রেকর্ড গড়েছে। মাওসিনরামের আর এক দ্রষ্টব্য, চেরাপুঞ্জির বিষয় একপ্রাচীন গুহায় স্ট্যালাগ-মাইট পাথরের শিবলিঙ্গ। দেব শিরে বছরভর জল ঝরে গরুর বাঁটের (স্তন) মতো বুলন্ত চুনাপাথরের দণ্ড থেকে। স্বাভাবিকভাবে গড়ে উঠলেও আরণ্যক পরিবেশের এই গুহাটির জন্ম-ইতিহাস আজও অজ্ঞাত। দৈর্ঘ্য ও গভীরতাও অজানা। জনশ্রুতি, গারো পাহাড়ের সিঁজুগুহার সঙ্গে সংযোগ রয়েছে এর। বেশ কয়েকটি মনোলিথ পিলার তোরণ সজিয়েছে প্রবেশ পথে। তোরণ পেরিয়ে ১½ কিমি পায়ে গিয়ে গুহা। নানানধর্মী পাথরদণ্ড গুহাময়। শরীর ও

মাথা বাঁচিয়ে পাথর চুইয়ে পড়া জল ডিঙিয়ে ভেতরে যাওয়া চলে। শ্রিলিং-এ ভরা গুহায় চলা। তবে, আলো সঙ্গে থাকা একান্তই দরকার। ৫ টাকার টিকেট লাগে গুহা দেখতে।



থাকার জন্য আছে CH, DB, রামকৃষ্ণ মিশন অতিথি ভবন ও আমেরিকান মিশন। আর হয়েছে MTDC-র ৩০ বেডের Orchid Hotel ক্যান্টিন সহ

মোসমাই-এর মুখে।

চেরাপুঞ্জি পর্বতদের আর এক আকর্ষণ বাজার থেকে ৬ কিমি দূরে বিশ্বের চতুর্থ উচ্চতম জলপ্রপাত মোসমাই ফলস। বাজার দু'য়েক ফুট উঁচু থেকে কয়েকটি জলের ধারা নামছে। বর্ষায় ভয়ংকর আকার নেয় এই ফলস। Dain-uhlen, Nohkai-likai ছাড়াও ফলস রয়েছে আরও নানান। ডাইনে বাংলাদেশের (সিলেট) মাঠ-প্রান্তর।

আর রয়েছে চেরা বাজারের ১ কিমি আগেই রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম। ১৯২৪ খ্রিস্টাব্দে সেলাতে প্রতিষ্ঠিত হলেও স্থানান্তরিত হয় চেরাপুঞ্জিতে ১৯৩১এ। পাঁচ শতাধিক পড়ুয়া পাঠ নিচ্ছে আশ্রমের উচ্চ মাধ্যমিক বিদ্যালয়ে। আর আছে হস্তশিল্প প্রশিক্ষণ কেন্দ্র, বিক্রয়কেন্দ্র ও অতিথি ভবন আশ্রমে। দুপুর ১২—১৫-৩০টায় দ্বার বন্ধ থাকে শ্রীরাম-কৃষ্ণ মন্দিরের।

চেরা বাজার থেকে ৩ কিমি দূরে পল কলিকাই ফলস। মোসমাই-এর থেকেও আকর্ষণীয়। নানানধর্মী অর্কিড ও প্রজাপতি মধুময় করে তুলেছে পরিবেশকে। আবার সেলার পথে ১০ কিমি গিয়ে কেইনরেম ফলসটিও দেখে নিতে পারেন নিজ ব্যবস্থায়। আর আছে Presbyterian Church চেরায়। চেরা বাজারের সাধারণ হোটেল আহাব মিললেও প্যাকেট লাঞ্চ সঙ্গে নেওয়া উচিত হবে শিলং থেকে। আর স্মারকরূপে সঙ্গী করুন চেরা বাজারের মধু।

ডাওকি

শিলং-চেরাপুঞ্জি পথে ২২ কিমি যেতে উমতিগর থেকে আবার বামহাতি ৫৮ কিমি গিয়ে ডাওকি। খাসি পাহাড়ের শোভা দর্শনের সাথে বাংলাদেশ সীমান্ত শহর ডাওকি বেড়িয়ে ফেরা যায় দিনে দিনে। ডাওকি শহর থেকে ১½ কিমি দূরে বাংলাদেশ সীমান্ত। নিয়মিত বাস যাচ্ছে শিলং থেকে। ১০ কিমি দূরের সিনডাই গুহা আর এক দ্রষ্টব্য।

জয়ন্তিয়া হিলস

শিলং পাহাড় থেকে ৬৫ কিমি পূর্বে NH 44-এ ১৩৮০ মি উঁচুতে জয়ন্তিয়া জেলার সদর জোয়াই (Jowai) জয়ন্তিয়া-দের বিশ্বাস মঙ্গোলিয়ানদের উত্তরপুরুষ এরা। জোয়াই-এরও মূল আকর্ষণ তার নৈসর্গিক শোভা। বিজি শহর। ভাষাভেদেও সঙ্কট আছে। হিন্দি, ইংরেজি বা বাংলার কল নেই—কেন যেন সঙ্কট বাড়ে জয়ন্তিয়াদের সঙ্গে কথা বলতে। হোটেলেরও

অভাব জোয়াই শহরে। অতি সাধারণ মানের *H Broadway* আছে বাসস্ট্যান্ডের বাঁকে। আর আছে *CH ও IB*, অব: *DC*, *Jowai* বাস, মিনিবাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে জোয়াই থেকে শিলং পাহাড়ে (মউলং তথা বড়বাজার)। শিলং-শিলচর বাসও যাচ্ছে জোয়াই হয়ে। পথেই পড়ে শিলং থেকে ৫৬ আর জোয়াই-এর ৯ কিমি আগে থাডলাস-কেন (*Thadlaskein*) লেক। পর্যটক আকর্ষণ উদ্বেগ না হলেও থাডলাসকেন-এর প্রশস্তি তার ঐতিহাসিক লেকের জন্য। জয়ন্তিয়া রাজ্যের বিশ্বেদ্বী বোডো (*Bodo*) বংশোদ্ভূত প্রধান (*USajiarNiangli*)-এর ঐতিহাসিক ঘটনা অর্থাৎ অন্যায়ের প্রতিবাদকে বরণীয় করে তুলতে তাঁর স্ববংশীয় উপজাতীয় ২৯০ অনুগামী প্রথামাফিক ধনুক দিয়ে লেক খনন করেন। চড়ুইতাতির আদর্শ পরিবেশ। লেকের পাড়ে *MTDC-র Orchid Inn* গত কিছুকাল পরিভ্রম্য হয়ে বন্ধ। জুলাই মাসে জয়ন্তিয়াসেইর ভাল ফসলের কামনায় ৪ দিনের *Behdein khlam* উৎসবে নাচ-গান-বাজনায় বিভোর হয়ে ওঠে। নানান লৌকিক ক্রিয়াকর্মের সঙ্গে খেলায় মেতে ওঠে জয়ন্তিয়া পাহাড়।

তেমনই জোয়াই-এর আর এক অতীত অসমের হাফ-লম্বুই পথে ৫৮ কিমি যেতে উষ্ণ জলের প্রসবণ গরম-পানিরও সলিল সমাধি ঘটেছে *North East Electric Power Corporation (NEEPCO)*-এর কপিলি নদীতে বাঁধে গড়া লেকের জলে। উৎসাহীরা আরও ৬ কিমি দূরে অসমের উমরাঙসোয় এক রাতের অবস্থানে দেখে নিতে পারেন বৃহত্তম হাইডেল প্রোজেক্ট। ১৯ কিমি জুড়ে কর্মকাণ্ড চলছে *KHEPA-র*। বাঁধ পড়েছে কপিলি নদীতে দুই প্রস্তে। *NEEPCO* প্রকল্পে জলবিদ্যুৎ হচ্ছে 250 MW.

MTC ও ২টি প্রাইভেট বাস যাচ্ছে জোয়াই থেকে ৩২ ঘণ্টায় উমরাঙসো। থাকারও হোটেল মেলে *H Lily* ও *H Pubali* বাস পথের বাজারে। আর আছে বাসের বিপরীতে ১ কিমি দূরে কপিলি নদীর পাড়ে মনোরম পরিবেশে *KHEPA-র Inspection Bungalow* ও অসম ট্যুরিজমের ট্যুরিস্ট লজ প্রোজেক্ট ক্যাম্পাসে।

শিলং থেকে ৬৫ আর জোয়াই-এর ২৪ কিমি উত্তরে ভ্রমণার্থীদের আর এক স্বর্ণ নারটিআঙ। হিন্দুধর্মের পাঠ-স্থানও এই নারটিআঙ। ৫০০ বছরের প্রাচীন দুর্গা অর্থাৎ জয়ন্তেশ্বরীর মন্দির রয়েছে। আর আছে পাহাড় কূঁদে তৈরি মনোলিথ পিলাস। একটি তার ২৭ ফুট উঁচু, ব্যাস ২ ফুট ৬ ইঞ্চি আর প্রস্থ ৬ ফুট। জয়ন্তিয়াসেইর বিশ্বাস ১৫০০-১৮৩৫ খ্রিস্টাব্দে তৈরি উপদেবতার মারফালিকির ছড়ি এই পিলাস। রক গার্ডেন নামেও সমধিক খ্যাত নারটিআঙ। জোয়াই থেকে বাসে বা ট্যাক্সিতে বেড়িয়ে নেওয়া যায় গরমপানি ও নারটিআঙ। তবে, ত্রীয়ার দর্শনার্থীদের একটা রাত জোয়াই বা উমরাঙসোয় থাকা দরকার হয়ে পড়ে।

শিলং থেকে ১৪০ কিমি দূরে রানীকোঠ—আর এক সুন্দর প্রকৃতি। মৎস্য প্রেমিকদের মাছ ধরারও ব্যবস্থা মেলে।

গারো হিলস

পর্যটকবিমুখ আর এক দিগন্ত পড়ে রয়েছে মেঘালয়ের পশ্চিমে গারো পাহাড়ে। তুরা ও আরাবেল্লা পর্বতশ্রেণীর বিস্তার গারো পাহাড় হয়ে। গারো অর্থ গহীন অরণ্য। তেমনই রয়েছে অসংখ্য বন্যপ্রাণীর বাস গারো পাহাড়ের চিরসবুজ অরণ্যে। গারো সম্প্রদায়ের বাস গারো পাহাড়ে। তবে *Achiks* বলে গর্ববোধ করে। তেমনই এদের বসত-ভূমিকে *Achiks Land* বলে থাকে এরা। সংখ্যাগরিষ্ঠ লোক চরকে হবে। অতীতে এরা তিব্বতের তরুণা প্রদেশ থেকে গারো পাহাড়ে আসে বসবাসের জন্য। জেলা সদর বসেছে ৬৫৭ মি উঁচু তুরায়। ছড়িয়ে ছিটিয়ে পাহাড়চূড়ো, ধাপে ধাপে বাড়িঘর। প্রকৃতিই গারো পাহাড়ের মূল আকর্ষণ। ৫ কিমি ট্রেক করে ১৪০০ মি উঁচু তুরা পিক থেকে সূর্যাস্তও রমণীয়। সর্বোচ্চ (১৪১২ মি) নকরেক পিক। সিল্কোনা বাগিচাটিও দেখে নেওয়া যায় তুরা পিকে। ঠিক তেমনই বৈচিত্র্যে ভরা এদের সমাজজীবন। গারোদের মধ্যেও মাতৃকেন্দ্রিক সমাজ প্রথার প্রচলন। বিমাতা ও শাশুড়িকে বিবাহের প্রথাও চালু আছে এদের সমাজে।



অসমের গুয়াহাটি, গোয়ালপাড়া, ধুবড়ি হয়ে পথ গিয়েছে। *MTC-র* বাস সকাল ৭টায় শিলং ছেড়ে ১০টার গুয়াহাটি পৌঁছে ৩২৩ কিমি দূরের তুরায় যাচ্ছে ১৯-০০টায়। এদের দ্বিতীয় বাসটি ১৭-০০টায় শিলং ছেড়ে তুরায় যাচ্ছে। *Assam Valley Travels* ও *DD Travels*-এর নাইট সুপারও চলছে শিলং থেকে তুরায়—গুয়াহাটি হয়ে। আর যাচ্ছে ২২০ কিমি দূরের গুয়াহাটি থেকে সকাল ৬-০০টায় *MTC-র* বাস। ১৭০ কিমি দূরের গোয়ালপাড়া থেকেও সকাল ৬-০০টায় প্রাইভেট বাস আসছে তুরায়। ধুবড়ি থেকেও বাস মেলে তুরায়। কলকাতা যাত্রীদের সহজতম পথ—নিউ বঙ্গাইগাঁও পৌঁছে ফেরিতে ব্রহ্মপুত্র পেরিয়ে গোয়ালপাড়া হয়ে তুরায় চলা।

গারোর যুদ্ধপটু, দান্দা-হাজামা লেগেই আছে এদের মধ্যে। চাল থেকে তৈরি *চু মদ* এদের প্রিয় পানীয়, সঙ্গে চলে ডামাকু। গো-মাংস, বাঘ ও সাপের মাংসও খায় এরা। এদের আর এক প্রিয় খাদ্য কুকুরপিঠে। অভিনব এর প্রস্তুতপ্রণালী। একটা কুকুরকে আঁকুচ চাল খাইয়ে তাকে আঙুনে পোড়ানো হয়। তারপর কেটে কেটে ভোজ্য চলে গারোদের। অনেকটা চিকেন রোস্ট-এর মতো আর কি। এদের বিবাহ-প্রথা ও অস্ত্রোপক্ৰিয়াও বৈচিত্র্যে ভরা। তেমনই বসন্তে চার দিন চার রাত ধরে গারোদের ফসল কাটার উৎসব *ওয়ালগা* (*Wangala*)-র পর্যটক আকর্ষণও উদ্বেগ। উৎসবের অঙ্গ দেবতা *Patigipa Rarongipa-র* আশিষ লাভ। উৎসবের সমাপ্তি দিনে *Dance of a Hundred Drums* আকর্ষণে অনবদ্য। বৈচিত্র্যে ভরা, ঝলমলে জাতীয় পোশাকে সেজে নাচে-গানে অংশ নেয় আবালবৃদ্ধ বনিতার দল। সঙ্গে চলে ভোজ গ্রামবাসীদের।

আরাবেল্লা ও তুরা গিরিশ্রেণীর মাঝে বালপাক্রাম

উপত্যকায় তুরা থেকে ১২৭ কিমি দূরে বাঘমারা। বাঘমারা থেকে ২০ কিমি গিয়ে আরণ্যক পরিবেশে পর্যটকপ্রিয় *সিঙ্গু গুহা*। চূনাপাথরের এই গুহার সাথে কাপ্রি দ্বীপের *ব্রু প্রোটোর* সাদৃশ্য মেলে। পথশোভাও সুন্দর। অদূরে নাফক লেক, মৎস্য শিকারীদের কাছে স্বর্গবিশেষ। তেমনই পাখিদেরও স্বর্গরাজ্য এই নাফক। বাঘমারা থেকে শিলংমুখী নতুন পথে আরও ৪০ কিমি গিয়ে ৫ কিমি পায়ে হাঁটা দূরত্বে বালপা-ক্রাম। নৈসর্গিক সৌন্দর্যের জন্য এর প্রশস্তি। তেমনই abode of perpetual winds বলেও খ্যাতি আছে বালপাক্রামের। গারোদের বিশ্বাস মৃত্যুর পর আত্মা সাময়িক বিশ্রাম নেয় বালপাক্রামে। এদের জারিজুরিতে স্থানীয়রা শঙ্কিত। তুরা থেকে বাসে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। থাকারও ব্যবস্থা আছে বাঘমারায় *PWD IB*-তে। তবে রিজার্ভ জিপে তুরা থেকে দিনে দিনে বাঘমারা/সিঙ্গু/বালপাক্রাম বেড়িয়ে নেওয়াই উচিত হবে অত্যাধিকারীদের। অরণ্যে ছাওয়া পাহাড়ভূমি, রডোডেনড্রন ও অর্কিড পঞ্চাশকে মধুময় করে তোলে। হাতিদের স্বর্গরাজ্য গারো পাহাড়ে রেডপাণ্ডা, বিরল

প্রজাতির স্লোলারিস, বিনটুরঙ, পিটার গ্যান্ট, নানান বর্ণের নানান আকারের মথ ও প্রজাপতির সাথে বনচরদের দর্শন লাভ অসম্ভব নয় এপথে। তেমনই নাফক লেকের কাছে সিঙ্গু গুহা/স্যাঙ্কচুয়ারি ও বালপাক্রাম ন্যাশানাল পার্ক আজও আরণ্যক নির্জনতায় কাল গুনছে পর্যটক আগমনের। সিঙ্গুতেও *বনবাংলা* ও সিমসং নদীর পাড়ে *ট্যারিস্ট লজ* হয়েছে।



গারো পাহাড়ে ভাল হোটেল নেই। সাধারণ সাজে রয়েছে বাস গ্যারেজের পিছনে প্যারেড গ্রাউন্ডেব ডাইনে *রাজকমল*, নিচুতে *ওয়েস্টার্ন* আর বামে *মিল্ক হোটেল*। এদের কাছে S ৬০-১০০ D ১০০-১৭৫ টাকায় মেলে। *H Mangum*, DAB ২৭৫-৬০০। আর আছে শহরে ঢুকতে ৪ কিমি আগেই ১৪০০ মি উঁচু তুরা পিকে যাতায়াতে অসুবিধা সত্ত্বেও থাকার পক্ষে মনোরম *সার্কিট হাউস* ও *ডাকবাংলো*। দুয়েরই বুকিং: D C, Tura; District Council Members Hotel-এর অব: Secretary, Tura, Meghalaya. আর হয়েচে MTDC-র *Orchud L*, S ১৬৭ D ২১৫ T ২৫৬ ডর্মি বেড ৩০ তুরা পিকে। ৬০ বেডের *যাত্রী নিবাস*ও হয়েছে অর্কিড *অঙ্গনে*।

পথের পাঁচালী—২

হিন্দী :

Inquiry ka daftar kahan hai?
Kya Agra ke liye thru tren hai?
Tren anc/chhutne ka kya taim hai?
Taj Ekspress steshan se kab chhutati hai?
Agra kis taim pahunchegi?
Agra wali gari kis platform se chhutegi?
Gari chhutne wali hai.
Yahan se Agra kitni dur hai?
Rail ka kya kiraya hai?
Tikat ghar kahan hai?
Agra ke liye ek sit buk kar dijiye.
Is steshan ka kya nam hai?
Yahan ka mashhur bazar kaunsa hai?
Mujhe koi bharose/aitbar layak dukan batlao.
Dukanen kis taim khultt hain?
Main kal kuchh khariidari karne jana chahta hun.
Iski-kya kimat hai?

ইরোজি :

Where is the enquiry office?
Is there a through train for Agra?
What time does the train arrive/depart?
When does the Taj Express leave the station?
What time does it reach Agra?
Which is the platform for the train to Agra.
The train is about to start.
How far is Agra?
What is the rail fare?
Where is the booking office?
Book me a seat for Agra.
What is the name of this station?
Which is the main shopping centre here?
Suggest me some dependable shop.
When do the shops open?
I shall go shopping tomorrow.
What is the price of this?

বাংলা :

অনুসন্ধান দপ্তরটি কোথায়?
আগ্রা যাবার জন্য কোনো থ্রু ট্রেন আছে কি?
ট্রেনটি আসা/যাবার সময় কি?
তাজ এক্সপ্রেস কখন ছাড়বে?
ট্রেনটি আগ্রায় কখন পৌঁছাবে?
আগ্রা যাবার ট্রেন কোন প্ল্যাটফর্মে?
ট্রেনটি এখনই ছাড়বে।
আগ্রার দূরত্ব কত?
রেল ভাড়া কত?
বুকিং অফিসটি কোথায়?
আগ্রার জন্যে একটি সিট বুক করুন।
এ স্টেশনটির কি নাম?
এখানকার প্রধান বাজার কোনটি?
নির্ভরশীল এমন কয়েকটি দোকানের নাম বলুন।
কখন খোলে দোকানগুলি?
আগামীকাল কিনতে খাব আমি।
এর দাম কত?

অরুণাচল

ল্যান্ড অব ডন-লিট মাউন্টেনস অর্থাৎ অরুণাচল। জাতীয় স্বার্থে বোরখা চেপেছে প্রকৃতির রূপ-রসে মদির অতীতের Hidden Land অরুণাচলে। মহাভারত তথা পৌরাণিক নানান আখ্যানও ছড়িয়ে আছে এর পথে-প্রান্তরে। একদিকে গগনচুম্বী তুষারশুভ্র হিমালয়, অপরদিকে আদিম অরণ্যে ছাওয়া পাহাড়ী উপত্যকায় বিরল প্রজাতির বন্য-প্রাণীর পাশে অরণ্যচারী উপজাতির বাস—এই নিয়ে অরুণাচল। পশ্চিম আর উত্তর থেকে ছড়িয়ে ছিটিয়ে হিমালয়; পূর্ব ঢেকে পাটকোই পর্বত। দক্ষিণে খরস্রোতা নদ। আর অশ্বক্ষুরাকার অরুণাচলের বুক চিরে বয়ে চলেছে কামেং, সুবনসিরি, সিয়াং, লোহিত ও তিরাপ পাঁচ পাহাড়ী নদী। সীমান্তকে সুদৃঢ় করতে ১৯৪৮-এ গড়ে ওঠা North East Frontier Agency অর্থাৎ NEFA ১৯৭২-এর ২০শে জানুয়ারি নতুন করে নাম হয়েছে অরুণাচল। শুধু নামেই নয়—কার্যত ভারত রাষ্ট্রের অরুণ (সূর্য) আঁচল (কিরণ) ৪-২০টায় এসে পড়ে এই অরুণাচল রাজ্যে। ভারতের ২৪তম রাজ্যের মর্যাদা পেয়েছে ১৯৮৭র ২০শে ফেব্রুয়ারি অরুণাচল; সদর দপ্তর বসেছে ইটানগরে।

সারা রাজ্যটাই পাহাড়ী, ঘন সবুজে ছাওয়া। গ্রীষ্মে হাজারো রকম ফুল বাসর সাজায়—তেমনই কুজন শোনায় রঙবেরঙের হাজারো পাখি অরুণাচলের পথে-প্রান্তরে। অর্কিড গার্ডেনের জন্য টিপির বিশ্ব প্রশস্তি আছে। পাহাড়ী নদীর যৌবনোদ্ধত রূপ, মনপা-আকা-আপতানি-আদি-মিরি-ওয়াংচু-মিশমি-নোক্টে সম্প্রদায়ের মঙ্গোলিয়ানদের বাস। মূলে ২০ হলেও ৮২ সম্প্রদায়ের উপজাতি মিলে রাজ্যের ৭৯% বাসিন্দা তপশিলীভুক্ত উপজাতি। বনজ সম্পদেও সমৃদ্ধ এই অরুণাচল। কৃষি ও বনজ সম্পদ এদের জীবিকার মুখ্য মাধ্যম। এদের অনিন্দ্য লাভগামিপ্রিত বণালী চেহারা, আতিথ্যপূর্ণ রমণীয় ব্যবহার পর্যটকদের অবিস্মরণীয় অভিজ্ঞতা বিশেষ। প্রকৃতির পূজারী এরা। বৌদ্ধ ও বৈষ্ণব ধর্মাবলম্বী—খ্রিস্টধর্মের প্রভাব পড়েনি আজও এদের মাঝে। গরু ও মোষের সন্ধরে জাত মিথুন এদের আরাধ্য দেবতা। এমনকি পাহাড়ী রাজ্যের সংঘাত থেকেও মুক্ত এরা। হয়তো বা রামকৃষ্ণ মিশনের শিক্ষা ব্যবস্থা হেতু প্রভাবিত হয়নি আধুনিকতার বিষময় ফলে এদের সমাজজীবন। প্রাকৃতিক সৌন্দর্যে মহীয়ান অরুণাচল, তেমনই হস্তশিল্পেও যথেষ্ট পারদর্শী অরুণাচলবাসী। বেত ও বাঁশের নানান সজ্জার পর্যটকদের মুগ্ধ করে। বিমান বা রেল আজও পৌঁছায়নি অরুণাচলে। সড়ক সংযোগ ক্রম পড়ে উঠছে সারা রাজ্য জুড়ে। ৭৪০১ কিমি সড়ক পথে যান চলাচল করে। তবে, ১৯৪৪এ ব্রিটিশ জেনারেল Vin-

egar Joe Stillwell-এর তৈরি অরুণাচলের দক্ষিণের Ledo থেকে Myanmar (বার্মা)-এর উত্তর-পূর্বে Myitkinya পর্যন্ত ৪৩০ কিমি দীর্ঘ (বিশ্বের সবথিক ব্যয়ে) ১৩৭ মিলিয়ন US\$ ব্যয়ে গড়া Stillwell সড়কটিও আজ বন্ধ। তবুও নয়নাভিরাম প্রাকৃতিক সৌন্দর্যমণ্ডিত অরুণাচল কেন যেন পর্যটক থেকে দূরে সরে রয়েছে।

১০টি জেলায় গড়া রাজ্যটির ভৌগোলিক অবস্থানও বৈচিত্র্যে ভরা। দক্ষিণে অসম ও নাগাল্যান্ড, পূর্বে মায়ানমার, পশ্চিমে ভুটান আর উত্তর, পূর্ব ও পশ্চিম জুড়ে চীন। অর্থাৎ ভুটান, চীন ও বার্মায় বেষ্টিত পাহাড়ী রাজ্য অরুণাচল। Inner Line Permit প্রথা চালু রয়েছে সীমান্তবর্তী রাজ্য অরুণাচল যেতে। তবে, ভারতীয় পর্যটকদের ILP পেতে কোনো বাধানিষেধ নেই। উচিতও হবে নির্ধারিত ফর্মে প্রতিটি পয়েন্টের জন্য ১৫ দিন করে ILP অর্থাৎ Tourist Card করে নেওয়া। (1) Joint Secretary (Political), Govt of Arunachal, Itanagar-791111; বা Deputy Commissioner—Tezu, Along, Ziro, Bomdila, Khonso; বা Liaison Officer, Arunachal Pradesh, Parbati Nagar, Tezpur, Assam-কেও লেখা যেতে পারে। আবার Deputy Resident Commissioner, Govt of Arunachal Pradesh, Roxy Cinema, 4-B, Chowringhee Placc, Calcutta-700013, @ 2286500; বা Resident Commissioner, Govt of Arunachal, Kautilya-marg, Chanakyapuri, ND. @ 3013956; বা Liaison Officer, Govt of Arunachal Pradesh, R G Barua Rd, Guwahati-781021, @ 26544/ Jorhat/Mohanbari/Shillong/Lilabari-থেকে রাজ্যের নানান পয়েন্টের জন্য পৃথক পৃথক এন্ট্রি পারমিট করে চলা যেতে পারে অরুণাচলে। ফি—প্রতি পয়েন্ট ১৫ হারে প্রতি জন।

আর বিদেশীদের অরুণাচল ভ্রমণে details of name, address, passport reference, profession, duration of stay, purpose of visit জানিয়ে Restricted Area Permits-এর জন্য The Secretary, Ministry of Home Affairs, Govt of India, (F-1) Nayak Bhawan, Khan Market, New Delhi-110001, @ 619709-কে লিখতে হয়।

বমডিলা

কলকাতা থেকে অরুণাচলের কাছে জেলা কামেং। কামেং টুকরো হয়েছে পূর্ব আর পশ্চিমে। পশ্চিম কামেং জেলার সদর দপ্তর বসেছে ২৫৩০ মি উঁচু বমডিলায়। মেঘেরা এখানে ঘরে ঘরে হানা দেয়, কুয়াশা রোধ করে দৃষ্টি—দিনভর। শীত বেশি বমডিলায়। ডিসেম্বর থেকে মার্চের

প্রথম সপ্তাহে বরফও পড়ে বমডিলায়। বরফে মোড়া হিমালয়ের নয়নাভিরাম নৈসর্গিক শোভার জন্য বমডিলায় প্রস্তুতি। উঁচু-নিচু—ধাপে ধাপে পাহাড়, ভিলাধর্মী বাড়িঘর। বর্ণময় মনশা উপজাতিদের বাস। তাত্ত্বিক বৌদ্ধ এরা। আর আছে পাহাড় শিরে বৌদ্ধ গুম্ফা, নিচুতে লোক সংস্কৃতির ছোট্ট মিউজিয়াম, লাইব্রেরি, আর্ট গ্যালি ক্র্যাফট সেন্টার ও আপেল বাগিচা। তেমনই চলেতে-ফিরতে দেখতে মেলে চেরি ফুলের গাছ। পায়ে পায়ে তিব্বতীয় কলোনি তেনজিং গ্যাং-ও বেড়িয়ে নিন। ১৯৬২র ২১শে নভেম্বর চীন এই বমডিলা দখল করে আরও ৩০ কিমি নেমে টেক্সা হয়ে মিশামারীর পথে ফুটহিলসে পৌঁছায়। বোড়াবার পক্ষে এপ্রিল-মে ও সেপ্টেম্বর-অক্টোবর মাস মনোরম। তবুও যেন অক্টোবরে মাধুর্য বাড়ে।



নিকটতম বিমান বন্দর তেজপুর ১৬০ কিমি, আর রেল ১০০ কিমি দূরের ভালুকপঙে। ট্রেন যাচ্ছে মিটার গেজে NJP-গুয়াহাটি রেলপথের রসিয়া থেকে ১১-০০টায় ছেড়ে ১৫-৩০এ রাঙ্গাপাড়া নর্থ পৌঁছে ১৭-০০টায় ১৫১ কিমি দূরের তেজপুর। আর ৮-৩০এ রসিয়া ছেড়ে ১৩-০০টায় রাঙ্গাপাড়া নর্থ যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। রাঙ্গাপাড়া নর্থ থেকেও প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৮-১৫য় ছেড়ে ১½ ঘণ্টায় তেজপুর। ৫-০০টায় রাঙ্গাপাড়া নর্থ ছেড়ে ১০-৫০এ নর্থ লখিমপুর পৌঁছে ১৭-৩০এ ৩২৭ কিমি দূরের মারকংশেলেক যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। ৫-৩০এ রাঙ্গাপাড়া নর্থ ছেড়ে অসম ও অরুণাচলের সীমান্ত ভালুকপঙ-এ যাচ্ছে ৭-০৫এ প্যাসেঞ্জার ট্রেন। ফেরে ৫-০০টায় মারকংশেলেক-রাঙ্গাপাড়া নর্থ, ৭-৪৫এ ভালুকপঙ-রাঙ্গাপাড়া নর্থ, ৫-১৫ ও ১১-৩০এ রাঙ্গাপাড়া নর্থ-রসিয়া প্যাসেঞ্জার। পরিস্থিতিজনিত কারণে সমস্তিপুর-তেজপুর এক্স ও কামাখ্যা-রাঙ্গাপাড়া নর্থ অরুণাচল এক্স ট্রেন দুটির যাত্রা স্থগিত। রাঙ্গাপাড়া থেকে বমডিলা ১৪৬ কিমি।



বাস যাচ্ছে ১৬০ কিমি দূরের তেজপুর থেকে ৭ ঘণ্টায় বমডিলায়। বাস আসছে রাজ্যের রাজধানী শহর ইটানগর থেকেও বমডিলায়। বাস আসছে ৫-৩০এ প্রতি সোম, বুধ ও শনিবার গুয়াহাটি থেকে নগাঁও/তেজপুর হয়ে ৩৪২ কিমি দূরের বমডিলায়। আর বমডিলা থেকে অরুণাচল রাজ্য পরিবহণের বাস যাচ্ছে—তাওয়াং ৭-৩০, ১৯-৩০এ প্রতি ১ দিন অন্তর ১২ ঘণ্টায়; ইটানগর যাচ্ছে ৬-০০টায় (শুক্র ছাড়া); নামফা যাচ্ছে ১৪-০০টায় শুক্র ছাড়া প্রতিদিন; দিরাং যাচ্ছে ১৫-০০টায় প্রতিদিন; গুয়াহাটি যাচ্ছে ৬-০০টায় শুক্র, রবি, মঙ্গলবার; তেজপুর যাচ্ছে ৭-৩০টায় ও সাঁঝে তাওয়াং থেকে আসা নাইট সুপার। এছাড়া Net Work Travels ও Blue Hill Travels ও সার্ভিস গড়েছে বমডিলা থেকে রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের নানান দিকের। তবুও যেন এপথের বাস চলা বেশ কিছুটা অনিশ্চয়তায় বাঁধা। প্রয়োজনে—বাস স্ট্যান্ড ৩ 22018, Resi ৩ 22125 থেকে সার্ভিসের খবর জানা যেতে পারে। গহন অরণ্যানীর মাঝ দিয়ে কামেং নদীর সাথে লুকোচুরি খেলে সর্গিল গতিতে পথ ওঠে পাহাড় বেয়ে বমডিলায়। তেজপুর থেকে সমতল পথে সোনাই-রাপাই অভয়ারণ্যের মাঝ দিয়ে ৬০ কিমি যেতে অসম ও অরুণাচল সীমান্তে ভালুকপঙ চেকপোস্টে ILP দেখাতে হয়।

অসুররাজ বাণের পৌত্র ভালুক-এর রাজধানী ছিল ভরেলি নদীর দক্ষিণপাড়ে ভালুকপঙ-এ। জনশ্রুতি, বিধবস্ত দুগাটি নাকি অসুররাজের। মৎস্য শিকারীদের স্বর্গরাজ্যও ভালুকপঙ। ভারতের বৃহত্তম (৭৫০০রও অধিক) অর্কিড ও ক্যাকটাসের অর্কেডারিয়ামটিও উচিত হবে দেখে চলা ভালুকপঙের ৭ কিমি দূরে টিপি (Tipi)-তে। টিপি থেকে ৬ কিমি দূরে অসম ও অরুণাচলের সীমানা জুড়ে নামেরি অভয়ারণ্য। পরিবেশের কথা মাথায় রেখে ইকো ক্যাম্প গড়েছে নামেরি অরণ্যে। তাঁবুতে রাত্রিবাসের ব্যবস্থাও মেলে। টিপি হয়ে পথ পৌঁছায় টেক্সা ভ্যালি। উপত্যকা জুড়ে সেনা ছাউনি। আরও যেতে দুই নদীর সঙ্গমে রূপা-র IB, রূপা থেকে পথ ওঠে চড়াই বেয়ে বমডিলায়। পথে পড়ে জিরো পয়েন্ট।

অরুণাচল □ রাজধানী: ইটানগর। আয়তন:

৮৩৭৪৩ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৮৫৮৩৯২।

ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.১০%। পুরুষ:

৪৬১২৪২। নারী ৩৯৭১৫০। ১৯৮১-৯১এ

লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ২২৬৫৫৩। বৃদ্ধির হার:

৩৫.৮৬%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ১০। বসতির

ঘনত্ব সবচেয়ে কম অরুণাচলে। প্রতি ১০০০ পুরুষে

নারী: ৮৬১। সাক্ষরের হার: ৪১.২২%। প্রধান

ভাষা: মনপা, আকা, মিজি, খামতি; এ ছাড়াও নানান

উপজাতীয় ভাষার প্রচলন আছে অরুণাচলে। তবে,

সরকারি দপ্তরে ইংরেজির প্রচলন রাজ্য জুড়ে।

বাংলা, অসমিয়া ও হিন্দির প্রচলনও উল্লেখ্য

অরুণাচলে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৪১৭৬.০০

টাকা (১৯৮৯-৯০)।

অঞ্চলভেদে শীত, গ্রীষ্ম ও বৃষ্টিতে তারতম্য আছে।

বৃষ্টিপাত: কামেং ৩৩, সুবনসিরি ২৬৬, সিয়াং ২২৯,

লোহিত ৩৯৩, তিরাপ ৩৭০ ইঞ্চি। তাপমান: কামেং

০.৫-২৩.৩°, সুবনসিরি ২.২-২৮.১°, সিয়াং ৩.১-

৩৩.০°, লোহিত ৪.৭-৩৭.৩°, তিরাপ ৯.১-৩১.২°

সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। রেল না পৌঁছালেও

বিমান যাচ্ছে অরুণাচলের তেজু, পাশিঘাট, আলং,

জিরো, দাপোরিজো পাঁচ বিমানবন্দরে।

বাজার ছাড়িয়ে শহর পেরিয়ে বাস ওঠে ৮০০০ ফুট উঁচু পাহাড় শিরে বমডিলায়। সামনে নেহরু পার্ক—পার্কের ডাইনে অরুণাচল পবনবিরে ট্যুরিস্ট লজ, অব: Tourist Information Assistant, Bomdila-790001, ৩ (03752)22049. লাগোয়া সার্কিট হাউস, তার উপরে শি ডাবলু ডি-র পর্যবেক্ষণ বাসো; দুইয়েরই অব: D C, West Kameng, Bomdila-1, ৩ 22028.

বিপরীতে বাঁয়ে প্রাইভেট Hotel La, DCB ১২৫ DAB ২২৫। আর আছে নিচুতে বাস স্ট্যান্ডে Dawa H, H Chuki, এদের কমন বাথের ২ বেডের ঘর ৮০ থেকে; দুইয়ের মাঝে বাজারে প্রাইভেট Yatri Nibas আছে বমডিলায়। ভালুকপঙ আছে বাস স্টপ লাগোয়া দুই রাজ্যের সীমান্ত জুড়ে অসম ট্যুরিজমের ট্যুরিস্ট লজ; টিপি-তে নদীর ধারে আছে Forest IB.

তাওয়াং

সিমলা-মুসৌরী-দার্জিলিং-এর মতো বহুমুখী পর্যটক আকর্ষণে উন্মোচ্য না হলেও গুম্ফা ও নৈসর্গিক শোভার জন্য উচিত হবে তাওয়াং বেড়িয়ে নেওয়া। তাওয়াং অর্থ বোড়ার আশীর্বাদ। বমডিলা থেকে বাসেই চলুন ১৮০ কিমি দূরের তাওয়াং। অরুণাচল রাজ্য পরিবহণের বাস যাচ্ছে প্রতি ১ দিন অন্তর বমডিলা থেকে সকাল ৭-৩০টা, ঘণ্টা নম্বরের পথ; ভাড়া ৫৯। AP State Roadways ও প্রাইভেট সাংগ্রিলা ট্রাভেলের তেজপু-তাওয়াং নাইট সুপারও যাচ্ছে প্রতি ১ দিন অন্তর ১৯-৩০টা বমডিলা হয়ে। দিরাং হয়ে পথ গিয়েছে। দিরাং-এ আপেল বাগিচা, বৌদ্ধ মনাস্ত্রি দেখে চলা যায়। তেমনই মেলে বৈশাখী পেরিয়ে আরও যেতে ১৯৬২র চীনা যুদ্ধের স্মৃতিরঞ্জিত নানান ওয়ার মেমোরিয়াল এপথে। বমডিলা থেকে ১০৩ কিমি দূরে ৪২১৫ মি উঁচু বরফাবৃত সেলা টপও পেরুতে হয় এপথে। ১ কিমি দীর্ঘ গ্যারাডাইস লেকটি সেলার আর এক অনন্য দর্শন। লেকের জলে বরফ ভাসে। ট্রাউট হ্যাচারিও হয়েছে সেলা পাস পেরুতেই Nuramang-এ। চাষবাস হচ্ছে পাহাড়ী ঢালে। পাহাড়ী নদী বেরিয়েছে সেলা থেকে। চমরী গাই চরে বেড়ায়—ইয়াক-দেরও দর্শন মেলে সেলায়। শিবমন্দির ও বৌদ্ধ গুম্ফাও হয়েছে সেলায়। পথ যথেষ্ট বন্ধুর, চলার পথের নৈসর্গিক শোভা আকর্ষণ করে পর্যটকদের। রক্তবেরঙের ফুলের বর্ণালী পথপাশকে রমণীয় করে তোলে। তবে, দুর্বল ফুসফুসধারীদের এপথ পরিহার করা উচিত হবে।

৩০৪৮ মি উঁচু তাওয়াং-এরও প্রশস্তি তার নৈসর্গিক শোভার জন্য। শহর থেকে দৃশ্যমান হলেও ৫ কিমি দূরে গেলু পা অর্থাৎ মহাবানপঙ্খীরে বৌদ্ধতীর্থ জগু বা তাওয়াং মনাস্ত্রি। ১৩৫ বর্গমি জুড়ে ১৬৪৩-৪৭এ Mera Lama নামে সমধিক পরিচিত Monpa Lama Loore Gyaltsar-এ গড়া Golden Namgyel Lhatse আজ হয়েছে তাওয়াং মনাস্ত্রি। জনকর্তি, বোড়ায় চেপে লামা বেরিয়েছেন মনাস্ত্রি গড়ার জায়গার খোঁজে। বোড়া যায় থেমে তাওয়াং-এ। গড়ে ওঠে মনাস্ত্রি। সেবতা সোনার তৈরি ২৬ ফুট উঁচু বুদ্ধমূর্তি। মনাস্ত্রির সিলিং-সেওয়াল বৌদ্ধ আলোখ্যে অলঙ্কৃত। লাইব্রেরির সংগ্রহও উন্মোচ্য।

মনাস্ত্রির পথেই পড়ে তাওয়াং-এর আর এক দ্রষ্টব্য আশ্রম গুম্ফা। মহিলা সম্মানসিনী পরিচালিত পাহাড়ের গহন কন্দরে নিরালা নির্জনে ৩৫০ বছরের প্রাচীন এই গুম্ফা।

নভেম্বর থেকে মার্চে বরফ পড়ে। শীতের তাণ্ডব আছে। তাপমান ফ্রিজি পয়েন্টে নেমে যায় অহরহ। তবে, মেঘদের আনাগোনা নেই বমডিলায় মতো তাওয়াং-এর আকাশে। নৈসর্গিক শোভা স্বর্গের সুবাসমণ্ডিত। হাতছানি দেয় হিমালয় প্রকৃতি প্রেমিকদের। উৎসব হয় জানুয়ারিতে। লামাদের বণাটা মুখোশ নৃত্য, মনপা জাতির লোসার লোকনৃত্য দেখা যায় উৎসবে। সোম অর্থাৎ মনপাদের মাথার টুপি বা মনপাদের শাল সঙ্গী করতে পারেন স্মারক রূপে। আর মেলে চুরপী—টিবিয় খান চুইংগামের মতো, শরীরকে উত্তপ্ত রাখতে। ইয়াকের মাংসেরও চলন আছে তাওয়াং-এ। শাঙ্গা এদের প্রিয় খাদ্য। তেমনই ছাং সুরাও মেলে যত্রতত্র।



তাওয়াং থেকে তেজপু-র যাচ্ছে সাংগ্রিলা ট্রাভেলস ১১-৩০টা ছেড়ে ১৯০ টাকায়; অরুণাচল রাষ্ট্রীয় পরিবহণ ১২-০০টা ছেড়ে ১২৭ টাকায়। বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া Shambala Traders-এ টিকিট মেলে সাংগ্রিলার। ভালুকপঙ ডোর ৪টেয় ২টি বাস একজোটে হয়ে পুলিশ প্রহরায় তেজপু-র পৌঁছায় ১১-০০টা। তাই ভালুকপঙ থেকে ৫-৩০/৬-০০টার লোকাল বাসে ২ ঘণ্টা তেজপু-র চলায় সময়ে সাক্ষ্য মেলে। তেজপু-র থেকেও যাচ্ছে একইভাবে বাস। পথ গিয়েছে আরও এগিয়ে বুলা হয়ে তিব্বতে। ১৯৫৯এ এপথেই ভারতে এসেছিলেন দালাই লামা।



বাস স্ট্যান্ডের সম্মুখে পাহাড় চুড়োয় Circuit House, DB ও PWD IB আছে তাওয়াং-এ; অব: DC, Towang বা Deputy Commissioner, Towang, Arunachal-790104. আর হয়েছে সাকিট হাউসের পথে বাজারের শিরে A P Tourism-এর ২০ বেডের Tourist Lodge, বাথ সলংঘ ঘর; থাকার পক্ষে অন্যতম। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে বাজারের মাঝে পর পর দাঁড়িয়ে—H Shangrila, H Samjhana, H Tashi Delek, H Kailash, H Shankara, H Gori Chen। কমনবাথের ঘর এদের—বেড ৬৫-১০০ টাকা হারে। মান সাধারণ হলেও চলন সই। গোয়ী চেন-এর ব্যবস্থাপনা এদের মধ্যে ভাল।

সেপ্তা: অসম রাজ্যের জিয়াভরলী নদী অরুণাচলে নাম নিয়েছে কামেং। নদীর নামে কামেং জেলা। কামেংও আজ টুকরো হয়ে পূব আর পশ্চিমে দ্বিখণ্ডিত। পূর্ব কামেং জেলার সদর দপ্তর বসেছে নতুন গড়ে তোলা শৈলশহর হাজার দুয়েক ফুট উঁচু সেপ্পায়। পথও পৃথক হয়েছে তেজপু-র ভালুকপঙ হয়ে বমডিলা সড়কের ৫০০০ ফুট উঁচু জিরো পয়েন্টে। মেঘদের রাজ্য জিরো পয়েন্ট। বিরামহীন মেঘবালাদের আনাগোনা। বমডিলা উর্ধ্বমুখী হলেও সেসা-বানা হয়ে পথ চলে নিম্নগামী জিরো পয়েন্ট থেকে সেপ্পায়। পূর্ব হিমালয়ের বন্ধুর পার্বত্য প্রকৃতি, আর্দ্র আবহাওয়া, নিবিড় সবুজ অরণ্যের অবগুষ্ঠনে ঢাকা ছোট্ট এক উপত্যকা সেপ্পার নৈসর্গিক শোভা মনোরম। চারদিকে বাহু গড়েছে পাহাড়শ্রেণী। তারই মাঝে সরকারি অফিস, কোয়ার্টার, দোকানপাট, মন্দিরও গড়ে উঠেছে শিব ঠাকুরের। ক্রাফট

সেন্টারও বসেছে উপজাতিদের হস্তশিল্পের। ডফলা বা বাগনি ছাড়াও নিশি, আপাতানি সম্প্রদায়ের উপজাতিদের বাস সেল্লায়। মিথুনও দেখতে মেলে সেল্লায়।

থাকার জন্য *Inspection Bungalow* ও *Circuit House* আছে; অব্: DC, PO-Seppa, PC-790102, Dist-East Kameng, AP. প্রাইভেট হোটেলে নেই সেল্লায়।

সরাসরি চলায় তেজপূর হয়ে যাওয়া সুবিধা। প্রতিদিন A P State Roadways-এর বাস যাচ্ছে ২১২ কিমি দূরের তেজপূর থেকে। আর প্রতি রবি ও বৃহস্পতিবার ইটানগর যাচ্ছে বাস সেল্লা থেকে তেজপূর হয়ে। Inner Line Permit লাগে সেল্লা যেতে। পথে ভালুকপণ্ডে ILP এপ্রি করাতে হয়।

ইটানগর



অরুণাচলের রাজধানী শহর ইটানগর। কলকাতা যাত্রীদের সহজতম পথ কামরূপ এল ১৪-৩৫, ২৫৭ দিন তিরুভনন্তপুরম/ কোচি/ ব্যাঙ্গালোর-গুয়াহাটি এল ১০-২০৫ রঙ্গিয়ায় পৌঁছে রঙ্গিয়া থেকে ১১-০০টায় রঙ্গিয়া-তেজপূর প্যাসেঞ্জারে ১৭-০০টায় তেজপূর গিয়ে বাসে ২২৬ কিমি দূরের ইটানগর চলা। নিম্নমিত বাসও চলে এপথে। আবার ১৬-০০, ১২-১৫য় গুয়াহাটি পৌঁছেও বাসে সরাসরি চলা যেতে পারে ইটানগর। খ্রিসাখাঞ্চি সরহিঘাট এক্স রঙ্গিয়ায় না থামলেও গুয়াহাটি যাচ্ছে ১৬-৪৫। A P Road Transport প্রতিদিন ৬-৩০, ১৬-০০টায় গুয়াহাটি ছেড়ে ইটানগর যাচ্ছে। আর পশ্চিমবঙ্গের থেকে বাস যাচ্ছে অসম ভ্যালি ট্রাভেলস ও ব্লু হিলস ট্রাভেলসের রাতভর জার্নিতে ৬৮১ কিমি দূরের ইটানগর অর্থাৎ পুরাতন শহর নাহারলগন-এ। কলকাতা থেকে ইটানগরের দূরত্ব ১৫২৯ কিমি। শিলং পাহাড় থেকেও সংযোগকারী সার্ভিস রয়েছে এদের। রাষ্ট্রীয় পরিবহনের বাসও যাচ্ছে ইটানগর থেকে গুয়াহাটি ও শিলং। শিলিগুড়ি থেকেও বাস যাচ্ছে তেজপূরে। বমডিলা/ তাওয়াং যাত্রীদের তেজপূর থেকে বাসে যাওয়াই সুবিধার। রেলযাত্রীদের উচিত হবে রাস্তাপাড়া নর্থ ফিরে ৫-০০টার প্যাসেঞ্জারে ৯-১৫য় হারমোতি পৌঁছে ১ কিমি গিয়ে বাসে ইটানগর চলা। নিকটতম রেল স্টেশন হারমোতি ৩৩ কিমি আর বিমান ৬৭ কিমি দূরের লীলাবাড়ি। ৬০ কিমি দূরের নর্থ লখিমপুর থেকেও বাস আসছে লীলাবাড়ি/হারমোতি হয়ে ইটানগরে। ত্রায়রই অবস্থান অসম রাজ্যে। হোটেলও মেলে—*আরটি, আশা, জয়া* নর্থ লখিমপুরে। পথে বান্দরদেওয়াকে অরুণাচল রাজ্যের গুরু। ILP দেখাতে হয়।



IAC-র বিমানও সংযোগ গড়েছে কলকাতা থেকে গুয়াহাটি, তেজপূর, জোড়হাট, লীলাবাড়ি, ডিঙ্গ-গড়ের। Skyline NEPC, Jet Airways ছাড়াও নানান প্রাইভেট বিমান কলকাতা থেকে গুয়াহাটি, তেজপূর, জোড়হাট, ডিঙ্গগড়, লীলাবাড়ির সার্ভিস গড়েছে। সহজতম পথ বিমানে অসমের জোড়হাট পৌঁছে বাসে ইটানগর/বমডিলা/তাওয়াং চলা। ট্যাক্সি, ল্যান্ডরোভারও মেলে এপথে।



আর নাহারলগন থেকে অরুণাচল রাজ্য পরিবহনের ২টি বাস যাচ্ছে গুয়াহাটি হয়ে শিলং। বমডিলা যাচ্ছে প্রতিদিন বাস। বাস যাচ্ছে—৭-০০টায় ছেড়ে ৬ ঘট্টায় জিরা; ৭-৪৫ ও ১৮-০০টায় হারমোতি;

৬-০০টায় ছেড়ে ১২ ঘট্টায় গুয়াহাটি; ৭-৪৫, ১১-০২, ১৪-৩০, ১৮-০০টায় নর্থ লখিমপুর। আর প্রাইভেট বাস যাচ্ছে সকাল ৬-০০টায় ছেড়ে ১৪ ঘট্টায় আলং; ৬-৩০টায় ছেড়ে ৯ ঘট্টায় পাশিঘাট; ৬-৩০টায় ছেড়ে ১৬ ঘট্টায় দাপোরিজো; তিনসুকিয়া ৪১৫ কিমি, ডিঙ্গগড় ৩৭৫ কিমি, কোহিমা ৩৫০ কিমি ছাড়াও গুয়াহাটি যাচ্ছে ১৭-০০টায় ছেড়ে পুরাতন ইটানগর থেকে। রেল না পৌঁছালেও রেলের আউট এক্সেসি বসেছে নাহারলগনে। শহরে চলেছে ট্যাক্সি আর নাহারলগনে রিক্সা মেলে।



শহরে ঢুকতেই *H Alena*, SCB ৬০ DCB ১০০ DAB ১৫০; বাজার পেরুতেই *MLA Hostel*, ডাইনে *H Hornbill*, SAB ৮০ DAB ১২৫-২৫০; আর আছে *H Lakshmi*, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৭৫; *H Ganesh*, S ৬০ D ১০০; *CH, IB*. আর *Youth Hostel* এ ঘর ৬০ বেড ২০ হারে নাহারলগনে; তবে থাকার পক্ষে ২৪ ঘরের *MLA Hostel*-টি রমণীয়, অব্: Chief Engineer, PWD, Zone-11, Itanagar বা Additional Deputy Commissioner, Naharlagun-791110.

১০ কিমির ব্যবধানে নতুন আর পুরাতন দুই শহর গড়ে উঠেছে ইটানগরে। পুরাতন—বয়সে আজও সে নাবালক, মাত্র ১৯৭৩এ জন্ম—নাম তার নাহারলগন। ২০০মি উঁচুতে পটে আঁকা ছবির মতো ছিমছাম ছোট্ট সুন্দর শহর নাহারলগন। চারপাশ অনুচ্চ পাহাড়শ্রেণীতে ঘেরা। বাজারঘাট, দোকানপাট, বহিরাবাসীর বাস মায় আবাসস্থল সবই এই পুরাতন ইটানগরে। আর আছে অরুণাচল স্টেট এসম্পোরিয়াম, অপরপ্রান্তে পোলো পার্ক অর্থাৎ বটানিক্যাল গার্ডেন তথা মিনি চিড়িয়াখানা। অসমিয়া/ হিন্দি/ ইংরেজি ত্রায়রই চলন আছে। বাংলাও অচ্ছন্ন নয় ইটানগরে। শহরের নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে অচিন নদী। পাড়ে পাড়ে উপজাতিদের বাস। ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরও বসেছে সেক্টর-সি নাহারলগনে। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। তবে, শীতের আধিক্য আছে। ভারী উলেনও দরকার শীতের দিনগুলিতে অরুণাচল ভ্রমণে।

রাজ্যপাট বসেছে লোয়ার সুবনসিরি জেলায় ৭৫০ মি উঁচুতে ১১ শতকের জিতারী বংশের শেষ রাজা শ্রীরাম-চন্দ্রের প্রাচীন রাজধানী মায়্যাপুরের ধ্বংসাবশেষের কাছে। নাম হয়েছে তার ইটানগর। আয়তনে ২৫০০ একর। হাজার পঁচিশেক বাসিন্দার বাস। জলবায়ু নাতিশীতোষ্ণ, স্বাভাবিক প্রদ ও বটে। রাজ্য পরিবহণ ও বেসরকারি বাস দুই-ই যাচ্ছে মুম্বাই নাহারলগন অর্থাৎ পুরাতন থেকে নতুন শহরে। শহরের ৩ কিমি আগে ব্যাংক-তিনালি—বামহাতি টিলার টঙে রাজভবন, সেক্রেটারিয়েট। ডাইনে আর এক টিলায় বৌদ্ধগুম্ফা *ইটাকোর্ট*। গুম্ফা থেকে শহর সুন্দর দৃশ্যমান। আরও এগুতে সেক্রেটারিয়েট। অদূরে আর এক টিলায় বটানিক্যাল তথা পোলো পার্ক। বাসে বসেই সাজ করা যায় শহর দর্শন। সুপার মার্কেটে বাসের চলা শেষ। সামান্য যেতে বামহাতি রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম ও হাসপাতাল। আর একান্তই উচিত হবে সোম ছাড়া প্রতিদিন নবগঠিত জওহর

মিউজিয়মে নানান প্রত্নতত্ত্বের সঙ্গে উপজাতীয় সমাজ ও সংস্কৃতির বর্ণনাময় প্রদর্শনী তথা অরুণাচলের উত্থান-পতন, অরুণাচলের প্যানোরামিক ভিউ দেখে নেওয়া। ৬ কিমি দূরের প্রকৃতিদগ্গা শেখী লেকটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় পায়ে প্রকৃতি বা জিপে। বোটিং-এর ব্যবস্থা আছে লেকে। আরণ্যক পরিবেশ, যুদ্ধপটু নিশিদের বাস। আজও এরা হনবিলের পাখনার টুপি পরে, ঝোলায় OTYO অর্থাৎ ছুরি এদের নিত্যসঙ্গী।



থাকারও ব্যবস্থা মেলে *আশ্রমের অতিথি নিবাসে*। আর আছে ২৪ ঘণ্টার *Field Hostel*, অব: Chief Engineer, CPWD, Zone-II, Itanagar, ৩ 2536. ITDC-র *H Donyi Polo Ashok*, Sector-C, Itanagar-791111, ৩ (03781) 2626, S ৮৫০ D ১২০০ সুইট ১৫০০; *H Arun Subansiri*, Zero Point-791111, ৩ 3258, S ৬০০ D ৮০০ সুইট ১০০০; *H Itafort*, *H Sangrila*, *H Himalaya*, *H Ganga*, *Bomdila H*, ৩ 2664; *Blue Pyne H*, ছাড়াও হোটেল আছে নানান ইটানগরে। এদের কাছে S ৬৫-১২৫ D ১৫০-৩২৫ টাকায় মেলে।

জিরো

লোয়ার সুবনসিরি জেলার সদর ১৫৩৮ মি উঁচুতে পাইনে ছাওয়া জিরো। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা অপরিষর উপত্যকার সমতল প্রান্তদেশে জিরোর অবস্থান। জিরোরও খ্যাতি তার নৈসর্গিক শোভার জন্য। বয়ে চলেছে পাহাড়ী নদী সুবনসিরি, নিশি, আপাতানি, দফলা, মিরি। আপাতানি উপজাতিদের বাস। শিকারিপ্রিয় এরা। আর করে চাষাবাস পাহাড়ী ঢালে। জুম চাষ হচ্ছে। সুন্দর বলেও যথেষ্ট খ্যাতি আছে আপাতানিদের। স্থানীয় সূরা *আপাং* এদের প্রিয় পানীয়। তেমনই এদের পছন্দ উজ্জল রঙচঙে বেশভূষা। সাজেও বৈচিত্র্য আছে। মেয়েরা কালো উক্কি পরে কপাল ও চিবুকে। আর নাকে ঝোলে বেতের নাকচাবি। এদের বিশ্বাস আদিম মানব-মানবী—*আরো-তানির* বংশধর এরা। *দয়নি-পোলো* অর্থাৎ সূর্য ও চন্দ্র এদের উপাস্য দেবতা। মার্চ-এপ্রিলে ১০ দিন ব্যাপী *মিকো* উৎসব আপাতানিদের বসন্তোৎসব। তেমনই নিসুদের *সিরোম মোলো*, *সোহাম*, *প্রি*, *নিয়াকুম* উৎসবেরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়।

রাজধানীর মতো জিরো শহরও ৫ কিমির ব্যবধানে দু'টি ভাগে গড়ে উঠেছে। পুরাতন জিরো অর্থাৎ ১৭৫০ মি উঁচু হাপোলি পেরিয়ে পথ চলে নেমে ২০০ মি নিচু নতুন শহর জিরোয়। দোকানপাট, হোটেলের আধিক্য। ব্যাকের শাখাও বসেছে। আর আছে শহরান্তে সরকারি হস্তশিল্প কেন্দ্র।



রাজ্য পরিবহণের বাস যাচ্ছে সকাল ৬-৩০টায়া ইটানগর ছেড়ে নর্থ লখিমপুর হয়ে ৬ ঘণ্টায় জিরো। আর মঙ্গল, বুধশ্রুতি ও শনিবার বাস যাচ্ছে নন-স্টপ সার্ভিসে সকাল ৮-০০টায়া। সর্গিল পাহাড়ী পথ, পঞ্চপাশে গহন জঙ্গল—শাল, কলা ও বাঁশের ঝাড়। পথ ওঠে আলুও

উঁচুতে। উচ্চতার সাথে সাথে জঙ্গলও ঘন হয়—গাছেরাও মাথা তোলে আরও উঁচু পানে। আবার হারমোতি ফিরে নর্থ লখিমপুর পৌঁছেও বাসে চলা যেতে পারে জিরো। দূরত্ব ৯৪ কিমি। লীলাবাড়ি থেকেও ৯৪ কিমি।



থাকার জন্য—টিলার টঙে *Circuit House* টি রমণীয়। আর আছে *IB*, কিছুটা ঘন অপরিচ্ছন্ন। দুই-এরই বুকিং: Deputy Commissioner, Zero থেকে মেলে। সাধারণ হোটেলও আছে জিরোয়। তবে, হাপোলিতে হোটেলের আধিক্য। উচিতও হবে হাপোলিতে অবস্থান করে অটোয় জিরো বেড়িয়ে ফেরা।

উৎসাহীরা জিরো থেকে ১৯৩ কিমি দূরে আপার সুবনসিরি জেলার আর এক সুন্দর ছোট পাহাড়ী জনপদ দাপোরিজোও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে বাসে। সবুজে ছাওয়া চারপাশ, অনুচ্চ পাহাড়ে ঘেরা উপত্যকা। ক্রাফট সেন্টার, বেত ও বাঁশের তৈরি অভিনব সেতুটিও দাপোরিজোর দ্রষ্টব্য। জেলাসদর তথা প্রধান বাণিজ্যকেন্দ্র দাপোরিজোয় তাগিন ও হিলমিরি উপজাতিদের বাস। সাজগোজ এদের প্রিয়। ছেলেরা ঝুটি করে সামনের চুল বেঁধে রাখে। হিলমি মেয়েরা বেতের রিং-এর আকর্ষণীয় আভরণে ঢেকে রাখে উদ্ধাঙ্গ। তেমনই উচিত হবে শহর থেকে অটো বা বাসে (দিনে ৩ বাস) ১৯ কিমি দূরের মেঙ্গায় প্রাকৃতিক গুহা দেখে নেওয়া। সন্ধীর্ণ ফাটল পথে হামাগুড়ি দিয়ে ঢুকতে হয় গুহায়। উর্চ সঙ্গে থাকা ভাল। গুহার বাইরে আর এক গহুরে দেবতা মহাদেবের অবস্থান। এপথেই আরও ২০ কিমি যেতে তালিয়া, আরও ১০ কিমি গিয়ে কোদক থেকে বরফাচ্ছাদিত হিমালয় দেখে নেওয়া যায়। আরও উত্তরে তাকসিঙ—না উপজাতিদের বাস। নিজস্ব ব্যবস্থায় জিপে যাতায়াত। আর হেলিকপ্টার মেলে দাপোরিজো থেকে অরুণাচলের নানানদিকের। *IB*, *CH*, সাধারণ হোটেল আছে দাপোরিজোয়।

আলং

জিরো থেকে দাপোরিজো বেড়িয়ে বাসেই চলুন পূর্ব সিংহা জেলার সদর সিয়ম নদীর দক্ষিণ পাড়ে ৬৫০ ফুট উঁচু আলং-এ। বাস আসছে ইটানগর থেকে সকাল ৬-০০টায়া ছেড়ে ১৪ ঘণ্টায়। ১৪৭ কিমি দূরের আসমের নর্থ লখিমপুর থেকেও বাস আসছে আলং-এ। বাস আসছে নিকটতম রেল স্টেশন ১৬৯ কিমি দূরের শিলাপাথার থেকেও। আবার লিকাবালি ও পাশিঘাট থেকেও বাস বা গাড়িতে চলা যেতে পারে আলং। নিকটতম বিমান বন্দর ২৬৩ কিমি দূরের লীলাবাড়ি।

রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রমের জন্য আলং খ্যাত। আর রয়েছে নবনির্মিত দয়নি পোলোর মন্দির। *দয়নি* অর্থ সূর্য আর *পোলো* হচ্ছে চন্দ্র। চন্দ্র ও সূর্য আদিবাসীদের উপাস্য দেবতা। হাসপাতালের পাশে মিউজিয়ম ও ক্রাফট সেন্টারটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে।

৮ শতকের কালিকাপুরাণে পবিত্র সতী পাঠ বলে

উল্লিখিত—সতীৰ মন্তক পড়ে আকাশীগঙ্গায়। আলং থেকে অসমের শিলাপাথারের পথে ২৫ কিমি যেতে ধারা নামছে পাহাড় থেকে—নাম তাই আকাশীগঙ্গা জলপ্রপাত। বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। চৈত্র সংক্রান্তিতে পুণ্যস্থান ও মেলা বসে। দামাল নদ ব্রহ্মপুত্রের দৃশ্যও মনোরম। থাকার জন্য Along-এ আছে CH, DB, H Yumbo, behind Bus Stand. শিলাপাথারেও হোটেল মেলে সাধারণ মানের।

মালিনীখান

আকাশীগঙ্গা থেকে শিলাপাথারের পথে ২৩ কিমি যেতে লিকাবালিতে—পাহাড় যেখানে সমতলে মিলেছে—আবিষ্কৃত হয়েছে এক অতীত ইতিহাস। প্রত্নতাত্ত্বিকদের মতে ৮০০ বছরের পুরাতন হবে পাথরে গড়া মন্দির ও রাজ-প্রাসাদ। পুরাণে মেলে ভীষ্মকনগর থেকে দ্বারকার পথে শ্রীকৃষ্ণ নববধূরক্সিণীদেবীকে নিয়ে আশীর্বাদ মাগেন দেবীর। বরণ করেন দেবী পার্বতী ফুলের মালা দিয়ে নব-দম্পতিকে। আর মালার গঠন নৈপুণ্যে শ্রীকৃষ্ণ সূচাক মালিনী বলেন পার্বতীকে—কালে কালে মালিনীখান। ১৯৭০এ জঙ্গল কেটে মাটি খুঁড়ে আবিষ্কৃত হয়েছে কারুকার্যময় দশভুজা দুর্গার প্রস্তর মন্দির। এছাড়াও, সপ্ত অশ্বচালিত রথে গ্রানাইট পাথরে দণ্ডায়মান দেবতা সূর্য, ফ্যালিক পাথরের শিবলিঙ্গ, ঐরাবতে উপবিষ্ট ইন্দ্র, ময়ুরাসনে কার্তিকেয় ছাড়াও শতাধিক দেব-দেবী, নৃত্যরতা যক্ষী, বিলানে মিথুনমূর্তি, আরও কত কি! তবে, মূল মন্দির অক্ষত থাকলেও দেবতার বিধবস্ত। মালিনীখানের নয়নলোভন প্রকৃতিও মুগ্ধ করে দর্শককে।



নিকটতম রেল শিলাপাথার, বিমান লীলাবাড়ি বা ডিব্রুগড়। বাস আসছে ইটানগর থেকে নর্থ লখিমপুর হয়ে মালিনীখানে। দূরত্ব শিলাপাথার ১০, লীলাবাড়ি ১১০, নর্থ লখিমপুর ১০৯, ইটানগর ১৮৫ কিমি। থাকার জন্য আছে সার্কিট হাউস ও মালিনীডবন, অবু: Extra Assistant Commissioner, Likabali, West Siang.

পাশিঘাট

সিয়াং নদীর অববাহিকায় সিয়াং জেলার অন্যতম সুন্দর শহর পাশিঘাট। মনোরম পর্যটককেন্দ্রও বটে। প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের তুলনা হয় না। অতীতের নেফার সদর দপ্তর বসেছিল এই পাশিঘাটে। CH, IB আছে, অবু: DC, Pasighat. আর আছে Anchal Samiti GH, H Siang, H Arun, H Sanggo পাশিঘাটে। পাশিঘাটের আর এক আকর্ষণ আদি সম্প্রদায়ের সোলুং লোক-উৎসব। এদিন ধরে চলে মন-মাতানো এই উৎসব বৈশাখ মাসে।



৮-৩০টার রসিয়া হেড়ে ১৩-০০টার রাসাপাড়া নর্থ যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন; আর ৫-০০টার রাসাপাড়া নর্থ হেড়ে নর্থ লখিমপুর ১০-৫০, লীলাপাড়ি ১১-৩৪, সুবনসিরি ১২-২১, শিলাপাথার ০৪-৪৫এ পৌঁছে

মারকংশেলেক যাচ্ছে ১৭-৩০টার প্যাসেঞ্জার। মারকংশেলেক থেকে ট্যান্ডি, জিপ ও বাস যাচ্ছে ৪২ কিমি দূরের পাশিঘাটে। পথশোভা রমণীয়। আবার অসমের শিলাপাথার থেকেও বাসে যাওয়া চলে পাশিঘাটে। বাস আসছে ইটানগর থেকেও ঘণ্টা নয়েকে। আর গুয়াহাটি থেকে ১৬-০০টার অরুণাচল রাজ্য পরিবহণের বাস যাচ্ছে পাশিঘাটে। তবুও যেন তেজপুর্ন হয়ে চলায় বাসের আধিকা মেলে।

তেজু/পরশুরাম কুণ্ড

পাশিঘাট থেকে বাসে শিলাপাথার। শিলাপাথার থেকে আরও মাইল দশকে গিয়ে ব্রহ্মপুত্র পারাপার—সোনারী ঘাটে। চরিত্রে ভয়ঙ্কর, তবে জলাভাবে সময় লাগে পারাপারে। অপর পাড়ে অসমের ডিব্রুগড়। ট্রেন বা বাসে চলুন তিনসুকিয়া। তিনসুকিয়া থেকে ১২০ কিমি দূরে তেজু। রেল যাচ্ছে তিনসুকিয়া থেকে মাকুমডাঙ্গরী। ঘণ্টা আড়াইয়ের রেলপথ। তবে, ট্রেন চলার অস্থিরতার জন্য বাসেই চলুন তিনসুকিয়া থেকে তেজু। মাকুম/দুম দুমা/নামসাই হয়ে ধালাঘাটে লঞ্চে ব্রহ্মপুত্র পেরিয়ে অরুণাচল রাজ্যের সদিয়া। পথে শোনপুরায় চেক পোস্ট বসেছে—ILP দেখাতে হয়। সরাসরি যাত্রায় গুয়াহাটি থেকে রেল বা বাসে তিনসুকিয়া পৌঁছে তেজু চলাই সুবিধা।

সদিয়ার পশ্চিম ধরে বয়ে চলেছে ডিহং ও দিবং নদী। মিলন ঘটেছে লোহিতের সঙ্গে। ব্রহ্মপুত্র নামকরণও এই ত্রিধারা থেকে সদিয়াতে। আধুনিক শহর রূপে গড়ে উঠেছিল সদিয়া। ১৯৫০ খ্রিস্টাব্দের ভূমিকম্পে ব্রহ্মপুত্রের প্রবাহ বদলে ধ্বংস পায় সে জনপদ। আজ দ্বীপাকার। অদূরেই দিগারু—পেড়ার স্বাদ নিতে পারেন চলার পথে। আর মেলে গরু ও মহিষের সন্ধরে জাত মিথুন এপথে। সদিয়া থেকে ৬৪ কিমির বাসপথে তেজু। তেজুর নিকটতম বিমান ১৪০ কিমি দূরে ডিব্রুগড় বা ১৪৮ কিমি দূরে মোহনবাড়ি। বায়ুদূতের এয়ার সার্ভিস কিছুকাল স্থগিত। তেজু শহর থেকে ২০ কিমি দূরে বিমানবন্দর।

অরুণাচলের কাশীর লোহিত জেলার সদর তেজু। বয়ে চলেছে তাঙ্গেব নদী। তাঙ্গেব থেকেই তেজু নামকরণ। অতীতের শোণিতপুরের অংশ নাকি এই অঞ্চল। তেজুর প্রাকৃতিক সৌন্দর্য মনোরম। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ। কার্ঠের বাড়িঘর—মিশমিদের বাস। সরল ও শান্ত এই মিশমিরিরা নাকি পরশুরামের বংশধর। আর রয়েছে শিবমন্দির ও বৌদ্ধবিহার তেজুতে। মিশমিদের তৈরি বেতের টুপিরও প্রসিক্তি আছে।

তেজুর একদিকে প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে হিমালয়, আর একদিকে সুউচ্চ সৌরশিলা পর্বতের পাদদেশে নদ-নদী বিধৌত চিরহরিৎ বনাচ্ছাদিত ডিকরাং উপত্যকা। ডিকরাং-এর পূর্বে সৌরশিলা, পশ্চিমে স্বর্ণ-শ্রী নদী, দক্ষিণে ব্রহ্মপুত্র আর উত্তরে মানস সরোবর। কালিকাপুরাণে ডিকরাং-

বাসিনী নামে উল্লিখিত হয়েছে ডিকরাং। বয়ে চলেছে ডিকরাং নদী—মিলেছে সদিয়াতে গিয়ে ডিবাং-এর সঙ্গে। উদীয়মান সূর্যের প্রথম কিরণও এসে পড়ে এই সৌরশিলা পাহাড়ে।

উপত্যকার আর এক আকর্ষণ ওয়ালাং—সুন্দরনৈসর্গিক শোভার মাঝে পার্বত্য বাহ্যনিবাস। ১৯৬২-তে চীন-ভারত যুদ্ধের গোলাবারুদে তেতে ওঠে ওয়ালাং। তবে, আজ স্বাভাবিকতা ফিরেছে—বারুদের গন্ধও মিলিয়ে গেছে ওয়ালাং-এর বাতাস থেকে।

তেজ-সদিয়া সড়কে ২২ কিমি দূরে সৌমরাপীঠে আদিদের মুখে *কেসাইখাতি* অর্থাৎ কাঁচা খেঁকা ভয়ঙ্করী দেবী তাম্রেশ্বরীর মন্দির। দেবী কালীর সঙ্গে সাদৃশ্য আছে। অতীতে চতুষ্কোণ মন্দিরের ছাদটি তামায় মোড়া ছিল—সেই থেকে তাম্রেশ্বরী নামকরণ। নরবলিরও প্রথা ছিল দেবী সকাশে। তবে, আজ দেবীও নেই, মন্দিরও নেই—তবুও ধ্বংসস্থল আজও পবিত্র শাক্ততীর্থ।

পরন্তরাম কুণ্ড : বড়চাম ধনুশের শরীরে গ্রহিত
ভীমবেশে ভার্গব হইল উপস্থিত।

ভারতের উত্তর-পূর্বে, অরুণাচলেরও পূর্বে লোহিত জেলা। মিশমিদের বাস। বয়ে চলেছে তিব্বত থেকে আসা লোহিত নদী। লোহিতের দক্ষিণ তীরে এক বাকুর মুখে স্ট্র ৭০ ফুট লম্বা ৩০ ফুট চওড়া কুণ্ড—পবিত্র হিন্দু তীর্থ। মুনি শান্ডনুর পরমাসুন্দরী স্ত্রী অমোঘা ও প্রজাপতি ব্রহ্মার আদিরসাম্বন্ধ কাহিনীই এই কুণ্ডের উৎস। কালিকাপুরাণে আছে, যৌবনবিলাসী ক্ষত্রিয় রাজা চিত্ররথের লালসার শিকার হন মহাতেজা মুনি জমদগ্নির স্ত্রী রেণুকা। ক্ষিপ্ত মুনির শাস্তির বিধানে পুত্র-ভার্গব মা রেণুকে হাতের পরশু (কুঠার) দিয়ে হত্যা করে এই কুণ্ডের জলে নান ও জল পান করে পাপমুক্ত হন। সেই থেকে অতীতের ব্রহ্মাকুণ্ড হয়েছে পরন্তরাম কুণ্ড। মন্দিরও হয়েছে পরন্তরামের—মর্মরে মূর্তি।

মকর (মাঘী পূর্ণিমা) সংক্রান্তিতে মেলা বসে, নান করে পূণ্যার্থীর দল। প্রবাদ, এক ডুবে সর্বপাপ ক্ষয় হয়। তবে মা-বাবা জীবিত থাকতে ডুব নৈব নৈব চ। অতীতের মূল কুণ্ড আজ আর নেই—১৯৫০-এর ভূমিকম্পে লোহিত গর্ভে বিলীন হয়েছে।

কলকাতা যাত্রীদের সহজতম পথটি গিয়েছে নিউ বঙ্গাইগাও/গুয়াহাটি/ডিমাপুর/তিনসুকিয়া/তেজু হয়ে। তেজু থেকে ২১ কিমি জিপে পাহাড় ডিঙিয়ে নদী পেরিয়ে আরণ্যক পথে লোহিত পার হয়ে আরও ৩ কিমি চড়াই চড়ে ধরমশালা, ধরমশালা রেখে সামান্য উতরাই নামতেই কুণ্ড। কুণ্ড ছাড়িয়ে পাহাড় বেয়ে পরন্তরাম মন্দির। অতীতের তাম্রেশ্বরীর মন্দিরটি আজ লুপ্ত। নতুন করে মন্দির হয়েছে রাম-লক্ষ্মণ-সীতা-গণেশ ও হনুর পরন্তরামে। পথের সৌন্দর্য বিমোহিত করে যাত্রীদের। অত্যাৎসাহীরা পায়ে পায়ে পাহাড় চড়ে শ্রো লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন।



সরাসরি বাস যাচ্ছে ১৯৮৬তে তৈরি পথে তিনসুকিয়া থেকে। বাস যাচ্ছে তিনসুকিয়া/ডুমডুমা/ডিরকগেট/ওয়ালাং হয়ে আরও ১৭ কিমি দূরে পরন্তরাম কুণ্ডে।

চলার পথে ডিরকগেট, নামসাই, চৌখাম, ওয়াক্রো-তে IB ও ধরমশালা আছে। হাটীর ঝকি নেই এপথে। মেলাকালে বিশেষ বাসের ব্যবস্থাও হয় তিনসুকিয়া থেকে। সাময়িক আবাসও গড়ে ওঠে মেলাকালে পাহাড়ের পাদদেশে।



কুণ্ডে ধরমশালা, PWD IB ও DB আছে। আর রেস্ট হাউস আছে তিমাইয়া ঘাটে। তেজুতে আছে CH, IB, DB, H Sharma ছাড়াও সাধারণ হোটেল। এয়ারপোর্ট ও শহরের মাঝপথে রাজ্য পর্যটনের টারিস্ট লজ। তাই যাত্রীদের পথে একটা রাত তেজুতেই কাটিয়ে চলা উচিত। নামসাই-তেও হোটেল, ধরমশালা ও বনবাংলো মেলে। সেইকিয়া ঘাটে অসম ও অরুণাচল সরকারের IB, সদিয়াতে অসম সরকারের IB ও DB আছে। বাংলোর বুকিং: DC, Tezu থেকে। আর ধরমশালা আছে ডিরকগেট, চৌখাম, ওয়াক্রো-য়।

খোনসা

তিরাপ জেলার সদর দপ্তর বসেছে ৩০০০ ফুট উঁচু খোনসায়। সাধারণ হোটেল আছে খোনসায়। অদূরেই নরোত্তমনগরে রামকৃষ্ণ মিশন ও সারদা আবাসিক বিদ্যালয়। নিকটতম (৮৯কিমি) রেল স্টেশন অসমের নাহারকাটিয়া থেকে বাস যাচ্ছে। নর্থ ফ্রন্টিয়ার রেলে তিনসুকিয়ার ২৪ কিমি আগেই নাহারকাটিয়া স্টেশন। আবার তিনসুকিয়া-ডিগবয়-মাগারিটা-লিখাপানি রেলের মাগারিটা থেকেও উঁচু



রহস্য রোমাঞ্চ আর আতঙ্ক—
তিন রাজ্যের সম্রাট হেমেন্দ্রকুমারের কিশোর সন্তার
হেমেন্দ্রকুমার রায় রচনাবলী
১ থেকে ১৬ খণ্ড □ প্রতি খণ্ড ৫০.০০

হেমেন্দ্রকুমার রায় রচনাবলী



এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

নিচু সংকীর্ণ বনপথে ১২০ কিমি দূরের খোনসায় যাওয়া চলে বাসে। পথে নামটিক নদী অসম ও অরুণাচল রাজ্যের সীমান্ত টেনেছে। ILP দেখাতে হয় চেকপোস্টে। সীমান্ত পেরিয়ে অরুণাচলের প্রথম জনপদ খারশাং রেখে নোয়া-ডিংই নদী পেরিয়ে মিয়াও। পাহাড় ঘেরা ২০০মি উঁচু সাজানো-গোছানো ছোট্ট শহর মিয়াও-এ চাংলো জেলার সদর দপ্তর বসেছে। নামডাফা ব্যাঘ্র প্রকল্পের ফিল্ড ডাইরেক্টরের অফিসও বসেছে মিয়াও-এ। থাকার জন্য মিয়াও-এ ৭ ঘরের ট্যুরিস্ট লজ, CH, DB আছে।

কুন্ত: 'হর হর গঙ্গাধর বম বম'। পূরণ বলে, সমুদ্রের নিচে অমৃতের সন্ধান পেয়ে কুর্মরূপী বিষ্ণুর পিঠে মন্দার পর্বত চাপিয়ে রজ্জুরূপী বাসুকী দিয়ে দেবতা ও অসুরে মিলে সমুদ্রমহন কালে অমৃতকুন্ত নিয়ে উঠে এলেন ঈশ্বর। প্রমাদ গণলেন দেবতারা। পিতার নির্দেশে হীন যড়যন্ত্রে ইন্দ্রপুত্র-জয়ন্ত হরণ করলেন কুন্ত। ছুটলেন স্বর্ণপালে। গুরুদেব ও কুন্তাচার্যের হিঙ্গিতে খাওয়া করল অসুররা। পশ্চিমদিকে ১২ জায়গায় কুন্ত নামান জয়ন্ত বিজ্ঞানের ভরে। ৮ জায়গা তার দেবলোকে, বাকি ৪—মর্ত্যধামের নাসিক, প্রাণ, হরিহার ও উজ্জয়িন-এ। ফলস্বরূপ পবিত্র হল উজ্জয়িন-এর শিশু, নাসিকের গোদাবরী, প্রাণে মিবোণী (গঙ্গা-যমুনা-সরস্বতী) সঙ্গম ও হরিহারের গঙ্গা। সেই স্মৃতিতে প্রতি ১২ বছর অন্তর অমৃত কুন্তযোগ ঘটে ভারত রাষ্ট্রের এই চার পূণ্যভূমি। আর চলকেও পাড় কুন্ত থেকে অমৃত হরিহার ও প্রাণে—সেই সুবাদে পূর্ণকুন্ত এই দুই-এ। হিন্দুধর্মের প্রবক্তা আদিভর শঙ্করাচার্যই রূপকার এই কুন্ত-মেলায়। লক্ষ লক্ষ পূণ্যার্থী আসেন দেশ-দেশান্তর থেকে কুন্তে। গত কুন্তমেলা এপ্রিল ১৭—মে ১৬, ১৯৯৩এ ঘটে গেল।

ছাশ্ব জ্যোতির্বিদ: ব্রহ্মা ও বিষ্ণু দুই দেবতায় শ্রেষ্ঠত্ব নিয়ে সংঘাত। দু'জনই অটল, অনড় শ্রেষ্ঠত্বের দাবি ছাড়তে। সংঘাত যখন জটিল থেকে জটিলতর—হঠাৎ এক আলোকস্তম্ভ থেকে উদ্ভাসিত জ্যোতিতে দুই দেবতাই দগ্ধ ভূলে পরম নিশ্চয়ে বিফল। বিষ্ণু বরাহ রূপ নিয়ে পাতাল আর ব্রহ্মা তীক্ষ্ণ দৃষ্টিসম্পন্ন ঈশ্বগলের রূপ নিয়ে হাজার বছর ধরে জ্যোতির উৎস উদ্ভাবনে বিংশ-চরাত্রি তোলপাড় করেও ব্যর্থ হলেন। দান্তিক দেবতাধর চিত্তায় আকুল। একাত্তাই বিফল হয়ে অবলোকন করলেন জ্যোতির স্তম্ভ থেকে বয়ঃ শিবঠাকুরের উদ্ভব। দুই দেবতাই তখন দাবি ভুলে ব্রহ্মা নিবেদনের সাথে শ্রেষ্ঠ বলে স্বীকৃতি জানালেন শিবঠাকুরকে। লিঙ্গরূপী ঈশ্বর জ্যোতি স্তম্ভ অর্থাৎ ঈশ্বর লিঙ্গ থেকেই জ্যোতি বিজ্জ্বলিত হয়ে থাকবে—শিবঠাকুরেরও আধ্যাতিক মাহাত্ম্যের উদ্ভব ঘটে এই ঈশ্বর জ্যোতির্বিদ থেকে। অবস্থান এদের: (১) সোমনাথ [গুজরাট] (২) শ্রীমদ্বিকার্কুন [তামিলনাড়ু], (৩) শ্রীমহাকালেশ্বর [উজ্জয়িন], (৪) ওঙ্কারেশ্বর [ইন্দোর], (৫) শ্রীকেশ্বরনাথ [গৌরীকুণ্ড], (৬) ভীম-শঙ্কর [মহারাষ্ট্র], (৭) শ্রীবিষ্ণেশ্বর [কাশী], (৮) শ্রীবেঙ্কেশ্বর [পালামপুর], (৯) শ্রীকালেশ্বর [ওরা], (১০) শ্রীঅম্বকেশ্বর [নাসিক], (১১) শ্রীরামেশ্বর [ধনুফাট], (১২) গুণেশ্বর [গুজরাবাদ]।

নামডাফা ব্যাঘ্র প্রকল্প

কলকাতা-গুয়াহাটি-ডিব্রুগড়/তিনসুকিয়া হয়ে বাসে ৩½ ঘন্টায় মিয়াও পৌঁছে নামডাফা ব্যাঘ্র প্রকল্পের সহজতম পথ। ইটানগর থেকেও সরাসরি বাস আসছে তিনসুকিয়ায়। আবার সহজতম পথে নর্থ লখিমপুর হয়ে লক্ষে ব্রহ্মপুত্র পেরিয়ে ডিব্রুগড় হয়েও তিনসুকিয়া পৌঁছে মাকুম/ডিগবয়/লেডো/তিরাপ হয়ে পথ গিয়েছে মিয়াও। তবে, থকল আছে জলপথে। ভাতিয়া চর পেরুতে হয়। আর নিকটতম রেল স্টেশন মাগারিটা ৬৪, বিমানবন্দর ১৪০ কিমি দূরের ডিব্রুগড়। বাস যাচ্ছে ডিব্রুগড় থেকেও তিনসুকিয়া, মাগারিটা হয়ে মিয়াও। থাকারও নানান ব্যবস্থা—Tourist L, CH, IB আছে মিয়াও-এ। মিয়াও থেকে নোয়া-ডিংই-এর পাড় ধরে গহীন বনের মাঝ দিয়ে ২৪কিমি উত্তরে জাতীয় উদ্যানের প্রবেশ ফটক ডিবান পৌঁছান জিপসি বা জিপে। সারাপথেই সজ্জনে নোয়া-ডিংই নদী। গিয়ে মিলেছে ডিবান নদীতে। প্রজাপতির রকমফের—সেও আর এক উল্লেখ্য নামডাফা। চলার পথে মাগারিটা পেরিয়ে ২ কিমি যেতে নামডাফা চেকপোস্টে ILP দেখাতে হয়। ডাইনে সবুজের উড়নি উড়িয়ে চলেছে হিমালয়। বরনা নামছে পাহাড় বেয়ে। এমনই এক নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে ডিবান-এ আছে ব্যাঘ্র প্রকল্পের ৫ ঘরের Deban Forest L. কাচে মোড়ি কাঠের দ্বিতল বাড়ি, থাকার পক্ষে রমণীয়। চেনা-অচেনা নানান পাখি ও হুলকের ঐকতান ঘুম ভাঙায় লজের। জিপ ও লজের বুকিং: Field Director, Namdapha Tiger Project, PO-Miao, Dist-Changlang, Arunachal-792122 থেকে মেলে। তবে, টিও মোমবাতি সঙ্গী করা ভাল। বাসনপত্র মিললেও আহার্য মিয়াও থেকে সঙ্গী করা উচিত হবে। পায়ে পায়ে বা হাতির পিঠে বনবিহার। গাইড মেলে প্রকল্প দর্শনে।

বিশ্বে অনন্য নামডাফা উচ্চতার তারতম্য। ২০০ থেকে ৪৫০০ মি উঁচুতে ১৮০৮ বর্গ কিমি ছুড়ে ভারত-ব্রহ্মদেশ সীমান্তে পাহাড় ঢালে তিরাপ জেলায় এই নামডাফা। নদীর নামে নাম। অতীতের জাতীয় উদ্যান ১৯৮০তে ব্যাঘ্র প্রকল্পের শিরোপা পরেছে। নামডাফার আর এক উল্লেখ্য বিভাগ প্রজাপতির বাঘ, লেপার্ড, ব্লো-লেপার্ড, ব্লুউডেড লেপার্ড। ছায়াছন্ন পাহাড়ী পথ, পথপাশে ক্রান্তীয় আর্দ্র চিরহরিৎ আদিম অরণ্য। হালক, হলুৎ, মেকাই, বট-অশ্বখ, ধূপ, হরীতকী, আমলকী, লোহাগাছ ছাড়াও নানান মহীকর ছাতা ধরেছে জাতীয় উদ্যানের পথে। আর পাহাড়ের নিচু ঢালে দুর্ভোষা ঘোঁষা-ঝাড়, বঁশ, ফার্ন, বেত ছাড়াও চেনা-অচেনা নানান উদ্ভিদ। তেমনই উচ্চতার তারতম্যে উদ্ভিদের সাথে সাথে জানোয়ারের অবস্থানেও বদল ঘটে। শোনা যায় ৪৫০ প্রজাতির বনচরের বাস এই নামডাফা। নিচের ভাগে প্রায় সমস্ত—কাঁকার হরিণ, শশর, বনকুকুর, গুয়ার, বাঘ, চিতাবাঘ, চিতাবিড়াল, মেহেবিড়াল; হাজার সাতেক ফুট উঁচুতে—হিমালয়ের লালপাতা, বিটুরং ও গোরাল-

জাতীয় দুশ্প্রাণ্য প্রাণীর অবস্থান; আরও উচুতে—লুপ্তপ্রায় তুষার চিতা ও মেঘবরণ চিতাবাঘের দর্শন মিলে। উচ্চতার তারতম্যে বৃক্ষরাজির প্রকৃতিতেও বদল ঘটে চলে।

তেমনই লাফিয়ে বেড়ায় নানান প্রজাতির বানর নাম-ডাফার গাছ থেকে গাছে। হরিণের রকমফেরও নামডাফায় উদ্ভ্রম্য। হাতি, বাহিন অবাধে চরে বেড়ায়। হাজারো পাখির কলকাকলি মাতিয়ে রাখে নামডাফার জলসামুদ্র। চারধর্মী রঙবেরঙের ধনেশ ছাড়াও, মোনাল, কালিজ, পিকক ফেজেস্ট, নানান জাতের মিনিভেট, টিয়া, কেশো রাজ, সাদা কাক ছাড়াও নানান ধরনের বিচিত্র সব পাখি কুজন শোনায়। নানান বৈচিত্র্যের অধিকারী নামডাফায় যাতায়াতের সুব্যবস্থা গড়েনা ওঠায় আজও দুর্গম হয়ে রয়েছে পর্যটক মানচিত্রে। শীতের আধিক্য থাকলেও ডিসেম্বর প্রথম থেকে মার্চ ১৫ নামডাফা ভ্রমণে রমণীয়।

বিজয়নগর

গহন বন আর পাহাড়—বয়ে চলেছে নোয়া-ডিহিং নদী। তিন পাশ বার্মায় ঘেরা। এই হচ্ছে অরুণাচলের

অন্যতম বৌদ্ধ সংস্কৃতির পীঠস্থান বিজয়নগর। ১৭ শতকের কথা—বার্মা থেকে এসে বসবাস গড়ে খামতি ও সিংফো সম্প্রদায় বিজয়নগরে। গড়ে তোলে বৌদ্ধ ধর্মকেন্দ্র—রূপ পায় স্তূপ ও বিহার। নতুন করে আবিষ্কার ১৯৬৯ খ্রিস্টাব্দে চন্দ্রবাহাদুর দামাই-এর হাতে এই বৌদ্ধ বিহার। আর রয়েছে লিসু সম্প্রদায় বিজয়নগরের আশেপাশে। মঙ্গোলিয়ান আর আর্য মিলনের চমৎকার নিদর্শন এই লিসু উপজাতি। কথিত আছে, গ্রিকবীর আলেকজান্ডারের সৈন্যবাহিনীর একটা অংশের উত্তরপুরুষ এরা।

খোনসা থেকে বাস ও জিপ মেলে বিজয়নগরের। আবার মাগারিটা থেকেও সড়ক সংযোগ রয়েছে। দূরত্ব ২৪০ কিমির মতো। আবার নোয়া-ডিহিং-এর বুক বেয়ে মিয়াও থেকেও পথ এসেছে বিজয়নগরে। পথশোভা সুন্দর। নামডাফা থেকে এপথের দূরত্ব ১২০ কিমি। থাকার জন্য CH, IB আছে। আহাম্য টোকিদারের হোপাজতে। অত্যাংসাহীরা লিখাপানি-জয়রামপুর হয়ে বার্মা শীমান্তে পামিসানও বেড়িয়ে নিতে পারেন।

পাথের পাঁচালী-৩ ইংরেজী থেকে তামিল

| | | | |
|---------------|-----------------|--------------|---------------|
| How much | Ennavilai | Back | Pinpakkam |
| Reduce | Kuraikkavum | North | Vadakku |
| Bring | Kondu vaa | South | Therku |
| Out of order | Sarlayaha illai | East | Kizhakku |
| Please call a | ...Koopidungal | West | Merku |
| Give | Kodu | Go Straight | Nerahapo |
| Take | Yedu | Turn | Thirumbu |
| Go | Po | Yes | Aam |
| Boy | Siruvan | No | Illai |
| Girl | Sirumi | Good | Nallathu |
| Man | Manithan | Bad | Kettathu |
| Woman | Penn | Sorry | Varunthukiren |
| One | Onru | Excuse me | Manniyungal |
| Two | Irandu | Good morning | Vanakkam |
| Three | Moonru | Good night | Vanakkam |
| Four | Naangu | Good bye | Pol Varukiren |
| Five | Ainthu | Alright | Sari |
| Left side | Idathu pakkam | Thank you | Nandri |
| Right side | Valathu pakkam | I need | Vendum |
| Stop | Niruthu | Come | Vaa |

আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ

বঙ্গোপসাগরের জলে উত্তর থেকে দক্ষিণে ৫৭০টি দ্বীপ নিয়ে গড়ে উঠেছে পাল্লাসবুজ দ্বীপমালা টুইন আইল্যান্ড—আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ। অবস্থান এদের ১৩.৫° উত্তর থেকে ৬° উত্তর অক্ষাংশে এবং ৯২° থেকে ৯৪° পূর্ব দ্রাঘিমায়ে। ভারত থেকে বার্মামুখী অংশ যেতে বঙ্গোপসাগরের জলে মূলত এগুলি পাহাড়ের চূড়ো। নিউগিনি থেকে শুরু করে বোর্নিও, বালি, সুমাত্রা পেরিয়ে উত্তর বাক নিয়ে গ্রেট নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ হয়ে কার নিকোবর, লিটল আন্দামান, মিডল দিয়ে উত্তর আন্দামান দ্বীপ পর্যন্ত বঙ্গোপসাগরে ৭২৫ কিমি জুড়ে দ্বীপমালা বা আইল্যান্ড আর্ক রূপে বিস্তার এদের। গড় উচ্চতা হাজার চারেক ফুট। মাঝে মাঝে আগ্নেয়গিরি। উত্তর আন্দামান, মধ্য আন্দামান, দক্ষিণ আন্দামান, বারটাং আর রাটল্যান্ড এই পাঁচটি এদের মধ্যে বৃহত্তম। পরিচিতিও এদের গ্রেট আন্দামান গ্রুপ নামে। গ্রেট আন্দামানের দক্ষিণে লিটল আন্দামান। লে. গভর্নর শাসিত রাজ্য এই দ্বীপপুঞ্জ। কার নিকোবর ছাড়া বাকি সব পাহাড়ী, অরণ্যময়—চন্দ্রাতপ গড়েছে দ্রাক্ষালতায়। আন্দামান গ্রুপের দ্বার ভারতীয়দের কাছে আবরিত। তবে, লিটল আন্দামান ও নিকোবরের উপজাতি অধ্যুষিত এলাকায় যেতে বিশেষ অনুমতি লাগে Deputy Commissioner, A & N Islands, Port Blair বা Nicobar থেকে। বিদেশীদের অনুমতি নেই নিকোবরে যাবার।

আর বিদেশীদের আন্দামান যেতেও RAP লাগে Deputy Secretary, Govt of India, Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-1 বা নিকটতম Indian Embassy থেকে। তবে, পোর্ট ব্ল্যারর পৌঁছেও Immigration Office থেকে পারমিট পেতে পারেন পৌর এলাকায় ৩০ দিন ভ্রমণের। তেমনই পোর্ট ব্ল্যারর পৌঁছে Deputy Superintendent of Police Office-এ নাম নথিভুক্ত করতে হয় বিদেশীদের। আবার Foreigners' Registration Office : কলকাতায়—237 Acharya J C Bose Rd, ☎ 2473301/চেন্নাই/মুম্বাই/দিল্লী থেকেও ১৫ দিনে (Municipal Area—Port Blair, Havelock, Long Island, Neil Island, Mayabunder, Diglipur, Rangat). আন্দামান ভ্রমণের ১৫ দিনের বিশেষ পারমিট মেলে। আর দিনে দিনে Jolly Buoy, South Cinque, Red Skin, Madhuban, Ross, Wandoor, Chidya Tappu বেড়াবার অনুমতি মেলে বিদেশীদের।

জনবসতি গড়ে উঠেছে মাত্র ১৩০টি দ্বীপে আন্দামান ও নিকোবরে। প্রকৃতি চলছে আরও দ্বীপে বসতি গড়ে তুলতে। সদর দপ্তর বসেছে দক্ষিণ আন্দামানের পোর্ট ব্ল্যারে। সারা দেশের সঙ্গে ১৯৪৭এ এই দ্বীপপুঞ্জও

স্বাধীনতা পায় ব্রিটিশ শাসন থেকে। আর ১৯৫৬র ১লা নভেম্বর কেন্দ্রের শাসনাধীনে যায় আন্দামান। সেই থেকে আন্দামান ও নিকোবর ভারতেরই অবিচ্ছেদ্য অংশ। অবস্থান হিসাবে সামরিক গুরুত্ব অপরিসীম আন্দামানের।

আন্দামানের ইতিহাস আজকের নয়। রামায়ণেও এর উল্লেখ মেলে। উল্লেখ মেলে জেরিনি ও টলেমির লেখাতেও। এমনকি ২ শতকে রোমান ভূতত্ত্ববিদের বিশ্ব মানচিত্রে গুড ফরচুন নামে উল্লেখ মেলে দ্বীপপুঞ্জের। ৭ শতকে চীনদেশীয় বৌদ্ধ ভিক্ষুর ভ্রমণ-বৃত্তান্তেও নগ্ন মানুষদের দেশ নামে উল্লিখিত হয়েছে আন্দামান ও নিকোবর। ১০৫০এ চোল রাজাদের তাজোর শিলালিপিতেও *Nakkavaram* অর্থাৎ নগ্ন মানুষদের দেশ নামে অভিহিত হয়েছে আন্দামান ও নিকোবর। ১২৯২এ মার্কো পোলো উল্লেখ করেছেন *Neulverum* বলে নিকোবরকে। সমকালের চীনা লেখকরা *Lo-Tan Kyo* নামে অভিহিত করেছেন কার নিকোবরকে। আর, আন্দামান নামটি এসেছে মার্কো পোলোর *Angamanian* থেকে। দ্বিমতে, লর্ড হব্‌সমান বা হনুমান থেকেই নাকি আন্দামান নামের উৎপত্তি। শ্রীলঙ্কা যাতায়াতে সমুদ্র পেরুতে হনুর ধাপ (পায়ের) পড়ত দ্বীপশিরে। অর্থাৎ *স্টেপিং স্টোন* রূপে ব্যবহৃত হত দ্বীপ।

২৫৮০ বর্গ মাইল বিস্তৃত এই দ্বীপপুঞ্জকে টলেমি নাম দিয়েছেন গুড স্পিরিট আইল্যান্ড, আর ভারতীয় বণিকেরা আন্ধার মাণিক্য। আবার কারও কারও মতে উদিত সূর্যের দেশ, কারও বা মতে গোল্ড ফ্লাওয়ার। কেউ বলেছেন—ল্যান্ড অব মেরিগোল্ড, কেউ বা বলেন অভিমানী আন্দামান, কেউ বা বলেন বিভীষিকাময় আন্দামান, আবার কারও কারও মতে কালাপানির দেশ আন্দামান। আর, দ্বিতীয় মহাযুদ্ধের কালে নেতাজী সুভাষ নাম রেখেছিলেন এর শহীদ দ্বীপপুঞ্জ ও স্বরাজ দ্বীপপুঞ্জ।

আন্দামান ও নিকোবর দু'টি পৃথক দ্বীপপুঞ্জ। বঙ্গোপসাগরে ১০ ডিগ্রি চ্যানেলের দু'দিকে দুই দ্বীপপুঞ্জের অবস্থান। একের নাম আন্দামান গ্রুপ—নর্থ, মিডল, সাউথ ও লিটল নিয়ে। আর গ্রেট নিকোবর, কার নিকোবর, কাচাল, নানকৌড়ি, চাওরা, টেরেসা ও ক্যান্বেল বে নিয়ে নিকোবর গ্রুপ। দ্বীপ আছে আরও নানান দুইয়েতেই। ব্রিটিশের হাতে সংযুক্তি ঘটে আন্দামান ও নিকোবরের ১৮৮৮ খ্রিস্টাব্দে। তারও শ'খানেক বছর আগে ১৭৮৯ খ্রিস্টাব্দে ব্রিটিশ গভর্নর জেনারেল লর্ড কর্নওয়ালিসের কালে হাইড্রোগ্রাফার ক্যাপ্টেন আর্কিবল্ড ব্র্যয়ার বাংলা থেকে লোকজ্ঞান নিয়ে পোর্ট ব্ল্যারের চাখামে এসে বসতি গড়েন। সভ্য জগতের আলো পড়ে আন্দামানে। আর ১৮৫৭র প্রথম স্বাধীনতা

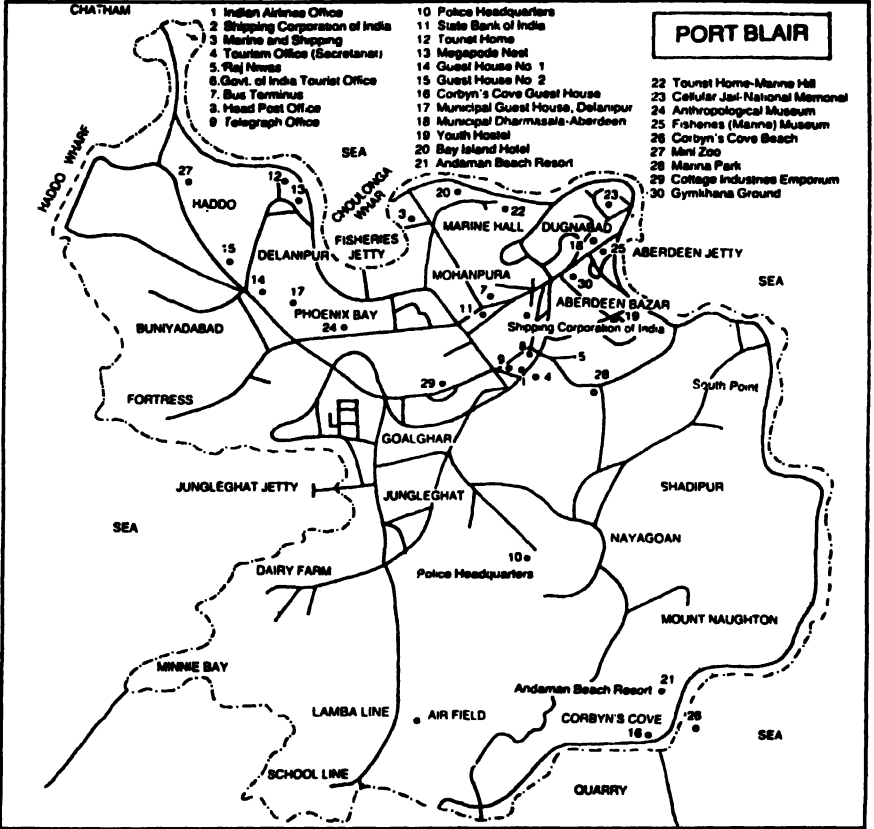
সংগ্রামে শক্তিত ব্রিটিশরাজ ১৮৫৮য় প্রথম দ্বীপান্তরে (কলাপানি) পাঠায় রাজদ্রোহে দণ্ডিত স্বাধীনতা সংগ্রামীদের আন্দামানে।

তবে সংযোগ ঘটে তারও আগে মারাঠাদের হাতে ১৭ শতকের শেষভাগে ভারত ভূখণ্ডের সাথে আন্দামানের। ১৮ শতকের প্রথম—বার বার সংঘাতও ঘটে মারাঠা অ্যাড-মিরাল কানৌজী আংরের নৌবাহিনীর সাথে ব্রিটিশ, ডাচ ও পর্তুগিজদের। দখল আগলে আমৃত্যু (১৭২৯ খ্রি) দমনও করেন একের পর এক বিদেশী হানা আংরে। অবশেষে পর্তুগিজ ও ডাচরা পরে পরে এসে দখল গড়ে আন্দামানে।

আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ □ রাজধানী: পোর্ট ব্লেয়ার। আয়তন: ৮২৪৯ বর্গ কিমি; আন্দামানের ৬৩৪০ আর নিকোবর ১৯০৯ বর্গ কিমি। দৈর্ঘ্য: উত্তর থেকে দক্ষিণ—৮০০ কিমি; কোস্ট লাইন—২০০০ কিমি। লোকসংখ্যা: ২৭৭৯৮৯। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.০৩%। পুরুষ: ১৫২৭৩৭। নারী: ১২৫২৫২। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৮৯২৪৮। বৃদ্ধির হার: ৪৭.২৯%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৩৪। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৮২০। সাক্ষরের হার: ৭৩.৭৪%। মাথা পিছু বাৎসরিক আয়: ৬৭৫১.০০ টাকা (১৯৯২-৯৩)। প্রধান ভাষা: আন্দামানিজ; বাংলা, ইংরাজি, হিন্দি, নিকোবরীজ, তেলুগু, তামিল, মালয়ালম ভাষারও প্রচলন আছে আন্দামান ও নিকোবরে। ট্রপিক্যাল ক্রাইমেটের দেশ আন্দামান। ভূখণ্ডের সর্বাধিক উচ্চতা ৭৩২ মিটার। বেড়াবার মরসুম মধ্য অক্টোবর থেকে মে-র মধ্য ভাগ হলেও মধ্য নভেম্বর থেকে মার্চ মাস আন্দামান ভ্রমণের মনোরম সময়। শীতের দিনগুলিতে ৭৫-৮৫° আর গ্রীষ্মে ৭৮-৯৫° ফারেনহাইটে ওঠানামা করে তাপমান। আর্দ্রতা সারাবছরেই ৮০%। বর্ষা বছরে দু'বার—দক্ষিণ-পশ্চিম মৌসুমী বায়ুতে মধ্য মে থেকে অক্টোবর, আর উত্তর-পূর্ব মৌসুমী বায়ুতে নভেম্বর থেকে জানুয়ারি মাসে বৃষ্টি হয় আন্দামানে। বছরের গড় ১২৫"। তবে, নিকোবর দ্বীপপুঞ্জে বিক্ষিপ্তভাবে বৃষ্টি প্রায় সারাবছর জুড়েই। তবুও জুনেই বৃষ্টির আধিক্য, ঠিক তেমনই গরমও বেশি মার্চ থেকে মে মাসে আন্দামানে। দিন দশকে বেড়িয়ে আসুন আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ জাহাজ বা বিমানে কলকাতা বা চেন্নাই থেকে।

আর দ্বিতীয় মহাসমর কালে (মার্চ ২৩, ১৯৪২—অক্টোবর ৭, ১৯৪৫) জাপানের দখলে যায় দ্বীপপুঞ্জ। তৈরি হয় রাস্তাঘাট, বিমান অবতরণক্ষেত্র, জাহাজ নোঙরের জেটি—সেজে ওঠে আধুনিক সাজে আন্দামান। তবে এই আধুনিকতা দ্বীপবাসীদের পছন্দ নয়—সুযোগ সুবিধা মতো গেরিলা হানা হানে জাপানের উপর। আর, ৬ই নভেম্বর ১৯৪৩এ জাপানের প্রধানমন্ত্রী তোকোজি ঘোষণা বলে দ্বীপপুঞ্জের ক্ষমতা হস্তান্তরিত হয় Provisional Govt of Azad Hind অর্থাৎ নেতাজী সুভাষের ভারতীয় জাতীয় বাহিনীর হাতে। প্রথম জাতীয় পতাকাও ওড়ে ৩০শে ডিসেম্বর ১৯৪৩এ পোর্ট ব্লেয়ারে। বাস্তবায়িত হয় প্রথম স্বাধীনতার স্বপ্ন আন্দামানে। দখল ফেরে ব্রিটিশের হাতে আবার ১৯৪৫এ, আর ১৯৪৭এ স্বাধীনতা।

মূলত আদিবাসীদের দেশ আন্দামান। স্বীকৃত গোষ্ঠীর সংখ্যা ছয়। মঙ্গোলয়েড ও নিগ্রোয়েড বংশোদ্ভূত এরা। শাম্পেন ও নিকোবরীরা মঙ্গোলয়েড গ্রুপের আর আন্দামানী, ওঙ্গে ও সেন্টিনেল সম্প্রদায় নিগ্রোয়েড গোষ্ঠী ভুক্ত। দক্ষিণ আন্দামানের পশ্চিম জুড়ে ৭০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত পাহাড় আর বন—হিংস্র জারোয়াদের বাস, সংখ্যায় এরা ২৫০; সভ্য জগতের আলো পৌঁছায়নি আজও এদের মাঝে। ১৯৬৮তে খুঁত একদল জারোয়াকে সভ্য সমাজের বৈভব দেখাতে পোর্ট ব্লেয়ারে আনা হয়। আধুনিকতার রোশনাই দেখে ঘরে ফিরতে সমাজ তাদের বয়কট করে। আজও তারা উপদল গড়ে বাস করছে পৃথকভাবে। নানান মহামারীতে সংখ্যায় কমে কমে ৬০৩ হেষ্টিরের স্ট্রুট আইল্যান্ডে আজ ২০ গ্রেট আন্দামানিজ-এর বাস। লিটল আন্দামানের ১০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত দুগুং ও দক্ষিণ খাঁড়িতে উল্কি আঁকা ১০২ নগ্ন ওঙ্গের মাঝেবসন পৌঁছেছে। এমনকি টিনের হাটও গড়ে দিয়েছে এদের বাসের জন্য সরকার; স্কুলও হয়েছে। তবে জনসংখ্যা এদের কয়েক দশকে দিনে দিনে। নর্থ সেন্টিনেলে ১০০ সেন্টিনেলিজ, হিংস্রতায় জারোয়াতুল্য এরা, আজও লোকচক্ষুর অগোচরে আদিম জীবন যাপন করছে। শুভেচ্ছার নানান যৌতুক নিয়ে প্রতিনিধি যেতে ২মি দীর্ঘ তীর ছোঁড়ে বিশ্ব লাগিয়ে সভ্য জগতের মানুষ দেখে এরা। স্বাতন্ত্র্য বজায় রেখে শিকারই এদের একমাত্র জীবিকা। আর নিকোবরে ২৯০০০ নিকোবরী, ক্যামেল বে-তে মঙ্গোলীয়ানদের বংশোদ্ভূত ২১৪ শাম্পেন ছাড়াও নানান সম্প্রদায়ের আদিবাসীর বাস। এদের জন্য রয়েছে পৃথক পৃথক দ্বীপ। আর আছে কয়েদীদের বংশধরেরা, যারা বংশপরম্পরায় আজ আন্দামানী হলেও *লোকাল বর্ন* রূপে পরিচিতি এদের। এছাড়া ১৯৫০এ পূর্ব পাকিস্তান থেকে আগত ৮০০০ বাহ্যহারাাদের সঙ্গে সিংহল ও বার্মা প্রভাণ্ড প্রবাসী ভারতীয়রাও বাসিন্দা হয়েছেন আন্দামানে। এসেছেন দক্ষিণীরাও তামিলনাড়ু ও কেরল থেকে আন্দামানে। গত



এক দশকে সিংহল থেকে প্রত্যাখ্যাত লক্ষাধিক তামিল ও উপনিবেশ গড়েছে আন্দামানে। আন্দামানে ভিখারির অভাব। অপরাধপ্রবণতা, সাম্প্রদায়িক বিদ্বেষও অশ্রুত।

যে যাই বলুক, আন্দামান-নিকোবর দ্বীপপুঞ্জের রাপের তুলনা হয় না। সূর্যকরোজ্জ্বল দিন; মৃদু-মন্দ নির্মল বাতাস। দিগন্ত বিস্তৃত নীলাকাশের নীলে গোলা অথৈ বঙ্গোপসাগর। তারই মাঝে সফেন ভেজা রূপোলী বালুকাবেলা দ্বীপ থেকে দ্বীপে। অগভীর সমুদ্রে রঙিন মাছেরের জলকেলি, নয়ন মনোহর প্রবাল, জলজ উদ্ভিদ রমণীয় করে তোলে দ্বীপমালাকে। প্রকৃতিরানী অতি নিপুণ হাতে দক্ষ স্থপতির মতো বঙ্গোপসাগরের বুকে ধাপে ধাপে গড়ে তুলেছেন পাহাড় আর অরণ্য দিয়ে আন্দামানকে। ৮৬% অর্থাৎ ৭১৪৪ বর্গ কিমি বনভূমি রয়েছে আন্দামানে। দ্বীপপুঞ্জের মূল সম্পদও বনজসম্ভার। ২০০০ ধর্মী উদ্ভিদ হচ্ছে আন্দামানে যার ২২১ রকম বিশ্বের অন্যত্র মেলে না। আর ৪৫ রকম

ওষুধ রূপে ব্যবহৃত হচ্ছে স্থানীয়দের মধ্যে। টিক, মেহগনি, রোজউড হচ্ছে, রবার চাষও গুরুত্ব পেয়েছে নতুন করে। তারই মাঝ দিয়ে পথ চলেছে বন মাড়িয়ে। দু'পাশে নারকেলের সারি। বসতিও গড়ে উঠেছে বন কেটে পাহাড় গুড়িয়ে আন্দামানে। ১৯৮১-৮২ খ্রিস্টাব্দে ৫৭৯.০২ লক্ষ টাকা আহত হয়েছে বন থেকে। তেমনই ২৪২ প্রজাতির পাখি কোরাস ধরে বনভূমির গাছের শাখে শাখে। ৪৬ ধর্মী ভন্যপায়ী জীবের সাথে ৭৮৫ ধর্মী সরীসৃপেরও বাস আন্দামানে। আর রঙবেরঙের প্রজাপতির বগলীর সাথে অর্কিড ও ম্লিকাল ফুলেরের রঙের বাহার সারা দ্বীপভূমে। ভ্রমণে-স্বর্গরাজ্য আন্দামানের আকর্ষণ আজও তাই অদম্য। শীত ও গ্রীষ্ম দু'য়েরই প্রকোপ কম। আবহাওয়া সারা বছরই আর্দ্র। তবে বর্ষায় সমুদ্র অশান্ত হয়ে পড়ে। তাই বর্ষা ঋতুতে আন্দামান ভ্রমণ পরিহার করাই উচিত হবে। ডিসেম্বর ও জানুয়ারির প্রথম আন্দামান ভ্রমণের মনোরম সময়। বৃষ্টির

জল সঞ্চিত রেখে পানীয় জলের সংস্থান করে পোর্ট ব্রায়ার। জিনিসপত্রের দামেও কিছুটা আধিক্য ঘটে পোর্ট ব্রায়ারের দোকানপাটে।

পোর্ট ব্রায়ার

আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জের সদর দপ্তর বসেছে দক্ষিণ আন্দামানের উচ্চ-নিচু পাহাড়ী শহর পোর্ট ব্রায়ারে। ছোট ছোট সবুজ টিলায় আধুনিক শহর ছড়িয়ে। চারপাশ জুড়ে বঙ্গোপসাগর। অগভীর সমুদ্র—স্বচ্ছ জল, নয়ন-লোভন প্রবালেরা হেলেদুলে মাথা নেড়ে স্বাগত জানায়। তবে, পর্যটকদের দুনিয়া আবার ডিন বাজারকে ঘিরে। নানান হোটেল, বাস স্ট্যান্ড, যাত্রী ডক, শিপিং করপোরেশন অব ইন্ডিয়া, অফিস, সবেরই অবস্থান আবার ডিন বাজার এলাকায়। ভারত সরকারের Tourist Office বিমানবন্দর-গামী দক্ষিণমুখী VIP Rd-এ মিনিট পনেরোর পথে। আর আন্দামান ও নিকোবর অ্যাডমিনিস্ট্রেশনের Tourist Office বসেছে মিনিট বিশেকের পথে ট্যুরিস্ট হোম—হাডয়ে; সেক্রেটারিয়েটেও দপ্তর আছে এদের। বালোদর্মী কাঠের বাড়িঘর, বোগেনডিলা তোরণ করে দাঁড়িয়ে। ১৯৯১-এর আদমসুমারি মতে ২০৩৯৬৮ জনের বাস আন্দামান জেলায় আর নিকোবর জেলায় ৩৯০২১ জনের বাস। এসেছে এরা ভারতের নানান প্রান্ত থেকে। ভারতের মূল ভূখণ্ডে কলকাতা ও চেন্নাই/ওয়ালটেমার থেকে বিমান ও জলপথে সংযোগ গড়ে উঠেছে মিনি ভারত—পোর্ট ব্রায়ারের।



কলকাতা থেকে জলপথে পোর্ট ব্রায়ারের দূরত্ব ১২৫৫, বিশাখাপতনম থেকে ১২০০, চেন্নাই থেকে ১১৯৩ কিমি। আর রেল থেকে ৫০০, গ্রেট চ্যানেলের ব্যবস্থানে সুমাত্রা থেকে ১৪৫ কিমি। আর বামার কেম নেগ রেইস থেকে আন্দামানের দূরত্ব ১৯০ কিমি মাত্র।

IAC-র বিমান সপ্তাহের ১ ৩৫ দিন ৫-৩০এ কলকাতা ছেড়ে বঙ্গোপসাগরের উপর দিয়ে উড়ে আন্দামানের গৈটয়ে পোর্ট ব্রায়ারে যাচ্ছে ৭-৩০এ। ফেরে ২ ৪৬ দিন সকাল ৮-৩৫। ভাড়া কলকাতা থেকে পোর্ট ব্রায়ার ৫৩০৫। আর ২ ৪৬ দিন ৫-৩০এ চেন্নাই ছেড়ে পোর্ট ব্রায়ার যাচ্ছে ৭-৩৫এ; ফেরে ৮-১০এ পোর্ট ব্রায়ার থেকে ১ ৩৫ দিন চেন্নাই। ভাড়া ৫৩৬৫। যাত্রণ্ট চাহিদা হেতু আগেভাগে OK টিকিট করে রাখা উচিত হবে। আর প্রাইভেট বিমান ইস্ট ওয়েস্ট এয়ারলাইনস চেন্নাই-পোর্ট ব্রায়ার-চেন্নাই ক্রিসপাটিক সার্ভিস গড়েছে।



তবে, ব্যস্ততা না থাকলে আন্দামান ব্রহ্মপুঞ্জের জাহাজের আকর্ষণ সম্ভবত বেশি। বঙ্গোপসাগর দিয়ে ৪ খানা জাহাজ মাসে ৩/৪ বার যাতায়াতও করে কলকাতা থেকে পোর্ট ব্রায়ারের হ্যাডো হার্বরে বন্দরে। সাধারণত চারদিন অপেক্ষা করে প্রতিটা জাহাজ বন্দরে। সময় সময় চেন্নাইও যায় এরা। তাই প্রয়োজনে ৪ দিনে সফর সেরে ঐ জাহাজেই ফেরা যেতে পারে। তবে টিকিট আগে থেকে কেটে রাখা বাধ্যনীয়। ভাড়া শীতাতপ M V Nicobar-এ বাছ : ৯৫৫, কেবিন : ৬ বার্ষিক

কমন বাথ ২২৪৩, ৪ বার্ষিক বাথ সংলগ্ন ২৮৫২, ২ বার্ষিক বাথ সংলগ্ন ৩৪৫০। সময় নেয় ৩ থেকে ৪ দিন। দিনভর আহার : বাছ শ্রেণী ৫০ কেবিন ১০০ প্রতিদিন প্রতিজনা। ভেজ্ঞ ও নন ভেজ্ঞ দুই-ই মেলে। শীতাতপ M V Harshabardhan বাছ ৯৫৫ কেবিন : ৪/৬ বার্ষিক কমন বাথ ২২৪৩ ১৭২৫ ৪ বার্ষিক বাথ সংলগ্ন ২৮৫২ ২ বার্ষিক বাথ সংলগ্ন ৩৪৫০ ১ বার্ষিক বাথ সংলগ্ন ৩৪৫০; M V Akbar-এ বাছ ৮২৮ A/C ডর্মি ১৪৪৯ ২ বার্ষিক বাথ কমন ২৪২৭ ২ বার্ষিক বাথ সংলগ্ন ৩৪৫০। M V Nancowry-ও যাচ্ছে মূল ভূখণ্ড থেকে পোর্ট ব্রায়ারে। তবে, বাধ্যবাধকতা নেই জাহাজি আহারে। আন্দামান যাতায়াতে নিকোবর বা হর্ষবর্ধনকেই বেছে নেওয়া যুক্তিযুক্ত হবে। যাত্রী যাচ্ছেন হর্ষবর্ধন (কেবিন ১৫০+বাছ ৫৯৬) ৭৪৬, নানকৌরীতে ১৫৭৫, নিকোবরে ১১৯৪ জন। উল্লিখিত ভাড়া যাত্রী পিছু এক পিঠের।

আর, লাগেজ কেবিন যাত্রীদের ২৫০ কেজি, বাছ যাত্রীদের ৫৫ কেজি ফ্রি। অতিরিক্ত লাগেজের ক্ষেত্রে মাওল লাগে। লাগেজের আকার ৩০x২ ফুটের মধ্যে থাকা বাধ্যতামূলক।

আর চেন্নাই থেকে M V Najd-II & III (শীতাতপ ফ্লোর স্পেস, সোফা/চেয়ার, কেবিন)—ভাড়া কলকাতারই তুল্য। T S Nancowry মাসে ২/৩ বার পোর্ট ব্রায়ার যাচ্ছে। বিশাখাপতনম (Bhanojiraw & Guruda, Pattavirama & Co, PB 17, Visakhapatnam) থেকেও জাহাজি সার্ভিস মেলে ২ মাসে একবার পোর্ট ব্রায়ারে। রেল না পৌঁছালেও বেলের কম্পিউটার চালিত Out Station Booking Office বসেছে সেক্রেটারিয়েটে।

আরও তথ্যের জন্য দি শিপিং করপোরেশন অফ ইন্ডিয়া লি., শিপিং হাউস, ১৩ স্ট্র্যাড রোড, কলকাতা-১, ৩ ২৪২৩৫৪, সংবাদ ৩ ২৪৫৪২০ আর চেন্নাই-এ The Shipping Corp of India Ltd, Jawahar Building, Rajaji Salai, Chennai-600001, ৩ ৫১৫৫৩৭-কে যোগাযোগ করুন। আর ফেরার পথে যোগাযোগ করুন The Shipping Corp of India Ltd, Aberdeen Bazar, Port Blair-744101 বা The Harbour Master, Andaman & Nicobar Administration, Port Blair-কে।

অতীতের প্যাসেজ বুকিং প্রথার আমূল বদল ঘটেছে। খবরের কাগজ/রেডিও-তে বিজ্ঞাপিত যাত্রার ৪/৫ দিন আগেই বাছ ও কেবিন ক্লাস টিকিটের জন্য নিধারিত ফর্ম ৩ খানা পাসপোর্ট সাইজের ফটোসহ দুই প্রচ্ছে পূরণ করে সরাসরি আবেদন করতে হয়—দি শিপিং করপোরেশন অব ইন্ডিয়া (প্যাসেজ ডিপার্টমেন্ট), কলকাতা বা চেন্নাই দপ্তরে। যাত্রার দিন থেকে ৩০ দিনের মধ্যে ফেরার রিটার্ন টিকিটও মেলে এদের কাছে। Resident Commissioner, A & N Administration, F-105 Curzon Road, New Delhi-110001, ৩ (011) 3782945 থেকেও আবেদন পত্র মেলে। তেমনই সরকারি বিধান বা ভি আই পি সফরে যাত্রার অন্তত ৫ দিন আগেই টিকিটের জন্য—Chief Liaison Officer, A & N Administration, 3A, Auckland Place, 2nd floor, Calcutta-700017, ৩ ২৪৭৫০৪৪-কে যোগাযোগ করা যেতে পারে। কর্মরত সরকারি কর্মীদের আইডেনটিটি কার্ড পাসপোর্ট

ফটোর পরিবর্তরূপে গ্রাহ্য। ছাত্রদের ৫০% রিবেটও মেলে ভাড়া। দ্বীপবাসীদেরও রিবেট মেলে ভাড়া।

আন্দামান যাতায়াতে জলপথের আকর্ষণ সর্বাপেক্ষে। সামুদ্রিক পীড়া ব্যক্তি ভেদে কিছুটা বিস্মৃতি ঘটালেও নানান মাছের সাথে ডলফিন, তিমি, হাঙর ছাড়াও সামুদ্রিক প্রাণীর জলকেলি, নৃত্যরত শুশুকের দল, জলের রঙ বদল, বিশেষ করে পূর্ণিমা রাতে সমুদ্রের রূপের তুলনা হয় না।

পোর্ট ব্ল্যার বেড়াবার জন্য ট্যাক্সি ও বাস চলছে। ট্যাক্সির মিটার অধিকাংশ ক্ষেত্রে খারাপ থাকে। চুক্তিতে যেতে আগ্রহী চালকরা। পয়েন্ট-টু-পয়েন্ট ভাড়াও ট্যাক্সি চলছে পোর্ট ব্ল্যারে। সাইকেল, মোপেডও ভাড়া মেলে পোর্ট ব্ল্যারে। আর দ্বীপ থেকে দ্বীপে যাচ্ছে হেলিকপ্টার ও জলযান ফেরি সার্ভিসে। Nicobar, Choolunga, Onga, Little Andamans, Maya Bunder, Yerewa-তে ফেরি জাহাজ যাচ্ছে সপ্তাহে সপ্তাহে। আর যাচ্ছে হেলিকপ্টার—Rangat, Maya Bunder, Little Andaman, Diglipur, Car Nicobar, Campbell Bay দ্বীপে পোর্ট ব্ল্যার থেকে। টিকিটের প্রচুর চাহিদা। আগ্রহীদের উচিত হবে জলযানের জন্য: Harbour Master; ফেরি সার্ভিসের জন্য: Marine Office (Inter Islands Ferry), Port Blair; হেলিকপ্টারের জন্য: Director of Transport, Port Blair-কে যোগাযোগ করা। তেমনিই পর্যটন দপ্তরও যাচ্ছে নানান প্যাকেজ ট্যুরে দ্বীপ থেকে দ্বীপে।

বাস স্ট্যান্ডের শিরে ফোনিক্স বে আর ডানহাতি বাজার ছড়িয়ে জিমখানা গ্রাউন্ড আরেজি বি পছ রোডের শেষ আবারডিন জেটি তথা সেলুলার জেলে। জেটির দক্ষিণে ফিসারিজ মিউজিয়ম, মেরিন পার্ক। আর বামে পাহাড় চড়ে হাড্ডো। এপথেই অ্যানথ্রোপলজিক্যাল মিউজিয়ম, মিনি জু, ফরেনস্ট মিউজিয়ম পর পর দাঁড়িয়ে। বাস থেকে দক্ষিণ-পশ্চিমে শহরের প্রাণকেন্দ্র মিডল পয়েন্টে জ্যুলাজিক্যাল মিউজিয়ম, কটেজ ইনডাসট্রিজ, খাদি গ্রামোদ্যোগ ভবনের অবস্থান। আরও দক্ষিণ-পূর্বে ডিলখামান ট্যাক্স। শহরের সর্ব দক্ষিণে করবাইনস কোড সাগরবেলা। সেতু দিয়ে সমুদ্র পেরিয়ে শহরের উত্তরে চাখাম দ্বীপ।

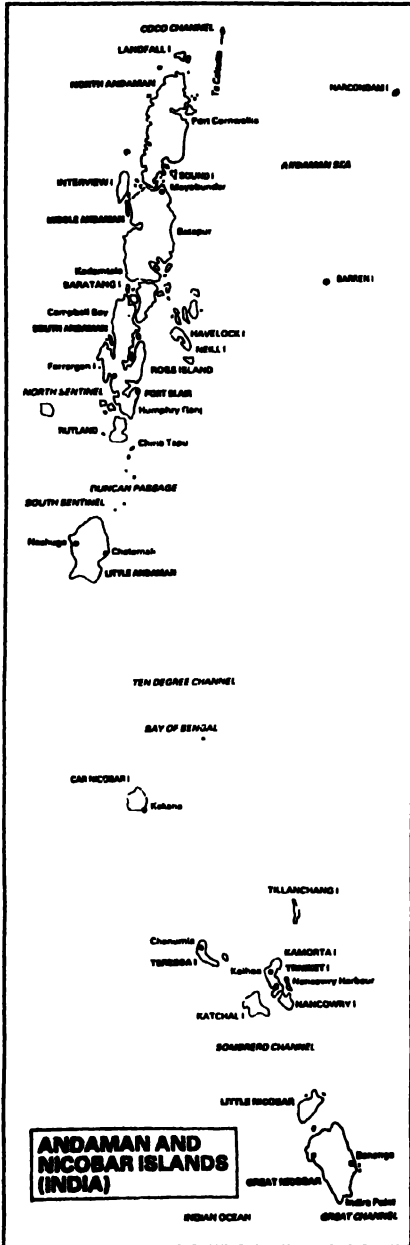
সেলুলার জেল: শহরের উত্তর-পূর্বে ১৮৭৯তে ব্রিটিশ জেনারেল ক্যাদালের হাতে ভিত্তিপ্রস্তর, আর ১৮৯২ থেকে ১৯১০এ ধাপে ধাপে গড়ে ওঠে কুখ্যাত সেলুলার জেল। সাগরমুখী পাহাড়ের উপর, পিছনেও খাড়া পাহাড়—গিয়ে মিলেছে সাগরে। দ্রিষ্টান্ত এই জেলে ৭টি শাখায় (wing) সারি সারি ৭৫৬টি সেল ছিল সেকালে। জানালাহীন সর্কাপ সেল অর্থাৎ কক্ষ—৩ মি উঁচুতে ছোট গবাক্ষ। ফালক্রাম হয়ে সেন্ট্রাল টাওয়ার। টাওয়ার চড়ে চারপাশের প্রকৃতি সুন্দর দৃশ্যমান। ১৮৫৮-১৯৩৮ ব্রিটিশরাজ রাজত্বের অপরাধে দেশপ্রেমে উদ্বুদ্ধ স্বাধীনতা সংগ্রামীদের দ্বীপান্তরে পাঠায় সেলুলারে। ব্রিটিশের অত্যাচার সহিতে না পেয়ে শহীদও হন নানান জনা। প্রতি সোম ও বৃহস্পতিবার ১৭-৩০টায়

টিল হাউস ও টুরিস্ট হোমে নিখরচায় ১ ঘণ্টায় VDO প্রদর্শনীতে Man in search of man অর্থাৎ সেলুলারের অজীত আখ্যান ছাড়াও জারোয়া ও ওসীদেব সমাজ জীবন দেখে নেওয়া যায়। টাওয়ারের দ্বিতলের দেওয়ালে ১৩টি ফলকে নামাক্রিত রয়েছে তেমনই ৩৩৬ জন শহীদের।

Conducted tours organised by Tourism Department (All tours commence from Andaman Teal House)

| | Adult Rs | Child Rs |
|---|------------------------------|----------------|
| I. Jolly Buoy / Redskin Islands (8-30 to 16-30 hrs) (J/Buoy) (R/Skin) | Bus 75 Boat 75 Boat 50 | 38 40 25 |
| II Wandoor Beach via Sippighat Agri Farm & Rubber Plantation (8-30 to 12-30 hrs) | Bus 75 | 38 |
| III Chiriyatapu (8-30 to 16-30 hrs) | Bus 75 | 38 |
| IV Corbyn's Cove Beach (8-30 to 12-30 hrs) | Bus 40 | 20 |
| V Mini City includes (Gandhi Park) Water Sports & I. & Sound Show (14-00 to 19-00 hrs) | Bus 40 | 20 |
| VI City Sight Seeing (8-30 to 12-30 hrs) & (13-30 to 17-00 hrs) | Bus 40 | 20 |
| VII. Trips to I. & Sound and back | Bus 15 | 8 |
| NB: Trips will be subject to the sufficient bookings Trips organised by Marine Department ② 20742/20526 | | |
| I Jolly Buoy/Red Skin Island From Wandoor at 10-00 hrs (Monday off) | Boat 75 Boat 50 | 40 25 |
| II Ross Island from Phoenix Bay Jetty (Wednesday off) (8-30/10-30/12-30 hrs) | | 13 4 |
| III Harbour Cruise or Seven Points from Phoenix Bay Jetty (Everyday) (15-00 to 17-00 hrs) | | 20 7 |
| For more information : Tourist Information Centre, Sec- retariat, Port Blair, ② 20694/20642 | | |

১৯৪১-এর ভূমিকম্প ও জাপানী হানায় ৭টির মধ্যে ৪টি উইং বিধ্বস্ত হতে গোবিন্দবল্লভ পছ হাসপাতাল বসেছে স্বাধীনোত্তর কালে নবসাজে। অবশিষ্ট তিনের একটিতে সাধারণ জেল থাকলেও ১৯৭৯র ১১ই ফেব্রুয়ারি জাতীয় স্মৃতি মন্দির হ্রদে ব্রিটিশের গড়া সেলুলার। রূপও পেয়েছে মিউজিয়ম—বিপ্লবীদের নানান স্মারক নিয়ে। সোম ও ছুটি ছাড়া ৯—১২-০০, ১৪—১৭-০০টায় দর্শন। এমনকি ২০শে অক্টোবর ১৯৯০ থেকে Son-et-Lumiere প্রদর্শনীতে ১৮-০০টায় হিন্দি, ১৯-১৫ই ইংরেজি ধারাভাষ্যে এক ঘণ্টায় (দেশের অধিক যাত্রী হলে) দেখে নেওয়া যায় বীর সাতারকর থেকে উল্লাসকর দপ্তরের আমৃত্যু সংগ্রামের সাথে নেতাজী সুভাষের আশামান আগমন আশ্বাস। টিকিট ৬। অগ্রিম টিকিট ৮-৩০—১০-০০টায় Tourist Information Centre, Haddo; ১৪—১৬-৩০টায় Tourism Office-এ মেলে। বিশেষ বাসও যাচ্ছে Tourism Office থেকে ১৭-



১৫য় Son-et-Lumiere দর্শনে। আর ৯—১৭-০০টায় দেখে নেওয়া যায় সেলুলার।

জিমখানা গ্রাউন্ড : ১৯৪৩এর ৩০শে সেপ্টেম্বর স্বাধীন ভারতের প্রথম জাতীয় পতাকা তোলেন আজাদ হিন্দ ফৌজের সর্বাধিনায়ক নেতাজী সুভাষ আন্দামান ক্রাবের বিপরীতে অতীতের জিমখানা গ্রাউন্ডে। সেও এক বরণীয় ঘটনা পোর্ট ব্রেনার তথা সারা ভারতের। পায়ে পায়ে বেড়াবার মনোরম পরিবেশ।

গান্ধী পার্ক: আন্দামান বাসে শহরের নবতম আকর্ষণ চিলড্রেন পার্ক, অ্যামিউজমেন্ট পার্ক, ডিয়ার পার্ক, ওয়াটার স্পোর্টস, জাপানিজ টেম্পল, লেক, গার্ডেন, রেস্টোরাঁ ছাড়াও আবালবৃদ্ধবনিতার চিত্ত-বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে গড়া উদ্যান তথা গান্ধী পার্ক।

ফিশারিজ মিউজিয়ম: দুইয়ের মাঝে সাগর পাড়ে ফিশারিজ মিউজিয়ম। কুমির, হাঙর, ডলফিন, গলদা চিংড়ি, কাঁকড়া ছাড়াও ৩৫০-এরও অধিকধর্মী সামুদ্রিক প্রাণী ও প্রবালের সংগ্রহ উল্লেখ্য। পোর্ট ব্রেনারের অনন্য দর্শনও অনিন্দ্যসুন্দর এই মিউজিয়ম। ছুটি ও রবি ছাড়া ৯-০০—১২-৩০ আবার ১৩-০০—১৭-০০টায় খোলা।

লাগোয়া ম্যারিন পার্কে টয় ট্রেন থেকে নাগরদোলা পর্যটক বিনোদনের নানান ব্যবস্থা। পাশেই খেলার মাঠ—নেতাজী স্টেডিয়াম। অদূরে, রামকৃষ্ণ মিশন।

জ্যুলজিক্যাল মিউজিয়ম: মেরিন পার্কের দক্ষিণ-পশ্চিমে শহরের প্রাণকেন্দ্র মিডল পয়েন্টে ২০০ ধর্মী প্রাণীর প্রদর্শনশালা জ্যুলজিক্যাল মিউজিয়ম। অদূরে কটেজ ইন্ডাস্ট্রিজ এম্পোরিয়ামে দ্বীপবাসীদের হস্তজাত মুক্তো, শঙ্খ, ঝিনুক, দারুণ তৈরি নানান কিছু দেখার সঙ্গে ক্রয়ের ব্যবস্থা মেলে। রবি ও ছুটি ছাড়া ৯—১৭-০০টায় খোলা।

মিডল পয়েন্টের শিরে হাড্ডেমুখী পথে ফোনিম্ন বে-তে ১৯৭৫-৭৬এ গড়া অ্যানথ্রোপলজিক্যাল মিউজিয়ম। শনি ও ছুটি ছাড়া ১০—১৬-৩০টায় মডেল ও আলোক-চিত্রে দ্বীপবাসীদের জীবনযাত্রা তথা অতীত প্রকৃতি বিজ্ঞান প্রদর্শিত হয়েছে। হস্তজাত নানান সস্তারও দেখতে মেলে। উচিতও হবে আন্দামান ভ্রমণে দেখে নেওয়া।

মিউজিয়ম রেখে আরও উত্তরে পাহাড় চড়ে হাড্ডো। হাড্ডো থেকে বঙ্গোপসাগর সুন্দর দৃশ্যমান। পথেই পড়ে মিনি জ্যু অর্থাৎ চিড়িয়াখানা। সোমবার ছাড়া ৮—১৭-০০টায় দ্বীপভূমির দ্বিগুণাধিক প্রজাতির জীবজন্তু ও পাখি দেখে নেওয়া যায়।

এপথেই স্বল্প যেতে ফরেস্ট মিউজিয়ম। দ্বীপভূমির অরণ্য সম্পদ প্রদর্শিত হয়েছে হাড্ডোর এই মিউজিয়মে। হাড্ডো রেখে ২ কিমি উত্তরে এশিয়ার প্রাচীনতম তথা বৃহত্তম চাখাম শ মিল। সেতুতে ঝাঁড়ি পেরিয়ে দ্বীপাকার চাখামে দ্বীপভূমির নানানধর্মী দুস্ত্রাপ্য ট্রপিক্যাল বৃক্ষের সাথে পাড়ক, মার্বেল, সাটিন দেখতে মেলে। সহস্রাধিক কর্মী

কর্মরত। হাড্ডোতেও একটি শো-রুম আছে এদের। তবে, আর্থিক ক্ষতির বহর ন্যূন করেছ একে আচ্ছ। কলকাতার জাহাজও চাফাম হয়ে যাচ্ছে। ছুটি ছাড়া প্রতিদিন ৯—১২-০০, ১৪—১৭-০০টায় দর্শন।

ওয়াটার স্পোর্টস কমপ্লেক্স: শহরের কেন্দ্রবিন্দু দিলখামানে নানানধর্মী জলক্রীড়ার সাথে সাঁতার সেতু, পেডাল ও রোয়িং বোটের ব্যবস্থা মেলে। চিলড্রেন ট্রাফিক রুল শিকার ট্রাফিক পার্ক (১৬—২০-০০) ছাড়াও ছোটদের চিত্ত বিনোদনের নানান ব্যবস্থা। ১৮৫৯এ ব্রিটিশের সঙ্গে আন্দামানীদের যুদ্ধের স্মারকও হয়েছে। বিধবস্ত এক জাপানি মন্দিরও রয়েছে। চডুইভাতিরও মনোরম পরিবেশ দিলখামান। অতীতে পানীয় জলের একমাত্র সংস্থানও ছিল এই দিলখামান ট্যাঙ্ক। প্রতিদিন খোলা (৮—২০-০০), ও ৩০৭৭৭. পাহাড় বেয়ে সিঁড়িও উঠেছে সেলুলারে।

নাভাল মেরিন মিউজিয়াম: সেলানিপুরের এই মিউজিয়ামটি আন্দামান ভ্রমণে দেখে নেওয়া উচিত। সামুদ্রিক প্রাণীর সাথে সমুদ্রজাত নানানকিছু (৩৫০রও অধিক) প্রদর্শিত হয়েছে, সমুদ্রিকায়। দ্বীপভূমির নানান তথ্যও মেলে এর সংগ্রহালয়ে। ৯—১২-০০ ও ১৪—১৭-৩০টায় খোলা।

কারবাইনস কোড সাগরবেলা: শহরের নিকটতম (১০ কিমি), হাড্ডো থেকে ৭ কিমি দক্ষিণে শহরেরও সর্বদক্ষিণে মেরিনা পার্ক। রামকৃষ্ণ মিশনের পাশ দিয়ে পথে তাল ও নারকেলে ছাওয়া নিরালা-নির্জনে সৈকত সৌন্দর্যে অনন্য কারবাইনস। সমুদ্র স্নানে রমণীয়, জেলে নৌকার আনাগোনা—চডুইভাতির মনোরম পরিবেশ। ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্স তথা শীতাতপ রেস্তোরাঁ রয়েছে। পাশেই ব্র্যাক আইল্যান্ড। অদূরে ব্লেক আইল্যান্ড। স্বল্প যেতে পিয়ারলেস রিসর্ট। বাস ও ট্যাক্সি আছে। প্রতি রবিবার বিশেষ বাসেরও ব্যবস্থা মেলে শহর থেকে। বাস যাত্রায় শেষ ১ কিমি হাঁটতে হয়। বিমানবন্দর ৪ কিমি দূরে।



থাকারও নানান ব্যবস্থা—Peerless Resort, ও ২১৬৬২, D ২০০০, সাইট ২৫০০; বিচ থেকে ১১ কিমি আগে নিরালা-নির্জনে ট্যুরিস্ট লজ—Hornbill Nest, D ২৫০ ডব্লিউ বেড ৫০ ও টিলার ট্যুরিস্ট Home আছে; বুকিং: A & N Tourism Office থেকে।

লক্ষ্মীবাই দ্বীপ: পোর্ট ব্রায়ার বন্দরের মুখে ছোট ছোট খাঁড়িতে আবৃত ০.৬ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত লক্ষ্মীবাই তথা অতীতের রস আইল্যান্ড। ১৫ই আগস্ট ১৯৯৬ রস আইল্যান্ড দ্বীপের নামান্তর ঘটে লক্ষ্মীবাই দ্বীপ হয়েছে। ১৮৫৮র ১০ই মার্চ Dr James Pattison Walker অর্থাৎ ব্রিটিশের (ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি) আগমন ঘটে দ্বীপে। ব্রিটিশের প্রশাসনিক দপ্তর বসে, ব্রিটিশ চিফ কমিশনারের বাসও ছিল রস দ্বীপে সেকালে। ১৯৪১এর ভূমিকম্পে ক্ষতিগ্রস্ত রস ১৯৪২এ জাপা গোলায় বিধ্বস্ত হয়। দখলও যায় জাপানের হাতে রসদ্বীপের। ১৯৪৫এ দখল ফিরলেও

দপ্তর ফেরে না ব্রিটিশের রস-এ। সেই থেকে বসতিহীন রস দ্বীপে ব্রিটিশ ও জাপা উপনিবেশিক স্থাপত্যের স্মারক হয়ে লাইট হাউস, চার্চ, চিফ কমিশনার হাউস, হাসপাতাল, টেনিস কোর্ট ও সিমেন্ট অতীত রোমন্থন করায়। ভারতীয় নেতির ব্যবস্থাপনায় দ্বীপের ইতিহাস তুলে ধরা হয়েছে স্মৃতিকা মিউজিয়াম গড়ে। আর আছে প্রকৃতির গড়া চিড়িয়াখানা। শ'দুয়েক ফুট উঁচু গর্জন গাছের অরণ্যে চিতল হরিণ ও ময়ূরেরা স্বাগত জানায়। আর উপকূলে প্রবাল ও ট্রকার্স শঙ্খও দেখে নেওয়া যায়। দেশী-বিদেশী সবার তরেই রস দ্বীপের দরজা খোলা। লঞ্চও আছে হাড্ডোর নিচে ফোনিম্ব বে জেটি থেকে বৃহবার ছাড়া প্রতিদিন ৮-৩০, ১০-৩০, ১২-৩০, ১৪-১৫, ১৬-৩০টায়—আধ ঘণ্টার জলপথ। ২ ঘণ্টা সময় দেয় পায়ে পায়ে অতীত রোমন্থন করে নিতে রসে। পানীয় জল মিললেও আহার্য সস্কী করা উচিত হবে রস সফরে। টিকিট জেটিতে মেলে। প্রকৃতি চলেছে ট্যুরিস্ট ভিলেজ গড়ার রসে।

| Distance From Port Blair : | | | মাউন্ট হ্যারিয়েট: |
|----------------------------|----------------|-----|--|
| To | Nautical Miles | Km | চাফামের নিপরাঁতে— |
| Diglipur | 101 | 190 | উত্তরে ৩৬৫ মি উঁচুতে |
| Mayabunder | 66 | 136 | মাউন্ট হ্যারিয়েট। ব্রিটিশ |
| Ranaghat | 50 | 93 | চিফ কমিশনারের গ্রীষ্মা- |
| Long Island | 46 | 85 | বাস ছিল অতীতে। সুন্দর |
| Have Lock | 21 | 38 | প্রাকৃতিক শোভার জন্য |
| Drakatcha | 35 | 65 | অরণ্যময় হ্যারিয়েটের |
| Wrafter Creek | 27 | 50 | প্রশস্তি। সূর্যোদয়, সমুদ্র, |
| Long Island via | | | পোর্ট ব্রায়ার শহরও |
| Have Lock | 75 | 139 | সুন্দর দৃশ্যমান পোর্ট |
| Little Andaman | 66 | 122 | ব্রায়ারের উচ্চতম |
| Car Nicobar | 150 | 276 | হ্যারিয়েট থেকে। |
| Narcondum | 140 | 259 | চডুইভাতির মনোরম |
| Nancowrie | 235 | 435 | পরিবেশ। বাস ও ট্যাক্সি |
| Nancowrie | | | যাচ্ছে ৪৫ কিমি দূরের |
| via Car Nicobar | 230 | 426 | পোর্ট ব্রায়ার থেকে ঘণ্টা |
| Barren Island | 75 | 139 | দুয়েকে। আবার মেরিন |
| Niel Island | 20 | 35 | জেটি থেকে লঞ্চে ১০ |
| Baratang | 35 | 65 | মিনিট হোপ টাউন গিয়ে |
| Kadamtala | 50 | 93 | ট্রেক করে আধ ঘণ্টায় চড়া যেতে পারে হ্যারিয়েটের শিরে। |
| (Uttara Jetty) | | | ট্যাক্সি মেলে শ'তিনেক টাকায়। দূরত্বও এপথে ১৫ কিমি |
| East Island | 120 | 222 | মাত্র। সমস্ত জাতীয় উদ্যানের শিরোপা পরেছে মাউন্ট |
| Katchal | 228 | 422 | হ্যারিয়েট। ২ ঘরের A/c ফরেন্স্ট রেস্ট হাউস-ও আছে |
| Campbell Bay | 294 | 544 | হ্যারিয়েটে পাহাড়ে। |
| South Bay | | | |
| (Great Nicobar) | 300 | 555 | |

ভাইপার দ্বীপ: বিশারিজ জেটি থেকে ৩ কিমি দূরে পোর্ট ব্রায়ার বন্দরের মুখে আকারে ছোট হলেও আকর্ষণে অনন্য Viper Island. সেলুলার তৈরির আগে রাজবন্দিদের আশ্রয়স্থল ছিল এই ভাইপার। নীরব সাস্কী হয়ে টিলার

টঙে ভাঙাচোরা ফাঁসিকাঠগুলি আজও নিষ্ঠুরতার কাহিনী শোনায়।

চিড়িয়া টাপু: এপথের শেষ করবাইনস কোডে—আর তারও দক্ষিণে, দক্ষিণ আন্দামানের সর্ব দক্ষিণে *চিড়িয়া টাপু* অর্থাৎ পাখির টিলা। নিরালা-নির্জনে মনোরম সাগরবেলা। আর আছে পাহাড় পাহাড় সবুজ ম্যানগ্রোভ অরণ্যে ছাওয়া সর্দীর্ণ খাঁড়ি। ১৫টি দ্বীপ নিয়ে ২৮০ বর্গ কিমি জুড়ে রূপ পেয়েছে জাতীয় উদ্যান। অগভীর পান্না সবুজ জলে প্রবালের সাথে মাছেদের জলকেলি আর গাছের শাখে রঙবেরঙের নানান পাখি ও প্রজাপতির বগলী পরিবেশকে মধুময় করে তোলে। সূর্যাস্ত ও সুন্দর চিড়িয়া টাপুতে। চতুর্ভুজিত মনোরম পরিবেশ। শহর থেকে ১৭ কিমি দূরে এপথের বার্মা নালায় মাল বহনে দক্ষ হাতির কর্মকাণ্ডও দেখে চলা যায়। ২৬ কিমি দূরের পোর্ট ব্রায়ার (আবারডিন বাজার) থেকে বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে চিড়িয়া টাপু—১ ঘণ্টার পথ। রোমাঞ্চ ভরা এপথে চলা। থাকারও ব্যবস্থা মেলে টিলার টঙের *ফরেস্ট রেস্ট হাউস*, অবু: Conservation of Forest—Andaman Circle, Port Blair, ৩ 21321.

চিনকুইআইল্যান্ড: পোর্ট ব্রায়ার থেকে ২৬ কিমি দূরে প্রবাল ও সাগরবেলায় জন্য Cinque-এর প্রশস্তি। ডলফিনও দেখা দেয় চিনকুই-এ। চিড়িয়া টাপু থেকে বোট ২ ঘণ্টায় বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ফোনিব্র বে থেকেও চলা যেতে পারে ঘণ্টা তিনেকো। নবোদ্যমে পর্যটন কেন্দ্রে রূপ পেতে চলেছে চিনকুই।

ওয়াড্ডার দ্বীপ: পোর্ট ব্রায়ার থেকে বাসে ৩০ কিমি দূরে ১ ঘণ্টার পথে দক্ষিণ আন্দামানের পশ্চিমে নির্জন সাগরবেলা ওয়াড্ডার। কোরাল আইল্যান্ড অর্থাৎ প্রবাল দ্বীপে স্ফটিক স্বচ্ছ জলে রঙবেরঙের প্রবাল ও নানান সামুদ্রিক প্রাণীর আকর্ষণে যাত্রী যাচ্ছেন শহর থেকে ওয়াড্ডারে। ন্যাশানাল মেরিন পার্কের শিরোপা চেপেছে ২৮১.৫ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত ছোট-বড় ১৩টি দ্বীপ নিয়ে গড়া ওয়াড্ডারের শিরে। নাম হয়েছে তার মহাশ্বা গান্ধী মেরিন ন্যাশানাল পার্ক। থাকারও ব্যবস্থা মেলে জেটির অদূরে *ফরেস্ট রেস্ট হাউস*।

শহর থেকে স্টেট বা প্রাইভেট বাসে বা প্যাকেজ ট্যুরে ঘণ্টা। ঝানেকে ওয়াড্ডার পৌঁছে ওয়াড্ডার জেটি থেকে যন্ত্রচালিত বোট মহাশ্বা গান্ধী ন্যাশানাল পার্কের অংশ গোলকধাতুলা ১৫টি দ্বীপের পুঞ্জ—Grub, Boat, Red Skin, Chester, Jolly Buoy Islands বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আকারে এরা ছোট হলেও পাহাড়ী এই দ্বীপপুঞ্জের সোনালী বালুকাবেলা, নীল জলে প্রবাল অলঙ্কার হয়ে সৌন্দর্য বাড়িয়েছে। ভবুও যেন এদের মধ্যে জলি বয় আকর্ষণে অনিল। সোম ছাড়া প্রতিদিন সকালে (১০-০০) ওয়াড্ডার থেকে ১ ঘণ্টার বোট ম্যানগ্রোভ অরণ্যে ছাওয়া সর্দীর্ণ খাঁড়ি পথে চলা যেতে পারে ন্যাশানাল পার্ক তথা সামুদ্রিক

অভয়ারণ্যে। ফাইবার গ্লাস লাগানো বোট দেখে নেওয়া যায় ৫০-এরও অধিকধর্মী প্রবাল ও নানান সামুদ্রিক প্রাণী জলি বয় সাগরবেলায়। ঝানেকো মেতে ওঠেন আবালবৃদ্ধ-বনিতা। ডুব দিয়ে বিশেষধর্মী চম্পায় প্রবাল দেখার অনাবিল আনন্দ মাতোয়ারা করে তোলে। আর এক প্রবাল দ্বীপ রেড স্কিন। আর, উচিত হবে প্যাকেট লাঞ্চ ও পানীয় জল সঙ্গী করা। পথে ঝিরকাটাও চিরহরিৎ অরণ্যে জারোয়াদের বাস।

সিলিঘাট: পোর্ট ব্রায়ার থেকে ১৪ কিমি দূরে ওয়াড্ডারের পথে ৮০ একর জুড়ে সিলিঘাট ফার্ম অর্থাৎ নানানধর্মী ফুল-ফল, মশলা ও গাছ-গাছালির গবেষণা কেন্দ্র। চাষ-আবাদ হচ্ছে—নারকেল, লবঙ্গ, দারুচিনি, গোলমরিচ, রাবার, জাম্বুফল। কিনতেও মেলে ফার্মে। ১ কিমি দূরে SAI Water Sports Complex. কায়াক, বোট, মোটর বোট আশমনি রঙের জলে জল-ক্রীড়ার নানান ব্যবস্থা। সুইমিং পুলও বসেছে। সোম ছাড়া ৮—১৭-০০টায় খোলা। কনডাক্টেড ট্যুরে দেখে নেওয়া যায়। বাসও যাচ্ছে ট্যুরিস্ট হোম থেকে সিলিঘাটে।

হ্যাডলক দ্বীপ: পোর্ট ব্রায়ারের ৩৮ কিমি পূর্বে ১০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত Havelock Island. সবুজে ছাওয়া সুন্দর বালুকাবেলা—অগভীর স্বচ্ছ জলে অগুপ্তি প্রবাল। মাছেদের আনাগোনা। সূর্যোদয়েরও মাধুর্য আছে হ্যাডলকে। আর উচিত হবে কিং কোকোনাট অর্থাৎ হলুদ ডাবের স্বাদ নেওয়া। হ্যাডলক দ্বীপভূমে প্রাক্তন পূর্ব পাকিস্তান থেকে আগত বাঙালি শরণার্থীদের বাস। দেশী-বিদেশী সবার কাছেই হ্যাডলকের দ্বার খোলা। ডাইরেক্টরেট অব শিপিং সার্ভিসের ফেরি বোটও যাচ্ছে ফোনিব্র বে জেটি থেকে হ্যাডলকে। থাকার ব্যবস্থা মেলে ৫ কিমি দূরে *ডলফিন যাত্রী নিবাস* হ্যাডলক দ্বীপে। ১৩টি কটেজধর্মী ঘর ১৫০ ২০০ ৪০০, বুকিং: ট্যুরিস্ট অফিস, পোর্ট ব্রায়ার। আর ক্যাম্পিং-এর ব্যবস্থা মেলে ৭ কিমি দূরে রাধানগর বীচে। অর্থ বৃত্তাকার বালির সৈকতবেলা, পাহাড় আর আরণ্যক রাধানগরে সূর্যাস্ত ও সুন্দর।

নীল দ্বীপ: পোর্ট ব্রায়ারের ৩২ কিমি পূর্বে বাঙালি প্রধান আর এক দ্বীপ নীল (Neil)। আকারে ছোট (১৮.৯০ বর্গ কিমি) হলেও আকর্ষণে হ্যাডলক তুল্য। প্রবালে ভরা অগভীর সমুদ্র, বালুকাবেলা, সবুজ দ্বীপ নীল। সপ্তাহে ৩/৪ দিন ফেরি সার্ভিসে মোটর বোটও যাচ্ছে ফোনিব্র বে, পোর্ট ব্রায়ার থেকে। থাকার ব্যবস্থা মেলে APWD-র *রেস্ট হাউস*।

কমডাকটেড ট্যুর: Directorate of Information, Publicity and Tourism, Secretariate, A & N Administration, Port Blair-744101, ৩ 20933 বা Tourist Home, Haddo, ৩ 20380 থেকে ৭—১১-০০ ও ১৪—১৭-০০টায় কোচবাছে পোর্ট ব্রায়ার শহর দেখাতে। □ আর Tourist Information Centre-এর দ্বীপ বিহারীশীলক যাচ্ছে প্রতিদিন বিকাল ১৬-০০টায় ২ ঘণ্টার সকরে দ্বীপ বিহারে। □ বুধ ছাড়া প্রতিদিন রস দ্বীপ যাচ্ছে

ফোনিঙ্গ বে থেকে। □ সোম ছাড়া প্রতিদিন ৮-১৫, ১০-৩০, ১২-১৫য় বাসে ওয়াতুর পৌঁছে বোট জলি বয় ও রেড স্কিন যাচ্ছে। □ বুধ ও রবিবার ৯-১৩-০০টায় করবাইনস কোড: বৃহস্পতি ও শনিবার ৯-১৩-০০টায় চিড়িয়া টাপু-বার্মা নানা; মঙ্গল ও শুক্রবার ৯-১৩-০০টায় ওয়াতুর-সিমিঘাট দেখাতে যাচ্ছে পর্যটন দপ্তর।

আবার ফিশারিজ জেটি থেকে ফেরি লঞ্চে ঘণ্টা চারেকের বিহারে জেটি থেকে জেটি বেড়িয়েও জলপথে পোর্ট ব্ল্যার বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে। ফোনিঙ্গ বে জেটি থেকেও প্রতি বিকালে (১৫-০০) লঞ্চ যাচ্ছে ভাইপার দ্বীপে ১½ ঘণ্টার সফরে। খুবই রমণীয় এই ভ্রমণ। Bay Island Hotel-এর Island Travels, Shompen Travels—Middle Point, এদেরও কনডাক্টেড ট্যুরে পোর্ট ব্ল্যার দেখাবার ব্যবস্থা আছে। ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরও বসেছে পোর্ট ব্ল্যারের মিডল পয়েন্টে।

এছাড়া আবারডিন বাজার, আবারডিন জেটি থেকে সূর্যোদয়, মেরিন হিল থেকে সমুদ্রের দৃশ্য, বাথু ফ্রাট, রাইট মাও, উইমকো ফ্যাক্টরি, বটানিক্যাল গার্ডেন, ফুচি চাও বৌদ্ধ মঠ, টাওয়ার ক্লক, কালীবাড়ি, শাদীপুর, বঙ্গা-চঙ্গে সরকারি কয়ার ইন্সটিটিউট, রামকৃষ্ণ মন্দির, মুকুর্গাও মন্দির, রাধাকৃষ্ণ মন্দির, পর্যটকদের দেখে নেওয়া উচিত। তেমনই উচিত হবে ফাইবার গ্লাস লাগানো বোট জলিবয়, রেড স্কিন ও সিল্ক দ্বীপের স্বচ্ছ অগভীর জলে রঙবেরঙের প্রবাল, মাছ, নানান জাতীয় সামুদ্রিক প্রাণী দেখে নেওয়া।

এছাড়া সারা আন্দামানেই রয়েছে সুন্দর সুন্দর সমুদ্র-সৈকত। বিশেষ করে কালীঘাট, লিটল আন্দামান, কাচাল, মালাক্সা সমুদ্রতীরের তুলনা হয় না। কামোটার জেটিতে বসে স্বচ্ছ জলে হাজারো রকম রাউন মাছের জলকেলি, নয়ন মনোহর প্রবাল, জলজ উদ্ভিদ দেখতে দেখতে পর্যটক-মাত্রই অভিভূত হয়ে পড়েন। এরও আকর্ষণ অনস্বীকার্য। ফোনিঙ্গ বে থেকে বোট (সপ্তাহে ৩ দিন) ৮২ কিমি দূরে লালাজি উপসাগরের লং আইল্যান্ড সৈকতবেলাটিও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। রুপোলি বালুকাবেলা—আরণ্যক পরিবেশ। পোর্ট ব্ল্যারের নবতম উৎসব প্রতি ফেব্রুয়ারি মাসে ১০ দিন ব্যাপী ট্যুরিজম ফেয়ার।

রাতভর সমুদ্রযাত্রায় চলা যায় ১৩৬ কিমি জলপথের মায়্যা বন্দর (Maya Bunder)। প্রতিদিন ৫—৬-৩০টায় সরকারি (বেসরকারি নানান বাসও যাচ্ছে পোর্ট ব্ল্যার থেকে ২৫০ কিমি দূরের সড়কপথে মায়্যা বন্দর। মাঝে মাঝে খাড়ি—লঞ্চে পারাপার। যাত্রীর সঙ্গে বাসও পার হয় জলপথ। পথশোভা মনোরম। পাল্লা-সবুজ জলে ঘেরা জমজমাট জনপদ মায়্যা বন্দর। কাছেই অস্টিন দ্বীপ। আর আছে রামপুর, পোখাডোরা, কারমাটাও সাগরবেলা মায়্যা বন্দরের কাছে-পিঠে। মায়্যা বন্দর থেকে ৫৪ কিমি উত্তরে দিঘলিপুর। মজার ভরা দিঘলিপুরের সমুদ্র—সূর্যও কৌতুকে মাতে সমুদ্রের সাথে। আন্দামানের একমাত্র নদী কালপং-এর তীরে গড়ে উঠেছে হাইড্রো-ইলেকট্রিক প্রোজেক্ট দিঘলিপুরে। তেমনই উচ্চতম স্যাডেল পীকের (৭৩২ মি) অবস্থানও দিঘলিপুরে।

ফেরি ও সড়ক সংযোগ গড়েছে মায়্যা বন্দর ও দিঘলিপুরের মাঝে। মায়্যা বন্দরের অদূরে মোটর লাগানো ডুঙ্গিতে বেড়িয়ে নেওয়া যায় নারকেলে ছাওয়া রত্নদ্বীপ এডিস। যত্রতত্র কোরাল-শাঁখ ও বিনুক।

পোর্ট ব্ল্যার-মায়্যা বন্দর বাসপথে পোর্ট ব্ল্যার থেকে ১৭০ আর মায়্যা বন্দরের ৭০ কিমি আগে রঙ্গতের অবস্থান। রঙ্গতের প্রসিদ্ধিও তার সাগরবেলায় জন্য। সূর্যোদয়ও মনোরম রঙ্গতে। তেমনই ডিসেম্বর থেকে এপ্রিল মাসে হাজার হাজার হক বিল অর্থাৎ কচ্ছপ আসে রঙ্গতে; ডিম পাড়ে সী বীচে—সেও আর এক রমণীয়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে বাস স্ট্যান্ড থেকে ২০ কিমি দূরে বাস সড়কে আন্দামান পর্যটনের হকস বিল (নেস্ট, D ২৫০ A/C ৪০০ ডর্মি বেড ৭৫; ছাড়িও প্রাইভেট হোটেল—হরিকৃষ্ণ লজ, চন্দ্রমোহন লজ আছে রঙ্গতে। বাস যাত্রায় আগে থেকে বলে হকস বিল নেস্ট-এ নামারও সুযোগ মেলে। এমনকি হকস বিল নেস্ট, রঙ্গত থেকে প্যাকেজ ট্যুরে মায়্যা বন্দর, কারমাটাং, পোখাডোরা বেড়াবার ব্যবস্থা আছে। মায়্যা বন্দরেও থাকার ব্যবস্থা মেলে আন্দামান পর্যটনের ট্যুরিস্ট লজ ও APWD-র বাংলায়। হকস বিল নেস্ট বা লজের বুকিং: Director of Tourism, Port Blair-744101, ☎ 20933.

তেমনই পোর্ট ব্ল্যারের ১২২ কিমি দক্ষিণে লিটল আন্দামানে বসেছে অতীতের পূর্ব-পাকিস্তান থেকে আগত বাঙালি উদ্বাস্তুদের কলোনি। বাঙালি পর্যটকদের কাছে এর আকর্ষণও কম নয়। নিকোবরের পথে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ফেরি জাহাজও যাচ্ছে লিটল আন্দামানে।

নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ

আন্দামান গ্রুপের দক্ষিণে ১৫০ নটিক্যাল মাইল দূরে ৮ ঘণ্টার জলপথে নিকোবর দ্বীপপুঞ্জের সদর দপ্তর কার নিকোবর। ১০ ডিগ্রি ল্যাটিটিউডের উপর বলে তেন ডিগ্রি চ্যানেল (বঙ্গোপসাগর ও ভারত মহাসাগরের মিলনস্থল)ও বলা হয় একে। আর অশান্ততম এই ১০ ডিগ্রি ল্যাটিটিউড পৃথক করেছে নিকোবরকে আন্দামান গ্রুপ থেকে। ২৮টি দ্বীপ নিয়ে নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ। ১২টিতে তার উপজাতিদের বাস। তবে কার নিকোবরেরই সংখ্যাধিক্য ঘটেছে। মঙ্গোলীয় গোষ্ঠীর নিকোবরী এরা। সংখ্যা ২৯০০০। উপজাতিদের মধ্যে সবচেয়ে সভ্য এই নিকোবরীরা। মিশনারীদের সংস্পর্শে খ্রিস্ট ধর্ম নেয় এরা। দ্বীপভূমির স্বকীয়তার সঙ্গে আধুনিকতা মিলে মিশে সৃষ্টি হয়েছে নিকোবরী কৃষ্টি তথা সংস্কৃতি। সমতলও বটে এই কার নিকোবর। তবে, ৬১মি উঁচু হয়েছে উত্তর-পশ্চিম। ৭ ফুট উঁচু Tochuvi Pati অর্থাৎ হাট ধর্মী বাড়ি আজ লুপ্ত হয়ে তিনের চালের বাড়ি হচ্ছে কার নিকোবরে। বাড়ির সামনে নুজু দেহে বল্লম হাতে তুত তাড়াতে মূর্তি হয়েছে Kareau-এর। শাঙ-শিঙ-উচ্চাস প্রব্রণ-আমোদপ্রিয় এরা—ধর্মে খ্রিস্টান, চেহারা মঙ্গোলীয়ান।

নারকেল-মিষ্টি আলু-কলার সাথে চাষ-বাস, পশুপালন, এদের জীবিকা। আরও অভিনব দলপতি অর্থাৎ Captain নির্বাচিত হয় এদের গণতান্ত্রিক প্রথায় ১৫-র অধিক বয়সীদের ভোটে। তাল, নারকেল, ঝাউ বীথিকায় ছাওয়া কার নিকোবরে বৈচিত্র্যপূর্ণ খেলা নৌকা বাইচ খুবই চমকপ্রদ। কাকানা, লাপাতি ও মালাক্কার সমুদ্র সৈকত, কাচাল দ্বীপে রবার চাষ, ইন্টারভিউ দ্বীপে বনা হাতিদের অভিসার পর্যটকদের মুগ্ধ করে। চ্যাম্পিনে আজও মাতৃতান্ত্রিক সমাজপ্রথার প্রচলন। উচিতও হবে দ্বীপ থেকে দ্বীপের জাহাজি সার্ভিসে ৮ থেকে ১০ দিনে হাট বে, কার নিকোবর, কাচাল, নানকোড়ি, ক্যাম্পবেল বে বেড়িয়ে নেওয়া।

সর্ব দক্ষিণে ভারতের শেষ ভূখণ্ড গ্রেট নিকোবর। উপকূল ধরে নিকোবরীদের বাস। গড়ে উঠেছে পূর্বের বিশাল উপকূল জুড়ে পাঞ্জাব থেকে আসা অবসরপ্রাপ্ত সামরিক কর্মীদের উপনিবেশ। আর নদী-নালা ও পাহাড়ী গ্রেট নিকোবরের গহন জঙ্গলে লোকচক্ষুর অঙ্গুরালে আদিমতম উপজাতি শাম্পিনদের বাস। এসব পেরিয়ে আরও দক্ষিণে অতীতের Pygmalion আজ হয়েছে ক্যাম্পবেল বে বা ইন্দ্রি়া পয়েন্ট। পিগম্যালিয়ান শেষ হতেই জল শুধু জল—অস্তুহীন মহাসাগর গিয়ে মিলেছে তুষার মহাদেশ অ্যান্টার্কটিকায়। যাত্রী জাহাজ যাচ্ছে পোর্ট ব্রোয়ারের ফেনিঙ্গ বে জেটি থেকে হাট বে, কার নিকোবর, চাওরা, টেরেসা, কাচাল, নানকোড়ি, পিলোমিলো, কণ্ডুল হয়ে ক্যাম্পবেল বে। বিশেষ অনুমতিতে মোটর বোটো ঘণ্টা পাঁচকে ওঙ্গদের বাসভূমি ডুগং ক্রীকও বেড়িয়ে নেওয়া যায় লিটল আন্দামানের হাট বে দ্বীপে। তেমনিই দেখে নেওয়া যায় আন্দামানের একমাত্র জলপ্রপাত হাট বে-য়। রাতভর জাহাজ চলে, নোঙ্গর করে নতুন দ্বীপে পরের সকালে। টিকিট ও তথ্যের জন্য Directorate of Shipping Services, A & N Island, Phoenix Bay-কে যোগাযোগ করুন। আর ট্রাইবাল পাসের জন্য Deputy Commissioner of Police, Port Blair, ০ 21082-কে লিখুন।



আন্দামানে থাকার জন্য সরকারি ব্যবস্থা :

দক্ষিণ আন্দামানে : আবাবডিন বাজার থেকে ২০ মিনিটের পথে Haddo, Port Blair-744102এ—Tourist Home, Circuit House, Rest House; Corbyn's Coveএ—Tourist Home, PWD-র Rest House; Neil Islandএ—Rest House.

মধ্য আন্দামানে : (1) Rest House—Betapur; (2) Rest House—Kadamtala; (3) Rest House—Ranaghat.

উত্তর আন্দামানে : (1) Rest House—Aerial Bay; (2) Rest House—Kadamtala; (3) Rest House—Diglipur; (4) Circuit House—Maya Bunder.

নিকোবরে : (1) Circuit House—Car Nicobar; (2) Inspection Bungalow—Car Nicobar; (3) Guest House—Kamotar.

For Further Information Contact :

Department of Tourism, Information & Publicity
Andaman & Nicobar Administration
Secretariat, Port Blair-744101

০ (03192) 20694, 20747, Fax : (03192) 30933

Resident Commissioner

A & N Administration

12 Chanakyapuri, New Delhi-110021

০ (011) 3783642/6878120.

Chief Liaison Officer,

A & N Administration

3-A, Auckland Place, 2nd floor

০ 2475084, Calcutta 700017.

Shipping Corporation of India Ltd

Shipping House, 13 Strand Road

Calcutta-700001 ০ 2482354/2485420

Shipping Corporation of India Ltd

Aberdeen Bazar, Port Blair-744101 ০ 21347

Shipping Corporation of India Ltd

Jawahar Building, Rajaji Salai

Chennai-600001, ০ 514537

M/s A V Bhanojiraw & Gaurua

Pattabhiramaya & Co,

Post Box No 17, Vishakhapatnam, A P

(Agent—Shipping Corp of India).

Deputy Resident Commissioner

of A & N Administration

Andaman Govt Timber Depot

Near War Memorial

St Fort George, Chennai 600009, ০ 582669

Useful Telephone Numbers:

Secretary (Information, Publicity & Tourism) 21345

Deputy Commissioner (Andamans) 21082

Superintendent of Police 21077

Director (I & P) 20933

Deputy Director (Tourism) 20694

Public Relations Officer 20694

Tourist Information Centre & Tourist Home 20380

Warden—Youth Hostel 20459

Indian Airlines (IAC) 21108

Airport Office 20983

Manager—Shipping Corporation of India Ltd,

Aberdeen Bazar, Port Blair 21347

Cellular Jail National Memorial 20759

Cellular Jail-L S Show 21388

OPD—GB Pant Hospital 20102

Marine Office (Inter Island Ferry Service) 20725

Island Service and Harbour Cruise 20528

Bus Stand 20278

Megapode Nest 20207

Marine Hill Tourist Home 20365

Corbyn's Cove Tourist Home 20211

Bay Island Hotel Fax: 21389 ০ 20881

Andaman Beach Resort 21381

Police Station 20100

State Bank of India 20457

Head Post Office 20226

Govt of India Tourist Office, VIP Road 21006

Tourism Office Secretary 20694

সাধারণত কেবল থাকার জন্য সার্কিট হাউসে S ২৫ D ৫০; টুরিস্ট হোম ও গেস্ট হাউসে D ১০৫; ডাকবাংলোয় D ২৫০। তবে, বিদেশীদের আধিক্য লগ্নে। দিনের খাবার প্রতিবেক্রে প্রতিদিন প্রতিজনা ৩২ থেকে ৪৫ টাকা। এদের যুক্তি: Deputy Director, Tourist Information Centre, Tourist Home, Haddo, Port Blair থেকে।

আর রয়েছে ২টি *Municipal GH, Aberdeen Bazar*, নতুন D ৭৫, T ৮০ পুরাতন F ১০০ ডর্মি বেড ১৫; *Municipal GH*, Dilanipur; এদের বুকিং: Secretary, Municipal Council, Aberdeen Bazar-744101, ☎ 20696. Manuar Park-এ *Marine Hill GH*; হাড্ডাতে *টুরিস্ট হোম*। এছাড়া *Gymkhana Ground*-এ ৪০ ঘরের *Youth Hostel*-এ বেড সদস্য ও ছাত্র ১০ সাধারণ ২০ ঘর ৪০; অব: Warden, ☎ 20459. *Hornbill Nest*, DAB ২৫০, FAB ৪০০; *Andaman Teal House*, Dilanipur, DAB ২৫০ A/c ৪০০; *Dolphin Yatri Niwas*, Havelock, DAB ২০০, ৩০০ A/c ৮০০; *Havelock*, D ২৫০; *New GH*, Mohanpura, D ১৫০; *Sainik Vishram Ghar*, Haddo, ডর্মি প্রথায়ে বেড ৩০। *Nook Nest*-এ বেড ২০ হারে। এদের বুকিং-এর জন্য: Director of Tourism, Port Blair-744101, A & N, ☎ 20747, Fax (03192) 30933-কে লেখা যেতে পারে। অবস্থান মাহাযোগ্য অন্যান্য হোম লাগোয়া *Megapode Nest*, Haddo, ☎ 20207/20380, DAB ৩৫০ A/c D ৫০০। ২ বেডের *Nicobari Cottage*, DAB ৬০০ A/c ৮০০, আহারও মেলে ক্যান্টিনে। এদের বুকিং: General Manager, A & N Islands Integrated Development Corporation LTD (ANIIDCO), New Marine Dry Docks, Port Blair-744101, ☎ 20076/20380. বুকিং ছাড়া ঘরের সঙ্কুলানে সমস্যা দেখা দেয় আদ্যমানে।

| আর হয়ে ছে পোর্ট | জাহাজ যাচ্ছে ৪ দিনে |
|---|--------------------------|
| ব্রোয়ার থেকে ৫ কিমি দূরে | পৌছায় ছাড়বে |
| করবাইনস কোডে <i>Peerless Resort, Corbyn's Cove</i> , Port Blair-744101, ☎ (03192) 21463, A/c D ২০০০ | পোর্ট ব্রোয়ার ৭-০০ |
| কটেজ D ২৫০০; অব: কলকাতা ☎ 2487181 | হাট বে ২০-০০ |
| মুখাই ☎ 2651500, দিল্লী ☎ 3329399, করবাইনস-এর পথে *H Sinclairs Bay View, South Point, Port Blair-6, ☎ 20937, L SAB ১০৫০, DAB ১২৫০ A/c S ১২৫০ D ১৫০০ সুইট ৩০০০, কল বুকিং: Hotel Sinclairs, Calcutta ☎ 295261, Delhi ☎ 3313236, Mumbai ☎ 2043607, Siliguri ☎ 22674/ Trimurty Travels, 76-B, N S Rd, Cal-7, ☎ 2388678; Hotel Shampa, Marine Hills, SAB ২৭৫, DAB ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬২৫; মেরিন হিলের শিরে দারুতে তৈরি অভিনব বাড়িতে পোর্ট ব্রোয়ারের অনন্য Welcomgroup-এর H Bay Island, Marine Hill, Port Blair-744101, ☎ 20888, A/c D ৩২০০ ৩৫০০ A/c D ৩৫০০-৪৫০০; *Shompen H, 2 Middle Point-1, ☎ 20360, A1.5, SAB ৪৫০ DAB ৬৫০-৮০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০; হাড্ডার পথে N K International H, Anarkali, Sea Shore Rd, ☎ 21066, DAB ৩০০-৪৫০ A/c D ৬০০; মনোরম পরিবেশে H Abhishek, Gol Ghar, ☎ 21565, S ৩২৫ D ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০, ঘর থেকে সর্বাত্মক দৃশ্যমান। | কার নিকোবর ২০-০০ |
| | ৬-০০ চাওয়া ৬-০০ |
| | ৭-০০ টেরেসা ৮-০০ |
| | ১১-০০ কাচাল ১৫-০০ |
| | ১৬-৩০ নানকোড়ি ৪-৩০ |
| | ৮-৩০ পিলোমিলো ৯-৩০ |
| | ১১-০০ কতুল ১২-৩০ |
| | ১৪-০০ ক্যাম্পবেল বে ৪-৩০ |
| | ফেরেও জাহাজ একই ডাবে। |

আর Aberdeen Bazar-এ—*Dhanalakshmi H*, ☎ 21953, SAB ২২৫ DAB ২৭৫ A/c S ৩৭৫ D ৬০০; *Rum Niwas L*, S ১০০ D ১৫০; *Modern L*; H Bengal KP, D ২০০ A/c D ৩২৫; *H Kavita*, S ১২৫ D ২০০; *Sampat L*, কার্ড-বোর্ড পার্টিশনে জানালাহীন D ১২৫-২০০; *Krishna L*, D ১৫০; *K K Guest House*, ☎ 20964, SCB ৮০ DCB ১৫০; *Phoenix Bay L*, Phoenix Bay, ☎ 21820, D ১২৫-১৭৫; *Central L*, Golghar, ☎ 21632, D ১২৫-২৭৫; *Ananda L*, Haddo, ☎ 21252, S ৮০-১২৫ D ১০০-১৭৫; *Jai Hind H*, VIP Rd, S ৬৫ D ১২৫; *Jagannath GH*, Phoenix Bay, ☎ 21140, SAB ১০০ DAB ১৭৫; *H Shalimar*, Dilanipur, ☎ 21963, SAB ২০০, DAB ২৭৫ A/c D ৪৫০; *Ratan L*, Supply Lane, S ৮৫ D ১২৫; *Manohar L*, Duganabad, S ৮৫ D ১২৫; *Sugar Alok L*, ☎ 21587, S ৮০ D ১৫০; *H Kavitha*, ☎ 21742, S ৮০ D ১৫০; *Tourist Cottage*, Babu Lane, ☎ 21021, DAB ১২৫-২০০। এছাড়াও মহিলা যাত্রীদের জন্য *মহিলা সমিতির গেস্ট হাউস*; *জয়সওয়ালা লজ*—হাড্ডো; ড. দেওয়ান সিং ধরমশালা (behind SBI), আবারডিনে *মুসলিম মুসাফিরখানা* ছাড়াও রয়েছে স্থানীয় বাঙালিদের মিলনতীর্থ—অতুল স্মৃতি সমিতি; আদ্যমান ভ্রমণে নানান সহযোগিতা মেলে এদের কাছে। *গেস্ট হাউস*ও গড়েছে সমিতি।

তবুও পোর্ট ব্রোয়ারে থাকার জন্য সাগর পাড়ে শৈল শিখরে *Megapode Nest*, *Nicobari Cottage* বা *Tourist Home* আঙ্কও রমণীয়। এদের বুকিং: Deputy Director, Information, Publicity and Tourism, A & N Administration, Port Blair-744101, ☎ 20694.

আর আহাৰ্বে গলদা চিংড়ির স্বাদ নিন হোটেল-রেস্তোরাঁয়—নানানধর্মী সামুদ্রিক মাছও সহজলভ্য পোর্ট ব্রোয়ারের হোটেল। আবারডিনে *খনলক্ষ্মী হোটেল*, থাকা ও আহাৰ্বে যথেষ্ট খ্যাত। অদূরে *Kaltuppanman H* টি স্বল্পমূল্যে আহাৰ্বে পরিবেশায় সদাই ব্যস্ত। হাড্ডোর পথে *New India Cafe* টির প্রশস্তি দক্ষিণ ভারতীয় আহাৰ্বে। আর চীনা মেনুর জন্য বসন্তবাড়ি লাগোয়া বার্মিজ দম্পতির *China Room*-এর যথেষ্ট সুনাম পোর্ট ব্রোয়ারে। তেমনই প্রশস্তি আছে দেশী-বিদেশী খাবারে মেরিন হিলে Bay Island হোটেলের *Mandalay*-এর, ☎ 20881 (6-30—22-30 hrs). Shompen-এর কাছে বাস স্ট্যান্ডে *Annapurna Cafe* টিরও যথেষ্ট সুনাম ভেজও নন ভেজ ছিলে। *Aberdeen Bazar-এ Chai Cafe*, *Manila Cafe* ছাড়াও নানান রেস্তোরাঁ—চায়ের সঙ্গে টায়ের ব্যবস্থা ভালই। তবে, দক্ষিণ ভারতীয় প্রভাব পোর্ট ব্রোয়ারের হোটলে। আদ্যমানের ফলেরও যথেষ্ট খ্যাতি। নারকেল, কলা, পেঁপের স্বাদ নিন চলাতে-ফিরতে।

আদ্যমান ভ্রমণের স্মারকরূপে সঙ্গী করুন দ্বীপবাসীদের নানানধর্মী হস্তশিল্প। মুক্তো খচিত আভরণ থেকে নারকেল, মিনুক ও শব্দ খোলের নানান ক্রিনিস সঙ্গী হতে পারে। তবে, সংগ্রহ তালিকার প্রবালকে সন্নিবেশ রাখুন। প্রবাল বথ যেমন আইনের চোখে দণ্ডনীয় তেমনই দ্বীপের বাইরে প্রবাল নেওয়া কঠোরভাবে মানা। ফেনাকাটাং Govt Cottage Industries Emporium টি আলরাণীর হবে।

ওড়িশা

সমুদ্র মন্দির পর্বত অরণ্য—স্রমগাথীদের কাছে কার আকর্ষণ কত বেশি সে বিতর্কিত প্রশ্নে না গিয়ে বলা যায় পুরীতে সমুদ্র দেখেননি এমন স্রমগাথী খুঁজে পাওয়া ভার। ওড়িশার পুরী পূর্ব উপকূলভাগে আছড়ে পড়ছে বঙ্গোপ-সাগর। দীঘার অদূরে তালশেরীতে শুরু হয়ে গোপালপুর-অন-সী বিস্তীর্ণ ভূ-ভাগ জুড়ে সাগরবেলা, দৈর্ঘ্যে ৪৮২ কিমি। আর পশ্চিমে পূর্বঘাট পর্বতমালা প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। ওড়িশার আর এক সম্পদ তার অমূল্য রত্নভাণ্ডার। কোরা-পুটকে ঘিরে হাজার তিনেক বর্গ কিমি জুড়ে ছড়িয়ে রয়েছে প্রকৃতিদত্ত এই অফুরন্ত ভাণ্ডার। লৌহ আকরিক ওড়িশার অমূল্য সম্পদ। শিল্প সংস্থাও গড়ে উঠছে নিত্য নতুন নানান। তেমনই বন্যজন্তু ও অরণ্য সম্পদেও যথেষ্ট বলীমান ওড়িশা। কৃষিতে সমৃদ্ধ ওড়িশায় তাল-কাজুও হচ্ছে। ল্যান্ড ফর অল রিজনস বলে থাকে লোকে ওড়িশাকে। তবুও যেন দারিদ্র্য কশাঘাত করে ওড়িশার অর্থনীতিকে। কৃষিভিত্তিক ওড়িশায় বন্যা, খরা, টর্নেডো লেগেই আছে প্রতি বছর। মাথা পিছু বাৎসরিক আয় দারিদ্র্য সীমার অনেক নিচে।

ওড়িশার আর এক আকর্ষণ তার উপজাতি। রাজ্যের লোকসংখ্যার ২৩% উপজাতি। নানান সম্প্রদায়ের এরা—সংখ্যায় ৬২। বাস এদের মধ্য ওড়িশার পাহাড়ী অধিতাকায়। এমনকি কোরাপুটের বোন্দা পাহাড়ে ৫০০০ বোন্দা অর্থাৎ নগ্ন উপজাতিও দেখতে মেলে। ঝলমলে জাতীয় পোশাকে আজও এদের সামাজিক অনুষ্ঠান অনবদ্য। উৎসাহীরা ফুলবনী গিয়ে দেখে নিতে পারেন এদের ঘর-সংসার তথা সমাজজীবন। তবে বিদেশীদের Home Department—Orissa, Bhubaneswar থেকে অনুমতি লাগে ফুলবনী যেতে।

পাহাড়-পর্বত-অরণ্যে আকীর্ণ গঞ্জাম জেলা আজও পর্যটকদের বিমোহিত করে। সাহিত্য ও সংস্কৃতিতেও ওড়িশার অবদান উল্লেখ্য। ওড়িশি নৃত্যের সূমহান ঐতিহ্যও যুগ যুগ ধরে নৃত্য-রসিকদের মনোরঞ্জন করে চলেছে। তেমনই আর এক বর্ণনীয় লোকনৃত্য ছৌ ওড়িশি স্বাতন্ত্র্যে ভরা। উৎসব-অনুষ্ঠানেও ওড়িশা পর্যটকপ্রিয়। সারা ভারতের সাথে হোলি, দশেরা ও দীপাবলীও অনুষ্ঠিত হয়ে চলেছে ওড়িশায়। তবে, বর্ষার আগমনে (মধ্য জুন) রাজা সঙ্ক্ৰান্তি বা রাজা পর্ব, নভেম্বরে ভাল ফসলের আশায় গর্ভাঙ্গা সৎকান্তি উৎসব, দশেরার ৫দিন পরে কুমারোৎসব অর্থাৎ ফেস্টিভ্যাল অব ইয়ুথ—এরও পর্যটকআবেদন যথেষ্ট। তবুও যেন জুন-জুলাই-এ ওড়িশার (পুরী) ঝলমলে রথযাত্রা অর্থাৎ কার ফেস্টিভ্যালের আকর্ষণ দেশ-দেশান্তর জুড়ে। বৃদ্ধের জ্যোৎসব বা দজ্যোৎসবের সাদৃশ্য মেলে এই রথে।

ওড়িশার মন্দির স্থাপত্যও আপন স্বকীয়তায় উজ্জ্বল। সুন্দর অলঙ্করণে সমৃদ্ধ পাথর কুঁদে মন্দির হয়েছে সারা ওড়িশায়। তবুও যেন গোল্ডেন ট্রায়ো—ভুবনেশ্বরের লিঙ্গরাজ, পুরীর জগন্নাথ ও কোণারকের সূর্য মন্দির ভারত দর্শনে মুখ্য আকর্ষণ। ওড়িশার হস্তশিল্পের প্রশস্তিও আজ সারা বিশ্ব জুড়ে। স্যান্ড স্টোন ও সোপ স্টোনের নানান শিল্প, কটকের কটকী শাড়ি, সম্বলপুরী তাঁতশিল্প, ব্যাগ-ছাতা ছাড়াও পিপলির নানানধর্মী অ্যাপ্লিক শিল্প, খুর্দা রোডের গামছা, কারকাখময় সোনা-রূপোর নানান আভরণ, পুরীর বিনুক ও শঙ্খ শিল্প স্মারকরূপে সঙ্গী করা যেতে পারে ওড়িশা ভ্রমণে। কেনাকাটায় ওড়িশা গভর্নমেন্ট এম্পোরিয়াম—উৎকলিকা বা ওড়িশা স্টেট হ্যান্ডলুম উইভার্স কোঅপারেটিভ আদরণীয় হবে। উচিতও হবে ভুবনেশ্বর, পুরী, কটক, সম্বলপুর, রাউরকেলায় কেনাকাটা সাঙ্গ করা।

ওড়িশার উত্থান-পতনের গাথা খুবই রোমাঞ্চকর। আর্য-অনার্য যুগের ওড়িশার সঠিক ইতিহাস জানা না গেলেও চন্দ্রগুপ্ত মৌর্যের জয় করবার লিঙ্গা ছিল সেদিনের উৎকল-ভূমিকে। ২৬১ খ্রি-তে সম্রাট অশোকও কলিঙ্গরাজের যুদ্ধের কথাও ভুলবার নয়। কলিঙ্গের পরাজয় আর যুদ্ধে জিতেও ক্ষয়-ক্ষতির ভয়াবহতায় জীবনধারণার পরিবর্তন আসে অশোকের। অসি ছেড়ে সবাই আমার সন্তান বাণী শোনালেন সম্রাট। দীক্ষা নিলেন বৌদ্ধধর্মে। প্রচারও পায় বৌদ্ধধর্ম ওড়িশায়। তার প্রভাব ওড়িশার মন্দিররাজিতে দেখতে মেলে। ওড়িশার কঠহারের ত্রিরত্ন—ললিতগিরি-উদয়-গিরি-রত্নগিরি। ভুবনেশ্বরের ৮ কিমি দক্ষিণে ধৌলীতে আজও অশোকের রাজাজ্ঞা পাথরের গায়ে খোদিত হয়ে আছে। দ্বিতীয় শিলালিপির অবস্থান জোঁ গড়ে। তেমনই ওড়িশার ২০ জায়গায় বৌদ্ধ স্থাপত্যের সন্ধান মিলেছে। এমনকি ওড়িশারই কুমার পদ্মসম্ভবা তিব্বতে গিয়ে বৌদ্ধধর্ম প্রচার করেন। তবে, বৌদ্ধধর্ম লোপ পায় অতি দ্রুত—প্রভাবিত হয় জৈনধর্মে ওড়িশা। আর ২ শতকে নবরূপে বৌদ্ধধর্ম বিস্তার লাভ করে—চলেও দীর্ঘকাল। ৭ শতকে হিন্দুধর্ম এসে বৌদ্ধধর্মকে উচ্ছেদ করে ওড়িশা থেকে। কার্যত ওড়িশার সুবর্ণ যুগের কেশরী ও গঙ্গারাজসের গড়া মন্দির-রাজি আজও অতীত গৌরব-গাথা রোমন্থন করায়।

সেকালে বঙ্গোপসাগরে ওড়িশারাজসের প্রতিপত্তি ছিল অব্যাহ। দেশ-দেশান্তরে বাণিজ্যতরী যেত ওড়িশা থেকে। তারই নিদর্শন হয়ে নৌকা মূর্ত হয়েছে পুরীর জগন্নাথ মন্দির, ভুবনেশ্বরের ব্রহ্মেশ্বর মন্দির ভাস্কর্যে। বোরোবুদুরের মন্দিরেও রেলিকা হয়ে নৌকা মূর্ত। এমনকি আজও কটকের বারবাটি দুর্গের কাছে মহানদীতে কার্তিক পূর্ণিমার সাঁঝে

মাটির প্রদীপ জ্বালিয়ে নৌকা ভাসানো হয় বালি যাত্রার স্মারক রূপে। সপ্তাহব্যাপী মেলাও বসে *বালী যাত্রা* উৎসবে।

তারও আগে পৌরাণিক যুগে দানবরাজ বলির ৩য় পুত্র কলিঙ্গই প্রথম এই রাজ্য গড়েন। এমনকি মহাভারতে মেলে, দুর্যোধন কলিঙ্গরাজ অঙ্গদের কন্যার পাণিগ্রহণ করেন। পট বাল হলেছে বারবার উৎকলভূমি। চৈদী রাজারাও রাজত্ব করে গেছেন ওড়িশায়। তাঁদের আমলে প্রসার পেয়েছে জৈনধর্ম। এসেছেন মগধের সমুদ্রগুপ্ত, বাংলার রাজা শশাঙ্ক; এসেছেন কনৌজের হর্ষবর্ধন—জয় করেছেন এরাও ওড়িশাকে। কলিঙ্গ রাজকুমার বিজয় প্রথম রাজ্য গড়েন সিংহলে। এমনকি জাভা, সুমাত্রা, বোর্নিও, বালিতেও ভারতীয় সংস্কৃতিকে পৌঁছে দেয় এই কলিঙ্গ রাজবংশ। চীনা পরিব্রাজক হিউ-এন সাঙ ভারতে আসেন হর্ষের কালে। তাঁর ভ্রমণবৃত্তান্তে মেলে, সে যুগে বৌদ্ধরা ছয় খোড়াম টানা রথে বুদ্ধ, ধর্ম আর সজ্জের প্রতিকৃতি নিয়ে বিহারে বেরুত। আজকের পুরীর রথের জগন্নাথ, সুভদ্রা আর বলরামের কথা ভাবিয়ে তোলে। প্রবাদ, রথের রশি টানায় বা চলন্ত রথে দেবদর্শনে স্বর্গলোকের পারমিট মেলে।

১৫৬৮তে শেষ হিন্দু রাজা মুকুন্দদেব পরাজিত হন ইসলামে ধর্মান্তরিত গোড়া ব্রাহ্মণ সন্তান কালাচাঁদ রায় তথা কালাপাহাড়ের কাছে। বিভীষিকা নেমে আসে ওড়িশায়। কোণারকের সূর্যমন্দিরে এই কালাপাহাড়ের অপকীর্তির নিদর্শন মেলে। আফগানদের শাসনে থাকে ১৫৯২ পর্যন্ত ওড়িশা। তারপর আসে মোগল। ধ্বংসও পায় মন্দিরের পর মন্দির কেশরী ও গঙ্গারাজদের কালে মোগলদের হাতে। মোগলদের পর ওড়িশা যায় মারাঠাদের দখলে। আর ব্রিটিশ আসে ১৮০৩এর ১লা এপ্রিল উৎকলে। ১৯১২য় বাংলা থেকে বিহারে আর ১৯৩৬এ বিহার থেকে পৃথক হয়ে জন্ম নেয় ওড়িশা প্রদেশ। স্মারকরূপে প্রতি বছর ১লা এপ্রিল জন্মদিনের উৎসব-সাজে সেজে ওঠে সারা রাজ্য—আতসবাজি পোড়ে আকাশ ছেয়ে। অর্থাৎ ওড়িশা দিবস পালিত হচ্ছে সারা রাজ্য জুড়ে। আর ১৯৪৭এ স্বাধীনতার পর ২৬টি স্বাধীন অঙ্গরাজ্যও যোগ দেয় ভারত রাষ্ট্রে ওড়িশার সঙ্গে। রূপ পায় নতুন আঙ্গিকে আজকের ওড়িশা ভুবনেশ্বরকে রাজধানী করে ১৯৪৯-এর ১৯শে আগস্ট। ওড়িশার পূবে বঙ্গোপসাগর, উত্তরে পশ্চিমবঙ্গ আর বিহার, পশ্চিমে মধ্য প্রদেশ, দক্ষিণে অন্ধ্র প্রদেশ।

ভুবনেশ্বর

লিসকোট সমাধিক্ষেত্র বারাণসী সমগ্রভূম

ওড়িশার নতুন রাজধানী শহর ভুবনেশ্বর। অতীতে নাম ছিল এর *একাক্ষেত্র*। বারাণসীতে শিবের বাস—আর হেলথ রিসর্ট ভুবনেশ্বর। মাহায্যোও বারাণসীর পরেই এর স্থান। দিল্লীর মতো ভুবনেশ্বরকেও দুটো ভাগে গড়ে তোলা হয়েছে। একদিকে খ্রি পূ ৩ থেকে ১৬ খ্রিস্টাব্দের মধ্যে গড়া

ওড়িশার বিশ্বখ্যাত মন্দিররাজি—অপর দিকে অফিস-কাছারি বসতবাড়ি নিয়ে গড়ে ওঠা নতুন রাজধানী শহর। রেল লাইন বিচ্ছেদ টেনেছে নতুন আর পুরাতনে।

এই ভুবনেশ্বরই ছিল অতীতে কলিঙ্গ রাজ্যের রাজধানী। সম্রাট অশোকের ঐতিহাসিক কলিঙ্গ যুদ্ধও ঘটে আজকের ভুবনেশ্বরে। রক্তে রাঙা *দয়ার* জলে বিচলিত সম্রাট শপথ নেন—জয় আর অসি দিয়ে নয়, প্রেম আর ভালবাসাই হবে জয়ের মন্ত্র। তেমনই খননে সন্ধান মিলেছে ২০০০ বছরের অতীত শিশুপাল গড়-এর। আবার ভুবনেশ্বর থেকে ১ দিনের প্যাকেজে জয় করে আসা যায় বিশ্ববিখ্যাত কোণারকের সূর্যমন্দির ও সৈকতনগরী তথা শ্রীক্ষেত্র পুরী।

ওড়িশা □ রাজধানী: ভুবনেশ্বর। আয়তন:

১৫৫৭০৭ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৩১৫১২০৭০।

ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৩.৭৩%। পুরুষ:

১৫৯৭৯০৪। নারী: ১৫৫৩২১৬৬। ১৯৮১-

৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৫১৪১৭৯৯। বৃদ্ধির হার:

১৯.৫০%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২০২। প্রতি

১০০০ পুরুষে নারী: ৯৭২। সাক্ষরের হার:

৪৮.৬৫%। প্রধান ভাষা: ওড়িয়া। সঙ্গে চলে বাংলা,

ইংরেজি, হিন্দি। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৩০৬৬

টাকা (১৯৮৯-৯০)। শীত-গ্রীষ্ম-বৃষ্টি কারোরই

আধিক্য নেই। বৃষ্টির গড় ১৫০। তবে, সামুদ্রিক ঝড়

অভিশাপ হয়ে দেখা দেয় প্রতি বছর ওড়িশায় এক

বা একাধিক বার। বেড়াবার মরসুম বছরভর। তবে

সেপ্টেম্বর থেকে মার্চ ওড়িশা বেড়াবার মনোরম

সময়।

১৫ দিনে ওড়িশা অর্থাৎ গোপালপুর-অন-সী ২

তপ্তপানি ১ চিক্কা বেড়িয়ে পুরী ৩ (কোণারক ও

ভুবনেশ্বর বেড়িয়ে নিন পুরী থেকে একই দিনে)

কটক ১ যাজপুর ১ চাঁদিপুর ১ সিমলিপাল ২

কেওনঝাড় ১ পথ চলাতে ৩ দিন। তবে সিমলিপাল-

কেওনঝাড় পৃথক টারেও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আর

অন্ধ্র প্রদেশের ওয়ালটেয়ারের পথে কোরাপুট

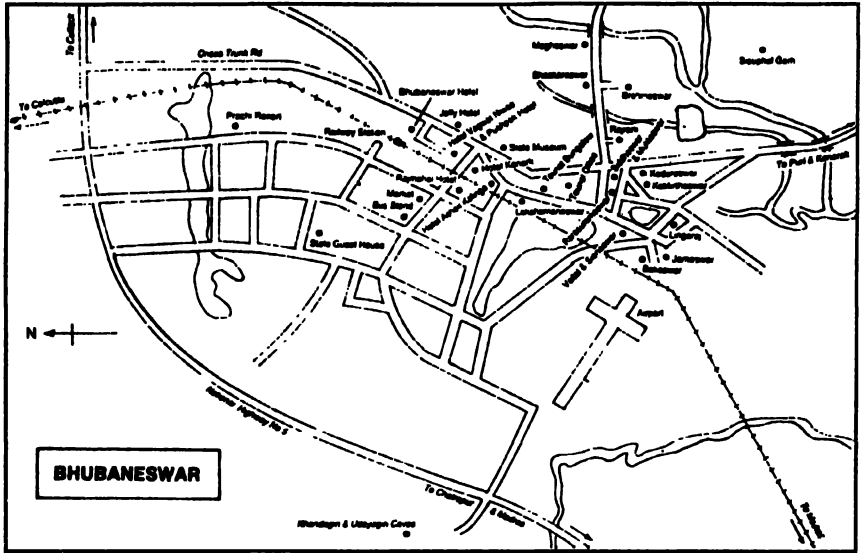
বেড়িয়ে নেওয়াই উচিত হবে উৎসাহীদের। তেমনই

রাউরকেলা ও সম্বলপুর বেড়িয়ে আসুন যে-কোনও

উইক এন্ডে। আর রথ দেখুন সৈকতনগরী শ্রীক্ষেত্র

পুরীথামে জুলাই-আগস্ট মাসে।

অনেক উত্থান-পতনের মাঝ দিয়ে যবতি কেশরী রাজা হলেন ওড়িশার। তিনি অযোধ্যা থেকে ১০০০০ ব্রাহ্মণ নিয়ে আসেন নিজ রাজ্যে। গড়ে তোলেন মন্দিরের পর মন্দির



বেলেপাথরে, কালে কালে মন্দিরের সংখ্যা ৭০০০ ছাড়িয়ে যায়। তবে, আজ আর সব মন্দিরের অস্তিত্ব নেই। শ'খানেক আজও মাথা তুলে দাঁড়িয়ে—আজকের পর্যটকদের অতীত আখ্যান শোনায়। Fergusson বলেছেন—The truest fusion of dream and reality.....perhaps the finest example of a purely Hindu temple in India লিসরাজকে।

ভুবনেশ্বর রেল স্টেশন থেকে ৩.৬ কিমি দূরে ভুবনেশ্বরের অন্যতম মন্দির—বিশ্ববিখ্যাত লিঙ্গরাজ। দেবতা এখানে স্বয়ম্ভু—আধা শিব, আধা বিষ্ণু অর্থাৎ স্বর্গ-মর্ত-পাতালের অধীশ্বর ত্রিভুবনেশ্বর। ভুবনেশ্বর নামকরণও এই ত্রিভুবনেশ্বর থেকে। গর্ভগৃহে বিশাল শক্তিপীঠের ওপর গ্রানাইট পাথরের ছত্রাকার লিঙ্গ মূর্তি। পুরীর মতো এখানেও রথযাত্রা, দোলযাত্রা, চন্দনযাত্রা উৎসব হয়। বৈশাখ মাসে অক্ষয় তৃতীয়া থেকে পরবর্তী শুক্লাষ্টমী পর্যন্ত চন্দনে চর্চিত হয়ে বিন্দু সরোবরে নৌকাবিলাস অর্থাৎ চন্দনযাত্রায় যান দেবতা। শিবরাত্রি আর এক বরণীয় উৎসব।

রাজা যযাতি কেশরীর মৃত্যুর পর তাঁর আয়োজিত ও পরিকল্পিত লিঙ্গরাজ মন্দির গড়ে তোলেন ললাট কেশরী। সূক্ষ্ম কারুকার্যময় বেলেপাথরে তৈরি মন্দিরে লোহা ব্যবহৃত হলেও কাঠের কোনো ব্যবহার নেই। লিঙ্গরাজের চারপাশ ১২৭ ফুট উঁচু, ৭২ ফুট চওড়া প্রাচীরে ঘেরা। মন্দিরের প্রাঙ্গণ ৫২০×৪৬৫ ফুটের। ১০৮টি মন্দিরের উপনিবেশ এই লিঙ্গরাজ। পুরীর মন্দিরের থেকে আকারে ছোট এটি। প্রকোষাধিকার কেবল হিন্দুদের। তবে লর্ড কার্জনের জন্য তৈরি উত্তরের দেওয়ালে পাথরের পাটাতন থেকে অহিন্দু

দেখে নিতে পারেন মন্দির। প্রবেশপথও তিন—পূবে মূল প্রবেশপথ সিংহদ্বার, জোড়া সিংহ গেট পাহারায় রত।

ওড়িশার মন্দির সাধারণত একই আঙ্গিকে—বিমান, জগমোহন, নাটমন্দির ও ভোগমণ্ডপ এই চার স্তরে গড়ে উঠেছে। ভোগমণ্ডপ অর্থাৎ দেবতাকে অর্ঘ্য দেওয়ার ঘর, নাটমন্দিরে নৃত্য, জগমোহন হচ্ছে মূল মন্দিরে প্রবেশের গাড়িবারান্দা, আর সবশেষে বিমান অর্থাৎ গর্ভমন্দিরে দেবতার অবস্থান। বিমানের মাথায় চূড়ো। সিংহ বিক্রম দেখাচ্ছে হাতিকে পিষ্ট করে অর্থাৎ হিন্দুধর্মের পুনরুত্থান বৌদ্ধধর্মকে খর্ব করে।

হিন্দু মন্দির নির্মাণের সূক্ষ্ম বিচারে না গিয়ে বলা যায় বিমান, জগমোহন, নাটমন্দির ও ভোগমণ্ডপ নিয়ে লম্বায় ৩০০ ফুট, চওড়ায় ৬০ থেকে ৭৫ ফুট এই লিঙ্গরাজ। মন্দিরে প্রথম ছিল বিমান আর জগমোহন। ১০৯০-১১০৪এ কোণারকের সূর্যমন্দির নির্মাতা নরসিংহ দেব বর্তমান রূপ দেন। প্রথা অনুযায়ী বিমানের উচ্চতা ১৬১ ফুট হলেও এ-মন্দিরের বিমানটি ১৬২ ফুট উঁচু। জগমোহনের ঝিল ছাদটি কয়েকটি স্তরের উপর দাঁড়িয়ে। পুরীর থেকেও সুন্দর এই জগমোহন। মন্দিরের বাইরে দেওয়ালের খোপে খোপে রয়েছে অষ্ট দিকপাল। উত্তরে কুবের, পূবে ইন্দ্র, দক্ষিণ-পূবে অগ্নি, দক্ষিণে যম, দক্ষিণ-পশ্চিমে নিখাতি আর পশ্চিমে রয়েছে দেবতা বরুণ। এছাড়া দেওয়ালে ফুল-লতা-পাতা ও হিন্দু পুরাণের নানান দেব-দেবীর সাথে মিশ্রিত মূর্তিও স্থান পেয়েছে মন্দির গায়ে। তবে কোণারক বা পুরীর থেকে সংখ্যায় কম।

লিঙ্গরাজকে বিরোধি গড়ে উঠেছে অন্যান্য মন্দির ভুবনেশ্বরে। পাশেই রয়েছেন নিশাগণেশ—বিশালাকার গণেশ, কার্তিক ও পার্বতীর মূর্তি। নিশাপার্বতীর কারুকার্য, বিশেষ করে পাথর কূঁদে বসান খুবই সুন্দর। মুক্তেশ্বর ও পার্বতী মন্দিরের কারুকার্যও দর্শকদের মুগ্ধ করে।

লিঙ্গরাজ থেকে ৭/৮শ' ফুট উত্তরে বিন্দুসরোবর। পুরাণ বলে, অতীতে জায়গার নাম ছিল একাক্ষকানন। পার্বতীর খুব প্রিয় ছিল। একদিন বিহারে বেরিয়ে পথে কৃতি ও বাস নামে দুই দৈত্যের সামনে পড়েন পার্বতী। বিয়ে করতে চায় ওরা পার্বতীকে। পার্বতীও রাজি। তবে শর্ত এক। সেই মতো দুই দৈত্য কাঁধে তুললেন পার্বতীকে। দেবীর ভারে পিষে গেল ওরা। পার্বতী ক্লান্ত, পিপাসার্ত। হাজির হলেন শিব। পার্বতীর পিপাসা মেটাতে তৈরি হলো সরোবর। শিবের আস্থানে সমস্ত নদ-নদী-সরোবর বিন্দু বিন্দু করে জল দিল। নামও তাই বিন্দুসরোবর। ১৪০০×১৫০০ ফুটের বিন্দু সরোবরের গভীরতা ১৫ ফুট। খুবই পবিত্র এই জল, স্নানে সর্ব পাপ নাশ হয়। লিঙ্গরাজ থেকেও দেবতা আসেন জম্মোৎসবে বিন্দু-সরোবরে স্নান করতে।

বিন্দু-সরোবরের পূর্ব পাশে অনন্ত বাসুদেব মন্দির। বহু প্রাচীন ও এই মন্দির দেবতা বিষ্ণুর। কারুকার্যও সুন্দর। এর এক শিলালিপিতে ভবদেব ভট্টর নাম মেলে। সম্ভবত তিনিই মন্দিরের প্রতিষ্ঠাতা। আর সরোবরটিও নাকি তাঁরই খনন করা। তবে, তাত্ত্বিকরা বলেন, ভবদেব ভট্টর হাতে সংস্কার হয় ৬০ ফুট উঁচু মন্দির ও বিন্দু-সরোবরের। আর মন্দির গড়েন ১২৭৮এ অনঙ্গ ভীম দেবের কন্যা চন্দ্রাদেবী।

সিদ্ধারণ্য বা সিদ্ধ অরণ্য। ভুবনেশ্বর-পুরী সড়কে অশ্রকাননে ঘেরা সুখাদু জলের প্রস্রবণ ছিল অতীতে। আজ আর আমের কানন নেই। তবে ৪৬×২০ হাতের কেদার-গৌরী বা গৌরীকৃণ্ড প্রস্রবণটি রয়েছে। কেদার-গৌরীর পাড়ে হাত বিশেক উঁচু ৯ শতকের মন্দির মুক্তেশ্বরে দেবতা শিব। স্বপ্ন রূপ পেয়েছে এর বেলেপাথরে। ভাস্কর্যে বৌদ্ধ-জৈন-হিন্দু স্থাপত্যের সমন্বয় ঘটেছে। ঢুকবার মুখে বৌদ্ধ আঙ্গিকে পদ্মাকার চন্দ্রাতপ। প্রতিটি পাণ্ডুর রূপ পেয়েছে এক এক দেবমূর্তিতে। দুটি থামের উপর এক অর্ধবৃত্ত। আবৃত্ত এর গঠন, পঞ্চতন্ত্রের আখ্যান মূর্ত হয়েছে। ব্যাস-রিলিফে হাতি ও ঘোড়ার মিছিলও অভিনব। বৈচিত্র্যে ভরা সপ্তমাতৃকা, নবগ্রহের মূর্তিও রয়েছে মুক্তেশ্বরে। গণেশের বাহন ইন্দুর, কার্তিকের বাহন ময়ূর আর কোলে শিশু; অভিনবত্ব আছে মূর্তিতে। মন্দিরের পাশে মরীচী পুষ্করিণী। স্নানে বন্ধ্যাত্ম নাশ হয়।

মুক্তেশ্বরের বিপরীতে পরশুরামেশ্বর মন্দিরে দেবতা শিব-তনয় কার্তিক। ৪০ ফুট উঁচু মন্দিরটি নাকি সবচেয়ে প্রাচীন—৬৫০এ তৈরি। রামায়ণ, মহাভারত ও নানান পৌরাণিক আখ্যান চিত্রিত হয়েছে এর দেওয়ালে। ব্যাস-রিলিফে হাতি ও ঘোড়ার শোভাযাত্রা অনবদ্য। জানালা

জাফরির কাজও সুন্দর। পরশুরামেশ্বরের সন্নিকটে স্বর্ণজালেশ্বর মন্দির। অদূরে কোটিতীর্থ পুষ্করিণী। তবে, জনশ্রুতি—৪৫ ফুট উঁচু কেদার-গৌরী মন্দিরটি আরও প্রাচীন, তৈরিও নাকি ৬ শতকে। কেদার-গৌরীতে রয়েছেন শিবজয়া গৌরী অর্থাৎ সিংহের পিঠে দাঁড়িয়ে দেবী দুর্গা। এমন সুন্দর শ্রীমণ্ডিত দেবীমূর্তি খুব কম দেখা যায়। আর রয়েছে ৮ ফুট উঁচু পবনপুত্র হনুমান, গৌরী মন্দির ও গৌরীকৃণ্ড। কেদারেশ্বরে ঢুকতেই বামহাতি দুধগঙ্গার জল পান করতে ভুলবেন না। জলে নানান ব্যাধির উপশম মেলে। আর আছে একই চত্বরে মুক্তেশ্বর লাগোয়া সিদ্ধেশ্বর মন্দির। সিদ্ধেশ্বরে দেবতা গণেশের দাঁড়ানো মূর্তিটিও সুন্দর।

সিদ্ধারণোর অদূরে সুন্দর বাগিচার মাঝে ১১ শতকে তৈরি ৫৮ ফুট উঁচু রাজা-রানী মন্দিরের কারুকার্যও সুন্দর। মূর্তি হয়েছে লতা-পাতার মাঝে গাছে ঠেস দিয়ে দাঁড়িয়ে অলঙ্কারভূষিতা সুন্দরী ও নানান ভঙ্গিমায নরনারীর; তেমনই রয়েছে দেব-দেবীর মূর্তি। কুলুসিতে হাতি, সিংহ; থামগুলিও কারুকার্যময়। পিরামিডধর্মী মন্দির, পিছে শিখর। অষ্ট দিকপালরা মন্দির পাহারায় রত। জনশ্রুতি, বাদামি রঙা রাজা আর হলুদ রঙা রানিয়া পাথরে মন্দির তৈরি, আর রাজা-রানিয়া থেকে নাম রাজা-রানী। দ্বিমতে, রানীর ইচ্ছায় রাজা উদ্যতকেশরী এই মন্দির গড়েন তাঁর মায়ের জন্য। নামটি নাকি তাই রাজা-রানী। তবে, দেবতাহীন মন্দির আজ সবার তরে খোলা।

মন্দিরের শেষ নেই ভুবনেশ্বরে। সব দেখাও সম্ভব নয় পর্যটকদের। তাই এবার চলা যাক রাজা-রানী থেকে ১ কিমি পূর্বের ব্রহ্মেশ্বর দেখে মন্দির থেকে রাজধানীর পথে। সারা মন্দিরময় ভাস্কর্য—নৃত্যরতা সুন্দরী, অভিনবত্বে ভরা চতুল এমনকি শৃঙ্গার মূর্তিও রূপ পেয়েছে ব্রহ্মেশ্বরে। জগ-মোহনের চন্দ্রাতপটি ফোটা পথের আকার। লিঙ্গরাজেরই প্রতিচ্ছবি, দ্বারও খোলা সবার তরে ৯ শতকে তৈরি ব্রহ্মেশ্বরে। বিপরীতে ৫মি উঁচু ভাস্করেশ্বর শিব, সামান্য পূর্বে মেঘেশ্বর।

উৎসাহীরা শহর থেকে ৫ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে ব্রহ্মেশ্বর থেকে মাঠ পেরিয়ে সম্প্রতি খননে মেলা অশোকের কালের (খ্রি পূ ২-৪) শিশুপাল গড়টিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। প্রাকারে বেষ্টিত প্রাচীন নগরের সন্ধান মিলেছে। কুবাণ যুগের মুদ্রাও মিলেছে খননে। খরবেলার রাজ্যপাট ছিল এই শিশুপাল-এ। নাম ছিল সেকালে এর তোঙ্গালি। তেমনই শহর থেকে ৬ কিমি দূরে হীরাপুরে ৯ শতকের বৃত্তাকার মাতৃকা বা যোগিনী মন্দিরটিও উচিৎ হবে বেড়িয়ে নেওয়া।

পাছনিবাসের অদূরে হোটেল অশোক কলিঙ্গের বিপরীতে কল্লান ঝোয়ারে ওড়িশার স্থাপত্য, ভাস্কর্য ও পুরাতত্ত্বের সংগ্রহ নিয়ে গড়ে উঠেছে মিউজিয়াম। নানান উপজাতীয় সত্তারও প্রদর্শিত হয়েছে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৩-০০ আবার ১৪—১৭-০০টা খোলা।

দশলী ২। তেমনই হয়েছে হ্যাটিক্রাফটস মিউজিয়াম, সায়েন্স মিউজিয়াম ভুবনেশ্বরের সেক্রেটারিয়েট রোডে। প্ল্যানে-টারিয়ামও বসেছে জাতীয় সড়ক-৫এ ভুবনেশ্বরে। সোম ছাড়া প্রতিদিন ১৫-০০ ও ১৬-৩০টায় প্রদর্শন। আর উচিত হবে রবিবার ছাড়া ১০—১৭-০০টায় CRP Sq-এর ট্রাইবাল রিসার্চ সেন্টারে ওড়িশার উপজাতীয় সংস্কৃতি দেখে নেওয়া। তেমনই উচিত হবে ভুবনেশ্বরের নতুন সংযোজন—রবীন্দ্রমণ্ডপ, বিড়লা গ্রুপের তৈরি রাম মন্দির, নয়া-পন্নীতে ইসকনের মন্দির, সেক্রেটারিয়েটের বিপরীতে ইন্দিরা গান্ধী পার্কটিও দেখে নেওয়া। এই পার্কেই ১৯৮৪-র ৩০শে অক্টোবর জীবনের শেষ বাণ্য দেন শ্রীমতী ইন্দিরা। মৃত্যু হয়েছে শ্রীমতী গান্ধীর।

মন্দিরের শহর ভুবনেশ্বর। তাই মন্দিরগুলির আকর্ষণ পর্যটকদের কাছে এত বেশি যে নতুন গড়ে তোলা রাজধানী শহরও হারিয়ে যায় মন্দিরের ভিড়ে। লিঙ্গরাজ মন্দির দেখে উদয়গিরি যাবার পথে গাড়িতে বসেই সাঙ্গ করা যায় শহর দর্শন। তবে, শহর থেকে ২০ কিমি উত্তরে নীল আকাশের নিচে ৪২৬ হেক্টর জুড়ে গড়া নন্দনকানন অর্থাৎ দেবতাদের নন্দনবনে বটানিকাল গার্ডেন ও চিড়িয়াখানাটি দেখে নেওয়া উচিত হবে। সোম ছাড়া ৮—১৭-০০টায় খোলা। জন্ম এর ১৯৬০এ হলেও পর্যটকপ্রিয় নন্দনকাননের সংগ্রহ উল্লেখ্য। বিশেষ করে দ্বি-শতাধিক বাঘ, সাদা বাঘ, সাদা কুমির, গরীলা, গিরগিটি জাতীয় ইগোয়ানা, ফ্লুইরেল অনন্য করে তুলেছে একে। ২০ হেক্টর জুড়ে ২৭ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৫ সিংহের লায়ন সফারি পার্কও হয়েছে ১৯৮৪তে। সোমবার ছাড়া ৯—১১-০০ ও ১৫—১৮-০০টায় বাটারি চালিত ১৯ সিটের সুরক্ষিত সফারি বাসে ৫ টাকার টিকিটে ৩ কিমি পথে দেখেও নেওয়া যায় শাল-সেতুনের নিস্তর্র অরণ্যে সিংহদের রাজ্যনামচা। সঙ্গে ছটায় সিংহদের আহারপর্ব সেও আর এক দ্রষ্টব্য। তবুও সোমবার উপবাসে রেখে মঙ্গলবার ১১টায় বাঘ-সিংহদের লাঞ্চ পরিষেবা এক বিরল দৃশ্য। রোপণওয়েও বসেছে সফারি পার্কে। তেমনই হয়েছে বিশেষ প্রথম সাদা বাঘের সফারি ১৯৯১-এর ১লা এপ্রিল নন্দনকাননে। ১২ হেক্টর ব্যাপ্ত সফারিতে ২৫টি সাদা বাঘ চরে বেড়ায় স্বাধীনভাবে—যাত্রী চলেন ঘেরা গাড়িতে সফারি দর্শনে।

শীতে দেশ-দেশান্তর থেকে পরিযায়ী পাখিরা এসে রমণীয় করে তোলে। হাতি যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে, টয় ট্রেন চলছে; রোপণওয়েও বসেছে নন্দনকাননে। ১৩৪ একর ব্যাপ্ত কাক্সিয়া লেকের জলে বোটিং-এরও নানান ব্যবস্থা আছে। আর হচ্ছে ১৮৯ বর্গ কিমি জুড়ে চাঁদকা হস্তী অভয়ারণ্য নন্দনকাননে।

নিকটতম রেল স্টেশন ভুবনেশ্বর-কটক রেলপথের বরাং থেকে ২ কিমি রিকশা বা পায়ে চলা যায় নন্দনকানন। আর বাস যাচ্ছে ভুবনেশ্বর বাস স্ট্যান্ড থেকে সপাল ৯-৩০টায় নন্দনকানন স্পেশাল। প্রাইভেট বাসও আছে ঘণ্টায় ঘণ্টায়। প্যাকেজ ট্যুরেও

বাস আসছে পুরী ও ভুবনেশ্বর থেকে নন্দনকানন দর্শনে। তবে, প্যাকেজ ট্যুরের ১ ঘণ্টায় অনাবাদিত থেকে যায় নন্দনকাননের নানান কিছ। গাইডও মেলে দর্শনে। ২ টাকার টিকিট লাগে নন্দনকানন দর্শনে। থাকারও ব্যবস্থা আছে নন্দনকাননের Tourist Cottage ও FRH-এ। অব্: Assistant Conservator of Forests, Nandankanan, Po-Barang, Dist- Cuttack, ৭ 51580.

খণ্ডগিরি ও উদয়গিরি: রেল স্টেশন থেকে ৮ কিমি পশ্চিমে, কলকাতা-চেন্নাই জাতীয় সড়কের সমিকটে, পূর্বঘাট পর্বতমালার একই পাহাড়ে মুখোমুখি দাঁড়িয়ে বৌদ্ধগুহা উদয়গিরি (Sunrise Hill) ও জৈনগুহা খণ্ডগিরি। খ্রি পূ ২ শতকে ১২৩ ফুট উঁচুতে গ্রানাইট পাহাড় কুঁড়ে তৈরি খণ্ডগিরি আর উদয়গিরির উচ্চতা ১১৩ ফুট। উচ্চতায় কম হলেও গুহার আধিক্য ও আকর্ষণে উদয়গিরি উল্লেখ্য। তৈরি সম্ভবত বৌদ্ধ সাধু-সন্তের বাসের জন্য। আর খণ্ডগিরি আকর্ষণে উল্লেখ্য না হলেও মন্দির হয়েছে খণ্ডগিরি শীর্ষে ১৮ শতকে জৈন তীর্থঙ্কর মহাবীর (২৪তম) ও পার্শ্বনাথের (২৩তম)। তেমনই আছে চলার পথে আটলিট, নারী ও হাতি ছাড়াও নানান মূর্তি খোদিত বেশ কয়েকটি জৈন গুম্ফা খণ্ডগিরিতে। এমনকি খণ্ডগিরির চূড়া থেকে বিমানবন্দর, লিঙ্গরাজ, ধৌলীও দৃশ্যমান। আর আছে বাদর সারা পাহাড়খণ্ডে।

আর পথের ডাইনে উদয়গিরিতে সিঁড়ি দিয়ে অল্প উঠতেই প্রথমে পড়ে স্বর্গপুরী গুম্ফা। এর দেওয়ালে লতা-পাতার সঙ্গে রয়েছে সুন্দর এক হস্তীমূর্তি। এরপর রানী গুম্ফা অর্থাৎ রানীর প্রাসাদ। উত্তর পূর্ব আর পশ্চিম কেটে তৈরি হয়েছে এই দ্বিতল প্রাসাদপুরী। দৈর্ঘ্যে ৪৯ ফুট আর প্রস্থে ২৪ ফুট এটি। পিলারগুলির মাথার ব্রাকেটে হস্তী-নারী-নর্তকী মূর্তি। মন্দিরের মতো কারুকার্য তত সূক্ষ্ম নয়। রানী গুম্ফার উপরে গণেশ গুম্ফা। একতলা এই গুম্ফাটি অলিন্দ সংলগ্ন। দু'পাশে দুই হস্তীমূর্তি, সীতাহরণের আখ্যানও রয়েছে দেওয়ালে। অলিন্দের কারুকার্যও সুন্দর। নীতিকথা রূপ পেয়েছে অলিন্দে।

সাধারণের কাছে সাদাসিধে হস্তী গুম্ফার আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও পালিভাষার শিলালিপিটি এর মূল সম্পদ। শিলালিপির স্বস্তিক চিহ্নের জন্য কারও কারও মতে এটি বৌদ্ধ, আবার জৈন বলেও দাবি করেন নানান জনে। সম্ভবত, কলিঙ্গরাজ খরবেলার জীবনচরিত ও তাঁর ১৩ বছরের (খ্রি পূ ১৬৮—১৫৩) রাজ-কাহিনী উৎকীর্ণ হয়েছে ১৭ লাইনে। কথিত আছে খ্রি পূ ৬ শতকে জৈন তীর্থঙ্কর মহাবীর জৈন ধর্ম প্রচারের মানসে ভুবনেশ্বরে আনেন। অবস্থান করেন কুমারী পাহাড়ে—সে নাকি আজকের এই উদয়গিরি।

এছাড়াও ব্যাঘ্র গুম্ফা, সর্প গুম্ফা, অনন্ত গুম্ফা, দ্বিতল জয়া-বিজয়া, জৈন গুম্ফাগুলিও একে একে দেখে নেওয়া উচিত হবে। উদয়গিরি থেকে গুরু করে ঘণ্টাখানেক নেমে যাওয়া যায় খণ্ডগিরি দেখে। পথ গিয়েছে বনের মাঝ দিয়ে

গাছপালা সরিয়ে। গুহার সংখ্যা উদয়গিরিতে ৪৪ আর খণ্ডগিরিতে ১৯। তবে সবগুলি দেখা সম্ভব নয়। ধর্ম ও সময় দুয়েরই অভাব ঘটে। সংখ্যায় অল্প হলেও শহর থেকে বাস, ট্যাক্সি, রিকশা আবার প্যাকেজ ট্যুরেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় ভুবনেশ্বর বা পুরী থেকে। ৮—১৮-০০টায় খোলা খণ্ডগিরি ও উদয়গিরি। দর্শনীও লাগে উদয়গিরিতে। ১২ কিমি দূরের হীরাপুরেও দেখে নেওয়া যায় ২টি যোগিনী মন্দির ভুবনেশ্বর থেকে।

যৌলী: শহর থেকে ভুবনেশ্বর-পুরী/কোণারক রোডে ৫ কিমি যেতে ডাইনে ৩ কিমি গিয়ে যৌলী। পুরী বা কোণারকের বাসে বা প্যাকেজ ট্যুরে যৌলী চলুন। রিকশা বা ট্যাক্সিতেও চলা যেতে পারে যৌলী। আজকের যৌলীতেই ঐতিহাসিক যুদ্ধ ঘটে খ্রি পূ ২৬১৩ত কলিঙ্গরাজ ও অশোকের। এই যুদ্ধের রক্তক্ষয় দেখে বিচলিত হয়ে পড়েন সম্রাট অশোক। শপথ নেন—*অসি দিয়ে নয়, এবার জয় প্রেম আর ভালবাসা দিয়ে।* আজও খোদিত রয়েছে ৫x৩ মিটারের এক প্রস্তরখণ্ডে সম্রাট অশোকের ১৩টি রাজ্যজ্ঞা যৌলীর পাদদেশে। বোধিত হয়েছে—*All men are my children.* সম্প্রতি মুকুট পরেছে যৌলী পাহাড়। অনুচ্চ পাহাড়চূড়ায় শ্বেত-শুভ্র শাস্তি স্তূপ গড়েছে জাপানের বৌদ্ধ সম্রা ১৯৭২এ। মনান্তিও হয়েছে—সদধর্ম বিহার। মূর্তিও হয়েছে গৌতম বুদ্ধের—চার রকমের চার। আর হয়েছে ধবলেশ্বর শিবের মন্দির যৌলীতে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে রক্তে রাঙা দয়া নদী।

ভুবনেশ্বর ভ্রমণের স্মারকরূপে ওড়িশার হস্তশিল্প ও তাঁতশিল্প সঙ্গী করা যেতে পারে। কেনাকাটায় জনপথ বা মার্কেট বিস্তৃত কমপ্লেক্স—রাজপথ চলা যেতে পারে। স্টেট এস্পোরিয়াম উৎকলিকা—রাজপথ, ওড়িশা স্টেট হ্যান্ডলুম উইভার্স কোঅপারেটিভ—জে এন মার্গ, ওড়িশা স্টেট হ্যান্ডলুম ডেভেলপমেন্ট করপোরেশন—জনপথ ছাড়াও প্রাইভেট মালিকানায দোকানপাট রয়েছে অজয়।

কনডাক্টর ট্যুর : ওড়িশা পর্যটনের Tourist Office, 5 Joydev Nagar, Kalpana Chowk, opp Museum, Bhubaneswar-751002, ৩ 432314 সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ৯এ/১২০ টাকায় ভুবনেশ্বর পাছনিবাস থেকে ৮-০০টায় গিয়ে ১৭-৩০টায় ফেরে নন্দনকানন, খণ্ডগিরি-উদয়গিরি, যৌলী ও মন্দির দেখিয়ে। আর প্রতিদিন ৯-০০টায় যাচ্ছে ১০০/১৫০ টাকায় পিপলি, পুরী ও কোণারক, ফেরে ১৮-০০টায়। প্রতিদিন OTDCর বাস স্বর্ণপুর যাচ্ছে ২২-০০টায় ছেড়ে ৮ ঘটায় ৯০ টাকায়; বেরহামপুর যাচ্ছে প্রতিদিন ৭-০০টায় ছেড়ে ৮ ঘটায়—ভাড়া ৫৫। ফেরে যথাক্রমে ২২-০০/১৪-০০টায়। A/C ও non A/C নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেনে এসেছে। বুকিং: Manager, Panthanivas, ৩ 431515. রেল স্টেশন ও বিমানবন্দরেও দপ্তর বসেছে এদের। আর ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর, B/21 Kalpana Area, Behind Museum, ৩ 542035। আবার এককভাবে ট্যাক্সিতেও সাঙ্গ করা যায় ভুবনেশ্বর দর্শন। পুরী ও কোণারকও যাবছে ট্যাক্সি। আবার রিকশা চেপেও ২৫—৩০

টাকায় দেখে নেওয়া যায় ভুবনেশ্বরের মন্দিররাজি। নানান প্রাইভেট সংস্থাও যাচ্ছে প্যাকেজ ট্যুরে ওড়িশা দেখাতে। গাড়িও ভাড়া মেনে এসেছে কাছে।

আর OTDC, Utkal Bhawan, 55 Lenin Sarani, Cal-13, ৩ 2443653 থেকে ২ দিন ১ রাতের ইকোনমিক প্যাকেজে টাইপু-পঞ্চকিঙ্গেশ্বর বেড়িয়ে আনে। যাতায়াত ও থাকার ব্যবস্থা সহ যাত্রীভাড়া এদের। ২ দিন ১ রাতের উইক এন্ড ট্যুরে পুরী-ভুবনেশ্বর-কোণারকও যাচ্ছে এরা। একইভাবে ভুবনেশ্বর-কোণারক-পুরী যাচ্ছে OTDC. সব ক্ষেত্রেই আহার্য নিজ বায়ে। তেমনই OTDC-র ভুবনেশ্বর, পুরী, কোণারক, তপ্তগনি, টাইপু, লুং, চিকার পাহনিবাসের আংশিক বুকিংও করে এরা।

অত্রি: শহর থেকে ৪০ কিমি দূরে গরম জলের জন্য অত্রির প্রশান্তি। জলে সালফার আছে—চর্মরোগের নিরাময় ঘটে। দেবতাও রয়েছেন হটকেশ্বর অত্রিতে।



বিমানবন্দর থেকে ৪ কিমি দূরে শহর—ট্যাঙ্গি যাচ্ছে। আর রেল ও বাস শহরের প্রাণকেন্দ্রে ২ কিমির ব্যবধানে ভুবনেশ্বরে। IAC-র বিমান। 136 দিন ১৬-১৫য় কলকাতা ছেড়ে ১৭-১০এ ভুবনেশ্বর, ১৯-১০এ নাগপুর, ২০-৫৫য় হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে; 24 দিন ১৭-৪০এ কলকাতা ছেড়ে ১৮-৩৫এ ভুবনেশ্বর যাচ্ছে। আর ভুবনেশ্বর থেকে দিল্লী যাচ্ছে প্রতিদিন ১৩-২৫এ ছেড়ে ২ ঘ ১০ মিনিটে। কলকাতায় যাচ্ছে ৫৫ মিনিটে। 136 দিন ২০-৫০, 24 দিন ১৯-০৫এ ভুবনেশ্বর থেকে। ভুবনেশ্বর আসছে দিল্লী থেকে প্রতিদিন ১০-৪০এ। মুম্বাই যাচ্ছে। 135 দিন ১৫-৫০এ ছেড়ে ২ ঘ ৫ মিনিটে; ফেরে মুম্বাই থেকে ১২-১৫এ। চেন্নাই যাচ্ছে। 135 দিন ১৯-৫০এ ছেড়ে ২১-১০এ হায়দ্রাবাদ পৌঁছে ২২-৪৫এ; ফেরে চেন্নাই থেকে ১৬-৩০এ ছেড়ে ১৭-৩০এ হায়দ্রাবাদ পৌঁছে ১৯-২০এ। 136 দিন ১৭-৫০এ ভুবনেশ্বর ছেড়ে ১৯-১০এ নাগপুর পৌঁছে হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ২০-৫৫য়; ফেরে ১৭-১৫য় হায়দ্রাবাদ ছেড়ে নাগপুর হয়ে ২০-১০এ। আর প্রাইভেট বিমান Skyline NEPC 4 6 দিন ভুবনেশ্বর-বিশাখাপতনম-চেন্নাই-ত্রিচি-কোয়েম্বটুর-মাদুরাই-ভুবনেশ্বর; 35 দিন ভুবনেশ্বর-কলকাতা-বাগডোগরা-ভুবনেশ্বর সার্বিস গড়েছে।



হাওড়া-চেন্নাই রেলপথে হাওড়া থেকে ৪৩৭ কিমি দক্ষিণে ভুবনেশ্বর। নানান ট্রেন যাচ্ছে কলকাতা থেকে ষড়্গাপুর-বালাসোর-ভদ্রক-কটক হয়ে ভুবনেশ্বরে। ৬-১৫য় কলকাতা অর্থাৎ হাওড়া ছেড়ে ১৩-৩৫এ ভুবনেশ্বর পৌঁছায় 2821 যৌলী এক্স; যৌলী ফেরে ১৪-০৫এ ভুবনেশ্বর ছেড়ে ২২-০৫এ হাওড়ায়। আর যাচ্ছে ১৯-০০টায় 8409 শ্রীজগন্নাথ এক্স, ২২-০০টায় 8007 পুরী এক্স, ১০-১৫য় 8045 ইস্ট কোস্ট এক্স, ২৩-৩০এ 8079 তিরুপতি এক্স হাওড়া থেকে ভুবনেশ্বরে পৌঁছায়। কম বেশি ৯ ঘটীর পথ। তেমনই ষড়্গাপুর থেকেও ট্রেন মেয়ে দিল্লী থেকে আসা ১-৩০এ কলিঙ্গ-উৎকল, ৬-২৫এ পুরী এক্স, ১০-৫০এ নীলাচল, ২২-৫৫য় পুরুষোত্তম এক্স, বুধবার ২০-২০এ পটিনা-পুরী বৈদ্যনাথধাম এক্স আর করমণ্ডল, চেন্নাই মেল বা তিরুভনন্তপুরম/ ব্যাঙ্গালোর/ কোচি এক্স, ফলকনুমা এক্সে ষষ্ঠীয় শ্রেণীর যাত্রায় নিম্নতম দূরত্ব খুঁটিয়ে নেওয়া টিকিট কেটে জার্নি রেক করা যায় ভুবনেশ্বরে। তবে, আপার ক্লাস যাত্রায় এই বিনিমিবেশ নেই।

১৬-৩০এ পুরী ছেড়ে ১৮-৩৫এ ভুবনেশ্বর এসে ষড়্গাপুর

১-০৫, টাটনগর ৩-৪০, চক্রধরপুর ৫-০০, রাউরকেলা ৬-৫৫, বিলাসপুর ১৩-১৫, অনুপপুর ১৬-৫০, কাটনি ২২-০০, ঝাসী ৫-০৫, আশ্রা ক্যান্ট ৯-২০এ পৌছে হজরত নিজামুদ্দিন যাচ্ছে ১৩-২০এ ৪৪৭৭ উৎকল-কলিঙ্গ এক্স; কলিঙ্গ ফেরে ১০-৫৫য় হজরত নিজামুদ্দিন থেকে। ২ ৫ ৭ লিন ৪৪৭৫ নীলাচল এক্স ৯-০৫এ পুরী ছেড়ে ভুবনেশ্বর ১০-৪০, ঝড়াপুর ১৬-৪০, টাটা ১৯-০০, বোকারো স্টিল সিটি ২৩-২০, বারাপসী ৭-২৫, লক্কেী ১৩-০০, কানপুর ১৪-৪৫এ পৌছে নতুন দিল্লী যাচ্ছে ২১-২০তে; নীলাচল ফেরে ২ ৫ ৭ লিন ৬-৩৫এ নতুন দিল্লী থেকে। ১ ৩ ৪ ৬ লিন ২৪১৫ পুরী-নিউ দিল্লী এক্স ৯-০৫এ পুরী ছেড়ে ভুবনেশ্বর ১০-৪৫, ঝড়াপুর ১৬-৩৫, আশ্রা ২০-০৫, গয়া ১-১৯, এলাহাবাদ ৭-১৫, কানপুর ১০-০৫এ পৌছে নতুন দিল্লী যাচ্ছে ১৭-০০টায়; পুরী ফেরে ১ ৩ ৪ ৬ লিন ৬-৩৫এ নতুন দিল্লী থেকে পুরী এক্স। সুপার ফাস্ট ২৪০১ পুরুষোত্তম এক্স ২০-১০এ পুরী ছেড়ে ভুবনেশ্বর ২১-৪৫, ঝড়াপুর ৩-৪৫, টাটা ৬-১৫, গয়া ১৩-৩২, মোগলসরাই ১৬-৩৫, এলাহাবাদ ১৮-৫৫য় পৌছে নতুন দিল্লী যাচ্ছে ৪-৩৫এ; পুরুষোত্তম পুরী ফেরে ২২-৩৫এ নিউ দিল্লী ছেড়ে ৩২১ ঘণ্টায়। আর যাচ্ছে ৩ ৭ লিন ২৪২১ ভুবনেশ্বর রাজধানী এক্স ৯-১০এ ভুবনেশ্বর ছেড়ে কটক ৯-৪৫, হাওড়া ১৬-৩০, আসানসোল ১৯-১০, ধানবাদ ২০-০০, মোগলসরাই ০-৩৮, কানপুর ৪-৪২এ পৌছে ৯-৪০এ নতুন দিল্লী; রাজধানী ফেরে। ৫ লিন ১৭-১৫য় নতুন দিল্লী থেকে।

| ভুবনেশ্বর থেকে সড়ক দূরত্ব | | 1020 কোণারক এক্স |
|----------------------------|---------|--------------------------------|
| কোণারক | ৬৪ কিমি | ১৪-০০টায় ভুবনেশ্বর ছেড়ে |
| পুরী | ৫৬ " | বেরহামপুর/ ওয়ালাটোয়ার/ |
| কটক | ৩৭ " | বিজয়ওয়াড়া/ সেকেন্দ্রাবাদ/ |
| পারাবীপ | ১২১ " | গুলবর্গা/ সোলাপুর/ পুনে |
| যাজপুর | ১২১ " | হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে। কোণারক |
| চাঁদীপুর | ২০৫ " | ভুবনেশ্বরে ফেরে মুম্বাই |
| সিমিলিপাল | ৩২৩ " | (CST) থেকে ১৫-০০টায়। |
| হীরাকুল বীথ | ৩৩৬ " | হাওড়া ১-সেকেন্দ্রাবাদ |
| কেওনঝাড় | ২৩৫ " | ফলকনুমা এক্স, ৩ ৭ দিন |
| রাউরকেলা | ৫১৪ " | ওয়াহাটি-বাসালোর, ৪ দিন |
| সম্বলপুর | ৩২১ " | ওয়াহাটি-কোচি, ১ দিন |
| চিক্কা | ৯৪ " | ওয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম |
| গোপালপুর-অন-সী | ১৮৪ " | এক্স যাচ্ছে ৩-৫০এ হাওড়া |
| বিশাখাপতনম | ৪২৬ " | ছেড়ে পরদিন ১২-৫৪য় |
| তিরুপতি | ১১৭২ " | ভুবনেশ্বর হয়ে। চিক্কায যাচ্ছে |
| হায়দ্রাবাদ | ১০৬৩ " | ৭-৫৫, ১০-০০, ১৩-০০ ও |
| কলকাতা | ৫১২ " | ১৮-৪০এ ভুবনেশ্বর ছেড়ে ৩ |
| মুম্বাই | ১৭৪২ " | ঘণ্টায় ভুবনেশ্বর-বালুগাঁও |
| চেন্নাই | ১২২৫ " | প্যাসেঞ্জার। ঋণী রোড, |
| | | ভালচের, কটক যাচ্ছে নানান |

প্যাসেঞ্জার। পুরী যাচ্ছে ২১ ঘণ্টায় ৯-৪০, ১০-৪০, ১৭-৪১এ প্যাসেঞ্জার ট্রেন ভুবনেশ্বর থেকে। আসানসোল যাচ্ছে পুরী প্যাসেঞ্জার। ১৬-১০এ ভুবনেশ্বর ছেড়ে রাউরকেলা যাচ্ছে ২৩ ঘণ্টায় হীরাকুল এক্স; ভুবনেশ্বর ফেরে ৮-১৫য় রাউরকেলা থেকে হীরাকুল। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ভারতের দিকে দিকে ভুবনেশ্বর থেকে। রেল অনুসন্ধান ০ ৪০২২৩৩, রিজার্ভেশন ০ ৪০২০৪২ ভুবনেশ্বরে।



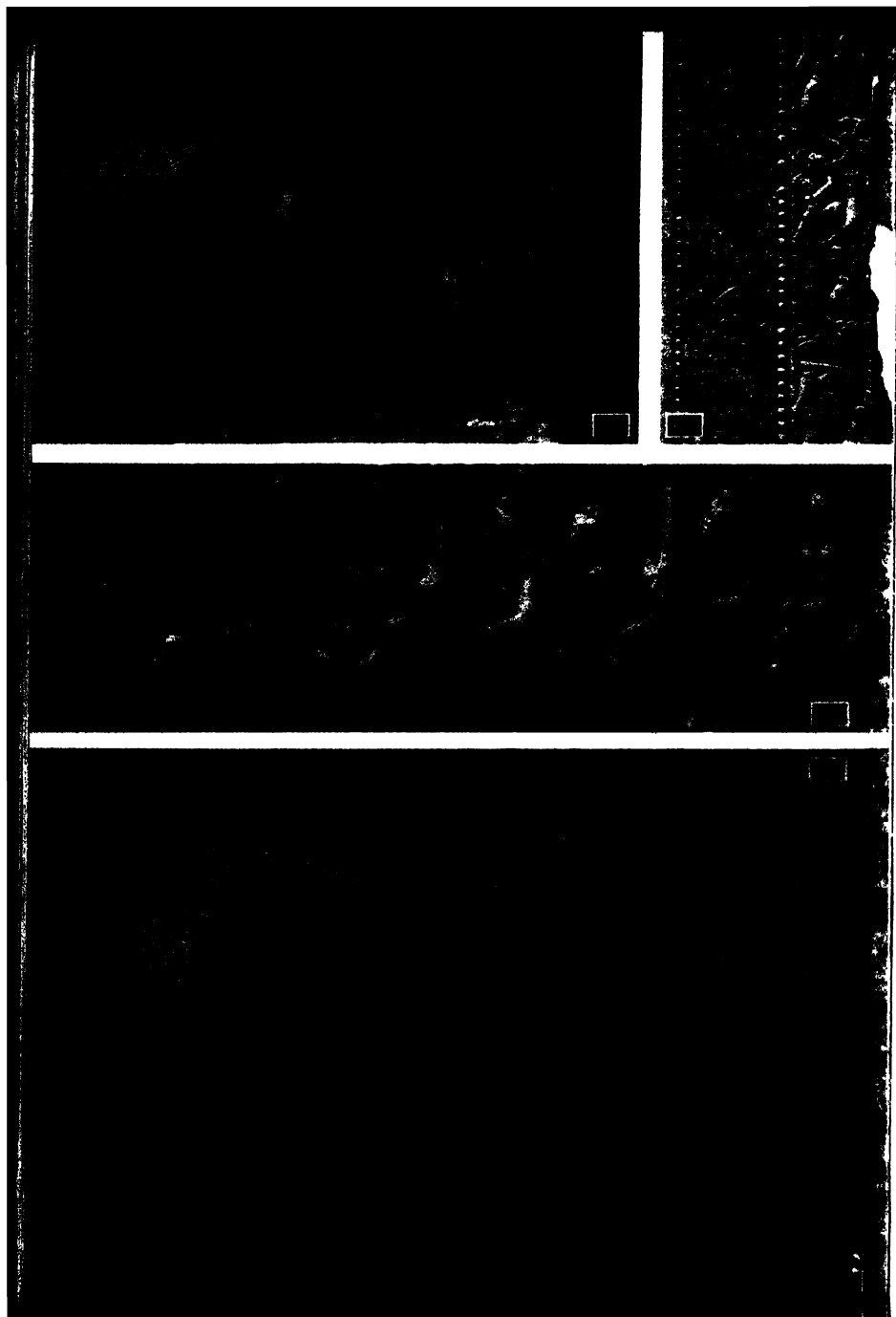
কলকাতা থেকে জাতীয় সড়ক-৫ যাচ্ছে ভুবনেশ্বর হয়ে চেন্নাই। শহীদ মিনার থেকে CSTC, ORTC ও হিকলী সমবায়ের পুরীর বাসও যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে ভুবনেশ্বর হয়ে। আর ৪—২২-০০টায় ৫ থেকে ৭ মিনিটের ব্যবধানে বাস যাচ্ছে ভুবনেশ্বর থেকে ১১ ঘণ্টায় পুরী। ৪—২৪-০০টায় মুম্বাই বাস যাচ্ছে ১ ঘণ্টায় কটক; ১১ ঘণ্টায় কোণারক; ৪—২১-০০টায় চিক্কা হয়ে ৫ ঘণ্টায় বেরহামপুর; কটক/ বালাসোর হয়ে ৭ ঘণ্টায় বারিপাড়া যাচ্ছে নানান বাস; আর যাচ্ছে বাস রাউরকেলা, সম্বলপুর, কোরাপুট, সুন্দরগড় ছাড়াও রাজ্যের নিম্নদিকে ভুবনেশ্বর থেকে। শ্রিপুর কোচও যাচ্ছে সম্বলপুর, বারিপাড়া ছাড়াও নানান দূরপাল্লার পথে ভুবনেশ্বর থেকে। বাস যাচ্ছে—বিশাখাপতনম, রাঁচি, টাটনগর, রায়পুরও রাজধানী থেকে। ORTC-র অনুসন্ধান ০ ৪০০৫৪০. বাস স্ট্যান্ডও শহরে দুই। রাজপথ থেকে সরে গিয়ে শহরের প্রাণকক্ষে ক্যাপিটাল বাস স্ট্যান্ড (Unit 2) আর শহর থেকে ৬ কিমি দূরে নতুন বাস স্ট্যান্ড হয়েছে ভুবনেশ্বরে। নানানধর্মী প্রাইভেট বাসও চলছে ভুবনেশ্বর থেকে রাজ্যের দিকে দিকে। তবে, বাসে সবকিছুই উৎকল ভাষায় লেখা। শহরে চলছে সিটি বাস, ট্যুরিস্ট কার, মিটারহীন ট্যাক্সি, অটো ও সাইকেল রিকশা। তবুও যেন পুরী পর্যটকদের পুরী থেকেই কনকটটে ট্যুরে ভুবনেশ্বর বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে।



রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ড দুইয়েব মাঝে ব্যবধান ২ কিমি। মাঝপথে কল্লনা চক—মালা গের্গেছে সাধারণ হোটেল এই কল্লনা চকে মিডিজিয়মকে ঘিরে। তেমনই বাস সড়কে মিডিজিয়মের বিপরীতে কল্লনা চকেই Gautam Nagar, Bhubaneswar, STD 0674, PC-751014-এ—ITDC-র *H Kalinga Ashok, ০ ৪৩১০৫৫, A4R1, A/c S ৯৫০ ১১৯৫ D ২২০০ ১৮০০ সুইট D ২৩৯৫। লাগোয়া বীয়ে OTDC-র Panthanivas, Lewis Rd-14, ০ ৪৩১১১৫, DAB ৩০০ TAB ৩৭৫ A/c ৫০০ ৫৫০; *H Konark, A/c S ৬৭৫ D ৭৫০ সুইট ১২৫০।

রেল স্টেশনের পেছনে Kalpana Chowk-6—বাঙালি মালিকানায যথেষ্ট পণ্যলার Bhubaneswar H, ০ ৪১৬৭৭৭, SAB ১০০ ১২৫ DAB ১৫০ ১৭৫ ৩৫০ TAB ২০০ A/c D ৫০০ (TV সহ), প্রতিটি ঘরে চ্যানেল মিডিজিক ও টেলিফোন। বাঙালি আহাযের জন্যও এদের প্রশংসা আছে। Cuttack Rd-6-এ H Swagat, ০ ৪১৬৬৪৬, DAB ১৫০ ২০০ ৩০০ ৩৫০; Bishram Bhawan, ০ ৪১২৩৩১ S ৬৫ D ১২৫। পাশেই Kalpana Sq-14য় H Ekamra, ০ ৪১৬৭৩২, D ১০০-১৭৫ T ১৫০-২৫০ A/c D ৩৫০; H Padma, ০ ৪১৬৬২৬, S ৮০ D ১৫০; H Sunrise, D ১২০; H Puspak, SAB ৬৫ DAB ১২৫ A/c D ৩৫০; H Gajapati, 77 Buddhanagar-14, ০ ৪১৭৪৯৩, S ৬০ D ১০০-১৫০ A/c D ৩০০; H Sahara, 76 Buddhanagar-14, ০ ৭১৭৩৩১, S ১৭৫ D ৩০০ A/c D ৪৫০ T ৫২৫; Samita L, 77 Buddhanagar-6, S ৪৫-৮০ D ৬৫-১০০ FR ৮০-১৫০; বিপরীতে *New Kenilworth H, ৪৬/A-1 Gautam Nagar, A4R1B2, ০ ৪১৭২২৩, A/c S ১১৭৫ D ১৫০০ সুইট ২০০০; Bhagabat Nivas, R4B1, SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২৭৫ FR ২২৫-২৭৫ A/c D ৪০০; Zooley L, D ১০০-১৫০; Aristo L, S ৬৫ D ১০০ T ১২০; Ratna





L, S ৪৫-৮৫ D ৮৫-১২৫; H Trident, Rajmahal Sqr-9, ④ 405180, S ১০০ D ১৭৫ FR ২৫০; H Joyram, ④ 403252, SCB ৬০ DCB ১০০; H Benaraswalla, SCB ৬০ SAB ৮০ DAB ১৫০।

Janpath-751011-এ—*H Prachi, ④ 402366, A/c S ৮৫০ D ১২৫০; H Safari International, 721 Rasulgargh-10, ④ 480552, A7R4B4, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০; নবতম পাঁচতারা সম The Garden Inn, Janpath-751001, ④ 414120, Fax 0674-400053, S ১২৫০ D ১৫৫০ ডিলার ১৮৫০ সুইট ২৫৫০; *H Swasti, 103 Janpath-1, Fax 91-674-407524, ④ 404179, A3R1, A/c S ১৬৫০-২২৫০ D ২২৫০-২৭৫০, কল বুকিং: 10 Meher Ali Rd, Cal-17, Telefax 91-33-2409534. Bapuji Nagar-এ—Venus Inn, S ৮০-১২৫ D ১২৫-২০০ A/c D ২৫০; H Janpath, S ৬০-১০০ D ১০০-১৭৫ A/c D ২৫০; H Casino, S ৬০ D ১০০-১৫০; H Rajmahal, ④ 402448, SAB ৬৫ DAB ১০০ FR ১৫০ A/c D ২৫০; H Venus Inn, ④ 401738, D ২২৫-৩০০; H Swagat Inn, ④ 408486, S ১২৫ D ২২৫; H Poonam, R1B1, S ১০০ D ১৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০।

রেল স্টেশনের কাছে Kharbela Ngr-1-এ—H Anarkali, ④ 404031, S ২০০ D ৩০০ FR ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬৫০; H Jajati, ④ 400352, S ১৭৫-২৫০ D ২২৫-৩৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬০০; H Nupur, ④ 404254, S ১২৫ D ২০০ A/c S ২৫০ D ৩০০-৪৫০। Stn Sqr-এ—H Nandan, D ১৭৫; *H Keshari, ④ 408593, S ৩০০ D ৮০০ A/c S ৮২৫ D ১০০০ সুইট ১৭৫০; H Richi, ④ 406619, S ১০০ D ১৮০-২৫০ FR ২৭৫ A/c D ৪০০; Chandan L, S ৬০ D ১০০। Ashok Ngr-এ—City G H, S ৬০ D ১০০; Prince L, S ৬০ D ১০০; H Nilagiri, S ৬০ D ১০০; Tourist G H, ④ 400857, S ১৫০ D ২২৫; Shashirekha L, S ৪৫-৮০ D ৮৫-১২৫; Central L, R1B1, ④ 407903, S ৬০ D ৮০-১২৫ T ১৫০; Santosh L, S ৬০ D ১০০। Saheed Ngr-এ—H Swapanpuri, D ১০০-১৫০; H Meghdoot, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪৫০-৬০০ D ৬৫০-৮৫০; H Blue Wheel, Market Building, D ১২৫-২০০ A/c D ৩৫০; H Upendra, SAB ৪০-৮৫ DAB ১০০-১৫০। Rajmahal Sqr-এ—Venus L, D ১২৫ T ১৫০; Marwari H, S ৮৫ D ১৫০; H Chand, ④ 408692, S ৬০-১০০ D ১২৫-১৭৫।

Old Station Rd-এ—H Lingaraj, R1B5, D ১২৫-২০০; H Jangendra, D ১২০-১৫০ A/c ২৫০; H Kumala, S ৮০ D ১২৫ FR ১৭৫ ডব্লিউ বেড ৪০। Cuttack Rd-এ—Birla G H, S ৬০ D ১২৫; H Rajdhani, S ৬০ D ১০০; H Siddhartha, 19A, Cuttack-Puri Rd-6, ④ 413496, S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৫০০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০; Jolly L, D ৬৫-১২৫; H Nataraj, D ২০০ A/c D ৪৫০; *H Oberoi Bhubaneswar, Plot-CB1, Nayapalli-13, A8R6, ④ 440890, A/c S ৬৫ D ৮৫ USS; H Raja Rani, Gauri Kedar S ৮০ D ১৫০; State G H, R1B1; Bhubaneswar Club; হাড়াণ্ডা হোটেল আছে আরও নানান ভূবনেশ্বরে।

এছাড়া CH, PWDIB; খণ্ডগিরিতে Youth Hostel-ও আছে;

অমল সঙ্গী : ৯৭-৯৮/১৯

অব্: Tourist Officer. ভূবনেশ্বর মিউনিসিপ্যালিটিও কটক রোডে Yatri Niwas গড়েছে, ডব্লিউ প্রথায় বেড ১৫-২৫ D ৮০ হল ২০০। আহাৰও মেলে রেস্তোরাঁয়। আর আছে রেলের রিটায়ারিং ক্লব, বাস স্ট্যান্ডে রিটায়ারিং ক্লবও ধরমশালা ভূবনেশ্বরে। দুধওয়ালা, ডালমিয়া, রেল স্টেশনে পতঙ্গিয়া, খণ্ডগিরিতে জৈন ঘরের জন্য সেখা যেতে পারে। রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রমও হয়েছে রেষ্ট হাউসের ব্যবস্থা নিয়ে লিসরাজের পাশে ভূবনেশ্বরে।

চিত্রসূচী: পাঁচ

৫৪ কোণারক সূর্যমন্দির ছবি শৃণাল দত্ত ৫৫ পুরী রথ ছবি শৃণাল দত্ত ৫৬ সূর্যমন্দিরের মন্দির ছবি শৃণাল দত্ত ৫৭ চুল ছাট্টে বোলা নারী ছবি লক্ষ্মী দত্ত ৫৮ লিসরাজ মন্দির—ভূবনেশ্বর ছবি শৃণাল দত্ত ৫৯ চন্দ্রাঙ্গা সাগরকোণা ছবি শৃণাল দত্ত ৬০ পুরী রথ সূর্যমন্দির ছবি সোমনাথ বোষ ৬১ উদয়গিরির শঙ্করেশ্বর ছবি দেবীপ্রসাদ সিংহ ৬২ উদয়গিরির তাজবাব ছবি লক্ষ্মী দত্ত ৬৩ রায়গিরির ফ্রিজ ছবি পঙ্কজ দত্ত ৬৪ কালিয়ার গড়ার ছবি পঙ্কজ দত্ত।

তবুও থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে রেল স্টেশনের পেছনে কলনা চকে মধ্য মানের হোটেল ভূবনেশ্বর, হোটেল পুষ্পক, হোটেল ভাগবত; বৃন্দনগরে হোটেল গজপতি, হোটেল জানারকলি বা OTDC-র পাহনিবাস নির্বাচনে অগ্রাধিকার পাবে। আহাৰও মেলে এদের কাছে। তেমনই, আনারকলি—স্টেশন কোয়ার, স্বপনপুরী—শহীদনগর, ডেনাসু ইন—বাপুজী নগর, এদেরও প্রসিদ্ধি আছে ওড়িশার সাথে নানানধর্মী আহাৰ পরিবেশনে। আহাৰ-বিহারে বাংলাই মতো—ভাত-মাছের সেশ ওড়িশা। তবে, সেব-মাছাছো নিরামিষ আহাৰের প্রচলন স্থানীয়দের মাঝে। লিসরাজ মন্দিরে স্বাদও নেওয়া যেতে পারে ওড়িশি স্বকীয়তায় অম্লভোগের। এছাড়া নিরামিষ আহাৰের ব্যবস্থা নিয়ে দক্ষিণ ভারতীয় হোটেলও আছে নানান ভূবনেশ্বরে। রাজমহলের পিছে Modern South Indian Hotel-টি ভালই। Hare Krishna Restaurant-টির ভেজ মিল মানে উন্নত হয়েও নামে স্বাভাবিক। তেমনই *Surya Restaurant, H Prachi, 6 Janpath, ④ 402689-এ ভারতীয়, চীনা, অন্তর্দেশীয়, মাগলাই; *Swasti Executive, 103 Janpath, Unit-III, ④ 404178-এ ভারতীয়, চীনা, অন্তর্দেশীয় হাড়াণ্ডা ওড়িশি ডিসের যথেষ্ট প্রশংসা। আর বাঙালিয়ানরা কটক রোডে ভূবনেশ্বর হোটেলটির যথেষ্ট সুনাম।

কোণারক

ভূবনেশ্বরের ৬৪ কিমি দক্ষিণ-পূবে কোণারক। পুরী থেকে দূরত্ব পুরী-কোণারক মেরিন ড্রাইভ ধরে ৩৬ কিমি—৬ কিমিতে ভায় সমুদ্র স্তরমান; আর পিপিহি ধরে ৮৫ কিমি। ভূবনেশ্বর থেকে ১১ ঘণ্টার বাসও আছে কোণারকে। আর পুরী থেকে ৬-৩০, ৮-৩০, ১০-৩০, ১২-৩০, ১৫-৩০ ও ১৬-৩০টায়ে মেয়ে ১ ঘণ্টার মধ্যে মেরিন ড্রাইভ ধরে কোণারকে। ট্রেকার ও ম্যাটিভোজর আসলে ১ ঘণ্টার পুরী বাস স্ট্যান্ড থেকে দিনভর মুখুণ্ড। অত্যাঁও মেলে শ'দুয়েক টাকার পুরী-কোণারক-পুরী ভ্রমণে। আবার

ভুবনেশ্বর-পুরী বাসপথের পিপিলিতে নেমেও সূর্যমন্দির যাওয়া চলে। পিপিলি থেকে দূরত্ব ৪৪ কিমি। আর ভুবনেশ্বর থেকে পিপিলির দূরত্ব ২০ কিমি। তাই পুরী বা ভুবনেশ্বর থেকে এককভাবে বা কনডাক্টেড ট্যুরে কোণারক বেড়িয়ে নেওয়াই উচিত হবে পর্যটকদের। তবে, নিষ্ঠুরভাবে দেখতে আগ্রহীদের সার্ভিস বাসে এসে দেখে ফেরাই সুবিধার।

পিপিলির আকর্ষণ রঙবেরঙ কাপড়ের মনোলোভা applique শিল্প। বর্ণবৈচিত্র্যে, শিল্পসুসমায়, সৌন্দর্যে অতুলনীয় পিপিলির অ্যাপলিক শিল্প। বাসপথেই দর্জিশাহী মহল্লা। সারি দিয়ে বাড়ি—দোকানপাট। হাতের কাজ দেখা ও কেনার ব্যবস্থা মেলে। পুরী-ভুবনেশ্বর বাসে পুরী থেকে ৪০, ভুবনেশ্বরের ২০ কিমি দূরে পিপিলি। মুহম্মদ বাস, ঘণ্টা খানেকের পথ।

কোণারকতার সূর্যমন্দিরের জন্য বিশ্ববন্দিত। দীর্ঘকালের অনাদর আর অবহেলায় হারিয়ে ছিল কোণারক। লর্ড কার্জনর প্রচেষ্টায় ১৯০৪-এ বালি ও ধ্বংসস্থাপন সিরিয়ে নতুন করে লোকচক্ষুর সমক্ষে আসে কোণারক। তবে, মূল মন্দিরটি আজ প্রকৃতির গ্রাস ও মানুষের লালসার শিকার হয়ে ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত। তবুও পাথরে বিশ্বের অনুপম শিল্পকর্ম বলে মূল মন্দিরের মুখশালা বা জগমোহন সারা বিশ্বে বন্দিত। দীর্ঘকালের বন্ধ দুয়ারও খুলেছে জগমোহনের। সংরক্ষণের স্বার্থে নতুন করে রূপ পেতে চলেছে জগমোহন। পর্যটক আকর্ষণও দিনের পর দিন বেড়েই চলেছে এর।

পুরাণ বলে, ৫০০০ বছর আগে শ্রীকৃষ্ণর শাপে পুত্র শাশ্ব কুঠরোগে আক্রান্ত হয়ে চন্দ্রভাগা নদীর তীরে মৈত্রেয়ারণ্য অর্থাৎ আজকের কোণারকে এসে আরাধনা করেন সূর্যের। ১২ বছরের আরাধনায় তুষ্ট সূর্যদেব বর দেন শাশ্বকে। রোগমুক্ত হন শাশ্ব। আর আরোগ্য লাভের পর মন্দির গড়ে প্রতিষ্ঠা করেন দেবতা সূর্যের মূর্তি। সেই স্মৃতিতে মাঘী শুক্লা সপ্তমীতে উৎসব হয়, মেলা বসে আজও ৩ কিমি দূরের চন্দ্রভাগা ও বঙ্গোপসাগরের সঙ্গমে। স্নানেও পূণ্য হয়, ঢেউ-এরও প্রবলতা বেশী চন্দ্রভাগায়। সাবধানতা পড়ে পড়ে—খোলা বালি বিস্তীর্ণ এলাকা ছুড়ে। নানান দোকানপাট, চায়ের সঙ্গে টা মেলে।

পূর্ব দুয়ারি সূর্য মন্দিরের মূল প্রবেশ পথে মর্মরের দুই সিংহমশাই হস্তী দলনে ব্যস্ত। মন্দিরের ১২০ ফুট উঁচু বিমানটি ১৮৬৯-এ ধ্বংসে পড়ে। তবে, ৬০ ফুট উঁচু জগমোহনটি ব্রিটিশের হাতে সংস্কার হয়ে আজও বর্তমান। সিঁড়িও আছে জগমোহনে উঠবার। চুড়োয় উঠবার আগেই তিন ধাপ বারান্দা, সারি সারি ৩ ক্রোরহিট সূর্য মূর্তি। আজও প্রত্নতত্ত্ব, মধ্যযুগ ও সূর্যাস্তে কিরণ এসে পড়ে দেবতার মুখে। ছাদে যেখানে সমতল তার নিচুতে শোহার কড়ি, লম্বায় এঁতলি ২০ ফুট, চওড়ায় ৮ থেকে ১১ ইঞ্চি, আর ওজন ৫৫ মণ প্রতিটার। ২০০০ টন পাথর ব্যবহৃত হয়েছিল মন্দির তৈরিতে। মূল মন্দিরের প্রবেশদ্বারে ছিল সূর্য, চন্দ্র, শনি, মঙ্গল, বুধ, বৃহস্পতি, শুক্র, রাহু ও কেতু মূর্তি ২০x৪

ফুটের নবগ্রহ পাথর। ওজন তার ২০ টন। ১৮৬৯-এ ধ্বংসে পড়ে—তবে, অক্ষত এই পাথর খণ্ড মন্দিরে ঢুকতে ভাইনের অঙ্গনে আজও দৃশ্যমান। ১৯৭৮-এর ক্ষতকে সারিয়ে তোলা হয়েছে। ব্যাপক সংস্কারও হয়েছে প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের হাতে কোণারক। মন্দিরটি আজ UNESCO-র World Heritage Site প্রোগ্রামে গৃহীত।

পুরো মন্দিরটিই একটা রথের আকারে গড়ে উঠেছে। রূপ তার ঘোড়ায় টানা রথ। ঘোড়ার সংখ্যা সাত অর্থাৎ সপ্তাহের সাত দিন। দু'পাশে বারো বারো—চব্বিশটি চাকা। অর্থ তার বারো মাসের চব্বিশটি পক্ষ। চাকায় আটটি করে স্পোক, তার অর্থ—দিনের অষ্টপ্রহর। মন্দিরের সঙ্গে ৯ ফুট ব্যাসের চাকগুলিও আজ ধ্বংসের মুখে। একটি চাকা অক্ষত রয়েছে আজও। যেমন অনবধ্য কারুকার্য তেমনই বলিষ্ঠ এর চিত্তাধারা—ভাবতেও বিস্ময় জাগে। সূর্যালোকের প্রতিফলনে কিছুক্ষণ থাকিয়ে থাকলে হঠাৎ মনে হবে চাকাগুলি চলমান। মন্দিরের দেওয়ালময় নানান দেব-দেবী, নাচ-গান-বাদ্যরতা মোহিনীদের অপরাণ মূর্তি; মিথুন মূর্তিও মূর্ত হয়েছে মন্দির গায়ে। আধিক্যও ঘটেছে মিথুন মূর্তিতে। তেমনই আছে ব্যাস-রলিফ—যুদ্ধে চলেছেন রাজা, রাজার মুগ্ধা, রাজ দরবারের নানান আখ্যান, খোদা প্রথায় হাতিধরা মন্দিরময়। নিচু থেকে সিঁড়ি পথে উপরে উঠে প্রথম চাতালে বন্য-মূর্তিগুলিও সুন্দর। চার কোণে আটটি নৃত্যশীল ভৈরব মূর্তিও দেখবার মতো। তেমনই প্রাঙ্গণ থেকে দৃশ্যমান দেউলের সূর্য দেবতার (তিন) মূর্তিতেও অভিনবত্ব আছে। তেমনই প্রাঙ্গণের প্রায় শেষে সুসজ্জিত যুগল হস্তী ও রণসাজে সজ্জিত ঘোড়া প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছে। অভিনবত্বের সাথে ভাস্কর্য ও স্থাপত্যে অনন্য কোণারকের এই শিল্পকর্ম। তেমনই সূর্য-পত্নী ছায়াদেবীর ছাদহীন মন্দিরটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। মন্দিরটি ভাঙা হলেও বেশ কিছু কারুকার্য আজও রয়েছে।

জগমোহনের পিছনের ২২৭ ফুট উঁচু রেখ দেউলটি আজ ধ্বংসপ্রাপ্ত। সূর্যদেবের সবুজ ক্রোরহিট পাথরের মূল মূর্তিটিও অপসারিত। মন্দিরের উপরে কুন্তপাথর নামে বিরাট একখণ্ড চূষক ছিল অতীতকালে। চূষকের আকর্ষণী শক্তিও ছিল ব্যাপক। সমুদ্রপথে জলযান এর আকর্ষণে গতিপথ হারাতে। সময়ে সময়ে যন্ত্রও বিকল হয়ে পড়ত। তেমনই একটি বিপদগ্রস্ত জাহাজের নাবিকেরা এসে চূষকটি নাকি ভেঙে দেয়। যবনেরা মন্দির ধ্বংস না করলেও মন্দির শীর্ষে সুবিশাল আমলকের ওপর বসানো ধাতব কলস ধ্বজদণ্ড তুলে নিয়ে যায়। তবে, অতীতেই (১৭ শতক) যবন হানার আশঙ্কায় রাজা মুকুন্দবর্মে নিরাপত্তাহেতু দেব বিগ্রহ পুরীর মন্দিরে পাঠিয়ে দেন। তবে বিজ্ঞানগ্রাহ্য নয় এ আখ্যান। আর দেবতাও দিল্লীর মিউজিয়ামে অধিষ্ঠিত। যে-কোনো ধর্মের যে-কোনো বর্গের পর্যটকদের কাছে কোণারকের দ্বার আজ উন্মুক্ত।

হারিয়ে যাওয়া দিনের কথা সঠিক খুঁজে পাওয়া ভার। তবে সিবাই সাঁতারার কর্তৃত্বের দীর্ঘ ১২ বছর ধরে ১২০০০

শ্রমিকের শ্রমে, ১২০০ স্থপতির নিরলস স্থাপত্য অমর করে রেখেছে কোণারককে। হয়ত বিশ্বের সপ্তম আশ্চর্যের গরিমাকেও মান করত সূর্যমন্দির। হিউ-এন-সাঙ লিখেছেন—এখানে একটি বন্দর ছিল, নাম তার চেলিভালা। খুবই বর্ষিষ্ণ গ্রাম ছিল এর চারপাশে। আবার আইন-ই-আকবরী প্রণেতা আবুল ফজলের অভিমত—কেশরী বংশের রাজা ৯ শতকের শেষ ভাগে একটি সূর্যমন্দির গড়েন। ১২ বছরের রাজত্ব খরচ হয়েছিল সেই মন্দির গড়তে। আর সেই মন্দির-টিই আজকের কোণারকের সূর্যমন্দির। প্রকৃত প্রতিষ্ঠাতা যিনিই হন—ইতিহাস বলে, গঙ্গা বংশের অমিতবিক্রম রাজা নরসিংহদেব ১ম সূর্যমন্দিরের প্রতিষ্ঠাতা। তৈরি ১২৪৩-৫৫ খ্রিস্টাব্দে বাংলা জয়ের স্মারকরূপে। আঙ্গিকে ভারতীয় মন্দির থেকে স্বতন্ত্রতা পেয়ে পাগোডাধর্মী, রঙও তার কালো; তাই জলপথের নাবিকদের কাছে *ব্ল্যাক পাগোডা* নামেও খ্যতি ছিল সেকালে। কোণারক ছিল সেযুগে প্রাচ্যের সম্পন্ন বন্দর। সূর্যমন্দিরের সামনে দিয়ে ছিল বঙ্গোপসাগর, অদূরে চন্দ্রভাগা নদী। সেকালে উদিত সূর্যের প্রথম কিরণ পড়ত মন্দিরে সূর্যদেবের মুখে কোণাকূর্ণ হয়ে। তাই নামটিও হয়েছে: কোণ+অর্ক=কোণার্ক। অর্ক অর্থাৎ সূর্য। বিজলী আলোয় ১৮—২২-০০টায় দেউড়ি থেকে মন্দির দেখবার ব্যবস্থাও হয়েছে আজকাল। তবে, ৬—১৭-০০টায় মন্দির চত্বর খোলা মেলে। টিকিটও লাগে ৫ টাকার কোণারক দর্শনে, ১৪ বছর পর্যন্ত ফ্রি। আর শুক্রবার টিকিট ছাড়াই দর্শন।

মন্দিরের অদূরে প্রত্নতাত্ত্বিক মিউজিয়মও বসেছে কোণারকে পাওয়া নানান ভাস্কর্য ও পুরাতত্ত্বের সন্টার নিয়ে। শুক্রবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় খোলা। তেমনই ফেরারিয়ার কোণারক ড্যান্স ফেস্টিভ্যালের আকর্ষণও কম নয় নৃত্যরসিকদের কাছে। নীলাকাশের নিচে সূর্য মন্দিরের পিছে স্থায়ী মঞ্চ আসর বসে ওড়িশি নৃত্যের। সারা ভারত থেকে শিল্পীরা আসেন নৃত্যে অংশ নিতে। থাকারও নানান সাময়িক ব্যবস্থা গড়ে ওঠে উৎসবকালে।



থাকার জন্য Konark-752111, STD 06758এ আছে—OTDC-র *Travellers' Lodge*, এসেরই *Panthanivas* ৩ 35823, DAB ২০০ ২৫০ A/c D ৩৫০, ৯—১৭-০০টার ৫০% রিফট মেলে; এসেরই মিউজিয়মের কাছে *Yatrinivas*, D ১০০ চার বেডের ঘর ১৫০; অব: Tourist Officer, Konark, ৩ 35820. দেশী থেকে বিদেশীরা কাছে বেশী পপুলার *Labanya Lodge*, S ৬৫-১০০ D ১২৫-১৭৫; *Shanti H. Sun Temple, Banita, Sunrise L*—এসের কাছে S ৪৫-৮৫ D ৮০-১৫০ টাকায় মেলে। আর আছে *Youth Hostel, CH, PWD IB* ও অতি সাধারণ প্রাইভেট হোটেল কোণারকে। ম্যানেজারদের লিখে অগ্রিম বুক করা যায়। দুপুরের আহার্যও মেলে এই সব হোটেলে। *পাণ্ডুনিবাসের Gitanjali Restaurant*এ বহিরাগতদেরও আহার্য মেলে। থাকার দরকার হয় না। সকালের বাসে পুরী বা ভুবনেশ্বর থেকে এসে সিন্ডার কোণারক দেখে দিনান্তে বাসেই ফেরা যেতে পারে। ১৭-

৩০টায় ভুবনেশ্বর আর ১৯-০০টায় পুরীর শেষ বাসটি ছেড়ে যাচ্ছে কোণারক। তবে, নির্জনতা যারা ভালবাসেন তাদের কাছে কোণারকে অবস্থান আদরণীয় হবে।

কুরুম: কোণারকের ৮ কিমি দূরে কুরুম গ্রাম। সপ্তম ও অষ্টম শতকে বৌদ্ধ ও হিন্দুধর্মের যে মেলবন্ধন ঘটে তার নিদর্শন মিলেছে অখ্যাত গাঁও কুরুমে। তবে, হিউ-এন-সাঙ-এর (৬৩৪ খ্রি) ভ্রমণ বৃত্তান্তে বর্ষিষ্ণ জনপদ রূপে উল্লিখিত হয়েছে কুরুমের নাম। আবিষ্কার হয়েছে শিলালিপি, প্রাচীন মুদ্রা, বৌদ্ধবিহারের নানান কিছু ১৯৬৩ থেকে UGME স্কুলের মাটির তলায়। উৎসাহীরা কোণারক থেকে আটো বা গাড়িতে দেখে নিতে পারেন স্কুল লাগোয়া চালাঘরে শিক্ষক শ্রীব্রজ দাসের ব্যবস্থাপনায় এই অমূল্য রতন।

পুরী

নীলাচলনিবাসময় নিত্যময় পরমাখ্যানে
বলভদ্রসুভদ্রাভ্যাং জগন্নাথায় তে নমঃ।

ভ্রমণার্থী ও তীর্থযাত্রী দুইয়ের কাছেই পুরীর আকর্ষণ অদ্বিতীয়। ভারতের চার ধামের অন্যতম বঙ্গোপসাগরের পাড়ে পুরী। (বাকি তিন—বলীনাথ, দ্বারকা ও রামেশ্বরম।) পুরীতে মেলে প্রভু জগন্নাথ বরীতে স্নান করে দ্বারকার বেশ-ডুবা পরে পুরীতে অন্নভোগ সেবায় রামেশ্বরম শয়ন করেন। তীর্থযাত্রীদের জন্য রয়েছে ১২ শতকের বিশ্বখ্যাত বিষ্ণু তথা শ্রীকৃষ্ণের অবতাররূপী জগন্নাথদেবের মন্দির। তেমনই রয়েছে ভ্রমণার্থীদের জন্য মনোরম সমুদ্র সৈকত। তুলনা হয় না ভারতের *ব্রাইটন* পুরীর সমুদ্রের। অভীতের বাঙালি প্রভাব আজ ক্ষীয়মাণ হলেও বাঙালিয়ানা আছে শহরে। বাঙালির ভ্রমণে অঙ্গ হিসাবে সঙ্গও নিয়েছে পুরী। আধিক্যও তাই বাঙালি ট্যুরিস্টের পুরীতে। বাংলা ভাষাও সর্বজনগ্রাহ্য পুরীর সর্বত্র। আর, স্বর্ণদ্বার তথা সী বাঁচ রোড বাঙালির কাছে অধিক প্রিয়। তেমনই নবসাজে গড়ে ওঠা চক্রতীর্থ এলাকাও আজ জমজমাট পাঁচমিশেলির ভিড়ে। তবে, ধর্মই যাদের কর্ম তাদের উপস্থিতি মন্দির লাগোয়া গ্রান্ড রোডে। প্রবাদ, ৩ দিন ৩ রাত পুরী অবস্থানে স্বর্ণপ্রাপ্তি মেলে।



সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে কলকাতা থেকে পুরীর। ১৯-০০টায় ৪৪০৭ শ্রীজগন্নাথ এক্স, ২২-০০টায় ৪৪০৭ পুরী এক্স হাওড়া ছেড়ে পুরী যাচ্ছে যথাক্রমে ৬-০৫ ও ৮-২০এ। দৃষ্টান্ত ৫০০ কিমি। আবার ৬-১৫র যৌলী এক্স হাওড়া ছেড়ে ১৩-৩৫এ ভুবনেশ্বর পৌছে বিকেল চারটেয় পুরী চলা যেতে পারে বাসে। হাওড়া-পুরী প্যাসেঞ্জারও চলাছে এপথে। এছাড়া দিল্লী থেকে আসা উৎকল-কলিঙ্গ, ১ 36 দিন নীলাচল এক্স, সুপার ফাস্ট পুরুষোত্তম, 2 4 5 7 দিন নিউ দিল্লী-পুরী এক্সও পুরী যাচ্ছে যথাক্রমে ১-৩০, ১০-৫০, ২২-৫৫, ৬-২৫এ খড়াপুর ছেড়ে। আবার ফেরাইগামী ট্রেনে খুর্দা রোড নেমেও শাণা লাইনে ৬-০০, ১০-০০, ১২-৩০, ১৮-৩০, ১৮-৫০, ২১-২৫এর প্যাসেঞ্জারে ১২-৫০টার পুরী চলা যায়। আর পুরী ছাড়ে ১৮-৩০এ ৪৪০৮ হাওড়া এক্স ও ২১-০৫এ ৪৪১০ শ্রীজগন্নাথ এক্স। আবার পুরী থেকে ১০-

০০টায় হাওড়া গ্যাসেজারে ১২-১৫য় বা বাসে ভুবনেশ্বর পৌঁছেও ১৪-০৫য় বৌলী এলেক্সে ফেরা যেতে পারে ২৩-০৫য় হাওড়ায়। তেমনই ৯-০৫য় নীলাচল/সিন্ধী সুপার ফাস্ট এলেক্স পুরী ছেড়ে ১০-৪০য় ভুবনেশ্বর, ১৬-৪০য় খড়াপুর পৌঁছে এমু কোটে ২০-০০টায় চলা যেতে পারে হাওড়ায়। তবুও যেন যাতায়াতে বৌলী আকস্মিকগণ্য এপথে। পাটনা যাচ্ছে সোমবার ১৬-০০টায় ৪৫৪৭ পুরী-পাটনা বৈদ্যনাথধাম এলেক্স খড়াপুর-আসানসোল-মধুপুর-জনিদি-মোকামা হয়ে। পুরী ফেরে বুধবার ৯-০০টায় ৪৫৪০ পাটনা-পুরী এলেক্স একই পথে। ওখা যাচ্ছে প্রতি রবিবার ৬-২০য় ৪৫৪০ পুরী-ওখা এলেক্স। আমেদাবাদ যাচ্ছে ৬-২০য় ত্রিশাষ্টিকি এলেক্স। ত্রিপুরতি যাচ্ছে পুরী-তিরুপতি সাপ্তাহিক এলেক্স ৬-২০য় পুরী ছেড়ে বেরহামপুর/বিশাখাপতনম/বিজয়ওয়াড়া/গুডুর হয়ে। রিজার্ভেশনের ব্যবস্থানিয়ে রেলের সিটি বুকিং বসেছে বাস স্ট্যান্ডের অদূরে পুলিশ স্টেশনের বিপরীতে গ্রান্ড রোডে।

১০ দিনে ওড়িশা

হাওড়া থেকে চেন্নাই মেলে ভুবনেশ্বর/খুর্দা রোড হয়ে বেরহামপুর পৌঁছে গোপালপুর-অন-সী চলুন বাসে। ১ম দিনে গোপালপুর বেড়িয়ে ২য় দিনে বেরহামপুর ফিরে বাসে বাসে তত্তপালি বেড়িয়ে রাতের বিশ্রাম তত্তপালি বা বেরহামপুরে। ৩য় দিন সকালের বাসে রডা বা বালুগাঁও পৌঁছে চিক্কা বেড়িয়ে বিকালের ভাইজাগ এলেক্স বাস ধরে পুরী পৌঁছে যান। ৪র্থ দিন মন্দির দর্শন ও বিশ্রাম। ৫ম দিনে কোণারক ও ভুবনেশ্বর বেড়িয়ে নিন প্যাকেজ ট্যুরে। ৬ষ্ঠ দিন সাগরবেলা। ৭ম দিনে বাসে কটক পৌঁছে শহর দেখে নিন। ৮ম দিন সাগরবেলা বাসে যাজপুর টাউন গিয়ে দিনে দিনে যাজপুর বেড়িয়ে কেওনঝড়ের বাসে সিমলিপাল বা বালেশ্বর পৌঁছান বাসে বাসে। বালেশ্বর থেকে চাঁদীপুর পৌঁছে যান ৯ম দিনে। ১০ম দিনে কলকাতা।



কলকাতার শহীদ মিনার থেকে ১৬-০০ ও ১৭-৩০য় ওড়িশা সরকার (ORT), ৬-৩০য় তালতলা থেকে হিজলী কোঅপারেটিভের বাস যাচ্ছে ১৪ ঘটায় পুরী, ভাড়া ৯৪-১০৫। আর CSTC-র বাস যাচ্ছে ৬-০০ ও ৬-৩০টায় কলকাতা ছেড়ে ১৪ ঘটায়; পুরী থেকে ফেরে ৬-০০ ও ১৪-০০টায় CSTC.

আর পুরী থেকে ৫-৩০টায় ORT, ৯-০০টায় প্রাইভেট বাস যাচ্ছে ৪ ঘটায় চিক্কা পৌঁছে ৬ ঘটায় বেরহামপুর। ৮-৩০টায় ORT-র পুরী-রায়গড় বাস যাচ্ছে চিক্কা/বেরহামপুর/তত্তপালি হয়ে; রাউরকেলা যাচ্ছে ১৩-০০ ও ১৫-০০টায়; সন্ধ্যাপুর যাচ্ছে ৬-০০টায়; দুর্গাপুর যাচ্ছে ১৭-০০টায় SBSTC, ১৫-০০টায় প্রাইভেট; রাত্রিকালীন সার্ভিসেও প্রাইভেট বাস যাচ্ছে দুর্গাপুরে; টাটা যাচ্ছে ৫-৩০, ৭-৩০টায় প্রাইভেট; রাঁচি যাচ্ছে ৫-৩০টায় পুরী ছেড়ে ১৪ ঘটায়; এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজা তথা প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে পুরী থেকে।

আর যাচ্ছে ৬-৩০, ৮-৩০, ৯-৩০, ১০-৩০, ১২-৩০, ১৪-৩০, ১৫-৩০ ও ১৬-৩০টায় ছেড়ে ১ ঘটায় কোণারক; ট্রেকার ও ম্যাট্রাডোরও চলছে পুরী থেকে কোণারকে মুম্বাই; ভুবনেশ্বর যাচ্ছে ১২-৩০টায় ৫/৭ মিনিটের ব্যবধানে ৫-০০ থেকে ২০-৩০টায়; নন স্টপ সার্ভিসেও নানান ক্যাটার মিনিবাস, ডিলাক্স বাস-চলছে পুরী ও ভুবনেশ্বরের মাঝে। উচিতও হবে ভুবনেশ্বর যাতায়াতে ননস্টপ সার্ভিসে চলা। ২ ঘটায় এলেক্স, ৩ ঘটায় সাধারণ

বাস যাচ্ছে ভুবনেশ্বর হয়ে মুম্বাই কটক। বাস স্ট্যাণ্ডটি মাসির বাড়ি লাগেয়া। পুরীর নিকটতম বিমানবন্দর ভুবনেশ্বরে। আর শহরে চলছে রিকশা, অটো ও ট্যাক্সি।



বাঙালিদের কাছে শহরের পশ্চিমে বীচ রোড তথা স্বর্ণধার, আর অবাঙালিদের কাছে শহরের পূর্বে চক্রতীর্থ রোড আদৃত। হোটেলও গড়ে উঠেছে স্বর্ণধার ও চক্রতীর্থ দুই এলাকাকে ভর করে পুরীতে। পশ্চিমে মিশ্রমানের আর পূর্বে পাশ্চাত্য শৈলীতে গড়া ইকোনমিক ও তারকাখচিত হোটেল। আর মন্দিরের সামনে গ্রান্ড রোডে তীর্থযাত্রীদের জন্য ধরমশালায় অবস্থান শ্রীক্ষেত্রে। মরসুমও এদের অক্টোবর থেকে জানুয়ারি ও মে-জুন মাস—বাকি সময় অফ সীজন; রিবেট মেলে হোটলে।

রেল স্টেশন থেকে স্টেশন রোড/VIP রোড ধরে ২, বাস স্ট্যান্ড থেকে ৩, আর মন্দিরের ১ কিমি দূরে বীচকে ভর করে মেলা বসেছে হোটেলের Sea Beach Rd, Puri, STD 06762, PC-752001-এ। রিকশায় ৮-১০ টাকা আর আপনিও পৌঁছান ১ কিমি দীর্ঘ বীচ রোডে। বাঁয়ে আছড়ে পড়ছে বঙ্গোপসাগর, ডাইনে হোটেলের সারি। প্রথমেই নবসাজে নতুন বাড়িতে Sri Sri Balananda Tirthashram, ৩ 22561, DAB ৯০ ১৫০ TAB ১২৫ FAB ২০০, তিন মাস আগে থেকে বুকিং এদের। এর পিছে Motel Kingfisher, ৩ 23134, SAB ১৫০ DAB ২০০-৬০০; লাগোয়া Rameswari L। গলিপথে Gopal Ballav Rd—H Enclave, ৩ 23867, DAB ১৭৫ ৩০০ ৩৫০; কল বুকিং: হাওড়া মের্টর, 16 R N Mukherjee Rd, Cal-1, ৩ 2481806; L De Comfort, ৩ 23110, D ২২৫-৩৫০; H Rumi, SAB ১৫০ DAB ২৫০ TAB ৩০০, কল বুকিং: Rumi Tours, ৩ 273687. পুরী হোটেলের পিছে গলিপথে H Beach Bengal, ৩ 26623, DAB ১৫০-৫৫০, কল বুকিং: ৩ 2393273; পুরী ভ্রমণে প্রথমেই নজর কাড়ে পুরীর উচ্চতম Puri H, ৩ 23809, কেবল থাকা SAB ১২০ DAB ১৫০ ১৮০ ২৫০ ৩৮০ TAB ২০০ ৩২০ ৪৭০ FAB ২৫০ ২৭০ ৩৮০ ৫৫০ A/C D ৫০০ সুইট ৬৫০, ২৪ ঘটায় দিন এদের, গাড়িও মেলে রেল স্টেশনে পুরী হোটেলের—নিখরচায় যাতায়াত, ঘর প্রতি ৪০০ অগ্রিম পাঠিয়ে বুকিং-এর প্রথা; কল বুকিং: রবিবার ছাড়া ১০—১৯-০০টায় 16-K, Fern Rd, near Ballaghun Bus Stand, Cal-19, ৩ 4405040; SBI Officers' Holiday Home, Siddharth GH, OTDC-র Panthubhawan, ৩ 23526, গত কিছুকাল সাধারণের কাছে ভবনের ঘর রুদ্ধ; Swapan Puri; কৌশিন্যে অনন্য H Victoria Club, ৩ 22005, DAB ১৫০ ১৭০ ২৪০ ২৫০ ডিলাক্স ৩০০ ৩৫০ চার বেডের ঘর ৩০০ ৩৫০ ৪০০ A/C ৭০০; Sea View H, ৩ 23417, D ১০০-২২০, T ১৫০-২৫০; Sagarika H, ৩ 24063, SAB ১০০ ১২০ DAB ২০০-৩৫০ TAB ৩৫০ ৪০০ F ৩৫০ ৪০০। বামহাতি গলিপথে নবসাজে Grand H, ৩ 23962, DAB ১৫০-৪০০, কল বুকিং: 2383389; বিপরীতে Sunny H, Renuka H, SCB ৮০ DAB ১২৫-১৫০ FAB ২০০; গলিপথের নিখে H Tourist Home, ৩ 23030, DAB ২০০ ২৫০ ৩০০; গলিপথে পর পর দাঁড়িয়ে Sudha L, Pulin Kutir L, Shridevi L, Bengal L, Sagar Tirtha, Marina G.H. বীচ রোডেই H Ocean View, ৩ 23352, DAB ২৫০-৪০০ TAB ৩৫০-৪৫০; H Park,

৩ 23366, DAB ২০০-৪৫০, প্রতিটি ঘরে TV; নবসাজে H Pulin Puri, ৩ 22360, DAB ২০০-৩৯৫ ডিলাক্স ৪৫০-৫০০ FAB ৩৫০-৫৫০, কল বুকিং: ৪৮-এ ডঃ সুন্দরীমোহন এভিনিউ, কলকাতা-১৪, ৩ 2450578; লাগোয়া H Sonali, ৩ 23377, DAB ২৩০ ২৮০ ৪০০ ৪৫০ ৫৫০, DAB ৪০০ FAB ৫০০ সুইট ৬৫০, কল বুকিং: ৩ ম্যাসো লেন, ৩য় তল, ৩ 2484698, কল-১/9 Hindusthan Park, 1st floor, Cal-29, ৩ 4648368; নবসাজে H Sea Gull, ৩ 23618, DAB ৩৫০ ৬০০, কল বুকিং: হোটেল ডলফিন, 47 Bhupen Bose Avenue, Cal-4, ৩ 5550702; Neelachal L, ৩ 23387, SAB ২০০ DAB ৩০০ ৪৫০ ৫৫০ ৬০০ FAB ৭০০ A/c D ৭০০।

মহাভারত লজ, স্বর্গবার, D ২০০-৩৫০, অব: বঙ্গবী বস্ত্রালয়, opp Shyambazar Tram Depot, ৩ 5553557 (18—20-30 hr)। স্বর্গবার পেরিয়ে H Meenakshi, opp Burning Ghat, ৩ 22231, DAB ২৫০ FAB ৩৫০; Maa Bhawan: একই বাড়িতে Anandam G.H. ৩ 23390, DAB ২০০ ২৫০ ৩৫০, কল বুকিং: Trimurty Tours, 76-B, N S Rd; বিপরীতে H Mayur, ৩ 22195, DAB ১২৫-১৭৫; H Rohit, ৩ 23453, DAB ১৫০-৩২৫, কল বুকিং: Sujana Chatterjee ৩ 2426592; Bidish Ghar, অব: ৫ বি বি গান্ধী স্ট্রিট, কল-১২, ৩ 260833; বিপরীতে H Prince, ৩ 23890, DAB ৪০০ ৪৫০; Shantini-kan L; Sri Jagannath L, Kakatua Sweet, ৩ 23815, D ২০০; পাশে H Tulsi, D ২০০-৩২৫।

নবতম মেরিন ড্রাইভে সবুজের গালাচায় মোড়া লন, শিশু উদ্যান তথা সাগরপারের মনোরম পরিবেশে H New Sea Hawk, ৩ 23168, 23500, DAB ৩৫০ ৪৫০ FAB ৬৫০, কল বুকিং: ৪৮-এ ডঃ সুন্দরীমোহন এভিনিউ, লিফ্টন স্ট্রিট পোস্ট অফিসের বিপরীতে, কলকাতা-১৪, ৩ 2450578, H Rani, behind Haridas Math, ৩ 26425, DAB ২০০ ২৫০ ৩০০ ৩৫০ TAB ৩৫০ ৪০০, কল বুকিং: ৩ 4405040, চলার পথে মেরিন ড্রাইভে নতুন হচ্ছে H Heaven, ৩ 25151, DAB ২৫০ ৩৫০ ৫০০ TAB ৪০০ A/c ৬০০, কল বুকিং: Sanyal Associates, ৩ 5515811/5552852/3503612; Bangaluxmi H, ৩ 22711; Sagar Sangam, Sugar Nibas, H Sugar Purni, ৩ 23723—পাশাপাশি অবস্থান এদের। সাগর-বিলাসীদের কাছে আদরণীয় হলেও ঘরের ভাড়া এদের চাহিদার নিরিখে DAB ১৫০-৪৫০ টাকায় ঠারানামা করে। বঙ্গলক্ষ্মীতে ভিলা খরী ঘরও মেলে। তেমনিই হোটেল সাগর পারনীতে কুছু পেশ্যাল, ১ চিত্তরঞ্জন এভিনিউ, কল-৭২-এর হোটেল কুছুস-র

শাখা বসেছে। হোটেল রাজ-এও হোটেল কুছুস-এর শাখা আছে। স্বর্গবার থেকে ১ কিমি দক্ষিণে H Raj, ৩ 23783, DAB ২০০-৩৫০ ডিলাক্স ৪০০ A/c ৫৫০, কল বুকিং: 295545/6678036; অদূরে H Gajapati, ৩ 23724, D ১৫০-৩২৫; স্বর্গবার থেকে ২ কিমি দূরে শহরান্তে সাগরপারে Hans Group's H Hans Coro Palms, Swargadwar-1, ৩ 22638, A/c D ১২৫০; পথে পড়ে Birla GH, S ১০০ D ১৫০ ২৭৫ সুইট ৩৫০; কল বুকিং: ৭৮ সৈয়দ আমির আলি এভিনিউ, পার্ক পার্কস, ৩ 2477564.

আর আছে যাত্রীসেবার নানান ব্যবস্থা নিয়ে ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ স্বর্গবারে। এদের লাইব্রেরিও যাত্রীদের কাছে অব্যাহত। নানানখরী ঘরেরও ব্যবস্থা আছে সঙ্ঘের। বৃহত্তর বার্ধে ডোনেশন প্রণয় এদের ক্রিয়াকর্ম। তবুও থাকার জন্য স্বর্গবারে—পূরী হোটেল, ভিক্টোরিয়া ক্লাব হোটেল, নিউ সী-হক, পার্ক হোটেল, পুলিশ পুরী, সোনালী, নীলাচল লজ আজও বরণ্য।

আর রয়েছে রেল থেকে ২, বাস থেকে ২, স্বর্গবারেরও ২ কিমি দূরে Chakratirtha Rd, Puri-752002-এ—সাগরপারে রমণীয় পরিবেশে H Repose, ৩ 23376, DAB ৩৫০ ৪৫০ A/c ৫৫০, অব: BD-50, Sector-1, Salt Lake City, Cal-64, ৩ 3371709; লাগোয়া নবসাজে নতুন হোটেল *Mayfair Beach Resort, ৩ 24041, S ১২০০ D ১৩৫০ সুইট ১৬৫০ ২০০০, কল বুকিং: Mayfair Travel ৩ 299315; চলার পথে ডাইনে OTDC-র Panthanivus, ৩ 22562, DAB ২৫০ ৩৫০ ৪৫০ FR ৫০০ A/c D ৫৫০ সুইট ৮০০ ১০০০, অবস্থান মাছাঘাে অন্যতম; সমুদ্রও দৃশ্যমান নানান ঘর থেকে। এদের আংশিক বুকিং—ওড়িশা ট্যুরিজম, ৫৫ লেনিন সরণী-১৩, ৩ 2443653 থেকে; H Vijaya International, ৩ 23705, D ৪৫০ A/c D ৮০০ সুইট ১০০০; H Samudra, ৩ 22705, RIB 1; SAB একতলায় ১৮০ ২২৫ ডিঙলে ২২৫ ২৭৫ ৩৫০ DAB একতলায় ২৫০-৩৭৫ ডিঙলে ৩০০-৪৫০ A/c D ৫৫০, কল বুকিং: ট্রাস্ট হাউস, ৭ম তল, ৩২-এ, চিত্তরঞ্জন এভিনিউ, কল-১২ ৩ 267934; সমুদ্র দৃশ্যমান না হলেও ১৪ ঘরের ভিলাখরী H Sea Land, ৩ 23982, DAB ৩৫০ ৪০০ A/c ৫৫০ ৭৫০; অদূরে বামহাতি লেডি অসওয়্যারের বাসভবনে ১৯২৫এ প্রতিষ্ঠিত বিশাল লনে সমুদ্রমুখী প্রশস্ত ঘরের SE Railway H, ৩ 22063, AP-S ৫০০ D ৮০০ T ১০৫০ A/c ৬০০ ৯০০ ১২০০, অব: Chief Catering Services Manager, 14 Strand Rd, Cal-1, ৩ 2482936; বিপরীতে মনোরম পরিবেশে ৪৯ বেডের রাজকীয় Youth Hostel-এ বেড সাধারণ ৪০ সভা ২০, পুরুষ ও নারী পৃথক পৃথক রন্ধ, আহার্যও মেলে; অব: Tourist Officer বা

পূর্বাব সমুদ্রতীরে সগরপারে এতিথিবাসী হোটেল থেকে সমুদ্রকে উপভোগ করুন



হোটেল নীলাচল লজ (AC/NON AC ROOMS)

স্বর্গবার, গৌরান্ধ চক সী বিহু পুরী-752001

ফোন: (06752) 23387.

SPECIAL DISCOUNT IN OFF SEASON

গ্রুপ বুকিংএর বিশেষ ব্যবস্থা করা হয়।

Calcutta Booking Office : TRAVELS & TOURS MAKER (INDIA)

P45/1, C.I.T. Road (Sch-52) Calcutta-700014, Entally, ৩ 244 2051/2047 (Res)

Ananda Palli Road Bus Stop (Middle of Moulaali & Park Circus)

Air Ticket Booking also available (Domestic/ International)

এছাড়া আমরা গোপালপুর, দীবা, দাঙ্গিলিং, পেনিং, গ্যাংক এবং ভারতের সর্বত্র হোটেল বুকিং করিয়া থাকি।

Warden, © 22424; *H Holiday Resort*, © 22440, DAB ৪৩০ FAB ৬৩০, A/c D ৮৩০ সুইট ১২৩০, কল বুকিং: PK Gupta, 1st floor, Room-183, 25-A, Camac St, Cal-16, © 2406338 Resi © 5307704; ভিলা টাইপের বাড়িতে *Buy View H*, D ১৫০-২৭৫; *H Divine*, SAB ১৫০ DAB ২০০-৩২৫ ডব্লিউ বেড ৪০, কল বুকিং: G S Service, 7-C/2 Abinash Banerjee Rd-10; *H Love & Life*, © 24433, S ১০০-১৫০, D ১৫০-৩০০; *H Chhaya*, © 24524, DCB ১২৫ DAB ১৫০, কল বুকিং; Rohit Travels, 128 Akhil Mistry Lane, Cal-9, © 3505224; *H Shankar International*, © 23637, DCB ১০০-১৫০, DAB ২৫০-৪৫০, TAB ৬৫০-৬০০; বিপরীতে জীৱামক্ক মঠ। *H Sea Foam*; *H Gandhara*, © 24117, SCB ৮০ DCB ১০০ ১২৫ DAB ২০০-৪০০, A/c D ৪৫০-৬৫০; *H Sandpiper*, DAB ১২৫-২০০; *Sun Row Cottage*, D ১২৫-২২৫; *H Apsara*; *H Holiday Inn*, © 23782, DAB ২২৫ ২৫০ ৩৫০, সমুদ্রমুখী ২৭৫ ৪০০; *H Tanuja*; *Travellers Inn*, DAB ১২৫-১৭৫; মহারাজার অতীতের প্রাসাদে *Hotel Z*, © 22554, সমুদ্রমুখী প্রশস্ত ঘর, DCB ২০০ DAB ৩০০, সান বাথেরও সুব্যবস্থা আছে ছাদে; *Derby H*; *Nundy Cottage*; *L Sagar Saikat*; *H Buy-La*; নবমত *H Akash International*, © 24204, DAB ১৫০, TAB ২০০; *H Golden Palace*, D ১৬০-২৫০; ফ্যামিলি চালিত *H Sri Balaji* ছাড়াও নানান। অবস্থানও করেন মূলত বিশেষী ইকোনমিক টুরিস্ট এইসব হোটেলে। সমুদ্রকে নিবিড়ভাবে পেতে উচিত হবে—হোটেল রিপোজ, পাশনিবাস, এস ই রেলওয়ে হোটেল, হলিডে রিসর্ট, হোটেল সমুদ্র, হোটেল বিজয়া, শঙ্কর ইন্টারন্যাশনাল, হোটেল জেড, হোটেল হলিডে ইন্, হোটেল আকাশকে নির্বাচন করা। পরিবেশও মনোরম প্রতিটা হোটেলের।

আর আছে বাস স্ট্যান্ড অর্থাৎ মাসির বাড়ি থেকে জগন্নাথ মন্দিরমুখী Grand Rd, Puri-752002-এ—*H Paradise*, © 23711, DAB ১৫০ ২০০ A/c D ৩৫০ চার বেডের ঘর ৪০০; বিপরীতে গলিপথে *H Luxmi*, *H Basanti*, DAB ১২৫-২২৫ FR ২২৫; *H Shreeram*, near Bus Stand; *Dharmajyoti L*, *Bhabani L*, *Sri Lokenath L*, *H Subhadra*, R1B1, SAB ৬০-৮৫ DAB ১০০-১৭৫; *Neelachal L*, *Niladri L*, *Luxmi L*, *H Jyoti*, *Birla G H*, জীৱাম, জগন্নাথ, শর্মা, গণেশ, ভারতী, সাগর, সূর্য, সারদা, বেবি, সবিতা লজ ছাড়াও নানান। অতি সাধারণ মানের এই লজগুলিতে S ৪০-৬৫ D ৬০-১২৫ টাকায় মেলে। তবে রথযাত্রাকালে এসের রোট যুক্তিকর্কের বাইরে বাড়ে। দেব-রথও চলে ২ কিমি দীর্ঘ গ্রান্ড রোড ধরে হোটেলগুলির মাঝ দিয়ে।

আর আছে সারা শহরময় ছড়িয়ে—ITDC-র **H Nilachal Ashok*, VIP Rd-1, A5R1, A/c D ২০০০ সুইট ২৩৫ মার্চ-সেপ্টেম্বর ১৬০০; *H Sun-N-Beach*, Balia Panda, A/c D ৬৫০; *Tourist Information cum Rest House-Govt of Bihar*, Station Rd; *Mohini L*, Station Rd; *Janata L*, Station Rd, © 23353, DAB ১৮০ ২৫০ চার বেডের ঘর ৩০০; সামান্য বেডে *Lee Garden*; বিপরীতে *Shamruck L*; শহর থেকে দূরে নিরালা নির্জনে মনোরম পরিবেশে **Toshali Sands Resort*, Puri-Konarak Marine Drive, Puri 8,

Konarak 23, Puri-752002, © 22888, Fax: 06752-23899, D কন্টেক্স ১৬০০ ঘর ২১০০ ভিলা ২৭০০ সুইট ৩০০০ ৪০০০ ৫০০০; বুকিং: কলকাতা © 290606, দিল্লী © 6480783, মুম্বাই © 6911910, ভুবনেশ্বর © 415074.

Govt of WB Youth Services-এর *Youth Hostel*-ও হয়েছে মন্দির ও সমুদ্রের মাঝ দূরত্বে Temple Rd-এ DAB ৬০/৩০ বেড ২৫/২০; কল বুকিং: © 2480626 ছাড়াও নানান হোটেল পুরীতে।

ধরমাশালাও আছে নানান পুরীতে। মন্দিরের সামনে Grand Road-এ—*Bagala Yatri Niwas*, *Bagadia Dharamshala*, *Doodwalla Dharamshala*, *Goenka Dharamshala*; Dolavedi-তে: *Kothari*, *Muljee*, *Danjee Muljee*; Mochi Sahi-তে—*Khenku Dharamshala* ছাড়াও নানান। এসের কাছে সামান্য সার্ভিস চার্জে থাকার ঘর মেলে।



পুরীর আর এক আকর্ষণ নানান বাণিজ্যিক সংস্থার সহস্রাধিক *Holiday Home*. অবস্থান ও ব্যবস্থাপনায় প্রতিটি উন্মোখ না হলেও স্বল্প মূল্যে ঘর নিয়ে থেকে নিজ ব্যবস্থায় রান্না করার আনুষঙ্গিক বাসনপত্র মেলে। আবার ভাড়াতেও মেলে বিছানাপত্র, বাসন-কোসন মায় কেরোসিন স্টোভ/গ্যাস স্বর্ণঘরের দোকানপাটে। বাঁচ রোড তথা স্বর্ণঘরে—পুরী হোটেলের সন্নিবিষ্ট *SBI Officers' H H-Akankhya*, Strand Rd Main Branch, Cal-1; সোনালী হোটেল লাগোয়া বাড়িতে একতলায়—*The Shipping Corp of India*, 13 Strand Rd, Cal-1, © 2482354; একই বাড়ির দ্বিতলে *Jessop & Co Ltd*, 63 NS Rd-1, © 2432041 (Ext: RPd); দ্বিতলের পিছনে *State Bank of Mysore SRC*, 1&2 Old Court House Corner-1, © 2200987; *Denu Bank Employees Co-operative Cr Society*, 11 Brabourne Rd-1, © 2421113. পাশেই *Sea View Hotel*-এ *Steel Authority of India Employees' Co-operative Cr Society*, 2 Fairlie Place-1, © 2211458; *Brook Bond Co-operative Credit Society*, 9 Shakespeare Sarani-71, © 2428331. গ্রান্ড হোটেলের একতলায় *New Barrackpur Municipality* ও CMDA-এর হলিডে হোম বসেছে। বিদূর মন্দিরের গলিপথে একান্ত-য় *Martin Burn Employees Co-operative Cr Society*, 12 Mission Row-1, © 2203371; *Burn Standard Employee Co-operative Cr Society*, 20 Nityadhan Mukherjee Rd, Howrah-711101, © 6602601 Extn 61; *UBI—Alambazar Branch*; একই বাড়িতে অবস্থান জয়ীর। *Canara Bank Staff Recreation Club*, 25 Princep St, Cal-73, © 275306—স্বর্ণঘার রোডে *Sriniketan/Swetlaya/Saikat/Swargabela* ৪টি Unit এসের।

গৌড়বাটশাখী বাজারকে ঘিরে কল্যাণীতে—*Calcutta Municipal Corp Cr Society*, 1 Hogg St, Cal-13, © 2443471 (Ext 542); *The Premier Co-operative Cr Society Ltd*, C/o, Mackinnon Mackenzie & Co Ltd, 16 Strand Rd, Cal-1, © 2200480; *Metro Railway Men's Union*, 33/1 Chowringhee Rd, Cal-16, © 291152 Ext 5153; *Cycle Corp of India Office Employees Co-operative Cr Society Ltd*, 1 Middleton St, 5th floor, Cal-

71, @ 2474130; *UBI Employees Recreation Club*, 67-A, NS Bose Rd, Cal-1, @ 2431715; *UBI Staff Recreation Club*, 9 Old Post Office, Cal-1, @ 2483819; *Punjab and Sind Bank Staff Recreation Club*, 73 Ashutosh Mukherjee Rd, Cal-25, @ 4752003; *Bank of India Employees Recreation Club*, 8/9 Bankim Chatterjee St, Cal-12, @ 2415179; *SBI Staff Association-Zonal Office*, 11 Shakespeare Sarani, Cal-71, @ 2421140.

রাজ হোটেলে সামনে গজপতিতে—*Bank of Baroda Employees Co-operative*, 4 India Exchange Place, Cal-1, @ 2201457; *Bank of Baroda Employees Co-operative*, 27/3 Grand Trunk Rd (South), Howrah-711101, @ 687430; *Bank of Baroda Employees Cultural Wings*, 3B, Camac St, Cal-16, @ 291720; *Corporation Bank Employees Union Cultural Circle*, 61 Rashbehari Avenue, Cal-26, @ 4642692; *The Bank of Rajasthan Employees Union*, 25 Strand Rd, Cal-1, @ 254147.

রাজ হোটেলের কাছে বিধবা আশ্রমের পাশে কুটিয়া নিবাস-এ—*SBI Staff Co-operative Cr Society*, 8 Old Post Office St, Cal-1, @ 2485075; *SBI Staff Association Commercial Branch*, 24 Park St, Cal-16, @ 295454; *SBI Foreign Dept Staff Recreation Club*, 43 Chowringhee Rd (10th floor), Cal-71, @ 2478781; *Union Carbide Employees Recreation Club*, Jeebandweep (5th floor), 1 Middleton St, Cal-71, @ 2473950.

আম্বে কালীধাম-এ—*Bata Sports Club*, 6-A, S N Banerjee Rd, Cal-13; *Saha Institute of Nuclear Physics*, 1-AF, Salt Lake City, Cal-64, @ 3370571; *UBI Employees Union*, 4 N C Dutta Sarani, Cal-1; *UBI Employees*, 39 Lenin Sarani, Cal-13, @ 2442136; *Indian Bank Employees Union*, 3/1 R N Mukherjee Rd, Cal-1, @ 2207675; *National Bank for Agriculture Employees' H H*, 6 Royed St, Cal-16, @ 295264.

এছাড়া Gaur Badshahi-কে ভর করে হলিডে হোম গড়েছে—*Allahabad Bank Employees' Recreation Welfare Society*, 7 Red Cross Place, Cal-1, @ 2482823; *UBI Employees' Association*, 16 Old Court House St, Cal-1, 4th floor (D D Department), @ 2487471-Ext 207/211; *Indian Overseas Bank Employees' Co-operative Cr Society*, P-35 India Exchange Place, Cal-1, @ 2254055; *Indian Bank Employees' Co-operative*, 3/1 R N Mukherjee Rd, Cal-1, @ 2484325; *RBI Supervisors' Staff Cooperative Society*, Reserve Bank of India, Cal, 7th floor, @ 2208331-Ext 167; *RBI Workers' Co-operative Cr Society*, Reserve Bank of India, 3rd floor, @ 2208331-Ext: PDO; *Hongkong & Shanghai Bank Recreation Club*, 31 B B D Bag-1, @ 2486363; *State Bank of Saurashtra*, 9 Trailokya Maharaj (Brabourne) Rd-1, @ 2424965; *State Bank of Mysore Staff Recreation Club*, 24-A, Shakespeare Sarani-17, @ 2472528; *SBI*

Cultural Club, 9-B, Esplanade East-69, @ 2028670; *Central Bank Staff Recreation Club*, 11 Bhupen Bose Avenue-4, @ 5556143; *Shibpur Co-operative Bank*, 173 Shibpur Rd-711102, @ 6602058; *Bank of India Employees' Co-operative Cr Society*, 23A-B, NS Rd-1, @ 2202302 Ext 208; *Bank of Baroda Staff Cultural Seminar*, 8-C, Maharshi Debendra Rd-7, @ 2396397; *Bank of Baroda Staff Recreation Club*, Station Rd, Sodepur, @ 5531589; *Bank of India Employees' Recreation Club*, 3 C R Avenue-72, @ 270996; *Vijaya Bank Employees' Association*, 25 NS Rd-1, @ 2200065; *Kasundia Co-operative Bank*, 122/1, Swami Vivekananda Rd, Howrah-1, @ 6602654; *Konnagar Co-operative Bank*, 66 G T Rd (West), Konnagar, @ 6630669; *UBI*, 4-A, Ekdalia Place-19, @ 4406054; *UBI Staff Welfare & Cultural Society*, Hazra Morh-26, @ 4751006; *UBI Employees' Welfare Society*, 26 Hindusthan Park-29, @ 4643416; *UBI Staff Recreation Club*, 6-A, S N Banerjee Rd-13, @ 2441093; *UBI Employees' Association*, 16 Old Court House St-1, @ 2487471; *UBI Employees' Recreation Committee*, 32/1 Girish Ghosh Avenue-3, @ 5553431; *UBI Employees' Congress*, 140 Bidhan Sarani-4, @ 5554130; *UBI Club*, 203/1/1 Bidhan Sarani-6, @ 2414557; *Hooghly River Waterways Co-operative*, 4/5 Rishi Bankim Ch St, Howrah Stn Ferryghat; *Hindusthan Fertilizer Corp'n Mktg Divn Recreation Club*, 41 Chowringhee Rd-71, @ 291151; *Housing Board Recreation Club*, 105 S N Banerjee Rd-14; *Lovelock & Lewes Employees' Cr Society*, 4 Lyons Range-1, @ 2204794.

এছাড়াও হলিডে হোম হয়েছে আরও অল্প স্বর্ণধারকে বাড়ি করে—*Punjab and Sind Bank Staff Federation*, IBD Branch, 14/15 Old Court House St-1, @ 2482276; *Cupexil Recreation Club*, 14/1B, Ezra St-1, @ 2258216 at Sri Sri Maa; *UCO Bank Staff Club*, 10 Brabourne Rd-1, 2nd floor, @ 2254120-28 Ext 234 at Bengal Lodge; *Mancha Bharati*, *Bank of India*, 23/A, N S Bose Rd-1, @ 2202301 at Sea View Hotel; *UCO Bank Office Congress*, 16-A, Brabourne Rd-1, @ 251778; *Bank of Baroda Recreation Club*, 8 India Exchange Place-1, @ 2422611; *Standard Chartered Bank Recreation Club*, 4 N S Rd-1, @ 2206902; *Indian Overseas Bank*, P-35 India Exchange Place-1, @ 2253187; *Central Bank of India Employees' Association*, 33 NS Rd-1, @ 2208925 at Sagarbela; *Indian Bank Employees' Co-operative Cr Society*, 3/1 R N Mukherjee Rd-1, @ 2487903; *PNB Staff Cultural Association*, 18-A, Brabourne Rd-1, @ 252046; *Grindlays Bank Employees' Co-operative Cr Society*, 6 Church Lane-1, at Taradham; *Grindlays Bank Employees' Staff Benefit Trust Fund*, 19 NS Rd-1; *Dena*

Bank Employees' Association, 16/A, Brabourne Rd-1, ☎ 251387, opp Tourist Home; *UBI Employees' Co-operative Cr Society*, 15 India Exchange Place-1, ☎ 2206867 at Karar Ashram Lane; *Allahabad Bank*, 213/A, B B Ganguly St-12, ☎ 274915; *Engineers' Export Promotion Council (EEPC)*, 14/1B, Ezra St-1, ☎ 250442—near Balisahi H S School; *Calcutta Stock Exchange Recreation Centre*, 7 Lyons Range-1, ☎ 2208636 at Taradham; *UBI Employees' Co-operative*, 4 N C Dutta Sarani-1, ☎ 2200841 at VIP Rd; *Union Jute Staff Recreation Club*, Chartered Bank Building, 4 N S Rd-1, ☎ 2201149; *Standard Chartered Bank Cooperative Society*, 4 N S Rd-1, ☎ 2206902; *Bank of India*, 111 C R Avenue-73, ☎ 277724 at Binodan; *Allahabad Bank Recreation Club*, 14 India Exchange Place-1, ☎ 2208375—beside Sagarika Hotel; *Allahabad Bank Workers Union*, 14 India Exchange Place-1, ☎ 2208375—beside New Sea Hawk Hotel; *All India Allahabad Bank National Employees' Federation*, 14 India Exchange Place-1, ☎ 2208375; *All India Allahabad Bank (NCBE)*, 14 India Exchange Place-1, ☎ 2208375; *NJMC Employees' Recreation Club*, Chartered Bank Building, 3rd floor, 4 N S Rd-1, ☎ 2206127; *Friends Association*—UBI, 235/2 B B Ganguly St-12; *Union Bank Employees' Cr Society*, 38 Strand Rd-1, 15 India Exchange Place-1, ☎ 2206868; *Syndicate Bank Staff Recreation Club*, 3-B, Lalbazar St-1, ☎ 2486055; *Anahra Bank Employees' Forum*, 14/1B, Ezra St-1, ☎ 250352; *Export Inspection Council Recreation Club*, 14/1B, Ezra St-1, 7th floor, at Nirikshan Bhawan, CT Rd; *Punjab & Sind Bank Employees' Union*, 14/15 Old Court House St-1, ☎ 2485867; *R B Employees' Co-operative Cr Society*, Reserve Bank of India, B B D Bag-1—behind Sonali Hotel; *Indian Aluminium Employees' Co-operative Cr Society*, 39 G T Rd, Belur, Howrah-12, (৩৬ ও শনিবার ছাড়া ৯-৩০—১০-৩০ ও ১৪—১৫-৩০); *Bhadreswar Municipality*, Bhadreswar, Hooghly; *Shaw Wallace Institute*, 4 Bhandakul St-1, ☎ 2485601; *Gillanders' Co-operative Cr Society*, 8 NS Rd-1, ☎ 2202331; *Tea Board H H Committee*, 14 Brabourne Rd-1, ☎ 251411-Ext License Section; *Calcutta Tram Co Recreation Club*, 12 R N Mukherjee Rd-1, ☎ 2482681—behind Bharat Sevashram; *Dunlop Recreation Club*, 57-B, Mirza Galib St-16, ☎ 294507; *Duncans Bros Employees' Union*, 31 NS Rd-1, ☎ 2206831-Ext 139; *Nilhat Recreation Club*, 11 R N Mukherjee Rd-1, ☎ 2486201; *Panihati Municipality*, Panihati, 24 Parganas-N, ☎ 5532909; *Bakora Steel Employees' Cr Society*, 13 Camac St-17, ☎ 2478351; *Mahindra & Mahindra Employees' Cr*

Society, 31 J L Nehru Rd-16, ☎ 298421; *Britannia Biscuit Co Employees' Union*, 15 Taratala Rd-83, ☎ 4784850; *LIC Employees' Cr Society*, Metropolitan Building, 7 J L Nehru Rd-13; *Siemens Employees' Cr Society*, 6 Nandalal Bose Sarani-71, ☎ 2478374 at Anandamela, Beach Rd; *Howrah Municipal Corporation Recreation Club*, 4 M G Rd, Howrah-1, ☎ 6603123; *Canara Bank Staff Recreation Club*, 27 Brabourne Rd-1, ☎ 2427105 (৪টি ইউনিট এদের); *Bank of Baroda Zonal Staff Recreation Club*, 2/7 Sarat Bose Rd-20, ☎ 4757255; *Bantra Co-operative Bank*, 10 Narasinha Dutta Rd, Howrah-1; *PNB Employees' Union*, 18-A, Brabourne Rd-1; *SBI*—Tata Centre; *UBI*—College St; *UBI*—Garpar; *UBI*—Cossipur; *UBI*—Santoshpur; *SBI*—Tata Centre; *Haldia Port Authority*; *SBI*—Cossipur; *WBS Electricity Board*; *PNB Employees' Union*, 6 Princep St-72, ☎ 272705; *Aajkal Recreation Club*, 96 Raja Rammohan Sarani-9, ☎ 3509803; ছাড়াও নানান।

চক্রতীর্থ রোডে—Dunlop, S E Railway, Allahabad Bank- Main, PNB-Main, Tisco, HMV, Allahabad Bank-Foreign Exchange, The New India Mutual Benefit Society, Eveready House H H, Nicco. গ্রান্ড রোডে—Indian Air Lines, CESC Credit Society-ছাড়াও নানান। বুকিং এদের মূল দপ্তর থেকে।

তবে, সমুদ্রকে নিবিড় করে পেতে Jessop (১ নম্বর ঘরটি রমণীয়)—63 NS Rd, The Shipping Corp-13 Strand Rd, Burn Standard—Howrah-1, Martin Burn-Mission Row, SBI Officers'-Akankhya, Aajkal, UBI-HO, Indian Aluminium Employee's Co-operative, Indian Oxygen Holiday Home-এর আকর্ষণ সর্বগ্রাে। এদের কাছে ঘর নিয়ে থেকে নিজ ব্যবস্থায় রান্না বা স্বর্ণবারে স্ট্রোপদী, বিদেশ ঘর, আনন্দমেলা হোটেল খাবার ব্যবস্থা করা যায়। তেমনই সোনালী হোটেলের রেস্টুরেন্ট রুটিরও পুরী ভ্রমণাথীদের আহার পরিষেবায় যথেষ্ট খ্যাত। এদের শীতাতপ Classic-এর মোগলাই-চীনা-কন্টিনেন্টাল সেও যেন তারকাসম। আর চক্রতীর্থে আছে Xanadu, Sumbhu Restaurant, Mickey Mouse Restaurant; শব্দর হোটেলের Om Restaurant; গ্রান্ড রোডে Jagannath South Indian Restaurant; পুরী হোটেলের শিখের চীনা পারিবারিক রেস্টুরেন্ট Chung Wah পুরীতে। তেমনই S E Railway H, Toshali Sands, Hans Coco Palms—এদেরও যথেষ্ট প্রশস্তি দেশী-বিদেশী আহার্য পরিষেবায়।

কলডাকটেড ট্রার স্বর্ণবার থেকে নানান প্রাইভেট কোম্পানি কন্ডাকটেড ট্রারে সোমবার ছাড়া প্রতিদিন সুপার লাঞ্চারি ভিডিও কোচে ৯০-৯৫ টাকায় ২৮৬ কিমি পরিক্রমায় চন্দ্রভাগা সাগরবেলা, কোশারক, বৌলী, ভুবনেশ্বর, খণ্ডগিরি, উদয়গিরি, নন্দনকানন, সাকীগোপাল বেড়িয়ে আনে। সোম, বুধ, শুক্র চিকায় বাচ্ছে এরা ১০০-১২০ টাকায়। তবে, N N Mukherjee & Co, Chakratirtha Rd, ☎ 22988/23124; Konarak Travels, Sea Beach; Mahapatra Travels, 12n Rd-এদের নিজস্ব গাড়ি, ব্যবস্থাপনা ভালই। আর OTDC পাহ্ণবন থেকে সকাল ৬-

৩০টায় গিয়ে ১৮-৩০টায় ফেরে কোণারক ও ডুবনেশ্বর বেড়িয়ে। ভাড়া ৩৫ সিল্টের ২২২ সুপার লাক্সারি ডিভিও কোচে ১০০ সুপার ডিলাক্স ১২০ A/c বাসে ১৫০ আর সেম, বৃথ, ওরু সকাল ৬-৩০টায় ১০০ টাকায় চিক্কায়া (সাতপড়া) যাচ্ছে OTDC. ফেরে ১৯-০০টায়। মঙ্গল, বৃহস্পতি ও রবিবার ৬-৩০টায় বিশেষ ট্যুরে নন্দনকানন যাচ্ছে ১০০ টাকায় এরা। বুকিং: Tourist Officer, Orissa Tourism, Station Rd, 22664/Manager, Panthabhan, 23526/Manager, Panthanivas, 22740/Youth Hostel, 22424/Rail Stn Tourist Counter, 23536. নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেনে এদের কাছে।

ভারতীয় সামুদ্রিক শহরগুলির মধ্যে পুরী অন্যতম। যেমন উত্তাল তেমনই দুর্দম পুরীর সমুদ্র। ক্ষণে ক্ষণে প্রলয়ঙ্কর গর্জনে আছড়ে পড়ছে অর্ধ চক্রাকার বসোপ-সাগর। নীল জল, ক্ষণে ক্ষণে ঢেউ এসে সোনালী বালুকা-বেলায় সফেদ ফেনা রেখে ছুটে পালায় ক্ষণিকে। তারই সঙ্গে পাল্লা দিয়ে জনকোলাহলও চলে ভোর থেকে গভীর রাতে সাগরবেলায়। অগভীর সমুদ্র—স্নান পর্ব শুরু হয় সকাল থেকেই ভ্রমণার্থীদের। অনভিজ্ঞদের স্নান-সহযোগী অর্থাৎ নুলিয়াসঙ্গে নেওয়া ভাল। তবে ঢেউ-এর সাথে সাথে তাল রেখেও শরীরাটা দুলিয়ে দিয়ে অতি সহজেই উপভোগ করা যায় সমুদ্রস্নান। আবার রবারের টিউব নিয়েও নামা যেতে পারে জলে। তবুও যেন বাঁধাধরা ছক ছাড়াও বেশ কিছুটা খামখেয়ালি পুরীর সমুদ্র। তাই নাট্যনাট্যবুও হয়ে পড়েন বারবার স্নানার্থী। পুরীর বীচের আর এক আকর্ষণ তার বিনুক। সোনালী বালুকাবেলায় বিনুক সংগ্রহের নেশায় মেতে ওঠেন আবালবৃদ্ধবলিগ। পুরীর সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তের আকর্ষণও অনবীকার্য। তেমনই আকর্ষণ আছে প্রত্যুষে ও সন্ধ্যাে নির্মল বায়ু সেবনের পুরীর বীচে। বৈচিত্র্য আছে পুরীর জেলে নৌকারও। ৩-৪ খণ্ড কাঠের ঢুকুরো গুঁজে-গেঁথে ভেসে পড়ে এরা গভীর সমুদ্রে। নৌকা চলে পাখির মতো ঢেউয়ে উড়ে।

পুরীর সমুদ্রে স্বর্গদ্বারেই প্রথম স্নান করার প্রথা। পূণ্যতীর্থও এই স্বর্গদ্বার। শ্রীচৈতন্যদেবও প্রথম স্নান করেন স্বর্গদ্বারে। লীনও হন ব্রহ্মা এই নীলাচলেই মহাপ্রভু। প্রবাদ, দৈববাণী মতে নীলমাধবের মূর্তি হবে মালবদেশে—তবে, শিলায় নয় দারুতে। দারুও আসে ভেসে সমুদ্রের জলে চক্রতীর্থে। আর সেই দারু থেকেই তৈরি হয় জগন্নাথদেবের বিগ্রহ।

স্বর্গদ্বার অর্থাৎ স্বর্গের দরজা, লাগোয়া কানপাড়া হনুমান/বিদুরপুরী/মহোদধি/সুদামাপুরী। শোনা যায়, বীর হনুমান আজও কান পেতে রয়েছে প্রলয়ঙ্করী সমুদ্রের গতিবিধি নজরে রাখতে। বিদুরের স্মৃতি বিজড়িত গলিপথের বিদুরপুরীতে আজও শাক ও খুদের প্রসাদ মেলে। তেমনই আছে নানান নারায়ণ শিলা বিদুরপুরীতে। আর মহোদধি হলো স্বর্গদ্বারসংলগ্ন সমুদ্র অংশটুকু। এখানে তীর্থযাত্রীরা শাস্ত্রমতে স্নান করেন। পূণ্যলাভের সাথে অতীত পাপের

নাশ হয় স্বর্গদ্বারের সমুদ্র স্নানে। সুদামাপুরীতে পাতাল-গঙ্গা, গুপ্ততীর্থের অবস্থান পাশাপাশি। আর হয়েছে নতুন করে—শঙ্করাচার্যের প্রতিষ্ঠিত ৯ শতকের গোবর্ধন মঠ—মঠের লাইব্রেরির সংগ্রহ উল্লেখ্য; নানক মঠ, কবীর মঠ, শঙ্করাচার্য মঠ, কারার আশ্রম, আনন্দময়ী মায়ের আশ্রম, শ্রীঅরবিন্দ আশ্রম, শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন, শ্রীঅনুকূল ঠাকুরের আশ্রম, গৌড়ীয় মঠ, নীলাচল আশ্রম, যতিরাজ মঠ, টোটা গোপীনাথ হাঁটা দূরত্রে পুরীতে। নামান্তরও ঘটেছে বার বার—নীলাগিরি, নীলাদ্রি, নীলাচল, পুরুষোত্তম, শঙ্খ-ক্ষেত্র, শ্রীক্ষেত্র, জগন্নাথ-ধাম সর্বশেষে পুরী।

পুরীর আর এক আকর্ষণ জগন্নাথ মন্দির বা শ্রীক্ষেত্র। পৌরাণিক যুগে সূর্যবংশীয় রাজা অবন্তীরাজ ইন্দ্রদ্যুম্ন স্বপ্নান্বিত হয়ে মন্দির গড়েন। সেটি ধ্বংস পেতে রাজা যযাতি কেশরী মন্দির গড়েন নতুন করে। আর ব্রাহ্মণ নিধনের প্রায়শ্চিত্ত স্বরূপ রাজা অনঙ্গভট্টমদেব ১১৯৮এ গড়েন আজকের এই মন্দির। ৫ লক্ষ তোলা সোনা খরচ হয় মন্দির গড়তে। তারও পরে গজপতি রাজাদের অর্থানুকূলে এর শ্রীবৃদ্ধি। ওড়িশার প্রতিটি দেবমন্দির একই আঙ্গিকে গড়ে উঠেছে—বিমান, নাটমন্দির, ভোগমন্দির, জগমোহন। ৬৭০x৬৪০ ফুট ব্যাপ্ত জগন্নাথ মন্দির ২০ থেকে ২৪ ফুট উঁচু প্রাচীরে ঘেরা। চারপাশে ৪ প্রবেশদ্বার—সিংহদ্বার, হস্তীদ্বার, অশ্বদ্বার ও খাঞ্জাদ্বার। পূর্ববাণী মূল প্রবেশ তোরণ, সিংহদ্বারের সামনে কোণারক থেকে আনা ৩৪ ফুট উঁচু ক্রোয়াইট পাথরের অরুণা স্তম্ভ, শিরে তার গরুড়। গুপ্তরের দুই সিংহমশাই গেট পাহারায় রত। তেমনই দক্ষিণ, পশ্চিম আর উত্তরের গেটে ঘোড়া, বাঘ ও হাতির অবস্থান। ২২টি ধাপ উঠে মন্দির প্রাঙ্গণ। মন্দিরের প্রাঙ্গণও ২২ ফুট উঁচু। আবার প্রাচীর ৪২৪x৩১৫ ফুট আয়তাকারের। এরও তোরণ ৪টি। পূর্বে রয়েছে ভোগমন্দির ৫৮x৫৬ ফুটের। তোরণে নবগ্রহের মূর্তি। নাটমন্দিরটি দৈর্ঘ্যে ও প্রস্থে ৮০ ফুট। পশ্চিমে জগমোহন ৮০x১২০ ফুটের। আর তার পিছনে বিমান বা বড় দেউল। এটিরও দৈর্ঘ্য ও প্রস্থ দুই-ই ৮০ ফুট, উচ্চতা ১৯২ ফুট। দ্বিতীয় প্রাচীর পেছতেই হিন্দু দেব-দেবীর অভিনব সমাবেশ ঘটেছে। কাশীর বিষ্ণুনাথ, রামচন্দ্র, জয়-বিজয়, বদরীনারায়ণ, রাধাকৃষ্ণ, বটকৃষ্ণ, মঙ্গলাদেবী, মার্কণ্ডেশ্বর, বটেশ্বর লিঙ্গ, ইন্দ্রাগ্নি, সূর্যদেব, ক্ষেত্রপাল, নরসিংহদেব, গণেশ, ভূবনীকাক, বলরাম পত্নী তান্ত্রিক দেবী বিমলা, জগন্নাথ পত্নী লক্ষ্মী, সর্বমঙ্গলা, কালী, সূর্যনারায়ণ, পাতালেশ্বর, শীতলামাধব, বৃদ্ধদেব, গৌরাস্ক-দেব অর্থাৎ সর্বতীর্থের সমন্বয় ঘটেছে শ্রীক্ষেত্রে। আর রয়েছে নাটমন্দিরের শেষে স্তম্ভাংশ যাতে মহাপ্রভু শ্রীচৈতন্য হাত রেখে বিভোর হতেন জগন্নাথদেবে। ভক্তজনরা আজও পরশ নেন শ্রীচৈতন্যর হাতের ছাপের স্তম্ভে। জন-শ্রুতি লীনও হন দেবসনে শ্রীচৈতন্য। বিভিন্ন ভঙ্গিমায় নর-নারীর শূভার মূর্তিও রূপ পেয়েছে মন্দির গায়ে। মন্দিরের

কালকর্ষ ও দেব-দেবীর সমাবেশ দুই-ই আকর্ষণ করে পর্যটকদের। মন্দিরের অন্দরের দেওয়ালে পৌরাণিক আখ্যানে সমৃদ্ধ পটচিত্র ও স্তম্ভের ব্যাস রিলিফের খোদাই কাজেও বৈচিত্র্যের সাথে অভিনবত্ব আছে। বিষয়বৈচিত্র্য ও রঙের জৌলুস উল্লেখ্য। তেমনই গর্ভগৃহের বিপরীতে দেওয়ালের আধা জুড়ে দশাবতারের ছবিতেও বৈচিত্র্য মেলে—বৃদ্ধর বদলে ৯ম অবতার রূপে স্বয়ং জগন্নাথদেব উপস্থিত।

মূল মন্দিরের রত্নবেদিতে রয়েছেন সাত মূর্তি অর্থাৎ সাতরত্ন। সফেদ রঙা মুখাবয়বের বলরাম, সঙ্গী ত'ন কালোমুখী ভাই জগন্নাথ—ভালে হীরক, মাঝে তাদের হলদিমুখী বোন সুভদ্রা। এদের পাশে সুদর্শন চক্র। বামদিকে সেনার লক্ষ্মী, ডাইনে রূপার তৈরি সরস্বতী, পিছনে নীলমাধব। মূল দেবতা ব্রহ্মদারুতে তৈরি। কিংবদন্তী, কৃষ্ণের নাতি অর্থাৎ পরমরত্ন দ্বারকা থেকে ভেসে আসে পুরীর সমুদ্রে ব্রহ্মদারু রূপে। যে বছর একসঙ্গে ২টি সৌর আষাঢ় মাস অর্থাৎ আষাঢ় মাসে ২টি অমাবস্যা পড়ে—সেবছরই দেবতার বিগ্রহ নতুন করে হয়ে থাকে। নাম তার নব-কলেবর। গত ১৯৯৬এ জাঁকজমকের সাথে নবকলেবর উৎসব যাপিত হয়েছে। মন্দিরের পিছে প্রাচীরের বাইরে বৈকুণ্ঠ বাগান—দেবতার নবকলেবর হতে পুরাতন বিগ্রহ সমাধিহ হয় বৈকুণ্ঠধামে। কিংবদন্তী, শিল্প শাস্ত্রের আদি প্রবর্তক প্রজাপতি ব্রহ্মা তনয়, বিশ্বকর্মা তথা জগন্নাথদেব শর্তাধীনে সূত্রধরের বেশে মূর্তি গড়তে আসেন। রুদ্রদ্বার কক্ষে ২১ দিনে সম্পূর্ণ হবার কথা মূর্তি। এই ২১ দিনে সূত্রধর দরজা না খুললে কারুর না আসার শর্তাধীনে রাজা রাজি। অর্ধে রানীর তর সয় না। শর্ত ভেঙে দ্বাদশ দিনে দরজা খোলেন রানী। ঘরে ঢুকে দেখেন সূত্রধর উধাও, দেবমূর্তি অসম্পূর্ণ—হাত-পা হতে বাকি। প্রতিষ্ঠা করেন রাজা সেই অসম্পূর্ণ মূর্তি মন্দিরে। আর আজ দারু ভেসে না এলেও স্বপ্নাদেশে দারুর সন্ধান মেলে। তিথির রকমভেদে ২১টি বেশে সজ্জিত হন জগন্নাথদেব। দিনের নানান সময়ে বেশেরও বদল হয়। পূজার পদ্ধতিতেও বৈচিত্র্য আছে। *আটকিয়া* বলে থাকে। চার পুরুষের নাম-দামা লেখাতে হয় খাটায়। ২২.৫০ থেকে ১৩২০০০ টাকা পর্যন্ত রকমফের আছে পূজার। কমেও পূজা দেওয়া যায়—তবে, অন্নদান আটকিয়া নয়। ৬০০০ পুরোহিত আর ২০০০০ নানানধর্মী কর্মী জীবিকা নির্বাহ করেন মন্দির থেকে। তবে নানান শ্রেণী বিন্যাস এদের মাঝে। বিশ্বের বৃহত্তম রামায়ণটিও হয়েছে এই মন্দিরে। ৪০০রও অধিক রাধুনী ২০০ উনুনে ১০০ ধরনের মহাপ্রসাদ অর্থাৎ দেবতার ভোগ রান্না করেন। প্রতিদিন ১০০০০ ভক্তের জন্য ৭০ কুইন্টাল চালের অন্ন হচ্ছে। মন্দিরের *আনন্দবাজারে* মহাপ্রসাদ কিনতেও মেলে। বিবিধ দামে বিভিন্নধর্মী মহাপ্রসাদ। উচ্ছিন্ন হয় না এই মহাপ্রসাদ। ৬—২৪-০০টায় দ্বার খোলা থাকে মন্দিরের।

সকাল বিকালে ৫ টাকার টিকিটে কাছ থেকে দেবদর্শনের বিশেষ ব্যবস্থাটিও অনেক তৃপ্তিদায়ক। তবে, জ্যেষ্ঠ পূর্ণিমা থেকে আষাঢ় মাসের অমাবস্যায় দেবতার *অনবসর* অর্থাৎ জ্বর হয়—দেবদর্শনও তাই মানা। দেবমন্দিরে প্রবেশাধিকার কেবল হিন্দুদের। মন্দিরের ছবি তোলাও কঠোরভাবে নিষেধ। উৎসাহীরা বিপরীতের রঘুনন্দন লাইব্রেরি ভবন থেকে ছবি নিতে পারেন। অ-হিন্দুরাও এই ভবন (৯—১২-০০ ও ১৬—২০-০০টায়) থেকে দেখে নিতে পারেন দেবমন্দির। তবে, দান প্রত্যাশা করে লাইব্রেরি। ৮ মি উঁচু টাওয়ার শিরে বিষ্ণুচক্র ও পতাকা—দূর-দূরান্ত থেকে দৃশ্যমান। ভক্তরাও পতাকা বাঁধতে পারেন মন্দির অফিসে নির্ধারিত টাকা জমা দিয়ে। অতি সম্প্রতি ২ কোটি টাকা ব্যয়ে সংস্কার হয়েছে জগন্নাথ মন্দির।

মাসির বাড়ি অর্থাৎ গুণ্ডিচাবাড়ি বা বাগানবাড়ি। গুণ্ডিচাদেবী হলেন অবন্তীর রাজা ইন্দ্রদ্যুম্নের স্ত্রী। এই রাজাই তৈরি করেন জগন্নাথ মন্দির। বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া মাসির বাড়ি প্রাচীরে ঘেরা। গোকুল থেকে ব্রজে এলেন শ্রীকৃষ্ণ—সেই স্মৃতিতে আষাঢ়-শ্রাবণ (জুলাই) মাসে জগন্নাথদেব বোন সুভদ্রা আর দাদা বলরামকে সঙ্গী করে অবকাশ যাপনে মাসির বাড়ি আসেন। ১০ দিন অবকাশে কাটিয়ে ফিরে যান আবার শ্রীমন্দিরে। দেবতা আসেন ১৩.৫ মি উঁচু, ১০মি বর্গাকার, ২.১ মিটারের ১৬ চাকার ৩ রথে জাঁকজমকপূর্ণ মিছিল করে শ্রীমন্দির থেকে ২½ কিমি দীর্ঘ গ্রান্ড রোড পেরিয়ে। নাম তার রথযাত্রা। আবার ফেরেনও দেবতা একইভাবে মিছিল করে—তার নাম *বহুড়া* অর্থাৎ উষ্টোরথ। দেবতা ফিরতে রথের কাঠ ভক্ত মাঝে বিক্রি হয় সূভেনির রূপে। দেশ-দেশান্তর থেকে লক্ষ লক্ষ তীর্থযাত্রী আসেন, আসেন পর্যটক এই রথযাত্রায় সামিল হতে। এমনকি চৈতন্যদেবও একদা রশি টেনেছিলেন এই রথের। অতীতে *জাগ্যারন্যাট* অর্থাৎ জগন্নাথদেবের রথের চাকায় আত্মহত্যা দিতেন ভক্তের দল। হাজার হাজার লোকের টানে রথ চলে গড়-গড়িয়ে—চলতে থাকলে থামা তার মুশকিল। সেই চলন্ত চাকায় পিষ্ট হয়ে প্রাণ দিতেন ভক্তেরা। রথ তৈরিও হয় প্রতি বছর নতুন নতুন। অক্ষয় তৃতীয়ার শুরু হয়ে ১০৭২টি গাছের গুড়ি থেকে ২১৮৮টি কাঠের টুকরায় তৈরি হয় *নন্দিদোষ* বা গরুড়ধ্বজা (১৩.৫ মি) অর্থাৎ জগন্নাথের রথ, *দণ্ডদোলনা* বা পদ্মধ্বজা (১১.৫ মি) অর্থাৎ সুভদ্রার রথ, *তালধ্বজা* (১২ মি) অর্থাৎ বলরাম বা বলভদ্রের রথ। প্রতি রথেই মূলদেবতা ছাড়াও ৯ জন পার্শ্ব দেব-দেবী, ২ জন দ্বারপাল, ১ জন সারথি, ১ জন ধ্বজা-দেবতা বা শীর্ষদেবতা অধিষ্ঠিত হন। সবাই দারুতে তৈরি। ১৬০০ মি উচ্চল রঙা কাপড়ে সুসজ্জিত করা হয় রথত্রয়ীকে। নব কলেবর অর্থাৎ নতুন দেবমূর্তি তৈরি হলে পুরাতন মূর্তি সমাধিহ হন উত্তরের গটে বৈকুণ্ঠবাগানে। এছাড়াও ৬২ ধর্মী উৎসব ঘটে চলেছে বছরের পর বছর জগন্নাথ মন্দিরে।

এবার চলুন পায়ে পায়ে বারিকশায় ৩৫/৪০ টাকার চুক্তিতে ঘণ্টা তিনেকের সফরে পুরী দর্শনে। সিদ্ধ বকুল অর্থাৎ যবন হরিদাসের সাধনপীঠ তথা বকুল গাছটি দেখে গম্ভীরা অর্থাৎ কান্ধী মিশ্রর ভবনে পৌছান—

“অদ্যাগীর্ষ সেই লীলা করে গোরা রায়।

কোন কোন ভাগ্যবান দেবিবারে পায়।।”

এই ভবনেই নিমাই ১৫১৫ থেকে ১৫৩৩-এর ২৯শে জুন (তিরোধান পর্যন্ত) ১৮ বছর অবস্থান করেন। আজও কাঁধা, কমণ্ডলু ও পাদুকা পূর্ণিমা হই শ্রীনিমাই-এর। দ্বিতলে ৫০ পয়সার টিকিটে চৈতন্যালীলাও দেখে নেওয়া উচিত হবে। ব্রহ্মপুণ্যে উল্লিখিত শ্রীমন্দিরের উত্তরে শ্বেতগঙ্গায় স্নানে পুণ্য হয়। আর আছে শ্রীমন্দিরের কাছেই যশেশ্বর। লোকশ্রুতি, যশেশ্বর পূজায় কোটি লিঙ্গ পূজার ফল মেলে। বাসুদেব সার্বভৌমের বাড়ি দর্শনাঙ্কে মার্কণ্ডেশ্বরের মন্দির ও সরোবরটিও দর্শনীয়। খুবই পবিত্র এই সরোবরের জল, স্নানে পুণ্য হয়। শ্রীমন্দির থেকে ৩ কিমি পশ্চিমে লোকনাথ অর্থাৎ শিবমন্দির। মন্দির লাগোয়া সরোবর, দেবতা প্রায়ই জলে থাকেন। রায় রামানন্দের বাড়ি, চন্দন সরোবর দর্শনাঙ্কে ১৩১৮তে তৈরি বিজয়কৃষ্ণ গোস্বামীর সমাধি মন্দিরে চলুন। বিপরীতে তদীয় শিষ্য কুলদানন্দ ব্রহ্মচারীর সমাধি—১৩৪৫এ নির্মিত শ্রীমন্দির। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে আঠার-নালা ও লক্ষ্মী-জলা। তবে ৮৫১১ মিটারের আঠারনালা সেতুটি রূপ পেয়েছে মুন্সি নদীর উপর ১৩০০ খ্রিস্টাব্দে। সেখানে এই আঠারনালা ছিল শ্রীক্ষেত্রের প্রবেশফটক। শ্রীক্ষেত্রের শুরুও ছিল এই আঠারনালা সেতু থেকে। সেকালের শিল্পনৈপুণ্যের নিদর্শন এই সেতু। ১৮টি পাথরের ফোকর রয়েছে সেতুতে কথিত আছে, রাজা ইন্দ্রদ্যুম্ন নিজের ১৮টি ছেলেকে দেশের কল্যাণার্থে বলি দিয়েছিলেন এখানে। যাত্রীরাও প্রথম দর্শনের সঙ্গে প্রণাম সারেন।

জগন্নাথ মন্দিরের উত্তর-পশ্চিমে ইন্দ্রদ্যুম্ন সরোবরটি আর এক তীর্থ। স্নান ও তর্পণে পুণ্য মেলে। প্রবাদ, রাজার অশ্বমেধ যজ্ঞে দান করা সহস্র গাভীর পায়ের খুরে তৈরি হয় সরোবর। জলে কচ্ছপ আছে। আর রয়েছে চক্রতীর্থে সোনার গৌরাস। তবে, দেবতা বংশীধারী কৃষ্ণর পাশে গোপাল মূর্তি। জনশ্রুতি, শ্রীগৌরাস গোপাল বেশে সাধক রামানন্দকে দর্শন দেন। তারই স্মারক রূপে মন্দির। পাশেই সফটমোচন, বামে গিয়ে নদীয়া গৌরাস। বিপরীতে জগন্নাথদেবের স্বপ্নরবাড়ি, বালুতটে বড়ঠাকুর অর্থাৎ শনি ও চক্রতীর্থ।

সুন্দর কার্ণকর্মশুভিত সাঙ্কীগোপাল বা সত্যবাদীর মন্দির। ভক্তের সাধনায় তুষ্ট শ্রীকৃষ্ণ বৃন্দাবন থেকে শর্তাধীনে কলিঙ্গে এলেন সাক্ষ্য দিতে। শর্ত লঙ্ঘনে লীন হয়ে রূপ নিলেন মূর্তিতে শ্রীকৃষ্ণ। কালে কালে মন্দির। পুরী থেকে ১৭ কিমি উত্তরে পুরী-ভুবনেশ্বর বাসে দেখে নেওয়া যায় সাঙ্কীগোপাল। লোকাল ট্রেনও যাচ্ছে পুরী থেকে। লোকশ্রুতি, সাঙ্কীগোপাল দর্শন ছাড়া পুরী ভ্রমণ অসম্পূর্ণ। পূজা

১+দক্ষিণা ১ বিধি হলেও পাঠাঠাকুরদের উৎসাহীন আছে সাঙ্কীগোপালে। সেই হেতু রাজা পর্যটন ও প্রাইভেট সংস্থা বয়কট করেছে প্যাকেজ ট্যুরে সাঙ্কীগোপাল দর্শন। তাই পদে পদে সাবধানতা পালনীয়। মন্দিরের ছবি তোলাও মানা। পুরীর নবতম উৎসব বীচ ফেস্টিভ্যাল। ১৯৯৩এ শুরু হয়ে প্রতি ডিসেম্বরে স্বর্গদ্বার লাগোয়া বীচে নাচ-গান-বাজনার সাথে নানানকিছু মিলেমিশে আকর্ষণীয় হয়ে উঠেছে।

পুরী-ভুবনেশ্বর পথে ৯ কিমি যেতে চন্দনপুরের অদূরে ডাইনে ১½ কিমি গিয়ে রেলের লেবেল ক্রসিং পেরিয়ে নারিকেল বীথিকার ছায়ায় আরও ১½ কিমি যেতে রঘুরাজপুর। রঘুরাজপুরের খ্যাতি তার মিথোলজিক্যাল পটচিত্রের জন্য। বিশেষ ধারায় অনাসুরা, পৌরাণিক তালপত্র, তসর, নারকেলের উপর পটচিত্র আঁকছেন শিল্পীরা। আঁকা দেখা ও কেনারও ব্যবস্থা মেলে ৮০ থেকে ২৫০০০ টাকায় শিল্পীদের বাড়ি-ঘরে রঘুরাজপুরে।

খুরদা রোড রেল স্টেশন থেকে ২½ কিমি পশ্চিমে অরাগড় পাড়াতে খ্রি ৩য় শতকের বৌদ্ধমুদ্রণ ও মঠ দেখে নিতে পারেন অত্যাংসাহীরা। তবে, সংস্কার ব্যাহত গত কিছুকাল।

কেনাকাটা: আর ভ্রমণের স্মারক রূপে সঙ্গী করুন রঘুরাজপুরের পটচিত্র, পাথুরিয়াশাহীর পাথরের ভাস্কর্য, পিপলির অ্যাপলিক শিল্প, শীখ ও বিনুকের নানান সন্টার, রূপোর কার্ণকর্মময় আভরণ, কটকের কটকি শাড়ি, সম্বলপুর সিদ্ধ, ময়ূরভঞ্জের সিদ্ধ ও তসর, খুরদা রোডের গামছা, দারুতে তৈরি দেবতার রেল্লিকা মূর্তি পুরী থেকে। মন্দির লাগোয়া গ্রান্ড রোডের দোকান পাটে উচিতও হবে কেনাকাটা সাক্ষ্য করা। ওড়িশা সরকারের উৎকলিকা, কটকী শাড়ি এম্পোয়ারিয়াম দেখা যেতে পারে। কটকীর এক শাখা বসেছে স্বর্গদ্বারে ভারত সেবাশ্রম সংঘের বিপরীতে কটকী এম্পোয়ারিয়াম নামে। বীচ জুড়েও দোকান বসে সাঁঝে। দামে রীতিমত টাগ অব ওয়ার চলে দোকানি ও ক্রেতার মাঝে।

আর, পুরী ভ্রমণে যাত্রীদের একান্তই উচিত হবে কোনও রকম আধাড়ে গল্পের শিকার না হওয়া। এমনকি চলার পথে ট্রেনেও নানান ব্যক্তি হোটেল, প্যাকেজ ট্যুর, ট্রেনের টিকিট বুক করে রসিদও দেয় টাকার বিনিময়ে। এমনকি হোটেল, হলিডে হোমেও যাত্রী-শিকারে হানা দেয় এরা। টাকা পাওয়ায় অনিশ্চয়তা দেখা দিলে সেই কলারও আবেদন রাখে এরা। সহায় সম্বলহীন যাত্রীরা এদের আশ্রবাক্যে শিকার হয়ে নাস্তানাবুদ হন নানানভাবে। তাই একান্তই উচিত হবে সরাসরি সঠিক জায়গায় যোগাযোগ করা।

চিহ্না

পুরী থেকে ১৬০ কিমি দূরে, পুরী জেলার দক্ষিণে চিহ্না হ্রদ। তবে, স্থানীয়দের কাছে চিলিকা নামে সমধিক খ্যাত—

অর্থ তার জলে ঢাকা মাটি। নতুন তৈরি মেরিন ড্রাইভ ধরে পুরী থেকে ৩৫ কিমি দূরের ব্রহ্মপুরী হয়ে চিকার নবতম পয়েন্ট সাতপুড়ার দূরত্ব ৫৫ কিমি মাত্র। চলার পথে শীতের দিনগুলিতে ডলফিনও দেখে নেওয়া যায় চিক্কা লেকেরই দ্বীপ সাতপুড়ায়। এছাড়াও পাখি আসে আরও নানান শীতের দিনে সাতপুড়ায় দেশ-দেশান্তর থেকে। বরাবুল থেকে ১৯ কিমি দূরে Chikka Wildlife Sanctuary, ১৯৭৩এ অভয়ারণ্যের শিরোপা চেপেছে স্যাক্চুয়ারির শিরে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা মেলে লেকের জলে সাতপুড়ায়। OTDC-রও ব্যবস্থা থাকে ৪০ টাকায় ঘণ্টা তিনেকের বোট বিহারের। ফরেষ্ট লজ হয়েছে চিক্কা লেকের দক্ষিণ-পূবে সাতপুড়ায়। নিজস্ব ব্যবস্থায় আহ্বার। লজের বুকিং: DFO, Chikka W L Division, N-4/3 Nayapally, Bhubaneswar-751015. আর হয়েছে OTDC-র Yatriniwas, D ১০০, মনোরম পরিবেশে কটেক্স ধর্মী ঘর, আহ্বারও মেলে কার্টিনে অগ্রিম অর্ডারে; অবু: A T O, Yatriniwas Satpada, via Brahmagiri, Dist-Puri, ☎ (06752) 8564. OTDC মরসুমে পুরী থেকে প্রতিদিন প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে চিক্কা অর্থাৎ সাতপুড়ায়। প্যাকেজ ট্যুরে বা পুরী মিউনিসিপ্যাল বাস স্ট্যান্ড থেকে সার্ভিস বাসে চলাও যেতে পারে সাতপুড়া। আর সুনাবোয়াল আছে OTDC-র Panthika, D ৪০, ডর্মি বেড ১০, অবু: A T O, Satpada. পুরী থেকে সোম, বুধ, শুক্র OTDC-র প্যাকেজ ট্যুরে ৬-৩০—১৯-৩০টা ৮৫-১১০ টাকায় চিক্কা বা চিলিকা বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আর ৫২৭ কিমি দূরের কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় চেন্নাই মেল, তিরুপতি এক্স, ইস্ট কোস্ট এক্স ঘণ্টা দশকে বালুগাঁও, চিক্কা, খালিকোট বা রম্ভায় নেমে চিক্কা চলায় সুবিধা। আর ওড়িশা রোড ট্রান্সপোর্টের বাস কটক/ভুবনেশ্বর/পুরী থেকে NH-5 ধরে মুম্বাই যাচ্ছে চিক্কা অর্থাৎ বালুগাঁও/বরাবুল/রম্ভা হয়ে বেরহামপুর/ভাইজাগ ছাড়াও নানান দিকে। কলকাতা-বেরহামপুর বাসও যাচ্ছে চিক্কা হয়ে। বালুগাঁও থেকে ৬ কিমি দূরে চিক্কা হ্রদ—টাঙা/রিকশা/অটোয় বরাবুল অর্থাৎ হ্রদে পৌছান। হ্রদ বেড়ান লঞ্চে বা বোটে। পর্যটক আকর্ষণ বাড়াতে বরাবুলেও ওয়াটার স্পোর্টস কমপ্লেক্স হয়েছে। রেল ও বাস সংযোগ গড়েছে বেরহামপুর, ভুবনেশ্বর ও পুরী থেকে। ভুবনেশ্বর-রাউরকেলা হীরাবুদ এক্স ১৬-১০, ভুবনেশ্বর-মুম্বাই কোয়ারক এক্স ১৪-০০, ভুবনেশ্বর-বালুগাঁও প্যাসেঞ্জার ১০-০০ ও ১৮-৪০এ ভুবনেশ্বর ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় বালুগাঁও অর্থাৎ চিক্কা যাচ্ছে। তবুও যেন উচিত হবে গোপালপুর বেড়িয়ে বেরহামপুর থেকে সকালের ভুবনেশ্বরের বাসে বালুগাঁও পৌছে চিক্কা বেড়িয়ে বিকালের ভাইজাগ এক্স বাসে পুরী চলা। দূরত্ব বেরহামপুর থেকে ৭৬, ভুবনেশ্বর থেকে ৯০ কিমি।

পুরী জেলার দক্ষিণ-পশ্চিমে সবুজে ছাওয়া পাহাড়, পুবে বঙ্গোপসাগর, মাঝে হয়েছে বালির পাহাড়—চারপাশ ঘিরে জল শুধু জল, তারই নাম চিক্কা হ্রদ। অতীতকালে বঙ্গোপ সাগরেরই অংশ ছিল দৈর্ঘ্যে ৭২ আর প্রস্থে ১৬ কিমি অর্থাৎ ১১০০ বর্গকিমি ব্যাপ্ত চিক্কা হ্রদ। বর্ষায় চারপাশ গ্রাস করে ব্যাপ্তি বাড়ে আরও। জলে নুনের ভাগও থাকে না

বর্ষাকালে। বর্ষাকালে চিক্কাই ভারতের মিষ্টি জলের বৃহত্তম হ্রদ। আর নভেম্বর থেকে মার্চ মাস ভরপুর থাকে বঙ্গোপ-সাগরের নোনা জলে চিক্কা। হ্রদের মাঝে নানান দ্বীপ,—হনিমুন, ব্রেকফাস্ট, কালিঘাই, কলিযুগেশ্বর, সাতপুড়া, নলবন, গড় কৃষ্ণপ্রসাদ, পারাবার আরও কত কি। জেলেদের বাস। ১৬ কিমির জলপথে কালিঘাই দ্বীপ-মন্দিরে রয়েছে কালী, গঙ্গা ও ঘাই দেবীত্রয়ী। মোটর লাগানো বোট ও লঞ্চ যাচ্ছে, যাতায়াত ২০। আর কলিযুগেশ্বরে যাচ্ছে মোটর ও দেশী বোট। দেবতা এখানে শিব, দূরত্ব ২২ কিমি; যাতায়াত ৫। তবে মোটর বোটে ঘণ্টা আড়াইয়ে ৪০ হারে দেবদর্শনের সাথে ৪০ কিমি জলবিহারে কালী ও শিব দেখে নেওয়া যায়। খুবই চিত্তমনোহর চিক্কার এই জলবিহার। চটুইভাতির মনোরম পরিবেশও চিক্কা। আর শীতে দেশ-দেশান্তর থেকে পাতিহাঁস, সারস, সিঙ্ক-ঈগল, সোনালী টিট্টিভ, কাদাখোঁচা, গাংচিল, ফ্রেমিংগো ছাড়াও ১৫০-রও অধিক প্রজাতির পাখি এসে নীড় বাঁধে চিক্কার বার্ডস আইল্যান্ড নলবন দ্বীপে। এরও আকর্ষণ কম নয় পর্যটকদের কাছে। তেমনই ৬৫০ প্রজাতির সামুদ্রিক প্রাণির মধ্যে প্রচুর এককোষী ও শামুকজাতীয় প্রাণী রয়েছে চিক্কায়। নানান উভচর প্রাণীও রয়েছে চিক্কায়। উৎসাহীরা গড় কৃষ্ণপ্রসাদে রম্ভা-রাজারের অতীতের প্রাসাদ, পারাবারে অগুণতি বেলহাঁসও দেখে নিতে পারেন ভটভটিতে গিয়ে। মৎস্যশিল্প স্থানীয়দের মুখ্য জীবিকা। ১৬০-এরও অধিকধর্মী মাছ মেলে চিক্কা হ্রদে। চিক্কার চিংড়ি ও কাঁকড়াও যথেষ্ট লোভনীয়। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তও রমণীয় চিক্কায়।

থাকার জন্য লেকের দক্ষিণ প্রান্ত রম্ভাতে আছে ডাকবাংলো, রেলের রিটায়রিং ক্লব ও OTDC-র Panthanivas, Rambha, Dist: Ganjam-761028, ☎ (06810) 87346, R5B1, D ২০০, A/c D ৩৫০; আর বরাবুলে আছে Panthanivas, Barakul, via Balugaon, Dist Khurda-752030, ☎ (06756) 20488, B6, DAB ২৭৫, A/c D ৫০০। আর আছে Puspak H, NH-5, Balugaon, H Chikka, Balugaon, D ১৫০-২২৫; H Ashoka, NH-5, Balugaon, D ১৭৫-৪২৫ ডর্মি ৫৫; PWD IB, Khallikote; Revenue IB, Balugaon; Kshasmahal Bungalow, Banpur-এ। তবুও যেন চিক্কা লেকের জলে ভাসন্ত রম্ভার পাহুনিবাস থাকার পক্ষে রমণীয়। ওড়িশা ট্যুরিজমের অফিসও বসেছে রম্ভার পাহুনিবাসে।

তেমনই, উৎসাহীরা রম্ভা থেকে ২২, বেরহামপুরের ৭০ কিমি দূরে ভাসেদী পাহাড়কোলে আদিম আরণ্যক পরিবেশে নারায়ণী অর্থাৎ দেবী দুর্গার মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। পাখির কুজন বারমেসে ঝরনাটি পরিবেশকে মধুময় করে তুলেছে।

রম্ভা থেকে ১১ আর খালিকোটের ২ কিমি দূরে পবিত্র বিষ্ণু-তীর্থ নির্মলম্বরও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে বাসে বাসে। বালুগাঁও থেকে ৮ কিমি দূরে বানপুর্নে ভগবতী ও দক্ষ প্রজাপতি মন্দিরও দেখে নেওয়া যায়।

পর্যটন মানচিত্রে অনুমিত ওড়িশার আর এক সাগরবেলা অন্তরঙ্গ। পুরী থেকে ৯০ কিমি দূরের অন্তরঙ্গায় থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই। তবে সুর্যাস্ত রমণীয়।

গঞ্জাম



হাওড়া থেকে ইস্ট কোস্ট এক্স, ফলকনুমা এক্স, তিরুপতি এক্স, চেমাই মেল, করমণ্ডল এক্স, তিরুভনন্তপুরম এক্স, গুয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম, গুয়াহাটি-কোচি ও গুয়াহাটি-ব্যাঙ্গালোর এক্স-এ হাওড়া-চেমাই রেলপথে ৬০৩ কিমি দূরের বেরহামপুর (গঞ্জাম) পৌছান। কম বেশি ১২ ঘণ্টার রেলপথ। আর যাচ্ছে ভুবনেশ্বর থেকে কোণারক এক্স, হীরাখণ্ড এক্স, ৪ ঘণ্টায় চিচ্চা পৌছে বেরহামপুর হয়ে।

ওড়িশার নৈসর্গিক সৌন্দর্যের আকর গঞ্জাম জেলা। পাহাড়-পর্বত-অরণ্য, তেমনই রয়েছে সাগরবেলা গঞ্জামে। জেলা সদর বসেছে বেরহামপুরে। বেরহামপুরের পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও জেলার মূল বাণিজ্য-কেন্দ্র বেরহামপুর। তেমনই বেরহামপুরের সিদ্ধ শাড়ি ও হস্তজাত পণ্যও উল্লেখ্য। রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে নতুন বাস স্ট্যান্ড। বাসও সংযোগ গড়েছে রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্য অস্ত্রের দিগ্বিদিকের সঙ্গে। এমনকি OTDC-র ডিলাক্স বাস ৭-০০টায় ভুবনেশ্বর ছেড়ে ১১-০০টায় বেরহামপুর আসছে; ভুবনেশ্বর ফেরে ১৪-০০টায় বেরহামপুর থেকে।



হোটেলও আছে নানান বেরহামপুরে। বাস ও রেল ঠাই থেকে ২ কিমি দূরে স্টেডিয়ামের পাশে Town Hall Rd. Berhampur-761026-এ—Municipal GH, ৩ 4911, S ৪৫ D ৬৫-১২০ A/c D ২৫০; বিপরীতে Berhampur RH, Convent School Rd, ৩ 2344, SAB ৪৫-৬০, DAB ৮০-১০০ A/c S ২৫০ D ৩০০; স্টেডিয়ামমুখী পুরাতন বাস স্ট্যান্ডে L Radha, ৩ 4141, S ৬০ D ১০০-১৭৫; বিপরীতে Udipi H, ৩ 2196, S ৪৫ D ৬৫-১০০; H Radha, S ৪৫ D ৮৫; Srirum Bhawan, S ৩৫-৪৫ D ৫৫-৮০। Gandhi Nagar-এ—H Moti, RIB, SAB ১০০ ১৫০ ১৭৫ DAB ১৫০ ১৭৫ ২৫০ সুইট ৩০০ A/c ৫০০। রেল স্টেশনের সন্নিকটে Station Rd-এ—Aurobindo L, S ৩৫-৪৫ D ৬০-৮৫; দাম ও মানে একই New Bhubani L; H Geetanjali, S ৩০ D ৬০। City High School Rd-এ—Durga Bhawan L, S ৩০-৪৫ D ৬০-৮৫ ডিলাক্স ১০০-১৭৫; Sri Ramnivas L, Ananda Bhawan L, Ramlingam Tank Rd-এ—Lake View L, S ৪০-৬৫ D ৮৫-১২৫; H Anarkali, S ৪০ D ৬৫-১০০; H Shankar Bhawan, S ৪০ D ৬৫-১০০। U B Rd-এ—Girija L, S ৪৫ D ৮৫; Bharati L, S ৪০ D ৮০; H Siddhartha, S ৪৫ D ৮৫; Luxmi Nivas L, S ৩৫-৬০ D ৬৫-১০০। Satyanarayan Temple Rd-এ—Indra Nivas L, S ৪০ D ৮০; Welcom L, ছাড়াও হোটেল আছে আরও নানান। তবুও যেন Municipal GH, H Radha, Berhampur R H, H Moti থাকার পক্ষে আদরণীয় হবে। আর আহাৰ্হে মিউনিসিপ্যাল গেস্ট হাউস লাগোয়া প্রাইভেট মালিকানাধীন হোটেল ময়ূরের যথেষ্ট প্রশস্তি বেরহামপুরে।

মহেন্দ্রগিরিহিলস: ১৭৫ কিমি দূরের বেরহামপুর থেকে বাস যাচ্ছে অরণ্যকে বিদীর্ণ করে, পাহাড় বেয়ে প্রকৃতির সন্ধানে গঞ্জাম জেলার দিকে দিকে। কখনও গহন বনের বাকে গেক্সা নদীর হাতছানি, কখনও পাকদণ্ডি পথ ওঠে পাহাড় বেয়ে। দূরে-দূরান্তে সবুজ গালিচা বিছানো উপত্যকা। বেরহামপুর থেকে গজপতি জেলার সদর উপজাতি অধ্যুষিত পারলেখমুণ্ডি ভায়া পলাসা বাসে ৩৬ কিমি দূরের জিরাঙ্গায় পৌছে ১১ কিমি ট্রেক করে চড়া যেতে পারে ১৫০০ মি উঁচু মহেন্দ্রগিরি পাহাড়ে। পাহাড়-নদী-প্রকৃতি আর কলিঙ্গ সংস্কৃতির পীঠস্থান—পূর্বঘাটের গর্ব মহেন্দ্রগিরি। যুববন্ধ মেঘেরা খেলায় মাতে। যতদূর দৃষ্টি যায় অসংখ্য পাহাড়চূড়ো। সমুদ্রও দৃশ্যমান পাহাড় থেকে পাখি ওড়া ২০ কিমি দূরে। অভ্র, কোণ্ডালিট, চার্নোকাইট, নানান খনিজ সম্পদেরও মেলবন্ধন ঘটেছে পূর্বঘাটের মহেন্দ্রগিরিতে। মহাকবি কালিদাস মুগ্ধ হয়ে মেঘদূতমে প্রশস্তি গেয়েছেন মহেন্দ্রগিরির। রামায়ণ ও মহাভারতেও মেলে মহেন্দ্রগিরির কথা। ১০০ মি খাড়া উঠে মহেন্দ্রগিরি পাহাড়ের চূড়ো। গ্রানাইট পাথরের টুকরো সাজিয়ে নিরাভরণ মন্দির হয়েছে যুধিষ্ঠির, ভীম ও কৃষ্ণের পাহাড়ভূমে। আর আছে পাহাড় শিরে ওড়িশার প্রাচীনতম ৬ শতকের পাঁচ ধাপের পাথুরে মন্দির গোবর্ধনেশ্বর শিবের। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে মহেন্দ্র তনয়া নদী। প্রকৃতির পূজারীরা বাস বা জিপে বেড়িয়ে নিতে পারেন। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই পাহাড়ভূমে। তবে, পারলেখমুণ্ডিতে বাংলা মেলে।

জৌগড়: বেরহামপুরের ৩৫ কিমি দূরে জৌগড়ের প্রশস্তি বৌদ্ধ স্মারকরূপে। সম্রাট অশোকের শিলালিপি ছাড়াও নানান অতীত দেখতে মেলে। ২ কিমি দূরে বুদ্ধশালাও নানান বৌদ্ধ ভাস্কর্য অতীত রোমন্থন করায়।

তন্তুপানি: বেরহামপুর থেকে ৫০ কিমি দক্ষিণে তন্তুপানি অর্থাৎ গরম জলের কুণ্ড। জলে সালফার আছে; চর্মরোগের মহৌষধ। মানেরও ব্যবস্থা আছে কুণ্ডের জলে। ঘাট এলাকা শুরুতেই তন্তুপানি। পথও পাহাড় চড়েছে। তারই মাঝে বাসপথে পাহাড়ী ঢালে মনোহর নৈসর্গিক পরিবেশে থাকার জন্য ৮ ঘণ্টার OTDC-র Panthanivas, Taptapani, Pudamari, Ganjam-761014, ৩ (06814) 47531, DAB ২৫০ FAB ৪০০ সুইট ৫০০। আহাৰ্হ পাছনিবাসের ক্যান্টিন নির্ভর। চারপাশে সবুজের সমারোহ—পাহাড়ী টিলা ব্যুহ গড়েছে। নিচুতে ডিম্বার পার্ক। ১ কিমি দূরে কুণ্ড। গরম জল এসেছে নল বেয়ে কুণ্ড থেকে পাছনিবাসের বাথ-টবে। মানের ব্যবস্থা মেলে। যথেষ্ট দোকানপাটের অভাব, সাধারণ চায়ের দোকান মেলে কুণ্ড লাগোয়া বাজারে। আর হয়েছে Revenue IB পাছনিবাসের বিপরীতে। বাস যাচ্ছে বেরহামপুর থেকে দিনভর নানান দূরপাল্লার তন্তুপানি হয়ে। আর OTDC-র দিনের একমাত্র বাস সকাল ৭-০০টায় বেরহামপুর ছেড়ে ২ ঘণ্টায় তন্তুপানি পৌছে ফেরে ৯-০০টায় তন্তুপানি থেকে

বেরহামপুরে। এমনকি পুরী-রায়গাড়া বাসও যাচ্ছে চিচ্চা/ বেরহামপুর/ তপ্তপানি হয়ে। সকালে গিয়ে দিনান্তে ফেরাও যেতে পারে বেরহামপুর থেকে তপ্তপানি বেড়িয়ে। অটো বা ট্যাক্সিতে গোপালপুর থেকে ৩৫০/৫০০ টাকায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় তপ্তপানি।

তেমনই এপথে অল্পের সীমান্তবর্তী পারলেখমুখিমুখী আরও যেতে বেরহামপুরের ৮০ কিমি পশ্চিমে পূর্বঘাট পর্বতের অধিত্যাকায় সবুজ শাল-মহয়ার জঙ্গলে ঘেরা চন্দ্রগিরি। তিব্বত থেকে দূরে বহুদূরে তিব্বতীয়দের জনপদ চন্দ্রগিরিতে সূর্য ওঠে ওম মণিপদে হুম ধ্বনিত। আজও এদের সমাজ চলে কমিউন প্রথায়। তেমনই আকর্ষণ গুম্ফা ও তিব্বতীয় হস্তশিল্পের চন্দ্রগিরিতে। তিব্বতীয় অতিথি-শালাও আছে চন্দ্রগিরিতে।

ফুলবনি: বেরহামপুর থেকে বাসে ১২৭ কিমি দূরের ফুলবনিও বেড়িয়ে ফেরা যায় দিনান্তে। ৫-০০ ও ১২-৩০টায় বাস যাচ্ছে ORTC-র বেরহামপুর থেকে ফুলবনি। আর খুরদা রোডের দূরত্ব ১৮৩ কিমি ফুলবনি থেকে। ১৫০০ ফুট উঁচুতে পাহাড়ী উপজাতি অধ্যুষিত অধিত্যাকা। ফুলবনির মূল আকর্ষণ রঙবেরঙ সাজের আদিবাসী। মানব সভ্যতার প্রথম পর্বের নিদর্শন আজও দেখতে মেলে এদের মাঝে। প্রকৃতিও সুন্দর ফুলবনির। উচ্চতার তুলনায় শীত বেশি।



থাকার জন্য Phulbani-762001-এ আছে—H Rabi Shankar; Guru L, Bus Stand; Venkateswar L ছাড়াও PWD IB, CH, FRH.

ডারিংবাড়ি: ফুলবনি জেলায় ফুলবনি থেকে ১৩৫ কিমি দূরে হাজার চারেক ফুট উঁচুতে ওড়িশার কাম্বীর ডারিংবাড়ি। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা, সবুজে ছাওয়া নির্জন উপত্যকা ডারিংবাড়িতে চন্দন, কফি ও গোলমরিচ হচ্ছে। প্রকৃতির গুণে পর্যটক কেন্দ্র রূপে গড়ে উঠছে ডারিংবাড়ি। সামার রিসর্ট রূপেও এর প্রশস্তি আজ লোক মুখে মুখে। পাহাড়ী জনপদ—আদিবাসীদের বাস। খ্রিস্টধর্মের প্রভাব ডারিংবাড়ির জনমানসে। বেশ কয়েকটি চার্চও আছে।

সরাসরি বাসের অমিলে বেরহামপুর থেকে ORT বা প্রাইভেট বাসে বালিগুড়া বা সোরাডা বা ফুলবনি পৌঁছে নতুন করে বাসে ডারিংবাড়ি চলা যেতে পারে। বাস আসছে ৩০০ কিমি দূরের ভুবনেশ্বর থেকেও। আবার, ফুলবনি বদল করলেও চলা যেতে পারে ভুবনেশ্বর থেকে ফুলবনি হয়ে ঘন্টা সাতেকে ডারিংবাড়ি। তপ্তপানি অবস্থানে জিপে চলা যেতে পারে ঘন্টা চারেক ডারিংবাড়ি। হোটেল নেই ডারিংবাড়িতে। তবে PWD IB, অব: EE, PWD, PO-Baliguda, Dist-Phulbani, Orissa; ও Forest Bungalow-য় ঘর মেলে থাকার। আহাির মেলে সাধারণ হোটেলে।

কালাহাণ্ডি: পাহাড় ও অরণ্যময় খরাপ্রবণ জেলা কালাহাণ্ডি। পর্যটক মানচিত্রে উল্লেখ্য না হলেও প্রাকৃতিক

আকর্ষণে যাত্রী যাচ্ছেন নানান। ভুবনেশ্বর থেকে রাতভর জার্নিতে বাস যাচ্ছে ৪১৮ কিমি দূরে কালাহাণ্ডির জেলা-সদর ভবানীপাটনা। বলানীর থেকে ১০৪, তিতলাগড় থেকে ৭১ আর ফুলবনির ২৪৭ কিমি দূরে ভবানীপাটনা। সাধারণ সাজে ভবানীপাটনায় পুষ্পা, অঞ্জরা, রবি, রুচি ছাড়াও হোটেল ও লজ আছে নানান। আর আছে PWD IB, অব: EE, R&B Division, Bhawanipatna; CH, অব: Collector, Kalahandi, Bhawanipatna. মন্দিরও আছে—রাজপ্রাসাদে মাণিকেশ্বরী, গোপীনাথ, ভবানীশঙ্কর, জগন্নাথ, মদনমোহন ছাড়াও নানান ভবানীপাটনায়। তেমনই জিপে শ'পাঁচেক টাকায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় ১৫ কিমি দূরে ১৬ মি উঁচু থেকে নামা ফুলরিবরন জলপ্রপাত। ২৫ কিমি দূরে ঝাকম ব্যাং প্রকল্প। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ঝাকম ফরেস্ট বাংলোয়, অব: DFO, Bhawanipatna. বাংলোয় অবস্থান-কারীদের রেশন সঙ্গে নেওয়া ভাল। ৩২ কিমি দূরে পাহাড়ে ঘেরা আরণ্যক শোভার সঙ্গে মাণিকেশ্বরীর প্রাচীন মন্দির, জলপ্রপাত দেখে নেওয়া যায় কারলাপাটে। কালাহাণ্ডির উপাস্য দেবী মাণিকেশ্বরী রয়েছেন অরণ্যময় পাহাড় কারলাপাটের পাদদেশে ডুকরী মন্দিরে।

গোপালপুর-অন-সী



বেরহামপুর (গজাম) রেল স্টেশন থেকে রিকশা বা অটোয় ৩ কিমি গিয়ে বাস স্ট্যান্ড। বেরহামপুর স্টেডিয়াম লাগোয়া পুরাতন বাস স্ট্যান্ড থেকে ঘন্টায় ঘন্টায় বাস যাচ্ছে গোপালপুর সাগরবেলায়। ট্রেকারও যাচ্ছে শেরারে মুহুম্বুহ। আর নতুন বাস স্ট্যান্ড থেকে ORTC-র বাস যাচ্ছে ১০-০০, ১৭-০০, ১৯-০০ ও ২০-০০টায় গোপালপুরে। তবে রেল স্টেশন থেকেও ট্যাক্সি ও অটো মেলে ১০০/৭৫ টাকায় গোপালপুরের। কটক ও পুরী থেকেও চিচ্চা হয়ে বাস আসছে বেরহামপুর। এমনকি কলকাতার বাবুঘাট থেকেও ১৫-৩০টায় ছেড়ে কটক/ভুবনেশ্বর/চিচ্চা হয়ে ১৫০ টাকায় প্রাইভেট বাস আসছে গোপালপুরে। আর রায়গাড়া ও ভাইজাংগ থেকে আসা বাস যথাক্রমে ১২-০০ ও ১৪-০০টায় বেরহামপুর পৌঁছে পুরী যাচ্ছে।



বাস স্ট্যান্ড তথা বাজার থেকে ৫ মিনিটের পথে সাগরবেলা। সাগরবেলার ডাইনে-বামে ১ কিমি জুড়ে হোটেলগুলি গোপালপুরে। তবে সাগরজলে পিঠ রেখে গড়ে উঠছে গোপালপুরের হোটেল। পাশ্চাত্যপ্রণয়—H Oberoi Palm Beach, Gopalpur on Sea-761002, ☎ (0680) 282021, S ৮৫ D ১৪০ US\$; H Mervuid of Motels India, ☎ 282050, AP প্রণয় S ৪৫০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০, কল বুকিং: ৪/1E, Palm Avenue, Cal-19, ☎ 2402634. আর ভারতীয় প্রণয়—বাস স্ট্যান্ডে নবতম H Sagar, DAB ৩০০। সাগরমুখী পথে Sea View L, DAB ২৫০ TAB ৩০০, FAB ৩২৫, অব: Manager বা Mr N K Dutta, Commerce House, 7th floor, Suite 9, 2 Ganesh Ch Avenue, Cal-13, ☎ 278974, ডাডায় অধিকার সাথে কিছুটা অব্যবহাও যেন

লজে। H Holiday Home, ৩ 282049, DAB ৩০০-৪৫০; কল বুকিং: R K Singh, 8/2 Kiran Sankar Roy Rd-1, Room 233, 2nd Floor, ৩ 2485052; পথে পড়ে H Rosalin, ৩ 282071, DAB ২০০; H Sea Side Breeze, ৩ 282075, D ২২৫-৩০০; মোটেল মারমেইড রেখে Kuliillu (White Heart), DAB ২০০-৩৫০; কিচেন সামগ্রীও মেলে; Ocean House, D ১৫০ সুইট ৩০০; Waverly House, D ২০০; H Wroxham L, DAB ২০০, FAB ২৭৫।

সাগরবেলার ডাইনে—H Kalinga, ৩ 282067 DAB ২৫০ ৩০০, FAB ৩৫০; Lobos L, DAB ১৫০; পথ ছেড়ে ডাইনে ১৬ বেডের Youth Hostel, অব: Secretary, Berhampur; বিপরীতে সুন্দর পরিবেশে নিজস্ব কর্মীদের জন্য SBI Holiday Home, কর্মীর মর্যাদার ভারতম্যে চার্জ এদের ভিন্ন, বুকিং: SBI, Local Head Office, Bhubaneswar; এরই পেছনে সাগরমুখী Holiday Inn, নলে জল না মিললেও DAB ১৫০-২৫০। আর আছে সাগরমুখী H Sagar, DAB ২৫০ ডিলাক্স ৩৫০; Rohini Villa, The Cottage, Mayers L, গোপালপুরে। তেমনই আছে A-Class Circuit House সাগরমুখী পথে; আর আছে PWD IB, Revenue IB, গোপালপুরে; এর বুকিং: তহশিলদার, বেরহামপুর, জেলা-গঞ্জাম, ওড়িশা থেকে।

খাবারের ব্যবস্থা প্রায় প্রতিটি হোটেলেই মেলে গোপালপুরে। আর আছে বাস স্ট্যান্ড তথা বাজারে জগদীশ কফি হাউস ও বিপরীতে হোটেল নাগেশ, মন্দের ভাল। তবে, হলিডে হোমের আহার্যে যথেষ্ট উন্নতি ঘটেছে। তেমনই সমুদ্রকে নিবিড়ভাবে চোখে পেতে হলিডে হোমের দ্বিতলের ৩ নম্বর ঘরটি ভালই।

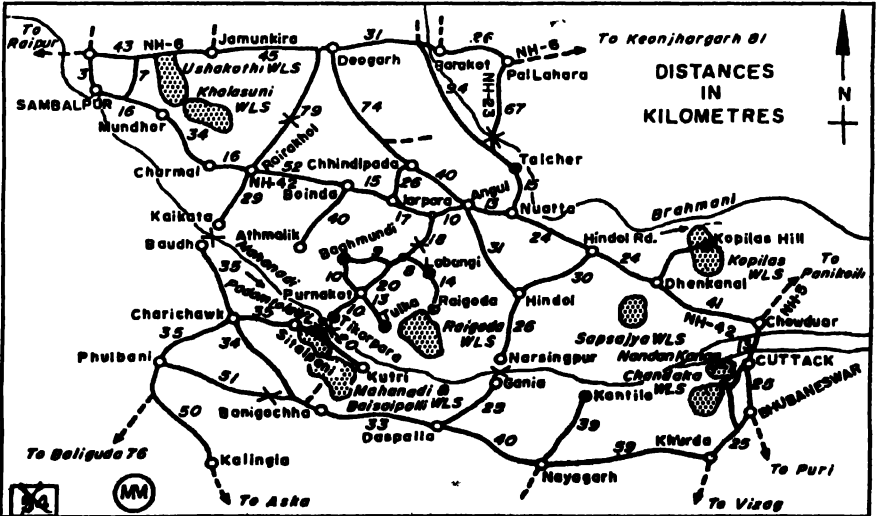
গঞ্জাম জেলায় বঙ্গোপসাগরের বুকে গড়ে উঠেছে মনোরম সাগরবেলা গোপালপুরে। ভার্জিন বীচ রূপে এর প্রশস্তি আজ সারা ভারতে। এককালে বিদেশী পর্যটকদের

প্রিয় ছিল গোপালপুর। সে কারণে, দক্ষিণ পূর্ব রেল তার অবসর প্রাপ্ত অ্যাংলো-ইন্ডিয়ান কর্মীদের আবাস গড়ে এখানে। এরাও আকর্ষণীয় করে তোলে বিদেশী পর্যটকদের পেয়িং গেস্ট প্রধায় থাকার ব্যবস্থা করে গোপালপুরকে। স্বাস্থ্যোদ্ধারের জন্যও গোপালপুরের প্রশস্তি আছে। সমুদ্র এখানে পূর্বীর মতো দামাল না হলেও শান্ত নয়। সমুদ্র-স্নানের পক্ষে খুবই আকর্ষণীয় এর সাগরবেলা। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে খাড়ি বা লেক অর্থাৎ ব্যাক ওয়াটারে। পায়ে পায়ে গোপালমন্দির ও লাইট হাউসটিও অভিযান করে আসা যায় ১৫৪ সিঁড়ি বেয়ে ১৬—১৭-০০টায়। তেমনই দেখে নেওয়া যায় অতীতের বন্দর তথা জেটির ভাঙাচোরা টুকরে ছড়িয়ে-ছিটিয়ে থাকা। জাহাজও যেত জাভা, বালী, সুমাত্রায় গোপালপুর বন্দর থেকে সেকালে।

কটক



কলকাতা থেকে ৪০৯ কিমি দূরে হাওড়া-ভুবনেশ্বর-চেন্নাই রেলপথে কটক। শ্রীজগন্নাথ এক্স হাড়া ভুবনেশ্বরগামী যে-কোনও ট্রেনে কটক যাওয়া চলে। ঘণ্টা নয়কের পথ। তবে, চেন্নাই মেল, করমণ্ডল, ফলকনুমা, দক্ষিণী সুপার ফাস্ট এক্সে সবদিন দূরত্বে কটক কভার করে না। তবুও যেন ৬-১৫র যৌলী এক্সে হাওড়া ছেড়ে ১২-৫২য় কটক চলায় সুবিধা। পুরী-দিল্লী এক্স, নীলাচল, উৎকল কলিঙ্গ, পুরুষোত্তম, পুরী-পাটনা সাপ্তাহিক বৈদ্যনাথ এক্স প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে কটক হয়ে। নানান প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে কটক-পারাদ্বীপ, কটক-চেন্নানল, কটক-ভদ্রক, কটক-খুরদা রোড, কটক-ভুবনেশ্বর, তালচের-পুরী, হাওড়া-পুরী কটক হয়ে।





আর বাস যাচ্ছে কলকাতার শহীদ মিনার থেকে বিকাল ১৬-০০টায়ে ছেড়ে ভোর ৫-০০টায়ে কটক; ফেরে ১৯-৩০এ কটক থেকে, ভাড়া ৯৫। আবার গোপালপুর, পুতামুতাই ও পুরীর বাসও যাচ্ছে কটক ও ভুবনেশ্বর হয়ে। বাস আসছে রাজ্যের নির্দিষ্টক থেকেও কটকে। নিকটতম বিমানবন্দর ২৮ কিমি দূরের ভুবনেশ্বরে। দিন-রাত জুড়ে মুম্বাই বাস ও ট্রেন সংযোগ গড়েছে রাজধানীর সঙ্গে কটকের।



রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি আর বাস স্ট্যান্ড থেকে ২৫ কিমি দূরে Ice Factory Rd, College Sqr, Cuttack-753003, STD 0671।—*Aurobindu Bhawan*, DCB ৬০, DAB ৮৫; স্বপ্ন যেতে বিপরীতে *H Ashoka*, ৬13508, SAB ১৫০-৩০০, DAB ২০০-৩৫০, A/c S ৪০০, D ৪৫০ সুইট ৬০০; *H Vijaya*, ৬13560, SAB ৮৫, DAB ১৫০-২২৫; *Bombay H*, ৬13097, SCB ৪৫-৬৫, SAB ১৫-১২৫, DCB ১০০-১৫০, DAB ১৬০-২২৫; *Cuttack H*, ৬10766, SAB ৬৫-১০০, DAB ১২০-১৭৫। *Pilgrim Rd-3এ—H Ambika*, ৬10137, S ৬০-৮৫, D ৮৫-১৫০; *Sreekrishna Lodging*, SCB ৪৫, DCB ৮০, SAB ৬৫, DAB ১২৫। *H Anand*, Canal Bank Rd, DAB ১৫০, A/c D ২৫০; *Asian H*, Ranihat-3, SAB ৪৫-৮০, DAB ৮৫-১৫০।

রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে শহরের প্রাণকেন্দ্রে Badambadi Bus Stand-9-এর বিপরীতে—*H Roxy*, ৬10110, SAB ৮০, DAB ১০০ ১২৫ ১৫০, TAB ১৭৫; লাগোয়া একই মালিকানাধীন *Roxy L*, DAB ১০০-১৭৫; বাসের ডাইনে *H Malangu*, SCB ৪৫, DAB ৮০ ১০০; স্ট্যান্ডের বাঁয়ে *H Monalisa*, SCB ৮০, SAB ১২৫, DCB ১২০, DAB ১৬৫, সুইট ৩০৫, ৪০০; *Ashok L*, ডাইনে বাঁক নিয়ে আবার ডাইনে Mahatab Rd-1এ—*H Basanti*, ৬10613, S ১০০, D ১৫০, A/c ৩০০; পাশেই *H Sree Jagannath*, DAB ১৫০-২২৫। মূলপথের বাঁয়ে Dolamundai Sqr, Cuttack-753001এ—*H Sagar*, SCB ৬০, SAB ১০০, DAB ১৫০; বিপরীতে *H Akbari Continental*, S ৭০০, ৯৫০ ১১৫০, D ৮৭৫ ১২০০ ১২৫০। রেল ও বাস সংযোগকারী পথ Bajrakabati Rd-753001এ—*Dwaraka Resorts*, SAB ২৫০-৩৫০, DAB ৩৫০-৪২৫, A/c S ৪৫০-৭৫০, D ৬০০-৮৫০, সুইট S ৮০০, D ৯৫০।

বাস স্ট্যান্ড থেকে ২ কিমি দূরে Buxibazar, Cuttack-753001এ—OTDC-র *Panthanivas*, ৬(0671) 621916, DAB ২২৫, A/c D ৩৫০ ডিলাল ৫০০; *H Orient*, S ১০০-১৫০, D ১৭৫-২৫০, A/c S ২৫০, D ৩২৫ সুইট ৪৫০।

এছাড়াও হোটেল আছে নানান সারা শহরময়—*H Bishram*, Jayprakash Marg-12, S ১০০, D ১৭৫, A/c S ২৫০, D ৩২৫; *Stadium G.H.*, DAB ২০০-৩২৫; *H Sailaza*, R3B2, DAB ১২৫-১৭৫; *Ramchandra Lodging*, Mangalbagh, S ৬০, D ১০০, T ১২৫; *H Lords*, Shiva Bzr-1, S ৬০, D ১২৫, A/c D ২০০; *H 5 Star*, Main Sahu Chwak, D ১২৫, A/c D ২২৫; *H Neeladri*, Mangalbagh-1, S ১০০, D ১৭৫, A/c D ৩০০, সুইট ৪৫০; *H Trimurti International*, Link Rd, A/c S ৪০০, D ৬০০; *Debalok Lodging*, Madhupatna-10, S ৮৫, D

১৫০; *H Anand Bhawan*, Bajrakabati Rd, S ৬০, D ১০০; *Indian L*, Mani Sahu Chwak, S ৪৫, D ৮৫; *Harshad H*, Balu Bzr, S ৪৫-৮০, D ১০০-১৭৫; *Santosh Bhawan*, Banka Bzr, S ৪৫-৬৫, D ৬৫-১০০; *Madras H*, Nimachauri, S ৪০, D ৮০; *H Veena*, Choudhury Bzr, S ৬৫, D ১২৫; *Indrapuri L*, Machhuabazar, S ৬৫, D ১২৫; ছাড়াও রয়েছে নানান সাধারণ হোটেল। আর রয়েছে CH, PWD IB ও রেলের রিটার্নিং রুম কটকে।

তবুও থাকার জন্য *মোনালিসা*, *বারকা*, *বিজয়া*, *রস্মি*, *বাসভী*, *আনন্দ*, *পাহুনিবাস* আজও অগ্রগণ্য। আর আহারে বাস স্ট্যান্ড থেকে বেরুতেই চৌরাস্তার ডাইনে Dholamundai Sqr-এ *Gokul* ও বিপরীতে *New Kalika South Indian Hotel* দুটি আদরনীয় হবে। মিঠাইতেও গোকুল যথেষ্ট খ্যাত।

কটক জেলার জেলা সদর কটক কিছুকাল (১৯৪৭) আগেও ছিল ওড়িশার রাজধানী। সম্ভবত কেশরী রাজাদের হাতে শহরের গোড়াপত্তন। উত্তরে মহানদী আর দক্ষিণে কাঠজুরী—এই দুই নদী শহরের তিন পাশ ঘিরে বয়ে চলেছে। আকারও তার দ্বীপাকার। কাঠজুরী নদীর ১১ শতকের বাঁধটিও কেশরী রাজাদের আর এক কীর্তি। আজও বন্যার হাত থেকে শহরের পরিব্রাতা পাথরের এই বাঁধ। মতান্তরে ৫ শতকের শহর কটক।

গঙ্গা রাজা অনঙ্গভীম ১৪ শতকে মহানদীর পাড়ে বারবাটি ফোর্ট অর্থাৎ দুর্গ গড়েন। চারপাশ গভীর পরিখায় ঘেরা, দু'পাশ ঘিরে পাথরের দুই প্রাচীর—প্রতিরক্ষায় গুরুত্বপূর্ণ ছিল সেকালে। আকবরের রাজত্বকালে এই দুর্গেই ছিল রাজা মুকুন্দরামের নয়তলার প্রাসাদপুরী। আজ সেটি বিধ্বস্ত হলেও সিংহদরজা ও পরিখাটি রয়েছে। ১৭-এরই বিপরীতে ২৫ একর জমিতে হয়েছে বারবাটি স্টেডিয়াম। পরিবেশ মনোরম। পথেই পড়ে দেবী কটকচতীর মন্দির।

আজকের শহর থেকে ৫ কিমি দূরে কপালেশ্বর দুর্গ। এই দুর্গে রয়েছে চোরগঙ্গা পুকুর। সম্ভবত উৎকলরাজ চোরগঙ্গার নামে নাম। গ্রামের নাম কটক চৌদার। কথিত আছে, সর্পযজ্ঞ করার কালে জনমেজয় এই নগরটি গড়েন। শহরান্তে পরমহংস শিব মন্দির। কিংবদন্তীতে ঘেরা অনন্ত গর্ভ কুপ—পবিত্র জলে দেবতাও প্লাবিত হন উৎসব-অনুষ্ঠানের বিশেষ বিশেষ দিনে। আর শহরের কেন্দ্রমণি হয়ে র্যাডেনশ কলেজিয়েট স্কুল। নেতাজী সুভাষচন্দ্র বসু বাল্যে এই বিদ্যালয়ে পড়াশোনা করেছেন। তেমনই সুভাষ চন্দ্রের পৈতৃক বাড়ি জানকীনাথ ভবনে জাতীয় সংগ্রহশালা বসেছে। এরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। এছাড়া শহরের প্রাণকেন্দ্রে কদম্ব রসুল (Quadam-i-Rasul)—প্রাচীরে ঘেরা সুন্দর কারুকার্যময় ৩টি মসজিদ। মক্কা থেকে আনা মহম্মদের পায়ের ছাপও রয়েছে চক্রাকার পাথরে। আর হয়েছে আধুনিক কটকে—থার্মাল স্টেশন, কাগজ কল, কণিষ্ক রেফ্রিজারেটর কর্পোরেশন, কোড স্টোরেন্স প্রাইট, কাগড় ও কাচের কারখানা, কেন্দ্রীয় চাউল গবেষণা কেন্দ্র, গোপবন্ধু

পার্ক—এগুলিও দেখে নেওয়া যায় চলতে-ফিরতে। কটক ভ্রমণের স্মারক-রূপে সঙ্গী করুন রূপায় তৈরি তারের কারুকার্যখচিত নানান আভরণ, শিং ও ব্রাসের নানান কিছু ও কটকি শাড়ী, যার সমাদর আজ সারা বিশ্ব জুড়ে।

পারাদ্বীপ: উৎসাহীরা ৮৩ কিমি দূরের পারাদ্বীপ বন্দরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন কটক থেকে। ট্রেন যাচ্ছে ১৮-৩৫এ কটক ছেড়ে ২১-৫৬য় পারাদ্বীপে; ফেরে ৫-১৫য় পারাদ্বীপ থেকে। আর কটক রেল স্টেশন থেকে রিকশায় ৩ কিমি দূরের বাদামবাড়ি বাস স্ট্যান্ডে পৌঁছে, আধঘণ্টা অন্তর এক্স ও নন স্টপ সার্ভিসে বাস যাচ্ছে পারাদ্বীপ। ৫-০০টায় প্রথম ছেড়ে ২০-০০টায় শেষ বাস কটক থেকে; আর ৮-৩০এ প্রথম ছেড়ে ১৮-৪৫এ শেষ বাসটি পারাদ্বীপ ছেড়ে কটক ফেরে। ঘণ্টা দু'য়েকের পথ। ভাড়া ১৮।

Paradwip-754142, STD 22986এ বাস স্ট্যান্ডের বাঁয়ে বাজার লাগোয়া *H Aristocrat, Q 22092, SAB ২৫০ ৩০০ DAB ৩৫০ ৪৫০ A/c S ৪৫০ ৫৫০ D ৬০০ ৬৫০ সুইট ৭৫০ ৮৫০; অ্যারিস্টোক্র্যাটের পিছে ১ কিমি দূরে H Paradwip International, Q 22985, SAB ১৭৫-৩৫০ DAB ৩০০-৪৫০ A/c S ৪৫০-৬৫০ D ৬৫০-৮০০; বাস থেকে ১ কিমি সাগরমুখী পথে H Golden Anchor, Q 22647, SAB ৩০০ DAB ৪০০ A/c S ৬৫০ D ৮০০। আর আছে বাস থেকে ১ কিমি দূরে সাগর পাড়ে Circuit House, DAB ৪০, অব: ADM, Paradwip; বাস থেকে ১৫ কিমি দূরে নেহরু বাংলা তথা পোর্ট ট্রাস্টের Jawahar GH, অব: Chairman, Port Trust, Paradwip-745142. অবস্থান মাহাশ্বে সার্কিট হাউসটি অনবদ্য। তেমনই পারাদ্বীপ ইন্টারন্যাশনাল ব্যবস্থাপনায় ভালই।

পোর্টকে নিয়ে পারাদ্বীপ। নগরীও গড়ে উঠেছে পোর্টের বহুমুখী কর্মধারা জুড়ে। দেশ-দেশান্তর থেকে জাহাজ এসে জেটির অপেক্ষায় নোঙর করে দাঁড়িয়ে। বাস স্ট্যান্ডের অদূরে বন্দর লাগোয়া জেলেদের কর্মকাণ্ডও দেখে নেওয়া যায় প্রবেশকটকে অ্যাডমিনিস্ট্রিটিভ অফিসারের অনুমতিতে ট্রলারের আনাগোনা—মাছ উঠছে, নিলামে বিক্রি। তারই মাঝে হলুদ বালির সৈকতবেলায় আছড়ে পড়ছে বঙ্গোপসাগর। তবে, স্নানের উপযোগী বীচের অভাব। পর্যটন মানচিত্রেও পারাদ্বীপের স্থান উল্লেখ্য নয়। আর আছে লাইট হাউস, ক্রোকোডাইল পার্ক, ডিম্বার পার্ক পারাদ্বীপে। অদূরে মহানদী সাগরে মিলেছে।

লবঙ্গী ওয়াইল্ডলাইফ স্যান্ডচুয়ারি: কটক রেল স্টেশন থেকে রিকশায় শহরের প্রাণকেন্দ্রে বাদামবাড়ি বাস স্ট্যান্ড পৌঁছে NH-5এ ১৩ কিমি যেতে Chowduar থেকে বামহাতি NH-42এ ডেনকানল ৪১ অঙ্গুল ৬১ রেখে আরও ১০ কিমি দূরের রোড জং থেকে ডানহাতি ২৬ কিমি যেতে Labangi FRH. রোড জং থেকে ৪৮ কিমি দূরে মহানদীর পাড়ে টিকরপাড়া। ২ কিমি দূরে ২টি FRH আছে টিকরপাড়া। ORTC-র বাসও যাচ্ছে কটক থেকে ৬—২১-৩০এ ১ ঘণ্টা অন্তর ডেনকানল হয়ে অঙ্গুল। অঙ্গুল থেকে নতুন করে টিকরপাড়ার

বাসে বা ট্রেকারে বা জিপে চলা যেতে পারে সাতকোশিয়া গর্জ স্যান্ডচুয়ারি অর্থাৎ লবঙ্গী। মধ্য প্রদেশের রায়পুর জেলার ফরসিয়া গ্রামের দীঘি থেকে জাত প্রায় ৯০০ কিমি দীর্ঘ নদ মহানদী পাহাড় ভেঙে তৈরি করেছে ২৫ কিমি দীর্ঘ ভারতের বৃহত্তম সাতকোশিয়া গর্জ। কলকাতার বাবুঘাট থেকেও প্রতি বিকালে (১৭-০০) ১০২ টাকায় সরাসরি অঙ্গুল যাচ্ছে প্রাইভেট বাস। সুন্দর অরণ্যভূমি—স্বপ্নময় লবঙ্গী। শাল-সেগুন-টিকে ছাওয়া—প্রাচীর হয়ে চারপাশে পাহাড়শ্রেণী। বয়ে চলেছে মহানদী গিরিখাতের মাঝ দিয়ে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে কুমিরে আকীর্ণ মহানদীর জলে। কুমির প্রকল্পও হয়েছে টিকরপাড়ায়। তেমনই ঘড়িয়াল সীতরে চলে—নৌকার সঙ্গে বাইচ খেলে। চলতে-ফিরতে দেখে নেওয়া যায় কুমির ও ঘড়িয়াল—সান-বাথ সারছে মহানদীর পাড়ে পাড়ে। তেমনই কোরাস গায় চেনা-অচেনা নানান পাখি দিন-রাত জুড়ে। লবঙ্গী থেকে টিকরপাড়া জুড়ে লবঙ্গী অরণ্য। স্যান্ডচুয়ারির প্রবেশদ্বার পম্পাসর থেকে ৩০ কিমি দূরে টিকরপাড়া। আর পুরানাকোট থেকে টিকরপাড়ার দূরত্ব ১০ কিমি। পুরানাকোটের ১০ কিমি ডাইনে রায়গাড়া, ১৩ কিমি বামে তুলকা।



থাকারও নানান ব্যবস্থা লবঙ্গী অরণ্যে। টিকরপাড়ায় মহানদীর পাড়ে পাহাড়ের পাদদেশে ফরেস্ট রেস্ট হাউস। অদূরে ওয়াচ টাওয়ার। বঙ্গ দূরে মিষ্টি জলের পুকুর—তৃষ্ণা মোটাতে আসে বন্যজন্তুরা। অরণ্যের নৈসর্গিক শোভা মোহময় করে তোলে। চলতে-ফিরতে কুমির প্রকল্পটিও দেখে নেওয়া যায় টিকরপাড়ায়। পুরানাকোট পাহাড়ী টিলার FRH-এ রাত্রি যাপনে রোমাঞ্চ আছে। লেপার্ড, ভালুক, বাইসন খেলায় মাতে রেস্ট হাউসের চারপাশে। তুলকার FRH-টিও বৈচিত্র্যে ভরা। দরবার বসে হাতির বাংলাকে ঘিরে পাহাড়ের পদতলে আদিম অরণ্যভূমি। বাংলাকে ঘিরে। তবুও যেন লবঙ্গী FRH-এর পরিবেশ আরও সুন্দর। চারপাশে সবুজ অরণ্য—দূরে পাহাড়শ্রেণী প্রাচীর গড়েছে। বাঘেরা বিহারে বেরোয়—দর্শন না মিললেও গর্জন শোনা অসম্ভব নয়। বাইসন চরে বেড়ায়, হরিণ অজ্ঞয়। তারই সাথে ফুলের জলসায় বর্ণালী বাড়ে সারা অরণ্যভূমির। তেমনই আছে রোড জং থেকে ৫২ কিমি দূরে ভীমগোরা ফলস, ৫১ কিমি দূরে তুলকা, ৩৮ কিমি দূরে পুরানাকোট, ৪০ কিমি দূরে রায়গাড়া, ৪৮ কিমি দূরে তিন পাহাড়ে ঘেরা সেগুন ছাওয়া বাঘমুণ্ডা। ছোট্ট অবকাশ যাপনে এদের আকর্ষণ অনবদ্য। Labangi, Tikurpara, Baghmunda, Tulka, Raigorha, Puranakot FRH-এ ঘর ৬০ হারে, আহার নিজ ব্যবস্থায় সর্ব। এদের বুকি: DFO, Aungul, Dist-Dhenkanal, Orissa, PC-759122.

ধবলেশ্বর: কটক বাদামবাড়ি বাস স্ট্যান্ড থেকে আটপূরের বাসে NH-5এ ১২ কিমি যেতে চৌদুয়ার থেকে ১৫ কিমি দূরে মহানদীর তীরে মধেশ্বর। মধেশ্বরের অপর পাড়ে মহানদীর জলে ঘেরা দ্বীপ ধবলেশ্বর। নৌকায় পারাপার। বসতিহীন দ্বীপে উৎকলরাজদের গড়া ১০-১১ শতকের (বিশাল) মহাকাল মন্দিরে নানান কিংবদন্তিতে ঘেরা অমঙ্গ

এক পাথরখণ্ড—সেবতা শিব। খুবই জাগ্রত এই সেবতা। কার্তিক পূর্ণিমার আগের ত্রয়োদশীতে ৫ দিন ব্যাপী পঞ্চক যাত্রা উৎসবে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে OTDC-র ১৬ বেডের Panthasala-য়, DCB ৬০ ডর্বি বেড ২০; নিরামিষ আহার মেলে ক্যান্টিনে। অবু: ATO, Panthasala Dhabaleswar, PO-Mancheswar, Via-Chasapada, Dist-Cuttack, PC-754027, ☎ (06723) 20264.

কপিলাস: কটক (বাদামবাড়ি) বাস স্ট্যান্ড থেকে তালচের বা অঙ্গুলের বাসে ঘণ্টা দেড়েক ডেনকানল। পথে পড়ে কেশরী রাজাদের অতীত রাজধানী চৌদুয়ার। জমজমাট জেলা সদর ডেনকানলেও শিল্প-স্বয়ামশ্রিত প্রাচীন নানান মন্দির ও ৬ কিমি দূরে টিলার টঙ্ক যতননগর প্যালেস দেখে চলা যায়। ডেনকানল থেকে দেওগাঁর মিনিবাস বা জিপে পূর্বঘাট পর্বতমালার পাহাড় চিরে ২৬ কিমি যেতে ওড়িশার কৈলাস ৪৫৭ মি উঁচু কপিলাস। পথশোভা সুন্দর। পাহাড়ের কোলে ছোট্ট শহর। স্বাছ্যকেন্দ্র রূপে কপিলাসের প্রশস্তি। বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া মন্দির। প্রবণের জলে নানান ব্যাধির উপশম মেলে। বট, অশ্বথ, কেন্দু, মহল, বেল, আমলকি, বহেরা, হরিতকীর সাথে পবনপুত্র হনুরা দাপিয়ে বেড়ায়। আর আছে মন্দিরমুখী পথে বাঁকের মুখে চিড়িয়াখানা কপিলাসে। চিড়িয়াখানা শেষ হতে ঘড়িয়াল প্রজনন প্রকল্প। লাগোয়া লেক—বোটিং-এর ব্যবস্থা মেলে। বোট চেপে দেখে নেওয়া যায় দূর-দূরান্তের পাহাড়শ্রেণী ও কপিলাসের বনবাগাড়। কপিলাসের সায়েল পার্কটিও অনবদ্য। সব বয়সের সবার কাছে আদরণীয় হবে বিজ্ঞানের নানান মডেল। দিন-রাত জুড়ে পাথ-পাথালির জলসা আর রাতে চাঁদের হাট বসে কপিলাসের আকাশে। চাঁদ ভাসা রাতে কপিলাসের বন-পাহাড় রহস্যে ঘেরা মনোমুগ্ধকর। দিন তিনেকের অজ্ঞাতবাস কাটিয়ে আসুন কপিলাস-এ। আর একান্তই উচিত হবে ছানাপোড়ার স্বাদ নেওয়া কপিলাসের দোকানপাটে। পাহাশালার ১ কিমি দূরে দেওগাঁ গ্রাম। আরও ৫ কিমি ঘাট রোড চড়ে ১৫৭৫ ফুট উঁচুতে ওড়িশা শৈলীতে তৈরি শিবের মন্দির। গাড়ি যাচ্ছে মন্দির ধারে। আবার ১৩৬৫ ধাপের সিঁড়ি পথেও মন্দিরে চড়া যায় দৃষ্টান্তে আধা করে। রক্তবেরঙের প্রজাপতি সঙ্গ নেয় সারাপথে। শিবরাত্রিতে মেলা বসে। তবে পাণ্ডাদের দাপট পরিবেশের সঙ্গে বিসদৃশ লাগে। শ্রাবণে দূর-দূরান্ত থেকে বীক কাঁধে ভোলে বাবার ভক্তরা আসেন জল নিয়ে। মন্দির থেকে সিঁড়ি পথে পাহাড় চড়ে দেখে নেওয়া যায় বিষ্ণু মন্দিরের সাথে কপিলাসের প্রকৃতি।

বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি থেকে কপিলাসে OTDC-র ১৩ বেডের Panthasala, DAB ৮০ ডর্বি বেড ২০; অবু: Asstt Tourist Officer, Panthasala Kapilas, Dist-Dhenkanal, PC-756011, ☎ (06762) 84419. ধরমশালাও সাধারণ হোটেলও আছে কপিলাসে। PWD-র বাংলোও আছে পাহাড়ে। অবু: অ্যাসিস্ট্যান্ট ইঞ্জিনিয়ার, পি ডাবলু ডি, ডেনকানল, ওড়িশা। আর

ডেনকানল-759001-এ আছে—H Shakuntala, DAB ১৫০; H Surya, DAB ১৫০-২৫০ A/c ৪০০; ছাড়াও সাধারণ হোটেল।

এছাড়াও অত্যাশ্বেহীরা বাসে বাসে বেড়িয়ে নিতে পারেন ডেনকানল থেকে সপ্তশয্যা ১২ কিমি, আনসুপা হ্রদ ৩০ কিমি, অঙ্গুল ৫৮ কিমি, জোরাগু, তালচের ছাড়াও নানান। কটক-ডেনকানল-তালচের-অঙ্গুল প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৮-০৫এ ছেড়ে ৫:৫ ঘণ্টায়; তালচের যাচ্ছে ১৯-২০এ ছেড়ে ৪ ঘণ্টায় পুরী-তালচের প্যাসেঞ্জার ট্রেন।

দশাধার: ডেনকানল থেকে ৩৬ কিমি দূরে নিরাল-নির্জন ছোট্ট মফস্বল শহর কামাখ্যানগর। ঘন অরণ্যে ঢাকা ছোট্ট পাহাড়শ্রেণী—নাম তার বুঢ়া পাহাড়। আরও ২৬ কিমি দূরে দশাধার অর্থাৎ বুড়িবিলা গ্রাম পেরিয়ে ২ কিমি দূরে পৌনে এক কিমি দীর্ঘ বাঁধে গতি রুদ্ধ হয়েছে রামিয়াল নদীর। তৈরি হয়েছে জলাধার অর্থাৎ লেক। পাহাড়-পাহাড়, ঘন জঙ্গল—চেনা-অচেনা পাখির কুজন তারই সাথে কুলকুল রবে তান ধরে রামিয়াল। অরণ্যচরেরা দশাধারের রূপ-রস-মধু উপভোগে অভিসারে বেরয় প্রতি সাঁঝে। মন্দিরও হয়েছে বাঁধের কাছে—সেবতা শিব। থাকার একমাত্র ব্যবস্থা সেচ দপ্তরের বাংলোয়, অবু: EE, Angol Irrigation Division, Po+Dist- Angul, Orissa, ☎ (06764) 30343. কামাখ্যানগরেও সেচ বাংলো আছে, বুকিং: একই। FIB-ও আছে কামাখ্যানগরে। যাতায়াতে ডেনকানল থেকে বাস ও ট্রেকার মিললেও নিজস্ব ব্যবস্থায় জিপ থাকা ভাল। আহার সর্বত্রই নিজস্ব।

সপ্তশয্যা: ডেনকানল থেকে ১২ কিমি দূরে অরণ্যময় পাহাড়ে সপ্তশযির তপস্যাশ্রম সপ্তশয্যা অর্থাৎ সাত পাহাড়ে সাত গুহা ও সাত বরনা। মূর্তি হয়েছে ধ্যানমগ্ন সাত ঋষি। আর আছে রঘুনাতথের মন্দির পাহাড়ে। বনবাসকালে শ্রীরামচন্দ্র সাতদিন অবস্থান করেন। রাম নবমীতে ৩ দিনের জাঁকালো উৎসব হয়। জিপ ও ট্যাক্সি যাচ্ছে ডেনকানল থেকে। তবে, ট্যাক্সি শেষ ২ কিমি পাহাড় চড়তে অক্ষম; জিপ পৌছায় আরও ১ কিমি।

আনসুপা: কটক থেকে ৭০ কিমি দূরে অচেনা আন-সুপার আকর্ষণ তার প্রকৃতিপন্থ লেকের জন্য। বাঁশ আর আমগাছে ছাওয়া সুন্দর প্রকৃতির মাঝে পট্টে আঁকা ছবি আনসুপা। দূরে-দূরান্তের সারাশুর পাহাড়শ্রেণী বাহু গড়েছে। শীতে আকর্ষণ বাড়ছে—চেনা-অচেনা পরিযায়ী পাখির মেলা বসে লেকের জলে। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই আনসুপায়। উচিত হবে কটক থেকে যে-কোনও সকালে ৮-০৫এর ডেনকানল প্যাসেঞ্জারে ৯-২৪এ রাজাখণ্ড গৌছে ২০ কিমি বাসে আনসুপায় চলা। ডেনকানল থেকেও বাস বা ট্যাক্সিবে বেড়িয়ে নেওয়া যায় আনসুপা। দিনান্তে (১৭-৩৫) একইভাবে কটক ফেরা যেতে পারে।

অঙ্গুল: কটক-ডেনকানল-তালচের-অঙ্গুল শাখায় ৮-০৫এ কটক ছেড়ে ৯-৫৫য় ৫২ কিমি দূরে ডেনকানল

পৌছে আরও ৫৮ কিমি দূরের অঙ্গুল যাচ্ছে ১০-০৫এ টেনকানল ছেড়ে ১৩-২০এ টেনকানল-অঙ্গুল প্যালেঞ্জার। ORT-র বাসও চলে এপথে। অঙ্গুল থেকে ৯-০০, ১২-০০, ১৫-০০টায় বাসে বা জিপে অরণ্য চিরে পথ চলে ৬২ কিমি দূরের টিকরপাড়ায়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *Gautambihar L D ১৫০* অঙ্গুলে।

দি ওয়াভার ট্রান্সেল: আবার কটক থেকে বাসে বা গাড়িতে ৬২ কিমি উত্তর-পূবে অতীতের বৌদ্ধ সংস্কৃতির পীঠস্থান *দি ওয়াভার ট্রান্সেল*—ললিতগিরি, উদয়গিরি, রত্নগিরি বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ৭ শতকের চীনা পরিব্রাজক হিউ-এন সাঙ-এর বর্ণনায় মেলে এই অঙ্গুল অর্থাৎ ওড্রয়ে ১০০টি সঙ্ঘারামে ১০০০০ ভিক্ষু মহাযানচর্চায় রত ছিলেন। আর সে পুষ্পগিরি পাহাড়ের এই ট্রায়ে হয়ে থাকবে। বিশ্বের প্রাচীনতম আর সুন্দরতমও বটে *Birupa-Chitrotpala* উপত্যকার এই ত্রয়ী।

১৯৮৫-৯২এ খননে খ্রিপূ ২ শতকে সুঙ্গদের কালের ললিতগিরিতে ইটে গড়া কারুকার্যমণ্ডিত বিশাল মনাস্তির চৈত্য হলে সোনা ও রূপার নানান সন্টারের সাথে পাথরের কৌটায় তথাগতের কেশ ও অস্থি মিলেছে। কুশাণ ও ব্রাহ্মী-লিপিরও সন্ধান মিলেছে মৃৎপাত্রে। সেকালে বৌদ্ধদর্শন শিক্ষার অন্যতম কেন্দ্রও ছিল ললিতগিরি। ধনুকাকৃতি খিলানওয়ালা মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ, ৪টি মনাস্তি, বিশাল স্তূপও আবিষ্কৃত হয়েছে খননে। জাভা ও দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ার মন্দির স্থাপত্যে ললিতগিরির প্রতিচ্ছবি মেলে। এমনকি বিশালাকার বুদ্ধ মূর্তিতেও বৈচিত্র্য আছে—কৃষ্ণিত ঠোট, বোলানো কান, দীর্ঘায়ত মুখ, ক্রমাবনত কপাল উদ্রোখ। খননে পাওয়া সন্টার নিয়ে মিউজিয়ামও হয়েছে। পাঙ্খার ও মথুরা শৈলীর প্রভাব মেলে ললিতগিরির ভাস্কর্যে।

ললিতগিরি থেকে ২৪ কিমি দূরে তাত্ত্বিক বৌদ্ধ ধর্মের প্রাণকেন্দ্র উদয়গিরির অবস্থান। বয়ে চলেছে কিমিরিয়া নদী উদয়গিরি ও রত্নগিরির মাঝে। তৈরিও এরা দীর্ঘ পরে—তবে, বৌদ্ধ ধর্মের ভারত তথা বিশেষে জয়যাত্রা উদয়গিরি থেকেই। বৌদ্ধতন্ত্রের লিখন থেকে আবিষ্কৃত ৬ শতকের উদয়গিরিতে ৩ মি উঁচু ভূমিস্পর্শ মূর্তায় পদ্ম হাতে মূর্তি হয়েছে লোকেশ্বরের। ৮ শতকের লিপিও মিলেছে মূর্তিতে। এমনকি ৭ শতকে *Saharapada*-ও এসেছেন নালন্দা থেকে উদয়গিরির *Vajrayana* কেন্দ্রের আকর্ষণে। তন্ত্র-মতবাদের প্রথম গুরুও হন সাহারাপা। আজকের পর্যটকদের জন্য রেলিকা করে গড়ে তোলা হচ্ছে অতীতদিনের ভাস্কর্য উদয়গিরিতে। আর আছে ২০০০ বছরের প্রাচীন *বাঙ্গী* অর্থাৎ কুশ। আজও এর জলপানে তৃষ্ণা নিবারণ করেন স্থানীয়রা। জনশ্রুতি, নানান ব্যাধিরও নিরাময় ঘটে বাঙ্গীর পূত জলে।

উদয়গিরি থেকে ১০ কিমি দূরে গুপ্তরাজ্যের তৈরি রত্নগিরির অবস্থান। বাজারের পিছোয় লাগোয়া রত্নগিরি-তেও মনোরম স্তূপ, অনুপম শিল্প-সুবাসমণ্ডিত চতুর্ভুজাকার

২টি মনাস্তি, ৮টি মন্দির, অসংখ্য ছোট স্তূপ, ভাস্কর্যের নানান নিদর্শন আবিষ্কৃত হয়েছে খননে। অপূর্ব কারুকার্যমণ্ডিত তোরণদ্বার। বৌদ্ধতাত্ত্বিক তিন শতকেরও অধিক দেব-সেবী। ব্রোঞ্জ ও পাথরের মূর্তিও মিলেছে বুদ্ধের। পাহাড় চূড়ায় ধ্যানস্থ বুদ্ধের বিশালাকার মূর্তি—চক্ষু তার অর্ধনির্মীলিত। ৫ থেকে ১২ শতকে গড়ে ওঠা রত্নগিরি ১৬ শতক পর্যন্ত বৌদ্ধ দর্শনের ৮টি শাখার অন্যতম কেন্দ্রও ছিল। মিউজিয়ামও হচ্ছে খননে মেলা স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের নিদর্শন নিয়ে রত্নগিরিতে। খননে আজও নিত্য নতুন সন্ধান মিলছে ললিতগিরি, উদয়গিরি ও রত্নগিরির বৌদ্ধ বিহারের অনুপম শিল্প-সুখমা, স্তূপ ও চৈত্য-র নানান ভাস্কর্য।

কটক থেকে টৌদয়ার ৫, চণ্ডীখোল ৪৪ কিমি যেতে NH 5-A ধরে পারাধীপমুখী ১০ কিমি গিয়ে বামহাতি পথে ২২ কিমি দূরে রত্নগিরির অবস্থান। ৯-০০, ১২-০০ ও ১৫-০০টায় কটক ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় রত্নগিরি যাচ্ছে প্রাইভেট বাস। বাসপথে রত্নগিরির ১০ কিমি আগেই উদয়গিরির অবস্থান। আর উদয়গিরি থেকে ১২ কিমি দূরের 5-A জাতীয় সড়কে ফিরে বামহাতি কেন্দ্রপাড়া মুখী ১০ কিমি গিয়ে টাওয়ার লাগোয়া পথে ২ কিমি যেতে ললিতগিরি। কটক থেকে দূরত্ব ৬২ কিমি। আর কেন্দ্রপাড়া ২২, পারাধীপ ৬৪ কিমি দূরে উদয়গিরি থেকে। কটক-কেন্দ্রপাড়া বাস চলছে 5A জাতীয় সড়ক ধরে। রোড জংশনে নেমে অনিয়মিত রিকশায় চলা যেতে পারে ললিতগিরি। তবে, বাস যাত্রায় একই দিনে রত্নগিরি ও উদয়গিরি দেখা সম্ভব হলেও সংযোগকারী বাসের অভাবে ললিতগিরি দেখে নেওয়া অসম্ভব হয়ে পড়ে। তবে, নিজস্ব গাড়ির অভাবে শ'পাঁচেক টাকায় গাড়ি নিয়ে ঘণ্টা সাতকে ট্রায়ে দর্শনের সাথে ফেরার পথে ছড়িয়ায় জগন্নাথ মন্দিরও দেখে নেওয়া যায়। ঘণ্টা খানেক শহর বেড়িয়ে সাঙ্গ হলো কটক দর্শন। তবুও যেন নানান বাসে চণ্ডীখোল পৌঁছে চুক্তিতে (শ'দুয়েক টাকায়) ট্রাকার নিয়ে ট্রায়ে দর্শন সেরে নেওয়া যেতে পারে। বাসও মেলে মুম্বাই কটক থেকে চণ্ডীখোলের। আর্থিক সাহায্য মেলে চণ্ডীখোল হয়ে যাতায়াতে।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে OTDC-র *Panthasala*, D ৩৬ ডর্মি ২০, বুকিং: Tourist Officer, Orissa Tourism, Cuttack, ৩ (0671) 612225. তবে, অবস্থান এড়িয়ে বাসে যাজপুর চলাই সুবিধার।

যাজপুর বিরজাক্ষেত্র

যাজপুর আর এক হিন্দু-তীর্থ। ৫১ পীঠের এক পীঠ যাজপুর। বিষ্ণু চক্রে টুকরো হওয়া সতীর নাভি পড়ে যাজপুরে। এমনকি গয়াসুরের নাভিও পড়ে এখানে। রাখা যযাতি কেশরীর নামে নাম হয় জয়গার—যযাতিপুর। কালে কালে যাজপুর। রাজধানীও ছিল সেকালে। তবে, পৌরাণিক কালে নাভিগয়া তীর্থ নামেও খ্যাত ছিল যাজপুর তথা বিরজাক্ষেত্র।

কলকাতা থেকে ভুবনেশ্বরের প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে যাজপুরের সংযোগকারী রেল স্টেশন যাজপুর-কেওনবাড় রোড হয়ে। কলকাতা থেকে দূরত্ব ৩০৭ কিমি, কটক আরও ৭২ কিমি এগিয়ে, ভুবনেশ্বরের দূরত্ব ১০০ কিমি। বাস যাচ্ছে রেল স্টেশন থেকে

১৯ কিমি দূরের যাজপুর টাউনে। আর যাক্ষে ORT-র বাস ১৭-০০ টায় কলকাতার বাবুঘাট ছেড়ে যাজপুর টাউন হয়ে সিংপুরে। কটক থেকেও বাসে যাজপুর বেড়িয়ে নেওয়া যায়। সরাসরি বাসও মেলে কটক থেকে যাজপুর টাউনের। খন্টা তিনেকের পথ কটক থেকে।

যাজপুরে হোটেলের অভাব। তবে PWD IB, অতি সাধারণ হোটেল, পাণ্ডা ঠাকুরদেব বাড়ি ছাড়াও ধরমশালা আছে বেশ কয়েকটি। আর আছে OTDC-র *Biraja Panthasala D ৬০* ডব্লিউ বেড ২০ যাজপুরে; বুকিং: ATO, Panthasala, Jaipur. PC-755001, ০ (06728) 20029. তবে, যাজপুরে থাকার দরকার হয় না। যাজপুর দেখে বাসে কটক বা বালাসোর বা কেওনঝড়ে গিয়ে রাত কাটান। আবার চলার পথে Bhadrak-756100-র *রাজেশ লজ, শাউনিকতেন লজ, সরোজ লজ, আদর্শ লজ* রাত কাটিয়ে বালাসোর হয়ে বাসে বাসে টাঙ্গিপুর্ন ও যোগয়া যেতে পারে। কলকাতারও ট্রেন ও বাস মেলে ভদ্রক থেকে। তবুও যেন উচিত হবে ভদ্রক থেকে ভিতরকণিকা বেড়িয়ে নেওয়া।

মন্দিরকে নিয়ে যাজপুর টাউন। মূল মন্দিরটি বিরজা (দুর্গা) দেবীর। গর্তমন্দিরের রত্নবেদীতে ব্রহ্মার স্টম্ভ দেবী বিরজা বা দুর্গা সিংহবাহিনী। দ্বিভুজা দেবীর এক হাতে শূল, অপর হাতে মহিষাসুরের লাঙ্গুল। দুর্গা ও কালাী পূজাতে উৎসব হয়। রথযাত্রাও হয় দুর্গাপূজার কালে। আর রয়েছে নাভিকুণ্ড; জনশ্রুতি, বৈতরণীতে অবগাহন করে নাভিকুণ্ডে পিশুদানে সাত পুরুষের স্বর্গবাসের পারমিট মেলে। বিরজা মন্দিরের পাশেই ব্রহ্মাকুণ্ড। কথিত আছে, ব্রহ্মার দশাশ্বমেধ যজ্ঞকালের কুণ্ড এটি।

জগন্নাথদেবের মন্দিরও রয়েছে যাজপুরে। নীলমাধব ছাড়া পুরীর মতো সব দেবতাই আছেন মন্দিরে। পাণ্ডাদের দাবি, এটিই ওড়িশার মূল জগন্নাথ মন্দির। এছাড়াও মন্দির রয়েছে যাজপুরে আরও নানান। তাদের মধ্যে বৈতরণীর ঘাটে গণপতির মন্দিরটি উল্লেখ্য। বিশাল মূর্তি হয়েছে লাল রঙের গণেশের। দেওয়ালের কুলদ্বীপে দশানন রাবণের ছোট মূর্তিটি আর এক দ্রষ্টব্য।

মাতৃকা মন্দিরটিও কম আকর্ষণীয় নয় যাজপুরে। অতি সাধারণ—সরু, লম্বাটে এই মন্দিরে অষ্টমাতৃকার পূজা হয়। অষ্টমাতৃকা অর্থাৎ চামুণ্ডা, বরাহী, ঐন্দ্রী, বৈষ্ণবী, ব্রাহ্মী, কৌমারী, মহেশ্বরী ও নারসিংহী মূর্তি রয়েছে মন্দিরে। মতান্তরও আছে নানান এই অষ্টমাতৃকাসের নিয়ে।

পুণ্যতোয়া বৈতরণীতে ঘেরা দ্বীপাকার যাজপুর তীর্থে পাণ্ডবরাও আসেন পূর্বপুরুষদের তর্পণ করতে। সেই থেকে তর্পণ প্রথাও চালু রয়েছে যাজপুরে। শ্রীচৈতন্য মহাপ্রভুও এসেছিলেন যাজপুরে। সে স্মৃতি জড়িয়ে আছে চৈতন্য পাদপীঠ মন্দিরে। এছাড়াও রয়েছে বরাহরূপী বিষ্ণুর মন্দির, বিষ্ণুদেবীর মন্দির, ৯ কোটি সূর্যনারায়ণ মন্দির, নবগ্রহ মন্দির, অখণ্ড পাথরের মিনার—শুভস্তুত। নানান কিং-বদন্তীও আছে এই শুভস্তুতকে ঘিরে। আর রয়েছে বাঙ্গাবট—বায়ীদের বাঙ্গা পুরণের জন্য। নানান (৫৪ + ৪২ + ১২)

শিবলিঙ্গও রয়েছে বিরজাক্ষেত্রে। অদ্বীশ্বর শিবের রঙেরও বদল ঘটে প্রতি প্রহরে। তেমনই তিল তিল করে বাড়ছে আজও তিলেশ্বর শিব। যাজপুর বাজারকে ঘিরে ১ কিমি ব্যাসার্ধে গড়ে উঠেছে যাজপুর তীর্থ। পায়ে পায়ে বারিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

ভিতরকণিকা: অতীতের শবরদের রাজ্য কণিকা আজ হয়েছে ভিতরকণিকা। অভয়ারণ্যের গেটওয়েও ভিতর-কণিকা। বৈতরণী ও ব্রাহ্মণী নদীর সঙ্গমে ১৭০ বর্গ কিমি জুড়ে সুন্দরী, হেঁতাল, গঁদ, গরগ, কেওড়া, বাহিন, গৈয়ো-য় ছাওয়া ভিতরকণিকা ম্যানগ্রোভ অরণ্য। তবে, ১৯৭৫ খ্রিস্টাব্দে জাতীয় উদ্যানের ভূষণ চেপেছে ৬৫০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত জল-জঙ্গলের ভিতরকণিকার শিরে। আকারে সুন্দর বন বৃহত্তম হলেও গাছগাছালি ও পশু-পাখির রকমভেদে ভিতরকণিকা অন্যতম। পাখিদেরও স্বর্গরাজ্য ভিতরকণিকা। ব্রাহ্মণীর পারাপারে কণিকা রেঞ্জ। ডাংমল ফরেস্ট রেস্ট হাউসের জেট থেকে ডিঙি নৌকায় ব্রাহ্মণী পেরিয়ে ভিতরকণিকার গাছের শাখে চেনা-অচেনা হাজারো পাখির বর্ণালী—মৌচুমী, শামুকখোল, ফটিক জল, সাদা কাক, সোনা জজ্বা, সাদা কান্তেচোরা, খয়েরি রঙা মাছরাঙা, ব্রাহ্মণী হাঁস পরিবেশকে মধুময় করে তোলে। টাওয়ার থেকে এদৃশ্য সত্যই নয়নলোভন। আর জলে কুমির ও কচ্ছপ শত সহস্র। সাপেদেরও রকমফের ভিতরকণিকায় উল্লেখ্য। আর আছে হরিণ, বনা শূয়ার, বনা চিতা, বনা বেড়াল ভিতর-কণিকার ম্যানগ্রোভ অরণ্যে। এমনকি হরিণেরা রাতে আসে বাংলোর চারপাশে। শীতে দেশ-দেশান্তর থেকে লক্ষ লক্ষ পরিযায়ী পাখি—ওপেন বিল্ড স্টকস, এগরেট, ফ্রেমিংগো, হেরণ, হোয়াইট আইবিস, পেলিক্যান, ব্লেকবার্ড, স্যাণ্ড পাইপার ছাড়াও নানান ডেরা বাঁধে ভিতরকণিকার জলে-জঙ্গলে। বাংলা লাগোয়া ভারতের দ্বিতীয় বৃহত্তম কুমির প্রকল্পটিও আর এক দ্রষ্টব্য। বিরল প্রজাতির সাদা কুমিরও আকর্ষণ্য বাড়িয়েছে প্রকল্পের। আর আসে ডিসেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে সুদূর দক্ষিণ আমেরিকা থেকে বিপুলাকার সামুদ্রিক কাছিম ডাংমল থেকে ৩০ কিমি জল-দূরত্বে উপকূলবর্তী গহিরমাথা দ্বীপের Ekakula-য়। একাকুলায় ব্রাহ্মণী নদী দু'ভাগে টুকরো হয়ে বঙ্গোপসাগরে মিলেছে—উত্তরে খামারা আর দক্ষিণে একাকুলা। সাগরের ঠিক আগে ব্রাহ্মণীর সঙ্গমে ডিম পাড়ে শত-সহস্র। ১৯৯২-এ ডিমের সংখ্যা পৌছায় ৭ লক্ষে। যান্ত্রিক জলযানে ঘন্টাচারেকে চলা যেতে পারে ডাংমল থেকে গহিরমাথা বাঁচে। নিরীলা-নির্জন-শান্ত কুমারী সাগরবেলা গহিরমাথা—বিশাল বিশাল ঢেউ আছড়ে পড়ছে নির্জনতা ভেঙে। বিশ্বের অন্যতম বৃহত্তম প্রাকৃতিক কচ্ছপ প্রজনন কেন্দ্র গহিরমাথার পেছনে আকাশ ছেয়ে ঘন সবুজ ঝাড়বীথিকা। বিদ্যায়ী সূর্যের রক্তিম আভাষ আগুন লাগে বঙ্গোপসাগরের জলে। সূর্যাস্তও অপলক মোহময় গহিরমাথায়। আকাশটা রাঙিয়ে দিয়ে—নীল জল,

সবুজ জঙ্গলেও রঙ ধরে লাল—বিশ্ব চরাচর তখন ফাগ খেলে লালে লাল। দিনভর প্রোগ্রামে সেপেও ফেরা যায় গহিরমাথা।



হাওড়া-ঝড়াপুর-বালাসোর হয়ে ট্রেন যাচ্ছে ২৯৭ কিমি দূরের ভদ্রক। ৬-১৫য় ঘোণী, ১০-১৫য় ইস্ট কোস্ট এক্স হাওড়া ছেড়ে ভদ্রক পৌছায় ১০-৫২/১৬-০৫এ। ফেরার পথে ১৬-৪৭এ ঘোণী, ৯-২৮এ ইস্ট কোস্ট ভদ্রক ছেড়ে হাওড়া আসছে ২২-০৫/১৫-৩০এ। আর ১৫-১০এ হাওড়া ছেড়ে ২৩-৩৫এ ভদ্রক যাচ্ছে হাওড়া-ভদ্রক প্যাসেঞ্জার। তেমনই ১৫-৩০এ ঝড়াপুর ছেড়ে ২০-৩০এ ভদ্রক যাচ্ছে ঝড়াপুর-ভদ্রক প্যাসেঞ্জার। ফেরে ৪-৫০এ হাওড়া প্যা, ৬-৫৫য় ঝড়াপুর প্যা ভদ্রক থেকে। ঝড়াপুর থেকে এমু লোকালে কলকাতা। এছাড়া ভুবনেশ্বরের প্রতিটা ট্রেন ঝড়াপুর/ভদ্রক হয়ে যাচ্ছে।



ভদ্রক রেল স্টেশন থেকে রিকশায় বাস স্ট্যাণ্ডে পৌছে বাস বা বাইপাস থেকে ট্রেকারে ঘণ্টা দুয়েকে ৫০ কিমি দূরের চাঁদবালি। বাস আসছে বালাসোর ১২০, কটক ১৬০, ভুবনেশ্বর ১৮৯ কিমি থেকেও। এমনকি দীঘা, ৪২০ কিমি দূরের কলকাতা থেকেও বাস আসছে অতীতের বন্দরনগরী চাঁদবালি। চাঁদবালি থেকে ৬-০০, ১৪-০০, ৫-০০ ও ১৭-০০টায় যাত্রী লঞ্চে ৫ টাকায় ২ ঘণ্টায় ২০ কিমি দূরের নলটাপাটিয়া ঘাট পৌছে ভ্যান রিকশায় ৪ কিমি দূরের কণিকা রঞ্জের Dangmal FRH-এ পৌছান। আবার বনদপ্তরের লঞ্চে (৩০০ + ফ্রুয়েল)ও চলা যেতে পারে ডাংমল অর্থাৎ ভিতরকণিকায়। ব্রাহ্মণীর পারাপারে ভিতরকণিকা অরণ্য—নৌকায় পারাপার। আবার কটক থেকেও সড়কপথে রাজনগর হয়ে শুপ্তি বা একাকুলায় চলা যায়।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে—Dangmal FRH-এ, DAB ৭৫, ইন্টারপ্রিন্টেন সেন্টারের হেলডব্লি প্রথায় বেড মেলে। আর আছে গহিরমাথা দ্বীপে জেটি থেকে ১৫ মিনিটের পথে ২ ঘরের Ekakula FRH. তেমনই দুই-এর মাঝে শুপ্তি গ্রামেও FRH মেলে। সেচদপ্তরের বাংলাও আছে ছোট্ট গ্রাম শুপ্তিতে। সৌরচালিত আলোও জ্বলছে প্রতিটি বাংলোয়। রেশন চাঁদবালি থেকে সঙ্গী করা ভাল—রামায় ভৈজঙ্গপত্রের সাথে চৌকিয়ারের সহযোগিতা মেলে। বাংলোর বুকিং: DFO, Mangrove Forest Division বা Wildlife Warden, Rajnagar, Kendrapara, Orissa, PC-754225, ৩ (06729) 8460 থেকে। ভবে, চলার পথে Range Officer, Chandbali-756133 থেকেও বুকিং-এ সহযোগিতা মেলে।

আর চাঁদবালিতে থাকার জন্য বাস স্ট্যাণ্ডে PWD-র Bungalow; গ্রাইভেট মালিকানায়—H Swagat, DAB ৮০-১২৫, একই মালিকানায় লাগোয়া Puspak L, D ৫০ আছে। অসময়ের যাত্রীদের জন্য Bhadrak-756100-য় রেল স্টেশন লাগোয়া Shantiniketan L, Rajesh L, Adarsha L, Saroj L: ১ কিমি দূরের Bye Pass—H Gautam, Motel Tarinee International ছাড়াও সাধারণ লজ আছে নানান।

ভদ্রক থেকে ৫২ আর বালাসোরের ১১০ কিমি দূরে বৈতরণী নদীর তীরে আরামির শিব মন্দিরটিও আর এক তীর্থ। জনজ্ঞতি—সেবদর্শনে নানান ব্যাধি থেকে আরোগ্য মেলে। চাঁদবালি থেকে লঞ্চে চলা যেতে পারে ঘণ্টা খানেক

আরাদি। ওড়িশা ট্যুরিজমের Panthasala-ও হয়েছে ডর্মি বেড ২০ হারে; অবু: ATO, Panthasala Aradi, PO-Aradi, Via-Dhusuri, Dist-Bhadrak বা Tourist Officer, Balasore, PC-756001, ৩ (06782) 62048 থেকে।

তেমনই চাঁদবালি থেকে বৈতরণী পেরিয়ে ব্রিটিশ রাজের কৃপাধন্য কণিকা রাজবাড়িও দেখে ফেরা যেতে পারে।

বউলা পাহাড়ের সালন্দী: ভদ্রক স্টেশন থেকে NH 5 ধরে কটকমুখী ৫ কিমি যেতে বজ্রচক চৌমাহোনা থেকে ডাইনে ২০ কিমি দূরের আগরপাড়া পৌছে বাঁহাতি ১০ কিমি গিয়ে বউলা পাহাড়ের পাদদেশে আরও ৭ কিমি দূরে হাওগড় বাঁধ হয়েছে সালন্দী নদীতে—জলাধার হয়েছে। শাল, পিয়াশাল, শিত, গামার, ময়রা, কেন্দু, ধব ও কুসুমে ছাওয়া আরণ্যক পাহাড়-ভূমে বাঘ, হাতি, ভান্দুক, বাইসন, বন্য-শূয়ার, হরিণ চরে বেড়ায়। বউলা পাহাড়ও নাইতে নেমেছে সালন্দীর জলাধারে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে লেকের পাড়ের মনোরম পরিবেশে ২ ঘরের সুসজ্জিত সালন্দী নিলয়-এ। বুকিং: EE, Baitarani Division, Sahapada, Dist-Keonjhar, PC-758001, Orissa. চলার পথে বাংলোর ৮ কিমি আগেই ২ কিমি বাঁয়ে গিয়ে গড়চতী মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন—বয়ে চলেছে কপালি নদী। চডুইভাতি মনোরম পরিবেশ।

চাঁদপুর

কেয়া-কাছু আর ঝাউয়ে ছাওয়া চাঁদপুর—ছোট অবকাশ যাপনে পক্ষে মনোরম। চাঁদপুরের শান্ত-নিষ্ঠ সাগরবেলাটি পর্যটকদের বিমোহিত করে। সমুদ্রতট থেকে ৫ কিমি ব্যাপ্ত এই অগভীর বেলাভূমিটির আর এক বিশেষত্ব উঁটার কালে জল নেমে যেতে গাড়ি চলে বাঁচে যা চাঁদপুরের একান্তই আপন। আর জোয়ারে জল আসে বেলাভূমি ছাপিয়ে কিনারে। আপনিও ভেসে পড়ুন কেয়া-পাতার নৌকা গড়ে উঁটার সমুদ্রে। পৌছে যান বৃড়িবালামের মোহান বা আরও দূরে-দুরাধরে। পুরীর মতো ঝিনুক-সংগ্রহের নেশাতেও যেতে ওঠেন ভ্রমণার্থীর দল চাঁদপুরে। সূর্যোদয় ও চন্দ্রোদয় দুই-ই মনোরম চাঁদপুরে। সমুদ্রবেলা ছাড়াও ৩ কিমি দূরে বলরামগড়ি অর্থাৎ বৃড়িবালাম নদী সাগরে মিলেছে, এরও পরিবেশ সুন্দর। অদূরেই ক্যান্টনমেন্ট এলাকায় ইন্টারিম ট্রেনিং সেন্টার তথা মিসাইল উৎক্ষেপণ কেন্দ্র। নানানধর্মী গবেষণা চলছে মহাকাশ নিয়ে। চাঁদপুর থেকে অগ্নি, পৃথ্বীর উৎক্ষেপণ সংবাদের শিরোনাম হয়েছে বারবার।



কলকাতা থেকে ঝড়াপুর হয়ে ভদ্রক/ভুবনেশ্বর-গামী প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে চাঁদপুরের রেল সংযোগকারী স্টেশন বালাসোর হয়ে। কলকাতা থেকে বালাসোরের দূরত্ব ৩৩২ কিমি। আর বালাসোর থেকে বাজপুর ১০৫, কটক ১৭৭, ভুবনেশ্বর ২০৫, পুরী ২৬৭ কিমি। ট্রেন ও বাস নিরমিত সংযোগ গড়েছে।

আর সরাসরি যাত্রার উচিত হবে ১০-১৫র ইস্ট কোস্টে ১৪-৪০এ বালাসোর পৌছে রিকশা ৩৫ অটো ৭৫ ট্যাক্সি ১২৫ বা ৮-১৫, ৯-৪০, ১০-৩০, ১৪-০০টার বাসে ১৩ কিমি দূরে চাঁদপুর থাওয়া। তবুও যেন রেল স্টেশন থেকে রিকশার বাটাইন বাসে গোলা পুকুরি (গোলাবাড়ি থানা) পৌছে অটো বা ট্রাকারে (৪ প্রতিজনা) চাঁদপুর চলাই সুবিধার। সকাল ৬-০০ থেকে রাত ২১-০০টার অটো মেলে এপথে। ফেরার পথেও ১০-১৫র ইস্ট কোস্টে ১৫-৩০এ হাওড়ায় ফেরা যেতে পারে। টিকি তেমনই যৌলী এক্সেরও যাত্রী হওয়া যেতে পারে চাঁদপুর থাওয়াতে। যৌলী যাচ্ছে ৬-১৫য় হাওড়া ছেড়ে ৯-৪৫এ বালাসোর; ফেরে ১৭-৪৪এ বালাসোর ছেড়ে ২২-০৫এ হাওড়ায়। তেমনই এমু লোকালে খড়্গাপুর গিয়ে ৬-৫০, ১৫-৩০, ১৮-৩০র প্যাসেঞ্জারে ও ঘন্টায় চলা যেতে পারে বালাসোর। প্যাসেঞ্জার ফেরে বালাসোর থেকে ৬-১৫, ৮-২০, ১৭-০৫এ।



আবার চন্দনেশ্বর হয়ে তালশেরী বা দীঘাও চলা যেতে পারে বাসে বাসে। কলকাতার শহীদ মিনার থেকে CSTC ও বাবুঘাট থেকে ORT-র ভদ্রক, কটক, পুরীর বাসগুলি যাচ্ছে NH-5 ধরে বালাসোর হয়ে। ১ কিমির ব্যবধানে বাস স্ট্যান্ড ও রেল স্টেশন বালাসোরে।

OTDC, Panthanivas, Chandipur, ৩ 72251 থেকে ৬০ টাকায় ১২০ কিমি পরিক্রমায় ৭-১৩-০০টায় Balasore, Nilagiri, Panchalingeswar, Sajangarh, Mitrapur, Remuna শেষিয়ে আনে। দশের অধিক যাত্রী সমাগমে বিশেষ ট্রায়ের ব্যবস্থাও করে এরা।



Chandipur, STD 06782, PC-756025, সাগরবেলায় OTDC-র Panthanivas, ৩ 72251, D ২৫০, A/c D ৪৫০ দশ বেডের ডমিটে ৬০ করে বেড, অবু: Manager বা Orissa Tourism, 55 Lenin Sarani, Cal-13, ৩ 2443653; FRH—Casurina, অবু: DFO, Baripada, Mayurbhanj; লাগোয়া PWD IB, অবু: EE (R&B), Balasore.

আর আছে প্রাইভেট মালিকানা পাছনিবাস লাগোয়া—বাগিচায় সূচোভিত H Shuvam, ৩ 72025, DAB ২৮০ ৩০০ ৩০০, A/c D ৪৮০ কল বুকিং: Smt K Dasgupta, Flat-9 D-1, 18/3 Gariahat Rd, Cal-19, ৩ 4407178 বা বসু, সন্ট লেক, ৩ 3217059 বা মুখার্জী, বহুবাজার ৩ 276098; বিপারিতে H Chandipur, ৩ 72313, DCB ১০০ DAB ১৭৫-২২৫ TAB ২০০ FAB ২২৫ ডমি ৪০, কল বুকিং: Orissa Saw Mill, 187 Maharaja Debendra Rd, Nimala-700006, ৩ 2399489; অদূরে বাস সড়কে H Santi Niwas, ৩ 72018, নারিকেল বীড়িকার হাওয়া নিজব বাঁচ, DAB ১২৫-১৭৫ TAB ১৫০ FAB ২০০, অবু: N N Das, 26/1, Gariahat Rd (South)-31, ৩ 4733505; স্বল্প দূরে H Apsara, ৩ 72090, DAB ১৭৫ ২০০, A/c ৩৫০, কল বুকিং: R K Singh, 8/2 Kiran Sankar Roy Rd, Room 2, Floor 2, Cal-1, ৩ 2485052 বা 55 Lenin Sarani, Cal-13 বা 303 Canal Street (Lake Town), Cal-48, ৩ 3374340 বা 3A Congress Exhibition Rd-17, ৩ 2402174; Anandamayee H, DAB ১৩০ ১৬০ ২০০ ৩০০, অবু: Ananda Travels, 93-A, R B Ave-26, ৩ 4663137/47-4 Becharam Chatterjee Rd-34,

৩ 4680427/Commune Electronics, Manton Super Market, Behala, Cal-34, ৩ 4680078; শহরে ঢুকতেই Larika Yatri Niwas, ৩ 72374, DAB ২৪৫-৩২৫ TV সহ A/c D ৪৫০ ডর্মি বেড ৬০, কল বুকিং: Larika, 74 Park St, Cal-17, ৩ 2403583; H Mukhtangan ছাড়াও Holiday Home গড়েছে UCO Bank Officers' Congress, 16-A, Brabourne Rd-1, ৩ 251778 চাঁদপুরে।

আর হচ্ছে Torrento Resort ও ইকোনমিক হোটেল যাত্রী নিবাস পাছনিবাসের লিখে চাঁদপুরে। অবস্থান মাহাশ্মো পাছনিবাস, চত্বর, শান্তিনিবাস অগ্রগণ্য হলেও FRH-টি রমণীয়। দেশী-বিশেী আহার্যও মেলে প্রতিটি হোটেলে। আর আছে কেবল আহার্যের ব্যবস্থা নিয়ে বাজলির H Panchali চাঁদপুরে।

আর Balasore-756001, STD 06782-এ আছে রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই স্টেশন রোড—H Sagaria, Hotel D K, D ৬৫-১২০; অতি সাধারণ City Lodge, ১ কিমি দূরে O T Road-এ ওড়িশা ট্যুরিজম অফিস লাগোয়া প্রাইভেট লিঙ্গে মিউনিসিপ্যাল রেস্ট হাউস H Kalinga, ৩ 63152, S ৫০ D ৮৫-১৫০; অদূরে Fly Over-এর মাঝপথে Moonlight L, D ৮০-১৫০; বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Maharaja, DAB ৮০-১২৫ ডর্মি ৩০; লাগোয়া গলিপথে H Hemangini ৩ 62803, DAB, ১২০-১৭৫ A/c ৩০০; বাস স্ট্যান্ডের বামে H Swarnachuda, ৩ 62657, SCB ৪০ DCB ৮০ SAB ৮৫ DAB ১৫০-২২৫ A/c D ৩০০-৪৫০; আরও বামে H Suraj. Cacheri Rd-এ—Taran L, Pacific International, এসের ঘর S ৪০ D ৮০ থেকে। Naya Bazar—J K Lodge, S ৩৫-৬০ D ৬৫-১০০। আর আছে Modern Union Canteen, H Abhishek, Seven Heaven L, Amrit L ছাড়াও CH, PWD DB, NH IB বালাসোরে। আর হয়েছে Januganj, Balasore-756019-এ শীততপ H Torrento ৩ 63481, S ৬০০-৮৫০ D ৮০০-১০৫০। তবুও থাকার পক্ষে কলিঙ্গ, স্বর্গচূড়া, হেমাসিনী, সূর্যসাদরমণীয় হবে।

বালাসোর: অতীতের বাণিজ্যনগরী বালাসোর—কলকারখানাও গড়ে ড্যানিস, দিনেমার ও ফরাসীরা। আর ব্রিটিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি প্রথম কারখানা গড়ে বালাসোরের অদূরে তথা সেকালের বাংলায় ১৬৩৪এ। ১৯১৫ খ্রিস্টাব্দ—জার্মানির অস্ত্রের অপেক্ষায় ৪ সঙ্গী নিয়ে কাল গুগছেন অমিয়ুগের বিপ্লবী যতীন্দ্রনাথ। গতিবিধি ব্রিটিশের গোচরে গেল—কৃত্যাত চার্লস টোগার্টের সশস্ত্র বাহিনীর সাথে বৃড়িলালমের তীরে চম্বাখণ্ডে অসম যুদ্ধে নীরেন্দ্র-মনোরঞ্জন-জ্যোতিষ-চিন্তাশ্রিয় ও যতীন্দ্র বুকের শোণিতে ধরিদ্বীকে রাঙিয়ে দেয়। আহত যতীন্দ্রনাথ স্থানান্তরিত হন বালাসোর হাসপাতালে, ১০.৯.১৯১৫য় মৃত্যুতে শেষকৃত্য হয় জেলখানায়। আর ১০.৯.১৯১৯তে স্মারকবেদি হয়েছে জেলের সামনে দাহস্থলে। বন্দীবাসের সেলটি কেবল সেপ্টেম্বরের ১০ তারিখে সাধারণের দেখার অনুমতি মেলে। আর সেদিনের হাসপাতালে বসেছে বারবাটি গার্লস স্কুল। এরও পর্বক আকর্ষণ অনবীকার্য। আর বাস/অটো বা রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় চম্বাখণ্ড। পথ গিয়েছে

বালাসোর থেকে জাতীয় সড়ক ধরে উত্তরমুখী ৮ কিমি গিয়ে ফুলারী পেরুতেই বামহাতি বাঘা যতীন রোড ধরে আরও ২ কিমি গিয়ে চবাখণ্ড। প্রকৃত জায়গা থেকে সরে গিয়ে স্মৃতিচারণ হয়েছে স্থল করে, মূর্তিও হয়েছে বাঘা যতীনের চবাখণ্ড থেকে ৩ কিমি উত্তরে। মুর্খুহ বাস চলে O.T Road ধরে। আর রয়েছে বালাসোর থেকে ৬ কিমি দূরে বৈষ্ণবতীর্থ ওড়িশার বৃন্দাবন রেমুনাতে স্কীরচোরা গোপীনাথ মন্দির। প্রবাদ, শ্রীকৃষ্ণের অবতার গোপীনাথ ৮০০ বছর আগে বাসও করতেন এখানে। তবে, মন্দিরটি ১৫০ বছরের প্রাচীন। অটো বা রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

পঞ্চলিংগেশ্বর: আবার বালাসোর থেকে ৮-০০, ১৩-০০, ১৬-০০টার বাসে ১২ কিমি দূরে চলা যেতে পারে পঞ্চলিংগেশ্বর। বাস পথ থেকে ১২ কিমি যেতে অনুচ পাহাড় চারপাশে প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। গহীন বন, গহন অরণ্য; নানান জীবজন্তু নীলগিরি পাহাড়ে। পাহাড়ের পাদদেশে ওড়িশা টুরিজমের ৪ ঘরের *Panthusala Panchalingeswar*, চার বেড়ের ঘর ৮০ ডর্মি বেড ২০, অব: ATO, PO-Shyam-sundarpur, via-Raj Nilagiri, Dist-Balasore-756040, ৩ (06782) 62048. আর হয়েছে *Larica Panchalingeswar H.* কল বুকিং: Larica, 74 Park St-17, ৩ 2403583. পাছশালার জানালায় দৃষ্টি মেলে দেখে নেওয়া যায় বন্য হাতির যুথ চলছে পাহাড় ওড়িয়ে গাছপালা মাড়িয়ে। চলছে ভালুকেরা হেলে-দুলে পাহাড়ভূমে। বাঘেরেরও দর্শন মেলা অস্বাভাবিক নয় নীলাগিরি পাহাড়ে। পাহাড়ের নীল আর দিগন্তের নীল মিলেমিশে একাকার পঞ্চলিংগেশ্বর।

পাছশালার অদূরে পথ উঠেছে ঢাল বেয়ে, ত্রিশতাধিক সিঁড়ি উঠে পথ পৌছায় আরও ১২ কিমি দূরের দেবতার থানে। মন্দিরের অভাব। ধারা নামছে ঝরনার—মিষ্টি-মধুর তানে পাহাড় বেয়ে। পাহাড়ী খাদের ছোট্ট এক ফাটলে বহুতা জলে পঞ্চলিংগেশ্বর অর্থাৎ পাঁচ শিবলিংগের অধিষ্ঠান। ঢালের তালে শরীরটা হেলিয়ে ঝরনার জলে হাত ডোবালে পরশও মেলে পাঁচ দেবতার। খুবই জাগ্রত এই দেবতা। কিংবদন্তী, জরাসন্ধও পূজা করেছেন এই পাঁচ শিবলিংগের। পাড়েই সাধুবাবার কুঠি। দেব-মাহাত্ম্যের সাথে নিরাল-নিভুতে ছোট্ট অবকাশ্যাপনের মনোরম পরিবেশ পঞ্চলিংগেশ্বরের পাছশালা। আহাৰ্যও মেলে পাছশালায়। বিপরীতে পোকানও হয়েছে—অগ্রিম অর্ডারে আহাৰ্য মেলে।

আবার সকালের বাসে এসে সিনডর দেখেওনে বিকালের বাসে ফেরাও যেতে পারে বালাসোর। তেমনই বালাসোর থেকে নানান বাসে ১৪ কিমি দূরের নীলাগিরি পৌছে ৬ কিমি রিকশায় ২৫-৩০ টাকায় বা পায়ে পায়ে সাঙ্গ করা যেতে পারে সেবদর্শন। ঘন্টার ঘন্টার বাস নীলাগিরির। আর মরসুমী পটিকাটা টালপুর থেকে কনডাক্টেড ট্রায়ে বা বালাসোর থেকে অটো/ট্যাক্সি নিয়ে ২৫০/৩৫ টাকায় ৮/৭ ঘন্টার পঞ্চলিংগেশ্বর/চবাখণ্ড/রেমুনা বা রিকশায় ঘন্টা পাঁচকে ৪০/৪৫ টাকায় চবাখণ্ড/রেমুনা বেড়িয়ে নিতে পারেন।

আবার বালাসোর থেকে ১২০ কিমি দক্ষিণে অতীতের বন্দর-নগরী টামবাণি, ১৪ কিমি দক্ষিণে শেরগড় হয়ে ডানহাতি পথে ২৭ কিমি গিয়ে অযোধ্যার অতীতের বৌদ্ধ ও জৈন মন্দিরগুলি বিক্ষত হলেও বৌদ্ধকলার নিদর্শন ও ১০ শতকের কিছু মাতৃকা মূর্তি দেখে নেওয়া যেতে পারে। এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিকে দিকে বালাসোর থেকে ORT-র।

কুলডিয়া অরণ্য: বালাসোর থেকে ১০ কিমি দূরে শেরগড়ে জাতীয় সড়ক ছেড়ে ডাইনে ৪ কিমি গিয়ে নীলাগিরিতে বামহাতি পথে পঞ্চলিংগেশ্বর রেখে আরও ৭ কিমি যেতে সুজনাগড় থেকে আবার বাঁয়ে মোরাম পথে ১১ কিমি দূরে Kuldih Sanctuary. ৯১ মি উচ্চে ২৮২ বর্গ কিমি জুড়ে শাল, গিয়াশাল, শিশু, মহানিম, আম, জাম, বহেড়া, শিমুলে ছাওয়া কুলডিয়া অরণ্যে বন্য হাতি, চিতল, জংলি বিড়াল, লম্বা লেজওয়ালা বানর, কথ্য বলা ময়না ছাড়াও নানান জন্তুর দর্শন মেলে। বহে চলেছে পাহাড়ী নদী অরণ্য চিরে কুলডিয়ায়। লায়ন স্যাঙ্কচুয়ারিও হয়েছে কুলডিয়ায়। রাত্রিবাসের জন্য *Forest Bungalow* ভরসা। বুকিং: রেঞ্জ অফিসার, সুজনাগড়, ভায়া নীলাগিরি, বালাসোর বা ডিভিশন্যাল ফরেস্ট অফিসার, বারিপাদা থেকে। আহাৰ্য নিজ ব্যবস্থায়। যাতায়াতে বালাসোর থেকে সুজনাগড় পর্যন্ত সার্ভিস বাস মিললেও শেষ ১১ কিমি জিপ নির্ভর। অত্যাৎ-সাহীরা গাইড সঙ্গে নিয়ে ট্রেক করেও বেড়িয়ে নিতে পারেন পাহাড়ের অন্দরমহল।

দেবকুণ্ড: পঞ্চলিংগেশ্বর থেকে নীলাগিরি/উদলা হয়ে সিমিলিপাল ফরেস্টের উদলা ডিভিশনের অংশ দেবকুণ্ড। লুলুং থেকে দূরত্ব ৯০ কিমি। কুলডিয়া থেকে ৬৯ আর বালাসোর থেকে ৮৭ কিমি দূরে দেবকুণ্ড। নিয়মিত বাস যাচ্ছে বালাসোর থেকে ৫৯ কিমি দূরের উদলা। উদলা থেকে জিপে ২৮ কিমি দূরে দেবকুণ্ড। পাহাড় আর জঙ্গল—শেষ ৫ কিমিতে গহন বন। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা। ৫০ ফুট উঁচু থেকে ধারা নামছে জলের—নিচুতে কুণ্ড অর্থাৎ দেবকুণ্ড। ধারা নামছে আরও চার—অর্থাৎ পাঁচ ধারা। কুণ্ডও হয়েছে পাঁচ—নামও তাই পঞ্চকুণ্ড বা *প্রেস অব ফাইভ লেক্স*। দেবকুণ্ড থেকে শতাধিক সিঁড়ি উঠে ঝরনার উৎসমুখে দেবী অম্বিকা মাতা তথা দুর্গার মন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য। ১৯৪০এ ময়ূরভঞ্জের রাজাদের তৈরি মন্দিরে পূজা হয় আজও। চেনা-অচেনা নানান পাখির সঙ্গে রক্তবেরঙের প্রজাপতির বর্ণালী, সেও আর এক রমণীয়। তবে, যাতায়াতে দুর্গমতা হেতু দেবকুণ্ড আজও পর্যটন মানচিত্রে অনুদ্রষ্টব্য। থাকারও কোনো ব্যবস্থা নেই দেবকুণ্ডে।

কেওনঝড়

রেল স্টেশনের নাম বাজপুর-কেওনঝড় রোড। রেল স্টেশন থেকে বাস যাচ্ছে ১১২ কিমি দূরের কেওনঝড়। বাস আসছে ২২৫ কিমি দূরের ভুবনেশ্বর ছাড়াও রাষ্ট্রের সঙ্গে রক্তবেরঙের কেওনঝড়ে। এমনকি কলকাতার বাবুঘাট থেকে সকাল ৫-৩০টার

ওড়িশা সরকারের বারবিলের বাস ৬২ কিমি দূরের যোশীপুর হয়ে ৯ ঘণ্টা কেওনঝাড় আসছে। ফেরে ১৭-০০টায় বারবিল ছেড়ে কেওনঝাড়/যোশীপুর হয়ে কলকাতায়। কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় বাসই সুবিধার। বাবুঘাট থেকে রবিবার ছাড়া প্রতিদিন ৮-০০ ও ১৭-০০টায় NH ৬থরে প্রাইভেট বাস যাচ্ছে লোখাগুলি ১৬৬/বারিগোপাল ২৩০/ বিসোই ২৪৮/যোশীপুর ২৯১/ তাম্রাবিলা ৩০১ কিমি পৌঁছে ডানহাতি ১৯ কিমি দূরে করঞ্জিয়ায়। তেমনই উচিত হবে সিমিলিপাল দর্শনার্থীদের বিচিং বেড়িয়ে বাসে বাসে কেওনঝাড় চলা। বিহারের কিরিবুরু/ মেঘাতুবুরুও চলা যেতে পারে বাসে বারবিল-কেওনঝাড় থেকে।



থাকার জন্য Keonjhar-758001-এ আছে—H Plaza, NH-6, New Market, DAB ১০০-১৭৫; Gayatri G H, DAB ১২৫; H Mayur, DCB ৮০ DAB ১২৫; Keonjhar L, SCB ৪৫ SAB ৬০-৮৫ DAB ৮৫-১৫০; H Borul, SAB ৪৫ DAB ৮০-১২৫; Labanya Bhawan L, SAB ৬০ DAB ১০০ TAB ১২৫ ছাড়াও আছে ৬০ থেকে ১২৫ টাকায় ডাবল বেডের ঘর নিয়ে H Ajanta, Chowda L, Mini L, Parijat L, Baba L আর আছে Circuit House, অব্: Collector; PWD IB, অব্: EE; আর্থ সমাজ ধর্মশালা কেওনঝাড়ে।

পাহাড় আর জঙ্গলে ঘেরা শান্ত শিখ ছোট পাহাড়ী শহর কেওনঝাড়। সাঁওতাল, ওরাওঁ, মুণ্ডা ছাড়াও নানান আদি-বাসীর বাস। চেনা-অচেনা পাখির কুজন স্বপ্নরাজ্য গড়েছে ১৫৭৫ ফুট উঁচু কেওনঝাড়ে। শহর থেকে ৩ কিমি দূরে পায়ে পায়ে বা রিকশায় জগন্নাথ মন্দিরটি বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। দেবতা রয়েছেন আরও নানান জগন্নাথ মন্দির চত্বরে। দুপুর ১২—১৭-৩০টায় দ্বার বন্ধ থাকে মন্দিরের। আবার জিপে বা রিকশায় ৬০/৩৫ টাকায় শহর থেকে ৫ কিমি দূরে ১০০ ফুট উঁচু থেকে নামা Sanghaghra অর্থাৎ ছোট জলপ্রপাত ও ১০ কিমি দূরে ২০০ ফুট উঁচু থেকে নামা Badghaghra অর্থাৎ বড় জলপ্রপাত বেড়িয়ে নেওয়া যায়। খুবই সুন্দর এই জলপ্রপাত। শহরের পানীয় জল আসছে এই জলপ্রপাত অর্থাৎ ঘাঘরা থেকে। চড়াইভাতির মনোরম পরিবেশ।

কেওনঝাড়ের ৩০ কিমি দূরে গোনাশিকা পাহাড়ের গুপ্তগায় বৈতরণীর উৎস। উৎসস্থল দেখতে গরুর নাকের মতো। মন্দিরও আছে ব্রহ্মেশ্বর মহাদেবের। পাহাড় থেকে বরনা হয়ে বৈতরণী নামছে মর্ত্যভূমে। কিছুটা যেতে ধরণী-প্রবেশ বৈতরণীর। আবার দৃশ্যমান হয়েছে বৈতরণী অর্থাৎ গুপ্তগা। গোনাশিকা গ্রামে ব্রহ্মেশ্বর মন্দিরের কাছে কুণ্ডে। ৪০০ কিমি পরিক্রমা সেরে যাজপুরের পাশ দিয়ে বয়ে গিয়ে সাগরে মিলেছে পৃথ্যাতোয়া বৈতরণী। মতান্তরে, বৈতরণী এসেছে মলয়গিরি পাহাড় থেকে। কেওনঝাড় থেকে পাল লহরা/সম্বলপুরমুখী বাসে ২১ কিমি গিয়ে ৯ কিমি পায়ে হাঁটা পথে গোনাশিকা। জিপ যাচ্ছে সরাসরি পাহাড়ে। কেওনঝাড়ের মাইল দশেক দূরে গজ্জমাদন। রামায়ণের পবনপুত্র এই গজ্জমাদন পর্বত মাথায় নিয়ে লঙ্কা যায়।

যাজপুরের পথে ২৩ কিমি গিয়ে কাতারবেদা থেকে আরও ৭ কিমি ডাইনে যেতে সীতাবিষ্ণি। পাহাড়ের গায়ে ফ্রেঙ্কো, আকার তার আধখোলা ছাতা সম। জনশ্রুতি, রাবণ ছায়া এটি। ছড়িয়ে ছিটিয়ে নানান পাহাড়—কারও নাম লব, কেউ বা কুশ, আবার কেউবা রাবণছায়া। আর আছে বাশিকীর আশ্রম, লব-কুশের জন্ম তথা সীতাদেবীর সূতিকাগৃহ ছাড়াও নানান কিছু। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে পাহাড়ী নদী সীতা। কেওনঝাড়ের প্রকৃতিও সুন্দর। কেওনঝাড়-যাজপুর-আনন্দপুর SH 111 ৪৫ কিমি দূরে ঘটগাঁও-এ মা-তারিণীর থান বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে কেওনঝাড় থেকে আনন্দপুরের বাসে। বৃষ্ণতে পূজা হয় দেবীর, খুবই জাগ্রতা এই দেবী মা-তারিণী।

কেওনঝাড় থেকে ২৪ কিমি দূরে করঞ্জিয়া পৌঁছে আনন্দপুরের বাসে ১০ কিমি গিয়ে মৌরীজোয়াল থেকে আরও ১০ কিমি ট্রেক করে দেখে নেওয়া যায় প্রকৃতির আর এক আশ্চর্য বোস্তার থেকে বোস্তারে ঝাঁপিয়ে দুটি টিলার পেছন থেকে ১৫০ ফুট নিচুতে পড়ে পাহাড় ফাটিয়ে গিরিখাদ গড়ে বয়ে চলা বৈতরণী নদী। পাহাড়ের গা দিয়ে আধ কিমি দূরে কুশরানী পাথরে ঘেরা দুরন্ত ঘূর্ণি অর্থাৎ ভীমকুণ্ড। হাল্কা সবুজ জলের কুণ্ডের গভীরতা ২৬০ ফুট। বৈতরণী এখানে অন্তঃসলিলা। জনশ্রুতি, ভীমকুণ্ডের তলা দিয়ে পাতালে গমন করেছে বৈতরণী। তবে, পাহাড়ের ফাটলে অদৃশ্য হয়ে আবার ৩ কিমি দূরে দৃশ্যমান হয়েছে বৈতরণী নদী। চলতে-ফিরতে ভানুক ও হাতির দর্শন মেলাও অস্বাভাবিক নয়—বিশেষ করে রাতে। আর আছে মন্দির, বাংলোর অদূরে—দেবতা শিব। শাল-মহুয়া-পিয়াশাল-কেন্দু-অর্জুনে ছাওয়া আরণ্যক পরিবেশে থাকারও ব্যবস্থা মেলে সেচ দপ্তরের ২ ঘরের বাংলোয়। কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় করঞ্জিয়া হয়ে চলায় সুবিধা—দূরত্ব ৩৫৮ কিমি। আর রেল যাত্রায় দৌলী এল্লো যাজপুর-কেওনঝাড় রোড পৌঁছে কেওনঝাড়ের বাসে ৯০ কিমি দূরে থোকোট নেমে বাস বা ট্রাকারে ১৯ কিমি দূরে পাটনা পৌঁছে নিজস্ব ব্যবস্থায় গাড়ি বা জিপে ১৮ কিমি গিয়ে ভীমকুণ্ড। তৈজসপত্র মিলেলেও রেশন পাটনা থেকে সস্তা করতে হয়। আর থাকার জন্য সাধারণ হোটেল ও PWD-র বাংলোমেলে করঞ্জিয়ায়। ময়ূরভঞ্জ জেলার ছোট শহর করঞ্জিয়া। করঞ্জিয়ার দুই বিপরীত দিকে বিচিং ও ভীমকুণ্ডের অবস্থান। বাসও আসছে কলকাতার সকাল ও সাঁঝে করঞ্জিয়া থেকে।

সিমিলিপাল

জাতীয় সড়ক ৫ আর ৬-এর সংযোগে বাংরিগোপাশি পেরুতেই ঘাট রোড অর্থাৎ পাহাড় চড়েছে NH-৬। পাহাড় গুরুতেই মন্দির হয়েছে বনের দেবী বাংরিগোপাশির। ঢলার পথে গাড়ির চালকেরা পূজা দেন দেবীর। জনশ্রুতি, দেবীকে তাক্ষিলা করে এপথে চলতে গিয়ে বিকল হয়ে পড়ে যন্ত্র।

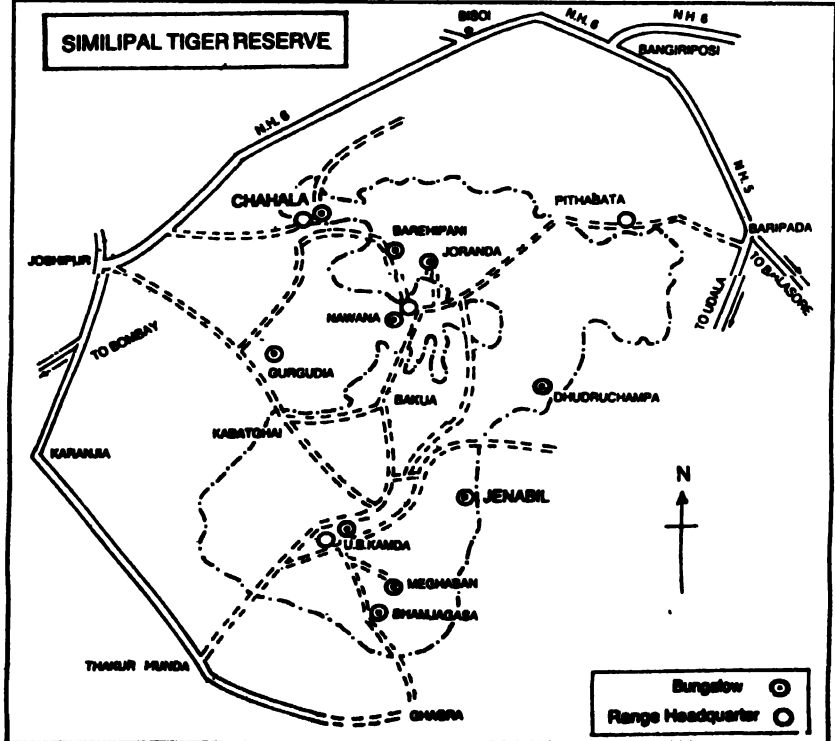
তবে দেবীর পূজা দিতেই বিকল যন্ত্রণে সচল হয়ে চলতে শুরু করে আবার। NH-6 ধরে ৬১ কিমি যেতে যোশীপুর— অর্থাৎ সিমিলিপাল জাতীয় উদ্যানের তোরণদ্বার। ২৭৫০ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে এই জাতীয় উদ্যান। কোর এলাকা তার ৮৪৫ বর্গ কিমি। গহীন বন, অপরূপা মোহময় পরিবেশ। আয়তনে যেমন বৃহত্তম তেমনি সুন্দরতমও বটে ভারতের অন্যতম জাতীয় উদ্যান সিমিলিপাল। পাশ দিয়ে বয়ে চলেছে মহানদী। ১৯৭৯তে গড়ে তোলা সিমিলিপাল ১৯৮০তে জাতীয় উদ্যানের শিরোপা পরেছে। আর ১৯৮৩তে কোর এলাকার ১১৭ বর্গ কিমি নিয়ে ব্যালু প্রকল্প গড়ে উঠেছে জাতীয় উদ্যানে। ১৯৯৩-এর সুয়ারিতে ২৩ পুরুষ, ৪১ স্ত্রী, ১৮টি শাবক অর্থাৎ ৮২টি বাঘের বাস সিমিলিপালে। ৭৫৭ মি থেকে ৯৪৬ মিটারের মধ্যে এর উচ্চতা। উত্তর আর পশ্চিম ঘিরে রেখেছে জাতীয় সড়ক ছয়। কলকাতা থেকে দূরত্ব ২৯১ কিমি।



বাস যাচ্ছে ওড়িশা সরকারের (ORT) ১০০টায় কলকাতার বাবুবাট ছেড়ে ১২-৪৫এ যোশীপুর পৌঁছে কেওনঝড় হয়ে বারবিলের। ফেরে ১৭-০০টায় বারবিল ছেড়ে কেওনঝড় হয়ে ২২-০০টায় যোশীপুর

পৌঁছে পরদিন সকাল ৮-০০টায় কলকাতায়। প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে হাওড়া পুল থেকে সোম, বুধ ও শুক্রবার ১৯-০০টায় ছেড়ে রাতভর জার্নিতে যোশীপুর হয়ে করঞ্জিয়া ও কেওনঝড়ের। আবার ট্রেনে হাওড়া থেকে বালাসোর পৌঁছেও সড়ক পথে বারিপাদা বা যোশীপুর যাওয়া চলে। বালাসোর থেকে যোশীপুরের দূরত্ব ১২০ কিমি। আর যোশীপুর থেকে ভুবনেশ্বর ৩২৩, কেওনঝড় ৭০, বাদামপাহাড় ১৭, হাতা ৮৪, টটানগর ১০৪ কিমি।

রাজ্যের উত্তর-পূর্বে কেন্দু, মসুয়া, কদম, চম্পা ও শাল-বাঁধিকায় ছাওয়া সবুজ জাতীয় উদ্যান সিমিলিপাল। বসন্তের সমাগমে লিলি, নাগেশ্বর ও অর্কিড মোহময় করে তোলে সিমিলিপালকে। ৫০১ রকমের লতা-উদ্ভিদ, ১০২ ধরনের বৃক্ষ, ৮২ ধরনের অর্কিড দেখতে মেলে সিমিলিপালে। ২৩১ ধর্মী পাখির বাস সিমিলিপালে। কখাবলা পাখি ময়না, ময়ূর, বাঘ, চিতা, নেকড়ে, চার শিঙের অ্যান্টিলোপ, হরিণ, প্যাছার, শম্বর, চিতল, হাতি, হায়েনা, ভান্ডুক, শেয়াল, নীলগাই দেখতে মেলে সিমিলিপালে। ৯১ কিমি দূরে ৯৪৬ মি উঁচু মেঘাসানি চুড়োটিও পায়ে পায়ে অভিবান করে ফেরা যায়। খুবই পর্যটক প্রিয় এই চুড়ো। সিমিলিপালের আর এক অতীত খেরী আজ আর নেই। খেরীর পালকপিতা



সরোজ রায়চৌধুরী মহাশয়ও আজ লোকান্তরিত। তবে বলে চলেছে খৈরী নদী আজও যোশীপুরে। যোশীপুর বাজার থেকে কেওনবাড়মুখী ৩ কিমি যেতে Assistant Conservator of Forests, Similipal National Park, Josphipur-757034, ৩ (06797) 2224 থেকে অনুমতি মেলে বন প্রবেশের। বেড়াবার মরসুম নভেম্বর থেকে জুন মাসের প্রথম। আর লাগে বনে অবস্থানের ফি—ভারতীয়দের দিন প্রতি ৫ ছাত্রদের ৫০% ছাড় মেলে। গাড়িও ক্যামেরারও চার্জ লাগে মান হারে।

প্যাকেজ ট্যুরেরও প্রচলন হয়েছে বন্যপ্রাণী, জল-প্রপাত, ফুল ছাওয়া উপত্যকা, আকাশছোঁয়া শৈলশিখর, হিমগুহর তথা বৈচিত্র্যের সম্ভারে গড়া সিমিলিপাল দেখিয়ে আনতে ৪ সিটের লাক্সারি জিপে ১ দিন ১ রাতের সফরে ২০০ কিমি পরিক্রমায় যাতায়াত, অবস্থান ও আহারসহ ৬০০ প্রতিজ্ঞা। আর যথেষ্ট যাত্রী (১৬) হলে সকাল ৮-০০টায় ছেড়ে রাত ২০-০০টায় যোশীপুর ফেরে ২৫ সিটের লাক্সারি বাস, জনপ্রতি ৬০ টাকায়। আহারও মেলে অগ্রিম অডি। বুকিং: ডেপুটি প্রোজেক্ট ম্যানেজার, আর অ্যাণ্ড ডি (টুরিজম), সিমিলিপাহাড় ফরেস্ট ডেভেলপমেন্ট করপোরেশন লি, যোশীপুর, জেলা: ময়ূরভঞ্জ-757034.



থাকার জন্য জাতীয় উদ্যানে বেশ কয়েকটি Forest Rest House ও Cottage আছে সিমিলিপাল জাতীয় উদ্যানে। যোশীপুর থেকে ৪০ কিমি ভেতরে Chahala-তে চার বেডের সুইট ২০০ করে; ৪৪ কিমি দূরে Eucalyptus Villa-য় চার বেডের সুইট ১৭৫; ৪৪ কিমি দূরে Camp House, Kairakacha-য় দুই বেডের ঘর ও সুইট; ৫৬ কিমি দূরে Falview RH, Barehipani-তে দুই বেডের সুইট ৩০০; ৬৩ কিমি দূরে Nawana-য় দুই বেডের সুইট ১০০ ১৭৫; ৭১ কিমি দূরে Falview Retreat, Joranda-য় চার বেডের ঘর ৩০০; ৬২ কিমি দূরে Log RH, Jenabil-এ দুই বেডের সুইট; ৮০ কিমি দূরে Upperarukamra RH-এ বিছানা ছাড়া তিন বেডের ঘর। এদের কাছে বাসনপত্র মিললেও আহার্য নিজ ব্যবস্থায় যোশীপুর থেকে সংগ্রহ করে নিতে হয়। ঘরের জন্য ৫০% টাকা Field Director, Similipal Tiger Reserve, Baripada, Orissa নামে Bank Draft on SBI, Baripada-757002, ৩ (06792) 52593-কে লিখুন যথেষ্ট আগে থেকে। আর ২৮ কিমি দূরে Gurguria FRH, ৯৫ কিমি দূরে Bhanjabusa FRH, ৮৫ কিমি দূরে Dhudruchampa FRH-এর বুকিং-র জন্য Deputy General Manager, Similipahar Forest Development Corpn Ltd, Baripada-2-কে লিখুন। নিজস্ব ব্যবস্থায় যাতায়াত। আবার দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায় বারিপাদা থেকে সিমিলিপাল। জিপও মেলে ১৫০০ টাকায় (যাতায়াত) সিমিলিপাল দর্শনে। উৎসাহীরা Hotel Ambika, Baripada-757001, ৩ (06792) 52557-এর সাথে যোগাযোগ গড়তে পারেন।

আবার যোশীপুর থেকেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় জাতীয় উদ্যান। ডজনখানেক গ্রাহিভেট জিপ মেলে ভাড়া। কিমি প্রতি ৮, রাতের অবস্থানে ৫০ অতিরিক্ত লাগে। ২০০-২৫০

কিমি পরিক্রমায় সাঙ্গ করা যায় বনবিহার। আবার সকালে গিয়ে সাঁঝে যোশীপুর থেকে জিপে ৭০০-৮৫০ টাকায় সিমিলিপাল বেড়িয়ে ফেরা যায়। ভোর থেকে দুপুর ১৪-০০টায় প্রবেশাধিকার মেলে জাতীয় উদ্যানে। তবে, বন্যজন্তু দেখার জন্য প্রত্যুষ বা গোখুলি আদর্শ।



থাকার জন্য যোশীপুরের কনজারভেটর অফিস লাগোয়া খৈরী নিবাস ফরেস্ট রেস্ট হাউসটি ভালই। দু'বেডের সুইট ১৫০ করে। আর আছে বাজারাস্তে NH-6, যোশীপুর-757034-এ ডা. এস রায়ের ১১ ঘরের টারিস্ট লজ, DAB ১২০-১৮৫, TCB ১৭৫, NH-6 Inspection House-ও আছে যোশীপুর বাজারে। এছাড়া যোশীপুর থেকে ৩৬ কিমি দূরে রায়রামপুরে Nishamani L ও Saha L; তেমনি যোশীপুর ও বারিপাদার মাঝে বাংরিপাশিতেও থাকার নানান ব্যবস্থা মেলে।

তবে বনবাস-লিপ্সুদের উচিত হবে সরাসরি বনে পৌঁছে অবস্থান করা। থাকার জন্য পাহাড় চূড়ায় ঝাড় আর ইউক্যালিপ-টাসে বরেহিপানীর বাংলাটি মনোরম। কাছেই ওয়াচ টাওয়ার। বাংলার বিপরীতে ৪৪০মি উঁচু থেকে ঝরনা নামছে। বুড়িবালামেরও জন্ম এই ঝরনা থেকে। হাতির রাজ্য আপার-বড়াঝাড়া ও জেনাবিল ফরেস্ট রেস্ট হাউস দুটিই বন্যজন্তু দেখার পক্ষে আকর্ষণীয়। তবে, বন্যজন্তু দর্শনে আরও বেশি আদরণীয় দুই রেস্ট হাউসের মাঝ দূরত্বে দেবছলী ভিউ টাওয়ার। চারপাশে পাহাড়—মাঝে সবুজে ছাওয়া বিতীর্ণ উপত্যকা। সাঁঝে হাতির যুথ, শব্দর ছাড়াও নানান জন্তু নেমে আসে ভিউ টাওয়ারের চারপাশে। আর ময়ূরভঞ্জের রাজার গ্রীষ্মাবাস চাহলা বাংলাটিও চমৎকার। তেমনিই আর এক সুন্দর পাহাড় আর জঙ্গলের মাঝে ১৫০মি উঁচু থেকে নামা জোরাগু জলপ্রপাত। প্রপাতের জলে রঙের বর্ণালী সেও রমণীয়। বরেহিপানি থেকে ১৩ কিমি দূরে নওয়ানা হয়ে জোরাগুর দূরত্ব ২১ কিমি। আর একান্তই উচিত হবে ম্যালেরিয়ার প্রতিষেধক নিয়ে বনবাসে যাওয়া।

যোশীপুর বাস স্ট্যান্ড থেকে ফরেস্ট অফিসের পথে ২২ কিমি গিয়ে রামতীর্থও বেড়িয়ে নিতে পারেন। লোকশ্রুতি, বনবাসকালে রামচন্দ্র এখানেও আসেন, পায়ের ছাপটিও নাকি শ্রীরামের। মকর সংক্রান্তিতে মেলা বসে। এরই লাগোয়া কুমির প্রকল্প আর এক দ্রষ্টব্য।

বারিপাদা: সিমিলিপালের সংযোগকারী ময়ূরভঞ্জ জেলার সদর বারিপাদার আর এক আকর্ষণীয় রথ—আকারে ছোট হলেও ঐতিহ্য ও আড়ম্বরে পুরীর পরেই এর স্থান। তেমনিই চৈত্র সংক্রান্তিতে ৩ দিন ধরে ছৌ নাচের বর্ণাঢ্য আসরও বসে বারিপাদায়।



পথও গিয়েছে বারিপাদা থেকে সিমিলিপালে। ফরেস্ট রেস্ট হাউসের বুকিংও কেন্দ্রীভূত হয়েছে বারিপাদায়। থাকারও নানান ব্যবস্থা বারিপাদায়। বাস স্ট্যান্ড থেকে ৩ মিনিটের পথে পোস্ট অফিস লাগোয়া Baripada-757001-এ—H Bishram, SAB ৬৫ DAB ১২৫; পাশেই H Ambika, ৩ 52557, DAB ১৫০ টিভি সহ ১৭৫ A/c D ২৭৫-৪০০, ৩০ অতিরিক্ত এয়ার কুলার মেলে; ১ কিমি দূরে জগন্নাথ মন্দিরের কাছে H Durga, ৩ 52338, DAB ১৫০-২২৫ A/c D ৩০০; H Siddhartha, ৩ 52818, S ৮০ D ১৫০

T ১৭৫। আর আছে সাধারণ সাজে—H Ashirvad, H Mayura, Ganesh Bhawan, Apsara L, Kalika L, Binod Bhawan; এদের কাছে S ৪০-৬৫, D ৮০-১৫০ টাকায় মেলে। CH, PWD IB-ও আছে বারিপাদায়।



বাসও আসছে কলকাতার বাবুঘাট থেকে ১৬-০০, ১৬-৩০, ১৮-০০টার ছেড়ে ৬ ঘটায় বারিপাদায়। এছাড়াও বাস যাচ্ছে আরও ছয় কলকাতা থেকে ২৫৩ কিমি দূরের বারিপাদায়। তবুও যেন যৌলী এন্ড বা ইস্ট কোস্ট এক্সপ্রেস বালাসোর পৌঁছে নন-স্টপ/এন্ড বাসে ১ ঘটায় ৫১ কিমি দূরের বারিপাদায় চলায় সুবিধা। ৪-৪৫ থেকে ২৩-২০তে মুম্বাই বাস যাচ্ছে বারিপাদা থেকে বালাসোর, ভদ্রক, কটক, ভুবনেশ্বর। বাস যাচ্ছে ২ ঘটায় অন্তর চন্দনেশ্বর হয়ে দীঘা (সীমান্তে)। কলকাতায় যাচ্ছে বাস ৫-০০, ৫-১৫, ৫-৩০, ৯-৩০, ১০-০০, ২২-০০, ২৩-০০টার; আরও ৩ বাস যাচ্ছে দুরান্ত থেকে এসে বারিপাদা হয়ে। আর রেল যাচ্ছে ঝড়পুর্-বালাসোর রেলপথের রূপসা জং থেকে ৬-৪৫ ও ১৮-৩০এ ন্যারো গেজে রূপসা-বারিপাদা-বাংরিপোশি শাখা লাইনে।

সিমিলিপাল অর্থাৎ চাহালার দূরত্ব ৮৩, নওয়ানা ৬০, বরহিশানি ৭৩, জেরাড়া ৬৪, গুরগুরিয়া ১০২, জেনাবিল ৮৬, আপারঝড়াকামড়া ১০৫, মেঘাসনি ১১৬, ভল্লবাসা ১২০, দধুকাশ্পা ৬৪ কিমি বারিপাদা থেকে।

হরিপুর: বারিপাদা থেকে ১৬ কিমি দূরে ময়ূরভঞ্জ রাজ্যের রাজধানী শহর হরিপুর দেখে চলা যায়। ১৪০০ খ্রিস্টাব্দে মহারাজা হরিহর ভঞ্জর গড়া নগরীর ধ্বংস-বশেষের মাঝে ইটে গড়া রসিক রায় মন্দিরটিতে অভিনবত্ব আছে।

বাংরিপোশি: বারিপাদা থেকে ৬১, যৌলীপুর ৬০ আর কলকাতার ২৩০ কিমি দূরে NH-৬ এ শাঙ-ব্রিঙ্ক বাংরিপোশি। নদী-পাহাড় আর গহন অরণ্য মিলেমিশে গড়ে তুলেছে এক স্বপ্নরাজ্য। প্রকৃতির রূপ-রস-বাস-এর এক আশ্চর্যসমীকরণ। বাংরিপোশির চারপাশ ঘিরে বিদ্যাভাণ্ডার, পাথরকুশি, অর্ধেশ্বর, বড়াবুড়ি ছাড়াও নানান পাহাড়চূড়া প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। আদিবাসীদের বাস—বুক চিরে বয়ে চলেছে বুড়িবালাম নদী। তারই মাঝে কান জুড়ানো পাখির কুজন, আদিবাসী রমণীর লাজুক হাসি; সবই যেন পটে আঁকা ছবি। ৪ কিমি দূরে পাহাড় চড়ে বনদুর্গা অর্থাৎ দেবী বাংরিপোশির মন্দির। হাতির পিঠের এই দেবী খুবই জাগ্রত। এতখানি চলতে দেবীর আশিস মাগেন গাড়ির চালক থেকে যাত্রী। বাস স্ট্যান্ডের সামনে পাহাড় চড়ে শিবমন্দির। ২ কিমি দূরে ঠাকুরানী হিলস, ৮ কিমি দূরে বারসেই, ১৩ কিমি দূরে কানচিটার মোহিনী রূপও দেখে নেওয়া যায়। সিমিলিপালও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাংরিপোশি থেকে। ছয় যাত্রীর জিপ যাচ্ছে—যাতায়াত ১২৫০।



থাকারও নানান ব্যবস্থা বাংরিপোশিতে—OTDC-র ৪ ঘরের *পাহালা*, DAB ৮০ ডর্মি বেড ২০, অবু: Tourist Officer, Orissa Tourism, Baghra Rd, Baripada, Dist-Mayurbhanj, ☎ (06792) 52710; ৪ ঘরের *মুখার্জি হোটে*, DAB ১০০-১৫০; আর এক বাড়লি সংস্থা

Similipal Resort, Bangriposi, Mayurbhanj-757032, SAB ১৫০, DAB ২৫০, আহাৰ্ঘও মেলে রিসর্টে, অবু: B D Enterprise, 173/1, Block G, New Alipur-53, ☎ 4783700.



যাতায়াতে বাবুঘাট থেকে ৫-৩০টার ORT-র বাংরিপোশির বাস, ৬-০০ ও ৭-০০টার করঞ্জিয়ার বাস; আগরওয়ালা কোম্পানির ২টি বাস ছাড়াও নানান বাস যাচ্ছে ঘণ্টা ছয়কে কলকাতা থেকে বাংরিপোশি। আর রেলযাত্রীদের হাওড়া থেকে বালাসোর পৌঁছে বাসে বাংরিপোশি বা ৬-৪৫এ রূপসা ছাড়া রূপসা-বারিপাদা-বাংরিপোশি শাখা রেলে ৮-৫৫য় বারিপাদা থেকে ন্যারো গেজ ট্রেনে ৬ ঘটায় বা বাসেই চলা যেতে পারে বারিপাদা থেকে বাংরিপোশি।

হাতিবাড়ি: বাংলা-বিহার-ওড়িশা সীমান্ত জুড়ে সুন্দর প্রকৃতির বুকে অনবদ্য হাতিবাড়ি। পাহাড় পাহাড়—আরণ্যক পরিবেশ, নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে সুবর্ণরেখা নদী। নৌকাবিহারও করা যেতে পারে জেলে নৌকায় চেপে। শাল, সেগুন, ইউক্যালিপটাস, আকাশমণিতে ছাওয়া রূপসী হাতিবাড়ির রূপের তুলনা হয় না। চেনা-অচেনা নানান পাখিপাখালির কলকাকলি মধুময় করে তোলে পরিবেশকে। বনবাংলোটি সেও আর এক উডিট স্পট হাতিবাড়ির। সীমান্ত এলাকা, চেকপোস্ট বসেছে—দোকানপাটের ভিড়, গাড়িঝোড়ার জটলা দিনরাত জুড়ে। বাসও যাচ্ছে NH ৬ ধরে কলকাতা থেকে ঘণ্টা আটকে হাতিবাড়ি অর্থাৎ জামসোলা হয়ে ওড়িশা রাজ্যের নানানদিকের। কলকাতা থেকে NH ৬-এ ঝড়পুর্ ১৩২, লোধাগুলি ১৬৬, চিচিড়া ১৮৪, জামসোলা ২০৭, বাংরিপোশি ২৩০ কিমি দূরে। বাংলা-বিহারের চেকপোস্ট চিচিড়া হলেও বিহার-ওড়িশার চেকপোস্ট জামসোলা-র রমরমা। হাতিবাড়িরও পথ গিয়েছে NH ৬-এ জামসোলা রেখে ১ কিমি গিয়ে বাঁয়ে মোরাম বিছানো পথে ৩ কিমি যেতে মনোরম পরিবেশে *হাতিবাড়ি ফরেস্ট রেস্ট হাউস*, অবু: DFO, Midnapur-West, Jhargram. ছোট্ট অবকাশ যাপনে হাতিবাড়ি অনন্য।

লুলুং: বারিপাদা থেকে ৩৮ কিমি দূরে সিমিলিপাল টাইগার প্রজেক্টের অংশ লুলুং। বৈচিত্র্যের অভাব ঘটলেও সবুজে ছাওয়া পাহাড় ঢালে আরণ্যক শোভার জন্য লুলুং-এর প্রশংসা। শাল-মহুয়া-লেবদারুতে ছাওয়া—পাহাড়-পাহাড় লুলুং-এর ৭ কিমি অরণ্য অন্দরে ৩০০ মি উচুতে OTDC-র ১০ ঘরের *Lulung Aranyanivas*-এ DAB ১৫০ ডর্মি বেড ২৫ টাকায় থাকা। আহাৰ্ঘও মেলে ক্যান্টিনে। অবু: Tourist Officer, Baghra Rd, Baripada, PC-757001, ☎ (06792) 52710. বা Asst Tourist Officer, Lulung, ☎ (06792) 53297 বা Orissa Tourism, 55 Lenin Sarani, Cal-13, ☎ 2443653 থেকেও আংশিক বুকিং মেলে। বিজলী বাতিও দ্বন্দ্বলছে সোলার এনার্জিতে বাংলায়। এমনকি নেতার ক্যাম্পের ব্যবস্থাও করে এরা। কল যুকিং: পাগমার্ক, ১০ মেহের আলি লেন, পার্ক সার্কাস। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে পাহাড়ী নদী পলপলা। ছোট্ট অবকাশ যাপনের মনোরম পরিবেশ। যাতায়াতে নিজস্ব গাড়ির অভাবে শ'দুয়েক

টাকায় অ্যাম্বাসাডর মেলে বারিপাদায়। ফেরার অগ্রিম অর্ডারে গাড়ি গিয়ে যাত্রী আনে। বনে প্রবেশের অনুমতি মেলে প্রবেশ ফটকে। বাংলা থেকে ৩ কিমি দূরে কালিগাহাড়, খেত-সুজ বরনা নামে পাছাড় থেকে; বরনার জলে সৃষ্ট সীতাকুণ্ড সেও আর এক রমণীয়। সঙ্গে জিপ থাকলে সিমিলিপালও বেড়িয়ে ফেরা যায় ললুচ থেকে। আর হয়েছে সিমিলিপাল ব্যায় প্রকল্পে টুকতে পিখাকোটা চেকপোস্ট পেরিয়ে ললুং-এর সন্নিকটে গাছগাছালির চক্রব্যূহে বেসরকারি হোটেল *পলপলা রিট্রিট*।

খিচিং

জাতীয় উদ্যান ভ্রমণার্থীদের বোশীপুর থেকে ৪৫, কেওনখড়ের ২৭ কিমি দূরে অতীতের ময়ূরভঞ্জ রাজাদের রাজধানী শহর খিচিং বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। যদিও আজ আর গরিমা নেই তার তবে রাজাদের গৃহদেবতা কিচকেশ্বরীর মন্দিরটি ভক্তজনের সমাগমে মুখর হয়ে ওঠে আজও। ১২—১৫-০০টায় ঘর বন্ধ থাকে মন্দিরের। ১০ শতকের মূল মন্দিরটি আজ বিধ্বস্ত। ১৯২৫ খ্রিস্টাব্দে রাজা পূর্ণচন্দ্র ভঞ্জদেও আজকের মন্দিরটি গড়েন নতুন করে মূল মন্দিরের আঙ্গিকে। বৈচিত্র্য আছে এর গঠন-শৈলীতে। ২২ মি উঁচু এই মন্দির ক্লোরাইট পাথরে তৈরি। মূল মন্দির অর্থাৎ রাজদেউলকে ঘিরে গড়ে উঠেছে আরও একাধিক মন্দির। দুর্গা, চামুণ্ডা, নটরাজ, শিব, সূর্যদেব, বাসদেব, লাকুলিসা, ধ্যানীবুদ্ধ, অবলোকিতেশ্বর, নাগ-নাগিনী মূর্তিও রয়েছে খিচিং-এ। মন্দির চত্বরের মিউজিয়মটিও পর্যটকদের দেখে নেওয়া উচিত হবে। গাছার যুগ থেকে সংগ্রহ রয়েছে মিউজিয়মে। সোমবার ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা। আর খিচিং ভ্রমণের আরক রূপে স্থানীয়দের তৈরি পাথরের সামগ্রী সঙ্গী করতে পারেন। ময়ূরভঞ্জের ছৌ নাচেরও প্রশস্তি আছে নৃত্য-রসিকদের কাছে। উৎসাহীরা বারিপাদা জেলার PRO-র সঙ্গে যোগাযোগ করুন। তেমনই উৎসাহীরা কুতূহলভিত্তে গ্রানাইট পাথরে তৈরি নীলকান্ত মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন।

বোশীপুর থেকে সন্ধ্যা ৮-৩০টার একমাত্র বাসে ফটা দূর্যেখে খিচিং পৌঁছে দেবী দর্শন সেরে ১২-০০টায় ঐ বাসেই ফেরা যেতে পারে বোশীপুরে। আবার খিচিং থেকে ১৪-৩০টার বাসে কেওনখড়ও চলা যেতে পারে। এছাড়াও বাস মেলে ঘুরপথে কল্লিয়ারা হয়ে বোশীপুর/কেওনখড়ের। ভ্রমণপ্রতুল বাসের জন্য উন্মিত বাস দু'টির যাত্রী হওয়াই উচিত হবে এপথে। উচিতও হবে বোশীপুর বা কেওনখড় থেকে খিচিং বেড়িয়ে নেওয়া। বাস আসছে ১৪৫ কিমি দূরের বারিপাদা থেকেও খিচিং-এ। আর নিকটতম রেল স্টেশন ৬৭ কিমি দূরের বাগমপাহাড়। থাকার জন্য খিচিং-এ আছে PWD/B, অব: EE, R & B (PWD), Baripada-758028. আর আছে *ধরমপালা*। এছাড়া Sukruli-তে আছে Revenue RH, অব: DM.

এছাড়া বারিপাদা থেকে ১৬ কিমি দক্ষিণ-পূবে অতীতের

হরিহরপুরের ধ্বংসাবশেষও দেখে নিতে পারেন। নানান মন্দির; কিছুকাল আগে জেলাসদরও ছিল আজকের হরিপুর। নিয়মিত বাস যাচ্ছে বারিপাদা থেকে হরিপুরে। আর রয়েছে ৪৫০ মি উঁচু থেকে নামা বরহিপানি জলপ্রপাত ও ১৫০ মি উঁচু বরাণ্ডা জলপ্রপাত। বোশীপুর থেকে দূরত্ব ৫০ কিমি। এদেরও আকর্ষণ কম নয় পর্যটকদের কাছে।

সম্বলপুর

উত্তর-পশ্চিম ওড়িশায় NH 42 ও 6এর সংযোগে সম্বলপুর জেলার জেলা সদর সম্বলপুর শহর। রাজা বলরাম দেব প্রতিষ্ঠিত *সামলাই* অর্থাৎ শ্যামলেশ্বরী দেবীর নামে নাম। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে রত্নগর্ভা মহানদী। তেমনই আছে শহরের মাথায় টোপর হয়ে অনুচ্চ বুদ্ধরাজা পাহাড়ে বুদ্ধরাজা মন্দিরে দেবতা শিব। তালপথে দ্বিশতাব্দিক সিঁড়ি উঠে পাহাড় থেকে শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। তেমনই আছেন বড় জগন্নাথ, ব্রহ্মপুরাণ, গোপালজী শহরে। বাণিজ্যিক শহর রূপেও খ্যাতি আছে সম্বলপুরের। সম্বলপুরের লোকসংস্কৃতি, তাঁতবস্ত্র, tie & dye print-এরও যথেষ্ট প্রশস্তি। কাঠের তৈরি খেলনাও যথেষ্ট খ্যাত সম্বলপুরের। সঙ্গীও করা যেতে পারে পশ্চিম ওড়িশা ভ্রমণের আরকরূপে। তবুও যেন পর্যটন মানচিত্রে সম্বলপুর অধিকতর খ্যাত—হীরাবুদ, বাদরামা অভয়ারণ্য, হুমা, নুসিংহনাথের সংযোগকারী জংশন স্টেশন রূপে। দিন পাঁচকে বেড়িয়েও ফেরা যায় রাউরকেলা সঙ্গে জুড়ে সম্বলপুর। সম্বলপুর আজকের নয়—টলেমির (2nd AD) লেখাতেও উল্লেখ মেলে *মানদা* (মহানদী) নদীর পাড়ে *সম্বলকা* নামে সম্বলপুরের। সম্ভাল, স্মেলপুর নামও ছিল অতীতকালে সম্বলপুরের। হীরক ব্যবসায় খ্যাত ছিল সেকালে সম্বলপুর।



কলকাতা থেকে সরাসরি ব্যারাম ৪০০৫ হাওড়া-সম্বলপুর-রায়গড়া-কোরাপুট লিঙ্ক এল ২০-৪০এ হাওড়া ছেড়ে পরদিন ৯-০০টায় সম্বলপুর রোড পৌছান। কলকাতায় ফেরে ৪০০৬ কোরাপুট এল ১৬-১০এ সম্বলপুর ছেড়ে পরদিন ৫-০০টায় হাওড়ায়। আর যাচ্ছে ৬-৫০এ হাওড়া ছেড়ে ১৮-১০এ হাওড়া-সম্বলপুর ৪০১১ ইম্পাত এল; ইম্পাত ফেরে ৯-১৫য় সম্বলপুর ছেড়ে ২১-৩৫এ হাওড়ায়। আবার মুম্বাই ডায়া নাগপুরগামী নানান ট্রেনে ৫১৬ কিমি দূরের ঝারসুন্দায় পৌঁছে ঝারসুন্দা-তিতলাগড় শাখা রপে ৪৯ কিমি দূরের সম্বলপুর চলা যায় ৫-৩০ প্যা, ৭-৪৫, ১০-১০, ১০-৫০, ১৩-১৫ প্যা, ১৪৫৭, ১৭-৩০ প্যা, ২০-৪০এর ট্রেনে। ক্যাবেনি ১১ ঘটনার পথ প্যাসেঞ্জারে। তিতলাগড়ের দূরত্ব ১৮২ কিমি, রাউরকেলা ১৫০ কিমি—ট্রেন ও বাস দুই-ই যাচ্ছে ৩১ ঘটনায় সম্বলপুর থেকে। ১৯১ ঘটনার ছুবনেশ্বর যাচ্ছে ১২-২০এ ৪৪৪৪ রাউরকেলা-ছুবনেশ্বর হীরাখণ্ড এল বলাদীর/তিতলাগড় হয়ে। ট্রেন যাচ্ছে ৪৬৪৭ বোকারো-আলেগি এল সম্বলপুর/তিতলাগড় হয়ে। ১৪৬ লিন হজরৎ নিজামুদ্দিন যাচ্ছে ১৪-৪০এ সম্বলপুর ছেড়ে ঝারসুন্দা/বিলাসপুর/কটৌ/বানী/আগ্রা ক্যাপ্ট হয়ে ২৬ ঘটনায়; সম্বলপুর ফেরে ১৩৬ লিন ৮-৪৫এ নিজামুদ্দিন থেকে।



বাস যাচ্ছে সম্বলপুর থেকে ওড়িশা তথা প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে। রাতভর নন-স্টপ সার্ভিসে OTDC-র লাক্সারি কোচও যাচ্ছে ২২-০০টায় সম্বলপুর ছেড়ে পরদিন ৬-০০টায় ভুবনেশ্বরে। ভুবনেশ্বর থেকেও ফেরে একইভাবে। নিকটতম বিমান রাউরকেলায়। শহরে চলছে রিকশা ও অটো। ২ কিমির ব্যবধানে ২টি রেল স্টেশন সম্বলপুরে। শহর যাত্রীদের উচিত হবে সম্বলপুর রোডে নেমে রিকশায় শহরে চলা। আর বাস স্ট্যান্ড শহরের প্রাণকেন্দ্রে সম্বলপুর রোড স্টেশন থেকে ১, সম্বলপুর থেকে ১৬ কিমি দূরে।



VSS Marg, Sambalpur-768001, STD 0663-এ—H Uphar, ৩ 21558, DAB ২০০ A-c D ২৫০ A/c D ৩৫০; H Sujata, ৩ 22112, R2B₁, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-১৭৫ A/c D ৩০০; Tribeni H, ৩ 20354, R2B₁, S ৮৫ D ১২০-২৫০ A/c D ৩৫০; অশোক টকিজের পাশে Hotel Li-n-Ja, ৩ 21301, SAB ৬০-৮৫ DAB ১০০-১৭৫ A/c D ৩০০; রিপারীতে Rani L, SAB ৬০ DAB ১০০ ডব্লিউ বেড ২৫; H Chandramani, ৩ 21440, SAB ৮৫-৮০ DAB ১০০-১৭৫ FR ২০০; H Apsara, ৩ 21366, SCB ৩৫ SAB ৬০-৮৫ DAB ১২৫-২০০ TAB ১৭৫। আর আছে সাধারণ সাজে S ৩৫-৮৫ D ৬৫-১২৫ টাকায়—Ashoka H, Nataraj H, New Bombay H, H Kalinga, Indrapuri L, City Boarding, Sambalpur L, Mahanadi L, Nanda L; বাস স্ট্যান্ডে Transport L ছাড়াও নানান। CH, PWD IB, FRH, মারোয়াড়ি ধরমশালা, গান্ধী মন্দিরেও পর্যটকদের থাকার ব্যবস্থা মেলে। তবুও যেন থাকার জন্য Brook Hill, Sambalpur-768001 এর মনোরম পরিবেশে OTDC-র Panthanivas, ৩ 21482, DAB ২০০ A-c D ২৫০ A/c D ৩৫০ ৫০০, অবু: Manager; থাকার পক্ষে রমণীয়। রাজ্য পর্যটনের দপ্তরটিও বসেছে পাছনিবাসে। পাহাড় থেকে শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান।

কনডাক্টর টার্নার: যথেষ্ট যাত্রী সমাগমে OTDC ছাছনিবাস থেকে রবিবার ছাড়া প্রতিদিন ১৩—১৬-০০টায় ৩০ টাকায় হীরাকুদ প্রোজেক্ট; রবিবার ৭—২০-০০টায় ১২০ টাকায় নুসিংহনাথ; শনিবার ১৯—০১-০০টায় ৮৫ টাকায় বাদরামা (উবাকাটো) অভয়ারণ্য বেড়িয়ে আনে। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়ায়ে মেলে পর্যটন দপ্তরে।

প্রধানপট: বাদরামা থেকে NH-6 ধরে কেওনঝড়মুখী ৫৯ কিমি গিয়ে দেওগড়ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। কেওনঝড়ের দূরত্ব ১৩৮, সম্বলপুর ৯১, ভুবনেশ্বর ৮১৮ কিমি। বাস চলে এপথে। তবে, উৎসাহীদের উচিত হবে বিকালে প্রধানপট অর্থাৎ ঝরনা দেখে রাতে বাদরামা পেড়িয়ে প্রত্যুষে সম্বলপুর ফেরা। আবার NH-23 ধরে ১৩৪ কিমি দূরের রাউরকেলাও চলা যেতে পারে দেওগড় থেকে বাসে। আরগ্যক পরিবেশ, আদিবাসীদের বাস দেওগড়ে। শহরান্তে জাতীয় সড়কেই সুন্দর নৈসর্গিক পরিবেশে ২টি ঝরনা নামছে পাহাড় থেকে। ১টিতে বিদ্যুৎ হচ্ছে, অন্যটির জল যাচ্ছে শহরে। তেমনই গোপালনাথ, জগন্নাথ, গোকর্নাথের ছাড়াও নানান মন্দির আছে দেওগড়ে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে দেওগড়ের বসন্তনিবাস, ললিতা-বসন্ত পোস্ট হাউস, মিউনিসিপ্যাল ট্যুরিস্ট হোম, PWD-র IB-তে।

হীরাকুদ প্রোজেক্ট: সম্বলপুর থেকে ১৬ কিমি উত্তরে মধ্য প্রদেশ সীমান্তে হীরাকুদে রাজ্যের প্রাণদায়িনী হীরাকুদ প্রোজেক্ট। অতীতে হীরা মিলত কুদ অর্থাৎ ধীপে—নামটি সেই থেকে। বাসও ছিল আদিবাসী বারাদারের কুদ থেকে কুদে। তবে সবই আজ জলের তলায়। ২৬.৭৪ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ৪৮০০ মি দীর্ঘ ৫০ মি উচ্চত্বের দীর্ঘতম বাঁধ পড়ছে মহানদীকে বশে আনতে। ৭৪৬ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত জলাধার অর্থাৎ কৃত্রিম লেকটি এশিয়ার মধ্যে বৃহত্তম। আকারে শ্রীলঙ্কার ষিগুণ সম—এই লেক থেকে জল যাচ্ছে কৃষির কাজে ৩.৮০ লক্ষ একর জমিতে। আর বিদ্যুৎ হচ্ছে ১,২৩,০০০ কিলোওয়াট। তেমনই রোধ হয়েছে অভিশপ্ত বন্যা ভারতীয় কারিগরিতে গড়া এই বাঁধে ১.১৯৫৭য় ভারতের তদানীন্তন প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত জওহরলাল নেহরু উদ্বোধন করেন বাঁধ। অভিহিত করেন *তীর্থঘাটা* বলে বিশাল এই কর্মযজ্ঞকে। ২৫ কিমি দূরে চিপলিমায় মহানদী ৮০ ফুট নিচে নামছে। নতুন করে দ্বিতীয় পর্যায়ে মিনি জলবিদ্যুৎ কেন্দ্রও হয়েছে চিপলিমায়। আর আছে দেবী ঘণ্টেশ্বরীর মন্দির চিপলিমায়। হীবারদের দেবী ঘণ্টেশ্বরী—ঘণ্টা বাঁধছেন ভক্তের দল মনোবাহা পুরণের মানসে। সম্বলপুর থেকে দূরত্ব ৩৬ কিমি আর ট্রান্সমিশন লাইন বসেছে হীরাকুদ থেকে রাউরকেলায়।

প্রোজেক্ট কলোনিতে ঢুকতেই সিকিউরিটি অফিস থেকে প্রোজেক্ট তথা বাঁধের ২ প্রান্তের ২ পাহাড় চূড়ায় গান্ধী ও নেহরু মিনার চড়ার সঠিক যাত্রী সংখ্যা লিখে অনুমতি নিতে হয় নিবরণায়। মহানদীর দুকুল ছাপিয়ে প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে পাহাড়শ্রেণী। মনোহর বাগিচার মাঝে হীরাকুদ প্রান্তে ৮০ ধাপ চড়ে ঘূর্ণমান গান্ধী মিনার থেকে নয়নলোভন লেকের দৃশ্য বিমোহিত করে। তেমনই ৫ কিমি দীর্ঘ বাঁধ পরিষে অপার প্রান্তের বারলায় আর এক পাহাড় চূড়ায় নেহরু মিনার। থাকারও ব্যবস্থা মেলে সুন্দর পরিবেশে পাহাড় চূড়ায় নেহরু মিনার লাগোয়া *লাক্সারি গেস্ট হাউস* ও *অশোক যাত্রীনিবাসে*। এদের বুকিং: Superintending Engineer, Hirakud Dam Circle, Burla, Sambalpur. তবে, আকর্ষণে গান্ধী মিনার আদরণীয় হবে। গাড়িও পৌঁছায় মিনারে। সূর্যসেব পাটে যেতে হীরাকুদের আলোকমালা—সেও আর এক রমণীয়। দেখার সময়: মার্চ থেকে অক্টোবরে ৮—১২-০০ ও ১৫—১৮-০০; নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে ৬—১৭-০০টায়। তবে, অনুমতির জন্য সিকিউরিটি দপ্তর মার্চ থেকে জুনে ৭—১১-০০ ও ১৫—১৭-০০; জুলাই থেকে অক্টোবর ৮—১২-০০ ও ১৫—১৭-০০; নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে ৮—১২-০০ ও ১৪-৩০—১৬-৩০টায় খোলা থাকে। বিশেষ অনুমতিতে পাওয়ার হাউসও দেখে নেওয়া যায়। লেকের জলে বোট-এরও ব্যবস্থা আছে। বাঁধের ছবি তোলা কঠোরভাবে মানা। ক্যামেরাও জমা রাখতে হয় বাঁধের মুখে লক গেট। ট্যুরিস্ট

অফিসার, সম্বলপুর থেকেও সহযোগিতা মেলে হীরাকুদ দর্শনের অনুমতি লাভে। চলার পথে সম্বলপুর অ্যালামিনি-রাম ফ্যাক্টরিটিও দেখে নিতে পারেন অনুরাগীরা।

হাওড়া-মুর্ঝি ভায়া নাগপুর রেলপথের বারনপুড়া থেকে শাখা লাইন যাচ্ছে সম্বলপুর হয়ে তিতলাগড়ে। এই শাখা রেলপেই হীরাকুদ স্টেশন, ১০ কিমি দূরে প্রোজেক্ট। সংযোগকারী যানের অভাবহেতু যাতায়াতে সম্বলপুরই সুবিধার। পর্যটকদের উচিতও হবে সম্বলপুর থেকে জিপ ২৫০-৩০০, অটো ১২৫-১৭৫ টাকায় হীরাকুদ বেড়িয়ে নেওয়া। বাসও যাচ্ছে লক্ষ্মী টকিজের বিপরীত থেকে। যথেষ্ট খাত্তী সমাগমে OTDC প্যাকেজ টুরেও যাচ্ছে পাহনিবাস থেকে হীরাকুদে।

বাদরামা ওয়াইল্ডলাইফ স্যান্টুয়ারি: সম্বলপুর-দেওগড় NH 6-এ সম্বলপুর থেকে ৩৮ কিমি যেতে বাদরামা। জাতীয় সড়কে বাদরামা ফরেস্ট রেঞ্জ অফিস থেকে অভয়ারণ্যের প্রবেশ-অনুমতি, গাইড ও সার্চ-লাইট নিয়ে চলা যেতে পারে বন অভিসারে। বিপরীতে ২ ঘরের ফরেস্ট বাংলো। অব: DFO, Bamra, Dist-Sambalpur, Orissa. অদূরেই স্যান্টুয়ারির প্রবেশ-দ্বার।

অতীতের উষাকোটী আজ হয়েছে বাদরামা। নাম বদলের সাথে সাথে আয়তনও বেড়েছে স্যান্টুয়ারি। ৭৫০ মিটারের অধিক উচ্চে ৩৭০ বর্গ কিমি জুড়ে স্যান্টুয়ারি। ১৯৬২তে অভয়ারণ্যের শিরোপা চেপেছে উষাকোটির ভালে। শালে ছাওয়া মিশ্র পর্ণমোচী বৃক্ষের গহীন অরণ্যে ১৪টি বাঘ, ৫০০-রও অধিক হাতি, ব্ল্যাক প্যান্থার, শম্বর, বাহিন, গৌর, ময়ূর, বন্য কুকুর, বন্য মহিষ, নানান প্রজাতির হরিণ ছাড়াও নানান বনচরের বাস বাদরামায়। তেমনই পাখিদের কল-কাকলি সারা অরণ্য জুড়ে। ফ্লাইং স্কাইরেল বা উড্ডুক কাঠবিড়ালী বাদরামার এক বিশেষ আকর্ষণ। ৩টি ওয়াচ টাওয়ারও হয়েছে—মিষ্টি জলের ও পুকুর পাড়ে। গ্রীষ্মের খর তাপে বনচরেরা আসে মিষ্টি জলে তৃষ্ণা মেটাতে। চলতে-ফিরতেও দর্শন মেলা স্বাভাবিক নয় গাড়িতে বসে। রেঞ্জ অফিস থেকে ১ম-টির দূরত্ব ৮ কিমি, ২য়-টির ১৪, আর ৩য়-টির অবস্থান ৩৬ কিমি দূরে। উঁচু-নিচু বনভূমি। টু-হীলার জিপ ৩য় টাওয়ারের পথ চলতে অক্ষম। তাই উৎসাহীদের উচিত হবে রাতের আহার্য সঙ্গে নিয়ে সন্ধ্যায় সম্বলপুর ছেড়ে সারা রাতের প্রোগ্রামে শ'পাঁচেক টাকায় ফোর হীলার জিপের যাত্রী হওয়া। আর যথেষ্ট যাত্রী হলে OTDC পাশভবন থেকে সন্ধ্যায় যাচ্ছে বাদরামা প্যাকেজে। বাসও চলে জাতীয় সড়ক ধরে বাদরামা হয়ে। নভেম্বর থেকে জুন বাদরামা দর্শনের মরসুম।

ছমা: সম্বলপুর থেকে ৩২ কিমি দক্ষিণে ছমাও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। শৈবতীর্থ রূপে ছমার প্রসিদ্ধি। ওড়িশার স্বকীয়তা থেকে সরে গিয়ে বেশ কয়েকটি মন্দিরের সমন্বয়ে গড়ে উঠেছে ছমার মন্দিররাজি। সপ্তম আশ্চর্যের অন্যতম পিসার টাওয়ারেরই প্রতিরূপ যেন। ভারতীয় মন্দির স্থাপত্যে নজিরহীন প্রতিটি মন্দিরই হলে থাকা। ১৬৭০

খ্রিস্টাব্দে বলদীর সিংহ চৌহানের তৈরি ৪৭ ডিগ্রী হলে থাকে মূল মন্দিরে দেবতা। বিমলেশ্বর শিব। দেবতাও হলোনা। তবে, মন্দিরের চূড়োটি হয়েছে সিংহ। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে মহাদানী। জলে আহার্য দিলে কুড়া মাছদের দর্শন মেলা। তবে, ধরাছোয়ার বাইরে শিবের ঢালা এই মাছেরা। ছোট ছোট টিলা, নদী চলে একেবঁকে; তারই মাঝে দেশী নৌকায় বিহার করে নেওয়া যায়। পরিবেশ মাধুর্যে ভরা। ২১ কিমি বাস বা ট্রাকারে গিয়ে ৩ কিমির গ্রাম্যপথ পায়ে পায়ে চলা যায় ছমা দর্শনে। তবে, শ'দুয়েক টাকায় জিপে সাজ করা যায় ছমা সফর।

নৃসিংহনাথ: রামায়ণের পবনপুত্র হনুবাহিত হিমালয়ের গঙ্গামদন পর্বতের উত্তর ঢালে সম্বলপুর ও বোলান্ধী জেলা সীমান্তে নৃসিংহনাথ। অসুরদের অত্যাচারে দেবতার অতিষ্ঠ—বিষ্ণু এলেন অসুর বিনাশ করতে ধরামায়ে। অসুরকুল মুখিক হয়ে আয়োগোপন করে এই পাহাড়ে। বিষ্ণুও আধা মার্জার আধা সিংহের রূপ ধরে মুখিক নিধনে পাহাড়ে এলেন। স্মারকরূপে ১৪১৩য় ভৈজাল দেও-এর তৈরি মন্দিরে কিংবদন্তীতে ঘেরা দেবতা নৃসিংহনাথ। দেবতা নৃসিংহনাথ অর্থাৎ বিষ্ণু এখানে মার্জারকেশরী বা বিড়াল-সিংহ—দেহ সিংহের, মাথাটি বিড়ালের। কটি পাথরের দেববিগ্রহ। তবে, ফুলের বেড়াঙ্কলে অবয়ব সাধারণের অগোচরে। মন্দিরের ভাস্কর্যও সুন্দর। পাথরের দরজায় গজলক্ষ্মীর মূর্তি, জয় ও বিজয়, বামন, নৃসিংহ, বরাহ মূর্তিগুলিও অনবদ্য। আর আছেন মন্দিরের কাছেই দুর্গা, গণেশ ও দ্বারপাল। পঞ্চপাণ্ডব ঘাটের কাছে সৃষ্টি-স্থিতি-লয়ের দেবতা ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর মূর্তির ভাস্কর্যও সুন্দর। তত্ত্বজ্ঞানদের অমরপ্রসাদও মেলে পংক্তিভোজনে মন্দিরে। দোল পূর্ণিমার উৎসবে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। বাসও পৌছায় উৎসবকালে মন্দির ঘাটে। এছাড়াও উৎসব হচ্ছে বৈশাখী চতুর্দশী, শ্রাবণী পূর্ণিমা, রথযাত্রা, মাঘী পূর্ণিমা ও দোলে নৃসিংহনাথে।

পাহাড় পাহাড়—ভীমাধার, গদাধার, শুণ্ডধার, পিত্রুধার, কপিলধার, চলাধার ছাড়াও নানান ঝরনা নামছে পাহাড় থেকে—বয়ে চলেছে নিচু দিয়ে নালা হয়ে। নাম তার পাণহরণ। নানে পাণমোচন হয়ে। আর আছে সীতাকুণ্ড, গোকুণ্ড—পুণি মেলে কুণ্ডের জলে নানে।

নালা পরিবেশে ধাপে ধাপে খাঁজ দিয়ে গঙ্গামদনের শিরে উঠেও জয় করে নেওয়া যায় গঙ্গামদন পর্বত। ৩৫ কিমি দীর্ঘ মালভূমিসম গঙ্গামদন ল্যাটেরাইট পাথরে ঢাকা। নিচুতে তার বস্ত্রাইটের আন্তরগ ধরে ধরে ২০ ফুটের মতো পাঁড়িয়ে। বিশাল্যকরণীর গঙ্গামদন পাহাড়ে আরণ্যক বন্ধুর পথে ১৬ কিমি যেতে Po-lo-mo-lo-ki-li অর্থাৎ ধ্বংসপ্রাপ্ত আর এক ইতিহাস পরিমলগিরি বৌদ্ধ বিশ্ববিদ্যালয় খ্রি পূ অতীত রোমান্থন করায়। উৎসবকালে যাত্রী চললেও সবৎসর নিরান্দা-নির্জন-বন্ধুর এপথ। পথ ভুলের সন্ধাননাও তাই

পদে পদে। তেমনই আছে দক্ষিণ ঢালে বৈষ্ণব ও শৈব তীর্থ হরিশঙ্কর। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ধ্যান-গম্ভীর পরিবেশে একই মন্দিরে সহাবস্থান ঘটেছে হরি ও হরের (শঙ্কর)। আর আছে ভৈরবী ও জগন্নাথ মন্দির হরিশঙ্করে। বয়ে চলেছে পাপহরা নদী—স্নানে পাপমোচন হয়।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে FRH, PWD IB, পঞ্চায়েতের যাত্রীনবাস ও ধরমশালায় হরিশঙ্করে। নৃসিংহনাথ থেকে পাহাড় ডিঙিয়ে যাওয়া চলে ১৫ কিমি দূরের হরিশঙ্কর। আবার পাহাড়তলী ধরেও পথ গিয়েছে। আর জিপ চলে ৪০ কিমি দূরের পদমপুরা থেকে হরিশঙ্করে। বাসও যাচ্ছে দিনে দুই পদমপুরা থেকে; ফেরে হরিশঙ্কর থেকে পরদিন সকালে।

সম্বলপুর থেকে বাস যাচ্ছে বরগড়/পদমপুর/পাইকমল হয়ে ঝাড়িয়ার রোড। সরাসরি বাসের অমিলে নানান বাসে সম্বলপুরী তাঁত খ্যাত বরগড় বা পদমপুর পৌঁছে নতুন করে বাসে পাইকমল গিয়ে রিকশা বা অটোর ৪ কিমি দূরে নৃসিংহনাথ। সম্বলপুর থেকে দূরত্ব ১৪০ কিমি, সময় লাগে বাসে খট্টা চারেক। আর OTDC যথেষ্ট যাত্রী হলে প্যাকেজে সম্বলপুর থেকে প্রতি রবিবার ৭—২০-০০টায় নৃসিংহনাথ দেখিয়ে ফেরে। তেমনই নিকটতম রেল স্টেশন রায়পুর-ওয়ালটোয়ার রেলপথে রায়পুরের ১০৬ কিমি দূরে ঝাড়িয়ার রোড থেকেও নানান বাস আসছে ৫০ কিমি দূরে নৃসিংহনাথে। সরাসরি যাত্রায় হাওড়া-সম্বলপুর-রায়গাড়া এক্সে বরগড় পৌঁছে বাসে নৃসিংহনাথ। বাস আসছে ক্যানিটাল সিটি ভুবনেশ্বর ছাড়াও দ্বিধিক থেকে পাইকমল তথা নৃসিংহনাথে।

পাহাড়-পাহাড় মায়াময় মোহাচ্ছন্ন আরণ্যক পরিবেশে ৫/৭টি দোকান নিয়ে নৃসিংহনাথ মন্দির। আহার্যও মেলে সাধারণ হোটেল। আর থাকার জন্য আছে OTDC-র *Panthasala Nrusinghnath*, Po-Paikamal, Dist-Sambalpur, Pin-768039, ☎ 72436. DAB ৬০, ডার্মি ২০; অব্: ATO. আর আছে মন্দির কমিটির *ধরমশালা, FRH, Panchayat IB* নৃসিংহনাথে। তেমনই আছে ৪ কিমি দূরে Paikamal-768039-এ—PWD IB; Padampur-768036-এ—PWD IB, *Revenue IB*; Baragarh-768028-এ—*H Oriental, Maharaja L, Bargarh L, Lucky L, PWD IB, NH IB, Irrigation RH, Revenue Rest Shed* ছাড়াও নানান হোটেল ও লজ।

অত্যাংশহীরা চলার পথে বরগড়ে জানুয়ারি মাসের মাঝামাঝি ১১ দিনের ধনুযাত্রা (১৯৪৭-এ শুরু) উৎসবটিও দেখে নিতে পারেন। বয়ে চলেছে অখ্যাত গ্রাম্য নদী—১১ দিনের তরে নাম হয় তার যমুনা। অস্থায়ী যমুনা পুলিনের এক তীরে গোপপুর অর্থাৎ বৃন্দাবন, অপর তীরে আমাপন্নী তথা মথুরা। নাচ-গান-বাজনায় মেতে ওঠে বরগড়। আলোয় ঝলমল দরবার বসে দুর্গাঙ্গ প্রতাপশালী কংসর—বিচার হয় দুটের, সাজা তার অর্ধদণ্ড। অন্ধরে অন্ধরে পালিত হয় সাধারণ থেকে অসাধারণে সে সাজা। এমনকি নগর পরিক্রমায় বের হন পারিবদবর্গ সহ রাজা কংস। গ্রামবাসী থেকে পথচারী, এমনকি যান চালক চলেও অব্যাহতি নেই কংসর সাজা থেকে। আর চলে শ্রীকৃষ্ণর আখ্যান বৃন্দাবনে, কংসও বধ হয় একাদশ দিনে শ্রীকৃষ্ণর হাতে। কৃষ্ণপুস্তিকাও পোড়ো কংসর। রাজা হন মথুরায়

কংসর পিতা উগ্র সেন। যবনিকা পড়ে সে বছরের তরে ধনুযাত্রা উৎসবে। থাকারও হোটেল আছে *H Oriental, S ১০০ D ১৫০* বরগড়ে।

বলাঙ্গির: বারসুগুদা-সম্বলপুর-বলাঙ্গির-তিতলাগড় শাখা রেলো বলাঙ্গির রোড স্টেশন। হাওড়া-রায়গাড়া এক্স ৯-১৫য় সম্বলপুর ছেড়ে ১১-৪৫এ বলাঙ্গির যাচ্ছে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে বোকারো-টাটা-আলেন্সি এক্স, বারসুগুদা-তিতলাগড় প্যা, রাউরকেলা-ভুবনেশ্বর হীরাকুদ এক্স সম্বলপুর-পলাঙ্গির-তিতলাগড় হয়ে। বাসও চলে নিয়মিত এপথে। পাহাড় আর অরণ্যের সমন্বয়ে বলাঙ্গির জেলার সদর বলাঙ্গির শহর। কোরা নামছে পাহাড় বেয়ে। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে আরও সুন্দর অনবদ্য শিল্প-সুখমায় সমৃদ্ধ নানান মন্দির ও প্রত্নতত্ত্বের সন্টার। থাকারও হোটেল মেলে সাধারণ সাজে—*সাহ লজ, গীতালজ, ট্যুরিস্ট হোম, বলাঙ্গির লজ, হলিডে ইন, হোটেল প্যারাডাইস, তারা লজ* ছাড়াও নানান বলাঙ্গিরে। এদের কাছে ডাবল বেডের ঘর ১০০-২২৫। বলাঙ্গির থেকে লোকাল বাসে চলা যেতে পারে হরিশঙ্কর, নৃসিংহনাথ, পাটনাগড়া। বাসের অপভ্রুলতায় জিপেও চলা যায় এপথ পরিক্রমায়।

বলাঙ্গির থেকে ৩৮ কিমি দূরে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় আর এক অতীত কুঁয়ারি পটিনা। ৯ম শতকে তন্ত্র সাধনার কেন্দ্র আজ হয়েছে পাটিনাগড়। চৌহান রাজাদের কালে নানান মন্দিরের ধ্বংসাবশেষের মাঝে ১২ শতকের সোমেশ্বর শিবমন্দির, পটিনেশ্বরী ও শ্যামলেশ্বরী মন্দিরদ্বয় দেখে নেওয়া যায় পাটিনাগড়ে। তেমনই বলাঙ্গিরের ৪৮ কিমি দূরে আর এক মন্দির তীর্থ সোনেপুর। টিলার টঙে লক্ষেশ্বরী মন্দির ছাড়াও মন্দির রয়েছে নানান সোনেপুরে। PWD-র বাংলাও আছে সোনেপুরে।

রানীপুর-ঝরিয়াল: পাশাপাশি দুটি গ্রাম। সোমাতীর্থ নামে খ্যাত এরা। ৮ থেকে ১০ শতকে ১৫ কিমির ব্যাপ্তিতে গড়ে ওঠে চল্লিশেরও বেশি মন্দির সোমাতীর্থে। আকারে এরা যেমন ভিন্ন, শিল্প-স্থাপত্যেও তেমনই ভিন্ন ভিন্ন রূপ পেয়েছে। শৈব, বৌদ্ধ, তন্ত্র, এমনকি বৈষ্ণব প্রভাবও রয়েছে সোমাতীর্থে। মন্দিরগুলির মধ্যে রাজারানী মন্দির, ইন্দ্রনাথ মন্দির, চৌবাট যোগিনী মন্দির, বিশেষভাবে উল্লেখ্য। নীল আকাশের নিচে প্রাচীরে বোথিত গর্তগৃহ ঘিরে প্রাচীরের খোপে খোপে যোগিনী মূর্তি। আর ইন্দ্রনাথ সম্ভবত ইটে তৈরি ওড়িশার রেখ সেউলের মধ্যে উন্নতম। তেমনই উচিত হবে উভয় প্রান্ত থেকেই ম্যাজিক পাথরটি মেপে নেওয়া। বারসুগুদা থেকে সম্বলপুর-বলাঙ্গির হয়ে ট্রেন যাচ্ছে রায়পুর-ওয়ালটোয়ার রেলপথে তিতলাগড়। তিতলাগড় থেকে বাস, মিনিবাস ও ট্যাক্সিতে ৩০ কিমি দূরের রানীপুর-ঝরিয়াল। আবার জেলা সদর বলাঙ্গির থেকেও বাস, ট্যাক্সি ও মিনিবাসে চলা যায়। আর হয়েছে *Panthasala Ranipur-Jharial, DCB ৬০, অব্: Tourist Officer, Orissa Tourism*,

Balangir, ① (06652) 22432. তিতলাগড়ের হোটেল মেলে সাধারণ মানের।

রাউরকেলা

ভারতের ইস্পাত কারখানাগুলির মধ্যে বয়োজ্যেষ্ঠ রাউরকেলা স্টীল প্ল্যান্ট। অতীতে ছিল অখ্যাত এক গ্রাম। ছোটনাগপুর পাহাড়ী অধিত্যকায় সুন্দরগড় জেলায় ২১৯ মি উঁচু রাউরকেলা আজ ইস্পাত কারখানারূপে সারা বিশ্বে বন্দিত। ১৯৫৩ খ্রিস্টাব্দের ১৫ই আগস্ট জার্মানির কুপ ডিমাগ কোম্পানির সাথে চুক্তিমত ৬০ লক্ষ টনের ক্ষমতা নিয়ে কারখানাটি গড়ে ওঠে। আর আজ ৪৫ বর্গকিমি জুড়ে পরিকল্পিত শহরও রূপ পেয়েছে স্টিল প্ল্যান্টকে কেন্দ্রমণি করে। ILD পদ্ধতিতে ইস্পাত তৈরি হয়, ফলে নাইট্রোজেনও হচ্ছে; ১৯৬২তে সার তৈরির কারখানাও হয়েছে রাউরকেলায়। প্ল্যান্ট দেখতে PRO-র অনুমতি লাগে।

রাউরকেলার আর এক আকর্ষণ ২৮ একর জমির উপর ইন্দিরা গান্ধী পার্ক। অবজারভেশন টাওয়ার, লেক, চিলড্রেন পার্ক, যোগল পার্ক, গ্রীন হাউস, গোলাপবাগ, মিনি চিড়িয়াখানা ছাড়াও পর্যটক বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে গড়ে তোলা হয়েছে এই ইন্দিরা পার্ক। শহরবাসীদের সাক্ষাৎমণের রমণীয় পরিবেশ।

তেমনই শহর থেকে ৯ কিমি সম্বলপুরমুখী গিয়ে ডান-হাতি সামান্য যেতে সুন্দর মনোহর পরিবেশে শম্ব ও কোয়েল নদীর মিলিত ধারায় ব্রাহ্মী নদীর জন্ম। সরস্বতীও অগোচরে এসে কুণ্ড থেকে দৃশ্যমান হয়ে গিয়ে মিলেছে সঙ্গমে। কিংবদন্তী, সঙ্গম পাড়ে পাহাড়ী ঢিলায় মহাভারত রচয়িতা বেদব্যাসের জন্ম। শ্মারক রূপে টিলা জুড়ে বেদ-ব্যাস মন্দির ছাড়াও নানান দেবতা নানান আশ্রম। বাস বা অটোয় বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আর শহরে আছে অনন্ত বাসুদেব, কেশবদেবগৌরী, লিঙ্গরাজ মন্দির, গির্জাও মসজিদ।

শহর থেকে ২৮ কিমি দূরে মন্দিরা ড্যামটির পর্যটক আকর্ষণও কম নয়। বোটিংও করা যেতে পারে লেকের জলে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে Mandira G H-এ, বুকিং: Manager, Water Supply Plant, HSL, Rourkela. চাইইভাতির মনোমর পরিবেশ। তেমনই শহর থেকে ৯২ কিমি দূরে খণ্ডধার জলপ্রপাতের আকর্ষণও অনস্বীকার্য। বাসে বাসে চলা যেতে পারে বোনাইগড় হয়ে। বোনাইগড় থেকে ১৯ কিমি দূরের জলপ্রপাতের শেষ ২ কিমি পায়ে হাঁটা পথ। ২৪৪ মি উঁচু থেকে ধারা নামছে। প্রকৃতিও মনোহর। PWD IB ও Revenue IB আছে Bonaigarh-এ।



হাওড়া-মুর্খাই ভায়া নাগপুর রেলপথে রাউরকেলা। দূরত্ব হাওড়া থেকে ৪১৫ কিমি, সময় নেয় কমবেশী ৭½ ঘণ্টা। মুর্খাইর দূরত্ব ১৫৫৪ কিমি। হাওড়া থেকে শনিবার ছাড়া ৬-০০টার ২০২১ পতাকাই এক্স, ৬-৫০এ হাওড়া-সম্বলপুর ৪০১১ ই-স্পাত এক্স, ২০-৪০এ ৪০০৫ হাওড়া-রায়গড়া-

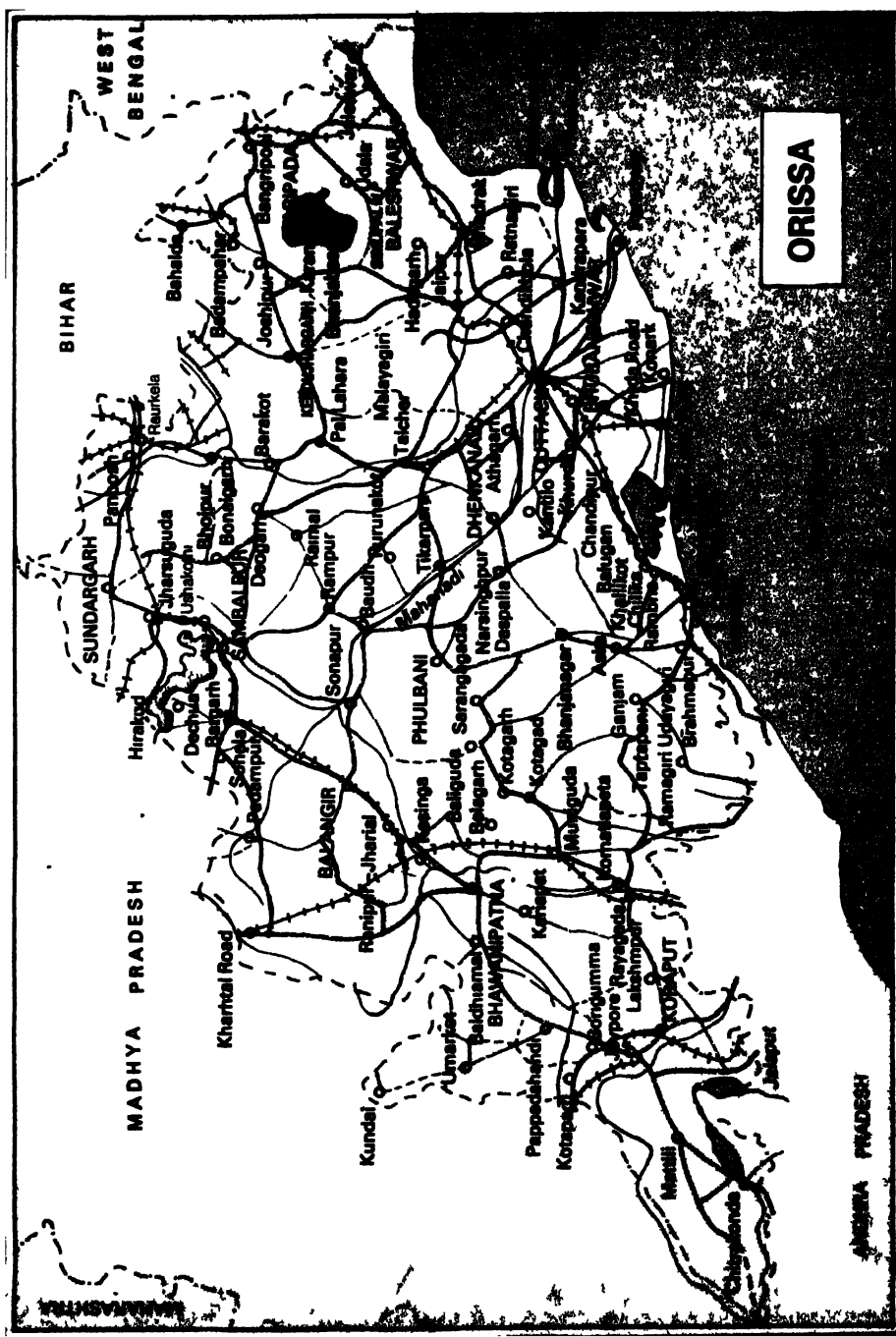
কোরাপুট এক্স, আমেদাবাদ এক্স ২০-৩০, মুর্খাই মেল ১৯-২০, কারলা এক্স ১০-৪৫, রবিবার আজাদ হিন্দ এক্স ১৫-৪৫, গীতাঞ্জলি এক্স ১২-২৫এ ছেড়ে রাউরকেলা হয়ে যাচ্ছে। কলকাতার ফেরে রাউরকেলা থেকে—১৪-১০এ রাউরকেলা-হাওড়া শতাব্দী, ১৩-০৫এ ই-স্পাত, ২০-১৫য় কোরাপুট-রায়গড়া-হাওড়া এক্স, ২১-১০এ আমেদাবাদ-হাওড়া এক্স, ২১-১০এ সাপ্তাহিক আজাদ হিন্দ, ৬-৩৫এ কারলা-হাওড়া এক্স, ৮-০৭এ গীতাঞ্জলি, ০-৩০এ মুর্খাই-হাওড়া মেল। কলিং-উৎকল এক্সও যাচ্ছে খড়াপুর/ রাউরকেলা/ বারসুওদা হয়ে পুরী থেকে হজরত নিজামুদ্দিন; বোকারো স্টীল সিটি-চেন্নাই-আরোমি এক্সও যাচ্ছে রাউরকেলা/ বারসুওদা/ সম্বলপুর হয়ে। ভুবনেশ্বর যাচ্ছে ৭-৪৫এ রাউরকেলা ছেড়ে ১১½ ঘণ্টায় হীরাখণ্ড এক্স। টাটা যাচ্ছে লিঙ্ক এক্স; পাটনা যাচ্ছে ৩২৪৪ টাটা লিঙ্ক ধরে। রাঁচি যাচ্ছে বোকারো-আরোমি এক্স ও বারসুওদা-রাঁচি প্যাসেঞ্জার রাউরকেলা হয়ে। আর বারসুওদা-রাউরকেলা প্যা, রাউরকেলা-বারসুওদা প্যা, নাগপুর-টাটা প্যা, নাগপুর-চক্রপুত্র এক্স, রাউরকেলা-বীরমিপুর মিক্সড ট্রেন যাচ্ছে রাউরকেলা হয়ে। আর বাস ও রেল নিয়মিত সংযোগ রেখেছে রাউরকেলা থেকে ১৫০ কিমি দূরের সম্বলপুরের। এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজ্য তথা প্রতিবেশী রাজ্যের দিঘিনিকে রাউরকেলা থেকে। বাস আসছে রাজ্যের রাজধানী ভুবনেশ্বর, কটকও কেওনঝড় থেকেও রাউরকেলায়।



রেল স্টেশনের বিপরীতে বাস স্ট্যান্ড তথা Station Square-কে ঘিরে হোটেলরাজি রাউরকেলায়। Rourkela, STD 0661, PC-769011-এ প্রথমেই নজর কাড়ে বাঙালির H Solan, Madhusudan Marg, SAB ৮০ DAB ১৫২-২০০ TAB ১৭৫ A/C ৩০০; Apsara H, New Stn Rd-11, SAB ৮৫ DAB ১৫০ TAB ১৭৫ A/C D ৩০০ T ৩৫০ সুইট ৪৫০; Radhika H, Bisra Rd-11, ① ৪৯০৭৭৫, A/C S ৪৫০ D ৪৫০ ডিল্লার ৭৫০-৮৫০ সুইট ৮৫০-২০০০; পার্শেই Rajnahal H, S ১০০ D ১৭৫ A/C S ২৫০ D ৩৫০; Bharat R H; H Chandralok, Main Rd-1, S ১০০ D ১৭৫ A/C D ৩২৫; Deluxe H, S ৬০০-৮৫ D ১০০-১৫০; H Ajanta, S ৪০-৬৫ D ৮০-১৫০; H Sonal, S ৪৫-৮০ D ১০০-১৫০ A/C D ২৫০-৩২৫। Old Station Rd-এ—H Paradise, S ৮০ D ১০০-১৫০; Nataraj H, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB ৬০-৮৫ DAB ১২০-১৭৫; H Blue Star, S ৬০ D ৮০-১২৫। H Mayfair, Panposh Rd-4, ① ৪৯০৭৪৯, A/C D ৮৫০ সুইট ১০০০-১২৫০; H Anurag, Gurudwara Rd-11, ① ৪৯০৫২১, A-C S ৩০০ D ৪০০ সুইট ৫০০ A/C ৪৫০/৬০০/৮০০; H Dingodena, Main Rd; H Shyam, Bisra Rd; H Deepthi, Ring Rd; H Konark, ছাড়াও নানান হোটেল আছে রাউরকেলায়।

আর আছে Rourkela House, Sector-19, Rourkela-769005, A/C S ৬০০ D ৮০০; Ispat G H—Atiithi Bhawan, Sector 2,3,4-এ, A/C D ৪৫০-৮৫০; এদের বুকিং: PRO, Rourkela Steel Plant, Rourkela. তেমনই আছে Circuit House, Panposh, অব: SDO (Civil), Uditnagar; FRH, অব: DFO, Sundargarh; PWD IB, Sector-4, অব: EE, R&B Division, Uditnagar; Hirakud GH, Uditnagar, অব: EE, (Electrical), Uditnagar, Rourkela. ধরমশালাও আছে নানান

ORISSA



BIHAR

WEST
BENGAL

SUNDARGARH

MADHYA PRADESH

ANDHRA PRADESH

KERALA

KARNATAKA

TAMIL NADU

CHELTAT

KILTAN

ANDROTHI ISLANDS

KADMATI

AMINI

PERUMAL PARI

ABATTI

PITTL

KAVARATTI

ANDROTHI

CANNANORE ISLANDS

BUNELIPARI

CHERYAMI

KALPENI

Lakshadweep Sea

NINE DEGREE CHANNEL

MINDICOTT

LAKSHA DWEEP (INDIA)

MAHE (PANDICHERRY)

Tellicherry

Kuruvad

Sadagora

Kadavur

KOZHIKODE

Nilambur

Manjeri

Manjerikudi

Alattur

Kollengode

Padagiri

Irishankudi

Karapadine

Agamelli

Alwaye

Karapadine

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

MAHE (PANDICHERRY)

Tellicherry

Kuruvad

Sadagora

Kadavur

KOZHIKODE

Nilambur

Manjeri

Manjerikudi

Alattur

Kollengode

Padagiri

Irishankudi

Karapadine

Agamelli

Alwaye

Karapadine

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

MAHE (PANDICHERRY)

Tellicherry

Kuruvad

Sadagora

Kadavur

KOZHIKODE

Nilambur

Manjeri

Manjerikudi

Alattur

Kollengode

Padagiri

Irishankudi

Karapadine

Agamelli

Alwaye

Karapadine

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

MAHE (PANDICHERRY)

Tellicherry

Kuruvad

Sadagora

Kadavur

KOZHIKODE

Nilambur

Manjeri

Manjerikudi

Alattur

Kollengode

Padagiri

Irishankudi

Karapadine

Agamelli

Alwaye

Karapadine

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

MAHE (PANDICHERRY)

Tellicherry

Kuruvad

Sadagora

Kadavur

KOZHIKODE

Nilambur

Manjeri

Manjerikudi

Alattur

Kollengode

Padagiri

Irishankudi

Karapadine

Agamelli

Alwaye

Karapadine

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

Alwaye

ই-পাণ্ড নগরী বাউরকোলায়—Amar Bhawan, Station Sqr,
Sarbanjanik, Bisra Rd, Lakshminarayan Dharamshala,
Daily Market, Haryana Bhawan, Daily Market

আর হয়েছে সেক্টর ৫-এ OTDC র Panthanivas
৩ 546568, DAB ২৫০ ৩৫০ A/c D ৩৫০ ৫০০ বাউরকোলায়।
ধাকার খণ্ডে পাহুনিবাস, আব স্টেশন কোথাও হোটেল সোলন,
হোটেল চন্দ্রালোক, হোটেল অলবা ভালই।

বাউরকোলা থেকে ১০০ কিমি দূরে ৩৭৮০ ফুট উঁচু
টেনসা পাহাড় SAIL-এব কর্মকাণ্ড চলেছে বাবসুয়া আয়বন
মাইনসকে ঘিরে। বাস ও জিপ যাচ্ছে বাউরকোলা থেকে
টেনসা—ঘন্টা তিনেকের পথ। আব ট্রেন যাচ্ছে ৯-৩০এ
বাউরকোলা ছেড়ে ১২-১০এ ৭৭ কিমি দূরে বাবসুয়ায়
(Barsuan) বাবসুয়ায় খনি থেকে আকর্ষক লৌহ তুলে
প্রসেসিং করে বাউরকোলা যাচ্ছে। অনুমতিতে দেখাব ব্যবস্থা
মিলে। তবুও যেন সুন্দর প্রকৃতিব মাঝে পট্টে আঁকা ছবি
টেনসা আকর্ষণে অনবদ্য। থাকারও ব্যবস্থা মেলে টেনসা

ভবন ও টেনসা হাউস—SAIL-এর দুই গেস্ট হাউসে।
বুকিং: সুপারিস্টেনডেন্ট ও এম কিউ, বাবসুয়া আয়বন
মাইনস, বাউরকোলা স্টিল প্ল্যান্ট, ওড়িশা। তেমনি পায়ে
পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায় লালমাটির পথ ধরে আদি-
বাসীসেব গ্রাম—মুণ্ডা, টোপো, লাখজা ছাড়াও নানান। সেখে
নেওয়া যায় গেস্ট হাউসেব ভিউ পয়েন্ট থেকে আব এক
বমণীয়—সূর্যাস্ত।

টেনসা থেকে ৩১, আব বাউরকোলাব ৯২ কিমি দূরে
খণ্ডধার জলপ্রপাত—খণ্ডধার অর্থ তবোয়ালের ধাব।
প্রবল গর্জনে ২৪৪ মি (সর্বোচ্চ) উঁচু থেকে ধাবা নামছে।
প্রকৃতিও মনোহর। চলাব পথে ওড়িশাব দার্জিলিং—দার্জিলিং-
ও উচিত হবে বেড়িয়ে চলা। ব্রাহ্মণী নদীর তীরে সুন্দর
প্রকৃতিব মাঝে পাহাড়ী গ্রাম দার্জিলিং। চড়ুইভাতিব মনোবম
পরিবেশ।

কোরাপুট/জেপুৰ ওয়ালটেয়াব অংশে দেখুন।

রহস্য রোমাঞ্চ আর আতঙ্ক

তিন রাজ্যের সম্রাট হেমেন্দ্রকুমারের কিশোর সম্ভার

হেমেন্দ্রকুমার রায় রচনাবলী

১ থেকে ১৬ খণ্ড □ প্রতি খণ্ড ৫০.০০

ছোটদের অমনিবাস ১০০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট ● কলকাতা-৭০০ ০০৭ ● ফোন ২৪১-২৩৮৬/২৪১-৪৬০৮

তামিলনাড়ু

তামিলনাড়ুর ইতিহাস আজকের নয়। অতীতে খ্রিস্ট জন্মেরও দু'হাজার বছর আগের কথা, চোল রাজারা রাজত্ব করতেন। তখন অবশ্য নাম ছিল এর চোলামগুল। তারও আগে পল্লব রাজারাও রাজত্ব করে গেছেন। বীণুর মৃত্যুর পর তাঁরই ছাদশ শিষ্যের অন্যতম সেন্ট টমাস ৫২ খ্রিস্টাব্দে প্রভুর ধর্ম প্রচারে ভারতে আসেন। খ্রিস্টধর্ম প্রচারের অপরাধে ৭২এ শহীদও হন সেন্ট টমাস। মায়লাপুরের স্যানটোম ক্যাথিড্রালটি তাঁরই স্মৃতিবাহক হয়ে আজকের পর্যটকদের অতীত রোমন্থন করায়। তামিলদের দেশ তামিলনাড়ু, এই সেদিনেরও মাদ্রাজ, বার বার আক্রান্ত হয়েছে বিদেশীদের হাতে। এসেছে ডাচ, পর্তুগিজ, ওলন্দাজ, ব্রিটিশ ও ফরাসি ভারতের এই দক্ষিণ উপকূলভাগে। ভারত ভূখণ্ডে প্রথম ব্রিটিশ উপনিবেশ চেমাইয়ে গড়ে উঠলেও ব্রিটিশ প্রভাব পড়েনি তামিলনাড়ুর জনমানসে। আর ১৪ শতকের প্রথম দিকে আলাউদ্দিন খিলজির সেনাপতি মালিক কাফুর বার বার তিনবারের আক্রমণে জয় করে নেয় সমগ্র দক্ষিণ। অল্প পরেই বিজয়নগরের হিন্দু রাজারা আবার হিন্দু সাম্রাজ্য গড়ে তোলে দক্ষিণাভ্যে। তাই যেন আপন স্বকীয়তায় সমৃদ্ধ ভারতের দক্ষিণ। বিদেশী প্রভাবমুক্ত এদের সমাজ জীবন। স্থাপত্য ও ভাস্কর্যেও দ্রাবিড়ীয় শৈলী প্রকট। চোল (তাজোর), নায়ক, পাণ্ড্য (মাদুরাই) ও পল্লবদের (কাঞ্চিপুরম) কালে গড়া কাঞ্চি, কুন্তকোনাং, ত্রিচি, রামেশ্বরম, মহাবলী ও মাদুরাই—এর মন্দিররাজি আপন স্বকীয়তায় আজও সমৃদ্ধ। এমনকি সুদূর মায়ানমার (বার্মা), থাইল্যান্ড, কাম্বোডিয়া, জাভায় সাম্রাজ্য বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে স্থপতি পাঠিয়ে নানান মন্দিরও গড়েন তামিল শাসকরা।

বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম সাগরবেলা ম্যারিনার অবস্থান চেমাইয়ে। তেমনই আছে মনোরম পাহাড়ী শহর উট্টি, কোদাই, কুদ্রু, ইয়ারকুড তামিলনাড়ুতে। নানান ওয়াইল্ড লাইফ স্যাঙ্কচুয়ারিও পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে যুগ যুগ ধরে সারা দক্ষিণে।

১৫০৭ খ্রিস্টাব্দের কথা—পর্তুগিজরা এল বাণিজ্য করতে। দখলও করে মায়লাপুরের স্যানটোম ক্যাথিড্রাল। দলপতি ম্যাড্রা-র নামে জায়গার নাম হয় ম্যাডুরাস পত্তন—কালে কালে মাদ্রাজ। আর আজ মাদ্রাজ হয়েছে চেমাই। মসলার আকর্ষণে ডাচ, ফ্রেঞ্চ, ড্যানিশ, ফিনিশীয়, আরব ও চীনা সওদাগররাও বাণিজ্য গড়ে করমণ্ডল উপকূলের জেলেসের গ্রাম চেমাই—এর সঙ্গে। এদেরই পিছে পিছে ব্রিটিশও আসে—কারখানা গড়ে ১৬১১-র মছলিপতনমে। আর চেমাই—এ আসে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি অর্থাৎ ব্রিটিশ ১৬৩৯-এ বাণিজ্য করতে। বিজয়নগরের শেষ রাজার কাছ

থেকে দান রাপে জমি পেয়ে উপনিবেশ গড়ে ব্রিটিশ। ছোট দুর্গও গড়ে ১৬৪৪-এ। আর দুর্গকে ঘিরে গড়ে ওঠে বসতি—জর্জ টাউন।

অল্পকালেই বাণিকের মানদণ্ড রাজদণ্ড হয়ে দেখা দেয় চেমাই তথা সারা দক্ষিণে। আর স্বাধীনোত্তর ভারতে অল্প ও কেরলের অংশে ছুড়ে অতীতের মাদ্রাজ নামেই রাজ্য হয় নতুন করে। তবে ১৯৫৬ ও ১৯৬০ খ্রিস্টাব্দে ভাষার ভিত্তিতে রাজ্য গড়তে গিয়ে অল্প কেরল ও কশাটিকের সঙ্গে দেওয়া-নেওয়া করে তামিলভাষী অঞ্চল ছুড়ে রূপ পায় মাদ্রাজ রাজ্য। আর ১৯৬৯ খ্রিস্টাব্দের ১৪ই জানুয়ারি মাদ্রাজ রাজ্যের নামান্তর ঘটে হয় তামিলনাড়ু। তবে রাজধানী মাদ্রাজেই থাকে। তামিল সাহিত্যের অমর গ্রন্থ কুরলরচয়িতা ২ শতকের কবি তিরুবাল্লুয়ারের স্মৃতিও জড়িয়ে রয়েছে এই মায়লাপুরের সাথে।

তামিলবাসীরা যেমন ধর্মপরায়ণ, তেমনই অতিথি-বৎসল। শান্ত, শিষ্ট ও কর্তব্যপরায়ণ এরা। মেধাশক্তিতেও ভারত রাষ্ট্রে দক্ষিণীরা আজ অগ্রগণ্য। কর্মের প্রেরণা ও নৈপুণ্য বাড়িয়েছে এরা চেমাই তথা সারা দক্ষিণে। জাত্যাভিমানী এরা। তামিল সংস্কৃতির প্রতি সহজাত আসক্তি এদের। তেমনই রাষ্ট্রীয় ভাষা হিন্দীর প্রতি অনীহা প্রবল। এমনকি কর্মব্যপদেশে দেশান্তরীও হয়েছে মায়ানমার, শ্রীলঙ্কা, সিঙ্গাপুর, মালয়েশিয়ায় এরা। তামিলনাড়ুকে অনেকে আবার মন্দিরের দেশও বলেন। সারা দক্ষিণ ভারতে ছড়িয়ে রয়েছে মন্দির। মন্দির তো নয়, যেন ছোটখাটো এক একটি সাম্রাজ্য। নির্মাণশৈলীতেও বৈশিষ্ট্য আছে—প্রাচীরে ঘেরা, দ্রাবিড়ীয় শৈলীর সুউচ্চ তোরণ বা গোপুরম অর্থাৎ প্রবেশদ্বার পেরিয়ে চত্বরের পর চত্বর রেখে মূল মন্দির। হিন্দু পুরাণের নানান দেব-দেবীতে সম্মিত বছরজা পিরামিড ধর্মী গোপুরমগুলি এমনই আঙ্গিকে তৈরি যে সূর্যালোকে এর ছায়া গোপুরমের মিলে থাকে, ভুমিতে পড়েনা—তাই পদচারণাও ঘটেনা বায়ীদের। ১০০০ পিলারের সভামণ্ডপ, পুষ্করিণীও হয়েছে প্রতিটি মন্দিরে। পোঙ্গল এদের জাতীয় উৎসব। এপ্রিলের তামিল নববর্ষে ৩ দিন ধরে চলে—ভোগী পোঙ্গল, সূর্য পোঙ্গল ও মট্ট পোঙ্গল। তামিলনাড়ুর ভারতনাট্যম ও কশাটিক সঙ্গীত আজ ভারত ছাড়িয়ে সারা বিশ্বের সংস্কৃতি-বানসের মন জয় করেছে। সঙ্গীতজ্ঞ ত্যাগরাজ তামিল ভাষায় কশাটিকী সঙ্গীতকে বিশ্বের দরবারে ঐশ্বর্যমণ্ডিত করে গেছেন। ভারতীয় ভাষায় প্রথম গ্রন্থ ১৫৫৪ খ্রিস্টাব্দে রোমান লিপিতে তামিলে ছাপা হল পর্তুগিজদের উদ্যোগে লিসবনে। এমনকি রাষ্ট্রভাষা হিন্দীর থেকে তামিল অনেক বেশি সমৃদ্ধ। তামিলনাড়ুর উত্তরে অল্প প্রদেশ, পশ্চিমে কশাটিক ও

কেরল, পূবে বঙ্গোপসাগর আর দক্ষিণে কন্যাকুমারিকায় এসে মিলেছে বঙ্গোপসাগর, ভারত মহাসাগর ও আরব সাগর। আয়তনে একাদশ বৃহত্তম রাজ্য তামিলনাড়ু। বেড়াবার মরসুম ডিসেম্বর থেকে মার্চ হলেও সারা বছর ধরেই পর্যটক সমাগম ঘটে তামিলনাড়ুতে।

তামিলনাড়ু □ রাজধানী: চেন্নাই। **আয়তন:** ১৩০০৫৮ বর্গ কিমি। **লোকসংখ্যা:** ৫৫৬৩৮৩১৮। **ভারতের লোকসংখ্যার হারে:** ৬.৫%। **পুরুষ:** ২৮২১৭৯৪৭। **নারী:** ২৭৪২০৩৭১। **১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি:** ৭২৩০২৪১। **বৃদ্ধির হার:** ১৪.৯৪%। **প্রতি বর্গ কিমিতে বাস:** ৪২৮। **প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী:** ৯৭২। **সাক্ষরের হার:** ৬৩.৭২%। **প্রধান ভাষা:** তামিল। **সঙ্গে চলে তেলুগু, মালয়ালম ও ইংরেজি।** **মাথা পিছু বাৎসরিক আয়:** ৩৮৯৪.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। **সারা ভারতের শীতের দিনগুলিতেও তাপমান ১৯.৮ থেকে ৩২° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে।** **আর গ্রীষ্মে তাপমান থাকে ২২.১ থেকে ৩৭° সেন্টিগ্রেড।** **বর্ষারও আধিক্য আছে।** **বর্ষা আসেও বছরে ২বার—** **জুন-সেপ্টেম্বরে দক্ষিণ-পশ্চিম আর অক্টোবর-ডিসেম্বরে উত্তর-পূর্ব মৌসুমী বায়ুতে।** **অঞ্চল ভেদে তারতম্যও ঘটে বৃষ্টিপাতে—** **৬৫০ থেকে ১৯১০ মি মি।** **বেড়াবার মরসুম ডিসেম্বর থেকে মার্চ মাস।** **পণ্ডিচেরী, কেরল ও অন্ধ্রের অংশ জুড়ে ২৫ দিনে বেড়িয়ে আসুন:** **চেন্নাই ২ তিরুপতি ১ কাম্বি পক্ষীতীর্থম-মহাবলী ১ পণ্ডিচেরী ১ তাজোর ১ চিদাম্বরম ১ কুন্তকোণাম ১ ত্রিচি ১ কোদাইকানাল ১ মাদুরাই ১ পেরিয়ার ১ কোচি ১ কোল্লম ১ তিরুভনন্তপুরম ১ কন্যাকুমারিকা ২ রামেশ্বরম ১ উটি ২ পথ চলায় ৫ দিন অর্থাৎ ২৫ দিনে দক্ষিণ।**

রাজ্যের বৃহত্তম ৭৬০ কিমি দীর্ঘ কাবেরী নদী বিমোভ কুদিনীভর রাজ্য তামিলনাড়ু— চা ও কফি হচ্ছে। তেমনি চাল উৎপাদনে ভারতে তামিলনাড়ু আজ সর্বাগ্রে। হেক্টর প্রতি ১০০ টন আখ উৎপাদন করেও বিশ্বরেকর্ড গড়েছে তামিলনাড়ু। ভারত রাষ্ট্রের ২৫% সুতো, ২০% সিমেন্ট, ৬০% মেশলাই, ৭৭% চর্মজাত পণ্যও হচ্ছে তামিলনাড়ুতে। শিল্পেও বিপ্লব ঘটিয়েছে তামিলনাড়ু। তেমনি বনজ সম্পদেও যথেষ্ট সমৃদ্ধ তামিলনাড়ু। Guindy, Mudumalai,

Vedantangal, Mundanthurai, Anamalai—এই ৫ ওয়াল্ড লাইফ স্যান্ড্রয়ারির অবস্থানও তামিলনাড়ুতে।

নানানধর্মী হোটেল ও গড়ে উঠেছে সারা দক্ষিণ জুড়ে। খরচ-খরচায়ও ভারতের অন্যান্য অঞ্চল থেকে সুবিধা মেলে। বৈচিত্র্য আছে এদের আহাৰ্বেও। ভাতের সঙ্গে দোসা, ইডলি, বড়া এদের প্রিয় খাদ্য, সঙ্গে রসম ও সন্ডরম। হাঙ্কা রান্নাই পছন্দ এদের। নারকেলের তেল ও নারকেলের দুধ রান্নার মাধ্যম। তবে, নারকেল আজ দুর্মূল্য হেতু নানানধর্মী রাসায়নিক তেলের প্রচলন উদ্বেগ্য। নিরামিষাশী এরা। তাই ভোজনবিলাসীদের কাছে হয়তো বা অকিঞ্চিৎ দেখা দিতে পারে। তবে রাজধানী শহর চেন্নাই বা বড় বড় শহরগুলিতে আজ আর আমিষ আহাৰ্য্য দুষ্প্রাপ্য নয়। মিলিটারি হোটেল-রেস্তোরাঁয় আমিষ আহাৰ্য্য মেলে।

চেন্নাই (মাদ্রাজ)

২০শে ফেব্রুয়ারি, ১৬৪০-এ Day & Cogan-এর আগমন করমণ্ডল তটে। সঙ্গী তাদের ২৫ জন ব্রিটিশ সৈনিক, কিছু ব্রিটিশ রুকার ও কিছু ভারতীয় সহযোগী। দু'মাস পরে (এপ্রিল ২৩) ১০০ বর্গ মি ধিরে দেওয়াল দিয়ে ভিত গড়ে তারা Fort St George-এর সেকালের ধীরবদের অখ্যাত গ্রাম চেন্নাই-এ। পত্তন হলো মাদ্রাজের। আর ১৬৪২-এ করমণ্ডল তটের চেন্নাইয়ে প্রথম উপনিবেশের পত্তন ব্রিটিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির। চিনি ও তুলো পাঠাতে সুদূর ইংল্যান্ডে কোম্পানি। আর ১৭৫১-র ফরাসিদের হঠিয়ে ব্রিটিশ দখল গাড়ে সারা দক্ষিণে। তবে, মাদ্রাজ নামটি এসেছে ১৫০৭-এ পর্তুগিজ দলপতি মাদ্রা থেকে। আর, ১লা অক্টোবর ১৯৯৬ মাদ্রাজ নামের বদল ঘটে নতুন করে হয়েছে চেন্নাই। তামিলনাড়ুর রাজধানী তথা দক্ষিণ ভারতের তোরণদ্বার চেন্নাই। ভারতের ৪র্থ বৃহত্তম শহরও চেন্নাই। আয়তন এর ১৭২ বর্গ কিমি। ৫.৪ মিলিয়ন লোকের বাস শহরে। হিন্দী এদের পছন্দ নয়। ইংরেজিও সহজবোধ্য নয় সাধারণের কাছে। বুঝলেও প্রত্যন্তর তাদের তামিলে। আবরণ আর আভরণেও এরা সারা ভারত থেকে স্বতন্ত্র। আহাৰ্য্য-বিহারেও স্বকীয়তা আছে এদের। সহজ-সরল এদের জীবনমান। হাসিখুশি, সদালাপী, বন্ধু বৎসলও বটে। সরকারি ভাষা তামিল। লোকশ্রুতি, অগস্ত্য মুনির কোনও এক শিষ্য প্রথম বই লেখেন তামিল ব্যাকরণের।

রাজ্য সরকার ও ভারত সরকার দুইয়েরই পর্যটন দপ্তর বসেছে অতীতের মাউন্ট রোড অর্থাৎ আজকের আদাম-সলাই-এ। পশ্চিমবঙ্গ রাজ্য পর্যটনও অফিস খুলেছে ১৪ Wallajah Rd-এ। শহরের ব্যস্ততম তথা মূল বাণিজ্য কেন্দ্রও এই আদামসলাই। দেশী-বিদেশী নানান ব্যাঙ্ক, এয়ারলাইনস, বিদেশী মূতাবাস, স্টাভার্ড হোটেল, লোকনপাট সবেসই অবস্থান মাউন্ট রোড তথা আদামসলাই-এ। তন্মুণ্ড কেনাকাটার পুরাতন শহরের নেতাজী সূভাষ রোড বা

প্যারিস কর্নারের আকর্ষণ সর্বাঙ্গে। বহুশিল্পেও চেন্নাইয়ের প্রশস্তির কথা আজ বিশ্ববিখ্যাত। সাউথ ইন্ডিয়ান সিন্ধু রমণীসের কাছে যেমন রমণীয়, তেমনই পুরুষদের জন্য আছে রকমারি লুসি। পট্টারি, হ্যাভিক্রাফটস ও চর্মজাত পণ্যেরও যথেষ্ট প্রশস্তি চেন্নাইয়ে। তবুও যেন উচিত হবে বিদেশী পণ্যের বার্মিজ বাজারটি দেখে চলা। চেন্নাইয়ে চলচ্চিত্র শিল্পও যথেষ্ট উন্নত। এতসবের মাঝেও চেন্নাই আজ দ্রুত এগিয়ে চলেছে শিল্পনগরীর গৌরব অর্জনে। গাড়ি (FIAT) তৈরির সংস্থা, রেলের বগি ছাড়াও নানান শিল্প-কারখানা গড়ে উঠেছে চেন্নাইয়ে। চলচ্চিত্র শিল্পে মুম্বাইর পরেই চেন্নাইয়ের স্থান। এমনকি রাজ্যের প্রাক্তন মুখ্যমন্ত্রী চলচ্চিত্রের সুপারম্যান এম জি আর ও শ্রীমতী জয়ললিতা চলচ্চিত্রের উজ্জ্বল তারকা ছিলেন। তবুও সারা ভারত থেকে স্বাভাব্য নিয়ে আপন স্বকীয়তায় সমৃদ্ধ হল চেন্নাই তথা ভারতের দক্ষিণ। পর্যটক আকর্ষণও বাড়ছে দিনের পর দিন দক্ষিণের।

তবে, গরমের আধিক্য আছে সারা বছর জুড়ে চেন্নাইয়ে। তেমনই গ্রীষ্মের দিনে জলাভাবও ঘটে চলেছে গত কিছুকাল চেন্নাইয়ে। আর জলাই থেকে সেপ্টেম্বর ও নভেম্বর থেকে ডিসেম্বর মাসে বৃষ্টি বিঘ্ন ঘটায় প্রমণে। বেড়াবার মনোরম সময় ডিসেম্বরের মধ্যভাগ থেকে ফেব্রুয়ারি মাস। সময়টা শীতকাল হলেও চেন্নাইয়ে তখন মধুর বাতাস বয়—শীত নেই চেন্নাইয়ে। মরসুমের আর এক আকর্ষণ পোঙ্গল উৎসব। জানুয়ারির ১৪-১৬ পোঙ্গল উৎসব চলে ফসল কাটার চেন্নাই তথা সারা দক্ষিণে। তেমনই ডিসেম্বর-জানুয়ারি মাসে মিউজিক ফেস্টিভ্যাল, জানুয়ারি-ফেব্রুয়ারিতে ড্যান্স ফেস্টিভ্যালও যথেষ্ট পপুলার পর্যটক মহলে।

তবে, প্রথম দিন পায়ে হেঁটে শহর দেখা, অগ্রিম বুকিং ও বিশ্রাম। দ্বিতীয় দিন কনডাক্টেড ট্যুরের বাসে বা ট্যাক্সিতে বেড়িয়ে নিন। ব্রডগেজ ট্রেনও যাচ্ছে শহর চিরে বিচ থেকে মায়লাপুরে। রিকশা, অটো, সিটি বাসও চলেছে শহরে। ইনগলিতেও বাস চলে চেন্নাইয়ে। ভিড়ও কম চেন্নাইয়ের বাসে। তাই স্বচ্ছন্দে বাস চেপেও সাজ করা যায় শহর দর্শন। আবার ITDC ও TTDC থেকে নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেলবে। পাশাপাশি অবস্থানও এদের আদ্যাসলাই-এ। প্যারিস কর্নার থেকে ১১ ও ১৮ রুটের বাস যাচ্ছে চেন্নাই সেন্ট্রাল হয়ে আদ্যাসলাই-এর টুরিস্ট অফিসে। এককভাবে গাড়ি নিয়েও বেড়িয়ে নেওয়া যায় চেন্নাই তথা সারা দক্ষিণ। এমনকি অবস্থান হেতু অল্পের তিরুপতিও চেন্নাই থেকে বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। সূর্যমুখ বাস, ট্রেন ও প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে ITDC ও TTDC। পেরাশ্বর ইনস্টিটিউট কোচ ফ্যাক্টরি ও রেড হিলস পৃথকভাবে বাসে বা ট্রেনে দেখে নেওয়া ভাল। তৃতীয় দিন চতুর্থ মহাবলীপুরম, পঞ্চমীধর্ম ও কাকিপুরম। রাতের বাসে বা মন্মুরম প্যাসেঞ্জারে পণ্ডিচেরী। রেল স্টেশনও চেন্নাই-এ ২টি।

ব্রডগেজ রেল চলেছে সেন্ট্রাল থেকে উত্তর-পূর্ব-পশ্চিম এমনকি দক্ষিণে। আর সেন্ট্রালের ডাইনে পুনামেল হাই রোড ধরে ২ কিমি যেতে চেন্নাই এগমোর রেল স্টেশন থেকে মিটারগেজ রেল যাচ্ছে পণ্ডিচেরী, রামেশ্বরম, মাদুরাই, তিরুনেলভেলী, কেরল তথা দক্ষিণে। আর সারা দক্ষিণ জুড়ে নানানধর্মী বাস চলেছে TTC-র। এদের বাস সার্ভিস আজ সারা ভারতের দিবার বন্ধ।

Tourist Informations :

| | |
|--|-----------|
| Govt of Tamilnadu Tourist Office | |
| Panagal Building, Jeenai Rd, Saidapet | |
| Chennai-600 015 | ☎ 4321694 |
| Tamilnadu Tourist Information Centre | |
| & TTDC Sales Counter | |
| Central Railway Station (6—21-00) | ☎ 5353351 |
| Egmore Railway Station | ☎ 8252165 |
| Airport | ☎ 2340569 |
| Express Bus Stand | ☎ 5341982 |
| Tamilnadu Tourism Development Corpn Ltd | |
| 3EVR Salai, opp Central Railway Station, | |
| Park Town, Chennai-600 003 | ☎ 582916 |
| 143 Anna Salai, Chennai-600002 | ☎ 8547985 |
| Govt of India Tourist Office | |
| 154 Anna Salai, Chennai-800 002 | ☎ 8524295 |
| India Tourism Development Corpn Ltd | |
| (Ashok Travels & Tours) | |
| 29 Victoria Crescent, | |
| Commandar-in-Chief Rd, | |
| Chennai-600 105 | ☎ 8278884 |
| 154 Anna Salai, Chennai-600 002 | ☎ 8524295 |
| Kerala Govt Tourism Office | |
| 28 Commander-in-Chief Rd, | |
| Chennai-600 105 | ☎ 8279862 |
| West Bengal Tourism Information Centre | |
| 18 Walajah Rd, Chennai-600 002 | ☎ 830293 |
| Youth Hostel Association of India | |
| 4 Ramachandra Rao Rd, Mylapore | ☎ 4820976 |
| YMCA, Chennai-600 014 | ☎ 832554 |
| YMCA, Chennai-600 086 | ☎ 5321058 |
| YWCA, | ☎ 5324945 |
| World University Service Centre | ☎ 8263991 |
| Foreigners Registration Office | ☎ 8275424 |



এয়ার ইন্ডিয়া'র বিমান নিয়মিত বিশেষ পাড়ি দিচ্ছে চেন্নাই থেকে। বিশেষী বিমানও যাচ্ছে চেন্নাই থেকে দেশ-শেখাডরে। আর IAC 2 4 6 দিন ৫-৩০এ চেন্নাই ছেড়ে ৭-৩৫এ পোর্ট ব্লোয়ার যাচ্ছে; ফেরে 1 3 5 দিন ৮-১০এ পোর্ট ব্লোয়ার থেকে। মুম্বাই যাচ্ছে সরাসরি 1 5 ঘটায় প্রতিদিন ৭-৩০, 3 7 দিন ১৪-৪৫, 1 2 4 5 6 দিন ১৪-৫০, 6 দিন ১০-৩৫, 1 4 দিন ১২-৩৫এ ছেড়ে ১৩-৩০এ পুঞ্জপুর্তি পৌঁছে ১৫-৩০এ। চেন্নাই ফেরে মুম্বাই থেকে সরাসরি প্রতিদিন

৭-১৫য়, ৫ দিন ২১-১৫, ১২৪৫৬ দিন ১৭-১৫য়, ৩৭ দিন ১১-০০টায় ছেড়ে ১২-২০এ পুন্ড্রপুর্তি পৌঁছে ১৩-৫৫য়। হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে প্রতিদিন ১০-৩০, ১৯-০০, ১৩৫ দিন ৭-৩০ ও ১৬-৩০এ। চেন্নাই ফেরে হায়দ্রাবাদ থেকে ৮-৪৫ ও ২০-৪৫, ১৩৫ দিন ১৮-৫০ ও ২১-৪০এ। কলকাতায় যাচ্ছে প্রতিদিন ২০-১৫য় ছেড়ে ২-০৫মিনিটে সরাসরি, ২৪৬ দিন ১১-০০এ ছেড়ে ১২-৫০এ বিশাখাপতনয় পৌঁছে কলকাতায়; চেন্নাই ফেরে কলকাতা থেকে প্রতিদিন ১৭-২০এ সরাসরি, ২৪৬ দিন ১১-৩০এ ছেড়ে বিশাখাপতনয় হয়ে। দিল্লী যাচ্ছে সরাসরি প্রতিদিন ৬-৪০, ১১-৪৫, ১৭-০০টায় ছেড়ে ২½ ঘটায়; চেন্নাই ফেরে দিল্লী থেকে ৬-৫০, ৮-১৫ ও ২০-০০টায়। কোয়েম্বাটুর যাচ্ছে প্রতিদিন ১২-৩০এ ছেড়ে ১৩-২৫এ; ফেরে ১২৪৬ দিন ১০-৩৫এ, ৩৫৭ দিন ৯-১০এ। আমোদাবাদ যাচ্ছে ৩৫৭ দিন ১২-২০এ ছেড়ে ১৩-০৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১৫-৪৫এ; ফেরে একইভাবে ১৬-৩০এ। তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে ৩৫৭ দিন ৮-১৫য় ছেড়ে ৯-২৫এ, ১২৪৬ দিন ৯-৪০এ ছেড়ে ১০-৫০এ; ফেরে ১৪-০০ ও ১১-০০টায় যথাক্রমে। পুনে যাচ্ছে ১৪ দিন ১০-১৫য় ছেড়ে ১১-০০টায় ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১৩-০০টায়; চেন্নাই ফেরে একইদিনে ১৩-৪৫এ পুনে ছেড়ে ১৫-১০এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১৬-৩৫এ। প্রতিদিন ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ১৩-০৫এ ছেড়ে ১৩-৫০এ; চেন্নাই ফেরে ব্যাঙ্গালোর থেকে ১১-৩০এ। ১৫৭ দিন ১২-২০, ১৩৫৭ দিন ১১-৩০, ১৪ দিন ১০-১৫, ২৪৬৭ দিন ৬-০০, ৩৫৭ দিন ১৬-০০, ১ দিন ১৭-৩০, ৩ দিন ১৩-২০এ; ফেরেও এরা একই দিনগুলিতে ব্যাঙ্গালোর থেকে। কালিকট যাচ্ছে প্রতিদিন ১২-৩০এ চেন্নাই ছেড়ে ১৩-২৫এ কোয়েম্বাটুর পৌঁছে ১৪-৩৫এ; ১৩৫৭ দিন ১১-২০এ ছেড়ে ১২-০৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১৩-৩০এ; ফেরেও একই দিনগুলিতে একইভাবে। কোচি যাচ্ছে প্রতিদিন ১৩-০৫এ চেন্নাই ছেড়ে ১৩-৫০এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১৫-১০এ; ফেরে ১০-১০এ কোচি ছেড়ে একইভাবে। ১৩৫৭ দিন ১২-১৫য় চেন্নাই ছেড়ে ১৩-০৫এ মাদুরাই পৌঁছে চেন্নাই ফেরে ১৮-১৫য়। ২৪৬ দিন ১৫-৩০এ চেন্নাই ছেড়ে ১৬-১০এ ব্রিটি পৌঁছে চেন্নাই আসছে ৩৫৭ দিন ৪-১০এ। ১৩৫ দিন ভুবনেশ্বর যাচ্ছে ১৬-৩০এ চেন্নাই ছেড়ে হায়দ্রাবাদ হয়ে ১৯-২০; ফেরেও একইভাবে একই দিনগুলিতে।

বিশেষেও পাড়ি দিচ্ছে IAC-র উড়ান—প্রতিদিন ২½ ঘটায় কলকাতা, ৩৭ দিন কুয়ালালামপুর, ২৬ দিন ৪½ ঘটায় ব্যাংকক, ১৩৪৬ দিন সিঙ্গাপুর যাচ্ছে চেন্নাই থেকে।

নানান প্রাইভেট বিমান সংস্থাও সংযোগ গড়েছে চেন্নাই থেকে ভারতের নানান দিকের। Jet Airways প্রতিদিন ৯-০০, ১৪-৪০, ১৯-৩৫এ ছেড়ে ১½ ঘটায় মুম্বাই পৌঁছে ফেরে ৬-৪০, ৯-০৫, ১৭-১৫য় মুম্বাই থেকে। তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে ১১-২০এ ছেড়ে ১২-০০এ, ফেরে ১৩-০০টায়। চেন্নাই-মুম্বাই-আমোদাবাদ; চেন্নাই-মুম্বাই-উত্তরাবাদের; চেন্নাই-মুম্বাই-গোয়া; চেন্নাই-মুম্বাই-জয়পুর; চেন্নাই-মুম্বাই-পুনে; দিল্লী-মুম্বাই-চেন্নাই ছাড়াও নানান সার্ভিস গড়েছে চেন্নাই থেকে। East West, Modiluft, NEPC Airlines ছাড়াও নানা প্রাইভেট সংস্থার আকাশী উড়ানও সার্ভিস গড়েছে চেন্নাই থেকে।

শহর থেকে ১৬ কিমি দূরে অঞ্চলেশ্বর Kamraja National Airport আর আন্তর্জাতিক Aringar Anna International Terminal—দুই-এরই পাশাপাশি অবস্থান Meenambakkam-

এর Trisoolamএ। IAC-র বাস যাচ্ছে শহরে। আবার Egmore Rail Stn থেকে ট্রেনে Trisoolam পৌঁছেও চলা যেতে পারে বিমানবন্দরে। মিনিবাস ও বাস যাচ্ছে শহর (প্যারিস কর্নার) থেকে Route No. 18, 18J, 52A/B/C/D, 55A রুটের; ট্যাক্সি, অটোও মেলে শহর থেকে বিমানবন্দর যাতায়াতে। আর Egmore (Hotel Imperial) থেকে ডিল্লিগ বাস যাচ্ছে ভোর থেকে গভীর রাতে।



কলকাতা থেকে ব্রতগামী ২৪৪। করমণ্ডল এবং প্রতিদিন ১৪-০০টায় ছেড়ে খড়্গাপুর/ ভুবনেশ্বর/

বিজয়ওয়াড়া/ শুভুর হয়ে ১৬৬২ কিমি দূরে চেন্নাই সেম্ভোল পৌঁছায় পরদিন ১৭-৩৫এ। আর ৬০০৩ চেন্নাই মেলা যাচ্ছে ২০-১৫য় হাওড়া ছেড়ে পরের পরদিন ৫-১৫য় চেন্নাই সেম্ভোলে। আর যাচ্ছে ১৫ দিন ৬৩২৪ হাওড়া-কোচি-তিরুভনন্তপুরম এবং ২২-৩৫এ; সোমবার ৩-৫০এ ৬৩২২ গুয়াহাটি-হাওড়া-তিরুভনন্তপুরম এবং, শুক্রবার ০-৪০এ খড়্গাপুর হয়ে ৬৩১০ পটিনা-কোচি, ৩৭ দিন ৩-৫০এ ৫৬২৬ গুয়াহাটি-ব্যাঙ্গালোর এবং, বৃহস্পতিবার ৩-৫০এ ৫৬২৪ গুয়াহাটি-কোচি এবং হাওড়া ছেড়ে পরের পরদিন যথাক্রমে ৪-১০, ১১-৩০, ৪-১০, ১১-৩০, ১১-৩০এ চেন্নাই সেম্ভোলে। চেন্নাই সেম্ভোল ছাড়ে করমণ্ডল ৯-০৫, হাওড়া মেলা ২২-৩০, ৫৬ দিন ৭-৩০এ ব্যাঙ্গালোর-হাওড়া-গুয়াহাটি, ৪৭ দিন ৭-৩০এ তিরুভনন্তপুরম-কোচি-হাওড়া এবং, মঙ্গলবার ৭-৩০এ কোচি-পটিনা (খড়্গাপুর), বুধবার ৭-৩০এ তিরুভনন্তপুরম-গুয়াহাটি, সোমবার ৭-৩০এ কোচি-গুয়াহাটি এবং।

৩৬২ কিমি দূরে ব্যাঙ্গালোর সিটি যাচ্ছে ঘট্টা ছয়দিকে চেন্নাই সেম্ভোল থেকে ৭-১৫য় ২৬৩৭ বৃন্দাবন এবং, ১৩-০০টায় ৬০২৩ চেন্নাই-ব্যাঙ্গালোর এবং, ১৫-৪৫এ ২৬০৭ লালবাগ এবং, ২২-০০টায় ৬০০৭ ব্যাঙ্গালোর মেলা, ১৪ দিন ১২-১০এ গুয়াহাটি-ব্যাঙ্গালোর এবং; চেন্নাই ফেরে যথাক্রমে ৪-৩০, ৬-৩০, ৮-০০, ২২-১৫, ৪৫ দিন ২৩-৩০এ। আর যাচ্ছে সুপার ফাস্ট চেন্নাই-মহিশূরে ২০০৭ শতাব্দী এবং (মঙ্গলবার ছাড়া) নন-স্টপ সার্ভিসে ৬-০০টায় চেন্নাই ছেড়ে ১০-৪৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১২-৫৫য় মহিশূরে। শতাব্দী ফেরে ১৪-১০এ মহিশূর ছেড়ে ১৬-০৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ২১-১৫য় চেন্নাই-এ।

১৯-০৫এ ৬৬০১ ব্যাঙ্গালোর মেলা, ১২-০০টায় ৬৬২৭ ওয়েস্ট কোস্ট এবং চেন্নাই সেম্ভোল ছেড়ে পালঘাট/ সোরানুর/ কালিকট হয়ে ৯০০ কিমি দূরে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে পরদিন ১৩-২৫ ও ১৩-৪০এ; চেন্নাই ফেরে যথাক্রমে ২২-৩০ ও ১৯-৪৫এ। ৯২১ কিমি দূরে তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে ১৮-৫৫য় ৬৩১৭ তিরুভনন্তপুরম মেলা, ১৫ দিন ৪-৩০এ হাওড়া-তিরুভনন্তপুরম এবং, মঙ্গলবার ১১-৩০এ গুয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম এবং; তিরুভনন্তপুরম পৌঁছায় যথাক্রমে পরদিন ১১-৫৫, ২২-৩০, ৭-৪৫এ। চেন্নাই ফেরে যথাক্রমে ১৩-৩০, ২৩ ৬ দিন ১২-৪৫এ। চেন্নাই সেম্ভোল থেকে ১৬-২০এ চেন্নাই-তিরুপতি ইন্টারসিটি ৭৪০৩ এবং, ৬-১৫য় সুপারগিরি এবং, ১৩-৪৫এ তিরুপতি এবং ১৪৭ কিমি দূরে তিরুপতি যাচ্ছে যথাক্রমে ১৯-৫০, ৯-২০, ১৬-৫০এ। চেন্নাই ফেরে ৬-৩০, ১৭-৩০ ও ১০-০৫এ তিরুপতি থেকে। ৭০৮ কিমি দূরে কোচি তথা এনকুলাম জং যাচ্ছে ১৯-৩৫এ চেন্নাই সেম্ভোল ছেড়ে পরদিন ৯-০০টায় ৬০৪১ আলেক্সি এবং; ফেরে ১৬-২০এ আলেক্সি-চেন্নাই এবং এনকুলাম থেকে। এছাড়া শুক্রবার ১২-১৫য় গুয়াহাটি-কোচি এবং, বোকারো স্টীল সিটি-

আলেন্সি এক্স, চেন্নাই-তিরুভনন্তপুরম এক্স, বিশাখাটিক ওয়াহাট-তিরুভনন্তপুরম এক্স, ৪ ৭ দিন গোরকপুর-কোচি এক্স চেন্নাই সেত্বাল/কাটপাদি/পালঘাট/এনকুলাম হয়ে যাচ্ছে।

| When you are at Chennai | |
|------------------------------------|---------------|
| Rail : Central Railway Station | ☎ 5353351 |
| " : Train Service " | ☎ A131/D133 |
| " : Reservation " | ☎ E1361/H1362 |
| " : Chennai Egmore " | ☎ 135/8252165 |
| " : " " Train Service " | ☎ 134 |
| " : " " Reservation " | ☎ 5630545 |
| Air India | |
| 19 Marshalls Rd, Egmore-8 | ☎ 8274477/88 |
| Indian Airlines | |
| 19 Marshalls Rd, Egmore-8 | ☎ 8553039/141 |
| Main Booking Office | ☎ 8555200 |
| Mylapore | ☎ 8279799 |
| T. Nagar | ☎ 4347555 |
| Meenambakkam Airport | ☎ R 3719168 |
| | ☎ E 140/142 |
| NEPC Airlines | |
| 407 G R Complex, Nandanam-35 | ☎ 4344580/ |
| Damanai Airways, G-A/2, | |
| 17 Khader Nawaz Khan Rd, | |
| Chennai-6 | |
| Sahara India Airlines | ☎ 4344580 |
| 18 Koddambakkam High Rd-34 | ☎ 8283180 |
| Modiluft, 8 Sivram Shastri St-3 | ☎ 583076 |
| International Terminal | ☎ 2349347 |
| Domestic Terminal | ☎ 2340569 |
| East West Airlines | |
| 9 Koddambakkam High Rd-34 | ☎ 8266669 |
| Jet Airways | |
| 14 Khader Nawaz Khan Rd-6 | ☎ 8555353 |
| Information | ☎ 2330269 |
| 4 EVR Rd, opp Central Rail Stn | |
| Tiruvalluvar Transport Corpn (TTC) | ☎ 5341835 |
| Rajib Gandhi Transport Corpn | ☎ 5341836 |

উটির যাত্রী নিয়ে 6605 নীলগিরি এক্স যাচ্ছে ২১-১৫য় চেন্নাই সেত্বাল ছেড়ে কাটপাদি-আলেন্সি-কোয়েম্বাটুর হয়ে পরদিন ৭-২৫য় মেট্রপলিটাম; ফেরে ১৯-২৫য় মেট্রপলিটাম থেকে নীলগিরি। চেন্নাই-কন্যাকুমারী 6721 এক্স ১৬-১৫য় সেত্বাল ছেড়ে ব্রডগেজে পরদিন ৩-২০য় মাদুরাই, ৭-৩০টায় তিরুনেলভেলী, ৯-১০এ নাগেরকয়েল পৌঁছে ৯-৫০এ কন্যাকুমারী যাচ্ছে; চেন্নাই ফেরে ১৬-০০টায় কন্যাকুমারী থেকে। ১ ৬ দিন 6039 গঙ্গা-কাবেরী এক্স যাচ্ছে ১৭-৩০এ চেন্নাই সেত্বাল ছেড়ে শুভুর / বিজয়ওয়াড়া/নাগপুর/ইটারসি/জবলপুর/কাটনি/এলাহাবাদ হয়ে ৩৮-১ ঘটায় ২১৪৪ কিমি দূরের বারাণসী; বারাণসী ছাড়ে ১ ৩ দিন ১৭-৫০এ গঙ্গা-কাবেরী। পাটনা যাচ্ছে ২ ৬ দিন ১৬-৩৫এ চেন্নাই সেত্বাল ছেড়ে শুভুর / নাগপুর / জবলপুর / সাতনা/ মোগলসরাই হয়ে পরের পরদিন ৭-৩০এ 6043 চেন্নাই-পাটনা এক্স; পাটনা ছাড়ে ৪ ৬ দিন ১৪-৪৫এ ১ ২ ৬ দিন 6093 চেন্নাই-লক্ষ্ণৌ এক্স ৫-৩০এ সেত্বাল ছেড়ে নাগপুর/ভূপাল/কানপুর হয়ে ৪৬ ঘটায় লক্ষ্ণৌ যাচ্ছে; লক্ষ্ণৌ ছাড়ে ১ ৪ দিন ১৬-১০এ। আলেন্সি-বোকারো স্টীল সিটি 8690 এক্স ২১-০০টায় পেরাডুর ছেড়ে শুভুর/বিজয়ওয়াড়া/বিশ্বাখাপনম/রায়গাড়া/তিডলাগড়/সম্বলপুর/রাউরকেলা/রটি হয়ে ৪০ ঘটায় বোকারো যাচ্ছে; বোকারো ছাড়ে ১০-২৫এ ৪689 বোকারো-আলেন্সি এক্স।

নতুন দিল্লী যাচ্ছে জি টি এক্স ২২-১৫, সুপার ফাস্ট তামিলনাড়ু এক্স ২১-০০টায়; হজরৎ নিজামুদ্দিন যাচ্ছে ২ ৭ দিন ১৫-৩০এ 2633 চেন্নাই রাজধানী এক্স; ৩ ৪ ৭ দিন ৫-৩০এ চেন্নাই-জম্মু এক্স চেন্নাই সেত্বাল ছেড়ে বিজয়ওয়াড়া/নাগপুর/ভূপাল/বাসী/নতুন দিল্লী/দিল্লী হয়ে জম্মু যাচ্ছে। জি টি এক্স ও জম্মু এক্সে ইটারসি/আগ্রা/কাট/মথুরাতেও স্টপ মেলে। সেকেন্দ্রাবাদ যাচ্ছে ১৬-০০টায় চেন্নাই-সেকেন্দ্রাবাদ এক্স নাদিকুড়ি হয়ে, ১৮-১০এ চারমিনার এক্স চেন্নাই সেত্বাল ছেড়ে বিজয়ওয়াড়া/ওয়ারাঙ্গাল হয়ে ১৪-১ ঘটায়; সেকেন্দ্রাবাদ ছাড়ে ১৬-২৫ ও ১৯-৩০এ যথাক্রমে। ১২৭৯ কিমি দূরের মুম্বাই যাচ্ছে ৩০-১ ঘটায় রেনিগুন্টা/কুডাল্লা/গুন্টাকল/রায়চুর/ওয়ারি/সোলাপুর/পুনে/কল্যাণ হয়ে ২২-০০টায় 6010 চেন্নাই-মুম্বাই মেল, ১১-৩০এ 6012 চেন্নাই-মুম্বাই এক্স, ৬-৪৫এ চেন্নাই-মাদার এক্স সেত্বাল থেকে ১৯-৩৫এ 6046 নবজীবন এক্স চেন্নাই সেত্বাল ছেড়ে ৩৪-১ ঘটায় ১৮৯৯ কিমি দূরের আমেদাবাদ যাচ্ছে বিজয়ওয়াড়া/কাজিপেট/ওয়াখা/ভূম্মাল/জলগাঁও/সুরট/ভাদোদরা হয়ে। নবজীবন চেন্নাই ফেরে ৬-৩৫এ আমেদাবাদ থেকে। জয়পুর যাচ্ছে ২ ৫ ৭ দিন ১৭-৩০এ চেন্নাই সেত্বাল ছেড়ে বিজয়ওয়াড়া/কাজিপেট/নাগপুর/ইটারসি/ভূপাল/উজ্জয়িন/কোটা হয়ে ৩য় দিন ৮-৪৫এ; জয়পুর ছাড়ে ২ ৫ ৭ দিন ১৫-৪৫এ চেন্নাই এক্স। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ব্রডগেজে ভারতের দিকে দিকে সেত্বাল থেকে।

ট্রেন যাচ্ছে 6317 হিমসাগর এক্স ৩৭-২৬ কিমি অর্থাৎ ভারতের দীর্ঘতম রেল পরিক্রমায় ৬৬ ঘটায় ৫৫ মিনিটে ভারতের দক্ষিণবিশ্ব কন্যাকুমারী থেকে প্রতি শুক্রবার ১২-৩০এ কেবল/তামিলনাড়ু/অন্ধ্র প্রদেশ/মধ্য প্রদেশ/উত্তর প্রদেশ/দিল্লী/হরিয়ানা/পাঞ্জাব হয়ে ভূ-বর্গের তোরণদ্বার জন্মতে; কন্যাকুমারী/ফেরে সোমবার ২২-৩০এ জম্মু থেকে হিমসাগর।

আর চেন্নাই এগমোর থেকে মিটারগেজ রেল যাচ্ছে রাজা তথা ভারতের দক্ষিণে। রামেশ্বরম যাচ্ছে এগমোর থেকে ১৭-৫৫য় 6713 সেতু এক্স, ২০-২৫এ 6101 রামেশ্বরম এক্স ভিন্নপুরম/মিচি/মন মাদুরাই হয়ে পরদিন যথাক্রমে ৯-০০ ও ১৪-২০এ; ফেরে রামেশ্বরম থেকে এগমোর ১৫-২০ ও ১২-৪৫এ। আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৭-৫৫য় এগমোর ছেড়ে ২১ ঘটায় রামেশ্বরমে।

তিরুচিরাপল্লী যাচ্ছে এগমোর থেকে ২১-০০টায় 6877 রক-ফোর্ট এক্স, ৯-০০টায় 6153 চোলা এক্স, ১৫-৩৫এ 2605 পদবান এক্স; মিচি পৌছায় ৬-০৫, ১৯-৫০, ২১-৫০এ। এগমোর ফেরে মিচি থেকে ২০-৪৫এ রকফোর্ট, ৭-৩৫এ চোলা, ৬-০০টায় পদবান এক্স। এছাড়া মাদুরাই, রামেশ্বরম ও কোলোমর নানান ট্রেন এগমোর ছেড়ে রিচি হয়ে যাচ্ছে। মাদুরাই যাচ্ছে ৬-১০এ 2637 মাদুরাই এক্স, ১২-৫০এ 2635 ভাইগাই এক্স, ১৮-৪৫এ 6717 পাভিয়ান এক্স, ১৩-৩০এ 6779 চেন্নাই-মাদুরাই জনতা এক্স, ২২-০০টায় 6719 মহল এক্স, ১৯-১০এ 6103 চেন্নাই-মাদুরাই এক্স ভিন্নপুরম/মিচি/ডিশিগল হয়ে মাদুরাই যাচ্ছে যথাক্রমে ১৫-৫৫, ২১-৪৫, পরদিন ৬-৪৫, ৪-৪৫, ১০-৫০, ৭-৩০এ। তিরুনেলভেলি যাচ্ছে ১৭-০০টায় এগমোর ছেড়ে পরদিন ১১-৩০এ 6119 নীলাই এক্স; নীলাই ফেরে ১৫-১০এ তিরুনেলভেলি থেকে। কোলোমর যাচ্ছে ২০-১ ঘটায় ভিন্নপুরম/মিচি হয়ে ১৯-৪০এ এগমোর ছেড়ে কোলোমর মেল; চেন্নাই ফেরে ১১-০০টায়

কোন্ডাম থেকে। পতিচেরী যাচ্ছে এগমোর থেকে মিটার গেজে ভিলুপুন্নম হয়ে।

চেন্নাই-এও রেল রিজার্ভেশন কেন্দ্রীভূত হয়েছে সেন্ট্রাল লাগোয়া Moore Market Complex-এর ঝিতলে। রিজার্ভেশন ৩ Eng 1361, Hindi 1362, Tamil 1363. বুকিং: সোম থেকে শনিবার ৭-৩০—১৩-০০, ১৩-৩০—১৯-৩০; রবিবার ৭-৩০—১৩-০০টায়। এমনকি স্যাটেলাইট বুকিং সংযোগও গড়ে উঠেছে চেন্নাই, মুম্বাই, দিল্লী, কলকাতার মাঝে। তাই চারের যেকোনও জায়গায় বসে বাকি ত্রয়ী থেকে ছাড়া যেকোনও ট্রেনের রেল বুকিং-এর সুযোগ নেওয়া যেতে পারে। এগমোর স্টেশনেও একই সময়ে রিজার্ভেশন মেলে। ট্রেন সার্ভিস Arrival ৩ 131 Departure ৩ 133 খবর মেলে চেন্নাই-এ।



সেন্ট্রাল রেল স্টেশন থেকে ১½ কিমি দূরে এসম্প্রানেড-রোডে এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড অর্থাৎ তিরুভান্তুড়ার ট্রান্সপোর্ট কর্পোরেশন (TTC) বাস স্ট্যান্ড, এসম্প্রানেড-১, ৩ 5341835 (রিজার্ভেশন) থেকে বাস যাচ্ছে—পতিচেরী, ব্যান্সালোর, ভেন্নোর, তিরুভনন্তপুরম হায়দ্রাবাদ, তিরুপতি (অন্ধ্র ও তামিলনাড়ু রাজ্য পরিবহন) ছাড়াও দক্ষিণ ভারতের দিথিদিকে। রাউন্ড দ্য ক্লক সার্ভিস এদের। তবে, কম্পুটারাইজড বুকিং কাউন্টার ৭—২১-০০-টায় খোলা। এরপর টিকিট মেলে বাসে। অগ্রিম টিকিটও মেলে ১০দিন আগে থেকে এদের। অন্ধ্র ও কলকাতা সরকারি বাস ছাড়াই এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড থেকে। আর তামিলনাড়ু রাজ্য পরিবহনের বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে ব্রডওয়ে থেকে। বাস যাচ্ছে মহাবলী ছাড়াও নানান। আর চলছে প্রাইভেট বাস এগমোর ও প্যারিস কর্নার থেকে রাজ্য জুড়ে। শহরের অলিগলি ধরে Pallavan Transport Corp'n (PTC)-এর বাস চলেছে শহর পরিক্রমায়। টার্মিনাল এদের হাইকোর্টকে ঘিরে প্যারিস কর্নার অর্থাৎ নেতাজী সুভাষচন্দ্র বসু রোডে।

প্যারিস কর্নার থেকে: সেন্ট্রাল হয়ে এগমোর যাচ্ছে: 9, 9A, 10, 10J, 17D, 28, 28J;

মাইন্ট রোড অর্থাৎ আন্ডালসলাই যাচ্ছে: 11, 11A, 11B, 11D, 17A, 18, 18J;

সেন্ট্রাল হয়ে ত্রিপলিকেন হাই রোড (ব্রোডল্যান্ডস) যাচ্ছে: 31, 32, 32A;

বিমানবন্দর যাচ্ছে আন্ডালসলাই হয়ে: 18, 18J, 52, 52A/B/C/D, 55A;

এগমোর থেকে আন্ডালসলাই যাচ্ছে: 23C, 27D;

এগমোর থেকে ব্রোডল্যান্ডস যাচ্ছে: 22, 27B;

ব্রডওয়ে থেকে মহাবলীপুরম যাচ্ছে: 188, 188A/B/D/K/N/L, 19C, 119A কোভেলু হয়ে, 108B বিমানবন্দর হয়ে।

সেন্ট্রাল থেকে এগমোর রেল স্টেশন যাচ্ছে: 9, 9A, 10, 10J, 17D, 28J, M4;

এগমোর থেকে শঙ্কর নেত্রালয় ও অ্যাপোলো হাসপাতাল যাচ্ছে: 10, 10J, 17D, 17E, 17K, 17T, 23A; অ্যাপোলো যাত্রায় যেকোনও বাসে গিয়ে IDM Bus Stop-এ নেমে যেতে হয়। আন্ডালসলাই থেকে নুনগামবাকাম হাই রোড যাচ্ছে: 17C, 25, 25B;

এছাড়াও বাস যাচ্ছে শহরের দিকে দিকে; চেন্নাই এগমোর থেকেও নানান বাস যাচ্ছে দক্ষিণের নানান দিকে।



শিপিং করপোরেশন অব ইন্ডিয়ার জাহাজ নিয়মিত যাত্রায়ত করে চেন্নাই থেকে আন্দামান দ্বীপপুঞ্জের পোর্ট ব্লোয়েরে। মালয়েশিয়াও যাচ্ছে জাহাজ চেন্নাই থেকে। আগ্রহীদের উচিত হবে সরাসরি Shipping Corporation of India ৩ 5144010 বা এজেন্ট K P V Shaik Mohammed Rowther & Co. 202 Linghi Chetty St, ৩ 511535কে যোগাযোগ করা।



পৰ্যটক-প্রিয় চেন্নাইয়ে বিবিধ মানের বিভিন্ন দামের হোটেল রয়েছে নানান। তবে সাধারণত তিন এলাকায় তিন ভাগে গড়ে উঠেছে হোটেলপাল্লি। চেন্নাই সেন্ট্রালের সামনে আন্ডালসলাই তথা আশপাশে উঁচু মানের তারকাখচিত, সেন্ট্রালের ডাইনে পুনামেল হাইরোড ধরে এগমোর রেল স্টেশনকে ঘিরে মধ্যমানের আর বাঁয়ে ওয়ালট্যান্স রোড থেকে ব্রিটিশের জর্জটাউন তথা পুরাতন শহরের সাধারণ মানের। সেন্ট্রাল লাগোয়া হাটা দূরত্বে বাঁহাতি Waltax Rd, Chennai-600003, STD 044-এ রয়েছে—H Blue Star International, ৩ 584005, SAB ২২৫ DAB ৩০০-৩৭৫ A/C D ৬০০; লাগোয়া পিছে New Lotus L, 13 Nannian St-3, ৩ 586422, DAB ১৫০-২০০; H Vishram, ৩ 563725, DAB ১৫০-২২৫ TAB ২৫০; Shanthi Bhavan, SCB ৬৫ DCB ১২৫ DAB ১৭৫; Great H, DAB ১০০-১৭৫ TAB ২০০; Sarvana L, DAB ১০০-১৫০; H De Kerala, Modern, Central L. ডানহাতি Stringer St-3এ—Lotus L, Ambika, Mothi, Arun, H Sornam, R2mnsB2, DAB ২৫০-৩২৫ T ৩০০ F ৩৫০; Raza, Tas, Kadam, Heera, Breeze, Park H, Udupi Hari Nivas, DCB ১২৫ DAB ১৫০-২০০; Sundar L, Nainiappa Naiken St-3.

শ্রী অন্তর্পূর্ণা একটি প্রথম ও সম্পূর্ণ বাঙালি প্রতিষ্ঠান

শ্রী অন্তর্পূর্ণা অফ ক্যালকাটা

স্থান : ২৩নং প্যানথিয়ন রোড, এগমোর, চেন্নাই-৬০০ ০০৮

(পুলিশ কমিশনারের অফিসের পাশে)

পথনির্দেশ : এগমোর স্টেশনের কাছে 'হোটেল ইমপালো'-র পাশ দিয়ে

কেনেট লেন ধরে ৩ মিনিট হাঁটা পথ।

Tamilnadu-II, EVR Rd, opp Chennai Central, Chennai-600003, ☎ 589132, DAB ২৫০ A/c D ৩৫০ ডব্লিউ ৪৫ করে; *H Howrah International*, DAB ২৫০-৩৫০ A/c D ৩৭৫-৪৫০; *Siddique Sarai, Golden Cafe L*, SAB ৮৫ DAB ১৭৫ TAB ২২৫; *H Devi*, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০; *H Kalinga*, D ৩২৫-৪০০; **Breeze H*, 850 PH Rd, Kilpauk-10, ☎ 6413334, A/c S ৮৫০-১২০০ D ১২৫০-১৬০০; **H Gokula*, 1082 PH Rd-84, RIB2, SAB ১৫০-২৭৫ DAB ২৭৫-৩৭৫ A/c S ৩০০-৪৭৫ D ৪০০-৬৫০; *Biva L*, SAB ৮৫ DAB ১৫০ TAB ১৭৫; *Virudhnagar Lodging House, H Akkur*, ভানহাতি Cuddappu Rangiah St—*Cauvery L*, *Eswari L*, *H Peacock*, 1089 PH Rd-84, SAB ২২৫ DAB ৪০০ A/c S ৩২৫ D ৪৭৫ সুইট ৮০০; **H Picnic*, 1132 PH Rd-3, ☎ 588809, S ২২৫ D ৩৫০ A/c S ৪৩৮ D ৬০০; *H Alankar*, 924 PH Rd-84, ☎ 6411134, S ৮০-১২৫ D ১২৫-২০০; *H Rivera*, 943 PH Rd-84, ☎ 6411845, DAB ৩০০ A/c D ৪৫০ সুইট ৬৫০; **H Blue Diamond*, 934 PH Rd-84, ☎ 6412244, SAB ২২০ DAB ৪৫০ A/c S ৪২০ D ৬০০; *Udipi H Sudha*, 97 PH Rd-84, ☎ 8252255, S ১৫০ D ২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; **H Dasaprakash*, 100 PH Rd-84, ☎ 8255111, S ১২৫-২৫০ D ৩০০-৪৫০ A/c S ২৫০-৩৫০ D ৪৭৫-৬৫০ সুইট ৬০০-৮৫০; *Everest Boarding Lodging*, EVR Rd, ☎ 580772, SAB ১৫০ DAB ২৭৫ FAB ৩০০; **H Windsor Park*, 349 P H Rd, Amjikarai-29, ☎ 421673, A/c S ৮৪৫ D ১০৪৫ সুইট ১৫০০; *H Sindoori Central*, 26/27 PH Rd-3, ☎ 583797, A/c S ৭৫০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০; *H Premier*, 22 PH Rd-3, ☎ 583311, A/c S ৪৫০ D ৬০০।

এগমোর রেল স্টেশনের বিপরীতে—(দোকানপাট ঘেরা **H Imperial*, 6, Gandhi-Irwin Rd, Egmore, Chennai-8, ☎ 8250376, SAB ২০০ DAB ৩২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮০০; **H Chandra Towers*, 9 Gandhi-Irwin Rd-8, ☎ 8258171, A/c S ৬৯৫-৭৯৫ D ৮৫০-১০৫০ সুইট ৯৫০-১৫৫০; গলি গাথে *Lakshmi Mohan L*, *H Pandiyan*, *H Masu*; মূলপথে ফিরে *H Ramprasad*, G I Rd-8, S ২০০ D ২৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; **Tourist Home*, 21 G I Rd-8, ☎ 8250079, S ২৫০ D ৩০০ A/c D ৪২৫-৬০০; *H Impala Continental*, G I Rd, S ২২৫ D ৩০০ সুইট ৬০০ A/c D ৬০০ সুইট ৮০০; *Buharis Blue Lagoon H*, 79-A, East Coast Rd-41, ☎ 4926125, S ২৫০ D ৪২৫ FR ৪৫০ A/c D ৫৫০-৮০০; **H New Victoria*, 3 Kennet Lane-8, ☎ 8253638, A/c S ৮০০ D ১০০০ সুইট ১৫০০; *Udipi Home*, 1 Halls Rd-8, ☎ 8251515, S ২৮০-৪০০ D ৩৭০-৪৭৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০; *H Majestic*, Kennet Lane, S ৬৫-১০০ D ৮৫-১৭৫; একই পথে *Sri Lakshmi L*, SAB ৮৫ DAB ১৫০; *H Regent*, *H Regal*, **H Pandian*, 9 Kennet Lane, ☎ 8252901, S ৩২৫-৪৫০ D ৪৫০-৬৫০ A/c S ৩০০ D ৬৫০-৮৫০, দেশী-বিশেষী আহার্য ও মেসে এগের ক্যাফিনে; *H Sri Durga Prasad*, 10/11 Kennet Lane-8, A15B2, S ১৫০ D ২৫০ T ৩০০ A/c S ২৭৫ D ৩৫০; *Merit Inn*, 2 Monteith Rd-8,

☎ 8257770, A/c S ৬৫০ D ৮৫০; **H Sudarshan International*, 53 Monteith Rd-8, A15R2, A/c S ৪৫০-৫২৫ D ৪৫০-৬৫০; *N N M P Sangam L*, *Doyul De L*, 486 Pantheon Rd, D ২২৫ T ২৭৫; *Peoples L*, Whannels Rd, SAB ১০০ DAB ১৭৫; *H Vaigai*, 3 G I Rd-8, ☎ 834959, D ২৫০-৩২৫ A/c D ৪২৫-৬০০; **H Victoria*, 3 G I Rd-8, A/c S ৩৫০ D ৮৫০ সুইট ১২০০; *Luxmi Narayan L*.

শহর জুড়ে বিশাল ম্যানেজ—*H Ganga International*, 47 Bazullah Rd, T Nagar, Chennai-600017, ☎ 8231340, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০, কল বুকিং: P-11 Manmohan Bose St, Cal-6, ☎ 5559243; **H Kanchi*, 28 Commander-in-Chief Rd-8, ☎ 8271100, DAB ৪০০ A/c D ৬০০ সুইট ৮০০, হোটেলটি ভালই; ল্যাগোরা **H Guru*, 69 Marshall Rd-8, A8R2, SAB ১৭৫ DAB ৩০০ TAB ৩২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; *Adayar Gate H*, 132 Mowbrays Rd-18, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ থেকে; **H Madras Asoka*, 33 Pantheon Rd, Egmore-8, ☎ 8253377, S ৪০০ D ৫০০ A/c S ৫২৫ D ৬০০-৮৫০ সুইট ৬৫০-১০০০ কটেন ১২৫০-১৭৫০; **H Atlantic*, 2 Monteith Rd-8, ☎ 8260461, S ৩৫০-৪৫০ D ৪৫০-৬০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; **H Ambassador Pallava*, 53 Monteith Rd-8, ☎ 8262061, A/c S ১৬৭৫ D ২২৭৫ সুইট ২৭৫০-৪৫০০; **Cmmemara H*, Binny Rd-600002, ☎ 8520123, A18R4B1, A/c S ১০০-১৪৫ D ১১০-১৬৫ সুইট ১৬০-২২৫ US\$; *H Garden*, 68A, Purasawalkam High Rd-7, ☎ 6422677, D ৩২৫ A/c D ৪৫০; **Gupta's Ajantha H*, 36 Royapettah High Rd-14, S ১৭৫ D ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪২৫; **H Madras International*, 693 Mount Rd-6, ☎ 8261811, A/c S ১২২০-১৩৯৫ D ১৫০০-১৭৫০ সুইট ২৭৫০; **H Maris*, 9 Cathedral Rd-86, ☎ 8270541, S ৩৫০ D ৪৭৫ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; **New Woodlands H*, 72-75 Dr Radhakrishnan Rd-4, ☎ 8273111, S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬২৫-৯৫০; **H Palmgrove*, 5 Kodambakkam High Rd-34, ☎ 8271881, S ৩৫০-৪৭৫ D ৪২৫-৫৫০ A/c S ৪৭৫-৬০০ D ৫৫০-৬৭৫ সুইট ৬২৫-৮৫০ কটেন ১২০০; বিপরীতে *Centrepointh GH*, S ৪০০ D ৫৫০; *H Pratap Plaza*, 96 CK High Rd-34, ☎ 8271147, S ৩৫০ D ৪৭৫ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; **H President*, 16 Dr Radhakrishnan Rd-4, ☎ 832211, A/c S ৮৫০ D ১০৯০ সুইট ১২৫০-২০০০; **Quality Inn Aruna*, 144 Sterling Rd, Nungambakkam-34, ☎ 8259090, A/c S ১৬৫০ D ২২৫০ সুইট ২৮৫০-৫৫০০; **H Ranjith*, 9 N H Rd-34, ☎ 8270521, SAB ৫২৫ DAB ৬৫০ A/c S ৮০০ D ৯৫০; **H Picnic Plaza*, 2 R K Mutt Rd, Mylapore-4, A/c S ৮০০ D ৮৫০; **Nilgiris Nest*, 58 Dr Radhakrishnan Salai, Mylapore-4, ☎ 8275111, A/c S ৬২৫-৮৫০ D ৬৭৫-১২৫০; **Savera H*, 69 Dr Radhakrishnan Salai, Mylapore-4, ☎ 8274700, A10R2B2, A/c S ১২৫০-১৬৯০ D ১৮৫০-২২৫০ সুইট ৩৭৫০; *H Karpakam*, 19 South Mada St, Mylapore-4, D ২৭৫-৪৫০; *H Srilekha*, 49 Anna

Salai-2, @ 830521, R3, SAB ২০০ DAB ৩০০ A/c D 8০০-৬০০ সুইট ৬৫০ A/c ১০০; *H Srilekha Intercontinental*, A/564, Anna Salai, Teynampet-18, @ 4349484, S 8০০ D ৫৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০; **H Sindoori*, 24 Greams Lane-6, A14R4B6, @ 8271164, A/c D ৪০-৪৫ সুইট ৫০-৬৫ US\$; Oberoi's **The Trident*, 1/24 G S T Rd-27, @ 2344747, A/c S ১১৫ D ১২৫ US\$; **Woodlands H*, 10 West Cott Rd, Royapettah-14, SAB ১৭৫ DAB ২২৫ A/c S ২৭৫ D ৪৫০; *H Ganga International*, 47 Bazullah Rd, T Nagar-17, @ 8231340, A/c S ৭৫০ D ৯৫০ সুইট ১২৫০; *H Mars*, 768 Pammal Main Rd, Pallavaram-43, @ 402586, S ২২৫ D ১২৫ A/c S ৪২৫ D ৫৯৫ সুইট ৮৯৫; *Hotel L R Swami Narayan*, 83 Usman Rd, T Nagar-17, @ 4346227; **H Peninsula*, 26 G N Rd, T Nagar-17, @ 8250853, DAB ৪৫০-৬৫০ A/c ৬৫০-৮৫০; *H Brindavan*, 6 Deen Dhayalu St, T Nagar-17, DCB ১২৫ DAB ১৫০ A/c D ৩০০; **The Residency*, 49 G N Chetty Rd, T Ngr-17, @ 8253434, A17R8B2, A/c S ১০০০-১২৫০ D ১২৫০-১৬৫০ সুইট ১৮৫০; **Harrisons H*, 154 Village Rd, Nungambakkam-34, @ 8275271, SAB ২৫০ DAB ৩২৫ TAB ৩৭৫ A/c D ৪৫০।

**H Swagath*, 243 Royapettah High Rd-14, @ 8268466, A15R5, SAB ২৫০ DAB ৩২৫ সুইট ৪৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০ ৫৫০; **Taj Coromandel H*, 17 Nungambakkam High Rd-34, @ 8272827, A12R5B2, A/c S ১৬০ D ১৮৫ সুইট ২৬৫-৪৫০ US\$; **VGP Golden Beach Resort*, Enjambakkam-41, @ 4926445, A25R20, কটেজ D ৬৫০ A/c D ১২০০-১৫০০ সুইট ২৫০০; **Welcomgroup's Chola Sheraton*, 10 Cathedral Rd-34, @ 8280101, A12R6B2, A/c S ১১০-১৮৫ D ১২০-১৯৫ সুইট ৩৭৫ US\$; এদেরই **Park Sheraton*, Alwarpet, 132 T T K Rd-18, @ 4994101, A9R8B4, A/c S ১১০-১৯৫ D ১২০-২০০ সুইট ২২৫-৭০০ US\$; *H Appola*, Egmore-8, S ১৭৫ D ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; *Ishwariya G H*, 27/1 Thiruvengadam St, Perampur-600011, S ১৭৫ D ২৫০ A/c D ৪৫৫; *H De Broadway*, 196 Broadway-8, S ৮০ D ১২৫-২০০; *H Excellent*, 185 Broadway-18, DCB ১০০ DAB ১৫০; **H Geetha*, 9-A, Victoria Crescent Rd-8; *H Ganapath*, 103 N H Rd-34, @ 8271889, SAB ২২৫ DAB ৪২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; *H Claridges*, 14 Thambuswamy Rd-10।

ট্যুরিস্ট অফিস থেকে ২০ মিনিটের পথে *Broadlands L*, 16 Vallabha Agramam St, Triplicane-5, @ 845573, SCB ৮০ SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ২০০, ব্যবস্থাপনা ভালাই; **Tourist Hostel*, 12 Dr Durgabai Deshmukh Rd-28, S ১৫০ D ২২৫ A/c D ৪২৫; *Andhra Mahila Sabha*, 12 Dr Durgabai Deshmukh Rd-28, S ১২৫ D ১৭৫ A/c D ৩২৫; *Admiralty H*, 5 Norton Rd-28, D ৩২৫ A/c D ৫৫০-৭৫০; ভিসেলশিদের গ্রিড *Malaysia L*, 104 Armenian St, behind GPO, George Town, S ১০০ D ১৭৫ A-c S ২৫০ D ৩২৫,

অতি সাধারণ সাজে হোটেলটি ভালাই; *H Surati*, 138 Popham's Broadway, S ৬০-১০০ D ১২৫-১৭৫; **Holiday Inn*, Crown Plaza, St Thomas Mount-16, @ 2348976, A/c S ১১০-১৪০ D ১২০-১৫০ সুইট ২১০-৪২৫ US\$; *Hotel L R Swami Narayan*, 83 Usman Rd, T Nagar-17, S ১০০, D ১৭৫ সুইট ২৫০; **Queen's H*, 67 Village Rd-34, S ১৫০ D ২৫০; **H Silver Star*, 5 Purasawalkam High Rd-17, S ১৭৫ D ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪০০; **H Harinivas*, 163 Thambu Chetty St-1, @ 5342121, S ১২৫ D ১৭৫ A/c S ২২৫ D ৩২৫; *Air Port Inn*, A2, S ১৭৫ D ৩০০ A/c S ৩০০ D ৪০০; *H Sree Krishna*, 159 Peters Rd-86, @ 8522320, A10R4, S ২২৫ D ৩০০ A/c D ৩৭৫-৬০০।

আর আছে শহরের দক্ষিণে অ্যাডিমারে *Youth Hostel*, Indira Nagar-20, @ 4912882, বেড ১০ করে। বাস যাচ্ছে প্যারিস কর্নার থেকে 19B, 19S, 21A, 21D, 23A; আশ্চর্যের পথ। ক্যাম্পিং-এরও ব্যবস্থা মেলে। *YMCA Guest Room*, 24 West Cott Rd-14, @ 832554, DAB ২২৫ A/c D ৩২৫। সেট্টাল থেকে ৩ কিমি দূরে চিদাম্বরম স্টেডিয়ামের কাছে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের ইয়ুথ সার্ভিসেস-এর *Youth Hostel*-এ ৭১ বেডের ডর্মিট ছাত্র ১০ সাধারণ ২০, ১৫টি DAB ৬০ ৭৫ ১০০, ১৮টি TAB ৮০ ১২৫ ৩টি FAB ১০০ A/c T ৩০০ F ৪০০; অবু: যুব কল্যাণ অধিকর্তা, ক্রীড়া ও যুব কল্যাণ বিভাগ, 32/1 BBD Bagh, 2nd flr, opp Telephone Bhawan, @ 2480626, Calcutta-700001। এগমোর স্টেশনের পশ্চিমে *World University Service Centre*, Spur Tank Rd, @ 863991, বাথসংলগ্ন ঘর—ছাত্র ১৫ শিক্ষক ২০ সাধারণ ৩০। TTC-র বাস স্ট্যান্ডেও ডর্মি প্রথায থাকার ব্যবস্থা আছে। রেলের *রিটার্নিং* রুমও আছে চেম্বাই সেট্টাল ও এগমোর স্টেশনে।

YMCA, 74 Ritherdon Rd, Esplanade; এগমোরের উত্তরে *YWCA*, 1086 PH Rd -84, @ 5324945 দুইয়েতেই ১০ টাকায় সাময়িক সদস্য হয়ে নারী ও পুরুষ পৃথকভাবে থাকার ব্যবস্থা মেলে, S ২৫০ D ৩০০ A/c D ৪৫০ FR ৪৫০, দেশী-বিদেশী আহাৰ্যও মেলে এদের ক্যান্টিনে। তবে সদাই ফুল থাকে এদের গেস্ট হাউস। এগমোর থেকে ২০ মিনিটের পথে বাথ সংলগ্ন ঘরের অভাব হলেও যথেষ্ট পপুলার *Salvation Army Red Shield G H*, 15 Ritherdon Rd, @ 5321821, D ৬০ T ৯০ ডর্মি ২০; *Laharry Transit Hostel*, 26 Venkataraman St-17, S ১৫০-২০০ D ২২৫-৩০০ ডর্মিতে ৫০ করে।

এছাড়াও হোটেল আছে চেম্বাইয়ে আরও নানান S ০ থেকে ১৫০ D ৮৫ থেকে ২২৫ টাকায়। ধরমালাও রয়েছে চেম্বাই শহরে। সেট্টালের কাছেই রেল পার্শ্বে অফিসের পাশে—*Sitanath Dharamshala*, 5 Edapalayam Lane; ওয়ালটায়ান রোডের ডাইনে—*Puramananda Doss Chota Doss Dharamshala*, Rofsappa Chetty St সেখা যেতে পারে। প্রতিটি হোটেলই অগ্রিম বুকিং-এর ব্যবস্থা আছে। ম্যানেজারদের লিখুন। তবে, দক্ষিণ ও পশ্চিমের ট্রেনগুলি চেম্বাই-এর এগমোর স্টেশন থেকেই চাড়ে, তাই এগমোরের হোটেলগুলিতে ঘর নেওয়া যাত্রীদের পক্ষে সুবিধার। তবুও থাকার জন্য তারকাচিহ্নিত হোটেলগুলির সঙ্গে *Wallax Rd-এ—হোটেল বিজ্ঞান, হোটেল রু স্টার ইন্টারন্যাশনাল; Poonamallee High Rd-এ—হোটেল*

দশপ্রকাশ, এভারেস্ট বোর্ডিং; Commander-in-Chief Rd-এ—হোটেল কাকি, হোটেল ওক; Triplicane-এ স্টার টকিজের বিপরীতে—ব্রাডল্যান্ডস লজ; Egmore-এ—হোটেল রামপ্রসাদ, হোটেল নিউ ভিক্টোরিয়া, হোটেল ম্যারিস, হোটেল ইম্পিরিয়াল, হোটেল ভাইগাই, ওয়ার্ল্ড হুনিভার্সিটি সার্ভিস সেন্টার, ইম্পালা কন্টিনেন্টাল, টুরিস্ট হোম নিরবার্চন করা যেতে পারে। আহার্যও মেলে অল্পপূর্ণ।

আহার্যও বৈচিত্র্য আছে চেন্নাই তথা সারা দক্ষিণে। নিরামিষাশী এরা। মেনুতে—টোস্ট-কচুরি-লুচির অভাব। ইডলি-দোসা-বড়া দিয়ে ব্রেকফাস্ট তথা টিফিন মেনু এদের। আর দুপুর ও রাতে *Saapad* অর্থাৎ ভাতের সাথে রসম-সম্বরম মেলে। তবে, চেন্নাইয়ে আজ গোলাই, ভন্দুরি, চীনা, কন্টিনেন্টাল আহার্যও মেলে নানান হোটেল রেস্টোরাঁ। চার্জও এদের সারা ভারত থেকে কম।

আর বাঙালি খানার ব্যবস্থা নিয়ে হোটেলও হয়েছে বাঙালির *শ্রীঅন্নপূর্ণা অব ক্যালকাটা* চেন্নাই-এর এগম্বোর পুলিশ কমিশনার অফিসের পাশে ২৩, প্যানথিয়ন রোডে। এমনকি সকালে লুচি, পরোটা, মাখন-কুটি-ওমলেট আর বিকালে রোল, নুডল, সিঙড়াও মেলে অল্পপূর্ণ।

উচিতও হবে চলার পথে আন্নালাই-এর গোদাবরী, তারাপোর টাওয়ারের মিতলে মথুরা, বিপরীতে হোটেল গঙ্গোত্রীর নিরামিষ খালির খাদ নেওয়া। আরও দক্ষিণে আন্নালাই-এ *যমুনা রেস্টুরেন্ট* টির ও সুনাম আছে মসলা দোসার সাথে লসির। তেমনি উচিত আছে এগম্বোরের উদিপি হোমের মৎস্য মসলা দোসার খাদ নেওয়া। আন্নালাই-এ স্পেন্সার বিল্ডিং-এর *ফিরোজা রেস্টুরেন্ট*, আন্না রোড পোস্ট অফিসের কাছে *হোটেল ইনলাভ*, আরও যেতে *মনসা, ওপেন হাউস*—এদের কাছে ৩০-৫০ টাকায় সুবাদু মিল মেলে। এগম্বোর রেল স্টেশনের বিপরীতে *রাজ্যভবন, বসন্তভবন, হোটেল অশোকা*-রও যথেষ্ট প্রশস্তি আহার্য পরিষেবা। *বসন্তভবনে* আমিষ আহার্যও মেলে। হোটেল ইম্পিরিয়ালের ওমর *শৈয়াম রেস্টুরেন্ট* টিরও যথেষ্ট সুনাম আমিষ আহার্য পরিষেবা। টি-নগরে হোটেল নিউ উডল্যান্ডস, হোটেল সর্বানী ভবন, অমরাবতী, হোটেল ম্যারিস, উডল্যান্ডস ড্রাইভ-ইন-এরও যথেষ্ট প্রশস্তি *Saapad* অর্থাৎ দক্ষিণী নিরামিষ আহার্য পরিবেশনে। আর, চীনা আহার্যের খাদ নেওয়া যেতে পারে চোলা সেরাটনের বিপরীতে ক্যাথোড্রাল রোডে *চায়না টাউন* বা ৬৭ আন্নালাই-এর *চ্যাকিং-এ*। আর ডুকা মেটাতে টুরিস্ট অফিসের আশ্রয়ে আন্নালাই-এ *আভিন-এর* ঠাণ্ডা পানীয়ের প্রশস্তি আছে সারা শহর জুড়ে। আর ট্রিপলিকানে হাই রোডে *মহারাজা রেস্টুরেন্ট* টির খ্যাতি স্যান্ডউইচ-এর সাথে লসির। লাগোয়া অল্পপূর্ণ হোটেলের গুণ *রেস্টুরেন্ট*-টিরও যথেষ্ট প্রশস্তি নিরামিষ টিফিন পরিষেবা।

কনডাক্টেড ট্যুর: তামিলনাড়ু ও সারা দক্ষিণ ভারত বেড়াবার সুন্দর আয়োজন রয়েছে চেন্নাই থেকে। তামিলনাড়ু টুরিজম ডেভেলপমেন্ট অ্যোজিট ট্যুরে অংশ নিয়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

Tour No 1: প্রতি শনিবার সকাল ৭-০০টায় ৬ দিনের Tamilnadu Tour-এ যাচ্ছে TTDC এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড থেকে—Chennai-Tiruchi-320*, Srirangam-35, Kodaikanal-155*, Madurai-130*, Teppakulam-50, Kanyakumari-265*, Suchindram-30*, Tiruchendur-90, Rameswaram-250*, Thanjavur-280*; total distance 2000 kms. ভাড়া—যাতায়াত ও থাকা দ্বিগুণ ৭-১২ বছরের শিশুদের ২৫০০, একই

ঘরে শেয়ার করে থাকার প্রতিজ্ঞা ২৮০০, একক থাকার ৩৩০০, A/c কোচে যাতায়াত A/c ঘরে অবস্থানে ৩৯৫০ ৪৫০০ ৫৫০০, Non A/c কোচে যাতায়াত A/c ঘরে অবস্থানে ৩৮০০ ৪১০০, ৪৬০০ যথাক্রমে।

ITDC-ও যাচ্ছে ৭ রাত ৮ দিনের ট্যুরে দক্ষিণী প্যাকেজে।

Tour No. 2: প্রতি শনিবার সকাল ৭-০০টায় ৬ দিনের South India Tour-এ ITDC বেড়িয়ে আনে—Bangalore*, Srirangapattana, Brindavan Garden, Mysore*, Mudumalai Wildlife Sanctuary, Udhagamandalam* (Ooty), Coonoor, Coimbatore, Hogenakkal*, Thiruvannamalai, Mamallapuram*; total distance 2000 kms. ভাড়া—শিশু ১৯০০, ডাবল বেডের ঘরে প্রতিজ্ঞা ২০৫০, একক থাকায় ২৪৫০ A/c ঘরে ৩১০০ ৩২৫০ ৩৬৫০। *চিহ্নিত স্থানগুলিতে রাতের অবস্থান।

Tour No. 3: ITDC, Govt of India Tourist Office, 154 Anna Salai, Chennai-600002, ☎ 8478884/8869685 (সোম থেকে শুক্রবার ৯-১৫—১৭-৪৫, শনি ও ছুটির দিন ৯—১৩-০০, রবিবার বন্ধ থাকে অফিস এদের) থেকে শুক্রবার ছাড়া প্রতিদিন বেলা ১৪-০০টায় রওনা হয়ে শহর দেখিয়ে ফেরে ১৮-০০টায়। গাড়িতে গাইড থাকেন।

Tour No. 4: ITDC প্রতিদিন ৬-২০এ গিয়ে চেন্নাই, কাকিপুরম, পক্ষীতীর্থম ও মহাবলীপুরম বেড়িয়ে ফেরে ১৯-০০টায়। ফেরার পথে কুমির প্রকল্প দেখিয়ে আনে। কেবল মহাবলীও বেড়িয়ে আনে এরা ৮—১৭-০০টায়।

Tour No. 5: সপ্তাহের প্রতিদিন TTDC-র বাস ৮—১৩-০০ আবার ১৩-৩০—১৮-৩০টায় পৃথক পৃথক ট্যুরে যাচ্ছে শহর দেখাতে। ভাড়া ৬৫ A/c ১০০। আর ৮—১৯-০০টায় শহর দেখিয়ে আনে TTDC. ভেজ মিল সহ ভাড়া ১৬৫ A/c ২৭৫।

Tour No. 6: TTDC-র ডিলাঞ্জ বাস প্রতিদিন সকাল ৬-২০এ রওনা হয়ে কাকি, পক্ষীতীর্থম, মহাবলীপুরম ও ভিক্তিগি গোন্ডেন বীচ বেড়িয়ে ১৯-০০টায় ফেরে। ব্রেকফাস্ট ও ভেজ লাঞ্চ নিয়ে ভাড়া ১৬০ A/c ২৬০ টাকা।

Tour No. 7: TTDC ও ITDC সপ্তাহের প্রতিদিন সকাল ৬-১০-এ গিয়ে দিনে দিনে অল্প প্রদেশের তিরুপতি বেড়িয়ে ফেরে ২২-০০টায়। তবে ছুটির দিনগুলিতে দীর্ঘলহিন হেতু সময়ে আধিক্য লাগে। বিশেষ দেবশ্রমী ৩০ সহ ভাড়া ডিলাঞ্জ বাসে ২৭৫ A/c ৩৭৫ শিশু ২৪৫/৩৪৫। ব্রেকফাস্ট ও লাঞ্চ সহ ভাড়া। যাতায়াতে ঘণ্টা দশেকের বাস সময়। আবার এককভাবেও ট্রেন বা বাস বেড়িয়ে নেওয়া যায় চেন্নাই থেকে তিরুপতি। অল্প প্রদেশ রাজ্য পরিবহনের (APSRTC ৫60753) বাসও যাচ্ছে এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড থেকে ঘটায় ঘটায়—৫-৩০ থেকে ২০-৩০টায়।

আবার ১ রাতের অবস্থানে প্রতি শনিবার ১৫-০০টায় গিয়ে রবিবার ১৮-০০টায় ফেরে ৪৭৫/৬৫০ টাকায় Tiruthani, Tirupathi, Tirumala বেড়িয়ে।

Tour No. 8: TTDC শুক্রবার ২১-০০টায় Week End Tour-এ গিয়ে Thanjavur, Velankanni, Nagore, Thirunallar, Poompuhar, Vaitheeswaram Koil, Chidambaram, Pichavaram, Pondicherry, অর্থাৎ ৮৫০ কিমি পরিক্রমা সেয়ে রবিবার ১৯-০০টায় ফেরে। এ ট্যুরের টাড়া এক ঘর ৭২৫ A/c বাসে ১১৫০, ডবল বেডের ঘর ৬৫০ A/c ঘরে ১০৫০ করে।

এক মাসে দক্ষিণী সফর

১ম দিন চেন্নাই পৌঁছে শহর বেড়িয়ে ও প্রয়োজনীয় টিকিট কেটে বিজ্ঞান। ২য় দিন ট্রেন বা বাসে একসপ্তাহে বা ITDC/TTDC আয়োজিত একদিনের ট্যুরে বিশেষ সেবাবন্দীসহ ২৭৫/A/c ৩৭৫ টাকায় অফরে ডিরপতি বেড়িয়ে আসতে পারেন। ৩য় দিনে TTDC বা ITDC-র আয়োজিত ট্যুরে মহাবলীপুরম/কাঞ্চিপুরম/পাক্ষীপুর্ম বেড়িয়ে যান। ৪র্থ দিনে কন্যাকাটা ও শহর বেড়িয়ে রাতের বাস বা ট্রেনে রওনা হয়ে ভোরে পতিচেরী পৌঁছান। দিনে দিনে পতিচেরী বেড়িয়ে সন্ধ্যায় ট্রেন বা বাসে শিবধরম পৌঁছে যান। আবার বাসে কিল্লিও বেড়িয়ে নিতে পারেন পতিচেরীতে একরাত থেকে। ৬ষ্ঠ দিনে চিদাম্বরম বেড়িয়ে রাত ভোজের। ৭ম দিনে ভাঙ্গোর ও কুডলোপাম বেড়িয়ে ডিরপতিগামী পৌঁছে যান। ৮ম দিন চলুন কোদাইকানাল ট্রেন বা বাসে। ১০ম দিন কোদাই থেকে মাদুরাই ফিরুন। ১১শ দিন রামেশ্বরম চলুন রাতের ট্রেনে। দিনে দিনে রামেশ্বরম বেড়িয়ে দুপুরের ট্রেনে মাদুরাই রওনা হন। ১২শ দিন রামেশ্বরম থেকে কন্যাকুমারীর বাসে চলুন ডিরপতিপুর। ডিরপতিপুরে রাত কাটিয়ে ১৪শ দিন সকালের বাসে কন্যাকুমারিকা চলুন। ১৫শ দিন বিকালে ট্রেন বা বাসে ডিরপতিপুরম পৌঁছে যান। ১৬শ দিন KSTDC-র কনডাক্টেড ট্যুরে শহর ও কোডমম বেড়িয়ে রাতের বিজ্ঞান ডিরপতিপুরম বা ১৬-৩০, ১৭-০৫, ১৭-৪০, ২১-০০, ২১-৪৫-এর ট্রেনে ১:৫০টার কোন্সাম পৌঁছে ১৭শ দিনে কোন্সাম ও ওয়ারকলা বেড়িয়ে পেরিয়ার যেতে পারেন। তবে, ডিরপতিপুরম থেকে প্রতি শনিবার গিয়ে ২ দিনের প্যাকেজ ট্যুরেও দেখে নেওয়া যায় পেরিয়ার। অথবা ডিরপতিপুরম থেকে সরাসরি কোচি চলুন ট্রেন বা বাসে। ১৮/১৯তম দিন কোচিতে কাটিয়ে লাক্ষাদ্বীপে যেতে পারেন। কোচি ও কালিকট (বেণুর) উভয় জায়গা থেকে জাহাজ আছে লাক্ষাদ্বীপের। সঙ্গে ৩ কপি পাসপোর্ট ফটো নিতে হবে লাক্ষাদ্বীপে। সময়ভাবে লাক্ষা না গিয়ে কোচি অর্থাৎ এনাক্কলাম থেকে চেন্নাইও ফেরা যেতে পারে। তবে কোচি থেকে ক্রিসুর/পালাকাদ/কোয়েম্বাটুর হয়ে উত্তরকাম ও চলাই উচিত হবে ২০তম দিনে। ২১শ দিনে কনডাক্টেড ট্যুরে উটি শহর ও মুথুমালাই বা কোটাগিরি ও অন্যান্য বেড়িয়ে নিতে পারেন। ২২তম দিনে ৮টার রওনা হয়ে ১৩-৩০টার মইশুর পৌঁছান। ২৩তম দিনে KSTDC বা ITDC-র ট্যুরে মইশুর শহর ও কুলাবাবাড বেড়িয়ে রাতের ট্রেনে বা পরদিন সকাল ৬-০০টার প্যাসেঞ্জার বা ৬-৪৫-এর চামুতী এক্সপ্রেস ৯-১৫/৯-৪০এ ব্যাসালের পৌঁছান। ২৪তম দিনে শহর বেড়ানো ও কন্যাকাটা/KSTDC-র প্যাকেজ ট্যুরে শহর দেখুন। ২৫তম দিনে কেলুড়/হালেবিদ/শ্রবণবেলগোলা বেড়িয়ে আসুন KSTDC-র ট্যুরে। ২৬তম দিনে বিকালের ট্রেনে রওনা হয়ে পরদিন সকালে কাচিগুদা অর্থাৎ হায়দ্রাবাদ পৌঁছান। ২৮তম দিনে হায়দ্রাবাদ থেকে ৫-৩০টার কুলা বা ৭-০০টার ইস্ট কোস্টে বা ১৬-০০টার সেকেন্ডাবাদ থেকে কলকাতা এক্সপ্রেস কলকাতা ফিরুন বা সন্ধ্যায় ট্রেনে কাচিগুদা ছেড়ে জালনা হয়ে ঔরঙ্গাবাদ পৌঁছে কনডাক্টেড ট্যুরে ঔরঙ্গাবাদ ও ইলোরা দেখেন। ২৯তম দিনে। ৩০তম দিনে ঔরঙ্গাবাদ থেকে বাসে গিয়ে অজন্টা দেখে জলপীও পৌঁছে ট্রেনে কলকাতার বা প্যাসেঞ্জার ট্রেনে নাগপুর গিয়ে মুম্বাই মেলের নাগপুর কোচে কলকাতা চলুন। চক্রেসের টিকিটও করে নিতে পারেন এগুণ পরিক্রমায়।

সুবিধামত পরিবর্তন বা পরিবর্তন করা যেতে পারে সফর-সূচীতে। আবার উৎসাহীরা সিন্ধুর টিপ সিংহল দ্বীপ কাকনময় দেশটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন ৩ থেকে ৫ দিনে রামেশ্বরম থেকে ১২তম দিনে।

Tour No. 9: TTDC Sakthi Tour অর্থাৎ Melmaruvathur, Thiruverkadu, Mangadu সেবাবন্দীনে আছে প্রতি মঙ্গল, শুক্র ও রবিবার ৭—১৮-০০টার ১৬৫ টাকায় A/c বাসে ২৭৫।

Tour No. 10 : Lord Muruga Tour-এ TTDC প্রতি মাসের প্রথম ও তৃতীয় শুক্রবার সকাল ৭-০০টার গিয়ে সোমবার ৬-০০টার ফেরে একক ঘরে প্রতিজনা ১১৫০ ডাবল বেডের ঘরে প্রতিজনা ১০৫০ শিশু ১০০০ A/c ঘরে ১৯৫০ ১৮৫০ ১৮০০।

Tour No. 11 : TTDC প্রতি রবিবার সকাল ৭-০০টার গিয়ে শুক্রবার ১৮-০০টার ফেরে **Mookambika** অর্থাৎ Bangalore*, Shravanabelagola, Belur, Hallebed, Hassan*, Sringeri, Mookambika (Kollur), Udipi*, Dharmastala, Mysore*, Hogenakkal* বেড়িয়ে। এ ট্যুরের ভাড়া: শিশু ১৯০০ A/c ৩১০০ একই ঘরে দু'জন অবস্থানে ২০৫০ একক অবস্থানে ২৪৫০ A/c ৩১০০ ৩২৫০ ৩৬৫০।

Tour No 12 : পতিচেরী আছে ১ দিনের প্যাকেজে ১৫০ টাকায়।

Tour No 13 : প্রতি শুক্রবার রাত্রে গিয়ে সোমবার সকালে শহরে ফেরে নবমই অর্থাৎ মন্দির দেখিয়ে ৫৭৫ টাকায়।

Tour No 14 : দিনে দিনে নবমশি ট্যুরে আছে ১০০ টাকায়।

Tour No 15 : বিষ্ণু অর্থাৎ ৯টি মন্দির দর্শনে আছে ১৩০ টাকায় TTDC.

এছাড়াও ৩টি পৃথক ট্যুরে—৭ দিনে মন্ডালয়ম ও গোয়া, ৭ দিনে ইস্ট-ওয়েস্ট কোস্ট, ৮ দিনে অজ্ঞানদেশ, ১৪ দিনে সানি সাউথ ট্যুর-এ আছে TTDC.

প্যাকেজ ট্যুর ও হোটেল তামিলনাড়ুর অগ্রিম বুকিংয়ের জন্য পুরো টাকা M O অথবা Bank draft করে Tamilnadu Tourism Development Corporation Ltd, 3 EVR Salai, opp Central Railway Station, Park Town, Chennai-600003, ☎ (044) 582916, Fax: 044-561385 টিকানায় পাঠাতে হয়। কমপক্ষে ১০ জনের দলে ১০% কমিশনও মেলে। রাউন্ড ট্রিপ সার্ভিস এদের। এমনকি, Diamond Tours & Travels, 30 Jadunath Dey Rd, Cal-12, ☎ 279639/Himal Chura Travels & Tours, P-263 CIT Rd, Scheme VI(M), Cal-10, ☎ 3508004 থেকেও TTDC-র ট্যুর ও হোটেল তামিলনাড়ুর অগ্রিম বুকিং মেলে। আর Travel India, I. Hazra Rd, Calcutta-700026, ☎ 4745102 থেকে ITDC-র প্যাকেজ ট্যুরের বুকিং ব্যবস্থা মেলে। এছাড়া, বুকিং-এর ব্যবস্থা নিয়ে Sales Counter (6-00 to 21-00 hrs) বসেছে—এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড (TTC) ☎ 5341982, সেট্রাল রেল স্টেশন ☎ 5353351, Hotel Tamilnadu, EVR Rd ☎ 589132, এগমোর রেল স্টেশন ☎ 8252165, Airport—Domestic Terminal ☎ 2340569 ও কলকাতার G-26 Dakshinappan Complex, 2 Gariahat Rd, Cal-68, ☎ 4720432-এ। Sathyam Travel ☎ 4837686, Parveen Travels ☎ 6421158, Moses Cabs ☎ 6212157,

Ganesh Travels @ 8250066, Hertz @ 826549। ছাড়াও নানান প্রাইভেট সংস্থা যাচ্ছে সেট্রাপ ও এগমোর রেল স্টেশন এলাকা থেকে যাত্রী নিয়ে দক্ষিণী সফরে। নানান ধর্মী গাড়িও ভাড়ায় মেলে এসের কাছে।

হাইকোর্টের পাশে দুর্গের উত্তরে ১৮৪৪-এ তৈরি ৪৯মি অর্থাৎ ১৬০ ফুট উঁচু লাইটহাউস। উপর থেকে অতীত দিনের চেমাইকে দেখে নেওয়া যায়। ছুটির দিনগুলিতে সকাল ৮—১১-০০ ও ১৩—১৭-০০টায়, অন্যান্য দিনে সকাল ৭—১০-০০টায় উপরে ওঠা যায়। তবে, আজ নতুন করে আধুনিক লাইটহাউস হয়েছে আকাশবাণীর বিপরীতে ম্যারিনায়। এর উচ্চতা ১৫০ ফুট। লিফটও বসেছে। এক টাকার টিকিটে ১৪—১৬-০০টায় চারপাশের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়।

অতীতের জর্জটাউন, আজকের প্যারিস কর্নারের আর এক আকর্ষণ তার হাইকোর্ট ভবন। ১৮৬১তে হেনরি আরউইন ও জে এইচ স্টিফেনের নকশায় ইভো-সেরাসেনিক শৈলীতে গড়া (লন্ডনের পরেই) বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম বিচারালয়। ১৩ নম্বর কোর্টের সাজসজ্জা ও আসবাবপত্রের অভিনবদ্ব আছে। অদূরে SBI ও GPO-র মূল দপ্তর।

হাইকোর্টের দক্ষিণে ব্রিটিশের হাতে তৈরি ফোর্ট সেন্ট জর্জ। ২০ ফুটের দেওয়ালে ঘেরা দুর্গের মূল প্রবেশপথ তিনটি—ম্যারিনা, মাউন্ট রোড ও পুনামেল হাইরোড হয়ে। ১৬৪০ খ্রিস্টাব্দে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি আসে বাণিজ্য করতে। চন্দ্রগিরির রাজার কাছ থেকে দু'বছরের ইজারা নেওয়া জমিতে ফ্রান্সিস ডে চেন্দ্র বছর ধরে গড়ে তোলেন ফোর্ট সেন্ট জর্জ সেকালের শিবরসের গ্রাম চেমাই-এ। নির্মাণ শেষ হয় ১৬৬৩-য়। ফোর্টের উত্তর জুড়ে গড়ে ওঠে বসতি হোয়াইট টাউন—অর্থাৎ ভারতে ব্রিটিশ রাজের জন্ম জর্জ টাউনে। ভারতে প্রথম মিউনিসিপ্যাল সনদও অনুমোদন পায় ১৬৮৮তে। ব্রিটিশের প্রতিদ্বন্দ্বী ফ্রান্সেরও লোলুপ দৃষ্টি ছিল ভারত থেকে রসদ পেতে। দীর্ঘকালের সংঘাতে ১৭৪৬-এ দুর্গের দখলও যায় ফ্রান্সের হাতে। তবে নর্থ আমেরিকায় দ্বীপ পেয়ে বদলে দুর্গ ছাড়ে ফ্রান্স ১৭৪৮-এ। তবুও সংঘাত চলতে থাকে পরস্পরে। ১৭৫১-য় আর্কটের কাছে ফ্রান্সকে হারিয়ে সার্বভৌমত্ব গড়ে ব্রিটিশ চেমাইয়ে। আর যুদ্ধজয়ের নায়ক লর্ড ক্লাইভ সামান্য কেরানি থেকে উন্নতির সোপান বেয়ে হন চেমাই-এর গভর্নর। আরও পরে ১৭৫৭-য় পলাশির যুদ্ধে সিরাজকে হারিয়ে ভারতে ব্রিটিশের বনিয়াদ মজবুতও করে ক্লাইভ। দুর্গের রবার্ট ক্লাইভ ও কর্নেল ওয়েলেসলীর বাসগৃহ দু'টির আকর্ষণও অপরিসীম। মিউজিয়মের দক্ষিণে ক্লাইভের বাসগৃহে পে অ্যাকাউন্টস অফিস বসেছে। তবে, ক্লাইভের বাসগৃহে ক্লাইভ কনারি সাধারণের কাছে খোলা। ওয়েলেসলীও ডিউক অব ওয়েলিংটন হন ওয়াটারলু যুদ্ধ জিতে।

ফোর্ট মিউজিয়মটি পর্যটকদের ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি তথা ব্রিটিশ স্মৃতি রোমন্থন করায়। ১৬৮০তে তৈরি মেস-

বাড়িতে ব্রিটিশ রয়্যাল নেভির ব্যবহৃত তরবারি, আমেরোয়, হেলমেটস, মুদ্রা, বসন, ঐতিহাসিক দলিল, চিঠি পত্র, পাণ্ডুলিপির অমূল্য সম্ভার প্রদর্শিত হয়েছে। শুক্র ও ছুটি ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা। দ্বিতলে ১৮০২-এ তৈরি ব্যাকোয়েট হল—এ ছবিতে সেন্ট জর্জের গভর্নর তথা ব্রিটিশ রাজের VIP-দের ছবির সংগ্রহও উন্মোখ। তবে বার বার সংস্কার হয়ে রূপান্তরও ঘটেছে। রাজ্য সরকারের সেক্রেটারিয়েট ও আইনসভা বসেছে সেন্ট জর্জ দুর্গে। অদূরেই কম্বুম নদী শহর পরিক্রমা সেয়ে সমুদ্রে মিলেছে।

দুর্গের মধ্যেই হয়েছে সেন্ট ম্যারির চার্চ অর্থাৎ গির্জা। ইংল্যান্ডের বাইরে ব্রিটিশের তৈরি প্রাচীর প্রথম প্রোটেস্ট্যান্ট চার্চ এটি। আমেরিকার এলিছ ইয়েল-এর টাকায় এডওয়ার্ড ফাউলের নকশায় ১৬৭৮-৮০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি। ৫ বছরের জন্য চেমাইর গভর্নরও ছিলেন এই ইয়েল। আর গভর্নর থাকা কালে বিপুল সম্পত্তির মালিক হয়ে পড়ায় ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি রুপ্ত হয় সাহেবের প্রতি। চার্চের লাস্ট সাপার ছবিটি আর এক দ্রষ্টব্য। শোনা যায় রায়ফেলের তুলির পরশ আছে ছবিতে। সম্পূর্ণতা পায় তারই এক শিবোর হাতে। ব্রিটিশের দখলের পর পণ্ডিচেরী থেকে আসে এই ছবি। ১৭৫৩তের বাটিক্লাইভ এই চার্চেই বিয়ে করেন মার্গারেটকে। সমাধিস্থও রয়েছেন নানান জনা চার্চ অঙ্গনে।

দুর্গের উত্তরে অতীতের পুরনো শহর বা ব্রিটিশের ব্ল্যাক টাউনে দোকানপাটে ঠাসা আর্মেনিয়ান স্ট্রিট—আর্মেনিয়াদের বাস। আর আছে নীল আকাশের নিচে মুক্ত বায়ুতে আর্মেনিয়ান চার্চ। পায়ে পায়ে দেখে চলা যায় ভারতে আর্মেনিয়ান কলোনি।

চেমাই ভ্রমণার্থীদের কাছে ম্যারিনার আকর্ষণ অমিতীয়। দুর্গের দক্ষিণে ১৩ কিমি দীর্ঘ এই ম্যারিনা বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম বাঁচ। গিয়ে মিলেছে আরও দক্ষিণে সানটোমে। পীতাভ বালুকাবেলায় শাস্ত্রভ্রমণের জন্য এর প্রশস্তি। জলে হাঙ্গর আছে। তাই সমুদ্র-স্নানার্থীদের অ্যাকোয়ারিয়ামের ডাইনে সুইমিং পুলে নামাই উচিত হবে। অ্যাকোয়ারিয়ামটির আকর্ষণ মনের ভাল। সোম-শুক্র ১২—২০-০০, রবি ও ছুটির দিনে ৮—২০-০০টায় খোলা। অ্যাকোয়ারিয়ামের কাছে ১৮৪২এ তৈরি বরফ-বাড়িটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে। ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির কালে সুদূর আমেরিকার ফ্রিট লেক থেকে বরফ এনে রাখা হত এই বাড়িতে। বীচের অপর পারে নেগিরার ব্রিজ পেরিয়ে বিশ্ববিদ্যালয় ভবন। তার ছড়িছড়ি সহজেই চিনিয়ে দেয় পর্যটকদের। ইভো-সেরাসেনিক শৈলীতে গড়া গম্বুজওয়ালা সিনেট হাউসটি চিনতেও অসুবিধা হয় না। তারই পাশে ম্যুরিশ শৈলীতে তৈরি চীপক প্রাসাদটি পর্যটকদের অভিভূত করে। অসংখ্য বিলান আর সুরু সুরু মিনারওয়ালা প্রাসাদে একলা কাণ্ডিকের নবাবসের দপ্তর বসেছে। সম্ভ্রতি রাজ্য সরকারের দপ্তর বসেছে। এরই সিঁছে ঐতিহাসিক চীপক স্টেডিয়াম। অদূরে বাঁচ রোডে প্রথম

বিশ্বযুদ্ধে নিহত সেনানীদের স্মরণে গড়া ভিক্টরি ওয়ার মেমোরিয়াল পেরুতেই সেন্ট জর্জ' আর রয়েছে কৃত্রিম বন্দর — ১৮৭৬-এ শুরু হয়ে শেষ হয় ১৮৯৬-এ। এছাড়া সুন্দর বাগিচায় ঘেরা আন্নাপুরাই স্মৃতিমন্দিরটিও কম আকর্ষণীয় নয় ম্যারিনা তথা চেম্বাই ভ্রমণার্থীদের কাছে। *আন্না* অর্থাৎ বড় ভাই, তামিলনাড়ুর প্রাক্তন মুখ্যমন্ত্রী C N Annadurai-এর স্মারক হয়েছে। দুই হাতের শুড় খিলান গড়েছে প্রবেশদ্বারে। তেমনই ম্যারিনার উত্তরে আর এক মুখ্যমন্ত্রী তথা চলচ্চিত্রের সুপারমান এম জি আর (রামচন্দ্রণ)-এর সমাধিতে মূর্তি হয়েছে স্মারকরূপে। সেস্থান থেকে ২A বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় ম্যারিনা তথা আন্না স্কোয়ার। অদূরে আর এক পপুলার ইলিয়ট বিচ।

শহর থেকে ৩.২ কিমি দূরে ম্যারিনা থেকে কপালে-শ্বরের পথে ত্রিপলিকেন হাইরোডে পার্শ্বসারথি মন্দির। ৮ শতকে পলুবরাজদের তৈরি *পার্শ্বসারথি* অর্থাৎ কৃষ্ণ মন্দিরের স্থাপত্য বিশেষ করে কাউং-এর কাজ সুন্দর। বিষ্ণু মূর্তি হয়েছেন পাঁচ অবতার রূপে। বিষ্ণু-জায়া ভেদাবম্বী আশ্বাইও রয়েছে ছোট মন্দিরে। মন্দিরে আর আছে ন পরিজন পরিবেষ্টিত শ্রীকৃষ্ণ। ১৬ শতকে বিজয়নগরের রাজারা সংস্কার করেন মন্দির।

আরও দক্ষিণে যেতে *মলাই* আজকের মায়লাপুর, মানে ময়ুরের বাসস্থান। তবে, আজ আর ময়ুর নেই। অতীতের বন্দরনগরী মায়লাপুরে দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে তৈরি চেম্বাই-এর বৃহত্তম কপালেশ্বর মন্দিরে শিব উপাস্য দেবতা। পুরাণ বলে, পার্বতী ময়ুরের রূপ ধারণ করে মুক্তির জন্য শিবের উপাস্যা করেন। মন্দির গায়ে মূর্তি হয়েছে সে আখ্যান। রামায়ণ ছাড়াও নানান পৌরাণিক আখ্যানও মূর্তি হয়েছে। ৩৭ মিউচু দ্রাবিড়ীয় *গোপুরমের* সুন্দর কারুকার্যও সুন্দর। তবে, ১৫৬৬তে পর্তুগিজদের দখলে যেতে অতীতের মূল মন্দির ধ্বংস পেলে ১৬ শতকে বর্তমান মন্দিরটি গড়েন বিজয়নগরের রাজা। সাক্ষর পূজায় মাধুর্য আছে। তেমনই মার্চ-এপ্রিলের ১১ দিন ব্যাপী Aru-pathumooar উৎসবও রমণীয়। ১২—১৬-০০টায় দ্বার বন্ধ থাকে মন্দিরের।

পাশেই হয়েছে ১৯৭৬-এ ভালুভার কোট্টাম (Valluvar-kottam)। তামিলদের কাছে বহিবেল সম শ্রোত্রম্বী *Thirukkural* রচয়িতা তামিল কবি তিরুভাল্লুভারের স্মরণে স্মৃতিমন্দির। তিরুভাল্লুর রথের রেন্সিক রূপে পাথরে গড়া জিতল স্মৃতি মন্দিরের নিচুতে ২২০×১০০ ফুটের অডিটোরিয়ামটি এশিয়ার মধ্যে বৃহত্তম। কবির ১৩৩০টি শ্লোক (*Kurals*) মূর্তি হয়েছে গ্রানাইট পাথরে। ৯—১৯-০০টায় খোলা, ৩ ৪২৭২১৭৭.

যীশুর মৃত্যুর পর দ্বাদশ যীশু-শিষ্যের অন্যতম সেন্ট টমাস পর্তুগিজ ভাষায় *স্যানটোম* (গুহী নাম ডাইডিমাস) ভারতে আসেন ৫২ AD-তে প্রভুর ধর্মপ্রচারের মানসে। ৭২ খ্রিস্টাব্দে আজতায়ীর হাতে মৃত্যু হতে শহর থেকে ১৩ কিমি

দূরে আজকের বিমানবন্দরের পথে Parangimalai-এ ৯১.৫ মি উঁচু সেন্ট টমাস মাউন্টে সমাধিস্থ হন যীশু-শিষ্য। ম্যারিনার দক্ষিণ প্রান্তে বঙ্গোপসাগরের পাড়ে মায়লাপুরের স্যানথোম ক্যাথিড্রাল বা গির্জাটি সেন্ট টমাসের তৈরি। পরবর্তীকালে সমাধিস্থও হন সেন্ট টমাস এই গির্জায়। আরও পরে পর্তুগিজরা দখল করে মায়লাপুর। ১৫০৪-এ সংস্কার করে গির্জা। তাই কারও কারও মতে গির্জাটি পর্তুগিজদের তৈরি। তবে, নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা গথিক শৈলীর বর্তমান গির্জাটি ১৮৯৩-এ তৈরি। এটিই ভারতে তৈরি প্রথম রোমান ক্যাথলিক ক্যাথিড্রাল।

আর সইদাপেট পুলের সামান্য পূবে দিলিটল মাউন্ট, তামিল ভাষায় *Chinnamalai* অর্থাৎ ষড়যন্ত্রকারীদের হাত থেকে পালিয়ে সেন্ট টমাসের আশ্রয় নেওয়া সেই গুহাটিও রয়েছে। বাসও করেন ৮ বছর সেন্ট টমাস লিটল মাউন্টে। লাগোয়া সুড়ঙ্গপথে পায়ের ছাপটিও নাকি সেন্ট টমাসের। পর্তুগিজদের হাতে চার্চও হয়েছে ১৫৫১তে — Our Lady of Health. আর এক যীশু-শিষ্য সেন্ট লিউকের আঁকা ছবিও রয়েছে যীশু-জননী কুমারী মেরীর। অলৌকিকত্ব আছে ক্রশ চিহ্নটিতে। শোনা যায় আজও প্রতি ডিসেম্বর মাসের ১৮ তারিখে সিন্ত হয়ে ওঠে এই ক্রশ।

এগমোর রেল স্টেশনের কাছে Pantheon Rd-এ মোগলী খাঁচে বেলে পাথরে তৈরি আর্ট গ্যালারির বাড়িটিও সুন্দর। চেম্বাই-এর উন্নতিকল্পে গড়া Pantheon Committee-র সভ্যদের বাসস্থান ছিল অতীতে। ১৯০৬-এ ভিক্টোরিয়া মেমোরিয়াল রূপে গড়ে উঠলেও ১৯৫১-য় আর্ট গ্যালারি বসে। রাজপুত, মোগলী ও দক্ষিণী ছবির সঙ্গে আধুনিক চিত্রকলার সমাবেশ ঘটেছে। ৯—১৭-০০টায় খোলা, শুক্র ও ছুটির দিনে বন্ধ থাকে গ্যালারি।

আর্ট গ্যালারি চত্বরে মিউজিয়ম বা যাদুঘর। এর জন্ম ১৮৫১ খ্রিস্টাব্দে। দক্ষিণ ভারতের ব্রোঞ্জশিল্পের নানান সংগ্রহ প্রদর্শিত হয়েছে। এছাড়া অমরাবতীতে পাওয়া বৌদ্ধস্তুপের সংগ্রহ মিউজিয়মকে গৌরবান্বিত করেছে। পলুব, চোল, পাণ্ড্য, হোয়সল ও বিজয়নগর রাজাদের কালের স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের সংগ্রহও উল্লেখ্য। ব্রোঞ্জের নটরাজ মূর্তি বিক্রয়ের ব্যবস্থা আছে মিউজিয়মে। শুক্র ও ছুটি ছাড়া ৮-৩০—১৬-৩০টায় খোলা থাকে মিউজিয়ম। ক্যান্টিনও বসেছে চত্বরে। তেমনই Arcot-Mudali St, T Nagar-এ M G R Museum; 46 Tirumalai St, T Nagar-এ Kamraj Museum; Annanagar-এ Prime Times অর্থাৎ মজার ভরা ইনডোর আম্বুজমেন্ট পার্কটিও চেম্বাই সফরে বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে।

আর হয়েছে শহরের Kotturpuram-এ কম্পিউটারাইজড প্রোজেক্টরে ২৩৬ আসনের B M Birla Planetarium. ১০-৪৫, ১৩-১৫, ১৫-৪৫-এ ইংরেজি; ১২-০০, ১৪-৩০-এ তামিল ধারাভাষ্যে প্রদর্শন। ৩ 4916751. চেম্বাই ভ্রমণে এটিও অনন্য।

সেন্ট্রাল রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে ওয়ার মোমোরিয়ালের বিপরীতে ফেয়ারল্যান্ড কমপ্লেক্সে INTACH ও TTDC-র যুগ্ম প্রচেষ্টায় যাত্রী মনোরঞ্জন উদ্দেশ্যে সিন্ধুরাজম অর্থাৎ মিনি থিয়েটারে শিল্প-সংস্কৃতির আসর বসছে প্রতি সন্ধ্যায়। আগ্রহীদের উচিত হবে Cultural Co-ordinator, INTACH, 855 Anna Salai, Chennai-2-কে যোগাযোগ করা।

১৪ কিমি দূরের রেড হিলস লেক থেকে চেম্বাই শহরের পানীয় জল আসছে। প্রাকৃতিক দৃশ্য সুন্দর। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। শহর থেকে বাস যাচ্ছে।

শহরের ১১ কিমি উত্তর-পশ্চিমে রেলের বগি তৈরির কারখানা পেরাথুর ইন্টিগ্রাল কোচ ফ্যাক্টরি। হালকা ইস্পাতের বগি তৈরি হচ্ছে পেরাথুরে। এশিয়ার মধ্যে বৃহত্তম ও বটে এই কোচ ফ্যাক্টরি। সপ্তাহের মঙ্গল ও শুক্রবার সাধারণের দেখার জন্য দরজা খোলা মেলে। ট্রেন বা বাসে দেখে ফেরা যায়। বোকারো স্টিল-আলমিনিয়াম-ও যাচ্ছে পেরাথুর হয়ে।

চেম্বাই ভ্রমণার্থীদের কাছে নতুন আকর্ষণ শহরের দক্ষিণ প্রান্তে Guindy National Park. ৩০০ একর জমি জুড়ে ব্ল্যাক বাক, স্পটেড ডিম্মার, সিভিট ক্যাট, চিতা, শিয়াল, বেজি, বানরেরা মাতিয়ে বেড়ায়। তেমনিই বিশ্বে লোপ পাওয়া কালো হরিণ (অ্যান্টিলোপ)ও দেখতে মেলে। অ্যাডিমার রোডে রাজভবন প্রাঙ্গণে গড়ে তোলা হয়েছে গিনথি ডিম্মার পার্ক। বিভিন্ন প্রজাতির হরিণ চরে বেড়ায় স্বাভাবিক পরিবেশে। লাগোয়া শিশু উদ্যান।

আর আছে গান্ধীজি, রাজাজি ও কামরাজ তিন রাষ্ট্রনায়কের স্মৃতিতে গড়া তিন স্মরণ-মন্দির। জাতির জনক মোহনদাস করমচারি গান্ধীর স্মৃতির উদ্দেশ্যে হয়েছে গান্ধী মণ্ডপ। নিয়মিত উপাসনা হয়। ভারতের প্রথম গভর্নর জেনারেল রাজা গোপালাচাঙ্গীর স্মৃতিমন্দির রাজাজি হল ভবনটিতে ব্রিটিশ স্মৃতি জড়িয়ে রয়েছে। গ্রিকদেশীয় মন্দিরের চঙে করিষ্টিয়ান শৈলীতে তৈরি ব্যাকোয়েট হল-এ রাজাজি স্মৃতিমন্দির বসেছে। টিপ্পুর সঙ্গে যুদ্ধ জয়ের স্মারকরূপে রবার্ট ক্লাইভের পূর্ব এডওয়ার্ড ক্লাইভ ১৮০২-এ তৈরি করান এই ভবন। ব্রিটিশ গভর্নরদের বাস ছিল সেকালে। দেওয়ালের প্রতিকৃতিগুলি অতীত রোমন্থন করায়। প্রতিদিন ১০—১৮-০০টায় খোলা।

অদূরে ব্লেক পার্ক। ভারতে বসবাসকারী আমেরিকান Romulus Whittaker গড়ে তুলেছেন খোলা গর্তে ২০০ প্রজাতির ৫০০-রও অধিক সাপের এই সর্পবাগিচা। চোখের দেখা ও হাতের পরশ দুই-ই মেলে। ছবি নিতেও নেই মানা। আর রয়েছে কুমির, অ্যালিগেটর, টিকটিকি, গিরগিটি, কচ্ছপ। ঘণ্টায় ঘণ্টায় ভেমনষ্টেশন। গবেষণা চলেছে সাপের বিব নিয়ে নানান। এরও পটটিক আকর্ষণ দিনের পর দিন বেড়েই চলেছে। ৯—১৭-০০টায় খোলা। প্রবেশমূল্য ১।

কনডাকটেড ট্রায়ে, চেম্বাই বাচ বা এগমোর থেকে ট্রেন, প্যারিস কনার থেকে ২১E বা মাউন্ট রোডের আন্না স্কোয়ার থেকে 5, 5A, 45 রুটের বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

শহর থেকে ৩০ কিমি দূরে Vandalur-এ ৫১০ হেক্টরে নতুন করে গড়া আন্না জুলজিক্যাল পার্ক। নানান জন্তু-জানোয়ারের সঙ্গে প্রাক-ঐতিহাসিক জীব-জন্তু (স্টাফড), লায়ন সাফারি, নিশাচর জীবজন্তুর ঘর, অ্যাকোয়ারিয়াম, ন্যাচারাল মিউজিয়াম-এর জন্য পার্কের প্রসিদ্ধি। মঙ্গলবার ছাড়া ৮—১৭-০০টায় খোলা।

রাশিয়ার মেয়ে Madame Blavatsky (হেলেনা পেট্রোভনা) আর আমেরিকার Colonel Olcott এই দুই-এ মিলে ১৮৭৫-এ আমেরিকায় খ্রিস্টকাল্য সোসাইটি গড়েন। আর ১৮৯১-এ স্থানান্তর হয় সোসাইটির মূল দপ্তর আমেরিকা থেকে চেম্বাই-এর অ্যাডিমারে। অ্যাডিমার নদীর দক্ষিণ পাড়ে ২৪৭ একর জমি জুড়ে গড়ে উঠেছে এই সোসাইটি। সোসাইটি গড়ে তোলার Annie Besant-এর অবদানও অনস্বীকার্য। সত্যের সন্ধান সোসাইটির মূল উদ্দেশ্য। ব্যাপক এসের কর্মকাণ্ড। মেডিটেশন হল-এ রয়েছে সকল ধর্মের প্রতীক। অমূল্য সব পুঁথি ও বই-এর ১৮ হাজার সংগ্রহ রয়েছে লাইব্রেরিতে। গার্ডেন অব রিমেমরান্স, বেসান্ট স্কুল, অতিথিশালা, ৪০০০০ বর্গফুট ব্যাপ্ত দূশ বছরের প্রাচীন বটবৃক্ষের স্নিগ্ধ ছায়া ক্লাজি দূর করে যাত্রীদের। সকাল ৮-০০—১১-০০ আবার ১৪-০০—১৭-০০টায়, শনিবার প্রথমার্ধ সাধারণের জন্য খোলা। তবে, লাইব্রেরি ৮-০০—১১-০০টায় খোলা থাকে। রবি ও ছুটির দিনগুলিতে বন্ধ।

নাচ আর গান ভালোবাসেন যারা, তাঁদের জন্য রয়েছে আর এক স্বর্গ ১০০ একর ব্যাপ্ত ১৯৬৬-এ Rukmini Devi Arundale-এর গড়া কলাক্ষেত্র। শহরান্তে সোসাইটির পাশেই কশটিক মিউজিক, কুরাতি যাবাবরদের কুরুভাঞ্জি লোকনৃত্য থেকে স্টুট ব্যালেকর্ষী ভারতনাট্যম ছাড়াও নানান গ্রন্থদী নৃত্যশিল্পার আবাসিক বিশ্ববিদ্যালয় এটি।

অ্যাডিমার থেকে ২০ কিমি দূরে সাগরপাড়ে ১৯৬৬তে গড়া চোলামণ্ডল শিল্পীগ্রামে ভাস্কর ও শিল্পীদের বাস। নানান ধর্মী স্থাপত্য, বাটিক, টেরাকোটা ও গ্রাফিক শিল্পীদের হাতের কাজ দেখা ও কেনার ব্যবস্থাও আছে।

চেম্বাই থেকে NH-4-এ পশ্চিমমুখী ৪০ কিমি গিয়ে বাঁ-হাতি পথে ঈপেরামবুদুর। আবার NH-45 ধরে চিঙ্গলপুটের ৯ কিমি আগেই সিনগাপেরা মালকয়েল থেকেও ডানহাতি পথে চলা। যেতে পারে ৩ কিমি দূরের ঈপেরামবুদুর। জাতীয় সড়কে ইন্দ্রা স্মৃতি তর্পণ তথা মূর্তি হয়েছে ইন্দ্রা গান্ধীর। অদূরে ১ কিমি যেতে ২১মে, ১৯৯১ রাত দশটা বিশ মিনিটে ভারতের ভাগ্যাকাশে ইন্দ্রপতন ঘটে ঈপেরামবুদুরে। ঘটকের হাতে শহীদ হলেন ভারতের তরুণতম প্রাক্তন প্রধানমন্ত্রী বিশ্ববরেন্দ্র নেতা রাজীব গান্ধী। ১৯৯৩-এর ১৮

জানুয়ারি স্মারকরূপে মূর্তিও হয়েছে রাজীব গান্ধীর। অপুর ভবিষ্যতে শ্রীপেরামবপুরও হতে যাচ্ছে আর এক ভারত মন্দির।

কাকিপুরম

চেন্নাই বীচ থেকে ১৭-৫৫৪ প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে এগমোর/চিসেলপট হয়ে ৩ ঘণ্টায় কাকিপুরমে। আবার এগমোর থেকে দক্ষিণগামী নানান ট্রেনে ৫৬ কিমি দূরের Chengalpattu Jn গিয়ে ট্রেন বা বাসে কাকিপুরম চলা যেতে পারে। চেন্নাই-ব্যাঙ্গালোর ব্রডগেজ লাইনের আরাকোন্ডাম থেকেও ট্রেনে কাকি বাওড়া যেতে পারে। বাস যাচ্ছে চিসেলপট থেকে কাকি, পক্ষীতীর্থ ও মহাবলী। ভেদনথললেও বাস যাচ্ছে চিসেলপট থেকে। বাস যাচ্ছে চেন্নাই শহর (ব্রডওয়ে) থেকেও 76, 78, 79 রুটের NH-4 থরে ৭৬ কিমি দূরের কাকিপুরমে মুম্বাই। চেন্নাই-ভেঙ্গোর (ব্রডওয়ে থেকে 102) বাস যাচ্ছে কাকি হয়ে। আর কাকি থেকে DTTC বাস যাচ্ছে চেন্নাই, ভেঙ্গোর, তিরুভল্লারম। বাস যাচ্ছে মিরি, কন্যাকুমারী, ব্যাঙ্গালোর, পণ্ডিচেরী ছাড়াও দক্ষিণ ভারতের নানান নিকে। মহাবলীরও বাস মেলে কাকি থেকে। ভবুও চিসেলপট হয়ে চলায় বাসের আধিক্য ও সময়ের সঞ্চার মেলে। TTDC ও ITDC-র প্যাকেজ ট্যুরেরও ব্যবস্থা আছে চেন্নাই থেকে একই দিনে কাকিপুরম, পক্ষীতীর্থ ও মহাবলীপুরম বেড়িয়ে নেওয়ার। টিকিট ১৬০ A/c ২৬০ করে। তবে, সময় ও অর্থের সঞ্চার ঘটলেও কনডাক্টর ট্যুরের নিখরতি সময়ে দেখে নেওয়া অসম্ভব হয়ে পড়ে। তাই উচিত হবে ট্রেন পরিহার করে বাসেই কাকি গৌঁছে গারে পায়ে বা চুক্তিতে রিকশায় (৪০-৫০) দিনভর পল্লব-চোল-বিজয়নগর রাজাদের তৈরি মন্দিরময় কাকি দেখে নেওয়া। দুপুরে (১৩-১৬-০০টার) দ্বার বন্ধ থাকে মন্দিরের। আর বকশিসের পীড়ন আছে যত্রতত্র কাকিতে। অত্যাংসাহীরা কৈলাসের বিপরীতে প্রত্নভট্ট দপ্তরের সঙ্গে যোগাযোগ করতে পারেন কাকি দর্শনে।

কাকিপুরম অর্থাৎ সোনার শহর। দক্ষিণ ভারতের কান্ধী নামেও খ্যাতি আছে কাকিপুরমের। অতীতে নাম ছিল শিব-বিষ্ণু কাকি। এমনকি বৌদ্ধ ও জৈনধর্মও যথেষ্ট প্রসার পেয়েছিল অতীতে। একটি জৈন মন্দির আজও আছে শহরখণ্ডে পালার নদীতটে চোলরাজাদের কালের। ভারতের পবিত্র সাত মোক্ষপুত্রীর মধ্যে কাকিপুরম অন্যতম। বাকি ছয়—বারাণসী, মথুরা, উজ্জয়িন, হরিদ্বার, দ্বারকা, অথোধ্যা। সর্বত্রই মন্দিরও হয়েছিল কাকিপুরমে, আর শিবলিঙ্গের সংখ্যা হাজার দশেক।

বিষ্ণু আর এক উপাস্য দেবতা কাকিতে। বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে শহরের উত্তরে বিশ্রীকাকি মন্দির আজও পল্লব স্থাপত্যের নিদর্শন হয়ে পর্বটক আকর্ষণ করে চলেছে। আকাশচোয়া গোপুরমগুলিও দূরদূরান্ত থেকে দৃশ্যমান। পল্লবরাজাদের আর এক কৃষ্টি কাকির কাকিভরম সিদ্ধ সৃষ্টি। পল্লববংশের কালে বন্ধকালের জন্য কাকির দখল যায় বালামীর চালুক্য ও রাষ্ট্রকূট রাজাদের হাতে।

৩ম কাকিই নর, সমগ্র দক্ষিণ ভারতের প্রাচীনতম মন্দির

কৈলাসনাথ। পিরামিডধর্মী চুড়া—শিরে তার অষ্টকোনি শিখর। শহরের পূর্বে ৭০০ খ্রিস্টাব্দে রানীর ইচ্ছায় পল্লব-রাজ রায়াসিংহর তৈরি। আর সম্মুখভাগ পূত্র মহেন্দ্রবর্মন তৃতীয়-র সযোজন। নিজ গৃহে রাউন্ট কৈলাসে দেবতা শিবকে ঘিরে রয়েছেন সিংহাসীনা দেবী দুর্গা ও বিষ্ণু সহ ৫৮জন দেবদেবী। হর-পার্বতীর নৃত্য প্রতিযোগিতার আসরও বসেছে মূল মন্দিরের পাশে। বিচারক তার ব্রহ্মা ও বিষ্ণু। ভাস্কর্য সুন্দর। পল্লবরাজাদের নানান যুদ্ধ-কাহিনীও রূপ পেয়েছে ব্যাস-রিলিফ প্রথায় গ্রানাইট বেদিতে বেলে-পাথরের মন্দির কৈলাসে।

একাধ্বরেখার মন্দিরটিও পল্লবরাজাদের তৈরি। দেবতা শিব—কৃতি বা পৃথিবীরূপে পূজিত হন। পরবর্তীকালে সংস্কারও হয়েছে চোল ও বিজয়নগর রাজাদের হাতে। আয়তনেও বৃহত্তম (২২ একর) এই মন্দির। মন্দিরের দক্ষিণমুখী ৫৭ মি উঁচু ৮তলা রাজা গোপুরমটির সাথে পাথরের প্রাচীরও গড়েন ১৫০৯-এ বিজয়নগরের রাজা কৃষ্ণদেবরায়। গোপুরমে উঠে চারপাশ দেখে নেওয়া যায়। ৫টি চত্বর পেরিয়ে হলও রয়েছে হাজার (৯৬৮) পিলারের একাধ্বরেখার। দক্ষিণে সর্বতীর্থম পুন্ডরীণী। আর রয়েছে কিংবদন্তীর সেই ইচ্ছাপূরণ আমগাছ—৩৫০০ বছরের এক আশ্র নাথার। এমনকি দেবতা তথা মন্দিরের নামটিও *শ্রীএকম্বরানাথার*। আমও হয় চার বাসের একই গাছের চার-শাখে। কিংবদন্তী, চার বেদের প্রতিভূ এই চারধর্মী আম। কাকি যখন মুসলিম দখলে যায় তখন একাধ্বরনাথখির বিগ্রহ চেন্নাই-এ স্থানান্তরিত হয়। পরবর্তীকালে কুইড আবার শিব কাকিতে প্রতিষ্ঠা করেন। প্রবেশমূল্য ১০ পরস, সাধারণ কামেরায় ৩, মুন্ডিতে ৫ লাগে ছবি তুলতে।

১ কিমি দূরে চোল রাজাদের ১৪ শতকের শ্রীকামাক্ষী মন্দির। দেবী এখানে কামাক্ষী আশ্রান বা পার্বতী। মূল বিগ্রহ তাঞ্জোরে। উত্তরকালে মূর্তি হয়েছে নতুন করে দেবীর। সোনার গোপুরমও হয়েছে মন্দিরে। প্রত্নভট্ট হাতির আশিসও নিতে পারেন বকশিসের বিনিময়ে মন্দির-ধারে। ফেব্রুয়ারি-মার্চে 9th Lunar day-র কার ফেস্টিভ্যাল বরণীয় উৎসব। তামিল নববর্ষ আর এক উৎসব কাকির মন্দিরে। শঙ্করাচার্যর সমাধিও রয়েছে।

প্রাচীনত্রে কৈলাসনাথের পরেই শ্রীকামাক্ষী লাগোয়া *শ্রীবৈকুণ্ঠ পেরুমল* মন্দির। এটি তৈরি পল্লবরাজ নন্দীবর্মন দ্বিতীয়-র হাতে ৭ শতকে। বিষ্ণু উপাস্য দেবতা। মন্দিরের স্থাপত্য, ভাস্কর্য ও ফ্রেসকোচিত্র পর্যটকদের মুগ্ধ করে। পল্লব রাজাদের ইতিকথা, গঙ্গা ও চালুক্যদের সঙ্গে যুদ্ধের দৃশ্য ছাড়াও নানান কিছু মুরালে রূপ পেয়েছে। হাজার পিলারের হলটিরও অভিনবত্ব আছে।

বিজয়নগর রাজাদের তৈরি *শ্রীভরদ্বারজ* বা দেব-রাজাবাহী মন্দিরেও দেবতা বিষ্ণু। হাতির ঢঙে পাথুরে দেবতা। একশ (৯৬) পিলারের হল-এ বিজয়নগর রাজাদের

স্থাপত্য, এককণ্ড পাথর কেটে তৈরি শিকল আজও মুঞ্চ করে। লোকশ্রুতি, শক্তিমত্তায় উন্মত্ত হায়দর আলি তরবারি দিয়ে শিকল কাটতে গিয়ে ব্যর্থ হন। টিকিট ১ ক্যামেরা ৩।

শুধু মন্দির নয়, অতীতে ৬ থেকে ৮ শতকে কাঞ্চি ছিল পত্নুবরাজাদের রাজধানী। উত্তরকালে চোল ও বিজয়নগর রাজাদের রাজধানীও বসে কাঞ্চিতে। আর তখন থেকেই কাঞ্চি ছিল শিল্প-বাণিজ্যে অগ্রগণ্য। কাঞ্চির কাল্পিতরম সিন্ধু সৃষ্টি যদিও দেবদাসীদের বসনরূপে, তবে আজ ভারত-ললনাদের অতি প্রিয়। দামে আধিকা লাগে কাঞ্চির দোকানে। কেনাকাটায় দাম ও মানে চেম্বাই-ই সুবিধা। শুধু শিল্পই-বা কেন শিক্ষাদীক্ষায়ও কাঞ্চি ছিল অগ্রগণ্য। শঙ্করাচার্য, আগ্নার, সিরুথোণ্ডার, বোধিধর্ম, কৌটিলা এঁদের গৌরবময় কর্মযজ্ঞের সঙ্গে কাঞ্চি গৌরবাবিত।

আর হয়েছে নতুন করে ভরদরাজের অদূরে তামিল-নাড়ুর জনপ্রিয় মুখ্যমন্ত্রী *আম্মা* অর্থাৎ বড় ভাই Dr C N Annadurai-এর স্মরণে *আম্মা মেমোরিয়াল* তাঁর প্রিয় জন্মভূমি কাঞ্চিতে।



TTDC-র H Tamilnadu, 78 Kamakshi Amman Sannathi St, Kancheepuram, STD 04112, ☎ 22253, PC-631502, near Rly Stn, DAB ২৫৫ A/c D ৩০০ ৩৭৫ ৫০০ চার বেডের ঘর ৩০০ ছয় বেডের ৩৭৫। *নিরীক্ষণ ভবন ও মিউনিসিপ্যাল রেস্ট হাউস*ও আছে কাঞ্চিতে। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের সন্নিকটে শহরের প্রাণকেন্দ্রে প্রাইভেট হোটেল—*Raja's L*, Nellukkara St. D ১২৫-২০০; *Palava Palace*, Gandhi Rd, D ১৫০; *Sri Rama L*, 20 Nellukkara St, S ১০০ D ১৭৫ T ২২৫ A/c D ৩২৫ T ৪০০; বিপরীতে *Sri Krishna L* মান ও দামে ভীরামা তুল্য; *Town L* ছাড়াও বেশ কয়েকটি হোটেল ও ধরমশালা কাঞ্চিতে।

খাবার হোটেলও আছে নানান কাঞ্চির বাস ও রেল স্টেশনকে ঘিরে। *Kamaraj Rd*-এর *H Abhiram*-এ নিরামিষ, আর *New Madras Cafe* বা *Pandiyan Restaurant*-এ আমিষ আহার্যও মেলে।

থিরুকাঙ্কুন্ডম

কাঞ্চিপুরম থেকে ৪৯ কিমি দূরে চিঙ্গেলপুট-মহাবলী-পুরম পথে Thirukkazhukundam বা পক্ষীতীর্থম। চেম্বাই-ব্রিটি NH-45 ঘরে চিঙ্গেলপুট হয়ে চেম্বাইয়ের দূরত্ব ৭০ আর মহাবলীপুরম থেকে ১৬ কিমি। ৫৩৭টা খাড়া সিঁড়ি উঠে ১৬০ মি উঁচু ভেদাগিরি পাহাড় চূড়ায় পক্ষীতীর্থম মন্দির। বুদ্ধিধর্মী কান্তীও মেলে পাহাড় চড়তে। দেবতা শিব। আর প্রতিদিন দুপুরে (১১-৩০—১২-০০টায়) পুষা ও পুথিবি নামে ২টি চিল মন্দিরে এসে নৈবেদ্য গ্রহণ করে। কখনও কখনও ২টির বদলে ১টিকেও দেখা গেছে মন্দিরে আসতে। প্রবাদ, দুই খষি চিলের রূপ ধরে কান্তীতে স্নান সেয়ে এখানে লাঞ্চ করে উড়ে যায় রামেশ্বরমে। দ্বিমতও আছে প্রবাদে। পাহাড়তলিতে ছোট শহর, শিব মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন

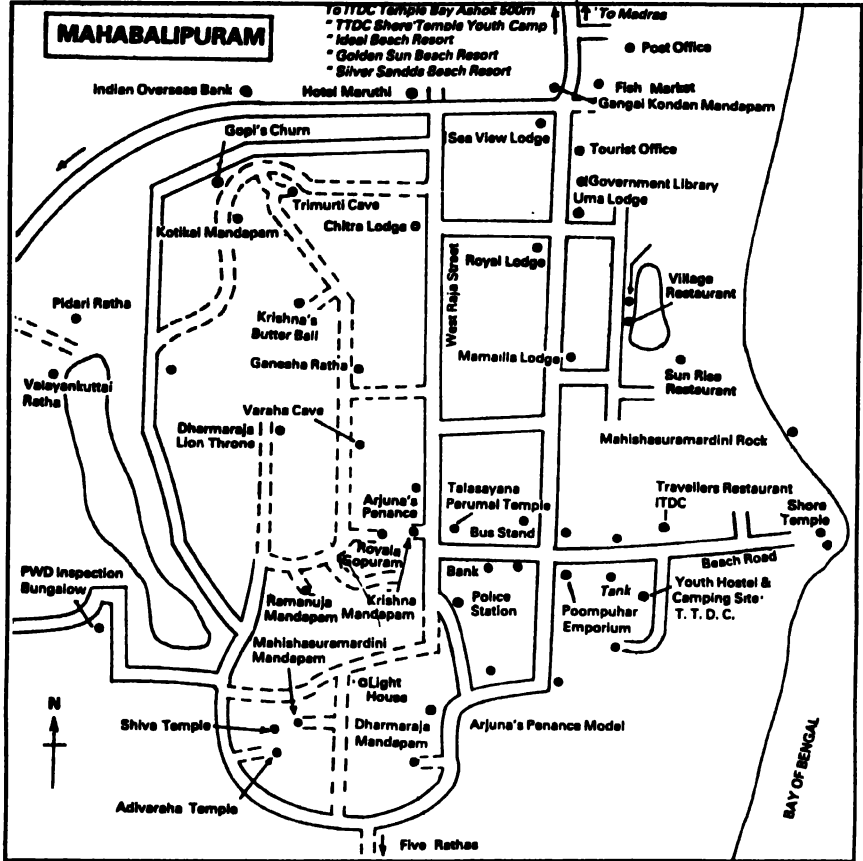
পায়ে পায়ে। উৎসাহীরা জিজির অনুকরণে বিজয়নগরের পলাতক রাজা তিশ্মু রায়ের তৈরি দুর্গটিও দেখে নিতে পারেন চেম্বাই-ব্রিটি পথের চিঙ্গেলপুটে।

মামান্নাপুরম/মহাবলীপুরম

সাত প্যাগোডার শহর মহাবলীপুরম আজ হয়েছে মামান্নাপুরম। প্রবাদ, বামন অবতার-রূপী বিষ্ণু যে অসুরকে জয় করেছিলেন সেই মহাবলী অসুরের নামে নাম হয়েছে জায়গার। তবে দ্বিমতে, পত্নুবরাজনরসিংহ বর্মন ১ম (৬৩০-৬৬৮ খ্রি) ছিলেন মহামন্ন। আর মহামন্ন থেকে নাম হয়ে থাকবে, মহামন্নপুরম—কালে কালে *মামান্নাপুরম*। পাহাড় কেটে বঙ্গোপসাগরের বুকে পত্নুবরাজনরসিংহ বর্মন ১ম ও নরসিংহ বর্মন ২য় (৭০০-৭২৮)-র কালে গড়া গুহা-মন্দির, রথের আদলে মনোলিখিক পঞ্চপাণ্ডব রথ, পাহাড়ের গায়ে ব্যাস-রিলিফ ভাস্কর্য, অভিনব বিন্যাসের শোর টেম্পল—পত্নুবরাজাদের অবিনশ্বর শিল্পসৃষ্টি দেশ-দেশান্তর থেকে পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে। সারা দক্ষিণে যখন মন্দির স্থাপত্যে দেবদেবীর প্রভাব—মহাবলীতে দেখানে বৈচিত্র্য ঘটেছে তদানীন্তন সমাজজীবন মূর্ত হয়ে। প্রাচীন মন্দির শিল্পের গোড়াপত্তনও এই মহাবলীতে। অতীতে বন্দরনগরীর সাথে দ্বিতীয় রাজধানীও (৪৫০-৯০০খ্রি) গড়ে ওঠে পত্নুবরাজাদের মহাবলীতে। ৭-১০ শতকে আরব, গ্রিক ও ফিনিশিয় বণিকদের বাণিজ্যও ছিল মহাবলীর সাথে। তবে পত্নুবরাজাদের জন্ম ইতিহাস যেমন কিংবদন্তীর গাথা তেমনই মহাবলীও দীর্ঘকাল লোকচক্ষুর অগাচরে থেকে নতুন করে আবিষ্কার হয় ১৮ শতকের শেষে। তবে জৈন ছিলেন অতীতে পত্নুব রাজবংশ। মহেন্দ্রবর্মন ১ম (৬০০-৬৩০ খ্রি) জৈন থেকে শৈব হলেন। তারই প্রতিফলন মেলে উত্তরকালের শিব ও বিষ্ণু মন্দিরে।

| | | |
|------------|-------------------------|----------------------------|
| Area | : 8 sq km | ব্যাস-রিলিফ প্রথায় |
| Population | : 12000 (1991C) | ২৭×৯ মিটারের এক |
| Altitude | : Sea level | পাহাড় কূঁদে তিমি মাছের |
| Climate | : Summer 36.6°-22.1°C | আকারে রূপ পেয়েছে |
| | : Winter 30.5°-19.8°C | অর্জনের তপস্যা। বিশ্বের |
| Rainfall | : 32.5 cms average | বৃহত্তম এই ব্যাস-রিলিফ |
| Season | : Through out the year. | ৬৩০-৬৭০এ তৈরি। |
| | | বিশ্ব-ব্রহ্মাও রূপ পেয়েছে |
| | | অনন্য এই ভাস্কর্যে। |

আত্মীয় নিধনের তাপে শিবকে ছুঁত করে এক পায়ে দাঁড়িয়ে বর মাগছেন অর্জুন, মহাপ্রাণনে নোয়ার বিশ্ব উজ্জায়, ভগীরথের গঙ্গা আনয়ন—শিবের জটা থেকে গঙ্গার অবরোধ, পঞ্চতন্ত্রের আখ্যানও মূর্ত হয়েছে নিশ্চিত ভাস্কর্যে। বরাহ মণ্ডপটিও উল্লেখ্য; বিষ্ণু এখানে বরাহ ও বামন অবতারে রূপ নিয়েছেন। আর আছেন—দেবী গজলক্ষ্মী ও দুর্গা।



Festivals round the year in Tamilnadu :

Dance Festival in Jan-Feb at Mamallapuram
Pongal Festival in all Major Centres, January
Tea and Tourism Festival, Nilgiris, January
Natyanjali Festival at Chidambaram, March/April
Chithirai Festival at Madurai, April/May
Summer Festival at Ooty, Kodaikanal and Yercaud, May
Elephant Festival, Mudumalai, May
Mango Festival, Dharmapuri, June
Sara Festival at Courtallam, July
Cape Festival, Kanniyakumari, Aug/September
Tiruppavai Festival, Dec/January

আর রয়েছে দ্রাবিড়ীয় মন্দিরশৈলীর আদিরূপ—এক এক ঋণ পাথর কুঁড়ে ৭ শতকে তৈরি বুদ্ধিষ্ট মনাস্থি বা বিহারের আদলে মনোবিধিক রথ। নাম তাদের—দ্রৌপদী

রথ, অর্জুন রথ, ধর্মরাজ রথ, ভীম রথ, শ্রীকৃষ্ণ রথ। মহাভারতের পাণ্ডবদের নামে নাম। নামে পঞ্চরথ হলেও আসলে রথের সংখ্যা আট। প্রথমটি বাংলার চালাঘরের মতো দেখতে, তার নাম দ্রৌপদী রথ। ভেতরে মূর্তি হয়েছে দ্রৌপদীর। ঘিমতে দুর্গার মূর্তি নাকি এটি। আর আছে ইন্দ্র, দুর্গা ও শিবের বাহন—হাতি, সিংহ ও নন্দী রথের পশ্চিমে। দ্বিতীয়টি বৌদ্ধ বিহারের চণ্ডে অভূন রথ। পেছনের দেওয়ালে ইন্দ্রের মূর্তি। তৃতীয়টি ভীমরথ। ৪৮ x ২৫ ফুটের বৃহত্তম রথটির উচ্চতা ২৬ ফুট। সর্ব দক্ষিণে আকারে বড় হলেও অভূন রথেরই মতো দেখতে ত্রিতলিকা পিরামিডধর্মী ধর্মরাজ রথ। দ্বিতীয় সারিতে অভূনের কাছে বৌদ্ধ চৈতোর শৈলীতে স্নাপ পেয়েছে নকুল ও সহদেব রথ।

যদিও খ্যাত সাত প্যাগোডার দেশ বলে—তবে আজকের পর্যটকদের জন্য প্যাগোডা রয়েছে মাত্র এক। বাকি

ছাটিকে গ্রাস করেছে সমুদ্র। সমুদ্রবেলাতে ৭ শতকের শেষভাগে পল্লবরাজ্য রাজ্যসিংহের তৈরি দ্বাবিড়ীয় শৈলীতে ধর্মরাজ রথের আসিকে পাহাড় কেটে পিরামিডের মতো ৫ তলা শোর টেম্পল। ইট-কাঠ-চুন-সুরকির কোনও ব্যবহার নেই। পল্লবরাজ্যের শেষ কীর্তিও এই মন্দির। মন্দিরে দেবতা রয়েছেন—পূবমুখী ১৬ দিকবিশিষ্ট গ্রানাইট পাথরে লয়ের দেবতা লিঙ্গে শিব ও সর্পশয্যা নিদ্রামগ্ন ২.৫ মিটারের স্থিতির দেবতা বিষ্ণু। বিষ্ণুর পিছনে দেবী দুর্গা। পাহাড় কেটে তৈরি বাড়ির সারি ও পৌরাণিক দেব-দেবীরা ভাস্কর্যের অনুপম নিদর্শন হয়ে মন্দির প্রহরায় রত। তবে, অনেক কিছুই আজ বালি আর নোনা হাওয়ায় লোপ পেয়েছে। গত কিছুকাল ওয়ার্ল্ড হেরিটেজ তালিকাভুক্ত হয়েছে শোর টেম্পল।

৯টি মণ্ডপম অর্থাৎ সুন্দর ভাস্কর্যমণ্ডিত গুহা মন্দিরও হয়েছে পাহাড় কেটে মহাবলীতে। ২টি তার অসম্পূর্ণ। প্রাচীনতম কৃষ্ণ মন্দিরটি এদের মধ্যে সুন্দরতম আর বৃহত্তমও বটে। কারুকার্যময় কৃষ্ণ মণ্ডপে শ্রীকৃষ্ণের জীবন আখ্যানের সাথে ইন্দ্রর রোধানল থেকে গোপ-গৌণীদের রক্ষার্থে গোবর্ধন পাহাড় তোলার দৃশ্যও রূপ পেয়েছে। মহিষাসুর-মর্দিনী মণ্ডপের কারুকার্যও অনবদ্য—শিল্পসুখমা অতুলনীয়। ভগবান বিষ্ণু ও মহিষাসুর বধে সিংহপৃষ্ঠে দেবী দুর্গার বিক্রমকণ্ডে রূপ দেওয়া হয়েছে। গণেশ মন্দিরটিও একখণ্ড পাথর কুঁড়ে তৈরি। পূজা হয় আজও। অদূরে দেবতার অসীম ক্ষমতার নিদর্শন মিলবে শ্রীকৃষ্ণের ব্রেকফাস্টের একবিন্দু মাখন ব্যালাঙ্গি রকে।

এতসব থাকলেও মহাবলী পুরমের সাগরবেলার আকর্ষণও অন্যরকম। নীল সমুদ্রের ফেনিল ঢেউ অবিরাম আছড়ে পড়ছে শোর টেম্পল-এর দেওয়ালে। শোর টেম্পলের উত্তরে জেলেদের ঘাঁটি—জেলে নৌকার আনা-গোনা। পরিবেশ পুতিগন্ধময়। তবে, আরও উত্তরে বা দক্ষিণে গিয়ে পায় বেড়াবার নোয়ারম সাগরবেলা।

এমনকি বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে স্থূল অবস্থান পট্টারে শিল্পীদের হাতে পাথর খোদাই-ভাস্কর্যও দেখে নেওয়া যায় মসল ছাড়া ৯—১৩-০০, আবার ১৪—১৬-০০টায়। লাইট হাউসও হয়েছে, ১৪—১৬-০০টায় অভিযান করে দেখে নেওয়া যায় মহাবলীর চারপাশ। আরও দক্ষিণে পারমাণবিকশক্তি গবেষণা কেন্দ্র বন্যেছে সমুদ্রতটে। গ্রামের পথে মহাবলীর নবতম আকর্ষণ জানুয়ারির ১৬ থেকে শুরু হয়ে ১ মাস ব্যাপী পর্যটক শ্রিয় ড্যান ফেস্টিভ্যাল। নানান ধর্মী ক্লাসিক্যাল নৃত্য ও সঙ্গীতের আসর বসে। সারা ভারত থেকে শিল্পী আসেন আর লক্ষ আসেন দেশ-দেশান্তর থেকে ফেস্টিভ্যালে।

রাজ্য পর্যটনের টুরিস্ট অফিসও বসেছে। প্রতিদিন ১০—১৭-৩০টায় খোলা। ব্যাঙ্কের শাখাও পৌছেছে মহাবলীতে। আর হোটেল-রেস্তোরাঁ, বাজারঘাট, দোকান-পাটও আছে পর্যটকদের স্বপ্নরাজ্য হোট্টে শহর, নিরান-নির্জন

মহাবলীতে। নির্ভুতভাবে দেখতে গাইড সঙ্গে নেওয়া ভাল। ভারত সরকারের প্রদ্রুতত্ব বিভাগ, মহাবলী পুরম থেকে নিখরচায় গাইডও মেলে।

শহর ছোট হলেও পর্যটক আকর্ষণে দক্ষিণ ভারতে অনন্য আজ মহাবলী পুরম। বৃহস্পতি বাস যাচ্ছে মহাবলী পুরম থেকে ৫৮ কিমি দূরের চেন্নাই। দুটি ভিন্ন পথে বাস চলে—সাগরটট ও চিসেলপুট হয়ে। সময় নেয় ২-২½ ঘণ্টা। এপথে বাস চলে ভোর ৪-৩০—২০-০০টায়। ১৪৪/A-B-D-K রুটের বাস সোজা পথে যাচ্ছে। ১১৯/C, ১১৯/A রুটের বাস যাচ্ছে ঘুরপথে কোভেলও হয়ে। শেয়ার ট্যাক্সিও চলে চেন্নাই থেকে মহাবলীতে। বাস যাচ্ছে ঘণ্টা আড়াইয়ে দিনে পাঁচ পণ্ডিচেরীও। আবার চিসেলপুট বাকল করে পণ্ডিচেরী চলা গেলেও উচিত হবে সরাসরি বাসের যাত্রী হওয়া। চিসেলপুটেরও বাস মেলে মহম্মদ ১৬ কিমি দূরের পক্ষীতীর্থম হয়ে যাচ্ছে বাস। নিকটতম রেল স্টেশনও ৩০ কিমি দূরে Chennai-Chengalpattu-Kancheepuram-Arakkonam শাখায় চিসেলপুট। ট্রেন যাচ্ছে ১৭-২৪, ১৭-৩৩, ১৭-৫৫, ১৮-০৫এ চেন্নাই বাঁচ থেকে ২½ ঘণ্টায় চিসেলপুটে। চলার পথে বিজয়নগর রাজ্যের বিম্বস্ত দুর্গটিও দেখে চলা যায় চিসেলপুটে। বাস যাচ্ছে ৬৫ কিমি দূরে কাঞ্চি পুরম ছাড়াও তেমনোর, ব্যাঙ্গলোর, তিরুপতি, কন্যাকুমারীও মহাবলী থেকে।

আবার চেন্নাই থেকে ITDC বা TTDC-র প্যাকেজ ট্যুরে মহাবলী পুরম বা কাঞ্চি, পক্ষীতীর্থম ও মহাবলী পুরম একইদিনে দেখে নেওয়া যেতে পারে। তবে, প্যাকেজ ট্যুরের সময় স্বল্পতার মহাবলী পুরম দেখে সারায় ঘাটতি থাকে। সকাল ও সন্ধ্যা মাধুর্য বাড়ে মহাবলী। চম্ভালোকেও মহাবলীর মাধুর্য অতুলনীয়। তাই উচিত হবে এককভাবে চেন্নাই ব্রডওয়ে থেকে ১৮৮ রুটের বাসে এসে একরাত মহাবলীতে থেকে পণ্ডিচেরী বা নতুনর সন্ধান এগিয়ে চলা।



থাকার জন্য হোটেলও আছে নানান Mamallapuram, STD 04114, PC-603104-তে। দিনভর যাত্রীর আনাগোনা ঘটে চললেও দিনান্তে মহাবলীর নির্জনতা রমণীয়। ITDC-র *Temple Bay Ashok Beach Resort, ৩ 42251, B2, A/c S ২০০০, D ২৭০০ সুইট ২৯০০, মে-জুলাই মাসে রিবেট মেলে। TTDC-র H Tamilnadu-Mamallapuram (Beach Resort Complex), next to Petrol Bunk, ৩ 42235, B3, DAB ৩৫০ কটেজ ৫০০ A/c D ৭০০ সুইট ১২০০; কেবল রবিবার ১২—১৮-০০টায় রিবেট মূল্যে ঘর মেলে। এদেরই H Tamilnadu-II, near Shore Temple, ৩ 42287, কটেজ ২৫০ ৩০০ A/c ৪৫০ ডর্মি বেড ৪০ ৫০ অতিরিক্তে TV মেলে। *Silver Sands Beach Resort, ৩ 42228, B3, কন্টিনেন্টাল গ্রানে মে-সেপ্টেম্বরে S ১০০০ D ১৪০০ সুইট ২২০০, অক্টোবর-নভেম্বর ও ফেব্রুয়ারি-এপ্রিল D ১৮০০ সুইট ২৭০০, ডিসেম্বর-জানুয়ারি D ১৮০০ সুইট ২৭০০; এদেরই Silver Inn, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ ইকনমিক হাটও মেলে; Golden Sun H and Beach Resort, 59 Kovelang Rd-4, ৩ 42245, B3, SAB ৩৭৫ DAB ৪৭৫ A/c S ৫২৫ D ৬৫০ সুইট ৯৭৫; Ideal Beach Resort, ৩ 42240, B3; TTDC-র ৪২ বেডের Youth Hostel-এ বেড ৪০, ছেলে ও মেয়েদের পৃথক পৃথক ঘর, কটেজও মেলে এদের।

আর আছে *Jawaharlal Nehru R H (Holiday Home)*,
 ৩ 42208.

লেকের পাড়ে *Surya H*, কটেজধর্মী ঘর—বিতলে ৪৫০
 একতলায় ৪০০; *Mamulla Bhuvan*, opp Bus Stand, DAB
 ১৭৫-৩২৫ A/c D ৪০০; লাগোয়া একই মালিকানায় *Mamulla*
L, DCB ১২৫-১৫০ DAB ১৫০-২২৫। আর আছে অতি
 সাধারণ সাজে—*Pallava L*, *Uma L*, *Kavitha L*, *Suresh L*,
Tina Blue View L, *Merina L*, *Royal L*, *Chitra L*, *Magesh*
Tourist L, *Sea View L*, এদের কাছে ১২৫-২৫০ টাকায় ডাবল
 বেডের ঘর মেলে। এছাড়াও *S W Deptt's Holiday Home*, ২টি
 ধরমশালা, *PWD IB* ও গ্রামে প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে
 ভাড়ায় মহাবলীপুরে। তেমনই পথে East Coast Rd-এ—
Buhari Blue Lagoon H, ৩ 4926125-এ S ২২৫ D ২৭৫
 ৩২৫ A/c D ৪৫০-৬০০ মেলে। আর গ্রামে হয়েছে *Mamulla*
Bhuvan Annexe, ৩ 42260, DAB ২৭৫ A/c ৪০০।

খাবার হোটেলও আছে নানান মহাবলীতে। সি-ফিস, গলদা
 চিংড়ি, কাকড়ার নানান মেনু। স্বাদে অতুলনীয় হলেও দাম
 মানানসই। তবুও যেন, স্বস্তরচে *মামালা ভবনে* থাকা ও দক্ষিণী
 নিরামিষ আহার্য দুইয়েরই ব্যবস্থা চলনসই। তেমনই শোর টেম্পল
 রোডে *Rose Garden* বা এরই পিছনে *Sun Rise*-এও সস্তায়
 আহার্য মেলে। লেকের পথে *Village Restaurant* ও *Surya Res-*
taurant দু'টিরও আহার্যে যথেষ্ট সুনাম। আর সাগরতটে *Tina*
Blue View, *Sea Queen Restaurant* সি-ফিসে যথেষ্ট পপুলার।

আর একান্তই উচিত হবে আরকরূপে মহাবলীর
 ভাস্কর্যকে সঙ্গী করা। সাজিমাটির নানান দেবমূর্তি ও
 দেবমন্দির বিকোচ্ছে বাস স্ট্যান্ড থেকে পাঁচ-রাস্তার মাঝের
 দোকানপাটে। ঠিক তেমনই মেলে পাথরে নানান কার্ভিং,
 শামুক ও কচ্ছপখালের রকমারি আভরণ ছাড়াও নানান
 সস্তার মহাবলীতে।

মহাবলীপুরম থেকে ৫ কিমি উত্তরে পঞ্চরথেরই ডুলা
 টাইগার রিজার্ভ। অতীতে রাজ পরিবারের বিনোদনের আসর
 বসত। আর মহাবলী থেকে ১৪, চেন্নাই থেকে ৪০ কিমি
 দূরে মহাবলী-চেন্নাই পথে হয়েছে ক্রোকোডাইল ব্যাঙ্ক।
 প্রজনন ঘটিয়ে সংখ্যা বাড়ানো হচ্ছে কুমিরের। শাবক থেকে
 নানান বয়সের নানান প্রজাতির (দুর্লভ ছয় সহ) ৫০০০
 কুমির নিয়ে এই ব্যাঙ্ক। এটিও World Wildlife Fund for
 Nature-এর সহযোগিতায় সর্প উদ্যানের সস্তা রোমুলাস
 ওয়াইটকারের সৃষ্টি। ৮-৩০—১৭-৩০টায় দর্শন—টিকিট
 ৪ শিশু ২ করে।

আবার ২০ কিমি দূরে ধীবরদের বাস কোভেলঙ গ্রামের
 পর্যটক আকর্ষণও কম নয়। সমুদ্রসৈকতটিও সুন্দর।
 চড়ইভাতির মনোরম পরিবেশ। আর আছে ক্যাথলিক চার্চ,
 মসজিদ ও অতীতের দুর্গ। Taj Group-এর হোটেল **Fish-*
erman's Cove, Covelong Beach-603112, ৩ (04114)
 42304, A/c S ৯০-১০৫ D ৯৫-১১৫ সুইট ১২০-১৩৫
 US\$ বসেছে দুর্গে। সাধারণ লজও আছে কোভেলঙ-এ।
 কোভেলঙ লাগোয়া উত্তরে মুথুকাদু (Muthukadu) ব্যাক

ওয়াটারে স্ট্র লেকে বোটিংও করা যেতে পারে। TTDC-
 র ব্যবস্থাপনায় বোট হাউস হয়েছে।

আর হয়েছে সাফারি পার্ক তথা মনোরঞ্জনর নানান
 পসরা নিয়ে শহরমুখী ইস্ট কোস্ট রোডে চেন্নাই শহরের
 নবতম আকর্ষণ VGP Golden Beach. সুন্দর সাগরবেলায়
 বিস্তার প্রাচুর্যের সাথে ঘটনার ঘনঘটায় পরিবেশ মনোরম
 হলেও কেন যেন ছন্দের পতন ঘটেছে। চলচ্চিত্রের নানান
 সৃষ্টি হচ্ছে সাফারি পার্ক তথা কৃত্রিমতায় দুষ্ট গোল্ডেন বীচে।
 তবে, অভিনবত্ব আছে VGP Golden Beach Resorts,
 ৩ (044) 4926445-এর জাহাজী বাড়িতে। কনকটটে
 ট্রারে বেড়িয়েও আনে মহাবলী সফরে কোভেলঙ ছাড়া ব্রী।

এছাড়াও সময় আর সুযোগ পেলে আড্ডিয়ার পেরিয়ে
 ১১ কিমি দূরের ইলিয়ট বীচটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়।
 মানের উপযোগী এর সাগরবেলাটি খুবই সুন্দর। বাস
 সংযোগ রয়েছে শহর থেকে। আবার উৎসাহীরা এম্মোর
 বীচও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ধীবরদের বাস এম্মোরে।
 বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে। আর রয়েছে ৬০ কিমি দূরে
 পৃথী রিজার্ভার বা সত্যমূর্তি সাগর। পানীয় জল আসছে
 শহরে এই পৃথী থেকে। পারিপার্শ্বিক পরিবেশ সুন্দর। আবার
 ডাচ ফোর্টের ধ্বংসাবশেষ ও সাগরবেলায় জন্য খ্যাত ৬১
 কিমি দূরের পুলিক্যাটও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

ভেদানথঙ্গল পক্ষীআলয়

চেন্নাই-ত্রিচি-কোট্টায়াম জাতীয় সড়কে—চেন্নাই থেকে ৭৫
 কিমি দক্ষিণে যেতে ডানহাতি পথে আরও ১১ কিমি গিয়ে
 পক্ষীশ্রেমিকদের স্বর্গ ভেদানথঙ্গল পক্ষীআলয়। কাঞ্চির দূরত্ব ৬১,
 ভিলুপুরম ৯৪ আর ত্রিচি ২৫২ কিমি। চেন্নাই থেকে সরাসরি বা
 মহাবলীপুরম বেড়িয়ে কান্ধি হয়েও পক্ষীআলয় যাওয়া চলে বাসে।
 আবার এগমোর থেকে দক্ষিণমুখী যেকোনও ট্রেনে ১২ ঘটায় ৫৬
 কিমি দূরে টিসেলপুট পৌঁছে বাসে ভেদানথঙ্গল গিয়ে ভাড়ার
 গাড়িতে বন দপ্তরের রেন্ট হাউসে চলা যেতে পারে।

ভারতের প্রাচীনতম (১৮৫৮) পক্ষীআলয় ভেদানথঙ্গল।
 ৩০ হেক্টর ব্যাপ্ত পক্ষীআলয়ের লেককে ঘিরে বর্বার পর প্রতি
 বছরই হাজারো রকমের জলচর পাখি এসে নীড় বাঁধে
 সাধীর খোঁজে। হেরন, আইবিস, পেলিক্যান, স্পুনবিল,
 স্ট্যারক, কারমরনট, ইগ্রেট, গ্রীভ ছাড়াও নানান প্রজাতির
 পাখি আসে উষ্ণ অঞ্চল থেকে। বেড়াবার মনোরম সময়
 নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারির সকাল বা বিকাল (১৫—১৮-
 ০০টায়)। তবে, ডিসেম্বর-জানুয়ারিতে পাখির সংখ্যা বাড়ে
 আধা লক্ষে। দিনান্তে কুলায় ফেরা ও রাতের খাবারের
 অন্বেষণে যাওয়ার দৃষ্টিনন্দন দৃশ্য দেখতে মেলে। পক্ষীআলয়ে
 আগ্নেয়াস্ত্র সঙ্গে নেওয়া মানা, নীড়ের কাছে যাওয়াও নিষেধ;
 রেন্ট হাউস বা অবজারভেটরি টাওয়ার থেকে টেলিস্কোপে
 দেখতে হয়। বাইনোকুলার সঙ্গে থাকা ভাল।

থাকার জন্য *Vedanthangal FRH* এ D ১৫০ ডর্মি বেড
 ৪০; বুকিং: The Forest in Charge, Vedanthangal R H বা

Wildlife Warden, Forest Department, 50 Forth Main Rd, Gandhi Nagar, Adyar, Chennai-600020, ☎ 413947. আর হয়েছে TTDC-র Hotel Tamilnadu-Vedanthangul.

ভেল্লোর

চেন্নাই সেন্ট্রাল থেকে ১৩০ কিমি দূরে চেন্নাই-ব্যাঙ্গালোর ব্রডগেজ রেলপথে কাটপাদী স্টেশন। গুয়াহাটি/হাওড়া-ব্যাঙ্গালোর/কোচি/তিরুভনন্তপুরম এক্স হাড়াও চেন্নাই সেন্ট্রাল থেকে ব্রডগেজে নানান ট্রেন যাচ্ছে কাটপাদী হয়ে তিরুভনন্তপুরম/কন্যাকুমারী/ম্যাঙ্গালোর/কোচি/মাদুরাই/তিরুপতি/মুম্বাই দিন-রাত্রি ভ্রূড়ে। কাটপাদী থেকে কাটপাদী-ভিন্নুপুরম মিটারগেজ শাখা রেলে ৯ কিমি যেতে ভেল্লোর টাউন, আরও ১ কিমি গিয়ে ভেল্লোর ক্যান্ট। কাটপাদী থেকে এক্স ট্রেন যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় চেন্নাই, ৪ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোর। কাটপাদী রেল স্টেশন থেকে বাস, ট্যাক্সি, অটো যাচ্ছে ভেল্লোর শহরে। উচিতও হবে রেলকে পরিহার করে কাটপাদী থেকে বাসেই মিনিট পনেরায় ভেল্লোর পৌঁছে যাওয়া। আর রেল যাচ্ছে এক্স ও প্যাসেঞ্জার—তিরুপতি ১০৪, তিরুভনামালাই ৮৪, ভিন্নুপুরম ১৫২ কিমি ভেল্লোর ক্যান্ট থেকে।

আর PTC বাস চেন্নাই ব্রডওয়ে বাসস্ট্যান্ড থেকে (১০২ রুটের) ঘণ্টায় ঘণ্টায় ছেড়ে কাঞ্চি হয়ে ৩ ঘণ্টায় এবং Non-Stop A/c বাসও যাচ্ছে ভেল্লোরে। ঘণ্টায় ঘণ্টায় ছেড়ে ৫½ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোর ২৩৪ কিমি, ২ ঘণ্টা অন্তর ৫৬ কিমি দূরের কাঞ্চি ২½ ঘণ্টায় হাড়াও তাল্লোর, মহাবলী, ভিন্নুপুরম, উট্টা, পণ্ডিচেরী, তিরুপতিও বাস মেলে ভেল্লোর থেকে। ব্রিটি (104, 139, 280), মাদুরাই (139) যাচ্ছে নানান বাস ভেল্লোর থেকেই।

উত্তর আর্কটের সদর ভেল্লোর। পালর নদীতটে নানান উত্থান-পতনের সাক্ষী গ্রানাইট পাথরে গড়া ভেল্লোরের দুর্গটির ঐতিহাসিক গুরুত্ব উল্লেখ্য। ১৬ শতকে বিজয়নগর রাজাদের সামন্তরাজা সিন্ধা বোম্বী নায়কের তৈরি। একে একে আর্কট রাজ ও বিজাপুরের আদিলশাহীদের দখলে যায় দুর্গ। আর ১৬৭৬-এ মারাঠারাও দখল করে দুর্গ। শতাধিক বছরের দখলখারী মারাঠাদের হাতিয়ে ১৭৬০-এ দিল্লী থেকে এসে দখল নেয় দুর্গের দায়দ খান। আর টিপু পরাভবে ১৭৯৯-এ ব্রিটিশের দখলে যায় দুর্গ। টিপুর ছেলে ও মেয়েদের ব্রিটিশ বন্দীও করে রাখে এই দুর্গে। এমনকি ১৮৫৭-র প্রথম স্বাধীনতা সংগ্রামের স্মৃতিও জড়িয়ে রয়েছে গভীর পরিখায় ঘেরা দুর্গের সাথে। ভিতরে দ্বিতল মহল। তবে, আজ্ঞা নানান বাড়িঘর হয়েছে, অফিস বসেছে দুর্গে। মিউজিয়ামটি সদাই বন্ধ।

দুর্গেরই সমকালে (১৫৬৬) তৈরি জলাকট্টেশ্বর শিব মন্দির—এর কার্ণাকার্বও সুন্দর। বিজয়নগরী স্থাপত্যের অনুপম নিদর্শন এর পিলার, ছাদ ও কার্ভিং। তবে আদিলশাহীদের হানায় দেবতা দুর্গে স্থানান্তরিত হলে মন্দিরটি গ্যারিসনের ভূমিকা নেয়। দেবতার অবর্তমানে মন্দিরের দরজা সবার জন্য খোলা।

তবুও যেন ভেল্লোর তার সি এস সি হাসপাতালের জন্য

অধিকতর খ্যাত। ১৯০০ খ্রিস্টাব্দে আমেরিকান মিশনারি Dr Ida Schudder-এর গড়া খ্রিস্টিয়ান মেডিক্যাল কলেজ ও হাসপাতালের চিকিৎসা বিজ্ঞান অনেক উন্নতমানের। সারা বিশ্বের সহযোগিতায় মিশনারিদের পরিচালিত হাসপাতালে দুরারোগ্য ব্যাধি থেকে আরোগ্য পেতে রুগী আসছেন দেশ-দেশান্তর থেকে। বাড়ির পর বাড়ি, তিনশ'রও অধিক ডাক্তার, সহস্রাধিক ছাত্র আর বেড কয়েক সহস্র।

পায়ে পায়ে অতীতের ব্রিটিশ কবরখানাটি বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে ভেল্লোরে। চার্চ হয়েছে সমাধিতে। আর হয়েছে দুর্গে বন্দী থাকাকালীন (১৮০৬) টিপুর দ্বিতীয় পুত্রের ভেল্লোর বিদ্রোহের শহীদ স্মারক। শহরের অপর প্রান্তে মেইন বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া গভর্নমেন্ট মিউজিয়াম (৯—১৭-০০)টিও আর এক দ্রষ্টব্য ভেল্লোরে।



হাসপাতালের জন্য যেমন তামিলী প্রভাব কাটিয়ে মিশ্র প্রভাব গড়ে উঠেছে Vellore, STD-0416এ ঠিক তেমনই হোটেলও হয়েছে নানান—বিবিধ মানের বিভিন্ন দামের। Municipal Travellers' Bungalow, অব্: Commissioner, Municipality, Vellore. শহর ও হাসপাতাল দুই-ই থেকে ১ কিমি দূরে H River View, New Katpadi Rd, Vellore-632004, ☎ 25060, S ১৫০ D ২৫০, A/c S ৩০০ D ৪৫০। আর আছে—India L, opp Clock Tower, SAB ৬০ DAB ১০০; Raja L, SAB ৮০ DAB ১৫০; H Sushil, near Hospital, SAB ৮০ DAB ১২৫-১৭৫ A/c D ৩০০। সাধারণ সাজে হাসপাতালের কাছে—H Paradise, H Best, Palace L, H Sangeet, Triveni L, Sekar L, Santhi L. বাস স্ট্যান্ডের কাছে—Mayura L, 85 Babu Rao St, S ৮০ D ১৫০ T ১৭৫; Salai H, B R St, S ৬৫ D ১২৫; H Arun, Luxmi L, Venus L, Taj International Deluxe L, 21 Fillerbed Rd, ☎ 23061; H Ganga, Officers' Line, ☎ 23060; Vasantha Vihar, Officers' Line, ☎ 21496; Radha L, Bangalore Rd, ☎ 23065; H Gokul, Arcot St, ☎ 22410; Brindavan L, Babu Rao St, ☎ 22406; Siva L, Officers Rd, ☎ 22396; হাড়াও নানান হোটেল ভেল্লোরে। এদের কাছে S ৪৫-১২৫ D ৬৫-১৫০ টাকায় মেলে। আর নিরামিষ আহার্যের জন্য বাজারের বিপরীতে India L, Raj Cafe ও আমিষ আহার্যের জন্য H Sufire দেখা যেতে পারে। তেমনই Ida Schudder Rd-এর H Best-এরও যথেষ্ট প্রাপ্তি আমিষ আহার্যে। পাশেই H Geetha-র খ্যাতি মসলা পোসা ও নানান আহার্যে। আর চীনা ডিশের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে Gandhi Rd-এর Nanking Hotel-এ।

ভেল্লোরের ২৫ কিমি দূরে শিবতনয় কার্তিকেয় অর্থাৎ মূর্গা মন্দিরটি বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে বাসে ভেল্লোমাল্লাই গিয়ে। পাহাড়চূড়ায় মন্দির হয়েছে এককথও পাথর কুঁড়ে। ইচ্ছাপূরণের জন্য টিল বাঁধার প্রথাও আছে মন্দিরে। পাহাড়ের নিচুতেও মন্দির হয়েছে ভেল্লোমাল্লাই-এ।

ভেল্লোরের ১২ কিমি দূরে ঝগ্গাগিরিতেও মন্দির হয়েছে কার্তিকেয়র। ১৪ শতকে তৈরি প্রাচীন এই মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

তেমনই ভেল্লোরের অদূরে পূর্বঘাটে ১০০০ মি উঁচু এলাগিরি পাহাড়ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। সুন্দর প্রকৃতি ও জলবায়ুর জন্য এলাগিরির প্রসিদ্ধি। আর আছে মুরুগান মন্দির এলাগিরি পাহাড়ে।

তিরুভনামালাই

কাটপাদী-ভেল্লোর-ভিন্নপুৰম রেলপথে তিরুভনামালাই। কাটপাদী থেকে ৩-৫০এ তিরুপতি-পণ্ডিচেরী প্যা, ৬-৪০এ তিরুপতি-ভিন্নপুৰম প্যা, ১৬-৫০এ কাটপাদী-ভিন্নপুৰম প্যা, ১৮-৫০এ তিরুপতি-মাদুরাই এক ট্রেন যাচ্ছে ভেল্লোর হয়ে ২২ ঘণ্টায় তিরুভনামালাই পৌঁছে ৪২ ঘণ্টায় ভিন্নপুৰমে। আর তিরুভনামালাই থেকে ৭-০০টায় ছেড়ে ভিন্নপুৰম হয়ে পণ্ডিচেরী যাচ্ছে ১০-২৫এ তিরুপতি-ভেল্লোর-পণ্ডিচেরী প্যাসেঞ্জার। ভিন্নপুৰম থেকে ৫৬ কিমি পশ্চিম আর ভেল্লোরের ৮২ কিমি দক্ষিণে তিরুভনামালাই। বাসও চলে এপথে। আর পণ্ডিচেরী ভ্রমণার্থীদের উচিত হবে সরাসরি ট্রেনে বা ভিন্নপুৰম পৌঁছে ৩৮ কিমি বাসে পণ্ডিচেরী চলা।

পাহাড়ের নামে নাম তিরুভনামালাই। আর পাহাড়-তলিতে ২৫ একর জমি জুড়ে শতাব্দিক মন্দিরের কমপ্লেক্স তেজোলিন্গম—দক্ষিণ ভারতের বৃহত্তম মন্দির। পঞ্চভূতের এক: তেজ অর্থাৎ অগ্নিরূপে পঞ্জিত হন দেবতা শিব অরুণ-চলেশ্বর মন্দিরে। ৬৬ মি উঁচু ১৩ তলার মণ্ডপম বা গোপুরমটি সুন্দর কারুকার্যময়। ১০০০ পিলারের অঙ্গনটিও সুন্দর। কার্তিক পূর্ণিমা (নভেম্বর-ডিসেম্বর) জাঁকালো *কার্তিগাই দীপম* উৎসব হয়। রমণ মহর্ষির স্মৃতি বিজড়িত আশ্রমটি তিরুভনামালাই-এর আর এক আকর্ষণ। মহর্ষি এখানে সমাধিস্থও রয়েছেন। তেমনই ১৪ কিমি পরিক্রমায় তিরুভনামালাই পাহাড়ে ১২ শিবলিঙ্গও দেখে নেওয়া যায়। যাত্রীদের থাকারও ব্যবস্থা মেলে আশ্রমে। আর আছে *Park H, Rajaram L, Aruna L, Devil, Murugan L, Ranga L, Trishul H, H Akash, Modern Cafe* ছাড়াও নানান হোটেল *Tiruvannamalai*-এ।

৩০ কিমি দূরে রিজার্ভ ফরেস্টের মাঝে সাখানুর ড্যামটির পারিপার্শ্বিক পরিবেশ নয়নাভিরাম। লাগোয়া পার্কটির পরিবেশও সুন্দর। সুইমিং পুলও হয়েছে পার্কে। আবার উৎসাহীরা বাসে বাসে ভিন্নপুৰমের ৪৩ কিমি পশ্চিমে সুন্দর ভান্ধবমণ্ডিত কৃষ্ণ মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন।

তিরুট্টানি

চেন্নাই-রেনিকুটা রেলপথে তিরুট্টানি স্টেশন। সেন্ট্রাল থেকে ৬-২৫এ সপ্তগিরি এক্স, ১৩-৫০এ চেন্নাই-তিরুপতি এক্স, ১৬-৩০এ চেন্নাই-তিরুপতি শতাব্দী এক্স, ১১-৪৫এ চেন্নাই-মুধাই এক্স আরাকোণাম/তিরুট্টানি হয়ে তিরুপতি/মুধাই-হয়। মহাশুব-তিরুপতি ফাস্ট প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে তিরুট্টানি হয়ে। চেন্নাই ৮৬ আর তিরুপতির দূরত্ব ৬৬ কিমি তিরুট্টানি থেকে। বাসও চলে এপথে।

রেলস্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে পাহাড়, আর পাহাড় চূড়ায় মন্দির। ৩৬৫টি ধাপ উঠে মন্দির, অর্থাৎ প্রতিটি ধাপ বছরের এক একটা দিনের প্রতিভূ। মন্দিরে ভগবান কার্তিকেয় উপাস্য দেবতা। প্রাক্তন রাষ্ট্রপতি সর্বপল্লী রাধাকৃষ্ণণের জন্ম তিরুট্টানিতে।

তিরুট্টানি থেকে ৬৬ কিমি উত্তরে অন্ধ্র প্রদেশের তিরুপতি আর এক হিন্দুতীর্থ—ভগবান ভেঙ্কটেশ্বর অর্থাৎ দেবতা বালাজির মন্দির। চেন্নাই ভ্রমণার্থীদের তিরুট্টানি বা চেন্নাই থেকে বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার।

নিয়মিত ট্রেন ও বাস যাচ্ছে চেন্নাই থেকে তিরুপতি। দূরত্ব ১৪০ কিমি। চেন্নাই সেন্ট্রাল থেকে ৬-২৫এ ছাড়া সপ্তগিরি, ১৩-৫০এ তিরুপতি এক্স, ১৬-৩০এ শতাব্দী এক্স তিরুপতি পৌঁছায় যথাক্রমে ৯-৩০/১৬-৫০/১৯-৫০এ। চেন্নাই ফেরে তিরুপতি থেকে ১৭-৩০, ১০-০৫, ৬-৩০এ। আর বাস যাচ্ছে ৫-৩০ থেকে ২০-৩০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায় চেন্নাই এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড থেকে। আবার টিডস, ITDC ও অন্ধ্র প্রদেশ রাষ্ট্রীয় পরিবহন (এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড) চেন্নাই থেকে কনডাকটেড ট্রায়ে বেড়িয়ে আনে তিরুপতি। সার্ভিস বাসও চলাছে এদের। এছাড়া তিরুট্টানির ৪৬ কিমি দক্ষিণে আর এক হিন্দুতীর্থ কাল্পিপুরম।

জিঞ্জি/সেন-জী

১৩ শতকের দুর্গের জন্য জিঞ্জির প্রশস্তি। দক্ষিণ আর্কট জেলায় ত্রিমুখী বিষ্ণু তিন পাহাড় চূড়ায় ৩ কিমি ব্যাপ্ত প্রাচীরে ঘেরা ঢোল রাজাদের কালের এই দুর্গ। এককালে অজেয় ছিল জিঞ্জি। প্রবেশ—পূবে পণ্ডিচেরী গেট আর উত্তরে আর্কট বা দিল্লী গেট দিয়ে। কালে কালে দখল যায় বিজয়নগর, নায়ক, মারাঠা, মোগল, ফরাসি ও ব্রিটিশদের হাতে। ১৩৮৩ থেকে ১৭৮০-র নানান উত্থান-পতনের গাথায় গাথা জিঞ্জির অতীত। মারাঠা বীর শিবাজির (১৬৭৭-১৬৯১) হাত থেকে মোগল দখলে যাবার পর জিঞ্জি হয় আর্কট বাহিনীর মূল ঘাঁটি। ১৮ শতকে দখল করে ফরাসিরা—অবস্থানও করে দীর্ঘ ১১ বছর তারা। হানাত্তর করে বেশকিছু স্থাপত্য জিঞ্জি থেকে পণ্ডিচেরীতে ফরাসিরা।

সেন-জী আশ্রম অর্থাৎ দেবী থেকে সেন-জী নামেও যথেষ্ট খ্যাত জিঞ্জি। জিঞ্জিবাজার থেকে ১ কিমি দূরে বাস সড়কের দিকে ২৭০ মি উঁচুতে জিঞ্জির মূল আকর্ষণ ১২০০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি রাজাগিরি দুর্গ। রাজাগিরির রঙ অদ্ভুত। গেরুয়া আর কালো পাথরের মিশ্রণ। অসম সিঁড়ি পথ, আবার কখনও-বা পাহাড় বেয়ে পথ উঠেছে। যথেষ্ট দুর্গমণ্ড বটে জিঞ্জির এই দুর্গ অভয়ান। ম্যাগাজিন, জিমনাসিয়াম, প্যালেস সাইট, অডিয়েন্স হল, আড্ডাবল, ক্রক টাওয়ার, শশ্যাগার, ইন্ডো-ইসলামিক ধারায় গড়া ট্রেজারি, গ্রানারি, এলিফ্যান্ট ট্যাক, পশ্চিমের গেট পেরুতেই ভেনু গোপালস্বামী মন্দির, বিজয়নগর রাজাদের কালের রজনাপথ মন্দির, ১৬লা কল্যাণমহল, সাদাওউদ্রা খানের মসজিদ (১১৭৭-১৮), মহাবল খানের মসজিদ, অকুরন্ত জলের স্রবস্থা, নানাগার, মহাবল খানের মসজিদ, অকুরন্ত জলের স্রবস্থা, নানাগার,

মন্দিরের নিচুতে কামান, দুর্গের শিরে চক্রকুলমের কাছে জলের কুণ্ড—অতীতদিনের নিৰ্মাণকৌশল অভিভূত করে পর্যটকদের।

বাসপথের বিপরীতে বোম্বার বিছানো ১২৪০ ব্রিস্টলে ডেরি কৃষ্ণাগিরি পথ কিছুটা সহজগম্য হলেও উচ্চতা ও আকর্ষণ দুই-ই কম। তবে, ২টি মন্দির, গ্রানারি, অডিয়েন্স হল, খাণে খাণে জলের কুণ আছে কৃষ্ণাগিরি পাহাড়ী দুর্গে। আর মুখোমুখি তৃতীয় দুর্গ চন্ম্রাগিরি—সে আজ অজুৎ।

থাকারও ব্যবস্থা হয়েছে কৃষ্ণাগিরি পাহাড়ে TTDC-র *H Tamilnadu Krishnagiri*, ৩ (04343) 22079, PC-635001, DAB ২৫০, A/c ৪২৫, ৫৫০, কেবল দিনের অবস্থানে রিক্টে মেলে। আর সাধারণ সাজে *H Shiva* ছাড়াও হোটেল আছে নানান Gingee-তে। আর আছে TTDC-র *H Tamilnadu-Hosur, Krishnagiri Bye Pass Rd, near Hosur Bus Stand*, ৩ (04344) 22030, D ২২৫ ৩০০ সাইট ৩৭৫।

চেন্নাই এগমোর থেকে মিটারগেজের দক্ষিণগামী রেল ১২২ কিমি দূরের তিনদিনম পৌঁছে তিনদিনম থেকে সড়কপথে ২৮ কিমি গিয়ে জিঞ্জি। ৯-০০টার চোলা এক্সে ১২-০৫এ তিনদিনম পৌঁছে বাসে আরও এক ঘণ্টার পথ। আর জিঞ্জি শহর থেকে যাত্রাভারতের চুক্তিতে রিকশা (২৫-৩০) নিয়ে জয় করে আসুন দুর্গ। জিঞ্জি বেড়িয়ে তিনদিনম থেকে ৪৭ কিমি বাসে গিয়ে আবার বাসে পণ্ডিচেরীও চলা যেতে পারে। মুম্বই বাসও চলছে তিনদিনম থেকে পণ্ডিচেরী। তাই পণ্ডিচেরী থেকেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় জিঞ্জি। বাসও মেলে পণ্ডিচেরী থেকে জিঞ্জির। সরাসরি বাসের অমিল হলে—তিনদিনমের বদল করণেও চলা যেতে পারে। উচিতও হবে পণ্ডিচেরী থেকে জিঞ্জি বেড়িয়ে নেওয়া। আর তিরুভনামালাই-এর দূরত্ব ৪২ কিমি জিঞ্জি থেকে।

চিদাম্বরম

সরাসরি চেন্নাই এগমোর থেকে নানান ট্রেন এসে দিনে দিনে জিঞ্জি দুর্গ দেখে তিনদিনম থেকে ১৬-০৫এ এগমোর-মাদুরাই এক্সে শৈব ও বৈষ্ণবতীর্থ চিদাম্বরম পৌঁছান ১৯-৩২এ। তিনদিনম থেকে চিদাম্বরমের দূরত্ব ১২২ কিমি, আর চেন্নাই এগমোর থেকে ২৪৪ কিমি। মাদুরাই-তিরুপতি এক্সও চলছে চিদাম্বরম/ তিরুপুর্ম/ ভেন্নোর হয়ে। আর শহরের প্রাণকেন্দ্রে বাস স্ট্যান্ড। বাস যাচ্ছে ৬৪ কিমি উত্তরের পণ্ডিচেরী ও চেন্নাই ঘন্টায় ঘন্টায়। সরাসরি বাসের অপ্রতুলতায় পণ্ডিচেরী থেকে যাত্রাভারতের কাটলোর হয়ে ঘন্টা দুয়েকে চলা যেতে পারে। এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিগ্বিদিকে চিদাম্বরম থেকে। নিকটতম বিমানবন্দর ১৬০ কিমি দূরের ত্রিচি। রেল স্টেশন থেকে ২০ মিনিটের পথে বৃহদেশ্বর। রিকশা চলছে শহরে।

পূর্ব ভটরেখায় শিল্পকেন্দ্রিক বাণিজ্য নগরী চিদাম্বরমে জল ও তাপ বিদ্যুৎ, সার, নুন ছাড়াও মৃত্তকায় চাষ হচ্ছে। তবুও যেন চিদাম্বরমের খ্যাতি তার নটরাজ মন্দিরের জন্য। ৯ শতকে ৪০ একর জমি জুড়ে চোলারাজা বীরা (৯২৭-৯৯৭)-র কালে শহরের প্রাণকেন্দ্রে গড়ে ওঠে গ্রানাইট পাথরের মন্দির নটরাজ। মাঝে শিবগঙ্গা সরোবর। চিদাম্বরমে আছে বোম্বার্লি। চিৎরানে জান, আর অধরঅর্থ আকাশ—নামও

তাই চিদাম্বরম। ভুলোকের কৈলাসও বলে থাকেন লোকে অতীতের বনভূমি থিলাই-এর অংশ চিদাম্বরমকে। আবার কেউ বা বলেন—এ হলো জ্ঞানের মহাকাশ। আর জ্ঞানের কোনও সীমা নেই, আকাশও সীমাহীন। সেবতাও এখানে অসীম, অনন্ত, মূর্তিহীন। রাজধানীও ছিল চোলা রাজাদের (৯০৭-১৩১০ খ্রি) চিদাম্বরমে। মন্দিরের ছাটটি সোনায মোড়া, উপাস্য দেবতা পঞ্চাভূতর কমসিকডাশারশিব। তবে মূল মন্দিরে দেবতা নিরাকার আকাশ লিঙ্গম। সামনে পর্দা, সাধারণের কাছে দেবদর্শন নিষিদ্ধ। একটি রত্নহার দিয়ে দেব-অবস্থান নির্দেশিত হয়েছে। মন্দিরে গোপুরম চারটি। পশ্চিম আর পূর্বের ৪০.৮ মি উঁচু গোপুরমে ১০৮টি করে ভারতনাট্যম নৃত্যের মূর্তি অনবদ্য মূর্তি হয়েছে। উত্তর আর দক্ষিণের গোপুরমের উচ্চতা যথাক্রমে ৪২.৪ ও ৪৯মি। ৫টি সভাগৃহও হয়েছে মন্দিরে। ১০৩x৫৮ মিটারের ১০০০ পিলারের রাজসভায় বিজয় উৎসব; রথের আকারে তৈরি ৫৬ পিলারের নৃত্যসভায় নাচের নানান মূর্তি; দেবসভায় মিটিং ছাড়াও উৎসব-অনুষ্ঠান; মূলমন্দির চিংসভায় পঞ্চভূতের (ক্ষিতি, অপ, তেজঃ, মরুৎ, ব্যোম) এক—ব্যোম অর্থাৎ আকাশ লিঙ্গম রূপী শিব। কনকসভায় পঞ্চাভূতর নটরাজ মূর্তিও আকর্ষণীয়। পল্লব, চোলা, পাণ্ডা ও নায়ক রাজাদের হাতে বার বার সংস্কার হয়েছে মন্দির—হয়েছে সমৃদ্ধ থেকে সমৃদ্ধতর শত শত বছর ধরে। তবুও যেন পাণ্ডা রাজা সুন্দরের কালে মন্দিরের রমরমা।

একই চত্বরে শিব ও বিষ্ণুর উপস্থিতিও উল্লেখ্য চিদাম্বরমে। নটরাজের সামনে গোবিন্দরাজ পেরুমলের মন্দিরটিও কম আকর্ষণীয় নয়। অনন্তশয়নে শায়িত বিষ্ণু এখানকার উপাস্য দেবতা। আর আছে পার্বতী, সূত্রান্ধা ও গণেশ মন্দির নটরাজ চত্বরে। ৪—১২-০০ ও ১৬-৩০—২১-০০টায় মন্দির খোলা। প্রতি শুক্রবার সন্ধ্যা (১৮-০০)-র দেবারতি দর্শনীয়। শহরের উত্তরে চোলারাজা Kopperunjangan (১২২৯-১২৭৮ খ্রি) এর তৈরি থিলাই কালী আশ্রান মন্দির।

রেল স্টেশনের বিপরীতে আন্নামালাই বিশ্ববিদ্যালয়-কে ঘিরে ৫০০ একর জমি জুড়ে আন্নামালাই নগর। প্রতিষ্ঠাতা আন্নামালাই ছেন্ডিয়ারের নামে নাম। দক্ষিণ ভারতে এই আবাসিক বিশ্ববিদ্যালয়ের যথেষ্ট সুনাম আছে। এর তামিল সাহিত্য ও কণ্ঠিক নৃত্য শাখা খুবই সমৃদ্ধ।



থাকার জন্য Chidambaram, STD 04144, PC-608001-এ—নটরাজ ঘরে PV Lodge, SCB ৪৫, SAB ৬৫; H Raja Rajan, 162 West Car St, ৩ 22690, SAB ৮০, DAB ১৫০; TTDC-র *H Tamilnadu: Chidambaram*, near Rly Stn-I, ৩ 20056, S ১২০ D ১৮০, পাঁচ বেডের ঘর ২০০, A/c D ৩০০, ৫৫০; TTDC's *Youth Hostel*-এ ডব্লিউ বেড ৪৫; টিভিও মেলে ৫০ অতিরিক্তে। ফিডার রোডে: *H Palace, H Rajkrishna*; VGP St-এ—*Jawhar L. Everest L; *H Sardha Ram*, near Bus Stand, ৩ 22966,

S ১৫০-২৫০ D ২০০-৩২৫ A/C D ৩৫০, সাইট ৫৫০। ৫ মিনিটের পথে *The Star L. South Car St.* @ 22743, S ৮০ D ১৫০; PWDIB, অব্: Collector, South Arcot, Guddalore. আর আছে *Rly Retiring Room, University GH* ছাড়াও বেশকিছু সাধারণ হোটেল চিরাশ্বরমে। থাকা ও আহার্যে *হোটেল তামিলনাড়ু ও রাজা রাজন* আজও বরগীর।

উৎসাহীরা চিদাশ্বরম থেকে ১৬ কিমি পূর্বে পিছাড়রম ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্সও বেড়িয়ে নিতে পারেন। সাগর থেকে বিচ্ছিন্ন ২৮০০ একর ব্যাপ্ত ব্যাকওয়াটারে স্টুন্ট দ্বীপে ম্যানগ্রোভ অরণ্য—আম-জাম-কাঁঠাল-গরাণ গাছে ছাওয়া। আর বসে শীতে দেশী-বিদেশী পাখির মেলা দ্বীপ থেকে দ্বীপে পিছাড়রমে। ওয়াটার স্পোর্টস ও বেটিং-এর ব্যবস্থা আছে ব্যাকওয়াটারে। অতীতে পর্তুগিজ ও ডাচদের বন্দর নগরী ছিল পিছাড়রম। শহর থেকে বাস, ট্যাক্সি, অটো যাচ্ছে। থাকার জন্য *Youth Hostel*-এ বেড ৪৫; TTDC-র *Aringar Anna Tourist Complex*, 47 Pichavaram-608102, @ (041445) ৪৯232, D ১২৫ ১৭৫ ডর্মি বেড ৪৫।

কাবেরী নদীতীরে ময়ূরমণ্ড (অতীতের মায়াজরম) আর এক হিন্দুতীর্থ। জনশ্রুতি, কার্তিক মাসে তুলা রাশিতে রবির অবস্থানে গঙ্গা মিলিত হন কাবেরীতে। শিব এখানে মায়ানাথ আর বিষ্ণু রঙ্গনাথ রূপে পূজিত হন ৫ কিমির ব্যবধানে দুই মন্দিরে। মাঘ মাসে কাবেরীতে বিষ্ণুর রান উপলক্ষে এক মাস ব্যাপী উৎসব চলে।

চিদাশ্বরম থেকে ৪০ কিমি দূরে কাবেরী নদীর অববাহিকায় ঢোল রাজাদের বন্দর পুহার—আজ হয়েছে পুষ্পুহার। তবে, অতীত আজ সমুদ্রগর্ভে লীন। মনোরম সাগরবেলা, আর্ট গ্যালারি, TTDC-র ক্রাফট এম্পোরিয়াম ও একাধিক মন্দিরের জন্য পুষ্পুহারের প্রসিদ্ধি। থাকার জন্য হোটেলের অভাব। চিদাশ্বরম বা তাঞ্জোর বা ২০ কিমি দূরের পিছাড়রম থেকে বাসে বেড়িয়ে নেওয়াই উচিত হবে উৎসাহীদের। তবে, তামিলনাড়ু ট্যুরিজমের *ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্সে* কটেক্ষধর্মী থাকার ঘর মেলে। নিয়মিত বাস যাচ্ছে চিদাশ্বরম থেকে। আবার ট্রেনে ময়ূরম পৌঁছেও বাসে যাওয়া চলে Poompuhar.

পুষ্পুহারের দক্ষিণে ১৬২০এ ড্যানিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি দেওয়ালে ঘিরে বাণিজ্য তথা দুর্গনগরী গড়ে ট্র্যাঙ্কুইবার (Tranquebar)-এ। ১৬২৪এ ডেনমার্কের রাজার দখলে যায় ট্র্যাঙ্কুইবার। আর ১৮২৫এ দখল যায় ব্রিটিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির হাতে। ড্যানিশদের বাঁচ রিস্ট গড়ার ইচ্ছা বাস্তবায়িত না হলেও সেযুগের বাড়ি-ঘর-দুর্গ সেখতে মেলে আজও। মিউজিয়াম বসেছে দুর্গে।

চিদাশ্বরম থেকে ৪৫ কিমি দূরের মুসলিম তীর্থ নাগোরও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাসে বাসে। হজরত মীর সুলতান সৈয়রাঙ্গ ছাড়া আবদুল হামিদে ৫ মিনারওয়ালা কাকরকার্ময় দরগাহ জন্ম নাগোরের প্রসিদ্ধি। প্রতি ডিসেম্বরের কান্দুরি উৎসবে ধর্মমত নির্বিশেষে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে।

তেমনই নাগোর থেকে ৮ আর তাঞ্জোরের ৯১ কিমি দূরে খ্রিস্টান জগতের মকানগরী ভেলানকারি খ্যাত তার রোমান ক্যাথলিক *Our Lady of Good Health* চার্চের জন্য। গথিক স্থাপত্যে গড়া চার্চের করিডোরের অলঙ্করণ অনবদ্য, প্রার্থনাকক্ষটিও সুসজ্জিত জানালাও রঙিন কাচে শোভিত। চার্চের মধ্যমণি মা মেরী—কোলে শিশু যীশু। জনশ্রুতি, ১৭ শতকের এক আগস্ট মাসে সামুদ্রিক জলোচ্ছ্বাসে নিমজ্জমান এক জাহাজের নাবিকদের চোখে দৃশ্যমান হন মা মেরী—নিমেবে সমুদ্র শান্ত হয়, প্রাণ পায় নাবিকেরা। কৃতজ্ঞতাবশত চার্চ গড়ে বিপদমুক্ত নাবিকেরা। প্রতি বছর আগস্ট ২৮ থেকে সেপ্টেম্বর ৮ তারিখের উৎসবে ধর্মমত নির্বিশেষে দূর-দূরান্ত থেকে যাত্রী আসেন—উপশম মেলে নানান ব্যথির মা মেরীর আশিসে। অদূরে সমুদ্র সৈকত। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *St Joseph's Pilgrims Quarters* ও সাধারণ লঞ্জে। তবুও যেন থাকার জন্য ১২ কিমি দূরে রেল সংযোগকারী স্টেশন নাগাপট্টিনম-এ TTDC-র *Hotel Tamilnadu* ছাড়াও *SM Lodge, H Golden Sand* আদরগীর্য হবে। নাগোরেও লঞ্জে মেলে সাধারণ মানের। আর আছে PWD-র *Rest House* ৬ কিমি দূরের নাগোরে। তবে, একান্তই উচিত হবে ভালানকারির হোটেল-রেস্তোরাঁর কীকড়ার ফ্রাইয়ের স্বাদ নেওয়া। যাতায়াতে তাঞ্জোর থেকে ৬-৪০, ৯-৫০, ১৩-১০, ১৮-০০টার নাগোর প্যাসেঞ্জারে ২½ ঘণ্টায় ৭৯ কিমি দূরের নাগাপট্টিনম বা তাঞ্জোর থেকে সরাসরি বাসে ভেলানকারি চলা। চেন্নাই এগমোর থেকে ২০-০০টায় ছেড়ে থিরুভারুর হয়ে নাগোর লিঙ্ক এক্স আসছে ৫-০৬এ। চেন্নাই ফেরে ২১-১০এ নাগোর থেকে লিঙ্ক এক্স। নাগোর-কুইলন ফা প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে নাগাপট্টিনম হয়ে। প্যাসেঞ্জার ট্রেন ও বাস আসছে ত্রিচি থেকেও ভেলানকারি।

কুন্তকোণাম

চিদাশ্বরম থেকে ৬৮ আর চেন্নাই থেকে ৩১৩ কিমি দক্ষিণে কুন্তকোণাম। বাস ও রেল যাচ্ছে। কুন্তকোণামের পূর্বে রেল আর উজ্জর বাস স্ট্যান্ড। রিকশা সংযোগ গড়েছে *Bright St* ধরে। ৩৮ কিমি দূরের তাঞ্জোরের প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে কুন্তকোণাম হয়ে। বাসও যাচ্ছে প্রতি ১০ মিনিট অন্তর তাঞ্জোর থেকে কুন্তকোণামে। ঘটাব্যবস্থার পথ। উচিতও হবে তাঞ্জোর থেকে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া। চেন্নাই যাচ্ছে ৭½ ঘণ্টায় কুন্তকোণাম থেকেই দিনে চার বাস। আর যাচ্ছে কুন্তকোণাম হয়ে দূরপাল্লার নানান বাস পতিচেরী, ব্যাঙ্গালোর, কোয়েম্বাটুর, মাদ্রাসে ছাড়াও সারা দক্ষিণে।



থাকার জন্য কুন্তকোণামে আছে—*The New Diamond L*, 93 Nageswaram North St-1, D ১৫০; *L Elite*, 106 NN St; *PRV Lodge*, near Clock Tower, D ১৫০-২২৫; *H Raya's*, 28 Head Post Office Rd, S ১২৫ D ২০০, A/C S ৩০০ D ৪৫০; *Pandiyan L*, 52 Sarangapani East St, S ৮৫ D ১২৫-২০০; বিপরীতে ভেজ মিলে খ্যাত শীতভোগ *Arul Restaurant*; *H Siva*; *VPR Lodge*, 104 Big St, DAB ১৭৫ A/C ৩০০; *Karpagam Boarding*

& Lodging, 60 Mutt St, Kumbhakonam-612001, D ১০০-১৫০ A/c D ৩৫০; The H Palace, Bus Stand. থাকার পক্ষে ভাল Hotel A R R, 21 TSR Big St-1, D 21234, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ১৫০-২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪২৫; চীনা, পাঁচতা ও ভারতীয় আহার্যও মেলে ARR-এ, এদের ভেজ বিক্রয়ানী অতুলনীয়। আর আছে, TTDC-র H Tamilnadu Kumbhakonam, D ১০০ A/c ২৫০; রেলের রিটার্নিং রুম ও গেস্ট হাউস। গেস্ট হাউসের বুকিং: Divisional Engineer, Kumbhakonam, Thanjavur, T N.

কাবেরী নদীর পাড়ে পুরাণখ্যাত প্রাচীন নগরী কুস্ত-কোণাম—সিটি অব টেম্পলস বলে থাকে লোকে। বর্নময় কারুকার্যখচিত ৩৯টি মন্দির আছে কুস্তকোণামে। চোল রাজাদের রাজধানীও বসে কিছুকালের জন্য কুস্তকোণামে। জনশ্রুতি, প্রলয়ের কালে অমৃতকুস্তের দখল নিয়ে সংঘাত দেখা দেয় দেবতা ও অসুরের। শিবের ছোঁড়া ভীয়ে কুস্তের কাণা ভেঙে পড়ে এখানকার মহামহম সরোবরে। নামও তাই কুস্ত + কোণাম = কুস্তকোণাম। সেই স্মৃতিতে প্রতি মাঘ (ফেব্রুয়ারি) মাসে মেলা বসে, আর ১২ বছর অন্তর হয় পূর্ণকুস্তযোগে স্নান। যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে এই পূর্ণস্নানে। গঙ্গা থেকে ধারাও বয় এ পূর্ণদিনে। ভিড় ও বিশৃঙ্খলা—দুইয়ের দাপটে পদদলিত হয়ে মৃত্যুও ঘটে নানান তীর্থযাত্রীর ১৯৯২-এ। পুলিশের অভিমত, তদানীন্তন মুখ্যমন্ত্রী জয়ললিতার অস্থিহিঁত এই মূলে। পরবর্তী পূর্ণকুস্তযোগ ২০০৪-এ।

কুস্তকোণামের প্রাচীনতম কুস্তেশ্বর শিব মন্দিরের গঠনশৈলী এমনই জ্যামিতিক ছকেগড়া বছরের বিশেষ দিনে সরাসরি মূল লিঙ্গে সূচকিরণ এসে পড়ে। তেমনই উন্মেষ্য ব্রহ্মামন্দির। আকারে বৃহত্তম, রঙবেরঙের কামদ ভাস্কর্যময় চক্রপাণি মন্দিরটিও দর্শনীয়। শিব ও বিষ্ণুর সমন্বয়ে এই সারঙ্গ পাণি। দেবতা এখানে অষ্টভূজ, ত্রিনেত্রধারী। গোপূরমের কার্ভিং-এর কাজও সুন্দর। তেমনই উন্মেষ্য ১৬২০তে তৈরি দেবতা শ্রীরামচন্দ্রের রামস্বামী মন্দির। উচিত হবে বাসস্ট্যান্ডের অদূরে নাগেশ্বর মন্দিরটিও পায়ের বা রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া। তবে ১২—১৬-৩০টায় বন্ধ থাকে কুস্তকোণামের মন্দিররাজি। শঙ্করাচার্যের একটি মঠও রয়েছে কুস্তকোণামে। কুস্তকোণামের তাঁতবস্ত্র, ব্রাসওয়ার, কাঁসার নানান জিনিস, সোনা ও রূপার আভরণ পর্যটকদের ছেড়ে যেতে বিধায় ফেলে। আর কুস্তকোণামের পানেরও প্রসিদ্ধি আছে সারা দক্ষিণ জুড়ে।

কুস্তকোণামের ৪কিমি পশ্চিমে দরগুন্নমও বেড়িয়ে নিতে পানেন রিকশায়। দরগুন্নম খ্যাত তার ১২ শতকের ঐরতেশ্বর শিবমন্দিরের জন্য। রাজা রাজন ২ (১১৪৬-৬৩ খ্রি)-এর তৈরি মন্দিরের ভাস্কর্য সুন্দর। সামনের খামে মিনিয়োচার ভাস্কর্য। হিন্দুপুরাণের সেবদেবীরা মূর্তি হয়েছেন ভাস্কর্যে। তাঞ্জোরের বৃহদেশ্বরের আদলও মেলে ঐরতেশ্বরে। তবে, কুস্তকোণামের নানান ভাস্কর্য তাঞ্জোরের

প্রাসাদ মিউজিয়মে স্থান পেয়েছে। সিন্ধুজাত বসনের জন্যও কুস্তকোণাম খ্যাত।

তেমনই কুস্তকোণাম থেকে ৪কিমি দূরে পন্ড্রেশ্বরে দেবী দুর্গার মন্দিরটিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। দেবী এখানে সৌভাগ্যের আশ্রয়। ৮ কিমি দূরে তিরুভুবনম-এ ১৩ শতকের কারুকার্যময় কম্পাহরেশ্বর শিবমন্দিরটিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। সিন্ধু উইভিং সেন্টার রূপেও তিরুভুবনম যথেষ্ট খ্যাত।

আবার কুস্তকোণাম থেকে বাসে ৩৫ কিমি উত্তরে গঙ্গাই-কোণাচোলোপুরমে (Gangaikondacholapuram) চোলরাজ রাজেন্দ্র ১ (১০১২-৪৫)-এর তৈরি শিবমন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন। পিতার তৈরি বৃহদেশ্বর মন্দিরের আদলে তৈরি হলেও স্থাপত্যে ও ভাস্কর্যে এটি অনন্য। সুউচ্চ গোপূরমটিও সুন্দর। গঙ্গা থেকে জল এনে বদ্ধ জলাশয়ে বন্দী রাখা হয়েছে মন্দিরে।

তাঞ্জাবুর/তাঞ্জোর

কুস্তকোণাম থেকে মাত্র ৩৮ আর চেমাই এগমোর থেকে ৩৫১ কিমি দূরে চেমাই-কুস্তকোণাম-ত্রিটি-মাদুরাই রেলপথে ত্রিটিশের তাঞ্জোর আজ হয়েছে তাঞ্জাবুর। মিটারগেজ রেল যাকে ৯-০০টার চোলা এক্স, ১৩-৩০এ মাদুরাই জনতা এক্স, ২০-৩০এ রামেশ্বরম এক্স এগমোর ছেড়ে ভিলুপুন্নম/কুস্তকোণাম হয়ে ৮½ ঘটায় তাঞ্জোরে। তিরুপতি-মাদুরাই এক্স, নাগোর-কুইলন গ্যাংএক্স তাঞ্জোর হয়ে থাকে। আর তাঞ্জোর থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেন থাকে ৩-৫০এ কোয়েম্বাটুর; ৫-২০, ৭-২০, ১০-০০, ১৪-০০, ১৬-২০, ২০-০০, ২১-৪৫এ ত্রিটি; ৩-৪০, ৬-০০, ৭-১৫, ১৭-০০, ১৭-২৫, ১৮-২৫এ ময়ূরম; ৬-৪০, ৯-৫০, ১৩-১০, ১৮-০০টার নাগোর; ১৬-২০এ মহীশূর এক্স ছাড়াও নানান। প্যাসেঞ্জার ট্রেন থাকে ২ ঘটায় ত্রিটি, ১ ঘটায় কুস্তকোণাম, ২½ ঘটায় চিরাশ্বরম, ৫ ঘটায় ভিলুপুন্নম তাঞ্জোর থেকে। আর রাজ্য পরিবহনের দ্রুতগামী বাস সংযোগ গড়েছে রাজ্যের বিভিন্ন শহরের সঙ্গে তাঞ্জোরের। নিয়মিত বাস আসছে চেমাই, পন্ড্রেশ্বরী, ভেমোর, তিরুপতি, কোদাইকানাল, নাগেরকয়েল, কোটলাম, কোয়েম্বাটুর ছাড়াও দক্ষিণের দিঘিনিক থেকে তাঞ্জোরে। আর তাঞ্জোর থেকে বাস থাকে ১½ ঘটায় ১১ স্ট্যান্ড থেকে প্রতি ১০ মিনিটে ত্রিটি; ১ ঘটায় ৭ ও ৮ স্ট্যান্ড থেকে ১০ মিনিট অন্তর কুস্তকোণাম, চেমাই থাকে ৮½ ঘটায় দিনে ১২টি বাস। শহরে চলছে ট্যাক্সি, অটোসাইকেল, রিকশা।

কাবেরী উপত্যকায় সাংস্কৃতিক কেন্দ্র গড়ে উঠেছে তাঞ্জোর জেলার জেলা সদর তাঞ্জোরকে ঘিরে। আজও সকাল-সাঁঝে উচ্চাঙ্গ সঙ্গীত ও ধ্রুপদী নৃত্যের ছন্দোময় ধ্বনিতে মুখরিত হয়ে ওঠে তাঞ্জোরের অলিগলি। তেমনই তাঞ্জোরের আর এক কৃষ্টি তার ব্রোঞ্জ মূর্তি সৃষ্টি। জানুয়ারির ১৪-১৬ পোলাক এক বরণীয়া উৎসব। ৫৯ মি উঁচু তাঞ্জোরে লাখ তিনেক লোকের বাস। গ্রীষ্মে ৩৬.৬—৩২.৫° আর শীতে ২০.৫—২২.৮° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। বেড়াবার মরসুম সারা বছর। অতীতে চোল রাজাদের

রাজধানী ছিল তাঞ্জোরে। তবে, তারও আগে সঙ্গম যুগ থেকেই তাঞ্জোরের প্রশস্তির কথা ইতিহাসে মেলে। ১০ থেকে ১৪ শতকে চোল রাজারা ছিল খুবই প্রথিতযশা। এমনকি মায়ানমার, শ্রীলঙ্কা, দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়াতেও প্রসার পেয়েছিল চোল সাম্রাজ্য। আজও চোল স্থাপত্যের নির্দশন দেখতে মেলে কাথোডিয়া, থাইল্যান্ড, জাভার নানান মন্দিরে। বৃহদেশ্বরের ঐক্যী রাজা রাজন (৯৮৫-১০১৬) চোল বংশের অন্যতম শ্রেষ্ঠ নৃপতি। কাঞ্চির পহুব, কেরলের চেরামন রাজাদের জয় করে প্রসারও পায় চোল সাম্রাজ্য সারা দক্ষিণে। আর যুদ্ধ জয়ের স্মারকরূপে রাজা রাজনের অবিনশ্বর কীর্তি তাঞ্জোরের অন্যতম বৃহদেশ্বর মন্দির। এমনকি ভারত মহাসাগরের দখল পেতে আরবদের সঙ্গে যুদ্ধে মাতে রাজন-পুত্র রাজেন্দ্র ১ (১০১৪-৪৪)। তাদেরই কালে তৈরি ৭৪টি মন্দির রয়েছে তাঞ্জোরে। কুন্তকোণাম, থিরুভাইয়ার, শ্রীরঙ্গম, থিরুকাণ্ডিয়ুর, গন্ধাকোণ্ডাচোলা-পুরমের মন্দির বিশেষভাবে উল্লেখ্য। শিবগঙ্গা সরোবরের মিষ্টি জলের খ্যাতিও সর্বজনবিদিত।

মন্দিরগুলির মধ্যে শ্রীবৃহদেশ্বর মন্দির ভাস্কর্যে ও স্থাপত্যে অনন্য। এমনকি *ব্রিটানিকা এনসাইক্লোপিডিয়া*তে ভারতের সুন্দরতম মন্দির বলে প্রশস্তি পেয়েছে এই বৃহদেশ্বর। আর শিল্পীদের নির্মাণ পারদর্শিতাকে বিশ্বের শ্রেষ্ঠতম বলে স্বীকৃতি দিয়েছে *ব্রিটানিকা*। মন্দিরটি কারু-কার্যময়। বৌদ্ধ শৈলীতে শৈব ও বৈষ্ণব স্থাপত্যের ছাপ মেলে এর স্থাপত্যে। মূল মন্দিরে উপাস্য দেবতা শিব—১৩ ফুট উঁচু লিংগমূর্তি, নিম্নমিত পূজা হয় আজও। ১৩ স্তরে ৬৬ মি উঁচু পিরামিডধর্মী মন্দিরের শিরে গম্বুজ। একখণ্ড পাথর কুঁদে তৈরি। ওজন এর ৮১ মেট্রিক টন অর্থাৎ ২০০ মণের মতো। শোনা যায়, ৬ কিমি দূর থেকে ঢালু পথ করে গম্বুজ ওঠে শিরে। মন্দিরের সামনে একখণ্ড কালো গ্রানাইট পাথরে তৈরি বৃহদাকার নন্দী অর্থাৎ শিবের বাহন। হাঁটু ভাঙা বসা অবস্থায় উচ্চতা এর ১২ ফুট আর দৈর্ঘ্য ১৬ ফুট। আকারে এটি ভারতে দ্বিতীয় বৃহত্তম মনোনিখিক নন্দী, লেপকান্দীর পরেই এর স্থান। মন্দির-গাত্রে ও সিলিং-এ বেশকিছু দেওয়াল চিত্রও রয়েছে চোল ও নায়ক রাজাদের কালের। তবে চোল রাজাদের দেওয়াল চিত্রগুলি দীর্ঘকাল ধরে চাপা পড়ে ছিল নায়ক রাজাদের ফ্রেস্কোর নিচুতে। সম্প্রতি আবিষ্কৃত হয়েছে অজস্রের তুল্য সুন্দর এই ফ্রেস্কোচিত্র। চোল সাম্রাজ্যের যুদ্ধগোষ্ঠা ও শিবের ১০৮ নৃত্যকলা অর্থাৎ ভারতনাট্যমের মূর্তা মূর্ত হয়েছে প্যানেলে। আর ভাস্কর্য ও ছবিতে মন্দির তথা চোল রাজবংশের আখ্যান তুলে ধরা হয়েছে। প্রত্নতত্ত্বের মিউজিয়ামও বসেছে মন্দির চত্বরে। ৯—১২-০০, ১৬—২০-০০টার মিউজিয়াম খোলা। আর ৬—১২-০০ ও ১৬—২০-০০টার মন্দির খোলা মেলে। প্রবেশাধিকার কেবল হিন্দুদের।

আর রয়েছে মন্দিরের অদূরে পুরনো শহরের কেন্দ্রঅণি

হয়ে দুর্গ অর্থাৎ প্রাসাদ। ১৫৫০-এ মাদুরাই-এর নায়ক রাজাদের হাতে শুরু, সম্পূর্ণতা পায় মারাঠাদের হাতে। তবে ধ্বংসও পেয়েছে অংশ। পরিখা পেরিয়ে দুর্গের অন্দরে প্রাসাদ। রাজা বিজয়রাম-এর হাতে তৈরি। প্রাসাদের দু'পাশে দুটি মিনার। একটি থেকে শ্রীরঙ্গমের ভগবান রঙ্গস্বামীকে প্রণাম জানাতেন রাজা, আর দ্বিতীয়টি ছিল শত্রুর গতিবিধি লক্ষ্য করার জন্য। ১৭০০ খ্রিস্টাব্দে গড়ে তোলা প্রাসাদের সরস্বতী মহল লাইব্রেরিটিও কম আকর্ষণীয় নয়। বিবিধ বিষয়ে বিভিন্ন ভাষায় ৩০ হাজার পাণ্ডুলিপির অমূল্য সংগ্রহ রয়েছে এখানে—৮ হাজার তার তালপাতায় লেখা। ৩০০ বছর ধরে নায়ক ও মারাঠা শাসকদের এই সংগ্রহ। তেমনই দুর্গের আর এক আকর্ষণ তার অলঙ্কৃত দরবার হল। সঙ্গীতমহল অর্থাৎ জলসাঘরটিও পর্যটকমাত্রেরই দ্রষ্টব্য। এর গঠননৈপুণ্য অনবদ্য। প্রাসাদের আট গ্যালারিটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে পর্যটকদের। ৯—১২ শতকের নানান শ্রোঞ্জমূর্তির সংগ্রহও রয়েছে এর মিউজিয়াম তথা অডিয়েন্স হল-এ। তবে, আজ সরকারি দপ্তর বসেছে দুর্গে। বুধবার ছাড়া ৯—১৩-০০ ও ১৪—১৭-০০টায় খোলা।

প্রাসাদের পূর্বে ১৭৭৯তে তৈরি স্কয়ার্জ মির্জাটিও কম আকর্ষণীয় নয় পর্যটকদের কাছে। এটি ড্যানিশ মিশনের Rev C V Schwartz-এর প্রতি চোলরাজ সর্বেজির স্রীতি উপহার। রাজার শিক্ষক তথা সেক্রেটারিরাপে কাজ করেছিলেন স্কয়ার্জ। ১৯৮১তে গড়া তামিল ইউনিভার্সিটি মিউজিয়াম ছাড়াও নানান মন্দির রয়েছে পুরনো শহরের পথেঘাটে তাঞ্জোরে; পায়ে পায়ে দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

Mayiladuthurai (Mayuram)-Aranthangi ও Nagore-Thanjavur রেলের জংশন স্টেশন তাঞ্জোর থেকে ১১ কিমি দূরে তিরুভারুর (*Thiruvavur*)-এ কণাটিকী সঙ্গীতের জন্ম। রচয়িতা ত্যাগরাজের বাসভূমি তথা সমাধিক্ষেত্র তিরু-ভাইয়ার (*Thiruvaiyaru*) বেড়িয়ে নেওয়া যায়। জানুয়ারি মাসের মৃত্যুবার্ষিকীতে সপ্তাহব্যাপী *আরাধনা মিউজিক ফেস্টিভ্যাল* দূর-দূরান্ত থেকে সঙ্গীতজ্ঞরা আসেন শ্রদ্ধা জানাতে। আর আছে শিব অর্থাৎ পঞ্চনাথেশ্বর মন্দির। ১০০০ পিলারের (৮০৭) হলও হয়েছে মন্দিরে। দক্ষিণের বৃহত্তম রথটিও এই মন্দিরে। কার ফেস্টিভ্যাল খুবই চমকপ্রদ উৎসব। তাঞ্জোর থেকে ১০ কিমি দূরে তিরুকাণ্ডিয়ুর (*Thirukandiyur*)-এ সুন্দর ভাস্কর্যমণ্ডিত ব্রহ্মামন্দির ও হর্ষবিমোচন পেরুমল মন্দির দেখে চলা উচিত হবে।



হোটেলগুলি সাধারণত ২টি ব্লকে গড়ে উঠেছে তাঞ্জোরে। বাস ও রেল স্টেশনের সংযোগকারী গাড়ী রোড, আর স্টেশনের পিছনে মিটি রোড। ট্যুরিস্ট অফিস (বুধ-শনিবার ৮—১১-০০ ও ১৬—২০-০০ট), জি পি ও, পুন্মুহার-এর অবস্থান গাড়ী রোডে। ট্যুরিস্ট অফিসের বিপরীতে Gandhi Road, Thanjavur, STD 04362, PC-613007এ রেল স্টেশনের কাছে—TTDC-র H Tamilnadu-

I, ① 21024, DAB ৩০০ ৩৫০ বারো বেডের ঘর ৪৫০ A/c D ৫০০ সুইট ৬০০; এরই পিছে Raja R H, SCB ৫০ DCB ১০০; H Bilal; Mangalumbika L.

বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে—Shri Mahalakshmi L, SAB ৬০-৮৫ DAB ১২৫-১৭৫; H Karthik, S ৬৫ D ১২৫ FR ১৫০ A/c S ২০০ D ৩৫০; Ajanta L, South Main St, S ৫০ D ১০০। Ashoka L, 93 Abraham Panjithar Rd, SCB ৪৫ DCB ৮০ SAB ৬০ DAB ১২৫। রেল স্টেশনের অদূরে—Deen L, Yagappa L. আর আছে TTDC-র H Tamilnadu-II, Trichy Rd, ① 20365; H Sangam, Trichy Rd-7, ① 25026, S ৪০ D ৫৫ US\$; Oriental Towers, 2869 Srinivasam Pillai Rd-1, ① 24728, S ৩৫ D ৪৫ US\$; *H Parisutham, 55 Grand Anicut Canal Rd-1, near Rail Stn, ① 21601, S ৩৭ D ৫২ সুইট ৬৫ US\$। ঝাল পেরুতেই Rajarajan L, D ৮০-১৫০; H Valli, 2948 M K M Rd, ① 21584, near G P O, D ১৫০-২২৫; Ananda L, Venkateswara, Krishna ছাড়াও হোটেল ও লজ আছে নানান। আর আছে Municipal R H, অবু: Commissioner; রেলের রিটারায়ার্স রুম তাঞ্জোরে। তবুও থাকা ও খাবারের জন্য হোটেল তামিলনাড়ু, রাজা রেস্ট হাউস, বিলাল হোটেল; আর আহার্য না মিললেও কেবল থাকার জন্য অণাকা লজ ভালই।

খাবার হোটেলও নানান বাসস্ট্যান্ডকে ঘিরে তাঞ্জোরে। হোটেল তামিলনাড়ুর বিপরীতে New Padma Restaurant-টির আহার্য সুসাদ আছে। হাসপাতাল রোডে Golden Restaurant-এ ভেজ মিল, আর Sathurs-এর নন ভেজ মিলের যথেষ্ট প্রশস্তি। তেমনই H Parisuthamও যথেষ্ট খ্যাত ভেজ, নন ভেজ ও চীনা মিলে। এরই পিছে Seakings খ্যাত তার ঠাণ্ডা পানীয়ের জন্য সারা শহর জুড়ে।

পুডুকোট্টাই

১৭ শতকের স্বাধীন রাষ্ট্র অধুনা তামিলনাড়ুর এক জেলা পুডুকোট্টাই নতুন করে রূপ পেয়েছে দক্ষিণী পর্যটন মানচিত্রে। চেমাই-ব্রিটি-রামেশ্বরম মিটারগেজ রেলে চেমাই থেকে ৪৫৪, রামেশ্বরম ২২২, তাঞ্জোর ৫৭, আর ব্রিটির ৫৩ কিমি দূরে পুডুকোট্টাই। ৩-০০, ৪-৩০, ৭-১০, ৭-৪৫, ১৮-০০টায় ব্রিটি ছেড়ে ১১ ঘটায় Pudukkottai যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। TTC-র বাসও যাচ্ছে চেমাই থেকে ৮-১৫, ৯-১৫ ও ২-২০টায় ছেড়ে ৯১ ঘটায় পুডুকোট্টাই। নিকটতম বিমানবন্দর তিরুচিরাপল্লী। ৮৭.৭৮ মি উঁচুতে, গ্রীষ্মে ৩৭.১ থেকে ৩৬.৪° আর শীতে ২১.৩ থেকে ২০.১° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। বৃষ্টির গড় ৮০.৫ cm. বছরভর চলা যেতে পারে পুডুকোট্টাই ভ্রমণে।

মহেন্দ্রভার্মা পল্লবের কালে খ্রি পূ ২ শতকে পাহাড় কেটে তৈরি শ্রীকোকরগেশ্বরের গুহামন্দিরের জন্য পুডুকোট্টাই-এর প্রসিদ্ধি। আর আছে ৫ কিমি দূরে মিউজিয়াম—অতীত সংগ্রহের গৌরবে গৌরবাবিহিত। ৩৮০ ও ছুটি ছাড়া ৯—১১-৩০ ও ১৪—১৭-০০টায় খোলা। তেমনই লাল পাথরে দুর্গাশৈলী পাবলিক অফিস বিল্ডিং, নিউ প্যালেসের শিল্প-সুখমা, কাঠ ও পেতলের কারুকার্যময় হেন্ডিয়ারনের প্রাসাদ দর্শন-ভালিকায় উদ্ভোধ্য।

পুডুকোট্টাই-এর আর এক আকর্ষণ ১৬ কিমি দূরে সিট্রামাভাসাল-এর জৈন মন্দির। খ্রি পূ ২ শতকে অজ্ঞাতারই সমকালে পাহাড় কেটে তৈরি। সুন্দর ফ্রেস্কো চিত্রে অলঙ্কৃত এই জৈন গুহামন্দির। এ ছাড়াও প্রাক-ইতিহাসের কালের নিদর্শন মিলেছে সিট্রামাভাসালে। তেমনই রয়েছে পুডুকোট্টাই থেকে ২০ কিমি দূরে কুমুদিত্রামলাই-এ স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের অনন্য নিদর্শন হাজার গিলারের মন্দির। ৩৬ কিমি দূরে কোডুবালুরে ১০ শতকের মন্দির স্থাপত্য, ৪০ কিমি দূরে ভিরালিমলাই-এ পাহাড়ী টিলায় সুব্রাহ্মণ্য মন্দির, ১৭ কিমি দূরে নারথামলাই-এ গুহামন্দির, ১৯ কিমি দূরে থিরুমায়াম-এ ১৭ শতকের দুর্গ, শিব ও বিষ্ণু মন্দির দেখে নেওয়া উচিত হবে একে একে। পুডুকোট্টাই থেকে নিয়মিত বাসও যাচ্ছে। আর মেলে ট্যাক্সি পুডুকোট্টাই তথা চারপাশ দেখে নিতে।

পুডুকোট্টাই-এর আর এক আকর্ষণ Point Calimere Wildlife Sanctuary. শীতে দেশ-দেশান্তর থেকে নানান জলচর পাখির সাথে হাজার তিনেক ফ্রেমিংগো; আর বসন্তে কোয়েল, ময়না, কৃষ্ণবর্ণ কপোত ছাড়াও নানান গায়কপক্ষী এসে নীড় বাঁধে—ডিম পাড়ে গুপ্তিচরী-কারিকল লাগোয়া পক্ষ প্রণালীর উত্তর প্রান্তের পয়েন্ট কালিমেরায়। এ দৃশ্যও নয়নাভিরাম। কৃষ্ণ হরিণ, চিতল হরিণ, বন্য শুয়োর ছাড়াও নানান বন্যপ্রাণীর সহাবস্থান ঘটেছে কালিমেরায়। রেলো মায়াভরম পৌঁছে বাসে বা তাঞ্জোর থেকে সরাসরি বাসে চলা যেতে পারে কালিমেরায়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে FRH-এ। আহার নিজ ব্যবস্থায়।

পাকাভা প্রথায়—H Shivalaya, Thirumayam Rd, Pudukkottai, SAB ১৫০ DAB ২২৫ A/c S ২৭৫ D ৪২৫; Municipal R H, Bus Stand R H, ছাড়াও সাধারণ হোটেল আছে পুডুকোট্টাই-এ।

তিরুচিরাপল্লী

চেমাই এগমোর থেকে ১৫-৩৫এ পল্লবন এক্স, ৯-০০টায় ঢোল এক্স, ২১-০০টায় রক কোর্ট এক্স ভিদুপুরম/ তাঞ্জোর হয়ে ব্রিটি যাচ্ছে যথাক্রমে ২১-৫০, ১৯-৫০ ও পরদিন ৬-০৫এ। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ২১-৩০এ এগমোর থেকে পরদিন ১০-০৫এ ব্রিটি। ৬-১০, ১২-৫০, ১৩-৩০, ১৮-৪৫, ১৯-১০, ২২-০০টায় এগমোর-মাদুরাই, ১৭-৫৫, ২০-২৫এ এগমোর-রামেশ্বরম; ১৭-০০টায় এগমোর-তিরুনেলভেলী; ১৯-৪০এ এগমোর-কোন্ডাম; ১৯-১০এ তাঞ্জোর-মহীশুর এক্স; প্রতিটা ট্রেন ব্রিটি হয়ে যাচ্ছে। ট্রেন যাচ্ছে রাজ্যের দিকে দিকে ব্রিটি থেকে। ১৭-০৫এ ব্রিটি ছেড়ে কোদাই/ মাদুরাই হয়ে কোন্ডাম যাচ্ছে ৬১৬। নাগোর-কোন্ডাম এক্স। আর ব্রডগেজ রেলো মাদুরাই-দিল্লী লিঙ্ক এক্স, মাদুরাই-ব্যালালোর লিঙ্ক এক্স, মাদুরাই-কোটি লিঙ্ক এক্সও যাচ্ছে ব্রিটি হয়ে ইরোড পৌঁছে মুলের সঙ্গে জুড়ে নানানলিকে। ইরোড থেকেও চড়া বাম ভারতের দিঘলিকের নানান ট্রেন। ২৬৫ কিমি দূরে রামেশ্বরম যাচ্ছে মনমাদুরাই/ রামনাথপুরম হয়ে ৩-০০টায় সেতু ও ৭-৪৫এ চেমাই-রামেশ্বরম এক্স। আর ৬-১০এ মাদুরাই ১৩-৩০এ

তিরুপতি যাচ্ছে তিরুপতি-মাদুরাই-তিরুপতি এক্স প্রিচি থেকে। কোয়েম্বাটুর যাচ্ছে ২০-০০টায় প্রিচি-কোচি এক্স; ৬-০০টায় তাম্বোর প্রিচি-কোয়েম্বাটুর ফাস্ট পাসেঞ্জার; ইরোড যাচ্ছে ৬-০০, ৬-৫৫, ১৪-৪০, ১৫-৪০, ১৮-০০, ১৯-১০, ৩০-০০, ২১-১০এ; কোম্বাই যাচ্ছে ২২ ঘট্টার ১-৩৫, ৩-২০, ৩-৫০, ৬-১০, ৬-৫০, ১৭-০৫এ; তিরুনেলভেলী যাচ্ছে ১-৫০এ ছেড়ে ১০ ঘট্টায় এগমোর-তিরুনেলভেলী নেলাই এক্স প্রিচি থেকে।



✈ IAC-র বিমান ২৪৬ দিন ১৫-৩০এ চেন্নাই ছেড়ে প্রিচি যাচ্ছে ১৬-১০এ; ফেরে ৩৫৭ দিন ৪-১০এ প্রিচি থেকে। প্রাইভেট বিমান NEPC Airlines রবি ছাড়া প্রতিদিন চেন্নাই-প্রিচি-মাদুরাই চলছে। শহর থেকে ৭ কিমি দূরে বিমানবন্দর। IAC-র অফিস বসেছে 4-A, Dindigul Rd-I, ৩ 41433-এ।



🚂 প্রিচিতেও সরকারি ও বেসরকারি দু'টি বাস স্ট্যান্ড। ২ মিনিটের ব্যবধানে অবস্থান এদের। Thiruvalluvar-এর বাসও যাচ্ছে ২ ঘট্টা অন্তর ছেড়ে ৮ ঘট্টায় চেন্নাই, ৩৯২ কিমি দূরের কন্যাকুমারী যাচ্ছে ভেমোর হয়ে ৯ ঘট্টায় ২টি, তিরুপতি যাচ্ছে ৯ ঘট্টায় ২টি প্রিচি থেকে। এছাড়াও বাস যাচ্ছে নাগেরকবল ৮টি, কোয়েম্বাটুর (২টি) ১৮৭, রামেশ্বরম, পতিচেরী, ভেমোর, ব্যাসালোর, কোদিকানাল, তিরুভনন্তপুরম ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের নির্দিষ্টকি। তাম্বোর দৈনিক বাসেই চলন প্রিচি। ১০ মিনিট অন্তর সার্ভিস, ১২ ঘট্টার পথ তাম্বোর থেকে প্রিচি। ৪ ঘট্টায় ১২৮ কিমি দূরের মাদুরাইও যাচ্ছে মুম্বাই বাস প্রিচি থেকে। এছাড়াও দূরাণ থেকে আসা নানান বাস প্রিচি হয়ে যাচ্ছে দক্ষিণের দিকে দিকে। তবে, সিটের অমিল এসব বাসে। এছাড়াও নানান প্রাইভেট ডিলাক্স বাস ৬ ঘট্টায় চেন্নাই যাচ্ছে প্রিচি থেকে। রিকশা, অটো, ট্যাক্সি ও সিটি বাস চলছে শহরে। বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া টুরিস্ট অফিস থেকে রাজ্য পর্যটন কনডাক্টেড ট্যুরে সকালে প্রিচি ও বিকালে তাম্বোর বেড়িয়ে আনে। সারা বছরই চলা যেতে পারে প্রিচি ভ্রমণে।



🏨 বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে নিত্য-নতুন হোটেল হচ্ছে Tiruchi-620002, STD 0431-এ। উচিতও হবে ঘর দেখে হোটেল নির্বাচন করা। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Guru, 13-A, Royal Rd, SAB ৮০ DAB ১২৫-১৭৫; H Sevana, 5 Royal Rd, Cantt-I, R1B4, S ১৫০ D ২০০ সুইচ ৩০০ A/c S ৩২৫ D ৪২৫ সুইচ ৬০০; Vijay L, 13-B, Royal Rd-I; H Rajasugam, 13-B, Royal Rd, S ৮০ D ১৫০; Selvam L, Jn Rd, S ৬৫ D ১২৫। বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া টুরিস্ট অফিসের বিপরীতে—TTDC-র H Tamilnadu-Tiruchi, Unit-I, Cantonment-620001, ৩ 460383, D ২২৫ ২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ ৬০০ পাঁচ বেডের ঘর ৪২৫। Abiruni H, 10 McDonald Rd, opp Central Bus Stand-I, ৩ 460001, S ২০০ D ৩৫০ A/c S ৩৫০ D ৪২৫ সুইচ ৬০০; *H Jenneys Residency, 3/14, McDonald Rd, Cantt-620001, ৩ 461301, R₁B₁, SAB ৪৫০ DAB ৭০০ A/c S ৮০০ D ১০০০ সুইচ ১২৫০-২৫০০; *H Femina, 14-C, Williams Rd, Cantt-I, A ৫B0, ৩ 461551, S ২২৫ D ৩৫০ A/c S ৪২৫-৫৫০ D ৬০০-৭৫০ সুইচ ৮০০-১২৫০; *H Arun, 24 State Bank Rd-I, ৩ 461421, S ১৭৫ D ২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০; একই অঙ্গনে Sarada L, S ১০০ D

১৭৫ FR ২৫০; H Gajapriya, 2 Royal Rd, S ২০০ D ২৫০, FR ২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০ ৫০০; লাগোয়া Rockins Rd-এ—H Mathura, ৩ 463737; H Mega, 8-B, Rockins Rd, opp Central Bus Std, মান ও দামে গজপ্রিয় তুল্য। Ranyas H, 13-D-2 Williams Rd-I, ৩ 461128, R₁, SAB ২০০-২৭৫ DAB ৩০০-৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইচ ৭৫০-৮৮০; *H Aristo, 2 Dindigul Rd-I, R₁ B₁, ৩ 461818, S ১০০ D ১৫০ A/c D ২৫০ কট্টেন ৩৫০, দামের তুলনায় মান ভাল; H Aanand, 1 Racquet Court Lane-I, A6R1B0, ৩ 460545, S ১৫০-২২৫ D ২২৫-৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫৫০; Ashby H, 17-A, Junction Rd-I, ৩ 460652, R₁B₃, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৭৫; Modern Hindu H, Dindigul Rd, S ৮৫ D ১৫০; H Lakshmi, 3A, Alexandrin Rd, Cantt-I, S ১৫০ D ২২৫ সুইচ ৩২৫ A/c D ৪০০ সুইচ ৬০০; *H Sangam, 91 Collector's Office Rd-I, A6R1B3, ৩ 464700, A/c S ৩৭ D ৫২ US\$; H Ajanta, Jn Rd-I, R₁ B0, SAB ১৫০ DAB ২২৫ A/c S ২৭৫ D ৪২৫; সেম্বীল বাস স্ট্যান্ডে Municipal Tourist Bungalow ছাড়াও বেশকিছু সাধারণ হোটেল আছে বাস থেকে রেল স্টেশনের পাঁচ মিনিটে। ৮-৫-১০ টাকায় ডাবল বেডের ঘরও মেলে এদের কাছে। রেলের রিটার্নিং ক্লমও আছে প্রিচিতে। তবুও থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে হোটেল তামিলনাড়ু, হোটেল রামাস, হোটেল রাজালী, হোটেল আনন্দ, অজন্তা, গুরু, মডার্ন হিন্দু হোটেল, ভিজয় লক্ষ-এর ব্যবস্থাপনা ভালই।

আহার্যেরও নানান ব্যবস্থা প্রিচির হোটেল। বাসস্ট্যান্ডকে ঘিরে সাধারণ সাজে নানান হোটেল-রেস্তোরাঁ প্রিচিতে। টুরিস্ট অফিসের বিপরীতে Vasuntha Bhavan Restaurant-এর (৯-২২-০০) যথেষ্ট প্রশস্ত ভেজ মিল পরিবেশনে। অদূরে Williams Rd-এ Kanchanaa Restaurant যথেষ্ট খ্যাতি ভেজ ও নন ভেজ মিলে। তেমনিই হোটেল আনন্দের Arun Restaurant, H Mega, H Ashby; কব্বনা লজের Kavithua Restaurant, গুরু হোটেলের Kurunchi Restaurant, Selvam L-এরও যথেষ্ট সুনাম আহার্য পরিবেশনে। আবার রাজালী হোটেলের Chorog-ও চীনা ডিশ, টুরিস্ট অফিসের অদূরে Kanchanaa H ও Maharaja Restaurant-এ অমিষ আহার্য মেলে।

তাম্বোর থেকে ৫৪কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে পবিত্রতম পাহাড়—অর্থাৎ তিরুচিরাপল্লী বা প্রিচি। আর, ব্রিটিশের আমলে প্রিচি ছিল ব্রিটিশোপলি। ১৭৫০-এ এই ব্রিটিশই ফরাসিদের হারিয়ে দক্ষিণ দখল করে ব্রিটিশ। চেন্নাই থেকে ৩১৬, মাদুরাই থেকে ১২৮ কিমি দূরে কাবেরী নদীর পাড়ে ৭৮ মি উঁচুতে প্রিচি শহর। শহরও রকফোর্ট যদিও মাদুরাই-এর নায়ক রাজাদের তৈরি, তবে তারও আগে পাণ্ড্য ও পল্লুবরাজারাও রাজত্ব করে গেছেন আজকের প্রিচিতে। ১০ শতকে চোল সাম্রাজ্যের দখলে যায় প্রিচি। আর চোল সাম্রাজ্য লোপ পেলে দখল যায় বিজয়নগর রাজাদের হাতে। ১৫৬৫তে বিজয়নগরের পতনে দাক্ষিণাত্যের সুলতান দখল করে ব্রিটিশ কোর্ট। রেল, বাস, হোটেল, টুরিস্ট অফিস সবেরই অবস্থান পরস্পর থেকে মিনিট দশকের পারে হাটা ব্যবধানে ক্যান্টনমেন্ট তথা জংশন এলাকায়। তবে, শহর থেকে ৫

কিমি উত্তরে কাবেরীর পাড়ে রক ফোর্টের অবস্থান ত্রিচিত্রে। তাপমান গ্রীষ্মে ৩৭.১—৩৬.৪° আর শীতে ২১.৩—২০.৬° সেণ্টিগ্রেডে ওঠানামা করে।

ত্রিচির মূল আকর্ষণ রক ফোর্ট। জংশন থেকে ১৬ কিমি উত্তরে শহরের মধ্যমি ৮০ মি উঁচু গ্রানাইট পাথরের পাহাড়ের টোপার হয়ে রক ফোর্ট অর্থাৎ পাহাড়ি দুর্গ। ৪০৭টি খাড়া সিঁড়ি বেয়ে পথ উঠেছে চূড়ায়। মূল প্রবেশপথে ১০০০ পিলারের মণ্ডপটি ১৭৭২ খ্রিস্টাব্দের বিক্ষোভের ধ্বংস হয়। অক্ষত অংশে আজ দোকানপাট বসছে। শিব এখানে মঠরুভুতেশ্বর নামে খ্যাত। দেবশিৱের বিমান সোনার পাতে মোড়া। মন্দিরের আখ্যানও চিত্রিত হয়েছে দেওয়ালে। ১০০ পিলারের হল-ও আছে—VIদের অভ্যর্থনা বসে। সর্বোপরি গণেশমন্দির। মন্দির থেকে চারপাশ সুন্দর দৃশ্যমান—বয়ে চলেছে কাবেরী, এমনকি শ্রীরঙ্গম ও জম্মুকেশ্বরের টাওয়ার ও দৃশ্যমান। সম্ভবত বিশ্বের অন্যতম ৩৮০০ মিলিয়ন বছরের প্রাচীন পাহাড় পহুব রাজাদের হাতে ১১ শতকে তৈরি হয়েছে এই মন্দির। আর দুর্গের অস্তিত্ব আজ লীন পেলেও অতীতের নানান যুদ্ধের সাক্ষী এই ঐতিহাসিক ফোর্ট। দেওয়ালে ১৮ শতকের কর্ণাটক যুদ্ধের নানান আখ্যানও মূর্ত হয়েছে। বাস যাচ্ছে শহর থেকে ১ রুটের রক ফোর্ট হয়ে শ্রীরঙ্গম।

পাহাড় কেটে তৈরি পহুব যুগের (৭ শতক) গুহা-মন্দিরটিও পহুব স্থাপত্যের সুন্দর নিদর্শন। ৭টি পিলারে ভর করে এই গুহামন্দির। চতুষ্কোণ ঘরে মূল বিগ্রহ। সুন্দর দেওয়াল চিত্রে শোভিত। পাহাড়ের দক্ষিণ-পশ্চিমে শিব মন্দিরের নিচুতে রয়েছে আর এক গুহামন্দির। আর গুহা-মন্দির থেকে উপরে ওঠার পথে পড়ে ১৯১৯ খ্রিস্টাব্দে তৈরি বেল টাওয়ার। এর বসন্ত মণ্ডপটি ১৬০০এ তৈরি। বেল টাওয়ারের নিচুতে হয়েছে ত্রিচির শহরের জলাধার। আর রক ফোর্টের নিচুতে টেল্লাকুলম অর্থাৎ বিরাট জলাধারের মাঝে মণ্ডপম। এরই পাশে ডেনমার্কের Reverend Schwartz-এর তৈরি চার্চের আগে ফরাসিদের স্মারক হয়ে সেন্ট জোসেফ কলেজ। লাগোয়া নিও গথিক চার্চ। ব্রিটিশের দখলে যেতে লর্ড ক্লাইভ বাসা বাঁধেন কলেজে। ১৮১২-য় তৈরি সুন্দর স্থাপত্যের সেন্ট জনস চার্চটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে চলতে-ফিরতে। নতুন শিল্পনগরী গোন্ডেন রক-এর আকর্ষণও কম নয় পর্যটকদের কাছে। গুরু ও ছুটি ছাড়া ৯—১২-৩০ ও ১৪—১৭-০০টায় কোর্টের কাছেই মিউজিয়মে রোঞ্জ ও গ্রানাইট মূর্তির সংগ্রহ দেখে নেওয়া যায়। ত্রিচির তাঁতবস্ত্র, লুঙ্গি, কাচের বলয় বা মাল, তালপাতার বাস্ক, কাঠ ও মাটির খেলনা, মাদুর ও সঙ্গী করতে পারেন স্মারক রাপে।

শ্রীরঙ্গম ত্রিচি থেকে ৭ কিমি উত্তরে কাবেরী ও তার শাখানদী কোমিডাম-এ ঘেরা ঘাঁপে ২৫০ হেক্টর জুড়ে দক্ষিণ ভারতের বৃহত্তম মন্দির শ্রীরঙ্গনাথস্বামী। অনন্ত-শয়নে

শায়িত বিষ্ণু রঙ্গনাথস্বামীরূপে পূজিত হন ঐ-ধর্মী ১৩ শতকের মন্দিরে। ৩২ খিলানের সেতু সংযোগ গড়েছে। ভাস্কর্যময় গোপুরমের সংখ্যা ২১ হলেও ৭টি পেরিয়ে, ৭ চত্বর ডিঙিয়ে মূল মন্দির। সোনার মোড়া গম্বুজ। চূড়ায় সোনার বিষ্ণু, সোনার তালগাছ, চার বেদের প্রতীক স্বর্ণ কলসও রয়েছে চার মন্দিরে। দেবতার অপরাধ অলঙ্কার। চতুর্থ গোপুরম পেরিয়ে বিজয়নগর রাজাদের শৌর্য মূর্ত হয়েছে সুস্বন্দ্র কারুকার্যে। ১৬ শতকে তৈরি হাজার (৯৪০) পিলারের মণ্ডপে প্রতি ডিসেম্বরের ১৫-২৫ শুক্লপক্ষের একাদশীতে ৯ দিন ব্যাপী বৈকুণ্ঠ একাদশী উৎসব পালিত হয়। যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে উৎসবে। মূল দেবতাও তখন হাজার পিলারের মন্দিরে অধিষ্ঠিত হন। মন্দিরের গুরুও এখান থেকে। জুতোও খুলতে হয় ৪র্থ গোপুরমে। দোকানপাট, বাড়িঘরও এই ৪র্থ গোপুরম পর্যন্ত। বিপরীতে আর্ট গ্যালারি, আর পূর্বে ১৪৬ ফুট উঁচু ডেল্লাই গোপুরম। এশিয়ার মধ্যে উচ্চতম—৭২ মি উঁচু সুন্দর গোপুরমটি হয়েছে (১৯৮৭) দক্ষিণের মূল প্রবেশদ্বারে। লোকশ্রুতি, খ্রিস্টজন্মেরও দু'হাজার বছর আগে লঙ্কার রাবণ রাজার ভাই বিভীষণ মন্দিরটি গড়েন। উপাসনারত ছবিও রয়েছে বিভীষণের মূল মন্দিরে। তবে, ব্রহ্মবিদ্যা কেন্দ্র রূপে সমৃদ্ধি আসে ১১ শতকে শ্রীরঙ্গমের। আর, মুসলিম হানাদারদের হটিয়ে চেরামন, পাণ্ডা, চোল, হোয়সল ও বিজয়নগর রাজাদের হাতে ১৪—১৭ শতকে সংস্কারও হয়েছে মন্দিররাজি। ৬-১৫—১৩-০০ আবার ১৫—২০-৪৫এ মন্দির খোলা। প্রবেশাধিকার কেবল হিন্দুদের। অ-হিন্দুরা ২ টাকার টিকিটে ৪র্থ দেয়ালে উঠে মন্দিরের প্যানোরমিক ভিউ দেখে নিতে পারেন। প্রবেশাধিকারও তাদের ৪র্থ চত্বর পর্যন্ত। মুহূর্তে বাস যাচ্ছে ত্রিচির বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ রুটের রেল স্টেশন হয়ে শ্রীরঙ্গমে।

শ্রীরঙ্গম থেকে ২ কিমি পূর্বে চেন্নাই-সালেম পথে তিরুবন্থাইকোভাল-এ জম্মুকেশ্বর শিবমন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য। জনশ্রুতি, হাতির পূজিত দেবতা—সেই থেকে নারী। জম্মু (জাম) বৃক্ষতলে গড়ে উঠেছে মন্দির। শ্রীরঙ্গমের সমকালে চোল রাজাদের তৈরি মন্দিরের কার্ভিংয়ের কাজ সুন্দর, শ্রীরঙ্গমের থেকেও প্রশংসনীয়। ৭টি গোপুরম হয়েছে ৫ দেওয়ালে ঘেরা মন্দিরের। দেবতা শিব অর্থাৎ স্বয়ম্ভু জম্মুকেশ্বরম এখানে জলবেষ্টিত। জল এসেছে ঝরনা থেকে। পূজাও পাচ্ছেন দেবতা পঞ্চভূতের এক—বারি অর্থাৎ জল রূপে। আর আছেই দেবী অখিলাদেশ্বরী মন্দিরে। ৬—১৩-০০ আবার ১৬—২১-৩০টায় মন্দির খোলা।

ত্রিচি থেকে ২৪ তাজোরের ৪৮ কিমি দূরে ত্রিচি-তাজোর সড়কে শ্রীলঙ্কা আনিকট অর্থাৎ কাবেরীকে বণে আনতে ১১ শতকে চোল রাজাদের তৈরি ৩২৪×২০ মিটারের পাথুরে বাঁধ দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। তবে বাঁধের গোড়াপত্তন চোলরাজা কারিকালানের হাতে ২ শতকে। চড়ুইভাতির

মনোরম পরিবেশ। থাকার জন্য ধরমশালাও আছে শ্রীরঙ্গমে। দিনে দিনে ত্রিচি ও শ্রীরঙ্গম বেড়িয়ে পরদিন কোদাই বা মাদুরাই চলুন।

শহরাত্তে ৮ কিমি দূরে ভায়ালুর-এ লর্ড মুরুগা মন্দির, ২০ কিমি দূরে সময়াপুরমে দেবী মেরী আম্মান, ৩০ কিমি দূরে ভিরালীমালাই পাহাড় চুড়োয় লর্ড কার্তিক ছাড়াও পিককু স্যাকচুরারি, ৩৭ কিমি দূরের নরথামালাই-এর গুহামন্দির ছাড়াও নানান মন্দির দেখে নেওয়া যায় ত্রিচি থেকে।

ইয়ারকুদ

সালেম জেলায় ১৫১৫ মি উঁচুতে শেভারয় পর্বতে গড়ে উঠেছে শান্ত ছায়া-সুনিবিড় ছোট্ট পাহাড়ী শহর ইয়ারকুদ। কফি, কমলা আর ইউক্যালিপটাসের শহরও ইয়ারকুদ। ১৮২০তে সালেমের কালেক্টর এম ডি ককবার্নের আবিষ্কার অরণ্যে ঘেরা পাহাড়ি লেক ইয়ারকুদ—ইয়ার হচ্ছে হ্রদ আর কুদ অর্থ অরণ্য। দক্ষিণী গরম এড়াতে গড়ে ওঠে সাহেব-দের বাড়ি-ঘর। কালে কালে শৈলশহর। আর আছে রমণীয় লেকে বোটিং, আন্না পার্ক, লেডিস সিট ভিউ পয়েন্ট, ৩০০ ফুট উঁচু থেকে নামা কিল্লীয়র ফলস, প্যাগোডা ভিউ পয়েন্ট, বিয়ারস ক্লেভ, শেভারয় পাহাড়ে মন্দির, দি রিট্রিট ইয়ারকুদে। প্রাকৃতিক শোভা অতুলনীয়। শীত ও গরম দুই-ই কম। তাপমানের গড় গ্রীষ্মে ২৯° আর শীতে ১৩° সেন্টিগ্রেড।



নিকটতম বিমানবন্দর ত্রিচি ১৮৭, ব্যাঙ্গালোর ২০৫, কোয়েম্বাটুর ১৯০ কিমি থেকে ট্রেন ও বাস আসছে সালেমে। আর, সেটাইল থেকে বৃষ্টি ছাড়া প্রতিদিন ১৫-১০৫ ২০২৩ চেন্নাই-কোয়েম্বাটুর শতাব্দী এক্স, ২২-৪৫ ইয়ারকুদ এক্স, ২০-৩৫এ নন স্টপ চেরান এক্স, ২১-১৫য় নীলগিরি এক্স, ১৯-০৫এ ম্যাঙ্গালোর মেল, ১৮-৫৫য় তিরুভনন্তপুরম মেল, ১২-০০টায় গুয়েস্ট কোস্ট এক্স, ৬-১৫য় কোভাই এক্স, ১৯-৩৫এ আলোমি এক্স চেন্নাই সেট্টাইল ছেড়ে ৩৩৫ কিমি দূরের সালেম যাচ্ছে যথাক্রমে ১৯-১৩, ৫-০৫, ১-২০, ১০-৫০, ২-৩৫, ০-২৫, ১৭-২০, ২৩-৫৫, ১-০৫এ। যাতায়াতে শতাব্দী ও ইয়ারকুদ এক্স আরম্ভ হয়। ট্রেন আসছে হাওড়া, গুয়াহাটি, পটনা, বোকারো স্টীল সিটি, দিল্লি, ও মুম্বাই থেকেও দক্ষিণী ইম্পান্ডনগরী সালেমে। ৬-০০টায় ইটোরসিটি, ৭-৩০এ প্যা, ১৫-৪৫এ কুইলন এক্স, ১৯-৩৫এ ময়ীশ্বর-ভাঙ্কোর এক্স, ২১-০০টায় কন্যাকুমারী এক্স ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে ২১৫ কিমি দূরের সালেম পৌঁছায় ৯-৪৫, ১৩-১০, ২০-৪৫, ০-৩৫, ১-৪৫এ। সালেম থেকে ৩৪ কিমি দূরে ইয়ারকুদ পাহাড়ী শহর। নিয়মিত বাস যাচ্ছে সালেম থেকে ইয়ারকুদে। ঘন ঘন বাক, কফি ও রবার গাছে ছাওয়া পথশোভা রমণীয়। বেড়াবার মরসুম ফেব্রুয়ারি থেকে মে, আবার সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস; তবে বছরভর চলা যায় ইয়ারকুদে। ট্যাক্সি মেলে শহরে।



থাকার জন্য TTDC-র H Tamilnadu-Yercaud, near Lake, ① (04281) 2273, PC-636601, DAB ৪০০ ৫৫০ সুইট ৬০০ ডর্মি বেড ৪৫; ইয়ুথ হোটেলে বেড ৪৫। Township R H, IB, বাস স্ট্যান্ডের

বিপরীতে NGGO'S Holiday Home, বুকিং: President, NGGO, Salem-1; H Shevarnays, Hospital Rd-1, ① (04281) 22288, সিলনে D ৪৫০-৮৫০ কটেজ ১১৭৫-১৫৫০; *Steering Holiday Resort, Lady's Seat-1, ① 22700, D ১২৫০-১৫৮০ সুইট ১৭৫০-২২৫০; H Select, near Bus Stand, D ৩২৫-৬০০; হাড়াও সাধারণ হোটেলে আছে ইয়ারকুদে।

পাহাড়ে ঘেরা সালেমও চলার পথে দেখে চলা যায়। শ্রীশুকবনেশ্বর মন্দির, মারিয়াম্মান মন্দির, রামকৃষ্ণ মঠ, টিপূর তৈরি জুমা মসজিদ, গভর্নমেন্ট মিউজিয়াম, সালেম স্টিল প্ল্যান্ট ছাড়াও রয়েছে নানান কিছু। সালেমের সোনা ও রূপার চেইন ও অ্যাকসেট, তাঁত শিল্পেরও যথেষ্ট প্রশস্তি। ৩৭ কিমি দূরে হায়দর আলী ও টিপু সুলতানের পাহাড়ী দুর্গ শঙ্খগিরি, ৪২ কিমি দূরে তিরুচেন্নৈগোদু পাহাড়ী মন্দিরে অর্ধনারীশ্বর, ৫০ কিমি দূরে কাবেরী নদীতে মেটুর বাঁধ তথা জলাধার, ৫০ কিমি দূরে পাহাড়ী গুহা মন্দিরে দেবতা হনুমানও দেখে নেওয়া যায় সালেম থেকে। আর আছে ৫০ কিমি দূরে মন্দির-তীর্থ নামাকাল।



হোটেলও আছে নানান সালেমে—H Apsara, 19 Car St, Salem-636001, S ১২৫-১৭৫ D ২২৫-৩০০ A/C D ৪০০; National H, Bangalore Rd-9, ① (0427) 54100, R3B2, S ৩০০ D ৪২৫ A/C S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮০০ কটেজ ৭০০-১০০০; Woodlands H, Five Rd-4, R1B3, S ১৫০ D ২৫০ A/C S ৩০০ D ৪৫০; H Salem Castle, A-4 Bharathi St, Swamapuri-4, ① 448702, A/C S ৬৫০-৮৫০ D ৮০০-১০০০ সুইট ১৮৫০-২৭৫০; H Vasantham, A/C D ৪২৫-৬৭৫; H Kalinga, 116 1st Agraharam, R6B3, ① 63184, SAB ২২৫ DAB ৩৫০ A/C S ৩৫০ D ৬০০ সুইট ১০০০; *H Dwaraka, Five Rd-4; Vedha L, 72 Trichi Main Rd-1, D ১২৫-২৫০ A/C D ৩৫০; H Fullavi, 20 A D Rd-1, SAB ১২০ DAB ২০০ A/C D ৩২৫; H Maruti, New East Pulikuthi St-6; Annapurna Lodging, 301 Thammannar Rd-9, S ৮০-১২৫ D ১৫০-১২৫; H Mithila, 102 Peramanoor Main Rd-7, S ১২৫ D ২২৫।

হোগেনাকল

হোগেনাকল—অর্থ তার স্মোকিং রক। উৎসাহীরা ৭০ ফুট উঁচু থেকে পড়া হোগেনাকল জলপ্রপাত অর্থাৎ পাহাড় থেকে সমতলে নামছে কাবেরী নদী—বাসে বাসে দেখে নিতে পারেন সালেম থেকে। জুলাই-আগস্টে অদৃশ্য অনুপম। এর জলে নানান ব্যাধির নিরাময় হয়, স্বাস্থ্যপ্রদও বটে।

হোগেনাকল থেকে সালেম ১১৪, ব্যাঙ্গালোর ৮০, চেন্নাই-র দূরত্ব ৩৩২ কিমি। আর জেলা সদর ধরমপুুরী দূরত্ব ২৫ কিমি। থাকার জন্য ধরমপুুরীতে আছে TTDC-র H Tamilnadu-Hogenakkal, Pennagaram-636810, ① (043425) 54447, D ২৫০ A/C D ৪২৫ ছয় বেডের ঘর ৩৭৫ ডর্মি বেড ৩৫; Youth Hostel-এ বেড ৪৫ করে; উইক ডেজ-এ রিবেট মেলে।

কোদাইকানাল

নীলগিরির অংশ পালনী পাহাড়ে মাদুরাই-এর ১২০ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ২১৩৩ মি উচ্চে মনোরম পাহাড়ী শহর কোদাইকানাল। শীতের আধিক্য নেই উত্তির মতো কোদাই-এ। নভেম্বর-ডিসেম্বরে প্রবল বৃষ্টির কারণে শীত বাড়ে কোদাই-এ। তবুও বছরভর যাত্রী যাচ্ছেন কোদাই পাহাড়ে। কোদাই ভ্রমণে সাধারণ উলেনই মরসুমের দিনগুলিতে যথেষ্ট।



চেন্নাই এগমোর থেকে তিরুচিরাপল্লী হয়ে মাদুরাই রেলপথের মধ্যবর্তী স্টেশন কোদাইকানাল রোড। সরাসরি রেল আসছে এগমোর থেকে ১৯-১০৫ 6103 মাদুরাই এক্স, ২২-০০টায় 6719 মাদুরাই মক্স এক্স, ১৩-৩০৫ 6779 মাদুরাই জনতা এক্স, ১৮-৪৫৫ 6717 পাণ্ডিয়ান এক্স ত্রিচি হয়ে কোদাইকানাল রোড পৌছায় যথাক্রমে ৬-১৫, ৯-২০, ৩-৫৫, ৫-৪৭এ। ৬-১০৫ ত্রিচি ছেড়ে ৮-৩৬৫ কোদাই পৌছে মাদুরাই যাচ্ছে ৯-৪৫এ 6799 তিরুপতি-মাদুরাই এক্স; নাগোর-কোন্টাম এক্স ১৭-০৫এ ত্রিচি ছেড়ে ১৯-২১এ কোদাই পৌছে কোন্টাম যাচ্ছে পরদিন ৪-০০টায়; ১৫ দিন মাদুরাই-জম্মু, ১৩৬ দিন নাগেরকয়েল-কারলা এক্স, চেন্নাই-ক্যাকুমারী এক্স, মাদুরাই-ব্যান্সালোর লিঙ্ক এক্স, কোয়েম্বাটুর-নাগোর এক্স, কোয়েম্বাটুর-রামেশ্বরম এক্সও যাচ্ছে কোদাইকানাল রোড হয়ে। ৯-১০এ মাদুরাই-ইরোড প্যা, ১৮-১০এ মাদুরাই-ডিভিগুল প্যা ১ ঘণ্টায় কোদাইকানাল রোড হয়ে যাচ্ছে। কোদাইকানাল রোড থেকে চেন্নাই ৫১৬, তিরুচিরাপল্লী ১১৫, মাদুরাই-এর দূরত্ব ৪০ কিমি। আর কোদাই রোড স্টেশন থেকে পাহাড়ী শহরের দূরত্ব ৮০ কিমি। বাস ও ট্যাক্সি নিয়মিত সংযোগ গড়েছে কোদাইকানাল রোড থেকে কোদাইকানাল পাহাড়ের। বাসে ঘণ্টা তিনেকের পথ। আরও দুই রেল স্টেশন ডিভিগুল ও পালানি থেকেও বাস মেলে কোদাই পাহাড়ের। সারা পথেই মনোহর প্রকৃতি। পশ্চিমঘাট পর্বতমালায় হাজার তিনেক ফুট উঠেই কফিক্ষেত চলার পথের সৌন্দর্যকে আরও বাড়িয়ে তোলে। তারই সঙ্গে পান্না দেয় কালচে রঙের আভুর পাহাড়ী ঢালে থরে থরে। রেল পাহাড়ে না পৌছালেও রেলের বুকিং অফিস বসেছে বাজার রোডের কাছে কোদাই পাহাড়ে।



এছাড়া রাজ্য পরিবহনের বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে কোদাইকানাল পাহাড়কে ৪ ঘণ্টায় ১২০ কিমি দূরের মাদুরাই-এর সাথে। ঘটনা ঘটায় বাস, যাতায়াতে সুবিধাও বেশি মাদুরাই থেকে বাসে। প্রাইভেট মিডি বাসও যাচ্ছে বাস স্ট্যান্ড থেকে কোদাই। যাতায়াতে আরামপ্রণও এই মিডি। নিকটতম বিমানবন্দরও মাদুরাই। সংযোগ গড়েছে বাস ৪½ ঘণ্টায় ১৯২ কিমি দূরের ত্রিচি, ডিভিগুল, পালানি, তুতিকোরিন, টেণ্ডাডি অর্থাৎ পেরিম্বার বন্যজন্তু স্যান্ডহারির সাথেও কোদাই-এর। বাস যাচ্ছে কোদাই থেকে—চেন্নাই, ক্যাকুমারী, কোয়েম্বাটুর (দিনে এক)। আর মরসুমে ডিলাক্স মিনিবাস চলে কোদাই থেকে ২৯৬ কিমি দূরের উটি পাহাড়ে; ৯ ঘণ্টার পথ। ব্যান্সালোরও যাচ্ছে KSRTC-র সুপার ডিলাক্স বাস রাতভর জানিতে কোদাইকানাল থেকে। সকাল ৯-০০টায় বাস পৌছাতেই টিকিট মেলে বাসে সে-রাতের।

আর কোদাই-এ ট্যাক্সি মেলে শহর বেড়াতে। মরসুমী পর্যটকদের কোদাই দেখাচ্ছে তামিলনাড়ু পর্যটন ৮-৩০—১২-৩০ ও ১৪-৩০—১৮-৩০টায় Hotel Tamilnadu থেকে। Pandyan Travels-এরও ব্যবস্থা থাকে মরসুমে শহর দেখাবার। এমনকি মাদুরাই থেকে নানান ট্রাভেল এজেন্ট গ্যাকেট ট্যুরে কোদাই দেখিয়ে ফেরে দিনে দিনে। তবুও যেন পায় পায় বেড়িয়ে-কাটরে উপভোগ করাই উচিত হবে কোদাই-এর নয়ন-মনোহর প্রকৃতি। রাজ্য পর্যটনের Tourist Office বসেছে বাস স্ট্যান্ডের সন্নিকটে। সবুজে ছাওয়া সুন্দর প্রকৃতির মাঝে স্বাস্থ্যকর পাহাড়ী শহর কোদাইকানাল। মসলা হচ্ছে নানান কোদাই-এ। কলা, কমলা আর ইউক্যালিপটাসের শহরও কোদাই। দিনের বারো ঘণ্টাই সূর্যালোকে স্নান করে কোদাইকানাল। আর আছে শতাব্দিক ধর্মী পাখি—দিন-রাত জুড়ে মিষ্টি-মধুর সুরে কোরাস গায়। কৃত্রিম (মানুষের কাটা) ৬০ একর ব্যাপ্ত বৈচিত্র্যে ভরা তারাকার বেরিজাম লেকটিও প্রাকৃতিক সৌন্দর্য বাড়িয়ে তুলেছে শহরের। আসলে পাহাড়ী নদী এই লেক—বশ মেনেছে বাঁধের কাছে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে—পেডাল ও রোবোট মেলে। কার্পটন হোটেলের নিচুতে বোট হাউসে বুকিং। লেকের পূর্বে Christ the King চার্চের সামনে ব্রেকস্ট পার্কে ফুলের বাসর, যে মাসে রঙবেরঙের ফুলে শোভা বাড়ে শহরের। ঘোড়াও মেলে শহর ঘুরতে বোট হাউসের আশেপাশে। লেকের উত্তর-পশ্চিম জুড়ে বসতি। ৬ কিমি দূরে Sacred Heart College ক্যাম্পাসে পালানি পাহাড় থেকে সংগ্রহ করা ৩৫০-রও অধিক ধর্মী অর্কিড ও রঙবেরঙের বাহারি গাছগাছালির অর্কিডারিয়ায়টিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। রবি ছাড়া ১০—১১-৩০ ও ১৫-৩০—১৭-০০টায় খেলা। তেমনি খ্যাত কুরুনজী ফুল—প্রতি বারো বছর অন্তর ফোটে। আগামী ২০০৪ সালে আবার ফোটার কথা। চার্চও আছে নানান কোদাই-এ। Sir Vere Laverge-এর পরিকল্পনায় ছোট নদীর পাড়ে প্রথম রূপ পায় কোদাইকানাল গত তৃত্বকের মাঝে। তবে আবিষ্কার তারও আগে ১৮২১-এ ব্রিটিশের চোখে, আর প্রথম সড়ক তৈরি আমেরিকান মিশনারীদের হাতে ১৮৪৫-এ।

কোদাই-মাদুরাই পথে শহরের ৮ কিমি আগেই আকর্ষণে অনন্য দুর্দম ধারায় লাফিয়ে নামা সিলভার ক্যাসকেড ফলস, শহর থেকে ৫ কিমি দূরে অবজারভেটরির নিচুতে ফ্লোরি ফলস, শহর লাগোয়া বিয়ার শোলা ফলস, দি প্লেন ফলস—এদেরও প্রাকৃতিক শোভা মুগ্ধ করে পর্যটকদের। এছাড়া প্রসপেক্টিং পয়েন্ট, ভেমবাদী সোল পিক, ৮ কিমি দূরে ডলফিনস নোজ, ৭ কিমি দূরে ৪০০ ফুট উঁচু শুভ্ররাণী ও পাথর গুণ্ড—শিলার রক, অবজারভেটরির সন্নিকটে শহর থেকে ৫.৫ কিমি দূরে গ্রিন ভ্যালি ভিউ পয়েন্ট থেকে ভাইগাই বাঁধের দৃশ্য, ৩.২ কিমি দূরে কুরুনজী অশ্বাধার মন্দিরে দেবতা মূরগন অর্থাৎ কার্তিক, কোদাই শহর ও মাউন্ট পেরুমল ছাড়াও সুদূর সমতলের দৃশ্য দেখার জন্য ১ কিমি দূরের ককরাস

ওলাকও পেরুমল শিকের আকর্ষণও কম নয়। উৎসাহীরা যাতায়াতে ২২.৬ কিমি ট্রেক করে কোদাই-এর উচ্চতম ৭৩২০ ফুট উচ্চ পেরুমলও অভিযান করে নিতে পারেন দিনে দিনে।

লেক থেকে ৩.২ কিমি দূরে শহরের উচ্চতম গিঙ্গুপুরম পাহাড়ে ১৮৯৩ খ্রিস্টাব্দে তৈরি, ভারতে একমাত্র Solar Physical Observatory-তে সূর্যসংক্রান্ত গবেষণা চলছে। মিউজিয়াম বসেছে। কোদাই ভ্রমণে অবশ্যই ব্রষ্টব্য। ২টি টেলিকোপ হাউসও হয়েছে কোদাই পাহাড়ে—প্রথমটি কুরুন অন্দাবর মন্দিরের কাছে, দ্বিতীয়টি ককারস ওয়াকে। ১২ ইঞ্চি টেলিকোপে কোদাই শহরও দেখে নেওয়া যায়। এপ্রিল-জুন ১০—১২-৩০ ও ১৯—২১-০০টায় আর অন্যান্য সময় কেবল শুক্রবার ১০—১২-০০টায় খোলা। থার্মো-মিটার তৈরির কারখানাও হয়েছে কোদাই-এ। এমনকি সাময়িক সদস্য হয়ে গল্ফও খেলে নেওয়া যায় গল্ফ ক্লাবে। এতসব আকর্ষণ থেকেও কৌলিন্যো দ্বিতীয় শ্রেণীর পাহাড়ী শহর কোদাই। যাত্রী বিনোদনে বৈচিত্র্যেরও অভাব—সূর্য অস্ত যেতে যাত্রী ঘরবন্দী হন কোদাই-এ। তবুও যেন কোদাই-এর পর্যটক আকর্ষণ তামিলনাড়ুতে অনন্য। এমনকি উটিও ইয়ারকুদ-ও যেন মান হয়ে পড়ে কোদাই-এর কাছে।



কোদাই-এর হোটেল এপ্রিল থেকে জুন সিজনে। বাকি বছর অফ-সিজনে। সিজনে রোডও আকাশ ছুঁই ছুঁই। অফ সিজনে—৩০-৫০% রিটে মেনে। ঢেক আউট চাইম এসের সকাল ৯-০০টায়। বাস থেকে নামতেই বায়ে বাজার রোড অর্থাৎ Anna Salai, Kodaikkanal, STD 04542, PC-624101-এ দোকান-পাট, বাজারঘাট, সাধারণ হোটেলের মেলা বসেছে। আর, মধ্যমান বা উচ্চমানের হোটেল বাজার রোড থেকে মিনিট পনেরোর পায়ে হাটা দূরত্বে কোদাই-এ। সাধারণ হোটেল কবল, গরম জলও মেনে। Bazar Rd-এ—Township Bus Stand R H; H Anjoy, DAB ৩২৫-৪৭৫; Rajaram L, DAB ২৫০; H Jaya, DAB ৩২৫-৪৫০; H Jayaraj, S ২৭৫ D ৩৫০; Kodai L, S ১৭৫ D ৩০০; L Everest D ২০০; Guru L, মান ও দাম এভারেস্ট তুল্য। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Sangeeth, D ২৫০-৪২৫; H Astoria, D ৩৫০-৬০০; Sri Guru L, SCB ১২৫ SAB ১৭৫ DCB ২০০, DAB ৩২৫; L Amar, D ৩০০।

Lloyds Rd-এ—H Jay, SAB ১৫০-২৫০, DAB ২৭৫-৩৫০; Lilly's Valley Resort, 17/178 Sivanadi Rd, D ৩২৫। Sterling Holiday Resorts, 44 Gymkhana Rd-1, ৩ 40313, দুই বেডের কটেজ ১২৫০-১৭৫০। এদেরই আর একটি ইউনিট Sterling Resorts Valley View, Pallangi Rd, ৩ 40635, S ১২৫০ D ১৫৫০ সুইট ১৭৫০-২২৫০, কল বুকিং: Diamond, ৩ 276714, Boat Club Rd, PC-624101-এ—*Carlton H, Lake Rd, ৩ 40056, লিক সিজনে AP-S ২০৫০ D ৩০৫০ সিজনে ১৮০০ ২৬০০, কটেজ/সুইটও মেনে কার্পট। ক্লাব রোড ছাড়িয়ে পাহাড় চড়তে Tuj L, D ৫৫০-৬৫০। বিপরীতে New Garden Manor H, ৩ 40461, D ৬৫০-৮৫০; R R Home, DAB ২৭৫-৪৫০। বাস থেকে মিনিট পনেরোর হাটা

দূরত্বে Fern Hill Road-1-এ—TTDC-র H Tamilnadu-Kodaikkanal, ৩ 41336, DAB ৪৫০ ৫০০ ৬৫০ কটেজ ৬৫০ ১০০০ পাঁচ বেডের কটেজ ৮৫০; TTDC-র Youth Hostel-এ DAB ৪৫০ ডার্মি বেড ৫০ করে; Sournam Apartments, ৩ 40731, সুইট ১০০০; Jai Devi Apartments, ৩ 40712, D ৪০০-৬৫০; Kohinoor G H এও ঘর মেলে থাকার। Golf Links Rd-1-এ—Holiday Home, AP প্রথম দুজন ৪৭৫-৬৫০। Thygaraza Rd-1-এ—Township R H, Kamarajapuram R H, অব: Executive Officer, Kodaikkanal Township, Upper Shola Rd-এ—Park View R H, Daisy Bank R H, Forest Bungalow-ও ঘর মেলে থাকার।

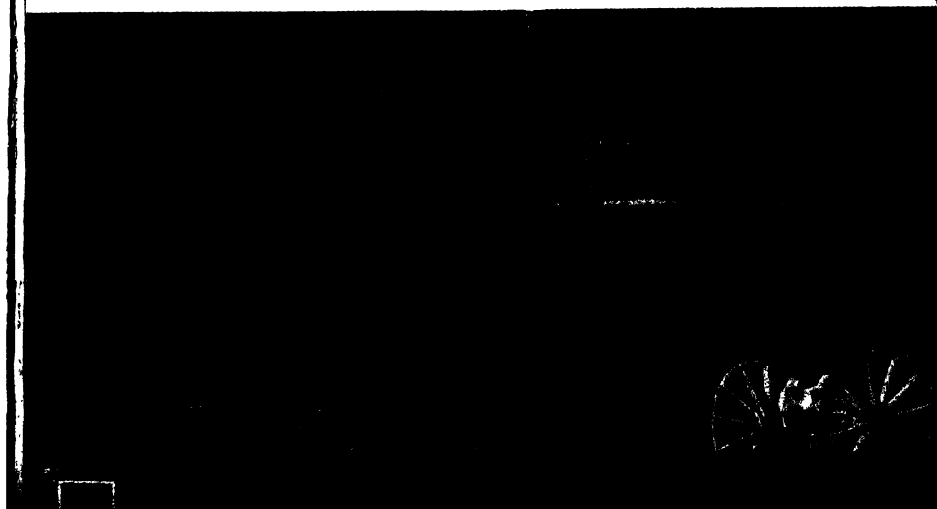
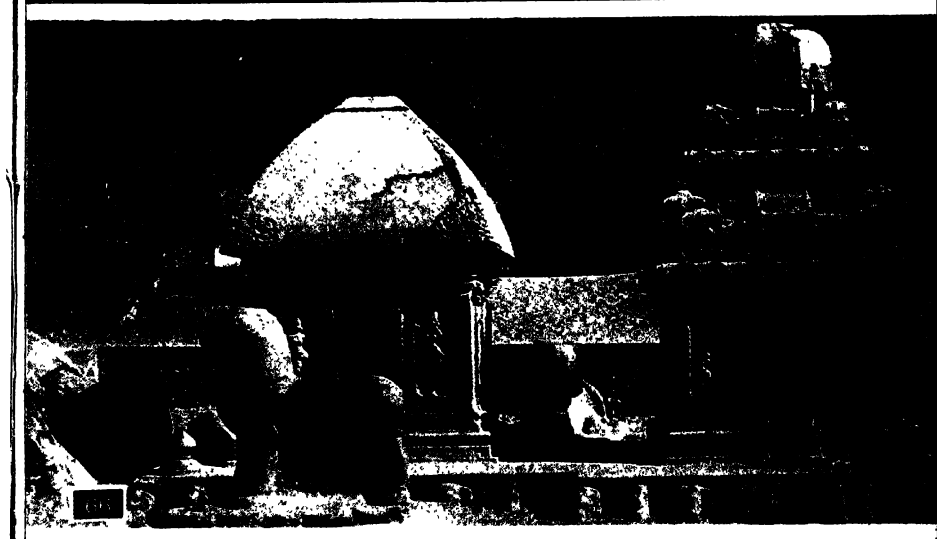
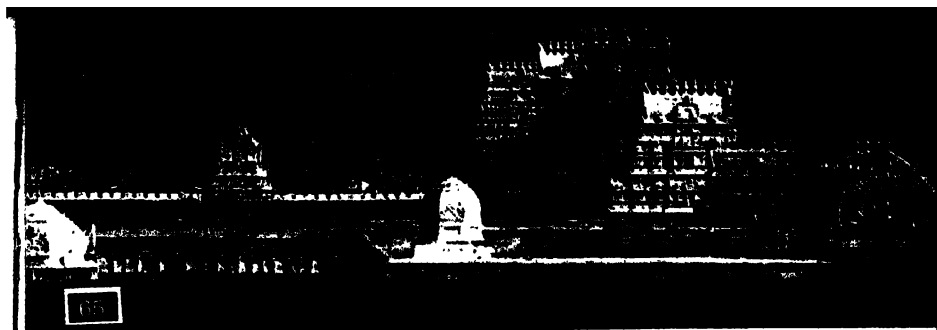
Noyce Rd-এ—Jai L, অতি সাধারণ Zum Zum L এসের রেট D ২২৫-৩৫০। Laws Ghat Rd-এ—Jey, S ২০০ D ৩২৫; Shanmugha Vilas, SAB ২৫০ DCB ৩২৫ DAB ৪০০; MNS Lodge, D ৩০০; ছাড়াও রয়েছে ৫০ কটেজের Kodai Resort H, Coakers' Walk, কটেজ ৪৫০-৮০০, থাকার পক্ষে উত্তম। *H Kodai International, 17/328 Lascot Rd-1, ৩ 40649, লিক সিজনে D ১৬৫০-২০০০ কটেজ ১৮৫০-২২৫০, সিজন/অফ সিজনে রিটে মেনে। বিপরীতে Hilltop Towers, Club Rd, ৩ 40413, SAB ৬৭৫ DAB ১০০০; H Jewel, Seven Roads Jn-1, ৩ 41029, D ৬০০-৮৫০; Highway Travellers Bungalow, অব: D C, Madurai, H Palace, Muthaliarpuram, DAB ৪২৫ TAB ৬০০; Paradise Inn, Laws Ghat Rd-1, DAB ৬৫০-৯৫০, মান হারে দামে আধিক্য; The Green Mist, opp Chettiar Park, Chettiar Rd-1, ৩ 40760, AP-D ১২৫০; Sunrise H, near Post Office, ৩ 41358, D ৩৫০-৫৭৫; বাস থেকে মিনিট বিশেকের পথে Yogappa L, D ৩০০-৪২৫; Shiraj L, D ৩০০-৪৫০; Keith L, near Lake, D ২৫০-৩৫০; অবশ্যই মাছাছো আকর্ষণীয় Greenlands Youth Hostel, Coakers Walk, ২টি ২ বেডের ঘর ও ডার্মি প্রথা থাক। আর আছে Peerless, 3 Esplanade East, Cal-69, ৩ 2483247-এর হলিডে হোম, কোদাই-এ।

তবুও থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে H Tamilnadu, Paradise Inn, H Astoria, Yogappa L, H Sunrise ভালই।

খাবার হোটেলও নানান কোদাই-এ। নিরামিষ আহার্যের জন্য বাস স্ট্যান্ডের নিচে Pakia Deepam বা GPO রোডে Makkal, Rising Star ভালই। আর আমিষ আহার্য বাজার রোড ছাড়িয়ে কোদাই স্কুলের বিপরীতে Tibetan Restaurant, Nedo Restaurant, Silver Inn-এ মেনে। হাসপাতাল রোডে Tava Restaurant-এ নিরামিষ; J J Restaurant-এ দক্ষিণী ভিশের সাথে চীনা, মোংলাই, তন্দুরী মেনে; অদূরে নিচুতে নেমে H Punjab, Apna Punjab এদের প্রসিদ্ধি তন্দুরীর জন্য। তেমনই Chef-master বা Lobsangs Restaurant-এরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি দক্ষিণী, চীনা ও কন্টিনেন্টাল মিল পরিবেশায়।

মাদুরাই

ভারতের এখেন মাদুরাই নগরী। হতী পাহাড় আর নাগ পাহাড়ের মাঝে মাদুরাই অর্থাৎ মধুরম বা মধুরাপুরী বা মিষ্টি





স্থান। মিষ্টতা আসে শিবের জটা থেকে পড়া অমৃত থেকে। ভাস্কর্য ও স্থাপত্যের শহরও এই মাদুরাই। উৎসবানুষ্ঠানের শহর বলেও খ্যাতি আছে মাদুরাই-এর। খ্রিস্টের জন্মেরও ৬০০ বছর আগে ভাইগাই নদীর দক্ষিণ তীরে ১৩৩ মি উঁচুতে পাণ্ডুরাজা কুল্যামেশ্বরের নতুন রাজধানী গড়তে শহরের পত্তন। কালে কালে মীনাঙ্কী মন্দিরকে মধ্যমণি করে পদ্মাকারে প্রসার পেয়েছে এই শহর। ১০ শতকে চোল রাজাদের দখলে যায় মাদুরাই। চোলদের হটিয়ে আবার আসে পাণ্ডু রাজারা ১২ শতকে। ১৪ শতক পর্যন্ত রাজত্বও করে পাণ্ডু রাজারা মাদুরাই-এ। পাণ্ডুদের যুদ্ধে হারিয়ে দিল্লী সুলতানের সেনাপতি মালিক কাফুর দখল নেয় মাদুরাই-এর। মাদুরাই যায় মুসলিম শাসনে। মুসলিমদের হটিয়ে আবার হিন্দু সাম্রাজ্য গড়েন বিজয়নগরের (হাম্পী) রাজা মাদুরাই-এ। ১৫৬৫তে বিজয়নগরের পতনে মাদুরাই যায় নায়ক রাজাদের দখলে। রাজত্বও করে ১৭৮১ পর্যন্ত নায়ক রাজারা মাদুরাইকে রাজধানী করে। আর তিরুমলাই নায়ক (১৬২৩-৫৫ খ্রি)-এর কালে সূর্যযুগ কাটে মাদুরাই-এ। দক্ষিণ ভারতের দ্বিতীয় বৃহত্তম মন্দির মীনাঙ্কীও গড়েন নায়ক রাজা তিরুমলাই। দক্ষিণের শ্রেষ্ঠতম মন্দিরস্থাপত্য তথা ভাস্কর্যও মাদুরাই-এর এই মীনাঙ্কীতে। এমনকি দ্রাবিড়ীয় সংস্কৃতির পীঠস্থানের রূপ নেয় মাদুরাই নায়ক রাজাদের কালে। সবশেষে নায়কদের হাটিয়ে দখল যায় মাদুরাই-এর ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি তথা ব্রিটিশের হাতে। আর ১৭৮১তে কশাটিক যুদ্ধ জিতে রাজত্বও আদায় করে ব্রিটিশ। ১৮৪০-এ অতীতের দুর্গাটও ওড়িয়ে দেয় ব্রিটিশ। পরিকা বুজিয়ে Veli St সড়ক গড়ে ব্রিটিশ। রাজ্যের দ্বিতীয় বৃহত্তম শহর মাদুরাই-এর হ্যান্ড লুম ও হ্যান্ডিক্রাফটসেরও প্রশান্তি আছে পর্যটকমহলে। ১১ লক্ষাধিক লোকের বাস শহরে।



মিচি থেকে ১২৮, ডিভিগুল হয়ে ১৬১ কিমি— বাস ও রেল যাচ্ছে মিচি থেকে মাদুরাই-এ। আথচন্টা অন্তর বাস, ৩২ ঘট্টার পথ মিচি থেকে। রেল সংযোগ রয়েছে রাজ্যের নানান শহরের সঙ্গেও মাদুরাই-এর। রেল আসছে রাজ্যের বাজধানী চেন্নাই এগমোর থেকে ভিন্দুপুরম-ভাজোর-চিদাম্বরম ও ভিন্দুপুরম-মিচি-কোলাই হয়ে ২টি ভিন্ন পথে। দূরত্ব ও সময়ে সাক্ষর মেলে মিচি হয়ে। দ্রুততম ট্রেন ভাইগাই এক্স সময় নেয় ঘন্টা আটেক। ১২-৫০এ Vaigai Exp, ১৮-৪৫এ Pandyan Exp, ৬-১০এ Kudal Exp, ১৯-১০এ Madurai Exp, ২২-০০টায় Madurai Mahal Exp, ১৩-৩০এ চেন্নাই-মাদুরাই Janata Exp চেন্নাই এগমোব ছেড়ে মিটারগেজে মাদুরাই পৌঁছায় যথাক্রমে ২১-৪৫, ৬-৪৫, ১৫-৫৫, ৭-৩০, ১০-৫০, ৪-৪৫এ। কোয়েম্বাটর-রামেশ্বরম এক্স ৬-০০টায় ১৬৪ কিমি দূরের রামেশ্বরম, ২১-৫০এ ২২৯ কিমি দূরের কোয়েম্বাটর যাচ্ছে মাদুরাই থেকে। ৯-৫০এ প্যাসেঞ্জার যাচ্ছে ৬-০০টায় মাদুরাই ছেড়ে কোয়েম্বাটর-রামেশ্বরম প্যাঃ ১০-০০, ১৪-০৫এ মাদুরাই ছেড়ে মনামাদুরাই হয়ে রামেশ্বরম, ৩-০৫, ১৩-১০এ মাদুরাই ছেড়ে পালঘাট যাচ্ছে পালঘাট-রামেশ্বরম-পালঘাট প্যাসেঞ্জার। ১৩-

অবশ সঙ্গী : ৯৭-৯৮/২৩

৩০এ মাদুরাই-নাগেরকরেল প্যাঃ ২২-৩০এ মাদুরাই-কুইলন প্যাঃ যাচ্ছে নাগেরকরেল হয়ে। নাগের-কুইলন এক্সও যাচ্ছে মাদুরাই হয়ে। ৬৪০০ মাদুরাই-তিরুপতি এক্স যাচ্ছে মিচি/ ভাজোর/ কুভকোশাম/ ভিন্দুপুরম/ ভেট্টোর/ কটিপাশী হয়ে তিরুপতি। মাদুরাই ফেরে ১৫-৪০এ তিরুপতি থেকে ৬৭৭৭ তিরুপতি-মাদুরাই এক্স। আর রত্ন গেজে ৩-৪০এ মাদুরাই ছেড়ে তিরুনেলভেলী/ নাগেরকরেল হয়ে সরাসরি কন্যাকুমারী যাচ্ছে ৯-৫০এ চেন্নাই সেট্রাল-কন্যাকুমারী এক্স, ২০-০৫এ ব্যালালোর যাচ্ছে মাদুরাই-ব্যালালোর লিঙ্ক এক্স। মুম্বাই-নাগেরকরেল এক্স, মাদুরাই-জম্মু লিঙ্ক এক্সও যাচ্ছে মিচি-ইরোড হয়ে। মাদুরাই রেলওয়ে এনকোয়ারি ৩ ৩৭৫৭, রিজার্ভেশন ৩ ২৩৫৩৫.

চিত্রসূচী: ছয়

৬৫ শ্রীরঙ্গম মন্দির ছবি স্থাপন দপ্তর ৬৬ মহাবলীর পূর্ববর্তী ছবি স্থাপন দপ্তর ৬৭ টিউব স্ট্যান্ডার্ড প্ল্যান ছবি স্থাপন দপ্তর ৬৮ কন্যাকুমারী মন্দির ছবি স্থাপন দপ্তর ৬৯ মাদুরাই — অরোতিন্দ ছবি পর্বত দপ্তর ৭০ মীনাঙ্কী মন্দির — মাদুরাই ছবি পর্বত দপ্তর ৭১ মহাবলীর বিলিক ছবি পর্বত দপ্তর ৭২ রামেশ্বরম মন্দিরে জালিন ছবি পর্বত দপ্তর ৭৩ কোয়েম্বাটর ছবি পর্বত দপ্তর ৭৪ তিরুমলাই মন্দির ছবি পর্বত দপ্তর ৭৫ পেরিয়ারের হাট ছবি পর্বত দপ্তর ৭৬ কোয়েম্বাটর বেল্লা ছবি বিজয় সেনওর



বাস স্ট্যান্ড ডিনটি মাদুরাই-এ। তিরুমলাইভার ও স্টেট অর্থো পাসিয়ান রোডওয়েজ স্ট্যান্ডের অবস্থান রেল স্টেশনের সন্নিকটে ওয়েস্ট ভেলি স্ট্রিটে। আর আদা বাস স্ট্যান্ডের অবস্থান ভাইগাই নদী পেরিয়ে শহরের উত্তরে। বাসও যাচ্ছে স্টেট বাস স্ট্যান্ড থেকে শহর পরিক্রমায়, তিরুমলাইভার থেকে যাচ্ছে দূরপাল্লার; আর আদা থেকে যাচ্ছে ভাজোর, মিচি, রামেশ্বরম। সিটিবাস (রুট ৩) সংযোগ গড়েছে শহর থেকে আদা স্ট্যান্ডের। আর স্টেট বাস স্ট্যান্ড থেকেই যাচ্ছে RMTC ও PRC-র বাস ঘট্টার ঘট্টার ছেড়ে ৪ ঘট্টার ১২০ কিমি দূরের কোলাইকানাল; আর মনসুনে বাস যাচ্ছে ঘুরপেছা পালানি হয়ে। বাস যাচ্ছে তিরুমলাইভার ৫-০০, ৬-২৫, ৭-২৫, ৮-১০, ১২-৩০, ১৪-৩০, ২৩-৩০এ ছেড়ে ৬ ঘট্টার কন্যাকুমারী ২৫৫ কিমি; অর্থ শতাধিক বাস যাচ্ছে ভোর থেকে গভী বাতে ১০ ঘট্টার ৪৫০ কিমি দূরের চেন্নাই, ১৩টি সুপার ডিলালও যাচ্ছে মাদুরাই থেকে চেন্নাই; ৭ ঘট্টার ৩৬৭ কিমি দূরের তিরুমলাইভারও যাচ্ছে ৩টি, ১০-০০, ১৮-০০, ২০-৩০এ ছেড়ে ৯ ঘট্টার ৩৮৬ কিমি দূরের কাজিকোড়; ৬-০০, ৭-০০, ৮-০০, ৯-৩০, ১০-০০, ১০-৩০, ১১-০০, ১৮-৩০, ১৯-৪৫, ২০-০০, ২১-০০, ২১-৩০, ২২-০০, ২৩-০০টায় ছেড়ে ৪৫১ কিমি দূরের ব্যালালোর যাচ্ছে ১০ ঘট্টার; ১০-০০, ২০-৪৫এ ছেড়ে ৮ ঘট্টার ৩৪১ কিমি দূরের পতিচেরী; ১৬-০০টায় ছেড়ে

১৬ ঘটায় ৬৮২ কিমি দূরের মাদ্রাসেলোর; ৪-০৫, ১৫-০০টায় ছেড়ে ২০৯ কিমি দূরের কোয়েম্বাটুর যাচ্ছে ৪২ ঘটায়; ৯-০০, ২১-০০টায় ছেড়ে ৯২ ঘটায় কোচি ৩২৪; ৯ ঘটায় ভেমোর ৪১৩, মণ্ডগম হয়ে রামেশ্বরম ১৭৩, ত্রিচি ১৫২, চিদাম্বরম ২৮৩, ছাড়াও তুডিকোরিন, কোর্টালম, কোল্লাম তথা সারা দক্ষিণে বাস যাচ্ছে মাদুরাই থেকে। কেরল রাজ্যের পেরিয়ার অর্থাৎ কোয়াম্বাটুরে দিনে ৪টি বাস যাচ্ছে মাদুরাই থেকে তিরুভান্তুভুরের ৮২ ঘটায়। তবে, পেরিয়ারের গেটওয়ে কুমিলির আধিকা মেলে বাসে। চলার পথে মাদুরাই থেকে ৬৭ কিমি দূরের ভাইগাই বাঁধটিও সেখাে যেতে পারেন উৎসাহীরা। থাকারও ঘর মেলে TTDC-র Hotel Tamilnadur D ১০০ টাকায়। আর, কন্যাকুমারীর যাত্রীদের উচিত হবে মাদুরাই থেকে ছাড়া বাসের যাত্রী হওয়া। এছাড়াও বাস যাচ্ছে নানান দিক থেকে এসে মাদুরাই হয়ে কন্যাকুমারী। তবে, দুরাশ থেকে আসা বাসে সিটের অভাব। TTC-র রিজার্ভেশন ৩ ৫৪৩৭৫৪; Pandiyan, ৩ ৩৫২৯৩। নানানধর্মী প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে স্টেট বাস স্ট্যান্ডের চারপাশ থেকে চমোই, ব্যাসালোর ছাড়াও দক্ষিণের নানান দিকে।



IAC-র বিমান ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১২-১৫য় চমোই ছেড়ে ১৩-০৫এ মাদুরাই যাচ্ছে। চমোই ফেরে ১৮-১৫য় মাদুরাই থেকে। মুম্বাই যাচ্ছে ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১৩-৩৫এ মাদুরাই ছেড়ে ১৫-২০এ; ফেরে ১৬-০০টায় মুম্বাই ছেড়ে ১৭-৪৫এ মাদুরাই-এ। প্রাইভেট বিমান NEPC Airlines ২ ৪ ৬ দিন মাদুরাই-বাসালোর-আমেনাদাব; ১ ৩ ৫ দিন মাদুরাই-বাসালোর; কোচি যাচ্ছে প্রতিদিন; চমোই যাচ্ছে প্রতিদিন ৭-৫০এ, ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন ২০-৫০এ মাদুরাই থেকে। ফেরেও এরা নিয়মিত। শহর থেকে ৫ কিমি দূরে বিমানবন্দর। ট্যান্ডি ও অটো যাচ্ছে শহরে।



সাঁউথ, ইস্ট, নর্থ ও ওয়েস্ট এই চার Veli Street-এ ঘেরা বর্গাকার মাদুরাই-এ বসেছে পর্যটকদের দুনিয়া। রেল স্টেশন ৩ ৫৪৩১৩১, স্টেট ও তিরুভান্তুভুর ৩ ৫৪৩৭৫৪ দুই বাস স্ট্যান্ডই ওয়েস্ট ভেলি স্ট্রিটে। অবস্থানও এদের পাশাপাশি। IAC ৩ ৫৪১২৩৪ আরও উত্তরে গিয়ে ওয়েস্ট ভেলি স্ট্রিটে। অদূরে GPO, টুরিস্ট অফিস, ৩ ২২৯৫৭ রেল স্টেশনের ডাইনে হোটেল তামিলনাড়ু লাগোয়া ১৮০ ওয়েস্ট ভেলি স্ট্রিটে। রেল স্টেশন ও বিমানবন্দরেও শাখা আছে টুরিজমের। মধ্যমানের হোটেলগুলিও গড়ে উঠেছে রেল ও দুই বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫/১০ মিনিটের হাটা দূরছে মীনাক্ষী মন্দিরের পশ্চিমে উত্তর ও দক্ষিণ ম্যাসি স্ট্রিটের মাঝের টাউন হল রোড ও ওয়েস্ট ম্যাসি স্ট্রিটে। অবস্থান এদের ভাইগাই নদীর দক্ষিণে অর্থাৎ পুরাতন শহরে। আর ভাইগাই নদীর উত্তর পাড়ে ব্রিটিশের গড়া আধুনিক ক্যান্টনমেন্ট নগরীতে উচ্চমানের হোটেলের অবস্থান।

রেল ও বাসের বিপরীতে মন্দিরমুখী Town Hall Rd, Madurai, STD 0452, PC-625001-এ—New College House, ৩ ৫৪২৯৭১, SAB ৭০ DAB ১২৫-২৫০ TAB ২০০ FR ২৫০; লাগোয়া H Tenush, 7 Town Hall Rd, S ৬০-৮৫ D ১২৫-১৭৫; H Times, ৩ ৫৪২৬৫৭, 15 Town Hall Rd, S ৯০ D ১২০-১৭০ A-C D ৩০০; Kaveri Mahal, S ৬০ D ৮০-১২৫; H Krishna, S ৬৫ D ১২০; H Ragu, S ৮৫ D ১৫০ A/C D ২৫০; H Sri Santhanam, S ৬৫ D ১২৫; H

Ramson, SAB ৬০ DAB ১০০-১৫০। West Perumal Maistry St-1-এ—H Aarthi, ৩ ৩১৫৭১, S ১২০ D ১৭৫-২২৫ A/C S ২৫০ D ৪০০; H Chakkrawarthi, D ১২৫-২০০; H Grand Central, D ১৫০ A/C D ২৫০; H International, ৩ ৩১৫৫২, SAB ১০০-১৭৫ DAB ২০০-৩২৫; TM Lodge, ৩ ৫৪১৬৫১, SAB ১৫০ DAB ২৫০ A/C S ৩৫০ D ৪০০; *H Prem Nivas, ৩ ৫৪২৫৩২, S ১৫০ D ২২৫ A/C D ৩৪০; H Naveen, SAB ১২৫ DAB ১৭৫; Ruby L, S ৮০ D ১২৫; H Subham, S ৬৫ D ১২৫ সুইট ১৫০-২৫০; H Gangali, S ৬০ D ১০০; K P Lodge, S ৬৫ D ১০০; TTDC-র *H Tamilnadu Madurai-1, West Veli St-1, opp TTC Bus Std, ৩ ৩৭৪৭০, SAB ১২৫ DAB ২০০ ২২৫ ২৫০ A/C S ২১০ D ৪০০ ৫০০ চার বেডের ঘর ২৭৫ A/C ৪০০ ডর্মি বেড ৫০। Ashok Bhavan, W Veli St-1, Corporation Travellers Bungalow, opp Rly Stn, S ৬০ D ৮৫ কন্ডেজ ১৫০, অব: Municipal Commissioner. রেলের রিটার্নিং ক্লকও আছে মাদুরাই-এ।

পাঁকাতা প্রথার—Taj Group's *Pandyun H, Race Course Rd-2, ৩ ৪২৪৭৭, R4, A/C S ১২০০ D ১৫০০ সুইট ৩৫০০; এদেরই পাছাড়া টুন্ডে ৬০ একর জায়গা জুড়ে *Taj Garden Retreat, 7 Thiruparamkundrum Rd-4, ৩ ৬০১০২০, S ৮৫ D ১০৫ US\$; ITDC-র *Madurai Ashok, Azagarkoil Rd-625002, ৩ ৪২৫৩১, A/C S ১১৯৫ D ২২০০ সুইট ২৩৯৫; H Sulochna Palace, 96 W Perumal-Maistry St-1, ৩ ৩০৬২৭, S ১৭৫-২৫০ D ৩০০ A/C S ৪০০ D ৪৫০ সুইট ৭৫০; H Supreme, 110, W Perumal Maistry St-1, ৩ ৫৪৩১৫১, D ৩৫০ A/C D ৬০০-৭৫০ সুইট ১২৫০-১৫০০; তারকাখচিত TTDC-র *H Tamilnadu Unit-Madurai II, Alagarkoil Rd-2, ৩ ৪২৪৬০, S ২০০ D ২৫০ A/C S ৩০০ D ৪০০ ৪২৫ সুইট ৭৫০, অব: ম্যানেজার।

H Devi, 20 West Avani St, S ৮০ D ১৫০, বাস ও রেল থেকে ১৫ মিনিটের পথে মন্দির তথা শহরের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান দেবীর ছাঙ্গ থেকে। H Sungam, Kokathopu St-1, D ১৫০ সুইট ২২৫-৩০০; H Basantham, HTPK Rd; H President, Yanakhal-1, R3B3, SAB ১৫০ DAB ২৫০ সুইট ৪৫০; Rankrishna L, Koodalalagarkoil St; H Arima, T B Rd-1, S ৮০ D ১২৫ A/C D ২৭৫; H Apsara, 137 West Masi St-1, DAB ১২৫-২৫০; H Midland, Dhanappa Mudali St; Udipi Boarding & Lodging, Natraj L, near West Tower, S ৮৫ D ১৫০।

এছাড়াও রয়েছে—H Alankar, Ashoka L, Kumara L, Central L, Ruby L, Sri Jayaram L, Sri Kasiram L, Vaigai L, Santhi L, New Arya Bhawan, Bhoopati L, Ashoka L, New Modern, Saraswati L, এদের কাছে S ৬০-১২৫ D ৮৫-২২৫ টাকায় মেলে। আর আছে মাদুরাই করপোরেশনের ধরমশালা—Rani Mangammal Choultry, opp Rly Stn, ৩ ২৩২৪০ ও বাস স্ট্যান্ডে Meenakshi Nilayam ছাড়াও Marvari Choultry, Bangur Dhurumshala, Birla Vishram মাদুরাই-এ।

তবুও *New College House* এ থাকা ও খাবারের আয়োজন ব্যাপক। আমিষ ও নিরামিষ দুই-ই মেলে। তেমনই টাউন হল রোডে সামান্য যেতে *Tuj*, অদূরে *Mahal Restaurant*, এদেরও যথেষ্ট প্রশংসা। দামে কিছুটা অধিক বটলেও আমিষ আহার্যে সুনাম যথেষ্ট এদের। *Aradhana*, *Murian De Vilas*, *Indo Ceylon Restaurant* এদের কাছে নিরামিষ আহার্য মেলে। ওয়েস্ট ম্যাসি স্ট্রিটের *New Arya Bhavan* (6-30—22-30) উত্তর ও দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহার্য, ওয়েস্ট পেরুমল মৈস্ট্রি স্ট্রিটে রুবি লজ লাগোয়া *Subham Restaurant* এরও নিরামিষ আহার্যে সুনাম আছে। দামও সস্তা শুভমে। তবে কেবল সাঁঝবেলাতেই খোলা মেলে শুভম। *Town Hall Rd* এর *Amuthan Restaurant* এও আমিষ আহার্য মেলে। এছাড়াও ভাত, সম্বর বা ইডলি, পোসা, বড়া, সম্বরে সস্তা দামে দক্ষিণ ভারতীয় মিলের ব্যবস্থা নিয়ে নানান হোটেল—রেস্তোরাঁ শহরের যত্রতত্র। আর কেবল থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে *H Prem Nivea*, *H Apsara*, *H Devi*, *H Gangali*, *H Tamilnadu* ভালই।

গত কিছুকাল প্রাইভেট মালিকানায় বেশ কিছু টাউনেলে এজেন্সি গড়ে উঠেছে মাদুরাই—এর যত্রতত্র। এরা নানানভাবে প্রলুব্ধ করে যাত্রীদের। এমনকি নানান হোটেল সংস্থাও জড়িয়ে পড়েছে এদের কর্মকাণ্ডে। গাড়ি যাচ্ছে এদের মাদুরাই থেকে প্যাকেজ ট্যুরে কোদাই, রামেশ্বরম, কন্যাকুমারী, পেরিয়ার ছাড়াও দক্ষিণের নানানদিকে। তবে, প্রাশশ এদের কথার সঙ্গে কাজের অসম্মতি যাত্রীর পীড়ন হয়ে দেখা দেয়। এ ব্যাপারে যাত্রীদের সচেতনতা দরকার।

রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি পূর্বে টাউন হল রোড শেষ হতে মাদুরাই—এর মূল আকর্ষণ দ্রাবিড় স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের অপ্রবর্ণনীয় পুরনো শহরে মীনাক্ষী আশ্রান মন্দির। তৈরি যদিও নায়ক রাজা তিরুমলাই (১৬২০-৫৫ খ্রি)-র হাতে, পরিকল্পনা ও নকশা করেন বিষ্ণুনাথ নায়ক ১৫৬০-এ। ১৫ একর জুড়ে গড়ে উঠেছে চটকদার মীনাক্ষী মন্দির। আয়তনে দক্ষিণ ভারতের দ্বিতীয় বৃহত্তম মন্দির মীনাক্ষী। ভাস্কর্য ও স্থাপত্যের সমন্বয়ে গড়া বিস্ময়ে ভরা ৯টি গোপূরম হয়েছে। হিন্দু দেবদেবীরা মূর্ত হয়েছেন গোপূরমে। এছাড়াও নানান জীবজন্তু, পৌরাণিক আখ্যানও রূপ পেয়েছে। আজও তার বহুবর্ণ বর্ণালী অমলিন।

মন্দিরে মূল দেবালয় দু'টি—একটিতে শিব অর্থাৎ সুন্দরেশ্বর, দ্বিতীয়টিতে শিব জায়া দণ্ডায়মান। পার্বতী মীনাক্ষীরূপে পূজা পান। বামহাতে শুকপাখি। আয়ত নয়ন—প্রশান্ত, প্রসন্ন, স্নিগ্ধ হাসি। লোকশ্রুতি, সন্তান কামনায় পাণ্ডুরাজ মলয়ধ্বজন এবং রানী কাঞ্চনমালায় করা যজ্ঞের হোমামি থেকে কন্যার জন্ম। শিবের সঙ্গে বিয়ে হয় মীন আখি কন্যা মীনাক্ষীর। জন্ম থেকেই ওটি স্তন ছিল কন্যার। দৈববাণী হয় বিবাহের পাত্র সম্পর্কনে লোপ পাবে তৃতীয় স্তন। লোপও পায় কৈলাশে শিবের দর্শন পেতে। শিবের নির্দেশ মতো কন্যা ফেরেন মাদুরাই—এ—আর, শিব আসেন ৮ দিন পরে কন্যাকে বিয়ে করতে সুন্দরেশ্বর রূপে। ১৩ শতকের প্রাচীনতম পূর্বের গোপূরম দিয়ে মন্দিরে প্রবেশ। প্রবেশপথে অষ্টশক্তি মণ্ডপ—বিতলে আঁট গ্যালারি। অদূরে

দক্ষিণমুখী যেতে দেবী মীনাক্ষী ও সুন্দরেশ্বর। আরও যেতে তিরুপটি। এরই শিরে ১০০৮ প্রদীপের বাতিদান। উচ্চতম (৪৮.৮ মি) দক্ষিণের ৯ তলা গোপূরমে ১৫১১টি মূর্তি শোভিত। ১৮তকর টিকিটে ৬—১৭-০০টায় সঙ্গীর্ণ পিচ্ছিল সিঁড়িপথে উপর থেকে মাদুরাই শহর সুন্দর দেখে নেওয়া যায়।

মন্দিরের *মারাইকুলম* বা গোশ্চেন লোটাস ট্যাঙ্কে অতীতে সাহিত্যের মান যাচাই করা হত। সাহিত্যমুলা নেই তেমন পাণ্ডুলিপি জলে ফেললে ডুবে যাবে আর সাহিত্যমুলা থাকলে ভেসে থাকবে জলে। এই লোটাস ট্যাঙ্ক থেকেই স্বর্ণকমল তুলে শিবের উপাসনা করে পাপশ্রাবন করেন ইন্দ্র। স্বয়ম্ভু শিবলিঙ্গটিও জঙ্গল থেকে ইস্তের পাওয়া। প্রতিষ্ঠাও পান কদম্ব বৃক্ষতলে ইস্তেরই হাতে দেবতা নতুন করে। এমনকি মীনাক্ষী মন্দিরও নাকি দেবরাজ ইস্তের আবিষ্কার। আর ৭০০ খ্রিস্টাব্দে দারু থেকে পাথরে রূপান্তর ঘটে মন্দিরের। ট্যাঙ্কের পশ্চিম প্রান্তে মডেলে মন্দির কমপ্লেক্স চিনে নেওয়া যায়। উত্তর-পূর্বে সহস্র স্তম্ভ *Ayirakkal Mandapam* অর্থাৎ হাজার (৯৮৫) পিলারের মণ্ডপটি হয়েছে ১৫৬০ খ্রিস্টাব্দে। কারুকার্যময় পিলারগুলিও সুন্দর। মহাভারতের আখ্যান রূপ পেয়েছে। মহাভারতের পাণ্ডবদের উত্তরপুরুষ বলে দাবি করে থাকে পাণ্ডুরা। যে কোনও প্রান্ত থেকেই হল—এর মধ্যের কেল্লাইডেক্সপিক ভিউ অভিভূত করে দর্শকদের। ১০০০ পিলারের সামনে মিউজিক্যাল পিলারগুলিও অভিনব। ক্রমশ সন্ধ্যা হওয়া ২২টি গ্রানাইট পাথরের স্তম্ভে ছোট পাথর দিয়ে আঘাত করলে সঙ্গীতের স্বরলিপি অনুরণিত হয়। পূর্বে বসন্ত রাজাদের মণ্ডপে নায়ক রাজাদের প্রমাণ আকারের মূর্তিগুলিও কম আকর্ষণীয় নয়। এই রাজাদের হাতেই গড়ে উঠেছিল মাদুরাই শহর অতীতে। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান মীনাক্ষী চত্বরে।

হাজার পিলার হল—এর অংশে মন্দিরের মিউজিয়ামটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে। প্রাচীন মুদ্রা, দক্ষিণ ভারতীয় প্রাচীন লিপি, ছবির সাথে পাথর, পিতল ও ব্রোঞ্জের নানান পৌরাণিক মূর্তিতে সর্বেশ্বরবাদের প্রকাশ ঘটেছে। দর্শনী ১, ক্যামেরার চার্জ ৫।

মন্দিরের আর এক আকর্ষণ তামিল নববর্ষে দেব-বিবাহবার্ষিকী। মিছিল বের হয় সন্ধ্যায়—দেবতারও অংশ নেন মিছিলে। এপ্রিলের মাঝামাঝি ৩ দিন ধরে চলে এই *চিথিরাই* জাঁকালো উৎসব। তবুও যেন মনে হয় আর্থদের সাথে দ্রাবিড়ীয়দের সখ্যতা স্থাপনের উৎসব এই *চিথিরাই*। দূর-দূরান্ত থেকে পর্যটকরাও শামিল হন উৎসবে। মন্দিরে প্রবেশমূল্য ১। গ্রিডও মেলে মন্দিরে। ৫—১২-৩০ আবার ১৬—২১-৩০টায় দেবদর্শন মেলে। অ-হিন্দুরা দেবদর্শন ছাড়া মন্দির দেখে নিতে পারেন। ২৫ টাকার টিকিটে ১২-৩০ থেকে ১৬-০০টায় ছবিও তোলা যায় মন্দিরের। ভক্ত

সমাপ্তমে মুখর, দিনভর পূজার্চনা, গানবাজনাও চলে সকাল থেকে সাঁবে। ২১-১৫য় সমাপ্তি উৎসব—সেবতা সুন্দরের চলেন শ্যায় দেবী পার্বতী সমভিব্যাহারে। নতুন দিনের শুরু সকাল ৫টার দেবতার স্ব-আসনে অধিষ্ঠিত হয়ে।

দিনে হাজার দশকে ব্যতী আসেন দেশ-দেশান্তর থেকে মেবদর্শনে। অষ্টে, রিকশা, গরুর গাড়ি, পোকনপাটে ঠাসা—খিজিভাব মন্দিরকে নিয়ে চারপাশ।

মন্দিরের ১ কিমি দক্ষিণ-পূবে ১৬৩৬৫ ইন্ডো-সেরাসেনিক ও রাজধানী শৈলীর সমন্বয়ে রূপ পেয়েছে তিরুমালাই নায়ক মহল। এর গোলাকার ছাদটি পিলার ছাড়াই দাঁড়িয়ে। খুবই সুন্দর এর কারুকার্য। তবে, ধ্বংসও পেয়েছে একটা অংশ। চেমাইর গভর্নর লর্ড নেপিয়র ১৮৬৬-৭২-এ সংস্কার করেন। সংস্কার হয়েছে অতি সম্প্রতিও নতুন করে প্রাসাদের। প্রাসাদের প্রবেশদ্বার, বিশালাকার হল, নৃত্য সভা, স্বর্ণ বিলাসম, মিউজিক্যাল পিলার, ছোট্ট মিউজিয়ম আজও দেখে নেওয়া যায়। অতীতের এই প্রাসাদপুরীতে আজ আদালত বসেছে। সকাল ৯—১৩-০০ ও ১৪—১৭-০০টায় খোলা থাকে প্রাসাদ। দর্শনী ১। আর বসছে প্রতিদিন ১৮-৪৫এ ইংরেজি, ২০-১৫য় তামিল ভাষায় Sound and Light-এ নায়ক রাজাদের দরবার। খুবই আকর্ষণীয়। টিকিট ৫ ও ২; ৩ 26945. পায়ে পায়ে বা রিকশায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় মন্দির ও প্রাসাদ। আর 11, 11A, 17 রুটের বাসও যাচ্ছে সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে প্রাসাদদ্বারে।

শহর থেকে ৫ কিমি উত্তর-পূবে রানী মঙ্গামলের ৩০০ বছরের প্রাচীন প্রাসাদে গান্ধী মিউজিয়ম বসেছে। ছবিতে গান্ধীজীবনী, গান্ধীজির ব্যক্তিগত সত্তার দর্শকদের আকর্ষণ করে। আর রয়েছে আততায়ীর গুলিতে বিদ্ধ গান্ধীজির রক্তাঙ্কৃত বসন প্রদর্শনীতে। লাইব্রেরি ও সেমিনার হলও হয়েছে মিউজিয়মে। একই চত্বরে গভর্নমেন্ট মিউজিয়মে দক্ষিণী গ্রামীণ হস্তশিল্প, বয়নশিল্প, স্থাপত্যের প্রদর্শনী বসেছে। বুধবার ছাড়া ১০—১৩-০০ ও ১৪—১৭-০০টায় খোলা। স্টেট বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ বা ২ রুটের বাস, ট্যাক্সি ও রিকশা যাচ্ছে শহর থেকে।

মীনাক্ষী মন্দির থেকে ৫ কিমি পূবে আয়তনে মীনাক্ষী তুল্য মারিআশ্বান টেম্পলম আর এক পুণ্যপুঙ্কর। সুদৃঢ় করে জল আসছে ভাইগাই নদী থেকে। জানুয়ারি-ফেব্রুয়ারির পুর্ণিমায় টেম্পলম উৎসব খুবই আকর্ষণীয়। দেবতা সুন্দরের স্ব-দেবী মীনাক্ষীও আসেন মীনাক্ষী মন্দির থেকে উৎসবকালে। অবস্থান করেন ১৬৪৬-এ তিরুমালানায়কের তৈরি পুণ্যপুঙ্করের দ্বীপ মন্দিরে। বোটো পারাপায়। তবে উৎসব ছাড়া আকর্ষণ কীপ। স্টেট বাস স্ট্যান্ড থেকে ৪ রুটের বাস যাচ্ছে টেম্পলম।

মাদুরাই থেকে ৮ কিমি দক্ষিণে পাহাড় কেটে তৈরি হয়েছে তিরুপনবকুম্ভ মন্দির—সেবতা সুব্রহ্মণ্য অর্থাৎ

কার্তিকেয়। প্রবাদ, কার্তিক ও ইন্দ্রকন্যা দেবযানীর বিয়ে হয় এখানে। আর পাহাড়চূড়ায় মুসলিম ফকির নিকশরের সমাধি। দুয়েরই পর্যটক আকর্ষণ রয়েছে। ৫ রুটের বাসে বেড়িয়ে ফেরা যায়।

আর আছে মাদুরাই-এর ২০.৮ কিমি উত্তর-পূবে আজাগার পাহাড়ের সানুসেনে আজাগার কোদাল মন্দির। বয়সে মীনাক্ষী সম মন্দিরের স্থাপত্য ও কারুকার্য সুন্দর। আজাগার তথা বিষ্ণু হলেন মীনাক্ষী দেবীর ভাই। বাস যাচ্ছে শহর থেকে।

রামেশ্বরম

রামের পূজিত ঈশ্বর অর্থাৎ রামেশ্বর। ভারতীয় শৈব ও বৈষ্ণব তীর্থের অন্যতম, দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গেরও এক রামেশ্বরম। তেমনই চার পুণ্যধামেরও এক ধাম রামেশ্বরম। দক্ষিণ-পূর্ব ভারতের শেষ প্রান্তভূমি পক প্রণালীতে শঙ্করানী দ্বীপভূমি রামেশ্বরম। ছোট্ট খিজি শহর—নাংরা, ধুলাময়। মন্দিরকে নিয়ে শহর। দেবতা—আরুলমিত্ত রামনাথস্বামী। আর আছে শিবের বাহন বিশাল বৃষমূর্তি ছাড়াও নানান দেবতা মন্দিরে। পূর্ব ও পশ্চিমে দু'টি গোপুরম। ৩৮.৬ মি উঁচু গোপুরম দিয়ে মন্দিরে প্রবেশ। ৪—১৩-০০ আবার ১৫—২১-০০টায় মন্দির খোলা। ৬ হেক্টর জমি জুড়ে মন্দির চত্বর, উঁচু ভিতের উপর মন্দির। আকারে দক্ষিণ ভারতের তৃতীয় বৃহত্তম মন্দির এটি। তবে বিশালতায় অগ্নিতীয়—দ্রাবিড়ীয় স্থাপত্যশৈলীতে তৈরি। লোকশ্রুতি, রাবণ বধে ব্রহ্মহত্যার পাপ ক্ষয়ের জন্য রামায়ণের রামচন্দ্র লঙ্কা থেকে ফেরার পথে পূজা করবেন শ্রীরামনাথস্বামী অর্থাৎ শিবের। শিবমূর্তি আনতে হন গেল কৈলাস। দেহিতে সময় পেরুতে যায়। তাই সীতাদেবী মূর্তি গড়লেন বালুকা দিয়ে। পূজাও হল দেবতার। হনুও হাজির এবার মূর্তি নিয়ে। প্রতিষ্ঠা করলেন রামচন্দ্র দুই মূর্তিই সাগরপারে। আর ১২০০ স্তম্ভের উপর গড়া মন্দির ১২ শতকে শুরু হয়ে শেষ হয় ১৯ শতকে। বিশ্বের দীর্ঘতম অলিন্দটিও হয়েছে রামেশ্বরম মন্দিরে। দৈর্ঘ্যে ১২২০ মি, চিত্রবিচিত্র সিলিং; স্তম্ভগুলিও সুন্দর কারুকার্যময়। এক এক খণ্ড গ্রানাইট পাথর কূঁসে তৈরি; কার্ভিং-এর কাল নয়নমনোহর। তেমনই আছে সীতা তীর্থম, লক্ষ্মণ তীর্থম, রাম তীর্থম ছাড়াও নানান (২১) তীর্থম অর্থাৎ কুণ্ড—রানে পুণ্য হয়। আহা! দিলে মাছেদের দর্শন মেলে লক্ষ্মণ তীর্থমের জলে। আর রাম তীর্থমের জলে ভাসন্ত পাথর দেখতে মেলে। লোকশ্রুতি, বারাগঙ্গী দর্শনাধীসের রামেশ্বরম অদর্শনে পুণ্য অপরূপ থাকে। অগ্নিতীর্থম অর্থাৎ মন্দির লাগোয়া সমুদ্রও শাস্ত, রানে পুণ্য হয়, শ্রীরামও রান করেছিলেন অগ্নিতীর্থমে।

নতুন করে মঠ হয়েছে মন্দিরের পাশে ভারত আশ্রম বাণীমূর্তি আচার্য শঙ্করের। মন্দিরের ৩ কিমি উত্তরে দ্বীপভূমির উচ্চতম (৩০ মি) গন্ধমালদ পর্বতে মন্দির

হয়েছে রাম করোকা। শ্রীরাম-পদমের পূজা হয় মন্দিরে। রামেশ্বরম শহরও সেখে নেওয়া যায় গন্ধমাদন থেকে।

তেমনই বাস থেকে মন্দিরের পথে যেন রোডে সেখে নেওয়া যায়—লক্ষ্মণ তীর্থম, পঞ্চমুখী হনু, রামকুণ্ড তথা মন্দিরে রাম-লক্ষ্মণ-সীতা-হনু রামেশ্বরমে।

রামেশ্বরমের দক্ষিণে আরও ১৯ কিমি গিয়ে ধনুক্ষেটিতে (Dhanushkodi) মিলাছে ভারত মহাসাগরের সাথে বঙ্গোপ-সাগর। এই ধনুক্ষেটিতেই শ্রীরাম বালি দিয়ে সেতুবন্ধন ঘটান ভারত ও শ্রীলঙ্কার। কথিত আছে, এই ধনুক্ষেটির সঙ্গমে নান না করলে রামেশ্বরম তীর্থের পূণ্য অর্পণ থাকে। চলার পথেও কিমি আগেই মন্দিরও রয়েছে কোদণ্ডরামস্বামী, অর্থাৎ রাম-লক্ষ্মণ-সীতা-হনু ও বিভীষণের। এই ধনুক্ষেটিতেই মিলন ঘটে শ্রীরাম ও বিভীষণের। ১৯৬৪-র সামুদ্রিক সাইক্লোনে উপকূলভাগ বিনষ্ট হলেও বাড়ি-ঘরের দেওয়াল আজও কেরাটি হয়ে অতীত রোমন্থন করায়। মন্দিরটিও অক্ষত।

১৯৭৬-৭৮এ সংস্কার হয়েছে কলকাতার রামকুমার বাসু-এর হাতে। সম্প্রতি নতুন করে মন্দিরও হতে যাচ্ছে বীর হনুমানের ধনুক্ষেটির প্রান্তভূমিতে। শিলান্যাসও হয়েছে ১৯৯৫-র মার্চে।

ধনুক্ষেটির আর এক অতীত পাশ্চাত্যে হিন্দুধর্মের বিজয় বৈজয়ন্তী উড়িয়ে ১৮৯৭ খ্রিস্টাব্দের ২৬শে জানুয়ারি এখানেই অবতরণ করেন স্বামী বিবেকানন্দ। তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায়, বিবেকানন্দ কুঠি তথা জেলে-উপনিবেশ রামকৃষ্ণপুরমে। ২ ঘণ্টা অন্তর বাস যাচ্ছে রেল স্টেশন থেকে রামনাথস্বামী মন্দির হয়ে ধনুক্ষেটি। বাস থেকেও কিমি দূরে সাগরবেলা। ফেরার শেষ বাস রাত ২০-০০টায় ধনুক্ষেটি থেকে।

তেমনই হোটেল তামিলনাড়ু থেকে ১.৫ কিমি দূরে Olakuda-য় পৌঁছে জলখানে এক ঘণ্টায় চলা যেতে পারে রামেশ্বরমের নবতম আকর্ষণ টাপু। সমুদ্রের অগভীর স্বচ্ছ জলে কোরাল, নানান ধরনের রক, স্টার ফিস, রঙিন মাছদের দর্শন মেলে। উৎসাহীদের উচিত হবে পায়ে পায়ে Shankumal পৌঁছে Mr Edward-কে সঙ্গী করে জেলে নৌকায় বেড়িয়ে নেওয়া। Hotel Tamilnadu-তেও Mr Edward-এর সন্ধান মেলে। তবে, মিষ্টি জলের অভাব টাপুতে।

অতুৎসাহীরা ইভো-নরওয়ে ফিশারিজ প্রোজেক্ট ও কুরুসাদী দ্বীপটিও বেড়িয়ে যেতে পারেন চলার পথে মণ্ডপম থেকে। মুজোরও চাষ হচ্ছে তামিলনাড়ু ফিসারিজ ডেভেলপমেন্ট কর্পোরেশনের মণ্ডপমে। মুজো দেখা ও কেনা দুইয়েরই ব্যবস্থা আছে। দ্বীপ রয়েছে আরও নানান। বোটা যাচ্ছে মণ্ডপম থেকে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে TTDC-র H Tamilnadu-Mandupam, PC-623526, ☎ (04573) 41512, D ১৫০ T ২০০ ডর্মি বেড ৪৫ টাকায়।

নিবেদন

রামেশ্বরমের আর এক আকর্ষণ শ্রীলঙ্কার কেরি সার্ভিস। সত্তাহে ও কিন—সোম, বুধ ও শুক্রবার বেলা ১২-০০টার নিপিং করপোরেশন অব ইন্ডিয়ায় ফেরি জাহাজ রামেশ্বরম থেকে রওনা হয়ে ৩২ ঘণ্টায় ৭২ কিমি জলপথ পেরিয়ে শ্রীলঙ্কার ডালাই-মায়ার পৌঁছায়। আর ফেরে মঙ্গল, বৃহস্পতি ও শনিবার সকাল ৮-০০টায়। আপার ডেক ও লোয়ার ডেক দুই শ্রেণীর টিকিট মেলে। যাত্রার দিন সকাল ৭—১০-০০টার মধ্যে হাজিরা দিতে হয়। উৎসাহীদের সঙ্গে পাসপোর্ট ও ভিসা থাকা দরকার। নভেম্বর-ডিসেম্বরের মনসুনে কিছুকাল পরিস্থিতিজনিত কারণে এপথ বিদ্রিষ্ট। জাহাজী সার্ভিসও সাময়িক ভাবে বন্ধ। উচিতও হবে সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে এপথে চলা।



রামেশ্বরমে থাকার জন্য মন্দির কমিটির ধরমশালা, Furnished Rest House ও Cottage আছে। ব্যাপক ব্যবস্থা—ঘর ও কুঠের মেলে S ৩৫ D ৩০০ কটেজ ৮০, ১০০, ১২৫ A/c ১৫০ টাকায়। অব্: Executive Officer, Arulmigu : Ramnathswamy Devasthanam, Rameswaram-623526, ☎ (04573) 0292; পাশেই Madhu Cottage, DAB ১৫০ TAB ২০০। আর আছে মন্দিরকে ঘিরে—H Venkatesh, Sithi Vinayagar Kovil St, ☎ 21135, DAB ১২৫-২০০ TAB ২০০ A/c D ৩০০; H Maharaja, 7 Middle St, ☎ 21271, DAB ১২৫-১৭৫ TAB ১৫০ FAB ২০০ A/c D ৩০০; Chinnaswamy L, 90 Middle St, DAB ৩০০; Sri Mahaluxmi L, Shabari L, Alunkar L, Alunkar Tourist Home, West Car St, R2, D ১০০-১৭৫; Mahajana Sangam L, 19 New St; Santhana L, South Car St; Debusharma L, D ১২৫ A/c D ২০০; L.Santhya, West Car St, D ১৫০ A/c D ২৫০; H Chola, North Car St; Swarna, Minakshi, Luxmi, Santhanam : Bazar St—Victoria L, Saban L; ছাড়াও লজ রয়েছে আরও নানান। এদের কাছে SAB ৬০-১২৫ DAB ৮০-১৭৫ টাকায় মেলে। আর রয়েছে Mahabeer Dharomashala, Gujarat Bhawan, Sri Ramkrishna Matt, Arya Vaisya Choultry, Jannu Choultry, Sri Sringeri Matt, Bansilal, Habirchand, Reddiar Choultry, Danani Atithi Griha, Bangur Dharomashala, ছাড়াও পাণ্ডাঠাকুরদের অঙ্কন ধরমশালা পাণ্ডাঠাকুরদের ধরমশালার পরিবেশ কম্বিত। চার্জ লাগেনা, পূজার বিনিময়ে থাকা। বিছানা-পত্র সঙ্গে থাকা ভাল। আর হয়েছে MPTC-র বাস স্ট্যান্ডের কাছেই ভারত সেবাক্রম সত্ত্বের ৪০ ঘরের অভিজিলা রামেশ্বরমে। এছাড়া মন্দির লাগোয়া সমুদ্র পাড়েই TTDC-র H Tamilnadu-Rameswaram, ☎ 21277, DAB ৩০০ A/c D ৪২৫ TAB ২৫০ পাঁচ বেডের ঘর ২৭৫ ডর্মি বেড ৪৫। থাকার জন্য রামেশ্বরমে অনান্যও বটে হোটেল তামিলনাড়ু : অব্: ম্যানেজার, রামেশ্বরম-623526. লাগোয়া Youth Hostel-এ বেড ৪৫ করে। আর আছে TTDC-র Tourist Facility Centre-এ ২০/২৪ বেডের ঘরে ৪৫ প্রতিজনা। মন্দির থেকে ১১ কিমি দূরে হলেও রেল স্টেশনে রেলের

Retiring Room স্বাক্ষরকারী অবস্থানে থাকার পক্ষে ভালই। বিপরীতে **Michael L.** তবুও যেন উচিত হবে রেল বা বাস স্ট্যান্ড থেকে অটো রিকশায় **হোটেল ডামিলনাডু বা মন্দিরকমিটির রেস্ট হাউস** বা **ভারত সেবাস্রম সেন্ট্র** পৌঁছে অবস্থান করা। **হোটেল ডেক্সট্র, মহারাজা, অলকার টারিস্ট হোম**-ও থাকার পক্ষে ভালই। উল্লেখ্য না হলেও সাধারণ মানের খাবার **হোটেল**ও আছে নানান রামেশ্বরমে। শহরে চলছে রিকশা, অটো, টাভা, ট্যাক্সি ও টাউন বাস।



১৭৩ কিমি দূরের মাদুরাই থেকে এক্স ও প্যাসেঞ্জার ট্রেন ৬½ ঘণ্টায় আসছে রামেশ্বরমে। ৬৬৬ কিমি দূরের চেন্নাই এগমোর থেকে ১৭-৫৫য় 6713 সেফ্ট এক্স, ২০-২৫এ 610। রামেশ্বরম এক্স রামেশ্বরম যাচ্ছে পরদিন ৯-০০ ও ১৪-২০এ। ভিভুপুৰম/ চিদাম্বরম/ ভাঞ্জোর/ ত্রিচি/ মনমাদুরাই/ রামনাথপুরম/ মণ্ডপমে খোলা ব্রিজ জোড়া দিয়ে সমুদ্র পেরিয়ে পাশন হয়ে রামেশ্বরম পৌঁছায় এক্স। আর কর্ড লাইনে ভিভুপুৰম/বীরখালম/ত্রিচি/ মণ্ডপম হয়ে যাচ্ছে সেফ্ট এক্স। চেন্নাই ফেরে রামেশ্বরম থেকে ১৫-২০/১২-৪৫এ। হুগিগ হলও গত কিছুকাল মাদুরাই-রামেশ্বরম প্যাসেঞ্জার ট্রেন ১৪-০৫এ পলঘাট-রামেশ্বরম প্যা, ৬-০০টায় কোয়েম্বাটুর-রামেশ্বরম প্যা, মাদুরাই ছেড়ে ৫ ঘণ্টায় রামেশ্বরম যাচ্ছে। ফেরে ৭-৩০এ পলঘাট প্যা ও ১৬-১০এ কোয়েম্বাটুর প্যা+এক্স রামেশ্বরম থেকে। চেন্নাই এগমোর-রামেশ্বরম প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে ত্রিচি হয়ে ২১ ঘণ্টায়।



আর রামেশ্বরম থেকে TTC-র বাস যাচ্ছে ৬-৩০, ৭-০০, ৮-৩০, ১০-৩০, ১৮-০০, ১৯-০০, ২০-০০, ২১-১৫য় ছেড়ে মাদুরাই হয়ে ১০½ ঘণ্টায় ৪৩০ কিমি দূরের কন্যাকুমারিকার (গত কিছুকাল কন্যাকুমারী-তিরুচেন্দুর-রামেশ্বরম সড়কটি বিধ্বস্ত থাকায় বাস যাচ্ছে ঘুর পথে মাদুরাই হয়ে)। ৫৭২ কিমি দূরের চেন্নাই যাচ্ছে ১৬-০০ ও ১৭-০০টায় ছেড়ে ১৪ ঘণ্টায়; চেন্নাই থেকে রামেশ্বরম আসছে ১৭-৪৫ ও ১৮-৩০এ। সালেম যাচ্ছে ৮-০০, ১৯-৪৫এ; হুগিগ যাচ্ছে ৭-৩০টায়; কোয়েম্বাটুর যাচ্ছে ৮-১৫, ১৯-১৫য়। বাস যাচ্ছে ৬ ঘণ্টায় ত্রিচি, ৮ ঘণ্টায় ৮ ঘণ্টায় ছেড়ে ৪ ঘণ্টায় মাদুরাই। আর পতিচেরী যাত্রায় চেন্নাই বাসে ভিভুপুৰম হয়ে চণা উচিত হবে। উচিত হবে রামেশ্বরম থেকে বাসে মণ্ডপম/পাশন হয়ে কন্যাকুমারিকার চলা। মণ্ডপম থেকে পাশন মাঝের সমুদ্রপথে সড়ক সেতুও হয়েছে। ১৪ বছর ধরে তৈরি সেতুর উদ্বোধন করেন তদানীন্তন প্রধানমন্ত্রী রাজীব গান্ধী ১৯৮৮-র ২রা অক্টোবর। গাড়িও যাচ্ছে মূল ভূখণ্ড থেকে ভারতের বৃহত্তম ইপিরা সেতুতে বঙ্গোপসাগর পেরিয়ে রামেশ্বরম বাসে। শহর থেকে ১½ কিমি পশ্চিমে MPCT বাস স্ট্যাণ্ড। তবে সব কিছুতেই কেমন যেন অগোছালো ভাব। TTC বাসের বুকিং অফিস হোটেল চোল লাগোয়া নর্থ কার স্ট্রিটে, রিজার্ভেশন ৩ 263. আর ট্রেন যাচ্ছে মাদুরাই/তিরুনেলভেলী হয়ে কন্যাকুমারিকার। নিকটতম বিমানবন্দর মাদুরাই-এ। এমনকি মাদুরাই থেকে প্যাকবক্স ট্রারে দিনে দিনে বেড়িয়ে নেওয়া যায় রামেশ্বরম।

তেনকাশী

মাদুরাই-তিরুভনন্তপুরম রেলপথে মাদুরাই থেকে ১৬০ কিমি দূরে তেনকাশী জংশন। তিরুনেলভেলী থেকেও ৭-০০, ১২-৩০এ কোমাম প্যা, ১৭-৫৫য় সেনগেট্টাই প্যা, ১৫-১০এ চেন্নাই এক্স

আসছে ৭৩ কিমি দূরের তেনকাশী। বাসও আসছে ৫৯ কিমি সড়ক দূরত্বের তিরুনেলভেলী থেকে। তেনকাশী বেড়িয়ে বাসেই চলুন তিরুনেলভেলী বা ১২৭ কিমি দূরের কন্যাকুমারী বা ১১২ কিমি দূরের তিরুভনন্তপুরম।

দক্ষিণ ভারতের কাশী তেনকাশী। মন্দিরও হয়েছে কাশীর বিশ্বনাথের। জনশ্রুতি, অগস্ত্য মুনির প্রতিষ্ঠিত দেবমূর্তি এই বিশ্বনাথ। গোপুরমাটিও সুন্দর। অদূরেই সুন্দর ফ্রেস্কোচিত্রে শোভিত চিত্রসভা মন্দিরে দেবতা নটরাজ শিব।

নিকটতম বিমান বন্দর মাদুরাই। আর নিকটতম রেল স্টেশন তেনকাশী থেকে ৮ কিমি বাস পথে কোর্টালাম। পশ্চিমঘাট পর্বতমালায় ১৬৭মি উঁচুতে মনোরম হেলথ রিসর্ট কোর্টালাম। কোর্টালামের আর এক প্রসিদ্ধি তার ৯টি জলপ্রপাত। ১৬৭মি উঁচু থেকে ৩ গাংপে নামছে চিত্রা। চিত্রা নদীর উৎসও এই চিত্রা জলপ্রপাত। জল ও ঘবির কাজ করে। তেমনই শামুকের খোলার নানান হস্তশিল্প ও মাদুরের প্রশস্তি আছে। প্রকৃতিও মনোরম। TTC-র H Tamilnadu-Courtallam, D ৩৫০ A/c ৫০০ ও বোট হাউস আছে। বেড়াবার মরসুম জুন থেকে সেপ্টেম্বর মাস।

থাকার জন্য তেনকাশীতে আছে PWD IB, DB ও ধরমশালা; আর কোর্টালামে আছে FRH, DB, Tourist Bungalow, Dalavoi House, Pandian L, Sree Udipi L, Lakshmiapuram St, ৩ 22170; Shree Kumar Tourist Home, Lakshmiapuram St, ৩ 23385; Senai Thalaivar L, Main Rd, ৩ 22710; Aruvillam, Courtallam Township ৩ 22128; Mallikarjuna, C T, ৩ 22128; Main Falls Cottage, C T, ৩ 22381; Kurunji Villa Tourist Home, Main Rd, ৩ 22136; ছাড়াও নানান সাধারণ হোটেল।

তিরুনেলভেলীর ৩৫ কিমি আগেই অম্বা সমুদ্রমে নেমে পাপনাশম জলপ্রপাতটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে। পাপ নাশ হয় প্রপাতের জলে। তাম্রপর্ণী নদী ৮০ ফুট নিচুতে নামছে। ৫ কিমি দূরে Mundanthurai Tiger Sanctuary। অদূরে অগস্ত্যের মন্দিরও দেখে নিতে পারেন অভ্যুতসাহীরা।

তিরুচেন্দুর

বঙ্গোপসাগরের পাড়ে নির্জন সমুদ্রসৈকত তিরুচেন্দুর। তিরুচেন্দুরের খ্যাতি তার সাগরবেলায় সুন্দর কারুকার্যময় মুরগান মন্দিরের জন্য। কারুকার্যমণ্ডিত গোপুরম হয়েছে। দেবতা এখানে সূত্রদ্বায় অর্থাৎ কার্তিক। একটি গুহাও রয়েছে তিরুচেন্দুরে।



তিরুনেলভেলী থেকে ৭-১৫, ৯-২০, ১২-৩০, ১৭-৫৫য় ট্রেন যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় তিরুচেন্দুর। বাসও যাচ্ছে তিরুনেলভেলী থেকে তিরুচেন্দুর। দূরত্ব ৬২ কিমি। রামেশ্বরম-কন্যাকুমারিকার বাসও যাচ্ছে তিরুচেন্দুর হয়ে। দিনে দিনে তিরুচেন্দুর বেড়িয়ে ১৫-৩০ জন্ম ১৭-৩০ বা ১৭-৩০এয় ট্রেনে রওয়ানা হয়ে ১৭-২৫/১৯-৩৫এ তিরুনেলভেলী পৌঁছে বাসে চলুন কন্যাকুমারিকার। তবে সরাসরি বাসও মেলে তিরুচেন্দুর থেকে কন্যাকুমারির। বাস-দূরত্ব ৮৫ কিমি। এছাড়াও

বাস যাচ্ছে ৮-৩০ ও ১৯-৩০এ ১৫ ঘণ্টায় চেন্নাই; ১৮-৩০এ ছেড়ে ১৪ ঘণ্টায় পণ্ডিচেরী; সালেম যাচ্ছে ৯-০০ ও ২১-০০টায় ছেড়ে ১০ ঘণ্টায়; আর যাচ্ছে বাস যিতি, ইরোড, কোয়েম্বাটুর ছাড়াও দক্ষিণের দিকে দিকে তিরুচেন্দুর থেকে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে তিরুচেন্দুরে TTDC-র H Tamilnadu-Thiruchendur, near Temple, PC-628215, ☎ (04639) 44268, DAB ১৭৫ ১৯৫ ছয় বেডের ঘর ৩০০ A/c D ৩৫০ ৪০০।

উৎসাহীরা তিরুচেন্দুর থেকে ৩৫ কিমি আগেই মণ্ডপমের পথে আর এক বন্দর-নগরী তুতিকোরিনও বেড়িয়ে নিতে পারেন। আবার তিরুনেলভেলীর পথে ২৯ কিমি আগেই মনিয়াকটি জং নেমেও চলা যেতে পারে ৩২ কিমি দূরের তুতিকোরিন ট্রেন বা বাসে। বাস ও ট্রেন আসছে চেন্নাই থেকেও তুতিকোরিনে। ১৬-১৫য় চেন্নাই সেট্রাল ছাড়া 6721 চেন্নাই-কন্যাকুমারী এক্স-এর সাথে জুড়ে মনিয়াকটিতে পথক হয়ে তুতিকোরিন যাচ্ছে ৭-৪০এ 6721-A চেন্নাই-তুতিকোরিন এক্স। ফেরে ১৮-১০এ তুতিকোরিন ছেড়ে মনিয়াকটি হয়ে একইভাবে। ৮-৩০, ১৭-৪০এ তিরুনেলভেলী প্যাঁ, ১৫-৪০এ মাদুরাই প্যাঁ যাচ্ছে তুতিকোরিন থেকে। ১৫৪০-এ পর্ভুগিজ, ১৫৪৮-এ ওলন্দাজ আর ১৮৭২-এ ব্রিটিশ আসে তুতিকোরিনে। নুন তৈরি ও মুক্তোর চাষ হচ্ছে। পর্ভুগিজদের তৈরি চার্জিটও সুন্দর।



*H Somanath, 135 Palayamkottah Rd, Tuticorin-628003, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ২২৫ D ৩০০; Sri Ramanah L, 19A, Palayamkottah Rd-2; H Mariss, S ১০০ D ১৭৫; ছাড়াও বেশ কিছু সাধারণ হোটেল আছে তুতিকোরিনে।

কন্যাকুমারী



রামেশ্বরম থেকে বাসে কন্যাকুমারী আসাই সুবিধা। TTC-র বাস, ৬-৩০, ৭-০০, ৮-৩০, ১০-৩০, ১৮-০০, ১৯-০০, ২০-০০, ২১-১৫য় যাচ্ছে কন্যাকুমারী। দূরত্ব ৪৩০ কিমি, সময় নেয় ১০ ঘণ্টা।



আর মিটারগেজে রেল যাচ্ছে রামেশ্বরম থেকে মাদুরাই হয়ে তিরুনেলভেলী। তিরুনেলভেলী থেকে ৭-০০ ও ১৮-০৫এ ছেড়ে ২ ঘণ্টায় ব্রডগেজ রেলের নাগেরকয়েল পৌছে ট্রেন বা বাসে কন্যাকুমারী। আর ১৬-১৫য়

চেন্নাই সেট্রাল ছেড়ে ব্রডগেজে ইরোড ২৩-০০, মাদুরাই (পরদিন) ৩-২০, তিরুনেলভেলী ৭-৩০, নাগেরকয়েল ৯-১০এ পৌছে কন্যাকুমারিকায় যাচ্ছে ৯-৫০এ 6721 চেন্নাই সেট্রাল-কন্যাকুমারী/তুতিকোরিন এক্স। চেন্নাই ফেরে ১৬-০০টায় কন্যাকুমারী থেকে। এপথের দূরত্ব ৭৫৯ কিমি। তিরুনেলভেলী থেকে ৩ ঘণ্টায় বাসও যাচ্ছে ৮০ কিমি দূরের কন্যাকুমারী। তবুও যেন মাদুরাই থেকে নাগেরকয়েল পৌছে নতুন করে বাসে কন্যাকুমারী চলায় বাসের (১০/১৫ মিনিটের ব্যবধানে) আধিক্য মেলে।

আবার ১৮-৫৫য় 6319 চেন্নাই-তিরুভনন্তপুরম মেলে সেট্রাল ছেড়ে কাটপাদী/সালেম/পালঘাট/এনকুলাম/কুইলন হয়ে পরদিন ১১-৫৫য় তিরুভনন্তপুরম সেট্রাল পৌছে তিরুভনন্তপুরম থেকে ১২-৪০-এর 1081 মুম্বাই-কন্যাকুমারী এক্সে ১৫-০০টায় অর্থাৎ ২০ ঘণ্টায় কন্যাকুমারী চলা যেতে পারে। এছাড়াও ট্রেন-বাস-টাক্সি যাচ্ছে তিরুভনন্তপুরম থেকে ৮৭ কিমি দূরের কন্যাকুমারী। ১৫-২০এ ব্যাঙ্গালোর-কন্যাকুমারী এক্স, ২৩-১০এ সাপ্তাহিক হিমসাগর এক্সও তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে কন্যাকুমারী যাচ্ছে। আর ৪-২০, ৭-০০, ১৮-০০, ১৯-১৫, ২০-৪০এ তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে প্যাসেঞ্জার যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় নাগেরকয়েল। নাগেরকয়েল থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৪-০০, ৬-৩০, ১৩-৩০, ১৬-৩৫এ ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় কন্যাকুমারিকায়। কন্যাকুমারী থেকে ভারতের দীর্ঘতম (৩৭২৬ কিমি) রেল পরিক্রমায় যাচ্ছে 6317 হিমসাগর এক্স প্রতি শুক্রবার ১২-৩০এ। তিরুভনন্তপুরম-এনকুলাম-কোয়েম্বাটুর-কাটপাদী-গুদুর-বিজয়ওয়াড়া-নাগপুর-ভূপাল-গোয়ালিয়র-আগ্রা ক্যান্ট-নতুন দিল্লী-দিল্লী জং হয়ে ৩২ দিনে জন্মু যাচ্ছে হিমসাগর। প্রতিদিন ৫-০০টায় যাচ্ছে 1082 কন্যাকুমারী-মুম্বাই এক্স তিরুভনন্তপুরম ২২ ঘণ্টায় পৌছে, এনকুলাম ৮ঘ, কোয়েম্বাটুর-কাটপাদী-পুনে হয়ে ৪৮ ঘণ্টায় ২১৪৯ কিমি দূরের মুম্বাই সিএসটি। ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৭-২০এ 6525 কন্যাকুমারী-ব্যাঙ্গালোর এক্স। নিকটতম বিমানবন্দর তিরুভনন্তপুরমে।

তাম্রপর্ণী নদীর তীরে অতীতকালের বর্ধিষ্ণু নগরী তিরুনেলভেলী। সাময়িকভাবে রাজধানীও বসে পাণ্ডা রাজসের। চলার পথে উৎসাহীরা তিরুনেলভেলীর শিব ও পার্বতী মন্দির দুটিও দেখে নিতে পারেন। ৩টি গোপুরম ছাড়াও আছে হাজার শিলারের মণ্ডপম ও টোমাকুলম।

থাকার জন্য আছে রেলের রিটায়ারিং রুম, Nellai L, 174 High Rd-627001, S ১০০ D ১২৫-১৭৫ T ২০০; H Blue

নামেতে পরিচয় • নাওয়া-খাওয়া ডুলিয়ে দেওয়া

ছোটদের অমনিবাস

হরর অমনিবাস □ ক্যানটাসি অমনিবাস □ চোর-ডাকাত-বোম্বেটে অমনিবাস
প্রতিটি খণ্ড ১০০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

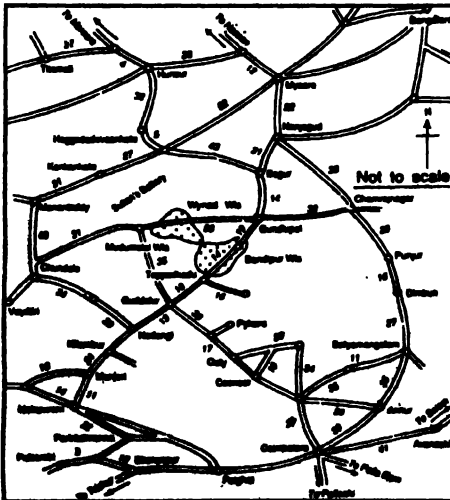
Star, Madurai Rd-1, D ১৫০-২২৫ A/C D ২২৫-৩৫০; H Aryaas, Madurai Rd, ৩ 339001; Arunagiri L, Madurai Rd, ৩ 24553; H Bhuruni, Madurai Rd, ৩ 23312; H Vasantham, Madurai, ৩ 25029; H Shakuntala তিরুনেলভেলীতে। আর আছে তাম্রপারী অপর পাড়ে খ্রিস্টান অনুযায়িত পালায়কোটায় মিউনিসিপ্যাল ট্রাভেলার্স বাসো।

তিরুনেলভেলী থেকে বাসে পাপনাশম পৌঁছে আবার বাসে চলা যেতে পারে মুনডনথুরাই টাইগার স্যান্ড্রুমারি। নিকটতম রেল স্টেশন অম্বাসমুদ্রম থেকেও বাস আসছে স্যান্ড্রুমারির FRH দ্বারে। জানুয়ারি থেকে সেপ্টেম্বরে চলাও যেতে পারে কেরল সীমান্তের পাহাড়ী অরণ্য তথা স্যান্ড্রুমারি দর্শনে। তবে, পর্যটক আকর্ষণ উদ্দেশ্য নয় মুনডনথুরাই-এর।



আর তিরুভান্তুভার (TTC) ও প্রতিবেশী রাজ্য কেরল রাজ্য পরিবহনের বাস সংযোগ গড়েছে দক্ষিণ ভারতের নানান শহরের সঙ্গে কন্যাকুমারী।

৭-০০, ৭-৩০, ৮-৩০, ৯-৪৫, ১০-০০, ২০-০০, ২১-০০, ২২-০০টায় কন্যাকুমারী ছেড়ে ৪৩০ কিমি দূরের রামেশ্বরম যাচ্ছে ১০½ ঘণ্টায়; ১০-১৫, ১১-৪৫, ১২-৩০, ১৩-৩০, ১৫-৩০, ১৬-১৫, ১৬-৪৫, ১৭-৪৫, ১৯-৩০, ২০-০০, ২০-৩০এ ছেড়ে ৭০৫ কিমি দূরের চেন্নাই যাচ্ছে ১৪-১৬ ঘণ্টায় তিরুচেন্নুর যাচ্ছে ৪-৪০, ৫-৫০, ১৫-২০, ১৭-৩০ টায়; তুতিকোরিন যাচ্ছে ৭-৪৫, ১১-৪৫, ১৩-০০টায়; কোডলম যাচ্ছে ৭-৩০, ১৩-০০টায়; ১৩-৩০এ ছেড়ে ৭৭২ কিমি দূরের তিরুপতি যাচ্ছে ১৮ ঘণ্টায়; ৫৮৫ কিমি দূরের পণ্ডিতেরী যাচ্ছে ১৯-১৫ টায় ছেড়ে ১৫½ ঘণ্টায়; ৭ঘণ্টায় ২৫৫ কিমি দূরের মাদুরাই যাচ্ছে ৭-০০, ১৪-৩০, ২২-৩০ ছাড়াও দুরাত্তের নানান বাস; ১৫-০০ টায় ছেড়ে ৬৬৮ কিমি দূরের ভেমোর যাচ্ছে ১৫½ ঘণ্টায়; ৫-৩০, ১৭-৩০এ ছেড়ে ৪৮৫ কিমি দূরের কোয়েম্বাটুর যাচ্ছে ১১½ ঘণ্টায়; ৮-৩০এ ছেড়ে ৫৭৫



কিমি দূরের উট্টি যাচ্ছে ১৫ ঘণ্টায়; ১৮½ ঘণ্টায় ৭২০ কিমি দূরের ময়ীপুর যাচ্ছে ১৬-৪৫এ; ৬৮২ কিমি দূরের ব্যাললোর যাচ্ছে ১৮-০০টায় ছেড়ে ১৬ ঘণ্টায়। যুদ্ধ বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে ২½ ঘণ্টায় কন্যাকুমারী থেকে কেরলের রাজধানী তিরুভনন্তপুরমে। লোকাল বাস যাচ্ছে কন্যাকুমারী থেকে ওট্টাইম, নাগেরকব্বেল, কোডলম, তিরুভনন্তপুরম যুদ্ধ। আধুনিক সাজে বাস স্ট্যান্ড হয়েছে শহরের পশ্চিমে ১৫ মিনিটের পথে। অগ্রিম টিকিটও মেলে ৭-২১-০০টায়, রিজার্ভেশন ৩ 71285; লজও হয়েছে বাস স্ট্যান্ডের নিচে। এছাড়াও বাস যাচ্ছে দক্ষিণের নানান দিকে কন্যাকুমারী থেকে। নানান প্রাইভেট ট্রাভেল এজেন্সীর ডিলার বাসও যাচ্ছে চেন্নাই, তিরুপতি, ব্যাললোর, পণ্ডিতেরী, ভেমোর, সালেম, রামেশ্বরম ছাড়াও দক্ষিণ ভারতের দিকে।



ভারত রাষ্ট্রের অন্যতম পর্যটন কেন্দ্র Kannyakumari-629702, STD 04653-তে নানান হোটেল। রেল স্টেশন থেকে ১ আর বাস স্ট্যান্ড থেকে ১.৫ কিমি আগেই শহরের শুরুতেই Vivekananda Rock Memorial & Vivekananda Kendra, Vivekananda Puram-629702, ৩ 71250, DCB ৪০ TCB ৬০ FCB ১০০ DAB ৮৫ FAB ১৫০। দিনভর আহারও (নিরামিষ) মেলে এদের ক্যাফিটে। ১০০ একর জমি নিয়ে স্বামীজীর ঘর—'উট্টো, জাগো' এদের কর্মকাণ্ড—স্কুল, ট্রেনিং সেন্টার, লাইব্রেরি, বিবেকানন্দ মন্দির, ছবিতে বিবেকানন্দ প্রদর্শনী, সূর্যোদয় পর্যটক তথা বীচ, স্বামীজীর মূর্তি, একনাথ রানাদের সমাধি ছাড়াও নানান কিছুর সাথে Post Office, SBI-এর শাখাও বসেছে বিবেকানন্দ কেন্দ্রে। নিখরচায় বাণ্যও যাচ্ছে কেন্দ্রে থেকে ৬-৩০—২০-৩০এ ঘণ্টায় ঘণ্টায় গান্ধী মণ্ডপ তথা বাস স্ট্যান্ডে। ফেরার বাস মেলে ৭-১৫—২১-১৫য়। থাকার পক্ষে আদর্শ পরিবেশ।

বিবেকানন্দ কেন্দ্র পেরুতেই Main Road, Kannyakumari-629702এ—H Ranji Tourist Home, D ১৫০-২২৫ T ১৭৫-২৫০; Ganesh Lodging House, D ২৫০ T ৪০০; Banopathi L, D ১৫০-২০০ T ২০০-২৫০; Jamalila L; H Green Palace; Vivekash Tourist Home, ৩ 71192, DAB ২৫০-৩৫০ TAB ৩০০-৪২৫; Vinanchi Arach Tourist Home; Ganga Lodging House, ৩ 71399, DAB ২০০ TAB ২৫০ FAB ৩০০; Sankar's G H; জাগোয়া গলিপথে Alankur L; Nageswar Tourist Home, ৩ 71358, DAB ২৭৫ TAB ৪২৫; H Sangam Tourist Lodging, ৩ 71351, DAB ৩০০ FAB ৪০০; Township L; Parvathi Niwas L.

ধানার সামনে Car St, Kannyakumari-629702এ—H Ashoka, H Saagar, DAB ১৫০ TAB ২০০; NRS Lodge, Cape Land L, H Sree Balajee, H Manickam Tourist Home, ৩ 71387, DAB ২৭৫-৩৭৫ TAB ৩৫০-৪৫০; এসের নবতম শাখা হয়েছে সাগরপাড়ে। Shiva Tourist Home. বাজারের মালিকানায় H Calcutta, ৩ 71499, DAB ১৭৫-৩৫০ TAB ২৭৫-৪০০, আছাও বাজারের কাছে। হোটেল ক্যালকটুর ২টি ঘরে UCO Bank Employees Society, 3 Lindsay St, Cal-87-এর ফ্লিডে হোম হয়েছে, AP প্রণায় ৬ প্রতি জলা। Bhagavathi L; Lakshmi Tourist Home, ৩ 71333, DAB ৪৫০ TAB ৫৫০ A/C D ৮৫০; Gopi Niwas L, DKV Lodge, Gomez L, H Sea Land L.

গান্ধী মন্দিরের বিপরীতে, কন্যাকুমারী মন্দিরের নিচে অবস্থানে অনবদ্য হ্রদেও অতি সাধারণ সাজে *Kannyakumari Devasthanam RH*, DAB ৬০; পাশেই *Pioneer L* মন্দির লাগোয়া *Sannathi St*, *Kannyakumari-629702* এ—*Meenakshi L*; সমুদ্রের জলে ভাসত *H Samudra*, ৩ 71162, DAB ৩৫০-৬০০, A/c ৮০০; *Sudarshan Tourist Home*, *Jyothi L*, *H Ashoka*.

বাস স্ট্যান্ডমুখী *Bus Stand Rd-2*—*Kaveri L*, *Tri Sea H*, ৩ 71283; *Narmadha L*, *Kerala House*—সদাই ফুল কেরল রাজ্যের অফিসিয়ালে; *TTDC-র H Tamilnadu Kannyakumari*, ৩ 71257, DCB ৯০, DAB ১৫০ ৬২৫ ছয় বেডের ঘর ৪০০, A/c D ৫৫০ ৬০০ কট্টেজ ৩৫০, A/c ৪৫০ ৬০০ ৯০০ TV মেলে ঘরে ৪৫ অভিরিক্তে। এদেরই *Cape H*, ও *Tourist Centre* আছে। *TTDC-র Youth Hostel*-এ বেড ৫০; অবু: একদিনের টাকা অগ্রিম পাঠিয়ে স্ব হা মানেজার বা *TTDC*, 4 EVR Salai, Park Town, Chennai-600003, ৩ 561385, Fax 561385 বা *Diamond Tours*, 30 Jadunath Dey Rd, Cal-12, ৩ 279639-কেলিখুন। এপথে আরও যেতে নবতম বাড়িতে *CPWD Guest House*; *Kumari Bhavan L*; *Prabhu Tourist Home*. আর আছে বাস স্ট্যান্ডের ভিতলে *Bus Stand L*; *রেলের রিটার্নিং রুম*, নানান ধরমশালা কন্যাকুমারিকার। ঘরও মেলে S ৬০-১০০ D ৮৫-২২৫ টাকায় কন্যাকুমারিকার হোটেল। তবে, যাত্রী সমাগমের ভারতময় রোটও ওঠানায় করে নানান প্রাইভেট হোটেল।

তবুও থাকার জন্য সমুদ্রের পাড়ে মন্দির লাগোয়া *H Samudra*, *Manickam Tourist Home*—এদের নবতম বাড়িটি আকর্ষণে অনবদ্য, *H Calcutta*, *H Lakshmi*, *H Sangam*, *H Ganga*, *DKV Lodge*, *H Tamilnadu*, আশ্রমিক পরিকাঠামোয় *Vivekananda Kendra*—এদের আবেদন সবগ্রে। ভগবতীও মন্দ নয় থাকার জন্য।

আর হয়েছে বাঙালির রসনা তৃপ্তির জন্য থানার বিপরীতে মাস্টার মশায়ের *ক্যালকাটা হোটেল*, এদেরই শাখা বসেছে মন্দিরমুখী হোটেল সাগরে। বিপরীতে বাঙালি খানার ব্যবস্থা নিয়ে আর এক হোটেল *বিশ্বভারতী*। *মানিকম ট্যুরিস্ট হোম*, *টিকেন কনারি*—এদেরও প্রসিদ্ধি ননভেজ মিল পরিবেষায়। তেমনই ফেরী ঘাটের মুখে *হোটেল সর্বগা* ও *প্যালেস হোটেল* দুটির সুনাম যথেষ্ট সম্ভায় ভেজ মিল পরিবেষায়। আর মিঠাপাতির পানেরও স্বাদ নেওয়া যায় বিশ্বভারতীর পাশে অরুণ ভারতীর লোকানে।

তবে পরিতাপের বিষয় অতীতের শাস্ত-সমাহিত রূপটি আজ লোপ পেয়েছে কন্যাকুমারী থেকে। মন্দিরকে ঘিরে সমুদ্রের পাড় ধরে পোকানপাটে ঘিজিভাব। জনসমাগমের সাথে জনকোলাহল ঘটে চলেছে প্রত্যাখ থেকে গভীর রাতে। রাজ্য সরকারের পর্যটন দপ্তর ৩ 71276 বসেছে গান্ধী মন্দিরের পথে। বাস স্ট্যান্ড, ৩ 71285 শহরের পশ্চিমে ১৫ মিনিটের দূরত্বে। রেলস্টেশন, ৩ 71247, বিবেকানন্দ-পুরমুখী ১ কিমি উত্তরে। আর উচিত হবে কন্যাকুমারীর আরকরূপে ফোন্টিং মাল্লুরকে সঙ্গী করা।

তিন সাগরের সঙ্গ: ভারতের দক্ষিণে শেষ প্রান্তভূমি এই কেপ কমোরিন বা কন্যাকুমারী। পর্বটম মানচিত্রে

ভারতে আজ মুখ্য স্থান কন্যাকুমারীর। স্থান মাহাত্ম্যে সারা দেহ-মন উদাস হয়। পবিত্র করে তোলে সারা অন্তরায় কন্যাকুমারীর আকাশ-বাতাস। বায়ে বনোপসাগর, ডাইনে আরবসাগর আর সমুখপানে ভারত মহাসাগর। মিলনও ঘটেছে ত্রীর কন্যাকুমারিকার। সকাল-সাঁঝে মন্দিরের চত্বর থেকে জলের রঙ দেখে সহজেই চিনে নেওয়া যায় এদের। মইশুর থেকে আসা পশ্চিমঘাট পর্বতও সমুদ্রে ডুবেছে এই কেপে এসে। আর মেলে ৭ রঙা বালি কন্যাকুমারিকার। প্রবাদ—হিমালয় দুহিতা পার্বতীকে বিয়ে করেন শিব। আর সেই বিয়ের আশীর্বাদী সাত রকমের চালেরই নাকি এই রূপান্তর। তবে, কন্যাকুমারিকার নানের উপযোগী সী-বীচ নেই, জলে নামাও বিপদ। তবে, মন্দিরের ডাইনে বাঁধানো ঘাটে স্নান করা যেতে পারে। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত সুন্দর দৃশ্যমান। তবুও যেন অবস্থান মাহাত্ম্য মহান করে তুলেছে একে। চোখ মুদে ভেবে নিন আপনিও পৌছে যাচ্ছেন অ্যান্টার্কটিকায়।

বিবেকানন্দ শিলায় বিবেকানন্দ মন্দির: অতীতে ছিল পাশাপাশি দুই শিলাখণ্ড। স্বামী বিবেকানন্দ জ্ঞানের সন্ধানে বেরিয়ে এই প্রান্তভূমিতে আসেন। ধ্যানে বসেন সমুদ্রজলে স্নাত ৫৫ ফুট উঁচু দক্ষিণী শিলাখণ্ডের উপর ১৮৯২ খ্রিস্টাব্দের ২৫-২৭ ডিসেম্বর। লক্ষ্যে সিদ্ধিলাভ করেন বিবেকানন্দ। সেই থেকে নাম হয় শিলাখণ্ডের বিবেকানন্দ শিলা। আর, বিবেকানন্দর জন্মশতবার্ষিকী (১৯৬৪)-তে শুরু হয়ে ১৯৭০-এর সেপ্টেম্বরে একনাথজী রানারের উদ্যোগে চোল, পাণ্ড্য, পল্লব ও আর্য স্থাপত্যকলার এক নিপুণ সংমিশ্রণে তৈরি মন্দিরে ভাস্কর এল এল সোনা-ডাঙেকারের হাতে ৮ ফুট উঁচু ব্রোঞ্জ মূর্তি হয়েছে স্বামীজির। নিচুতে মেডিটেশন হল। আর আছে কাচের আধারে দেবী কন্যাকুমারীর পায়ের ছাপ শিলায়। মন্দিরও হয়েছে চোল স্থাপত্যশৈলীতে শ্রীপদ মণ্ডপম। মন্দির ছিল অতীতকালেও পরগুরামের তৈরি দেবী কুমারীর এই শিলাখণ্ডে। নামও ছিল তার শ্রীপদ মণ্ডপম। কালে কালে সমুদ্র গ্রাস করে সে মন্দির। আরও পরে মূল ভূখণ্ডে মন্দির হয় দেবী কুমারীর। ৫০০ মি জলপথ লঞ্চে পারাপার, মঙ্গল ছাড়া ৭—১১-০০ আবার ১৪—১৭-০০টায় লঞ্চ চলে, টিকিট ৫+দর্শনী ৩ করে।

কন্যাকুমারী মন্দির: তিন সাগরের পাড়ে সুন্দর মন্দির পরমাসুন্দরী দেবী কুমারী কন্যার। নানান পৌরাণিক আখ্যান জড়িয়ে আছে মন্দিরকে ঘিরে। প্রবাদ—শিবজ্ঞানী পার্বতীর দেবী কন্যাকুমারী রূপে আবির্ভাব। ব্রহ্মার বরে বাগাসুর ত্রিগোকে জয় করে দেবলোক আক্রমণ করায় বিষ্ণুর পরামর্শে যজ্ঞ করলেন ইন্দ্র। আর সেই যজ্ঞের হোমায়ি থেকে জন্ম এই কন্যার। শিব চলেছেন বিয়ে করতে কন্যাকে। কন্যার বিয়ে হলে বাগাসুর আর বধ হয় না। প্রবাদ গলেন দেবভাঙ্গা। মানসের চক্রে মাকেপক্ষে মোরগের ডাক শুনে শিব যান ফিরে গুচিহ্রমে। আর শিবের সঙ্গে বিয়ের লগ্ন

পেরিয়ে যেতে দেবী আজও তাই কুমারী। পাথরের দেবী মূর্তি খুবই সুন্দর। তিনদিকের তিনরঙা অনন্তের আঁচল গায়ে টেনে আকাশ-মুকুটিনী ভারতকুমারী অসীমের পানে তাকিয়ে। দিনের বিভিন্ন লগ্নে (৪-৩০এ বিশ্বরূপ, ৫-০০টায় অভিষেক, ৬-১৫য় দীপ আরাধনা, ১০-০০টায় অভিষেক, ১১-৩০টায় দীপ আরাধনা, ১৬-৩০এ অলঙ্কার, ১৮-৩০এ সায়রক্ষা দীপ আরাধনা, ২০-৩০এ অর্ধ্যযাম পূজা, ২০-৪৫এ দীপ আরাধনা) পূজা হয়। প্রতিবারই সাজ বদল হয় দেবীর। দিনের শুরুতে সাজ তার কুমারী কন্যার, দিনান্তে সাজ পনের দেবী নববধুর। দেবীর নালকের হীরাখণ্ডের দৃষ্টি গভীর সমুদ্র থেকেও দৃশ্যমান। মন্দিরে ৪টি স্তম্ভ আছে। আঘাত করলে মুগ্ধ, বেণু, বীণা ও জলতরঙ্গের সুর বাজে। আর আছে পাতালগঙ্গা তীর্থ অর্থাৎ কুম্ভা ও ধ্বজস্তম্ভ মন্দিরে। মন্দিরে পুরুষদের জামা ও গেঞ্জি খুলে ধুতি বা প্যাট পরে প্রবেশের প্রথা। মন্দিরের চাতাল থেকে সূর্যাস্ত ও সূর্যোদয় সুন্দর দেখায়। প্রতি পূর্ণিমার প্রাক সন্ধ্যায় একই সময়ে সূর্যাস্ত ও চন্দ্রোদয় দেখা যায় কন্যাকুমারিকায়। তবে, দক্ষিণায়ণের শেষভাগ থেকে উত্তরায়ণের প্রথম ভাগেই সূর্যাস্ত সঠিকভাবে দৃশ্যমান। গাঙ্গী মন্দিরের দ্বিতল থেকেও সুন্দর দৃশ্যমান এই সূর্যাস্ত ও চন্দ্রোদয়। ৪-৩০—১১-৪৫ আবার ১৭-৩০—২০-৪৫এ দ্বার খোলা মেলে মন্দিরের।

গাঙ্গী মন্দির: গাঙ্গীজির চিতাভ্রম এখানেও বিসর্জন দেওয়া হয়—সেই স্মৃতিতে মন্দির হয়েছে ১৯৫৬-য়। নির্মাণশৈলী এমনই যে প্রতি ২রা অক্টোবর (জন্মদিন) দুপুর ১২-০০টায় সূর্যরশ্মি ছিন্নপথ দিয়ে সরাসরি গাঙ্গীমূর্তির মুখে পড়ে। ৭—১২-০০ ও ১৫—২০-০০টায় খোলা। সামনেই গভর্মেষ্ট মিউজিয়াম। অদূরে ভাস্কর্য ও ছবিতে পরিব্রাজক-রূপী বিবেকানন্দ প্রদর্শনশালা।

লাইটহাউস: ১৫—১৭-০০টায় লাইটহাউসটিও দেখে নেওয়া যায়। উপর থেকে চারপাশ সুন্দর দৃশ্যমান। তবে, ছবি তোলা মানা।

আর রেল স্টেশনের কাছে চোল যুগের শিবমন্দির, সীতারাম দাস ওঙ্কারনাথ আশ্রম, সমুদ্রের ধারেই ১৬ শতকের রোমান ক্যাথলিক চার্চ, অদূরে সুইমিং পুল, ১২ কিমি উত্তরে চক্রতীর্থে কাশীর বিশ্বনাথের মন্দির, কিংবদন্তীতে ঘেরা পাতাল গঙ্গা, অদূরে মারুতমলাই অর্থাৎ গঙ্গামদনের ছিদ্রকে পড়া টুকরো, ৬ কিমি দূরে ১৮ শতকের ভাট্টাকোণ্ট্রাই সার্কুলার ডাচ ফোর্টিও বেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাশ্চর্যসাহীরা। শান্ত-শ্রদ্ধ সাগরবেলা, সমুদ্রমান ও চড়ইভাতির মনোরম পরিবেশ।

কন্যাকুমারী-নাগেরকয়েল-তিরুভনন্তপুরম NH47-এ ১৩ কিমি যেতে শুচীন্দ্রমের (Suchindram) শিব মন্দিরটিও কন্যাকুমারী যাত্রীদের কাছে কম আকর্ষণীয় নয়। ৭ তলা উঁচু তোরণটিও সুন্দর। শুক্রবার সূর্যাস্তে বিশেষ পূজা, যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। প্রবাদ—শাপগ্রস্ত ইন্দ্র দেবাদিদেব

শিবের তপস্যা করেন। শিব শুচি শুদ্ধ করেন ইন্দ্রের অর্থাৎ শুচি-ইন্দ্রম। স্থানীয়দের মুখে শিব-ইন্দ্রম নামেও খ্যাত মন্দিরটি। অতীতে নাম ছিল এর জ্ঞানারণ্য। একশত পাথর কুঁদে ৭টি মিউজিক্যাল পিলারও হয়েছে দ্রাবিড়ীয় স্থাপত্যে গড়া মন্দিরে। আঘাতে সারোগামা সুর বাজে। মন্দিরের অলিঙ্গটিও সুন্দর। ১৮ ফুট উঁচু হনুমান মূর্তিটি অনবদ্য। দেবতা রয়েছেন বিষ্ণু, কার্তিক, গণেশ ছাড়াও নানান। নবগ্রহ মূর্তিও হয়েছে প্রবেশ পথের সিলিংয়ে। ১০৩৫ স্তম্ভের নাচঘরটিও বৈচিত্র্যের আর এক গাঁথা। তেমনিই এর চূড়োর এক দিকে রামায়ণ অপরদিকে মহাভারত আখ্যান মূর্তি। মন্দিরটি সবার তরে খোলা।

প্রবাদ, অতী খমি ক্লী-অনসুয়া-সহ বাস করতেন এখানে। ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর নাকি অনসুয়ার সতীভূ পরীক্ষায় এখানেই আসেন। স্মারক রূপে মূর্তি হয়েছে দেবত্রয়ের। পূজাও হয় ত্রয়ীর। এমনকি শিবও যাচ্ছিলেন শুচীন্দ্রম থেকেই বিয়ে করতে কন্যাকুমারিকায়। মুহূর্মহ বাস যাচ্ছে শুচীন্দ্রম হয়ে নাগেরকয়েল। ট্রেনও যাচ্ছে শুচীন্দ্রমে কন্যাকুমারী থেকে। ১৫০ টাকায় জিপ বা ট্যাক্সিতে বেড়িয়ে ফেরা যায় শুচীন্দ্রম ও নাগেরকয়েল। তেমনিই শ'পাঁচেক টাকায় ট্যাক্সিতে শুচীন্দ্রম-নাগেরকয়েল-পদ্মনাভপুরম-কোভলম-তিরুভনন্তপুরম বেড়িয়ে ফেরা যায় কন্যাকুমারী থেকে একই দিনে।

আবার তিরুভনন্তপুরমমুখী আরও ৬ কিমি গিয়ে নাগদেবতার মন্দির নাগেরকয়েলও বেড়িয়ে নিতে পারেন। মুহূর্মহ বাস যাচ্ছে নাগেরকয়েল হয়ে তিরুভনন্তপুরম ও কন্যাকুমারী। বাস যাচ্ছে দক্ষিণের দিকে দিকে নাগেরকয়েল থেকে। চীনা প্যাগোডাশৈলীর প্রবেশপথ। মূল মন্দিরে পঞ্চমুখী কেউটের পাহারায় রূপোর সিংহাসনে দেবতা নাগরাজ। রঙয়েরও বদল ঘটে প্রতি ৬ মাসে নাগদেবতার। প্রতি শুক্রবার বিশেষ পূজা—দুধ দেওয়া হয় এই বিশেষ দিনে। শিব আর বিষ্ণুও আছেন মন্দিরে। এছাড়াও মূর্তি রয়েছে আরও নানান মন্দির অঙ্গনে। জৈন তীর্থঙ্কর মহাবীর ও পার্শ্বনাথ স্বামীও উৎকীর্ণ হয়েছেন মন্দিরের স্তম্ভে। নাগেরকয়েল থেকে বাসে ঘণ্টাখানেকের সুন্দরী থিরুপারামু-এ জলপ্রপাত ও দক্ষিণী শৈলীতে গড়া শিব মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। আরও ১৩ কিমি দূরে Kodhayar Dam-এর জল মন্দিরের তোরণ পেরিয়ে ৫০ ফুট নিচু পাথরের চাতালে আছড়ে পড়ছে। শুচীন্দ্রম, নাগেরকয়েল ও থিরুপারামুর মন্দির প্রবেশে পুরুষদের ধুতি-প্যাট-পাজামা পরে খালি গায়ে চলা রীতি। তেমনিই আরও ১৪ কিমি তিরুভনন্তপুরমমুখী যেতে উদয়গিরি দুর্গটিও দেখে নেওয়া যায় চলার পথে। কন্যাকুমারীর দূরত্ব ৩৪ কিমি। ১৭৪১এ মার্তও ভার্মা কোলাচেলের যুদ্ধে ডাচদের হারিয়ে দখল করেন দুর্গ। আরও যেতে অতীতের ত্রিবাঙ্কুর রাজ্যের রাজধানী পদ্মনাভপুরম।



খাকারও নানান হোটেল নাগেরকয়েল—*Baskar L. Meenakshipuram-629001. S ১০০ D ১৭৫ T ২০০; Sri Swaminath L. S ৬০ D ১০০; H Rajan, M S Rd. ৩ 24581, DAB ২৭৫ A/C D ৪৫০ সুইট ৬০০-৮৫০, ব্যবস্থাপনা ভালই; Tower View L. S M Lodge, H Prabhu Bharani GH, H Ganga L, H Singaur, H Blue Star, Janakram H, H Arunagiri, Sree Shelvanas ছাড়াও নানান।*

কোয়েম্বাটুর

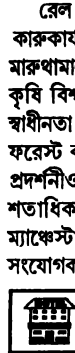


জেলাসদর তথা রাজ্যের তৃতীয় বৃহত্তম তথা বাণিজ্যিক শহর কোয়েম্বাটুর। প্রতিদিন IAC-র উড়ান ১৪-০৫এ কোয়েম্বাটুর ছেড়ে কলিকট যাচ্ছে ১৪-৩৫এ। ফেরে ১ ২ ৪ ৬ দিন ৯-২৫, ৩ ৫ ৭ দিন ৮-০০টায় কলিকট থেকে কোয়েম্বাটুরে। চেন্নাই যাচ্ছে কলিকট থেকে এসে। ১ ২ ৪ ৬ দিন ১০-৩৫, ৩ ৫ ৭ দিন ৯-১০এ কোয়েম্বাটুর থেকে। কোয়েম্বাটুর ফেরে চেন্নাই থেকে প্রতিদিন ১২-৩০এ ছেড়ে ১৩-২৫এ সহসারি। মুম্বাই যাচ্ছে ১ ২ ৩ ৪ ৬ ৭ দিন ১১-১৫য় কোয়েম্বাটুর ছেড়ে ১৩-০৫এ; ফেরে ৮-৪৫এ মুম্বাই থেকে। আর প্রাইভেট বিমান Jet Airways প্রতিদিন কোয়েম্বাটুর-মুম্বাই-আমোদাবাদ, কোয়েম্বাটুর-মুম্বাই-ওরসাবাদ, কোয়েম্বাটুর-মুম্বাই-দিল্লী, কোয়েম্বাটুর-মুম্বাই-জয়পুর যাচ্ছে। ফেরেও একইভাবে এরা। Skyline NEPC চেন্নাই, কোটি, দিল্লী যাচ্ছে প্রতিদিন; আমোদাবাদ যাচ্ছে ২ ৪ ৬ দিন; ১ ৩ ৫ দিন ব্যাঙ্গালোর হয়ে চেন্নাই; ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন কলকাতা-চেন্নাই-ব্রিটিশ যাচ্ছে কোয়েম্বাটুর থেকে। East West Airlinesও নিয়মিত সার্ভিস গড়েছে মুম্বাই-কোয়েম্বাটুরের মাঝে। দপ্তর বসেছে Trichy Rd-এ; Indian Airlines ৩ 212743 ও Air India ৩ 213933-র Jet Airways ৩ City 212034 Airport 575387; Skyline NEPC, 1678 Tulur Rd, ৩ 217763-এ। চেরন বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে Sathy Airport থেকে ৩০ কিমি দূরের শহরে।



তিরুভান্নভার, আম্মা, কেরল স্টেট, কণ্ণিক স্টেট, চেরন ট্রান্সপোর্ট ছাড়াও নানান প্রাইভেট বাস মাকড়সার জাল বুনেছে কোয়েম্বাটুরকে কেন্দ্রমণি করে সারা দক্ষিণে। চেন্নাই যাচ্ছে ১১½ ঘণ্টায় দিনে ৭, মাদুরাই যাচ্ছে ৫ ঘণ্টায় দিনে ২৫, ব্রিটিশ যাচ্ছে ৫½ ঘণ্টায় দিনে ১৫, ব্যাঙ্গালোর ২, মহিশূর ৩ বাস ছাড়াও, পণ্ডিতেরী, তিরুপতি। বাস স্ট্যান্ডও দুই কোয়েম্বাটুরে—কাছাকাছি অবস্থান এদের। TTC-র দূরপাল্লার বাসে রিজার্ভেশন মেলে। আর রেল স্টেশন বাস স্ট্যান্ড থেকে ২ কিমি দূরে কোয়েম্বাটুরে। (রেল সার্ভিস উটি অংশে) টুরিস্ট অফিস রেল স্টেশনে। মধ্যমানের হোটেলগুলির অবস্থানও দুই বাস স্ট্যান্ড ও রেলকে ভর করে কোয়েম্বাটুরে। শহরে চলছে রিক্সা, অটো, বাস ও ট্যাক্সি।

৫ মিনিটের ব্যবধানে স্টেট ও তিরুভান্নভার দুই বাস স্ট্যান্ড থেকেই বাস যাচ্ছে উটি পাহাড়ে। ভোর থেকে মধ্যরাতে ২ ঘণ্টা অন্তর সার্ভিস। দূরত্ব ৯০ কিমি, ঘণ্টা চারেকের পথ। ট্যাক্সিও যাচ্ছে কোয়েম্বাটুর থেকে উটি পাহাড়ে। TTDC ও প্রাইভেট ট্রাভেল এজেন্ট প্যাকেজ ট্যুরে যাচ্ছে শহর দেখাতে।



রেল স্টেশন থেকে ৭ কিমি পশ্চিমে পেরুর অর্থাৎ সুন্দর কারুকার্যময় শিবমন্দির, ১২ কিমি দূরে পাহাড়ী টিলায় মারুথামালাই মন্দিরে কার্তিকি, ৫ কিমি দূরে ১৯৭৩এ গড়া কৃষি বিশ্ববিদ্যালয়, শহরের মাঝে স্টেডিয়ামের কাছে স্বাধীনতা সংগ্রামের শহীদ স্মরণে ডি ও সি পার্ক, বিশ্ববন্দিত ফরেস্ট কলেজ, রেসকোর্সের অদূরে জি ডি নাইডু শিল্প প্রদর্শনীও দেখে নেওয়া যায় কোয়েম্বাটুরে। তবুও যেন শতাধিক বয়নশিল্প ও কৃষিভিত্তিক দক্ষিণ ভারতের ম্যাঞ্চেস্টার কোয়েম্বাটুর ভ্রমণ-মানচিত্রে উটি ও কেরলের সংযোগকারী জংশন রূপে সমধিক খ্যাত।

Coimbatore-641001, STD 0422-এ হোটেল আছে নানান—*H Sree Shakri, 11/148 Sastri Rd, opp Bus Std, S ১২০ D ১৭৫-২২৫ T ২০০, ব্যবস্থাপনা ভালই; অদূরে Zukin H, Sastri Rd, S ৮০ D ১৫০; বাস স্ট্যান্ডের শিখে Sri Ganapathy L, Sastri Rd, S ৮০ D ১৫০; H Samnathdram, S ১০০ D ১৭৫। রেল স্টেশনের বিপরীতে গলিপথে H Sivakami, D ১৫০-২২৫; H Anand Vihar, 6 State Bank Rd, SAB ৮৫-১২৫ DAB ১৫০-২২৫; A P Lodge, S ১০০ D ১৭৫। রেল স্টেশনের উত্তরে H Blue Star, Nehru Rd, S ১৫০ D ২৫০ A/C D ৪৫০; *H Guru, 996 Raja Street-1, D ১০০-২২৫ T ২০০ A/C D ৪০০; *H Alankar, 10 Sivaswamy Rd-9, ৩ 235441, S ২২৫ D ২৭৫-৪০০ A/C S ৪৫০ D ৬০০-৮০০; H Hema, opp Rly Stn, 16 Geeta High Rd, ৩ 210270; H Vishnuipriya, 14 Kalin Garayan St, Ramnagar; অদূরে Vijay L, D ১৭৫-২২৫; H Aswini, 352 Nehru Rd, D ২৭৫-৪২৫; বাস থেকে ৫ মিনিটের পথে H City Tower, off Dr Nanjappa Rd, Ramnagar-9, ৩ 230681, S ৪০০ D ৬০০ A/C S ৬৫০ D ৮০০ ৯০০ সুইট ১৫০০; Heritage Inn, 38 Sivaswami Rd, Ramnagar-9, ৩ 231451, A/C S ৮৫০ D ১০০০ সুইট ১০৫০-১২৫০; H Seetharam, Ramnagar, S ২২৫ D ৩২৫ A/C S ৩৫০ D ৪৭৫; H Murugan, opp Rly Stn, A/C S ৩০০ D ৪৫০; H Shoma, Gandhipuram, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫; H Sree Lakshmi, Cross Cut Rd, Gandhipuram, ৩ 233071, S ২০০ D ৩০০; *Sree Annappurna L, R S Puram-2, ৩ 447722, R3B3, S ৩২৫ D ৪৫০ A/C S ৪৫০ D ৬৫০ Suite ৮০০; *Sri Aarvee H, Gandhipuram-44, ৩ 433677, R1, S ৩২৫ D ৪৫০ A/C S ৪৫০ D ৫২৫ ৬৫০ সুইট ৭৫০-১০০০; *H Surya International, 105 Race Course Rd-18, ৩ 217755, R1B1½ A/C S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১৫০০; *H Sri Thevar, Avanashi Rd-18, R½ B1, S ১৭৫ D ৩০০ A/C S ৩৭৫ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; TTDC-র *H Tamilnadu-Coimbatore, Dr Nanjappa Rd-641018, ৩ 236311, SAB ১৯৫ ২০০ DAB ২৫০ A/C S ৩৫০ D ৪০০ ৫৫০ A/C Suite ৭০০ ডর্মি বেড ৪৫; ছাড়াও সাধারণ হোটেল আছে নানান রেল ও বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে কোয়েম্বাটুরে। আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম ও বাস স্ট্যান্ডে রেন্ট হাউস কোয়েম্বাটুরে। তেমনই ভেজ মিলে যথেষ্ট খাত Main Rd-এর Royal Hindu Restaurant. নন-ভেজ মিলের জন্য*

শাস্ত্রী রোডে জাকিল, নেহরু রোডে হোটেল টপ কর্ম ও রেল জংশনে সানরাইজ ভালাই।

অত্যাৎসাহীরা কোয়েষাটুরের ৯০ কিমি পূবে তামিল-নাড়ু ও কেরল সীমান্তে পশ্চিমঘাটের সানুসেপে ১৪০০ মি উচ্চতে ৯৫৮ মর্গ কিমি জুড়ে গড়া আন্নামালাই বন্যজন্তু সন্গ্রহালয়ে হাতি, গৌর, বাঘ, প্যাহার, কুমির, হরিণ, বন্য ছাগল ছাড়াও নানান জন্তু দেখে নিতে পারেন। নিয়মিত বাস যাচ্ছে। আবার পালঘাট-পোন্নাচি শাখা রেলের পালঘাট থেকে ৫৮কিমি দূরের পোন্নাচি পৌঁছেও বাসে চলা যেতে পারে আন্নামালাই। পালঘাট-রামেশ্বরম, পালঘাট-মাদুরাই প্যাসেঞ্জার ও যাচ্ছে পোন্নাচি হয়ে। Parambikulam বাঁধে রিসেশন সেন্টার বসেছে। থাকারও নানান ব্যবস্থা; Topslip-এ ৬ ঘরের Forest RH, অরণ্য অন্দরে Varugaliar RH, Mount Stuart RH. মাউন্টে আহার্য মিলেও অন্যত্র নিম্ন ব্যবস্থা। সকাল বা সাঁঝে বছরভর চলাও যেতে পারে আন্নামালাই দর্শনে।

তেন্নাই কোয়েষাটুর-ডিভিগল সড়কে কোয়েষাটুর থেকে ১০৫ আর ডিভিগলের ৫৭ কিমি দূরে হাজার ফুট উচ্চতে পালনী পাহাড়ে ভগবান সূর্য্যাপ্য মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বাস ও রেল সংযোগ রেখেছে ত্রীয়র। থাকার জন্য সাধারণ হোটেল, মন্দির কমিটির রেস্ট হাউস, কটেজ ও ধর্মশালা আছে।

উমাগামগুলম/উডকামও



তামিলনাড়ু কেরল ও কণাটকের সঙ্গে বাস ও ট্রেনপথে নিয়মিত সংযোগ রয়েছে উডকামও তথা উটির। মাদুরাই ৩১৬, মেট্রো পলাল্যাম ৫১, কন্যাকুমারী ৫৫৭, কোদাই ২৯৬, চেন্নাই ৫০৫, তিরুপতি ৫৭৭, পণ্ডিচেরী ৪০৪, তিরুভনন্তপুরম ৬৩১, ত্রিচি ২৬১ কিমি থেকেও নিয়মিত বাস আসছে ৯০ কিমি দূরের কোয়েষাটুর হয়ে উটি পাহাড়ে। বাস আসছে কোচি ২৮১, কালিকট ১৭১, পালঘাট, কোজিকোড় ছাড়াও কেরলের নানান শহর থেকে। এছাড়াও বাস আসছে মধীশুর ১৫৯, ব্যাঙ্গালোর ৩০৯, ম্যাঙ্গালোর ৩৪৮ কিমি থেকেও উটিতে। আর উটি থেকে কোয়েষাটুর যাচ্ছে ২০-৩০ মিনিটের ব্যবধানে ৩ ঘণ্টায়, কুমুর ৫ মি অন্তর ১ ঘ, কোটাগিরি ১ ঘণ্টা অন্তর দিনভর ১½ ঘ, চেন্নাই যাচ্ছে ২টি বাস, কোদাই ৬-৪০৫ ছেড়ে ৯ ঘণ্টায়, পণ্ডিচেরী ২১-০০, ২১-৩০, তিরুপতি ১৮-০০, কন্যাকুমারী ১৭-৪৫, মাদুরাই ৬-০০, ৮-০০, ১৮-০০; ত্রিচি ১৬-০০টায়। ৮½ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৮-৪৫, ৯-৩০, ১৯-১৫, ২১-০০টায়; ৫½ ঘণ্টায় মধীশুর যাচ্ছে ৮-০০, ৯-০০, ১১-৩০, ১৩-৩০, ১৫-৩০ ছাড়াও ব্যাঙ্গালোরের বাস; হাসান যাচ্ছে ১১-৩০৫ মধীশুর হয়ে। ১৫ ঘণ্টায় তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে ১৩-৪৫৫; আর কালিকট যাচ্ছে ৬½ ঘণ্টায় দিনে ৭টি বাস উটি থেকে। এপথের যাত্রীদের উচিত হবে উটি পাহাড়ে চড়ার পথে পশ্চিমঘাট পর্বতমালায় শোভা পেতে ডান পাশে আর নামার কালে বামপাশে জানালায় সিট নেওয়া। এছাড়া চারিং ক্রস থেকে নানান প্রাইভেট ডিলাক্স বাসও যাচ্ছে কোদাই, মধীশুর, ব্যাঙ্গালোর

ছাড়াও দক্ষিণের দিকে দিকে। ভাড়ায় কিছুটা অধিক লাগলেও সময়ে সময়ে মেগে, যাত্রাও অনেক আরামদায়ক প্রাইভেট বাসে।



চেন্নাই থেকে রুডগেজে ২১-১৫য় ৬৬০৫ শীলগিরি এক্সপ্রেসে সোয়াইল ছেড়ে পরদিন ২-৩৫৫ সালেম, ৩-৫০৫ ইরোড, ৬-০০টায় কোয়েষাটুর, ৭-২৫৫ মেট্রোপলাল্যাম জং পৌঁছে নীল-হলদে ছোট্ট পাহাড়ী ট্রেন ৭-৪৫৫ মেট্রোপলাল্যাম ছেড়ে পূর ১২-০৫৫ উটি যাচ্ছে। উটির দ্বিতীয় ট্রেনটি ৯-১০৫ ছেড়ে ১৩-৪০৫ উটি যাচ্ছে মেট্রোপলাল্যাম থেকে। সবুজের ইজ্জেল কুঁড়ে ট্রেন ওঠে পাহাড় বেয়ে— মাদকতা আছে ট্রেন চড়ায়। মরসুমে বিশেষ ট্রেনও চলে পাহাড়ী পথে। শীলগিরি ফেরে ১৫-০০টায় উটি ছেড়ে ৩½ ঘণ্টায় মেট্রোপলাল্যাম পৌঁছে চেন্নাই যাচ্ছে ১৯-২৫৫ মেট্রোপলাল্যাম ছেড়ে পরদিন ৫-৫৫৫। দ্বিতীয় ট্রেনটি ১৪-০০টায় উটি ছেড়ে ১৭-২৫৫ মেট্রোপলাল্যাম যাচ্ছে। এছাড়াও ট্রেন আসছে চেন্নাই সোয়াইল থেকে ৬-১৫য় ২৬৭৫ কোভাই এক্স, ২০-৩৫৫ ৬৬৭৩ চেরান এক্স, ১৫-১০৫ ২০২৩ শতাব্দী এক্স, ১২-০০টায় ৬৬২৭ ওয়েস্ট কোস্ট এক্স ছাড়াও নানান। কোয়েষাটুর পৌছায় যথাক্রমে ১৩-৪৫, পরদিন ৫-০০, ২২-০০, ২০-৫০৫। সালেম-ইরোড হয়ে ট্রেন যাচ্ছে। ক্ষততম এসের মধ্যে শতাব্দী এক্স। কোয়েষাটুর থেকে চেন্নাই ফেরে ১৩-৩০৫ কোভাই, ২৩-০৫৫ চেরান, বুধ ছাড়া ৭-২৫৫ শতাব্দী, ৪-৫৫৭ ওয়েস্ট কোস্ট এক্স। বোকরো স্টিল সিটি-আলেক্সি এক্সও যাচ্ছে চেন্নাই না গিয়ে পেরাম্বুর, কোয়েষাটুর হয়ে। ট্রেন আসছে রবি ও শুক্র হাওড়া-তিরুভনন্তপুরম, বৃহস্পতিবার পাটনা-কোচি, সোমবার গুয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম, বৃহস্পতিবার গুয়াহাটি-কোচি, বুধ ও রবিবার গুয়াহাটি-ব্যাঙ্গালোর এক্স হাওড়া ছেড়ে খড়াপুর, ভুবনেশ্বর, বিশাখাপত্তনম, চেন্নাই সোয়াইল, সালেম হয়ে ৩৮½ ঘণ্টায় কোয়েষাটুরে। চেন্নাই-তিরুভনন্তপুরম মেল, চেন্নাই-কোচি এক্সও যাচ্ছে কোয়েষাটুর হয়ে। ট্রেন আসছে রামেশ্বরম-মাদুরাই-কোয়েষাটুর এক্স, কন্যাকুমারী-মুঝাই এক্স, কারলা-ম্যাঙ্গালোর এক্স, রাজকোট-কোচি/তিরুভনন্তপুরম, গান্ধীধাম-নাগেরকয়েল, ত্রিচি-মধীশুর এক্স, সাপ্তাহিক হিমসাগর/নবযুগ এক্স, ম্যাঙ্গালোর-হজরৎ নিজামুদ্দিন এক্স, গোরাকপুর/বারাউনি-কোচি রাষ্ট্রসাগর এক্স, বারাণসী-কোচি এক্স, বিলাসপুর-কোচি এক্স, ত্রিচি-কোচি এক্স, হায়দ্রাবাদ-কোচি এক্স, ইন্দোর-কোচি এক্স, ম্যাঙ্গালোর, ব্যাঙ্গালোর, দিল্লী থেকেও উটির যাত্রী নিয়ে কোয়েষাটুরে। এমনকি কোয়েষাটুর-ব্যাঙ্গালোর ইন্টারসিটি এক্সও চলছে ৭ ঘণ্টায়। ট্রেন যাচ্ছে মাদুরাই ৫½ ঘ, রামেশ্বরম ১২ ঘ, কন্যাকুমারী ১৩½ ঘ, মুঝাই ৩০ ঘ, কোচি ৫ ঘ, তিরুভনন্তপুরম ৯½ ঘণ্টায়। তবুও যেন মাদুরাই থেকে TTC-র দ্রুতগামী বাসে উটি যাওয়ায় সুবিধা। উটির নিকটতম বিমানবন্দর ৯০ কিমি দূরে দক্ষিণ ভারতের ম্যাকোন্সটার কোয়েষাটুরে। কোয়েষাটুর থেকে রেল, বাস বা ট্যাক্সিতে চলা যেতে পারে পাহাড়ী শহরে। আধ ঘণ্টা অন্তর বাস, ৩ ঘণ্টার পথ কোয়েষাটুর থেকে উটি পাহাড়ের। এছাড়াও বাস যাচ্ছে সারা দক্ষিণে কোয়েষাটুর থেকে। পাহাড়ী শহরে চলছে রিকশা, মিটারহীন অটো ও ট্যাক্সি।



রেল ও বাস দুই-এরই অবস্থান পশ্চিমপাশী পাহাড়ী শহর উটিতে। অতীতে শহরও গড়ে উঠেছিল রেসকোর্সকে ঘিরে রেল ও বাসকে ভর করে। তবে, নতুন করে প্রসার পাচ্ছে শহর চারিং ক্রসকে ছাড়িয়ে বটানিক্সের ছারপ্রান্ত জুড়ে। মরসুম এসেই এপ্রিল থেকে জুনের ১৫—বাকি

বহরতা অব-সীজন। রেন্টও তাই লাগাম হাজা সীজনে। আর অব-সীজনে রিফট মেলে উটির হোটেল। ঢেক আউট টাইমেও বৈচিত্র্য মেলে—কোথাও সকাল ৯-০০, কোথাও ১২-০০; আবার ২৪ ঘণ্টারও প্রচলন আছে নানান হোটেল। বাস স্টেশনের সামনে রেস কোর্সের বাঁয়ে ৫ থেকে ১৫ মিনিটের পথে—*Pradhitya L*, opp Rly Stn, S ১২৫ D ২৫০; *Raj L*, *H Sreekrishna*, *Prabhu L*, *Roadhiga L*, *Apsara L*, DAB ২০০-৪২৫; *Blue Star L*, *Maneek Tourist Home*, Main Bazar, DAB ৩০০-৪২৫; *Vishu L*, DAB ২২৫-৩৫০; *Sabari L*।

বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে UBI-এর *হিল্ডে হোম* পেরিয়ে ৫ থেকে ১০ মিনিটের দূরত্বে Fern Hill Rd, Ootacamund-4, STD 0423৫—নিজাম অব হায়দ্রাবাদের প্রাসাদ ভবনে **The Palace H*, DAB ৮৫০-১২০০ সুইট ১৫০০; *Mount View*, DAB ৬৫০-৮৫০ সুইট ১২৫০; **H Dasuprakash*, 042434, SAB ৪২৫, DAB ৬০০-৮৫০; *H Nilgiri Woodlands*, 042551, DAB ৪৫০-৮৫০ কটেজ ৬৫০-১২০০; *Welcomgroup*-এর **Fern Hill Imperial-4*, SAB ৬৫০, DAB ৮৫০-১০০০ সুইট ১৭৫০; *লাগোয়া Regency Villa*, Fernhill-4, 042555, D কটেজ ৩৫০-৬০০ ভিলা ৬০০-৮৫০।

বাসের পিছনে লেকমুখী—*Mahesh Tourist L*; *Reflection GH*, 043834, D ৩২৫-৪৫০; *H Darshan*, 043378, DAB ৩০০-৪৫০; *H Lake View*, West Lake Rd-4, 043904, DAB ৪৫০-৬৫০ সুইট ৮০০-১০০০, কল বুকিং: Diamond 0276714।

রেল স্টেশনের বিপরীতে—*H Garden View*, *H Gaylord*, DAB ৩৫০, TAB ৪০০, FAB ৪৫০; *Little Paradise*, Lake Rd-1, DAB ৩২৫, FAB ৪৫০।

বাস থেকে ১ কিমি দূরের Commercial Rd-1-এ—*Geetha L*, *Mamali Tourist Home*, *Savera Inn*, *Giri L*, *New Savera L*, *Primrose Tourist Home*, S ২৫০ D ৩২৫ ডিলান্স ৩৭৫; *Natheem L*, *L Central Park*, *T K Lodge*, *Sri Annapurna L*, *R1B1*, *SCB* ১০০, *DCB* ১৫০, *SAB* ২০০, *DAB* ৩০০।

১½ কিমি দূরের Charring Cross Rd, Ooty-643001-এ পাহাড়চূড়ায় ট্যুরিস্ট অফিসের শিরে—TTDC-র *H Tamilnadu-Ooty*, 0(0423)44370, DAB ৪২৫ ৫০০ সুইট ৭০০-৯৫০ কটেজ ৮০০; অদূরে TTDC-র *H Tamilnadu-Ooty II*, 043665, DAB ৩৭৫ ছয় বেডের ঘর ৪৭৫ ডর্মি বেড ৫০, ৫০ অতিরিক্তে TV মেলে ঘরে। *Tamilnadu Co-operative H*-এও ঘর মেলে যাত্রীর। *H Charring Cross*, Garden Rd, D ৬৫০-৮০০; *Nahar H*, Charring Cross-1, 042173, DAB ৭৫০ ১১০০ সুইট ১২৫০; কল বুকিং: NCS Travels & Tours, 225-F, AJC Bose Rd-20, 02474727; *H Durga*, Ettins Rd, D ৩০০-৪৫০; কাছেই *H Preethi Palace*, 042789, DAB ৪৫০-৭৫০; *H Sanjoy*, Charring Cross, 043160, S ২২৫-৩৫০ D ৩০০-৪৫০; *H Sapphire Paradise*, Ettins Rd, 043412, S ১৭৫-৩০০ D ৩০০-৪৫০; *H Blue Hills*, Ettins Rd-1৫—*H Nataraj*, SAB ২২৫, DAB ৪০০ সুইট ৬০০; *H Nandhi*, DAB ৩০০-৪৫০; *Highland L*, মান ও দামে নন্দী ভুল্য; এসেরই উপরে *H Khems*, 044188, D ৭৫০ সুইট ১০০০।

Club Rd-1-এ—*Taj Group's *H Savoy*, 044147, R1½B½, S ৬৫-৭৫ D ৯০-১১০ US\$; *Savoy Annex*-এ D ৬৫০; *Ratan Tatu Officer's Holiday Home*, AP প্রধার প্রতি জনা ৪৭৫-৬২৫।

আর বয়েছে শহরময়—KSTDC-র *H Mayura Sudarshan*, Fern Hill, 043828, DAB ৩২৫ ৫০০ সুইট ৬৫০ ৮০০; *H Brindavan*, St Mary's Hill, S ১৭৫ D ২২৫-৩৫০ ডিলান্স ৪২৫ সুইট ৫৫০-৮০০; *Snowdown Inn*, Snowdown Rd, D ৩২৫-৪৫০; পাহাড় শিরে সুপার স্টার মিউন চক্রবর্তী **The Monarch*, off Havelock Road, Church Hill-643001, 044408, D ১২৫০ ১৬৫০ ২০০০, হেলিপ্যাডে হয়েছে মনার্কো। মহীশূরের মহারাজার গ্রীষ্মাবাসে *Fernhill Palace*, Ooty-4, 043910, D ১০০০-১৫৫০ সুইট ২২৫০, কটেজ ৮৫০-১১৫০; *Holiday Inn Gem Park*, Sheddion Rd-1, 043066, S ২০০০-২৭৫০ D ২৫০০-৩০০০ সুইট ৩০০০-৪৫০০; *Sterling Holiday Resort*, Fernhill, 041672, D ১২৫০ সুইট ১৭৫০ চার বেডের ২২৫০, কল বুকিং: Diamond 0276714; **Quality Inn Southern Star*, 22 Havelock Rd-643001, R2, 043601, S ১১৭৫ D ১২৭৫ সুইট ২৫০০; **Willow Hill*, 58/1 Havelock Rd-1, 042686, D ৬৫০ ৮৫০ সুইট ১৭৫০; *Sri Akshya Tourist Home*, Coonoor Rd, D ৪২৫-৬৫০; *H Pleasure Inn*, Coonoor Rd, 042559, D ৬০০-৮০০; *H Blue Bird*, Coonoor Rd, D ৪৫০-৬০০; *Thamizhagan*, D ৩০০-৪৫০; *Shoram Palace*, DAB ৬০০; *H Sinclairs*, Ooty, Goushola Rd-1, 044061, S ১২৫০ D ১৫৫০ সুইট ২৫০০, কল বুকিং: Sinclairs Hotels & Transportation Ltd, 56-A, Mirza Ghalib St-16, 0292925; *H Weston*, Club Rd, 043500, D ৭২৫; *H Sabari*, Upper Bazar, D ৩২৫-৪৫০; *H Rathena*, Main Rd, D ২২৫-৩৭৫; *H Elkhill*, DAB ৬০০-৮৫০। আর আছে YWCA, Anandagiri, 042218, D ২৭৫-৪২৫ ডর্মি ৫০, আহার্যও মেলে এদের ক্যান্টিনে; YMCA, PWD-র *Connemera Cottage*, ছাড়াও ৪ ঘরের রেলের *রিটায়ারিং ক্লব* উটিতে। এছাড়াও অতি সাধারণ সাজে S ৬০-১৭৫ D ৮৫-২২৫ টাকায় নানান হোটেল আছে উটিতে। অগ্রিম বুকিংয়ের জন্য *Manager*-সের লিখুন।

হিল্ডে হোম-ও গড়েছে *Steel Authority of India Employee's Cooperative Cr Society*, 2 Fairlie Place, Cal-1, 02211458, 2202371-79 Ext 325, 430 at Bishops Down; *Peerless Officer's GH*, 13-A, Decars Lane, Cal-69, 02489682 (4-6 PM)।

প্রায় প্রতিটি হোটেল আহার্য মিললেও খাবার হোটেলও আছে নানান উটি পাহাড়ে। *H Sanjoy*, *Nahar Tourist Home*, *H Dasuprakash*—আহার্যে যথেষ্ট সুখ্যাতি এদের। তবুও যেন চারিই ক্রসে *Tandoori Mahal*-এর মোগলাই খানার যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। নাহার লাগোয়া *Blue Hill*-এও স্বাদ নেওয়া যেতে পারে আহার্যের। কমার্শিয়াল রোডে ট্যুরিস্ট অফিসের কাছে *H Paradise* বা *Chungwah*-ও যথেষ্ট খ্যাতি চীনা ভিশ পরিবেশনে। তেমনই রেল স্টেশন ক্যান্টিনেও আহার্য ও নিরামিষ আহার্যের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে উটি অবস্থানে। শহরের পশ্চিমে চীনা ক্যান্টিন পরিচালিত

Shinkow's Chinese Restaurant-টিরও যথেষ্ট সুনাম চীনা মিল পরিবেশায়।

টোডা ভাবায় উখাগামগুলম অর্থাৎ *কুটিরের গাঁও*-এ নামান্তরিত হয়েছে ব্রিটিশের উতকামণ্ড। বিমতে টোডা ভাষা *যে মোকো এ মাণু* অর্থাৎ প্রস্তরময় গ্রাম তামিলে *উটাকাল এ মাণু*—কালে কালে উটাকালমাণু বা উটকামণ্ড হয়ে থাকবে। আবার গাদা আদিবাসীদের অভিমত, প্রায়ই বৃষ্টি হয় যে গ্রামে অর্থাৎ *হটকামাউণ্ড*-ই উটকামণ্ডলম বা উটগামণ্ডলম অতি সম্প্রতি উখাগামণ্ডলম হয়ে থাকবে। নীলগিরি অর্থাৎ *নীলাগিরি* বা নীল পাহাড়ে দক্ষিণ ভারতের মনোরম পাহাড়ী শহর। গিরির নীল আর আকাশের নীল মিলেমিশে বাতাসও নীল নীলগিরি পাহাড়ে। পাহাড়ের রানী বলেও খ্যাতি আছে উতকামণ্ডের। আদুরে নাম তার উটি। চির বসন্তের দেশ উটি। বেড়াবার মরসুম এপ্রিল থেকে জুন, আবার সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস। তবে, জুলাই-আগস্টের মনসুন এড়িয়ে সারা বছরই পর্যটক সমাগম ঘটে থাকে তামিলনাড়ু-কেরল-কর্ণাটক সীমান্ত লাগোয়া উটি পাহাড়ে। সাধারণ উলেনই যথেষ্ট মরসুমের দিনগুলিতে উটি ভ্রমণে। গ্রীষ্মে ২২-১০° আর শীতে ১৮-৪° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। তবে বর্ষায় ০°C-এও তাপমান নেমে থাকে অহরহ।

উটি যেমন পাহাড়ের রানী, তেমনি সুন্দর এর জলবায়ু। ২২৮৫মি উঁচুতে পাহাড়ী শহর হলেও বরফ পড়ে না। চরিত্রেও কেন যেন আর পাঁচটা পাহাড়ী শহর থেকে ভিন্ন। দক্ষিণী প্রভাবও উল্লেখ্য নয় পাঁচমিশেলীর ভিড়ে উটি পাহাড়ে। *Toda, Kota, Kurumba, Irula, Pania* উপজাতিদের বাস পাহাড়ভূমে। ১৬০২এ পর্তুগিজরা আসে খ্রিস্টধর্ম প্রচারের মানসে পাহাড়ী টোডাদের মাঝে। টোডাদের অনীহা, জীবজন্তু ও শীতের তাড়নায় পাহাড় ছাড়ে পর্তুগিজ বিশপ ফেরির। সেই থেকে পদধ্বনি শোনা যায় নানান জনের। তবে, ব্যর্থতার ইতিহাসে ভরা সে ধ্বনি। অবশেষে ১৮১৯-এ কোয়েম্বাটুরের ব্রিটিশ কালেকটর জন সুলিভান নীলগিরির পাহাড়ী প্রতিকূলতা উপেক্ষা করে উটির সৌন্দর্যে মোহিত হন। পায়ে হাঁটা পথও গড়ে ব্রিটিশ ১৮২১-এ সিরুমুগাই অর্থাৎ মট্টুপলান্যাম থেকে কোটাগিরির। আর উতকামণ্ডের প্রথম উল্লেখ মেলে ১৮২১-এ চেনাই গেজেটে *Wotokymund* নামে। পথও এগিয়ে আসে কোটাগিরি থেকে উতকামণ্ডে। আদল মেলে *হোমল্যান্ডের* /স্বাস্থ্যকর জলবায়ুর আকর্ষণে *স্টোন হাউস* বাড়িটিও গড়েন সুলিভান ১৮২২-এ। কালে কালে ব্রিটিশ সামরিক বাহিনীর উপনিবেশ গড়ে ওঠে উতকামণ্ড পাহাড়ে। ১৮২৬-এ গভর্নরও এলেন চেনাই থেকে পাহাড় পর্যবেক্ষণে। রূপ পায় স্যানাটোরিয়ামে উটি পাহাড়। প্রথম দোকানও গড়ে ওঠে মুন্সাই থেকে আসা পাশির। ফুলও গড়ে ১৮৩২-এ চার্চ মিশনারী সোসাইটি, আর হোটেল ১৮৩১-এ; প্রথম কফি এস্টেট ১৮৩৭-এ। অবশেষে ১৮৬৯-এ

মাদ্রাজ রেসিডেন্সির গ্রীষ্মাবাসও বসে উটিতে। সাহেবি-য়ানাও তাই সারা শহরময়।

চা ও কফিতে ভরা, ইউক্যালিপটাসে ছাওয়া ছোট্ট নির্জন পাহাড়ী শহর রেসকোর্সকে ঘিরে রূপ পেয়েছে। লাল টালির কটেক্কাধর্মী বাড়িঘর, ফুল ও ফলেরাও আকর্ষণ বাড়িয়েছে উটি শহরের। শহরও গড়ে উঠেছে মূলত দুই ভাগে। বাস ও রেল স্টেশন দুইয়েরই অবস্থান কৃত্রিম লেককে ভর করে শহরের প্রাণকেন্দ্রে রেসকোর্সের পশ্চিমে। ঘোড়া ছুটেছে রেস ট্রাক ধরে মনসুনে। আর ২ কিমি দূরে চারিং ক্রস অর্থাৎ পর্যটকদের উটি বোটানিক্যালের আশেপাশে। দোকান পাট, হোটেল, রেষ্টোরাঁর সমারোহও বেশি চারিং ক্রসে। ট্যুরিস্ট অফিসটিও চারিং ক্রসে নাহার ট্যুরিস্ট হোমের বিপরীতে কমার্সিয়াল রোডে। তেমনই বাজারের শিরে সুলিভানের প্রথম কুঠি *স্টোন হাউসে* আজ আর্ট কলেজের প্রিন্সিপালের বাস। উটির নবতম আকর্ষণ মে মাসের চিত্তাকর্ষক সামার ফেস্টিভ্যাল। বাস, অটো ও ট্যাক্সি সংযোগ গড়েছে শহরের।

২ কিমি দূরে ২২৫০ মি উঁচুতে ১৮৪৭এ তৈরি বোটানিক্যাল গার্ডেনটিও কম আকর্ষণীয় নয় উটির। নীলগিরি থেকে আনা চেনা-অচেনা নানান ফুল আর গাছের সমারোহ ঘটেছে। ৩৫ রকমের ইউক্যালিপটাস, শতাধিকধর্মী গোলাপ ছাড়াও ৬৫০ রকমের গাছ-গাছালি রয়েছে ৫১ একরের বোটানিক্যালে। প্রতি মে মাসে ফুলের প্রদর্শনী বসে। পর্যটকদের এও এক উপরি দর্শন। বিশ মিলিয়ন বছরের বৃদ্ধ ফসিল গাছটিও পর্যটকদের আর এক আকর্ষণ। লাগোয়া রাজভবন। দর্শনী লাগে গার্ডেনে।

বোটানিক্যালের মাথার উপর *Othakkalmanthu* গ্রাম। উতকামণ্ড নামেরও উদ্ভব এই *One Stone Village* থেকে। অবলুপ্তপ্রায় হাজার তিনেক টোডা সম্প্রদায়ের বাস। তবে, কবে কোথা থেকে উদ্ভব এই টোডা উপজাতির সে-কথা আজও অজানা। *ইগলু (Igloo)* অর্থাৎ এসকিমোদের মতো বাড়িঘর, সহজ-সরল-সাধারণ এদের জীবনধারা, *Bou* অর্থাৎ মন্দিরও এদের খড়-পাতায় ছাওয়া গৃহজ্যাকৃতির। মহিষ পূজা করে টোডারা। একই নারীর একাধিক স্বামী আজও দৃশ্যমান এদের সমাজে। পর্যটকদের কাছে এরও আকর্ষণ কম নয়।

বাস ও রেলের ১ কিমি পিছে যাত্রী বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে গড়ে উঠেছে উটি লেক। *Video games* বসেছে, ট্যুরটেন চলছে লেকের পাড় ধরে; ঘোড়াও ছুটেছে যাত্রী নিয়ে। ডিস্কাভি ৩ বর্গ কিমি লেকের জলে রোয়িং ও বোটিং-এর আনন্দও ভুলবার নয়। TTDC-র বোট হাউস ৮—১৮-০০টায় খোলা। কৃষিকে জল দিতে এটিও সুলিভানের তৈরি ১৮২৪এ। বাস স্ট্যান্ড আর লেকের মাঝে *চিলড্রেনস পার্কের* মিউজিক্যাল লাইটও আর এক দ্রষ্টব্য। বাসের ডাইনে আকোয়ালিয়াম ও মিউজিয়াম বসবে। আদা ইনডোর স্টেডিয়ামও হয়েছে নানানধর্মী খেলার ব্যবস্থা নিয়ে উটি পাহাড়ে। আর আছে ক্লাব রোডের ডাইনে গথিক-

নদী। নামটি এসেছে ১৮২৩-এ পাহাড় বেয়ে নামা ভূবারত্মপ অর্থাৎ অ্যাভ্যালানশ থেকে। এপথে আরও ২০ কিমি যেতে প্রকৃতি-পূজারীদের স্বর্গ আপনার ভবানী। শিশুপাড়া-বাক্সী-খাল্লাল হয়ে ট্রেক করে সাইলেন্ট ভ্যালী চলা যেতে পারে আপনার ভবানী থেকে।

আর আছে Mukurti Peaks, Wenlock Downs, Kalhatti Waterfalls, Frog Hill, Cairn Hill, Snowdown and Elk Hill উটি পাহাড়ে।

কুম্বুর

উটি-মেট্রপলিটাম রেলপথে উটি থেকে ১৭ আর মেট্রপলিটাম থেকে ৩৪ কিমি দূরে কুম্বুর পাহাড়ী শহর। উটি থেকে ৯-৩০, ১৪-০০, ১৫-০০, ১৮-০০টায় ন্যাংরাগেজের খেলনা রেলো বা বাসে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায়। রেল ফেরে ১০-৪০, ১৫-০৫, ১৬-০৫, ১৯-১০এ কুম্বুর থেকে। আর বাস যাচ্ছে ১৫ মিনিট অন্তর। ১ ঘণ্টার পথ। উটি থেকে ৫-৩০এ প্রথম ছেড়ে ২১-১৫য় শেষ বাসটি কুম্বুর ছেড়ে উটি ফেরে। পথশোভা মনোহর। সীমস পার্ক হয়েও যাচ্ছে কোনো কোনো বাস কুম্বুরে।

পাথির কাকলি, ঝরনার কলতান, নীল কুয়াশায় মোড়া ১৮৫৮মি উচুতে মোহময়ী কুম্বুর। চা-বাগিচায় ঘেরা শান্ত-মিষ্ণু শহর। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ, উটির থেকেও নাতিশীতোষ্ণ। আপনার ও লোয়ার দুই ভাগে শহর। আপনার কুম্বুরে পাহাড়ী ঢালে ১৮৭৪-এর স্নেজার গ্রাউন্ড সীমস পার্কনানান বৃক্ষের সমারোহ। গোলাপের সংগ্রহ উল্লেখ্য। পার্কের মুখ্য স্থপতি জেড সীমসের নামে নাম। এরই নিচুতে রেসকোর্স, পার্কের বিপরীতে ১৯০৭-এর পাঙ্কর ইনস্টিটিউট; কুম্বুর-মেট্রপলিটাম-উটি পথে ১৯০০ মি উচুতে ১৬ একর জমি জুড়ে ১৯২০-র ফল-বাগিচা তথা কৃষি গবেষণা কেন্দ্র; ৯ কিমি দূরে ল্যাঙ্কস রক; ১০ কিমি দূরে লেডী ক্যানিসি সিট থেকে চা ও কফি উপত্যকার দৃশ্য; ১২ কিমি দূরে ডলফিনস নোজ থেকেও সমতলের সুন্দর শোভা দেখে নেওয়া যায়। এছাড়াও রয়েছে লস, ক্যাথেরিন ছাড়াও বেশ কয়েকটি জলপ্রপাত কুম্বুরে। উটির পথে ৫ কিমি দূরে ওয়েলিংটন অর্থাৎ ১৮৫২-য় গড়া ব্রিটিশ ক্যান্টনমেন্টে চোমাই রেজিমেন্টের মূল দপ্তর ও কেক্ট্রি উপত্যকার সৌন্দর্যও মুগ্ধ করে কুম্বুর পর্যটকদের—থরে থরে পাহাড়, ঢালে তার চা ও কফি বাগিচা; দূরে আরও দূরে কোয়েন্টার ও মহীশূর অধিত্যকা। তবে, কোটির নীডল ইনডাসট্রি দেখতে অনুমতি লাগে জেনারেল ম্যানোজারের।



*Hampton Manor H. Church Rd, ৩ 20084, S ৪৭৫ D ৮০০ সুইট ১০০০; *Taj Garden Retreat, Church Rd-1, ৩ 20021, S ৬৫ D ১০৫ US\$, অব্: কলকাতা ৩ 2483939, Chennai ৩ 8274849, Mumbai ৩ 2022524, Delhi ৩ 3322333; *Monarch Ritz H, Orange Grove Rd-1, ৩ 20084, S ৬৫০ D ১০০০ সুইট ২২৫০; Blue Hills, S ২২৫ D ৩০০; Sree

Lakshmi Tourist Home, S ১২৫ D ২২৫; Vivek Tourist Home, S ১৫০ D ২২৫; Modern L, S ১২৫ D ২২৫; New Tourist L, Bus Stand-2, DCB ১৫০; Mysore L, Highway T B; YWCA ছাড়াও হোটেল আছে নানান কুম্বুরে। আর আছে TTDC-র H Tamilnadu-Coonoor, Gandhi Nagar, The Nilgiris- 643102, ৩ (04264) 22813, DAB ৩৫০ ছয় বেডের ঘর ৩০০ কুম্বুরে। অফ সিজন রিবেটও মেলে কুম্বুরের হোটেল। মেট্রপলিটামেও Bhuvath Bhavanum H ও রেলের রিটার্নরিং রুম আছে।

কোটাগিরি

১৯৮২ মি উচু প্রাচীনতম পাহাড়ী শহর কোটাগিরিরও পথ গিয়েছে ১৯ কিমি দূরের কুম্বুর থেকে। আর উটির দূরত্ব ২৯ কিমি। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে, ১½ ঘণ্টার পথ। নীলগিরি রেল্লে চা বাগিচার মাঝে ১৮১৯এ ব্রিটিশের গড়া প্রথম বাড়ি থেকে পাহাড়ী শহরের জন্ম। কোটাগিরিরও প্রশস্তি প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের জন্য। তবুও যেন কোডানাদ ভিউ পয়েন্ট ২০ কিমি, সেন্ট ক্যাথারিন জলপ্রপাত ৮ কিমি, এলাকে ফলস ৮ কিমি, রঙ্গস্বামী পিলার ও পিক উল্লেখ্য। কোটাগিরিও নামান্তরিত হয়ে Kota Keri অর্থাৎ কোটাদের পথ হয়েছে।

খাকার জন্য—PWD R H, Demham Boarding House, Rum Vihar H, Modern Cafe, Queen Hill Christian GH, Highway Tourist Bungalow, Kotagiri-643217 ও TTDC-র H Tamilnadu-Kothagiri, ডরি বেড ২০ আছে।

মুধুমালি বন্যজন্তু সংগ্রহালয়

উটি-মহীশূর জাতীয় সড়কে ৯০০-১১৪০ মি উচুতে ৩২৪ বর্গ কিমি জুড়ে এই বন্যজন্তু সংগ্রহালয়। ময়্যার নদী সীমারেখা টেনেছে কণাটিকের বন্দীপুরের সাথে। কেরল রাজ্যেও প্রসার পেয়েছে এই সংরক্ষিত বন—নাম তার উইনাদ (Wynad)। জাতীয় সড়কে ১১ কিমি যেতে ওডালুর থেকে ত্রিমুখী পথ গিয়েছে—কণাটিকের মহীশূর ৮৮, কেরলের নিলাশুর ১১১, উটি ৫১ কিমি। এপথে আরও যেতে জাতীয় সড়কেই বসেছে মুধুমালি—এর প্রবেশতোরণ তথা রিসেপশন সেন্টার টেল্লোকাডুতে। উটি থেকে দূরত্ব ৭৩, বন্দীপুর ১৪, আর মহীশূর থেকে ৯৭ কিমি। বাসও যাচ্ছে ৭-৩০, ১১-০০, ১৫-৩০, ১৬-৩০এ উটি থেকে মুধুমালি। ২½ ঘণ্টার পথ। কনডাকটেড ট্রায়েও বাস যাচ্ছে মুধুমালি দেখাতে উটি থেকে। উটি থেকে হাসান, মহীশূর ও ব্যালোলের বাসও যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে টেল্লোকাডু হয়ে। মুধুমালি থেকে ঘণ্টা আড়াইয়ে বাস যাচ্ছে মহীশূরেও।

উটি-মহীশূর সড়কের মাঝ দূরত্বে অরণ্যময় নীলগিরির পাহাড়ী ঢালে হাতিরা চলেছে দলে দলে; আর ঢালে গৌর (বাইসন), শবর, চিত্তল (স্পটেড ডিম্মার), বার্কিং ডিম্মার,

মাউস ডিম্বার, প্যাহার, ভালুক, বন্য শুশ্রূষ, বন্য কুকুর, হায়না, শঙ্কর, ছাড়াও নানান। বাঘ, চিত্রাবাহেরও বাস শাল, সেতুন, চন্দন, আবলুস, ইউক্যালিপটাস ও মেবলারকর অরণ্যভূমে। গ্রে ও ব্রাউন রং-এর বানরের সাথে নানান প্রজাতির পামিরও বাসভূমি এই অভয়াারণ। চিত্র-বিচিত্র বহুবর্ণের প্রজাপতি, নানানধর্মী পঁচায় ও দর্শন মেলে মুখুমালি-এ। জলসা বসে রাতভর—কখনও একক কখনও কোরাস গানের। পাইথন, কোবরা, র্যাট স্নেক ছাড়াও নানান ধরনের সর্পকুলও রয়েছে মুখুমালি-এ। ময়্যার নদীর জলপ্রপাত, হাতিশালাও আনন্দ বর্ধন করে পর্যটকদের। কুমিরও আছে ময়্যারের জলে। গাছে গাছে ফুল ফোটে, ফল ধরে ফেব্রুয়ারি থেকে এপ্রিলে। মরসুম: ফেব্রুয়ারি থেকে এপ্রিল মাস। আবার সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাসেও পর্যটক আসছেন বন্যজন্তু দেখতে মুখুমালি-এ। সকাল ৬—৮-০০ ও ১৬—১৮-০০টায় জন্তু দেখার মাহেন্দ্ৰকণ। টেপ্পাকাডুতে বন দপ্তরের রিসেপশন সেন্টার থেকে ৬-০০, ৮-০০ ও ১৬-০০টায় হাতির পিঠে বন্যজন্তু দেখাবার ব্যবস্থাও আছে। ৪/৫ কিমির বনবিহারে ৪ যাত্রীর হাতিতে প্রতিজনা ৪০০ ক্যামেরারও চার্জ লাগে। আর যাচ্ছে জিপ ও মিনিবাস ৬-টা, ১৬-টা ও ১৭-০০টায় বনবিহারে। টিকিট ৪০ করে প্রতিজনা। নিজস্ব গাড়িতেও চলা যেতে পারে টোলের বিনিময়ে বনবিহারে। যে থেকে সেপ্টেম্বরের গ্রীষ্ম আর অক্টোবর ও নভেম্বরের বর্ষা এড়িয়ে চলাও যায় বছরভর মুখুমালি-এ। বন্ধও থাকে গ্রীষ্ম ও বর্ষায় বনবিহার তথা দর্শন। তাপমান গ্রীষ্মে ৩২° আর শীতে ১৭° সেন্টিগ্রেডে ওঠা-নামা করে।



বাসযাত্রীদের উচিত হবে উটি-মহীশূর জাতীয় সড়কে টেপ্পাকাডুতে অবস্থান করা। বনদপ্তরের রিসেপশন সেন্টার বসেছে টেপ্পাকাডুতে। থাকার ব্যবস্থা মেলে Reception Centre-এ ডর্বি প্রথা ৪ বেডের ২টি ঘরে; অনুরে থাকার পক্ষে মনোরম Sylvan L. ডাবল বেডের ঘর, ডর্বি বেড মেলে; TTDC-র H Tamilnadu-Mudumalai, WLS, Theppakadu-643267, চার বেডের ঘর ২২০ ৩৫০ ডর্বি বেড ৪৫ করে, দিনের বিশ্রাম (১০—১৮-০০টায়) ২৫ হারে; টেপ্পাকাডু থেকে উটিমুখী ৫ কিমি দূরে অর্ধবৃত্তাকার বাসপথ থেকে ২০০ মি দূরে পাহাড়ের কোলে Abhayaranyam R H লাগোয়া Abhayaranyam Annexe Tourist L; উইক ডেজে রিবেট মেলে। স্বল্প দূরে Range Office-এও ডর্বি বেড মেলে। ৩ কিমি দক্ষিণে Kargudi R H-এও ডর্বি প্রথা থাকার ব্যবস্থা। আর আহাৰ্য মেলে Sylvan L ও Youth Hostel-এ।

Theppakadu থেকে ৮ কিমি পূবে Masinagudi গ্রামে প্রাইভেট মালিকানা Mountain L-এ কটেক্স ৪৫০, ডর্বি প্রথা Log Cabin ও মেলে এদের। আহাৰ্যও মেলে লজে; অব: Safari Travels, opp Union Church, Ooty, আর আছে পুলিশ স্টেশনের বিপরীতে Travellers Bungalow; Bamboo Banks Farm GH, Masinagudi-643223, ☎ (0423) 56222, AP-

S ১২৫০, D ২২৫০, গাড়ীখন যাত্রীদের রেস্ট হাউসে যাতায়াতে অসুবিধা; Blue Valley Resorts, ☎ 56244, A/c S ৮৫০, D ১৫০ ১২০০, এদের টেক্সি বুকিং: ☎ 04997285; Masinagudi R H আর Log House-ও আছে, তাঁবুও মেলে লগ হাউসে।

আর আছে Masinagudi থেকে ৮ কিমি পূবে Chital Walk L, D ৩৫০ ডর্বি বেড ৫০। জানোয়ার দেখার পক্ষে Chital অনন্য। আহাৰ্যও মেলে চিতলে। Sighur Ghat-Ooty বাস পথের Valaitotam নেমে চলা যেতে পারে চিতলে। আবার মালিনাওডি থেকেও বাস মেলে ভালাইটোটারের। অবস্থান ও বনবানের অগ্রিম বুকিং-এর জন্য—D F O, Coonoor Road, Ooty, বা Reception Range Officer, Wildlife Warden Office, Coonoor Rd, Ooty বা State Wildlife Warden, Forest Department, Chennai-কে লিখুন।

মুখুমালি ফরেস্ট লাগোয়া উপত্যকা মালিনাওডিতে নবতম সৃষ্টি সুপার স্টার মিউন চক্রবর্তীর শিরামিডধর্মী ১৪ বছরের জলল রিসর্ট তথা Monarch Safari Park, Bokka Puram, Masinagudi-643223, ☎ 56343, D ৮০০-১৫০০; আহাৰ্যও মেলে সাতভাই চম্পার কেন্দ্রমণি পারুলবোন মাচান রেস্তোরাঁর। আর আছে একই মালিকানাধীন H Monarch, D ১২০০-২৬০০ ও Monarch Country Club and Resort, D ১১০০-১৭০০; কলকাতা বুকিং: Expression, ☎ 4754502.

নীলগিরি পাহাড়ে কেরল ও মহীশূর সীমান্তে ১০০০ মি উচুতে মুখুমালি-এর অংশ ৩২.১ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত ড জয়ললিতা ওয়াইল্ড লাইফ স্যাফারিয়ার আবার নামান্তরিত হয়ে মুখুমালি-এর সঙ্গে মিশে গিয়ে মুখুমালি বন্যজন্তু সংগ্রহালয় হয়েছে। উটি থেকে কালাহাটি হয়ে ৩৮ আর মহীশূর থেকে দূরত্ব ৯১ কিমি। থাকারও ব্যবস্থা মেলে টেপ্পাকাডু ও কারওডিতে।

দক্ষিণ ভারত ভ্রমণার্থীদের কন্যাকুমারিকা থেকে কেরলের তিরুভনন্তপুরম পাওয়া সুবিধার। তিরুভনন্তপুরম থেকে শুরু করে কেরল ভ্রমণ সাঙ্গ করে পালঘাট হয়ে উটি চলুন। রেল ও বাস নিয়মিত সংযোগ রেখেছে কোয়েম্বাটুর হয়ে। ৮-০০, ৯-০০, ১০-১৫ ও ১৪-০০টায় যাচ্ছে উটির বাস পালঘাট থেকে। বন্টা পট্টকের বাসপথ। অসময়ের যাত্রীদের জন্য *H Indraprastha, ☎ (0491) 534647, D ৪৫০ A/c ৬৫০; *Walayar Motel, ☎ 66101, D ৩০০ A/c ৪৫০ ছাড়াও নানান হোটেল আছে পালঘাটে। উটি থেকে মহীশূরের রেল গিয়েছে ঘুরপথে। তাই উটি থেকে বাসে মহীশূর যাওয়ার সুবিধার। অর্ধ ও সময় দুয়েতেই সাঙ্গ হয় মেলে। সার্কুলার রেলযাত্রীদেরও এই সংযোগ নেওয়া বাছনীয়। বাসও যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে মুখুমালি ও বন্দীপুর বন্যজন্তু সংগ্রহালয়ের উপর দিয়ে। চলার পথে বাসে বসেই অরণ্যচারীদের দেখে ফেলাও অস্বাভাবিক নয়। দুলকি চালে বন্যহাতির বৃথ চলছে পথ জুড়ে। আভব পেয়ে বসলেও রোমাঞ্চ আছে এপথে। এছাড়া উটি থেকে ৮ কিমি এণ্ডেইন INDU Film কারখানাটিও দেখে চলা যেতে পারে বাসে বসেই। ৮-০০, ৯-০০, ১১-৩০, ১৩-৩০ ও ১৫-৩০-এ যাচ্ছে মহীশূরের বাস। সময় নেয় ৫.৫ ঘন্টা। ব্যালালোরেরও বাস মেলে উটি থেকে সকাল ৬-৩০, ১০-৩০ ১২-৩০, ১৯-০০ ও ২০-০০টায়। ব্যালালোর পৌঁছায় ৯ ঘটায়। স্থান বাসে মহীশূর হয়ে ১১-৩০এ উটি থেকে বাস।

পণ্ডিচেরী

স্বাধীনতা-সাম্য-মৈত্রীর প্রতীক পণ্ডিচেরী—সারাবিধে আজ শ্রীঅরবিন্দ আশ্রমের জন্য খ্যাত। এই শতাব্দীর প্রথমভাগে বাঙালি দেশপ্রেমিক আধ্যাত্মিক শ্রীঅরবিন্দ ষোড়শের হাতে এর গোড়াপত্তন। তবে, তারও আগের কথা—ফেব্রুয়ারি ৪, ১৬৭৩ খ্রিস্টাব্দে জিজির রাজা সেদিনের অখ্যাত পণ্ডিচেরী গ্রামকে বিক্রি করলেন M Francois Martin-এর কাছে। সুত্রপাত হল ফরাসি উপনিবেশের। আর ১৭৩৯ খ্রিস্টাব্দে ফরাসি স্থপতি ফ্রান্সিস মার্টিন-এর হাতে গড়ে ওঠে শহর—অর্থাৎ Pudu cherry. তামিল ভাষায় pudu মানে নতুন আর cherry হল শহর। কালে কালে পণ্ডিচেরী। সংঘাতও চলতে থাকে দখল নিয়ে ব্রিটিশ ও ফরাসিতে। অবশেষে ১৮১৫য় কায়ম্বর ফরাসি শাসন পণ্ডিচেরীতে। শেনা যায়, তারও আগে পণ্ডিচেরীর নাম ছিল ভেন্দাপুরী—অর্থাৎ জ্ঞানের শহর। দ্বিমতে, দেবতা ভেন্দাপুরীশ্বরী থেকে নাম। ঋষি অগস্ত্যও আশ্রম গড়েছিলেন, যজ্ঞ করেছিলেন; আর অতীতের সেই যজ্ঞ—বেদিতেই রূপ পেয়েছেন নাকি বিংশ শতাব্দীর ঋষি শ্রীঅরবিন্দর সমাধি।

উত্তর থেকে দক্ষিণবাহি খালকে সীমান্ত করে সমুদ্রপাড়ে গড়ে ওঠে ফরাসি উপনিবেশ—Vile Blanche অর্থাৎ সাদা শহর, আর খালের পশ্চিমপাড়ে স্থানীয়দের Ville Noire মানে কালো শহর। সাদা শহরেই বসেছে আজ শ্রীঅরবিন্দ আশ্রম। ফরাসিদের পণ্ডিচেরী ত্যাগের সাথে সাথে ফরাসি সংস্কৃতিও লোপ পেয়েছে। তবে, কোনো কোনো পথঘাটের ফরাসি নাম রয়ে গেছে আজও। তেমনিই চোখে পড়ে সাদা পোশাকের সঙ্গে টকটকে লাল কে পি (চুপি) ও বেস্ট পরিহিত ট্রামিক পুলিশ শহরের পথেঘাটে। ইংরেজিরও চলন আছে দোকানপাটের সাইনবোর্ডে তামিলের পাশে-পাশে।

১৬৯৩তে ডাচরা দখল করে পণ্ডিচেরী। তবে, ১৬৯৯এ Ryswick-এর সন্ধি সূত্রে ফিরে আসে আবার ফরাসিদের হাতে পণ্ডিচেরী। আর সেই থেকে ভারতে অধিকৃত ফরাসি সাম্রাজ্যের সদর দপ্তর বসে পূর্বে বঙ্গোপসাগর বাকি ৩ দিক তামিলনাড়ুর আর্কট জেলায় পরিবেষ্টিত ডিঘাকার পণ্ডিচেরীতে। ১৯৫৪ খ্রিস্টাব্দের ১লা নভেম্বর ফরাসি অধিকৃত Pondicherry, Karaikal, Mahe, Yanam ভারত যুক্তরাষ্ট্রের অন্তর্ভুক্ত হয়। পরস্পর পরস্পর থেকে বিচ্ছিন্ন এরা। তামিলনাড়ুর তাজোর লাগোয়া বঙ্গোপসাগরের তীরে করাইকল—অতীতে তাজোর জেলারই অংশ ছিল। ১৭৩৮এ ফরাসি ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির দখলে আসে। আরতনে ১৬০ বর্গ কিমি, লোকসংখ্যা ১১১৯৭৮। ১৭৪০এ তৈরি ক্যাথলিক চার্চ Our Lady of Angels

১৮২৮এ সংস্কার হয়ে আজও অতীত রোমন্থন করায়। পর্যটনে উল্লেখ্য না হলেও হিন্দু মন্দির শিব ও দেবী আর্ন্থেইয়ার মন্দির আছে। ১ কিমি দূরে সাগরবেলা আর শহরের Bharathiar Rd-এ হোটেলে City Plaza, Government Tourist Motel, Nala, Annapurna আছে। বাস আসছে কুন্ডকোণাম থেকে করাইকল-এ। আর ইয়ানামের অবস্থান ছিল অস্ত্রের পূর্ব গোদাবরী জেলায়। দখল যায় ফরাসিদের হাতে ১৭৩১-এ। ৩০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত ইয়ানামের জনসংখ্যা ১১৬২৭। আর পশ্চিম উপকূলে কালিকটের উত্তরে কেরল ভূখণ্ডে ঘেরা নারকেল বীথিকায় ছাওয়া পাহাড়ী মাছে। আয়তন ৯ বর্গ কিমি, লোকসংখ্যা ২৮৪০১। জলবায়ু ও প্রকৃতিতে কেরলের প্রতিচ্ছবি মেলে। ফরাসি দখলে আসে ১৭২১ খ্রিস্টাব্দে। তবে, পর্যটকদের কাছে পণ্ডিচেরী বলতে পুডুচেরীকেই বোঝায়।

শ্রীঅরবিন্দ আশ্রম: রেল ও বাস দুই-ই থেকে ২ কিমিরও কম দূরত্বে পণ্ডিচেরীর আজকের মূল আকর্ষণ শ্রীঅরবিন্দ আশ্রম। ১৫ই আগস্ট ১৮৭২এ কলকাতায় জন্ম—শ্রীঅরবিন্দ ঘোষ ১৮৯০এ ইংল্যান্ডে গেলেন উচ্চ-শিক্ষার্থে। কেম্ব্রিজ থেকে ICS হয়ে ১৮৯৩-এ ভারতে ফেরেন বরোদা স্টেটের চাকরি নিয়ে। ১৯০৬এ বরোদা থেকে বাংলায় এসে স্বদেশী আন্দোলনে সঁপে দেন নিজেকে। বারবার ওবার কারারুদ্ধ হয়ে অবশেষে, ১৯০৯এ আলিপুর বোমা মামলার অন্যতম আসামী শ্রীঅরবিন্দ ঘোষ মুক্তি পেলেন সেদিনের ব্রিটিশ জেল থেকে সাক্ষ্য-প্রমাণের অভাবে। কারাগারে অবস্থানকালেই পরিবর্তন আসে শ্রীঅরবিন্দর। রাজনীতি থেকে আধ্যাত্মিকতার খোঁজে ছুটে গেলেন তিনি ১৯১০ খ্রিস্টাব্দের ৪ঠা এপ্রিল ব্রিটিশ ভারত ছেড়ে ফরাসির পণ্ডিচেরী। গড়ে তোলেন অধ্যাত্ম ও যোগশিক্ষা কেন্দ্র। পুণিসিদ্ধি লাভ করেন ১৯২৬ খ্রিস্টাব্দের ২৪শে নভেম্বর শ্রীঅরবিন্দ। আশ্রমও গড়েন ১৯২৬-এ। দেশ-বিদেশ থেকে আসতে শুরু করেন আশ্রমিকরা। শ্রীঅরবিন্দকে কেন্দ্রমণি করে। প্রথম পণ্ডিচেরী আগমন ১৯১৪য় ঘটলেও ১৯২০-র ২৪শে এপ্রিল আশ্রমিক হয়ে আগমন ঘটেছে মিসেস Mira Alfassa-র। পুণিসিদ্ধিলাভের পর যৌগিক সাধনার মধ্য হতে দারিদ্র্যও পড়ে আশ্রমের ফ্রাঙ্ক থেকে আসা মীরা অর্থাৎ মাদার বা শ্রীমায়ের উপর।

জান-ভিক্তি-কর্ম সাধনার মাধ্য দিয়ে নিখিল মানবজাতি তথা স্বয়ংস্বত্বতা গড়ে তোলার আশ্রমের উদ্দেশ্য। তেমনিই সুস্থ, সবল, সতেজ, সঠিক, সঠিক দেখে রূপশ্রী কুটিয়ে তোলার মূলমন্ত্র বোণ—সেই বোণ সাধনা নিজেও নানান পরীক্ষা-নিরীক্ষা চলেছে। প্রতি বছর জানুয়ারিতে আন্তর্জাতিক বোণ

উৎসবও অনুষ্ঠিত হচ্ছে পতিচেরীতে। নারী-পুরুষ মিলিয়ে হাজার দু'য়েক আশ্রমিক নিয়ে বিকিণ্ডভাগে সংগ্রহ করা ৪০০ বাড়িতে চলছে আশ্রমের রোজনাচা। ডিবাংকার শহরের পথপাশে সারি দিয়ে বাড়ি—খাল আর সাগরের মাঝে হাফা ছাই রঙের বাড়িগুলি হল আশ্রমের। ভিলাধর্মী বাড়ি—সামনে ফুলের বাগিচা, বোগেনভিলায় মাধুর্ষ বেড়িয়েছে। সমুদ্রও বয়ে চলেছে সামনে দিয়ে, পরিকেশ সুন্দর। তবে, আশ্রম থেকে অচ্ছূৎ হেতু স্থানীয়রা অধুনা যেন আশ্রমের প্রতি।

পতিচেরী □ রাজধানী: পতিচেরী। আয়তন: ৪৯২ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৭৮৯৪১৬। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.০৯%। পুরুষ: ৩৯৮৩৩২৪। নারী: ৩৯১০৯২। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ১৮৪৯৪৫। বৃদ্ধির হার: ৩০.৬০%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ১৬০৫। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৮২। সাক্ষরের হার: ৭৪.৯১%। প্রধান ভাষা: তামিল, ইয়ানামে—তেলুগু, মাহেতে—মালয়ালাম ভাষার প্রচলন উল্লেখ্য। তেমনই ইংরেজি ও ফ্রেঞ্চ ভাষারও প্রচলন আছে সারা রাজ্যে। মাথা পিছু বাৎসরিক আয়: ৫৬৩৭ টাকা (১৯৮৯-৯০)। শীতের আধিক্য নেই পতিচেরীতে। শীতে তাপমান ২১° আর গ্রীষ্মের সর্বোচ্চ গড় ৩৭° সেন্টিগ্রেড। শীতকালেও সাধারণ সূতি বসন পতিচেরী ভ্রমণে যথেষ্ট। গ্রীষ্ম এড়িয়ে চলাও যেতে পারে বছরভর পতিচেরী। তেমনই তামিলনাড়ু ভ্রমণপথে চেম্বাই থেকে পতিচেরী, তাঞ্জোর থেকে কারিকল, রেলো কাকিনাড়া বা রাজমহেন্দ্রী পৌঁছে বাসে ইয়ানাম, ম্যাসালোর—কালিকট রেলপথে ম্যাসালোর থেকে ১৬২ কিমি দূরের মাছে বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধা।

সমাধি : ১৯৫০ খ্রিস্টাব্দের ৫ই ডিসেম্বর দেহরক্ষার পর যে গৃহে শ্রীঅরবিন্দ বাস করতেন সেই গৃহপ্রাঙ্গণেই সমাধিস্থ হয়েছেন তিনি। আশ্রমিকদের জীবনযাত্রা শুরু হয় প্রতিদিন সমাধিতে পুষ্পার্ঘ্য দিয়ে। পর্বটকরাও প্রথমেই আসেন শ্রদ্ধাৰ্থী জানাতে শ্বেতমর্ম্মরের সমাধি বেগিতে। যে ঘরে শ্রীঅরবিন্দ সিদ্ধিলাভ করেন সেখান থেকে নিতে পারেন রিসেপশন সার্ভিস থেকে বিশেষ অনুমতি নিয়ে। ১১-৪৫ থেকে ১২-০০টার দর্শনের জন্য খোলা মেলা। তবে, দর্শন নয় উপলব্ধিই এর মূল উদ্দেশ্য। শ্রীমাও আশ্রম আর নেই। ৯৬ বছর বয়সে ১৯৭৩ খ্রিস্টাব্দের ১৭ই নভেম্বর দেহ রেখেছেন তিনি। পূর্ব-পরিকল্পনা মতো ভাবল চেম্বাই

পদ্ধতিতে শ্রীঅরবিন্দর সমাধির উপর শ্রীমায়ের মরমেহ সমাধিস্থ হয়েছে—তিনিদিন পর ২০শে নভেম্বর। প্রতিদিন ৮—১৮-০০টায় সমাধির দ্বার খোলা থাকে দর্শকদের কাছে। তবে ৪ বছরের কম শিশুদের প্রবেশ মানা। বিপরীতে সাংস্কৃতিক কেন্দ্র—ফিল্ম শো, খেলার আসর, শিক্ষামূলক ভাবণের নিয়মিত আসর বসে প্রতি সন্ধ্যায়, প্রবেশ অবাধ হলেও ভিজিটর পাস সঙ্গে থাকা ভাল।

এছাড়া ২১শে ফেব্রুয়ারি (১৮৭৮)—শ্রীমায়ের জন্মদিন। ৪ঠা এপ্রিল (১৯১০)—শ্রীঅরবিন্দর পতিচেরী আগমন। ২৪শে এপ্রিল (১৯২০)—শ্রীমায়ের পতিচেরী আগমন। ১৫ই আগস্ট (১৮৭২)—শ্রীঅরবিন্দর জন্মদিন। ১৭ই নভেম্বর (১৯৭৩)—শ্রীমায়ের তিরোধান। ২০শে নভেম্বর (১৯৭৩)—শ্রীমায়ের সমাধি। ২৪শে নভেম্বর (১৯২৬)—শ্রীঅরবিন্দর পূর্ণ সিদ্ধিলাভ। ১ ও ২রা ডিসেম্বর—আশ্রম বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠা বার্ষিকী। ৫ই ডিসেম্বর (১৯৫০)—শ্রীঅরবিন্দর তিরোধান। ৯ই ডিসেম্বর (১৯৫০)—শ্রীঅরবিন্দর সমাধি। উৎসবমুখর হয়ে ওঠে পতিচেরী; ভক্তের দল আসেন দেশদেশান্তর থেকে পতিচেরীতে বিশেষ দর্শনের এই দিনগুলিতে।

শ্রীঅরবিন্দ আন্তর্জাতিক শিক্ষাকেন্দ্র : শ্রীঅরবিন্দর দেহরক্ষার পর তাঁরই শিক্ষাদর্শে শ্রীমায়ের হাতে ১৯৫২ খ্রিস্টাব্দে বিশেষ প্রথম আন্তর্জাতিক বিশ্ববিদ্যালয়টি রূপ পেয়েছে এখানে। দেশ-বিশেষ থেকে পড়ুয়া আসছে পাঠ নিতে।

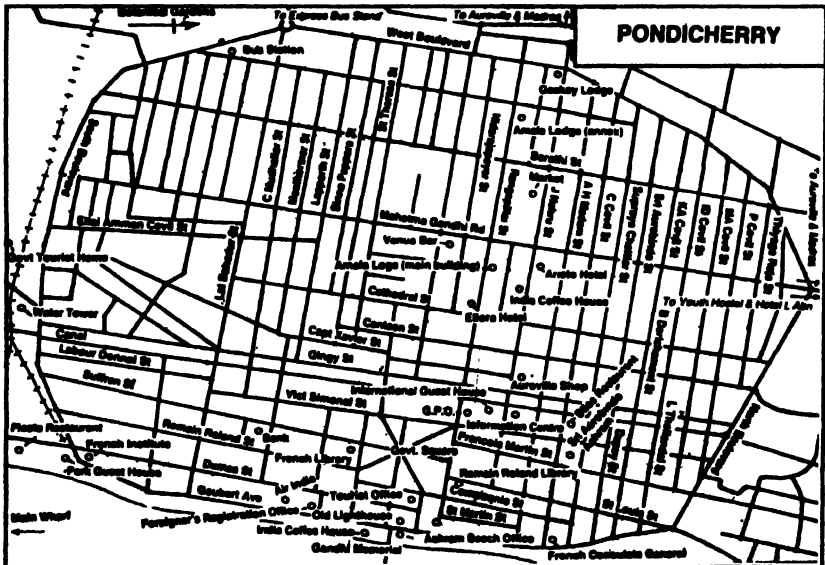
অরোডিল: ফরাসি ভাষায় ভিল অর্থ নগরী—অরো+ভিল অর্থ অরবিন্দ নগরী। শ্রীমায়ের আশীর্বাদপুষ্ট—শ্রীঅরবিন্দ ভক্তদের বাস্তব স্বপ্ন অরোডিল অর্থ City of Dawn। শ্রীঅরবিন্দ সোসাইটি এর রূপদাতা। ইউনেস্কোর আর্থিক সাহায্যে, সারা ভারতের পৃষ্ঠপোষকতায়, পৃথিবীর ১২৬টি দেশের সহযোগিতায় গড়ে উঠেছে বিশ্বজনীন আন্তর্জাতিক নগর পতিচেরী সীমান্তের তামিলনাড়ুতে। ১৯৬৮ খ্রিস্টাব্দের ২৮শে ফেব্রুয়ারি ভারতের রাষ্ট্রপতির উপস্থিতিতে ১২৪টি দেশের প্রতিনিধি এসে নিজ ছুঁমের মাটি গড়ে অরোডিলের স্বাভা শুরু করেন। নগরী গড়ার দায়িত্ব পড়ে ফরাসি স্থপতি মিঃ রগার অঙ্গারের হাতে। শ্রীঅরবিন্দ আশ্রম থেকে ১০ কিমি উত্তর-পশ্চিমে পতিচেরী-চেম্বাই সড়কে ৫০ বর্গ কিমি জুড়ে ৪টি জোনে অরোডিল। শহর নয়—মানুষ গড়ার ব্রত নিয়েছে অরোডিল। ৫৬ হাজার বাড়ি এর পরিকল্পনা। কোনো ব্যক্তিগত মালিকানা নেই নগরে। অরোডিল হল এক আন্তর্জাতিক মানব এক্যের জীবন্ত কর্মশালা।

১৯৭৩-এ শ্রীমায়ের তিরোধানের পর সম্মত দেখা দেয় ক্ষমতা নিয়ে। বিশেষ থেকে আগত অরোডিলবাসী ও শ্রীঅরবিন্দ সোসাইটি পরস্পর পরস্পরকে অস্তিত্ব করে। অরোডিলের অহিনশৃঙ্খলা প্রশ্ন হয়ে দেখা দেয় সোসাইটির

কাছে। সোসাইটির দাবি—the township with all its property will being to the Sri Aurobindo Society. শ্রীমায়েরই বিবৃতি থেকে খণ্ডন করে অরোভিলবাসী—Auroville belongs to nobody in particular, (it) belongs to humanity as a whole. অরোভিলবাসীদের সোসাইটির বিরুদ্ধে পাল্টা অভিযোগ অর্থের অপচয় ও অসহযোগিতার। সবরকম অর্থ সাহায্য, কর্মসূচী বাতিল করে সোসাইটি আর অরোভিলবাসীরা গঠন করে অরোমিত্র। ১৯৭৬এ অরোভিলবাসীদের অনাহার থেকে বাঁচাতে অর্থ সাহায্য আসে ফ্রান্স-জার্মানি-আমেরিকা থেকে। ১৯৭৭ ও ৭৮-এ সংঘর্ষে জড়িয়ে পড়ে পরস্পরে। আর ১৯৮০তে ভারত সরকারের তত্ত্বাবধানে নতুন করে কমিটি গঠিত হয় নানান প্রতিনিধি নিয়ে। দীর্ঘকালের অসন্তোষ কাটিয়ে এগিয়ে চলেছে অরোভিল পরস্পর থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে স্বতন্ত্রভাবে। দীর্ঘ বিরতির পর নবোদ্যমে চলেছে অরোভিল। সারা বিশ্ব থেকে ১২০০-রও বেশি ভক্ত এসে ৩৩টি কমিউনে অংশ নিয়েছে এর রোজনাচা। আহারও অধিক বহির্ভারতীয়। ভাষাও এদের নানান—সংখ্যা ৬৫। আর আছে প্রতিটি কমিউনে Guest House, ব্যবস্থাপনা ভালাই; আহারও মেলে এদের কাছে। অরোভিল অবস্থানে উচিত হবে ভারতনিবাসে যোগাযোগ করা।

অরোভিলের মূল আকর্ষণ মাতৃমন্দির। মহালক্ষ্মী, মহাসরস্বতী, মহেশ্বরী, মহাকালী স্রগ্ধে ১২০ বছরের প্রাচীন বটবৃক্ষের (Divine Tree) শিখ ছায়ায় ফরাসি স্থপতি Roza

Andhra-র সৃষ্ট অভিনব মাতৃমন্দির রূপ পেয়েছে অরোভিলের মধ্যমণি হয়ে। ঢাল সিঁড়ি বেয়ে পথ উঠেছে বৃক্ষাকার গোলাবের মেডিটেশন হল-এ। ২টি কাচে সৃষ্টির পথ প্রতিকলিত হয়ে জার্মানী (পশ্চিম) থেকে আনা বিশ্বের বৃহত্তম ৬০০ কেজির ক্রিস্টালে বিচ্ছুরিত হয়ে আলোর উজ্জ্বলিত হচ্ছে বিদ্যুৎহীন মাতৃমন্দির। ধ্যানে বসেন ভক্তের দল। নানান বিধি-নিষেধ মেনে ১০০ যাত্রীর ১৬—১৭-০০টায় দেখার ব্যবস্থা। টিকিট না লাগলেও অনুমতি লাগে দর্শনে। Sri Aurobindo Ashram Autocare প্রতিদিন ১৪-৩০টায় Cottage Complex থেকে ২৫জন যাত্রী নিয়ে অরোভিল দর্শনে যাচ্ছে। টিকিট ৩০; বুকিং: আশ্রম গেটে ৮—৮-৪৫এ। Director of Tourism-এরও ব্যবস্থা আছে অরোভিল দর্শনের। একক যাত্রায় অনুমতি মেলে মাতৃমন্দির রিসেপশন থেকে। অদূরেই কিচেন তথা ডাইনিং হল। আহাৰ মেলে যাত্রীদেরও। অভিনব আছে এর অডিটোরিয়ামেও। ভারতনিবাস প্যাভিলিয়নে ভারতীয় সাংস্কৃতিক আসর বসেছে। গবেষণা চলছে ভারতীয় ভাষার উপর এর পাঠাগারে। অরোভিলের ইনফরমেশন তথা রিসেপশন সেন্টারও বসেছে ভারত-নিবাসে। রবিবার ছাড়া ৯—১৩-০০ ও ১৪—১৭-৩০টায় হস্তজাত নানান কিছু কিনতেও মেলে ভবনে। ছড়িয়ে-ছিটিয়ে অবস্থান এদের। প্যাকেজ ট্যুরে দেখে নেওয়া যায়—তবে দর্শনে বাটতি থাকে প্যাকেজ ট্যুরে। এককভাবে ১৭৫ টাকায় গাড়িতেও চলা যায় ঘণ্টা তিনিকে অরোভিল দর্শনে।



খাকারও নানান ব্যবস্থা—৩৩টি গেস্ট হাউস আছে অরোভিলে। *Central GH, Kottakarai GH, New Creation, Verite, Sharnga, Fertile Windmill, Aspiration, Hope, Joy, Quiet Beach, Sanasti* ছাড়াও নানান। বিলাস ও অবস্থানের তারতম্যে রোট এসের S ৮০-২৫১; অবঃ Auroville Guest Programme, Visitors Centres, Auroville-605101, India, ① (91) 41386 বা Boutique d' Auroville, 12 J N Street, near Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry. চব্বরের বাইরে প্রাইভেট মালিকানায Guest House-ও হয়েছে অরোভিলে। মাতৃমন্দিরের অদূরে *Centrefield G H*, কটেক্ষখম্মী ঘর মেলে। স্বল্পকালীন অবস্থানে মানানসই।

সাগরবেলা: শহরের পূর্ব ধরে শান্ত-মিষ্ণ-বর্ণময় সমুদ্র-সৈকত—বয়ে চলেছে বঙ্গোপসাগর। উত্তরে শ্রীমায়ের স্মৃতিধন্য টেনিস কোর্ট আর দক্ষিণে চিলড্রেন পার্ক ছাড়িয়ে Duplex-এর মূর্তি তথা পার্ক গেস্ট হাউসে শেষ হয়েছে ১৬ কিমি দীর্ঘ বীচ রোড বা সাগরবেলা। বর্ষব্যব আকর্ষণ রয়েছে পণ্ডিতেরী সাগরবেলায়। সাগরবেলায় রূপ পেয়েছে ফরাসিদের হাতে প্রথম বিশ্বযুদ্ধে নিহত বীর সৈনিকদের স্মরণে ওয়ার মেমোরিয়াল। ১৪ ফুট উঁচু গাঙ্গী মূর্তিটিকে ঘিরে রেখেছে পাথর কুঁদে তৈরি ৮টি মনোলিথ পিলায়। পরিবেশকে মহিমাষিত করে রেখেছে এই গাঙ্গী স্কোয়ার। মুখোমুখি দাঁড়িয়ে জওহরলাল নেহরু। ২৯ মি উঁচু লাইট হাউসটিও যেন আকাশকে ধরি ধরি। পাশেই আকাশবাণী পণ্ডিতেরী কেন্দ্র। সামন্যা এণ্ডেই নতুন জেটি বসেছে সমুদ্রবক্ষে। ২৮৪ মি লম্বা কংক্রিটের এই জেটি সান বাথ ও সী বাথ দুইয়েরই পক্ষে রমণীয়। এসব সাযোজনকে হেলায় ভাসিয়ে দেয় যেন সমুদ্র তার প্রলয়ঙ্করী ঢেউ তুলে। তাই সবেই উর্ধ্ব আকর্ষণও যেন পণ্ডিতেরী সমুদ্রে।

টিক তেমনই চলতে-ফিরতে বেড়িয়ে নেওয়া যায় পায়ে-পায়ে গভর্নমেন্ট স্কোয়ার। ফরাসি কালের পরশও মেলে স্কোয়ারের চারপাশে। এরই উত্তরে ১৮২৭-এ প্রতিষ্ঠিত রম্যা রল্যাঁ (Romand Rolland) লাইব্রেরি। লাগোয়া দ্যুপ্লের বাসভবনে রাজভবন বসেছে। তারও পশ্চিমে আশ্রমের ছাউনিং হল, GPO, সম্মুখে ভারতী পুস্তা অর্থাৎ পার্ক পেরুকেই দক্ষিণে Romand Rolland St-এ ফরাসি সংস্কৃতির নানান স্মারক নিয়ে গড়া মিউজিয়াম (রবি ও মঙ্গল ছাড়া ৯—১৭-০০টায়), সাগরপাড় ট্যুরিস্ট অফিস (Goubert Avenue) তথা ইনফরমেশন ব্যুরো। এছাড়াও তামিল কবি সূত্রদ্বাণা ভারতীর স্মৃতিমন্দির, সোমবার ছাড়া ৯—১৭-০০টায় পণ্ডিতেরী মিউজিয়াম, ভারতীয় সংস্কৃতির গবেষণা কেন্দ্র ১৯৫৫য় গড়া ফ্রেঞ্চ ইনস্টিটিউট—এসের রেস্টুরেন্টে ফরাসি খানারও স্বাদ মেলে, ফ্রেঞ্চ লাইব্রেরি, আর্ট গ্যালারি, বীচ রোড লাগোয়া জওহরলাল টয় মিউজিয়াম, বাস স্ট্যাণ্ডের কাছে ১৮২৬-এ গড়া ১৫০০ গাছের বটানিক্যাল গার্ডেন, লাগোয়া অ্যাকোয়ারিয়াম, পাবলিক গার্ডেনে জোআন অব আর্কের মূর্তি, উসটেরী লেক, অডিটোরিয়াম

ও আশ্রমের বিভিন্ন দপ্তরও পর্যটকদের কাছে আকর্ষণীয়। আর আছে সারা পৃথিবীতে সমাপ্ত নিষ্ক কাপড়ের উপর অভিনব পদ্ধতিতে ছাপা মার্বেল প্রিন্ট। এর অভিনব পদ্ধতিতে পর্যটকদের আকৃষ্ট করে। পণ্ডিতেরী ভ্রমণের স্মারক রূপে আপনিও সঙ্গী করতে পারেন। *পুডুচেরী বোম্বাই* অর্থাৎ পণ্ডিতেরীর পুতুল বা আশ্রমের তৈরি ধূপকাঠি, ক্রমাল ইত্যাদিও সঙ্গী করা যেতে পারে পণ্ডিতেরীর স্মারকরূপে। আর মেলে শ্রীঅরবিন্দ ও শ্রীমায়ের লেখা অমূল্য সব গ্রন্থসম্ভার আশ্রমের বিক্রয় কেন্দ্রে।

কনডাক্টেট ট্যুর : Director of Tourism, Govt of Pondicherry, 19 Goubert Avenue (Beach Rd)-605001, ① (0413) 24575 থেকে ৪০ টাকায় পণ্ডিতেরী ও অরোভিল দেখার ব্যবস্থা আছে। রেল স্টেশনের কাছে Tourist Home থেকে সকাল ৮-০০টায় গিয়ে ট্যুরিস্ট ইনফরমেশন ব্যুরো হয়ে ১৩-০০টায় ফেরে এসের মিনিবাস। দ্বিতীয় ট্যুরে ১৪—১৭-০০টায় যাচ্ছে অরোভিল দর্শনে রাজ্য পর্যটন। ৮ কিমি দূরে চুন্নাংবার নদীর বোট হাউসে নানানখর্মী বোটিং-এর সাথে হাইড্রোপ্লেন, কায়াক-এরও ব্যবস্থা করে পর্যটন দপ্তর। এছাড়া আশ্রমের গাড়িও কনডাক্টেট ট্যুরে রবিবার ছাড়া প্রতিদিন সমাধি মন্দির থেকে ৮-৪৫এ গিয়ে ঘণ্টা ভিনেকে ১০ টাকায় আশ্রমের নানান দপ্তর দেখিয়ে আনে। তিরুপতিও যাচ্ছে রাজ্য পর্যটন প্রতি শুক্রবার রাত ২২-০০টায় ওন্ড সেক্টোরিয়েট থেকে। ফেরে শনিবার রাত্রে। থাকা ও বিশেষ দর্শনী সহ ভাড়া এসের। গাড়িও মেলে ভাড়া রাজ্য পর্যটন থেকে। এছাড়া রাজ্য পর্যটন প্রতি প্রথম শনিবার ৮ দিনের প্যাকেজে ব্যাঙ্গালোর/গোয়া; প্রতি শুক্রবার কন্যাকুমারী; দ্বিতীয় ও চতুর্থ শনিবার ৭ দিনের ট্যুরে দক্ষিণ ভারত; তৃতীয় শনিবার ৮ দিনের ট্যুরে কোরল ও তামিলনাড়ু বেড়াতেও যাচ্ছে পণ্ডিতেরী থেকে।

মন্দিরের দেশ দক্ষিণ। পণ্ডিতেরীতেও অভাব নেই—৩৫০-এরও অধিক মন্দির হয়েছে পণ্ডিতেরীকে ঘিরে। ৭৫টি তার বিনায়ক অর্থাৎ কার্তিকের মন্দির। Rue d' Orleans-এর মানাকুলা বিনায়ক মন্দিরে প্রতি শুক্রবার পূজা হয়। নতুনের শুভকামনায় ভক্তজনরা আসেন। শহর থেকে ২৫ কিমি দূরে বাহুর মন্দির। সম্ভবত ১০ শতকের এই মন্দিরে গ্রানাইট পাথরের মূর্তিতে ভারতনাট্যমের মুদ্রা জীবন্ত হয়ে উঠেছে। ১২ শতকের মন্দির ভিলিয়ানুরে দেবতা ভগবান তিরুকামেশ্বর। মে-জুনের রথযাত্রায় দূর-দূরান্ত থেকে তীর্থযাত্রীরা আসেন। ভিন্নপুরমের পথে ভিলিয়ানুর মন্দিরটি বেড়িয়ে আরও ৮ কিমি দূরে তিরুভাণ্ডার মন্দিরটিও দেখে ফেরা যায়। শিব এখানকার উপাস্য দেবতা। পথেই পড়ে শহর থেকে ১৬ কিমি দূরে বোট হাউস। সুন্দর রমণীয় পরিবেশে ব্যাক ওয়াটারে বোটিং-এরও ব্যবস্থা মেলে ৯—১৭-০০টায়। উৎসাহীরা দেখে নিতে পারেন বাসে বাসে। আর রয়েছে বেশ কয়েকটি চার্চ পণ্ডিতেরীকে ঘিরে। *Eglise de sacre coeur de Jesus* এসের মধ্যে অন্যতম।

শহর থেকে ৮ কিমি দূরে Chunnamm বোট হাউস অর্থাৎ নদী ও সাগরের জলে গড়া ব্যাকওয়াটারে রকমারি বোট ভেসে বেড়ান। প্রতিদিন ৯—১৩-০০ আবার ১৪—

১৮-০০টায় বোটিং-এর ব্যবস্থা। নির্জন নিরালায় ঘরও মেলে গাছপাছলিতে ছাওয়া ব্যাক ওয়াটারের পাড়ে ৪ ডাবল বেডের বোট হাউসে; অব্: পণ্ডিচেরী পর্যটন। আহ্নারও মেলে ক্যান্টিনে। শীতে পরিবারী পাখিরও উড়ে আসে দেশ-দেশান্তর থেকে—ভেসে বেড়ায় ব্যাক ওয়াটারে।



রেল বা বাস থেকে আসা সলাই থরে Rue Nehru অর্থাৎ জওহরলাল নেহরু স্ট্রিট পেরিয়ে জিজি সলাই টপকে খ্রীঅরবিন্দ আশ্রম। আশ্রমকে কেন্দ্রমণি করে হাঁটা দূরত্বে নানান গেস্ট হাউস Pondicherry, STD 0413, PC-605002-এ। ঘরও মেলে S ৪০-১৫০ D ৬০-৩৫০ টাকায়—ধাকার পক্ষে ভালই। সকাল ৫-০০টায় দরজা খোলে, আর রাত ২২-৩০টায় বন্ধ হয় আশ্রম গেস্ট হাউসের দরজা। আশ্রমের ব্যবস্থাপনায়—International G H, Gingy Salai, ৩ 36699, S ৬০ D ৮০-১৫০ A/c D ৩০০; খালের অপর পাড়ে Cottage G H, Gingy Salai, ৩ 38434, S ৪০ D ৬০ T ৮৫ F ১২৫ থেকে। আশ্রম গেস্ট হাউসের কেন্দ্রীয় বুকিং Bureau Centre-ও বসেছে কট্টেজ ক্যাম্পাসে। Good G H, New Sweet Home, Oriya Nilayam, Samarpam Yuri Niwas, Navajyoti G H, Jubilee G H, Auro Bharati, Karnataka Nilayam; আশ্রম থেকে ১ কিমি দূরে সাগরবেলায় মনোরম পরিবেশে Park G H, Goubert Avenue, ৩ 34412, S ১৫০-২৫০ D ২০০ ৩৫০; Sea Side G H, ৩ 36494, সমুদ্রমুখী ঘর, D ১৫০-৩০০ A/c ২৫০-৪৫০; অগ্রিম বুকিং-এর জন্য স্ব ইনচার্জ বা Bureau Centre, ৩ 39648, Cottage Industries Campus, Pondicherry-605002 কে লেখা যেতে পারে।

ভেমনই আছে ধাকার জন্য সুপার Government Tourist Home, Uppalam Rd, near Rail Stn-1, ৩ 226376, SAB ৪৫ DAB ৮০ A/c S ১৫০ D ২২৫ সুইট ৩৫০; তবে, অবস্থান ছেতু বিকর্ণণ ঘটায়, খাবার হোটেল-রেস্তোরাঁও টুরিস্ট হোম থেকে ২০ মিনিটের দূরত্বে। এসেরই আর এক শাখা—Tourist Home, opp JIPMER, Indira Nagar-6-এ; পর্যটন দপ্তরের আর এক শাখা Yatri Nivas, ৩ 29474, D ১২৫ ডব্লিউ ৪০; এসের বুকিং : Receptionist বা Director of Tourism, Govt of Pondicherry, Goubert Avenue, Pondicherry-1. আর আছে Youth Hostel, Salai Nagar-3, ৩ 23495; আহার্যের অভাব—অবস্থানও বিকর্ণণ ঘটায়, অব্: Warden, Pondicherry-605003. সাগর পাড়ে মনোরম পরিবেশে Municipal T B—Hotel De Ville, 6 Rue Suffren; অব্: Commissioner, Pondicherry Municipality.

আর আছে খালের পশ্চিমে প্রাইভেট হোটেল—H Mass, Maraimalai Adigal Salai-1, near Bus Stand, ৩ 27221, D ৬০০ সুইট ৬২৫-৮৫০। আশ্রম থেকে ১ কিমি পশ্চিমে মিউনিসিপ্যাল বাস স্ট্যাণ্ডে—Albert L, G K Guest House, Regal L, Royal Star GH, G K Lodge, Anna Salai-1; বিপরীতে KRS Guest House; পাশেই L Selva; এসের কাছে S ৬০-১২৫ D ৮৫-১৭৫ টাকার মেলে। H Liberty, Uppalam Rd, S ১০০ D ১৭৫ A/c D ৩০০; Grand Hotel D' Europe, 12 Rue Suffren, AP-S ১৫০-২২৫; H Emiraj, 68 St Theresa St-1, SCB ৪৫ SAB ৭০ DAB ১২৫; Ellora L,

37 Ranga Pillai St-1, SAB ৪৫-৮৫ DAB ৮০-১৭৫ A/c D ২৭৫; H Seker, 48 Rangapillai St, SAB ৬৫ D ৮৫-১২৫; Ajanta L, 144 Rangapillai St, D ১২৫; Raj L, 57 Rangapillai St, S ৮০ D ১২৫-১৭৫; Aristo G H, 50-A, Mission St, ৩ 26728, SAB ৮০ DAB ১২৫-২০০ A/c S ২৫০ D ৩২৫; পৃথকমূলে আহ্নারও মেলে; একই মালিকানায় হোটেল আরিষ্টো।

| পণ্ডিচেরী থেকে সড়ক দূরত্ব | আর আছে পার্ক গেস্ট হাউসের কাছে সাগর পাড়ে— |
|----------------------------|--|
| চেন্নাই ১৬৬ কিমি | Ajantha G H, 22 Goubert |
| মহাবলীপুরম ১৩০ " | Ave, Pondi, ৩ 28898 |
| তিনদিভনম ৪৭ " | DAB ৩০০ A/c D ৪০০ |
| জিজি ৭৫ " | ৬৫০; এসেরই নবতম শাখা |
| চিলাধরম ৬৮ " | Ajantha G H, Zamindar |
| কাঞ্চিপুরম ১৩৬ " | Garden, ৩ 37756, D ২০০ |
| তিরুচিরাপল্লী ১৯৮ " | A/c ৩০০; Annivasam, S |
| ভাল্লুর ১৭০ " | ৬০ D ১০০; H Quality, 23 |
| মাদুরাই ৩২৬ " | Brindavanam-13, SAB ৮০ |
| রামেশ্বরম ৪৬৫ " | DAB ১২৫-১৭৫ A/c D |
| কন্যাকুমারী ৫৮০ " | ২৭৫; Shanthi GH, 6 Rue |
| তিরুপতি ২২৫ " | Suffren, S ৮০ D ১০০- |
| ব্যাঙ্গালোর ৩১১ " | ১৫০; বাঙালির ব্যবস্থাপনায় |
| উত্তরামণ্ড ৪০৪ " | Radha G H, Canteen St-1, |
| তিরুভনন্তপুরম ৬৬৫ " | DAB ১০০-১৭৫, আহ্নারও |
| এর্নাকুলম ৬২৪ " | মেলে; Blue Star H, Kamraj |
| মাদ্রাস ৬৫০ " | Salai, SAB ৬৫-১২৫ DAB |
| করাইকল ১৩২ " | ১০০-১৭৫ A/c S ২২৫ D |

২৭৫; H Mala, 35 Labourdonnais St, S ৮০ D ১৫০ A/c D ২৫০; H Ram International, West Boulevard, ৩ 27230, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ২৭৫ D ৩৭৫; Hotel L' Abri, 18-B, Zamindar Garden, DAB ১০০-১৫০ A/c D ২০০-২৭৫; H Aristo, 36 Nehru St-1, ৩ 24524, S ৮৫ D ১২৫-২০০; Victoria L, 79 Nehru St-1, SCB ৬০ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০ A/c D ২২৫; Sri Saibaba G H, 166 J Nehru St-1, RIB1, SCB ৪৫ SAB ৬০-৮৫ DAB ১০০-১৫০ A/c D ২৫০; লাগোয়া Paris L, DCB ৮০ DAB ১০০-১৫০; Naidu L; *Anandha Inn, 154 S V Patel Rd-1, ৩ 30711, S ৮০০ D ৯০০-১২৫০ সুইট ১৫০০-১৭৫০।

আর আছে ITDC-র হিটারকা *H Pondicherry Ashok Beach Resort, Chinakalapet, Pondicherry-605104, A17R12, A/c S ১১৯৫ D ১৮০০ সুইট ২৩৯৫; H Bristol, 23 Brindavanam; Kanchi Lodging, 93 Mission St, ৩ 25540, S ১২৫ D ২০০; অদূরে Fenns L, H Qualithe, Mahé De Labourdonnais St, near Beach; H Surguru, 104 Sardar Vallabhbhai Patel Salai, ৩ 27230, DAB ৩২৫ A/c ৪০০-৬৫০; শহরত্বে জাতীয় সড়কে H Rasheed.

ও ঘরের রিটায়ারিং রুমও আছে পণ্ডিচেরী রেল স্টেশনে। এছাড়া আছে ৩৬টি গেস্ট হাউস অরোলা নগরীতে। এসের কাছে ৮০-১৫১ টাকার ঘর মেলে। আর আছে সারাদিনের বিজ্ঞানমের

জনা আশ্রমের মাতৃশ্রমণ। আশ্রমের ডাইনিং হল ১৫ টাকায় সারাদিনের (৬-৪৫—৭-৪৫ ব্রেক ফাস্ট, ১১-১৫—১২-৩০ লাঞ্চ, ১৭-৪৫—১৮-০০ বা ২০—২০-৩০এ ডিনার) খাবারের ব্যবস্থাটিও স্বল্পকালের অবস্থানে ভাল লাগবে পর্যটকদের। আশ্রমের অতিথি নিবাস আবার মাতৃশ্রমণ থেকেই খাবারের টোকেন করে নিতে হয়। এছাড়া করাইকল, ইয়ানাম ও মাহেতেও Tourist Home আছে রাজ্য পর্যটনের।

তবুও থাকার জন্য আশ্রমের—কটেজ গেস্ট হাউস, পার্ক গেস্ট হাউস, ইন্টারন্যাশনাল গেস্ট হাউস, সী সাইড গেস্ট হাউস; আর প্রাইভেট হোটেলে—সাঁইবাবা, শান্তি, আরিস্টো, এল আত্রি, অজন্তা, ইলোরা, গভর্নমেন্ট ট্যারিস্ট হোমভালই। তেমনই উচিত হবে আশ্রম গেস্ট হাউসে অবস্থানে Visitor pass ব্যতীতের সঙ্গে রাখা। আশ্রমের নানান অনুষ্ঠানে অংশ নিতে এটি প্রয়োজন হতে পারে।

আর খাবারের হোটেল যত্রতত্র মিললেও যথেষ্ট পণ্ডার আরিস্টো হোটেলের অগ্রিম অর্ডারে ২২৭ রকমের আহার্য মেলে, রিস, আশীর্বাদ ও আশ্রমের ডাইনিং হলও রমণীয়। জওহরলাল নেহরু রোডের ইন্ডিয়ান কফি হাউসটিতেও চলতে ফিরতে স্বাদ নেওয়া যেতে পারে টফিনের। একই পথের প্রিয়া রেস্টুরেন্টেরও যথেষ্ট প্রশস্তি নিরামিষ আহার্য পরিবেশনে। পার্ক গেস্ট হাউস-এর সন্নিকটে ব্রু ড্রাগন চাইনীজ রেস্টুরেন্টের প্রসিদ্ধি তার চীনা ডিশের জন্য। Suffren St-এ চীনা মেনুর চায়না টাউন রেস্টুরেন্টটিও যথেষ্ট খ্যাত। পার্কের সন্নিকটে Goubert Avenue-এর অজন্তা রেস্টুরেন্ট বা সী গার্লস—দুইয়েরই যথেষ্ট সুনাম দেশী-বিশেষী আহার্য পরিবেশায়।



শহরের দক্ষিণ প্রান্তে রেল স্টেশন আর ১ কিমি পশ্চিমে বাস স্ট্যান্ড পতিচেরীতে। কলকাতার যাত্রীরা সরাসরি চেন্নাই পৌঁছে এগমোর থেকে দক্ষিণগামী ট্রেনে ভিলুপুর্মে গিয়ে নতুন করে ট্রেনে পতিচেরী চলন। ৩-৫০, ৯-২৫, ১৮-২৫, ২০-২০এ যাচ্ছে ভিলুপুর্ম থেকে পতিচেরীর ট্রেন। ১ ঘণ্টার পথ। ১২-২৫এর ট্রেনটি তিরুপতি ও ২০-২০এর ট্রেনটি চেন্নাই এগমোর থেকে ১৬-২৫এ ছেড়ে ভিলুপুর্ম হয়ে পতিচেরী যাচ্ছে সরাসরি। আবার এগমোর থেকে ১৩-৩০এ চেন্নাই-মাদুরাই জনতা এক্স, ১২-৫০এর ডাইগাই এক্সে ১৭-২০/১৫-৪০এ ভিলুপুর্ম পৌঁছে ১৮-২৫এর প্যাসেঞ্জারে ১৮-২৫এ পতিচেরী চলা যেতে পারে। এগমোর থেকে ভিলুপুর্মের দূরত্ব ১৫৯ কিমি, আর ভিলুপুর্ম থেকে পতিচেরী ৩৮ কিমি। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান এগমোর থেকে ভিলুপুর্ম হয়ে দক্ষিণের দিকে দিকে। পতিচেরী রেল স্টেশনে রিজার্ভেশনও মেলে ভিলুপুর্ম ও চেন্নাই থেকে ছাড়া নানান ট্রেনের।



TTC-র বাস যাচ্ছে চেন্নাইর প্যারিস কর্নার থেকে ০০-৪৫, ২-০০, ১০-০০, ৩-৪৫, ৫-১৫, ৬-৩০, ৭-৪৫, ৯-৩৫, ১০-৫০, ১১-১৫, ১২-২০, ১৩-৩০, ১৪-৪০, ১৫-২০, ১৬-২০, ১৭-৩০, ১৮-৪০, ২১-৩০, ২২-১৫, ২৩-৩০এ পতিচেরী। শীতাতপ ও ডিলাক্স বাসও চলে। আর যাচ্ছে সকাল থেকে রাতে প্রাইভেট বাস—সকাল ও বিকালে মুম্বাই। পথের দূরত্ব ১৬৬ কিমি, সময় নেয় ৩½ ঘণ্টা; ভাড়া ২৪.৫০। সমুদ্রের পাড় ধরে পথ গিয়েছে—পথঘোড়াও সুন্দর। পতিচেরী যাত্রাঘাতে বাসই সুবিধার।

পতিচেরীতে বাস স্ট্যান্ড দু'টি। লোকাল বাস স্ট্যান্ড বটানিক্যাল গার্ডেনের বিপরীতে আর এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড বটানিক্যালকে ছাড়িয়ে আরও ১ কিমি গিয়ে ভিলুপুর্ম রোডে। মহাবলীপুর্ম, তিরুভনামালাই, চিলাশ্রম, জিজি (সেনজী) ও ভেন্নোলের বাস যাচ্ছে লোকাল স্ট্যান্ড থেকে। আর এক্সপ্রেস স্ট্যান্ড থেকে যাচ্ছে দক্ষিণ ভারতের নানান দিকে বাস। বাস যাচ্ছে ২১-০০ ও ২২-৩০টায় ছেড়ে ৬ ঘণ্টায় ২২২ কিমি দূরের তিরুপতি; মুম্বই চেন্নাই যাচ্ছে TTC (২০ বাস) আর প্রাইভেট বাস অগুনতি; মিচি/ মাদুরাই হয়ে ১৫ ঘণ্টায় ৬০০ কিমি দূরের কন্যাকুমারী যাচ্ছে ৮-০০, ১৯-০০ ও ২১-০০টায়; ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৭½ ঘণ্টায় ৬-০০ ও ১৭-৩০টায় আদা ট্রান্সপোর্ট, ৮-৩০, ২১-৩০ ও ২২-০০টায় TTC, ৭-২৫এ পেরিয়ার, ২১-৩০এ প্রাইভেট; উটি যাচ্ছে ২০-০০ ও ২২-০০টায় ৯½ ঘণ্টায়; এর্নাকুলম ১৭-৩০; তিরুভনন্তপুরম ১৬-৪৫ ও ১৭-৩০; কোয়েম্বাটুর ৭-০০, ৯-৩০, ১৩-০০, ২০-০০, ২১-৩০; ভেন্নোলের (২ বাস); তিরুচেন্দুর ১৮-০০টায়। আর যাচ্ছে বাস—মহাবলীপুর্ম, মাদুরাই, ত্রিচি, তাঞ্জোর, কাকিপুরম মুম্বই। সরাসরি বাসের অভাবে রামেশ্বরম যাত্রায় মাদুরাই বদল করে চলাই সুবিধার। এমনকি পতিচেরী থেকে বাসে গিয়ে দিনে দিনে ৭৫ কিমি দূরের জিজি দূর্ণও দেখে ফেরা যায়। সরাসরি বাসের অমিল হলে তিনদিনের বদল করে চলা যেতে পারে এ-পরিক্রমায়। পতিচেরীর নিকটতম বিমানবন্দর চেন্নাই-এ। তবে, বায়ুদূত ত্রিসাপ্তাহিক সার্ভিস গড়েছে চেন্নাই থেকে পতিচেরীর সোম, বুধ, শুক্রবার।

আর রাজ্য পর্যটন ও Transport Development Corp-এর বাস যাচ্ছে—২৩-৩০এ করাইকল (১৩৮ কিমি); ১৮-৩০এ মাহে (৬৩০ কিমি); ১৭-২০এ কুমিলি অর্থাৎ পেরিয়ার (৪৫৪ কিমি); ৫-৪০, ৭-১০, ১৩-৫০, ১৮-৪০ এ চেন্নাই; ১৩-০৫, ২৩-৩৫এ ব্যাঙ্গালোর (৩১১); ৪-০০, ৯-০০টায় তিরুপতি (২২৫ কিমি); ১৮-২৫এ নাগের কয়েল (৫৭৫ কিমি) ছাড়াও নানান। এমনকি চেন্নাই (৩০৪ কিমি), তিরুপতি (৩৬১ কিমি), চিলাশ্রম (৭৪ কিমি) থেকেও রাজ্য পর্যটনের বাস যাচ্ছে করাইকল।

সময় স্বল্পরাত ২২-০০টায় এগমোর ছেড়ে ১-৪৫এ ভিলুপুর্ম পৌঁছে ভিলুপুর্ম থেকে ৩-৫০এর প্যাসেঞ্জারে ৪-৪৫এ পতিচেরী পৌঁছান। পতিচেরী পৌঁছে সন্দের জিনিসপত্র রেলের ক্রোকরমে রেখে বাস/অটো বা রিকশায় চলুন স্বীয়অবস্থান আশ্রমে। আবার আশ্রমের মাতৃশ্রমণেও সন্দের জিনিস রেখে আশ্রম দেখে নেওয়া যায়। সারাদিনের বিশ্রাম ও নানাদিগন্ত সুব্যবস্থা আছে মাতৃশ্রমণে। দিনে দিনে আশ্রম দেখে ১৬-৩৭ বা ২১-৫৩র প্যাসেঞ্জার ট্রেন ১ ঘণ্টায় ভিলুপুর্ম পৌঁছে ০০-৩০এ রামেশ্বরম এক্স, ২৩-২০এ তিরুপতি-মাদুরাই এক্স, ১৭-৩৫এ চেন্নাই-মাদুরাই জনতা, ১৩-২৫এ চেন্নাই এক্স যথাক্রমে ৫-২০, ৪-১৫, ২৩-৩০, ১৭-৫৫য় তাঞ্জোর পৌঁছান। তেমনই চলা যেতে পারে এগমোর ছেড়ে আসা ট্রেনে ভিলুপুর্ম থেকে—রামেশ্বরম, মাদুরাই, কোদাই, কন্যাকুমারী, কুইলন, ত্রিচি ছাড়াও দক্ষিণের দিকে দিকে। তবে, পর্যটকদের একটা দিন পতিচেরী থাকার উচিত হবে আশ্রম আর সাগরবেলায় পায়ে পায়ে বেড়িয়ে-কটিয়ে।

কেরল

একফালি একাদশীর চাঁদের মতো ভারতের পশ্চিম উপকূলে কেরলের অবস্থান। অতীতের ২টি স্বাধীন রাজ্য ভারতভূমির পর ১৯৪৯ খ্রিস্টাব্দের ১লা জুলাই পরস্পরে মিলেমিশে গড়ে ওঠে ত্রিবাঙ্কুর-কোচিন রাজ্য। ত্রিবাঙ্কুর রাজ্যে তিরুভনন্তপুরম—রাজধানী তার সীমান্তজোড়া তামিলনাড়ুর পন্ডিনাভপুরম। যদিও তার আগে নাম ছিল এর *Thiruvazhum Kode*—অর্থ তার সৌভাগ্যের আবাস। শুধু নামে নয়—সেকালের মহারাজারাও প্রজাদের মঙ্গলে তৎপর ছিলেন। শিক্ষার বনিয়াদ তাদেরই হাতে গড়ে ওঠে। পরিণামে ভারত রাষ্ট্রে কেরল আজ শিক্ষায় সর্বাগ্রে। নিরক্ষরতা দূরীভূত হয়েছে রাজ্য থেকে। তেমনিই ভারতে একমাত্র রাজ্য কেরল যেখানে পুরুষ থেকে নারীর আধিক্য। হয়তো বা মূলে কারণ হয়ে থাকবে, পুরুষরা দেশ ছেড়ে প্রবাসে জীবন যাপন করছে জীবিকার সন্ধানে। দেখতেও মেলে তেলের দেশে কর্মরত নানান কেরলিয়ানকে।

আর ভাষার ভিত্তিতে ১৯৫৬ খ্রিস্টাব্দের ১লা নভেম্বর চেম্নাই প্রেসিডেন্সি থেকে মালাবার হেঁটে ত্রিবাঙ্কুর ও কোচিকে জুড়ে রূপ পেয়েছে আজকের কেরল রাজ্য। মালয়ালম এর সরকারি ভাষা—জন্ম তামিল থেকেও কয়েকশত বছর আগে। আয়তনে ভারতের তৃতীয় ক্ষুদ্রতম রাজ্য কেরল। তবে, প্রাকৃতিক সৌন্দর্য অতীব মনোরম। সজল, সবুজ—সুন্দরী কেরলের প্রকৃতিতে যেন বাংলারই প্রতিচ্ছবি মেলে। কেরল রাজ্যের পশ্চিম জুড়ে গাঢ় নীলাভ আরব সাগর আর পূবে চির সবুজে ছাওয়া পশ্চিমঘাট (সহ্যাদ্রী) পর্বত। কেরলের পাহাড়-পর্বত-অরণ্য আর খাল-খাড়ি-নারকেলকুঞ্জের সঙ্গে কোতলম সাগরবেলা, পেরিয়ার বনাঞ্চল বিচরণক্ষেত্র ও ব্যাক ওয়াটার অর্থাৎ সমুদ্রের জল ঢুকে তৈরি খাড়ি পর্যটকদের বিমোহিত করে। আবার চাষের জমির উর্বরতা বাড়াতে মানুষের তৈরি খাল-বিল-লেক হয়েছে কেরলে।

যেমন বৈচিত্র্যময় এর প্রকৃতি, তেমনিই অতীব বৈচিত্র্যে ভরা এর অতীত ইতিহাস। *কেরা + আলয়ম* অর্থাৎ নারকেলের দেশ *কেরলম-ই* কালে কালে হয়েছে কেরল। *প্রাচ্যের ভেনিস* নামেও খ্যাত এই কেরল। কিংবদন্তী বলে, পুরাকালে কেরল ছিল অসুররাজ মহাবলীর রাজ্য। মহাবলীর প্রশস্তিতে দেবতারা শঙ্কিত। বিষ্ণু এলেন বামন অবতার (৫ম) রূপে মহাবলী সকাশে। বাসযোগ্য তিন-পা জমি মাগেন রাজ্যের কাছে ক্ষুদ্রে বামন। রাজ্যের তথাকথিত দু-পা নিতে জমি যায় ফুরিয়ে—সেব ছলনা বুঝতে পেরে মাথা পেতে নেন তৃতীয় পায়ের জন্য মহাবলী। বামনরূপী বিষ্ণুর পায়ের চাপে মহাবলী তলিয়ে যান পাতালে। পাতালগামী

মহাবলীর অস্তিম-ইচ্ছা পূরণ করেন বিষ্ণু। সেই থেকে বছরে একটি বার ৪ দিনের তরে প্রজা-সকাশে আসেন মহাবলী। মহা আড়ম্বরে যাপিত হয় প্রিয় রাজ্যের উপস্থিতি—নাম তার *ওনাম*।

আর বিষ্ণুর ৬ষ্ঠ অবতাররূপী পরশুরাম সবুজ স্বর্গ গড়ার মানসে পাহাড়চূড়ো থেকে কুড়াল ছুড়ে জল সরিয়ে আরব সাগর থেকে মালাবার উপকূল গড়ে দান করেন তাঁরই প্রিয়জনদের মধ্যে। তবে, বারবার ভূমিকম্প ও আগ্নেয়গিরির বিস্ফোরণে জল সরে জেগে ওঠে কেরলের বিরাট এক অংশ। কতকগুলি ছোট ছোট স্বাধীন রাজ্য ছিল বিক্ষিপ্তভাবে সেকালের কেরল ভূখণ্ডে। যুদ্ধবিগ্রহ লেগেই থাকত রাজ্যে রাজ্যে। সম্রাট অশোকের শিলালিপিতে উল্লেখও মেলে কেরলপুত্র নামে কেরলের। এমনকি মেগাস্থিনিসের বিবরণেও উল্লিখিত হয়েছে কেরলের নাম।

এমনকি কেরলের অষেষণে বেরিয়ে আমেরিকা আবিষ্কার করেন ক্রিস্টোফার কলম্বাস। যীশুর মৃত্যুর পর ৫২ AD-তে সিরিয়া থেকে যীশু-শিষ্য সেন্ট টমাসের মালাবার উপকূলে ক্রান্তানোরের মাসিয়াউকারা প্রদেশে আগমনে খ্রিস্টধর্ম, আর ৬৪৩ AD-তে মালিক ইবন ডিনার-এর আগমনে ইসলাম ধর্মের প্রবর্তন হয় সেদিনের মালাবার অর্থাৎ কেরলে। ভারতে প্রথম মসজিদটিও গড়ে ওঠে জামোরিন রাজাদের আনুকূল্যে ক্রান্তানোরে। এরপর হিন্দুধর্মের প্রভাব ঘটে কেরলে। বৈদিক-আদর্শবাদের বা উপনিষদের অদ্বৈতবাদের বিজয়-বৈজয়ন্তী ওড়ান শঙ্করাচার্য (৭৮৮-৮২০) সারা ভারতময়। বাস ছিল তাঁর কেরলে। আর আজ ৬০% হিন্দু, ২০% মুসলিম, ২০% খ্রিস্টানের বাস কেরলে। বাসও এদের মূলত রাজ্যের উত্তরে মুসলিম, মধ্যভাগে খ্রিস্টান আর দক্ষিণে হিন্দুর। কেরলই একমাত্র রাজ্য যেখানে নিরক্ষরতা দূরীভূত হয়েছে।

খ্রিস্ট পূর্বকাল থেকে বণিকেরা এসেছে দেশ-দেশান্তর থেকে পণ্য বিকোতে কেরলে। নিয়েছে তারা মশলা, হাতির দাঁত, চা, রবার ও চন্দন কাঠ কেরল থেকে। এদেশের মশলার প্রশস্তি ছিল সারা বিশ্বে সেকালে। বনজ ও খনিজ সম্পদেও যথেষ্ট বলীয়ান কেরল রাজ্য। এমনকি গ্রিস, রোম, আরব ও চীনের সঙ্গে বাণিজ্য ছিল সেকালে। খ্রিস্টপূর্ব ৫৮৭-তে নেবুচাদনেজারের প্যালেস্টাইন দখলে ইহুদিরা এসে প্রথম উপনিবেশ গড়ে কেরলে—আজও কোচিতে তার নিদর্শন মেলে। আর ব্রিটিশ উপনিবেশ গড়ে ১৬৮৪ খ্রিস্টাব্দে আঞ্জিলের রানীর দেওয়া ভূমি অনঙ্গেন-গোতে। তবে, পর্তুগাল থেকে আসা ডাকো-ডা-গামার পদার্পণ ঘটেছে তারও আগে ১৪৯৮-তে। মালাবারে গড়েও ওঠে

ব্যবসাকেন্দ্র পর্তুগিজদের। তারই পিছু পিছু আসে দিনেমার, ওলন্দাজ, ফরাসি ও ইংরেজ। দখল নিয়ে প্রতিদ্বন্দ্বিতা লেগে যায় পরস্পরে। ১৭৯২এ দক্ষিণী শার্দুল টিপু পরাজয়ে ইংরেজদের দখলে যায় মালাবার ও কোচি; আর ত্রিবাঙ্কুর থাকে দেশীয় রাজা হয়ে। বারবার বিদেশীদের আগমনে বিদেশী প্রভাবও অতিমাত্রায় চোখে পড়ে সারা কেরল চুখণে। তবুও কেরলীয় স্বকীয়তায় আজও স্বতন্ত্র এরা।

কেরল □ রাজধানী: তিরুভনন্তপুরম (ত্রিবান্দ্রম)।

আয়তন: ৩৮৮৬৩ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ২৯০১১২৩৭। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৩.৪৩%। পুরুষ: ১৪২১৮১৬৭। নারী: ১৪৭৯৩০৭০। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৩৫৫৭৫৫৭। বৃদ্ধির হার: ১৩.৯৮%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৭৪৭। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ১০৪০। সাক্ষরের হার: ৯০.৫৯%। প্রধান ভাষা: মালয়ালম, সঙ্গে চলে তামিল ও ইংরেজি। মাথাপিছু বাৎসরিক গড় আয়: ৫০৬৫.০০ টাকা (১৯৯২-৯৩)।

১২ দিনে কেরল বেড়ান—তিরুভনন্তপুরম ২ কুইলন ১ আলোমি ১ পেরিয়ার ১ কোচি—এর্নাকুলম ২ পথ চলায় ৫ দিন। তবে, উচিত হবে দক্ষিণ ভারত ভ্রমণ পথে তামিলনাড়ুর সাথে জুড়ে কেরল বেড়িয়ে নেওয়া। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ হলেও নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাস মনোরম।

ভারত যুক্তরাষ্ট্রে ১৯৫৭-য় জনগণের ভোট প্রথম কম্যুনিষ্ট সরকারও গঠিত হয় এই কেরলে। কম্যুনিজমের সঙ্গে অতিমাত্রায় ধর্মপ্রাণও কেরলবাসীরা। মন্দির/মসজিদ/গির্জাও তাই গ্রামেগঞ্জে। এছাড়া ফেস্টিভ্যাল বা উৎসবও লেগে আছে বছরের প্রতিটা দিন কেরলে।

Elephant March : প্রতি বছর জানুয়ারি মাসের ৯—১২ ঝলমলে সাজে ১০১ দাঁতাল হাতির বর্ণাঢ্য শোভাযাত্রা দেখতে দেশ-দেশান্তর থেকে যাত্রী আসছে থ্রিসুরে। হাতি চলে ছত্রাধিপতি হয়ে। পিঠে চড়ারও সুযোগ মেলে যাত্রীর। শুক থ্রিসুরে হলেও তিরুভনন্তপুরমেও যথেষ্ট পপুলার বাৎসরিক উৎসব এলিফ্যান্ট মার্চ।

Thrissur Puram : এপ্রিল-মে মাসে (৫.৫.১৯৯৮) থ্রিসুরের আর এক উৎসব ৪ দিন ব্যাপী পুরম। দুই সারিতে ৩০টি করে হাতি চলে ঝলমলে সাজে সজ্জিত হয়ে। হাতির পিঠে ৩ জন করে পুরোহিত—হাতে তাদের রঙবেরঙের বাহারি ছাতা। হাতির প্রতিযোগিতা দেখতে দূর-দূরান্ত থেকে

যাত্রী আসেন পুরমে। নাচ-গান-বাজনায় মেতে ওঠে থ্রিসুর। আতসবাজি পাওড়ে উৎসবে।

Boat Races : আগস্ট মাসের দ্বিতীয় শনিবার আলাপুজার পশ্চাৎদিকে ১০০ দাঁড়ওয়ালা সুসজ্জিত বোট রেস আকর্ষণে অনবদ্য। ছাড়া সাপ হুড়ে নিয়ে শতাধিক নৌকা নেহরু ট্রফি জেতার লোমহর্ষক প্রতিযোগিতায় অংশ নেয়। ১৯৫২ খ্রিস্টাব্দে প্রথম প্রধানমন্ত্রী জওহরলাল নেহরুর হাতে এর সূচনা—পুরস্কারটিও নেহরুর দান।

Kochi Carnival : ডিসেম্বরের ২৫-৩১ সপ্তাহব্যাপী নাচ-গান-বাজনায় নববর্ষের উৎসব সাড়শরে পালিত হয় কোচিতে।

Nishagandhi Dance Festival : প্রতিবছর ফেব্রুয়ারির ২১-২৭ অর্থাৎ ৭ দিনের ফ্রপদী নৃত্যের আসর বসে তিরুভনন্তপুরমের নিশাগান্ধী মুক্ত মঞ্চে। ভারতনাট্যম, ওড়িশি, মোহিনীআট্টম, কথক নৃত্যও পরিবেশিত হয় ডান্স ফেস্টিভ্যালে। নৃত্য প্রেমিকদের কাছে খুবই পপুলার—দর্শকও আসেন দেশ-দেশান্তর থেকে।

Food Festival : খাদ্য রসিকদের কাছে খুবই প্রিয় এপ্রিল মাসের ৫-১১ তিরুভনন্তপুরমের খাদ্যোৎসব। কেরলীয় মেনুর সাথে ভারতীয় সুস্বাদু খাদ্যের স্বাদ নিতে পারেন খাদ্যোৎসবে।

Onam : এপ্রিল মাসের নববর্ষে ধান বোনার উৎসব বিত্ত, আগস্ট-সেপ্টেম্বরে (১.৯.৯৮-৬.৯.৯৮) ৭ দিন ধরে ধান কাটার উৎসব ওনাম; আর ডিসেম্বর-জানুয়ারিতে তিরুভাথির বিশেষভাবে উদ্বেগ। তবে ওনাম-ই কেরলের জাতীয় উৎসব। পর্যটন সপ্তাহও পালিত হচ্ছে ওনাম উৎসবকালে। ব্যাকওয়াটারে নৌকা প্রতিযোগিতা ওনামের আর এক আকর্ষণ। নাচেগানেও কেরল বিশেষভাবে সমৃদ্ধ। *কথাকলি, ভুলাল, মোহিনীআট্টম* নৃত্য আপন মহিমায় সারা বিশ্বে সমাদর পাচ্ছে। আর কর্ণাটকী সঙ্গীতে কেরলের অবদানও অনস্বীকার্য। মঙ্গলানুষ্ঠান ও অতিথি আপ্যায়নে কলার উপকরণ এদের জাতীয় কৃষ্টি। তেমনই এরা ঘাড় নেড়ে হ্যাঁ জানায় আমরা যাতে না বোকাই। তবুও কেমন যেন বিশৃঙ্খলা—ঠকতে হয় পদে পদে নানান অছিলায়। নানান তিক্ত অভিজ্ঞতাও নিয়ে ফেরেন কেরল পর্যটকরা।

তিরুভনন্তপুরম/ত্রিবান্দ্রম

কেরল রাজ্যের রাজধানী ত্রিবান্দ্রম—নামান্তর ঘটে আজ হয়েছে তিরুভনন্তপুরম। অতীতকালে নামও ছিল এর *Thiru-Anantha-Puram* অর্থাৎ পবিত্র অনন্তনাগের শহর। রোম শহরের মতো সহ্যাদ্রি পর্বতের সাত পাছাড়ে মনোরম প্রকৃতির মাঝে গড়ে উঠেছে তিরুভনন্তপুরম। সঙ্গীর্ণ গলিপথে, লাল টালিতে ছাওয়া বাড়িঘর—তারই মাঝে আধুনিক স্থাপত্যে গড়া ইমারত আর ফুলবাগিচা সৌন্দর্য বাড়িয়েছে শহরের। তবুও যেন বিকৃত তথা শ্রীপদ্মনাভমায়ী

মন্দির সহ রাজধানীর আকর্ষণ ভ্রান হয়ে পড়ে শহর থেকে ১৬ কিমি দূরের কোভলম সাগরবেলার কাছে। পর্যটন মানচিত্রে তিরুভনন্তপুরমের প্রসিদ্ধিও কোভলমের জন্য। KTDC-র কনডাকটেড ট্যুরে বা চুক্তিতে ট্যাক্সি নিয়ে বেড়িয়েও নেওয়া যায় কোভলম সহ তিরুভনন্তপুরম দিনে দিনে। তবে, ২ দিনের বেশি থাকার দরকার হয় না তিরুভনন্তপুরমে।

কেরল আজকের নয়:

- মর্ত্যভূমে বর্গ গড়তে বর্ণের দেবতা বিকুর ৬ষ্ঠ অবতাররূপী পরওয়ারের ছোড়া কুড়ালে আরব সাগর থেকে জল সরে কেরল ভূখণ্ডের উদ্দীপন।
- ক্রিস্টোফার কলম্বাসের আমেরিকা আবিষ্কার এই কেরলের সম্মানে বেরিয়ে।
- বিত শিখ্য সেন্ট টমাস 52 AD-তে ভারতে এসে এশিয়াম প্রথম গির্জা গড়েন কেরলে।
- ইসলাম ধর্মের প্রবর্তক মোহাম্মদের শিখ্য মালিক ইবন ডিনার (Malik Ibn Dinar) 643 AD-তে ভারতে পৌঁছে এশিয়াম প্রথম মসজিদ গড়েন কেরলে।
- এমনকি কিং সলোমন কেরল থেকেই দারু নিয়ে নিজ ভূমে মন্দির গড়েন।
- শিবারের হাত থেকে প্রাণ বাঁচাতে ক্রিওপ্টো কেরলেই ছেলেকে পাঠানোর মনস্থ করেন।



চেন্নাই সেন্ট্রাল থেকে ১৮-৫৫য় 6319 চেন্নাই-তিরুভনন্তপুরম মেল কাটগাদী/সালেম/পালঘাট/মিচুর/এর্নাকুলম/কোট্টায়াম/কুইলন হয়ে পরদিন ১১-৫৫য় তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে। চেন্নাই ফেরে ১৩-৩০এ 6320 চেন্নাই মেল। দূরত্ব ৯২১ কিমি। সালেম/কোয়েম্বাটুর/পালঘাট হয়ে ওয়েস্ট কোস্ট ও কোচি এক্স; আর সালেম/পালঘাট হয়ে ম্যাসালোর মেল যাচ্ছে চেন্নাই সেন্ট্রাল থেকে। কুইলন মেল চেন্নাই এগমোর থেকে, কুইলন এক্স মিচি থেকে মাদুরাই হয়ে যাচ্ছে। কলকাতা যাত্রীদের 1 5 দিন 6324 হাওড়া-তিরুভনন্তপুরম এক্স বা রবিবার ৫-০০টায় গুয়াহাটি ছাড়া 6322 গুয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম এক্স সোমবার ৩-৫০এ হাওড়া ছেড়ে চেন্নাই সেন্ট্রাল হয়ে তিরুভনন্তপুরম যাওয়ায় সুবিধা। কলকাতা থেকে তিরুভনন্তপুরমের দূরত্ব ২৫৮৩ কিমি, সময় সের ৪৮ ঘণ্টা।

ভারত রাষ্ট্র কেরলের উল্লেখ্য :

১৯৫৬র ১লা নভেম্বর কেরলের জন্ম। জনগণের ভোটে প্রথম কম্যুনিষ্ট সরকার ১৯৫৭য়।

প্রতি বর্গ কিমিতে জনবসতির ঘনত্বও ভারত রাষ্ট্রে কেরল প্রথম (৭৪৭)।

৪৪টি নদী বলে চলেছে কেরল ভূখণ্ডে—৪১টি তার পশ্চিম বাহিনী, ৩টি পূর্ব বাহিনী।

সমুদ্রের জলে ঝাঁড়ি অর্থাৎ ব্যাক ওয়াটার—সেও কেরলের অনন্য সৃষ্টি।

কেরলের বৃহত্তম লেক—২০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত সমুদ্রের জলে সৃষ্ট ব্যাক ওয়াটার অর্থাৎ ভেদ্যানাদ লেক।

কেরলের আর এক কৃষ্টি পৌরাণিক আখ্যানভিত্তিক কথাকলি নৃত্য সৃষ্টি।

সমবায় প্রথায় জন-জাগরণ ঘটায় শিক্ষাদীক্ষা, চরিত্র, বাহ্য গঠনে কেরল অদম্য।

ভারতে একমাত্র রাজ্য কেরলেই পুরুষের থেকে নারীর আধিক্য।

ভারতে অন্যতম আর বিশ্বে দ্বিতীয় (মিয়ামি প্রথম) সুন্দরতম কোভলম বীচ ও বিশ্বখ্যাত পেরিমার ওয়াইল্ড লাইফ শ্যাকচুয়ারি দুইয়েরই অবস্থান কেরলে।

লাকারীপের জাহাজ ও বায়ুদূতের বিমানও যাচ্ছে ভারতের বৃহত্তম পৌর নগরী কোচি থেকে।

ভারতের প্রথম মহিলা ম্যাজিস্ট্রেট—Mrs Omana Kunjamma: প্রথম মহিলা মুন্সিফ (Munsiff), প্রথম মহিলা সেশন জজ (Sessions Judge), প্রথম মহিলা হাইকোর্ট জজ (High Court Judge)—তিনেরই দাবিদার কেরলের Mrs Anna Chandy.

সুপ্রিম কোর্টের প্রথম মহিলা জজ কেরলের Miss M Fathima Beevi.

মহিলা-স্বার্থ রক্ষার্থে প্রথম Womens' Commission গঠিত হয় ১৯৯০এ কেরলে।

ভারতে প্রথম লেখক সমবায়ের পণ্ডনও কেরলের কোট্টায়ামে।

সরকারি মনে নিরক্ষরতা দূরীভূত হয়েছে ভারত রাষ্ট্রের একমাত্র রাজ্য কেরলে।

এছাড়া ট্রেন যাচ্ছে হাওড়া থেকে বৃহস্পতিবার ৩-৫০এ 5624 গুয়াহাটি-কোচি এক্স, বৃহস্পতিবার ১৩-০০টায় পাটনা ছেড়ে ০০-



প্রেমের ফাঁদ পাতা ছুবনে—
কে কোথা ধরা পড়ে কে জানে। —রবীন্দ্রনাথ

চিরকলীন তানবাসা



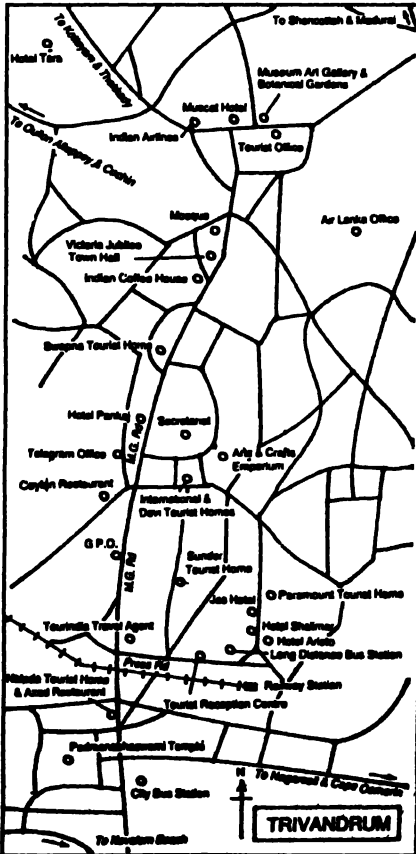
সম্পাদনা : বিশ্ব বসু ও অশোককুমার মিত্র ● প্রচ্ছদ ও অলঙ্করণ : পূর্ণেন্দু পত্নী

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলকাতা স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

২০এ খড়গপুর পৌঁছে চেন্নাই হয়ে কোচি যাচ্ছে 6310 পাটনা-কোচি এক্স। হাওড়া ফেরে তিরুভনন্তপুরম থেকে 36 দিন 1২-৪৫এ হাওড়া এক্স, মঙ্গলবার 1২-৪৫এ গুয়াহাটি এক্স; কোচি ছাড়ে রবিবার 1৬-৪০এ গুয়াহাটি এক্স, সোমবার 1৬-৪০এ পাটনা এক্স। তেমনিই করমণ্ডল এক্স, চেন্নাই মেল-এ হাওড়া ছেড়ে চেন্নাই সেন্ট্রাল পৌঁছে নতুন করে নানান ট্রেনে চলা যেতে পারে তিরুভনন্তপুরম তথা কেরলে।

মুম্বাই যাচ্ছে ৭-1৫য় তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে ৪৪½ ঘণ্টায় কন্যাকুমারি-মুম্বাই এক্স, শুক্রবার ৪-২০এ তিরুভনন্তপুরম-কারলা এক্স কুইলন/এর্নাকুলম/পালঘাট/কোয়েম্বাটুর/কাটপাদী/পুনে হয়ে। ৯-৪০এ কেরল এক্স ও কেরল-ম্যাসালোর লিঙ্ক এক্স যাচ্ছে তিরুভনন্তপুরম থেকে ৫২ ঘণ্টায় ৩০৫৪ কিমি দূরের নিউ দিল্লী; আর যাচ্ছে ভারতের দীর্ঘতম রেল যাত্রায় হিমসাগর এক্স প্রতি শুক্রবার 1২-৩০এ কন্যাকুমারি ছেড়ে তিরুভনন্তপুরম/কোয়েম্বাটুর/কাটপাদী/বিজয়ওয়াড়া/নাগপুর/ভূপাল/ঝাঁসী/ নিউ দিল্লী হয়ে জন্ম অর্থাৎ ভূবর্গে। হিমসাগরের সঙ্গে জুড়ে ইরোডে পৃথক



হয়ে মাধুবাই যাচ্ছে লিঙ্ক এক্স। প্রতি শুক্রবার ৬-৩৫এ তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে রাজধানী এক্স যাচ্ছে চেন্নাই হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন। প্রতি বুধবার তিরুভনন্তপুরম-রাজকোট এক্স 1৪-1০এ, বৃহস্পতিবার নাগের-কয়েল-তিরুভনন্তপুরম-গান্ধীধাম এক্স 1২-৪৫এ তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে পালঘাট/কোয়েম্বাটুর/গুণ্ডাকল/পুনে/সুরাট/আমোদাবাদ হয়ে যাচ্ছে। কোচি-আমোদাবাদ-রাজকোট এক্স যাচ্ছে প্রতি শুক্রবার 1৬-৪০এ একই পথ ধরে। 1৬ ঘণ্টায় ৬৩৫ কিমি দূরের ম্যাসালোর যাচ্ছে ৬-০৫এ 6349 তিরুভনন্তপুরম-ম্যাসালোর পরশুরাম এক্স, 1৭-৪০এ 6329 মালবার এক্স তিরুভনন্তপুরম থেকে পশ্চিম উপকূল ধরে কুইলন/এর্নাকুলম/সোরানুর হয়ে। ম্যাসালোর যাচ্ছে 1০-২০এ তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে 1৯ ঘণ্টায় 6525 কন্যাকুমারি-ম্যাসালোর এক্স; বৃহস্পতিবার নাগেরকয়েল-গান্ধীধাম এক্স। ৯ ঘণ্টায় কোয়েম্বাটুর যাচ্ছে উটির যাত্রী নিয়ে নানান ট্রেন। আলোমি, এর্নাকুলম, সোরানুর যাচ্ছে নানান ট্রেন। ভারতের দক্ষিণ বিন্দু কন্যাকুমারিতেও ট্রেন যাচ্ছে তিরুভনন্তপুরম থেকে ৪-২০এ এক্স, ৭-০০টায় প্যাসেঞ্জার, ৮-৫০এ চেন্নাই-কন্যাকুমারি এক্স, 1২-৪০এ কারলা-কন্যাকুমারি এক্স, 1৫-২০এ ম্যাসালোর-কন্যাকুমারি এক্স, 1৮-০০টায় প্যাসেঞ্জার, 1৯-০৫এ প্যাসেঞ্জার, ২০-৩৫এ কুইলন প্যাসেঞ্জার, ২৩-1০এ সাপ্তাহিক হিমসাগর ছাড়াও নানান। দূরত্ব ৮৭ কিমি, ২ ঘণ্টার পথ এক্স ট্রেনে আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন কন্যাকুমারির 1৬ কিমি আগে নাগেরকয়েলে চলায় বিরতি টানে।



NH 7, 17, 45 ও 47এর সংযোগে তিরুভনন্তপুরম। ভ্রমণ তালিকায় তামিলনাড়ু, কেরল ও কর্ণাটক থাকলে ভ্রমণার্থীদের কন্যাকুমারি থেকে তিরুভনন্তপুরম যোগ্যই সুবিধা। ট্রেন ও বাস আছে মুম্বাই সার্ভিস, বাসে ২½ ঘণ্টার পথ; দূরত্ব ৯৭ কিমি। তবে, নাগেরকয়েল থেকে বাসের আধিক্য মেলে। বাস যাচ্ছে কুইলন (1½ ঘ) ৬৩, কোটায়াম 1৫৪, আলোমি (৩½ ঘ) 1৪৭, এর্নাকুলম (৫ ঘ) ২1০ কিমি ছাড়াও রাজ্যের দিগ্বিদিকে তিরুভনন্তপুরম থেকে। ডিলাক্স বাসও যাচ্ছে রাষ্ট্রীয় পরিবহণের তিরুভনন্তপুরম থেকে কোচি, কামানোড়, কুইলন ও আলোমি। পথেই পড়ে এর্নাকুলম, আলগুয়ে, ত্রিচূর ও কোজিকোড। আর চলে দ্রুতগামী নন-স্টপ সার্ভিস ও সাধারণ বাস সারা রাজ্য জুড়ে মুম্বাই। বাস যাচ্ছে 1½ ঘণ্টায় পোনমুড়ি ৫৬, ৮ ঘণ্টায় ২৭২ কিমি দূরের পেরিমার যাচ্ছে ৩-৩০, ৮-৪৫, 11-৩০এ তিরুভনন্তপুরম থেকে। এমনকি বাস যাচ্ছে চেন্নাই, পিচেরিগুডি, মাধুবাই, উটি, ম্যাসালোর, মহেশ্বরও তিরুভনন্তপুরম থেকে। তবে, বাসে সবকিছুই মাল্যালম ভাষায় লেখা। অব্যবহাও যেন সবকিছুতে। নির্ধারিত স্ট্যান্ডে নির্দিষ্ট চলার বাস খুঁজে পাওয়া ভার। টিকিটের দীর্ঘ লাইন, বাসও চলতে শুরু করে যাত্রী না ভুলে। এমনকি প্রায়টি টিকিটের যাত্রীদের বাসে ওঠা সম্ভব হলও সিট পাওয়া অনিশ্চিত হয়ে পড়ে। তাই, উচিত হয়ে দূরপাল্লার পথে রাজ্য পরিবহণ পরিদপ্তর করে প্রাইভেট বাসের যাত্রী হওয়া।

সারা দক্ষিণে মিটারগেজ রেলের প্রচলন থাকায় বাসে চলায় গতি বাড়ে। আর তামিলনাড়ু রাজ্য পরিবহণ Thiruvalluvar-এর বাস যাচ্ছে তামিলনাড়ুর দিকে দিকে। দপ্তর এদের সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ডের পূর্বে। বাস যাচ্ছে 1৭ ঘণ্টায় চেন্নাই চার, ৭ ঘণ্টায়

মাদুরাই দশ, ১৬ ব'টার পতিচেরী এক, ছাড়াও কোরেছাইর, নাগেরকরেল, ইরোড ও আরও নানান।

| কেরল সরকারের (১৯৯০) বিধানে ইংরেজি বাগখানা থেকে বাসদালম-এ নামাঙ্কিত : | |
|---|--------------------|
| পুরাতন | নতুন |
| Alleppey | Alappuzha |
| Alwaye | Aluva |
| Calicut | Kozhikode |
| Cannanore | Kannur |
| Cochin | Kochi |
| Cranganore | Kodungallur |
| Palghat | Palakkad |
| Quilon | Kollam |
| Sultan's Battery | Sultanbatheri |
| Tellicherry | Thalasseri |
| Trivandrum | Thiruvananthapuram |
| Trichur | Thrissur |

FOR INFORMATION CONTACT:
Department of Tourism,
Govt of Kerala, Park View,
Thiruvananthapuram
..... ৩ 321132
Tourist Information Centre,
Airport ৩ 501085
Central Bus Terminus,
Thampanoor, ৩ 327224
Kerala Tourism Development
Corporation (Central Reser-
vation), Mascot Square,
..... ৩ 438976
Tourist Reception Centre
(KTDC) ৩ 330031
Tourist Information Centre,
Kovalam ৩ 480085
Tourist Information Counter,
Tourist Desk, Boat Jetty,
Kochi ৩ 371761
Tourist Information Counter,
Airport, Kochi
Tourist Information Centre,
Rly Station-Kozhikode
Tourist Information Centre,
New Delhi ৩ 3316541
Tourist Information Centre,
Mumbai ৩ (P.P)2026817
Tourist Information Centre,
Chennai ৩ 8279862



IAC-র উড়ান প্রতিদিন ৮-৩০এ দিল্লী ছেড়ে ১০-২৫এ মুম্বাই পৌছে তিরুভনন্তপুরম আসছে ১৩-১৫য়; দিল্লী ফেরে ১৫-১৫য় তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে ১৭-১০এ মুম্বাই পৌছে ২০-০০টায়। ১২৬ দিন ৯-৪০এ চেন্নাই ছেড়ে তিরুভনন্তপুরম আসছে ১০-৫০এ, ৩ ৫ ৭ দিন ৮-১৫য় ছেড়ে ৯-২৫এ সরাসরি। চেন্নাই ফেরে ১৬-০০/ ১৪-০০টায় ছেড়ে একইভাবে। ১ ৪ দিন ১১-৫০এ ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ১২-৫৫য়; তিরুভনন্তপুরম ফেরে ১০-০০টায় ব্যাঙ্গালোর থেকে। কোচি যাচ্ছে ১৩ ৪ ৫ ৭ দিন ১১-০০টায় ছেড়ে ৪৫ মিনিটে, ফেরে ৯-৫৫য় কোচি থেকে। আর প্রাইভেট বিমান Jet Airways প্রতিদিন যাচ্ছে তিরুভনন্তপুরম-মুম্বাই-আমেরদাবাদ, তিরুভনন্তপুরম-মুম্বাই-উত্তরাবাদের, তিরুভনন্তপুরম-মুম্বাই-দিল্লী, তিরুভনন্তপুরম-মুম্বাই-জয়পুর; ইস্ট ওয়েস্ট এয়ারলাইন্সও দৈনিক সার্ভিস গড়েছে তিরুভনন্তপুরম থেকে মুম্বাই-এর। ১ ২ ৬ দিন মালী; ৩ ৫ ৭ দিন কলম্বো যাচ্ছে IAC-র উড়ান তিরুভনন্তপুরম থেকে। এয়ার লন্ডাও সপ্তাহে ৪ দিন সার্ভিস গড়েছে তিরুভনন্তপুরম থেকে কলম্বোর। ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনগুলিতে। সিটি বাস (রুট ১৪), অটো ও ট্যাক্সি যাচ্ছে শহর থেকে ৬ কিমি দূরের এয়ারপোর্টে। IAC-র অফিস বসেছে মাসকট হোটেলের পেরিয়ে Museum Rd, ৩ 438288-তে; Air Lanka-র অফিস সেক্রেটারিয়েটের পূবে Ganapathy Kovil Rd, ৩ 68767-এ।

Packages of KTDC Ltd.

Beach Holidays : Anchor Point : Hotel Samudra, Kovalam : Duration : 2 nights 3 days for 2 persons @ Rs. 6349/- (all inclusive)
Jungle Holidays : Anchor Point : Lake Palace Hotel, Thekkady : Duration : 2 nights 3 days for 2 persons @ Rs. 9299/- (all inclusive)
Anchor Point : Aranyanivas Hotel, Thekkady : Duration 2 nights 3 days for 2 persons @ Rs. 4399/- (all inclusive)
Anchor Point : Periyar House, Thekkady : Duration : 2 nights 3 days for 2 persons @ Rs. 2499/- (all inclusive)
Back Water Holidays : Anchor Point : Boat House, Kumarakom : Duration : 2 nights 3 days for 2 persons @ Rs. 2599/- (all inclusive)
Island Holidays : Anchor Point : Bolgatty Palace Hotel, Kochi : Duration : 2 nights 3 days for 2 persons @ Rs. 4999/- (all inclusive)
For reservations : contact the Marketing Division, Central Reservations, KTDC Ltd., Mascot Square, Thiruvananthapuram. (Fax : 0471-434406/431080).

কনডাক্টেড ট্যুর : রেল স্টেশন আর দূরপাল্লার বাস টার্মিনাস পরস্পর মুখোমুখি দাঁড়িয়ে তিরুভনন্তপুরমে। বাস টার্মিনাসে ট্যুরিস্ট অফিস আর পাশেই তার Kerala Tourism Development Corporation Ltd. আর এদের থেকে ৭-১০ মিনিটের হাঁটা দূরত্বে শ্রীপদ্মনাভস্বামী মন্দির; বিপরীতে সিটি (মিউনিসিপাল) বাস স্ট্যান্ড। মূল সড়ক মহাশ্বে গান্ধী বোড চলেছে শহর বিদীর্ণ করে—উত্তরে ট্যুরিস্ট অফিস, মিউজিয়াম ও চিড়িয়াখানা; আর দক্ষিণে মিউনিসিপ্যাল বাস স্ট্যান্ড।
(১) KTDC প্রতিদিন সকাল ৮-০০টায় গিয়ে ১৯-০০টায় ফেরে ৯০ টাকায় শহর অর্থাৎ শ্রীপদ্মনাভস্বামী মন্দির, মিউজিয়াম, চিত্রালয়ম, অ্যাকোয়ারিয়াম, জু, কোভলম বাঁচ, প্ল্যানেটেরিয়াম, শানওমুঘাম বাঁচ দেখিয়ে। তবে সোমবার মিউজিয়াম ও জু বন্ধ থাকায় প্রোগ্রামে কিছুটা বদল ঘটে। বৃহ ছাড়া প্রতিদিন (১৪— ১৯-০০) হাফ টু ট্যুরেও যাচ্ছে Veli Lagoon, Shanthumugham Beach ও Kovalam Beach দেখাতে ৬০ টাকায়।
(২) প্রতিদিন ৭-৩০এ গিয়ে ২১-০০টায় ফেরে ১৭০ টাকায় কোভলম, পদ্মনাভপুরম প্রাসাদ, ওট্টমন্ড, কন্যাকুমারি বেড়িয়ে।
(৩) পেনমুন্ডি পাহাড়ী শহর ও নায়ার বাঁধ বেড়িয়ে আনে ১৫০ টাকায় প্রতিদিন ৭-৪৫এ গিয়ে ১৯-০০টায় ফিরে। (৪) প্রতি শনিবার (শেষ ছাড়া) সকাল ৬-৩০টায় ২ দিনের সফরে পেরিয়ার যাচ্ছে ৩৫০ টাকায়। (৫) মাসের শেষ শনিবার ৩ দিনের সফরে ৬০০ টাকায় যাচ্ছে কোলাইকানাল, মাদুরাই, পেরিয়ার। দিনে দিনে কোটগিলম থেকে আনে ১৭০ টাকায়। মুম্বায় যাচ্ছে কুমারাকোম হয়ে ৪৫০ টাকায়। এছাড়াও নানান প্যাকেজে—তিরুপতি/ গোয়া/ ব্যাঙ্গালোর/ মোকাম্বিকা/ রামেশ্বরম/ মুম্বাইও যাচ্ছে তিরুভনন্তপুরম থেকে KTDC-এ বছরের উর্ষে ভাড়া লাগে

পুরো। ভাড়া বলতে কেবল যানবাহন। থাকা ও আহার্য নিজ ব্যয়ে—তবে সহযোগিতা মেলে KTDC-র। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়ায় মেলে এদের কাছে। বুকিং: Tourist Reception Centre, KTDC Ltd, Subramoniam (Station) Rd, Thampanoor, Thiruvananthapuram-695001, ☎ 330031 বা Assistant Manager, Travel & Tours Division, KTDC Ltd, Hotel Chaitram, Thampanoor, Thiruvananthapuram-1, ☎ (0471) 331321. ডেমনাই KTDC-র হোটেল বুকিং-এর জন্যও লেখা যেতে পারে KTDC, Central Reservations, Mascot Square, Thiruvananthapuram-33, ☎ 438976 (Ext 609)-কে। এমনকি কলকাতায় Himalchura, ☎ 3508004/3530390 বা Diamond Travels ☎ 2259639/276714 থেকেও KTDC-র হোটেল ও প্যাকেজ ট্যুরের বুকিং মেলে। উৎসাহীরা Tourist Information Centre, Park View Rd-এর ব্যবস্থাপনায় কথাকলি নাচের আসরও দেখে নিতে পারেন।



Thiruvananthapuram-695033, STD 0471-তে হোটেলও আছে নানান। তিরুভনন্তপুরম রেল স্টেশনে রেলের রিটার্নিং রুম আর বেরতেই বামহাতে Corporation Rest House, ☎ 330477, S ২০ ৩০ ৪০ D ৩৫ ৫০ T ৭০, অব্: Superintendent; Legislators Hostel, Cantonment, অব্: Estate Officer.

আর রয়েছে পাঁচাত্তরপ্রায়—KTDC-র ত্রিতারকা *Mascot H, Mascot Sqr, Palayam-33, ☎ 438990, A8R3B3, A/c S ১১৫ D ১১৫ সুইট ২০০০ ২৩৯। রেল ও বাস দুই-এরই সন্নিকটে KTDC-র H Chaitram, Thampanoor Rd, near Rly Stn-1, ☎ 330977, SAB ৪০০ ৫০০ DAB ৫৫০ ৬০০ A/c S ৭০০ ৮৫০ D ৮৫০ ১০০০। টুরিস্ট অফিসও বনোই চেতরামে। এদেরই আর এক সংস্থা Yatriniyas, Thycaud, ☎ 64453.

রেল চত্বর পেরুতেই Thampanoor ও Aristo Jn এ—Green Land Lodging, ☎ 63485, SCB ৩০ SAB ৬৫ DAB ১২০ TAB ১৫০ FR ১৬০; H Aristo, ☎ 63622, SCB ৩৮ DCB ৭৫ TAB ১৫০; Shalimar Inn, ☎ 61974; Paramount Park H, ☎ 63474. বাঁয়ে গলিপথে—H Rohini Complex, ☎ 69377, DAB ১৫০ TAB ১৭৫; Lal Tourist Home, ☎ 68477, S ৮৫ D ১৫০ T ১৮৫ A/c D ৩৫০; Vinayaka Tourist Home, S ৬০ D ১০০ T ১৫০; Venkateshwara Tourist Home, ☎ 63968, DAB ১২৫-১৭৫। আরেকটা হোটেলের বাঁয়ে গলিপথে—Sri Devi Tourist Home, S ৫০ D ১০০ T ১২৫ F ১৫০; Munacaud Tourist Home, S ৮০ D ১৫০-২০০ T ২২৫ A/c D ৬০০; Hazeen Tourist Home, ☎ 63465, SAB ৬০ DAB ১২৫ TAB ১৫০; SGA Lodge, Sree Kumar L, ☎ 63705, SCB ৪৫ DAB ১২০ TAB ১৫০; H Thamburu International (INT), ☎ 61974, SAB ১২৫ DAB ১৫০-২৫০ TAB ২২৫ A/c D ৩৫০ সুইট ৬০০; *Jas H, Thycaud-14, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৬০০ ৬৫০ D ৬৫০-৮৫০ সুইট ১০০০-১২৫০; Saffire L, ☎ 65686, SCB ৬০ DAB ১২৫ TAB ১৫০; H Woodlands, Thycaud, S ১৫০-২২৫ D ২৭৫-৩৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০।

মূলপথ Thampanoor-এ—O M Tourist Home, Prasanth Tourist Home, H Salrah, Priya Tourist Home, H Keerthi, S ৮০ D ১৫৫ T ১৯৫ A/c D ২৮৫; *H Horizon, Aristo Rd-14, SAB ৪০০ DAB ৬০০ A/c S ৮৫০-১২৫০ D ১০৫০ ১৫৫০ সুইট ১৭৫০; S N Tourist Home, H Safu International, ☎ 67556, CK Lodge, Paramount Park H.

বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে হোটেল চেতরাম লাগোরা Thampanoor, Station Rd এ—H Sreevas, ☎ 331664, S ৮০ D ১৫০ T ১৭৫। স্বল্প বেতে ডানহাতি Manjalikulam Rd-এ—H Munacaud Tourist Paradise, H Sukhavas, ☎ 331967, S ১০০ D ১৫০ সুইট ২৭৫ A/c D ৪০০; H Ammu, ☎ 331966; H Highland, ☎ 68200, S ১২৫-২০০ D ১৬০-২৫০ A/c S ২২৫-৩২৫ D ৩০০-৪২৫; H Hyvala, ☎ 330724; H Regency, ☎ 330377. Station Rd-এ—Sree Arulakan L. ডানহাতি M G Rd-এ—Saja Tourist Home, H Safari, opp SMV School, ☎ 77202, S ১৫০ D ২০০ A/c S ৩৫০ D ৪২৫।

বাস ও রেলের সন্নিকটে

| Thampanoor-এ—H Sil- | তিরুভনন্তপুরম থেকে দূরত্ব : |
|----------------------------------|-----------------------------|
| varsand, Thampanoor | পোনমুড়ি ৬১ কিমি |
| Flyover, TVM-695036, | ওয়ারকাল ৫৪ " |
| ৔ 460318, S ১৭৫ D | কোলাম ৭১ " |
| ২৫০ A/c D ৩৫০-৪৫০ | কন্যাকুমারিকা ৮৭ " |
| সুইট ৬৫০; Jacob's H, | কোচি ২২০ " |
| ৔ 331963, D ১২৫-২০০ | কোয়াম ১৫৪ " |
| A/c ২৫০-৩৫০ সুইট ৬০০; | বিসু ৩০০ " |
| H Mas, Overbridge Jn, | কুমিলি ২৪৯ " |
| ৔ 78566, S ১৫০ D ২২৫ | পেরিয়ার ২৫৩ " |
| A/c D ৩৫০। | মাদুরাই ৩০৭ " |
| শ্রী পদ্মনাভস্বামী মন্দির | কোলাইকানাল ৪১৮ " |
| তথা বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে— | চেন্নাই ১৮৪ " |
| *H Luciya, East Fort, | ময়ীপুর ৬৪৩ " |
| TVM-23, ৔ 463443, | ব্যাঙ্গালোর ১১২ " |
| SAB ৯৯৫ DAB ১২৫০ | ব্যাঙ্গালোর ১০৬ " |
| সুইট ১৮০০; Madison | মুন্ডাই ১৬১৩ " |

D ২০০; *H Prasanth*, PMG Jn, @ 436189, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ২৫০, D ৩২৫; *H Mufair*, Statue Jn, S ৮৫ D ১৫০ A/c S ২২৫, D ২৭৫; *H Poorna*, YMCA Rd, near Secretariat, @ 331315, D ১৫০ A/c D ৩০০; *Navaratna H*, south-east of Secretariat, YMCA Rd, @ 331784, SAB ১৮০-২৫০ DAB ২২৫-৩০০ A/c S ৩৮০ D ৩৮০; *Safari L*, opp SMV School, @ 77202, S ২০ D ১৫০ A/c S ২২৫ D ৩২৫; *Highness Inn*, Airport Rd, Perunthanni, @ 450983, S ১০০ D ১৭৫ A/c S ৩০০ D ৪০০ সুইট ৬০০; *H Samrat*, Thakaraparampu Rd, @ 463314, S ১২৫ D ১৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০; *H Hilton*, Housing Board Jn, Thampanoor, @ 331098, S ১০০ D ১৭৫ A/c D ৩০০; *Navara*, Pattom Palace, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ২৭৫ D ৩৭৫। কাছেই প্রেস রোডে *International Tourist Home*, S ১০০ D ১৫০ সুইট ২২৫ A/c S ২০০ D ৩২৫; *Devi Tourist Home*, SAB ৮০ DAB ১৫০ A/c S ২০০ D ২৫০; *H Residency Tower*, Press Rd, @ 69545, SAB ৩২৫ DAB ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; *Model School*, Aristo Rd-14, SAB ৬০-৮৫ DAB ৮০-১৫০ A/c ২২৫।

M G Rd-এ : *Nalanda Tourist Home*, SAB ৬০-৮৫ DAB ১২০-১৫০; *Omkar I*, D ৮০-১২৫। *H Lido*, S ৮০-১২৫ D ১২৫-১৭৫ A/c S ২৫০ D ৩২৫। *H Sangnam*, D ১৫০ FR ২০০ A/c ২৭৫; *Sree Krishna L*, Narayan L, Shalimar, S ৬৫ D ১২৫; *R Lodging*, Priya Tourist Home, SAB ৪৫-৮৫ DAB ৮০-১৫০; *Pravin Tourist Home*, Thampanoor, @ 330443; *Sundar Tourist Home*, Sivada Tourist Home, H President, H Tilak, Annies Tourist Home. তিরুভনন্তপুরম স্ট্রাটাল রেল স্টেশন থেকে ২ মিনিটের পথে অবস্থান এদের। স্বরও মেলে S ৪৫-১২৫ D ৮৫-২২৫ চার বেডের ঘর ১৫০-২৭৫ টাকা।

আর আছে শহর থেকে দূরে *Surya Samudra Beach Garden*, Pulinkudi, Mullur-695521, A22 R20 B20, @ (0471) 481825, পিক সিজনে DAB ১২৫০-৫০০০, তেমনই নভেম্ব-এপ্রিল: হুই সিজনে, আগস্ট-সেপ্টে-অক্টোবর: সিজনে, মে-জুন-জুলাই অফ সিজনে এদের। রেটও নামে তিন ভাগ কমে এক ভাগে সিজনে।

এছাড়াও হোটেল ও লজ আছে নানান সারা শহরময়। *Baba Tourist Home*, near Ayurveda College; *Bhaskara Bhavan Tourist Paradise*, Dharmalayam Rd-1, @ 79662, R1½; *Gandhi H*, Chalai Bazar; *Grand Udipi L*; *H Uttarayan*, near Medical College, Ulloor-11, @ 447482; *Pearl L*, Pattom; *Trivandrum H*, near Secretariat; *Swapna Tourist Home*, Statue Rd; *Nanda Vancam Tourist Home*, S ১৫০ D ২২৫ A/c D ৪০০; *Kukies Holiday Inn*, near GPO-1; *H Ganesh*, Pulimood, @ 461070; *H Jajeera*, Murinjapalam, @ 446582; *Savera Tourist Home*, Sihan Tourist, Chalai, Bright, Ritz L, H Sea Blue ছাড়াও নানান। এদের কাছে ঘর মেলে S ৪০-৮৫ D ৬০-১২৫ টাকা। তবুও পবিত্রসের বরকালীন অবস্থানে উচিত হবে রেল স্টেশনের বিপরীতে বা স্টেশন রোডে হোটেল নির্বাচন করা।

সাধারণ মানে *শিবালু*, *হাইল্যান্ডস*, *ভাকর ভবন*, *হোটেল সুব্বাস* ভালই। আর উচ্চমানে তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে *KTDC*-র *Mascot* ও *Chuthram* নির্বাচন করা যেতে পারে।

আর আছে *Thycaud*-এ—*Govt G H*, @ 64453, *PWD Rest House*; *Youth Hostel*, Velli, @ 79230; *YMCA*, behind Secretariat, Statue, @ 330059; *YWCA*, M G Rd, @ 446518 তিরুভনন্তপুরমে।

আহায়েও বৈচিত্র্য মেলে দক্ষিণের ফেরলে। আমিষ দুস্থাপ্য না হলেও নিরামিষের প্রতিপত্তি। তেমনই তেঁতুল, নারকেল ও মশলার আধিক্য তিরুভনন্তপুরমের হোটেল। যেনুতেও বিফ ও সী ফিশের নানানকিছু। রেল স্টেশনে—নিরামিষ আহায়ের জন্য *আরাধনা রেস্টুরেন্ট*; অদূরে *খাইবার রেস্টুরেন্টে* চীনা ও কন্টিনেন্টাল ডিশ; *সেক্রেটারিয়েটের কাছে হোটেল উডল্যান্ডস*; বাস স্ট্যান্ডের বাঁয়ে *ইন্ডিয়ান কফি হাউস*; মন্দিরের পাশে M G Rd-এ *সেক্রেটারিয়েটের* বিপরীতে *অতুলজ্যোতির* নিরামিষ, এদের জায়েবো সোসা—সেও এক কিংবদন্তী; নামটা মিষ্টি হলেও পঙ্কজ হোটেলের *শ্রীরাম সুইট স্টল*-এরও যথেষ্ট সুনাম নিরামিষ আহায্য পরিষেবায়। মন্দিরমুখী M G Rd-এর *আজাদ বা সীলন রেস্টুরেন্টে* আমিষ আহায্যের স্বাদ নিতে পারেন তিরুভনন্তপুরম অবস্থানে। স্টেশন রোডের সন্নিকটে *ওঙ্কার কাক্ষে*, চিকেন ডিশের জন্য অদূরে *চিকেন কর্নার* যথেষ্ট খ্যাত। *KTDC*-ও রেস্টুরেন্ট আর বিয়ার পার্লার *Sabula* গড়েছে রাজ্য জুড়ে। তিরুভনন্তপুরমেও শাখা হয়েছে সাবালার—*Veli*, Museum ও Statue Jn-এ। তেমনই চৈতরাম লাগোয়া *হোটেল চৈতরামের* কডিটারটিরও স্বল্পমূল্যে আহায়ে সূচ্যাপ্তি যথেষ্ট।

রেলস্টেশন থেকে ৭-১০ মিনিটের পথে মিউনিসিপ্যাল বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে শ্রীপল্লভান্ডস্বামী মন্দির। মন্দির থেকে শহরের নাম। ত্রিবাঙ্কুর রাজ্যের গৃহদেবতা এই *পল্লভান্ডস্বামী* অর্থাৎ বিষ্ণু। মূল মন্দিরে বিধির দীর্ঘতম মূর্তি অনন্তশয়নম লর্ড বিষ্ণু। মাথার উপরে ছত্রাকারে অনন্তনাগ আর পায়ের কাছে দেবী লক্ষ্মী, মন্তকে ধরিত্রী। ১৭২৯ খ্রিস্টাব্দে একের পর এক যুদ্ধ জয়ের পর রাজা মার্তণ্ড ভার্মা সমগ্র রাজ্যকে দেবতার নামে উৎসর্গ করেন। মন্দিরেরও সংস্কার হয় নতুন করে ১৭৩৩এ। অতুলনীয় ভাস্কর্যমণ্ডিত প্যাপোগাভার্মী সাততলা গোপুরমটি দ্রাবিড়ীয় শৈলীর নিদর্শন হয়ে আজও পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে।

সিংহধার গিরে ঢুকতেই সোনার মোড়া সেতন কাঠের মিনার। সুন্দর ভাস্কর্যমণ্ডিত গ্রানাইট পাথরের ৩৬৮টি স্তম্ভের উপর এর অলিঙ্গিত তৈরি। মন্দিরের আর এক আকর্ষণ কুলাশেখর মণ্ডপমের ২৮টি মনোলিথ পিলার। প্রতিটি পিলারে হয়েছে আবার অসংখ্য ছোট ছোট পিলার। এর একটিতে কান পেতে পাশেরটিতে আওয়াজ করলে মৃদঙ্গের সুর মেলে। অভিনবস্থ আছে এর স্থাপত্য। মন্দির লাগোয়া পঙ্কজীর্থম সরোবর। সরোবরের জলে প্রতিবিম্বে সেখে নেওয়া যায় মন্দির। শহরের মূল স্ট্রটব্যও *Kalarippayati* শৈলীতে গড়া এই মন্দির। মার্চ-এপ্রিল ও অক্টোবর-নভেম্বরে দশ দিন ধরে উৎসব হয়। জমকালো মিছিল চলে সাগর-বেলার। দেবতাও অংশ নেন এই মিছিলে। বাজি পোড়ে—

লোক-নৃত্য, হাতিও অংশ নেয় বর্ণাঢ্য মিছিলে। মন্দিরের সঠিক জন্ম ইতিহাস অজানা হলেও কথিত আছে, খ্রিস্ট জন্মেরও ৩০০০ বছর আগে ৪০০০ রাজমিস্ত্রি, ৬০০০ শ্রমিক আর ১০০ হাতির দীর্ঘ ৬ মাসের শ্রমে গড়ে ওঠে শ্রীপদ্মনাভস্বামী মন্দির। প্রবেশাধিকার কেবল হিন্দুদের। ৪-১৫—৫-১৫, ৬-৪৫—৭-১৫, ৮-২০—১১-১৫, ১১-৪৫—১২-০০, ১৭-১৫—১৮-০০, ১৮-৪০—১৯-৩০এ মন্দির খোলা। পুরুষদের লুঙ্গির মতো করে কাপড় (প্রবেশ-দ্বারে ভাড়ায় মেলে) পরে মন্দিরে যেতে হয়। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান মূল মন্দিরের অঙ্গনে।

শহরের প্রাণকেন্দ্রে সারি দিয়ে বাড়ি—একের পর এক সরকারি দপ্তর; বিপরীতে অবজারভেটরি পাহাড়ে ৮০ একর জুড়ে মনোহর পার্ক ভিউ অর্থাৎ জুও বোটানিক্যাল গার্ডেন। একই চত্বরে আর্ট মিউজিয়ম, শ্রীচিত্রা আর্ট গ্যালারি, ন্যাচারাল হিস্ট্রি মিউজিয়ম, শ্রীচিত্রা এনক্রেড, কে সি পানিক্কর গ্যালারির অবস্থান। উদ্যানে প্রবেশ অবাধ হলেও ৫ টাকার টিকিটে প্রতিটির দর্শন মেলে। সোম ছাড়া ৯—১৭-০০টায় খোলা। উচিতও হবে সকালে পদ্মনাভস্বামী মন্দির দেখে বাসে কোভলম বেড়িয়ে বিকালে বাসে বাসেই তিরুভনন্তপুরম (Shanghumugham) বাঁচ, ভেলি, পার্ক ভিউ দেখে তিরুভনন্তপুরম দর্শন সাজ করা। অটোও মেলে এ-সফরে ১৭৫ ট্যাক্সি ৩০০ টাকায়।

১৮৮০তে চেমাই-এর গভর্নর লর্ড নেপিয়ারের সম্মানে গড়া বর্ণাঢ্য মিনারের আকর্ষণীয় বাড়িতে বসেছে নেপিয়ার মিউজিয়ম। নানান আভরণ, বাদ্যযন্ত্র, হস্তশিল্প, ব্রোঞ্জ মূর্তির সুন্দর সংগ্রহের সঙ্গে ৭ শতকের চোল স্থাপত্য প্রদর্শিত হয়েছে। কথাকলি নৃত্যশিল্পীদের মডেলের সঙ্গে নায়ার যৌথ পরিবারের মডেলটিও সুন্দর। ৩০০ বছরের পুরাতন টেম্পল কারটিও উল্লেখ্য। সোম ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা।

যাদুঘর চত্বরেই ১৯৩৫এ রূপ পেয়েছে চিত্রালয়ম বা আর্ট গ্যালারি। রবি ভার্মা ও মাইকেল রোয়েরিক ছাড়াও নানান মডার্ন আর্টের সংগ্রহ উল্লেখ্য। তেমনই রাজপুত, মোগল, তাম্রোয়, বালী, তিব্বতি, চীনা ও জাপানি ছবি-গুলিও সংগ্রহের মর্যাদা বাড়িয়েছে। সোম ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা।

তবুও যেন অবজারভেটরি হিলস বা ৫০ একর ব্যাপ্ত জু সুফারির সর্বোত্তম আকর্ষণ তিরুভনন্তপুরম সাগরবেলায় জলজ উদ্ভিদ ও জলজ প্রাণীর অত্যাশ্চর্য অ্যাকোরিয়াম। সামুদ্রিক মাছের সংগ্রহ উল্লেখ্য। বেশকিছু দুষ্প্রাপ্য সামুদ্রিক প্রাণীও প্রদর্শিত হয়েছে। এশিয়ার মধ্যে বৃহত্তম ও সর্বাধুনিক বলেও এর প্রসিদ্ধি। তিরুভনন্তপুরম পর্যটকদের অবশ্যই দেখে নেওয়া উচিত। সোম ছাড়া প্রতিদিন ৯-৩০—১৮-০০টায় খোলা। তবে, গত কিছুকাল অ্যাকোরিয়ামটি বন্ধ।

শহর থেকে ৭ কিমি দূরে এয়ারপোর্ট লাগোয়া শানও-

মুঘাম (তিরুভনন্তপুরম) বাঁচের অন্যতম আকর্ষণ সূর্যাস্ত। পর্যটক বিনোদনের নানান ব্যবস্থা—ইনডোর রিক্রিয়েশন ক্লাব, চিলড্রেন ট্র্যাঙ্কিং ট্রেনিং পার্ক, স্টার শেপড রেস্টুরেন্ট, ক্লেটিং রিং বসেছে শানওমুঘামে। Kanai Kunhiraman-এর ভাস্কর্য—মৎস্যকন্যা ছাড়াও ৬৮ ফুট দীর্ঘ শামুকে তৈরি মহিলা আকর্ষণ বাড়িয়েছে সাগরবেলায়। হোটেলও আছে নানান এয়ারপোর্ট লাগোয়া শানওমুঘামে।

তিরুভনন্তপুরমের নবতম আকর্ষণ শহর থেকে ৯ কিমি দূরে সমুদ্র-ছোয়া ভেলি ট্যুরিস্ট ভিলেজ। ব্যাক ওয়াটারে বোটিংয়ের নানান ব্যবস্থা। নয়ন মনোহর বাগিচার মাঝে টয় ট্রেন চলেছে। ভাস্কর Kanai Kunhiraman-এর নানান ভাস্কর্য আকর্ষণ বাড়িয়েছে উদ্যানের। KTDG-র *ফোটিং রেস্টুরেন্ট* ছাড়াও *সাবালা রেস্টুরেন্ট* বসেছে। ১০—১৭-০০টায় খোলা, ৩ 75385. থাকারও নানান ব্যবস্থা—উদ্যান মাঝে লেকের পাড়ে Youth Hostel; অদূরে Lake Side Heritage, ৩ 71977 ও Veli Star আছে ভেলিতে।

আর আছে মাসকট হোটেলের কাছে সায়েশ ও টেকনোলজি মিউজিয়ম, চাচা নেহরু চিলড্রেন মিউজিয়ম Thycaud-এ। শহরবাসীদের আর এক আকর্ষণ আক্কুলাম বোট ক্লাব। লেকের জলে বোটিং, চিলড্রেন পার্কও বসেছে।

আর আছে PMG Sqr-এ—Priya Darshini Planetarium; পাশেই Science and Technological Museum; Thycaud-এ Chacha Nehru Childrens' Museum; ১৩ কিমি দূরে Akkulam Boat Club; Aruvikara-য় কারমালা নদীর তীরে Picnic spot ও জলপ্রপাত তিরুভনন্তপুরমে। উৎসাহীরা অক্টোবর থেকে মার্চে প্রতি শনিবার নিশাগান্ধী থিয়েটারে রাজা পর্যটন আয়োজিত All India Dance Festival দেখে নিতে পারেন।

চলার পথে ত্রিবাঙ্কুর মহারাজাদের বসতবাড়ি কৌঞ্জীয় প্রাসাদটি দেখে চলা যায়। এরও ইমারত-স্থাপত্য অতুলনীয়। মহারাজার প্রাইভেট সেক্রেটারির অনুমতি নিয়ে প্রাসাদ দেখার ব্যবস্থা।

তিরুভনন্তপুরম থেকে ৫১ কিমি দূরে কন্যাকুমারিকার গথে NH-47 থেকে ২ কিমি গিয়ে অথুনা তামিলনাড়ু রাজ্যে অতীতের ত্রিবাঙ্কুর রাজ্যের রাজধানী পদ্মনাভপুরম। কন্যাকুমারির দূরত্ব ৪৫ কিমি। ১৫৫০-এ টিক ও শিলায় তৈরি প্যাগোডাধর্মী অখজীনরাণী প্রাসাদে ত্রিবাঙ্কুরের রাজবরবার বসে ১৭৯০ পর্যন্ত। প্রাসাদের সিলিং হয়েছে ফুলের আকারে; মেঝে, জানালা সবই বৈচিত্র্যময়। কালো মর্মরের মতো দেখতে হলেও মেঝে হয়েছে নারকেলের মালার ভন্ম, চুন ও ডিমের খোলায় মিশ্রণে। লেণ্ডস্কেপটিজ, ব্রোঞ্জ ও প্রস্তরের ভাস্কর্য অতুলনীয়। কাউন্সিল চেম্বার, মাদার হল, বাক্সেট হল, নাচঘরের শিল্পসৌকর্যের তুলনা হয় না। প্রাসাদ সন্দের রামস্বামী মন্দিরে ৪৫টি প্যানেলে রামায়ণের আখ্যান, ১৮ শতকের দেওয়াল চিত্রও অনবদ্য। ৯০ রকম

কুলের নকশাকাটা সর্বোচ্চ ঘরটিতে দেবতা বিষ্ণুর অধিষ্ঠান। আর ঠিক নিচের ঘরে ছিল মহারাজার অবস্থান। তেমনিই দেশী-বিদেশী শিল্প সামগ্রীর সংগ্রহশালাসহ এরা পর্যটক আকর্ষণ অনবীকার্য। বাণিজ্যিক যোগসূত্রও ছিল সারা বিশ্বের সঙ্গে সেকালে—পরিচিতিও ছিল Gods own country বলে কেরলের। সোম ছাড়া ৯—১৭-০০টায় খেলা থাকে প্রাসাদবার। ১৫ কিমি দূরে নাগেরকয়েল, আরও ৮ কিমি গিরে ওটীল্লমও বেড়িয়ে চলা যায় কন্যাকুমারির পথে বাসে বাসে বা কনডাকটেড ট্রায়ে।

এছাড়া অতীতদিনের দুর্গ, অহিনসভা ভবন, মহাকরণ, রবীন্দ্র শতবার্ষিকী নাট্যশালা, বিশ্ববিদ্যালয় ভবনও আধুনিক সৌধ হিসেবে কম আকর্ষণীয় নয়। তিরুভনন্তপুরমের অদূরে সমুদ্রোপকূলে জেলেদের গাঁ খুন্ডায় ভারতীয় মহাকাশ বিজ্ঞানের খুন্ডা ইকোয়েটোরিয়াল রকেট লঞ্চিং স্টেশন (ISRO) বসেছে ১৯৬৩তে। আর ১৯৭১এ গড়ে ওঠা বিক্রম সারাভাই স্পেস সেন্টারও এই খুন্ডায়। চলার পথে এগুলিও দেখে নেওয়া যেতে পারে। তবে, সাধারণের কাছে ঘর রুদ্ধ এরা। শহর দেখার জন্য দু'দিনের বেশি থাকার দরকার হয় না। পর্যটকদের তিরুভনন্তপুরমে। দ্বিতীয় দিন ৮-২০, ৫-০০, ৬-০০, ৭-১৫, ৯-৪০, ১০-২০, ১২-৪৫, ১৩-৩০, ১৪-১০, ১৬-৩০, ১৭-০৫, ১৭-৪০, ২১-০০, ২১-৪৫, -এর ট্রেনে সওয়া ঘণ্টায় কুইলন পৌঁছান। বাসও যাচ্ছে তিরুভনন্তপুরম থেকে ৬৫ কিমি দূরের কুইলনে।

কোভলম

ভারতে অন্যতম আর বিশ্বে দ্বিতীয় (মিয়ামির পরেই) সমুদ্রতম বেলোড্রুমি কোভলম। শান্তি আর নিজনতা যীরা পছন্দ করেন তাঁদের অতি প্রিয় এই কোভলম বীচ। সমুদ্র এখানে শান্ত, আকার তার ধনুকাকার—রূপ পেয়েছে ঝাঁড়ি সম। রূপোলি বালুবেলা, ছোট ছোট টেড; সাগরবানে অনন্য। পাছাড় পাছাড় পরিবেশ—পেঁপে, কলা আর নারিকেল বাঁধিকায় ছাওয়া। নীল আকাশের নিচে সুনীল বারিষি—ছায়া সুনিবিড় এই বেলোড্রুমির প্রশান্তি আজ সারা বিশ্ব জুড়ে। সান বাথেও মনোরম কোভলম। বিদেশী পর্যটকদের ভিড়ও বেশি কোভলমে। বাস থেকে সমুদ্রমুখী পথে Convention Centre, আর সমুদ্রপাড়ের Madrasa Hidayathul Islam, অদূরের লাইট হাউসটিও অভিযান করে নেওয়া যায় ১৪—১৬-০০টায়। আর পূর্বে জেলেদের বসতি। বীচও হয়েছে আর এক—সেও যেন ঝাঁড়ির আকার, পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। সকালে গভীর সমুদ্র থেকে মাছ ধরে জেলে নৌকার প্রত্যাগমন আকর্ষণ বাড়ায় কোভলমের সাগরবেলায়। দোকানপাটে দেশী-বিদেশী নানান পসরা, হোটেলও হয়েছে নানান তিরুভনন্তপুরমের ১৬ কিমি দক্ষিণে কোভলমে। তবে, সবেরই দাম উর্ধ্বমুখী। অক্টোবর থেকে মার্চ মরসুম হলেও নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারির পিক সিজনে পর্যটকদের মেলা

বসে কোভলমে। Govt of India Tourist Information Centreও বসেছে কোভলমে, ৩ 62146.

KTDC Packages

Kerala Tourism Development Corporation offers the following packages at Hotel Samudra Kovalam Premium Packages

1. Rejuvenation Therapy :
7 days Rs. 22,890, 14 days Rs. 42,180
2. Body Immunisation :
7 days Rs. 21,490, 14 days Rs. 42,430
3. Body Suedation :
7 days Rs. 19,090
4. Body slimming :
7 days Rs. 19,090
5. Pancha Karma :
7 days Rs. 22,090, 14 days Rs. 44,180

Economic Packages

- 7 days packages : Sirovasthi, Rs. 17,990 ;
Thakradhara, Rs. 16,590 ; Kadidhara Rs. 16,340 ;
Elakizhi Rs. 16,340 ; Choomaswedam Rs. 16,240.
1 Day Package : Udwarthanam Rs. 2,050 ;
Kashayavasti Rs. 2,260 ; Snehavasti Rs. 2,050 ;
Mathravasti Rs. 1,910 ; Nasyam Rs. 1,825 ;
Snehapanam Rs. 1,950 ; Vamanam Rs. 2,470 ;
Tharpanam Rs. 1,910.

Please note that above rates include accommodation and treatment charges only. Cost of food and beverages etc. will be charged separately. Reservation can be done at the Marketing Division, KTDC Ltd, Mascot Square, Thiruvananthapuram-33 on request by fax over 0091-471-431080/434406.



শ্রীপদ্মনাভস্বামী মন্দিরের বিপরীতে ইস্ট কোর্ট বাস স্ট্যান্ড লেন ১৯ (M G Rd লাগোয়া) থেকে ১১১ রুটের বাস যাচ্ছে ৫ ঘণ্টা অন্তর ৬-২০—২১-০০টায়। অটো, ট্যাক্সি, এমনকি শেয়ার ট্যাক্সিও মেলে এপথ পরিক্রমায়। আর কোভলম থেকে তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে ৬-১৫ থেকে ২০-০০টায়। সরাসরি কন্যাকুমারিকা যাচ্ছে (৪ বাস) ২ ঘণ্টায়, পেরিয়ার (১ বাস) যাচ্ছে প্রতিদিন সকালে। এর্নাকুলম, কুইলনও যাচ্ছে নানান বাস কোভলম থেকে।



বাস স্ট্যান্ড থেকে সাগরমুখী পথে সাধারণ হোটেলের মেলা বসেছে Kovalam, STD 0471, PC-695527-এ। যতই পথ এতবে সাগরে—রেটও বাড়তে থাকে হোটেলের। পর্যটক সমাগমে রেটের হেরফেরও ঘটে থাকে কোভলমের সাধারণ হোটেল। টুরিস্ট মরসুমের ভারতম্বে বছরটাকে ৩ টুকরো করেছে কোভলমের হোটেল। আগস্ট থেকে নভেম্বর সিজন, ডিসেম্বর-জানুয়ারি পিক সিজন; বাকি বছরটা অফ-সিজন। তবুও সিজনে ১৭৫-২৫০ আর পিক সিজনে ২৫০-৪৫০ টাকায় দু'বেড়ের ঘর মেলা অস্বাভাবিক নয় কোভলমের হোটেল: H Palm Garden, H Deepak, H Sunshine, H Blue Sea, ৩ 480401; H Sun Waves, Raja

H, ④ 480455; H Neela, H Monalisa, Moon Cottage, H Taj, Sreenivas H, H Suriya, লাগোয়া White House, সুন্দর পরিবেশে Apsara Beach Cottage, H Holiday Home, ④ 480497; H Kavitha, H Orion, ④ 480999; Simi Cottages, Beach House, Crab Club, Velvet Dawn Restaurant, Shangrila L, নবতম Bright Resorts, H Shamrock.

বীচ লাগোয়া লাইট হাউসের শিরে—H Rockholm, Light House Rd-695521, ④ 480606, SAB ৮৫০, DAB ৯৭৫; বিপরীতে Shurma Cottages, স্বল্পদূরে সমুদ্রমুখী Varnas Beach Resort, D ৩৫০-৪৫০ পিক সিজনে, ৬০০-৮৫০ পিক সিজনে। অদূরে বীচ লাগোয়া H Seaweed, ④ 480390, DAB ৪৫০-৮০০, A/c ৮৫০-১২০০; H Surya Samudra, ④ 480478; H Neptune, ④ 480222, D ৩২৫-৪৭৫ পিক সিজনে ৪৫০-৮০০; একই মানে একই দামে H Volga; Sea Rock H, ④ 480422, DAB ৬০০; লাগোয়া নারিকেল বীথিকায় ছাওয়া H Thushara, D ৪৬০; লাইট হাউসের দক্ষিণে Sea Flower Home, পিক সিজনে D ৪৫০-৬০০; লাইট হাউস রোডে Eden Seaside Resort; লাগোয়া H Thiruvathira, এসের ঘর সিজনে ৩০০, পিক সিজনে ৪৫০; বীচ লাগোয়া Paradise Rock, D ২০০-৩২৫; হাসপাতালের কাছে Lobster Pot H, D ২২৫-৩৫০, A/c ৬০০; স্বল্পদূরে Neelam H, D ২৫০; বীচ থেকে দূরে Kovalam Tourist Home, D ২৫০, A/c ৪০০; H Palm Beach, H Sea Waves, H Mas, Dwaraka L, H Neelakanta, My Dream Restaurant, H Sea Queen, Beach Belair, Vizhinjam, H Palmanova, Light House Rd-21, ④ 480494, A/c S ২৬-৬০ D ৩০-৭৫ US\$; Kadalaran Beach Resort, Raja Rd, ④ 481115, DAB ৭৫০-১০০০ লাক্সারি ১০৫০-১৮৫০, অব: Classic Travels, 2-3 Stephen House, Cal-1, ④ 2483188; H Shah International, H Karthika.

আর আছে সমুদ্রের পাড়ে রাজ্য পর্বত অর্থাৎ KTDC-র H Samudra, ④ 480089, A/c D অক্টোবর-এপ্রিল ৩৪৯৫ মে-সেপ্টেম্বর ২৮০০; এসেরই আর এক সংস্থা Yatri Nivas. ITDC-র Kovalam Ashok Beach Resort, ④ 480101, A/c S ৩২০০ D ৩৭০০, সাইট ৫০০০ ডিসেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে ৩৭০০ ৪২০০, ১২৫০০, কটেজ S ৪০০০ ৪৫০০ D ৪৫০০ ৫০০০। Somatheparam Ayurvedic Beach Resort, Chowara, ④ 481601, S ১২৫০-৬৫০০; H Soorya Samudra, Nulloor, ④ 480413, S ১২৫০-৫০০০। বাসস্ট্যাণ্ডে ITDC-র Kovalam H ক্যাপাসে PWD-র Govt GH, ④ 480146-এও ঘর মেলে যাত্রীর।

আর আছে Neelakanta H, ④ 480421; Lagoona Beach Resort, ④ 480049; Moonlight H, ④ 480375; Park Lane H, ④ 480058; Swagath Holidays, ④ 481150; Bright Resort, ④ 481210; Royal Retreat H, ④ 481010 ছাড়াও নানান। এমনকি নানান প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়ার কোডলমে। তবুও থাকার জন্য হোটেল সমুদ্র, হোটেল রকহোম, সী উইজ, ওরিনন-এর অবস্থান মাথায় রে আকর্ষণ সর্বত্র। আর বীচ থেকে দূরে হলেও রাজ্য, পায় পার্ভেন ও হোটেল হু সী ভালই। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য Manager, Kovalam, PC-695522-কে লিখুন। থাংবের হোটেলও আছে নানান কোডলমে। লাইট হাউস বীচে সারি নিয়ে হোটেল। আহার্যও মেলে বেশী-মহলেদায়ী ও চীন।

অবশ্য সঙ্গী: ৯৭-৯৮/২৫

ভবে, পরিবেশে লক্ষণগতি এসের। সী বীচে—ভোলগা, ক্রব ক্লাব, কোরাল রীক, সাগ্রিলা, সী রক, রক হোম, রাক ক্যাট, মাই ফ্রিম-এর যথেষ্ট প্রসিদ্ধি পর্যটক মন্থলে। কোডলমে পানীয় জল খেতেও সাবধানতা দরকার। একান্তই উচিত হবে শোশন করে জল খাওয়া। তেমনই উচিত হবে হোটেল বা সোকানপাটে দশালাল পরিহার করে চলা। চোর-ছুরাচোর-ঠকবাজের আখিও যেন কোডলমে। আর সঙ্গী করতে পারেন বাটিক থ্রিট লুপি কোডলম থেকে। তেমনই মেলে থিনুক ও শাঁখের তৈরি নানান জিনিস, ধাতুর মিশ্রণে তৈরি আয়না, ছোবড়ার তৈরি নানান কিছু, ঘর সাজাবার সত্তার, রঙবেরঙের মুখোশ কোডলমের সোকানপাটে।

শহর থেকে ১৬ কিমি উত্তরে করামানা নদীর তীরে জারু-ভিক্সার ওয়াটার ওয়ার্কসও বেড়িয়ে নিতে পারেন। তেরিন লেভন, ভগবতী মন্দির, বাগিচা ও পারিপার্শ্বিক দৃশ্যে চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। থাকার জন্য IB আছে। আবার শহর থেকে ৩২ কিমি দূরে রান্নার বীথটির পরিবেশও কম আকর্ষণীয় নয়। পার্ক হয়েছ, হয়েছ লেক, বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে। প্রতি রবিবার সন্ধ্যায় আলোর সাজ পরে বাঁধ। নান্নার ওয়াইন্ড লাইক স্যাফটমারি, লার্নন সফারি আর কুমির প্রকল্পও পড়েছে এই মধুর পরিবেশকে পর্যটকপ্রিয় করে তুলতে। হাতি, গৌর ছাড়াও নানান জন্তু চরে বেড়ায় নান্নার-এ। উৎসাহীরা বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে গিয়ে। কনডাক্টেড টুরের বাসও দেখিয়ে আনে নান্নার। নান্নার থেকে ৩২ আর তিরুভনন্তপুরমের ৬১ কিমি দূরে বোনাকাদু হয়ে সহ্যাদ্রি পর্বতে অগস্ত্যকোদাম বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। থাকারও ব্যবস্থা আছে—The Project House, Neyyar Resort-এ, অব: E.E. Irrigation Division, Thiruvananthapuram or Neyyar Dam. আর আছে KTDC-র হোটেল Agasthya House, Neyyar Dam, A35R30B30, Thiruvananthapuram-520660, ④ (91-471) 520660, A/c S ২৫০ D ৩০০।

পোনমুড়ি

তিরুভনন্তপুরম দশকদের একান্তই উচিত হবে পোন অর্থ সোনা আর মুড়ি হচ্ছে পাহাড় অর্থাৎ সোনার পাহাড় পোনমুড়ি বেড়িয়ে নেওয়া। তিরুভনন্তপুরম থেকে ৫৬ কিমি উত্তরে ৩০০০ ফুট উঁচুতে পার্বত্য স্বাধ্যনিবাস পোনমুড়ি। পোনমুড়ির নৈসর্গিক শোভাও অনবদ্য। অসংখ্য পাহাড় চূড়া চক্রাকারে আকাশ খুঁড়ে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। সূর্যোদয়ে সোনা করে সারা পোনমুড়ি পাহাড়ে। চা ও রবার বাগিচার ছাওয়া সবুজের গালচের মোড়া স্টেট রজা পাহাড় ডেউ তুলে ছুটে চলেছে যেন। সকাল-সাঁঝে চেনা-অচেনা নানান পারিবার কলকলি পরিবেশকে মধুর করে তোলে। তবে, নিরালা-নির্জনে সোকানপাটের অভাব, বসতিও নেই পোনমুড়ির টুরিস্ট কমপ্লেক্সে। যথেষ্ট যাত্রীর সমাগমে KTDC-র প্যাকেজ টুরে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। বাস ও ট্যাক্সিতেও চলা যায় তিরুভনন্তপুরম থেকে পোনমুড়ি। তিরুভনন্তপুরম থেকে ৫-৩০এ প্রথম ছেড়ে ১৮-১০এ শেষ বাস বাচ্ছে পোনমুড়ি। আর পোনমুড়ি থেকে ৭-৩০এ প্রথম, ২০-৪০এ শেষ বাসটি ছেড়ে আসে তিরুভনন্তপুরমের। ১টি বাস বাচ্ছে দিনভর। তবু যেন উচিত হবে ১-৩০টার তিরুভনন্তপুরম ছেড়ে ২

থলসেরীর। কোল্লম থেকে বাসে ১০ কিমি দক্ষিণে ৯টি মন্দিরের জন্য খ্যাত মায়ানাদ-ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। ১১ কিমি দূরে Chavara-তে ভারত-নরওয়ের যৌথ উদ্যোগের মৎস্য প্রকল্পটির পর্যটক আকর্ষণও অনস্বীকার্য।

কুইলনের আর এক আকর্ষণ তার কাজুবাদামের কারখানা। টাইলস ও সিরামিক শিল্পেও যথেষ্ট খ্যাত কুইলন। পর্যটকদেরও উচিত হবে দেখে নেওয়া। তবুও যেন প্রকৃতির সাথে মিলে-মিশে দু'একদিন পায়ে পায়ে বেড়িয়ে কাটাবার মনোরম স্থান কুইলন। রিকশা, অটো, ট্যাক্সি ও বাস চলছে শহরে।



পান্ডাত্য প্রধার *H Neela, Cantonment, Kollam-691001; কুইলনে অন্যতম H Shah International, Tourist Bungalow Rd, R1B1, ৩ 742362, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩০০ D ৩৫০ সুইট ৬৫০; বাস ও জেটির সন্নিকটে H Sudarshan, Parameswar Nagar-1, ৩ 75323, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২২৫ A/c S ২৫০-৩৫০ D ৩২৫-৪৫০ সুইট ৪৫০-৬৫০।

ভারতীয় প্রধার—*H Karthika, Paikada Rd-1, R1, ৩ 76240, SAB ৮৫ DAB ১৭৫ A/c D ৩০০-৪৫০; H Suprabhatam, near Clock Tower, DAB ১৫০; Everest, Jetty Rd, বাস ও জেটির কাছে H Sea Bee, Jetty Rd-1, R1½, ৩ 75371, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A/c S ২২৫ D ৩৫০ সুইট ৪৫০; H President, Xavier's H, Boat Jetty Rd; H Original, H Gurupras, S ৬৫ D ১২৫। অদূরে Main St-এ—Sika L, S ৪৫ D ৮০; Iswarya L, SAB ৮৫ DAB ১০০-১৭৫ A/c S ২২৫ D ৩২৫; H Apsara, Samos L, এসের ঘর S ৪০-৬৫ D ৬০-১২৫ টাকায় মেলে। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে Mahalakshuni L, S ৬০ D ১০০; রেল থেকে ১ কিমি দূরে H Vrindhanam, KSRTC Jn, Punalur-691305, S ১২৫ D ১৭৫ A/c D ৩০০; H Prasanth, Beach Rd, ৩ 742292, S ১৭৫ D ২৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; H Check Mate, ৩ 204731; H Jaladarshini, ৩ 203414 ছাড়াও হোটেল আছে নানান। আর আছে KTDC-র Yatrivivas, Kollam, R1½ B1½, ৩ (91474) 745538, S ১০০ ১৫০ D ১৫০ ২০০ A/c S ৩৫০ D ৪০০ ছয় বেডের ঘর ৩০০; Govt GH, ৩ 76456, অব: DC, Kollam-691001। শহর থেকে ৩ কিমি দূরে অষ্টমুড়ি লেকের পাড়ে বাগিচায় ঘেরা অতীতের ব্রিটিশ রেসিডেন্সিতে বসেছে Tourist Bungalow, আহার্যও মেলে ক্যান্টিনে, অব: Steward-in-Charge; ট্যুরিস্ট অফিসটিও বাংলা লাগোয়া। তবুও থাকার জন্য শাই ইন্টারন্যাশনাল, কার্ভিকেম, সুন্দরন, যারী নিবাস বা ট্যুরিস্ট বাংলাে অন্য। নানানযারী আহার্যও মেলে কার্ভিকেম ও সুন্দরনে। তেমনই মৌন ট্রিটের ঐশ্বর্য, আজাদ হোটেল ও হোটেল ওরঙ্গাসের যথেষ্ট প্রশস্তি নিরামিষ আহার্য পরিবেশায়। মৌন ট্রিটের Indian Coffee House-টিও সদাই ব্যস্ত; রন্ধনটিওয়ারের কাছে Suprabatham Restaurant-টিরও দক্ষিণ ভারতীয় আহার্য সুনা আছে।

আলাপুজা/আলেঙ্গি

কেমল ৬৩, কুইলন ৮৪ আর তিরুবনন্তপুরমের ১৪৭

কিমি দূরে আলেঙ্গি। আলেঙ্গিরও নামের বদল ঘটে আজ হয়েছে আলাপুজা (Alappuzha)। কুইলন থেকে বাসেই চলে আসে। মুম্বাই বাসও মেলে ত্রয়ী থেকে। আর যাচ্ছে ট্রেন নবতম ব্রডগেজ রেল মালাবার কোস্ট ধরে এর্নাকুলামে। বোকরো সিল সিটি-আলেঙ্গি এর, আলেঙ্গি-চেন্নাই এর যাচ্ছে আলেঙ্গি থেকে। তিরুবনন্তপুরমের বাসও যাচ্ছে আলেঙ্গি হয়ে। লঞ্চও যাচ্ছে। সকাল ও সাঁঝে বোট যাচ্ছে কুইলন থেকে আলেঙ্গির। ডিলাভ বোট যাচ্ছে ১১৫ দিন (Alappuzha Tourism Dev Co-op Society, Karthika Tourist Home) ১০-০০টায় আলেঙ্গি ছেড়ে ১৮-০০টায় কুইলনে। চাঁদনি রাত্রে ব্যাক ওয়াটারে ৮½ ঘণ্টায় এই জলবিহার যেমন চিত্তাকর্ষক তেমনই রোমাঞ্চকর। ৭½ ঘণ্টায় কোচিও যাচ্ছে ফেরি বোট আলেঙ্গি থেকে। ভেখানাদ লেক পেরিয়ে কোট্টায়াম যাচ্ছে ২½ ঘণ্টায় ডজনখানেক ফেরি বোট। কুমারাকোম যাচ্ছে KTDC-র বোট আলেঙ্গি থেকে। বোট জেটি ও বাস স্ট্যান্ড দুইয়েরই অবস্থান কাছাকাছি আলেঙ্গিতে।

Ala অর্থ ঝাল, ppuzha হচ্ছে নদী অর্থাৎ ঝাল-নদী-খাঁড়ি আর উপহ্রদের দেশ আলেঙ্গি। নারকেল বাঁধিকায় ছাওয়া ব্যাক ওয়াটারের দেশ। প্রাচ্যের ভেনিস নামে খ্যাত। সমুদ্র বেড়া ভেঙে ঢুকে পড়েছে আলেঙ্গিভূমে। গহীন বনের মাঝে ছোট ছোট বাড়িঘর। ঘর্মে ব্রিস্টান হলেও আহার-বিহারে মাল্যালম এর। কেরলের অন্যতম রমণীয় শহরও এই আলেঙ্গি। নারকেল তেল, কয়ার ইনডাস্ট্রি ও মশলা শিল্পকেন্দ্রিক শহর আলেঙ্গির ঘরোয়া শিল্প। ঝাল কেটে জলপথে বোট চলছে শহরের বুক বেয়ে। আবহাওয়া জলাভূমি বা ব্যাক ওয়াটারে সৃষ্ট ভেখানাদ লেক ভারতের বৃহত্তম লেক। মনোহর লেকে পাখিরামানাল দ্বীপ—লঞ্চ ভ্রমণ সেও এক রমণীয়। আলেঙ্গির সাগরবেলা ও প্রাচীন হিন্দুমন্দিরটিও দর্শনীয়। আর আগস্ট মাসের দ্বিতীয় শনিবার পম্পা নদীতে ১০০ দাঁড়ওয়ালা ব্লেক বোট রেস সারা বছরের বিমুনি ভাঙিয়ে মাতিয়ে তোলে আলেঙ্গিকে। লোমহর্ষক এই প্রতিযোগিতা সাপেদের ছড়ে নিয়ে বলমলে সাজে সজ্জিত হয়ে শতাধিক নৌকা নেহরু ট্রফি জেতার নেশায় মেতে ওঠে। দূর-দূরান্ত থেকে দর্শক আসেন—আসেন পর্যটক আলেঙ্গির ব্লেক বোট রেসে। চিত্রিত প্রধার দর্শনের ব্যবস্থা। দর্শনার্থীদের উচিত হবে আহার্য ও পানীয় জল সঙ্গে নেওয়া। সম্ভব হলে একটি ছাটাও সঙ্গে নেওয়া ভাল।

তেমনই কুইলনের পথে ৪৭ কিমি বেতে স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে অনুপম কৃষ্ণপুরম প্রাসাদটিও দেখে নেওয়া যায়। মিউজিয়ম ও কেরলের বৃহত্তম ম্যুরাল চিত্রটি উচিত হবে দেখে নেওয়া প্রাসাদে। ১৪ কিমি দূরে অশ্বালাপুজার শ্রীকৃষ্ণ মন্দির, ২২ কিমি উত্তরে সেট অ্যান্ড্রুজ চার্চ, ছেট্টুকুলাঙ্গার ভগবতী মন্দির, ৩২ কিমি দূরে মাল্লালাঙ্গাল নাগ মন্দিরও দেখে নিতে পারেন অভ্যুৎসাহীরা।



বাল ও জেটি দুই-ই থেকে হাঁটা দূরত্বে নানান হোটেল Alappuzha (Alleppey)-688010, STD 0477-এ। বাস থেকে ১ কিমি দক্ষিণে St George's Lodging, CCNB Rd, ৫ 61620, SCB ৪০ DCB ৭৫ SAB ৭০, DAB ১২৫। আরও ১ কিমি দক্ষিণে এম সি হাসপাতালের কাছে H Raibon Tourist Home, ৫ 251930, SAB ১৭৫ DAB ৩৫০, A/c D ৪৫০-৬৫০। জেটির উত্তরে খাল পেরিয়ে H Komala, ৫ 243631, SAB ১২৫ DAB ১৫০-৩০০, A/c S ৪০০ D ৫৫০ সুইচ ৮৫০; বিপরীতে Municipal R H, DAB ৮০; Karthika Tourist Home, ৫ 245624, D ১২৫-১৭৫। আরও উত্তরে কোচিঙ্গা বি-ভারকাসম *Prince H, A S Rd-688007, ৫ 243752, B2½, A/c S ৬০০ D ৭৫০ সুইচ ৯৫০-১২৫। Brothers Tourist Home, S ৬০ D ১০০-১২৫ T ১৫০, A/c D ২৫০; Narasimhapuram L, Collen Rd, D ১২৫-১৫০, A/c D ৩৫০; Sheeba L, S ৬০ D ১০০; Kadambari Tourist Home, S ৬৫ D ১২৫ T ১৭৫; Nellai T H, Matha Tourist Home. সেন্ট জর্জের পথে মন্দিরের বিপরীতে Dhanalakshmi L, অদূরে Raja Tourist Home; কাছেই H Westland. বাস ও জেটির মাঝে Kuttanadu Tourist Home, ৫ 251354, DAB ১৭৫-২২৫ A/c D ৩৭৫; Sree Krishna Bhavan L, SAB ৪৫ DAB ৮৫; Mahalakshmi L. KTDC-র Motel Arram, S ১০০ D ১৫০ A/c S ২৫০ D ৩০০। আলেগিজে। Kayalarom Lake Resort, ৫ 242040; H Bonie, A S Rd, ৫ 243752; Motel Aarannam, A S Rd, ৫ 244460; Coconut Palm, Thottapally, ৫ 836251; Govt G H, Beach, ৫ 243445; Nowroji Boarding, Way Side Inn; H, Ashoka ৫ 251020, ছাড়াও নানান হোটেল আছে আলেগিজে। তবুও থাকার জন্য—কুট্টানাদ, হোটেল কমলা, মিউনিসিপ্যাল রেস্ট হাউস, সেন্ট জর্জের পল্লি, প্রিন্স হোটেল অগ্রাধিকার পাবে। আর খাবারের জন্য উত্তরে কমলা হোটেলের Arun Restaurant, দক্ষিণে ইন্ডিয়ান কফি হাউস; Culton Rd-এ সস্তায় ননভেজ রিসের জন্য Rajas H, Kream Korner Restaurant দেখা যেতে পারে। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে জেটি রোডে KTDC-র Sabala, ৫ 251796-ও আহায়ে রমণীয়।

কেট্টায়াম



ভিরুভনত্তপুৰম-এর্নাকুলম-মিচুর-সোয়ানুর রেল পথে নীলগিরি পাহাড়ের পাদদেশে কেট্টায়াম স্টেশন। পশ্চিমের ব্যাক ওয়টার ও পূর্বের পশ্চিম ঘাটের যোগসূত্র গড়েছে কেট্টায়াম। কিছুকাল আগেও রাজধানী ছিল Thekkumkur রাজার কেট্টায়াম। চেন্নাই-ভিরুভনত্তপুৰম মেল, মুম্বাই-কল্কাতারি এর, যাদালোর-ভিরুভনত্তপুৰম মালবার এর/পন্নওরাম এর, কান্নানোর-ভিরুভনত্তপুৰম এর, সোয়ানুর-ভিরুভনত্তপুৰম ডেনাল এর, এর্নাকুলম-ভিরুভনত্তপুৰম ডানডিনাল এর ছাড়াও নানান ট্রেন বাছো কেট্টায়াম হয়ে। ট্রেন বাছো ২ ঘণ্টার ১৬ কিমি দূরের কুইলন; ১½ ঘণ্টার কোচি, ৩½ ঘণ্টার ভিরুভনত্তপুৰমে কেট্টায়াম থেকে। নিকটতম বিমানবন্দর কোচি। তবুও যেন বাতারাতে ফেরি বোট রমণীয়। ফেরি বোটেই চলুন আলেগি থেকে কেট্টায়ামে। ডজনখানেক বোটও চলে ভোর থেকে

গভীর রাতে। ব্যাক ওয়টারের জলে ভেসে ২৯ কিমি জলপথে ২½ ঘণ্টার এই বোট-বিহার বৈচিত্র্যের স্বাদ আনে। এমনকি কোচিও যাচ্ছে ফেরি বোট ৯ ঘণ্টার কেট্টায়াম থেকে। বোট যাচ্ছে কোল্লামও কেট্টায়াম থেকে। চাঁদনি রাতে ব্যাক ওয়টারে বোট চলা যেমন রমণীয় তেমনই চিত্তকর্ষক। শহরের কেন্দ্রস্থলে বাস স্ট্যান্ড। রুম্মুথ বাস যাচ্ছে কুইলন, কোচি ও ভিরুভনত্তপুৰমে। বাস যাচ্ছে ৪ ঘণ্টার পেরিয়ার (৭ বাস), ৭ ঘণ্টার মাদুরাই (৪) ছাড়াও রাজ্যের দিকে দিকে কেট্টায়াম থেকে। বোট জেটি থেকে ১ কিমি দূরে শহরের কেন্দ্রস্থলে লোকাল ও ইটার স্টেট বাস স্ট্যান্ড কেট্টায়ামে। রেল স্টেশন ২ কিমি দূরে সেন্দ্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে।

ভেদানাদ লেক ও খালবিল হয়ে পথ গিয়েছে আলেগি থেকে কেট্টায়ামে। বর্ষাকালে লেক আর চারপাশ মিলে ৭৭৭ বর্গ কিমি জুড়ে জল শুধু জল। নাম তার কুট্টানাদ (Kuttanad) লেক। কেরলের মধ্যে সাক্করের হারও কেট্টায়ামে বেশি। ভারতে প্রথম লেখক সমবায় সংস্থারও জন্ম প্রাচ্যের রোমনগরী, পেরিয়ারের গেটওয়ে কেট্টায়ামে। খ্রিস্টান মিশনারিদের অধিকা কেট্টায়ামে। ল্যান্ড অব লোটাস, ল্যাটেক্স অ্যান্ড লেকস—কেট্টায়ামে। রেল স্টেশনের ৫ কিমি উত্তর-পশ্চিমে সুন্দর দেয়াল চিহ্নে শোভিত সেন্ট ম্যারিস সিরিয়ান চার্চটি অনবদ্য। জনশ্রুতি, সেন্ট টমাসের তৈরি চার্চের উত্তরসূরী এটি। বৃষ্টির আধিক্য পর্ণমোচী ও চিরহরিৎ অরণ্যে ছাওয়া বাণিজ্যিক শহর কেট্টায়ামে চা, কফি, কোকো, গোলমরিচ, এলাচ, রবারের চাষ হচ্ছে।



হোটেলও আছে Kottayam, STD 0481, PC-686001-এ। বাস স্ট্যান্ডে: Home Stead H, ৫ 560467; Anuragh L, H Surya. বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে—H Aida, MC Rd, Kottayam-39, ৫ 568391, SAB ২৫০ DAB ৪০০ A/c S ৩৫০ D ৫০০ সুইচ ৭৫০; Sakthi Tourist Home, Baker Jn, ৫ 563151, DAB ২০০ A/c ৩২৫; Ashoka L, H Swagath, H Arcadiya, H Vinand, Rajdhani H, H Prince, ৫ 578809; Casino L, H Sonia, Malayasia Tourist Home, Priya L. শহরান্তে ৫ কিমি দূরে Vembanadu Lake Resort, Kodimatha, ৫ 564866; H Floral Park, Medical College, S ৮০ D ১৫০ A/c D ২৫০। রেল স্টেশনের অদূরে H Sear, D ১২৫-১৭৫; H Triveni, T B Rd-1, S ৬০ D ১৫০ সুইচ ২২৫ A/c S ২৫০ D ৩২৫ সুইচ ৪২৫; *H Ambassador, K K Rd-1, ৫ 563293, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ২৫০ D ৩২৫, থাকার পক্ষে ভালই; *Anjali H, K K Rd-1, ৫ 563984, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইচ ১২৫০; *H Greenpark, Nagampadam-1, ৫ 563311, R/B½, S ৩০০ D ৪২৫ A/c S ৪০০ D ৪৭৫ সুইচ ৬৫০-৮৫০; Udiippi L, Sastri Rd, ৫ 562911, D ৮০-১২৫ A/c D ২২৫; H Nithya, Gandhi Ngr, D ২০০ A/c ৩২৫; *Vani H, Changancherry-686101, ৫ 422403, S ২৫০ D ৩৫০ সুইচ ৪৫০ A/c ৩৫০/৪৫০/৬৫০; Kaycees L, YMCA Rd, S ৬০ D ১০০; H Nisha Continental, Stn Rd, ৫ 563984, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৪২৫। ৫ কিমি দূরে পাছাড়া টতে KTDC হোটেল গড়েছে H Aiswarya, Thirunakkara, Kottayam-686001, ৫ (91481)

581254, R2B2, S ১৫০-২২৫ D ২০০-২৭৫ A/c S ৪০০-৬০০ D ৫০০-৭৫০। আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম, Govt GH, ৩ 562219; PWD RH, ৩ 568147; YMCA, ৩ 560541; YWCA, ৩ 560188 কোট্টায়ামে।

আহাৰ্বেৰেও নানান ব্যবস্থা—তবুও যেন KK Rd-এ Hotel Vysak-এ নন-ভেজ; রেল স্টেশনের Refreshment Room-এ ভেজ ও নন-ভেজ ভালই।

তবে, কোট্টায়ামে থাকার দরকার হয় না। বাসে চলুন বন্যজন্তু দেখতে টেক্কাডি অৰ্থাৎ পেরিয়ারে। অরণ্য চিহ্নে পাছাড় বেয়ে বাস চলে চা বাগিচার মাঝ দিয়ে—রোমাঞ্চে ভরা এপথে চলা। আবার কোচি থেকে সড়কপথে ঘণ্টা দেড়েকে থান্নিরমুক্কম পৌঁছে বোটো কুমারাকোম চলা যেতে পারে। সরাসরি মোটর চালিত বোটো মেলে কোচি থেকে কুমারাকোমের।

উৎসাহীরা কোট্টায়ামের ১৫ কিমি পশ্চিমে ভেছানাদ লেকের ব্যাক ওয়াটারে কুমারাকোম টুরিস্ট কমপ্লেক্স তথা পক্ষী আলয়টিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ৪০ একর ব্যাপ্ত অতীতের রবার বাগিচায় অন্তর্নিত জল মোরগ, কেকিল, পাতিহীস দেখতে মেলে। এমনকি সুদূর সাইবেরিয়া থেকে সারসও আসে কুমারাকোমে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। নানান ধর্মী হাউস বোটো ভাড়াই মেলে।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে মোটর যুক্ত চলমান Kettuvalloms তিন হাউস বোটো KTDC-র Kumarakom Tourist Complex, ৩ (91481) 524258। অক্টোবর-মে ও আগস্ট-সেপ্টেম্বর মাসে S ১১০০ ১১৫০ A/c ১১৫০ ১১৯৫ D ২০০০ ২২০০ A/c ২২০০ ২৩০০ সুইট ২৩৯৫, জুন-জুলাই মাসে ৭০০ ৯০০ A/c ৯০০ ১০৫০ D ১০০০ ১১০০ A/c ১১০০ ১১৫০ ২১০০।

আর আছে ধারাওয়াড অৰ্থাৎ কেরলীয় শৈলীর কাল্পনিক অভিনব কাঠের বাড়ি-ঘর সারা রাজ্য থেকে খুঁজে এনে ১০ একর জুড়ে ছড়িয়ে ছিটিয়ে গড়া Casino Hotel Group's Coconut Lagoon Heritage Resort, Kumarakom, Kottayam-686563, ৩ 048192491, এমের ম্যানসনে: নীতে S ৭০ D ৮০ গ্রীষ্মে ৫৫/৬৫, বাংলাদেশ: নীতে S ৬০ D ৭৫ গ্রীষ্মে ৫০/৬০ US\$। রিসর্টের আর এক আকর্ষণ আয়ুর্বেদিক ম্যাসাজ। নানান ব্যাধির উপশম মেলে ভেজ ভেলের ম্যাসাজে। আর হয়েছে পাথিরালয়ের কাছে অেকার সাহেবের বাগেয়ার তাজ গ্রুপের Taj Garden Retreat, কুমারাকোমে। তেমনই চলা যায় ভেছানাদ লেকের জলে ভেসে যেতে নীপ পাবিয়ার্মানাল অৰ্থাৎ মধ্যরাতের বালুকা বানিজ্য নীপে। প্রতি রবিবার সার্ভিস বোটো চলে কুমারাকোম থেকে।

পেরিয়ার ওয়াইল্ড লাইফ স্যাকুফ্যারি

কোট্টায়াম থেকে দিনে ৪ ফ্রন্টপায়ী বাস বাসে ৭ ঘণ্টার মাদুরাই-এ—কুমিলি অৰ্থাৎ টেক্কাডি (পেরিয়ার) হয়ে। এ-ছাড়া, টেক্কাডির বাসও মেলে কোট্টায়াম থেকে ৪ ঘণ্টার দিনে ৭, দুপুর ১১৮ কিমি; বাসেই চলুন টেক্কাডি। বড় এলাচ, গোলমরিচ, রবার, ককি বাগিচার মাঝ দিয়ে পথ—পাছাড় চড়তে চা-বাগিচা। দারুচিনি, জারকল, লবঙ্গ, আদাও হচ্ছে এপথে। পথশোভা নয়নাভিরাম। বাস আসছে ১৬০ কিমি

দূরের মাদুরাই থেকেও টেক্কাডি অৰ্থাৎ পেরিয়ার বন্যজন্তু বিচরণভূমির। মাদুরাই থেকে টেক্কাডি পৌঁছেও কেরল ভ্রমণ শুরু করা যায়। পেরিয়ারের সহজতম পথটিও মাদুরাই হয়ে। এমনকি দিনের একমাত্র বাস সংযোগ গড়েছে কোচি থেকে পেরিয়ারের। ডিরুভনন্তপুরম ও এর্নাকুলাম (কোচি) থেকেও নিয়মিত বাস আসছে টেক্কাডিতে। তেমনই মাসের শেষ শনিবার ছাড়া প্রতি শনিবার KTDC-র ২ দিনের প্যাকেজ ট্রায়ে ডিরুভনন্তপুরম বা কোচি (৩৫০/৩০০) থেকে পেরিয়ার দেখে নেওয়া যায়। আবার এর্নাকুলাম থেকে ঘণ্টা দু'য়েকে কোট্টায়াম এসেও নতুন করে এক বাসে তামিলনাড়ু সীমান্তে কোট্টায়াম-মাদুরাই সড়কের কুমিলি (পেরিয়ার লাগোয়া গ্রাম) পৌঁছেও চলা যেতে পারে লোকাল বাসে ডানহাতি ৪ কিমি দূরের টেক্কাডি অৰ্থাৎ পেরিয়ারে।

পেরি অৰ্থাৎ বড়, আর হচ্ছে নদী। তবে, পেরিয়ার বলতে সমগ্র অরণ্যভূমি, আর টেক্কাডি হচ্ছে পেরিয়ারের হোটেল, অফিস ও বাসের সংযোগস্থল। তেমনই টেক্কাডির আর এক আকর্ষণ ইন্দ্রিয়া গান্ধী হাইড্রোইলেকট্রিক প্রোজেক্ট।

কুমিলি: তামিলনাড়ু সীমান্তে কোট্টায়াম-মাদুরাই সড়কে কেরল ছুঁতে ৩০০০ ফুট উঁচুতে কুমিলির অবস্থান। কুমিলির অন্যতম আকর্ষণ পেরিয়ারের সড়ক সংযোগকারী শহর রূপে। তেমনই কুমিলির মশলার আকর্ষণও উল্লেখ্য। সহ্যাদ্রি পর্বতে জাত এলাচ, দারুচিনি, গোলমরিচ বিকোচ্ছে দোকানপাটে। দাম ও মান দুই-ই আকর্ষণীয়। উচিতও হবে ঘরপানে সঙ্গী করা।



কুমিলি শুরুতেই Kumily-685585-তে Lake Queen Tourist Home, Thekkady Jn, ৩ (04869) 22084-6, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-১৫০। বিপরীতে KTDC-র Information Centre; ইন্ডের মাঝ দিয়ে পথ গিয়েছে Kumily-Thekkady Rd. আর আছে দোকানপাটের মাঝে সাধারণ সাজে D ৮০-১২৫ টাকার লজ—Rani, Nice, Mini, Kavitha, Italia, Everest; বাস স্ট্যান্ডে Muckumkal Tourist Home, ৩ 22070, DAB ১৫০-২০০ A/c D ৩৫০-৪৫০; H Sreekumar ও Holiday Home, ৩ 22016. থাকার জন্য Lake Queen ও আহাৰ্বে KTDC-র Sabala-র আকর্ষণ সর্বাঙ্গে।

Kumily-Thekkady Rd-685536, Dist-Idukkiতেও হোটেল হয়েছে নানান—Roxley Tourist Home, ৩ 22081; Woodlands Tourist Bhavan, ৩ 22077, DAB ১২৫; আহাৰ্বে ব্যবস্থা নিয়ে KTDC's Motel Sabala; আরও যেতে Casino Group's H Spice Village, ৩ 22315, নীতে: S ৬৫ D ৮৫, গ্রীষ্মে: S ৫০ D ৬৫ US\$; H Ambadi, ৩ 22194, কটেজ ৪০০-৮৫০, ব্যবস্থাপনা ভালই। গ্রাহিতে Tourist Office-ও বলেছে খাবী আকর্ষণ বাড়তে অবধি হোটেল। অল্পে Coffees Inn লাগোয়া এমেরই Wild Hua-এ ঘর মেলে থাকার। ঘর থেকে Lanka Pankaj Resort, ৩ 22299; Ambika Tourist Home, ৩ 22004, SAB ৮০ DAB ১৫০। PWD-র Rest House, IB-ও আছে কুমিলিতে।

প্রতিদিন সকাল ৮-০০টা থেকে ঘটায় ঘটায় নিমন্তর Tiger

Project-এর মিলিবাগ বাহে কুমিলি বাস স্ট্যান্ড থেকে পেরিয়ারে। দু'পাশায় নানান বাসও বাহে কুমিলি হয়ে টেকাডি অর্থাৎ পেরিয়ারে। অটো, ট্যাক্সি, রিক্সা বাহে কুমিলি থেকে পেরিয়ারে। পায়ে হেঁটেও পাড়ি নিচ্ছেন নানান যাত্রী কুমিলি থেকে ৪ কিমি দূরে পেরিয়ারে। প্রথম ১ কিমি জুড়ে বসতি, সোকনপাট, হোটেলের অবস্থান। ১ কিমি যেতে Periyar Wildlife Sanctuary-র চেকপোস্ট। বাস তথা বাস স্ট্যান্ড আরও ৩ কিমি দূরে পেরিয়ার অঙ্গরে অরণ্যনিবাসে। নির্ভীক রেল স্টেশন কোট্টায়াম ১১৩ কিমি আর বিমানবন্দর মাদুরাই ১৪০, কোচি ২৬৬, তিরুভনন্তপুরম ২৫৩ কিমি। আর, পীড়মডি (Peermedu) দূরত্ব ৩৬, পেনমুড়ি ৩১, কন্যাকুমারি ৩৪০ কিমি টেকাডি থেকে। কুমিলি-কোট্টায়াম পথে চারের শহর পীড়মডি-ও এক বাহ্যিক স্থান। কুমিলি থেকে ৩২, কোট্টায়ামের ৭৯ কিমি দূরে কলাগাছ হাওয়া ৩০০০ ফুট উঁচু শৈল শহর পীড়মডিতেও হোটেল আছে—Apsara, Himarane, ③ 32288; Bushland, Govt GH, ③ 32071; KTDC's Motel Aaram, S ১০০ D ১৫০ ছাড়াও নানান। তেমনি অত্যাশ্চর্য কোট্টায়াম-এর্নাকুলাম সড়কে কোট্টায়াম থেকে ৪০ আর এর্নাকুলামের ২৯ কিমি দূরে ভাইকুম-এর শিব মন্দিরও দেখে নিতে পারেন। কিংবদন্তী, কেরল ব্রহ্মা পরওয়ারমের তৈরি মন্দির। নভেম্বর-ডিসেম্বরের ২১ দিন ব্যাপী পঞ্চাবাসম উৎসবেরও প্রস্তুতি আছে। ৩ কিমি উত্তরের লড় কার্তিকের মন্দিরের কাঠের কার্তিক ও স্থাপত্য অনবদ্য। আবার কুমিলি থেকে শ'দূরে টাকায় ১৮ কিমি পাছাড়ী পথে সুন্দর পরিবেশে ধ্বংসপ্রাপ্ত মল্লাদেবীর মন্দিরটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় জিগে।

৯°১৮'-৯°৪০' উত্তর অক্ষাংশ ৭৬.৫৫-৭৭.২৫ পূর্ব দ্রাঘিমাংশ সহায়ী পর্বতে ৯০০-২০০০ মি উচ্চতায় তামিলনাড়ু সীমান্তে টেকাডি জেলায় ৭৭৭ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে পেরিয়ার ওয়াইল্ড লাইফ স্যাকুয়ারি—পেরিয়ার লেককে মধ্যমণি করে। অতীতে, ১৮৯৫এ কেরলের দ্বিতীয় বৃহত্তম নদী পেরিয়ারে বাঁধ দিয়ে কুমি ও জলবিদ্যুৎ তৈরির কাজে জল দিতে ৪৬ মি গভীর ২৬ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত লেকটি কাটা হতে স্যাকুয়ারি গড়ে তোলেন ব্রিটিশদের মহারাজা পেরিয়ারে। নাম হয় তার নেলিয়ামপাটি স্যাকুয়ারি। ১৯৫০এ আয়তন বেড়ে নামান্তর ঘটে হয় পেরিয়ার ওয়াইল্ড লাইফ স্যাকুয়ারি। আর ১৯৭৮-এ প্রোজেক্ট টাইগারের শিরোপা চেপেছে পেরিয়ারের শিরে। কোর এলাকা তার ৩৫০ বর্গ কিমি।

অরণ্যনিবাস থেকে মোটর লঞ্চ, বোট বা ডিঙি নৌকায় পেরিয়ার লেকে বিহারের ব্যবস্থা। নীলাকাশের নিচে স্বচ্ছ হ্রদের জল, দু'দিকেই ঘন-বুনট কালচে-সবুজ বন—তাকে ঘিরে প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে পাছাড়প্রাণী। উচিতও হবে ৭-০০টার লঞ্চ ট্রিপে ২ ঘণ্টার লেক বিহারে ৩০ টাকায় জলবানে রসেই বনচরদের দেখে নেওয়া। এছাড়াও লঞ্চ বাহে ৭-১৫-০০টার প্রতি ২ ঘণ্টায়। ভাড়া—লোয়ার ডেক ৩৫ আগার ডেক ৬০। ভাড়া আর অধিকা লাগলেও লঞ্চে রিটল থেকে জন্তু দেখার সুবিধা। এছাড়া জেটি হাটের Wildlife Office থেকেও বোট বিহারের ব্যবস্থা মেলে। এককভাবেও

লঞ্চ মেলে ভাড়া—১৫ যাত্রীর ৩৫০, ৬০ যাত্রীর ৬০০ টাকায়। নরনলোভন এদৃশ্য সত্যিই অতুলনীয়। ২ যাত্রী নিয়ে হাতিও বাহে ২ ঘণ্টার সফরে ৪০ টাকায়। সারা বছর চলা গেলেও বেড়াবার মরসুম সেপ্টেম্বর থেকে মে মাস—তবে, ফেব্রুয়ারি থেকে মে মনোরম। বৃষ্টির আধিক্য আছে—বছরের গড় ২৫০০ মিমি।

গ্রীষ্মে দলে দলে হাতিরা আসে লেকের পাড়ে—কখনও মান করে আবার কখনও সাঁতার কাটে লেকের জলে। খুবই চিত্র-মনোহর সে দৃশ্য। মাছ পেতে ফাঁদ পাতে ভোঁদাডেরা। চিত্রবিচিত্র পেরিয়ারের রক্ষণও চলতে ফিরতে দেখা মেলে জলেহলে। সকাল-সন্ধ্যায় শব্দরও আসে লেকের পাড়ে জল খেতে। বৃহদাকার গৌর অর্থাৎ বাহিন, বন্য মহিষ, বন্য কুকুর, বন্য শুয়োর, হরিণ, প্যাছারও রয়েছে অশুনতি। কেউটে, চম্র-বোড়া ছাড়াও নানান ধর্মী সাপেরও দর্শন মেলে পেরিয়ারে। এমনকি বাঘ (৪০), চিতাবাঘেরও দেখা মেলা অস্বাভাবিক নয় পেরিয়ারে। তেমনিই গাছ থেকে গাছে দাপিয়ে বেড়ায় কালো কালো ছোট্ট লেজুর অর্থাৎ বানরেরা। সিংহপুচ্ছ সাদামুখো কালো হনু বা ম্যাকাক-এরও দর্শন মেলে জঙ্গলের অঙ্গরে। ধনেশ, ভীমরাজ, পাগিয়া, কাঠঠোকরা, মাছরাঙা, সারস ছাড়াও চেনা-অচেনা নানান পাখি নীড় বাঁধে লেকের পাড়ে গাছের শাখে। সূর্যাস্তে গাছ থেকে গাছে উড়ে চলে উড়ছ কাঠবেড়ালি বা ফাইং ফুইরেল। বছরের জুন ও অক্টোবর মাস ছাড়া অনুমতি নিয়ে শিকারেরও ব্যবস্থা আছে পেরিয়ারে।



কুমিলি থেকে ১ কিমি যেতে চেকপোস্ট, আরও ৩ কিমি পেরিয়ার অঙ্গরে লেকের ধারে KTDC-র Aranya Nivas H, Thekkady, Dist: Idukki-685536, ③ (04869) 22023, SAB ১১০০ ১১৫০ DAB ২০০০ ২২০০ A/c S ১১৫০ D ২২০০ ২৩৯৫ সুইট ১১৯৫/২৩০০, জুন-জুলাই-মাসে রিবেট মেলে; আহার্য মেলে পৃথকভাবে। পথের শেষ, বাসেরও চলা শেষ অরণ্য নিবাসে। বাস পথেই আধ কিমি পিছিয়ে KTDC-র Periyar House, Thekkady, Idukki-685536, ③ 22026. অক্টোবর-মে ও আগস্ট-সেপ্টেম্বর মাসে SAB ৫০০ ৭০০ ৯০০ ১৩০০ DAB ৭০০ ৯০০ ১১০০ ১৫০০ জুন-জুলাই মাসে SAB ৩০০ ৪৫০ ৫৫০ ৭৫০ DAB ৫০০ ৬৫০ ৭৫০ ৯৫০। লেকের বাঁশে ব্রিটিশদের মহারাজার সামার প্যালেসে KTDC-র Lake Palace H, ③ (914869) 22023, AP-S ৩২১১ D ৪৬৫০ ৪৬৭৯ ৭০০৮, রোমান্টিক পরিবেশ, লেক প্যালেসের ঘর থেকে জন্তুও দেখতে মেলে। তবে লেক প্যালেসের যাত্রীদের ১৬-০০টার মধ্যে অরণ্য নিবাসে পৌঁছে ফেরিতে যেতে হয়। আর বুকিং ছাড়া অরণ্যে চলা উচিত নয়। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য Manager বা KTDC, Mascot Square, Thiruvananthapuram-695033, ③ (0471) 438976 কে লিখুন। ঢলার পথে কুমিলি Tourist Office-এও যোগাযোগ করা যেতে পারে পেরিয়ারে অবস্থানের ব্যাপারে। আর আছে বন দপ্তরের ৩ ঘরের Edapalayam R H; বুকিং: Chief Conservator of Forest (Wildlife), Thiruvananthapuram-695014, ③ 62217, বা The Wildlife Preservation Officer,

Periyar Tiger Reserve, Thekkadi, Kerala-685536, ৩ 2027 (Kumili). আরোজনে ভাল হলো বোট নির্ভর বাতায়ত হেটু রেস্ট হাউসটি উচিত হবে বন্ধন করে চলা। আর জন্তু দেখার চর্চার লক্ষ বা যাত্রী লকের জন্য Manager, Aranya Nivas Hotel বা বন দপ্তরের Wildlife Office-কে যোগাযোগ করুন। অন্যদ্যোগ্যারীসের উচিত হবে টেকাডি-কুমিলির মাঝ পথে হোটেল অথবা ডি বা কুমিলিতে অবস্থান করে পেরিয়ার দেখে নেওয়া। আহার্যও মেলে পেরিয়ার হাউস, অরণ্য নিবাসে; লেক প্যালেস হোটেল আহার্য সহ থাকে। হোটেল অর্থানি-রও প্রশস্তি আছে আহার্যে। তেমনই অর্থানির অদূরে Coffee Inn (7—22-00)-এরও সুনাম আছে দিনভর আহার্য পরিবেশায়। আর, Paris Restaurant আরোজনে হোট হলেও আহার্য ভালই।

পাহাড়ী আনিবাসী অধ্যুষিত কুমিলি থেকে বাসে তামিলনাড়ুর কোদাইকানাল বা মাদুরাইও চলা যেতে পারে। বাসও যাহ্ছে কুমিলি থেকে: কোট্টায়াম ৪ ঘণ্টায় ৭ বাস, এর্নাকুলম ৬ ঘণ্টায় ৩, তিরুবনন্তপুরম ৮ ঘণ্টায় ৩, কোভলম ৯ ঘণ্টায় ১, কোদাই যাহ্ছে ৬ ঘণ্টায় ১, মাদুরাই ৪ ঘণ্টায় ৪। পেরিয়ার বেড়িয়ে পরদিন সরাসরি বাসে কোচি চলুন বা বাসে কোট্টায়াম পৌছে ট্রেন ধরুন। প্রাচ্যের ডেনিস—কোচি বা এর্নাকুলমের।

কোচি

সম্প্রতি নামান্তর ঘটে কোচিন হয়েছে কোচি। ১০টি দ্বীপের সমষ্টি—আরব সাগরের রানী কোচি এক সুন্দর প্রাকৃতিক বন্দর। রূপসী কেরলের বিউটি স্পট-ও বলা হয় কোচিকে। কেরলের অন্যতম সুন্দর কোচির প্রকৃতি। তেমনই যাদুপুরী গড়েছে পর্ভুগাল, হফ্যান্ড ও ব্রিটিশ স্থাপত্য মালাবার উপকূলের দ্বীপভূমি কোচিতে। বাসও করে হিন্দু, মুসলিম, ইহুদি, খ্রিস্টান পরস্পর মিলেমিশে। ব্যবসা-বাণিজ্যের দিক থেকেও পশ্চিম ভারতে মুম্বাইর পরেই কোচি বন্দরের স্থান। নীল জলে রঙবেরঙের নানান জাহাজ নোঙর করে জেটির অপেক্ষায় দাঁড়িয়ে। এসেছে এরা দেশ-দেশান্তর থেকে। বন্দরের গভীরতা বাড়াতো তোলা মাটি জমে রূপ পায় বলমলে উইলিঙেন দ্বীপ। দ্বীপের অপর পাড়েই মূল ভূখণ্ডে বাণিজ্যনগরী এর্নাকুলম। রেল ও বাস দুই-ই আপছে সারা ভারত থেকে এর্নাকুলমে। বাজারবাট, পর্যটন দপ্তর, সাধারণ হোটেল সবেরই অবস্থান এর্নাকুলমে। তবে, অতীতের মিউজিয়ম নগরী হচ্ছে ফোর্ট কোচি। উইলিঙেন, বোলাঘাট, গুডুদ্বীপ পোতাশ্রয়কে ভর করে অবস্থিত, আর ফোর্ট কোচি তথা মাদানচেরীর অবস্থান উপদ্বীপাকারে। তারও উত্তরে ব্যাপানী দ্বীপ। ব্যাপানীর ১৮ কিমি দূরে শান্ত-শিথ-সুন্দর চেরাই দ্বীপ। এর্নাকুলম থেকে ফেরি লক্ষ যাহ্ছে দ্বীপ থেকে দ্বীপে। সুন্দর কার্যকর্মশুভিত সেতুতে সড়ক সংযোগও গড়ে উঠেছে এর্নাকুলম থেকে উইলিঙেন হয়ে ১২ কিমি দূরের মাদানচেরী তথা কোচির। দু'পাশে নারকেল গাছের সারি—বাস, ট্যাক্সি যাহ্ছে। রেল আর বিমানও পৌছেছে উইলিঙেনে। রাতের আলোকমালায় বন্দরের দৃশ্য নয়নাভিরাম। চলতে-কিরতে ঘড়ি, ক্যামেরা ছাড়াও নানান বিশেষী পণ্য ক্রয়ের

প্রস্তাব মেলে পথেঘাটে বন্দরনগরী তথা এর্নাকুলমে। তবুও যেন কেনাকাটার উচিত হবে M G Rd-এর মোকনপাটে চলা। Kerala State Handicrafts Development Corp-এর শোরুম Kairali; Handicraft Society-র Saurabhi Emporium—দুইয়েরই মুখোমুখি অবস্থান এমন জি রোডে Pallimukhu-তে। Khadi Gramodyog Bhawan-ও আদরগীর হবে কেনাকাটার।

কোচি আজকের নয়—ব্রিটিশের হাতে গড়ে ওঠে শহরের অংশ। এর দুর্গটি ব্রিটিশের গড়া। তারও আগে থেকে বহির্বিদেশের সঙ্গে কোচির ব্যবসা-বাণিজ্য গড়ে উঠেছিল। ক্রিস্টোফার কলম্বাসের আমেরিকা আবিষ্কার এই কেরল-ভূমির সন্ধানে বেরিয়ে। নারকেলের ছোবড়া, রবার, মশলা, সামুদ্রিক মাছ বিদেশে যেত কোচি থেকে। কুবলাই খাঁর কালে চীনও ব্যবসা-বাণিজ্য গড়ে তোলে এই কোচিতে। এমনকি আজও ফোর্ট কোচির দ্বীবরেরা যে ধরনের জালে মাছ ধরে সে চীনাগেরই সৃষ্টি। ক্যান্টিলিভার ধর্মী চীনা জালের প্রচলন সেই থেকে রয়ে গেছে এদের মাঝে। মাথায় শঙ্কর মতো চীনা টুপিও পরে এরা। এমনকি মন্দিরও গুলিও চীনা শৈলীর প্যাগোডা ধর্মী কেরলে।

ব্যাপান থেকে বোট লাগোয়া ক্ষুদ্রতম গুডুদ্বীপে Coir Industry-তে সমবায় প্রথম নারকেলের ছোবড়ার রকমারি প্রোডাক্ট দেখা ও কন্যার ব্যবস্থাও আছে। KTDC-র লক্ষ সফরে দেখে নেওয়া যায়।

ভারতের প্রাচীনতম চার্চ ইহুদি উপাসনা মন্দির, ডাচ স্থাপত্য, মসজিদ, হিন্দু মন্দির গৌরবাধিত করে তুলেছে কোচিকে। তাই মিউজিয়ম-নগরী বলেও দাবি রাখে কোচি। এমনকি, কেরল রাজ্যের হাইকোর্টটিও বসেছে এই বন্দর-নগরী তথা রাজ্যের বৃহত্তম পৌরনগরী কোচিতে। লাখ ছয়েক লোকের বাস শহরে।

কোচি দুর্গের আর এক আকর্ষণ তার চার্চ বা মন্দির। ১৫১০ খ্রিস্টাব্দে পর্তুগিজ গভর্নর অ্যালাবানসো দ্য আলবুক-কার্ক-এর উদ্যোগে গড়া সেন্ট ফ্রান্সিস চার্চ ভারতে পর্তুগিজ-দের তৈরি প্রথম ক্যাথলিক চার্চ। আজকের দর্শকদের কাছে পর্তুগিজদের একমাত্র স্মারকও এই চার্চ তথা তীর্থ মন্দির। মূল ভূখণ্ড থেকে বিচ্ছিন্ন সন্ধ্যাপ উপদ্বীপে ফোর্ট কোচিতে পর্তুগাল থেকে এসে বাণিজ্যক্ষেত্র গড়ে তোলেন ডাঙ্কে-ডা-গামা। মৃত্যুর পর সমাধিহীন হন ডাঙ্কে-ডা-গামা ১৫২৪এ সেন্ট ফ্রান্সিসে। আর, ১৫৩৮এ তার পুত্রের উদ্যোগে সেহ স্থানান্তরিত হয় পর্তুগালের লিসবনে। সমাধি স্মারক রয়েছে আজও। ভারতে উপনিবেশবাসের ইতিহাসও ধরে রেখেছে স্পেনীয় শৈলীতে গড়া প্রাচীরে ঘেরা সেন্ট ফ্রান্সিস। ১৫০৩এ পর্তুগিজ Franciscan Friars-এর হাতে দারুণত নিখিত হলেও ১৬ শতকের মধ্যভাগে স্বদেশের সাথে পাথরে রূপান্তর ঘটে। ব্রিটিশ আসে ১৭৯৫এ কোচিতে। জনজাতি, বীত-শিখ্য সেন্ট টমাস ৫২ খ্রিস্টাব্দে সিরিয়া থেকে এসে এই মালাবার উপকূলের মাসিয়াউকারা প্রদেশে অবতরণ করেন। তারই

প্রভাবে শিরির খ্রিস্টানদের অনীহায় পূর্ত-গিজরা প্রতিহত হয় কেরলে। সেন্ট ফ্রান্সিস লাগোরা দেওয়াল-তিত্রে সম্বন্ধ ১৫৫৭য় তৈরি রোমান ক্যাথলিক সান্তা ক্রুজ ক্যাথিড্রালটিও দুর্গনগরী কোটির আর এক দৃষ্টব্য।

আম বাগিচার ছাওয়া মাঞ্জনচেরী প্যালেস-এর পর্যটক আকর্ষণও কম নয়। একটি হিন্দু মন্দির লুট করার অপরাধে পূর্তগিজরা কোচিরাজ Veera Kerala Varma (1537-61)-কে ডুট করতে ১৫৫৫ খ্রিস্টাব্দে তৈরি করে ভেট দেয় এই প্রাসাদপুরী। আর পূর্তগিজদের হঠিয়ে ডাচরা ১৭ শতকের শেষভাগে এটি দখল করে আরও সুন্দর রূপে সংস্কার করে নজরানা দেয় কোচিরাজকে। তাই ডাচ প্রাসাদ বলেও প্রসিদ্ধি আছে। এদেরই হাতে ১৭ শতকে প্রাসাদের দেওয়ালে আঁকা নয়ন মনোহর বিপুলাকার দেওয়ালচিত্রগুলির প্রচারের অভাবে প্রসিদ্ধি কম। রামায়ণ, মহাভারত ছাড়াও নানান পৌরাণিক আখ্যান রূপ পেয়েছে। চতুর্ভুজাকার প্রাসাদের বিতলের কেন্দ্রীয় হল অর্থাৎ রাজাদের করোনেশন হল-এ রাজ-পরিবারের বসন-ভূষণ তথা সাজ সরঞ্জামের মিউজিয়াম বসেছে। সংস্কারও হয়েছে বার বার প্রাসাদ। তবে, আজও ডাইনিং হল-এর সিলিংয়ে ডাচ স্থাপত্যের নির্দশন দৃশ্যমান। শুক্র ও ছুটি ছাড়া ৯—১৩-০০ ও ১৪—১৭-০০টায় খোলা। ছবি তোলা গেলেও ফ্লাশ জ্বালা মানা। হিন্দু দেবমন্দিরও রয়েছে চত্বরে।

১৫ শতকে সাদা ইথিরা স্পেন থেকে এসে বসতি গড়ে কোচিতে। জমিও মেলে বিনামূল্যে কোচিরাজ রবি ভার্মার আনুকূল্যে। আর ১৫৬৮তে রূপ পায় ইথিদের উপাসনা মন্দির জুইস সিনাগগ প্রাসাদের সামনে। তবে, গোড়াপত্তন তারও আগে ৫৮৭তে ইয়েমেন ও ব্যাবিলন থেকে আসা ইথিদের (কাল) হাতে। নেবুচাদনেজারের জেরুসালেম দখলে ইথিরা মাত্তানে এসে জুটাইন গড়ে তোলে। কালে কালে বিয়ে-শাদি করে স্থানীয়দের সাথে মিলে যায় এরা। তাদেরই গড়া ১৩৪৪এর কোচানগাড়ির (Kochangadi) সিনাগগটি ১৬৬২তে পূর্তগিজ হানায় ধ্বংস হতে ২ বছর পর ১৬৬৪তে ডাচরা নতুন করে সাজিয়ে তোলে এই উপাসনালয়। উপাসনালয় ধ্বংস হলও হিক্রতে লেখা প্রস্তর ফলকে সে আখ্যান মেলে। আর ১৭৬২ খ্রিস্টাব্দে বণিক Ezekial Rahabi চীনের ক্যান্টন থেকে হাতে আঁকা নীলচে উইলোখর্মী সুন্দর টালি এনে সাজিয়ে তোলেন সিনাগগের মেঝে। প্রতিটা টালিতেই নতুন নতুন ডিজাইন। সিনাগগের রুক-টাওয়ারটিও মাত্তান প্রেমিক রাহাবীর তৈরি। বেলজিয়ামের বাড় লর্টনওলিও অনবদ্য। হিক্রতে লেখা শ্রেট ক্রল অর্থাৎ তট্টরে রাখা বিরাট কাগজে ওল্ড টেস্ট-সেন্ট ও ভামার পাতে King Bhaskara Ravi Varma I (962-1020)-র জমি দেওয়ার বানপত্রটি দেখতে মেলে এর উপাসনা হল-এ। ইথিদের ছুটি ও শনিবার ছাড়া ১০—১২-০০ ও ১৫—১৭-০০টায় খোলা।

সিনাগগকে ঘিরে দুর্গের দক্ষিণ লাগোরা মাত্তানে গড়ে উঠেছিল অতীতকালে ইথীদের বাস অর্থাৎ জু-টাউন। ভারতে প্রথম জু-টাউনের উদ্ভব কোচির উত্তরে ক্রাসানোরে রাজার দানে জমি পেয়ে বোশেপ রাব্বান-এর হাতে। তবে, সুপ্রাণত ৫২ খ্রিস্টাব্দে সেন্টমাসের আগমনের কাল থেকে। আর রাব্বানের মৃত্যুতে অসন্তোষ গড়ে ওঠে ছেলদের মাঝে। প্রতিবাদী দল ক্রাসানোরে ছেড়ে মাত্তানে এসে বসতি গড়ে। সুরু সুরু গলিপথ—দর্জিদের দোকানপাট, আর রয়েছে মশলাপতির দোকান এলাকা জুড়ে। দুষ্প্রাণ্য নানান জিনিসও মেলে এদেরই মাঝে কিউরিও শপে। ভারত স্বাধীন হয়েছে—ইজরায়েলও আজ স্বাধীন রাষ্ট্র। তাই স্বাধীনতার রঙে মনকে রাঙিয়ে নিতে যুব সম্প্রদায় মাত্তান ছেড়ে পাড়ি জমিয়েছে স্বদেশে। তবে, দোকানপাটে আজও হিক্র ভাষায় সাইনবোর্ড দেখতে মেলে মাত্তানে। সংখ্যায় এরা আজ কমে কমে শ' থেকেও নেমে এসেছে। এমনকি এর্নাকুলমে Jew St-এর সিনাগগটি আজ অব্যবহৃত অবস্থায় তালাবদ্ধ।

এর্নাকুলমের উত্তর-পশ্চিমে কোচি উপহ্রদে বোলাঘাটি দ্বীপ। নিরলস অবকাশ যাপনের রমণীয় পরিবেশ। এরও প্রকৃতি পর্যটকদের মোহিত করে। অতীতে ব্রিটিশ রেসিডেন্টের বাস ছিল দ্বীপে। তবে, তারও আগে ১৭৪৪এ ডাচদের তৈরি ডাচ গভর্নরের ম্যানসনে আজ রাজ্য পর্যটনের বোলাঘাটি প্যালেস হোটেল ও পর্যটন দপ্তর বসেছে। ডাচ ও কেরল স্থাপত্যের নির্দশন রয়েছে প্রাসাদ-পুরীতে। লিনটোলে আঁকা ছবিগুলিও সুন্দর। কনডাক্টেড ট্যুরের লক্ষে বা হাইকোর্ট জেটি (এর্নাকুলম) থেকে ফেরিলক্ষে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

বোলাঘাটির পশ্চিমে ভাদ্রারপদম দ্বীপের ক্যাথলিক তীর্থ সেন্ট ম্যারি গির্জাটিরও পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য। অত্যাংসাহীরা ১০ কিমি দূরের ত্রিগুনিভুরায় মন্দির ও একাধিক প্রাসাদ, আরও ৮ কিমি পূর্বে চোট্টিনিকারায় ভগবতী মন্দির, আবার ৭ কিমি দক্ষিণে মুলাঙ্গুরতিতে ৭০০ বছরের প্রাচীন গির্জাটিও দেখে নিতে পারেন। গির্জার ফ্রেসকোওলিও সুন্দর। ফেরিলক্ষে দেখে এর্নাকুলম থেকে ভাদ্রারপদম।

নারকেল কুঞ্জে শোভিত এর্নাকুলমও প্রাকৃতিক সৌন্দর্য, মন্দির আর গির্জার শহর। লাখ দুইয়েক লোকের বাস এর্নাকুলমে। অতীতে কোচি রাজ্যের রাজধানীও ছিল মূল ভূখণ্ডের এর্নাকুলমে। এর্নাকুলমের কৃষ্ণ ও শিবমন্দির দুটিও ভক্তজনের সমাগমে দিনভর মুখর। জানুয়ারি মাসে শিবমন্দিরের জাঁকজমকপূর্ণ সপ্তাহব্যাপী উৎসবেরও পর্যটন আকর্ষণ কম নয়। কেরলের নানানখর্মী সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানও পরিবেশিত হয় উৎসবে।

দরবার হল রোডে দরবার হল লাগোরা Parishath Thampuram Museum তথা খোঁচি মিউজিয়াম। তৈলচিত্র, প্রাচীন মুদ্রা, ভাস্কর্য ছাড়াও কোচিরাজদের নানান সত্তার আকর্ষণ বাড়িয়েছে মিউজিয়ামের। সোম ও ছুটি ছাড়া ৯-৩০—১২-

৩০ আবার ১৫—১৭-৩০টার খোলা। শহরের প্রাণকেন্দ্রে হাইকোর্টের পিছেড. সেলিম আলি রোডে পর্যটক প্রিয় Mangalavana-য় সহস্রধর্মী দেশী-বিদেশী পাখি দেখে নেওয়া যায়।

ভেনমই প্রত্নতত্ত্বের নানান সংগ্রহ নিয়ে রাজ্যের বৃহত্তম Hill Palace Museum হয়েছে কোচি থেকে ১৩ কিমি দূরে। সোম ছাড়া প্রতিদিন ৯—১৭-০০টার খোলা। এর্নাকুলম থেকে ৮ কিমি দূরে Edappally-র Museum of Kerala History-তে Light and Sound প্রদর্শনীতে নিওলিথিক যুগ থেকে আধুনিক যুগের ইতিহাসও দেখে নিতে পারেন মডেলে। সোম ও জাতীয় ছুটি ছাড়া ১০—১৭-০০টার খোলা।

পর্যটকদের আর এক আকর্ষণ এর্নাকুলমের কথাকলি নাচের আসর। বাংলার ছৌ-নাচেরই মতো মুখোশভিত্তিক জমকালো এই নৃত্যনাট্য। নাচের বিষয় হিন্দু পৌরাণিক আখ্যান—রামায়ণ ও মহাভারত। বসনের সাথে ভূষণ পরে প্রতিটি অঙ্গ গাছগাছালির রঙে রাঙিয়ে নিয়ে যোগসিদ্ধ শিল্পীরা অংশ নেয় নাচে। বছরের সেপ্টেম্বর থেকে এপ্রিল মাসের সন্ধ্যায় নানান সংস্থার আয়োজন থাকে কথাকলি নাচের।

বৃহৎপতিবার ছাড়া সেপ্টেম্বর থেকে এপ্রিল মাসে ১৯—২০-৩০টার আসর বসছে See India Foundation, Kalathil Parambu Lane, Ernakulam South, Kochi-682016; বা কোচি মিউজিয়াম লাগোয়া Kochi Cultural Centre, Durbar Hall, Durbar Hall Rd—এদের প্রদর্শন প্রতিদিন; বা Art Kerala, Menon & Krishna Annexe, Chittoor Rd-এ রেল স্টেশনের অদূরে দেবী মন্দিরের বিপরীতে সন্ধ্যা ১৯-০০টার; বা কাছেই Mr Devan-ও নিজ বাড়িতে প্রদর্শন করেন কথাকলি নাচের। ১১ থেকে ২ ঘণ্টার প্রদর্শনী, টিকিট ৩০-৫০।

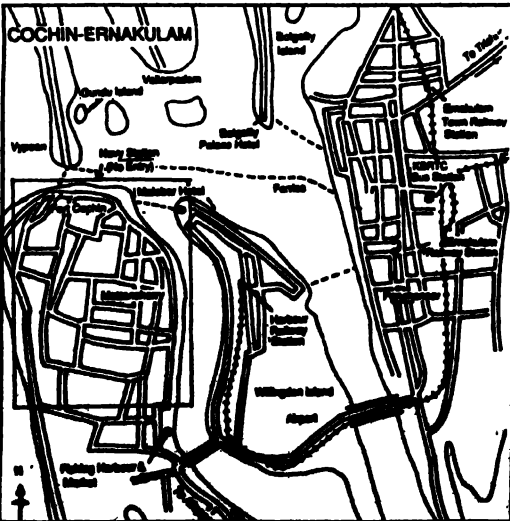


IAC, 361905-এর উড়ান প্রতিদিন ১০-১০-এ কোচি ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ১১-০০টার; প্রতিদিন ৭-৪৫এ ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে ৯-৩০এ; প্রতিদিন ১৫-৫০এ ছেড়ে ১৭-০০টার গোয়া পৌছে দিল্লী যাচ্ছে ১৯-৫৫য়; চেন্নাই যাচ্ছে প্রতিদিন ১০-১০এ ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর হয়ে ১২-১৫য়। 13457 মিন ১২-০৫এ কোচি ছেড়ে আগাতি অর্থাৎ লাক্ষা যাচ্ছে ১৩-৪০এ। ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনগুলিতে কোচিতে।

আর প্রাইভেট বিমান যাচ্ছে Jet Airways 369582-এর প্রতিদিন কোচি-মুম্বাই-আমেদাবাদ, কোচি-মুম্বাই-কলকাতা, কোচি-মুম্বাই-দিল্লী, কোচি-মুম্বাই-পুনে; ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে। Skyline NEPC Airlines, East West Airlines-ও সার্ভিস গড়েছে কোচি থেকে মুম্বাই, চেন্নাই, দিল্লী, ব্যাঙ্গালোরের।



রেল স্টেশনও এর্নাকুলম দুই—৩ কিমির ব্যবধানে জংশন 369119 ও টাউন 353920, উইলিং-ডন অর্থাৎ ৮ কিমি দূরের কোচি হারবারও ট্রেন যাচ্ছে নানান এর্নাকুলম জং হয়ে। জংশনের অবস্থান শহরের কেন্দ্রেই। কোচি তথা এর্নাকুলম যাতায়াতে উচিতও হবে এর্নাকুলম জং নেমে চলা। ট্রেন যাচ্ছে এর্নাকুলম জং থেকে ১৬-২০এ আলেন্সি-চেন্নাই এক্স প্রিচুর/পালঘাট/সালেম/কটিপাণী হয়ে ১৩ই ঘণ্টার চেন্নাই স্টেশন। চেন্নাই স্টেশন ছাড়ে আলেন্সি এক্স ১৯-৩৫এ। আলেন্সি-বোকরো স্টীল সিটি এক্স ৭-১০এ এর্নাকুলম জং ছেড়ে একই পথে ২১-০০টার পেরাথুর পৌছে বোকরো ইম্পাত নগরী যাচ্ছে; পেরাথুর থেকে আলেন্সি আসছে ৪-১০এ। আর যাচ্ছে সোমবার ১৬-৪০এ কোচি-পাটনা, রবিবার ১৬-৪০এ কোচি-গুয়াহাটি এক্স পরদিন ৭-১০এ চেন্নাই স্টেশন পৌছে তারও পরেরদিন ১৩-৪৫এ হাওড়ার। উটির যাত্রী নিয়ে নানান ট্রেন যাচ্ছে এর্নাকুলম জং থেকে ৬ ঘণ্টার ১৯৮ কিমি দূরের কোয়েম্বাটরে।



| কোচি থেকে দূরত্ব | ৩৮ কিমি |
|---------------------------------------|---------|
| কাসারগো | ৩৮ |
| আলেগি ১১ ঘ ট্রেন ও বাস | ৬০ |
| ত্রিচুর | ৭৯ |
| মুম্বাই ৪ ঘ ট্রেন ও বাস | ১৫৬ |
| পালঘাট ৪ ঘ ট্রেন ও বাস | ৩৬০ |
| কোম্বিলেড ৫ ঘ বাস (১১ ঘণ্টা অন্তর) | ১৮৯ |
| কোয়ারাম ২১ ঘ বাস (১৪) | ৭৬ |
| ভিক্রমজন্মপুরম ৪-৬ ঘ ট্রেন ও বাস (২০) | ২২০ |
| পেরিয়ার (কোয়ারাম) ৭ ঘ বাস (৬) | ১৯০ |
| মাদুরাই ৯ ঘ বাস (৪) | ৩২৪ |
| চেন্নাই ১৩ ঘ রেল ও বাস (৩) | ৬৯৪ |
| কন্ডাকুমারি ৯ ঘ বাস (১) | ৩০৯ |
| কোয়েম্বাটর ৬ ঘ রেল ও বাস (৩) | ২২০ |
| উত্তকামণ্ড (ভার্মা কোয়েম্বাটর) | ৩১২ |
| কোম্বিলকনাল | ৩৫০ |
| ব্যাঙ্গালোর ১৬ ঘ রেল | ৪১২ |
| মুম্বাই | ৪২৪ |
| ব্যাঙ্গালোর ১৪-১৫ ঘ রেল ও বাস (৩) | ৫৬৫ |
| হুয়রাবাব ২১ ঘ রেল | ১১১২ |
| মুম্বাই ৩৬ ঘ রেল | ১৩৫১ |
| দিল্লী ৫৬ ঘ রেল | ২৫৫৫ |
| কলকাতা ৪৪ ঘ রেল | ২৬৪৭ |
| (কল্লীর আরও অনেক সন্ধ্যা) | |

কোচি আসছে ৪৪ ঘণ্টার বৃহস্পতিবার পটনা-কোচি (জাশানসোল/খড়গপুর/চেন্নাই হয়ে), বৃহস্পতিবার গুয়াহাটি-কোচি এবং ৩-৫০৫ হাওড়া ছেড়ে খড়গপুর/ভুবনেশ্বর/চেন্নাই সেতুল/সালেম/কোয়েম্বাটুর/পালঘাট/এর্নাকুলম জং হয়ে। ১৫ মিনি হাওড়া-তিরুভনন্তপুরম, সোমবার গুয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম এবং যথেষ্ট হাওড়া/চেন্নাই/পালঘাট/কুইলন হয়ে; ফেরে ১৬-৪০৫ কোচি থেকে রবিবার গুয়াহাটি এবং, ৩৬ দিন তিরুভনন্তপুরম-হাওড়া এবং।

সাপ্তাহিক কোচি-ইন্দোর অফলাইন এবং ৮-৪০৫ (১), কোচি-গোরকপুর রাতি সাগর এবং ৮-৪০৫ (২ ৪ ৫), ৮-৪০৫ কোচি-বরানসি এবং (৭); কোচি-বিলাসপুর এবং ৮-৪০৫ (৩ ৬), কোচি-বারানসি এবং (৬)-ও যথেষ্ট কোচি থেকে এর্নাকুলম/পালঘাট/কোয়েম্বাটুর/সালেম/কাটপাদী/চেন্নাই/বিজয়গয়াড়া/নাগপুর হয়ে। কোয়েম্বাটুর/সালেম/গুডুর হয়ে ২৮ ঘ ২০ মিনিটে লিঙ্ক লাইনে হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে। ১৪ ৬ দিন কোচি-হায়দ্রাবাদ এবং, ১০ ঘণ্টার মিত্রি যাচ্ছে কোচি-মিত্রি এবং।

সাপ্তাহিক (৫) হিমসাগর এবং যাচ্ছে কন্যাকুমারি থেকে তিরুভনন্তপুরম/এর্নাকুলম/পালঘাট/কোয়েম্বাটুর/রেনীওট/বিজয়গয়াড়া/নাগপুর/ইটারসি/ভূপাল/গোয়ালিয়র/আগ্রা কাণ্ট/নিউ দিল্লী/আখালা হয়ে জম্মু অর্থাৎ সাগর থেকে ভূবর্ণে। নিউ দিল্লী যাচ্ছে ৫৬ ঘণ্টার হিমসাগর। আর যাচ্ছে প্রতি মঙ্গলবার ৬৩৪ এর্নাকুলম-হজরত নিজামুদ্দিন এবং, সাপ্তাহিক (৫) রাজধানী এবং ও কেরল এবং তিরুভনন্তপুরম থেকে এর্নাকুলম জং হয়ে হিমসাগরের পথ ধরে নিউ দিল্লী।

মুম্বাই যাচ্ছে ১৭-১৫য় কোচি, ১৭-৩৭এ এর্নাকুলম জং ছেড়ে সোরানুরে নেত্রবতীর সাথে জুড়ে পালঘাট/কোয়েম্বাটুর/শুটাকল/সোলাপুর/পুনে হয়ে ৩৬ ঘণ্টার; শুক্রবার ৮-৪০৫ তিরুভনন্তপুরম-কারলা এবং; আর কন্যাকুমারি-মুম্বাই এবং ১২-৫০৫ এর্নাকুলম জং ছেড়ে লিঙ্ক লাইনে মুম্বাই যাচ্ছে।

শুক্রবার ১৬-৪০৫ কোচি ছেড়ে ১৪ ঘণ্টার ৬২৯ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোর শৌছে রাজকোট যাচ্ছে কোচি-রাজকোট এবং; বৃহস্পতিবার ২০-১৫য় এর্নাকুলম জং থেকে কুইলন-ব্যাঙ্গালোর এবং; বুধবার ১৯-১৫য় টাউন থেকে তিরুভনন্তপুরম-রাজকোট এবং, বৃহস্পতিবার ১৭-৩০৫ নাগেরকয়েল-গান্ধীধাম এবং এর্নাকুলম টাউন ছেড়ে কোয়েম্বাটুর/কুম্বারাজাপুরম/শুটাকল/ব্যাঙ্গালোর/পুনে/জলপাইগুড়ি/সুরাট/আমোলাবাদ হয়ে যাচ্ছে।

তিরুভনন্তপুরম-ম্যাঙ্গালোর যাচ্ছে কেরল কোস্ট থরে ২৩-০০টায় এর্নাকুলম টাউন ছেড়ে ১৫ ঘ ৫৫ মিনিটে মালাবার এবং, ১১-০০টায় পরগুরাম এবং। ২২১ কিমি দূরের তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে এর্নাকুলম জং থেকে কোট্টায়াম ও কুইলন থেমে ৪১ ঘণ্টার ৫-৫০৫ দ্রুতগামী ভানচিনাদ এবং, ৬-৩০৫ এর্নাকুলম-তিরুভনন্তপুরম এবং, ৬-৩০৫ মুম্বাই-কন্যাকুমারি এবং, সোরানুর-তিরুভনন্তপুরম ভেনোপ এবং ১৭-১৫য়, কল্লানোর-তিরুভনন্তপুরম এবং ৩-৩০৫; আর ৪-০০টায় মালাবার এবং, ১৩-৫৫য় ম্যাঙ্গালোর-তিরুভনন্তপুরম পরগুরাম এবং, ৭-০০টায় চেন্নাই-তিরুভনন্তপুরম মেল, ২৩-৩০৫ শুক্রভায়ুর-নাগেরকয়েল এবং, ১-৩০৫ সাপ্তাহিক কারলা-তিরুভনন্তপুরম এবং, ১০-০০টায় ব্যাঙ্গালোর-কন্যাকুমারি এবং এর্নাকুলম টাউন থেকে; এছাড়াও নানান প্যাসেঞ্জার ও দূরপাল্লার এবং। মুম্বাই ট্রেন যাচ্ছে আলওয়ে/মিট্রি হয়ে সোরানুরে কোচি ও এর্নাকুলম থেকে কেরেও প্রতিটা

ট্রেন নিয়মিত। তিরুভনন্তপুরম ছাড়ে ভানচিনাদ ১৭-০৫এ, এর্নাকুলম এবং ১৬-৩০এ, ভেনোপ এবং ৫-০০টায়।



আর KSRTC, 352033-এর দ্রুতগামী বাস যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর, মহেশ্বর, মাদুরাই (কোট্টায়াম হয়ে), কোয়েম্বাটুর, উটি, কোলিকটানাল, শেরিয়ার, তিরুভনন্তপুরম, আলেন্সি, কুইলন, মিট্রি, পালঘাট, টেকাডি ছাড়াও রাজ্যের দিকে বন্দরনগরী কোচি অর্থাৎ সেতুল বাস স্ট্যান্ড, স্টেডিয়াম রোড, এর্নাকুলম থেকে। রেল স্টেশনের ডাইনে বাস স্ট্যান্ড। বাস চলছে সাধারণ, এবং ও নন স্টপ। ৫ দিন আগে থেকে অগ্রিম টিকিট মেলে KSRTC-র বাসে। টিকিটের প্রচুর চাহিদা এই সব বাসে। এছাড়া দূরত্ব থেকে আসা নানান বাসও যাচ্ছে এর্নাকুলম হয়ে পূর্ব-বন্দর-উত্তরে। এই সব বাস সিট মিললেও অগ্রিম বুকিং-এর ব্যবস্থা নেই। তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে বাস আলেন্সি ও কোট্টায়াম ২টি পৃথক পথে। সময় নেয় (সাধারণ) ৬½ ঘ, এবং বাস ৫ ঘণ্টা এর্নাকুলম থেকে তিরুভনন্তপুরমে। বাসের আধিক্য মেলে আলেন্সি হয়ে। তেমনই যাচ্ছে নানান প্রাইভেট সংস্থার ডিলাস, সুপার ডিলাস, ডিডিও বাস মুম্বাই, ব্যাঙ্গালোর, ম্যাঙ্গালোর, কোয়েম্বাটুর ছাড়াও সারা দক্ষিণে। ছাড়ে এরা M G Rd, Shanmugham Rd ও Jas Junction থেকে। আর শহরে চলছে সিটি বাস, রিকশা, অটো রিকশা ও ট্যাক্সি।

জলপথে ফেরিবাট যাচ্ছে ৯ ঘণ্টার কোট্টায়াম, ৭½ ঘণ্টার আলেন্সি, ৩½ ঘণ্টার কল্লানোর বন্দরনগরী কোচি থেকে। আর যাচ্ছে ৬ ঘণ্টা থেকে বীপে ফেরিলাঞ্চ—এর্নাকুলম (Main Jetty) থেকে মাত্তানচেরী (Terminas) যাচ্ছে ৬-৩০—২১-৩০এ ১ ঘণ্টা অন্তর ফোর্ট কোচি (Custom) ও উইলিংডন বীপ (Embarkation) হয়ে; এর্নাকুলম (High Court Jetty) থেকে বাপীন যাচ্ছে ৫-৩০—২২-৩০টায় ১৫/৩০ মিনিটের ব্যবধানে; ফোর্ট কোচি থেকে বাপীন বীপে যাচ্ছে ৬—২২-০০টায় মুম্বাই; ফোর্ট কোচি থেকে মালাবার হোটলে (Embarkation) যাচ্ছে ৬—২২-৩০টায় ১ ঘণ্টা অন্তর। যাত্রী জাহাজ ও মালবাহী জাহাজও যাচ্ছে কোচি বন্দর থেকে দেশ-দেশান্তরে। এমনকি লাক্ষাদ্বীপের জলযান ও ত্রি-সাপ্তাহিক সার্ভিসে বাদুদুত ও প্রাইভেট বিমান যাচ্ছে কোচি থেকে।

কনডাক্টেড ট্রা: KTDC, Shanmugham Rd, Ernakulam, Kochi-682011, ☎ (0484) 353234 (৮—১৯-০০টায় খোলা) আয়োজিত কনডাক্টেড ট্রা—(১) প্রতিদিন ৯—১২-৩০ ও ১৪—১৭-৩০টায় ডিলাস বাটে ব্যাক ওয়াটারে বেড়াবার ব্যবস্থা আছে। ৪ ঘণ্টার এই সফরে উইলিংডন বীপ, মাত্তানচেরী প্রাসাদ, সিনাগগ, ফোর্ট কোচি, বোলাঘাট বীপ, শুভু বীপ দেখিয়ে আসে। ভাড়া ৬০। তবে, ট্রারের স্ট-আউটকরণ যত-না তার থেকেও মনোরম এই বাটে ভ্রমণ। ব্যাক ওয়াটারের জলে ডেসে বীপ থেকে বীপে সেথে নেওয়া যায় কেরলীয় রোজানমচা। ঘরে বসে মাছ ধরছে চীনা জাল চুবিয়ে জেলেরা, কোথাও-বা জাল হুঁড়ুছে অলিম্পিক আসরে ডিসকাস শ্রোয় ভঙ্গিমায়। মনির-মসজিদ-গির্জার সহাবস্থানও দেখতে মেলে বীপ থেকে বীপে। (২) প্রতি শনিবার ৭-৩০টায় ২ দিনের সফরে শেরিয়ার যাচ্ছে ৩০০ টাকা। (৩) প্রতিদিন শহর সেবাচ্ছে ১০০ টাকা। (৪) প্রতি রবিবার ৮-০০টায় যাচ্ছে কল্যাণি, ঋষিরাপন্নী ও ভাজাচল জলপ্রপাত দেখাতে ১৫৫ টাকায়। ফেরে ১৮-০০টায়। (৫) ১৭-০০টায় গিয়ে ১৯-০০টায় ফিরে সূর্যোদয় দেখিয়ে আনে KTDC ৪০ টাকায়। (৬) ব্যাক ওয়াটারে ডেসে ২ ঘণ্টার ভিলেজ

ট্রায়েও বাসে ৩০০ টাকার প্রতিদিন KTDC। নানান প্রাইভেট সংস্থাও বাসে যাত্রী নিয়ে শহর তথা কেরল দর্শনে। ভাড়ারও মেলে নানানধর্মী যাত্রিক বোট জেটি ঘাটে।

আবার এর্নাকুলম জেটি থেকে যে কোনও ফেরিলকে ব্যাক ওয়টিংয়ে জলবিহারও করে নেওয়া যায়। কেরল টুরিজমের অফিস বসেছে Old Collectorate Building, Park Rd-এ। এয়ারপোর্ট ও মেইন বোট জেটিতেও দপ্তর বসেছে কেরল টুরিজমের। আর ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর Malabar Hotel, ৩ 340352, Willingdon Island-এ। IAC-র অফিস, ৩ 352465, Durbar Hall Rd; Jet Airways ৩ 369582; NEPC Airlines, Kuriswapally Rd, ৩ 361627; Air India M G Rd, ৩ 365485, কোচিতে।



নানানধর্মী হোটেল আছে Kochi, STD 0484 তথা এর্নাকুলমে। নিচুর পিকের সাধারণ হোটেল—অবস্থান এসের এর্নাকুলমে। মধ্যমানের হোটেলের অবস্থান এর্নাকুলম ও বোলাঘাট দ্বীপে। আর উচ্চমানের তারকাসমান হোটেল এর্নাকুলম ও উইলিঙ্গডনে। রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই ডাইনে-বামে সাধারণ হোটেল। অদূরে মহাত্মা গান্ধী রোডে উচ্চমানের; আর মধ্যমানের হোটেল ভিড় করেছে ব্রডওয়ে তথা শানমুগম রোডে। ব্রডওয়ে শেষ হতেই প্রেস ক্লাব রোড ও কানন শেড রোডেও হোটেল হয়েছে সাধারণ মানের। আবার বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরেও সাধারণ হোটেল রয়েছে এর্নাকুলমে।

এর্নাকুলম জং থেকে বেরুতেই opp South Rly Stn, Ernakulam Jn, Kochi-682016-এ ডানহাতি গলিপথে—Premier Tourist Home, SAB ৮০ DAB ১২৫ FR ১৫০; Hotel K K International, ৩ 366010, SAB ১৫০-৩০০ DAB ২৫০-৪০০ FR ৩২৫-৪৫০; H Metropolitan, near South Rail Stn, ৩ 352412, A/c S ৪৫০ D ৬৫০-৮০০; অতি সাধারণ Tourist Centre. বামহাতি—H Central Park, H Embassy, ৩ 361449, SAB ৮০ DAB ১১৫-১৫০; N M Hotels, ৩ 353641, SAB ৭৫-১০০ DAB ১৫০-১৭৫ TAB ১৫০-২০০ A/c S ৩০০ D ৪০০; Cochín Tourist Home, S ৮৫ D ১২৫ T ১৫০ A/c D ৩৫০।

রেল স্টেশনের বিপরীতে Kalathiparambu Rd-16য়—Piazza L, ৩ 367408, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৪০-১৭৫ TAB ১৭৫ A/c D ৩৫০; Shaziya H, D ১৫০। স্বল্প ভেতে ডাইনে Chittoor Rd-16য়—H Sangeetha, ৩ 368487, S ২০০-২৫০ D ২৭৫-৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫৫০; বিপরীতে Paulson Park H, ৩ 354002, S ১৫০ D ২২৫-৩০০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০ সুইট ৫৫০-৬৫০; *Gaanam H, ৩ 367123, S ৩২৫-৪৫০ D ৪৫০-৬৫০ A/c S ৬০০ D ৮০০; H Kavitha, ৩ 353260, S ১০০ D ১৭৫ A/c D ৩২৫; Motel Mayur, ৩ 354262, S ১০০ D ১৪৫; Ramkrishna L. আবার সিনে পথে H Joyland, D H Rd-16, ৩ 367764, S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০; বিপরীতে সাধারণ Sea Line L. দরবার হল রোড ও মহাত্মা গান্ধী রোড সংযোগে রকমারি ঠাণ্ডা পানীয়ের Mimbis, একই বাড়িতে non-veg আহারে Khyber, বিপরীতে Indian Coffee House সদাই ব্যস্ত রসনা মেটাতে।

এর্নাকুলম KSRTC-র বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে Stadium Rd, Kochi-682035A : H Ninans, ৩ 351235, SAB ৬৫-

১২৫ DAB ১০০-১৫০; H Blue Nile, ৩ 367838, S ১২৫ D ১৭৫ A/c S ৩০০ D ৪০০ সুইট ৬৫০; ডাইনে H Luchiya, Stadium Rd, Kochi-682035, ৩ 354433, S ৮৫ DAB ১৪০-১৮৫ সুইট ৩২৫ A/c S ২০০ D ৩২৫ সুইট ৪৫০; আর বামের গলিপথে H Swagath, Casino L, H Sonia, Malayasia Tourist Home, Priya L, Surheel L, অবস্থান এসের পাশাপাশি; ঘরও মেলে S ৬০-১২৫ D ৮৫-১৭৫ টাকায়।

Durbar Hall Rd-এ—*Bharat H, Rj B, ৩ 353501, SAB ৩০০ DAB ৪০০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০ সুইট ৮০০ ১৫০; H Sealines, Durbar L. M G Rd-11এ—থোলামেলা পরিবেশে *Grand H, ৩ 352211, A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৮২৫-১০৫০; H Sea King, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০ A/c S ২০০ D ৩০০; H Midland, S ৬৫ D ১০০ A/c D ২৫০; H Mercy, ৩ 367040, SAB ১২৫ DAB ১৫০-২২৫ A/c S ২২৫ D ৩০০-৩৫০; H Airlines, ৩ 366633, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২০০ A/c S ২৫০ D ৩৫০; *International H, A7R1B1, ৩ 353911, A/c S ৬৫০-৮৫০ D ৮৪০-১০৫০ সুইট S ১২০০ D ১৫০০; *H Woodlands, M G Rd-11, A6Rj B, ৩ 351372, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৭৫০ A/c ১০০০, রুফ গার্ডেন, ঘরে ঘরে রঙিন টি ভি; থাকার পক্ষে ভালই। *H Abad Plaza, M G Rd-35, ৩ 361636, A5R1, A/c S ৬৫০-৭৫০ D ৭৫০-৮৫০ সুইট ১২৫০-১৫০০; H Udipi Anantha Bhavan, ৩ 352313, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২৭৫ সুইট ৪৫০ A/c D ৩৫০। M G Rd, Kochi-16য়—*The Avenue Regent, ৩ 372660, A/c S ৪৫ D ৫৫ সুইট ৮৫ US\$; *Dwaraka H, ৩ 352766, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৫২৫-৬৫০।

Shanmugham Rd-31এ—KTDC-র ট্যুরিস্ট রিসেশনের বিপরীতে H Hakobu ৩ 353933, S ৮০-১০০ D ১২৫-১৭৫ A/c ৩০০; সামান্য উত্তরে *H Sea Lord-31, ৩ 352682, A/c S ৪৫০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০ সুইট ১৫০০-১৭৫০; *H Seashell, ৩ 353807, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A/c S ২২৫ D ৩২৫; Queen Mary Tourist Home, S ৬৫ D ১২৫ A/c S ২০০ D ২৫০। Market Rd-11য়—H Deepak, R2B1, SAB ৬০ DAB ৮০-১২৫ A/c D ২৫০; H Blue Diamond, ৩ 353221, D ১৭৫-২২৫ A/c D ৩৫০-৪৫০; নবস্তর Modern G/H, S ৮০-১২৫ D ১২৫-১৭৫; Bijus Tourist Home, Market Rd ও Canon Shed Rd Crossing-11, SAB ৮৫-১৫০ DAB ১৭৫-২৫০ A/c D ৪০০; লাগোয়া নবস্তর Maple Tourist Home, ৩ 355156, S ৮৫ D ১২৫-১৭৫ A/c D ২৫০।

Press Club Rdএ—Basoto L, ৩ 352140, SAB ১২৫ DAB ২২৫। Banerjee Rdএ—Madras Cafe, Plaza Tourist Home, D ৮৫-১৭৫ A/c D ২৫০; H Megha, D ১২৫-১৭৫ A/c D ৩২৫; *H Abad, Chulikal-5, A3R6, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০।

Fort Kochi-তে H Sea Gull, D ১৮৫-২৭৫; মাজানমুখী সুন্দর পরিবেশে সাধারণ সাজে Port View L, ৩ 352140, D ১২৫-২০০।

Willingdon Island-682003এ—হারবারমুখী কোচিন

অন্যতম হোটেল *Taj Malabar H, ৩ 666811, A5R3, A/c S ৮৫ D ৯৫ US\$; ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরও বসেছে মাল্যাবারে। Taj Residency, Marine Drive, ৩ 371471. আর রয়েছে পান্থেই আর এক অন্য*Casino H, ৩ 666821, A/c S ৪৫ D ৮৫ US\$; Island H Maharaj, Bristo Rd-3, ৩ 666816, S ২৫০ D ৩০০ A/c S ৩০০ D ৫০০ সুইট ৭৫০; Maruthi Tourist Home. আর হয়েছে ৭৯৪৪-এ ডাচসের তৈরি প্রাসাদবাড়িতে KTDC-র Bolaghaty Palace H, PC-682504, ৩ 355003, DAB ৫৫০-৬৫০ A/c Cottage ১০৫০ হনিমুন কটজ ১৬০০, আর মেলে ডাবল বেডের লাগ্নারি হাউস বেটি ৯৯৫ ১১৯৫। কল বুকিং: Diamond Tours, ৩ 276714. এমনকি ব্রিটিশ রেসিডেন্সের দপ্তরও বসেছিল এই প্রাসাদে। বিস্তীর্ণ চত্বর জুড়ে সবুজের মেলা। কটেজগুলি জলের উপর মূলে ডালমান যেন। সুন্দর এই পরিবেশ থাকার পক্ষে রমণীয়। সকাল ৬-০০টা থেকে রাত ১২-০০টায় ২০ টাকার ফেরি সার্ভিসও চলেছে। অবু: ম্যানেজার বা KTDC.

এছাড়াও হোটেল রয়েছে সারা শহরময় এর্নাকুলমে। *H Presidency, Paramara Rd-18, A7R3B1, ৩ 363100, A/c S ১২৫০ D ১৬৫০ সুইট ২৫০০; *H Hilltop Resorts, Joymatnagar, Kochi-683561, ৩ 540100, A/c S ১২৫০ D ১৬০০ কটেজ ৪৭৫০; Kanichai L, ৩ 355775, S ৬৫-১২৫ D ৮৫-১৫০ A/c ৩০০; Sun International, near Bus Stand, Rajaji Rd-35, ৩ 364162, S ১৭৫ D ২৫০ A/c D ৪০০; Elite Tourist Home, Paramara Rd, opp Town Hall-18, ৩ 355738, S ১০০ D ১৭৫; Good Shepherd Tourist Home, Jos Jn, M G Rd-11, ৩ 367629, S ৮৫ D ১৫০ A/c D ৩০০; H Castle Rock, Manorama Jn-16, ৩ 353331, S ১২৫ D ১৭৫ A/c S ২৫০ D ৩৫০; H Excellency, Netippadam Rd-16, ৩ 374001, S ২৫০ D ৩০০ A/c S ৩৭৫ D ৪২৫; H Grace, Narakathana Rd-35, ৩ 353789, S ৮৫ D ১৫০; H Orchid, Kadavanthara-20, ৩ 319135, S ৮০ D ১৫০ A/c S ২০০ D ২৫০ সুইট ৩৫০; H Prasanti, North Fort Gate, Tripunithura, Kochi-682301, ৩ 776073, S ১২৫ D ১৭৫ A/c S ২৫০ D ৩২৫; Usha Tourist Home, Kacheripadi-18, R1½ B1, SAB ৮৫ DAB ১৫০ FR ২০০ A/c D ৩২৫। Omega H, Kalathiparambi Rd-16, S ৮০-১২৫ D ১২৫-১৭৫ A/c S ২০০ D ৩০০; Hotel GEO, Thoppumpady, S ৮৫ D ১৫০ A/c D ২৫০; Star Tourist Home, Koloor-17, S ৮০ D ১৫০ A/c S ২০০ D ২৭৫; La Bella, May Fair, Ambaamedu House, H Broadway-31, S ৬৫ D ১২৫; H Nalanda, Matha Tourist Home, St Vincent Rd, ৩ 355221, S ৬৫-১০০ D ৮৫-১৫০; H Ajanta, H Roshini, near South Rly Stn; H Jafna, Mass H, near North Rly Station-18, ৩ 361364, S ৬০ D ১০০ A/c D ২২৫; এদের কাছে ঘর মেলে সিঙ্গল ৪৫-৮৫ ডাবল ৬৫-১২৫ টাকায়।

Tharevadu Tourist Home, Quiros St, behind GPO, ৩ 226997, D ১২৫-১৭৫, হোটেলটি থাকার পক্ষে ভালই।

• আর আছে Rly Retiring Room, Ernakulam Jn; Youth Hostel, Kakkannadu, ৩ 422808, Government G H,

Broadway-11, ৩ 360502; Ernakulam G H, PWD IB, Mattan Chery; Corporation Travellers Bungalow, Kochi; YWCA, YMCA, Chittoor Rd, Ernakulam, ৩ 355620; এদের কাছেও ঘর মেলে যাত্রীর। তবে, সরকারি আবাসগুলি মূলত সরকারি কর্মীদের জন্য।

তবুও থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে বাস স্ট্যাণ্ডে Ninan's Tourist L; রেল ও বাসের মাঝে H Luciya; M G Rd-এ—H Woodlands, Grand H; Durbar Hall Rd-এ Bharat H; Shanmugham Rd-এ H Hakoba; Canon Shed Rd-এ Bijus Tourist Home; Press Club Rd-এ Bosoto L; রেল স্টেশনের সন্নিকটে Chittoor Rd-এ H Sangeetha, Apsara Tourist Home, Piazza L, Premier Tourist Home ভালই।

আর খাবার হোটেল রয়েছে হুড়িয়ে-ছিটিয়ে সারা শহরময়। তবে, রেল স্টেশনের অদূরে M G Rd ও Canon Shed Rd-এর Indian Coffee House-এর শাখা দুটি সদাই ব্যস্ত। কফির সঙ্গে দেশী-বিদেশী নানানধর্মী আহাৰ্যও মেলে। M G Rd-এ কফি হাউসের বিপরীতে Bimbi fast food-ও সদাই ব্যস্ত। তেমনিই Broadway-র Bharat Coffee House-টিরও প্রশস্তি কফির সঙ্গে নানানধর্মী নিরামিষ আহাৰ্য। আর চীনা ডিসের হাদ নেওয়া যেতে পারে টুরিস্ট অফিসের কাছে Broadway-র Ceylon Bakehouse বা Malang's Restaurant বা সঙ্গীতা থিয়াটারের কাছে Moloy Restaurant বা দ্বারকা হোটেলের পিছনে Chaineese Garden বা শীতাতপ Chik Chow Restaurant-এ। শম্মুগম রোডের H Aurn Jyothi, H Sea Sail, H Refreshment House; এর্নাকুলমে Sea Lord H; বন্ধ মূল্যে ভেজ ও ননভেজ মিলে এম জি রোডে Shaziya H, Swagatha, উডল্যান্ডস হোটেলের Jaya Cafe দক্ষিণী আহাৰ্য পরিবেশায় সদাই ব্যস্ত। আবাদ প্রাঙ্গণ হোটেলের ওয় তলে Regency Restaurant-টিরও যথেষ্ট প্রশস্তি চীনা, ভারতীয় ও মহাদেশীয় মেনু পরিবেশনে। কোর্ট কোটির Princess St-এর Elite H-এ বন্ধ মূল্যে ননভেজ মিল; এ পথেরই শেষ প্রান্তে Uncle Sam's Chinese Restaurant-এ সাচ্চা মজলিপের সাথে চীনা ডিশ পরিবেশায় যথেষ্ট সুনাম। তেমনিই মাল্যাবারের সাথে আরব্য মেনুর মিলনে—biryani, চাল-মিষ্টি-মুখে তৈরি পিঠা জাতীয় appams, নারকেল বাদ্যের stew, ভাপানো চালের idli, কাগজের মতো পাতলা ভাজা সবজির পুরের dosa-র সাথে পাপড়ও মেলে কোটির হোটেল-রেস্তোরাঁর।

সময় স্বল্পতায় যেকোনও ভ্রমণার্থী কোটি বেড়িয়ে কেরল ভ্রমণ সাঙ্গ করতে পারেন। কোটি থেকে ত্রিচূর, পালঘাট হয়ে তামিলনাড়ুর কোয়েম্বাটুর গিয়ে উতকামণ্ড পৌছান। আবার কোটি থেকে কেরল ভ্রমণ শুরু করেও তিরুভনন্তপুরম হয়ে কন্ডাকুমারি বাওয়া চলে। বাসে বা ট্রেনে ব্যাঙ্গালোর বা ম্যাঙ্গালোর আবার মুম্বাইও চলা যেতে পারে এর্নাকুলম থেকে। তেমনিই ত্রিচূরের পথে ৩০ কিমি দূরে আলামালিতে ৪৮০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি সেণ্ট জর্জেস চার্চ, এডাপন্নীতে ৫৯৩এ তৈরি আর এক সুন্দর সেণ্ট জর্জেস কোরেন চার্চ, নিগভমোয়া লোকের পাড় ভাইকোমের সেণ্ট জোসেফ চার্চটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় কোটি থেকে।

কোডাঙ্গাল্লুর /ক্রাসানোর

কোচি থেকে দূরত্ব ৩৮ কিমি। জলবানে ৩৬ ঘণ্টার পথ। কনডাকটেড ট্রাকের মোটরবোটে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। প্যাকেট লাঞ্চ ও পানীয় জল সঙ্গে নিতে ভুলবেন না। বাসও আছে কোচি থেকে ক্রাসানোর।

আজকের কোডাঙ্গাল্লুর এই সেদিনের ক্রাসানোর হাজার দূয়েক বছর আগে ছিল পশ্চিম উপকূলের গুরুত্বপূর্ণ বন্দরনগরী। নাম ছিল তার মসিরিস। কালে কালে ক্রাসানোর। ত্রিচুরের ৩৬ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে উত্তরে ছোটভাই, দক্ষিণে আজিকোড নদী আর পূবে ব্যাক ওয়াটার, পশ্চিমে আরব সাগরে ঘেরা দ্বীপাকার ক্রাসানোরে মশলার স্বার্থে বাণিজ্য করতে বিদেশীরা বার বার এসে উপনিবেশ গড়েছে। এসেছে গ্রিক, রোমান, ইহুদি ও যবন। অতীতে কেরল সম্রাট চেরামন পেরুমলের রাজধানীও ছিল ক্রাসানোরে। এখানকার মন্দিরগুলির মধ্যে ভগবতী ও তিরুবনচিকুলম মন্দির দুটি বিশেষভাবে খ্যাত। আর হিন্দু মন্দিরের আদলে গড়া Cheraman Jama Masjidটি সম্ভবত ভারতের তৈরি প্রথম মসজিদ। ইসলাম ধর্মের প্রবর্তক হজরত মহম্মদের ভক্ত Malik Ibn Dinar-এর (৬৪৩ খ্রি) সম্ভবত ভারতভূমে প্রথম অবতরণ এই ক্রাসানোরে। আর আছে পবিত্র গির্জা দুর্গ ক্রাসানোরে। এমনকি খ্রীষ্ট-শিষ্য সেণ্ট টমাসও ৫২ খ্রিস্টাব্দে ক্রাসানোরের অদূরে কোট্টাপুরমে প্রথম অবতরণ করেন। স্মারক রূপে মারথমা পস্টিফিকাল শ্রাইন অর্থাৎ চার্চ হয়েছে পেরিয়ার নদী যেখানে আরব সাগরে মিলেছে। এর প্রাকৃতিক শোভা সুন্দর। ১৯৫৩য় সেণ্ট টমাসের ডান হাতের হাড়ের টুকরো স্থাপনে চার্চের আকর্ষণ বেড়েছে। তেমনই সুন্দর ক্রাসানোরের পুরম, জানুয়ারি মাসের খালাপোলি, মার্চ-এপ্রিলে ভরনী উৎসব। অতুৎসাহীরা ২৫ কিমি দূরে ত্রিপ্রয়ার-এ শ্রীরাম মন্দির, ২১ কিমি দূরে ইরিনজালাকুডায় রামের অনুজ ভরত মন্দির বেড়িয়ে নিতে পারেন। জলবানে ভ্রমণও কম আনন্দের নয়। থাকার জন্য ত্রিচুর আদরগীয হবে।

মুম্বার

সময় করে একরাত কাটিয়ে যেতে পারেন ব্রিটিশের সামার রিস্ট নিরাল-নির্জনে পশ্চিমবাট পর্বতে চা ও এলাচ বাগিচায় ছাওয়া ১৫২৪ মি উঁচু মনোরম পাহাড়ী শহর মুম্বার-এ। চায়ের প্রসেসিং দেখা ও কেনারও ব্যবস্থা মেলে। ২৬৯৫ মি উঁচু আনামুদি অর্থাৎ হাতির মাথা পাহাড়চূড়োও দৃশ্যমান ১৭ কিমি দূরের মুম্বার থেকে। তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় ১৬ কিমি দূরের মশলা বাগিচা তথা চটুইভাতির বর্ণ ১৮০০ মি উঁচু সেরীকুলাম। মনোহারিত্ব বেড়েছে চিন্নাঙ্গারা ও ভালরা দুই জলপ্রপাতে। মেঘেরাও আকাশ থেকে নেমে এসে লাল-নীল গাম গাছের শিরে ছাড়া ধরে পাহাড়ে। মুম্বার অর্থাৎ

শহর থেকে ৭ কিমি দূরে Mudrapuzha, Nallathanni ও Kundala তিন পাহাড়ী নদীর সঙ্গমে পান্নাভাসাল জলবিদ্যুৎ প্রকল্প ও জলাধার হয়েছে। জলাধারে নৌবিহারেও অভিনবত্ব আছে। তেমনই রাজামালাই অভয়ারণ্য ও এরাডিকুলাম জাতীয় উদ্যানও বেড়িয়ে নেওয়া যায় মুম্বার থেকে। সকাল-সন্ধ্যাে নীলগিরি ধরও দৃশ্যমান এরাডিকুলামে। ৭০ কিমি দূরে Chinnar Wildlife Sanctuary. এর্নাকুলম থেকে দূরত্ব ১২৭ কিমি, নিয়মিত বাস আসছে। পেরিয়ার বা দক্ষিণগামী যাত্রীরা বাসে কুমিলি হয়ে কোট্টায়াম চলুন। দূরত্ব ১৪২ কিমি। বাস আছে ৯৪ কিমি দূরের কোদাইকানালও মুম্বার থেকে। দক্ষিণ ভারতে উচ্চতম (২৬৯৫ মি) আনামুদি পাহাড়চূড়োও দৃশ্যমান মুম্বারে।



থাকার জন্য H Residency, Top Stn Rd, Munnar-685612, ☎ (04865) 30265, S ৬০০, D ৭৫০, সুইট ১২৫০; H Hill View, Old Munnar, ☎ 30567, D ৪৫০-৬৫০; S N Lodge, Old Munnar, ☎ 30212; H Poopada, Old Munnar, ☎ 30223; Krishna L, near Bus Std; Royal Retreat, near KSRTC Bus Std, ☎ 30240, D ৬০০-১২৫০; Edassery Eastend, Temple Rd, ☎ 30451; Iglo Tourist Home, Chithaipuram, ☎ 63258; High Range Club, ☎ 30253; Govt Guest House, ☎ 30385, অব্: DC, Eddakki ছাড়াও প্রাইভেট হোটেল আছে নানান মুম্বারে।

আলুতা/আলওয়ে

কোচি-সোরানুর পথের আলওয়ে আজ হয়েছে আলুতা। রেল ও বাস আছে এর্নাকুলম থেকে ত্রিচুরে। পথেই পড়ে পেরিয়ার নদীর তীরে শিল্পনগরী কেরলের রুপ—আলওয়ে। এর্নাকুলম থেকে দূরত্ব ২১ কিমি। কোদাই-এরও পথগিয়েছে এর্নাকুলম থেকে আলওয়ে হয়ে। ডিসেম্বর মাসে আলওয়ের শিবরাত্রি উৎসবের খ্যাতি সারা দক্ষিণ ছুড়ে। অতীতের মহারাজার প্রাসাদে ট্যুরিস্ট বাংলা বসেছে।

বাণিজ্যিক শহর আলওয়ের মূল আকর্ষণ ১০ কিমি দূরের কালাডি। ৮ শতকের অবৈত দার্শনিক একেশ্বরবাদী জগৎগুরু শ্রীশঙ্করাচার্যর জন্ম এই কালাডিতে। সেই স্থিতিতে মন্দির হয়েছে দক্ষিণামূর্তি তথা শঙ্করাচার্যর। মূল সড়কে ৮তলা কীর্তিস্তম্ভ সৌখিন ও সুন্দর। আচার্যের বর্ষময় কর্মজীবন বৃত্ত হয়েছে। পাদুকামও পমে আচার্যের রূপোর পাদুকা ও দেওয়াল চিত্রে শঙ্করাচার্যর জীবনাব্যয়ন দেখে নেওয়া যায়। আর রয়েছে দেবী সারাদা, ভগবান শ্রীকৃষ্ণর মন্দির ও ১৯৭৬এ তৈরি শ্রীরামকৃষ্ণ অবৈত আশ্রম। তেমনই রয়েছে চেরামান জামা মসজিদ। বয়ে চলেছে পেরিয়ারের শাখা পূর্ণা নদী।

কালাডির নিকটতম রেল স্টেশন ১০ কিমি দূরে অজামানী আর বিমানবন্দর ৪৮ কিমি দূরে কোচি। বাস আসছে আলুতা, অজামানী, কোচি—ত্রী থেকেই কালাডি। থাকারও ব্যবস্থা মেলে

আরমের *Shri Sankaracharya New GH-এ*। আর আছে রেল থেকে ১ কিমি দূরে শহরের প্রাণকেন্দ্রে *H Periyar; Seven Stars Periyar Hotel Complex*, ② 25465; *Alankar Tourist Home*, ② 23162; *Govt Guest House*, ② 23636; *PWD Rest House*.

তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় আলওয়ে তালুকে এর্নাকুলম বা কোচি থেকে ৪৫ কিমি দূরের মালারায়ার। বয়ে চলেছে পেরিয়ার নদী। শান্ত-নির্জন মালারায়ারের মূল আকর্ষণ কুরিসমুড়ি পাহাড়। ইংরেজিতে অর্থ বার *মাউন্ট অব দি ক্রুশ* / কিংবদন্তী, অতীতকালে শিকারে যেত শিকারীরা কুরিসমুড়ি পাহাড়ে। তাদেরই আবিষ্কার খেতগুত্র, শঙ্কগুত্রশোভিত এক দিব্যপুরুষ পাহাড়ভূমিরে ঘ্যান্ ময়। একাদশ দশক মেনে সোনালী ক্রশের। লোকমুখে সেকথা ছড়িয়ে পড়তে অলৌকিক ঘটনা দেখতে যাত্রী আসেন নানান—দর্শনও মেনে সোনালী ক্রশের। আর মেনে সেই দিব্যপুরুষ অর্থাৎ যীশুখ্রিস্টের শিবা (52 AD) সেট টমাসের পায়ের ছাপ কুরিসমুড়ি পাহাড়ে। খ্রিস্টধর্মীদের কাছে পরমতীর্থ এই কুরিসমুড়ি। তেমনই উচিত হবে চলার পথে ৯০০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি সেট টমাস প্যারিস চার্চটিও দেখে চলা।

ত্রিসুর/ত্রিচূর

আলওয়ে-সোরানুর পথে আলওয়ের ৫৮ কিমি দূরে কোচিরাজসের প্রাচীন রাজধানী ত্রিচূর। কালে কালে জামোীর রাজাদের শব্দে যায় ত্রিচূর। আর ব্রিটিশ কালে ১৮ শতকের শেষার্ধ্বে। তবে, ত্রিচূরের আধুনিকতা ১৭৯০এ সিংহাসনে বসে রাজা রামা ভার্মার হাতে। রেল ও বাস যাচ্ছে কালাডি হয়ে। কালাডির দূরত্ব ৫৫, সোরানুর ৩২, পালঘাট ৬৭, এর্নাকুলম ৮৫ কিমি। হাওড়া-কোচি/তিরুভনন্তপুরম, বোকারো স্টিল সিটি-আলেঙ্গি, চেমাই-তিরুভনন্তপুরম, চেমাই-আলেঙ্গি, সোরানুর-তিরুভনন্তপুরম ডেনাপ এন্ড, মুখাই-তিরুভনন্তপুরম/ কন্যাকুমারি এন্ড, রাজকোট-কোচি/ তিরুভনন্তপুরম, ত্রিচি-কোচি এন্ড, ব্যাসালোর-কন্যাকুমারি এন্ড, তিরুভনন্তপুরম-ম্যাসালোর মালাবার/পরন্তুরাম এন্ড, হাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে আলওয়ে/ত্রিচূর হয়ে। বাস যাচ্ছে উটির যাত্রী নিয়ে কোয়েম্বাটুরে ত্রিচূর হয়ে।

কেরলের সঙ্কট, ইতিহাস ও প্রকৃতভূমির গীঠস্থান ত্রিচূর। মালারায়াম বাগধারায় ত্রিচূর আজ হয়েছে ত্রিসুর। নীলগিরি পাহাড়ের দক্ষিণে ছোট পাহাড়ী টিলায় ভাড়াকুনাথন শিব মন্দিরের জন্য ত্রিচূরের প্রশস্তি। দারুতে প্যাগোডা হয়েছে মন্দির শিরে। বৈশাখ (৮ই মে) মাসের জীকজমকপূর্ণ *বিপুল পুরম উৎসবে* বর্ণাঢ্য মিছিল বেরোয়—কলমলে সাজে হাতিও অংশ নেয় মিছিলে; আতসবাজি পোড়ে সারারাত ধরে। সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানও চলে দিন-রাত জুড়ে। যাত্রীও আসেন দূর-দূরান্ত থেকে উৎসবে। মন্দিরটি দক্ষিণী প্রভাব-মুক্ত। সুউচ্চ গোপুরমের অভাব। প্যাগোডাধর্মী কারুকার্যময় মন্দিরে পাথরের দেবতা—বিদ্যে আবৃত। মন্দিরের আর এক আকর্ষণ নেওয়ারালটিয়ে মহাভারত-আখ্যান। আর আছে ভগবতী মন্দির, অদূরেই কৃষ্ণ মন্দির। ত্রিচূরের প্রাসাদ, দুর্গ,

চিড়িয়া-খানা, যাদুঘরও কম আকর্ষণীয় নয়। চিড়িয়াখানায় সাপের সংগ্রহ ভারতে অনন্য।



KTDC-র *Yatrinivas*, Stadium Rd, Thrissur-680020, STD 91487, ② 332333, S ১০০ D ১৫০ F ৩০০ A/C S ৩৫০ D ৪০০। আর অতীতের রামলিয়াম রাজপ্রাসাদে *টুরিস্ট বাংলা* বসেছে, D ২০০ A/C ৩০০-৬৫০। আর আছে রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ডের কাছে সাধারণ মানের *Joya L*, Kurrupad Rd; *Shanti Tourist Home*, *Chandy's Tourist Home*, Stn Rd; এসের চার্জ S ৫০-৮৫ D ৮০-১৫০। *Bini Tourist Home*, Round North, S ১২৫ D ১৭৫; **H Elite International*, Chambolli Lane-1, ② 21033, D ৩০০ A/C D ৬০০ সুইট ১২৫০; **Casino H*, T B Rd-680021, ② 24699, S ৩৫০ D ৪০০ A/C S ৬০০-৯৫০ D ৭৫০-১২৫০ সুইট ১৬০০-২৫০০; *H Suria International*, Kokkalai; *Allukkas Tourist Home*, ② 24067; *Central H*, Chembukavay; *Bini T H*, *Volga T H*, *H Peninsula*, M G Rd; *H Luciya Palace*, Marar Rd, ② 24731, S ১৫০ D ২২৫ A/C S ২৭৫ D ৩৫০; *H Skylord*, Municipal Office Rd-1, ② 24662, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A/C S ২৫০ D ৩২৫; *H Suria*, Kokkalai-21, S ৮৫ D ১২৫-১৫০ A/C S ২০০ D ৩০০; *Ambassador H*, State H, হাড়াও নানান হোটেল। *YMCA*, *YWCA*, *Govt G H*, ② 332300; *রেলের রিটায়ারিং ক্লব* আছে ত্রিচূরে।

গুরুভায়ুর: ত্রিচূর থেকে ৩২ কিমি উত্তর-পশ্চিমে, কোচির ৮৮ কিমি দূরে বাসে গুরুভায়ুরের শ্রীকৃষ্ণ মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন। নাগেরকয়েল-গুরুভায়ুর এক ট্রেনও যাচ্ছে তিরুভনন্তপুরম/এর্নাকুলম জং/ত্রিচূর হয়ে। কিং-বদন্তী, বিশ্বকর্মার তৈরি মন্দিরে পবনদেব ও দেবগুরু বৃহস্পতির প্রতিষ্ঠিত দেবতা শঙ্খ-চক্র-গদাধারী বিশ্বকর্মা শ্রীকৃষ্ণ অর্থাৎ গুরুভায়ুরাঙ্গন বা *লর্ড অব গুরুভায়ুর*। তবে, বর্তমান মন্দিরটি ১৯ শতকের। ধ্বজস্তম্ভটি সোণায় মোড়া। পাশেই দীপস্তম্ভ। গোপুরমটি ১৭৪৭এ তৈরি। মন্দির হয়েছে আরও বেশ কয়েকটি—দেবতাও রয়েছে নানান। ফেব্রুয়ারি মার্চের পুরম উৎসবে আতসবাজি পোড়ে, মিছিল বেরায় লালমলে সাজে; এমনকি কৃষ্ণআটম নৃত্যও পরিবেশিত হয় উৎসবে। ৩-১২-৩০ ও ১৭-২১-০০টায় নানান উপাচারে পূজিত হচ্ছেন দেবতা।



ধাকারও নানান ব্যবস্থা মেনে *Guruvayur-680101*, STD 04889৭—KTDC-র *H Nandanam*, East Nada, Guruvayur-680101, ② 556266, S ১৫০ ২৫০ D ২০০ ২৫০ ২৭৫ A/C D ৪৫০; এসের ই *H Mangalaya*, RIB1, East Nada, ② 556267, ভাড়া একই রকম।

আর আছে *East Nada-য়—H Elite*, ② 556215; *Arunodayam T H*, *Purnima T H*, *Amrutha T H*, *Nandini T H*; *West Nada-য়—H Ajodhya*, ② 556226; *Ardhana T H*, *Indian T H*, *Libra T H*, *H Surya*, *Namaskar T H*, *Murali L*; *South Nada-য়—*H Vanamala Kuzumam*, ② 556702, D ২৭৫-৩৫০ A/C D ৪৫০ সুইট ৬০০-৮৫০; *Maharaja T*

H, Sree Venugopal L; opp KSTRC Bus Stand—Panchami T H, Vijay Sree L; Guruvayur Devaswom—Sreevalsam G H, ⑤ 556539, অব্: Administrator, Guruvayur Devaswom; Guruvayur Township R H, ⑤ 536809; Govt Guest House, ⑤ 556696; Panchajanyam R H, ⑤ 556535; Kausthbm R H, Sathram; ঘড়াও নানান।

মালামপুবা

কোয়েম্বাটুর-ত্রিচুর পথে NH-47এ পালঘাট থেকে কালিকটমুখী ৮ কিমি যেতে মালামপুবা। পালঘাট থেকে দূরত্ব ১৪ কিমি, বাস যাচ্ছে। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে মালামপুবার বাঁধটি খুবই চিত্তাকর্ষক। রাতের বেলায় KTDC-র Garden House, Malamapuzha-678651, ⑤ (91491) 815217, D ৩০০ ৪০০ A/c ৭০০; KTDC-র ইকোনমিক M Arram, Erumayur, Alathoor, PO-Palakkad, ⑤ (4922) 22024. আর আছে রাজ্য পর্যটনের Tourist Home; PWD Rest House; Govt Guest House, ⑤ 55207; The Gowardhan Rock Garden, ⑤ 56010 মালামপুবা। পাহাড়ী টেকের গার্ডেন হাউস থেকে লেক ও ফুলবাগিচার মনোহর দৃশ্য পর্যটকদের চিত্তহরণ করে। রক্তবেরঙের নানান মাছে ভরা বিশালাকার লেকের জলে বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে। মালামপুবা থেকে পালঘাট হয়ে কোয়েম্বাটুরও যাওয়া চলে।

পালঘাট/পালাক্কাদ: কেরল ও তামিলনাড়ু সীমান্তে কোয়েম্বাটুরের ৫৫ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে পশ্চিমঘাট পর্বতের পাদদেশে কেরল ভূমে পালঘাট। পালঘাট থেকে ত্রিচুরের দূরত্ব ৮০ কিমি। বাস যাচ্ছে কেরলের শস্যাগার পালঘাট হয়ে রাজ্যের দিকে দিকে। নানান পাহাড়ি নদী বিদ্যোত পালঘাটে পাহাড় ও অরণ্যের সমন্বয় ঘটেছে। জংশন ও সিটি দুই রেল স্টেশন পালঘাটে—শহর থেকে ৫ কিমি দূরে Palakkad Jn. আর নিকটতম বিমানবন্দর কোয়েম্বাটুর। অসময়ের যাত্রীদের জন্য থাকারও নানান ব্যবস্থা Palakkad, STD 0491এ মেলে—H Indraprastha, ⑤ 534647, D ৪৫০ A/c ৬৫০; Walayar Motel, ⑤ 66101, D ৩০০ A/c ৪৫০; H Fort Palace, West Fort Rd, S ১৫০ D ২২৫; H Devaprabha, T B Rd; Hilux, near Express Bus Std, ⑤ 25433, DAB ১৫০-২২৫; H Rajdhani, Shoranur Rd, ⑤ 28949; H Apsara ছাড়াও নানান হোটেল আছে পালঘাটে।

শহরের প্রাণকেন্দ্রে ১৭৬৬ খ্রিস্টাব্দে হায়দর আলির তৈরি দুর্গ ১৭৯০এ ব্রিটিশের হাতে সংস্কার হয়। মন্দিরও আছে নানান পালঘাটে। কালপাখি শিব মন্দিরটি বিশেষভাবে উল্লেখ্য। নভেম্বরের রথযাত্রা বরণীয়া উৎসব। শহরের পশ্চিমে কারুকার্যবিন প্রাচীরে ঘেরা ৫০০ বছরের প্রাচীন চন্দ্রনাথ বামী জৈন মন্দিরটিও আর এক দৃষ্টব্য। তেমনই DFO, Palakkad-এর অনুমতিতে গাড়িতে ২ ঘণ্টায় ৯০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত ভার্জিন করোস্ট সাইলেন্ট ড্যান্সি ওয়াইন্ড লাইফ স্যাক্চুরারিটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আর আছে পালঘাট থেকে ৯৭ কিমি দূরে তামিলনাড়ুর আন্নালাই

লাগোয়া ২৮৫ কিমি ব্যাপ্ত পরামবিকুলাম ওয়াইন্ড লাইফ স্যাক্চুরারি।

কোজিকোড়/কালিকট

তিরুভনন্তপুরম-এর্নাকুলম-ম্যাঙ্গালোর ও চেন্নাই-ম্যাঙ্গালোর রেলপথে কালিকট। মালামপুবা থেকে সোরানুর এসে ট্রেন বা বাসে কালিকট চলায় সুবিধা। পথের দূরত্ব ১৪৫, সোরানুর থেকে ৮৬, কোচি ২২৪, বন্দীপুর ১৬৯, ত্রিচুর ১১৮, তিরুভনন্তপুরম ৪৪৫, ম্যাঙ্গালোর ২২২, ম্যাঙ্গালোর ৩৫৪ কিমি। রেল যাচ্ছে ম্যাঙ্গালোর ৫ ঘ, এর্নাকুলম ৫ ঘ, তিরুভনন্তপুরম ১০ ঘণ্টায় কালিকট থেকে। বাসও যাচ্ছে নিয়মিত কালিকট থেকে তিরুভনন্তপুরম, আলোমি, কোচি, কোট্টায়াম ছাড়াও রাজ্যের দিকে দিকে। বাস যাচ্ছে কোয়েম্বাটুর, উটি, মহেশ্বর, ম্যাঙ্গালোর, ম্যাঙ্গালোর, পণ্ডিচেরী, মানুরাইছাড়াও সারা দক্ষিণে। শহরের Mavoor Rd-এ বাস স্ট্যান্ড। আর মিনিট পনেরোর ব্যবধানে রেল স্টেশন কালিকটে। IAC-র বিমান দৈনিক সার্ভিস গড়েছে কালিকট থেকে মুম্বাই, কোয়েম্বাটুর, চেন্নাই ও ম্যাঙ্গালোরের। আর প্রাইভেট বিমান Jet Airways দৈনিক সার্ভিসে যাচ্ছে কালিকট-মুম্বাই-আমেদাবাদ, কালিকট-মুম্বাই-ওরসাবাদ, কালিকট-মুম্বাই-কলকাতা, কালিকট-মুম্বাই-জমপুর, কালিকট-মুম্বাই-দিল্লীর মাঝে। ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে একইপথে। শহরে চলছে অটো ও রিকশা কালিকটে।

অতীতে জামোরিন (সমুদ্রের অধিপতি) রাজাদের রাজধানী ছিল কালিকটে। শুধু রাজাই নয়, নামেরও বদল ঘটেছে—কালিকট হয়েছে কোজিকোড়। তবে, ভারতের অন্যতম প্রাচীন বন্দর কালিকটের ১৬ কিমি দূরে কাল্পাদ সাগরবেলায় ১৪৯৮ খ্রিস্টাব্দের ২০ মে ভাস্কো-ডা-গামা অবতরণ করেন। সংঘাতেরও শুরু সেই থেকে। ১৫০৯ ও ১৫১০এর পর্তুগিজ হানা দমন করেন জামোরিন রাজা। আর ১৫১৫য় রাজার সঙ্গে চুক্তিবলে কারখানা গড়ে পর্তুগিজ। ব্রিটিশ আসে ১৬১৫য়। ১৭৮৯এ টিপুস সঙ্গে সন্ধিবলে ১৭৯২এ ব্রিটিশের দখলে যায় কালিকট। বহুশিল্পের জন্যও কালিকট খ্যাত অতীতকাল থেকে। এমনকি ক্যালিকো শব্দটিও এসেছে এই কালিকট থেকে অপভ্রংশ হয়ে। বেশকিছু প্রাচীন মন্দির, মসজিদও চার্ট রয়েছে কালিকটে। ২ কিমি দূরের সাগর সৈকতটিও মনোহর। শহর থেকে ৫ কিমি দূরে ইস্ট হিলে প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের Pazhassiraja Museumএ সোম ছাড়া ১০—১৭-০০টায় কয়েন, ব্রোঞ্জ মূর্তি ও পেপেরাল চিত্র ছাড়াও নানান কিছু দেখে নেওয়া যায়। লাগোয়া Krishna Menon Museum-এ রাজা রবি ভার্মা ও রাজা রাজা ভার্মার ছবি, সারা বিশ্ব থেকে ডিকে কৃষ্ণমেননের পুরস্কার পাওয়া নানান কিছু সোম ও বুধ ছাড়া ১০—১৭-০০টায় দেখার ব্যবস্থা। আর আছে মাহ—ওটকি হচ্ছে,

বিশেষেও আছে। এছাড়াও বিশেষ আছে নানান মশলা, নারকেলজাত সস্তার, চা ও কফি। কালিকটের আর এক আকর্ষণ ১১ কিমি দূরের Bepore থেকে লাক্ষাদ্বীপের জলযান। বেপুরের বাড়ি-ঘরও সুন্দর।



Calicut-673001, STD 0495-এ হোটেলও আছে নানান—*Alkapuri G H, M M Ali Rd, Kozhikode-2, ৬5351, R1B1, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৪০০-৪৭৫; H Regency, M M Ali Rd-2, ৬5321, D ২৯০ A/c D ৪৯০ সুইট ৯৯০; কাছেই মান ও দামে অলকাপুরী তুল্য Mogul H, ৬362A; *Beach H, Beach Rd-2, R1B1, ৬73852, D ২০০ A/c D ৩৫০; *Sea Queen H, Beach Rd-1, R1B1, ৬36604, S ৩০০ D ৩৭৫ A/c S ৪০০ D ৪৫০-৬২৫ সুইট ৮০০; Tourist Dak Bungalow, Beach Rd-1. H White Line, Kallai Rd, ৬5211; Calicut Tower, New Bus Std, ৬5603; Aradhana Tourist Home, ৬302222.

বাস স্ট্যান্ডের অদূরে Mavoor Rd-673001-এ—H Faura, ৬3601, S ১৫০-২৫০ D ২৫০-৪৫০, থাকার পক্ষে উত্তম; Delma Tourist Home, D ১২৫-২২৫; Neelina Tourist Home, Western Tourist Home, Kingsway Tourist Home, Guest House Rd-1-এ—Luxmi Bhavan Tourist Home, Kakkodan Tourist Home, H Luxmi Bhavan Tourist Home, H Malabar Palace, ৬4974, A/c S ৮৫০-১০৫০ D ৯৫০ ১২৫০ সুইট ১৫০০-১৭৫০। Town Hall Rd-1-এ—*Paramount Tower, (204), ৬2731, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪২৫ সুইট ৮৫০-১৭৫০; Kulpaka Tourist Home, A20R1, ৬7171, S ২৫০ D ৩০০-৪৭৫ A/c D ৪৫০-৬৫০। Jail Rd-এ—Sasthapuri Tourist Home. Khymadi Motels, Arayedathupalam-4, ৬7641, R1B1, D ১৮০-৩২৫ A/c D ৩৫০-৬০০; N C K Tourist Home, ৬5331, S ৮৫ D ১৫০ A/c S ২২৫ D ৩২৫; Metro Tourist Home, ৬5216, S ৮৫ D ১৫০ A/c S ২৫০ D ৩২৫; লাগোয়া H Hyson, Bank Rd, ৬5221, D ১৫০ A/c D ২৭৫; H Sajina, ৬4983, S ১০০ D ১৫০ A/c D ২৫০।

রেল স্টেশন থেকে বেরিয়ে বাঁয়ে গিয়ে ডাইনে M P Rd-এ Coronation L, S ১০০ D ১৭৫; H Nalanda, near Rly Gate-3; H Maharani, Taluk Rd-4, ৬1541, R2, S ১০০ D ১৫০-২০০ A/c S ৩০০ D ৩৫০-৪৫০; H Ratnagiri, Annie Hall Rd-2; Modern Hindu H, Husur Rd; হাড়াও হোটেল আছে নানান কালিকটে।

আর আছে KTDC-র H Malabar Mansion, S M St, Kozhikode-673001, R1B1, ৬(91495) 722391, S ১৭৫ ২২৫ D ২২৫ ২৭৫ A/c S ৩৬০ ৪৫০ D ৪০০ ৫০০; Govi G H, West Hill, ৬76620; D ১৫০-২২৫; PWD Rest House, West Hill, ৬52720; YMCA, near Rly Gate-4, ৬55740; YWCA, Cannore Rd, ৬54604; হাড়াও রেলের স্টেশনারিং রুম কালিকটে।

খাবার হোটেলও নানান কালিকটে। তবুও যেন হোটেল কৌরার Ruchi Restaurant-এর ভেজ মিল ও পাশেই H Sarovar-এর

ননভেজ মিল পরিবেশায় যথেষ্ট সুনা। হোটেল শোভারও বাজার চত্বরে H Sea Shell-এরও প্রসিদ্ধি ননভেজ মিলে।

কালিকট থেকে ৫০ কিমি দক্ষিণে মালাবার উপকূলে কালিকট-কাদানোর সড়কের মেলাডি গ্রামটিও নতুন করে প্রসিদ্ধি পেয়েছে—ভারতের সোনার মেয়ে পি টি উবার জন্ম এই মেলাডিতে।

কালিকটের ৬০ কিমি উত্তরে কেন্দ্রীয় শাসনাধীন পশ্চিম চৈরীর অংশ মাছেও বেড়িয়ে নিতে পারেন অভ্যাৎসাহীরা। ফরাসি দখলে যায় ১৭২১এ মাহে। থাকেও দীর্ঘকাল—১৯৫৪র ১লানভেশ্বর পতিচৈরীর সাথে ভারত রাষ্ট্রে হস্তান্তর পর্যন্ত। নারকেল বাথিকায় ছাওয়া পাহাড়ী মাহের জলবায়ুতে কেরলেরই প্রতিচ্ছবি মেলে।

৯ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত মাহেতে থাকার জন্য বাস থেকে ১ কিমি দূরে টেগোর পার্কের কাছে আছে Government Tourist Home. তবে সদাই ব্যস্ত এরা সরকারি অতিথি নিয়ে। আর আছে H Arena, Maidan Rd, D ১৫০-২২৫ A/c D ৩০০; বাস স্ট্যাণ্ডে Rivera Tourist Home; আহার্যও মেলে এদের Rainbow Restaurant-এ। আর ৮ কিমি দূরে কেরলের তেলিচেরী-তে হোটেলের আধিক্য মেলে।

মাছে বেড়িয়ে বাস বা রিকশায় চলা যেতে পারে ৮ কিমি উত্তরে কেরলের তেলিচেরী। তারও আগে ব্রিটিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি আসে লবঙ্গ ও দারুচিনি কিনতে—গড়ে তোলে কারখানা মালাবার উপকূলের তেলিচেরীতে (কেরল) ১৬৮৩তে। আর দুর্গ গড়ে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি ১৭০৮এ। দীর্ঘবসের বাস—মাছ ধরা জীবিকা এদের। সাঁঝে জেলে নৌকা ফেরে গভীর সমুদ্র থেকে মাছ নিয়ে। তেলিচেরী থেকে বাস বা ট্রেনে চলা যেতে পারে ম্যাঙ্গালোর বা কেরলের কোচি বা কালিকটে।

থাকারও নানান লজিং তেলিচেরীতে—*H Pranam, Narangapuram, Tellicherry-670101, ৬220972, S ২৫০ D ২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; একই মানের একই দামে Paris Lodging House, Logans' Rd. আর আছে Taj Lodging, Chattanchal Tourist Home, Brothers T H, Minerva T H, Impala T H, এদের রেট S ৮০-১৭৫ D ১০০-২২৫।

কাঙ্গুর/কাদানোর

কালিকট থেকে ২ ঘণ্টার রেলপথে কাঙ্গুর। কিছুকাল আগেও কাঙ্গুর ছিল কাদানোর। আরব সাগরের বুক বেয়ে ম্যাঙ্গালোর গামী ট্রেন আছে। দূরত্ব ৭২ কিমি কালিকট থেকে আর ম্যাঙ্গালোর ১৩১ কিমি। ৪-৫৫য় কাদানোর ছেড়ে ৬-৪০এ কালিকট, ৮-৩০এ সোরাবুর পৌঁছে ১০-৫৫য় এর্নাকুলম থাকে ৬30৪ কাদানোর-এর্নাকুলম এক্স। কাদানোর ফেরে ১৭-১০এ এর্নাকুলম থেকে।

দীর্ঘকাল ধরে জামোরিন রাজার প্রবল প্রতিদ্বন্দ্বী কোলাথিরি রাজাদের রাজধানী ছিল। কাদানোরও বন্দরনগরী। মার্কোপোলোর ভারত-বৃত্তান্তেও কাদানোরের মশলার কথা মেলে। ১৫ শতকে পর্তুগিজদের আগমনে

রমরমাও বাড়ে কান্নানোরের। দুর্গ গড়ে পর্ভুগিজরা।
ওলন্দাজরাও উপনিবেশ গড়ে কান্নানোরে। আর ব্রিটিশ
দখলে যায় ১৭৯২এ। গরম কম, সামুদ্রিক বাতাস ঠাণ্ডা
রেখেছে শহরকে। কান্নানোরের আর এক অবদান ভারতীয়
সার্কাস শিল্পীদের বড় একটা অংশের যোগান দান।

পর্যটকদের জন্য KTDC-র H Yatrivas, near Police
Club, Kannur-670002. ☎ (91497) 500717, S ১০০ D
১৫০ A/c S ৩৫০ D ৪০০; এদেবই আর এক সংস্থা Motel
Aarun; সার্কিট হাউসও আছে। আর প্রাইভেট হোটেল Kamala
International Tourist H. S M Rd, Kannur, ☎ 66910, S
১৫০-২২৫ D ২৫০-৩২৫ A/c S ৩০০-৪২৫ D ৩৭৫-৬০০
সুইট ৮৫০; Omars Inn, Station Rd, ☎ 63313; H Savoy,
Beach Rd, ☎ 60074, Chuyis, Seaside Cliff, Vichitra,
Kavitha ছাড়াও নানান। আর আছে Govt Guest House,
☎ 68366; PWD Rest House কান্নুরে।

পর্ভুগিজদের গড়া সেন্ট অ্যানজেলাস দুর্গ ১৬৬০এ
ডাচরা দখল করে ১৬৯২এ কান্নানোরের রাজাকে বিক্রি
করে। আর ১৭৯০এ ব্রিটিশের দখলে যেতে মালাবারে মুখ্য
ঘাটি গড়ে ব্রিটিশ।

কান্নানোর থেকে সড়কপথ গিয়েছে মহীশূরের। পথ
এসেছে কালিকট থেকেও। পাহাড়ী পথ। পথশোভা সুন্দর।

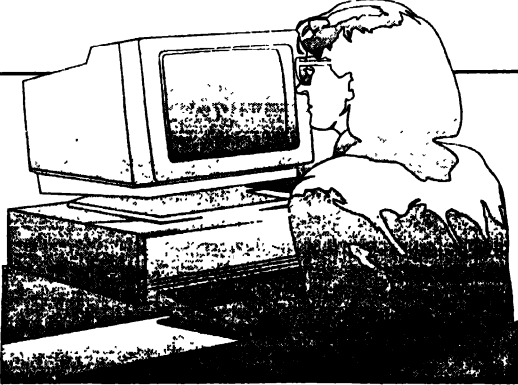
কালিকট থেকে ৬৬ কিমি দূরের চুন্দেল হয়ে আরও ৩১
কিমি গিয়ে সুলতানস ব্যাটারি। পথ এসেছে ৮৫ কিমি দূরের
উটি থেকেও শুভালুর হয়ে মুখুয়ালাই লাগোয়া দিন হাজার
ফুট উঁচু সুলতানস ব্যাটারির। নিয়মিত বাস চলে। কফির
জন্য খ্যাতি আছে এর। সামান্য এণ্ডেই পেরুমানাম কেষ্ট্রা।

মহীশূরের সড়কখাত্তার বিশ্রামও নিতে পারেন KTDC-র
Motel Aaram, Chermal Rd, Sultan Batherly, Wynad.
☎ (4968) 22150, S ১০০ D ১৫০ প্রতি ঘণ্টার বিশ্রাম ৬০।
আর আছে PWD Rest House, ☎ 20225; Govt Guest
House, ☎ 20225 সুলতান ব্যাটারিতে।

কেরল ভ্রমণার্থীদের কাছে কেবল প্রাকৃতিক সৌন্দর্যই নয়
কেরলের হস্তজাত পণ্যের আকর্ষণও কম নয়। ভ্রমণকে আরণীয়
করে রাখতে হাতের দাঁতের সিগারেট কেস থেকে শুরু করে বিভিন্ন
রকম মূর্তি, চন্দন কাঠের নানান সজ্জা, মশলা, কাপড়, রঙবেরঙের
লুঙ্গি, তাঁতজাত বস্ত্র, সোনা ও রূপার ব্রোকেড শাড়ি সঙ্গী করতে
পারেন। কেরল হস্তশিল্পের খ্যাতি আজ সারা ভারতে। মাটি, কাঠ,
শিং, তামা, কাঁসার জিনিসপত্রও পর্যটকদের লোলুপ দৃষ্টি আকর্ষণ
করে। তবে, অল্প পয়সায় কাঠের তৈরি কথাকলি নাচের মূর্তিই
সম্ভবত কেরল ভ্রমণার্থীদের ভ্রমণকে বরণীয় করে তুলতে সবচেয়ে
উপযোগী হবে। যদিও সর্বত্রই পাওয়া যায় তবুও, তিরুভনন্তপুরম
বা কোচি থেকেই স্মারক সংগ্রহ করা উচিত হবে।

for prompt
& smart service

Any
SORTS
OF
DTP
Job



A P C LASER

61 Mahatma Gandhi Road
Calcutta-700 009 ☎ 241 4608

লাক্ষাদ্বীপ

ভারতের আর এক বিচ্ছিন্ন অংশ আরব সাগরের নীল জলে থোয়া প্রবালে গড়া ভাসন্ত দ্বীপ পাল্ম-সবুজ লাক্ষা। তবে, পাহাড়-পর্বত-অরণ্যের অভাব—উপজাতিও নেই আশ্রমানের মতো লাক্ষায়। অতীতের লাক্ষাদ্বীপ, মিনিকয় আর আমিনদীভে—এই তিন দ্বীপ মিলে গঠিত হয়েছে ১.১.৭৩ তারিখে লাক্ষাদ্বীপ। দ্বীপ রয়েছে আরও নানান। সংখ্যা—৩৬; বসতি গড়েছে ১০টি দ্বীপে। মিষ্টি জলের অভাবহেতু বাকি ২৬টি দ্বীপ বসতি গড়ার অন্তরায়। লোকসংখ্যা ৫১৬৮১, সাক্ষরের হার ৭৯.২৩%। ধর্মে গৌড়া—৯৩% সুফি সম্প্রদায়ের সুফি মুসলিম এরা। সহজ-সরল এদের জীবনযাত্রা—সততা এদের জীবনের ব্রত; চুরি-ডাকাতি-রাহাজানি নেই দ্বীপভূমে। যথেষ্ট আভরণ পরে মেয়েরা চলেন-ফেরেন ঘরে-বাইরে। ভাষা—মালয়ালম। ইংরাজিরও চলন আছে। তবে, ব্যতিক্রম ঘটেছে দক্ষিণদ্বীপ মিনিকয়ে। মিনিকয়ীদের ভাষা মাল (Mahl)। লেখার মাধ্যম দিবেই হরফ—আরবির সঙ্গে যথেষ্ট সাদৃশ্য মেলে। হয়তো বা মালদ্বীপের সানিধাই (৬০ কিমি জল-দূরত্বে) এর মূলে। ইংরাজি ও হিন্দিও চলছে মিনিকয়ে। সর্বশ্রুত্রেই অবৈতনিক লেখাপড়া চলছে লাক্ষাদ্বীপে। কর্মই এদের সমাজে শ্রেণীভেদ এনেছে—ভূস্বত্বাধিকারী, নাবিক ও কৃষি এই ৩ শ্রেণীতে। নারকেল ও মাছ ধরা এদের মুখ্য জীবিকা। পর্যটন শিল্পও অতি দ্রুত গড়ে উঠছে লাক্ষায়। আর রয়েছে নারকেল বীথিকা সারা দ্বীপময় আকাশছোঁয়ে। সঙ্গে তার পেয়ারা, পেঁপে, কলা। নারকেলের ছোবড়া থেকে তৈরি নানান জিনিস ঘরোয়া শিল্পের রূপ নিয়েছে। নারকেল থেকে তেল, গুড়, ভিনিগার, কোপরা (শুক্ক নারকেল) তৈরি হচ্ছে। পাতায় হচ্ছে চাটাই ও ঘরের চাল। আর কাণ্ডে নানান শৌখিন গৃহসজ্জা, আস্ত কাণ্ডে হচ্ছে ঘরের কড়ি-বরগা-খুঁটি। আর মাছ সে তো নানানভাবে বিদেশী মুদ্রা আনছে সারা বিশ্ব থেকে। কালো-রূপালি ডোরাকাটা তুনা (চুরা) মাছের প্রশস্তি আজ বিশ্বের দিগ্বিদিকে।

টুপিপাল আবহাওয়ার দেশ লাক্ষা। ৮° থেকে ১২° ৩০'-উত্তর অক্ষাংশ আর ৭১° থেকে ৭৪° পূর্ব দ্রাঘিমাংশে লাক্ষার অবস্থান। তাপমান—গ্রীষ্মে ৩৫° থেকে ২২° আর শীতে ৩২° থেকে ২০° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। আর্দ্রতা ৭০-৭৬%। তবে, বৃষ্টির আধিক্য আছে—ব্যাপ্তিও বেশি বর্ষাকালের। জুন থেকে সেপ্টেম্বরে দক্ষিণ-পশ্চিম আর অক্টোবর থেকে জানুয়ারি মাসে উত্তর-পূর্ব মৌসুমি বায়ুতে বৃষ্টি হয় লাক্ষায়। বছরের গড় ১৬০০ মিমি। গ্রীষ্মকাল—মার্চ-এপ্রিল-মে জুড়ে। শীত নেই বললেই চলে লাক্ষাদ্বীপে।

জল সরিয়ে রাজপথ হয়েছে। টেলিফোনও বসেছে।

দূরদর্শনও পৌছেছে স্যাটেলাইটের সংযোগে রাজধানী কাভারতি ও মিনিকয় দ্বীপে। লাক্ষাদ্বীপের আর এক নয়নলোভন—সূর্যোদয়, সূর্যাস্ত এমনকি চন্দ্রোদয়ও। সূর্যাস্তে সোনালী সন্ধ্যায় সোনা রঙ ধরে সারা সমুদ্রে। পরক্ষণেই আশুন ধরায় বিদায়ী সূর্য সমুদ্রের নীলজলে। আর চন্দ্রোদয়ে অত্র ঝরে সারা লাক্ষাময়। আলোর বন্যায় স্নান করে দ্বীপবালা লাক্ষা।

নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা লাক্ষাদ্বীপ কিছুটা যেন ধোঁয়াশায় ছাওয়া। তবে, মার্কোপোলোর ভ্রমণ বৃত্তান্তে আকর্ষণীয় প্রমীলা রাজ্যরূপে স্থান পেয়েছে মিনিকয়। আজও মাতৃতান্ত্রিক সমাজের প্রচলন লাক্ষা দ্বীপপুঞ্জে। ক্রান্তানোরের হিন্দু রাজা চেরামন পেরুমল ইসলাম ধর্মে দীক্ষিত হয়ে ক্রান্তানোর থেকে মক্কার পথে সামুদ্রিক ঝড়ে দিগভ্রান্ত হয়ে বাঙ্গারাম দ্বীপে পৌছান। বাঙ্গারাম থেকে আগতি পৌছান রাজা। দেশে ফিরে লোক-লস্কর পাঠান রাজা। তারা ছিলেন হিন্দু। বসতিও গড়ে ওঠে হিন্দু সাম্রাজ্যের সেকালের দ্বীপভূমে। কালে কালে আবিষ্কৃত হয় আগতি, আমিনি ও অন্যান্য। ৭ শতকে জেড্ডার *Maraboot* (মুসলিম) ফকির উবেদুল্লাহ (Ubaiddullah) হজরত মহম্মদের স্বপ্নাদেশ মতো ইসলাম ধর্ম প্রচারে বেরিয়ে পথে জাহাজ ডুবিতে আমিনি দ্বীপে আশ্রয় নেন। প্রচারও করেন ফকির সাহেব আমিনি ও আনদ্রোত-এ হিন্দুদের মাঝে ইসলাম ধর্ম। সম্ভবত হিন্দু প্রভাবও তাই এদের মধ্যে আজও বিদ্যমান। ফকির সাহেবের মৃত্যু হতে সমাধিস্থও হন আনদ্রোত-এ। পবিত্র মুসলিম তীর্থ আনদ্রোত-এর এই দরগা। ১৬ শতকে লুইসের আনন্দে পর্তুগিজরা এলেও বিযক্রিয়ায় হত্যা করে দ্বীপ-বাসীরা তাদের। দ্বীপবাসী মুসলিম হলেও রাজত্ব থাকে চিরাকালের হিন্দুরাজার হাতে। আর ১৬ শতকের মধ্যভাগে আরাকানের মুসলিম নৃপতির হাতে ক্ষমতা ফেরে আবার। ১৭৮৩তে আমিনবাসীদের অনুরোধে আরাকানের বিচক্ষণতায় টিপু সুলতানের দখলে আসে কয়েকটি দ্বীপ। আর ১৭৯৯এ টিপুর মৃত্যুতে দখল যায় দ্বীপের ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি অর্থাৎ ব্রিটিশের হাতে। শাসক হন চিরাকালের রাজা।

১৮৪৭এর সামুদ্রিক বন্যায় ক্ষতিগ্রস্ত হয় আনদ্রোত দ্বীপ। চিরাকাল থেকে রাজা আসেন সাহায্যে। প্রয়োজন-ভিত্তিক কতিপূরণে অসমর্থ রাজাকে ধার দেয় ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি। ঋণ শোধের অক্ষমতায় ১৮৫৫য় দখল যায় দ্বীপের ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির হাতে। ১৯৪৭এ মূল ভূখণ্ডের সঙ্গে লাক্ষাও স্বতন্ত্রিত হয় ভারত রাষ্ট্রের হাতে। সেই সুবাদে ১৯৫৬ পর্যন্ত সাম্রাজ্যের অংশ ছিল লাক্ষা। ১লা নভেম্বর,

১৯৫৬ কেন্দ্রশাসিত অঞ্চল রূপে শাসনভার যায় কেন্দ্রীয় সরকারের হাতে। আর ১৯৭৩এ নামকরণ হয় লাক্ষাদ্বীপ। নীল জলে থোয়া প্রবালে গড়া লাক্ষার নৈসর্গিক সৌন্দর্য আজ ভারত তথা বিশ্ববাসীর অদম্য আকর্ষণ।

জাতীয় স্বার্থে দ্বীপবাসীদের স্বকীয়তা বজায় রাখতে লাক্ষাদ্বীপ অর্থাৎ শত সহস্র দ্বীপে যাতায়াতে নানান বিধিনিষেধ। অনুমতিও লাগে ভারতীয়দের লাক্ষাদ্বীপে যেতে। অনুমতির জন্য ৪ কপি পাসপোর্ট ফটোসহ পুরো নাম, জীবিকা, ঠিকানা, জন্ম তারিখ ও স্থান জানিয়ে The Asstt General Manager, Lakshadweep Office, Indira Gandhi Road, Willingdon Island, Kochi-682003, ☎ 668387, Fax 0484-668647-কে যথেষ্ট আগেই লিখুন। আর বিদেশীদের—নাম, ঠিকানা, নাগরিকত্ব, পাসপোর্ট নম্বর, ইস্যু তারিখ, সময়সীমা, জীবিকা, জন্ম তারিখ ও স্থান জানিয়ে একই ঠিকানায় বা Liaison Officer, Lakshadweep, 202 Kasturba Gandhi Rd, New Delhi-110001, ☎ 386807, Fax 3782246-কে লিখতে হয়।

লাক্ষাদ্বীপ □ রাজধানী: কাক্তারতি। আয়তন: ৩২ বর্গকিমি। লোকসংখ্যা: ৫১৬৮১। পুরুষ: ২৬৫৮২। নারী: ২৫০৯৯। ১৯৮১-৯১এ লোক-সংখ্যা বৃদ্ধি: ১১৪৩২। বৃদ্ধির হার: ২৮.৪০%। প্রতি বর্গকিমিতে বাস: ১৬১৫। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৪৪। সাক্ষরের হার: ৭৯.২৩%। প্রধান ভাষা: মালয়ালম। ট্রপিক্যাল ক্লাইমেটের দেশ লাক্ষা। তাপমান গ্রীষ্মে ৩৫.২২° আর শীতে ৩২.২০° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। আর্দ্রতা ৭০.৭৬%।

বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে এপ্রিল মাস। উচিত হবে SPORTS আয়োজিত প্যাকেজ ট্যুরে অক্টোবর থেকে মার্চ মাসে নীল জলে ভাসন্ত পাল্লা-সবুজ লাক্ষা বেড়িয়ে নেওয়া। মনসুনে জাহাজী সার্ভিস বন্ধ হলেও হেলিকপ্টার আছে। অক্টোবর-নভেম্বরেও উত্তর-পূর্ব মনসুনে হাল্কা বৃষ্টি হয় লাক্ষায়।



ভারত রাষ্ট্রের কেরল ভূখণ্ড থেকে আকাশ ও জলপথে সংযোগ গড়ে উঠেছে লাক্ষাদ্বীপের। কোচি থেকে জল-দূরত্ব ২৮৭—৪৮৩ কিমি, জলযান আছে বছরভর; সময় নৈমিত্তিক ও আবহাওয়ার রকমকমে ১২ থেকে ২০ ঘণ্টা। মাসে ৪/৫ বার জাহাজ আছে Tipu Sultan কোচি থেকে। আর আছে কালিকটের অদূরে বেলুর (Beyyore) থেকে ভারত সীমা ও দ্বীপ সেতু জাহাজ। কোচি থেকেও ছাড়ে এরা নানান সময়।



আর IAC-র উড়ান আছে। 13457 দিন ১২-৩০এ কোচি ছেড়ে ১৩-৪০এ আগতি দ্বীপে। ফেরে ৮-০০টায় আগতি ছেড়ে ৯-৩৫এ কোচি। আগতি থেকে IAC-র যাত্রী নিয়ে শিডবোট/হেলিকপ্টার আছে লাক্ষার দ্বীপে। আর হেলিকপ্টার ও শিডবোট চলছে দ্বীপ থেকে দ্বীপে লাক্ষা দ্বীপপুঞ্জের। অবস্থানের তারতম্যে সময় নৈমিত্তিক দ্বীপ থেকে দ্বীপে যেতে। তেমনই Skyline NEPC Airlines-এর বিমান সোম ও শুক্রবার সার্ভিস গড়েছে কোচি, মাদুরাই, চেন্নাই, মুম্বাই ও দিল্লীর সাথে আগতি দ্বীপের।



আর রেল, বিমান বা সড়কপথে ভারতের যেকোনও প্রান্ত থেকে কোচি পৌঁছে কোচি-র যানবাহন অংশ প্র.) চলা যেতে পারে লাক্ষাদ্বীপে। দূপুর ১২—১৪-০০টায় কোচি ছাড়ে লাক্ষার জাহাজ। ওতকের মতো জলে ভেসে রাখভর জাহাজ চলে আরব সাগরে। ভোর হয় নিম্নোখিতা দ্বীপবালা লাক্ষার উপহ্রদে। দূর থেকে দূরে জাহাজ ছেড়ে শিডবোটে দ্বীপভূমি লাক্ষায় পৌঁছান। সারাদিনে দ্বীপভূমি দেখা সেরে আবার বোট করে জাহাজ ফেরা। জাহাজ চলে রাতে নতুন দ্বীপের অভিসারে। এভাবেই চলে দিনের পর দিন দ্বীপ থেকে দ্বীপে SPORTS-এর Coral Reef প্যাকেজে টিপু সুলতান।

১৯৭৭-৮৮এ কোরাল রীফ প্যাকেজ:
কোচি থেকে যাত্রা শুরু ও শেষ
সেপ্টেম্বর ১৯৭৭: ১৫, ২১, ২৯
অক্টোবর ১৯৭৭: ১২, ১৮
নভেম্বর ১৯৭৭: ০৩, ০৯, ২৫
ডিসেম্বর ১৯৭৭: ০৮, ১৪, ২০
জানুয়ারি ১৯৭৮: ০৪, ১০, ২৩
ফেব্রুয়ারি ১৯৭৮: ০৮, ১৪, ২০
মার্চ ১৯৭৮: ০৮, ১৪, ২০, ২৬
এপ্রিল ১৯৭৮: ১১, ১৭, ২৩
মে ১৯৭৮: ০৬, ১২

একক যাত্রায় যাত্রীদের উচিত হবে লাক্ষাদ্বীপ যাবার অনুমতি ও জাহাজের টিকিটের জন্য The Secretary to the Administrator, Lakshadweep Office, Indira Gandhi Rd, Kochi-682003-কে লেখা। আর IAC-র টিকিটের জন্য যেকোনও IAC

অফিসকে যোগাযোগ করা যেতে পারে। তবে, Bangaram Island Resort-এর যাত্রীরা Reservation Manager, Casino Hotel, Willingdon Island, Kochi-682003, ☎ (0484) 668221-কেও লিখতে পারেন যাত্রাভারের প্যাসেজ বুকিং-এর জন্য।



হোটেল ব্যবসা আজও প্রসার না পেলেও বিলাসবহুল হোটেল হয়েছে *Bangaram Island Resort বাঙ্গারাম দ্বীপে। বাফা ও খাওয়া নিয়ে অক্টোবর থেকে মার্চ S ৪২৫০ D ৫৬৫০ ডিলাক্স বাংলায় ৪ জনা ১৬৫০০, ডিসেম্বর ১৫—জানুয়ারি ১৫: ৭০০০/ ৭০০০/ ২০৫০০, এপ্রিল ১—সেপ্টেম্বর ৩০: ২৫০০/ ৪৫০০/ ১২৫০০, আগস্ট ১—আগস্ট ৩১: ৪২৫০/ ৫৬৫০/ ১৬৫০০, এদের বুকিং: Casino Hotel, Willingdon Island, Kochi-682003, ☎ 668221. আর আছে সরকারি ব্যবহার Tourist Hut—কাক্তারতি, বাঙ্গারাম, আগতি ও কদমাত দ্বীপে। SPORTS-এর গেস্ট হাউস (D ১৫০-২০০) হয়েছে কাক্তারতি ও কদমাত দ্বীপে। বীচ রিসর্ট হয়েছে কালপনি, মিনিকর, কাক্তারতি দ্বীপে। হিনিয়ন রিসর্ট ও ইয়ুথ হোস্টেল হয়েছে কদমতে। আর আছে PWD IB মিনিকর ও কাক্তারতি দ্বীপে।

তবে গত কিছুকাল Society for Promotion of Recreation at Tourism and Sports in Lakshadweep অর্থাৎ SPORTS, Lakshadweep Office, Indira Gandhi Road, Willingdon Island, Kochi-682003, ☎ 668387, Telex 08856931 ISLE IN, Fax : 0484-668155 অক্টোবর থেকে মে মাসে কোটি থেকে ৮টি পৃথক পৃথক প্যাকেজ ট্যুরে লাক্ষা বেড়িয়ে আনে। প্যাকেজ যাত্রীদের লাক্ষা ভ্রমণের অনুমতিও লাগে না পৃথকভাবে।

(১) ৪ রাত ৪ দিনের সফরে Coral Reef প্যাকেজে M V Tipu Sultan জাহাজে (প্রথম শ্রেণী ৩৬ ট্যুরিস্ট ক্লাস ১০০ যাত্রী নিয়ে) রাতের অবস্থান, ফাইবার গ্রাসে মোড়া বোটো দিনভর দ্বীপ থেকে দ্বীপে ভ্রমণে ভাড়া (ট্রান্সপোর্ট চার্জ + ট্যুর চার্জ মিলে) Tourist Class (২০০০ + ৪০০০) = ৬০০০; 1st Class (৪০০০ + ৪০০০) = ৮০০০। ডিলাক্স বার্থ (৬০০০ + ৪০০০) = ১০০০০।

(২) ৬ দিনের Kadmat Beach Resorts and Water Sports Institute (Marine Wealth Awareness) অর্থাৎ জাহাজে ৬ দিনের প্যাকেজে কলমাত-এ অবস্থানের ভাড়া (ডিলাক্স ১২ প্রথম শ্রেণী ১৪ ট্যুরিস্ট ক্লাস ২২) ৪০০০ + ৬৫০০ = ১০৫০০, ৩৫০০ + ৫৫০০ = ৯০০০, ২৫০০ + ৫৫০০ = ৮০০০।

| | |
|---|--|
| ১৯৯৭-৯৮ কলমাত বীচ রিসর্ট এবং ওয়াটার স্পোর্টস ইনস্টিটিউট প্যাকেজ: | (৩) ৪ দিনের Tara-tashi সফরে জাহাজে যাতায়াত ও কাভারতি-তে অবস্থান নিয়ে ভাড়া 1st Class (৩৫০০ + ৫৫০০) = ৯০০০, ডিলাক্স বার্থ (৪০০০ + ৫৫০০) = ৯৫০০। |
| কোটি থেকে যাত্রা শুরু ও শেষ | |
| অক্টোবর ১৯৯৭: ০৫, ২৭ | |
| নভেম্বর ১৯৯৭: ১৫ | |
| ডিসেম্বর ১৯৯৭: ০১, ২৮ | |
| জানুয়ারি ১৯৯৮: ১৬ | |
| ফেব্রুয়ারি ১৯৯৮: ০১, ২৬ | |
| এপ্রিল ১৯৯৮: ০১, ২৯ | |

৪৪০০, ৯৬০০; এদেরও মাসভেদে তারতম্য ঘটে রেখে।

প্যাকেজ ভাড়া বলতে—কোটি-লাক্ষা-কোটি যাতায়াত, অবস্থান, আহাৰ্য, দ্বীপ ভ্রমণের বোট—সবেরই সমন্বয়ে। উচিত হবে যাত্রীদের একনম্বর প্যাকেজ অর্থাৎ Coral Reef-এ অংশ নিয়ে মিনিকম্ব, কাভারতি, কালপেনি দ্বীপ বেড়িয়ে নেওয়া। ভারতীয়দের প্রবেশাধিকারও মেলে এই তিনের সাথে কলমাত অর্থাৎ চার দ্বীপে। তবে, আনন্দ্রোত-এরও দক্ষিণা খুলেছে ভারতীয়দের কাছে। আর বিদেশীদের প্রবেশাধিকার কেবলমাত্র বাঙ্গারাম দ্বীপে। আর উচিত হবে প্যাকেজ যাত্রীদের হাক্ষা হয়ে জাহাজে চড়া। ছাত্রদের ১৫-র অধিক দলে রিটেট মূল্যে ১ ও ২ নম্বর প্যাকেজের ট্যুরিস্ট ক্লাসে ৪০০০ প্রতি জন। LTC-র যাত্রীদের ক্ষেত্রে যাতায়াত ৪০০০ অবস্থান ও আহাৰ্য ৪০০০ ধর্য। আর ২ থেকে ১২ বছরের যাত্রীর ক্ষেত্রে যাতায়াতে ৫০% ও অবস্থান-আহাৰ্যে রিটেট মেলে ৫০%।

Tourist Class বলতে শীতাতপ হল-এ পুশবাক চেয়ারে ট্যুর ভর শয়ন ও অবস্থান। TV আছে হল-এ, বাথরুম কমন। আর 1st Class অর্থাৎ ৪ বার্থের সুসজ্জিত বাথ সলংগ সঙ্কীর্ণ কেবিন, আহাৰ্য একই। হনিমুন্যারদের জন্য ২টি ২ বার্থের কেবিনও মেলে।

প্যাকেজ ট্যুরের আঞ্চলিক প্রতিনিধি :

কলকাতা: Ashok Tours & Travels (ITDC), 3-G, Everest Building, 46 Chowringhee Rd, Calcutta-700071, ☎ 2423254/2425208; একই বাড়ির একতলায় Mercury Travels (I) Ltd, ☎ 2420899; দিল্লী: Ashok Tours and Travels (ITDC), Barakhamba Rd, ND-110001, 3rd floor, ☎ 3325035; মুম্বাই: Lakshadweep Travelinks, Passport Studio, Jermahal, 1st floor, Dhobi Talao, Mumbai-400002, ☎ 2054231; Raj Travels & Tours Ltd, Chopatty View Building, Ground floor, SVP Rd, Mumbai-400007, ☎ 3634413; ম্যাঙ্গালোর: Lakshadweep Foundation Glove International Travels, A1-Fareed Centre, Hampankatta, Mangalore-575001, ☎ 425950; ম্যাঙ্গালোর: Clipper Voyages, 406 Regency Enclave, 4 Magrath Rd, Bangalore-560025, ☎ 5592023-24; পুনে: Leonard Travels P Ltd, Tej House, 5 Mahatma Gandhi Rd, Pune-411001, ☎ 631647; চেন্নাই: Mercury Travels India P Ltd, 191 Mount Rd, Chennai-600006, ☎ 8522993; কালিকট: Lakshadweep Tours & Travels, Counter No 1, Akber Travels of India, 6401 C D Kashkand Chambers, Bank Rd, Calicut-673001, ☎ 766596. তবুও যেন ৫০% টাকা MO/ Bank Draft-এ পাঠিয়ে সরাসরি SPORTS—Lakshadweep Tourism, Asstt General Manager, Lakshadweep Office, Indira Gandhi Rd, Kochi-682003, ☎ 668387, Fax 0484-668647-কে লেখাই উচিত হবে টিকিটের জন্য। অতীতের কোটি প্রথা রহিত হয়ে বৃক্সি কেন্দ্রীভূত হয়েছে কোটিতে। প্রতিনিধিরা সামান্য সার্ভিস চার্জ সংযোগ গড়ে টিকিটের ব্যবস্থা করে। টিকিট মিলবে আঞ্চলিক প্রতিনিধির মাধ্যমে।

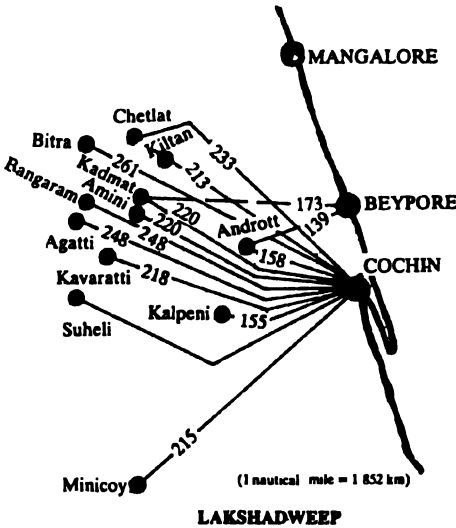
চাহিদাও বাড়ছে দুর্দম হারে এদের প্যাকেজ টিকিটের। প্যাকেজ যাত্রীদের অব্যাহতিও মেলে লাক্ষা ভ্রমণের বিশেষ অনুমতি থেকে। ব্যবস্থাপনা প্রশংসনীয়। আরও ভাল এদের জাহাজে দ্বীপ থেকে দ্বীপে ভ্রমণ। ভ্রমণকে মধুময় করে তোলে এদের ফাইবার গ্রাসে ঘেরা স্পিড বোটো জাহাজ থেকে দ্বীপে অবতরণ। স্বচ্ছ জল, প্রবালে বাধা পেয়ে আছড়ে পড়ে সামুদ্রিক ঢেউ; কুণ্ড লী পাকিয়ে চলতে থাকে তটে। দূর থেকে মনে হয় মুক্তোর মালা পরেছে নীলবসনা দ্বীপবালা। স্বচ্ছনীল জলে প্রবালের ফাঁকে ফাঁকে সামুদ্রিক প্রাণীদের নয়নলোভন জলকেলি সেও যেন তুলনাহীন।

লাক্ষদ্বীপের সদর দপ্তর বসেছে কোটি থেকে ২১৮ কিমি দূরে ৩.৬ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত কাভারতি দ্বীপে। দ্বীপমালার প্রাণকেন্দ্রও এই কাভারতি লেগুন অর্থাৎ উপহ্রদ। অগভীর শান্ত সমুদ্র। কোথাও ফিরোজা, কোথাও সবুজ; কোথাও বা নীল জল। গভীরতার তারতম্যে জলের রঙ বদল মোহময় করে তোলে দূর থেকে। সরকারি দপ্তর, স্কুল-কলেজ, হাসপাতাল বসেছে কাভারতি দ্বীপে। দূরদর্শনও পৌছেছে স্যাটেলাইটের সংযোগে কাভারতিতে। অ-দ্বীপবাসীদের সংখ্যাও উদ্বেগ্য কাভারতি দ্বীপে। ৫২টি মসজিদও হয়েছে কাভারতিতে। তবে, উদ্বেগ্য ১৬৭০এ দারুণতৈরি পবিত্র উজ্জরা মসজিদ। সিলিং ও স্তম্ভের কারুকার্য খুবই সুন্দর।

মসজিদ লাগোয়া কুপের জল—সেও আর এক ধ্বংসারী। মাছ সিদ্ধ করে খোঁয়া লাগিয়ে রৌদ্রে শুকিয়ে তৈরি মাস এদের প্রিয় খাদ্য। তেমনই আছে রঙবেরঙের চিত্র-বিচিত্র সামুদ্রিক মাছ ও প্রবালের সংগ্রহ নিয়ে মেরিন অ্যাকোয়া-রিয়াম। মিউজিয়মের সংগ্রহও উদ্ভেদ্য। তবে, সবেই উদ্ভেদ্য আকর্ষণ ফাইবার গ্লাসে অগভীর (৫ ফুট) জলে প্রবালের সাথে রঙবেরঙের হাজারো মাছের জলকেলি—বিমোহিত করে চিত্তকে।



থাকারও নানান ব্যবস্থা—SPORTS-এর Tourist Complex, PWD-র DB ও IB, Circuit House, Govt Annex ও প্রাইভেট Taj Complex H আছে কাভার্ড দ্বীপে।



গ্রাম—অর্থাৎ Athiris—সংখ্যা দশ। প্রতিটি গ্রাম অর্থাৎ আখিরীর সর্বময় কর্তা গ্রামের মোড়ল অর্থাৎ Moopann. ৯টি আখিরী নিয়ে মিনিকয় দ্বীপ। ১৮৮৫তে ব্রিটিশের গড়া দ্বিধাতাধিক ধাপের লাইট হাউসটি অভিযান করে আরব সাগরে জলের বর্ণালী দেখায় মাধুর্য বাড়। অমূরে সাগরবেলা—স্নান ও বোটিং-এর ব্যবস্থা মেলে। TV-ও পৌছেছে মিনিকয়-এ। তেমনই দেখে নেওয়া যায় মিনিকয়ের লাভা নৃত্য। জেটি ঘাটে Light Meat Tuna Canning Factory টিও দেখে নেওয়া যায়। থাকার ব্যবস্থা মেলে SPORTS-এর Beach Resort ও PWD-র IB-তে।

| Area and Population | | |
|---------------------|--------------|-----------------|
| Island | Area (Sq km) | Population 1991 |
| Minicoy | 4.4 | 8323 |
| Kalpeni | 2.3 | 4079 |
| Andrott | 4.8 | 9149 |
| Agatti | 2.7 | 5667 |
| Kavaratti | 3.6 | 6445 |
| Amini | 2.6 | 3983 |
| Kadmat | 3.1 | 3075 |
| Kiltan | 1.6 | 3075 |
| Chetlat | 1.0 | 2050 |
| Bitra | 0.1 | 226 |
| Total | 32 | 51681 |

কাভারডির ৮ কিমি পশ্চিমে ঘণ্টাখানেকের স্পিড বোটো বাঙ্গারাম দ্বীপ। বসতিহীন দ্বীপ-ভূমি বিদেশীদের কাছে অব্যাহত। পানাহারেরও ব্যবস্থা মেলে একমাত্র বাঙ্গারাম দ্বীপে। নারকেল বীথিকায় ছাওয়া ১২০ একরের এই দ্বীপভূমি পরিক্রমা ঘণ্টাখানেকে সাঙ্গ করা যায়। আকার যেন দ্বীপবাল্য লাক্ষার চোখ থেকে পড়া অশ্রুবিন্দু। রূপোলি বেলাভূমি ঘিরে শান্ত-নির্মল গাঢ় সবুজ এক উপহৃত। অগভীর জলে প্রবালের সাথে রঙবেরঙের মাছেদের জলকেলি সত্যি নয়ননোভন। তেমনই রয়েছে রঙবেরঙের কাকড়া-শামুক-বিনুক ছাড়াও নানান কিছু। সূর্যাস্তের সৌন্দর্যেরও মাধুর্য আছে বাঙ্গারামে। পূর্ণিমা রাতে অশ্রু ছড়ায় সারা দ্বীপে। সত্যিই অপরাধা লাক্ষার পূর্ণিমা রাত। বেলাভূমি শেষ হতে নারকেলকুঞ্জ। তারই মাঝে

*Bangaram Island Resort, মাস ভেদে ভাড়া হেরফের ঘটে এদের। AP প্রথায় আগস্টে \$ ৪০০ D ১৯০/৫০০, এপ্রিল-মে-জুন-জুলাই-সেপ্টেম্বর মাসে \$ ৮৫ D ১৪০/৩৮৫, অক্টোবর থেকে মার্চে \$ ১৪০ D ১৯০/৫০০, তবে ডিসেম্বর ১৫—জানুয়ারি ১৫য় \$ ২২০ D ২৩০/৬৫০ US\$। বুকিং: Casino Hotel, Willingdon Island, Kochi-682003, ☎ (0484) 668221। বসতিহীন আরও দুই দ্বীপ Tirmakara, Parali I & 2—এদেরও অবস্থান বাঙ্গারামের সাথে একই লেগুন-এ।

পট্টির পশ্চিমে আর কাভারডির থেকে ২৫, কালপেনি থেকে ৪০ কিমি দূরে আগাতি দ্বীপ। স্পিড বোটো ঘণ্টা দু'য়েকের পথ। সোনালি সবুজ নারকেল কুঞ্জের মাঝ দিয়ে অলস মন্থর গতিতে পথ গিয়ে মেশে দুরন্ত সাগরের অতীত নীল জলে। বামে স্মটিক-রঙ পান্না-সবুজ শাশ উপহৃত। অগভীর জলে প্রবালের মাঝ দিয়ে চলা যায় এগিয়ে। সত্যিই

| | |
|---|---|
| ১৯৯৭-৯৮এ প্যারাডাইস আইল্যান্ড হাউস কাভারডি প্যাকেজ: | আয়তনে দ্বিতীয় |
| কোচি থেকে যাত্রা শুরু ও শেষ | বৃহত্তম ১০.৬ কিমি দীর্ঘ |
| অক্টোবর ১৯৯৭: ০৫, ২৭ | নারকেল বীথিকায় ছাওয়া |
| নভেম্বর ১৯৯৭: ১৫ | মিনিকয় দ্বীপ—পান্না-সবুজ শাশ উপহৃত। লাক্ষা |
| ডিসেম্বর ১৯৯৭: ০১, ২৮ | দ্বীপপুঞ্জের সর্ব দক্ষিণে, |
| জানুয়ারি ১৯৯৮: ১৬ | কাভারডির থেকেও ২০০ |
| ফেব্রুয়ারি ১৯৯৮: ০১, ২৬ | কিমি দক্ষিণে মিনিকয়ের |
| এপ্রিল ১৯৯৮: ০১, ২৯ | অবস্থান। এদের জীবন-যাত্রা, ভাষা, সংস্কৃতি |

সবেতেই বদল ঘটেছে। ভারতের দক্ষিণী প্রভাব থেকে মুক্ত এরা—সামিধ্য মেলে মালদ্বীপের সাথে। মুখের ভাষা মাল (Mahi)। পটে আঁকা ছবির মতো ছকে ফেলা গ্রামের পর

যেন কল্পনার তুলিতে আঁকা স্বপ্নে দেখা স্বর্গের মরকতকুঞ্জ লাক্ষার এই দ্বীপপুঞ্জ। আরব সাগরের জলের ওপর ভেসে IAC-র বিমান যাচ্ছে কোচি থেকে ১২ ঘণ্টায়। ১৩৪৫৭ দিন ১২-৩০এ কোচি ছেড়ে ১৩-৪০এ আগাতি দ্বীপে। কোচি ফেরে আগাতি থেকে ৮-০০টায়। Skyline NEPC-র প্রাইভেট বিমানও সার্ভিস গড়েছে কোচি-মাদুরাই-চেন্নাই-দিল্লী-মুম্বাই-এর সাথে আগাতি-র প্রতি সোম ও শুক্রবার।

কাভারতির দক্ষিণ-পূবে নারকেল বীথিকায় ছাওয়া কালপেনি। প্রবাল ও সমুদ্রজাত নানান কিছু আকর্ষণ বাড়িয়েছে। সুন্দরী লাক্ষার সুন্দরতম এই কালপেনি দ্বীপ। সুন্দর করে তুলেছে এর লেগুন অর্থাৎ উপহ্রদ। তেমনি বোটে বসতিহীন Tilakkam দ্বীপে পৌঁছে সমুদ্রস্নান করে নেওয়া যায়। মৎস্য দপ্তরের অ্যাকোয়ারিয়ামে সামুদ্রিক প্রাণীর সংগ্রহও দেখে নেওয়া যায়। লাইট হাউস (১৮৫ খাপ)

থেকে উচিত হবে কালপেনি দ্বীপ দেখে নেওয়া। তবে, হোসিয়ারি মিল বা খাদিভবন থেকে স্মারকরূপে সংগ্রহ করা যায় হস্তজাত নানানকিছু।

কাভারতিমুখী মাঝপথে আর এক বসতিহীন দ্বীপ পিট্টি (Pitty)। পাখিদের স্বর্গরাজ্য এই পিট্টি।

কদমাত-ও আর এক সুন্দরী দ্বীপ। উত্তাল-উদ্দাম সামুদ্রিক টেউ নিশ্চলতা ভাঙছে নিখর-নিষ্পন্দ দ্বীপভূমির। নীলাকাশের নিচে নারকেল বীথিকা চাঁদোয়া মেলেছে Kadamat-এ। সারা দ্বীপটা ঘিরে রূপোলি সাগরবেলা, অতীব সুন্দর। তেমনি সুন্দর কদমাতের পূর্ব ও পশ্চিম জুড়ে অপূর্ব উপহ্রদ অর্থাৎ লেগুন। জলক্ৰীড়ার পক্ষে রমণীয়। লাক্ষা দ্বীপপুঞ্জের মধ্যমণিও এই কদমাত। লাক্ষার আর এক সুন্দরী আনন্দ্রোত দ্বীপটিরও দ্বার খুলেছে ভারতীয় পর্যটকদের কাছে নতুন করে।

Malayalam for Tourists

Selected phrases

| Bring | Konduvaru | Numbers | |
|--------------------|-------------------|----------|------------|
| Call | —vilikku | | |
| Out of order | Kedanu | one | —onnu |
| What is the price? | Vilayenthane? | two | —rande |
| Who is he? | Avan aranu? | three | —munne |
| Who is she? | Aval arane? | four | —nale |
| Who are they | Avar arane? | five | —anje |
| I am sick | Enikke sukhamilla | six | —arc |
| Where is— | —evidyane | seven | —ezhe |
| Call | —vilikku | eight | —ette |
| I want a— | Enikke-venam | nine | —onpathe |
| I want to go | Enikke pokanam | ten | —pathe |
| Can you reduce | | twenty | —irupathe |
| the price? | Vila kuraikkamo? | thirty | —muppathe |
| Days of the week | | forty | —nalpathe |
| Monday | —Thingal | fifty | —anpathe |
| Tuesday | —Chovva | sixty | —arupathe |
| Wednesday | —Budhan | seventy | —ezhupathe |
| Thursday | —Vyazham | eighty | —enpathe |
| Friday | —Velli | ninety | —thonnure |
| Saturday | —Sani | hundred | —nure |
| Sunday | —Gnayar | thousand | —ayiram |

কর্ণাটক

কানাডাকে সরকারি ভাষা করে ভাষার ভিত্তিতে গড়ে উঠেছে ১৯৫৫ খ্রিস্টাব্দে কর্ণাটক রাজ্য। আয়তন ও জনসংখ্যা ভারতে ৮ম স্থান কর্ণাটকের। অতীতের মহীশূর রাজ্যের সঙ্গে কানাডাভাষী বিশ্বের ৪টি জেলা, মাদ্রাজের ২টি, নিজাম শাসনাধীন ৩টি আর কর্ণাটকে নিয়ে ভাষার ভিত্তিতে জন্ম নিয়েছে আজকের কর্ণাটক। উত্তরে এর মহারাষ্ট্র; পশ্চিমে গোয়া, আরব সাগর ও কেরল; দক্ষিণে কেরল ও তামিলনাড়ু আর পূর্বে অন্ধ্র। এই বিস্তীর্ণ ভূখণ্ডের মুখের ভাষা কানাড়া। প্রায় হাজার দু'য়েক ফুট উঁচুতে কর্ণাটক রাজ্যের পূর্ব ও পশ্চিমের ঘাট পর্বতশ্রেণী দক্ষিণে নীল-গিরিতে গিয়ে মিলেছে। পশ্চিম জুড়ে আরব সাগরের বুকে ৩২০ কিমি ব্যাপ্ত তটরেখা—নানান সাগরবেলা কর্ণাটকের অন্যতম আকর্ষণ। তবে পর্যটন মানচিত্রে যথাযথ সমাদরে বঞ্চিত এই সোনালী বালুবেলা আজও।

বৈচিত্র্যে ভরা রাজ্য কর্ণাটক। কানাড়া ভাষায় *করনাডু* অর্থাৎ অত্যাচ্চ ভূমি থেকেই রাজ্যের নাম হয়েছে কর্ণাটক। জনশ্রুতি, রামায়ণের বালী ও স্ত্রীবীর রাজধানী কিষ্কিন্দ্যা ছিল আজকের বেঙ্গালী জেলার হাস্পীতে। আর অগস্ত্য মুনির সহচর বাতাপী থেকেই নামটি এসেছে বাদামীর। অতীতে মৌর্য সাম্রাজ্যের অধীন ছিল আজকের কর্ণাটক। ভারতসম্রাট চন্দ্রগুপ্ত মৌর্য খ্রি পূ ৩ শতকে ছৈন ধর্ম গ্রহণও করেন আজকের শ্রবণবেলগোলায়। এমনকি কর্ণাটকের মূল অংশ মহীশূরে বিভিন্ন বংশের রাজারা স্বাধীনভাবে রাজত্ব করে গেছেন দীর্ঘকাল ধরে। তাঁদের মধ্যে কদম্ব, চালুক্য, গঙ্গা, রাষ্ট্রকূট, হোয়সল ও বিজয়নগরের রাজারা বিশেষভাবে উল্লেখ্য।

১১—১৪ শতকের হোয়সলরাজদের গড়া সোমনাথ-পুর, বেলুড় ও হালাবিদের মন্দির স্থাপত্য, গঙ্গারাজদের পৃষ্ঠপোষকতায় গড়া বিশ্বের উচ্চতম (১৭.৫ মি) মনোলিথিক প্রস্তর মূর্তি গোমতেশ্বর, ৬—৮ শতকে চালুক্য রাজাদের তৈরি বাদামীর মন্দির ভাস্কর্য আজও মহান করে রেখেছে কর্ণাটককে। এমনকি দক্ষিণী স্থাপত্য শৈলীও গড়ে ওঠে বাদামীর মন্দির স্থাপত্য থেকে। তবে, সবই আজ অতীত। কথাও কয় না ১৩২৭এ মহম্মদ বিন তুঘলকের হাতে ধ্বংস পাওয়া হিন্দু রাজ্য হালাবিদ। ১৩৪৬এ বিজয়নগর রাজ্যের অংশ হয় হালাবিদ। ঠিক তেমনই হিন্দু সাম্রাজ্যের আর এক গৌরবগাথা (১৩৩৩—১৫৬৫) ধ্বংস পায় দাক্ষিণাত্যের সুলতানদের হাতে বিজয়নগরের পতনে। বাহমনি সুলতানদের গৌরবগাথা—সেও ইতিহাসের আর এক কিংবদন্তী! বাহমনি সাম্রাজ্য ভেঙে গিয়ে ১৪৮২তে বিজাপুর, বিদার, গোলকুণ্ডা, আহমেদনগর ও গুলবর্গা রাজ্যের সৃষ্টি। বিজাপুর

এদের মধ্যে প্রথিতযশা। আদিলশাহীদের কীর্তিকলাপ তথা মধ্যযুগীয় ইসলামী স্থাপত্যের মিউজিয়ম নগরী বিজাপুর অতীত রোমন্থন করায় আজও।

তেমনই দিনে মহীশূরের Wadecar রাজারা বিজয়-নগরের দখল পেতে প্রসার পায় রাজ্য। রাজাপাট বসে শ্রীরঙ্গপত্তনে। কালে কালে প্রতিপত্তির সাথে বৈভব বাড়ে রাজাদের। আর ১৭৬১তে যাদবরাজ ওদিয়ারকে হারিয়ে মহীশূরের রাজা হন তাঁরই জেনারেল হায়দর আলি। হায়দর আলি ও তাঁর পুত্র টিপু সুলতানের বিক্রমের কথা আজ ইতিহাসের আখ্যান। দক্ষিণ ভারতের বহু স্বাধীন রাজ্যকে এদের কাছে অধীনতা স্বীকার করতে হয়। উত্থান-পতনের সে গাথা খুবই চমকপ্রদ। তেমনই দিনে ব্রিটিশ আর ফরাসিদের মধ্যেও দখল নিয়ে ক্ষমতার দ্বন্দ্ব চলতে থাকে। কর্ণাটক যুদ্ধে ফরাসিদের সাহায্যে অংশ নেয় হায়দর। আর টিপুর পরাভবে কর্ণাটক ব্রিটিশের দখলে যায় ১৭৯৯এ। তবে, সেদিনের ব্রিটিশ দখল করেও ক্ষমতা হস্তান্তর করে অতীতের ওদিয়ার বংশের শ্রীকৃষ্ণ রাজা (Wadecar III)-র হাতে। রূপ নেয় ব্রিটিশের মিত্র রাজ্যে মহীশূর। ১৮৩১-এর চুক্তিমতো ৫০ বছরের শাসনভার যায় ব্রিটিশের হাতে। ১৮৮১তে দখল ফেরে আবার ওদিয়ার বংশের হাতে।

অবশেষে ১৯৪৭এ ভারতের স্বাধীনতা প্রাপ্তির পর জন সমর্থনে তদানীন্তন মহারাজ Jaya Chamarajendra Wadecar মহীশূরের ভারতভুক্তির সিদ্ধান্ত নেন। আর ১৯৫৬য় ভাষার ভিত্তিতে রাজ্য গড়তে কর্ণাটকের সূচনা। নতুন রাজ্যের প্রথম মুখ্যমন্ত্রী K C Reddy আর *রাজপ্রমুখ* অর্থাৎ গভর্নর হলেন প্রজাবৎসল মহারাজা স্বয়ং। সেই থেকে আধুনিক শিল্পনগরী রূপে গড়ে তোলা হচ্ছে কর্ণাটককে। চন্দন এখানকার একটি গুরুত্বপূর্ণ শিল্প। চন্দন থেকে তৈরি হচ্ছে আসবাবপত্র, সাবান, তেল, পাউডার, ধূপ। সারা পৃথিবীতে এর সমাদর রয়েছে। ব্যাসালোর সিল্কের সমাদরও কম নয় পর্যটকদের কাছে। HMT অর্থাৎ Hindustan Machine Tools-এর মূল কারখানাটিও বসেছে কর্ণাটকে। হিন্দুস্থান এয়ার-ক্রাফট, টেলিফোন ইন্ডাস্ট্রিজ-এর কারখানাও গড়ে উঠেছে কর্ণাটকে। বনজ সম্পদেও কর্ণাটক খুবই সমৃদ্ধ। মশলার অতীত গৌরব আজও অক্ষুণ্ণ রেখেছে কর্ণাটক। এর চিরসবুজে ছাওয়া পশ্চিমঘাট পর্বত ও কুর্গ বনাঞ্চলের বনজ সম্পদ এককালে বিদেশী ব্যবসায়ীদের লালসার শিকার হয়েছে। তেমনই হচ্ছে কফি, রবার, এলাচ ও চা সারা কর্ণাটকের পশ্চিমঘাট জুড়ে। *ফ্রেম অব দি ফরেস্ট* সারা রাজ্য জুড়ে। কাবেরী নদীর উৎসও পশ্চিমঘাট পর্বতমালায় কর্ণাটকের থালায়। তামিলনাড়ু ও কর্ণাটকে কাবেরীর জল-

বিবাদ কিছুটা প্রশমিত হয়েছে। বয়ে চলেছে কৃষ্ণা, তুল্লভদ্রা আরও দুই নদী রাজ্যকে বিদীর্ণ করে।

গুপ্ত শিল্প আর বনজ সম্পদই নয়—বহুমুখী আকর্ষণ রয়েছে পর্যটকদের কাছে কর্ণাটকের। যেমন এর স্বাস্থ্যকর জলবায়ু, তেমনই সুন্দর-সুন্দর বাগিচায় ঘেরা শহর, নয়নাভিরাম জলপ্রপাত, ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি চমৎকৃত করে পর্যটকদের। তাই কর্ণাটকে পর্যটকদের স্বর্গরাজ্য বললেও অত্যুক্তি হয় না।

মহীশূর

রাজ্যের রাজধানী যদিও ব্যাস্বালোর তবে মহীশূর মহারাজের রাজ্যপাট ছিল মহীশূরেই। সেই সুবাদে শহরের শ্রীবৃদ্ধি। মহারাজার রাজত্ব গেলেও রাজাদের বৈতব আজও মহীশূরের অন্যতম আকর্ষণ। শিল্প-সাহিত্য-কলা আর বাগিচা মহিমাষিত করে রেখেছে কর্ণাটকের মহীশূরকে। সাড়ে ছয় লাখ লোকের বাস মহীশূরে। মহীশূর থেকে রাজ্যের রাজধানী ব্যাস্বালোরের দূরত্ব ১৩৯ কিমি। রেল ও বাস সংযোগ গড়েছে। আর দক্ষিণ ভারত ভ্রমণার্থীদের উটি থেকে বাসে কর্ণাটক চলায় মহীশূর পড়ে প্রথম। তাই ভ্রমণের সুবিধার্থে মহীশূর থেকে কর্ণাটক ভ্রমণ শুরু করাই যেন উচিত হবে। তেমনই বেলুড়, হ্যালেবিদ, শ্রবণবেলগোলা, সোমনাথপুর, কুর্ণ-ও বেড়িয়ে নেওয়া যায় মহীশূরকে বুড়ি করে।

১৪ শতকের শেষভাগে গুজরাটের দ্বারকা থেকে বিজয় ও কৃষ্ণ দুই যাদব ভাই এসে *হাড্রনাড* অর্থাৎ বাস গড়েন আজকের মহীশূরে। কালে-কালে বিজয়ের বীরত্বে মুগ্ধ মহীশূররাজ কন্যার বিয়ে দিলেন—রাজত্বও পেলেন রাজকন্যার সাথে বিজয়। নতুন রাজা বিজয় যাদব হলেন শাসক অর্থাৎ *Wadeyar*। সেই থেকে ওদিয়ার (*Wadeyar*) রাজবংশের পত্তন মহীশূরে। রাজত্বও করে ১৭৬১ পর্যন্ত ওদিয়ার বংশ। ১৭৬১তে হায়দরের কাছে পরাজয়ে রাজ্য যায়। আর, ১৭৯৯এ ফরাসি শক্তিতে পুষ্ট হায়দর-পুত্র টিপু পরাজয়ে ব্রিটিশের দখলে যায় মহীশূর। তবে, জয় করেও দখল ছাড়ে মহীশূরের হিন্দুরাজার হাতে ব্রিটিশ। অবশেষে ১৯৪৭এ ভারতের স্বাধীনতায় ভারত রাষ্ট্রের অংশ হয় মহীশূর। আর ১৯৭০এ ভারতে রাজ্য ভাঙা লোপ পেতে জীবিকার সন্ধানে হোটেল গড়েন নানান প্রাসাদে রাজা। দ্বারও খুলে দেন রাজা টিকিটের বিনিময়ে সাধারণের কাছে প্রাসাদ দর্শনের।

তবে, দ্বিমতও আছে বংশের গোড়াপত্তন নিয়ে নানান। আরও পেরের কথা—স্টেটের দেওয়ান অর্থবিদ M Visvesaraya-র উদ্যোগে স্টেট ব্যাঙ্ক অব মহীশূর, এলিয়ার প্রথম হাইড্রো-ইলেকট্রিক পাওয়ার প্রোজেক্ট, সোপ ফ্যাক্টরি, স্যাভালউড ফ্যাক্টরি, বিশ্ববিদ্যালয়, ভদ্রাবতী আরন ও স্টিল ওয়ার্কস, কৃষ্ণরাজসাগর বাঁধ, নানান প্রাসাদ, বিড়ি, আগরবাতি ছাড়াও বিভিন্নধর্মী কটেজ ইত্যাদি রূপ পায়

মহীশূরে। ঘরে ঘরে আজও আগরবাতি তৈরি হচ্ছে মহীশূরে।

পর্যটকদের মন্ডানগরী ৭৭০মি উঁচু মহীশূর হল বাগিচার শহর। আবার চন্দনের শহরও বলে থাকে লোকে প্রাসাদপুরী মহীশূরকে। সুন্দর শহর মহীশূর—সুন্দরতর করে তোলা হয়েছে চন্দনে। চন্দন মহীশূরের ঘরোয়া শিল্প—তৈরিও হচ্ছে চন্দন থেকে আগরবাতি, চন্দন সাবান, চন্দন তেল, আসবাবপত্র ছাড়াও নানান কিছু। সারা শহর চন্দনের সৌরভে সুরভিত। চন্দন তেলের সুরভি বিশ্ববন্দিত যেকোনো সেন্ট থেকে অধিক মাতোয়ারা করে। যাচ্ছেও সব দেশ-দেশান্তরের বাজারে।

কর্ণাটক □ রাজধানী: ব্যাস্বালোর। আয়তন: ১৯১৭৯১ বর্গকিমি। লোকসংখ্যা: ৪৪৮১৭৩৯৮। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৫.৩১%। পুরুষ: ২২৮৬১৪০৯। নারী: ২১৯৫৫৯৮৯। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যার বৃদ্ধি: ৭৬৮১৫৮৪। বৃদ্ধির হার: ২০.৬৯%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২৩৪। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৬০। সাক্ষরের হার: ৫৫.৯৮%। প্রধান ভাষা: কানাড়া; সঙ্গে চলে—ইংরেজি, তামিল, তেলুগু ও হিন্দী। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৪০৭৫.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। শীত বা গ্রীষ্ম কোনোটিরই আধিক্য নেই। মার্চ থেকে জুনে ২০-৩৫° আর শীতে ১৪-২৮° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। বৃষ্টিজুন থেকে অক্টোবরে। সারা বছর ধরেই পর্যটক সমাগম ঘটে চললেও অক্টোবর থেকে মার্চ মাস কর্ণাটক বেড়াবার মনোরম সময়। দক্ষিণ ভারত সফরের সাথে ৫ দিনে বা এককভাবে মহীশূর ২ বেলুড়-হ্যালেবিদ-শ্রবণবেলগোলা ১ মারকারা ১ বন্দীপুর ১ যোগ ১ বিজাপুর ১ হাম্পী ১ ব্যাস্বালোর ১ কোলার স্বর্ণখনি ১ পথ চলতে ৫ দিন অর্থাৎ ১৫ দিনে বেড়িয়ে নেওয়া যায় কর্ণাটক রাজ্য।

আবার কারো কারো মতে দশেরা উৎসবের শহর মহীশূর। নামটি এসেছে অসুররাজ মহিষাসুর থেকে। আজকের মহীশূরেই নাকি ছিল মহিষাসুরের রাজ্যপাট। নাম ছিল তার মহিষাতী বা মহিষাসুরপুরা। রাজা-মহারাজার যুগের পর যুগ ধরে অতি নিপুণ হাতে সাজিয়ে তুলেছেন মহীশূরকে। এর সুন্দর সুন্দর পথঘাট, বাড়িঘর এমনকি রাজপ্রাসাদ আকর্ষণ বাড়িয়েছে। মহীশূরের বৃন্দাবন গার্ডেন যেমন খ্যাতি পর্যটক মহলে, তেমন দশেরা উৎসবের প্রশস্তির

কথাও আজ ছড়িয়ে পড়েছে বিশ্বভূবনময়। দেশ-বিদেশ থেকে পর্যটক সমাগম ঘটে এই দেশেরা উৎসবে। দেবী চামুণ্ডেশ্বরীর মহিষাসুরকে যুদ্ধে হারাবার প্রেক্ষামেশন অর্থাৎ জাঁক-জমকপূর্ণ বর্ণাঢ্য মিছিল উপভোগ করবার মতো। ঝালমলে সাজে সজ্জিত হয়ে সোনার দেবী চামুণ্ডেশ্বরী বিজয় (দেশেরা) মিছিলে অংশ নেন। হাতির হাওদায় বসে মহারাজাও অংশ নিতেন শেষ দিনের এই বিজয় মিছিলে। ১০ দিন ৯ রাত ধরে চলে দেশেরা উৎসব প্রাসাদ সংলগ্ন বিশাল চত্বরে। নানান সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানও অনুষ্ঠিত হয় উৎসবে। নাচ-গানে মুখরিত হয়ে ওঠে প্রাসাদ চত্বর। উৎসবের আর এক অভিনব টুর্চ লাইট প্যারেড। মেতে ওঠে সারা শহর উৎসবের সাজে। বাজিও পোড়ে আকাশ রাঙিয়ে। সাধারণত অক্টোবরে হয় দেশেরা। আগে থেকে থাকার ব্যবস্থা না করে তখন মহীশূরে যাওয়ায় বিড়ম্বনা হতে পারে। হোটেল রেটও আকাশ ছুঁই ছুঁই করে উৎসবকালে।

অদূরে শহরের উত্তরে কাবেরীতে ঘেরা দীপ শ্রীরঙ্গপত্তনে হায়দর ও টিপু গড়া মহীশূরের প্রাচীন রাজধানীর ধ্বংসাবশেষ ছাড়াও সোমনাথপুরের মন্দিররাজিও আকর্ষণ বাড়িয়েছে শহরের। এমনকি, বেলুড়, হ্যালেবিদ ও শ্রবণবেলগোলাও দূরত্ব কম হেতু মহীশূর থেকে বেড়িয়ে নেওয়ায় সুবিধা।



বাস স্ট্যান্ড ও রেল স্টেশন দুইয়েরই অবস্থান শহরের প্রাণ-কেন্দ্রে সিটি সেন্টার লাগোয়া মহীশূরে। তবে, দূর-পাল্লার বাস যাচ্ছে রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে মেইন রোডের (গান্ধী স্কোয়ার) সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ড থেকে। আর IAC-র দপ্তর বসেছে রেল থেকে ১ কিমি দূরে রানী বাসী রোডের হোটেল ময়ূর হোয়াসল-এ। মহীশূরের নিকটতম বিমানবন্দর ব্যাঙ্গালোর। তবে, বায়ুদূত সংযোগ গড়েছে ব্যাঙ্গালোর, হায়দ্রাবাদ ও তিরুপতির সাথে মহীশূরের। Vayudoot-এর লোকাল এজেন্ট Mita Travel, 66 Chamaraja Rd, Mysore-এ।



ব্রডগেজে এক ট্রেনে ২-৩ ঘণ্টার পথ মহীশূর থেকে ব্যাঙ্গালোর। ৬-০০টায় ফাস্ট প্যাসেঞ্জার, ৬-৪৫এ 6215 চামুণ্ডী এক্স, ১১-২০এ ননস্টপ 6205 টিপু এক্স, ১৬-২০এ 6232 ব্রিটিশ এক্স, ১৮-০৫এ 6221 কাবেরী এক্স যাচ্ছে মহীশূর থেকে ব্যাঙ্গালোরে। আর যাচ্ছে মঙ্গলবার ছাড়া প্রতিদিন 2008 শতাব্দী এক্স ১৪-১০এ মহীশূর

ছেড়ে ১৬-০৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ২১-১৫য় চেন্নাই সেট্রালে। শতাব্দী ফেরে ৬-০০টায় চেন্নাই ছেড়ে ১০-৪৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১২-০৫য় মহীশূরে। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ৮-০৫, ১৪-৩০, ১৬-৫৫, ১৮-২৫, ২৩-৩০এ মহীশূর ছেড়ে শ্রীরঙ্গপত্তন হয়ে ৩-১৫ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোরে। ব্রডগেজে রূপান্তর হেতু মহীশূর-হাসান-আরসিকেরে সার্টিন বন্ধ থাকায় বেলুড়-হ্যালেবিদ-শ্রবণবেলগোলা যাত্রীদের উচিত হবে বাসে ৩-১৫ ঘণ্টায় হাসান পৌঁছে এককভাবে দেখে নেওয়া। ৭-৩৫, ১১-৩০, ১৫-৪০, ১৮-১৫য় মহীশূর ছেড়ে ২ ঘণ্টায় চামরাজানগর যাচ্ছে মহীশূর থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। তিরুপতি যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর/ কাটপাদী হয়ে ১৬-৫৫য় মহীশূর ছেড়ে পরদিন ৪-০০টায় 213 মহীশূর-তিরুপতি প্যাসেঞ্জার; ফেরে রাত ২২-০০টায় তিরুপতি থেকে। মহীশূর থেকে মুম্বাই যাত্রায় আরসিকেরে-মিরাজ হয়ে বা ব্যাঙ্গালোর হয়ে চলায় সুবিধা। 2 56 দিন ৯-১০এ আরসিকেরে ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর-মুম্বাই এক্স হবলি-লোণা-মিরাজ-পুনে হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে ২৩ ঘণ্টায়। ২৩-২০এ আরসিকেরে ছেড়ে হবলি-লোণা হয়ে মিরাজ যাচ্ছে পরদিন ১১-৩৫এ 6589 রানী চামান্দা এক্স। CST যাত্রীদের মিরাজ বা দাদারে ট্রেন বদল করে চলা উচিত হবে। আরসিকেরে থেকে ১৮-১০এ 7309 ব্যাঙ্গালোর-ভান্ডা এক্স পরদিন ৬-৫৫য় ভান্ডা-গামা পৌঁছে বাসে পানাজি চলা যেতে পারে। আবার হবলি বা লোণা জংশনে ট্রেন বদল করে মারগাঁও বা ভান্ডা-গামা পৌঁছেও বাসে পানাজি চলা যেতে পারে ৭০০ কিমি দূরের মহীশূর থেকে। বিজয়ওয়াড়া-ভান্ডা 7225 অমরাবতী এক্সও যাচ্ছে হবলি/ লোণা হয়ে। তবে, হবলি/লোণা থেকে সরাসরি বাস মেলে পানাজির। ট্রেনেরও গতি বেড়েছে এপার্ষে অতীতের মিটারগেজের ব্রডগেজে রূপান্তরে। সোলাপুর যাচ্ছে ২২-১৫ ঘণ্টায় ৭-৫০এ মহীশূর থেকে 6542 গোলগম্বুজ এক্স হাসান/ আরসিকেরে/ হরিহর/ হবলি/ বিজাপুর হয়ে; গোলগম্বুজ ফেরে ২০-৫০এ সোলাপুর থেকে। ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ১০-১০ ও ২২-৩৫এ মহীশূর থেকে হাসান হয়ে ১০-১৫ ঘণ্টায় ফাস্ট প্যাসেঞ্জার। আর সড়ক সংযোগ রয়েছে রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের নানান শহরের সঙ্গে মহীশূরের।

আর East West Airways ও ভারতীয় রেলের যুগ্ম উদ্যোগে নবতম কোঙ্কন রেল মহীশূর থেকে গোয়ার মাঝে বিলাসবহুল ট্রেনের প্রবর্তন হতে চলেছে।



সিটি বাস টার্মিনাস থেকে 125 রুটের বাস যাচ্ছে ঘণ্টায় ঘণ্টায় শ্রীরঙ্গপত্তন, এছাড়াও নানান দূরগামী বাস মহীশূর থেকে শ্রীরঙ্গপত্তন হয়ে যাচ্ছে নানান দিকে। আর যাচ্ছে ১ ঘণ্টা অন্তর ১০১ রুটের বাস চামুণ্ডী হিল,

ছোটদের মনিবাস

অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য □ শিবরাম চক্রবর্তী

স্ব স্ব লেখকের প্রতিটি বই ১০০.০০

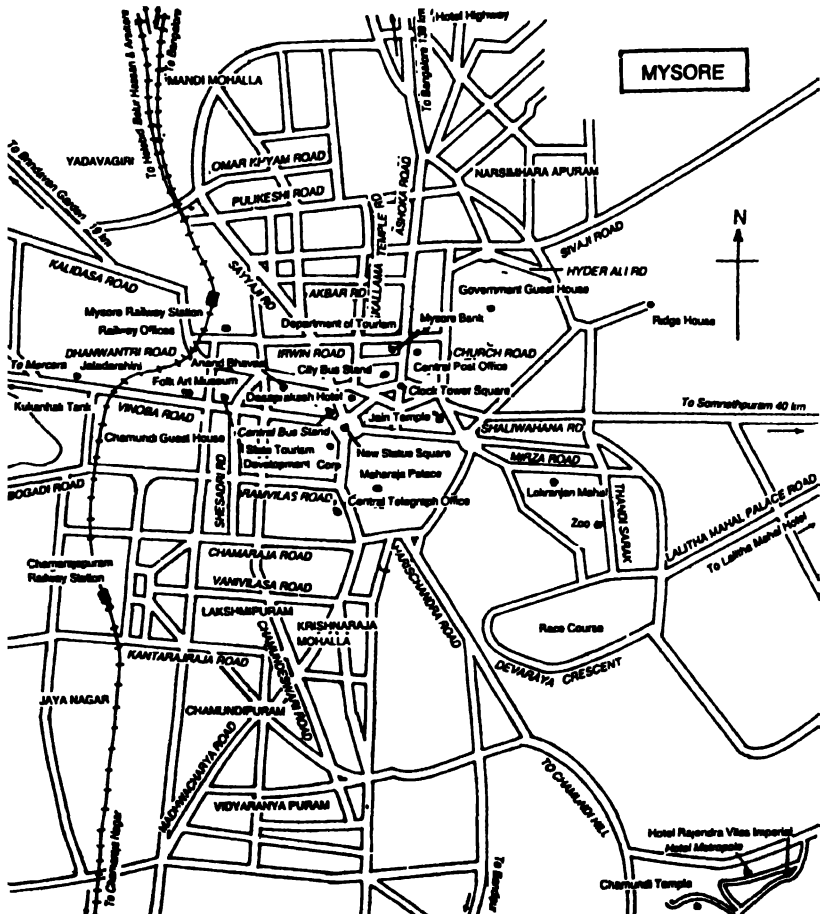
এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

১ ঘণ্টা অন্তর ১৫০ ক্রটের বাস বৃন্দাবন গার্ডেন, এছাড়াও বাস যাচ্ছে শহরের নানান প্রান্তে সিটি বাস টার্মিনাস থেকে।

আর সেন্ট্রাল বাসস্ট্যান্ড থেকে KSRTC-র বাসে সরাসরি, বানানান বাসে টিনারিসিপুর বা বাবুর গিয়ে আবার বাসে ১১ ঘণ্টায় সোমনাথপুর; ৭-০০, ১২-৩০, ১৫-০০, ১৬-১৫য় কোলার; ৫-৪৫—২১-০০টায় প্রতি ২০ মিনিট অন্তর ৩১ ঘণ্টায় ১৩৯ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোর, সুপার ডিলাক্স বাসও যাচ্ছে সকাল থেকে সন্ধ্যা ঘণ্টায় ঘণ্টায় ছেড়ে ব্যাঙ্গালোরে; আরসিকেরে যাচ্ছে ঘণ্টায় ঘণ্টায়; হান্সী যাচ্ছে দিনে দুই; ৫ ঘণ্টায় ১৫৮ কিমি দূরের উটি যাচ্ছে এগারো বাস বন্দীপুর/মুখুমালাই হয়ে; মুখুমালাই যাচ্ছে ১২-১৫, ১৪-৩০, ১৭-১৫য়; ঘণ্টায় ঘণ্টায় ছেড়ে মারকারা ১১৪ কিমি; ঘণ্টায় ঘণ্টায় ছেড়ে ২১ ঘণ্টায় হাসান ১১৫ কিমি; ৬-০০, ৮-০০, ৯-০০, ১১-৩০, ১২-১৫, ১৪-৩০, ১৫-০০, ১৬-১৫, ১৭-০০এ যাচ্ছে ১৭৩ কিমি দূরের চিকমাগালুরের বাস বেলুড ১৪৯/হাসান

হয়ে; ৭-৩০, ৯-৩০, ১০-০০ ও ১২-০০টায় যাচ্ছে শ্রবণবেলাগোলায়; ঘণ্টায় ঘণ্টায় ছেড়ে ৬ ঘণ্টায় ম্যাঙ্গালোর যাচ্ছে দশটি বাস; বাদামী যাচ্ছে ১০-৩০এ; হবলি যাচ্ছে ৬-০০ ও ১৮-৪৫এ; চেমাই যাচ্ছে ১৮-০০ ও ১৯-০০টায়; মাদুরাই যাচ্ছে ২১-০০টায়; ৬-০০, ৮-০০, ১০-০০, ১৩-৩০, ১৬-০০, ১৮-৩০এ যাচ্ছে ২১৬ কিমি দূরের কালিকট; ৮-১০, ১০-৩০, ২১-৪০এ ছেড়ে ১৩ ঘণ্টায় ৪৩৯ কিমি দূরের এর্নাকুলম যাচ্ছে কালিকট হয়ে; কান্নানোর যাচ্ছে ছয় বাস; শিমোগা/সাগর/যোগ হয়ে পানাজি যাচ্ছে ১৬-০০টায়; ৭-১৫, ১৫-০০টায় যাচ্ছে ২৪৬ কিমি দূরের কোয়েম্বটুর; এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজোর দিকে দিকে মহেশ্বর থেকে। ১ দিন আগে থেকে অগ্রিম টিকিটও মেলে দূরপাল্লার বাসে। প্রাইভেট বাসও চলেছে মহেশ্বর থেকে মুম্বাই, পুনে, গোয়া, হায়দ্রাবাদ, চেমাই, ম্যাঙ্গালোর, ব্যাঙ্গালোর ছাড়াও দক্ষিণ ও পশ্চিম ভারতের নানান দিকে। আর শহবে চলেছে ট্যাক্সি, অটো, টাঙা ও রিকশা।





ছোট শহর মহীশূর। বাস ও রেল দুইয়ের মাঝে ব্যবধান ২ কিমি। সিটি বাস স্ট্যান্ড শহরের প্রাণকেন্দ্রে K R Circle-এ। লোকানগটি-মূল শপিং সেন্টারও প্রাসাদের উত্তরে আবউইন রোড রেখে স্ট্যাচু স্কোয়ার ছেড়ে Sayaji Rao Rd-এ। সাধারণ হোটেলগুলিও গড়ে উঠেছে শহরের প্রাণকেন্দ্রে—Dhanvantri Rd, Gandhi Sqr. K R Circle তথা Art Gallery-কে ভর করে। অবহানও এদের ৫ থেকে ২৫ মিনিটের হাঁটা দূরত্বে বাস ও রেল দুই-ই থেকে। আর উচ্চমানের আবকাখচিত হোটেলের অবহান Jhansi Lakshmi Bai Rd ও সেস্টাইল বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে Mysore, STD 0821, PC-570001-এ।

বাস থেকে ১ আর রেল স্টেশনের বিপরীতে Dhanvantri Rd-এ—New Gayatri Bhawan, SCB ৬০ DCB ১০০ DAB ১২৫-১৫০; H New Bishnu Bhawan, DAB ১০০-১৫০; H Ashraya, SAB ১৫০-২২৫ DAB ৩০০-৪২৫ TAB ৪২৫-৬০০; লাগোয়া ডানহাতি Rajkamal Talkies Rd-1-এ—H Chalukya, SAB ৮৫-১৫০ DAB ১৫০-২৭৫ TAB ৩০০; H Indra Bhawan, SAB ১২৫ DAB ১৫০-২০০, FR ১৭৫-২৫০; National L; H Atithya; Agarwala L, SAB ১০০ DAB ১৫০-২২৫; H Santinivas, DAB ১০০-১৭৫ A/c D ৩০০-৪৫০; H Sangeeth, 1966 Narayan Shastri Rd, S ১২৫ D ১৭৫।

রেল থেকে ২ কিমি, আর বাস স্ট্যান্ডের সমীকটে Bangalore-Nilgiri Rd-570001-এ—H Ritz, DAB ১৫০-২২৫; H Mannan, SAB ১০০ DAB ১৭৫ TAB ২০০; H Karthik, DAB ২৫০; Mysore H Complex, SAB ১৫০ DAB ২২৫-৩০০ A/c D ৪৫০; বিপরীতে H Roopa, D ২৫০-৪৫০; H Arathi, Mysore Woodlands H. বাস স্ট্যান্ডের উপরে Sri Nandini H, S ১৫০ D ২২৫; লাগোয়া ডাইনে Woodside L, তবে, বাস স্ট্যান্ডের কোলাহলে পরিবেশ ভারাক্রান্ত।

ডানহাতি গান্ধী স্কোয়ারে Cuizon Park Rd-1-এ—Chamundi Basti Gruha L, Park Lane H, SAB ১২৫ DAB ২০০ TAB ২৫০; H Pravasi, H Govardhan, DAB ১৭৫। Gandhi Sqr-1-এ—H Srikanth, SAB ৮৫ DAB ১৫০ সুইট ২০০; *Mysore Dasaprakash, A2R1B1, SAB ১৫০ DAB ২২৫-৩৫০ সুইট ৩৭৫-৪৫০; H Madhu Nivas, SAB ৮০ DAB ১৫০; বিপরীতে H Satkar, SAB ৮৫ DAB ১৫০; লাগোয়া H Durbar, SCB ৬০ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০; অদূরে H Balaji Lodge, Halladakeri, S ৮০ D ১৫০।

রেল ও বাস দুই-ই থেকে ১ কিমি দূরে Jagammohan Art Gallery-কে ঘিরে—H Parimal, DAB ১৭৫ FAB ২২৫; H Shreeram, near RMC, SAB ৬০ DAB ১০০ TAB ১২৫। H Dasaprakash Paradise, 104 Vivekananda Rd-20, Q 515565, SAB ৫৫০ DAB ৫৫০ A/c S ৬৮০ D ৮০০ সুইট ৯০০-১২৮০, কল বুকিং: Linkage Q 2464485; H Arun, DAB ২২৫ FAB ৩০০; Palace View L, DAB ১৫০-২২৫; Raj Bhawan L, DAB ১২৫-১৭৫; Palace I, DCB ১০০ DAB ১৫০ TAB ২০০; Kulpana L, SAB ৬৫ DAB ১২৫; Savvya L, SAB ৬৫ DAB ১২৫ ডর্মি ৩০; Sudarshan L, S ৬৫ D ১০০।

বামহাতি Srikrishna Complex-এ—H Tara; H Gokul, Banumiah Sqr, DAB ২০০ FAB ২৫০। বিপরীতে Santhepet-1-এ—Modern L, Kumar L, Naga L, S ৮০ D ১৫০ T ২০০ F ২২৫; Prashanti L, SCB ৬৫ DCB ১২৫ DAB ১৫০।

City Bus Stand-এর বিপরীতে Sayaji Rao Rd-1-এ—H Culinga, 23 K R Circle, SAB ২২৫ DAB ৩২৫ সুইট ৪৫০, কিচেনও মেলে এদের কাছে; বিপরীতে বাস স্ট্যান্ডের উপরে Kochela L. CBS থেকে ডাইনে ব্যবস্থাপনায ভাল H Anugraha, R1B1, SAB ৮০-১৫০ DAB ১২৫-২০০ TAB ২২৫-২৭৫; H Sree Ram, কাবেবী এম্পারিয়াম পেরিয়ে মেডিক্যাল কলেজের বিপরীতে H Prakash L, Sayaji Rao Rd-21, SAB ৮৫ DAB ১৫০ A/c D ৩০০। H Siddhartha, 73/1, Guest House Rd, near CBS, Nazarbad-10, SAB ২৭৫ DAB ৩৫০-৪৫০ A/c D ৬০০-৭৭৫ সুইট ৬৫০-৮৫০, কল বুকিং: Diamond Q 276714; Linkage Q 2464485; H Ashirbad, 3 Nazarbad Rd-10, DAB ১৭৫-২৫০ A/c D ৩০০-৪২৫; H Sreekrishna Continental, Sri Madhveshu Complex, 73 Nazarbad Main Rd, DAB ২৫০-৪২৫, ব্যবস্থাপনা ভাল।

রেল থেকে আর বাস থেকে ১ কিমি দূরে Jhansi Lakshmi-bai Rd-5-এ—KSTDTC-র H Mayura Hovsala, Q 425349, SAB ২০০ DAB ২৫০ সুইট ৬৫০ A/c ৩০০, ৩৫০, ৭৫০। একই ঠিকানায় Mayura Yatrivivas, Q 423492, S ২০০ D ২৪০ চার বেডের ঘর ৩৫০ ছয় বেডের ৫০০ ডর্মি বেড ৭০। KSTDTC-র টার বাসেরও যাত্রা শুরু হোটেল ময়ুর থেকে; অব: Manager বা KSTDTC, 10/4, Kasturba Rd, Bangalore-560001, Q 2212901। ব্যবস্থাপনায় অনলা *H Metropole, 5 J L B Rd-5, Q 520681, SAB ৭০০ DAB ৮৫০ A/c S ৮০০ D ৯৫০ সুইট ১২০০-১৫০০; সমাই ফুল Kings Kourt H, J L B Rd-1, SAB ৪২৫ DAB ৬৫০ A/c S ৬৯০ D ৮৯০-১০৯০ সুইট ১৯৯০; Chamundi G H, J L B Rd.

এছাড়াও হোটেল আছে নানান সারা শহরময়। ITDC-র *Ashok Lalitha Mahal Palace H, Mysore-570011, S ১৮০০ D ২০০০ A/c S ৩৭০০ D ৪২০০ সুইট ৭০০০ ১৪০০০ ২২০০০। নবতম Southern Star Mysore, 13-14 Vinobha Rd, D ৯৪৯ ১০৯৫ ১২৯৫ সুইট ১৭৯৫; *Quality Inn Southern Star, 13 Vinobha Rd-5, A/c S ১২৯৫ D ১৮৯৫ ২৩৯৫ সুইট ৪৫০০; H Brindavan, opp St Philomena Church, Bangalore-Nilgiri Rd-1, R2B1, D ১৫০-৪২৫; Ramanashree Comforts Inn, L-43/A, Bangalore-Nilgiri Rd-1, R3B1, A/c S ৮৭৫ D ১২৭৫ সুইট ১৬৭৫; H Highway, New Bannimandap Ext, Sayaji Rao Rd-15, Q 521117, SAB ৪৫০ DAB ৬০০ A/c S ৬২৫ D ৮০০ সুইট ৬৫০-১২০০; Lokaranjan Mahal Palace H-10; H Mayura, 9/5 Hanumantha Rao Rd-1, D ২৫০-৪৫০; Anand Vihar L, Makkaji Chowk-1.

আর আছে রেল ও বাস থেকে ৫ কিমি দূরে—27, 41, 51, 53, 63 রুটের বাসপথে Youth Hostel ছাড়াও Maharaja College Hostel, Chamraja Rd; Maharani College Hostel, Viceroy Rd; এদের কাছেও ঘর মেলে স্বকালীন অবস্থানে। রেলের মিটারিং রুথও আছে মহীশূরে।

এছাড়া Agrawal Kalyana Bhavan, Dhanvantri Rd-1; Allamanna Choultry, Vinobha Rd-5; Anandavihar Kalyana Bhavan, Bangalore-Nilgiri Rd-1; Chundragiri Chaluvarya Chetty Choultry, K R Hospital Rd-1; Dasappa Choultry, Benki Nawab St-1; Jain Boarding Home, G L B Rd; Kunti Mallanna Choultry, Kabir Rd-1; Sharada Niketan Choultry, J L B Rd ছাড়াও নানান ধরমশালা মহীশুরে।

তবুও থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে H Mayura Haysala, H Dasaprakash, H Anugraha, H Durbar, H Indira Bhawan ভালই।

আহার্যও মেলে চলেতে-ফিরতে নানান হোটেল-রেস্তোরাঁয় মহীশুরে। গান্ধী ক্যোয়ারকে ঘিরে Dhanvantri Rd ও Sayaji Rao Rd-এ সাধারণ হোটেল-রেস্তোরাঁর জটলা। H Dasaprakash, R R R Restaurant দুইয়েরই দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহার্যে যথেষ্ট প্রশস্তি। তেমনিই চীনা বা মোগলিই খানার স্বাদ নেওয়া যেতে পারে গান্ধী ক্যোয়ারে C P C Building-এর H Shipashri-তে; H Darbar-এরও আমিষ ও নিরামিষ আহার্যে যথেষ্ট সুনাম। সাঁঝে এদের Roof Top Restaurantটিও যথেষ্ট পপুলার। আর Dhanvantri Rd-এর Punjabi Restaurant-এ স্বাদ নেওয়া যেতে পারে পাঞ্জাবি মিলের; লাগোয়া Bombay Juice Centre; Indira Cafe's Paras Restaurant (7-30—15-00, 17—22-00)-এ দেশী-বিদেশী আহার্য; Kwality Restaurant-এর চীনা ও তন্দুরীর জন্য সুনাম যথেষ্ট। Jyothi, 13 Vinobha Rd-5 (12-30—15-00, 19-30—24-00)-রও যথেষ্ট সুনাম ভারতীয়-চীনা-মহাদেশীয়-আহার্যে। Gun House Restaurant & Bar, Bangalore-Nilgiri High Way-1 (11—23-00)-এর চীনা-মহাদেশীয়-ভারতীয় আহার্য পরিবেশনে যথেষ্ট সুনাম। Vinobha Rd-এর Shanghai Restaurantটি চীনা মিলে যথেষ্ট পপুলার। গান্ধী ক্যোয়ারের অদূরে সর্বার পাটলে রোডের Cold Drinks House সর্বাঙ্গীণ নানানখর্ষী ফ্রুট জুস ও সুমিষ্ট দুগ্ধ পরিবেশনে।

কনডাক্টেড ট্রা : KSTDC, Transport Wing, Old Exhibition Building, Irwin Road, ☎ 23652 (১০—১৭-৩০) থেকে প্রতিদিন সকাল ৮-০০টায় গিয়ে ২১-০০টায় ফেরে মহীশুর শহর, সোমনাথপুর, শ্রীরঙ্গপত্তন ও বৃন্দাবন গার্ডেন দেখিয়ে। ভাড়া ১০০ করে। ITDC-ও যাচ্ছে একই ট্রায়ে। কলিভাঙ্গল প্রাসাদ থেকে ছাড়ে এদের বাস। এছাড়া KSTDC প্রতি মঙ্গল, বুধ, শুক্র ও শনিবার সকাল ৭-৩০টায় গিয়ে ২০-৩০টায় ফেরে ১৮০ টাকায় বেলুড়, হ্যালেবিদ ও শ্রবণবেলগোলা বেড়িয়ে। মরসুমে প্রতিদিন বেড়িয়ে আনে ২০০ টাকায় উটি। আর রাতভর জার্নিতে ম্যান্ডালোর যাচ্ছে KSTDC-র ডিলাক্স বাস, ফেরেও একইভাবে। তবে, দূরত্ব বেশি হলেও বেলুড় প্রোগ্রামটি ব্যাসালোর থেকেও দেখে নেওয়া যায়। সারা বছরই বাব্বা থাকে ব্যাসালোর থেকে। নানান প্রাইভেট কোম্পানিও যাচ্ছে প্যাকেজ ট্রায়ে কর্ণাটক দেখাতে মহীশুর ও ব্যাসালোর দুই-ই থেকে। Tourist Officeটিও বসেছে Old Exhibition Building, Irwin Rd, Mysore, ☎ 22096-এ। রেল স্টেশন ও হোটেল ময়ূরাত্তেও শাখা আছে এদের।

মহীশুর রাজপ্রাসাদ: পর্যটকদের কাছে রাজপ্রাসাদের দ্বার আঙ্গু উদ্ভুক্ত। সবার তরে দরজা খুলেছে প্রাসাদের। চত্বর জুড়ে বাগিচা, মন্দিরও হয়েছে—ভুবনেশ্বরী, গায়ত্রী,

গোপাল-কৃষ্ণস্বামী, নবগ্রহ, ত্রিনয়নেশ্বর, বরাহস্বামী। শিল্প-স্বয়ম্মাণ্ডিত তোরণ দিয়ে ঢুকতেই বামে ১৮ ক্যারেট সোনার গিলটি করা মন্দিরের চূড়া। প্রাসাদের নির্মাণশৈলী পর্যটক-দের মুগ্ধ করে। স্থাপত্য-ভাস্কর্য-সংগ্রহ ত্রয়ীতেই অভিনবভের সাথে কল্পনার জাল বুনছে প্রাসাদ। তবে, ভিক্টোরিয়ান শৈলীর বাবহারে দ্বারজও দোষে দুষ্ট। অতীতের দারু নির্মিত প্রাসাদ ১৮৯৭এর ভয়াবহ অগ্নিকাণ্ডে পুড়ে যেতে হেনরি আরউইনের নকশায় ১৫ বছর ধরে ১৯১২ খ্রিস্টাব্দে হিন্দু ও আরব্য সেরাসেনিক শৈলীতে ৪.২ মিলিয়ন টাকা ব্যয়ে তৈরি হয় এই প্রাসাদপুরী। গৈরিক রঙা ৮০×৫০ মিটারের প্রাসাদের উচ্চতা ৪৮ মি। প্রাসাদের কল্যাণমণ্ডপ অর্থাৎ বিবাহবাসরে রবি ভার্মার আঁকা দশেরা উৎসবের ছবি, দ্বিতলে দরবার হল-এ মণি-মাণিক্যখচিত ২৮০ কেজি ওজনের রত্ন-সিংহাসন (প্রতি রবিবার ১৯—২০-০০ ও দশেরা কালে প্রতিদিন) দেখতে ভুলবেন না। হিন্দু পূরণের নানান দেবদেবীর মূর্তি খোদিত এটি রাজা ওদিয়ারের (১৫৭৬-১৬১৭) বিজয়নগর জয়ের স্মারক রূপে বিজয়-নগর থেকে মহীশুরে আসে। দ্বিমতে দিল্লীশ্বর ঔরঙ্গজেবের দেওয়া উপহার এই সিংহাসন। কাচ, হাতির দাঁত ও মূল্যবান পাথরের চাকচিক্যময় অলঙ্কার, নিরেট রূপোর দরজা, দুগ্ধধবল বাইজেন্টাইন মোজাইক মেজে, মেহগনি কাঠের কারুকর্মময় সিলিং, হোয়সলী শৈলীর কার্ভিং, গিলটি করা থাম আকর্ষণ বাড়িয়েছে দরবার হলের। প্রাসাদের আর্ট গ্যালারির তেলচিত্রগুলিও সুন্দর। এছাড়া ক্যাবের আধারে সোনার জলে পাশিশ করা ব্রিটিশ ক্রাউনের রেমিক্স, টিপু ও হায়দরের তরবারি, শিবাজীর বাঘনখ, চন্দন কাঠের আসবাবপত্র, হাতির দাঁতের কারুকর্ম যাদুপুরী করে তুলেছে প্রাসাদকে। বাসও করেন প্রাক্তন মহারাজার পুত্র প্রাসাদের পেছন অংশে। ছুটির দিনগুলিতেও উৎসবের সন্ধ্যায় (১৯—২০-০০) আলোর সাজ পরে প্রাসাদ। দূর থেকে মনে হয় সোনালী রুজ পরেছে প্রাসাদ। ১০—১৭-০০টায় খোলা, দর্শনী ৫। জুতো, ক্যামেরা, সঙ্গে র জিনিস প্রাসাদদ্বারে জমা রেখে প্রাসাদে যাওয়া বিধি।

জগমোহন প্রাসাদ বা জম্মা চামরাজেন্দ্রে আর্ট গ্যালারি: ১৮৬১তে কৃষ্ণরাজা ওদিয়ারের বিয়ের কালে তৈরি জগ-মোহন প্রাসাদে নানান অ্যান্টিকের সন্ধান নিয়ে মিউজিয়াম তথা আর্ট গ্যালারি বসেছে ১৮৭৫এ। ছবির সংগ্রহ বিশেষ করে দ্বিতলে S L Haldekar-এর আঁকা সন্ধ্যাপ্রদীপ হাতে মহিলা ছবিটি মর্যাদা বাড়িয়েছে। ঘরের আলো নিবিয়ে ধীরে ধীরে ছবিটির দিকে এগুতে থাকলে মনে হবে সাঁঝের প্রদীপ হাতে মহিলাই এগিয়ে আসছে। অবসাদ দূর করে, তৃপ্তি পান দর্শক এই ছবির মাঝে। রবি ভার্মার আঁকা ছবিগুলিও আর এক সম্পদ মিউজিয়মের। বাদ্যযন্ত্রের সংগ্রহও উদ্বোধ্য। প্রবেশদ্বারে ঘণ্টায় ঘণ্টায় প্যারেড ঘড়িটিরও অভিনবত্ব আছে। বৃহস্পতি ও ছুটি ছাড়া ৮—১২-০০ আবার ১৪-৩০—১৭-০০টায় খোলা; দর্শনী ৫ করে।

চামরাজেন্দ্র জলজিক্যাল গার্ডেন/চিড়িয়াখানা: মহীশূরের চিড়িয়াখানাটিরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। প্রাসাদ থেকে ৩ কিমি পূবে ৩৭ হেক্টর জুড়ে সবুজ বনানীতে ছাওয়া, পরিখায় ঘেরা নীল আকাশের নিচে বাঘ, সিংহ, হাতি, গরিলার অবস্থান উল্লেখ্য। ১৫০০ জানোয়ারের বাস। তেমনই পাখি, পশু ও সরীসৃপের সংগ্রহও উল্লেখ্য। শুক্রবার ছাড়া ৮—১১-৩০ আবার ১৪—১৮-০০টায় খোলা, টিকিট ৫।

ললিতামহল : চামুণ্ডীর পথে পাহাড়ী সোপানে ১৯৩০এ কৃষ্ণরাজা চতুর্থ-র তৈরি রাজ-অভিধিরের গেট হাউসে আজ। TDC-র ৫ তারা হোটেল বসেছে। সুপারিনটেনডেন্ট-এর অনুমতিতে মনোহর এই প্রাসাদ দেখার ব্যবস্থা আছে। ডাইনিং হল-এর ইটালিয়ান মার্বেলের সিঁড়ি—সেও আর এক অভিনব।

চামুণ্ডী পাহাড় : শহরের শিরে কিরীট হয়ে ১০৯৫ মি উঁচু চামুণ্ডী পাহাড়। কৃষ্ণরাজা ওদয়ার তৃতীয়-র তৈরি মন্দিরে রাজবংশের গৃহদেবতা দু'হাজার বছরের প্রাচীন চামুণ্ডেশ্বরী রয়েছেন পাহাড়ে। কথিত আছে মহিষাসুরকে বধ করেন এই দেবী। মন্দিরের স্থাপত্যও সুন্দর। ৪০মি উঁচু ৭তলা গোপূরম হয়েছে। মন্দিরের শিরে ঝলমলে মহিষাসুরের মূর্তি। নিচুতেও মূর্তি হয়েছে নতুন করে মহিষাসুরের। তেমনই মহীশূর শহরের রাতের আলোকসজ্জা ও চারপাশ সুন্দর দৃশ্যমান চামুণ্ডী পাহাড় থেকে। পথখোঁজাও মনোরম। ছুটির দিনে যাত্রীর আধিকা ঘটে মন্দিরে।

শহরের দক্ষিণ-পূবে খাড়া পাহাড়—পাহাড়ী পথের মাঝ দূরত্বে এক খণ্ড পাথর কুঁদে ১৮৫৯এ তৈরি ১৬x২৫ ফুটের মনোলিথিক নন্দীর কারুকার্যও মুগ্ধ করে। গলার ঢেন, ঘণ্টা, পাথর কুঁদে তৈরি হলেও অনবদ্য।

৪২ কিমি দীর্ঘ হাঁটা পথ উঠেছে শহর থেকে শৈল শিখরের মন্দিরে। ১৭ শতকের তৈরি পথে ১০০০ সিঁড়ি। আর গাড়ি যাচ্ছে ১০ কিমি দীর্ঘ ঘুরপথে মন্দিরদ্বারে। প্যাকেজ ট্যুরে বা সিটি বাস স্ট্যান্ড থেকে ১০১ রুটের বাসে (৪০ মিনিট অভ্যন্তর সার্ভিস) বেড়িয়ে নেওয়া যায়। চামুণ্ডী থেকে শহরে ফেরার শেষ বাস রাত ২১-০০টায়। ৬—১২-০০ আবার ১৭—২০-০০টায় খোলা থাকে মন্দির। দোকানপাট-রেস্তোরাঁও হয়েছে মন্দিরকে ঘিরে পাহাড়ে।

হোটেলও হয়েছে চামুণ্ডী পাহাড়ে রাজ-পরিবারের গ্রীষ্মাবাসে H Rajendra Vilas Palace, Chamundi Hills-570019, ☎ 520690, DAB ৪২৫ A/C D ৩০০ সুইট ৮৫০-১৮৮৫।

আর রয়েছে শহরের প্রাণকেন্দ্র সয়াজী রাও রোডে কাঁবেরী আর্টস অ্যান্ড ক্রাফট এম্পোরিয়াম। আভরণ, সিল্ক, চন্দন, হাতির দাঁত তথা হস্তজাত নানান পণ্যের সস্তার নিয়ে দোকান সাজিয়েছে কর্ণাটক সরকার। কেনাকাটার পক্ষে অনন্য। এমনকি কেনাকাটায় আগ্রহ না থাকলেও উচিত হবে দেখে নেওয়া। রবিবার ছাড়া ১০—১৪-০০ ও ১৫-

৩০—১৯-৩০টায় খোলা। তেমনই আছে KSIC-র সিল্ক সপ কে আর সার্কেল ও ইন্দিরানগরে।

এছাড়া লোকরঞ্জন মহল, চেলুভাষা ম্যানসন (কেন্দ্রীয় সরকারের খাদ্য গবেষণাগার), মিউনিসিপ্যাল অফিস, কৃষ্ণ-রাজেন্দ্র হাসপাতাল, একজিবিশন হাউস, রেল স্টেশন, ৩ কিমি উত্তরে ২৭ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৯৩১এ নিও-গথিক শৈলীতে তৈরি সেন্ট ফেলোমেনা ক্যাথিড্রাল, বাণীবিলাস মহল্লার রামকৃষ্ণ আশ্রম ছাড়াও একাধিক প্রাইভেট বাড়ি-ঘর অতীব সুন্দর। জয়পুর যেমন গোলাপী ঠিক তেমনই গৈরিক-রঙা বাড়িগুলি শোভাবর্ধন করেছে মহীশূরের। দক্ষিণ প্রান্তে কনডাকটর ট্যুরে পরিত্যক্তা হলেও এককভাবে শহর থেকে ৮ কিমি দূরে চন্দন তেলের সরকারি কারখানাটিও রবি ও বুধস্পতি ছাড়া ৮—১২-০০ আবার ১৩—১৭-০০টায় দেখার ব্যবস্থা মেলে। চন্দন তেল বিক্রিরও ব্যবস্থা আছে। শহরমুখী ১ কিমি দূরে রবিবার ছাড়া ৮—১৬-৩০টায় অনুমতি সাপেক্ষে সিল্ক ফ্যাক্টরিটিও পর্যটকরা দেখে নিতে পারেন। সিল্কজাত বসন তৈরি দেখাও কেনার ব্যবস্থা মেলে। এটিও সরকারি পরিচালনাধীন। চামরাজেন্দ্র টেকনিক্যাল ইনস্টিটিউটে হাতির দাঁত, চন্দন কাঠ ও ধাতুর নানান কাজ দেখাও কেনা যেতে পারে। রেল স্টেশনের সন্নিকটে রেলওয়ে মিউজিয়ামটিরও অভিনবত্ব আছে। রাজকীয় টয়লেট সহ মহারানীর সেলুন কারটিও আকর্ষণ বাড়িয়েছে। ১৮৮৮ থেকে রেলের বিচিত্রধর্মী সংগ্রহ সোম ছাড়া ১০—১৭-০০টায় দেখে নেওয়া যায়। তেমনই ১৯২৮এ কর্ণাটকের লোকশিল্পের সংগ্রহ নিয়ে গড়ে ওঠা ফোক আর্ট মিউজিয়ামটিও আর এক দ্রষ্টব্য। মহীশূর ভ্রমণার্থীরা আর এক রোমহর্ষক অভিজ্ঞতা পেতে পারেন খেঁদা অপারেশনে। মহীশূর থেকে ৫৫ কিমি দক্ষিণে কোরাপুর ফরেস্টে সরকারি ব্যবস্থায় মাঝে মাঝে বন্য হাতি ধরার এই অপারেশনে বৈচিত্র্যের স্বাদ মেলে। আর, বাস স্ট্যান্ড থেকে হাঁটা দূরত্বে পায়ে পায়ে জগমোহন আর্ট গ্যালারিও প্রাসাদ বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে এককভাবে। কারণ, কনডাকটর ট্যুরের নির্ধারিত সময়ে দেখে সারা অসম্ভব হয়ে পড়ে।

বৃন্দাবন গার্ডেন ও কৃষ্ণরাজ সাগর বাঁধ

শ্রীরঙ্গপত্তন ১৬, মহীশূর ২২, সোমনাথপুর ২৮ আর ব্যাল্লারের থেকে ১৫৩ কিমি দূরে কাবেরী নদীতে ৩ কিমি লম্বা, ৪০ মি উঁচু বাঁধ হয়েছে ১৯১১য় শুরু হয়ে ১৯৩৫। শিবসমুদ্রেরে সিমসা জলবিদ্যুৎ প্রকল্পকে জল দিতে এম বিখেসরাইয়ার পরিকল্পনায় সিমেন্ট ছাড়াই পাথরে তৈরি এই বাঁধ। আর ১৩০ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে জলাধার। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। চতুইভাতির মনোরম পরিবেশ। আর বাঁধের নিচুতে মনোরম বাগিচা বৃন্দাবন গার্ডেন ধাপে ধাপে যোগলী ধাঁচে রূপ পেয়েছে। ফোয়ারা, ফুলের কেয়ারি, গাছ ছোটো জন্তু-জানোয়ারের

প্রতিকৃতি—সব মিলিয়ে পরিবেশকে মধুময় করে তুলেছে। সাঁঝে আলোকসজ্জাও অপরূপ করে তোলে বৃন্দাবন গার্ডেনকে। সোম থেকে শনি ১৮-২৫ থেকে ১৯-২৫ আর রবিবার ১৮ থেকে ২০-০০টায় আলোর সাজ পরে বৃন্দাবন গার্ডেন। আর সন্ধ্যা সাড়ে ছয় থেকে আধ ঘণ্টা অন্তর ফিলিপস কোম্পানির ব্যবস্থাপনায় কম্পুটার নিয়ন্ত্রণে সঙ্গীতের তালে তালে ফোয়ারাগুলি নাচতে শুরু করে। রঙেরও বদল ঘটে ক্ষণে ক্ষণে। উচিতও হবে ঘড়ি ধরে সাঁঝে বেয়ে লেকপেরিয়ে গার্ডেনের সর্ব দক্ষিণে ড্যালিং ফোয়ারার নয়নলোভন নাচ দেখে নেওয়া। উদ্যানের প্রবেশদ্বারে রাধাকৃষ্ণের মূর্তিটিও মনোহর।

ট্যুরিস্ট বাস, ট্যাক্সি, ট্রেন বা সিটি বাস স্ট্যান্ড থেকে ১৫০ রুটের (৩০ মিনিট অন্তর সার্ভিস) বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় মহীশূর থেকে। ব্যাঙ্গালোর থেকেও কনডাকটেড ট্র্যার বাস আসছে যাত্রী নিয়ে। প্রবেশমূল্য ২, ছবি তুলতে সাধারণ ক্যামেরা ১০, মুভি ১০০। টিকিট ছাড়া ছবি তোলায় বিপদ আছে।

থাকার জন্য আছে KSTDC-র *H Mayura Cauvery*, K R Sagar, Belagola, Dist-Mandya, ☎ (08236) 57252, S ১৩৫, D ১৬০, অফ: Manager, K R Sagar, Mandya, ☎ (08236) 57252 বা Commercial Manager (Lodges), KSTDC, 10/4 Kasturba Rd, Bangalore-1. আর আছে *Travellers Bungalow* ও *Ritz Group*-এর **H Krishnarajasagar*, Krishna-rajasagar-571607, ☎ 57222, S ৪৯৫ D ৫৯৫ A/C S ৬৯৫, D ৮০০; ভারতীয় চীনা ও কন্টিনেন্টাল মিল মেলে।

শ্রীরঙ্গপত্তন

মহীশূর-ব্যাঙ্গালোর সড়কে মহীশূর থেকে ১৫ কিমি উত্তর-পূবে আর ব্যাঙ্গালোরের ১২৪ কিমি দূরে কাবেরীর দুই শাখায় ঘেরা দ্বীপ শ্রীরঙ্গপত্তন। মহীশূর রাজাদের অতীতের (১৬১০-১৭৯৯) রাজধানী শহর। তারও আগে ১৫১০এ হেবকার তিম্বানা দুর্গ গড়েন শ্রীরঙ্গপত্তন-এ। প্রাচীর আর পরিখায় ঘেরা শ্রীরঙ্গপত্তন। বারবার ব্রিটিশ, ফ্রেঞ্চ, হায়দ্রাবাদের নিজাম ও মারাঠা আক্রমণ প্রতিরোধ করে অবশেষে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির লর্ড ওয়েলেসলির কৃৎজালে বিখ্যাসঘাতকের খুলে দেওয়া দ্বারে (ওয়াটার গেট) ঢুকে পড়া ব্রিটিশের হাতে প্রাণ দেন *সোর্ড অব টিপু সুলতানের* নায়ক প্রবাদপ্রতিম মহীশূর শার্দুল টিপু। দখল যায় ব্রিটিশের হাতে ১৭৯৯ খ্রিস্টাব্দের ২৮শে এপ্রিল। ধ্বংসও পায় ব্রিটিশেরই হাতে শ্রীরঙ্গপত্তন। তবে, আজও ধ্বংসস্থপের মাঝে স্বাধীনতার নিতীক গরিমায় নীরব সাক্ষী হয়ে দাঁড়িয়ে আছে হায়দর ও টিপুর স্বপ্নে গড়া দুর্গ। পর্যটকও আসেন সারা ভারত থেকে প্রবেশ পথের ডাইনে টিপুর মৃত্যুস্থানকে শ্রদ্ধা জানাতে।

এখানকার রায়মর্পাট, দরিয়া দৌলত, গম্বুজ, জুম্মা মসজিদ, মুসলিম দুর্গে হিন্দুর দেবতা রজনাতথ্যবাসী, ডানজন অর্থাৎ পাতালে করেন ঘর ও মিউজিয়ম আজও অতীত রোমন্থন করায়।

Chennai-Bangalore-Hubli-Pune-Mumbai NH-28

| | | |
|--------|------------------------|----------|
| 0 Km | Chennai | |
| 21 " | Poonamallee | |
| | To Tamilnadu/AP Border | 44 km |
| | " Rengunata | 120 km |
| | " Tirupati | 131 km |
| 70 " | Road Jn | |
| | To Kancheepuram | 5 km |
| | " Chingleput | 39 km |
| 112 " | Ranipet | |
| | To Vellore | 32 km |
| | " Coimbatore | 409 km |
| 153 " | Chittoor | |
| | To Vellore | 35 km |
| | " Tirupati | 69 km |
| 198 " | Road Jn | |
| | To Kolar Gold Fields | 65 km |
| 216 " | AP/Karnataka Border | |
| 263 " | Kolar Town | |
| 331 " | Bangalore | |
| | To Hassan | 187 km |
| 358 " | Nelamangala | |
| | To Hassan | 160 km |
| 397 " | Tumkur | |
| | To Arsikere | 86 km |
| | " Hassan | 129 km |
| 529 " | Chitradurga | |
| | To Bhadravati | 94 km |
| 607 " | Hanhar | |
| | To Hospet | 110 km |
| | " Shimoga | 77 km |
| 736 " | Hubli | |
| | To Bijapur | 190 km |
| | " Sholapur | 286 km |
| | " Hospet | 438 km |
| 756 " | Dharwar | |
| | To Panaji | 167 km |
| 830 " | Belgaum | |
| | To Karwar | 178 km |
| 863 " | Road Jn | |
| | To Ghatprabha Dam | 32 km |
| | " Gokak Falls | 47 km |
| 897 " | Nipani | |
| | To Miraj | 77 km |
| 933 " | Kolhapur | |
| 1003 " | Karad | |
| | To Koyana Dam | 58 km |
| | " Bijapur | 186 km |
| 1056 " | Satara | |
| | To Mahabaleswar | 56 km |
| 1077 " | Panchwad | |
| | To Mahabaleswar | 44 km |
| 1142 " | Road Jn | |
| | To Singadh | 13 km |
| 1166 " | Pune | |
| | To Mahabaleswar | 123.7 km |
| 1211 " | Kamshet | |
| | To Bedsa Caves | 6.5 km |
| 1220 " | Karla | |
| | To Karla Caves | 2.5 km |
| | " Bhaja Caves | 4 km |
| 1228 " | Lonavala | |
| 1233 " | Khandala | |
| 1259 " | Road Jn | |
| | To Karjat | 10 km |
| | " Neral | 51 km |
| | " Matheran | 72 km |
| 1329 " | Mumbai | |

৮৯৪এ গঙ্গারাজদের গভর্নর থিরুমালারায়ের তৈরি মন্দির বার বার সংস্কার হয়ে ১২০০ খ্রিস্টাব্দের নতুন মন্দিরে দেবতা বিষ্ণু অর্থাৎ রঙ্গনাথ থেকে জায়গার নাম হয়েছে শ্রীরঙ্গপত্তন। নিম্নাভিভূত বিশালাকার মূর্তি হয়েছে কালো পাথরে দেবতার। পাঁচতলা গোপুরম হয়েছে দক্ষিণী শৈলীতে। নানান অবতাররূপী বিষ্ণুও মূর্তি হয়েছেন মন্দিরের ভান্ডারে। মন্দিরের সামনের কারুকার্যময় রথটি হায়দর আলির ভেট। প্রতি মাঘ মাসে রথ-সপ্তমী উৎসবে রথযাত্রা হয়—মেলাও বসে রথ যাত্রাকালে। টিপুও ভক্ত ছিলেন হিন্দুর দেবতা রঙ্গনাথের। হোয়সল ও বিজয়নগর রাজাদের হাতে সংস্কার হয়েছে মন্দির। অদূরে শিব মন্দির। ১৯৩৩ খ্রিস্টাব্দে মহীশূর মহারাজার তৈরি ১৬৫ ফুট উঁচু সেন্ট ফিনোমনা (ভারতে তৃতীয় বৃহত্তম) চার্চও আছে শ্রীরঙ্গপত্তনে।

কাবেরী নদীতে ঘেরা পারসীয় ধাঁচে ১৭৮৪তে তৈরি দরিয়া দৌলত (নদীর সম্পদ) বাগ সুন্দর এক বাগিচা। বাগিচার মাঝে টিপুর গ্রীষ্মাবাস ছিল সেকালে। ইন্দো-সেরাসেনিক শৈলীতে, টিক কাঠে তৈরি কারুকার্যময়। টিপু ও হায়দর আলির ঐতিহাসিক স্মারকরূপেও আকর্ষণ করে প্রাসাদ। ব্রিটিশ কর্নেল আর্থার ওয়েলসলীও কিছুকাল বাস করেন দরিয়া দৌলতে। পারসীয় মিনিয়চারখর্মী ফ্রেস্কো চিত্রগুলি বিবর্ণ হলেও অতীত স্মরণ করায়।

নীল আকাশের নিচে কালো পাথরের পিলারের উপর ৩৬টি পিলারে ভর করা ক্রীম রঙা গম্বুজ জামিয়া-ই টিপু মসজিদ তথা টিপুর সমাধিক্ষেত্রটিও সুন্দর। ব্যাঘ্র চর্মের ডোরাকাটা দেওয়াল। ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির সৈনিকদের আঁকা ফ্রেস্কো চিত্রে ফরাসি সাহায্য পুষ্ট টিপু ও ব্রিটিশের যুদ্ধ-আখ্যান ও নবাবী জীবনধারা মূর্ত হয়েছে। বাবা, মা ও তাঁর পূর্বপুরুষদের সমাধিও রয়েছে এখানে। আর মিউজিয়াম বসেছে অপ্রশস্ত স্থিতলে টিপুর নানান স্মারক নিয়ে। তেমনই ১৭৮৪তে তৈরি জুম্মা মসজিদ—এ ২০০ সিঁড়ি উঠে মিনারেট চড়েও দুর্গের ধ্বংসাবশেষ তথা শ্রীরঙ্গপত্তন দেখে নেওয়া যায়। কোরান থেকেও নানান উদ্ধৃতি খোদিত হয়েছে হলের বারান্দায়। আর পশ্চিমে *mihrab*.

সিটি বাস স্ট্যান্ড থেকে ১২৫ রুটের বাস যাচ্ছে ঘন্টাঘ ঘন্টায়। ট্রেনও যাচ্ছে মহীশূর থেকে ৬-০০, ৬-৪৫, ৮-০৫, ১৪-৩০, ১৬-৫৫, ১৮-০৫, ১৮-২৫, ২৩-৩০এ ছাড়া ১৫ মিনিটে শ্রীরঙ্গপত্তন পৌঁছে ব্যাঙ্গালোরে। কনডাক্টেড ট্রায়ে বাস যাচ্ছে শহর থেকে। আর অটো ও টাঙ্কা মেলে শ্রীরঙ্গপত্তনে।

মন্দির লাগোয়া KSTDC-র *H Mayura River View, Srirangapatna-571438, Dist-Mandya, O (08236) 252114*, এপ্রিল-জুন ও অক্টো-নভেম্বর মরসুমে DAB ৫০০ A/c ৬৫০, কটেজ ৪৫০; রিবেট মেলে অফ সিজনে। আহার্যও মেলে ক্যান্টিনে। PWD-র *Travellers Bungalow* ও *IB* ছাড়াও বেশ কয়েকটি লজ আছে শ্রীরঙ্গপত্তনে। আর আছে *Amblee Holiday Resort, O (08236) 52326, S ৭০০ D ৮০০* সুইট ১০০০ A/c S ১০০ D ১০০০ সুইট ১২০০।

রঙ্গনথিট্টো পক্ষীআলয়

পক্ষী-প্রেমিকদের কাছে এর আকর্ষণ অনস্বীকার্য। বছরভর চলা গেলেও জুন থেকে নভেম্বরে দূর-দূরান্ত থেকে পাখিরা এসে নীড় বাঁধে ৭৫০ মি উঁচুতে কাবেরী নদীতে ঘেরা ০.৬৭ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত দ্বীপের বৃক্ষ শাখে। সূর্যাস্তে পাখিদের কল্যাণ ফেরা—সেও রমণীয়। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। বোটে বসে দেখে নেওয়া যায় পাখিদের রোজনাচা, শুনে নেওয়া যায় পাখিদের কাকলি; চিনে নেওয়া যায় ইগ্রেট, স্পুন বিল, হেরন, ওপেন বিল স্কর্ক, ওয়াইট আইবিস ছাড়াও বিভিন্ন প্রজাতির নানান পাখি। শ্রীরঙ্গপত্তন থেকে ৪ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে রঙ্গনথিট্টো পক্ষীআলয়। কনডাক্টেড ট্রায়ে বা শ্রীরঙ্গপত্তন থেকে রিকশা/টাঙ্কা/অটোয় বেড়িয়ে নেওয়া যায়। সরাসরি যাত্রায় মহীশূর থেকে বাসে শ্রীরঙ্গপত্তন বাজার পৌঁছে অটো/টাঙ্কা চলা যেতে পারে Ranganathittu Bird Sanctuary. থাকার জন্য কণ্ঠিক ট্যুরিজমের *3 Riverside Cottage* আছে রঙ্গনথিট্টোয়।

সোমনাথপুর

শ্রীরঙ্গপত্তন থেকে বাসে ২৬ কিমি দূরে সোমনাথপুর। মহীশূর থেকে দূরত্ব ৪০, ব্যাঙ্গালোর ১২১, শিবসমুদ্র ৩৭ কিমি। একক যাত্রায় সরাসরি বাসের অমিলে মহীশূর সিটি বাস স্ট্যান্ড থেকে T Narisipur-এর বাসে টিনারিসিপূর পৌঁছে নতুন করে বাস চেপে চলা যেতে পারে সোমনাথপুরে। আবার বামুন্ডে বাস বদল করেছে ও চলা যেতে পারে সোমনাথপুর। তেমনই শ্রীরঙ্গপত্তন থেকেও বাস মেলে সোমনাথপুরের।

প্রসন্ন চেম্বারশেখর মন্দিরের জন্য সোমনাথপুর খ্যাত। তারা-আকার এক উঁচু ভিত্তে পাশাপাশি তিন মন্দির। মাঝে চেম্বারশেখর, ডাইনে জনার্ন ও বামে বেণুগোপাল। মূল মূর্তির অনুপস্থিতিতে নতুন করে মূর্তি হয়েছে চেম্বারশেখরের। আর আছেন শঙ্খ, চক্র, গদা ও পদ্ম হাতে ৬ ফুট উঁচু বিষ্ণু। তেমনই বেণুগোপাল অর্থাৎ বাঁশি হাতে গাছে ঠেস দেওয়া মূর্তি হয়েছে শ্রীকৃষ্ণের।

হোয়সল রাজত্বের সুবর্ণ যুগে দ্বার সমুদ্রের রাজা নরসিংহ ৩য়-র সেনাপতি সোমা নিজ নামে গ্রাম গড়ে তৈরি করেন কেশব মন্দির ১২৬৮ খ্রিস্টাব্দে। সেযুগের স্থাপত্যের অন্যতম নিদর্শন হয়ে আজও তীর্থযাত্রী ও পর্যটক দুই-ই আকর্ষণ করে চলেছে। এটিও স্থপতি তথা ভাস্কর যবনাচার্যর আর এক কীর্তি। সিমেন্ট ছাড়াই তৈরি হয়েছে ১০ মি উঁচু এই মন্দির। মন্দিরের বিমান সুখনসী(খামওয়াল ফল), নবরঙ্গ সবই কারুকার্যময়। গুরুড়ের কাঁখে লক্ষ্মী-নারায়ণ, এরাবতে ইন্দ্র ও শক্তি, গণপতির নৃত্য ছাড়াও জীবজন্তু, শিকারী, নর্তকী, রামায়ণ, মহাভারত ও ভাগবতের কাহিনী মূর্ত হয়েছে দেওয়ালে। বিকুর দশ অবতার মূর্তিও রূপ পেয়েছে। কণ্ঠিক ভ্রমণার্থীদের দেখে নেওয়া একান্তই উচিত হবে দক্ষিণ

ভারতের অন্যতম সুন্দর এই মন্দিররাজি। ৯--১৭-০০টায় খোলা।

থাকার জন্য মন্দির লাগোয়া কর্ণাটক ট্যুরিজমের H Mayura Keshav, Somnathapur, ☎ (08277) 7017 আছে সোম-নাথপুরে।

উৎসাহীরা সোমনাথপুরের ৩০ কিমি দক্ষিণ-পূবে শিবসমুদ্রমের পথে বাসে গঙ্গা ও চোলরাজাদের প্রাচীন রাজধানী তালকাড-ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। কাবেরীর বাম পাড়ে নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা তালকাড অর্থাৎ জঙ্গলে ৬টি মন্দির হয়েছে দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে। গ্রানাইট পাথরে ১৩৬০এ তৈরি বৈদ্যেশ্বর শিবমন্দিরে নানান ভঙ্গিমায় শিব; আর মন্দিরের সামনে শিবের বরে অমরত্ব পাওয়া তাল্লাও কাড় দুই দ্বারপাল ভাইয়ের মূর্তিও দ্রষ্টব্য। এসেরই নামে জায়গার নাম। জঙ্গল কেটে শিব মূর্তি আবিষ্কারও এই দুই ভাই-এর। তেমনই পাতালেস্বর লিঙ্গ মূর্তির রঙবদল—সেও আর এক বৈচিত্র্যময়। সকালে গাঢ় লাল, বিকালে পিঙ্গল, আর সন্ধ্যাে শ্বেত রঙ ধরে লিঙ্গ মূর্তি। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান—তবে সবই বালির নিচে চাপা। ১২ বছর অন্তর বালি খুঁড়ে বের করা হয় কার্তিক মাসের পঞ্চমি দর্শন উৎসবে।

শিবসমুদ্রম

কর্ণাটক-তামিলনাড়ু সীমান্তে বন আর পাহাড়ে ঘেরা সুন্দর প্রকৃতি ও জলপ্রপাতের জন্য শিবসমুদ্রমের প্রশস্তি। আর রয়েছে দু'টি মন্দির—একটি শিবের অপরটি অনন্ত-শয়নে বিষ্ণু অর্থাৎ রত্ননাথের। সোমনাথপুর থেকে দূরত্ব ৩৭, মহীশূর থেকে ৭৭, ব্যাসালোর থেকে ১২০ কিমি। বাসে বাসে বেড়িয়ে ফেরা যায়। কাবেরী এখানে দু'ভাগে ভাগ হয়ে জলপ্রপাতের মতো ৯১মি নিচুতে পড়ে পাহাড়ী গিরিখাতের মাঝ দিয়ে বয়ে চলেছে গগনচুম্বি আর বরাচুম্বি এই দুই শাখা নদীতে। মনসুনে ধারা বাড়ে। আকার নিয়েছে হীপের—শিবসমুদ্রম। দর্শন না মিললেও গর্জন শোনা অস্বাভাবিক নয় বনচরদের। অনুমতি সাপেক্ষে ১ই কিমি দূরে শিবসমুদ্রমের সিমসা জলবিদ্যুৎ প্রকল্পটিও দেখে নেওয়া যায়। এশিয়ায় প্রথম (১৯০২) জলবিদ্যুৎ তৈরির প্রকল্প এই সিমসা। থাকারও ব্যবস্থা মেলে RH ও IB-তে; অবু: EE, Electrical Division, Shimsapur.

বন্দীপুর ব্যাঘ্র প্রকল্প

১০২২ থেকে ১৪৫৪.৫ মি উঁচুতে নীলগিরি পর্বতে চন্দন, মেহগনি, আবলুস, সেণ্ডন, বাঁশ ও দেওদারে ছাওয়া ৮৭৪.২০ বর্গ কিমি জুড়ে মহীশূর-উটি সড়কে তামিলনাড়ুর মুধুমালার ও কেরলের উইনাদ সংলগ্ন বন্দীপুর। দুইয়ের মাঝে সীমান্ত টেনেছে ময়্যার নদী। আর কাবিনী নদীর বাঁধ টুকরো করেছে অতীতের বেণুগোপাল ওয়াইল্ড লাইফ পার্ককে।

কাবিনীর দক্ষিণে বন্দীপুর আর উত্তরে নাগারহোল জাতীয় উদ্যান। ১৯৩১এর জঙ্গলয় পশ্চিমঘাট পর্বতের পাদদেশে ৯০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত মহারাজাদের মুগয়াভূমি বন্দীপুর ১৯৪১এ হয় বেণুগোপাল ওয়াইল্ড লাইফ স্যাক্রুয়ারি। নামান্তরের সাথে আয়তনও বাড়ে ৯০ থেকে ৮০০ বর্গ কিমিতে। আর ১৯৭৩এ WWF-এর পরিকল্পিত ভারতীয় (১৮শ) ব্যাঘ্র প্রকল্পের শিরোপা চেপেছে বন্দীপুরের শিরে। মহীশূরের ৭৬ কিমি দক্ষিণে আর উটির ৮২ কিমি উত্তরে বন্দীপুর। মহীশূর-উটি বাসও চলছে বন্দীপুর প্রকল্প হয়ে। চলার পথে বাসে বসে দর্শন মেলে বন্য হাতির যুথের। বেড়াবার মরসুম নভেম্বর থেকে মে মাস হলেও জানুয়ারি থেকে মে রমণীয়।

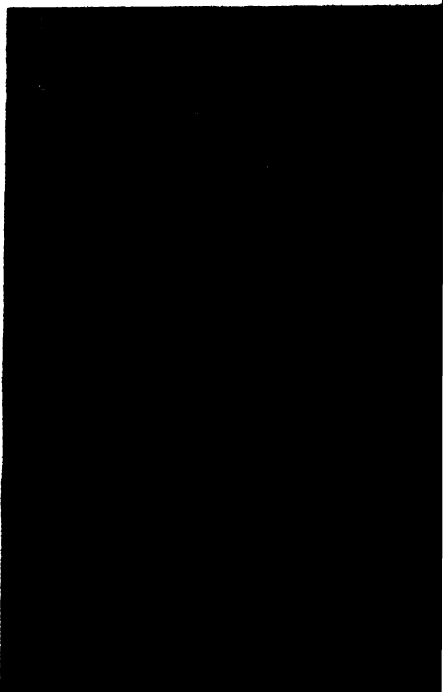
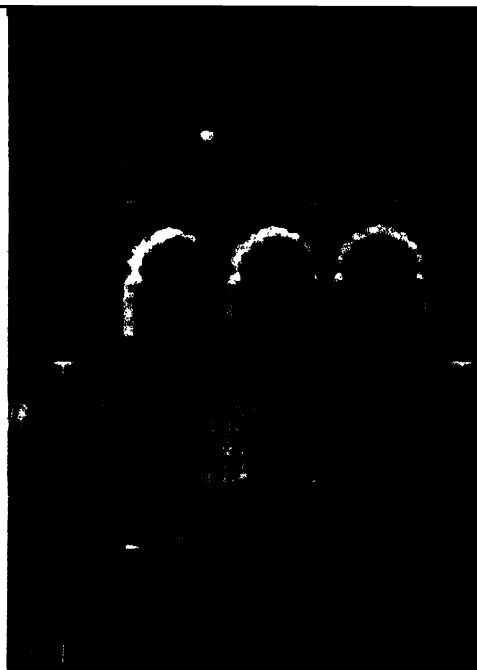
হাতির পিঠে বাজিপেসকাল ৬—৯-০০ আবার ১৬—১৮-৩০টায় বনবিহারের ব্যবস্থা। ৪ যাত্রী নিয়ে হাতি যাচ্ছে প্রতি জনা ৫০; আর ৮ যাত্রীর জিপ যাচ্ছে ১৭৫ টাকায় প্রতি জনা। বাসও যাচ্ছে ২৫ যাত্রীর বনবিহারে। ওয়াচ টাওয়ারে বসে ছবি তোলাও জন্তু দেখা রোমাঞ্চে ভরা। ১৯৯৩র সুমারি মতে বাঘ ৬৬, চিত্রা ৮১, শব্বর ৬০৮, বাইসন ১১৬৬, হিন্সহু বন্য হাতি ছাড়াও নানান প্রজাতির হরিণ, প্যাংগা, ভান্ডুক, বন্যকুকুরের বাস বন্দীপুরে। তেমনই ময়ূর, ময়না, ধনেশ ছাড়াও নানান প্রজাতির পাখিও নীড় বাঁধে বন্দীপুরের বৃক্ষ-শাখে। আর বীদারের বীদারি নিয়ে সঙ্গীত সতর্কতা দরকার।

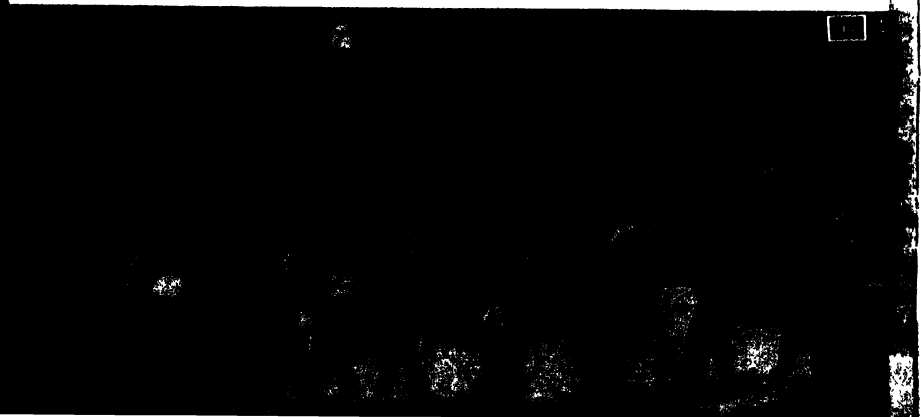
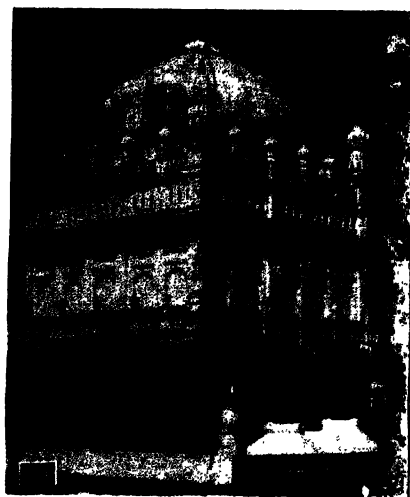
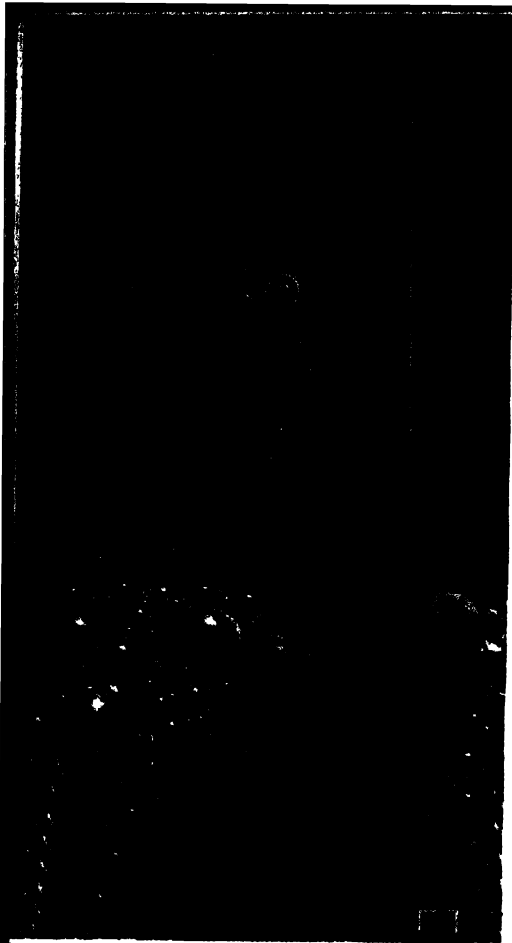
বন্দীপুর স্যাক্রুয়ারিতে যাবার, বনবিহারের গাড়ি, ৭টি কটেজ বুকিং-এর জন্য ১০দিন আগেই লিখুন—Field Director, Project Tiger, Aranya Bhavan, Ashokpuram, Mysore. আবার মহীশূর অবস্থানে রিকশা বা ৬১ রুটের বাসে চলা যেতে পারে দক্ষিণ শহরতলির ফরেস্ট অফিস। বা Asstt Director, Bandipur N P. Bandipur-571318-কেও লেখা যেতে পারে। ছবি তোলাও অনুমতি লাগে বনে।

তেমনই ২টি কটেজ বুকিং বা কর্ণাটকের যে কোনও বনের খবরাখবরের জন্য লেখা যেতে পারে The Chief Warden, Wildlife, Aranya Bhavan, 18th Cross, Malleswaram, Bangalore-560003, ☎ 3341993 বা Jungle Lodges & Resorts Ltd, 2nd floor, Shringar Shopping Centre, M G Rd, Bangalore-560001, ☎ 5597025, Fax: 080-5586163-কে।

থাকার জন্য আছে, ১৮টি ঘর ও ডমিটির ব্যবস্থা নিয়ে বনবিভাগের ৯টি কটেজ—Gujendra, Harini, Chittal, Papecha, Kokila, Vanashree, Vanasuma, Kuteera, Mayura L ঘর ২৫০ করে। আহারও মেলে পৃথক দামে। এমনকি সকাল ও সন্ধ্যাে কটেজের জানালায় হরিণ ছাড়াও নানান বনচরের দর্শন মেলে। গেটের কাছেই ইন্টারপ্রিটেশন সেন্টারে সঁাখে বন্যপ্রাণী বিষয়ক তথ্যচিত্রও দেখানো হয় খণ্ডে যাত্রী হলে।

২০ কিমি দূরে Himavat Gopalaswami পাহাড়ে Venu Vihar লজের অবস্থান। প্রত্যবে হরিণ ও ময়ূরের এসে সন্ধ্যাে জানায় লজে। আর আছে KSTDC-র H Mayura Prakruti, Melkamanahalli, PO-Hangala, Gundlupet Taluk, near Bandipur, ☎ (08229) 7301, ডাবল বেডের কটেজ ৩৮৫।





তবুও যেন সাত-সকালের (৬-৩০) বাসে মহীশুর ছেড়ে ঘণ্টা তিনেক বন্দীপুর পৌছে জিপ বা বাসে বা হাতিতে বনবিহার সেয়ে দিনের শেষ (১৭-৩০) বাসে ফেরাও যেতে পারে মহীশুরে বা উটিও চলা যেতে পারে বাসেই।

অত্যাংশহীরা চলার পথে মহীশুর থেকে ১৮ কিমি দূরে কপিলি নদীর তীরে ১৬ শতকের নান্দন ওড়া শিব মন্দিরটি দেখে নিতে পারেন। তেমনিই মহীশুরের ১০২, চামরাজানগর থেকে ৪৮ কিমি দূরে Biliginrangna Hills বা B R Hills বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাসে বাসে। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে বিলিগিরি রঙ্গনাথ স্বামী মন্দির থেকে নাম হয়েছে পাহাড়ের। জানুয়ারি ও এপ্রিল মাসে দূর-দূরান্ত থেকে যাত্রী আসেন রথ উৎসবে। থাকার ব্যবস্থা মেলে Travellers Bungalow-য়।

মান্দা জেলাতেও ছড়িয়ে রয়েছে নানান মন্দির হোয়সল-কালের। মহীশুরের ৩০ কিমি উত্তরে মেলকোটে ১২ শতকের চেণ্ডাভারায়স্বামী মন্দিরটি খ্যাত তার মার্চ-এপ্রিলের ভৈরামুড়ি উৎসবের জন্য। ৬ কিমি দূরে তিরুমলাসাগর লেকের পাড়েও হোয়সল স্থাপত্যের নানান নিদর্শন মেলে। মেলকোটের উত্তরে নাগামঙ্গলায় ১২ শতকের সৌম্য কেশব মন্দির। আর পশ্চিমেও রয়েছে ১৩ শতকের নানান মন্দির। আর মান্দ্য-এর ২৫ কিমি উত্তরে জেলা সদর বাসারুল-তে হোয়সলী শৈলীর ভাস্কর্যময় মল্লিকার্জুন মন্দিরে ১৬ হাতের তাণ্ডব নৃত্যের শিবমূর্তিতে বেচিত্র্য মেলে। অত্যাংশহীদের উচিত হবে মহীশুর-ব্যাঙ্গালোর পথে মহীশুর ও মান্দাকে বড়ি করে বাসে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া।

তেমনই মহীশুরের ৮০ কিমি পশ্চিমে তিব্বতীয় উদ্বাস্ত কলোনি Bylakuppe বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। সবুজে ছাওয়া ১৫টি গ্রাম জুড়ে উপনিবেশ রাবগেলিং—অর্থ তার Good progress place. ২টি মনাস্পি, কার্পেট ফ্যাক্টরিও হয়েছে। কিনতেও মেলে হস্তজাত নানান পণ্য। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই। তবে, রেস্টোরাঁ আছে, তিব্বতীয় আহার্য মেলে।

হাসান

মহীশুর-আরসিকেরে রেলপথে হাসান। হাসান জেলার জেলাসদরও বসেছে হাসানে। তবে, হাসানের নিজস্ব পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও বেলুড়, হ্যালেবিদ ও শ্রবণবেলগোলা ব্যায়ার জগন রূপে হাসানের প্রসিদ্ধি। ট্রেন ৮-১০, ১৪-৫৫, ১৮-০০-টায় মহীশুর ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় হাসান পৌছে আরসিকেরে যাচ্ছে; ১০-১০, ২২-৩৫এ মহীশুর ছেড়ে ১২-৩৫/১-০৫এ হাসান পৌছে ৭ ঘণ্টায় ১৮৯ কিমি দূরের ম্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ফাস্ট প্যাসেঞ্জার। তবে, কোঙ্কণ রেলের অসম্পূর্ণতা হেতু মহীশুর-হাসান-ম্যাঙ্গালোর রেল সার্ভিস আজও বিলুপ্ত। আর গোয়া যাত্রীদের নিয়ে ট্রেন যাচ্ছে 7309 ব্যাঙ্গালোর-ভান্ডো এক্স আরসিকেরে থেকে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান আরসিকেরে হয়ে ভারতের দিকে দিকে নব প্রবর্তিত কোঙ্কণ রেলের ভ্রমণেজে।

আবার, হসপেট অর্থাৎ হাস্পী যাত্রীরা হাসান থেকে

আরসিকেরে/ হরিহর হয়ে ট্রেনে যেতে পারেন হসপেট। সরাসরি বাসও মেলে হাসান থেকে ৮-৩০ ও ১৮-০০টায় চিকমাগালুর/ শিমোগা/হরিহর হয়ে ৩৪০ কিমি দূরের হসপেটের। ঘণ্টা দশকের পথ। তবে, সরাসরি বাসের অমিল হলে হাসান থেকে শিমোগা বা হরিহর পৌছে চলা যেতে পারে নতুন করে বাস চেপে হসপেট অর্থাৎ হাস্পী দর্শনে। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাসও মেলে এপথে। এছাড়াও বাস যাচ্ছে হাসান থেকে ঘণ্টায় ঘণ্টায়—মহীশুর ১১৫ কিমি, ব্যাঙ্গালোর ১৮৭, আরসিকেরে ৪৩, দিন-রাত জুড়ে। বাস যাচ্ছে ম্যাঙ্গালোর ১৬০ কিমি; ৮-১৫য় উটি যাচ্ছে মহীশুর হয়ে; ২০-০০টায় মাদুরাই যাচ্ছে উটি/কোয়েম্বাটুর হয়ে; আরসিকেরে/যোগ ফলস/ কারওয়ার হয়ে পানাজি—বিকল্প পথে আরসিকেরে/হবলি হয়েও চলা যেতে পারে পানাজি। এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজা তথা প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে হাসান থেকে।

চিত্রসূচী: সাত

৭৭ রাতের কৃন্দাবন গার্ডেন ছবি পর্যটন দপ্তর ৭৮ বিধানসভা সৌধ—ব্যাঙ্গালোর ছবি পর্যটন দপ্তর ৭৯ ব্যাঙ্গালোর শহর ছবি আশোকবসু ৮০ হাস্পীর রথ ছবি মুগালদহ ৮১ বেলুড়ের ভাস্কর্য ছবি পর্যটন দপ্তর ৮২ বেলুড়ের ভাস্কর্য ছবি পর্যটন দপ্তর ৮৩ হ্যালেবিদের ভাস্কর্য ছবি পর্যটন দপ্তর ৮৪ হোয়সল মন্দির ছবি পর্যটন দপ্তর ৮৫ সেকুম্বিগিলা ছবি পর্যটন দপ্তর ৮৬ কালানওটে সাগরবেলা ছবি পর্যটন দপ্তর ৮৭ গোয়া রীতে সূর্যোদয় ছবি পর্যটন দপ্তর ৮৮ এপ্রিল স্ট্রাট মার্চ—কেরল ছবি পর্যটন দপ্তর ৮৯ শ্রবণবেলগোলায় গোম্বা/ডেব্বর ছবি পর্যটন দপ্তর ৯০ টিপুর সমাধি ছবি মুগালদহ ৯১ লাভা নৃত্য ছবি পর্যটন দপ্তর।

হাসান থেকে বেলুড়ের দূরত্ব ৩৪, হ্যালেবিদ ৩৯, শ্রবণবেলগোলা ৫২ কিমি। বাস যাচ্ছে ৬-১৫ থেকে ২০-৪৫এ মুম্বই বেলুড়, সময় নেয় ঘণ্টা দেড়েক। হ্যালেবিদ যাচ্ছে ৬-৩০ থেকে ২১-০০টায়, ঘণ্টায় ঘণ্টায়। আর শ্রবণবেলগোলা যাচ্ছে দু'ঘণ্টায় ৫-৩০, ৯-০০, ১৪-০০, ১৮-১৫, ২০-৪৫এ হাসান থেকে। তবে, উচিত হবে হাসান থেকে বাসে বেলুড় পৌছে বেলুড় দেখে বাস বা টেম্পোয় ১৬ কিমি দূরের হ্যালেবিদ চলা। আধ ঘণ্টার পথ, বাস/ টেম্পো মেলে মুম্বই বেলুড় থেকে হ্যালেবিদের। হ্যালেবিদ দেখে বাসে হাসান ফিরে লাঞ্চ সেরে ১৪-০০টায় বাসে শ্রবণবেলগোলায় চলুন। বাসের সংখ্যা কম শ্রবণবেলগোলার। শ্রবণবেলগোলা দেখে মহীশুরও ফেরা যেতে পারে বাসে। মহীশুর, ব্যাঙ্গালোর, আরসিকেরে, হাসানের সরাসরি বাস মেলে শ্রবণবেলগোলা থেকে। তবে, সরাসরি বাসের অমিল হলে শ্রবণবেলগোলা থেকে ৮ কিমি দূরের চামারামাণ্টোনায় বাস বদল করে ফেরা যেতে পারে হাসান। আর বেলুড় থেকে ২৩-০০, হ্যালেবিদ থেকে ১৯-৪৫এ শেষ বাসটি আসছে হাসানে। হাসান থেকে রাতের বাস—মহীশুর, ব্যাঙ্গালোর, শিমোগা, হরিহর, হসপেট, মায়কারা; বা আরসিকেরে হয়ে ম্যাঙ্গালোর চলা যেতে পারে। ২০-রও অধিক বাস যাচ্ছে হাসান

থেকে মইশূর ও ব্যাঙ্গালোরে দিন রাত্রি জুড়ে। তেমনিই হবলি (৮½ ঘ) হয়ে পানাজিও (৫½ ঘ) চলা যেতে পারে। তবুও যেন হাসান থেকে শ্রীসেরী (৪ ঘ), সাগর (৫ ঘ), যোগ (১ ঘ), কারওয়ার (৬ ঘ) পানাজি (৪ ঘ) ব্রেক দিয়ে দিয়ে উচিত হবে বাসে বাসে এপথে চলা। পাহাড় আর অরণ্যের মাঝ দিয়ে বাস ওঠে পশ্চিমঘাট পর্বতে। পথশোভা মনোহর। হোটেলও মেলে সর্বত্র।

তবে, এপথে বাসের সর্বত্র কানাড়া ভাষার প্রচলন। হিন্দীর উপর বিরাগ এদের। ইংরাজিও সহজবোধ্য নয় সাধারণের কাছে। তাই ভাষা সঙ্কট হয়ে দেখা দিলেও মানুষ-জন বন্ধুবৎসল। অ্যাকসেন্ট অর্থাৎ বাচনভঙ্গির ব্যবধানও সংঘাত বাড়িয়ে তোলে।

সময় স্বল্পতায় মইশূর বা ব্যাঙ্গালোর থেকে কনডাকটেড ট্রারে বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে অনুপম শিল্পসুখমামণ্ডিত বেলুড়-হ্যালেবিদ-শ্রবণবেলগোলা র মন্দিররাজি। এ-পরিক্রমায় শতাধিক কিমি দূরত্ব অধিক হেতু যাতায়াতে সময়ের আধিক্য লাগলেও ব্যাঙ্গালোর থেকে বেড়িয়ে নেওয়ার সারা বছরই ব্যবস্থা মেলে। তবে, ব্যাঙ্গালোর যাত্রীদের পথ-ক্লান্তিও সময় স্বল্পতায় দর্শনে যেন খাটতি ঘটে। মইশূরের মরসুমি পর্যটকদের দূরত্ব কম-হেতু যাতায়াতে সময়ের কিছুটা শাস্রয় ঘটে, দর্শনেও সময়ের আধিক্য মেলে। তাই অত্যাশ্রয়ীদের উচিত হবে এককভাবে এসে একরাত হাসানে অবস্থান করে সার্ভিস বাসে বা ট্যাক্সিতে ট্রায়ে দর্শন সেরে নেওয়া। আবার বেলুড়ে অবস্থান করেও দেখে নেওয়া যায় মন্দিরতীর্থ।



Hassan-573201, STD 08172 এ হোটেলও আছে নানান। বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া ভাইনে—H Satya Prakash, SAB ৮০ DAB ১২৫-২৫০; অতি সাধারণ H Dwaraka, DAB ১২৫; Madhu L, SAB ৬০ DAB ১০০ TAB ১২৫; Lakshmi Janardhan L, B M Rd; পাশেই H Samman, SAB ৮৫ DAB ১৫০ TAB ১৭৫।

বাস স্ট্যান্ডের বায়ে পার্ক শেষ হতে—H Harshamahal, SAB ৮০ DAB ১৫০; লাগোয়া Vaishnavi Lodging, SAB ৮০ DAB ১৫০-২২৫ TAB ২০০; অদূরে H Apurva, Park Rd. DAB ১৫০-২২৫।

আর আছে H Amble Palika, Race Course Rd-573201 ০ 66307, B1, SAB ২৫০ DAB ৩২৫ A/c S 8৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; Prashanth L, SAB ৮০ DAB ১২৫; Kotari H, Station Rd; H Sivarna Arcade, B M Rd, ০ 67433; H Abhiruchi, B M Rd. SAB ১০০ DAB ১৭৫ TAB ২৫০; 3 Star L, L J B Lodge, Kilns L, Vijaya L, ITDC-র *Hassan Ashok, B M Rd-573201, ০ 68731, RIB, SAB ১০৫০ DAB ১২৫০ A/c S ১১৯৫ D ২০০০ সুইট ২৩৯৫। আর আছে PWD-র IB, Travellers' Bungalow ও রেলের রিটায়রিং কাম হাসানে। রাজ্য সরকারের Tourist Office-ও বসেছে হোটেল হাসান অশোকের বিপরীতে। তবুও থাকার জন্য Vaishnavi, Harsha, Satyaprakash ভালই। আর খাবারের হোটেলও আছে নানান হাসানে। সত্যপ্রকাশ লাগোয়া শাহালিয়া, আখিল পালিকার মালিকানা ও ভারানিমাণে ও হাসে অবনব্য। তেমনিই উত্তর ভারতীয়

ও চীনা মেনুর জন্য অভিরুচি; ননভেজ মেনুর জন্য হোটেল নিউ স্টার যথেষ্ট খ্যাত। মটন ও বিফ দুই-ই বিকোচ্ছে নিউ স্টারে।

আবার হাসান থেকে ৬৩ কিমি দূরে ব্যাঙ্গালোর-মিরাজ-মুসাই রেলপথের আরসিকেরে জংশন থেকেও দেখে নেওয়া যায় বেলুড়-হ্যালেবিদ-শ্রবণবেলগোলা। আরসিকেরে-হাসান-মইশূর প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে দিনে তিন হাসান হয়ে। বাসও যাচ্ছে হাসান তথা মন্দিরতীর্থে আরসিকেরে থেকে। এমনকি আরসিকেরে হয়েই পথ গিয়েছে হাঙ্গলীর। ট্রেন যাচ্ছে হবলি-গডগ বদল করে বা রেলো হরিহর পৌছে বাসে চলা যেতে পারে হসপেট। আরসিকেরে থেকেও সরাসরি বাস মেলে হসপেটের। ১৫৬ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোরে বাস-ও ট্রেন দুই-ই যাচ্ছে আরসিকেরে থেকে। মুসাই যাচ্ছে মহালক্ষ্মী এক্স, বৃন্দাবন এক্স, সহাদ্রি এক্স, দ্রুত গামী উদ্যান এক্স ও ব্যাঙ্গালোর এক্স; গোয়া যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর-ভাস্কো এক্স। এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজা ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে আরসিকেরে থেকে। অতীত বিনষ্ট হলেও হোয়সল রাজাদের কালের এক মন্দিরও আছে বাস থেকে ১৫ মিনিটের পথে আরসিকেরে-য়।

থাকারও নানান হোটেল আছে বেল ও বাস থেকে মিনিট পাঁচেকের পথে B H Road-এ—Tourist L, New Gavatti L, Janatha, Geetha L, H Mayura, Sri Raghavendra L, ছড়িও বেলের রিটায়রিং কমআছে আরসিকেরে-য়। এদের কাছে S ৪০-৮৫ D ৮০-১৫০ টাকায় মেলে।

বেলুড়

মইশূর থেকে কনডাকটেড ট্রাবে KSTDC-র বাস যাচ্ছে প্রতি মঙ্গল, বুধ, শুক্র ও শনিবার মরসুমি পর্যটক নিয়ে বেলুড়, হ্যালেবিদ ও শ্রবণবেলগোলা। এছাড়া নানান প্রাইভেট সংস্থাও যাচ্ছে কনডাকটেড ট্রারে ট্রায়ে দর্শনে। হাসান ৩৪, হ্যালেবিদ ১৬, শ্রবণবেলগোলা ৮৬ কিমি বেলুড় থেকে। আবার ব্যাঙ্গালোব থেকেও কনডাকটেড ট্রাবে দেখে নেওয়া যায় ত্রয়ী। ব্যাঙ্গালোব থেকে সাবা বছরই এই ট্রাবের ব্যবস্থা থাকে।

দক্ষিণ ভারতের মন্দিরের মাঝে হঠাৎ বৈচিত্র্যের স্বাদ মেলে ৯৭৫ মি উঁচু ছেট্রি শহর বেলুড়ে। তামিলনাড়ুর মন্দির-গুলির মতো এর আকাশচুম্বী গোপুরম নেই, না আছে ব্যাপক চত্বর মন্দিরে। তবে, মন্দির গাত্রের প্রতিটি অংশের সূক্ষ্ম কারুকার্য অভিজুত করে দর্শকদের। ৪৪০x৩৬০ ফুটের প্রাঙ্গণে চমোকেশব অর্থাৎ বিষ্ণু মন্দিরটি সোমনাথপুরমের ১৫২ বছর আগে ১১১৬ খ্রিস্টাব্দে হোয়সল রাজ বিষ্টিগা (১১১০-৫২) বা বিষ্ণুবর্ধন তালিকাডের যুদ্ধে চোলের সঙ্গে যুদ্ধজয়ের স্মারকরূপে গুরু হয়ে ১০৩ বছর ধরে গড়ে ওঠে। আগমন পশ্চিমঘাট পর্বত থেকে এই পাহাড়ী উপজাতিদের। দীর্ঘ ব্যবধানে দলপতি তিনায়াদিত্য (১০৪৭-৭৮)-এর কালে প্রসিদ্ধি পায় বংশ। আর মন্দির শিল্পে হোয়সলী কৃষ্টির প্রবর্তন ১২ শতকে বিষ্টিগার কালে। মন্দির স্থাপত্যে পৌরাণিক আখ্যানের সাথে যুদ্ধ জয়ের উল্লাস, সমাজ জীবনের নানান

উচ্চস্ব প্রতিফলিত হয়েছে। জৈন ধর্মের প্রতি বিতৃষ্ণা থেকে বৈষ্ণব হলেন বিটিগা। দেবতাও তাই বিষ্ণু চেম্বাকেশব মন্দিরে। তারার আকারে বহুভুজ মন্দিরে কপিপাথরের মূর্তি হয়েছে ২ মিউচ কেশবের। নিয়মিত পূজাও পাচ্ছেন দেবতা। মূর্তি হয়েছে দশ অবতাররূপী বিষ্ণুর। তেমনই আছে বিষ্ণুর দুই স্ত্রী—ভূ দেবী ও লক্ষ্মী দেবী। হোয়সল রাজাদের (১৫০-১৩১০) স্থাপত্যের সুন্দর নিদর্শন এই মন্দিররাজি। পূব, উত্তর আর দক্ষিণ— তিনদিকে তিন প্রবেশদ্বার। দক্ষিণদ্বারে দেবতা, দৈত্য ও জীবজন্তুর সমাবেশ ঘটেছে। সারি দিয়ে হাতি নানান ভঙ্গিমায়ে। পূবের কারুকার্য আরও সুন্দর। বিভিন্ন ভঙ্গিমায়ে নারী মূর্তিগুলি আকর্ষণীয়। পাথরের জালির কাজ, কার্নিসের কারুকার্য অনবদ্য। নানান পৌরাণিক আখ্যানও রূপ পেয়েছে মন্দিরে। ৩০টি স্তম্ভের উপর ব্রাক্‌সেটের মতো মূর্তি হয়েছে মদনিকার। তবুও যেন নরসিংহ স্তম্ভটি অনন্য— সারা মন্দিরের প্রতিটি ভাস্কর্য মূর্তি হয়েছে মিনি আকারে নরসিংহে। রাজা বিষ্ণুবর্ধনের রাজসভার দৃশ্যও ধরে রাখা হয়েছে মন্দিরগায়ে। ফাগুসন সাহেবের অভিমত, বিশেষ দ্বিতীয় কোনো সৌধে এমন সুন্দর শিল্পকর্ম নেই। কর্ণাটক ভ্রমণার্থীদের অবশ্যই দেখে নেওয়া উচিত। আর আছে গণেশ, দুর্গা, সরস্বতী, বীরানারায়ণ, লক্ষ্মী-নারায়ণ ছাড়াও নানান মন্দির বেলেড়ু। ৮০০ বছর আগে বেলেড়ু ছিল হোয়সল রাজাদের রাজধানী। নাম ছিল সেকালে ভেলাপুরী। ভেলাপুরী হয় ভেলুর—কালে কালে বেলেড়ু।



থাকার জন্য মন্দিরের পথে বাস স্ট্যান্ড লাগেয়া বেলেড়ু আছে KSTDC-র H Mayura Velupura, Temple Rd, Belur, K (08177) 22209. SAB ১৬০ DAB ১৯০ পুরাতন রকে ১৩৫/১৫৫ ভূমি প্লট ২৫/৩৫, অব: Manager বা Tourist Officer, Karnataka Tourism, Hassan আর বাস স্ট্যান্ডে New H Gayatri, H Vishnu Prasad, Tourist H, মন্দিরব ডাইনে Sri Raghavendra Tourist Home ছাড়াও নানান।

হ্যালেবিদ

বেলেড়ু থেকে ১৬ কিমি পূবে হ্যালেবিদ আর হাসান থেকে দূরত্ব ৩৯ কিমি। কানাড়া ভাষায় *হ্যালেবিদ* অর্থ পুরনো রাজধানী। অর্থাৎ হ্যালেবিদও রাজধানী ছিল অতীতকালে হোয়সল রাজাদের। নাম ছিল তার দ্বারসমুদ্রম (গেটওয়ায়ে টু দি সী)। ১৩২৭ খ্রিস্টাব্দে নগর ধ্বংস করে মহম্মদ বিন তুঘলক। আর আজ কর্ণাটকের নিছক এক গণগ্রাম হ্যালেবিদ।

হোয়সলরাজ বিটিগা (১১১০-৫২) আচার্য রামানুজের কাছে দীক্ষা নিয়ে জৈন থেকে বৈষ্ণব হলেন। নামেরও বদল ঘটে—বিটিগা হন বিষ্ণুবর্ধন। মন্দির গড়ে ন বিষ্ণুবর্ধন ৯৬০-২৫ মিউচ হ্যালেবিদে ১১২১-এ হোয়সলেশ্বর শিব মন্দির। দ্বারসমুদ্রম লেকের পাড়ে তারার মতো উঁচু ভিত্তে একই মন্দিরে পাশাপাশি দুই দেবতা। চুকতেই প্রথমে

শান্তালেশ্বর শিব, আর দ্বিতীয়ে হোয়সলেশ্বর। রাজা ও রানীর নামে নাম। বিপরীতে শিবের বাহন বিরাটাকার নন্দী। দীর্ঘ ৮৬ বছরের শ্রমেও মন্দির দুটি অসম্পূর্ণ। হোয়সলেশ্বর শিব মন্দিরের বাইরের কারুকার্যও সুন্দর। সারা দেওয়ালেই হিন্দু দেব-দেবীর ২৮০টি মূর্তি খোদিত। নারীমূর্তির আধিক্য খটেছে পাথরের ভাস্কর্যে। স্বর্ণের দেবসভা বসেছে দেওয়ালে। ভাগবত, রামায়ণ ও মহাভারতের কাহিনীও উৎকীর্ণ হয়েছে মন্দিরগায়ে। কার্নিসের নিচের অংশের কারুকার্য আরও সুন্দর। তদানীন্তন সমাজব্যবস্থা, যুদ্ধজয়ের উল্লাস, নৃত্য ও গীতের ছন্দোময় ভাস্কর্যের উৎকর্ষতা চমকপ্রদ। দেওয়ালের উপরিভাগে পাথরের জাফরির কাজও অনবদ্য। পাথরে প্রাণসঞ্চার করেছেন বেলেড়ুর চেম্বাকেশব নির্মাতা স্থপতি যবনাচার্য। কিরীট শোভিত গণেশ, নন্দী ও নটরাজ শিবের মূর্তিগুলিও সুন্দর। তেমনই অভিনব আছে ৭টি প্রাণীর সমন্বয়ে তৈরি মকর-প্রাণীর স্থাপত্য। এছাড়াও মন্দির আছে আরও নানান হ্যালেবিদে। মিউজিয়াম বসেছে মন্দির ভাস্কর্যের নানান নিদর্শন নিয়ে বিপরীতে। কর্ণাটক ট্যুরিজমের *ট্রাবিস্ট কটেক্সট* আছে হ্যালেবিদে। ক্যান্টিনে আহার্য মেলে। বুকিং বেলেড়ুর মতোই।

আর আছে হোয়সলেশ্বর থেকে আধ কিমি দূরে হাসান-মুখী বায়ে পরশুনাথ জৈনমন্দির। এরও ভাস্কর্য, বিশেষ করে পিলাবগুলি খুবই সুন্দর। দক্ষিণ দ্বারের কালরের কাছের তুলনা হয় না জৈন মন্দির রেখে আরও এগিয়ে কেদারেশ্বর শিব মন্দির। ১২১৯-এরও আগে হোয়সলরাজ বীরাবল্লারা ও রানী অভিনব কেতলাদেবীর তৈরি কেদারেশ্বর আজ দেবতাহীন হলেও ভাস্কর্যমণ্ডিত। নানান পৌরাণিক আখ্যান রূপ পেয়েছে ভাস্কর্যে। দক্ষিণ দ্বারের দ্বারপালিকা মূর্তিটি অনুপম। তবে, কনডাকটেড টার প্রোগ্রামে জৈন মন্দির অচ্ছত। প্রতিদিনই খোলা বেলেড়ু ও হ্যালেবিদ, প্রবেশ অব্যাহত; টিকিটও লাগে না মন্দির দেখতে। তবে, ৩ টাকার টিকিটে বিশেষ আলোর ব্যাবস্থা মেলে বেলেড়ু। নিখুঁতভাবে দেখতে আলো অপরিহার্য। আর হ্যালেবিদ নিজেই আলোকিত।

শ্রবণবেলগোলা

কানাড়া ভাষায় *শ্রবণ* অর্থ জৈন তীর্থঙ্কর আর *বেলগোলা* হচ্ছে শ্বেত পুরু। হাসান-ব্যাঙ্গালোর সড়কে হাসানের ৫২ কিমি পূবে, হ্যালেবিদ থেকে হাসান হয়ে ৮৪, বেলেড়ু ৮৬, মহীশূর ১১৫, ব্যাঙ্গালোরের ১৫৫ কিমি দূরে Temple Saffari-র অন্যতম জৈনতীর্থ (দিগম্বর শাখা) শ্রবণবেলগোলা। পাহাড় চূড়ায় অপার্থিব রাজকীয় ঐশ্বর্য আর মহিমা নিয়ে গোমতেশ্বর দাঁড়িয়ে। ঘট্টা দেড়েকে বাস যাচ্ছে হাসান থেকে ৩০৫ ফুট উঁচু শ্রবণবেলগোলায়। অতীতকাল থেকে প্রখ্যাত জৈনতীর্থ শ্রবণবেলগোলার প্রশস্তি আজও লোক মুখে মুখে। খ্রি পূ ৩ শতকে ভারত সত্রটি চন্দ্রগুপ্ত মৌর্য আসেন রাজ্য ছেড়ে শ্রবণবেলগোলায়। সঙ্গে তার গুরু ভদ্রবাহুবাহী।

দীক্ষাও নেন জৈনধর্মে চন্দ্রগুপ্ত। কালে কালে গঙ্গারাজদের আনুকূল্যে ৪ থেকে ১০ শতকে প্রসার পায় জৈনধর্ম। লোকশ্রুতি, জৈনধর্মের প্রথম তীর্থঙ্কর ঋষভনাথ বা আদিনাথ রাজ্য ছেড়ে প্রায়শ্চিত্ত করতে বনে যান। সংঘাত বাধে ক্ষমতা নিয়ে ঋষভনাথের দুই পুত্র বাঘবলী ও ভারতের। জয় করেও বিজিত ভাই ভারতকে সিংহাসনের দাবি ছেড়ে বাণপ্রস্থে গেলেন সহস্র বর্ষের তরে বাঘবলী। সেই মর্মকথাই অর্থাৎ বৈরাগ্য ও সংযম ব্যক্ত হয়েছে গঙ্গারাজ রচমসের মন্ত্রী চামুন্দ্রায়ার উদ্যোগে ৯৮ খ্রিস্টাব্দে দ্বারকায়ারিস্টনেমীর হাতে গ্রানাইট পাথরে তৈরি বিশ্বের উচ্চতম (১৭.৫ মি) এই মনোলিথিক মূর্তিতে। তবে, সম উচ্চ ৩৫০ টনের মনোলিথিক মূর্তি হয়েছে হায়দ্রাবাদের বুদ্ধ পূর্ণিমা কমপ্লেক্সে ভগবান বুদ্ধের। আর মধ্য প্রদেশের সাতপুরা পর্বতমালায় চুলাগিরিতে ২৪ জৈন তীর্থঙ্করের প্রথম ঋষভনাথ বা ঋষভদেব, আদিনাথ নামেও খ্যাত—এর মূর্তির উচ্চতা ৮৪ ফুট (২৫.৬মি)। বাওয়ানগঞ্জ ভগবান নামে সমধিক খ্যাত আদিবাসী সর্দার অর্ককীর্তির তৈরি (১১৬৬-১২১৮) এই দেবতা (মনোলিথিক নয়)।

সমতল থেকে হঠাৎই মাথা তুলে দাঁড়িয়েছে বিজাগিরি পর্বতের ইন্দ্রগিরি ও চন্দ্রগিরি পাশাপাশি দুই পাহাড়। আর ৩৩৪৭ ফুট উঁচু ইন্দ্রগিরির চূড়ো কুঁদে তৈরি হয়েছে জৈন তীর্থঙ্কর ভগবান বাঘবলী অর্থাৎ গোমতেশ্বরের ১৭.৫মি উঁচু নিরাভরণ মূর্তি। মানসিক যন্ত্রণার প্রকাশ ঘটেছে পায়ে পিপীলিকা ও সাপের উপস্থিতিতে। তেমনই ঠোঁটে স্নিগ্ধ হাসি অর্থাৎ জয়ের অভিব্যক্তি। ঋজু ভঙ্গিমা আয়তসংযমের চূড়ান্ত প্রকাশ। ৬১৪ ধাপের সিঁড়ি উঠেছে ৪৭০ ফুট উঁচুতে মূর্তির পাদদেশে। জুতো ছেড়ে আধ ঘণ্টায় ওঠা যেতে পারে। আবার ঢুলী ও ঢেয়ারও মেলে সিঁড়ি পথে। উচিত হবে সূর্যের খরতাপ এড়িয়ে সিঁড়িপথ পরিক্রমা সাঙ্গ করা।

প্রতি ১২ বছর অন্তর মহামস্তকভিষেক উৎসব হয়। গোমতেশ্বরের মূর্তিকে তখন ঘি, গরুর দুধ, নারকেলের দুধ, দই, মধু, সিন্দূর, চন্দন, টাকা-পয়সা, মগি-মুতা, ১০০৮ ঘড়া পবিত্র জলে স্নান করান হয়। ১৩৯৮ খ্রিস্টাব্দে যোগিত হয়ে আসছে এই উৎসব। ১৯ ডিসেম্বর, ১৯৯৩এ ৮৭তম মহামস্তকভিষেক উৎসব উদযাপিত হল লাখ দশকে ভক্তের সমাগমে। আগামী উৎসব ২০০৫-এ। ১৯৮১তে মূর্তি প্রতিষ্ঠার সহস্র বছরও যাপিত হয়েছে মহামস্তকভিষেকের বিশেষ উৎসবে। উৎসবকালে দূর-দূরান্ত থেকে জৈনরা আনেন। আসেন পর্যটক দেশ-দেশান্তর থেকে। বিশেষ যানবাহনের ব্যবস্থা হয় উৎসবকালে। থাকারও বিশেষ ব্যবস্থা গড়ে ওঠে উৎসবে।

আর আছে পাহাড়ী পথে ৫ ফুট উঁচু ত্যাগাদা ব্রহ্মদেব স্তম্ভ; মন্দিরের প্রবেশদ্বারে পাহাড় কেটে তৈরি অখণ্ড বাগিলু ছাড়াও ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার বসছে। সদস্য জিনিসপত্র নিখরচায় ট্যুরিস্ট রিসেপশনে (১০—১৩-০০ ও ১৫—

১৭-৩০) রেখে পাহাড়ে চড়া যেতে পারে। পাহাড়ের পাদদেশে সিঁড়িপথে পথপাশে *বেলগোলা* অর্থাৎ পাথরে বাঁধানো চতুষ্কোণ পুকুর।

আর ৩০৫২ ফুট উঁচু চন্দ্রগিরিতে আছে ১৫টি জৈন বস্তি ও মঠ। অদুরেই কল্যাণীপুকুর ও নানান জৈন বস্তি। অত্যাংশহীরা হোয়সলী শৈলীর ভাণ্ডারি ও অক্কানা ছাড়াও ভদ্রবাহ ও সম্রাট অশোকের গড়া চন্দ্রগুপ্ত বস্তি (মন্দির) বেড়িয়ে নিতে পারেন গ্রামের অন্দরে। চন্দ্রগুপ্তর গুরু ভদ্রবাহ স্বামীর জীবনাখ্যান মেলে চন্দ্রগুপ্তে। সুন্দর সুন্দর মন্দির ও মঠও রয়েছে অতীতকালের। শ্রবণবেলগোলাতে থাকার জন্য কর্ণাটক ট্যুরিজমের *Tourist Home, Shriyans Prasad GH* ও জৈন ধর্মশালা আছে। হোটেল-রেস্তোরাঁও আছে নানান—ভেজ মিল মেলে। তবুও থাকা ও যানবাহনের সুবিধার্থে হাসান অনেক বেশি আদরণীয় হবে।

কেম্মানাগুড়ি

চিকমাগালুর থেকে লিঙ্গধাম্মী হয়ে বাস যাচ্ছে ৪৮ কিমি দূরের কেম্মানাগুড়ি। বাস আসছে বিক্রম-শিমোগা-তালগুপ্পা রেলের তারিকেরে থেকেও কেম্মানাগুড়ির। উৎসাহীরা ১৪৪৮ মি উঁচুতে একটা দিন প্রকৃতির সৌন্দর্য উপভোগের সাথে বিশ্রাম নিতে পারেন কৃষ্ণরাজেন্দ্র পাহাড় বলে খ্যাত বাবাবুদান পাহাড়ী শহরে। চারপাশে কফি বাগিচা—লৌহ আকরিকও প্রচুর পরিমাণে রয়েছে পাহাড়ে। ৫ কিমির রোপওয়েতে এই আকরিক লৌহ আনার দৃশ্যও পর্যটকদের প্রভূত আনন্দ দেয়। আর হচ্ছে এলাচ খেতেও পরিমাণে।

থাকার জন্য কর্ণাটক ট্যুরিজমের *ট্যুরিস্ট কেটেজ* আছে। আর আছে *রেস্ট হাউস* ও *ট্যুরিস্ট হোম*; অব্: The Secretary, Board of Management, Mysore Iron & Steel Works, Bhadravati.

চিকমাগালুর

হাসান থেকে বেলুড় হয়ে বাস গিয়েছে চিকমাগালুর। হাসান থেকে দূরত্ব ৫৮, বেলুড় ২৪, কাদুর ৪০, তারিকেরে ৫৬ কিমি। অরণ্যময় সুন্দর পাহাড়ী ঢাল বেয়ে পথ উঠেছে। কেন্দ্রবিন্দুর উচ্চতা ১৮২৯ মি। এরই ঢালে প্রথম ভারতীয় কফির জন্ম। ১৭ শতকে মুসলিম ফকির বাবা বুদান মক্কা থেকে চারা এনে রোপণ করেন। আর সেই হচ্ছে ভারতে কফির প্রথম চাষ। বাবা বুদান পাহাড় ঢালে ছবির মতো জেলা শহর অফুরন্ত প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের ভাণ্ডার চিকমাগালুর। পাহাড়, নদী, উপত্যকা—দৃষ্টব্যবল কফি ফুলও শোভা বাড়িয়েছে। আর আছে দুর্গ, কালী, পরশুরাম, কোদন্ডরামা, ঈশ্বর মন্দির। ৯০ কিমি দূরে আর এক পাহাড়ী শহর ৬০০০ ফুট উঁচু কুদ্রেমুখ। নৈসর্গিক শোভার লীলাক্ষেত্র কুদ্রেমুখ—এ বাস যাচ্ছে চিকমাগালুর থেকে। অক্টোবর থেকে মে মাসে ৬০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত Kudremukh National Parkটিও

বেড়িয়ে নিতে পারেন। ম্যাকাও, বাঘ, চিতা ও গৌরের দর্শন মেলে কুদ্রমুখ-এ। থাকার জন্য আছে *Travellers Bungalow*; অব্: Asstt Engineer, PWD, Belur.

ভদ্রা ওয়াইল্ড লাইফ স্যাকুয়ারি

কেশ্মান্ডাভি থেকে ৬০ আর চিকমাগালুরের ৩৮ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ভদ্রা ওয়াইল্ড লাইফ স্যাকুয়ারিটিও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে নভেম্বর থেকে মার্চে। শিমোগা ও চিকমাগালুর জেলায় ৪৯২.৪৬ বর্গকিমি জুড়ে রূপ পেয়েছে ভদ্রা বন্য জন্তু সংরক্ষণালয়। নানান প্রজাতির হরিণ, ভাঙ্গুক, হাতি, প্যাথার, শম্বর, বাঘ ছাড়াও সরীসৃপ ও পক্ষীকুলেরও সহাবস্থান ঘটেছে ভদ্রায়। থাকার জন্য *FRH, PWD-র Bungalow* ও *CH* আছে ভদ্রায়। অত্যাৎসাহীরা পথে তারিকেরে থেকে ১০ কিমি দূরের কালাহস্তী জলপ্রপাতটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন।

ভদ্রাবতী

কর্ণাটকের বার্মিংহাম হল ভদ্রাবতী। লৌহ, ইস্পাত, কাগজ, সিমেন্ট কারখানা ছাড়াও অতি আধুনিক শিল্পনগরী গড়ে উঠেছে ভদ্রা নদীর পাড়ে ভদ্রাবতীতে।

বাস যাচ্ছে বিকর ৪৫, তালগুন্না ১০৬, তারিকেরে ২১, চিকমাগালুর ৭৭, হাসান ১৩৫, শিমোগা ১৮ কিমি ছাড়াও রাজ্যের দিগ্বিদিক থেকে। আর রেল এসেছে ২৫৬ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোর থেকে তালগুন্না। তালগুন্না থেকে শাখালাইনে ট্রেন যাচ্ছে (১০-০০ ও ১৮-৩০এ) সাগর/শিমোগা/ভদ্রাবতী/তারিকেরে হয়ে চমোই-মুখাই রেলপথের বিকরে। সরাসরি ব্যাঙ্গালোর সিটি থেকে ব্রডগেজে ১২৫৬ দিন ৬-০০টায় ১০১৮ মুখাই এক্স, ১৪-৩০এ ২৭২৫ ব্যাঙ্গালোর-হবলি ইন্টারসিটি এক্স, ১৫-০০টায় ৭৩০৭ ব্যাঙ্গালোর-ভান্ডো এক্স, শনিবার ১৯-৩০এ ৬৫০৫ ব্যাঙ্গালোর-নিজামুদ্দিন খুর্জয়তী এক্স, ২০-০০টায় ৬৫৪৭ ব্যাঙ্গালোর-মিরাজ চমোমা এক্স যথাক্রমে ৯-০০, ১৬-৫৫, ১৮-০০, ২২-৩০, ২৩-১০এ আরসিকেরে জং ৯-৫৩, ১৭-৪৪, ১৮-৫০, ২৩-২৫, ০-১০এ বিকর জং পৌছে হরিহর-হবলি হয়ে যাচ্ছে। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর সিটি থেকে ৬-৩০এ ব্যাঙ্গালোর-হরিহর/শিমোগা ফা প্যা, ৭-৫৫য় ব্যাঙ্গালোর-হবলি চিত্রদুর্গা প্যা, ১৫-৫৫য় বিকর প্যা, ১৮-১৫য় আরসিকেরে প্যা, ২২-১০এ ব্যাঙ্গালোর-ওট্টাকল/হবলি/শিমোগা ফা প্যাসেঞ্জার।

থাকার জন্য *ট্রাভেলার্স বাংলাও ও গেস্ট-হাউস* আছে; অব্: PRO, Iron & Steel Works, Bhadravati. হোটেলও আছে বিভিন্ন মানের বিবিধ দামের ভদ্রাবতীতে।

শ্রীসৈরী

ভদ্রা থেকে বাসেই চলুন ৫৬ কিমি দূরের শ্রীসৈরী। বাস আসছে চিকমাগালুর, হাসান, শিমোগা, বিকর, আওথে ছাড়াও রাজ্যের দিগ্বিদিক থেকেও শ্রীসৈরী। তেমনই হাসান থেকে রেলো তারিকেরে পৌছেও বাসে চলা যেতে পারে শ্রীসৈরী। ব্যাঙ্গালোর-

পুনে রেলপথে ১২৮ কিমি দূরের বিকর জং থেকেও বাসে চলা যায় শ্রীসৈরী। আরসিকেরে থেকে বিকরের দূরত্ব ৪৫ কিমি।

অম্বৈতবাদী জগৎগুরু শঙ্করাচার্যর ৪টি মঠের প্রথমটি তুঙ্গা নদীর পাড়ে এই শ্রীসৈরীতে। বাকি তিন—যোশীমঠ, পুরী ও ধারকায়। আর এই মঠের জন্যই শ্রীসৈরীর সমৃদ্ধি। বিদ্যার দেবী সারদা আরাধ্যা মঠে। লোকশ্রুতি, সারাদেশের মন্দিরটিও আচার্যর তৈরি। তেমনই বিদ্যাশঙ্কর মন্দিরের রাশিচক্রের স্তম্ভ ১২টিও মজার—সূর্যালোক এসে পড়ে বছরের নানান সময় এই স্তম্ভে। আর আছে সুন্দর কারুকার্য-ময় ৮০ বছরের অসম্পূর্ণ চেন্নাকেশব মন্দির। মন্দিরের বাইরের দেওয়ালের কারুকার্য সুন্দর। *ট্রাভেলার্স বাংলাও, সাধারণ হোটেল* ছাড়াও মঠে *গেস্ট হাউস* ও *চোলট্রা* আছে শ্রীসৈরীতে।

শ্রীসৈরী থেকে বাসে ৫৬ কিমি দূরে ম্যাঙ্গালোর-শিমোগা যাট রোড ধরে ৮২৬ মি উঁচু আগুম্বে (Agumbe) পৌছে সূর্যস্তের মনোহর দৃশ্য দেখে ১১৪ কিমি দূরের ম্যাঙ্গালোর বা ৯৭ কিমি দূরের শিমোগা/সাগর হয়ে যোগ জলপ্রপাত চলা যেতে পারে বাসে। *PWD IB*, প্রাইভেট *হোটেল* আছে আগুম্বে পাছাড়ে।

যাতায়াতের পথে কেলডিতে নায়ক রাজাসের দুর্গ, মি চার্চ অব দ্য স্যাক্রেড হার্ট অব জেসাস ও গভর্নমেন্ট মিউজিয়াম দেখে চলা উচিত হবে শিমোগায়।

যোগ ফলস

১৫০০ ফুট উঁচুতে সুন্দর নৈসর্গিক পরিবেশে সারাবতী নদীর এই জলপ্রপাত দর্শকদের মুগ্ধ করে। ভারতে উচ্চতম—২৯২ মি উঁচু থেকে চারটি ধারায় নামছে সারাবতী। নিরবচ্ছিন্ন ধারায় সোজা নামছে প্রথমটি। তার নাম রাজা। আধাআধি পথ গিয়ে রাজা মিলেছে রোয়ার সঙ্গে। তৃতীয়র নাম রকেট আর চতুর্থটি রানী। প্রকৃতি তার সৌন্দর্যের ভাণ্ডার উজাড় করে সাজিয়ে তুলেছে যোগকে। ধারা নামছে আরও দুই। নয়নলোভন এই জলপ্রপাত বর্ষায় রমণীয় হয়ে ওঠে। রামধনুর রঙ খেলে জলে। তবে, সারাবতীতে বীধ পড়ায় গতি কমেছে ধারার।

শুধু জলপ্রপাতই নয়, সারাবতী নদীকে আটপেগুঠে বেঁধে জলবিদ্যুৎ হচ্ছে যোগে। *Karnataka Power Corpn* থেকে অনুমতি নিয়ে দেখে নেওয়া যায় *Sharavathy Valley Project*. দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ায় প্রথম এবং বৃহত্তমও বটে এই প্রোজেক্ট। ১৩ কিমি দূরে *Lingamakhi Dam*, *Reservoir* ও *Power House*; আর ১ কিমিরও কম দূরত্বে মহাত্মা গান্ধী জলবিদ্যুৎ প্রকল্পটি ওপর থেকে দেখে নেওয়া যায়। এদেরই তৃতীয় প্রকল্প ১০ কিমি দূরে সারাবতী। প্রাইভেট ভ্যান যাচ্ছে ড্যালি দেখাতে।

থাকার জন্য *Woodlands H, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-২৫০*, অব্: Manager, PC-577435; *Guest House*, অব্: Supdt Engineer (Electrical), *Hydro Electrical Works, Jog Falls*; *PWD IB* ও *Youth Hostel* আছে যোগে। বাসও যাচ্ছে

হোটেল তথা জলপ্রপাত হয়ে। আহার্য ও মেলে Woodlands-এ। অবস্থান মাহাথ্যে Woodlands ও PWD IB থাকার পক্ষে অনবদ্য হলেও ৫ কিমি দূরে Rainbow H. Kargal.DAB ১৩০-১৭৫ ব্যবস্থাপনায় ভালই।



ব্যান্সালোর-মুর্খাই রেলপথের বিকল্প জং থেকে শাখালাইন গিয়েছে সাগর হয়ে তালগুন্ডায়। ৩-১৫, ৮-০০, ১১-২০, ১৭-৩০এ বিকল্প ছেড়ে তারিকের/ভদ্রাবতী হয়ে ঘণ্টা দু'য়েকে শিমোগা যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। আর ৬-০০ ও ১৪-৩০এ শিমোগা ছেড়ে সাগর হয়ে ৩১ ঘণ্টায় প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে তালগুন্ডায়। বিকল্প থেকে ট্রেন যাচ্ছে ব্যান্সালোর, মুর্খাই, ভাকো, নিজামুদ্দিন ছাড়াও নানান। বগি যাচ্ছে আরসিকের হয়ে প্যাসেঞ্জারের সাথে জুড়ে মইশুরে। নিকটতম রেল স্টেশন ১৬ কিমি পূর্বের এই তালগুন্ডা। বাস যাচ্ছে সাগর/তালগুন্ডা থেকে মুর্খমুহ যোগে। মইশুর ৩৭১, পানাজি ২৯৯ বাসও যাচ্ছে যোগ হয়ে। বাস যাচ্ছে শিমোগা ১০৩, ভদ্রাবতী ১২১, ভাটকল ৭৪, কারওয়ার ১৬৪, ম্যান্সালোর ২০৬ কিমি তেও। তবুও যেন বাসের আধিকা মেলে ১১ কিমি দূরের সাগর থেকে রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিগ্বিদিকের। নিকটতম বিমানবন্দর বেলগাঁও ২৫১, ব্যান্সালোর ৩৭৮ কিমি। মইশুর বা ম্যান্সালোর থেকে রাতের বাসে এসে দিনে দিনে যোগ বেড়িয়ে পরদিন ৬-০০টার বাসে ৭ ঘণ্টায় কারওয়ার বা রাতের বাসে সরাসরি পানাজি চলা যেতে পারে যোগ থেকে।

চলার পথে ভাটকল-ও বেড়িয়ে চলা যায়। অতীতের বন্দর নগরী তথা ঐতিহাসিক শহর ভাটকলে বিজয়নগর রাজাদের মন্দির ও নানান জৈন স্মারক দেখতে মেলে। ১৬ কিমি দূরে মুদ্রেশ্বরও আর এক পবিত্র শহর। মন্দির তথা কবুতর দ্বীপও দেখে নেওয়া যায় মুদ্রেশ্বর তটে।

সাগর

যোগ থেকে ৩১ আর মইশুরের ৩৪০ কিমি দূরে তালগুন্ডা-শিমোগা শাখায় সাগর-জাখাগার স্টেশন। যোগের প্রতিটা বাসই বাণিজ্যিক শহর সাগর হয়ে যাচ্ছে। হাতির দাঁত ও চন্দনকাঠের কারখানার জন্য সাগরের প্রশস্তি। সরকারি কারখানায় কাজ দেখাও কেনার ব্যবস্থা মেলে। H Sabhlok International, 19 Gujarati Bazar, Sagar-470002. ৩ 22522, S ১৫০-২২৫ D ২০০-২৭৫ A/C S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০ ছাড়াও হোটেল আছে নানান সাগরে।

আবার সাগর থেকে ৭২ কিমি দূরের শিমোগা টাউন ফিরে শিমোগা থেকে আরও ১১৫ কিমি গিয়ে মালনাড অঞ্চলের আজ পাড়াগাঁ চন্দ্রশক্তিও বেতেলে সেভে অর্থাৎ নম্র পূজার সাক্ষী হতে পারেন। আজও প্রতি বছর মার্চের ২০ তারিখে হাজার হাজার পুরুষ-নারী মন্দির থেকে ৪ কিমি দূরের বরদা নদীতে স্নান সেয়ে নগ্নদেহে দেবতা বৈষ্ণকৃষ্ণ বা মাতঙ্গির মন্দিরে আসেন মানত পালনে। বসে মেলা, পূণার্থী আসেন দূর-দুরান্ত থেকে লক্ষ লক্ষ। সারা বছরের ঝিমিয়ে থাকা চন্দ্রশক্তি মেতে ওঠে প্রাচীন প্রথা পালনে বছরের এই একটা দিনে।

হাম্পী বা বিজয়নগর

বিজয়নগর অর্থাৎ সিটি অব ভিক্টরি। ভারত ইতিহাসের বৃহত্তম হিন্দু-সাম্রাজ্য বিজয়নগর রাজাদের ধ্বংসাবশেষ রয়েছে রাজ্যের উত্তর-পূর্বে, ৪৬৭ মি উঁচু হাম্পীতে। ১৩৩৬ খ্রিস্টাব্দে তেলুগু রাজকুমার হুকা (হরিরহ ১) ও বৃদ্ধার হাতে শহরের গোড়াপত্তন। রোমানোভেরা সে ইতিহাস। ১৪ শতকে মহম্মদ বিন তুঘলকের সেনাবাহিনীর হাতে বন্দী হয়ে দিল্লী যেতে সুলতানের ইচ্ছায় ইসলাম ধর্ম নিয়ে কাম্পিলীর শাসকরাপে দক্ষিণাভ্যে ফেরেন হুকা ও বৃদ্ধা। অবশেষে সাধ ভাগে রাজা হতে। অধীনতা ছেড়ে স্বাধীনভাবে রাজ্য গড়েন সেদিনের ইস্তিনাবতীতে। ১৩৩৬এ হিন্দু হলেন শ্বৈরী মঠের গুরু বিদ্যারণ্যের সাহচর্যে হুকা ও বৃদ্ধা। রাজ্য হতে রাজধানীও গড়েন ১৩৪৩এ পম্পা নদীর পাড়ে।

আর এই বংশেরই রাজা কৃষ্ণ দেবরায়ের (১৫০৯-২৯) রাষ্ট্রকাল ছিল বিজয়নগরের সুবর্ণযুগ। রাজকোষ ভরে ওঠে বিপুল ধনরত্ন ও মণিমানিক্যে। প্রসারও পায় রাজ্য কৃষ্ণা ও তুঙ্গভদ্রার দক্ষিণ জুড়ে পূর্বে বঙ্গোপসাগর থেকে পশ্চিমে আরব সাগর পর্যন্ত। ঐতিহাসিকদের মতে, জীক-জমকেও ১টি ছিল সেকালের বিজয়নগরের। প্রাসাদের পর প্রাসাদ—শুধু আয়তনে নয়, রোমনগরীর থেকেও বড় আর সারা বিশ্বে অন্যতমও ছিল বিজয়নগর। ১৪৪৩এ আবদুর রজ্জাক বলেছেন—এমন শহর পৃথিবীতে কেউ চোখে দেখেনি, এমন শহরের কথা কেউ কানে শোনেনি; ৭টি দরজা ছিল রাজধানী প্রবেশের। ১০ লক্ষ সম্মিলিত হিন্দু-মুসলিম সৈনিক অতঃপ্রহরায় রত। এমনকি উত্তরের মুসলিম রাষ্ট্র থেকে রাজধানী সুরক্ষায় মুসলিম তীরন্দাজও নিয়োজিত ছিল। ব্যবসা-বাণিজ্যও রমরমা ছিল সেকালের বিজয়নগর রাজ্য। মশলা ও তুলো যেত বিশ্বের দিগ্বিদিকে বিজয়নগর থেকে। ধর্মও বর্ণসঙ্কর অর্থাৎ শিব আর বিষ্ণু উভয় দেবতাই পূজিত হতেন বিজয়নগরে। সতীদাহ প্রথার প্রচলন ছিল সেকালের বিজয়নগরে। মন্দিরে মন্দিরে দেবদাসীরও চল ছিল। মসজিদ ও ইদগাঁও ছিল সেকালের হিন্দু সাম্রাজ্যে। অবশেষে, ১৫৬৫র ২৩শে জানুয়ারি টালিকোটায় যুদ্ধে ৫ শাহী (বিদ্যার, বিজাপুর, গোলকোটা, আহমদনগর, বেরার) সুলতানের সম্মিলিত মুসলিম শক্তির কাছে বংশের শেষ রাজা রামার পরাজয়ে শিরশ্ছেদ করে। রামারায়ের ভাই সদাশিব ও অন্যান্যরা দক্ষিণে পাগিয়ে যেতে দীর্ঘ ৬ মাস ধরে লুণ্ঠনের সাথে ধ্বংস করে ৩৩ বর্গ কিমির উপর গড়া রাজধানী শহর। আজ চাষবাস হচ্ছে, চরে বেড়াচ্ছে নানান গবাদি পশু মৃত নগরী হাম্পীর গ্রানাইট পাথরের ধ্বংসস্থলে। রূপোর কাঠির ছোঁয়ায় আজ যেন ঘুমিয়ে আছে হাম্পীর অতীত। হাম্পীর নবতম আকর্ষণ ডিসেম্বর মাসে হাম্পী উৎসব।

উত্তরের এলোমেলো শিলাখণ্ড পেরিয়ে পাহাড়ী গিরি-

খাতের মাঝ দিয়ে প্রচণ্ড গর্জনে বয়ে চলেছে পশ্চিমঘাট থেকে জাত তুঙ্গ আর ভদ্রার মিলিত সলিলে শ্রোতবিনী তুঙ্গভদ্রা। আজও এই সুন্দর পরিবেশে ঐতিহাসিক ধ্বংস-স্তুপের মাঝে দাঁড়িয়ে আছে ১৫০০-১৫৪২ খ্রিস্টাব্দের মধ্যে তৈরি পট্টভিরামা মন্দির। দশেরা দিব্বা বা বিজয়া ভবানী মন্দিরটি তৈরি করেন কৃষ্ণদেবরায় ১৫১৩তে ওড়িশা জয়ের স্মারকরূপে। যুদ্ধজয়ের প্রতীকরূপী মন্দিরের কারুকার্য সুন্দর। দিব্বার উপর থেকে বিধ্বস্ত প্রাসাদপুরী দেখে নেওয়া যায়।

সঠিক জন্ম ইতিহাস না মিললেও পম্পাপতি মন্দিরের দেবতা বিরূপাক্ষ আজও অনন্য। সম্ভবত ১৫০৯এ কৃষ্ণদেবরায়ের রাজ্যাভিষেকের স্মারকরূপে তৈরি। সংস্কার হয়েছে বার বার। একথণ্ড পাথর কূঁড়ে তৈরি বৃহৎ আকারের শিব রয়েছেন গর্ভমন্দিরে। শিব এখানে বিরূপাক্ষ আর পম্পাপতি রূপে দেবী পম্পা অর্থাৎ পার্বতী, ভুবনেশ্বরী ছাড়াও নানান দেবতা স্ব-মন্দিরে। এদের কোনো কোনোটি চালুকা ও হোয়সল কালে তৈরি। এমনকি মন্দিরের কোনো কোনো পিলারে আজও বিজয়নগর চিত্রকলার নিদর্শন দেখতে মেলে। হাম্পী বাজারমুখী মন্দিরের পূর্বে গোপুরমও হয়েছে কৃষ্ণদেব রায়ের রাজকর্মচারী প্রোলগাশ্টি টিপ্পার গড়া ৯ তলা উঁচু ৫২ মিটারের।

তুঙ্গভদ্রার পাড় ধরে ধ্বংসাবশেষের মাঝ দিয়ে বিরাটাকার গণেশ মূর্তি রয়েছে পুরো এণ্ডতেই দাঁড়িপাল্লা পেরিয়ে ২ কিমি দূরে হাম্পীর পরমাশ্রমের এক কারুকার্যমণ্ডিত বিঠালা স্বামীর মন্দির। বিজয়নগর স্থাপত্যের চরম উৎকর্ষতা পেয়েছে বিঠালায়। বিঠালা মন্দিরটি ১৫১৩য় কৃষ্ণদেবরায়ের তৈরি। বিধ্বস্ত গোপুরম দিয়ে ঢুকতেই ১৫২×৯৪মি আয়তাকার প্রাঙ্গণে ৫৬টি মনোলিখিক খামে ভর করে মূল মন্দির বিঠালা স্বামী অর্থাৎ বিষ্ণু মন্দির, কল্যাণ মণ্ডপ ও রথ। মন্দিরের মূল আকর্ষণও গ্রানাইট পাথরের এই রথ। সূক্ষ্ম কারুকার্য-মণ্ডিত মিউজিক্যাল পিলারগুলিতে সঙ্গীতের সুর বাজে। কালিয়ে নিতে পারেন সা-রে-গা-মা-হল্-এর খামে। World Heritage Monument-এর তালিকায় উল্লিখিত ও দক্ষিণ ভারতীয় মন্দিরের (ভোগোর, মহাবলী ও বিঠালা) এক এই বিঠালা। অদূরেই পাতাল লিঙ্গেশ্বর। দেবতাহীন জলমগ্ন মন্দিরটি মাটি খুঁড়ে ব্রিটিশের আবিষ্কার। এরই সামনে রাজকীয় অতিথিশালায় ধ্বংসস্তুপ।

রাজপ্রাসাদমুখী কিট্টাচলতেই ৭ মিউচুমানুষ ও সিংহর সম্মুখে বিষ্ণুর অবতার নৃসিংহ মূর্তিটিও কম আকর্ষণীয় নয়। পাথর কূঁড়ে তৈরি হয়েছে মনোলিখ এই দেব-ব্রহ্ম। লাগোয়া জলমগ্ন মন্দিরে শিবঠাকুর।

প্রাকারে ঘেরা রাজপ্রাসাদটিও বিধ্বস্ত। সামনে ইন্দো-সেরাসেনিক শৈলীতে গড়া কুইনস প্যালেস। প্রতিটি গম্বুজ স্ব স্ব ভাস্কর্যে আজও মহীয়ান। মহারানীর স্নানাগারটিও সুন্দর। মুসলিম স্থাপত্যে গড়া পদ্মাকার বরনা থেকে সুগন্ধী জল

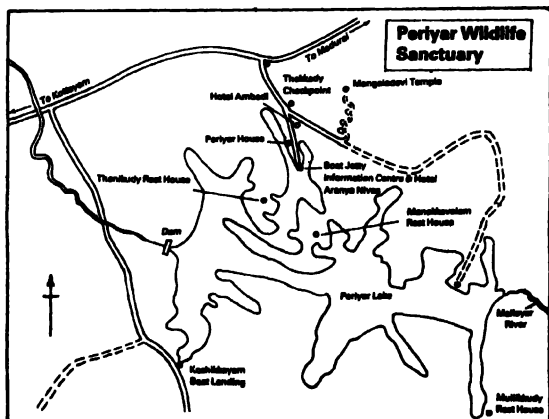
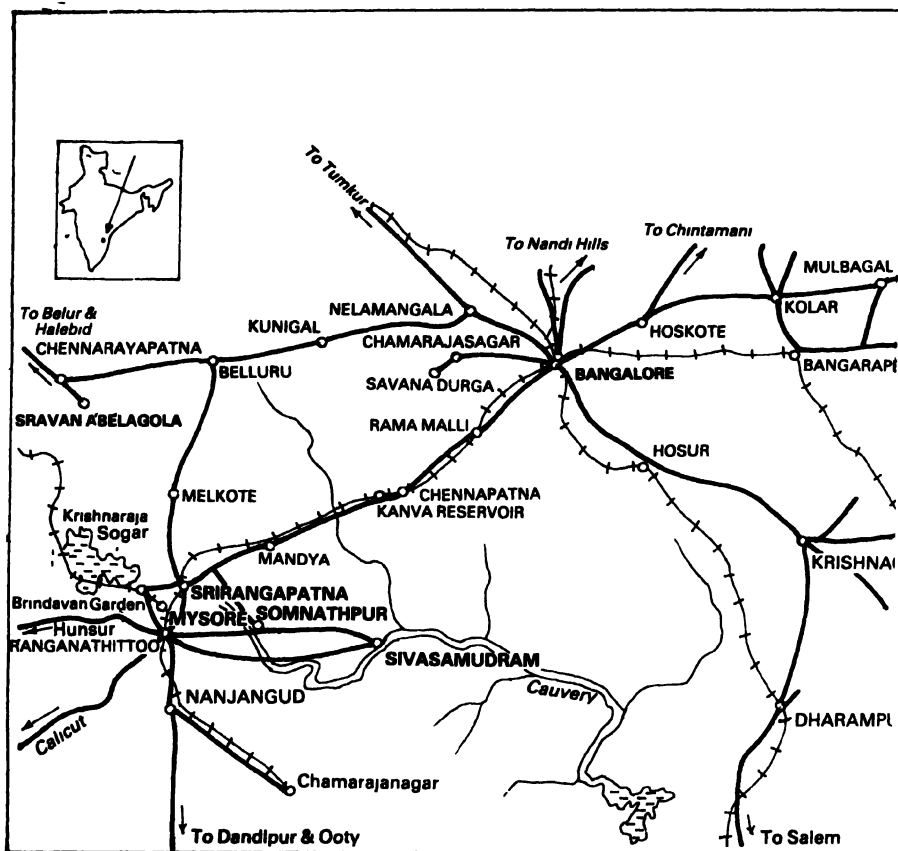
মিলত। জল আসত পম্পানদী থেকে। হিন্দু ও মুসলিম স্থাপত্য শৈলীর পদ্মাকার লোটাচস মহলও অনবদ্য। চিত্রিত এই মহলের অতীতে নামও ছিল চিত্রাঙ্গিনী মহল। দেওয়ালে ঘেরা জেনানা দরবারের জীর্ণ টাওয়ার থেকে রাজপরিবারের মেয়েরা রাজকীয় উৎসব পর্যবেক্ষণ করত। ১১ গম্বুজওয়ালা ঘরের সারি—বিশ্বের বৃহত্তম হাতিশালা, জৈন মন্দির ছাড়াও হাজারো রকমের ধ্বংসস্তুপ হাম্পীর অতীত রোমন্থন করায়। অদূরে মুক মুখে আর এক অতীত সুলেবাজার।

তবে, ১৫১৩য় তৈরি রাজপরিবারের গৃহদেবতা হাজারা রামস্বামী মন্দিরটি আজও অক্ষত রয়েছে। দশ অবতার অর্থাৎ যুগে যুগে বিষ্ণুর আবির্ভাব ব্যাসান্ট পিলারে মূর্ত হয়েছে। রামায়ণ ও মহাভারতের আখ্যান ভিতরের দেওয়ালে আর বাইরের দেওয়ালে রয়েছে নানান জীবজন্তুর মূর্তি। খুবই সুন্দর এই ভাস্কর্য।

এখানেই শেষ নয়—খনন চলছে আজও (১৯৭৬ থেকে) অতীত পুনরুদ্ধারের আশায়। আবিষ্কৃত হয়েছে চীনা মুদ্রা হাম্পীর খননে। প্রদর্শিত হয়েছে খননে পাওয়া মুদ্রা ছাড়াও নানান সম্ভার ফোটা পদ্মের মতো মহারাজার বিশ্রামাগার দ্বিতল লোটাচস মহলে। আজ নতুন করে গড়ে উঠেছে KSTD-র H Mayura Lotus Mahal Restaurant পদ্ম-মহলের তোরণ দ্বারে। যাত্রীদের বিশ্রাম ও আহাৰ্য মেলে। আর হয়েছে হাম্পীর ধ্বংসস্তুপের নানান ভাস্কর্যের প্রদর্শনশালা প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের মিউজিয়াম কমলাপুরমে। ১০—১৭-০০টায়ে খোলা। এমনকি খননে মেলা ব্রাহ্মণীক্যাল লিপি থেকে আবিষ্কৃত হয়েছে খ্রিস্টের জন্মকালে বৌদ্ধকেন্দ্র ছিল বিজয়নগরকে ঘিরে।

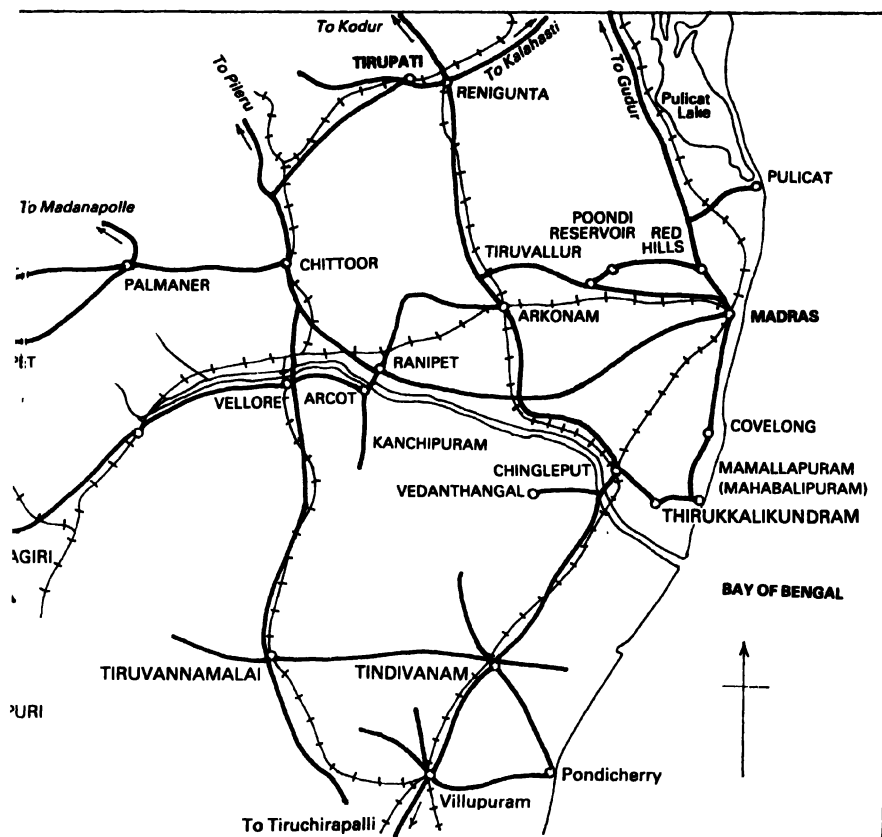
অতীতকালে তুঙ্গভদ্রার নাম ছিল পম্পা। পম্পা নদীর অপর পাড়ে রামায়ণের কিঙ্কিঙ্কা অর্থাৎ বালির সাম্রাজ্য। চারপাশে রামায়ণের খ্যামুক, মালাবস্ত্র, মাতঙ্গ পর্বত। জন-শ্রুতি, ভাই-এর হাতে বিতাড়িত হতে মাতঙ্গ পর্বতে আশ্রয় নেয় সুগ্রীব। শ্রীরামও কিছুকাল অবস্থান করেন মাতঙ্গ পর্বতে। এমনকি বালি বধের পর শ্রীরামের হাতে সুগ্রীবের অভিষেকের স্মারকরূপে কোদুরামা মন্দিরে মূর্তি হয়েছে রামচন্দ্রর। বালির সমাধিটিও ঢিবির আকারে অদ্ভুত রূপ নিয়েছে।

হাম্পী বাজারে সাধারণ হোটেল—মন্দিরের কাছে Shanthi G H. বাজারের পথে বাঁয়ে Rahul G H, বিরূপাক্ষ মন্দিরে ধরমশালা ট্যুরিস্ট অফিসের কাছে PWD IB আছে। আহাৰ্যও মেলে অগ্রিম অডারে। তবুও হাম্পী দর্শনার্থীদের থাকার পক্ষে হসপেটই সুবিধার। বাসও যাক্কে মুহূর্তে হসপেট নিউ বাস স্ট্যান্ড ১০ নম্বর স্ট্যাটফর্ম থেকে ৬-৩০—২১-১৫য় হাম্পী বাজার। হাম্পী থেকে হসপেট ঘেরা রাত ২০-০০টার শেষ বাস। আধ ঘণ্টার পথ, দূরত্ব ১৩ কিমি। পথেই পড়ে কমলাপুরম। ধ্বংসস্তুপের প্রবেশ দরজা কমলাপুরম ও হাম্পী বাজারে। দোকানপাট ও খাবার হোটেলও মেলে উভয় প্রবেশদ্বারে। বাস যাত্রায় উচিত হবে হাম্পী বাজার থেকে হাম্পী অভিযান শুরু করা। পায় পায় ৭ থেকে ১০



Indian Tiger Proj Total Tiger 3750

| Name | Tot |
|--------------------------------|------|
| Venugopal (Bandipur) | |
| —Karnataka | 69 |
| Corbett—Uttar Pradesh | 52 |
| Kanha—Madhya Pradesh | 194 |
| Manas—Assam | 284 |
| Melghat—Maharashtra | 151 |
| Mundanthur—Tamilnadu | |
| Palamou—Bihar | 9 |
| Ranathambhore—Rajasthan | 34 |
| Simlipal—Orissa | 27 |
| Sundarban—West Bengal | 25 |
| Periyar—Kerala | 71 |
| Sanskha—Rajasthan | 4 |
| Buxa—West Bengal | 74 |
| Indravat—Madhya Pradesh | 279 |
| Nagarjuna Sagar—Andhra Pradesh | 356 |
| Nandapha—Arunachal | 180 |
| Dudwa—Uttar Pradesh | 61 |
| Number of National Parks 53 | San. |



Object : 18
0 (1993)

| Area | Core Area |
|---------|-----------|
| Area 1 | Area 2 |
| Area 3 | Area 4 |
| Area 5 | Area 6 |
| Area 7 | Area 8 |
| Area 9 | Area 10 |
| Area 11 | Area 12 |
| Area 13 | Area 14 |
| Area 15 | Area 16 |
| Area 17 | Area 18 |
| Area 19 | Area 20 |
| Area 21 | Area 22 |
| Area 23 | Area 24 |
| Area 25 | Area 26 |
| Area 27 | Area 28 |
| Area 29 | Area 30 |
| Area 31 | Area 32 |
| Area 33 | Area 34 |
| Area 35 | Area 36 |
| Area 37 | Area 38 |
| Area 39 | Area 40 |
| Area 41 | Area 42 |
| Area 43 | Area 44 |
| Area 45 | Area 46 |
| Area 47 | Area 48 |
| Area 49 | Area 50 |
| Area 51 | Area 52 |
| Area 53 | Area 54 |
| Area 55 | Area 56 |
| Area 57 | Area 58 |
| Area 59 | Area 60 |
| Area 61 | Area 62 |
| Area 63 | Area 64 |
| Area 65 | Area 66 |
| Area 67 | Area 68 |
| Area 69 | Area 70 |
| Area 71 | Area 72 |
| Area 73 | Area 74 |
| Area 75 | Area 76 |
| Area 77 | Area 78 |
| Area 79 | Area 80 |
| Area 81 | Area 82 |
| Area 83 | Area 84 |
| Area 85 | Area 86 |
| Area 87 | Area 88 |
| Area 89 | Area 90 |
| Area 91 | Area 92 |
| Area 93 | Area 94 |
| Area 95 | Area 96 |
| Area 97 | Area 98 |
| Area 99 | Area 100 |

901 sq km 335 sq km

20 " "

45 " " 940 " "

HD " " 391 " "

171 " 311 " "

100%
 100%

| | |
|-----|-----|
| 200 | 200 |
| 167 | 167 |

| | | | | | |
|-----|---|---|-----|---|---|
| #12 | - | - | 187 | - | - |
| #10 | " | " | 300 | " | " |

1330 " "

| | |
|----|-----|
| 10 | 350 |
|----|-----|

498

145 " " 313 " "

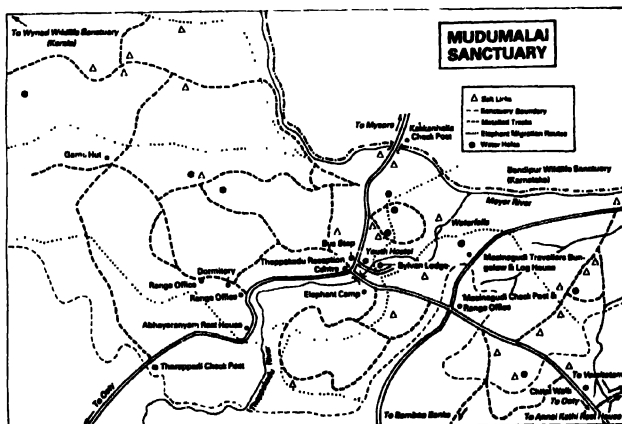
199 " " 1258, " "

360 " " 1200 " "

| | |
|---------|----------|
| 160 " " | 1200 " " |
| 108 " " | 695 " " |

613 " " 490 " "

Actuaries 247



কিমি পরিক্রমায় সাঙ্গ করা যায় হাম্পী দর্শন। সাইকেলও মেলে ভাড়াইয় হাম্পী বাজারে। আর ট্যাক্সি মেলে হসপেটে—যাতায়াত সহ দর্শন ৩৫০ টাকায়। শেয়ারেও ট্যাক্সি মেলা অস্বাভাবিক নয়। অটোও যাচ্ছে এপথ পরিক্রমায়। আবার KSTDC, Taluk Office Circle, ৫ 8537 (বাস স্ট্যান্ডের পেছনে) হসপেট থেকে কনডাক্টেড ট্রায়ে সকাল ৯-০০টায় গিয়ে ১৭-০০টায় ফেরে ৬০ টাকায় হাম্পী ও তুঙ্গভদ্রা বাঁধ দেখিয়ে। হসপেটের আর এক আকর্ষণ তার মহরম উৎসব। দিনরাত ধরে মিছিল চলে নানান বর্ণের তাজিয়ার সাথে রঙবেরঙের আলোর রোশনাই নিয়ে। খুবই আকর্ষণীয় এই তাজিয়া মিছিল।

তুঙ্গভদ্রা বাঁধ: হসপেট থেকে ৭ আর হাম্পী থেকে হসপেট হয়ে ২০ কিমি পশ্চিমে ১৯৭৩-এ ৫০৪.৬ মি উঁচু বাঁধ পড়েছে তুঙ্গভদ্রা নদীতে। রেল ও মুহুম্বু বাস যাচ্ছে হসপেট (১২ নম্বর প্রাইটফর্ম) থেকে ৬-১০এ প্রথম ছেড়ে ২১-২৫এ শেষ বাস; ২ ঘণ্টার পথ। দূরপাল্লার নানান বাসও যাচ্ছে T B Dam-এর নিচুতে রোড জংশন হয়ে হসপেট থেকে। ৫০০ মিলম্বা আর ৪৯ মি উঁচু বাঁধের জলাধারটি ৩৮৭ বর্গমিটার। ২ মিলিয়ন একর জমিতে চাষের জল যাচ্ছে, আর হচ্ছে জলবিদ্যুৎ। অনুমতি নিয়ে জলবিদ্যুৎ প্রকল্পটিও দেখে নেওয়া যায়। তবে, একাত্তাই উচিত হবে বৈকুণ্ঠ গেস্ট হাউস থেকে বাঁধ তথা লেকের নয়নাভিরাম শোভা দেখে চলা। ভিউ টাওয়ার, মাছের পুকুর, জল তৈরির কারখানা, স্টিল প্রোজেক্ট, জাপানি প্রথায় বাগিচা ছাড়াও রয়েছে হেরিটিকালচার ফার্ম তুঙ্গভদ্রায়।



বাস যাচ্ছে ডজনখানেক (৭—২৩-৪৫) হসপেট থেকে NH 4 ও 13 ধরে ৩৫৮ কিমি দূরের ব্যাসালোরে। আর KSTDC-র বাস যাচ্ছে রাত দশটায় হসপেট ছেড়ে রাতভর জানিতে ব্যাসালোরে। ভাড়াইয় সামান্য আধিক্য ঘটলেও চলা আরামদায়ক, সময়ও কম নেয় KSTDC-র ডিলাক্স/সুপার ডিলাক্স। হসপেট থেকে ১৩ কিমি উত্তর-পূর্বে হাম্পী, তুঙ্গভদ্রার দূরত্ব ৭ কিমি; নিয়মিত বাস যাচ্ছে। বাস আসছে সকাল ৮-৩০ ও সন্ধ্যা ১৮-০০টায় হাসান ছেড়ে চিক্সাগালুর/শিমোগা/ হরিহর হয়ে মন্দিরতীর্থ বেলুড়-হ্যালেবিন্দ-শ্রবংবেলগেলার যাত্রী নিয়ে ৩৪০ কিমি দূরের হসপেটে। যোগ যাত্রীরা সাগর থেকে শিমোগা/ হরিহর হয়ে হসপেট পৌছান বাসে বাসে। এপথের দূরত্ব ৭২+৭৭+১১০ অর্থাৎ ২৫৯ কিমি। **তুঙ্গভদ্রা/ বগলকেট** হয়ে ৮ ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে ২৫০ কিমি দূরের বিজাপুরে। ৩৯১ কিমি দূরের ব্যাসালোর যাচ্ছে শিমোগা হয়ে। **পানাজি** যাচ্ছে হবলি/ খারওয়ার হয়ে হসপেট থেকে। পথের দূরত্ব (১৪৯+২০ +১৬৭) ৩৩৬ কিমি। হবলি যাচ্ছে ৩½ ঘণ্টায়; ৫ ঘণ্টায় ১৬৭ কিমি দূরের বাদামী যাচ্ছে নানান বাস। ৪৪৫ কিমি দূরের হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ২টি এক্স বাস। বেলারি ৬১, বিদার ৩৬৫, গুলবর্গা ২৫১ কিমি, গুন্টাকল, মহীশূর, মঙ্গলায় ছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজা ৬ প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে হসপেট থেকে।



হবলি-গুন্টাকল মিটারগেজ রেলপথে হবলি থেকে ১৪৫ আর গুন্টাকলের ১১২ কিমি দূরে হসপেট। ২১-৫৫য় ব্যাসালোর ছেড়ে ৫১৭২ হাম্পী এক্স ব্রডগেজে পরদিন ধর্মভরম ১-৫০, গুন্টাকল ৪-৪০, হসপেট ৭-

৩০, গড়গ ৯-৪৮এ পৌছে হবলি যাচ্ছে ১১-১০এ; ব্যাসালোর ফেরে ১৭-০০টায় হসপেট ছেড়ে পরদিন ৬-৫৫য়। হাম্পীর অংশ গুন্টাকলে পৃথক হয়ে পার্বণী যাচ্ছে 7014 ব্যাসালোর-পার্বণী লিঙ্ক এক্স হয়ে। আর হবলি-গুন্টাকল বিজয়নগর এক্স, হবলি-গুন্টাকল প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে গড়গ-হসপেট-বেল্লাবি হয়ে। ভান্ডো যাচ্ছে হসপেট-ভান্ডো প্যা ও এক্স, কোট্টিক যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার হসপেট থেকে নবতম ব্রডগেজে। আবাব হসপেট থেকে হবলি পৌছে ৬-২০এক্রতম ইটারসিটি এক্স হবলি ছেড়ে ১৩-৫০এ ব্যাসালোর চলা যেতে পারে। তবে, গড়গ ও গুন্টাকল থেকে ট্রেনের আধিক্য মেলে ব্যাসালোরের। আর ২ 5 6 দিন ৬-০০টায় ব্যাসালোর-মুন্ডাই এক্স, ২০-০০টায় রানী চোমামা এক্স আরসিকেরে/বিকর/ হরিহর হয়ে ৪৬৯ কিমি দূরে হবলি আসছে ১৪-৪০, পরদিন ৭-০৫এ। বিজয়ওয়াড়া-ভান্ডো অমাবসী এক্স, গুন্টাকল-বিজয়পুর্বা চালুক এক্স ছাড়াও নানান প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে হবলি ও গুন্টাকল থেকে হসপেট হয়ে। আর কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় উচিত হবে করমণ্ডল এক্স ১০-২৫এ বিজয়ওয়াড়া পৌছে দিনভব শহর দেখে ১৯-৩০এব বিজয়ওয়াড়া-ভান্ডো 7225 অমাবসী এক্স নবতম ব্রডগেজে গুন্টাকল ২০-২০, গুন্টাকল ৮-২০, পরদিন ২-৩০, হসপেট ১১-০০, গড়গ ১৩-০৩, হবলি ১৮ ৩২, কোটা ১৭-৩০এ, পৌছে ১২-১৫য় ভান্ডোয় চলা। এমনকি এপথটি আজ কলকাতাবাসীরা গোয়া যাত্রায় অমোঘ পথি আকর্ষণীয়।



হাম্পী ও তুঙ্গভদ্রা যাত্রীদের রাত্রিবাসের জন্য বেলারি জেলার তালুক শহর হসপেট আকর্ষণীয়। হোটেলও হয়েছে নানান Hospet-583201, STD 08394৫। রেল স্টেশন থেকে ১½ কিমি দূরে শহরের প্রান্তক্রেমে বাস স্ট্যান্ড। রেল স্টেশনের চত্বর পেরুতেই শহরমুখী Station Rd-এ—Rana L, Pampa L, H Salini, SAB ১২০, DAB ১৫০; H Sundarshan, SAB ৮০-১২৫, DAB ১৫০-২৭৫; H Priyadarshini, SAB ৮০-১২৫, DAB ১৭৫-৩২৫, A/c D 8০০। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Vishwa, SAB ৬০, DAB ১০০। বায়ে অতি সাধারণ সাজে Municipal Pravasi Mandir ডাইনে Sree Bandri Ragappa Setty's Dharamshala; বিপরীতে Shanbag L, S ৬০ D ১০০। বাস থেকে মিনিট পাঁচকের পথে গান্ধী চক্রে—Lokure L, S ৬০ D ১০০; Sundar L, H Mayura, Mallige Tourist Home, Hampi Rd, ৫ 48101, SAB ৪৫০ DAB ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮০০ Suite ১৭৫০, পুরান্নার ব্রকে কিছু ইকোনমিক ঘরও মেলে। Krishan L, T B Dam Rd, SAB ৬০, DAB ১২৫। Naga L, Padma L, Old Bus Std. আর আছে তুঙ্গভদ্রা বাঁধের নিচে KSTDC-র H Mayura Vijaynagar, T B Dam, ৫ 59270, SAB ১২৫, DAB ১৭৫; তবে, হাম্পী দর্শনে উচিত হবে ময়ূরকে বয়কট করে শহরে অবস্থান করা। আর কমলাপুরম অর্থাৎ হাম্পীতে আছে KSTDC-র H Mayura Bhuvaneshwari, Kamalapur (Hampi), Dist-Bellary, ৫ 51574, S ২০০ ৩৩০ D ২৪০ ৩৮৫। **রেলের রিটার্নিং** রুমও আছে হসপেটে। Hampi Power G H, আর তুঙ্গভদ্রায় বাঁধের মুখে লেকের পাড়ে টিলার টাউন নয়নাভিরাম পরিবেশে Vaikunt G H, DAB ৬০ ৮৫, ১২৫, অবঃ EE, HLC Division. T B; / B, অবঃ EE, HLC Division. T B. আর বাঁধের অপরপাড়ে মুনীরাবাদে—Indra Bhavan G H ও Lake View G H; দুইয়েরই বুকিং: EE, No 1 Sub-Division,

Munirabad, Dist-Raichur, Karnataka. তবে থাকার জন্য শহরে—হোটেল হর্ষ, মালিগী টারিস্ট হোম, প্রিয়দর্শিনী ও সম্পর্শন ভালই।

নিরামিষ আহার্যের জন্য হাস্পী রোডে হোটেল প্রভু ও বিশ্ব হোটেলের শান্তি রেস্টুরেন্ট, প্রিয়দর্শিনীর চালুকা রেস্টুরেন্ট; আর আমিষের জন্য গান্ধী চক্রে নাগার্জুন দেখা যেতে পারে। দামে কিছুটা আধিক্য ঘটলেও মালিগীর বিপরীতে ইগল গার্ডেন রেস্টুরেন্ট-এ ৭—২৩-০০ টায় বিরিয়ানী ও মটর/চিকেনের রকমারি আহাৰ্য রসিকজনের জিতে জল আনে। মালিগী টারিস্ট হোমের অমরুথ-এরও সুনাং আছে আহাৰ্যের। আর টিফিনের হাদ নেওয়া যেতে পারে Shunbau Coffee Bar-এ।

হরিহর

চলার পথে সাগর থেকে ১৪৯, শিমোগা থেকে ৭৭ কিমি দূরে NH-4 অর্থাৎ ব্যাসালোর-হবলি সড়কে আর এক প্রাচীন শহর হরিহরও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ১২২৩এ তৈরি হোয়সল মন্দির ১২৬৮তে সোমনাথপুরম মন্দির নির্মাতা সোমের হাতে সংস্কার হয়। শিব ও বিষ্ণুর সমন্বয়ে দেবতা হরিহরেশ্বরের মূর্তিও প্রতিষ্ঠিত হয় নতুন করে। দেবতা হরিহরেশ্বরের নামে জায়গার নাম। একটি তাম্রলিপিও মিলেছে মন্দিরে। হরিহর থেকে ১৪ কিমি যেতে বাণিজ্যিক শহর দাবাসেরে হয়ে পথ গিয়েছে ব্যাসালোর-হাস্পী সড়কে ৭৮ কিমি দূরের ২৮৮৪ ফুট উঁচু চিত্রলদুর্গে। পাহাড়ডুড়োয় পাথুরে দুর্গটি হায়দর আলির তৈরি। পুত্র টিপুও আত্মরক্ষার প্রয়োজনে মজবুত করেন দুর্গকে। নিচে শহর, মন্দিরও আছে চিত্রলদুর্গে। ২ কিমি পশ্চিমে চন্দ্রাবতী উপত্যকার দৃশ্য সুন্দর। দু'হাজার বছরের প্রাচীন রোমান মুদ্রাও মিলেছে এখানে। থাকার জন্য রেস্ট হাউস, সার্কিট হাউস, ডাকবাংলো, ট্রাভেলার্স বাংলা ও সাধারণ হোটেল আছে চিত্রলদুর্গে। চিত্রলদুর্গ থেকে ১৯৮ কিমি দূরের ব্যাসালোরও ফেরা যেতে পারে। হসপেটের দূরত্ব ৩৩৯ কিমি।

রায়চুর

ইতিহাসের হেঁড়া পাতার সাক্ষী হতে তুঙ্গভদ্রা বা হসপেট থেকেই বাসে চলুন রায়চুর। মুম্বাই/পুনে-বাসালোর/চেন্নাই রেলপথে রায়চুর। হসপেট থেকে অক্সের গুন্টাকল পৌছেও নতুন করে ট্রেনে রায়চুর যাওয়া চলে। দূরত্ব গুন্টাকল থেকে ১২২, হসপেট ১৮২, তুঙ্গভদ্রা ১৭৫, সেকেন্দ্রাবাদ ৩০৩ আর পুনে ৫২০ কিমি।

রায়চুর যদিও আজ জেলা সদর তবে রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে ১২৯৪ খ্রিস্টাব্দে কাকাতীয় রাজাদের তৈরি দুর্গটি পর্যটকদের অন্যতম আকর্ষণ। আর আছে সমাধি, জুম্মা মসজিদ, এক মিনার মসজিদ ও মন্দির। বারবার হাতবন্দল হয়েছে রায়চুরের। কাকাতীয় থেকে বাহমনি, বাহমনি থেকে বিজাপুর, এমনকি বিজয়নগর রাজাদেরও দখলে যায় রায়চুর।



থাকার জন্য S L V Tourist Hostel, Stn Rd-584101, S ১৫০ D ২৫০, A/C D ৪০০; Uma H, near Rly Stn; Ashok H, near Bus Std, Tourist Bungalow, 1B ছাড়াও নানান হোটেল আছে রায়চুরে।

গুলবর্গা

রায়চুরের উত্তরে গুলবর্গা। বিদারে স্থানান্তরের আগে গুলবর্গাও (১৩৪৭-১৪২৮) বাহমনি সুলতানদের রাজধানী ছিল। আর ঔরঙ্গজেবের দখলে যায় ১৬৮৭তে গুলবর্গা। গুলবর্গার ১৫ বুরুজবিশিষ্ট ক্ষতবিক্ষত দুর্গটি উল্লেখ্য। ১৪ শতকের শেষার্ধ্বে স্পেনের করভোভার অনুকরণে ম্যুরিশ শৈলীতে তৈরি দুর্গের জামি মসজিদটি ভারতে অন্যতম। বিরাটাকার গম্বুজ—চারকোণায় আবার চার, আর মাঝে চারপাশ জুড়ে ৭৫টি ছোট আকারের গম্বুজ। আর আছে মহলের পর মহল গুলবর্গার দুর্গ। তেমনিই আছে বাহমনি সুলতানদের নানান সমাধিসৌধ, বন্দে নওয়াজের দরগা, হিন্দু মন্দির বাসবেধর গুলবর্গায়।

বিজাপুর ১৫৯, হায়দ্রাবাদ ২২২ কিমি বাসও যাচ্ছে গুলবর্গা হয়ে। বাস আসছে রায়চুর থেকেও গুলবর্গায়। রেলও সংযোগ গড়েছে ত্রয়ার সাথে গুলবর্গার। মুম্বাই-কন্যাকুমারী এক্স, মুম্বাই-তিরুভনন্তপুরম এক্স, মুম্বাই-হায়দ্রাবাদ এক্স, মুম্বাই-সেকেন্দ্রাবাদ হসেনসাগর এক্স, মুম্বাই-চেন্নাই এক্স, চেন্নাই-মুম্বাই মেল, মুম্বাই-ভুবনেশ্বর কোণারক এক্স, মুম্বাই-বাসালোর উদ্যান এক্স, দাদার-চেন্নাই এক্স, কারলা-বাসালোর, কারলা-ম্যাসালোর/কোচি এক্স, কোচি-রাজকোট, তিরুপতি-কারলা, নাগেরকয়েল-কারলা এক্স, নিউ দিল্লী-বাসালোর এক্স, সোলাপুর-ওয়াডি প্যাসেঞ্জার, হায়দ্রাবাদ-পুনে প্যাসেঞ্জার ছাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে পুনে-সোলাপুর-গুলবর্গা-ওয়াডি হয়ে।

KSTDC-র H Mayura Bahamani, Public Garden, Gulbarga. ☎ (08472) 20644. SAB ৬০, DAB ১২০, আহারও মেলে ক্যান্টিনে; H Sanman ছাড়াও হোটেল আছে নানান গুলবর্গায়।

বিদার

গুলবর্গা তথা কর্ণাটক রাজ্যের উত্তরে অক্স সীমান্তে ২৩০০ ফুট উঁচুতে বিদার। বাস সংযোগ রয়েছে ৫৬ কিমি দূরের গুলবর্গার সাথে। এছাড়াও রাজ্যের বিভিন্ন শহরও প্রতিবেশী রাজ্য অন্ধ্রের সঙ্গেও বাস ও রেলপথে যুক্ত বিদার। হায়দ্রাবাদ-মুম্বাই রেলপথে বিদার। ভিকারাবাদ-বিদার-পারলি বৈজনাথ-ঔরঙ্গাবাদ হয়ে ট্রেন আছে। হায়দ্রাবাদ থেকে দূরত্ব ১৩৭ কিমি। বাসও আসছে ঘন্টায় ঘন্টায় হায়দ্রাবাদের গৌলিগুড়া স্টেডাল বাস টার্মিনাস থেকে।

গুলবর্গা থেকে রাজ্যপাট তুলে ১৪২৮এ বিদারে বাসে বাহমনিদের রাজধানী। দুর্গও গড়ে বাহমনি সুলতান আহমেদ শা ওয়ালি। ১৪৮২তে বাহমনি রাজ্য ডেকে টুকরো হয়ে বারিদশাহীদের রাজধানী হয় বিদার। আর ১৬৫৬র এপ্রিলে ঔরঙ্গজেবের মোগলবাহিনীর হাতে পতন ঘটে বারিদ-

শাহীদেয়। বিদ্যার খ্যাত তার ১৫ শতকের দুর্গের জন্য। ৫২ কিমি দীর্ঘ প্রাচীরে ঘেরা লাল ইট ও পাথরে গড়া ৭ প্রবেশ দ্বারের ৩৭ বুরুজওয়ালা দুর্গে আজ দোকানপাট, বসতি গড়ে উঠেছে। বাজারের যিঞ্জিভাব রেখে তোরণের পর তোরণ পেরিয়ে ভিন মহলা দুর্গে—রক্তিন মহল, চিনি মহল, তুর্কিশ মহল, বড়ী তোপ, যুদ্ধজয়ের স্মারকস্তুপ, প্রত্নতত্ত্বের নানান সম্ভারের মিউজিয়াম অন্যতম দৃষ্টব্য। বিপরীতে ঝোলাখায়া মসজিদ, তার পেছনে গগন মহল ও দেওয়ানী আম। অদূরে তখত মহল অর্থাৎ রাজবাড়ি। এছাড়া বাহমনী ও বারিদি রাজাদের কার্যক্রম সমাধি, মহম্মদ ঘাউসের মাদ্রাসা ও নরসিংহ বোরা তথা গুহা মন্দিরটিও পর্যটকদের কাছে কম আকর্ষণীয় নয়। সিঁড়ি নেমে সঙ্গীর্ণ গুহায় ঝরনার উৎস মুখে দেবদর্শনের ব্যবস্থা। আর আছে পাপনাশম শিব মন্দির শহরে। জনশ্রুতি, লঙ্কার পথে শ্রীরাম শিবের পূজা করেন এখানে। বিদ্যারের আর এক উল্লেখ্য তার নানান ধর্মী বিদ্যার শিল্প।

তেমনই আছে শহর থেকে ১২ কিমি দূরে গুলবর্গা সড়কে বিদ্যার অবস্থানের স্মারকরূপে নানক বোরা তথা গুহাধারা। জনশ্রুতি, ভারত পরিক্রমায় বেরিয়ে বিদ্যারবাসীদের কাতর প্রার্থনায় উভলা নানক পাহাড়চুড়োয় পায়ের চাপ দিতে বেরিয়ে আসে জলের ঝরনাধারা। আজ হয়েছে শ্বেতমর্মরে বাঁধানো জলাশয়। অদূরে বিশালাকার দিঘি। নানে পুণ্যের সাথে নানান ব্যাধির উপশম মেলে। লোহার বালা দানে মনস্কামনাও পূরণ হয় যাত্রীর।



খাকার জন্য R.H. PWDGH, কর্ণাটক টুরিজমের H Mayura Barid Shuhri, Yadgir Rd. Bidar, near Bus Std, ☎ (08482) 6571, SAB ১২৫ DAB ১৭৫; Sri Venkateswar I, Main St. D ১৫০-২২৫ A/c D ৩০০-৪৫০; লাগোয়া Kulpuna H ছাড়াও হোটেল আছে নানান বিদ্যারে।

বিদ্যার থেকে ট্রেনে বা বাসে হায়দ্রাবাদ চলুন। আবার মহারাষ্ট্রের সোলাপুরে ট্রেন বদল করে বিজাপুরে চলা যেতে পারে। তবে অল্প ভ্রমণার্থীদের হায়দ্রাবাদে যাওয়াই উচিত হবে। আবার ঔরঙ্গাবাদও চলা যেতে পারে ইলোরা-অজন্তা দর্শনে।

বিজাপুর

চলুকাদের বিজয়পুর অর্থাৎ The city of Victory আজ হয়েছে বিজাপুর। এমনকি, বিজয়পুর আজ বিস্মৃত—অতীতও (1074-1489) লোপ পেয়েছে হিন্দুরাজাদের। হাঙ্গানী বেড়িয়ে হসপেট থেকে ট্রেনে বা বাসে বিজাপুর চলুন। ঘণ্টা নয়কের পথ, দূরত্ব ২৮৫ কিমি। পথে পড়ে বাদামী। বাদামী থেকেও বাস আছে। আবার সোলারি বা বগলকোটের বাসেও বিজাপুরে চলা যেতে পারে বাদামী-পাট্টাডাকাল-অহিহোল দর্শন সেরে। বা বিদ্যার থেকে ট্রেনে ভিক্রাবাদ ক্রিয়ে মুম্বাইগামী ট্রেনে হেটগীতে গাড়ি বদল করেও চলা যেতে পারে বিজাপুর। তবুও উত্তরমুখী যাত্রায় ৩-

১০, ৭-৩০, ৯-৪০, ১৫-১০, ১৯-২৫-এর ট্রেনে ৩২ ঘণ্টায় সোলাপুর পৌঁছে ২০-৩০এ সোলাপুর-মুম্বাই সিদ্ধেশ্বরী এক ছাড়াও নানান ট্রেনে ব্রডগেজ রেলের মুম্বাই বা হায়দ্রাবাদ বা বিজয়ওয়াড়া চলা যেতে পারে। ২৫৮ কিমি দূরের হবলি থেকেও ট্রেন আসছে নানান ৯ ঘণ্টায় বিজাপুরে। ট্রেন আসছে ৬০৩ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোর সিটি থেকেও গোলগম্বুজ এক আরমিকেরে/হরিহর/হবলি/গডগ/বগলকোট হয়ে বিজাপুরে। ফেরেও রাতে বিজাপুর থেকে ব্যাঙ্গালোরে। ট্রেন আসছে গুণ্ডাকল থেকেও বিজাপুরে। তবে, কোঙ্কণ রেলের অসম্পূর্ণতা হেতু এপথে ট্রেনের চলা আজও বিঘ্নিত। বাসও আছে (ভাট) সাঁঝে রাতভর জার্নিতে ১২ ঘণ্টায় বিজাপুর থেকে ব্যাঙ্গালোরে।

আবার ১৫৯ কিমি দূরের গুলবর্গা থেকেও সড়কপথ গিয়েছে বিজাপুরে। বাস আছে ৫টি কোলহাপুর ১৭৫, ১২টি সোলাপুর ৯৯, ১২টি বেলগাঁও ১৯২, ১২টি হবলি ১৮৭, ২টি বাদামী, ১১টি বিদ্যার, মিরাজ ১২৫, পুনে ৩৪২ কিমি ছাড়াও রাজা ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে। বাস আছে ১০ ঘণ্টায় ঔরঙ্গাবাদ ৪৪১, ১২ ঘণ্টায় মুম্বাই ৬৬৯, ১০ ঘণ্টায় হায়দ্রাবাদ ৪১২ কিমি। নিকটতম বিমানবন্দর বেলগাঁও। আর টাঙ্কা, অটো, রিকশা ও ট্যাক্সি চলছে শহরে। ভবে, মিটার নয়—চুক্তিতে চলে এরা। মুম্বাই সিটি বাসও চলছে রেল স্টেশন থেকে শহর মাড়িয়ে পশ্চিমে।

১৪৮২ খ্রিস্টাব্দে বাহমনি সাম্রাজ্য ভেঙে গিয়ে ৫টি স্বাধীন রাষ্ট্রের পত্তন হয়। তাদেরই এক বিজাপুর—১৪৮৯এ ইউসুফ আদিল খানের হাতে গড়ে ওঠে। বাকি ৪—বিদ্যার, গোলকুণ্ডা, আহমেদনগর ও গুলবর্গা। সংঘাতও লেগেছিল পরস্পরে। আবার, এদেরই সম্মিলিত শক্তির কাছে বিজয়-নগর হিন্দু সাম্রাজ্যের পত্তন ঘটে ২৫শে জানুয়ারি ১৫৬৫ টালিকোটায় যুদ্ধে। রাজধানীও ছিল ১৪৮৯-১৬৮৬ আদিল-শাহীদের ৫৯৩ মি উঁচু বিজাপুরে। তাঁদেরই কীর্তিকলাপে গড়া মধ্যযুগীয় (১৫—১৭ শতক) ইসলামি স্থাপত্যের মিউজিয়াম নগরীও বলা যেতে পারে বিজাপুরকে। বংশের ৭ম শাসক মহম্মদ আদিলশাহর কালে বিজাপুরের রমরমা। দীর্ঘ এক বছর ধরে অবরোধ চালিয়ে ১৬৮৬র ১৫ই অক্টোবর ঔরঙ্গজেব দখল করে বিজাপুর। তবে, ক্ষমতার পালাবদল ঘটে চলে বারে বারে বিজাপুরে। সবশেষে ১৮১৮য় দখল যায় মারাঠা থেকে ব্রিটিশে।

তবে, কেমন যেন জড়তা আছে বিজাপুরের স্থাপত্যে। আদিকাল থেকেই এর শিল্পকল্যাণ। ৫০-এরও বেশি মসজিদ, ২০-এরও বেশি সমাধি, আর সমসংখ্যক প্রাসাদ দেখতে পর্যটক আসেন প্রাকারবেষ্টিত লেক ও বাগিচার শহর বিজাপুরে। দোকানপাট, হোটেল, শহরের প্রাণকেন্দ্র গান্ধী চককে ঘিরে গড়ে উঠেছে। বাস স্ট্যাণ্ডও গান্ধী চক থেকে মিনিট পাঁচেকের পথে দক্ষিণে। ডাইনে পূর্বমুখী স্টেশন রোড, আর বাঁয়ে পশ্চিমমুখী মহাত্মা গান্ধী রোড। শহরের মূল আকর্ষণও পূবে গোলগম্বুজ আর পশ্চিমে ইব্রাহিম রোজা। রাজা পর্যটনের দপ্তর বসেছে রেল স্টেশন থেকে ১২ কিমি দূরে আনন্দ মহল রোডে হোটেল আদিলশাহিতে। গ্রীষ্মে ৪১ থেকে ২৮° আর শীতে ৩০ থেকে ১৬°

সেটিগ্রাডে ওঠানামা করে তাপমান। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস।

গোলগম্বুজ: শহরের পূর্বে ১৬৫৯ খ্রিস্টাব্দে তৈরি গোলাকার গম্বুজ থেকে নাম হয়েছে গোলগম্বুজ। জাঁকালো এই সমাধিসৌধের কেন্দ্রস্থলে অষ্টকোণী উঁচু বেদিতে কফিনাকার আধারটির অবস্থান হলেও বাহমনি বংশের ৭ম নৃপতি মহম্মদ আদিল শাহ (১৬২৬-৫৬) শায়িত রয়েছেন পশ্চিমের প্রবেশ পথের ভূগর্ভস্থ কক্ষ। আর রয়েছেন দুই প্রিয়তমা বেগম, শিক্ষয়িত্রী তথা প্রণয়িনী রক্তা, কন্যা ও নাতি। দেবী রক্তার আশা পূরণে পার্শ্ববর্তিনী হয়েছেন সমাধি সৌধে। বিজাপুরের বাতাসে আজও ভেসে বেড়ায় তাদের প্রেমোপাখ্যান। তবে, সাধারণের প্রবেশ মানা। স্তম্ভহীন ৬৬ মি উঁচু ৩৮ মি ব্যাসের ১৭০৪ বর্গ মি আয়তনের হল তথা গোলগম্বুজে দেওয়াল হয়েছে ৩ মি পুরু। চারকোণে ৭ তলার চার অষ্টকোণী মিনার। আকারে এটি বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম হলেও নির্মাণশৈলীতে অনন্য। বৃহত্তমটি রোমের ভ্যাটিকান নগরীতে ৪২ মি ব্যাসের সেন্ট পিটার্স আর তৃতীয়টি ৩৩ মিটারের লন্ডনের সেন্ট পিটার্স। সঙ্গী শতাব্দিক সিঁড়ি পথে টাওয়ার চড়ে হলের শিরে ডোমকে ঘিরে ৩ মি চওড়া ছইসপারিং গ্যালারিটিও খুবই উপভোগ্য। যে কোনও ধ্বনি প্রতিধ্বনিত হয় ১০ গুণ হয়ে। তেমনই নিচুর ইকো পয়েন্টের ধ্বনি প্রতিধ্বনিত হয় ১০-এরও অধিকবার। তবে, উচিত হবে সমাধিসৌধের যথাযথ মর্যাদা রেখে নিরীক্ষা করা। অন্যের উপস্থিতিও স্মার্তব্য। মসজিদ, নকরখানা, ধর্মশালাও বসেছে। গ্যালারি থেকে শহরও সুন্দর দৃশ্যমান। ৬—১৮-০০টায় দ্বার খোলা, টিকিট ৫০ পয়সা; শুক্রবার ফ্রি। পুরাতত্ত্বের মিউজিয়ামও বসেছে গোল গম্বুজের সামনে নগরখানায়। পরিতাপের বিষয় ১৯৯৩-এর বিধবংসী ভূমিকম্পে ফটিল ধরেছে গম্বুজে।

ইব্রাহিম রোজা: শহরের পশ্চিমপ্রান্তে ইব্রাহিম আদিল শাহ ২য়-র (১৫৮০-১৬২৬) হাতে বেগম চাঁদ সুলতানার সমাধিরূপে তৈরি। সুদৃশ্য ২৪ মি উঁচু মিনারশোভিত ইব্রাহিম রোজা অর্থাৎ বাগিচায় শায়িত রয়েছেন ইব্রাহিম আদিল শাহ, বেগম, পুত্র, দুই কন্যা ও আশ্রাজান—হাজিবাদী সাহেবা। কারুকার্যময় ইব্রাহিম রোজার দেওয়াল-চিত্র, জানালায় পাথরের জালির কাজ সুন্দর। কোরানের আয়াতও সোনায় রূপ পেয়েছে এর গম্বুজে। জনশ্রুতি, তাজ তৈরিতে অনুপ্রেরণা যোগায় এই সমাধি। আর স্থপতি মালিক স্যাভালের দাবি স্বর্গোদ্যান বসেছে ইব্রাহিম রোজায়। অদূরেই আলি রোজা—আর এক সমাধি।

জামি মসজিদ: গোলগম্বুজের দক্ষিণ-পূর্বে ১০৮০৪ বর্গ মি জুড়ে আলি আদিল শাহ ১ম (১৫৫৭-৮০) র হাতে ১৫৭৩এ তৈরি জামি মসজিদটি বিজাপুরের আর এক দ্রষ্টব্য। এর নির্মাণশৈলী ভারতে অনন্য করে তুলেছে একে। অসম্পূর্ণ এই মসজিদের দুটি চূড়া, পূর্বের তোরণও বারান্দা মোগল

সম্রাট ঔরঙ্গজেবের তৈরি। এর অর্ধবৃত্তাকার খিলানশ্রেণী খুবই সুন্দর। ২২৫০ ধর্মার্থী পৃথক পৃথক রুকে একসাথে নামাজ পড়তে পারেন। ব্যাপক চত্বর জুড়ে বাগিচা, জলাশয়, ফোয়ারা—পরিবেশ রমণীয়।

জোড়া মসজিদ: বাস স্ট্যান্ডের অদূরে আকারে ছোট গোলগম্বুজের মতো গোলাকার গম্বুজ তথা সমাধি। ঔরঙ্গজেবের সঙ্গে যুদ্ধে আলি আদিল শাহর জেনারেল খান মহম্মদ ও পুত্র খাওয়াস খানের বিশ্বাসহতার পরিণাম হয় মৃত্যু। আর যুদ্ধে জয়ের পর ঔরঙ্গজেবের ফরমানে তৈরি হয় এই সমাধি সৌধ। দক্ষিণে শায়িত রয়েছে পিতা ও পুত্র আর লাগোয়া উত্তরমুখী সমাধিটি খাওয়াসের গুরু আব্দুল রাজাক কাদরীর। মহিলাদের প্রবেশ নিষেধ সমাধিগৃহে।

আসার-ই-শরীফ: শহরের কেন্দ্রস্থলে ১৬৪৬এ মহম্মদ আদিল শাহর তৈরি ন্যায়বিচারের উচ্চ আদালত। সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত শরীফের উপরের ঘরগুলি ফ্রেস্কো চিত্রে সুশোভিত। নানান ভঙ্গিমায পুরুষ ও নারীর সাথে ফুল ও পত্র শোভিত। তবে আজ বিবর্ণ। ইসলাম ধর্মের প্রবর্তক মোহাম্মদের শাশ্রফ দুটি কেশ রক্ষিত ছিল এখানে। তবে, ১৭০০ খ্রিস্টাব্দে হজরতবালে (শ্রীনগর) স্থানান্তর ঘটে। মহিলাদের প্রবেশ মানা মূল শরীফে।

মালিক-ই-ময়দান: শরীফ তথা নগর-দুর্গের পশ্চিমে মালিক-ই-ময়দান। অর্থ তার সমতলের শাসক। ময়দানের মূল আকর্ষণ তার বৃহৎ আকারের কানাম। ১৫৪৯এ তাম্র-লৌহ-টিনের মিশ্রণে তুরস্কের মহম্মদ-বিন-হাসান রুমির হাতে আহম্মদনগরে তৈরি। আকার এর ৪.৪৫ মি লম্বা, ১.৫ মি ব্যাস; ওজন ৫৫ টন। আরবি ও পার্সি ভাষায় নানান কিছু লেখা। মুখটি হয়েছে সিংহ-র মাথার মতো। যুদ্ধজয়ের স্মারক রূপে আহম্মদনগর থেকে বিজাপুরে আসে। ১০টি হাতি, ৪০০ ষাঁড় আর শতাব্দিক শ্রমিকের শ্রমে কামানের এই স্থানান্তর। জনশ্রুতি, এটি ছুঁয়ে প্রার্থনা মাগলে নাকি পুরণ হয়।

বরাকামান: গান্ধী চকের অদূরে আলি আদিল শাহর জাঁকালো সমাধিটিও শহরের আর এক দ্রষ্টব্য। ১২টি ধনুকাকৃতি খিলানের অসম্পূর্ণ এই সমাধি সম্পূর্ণতা পেলে অনন্য রূপ পেত।

উপলি বুরুজ: আরও পশ্চিমে ৭০ ধাপ বেয়ে ২৪ মি উঁচু উপলি বুরুজ অর্থাৎ অবজারভেশন টাওয়ার অভিযান করে দেখে নেওয়া যেতে পারে শহর ও চারপাশ। আর আছে গোলা, বারুদ ও বন্দুক সেকালের। বন্দুকটির নল সঙ্কীর্ণ (29 cm) হলেও লম্বা ৯মি। ১৫৮৫ খ্রিস্টাব্দে এটি তৈরি করান হায়দর খান।

আর রয়েছে গভীর পরিখায় বেষ্টিত ৭ প্রবেশদ্বারওয়ালা নগর-দুর্গে রাজ পরিবারের মহিলাদের বাসের আনন্দমহল, ১৫৬১তে আলি আদিল শাহ ১ম-এর তৈরি দরবার হল—গগন মহল তথা প্রাসাদ; স্নেজার গার্ডেন—সবই আজ

বিধ্বস্ত। অদূরে শহর পর্যবেক্ষণের জন্য মহম্মদ আদিল শাহর তৈরি সাততলা প্রমোদ মহল সাত মঞ্জিলও বিধ্বস্ত। বিপরীতে বিজাপুরের অনন্য আকর্ষণ সেকালের শীতাতপ প্রথায় জলের মাঝে প্রাসাদ—জলামঞ্জিল; মন্টার প্রতিরূপ মন্কা মসজিদ; অতীতের জৈন মন্দির রূপান্তর হয়ে মসজিদ; চিনিমহল; ইন্দো-সেরাসেনিক শৈলীতে অনুপম ভাস্কর্যমণ্ডিত পাথরে গড়া মেহতার মহল অর্থাৎ মণ্ডপম; তাজ বাড়ি অর্থাৎ বেগম তাজ সুলতানের স্মারক—বিশাল দিঘি ছাড়াও বেশ কয়েকটি সুন্দর সাজানো বাগিচা আছে বিজাপুরে।



শহরের প্রাণকেন্দ্র গান্ধী চক্কর অদূরে বাস স্ট্যান্ড। আর রেল স্টেশন বাস না শহর থেকে ২ কিমি দূরে বিজাপুরে। বাসের বিপরীতে রাজকীয় বাড়িতে H Ladiha Mahal, ৩ 21641, SCB ৪৫ SAB ৬০-৮৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫-১৭৫ TCB ১৫০ TAB ২০০; পাশেই Hindusthan I, ডাইনে H Santosh, S ৬০-৮০ D ১০০-১৫০ T ১৭৫, তবে মান হারে দামে আধিক্য। বামহাতি ৫ মিনিটের পথে গান্ধী চক্ক—H Tourist, M G Rd-586101, SAB ৬৫-১২৫ DAB ১২০-২২৫; ডাইনে Mysore L, Main Rd, SCB ৪০ DCB ৮০ SAB ৬৫ DAB ১২৫; পাশেই H Midland, Dr Ambedkar Circle, SAB ৪৫-৮৫ DAB ১০০-১৫০; Himalaya L.

বাস ও রেল দুইয়ের মাঝ-দূরত্বে Station Rd—H Prasanth, SAB ১০০ DAB ১৭৫ TAB ২২৫; বিপরীতে H Samrat, R 1/1 B1, near Gol Gombuj, ৩ 21620, SAB ৬৫-১০০ DAB ১০০-১৭৫। অতি সাধারণ সাজে Ganesh L, Arogya Nivas ছাড়াও নানান হোটেল বিজাপুরে।

আর আছে রেল থেকে ১২; বাস থেকে ৫ কিমি ব্যবধানে স্টেশন রোড লাগোয়া KSTDC-র H Mayura Adil Shahi, Ananda Mahal Rd, Bijapur-586101, ৩ (08352) 20934, SAB ১৩০ DAB ১৫৫; বিপরীতে এদেরই Mayura Annexe, Sln Rd., ৩ 20401, A/c D ৪৪০; CH, PWD IB, Travellers Bungalow, রেলের রিটার্নিং রুম বিজাপুরে।

তবুও গাঁকার জন্য H Mayura Adil Shahi, H Tourist, H Samrat ভালই। আর নিরাশ্রিত আহাযের জন্য গান্ধীচক্রে H Tourist, আমিষেব জন্য ট্যুরিস্টের কাছে থিতলে Swapna দেখা যেতে পারে। Mayura Adil Shahi-রও সুনাম আছে আহায পরিষেবা। হোটেল সম্রাটের A/c-Non A/c Prabhu Restaurant-এর সুনাম ভেজ মিলে। একই বাড়ির President Bar & Restaurant-এর ননভেজ স্বাদে অতুলনীয়।

বাদামী

বিজাপুরের দক্ষিণে দ্বলি-গডগ-বিজাপুর-সোলাপুর মিটার গেজ রেলপথে দ্বলি থেকে ১২৭ কিমি দূরে বাদামী। প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৩২ ঘণ্টায় দিনে ছয়। আর ২৩১ কিমি দূরের সোলাপুর থেকে ব্রডগেজ রেল যাচ্ছে মুম্বাই ছাড়াও নানান দিকের। ব্যালানোর থেকে বাদামী আসছে ১৪ ঘণ্টায় ব্যালানোর-সোলাপুর এক্স। বাদামী থেকে সোলাপুরমুখী পথে বগলকোট ২৬, বিজাপুর ১১৬, হোটলী ২১০ কিমি দূরে। আবার দ্বলি-গুন্টাকল শাখায় দ্বলি থেকে ৫৯ কিমি দূরের গডগ পৌছেও চলা যেতে পারে

বাদামী। হাম্পী অর্থাৎ হসপেট থেকেও ৬ ঘণ্টায় গডগ হয়ে প্যাসেঞ্জার ট্রেন আসছে বাদামী। ৪ কিমি দূরের রেল স্টেশন থেকে মুম্বাই বাস/মিনি বাস যাচ্ছে শহর। টাঙাও মেলে রেল স্টেশন থেকে মন্দিরতীরে। পাট্টাডাকাল ও আইহোলের রেল সংযোগকারী স্টেশনও ৪৬ কিমি দূরের বাদামী বা ৫১ কিমি দূরের বগলকোট। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস আসছে বগলকোট থেকে বাদামী। আইহোলেরও বাস মেলে বগলকোট থেকে। বাদামী থেকে বাস যাচ্ছে ১ ঘণ্টায় পাট্টাডাকাল, ২ ঘণ্টায় আইহোল। আর যাচ্ছে বাস—৪ ঘণ্টায় বিজাপুর, হসপেট ১৬৭, দ্বলি, কোলহাপুর, ব্যালানোর ৫০২, গডগ ৭০ কিমি ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে বাদামী থেকে। নিকটতম বিমান ১৯২ কিমি দূরের বেলাগাঁও-এ।

তবে, সময় স্বল্পতায় বিজাপুর থেকে গাড়িতে ১ দিনের প্যাকেজে ২৮২ কিমি পরিক্রমায় দেশে ফেরা যায় বাদামী, আইহোল ও পাট্টাডাকাল। আবার বাদামীতে অবস্থান করে বাসে বাসে শ'খানেক কিমি পরিক্রমায় দু'দিনে সাস্র করা যায় ট্রায়ো দর্শন। উচিত হবে হাম্পী অর্থাৎ হসপেট থেকে ৯-৩০টার বাসে ঘণ্টা পাঁচেক বাদামী পৌছে গুণ্ডোত্তর যুগের (540-757AD) মন্দির ভাস্কর্য দেখে ট্রেন বা বাসে বিজাপুর চলা। তবে, পর্যটন মানচিত্রে কেন যেন অবহেলিত এই মন্দিররাজি।

রাষ্ট্রকূটদের হাতে পরাজিত হয়ে চালুকা রাজারা রাজধানী গড়ে ১৭৬.৭ মি উঁচু বাদামীতে। নামটি এসেছে তারও আগে অগস্ত্যের সহচর বাতাপী থেকে। ৬৪০এ পহুবরাজ নরসিংহ বর্মণের হাতে পরাজয়ের পর ভাস্কিতে রাজ্যপাট স্থানান্তরিত হয় চালুকাদের। পূর্ব পরাজয়ের প্রতিশোধ নিতে পহুবেরা ধ্বংস করে বাদামী দ্বিতীয় দফার জয়ে ৬৪০এ। তবে, ৬৫৩তে রাষ্ট্রকূটদের হাতিয়ে দখলের সাথে বাদামী নবরূপে রাজধানী হয় বিক্রমাদিত্যর কালে চালুকাদের। কালে কালে শাসক বদলায়—চালুকা (কল্যাণ গ্রুপ), কালচূরীয়া, যাদব (দেবগিরি), বিজয়নগর, বিজাপুরের আদিলশাহী, মারাঠা, ব্রিটিশ ও আসে একে একে। বদলায় ভৌগোলিক কাঠামো—বাদামী যায় ব্রিটিশ ভারতের মুম্বাই প্রেসিডেন্সিতে। পালাবদলের এই টলমটালে স্থিতি রেখে যান মন্দির গড়ে নানান রাজা বাদামীতে। এমনকি ৬৪২এ পহুবরাজ নরসিংহ বর্মণের গড়া পহুব অনুলিপিও দেখতে মেলে। আর রাজধানীর সৌন্দর্য বাড়াতে মন্দির গড়েন কীরীট বর্মণ ১ম (৫৬৭-৫৯৮)। দাদার পদাঙ্ক অনুসরণ করে ভাই মঙ্গালেশ (৫৯৮-৬১০) গড়েন লাল বেলেপাথরের অনুচ্চ এক পাহাড় কূঁড়ে বাদামীর মূল আকর্ষণ গুহামন্দির—৪টি তার কৃত্রিম, ১টি প্রকৃতিদত্ত।

বাদামী রেল স্টেশন থেকে ৫ আর শহর অর্থাৎ বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি দূরে পাহাড়ী ঢাল বেয়ে শ'দুয়েক সিঁড়ি চড়ে বাদামীর গুহামন্দির। মঙ্গালেশার তৈরি ৩টি ব্রাহ্মণ-ক্যাল—২টি তার বিষ্ণু ১টি শিবের নামে উৎসর্গিত; আর ১টি ৭ শতকের জৈন গুহা মন্দির। অজ্ঞতারই সমসাময়িক আর অজ্ঞতার প্রতিচ্ছবি এই মন্দির-ছাপত্য। ১ম গুহায় ৮১

মুদ্রায় ১৮ হাতের নৃত্যরত দেবতা নটরাজ শিব, দু'বাঘর গণেশ, মহিষাসুরমর্দিনী, অর্ধনারীশ্বর ছাড়াও দেবতা রয়েছেন নানান। সিলিংটিও কারুকার্যময়।

২য় গুহাটি বৈষ্ণবধর্মী। নানান অবতাররূপী বিষ্ণু, অনন্তশয়নে বিষ্ণু, শিব, ব্রহ্মা ছাড়াও অষ্ট দিকপালেরা মূর্ত হয়েছেন সিলিং-এ। ২ আর ৩-এর মাঝে প্রকৃতিদত্ত গুহা (৫ম গুহা)টি হয়তো-বা বৌদ্ধ। তবে, শুরুতেই পরিত্যক্ত হয়। আকর্ষণে উল্লেখ্য না হলেও শহরের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান গুহামন্দির থেকে।

৩য় গুহাটি শুধু আয়তনে নয় আকর্ষণেও বাদামীর অন্যতম। কারুকার্যময় গুহায় শিব ও বিষ্ণু দুইয়েরই সমাবেশ ঘটেছে। গুহাটি অলঙ্কৃতও। তবে, ফ্রেস্কো চিত্র আঙ্গ বিবর্ণ। ৪র্থ-টি জৈন গুহা। সুন্দর মূর্তি হয়েছে উপবিষ্ট ২৪তম তীর্থঙ্কর মহাবীরের। পঞ্চাবতী ও অন্যান্য জৈন তীর্থঙ্কররাও মূর্ত হয়েছেন ভাস্কর্যে।

এদেবই শিরে ২ আর ৩-এর মাঝ দিয়ে অসম উঁচু গায়ে সংকীর্ণ সিঁড়ি-পথ উঠেছে বাদামী দুর্গের। দুর্গের মূল আকর্ষণ সিঁড়ির কামান। তবে, একান্তই উচিত হবে দুর্গের সিঁড়ি-পথ পরিহাস করা।

গুহামন্দিরের পাদদেশে ৫ শতকের আগুণ্য-তীর্থ তথা লেক। প্রবাদ, মানে কুষ্ঠ রোগ নিরাময় হয়। লেকের অপর পাড়ে মহাকুটেশ্বর ও মালোগিটি শিবালয় দুটির গঠনশৈলীও অনবদ্য। সার্বকালের বেলায় লেকের পশ্চিমে ভূতনাথ মন্দিরের পরিবেশ মধুময় হয়ে ওঠে। ১৮ হাতের শিব রয়েছেন মন্দিরে। আর রয়েছে বরাহ, নৃসিংহ, গণেশ ও মহিষমর্দিনী দুর্গা। মন্দিরের ছোট্ট দেবকক্ষ, থামওয়াল হল, অলিন্দের সূক্ষ্ম কারুকার্যও নয়নাভিরাম। আর বিষ্ণু রয়েছেন অনন্ত-শয়নে আরও দক্ষিণে।

অতীত ভাস্কর্যের নানান নিদর্শন নিয়ে মিউজিয়ামও বসেছে গুহামন্দিরের বিপরীতে লেকের উত্তরে ভূতনাথ মন্দির রোডে। শুরু ছাড়া ৯—১৭-০০টা খোলা।

আর রয়েছে বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে অনুচ্চ এক পাহাড়ী টিলায় ফুলওয়ালীর তৈরি মালোগিটি শিবালয়। মন্দিরে উপাস্য দেবতা শিব। আর আছে শহর থেকে ৫ কিমি দূরে বনশঙ্করী মন্দির। সিংহারুচা, দশভুজা শতাব্দী-শাক্তরী দুর্গার সমন্বয়ে মন্দিরে দেবীমূর্তি। মন্দিরটিও ভাস্কর্যময়।



হোটেলও আছে নানান বাদামীতে। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে বাঁয়ে—H Mukambika L, SAB ১২৫, DAB ২০০; H Chalukya, DCB ১৫০; H Anand, SCB ৬০, SAB ৬০, DCB ১০০, DAB ১৫০। ডাইনে টাঙ্গা স্ট্যান্ডে—Sri Laxmi Vilas L, DCB ১০০। আর আছে H Saktar, মান ও দামে মধুর তৃপ্ত। KSTDC-র H Mayura Chalukya, Ramdurg Rd, Badami, ☎ (08357) 65046, RSB, SAB ১৬০, DAB ১৯০; বিপরীতে PWD IB, অব: EE, Badami. ভবুও থাকার জন্য মুকাবিকা বা হোটেল মধুর চান্দুকা; আর আশিষ আহার্যের জন্য মুকাবিকা লাগোয়া Kanchan বা বিপরীতে Sunnar H ভালই। নিরাশিষ আহার্যে টাঙ্গা স্ট্যান্ডে

Sri Raghavendra Bhavan, Shri Laxmi Vilas H, H Brindavan যথেষ্ট খ্যাত।

পাট্টাডাকাল

বাদামী থেকে ২৯ কিমি দূরে বাদামী-আইহোল পথে ১৭৬.৬ মি উঁচুতে পাট্টাডাকাল। চালুক্যরাজদের দ্বিতীয় রাজধানী তথা রাজ্যাভিষেকের শহর পাট্টাডাকাল বা অতীতের রক্তপুর আজ নিছক এক গাঁ। বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া পাট্টাডাকালে ১০টি মন্দির নিয়ে গড়ে উঠেছে মন্দির কমপ্লেক্স। নিচ দিয়ে বয়ে চলেছে কৃষ্ণর শাখা উত্তরবাহিনী মালপ্রভা নদী। চালুক্যরাজ বিক্রমাদিত্য ২য় (৭৩৪-৭৪৫) ও তার শিল্পপ্রেমিক দুই রানীর ইচ্ছায় কাঞ্চি থেকে স্থপতি এনে গড়ে তোলা হয় এই মন্দিররাজি। দেবতা শিব পাট্টাডাকালের মন্দিরে। তবে, তারও আগে মন্দির হয়েছে ইলোরার কৈলাসের প্রতিচ্ছবি পাপানাত (৬৮০) কমপ্লেক্স লাগোয়া বসতির পেছনে। রামায়ণ ও মহাভারতের আখ্যান মূর্ত হয়েছে দেওয়ালময়। পিলারে মানব-মানবী আর সিলিং-এ শিব-পার্বতী-বিষ্ণু ছাড়াও নানান দেব-দেবী মূর্ত হয়েছেন।

দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে তৈরি বিরূপাক্ষ (৭৪০), পাশেই মল্লিকার্জুন—মন্দির দুটি কমপ্লেক্সের মধ্যে উল্লেখ্য। সুন্দর ভাস্কর্যমণ্ডিত বিরূপাক্ষে রামায়ণ ও মহাভারতের কাহিনী উৎকীর্ণ হয়েছে। ১৬টি মনোনিখি পিলারে ভর করে হল। পিলারগুলিতে তদানীন্তন সমাজ জীবন রূপ পেয়েছে। সর্ব-বৃহৎ এই বিরূপাক্ষ পত্তনবদের সঙ্গে যুদ্ধ জয়ের স্মারকরূপে কাঞ্চি থেকে স্থপতি এনে রানী লোকমহাদেবীর তৈরি—নামও ছিল সেকালে এর লোকেশ্বর। বিপরীতে শিবের বাহন নন্দী। লাগোয়া মল্লিকার্জুন মন্দির। এটি রানী ত্রৈলোক্য-মহাদেবীর তৈরি। আয়তনে ছোট হলেও স্থাপত্যে ও ভাস্কর্যে বিরূপাক্ষেরই তুল্য। মল্লিকার্জুনের পিলারে ভাগবত গীতা অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ-আখ্যান উৎকীর্ণ হয়েছে। আর সিলিং-এ গজলক্ষ্মী, শিব ও পার্বতী—মূর্ত হয়েছেন মহিষা-সুরমর্দিনীও মল্লিকার্জুনে।

ভাস্কর্যে উল্লেখ্য না হলেও চত্বরের প্রাচীনতম সজ্জমেশ্বর মন্দিরটিও দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে রূপ পেয়েছে। তৈরি এটি রাজা বিজয়াদিত্য (৬৯৬-৭৩০ খ্রি.)-র হাতে। আর অসম্পূর্ণ হলেও গলাগনাথ মন্দিরে অভিনবত্ব আছে। সুন্দর ভাস্কর্যময় জয়লিঙ্গ ও কাদা সিদ্ধেশ্বর মন্দির দুটি উত্তর-ভারতীয় নাগারা শৈলীতে রূপ পেয়েছে। আর আয়তন ও আকর্ষণ দুইই কম কাশী বিবেশ্বর ও চন্দ্রেশ্বর মন্দিরদ্বয়ের।

কমপ্লেক্স থেকে বাদামীমুখী ২ কিমি যেতে ডাইনে জৈন মন্দির। দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে ৯ শতকের রূপ পেয়েছে। অভিনবত্ব আছে এর পাথরের হাতি দুটিতে।

পাট্টাডাকালে থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই। সোকানপাটেরও অভাব। তাই উচিত হবে বাদামী থেকে বাসে বাসে ঘেঁষিয়ে নেওয়া। বাসও যাবে দিনভর। ১২ ঘণ্টার পূর্ণ, দুপুর ২৯ কিমি। বটা দুয়েকে দেখেও নেওয়া যায় পাট্টাডাকালের মন্দিররাজি।

আইহোল

পাট্টাডাকাল থেকে ১৭, বাসামী থেকে ৪৬ কিমি দূরে ৫৯৩ মি উঁচুতে আইহোল। বগলকোটের দূরত্ব ৪৩, বিজাপুর ১২৯, হাস্মী ১৪৬, ব্যাঙ্গালোর ৪৮৩ কিমি।

৪—৭ শতকে চালুক্যরাজদের রাজধানী ছিল আইহোল। তবে, আজ ছোট্ট এক গণ্ড গ্রাম। বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে ১ কিমি ব্যাসার্ধের মধ্যে ছড়িয়ে আছে ১২৫টি মন্দির আইহোলে। ত্রয়ীর মাঝে আইহোলের মন্দির স্থাপত্যও উঁচু মানের। তবে, পাট্টাডাকাল সবুজে লালিত। পাট্টাডাকাল-আইহোল পথে পড়ে কৃষ্ণ-মালপ্রভা-ঘটিপ্রভার সঙ্গম—কুদালা সঙ্গম। সাধক বাসবেশ্বরের বাস ছিল অতীতে। জনশ্রুতি, বাসবেশ্বরের সাধনায় তুষ্ট হয়ে শিব দর্শন দেন সাধককে। স্মারকরূপে নদীর মাঝে সুউচ্চ ধরনের মন্দির।

৫০০ থেকে ৭০০ খ্রিস্টাব্দে চালুক্যরাজদের কালে তৈরি মন্দিরে ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর অর্থাৎ হিন্দুর দেবদেবীর সমাবেশ ঘটেছে। মুখ্যত—Huchimalli, Chikki, Ambiger, Durga, Gaudar-Ladkhan-Surjyanarayan Complex, Chakraguri-Badiger, Rachi, Kunti Complex, Charanti Math Complex, Tryambukeswara Group, Gauri; গ্রীষ্মের অন্দরে Jaina, Mallikarjuna Complex, Meguti, Jaina, Jyotirlinga Group, Rock Cut Cave, Hoc-chappayya, Galagnatha Complex, Ramalinga Temple Groups দেখেও সন্তুষ্ট করা যেতে পারে আইহোল দর্শন। সেক্ষেত্রে একরাত অবস্থান করা দরকার হয়ে পড়ে আইহোলে। তবে, তালিকাকে সংক্ষিপ্ত করে ঘট্টা তিন-চারে দেখে সারা যেতে পারে আইহোলের মন্দির।

বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া লাডখান মন্দিরটি দ্রাবিড়ীয় ও চালুকা স্থাপত্যে রূপ পেয়েছে। জানালার জাফিরির কাজ সুন্দর। পঞ্চায়েত হলধর্মী প্রাচীনতম (450AD) লাডখান মন্দিরে দেবতা শিব, সঙ্গী তার বাহন নন্দী। লাডখান নামটি এসেছে উত্তরকালের মুসলিম শাসক লাডখান থেকে। কিছুকাল বাসও করেন লাডখান এই মন্দিরে। লাডখানের উত্তর-পূর্বে সূর্যনারায়ণ মন্দিরে দেবতা সূর্য—সঙ্গী তার উষা ও সন্ধ্যা।

ভারতে অনন্য চক্রাকার দুর্গগুড়ি অর্থাৎ দুর্গের কাছে মন্দির হয়েছে দেবতা বিষ্ণুর। বৌদ্ধ চৈতোর অনুকরণে হিন্দু শিল্প প্রতিফলিত চক্রাকার মন্দিরটিও কারুকার্যময়। দক্ষিণী ঢঙে গোপুরম হয়েছে। প্যান্ডানে রামায়ণ ও মহাভারতের আখ্যান মূর্ত হয়েছে। আর আছেন দেবতা—শিব, নৃসিংহ অবতার, বরাহ, মহিষাসুরমর্দিনী দুর্গা ছাড়াও নানান। আইহোলের অন্যতম আকর্ষণও এই দুর্গগুড়ি।

মিউজিয়ামও হয়েছে দুর্গা মন্দিরের বিপরীতে আইহোলের নানান ভাস্কর্যের নিদর্শন নিয়ে। ছোট্ট ছাড়া ১০—১৭-০০টা খোলা।

বসতি পেরিয়ে আরও উত্তরে টুরিস্ট হোমের ডাইনে

হুচিমাল্লী মন্দির। প্রাচীনকালের এই মন্দিরে বিরাটাকার গোখুরার উপর দেবতা বিষ্ণু। শিব আর নন্দীও রয়েছে মন্দিরে। আর রয়েছে দেবতা ব্রহ্মা মরাল চড়ে সিলিং-এ। হুচিমাল্লীর দক্ষিণ-পূর্বে পাহাড় কেটে তৈরি ৬ শতকের রাবণফদী গুহামন্দিরে নানান ভঙ্গিমায় দেবতা শিব, মহিষা-সুরমর্দিনী, সপ্তমাতৃকা, গণেশ ছাড়াও নানান। সিলিং-ও কারুকার্যময়।

গুহা মন্দিরের বিপরীতে পাহাড়ী টিলায় দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে পূলকেশী দ্বিতীয়র মন্ত্রী রবিকীর্তির তৈরি অসম্পূর্ণ মেঘুতি (634AD) আংশিক বিধ্বস্ত হলেও কারুকার্য বিশেষভাবে উল্লেখ্য। একই পাহাড়ের উপরে বৌদ্ধ আর নিচুতে জৈন গুহামন্দির। সাধাসিধে বৌদ্ধ মন্দিরের সিলিং-এ দেবতা বুদ্ধের মাথা থেকে উদগত হয়েছে বোধিবৃক্ষ। আর জৈন মন্দিরে মূর্তি হয়েছে ধ্যানস্থ মহাবীরের। মেঘুতি থেকে আইহোলের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান।

বাস স্ট্যান্ডে টোকর মুখে বাজার লাগোয়া ৫ শতকের মন্দিররাজি কুস্তি। মন্দিরের ভাস্কর্য সুন্দর। পয়সা বসার ব্রহ্মা-মূর্তিটি অতুলনীয়। উমা-মহেশ্বরের ঠোট দুটিও সঙ্গী হয়ে উঠেছে। সিলিং-এ হলান দেওয়া বিষ্ণু মূর্তিতেও অতিনব্ব আছে। আজও দশেরা উৎসব পালিত হয় কুস্তিতে।

থাকার জন্য কর্ণাটক টুরিজমের সাধারণ মানের ১০ ঘরের Aihole Tourist Home আছে, আহরও মেলে অর্ডারে; PWD-র IBও আছে পাট্টাডাকালে।

তবে, উচিত হবে বাদামী থেকে ৬-০০, ৮-১৫, ১৪-৪৫র বাসে এসে আইহোলে বেড়িয়ে ১৩-০০টার বাসে পাট্টাডাকাল গিয়ে পাট্টাডাকাল দেখে ১৬-০০টার বাসে বাদামী ফিরে অবস্থান করা। এছাড়াও বাস আসছে ৭-১৫ ও ১৯-৩০টায় আইহোল থেকে বাদামীর। আর পাট্টাডাকাল থেকে ঘট্টায় ঘট্টায় বাস মেলে বাদামীর। মিনিবাসও মেলে পাট্টাডাকাল থেকে বাদামীর। ট্যাক্সি মেলে শ'পাঁচেক টাকায় ত্রয়ী দর্শনে বাদামীতে। আহাৰ্যও সঙ্গী করা উচিত দিনভর প্রোগ্রামে বাদামী থেকে। আবার হবলি/বাদামী-বগলকোট/বিজাপুর/সোলাপুর রেলের বগলকোটে অবস্থান করেও ট্যাক্সি, রেল বা বাসে আইহোল-পাট্টাডাকাল-বাদামী বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। গ্রীষ্মে ৪১ থেকে ২৮° আর শীতে ৩১ থেকে ২০° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান।

বেলগাঁও

আইহোল থেকে বাসে চলুন বেলগাঁও। বাস আসছে রাজা ও প্রতিবেশী রাজ্যের নির্দিষ্টক থেকেও বেলগাঁও-এ। রেল আসছে ৬১২ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোর থেকে হবলি/লোণা জং হয়ে মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর ব্রডগেজ রেলে মিরাজ ও লোণার মাঝের বেলগাঁও-এ। মুম্বাই-পুনে-গোয়া সড়কও যাচ্ছে বেলগাঁও হয়ে। আর IAC-র বোয়িং ২৪৬ দিন সার্ভিস গড়েছে মুম্বাই থেকে বেলগাঁও-এর। ১২—১৩ শতকের রাজধানী শহর বেলগাঁও-এ আজ বেলগাঁও জেলার সদর দপ্তর বসেছে। গোয়াও মুম্বাইর পথে কর্ণাটকের গেটওয়ে তথা বাণিজ্যিক শহর বেলগাঁও। বাস

KARNATAKA

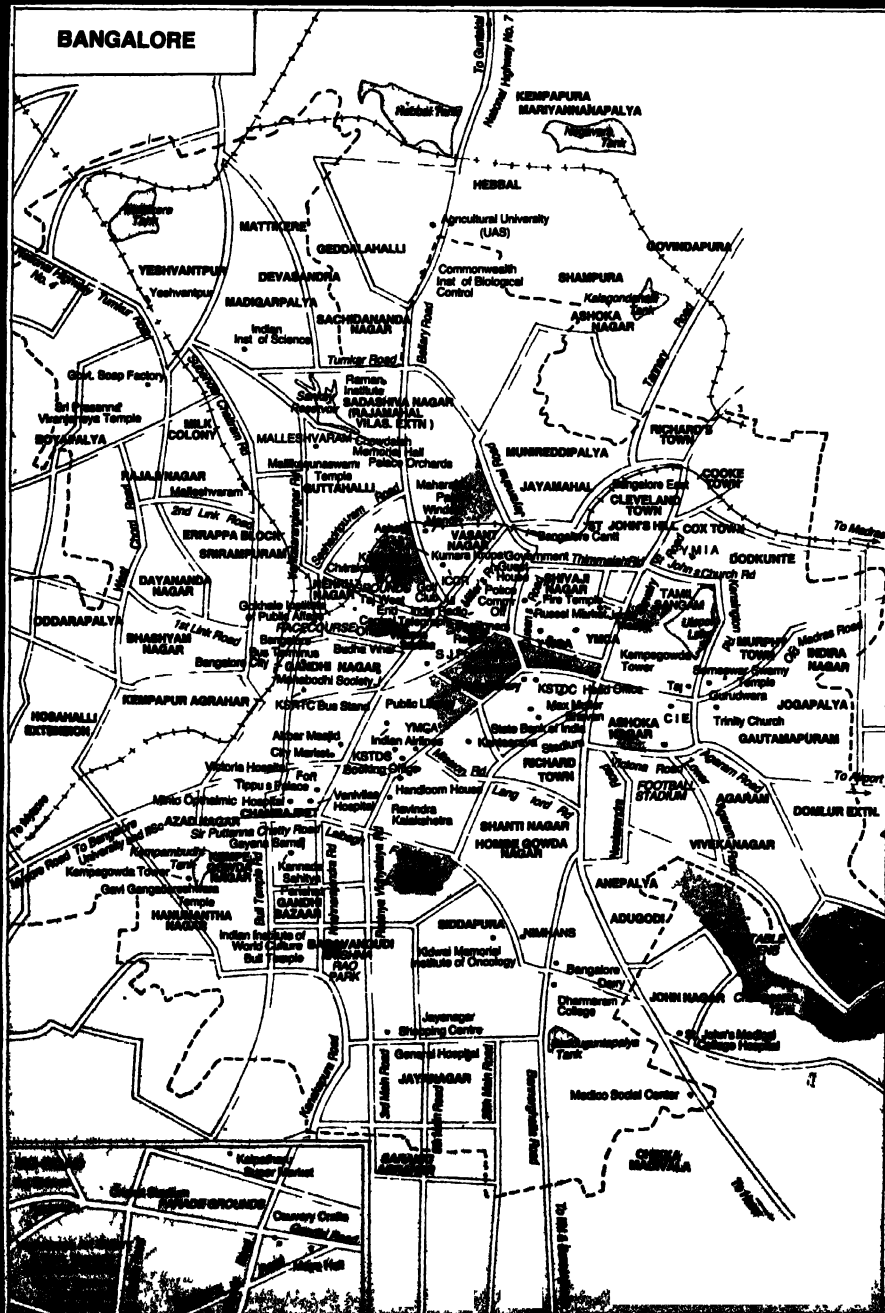
MAHARASHTRA

ANDHRA PRADESH

TAMILNADU



BANGALORE



স্ট্যান্ডের কাছে ডিম্বাকার পাথুরে দুর্গ ছাড়াও সানসেট পয়েন্ট থেকে সূর্যাস্তের দৃশ্যের জন্য বেলগাঁও-এর প্রশস্তি। আর আছে ১৫১৯এর সাতা মন্ড, ২টি জৈন মন্দির, ওয়াচ টাওয়ার, ক্যান্টনমেন্ট নগরী বেলগাঁও-এ।

তবুও, বেলগাঁও পর্যটকদের কাছে ঘাটপ্রভা নদীর জলপ্রপাতের আকর্ষণ অন্যতম। ঘাটপ্রভা অতি নির্দয়ভাবে হঠাৎ-ই ৫২ মি নিচুতে আছড়ে পড়ছে। অতীব নয়ন মনোহর জলপ্রপাতের এই পতন দৃশ্য। নর্দার্ন-মহীশুর নামেও প্রসিদ্ধি আছে গোকক জলপ্রপাতের। বেলগাঁও থেকে ৫৩ কিমি মিরাজমুখী যেতে গোকক রোড, আরও ৮কিমি পেরিয়ে ঘাটপ্রভা স্টেশন গিয়ে এই গোকক জলপ্রপাত।



থাকারও নানান ব্যবস্থা Belgaum-590001, STD 0831-এ—H Milan, Club Rd-1, ☎ 425555. S ১৭৫ D ২৫০ স্যুইট ৩০০-৪৫২ A/c S ৩০০ D ৪৫০-৬০০ স্যুইট ৮২; H Sheetal, Khade Bz; বাস থেকে ডাইনে ২০ মিনিটের পথে H Tapuam; রেলের রিটায়ারিং রুম; আর জলপ্রপাতের কাছে রেন্ট হাউস আছে। আর আছে KSTDC-র H Mayura Malaprabha, Ashoknagar, HUDCO Colony, ☎ 433781, SAB ১৬০ DAB ১৯০ ডর্মি বেড ৪০।

সৌন্দর্য

কর্ণাটকের বেলগাঁও জেলায় ধারওয়ার থেকে ৩৮, হবলি থেকে ৫৮, বেলগাঁও-এর ১১২ কিমি দূরে সিদ্ধাচল মতান্তরে রামগিরি পাহাড়ের পাদদেশে মালপ্রভা নদীর তীরে রমণীয় পরিবেশে বরণীয় তীর্থ সৌন্দর্য। পশ্চিম ভারতে খুবই জাগ্রত এই দেবতা। দূর-দূরান্ত থেকে যাত্রী আসেন শত-সহস্র। দেবীপক্ষে, নবরাত্রি, মাঘী পূর্ণিমার উৎসবে সারা পশ্চিম ভারত থেকে ভক্তের দল আসেন দেবী দর্শনে। মন্দিরের আর এক আকর্ষণ দেবদাসী অর্থাৎ দেবতার সঙ্গে বিবাহ। অধিক পুণ্যের লোভে অতীতকাল থেকে কুমারী মেয়েদের সঁপে দেন দেবতার নামে পিতামাতা।

বাস থেকে অদূরে পাহাড়চুড়োয় ছোট্ট মন্দিরে সৌন্দর্যের দেবী ইয়েলাস্মার অধিষ্ঠান। জনশ্রুতি, বিষ্ণুচক্র খণ্ডিত দেবীর অঙ্গ পড়ে এখানে। বয়ে চলেছে মালপ্রভা নদী, অপর-দিকে ধু ধু করছে মরুভূমিসম বালপ্রান্তর। থরে থরে পাহাড়-শ্রেণী প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। তার পেছনে রঙবেরঙের পাথরের সিদ্ধাচল পর্বত।

পর্বতের নিচুতে যোগড়বামি সত্যাম্মা কুণ্ডে স্নানান্তে নববস্ত্রে সত্যাম্মা মন্দির পরিক্রমা সেরে সৌন্দর্য মন্দিরে চলার প্রথা। স্নানেও নানান রীতি, পাশাঙ্গের মতো হিজড়ারা রয়েছেন স্নান ও পূজার জন্য। নমসেহে আবালবৃদ্ধবনিতা স্নান করছেন কুণ্ডের জলে। স্নানের পর নিশান্মা অর্থাৎ নিমপাতা মুখে নিয়ে দুলাকি চালে নাচের তালে তালে সত্যাম্মা মন্দির পরিক্রমা।

সবশেষে পাহাড় চড়ে সৌন্দর্য দর্শন। চাঙাও মেলে এই

পাহাড়ী পথে। আবার পায় পায়ও চলা যেতে পারে সৌন্দর্য মন্দিরে। ছোট্ট মন্দির—বহু প্রাচীনও বটে। যাদব রাজাদের হাতে সংস্কার হয় মন্দির। চুড়োর স্বর্ণকলস। মন্দিরের পেছনে কুঙ্কুম, যোনিও অরিষণ—তিন কুণ্ডে স্নান সেরে পূজা দেওয়ার বিধি। বিশেষ করে যোনি কুণ্ডের জল অতি পবিত্র—বিক্রিও হচ্ছে শিশিতে। কর্ণাটকের ভয়ঙ্করী এই দেবী ইয়েলাস্মা হচ্ছেন পরশুরামের জননী বৈষ্ণাক্ষা। পাশেই পরশুরামের তপোভূমি—পরশুরামক্ষেত্র।

থাকার জন্য নানান ধরমশালা আছে মন্দিরতীরে। বাসও আসছে সারা পশ্চিম থেকে সৌন্দর্য তীর্থে।

ধারওয়ার

বেলগাঁও থেকে ১১২ কিমি দক্ষিণে আর হবলির ৭৮ কিমি উত্তরে বেলগাঁও-হবলি রেলপথে ধারওয়ার স্টেশন। রেলও বাস দুইই যাচ্ছে বেলগাঁও ও হবলি থেকে। পর্যটকদের কাছে আকর্ষণীয় না হলেও কর্ণাটক বিশ্ববিদ্যালয় বসেছে ধারওয়ারে। ধারওয়ারের কাছে সোমেশ্বর পাহাড়ে শাসনান নদীর উৎসও দেখে নেওয়া যায়। তেমনই অত্যাশ্চর্য পাহাড়া ধারওয়ার জেলায় ১১৯ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত Ranebennur Blackbuck Sanctuaryটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন যে থেকে জানুয়ারি মাসে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে স্যাক্সুয়ারির রেন্ট হাউসে।

মাদিকেরী/মারকারা

স্কটল্যান্ড অব ইন্ডিয়া অর্থাৎ অতীতের মারকারা আজ হয়েছে মাদিকেরী। রবার, কফি আর কোকো গাছের গা বাঁচিয়ে NH-48 চলেছে ম্যাঙ্গালোর থেকে মহীশুর। পথেই পড়ে মারকারা। বাসও চলেছে মুহূর্তে—১৪ কিমি দূরের মহীশুর (৩ ঘ) ও ১৩৪ কিমি দূরের ম্যাঙ্গালোর (৩½ ঘ) থেকে। ম্যাঙ্গালোর-মহীশুর বাসও যাচ্ছে মারকারা হয়ে। বাস যাচ্ছে ৬ ঘন্টার ম্যাঙ্গালোর (১০টি), হাসান, বেলুড, চিকমাগালুর, আরসিকেরে, শিমোগা ছাড়াও রাজ্যের দিকে দিকে মারকারা থেকে। নিকটতম রেল মহীশুর আর বিমান ম্যাঙ্গালোরে।

পশ্চিমঘাট পর্বতের ঢালে পাহাড়ী বনাঞ্চলে ঘেরা অতীতের ছোট্ট শাধীন রাষ্ট্র কুর্ণ। ১৯৫৬য় কর্ণাটকের অঙ্গীভূত হতে আজ জেলায় রূপ পেয়েছে। জেলাসদর বসেছে ১৫২৫ মি উঁচু মারকারায়। বৈচিত্র্যে ভরা জেলা। পশ্চিম-ঘাটও সাগরমুখী হয়েছে মাথানত করে মারকারায়। ছড়িয়ে-ছিটিয়ে নানান শৈল শিরায় শহর। যেমন এর চিরহরিৎ অরণ্যের নৈসর্গিক শোভা—কুয়াশায় ঢাকা নীলচে পাহাড়—নাতিশীতোষ্ণ আবহাওয়া, তেমনই আকর্ষণ করে এর মানুষজন। কোড়াবা সম্প্রদায়ের বাস, ভাবা এদের প্রাদেশিক অপভ্রংশমিশ্রিত কানারী। যোদ্ধার জাত, জ্যাতিভিমানী আর অতিথিবৎসল এরা। আপন স্বকীয়তায় সমৃদ্ধ কুর্ণারা।

সাক্ষরের হারও বেশি কুর্গে। আম-কাঁঠাল-কলায় ছাওয়া; কফি, কমলা, পাকা ধানের সোনালী সাজ মোহময় করে তোলে কুর্গকে। সঙ্গীও করা যায় কফি, মধু, বড় এলাচ, দারুচিনি মাদিকেরী থেকে।

বাস স্ট্যাণ্ডে চুকতেই মারকারার ১৯ শতকের দুর্গে আজ মিউনিসিপ্যাল অফিস বসেছে। পাহাড়চূড়ার এই দুর্গ থেকে শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। মিউজিয়মও বসেছে দুর্গের চার্টে। ১৭৮১তে টিপূর হাতে সংস্কার হয় দুর্গ। নাম হয় সেই থেকে জাকরাবাদ। আর আছে মহীশূরমুখী ১ কিমি দূরে গথিক ও মুসলিম স্থাপত্যে ১৮২০এ লিঙ্গরাজ্যর তৈরি ওজারেশ্বর মন্দির। শহরের অন্যপ্রান্তে রাজ্যের সমাধি। তেমনই আদর্শীয় রাজাস সীট। অতীতে রাজারা আসতেন পাহাড়চূড়ার রাজাস সীট থেকে সূর্যাস্তে ও সূর্যোদয়ে উপত্যকার সৌন্দর্য উপভোগে।

তবুও মারকারার মূল আকর্ষণ কোডাও পর্বতমালায় কাবেরী নদীর উৎস *তাল (পুকুর)* বা থালা কাবেরী। বাস যাচ্ছে ৩২ কিমি দূরের ভাগামান্দালা। মন্দিরও আছে ত্রিবেণী সঙ্গমে ভাগামান্দালায়। ভাগামান্দালার আর এক আকর্ষণ তার মধু। তবুও ৮ কিমি দূরের থালা কাবেরীর সংযোগকারী রপে ভাগামান্দালা অধিক পরিচিত। সরাসরি বাসের অমিলে মারকারা থেকে বাসে ভাগামান্দালা পৌঁছে বাস/জিপ/ট্যাক্সিতে চলা যেতে পারে থালা কাবেরী। ১৫×২ হাতের ছোট এক কুণ্ড—জলতার নিখর-নিষ্পন্দ। বিববন্তী, অগস্ত্য মুনির কমণ্ডলু এই কুণ্ড। ইন্দ্রের ইচ্ছায় কাকরূপে গণেশ এসে মুনির ধ্যানকালে উন্টে দেয় কমণ্ডলু। আর কমণ্ডলু উন্টে যেতে বেরিয়ে আসে শিবের জটা থেকে আনা কাবেরী। ধ্রুমেত ব্রহ্মার কন্যা লোপামুদ্রা কাবেরীর খবির হাতে লালিতা—নাম হয় তার কাবেরী। বিয়ে হয় কন্যার অগস্ত্যমুনির সাথে। মুনির উপর অভিমান ভরে জল রূপ নিয়ে বাস করছেন কন্যা কুণ্ডের জলে আজও। তবে, অক্টোবরের ১৭ই কন্যার উপস্থিতি ঘটে, বৃন্দবৃন্দ খেলে কুণ্ডের জলে; পূজা হয় মহাসমারোহে। লাগোরা বড় কুণ্ডের জলে নাম পূণ্য হয়। মন্দিরও আছে কাবেরীর। আর আছে ৩৬৫ সিঁড়ির ব্রহ্মগিরি পাহাড়। বৈচিত্র্যময় ব্রহ্মগিরি থেকে চারপাশ দেখে নেওয়া যায়। মহাভারতের পাণ্ডবদের বাস ব্রহ্মগিরি পাহাড়ে।



বাস থেকে ২০ মিনিটের পথে টাউন হল—এর পিছে রাজাস সীট ছাড়িয়ে সর্বোচ্চ সুন্দর প্রকৃতির মাঝে সেক্টর ১৬ থেকে জুন ১৪য় থাকার জন্য মনোরম KSTDC-র *H Mayura Valley View, Rajaseats, Madikeri-571201*, ☎ (08272) 28387, S ৩০০ D ৪০০, Suite ৫০০; অব: Manager বা KSTDC, 10/4 Kasturba Rd, Bangalore-560 001. আর আছে বাস স্ট্যান্ডের সন্নিবিষ্ট—*H Canvry*, ☎ 26292, S ৮৫ D ১৫০; *Anchorage G H*, D ১০০-১৭৫; *H Tourist, Sri Vinayaka L, Sunanda L, Chitra L, Goss GH, IB, RH* মারকারায়। জুন ১৫—সেক্টর ১৫ অফ সিজন, রিবেটও মেলে মারকারার হোটেল। তবে, থাকার

দরকার হয় না—মহীশূর বা ম্যালালোর থেকে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায় মারকারায়। Tourist Office বসেছে PWD-র বাংলাদেশ মারকারায়।

নাগারহোল জাতীয় উদ্যান

মহীশূররাজ্যের অতীতের মৃগয়াভূমি ১৯৫৫য় হয়েছে জাতীয় উদ্যান। ১৯৭৪এ কবিনী নদীর বাঁধটি সীমারেখা টেনেছে কবিনীপুর ও নাগারহোলের মাঝে। দু'য়ের মাঝে বাঁধে সৃষ্ট লেক। বন্য হাতি, মহিষ, প্যাছার, বহিসন, শম্বর, শিয়াল, ঢোল অর্থাৎ বন্য কুকুর, বিভিন্ন প্রজাতির অন্তর্নতি হরিণ, এমনকি বাঘও দেখতে মেলে কুর্গ ও মহীশূর জেলায় ৭৮০মি উঁচুতে ৫৭১.৪৫ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত নাগারহোল জাতীয় উদ্যানে। বয়ে চলেছে *নাগার (সর্প) হোল (নদী)* অর্থাৎ সর্পিলা নদী কবিনী। শ'আড়াই প্রজাতির স্তন্যপায়ীর সঙ্গে সর্পীসূপ ও পক্ষিকুলও সহাবস্থান করছে কফির দেশ নাগারহোলে। ১৯৯২এর সংঘাতও প্রশমিত হয়েছে। তবে, অনুপ্রবেশ-কারীদের বৃক্ষ কেটে জঙ্গল ধ্বংসের সাথে অরণ্যচরও লোপ পাচ্ছে নাগারহোলে। জন্তু দেখার উপযুক্ত সময় অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। শীতের স্থায়িত্ব কম। বৃষ্টির আধিক্যে সবুজের সমারোহ বেশি। জলবায়ু নাতিশীতোষ্ণ। ৬—৯-০০ ও ১৬—১৮-৩০টায় জিপ ও মিনিবাস যাচ্ছে ২ ঘণ্টার উদ্যান সফরে। হাতিও যাচ্ছে বিহারে। বাস আসছে ৬৭ কিমি দূরের মহীশূর ও ৯১ কিমি দূরের মারকারা থেকে নাগারহোলে। ২টি পৃথকভাগে ট্যুরিস্ট জোন গড়ে উঠেছে জাতীয় উদ্যানে—নাগারহোল ও কারাপুরায়। পথও পৃথক এদের—নাগারহোল যাচ্ছে মুরকেল হয়ে, কারাপুরার অবস্থান মহীশূর-মানানথাবাড়ি সড়কে। বাসও যাচ্ছে দিনে এক মহীশূর থেকে ঘণ্টা চারেক নাগারহোলে। আর হচ্ছে মুরকেল ট্যুরিস্ট জোন নতুন করে। ৬ কিমি দূরে অ্যাবে জলপ্রপাত—২টি ভাঁজে খারা নামছেন নদীর। নয়নাভিরাম সে দৃশ্য। পথেই পড়ে ইরুপু—কবিনী নদী প্রপাত গড়েছে। সেও আর এক দর্শন।

থাকার জন্য কারাপুরায় পাশ্চাত্য প্রধায় *কবিনী রিডার লজ* আর নাগারহোলে অরণ্যের মাঝখানে ভারতীয় প্রধায় *পদোদী, কাবেরী কনস্ট লজ* আছে। অবস্থান এদের ৫০ গজের ব্যবধানে। আহার মেলে ক্যান্টিনে। আর আছে ৪টি *Forest RH* অরণ্যঘরে। ৬ কিমি অরণ্য অঙ্গরে *Karapur Tented Camp*. পদোদীর বৃকিং—*Dy Conservator of Forest, Wildlife Division, Hunsur*, ☎ (08332) 52041. কাবেরীর বৃকিং—*Chief Wildlife Warden, Karnataka Forest Department, Aranya Bhawan, Malleswaram, Bangalore-560003*, ☎ 3341993. কবিনীর বৃকিং—*Jungle Lodges & Resorts Ltd, Govt of Karnataka Tourism Venture, Shrungar Shopping Centre, 2nd floor, M G Rd, Bangalore-560001*, ☎ 5597025.

মহীশূর থেকে ১১৪ কিমি দক্ষিণ-পূবে মহীশূর জেলায় ৫০৯১ হু উচ্চে বিকিগিরিলক্ষ বৌদ্ধ পাহাড়ী শহর। পাহাড় চূড়ার

বিলিগিরিরস্বামীর মন্দির। তেমনি হয়েছে পাহাড় ৫৪০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত Biligirirangaswami Sanctuary. অক্টোবর থেকে মে মাসে গৌর, চিতল, শব্বর, হাতি, বাঘ দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। Deluxe Tent Camp ও Rest House আছে স্যাফুয়ারিতে।

ম্যাঙ্গালোর

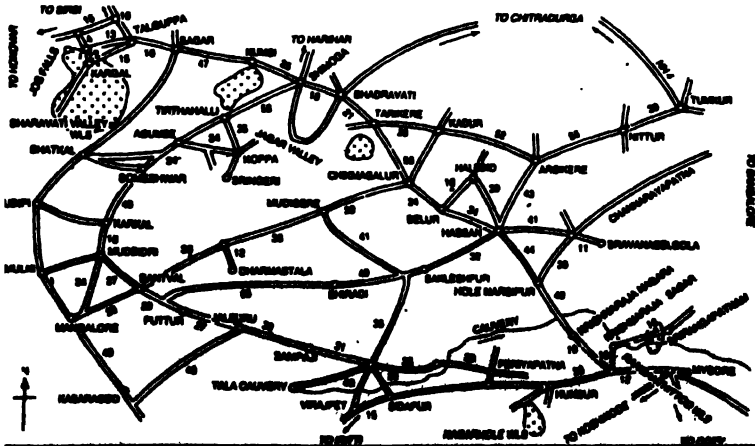
নেত্রবতী ও গুরুপুর নদীর সঙ্গমে আরব সাগরের বুকে বন্দর নগরী ম্যাঙ্গালোর। বাসেই চলুন মারকারা থেকে ম্যাঙ্গালোর, ঘণ্টা চারেকের পথ। পথশোভাও তুণ্ড করে পর্যটকদের। সাড়ে চার লাখ লোকের বাস শহরে। লাল টালিতে ছাওয়া বাংলাোধর্মী বাড়িগুলিও সৌন্দর্য বাড়িয়েছে কানাড়ার দক্ষিণ জুড়ে। লাগোয়া বাগিচা প্রতিটি বাড়িতে। যদিও কর্ণাটকের বন্দর নগরী, তবে কেরলের প্রকৃতির সঙ্গে সামঞ্জস্য মেলে। সেই ব্যাক-ওয়াটার অর্থাৎ জমানো জল, শীত ও গ্রীষ্ম দুইয়েরই আধিক্য কম, ক্যাথলিক ধর্মের প্রভাব—সব মিলিয়ে কেরলের প্রতিচ্ছবি ফুটে ওঠে ম্যাঙ্গালোরে। অভিনব মেলো প্রত্নাধি—মসজিদের ময়াজিনের সাথে চার্চ ও মন্দিরের ঘণ্টাধ্বনি কোরাস ধরে। তেমনি উচিত হবে ম্যাঙ্গালোর ভ্রমণে Yakshagana নৃত্য বা Kambla মহিষ প্রতিযোগিতা উপভোগ করে নেওয়া।

শহরের মূল আকর্ষণ ৩ কিমি দূরে মঙ্গলাদেবীর মন্দির। ম্যাঙ্গালোর নামটিও এসেছে এই দেবীর নাম থেকে। ২৭ রুটের বাস যাচ্ছে মন্দির দ্বারে। ২ বা ৪৫ রুটের বাসে শহর থেকে ১০ কিমি দূরে প্যানাথুরে নতুন বন্দরটিও দেখে নেওয়া যায়। কফি ও কাজু আজও বিদেশে যাচ্ছে। লাগোয়া সমুদ্র সৈকতটিও সুন্দর। ৩ কিমি দূরে কাদরী পাহাড়ও বেড়িয়ে ফেরা যায় বাসে বাসে। পাহাড়-পাহাড়, রমণীয় পরিবেশ। পথেই পড়ে টেগোর পার্ক। আর আছে মঞ্জুনাথ

শিবমন্দির ও পাণ্ডব গুহা কাদরী পাহাড়ে। এখানকার ৭টি ট্যাক্সের জলে চমরোগ ও নিরাময় হয়। লাইট হাউস, St Aloysius Chapel ছাড়াও নানান ক্যাথলিক চার্চ দেখে নেওয়া যায় চলতে-ফিরতে। চার্চের ফ্রেস্কোর কাজ সুন্দর। টিপূর দুর্গ সুলতানস ব্যাটারি—টিপূর নৌবহরের ষাঁট ছিল সেকালে। আর হায়দরের কালে জাহাজ তৈরির কারখানা বসে। বাস যাচ্ছে ১৬ রুটের শহর থেকে। শহর থেকে ৪৪ রুটের বাসে ১৪ কিমি গিয়ে খাউ-এ ছাওয়া উল্লাল ষাঁটটিও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। বীচের অদূরেই সৈয়দ মহম্মদ শেরীফুল মাদানী দরগা।

আর আছে ৫০ কিমি দূরে কারকালাতে ১৪৩২এ পাথর কুঁসে তৈরি ১২.৮ মি উঁচু গোমতেশ্বরের (বাঘবলী) মূর্তি। জৈন তীর্থরূপে এর প্রশস্তি। কফি ও কাজুর বাণিজ্যিক শহররূপেও খ্যাতি আছে কারকালার। কারকাল থেকে ১৮ কিমি পূবে ধর্মাস্থলীর পথে ভেন্নুরও এক জৈনতীর্থ। ১১ মি উঁচু মূর্তি হয়েছে ১৬০৪এ গোমতেশ্বরের। আর আছে মহাদেব মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ ভেন্নুরে। ম্যাঙ্গালোর-বেলুড পথের ভেন্নুর থেকে ৪১ কিমি যেতে ধর্মাস্থল ও আর এক জৈনতীর্থ। ১৯৭৩এ ১৪ মি উঁচু মূর্তি হয়েছে ভগবান বাঘবলী অর্থাৎ গোমতেশ্বরের। আর আছে মঞ্জুনাথের মন্দির ধর্মস্থলীতে। ভেন্নুর থেকে ২২ কিমি দূরে মুভাবিল্লীতেও ১৮টি জৈন বস্তু (মন্দির) আছে। ১০০০ পিলারের হলও হয়েছে মন্দিরে। মুভাবিল্লী থেকে ৩১ কিমি উত্তরে কারকালের জৈন বস্তুতে মূর্তি হয়েছে ১৪৩২এ ১৪মি উঁচু বাঘবলীর।

কারকাল থেকে ৩২ আর ম্যাঙ্গালোর থেকে যোগমুখী ৫৮ কিমি যেতে NH-17য় উদুপু। রূপোর দরজাওয়ালা ১৩ শতকের কৃষ্ণ মন্দিরে মাধবাচার্যর প্রতিষ্ঠিত শ্রীকৃষ্ণ ছাড়াও দেবতা রয়েছেন আরও নানান। সম্প্রতি পলিমার মঠের শ্রীবিদ্যামান্য তীর্থ স্বামীজী এক কোটিরও অধিক টাকা ব্যয়ে



একটি রথ উপটৌকন দিয়েছেন দেবতাকে। তামিলনাড়ুর পুন্মুহারের দক্ষ শিল্পীরা সেগুন কাঠে তামার মোড়ক লাগিয়ে ২৫ কেজি সোনার মুড়ে দিয়েছেন এই রথ। মহাভারতের নানান আখ্যান রূপ পেয়েছে অলঙ্করণে। এটিও উদ্ভূত-র অন্যতম আকর্ষণ। লাগোয়া পুকুরে মাছের জলকেলিও দর্শনীয়। উদ্ভূত-র কক্ষ মন্দিরের মাহাত্ম্য আজ সারা দক্ষিণ জুড়ে। তেমনিই খ্যাত উদ্ভূত-র ইডলি ও মশলা দোসা।



ধাকার জন্য *H Mallika, K M Marg, Udipi-576101, S ১২৫ D ২০০; Kalpana L, Upendra Baug-1, @ (08252) 20440, S ৪৫-৮০ D ৮৫-১৫০; Royal Mahal, Sukha Nivas, Krishna Vilas, Neo Royal, Durga Mahal, Chittaranjan ছাড়াও বরমশালা আছে উদ্ভূতে। উদ্ভূত বেড়িয়ে বাসেই চলুন ভাটকল/সাগর হয়ে ১৪৫ কিমি দূরের যোগ দেখে কারওয়ার হয়ে পানাজি। পথপার্শে নীল আরব সাগর, পশ্চিমঘট অপর পাশে। আর চলছে নদীনালা একে বেকে। তারই মাঝ দিয়ে রাজপথ বেয়ে বাসে চলা খুবই চিত্তাকর্ষক।



IAC প্রতিদিন ১১-১০৫ ম্যাসালোর ছেড়ে ১১ ঘট্টার মুম্বাই যাচ্ছে; ম্যাসালোর আসছে মুম্বাই থেকে ৯-২৫৫। চেন্নাই যাচ্ছে ২৪৬৭ দিন ৮-২৫৫। ম্যাসালোর ছেড়ে ৪০ মিনিটে ম্যাসালোর পৌঁছে ১০-২০৫; ম্যাসালোর আসছে ৬-০০টার চেন্নাই ছেড়ে ৪৫ মিনিটে ম্যাসালোর পৌঁছে ৭-৫৫য়। আর প্রাইভেট বিমান NEPC Airways 135 দিন ম্যাসালোর-ম্যাসালোর-চেন্নাই-কোয়েম্বাটুর-মাদ্রাই-দিল্লী যাচ্ছে। মুম্বাই যাচ্ছে প্রতিদিন ১৪-২০৫ ছেড়ে ১৫-৩৫৫। Jet Airways প্রতিদিন ১২-২৫৫ ম্যাসালোর ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে ১৩-৪০৫; আর 134 দিন ৯-১০৫ ম্যাসালোর ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে ১০-২৫৫। বিমানবন্দর থেকে ২০ কিমি দূরে শহর। দপ্তর বসেছে IAC-র K S Rao Rd-এর Hotel Poonja International, @ E-752433 R-414300। NEPC-র দপ্তর বসেছে—12 1st Floor, Saibeen Complex, Lal Baugh-4, @ 455032এ।



আর রেল যাচ্ছে ভারতের দিকে দিকে বন্দর নগরী ম্যাসালোর থেকে। ৯০০ কিমি দূরের চেন্নাই সেত্বাল থেকে ১২-০০টার 6627 ওয়েস্ট কোস্ট, ১৯-০৫৫ 6601 ম্যাসালোর মেল আসছে সালেম/পালঘাট/সোরানুর/কালিকট/মাহে হয়ে পরদিন ৬-৩৫ ও ১৩-২৫৫ ম্যাসালোরে। চেন্নাই ফেরে ম্যাসালোর থেকে যথাক্রমে ১৯-৪৫/১২-৩০৫। কেবল এক্স-এর সাথে জুড়ে মঙ্গলা এক্স যাচ্ছে ১১-১০৫ ম্যাসালোর থেকে কোয়েম্বাটুর/বিজয়ওয়াড়া/নাগপুর/ভূপাল/আগ্রা কাঠ হয়ে ৩০৩৩ কিমি দূরের হজরত নিজামুদ্দিন; কালিকট/সোরানুর/এর্নাকুলম টাউন/কোড্রায়াম হয়ে ১৫ ঘট্টার ৬৩৪ কিমি দূরের তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে ১৭-৫০৫ মালবার এক্স, ৪-১৫য় পরওয়ারম এক্স। সোরানুর যাচ্ছে নানান ট্রেন; সোরানুরে টুকরা হয়ে কারলা থেকে অঙ্গা নেত্রবতীর অবশ্য যাচ্ছে কোটি ও ম্যাসালোরে। ৭-১০ ও ১৪-৪৫৫ মাদগাঁও যাচ্ছে ম্যাসালোর-মাদগাঁও এক্স; ৭ ঘট্টার পালঘাট যাচ্ছে ৬-৫০৫ ম্যাসালোর-পালঘাট এক্স, ১৩-৫০৫ নেত্রবতী এক্স; ৭-৪৫ ও ১৮-০৫৫ ম্যাসালোর ছেড়ে মইশূর যাচ্ছে ১০ ঘট্টার ফাস্ট

প্যাসেঞ্জার; ১৮৯ কিমি দূরের হাসান যাচ্ছে ৭ ঘট্টার ম্যাসালোর-মইশূর প্যাসেঞ্জার; ১৩-৫০৫ ম্যাসালোর ছেড়ে সোরানুরে নেত্রবতীর সাথে জুড়ে কারলা (মুম্বাই) যাচ্ছে; জম্মু যাচ্ছে প্রতি সোমবার ১৫-৩০৫ নববৃগ এক্স; ১৮-১০৫ ম্যাসালোর ছেড়ে ফাস্ট প্যাসেঞ্জার ৪৪৭ কিমি দূরের ব্যাসালোর যাচ্ছে ১৬ ঘট্টার। ফেরে ও এরা নিয়মিত ম্যাসালোরে। তবে কোকন রেলের কর্মকাণ্ডে এপথের ট্রেন সার্ভিস আজও বিঘ্নিত।



বাস যাচ্ছে ম্যাসালোর থেকে NH 48 ধরে ৩৪৭ কিমি দূরের ব্যাসালোর। বাস যাচ্ছে মইশূর ২৪৮, মারকারা ১৩৪, যোগ ২০৬, কারওয়ার ২৬১, হাসান ১৭৬, বেলুড় ১৫৪, শিমোগা, সাগর, উদ্ভূত ছাড়াও রাজ্যের দিবিদিকে। ১৮১ কিমি দূরের হিরিহর যাচ্ছে কারকল/সোমেশ্বর/আণ্ডবে/শিমোগা হয়ে; মইশূরের বাস যাচ্ছে মারকারা হয়ে; বাস যাচ্ছে সাগর/যোগ/কারওয়ার হয়ে ৪১৯ কিমি দূরের পানাজি; ১০৬৭ কিমি দূরের মুম্বাই যাচ্ছে সরকারি, বেসরকারি নানান ডিলাক্স, সুপার ডিলাক্স, A/c Video ম্যাসালোর থেকে। গোয়া রাষ্ট্রীয় পরিবহণের কন্সট্রাক্টর ১১-৩০০টায় ম্যাসালোর ছেড়ে ১০ ঘট্টার পানাজি যাচ্ছে। তবে উচিত হবে রাতের একমাত্র বাসে ম্যাসালোর ছেড়ে প্রত্যবে যোগ পৌঁছে কারওয়ার দেখে পানাজি যাওয়া।

আর, KSTDC-র ডিলাক্স বাস যাচ্ছে ম্যাসালোর থেকে মইশূর ও ব্যাসালোর রাতভর জানিতে। কলিকট টুরিজমের অফিস বসেছে Hotel Indraprastha-য়। আর IAC ও Air India-র অফিস K S Rao Rd-এর Poonja International Hotel-এ।



ম্যাসালোর পাছাড়ী হলও হোটেলগুলি রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া শহরের প্রাণকেন্দ্রে সমতলে। তবে নেত্রবতীর অবস্থান কাদরী হিলে। বাস স্ট্যান্ডের বামে K S Rao Road-575001, STD 0824-এ মেলা বসেছে হোটেলের। H Ashwari, Viswa Bhavan Lodging, Canara, Ganesh Prasad, Venkatesh, Vasantha Mahal, SAB ৬০-১২৫ DAB ৮৫-১৭৫; H Navarutna, @ 27941, D ২৫০ সুইট ৪০০ D ৪৫০; লাগোয়া নবগঠিত H Navarutna Palace, @ 33781, S ২৫০ D ৩০০ A/c D ৪৫০; Taj Group's *H Manjarun, Old Post Rd-1, @ 420420, A/c S ৩২-৪০ D ৩৬-৪৫ US\$; H Woodside, S ১০০ D ১৫০-২২৫; Mayura, Manorama, D ১২৫-২০০; Ganesh Mahal, Sujata, Hill Top. বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে H Adarsha, SAB ১০০ DAB ১৫০-২২৫; Tajmahal, Panchami Boarding & Lodging, S ৮০ D ১৫০। আর আছে H Vimlesh International, Ganapati Temple Rd-1, @ 33711, S ২০০ D ৩০০-৪৫০ A/c S ৪০০ D ৪৫০-৬০০; H Pentagon, Kankanday-2, @ 31139, A20R3.5, S ২২৫-৩৫০ D ২৭৫-৪৫০ সুইট ৬০০-৮৫০। *H Srinivas, Ganapati High School Rd-1, @ 440061, R1B0, SAB ২০০ DAB ২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; *H Jupiter; H Poonja International, K S Rao Rd-1, @ 440171, A17R0, SB2.5, SAB ২৫০-৩৭৫ D ৩৫০-৪৫০ A/c S ৪৫০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০ সুইট ১৫০০; *Tourist Motel, Vijay Vihar, *Sudar Beach Resort, Chotamangalore, Ullal-574159, R10B10, DAB ৩২৫-

৪৫০ A/c D ৪৭৫-৬৫০; Falnir Rd-1এ—H Moti Mahal, A20R0.5B0, ৩৪১৪১১, SAB ৪০০ DAB ৪৫০-৬২৫ A/c S ৪৫০-৫২৫ D ৬৫০-১০০০; Keerthi Mahal; KSTDTC-র H Mayura Nethravathi, Kadri Hills, ৩২১১১২, S ১০০ D ১৩৫ ডর্মি বেড ৪৫; Municipal Tourist Bungalow, CH, IB, রেলের রিটায়ারিং রুম ছাড়াও হোটেল আছে নানান ম্যাসালগোরে।

আর নিরামিষ আহাৰ্যের জন্য—Tajmahal, Kandhenu, Navaratna ভালই। চীনা মেনুর জন্য—Shin Min Chinese Restaurant; ননভেজ মিলের জন্য—H Mayura-র যথেষ্ট প্রসিদ্ধি; নবরত্ন কমপ্লেক্সে শীতাতপ Heera Panna-র যথেষ্ট সুনাম আমিষ ও নিরামিষ আহাৰ্য; বিপরীতে নবগঠিত আর এক শীতাতপ Palimar-এরও সুনাম যথেষ্ট নিরামিষ আহাৰ্য। রূপার পাশে Saja Dine-এও ননভেজ মিল মেলে।

হবলি



শিল্পকেন্দ্রিক শহর হবলি। তবে পর্যটন মানচিত্রে পরিচিতি এর সংযোগকারী জংশন রূপে। ১ কিমির ব্যবধানে রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ডের অবস্থান হবলিতে। ট্রেন যাচ্ছে মুম্বাই-চেন্নাই, বিজয়ওয়াড়া-ভান্ডো-অমরাবতী এন্ড, ভান্ডো-ব্যাঙ্গালোর এন্ড হবলি হয়ে। এমনকি দ্রুতগামী ইন্টারসিটি এন্ডও চলছে ব্যাঙ্গালোর ও হবলির মাঝে। ট্রেন যাচ্ছে হবলি থেকে ৪-০৫এ ভান্ডো-ব্যাঙ্গালোর এন্ড, ৬-২০এ হবলি-ব্যাঙ্গালোর ইন্টার সিটি এন্ড, ৭-৩০এ হবলি-ব্যাঙ্গালোর প্যা, ১৪-৪৫এ হবলি-আরসিকেরে প্যা, ২৪ ৬ ৭ দিন ১৭-৩৫এ মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর এন্ড, ১৮-৪৫এ হবলি/গুন্টাকল/শিমোগা-ব্যাঙ্গালোর ফাস্ট প্যা, ২২-০৫এ মিরাজ-ব্যাঙ্গালোর রানী চেন্নামা এন্ড, হজরত নিজামুদ্দিন-ব্যাঙ্গালোর স্বর্ণজয়ন্তী এন্ড ২ ঘণ্টায় ১২৯ কিমি দূরের হরিহর, ৪ ঘণ্টায় বিষ্ণুর ২৫৮ কিমি, ৮ ঘণ্টায় আরসিকেরে ৩০৩ কিমি হয়ে ৪৯৯ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৮½ ঘণ্টায়। ট্রেন যাচ্ছে ১½ ঘণ্টায় ৫৯ কিমি দূরের গডগ, ৪½ ঘণ্টায় ১৪৪ কিমি দূরের হসপেট, ৬ ঘণ্টায় ২১০ কিমি দূরের বেলারি জং পৌঁছে ২৫৭ কিমি দূরের গুন্টাকল যাচ্ছে ৯½ ঘণ্টায় ১৬-৪৫এ বিজয়নগর এন্ড, ২৩-১০এ গুন্টাকল প্যাসেঞ্জার হবলি থেকে। আর গডগ থেকে ট্রেন যাচ্ছে ৬-৩০, ৯-০৫, ১৩-১৫, ১৮-১৫, ২২-৩০ (এন্ড)-এ ছেড়ে ১½ ঘণ্টায় বাদামী (৬৭ কিমি), ২½ ঘণ্টায় বগলকোট (৯৩ কিমি), ৬ ঘণ্টায় বিজাপুর (১৯০ কিমি) পৌঁছে-হোটলী হয়ে ৯½ ঘণ্টায় ২৯৮ কিমি দূরের সোলাপুরে। লোণ্ডা/বেলগাঁও/গোকক রোড/ঘাটপ্রভা হয়ে ২৮০ কিমি দূরের মিরাজ যাচ্ছে ৫-১৫য় রানী চেন্নামা এন্ড, ১২-০০টায় হবলি-মিরাজ প্যাসেঞ্জার, ২১-৫০এ ব্যাঙ্গালোর-মিরাজ প্যাসেঞ্জার হবলি থেকে। হবলি ছেড়ে ০-৩০এ ব্যাঙ্গালোর-ভান্ডো এন্ড, ১৫-০০টায় অমরাবতী এন্ড লোণ্ডা হয়ে ৬½ ঘণ্টায় সরাসরি ভান্ডো যাচ্ছে। ২১ কিমি দূরের ধারওয়ার যাচ্ছে নানান ট্রেন; গোলগম্বুজ এন্ড ৬-৪৫, মহালক্ষ্মী এন্ড ১৩-১০, মিরাজ-ব্যাঙ্গালোর-কিয়ুর এন্ড ২৩-০৫, ছাড়াও ৭-২০, ১৪-১৫, ১৮-০৫এ হবলি ছেড়ে হরিহর (১২৯ কিমি) বিষ্ণুর (২৫৮) আরসিকেরে (৩০৩) যাচ্ছে। তবে নতুন করে কোচন রেলের ব্রডগেজ রূপান্তর আশেও সম্পূর্ণতা না পাওয়ায় ট্রেন সার্ভিস বেশ কিছুটা ব্যাহত এগথে গত কিছুকাল।



আর, বাস যাচ্ছে ১১ ঘণ্টায় কদম ট্রাকপোর্টের পানাজি (মিনে ৩), ব্যাঙ্গালোর (৪), ময়ীপুর (২), মুম্বাই (২), পুনে (২), বিজাপুর (৪), ব্যাঙ্গালোর ছাড়াও কণ্টিক ও মহারাষ্ট্রের দিকে দিকে হবলি থেকে। তেমনই যাচ্ছে প্রাইভেট সুপার ডিলাক্স ভিডিও কোচ বাস স্ট্যান্ডের বিপরীত থেকে মুম্বাই, ব্যাঙ্গালোর ছাড়াও নানান দিকে।



সংযোগকারী যানের অভাবে রাতের অবস্থান অবশ্যভাবী হয়ে পড়ে Hubli-580025, STD 0836-এ। তাই হোটেল ও গড়ে উঠেছে রেলকে ভর করে হবলিতে। রেল স্টেশন থেকেই দৃশ্যমান H Ajanta, Jaichamarajanagar, DAB ২০০-৪২৫, থাকার পক্ষে ভাল। বিপরীতে H Natraj, Stn Rd, DAB ১৭৫-৩০০। পথেই গড়ে অতি সাধারণ Modern L, Main St; লাগোয়া Udiipi H. আর আছে H Ajadhya, opp Central Bus Std, A/c S ৩০০-৪২৫ D ৩৫০-৪৭৫ সুইট ৬৫০; *Hubli Woodlands Keshwapur, Hubli-580023, ৩ 362246, S ৩০০ D ৪৫০ A/c D ৬০০ কটেজ ৮০০; H Ashok, Lamington Rd-20, D ২৫০-৪২৫ সুইট ৬৫০; বাস স্ট্যান্ডের সন্নিকটে H Kailash, Lamington Rd, S ২২৫ D ৩০০ A/c D ৬০০; H Naveen, Poona-Bangalore Rd-25, A10R6, ৩ 372283, A/c S ৭০০ D ৮৫০ সুইট ১৫০০-২৫০০; রেলের রিটায়ারিং রুমও আছে হবলিতে। আহাৰ্যে রেল স্টেশনের বিপরীতে কামাথ গ্রুপের কামাথ হোটেলটি ভালই। মডার্ন লাগোয়া Parag Bar & Restaurant (Roof top)-এ ভেজ ও ননভেজ ভারতীয় ও চীনা মেনু মেলে। H Vaishali-রও প্রশস্তি স্বল্প দামে আহাৰ্য পরিবেশায়।

চলার পথে সোলাপুরেও হোটেল মেলে—Ajanta L, near Rail & Bus Std, Mechanic Chowk, Solapur-413007, S ১০০ D ১৫০; H Surya International, 3/2/2 Murarji Peth-2, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ ছাড়াও নানান।

মাগোঞ্জ জলপ্রপাত: হবলি থেকে কারওয়ারের পথে পড়ে ইম্পাপুর। ইম্পাপুর থেকে ১৯ কিমি দূরে মাগোঞ্জে ৬০০ ফুট নিচুতে গঙ্গাবতী নামছে পশ্চিমঘাট পর্বত থেকে। সুন্দর পরিবেশের মাঝে আরও সুন্দর এই জলপ্রপাত। থাকার জন্য কণ্টিক ট্যুরিজমের Tourist Home আছে।

কারওয়ার

গহন বনের মাঝ দিয়ে পথ গিয়েছে হবলি থেকে কারওয়ার, দূরত্ব ১৬০ কিমি; বন্যজন্তু চরে বেড়ায় এপথে। পথ এসেছে ২৬১ কিমি দূরের ম্যাসালোর থেকেও পশ্চিমঘাট পর্বত চড়ে যোগ হয়ে। ধান্দেলী ৪০, বেলগাঁও ১৭৮, লোণ্ডা ১২৭, মারগাঁও ১২৫, পানাজির দূরত্ব ১৫৮ কিমি কারওয়ার থেকে। NH 17 ধরে বাসও চলেছে এপথে। পথশোভা সুন্দর। নবতম কোচন রেল ৭-১০ ও ১৪-৪৫এ ম্যাসালোর ছেড়ে উদুপু-ভাটকল হয়ে ১২-১৫ ও ১৯-২৫এ কারওয়ার পৌঁছে মাদগাঁও যাচ্ছে ম্যাসালোর-মাদগাঁও এন্ড পশ্চিম উপকূল ধরে। উত্তর ও দক্ষিণ কান্যাড়ার মাঝে সোপানও গড়েছে কারওয়ার।

আরব সাগরের বুকে সুন্দর প্রাকৃতিক সম্পদে কবীন্দ্র

কারণওয়ার। ঝাউয়ে ছাওয়া কারণওয়ারের সাগরবেলাটিও রমণীয়। অদূরে পশ্চিমঘাট ব্যুহ গড়েছে চক্রাকারে। মাঝে মাঝে বীপবলা মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। তারই মাঝে দাঁড়িয়ে আছে দেশী-বিশেষী নানান জাহাজ নোঙর করে। নৈসর্গিক শোভায় মুগ্ধ হয়ে রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর প্রথম নাটিকা লেখেন কারণওয়ারে। কালী নদীর সেতু পেরুতেই সদাশিবগড়— শিবাজী মহারাজের বিধ্বস্ত দুর্গ। কালী নদীতে মোটর লঞ্জে বেড়াবারও ব্যবস্থা আছে। নতুন করে নৌ-বাঁটিও গড়ে উঠছে কারণওয়ারে। অ্যাকোয়ারিয়ামটিও হয়েছে উত্তর কর্ণাটক জেলার জেলা সদর কারণওয়ারে।



থাকার জন্য মধ্যমানের নানান হোটেল—বাস স্ট্যান্ডে Ashok H, D ১২৫-২৫০; Tourist Home; Udipi Ananda Bhavan; Sea View L; Savan. ১ কিমি দূরে কাঙ্ছবাগে Gobardhan H, DAB ১২৫-২০০ ছাড়াও হোটেল আছে নানান কারণওয়ারে। আর আছে পানাজি মুখী ১ কিমি দূরে কোস্ট রোডে JB, অব: D C, North Karwar. H Ashok-এ অমিষ আহার্য মেলে।

কারণওয়ার থেকে কালী সেতু পেরিয়ে গোয়াতেও বাস যাচ্ছে। ঘণ্টা দুয়েকের পথে মারগাঁও। কদম্ব বাস যাচ্ছে ঘণ্টায় ঘণ্টায়। পানাজিও যাচ্ছে বাস ৪৫ ঘণ্টায়। গোয়া বেড়িয়ে মুম্বাই বা ব্যাস্কালোর ফিরুন বাসে। তবে, গোয়া-যাত্রীদের ব্যাস্কালোর বেড়িয়ে গোয়া যাওয়াই উচিত হবে। কারণ কলকাতা ফেরার পক্ষে মুম্বাই বা বিজয়ওয়াড়া সুবিধার।

গোকর্ণ

কারণওয়ার থেকে ৪৫ কিমি দক্ষিণে মদনগিরি, আরও ১০ কিমি যেতে আরব সাগরের তীরে প্রকৃতির আর এক স্বর্গ গোকর্ণ। শৈবতীর্থ গোকর্ণের মহাবালেশ্বর মন্দিরটি তীর্থযাত্রী ও পর্যটক দুইয়েরই কাছে আদরলীয়। মাহাশ্ম্যে বারানসীর পরেই এর স্থান। শিবরাত্রি জাঁকালো উৎসব। জনশ্রুতি, লঙ্কাধিপতি রাবণরাজার তপস্যায় তুষ্ট শিবের দেওয়া প্রাণলিঙ্গম নিয়ে কৈলাশ থেকে লঙ্কায় যাবার পথে (রাবণ) শর্ত ভেঙে মাটিতে রাখতেই প্রাণিহীন হন সেবতা এই গোকর্ণে। থাকার জন্য JB, RH ও ধরমশালা আছে।

গোকর্ণের আর এক আকর্ষণ আকোলা গ্রাম। ছোট সাগরবেলা ছাড়াও ১৫ শতকের রাজ্যসম্মালিকা ও ভেঙ্কট-রমন মন্দিরের জন্য আকোলায় প্রসিদ্ধি। মন্দিরের দারুণ নির্মিত রথদুটিও উল্লেখ্য—রামায়ণের আখ্যান মূর্ত হয়েছে। থাকারও সাধারণ হোটেল আছে—Jai Hind L আকোলায়।

ধান্দেলী বন্যজন্তু সংগ্রহালয়

ধারণওয়ার থেকে ৭৬, কারণওয়ার ৪০ আর বেলগাঁও থেকে ১০৪ কিমি দূরে ধান্দেলী। নিয়মিত বাস যাচ্ছে। বাস আসছে বেলগাঁও ও ব্যাস্কালোর থেকেও ধান্দেলীর। আর রেল আসছে ম্যান্দালোর-পুনে শাখার অলনাওয়ার স্টেশন থেকে শাখা লাইনে ধান্দেলীর। নিকটতম বিমানবন্দর ১৫২ কিমি দূরের বেলগাঁও।

At Bangalore :

Department of Tourism Government of Karnataka
1st Floor, F Block, Cauvery Bhawan
Kempegowda Rd, Bangalore-560009, ☎ (080) 2215489
64 St Marks Rd, Bangalore-560001, ☎ 2579139.
Tourist Reception Centre
City Railway Station, ☎ 2870068/131
Airport, ☎ 5268012
Bangalore City Railway Station
Enquiry ☎ 132
Reservation ☎ 133
1st Class ☎ 2874172, Sleeper Class ☎ 2829511.
HAL Airport, ☎ 5588012/2266901.
Shrunagar Shopping Centre,
52 M G Rd, ☎ 2572377.
Kidskemp, 128 M G Rd, ☎ 5587777.
Karnataka State Tourism Development Corp'n Ltd (KSTDC),
10/4 Kasturba Road, Queen's Circle
Bangalore-560001, ☎ 2212901-3
KSTDC's Mayura Central Reservation
Badami House, N R Square, ☎ 2275869/2275883,
Fax: (080-2238016.
Government of India Tourist Office
KPC Building
48 Church Street, Bangalore-560001, ☎ 5585417.
Karnataka State Road Transport Enquiry: 2873377.
Indian Airlines
Cauvery Bhawan, Kempe Gowda Rd
Information ☎ 2211914/141 Booking ☎ 141
Customer Service ☎ 140.
Airport ☎ 140/5266233
Recorded Flight Service ☎ 142.
East West Airlines ☎ 5588282.
Modiluft ☎ 5582199.
Jet Airways ☎ 5588354
Damania Airways ☎ 5588736.
Skyline NEPC Airlines, ☎ 5588866.
Sahara India Airlines ☎ 5586976.
Air India,
Unity Building, Jaya Chamraja Rd, ☎ 2224144.
Vayudoot
Agent: St Marks Rd, ☎ 2212640.
ITDC Transport Unit
Hotel Ashok, K K High Grounds, close to City Centre
☎ 2179411,
Bangalore Bus Stand
Enquiries ☎ 2871261.
BTS Control Room ☎ 6021771.
Kadamba Transport ☎ 2871262.
Thiruvalluvar Transport Corporation ☎ 76974
A P Road Transport ☎ 73915.

৩৭৫ থেকে ৬৮৫ মি উঁচুতে কালী আর কানেরী নদীতে ঘেরা সেতুন ও বাঁশে ছাওয়া ৮৩৪ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে ধান্দেলী বন্যজন্তু সংগ্রহালয়। হাতি, বাইসন, প্যাংগার, বাঘ, শশুর, চিতল, নেকড়ে রয়েছে প্রচুর সংখ্যায়। গ্রীষ্মে পাখিরও নীড় বাঁধে। দুটি ওয়াচ-টাওয়ার হয়েছে বন্যজন্তু দেখার জন্য। জুন থেকে অক্টোবর ছাড়া বছরভর চলা গেলেও ফেব্রুয়ারি থেকে মে মাস ধান্দেলী বেড়াবার মনোরম সময়।
থাকার জন্য H Mayura Sahyadri, Kojiban, SAB ১৫০
DAB ২২৫; বনবিভাগের ৬টি রেন্টেড হাউস ছাড়াও ১১ কিমি

দূরে কুলগীতে ডাকবাংলো আছে। অব্: DFO, Dandeli Sanctuary-কে লিখুন।

ব্যাঙ্গালোর

কর্ণাটকের রাজধানী শহর ব্যাঙ্গালোর। অতি দ্রুত গড়ে ওঠা মডার্ন সিটি রূপে এশিয়ার অন্যতম নগরী ব্যাঙ্গালোর। পরিকল্পিত শহর রূপেও প্রসিদ্ধি আছে ব্যাঙ্গালোরের। যেমন সুন্দর এর পথঘাট, তেমনিই এর বাড়িঘরের সৌন্দর্য আকর্ষণ বাড়িয়েছে শহরের। গার্ডেন সিটিও বলে থাকে লোকে ব্যাঙ্গালোরকে। বিশ্বের সেরা পাঁচ উদ্যান-নগরীর মধ্যে ব্যাঙ্গালোর (দ. আফ্রিকার প্রিটোরিয়া, নিউজিল্যান্ডের ক্রাইস্ট চার্চ, ফ্রান্সের কঁয়, ইতালির সনদ্রিয়া) অন্যতম। ভারতের ষষ্ঠ বৃহত্তম নগরী ৯২১ মি উঁচু ব্যাঙ্গালোরের জল-বায়ুও সারা ভারতের ইর্ষার বস্তু। অতীতে মাদ্রাজ প্রেসিডেন্সি থেকে গ্রীষ্মের দাবদাহ থেকে অব্যাহতি পেতে ব্রিটিশ ব্যাঙ্গালোরে আসে। আর আজ অসহ্য জীবিকার সন্ধানে সারা ভারত থেকে ভারতবাসী। ৫ মিলিয়ন লোকের বাস শহরে। কর্মপটু, কর্মে তৎপর এরা। সাহিত্য-সংস্কৃতিতেও ব্যাঙ্গালোর আজ ভারত রাষ্ট্রে অনন্য। ভাষার সংঘাত নেই দক্ষিণের ব্যাঙ্গালোর শহরে। মুখ্য ভাষা কানাড়া হলেও হিন্দী-ইংরেজির চলন আছে। কেতাদুরস্ত পাশ্চাত্যের প্রভাব এর জনমানসে। শীত বা গ্রীষ্মের আধিক্য নেই ব্যাঙ্গালোরে। জলবায়ু নাতিশীতোষ্ণ—বছরভর মনোরম, কলকারখানার পক্ষে খুবই অনুকূল। ভারতের বেশ কয়েকটি বড় বড় শিল্প এই ব্যাঙ্গালোরেই রূপ পেয়েছে। ইলেকট্রনিক সিটি বলেও ব্যাঙ্গালোর সুবিদিত। ব্যাঙ্গালোর সিদ্ধ ও কফি আজ ভারত ছাড়িয়ে বিশ্ববাসীর সমাদর কুড়োচ্ছে।

ব্যাঙ্গালোর নামকরণেও বৈচিত্র্য আছে। অতীতের Benda-Kalo Oru অর্থ তার—সিদ্ধ সিম। লোকশ্রুতি, বিজয়নগরের রাজা ভীরা একদা শিকারে বেরিয়ে বন মধ্যে পথ হারিয়ে শ্রান্ত-ক্লান্ত-ক্ষুধার্ত। রাজাকে এক নারী Benda-Kalo অর্থাৎ সিদ্ধ সিমের আহার্যে আপ্যায়িত করেন। সেই স্মৃতিতে মাটির দুর্গ গড়ে Bandakalooru শহরের গোড়াপত্তন ১৫৩৭এ বিজয়নগর সাম্রাজ্যের অধীন মগদি গোষ্ঠীপতি কেম্পেগৌড়ার হাতে। কালে কালে Bonda-

kalooru থেকে Bangalooru বা Bangalore. দীর্ঘ ২০০ বছর পর হায়দর আলি সন্ধারের সাথে পাথরে গড়ে আয়তন বাড়ান দুর্গের। আধুনিকতার জয়যাত্রাও হায়দরের হাতে। পূর্ব টিপূর কালেও দুর্গের শ্রীবৃদ্ধি ঘটে। আর মহীশূর শার্দূল প্রবাদপ্রতিম টিপূর পরাভবে ব্রিটিশের আগমন ১৭৯৯এ। ব্রিটিশের হাতে ক্যান্টনমেন্ট নগরী গড়ে ওঠে ব্যাঙ্গালোরে। আর পণ্ডিত জগৎহরলাল নেহরুর মুখে The City of the Future বলে আখ্যায়িত হয় ব্যাঙ্গালোর।



কম্পটারাইজড বুকিং ব্যাঙ্গালোরে। রিজার্ভেশন মেলে ৭-১৩-০০ ও ১৩-৩০-১১-০০টায় সোম থেকে শনিবার; রবিবার ৭-১৩-০০টায়। হাওড়া থেকে বৃহ ও রবিবার ৩-৫৫য় গুয়াহাটি-ব্যাঙ্গালোর এক্সপ্রেস/ভুবনেশ্বর/ওয়ারাটোর/বিজয়ওয়াড়া/গুডুর/চেন্নাই সেন্ট্রাল/জলারপেট হয়ে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৪০ ঘণ্টায়। আবার করমণ্ডল এক্স, চেন্নাই মেল, ১.৫ দিন হাওড়া-তিরুভনন্তপুরম এক্স, বৃহস্পতিবার গুয়াহাটি-কোচি, সোমবার গুয়াহাটি-তিরুভনন্তপুরম এক্সে চেন্নাই সেন্ট্রাল পৌঁছেও চলা যেতে পারে ব্যাঙ্গালোর। সাপ্তাহিক পট্টনা-কোচি, বোকারো স্টিল সিটি-আলোরি এক্সও যাচ্ছে চেন্নাই হয়ে। চেন্নাই সেন্ট্রাল থেকে ৭-১৫য় ২৬৩৭ বৃন্দাবন এক্স, ১৩-০০টায় ৬০২৩ ব্যাঙ্গালোর এক্স, ১৫-৪৫এ দ্রুতগামী ২৬০৭ লালবাগ এক্স, ২২-০০টায় ৬০০৭ ব্যাঙ্গালোর মেল কাটপালী/জলারপেট হয়ে ঘণ্টা সাতকে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে। দ্রুততম ২৬০৭ লালবাগ এক্স ৫.৫ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে। আর যাচ্ছে মঙ্গলবার ছাড়া প্রতিদিন ২০০৭ শতাব্দী এক্স ৬-০০টায় চেন্নাই সেন্ট্রাল ছেড়ে ১০-৪৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ১২-৫৫য় মহীশূরে। শতাব্দী ফেরে একইভাবে ১৪-১০এ মহীশূর ছেড়ে ১৬-০৫এ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ২১-১৫য় চেন্নাই-এ। রেল দ্রুত কলকাতা থেকে চেন্নাই ১৬৬২+চেন্নাই থেকে ব্যাঙ্গালোর ৩৫৬ অর্থাৎ ২০১৮ কিমি কলকাতা থেকে ব্যাঙ্গালোর।

ব্যাঙ্গালোর সিটি ছেড়ে ক্যান্টন হয়ে চেন্নাই ফেরে ৬-৩০এ লালবাগ এক্স, ১৪-৩০এ বৃন্দাবন এক্স, ৮-০০টায় ব্যাঙ্গালোর-চেন্নাই এক্স, ২২-১৫য় ব্যাঙ্গালোর-চেন্নাই মেল, ৪.৫ দিন ২৩-৩০-এ ব্যাঙ্গালোর-হাওড়া-গুয়াহাটি এক্স। ব্রিটিশ যাচ্ছে ১৯-৩৫এ ছেড়ে ৯.৫ ঘণ্টায় মহীশূর-মাদুরাই-ব্রিটিশ এক্স। প্রতিদিন ৬-০০টায় ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে ৪২৪ কিমি দূরের কোয়েম্বাটুর যাচ্ছে ১২-৫৫য় ২৬৭৭ শতাব্দী এক্স; শতাব্দী ফেরে ১৪-২৫এ কোয়েম্বাটুর ছেড়ে ২১-১৫য় ব্যাঙ্গালোরে। ২১-০০টায় ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে কোয়েম্বাটুর-এর্নাকুলম-তিরুভনন্তপুরম হয়ে ১৭-৩০এ কন্যাকুমারি যাচ্ছে

বেনারসী • সর্বভারতীয় সিদ্ধ • হ্যাণ্ডলুম কটন ও
ফ্যাক্টরী শাড়ী পাওয়ার একমাত্র ঠিকানা

উৎসবে
উপহারে
অপরিস্রব

সুনীতা

শীতাতপ
নিয়ন্ত্রিত

১১৩/১বি, রাসবিহারী এডিন্যু, ত্রিকোন পার্কের বিপরীতে
কলকাতা ৭০০ ০২৯, ফোন ৪৬৬-৩৭১৫

৬৫২৬ ব্যাঙ্গালোর-কন্যাকুমারি এক্স; প্রতি বুধবার ১৫-৪৫এ ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে ১৬ ঘট্টায় কুইলন যাচ্ছে কুইলন এক্স; সোমবার রাজকোট-কোচি এক্স; মঙ্গলবার গান্ধীঘাম-নাগেরকয়েল এক্স; শুক্রবার ব্যাঙ্গালোর-আমেদাবাদ এক্স যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর সিটি হয়ে। ১২৫৬ দিন ৬-০০টায় ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে হবলি-লোণা-মিরাজ-পুল হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে পরদিন ৮-০০টায় ১০১৮ ব্যাঙ্গালোর-মুম্বাই এক্স; ব্যাঙ্গালোর ফেরে মুম্বাই থেকে ২৩৬৭ দিন ২২-৪০এ। গুন্টাকল-গুলবর্গা-সোলাপুর-পুলে হয়ে ২৪ ঘট্টায় মুম্বাই যাচ্ছে ১২-১০এ ১০১৮ ব্যাঙ্গালোর-কারলা এক্স, ২০-৩০এ ৬৫৩০ উদ্যান এক্স; ফেরে ৭-৫৫য় উদ্যান, ২২-২০এ কারলা-ব্যাঙ্গালোর এক্স। ১৭-০৫এ ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে গুন্টাকল-রায়চুর হয়ে হায়দ্রাবাদ অর্থাৎ কাচিগুদা যাচ্ছে পরদিন ৯-২০এ ৭৬৪৬ ব্যাঙ্গালোর-কাচিগুদা এক্স; ব্যাঙ্গালোর ফেরে ১৬-৩০এ কাচিগুদা থেকে। প্রতি বুধবার ১৬-০০টায় ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে সেকেন্দ্রাবাদ হয়ে গৌরনগর যাচ্ছে এক্স; নতুন দিল্লী যাচ্ছে ৪১১ ঘট্টায় ১৮-২৫এ ২৬২৭ কলিকট এক্স, ৩১ দিন ৩৩১ ঘট্টায় ৬-৪৫এ ২৪২৭ ব্যাঙ্গালোর রাজধানী এক্স, সাপ্তাহিক কন্যাকুমারি-জম্মু হিমসাগর এক্স। ২১-৫৫য় ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে পরদিন গুন্টাকল ৪-৪০, বেলারি ৪-৪৫, হুসপেট ৭-৩০, গডগ ৯-৪৮এ পৌঁছে ৪৬৯ কিমি দূরে হবলি যাচ্ছে হাঙ্গুপি এক্স। হাঙ্গুপির সাথে জুড়ে গুন্টাকলে পৃথক হয়ে শার্বনী যাচ্ছে লিঙ্ক এক্স। ১৪-৩০এ ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে ২২-০০টায় হবলি যাচ্ছে ২৭২৬ ব্যাঙ্গালোর-হবলি ইন্টারসিটি এক্স, ব্যাঙ্গালোর ফেরে হবলি থেকে ৬-২০এ ইন্টারসিটি এক্স; নানান প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর থেকে হবলি। হবলি/বিজাপুর হয়ে সোলাপুর যাচ্ছে ৯-৩০এ গোল গম্বুজ এক্স, মিরাজ যাচ্ছে হবলি হয়ে ২০-০০টায় ৬৫৪৭ রানী চোমাম্মা এক্স, ১২ ২৫ দিন ব্যাঙ্গালোর-মুম্বাই এক্স; আরসিকেরে/হাসান হয়ে ১৪ ঘট্টায় ম্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ফা প্যা; ১৫-০০টায় ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে ব্রডগেজে আরসিকেরে ১৬-৫৫, বিরুর ১৯-০০, হরিরহর ২১-১০, হবলি ০-২০, লোণা ২-৪০এ পৌঁছে ভান্ডো যাচ্ছে ৬-৫৫য় ৭৩০৭ ব্যাঙ্গালোর-ভান্ডো এক্স। ব্যাঙ্গালোর ফেরে ২১-১০এ ভান্ডো থেকে। মহিশূর যাচ্ছে ঘণ্টা তিনেক ৬-২৫এ তিরুপতি-মহিশূর এক্স, ৭-১৫য় কাবেরী এক্স, ১৪-২৫এ নন স্টপ টিপু এক্স, ১৮-১৫য় চামুন্ডি এক্স, ১০-৫৫য় শতাব্দী এক্স (মঙ্গলবার ছাড়া), ৫-০০টায় ব্রিটিশ-মহিশূর এক্স, ছাড়াও ৬-০০, ৭-০০, ১০-০৫, ১৬-৪৫, ১৮-২০ ও ২৩-৪৫এ প্যাসেঞ্জার ট্রেন; ৮ ঘট্টায় তিরুপতি যাচ্ছে ১৬-২০এ সিটি ছেড়ে মহিশূর-তিরুপতি ফাস্ট প্যাসেঞ্জার; এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে লোকাল, মেল ও এক্স রাজ্যের দিকে দিকে ব্যাঙ্গালোর থেকে।



IAC-র বিমান ৬-৫০ ও ১৯-৫০এ ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে দিল্লী যাচ্ছে ২১ ঘট্টায়; দিল্লী ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর ফেরে ৬-৪৫/১৬-৩০এ। মুম্বাই যাচ্ছে ১১ ঘট্টায় প্রতিদিন ১৩-৫০, ২০-১০৫য়, ৮-৩৫এ ব্যাঙ্গালোর থেকে; ব্যাঙ্গালোর ফেরে ১০-৪০, ১৮-০০, ৬-১৫য় মুম্বাই থেকে। কলকাতা যাচ্ছে ২১ ঘট্টায় প্রতিদিন ৯-১৫য়; ব্যাঙ্গালোর আসছে কলকাতা থেকে ৬-০০টায়। চেন্নাই যাচ্ছে ৪৫ মিনিটে প্রতিদিন ১১-৩০, ১২৪৬ দিন ৮-২৫, ৩৫১৭ দিন ১৭-৩০, ২৪৬৭ দিন ১৮-৩৫, ১৫৭৭ দিন ১৯-০০, ৩ দিন ১৯-৫৫, ১৪ দিন ১৫-৫০এ; ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে। হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে প্রতিদিন ১৮-২৫এ ১ ঘট্টায়; ফেরে ২০-১৫য় হায়দ্রাবাদ থেকে। কলিকট যাচ্ছে প্রতিদিন ৪৫ মিনিটে; কোচি যাচ্ছে প্রতিদিন ১৪-

২০এ ছেড়ে ৪৫ মিনিটে; ব্যাঙ্গালোর ফেরে ১০-১০এ কোচি থেকে। গোয়া যাচ্ছে ২৬ দিন ১১-২৫এ ছেড়ে ৫৫ মিনিটে; ফেরে ১৩-০৫এ। ম্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ২৪৬৭ দিন ৭-১০এ; আমেদাবাদ যাচ্ছে ৩৫৭ দিন ১৩-৪৫এ; পুলে যাচ্ছে ১৩৪৫৭ দিন ১০-০০টায়; তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে ১৪ দিন ১০-০০টায় ব্যাঙ্গালোর থেকে। ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে।

| প্রাইভেট বিমানও সংযোগ গড়েছে ভারতের নানান শহর থেকে ব্যাঙ্গালোরে। Jct Airways প্রতিদিন মুম্বাই যাচ্ছে ৬-২৫ ও ১৭-৪৫এ; ফেরে মুম্বাই থেকে ৮-২৫ ও ১৯-৪৫এ। NEPC Airlines ২৪৬ দিন ৮-৩০ ও ১১-১০এ ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে ২ ঘণ্টায় পুলে; মুম্বাই যাচ্ছে প্রতিদিন ৮-৩০, ১১-০০ ও ২০-০০টায়; গোয়া যাচ্ছে প্রতিদিন ৮-৩০; ইন্দোর যাচ্ছে ৮-৩০; চেন্নাই যাচ্ছে ১৩৫ দিন ২০-৫৫, ২৪৬ দিন ১০- ০০, ১৩৫ দিন ১৮-৩০, ১৩ ৫ দিন ১৪-১০, ২৪৬ দিন ১৬-৫০এ ছেড়ে ১ ঘট্টায়; পোরবন্দর যাচ্ছে ২৭ দিন ৮- ৩০এ; আমেদাবাদ যাচ্ছে ২৪ ৬ দিন ১০-০০টায়; কোচি যাচ্ছে ২৪৬ দিন ১৪-০০টায়; কেশাদ যাচ্ছে ২৭ দিন ৮-৩০; কান্দালা ১৪ দিন ৮-৩০; জামনগর ৩৫৭ দিন ৮-৩০এ; ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে ব্যাঙ্গালোরে। Damania Airways প্রতিদিন ৮-৩০ ও ২০-০০টায় ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে | |
|--|----------|
| আইহোলে | ৫১০ কিমি |
| কোলা | ৭২ " |
| হাসান | ১৯৪ " |
| বেলুড | ২২১ " |
| বাদামী | ৪৯৯ " |
| বন্দীপুর | ২১৫ " |
| বিজাপুর | ৫৩০ " |
| বেলগাও | ৫০২ " |
| বিদার | ৬৬৯ " |
| গুলবর্গা | ৬৩৩ " |
| চিকমাগালুর | ২৫১ " |
| যোগ ফলস | ৩৭৭ " |
| ম্যাঙ্গালোর | ৩৫৭ " |
| মারকারা | ২৫২ " |
| মহিশূর | ১৩৯ " |
| অবাবেলগোলা | ১৫৫ " |
| হালেবদ | ২২৬ " |
| হাঙ্গুপি | ৫০০ " |
| নন্দী হিলস | ৬০ " |
| সোমানথপুর | ১২১ " |
| তুঙ্গভদ্রা | ৩৫০ " |
| উতকামণ্ড | ২৯৭ " |
| চোমাই | ৩৩৭ " |
| হায়দ্রাবাদ | ৫৬২ " |
| পানাজি | ৫৪০ " |
| পতিচেরী | ৩০৩ " |
| পুণ্ডাপুর্তি | ১৮০ " |
| তিরুপতি | ২৬০ " |

১১ ঘট্টায়; আমেদাবাদ যাচ্ছে ২৪৬ দিন ১৫-৩০এ ছেড়ে ১৭-৩০এ; কলকাতা যাচ্ছে ৮-৩০এ ব্যাঙ্গালোর ছেড়ে মুম্বাই হয়ে ১৯-৩৫এ; দিল্লী যাচ্ছে ২৪৬ দিন ১৫-৩০এ ছেড়ে আমেদাবাদ হয়ে ১৯-২৫এ; প্রতিদিন ৮-৩০এ ছেড়ে মুম্বাই হয়ে ১৩-৩০এ গোয়া পৌঁছে ইন্দোর বাচ্ছে ১৪-০০টায়; পুলে যাচ্ছে ৮-৩০টায় ছেড়ে মুম্বাই হয়ে ১৬-১৫য়; চেন্নাই যাচ্ছে ২৪৬ দিন ১০-০০টায় ছেড়ে ১ ঘট্টায়। ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে একইভাবে ব্যাঙ্গালোরে। East West Airlines-ও মুম্বাই যাচ্ছে প্রতিদিন ব্যাঙ্গালোর থেকে। Raj Air যাচ্ছে মুম্বাই-তিরুপতি-ব্যাঙ্গালোর-তিরুপতি-মুম্বাই সার্কিটে। শহর থেকে ৮ কিমি দূরে বিমানবন্দর। অটো ও ট্যাক্সি যাবে শহরে। কলিকট স্টেট রোড ট্রান্সপোর্ট কর্পোরেশন (KSRTC)-র কোচ যাচ্ছে এয়ারপোর্ট থেকে নানান হোটেল ঘুরে শহরে। দপ্তর বসেছে IAC-র Cauvery Bhawan, Kempe Gowda Rd, ৩ সংবাদ: ৫২৬৬২৩৩/১৪০, বুকিং:

2211914/141; Damania Airways ⑤ 5588866; NEPC Airlines ⑤ 5588101; বায়ুদূতের এজেন্ট St Marks Rd, ⑤ 2212640-তে।



মুম্বাই-পুনে NH 4, হায়দ্রাবাদ-কন্যাঙ্কুমারী NH 7 ও ব্যঙ্গালোর-ম্যাঙ্গালোর NH 48-এর সংযোগে ব্যঙ্গালোর। বাস যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে দক্ষিণ ও পশ্চিম ভারতের প্রায় প্রতিটি শহরে। নিয়মিত বাস যাচ্ছে কণ্টিক স্টেট রোড ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন (KSRTC, Stand 13) ⑤ 2871261, কেরল ⑤ 2202806, তামিলনাড়ু, অন্ধ্র, মহারাষ্ট্র রাজ্য পরিবহণের ব্যঙ্গালোর সিটি বাস স্ট্যান্ড থেকে রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে। আর মুম্বই বাস যাচ্ছে—ম্যাঙ্গালোর, মারকারা, চিকমাগলুর, হাসান, শিমোগা ছাড়াও রাজ্যের নানান শহরে ব্যঙ্গালোর থেকে। মহীশূর যাচ্ছে ২০ মিনিট অন্তর ৩ ঘণ্টায়—৫-৪০৫ প্রথম ছেড়ে ২১-০০টায় শেষ বাস। মালাবার হিল হয়ে পথ গিয়েছে—পথশোভাও মনোহর। প্রাইভেট বাসও চলে রেল স্টেশনের কাছ থেকে সারা দক্ষিণে। ভাড়া রাস্তায় বাসে কম হলেও যাত্রা আরামপ্রদ প্রাইভেট বাসে।

বাস ও রেল স্টেশন পরস্পর মুম্বাইমুখি ব্যঙ্গালোরে। ব্যঙ্গালোর সিটি রেল স্টেশন থেকে বাস স্ট্যান্ড টপকে কেম্পেগৌদা (Kempegowda) সার্কেল। বায়ে সুবদার রোড গিয়ে মিলেছে শেখাদ্রি রোডে, ডাইনে বালেপেট মিলেছে রেল ও বাসের সংযোগকারী চিকপেট রোডে; আরও ডাইনে কটনপেট। আর দিগ্ধ কেম্পেগৌদা রোড। শপিং এলাকা, দোকানপাটে ঠাসা, যিঞ্জিভাব—গান্ধীনগর। নানান সিনেমা হল, হোটেল-রেস্তোরাঁ; ভিড় করেছে এলাকা জুড়ে আকাশচুম্বী সব হোটেল বাড়ি। তবে যতটা উঁচু বাড়ি এদের রেটে ততটা নয়।



সাধারণ হোটেলের ভিড় যেমন কেম্পেগৌদা সার্কেলকে ঘিরে, তেমনি পাশ্চাত্য প্রধায় তারকা সমান হোটেল-রেস্তোরাঁ রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি পশ্চিমে কুব্বন পার্কের পূর্বে Mahatma Gandhi Rd, Brigade Rd ও Regency Rd-এর বেষ্টিতভাবে রূপ পেয়েছে। অফিস-কাছারি, নানান ট্রাভেল এজেন্ট, এয়ার লাইনস, ট্যুরিস্ট অফিসের অবস্থানও এলাকা জুড়ে। পর্যটন বিনোদনের পসরাও সাজিয়েছে কুব্বন। তবে, ব্যঙ্গালোরের অতীত দেখতে মেলে রেল স্টেশনের দক্ষিণে সিটি মার্কেটকে ঘিরে শ্রীনরসিংহরাজা রোডে।

Seshadri Rd, Bangalore, STD 080, PC-560009-এ—H Rajmahal, SAB ১৫০-১৭৫ DAB ১৭৫ ২৫০ ৩০০ TAB ২৭৫ A/c D ৪০০; লাগোয়া H Suprabhatia, SAB ৭৫-১২৫ DAB ১২৫-২০০ TAB ১৫০; পেছনে Sheetal Lodging, SAB ৯০-১২৫ DAB ১৫০-২২৫; ডাইনে H Kapila, 229 Subedar Chattram Rd-9, SAB ৮৫ DAB ১৫০ FAB ২০০; H Dwaraka, SAB ৮০ DAB ১০০-১৭৫; বায়ে H Tourist, SAB ৭৫ DAB ১৫০; H Prashanth, H Sangeeth, SAB ৬০ DAB ১৫০-২২৫ A/c S ২৫০ D ৩২৫; H Highlands, Modern Hindu H, SCB ৪৫-৮০ DAB ৮৫-১৫০ TAB ১৭৫; Royal L সাধারণের মাঝে ভালই।

বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে Gandhi Nagar-560009-এ—H Amar, SAB ৮০ DAB ১৫০ TAB ২০০; H India; Janatha L, DAB ১২৫-১৭৫; Sudarshan L, SCB ৬০ DCB ১০০

DAB ১২৫ TAB ১৬০; Sri Ramkrishna L, Subedar Chattram Rd, SCB ৫০ SAB ৬৫ ৮০ ১০০ DAB ১০০ ১২৫ ১৫০ ১৭৫; বিপরীতে Sandhya L, S C Rd, SAB ৭০ DAB ১৫০ TAB ১৭৫ A/c D ৩০০; H Motimahal, 8/17, 5th Main Rd-9, RIB, SAB ১০০ DAB ১২৫-২০০ TAB ২২৫ A/c S ২৫০ D ৩০০ T ৩৫০; H Tribhuvan, 4, 5th Main Rd-9, ⑤ 2263151, S ১০০ D ১৫০-২৫০; H Tajmahal, SAB ১০০ DAB ১৫০-২২৫; H Adora, 47 S C Rd-9, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-১৭৫; একই মানের Samadhya L, বিপরীতে Royal L, Sajjan L, H Hindusthan, H Volga, সামান্য যেতে H Adursha, 6th Cross, SAB ৮৫ DAB ১৫০ TAB ২০০; বিপরীতে ডানহাতি যেতে H Santosh, 10/1, 5th Cross, SAB ৮০ DAB ১০০-১৫০; H Nanda, SAB ৬০ DAB ১০০; লাগোয়া H Pulkeshi, SAB ১০০ DAB ১৭৫; H Lakshmi, 11-1st Cross, SAB ৬০-৮৫ DAB ১০০-১৫০ A/c ২২৫-২৭৫; H Kanishka, 2nd Main Rd, S ১৭৫-২২৫ D ২০০-২৮০ সুইট ৪০০; H Everest, S ৪০০ D ৫৫০ সুইট ৭৫০, কল বুকিং: Linkage ⑤ 2464485; Kamal Yatrinar, 1st Cross-9, ⑤ 2260088, RIB, S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ১০০০।

Kamad Kenu, Trinity Circle; Regent G H, Brigade Rd, S ৮০ D ১৫০; *H Ajanta, 22/A, M G Rd-1, ⑤ 5584321, SAB ১২৫ DAB ২২৫-৩০০ A/c D ৪৫০; H Imperial, 95 Residency Rd, S ১২৫ D ১৫০-২৭৫; H Brindavan, 108 M G Rd-1, S ১৫০-২২৫ D ২২৫-২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; যথেষ্ট পপুলার Central L, 56 Infantry Rd, DCB ১০০ DAB ১৫০; Airlines H, 4 Chennai Bank Rd-1, ⑤ 2271602, S ২৫০ D ৩২৫-৪৫০ A/c D ৬৫০ সুইট ১২৫০; রেল ও বাস থেকে ডানহাতি Sudha L, Cottonpet Main Rd, SAB ১৫০ DAB ২২৫ TAB ২৫০; কাছেই Sri Ganesh L, S ৬০-৮৫ D ৮৫-১৫০ T ১৭৫; Kabini River L, 51 Shuungar Shopping Centre, M G Rd-1, ⑤ 5597025, AP-S ৯৯ D ১৯৮ US\$.

আরও দক্ষিণে যেতে রেল ও বাস দুই-ই থেকে ১০-২৫ মিনিটের হাঁটা দূরত্বে, ডাইনে সিটি মার্কেটকে ঘিরে সাধারণ সাজে Narasimharaja Rd-এ—H Natary, Bilal, Rainbow H, opp City Mkt Bus Stand, S ৮০ D ১৫০ A/c D ২৭৫; Delhi Bhawan L, Avenue Rd, S ৬৫ D ১২৫; বিপরীতে Chandra Vihar, S ৬৫ D ১২৫; Isaqua, H Anand Vihar, H Deepa, Palace, Ali Asker Rd; King, J P Rd, S ৬০ D ১০০; নবভব H Race View, 25 Race Course Rd, ⑤ 266147, DAB ২৫০ A/c ৪০০; Swiss Cottage, Race Course Rd; International Tourist Centre, 84 Benson Cross (কবল সভা)। Sivaji Nagar-এ—Vishranti Nilayam, Infantry Rd, S ৬৫ D ১২৫; Prabhat Boarding & Lodging, Sudarshan L, SAB ৬০ DAB ১০০; H Sarada, H Bharat, H Madhuvan, H Mahaveer, Tank Bund Rd-53, near City Rly Stn, ⑤ 2873670, SAB ১৫০ DAB ২২৫-৩৫০ A/c D ৩৮০-৪৫০; H Janpath, Aristo L, Venus H, H Select, 31 Central St-1; *Nilgiris

Nest, 171 Brigade Rd-1, @ 5588401, S ৪০০ D ৬০০, A/c S ৬৫০ D ৮০০ সুইট ১০০০; **H Ruma*, 40/2 Lavelle Rd-1, @ 2273311, DAB ৮০০-১০০০ A/c D ১২০০, কল বৃক্ষি: Diamond @ 276714/Linkage @ 2464485; *Kumari* L, 152 JCR Rd-2, Minerva Circle, @ 220086, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ২০০-৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬০০-৮৫০; *H Kamdhenu*, Trinity Circle, M G Rd-8, S ২২৫ D ২৭৫ T ৩০০; **H Akshaya*, 30 Sampangi Tank Rd-25, DAB ১৫০-২২৫ সুইট ৩৫০ A/c D ৪০০; *H Haysala*, 212 S C Rd-20, @ 365311, S ৩৫০ D ৪৫০-৬৫০ A/c D ৬২৫-৮৫০; *H Gangothri*, 173/1 S C Rd-20, R1½ B½, @ 3344564, D ৪৫০-৬৭৫ A/c D ৭৫০; *H Lucyia*, 6 OTC Rd-2, R3B3, SAB ৩২৫ DAB ৪২৫ সুইট ৬০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮০০; *H Sudarshan East West*, Residency Rd-25, S ৪২৫ D ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০; *Gupta's Boarding and L. Kempegowda* Rd-9, @ 2265131, S ১৫০ D ২২৫-২৭৫; **H Broadway Complex*, 19 Kempegowda Rd-9, @ 2872321, D ৪০০-৬৫০ A/c ৮৫০, অ্যাননস: @ 2871321, A/c S ৪৫০ D ৬৫০; *Bombay Anand Bhavan H*, 68 Grant Rd-1, @ 2214581, S ৩০০ D ৪৫০ সুইট ৮৫০-১০০০; *Anand Bhavan L. Chickpet*-53, A15R3, @ 2874313, S ৬৫-১০০ D ১২৫-২২৫ সুইট ৩৫০; ছাড়াও হোটেল আছে অজব ব্যাঙ্গালোরে। এদের কাছে ৬৫ থেকে ২২৫ টাকায় সিঙ্গেল আর ৮৫ থেকে ২৭৫ টাকায় ডবল বেডের ঘর মেলে।

**Guest Line Days*, Plot 1&2, KIDAB Industrial Estate, Attibele-562107, @ (08116)420431, A/c S ৮৫০ D ১২৫ সুইট ১৫০০; *The Central Park*, 47 Dickenson Rd-42, @ 5584242, A/c S ১৯৫-১৬৫ D ১৬৫-১৮৫ সুইট ২২৫০-৩০০০; *The Minerva*, 34 J C Rd-2, @ 2226992, S ৩৫০ D ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০; *H Rajutha*, 812/1 Rajatha Complex, O T C Rd, Chickpet-53, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ সুইট ৬০০।

পাশ্চাত্য প্রণায় ITDC-র **H Ashok*, K K High Grounds-560001, @ 2069462, A13R3, S ১১৯৫ D ২৩০০ A/c S ৩৫০০ ৪০০০ S ৪০০০ ৪৫০০ সুইট ৫৫০০-১৫০০০; **H Bangalore International*, 2A Crescent Rd-1, @ 2268011, SAB ৬৫০ DAB ৮০০ A/c S ৯৫০ D ১০৫০ সুইট ১৫৫০-২৫০০; অর্ন্তে *H Abhishek*, 19/2 Kumara Krupa Rd. High Grounds, S ৬৫০ D ৮৫০ A/c ৮৫০/১০০০; **Obero'i Bangalore*, M G Rd-1, @ 5585858, A/c S ১৮৫ D ২১০ US\$; **Barton Court H*, M G Rd-1, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৩৫০-৪০০ D ৪০০-৬৫০; *H Ivory Tower*, Barton Centre, M G Rd-1, @ 5589333, A5R7, A/c D ১২৫০-১৭৫০; **Shilton H*, St Marks Rd-1, S ৩২৫ D ৪৫০ A/c S ৪২৫ D ৬৫০; *St Mark's H*, @ 2279099, A/c S ১৫০০ D ১৮৫০ সুইট ২৫০০; মনোরম বাগিচার মাঝে *Taj Group's* **West End H*, Race Course Rd-1, @ 2269282, A/c S ১২০-১৪৫ D ১৩০-১৬৫ সুইট ২৫০-৩০০ US\$; **Woodlands H*, 5 Raja Ram Mohan Roy Rd-25, @ 2225111, S ৪২৫ D ৬০০-৬৭৫ A/c D ৮৫০-১০৫০ সুইট ১৪৫০-১৭৫০;

**Ramanashree Comforts*, 16 Raja Ram Mohan Roy Rd-25, @ 2225152, A/c S ১২৯৫ D ১৫৯৫ সুইট ১৮৫০; **H Harsha*, Venkatswami Naidu Rd-51, Shivajinagar, @ 2865566, S ৭৫০ D ৮৫০ সুইট ১২০০ A/c S ৮৫০-১০৫০ D ১০০০-১২৫০ সুইট ১৫০০; *Gateway H*, 66, Residency Rd-25, @ 5584545, S ৬০০-৭৫০ D ৮০০-১০৫০ সুইট ১২০ US\$; *H Manu*, Basappa Circle, V V Puram-4, S ২২৫ D ৩২৫; **H Cauvery Continental*, 11/37 Cunningham Rd-52, @ 2256966, S ৬০০ D ৮৫০ A/c S ৮৫০ D ১০৫০ সুইট ১২৫০ কটেজ ২৫০০; **Taj Residency*, 41/3 M G Rd-1, A5R5, @ 5584444, S ৯৫ D ১১০ US\$; **H East West*, Residency Rd-25, S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০; *H Nahar Heritage*, 14 St Mark's Rd-1, @ 2278731, A9R5B5, A/c S ৮৫০-১০৫০ D ১০৫০ ১২৯০; *H Rajputana*, 80 Hospital Rd-53, A12R1.2, @ 2876897, S ৩০০ D ৪৫০ সুইট ৬০০ A/c D ৬৫০ সুইট ৮০০; *H Shalimar*, 126 B V K Iyengar Rd-53, @ 2258061, S ১৭৫ D ২২৫; *H Kanishka*, No 2, II Main Rd, Gandhinagar-9, R1B0, @ 2265544, DAB ৪৫০-৫৫০ A/c ৬০০-৮০০; **Kwality H*, Brigade Rd-1; *H Sunflower*, 129 Brigade Rd, DAB ১৭৫-২২৫, ব্যবস্থাপনা ভালই; *H Vellara*, 283 Brigade Rd, S ২০০ D ২২৫-৩৫০; *H Avishkar*, Infantry Rd; *Ashraya International*, 149 Infantry Rd, S ৩০০-৪৫০ D ৪২৫-৬৫০; বাগিচার মাঝে *The New Victoria H*, 47 Residency Rd-25, @ 5584076, D ৫০০-৬৭৫ সুইট ৮৫০, আহায়েও সুনাম আছে এদের; *H High Gates*, Church St; *H Chalukya*, 44 Race Course Rd-1, @ 2265055, S ৪৫০ D ৪৮০-৬৫০ A/c S ৬০০ D ৬৫০-৯৫০; *H Maurya*, 22/4 Race Course Rd, Gandhinagar-9, R1B0, @ 2254111, S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮০০ সুইট ১০০০; *Janardhan H*, DAB ২২৫-৩৫০; *Berry's H*, 46/1 Church St-1, @ 5587211, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০; *H Geo*, 11 Devanga Sanga Hostel Rd-27, @ 2221583, A15R4, S ৩৫০ D ৪৫০-৬০০ A/c D ৮০০; *H Paruag*, 3 Rajbhavan Rd-1, @ 2267071, A10R3, D ১৫৫০ সুইট ২৫০০; **Holiday Inn*, 28 Sankey Rd-52, @ 2262233, A11R3B2, A/c S ২৩০০ D ২৬০০ সুইট ৪৫০০; *Welcomgroup's* **Windsor Manor*, 25 Sankey Rd-52, @ 2269898, A/c S ১৫০-২৭৫ D ২৭৫-৩০০ সুইট ৩৫০-৯৫০ US\$; *Curzon Court*, 10 Brigade Rd-1, @ 5582997, A8R3, A/c S ৬৫০ D ৮৫০-১০০০; *H Raceview*, Race Course Rd, D ৪৫০-৮০০; *H Swagath*, 75 Hospital Rd-53, @ 2877200, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১০০০; *H Gautham*, Museum Rd-1, S ২২৫ D ৩২৫; *Atria H*, 1 Palace Rd-1, @ 2205205, A10R4, A/c S ১৭৫০ D ২০০০ সুইট ২৭৫০; *The Capitol*, 3 Rajbhavan Rd-1, @ 2281234, A/c S ১২৫০ D ১৭৫০ সুইট ২৫৫০; *Quality Inn*, 14 Kensington Rd-42, @ 5594666, A/c S ১২৫০ D ১৭৫০ সুইট ২২৫০।

| বাংলাদেশ সরকারের পরিবহন বিভাগের তত্ত্বাবধায় ওয়েস্টবঙ্গ ও উত্তর-পশ্চিম কলিকাতা জেলা পরিষদের অধীন | | | |
|--|---|------------------|------------------------|
| গন্তব্য স্থান | ছাড়ার সময় | দূরত্ব (কিমি) | যাত্রা সময় (ঘণ্টা) |
| মুখাই | ৮-০০, ১৪-০০, ১৬-০০, ১৯-০০ | ১০১০ | ২৪ |
| মহীশূর | ৫-৪০ থেকে ২১-০০ ২০ মিনিট অন্তর | ১৩৯ | ৩ |
| বিজাপুর | ১৮-১৫, ১৮-১৫, ১৯-০০, ৬৭৫ ২০-০০ | ১৩ | |
| কোয়েম্বাটুর | ৭-৩০, ৯-৩০, ১৯-৩০ | ৩২৩ | ৯ |
| এনাকুলম | ৫-০০, ৭-০০, ১৮-৩০ | ৫৬৪ | ১৪ |
| হসপেট | ৮-১৫, ৮-৩০, ১৭-৩০, ২১-১৫ | ৩৬০ | ৯ |
| হায়দ্রাবাদ | ৭-৪৫, ১৬-৩০, ১৮-০০, ১৯-০০, ২০-০০, ২১-০০ | ৫৬৬ | ১১ |
| কারওয়ার | ১৭-১৫, ১৮-১৫, ১৯-০০ | ৫৪৭ | ১২ |
| কনাকুমারি | ১৭-৩০, ২০-৩০ | ৬৭৪ | ১৭ |
| চেন্নাই | ৫-৩০, ৭-০০, ৭-৩০, ৮-১০, ৯-০০, ১০-৩০, ১১-০০, ১১-৫৫, ১২-০০, ১৩-৩০, ১৬-০০, ১৯-০০, ১৯-৪৫, ২০-০০, ২০-৩০, ২১-০০, ২১-৩০, ২২-১৫, ২২-৩০, ২৩-০০, ২৩-৩০ | ৩৫৮ | ৮ |
| ম্যাসালোর | ৪-৩০, ৬-৪৫, ৭-৪৫, ৮-৩০, ১০-০০, ১১-৩০, ১৩-০০, ১৯-৩০, ২০-০০, ২০-৩০, ২১-০০, ২১-১৫, ২১-৩০, ২২-০০, ২২-৩০ | ৩৬০ | ৮ |
| মাদুরাই | ৬-৩০, ৭-১৫, ৮-০০, ৯-১৫, ৪৪৫ ১০-০০, ১১-০০, ১৮-০০, ২০-০০, ২০-৩০, ২১-০০, ২২-০০, ২২-৩০, ২৩-০০ | ৪৪৫ | ১০ |
| নাগেরকয়েল | ১৯-০০ | ৬৬৮ | ১৬ |
| উতকামণ্ড | ৮-৩০, ৯-০০, ২২-৩০, ২৩-০০ | ২৯৫ | ৮ |
| পানাজি | ১৬-৪৫, ১৭-৪৫, ১৮-০০ | ৬৩২ | ১৫ |
| পতিচেরী | ৭-০০, ৯-৩০, ১৯-০০, ২০-০০ ২২-০০ | ৩১০ | ৮ |
| পুন্ডাশ্রুতি | ৯-৪৫, ১১-৪৫, ১৭-০০ | ১৮০ | ৫ |
| সেকেন্দ্রাবাদ | ১৯-৩০ | ৫৯০ | ১২ |
| তিরুপতি | ১-০০, ৫-০৫, ৬-৩০, ৭-০০, ৭-৩০, ৮-৩০, ৯-০০, ১০-৩০, ১১-০০, ১২-১৫, ১২-৩০, ১৩-০০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৫-৩০, ২০-৩০, ২১-৩০, ২২-০০, ২২-১৫, ২২-৩০, ২৩-০০, ২৩-৩০ | ২৬০ | ৬ |

| | | |
|--------------|--|-----|
| তিরুচিরাপলী | ৭-৪৫, ১১-০০, ২০-০০, ৩৪০ | ৯ |
| ২১-০০ | | |
| ভেঙ্গোর | ৬-০০, ৭-৩০, ৮-০০, ১০-০০, ১১-৩০, ১২-৩০, ১৩-৩০, ১৪-৩০, ১৬-০০, ২১-৩০ | ৫ |
| তিরুনেলভেলী | ১৭-০০ | ৬১৫ |
| বিজয়ওয়াড়া | ১২-৪৫, ১৬-০০ | ৬২৮ |
| শ্রবণবেলগোলা | ৯-৩০, ১৪-১৫, ১৭-০০ | ১৬ |
| যোগ ফলস | ২১-১৫, ২১-৪৫ | ৩৭৭ |
| শ্রীসেরী | ৮-০০, ৯-০০, ২০-৪৫, ২২-০০ | ৩৯৯ |
| হাম্পী | ১২-০০ | ৩৫০ |
| ৭২ | | |

এছাড়াও বাস যাচ্ছে নানান—হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে PSRTC ৬ বাস, তিরুপতি ৯ বাস, ১২ ঘণ্টায় কোম্বাইকানাল যাচ্ছে ১ বাস, হাসান ও শিমোগায় নানান বাস, যোগ ২, কালিকট ২, গুলবর্গা, আরসিকেরে, বাদামী, হরিহর, বিদ্যার, মন্ত্রালয়ম, ধরমহালা, উদিশী ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে।

আর KSTDC-র সুপার ডিলাক্স বাস ব্যাঙ্গলোর থেকে রাতভর জার্নিতে যাচ্ছে—ম্যাসালোর, উদিশী, বেলগাঁও, হবলি, শিমোগা, কালিকট, হসপেট। ফেরেও এরা একইভাবে।

আর ৩৫৮ কিমি দূরের চেন্নাই থেকে ৯ ঘণ্টায় TTC-র বাস আসছে ৫-৩০, ৭-০০, ৮-৩০, ৮-৪৫, ৯-৩০, ১০-৩০, ১১-০০, ১২-০০, ১৪-৩০, ১৬-৩০, ১৯-৩০, ২০-৩০, ২১-০০, ২১-১৫, ২১-৩০, ২৩-০০, ২৩-৩০এ। KSRTC-র বাস আসছে চেন্নাই থেকে—লাঙ্গারি ৮-০০, ১০-০০, ২১-৪৫-এ; সেমি লাক্সারি যাচ্ছে ২০-৪৫, ২২-০০, ২২-৩০, ২৩-১৫-এ।

আর আছে YMCA GH, 31 Infantry Rd, ৫ 575885-এ ফ্যামিলি সহ থাকার ব্যবস্থা; YMCA, Nirupathunga Rd, Cubban Park-W, ৫ 211848; YWCA, 86 Infantry Rd, ৫ 570997, YWCA Annexe, ৫ 238574, 32 Mission Rd, ১০ টাকায় সাময়িক সদস্য হয়ে বেড ও ব্রেকফাস্ট সহ প্রতি ২ জনার ২০০। অত্যধিক চাহিদা হেতু এদের ঘর আগে থেকে বুক করা উচিত। রেলের রিটার্নিং রুম; Youth Hostel-ও আছে Obelappa Garden-82 ব্যাঙ্গালোরে। আর আছে ধরমশালা Gubbi Thotadappa Choultry, Stn Rd; Maharashtra Mandal, Gandhinagar; Parsi, Queens Rd; Vasavi, Vanivilas Rd ব্যাঙ্গালোরে।

ভারকশচিত হোটেলগুলির সাথে সাধারণ সাজের Sudha L, Cottonpet; Tourist Hostel, Race Course Rd; Sri Ramkrishna L, H Tajmahal দুইয়েরই অবস্থান গান্ধীনগরে; H Luciya, OTC Rd থাকার পক্ষে ভালই। আর স্বল্পকালীন অবস্থানে উচিতও হবে রেল ও বাসের সল্লিকটে হোটেল নির্বাচন করা।

খাবার হোটেলও আছে ব্যাঙ্গালোরে নানান। রেল স্টেশন, চিদেলপেট, গান্ধীনগরের হোটেলগুলিতে মূলত দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহার্য মেনে; ব্যবস্থাপনা ভালই। ভবুও নেন 5 Sampangi Tank Rd-এ Woodlands-র যথেষ্ট প্রশস্ত দক্ষিণ ভারতীয়

আহার্য পরিবেশনে। বাস ও রেলের সন্নিকটে গান্ধীনগরে *Udipi Cafe, Kamath H* বা রেল স্টেশনের বিপরীতে *Kadamba H*-এ ১২-১৫ টাকায় আজও দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহার্য *Bisi bele bat* অর্থাৎ গরম ডাল ভাত মেলে। কামাথের পাশে *Sagar H, Subedar Chatram Rd*-এ আমিষ ও নিরামিষ দুইই মেলে। বাদামী হাউস তথা টুরিস্ট অফিসের অদূরে *Dai Vihar*-এরও যথেষ্ট প্রশস্তি দক্ষিণ ভারতীয় আহার্য পরিবেশনে। আর দেশী-বিশেষী নানানধর্মী মিলের জন্য উচিত হবে *M G Road*-এর হোটেল-রেস্তোরাঁয় চলা। দালাই লামার বানেন মালিকানাধীন *Rice Bowl*-এ দামে কিছুটা আধিক্য ঘটলেও চীনা ও তিব্বতীয় আহার্যে সুনাম এদের। *Chit Chat, M G Rd*-এ সুস্বাদু আহার্যের সাথে লসিয় ও অহিসক্রমেও সুনাম যথেষ্ট; *Blue Fox, 80 M G Rd (11—23-00)* ভারতীয়, চীনা ও তন্দুরী; *Khyber, 17/1 Residency Rd (12—15-30 & 19—24-00)*-এব মোগলাই খানা; *Kwality Restaurant, 44 Brigade Rd (11-30—15-30 & 19—23-30)*-এর চীনা ও কাবাব; *Princes, 9 Brigade Rd (11—15-30 & 20—23-30)*-এ চীনা ও মহাদেশীয়; ব্রিগেড রোডের *Waikikee Restaurant*-এর নন ভেজ মিলে যথেষ্ট সুনাম; *Tandoor, 28 M G Rd (12—15-30 & 19—24-00)*-এ উত্তর ভারতীয় আহার্য; *The Pub, 1/4 Church St (11—23-00)*, ভারতীয় ও চীনা আহার্য পরিষেবা সুনামের সঙ্গে যথেষ্ট ব্যাত এরা। *Magestic Circle*-এর *Delhi H. Naidu Military H; Shibaji Nagar*-এর *Noor; Commercial St*-এর *Suhajog, Kalpataru*-র প্রশস্তি মাটন/চিকেন ভিশে। তেমনিই *78 M G Rd*-এর *India Coffee House*-টিও সদাই ব্যস্ত কফি ও চিফিন পরিবেশনে। *Taj-shibaji* নগর, *Taj Grand-Curzon Rd* দুইয়েরই প্রশস্তি চিকেন ও মাটন বিরিয়ানিতে। তেমনিই উচিত হবে ব্যাস্কালোরের নিজস্ব খাবার *madur vada*-র স্বাদ নেওয়া নানান হোটেল-রেস্তোরাঁয়।

ঠিক তেমনিই বিশ্বখ্যাত রসগোল্লা স্বাদ নেওয়া যেতে পারে ব্রিটিশ কাউন্সিলের বিপরীতে *48 St Marks Rd*-এ কলকাতা থেকে আগত *K C Das*-এর মিঠাইয়েব দোকানে। আর রয়েছে রসনাভূতির জন্য *Brigade Rd*-এ *Kwality* ও *Charms*. উচিত হবে ব্যাস্কালোর ভ্রমণের স্মারকরূপে সিঙ্ক শাড়ি, জুয়েলারি, কফি, চন্দন তেল, আগরবাতি, চন্দনজাত নানান কিছু, আইভির রকমারি জিনিস সঙ্গী কবা। কেনাকাটার জন্য *M G Road*-এ *Cauvery Arts & Crafts Emporium* ৫71418, বা সিটি মার্কেটে দেখা যেতে পারে। তেমনিই *18 M G Rd*-এ *Kidskemp* ৫587777 যাদুপুরী গড়েছে শিশুদের নানান পণ্যের। ব্রিগেড রোড, কমাশিয়াল রোডের দোকানপাটেও কেনাকাটা করা যেতে পারে। তবুও যেন সিঙ্কজাত বসনের জন্য *Government Emporium, M G Rd*-এ চলাই উচিত হবে।

কনডাক্টেড ট্যুর : ব্যাস্কালোর ভ্রমণার্থীদের কর্ণাটক ও প্রতিবেশী রাজ্য দেখাবার ব্যবস্থা আছে কর্ণাটক স্টেট ট্যুরিজম ডেভেলপমেন্ট কর্পোরেশন লি, ৩য় ভল, মিত্র টাওয়ারস, ১০/৪ কল্লুরবা রোড, ব্যাস্কালোর-৫৬০০০১, ৫ ২২১২৯০১-৩ থেকে। এদের সেন্ট্রাল বুকিং: KSTDC, Badami House, N R Square, Bangalore-2, ৫ 2275883; গাড়িও ছাড়ছে বাদামী হাউস থেকে। পাবলিক ইউটিলিটি বিন্ডিং—*M G Rd*, এয়ারপোর্ট

৫ 5268012 ও সিটি রেল স্টেশন, ৫ 2870068-এও দপ্তর আছে KSTDC-র।

(১) প্রতিদিন সকাল ৭-৩০—১৩-৩০, ১৪—১৯-৩০টায় ২টি পৃথক ট্রারে শহর দেখিয়ে আনে KSTDC. টিকিট ৭৫ করে।

(২) প্রতিদিন ডিলাক্স বাসে ৭-১৫য় গিয়ে ২২-০০টায় ফেরে *Deluxe ১৬৫ Aerotech ১৮০ A/c ২৩৫* টাকায় বেলুড়/হ্যালিবিন্দ/শ্রবণবেলাগোলা দেখিয়ে। তবে, মহিশূর থেকে প্যাকেজ ট্রারে বা এককভাবে হাসান পৌছে বেড়িয়ে নেওয়ায় সুবিধা।

(৩) জুলাই থেকে অক্টোবরে ৩ দিনের প্যাকেজে ৫৫০ টাকায় রাত ২২-০০টায় গিয়ে তৃতীয় সকাল ৬-০০টায় ফেরে যোগ বেড়িয়ে।

(৪) এপ্রিল-জুনে প্রতিদিন আর অফ সিজনে সোম, বুধ ও শুক্রবার থাকা ও যাতায়াতে ১১০০ টাকায় সকাল ৭-১৫য় উঠি যাচ্ছে ৩ দিনের প্যাকেজে KSTDC পথে শ্রীরঙ্গপত্তন, মহিশূর, বন্দীপুর, উঠি বেড়িয়ে আনে বাস।

(৫) রবি ও ছুটির দিনে ৮-০০টায় গিয়ে ২০০ টাকায় শিবসমুদ্র, সোমনাথপুর, রঙ্গনাথ টিট্টো দেখিয়ে ২০-৩০টায় ফেরে।

(৬) তিরুপতি, মঙ্গাপুরা যাচ্ছে প্রতি রাত ২২-০০টায়, ফেরে পবদিন রাত ২১-০০টায়। দেবদর্শনী সহ ভাড়া ৩২৫।

(৭) প্রতি শুক্রবার রাত ২১-০০টায় গিয়ে তৃতীয় রাত ২২-০০টায় ফেরে মঙ্গালয়, তুঙ্গভদ্রা বীধ ও হাম্পী দেখিয়ে। থাকা ও যাতায়াত ভাড়া ৫৬৫।

(৮) শ্রীরঙ্গপত্তন, মহিশূর ও বৃন্দাবন গার্ডেনও দেখে নেওয়া যায় ব্যাস্কালোর থেকে। সকাল ৭-১৫য় গিয়ে ২৩-০০টায় ফেরে বাস। টিকিট ১৬৫/১৮০/২২৫। তবে, মহিশূর থেকে দেখে নেওয়ায় সুবিধা।

(৯) সোম, মঙ্গল ও বুধবার সকাল ৮-৩০টায় গিয়ে ১৮-০০টায় ফেরে ১০০ টাকায় নন্দী পাহাড় বেড়িয়ে।

(১০) জুলাই থেকে ডিসেম্বরে রবি ও ছুটির দিনে ৮-০০টায় গিয়ে ২০-৩০এ ফেরে ২০০ টাকায় হোপেনাকল জলপ্রপাত ও কৃষ্ণগিরি বীধ দেখিয়ে।

(১১) নভেম্বর-জানুয়ারি ও এপ্রিল-জুনে প্রতিদিন, অফ সিজনে শুক্র ও শনিবার ২ দিনের সফরে থাকা ও যাতায়াতে ৫৫০ টাকায় সকাল ৭-০০টায় গিয়ে পরদিন রাত ২২-০০টায় ফেরে নাগারহোল, মারকারা বেড়িয়ে।

(১২) জুলাইর থেকে জানুয়ারির প্রতি বৃহস্পতিবার ২২-০০টায় যাচ্ছে ৫ দিনের সফরে উত্তর কর্ণাটক অর্থাৎ তুঙ্গভদ্রা, হাম্পী, বাদামী, প্যাট্টাডাকাল, আইহোল ও বিজাপুর দর্শনে। থাকা ও যাতায়াতে এ-ট্রারের ভাড়া ৭০০।

(১৩) মরুমুমে প্রতি বৃহস্পতিবার গোয়া ও গোকর্ণ যাচ্ছে ৫ দিনের সফরে ২২৭৫ টাকায়।

(১৪) প্রতি বৃহস্পতিবার রাত ২১-০০টায় ৫ দিনের ট্রারে সাউথ কানাড়া বেড়িয়ে আনে থাকা ও যাতায়াত সহ ৭৭০ টাকায়।

(১৫) জুলাই থেকে অক্টোবর মাসে ৪৭৫ টাকায় ৩ দিনের প্যাকেজে যোগ জলপ্রপাতও বেড়িয়ে আনে KSTDC.

এছাড়া KSTDC-র ডিলাক্স বাস যাচ্ছে প্রতি রাতে ১০০ টাকায় শিমাগা, ১২৫ টাকায় হসলেট, ১৩০ টাকায় কালিকট, ১৩০ টাকায় কাম্বানোর, ১৬০ টাকায় ম্যাঙ্গালোর—ফেরেও এরা

একইভাবে। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেনে এদের কাছে। সরাসরি যোগাযোগ ৩ 2212901-3 বা 2275883.

আর ITDC প্রতিদিন ৭-৪৫৫ হোটেল অশোক থেকে গিয়ে শ্রীরামপত্তন, মহীশূর ও বৃন্দাবন গার্ডেন দেখিয়ে ২২-৩০টায় ফেরে শহরে। শ্রবণবেলগোলা, হাসান, বেণুড় ও হ্যালেবিদ বেড়িয়ে আসে প্রতি শুক্র ও রবিবার সকাল ৭-৪৫৫ গিয়ে ২২-৩০টায় ফিরে ITDC. A/c বাসও যাচ্ছে এদের। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেনে এদের কাছে। বুকিং : ITDC, Transport Unit, Hotel Ashok, K K High Grounds, close to City Centre, ৩ 179411, Bangalore-560001.

এছাড়া নানান প্রাইভেট সংস্থাও কর্পটিক প্যাকেজে যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে: (১) মহীশূর স্টেট ব্যাঙ্ক (MSB) থেকে বাস যাচ্ছে রবিবার ছাড়া প্রতিদিন—সকাল ৮-৩০টায় গিয়ে ১৭-৩০টায় ফেরে ব্যাঙ্গালোর শহর দেখিয়ে। (২) মঙ্গল ও বৃহস্পতিবার নন্দী হিল দেখিয়ে আনে MSB থেকে ৮-৩০টায় গিয়ে ১৮-৩০টায় ফিরে। (৩) MSB থেকে ৭-৩০টায় গিয়ে ২১-৩০টায় ফেরে মহীশূর ও বৃন্দাবন গার্ডেন দেখিয়ে। (৪) বেণুড়, হ্যালেবিদ ও শ্রবণবেলগোলাতেও যাচ্ছে প্রাইভেট বাস। হোটেল থেকেও যাত্রী তুলে নেয় এরা। এ ব্যাপারে হোটেল ম্যানেজারদের সাহায্য নেওয়াই উচিত হবে। তেমনই উচিত হবে শহর থেকে ২০ কিমি দূরে White Field অর্থাৎ শ্রী সত্য সইবাবার আশ্রমটি বেড়িয়ে নেওয়া। ট্রেন ও বাস (333E) দুই-ই যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর সিটি থেকে হোয়াইট ফিল্ডে। ব্যাঙ্গালোর প্রাসাদ: শহরের প্রাণকেন্দ্রে ব্রিটিশ টিউডরি স্থাপত্য উইন্ডসর ক্যাসেলের রেনিঞ্জার রোপে ১৮৮৭তে ওদয়ার রাজার গড়া প্রাসাদ। তবে পর্যটন মানচিত্রে উপেক্ষিত হলেও চড়ুইভাতির প্রকৃষ্টি ক্ষেত্র।

কুব্বন পার্ক: রূপসী ব্যাঙ্গালোরের আর এক মরুদ্যান কুব্বন। দক্ষ স্থপতির মতো খাঁজতোলা ছায়াচ্ছন্ন বাঁশের ঝাঁড় প্রকৃতি প্রেমিকদের স্বর্গ। রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি পশ্চিমে শহরের মূল আকর্ষণ কুব্বন পার্ক। ১৮৬৪ খ্রিস্টাব্দে ব্রিটিশ ভাইসরয় লর্ড কুব্বন ৩০০ একর জমি জুড়ে গড়ে তোলে। টয় ট্রেন চলছে। পার্কে গাখিক শৈলীর লালরঙা শেখাব্রি আয়ার মেমোরিয়াল হল-এ সাধারণ পাঠাগার বসেছে। ছোটদের স্বর্গোদ্যান কুব্বনে—মিউজিয়াম, জুওহর বালভনন, শিশু উদ্যান ছাড়াও নানান কিছু রয়েছে। প্রতি রবিবার সন্ধ্যায় ব্যান্ড পার্টির আকর্ষণও অনবদ্য। তবে, নামের বদল ঘটেছে, সম্প্রতি কুব্বন হয়েছে Joya-chamarajendra Park.

কুব্বনের আর এক গৌরব ১৮৬৬ খ্রিস্টাব্দে তৈরি গভর্নমেন্ট মিউজিয়াম। ১৮টি উইংসে হ্যালেবিদ, বিজয়নগরের সাথে ৫০০০ বছরের প্রাচীন মহেঞ্জোদাড়োর স্থাপত্য, প্রাচীন মুদ্রা ও শিলালিপির সংগ্রহ প্রদর্শিত হয়েছে। নতুন সংযোজন Venkatappa Art Gallery-টিও উল্লেখ্য। ছবি, প্রাসাদের অব প্যারিসের নানান কিছু, পার্কতে ভাস্কর্যের সংগ্রহ অনবদ্য। বৃষ্ণ ও ছুটি ছাড়া ৯—১৭-০০টায় খোলা।

মিউজিয়াম লাগোয়া কস্তুরবা রোডে Visveswaraya Technological & Industrial Museum-টিও উচিত হবে

চলতে-ফিরতে দেখে নেওয়া। মানবকল্যাণ তথা শিল্পে বিজ্ঞানের প্রয়োগ তুলে ধরা হয়েছে। সোম ও ছুটি ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা, টিকিট ১ করে।

ভারতে দ্বিতীয় বৃহত্তম অ্যাকোয়ারিয়ামটিও কস্তুরবা রোডে। বালভনন লাগোয়া হিরের আকারে তৈরি অ্যাকোয়ারিয়ামটিও কুব্বনের আর এক গৌরব। স্বাদ নেওয়ারও ব্যবস্থা আছে জলচর মাছের। মঙ্গল ও ছুটি ছাড়া ১০—১৯-০০টায় খোলা। আর প্ল্যানেটেরিয়াম বসেছে সাংখ্যে রোডে। সোম ছাড়া প্রতিদিন নানান প্রদর্শনী—১৬-৩০টায় ইংরেজি ধারা-ভাষ্য ৩ 2203234/2266084. ২০ মিলিয়ন বছরের প্রাচীন ফসিল ব্লকের সাথে শিশু চিত্র বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে গড়া বালভননের দ্বার সবার তরেই খোলা।

গ্রানাইট পাথরে ব্রাহ্মীড়য় ভাস্কর্যের নিদর্শন হয়ে বিধান সৌধটিও গড়ে উঠেছে ১৯৫৪য় কুব্বনের উত্তর-পশ্চিমে রাজপাথের বিপরীতে। আয়তনে ৫০৫০০০ বর্গ ফুট। ক্যাবিনেট রুমের চন্দনকাঠের বিশালাকার দরজাটিও অনন্য করে তুলেছে। বিধানসভা ছাড়াও সেক্রেটারিয়েটও বসেছে ৪৬ মিটারের ৪ তলা এই সৌধে। রবি ও ছুটির দিনগুলিতে আলোর সাজ পরে সৌধ। ছুটি ছাড়া ১৫—১৭-৩০টায় Under Secretary-র অনুমতিতে সৌধের অংশ—বিশেষ করে জাঁকালো রঙের গম্বুজটি দেখে নেওয়া যায়।

বিধান সৌধের বিপরীতে ইট ও পাথরে ১৮৬৮তে গড়া লালরঙা দ্বিতল *আট্টার কাছারি* অর্থাৎ *হাইকোর্ট* ভবন। লাগোয়া গাখিক শৈলীর স্টেট সেন্ট্রাল লাইব্রেরি। পোস্ট অফিসটিও (GPO) ইমারত শৈলীতে অনন্য। ব্যাঙ্গালোর বাসস্ট্যান্ড থেকে ১১৩, ১২২, ১২৪, ১২৬, ১২৬-এ, ১২৯, ১৩৬ রুটের বাস যাচ্ছে কুব্বন তথা বিধান সৌধ হয়ে। অদূরেই শিবাজী নগর।

তেমনই কুব্বনের উত্তর-পূবে উলসুর লেকের পাশা-সবুজ জলে সাঁতার ও বাোটিং করা যেতে পারে। লেকের জলে ছোট ছোট দ্বীপ। এমনকি গণেশচতুর্থীতে দেবতা গণেশ, প্রবাসী বাঙালিদের দেবী দুর্গার ভাসানও হয় উলসুরে। কুমারা পার্কের পশ্চিমে কর্পটিক ফোকআর্ট মিউজিয়ামে লোক শিল্পের নানান কিছু দেখে নেওয়া যায়। শহরের নবতম আকর্ষণ এয়ার পোর্ট রোডে কৃত্রিম কৈলাশ পর্বতে ৬০০০ বর্গ ফুট জুড়ে ভাস্কর্য কে কাশীনাথ-এর তৈরি বিশ্বের উচ্চতম (৬০ ফু) শিবমূর্তি। ১৯৯৫র শিবরাত্রিতে মূর্তি উন্মোচন করেন শৃঙ্গেরী মঠের শঙ্করাচার্য।

লালবাগ: দক্ষিণ শহরতলীতে লালবাগ হচ্ছে বটানিক্যাল গার্ডেন তথা প্রমোদ কানন। ১৭৬০এ হায়দর আলির হাতে এর গোড়াপত্তন। সম্পূর্ণতা পায় পূত্র টিপু হাতে লালবাগ। আর আধুনিকতা পায় ব্রিটিশের হাতে ১৯ শতকে। পারস্য, আফগানিস্তান, ফ্রান্স থেকে আনা বৃক্ষ সহ সহস্রধর্মী বৃক্ষের সমাবেশ ঘটেছে ২৪০ একর ব্যাপ্ত লালবাগে। এর প্রমোদ বিভাগটিও আকর্ষণীয়। লন্ডনের ফ্রিস্টল গ্যালারিদের আদলে

১৮৯০এ তৈরি অতীতের বিবাহবাসর—কাচঘর, ঝরনা, কৃত্রিম হ্রদ, পদ্মে ভরা পুকুর, গোলাপ বাগিচা, ডিয়ার পার্ক বৈচিত্র্য এনেছে উদ্যানে। ব্যাটারি চালিত ফুল-বাড়িটিও অনবদ্য। ঘড়িও মিলিয়ে নেওয়া যায় HMT-র এই ঘড়ির সাথে। জানুয়ারি ২৬ ও আগস্ট ১৫ পুষ্প ও বৃক্ষ প্রদর্শনীও বসে উদ্যানে। প্রতিদিন ৮—২০-০০টায় খোলা। সিটি বাস স্ট্যান্ড থেকে ২, ৪, ১২/এ/বি/ডি, ১৮, ২৫এ/ডি/ই বাস যাচ্ছে লালবাগে। অদূরে শ্রীরামকৃষ্ণ মঠ।

দুর্গ: বিজয়নগররাজ্যের কাছ থেকে দানরূপে জমি পেয়ে ইয়েলাহাঙ্কা প্রভু গোষ্ঠীর কেম্পেগৌড়ার করদ রাজ্যের সূচনা। রাজ্য হতে দুর্গ চাই। আজকের রেল স্টেশনের দক্ষিণে সিটি মার্কেটের বিপরীতে কৃষ্ণরাজেন্দ্র রোডে ১৫৩৭এ কেম্পেগৌড়া সর্গার মাটি দিয়ে দুর্গ গড়েন। এই দুর্গ থেকেই শহরের পত্তন। আর ১৮ শতকে হায়দর আলি রূপান্তর ঘটান মাটি থেকে পাথরে। সংস্কার হয় টিপুর হাতেও দুর্গ। ধ্বংস ব্রিটিশের সাথে টিপুর যুদ্ধে। দর্শনে উল্লেখ্য না হলেও অতীত রোমন্থন করে নেওয়া যেতে পারে পায়ে পায়ে। তবে, কালহস্তেশ্বর অর্থাৎ সিদ্ধিদাতা গণপতি মন্দিরটি রয়েছে আজও।

টিপুর প্রাসাদ: আর রয়েছে দুর্গ থেকে সামান্য দক্ষিণে সিটি মার্কেটের সমীকটে কৃষ্ণরাজেন্দ্র ও আলবার্ট ভিক্টর রোডের সংযোগ দাক ও মর্মরে তৈরি অতীতের প্রাসাদপুরী টিপুর গ্রীষ্মাবাস—Rashk-e-Jannat. দারুতে কারুশিল্পের বৈভব উল্লেখ্য। শ্রীরঙ্গপত্তনের দারিলা দৌলত বাগ প্রাসাদের রেমিকার্পে ১৭৭৮এ হায়দর আলির শহর হাতে শুরু হয়ে শেষ হয় টিপুর হাতে ১৭৯১এ। তবে, অযত্ন আর অবহেলায় এটি আজ ধ্বংস পেয়েছে। একাত্তই উচিত হবে মহীশূর শাদুল টিপু নিতীক গরিমার নীরব সাক্ষ্য মিউজিয়মে দেখে নেওয়া। ৮—১৮-০০টায় দুর্গ দেখার সময়।

অদূরে দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে গড়া ৩০০ বছরের প্রাচীন ভেঙ্কটরমনস্বামী মন্দির। তৃতীয় মহীশূর যুদ্ধের (১৭৯০-৯২) কানানের গোলায় ক্ষতচিহ্ন আজও দেখে নেওয়া যায় বিপরীতের পাথরের খামে।

শহরের আর এক আকর্ষণ জ্যোতির্বিদ্যা ও স্থাপত্যে অনবদ্য শ্রীগাভী গঙ্গাধারেশ্বর গুহা মন্দির। মকর সঙ্কোচিত্তে গুহা মন্দিরের বাইরে মর্মরে তৈরি নন্দীর সিং-এর মাঝ দিয়ে সূর্যালোক গিয়ে আলোকিত করে সেবমন্দিরের গর্ভগৃহ। দুর্গ-দুর্গাথ থেকে বাত্রী আসেন জানুয়ারির মধ্যভাগের এই পূর্ণ্যদিনে।

বুল টেম্পল: শহর থেকে দক্ষিণে বুল টেম্পল রোডে বাগল হিলে মন্দির হয়েছে নন্দীর। শহরের প্রাচীনতম (১৬ শতক) মন্দিরও এই বুল টেম্পল। দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে কেম্পেগৌড়ার হাতে তৈরি মন্দিরে ৬.২ মি উঁচু মনোনিখিক মূর্তি হয়েছে শিবের বাহন নন্দীর। জনক্ৰতি, আকার বাড়ছে নন্দীর আজও। লাগোয়া গণেশমন্দির। মূর্তি হয়েছে গলে

না এমন ১১০ কিলো মাখন জমিয়ে। প্রতি ৪ বছর অন্তর মূর্তি হয় নতুন করে সেবতার। আর আছে ৪০০ মি পশ্চিমে কেম্পেগৌড়ার তৈরি ৪টি ওয়াচ টাওয়ার। পর্যবেক্ষণে ব্যবহৃত হত সেকালে। শহর থেকে ১ডি, ৫, ৩১, ৩৬, ৩৬ই, ৩৯, ৪৩ রুটের বাস যাচ্ছে। সবার তরে দ্বার খোলা মন্দিরের।

নন্দী হিলস

শহর থেকে ৬০ কিমি উত্তরে ব্যাঙ্গালোর-মহীশূর NH 48-এ ১৪৭৮ মি উঁচুতে শিবের বাহন নন্দী হিলস পাহাড়ী শহর। নন্দীগিরি বা নন্দী দুর্গও বলে থাকে লোকে নন্দীকে। নিরালো নিভুতে ছোট্ট অবকাশখাপনের মনোরম পরিবেশ। Chikkaballapur রাজ্যের গড়া দুর্গের প্রকৃতিতে প্রলুব্ধ হয়ে টিপুও গুপ্তাবাস বা গ্রীষ্মাবাস গড়ে নন্দী হিলসে। গ্রীষ্মে ২২.৩ থেকে ২৮.৭° সেন্টিগ্রেডে গুঠানামা করে তাপমান। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ, পথশোভা সুন্দর। ব্রিটিশও আসে নন্দী পাহাড়ে। ১৭৯১-এর চতুর্মা রাতে লর্ড কর্ণওয়ালিস আক্রমণ হানেন। পাথর গড়িয়ে পথরোধ হয় ব্রিটিশের। দু'টি শিব মন্দিরও রয়েছে বাণরাজাদের রানীর গড়া—একটি বাস স্ট্যাণ্ডের শিরে টিপু সামার প্যালেসের নিচুতে; দ্বিতীয়টি পাহাড়ে চড়ে। তবে, বারবার সংস্কারে প্রাসাদের অতীত লোপ পেয়েছে আজ। পাশেই অমৃত সরোবর অর্থাৎ ছোট্ট লেকও বারমেসে ঝরনা—নির্গত হয়েছে পেনার, চিত্রবতী ও পালার নদী। আর বাস থেকে ১ কিমি দূরে পাহাড় চূড়ায় Yoganand-Diswara শিব মন্দিরটি চোলরাজাদের কালের। তবে, বিজয়নগর রাজাদের কালেও নানান সংযোজন ঘটছে মন্দিরে। আর আছে টিপুর উপাসনা হল—ছাবোরা, কুস্পেজ অর্চাট, ম্যাগাজিন, যোগানন্দ মন্দির, টিপু ড্রপ অর্থাৎ ৬০০মি উঁচু খাড়া পাহাড় থেকে মৃত্যুদণ্ডে দণ্ডিত কয়েদীদের ফেলে দেওয়া হত, টিপু হারেম মানে জেনানা মহল ও চোল-রাজাদের কালের বেশ কয়েকটি মন্দির নন্দী পাহাড়ে।

কেবলমাত্র কণ্ঠিক ভ্রমণার্থীদের পক্ষে তিন সপ্তাহে এই তালিকা ধরে সফর করা অসম্ভব নয়। তবে, সময় বহনতায় এ দিনেও কণ্ঠিক সফর সাঙ্গ করা যেতে পারে। সেক্ষেত্রে সরাসরি মহীশূর পৌছে বিজয় নিন সেন্নি। প্রয়োজনীয় টিকিট-পর কেটে রাখুন। মারফতরা বেড়িয়ে আসুন প্রথম দিন। দ্বিতীয় দিন মহীশূর শহর ও কুন্ডাবাস গাউনে দেখে ১৮-০৫এর কাবেরী এঙ্গে ২০-৫০এ বা ২০-৩০এর প্যালেঞ্জারে মহীশূর থেকে ব্যাঙ্গালোর পৌছান ভোর ৪-০০টায়। বা রাত মহীশূরে কাটিয়ে তৃতীয় সকালে ৬-৪৫এর চামুটী এঙ্গে ১-৪০এ ব্যাঙ্গালোর পৌছে কেনাকাটা ও শহর দেখা। চতুর্থ দিনে বেলুড়, হায়েলিও ও শ্রবণবেঙ্গগোলা বেড়িয়ে আসুন। পঞ্চম দিনে কোলার কর্ণিকি দেখে ১৭-০৫এর 7686 কাচিওলা এঙ্গে রওনা হয়ে পরদিন ৯-২০এ কাচিওলা পৌছান। আবার ত্রিকুপতি চলা বেতে পারে মহীশূর-ত্রিকুপতি স্ট্রট প্যালেঞ্জারে ২০-১০এ ব্যাঙ্গালোর সিটি ছেড়ে পরদিন ভোর ৪-০০টায় বা যোগ কলস বা বিজাপুরও বেতে পারেন বা আপনার পছন্দমত রুট ধরে এগিয়ে চলুন।

| Bangalore-Mysore-Ooty-Coimbatore- Thrissur-Ernakulam-Kottayam- Thiruvananthapuram-Kanniya Kumari | | | |
|--|---------------------------------|--------|--|
| 0 | Km Bangalore | | |
| 80 | " Madurai | | |
| 81 | " Road Jn | | |
| | To Somnathpur | 40 km | |
| | " Sivasamudram | 43 km | |
| 94 | " Mandya | | |
| | To Somnathpur | 27 km | |
| 122 | " Road Jn | | |
| | To Hassan | 103 km | |
| 124 | " Wellesly Bridge | | |
| | To Somnathpur | 23 km | |
| 127 | " Srirangapatnam | | |
| | To Ranganathitto Bird Sanctuary | 3 km | |
| | " Brindaban Garden | 16 km | |
| 139 | " Mysore | | |
| 161 | " Nanjangud | | |
| | To Coimbatore | 179 km | |
| 215 | " Bandipur | | |
| 224 | " Mudumalai | | |
| 247 | " Gudalur | | |
| | To Kozhikode | 126 km | |
| 280 | " Pykara Hydro Electric Project | | |
| 297 | " Udagamandalam (Ootacamund) | | |
| 314 | " Coonoor | | |
| | To Kotagiri | 19 km | |
| 348 | " Mettupalayam | | |
| 355 | " Coimbatore | | |
| 432 | " Palakkad | | |
| | To Malampuzha Dam | 14 km | |
| 499 | " Thrissur | | |
| | To Aluva | 53 km | |
| 544 | " Angamalai | | |
| | To Kalady | 10 km | |
| 554 | " River Periyar | | |
| 557 | " Aluva | | |
| | To Kodai | | |
| 578 | " Ernakulam | | |
| | To Kochi | 4 km | |
| | " Alappuzha | 63 km | |
| 645 | " Kottayam | | |
| | To Periyar Game Sanctuary | 119 km | |
| | To Madurai/Kodai | | |
| 725 | " Kottarakara | | |
| | To Kollam | 30 km | |
| | " Tenkasi | 79 km | |
| 798 | " Thiruvananthapuram | | |
| | To Kovalam Beach | 13 km | |
| 851 | " Padmanabhapuram | | |
| 866 | " Nagercoil | | |
| 874 | " Suchindram | | |
| 885 | " Kanniya Kumari | | |

মার্চ থেকে জুনে প্রতিদিন আর সোম, মঙ্গল ও বুধবার বছর জুড়ে KSTDC সকাল ৮-৩০টায় গিয়ে ১৮-০০টায় ফেরে নন্দী হিলস ও M Visveswaray-র জম্মভূমি Muddanahalli বেড়িয়ে। আর রাজ্য পরিবহণের বাস যাচ্ছে সিটি বাস স্ট্যান্ড প্লাটফর্ম ৯ থেকে ৮-০০, ৮-৩০, ৯-৩০, ১৪-৪৫, ১৬-৩০, ২০-৩০এ ছেড়ে ২ ঘণ্টায় চিকুবালাপুর্তি পাহাড় হয়ে নন্দী হিলসে। একমাত্র এই বাসই চুড়োয় ওঠে। ফেরে ৮-০০টায় প্রথম ছেড়ে ১৭-৩০এ শেষ বাসটি নন্দী হিলস থেকে ব্যাঙ্গালোরে। আবার, ব্যাঙ্গালোর-বঙ্গারপেট শাখা রেলও নন্দী পাহাড় যাওয়া চলে।

বাস স্ট্যাণ্ডে *Cubban House, Cottage, Horticulture Dept, Bangalore, ☎ 602231; PWD GH, Keb GH;* আর পাহাড়চূড়ায় KSTDC-র *H Mayura Pine Top, Nandi Hills, Dist-Kolar, ☎ (08156)78624, SAB ১৯০, DAB ২২০, ছাড়াও হোটেল আছে নানান।*

কোলার স্বর্ণখনি

সোনার দাম আকাশচুম্বী। থাকে কিন্তু তা মাটির নিচে—তিন কিমিরও (২৪০০ মি) বেশি গভীরে। ভারতের একমাত্র স্বর্ণখনিটি ব্যাঙ্গালোর-চেন্নাই জাতীয় সড়কে ব্যাঙ্গালোর থেকে ৬৮ কিমি দূরে দীর্ঘ ৭০০ বছরের গণিয়া রাজাদের অতীতের রাজধানী শহর কোলারে। শহর থেকে স্বর্ণখনির দূরত্ব ৪৫ কিমি। আকরিকের সাথে ১৮৮০তে প্রথম সোনা মেলে—টনে ৫ থেকে ৬ পেনিওয়েট। ১৯৫৮য় রাষ্ট্রায়ত্ত্বকরণ হয়েছে স্বর্ণখনি। এলিভেটর নামছে যাত্রী নিয়ে। অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে *The Secretary, Kolar Gold Mining Undertaking, Kolar-563101*-এর অনুমতি নিয়ে দর্শনী দিয়ে খনিতে নামা যায়। তবে মঙ্গল, বৃহস্পতি ও শুক্রবার ২০ জন, সোম ও বুধ ৪০ জন করে দর্শনার্থীর দেখার ব্যবস্থা। শনি ও রবিবার বন্ধ থাকে দর্শন। ১০ বছরের কম বয়সীদের খনিতে নামা মানা। ব্যাঙ্গালোর সিটি থেকে ৬-৫৫র মারিকুন্ডম প্যাসেঞ্জারে ৯-০০টায় বঙ্গারপেট পৌছে ন্যারো গেজে ৯-১০এর বঙ্গারপেট-ইলেহাঙ্কা প্যাসেঞ্জারে ৯-৫৩য় কোলার পৌছান। ফেরার ট্রেন ১৮-২০এর চেন্নাই-ব্যাঙ্গালোর এন্ডে ২০-২০এ ব্যাঙ্গালোর। বাসও আছে ব্যাঙ্গালোর সিটি বাস স্ট্যান্ড ৬ প্লাটফর্ম থেকে প্রতি আধ ঘণ্টা অন্তর কোলারে। যাতায়াতে বাসই সুবিধার।

থাকার জন্য *Woody's The Nagarjuna H, NH 4, near Devraj Urs Medical College, Tamka, Kolar-563101, ☎ (08152) 24466, S ৩০০, D ৪০০* ছাড়াও নানান হোটেল ও *Mines Visitors' Bungalow* আছে কোলারে। আর আছে KSTDC-র *H Mayura Apoorva, Old Madras Rd, Mulbagal, Dist-Kolar, ☎ (08159) 42173, S ১৬০, D ২২০* টাকায়।

ব্যাঙ্গালোর থেকে ৫৫ কিমি দূরে টুমকুর রোডে ১৩৮০ মি উচুতে শিবসঙ্গা পাহাড়ী শহর। পাহাড়টি এখনে পূর্ব

থেকে শিবের বাহন নন্দী, পশ্চিম থেকে গণেশ, দক্ষিণ থেকে লিঙ্গরূপী শিব, আর উত্তর থেকে যশা তোলা কোবরারূপী দৃশ্যমান। দু'টি মন্দির ও বরনার জন্য শিবগঙ্গার প্রশস্তি। মাঝপথে পাথলাগঙ্গা প্রবণটিও এপথের আর এক দ্রষ্টব্য।

তেমনিই ব্যাঙ্গালোর থেকে ৩৫ কিমি দূরে অর্কাবতী নদীতে বীধ পড়েছে, হয়েছে জলাধার চামরাজাসাগর বা থিলেগুণ্ডনহাম্মি। শহরের পানীয় জল আসছে এই চামরাজা থেকে। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। তবে, Chief Engineer, BWSSB, Cauvery Bhavan, Bangalore-9-এর অনুমতি লাগে জলাধার দেখতে। থাকারও ব্যবস্থা আছে Travellers' Bungalow-য়।

ব্যাঙ্গালোর থেকে ৩৫ কিমি দূরে দেবানাহম্মীতে টিপূর জন্ম। স্মারকরূপে মনুমেন্ট হয়েছে, দুর্গও আছে। আর আছে দ্রাবিড়ীয় শৈলীতে তৈরি বেণ্গোপাল মন্দির দেবানাহম্মীতে। ৪৫ কিমি দূরে কেম্পেগৌদার জন্মভূমি মাগাডিও আর এক প্রাচীন নগর। ১১৩৯এ তোলরাজদের কালে গড়ে ওঠে নগরী। ভাস্কর্যময় নানান মন্দির—সোমেশ্বর, রামেশ্বর, গঙ্গাধারেশ্বর, বীরভদ্র উল্লেখ্য।

বাসেরবাট্টা জাতীয় উদ্যান

ব্যাঙ্গালোর থেকে ২১ কিমি দক্ষিণে ১০৪ বর্গ কিমি জুড়ে শুষ্ক পর্ণমোচী বৃক্ষের অরণ্যভূমি বাসেরবাট্টা। জাতীয় উদ্যানের শিরোপা চেপেছে ১৯৭৪ খ্রিস্টাব্দে বাসেরবাট্টার শিরে। পাহাড়-পাহাড় আরণ্যক পরিবেশ। শব্দ, স্পটেড ডিম্বার, সাপ, হাতি, বাইসন ও সিংহ আকর্ষণ বাড়িয়েছে। ডিম্বার পার্ক, প্রি-হিস্টোরিক অ্যানিমাল (স্টাফড) পার্ক, টাইগার সাফারি, লায়ন সাফারি, ক্রোকোডাইল প্রোজেক্টও বসেছে বাসেরবাট্টায়। শতাধিক প্রজাতির পাখিও নীড় বেঁধেছে জাতীয় উদ্যানের বৃক্ষ শাখে। বয়ে চলেছে সুবর্ণমুখী নদী উপত্যকার বুক চিরে। অনুচ্চ দুই পাহাড়চূড়ো—মির্জা ও হাজমানাকান্ন থেকে জাতীয় উদ্যান সুন্দর দৃশ্যমান। ৩৬৫ রুটের বাস যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর বাস স্ট্যান্ড থেকে। সোমবার ছাড়া ৯—১৭-০০টায় খোলা থাকে জাতীয় উদ্যান। গাড়িও মেলে বনদপ্তরের সাফারি দর্শনে।

রামোহাম্মী

রামো হাম্মী অর্থ তার বিশাল বটবৃক্ষ। শাখাপ্রশাখায় ছড়িয়ে ৩ একর জুড়ে এই ৪০০ বছরের প্রাচীন বট বৃক্ষ। শহর থেকে ২৮ কিমি দূরে চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। ব্যাঙ্গালোর-মহীশূর পথের কেন্দ্রেগেরী পৌছে রামোহাম্মী চলা

যেতে পারে বাসে বাসে। তবে সিটি মার্কেট থেকে সরাসরি বাসও মেলে ২২৭ রুটের।

পুত্তাপুর্তি

অন্ধ্র প্রদেশের অনন্তপুর জেলায় অখ্যাত এক গ্রাম পুত্তাপুর্তি—আজ ভারত তথা বিশ্ববাসীর কাছে বরগীয় তীর্থ। ১৯২৬ খ্রিস্টাব্দের ২৩শে নভেম্বর শ্রীসত্য সাঁইবাবার জন্ম এই পুত্তাপুর্তিতে। আশ্রম হয়েছে বিস্তীর্ণ এলাকা জুড়ে—প্রশান্তি নিলয়ম। উপাসনা হয় ৪-৩০—৫-৩০টা পর্যন্ত। ভজন হয় গ্রীষ্মে ৮—৯-৩০ ও ১৮-৩০—১৯-৩০টায়, শীতে ১১—১২-০০টায়। দর্শনও মেলে শ্রীসত্য সাঁইবাবার ভজনকালে। এছাড়াও মহাশিবরাত্রি ও সাঁইবাবার জন্মদিনে বিশেষ দর্শনের ব্যবস্থা। দেশ-দেশান্তর থেকে ভক্তের দল আসেন বিশেষ দর্শনের দিনে সাঁইবাবার আশীর্বাদ পেতে। ১৯৮৫তে সাঁইবাবার ৬০তম জন্মবার্ষিকীতে ৪ লক্ষ ভক্তের সমাগম ঘটে আশ্রমে। তবে, বিশেষ দর্শনের দিনগুলিতে থাকার ব্যবস্থার জন্য আগে থেকে—PRO, Prasanti Nilayam, Puttaparti, P O-Anantapur, PC-515134, A P-কে লিখে যাওয়াই উচিত হবে। আর আছে প্রাইভেট মালিকানা Sri Satya Sai Towers H, Main Rd, Puttaparti-515134, AP, ☎ (08555) 87270, S 8০০ D ৬৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০। হায়দ্রাবাদ ৪২১, অনন্তপুর ৬৭ আর ব্যাঙ্গালোর থেকে ১৫২ কিমি দূরে পুত্তাপুর্তি। অবস্থান অন্ধ্র প্রদেশে হলেও যাতায়াতে বিমান, রেল ও বাস তিনেরই সুব্যবস্থা ব্যাঙ্গালোর থেকে মেলে। পুত্তাপুর্তির নিকটতম রেলস্টেশন ব্যাঙ্গালোর সিটি-ধর্মভরম শাখায় ১৬৮ কিমি দূরে ধর্মভরম জং বা ধর্মভরম-গুণ্টাকল-হসপেট ব্রডগেজ রেলের অনন্তপুর। দিন-রাত্রি জুড়ে নানান ট্রেন। আবার ব্যাঙ্গালোর সিটি বাস স্ট্যান্ড ১০ প্ল্যাটফর্ম থেকে ৯-৪৫, ১১-৪৫, ১৭-০০টায় ছেড়ে ৫ ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে পুত্তাপুর্তি। IAC-ও সার্ভিস গড়েছে ৩৭ দিন চেন্নাই-পুত্তাপুর্তি-চেন্নাই, ৪ দিন মুম্বাই-পুত্তাপুর্তি-মুম্বাই-এর। থাকা ও আহাৰ্য মেলে আশ্রমে।

আবার ব্যাঙ্গালোর শহর থেকে ২০ কিমি দূরে বিমান-বন্দর সড়কে ওয়েট ফিল্ড অর্থাৎ বৃন্দাবনে আশ্রম হয়েছে সাঁইবাবার। অবস্থানও করেন বাবা বছরের নানান সময় ব্যাঙ্গালোরে। তাই আগ্রহীদের উচিত হবে Information Centre, Brindavan, Kadugodi-560067, ☎ 842233-কে (ব্যাঙ্গালোর আশ্রম) ফোন করে বাবা সন্দর্শনে এগিয়ে চলা। ট্রেন যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর থেকে Weight Field Rly Stn-এ। বাস যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর সিটি থেকে 333-E রুটের বৃন্দাবনে। থাকারও ব্যবস্থা আছে আশ্রমে।

অন্ধ্র প্রদেশ

আয়তনে ৪র্থ আর জনসংখ্যায় ৫ম বৃহত্তম রাজ্য অন্ধ্র প্রদেশ। অন্ধ্র আজকের নয়। খ্রিস্ট জন্মেরও হাজার বছর আগে থেকে এর ইতিহাস মেলে। সেকালে আত্রেয় ব্রাহ্মণ্য সম্প্রদায় বাস করত আজকের অন্ধ্রে। সম্ভবত আত্রেয় থেকে অন্ধ্র হয়ে থাকবে। এমনকি মৌর্য সম্রাট চন্দ্রগুপ্ত ও অশোকের রাজ্যভূক্তও ছিল সেকালের অন্ধ্র। প্রসার পায় বৌদ্ধধর্ম—রূপ পায় বৌদ্ধধর্মের অন্যতম ঘাঁটি রূপে, যার নিদর্শন আজও মেলে অমরাবতীতে। সম্রাট অশোকের মৃত্যুর পর খ্রিপূ ২ শতকে অন্ধ্র নায়ক সাতবাহন স্বাধীনভাবে রাজ্য গড়ে তোলেন আজকের হায়দ্রাবাদে। আর্য রক্ত রয়েছে এদের ধমনীতে। অতীতে কোনো একসময় বিদ্যাপর্বত থেকে নেমে এসে আস্তানা গাড়ে এরা।

খ্রিপূ ২২৫ অব্দ থেকে সাতবাহন রাজারা রাজত্বও করে গেছেন দীর্ঘ ৪৫০ বছর ধরে অন্ধ্রে। এদেরই অধীনস্থ ঈক্ষ্বাকু রাজারা স্বাধীনতা ঘোষণা করে বিজয়াপুরীতে রাজধানী গড়ে। দক্ষিণে তখন পল্লব রাজত্ব। আর ৬১৫য় পুলকেশী ২ পল্লবরাজ মহেন্দ্রবর্মণকে হারিয়ে রাজ্য গড়ে চালুক্যরা। আর গৌতমীপুত্র সাতকর্ণি (খ্রি ১০৬-১৩০)-র কালে প্রসার পায় রাজ্য সুদূর মহারাষ্ট্র, উত্তর কঙ্কন, গুজরাত, কাথিয়াবাড় ও মালোয়া পর্যন্ত। ১০ শতকে রাজ্য যায় দক্ষিণী চোল রাজাদের দখলে। ১২ শতকে ওয়ারাসালের কাকাতীয়রা শাসক হয় অন্ধ্রে। ১৪ শতকে অন্ধ্র যায় বিজয়নগরের হিন্দুরাজাদের দখলে। সংঘাতও চলতে থাকে সেই থেকে হিন্দু ও মুসলিমে ক্ষমতার দখল নিয়ে। প্রতাপরুদ্র দ্বিতীয়ের পর ১৫৪৩এ কুতবশাহী বংশের পতন হায়দ্রাবাদে। বিজয়নগরের শেষ হিন্দু রাজা রামরাজা ১৫৬৫র ২৩শে জানুয়ারি টালিকোটায় সম্ভবন্ধ শাহী সুলতানদের হাতে পরাজয়ে অন্ধ্র যায় কুতবশাহীদের দখলে। আর অধীনতার নিদর্শন স্বরূপ অনুদান দিতে বার্থতায় মোগলী আক্রমণে ১৬৮৭তে কুতবশাহী থেকে অন্ধ্র যায় ওরঙ্গজেবের দখলে। ১৭০৭এ ওরঙ্গজেবের মৃত্যুর পর দাক্ষিণাত্যে মোগল প্রতিপত্তি কমতে শুরু করে। ১৭১৩য় সম্রাটেরই দক্ষিণের ভাইসরয় আসফ বার বংশের মীর কামরুদ্দিন খান সুবেশার হয়ে বসেন। আর ১৭২৪এ নিজাম-উল-মুলক শিরোপা নিয়ে স্বাধীনতা ঘোষণা করে সুবেদার হলেন নিজাম। শুরু হয় হায়দ্রাবাদে নিজামী শাসন। শাসন চলে ১৯৪৮এ ভারতভূক্তি পর্যন্ত নিজামী বংশের। অল্প পরে পরে ব্রিটিশ ও ফরাসিদের আসে অন্ধ্র দখলের লিলা নিয়ে। বার বার মারাঠাদের হাট্টয়ে, ফরাসিদের যুদ্ধে হারিয়ে হীনবল নিজাম সন্ধি করে ব্রিটিশের সাথে।

ব্রিটিশের ভারত ত্যাগের পর স্বাধীনোত্তর ভারতে

হিন্দুপ্রধান (৮৫%) রাজ্যের মুসলিম নিজাম স্বাধীন রাষ্ট্রের স্বপ্ন দেখেন। কিছুটা কলুষিতও করে হায়দ্রাবাদের আকাশ-বাতাস নিজামী মদতে পুষ্ট সেদিনের মুসলিম রাজাকার বাহিনী। ভারতেরও পছন্দ নয় স্বাধীনচেতা নিজামী মনোভাব। বিদ্রোহ দমনে এগিয়ে যান মেজর জেনারেল জয়ন্ত চৌধুরী—মুক্ত করেন হায়দ্রাবাদকে। স্বপ্ন টুটে যায় নিজামের—যোগ দেন ভারত রাষ্ট্রে ১৯৪৮এ।

১৯৫৩র ১লা অক্টোবর প্রথম একজাতীয় রাজ্য গড়তে নিজামী হায়দ্রাবাদের সাথে চেমাই (মাদ্রাজ) প্রেসিডেন্সি থেকে ছেঁটে ৯৬৫ কিমি দীর্ঘ বঙ্গোপসাগরের উপকূল ও দক্ষিণ পশ্চিমের তেলুগুভাষী জেলাগুলি নিয়ে অন্ধ্রপ্রদেশের গঠন। বিদ্যাপর্বত ও গোদাবরীর মাঝের পাহাড় ও জঙ্গলে ঘেরা নিজামাধীন তেলঙ্গানা অঞ্চলও যোগ দেয় অন্ধ্রের সাথে ১৯৫৬ খ্রিস্টাব্দের ১লা নভেম্বর। চেহারা নেয় নতুন করে আজকের অন্ধ্র প্রদেশ। তদানীন্তন প্রধানমন্ত্রী ইন্দিরা গান্ধীর ৬ ধারায় ১৯৭৩এ ৩২তম সংশোধনী বলে সংবিধান সংশোধিত হয়ে ১৯৬৯-৭২এর সংঘাত প্রশমিত হলেও মন কষাকষি আজও বিদ্যমান তেলঙ্গানা আর অন্ধ্রে। তবে উত্তর ও দক্ষিণ ভারতের মেলবন্ধন ঘটেছে কৃষণ ও গোদাবরী বিধৌত হায়দ্রাবাদ তথা অন্ধ্রে।

পর্যটন কেন্দ্র অন্ধ্রে সীমিত হলেও সে অভাব পূরণ করেছে রাজ্যের রাজধানী নিজামের হাতে গড়ে ওঠা হায়দ্রাবাদ শহর, গোলকুণ্ডা দুর্গ ও হিন্দুতীর্থ তিরুপতি। এই ত্রয়ীর অদর্শনে ভারত ভ্রমণ অসম্পূর্ণ থাকে আজ। অন্ধ্রের কৃষিজ সম্পদও উল্লেখ করবার মতো। সারা দক্ষিণ ভারতের খাদ্যাভাব মিটিয়ে চলেছে কৃষা, গোদাবরী ও পেনার নদী বিধৌত অন্ধ্র। বনজ সম্পদেও যথেষ্ট সমৃদ্ধ অন্ধ্র প্রদেশ। আর তামাক পাতা উৎপাদনে ভারতের প্রথম স্থান অন্ধ্রের ললাটে।

নভেম্বর থেকে মে মাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় চার বন্য জন্তু সংগ্রহালয় অন্ধ্রে। Pakhal ও Etumagaram W L S-এর অবস্থান ওয়ারাসাল জেলায়, Pocharam W L S মেদক জেলায়, Kawal W L S আদিলাবাদ জেলায়। আর আছে আদিলাবাদে Kuntala Waterfalls, শুশুঁরে Ettipothala Waterfalls—চলতে-ফিরতে দেখে চলা যায়।

নাচ-গান-বাজনায়ও অন্ধ্রের অবদান অনস্বীকার্য। অন্ধ্রের নিজস্ব নাচ কুচিপুডি—ভারত তথা সারা বিশ্বে সমাদৃত আজ। কর্ণাটী সঙ্গীতের মূল কেন্দ্র তামিলনাড়ুর তাল্লোরে হলেও ভাষা তার তেলুগু। তেলুগু ভাষাও যথেষ্ট সমৃদ্ধ—বুদ্ধেরও আগে প্রচলন ছিল তেলুগু ভাষার। তবে ছাপার হরফ আবিষ্কার ১৮০১এ। পৌষের পোঙ্গল এদের জাতীয় উৎসব। ৩ দিন ধরে উৎসব চলে। প্রথম দিন ভোগী অর্থাৎ

পারিবারিক, দ্বিতীয় দিনটি সূর্য দেবতাকে উৎসর্গীকৃত; তৃতীয় দিনে গৃহপালিত পশুর উৎসব। ঠিক তেমনই আশ্বিন-কার্তিকের নবরাত্রি উৎসবও আর এক জাতীয় উৎসব অঙ্কে। তেমনই, জুন-জুলাই মাসে মাসাধিককাল ব্যাপী মুসলিম তীর্থ মহরম আর এক রমণীয় উৎসব। অজ্ঞের হাতের কাজেরও সমাদর আছে পর্যটক মহলে। তামার উপর সোনা ও রূপার কাজ করা সিগারেট কেস, অ্যাশট্রে, ফুলদানি, রকমারি পুতুল, রেকাব, বোতাম, ব্রোচ, হিমরু ব্রোকেড শাড়ি, রূপার আভরণ, চন্দন কাঠের খেলনা, বিদ্যির রকমারি সঙ্গী করা যেতে পারে স্মারকরূপে। কেনাকাটায় হায়দ্রাবাদে—আবিস, বসিরবাগ, নামপালী; সেকেন্দ্রাবাদে—এম জি রোড, সুলতান বাজার আদরণীয় হবে। তেমনই মুক্তো ও আভরণ কিনতে চারমিনারের চারপাশ চলা যেতে পারে। তবে, রবিবার বন্ধ থাকে টুইন সিটির দোকান।

অন্ধ্র প্রদেশ □ রাজধানী: হায়দ্রাবাদ। আয়তন: ২৭৫০৬৮ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৬৬৩০৪৮৫৪। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৭.৮৫%। পুরুষ: ৩৩৬২৩৩৮। নারী: ৩২৬৮১১১৬। ১৯৮১-৯১ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ১২৭৫৫১৮১। বৃদ্ধির হার: ২৩.৮২%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২৪১। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৭২। আয়তন ও জনসংখ্যা ভারত রাষ্ট্রে ৫ম স্থানে অন্ধ্র প্রদেশ। সাক্ষরের হার: ৪৫.১১%। প্রধান ভাষা: তেলুগু; সঙ্গে চলে উর্দু, ইংরেজি ও হিন্দী। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৪৫০৭.০০ টাকা (১৯৯০-৯১)।

১৫ দিনে অন্ধ্র বেড়ান: তিরুপতি ১ নাগার্জুন সাগর ১ হায়দ্রাবাদ ২ ভদ্রাচলম ১ বিজয়ওয়াড়া ১ বিশাখাপতনম ২ সীমাচলম ১ আর্কু ১ পথ চলায় ৫ দিন। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। গ্রীষ্মে গরমের আধিক্য আছে। আর বৃষ্টি জুন থেকে সেপ্টেম্বরে। তবুও সারাবছর ধরেই পর্যটক সমাগম ঘটে চলে অন্ধ্র।

অন্ধ্র ভ্রমণের জন্য বছরের যে-কোনও সময় নির্বাচন করা যায়। তবে, মে ও জুন মাসের গরমকে এড়িয়ে যাওয়াই উচিত হবে। আর সেপ্টেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসের মরসুম। গ্রীষ্মে ৩৯.৪ থেকে ২২° আর শীতে ২২ থেকে ১৩.৮° সেণ্টিগ্রেডে ওঠানমা করে তাপমান। বর্ষা যদিও জুন থেকে সেপ্টেম্বর মাস, তবুও খুব বিরক্তিকর নয় সে বৃষ্টি। তবে, অজ্ঞের দক্ষিণে বৃষ্টি বিঘ্ন ঘটায় ভ্রমণে।

হায়দ্রাবাদ

যমজ দুই বোন—হায়দ্রাবাদ ও সেকেন্দ্রাবাদ। মাঝে তাদের বিচ্ছেদ টেনেছে ঘসেন সাগর। ভারতের বুদাপেস্ট নামে খ্যাত এরা। অন্ধ্র প্রদেশের রাজধানী শহর হায়দ্রাবাদ। অতীতে নিজামের রাজধানীও ছিল এই হায়দ্রাবাদে। শহরের পশ্চিম ১৫৯০এ গোলকুণ্ডা থেকে সমতলে নেমে মুসী নদীর পাড়ে ৬১০ মি উঁচুতে ৪র্থ কৃতবংশাহী সুলতান মহম্মদ কুলী কৃতব শাহর হাতে। জায়গার নামকরণ হয় ভাগ্যানগর—প্রিয়ার নামে নাম। দু'বছর পর আবার নামান্তর ঘটে—হিন্দু প্রেমিকা ভাগমতী বেগম হয়ে নামান্তরিত হলেন হায়দরমহল—এ। আর শহরের নাম হয় ভাগ্যানগর থেকে হায়দ্রাবাদ। ২৫৯ বর্গ কিমি জুড়ে শহর। ২৭ লক্ষাধিক লোকের বাস। শহর হিসাবে ভারতে এর স্থান ৬ষ্ঠ। ঐতিহাসিক ফেরিস্তার অভিমত—সেকালে হায়দ্রাবাদ ভারতের অন্যতম নগরী ছিল। এমনকি মার্কোপোলোও মুঞ্চ হন গণপতির কন্যা রুদ্রামার কালে হায়দ্রাবাদ দেখে।

মুক্তোর শহর হায়দ্রাবাদ। রাতের আলোকমালায় মনোরম লাগে শহরকে। কংক্রিটে মোড়া প্রশস্ত রাজপথ, সুন্দর সুন্দর বাড়ির, বাগিচা, সরোবর—সবকিছু মিলিয়ে আধুনিক শহর রূপে সমাদর আছে টুইন সিটির। পারসীয় স্থাপত্যের ছাপ রয়েছে এর বাড়িঘরে। এই আধুনিকতা পেয়েছে নিজামদের হাতে। বংশের শেষ বা ১০ম নিজাম মীর ওসমান আলি খান ১৯১১য় ক্ষমতায় বসেন। বিশ্বের অন্যতম ধনী ব্যক্তি ছিলেন এই নিজাম। বিশাল প্রাসাদ, ১১০০০ ভূতা, ডিঙ্কার ডায়মন্ডের পেপারওয়েট, তার ধনের নিদর্শনরূপে বিশ্ববন্দিত। ঠিক তেমনই প্রজারা ছিল দীনতম। অন্ধ্র ছিল ভারতের দরিদ্রতম তথা অনুন্নত রাজ্য। শহরের মোগলাই খানার সাথে বাদশাহী আদব-কায়দাও তুণ্ড করে পর্যটকদের। সারা দক্ষিণের হিন্দু সাম্রাজ্যের মাঝে মুসলিম নবাব হায়দ্রাবাদে। রাজ্য জুড়ে হিন্দুর আধিক্য। তবে ইসলামি সংস্কৃতি হায়দ্রাবাদের জনমানসে—উর্দুও বলে থাকে লোকে। দুর্গাপূজাও হচ্ছে রামকৃষ্ণ মিশন ও সেকেন্দ্রাবাদের বাঙালি সমিতিতে। তবে, দ্রুত শিল্পনগরীর রূপ পাচ্ছে হায়দ্রাবাদ আজ। বৈচিত্র্য আছে হায়দ্রাবাদের ব্যাকিং সময়েও। বিশেষ বিশেষ ব্যান্ড সোম থেকে শুক্রবার ৮-৩০—১০-৩০, আবার ১৬-৩০—১০-৩০, আর শনিবার ৮-৩০—১০-৩০টায়ে খোলা মেলে।

তবে, পর্যটকদের দুনিয়া—সালার জং, চারমিনার, জু, সবেরই অবস্থান পুরাতন হায়দ্রাবাদে। সাধারণ হোটেলেরও মেলা বসেছে নামপালি অর্থাৎ হায়দ্রাবাদ স্টেশনের অদূরে স্টেশন রোড পেরিয়ে আবিদ তথা নেহরু রোডে। আর কৌলিন্যের সাথে গৌরব মিলিয়ে গড়ে উঠেছে উপজাতি বানিজ্যাদের অতীত বাসভূমি বানজারা হিল। তেমনই বেগমপেট আর এক বহিষ্কৃত এলাকা। রাজ্যপাল থেকে নানান

মন্ত্রীর বাস এই বেগমপেটে। আর নতুন শহর হুসেন সাগরের উত্তরে সেকেন্দ্রাবাদ ১৮০৬এ ব্রিটিশের হাতে ক্যান্টনমেন্ট নগরীরাপে গড়ে ওঠে। নামকরণ তদানীন্তন নিজাম সিকন্দার কা থেকে। সংযোগ গড়েছে মহাশা গান্ধী রোড সেকেন্দ্রাবাদ থেকে আবিদের—দক্ষিণে নাম তার জহরলাল নেহরু রোড; তবে আবিদ বলে থাকে লোকে। বাস চলছে এপথ ধরে ৭ নম্বর রুটের। অন্ধ্র প্রদেশ রাজ্য পর্যটনের শাখা হায়দ্রাবাদ ও সেকেন্দ্রাবাদ রেল স্টেশনে বসলেও রাজ্য সরকারের Department of Tourism, 5th floor (৯—১৯-০০), ৩ 557531-এর মূল দপ্তর বসেছেনামপালীর ডাইনে Gagan Vihar, Mukhramjahi Road, Hyderabad-500001-এ। Andhra Pradesh Travel & Tourism Development Corporation (APTDC)-র দপ্তর বসেছে 11th floor, Gaganvihar, M J Rd, ৩ 4601979, Hyderabad-1 ও Yatri Nivas, S P Road, Secunderabad-500003, ৩ 843931, Telex 0425-6760-এ ৬-৩০—১৯-০০টায় প্যাকেজ টুর ও যাত্রী নিবাসের কেন্দ্রীয় বুকিং-এর ব্যবস্থা নিয়ে। আর Sandozi Building, Himayat Nagar Rd, Hyderabad-500 029, ৩ 666877-এ ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর (সোম থেকে শুক্র ৯-১৫—১৭-৪৫, শনিবার ৯-১৫—১৩-০০); ইন্ডিয়ান এয়ারলাইনস, ৩ 140/599333 ও এয়ার ইন্ডিয়া, ৩ 222883; এদের দপ্তর সেকেন্দ্রাবাদস্টেটের কাছে হাইফাবাদে। বায়ুদূতের দপ্তর, ৩ 232625, সফট কমপ্লেক্স, হাইফাবাদ-এ। আর কেনাকাটায় আবিদ আদরশীল হবে।



কাচিগুদা, হায়দ্রাবাদ ও সেকেন্দ্রাবাদ ত্রিমুখী তিন রেল স্টেশন সংযোগ গড়েছে টুইন সিটির। আর বাস সংযোগ গড়েছে স্টেশন থেকে স্টেশনে। ৮ নম্বর বাস চলছে সেকেন্দ্রাবাদ ও হায়দ্রাবাদ রেল স্টেশনের মাঝে।

কলকাতা থেকে সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে হায়দ্রাবাদ। হাওড়া থেকে ১০-১৫য় ৪০45 ইস্ট কোস্ট এক্স বড়গাপুর/ভুবনেশ্বর/ওয়ালটোয়ার হয়ে পরদিন ৫-১৫য় বিশাখাপতনম, ১২-০০টায় বিজয়ওয়াড়া, ১৮-২০এ সেকেন্দ্রাবাদ পৌঁছে হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ১৯-০৫এ। ইস্ট কোস্ট ফেরে ৭-০০টায় হায়দ্রাবাদ থেকে। পথের দূরত্ব ১৫৮১ কিমি। আর প্রতি দিন ৭-৫০এ হাওড়া ছেড়ে 2703 ফলকনুমা এক্স পরদিন ১১-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ যাচ্ছে। ফলকনুমা ফেরে ১৬-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ থেকে। এছাড়াও চেন্নাইগামী ট্রেনে বিজয়ওয়াড়ায় সেমে ৪-২০এ বিশাখা এক্স, ৪-৩৫এ কোণারক এক্স, ৬-০০টায় বিজয়ওয়াড়া-সেকেন্দ্রাবাদ 2713 সাতবাহন এক্স, ৬-৪০এ গোলকুণ্ডা এক্স, ১৩-৩০এ কুর্না এক্স, ২২-৩০এ নরসাপুর-হায়দ্রাবাদ এক্স, ২৩-০৫এ গোদাবরী এক্স, ২৩-৫৫য় গৌতমী এক্সে হায়দ্রাবাদ বা সেকেন্দ্রাবাদ যাওয়া চলে। ক্রততমতম বটে করমণ্ডলে ১০-২৫এ বিজয়ওয়াড়া পৌঁছে হায়দ্রাবাদ চলা। কোণারক ফেরে ১৫-০০টায় মুম্বাই CST ছেড়ে পরদিন ৮-১৫য় সেকেন্দ্রাবাদ পৌঁছে তারও পরদিন ৬-৪৫এ ভুবনেশ্বর। সোলাপুর/পুনে হয়ে ১৬ ঘটায় ৮০০ কিমি দূরের মুম্বাই যাচ্ছে ১৪-৩০এ হুসেনসাগর এক্স, ২০-২০এ মুম্বাই এক্স হায়দ্রাবাদ থেকে; ১১-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে

ভুবনেশ্বর-মুম্বাই কোণারক এক্স; ফেরে মুম্বাই থেকে যথাক্রমে ২১-৫৫/১২-৩৫/১৫-০০টায়। পুনে যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার; কোকন যাচ্ছে ২০-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ থেকে; ১৬১ ঘটায় ৮২৬ কিমি দূরের ব্যালারোর যাচ্ছে ১৬-৩০এ কাচিগুদা ছেড়ে 7685 ব্যালারোর এক্স। ১৬-২৫এ 7054 চেন্নাই এক্স, ১৯-০০টায় 2760 চারমিলার এক্স হায়দ্রাবাদ ছেড়ে ৮৬২ কিমি দূরের চেন্নাই সেতুলি পৌঁছায় যথাক্রমে পরদিন ৬-১০/৯-২০এ। ২২-১০এ সেকেন্দ্রাবাদ-আজমের-জয়পুর লিঙ্ক এক্স, ১৯-২৫এ ফস্ট প্যাসেঞ্জার সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে মিটারগেজে মধ্য প্রদেশ পেরিয়ে রাজহান তথা জয়পুর ও আজমের যাচ্ছে সেকেন্দ্রাবাদ/খাণ্ডোয়া/মৌ/ইন্দোর/চিতোর গড়/আজমের হয়ে। ২০-০০টায় হায়দ্রাবাদ ছেড়ে হজরত নিজামুদ্দিন যাচ্ছে 7021 দক্ষিণী এক্স, ৬-০০টায় 2723 ক্রতগামী অন্ধ্র প্রদেশ এক্স নাগপুর/ভূপাল/ঝাঁসী হয়ে ১৬৭৫ কিমি দূরের নিউ দিল্লী যাচ্ছে ২৬ ঘটায়।

সেকেন্দ্রাবাদ থেকে ৩৮৪ কিমি দূরের শুটুর যাচ্ছে ৭-০০টায় ছেড়ে ৪১ ঘটায় 7006 সেকেন্দ্রাবাদ-ডেনালি ইন্টারসিটি এক্স, ১২-৩০টায় ছেড়ে ৮ ঘটায় গোলকুণ্ডা এক্স, ১৬-০০টায় ছেড়ে ৪১ ঘটায় সেকেন্দ্রাবাদ-হাওড়া ফলকনুমা এক্স, ১৭-৩০এ ছেড়ে ৫ ঘটায় বিশাখা এক্স, ১৮-০০টায় ছেড়ে ৫ ঘটায় নারায়ণগিри এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন; ১৪২ কিমি দূরের ওয়ারাঙ্গাল যাচ্ছে ৬-০০টায় কুর্না এক্স, ৭-৩০এ ইস্ট কোস্ট এক্স, ৮-৩০টায় কোণারক এক্স, ১২-৩০টায় গোলকুণ্ডা এক্স, ১৬-৪৫এ সাতবাহন এক্স, ১৭-৪৫এ গোদাবরী এক্স, ১৯-৫০এ গৌতমী এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন: 7406 কুর্না এক্স ৫-৩০এ হায়দ্রাবাদ, ৬-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ, ১৩-১৫য় বিজয়ওয়াড়া ছেড়ে শুটুর হয়ে ৭৪১ কিমি দূরের তিরুপতি যাচ্ছে ২১-৩০এ; 7603 লিঙ্ক এক্স ১৫-০০এ সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে কাচিগুদা হয়ে শুটাকল-এ 7597 ডেভট্যাক্স এক্সের সঙ্গে জুড়ে শুটুর/রেণীশুটী হয়ে তিরুপতি যাচ্ছে পরদিন ১৩-০০টায়; 7429 রায়লাসীমা এক্স ১৭-৩০টায় হায়দ্রাবাদ-২-৫০এ শুটাকল-৯-০৫এ রেণীশুটী পৌঁছে তিরুপতি যাচ্ছে ৯-৪০এ। 4 7 দিন হায়দ্রাবাদ-গোরকপুর এক্স যাচ্ছে নাগপুর/ভূপাল/ঝাঁসী/লক্ষৌ হয়ে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে 1 4 6 দিন হায়দ্রাবাদ-কাচি এক্স, মঙ্গলবার 7018 সেকেন্দ্রাবাদ-রাজকোট এক্স, সেকেন্দ্রাবাদ-বিশাখাপতনম বিশাখা এক্স, কানিনাড়া যাচ্ছে ১৯-৫০এ গৌতমী এক্স, হিসাপ্তাহিক ব্যালারোর রাজহানী এক্স, হিসাপ্তাহিক চেন্নাই রাজহানী এক্স, সেকেন্দ্রাবাদ থেকে সরাসরি বগি যাচ্ছে শুটাকলে 7225 বিজয়ওয়াড়া-ভাকো অমরাবতী এক্সের সাথে ভাকো অর্থাৎ গোয়া। আর যাচ্ছে রেল—হবলি, নরসাপুর, পলাসা, ভরালম। 7008 গোদাবরী এক্স যাচ্ছে ১৭-১৫য় হায়দ্রাবাদ, ১৭-৪৫এ সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে পরদিন সকাল ৬-০০এ ওয়ালটোয়ার। ১৯-০০টায় কাচিগুদা, ১৯-৩০এ সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে ভিকরাবাদ/বিদার/পারলি-বৈজনাথ হয়ে পরদিন ৮-১০এ ওয়ারাঙ্গাল পৌঁছে মানমাদ যাচ্ছে 7664 এক্স; ৫-২০, ১৩-০০ এক্স, ১৯-২৫, ২১-৩০এ এক্স, ২২-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ থেকে নিজামাবাদ হয়ে ৯ ঘটায় নানডেড অর্থাৎ মুদখেন্ড জং যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন; নিজামাবাদ যাচ্ছে মুদখেন্ড-এর প্রতিটি ট্রেন; কাজিগেট যাচ্ছে ৮-৩০, ১৮-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে ৩ ঘটায় প্যাসেঞ্জার ছাড়াও দূরত্বের নানান ট্রেন; শুলবর্গা-সোলাপুর হয়ে বোলাপুর যাচ্ছে 7062 এক্স; ৬-০০টায় হায়দ্রাবাদ ছেড়ে ২০-৪০এ পূর্ণা যাচ্ছে কস্ট প্যাসেঞ্জার।

এছাড়াও রেল সংযোগ রয়েছে রাজা তথা ভারতের সিবিদিকের সঙ্গে টুইন সিটির। প্রয়োজনে: Computerised Reservation—Hyderabad @ 231130/237133; Secunderabad @ 75413/76444; Centralised Recorded Enquiry @ 833541/135; Train Service @ 833542 কে যোগাযোগ করা যেতে পারে।

তবে, কণ্টিক ভ্রমণ সেবায় ব্যাঙ্গালোর থেকে রাতের ট্রেন রওনা হয়ে সকালে হায়দ্রাবাদ অর্থাৎ কাচিগুদায় পৌছানোই সুবিধার। গুলবর্গা/বিজাপুর/হসপেট থেকেও চলা যেতে পারে হায়দ্রাবাদ।



NH 739 এর সংযোগে হায়দ্রাবাদ। বাসপথেও হায়দ্রাবাদ রাজ্যের বিভিন্ন শহরের সঙ্গে যুক্ত। APSRTC বাস যাচ্ছে তিরুপতি (১১ বাস), বিদার (১৯), গুলবর্গা (১২), বিজয়ওয়াড়া (২৪), নিজামাবাদ (৩২), কুরনুল (৭), অমরাবতী (১), শুন্টাকল, শুণ্ডুর, নাগার্জুন সাগর, ভাট্রাকলম ছাড়াও রাজ্যের বিভিন্ন প্রান্তে। এমনকি ঔরঙ্গাবাদ (১) ৬০৬ কিমি, ব্যাঙ্গালোর (১০) ৫৯০ কিমি, মুম্বাই (৮), চেন্নাই (১), নাগপুর (২), ছাড়াও দক্ষিণ-পশ্চিমের নানান দিকে। নানান প্রাইভেট সংস্থার ডিলাক্স, সুপার ডিলাক্স, ভিডিও বাস যাচ্ছে হায়দ্রাবাদ রেল স্টেশনের প্রবেশ ফটক থেকে ১৬ ঘণ্টায় ঔরঙ্গাবাদ, ১৪ ঘণ্টায় মুম্বাই, ১২ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোর, ১২ ঘণ্টায় তিরুপতি ছাড়াও সারা দক্ষিণে। মূল বাস স্ট্যান্ডটি নামপালির অদূরে আদিদের দক্ষিণ-পূর্বে Gowliguda-য় অগ্রিম টিকিটও মেলে। কম্পটারাইজড বুকিং ৮—২১-০০টায় খোলা।



আর IAC-র বিমান প্রতিদিন ২০-১৫য় ছেড়ে ১ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে; হায়দ্রাবাদ আসছে ১৮-২৫য় ব্যাঙ্গালোর থেকে। মুম্বাই যাচ্ছে ১১ ঘণ্টায় প্রতিদিন ৬-৩০, ১১-২৫, ১৭-৩০, ফেরে ৯-২০, ১৫-২০, ১৯-৩৫য়। কলকাতায় যাচ্ছে ২৪৬ দিন ১৪-০৫য় ছেড়ে ১ ঘণ্টায় বিশাখাপতনম পৌছে ১৬-৫৫য়, ২৪ দিন ১৯-৫০য় ছেড়ে ২১-৫৫য়, ১৩৬ দিন ১৭-১৫য় ছেড়ে নাগপুর ১৮-১৫, ভুবনেশ্বর ২০-১০য় পৌছে ২১-৪৫য়; ফেরেও একইভাবে একই দিন-গুলিতে। তিরুপতি যাচ্ছে ১৫ দিন ১২-০০টায় ছেড়ে ১২-৫৫য়; আমেদাবাদ যাচ্ছে ৪৭ দিন ২২-২০য়; ফেরে ১৫ দিন আমেদাবাদ, ৩৫ দিন তিরুপতি থেকে। দিল্লী যাচ্ছে প্রতিদিন ৯-০৫, ১৯-৩০য় হায়দ্রাবাদ ছেড়ে ২ ঘণ্টায়; হায়দ্রাবাদ ফেরে দিল্লী থেকে ৬-১৫ ও ১৬-৪০য়। চেন্নাই যাচ্ছে প্রতিদিন ১ ঘণ্টায় ৮-৪৫, ২০-৪৫, ১৩ ৫ দিন ১৪-০৫, ২১-৪০য়; হায়দ্রাবাদ ফেরে চেন্নাই থেকে প্রতিদিন ১০-৩০, ১৯-০০, ১৩ ৫ দিন ৭-৩০, ১৬-৩০য়।

আর বায়ুদূত ২৪৬ দিন ৬-০০টায় হায়দ্রাবাদ ছেড়ে ৭-৩০টায় তিরুপতি পৌছে চেন্নাই যাচ্ছে ৮-১৫য়; ফেরে ১৭-০০টায় চেন্নাই ছেড়ে ১৭-৩০য় তিরুপতি পৌছে ১৯-১৫য় হায়দ্রাবাদ। ১৩ ৫ দিন হায়দ্রাবাদ-রাজমহেন্দ্রী-বিজয়ওয়াড়া; ২৪ ৬ দিন হায়দ্রাবাদ-বিজয়ওয়াড়া সার্ভিস গড়েছে বায়ুদূতের উড়ান। আসছেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনগুলিতে।

আর প্রাইভেট বিমান Skyline NEPC Airways রবি ছাড়া প্রতিদিন হায়দ্রাবাদ-ব্রিটিশ কোয়েম্বাটুর-চেন্নাই; ২৪ ৬ দিন হায়দ্রাবাদ-ব্যাঙ্গালোর; ৩-৫ ৭ দিন বিশাখাপতনম; ৩ ৫ ৭ দিন মুম্বাই যাচ্ছে; ফেরেও একইভাবে একই দিনগুলিতে। আর Jet Airways-এর উড়ান সার্ভিস গড়েছে হায়দ্রাবাদ-মুম্বাই-এর মাঝে। দপ্তর এদের: Indian Airlines, City Office: Saifabad,

@ 599333/236902, Gen Enquiries @ 140, Reservation @ 141, Flight @ 142. Airport 844422. Air India @ 237243; Vayudoot @ 232625; East-West Airlines @ 526518; NEPC Airways @ 241660. শহর থেকে ১০ কিমি দূরে বেগমপেট-এ বিমানবন্দর। শহরে চলছে রিক্সা, অটো, ট্যাক্সি ও সিটি বাস। বহুক্ষেপে বাসে চেপে বেড়িয়ে নেওয়া যায় টুইন সিটি।

কনডাক্টেড ট্রাভেল: Andhra Pradesh Travel & Tourism Development Corp Ltd (APTDC), 11th floor, Gaganvihari, M J Road, Hyderabad-500001. @ 4601519/ Yatri Nivas, Sardar Patel Rd, Secunderabad-500003. @ 816375 থেকে ৯০ টাকায় (শিশু ৭০) প্রতিদিন ৭-৪৫—১৭-৩০টায় কনডাক্টেড ট্রাভেল লাঞ্চ সহ বৃদ্ধপুর্নিমা, ওসমানিয়া বিশ্ববিদ্যালয়, পাবলিক গার্ডেন, গোলকুটা দুর্গ ও সমাধি (শুক্র বন্ধ), ওসমান সাগর, সালার জং মিউজিয়াম (শুক্র বন্ধ), জুলজি-ক্যাল পার্ক (সোম বন্ধ), চারমিনার, মকামসজিদ, নওবত পাহাড়/বিড়লা মন্দির অর্থাৎ শহর দেখিয়ে আনে। ১৪-০০টায় গিয়ে ২০-৪৫য় ফেরে ৬৫/৫৫টাকায় ডেকান অর্থাৎ লুম্বিনী পার্ক-কুতবশাহী টুথ ও গোলকুটা লাইট আউট সাউন্ড শো দেখিয়ে। ৫ বছর থেকে পুরো টিকিট লাগে। দর্শনী নিজ নিজ। ITDC, 3-6-150 Himayatnagar Rd, Hyderabad-500029. @ 220730-এরও সুপার ডিলাক্স কোচ যাচ্ছে প্রতিদিন শহর দেখাতে। ভাড়া ও প্রোগ্রাম একই। কেবল সালার জং ITDC দু'ঘণ্টা সময় দেয় দেখতে। ফেরেও আধ ঘণ্টা দেয় ১৮-৩০টায়। লাঞ্চ ব্রেকও এদের আবিদে। তবুও যেন সময় স্বল্পতায় সালার জং ও গোলকুটা দেখে মন ভরে না। তাই সুযোগ-সুবিধা মতো একান্তই উচিত হবে এককভাবে এই দুই দেখে নেওয়া। সার্ভিস ফেরে আসে সকালে গোলকুটা, বিকালে সালার জং, চারমিনার ও নওবত পাহাড় দেখে একই দিনে সাঙ্গও করা যেতে পারে শহর দর্শন।

এছাড়া যথেষ্ট যাত্রী হলে প্রতিদিন APTDC ও ITDC পৃথক পৃথক ভাবে সকাল ৬-৩০টায় গিয়ে ২১-৩০টায় ফেরে নাগার্জুন সাগর ও নাগার্জুনকোণ্ডা দেখিয়ে। লাঞ্চ সহ ভাড়া ১৯০ শিও ১৪০। তুঙ্গভদ্রার তীরে মন্ড্রালয়মে শ্রীনাথব্রহ্ম মন্দির দর্শনে যাচ্ছে ২ দিনের প্যাকেজে প্রতি শনিবার ৩৫০/৩০০ টাকায় APTDC. তিরুপতিও যাচ্ছে ৬৭৫/৫৭৫ টাকায় প্রতি শুক্রবার ১৫-৩০টায়, ফেরে সোমবার ৭-০০টায়। প্রতি শনিবার ১১-৩০য় গিয়ে এক রাতের অবস্থানসহ ৫৫০/৩০০ টাকায় শ্রীশৈলম বেড়িয়ে রবিবার ২০-৩০য় ফেরে APTDC-র বাস। প্রতি বুধবার ৭-০০টায় গিয়ে শুক্রবার ৭-০০টায় ফেরে অবস্থান সহ ৭০০/৫৭০ টাকায় সিবি বেড়িয়ে। প্রতি রবিবার ৮-০০টায় গিয়ে ২১-০০টায় ফেরে ১৪০/৯৫ টাকায় গিলগ্রিম সফর বেড়িয়ে। প্রতি দ্বিতীয় শনিবার ৭-০০টায় গিয়ে রবিবার ২০-০০টায় ফেরে ৩৫০/৩২৫ টাকায় ওয়ারাসাল বেড়িয়ে। দক্ষিণ ভারতও যাচ্ছে APTDC-র প্যাকেজ ১৪ দিনের সফরে ৪০০০/৩১৫০ টাকায়। হাস্পী-গোয়া-বিজাপুর প্যাকেজে যাচ্ছে প্রতি ১ম ও ২য় শনিবার, ফেরে বুধশনিবার; থাকা সহ ভাড়া ১৭০০ শিও ১২২৫। অজন্টা-ইলোরা-সিবি প্যাকেজে যাচ্ছে প্রতি ১ম ও ৩য় সোমবার, ফেরে শুক্রবার; ভাড়া ১২০০ শিও ১০০০। আর অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে প্রতি ১ম ও ৩য় শনিবার ২ দিনের প্যাকেজে লাঞ্চ সফরি সহ ৯৭৫ টাকায় (শিশু ৭৫০) নাগার্জুন

সাগর ও শ্রীশৈলম যাচ্ছে হায়দ্রাবাদ থেকে APTTDC। নানান প্রাইভেট কোম্পানিরও ব্যবস্থা আছে কনডাক্টেড ট্রাকের।

এছাড়াও APTTDC প্রতি শনিবার ৭ দিনের প্যাকেজ ট্রায়ে অজ্ঞতা, ইলোরা, সির্খি, মুম্বাই যাচ্ছে; প্রতি শনিবার ৭ দিনের ট্রায়ে মন্ডালয়ম, হাম্পী, গোয়া, বাম্বামী, বিজাপুর যাচ্ছে; প্রতি ২য় শনিবার দক্ষিণ ভারতও যাচ্ছে ১৩ দিনের প্যাকেজে। যাতায়াত, থাকা ও আহার নিয়ে টিকিট এদের।



হায়দ্রাবাদ রেল স্টেশন থেকে নামপালী হাইরোড পেরিয়ে আবিদমুখী স্টেশন রোড, Hyderabad, STD 040, PC-500001-এ পাঁচতায় প্রথায়—*H Harsha*, Nampally-1, SAB ৩০০ DAB ৩৭৫-৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; *H Kakatiya*, SAB ২২৫ DAB ৩২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; *H Annappurna*, SAB ২৫০ DAB ৩২৫ A/c S ৩০০ D ৫০০; *H Jaya International*, Abid-1, ৩ 232929, SAB ১৮০-২৫০ DAB ২৫০-৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; *H Siddhartha*, Bank St. Abid-1, near GPO, S ২০০ D ২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০; *H Suhail*, behind GPO, ৩ 41286, S ১৫০ D ২২৫-৩০০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০, থাকার পক্ষে ভালই; **Taj Mahal H*, King Kothi. Abid Rd-1, ৩ 237988, SAB ২৫০-৩২৫ DAB ৩৫০-৪৫০ A/c S ৩৭৫ D ৬০০; **H Emerald*, Chirag Ali Lane. Abid-4, ৩ 202836, S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০। আর হয়েছ জওহরলাল নেহরু রোড শেষ হতে রামকৃষ্ণ সিনেমার বিপরীতে *H Aahwaanam*, SAB ২৫০ DAB ৩০০-৪৫০ A/c S ৩৫০ D ৬০০; *H Saptagiri*, S ২০০ D ২৭৫ A/c D ৩৫০; দু'য়েতেই A/c ঘরে রঙিন টি ভি মেলে। ব্যবস্থাপনাও ভাল হোটেল দুটির।

নেহরু রোড ধরে বামহাতি যেতে, অদূরে **H Nagarjuna*, 3-6-356 Basheer Bagh-29, ৩ 237201, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০-১০৫০; বিপরীতে *H Krystal*, 5-9-24/82 Lake Hills Rd-463, A4R1, S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S ৪০০-৪৭৫ D ৫২৫-৬৫০; লাগোয়া অতীতের প্রাসাদে বলিরবাগে নিউলা মন্দিরের সমীকটে **Ritz H*, Hill Fort Palace-500463, ৩ 233571, A/c S ৮৫০ D ১০০০-১৫০০ সুইট ১৭৫০; আরও বাঁয়ে **H Sarovar*, 5-9-22 Secretariat Rd, Saifabad-4, ৩ 237638, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৫০০ A/c ৬০০; **H Ahsonka*, Lakdi-ka-Pool-4, A5R2, ৩ 230105, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ৯৫০; আরও বাঁয়ে *Blumoon H*, 6-3-1186/A, Rajbhawan Rd, Begumpet-16, ৩ 312815, SAB ৩০০ DAB ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬৫০।

লেকের পাড়ে মনোরম পরিবেশে বানজারা হিলে—*Welcomgroup-r*, **Grand Kakatiya H*, Begumpet-16, ৩ 310132, S ৮০-১৪০ D ৯০-১৫০ USS; এরপর **H Banjara*, B Hills-34, ৩ 222222, A7R5B8, A/c S ১৮৫০ D ২২৫০ সুইট ৪৫০০ থেকে; **Holiday Inn Krishna*, Road No 1, B Hills-34, ৩ 393939, A/c S ২০০০ D ২২৫০ সুইট ৪৫০০; **H Krishna Oberoi*, Road No 1, B Hills-34, ৩ 392323, A/c S ১১৫ D ১৩০ USS; **Bhaskar Palace*, Road No-1, Banjara Hills-34, ৩ 396141, A/c S ১৫০০-

২০০০ D ১৭৫০-২২০০ সুইট S ৩০০০ D ৩৭৫০; **Taj Residency*, Road No 1, B Hills-34, ৩ 399999, A/c S ৮৫-৯৫ D ৯৫-১১৫ সুইট ১৪০-২২৫ USS; **Rock Castle H*, Jubilee Hills-34, S ৩২৫ D ৪২৫ A/c S ৪২৫ D ৬০০।

শহরের কেন্দ্রস্থলে **H Sampurna International*, Mukram Jahi Rd-1, A/c S ৪০০-৫৫০ D ৪৫০-৬৫০ সুইট ৮৫০-১০৫০; **H Deccan Continental*, Sir Ronald Ross Rd-500003, ৩ 840981, A/c S ৭৫০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০।

সেকেন্ডারাবাদে—*H Akbar*, 1-7-190 Mahatma Gandhi Rd-3; **H Basera*, 9-1-167 Sarojini Devi Rd, Secunderabad-3, ৩ 803200, A/c S ৬৫০-৮০০ D ৮৫০-১৫৫০; **H Parklane*, 115 Sij Devi Rd-3, ৩ 840466, A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ৮০০-১০৫০; **H Golkonda*, Masab Tank-28, A/c S ৭৫০ D ৯৫০ সুইট ১৫০০; **Guestline Days H*, Golkonda, 10-1-124 Masab Tank-28, ৩ 226001, A/c S ৬৫০ D ৯৫০ সুইট ১৫০০; **Percy's H*, Sardar Patel Rd-3; **H Sivani*, 3-5-872 Hyderguda-1, S ২৫০ D ৩২৫ A/c D ৪৫০; **H Rajdhani*, 15-1-503 Siddiambar Bzr-12, ৩ 590650, S ২৫০ D ৩০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৬৫০ A/c ৮০০; *H Niagara*, 16-6-11-1-4 Chr Gate; *H Ambassador*, 1-7-27 Sij Devi Rd, Secunderabad-3, ৩ 843760, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; *H Karan*, 1-2-261/1 S D Rd, Karan Centre-3, ৩ 840191, A2R1:B1, A/c S ৪৫০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০ সুইট ৮৫০-১২৫০; **Asrani International H*, 1-7-179 M G Rd-3, ৩ 842267, A/c S ৬২৫ D ৯৫০ সুইট ১৫০০; **H Deccan Continental*, Sir Ronald Ross Rd-3, ৩ 840981, A/c S ৭৫০ D ৯৫০ সুইট ১৫০০; *Montgomery, Firdaus, H Heritage*, 116 Chenoy Trade Centre, Parklane-25, ৩ 845020, A/c S ৫২৫ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; *H Labina*, 5-1-806, K J Mkt-500195, ৩ 510380, S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৫০০ D ৬৫০ সুইট ৮০০-১০৫০; ছাড়াও হোটেল আছে নানান হায়দ্রাবাদে।

ভারতীয় প্রথায় হায়দ্রাবাদ রেল স্টেশনের বিপরীতে Nampally High Rd, Hyderabad-500001-এ মেলা বসেছে সাধারণ হোটেলের। *H Rajmata*, ৩ 201000, SAB ৩০০ DAB ৪৫০; *New H Nataraj*, SCB ৩০ SAB ৭৫ DCB ১০০ DAB ১৫০; *Neo Royal H*, S ৩০ D ১০০-১২৫; *Royal H*, ৩ 201020, S ৮০ D ১৫০; *Royal Home*, *Gee Royal L*, *H Palace*, DAB ১২৫-২৫০ A/c D ৪২৫; *H Yatrik*, S ৮০ D ১২৫; *H Swagath*, *H Shanti Nivas* DAB ১০০-১৫০; *H Three Castles*, DAB ১২৫; *Super H*, *Ajanta L*, *Royal L*, SAB ৬০-১২৫ DAB ১০০-১৭৫; এদের সুনামকে বেসাতি করে Royal নামটির সাথে অলঙ্কার জুড়ে হোটেল ঘুরছে নানান। *H Imperial*, ৩ 235436, SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২২৫; বিপরীতে *New Asian L*, SAB ৮০ DAB ১০০-১৫০। *Sri Brindavan H*, SAB ১৫০ DAB ২০০-২৫০; থাকার ও আহারে *শ্রীকৃষ্ণান*, *ইম্পিরিয়াল*, *রয়্যাল লজ মন নর*। তেজ ও ননভেজ মিল মেলে *ইম্পিরিয়াল*। অবস্থানও এদের হায়দ্রাবাদ রেল স্টেশন থেকে G P O অর্থাৎ আবিদমুখী ইটা দূরে।

কলকাতা যাত্রীদের অনুগৃহণী হলেও চেম্বাই ও ব্যাঙ্গালোর রেলপথে হায়দ্রাবাদের সংযোগকারী স্টেশন কটিওলা। হোটেলও আছে নানান কটিওলা স্টেশন রোড, হায়দ্রাবাদ-500027-এ—H Rajmahal, SAB ৬৬ DAB ১২৫; H Triveni, Tourist H, ৬65691, SAB ৬০-৮৫ DAB ১০০-১৫০; Tourist Home, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-১৫০ TAB ১৫০-২০০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; H Panchratna, SAB ১০০ DAB ১৫০; H Ratna, H Natraj, SCB ৪৫ SAB ৬৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫; H Shri Krishna, (3-4-230), SAB ১২৫ DAB ১৭০; Saraswathi L, Sree Nand L, ৬4657511, SAB ১৪০ ১৮০ DAB ১৮৫ ২৪০ TAB ২৩০ ২৮০ A/c ৩৭৫।

সেকেন্দ্রাবাদ রেল স্টেশন, হায়দ্রাবাদ 500003-এ—H Indiana, opp Rly Stn, SCB ৮০ DCB ১২৫-১৫০; Alpine L, Sun L, SCB ৫৫ SAB ৮০ DAB ১৫০; Everest L, S ৬৫ D ১২৫; Padmaja L, National L, H Sree Devi, Nabodaya L, SCB ৬৫ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০।

Lakdi-Ka-Pool, Hyderabad-500004-এ—H Ayodhya, SCB ৬০ SAB ৮৫ DAB ১০০-১৭৫; *H Dwaraka, Rajbhavan Rd-4, ৬237921, SAB ১৫০ DAB ২০০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; H Femina, H Hill Top, The Central Court, 6-1-71 Lakdi-ka-Pool, ৬233262, A/c S ৮০০ D ১০০০ সুইট ১৫০০; H Krishna, 6-1-1081 Lakdi-ka-Pool, SAB ৮০-১২৫ DAB ১০০-১৭৫ A/c S ২৭৫ D ৩৫০; *Quality Inn Green Park, 7-1-26 Ameerpet-16, ৬291919, A2.4R8, A/c S ৬৫০-৯৫০ D ৮৫০-১২৫০ সুইট ১০৫০-১৫৫০; H Madhura; H Panchsheel-1, Grand H, Abid-1; H Haridwar, 4-6-464 Esm Bzr-27, D ১২৫-১৭৫; H Prusant, 8-2-325/K, St Mary's Rd-3; H Sarita, 3-2-17 R P Rd-3; H Gayatri, 14-8-464 Esm Bzr-27; Sree Venkateswara L, Lakdi-ka-Pool, D ১২৫-২২৫; *Twin Cities H, D ১০০-১৭৫; *H Minerva, 3-6-199/1, Himayatnagar-3, ৬230448, A/c S ৬০০ D ৮৫০; *H Viceroy, Tank Bank Rd-500380, ৬618383, A5R5, A/c S ৯৯৫-১২৯৫ D ১৪৯৫-১৬৯৫ সুইট ২০৯৫-২৫৯৫; ছাড়াও হোটেল রয়েছে আরও নানান সারা শহরময়। আর হয়েছে APTTDC-র Shamirpet Lake Resort, Secunderabad, DAB ২৫০ A/c ৩৫০, উইক ভেঞ্জে রিভেট মেলে, ৬253907; এদেরই Yatri Nivas, S P Rd, Secunderabad-500003, ৬843931, DAB ৩২৫ ছয় বেডের ঘর ৫০০ A/c D ৪৫০।

আর রয়েছে Lake View G H, Sumaji Guda, অব: General Admn Dept, Govt of A P; Municipal R H, opp Hyderabad Rly Stn, অব: Caretaker. Purushottam Das Narottam Das Dharamshala, Grain Bazar Dharamshala—Secunderabad; Jubilee Sarai—Kachiguda; Peace Memorial, Seth Ram Pratap Preeti Dharamshala, রেলের রিটারারিং রুম সেকেন্দ্রাবাদ ও হায়দ্রাবাদে। আবার সাময়িক সদস্য হয়ে সেকেন্দ্রাবাদে রাবও থাকে যায়। এছাড়া রয়েছে ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ ও রামকৃষ্ণ মিশনের রেস্ট হাউস নামপালীতে। তেমনই আছে বেঙ্গলি নৃগোঁসব কমিটির পেস্ট হাউস হায়দ্রাবাদ ও সেকেন্দ্রাবাদে।

এমনকি ছুসন সাগরের উত্তর-পূর্বে খোট রাবের শিহে ৫১ বেডের ডর্মি প্রথায Youth Hostel ছাড়াও YMCA, YWCA-এরও শাখা বসেছে সেকেন্দ্রাবাদে।

আহারেও বৈচিত্র্য মেলে টুইন সিটির হোটেল-রেস্তোরাঁর। আমিষ আহার্য মেলে মুসলিম হোটলে আর হিন্দু হোটলে মূলত নিরামিষ। তবে তারকাখচিত হোটলে দেশী-বিদেশী নানান আহার্যের ব্যবস্থা। হায়দ্রাবাদ শ্রমণে একাডুই উচিত হবে রাব ও গঞ্জে অভুলনীয় চিকেন বিরিয়ানির রান নেওয়া চারমিনারের কাছে সারা দক্ষিণ খ্যাত মেদিনা হোটলে বা আবিন রোডের রেইনবো রেস্টুরেন্টে। মটনের তৈরি হালিম, কবাব ছাড়াও নানান মোগলাই ডিশের জন্যও এদের প্রসিদ্ধি। তেমনই দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহার্যে ভেজ বিরিয়ানির জন্য হোটেল সম্পূর্ণ ইন্টারন্যাশনাল বা কামাখা বা উদীপী হোটলে চলা যেতে পারে। স্টেশন রোড, আবিন ও IAC-র কাছে সইফাবমে শাখা আছে কামাখের। স্টেশন রোডে কামাখের বিপরীতে পাঞ্জাব রেস্টুরেন্ট-টিও যথেষ্ট প্রসিদ্ধ ননভেজ মিল পরিবেশায়। শ্রীবৃন্দাবন হোটেলের বিপরীতে প্রিয়া হোটেলেরও যথেষ্ট সূখ্যতি ভেজ ও ননভেজ মিল পরিবেশে। লাগোয়া হোটেল রাগত ও ভালই। নামপালীর লক্ষ্মী রেস্টুরেন্ট (৬-২৩-০০)-এরও যথেষ্ট সূখ্যতি ভেজ মিলে। তেমনই আবিন রোডে ব্রডওয়ে রেস্টুরেন্ট, ৬230075 (১১-২৩-০০); গোল্ডেন গেট রেস্টুরেন্ট ৬232485 (১১-২৩-০০)-এ চীনা, ভারতীয় ও মহাদেশীয় আহার্য মেলে। হিমায়নগরে Hai-King Restaurant, বিপরীতে Chung Hua—এদেরও যথেষ্ট সুনাম চীনা ডিশ পরিবেশনে। আবিনের Palace Height (১১-২৩-০০)-এরও সুনাম যথেষ্ট দেশী-বিদেশী-চীনা-ভদ্রুরী পরিবেশায়। তেমনই পোস্ট অফিসের শিহে ব্যাক স্ট্রিটের গ্রান্ড হোটেল নন ভেজ বিরিয়ানি, আর বিপরীতে লিবার্টি রেস্টুরেন্টে চীনা ও ভারতীয় মিলের রান নেওয়া যেতে পারে। সেকেন্দ্রাবাদে চক্রে ইন্ডিয়ান কফি হাউসটিরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি কোন্ড ও হট কফির সঙ্গে দক্ষিণ ভারতীয় আহার্য পরিবেশায়। 14-B বিবিরবাগে Peacock Restaurant & Bar (১১-২৩-০০)-এরও যথেষ্ট সূখ্যতি দেশী-বিদেশী নানান আহার্যে।

গোলকুণ্ডা দুর্গ: যাদব দেবতা গোলাস থেকে গোলকুণ্ডা—দ্বিমত্রে, তেলুগু শব্দ গোলাঅর্থ মেঘপালক আর কোণ্ডা অর্থ পাছাড় থেকে নামকরণ। শহর থেকে ১১ কিমি পশ্চিমে গোলকুণ্ডা দুর্গ। ইতিহাসখ্যাত এই দুর্গটি ওয়া-রাঙ্গালের একাধার রাজা গণপতির হাতে গ্রানাইট পাথরের মোচাকার কাপড় ছুড়ায় তৈরি। কুলদেবতা কাকাতি অর্থাৎ দুর্গা থেকে বংশের নাম এদের কাকাতীয়। গুলবর্গার বাহম্নী সুলতানদের দখলে থাকে ১৩৪৬ থেকে ১৫১৮য় দুর্গ। অবশেষে সুলতান মহম্মদ শা বাহম্নীর মৃত্যুতে টুকরো হয় রাজ্য। আর বাহম্নীরাঙ্গদের তেলঙ্গানার সুবেদার পারস্য থেকে আসা সুলতান কুলী কুতব শাহ ১৫১৮য় স্বাধীনতা ঘোষণা করে গোলকুণ্ডায় রাজধানী গড়ে পত্তন করেন কুতব-শাহীরাঙ্গের। দখলও থাকে ১৫১৮-১৬৮৭ কুতবশাহীদের হাতে। এই বংশেরই ৫ম সুলতান মহম্মদ কুলী কুতব শাহ ১৫৯০য় পাছাড় (গোলকুণ্ডা) থেকে সমস্ত ভেদে নম্রী নদীর পাড়ে রাজধানী গড়েন।

পাহাড় ছেড়ে সমতলে গেলেও বিকিঞ্চ দুই মোগলী হানা প্রতিরোধ করতে রাজ্যপাট আবার ফিরেছে দুর্গে। সেকালের দূর্ভেদ্য এই দুর্গ ১৬৮৭তে দ্বিতীয় বারের হানায় দীর্ঘ ৮ মাস ধরে অবরোধ চালিয়ে মোগল ফৌজ নিশ্চিহ্ন রাতে দুর্গের বিশ্বাসহজ্ঞা কর্মী আবদুল্লা খান পানির খুলে দেওয়া দরজা দিয়ে ঢুকে শেষ কূতবশাহী সুলতান আবুল হাসানকে অতর্কিতে হারিয়ে দুর্গ দখল করে। মোগল বাহিনীর প্রবেশ ফতে দরওয়াজায়—নামকরণ ঔরঙ্গজেবের।

তবে, সংস্কার হয়েছে বার বার গোলকুণ্ডা দুর্গের। অভিনবত্ব আছে এর নির্মাণশৈলীতে। দুর্গের পরিধি ১১ কিমি, ১৫ থেকে ১৮ ফুট উঁচু দেওয়ালে বেটনী, গ্রানাইট পাথরের ৮টি গেট, হাতির আক্রমণ প্রতিরোধ করতে গজাল বসানো দরজা, বুরুজ ৭০টি। পরিখাও ছিল চারপাশে সেকালে। ৩৬০ সিঁড়ি বেয়ে দ্বিতল *তানা শাহ কি গদী* অর্থাৎ *বারাদরি* বা দরবার হল। সিঁড়িপথের ডাইনে *বাদি বাওলি* অর্থাৎ বরনায় সুশোভিত পাঁতকুয়া। আর ছিল দুর্গে মণিমুক্তা খচিত নানান প্রাসাদ, *জেনানা প্যালেস* তথা নানান হারেম মহল, মসজিদ, তাকিশ বাথ, ত্রিতল তোপখানা, মনোহর বাগিচা *নাগিনা বাগ*। মূল প্রবেশদ্বার প্রাচীরে ঘেঁষা বালহিসারের তোরণটি। প্রবেশদ্বার থেকে সামান্য যেতে দরদালানের গম্বুজের নিচে হাততালি দিলে ১২৮মি উঁচু দরবার হলে ধ্বনি পৌঁছায় তার। জরুরি সঙ্কেত রূপে ব্যবহৃত হত সেকালে। এমনকি সুড়ঙ্গপথও ছিল সেকালে দরবার হল থেকে পাহাড়ী ঢালের প্রাসাদে। তবে সে পথ আজ রুদ্ধ। গ্রীষ্মে দুর্গের শীতাতপ ব্যবস্থাটিও অভিনব। মাটির নল ও পার্সিয়ান চাকার সাহায্যে হাদের ওপর জল তুলে ঠাণ্ডা রাখা হত প্রাসাদকে। দুর্গের হাড্ডিসার ধ্বংসস্তুপ আজও বিশ্বয় জাগায় দুর্গ দর্শকদের। চারপাশের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান দুর্গ থেকে।

দুর্গের নবতম আকর্ষণ *Light and Sound* প্রদর্শনীতে *সোর্ড অব টিগু সুলতানের* অতীত বিক্রম। শীতে (Nov-Feb) ১৮-৩০, গ্রীষ্মে (মার্চ-অক্টোবর) ১৯-০০টায় ৫৫ মিনিটের প্রদর্শনের (ইংরেজি ধারাতাৎ—বুধ, রবি; হিন্দী—মঙ্গল, শুক্র, শনি; তেলুগু—বৃহস্পতিবার) টিকিট ২০। অনূর্ধ্ব ৫ বছর প্রবেশ মানা। APTDC-র বাসও আছে ৪৫ টাকায় যাত্রী নিবাস থেকে ১৭-০০টায়। অগ্রিম টিকিটও মেলে যাত্রী নিবাসে।

তবে, কনকটটেড ট্রায়ের এক ঘণ্টায় দুর্গ দেখে ওঠা অসম্ভব হয়ে পড়ে। চুড়োয় ওঠানামায় ১ ঘণ্টা লেগে যাওয়া অস্বাভাবিক নয়। তাই, উচিত হবে বাসে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া। হায়দ্রাবাদ রেল স্টেশন লাগোয়া পাবলিক গার্ডেনস (নামপালী হাউ) রোড থেকে ১১৯ ও ১৪২ স্কটের সার্ভিস বাসও আসছে দুর্গে। অটো ও ট্যাক্সিও মেলে এপথে।

দুর্গের ১ কিমি উত্তরে ফল-বাগিচায় ঘেরা ইব্রাহিম বাগে

৭ কূতবশাহী সমাধিছবি। হিন্দু ও মুসলিম স্থাপত্যে কারু-কার্যময় পাথরের এই সমাধিসৌধ গুরু ছাড়া প্রতিদিন খোলা। সম্প্রতি খননে কূতবশাহী সুলতানদের গ্রীষ্মাবাসও আবিষ্কৃত হয়েছে ইব্রাহিম বাগের মাটির নিচে।

গোলকুণ্ডার হীরারও প্রচুর প্রশস্তি ছিল অতীতকালে। কৃষ্ণার অববাহিকায় হীরা মিলত। সুদূর আরব, পারস্য, তুরস্ক থেকে ব্যবসায়ীরা এসেছে হীরা কিনতে ক্যারানান নিয়ে। এমনকি ব্রিটিশ ক্রাউনের কোহিনূর হীরকাটিও এই গোলকুণ্ডার।

ওসমান সাগর: দুর্গের মক্কা দরজা দিয়ে বেরিয়ে ডাইনে এগুতেই ওসমান সাগর। মুসী নদীর প্লাবন থেকে শহর বাঁচাতে বাঁধ দিতে তৈরি হয় এই কৃত্রিম জলাশয় ১৯০৮ খ্রিষ্টাব্দে। ৫.৮ মিলিয়ন টাকায় ৪৬ বর্গ কিমি জুড়ে রূপ পেয়েছে এই ওসমান। নিজাম ওসমান আলি খানের নামে নাম। শহরের পানীয় জল আসছে ২২.৫ কিমি দূরের ওসমান সাগর থেকে। বাগিচাটিও সুন্দর। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। গাঙ্গীপেট নামেও সমধিক খ্যাত ওসমান।



থাকারও ব্যবস্থা আছে ওসমান সাগরে *UIG Rest House—Sagar Mahal*, ৩ 3513907-এ কাজের দিনে D ২০০ ছুটির দিনে ২৫০; আর *LIG Rest House—Vishranthi*তে D ১২৫ / ১৫০; *Glass House*-এ ৫০০; অথবা APTDC, Yatri Nivas, S P Rd, Secunderabad-3, ৩ ৪43931। শহর থেকে দূরত্ব ২৩ কিমি—রেল/বাস/ট্যাক্সি যাচ্ছে।

হিমায়ত সাগর: ওসমান থেকে সড়ক দূরত্ব ১০ আর হায়দ্রাবাদ থেকে ২০ কিমি দূরে হিমায়ত সাগর। এটিও কৃত্রিম লেক। জন্ম এরও মুসীকে বেশে আনতে। বাঁধ পড়েছে মুসীর শাখা নদী ইসীতে। ওসমান থেকে হিমায়ত আকারেও বড়—আয়তন এর ৮৫ বর্গ কিমি। খরচ পড়ে ৯.৩ মিলিয়ন টাকা। ছুটি কাটাবার মনোরম পরিবেশ। থাকার জন্য *RH* ও *DB* আছে।

ফলকনুমা প্রাসাদ: খ্রীড়িখারুল উমরের হাতে ৩৫ লক্ষ টাকা ব্যয়ে তৈরি ফলকনুমা ৬ষ্ঠ কূতবশাহী নিজাম শীর মহবুব আলি খান ১৮৯৭এ কিনে প্রাসাদ করেন। অতি আধুনিক বাড়িগুলির মধ্যে ফলকনুমার বিশ্ব প্রশস্তি আছে। বাঁক খাওয়া ঘাট রোড ধরে এগুলে টিলার টঙে ফলকনুমা প্রাসাদ। এর লাইব্রেরির পাণ্ডুলিপি ও বই-এর সম্ভার যেমন দুর্মূল্য তেমনই দুস্তাণ্ড। বিলাসবহুল রাজকীয় রিসেপশন ঘরটি স্ফটিক, হীরা ও মূল্যবান সব ধাতু বসিয়ে অনন্য করে তোলা হয়েছে। ছবির সংগ্রহও উল্লেখ্য। তবে সাধারণের জন্য নয় ফলকনুমা। এটি পারিবারিক প্রাসাদ। Tourist Office বা The Secretary, Nizam's Trust Fund-এর বিশেষ অনুমতিতে দেখার ব্যবস্থা। তবে পুরানী প্রাসাদের দ্বার অব্যাহত। দর্শন মেলে যাত্রীর।

ওসমানিয়া বিশ্ববিদ্যালয়: শহর থেকে ৮ কিমি দূরে নতুন শহর গড়ে উঠেছে বিশ্ববিদ্যালয়কে ঘিরে। জন্ম ১৯১৭তে নিজামের হাতে হলেও নতুন ভবনে বিশ্ববিদ্যালয় বসেছে ১৯৩৪এ। ১৯৩৯এ হিন্দু (অজ্ঞাত) ও মুসলিম (আরব্য ও পারস্যীয়) শৈলীতে গড়া কলা শাখার বাড়িটি স্থাপত্যে অনবদ্য। বাড়ির পর বাড়ি—গাড়ি করে যাতায়াত, ব্যাপক চত্বর জুড়ে এই বিশ্ববিদ্যালয়। নানান কলেজ—বিবিধ বিভাগ, গবেষণা কেন্দ্র, হোস্টেল, ক্যান্টিন, খেলার মাঠ, এমনকি বটানিক্যাল গার্ডেনও বসেছে বিশ্ববিদ্যালয় চত্বরে। পড়ার মাধ্যম উর্দু। আর মেয়েদের ওসমানিয়া কলেজ বসেছে অতীতের ব্রিটিশ রেসিডেন্সিতে। এগুলিও আজ দর্শন তালিকায় উল্লেখ্য।

পাবলিক গার্ডেন: হায়দ্রাবাদ রেল স্টেশনের পাশেই নামপালীতে বটানিক্যাল গার্ডেন তথা মনোরঞ্জনীর নানান পসরা নিয়ে গড়ে উঠেছে পাবলিক গার্ডেন। সারা বিশ্ব থেকে গাছের সমাবেশ ঘটেছে এই উদ্যানে। লেকও বয়ে চলেছে একে বেঁকে সর্পিল গতিতে উদ্যানের বুক চিরে। পদ্মভরা লেক, গোলাপবাগিচা, সাইপ্রিস বাগিচা, ছোটদের খেলার মাঠ, আরো কত সব মুগ্ধ করে পর্যটকদের। এরই মধ্যে বসেছে নানান সরকারি দপ্তর। পুরাতত্ত্বের সংগ্রহ নিয়ে হায়দ্রাবাদ মিউজিয়ামটিও এই পাবলিক গার্ডেনে। ১৯৩০এ জন্ম মিউজিয়মের মুদ্রার সংগ্রহ, বাসনকোসন, আগ্নেয়াস্ত্র, পাণ্ডুলিপি উল্লেখ্য। এর অজ্ঞাতা পাণ্ডুলিখনে অজ্ঞাতা গুহার ফ্রেস্কো চিত্র আকর্ষণ বাড়িয়েছে। সোম ছাড়া ১০-৩০—১৭-০০টায় খোলা। এরই সামনে হেলথ মিউজিয়াম—সংগ্রহে অভিনবত্ব আছে। রবীন্দ্র-শতবার্ষিকীতে তৈরি রবীন্দ্র-ভারতীর জাতীয় থিয়েটার, ফিল্মহাউস (১৯৮৫) তৈরি মুক্তাঙ্গন থিয়েটারও বসেছে এই উদ্যানে। ৫—১৫ বছরের শিশুদের শিক্ষার সঙ্গে চিত্তবিনোদনের নানান পসরা নিয়ে ১৯৬৬র জুনে গড়া জওহরলাল বালভবন, ইন্দিরা প্রিয়দর্শিনী অডিটোরিয়ামও স্ব স্ব মহিমায় ভাস্বর। অ্যাকোয়া-রিয়ামও বসেছে বালভবনে। শুক্র ছাড়া ১০-৩০—১৭-০০টায় খোলা। ঘাস ছেঁটে তৈরি মডেলগুলিও—বিশেষ করে জোয়ার কাঁধে জোড়াবলদ মূর্তিটি অনবদ্য। এমনকি সচিবালয়টিরও আকর্ষণ অনস্বীকার্য। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০-৩০ থেকে ১৭-০০টায় খোলা।

নববত পাহাড়: পাবলিক গার্ডেনের পরিয়ে রিজার্ভ ব্যাঙ্কের বিপরীতে হুসেন সাগরের পাড়ে দু'টি পাহাড়ী অধিষ্ঠান। অতীতে ড্রাম পিটিয়ে রাজাজ্ঞা ঘোষিত হত এই পাহাড় থেকে। ১৯৪০-এ নবাবের প্রধানমন্ত্রী স্যার মির্জা ইসমাইল এর আকর্ষণ বাড়ান দু'টি প্যাভিলিয়ন গড়ে। একটি অর্থাৎ ২৮০ ফুট উঁচু কালাপাহাড়ে ২ কোটি টাকা ব্যয়ে ১৯৭৬-এর ১৩ই ফেব্রুয়ারি বিড়লা গ্রুপ মন্দির গড়েছে। ৫০ লাখ টাকাতে ২০০০ টন শ্বেতপাথর এসেছে রাজহন থেকে। স্থপতি এসেছেন তাজেরই উত্তরসূরী।

মন্দির হয়েছে খাভুরাহে ও বোথগয়ার শৈলীতে শ্বেত মর্মরে ৯.৫ ফুট উঁচু ভগবান শ্রীভৈষ্ণবের। ৫১ ফুট উঁচু রাজা গোপুরটি দক্ষিণী ঢঙে। হিন্দু পুরাণের নানান আখ্যান রূপ পেয়েছে—ভাস্কর্যময় মন্দির থেকে শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান, বিশেষ করে সূর্যাস্তে মনোরম। ১৬—২১-০০ সবার তরে দ্বার খোলা মন্দিরের; শনি ও রবিবার ৭—১১-০০ আবার ১৫—২১-০০টায় খোলা। লিফটও বসেছে সিঁড়ি উঠতে অক্ষমদের জন্য।

পশ্চিমঘাটে ১৫ ফুট উঁচু মূর্তি হয়েছে কালোপাথরে ভগবান শ্রীকৃষ্ণর। আর হয়েছে লাইব্রেরি, মিউজিয়াম ও অডিটোরিয়াম কালাপাহাড়ে। বিপরীতে নববত পাহাড়ে রূপ পেয়েছে বুলন্দ উদ্যান ও ১৯৮৫র ৮ই সেপ্টেম্বর জাপানি শিল্প সহযোগিতায় অত্যাধুনিক বি এম বিড়লা প্লানেটেরিয়াম। দিনে ৬ প্রদর্শনী, ইংরেজিতে ধারা বিবরণী; টিকিট ৫।

নববত পাহাড় থেকে হুসেন সাগরের দৃশ্যও নয়না-ভিরাম। রাতের আলোকমালা পরিবেশকে মোহময় করে তোলে। সাধা ভ্রমণের রমণীয় পরিবেশ। বোটিং-এরও ব্যবস্থা হয়েছে হুসেন সাগরে। হায়দ্রাবাদ ও সেকেন্দ্রাবাদেরও সংযোগ ঘটিয়েছে হুসেন সাগর। হুসেন শাহ ওয়ালির প্রতি কৃতজ্ঞতা বশে ১৬ শতকে ইব্রাহিম কুলী কুতব শাহর তৈরি।

নববত পাহাড় লাগোয়া ফতে ময়দান অর্থাৎ ভিক্টরি ময়দানে ঔরঙ্গজেবের ক্যাম্প বসেছিল গোলকুণ্ডা দখল-কালে। আর আজ বসেছে খেলার আসর—নামও হয়েছে নতুন করে লাল বাহাদুর স্টেডিয়াম। কনডাকটেড ট্রারের বাস দেখিয়ে আনে। নিজামিয়া অবজার্ভেটরি-টিও হুসেন সাগরের পাড়ে।

শহরের নবতম আকর্ষণ বাঁধে গড়া হুসেন সাগর লেকে বুদ্ধপূর্ণিমা কমপ্লেক্স। বিশ্বের দ্বিতীয় উচ্চতম (২২ মি অর্থাৎ ৭২.১৬ফু) ৩৫০ টনের মনোলিথিক মূর্তি হয়েছে ভগবান বুদ্ধর। প্রাক্তন মুখ্যমন্ত্রী এন টি রামারাও-এর উদ্যোগে ১৯৮৫তে শুরু হয়ে শেষ হয় ১৯৯০এ। মূর্তি প্রতিষ্ঠাকালে বর্ষাভূমিতে প্রাণহানিও ঘটে নানান। প্রাথমিক বিপর্যয় কাটিয়ে ১৯৯২-এর এপ্রিলে লেকের জল থেকে তুলে প্রতিষ্ঠা করা হয় ভগবান বুদ্ধকে। পার্কের আকর্ষণ বাড়াতে লুইসী পার্কে Light and Music-এ ওয়টার ড্যান্স—সেও এক অনবদ্য দর্শন। বোটো পারাপার।

সালাব জং মিউজিয়াম: হায়দ্রাবাদ ভ্রমণার্থীদের কাছে এক বিশ্বয় মুসী নদীর দক্ষিণপাড়ে সালাব জং অর্থাৎ প্রধানমন্ত্রীর মিউজিয়াম। ১৩ই জুন ১৮৮৯এ জন্ম নিজামের প্রধানমন্ত্রী মীর ইউসুফ আলি খান (সালাব জং ওর) ১৯১৪র চাকরিতে ইন্তুফা দিয়ে নীল সেন নিজেস্ব সংগ্রহ বাড়াতো। আর ১৯৪৯র ২রা মার্চ অকৃত্যসার সালাব জং-এর মৃত্যুর পর ১৯৫১র ভারত রাষ্ট্রের প্রধানমন্ত্রী জওহরলাল নেহরু

জাতীয় স্বার্থে মিউজিয়ম গড়েন সালার জং প্যালাসে। ১৯৬৮তে স্থানান্তরিত হয় আজকের ভবনে মিউজিয়ম। বৃহত্তম একক সংগ্রহ হিসাবে বিশ্বে অনন্য। ৩৫টি ঘরে ৩৫০০০ বর্ণাঢ্য সম্ভারে বিস্তার প্রদর্শিত হয়েছে। শোনা যায় জায়গার অভাবে নানান জিনিস আজও বাস্তবন্দী হয়ে গোড়াউনে কাল গুনছে। সারা পৃথিবী থেকে এসেছে এই অনন্য সম্ভার। এক কথায় বলা চলে—পৃথিবীতে নেই যা সালার জং-এ আছে তা।

চীন, জাপান ও বর্মার পৃথক পৃথক হল হয়েছে। এছাড়া জুয়েল হল, পেইন্টিং হল, স্কালচার হল, ম্যানাসক্রিপ্ট হল দর্শকদের মুগ্ধ করে। ইতিহাসও সজীব হয়ে উঠেছে নুরজাহানের ড্যাগার, টিপু র হাতির দাঁতের চেয়ার, ঔরঙ্গজেবের তরোয়াল, জাহাঙ্গীরের মদ্যপানের কাপের প্রদর্শনে।

আর রয়েছে ১৬ নম্বর ঘরে সেকালের ৭ লাখ টাকায় ইতালিয় ভাস্কর বেনজোনির সৃষ্টি *ভেইলড রেবেকা* অর্থাৎ সিন্তবসনা সুন্দরীর অনবদ্য মর্মর মূর্তি। পাথরের মূর্তি যেন প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছে। একই কাঠের গুঁড়িতে একদিকে নারী ও বিপরীতে পুরুষ অর্থাৎ মেফিস্টোফেলিস-মার্গারেট মূর্তিও অনবদ্য। ১৬ নম্বর ঘরে বৈচিত্র্যময় ঘড়ির সংগ্রহও বিহুল করে তোলে। প্যারেড বন্ধ হলেও অভিনবত্ব আছে ঘন্টা ঘন্টা ঘন্টা পেটানোয়—১৬-র সামনের এই ঘড়িটিও অভিজুত করে দর্শকদের। মহীশূর আর্ট গ্যালারিতে আজও প্যারেড করে চলেছে এরই জুড়ি এক। আর ভারতের তৃতীয়টি রয়েছে কলকাতায় ব্যক্তিগত সংগ্রহে। ১৮ নম্বর ঘরে ভারতীয় পুরাণ-ইতিহাস-সমাজ রূপ পেয়েছে নানানধর্মী শিল্পকলায়।

শিশু-বিভাগটিও আকর্ষণীয় হয়ে উঠেছে তার বিচিত্রধর্মী সম্ভারে। পের্চামুখী ঘড়িটিতে অভিনবত্ব আছে। অভিনবত্ব আছে পা থেকে কাঁটা তোলায় রত যুবক মূর্তিটিতেও। পুতুলের সম্ভারও আর এক বিশ্বাস। শুক্রবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় খোলা সালার জং। প্রবেশ মূল্য ২ ছাত্র ১ করে। ক্যামেরা ও সঙ্গের জিনিসপত্র গেটে জমা রাখা বাধ্যতামূলক। সময় স্বল্পতায় সালার জং দেখার জন্য এক বেলা দেওয়া উচিত হবে।

অদূরে ২৮ লক্ষ টাকা ব্যয়ে লাল আর সাদা পাথরে ইভো-সেরাসেনিক শৈলীতে তৈরি উচ্চ আদালত বা ওসমানিয়া আদালতটিও সুন্দর। তেমনই আর এক সুন্দর ওসমানিয়া হাসপাতাল। মুসীর বিপরীতে ১৮০৩এ গড়া ব্রিটিশ রেসিডেন্সিতে কলেজ বসেছে।

চারমিনার: শহরের প্রাণকেন্দ্র সালার জং থেকে বাজারমুখী পথে চুন আর পাথরে তাজিয়া ঢঙে রূপ পেয়েছে চারমিনার। কারুকার্য সুন্দর। চারটি মিনার চারপাশে—নামও তাই চারমিনার। প্রতিটি মিনার ৫.৬ মি উঁচু। বেড় এর ১৫ থেকে ৩০ মি। পূব, পশ্চিম, উত্তর ও দক্ষিণমুখী এই মিনারগুলির ১৪৯ সিঁড়ি বেয়ে উপরে ওঠা যায়। বিতলে

মন্দির। তবে, পাঁচশির অষ্টনের পর সিঁড়ি-পথ রুদ্ধ। মসজিদও হয়েছে, ফুল বসেছে। শ্রেণ মহামারীকে শহর থেকে দূর করে মহম্মদ কুলী কুতব শাহ ১৫৯১এ শুরু করে ১৫৯৩এ স্মারকরূপে গড়ে তোলেন এই মিনার। জনশ্রুতি, প্রেমিকা রূপবতী হিন্দুরমণী ভাগমতীকে প্রথম দর্শনের স্থানেই স্মারকরূপে গড়ে ওঠে মিনার। বাসও করত ভাগমতী আশপাশের Chicham গ্রামে। ধুমপায়ীদের কাছে মিনারটি বিশেষভাবে পরিচিত। নিজামী মুদ্রা থেকে সিগারেটের মোড়কে স্থান পেয়েছে আজ। ১৯—২১-০০টায় আলোর সাজ পরে চারমিনার। অদূরে চৌ-মহম্মা প্রাসাদ। বাস যাচ্ছে সেকেন্দ্রাবাদ রেল স্টেশন থেকে রুট ২ চারমিনারে।

জামি মসজিদ: চারমিনারের উত্তর-পূবে জামি মসজিদ। হায়দ্রাবাদের সবচেয়ে পুরাতন মসজিদও এটি। এটিও ১৫৯৪তে কোয়ালী কুতব শাহর তৈরি।

মক্কা মসজিদ: চারমিনার থেকে এক ফার্লং, শহর থেকে ৪ কিমি দূরে ৮ লক্ষ টাকা ব্যয়ে তৈরি দক্ষিণ ভারতের বৃহত্তম মসজিদ। ১০০০০ ধর্মার্থী একত্রে উপাসনায় বসতে পারেন। ১৬১৪ খ্রিস্টাব্দে আবদুল্লা কুতব শাহর হাতে নির্মাণ শুরু হয়ে শেষ হয় গোলকুণ্ডা দখলের পর ১৬৮৭তে ঔরঙ্গজেবের হাতে। তোরণটি ১৬৯২এ এককথু পাথরে তৈরি। ৩০ মি উঁচু পিলার ভর রেখেছে ঝিলানের। বশু খণ্ড গ্রানাইট পাথর থেকে তৈরি হয়েছে এর দরজা ও পিলার। চুনবালির কারুকার্য, ফ্রেস্কো চিত্র খুবই সুন্দর। এর একটি ইট মক্কা থেকে আনা। দ্বিমতে মক্কার মসজিদের আদলে তৈরি। লোকশ্রুতি, ২০০ বছর অতীতে ইরান থেকে আনা কালো পাথরের আসনে (চত্বরের ডাইনে) বসলে ফের হায়দ্রাবাদ আসা অবশ্যস্বার্থী। বাঁয়ে নিজাম পরিবারের সমাধি। ঘিঞ্জি পথ-ঘাট, গাড়ি-ঘোড়ার ঠাসা, চারপাশে দোকানপাট—হায়দ্রাবাদের পুরনো বাজার। তেমনই নানান প্রাসাদ—পাঁচ মহল, চৌ মহম্মা, কিং কোঠী, বরাদিরির অবস্থানও বাজারকে ঘিরে। তবে, আজ ধ্বংসের কাল গুনছে এরা।

নেহরু জুলজিক্যাল পার্ক: হায়দ্রাবাদ ভ্রমণার্থীদের কাছে এর আকর্ষণও অনবদ্য। শহর থেকে ৫ আর চারমিনারের ২ কিমি দূরে ১৯৫৯ খ্রিস্টাব্দে ৩২০ একর জমি জুড়ে রূপ পেয়েছে ২৫০ প্রজাতির ২৪৫০ প্রাণীর পার্ক অর্থাৎ ডিডিয়াখানা। নীল আকাশের নিচে খোলামেলা পরিবেশে অরণ্যচারীদের চলাফেরা অনন্য করে তুলেছে একে। ভারতের প্রথম লায়ন সাফারি পার্কটিও আকর্ষণ বাড়িয়েছে জুলজিক্যাল পার্কের। যত্রতত্র বিচরণ করছে পশুপাখি—যাত্রী যাচ্ছে সিংহ দর্শনে ৯-৩০—১২-১৫ ও ১৪—১৬-৩০টায় ১৫ মিনিট অন্তর মিনিবাসে। আর প্রবেশ পথে প্রাপ্তিহাসিক জীবজন্তুর (স্টাফড) পার্ক, প্রকৃতিবিজ্ঞান, অতীত সমাজ জীবন, শিশুদের মনোরঞ্জন

জন্য টয় ট্রেনও আকর্ষণ বাড়িয়েছে। আর আছে ছাগলে টানা রিকশা ছাড়াও টাট্টু, হাতি ও উট—পিঠে চাপা যেতে পারে। লেকের জলে চলছে হাউসবোট ও লঞ্চ। ২৪০ প্রজাতির পাখিও বাসা বেঁধেছে লেকের পাড়ের বৃক্ষশাখে। নিশাচর প্রাণীদের জন্য ১২ লক্ষ টাকায় বিশেষ আবাসও হয়েছে নেহরু জুলজিয়াল পার্কে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিনই ৯—১৮-০০টায় খোলা।

সেকেন্দ্রাবাদ: হায়দ্রাবাদ শহর থেকে ৮ কিমি দূরে হুসেন সাগরের উত্তরে ক্যান্টনমেন্ট নগরীরূপে ব্রিটিশের হস্তে ১৮০৬এ গড়া সেকেন্দ্রাবাদ। নামকরণ—নিজাম সিকান্দার বা থেকে। তবে, অধুনা সাধারণ নাগরিকদের বাড়িঘরও রূপ পাচ্ছে। সৈনিকাবাস কিছুটা দূরে বোলারুমে কেন্দ্রীভূত হয়েছে। রাজা সন্তুম এডওয়ার্ডের স্মৃতিতে তৈরি হাসপাতাল, ইউনাইটেড সার্ভিস ক্লাব, রাষ্ট্রপতি ভবন, ম্যালেরিয়া রোগের আবিষ্কর্তা রোনাল্ড রস-এর বাড়ির আকর্ষণও কম নয় ভ্রমণার্থীদের কাছে। তেমনই উচিত হবে মহাকালী মন্দিরটিও দেখে নেওয়া। কৃত্তবংশীদের তৈরি লেকটিও পারিপার্শ্বিক সৌন্দর্য বাড়িয়ে তুলেছে। হোটেলও আছে নানান সেকেন্দ্রাবাদে রেল স্টেশনকে ঘিরে।

আমলাপুর: পর্যাপ্ত সময় থাকলে হায়দ্রাবাদ থেকে আমলাপুর বেড়িয়ে নিতে পারেন। বাস যাচ্ছে হায়দ্রাবাদ থেকে আমলাপুরে। চালুক্য রাজাদের তৈরি বেশ কয়েকটি মন্দিরের জন্য আমলাপুরের প্রশস্তি। মন্দিরের শিল্পকর্মে পশ্চিম ভারতীয় ব্রাহ্মণ্য ধারার ও বুদ্ধওহার আদল মেলে।

নিজাম সাগর: হায়দ্রাবাদ থেকে ১৪৭ কিমি দূরে হায়দ্রাবাদ-মনমদ রেলের কামরেড্ডিগেট পৌঁছে ৪৫ কিমি সড়ক দূরত্বে তেলেঙ্গানাতে গোদাবরীর শাখা নদী মঞ্জিরায় বাঁধ পড়েছে, তৈরি হয়েছে ১২৯ বর্গকিমির চলাধার। জল যাচ্ছে কৃষির কাজে। পাহাড় চূড়ার সাগর ভিউ থেকে চারপাশের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান। ছোট্ট অবকাশ্যাপনের মনোরম পরিবেশ। থাকার জন্য *ক্লিথুসা বাংলা* আছে।

ওয়ারাঙ্গাল



হায়দ্রাবাদের ১৪২ কিমি উত্তর-পূর্বে লেক, মন্দির আর অতীতের ধ্বংসাবশেষ রয়েছে হায়দ্রাবাদ-বিজয়ওয়ারাঙ্গাল রেলপথের ওয়ারাঙ্গালে। সেকেন্দ্রাবাদ বা হায়দ্রাবাদ থেকে নানান ট্রেনে ৩২ ঘট্টায় ওয়ারাঙ্গাল চলুন। কলকাতাগামী ট্রেন ফলকনুয়ার স্টপ নেই, ইস্ট কোস্ট যাচ্ছে ওয়ারাঙ্গাল হয়ে। ট্রেন আপছে ২০৯ কিমি দূরের বিজয়ওয়ারাঙ্গাল থেকে ৩২ ঘট্টায় ওয়ারাঙ্গালে। সেকেন্দ্রাবাদ-দিল্লী, সেকেন্দ্রাবাদ-বারাণসী, ঢেয়াই-দিল্লী, ঢেয়াই-জয়পুর ট্রেনও যাচ্ছে ওয়ারাঙ্গাল হয়ে। আবার ৯ কিমি দূরের কাজিগেট পৌঁছেও প্যাসেঞ্জার ট্রেন বা বাসে চলা যেতে পারে ওয়ারাঙ্গাল। বাস চলে রাজ্য জুড়ে ওয়ারাঙ্গাল থেকে। গোদাবরী ও কৃষ্ণা বিধৌত, আম-নারকেল-তমাল গাছের পল্লবের বাস আসছে হায়দ্রাবাদ থেকে ওয়ারাঙ্গালে।

১২-১৪ শতকে কাকাভীম হিন্দু রাজাদের রাজধানী ছিল হাম্মাকোণ্ডা, পদ্মস্তু ও সিদ্ধেশ্বরী তিন পাহাড়ে ঘেরা ওয়ারাঙ্গাল। নাম ছিল তার হাম্মাকোণ্ডা পট্টনম। শাসিতও হত তেলেঙ্গানার ব্যাপক অংশ ওয়ারাঙ্গাল থেকে। লেক, প্রকৃতি, ইতিহাস ও সংস্কৃতির আকর্ষণে যাত্রীও যাচ্ছেন ওয়ারাঙ্গাল। ১৪ শতকের প্রথমে দিল্লীর তুঘলকরা জয় করে নেয় ওয়ারাঙ্গাল। কুলদেবী কাকাভীম দুর্গার নামেই বংশের নাম কাকাভীম। দুর্গও রয়েছে ৫ কিমি দূরে মধুকোণায় গণপতিদেবের তৈরি ১৩ শতকের। পাথর আর পাঁকে গড়া, ডাবল প্রাচীরে ঘেরা দুর্গ। পরিখাও হয়েছে ২২ মি চওড়া ১৭ মি গভীর কন্যা রুদ্রামার কালে। রাজা প্রতাপরুদ্রও আকর্ষণ বাড়ান রাজপ্রাসাদ ও পুষ্পোদ্যান তৈরি করে। ধু ধু বালুর বুকে ভগ্নস্থপে একশিলা মন্দিরে পূজা হয় আজও। আর আছে কীর্তিতোরণ, কল্যাণমণ্ডপ। দুর্গে সাঁটার বৃহৎ স্থূপের আসিকে ৭টি কীর্তিস্তম্ভও হয়েছে। ২৮ রুটের বাসে বা অটোয়ে চলা যেতে পারে দুর্গে।

তেমনই ওয়ারাঙ্গাল-কাজিগেট পথে ৬ কিমি যেতে হাম্মাকোণ্ডা পাহাড়ী ঢালে ১১৬২ খ্রিস্টাব্দে রাজা রুদ্রদেবের তৈরি হাজার পিলারের হাম্মাকোণ্ডা মন্দিরটিও শিল্প সৌন্দর্যে উন্মোখ। তবে নানান ভাস্কর্য মন্দির থেকে লুপ্ত। তারাকার মন্দিরে দেবতা—শিব, বিষ্ণু ও সূর্য। মন্দিরের মধ্যভাগ রত্নমণ্ডপ নামে খ্যাত। মণ্ডপের মধ্যভাগের প্রস্তর-খণ্ডে আজও সূর্যালোক পড়ে বিচ্ছুরিত হয় মন্দিরময়। উপরিভাগে গায়ত্রী দেবী ছাড়াও অষ্ট নিকপালদের মূর্তি রয়েছে। মণ্ডপ দ্বারের দু'পাশের দ্বারপালদের মূর্তিতেও বৈচিত্র্য আছে। পাথর কেটে তৈরি হাতি ও নন্দী মূর্তি অনবদ্য। পাশেই কল্যাণ মণ্ডপ বা ত্রিকূট মন্দির। পথেই পড়ে আর এক টিলায় অষ্টভূজা দেবী ভদ্রকালীর মন্দির, শঙ্খ (শিব ঠাকুর) লিঙ্গেশ্বর বা স্বয়ম্ভু মন্দির। এছাড়াও মন্দির রয়েছে চালুক্য রাজাদের কালের সুন্দর কারুকার্যময় শিব, বিষ্ণু, সূর্যদেবের। পূর্বদ্বারে মন্দির তৈরির খ্রিস্টাব্দও লেখা ১১৬২। শিল্পের পূজারী কাকাভীমদের কালেই চালুক্য শৈলীর মন্দির-স্থাপত্য উন্নতির শিখরে ওঠে।

ওয়ারাঙ্গালের কার্ণেট ও তাঁত বস্ত্রেরও প্রশস্তি আছে পর্যটক মহলে। মার্কো পোলোও এসেছেন অতীতের *অরুণাচল* অর্থাৎ আজকের ওয়ারাঙ্গালে।

অতুৎসাহীরা হায়দ্রাবাদ-ওয়ারাঙ্গাল সড়কে হায়দ্রাবাদ থেকে ৪৭ আর ওয়ারাঙ্গালের ৯৩ কিমি দূরে আর এক অতীত রোমন্থন করে নিতে পারেন। বিধ্বস্ত জ্যোতীর্ঘ দুর্গের নিচে আবিষ্কৃত হয়েছে প্রাগৈতিহাসিক ধ্বংসাবশেষ।

হায়দ্রাবাদ-ওয়ারাঙ্গাল সড়কে হায়দ্রাবাদ থেকে ৬৯ আর ওয়ারাঙ্গালের ৮৮ কিমি দূরে ইয়াদাগিরিগুট্টা (Yadagirigutta) আর এক হিন্দুতীর্থ। লক্ষ্মী, নৃসিংহদেবী ও অনার্পন মন্দিরের জন্য এর প্রশস্তি। মন্দির লাগোয়া সরোবরের জলে স্নানে নানান ব্যাধির উপশম মেলে। ইয়াদাগিরিগুট্টার অদূরে

কোলানুপাকা আর এক সুপ্রাচীন হিন্দুতীর্থ। সোমেশ্বর, ধীরনারায়ণ, ২০০০ বছরের প্রাচীন জৈন মন্দির দেখে চলা যায়। হোটেলের অভ্যর্থনা—বাসে বসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। APTTDC প্যাকেজ ট্যুরেও আসছে ভোঙ্গী-ইয়াড়া-গিরিগুট্টা-কোলানুপাকা-ওয়ারাঙ্গাল।

ওয়ারাঙ্গালের ৭৪ কিমি উত্তর-পূবে পালামপেটে রামান্না লেকের তীরে ১২১৩ খ্রিস্টাব্দে কালো আগ্নেয়-শিলায় তৈরি রামান্না মন্দিরটির পর্যটক আকর্ষণও কম নয়। হাম্মাকোণ্ডার হাজার গিলারের মন্দিরের অনুকরণে চালুকা ও হোয়সলী শৈলীতে তৈরি। মধ্যযুগীয় মন্দিরগুলির মধ্যে এটি অন্যতম। রামায়ণ ও মহাভারতের আখ্যানও উৎকীর্ণ হয়েছে মন্দির গায়ে। এছাড়া রয়েছে নানান দেবদেবী, নৃত্যরতা নারী, শ্রীকৃষ্ণের গোপবাল্যের বস্ত্রহরণের দৃশ্য। খুবই সুন্দর এর স্থাপত্য। ওয়ারাঙ্গাল বা কাজিপেট থেকে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

আবার ওয়ারাঙ্গাল থেকে ৫০ কিমি দূরে ১২১৩য় কাকাতীয় রাজাদের তৈরি পাখাল লেকের পাড়ে ৯০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত পাখাল ওয়াইল্ডলাইফ স্যান্ডফ্লুরিতে অক্টোবর থেকে মার্চে বাঘ, চিতা, ভান্ডুক, হয়না, নানান প্রজাতির হরিণ ছাড়াও বিভিন্নধর্মী জন্তু দেখে নেওয়া যায়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে পাখালের Sarovihar Tourist R H এ।

তেমনি ওয়ারাঙ্গাল থেকে ৬০ কিমি দূরে অখ্যাত গ্রাম কোরিডি-ও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাসে। কোরিডির খ্যাতি জাগ্রত দেবতা বীরান্না মন্দিরের জন্য। মার্চের এক মাস ব্যাপী উগাড়ি উৎসবে (তেলুগু নববর্ষ) বন্ধা নারীরা আসেন—সন্তান মাগেন দেবতার কাছে। জনশ্রুতি, দেব-আশিসে পূরণও হয় মনস্কামনা তাদের।

ওয়ারাঙ্গাল থেকে ৯০ কিমি দূরে লাখনাডরম লেকটিও মনোরম প্রকৃতির মাঝে রূপ পেয়েছে। তবে, লেক দেখতে আগ্রহীদের এক রাত ওয়ারাঙ্গালে থাকা দরকার হয়ে পড়ে।

হায়দ্রাবাদের ৯০ কিমি পশ্চিমে মেডক জেলায় কোনডাপুরে খননে মিলেছে খ্রিপূ ৩০০০ বছরের অতীত বৌদ্ধস্তুপের নানান ধ্বংসাবশেষ। যুগ্মাও মিলেছে সাতকাহন রাজাদের কালের। সমাপ্তিও মিলেছে সন্নিহিতে।



রেল ও বাস স্টেশন মুখোমুখি ওয়ারাঙ্গালে। রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই বামহাতি Station Rd, Warangal, STD 08712, PC-560002-এ—Maheswari L, Vijaya L, RJB, SCB ৮৫ DAB ৮৫ SAB ৮৫ DAB ১০০-১৭৫। বাস স্ট্যান্ডের পিছে Vikash L, S ৪৫ D ৮৫-১২৫। পোস্ট অফিসের পিছে H Shanthi Krishna, S ৬০ D ১০০-১৭৫। R N Tagore Rd-2৫—H Natraj, R1, DCB ১০০ DAB ১৫০; Krishna L, Geetha L Chowrashta-য়—H New Urvasi, SCB ৪৫-৮৫ DAB ১০০-২২৫; Annapurna L, Ganesh L, H Kohinoor, Ananda L, Venkatarama L H Ashoka, D ১৫০ A-C D ৩৫০; H Sankar, Main Rd; Prince, opp Rly Stn; Lakshmi

L, SCB ৪৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫; ছাড়াও হোটেল আছে নানান ওয়ারাঙ্গালে। SVP Rd, Warangal-506007-এ—H Ekasila, SAB ৮৫ DAB ১২৫-২০৫ A/C S ২৫০ D ৩৫০। আর আছে APTTDC-র Tourist Guest House, Warangal-506002; রেলের Retiring Room, Municipal TB, PWD RH ও ধরমশালা। নিরামিষ আহার্য ওয়ারাঙ্গালের হোটেল। তবে, বিজয়া লজ ও অশোকায় আমিষ-নিরামিষ দুই-ই মেলে।

ভদ্রাচলম



বিজয়ওয়ারা-ওয়ারাঙ্গাল/কাজিপেট রেলের ডোর্নাকল জং থেকে ২-৩০, ৯-২০, ১৬-০০, ১৯-৩০এ ট্রেন যাচ্ছে Dornakal-Bhadrachalam-Manuguru ব্রড গেজের ভদ্রাচলম রোড। ডোর্নাকল থেকে দূরত্ব ৫৫ কিমি, ঘণ্টা দেড়েকের পথ। ৯-২০এর ট্রেনটি ২০৭ কিমি দূরের বিজয়ওয়ারা আর ১৬-০০টার ট্রেনটি হায়দ্রাবাদ থেকে এসে সরাসরি ভদ্রাচলম যাচ্ছে। বাসও চলে এপথে। বাস আসছে বিশাখাপতনম ৩৯৯, তিরুপতি, হায়দ্রাবাদ, চেন্নাই ছাড়াও রাজ্যের দিঘিদিগ থেকে।

গোদাবরীর দক্ষিণ পাড়ে রামচন্দ্রস্বামী মন্দিরের জন্য ভদ্রাচলমের প্রশস্তি। অনুচ্চ পাহাড়ে মন্দির। মন্দিরে রয়েছেন তীর, ধনুক, শব্দ ও চক্র হাতে চতুর্ভুজ দেবতা শ্রীরামচন্দ্র, সঙ্গী সীতা দেবী ও ভাই লক্ষ্মণ। মন্দিরের শিখর চূড়ায় ৩০ টনের বিমান। তার শিরে গোদাবরী থেকে পাওয়া সুশ্রন চক্র। মূল মন্দিরকে ঘিরে ২৪টি ছোট ছোট মন্দির। ৪৮রূপী বিষ্ণুও রয়েছেন মন্দিরে। জনশ্রুতি, লঙ্কার পথে শ্রীরাম এখান থেকেই গোদাবরী পার হন। ১৭ শতকে কৃতবংশীদের তালুক-প্রধান গোপান্না উত্তরকালের রামভক্ত রামদাস সংস্কার করেন মন্দির। সেও আর এক কিংবদন্তীর গাথা। রামনবমীর উৎসবে দুর্ন-দুরাঙ্গ থেকে তীর্থযাত্রী আসেন। ৪—১৩-০০ আবার ১৫—২১-০০টার মন্দির খোলা। ভদ্রাচলম থেকে ৩২ কিমি দূরে অতীতের আশ্রমটিও আজ মন্দিরে রূপান্তরিত। কিংবদন্তী, এই আশ্রম থেকেই রাবণ হরণ করেন সীতাকে।



থাকার জন্য ভদ্রাচলমে আছে—রাজ্য পর্যটনের Panchvati, Parnasala, অব: District PRO, Khammam-507001. আর আছে মন্দির কমিটির নানানধর্মী গেস্ট হাউস, ধরমশালা ও প্রাইভেট হোটেলভদ্রাচলমে।

রাজমহেন্দ্রী



হাওড়া-চেন্নাই রেলপথে রাজমহেন্দ্রী। ভদ্রাচলম থেকে ট্রেনে খান্নাম পৌঁছে বাসে রাজমহেন্দ্রী বাওরাই সুবিধার। সরাসরি বাসও মেলে, দূরত্ব ১৬১ কিমি। আর চেন্নাই থেকে দূরত্ব ৫৮১, ওয়ালটেনার ২০৯, হায়দ্রাবাদ ৪৬৪ কিমি। ট্রেন ও বাস মেলে ত্রী থেকে।

গোদাবরী নদীর পূর্ব তীরে পূণ্য হিন্দুতীর্থ রাজমহেন্দ্রী। রাজমহেন্দ্রীর মার্কণ্ডেয় স্বামী ও কোটিলিঙ্গেশ্বর মন্দির দুটির পূণ্যার্থী ও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। মার্কণ্ডেয় মন্দিরে হর-

পার্বতী, নারায়ণ ও সূর্য দেবতা আর কোটিলিঙ্গেশ্বরে লিঙ্গরূপী মহাদেব মূর্তি। ত্রাবিড়ীয় স্থাপত্যে তৈরি মার্কেশুয় মন্দিরে দান-খ্যান-পূজাপাটে পাপস্থালনের সাথে পুনর্জন্ম থেকে অব্যাহতি মেলে। পুরাণখ্যাত প্রতিটি মন্দিরে বিষ্ণুর দশাবতারের মূর্তি বিরাজিত। পাশেই রাম-সীতার মন্দির। গোদাবরী এখানে যথেষ্ট প্রশস্ত, ভাগ্যও হয়েছে সপ্তধারায়—মিলেছে বঙ্গোপসাগরে। প্রতি ১২ বছর অন্তর পুষ্কর ঘাটে পুষ্করম তীর্থে যাত্রী আসেন সারা ভারত থেকে। স্নান চলে, মেলা বসে ঘাট জুড়ে। ঘাট জুড়ে নানান দেবমূর্তি—দুর্গাহি প্রাধান্য পেয়েছে। শ্রীমা সারদা দেবীও এসেছেন—স্মারক রূপে প্রতিষ্ঠিত হয়েছে পুষ্কর ঘাটে। ২ কিমি দূরে কোটিলিঙ্গেশ্বর মন্দির তথা ঘাট। ভারতের দ্বিতীয় বৃহত্তম (৫ কিমি দীর্ঘ) রেল ও সড়ক সেতুটিও হয়েছে ৫৬টি খামে গোদাবরী নদীতে এই রাজমহেন্দ্রীতে। সেতুতে চলার কালে ট্রেন থেকেই গোদাবরীর পাড়ে শহরের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান। তবে, বর্ষায় খুবই অশান্ত হয়ে পড়ে গোদাবরী। রাজমহেন্দ্রীর চন্দনজাত পণ্য ও কার্পেটও যথেষ্ট খ্যাত।

আর রয়েছে গোদাবরী ব্যারেজ—অদূরে ছোট্ট দ্বীপ শ্রীলঙ্কা; শহর থেকে ৫ কিমি দূরে প্রাচীন রাজধানীর ধ্বংসস্থল; ১০ কিমি দূরে সীহিবাবর মন্দির; ১৮ কিমি দূরে পণ্ডিতেরী রাজ্যের এক বিক্ষিপ্ত অংশ ইয়ানাম; ২৫ কিমি দূরে দ্বারপুর্নীতে হর ও হরির আঁধারে দেবতা অর্থাৎ আয়ান্না মন্দিরে জানুয়ারির মকর সংক্রান্তির দীপারান্ধনায় মকর জ্যোতি দর্শন; ৫৫ কিমি দূরে কাকিনাড়া সামুদ্রিক বন্দর ছাড়াও ২৫ কিমি দূরে শক্তিপীঠ ব্রহ্মরামাও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাস-অটো-ট্যাক্সিতে অত্যাশুসহায়ী। ট্যাক্সিতে ১ দিনে সাজ করা সম্ভব হলেও বাস যাত্রায় ২ দিন থাকা দরকার হয়ে পড়ে রাজমহেন্দ্রী ও আশপাশ দর্শনে।



থাকার জন্য Rajamundry, STD 0883, PC-533103-তে—*Panchvati H, Pushkar Ghat ;

Modern Hindu H, H Agastu, H Ashok, Main Rd; Ananda Nivas, opp Godavari Rly Stn; H Sri Durga, Pushkar Ghat; Metro L, near Bus Stand, H Devi-Sridevi, Kotipally Bus Stand, S ৮০ D ১৫০; H Surya, H Mahaluxmi, Ratna Palace, H Chandralok, Anand Regency, 26-3-7 Jampet-533103, SAB ৩০০ DAB 8৫০ A/c S ৫০০ D ৬৫০ সুইট ১০০; ছাড়াও সাধারণ হোটেল আছে নানান। এদের কাছে D ৮০-১৭৫ টাকায় মেলে।

বিশাখাপতনম



কলকাতা-চোমাই রেলপথে কলকাতা থেকে ৯২৪, চোমাই থেকে ৮১০ কিমি দূরে ওয়ালটোয়ার। আর রাজমহেন্দ্রীর দূরত্ব ১৯৪, হায়দ্রাবাদ ৬৬৭ কিমি। চোমাই থেকে আসা হাওড়াগামী প্রতিটি ট্রেনই সংযোগ গড়েছে রাজমহেন্দ্রী ও ওয়ালটোয়ারের। হাওড়া থেকে সরাসরি ট্রেন বাতিল করতলা এক্সপ্রেস, চোমাই মেইল, ইস্ট কোস্ট, কলকাতা এক্সপ্রেস, কোচি,

ব্যাঙ্গালোর, তিরুভনন্তপুরম এক্স ওয়ালটোয়ার হয়ে। ঘণ্টা পনেরোর গতি।

আর ওয়ালটোয়ার অর্থাৎ বিশাখাপতনম থেকেই—1357 দিন বিলাসপুর যাচ্ছে 8518 এক্স; 347 দিন ইন্ডরত নিজামুদ্দিন যাচ্ছে বিলাসপুর-নাগপুর-ভূপাল-আগ্রা ক্যাপ্ট হয়ে 8543 সমতা এক্স; 15 দিন 8553 বিশাখাপতনম-নিজামুদ্দিন এক্স; সেকেন্দ্রাবাদ যাচ্ছে 1৬-০০টায় 7007 গোদাবরী এক্স, ৮-১৫য় 7405 কৃষ্ণা এক্স; গুন্টুর যাচ্ছে ৮-১৫য় 7240 সিমান্দ্রী এক্স; বিজয়ওয়াড়া যাচ্ছে ১৩-০০টায় 7245 এক্স; রেল যাচ্ছে আর্কু/ কোরাপুট/ জেপুর/ জগদলপুর হয়ে কিরণদোল। কোণারক এক্স যাচ্ছে মুম্বাই-সেকেন্দ্রাবাদ-ভুবনেশ্বর; আলোমি-বোকরো স্টিল সিটি; পুরী-ওখা, পাটনা-কোচি, সেকেন্দ্রাবাদ-পলসা, বিশাখা এক্স, গুয়াহাটি-ব্যাঙ্গালোর/ কোচি/ তিরুভনন্তপুরম এক্স ওয়ালটোয়ার হয়ে যাচ্ছে। ট্রেন যাচ্ছে বিলাসপুর, পুরী, গোয়ালিয়র, রায়পুর, নাগপুর ছাড়াও ভারতের দিকে দিকে ওয়ালটোয়ার থেকে।



IAC-র বিমান 246 দিন ১১-০০টায় চোমাই ছেড়ে ১২-০৫এ বিশাখাপতনম পৌছে চোমাই যাচ্ছে ১৩-২০এ। ১৪-৩০ বিশাখাপতনম ছেড়ে ১৫-২০এ

ভুবনেশ্বর পৌছে মুম্বাই যাচ্ছে ১৭-৫৫য়। হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে 135 দিন ১০-৩০, 246 দিন ১২-৩৫এ ছেড়ে ১ ঘটায়। 246 দিন কলকাতায় যাচ্ছে ১৫-৩৫এ ছেড়ে ১৬-৫৫য়। ফেরেও এরা একই ভাবে একই দিনগুলিতে। বায়ুদ্রুতও সংযোগ গড়েছে বিশাখাপতনম থেকে হায়দ্রাবাদ, বিজয়ওয়াড়া ও রাজমহেন্দ্রীর। দপ্তর এদের: Indian Airlines, LIC Building, ৫ 599333/140; Vayudoot, Frontline Travels, Shop No.1, Udjog Bhavan. আর প্রাইভেট বিমান Skyline NEPC Airways সার্ভিস গড়েছে 42 দিন চোমাই-মাদুরাই-ত্রিচি; 35 দিন ভুবনেশ্বর-কলকাতা-বাগডোগরা-পাটনা-বারানসী; 357 দিন হায়দ্রাবাদ-মুম্বাই; 46 দিন দিল্লী-মুম্বাই-কোয়েম্বাটুরের ভাইজাগ থেকে। NEPC-র দপ্তর বসেছে Station Rd, ৫ 574151-এ।



ওয়ালটোয়ার রেল স্টেশন থেকে ১.৫ কিমি দূরে রাজকীয় বাস স্ট্যান্ড। NH-5 চলেছে শহর চিরে। APSRTC বাস যাচ্ছে বিজয়ওয়াড়া, বেরহামপুর (গোপালপুর অন সী), পুরী ছাড়াও রাজ্য তথা প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে বিশাখাপতনম থেকে। রেল স্টেশন থেকে ৩, বাস স্ট্যান্ড থেকে ২ কিমি দূরে বিশাখাপতনম বন্দর নগরী তথা সাগরবেলা। বাস, ট্যাক্সি, অটো ও রিক্সা চলেছে।

কেউ বলেন ভাইজাগ, কেউ বা বলেন ওয়ালটোয়ার; আবার বিশাখাপতনমও বলে থাকেন নানানজনে। রাজ্যের রাজধানী হায়দ্রাবাদের মতো ওয়ালটোয়ার ও বিশাখাপতনমও আর এক টুইন সিটি। ব্রিটিশের মুখে ভাইজাগপতনম বা ভাইজাগ নামে খ্যাত ছিল বিশাখাপতনম অর্থাৎ ওয়ালটোয়ারের শিজাঞ্চল তথা বন্দর এলাকা। আর রেল স্টেশনকে ঘিরে সারা উত্তর জুড়ে বসতি নিয়ে ওয়ালটোয়ার। স্টেশনের নামও ওয়ালটোয়ার জংশন। উচ্চতা ১৫ ফুট। তাপমান বছরভর ২৪-৩১° সেলসিয়াসে ওঠানামা করে। জলবায়ু নাতিশীতোষ্ণ। প্রকৃতি-প্রেমিক ব্রিটিশের গড়া রিসর্চ নগরী ভাইজাগ আজ গোপালপুরের মতোই হৃদয়হারা।

১১ শতকের কথা—অন্ধ্রের রাজা বারাগঙ্গীর পথে মন্দির গড়ে পূজা করেন দেবতা বিশাখা বা কার্তিকেশ্বর। আর বিশাখা থেকে নাম হয় জায়গার বিশাখাপতনম। পাহাড়-পাহাড়, উঁচু-নিচুর সমন্বয়—পূব জুড়ে বঙ্গোপসাগর। বন্দরটি ভারতে চতুর্থ আর দক্ষিণ ভারতে চোমাই-এর পরেই স্থান। আকরিক লৌহ ও ম্যাঙ্গানিজ যাচ্ছে বিদেশের বাজারে। মঙ্গল, বৃষ্ণ ও বৃহস্পতি ১৫—১৭-০০টায় বন্দর দেখার ব্যবস্থাও আছে। অন্যান্য দিন Admn Officer-এর বিশেষ অনুমতিতে দেখা যায়। হিন্দুস্থান শিপ ইয়ার্ড কোম্পানির অন্যতম জাহাজ কারখানাটিও গড়ে উঠেছে ভারতের ব্রাইটন বিশাখাপতনমে। সোম থেকে শনিবার ১৬—১৮-০০টায় দর্শকদের জন্য দ্বার খোলা মেলে শিপ ইয়ার্ডের। ইন্ডিয়ান নেভির সাবমেরিন বেস বা ডুবোজাহাজ ঘাঁটি, করমণ্ডল ফার্টলাইজার, হিন্দুস্থান পেট্রোলিয়ামের তৈল শোধনাগারও বসেছে বিশাখাপতনমে।

কালেকটর চক থেকে ১৩ রুটের বাসে GPO গিয়ে বা অটোয় ডক লাগোয়া ব্রিহিলস্ম অর্থাৎ একই পাহাড়ের তিন চুড়োয়—হসিলে ১৮৬৪ খ্রিস্টাব্দে তৈরি Our Lady of the Sacred Heart রোমান ক্যাথলিক গির্জা; দ্বিতীয়ে মদিনার ঈশাকের নামে উৎসর্গীকৃত মসজিদ; আর তৃতীয়ে ১৮৮৬তে Captain Blackmoor-এর তৈরি মন্দিরে হিন্দুর দেবতা ভেঙ্কটেশ্বর দেখে নেওয়া যায়। রেল স্টেশন থেকে দূরত্ব ৫ কিমি; উচিতও হবে একে একে দেখে নেওয়া। ভেঙ্কটেশ্বর মন্দিরের পিছন থেকে লঞ্চে নরাভাগেদা নদী পারাপারে ৩০০ সিঁড়ি ভেঙে কিছুটা ঢাল বেয়ে নেভি পেরিয়ে ঘটনা-খানেকে পথ গিয়েছে ৩৫৮ মি উঁচু পাহাড়ের লাইট হাউস-এ। ডলফিনস নোজ পয়েন্ট থেকে প্রতি শনি ও রবিবার ১৪—১৬-০০টায় লাইট হাউসে চড়ার ব্যবস্থাও মেলে। উপর থেকে নীল সমুদ্র ও শহরের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। তেমনই ৬৪ কিমি দূরত্ব পর্যন্ত জলযানকে নিশানা দেয় এই লাইট হাউস। হাসরের উপদ্রব আছে ডলফিনস সাগরে।

তবে, সবার ওপরে রয়েছে সিটি সেন্টার থেকে ৩ কিমি দূরে ওয়ালটোয়ারের রামকৃষ্ণ বীচ (Mission Beach)। মঙ্গলা গিরি আশ্বাজাম্মা মন্দিরে বীচের গুফা। আর হয়েছে বাদল ব্যানার্জীর উদ্যোগে ১৯৮৪র ১৮ই অক্টোবর বাঙালির দেবী কালীর মন্দির। দেবী এখানে ভবতারিণী। সম্মুখে অস্তহীন বঙ্গোপসাগর। বিক্ষিপ্তভাবে পাথরখণ্ড—স্নানের সুব্যবস্থার অভাব বিশাখাপতনমের সাগরতোলায়। সকাল-সন্ধ্যে স্থানীয়দের ভ্রমণে রমণীয় পরিবেশ। ওয়ালটোয়ারে আর এক আকর্ষণ ভূধা (VUDA) পার্ক। লোক হয়েছে—বোট চলছে, গা ছমছম করা কৃত্রিম গুহাগুলি ও ফিশ অ্যাকোয়ারিয়াম উচিত হবে পায়ে পায়ে দেখে নেওয়া। তেমনই বীচ রোডে বিশাখা মিউজিয়ামটিও (১৬—২০-০০) আর এক দর্শন।

বীচ রোড ধরে উত্তরে আলুঘর রেখে পথ উঠেছে ৬০০ মি উঁচু কৈলাসগিরি পাহাড়ে। রোড ট্রান্সপোর্ট কমপ্লেক্স থেকে

বাসে ১০ কিমি দূরে কৈলাসগিরির পাহাড়তলি পৌঁছে পায়ে পায়ে সিঁড়ি বেয়ে চড়া যায় গিরি শিখরে। অটোও যাচ্ছে পাহাড়ের পাদদেশে শহর থেকে ৩০-৪০ টাকায়। আর ট্যাক্সি শিখর চড়ে ঘুরপথে। নিরাল-নির্জনে মনোরম প্রকৃতির মাঝে নয়নলোভন কৈলাসগিরির স্বর্গের নন্দনকানন সম। তিনদিক নীল সমুদ্রে ঘেরা—সোনালী বালুকাবেলা। পাহাড় কুঁড়ে জল ঢুকেছে—পাহাড়টোও যেন ঝুঁকে আছে বঙ্গোপসাগরের বুকে। নীল জল আর নীলাকাশ দুইয়ে মিলে একাকার। আর হয়েছে পাহাড়ে ডিজনালী ল্যান্ড সম রমণীয় পার্ক, বিশালাকার শিব-পার্ভীর যুগল মূর্তি, সুন্দর এক রেস্তোরাঁ। শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান পাহাড় থেকে। চড়ুইভাতির ও মনোরম পরিবেশ কৈলাসগিরি। থাকারও ব্যবস্থা মেলে রাজা পর্যটনের টুরিস্ট লজে। তেমনই আছে পাহাড়ী পথে শ্রীকৈলাস গিরিশ্বর মন্দির ও পাহাড়তলীর সমুদ্রতটে আলুঘর পার্ক।

সাগরবেলা হয়েছে আরও এক, শহরান্তে ৬ কিমি দূরে স্বমিকোশা বীচ (Lawson Beach)। নিরাল-নির্জনে একদিকে ঝাউবন, আর একদিকে পাহাড়—সমুখপানে সুনীল বঙ্গোপসাগর। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই। বাস ও অটো যাচ্ছে। তেমনই বাসে সাগরের সঙ্গে লুকাচুরি খেলে ২৪ কিমি উত্তর-পূবে গোষ্ঠী নদীমুখে ভীমানিপতনমও দেখে নেওয়া যায় বনবাসকালে পাণ্ডব ভ্রাতা ভীমের প্রতিষ্ঠিত দেবতা নৃসিংহ ছাড়াও সমুদ্র স্নানে আদরণীয় ধীর-স্থির সাগরবেলা, লাইট হাউস ও ১৭ শতকের ডাচ সমাধি-ভূমি ও ডাচ দুর্গের ধ্বংসাবশেষ। নামটিও এসেছে পাণ্ডব ভ্রাতা ভীম থেকে। বিশাখাপতনমের নবতম আবিষ্কার ভীমানিপতনমের পথে বীচ রোডে ১৬ কিমি দূরে বভিকোশা। আবিষ্কৃত হয়েছে ১০ একর ব্যাপ্ত পাহাড়ী টিলায় বৌদ্ধ বিহার, মহাচৈত্র্য ও নানান স্তুপ। তেমনই উৎসাহীরা বিশাখাপতনমের ৪৮ কিমি দূরে কোণাকারলায় ২৯৬ একর ব্যাপ্ত জলাশয়ে পাখির মেলাও দেখে নিতে পারেন। চড়ুইভাতিরও মনোরম পরিবেশ বভিকোশা ও কোণাকারলা। ওয়ালটোয়ারের রেল কলোনিটিও বেড়িয়ে নিন চলতে ফিরতে। এছাড়া বিশাখাপতনমের হাতির দাঁত, মহিষের শিং ও কচ্ছপের খোলের কাজও আদরণীয়।

কনডাক্টেট ট্যুর : যথেষ্ট যাত্রী হলে পর্যটন দপ্তর Regional Tourist Information Bureau, Vuda Building, Siripuram, Visakhapatnam-530003, ☎ 554716 থেকে প্রতিদিন সকাল ৮—১৯-০০টায় কনডাক্টেট ট্যুরে ৭৫ টাকায় শহর ও সিংহচলম বেড়িয়ে আনে; বৃষ্ণ ও বৃহস্পতিবার যাচ্ছে ভীমলি ও জ্বা দেখতে একই সময়ে একই ভাড়া। প্রতিদিন যাচ্ছে আম্রভরম ৭—১৮-০০টায় ১২৫ টাকায়। প্রতি রবিবার আর্কুভালি যাচ্ছে ১৭৫ টাকায় ৭—২১-০০টায়।



রেল স্টেশনের সোজা উত্তরমুখী পথে ১২ কিমি দূরত্বে বাস স্ট্যান্ড। আর ডাইনে ডাবা গার্ডেন হয়ে মেইন রোড ধরে শহর পেরিয়ে ৩ কিমি দূরে কালেকটর চক। ডাউন নামতেই সমুদ্র। রেল স্টেশনের ডাইনে

Daba Garden, Waltair, STD 0891, PC-530020 মুখী ১০—১৫ মিনিটের পথে—L Sri Krishna, L Durga Bhawan, H Arafu, H Sri Sathya, Tourist L, L Sri Ganesh, Gemini L, H Sri Kanya, Krishna L, L Brindavan, SCB ৫০ SAB ৬৫-১০০ DAB ১০০-১৭৫ A/c S ২৫০ D ৩৫০; H Jupiter, 31-32-18 Daba Gardens-20, SAB ৮০-১২৫ DAB ১২৫-১৭৫ A/c D ৩৫০; H Manorama, 3-32-18 Daba Gardens-20; H Anand, Surya Bagh, I. Ranganath, 31-32-62 Daba Gardens-20; H Ootry, Daba Gardens-20, SAB ৬৫-১০০ DAB ১০০-১৫০ A/c S ৩০০ D ৩৫০; *H Dolphin, Daba Gardens-20, 567000, A/c S ৬০০-১০৯৫ D ৭৫০-১২৯৫ সুইট ১২৯৫ ১৫৯৫।

Waltair Main Rd-530002-এ—*H Apsara, S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৭৫০ সুইট ৮০০-১০০০; H Poorna, R3B3, SCB ৫০ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১২৫-২০০; L Viswabhavan, 14-1-1A, Ganjipeta-2; H Prasanth, Main Rd-2, SAB ৮০-১৫০ DAB ১২৫-২০০ সুইট ৩০০-৪৫০; H Swapna, 10-28-3 Main Rd-3; H Casino, Main Rd-1, H Sundhya, Main Rd-1; *H Vikram, 75 Feet Rd-1, S ২০০ D ৩০০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০ সুইট ৬৫০ A/c ৮০০; H Viruat, Indira Gandhi Stadium Rd-1, S ৮০-১৫০ D ১০০-২২৫ A/c S ২৫০ D ৩০০।

আর রয়েছে সারা শহরময়—সাগরবেলার উত্তরে *Ocean View Inn, 7-1-43 Kirlampudi-23, 554828, S ১৭৫ D ২২৫-২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০, ব্যবস্থাপনা ভালই; L Konark, 47/11-2 Dwarakanagar, Visakhapatnam-530016, 548251, D ১৫০-২২৫ A/c D ৩০০; H Jyoti Swaroopa, 47/11-2 Dwarakanagar-16, 548871, D ২২৫-২৭৫ A/c ৪০০; H Sarovaz, Dwarkanagar, S ২২৫ D ৩২৫ A/c S ৩০০ D ৪২৫ সুইট ৬০০; *H Meghalaya, Ascelmetta-3, 555141, S ২৫০ D ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০-৬০০; H New Alankar, V M Rd-2; L Pardesi, K G H Rd; L Romex, B Rd-1; H Sai Sudha, B Rd-1; L Basanti, near Bus Std; L Sri Sankar, Maharani St, Anakapalli-2.

কালেক্টর চক-530002-এ—L Sagur, 16-1-30 Collectors' Office Jn, Visakhapatnam-2, SAB ৮০ DAB ১২৫-২০০ A/c D ৩০০-৪২৫; H Ajanta; চকের ভাইনে King George Hospital DN-2-এ সাধারণ সাজে Royal L, SAB ৬৫ DAB ১২৫। L Shri Ramakrishna, Surjya Bhawan L, Imperial L, H New Swapna, Navayuga.

Ramakrishna Paramhansa Marg-530002 অর্থাৎ বীচ রোডে—Jaabity Beach Inn, A10R3B2.5, SAB ১৫০ DAB ২২৫ A/c S ৩০০ D ৪২৫; *H Sea Pearl, A/c S ১৩৫০ D ১৬৫০। Beach Rd-530003-এ—H Sun-N-Sea; Palm Beach H, S ৩০০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০ A/c S ৩৫০ D ৫০০ সুইট ৮০০; *Park H, 554488, Mumbai 0 (022) 2854574, Delhi 0 (011) 3732477, Calcutta 0 (033) 2493121, A/c S ১২৫০ D ২২৫০ সুইট ৩২৫০; *Taj Residency, 567756, S ৬৫ D ৮০ US\$; H Bommana,

DAB ৩০০ থেকে; Marina H, Indira Mahal, Indra Bhawan, Sea Rock H, 49 Dasapalla Hills, Visakhapatnam-3, A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; Grand Bay Ravi H, 15-1-44 Nowroji Rd-2, 550691, A/c S ১২০০ D ১৫০০ সুইট ৩৫০০; *H Dasapalla, Suryabagh-20, 564825, S ৩০০ D ৩৫০-৪২৫ সুইট ৬০০ A/c S ৩৭৫-৪৫০ D ৪৫০-৬০০ সুইট ৮০০-১২৫০; Silver Sands Inn, 2 Kirlampudi, Beach Rd, S ২০০ D ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ ছাড়াও হোটেল ও লজিং হাউস রয়েছে আরও নানান বিশাখাপতনমে। আর আছে রেলস্টেশন ও বাস স্ট্যান্ড দু'য়েতেই রিটায়ারিং ক্রম; সার্কিট হাউস, Municipal Corpn G H, University G H, APTTDC's Rishikonda Beach Resort ও H Chandan. তবে মধ্যমানের হোটেল ডলফিন, হোটেল শ্রীসত্য, লজ শ্রীগণেশ, হোটেল শ্রীকৃষ্ণা, লজ বৃন্দাবন, হোটেল জুপিটার, হোটেল মনোরমা, লজ সাগর থাকার পক্ষে ভালই। আপনিও রেল স্টেশন থেকে 42, 42E বাসে বা ১০-১৫ টাকার রিকশা বা ২০-২৫ টাকার অটোয় কালেক্টর চকের লজ সাগরে পৌঁছে যান।

সিংহাচলম: সিংহাচলম অর্থাৎ সিংহের পাহাড়। রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি আর বিশাখাপতনম থেকে ১১ কিমি দূরে ২৪৪ মি উঁচু পাহাড়ে নরসিংহদেবের মন্দিরের জন্য সিংহাচলমের প্রসিদ্ধি। ভগবান বিষ্ণুর চতুর্থ অবতার মানবরূপী এই নরসিংহদেব। চন্দনে আবৃত থাকেন দেবতা। বৈশাখে অক্ষয় তৃতীয়ার চন্দন যাত্রায় দেবতার প্রকৃত রূপ দেখা যায়। জনশ্রুতি, এই রূপদান্ডে মোক্ষলাভ ঘটে। বাৎসরিক উৎসব কল্যাণম অনুষ্ঠিত হয় চৈত্র মাসের শুক্লা একাদশী থেকে পূর্ণিমায়। এছাড়াও উৎসব আছে সারাবছর জুড়ে সিংহাচলমে। চতুষ্কোণ এই মন্দিরের চোল স্থাপত্য অভুলনীয়, শিখর কারুকার্যময়; মন্দির গায়ে বিষ্ণুপূরণের নানান আখ্যান উৎকীর্ণ হয়েছে। জনশ্রুতি, মুখমণ্ডলের কল্পমস্তকের পূজায় আজও বন্ধ্য নারীর সন্তান হয়। বিষ্ণুর বিবাহবাসর ৯৬ স্তম্ভের কল্যাণ বা বিবাহ মণ্ডপের কারুকার্যও সুন্দর। মূল মন্দিরের সামনে কালো কষ্টিপাথরের নাটমন্দির, একপাশে লক্ষ্মীনারায়ণ মন্দির, অপরপাশে পাথরের রথ। ১৫১২য় খ্রীষ্টাব্দেবসেও এসেছেন মন্দিরে—পদচিহ্ন রয়েছে প্রবেশদ্বারে।

দেবদর্শন ও পূজাপদ্ধতি তিরুপতির মতো ২ ১৫ ৩০ টাকার টিকিটের বিনিময়ে। লাডু ও অন্নভোগও কিনতে মেলে। নানানধর্মী দোকানপাটও বসেছে মন্দির চত্বরে। লোকশ্রুতি, হিরণ্যকশিপু পুত্র প্রহ্লাদকে বধ করতে সমুদ্রে ফেলে পাহাড় চাপা দেয়। কিন্তু বিষ্ণু বরাহরূপে জল থেকে উদ্ধার করেন প্রহ্লাদকে। সেই স্মৃতিতে ভক্ত প্রহ্লাদ মন্দির গড়েন পাহাড়ে। তবে, শিলালিপি বলে ১২৬৮ খ্রিস্টাব্দে সেনাপতি আখতাই তৈরি করেন এই মন্দির। মন্দির থেকে ১ ফার্লং বামে গঙ্গাধারা জলপ্রপাত। জলে দুরোগ্য ব্যাধির উপশম মেলে।

ওয়ালটেরার রেল স্টেশন থেকে 6A, আর কালেক্টর

চক থেকে ২৪৫০ ফুটের বাসে সিংহচলম পৌঁছে বিপরীত থেকে মন্দির কমিটির বাসে কারুকার্যময় বিশাল তোরণ পেরিয়ে ১৯৫৯ থেকে ১৯৬৩ খ্রিস্টাব্দে গড়া সড়ক ধরে মন্দির বেড়িয়ে নেওয়া যায়। বাস আসছে শ্রীকাকুলাম, আল্লাভরম থেকেও সিংহচলমে। আবার ১১০০ সিঁড়ি ভেঙেও পথ উঠেছে মন্দির ঘারে। ১৫ টোল লাগে।

থাকার জন্য সিংহচলমে আছে APTTDC-র ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস, ডিস্ট্রিক্ট বোর্ড রেস্ট হাউস ও ধরমশালা। আর পাহাড় চূড়ায় ৪০ ৬০ ৮০ ১০০ টাকায় মন্দির কমিটির নানান ধর্মী ধরমশালা ও কটেজ আছে।

অন্ধ্র-ওড়িশা-মধ্য প্রদেশ তিন রাজ্যের উপর দিয়ে সমভাবে যাচ্ছে ৪৭০ কিমি দীর্ঘ বিন্দুং যাহিত K K Rail. সবচেয়ে উঁচুতেও উঠেছে ভারতীয় ব্রডগেজ রেল এপথে। উচ্চতম রেল স্টেশন ১০৫০ মি উঁচুতে সিমলিগুড়া। সামনে-পিছনে ডাবল ইঞ্জিন। মেঘেরাও আকাশ থেকে নেমে এসে যাত্রী হয় কে কে রেলে। দৃষ্টিও অগম্য কুয়াশার বেড়া জালে। রোমাঞ্চে ভরা পথশোভার আকর্ষণে প্রকৃতি ও প্রাকৃতিকজনের মেলবন্ধনে এপথ অন্যতম। ওয়ালটোয়ার-হাওড়া পথে ওয়ালটোয়ার থেকে ২৭ কিমি যেতে কোন্ডালসা অর্থাৎ পয়লা 'কে' থেকে বন মাড়িয়ে নদী ভিত্তিয়ে পাহাড় গলিয়ে রেল যাচ্ছে। আবিষ্কার—বঙ্গসজ্ঞান প্রমথনাথ বসুর। আরও পরের কথা—রাপ দিলেন এলাকাকে সার্ভে করে মাপে আর এক বাঙালি পি কে ঘোষ। জন্ম হল ১৯৬৬তে বন্দরনগরী বিশাখাপত্তনমে বয়লাডিলার লৌহ আকরিক পৌঁছে দিতে কে কে রেলের। ৭২টি টায়েল হয়েছে সারা পথে কোন্ডালাইট পাথর কেটে: বৃহত্তমটি ৮০০ ফুটের। আর সেতুর সংখ্যা ৮৭; ছোটখাটো অন্তর্নিত। পাহাড় থেকে বরনানাথহে অজ্ঞব। পথশোভাও সুন্দর। পথের আকর্ষণে উচিত হবে প্রকৃতিপ্রেমিকদের বেড়িয়ে নেওয়া। আবার হাওড়া-নাগপুর রেলপথের রায়পুর থেকেও বাসে জগদলপুর পৌঁছে ওরু করা যায় এসফর। বাসও যাচ্ছে জগদলপুর থেকে ৬-৩০ ও ১২-০০টার অজ্ঞবও মধ্য প্রদেশ রাজ্য পরিবহণের কোরাপুট/জৈপুর/বিজয়নগরম হয়ে ৮ ঘণ্টায় ওয়ালটোয়ারে। বাস যাচ্ছে আর্কু থেকেও ওয়ালটোয়ারে।

আর্কুভালা

ওড়িশা ভাষায় আর্কু অর্থ লালমাটি। লালমাটির দেশ আর্কু। ওয়ালটোয়ার-কিরগডোল শাখা রেলে ওয়ালটোয়ার থেকে ১১৯, কোরাপুটের ৮৫ কিমি আগে ১১৬৬ মি উঁচুতে আর্কুভালা। দিনের একমাত্র ট্রেন ৭-১০এ ওয়ালটোয়ার ছেড়ে ৯-৫০এ বোরাগুহালু পৌঁছে আর্কু যাচ্ছে ১০-৫০এ। আর ১৫-৪৫এ আর্কু ছেড়ে ১৬-৪৭এ বোরাগুহালু পৌঁছে ওয়ালটোয়ার যাচ্ছে ২০-১৫এ ডাউন ২৪৮ প্যাসেঞ্জার। তবে, বোরাগুহালুতে বাস সড়ক গুহা থেকে ৫ কিমি সরে গিয়ে বোরা জং হয়ে। তাই ট্রেনের অসময় ও বাসের (৮-৩০) অবস্থি এড়াতে আর্কু থেকে শ'শতক টাকায় জিপে দিনে দিনে বোরাগুহালু দেখে ফেরা যেতে পারে। শেরারেও জিপ মেলে ১০০টাকায় বোরাগুহালু প্যাকেজে। বাসও

যাচ্ছে ওয়ালটোয়ার থেকে আর্কু হয়ে কোরাপুট/জৈপুর/জগদলপুর/রায়পুরে। ফেরার পথে বাসই সুবিধার। আর পাইন ও ইউক্যালিপটাসে ছাওয়া এটি উপত্যকার সমন্বয়ে গড়া সৌন্দর্যে চমকহীন পরম মিলিত্যয় ভরা স্বপ্নময় রঙিন আর্কুর প্রকৃতি রমণীয়। চারপাশ ঘিরে বৃহৎ গড়ছে পাহাড়। মেঘেরা এখানে চরে বেড়ায়। জলবায়ু নাতিশীতোষ্ণ—স্বাস্থ্যপ্রদও বটে। পথশোভাও মনোরম। বোল্ডা, মারিস, মুরিয়া, গোন্ড ছাড়াও নানান (১৯) উপজাতির বাস। উপজাতিদের নাচ-গান-বাজনায় আমোদিত আর্কুতে পটরি, সিঁক, কফি হচ্ছে। পায়ে পায়ে আদিবাসী মিউজিয়াম ও পথ্যগ্রন্থে হার্টকালচার গার্ডেনটি উচিত হবে দেখে নেওয়া। পর্যটন কেন্দ্রে রাপেও গড়ে তোলা হচ্ছে আর্কুতে। বিশাখাপত্তনম থেকে পর্যটন দপ্তরও আসছে আর্কু প্যাকেজে।

বিশাখাপত্তনম থেকে ৬০ আঁর আর্কুর ৫৩ কিমি আগেই নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে পূর্বঘাটে ১১৬৮ মি উঁচু অনন্তগিরি পাহাড়ী শহরও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বিন্দু বিন্দু জল পড়ে সৃষ্ট চুনের দশে ভরা চূনাপাথরের অভিনব গুহা অনন্তগিরির মুখ্য আকর্ষণ। এপথের দীর্ঘতম (২ কিমি) রেল সেতুটিও হয়েছে এই অনন্তগিরির কোলবা নদীতে। থাকার ব্যবস্থা মেলে Travellers Bungalow-য়।

আর আছে দুয়ের মাঝে ওয়ালটোয়ার-আর্কু পথে আর্কু থেকে ৩৩, ওয়ালটোয়ারের ৯৯ কিমি দূরে বোরাগুহালু রেল স্টেশনের অদূরে ভারতের দীর্ঘতম গুহা। যুগ যুগ ধরে চূনাপাথরে জল পড়ে পড়ে প্রকৃতির গড়া স্থাপত্যকলার স্বপ্নপূরী ১০ লক্ষ বছরের প্রাচীন এই বোরাগুহালু গুহা। তবে, নবরূপে আবিষ্কার ১৮০৭এ, আর পর্যটক আকর্ষণ ১৯৭০ খ্রি থেকে। বৃহত্তমটি ছাড়া গাইড সহ ১০ টাকায় ১১—১৩-০০ ও ১৪—১৬-০০টায় দেখার ব্যবস্থা। ৭২২ মি উঁচুতে ৩০০ মি প্রশস্ত, ৪০ মি গভীর গুহায় সিঁড়ি নেমেছে ধাপে ধাপে। নিচুতে বিশালাকার শিবলিঙ্গ। জল পড়ছে দেবশিরে। এছাড়াও মূর্তি রয়েছে নানান। লোকশ্রুতি, রাম-লক্ষ্মণ-সীতাদেবীও বনবাসকালে অবস্থান করেন এই গুহায়। তাঁদেরও অর্চিত এই দেবতা শিব। বিজলী পৌঁছেছে গুহায়, তবে অপর্যাপ্ত, টর্চ সঙ্গে থাকা ভাল। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই আদিবাসী অধ্যুষিত বোরাগুহালুতে। কেবল বোরাগুহালু দর্শনার্থীরা দিনে দিনে ওয়ালটোয়ার থেকে গিয়ে গুহা দেখে দিনান্তে ওয়ালটোয়ার ফিরন।



থাকার জন্য রেল স্টেশন থেকে ১২ কিমি দূরে বাস স্ট্যান্ডের বাঁয়ে APTTDC-র Mayuru Tourist Lodge, D ১৫০-৩০০, PWD IB, FRH, Zilla Parishad G H, দক্ষিণ-পূর্ব রেলের রেস্ট হাউস ছাড়াও বাস স্ট্যান্ডের কাছে প্রাইভেট হোটেল লক্ষ অবশ্যেয় D ১৫০-২২৫ আছে আর্কুতে। কুফি: Manager, Araku Valley, A. P. আর গাছপাছলিতে ছাওয়া ছোট্ট নির্জন রেল স্টেশনে ৬ বেডের ডব্লিউটি আছে আর্কুতে।

কোরাপুট

প্রকৃতির সৌন্দর্য-পূজারীদের কাছে ২৯৯০ ফুট উঁচু দণ্ডকারণ্য লাগোয়া কোরাপুটের আকর্ষণ অনবীকার্য। বনজ ফুলেরা যেমন সাজিয়ে তুলেছে—তেমনই বন্য পশু-পাখিদের কুজনও মুখর করে তোলে আদিবাসীদের গাঁ কোরাপুট তথা ওড়িশার বৃহত্তম জেলাকে। পটে আঁকা ছবির মতো সুন্দর সাজানো শহর কোরাপুট। শাস্ত্র, নিরুদ্বিগ্ন ও নির্জনতায় ভরা কোরাপুটের আকাশ। আদিবাসীদের প্রিম প্রিম মাদলের বোল রাতের বেলায় ঘুমপাড়নি গান শোনায়। অঙ্ক ও মধ্য প্রদেশের মাঝে কোরাপুট জেলার সদরও কোরাপুট। দণ্ডকারণ্য উদ্বাস্ত পুনর্বাসনের প্রশাসনিক সদর দপ্তরও এই কোরাপুটে। নানান খনিজ সম্পদে সমৃদ্ধ কোরাপুটে আছে অনুচ্চ পাহাড়ী টিলায় জগন্নাথ মন্দির।

থাকার জন্য আছে মন্দিরের নিচে মহালক্ষ্মী লজ, বাস স্ট্যান্ডে লজ মুরালীকৃষ্ণ, প্রিয়া লজ ছাড়াও CH, PWD IB, FRH, Dandakaranya G H কোরাপুটে।

অভ্যুৎসাহীরা কোরাপুট থেকে ২২ কিমি দূরে আপার কোলবা ড্যামটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। জলবিদ্যুৎ হচ্ছে। তেমনই ভারতের বৃহত্তম অ্যালুমিনিয়াম কারখানা নালকোর অবস্থানও কোলবায়।

জেপূর

যদিও জেলা সদর কোরাপুট, তবে থাকা ও যাতায়াতের সুবিধার্থে বাণিজ্যিক শহর জেপূর বেশি আকর্ষণীয়। কোরাপুট থেকে সড়ক দূরত্ব ২৭ কিমি। যাতায়াতে বাসই সুবিধার। বাস স্ট্যান্ড থেকে বেরুতেই মেইন রোড, শেষ হতেই সূর্যমহল রোড। অতীতের রাজপ্রাসাদ সূর্যমহলে আজ সরকারি দপ্তর বসেছে। প্রবেশপথে দরবার হল, বিপরীতে রঘুনাথজী অর্থাৎ রাম-লক্ষ্মণ-সীতাদেবীর মন্দির। লাগোয়া কৃষ্ণ মন্দির। এগুলিও পায়ে পায়ে দেখে নেওয়া যেতে পারে।

আর জেপূর থেকে ৪৫ কিমি যেতে রামায়ণ-খ্যাত রামগিরি পর্বত। কোণা উপজাতির বাস। বাস যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় সকাল ১০-০০টায়। রামগিরি থেকে আরও ২০ কিমি গিয়ে গুপ্তেশ্বর। গুপ্ত ঈশ্বর অর্থাৎ গুপ্তেশ্বর তথা মধ্য প্রদেশের এই গুপ্তকেন্দার শিব মন্দিরটি আজও ভক্তজনদের সমাগমে মুখরিত হয়ে ওঠে। শ'পাঁচেক ফুট উঁচু পাহাড়ী টিলায় এই গুহামন্দির। বর্ষায় নিয়মিত বাসের অভাব। মনসুন ছাড়া জগদলপুর থেকে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। থাকার জন্য PWD IB, RH, Revenue Rest Shed ও OTDC-র পাশাপাশি আছে গুপ্তেশ্বরে।

জেপূর থেকে ৬-০০ ও ১৫-৩০টায় ৩ ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে জেপূরের অতীত রাজধানী নন্দপুরে। বিক্রমাদিত্যর সিংহাসনের আদলে তৈরি নন্দপুরের বত্রিশ ধাপের সিংহাসনটির পর্যটক আকর্ষণ আজও অপ্রাণ। কার্যকর্মময় শিলাখণ্ড দুটি ও ১.৮ মিটারের গণপতি মূর্তি যুগ যুগ ধরে

পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে। সুরাই-এর জৈন মঠটির আকর্ষণও কম নয়। তবে সুরাই দর্শনার্থীদের নিজ ব্যবস্থায় যেতে হয়। থাকার জন্য PWD IB আছে নন্দপুরে। ৭০ কিমি দূরের দুদুমার মৎস্যতীর্থ তার অতীত গৌরব হারালেও ১৬৫ মি উঁচু থেকে পড়া (রাজ্যের উচ্চতম) জলপ্রপাতের জন্য পর্যটক খ্যাতি আছে। ধারা পড়ছে মাককুণ্ড নদীতে। জলবিদ্যুৎ হচ্ছে, চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। বাস যাচ্ছে জেপূর থেকে দুদুমায়। PWD IB-ও আছে দুদুমায়। জেপূর থেকে ১১৪ কিমি দূরের বালিমেলার তার জলবিদ্যুৎ কেন্দ্রের জন্য যথেষ্ট খ্যাতি। আরও ২৩ কিমি গিয়ে চিত্রকোন্দা, বাঁধ পড়েছে সিলের নদীতে। পরিবেশ খুবই সুন্দর। বাস যাচ্ছে সকাল ৭-০০টায় জেপূর ছেড়ে ৫ ঘণ্টায় চিত্রকোন্দা। থাকার জন্য প্রোজেক্ট গেস্ট হাউস আছে। ৫-০০টায় জেপূর ছেড়ে ৮ ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে ২০২ কিমি দূরের মালকানগিরি অর্থাৎ দণ্ডকারণ্য। মালকানগিরি ছেড়ে ১৪-০০টায় ফেরে বাস। এছাড়াও বাস যাচ্ছে জেপূর থেকে ৬-০০ ও ৭-৩০টায় ১০ ঘণ্টায় ৩৬৫ কিমি দূরের বেরহামপুর; ৫৫০ কিমি দূরের কটক যাচ্ছে ১৫-০০টায় জেপূর ছেড়ে ১৩ ঘণ্টায়; ২২৭ কিমি দূরের ওয়ালটোয়ার যাচ্ছে ১৫-০০টায় জেপূর ছেড়ে ৬ ঘণ্টায়; কোরাপুট, জগদলপুর যাচ্ছে মুহুমুহ জেপূর থেকে।

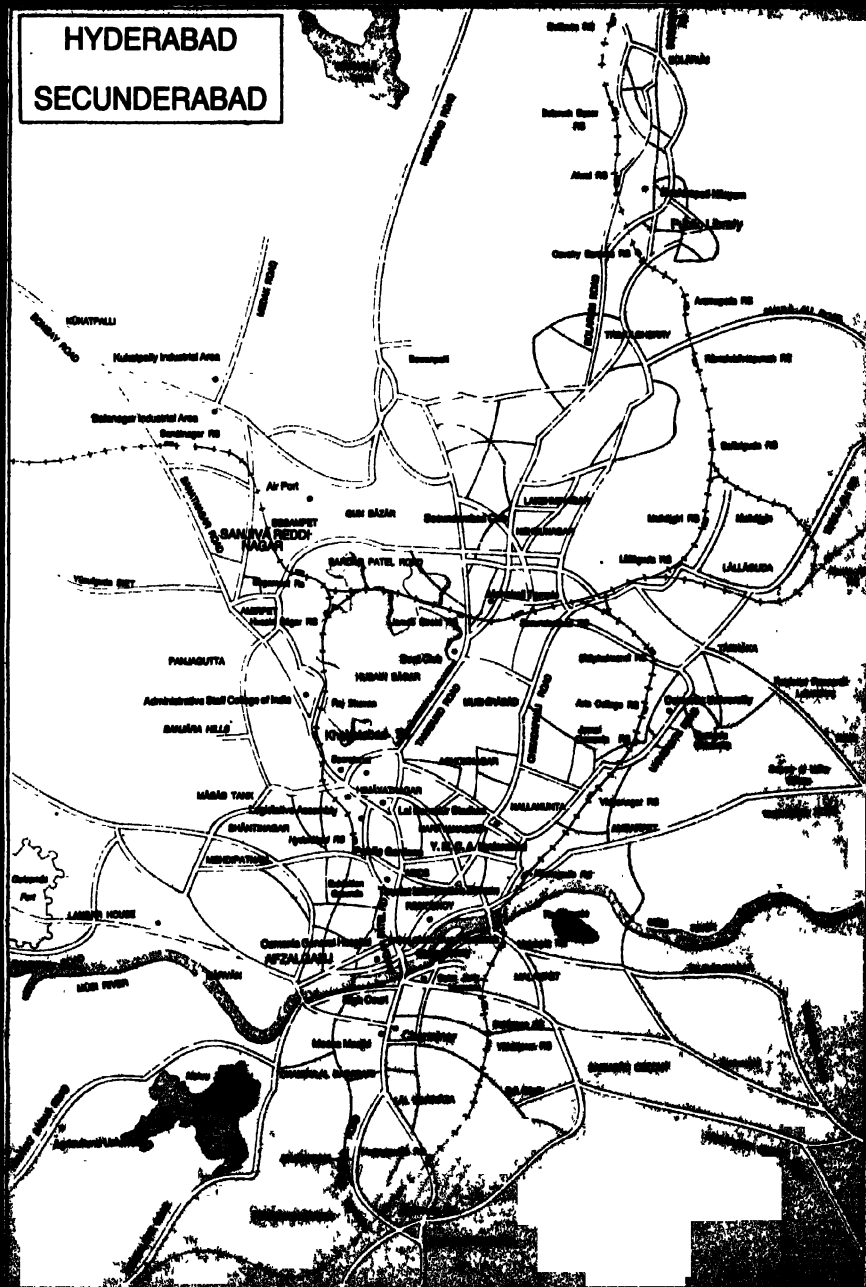


বাস স্ট্যান্ডের বামে ৫ মিনিটের পথে Main Road, Jeypore-764001-এ—H Shankar, DCB ১০০ DAB ১২৫-১৭৫; Shanti Nivas L, H Oorvasi, Konarak L, Roseland L, S ৬০ D ১০০; L Indra Bhawan, Welcome L, L Ravi, H Madhumati, DAB ১৫০-২৫০; Kedar Gouri L, গয়েলকাম লজের বাঁয়ে M G Rd-এ—Apsara L, Luxoninivas L, Woodland L, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০; Krishna L, Jagadish L, Trimurti L. বাস স্ট্যান্ডের ডানহাতি Gopabandhu Ngr-এ—H Puspanjali, L Manorama, H Ananda ছাড়াও হোটেল আছে নানান। সাজ এদের সাধারণ, রেট DCB ৬৫-১২৫ DAB ১০০-১৭৫। আর আছে CH, IB, DB জেপূরে।

চিত্রকোট জলপ্রপাত

ওড়িশা সীমান্তে ভারতের বৃহত্তম জেলা মধ্য প্রদেশের বস্তার। আয়তনে ৩৯১৮০ বর্গ কিমি। মাদিয়া ও মুদিয়া উপজাতিদের বাস। আজও এদের মধ্যে প্রাচীন সংস্কৃতি দেখতে মেলে। বস্তারের জেলা সদর ১৮২৪ ফুট উঁচু জগদলপুর। চিত্রকোটের অবস্থান মধ্য প্রদেশে হলেও ওয়ালটোয়ার/আর্কু/ কোরাপুট/জেপূর থেকে জগদলপুর হয়ে বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। বাসও যাচ্ছে ওয়ালটোয়ার, কোরাপুট ও জেপূর থেকে জগদলপুরে। বাস যাচ্ছে বিজয়-ওয়াড়া, হায়দ্রাবাদ, রায়পুর ছাড়াও ওড়িশা, অঙ্ক ও মধ্য প্রদেশের দিকে দিকে জগদলপুর থেকে। বাসেই চলুন জেপূর থেকে জগদলপুরে। আর জগদলপুরের অনুপমা সিনেমা

HYDERABAD SECUNDERABAD





**MUMBAI
(BOMBAY)**

থেকে ১০-০০, ১২-০০, ১৬-০০ ও ১৮-০০টায় ছেড়ে ১২ ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে ৩৮ কিমি পশ্চিমের চিত্রকোট। ফেরে ৭-৩০, ৮-৩০, ১৩-০০ ও ১৫-০০টায় চিত্রকোট থেকে জগদলপুরে। আর যাচ্ছে জিপি শহর থেকে।

জগদলপুর বাস স্ট্যান্ডের কাছে বাজারের অনতিদূরে উনবিংশ শতকের প্রথম দশকে তৈরি কাকাভীষ্মের রাজ-প্রাসাদে সরকারি দপ্তর বসেছে। প্রাসাদ দ্বারে আদিবাসীদের জাগ্রতা দেবী দত্তেশ্বরী মাতার মন্দিরটিও পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। সিংহবাহিনী দুর্গই এখানে দেবী দত্তেশ্বরী। দশেরাতে রথোৎসব আকর্ষণীয়। অবশ্য দেবীর মূল মন্দিরটি ৮৬ কিমি দক্ষিণে কাকাভীষ্মের রাজাদের অতীতের রাজধানী দত্তেবাড়ায়। বাস যাচ্ছে। দত্তেবাড়া থেকে ৩১ কিমি দূরে বারাসুরও চলা যেতে পারে বাসে। বারো স্তম্ভের শিব মন্দিরের জন্য বারাসুরের প্রসিদ্ধি। আর আছে গণেশ ও মামা-ভায়ের মন্দির। তেমনই দত্তেবাড়ার ৪০ কিমি দূরে বয়লাডিলা।



Gurdwara Rd, Jagdalpur-494001-এ—
Ananda Niwas L, R4B1, SCB ৬০ SAB ৮০
DCB ৮৫ DAB ১০০-২২৫; পাশেই Gaurab L,
opp Gurdwara, SAB ৬৫ DAB ৮৫-১৫০; Mona L,
Apsara L, Satkar L, DAB ১০০-১৭৫; Gautam H, Ashoka
I, Shakel L রেট দেবের DAB ৮০-১৫০। H Poonam,
Hospital Chowk, Circuit House Rd-1, A1R1B1, D ১৫০-
২২৫ A/C D ৩৫০; নিরাল-নির্জনে Atihti H, near Rail Stn.
আর স্মারকরূপে সংগ্রহ করুন দারুণ ও পোড়ামাটির নয়নলোভন
কালশিল্প জগদলপুরে।

জগদলপুরের মূল আকর্ষণ নায়গ্রার মিনি সঙ্কর গিরি-কোট জলপ্রপাত। চিত্রকোটের চিত্রগোড়া ভাষায় অবগনিয়। ১৭২২.৩২ ফুট থেকে ১৬২৬ ফুটে অর্থাৎ ৯৬.৩২ ফুট নিচুতে পিছলে পড়ছে ওড়িশায় জাত এই পাহাড়ী নদী। বর্ষায় আধ কিমিরও বেশি জায়গা জুড়ে দুর্দম বেগে ঝাঁপিয়ে পড়ে পুরো ইন্দ্রাণী বা ইন্দ্রাবতী নদী। ডাইনে বাঁক নিয়ে মিলেছে গিয়ে গোদাবরীতে। রূপও যেন ফেটে পড়ে বর্ষায় ইন্দ্রাবতীর। নানান ছন্দে, নানান বর্ণে ইন্দ্রাবতীর এই রঙ্গ ইন্দ্রসভার মোহিনীদেরও হার মানায়। জলোচ্ছ্বাসে রামধনুর রঙ প্রতিভাত হয়। সত্যই চিত্র হরণ করে চিত্রকোট। যেমন অপূর্ব সুন্দর এই জলপ্রপাত তেমনই সুন্দর এর পরিবেশ। নিচু থেকে আর এক রূপ চিত্রকোটের। প্রচারের অভাবে পর্যটক সমাগম কম চিত্রকোটে। চলার পথে টোল লাগে পল্লিগাঁও গেটে। থাকার ব্যবস্থা মেলে চিত্রকোটের জলপ্রপাত লাগোয়া PWD-র RH-এ, অবু: EE—North. PWD-B & R, Jagdalpore, Baster, MP.

উৎসাহীরা জগদলপুরের ৩৯ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে আরণ্যক পরিবেশে ১১০ ফুট উঁচু থেকে ঝাঁপিয়ে নামা তিরুংগল জলপ্রপাতও বেড়িয়ে নিচ্ছে প্যারেন। ২১৫ সিডি-পথে নিচে নেমেও দেখে নেওয়া যায় সফেন জলধারার

ভ্রমণ সঙ্গী : ৯৭-৯৮/৩০

গড়িয়ে নামার দৃষ্টিনন্দন ছন্দ। মন্দিরও হয়েছে ত্রিভুবনেশ্বর মহাদেব ও লক্ষ্মী-নারায়ণের। ৪০ কিমি দক্ষিণে কুটুমসর গুহা—প্রকৃতির অপরাধ সৃষ্টি, অভিনবত্ব ভরা গোলকধাঁধা সম। ৫x৩ ফুটের প্রবেশ পথে কপিকলের সাহায্যে ৫০ ফুট নেমে ১২ কিমি ব্যাপ্ত গুহায় চূনাপাথরের দণ্ডরাশী শিবলিঙ্গ দেখে নেওয়া যায়। কুটুমসরের ১৭ কিমি দূরে আর এক গুহা কৈলাসের অবস্থান। তবে, পথের মাদকতা গুণে বন্য-জন্তুরাও হানা দেয় এপথে। বর্ষায় জল জমে গুহার অন্তরে। আর, যথেষ্ট দুর্গম—টর্চ একাটাই দরকার। কালেক্টর বা ট্যুরিস্ট অফিস থেকে অনুমতির সাথে গাইডও মেলে অরণ্যময় কুটুমসর ব্যাটায়। ১০ কিমি দূরে কাঙের ভ্যালি ন্যাশানাল পার্ক। ফরেস্ট বাংলোও আছে পার্কে।

১১৪ কিমি দূরের কিরণডোল আয়রণ ওর খনিটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। এশিয়ার বৃহত্তম লৌহখনি এই কিরণডোল। স্থানীয়দের কাছে বয়লাডিলা নামে খ্যাত। দেখতেও যেন বলদের কুঁজের মতো—নামও তাই বয়লাডিলা। আরণ্যক পাহাড়ী পরিবেশ। পর্যটনে উদ্বেগ না হলেও মনোহর প্রকৃতির আকর্ষণে পর্যটক আসছেন দূর-দূরান্ত থেকে। সবুজ-সাদা আর নীলে মিলে মিশে কিরণডোলের প্রকৃতি। আর আছে পাহাড় শিরে হিলটপ। উচিতও হবে হিল টপ অর্থাৎ কৈলাসনগর থেকে কিরণডোলের সৌন্দর্য উপভোগে চলা। গাড়িও চলে মেঘ কেটে পাহাড় ঘুরে হিল টপে। হোটেলও আছে রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে কিরণডোল সুপার মার্কেটে Sangita L. আর, রেল স্টেশন থেকে ২০ মিনিটের পথে Tourist Bungalow কিরণডোলে।

এপথের আর এক আকর্ষণ চিরহরিৎ অরণ্যে ছাওয়া ২০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত কাঙের ভ্যালি ন্যাশানাল পার্ক। পথ চলে পার্কের উপর দিয়ে কুটুমসরের। ফরেস্ট বাংলোও আছে পার্কে।



কলকাতা থেকে ১ ২ ৪ ৬ দিন IAC বা ৩ ৫ দিন NEPC-র বিমানে বা হাওড়া থেকে করমণ্ডল এক্স, চেন্নাই মেল, তিরুপতি এক্স, ইস্ট কোস্ট, ফলকনুয়া এক্স ওয়ালটোয়ার জংশনে পৌছান। তিরুডনন্তপুরম, কোচি ও ব্যাঙ্গালোর এক্স যাচ্ছে পটনা, শুয়াহাটি ও হাওড়া থেকে ওয়ালটোয়ার হয়ে। ওয়ালটোয়ার-কিরণডোল শাখায় দিনের একমাত্র ট্রেন ৭-১০এ ওয়ালটোয়ার ছেড়ে ৯-৫০এ ৯৯ কিমি দূরের বোরোহাঙ্গু, ১০-৫০এ ১৩১ কিমি দূরের আর্কু পৌছে আরও ৮৫ কিমি দূরের কোরাপুট যাচ্ছে ১৩-৪৫এ। রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে শহর। কোরাপুট থেকে ৪০ কিমি যেতে জেপুর্ন। ট্রেন যাচ্ছে ৩-৪৫এ কোরাপুট ছেড়ে ১৫-৩০এ জেপুর্নে। রেল স্টেশন থেকে ৫ কিমি উত্তরে শহর। সিটি বাস ও রিক্সা রেলগাড়ী নিয়ে শহরে যাচ্ছে। আরও ৬৫ কিমি দূরের জগদলপুর পৌছায় ১৭-২০এ ট্রেন। আর ১৪৯ কিমি দূরের কিরণডোল-এ ২২-৪৫এ পৌছে ট্রেনের চলায় বিরতি। সড়ক দূরত্ব ১১৪ কিমি জগদলপুর থেকে কিরণডোল-এর।

তেমনই মুখাই-হাওড়া ডায়া নাগপুর রেলপথের রায়পুর থেকেও চলা যেতে পারে ঘর পানে। কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রার চিক্রকোট ও দণ্ডকারণ্যে যাবার সহজতম পথও এই রায়পুর হয়ে। বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে। বাসও যাচ্ছে ৫-৩০, ৮-৩০এ জবলপুর; ৫-১৫, ৮-৩০, ১২-৩০এ NH-43 ধরে ২৮২ কিমি দূরের জগদলপুর; ৬-০০, ৭-০০, ৮-০০, ৯-৩০এ বিলাসপুর ছাড়াও রাজ্যের নানান দিকে রায়পুর থেকে। অরণ্যময় পাহাড় বেয়ে জাতীয় সড়ক ৪৩ চলে কাঁকের ও কোতাগাঁও-এর মাঝে ২৭৯৯ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত মধ্য প্রদেশের বৃহত্তম ইন্দ্রাবতী ব্যাঘ্র প্রকল্পের বুক চিরে। চলার পথে বাসে বসে এ-শোভাও দেখে নেওয়া যায়। শাল-সেগুন-অশোক-অর্জুন হাওয়া পাহাড় চূড়ায় মন্দিরও হয়েছে। হোটেল, বনবাংলোও মেলে কাঁকের ও কোতাগাঁও-এ। তবে, ব্যাঘ্র প্রকল্প দর্শনের সুব্যবস্থা গড়ে ওঠেনি আজও। ৫১ কিমি যেতে প্রব্রতন্ত্বের সত্ত্বায় সমৃদ্ধ বস্তার। বস্তারের আর এক আকর্ষণ Flame of the Forest.



খাকারও নানান হোটেল মেলে রায়পুরে। MPTDC-র H Chhattisgarh, Teli Bondha, ① (0771) 427906, A-c S ২৫০ D ৩০০ A/c S ৪৯০ D ৫৫০; H Mayura, G E Rd, near Bus Std, ② 28473, S ১৭৫ D ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৫০০ সুইট ৬৫০; Maya L, M Rd; H Apsara, Jay Stambh-492001, A10R2, S ১০০ D ১৭৫-২৫০ A/c S ২৫০ D ৩৫০; Meenu H, M G Rd, S ৮৫-১২৫ D ১৫০-২০০; H Poonam, Jaista Chowk, D ১৭৫-৩২৫ A/c D ৩৫০। আর আছে Purnima L, H Radhika, H Ajanta, H Kiran, H Rajmahal, H Gurnar, H Madhuban, H Sharda ছাড়াও নানান। M P Tourism-এর দপ্তরও বসেছে হোটেল ছত্রিশপড়-এ, ① (0771) 427906 ছাড়াও নানান। রায়পুরের ২২ কিমি দূরে ভারতের অনন্য ইন্স্পাতনগরী ভিলাই-ও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাস বা ট্রেন।

আবার ওয়ালটোয়ার-হাওড়া রেলপথে ওয়ালটোয়ার থেকে ১৩০ আর বেরহামপুরের ১৪৬ কিমি দূরে শ্রীকাকুলাম রোড। রেল স্টেশন থেকে ১৩ কিমি গিয়ে শহর। ২ কিমি দূরের আরসাবলীতে সূর্যের মন্দির। কিংবদন্তী, ইন্দ্রের তৈরি মন্দিরে রয়েছেন সূর্য, ইন্দ্র ছাড়াও নানান দেবতা। শ্রীকাকুলামের ১১ কিমি পূবে শ্রীকুম্মে কুর্মাভতারের মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাংসাহারী। খাকারও ব্যবস্থা মেলে শ্রীকাকুলামে Municipal Panchayat Raj G H, PWD (Roads) G H-এ।

আবার শ্রীকাকুলাম ৭০, আর ওয়ালটোয়ার থেকে ৬০ কিমি অর্থাৎ দুয়েরই মাঝপথে বিজয়নগরম। চিক্রকোটের বাসও যাচ্ছে বিজয়নগরম হয়ে। রেল স্টেশন থেকে মাইল খানেক দূরে বিশাল দুর্গের মাঝে রাজপাট; রাজপাটও বসেছিল সেকালে। আর রয়েছে শহরের প্রাণকেন্দ্রে বিশাল সেক বিজয়নগরমে। খাকার জন্য Travellers Bungalow ছাড়াও বেশ কয়েকটি হোটেল আছে। ১১ কিমি উত্তর-পূবে রামতীর্থ অর্থাৎ প্রবল, রামমন্দির, জৈন ও বৌদ্ধতীর্থও বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

তিরুপতি

ভারতের হিন্দু তীর্থগুলির মধ্যে তিরুপতি অন্যতম। সারা বছর ধরেই তীর্থযাত্রী আসছেন দেশ-দেশান্তর থেকে। অবস্থান অল্প প্রদেশে হলেও (দক্ষিণ প্রান্তে) চেমাই থেকে তিরুপতি যাত্রায়াত্র সূবিধা। ট্রেন ও বাস সংযোগ গড়েছে। IAC-র বিমানও যাচ্ছে ৩ ৫ দিন চেমাই-তিরুপতি-হায়দ্রাবাদে। বায়ুসড়ও সার্ভিস গড়েছে চেমাই-বিজয়ওয়াড়া-হায়দ্রাবাদ থেকে তিরুপতির। এমনকি চেমাই থেকে প্যাকেজ ট্যুরে তিরুপতি বেড়িয়ে দিনে দিনে ফেরাও যায় চেমাই। ২৩-৩০এ হাওড়া ছেড়ে ৪০৭৭ হাওড়া-তিরুপতি এক্সও যাচ্ছে পরের পরদিন ১৬-০৫এ তিরুপতি। আবার হাওড়া-চেমাই রেলপথের শুভুর নেমেও চলা যায় তিরুপতি। হাওড়া ফেরে ৯-৪৫এ ৪০৪০ তিরুপতি-হাওড়া এক্স।

চিঙ্গুর জেলায় সাতটি পাহাড়ের সমষ্টি—শেবাচল বা ভেঙ্কটচল। এরই একটি তিরুমলাই—আম আর চন্দন গাছে ছাওয়া চূড়ায় বালাজী মন্দির। ৪ বর্গ কিমি জুড়ে মন্দিরকে নিয়ে শহর, উচ্চতা ৮৬০ মি। রেল ও বাসের অবস্থান পাশাপাশি তিরুপতি ইস্টে। লাগোয়া T T O Bus Stand থেকে প্রত্যুষ হতে রাতে মুহূর্ষ বাস যাচ্ছে ২২ কিমি পাহাড়ী পথে পবিত্র পাহাড়চূড়ার মন্দির তীর্থে। তদিনের মেয়াদে যাত্রায়াত্রের রিটার্ন টিকিট মেলে বাসে। শোয়ারে জিপ, ট্যাক্সিও চলে তিরুপতি থেকে তিরুমলাই মন্দির তীর্থে। পাহাড়ী পথ। ঘন ঘন বাঁক; ৫৭টি হোয়ার পিন বেঁধেও পেরুতে হয়। আবার রেল বা বাস স্ট্যান্ড থেকে ৪ কিমি উত্তরে অ্যালিপিড়ি থেকে ছাউনি দেওয়া হাঁটা পথও উঠেছে পাহাড় বেয়ে। বাস ও অটো চলছে রেল স্টেশন/বাস স্ট্যান্ড থেকে অ্যালিপিড়ি। যাত্রীদের লাগেজ রাখারও ব্যবস্থা মেলে। অনেক তীর্থযাত্রী (১৪.৫ কিমি) হাঁটা পথ ধরেও মন্দির পৌছান অধিক পুষ্যের লোভে। হাঁটা পথেও ২টি মন্দির হয়েছে নুসিংহ ও রামানুজাচার্যর। জনশ্রুতি, নুসিংহ মন্দিরে পূজা না দিলে তিরুপতি দর্শন অপূর্ণ থাকে। শিব ও বিষ্ণুর সমন্বয়ে বালাজী অর্থাৎ লর্ড ভেঙ্কটেশ্বরের এই মন্দির আজকের নয়। ৩টি প্রাকারে ঘেরা—মূল প্রবেশদ্বারে ঢুকে প্রথম প্রাকারে সম্পাদী, দ্বিতীয় প্রাকারে বিমান, আর তৃতীয় প্রাকারে বৈকুণ্ঠ প্রদক্ষিণ অর্থাৎ পরিক্রমা করে মূল মন্দির। তেমনই মন্দির সবেল ভেঙ্কটেশ্বর কুণ্ড বা স্বামী পুষ্করিণীর জলে স্নানে পবিত্র হয়ে দেবদর্শনের প্রথা। অতীতে রাজা-রাজড়াদের দানে গড়ে ওঠে ভারতের সবচেয়ে সম্পদশালী দেবমন্দির তিরুপতি। এর সম্পদের কথা আজ বিশ্ববিখ্যাত। বছরের আয় ৫ লক্ষ কোটিরও অধিক। জনশ্রুতি, দেবতা লর্ড ভেঙ্কটেশ্বর বিয়ের বরচ মেটোতে ঢাকা ধার করেন কুবেরের কাছ থেকে—আজও ধার শোধ না হওয়ায় ভক্তদের অর্ধদানের প্রথা। তবে, নানান সমাজসেবা, ৬টি বিশ্ববিদ্যালয়ও চলছে দেবতার ধর্মে।

লর্ড ভেঙ্কটেশ্বরের পূজা-পদ্ধতিতে বৈচিত্র্য আছে। ৪০০ থেকে ৫০০০ টাকায় বিশেষ পূজা। ১১ শতকের রামানুজাচার্যর নিম্নোক্ত প্রথায় পূজার রীতি। দেবদর্শনও পায়ে পায়ে চলতে চলতে করে নিতে হয়। ভক্তের মনোবাঞ্ছা পূরণও হয় সেবাশিষে। ১০০ কেজি সোনায মোড়া গর্তগৃহে ২মি উঁচু দণ্ডায়মান কালো পাথরের চতুর্ভুজ দেবতার পেছনের দুই হাতে শঙ্খ ও চক্র, সামনের এক হাতে অভয়মুদ্রা আর অন্য হাত কোমরে ন্যস্ত। নানান মণি-মুক্তা ও স্বর্ণালঙ্কারে ভূষিত দেবতার মুকুট হয়েছে ১৯৮৪তে ৫ কোটিরও অধিক টাকা ব্যয়ে ১২ কেজি সোনা ও ৯ হাজার টুকরো হিরেয়। নবতম আকর্ষণ ১৯৯৫এ ২৫ কোটি টাকা ব্যয়ে ৭৮০.৭ কেজি তামার উপর ২৯.৯২২ কেজি সোনায মোড়া ২১২ ফুট উঁচু সোনার রথ। তবে, পুষ্পমালায় সারা অঙ্গ ঢাকা দেবতার; চোখ দুটিও দৃশ্যমান নয়—কেবল পায়ের পাতা ও মুখমণ্ডল দেখতে মেলে। পূজার অর্ঘ্য বা প্রণামীও ডোলে দেওয়ার প্রথা। বিশেষ পূজা ব্যাঙ্কের মাধ্যমে দেওয়ায় দেবদর্শনের বিশেষ ব্যবস্থা ও অঙ্গপ্রসাদ মেলে। প্রসাদ কিনতেও মেলে পৃথকভাবে। একাডুই উচিত হবে সুস্বাদু প্রসাদী লাডু সংগ্রহ করা। কুপন প্রথায় অঙ্গপ্রসাদ মেলে ডাইনিং হল-এ। প্রবেশাধিকার কেবল হিন্দুদের। তবে খ্রিস্টধর্মীদের বিশেষ অনুমতি মেলে দেবদর্শনের।

মন্দিরের ২৪৭ ফুট উঁচু গোপুরমটি দ্রাবিড়ীয় স্থাপত্যের সুন্দর নিদর্শন। সম্প্রতি উচ্চতা বাড়িয়ে উচ্চতম করা হয়েছে। বিমানটি সোনায মোড়া, নাম তার আনন্দ নিলয়ম। সোনায মোড়া ধ্বজস্তম্ভ অর্থাৎ তালগাছ হয়েছে মন্দিরে। মন্দিরের কারুকার্যও সুন্দর। বিভিন্ন রাজা-মহারাজার মূর্তিও স্থান পেয়েছে সেবামন্দিরে। প্রবেশ পথের ছোট মিউজিয়ামটি আর এক দ্রষ্টব্য মন্দিরে। প্রতিদিন গড়ে ২০০০০ পূণ্যার্থীর উপস্থিতি ঘটে মন্দিরে। বিশেষ বিশেষ দিনে ভক্তের সমাগম ১০০০০০ ছাপিয়ে যায়। দীর্ঘ লাইনে ঘণ্টার পর ঘণ্টা দর্শনার্থীদের প্রতীক্ষা। আবার ৩০ বা আরও অধিক টাকার টিকিট কেটেও ভোর থেকে দেবদর্শনের বিশেষ ব্যবস্থা আছে। দীর্ঘ লাইন থেকে অব্যাহতি মেলে টিকিটের দর্শনার্থীদের। সেন্টেশ্বরের বাৎসরিক অনুষ্ঠানে দূর-দূরান্ত থেকে তীর্থযাত্রীরা আসেন। মস্তক মুগুন করে চুল দেওয়ার প্রথাও আছে সেবাসনে।

আবার উৎসাহীরা তিরুমলাই অর্থাৎ মন্দির বাস স্ট্যান্ড থেকে বাসে ৮ কিমি গিয়ে পাশ বিনাশ্রম তীর্থও বেড়িয়ে নিতে পারেন। স্বর্ননার জলে স্নানে পাশ মুক্ত হওয়া যায়। আর রয়েছে এরই শিরে আকাশ পলা করনা। সিঁড়ি ভাঙা পথ বেয়ে দেখে নেওয়া যায়। এছাড়া মন্দির থেকে ১ কিমি দূরে গো-গর্ত। পাহাড় শুধু পাহাড়, বয়ে চলেছে করনা। আর রয়েছে পঞ্চপাণ্ডবের ছোট মূর্তি ও বিষ্ণুর পায়ের ছাপ পাহাড়ী শুভায়। এ গেল আপার তিরুপতির কথা।

শিবকেন্দ্রিক শহর সোরার তিরুপতিতেও মন্দির রয়েছে

নানান। কথিত আছে, শ্রীপদ্মাবতী দেবী অর্ধাৎ আলামে-লুম্ভা মাতার দর্শন ছাড়া তিরুপতি দর্শন অসম্পূর্ণ থাকে। ভেঙ্কটেশ্বরের ভাই শ্রীগোবিন্দরাজবাসী মন্দিরটিও দর্শনীয়। আর আছে কপিলেশ্বর মন্দির, পবিত্র কপিলা তীর্থম পুষ্করিণী। প্রবাদ, শিবও এসেছেন কপিল মূর্তির সন্দর্শনে পুণ্যপুঙ্করে। ১০ কিমি দূরে অগস্ত্যবাসী মন্দির, ১৮ কিমি দূরে কল্যাণী ড্যামও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

তিরুপতি থেকে বাস যাত্রায় তিন কিমি হাঁটা থেকে অব্যাহতি পেতে অটোর ১৫০-২০০টাকায় ১১ কিমি দূরের চম্মগিরিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় একটা দিন তিরুপতিতে থেকে। স্বর্ণমুখী নদীর পাড়ে গ্রানাইট পাথরের পাহাড়ে ১৮২ মি উঁচুতে বিজয়নগররাজদের রাজ্যপাট তথা দুর্গটি চম্মগিরির মুখ্য আকর্ষণ। মিউজিয়ম বসেছে অতীতের প্রাসাদে। মন্দিরও আছে নানান। এই চম্মগিরিতেই ১৬৩৯এ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি চেন্নাইয়ে সেন্ট জর্জ ফোর্ট গড়ার জমি ইজারা নেয়।

এমনকি A P Tourism, ৩ 20602 প্রতিদিন ৬০ টাকায় ১০—১৭-৩০টায় তিরুপতি দর্শনের ব্যবস্থাও করে।



হায়দ্রাবাদ ও সেকেন্দ্রাবাদ থেকে বাস ও রেল সরাসরি সংযোগ গড়েছে তিরুপতির। ব্যালার-চেন্নাই রেলপথে ১০ কিমি দূরের রেনিগুন্টা হয়ে তিরুপতির রেলসংযোগ গড়ে উঠেছে ভারতের সিঁচিকেন্দ্রসাথে। 7406 কুলাঙ্গর ৫-৩০এ হায়দ্রাবাদ, ৬-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ, ১৩-১৫য় বিজয়গুন্টা, ১৯-১০এ শুভুর ছেড়ে ৫৩২ কিমি দূরের তিরুপতি যাচ্ছে ২১-৩০এ; 7429 রায়লাসীমা ১৭-৩০টায় হায়দ্রাবাদ, ২-৫০এ গুন্টাকল, ৯-০৫এ রেনিগুন্টা পৌছে তিরুপতি যাচ্ছে ৮-৪০এ; 7603 লিঙ্ক ১৫-৫০এ সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে কাচিগুন্টা হয়ে গুন্টাকল-এ 7597 ভেঙ্কটেশ্বরী এক্সের সঙ্গে জুড়ে শুভুর/রেনিগুন্টা হয়ে তিরুপতি যাচ্ছে পরদিন ৯-৪০এ; ফেরে যথাক্রমে ৫-৩০, ১৫-৩০, ১৩-৩০এ। তেমোর/তাঞ্জোর/মিতি হয়ে মাদুরাই যাচ্ছে ১৫-৪০এ 6799 মাদুরাই এক্স; মাদুরাই ছাড়ে ৯-১৫য়।

6057 সুগিরি এক্স ৬-১৫য় চেন্নাই সেট্টাল ছেড়ে ৯-২০এ ১৪৭ কিমি দূরের তিরুপতি পৌছে ফেরে ১৭-৩০এ; আর 6053 তিরুপতি এক্স যাচ্ছে ১৩-৪৫এ ছেড়ে ১৬-৫০এ, চেন্নাই ফেরে তিরুপতি থেকে ১০-০৫এ 6054 এক্স। আর 7403 চেন্নাই-তিরুপতি ইন্টারসিটি এক্স যাচ্ছে ১৬-২০এ সেট্টাল ছেড়ে ১৯-৫০এ, ফেরে ৬-৩০এ ইন্টারসিটি। কোচি-তিরুপতি-বারাণসী এক্স শনিবার কোচি আর বুধবার ২১-৪৫এ বারাণসী ছেড়ে গুন্টাকল-তিরুপতি হয়ে যাচ্ছে। বিজয়গুন্টা যাচ্ছে শুভুর হয়ে নানান ট্রেন। 214 তিরুপতি-মহীশূর ফাস্ট প্যা যাচ্ছে ২২-০০টায় তিরুপতি ছেড়ে রেনিগুন্টা/কাটপাদী/ব্যালারগোয়র হয়ে ৫১৪ কিমি দূরের মহীশূরে। বুধাই যাচ্ছে বিসাপ্তাহিক তিরুপতি-বারাণসী এক্স 47 দিন ২১-৪০এ, কারলা ছাড়ে 26 দিন ১২-২৫এ।

আর হাওড়া থেকে ২৩-৩০এ ৪079 তিরুপতি এক্স যাচ্ছে পরের পরদিন ১৩-৫৫য় ১৫২৬ কিমি দূরের তড়ুর পৌছে ১৬-০৫এ ১৬১৯ কিমি দূরের তিরুপতি। আবার হাওড়া-চেন্নাই-এর নানান ট্রেনে শুভুর সেমেও তিরুপতি চলা আর ট্রেন বা বাসে।

হাওড়া-চেন্নাই রেলো বিজয়ওয়াড়া থেকে ২৯৪ কিমি পেরিয়ে আর চেন্নাই-এর ১৩৮ কিমি আগেই শুভুর জং। শুভুর থেকে শাখা লাইনে ০-৩০, ২-১০, ৪-২০, ৫-০০, ৯-২০, ১১-১০, ১৪-০০, ১৮-৪০, ১৯-১০, ২০-২০, ২২-৪৫-এর ট্রেন রেনিগুন্টা হয়ে চলা যেতে পারে শুভুর-রেনিগুন্টা-তিরুপতি শাখা লাইনে ৯৪ কিমি দূরের তিরুপতি ইস্ট। ঘন্টা তিনেকের পথ। পুরী-তিরুপতি এক্স যাত্ৰা প্রতি শুক্রবার ৬-২০এ পুরী ছেড়ে খুর্দা রোড-বেরহামপুর-বিজয়ওয়াড়া-শুভুর হয়ে পরদিন ৮-৩০এ। পুরী ফেরে শনিবার ১৬-১০এ তিরুপতি-পুরী এক্স। পতিচেরী যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে আরাকোণাম, কাকিনাড়া, ওঙ্গোল-এ তিরুপতি থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেন।



তবুও যেন চেন্নাই TTC এক্সপ্রেস বাস স্ট্যান্ড (এসপ্লানড) থেকে তিরুভাভুর বা অন্ধ্র প্রদেশ রাজ্য পরিবহনের এক্সপ্রেস বাসে তিরুপতি বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার। ৪-৩০টার প্রথম ছেড়ে ২০-০০টার শেষ বাস, ঘন্টার ঘন্টার সার্ভিস। সড়কপথে চেন্নাই থেকে রেনিগুন্টা হয়ে দূরত্ব ১৭০ কিমি। ৩ই ঘন্টার পথ; ভাড়া ৬৫ থেকে ১০৫ বাস বিশেষে। দিনে দিনে ফেরাও যায় তিরুপতি বেড়িয়ে চেন্নাইয়ে। সড়ক দূরত্ব: শুভুর ৯৪, ব্যাঙ্গালোর ২৬০, হায়দ্রাবাদ ৬১৭, বিজয়ওয়াড়া ৩৮৫ কিমি হায়দ্রাবাদ থেকে।

আবার TTDC, ITDC, APTTDC প্রতিদিন চেন্নাই থেকে বিশেষ সেব-সর্বনী সহ ২৭৫ টাকায় ডিলার, ৩৭৫ টাকায় A/c বাসে দিনে দিনে তিরুপতি বেড়িয়ে চেন্নাই ফেরে রাতে। তবে, মন্দিরে যাত্রীর আধিক্য ফেরার সময়ে (৬-২১-০০ অর্থাৎ যাতায়াতে ১২ ঘন্টা, লাঞ্চ ১ ঘন্টা, সেব-সর্বনে ২ ঘন্টা) হেরফের ঘটে প্রায়ই। হায়দ্রাবাদ থেকে উইক এন্ডে APTTDC প্যাকেজ ট্রায়ে সেব-সর্বনে আসছে। তবে, দূরত্বের আধিক্যহেতু চেন্নাই থেকেই সেখে নেওয়া সুবিধার। আর অন্ধ্র প্রদেশ স্টেট রোড ট্রান্সপোর্টের বাস যাচ্ছে লোয়ার থেকে পাহাড়। মুম্বই বাসও মেলে প্রভুত্ব থেকে গভীর রাতে। তেমনই ফেরার পথে তিরুমলাই অর্থাৎ তিরুপতি থেকে মুম্বই APSRTC/TTC/PAT-র বাস যাচ্ছে ৫-৩০ থেকে ২০-৩০-এ চেন্নাই; ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৬-০০, ৭-০০, ১০-০০, ১১-০০, ১৩-০০, ১৮-৩০; পতিচেরী ৯-৩০ ও ১৩-০০; কনাকুমারি ১৩-৪৫; মহেশ্বর ২১-৩০; মাদুরাই ১৬-৩০ ও ১৯-৩০-এ। তবুও যেন বাস টিকিটের প্রচুর চাহিদা—দীর্ঘ থেকে দীর্ঘতর হয় লাইন। তাই ফেরার পথের রিটার্ন টিকিট কেটে রাত্রিবাস করাই উচিত হবে যাত্রীসের।



মন ভরে সেব-সর্বনের জন্য একরাত মন্দির তীর্থে থাকা উচিত হবে যাত্রীসের। থাকার জন্য তিরুমলাই-এ মন্দির কমিটির পেস্ট হাউস, বি-সহস্রাবিক কটেজ, সুইট ও ধরমশালা আছে। দু'ঘরের কটেজ ২০ ২৫ ৩০ ৭৫ ১০০। আর আছে প্রথম শ্রেণীর Modi Bhawan, Sriniketan, Indira, Balakutiram, Padmabati, Gokulam ছাড়াও নানান পেস্ট হাউস, অফ: Reception Officer, TTD, Tirupati-517504-কে ৩০ দিন আগেই M O বা ব্যাঙ্ক ড্রাকফট টকা পাঠিয়ে লিখুন। এছাড়া APTTDC-র Hillview G H, Alipiri Rd., (08574) 22494, D ৭৫; KSTDC-র *H Mayura Saptagiri, 1st Floor, Karnataka Pravasi Soudha, Tirumala, (08574) 77285, D ৯৫; TTDC-র Tourist Cottage ও আছে তিরুমলাই-এ। আহার মেলে নিখরচায় মন্দির

কমিটির ডাইনিং ক্লাব-এ। প্রাইভেট রেস্টোরাঁও হয়েছে বাস স্ট্যান্ডে।

আর আছে Tirupati, STD 08574, PC-517501-এ প্রাইভেট হোটেল—H Mananta, H 7 Hills, Gokula Tourist L, H Prashanth, Gomatha L, Hotel LNB, Apsara, Murali Krishna L, H Vikram, 207 T P Area, Opp APSRTC Bus Stand, SAB ১৫০ DAB ৩০০ A/c D ৪৫০; Sri Ganesh L, 14-3-304 D R Mahal Rd-1, (0) 21565, DAB ১২৫; *H Mayura, 209 T P Area, Tirupati-517501, (0) 25925, DAB ৪০০ A/c D ৬০০-৭৫০; *H Oorvasi, Renigunta Rd, D ৩২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০-৮৫০; *Bhimas Deluxe H, 34-G, Car St-1, (0) 25521, S ২৫০ D ৩০০-৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮০০; লাগোয়া H Bhimas Paradise, 42-G Car St, (0) 25747, S ৩৫০ D ৪৭৫ A/c S ৫২৫ D ৭৫০; Gopi Krishna Deluxe L, opp Rail Stn; H Guestline Days, Karakambadi Rd-517507, (0) (08574) 20366, A/c S ৫৪৫ D ৭৯৫ সুইট ১২৫০-১৫৯৫। Bhimas Paradise, 33 Renigunta Rd, (0) 20747, D ৩০০ A/c D ৪৫০ সুইট ৬৫০; H Vishnupriya, Opp APSRTC ছাড়াও নানান হোটেল। রেলের রিটার্নিং রুমও আছে তিরুপতিতে।

ধরমশালাও আছে লোয়ার তিরুপতিতে। রেল স্টেশনের কাছে—Venkateswara, Govindaraj, Sri Kodandarama ছাড়াও নানান।

আহার্যও মেলে ভেজ ও ননভেজ তিরুপতির হোটেল। থাকা ও ভেজ মিলের জন্য হোটেল ভীমাস আজও বরগায়। তেমনই অদূরে সের্গু-রেট পীকর-এরও যথেষ্ট সুনাম ননভেজ মিল পরিষেবার। আর বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে লক্ষ্মীনারায়ণ ভবন-ও সদাই ব্যস্ত ভেজ মিল পরিষেবনে।

কোনাই জলপ্রপাত: চেন্নাই-উৎকেট্রাই-তিরুপতি সড়কে চেন্নাই থেকে ৯০ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে নাগালপুরম পেরুতেই নারায়ণাভনাম (Narayanawanam)-এ নেমে ২ কিমি যেতে নির্জনে এই জলপ্রপাত। চলার পথে দেখে নেওয়া যায়। অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে ধারা বাড়ে বৃষ্টির জলে, আর শীতে বাড়ে যাত্রী। প্রবাদ শ্রীভেঙ্কটেশ্বর এখানেই পদ্মাবতীকে বিয়ে করেন। সেই স্মৃতিতে মন্দির হয়েছে নারায়ণাভনামে।

পুষ্পগিরি: পুষ্পগিরি অর্থাৎ ফুলের পাহাড়। কারুকার্য-মণ্ডিত ৮টি মন্দির ফুলের পাহাড়ে আর নিচুতে ডজন-খানেক। এমনকি গীতা, রামায়ণ ও মহাভারত আখ্যান রূপ পেয়েছে অলঙ্কারে। কার্ভিং-এর কাজও সুন্দর। তিরুপতি থেকে ১১ কিমি দক্ষিণে রেনিগুন্টা আর রেনিগুন্টার ১৩১ কিমি উত্তরে কুডাপা, কুডাপার ১৬ কিমি উত্তর-পূর্বে পুষ্পগিরি।

শ্রীকালহস্তী

তিরুপতি থেকে ৩৭ কিমি পূর্বে দু'টি ঝাড়া পাহাড়ের মাঝে পূর্বব রাজ্যের তৈরি শিব মন্দিরটি আর এক হিন্দুতীর্থ। স্বর্ণযুগী নদীর তীরে মন্দির নথরী শ্রীকালহস্তী। শিব এখানে পঞ্চভুতের এক মরুৎ অর্থাৎ বায়ুলিঙ্গম—

মন্দিরে দীপশিখা অবিরাম কাঁপছে। পঞ্চভূতের আরও চার—কাশীপুরে ক্ষিতিলিঙ্গম, জম্বুকেশ্বরে অপলিঙ্গম, অরুণাচলে তেজলিঙ্গম, চিদাম্বরমে বোম বা আকাশলিঙ্গম। প্রবাদ—শিব এখানে *শ্রী* (মাকড়সা), *কাল* (সাপ) ও *হস্তী* অর্থাৎ হাতি দ্বারা পূজিত হন। নামটিও তাই *শ্রী-কালহস্তী*। শিবরাত্রিতে উৎসব হয়। স্বর্ণমুখী নদী আর পূর্বঘাট পরিবেশকে অনিন্দ্যসুন্দর করে তুলেছে। তিরুপতি ইস্ট থেকে রেনিগুণ্টা হয়ে রেল যাচ্ছে হাওড়া-চেন্নাই রেলের গুডুরে। গুডুর-তিরুপতি শাখা লাইনে গুডুর থেকে ৬০ আর চেন্নাই থেকে (১৩৮+৬০) ১৯৮ কিমি দূরে Srikalahasti. বসেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় চেন্নাই, তিরুপতি বা গুডুর থেকে। *চোলদ্রি* অর্থাৎ ধরমশালা ছাড়াও হোটেল আছে *Bhima L, Sri Ram Cafe I*, শ্রীকালহস্তীতে।

হর্সলে পাহাড়



অন্ধ্রের দক্ষিণ-পশ্চিমে তিরুপতি-ব্যাঙ্গালোর সড়কে তিরুপতি থেকে ১২২ আর ব্যাঙ্গালোরের ১৩৬ কিমি দূরে চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা ৭৪৬মি উঁচুতে স্বাভাবিক শৈলশহর মদনাপল্লী। চেন্নাই-এর দূরত্ব ২২১, হায়দ্রাবাদ ৪৩১ কিমি। গুন্টাকল-পাকলা মিটারগেজ রেলে গুন্টাকল-তিরুপতি প্যা, বেলারি-তিরুপতি প্যা, ভেঙ্কটাপ্রি এক্স Madanapalle Rd হয়ে যাচ্ছে। গুন্টাকল থেকে দূরত্ব ১৪৭, পাকলা ১৮২ কিমি মদনাপল্লী থেকে। লাগোয়া বামিনীকোণ্ডা পাহাড়ে দুর্গা তথা বামিনীদেবীর মন্দির। টি বি স্যানাটোরিয়ামও গাড়ে উঠেছে জলবায়ুর গুণে। তবুও যেন মদনাপল্লীর মূল আকর্ষণ ২৯ কিমি দূরের হর্সলে পাহাড়ের বাস সংযোগকারী জংশন রূপে। বাসও যাচ্ছে ৮-০০, ১৩-০০ ও ১৬-০০টায় বছরভর, ১ ঘণ্টার পথ; অক্টোবর থেকে মার্চ মাসে বাসের আধিক্য মেলে।

১৮৫৭ খ্রিস্টাব্দে ইয়োরোপীয় সাহেব W D Horsley শিকারে বেরিয়ে মালাস্মাকোণ্ডা অর্থাৎ দেবী মালাস্মার পাহাড়ে পৌছান। প্রকৃতির প্রেমে মুগ্ধ সাহেব গ্রীষ্মাবাস গড়েন ১৮৭০এ। নামান্তরও ঘটে—অভীতের ইয়েমুগু মালাস্মা-কোণ্ডা পাহাড় হয় হর্সলে হিলস। ১২৬৫ মি উঁচুতে পূর্বঘাট পর্বতে অন্ধ্রের একমাত্র শৈলশহরও এই হর্সলে। চন্দন, পলাশ, পিয়াল, সেগুন, দেবদারু, ইউক্যালিপটাস, গুলমোহর আর আমগাছে ছাওয়া হর্সলের প্রকৃতিও মনোরম। তেমনি সুন্দর হর্সলের সূর্যাস্ত। আর আছে নেচার স্টাডি সেন্টারের বনজ-সংগ্রহশালা, মনোরম অর্কিডোরিয়াম, ৯ কিমি পাহাড়ী পথে স্বমিকোণ্ডা ভ্যালি স্কুল, ২০ কিমি পশ্চিমে এনুগোমালায়ার মন্দির। তেমনি চেন্না-অচেনা নানান পাথির কুজনও মধুময় করে তোলে উপজাতি অধ্যুষিত হর্সলে। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ।



খাকারও নানান ব্যবস্থা হর্সলে পাহাড়ে—সুন্দর প্রকৃতির মাঝে APTTDC-র *Tourist R H, D* ১২৫ ১৭৫ ২৫০, অব: Manager, Horsley Hills, Dist-Chittoor-517325, ☎ (08571) 69323 বা

APTTDC, Yatri Nivas Complex, Sardar Patel Rd, Secunderabad-500003, ☎ 816373. ৩০ ঘণ্টার *Mount Pleasant R H, D* ২২৫-৩৫০; সাহেবের গ্রীষ্মাবাসে *বন বাগে* ও নবতম *Forest R H*-এর অব: FRO, Madanapalli, Dist-Chittoor, AP-517325, ☎ (08571) 8325; PWD *RH; ADC Quarters* আছে হর্সলে পাহাড়ে।

পেনুকোণ্ডা: হর্সলে লাগোয়া আর এক পাহাড়ী শহর ৯৩৪ মি উঁচু পেনুকোণ্ডা। ১৫৬৫র যুদ্ধে হারার পর বিজয়-নগররাজ ২০ বছর অবস্থান করেন। পেনুকোণ্ডায় নানান ধ্বংসাবশেষ, দুর্গ, শের খান মসজিদটির পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

লেপাক্ষী

গুন্টাকল-ব্যাঙ্গালোর শাখা রেলের হিন্দুপুরে নেমে ১৬ কিমি বাসে গিয়ে শিব মন্দির দেখে নিতে পারেন লেপাক্ষীর। বাস আসছে অনন্তপুর ১০৮, ব্যাঙ্গালোর ১৩৬ কিমি থেকেও। দক্ষিণ ভারতীয় মন্দিরের মতো গোপুরমের অভাব। বিরটি চত্বরের উপর তিনটি ভাগে এই মন্দিররাজি—মুখ্য মণ্ডপ বা নাট্য মণ্ডপ, অর্থ মণ্ডপ ও কল্যাণ মণ্ডপ। জনশ্রুতি, অগস্ত্য মূনির তৈরি লেপাক্ষীর এই মন্দির। কল্যাণ মণ্ডপটি অসম্পূর্ণ অবস্থায় ৩৮টি মনোলিথিক পিলারের উপর ১৫ শতকে বিজয়নগরী শৈলীতে পথুর রাজাদের হাতে গড়ে ওঠে। মন্দিরের স্থাপত্য ও দেওয়াল চিত্র খুবই সুন্দর। বৈচিত্র্য আছে স্থাপত্যে। লোকশিল্পের নানান আখ্যান রূপ পেছেছে দেওয়ালে। পাথর কুঁদে তৈরি মূর্তিও লি প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছে। বিশেষ করে একশত পাথর কুঁদে ৪.৫×৮.২৩ মিটারের দ্বিতীয় বৃহত্তম নন্দী, চুল ও বসনের কারুকার্য, প্রসাধনরতা নারী, সিলিং-এর আখ্যান-চিত্র অতুলনীয়। থাকার জন্য *অভয় গৃহ রেস্ট হাউস ও ধরমশালা* আছে।

কুরনুল

হায়দ্রাবাদ থেকে ২৪০ কিমি দক্ষিণে, গুন্টাকল-দ্রোণা-চলম-সেকেন্দ্রাবাদ শাখায় কুরনুল স্টেশন। জেলাসদরও কুরনুল। তুঙ্গভদ্রা ও হাতি নদীর পাড়ে এই শহর। অতীত-কালের দুর্গের ভগ্নাবশেষ, মসজিদ ও সমাধি আজও দেখে নেওয়া যায়। কুরনুল জেলার আর এক তীর্থ শ্রীরাঘবেন্দ্র স্বামীর বৃন্দাবন অর্থাৎ মন্ডালয়মও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে ৮৯ কিমি গিয়ে কুরনুল থেকে।



Kurnool, STD 08518, PC-518001-এ হোটেলও আছে—*H Raja Vihar Deluxe*, Bellary Rd-1, ☎ 20702, S ২৫০ D ৩০০ A/c S ৪০০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; *H Raviprakash*, Station Rd, Kurnool ছাড়াও নানান। আর মন্ডালয়মে আছে APTTDC-র *Tourist R H, D* ১২৫ A/c D ২৭৫ ডর্মি বেড ২০; অব: Mantralayam, Kurnool Dist, ☎ (08512) 59463.

শ্রীশৈলম

গুন্টুর-কুরনুল সড়কে সোর্ণালা থেকে পথ গিয়েছে শ্রীশৈলমের। বাস আসছে নাগার্জুন কোটা থেকেও সোর্ণালা হয়ে শ্রীশৈলমে। সরাসরি যাত্রায় কলকাতা থেকে ইস্ট কোস্ট এক্সপ্রেস সাথে জোড়া গুন্টুর কোটে ১২৬৫ কিমি দূরের গুন্টুর পৌছে বাসে শ্রীশৈলম চলাই সুবিধার। ট্রেন আসছে—সেবেঙ্গাবাদ ২১৯, বিজয়ওয়াড়া ৩৩, মহলিপতনম ১১৩, মাচেরালা ৬১ কিমি থেকেও গুন্টুরে। আর গুন্টুর থেকে ২১২, কুরনুল ১৭৮, সোর্ণালা ৫০, হায়দ্রাবাদ ২৩২, বিজয়ওয়াড়ার ২৬০ কিমি দূরে কুরনুল জেলার নানীমালাই অমিত্যাকায় ১৫০০ ফুট উঁচুতে হিন্দুতীর্থ শ্রীশৈলম। নিকটতম বিমানবন্দর হায়দ্রাবাদে। নানীমালা পর্বত ট্রেনে গিয়ে ১৫৮ কিমির সড়কপথে শ্রীশৈলম। বাস আসছে কুরনুল, গুন্টুর, গুণ্টাকল, হায়দ্রাবাদ ও বিজয়ওয়াড়া থেকেও শ্রীশৈলমে।

কৃষ্ণার দক্ষিণ পাড়ে ৪৫৭মি উঁচু মহাবীরতের শ্রীপর্বত আজকের খবত পাহাড়ের মন্দিরে দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের অন্যতম লিঙ্গরূপী স্বয়ম্ভু দেবতা শিব এখানে মল্লিকার্জুন স্বামী। সোনার নাগরাজ কিরীট হয়ে শিরে। জাতিধর্ম নির্বিশেষে দর্শন মেলে দেবতার। আর আছেন দেবী মহাকালী—ব্রাহ্মারজা রূপে মন্দির চত্বরে। জনশ্রুতি, শিবের বাহন বৃষভ অর্থাৎ নন্দী প্রায়শ্চিত্ত করে এখানে। প্রায়শ্চিত্তে তুষ্ট শিব ও পার্বতী আসেন বৃষভকে আশীর্বাদ করতে মল্লিকার্জুন ও ব্রাহ্মারজা রূপে। দুর্গারূপী ৬মি উঁচু প্রাচীরে ঘেরা মন্দির। নানান রাজা-রাজভাদের পৃষ্ঠপোষকতায় সমৃদ্ধ হয়েছে মন্দির। এমনকি ফা-হিয়েন ও হিউয়েন-সাঙ-এর ভারত বিবরণীতেও বর্ণিত হয়েছে শ্রীশৈলমের কথা। বৌদ্ধ ভিক্ষু আচার্য নাগার্জুনও বাস করে গেছেন শ্রীশৈলমে। শিবরাত্রি উৎসবেরও প্রশস্তি আছে। ৫১ সতী পীঠের এক শ্রীশৈলম।

আর আছে মন্দির থেকে ২ কিমি দূরে পাড়ালগঙ্গা—অর্থাৎ কৃষ্ণা নদী খাড়া নামছে; ২১ কিমি দূরে সাক্ষী গণপতি—শ্রীশৈলম দর্শন জানিয়ে যাওয়ার প্রথা। ৩ কিমি দূরে হতকেশবের ২টি প্রবণের উৎস, আদি শঙ্করাচার্যর প্রায়শ্চিত্ত, শিবানন্দ লহরী লেখেন এখানে শঙ্করাচার্য; ৮ কিমি দূরে ২৮০৫ ফুট উঁচু সর্বোচ্চ শিখরে শিখরেশ্বর স্বামী অর্থাৎ শিব মন্দির; ১৪ কিমি দূরে কৃষ্ণা নদীতে ৫১২ মি দীর্ঘ বাঁধ তথা হাইড্রো প্রোজেক্টও দেখে নেওয়া যায়।



থাবার জন্য শৈল বিহার ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস আছে, অব: DPRO. আর আছে মন্দির কমিটির ১০৫টি কন্টেক, ১৫০ ঘরের ধরমশালা, অব: Executive Officer, Srisaillam Devasthanam, Srisaillam, Dist-Kurnool, PC-518101; হাড়া১০ নানানধর্মী গেস্ট হাউস শ্রীশৈলমে।

রাজীব গান্ধী ব্যাংক প্রকল্প: শ্রীশৈলম-হায়দ্রাবাদ সড়কে ডায়ম পেরুতেই বাস চলে গহীন বনের মাঝ দিয়ে—নাম তার রাজীব গান্ধী ব্যাংক প্রকল্প। গাড়ি যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে বাঘ দেখাতে। হায়দ্রাবাদ থেকে ঘণ্টা ছয়েক, বিজয়ওয়াড়া থেকে

দশ ঘণ্টার বাসও আসছে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে বনদপ্তরে ট্যুরিস্ট লজে।

উদয়গিরি

নিকটতম রেল স্টেশন চেমাই-বিজয়ওয়াড়া রেলের কাভালী ৭৭ কিমি, নেলোরের দূরত্ব ৯৮ কিমি; আর চেমাই ১৭৭, বিজয়ওয়াড়া ৪৩০, কলকাতা ১৪৮৩ কিমি। বাস সংযোগ রেখেছে নেলোর ও কাভালী থেকে। বিধবস্তপ্রায় ১৩টি দুর্গের জন্য উদয়গিরির পর্যটক আকর্ষণ। লঙ্গুলা ওজাপতি রাজাদের রাজধানী ছিল ১৪ শতকে। পরে দখল যায় বিজয়নগর ও গোলকুণ্ডার হাতে। ১০০০ ফুট উঁচু পাহাড়ের উপর মসজিদও রয়েছে ১৬৬০ খ্রিস্টাব্দের।

বিজয়ওয়াড়া



কলকাতা-চেমাই/ হায়দ্রাবাদ/ তিরুপতি, চেমাই-দিল্লী/আমেদাবাদ রেলপথে জংশন স্টেশন বিজয়ওয়াড়া। কলকাতা ১২৩০, চেমাই ৪৩৩, দিল্লী ১৭৬১, আর হায়দ্রাবাদের দূরত্ব ৩৬১ কিমি। রেল যাচ্ছে ওয়ারাঙ্গালেও বিজয়ওয়াড়া থেকে। ৬৪ কিমি পশ্চিমের অমরাবতীরও জংশন স্টেশন বিজয়ওয়াড়া। রেল যাচ্ছে ৫০ ঘণ্টার দিল্লী, চেমাই ৬ ঘ, কলকাতা ২৭ ঘ, হায়দ্রাবাদ ৭ ঘ, কন্যাকুমারী, তিরুভনন্তপুরম, ব্যাঙ্গালোর, বারাণসী ছাড়াও ভারতের দিকে দিকে। কলকাতা-চেমাই NH-৫ আর হায়দ্রাবাদ-পুনে NH-৭-এ বিজয়ওয়াড়া। নেলোর থেকে কলকাতাগামী ট্রেনে বিজয়ওয়াড়া চলুন, দূরত্ব ৪৩০ কিমি। ট্রেন আসছে ১২৮ কিমি দূরের ডোর্নাকল থেকেও। রাজধানী শহর হায়দ্রাবাদ থেকেও ট্রেন ও বাস দুই-ই আসছে। তবুও যেন কলকাতা তথা পূর্ব ভারত যাত্রীদের গোয়া যাত্রায় হাওড়া থেকে ১৪-০০টায় ২৪৪১ করমন্ডল এক্স, ২০-১৫য় ৬০০৩ চেমাই মেল, ২৩-৩০এ ৪০৭৭ তিরুপতি এক্স, ১০-১৫য় ৪০৪৫ ইস্ট কোস্ট, ৭-৫০এ ২৭০৩ ফলকনুমা এক্স, ১১ দিন ২২-৩৫এ ৬৩২৪ হাওড়া-কোচি-তিরুভনন্তপুরম এক্স যথাক্রমে ১০-২৫/২০-০০/৮-০০/১২-০০/৫-০০/২০-৫০এ ১২৩১ কিমি দূরের বিজয়ওয়াড়া পৌছে ১৯-৩০এ ৭২২৫ অমরাবতী এক্স বিজয়ওয়াড়া হেড়ে গুন্টুর-হসপেট-হবলি-লোভা-কাসল রক-কুলেম হয়ে পরদিন ২২-১৫য় ভাঙ্কা চলায় সুবিধা। ওয়ারাটি ও পাটনা থেকেও নানান দক্ষিণী এক্স বিজয়ওয়াড়া হয়ে যাচ্ছে। বিজয়ওয়াড়ার সংযোগ গড়েছে দক্ষিণ ভারতের নানান শহরের সঙ্গে কৃষ্ণা নদীর পাড়ের Bandar Rd বাস স্ট্যান্ড থেকে দিন-রাত জুড়ে APSRTC-র বাস। রিটার্নিং রুমও আছে বাস স্ট্যান্ডে। আর বোট যাচ্ছে বিজয়ওয়াড়া থেকে অমরাবতী। বায়ুদূতও সংযোগ গড়েছে। ১৩৫ দিন হায়দ্রাবাদ-বিজয়ওয়াড়া-রাজমহেন্দ্রী; আর ২ ৪ ৬ দিন হায়দ্রাবাদ-বিজয়ওয়াড়ার মাঝে। শহর থেকে ২০ কিমি দূরে শিবানবন্দর। ট্যাক্সি মেলে যাত্রায়ে। বায়ুদূতের লোকাল এজেন্ট Smita Travels, Bandar Rd, ৩ ৪৭৭৮১।

কৃষ্ণা নদীর উপর পাড়ে পাহাড়ে ঘেরা এক্সপ্রেস দ্বিতীয় বৃহত্তম শহর তথা তেলুগুর মর্যকেন্দ্র বিজয়ওয়াড়া। দক্ষিণের

প্রবেশদ্বারও বলা হয় বিজয়ওয়াড়াকে। ২০০০ বছরের অতীত—প্রবাদ, ইন্দ্রকিলা পাহাড়ে অর্জুনের তপস্যায় তুষ্ট শিব কিরাত রূপে দর্শন দেন। আশীর্বাদ মেলে বিজয়ের। বিজয় থেকে নাম হয় জয়গার বিজয়বাটিকা। স্মারক রূপে মন্দির, মূর্তিও হয়েছে ব্যাধরূপী কিরাত-শিবের। মহা-ভারতের আখ্যানও মূর্ত হয়েছে মন্দির গায়ে। প্রায়শ্চিত্ত করেন অর্জুন এই পাহাড়ভূমে।

আর রয়েছে শ্রীকনকদুর্গার মন্দির। অষ্টভুজা দেবী দুর্গা বিজয়া রূপে খ্যাত হলেও পার্বতী রূপে অধিষ্ঠিত। মূর্তি হয়েছে সোনার। মন্দিরের পথেই ১৭শ শতকের কুতবশাহী মসজিদের পাহাড় কেটে গড়া শুহা, অদূরে খ্রি পূ ২য় শতকের শিব, বিষ্ণু ও ব্রহ্মার শুহা মন্দিরও উচিত হবে দেখে নেওয়া। ১৯৫৭য় তৈরি ১২২৩.৫ মি দীর্ঘ প্রকাশম ব্যারোজ বা কৃষ্ণা নদীর সেতুটিও আর এক দ্রষ্টব্য। বাঁধে গড়া কৃত্রিম লেকের জলে বোটিং; লেকের ভবানী ধীপে ওয়াটার স্পোর্টসের আসর বসেছে। এছাড়া ১৪ শতকের বিষ্ণুস্তু দুর্গটিরও পর্যটক আকর্ষণ অন্বীকার্য। নানান পুরাতাত্ত্বিক সংগ্রহের সাথে Bandar Rd-এর কালো গ্রানাইট পাথরের বৃহৎ আকারের বৃদ্ধ মূর্তিটিও ভিক্টোরিয়া জুবিলি মিউজিয়মে শুক্রবার ছাড়া দেখে নেওয়া উচিত হবে। বাস স্ট্যান্ডের অদূরে কৃষ্ণার পাড়ে রাজীব গান্ধী পার্কটিও জ্ঞানার্জনের সাথে চিত্ত বিনোদনের নবতম সংযোজন। মডেলে ডাইনোসর ছাড়াও প্রি-হিস্টোরিক জীব-জন্তুর সম্ভার উল্লেখ্য। ৮—১০-৩০ ও ১৭—২০-৩০টায় খেলা। আর আছে নানান পসরা নিয়ে On Hill-এ গান্ধীজীর স্মারকরূপে গড়া গান্ধী হিল। ১৯৬৮তে তৈরি ১৫.৮ মিটারের গান্ধী স্তূপ, গান্ধী মেমোরিয়াল লাইব্রেরি, লাইট অ্যান্ড সাউন্ড প্রদর্শনী, প্ল্যানেটেরিয়াম ছাড়াও টয় ট্রেন চলছে গান্ধী পাহাড়ে। এমনকি শহরের দৃশ্যও সুন্দর দেখে নেওয়া যায় গান্ধী পাহাড় থেকে। তেমনিই উচিত হবে আদি শঙ্করাচার্য প্রতিষ্ঠিত মন্দেশ্বর শিব মন্দিরে শ্রীচক্র, হজরতবাল মসজিদে ইসলাম ধর্মের প্রবর্তক মোহাম্মদের স্মারক, চলাতে ফিরতে দেখে নেওয়া। মোগা রাজাপুরমে ৪৬২-৫০২ খ্রিস্টাব্দে রাজা মাধব বর্মা বিত্তীয়ের গড়া শুহা মন্দির ত্রয়ীও উচিত হবে দেখে নেওয়া। নটরাজ (শিব), বিনায়ক (কার্তিক) আজও সযত্নে রক্ষিত। দক্ষিণ ভারতের একমাত্র অর্ধ-নারীশ্বর মূর্তিও রয়েছে। তেমনিই বিজয়ওয়াড়ার ৮ কিমি দূরে কালো গ্রানাইট পাহাড়ের ঢালে ৫ খালে ৭ শতকের উভাতারী শুহায় বিশালাকার মনোনিখি কৃষ্ণর অবস্থান। ৫মি উঁচু বিষ্ণুকে বৃদ্ধও বলে থাকে লোকে। ২টি জৈন মন্দিরও আছে ৬২৪-৬৪২ খ্রিস্টাব্দের। ভগবান বিষ্ণুর অবতাররূপী নরসিংহদেবের মন্দিরও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে ১২ কিমি দক্ষিণের মঙ্গলাগিরিতে।

বিজয়ওয়াড়া-হায়দ্রাবাদ সড়কে ১৬ কিমি গিয়ে সুব্ব কারশিল দেখে আসুন কোণাপাল্লিতে। দক্ষ শিল্পীদের হাতে

শিড়ার বৃক্ষের হালকা কাঠে তৈরি নানান ধর্মী পুতুল পর্যটকরা অন্ধ্র ভ্রমণের স্মারকরূপে সঙ্গীও করতে পারেন। Prolaya Veera Reddy-র ৭ শতকের দুর্গও আছে কোণাপাল্লির শিরে। দুর্গের অদূরে ত্রিতল পাথুরে টাওয়ার ও মন্দির হয়েছে বিরাটাকার। বসন্তে দেশেরা বরণীয় উৎসব। চতুইভাতির মনোরম পরিবেশ।

বিজয়ওয়াড়া থেকে ৬৮ আর গুন্টুর থেকে ১০০ কিমি দূরে কৃষ্ণার পূর্ব পাড়ে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির বাণিজ্য নগরী মহলিপতনমও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ডাচ ও ফরাসিরাও শিক্ষা-কারখানা গড়ে মহলিপতনমে। সিদ্ধ ও সূতি বসনে Kalamkari Printing আজও পর্যটক প্রিয়। ৭-২০, ১৪-০৫, ১৬-১৫, ২১-৪৫এ প্যাসেঞ্জার ট্রেন আর বাসও যাচ্ছে বিজয়ওয়াড়া থেকে মহলিপতনমে। ২৫ ঘণ্টার পথ। H Santosh, PC-521001, R1, D ১৭৫ A/c S ২৭৫ D ৪০০ ছাড়াও হোটেল আছে নানান মহলিপতনমে।

তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় বিজয়ওয়াড়া থেকে ৬০ কিমি দূরে কুচিপুডি নাচের স্রষ্টা সিদ্ধেন্দ্র যোগীর জন্মভূমি কুচিপুডি। স্মারকরূপে কুচিপুডি নৃত্যের স্কুল বসেছে যোগীর বাসভবনে।



H Chaya, 27-8-1 Sivalayam St, Vijayawada-520002, STD 0866, S ১৭৫ D ৩০০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; *H Kundhari International, M G Rd, Lebbipet-10, ৩৭1311, S ৩২৫ D ৪৫০ A/c S ৪২৫ D ৬২৫ সুইট ১০৫০; H Ashoke, near Bus Stand, DAB ২০০; Shree Durga Bhavan, Eluru Rd-2, S ৮৫ D ১৫০; একই বাড়িতে *H Mamata, Eluru Rd-2, Opp Bus Stand, ৩৬1251, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৬৫০-৮৫০। Governor Pet-এ—H Swarna Palace, Eluru Rd, ৩৬7222, S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; *H Raj Towers, Congress Office Rd, SAB ২২৫-৩০০ DAB ৩২৫-৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮৫০; H Anupama, Kaleswara Rao Rd, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; অদূরে H Nataraj, S ১২৫ D ২২৫ A/c S ২২৫ D ৪২৫ সুইট ৬০০। *H Manorama, 27-38-61 M G Rd-2, ৩৭7220, S ৩০০ D ৪২৫ সুইট ৬০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮৫০; Sree Lakshmi Vilas Modern Cafe, Besant Rd, Governor Pet-2, R1, ৩৬2525, S ১২০ D ২০০; Welcome H, Gandhi Ngr, Besant Rd-3; *H Ilapuram, Besant Rd, Gandhi Ngr-3, ৩৬1282, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ১০৫০; *Krishna Residency, Rajagopalachari St, Governor Pet-2, ৩৬302, S ২৭৫ D ৩২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ১০০০; Swapna L, Durgaiyah St, D ১৭৫-২২৫, ব্যবস্থাপনা ডাশই; H Alankar, H Sri Durgabhavan, ছাড়াও বেশ কিছু সাধারণ হোটেল, RR, DB, IB আছে বিজয়ওয়াড়ার। আর হয়েছে APTTDC-র Krishnaveni Motel, Sitanagarum, Vijayawada, ৩ (০৪৬৬) ৬৪৩৪২, DAB ২৫০ A/c D ৩৫০; অব্: Asstt Manager. তবে উচিত হবে শহরের বাসিন্দাদের গভর্নর পেট M G Rd বা Eluru Rd-এ হোটেল নির্বাচন করা।

চরিয়ে এরা দক্ষিণী থেকে স্বতন্ত্র—অক্সের নিজস্ব ডিশের সাথে উত্তর ভারতীয় ছাড়াও নানানধর্মী আহার্য মেলে। উচিতও হবে Lebbipet-এ ভাবনী গার্ডেনের H Greenland-এ আহার্যের স্বাদ নেওয়া।

A P Tourisra-এর দপ্তরও বসেছে Krishnaveni Motel, Sitanagaram-522515, ☎ 75382-এ। কন্ডাক্টেড ট্যুরের শহর দর্শন ও কৃষ্ণার জলে বোটিং-এর ব্যবস্থা করে টুরিজম। অমরা-বতীও যাচ্ছে পর্যটন দপ্তরের বোট ও বাস। আর কেনাকাটায় M G Rd, Eluru Rd, Governor Pet-এর দোকানপাটে চলা যেতে পারে। শহরে চলেছে বাস, রিকশা, অটো ও ট্যাক্সি।

অমরাবতী

বিজয়ওয়াড়া থেকে গুন্টুর হয়ে ৬৪ কিমি পশ্চিমে কৃষ্ণার দক্ষিণ পাড়ে অমরাবতী। আর গুন্টুরের দূরত্ব ৩২ কিমি। ৬—১৯-৩০টায় ঘন্টায় ঘন্টায় বাস যাচ্ছে বিজয়-ওয়াড়া থেকে। হায়দ্রাবাদের দূরত্ব ৩৩৪ কিমি। মৌর্য সাম্রাজ্যের পতনে মৌর্যদের উত্তরপুরুষ সাতবাহন রাজাদের রাজধানী শহর খান্যকটকের ধ্বংসাবশেষের পাশেই খ্রিস্ট জন্মেরও দশ বছর আগে গড়া বৌদ্ধ বিহারের মহাচৈত্যাটি ভারতে বৃহত্তম। চৈতোর ডোমের উচ্চতা ২৯ মি, প্রস্থে ৪৯ মি। ১৪ ফুট উঁচু রেলিং-এ ঘেরা। প্রদক্ষিণ পথটি ১৫ ফুট চওড়া। কার্নিশে বুদ্ধের জীবনাখ্যান উৎকীর্ণ হয়েছে। সেকালের বৌদ্ধ বিহারগুলির মধ্যে অন্যতম ছিল অমরা-বতী। এর স্থাপত্য ও ভাস্কর্য খুবই সুন্দর। তবে অতীত আজ বিধ্বস্ত। বিনষ্ট করেছে ১৮ শতকেও স্থানীয়রা। ২১ কিমি দূরের শঙ্করমে খননে পাওয়া স্থাপত্যের সম্ভার নিয়ে মিউজিয়ম হয়েছে। সোমবার ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা। এছাড়া কলকাতা সহ সারা বিশ্বের যাদুঘরগুলিও সমৃদ্ধ হয়েছে অমরাবতীর অমর ভাস্কর্যের প্রদর্শনে। মহাচৈত্যা থেকে ১ কিমি দূরে কৃষ্ণার পাড়ে ১৫ ফুট উঁচু অমরালিঙ্গেশ্বর শিবের মন্দির। কিংবদন্তী, ইন্দ্রের প্রতিষ্ঠিত ভারতে তৃতীয় বৃহত্তম কালো পাথরের একশিলা অমরেশ্বর স্বামী শিব। আর এই অমরেশ্বরের থেকেই অমরাবতী নামকরণ। শিবরাত্রিতে উৎসব হয়।



থাকার জন্য RH, IB আছে। আর আছে H Neelum, Badnera Rd-446601, R:B1, SAB ১৫০ DAB ২৭৫ A/C S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬০০; H Hindusthan International, Satidham Complex, Amaravati, ☎ 75375, S ১৫০-২২৫ D ২৫০-৩২৫ A/C S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮০০ ছাড়াও নানান হোটেল অমরাবতীতে।

নাগার্জুনকোথা

হায়দ্রাবাদ থেকে ১৬৪ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে কৃষ্ণ নদীর দক্ষিণ তীরে নাগার্জুনকোথা অর্থাৎ পাহাড়ে মাটির নিচে ১৯২৬-এ আবিষ্কৃত হয়েছে, দুই হাজার বছরেরও প্রাচীন ইক্ষ্বাকু রাজাদের রাজধানী ও বৌদ্ধ বিহার অতীতের

বিজয়পুরীতে। নগরীর পশ্চিম সাতবাহন রাজা বিজয় সাত-কর্ণীর হাতে। খ্রিপূ ২ থেকে খ্রিস্টাব্দ ৩ পর্যন্ত দীর্ঘ ৫০০ বছর ধরে বিজয়পুরী ছিল দাক্ষিণাত্যের মূল বৌদ্ধকেন্দ্র। এর মহাচৈত্যাটি সম্রাট অশোকের তৈরি। গঠন প্রণালী অমরাবতীর মতো হলেও প্রশস্ত জমির উপর ২৪৪মি উঁচুতে ২৩ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছিল এই বৌদ্ধ বিহার। মঠ, স্তুপ, বিহার, বিশ্ববিদ্যালয় আর প্রাসাদের ধ্বংসাবশেষ আজও অতীত রোমন্থন করায়। শ্বেতমর্মরে কার্ভিং-এর কাজও অনবদ্য।

সিংহল থেকে আগত সেকালের বৌদ্ধভিক্ষু পণ্ডিতাচার্য নাগার্জুন বাস করতেন এখানে। আচার্য নাগার্জুন ছিলেন বৌদ্ধ মহাযান ধর্মের মধ্যমিকা সম্প্রদায়ের প্রবর্তক। ২ শতকে দীর্ঘ ৬০ বছর ধরে সম্ভবতথা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রধান ছিলেন তিনি। ছাত্রও এসেছে দেশ-দেশান্তর থেকে। তাঁরই নামে নাম হয়েছে জায়গার।

দক্ষিণী ভ্রমণার্থীরা চেমাই থেকে রেল বা বাসে তিরুপতি বেড়িয়ে নিতে পারেন। কনডাক্টেড ট্যুরেরও ব্যবস্থা আছে চেমাই থেকে। ব্যাসালোর থেকে হায়দ্রাবাদ পৌঁছান। ট্রেন ও বাস দুই-ই চলে এপথে। 76৪6 ব্যাসালোর-কাচিগুদা এক্স ১৭-০৫এ ব্যাসালোর ছেড়ে কাচিগুদা পৌঁছায় পরদিন ৯-২০এ। দু'দিনে হায়দ্রাবাদ বেড়িয়ে অল্প ভ্রমণ সাস্ক করুন। সেকেন্দ্রাবাদ থেকে ১৯-৩০এ 7664 কাচিগুদা-মানমাদ এক্সে বওয়ানা হয়ে ব্রড গেজে পার্বনী/জালনা হয়ে পরদিন ৮-১০এ ওরঙ্গাবাদ পৌঁছান। ২০-৩০এ কাচিগুদা ছেড়ে 349 কাচিগুদা-ওরঙ্গাবাদ প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে পারলি/পার্বনী হয়ে পরের পরদিন ১৪-০৫এ। পরদিন কনডাক্টেড ট্যুরে ইলোরা ও ওরঙ্গাবাদ দেখে নিন। রেল স্টেশন থেকে ৮টায় বাস যাচ্ছে। তৃতীয় দিন সার্ভিস বাসে চলুন অজন্তা। সঙ্গের জিনিসপত্র ঝুপড়ির দোকানপাটে রেখে অজন্তা বেড়িয়ে নতুন করে বাস চেপে জলগাঁও পৌঁছে জলগাঁও থেকে কলকাতার ট্রেন চাপুন। চক্রবর্তীর টিকিটও করে নিতে পারেন এই পথ পরিক্রমায়। আর গুহাভিমুখীরা কৃষ্ণ/করমণ্ডল বা ফলকনুমা বা ইস্ট কোস্ট হাওড়ায় ফিরতে পারেন সেকেন্দ্রাবাদ থেকেই। করমণ্ডলে সংযোগকারী রিজার্ভেশন আর ফলকনুমা ও ইস্ট কোস্ট সরাসরি যাচ্ছে সেকেন্দ্রাবাদ থেকে কলকাতায়।

তবে তিনপাশ নাম্মালাই অর্থাৎ কালো পাহাড় আর চতুর্থপাশ কৃষ্ণ নদীতে ঘেরা ছিল অতীতে নাগার্জুনকোথা। বাঁধের জলে তলিয়ে যেতে খননে (১৯২৬-৩১ ও ১৯৫৪-৬২) পাওয়া স্তুপ, বিহার, চৈত্যা, মণ্ডপ, মার্বেল কার্ভিং, রোমান মুদ্রা ছাড়াও প্রত্নতত্ত্বের নানান সম্ভার নিয়ে লেকের জলে অতীতের আদলে রূপ দেওয়া হয়েছে দ্বীপাকার নাগার্জুনকোথার মিউজিয়ম। বৌদ্ধ বিহারের আদলে তৈরি মিউজিয়ম (১৯৬৬র ২তম এপ্রিল) বাড়তি সুন্দর। শ্বেত-মর্মরের বৃহৎ মূর্তিটিও মনোহর। এমনকি ১৪টি প্রাচীন সৌখের রৌদ্রকর্ণ আকর্ষণ বাড়িয়েছে দ্বীপভূমির। শুক্রবার

ছাড়া ৯-৩০—১৭-৩০টায় খোলা। ৯-০০ ও ১৩-৩০টায় লঞ্চ যাচ্ছে ১১ কিমির জলপথে ১ ঘণ্টার রাউন্ড ট্রিপে। যাতায়াত টিকিট ২৫/১৮। তেমনই নাগার্জুন সাগরের পূর্ব তীরে অনুপু গ্রামেও অ্যাক্সিথিয়েটার, হারিতি মন্দির, ২টি মঠ, ১টি মন্দির ছাড়াও পুরাতত্ত্বের নানান নিদর্শন রয়েছে।

তবে, আজকের নাগার্জুনকোণ্ডার মূল আকর্ষণ বন্যার হাত থেকে শহরকে বাঁচাতে ১৯৫৫য় শুরু করে ৭ বছর ধরে কৃষ্ণ নদীতে গড়া এর বহুমুখী বাঁধ। বৌদ্ধ বিহার থেকে ১১ কিমি দূরে ২৬টি মুইস গেটে ৬০৫ ফুট উঁচু ৪৭৫৬ ফুট দীর্ঘ কৃষ্ণ নদীর এই বাঁধের জলাধারটি ১৭৫ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত। বিশ্বের তৃতীয় বৃহত্তম এই কৃত্রিম লেকের নামও হয়েছে নাগার্জুন সাগর, আচার্যর নামে নাম। জল যাচ্ছে জলাধার থেকে ৩.৫ মিলিয়ন একর কৃষিক্ষেত্রে। আর হচ্ছে জলবিদ্যুৎ। ডাইনে জওহর ক্যানাল বিশ্বের বৃহত্তম আর বামে সুড়ঙ্গের মাঝ দিয়ে গিয়েছে আর এক বৃহত্তম লালবাহাদুর ক্যানাল। ব্যারেজ নগরী উত্তর ও দক্ষিণ বিজয়াপুরীও পর্যটকদের মুগ্ধ করে।

৩ কিমি দূরে পাইলাস—কারকার্যময় পাথরের স্তম্ভ ও নাগার্জুন সাগর মডেল দর্শনীয়। অদূরে কারকার্যমণ্ডিত প্রাচীন শিব মন্দির। আর হয়েছে শ্রীরামমন্দির নতুন করে। তেমনই ৭ কিমি দূরের পাইলন ভিউ পর্যটক থেকে ইক্ষ্বাকু রাজাদের অশ্বমেধ যজ্ঞস্থলও দেখে নেওয়া যায়। ১১ কিমি দূরে ইথিপোথালা জলপ্রপাত অর্থাৎ পাহাড়ী নদী চন্দ্রভক্সা ২২ মি নিচে আছড়ে পড়ছে। চড়ুইভাতির সুন্দর পরিবেশ। কুমির প্রকল্পও গড়ে উঠেছে।



নিয়মিত বাস সংযোগ গড়েছে হায়দ্রাবাদ, শ্রীশৈলম, গুন্টুর ও বিজয়ওয়াড়ার সাথে নাগার্জুনকোণ্ডাব। গুন্টুর হয়ে বিজয়ওয়াড়ার দূরত্ব ১৭৮ কিমি। আবার গুন্টুর থেকে ব্রডগেজে ৭-৪০ ও ১৭-৫০এর Guntur-Machaela Pgr-এ ঘণ্টা চারেকে ১২৯ কিমি দূরের ম্যাকেরলা পৌছেও ম্যাকেরলা থেকে ২২ কিমি বাসে নাগার্জুনকোণ্ডা যাওয়া চলে। সেকেন্দ্রাবাদ থেকেও ৭-০০, ৯-২০, ১২-০০, ১৬-২৫, ১৭-৩০, ১৮-০০, ২২-০০টার ট্রেনে নলগোণ্ডা হয়ে ৩১ ঘণ্টায় নাদিকুড়ী জং পৌছে ৩৫ কিমি দূরের ম্যাকেরলা গিয়ে বাসে চলা

যেতে পারে নাগার্জুনকোণ্ডা অর্থাৎ বিজয়াপুরী নর্থ। তবুও যেন হায়দ্রাবাদ থেকে ITDC বা APTTDC-র প্যাকেজ ট্যুরে (৬-৩০—২১-৩০) দেখে নেওয়া সুবিধার। আবার ট্যুরিস্ট অফিস, প্রোজেক্ট হাউস, হিল কলোনি, নাগার্জুনকোণ্ডা থেকেও লোকাল ট্যুরের ব্যবস্থা করে।

অক্টোবর থেকে জুন মাসে মেটর বোটে ১১০ কিমির লোক বিহারে শ্রীশৈলম ওয়াইল্ড লাইফ স্যাকুয়ারিতে বাঘ, প্যাংগার, নীলগাঁই, শব্বর, নেকড়ে, নানান প্রজাতির হরিণ, পাইথন, কোবরা দর্শন করে নেওয়া যেতে পারে।

তবুও যেন প্যাকেজ ট্যুরে একই দিনে দেখায় ঘাটতি থাকে। উচিতও হবে এককভাবে প্রথমদিনে বিজয়াপুরী, পাইলন, ডাম, মিউজিয়াম দেখে নর্থ বিজয়াপুরীতে অবস্থান করে দ্বিতীয় দিনে জিপ বা ট্যাক্সিতে অনুপু ও ইথিপোথালা বেড়িয়ে বিজয়াপুরী নর্থ থেকে বিজয়ওয়াড়া হয়ে ঘরপানে ফেরা।



থাকার জন্য *H Ravi Sankar, 5/1 Brodiepet, Guntur-522002, ☎ 31750, SAB ১৫০ DAB ১৭৫-২৭৫, A/c S ৩০০, D ৪৫০; *H Sudarshan, Main Rd-1, ☎ 22681, SAB ১৫০ DAB ২২৫, A/c S ৩২৫, D ৪২৫; H Vijaykrishna International, Collectorate Rd-2, ☎ 22221, DAB ২৫০ A/c L ৪০০ সুইচ ৬৫০; ছাড়াও হোটেল আছে নানান গুন্টুরে। আর বিজয়াপুরী নর্থ বাস স্ট্যান্ডে আছে Annappurna H ছাড়াও নানান সাধারণ হোটেল।

নাগার্জুনকোণ্ডায় APTTDC-র Vijoy Vihar Complex, Hill Colony, D ২২৫, A/c D ৩০০ কটেজ ৪০০; এসেরই হিল কলোনির প্রোজেক্ট হাউসে D ১২৫ ১৫০; পাইলস কলোনিতে ডামের কাছে সেতু সড়কে D ১৫০ কটেজ ২০০; Sagar Vihar, near Bus Stand, DAB ২২৫, A/c D ৪০০; সৌন্দর্য গেস্ট হাউসে D ১০০; বাস স্ট্যান্ড থেকে ৪ কিমি দূরে Nagarjun M, Vijayapuri North, D ১৭৫-২২৫; Hill Colony-র ইয়ুথ হোস্টেল-এ ডর্মি প্রাথম্য থাকা; অব্: APTTDC, Secunderabad বা Tourist Information Officer, Nagarjun Sagar Project, Vijoyapuri North, Dist-Nalgonda, A P.

আর বিজয়াপুরী সাউথে আছে—River View L, Lake View L, Cottage Complex ছাড়াও নানান। ইথিপোথালায় আছে APTTDC-র চন্দ্রভক্সা রেস্ট হাউস। তবুও থাকার পক্ষে বিজয়াপুরী নর্থ আদরগীয় হবে।

দামু দেখার আগে পড়ে নেও

পঞ্চগননের হাতি

নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায়

২০.০০



এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রীট মার্কেট • কলকাতা-৭০০ ০০৭ • ফোন ২৪১-২৩৮৬/২৪১-৪৬০৮

মহারাষ্ট্র

স্বাধীনোত্তর ভারতে ১লা মে ১৯৬০ ভারত ভিত্তিতে নতুন করে রূপ পেয়েছে মহারাষ্ট্র রাজ্য। অতীতের বোম্বাই প্রভিন্স ও গুজরাট রাজ্য দুটি পরস্পরে মিলেমিশে মারাঠি ও গুজরাটি ভাষার ভিত্তিতে এই নবীকরণ। শুধু ভৌগোলিক চেহারাতেই নয়—নামান্তরও ঘটেছে; অতীতের বোম্বাই হয়েছে আজকের মহারাষ্ট্র রাজ্য—মারাঠি শব্দ *Maharashtra* থেকেই নামান্তর। আকার তার তেজোপা, আয়তনে ভারতের তৃতীয় বৃহত্তম রাজ্য মহারাষ্ট্র। সারা পশ্চিম আরব সাগরের জলে পিঠ রেখে দাঁড়িয়ে; পূবে অন্ধ্র আর মধ্য প্রদেশ; দক্ষিণে গোয়া ও কর্ণাটক রাজ্য আর উত্তরে গুজরাট ও মধ্য প্রদেশ। মহারাষ্ট্রের ইতিহাস আজকের নয়—পৌরাণিক যুগের বিদূর্ভ রাজ্যটি ছিল আজকের এই মহারাষ্ট্র। শ্রীকৃষ্ণের ত্রী রুক্মিণী, অজের ত্রী ইন্দুমতী, নলের ত্রী দময়ন্তী—এরা সবাই ছিলেন সেদিনকার বিদূর্ভের রাজকন্যা।

মৌর্য সাম্রাজ্যের পতনের পর যাদব রাজারা রাজত্ব করে গেছেন ১২৯৪ খ্রিস্টাব্দ পর্যন্ত এই বিদূর্ভে। তারপর এর শাসনভার যায় বাহমণী বংশের মুসলিম নৃপতিদের হাতে। দীর্ঘ ২০০ বছর মুসলিম শাসনের পর মারাঠা বীর শিবাজী সজবদ্ধ করেন মারাঠীদের। দুর্গ গড়ে ৩৫০-এরও অধিক দুর্গ গিরিকন্দরে। চেয়েছিলেন তিনি সারা ভারত জুড়ে মারাঠা সাম্রাজ্য গড়ে তুলতে। প্রসারও পায় রাজ্য অক্ষিপে তাজোরে থেকে উত্তরে গোয়ালিয়রে। তাঁর সে অভিলাষ সেদিনকার মোগল সম্রাটেরও শঙ্কিত করে তোলে। ১৭৬১র পাণিপথের যুদ্ধে আফগান শাসক আইয়দ শাহ আবদালীর হাতে পর্যুস্ত মারাঠা শক্তি পরাভূত হয় ১৮১৮য় ব্রিটিশের কাছেও। ব্রিটিশের দখলে যেতে রূপ পায় বোম্বাই প্রেসিডেন্সির অংশ হয়ে। পশ্চিমঘাট পর্বতমালার মশলা বিদেশী ব্যবসায়ীদের লোলুপ দৃষ্টিতে পড়ে। তেমনই সিন্ধ, তুলো, আফিম, নানান খাত্ত যোগান দিয়েছে তিন শতক ধরে বিশ্বের দরবারে মুম্বাই। এসেছে পর্তুগিজ, এসেছে ব্রিটিশ। আজকের মহারাষ্ট্রে ব্রিটিশের কীর্তি-কলাপের নানান নির্দশন পর্যটকদের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। মুম্বাই-এর প্রগতির মূলেও ব্রিটিশের অবদান অনস্বীকার্য। আবার এই মহারাষ্ট্রেই 'ব্রিটিশ ভারত ছাড়ো' প্রস্তাব গৃহীত হয়েছিল ১৯৪২এর ৮ই আগস্ট।

বৌদ্ধ, জৈন ও হিন্দুধর্মও একসা জাগ্রত ছিল অতীতের মহারাষ্ট্রে। তার নিদর্শন মেলে বিদ্যাপর্বত ও পশ্চিমঘাট পর্বতমালার গিরিকন্দরে। ভারতের ৮০% অর্থাৎ হাজারেরও অধিক গুহামন্দির রয়েছে সারা মহারাষ্ট্রে। তৈরি এগুলো খ্রিস্টপূর্ব ২ থেকে ৯ শতকে। চালুক্য ও রাষ্ট্রকূট রাজাদের কালে সৃষ্ট সহস্রাধি পর্বতের বিশ্ময়কর গুহামন্দির বিশ্বখ্যাত

বৌদ্ধগুহা অজন্তা ও হিন্দুগুহা ইলোরা অদর্শনে ভারত ভ্রমণ অপূর্ণ থেকে যায় আজ। তেমনই দ্বাদশ জ্যোতির্লিংয়ের পাঁচটির অবস্থান মহারাষ্ট্রে। সহ্যাদ্রি জাত গোদাবরী, ভীমা, কৃষ্ণা বিধৌত দাক্ষিণাত্যের মালভূমির মহারাষ্ট্রে চাল-গম-বজ্রার সঙ্গে আখ-তুলো-তামাক পাতা হচ্ছে। ৪টি জাতীয় উদ্যান, ২৫এরও অধিক স্যাক্চুরারিও রয়েছে মহারাষ্ট্রে। এমনকি মেলঘাট ব্যাঘ্র প্রকল্পটিও মহারাষ্ট্রের বিদূর্ভে। তবুও যেন মহারাষ্ট্র আজ আমাদের কাছে সমধিক পরিচিত তার শিল্পনগরীর জন্য। তৈরিও হচ্ছে সমাজ-সংসারের প্রতিটা জিনিস বৃহত্তর মুম্বাই জুড়ে। এমনকি সিনেমা শিল্পের জন্য প্রাচ্যের হলিউডের আখ্যাও আজ মুম্বাই-এর শিরে। ভারতের অর্থেকের বেশি ফিচার ফিল্ম তৈরি হচ্ছে মুম্বাই-এর ১২টি স্টুডিওতে। বছরে ২০০ ফিল্ম তৈরি করে বিশ্বের সর্বধিক ফিল্ম উৎপাদক নগরীও এই মুম্বাই। সিনেমা হল-ও চলতে-ফিরতে সারা শহরে নানান। সিনেমার সাথে থিয়েটার শিল্পেও মুম্বাই যথেষ্ট খ্যাত। মারাঠি-গুজরাটি-হিন্দী তিন ভাষাতেই থিয়েটার হচ্ছে—হোমি ভাবা অডিটোরিয়াম, কোলাবা; এক্সপেরিমেন্টাল থিয়েটার, নরিমান পয়েন্ট; ন্যাশানাল সেন্টার, নরিমান পয়েন্ট; নেহরু অডিটোরিয়াম, ওরলি; বিড়লা মথুরী, ম্যারিন লাইনস; পটেকর হল; শোফিয়া ছাড়াও নানান। ভারতীয় বাণিজ্যের প্রায় আধা লেনদেন হচ্ছে মুম্বাই বন্দর থেকে। ঠিক তেমনই ভারতের ব্যস্ততম বিমানবন্দর এমনকি রেল স্টেশনটিও মুম্বাইয়ে। ১৯৯৩-এর সেই ভয়াবহ বারুদের গন্ধ মিলিয়ে গেছে আরব সাগরের নোনা বাতাসে। তেমনই ১৯৯৩-এর ৩০শে সেপ্টেম্বরের বিধ্বংসী ভূমিকম্পে কর্ণাটক সংলগ্ন মহারাষ্ট্রের (লাতুর) ব্যাপক ক্ষয়ক্ষতির সঙ্গে বিপুল জীবনহানি ত্রাসের সঞ্চার করেছে নতুন করে।

মুম্বাই (বোম্বাই)

অতীতের বোম্বাই নতুন করে আজ হয়েছে মুম্বাই। কোলাবা, ফোর্ট, বাইকুলা, প্যারেল, ওরলি, মাছুঙ্গা আর মহিম এই ৭টি দ্বীপ নিয়ে গড়ে উঠেছে ৫ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত বৃহত্তর মুম্বাই শহর। তবে, আজ তাদের পৃথক সত্তা মিলেমিশে একাকার হয়ে উপদ্বীপে রূপ পেয়েছে। অতীতে ছিল কোলিস ধীবরদের বাস। তাদেরই ইস্টসেবত মুম্বা আই বা মুম্বা জম্মা থেকে নাম এসেছে বোম্বাই। দ্বিমতে, ১৭ শতকে সাহেবদের মুখে পর্তুগিজ ভাষা *Buon Bahia* অর্থাৎ ভাল সাগরই নাকি বোম্বাই-এ রূপান্তরিত। তবে, ১৫৩৮ এ *Jao de Castro*-র লেখায় *Boa Vida* অর্থাৎ ভাল জীবনমান বলে উদ্বেগ মেলে। আর ১৬২৬এ *John Vlau* প্রথম উদ্বেগ

করলেন ধীপের নাম বোম্বাই বলে। *London of the East* নামে আখ্যায়িতও করে ব্রিটিশ সেকালের সুন্দরী বোম্বাইকে। তারও আগের কথা, খ্রিস্ট জন্মেরও আগে (273-232 BC) আজকের মুম্বাই ছিল মৌর্য সাম্রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত। টলেমির লেখায় হেস্টানেশিয়া অর্থাৎ সাত ধীপের দেশ নামে উল্লেখিত হয়েছে মুম্বাই। ১৩৪৮এ মুসলিম হানায় হিন্দু রাজার রাজত্ব যায়। আর, পর্তুগালের রাজার দখলে আসে ১৫৩৪ খ্রিস্টাব্দের ২৩শে ডিসেম্বর। ভাসাই সন্ধির চুক্তিমত গুজরাটের সুলতান বাহাদুর শাহ মুম্বাইকে নজরানা দিয়ে বশ্যতা স্বীকার করেন। ১৫৪৯এ ড. পার্সিয়া ওরতা মাত্র ৫৩৭ টাকায় কিনে নেন সেদিনের মুম্বাইকে। আর ১৬২৫এ ডাচরা দখল করে মুম্বাই। লুটের মালেই খুশি হয়ে ফিরে যায় তারা। ১৬৬১ খ্রিস্টাব্দের ২৩শে জুন ক্যাথারিনকে বিবাহসূত্রে মুম্বাইকে ডাউরি রূপে পেলেন পর্তুগালের রাজার কাছ থেকে ব্রিটিশরাজ দ্বিতীয় চার্লস।

When you are in Mumbai
Rail Enquiry :
 General Enquiry ☎ A 131/D 132.
 Mumbai C S T ☎ 2043535.
 Mumbai Central ☎ 4933535.
 Mumbai Church Gate ☎ 2031952.
 Dadar ☎ 4224161.
 Booking: Rail (8—13-00, 13-30—20-00 hrs).
Air Enquiry :
 Air India Building, Nariman Point-21,
 Air India ☎ 2023747.
 Indian Airlines ☎ 2023131/R 141, A 142 D 143.
 Airport ☎ 6112850/140
 Jet Airways ☎ 6102772.
 Sahara India ☎ 2832369.
 Modiluft ☎ 3635085.
 Maharashtra State Road Transport Corp'n (MSRTC),
 opp Mumbai Central Rail Sin ☎ 374272.
 Maharashtra Tourism Development Corp'n Ltd.
 Express Towers, 9th Floor, Nariman Point.
 Mumbai-400 021, ☎ 2024482.
 MTDC, Tour Division, opp LIC Building, Madame
 Cama Rd, Nariman Point. ☎ 2026713/2027762.
Maharashtra Tourism :
 Santacruz Airport Terminal I-A, ☎ 6114788
 CST Railway Station ☎ 2622859
 Gateway of India ☎ 241877
 ITDC, Nirmal Building, 11th Floor, Nariman Point
 ☎ 2023342/2027762.
 Govt of India Tourist Office,
 123 Maharshi Karve Rd, opp Churchgate Rly Stn.
 Mumbai-20 (8-30—18-00 hrs, ছুটির দিনে ৮-৩০—১৩-
 ৩০, রবিবার বন্ধ), ☎ 293144-45.
 Domestic Airport ☎ 6149200 (Ext 278)/140.
 International Airport ☎ 6325331 (Ext 253).
IAC City Booking :
 Juhu Centaur ☎ 6147461.
 Kala Ghoda ☎ 2023031/141.
 Foreigners' Regional Registration Office, opp Crawford
 Market ☎ 4150446.
Shipping Corporation of India,
Shipping House, Madame Cama Rd, ☎ 2026666.

১৬৬৫তে ৭টি ধীপেরই দখল নেয় ব্রিটিশরাজ। আর ১৬৬৮তে ব্রিটিশরাজ ৬২ বছরের ইজারা দেয় বাৎসরিক ১০ পাউন্ডের বিনিময়ে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানিকে মুম্বাই। শুরু হয় মুম্বাই-এর প্রগতি ব্রিটিশ অর্থাৎ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির হাতে। থানে ঝাড়িতে সেতু গড়ে মূল ভূখণ্ডের সঙ্গে সংযোগ গড়ে তোলা হল ধীপপুঞ্জের। গড়ে ওঠে বন্দর। আর ১৬৭০এ পার্সিরা এসে বসতি গড়ে মুম্বাইয়ে। মুম্বাই-এর প্রগতিতে পার্সিদের অবদানও উল্লেখ্য। ১৬৮৭তে সুরাট থেকে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির প্রেসিডেন্সি স্থানান্তরিত হয় মুম্বাইয়ে। আর, ১৭০৮এ পশ্চিম উপকূলের মূল বাণিজ্য দপ্তর বসে মুম্বাইয়ে।

মহারাষ্ট্র □ রাজধানী: মুম্বাই (বোম্বাই)। আয়তন: ৩০৭৬৯০ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৭৮৭০৬৭১৯। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৯.৩২%। পুরুষ: ৪০৬২২০৫৬। নারী: ৩৮০৫৪৬৬৩। ১৯৮১-৯১-এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ১৫৯২২৫৪৮। বৃদ্ধির হার: ২৫.৩৬%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২৫৬। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৩৬। সাক্ষরের হার: ৬৩.১০%। প্রধান ভাষা: মারাঠি, ইংরেজি, হিন্দী ও গুজরাটের ৮ল আছে মহারাষ্ট্রে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৬৮৪.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। অজন্তা ১ ইলোরা ১ মুম্বাই ২ গোয়া ৩ পুনে ১ মহাবালেশ্বর ১ লোনাভালা-কারলা-ভাজ-খান্দালা ১ নাসিক-সির্খি ২ পথ চলায় ৩ দিন অর্থাৎ ১৫ দিনে মহারাষ্ট্র ও গোয়া বেড়িয়ে নিন। বেড়াবার মনোরম সময়: নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাস। ঋতুর মেলায় শীতের দাপট নেই মুম্বাই তথা মহারাষ্ট্রে। আর সারা বছর ধরে পর্যটক সমাগম ঘটলেও জুলাই-আগস্টের বৃষ্টি এড়িয়ে যাওয়াই উচিত হবে। ঠিক তেমনই উচিত হবে মার্চ থেকে জুনের গরম এড়িয়ে মুম্বাই যাওয়া। আয়তন ও জনসংখ্যায় ভারতে তৃতীয় বৃহত্তম রাজ্য মহারাষ্ট্র।

১৮ শতক অশীর্বাদ হয়ে আসে মুম্বাই-এর ভালে। শিরে বিলব ঘটায় মুম্বাই। প্রথম ভারতীয় রেল চলতে শুরু করে ১৮৫৩র মুম্বাইয়ে। প্রথম কন্টন মিলটিও গড়ে ওঠে ১৮৫৩র। ১৮৫৭র ভারতীয় স্বাধীনতা সংগ্রামে শক্তিত ব্রিটিশরাজ নিরাপত্তা বোধ করে মুম্বাইয়ে। এমনকি আমেরিকার গৃহবিবাসে মুম্বাই বন্দরের তুলো বিধের বাজারে আদরণীয় হয়ে পড়ে। অবশেষে ১৮৬২তে সাগর বুজিয়ে ডাঙা আগিয়ে

সাত দ্বীপকে একীকরণ করার পরিকল্পনা গ্রহণ করে ব্রিটিশরাজ। মুম্বাই-এর অতীত কাহিনী যেমন মজার তেমনি রোমাঞ্চকর। তবে, আজকের মুম্বাই ইতিহাসের সে অধ্যায় আরব সাগরের জলে ভাসিয়ে নতুন করে রূপ নিচ্ছে নিত্য-নতুন সাজে।

মুম্বাই-এর বৈচিত্র্য তার চোখধাঁধানো, চমক লাগানো আকাশচুম্বী বাড়ি—গড়ে উঠেছে আরব সাগরের জল সরিয়ে। ক্রমেই সাগর বৃদ্ধি আর শহর বাড়ছে। ভারতের সেরা শহরের খেতাব আজ মুম্বাই-এর শিরে। শুধু ভারতই-বা কেন, আধুনিক শহররূপে বিশ্বে মুম্বাই-এর স্থান ষষ্ঠ। ভারতীয় বিশেষী বাণিজ্যের ৪৬% লেনদেন হয় মুম্বাই থেকে। মুম্বাই-এর রাজপথগুলিও খুবই মসৃণ। যানবাহন ব্যবস্থা অতীব সুন্দর। জীবনযাত্রার মান যেমন উন্নত, তেমনই ব্যয়-বহুল। বৃহত্তর মুম্বাই জুড়ে ট্রেন চলাচল ব্যবস্থাও অতি সুন্দর। শহরের কেন্দ্রস্থলে ছত্রপতি শিবাজী টারমিনাস ও চার্চগেট; আর নামে সেন্ট্রাল হলেও শহর থেকে দূরে মুম্বাই সেন্ট্রাল—ক্রিম্বী তিন রেল স্টেশন ঘিরে রেখেছে শহরকে। পুরো বৃহত্তর মুম্বাই শহর ঘিরে মাকড়সার জালের মতো সার্ভিস গড়েছে বৈদ্যুতিক ট্রেন আর BEST (Bombay Electric Supply & Transport) মার্কা সরকারি বাস। আর চলছে CBD বাস সেন্ট্রাল বিজিনেস ডিসট্রিক্ট এলাকায়। মিটার লাগানো হলুদ মাথার ট্যাক্সিও মেলে হাত তুলতেই। অটো, রিকশাও চলছে সিটি সেন্টার ছাড়িয়ে। স্বচ্ছন্দে বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাস আর ট্রেনে বৃহত্তর মুম্বাই শহর। ১৯৮৬র ২৬শে জানুয়ারি বোম্বে অর্থাৎ বোম্বাই নামান্তরিত হয়ে মুম্বাই হয়েছে।

মুম্বাই-এর আবহাওয়াও বৈচিত্র্যে ভরা। ঋতুর মেলায় শীতকাল নেই বললেই চলে। সর্বনিম্ন তাপমান ২৪° সে; হাফা উলেনই যথেষ্ট শীতের দিনগুলিতে। তবে, জুন থেকে সেপ্টেম্বরের বর্ষায় হাফা উলেন দরকার হয়ে পড়ে কখন-সখন। বৃষ্টির গড় ৮৫"। গ্রীষ্ম—মার্চ থেকে মে ও অক্টোবর মাস। তাই মুম্বাই বেড়াবার পক্ষে নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাস মনোরম। সদাই বয় মনোরম বাতাস, দিনের তাপমান আরামপ্রদ; রাতে শীতের পরশ মেলে। আগস্ট (সেপ্টেম্বরে ১০ দিন ব্যাপী গণেশ চতুর্থী উৎসবেরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। শেষদিন মিছিল করে ভাসান হয় দেবতা আরব সাগরে। এছাড়াও শ্রীকৃষ্ণের জন্মতিথি (গোকুলটিমী, দশেরা, দীপাবলী ও মুসলিম পরব মহরমও পালিত হয়ে সাড়শ্বরে।



সারা বিশ্বের সাথে আকাশী উড়ান সরাসরি সংযোগ গড়েছে মুম্বাই-এর। নরিমান পয়েন্ট থেকে ৩০ কিমি দূরে Sahar International Airport. এয়ার ইন্ডিয়ান বিমান ৩৬টি দেশে পাড়ি সিঁছে মুম্বাই থেকে। এছাড়া বিশেষী বিমানও নিয়মিত আসা-যাওয়া করে মুম্বাই-এ। আর ২৬ কিমি দূরের সান্তকুম্ভ থেকে IAC-র বিমান ভারতের প্রায় প্রতিটি শহরের সঙ্গে নিয়মিত সংযোগ গড়েছে মুম্বাই-এর। সরাসরি সার্ভিসে (৫ ফ্লাইট) ২ ফ্লটায় দিল্লী + ২ ৪ ৬ ৭ দিন ১৭-২০এ মুম্বাই ছেড়ে যোদ্ধাপুর হয়ে দিল্লী যাচ্ছে; কলকাতা (২ ফ্লাইট)

২১ শ সরাসরি + ১ ৩ ৫ দিন ১৬-২০এ ছেড়ে আমেদাবাদ, জয়পুর হয়ে কলকাতায় যাচ্ছে; গোয়া (১ ফ্লাইট) ১ শ; ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে (৩ ফ্লাইট) ১ শ; উরসাবাদ (১ ফ্লাইট) ১ শ; হায়দ্রাবাদ (৩ ফ্লাইট) ১ শ; জয়পুর যাচ্ছে ১ ৩ ৫ দিন ১৬-২০এ ছেড়ে আমেদাবাদ হয়ে ১৯-১০এ, ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১৮-৪০এ ছেড়ে উদয়পুর হয়ে ২১-০৫এ, ২ ৪ ৬ দিন ১৭-৩০এ ছেড়ে উরসাবাদ, উদয়পুর হয়ে ২১-০৫এ; নাগপুর (২ ফ্লাইট) ১ শ; চেন্নাই (২ ফ্লাইট) ১ শ; উদয়পুর (১ ফ্লাইট) ১ শ; ম্যাঙ্গালোর (১ ফ্লাইট) ১ শ; আমেদাবাদ (৩ ফ্লাইট) ১ শ; ভাদোদরা (১ ফ্লাইট) ১ শ; কোচি (১ ফ্লাইট) ১ শ; ছাড়াও দৈনিক সার্ভিসে IAC-র উড়ান যাচ্ছে কালিকট, কোয়েম্বাটুর, তিরুভনন্তপুরম; ২ ৪ ৬ দিন ১০-১০এ ছেড়ে আমেদাবাদ, অমৃতসর হয়ে ১৪-৩৫এ চতীগড়; ১ ২ ৪ ৬ দিন ভাবনগর; ২ ৪ ৬ ৭ দিন জামনগর; প্রতিদিন ৬-৩০এ ছেড়ে ইন্দোর, ভূপাল হয়ে গোয়ালিয়র যাচ্ছে ৯-৫৫য়; ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১০-০০টায় মুম্বাই ছেড়ে রাজকোট যাচ্ছে ১০-৫০এ; ৩ ৭ দিন ১১-০০টায় ছেড়ে পুত্রা পুত্রি যাচ্ছে ১২-২০এ; ১ ৩ দিন ৮-৪৫এ ছেড়ে ব্যারানসী হয়ে ১২-৩০এ লক্ষ্ণৌ; ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১৩-১০এ ছেড়ে ১ ঘটায় ভূজ; ১ ৩ ৫ দিন ১২-১৫য় ছেড়ে বিশাখাপতনম হয়ে ভুবনেশ্বর যাচ্ছে ১৫-২০এ; ১ ৩ ৫ ৭ দিন ১৬-০০টায় মুম্বাই ছেড়ে মাদুরাই যাচ্ছে ১৭-৪৫এ।

অফিস বসেছে:—Air India, Air India Building, Nariman Point, Mumbai-400021. ☎ 2024142. একই বাড়িতে—Indian Air Lines Corporation, ☎ 141/142/2023131; Vayudoot, ☎ 2048585. ভোর ৩-০০ থেকে রাত ২৩-০০টায় প্রতি আধ ঘণ্টা অন্তর এয়ারপোর্ট থেকে বাস যাচ্ছে শহরে। আর মেলে ট্যাক্সি বিমানবন্দর থেকে শহরে মেতে।

নানান প্রাইভেট বিমান সংস্থাও সার্ভিস গড়েছে মুম্বাই থেকে ভারতের নানান শহরের। Jet Airways-এর বিমান যাচ্ছে দৈনিক সার্ভিসে—মুম্বাই-কলকাতা-গুয়াহাটি, মুম্বাই-দিল্লী (২ ফ্লাইট), মুম্বাই-পুনে, মুম্বাই-আমেদাবাদ; Skyline NEPC Airlines ☎ 6102525-39 প্রতিদিন ভাদোদরা হয়ে আমেদাবাদ, পুনে যাচ্ছে (২ ফ্লাইট), কলকাতা (২ ফ্লাইট) ২ শ; ইন্দোর (২ ফ্লাইট) ১ শ; ব্যাঙ্গালোর (২ ফ্লাইট) ১ শ; রাজকোট (১ ফ্লাইট) ১ শ; চেন্নাই (১ ফ্লাইট) ১ শ; ম্যাঙ্গালোর (১ ফ্লাইট) ১ শ; উরসাবাদ (১ ফ্লাইট) ১ শ, গোয়া (১ ফ্লাইট) ১ শ, ১ ৩ ৫ দিন বাগডোগরা, ৩ ৫ ৭ দিন হায়দ্রাবাদ-ভাইজাগ, ৩ ৫ দিন ভাবনগর, ৩ ৫ ৬ দিন জামনগর, ২ ৭ দিন কোশাদ-পোরবন্দর, ১ ৪ দিন কাম্বালা। Damania Airways ☎ 6102525-39 প্রতিদিন কলকাতা (২ ফ্লাইট) ২ শ; ব্যাঙ্গালোর (২ ফ্লাইট) ১ শ; দিল্লী যাচ্ছে আমেদাবাদ হয়ে প্রতিদিন, ১ ৩ ৪ ৫ ৬ ৭ দিন কলকাতা-গুয়াহাটি-ডিব্রুগড়, গোয়া ১ শ, ১ ৩ ৫ ৭ দিন আমেদাবাদ-জয়পুর, পুনে ১ শ, ইন্দোর ১ শ; ২ ৪ ৬ দিন ব্যাঙ্গালোর-চেন্নাই, ১ ৩ ৪ ৬ ৭ দিন চেন্নাই ১ শ ঘটায়। East West Airlines ☎ 6441880 প্রতিদিন—ব্যাঙ্গালোর, কালিকট, কোচি, দিল্লী, চেন্নাই, মাদুরাই হয়ে তিরুভনন্তপুরম, ম্যাঙ্গালোর, হায়দ্রাবাদ হয়ে ভাইজাগ; ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন আমেদাবাদ, ১ ৩ ৫ ৭ দিন উরসাবাদ, ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন কোয়েম্বাটুর, ২ ৪ ৬ ৭ দিন গোয়া, ২ ৪ ৬ ৭ দিন পুনে, ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন নাগপুর ছাড়াও নানান সার্ভিস গড়েছে। Sahara India ☎ 2832369; City Link Service-এর বিমানও সার্ভিস গড়েছে মুম্বাই থেকে। ফেব্রুও এরা নিয়মিত একইভাবে।



রেলপথেও মুম্বাই ভারতের নানান প্রান্তের সঙ্গে যুক্ত। ওয়েস্টার্ন ও সেন্ট্রাল রেলওয়ের সদর দপ্তর বসেছে মুম্বাই-এ। ১৫৮৮ কিমি দূরের দিল্লী যাচ্ছে ১৭১—৪৩ ঘণ্টায়; ১২৭৯ কিমি দূরের চেন্নাই যাচ্ছে ২৬২—৩০১ ঘণ্টায়; ৪৯২ কিমি দূরের আমোদাবাদ যাচ্ছে ৮—৯১ ঘণ্টায়; ৭৬৯ কিমি দূরের ভাঙ্কো যাচ্ছে ২৪ ঘণ্টায়; ৮০০ কিমি দূরের সেকেন্দ্রাবাদ যাচ্ছে ১৫ ঘণ্টায় (মিনার এক্স); ১২১০ কিমি দূরের ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ২৪ ঘণ্টায়।

| মুম্বাই থেকে ট্রেন যাচ্ছে | মুম্বাই থেকে সড়ক দূরত্ব |
|---------------------------------------|--------------------------|
| আমোদাবাদ ৯-০০ ঘণ্টায় | গুজরাবাদ ৩৮৮ কিমি |
| গুজরাবাদ ১০-০৫ " | ইলোরা ৪০৫ " |
| পুনে ৩-২৫ " | অমৃতসর ৪৮৭ " |
| ভাঙ্কো-ভা-গামা ২৪-২০ " | নাসিক ১৮৮ " |
| হায়দ্রাবাদ ১৪-১০ " | সিঁরি ২৭৮ " |
| ভূপাল ১৪-৩০ " | মথেরন ১০৪ " |
| ইন্দোর ১৫-৩০ " | কারলা ১১৪ " |
| দিল্লী ১৭-১৫ " | পুনে ১৭০ " |
| চেন্নাই ২৬-৩০ " | মাহাড় ১৭৭ " |
| কলকাতা ৩২-১৫ " | মহাবালেশ্বর ২৩৮ " |
| স্যাটেলাইটে সংযোগ গড়ে ওঠায় | কোলহাপুর ৩৯৪ " |
| কম্পিউটারাইজড প্রণয় দিল্লী, | থানে ৩৯ " |
| চেন্নাই, কলকাতা থেকে সরাসরি | বাসেইন ৭৭ " |
| বুঁকি করা যেতে পারে মুম্বাই | হরিহরেশ্বর ২১০ " |
| থেকে ছাড়া যে-কোনও ট্রেনের। | রত্নগিরি ৩৫৫ " |
| ট্রেন যাচ্ছে মুম্বাই সেন্ট্রাল স্টেশন | গণপতিপুলে ৩৭৪ " |
| থেকে দমন (বাণী), সুরাট, | পারলি ৪৯৫ " |
| আমোদাবাদ, ওখা, গান্ধীঘাম, | বৈজনাথ ৪৯৫ " |
| পোরবন্দর, আজমের, জয়পুর | সিন্ধুপুর্গ ৫৩২ " |
| তথা সারা পশ্চিম ভারতে। আর | পানাজি ৫৯৩ " |
| মুম্বাই CST থেকে ট্রেন যাচ্ছে | ভীমাশঙ্কর ২৬৫ " |
| পুনে, গোয়া, চেন্নাই, কোচি, | মালসেজ ঘাট ১৫৪ " |
| ম্যাঙ্গালোর, ব্যাঙ্গালোর, ভূপাল, | আর্যুধ-নাগনাথ ৫৭৯ " |
| তিরুভনন্তপুরম, নিউ দিল্লী, | অমরাবতী ৭১০ " |
| হাওড়া ছাড়াও উত্তর-পূর্ব-বঙ্গ। | ওয়ার্ধা ৮২২ " |
| ভারতের নানান দিকে। কাকি, | নাগপুর ৮৫৫ " |
| দাদার, কারলা থেকেও ট্রেন | তারোবা ১০০৫ " |
| যাচ্ছে নানান। | |

কলকাতা থেকে দ্রুততম ট্রেন ২৪৬০ গীতাঞ্জলি এক্স ১২-২৫এ হাওড়া ছেড়ে পরদিন ২১-৪০এ মুম্বাই সি এস টি পৌছায়। এছাড়া ৪০০২ মুম্বাই মেল ১৯-২০, ৪০৩০ কারলা এক্স ১০-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে নাগপুর হয়ে মুম্বাই সি এস টি যাচ্ছে ৩য় সকাল ৭-৩০ আর কারলা এক্স সি এস টি-র ১৬ কিমি আগের কারলা পৌছায় ৬-০০টায়। আর ৩০০৩ মুম্বাই মেল ২০-০০টায় হাওড়া ছেড়ে গুয়া/এলাহাবাদ/সাতনা/ইটারসি/ভূসমাল হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে ৩য় দিন ১১-৩৫এ। তবে, কলকাতার যাত্রীদের নাগপুর হয়ে চলার সুবিধা, সমগ্র ও ভাড়ার সাশ্রয় মেলে। মুম্বাই থেকে হাওড়ায় ফেরে ৬-০০টায় গীতাঞ্জলি এক্স, ২০-১৫য় কলকাতা মেল, ২১-৫০এ কারলা-হাওড়া এক্স ও ২১-১০এ ৩০০৪ মুম্বাই-হাওড়া মেল। আর

প্রতি রবিবার ১০৩০ আজাদ হিঙ্গ এক্স যাচ্ছে ১৫-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে নাগপুর, ভূসমাল, মনমদ হয়ে ৩৭ ঘণ্টায় পুনে।

দিল্লী যাচ্ছে মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে ভাদোদরা/রাতিলাম/কোটা/সওয়াই মাধোপুর হয়ে সোম ছাড়া প্রতিদিন মুম্বাই রাজধানী এক্স, বুধবার ছাড়া প্রতিদিন অগাস্ট ক্রান্তি রাজধানী এক্স, মুম্বাই-অমৃতসর পশ্চিম এক্স, মুম্বাই-অমৃতসর হুটিয়ার মেল, গোভিন্দ টেম্পল, দাদার-অমৃতসর এক্স; মুম্বাই-জম্মু তাওয়ারি এক্স, ১৪ ৫ ৭ দিন মুম্বাই-জম্মু স্বরাজ এক্স, মুম্বাই-মেরাদুন এক্স, মুম্বাই-ফিরোজপুর জনতা এক্স; ব্রডগেজে ভাদোদরা-নাগদা-সওয়াই মাধোপুর হয়ে মুম্বাই-জয়পুর এক্স; বাম্পা-ইন্দোর অবন্তিকা এক্স, আর CST থেকে জলগাঁও/ইটারসি/ভূপাল/আগ্রা কাণ্ট হয়ে যাচ্ছে মুম্বাই-ফিরোজপুর পাঞ্জাব মেল, দাদার-অমৃতসর এক্স। রাজধানী এক্স এদের মধ্যে দ্রুততম ট্রেন।

ট্রেন যাচ্ছে ১৭-০০টায় মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে সুরাট/ভাদোদরা/আমোদাবাদ/ভিরামগাম হয়ে ব্রডগেজে ১৫ ঘণ্টায় মুম্বাই-গান্ধীঘাম-কছ এক্স, জামনগর যাচ্ছে ১৬-২৫এ বাম্পা ছেড়ে সৌরাষ্ট্র জনতা এক্স, ২০-২৫এ ছেড়ে জামনগর হয়ে ১৭১ ঘণ্টায় ওখা যাচ্ছে সৌরাষ্ট্র মেল, ৭-৪৫এ ছেড়ে ২৩ ঘণ্টায় পোরবন্দর যাচ্ছে সৌরাষ্ট্র এক্স; আমোদাবাদ যাচ্ছে ৩য় ছাড়া প্রতিদিন ৬-২৫এ ছেড়ে ৭ ঘণ্টায় ২০০৭ শতাব্দী এক্স, ২১-৫০এ ছেড়ে ৮১ ঘণ্টায় ২৯০১ গুজরাট মেল, ৫-৪৫এ ছেড়ে ৯১ ঘণ্টায় ৯০১১ গুজরাট এক্স, ১৯-৩৫এ ছেড়ে ৯১ ঘণ্টায় ৯০১৭ মুম্বাই-আমোদাবাদ জনতা এক্স, বুধ ছাড়া প্রতিদিন ১০-৪০এ ছেড়ে ৭১ ঘণ্টায় ২৯৩৩ মুম্বাই-আমোদাবাদ কর্ণবতী এক্স, ৪-০৫এ ভাদোদরা ছেড়ে ৬ ঘণ্টায় আমোদাবাদ যাচ্ছে ৯১০৭ গুজরাট কুইন; ভাদোদরা যাচ্ছে ৬ ঘণ্টায় ২৩-৩০এ ২৯২৭ ভাদোদরা এক্স, ১৪-৫০এ বাম্পা ছেড়ে ৯০৫৫ সমাজী নগরী এক্স; ১৭-৫৫য় মুম্বাই ছেড়ে ৪১ ঘণ্টায় সুরাট যাচ্ছে ৯০২১ ফ্লাইং রানী ও ভাদোদরা/আমোদাবাদের প্রতিটা ট্রেন। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ৮-১০এ মুম্বাই সি এস টি ছেড়ে ভূসমাল-ভূপাল-রাণী-কানপুর হয়ে ২৫১ ঘণ্টায় লক্শ্মী যাচ্ছে পুশ্পক এক্স, ২২-৩০এ সি এস টি ছেড়ে কানপুর-লক্শ্মী-বস্তি হয়ে ৩৪ ঘণ্টায় গোরকপুর যাচ্ছে কুশীনগর এক্স। ৬-৪০এ দাদার ছেড়ে নাসিক-জলগাঁও-ইটারসি-এলাহাবাদ-বারাণসী হয়ে ৩৭ ঘণ্টায় গোরকপুর যাচ্ছে দাদার-গোরকপুর এক্স; ১৩ ৪ দিন ৫-২০এ কারলা ছেড়ে এলাহাবাদ হয়ে ২৬১ ঘণ্টায় বারাণসী যাচ্ছে কারলা-বারাণসী এক্স, ২ ৫ দিন কারলা-এলাহাবাদ এক্স, শনিবার কারলা-ফৈজাবাদ এক্স; ৩ ৬ দিন ৭-৫৫য় দাদার ছেড়ে ভূসমাল-সাতনা হয়ে দাদার-সওয়াইটি এক্স, ২ ৪ ৫ দিন ৭-৫৫য় দাদার-ভাগলপুর এক্স; ২৩-৫৫য় সি এস টি ছেড়ে মনমদ-ভূসমাল-ইটারসি-এলাহাবাদ হয়ে ২৮ ঘণ্টায় বারাণসী যাচ্ছে মহানগরী এক্স, ২১-১০এ কারলা ছেড়ে ৩৫১ ঘণ্টায় পাটনা যাচ্ছে কারলা-পাটনা এক্স, ২ ৭ দিন কারলা-হারদোয়া এক্স, ১ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন কারলা-মজফেরপুর এক্স, ২০-২০এ কারলা ছেড়ে কোয়েম্বাটুর হয়ে ১২১ ঘণ্টায় স্ফীয়ারলোর যাচ্ছে নেত্রবতী এক্স, ১ ৩ ৫ দিন সালেম-মাদুরাই হয়ে নাগেরকবেল যাচ্ছে কারলা-নাগেরকবেল এক্স, রবিবার যাচ্ছে কারলা-তিরুভনন্তপুরম এক্স; ১৫-৩৫এ সি এস টি ছেড়ে পুনে-কোয়েম্বাটুর-ইলুন-তিরুভনন্তপুরম হয়ে ৪৭ ঘণ্টায় কন্যাঙ্কুমারী যাচ্ছে ১০৪১ কন্যাঙ্কুমারী এক্স; নেত্রবতীর অংশ যাচ্ছে সোরানুরে পৃথক হয়ে এর্নাঙ্কুমার; ৭-৫৫য় মুম্বাই সি এস টি ছেড়ে পুনে-সোলাপুর-ওয়ালি-গুন্টাকল হয়ে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ৫১২৭ উদ্যান

এক্স, ২২-২০এ কারলা ছেড়ে 1013 কারলা-ব্যাঙ্গালোর এক্স, 1 3 5 দিন কারলা-নাগেরকয়েল এক্স, রবিবার কারলা-তিরুভনন্তপুরম এক্স যাচ্ছে ব্যাঙ্গালোর থেকে ১০ কিমি দূরের কুকারাঙ্গাপুরম হয়ে; 1 2 5 6 দিন ৮-০০টায় সি এস টি ছেড়ে পুনে-মিরাজ-লোণা-হবলি হয়ে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে 1018 কারলা-ব্যাঙ্গালোর-মুখাই এক্স। চেন্নাই স্টেশনাল যাচ্ছে সি এস টি থেকে ১৪-০০টায় 6011 মুখাই-চেন্নাই এক্স, ২৩-২০এ 6009 মুখাই-চেন্নাই মেল, ১৯-৪৫এ দাগার ছেড়ে 1063 দাগার-চেন্নাই এক্স।

৮-৪৫এ 7307 কয়না এক্স, ১৭-৪৫এ 7303 সন্থাপ্রি এক্স, ২০-২৫এ মহালক্ষ্মী এক্স সি এস টি ছেড়ে পুনে-মিরাজ হয়ে কোলহাপুর যাচ্ছে। মিরাজ থেকে ২৩-০৫এ হজরৎ নিজামুদ্দিন-ভাকো 2780 গোয়া এক্স ৮½ ঘটায় ভাকো পৌঁছে বাসে পানাজি। আবার 2367 দিন 1017 মুখাই-ব্যাঙ্গালোর এক্সে ১৪ ঘটায় লোভা পৌঁছেও বাসে চলা যেতে পারে পানাজি। হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ১২-৩৫এ সি এস টি ছেড়ে 7031 মুখাই-হায়দ্রাবাদ এক্স, ২১-৫৫য় 7001 হুসেনসাগর এক্স; সেকেন্দ্রাবাদ যাচ্ছে 1019 মুখাই-তুবাশখর কোনার্ক এক্স। পুনে যাচ্ছে ৬-৪০এ সি এস টি ছেড়ে ৪½ ঘটায় 2027 শতাব্দী এক্স, ৫-৪৫এ 1021 ইল্লানী এক্স, ৬-৩৫এ 1007 ডেকান এক্স, ১৪-৩৫এ 1009 সিংহগড় এক্স, ১৬-২০এ 1025 প্রগতি এক্স, ১৭-১০এ 2123 ডেকান কুইন ছাড়াও দূরান্তের নানান ট্রেন। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ভারতের দিকে দিকে মুখাই থেকে। শহরতলির চার্জগেট, দাগার, বাস্ত্রা ও কারলা স্টেশন থেকেও ছাড়ে কোনো কোনো ট্রেন মুখাই-এর।

৫ ঘটায় নাসিক পৌঁছে মনমদ যাচ্ছে নানান ট্রেন। তবুও যেন ১৮-৪৫এ মুখাই CST-মনমদ 1401 পঞ্চবটী এক্স যাত্রায়েতে আদরগায় হবে। নাসিক-মনমদ হয়ে ৭ ঘটায় ঔরঙ্গাবাদ পৌঁছে নানডেড যাচ্ছে CST থেকে ৬-১০এ মুখাই-নানডেড 7617 তপোবন এক্স, ২১-২০এ মুখাই-নানডেড 1003 দেবগিরি এক্স। আর মনমদ থেকে ১৪-২০এ ছেড়ে ২½ ঘটায় ঔরঙ্গাবাদ পৌঁছে মুদখেড যাচ্ছে 7587 মনমদ-মুদখেড এক্স। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ৩-০০টায় দেবগিরি, ১১-৪০এ তপোবন, 2 4 6 দিন ১০-৩০এ অমৃতসর-নানডেড এক্স মনমদ থেকে ঔরঙ্গাবাদ হয়ে নানডেড। ৩ ঘটায় ঔরঙ্গাবাদ পৌঁছে পূর্ণা যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন ১-০৫, ১৪-৩০, ১৮-২০এ মনমদ থেকে।

তবে, লোভা থেকে ভাকো রেল ব্রডগেজে রূপান্তরিত হতে গিয়ে ট্রেন সার্ভিস ভীষণভাবে বিঘ্নিত আজ্ঞাও। বৃষ্টি শীঘ্রই কোকন রেল সম্পূর্ণতা পেয়ে সরাসরি ট্রেন চলবে ৭ ঘটায় মিলবে মুখাই থেকে ভাকোয়। এখনই ট্রেন যাচ্ছে ২৩-১০এ কারলা ছেড়ে পানডেল/রাভগিরি হয়ে পরদিন ৯-০৫এ সামন্তওয়াদি (Sawant-wadi) রোড। বাস মেলে সামন্তওয়াদি রোড থেকে পানাজির। তাই বাসই সুবিধার এপথে আজ।



মুখাই স্টেশনাল স্টেশনের বিপরীতে মহারাষ্ট্র স্টেট ট্রান্সপোর্ট ভিগো। অফিসও বসেছে মহারাষ্ট্র স্টেট ট্রান্সপোর্ট ছাড়াও মধ্য প্রদেশ, গুজরাট, গোয়া, কর্ণাটক রাজ্য পরিবহণের এই ভিগোতে। বৃষ্টি এসের সকাল ৮-০০টা থেকে রাত ২৩-০০টায় মেলে। বৃষ্টি : ৩ 374272. বাস যাচ্ছে রাত্তা তথা পশ্চিম ভারতের দিকে দিকে ভিগো থেকে। বাস যাচ্ছে NH 8, 3, 6, 17, 9, 34 ও 4 ধরে সাধারণ ও ডিলাক্স বাস—১৭ ঘটায় পানাজি, ২৫ ঘটায় ব্যাঙ্গালোর, ১১ ঘটায় ঔরঙ্গাবাদ, ১৬ ঘটায় ইন্দোর, ৯ ঘটায় সুরাট, ১২ ঘটায়

আমোদাবাদ, ৫ ঘটায় পুনে, ২৫ ঘটায় ম্যাঙ্গালোর, ১৬ ঘটায় হায়দ্রাবাদ, মনম, মিউ, ভাবনগর ছাড়াও যাচ্ছে রাজ্যের প্রতিটি পর্যটন কেন্দ্রে। নানান প্রাইভেট সংস্থার বাসও যাচ্ছে ভিগোর চারপাশ থেকে পশ্চিম ভারতের নানান দিকে।



ভাওকা ডাকো জেটি, New Ferry Wharf, Mallet Bunder, Mumbai-400009 থেকে Damania Catamaran Service-এর শীতাতপ স্পিডলক্স যাচ্ছে ৮ ঘটায় মুখাই থেকে পানাজি। প্রতিদিন রাত ২২-৩০এ মুখাই ছেড়ে পানাজি যাচ্ছে পরদিন ৬-৩০টায়। ফেরে ৯-০০টায় পানাজি ছেড়ে ১৭-০০টায় মুখাই। ভাড়া ১১০০/১৩০০।

কনডাক্টরেট ট্রার : মুখাই শহর দেখার জন্য কনডাক্টরেট ট্রারের সুপার ব্যবস্থা রয়েছে সরকারি ও বেসরকারি দুইই থেকে। উত্তর থেকে দক্ষিণে ২০ কিমিরও অধিক জুড়ে শহরের বিস্তার।

(1) JTDC, Central Hotel & Nirmal Building, Nariman Point, 11th Floor, ৩ 2026679.

(2) The Travel Corporation of India (P) Ltd, Chandernukhi, Nariman Point, ৩ 2021881.

(3) Sanghi International Travels, 39-A, Patkar Rd, ৩ 353598.

(4) Odyssey Tours, 1307 Everest Apartments, J P Road, Versova, Andheri (W)-400081.

(5) Maharashtra Tourism Development Corp'n Ltd, Tours Divn (সাগরমুখী opp LIC), Madame Cama Rd, ৩ 2026713, Mumbai-400020 থেকে পানাজির বাস যাচ্ছে শহর দেখাতে সোমবার ছাড়া প্রতিদিন সকাল ৯—১৩-০০টায়, আবার দ্বিতীয় দফায় ১৪—১৮-০০টায়। তবে রবিবার কেবল প্রথম ট্রারের ব্যবস্থা থাকে এদের। ভাড়া ৬০ প্রতিটি ট্রার। ৩ বছরের উর্ধ্বে পুরো ভাড়া লাগে। এমনকি মহারাষ্ট্র ভ্রমণকে বরণীয় করে তুলতে MTDC-র নানানখ্যা শ্রমিক-সভ্যদের আকর্ষণও কম নয় পর্যটক মহলে। MTDC: CST Station, ৩ 2622859, Gateway of India, ৩ 2841877, Airport ৩ 614788, Churchgate Rly Stn-এর বিপরীতে Govt of India Tourist Office ৩ 2093229, Dadar T T, near Pritam Hotel, ৩ 4143200 শাখা কেন্দ্রগুলিতেও বৃষ্টি-এর ব্যবস্থা মেলে। প্রথম ট্রার: গেটওয়ে অব ইন্ডিয়া, তারাপোরওয়াল আকোয়ারিয়াম, জৈন মন্দির, বুলল্ড উদ্যান, কমলা নেহরু পার্ক, মণি ভবন, গ্রিন্স অব ওয়েলস মিউজিয়াম, ওয়ার্ল্ড ট্রেড সেন্টার (রবিবার ছাড়া) ও কাউন্সিল হল। দ্বিতীয় ট্রার: প্রথম ট্রারের স্টার্ট সঙ্গে ওরলি ডেমারি দেখিয়ে আনে জৈন মন্দির ও কাউন্সিল হলের বদলে।

MTDC রবিবার ছাড়া প্রতিদিন সকাল ৯-১৫য় ছেড়ে ৯-৪৫এ দাগার পৌঁছে ওয়ার্ল্ড ট্রেড সেন্টার, আন্তর্জাতিক বিমান-বন্দর, বিহার সেক, অবজারভেশন পয়েন্ট, আরে মিক্স কলোনি, কানহেরী গুহা, লায়ন সকারি পার্ক (সোমবার ছাড়া), সঞ্জয় গান্ধী জাতীয় উদ্যান, লুইসিট ও ইন্ডন মন্দির, ওরলি ডেমারি অর্থাৎ শহরতলি দেখিয়ে ১৯-০০টায় ফেরে। এ ট্রারের ভাড়া ১৪০। রাতের মুখাই শহর দেখতেও যাচ্ছে MTDC সোমবার ছাড়া প্রতিদিন। এলিক্যাপ্টা যাচ্ছে মনসুন ছাড়া সারা বছর MTDC-র ডিলাক্স লক্স।

প্রতিদিন ২০-৩০এ যাচ্ছে MTDC-র A/C কোচ ৪ দিনের প্যাকেজ ট্রারে অজন্টা-ইলোরা-ঔরঙ্গাবাদ দেখাতে। মুখাই ফেরে

৪র্থ সপ্তাহ ৭-৩০টার। লোকাল সাইটসিঙ্গে লান্সারি বাসে। পূনে হয়ে যাচ্ছে বাস। থাক-খাওয়া বাতারাভের ভাড়া ১০৬০ ৯৩০ ৮১৫ শিও ৯৫০ ৭৫০ ৬২৫; পূনে থেকেও অংশ নেওয়া যায় এ-টুরে। অবস্থানের হোটেল ভারতম্যে ভাড়া হেসকেন।

আর শহরতলির ট্রেন যাচ্ছে CST, চার্জিগিও সেম্বাল থেকে। ডোর ৪-৩০ থেকে গভীর রাতে ২/৩ মিনিটের ব্যবধানে ট্রেনও যাচ্ছে অত্রী থেকে। ভবুও ট্রেনে ভিড়ের আধিক্য। নিক আওয়ার্সে অফিস যাত্রীদের ভিড়ে বেহাল অবস্থা।

এছাড়া A/c Super Deluxe বাস যাচ্ছে প্রতিদিন ২১-০০টার মুম্বাই ছেড়ে রাত ২-০০টার পূনে পৌছে ৮-০০টার উত্তরাবাদ। ভাড়া: উত্তরাবাদ ২২৫ পূনে ১২৫ মুম্বাই থেকে, শিশুরের আধা। ফেরেও এরা একইভাবে। আর সেমি ডিলাস ১৮-০০টার মুম্বাই ছেড়ে পূনে যাচ্ছে ১২৫ টাকায়। কোলহাপুর যাচ্ছে MTDC-র লান্সারি কোচ ২০-১৫য় মুম্বাই ছেড়ে ২১০ টাকায়। মহাবালেস্বর যাচ্ছে ৭-০০টার মুম্বাই ছেড়ে সাহাদ হয়ে ১৪-০০টার, ফেরে ১৫-০০টার মহাবালেস্বর ছেড়ে ২১-৩০টার মুম্বাই; ভাড়া ২৩৫। গণপতিপূলে যাচ্ছে ২১-০০টার মুম্বাই ছেড়ে ২৪৫ টাকায়। পাঞ্চগনি যাচ্ছে সকাল ৬-৩০টার মুম্বাই ছেড়ে ১৪-০০টার, ভাড়া ২২৫; ফেরে ১৫-০০টার পাঞ্চগনি থেকে। নাসিক যাচ্ছে ৬-৩০টার মুম্বাই ছেড়ে ১১-৩০টার, ফেরে ১৫-০০টার, ভাড়া ১২৫। MTDC-র লান্সারি বাস প্রতিদিন ১৬-০০টার মুম্বাই ছেড়ে পরদিন ৭-০০টার পানাজি যাচ্ছে। এপথের ভাড়া ২০০। ফেরেও একইভাবে। মরসুমি পর্যটকদের জন্য প্যাকেজ টুরেরও ব্যবস্থা থাকে এদের।

চক্রটুরে মুম্বাই-সির্ধি-নাসিক যাচ্ছে MTDC-র লান্সারি বাস বৃঃ শনিবার আর অক্টোবর থেকে জুনে প্রতি রাত ২০-০০টার। ফেরে পরদিন ২২-৩০টার। এ-টুরের ব্যায়াত ভাড়া ৩৫০/২৫০। এছাড়া প্যাকেজ টুরে মরসুমি পর্যটক নিয়ে ভারত ভ্রমণেও যাচ্ছে মুম্বাই থেকে MTDC আর রাভের অভিসারে যাচ্ছে TCI ১৯—২২-০০টার মুম্বাই শহর, নাচ ও গব্বেরয়ে ডিনার প্রোগ্রামে।

এছাড়া অজব প্রাইভেট সংস্থাও যাচ্ছে কনডাক্টেড টুরে মুম্বাই শহর দেখাতে। মহারাষ্ট্রের সাথে গোয়া জুড়েও সফর-স্টী গড়েছে এদের নানান জন। দপ্তরও এদের CST রেল স্টেশন ও ক্রুকার্ড মার্কেটকে ঘিরে। এমনকি নিউ বেঙ্গল লজও কনডাক্টেড টুরে মুম্বাই দর্শনে যাচ্ছে। ৫ দিনের প্যাকেজে গোয়া দর্শনেও যাচ্ছে এরা।

ভবুও যেন একক যাত্রায় মুম্বাই-এর সঙ্গে গোয়া জুড়ে বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। তেমনই মুম্বাই থেকে ওজরাটি অর্থাৎ আমেদাবাদ পৌছে সৌরাষ্ট্র সফরেও চলা যেতে পারে। আবার চলার পথে বাণীতে নেমে দমন, দামরা ও নগর হাফেলীও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে। ট্রেন, বাস ও বিমান সার্ভিস রয়েছে মুম্বাই থেকে পানাজি ও আমেদাবাদের।

উত্তর, পূব আর দক্ষিণ ভারতের সংযোগকারী স্টেশন ফোর্টের উত্তরে সেম্বাল রেলওয়ের সদর মুম্বাই ছয়পতি শিবাজী টার্মিনাস অর্থাৎ সি এস টি। কিছুকাল আগেও নাম ছিল এর ভিক্টোরিয়া টার্মিনাস অর্থাৎ ভি টি। কলকাতার ট্রেনগুলি এই সি এস টি থেকে আসা-যাওয়া করে। ইতালীর পাবিক রেলওয়ে লভনের প্যানরকন স্টেশনের আলগে ১৮৮ খ্রিস্টাব্দে অতীতের মুম্বা দেবীন্স মন্দিরস্থল-আই ডাবলু

সিটেনেন-এর পরিকল্পনার তৈরি হয় ভি টি। উত্তরকালে ক্রুকার্ড মার্কেটের কাছে নতুন করে মন্দির হয় মুম্বা দেবীন্স। ভারতে বাণ্টাচলিত প্রথম ট্রেনটি এই সি এস টি থেকেই রওনা হয়ে ৩৫ কিমি দূরের থানে যায় ১৮৫৩ খ্রিস্টাব্দের ১৬ এপ্রিল। মূর্তি হয়েছে প্রবেশ পথের শিরে মহারানী ভিক্টোরিয়ার।

উপরের ৩.১৯ মি ব্যাসের ঘড়িটিও দশনীয়। প্রাচ্যের সবচেয়ে ব্যস্ত রেল স্টেশনও এই CST। আর CST স্টেশনের বিপরীতে V ধাঁচের মিউনিসিপ্যাল বিস্তিহিটি ১৮৯৩ খ্রিস্টাব্দে আই ডাবলু সিটেনেন-এর নকশায় গথিক শৈলীতে তৈরি। এর গম্বুজগুলিও দশনীয়, চুড়োর উচ্চতা ৭১.৫ মি। অদূরে ডানহাতি হজ হাউস।

CST থেকে বেরিয়ে বাঁহাতি দাগাভাই নওরোজী রোড ধরে সামান্য এগুতেই ফাইভ পয়েন্টে ফ্লোরা ফাউন্টেন অর্থাৎ বরনা। মুম্বাই-এর গভর্নর স্যার বার্টলে এডওয়ার্ড (১৮৬২—৬৭)-এর সম্মানে ১৮৬৯এ তৈরি। মহারাষ্ট্র রাজ্যের দাবিতে জীবন দেওয়া শহীদদের স্মরণে নতুন করে নাম হয়েছে এর স্তম্ভাঙ্ক (Martyrs Sqr) চক। শহরের প্রাণকেন্দ্রের এই বরনাকে ঘিরেই গড়ে উঠেছে ষাণ্মজিক অফিস-কাছারি-ব্যাঙ্ক। ফ্লোরা লাগোয়া সেন্ট টমাস ক্যাথিড্রাল। ১৬৭২এ শুরু হয়ে শেষ হয় এটি ১৭১৮য়। রাজা পাঞ্চম জর্জ ও রানী মেরী ১৯১১তে ব্যবহৃত চেয়ার দুটি অজম ও দৃশ্যমান। সমাধিও রয়েছে নানান। অদূরে ১৮৩৩এ ৬০০০ পাউন্ড ব্যয়ে তৈরি ডরিক শৈলীর ফ্যাসাডের টাউন হল-এ রয়্যাল এশিয়াটিক সোসাইটি গ্রেট ব্রিটেন-এর লাইব্রেরি বসেছে। এরই পিছে সামান্য যেতে ১৮২৩এ সাগর বুজিয়ে গড়া ভূমে Bombay Castle-এর ধ্বংসাবশেষ, ১৮২৯এ তৈরি Ionic ফ্যাসাডের মিস্ট, বিপরীতে আকাশচুম্বী রিজার্ভ ব্যাঙ্ক। আরও যেতে ১৭২০এ তৈরি কাস্টমস হাউস। এরই পিছে মুম্বাই ডক এলাকা। অদূরে ডি এন রোড মিলেছে গিয়ে মহাভা গান্ধী রোডে।

ফ্লোরা ফাউন্টেনের স্বল্প দূরে এম জি রোডের দক্ষিণ প্রান্তে খেত ওশ গম্বুজ শিরে বাবুবার। ১৯০৫এ রাক্ষুসীরের প্রথম ভারত ভ্রমণের স্মারকস্বরূপ এর ভিত্তিপ্রস্তর স্থাপন করেন প্রিন্স অব ওয়েলস—উত্তরকালের রাজা পাঞ্চম জর্জ। ইডো-সেরাসেনিক শৈলীতে গম্বুজ হয়েছে খেত-ওশ বাড়ির শিরে। ১৯০৪-১৯১৪য় হাসপাতাল বসলেও নবসাজে প্রদর্শন শুরু হয় ১৯২৩এ। অতীতে নামও ছিল এর প্রিন্স অব ওয়েলস মিউজিয়াম। শিল্প, প্রত্নতত্ত্ব ও প্রকৃতি বিজ্ঞান—তিন ভাগে ভাগ করা যায় এর সংগ্রহকে। মোগল ও রাক্ষুসৃত মিলিয়েচাও শিল্প-বিশ্বাসের সংগ্রহ বিশেষভাবে উল্লেখ্য। এলিক্যাপ্টা, পাখার ও অমরাবতীর নানান ডাকঘরের সঙ্গে চাকুল ও রাষ্ট্রকূট কালের নানান সজায়ও প্রদর্শিত হয়েছে। মিনিরেচার মডেলে পার্সিদের কিউনরল টাওয়ার অব সাইলেন্স দেখে নেওয়া যায়। টাটা পরিবারের, বিশেষ করে

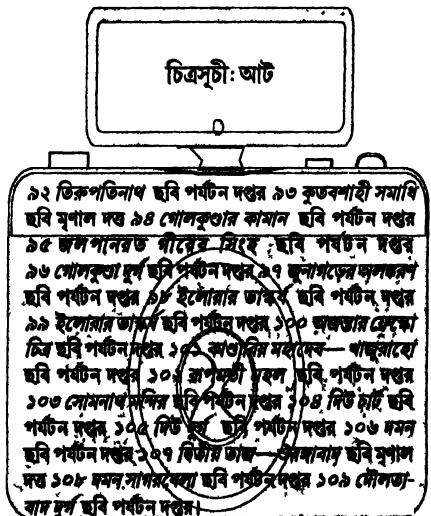
রতনলাল টাটার নানান সংগ্রহও প্রদর্শিত হয়েছে মিউজিয়মে। ১০—১৮-০০টায় খোলা, সোমবার বন্ধ। টিকিট ২ শিশু ১; মঙ্গলবার দর্শনী লাগে না।

মিউজিয়ম সংলগ্ন জাহাজীর আর্ট গ্যালারির ছবির সংগ্রহও দেখবার মতো। প্রায়ই ভারতীয় মডার্ন আর্টের ছবির একজীবিশন বসে থাকে। ১৯৫২ খ্রিস্টাব্দের ২১শে জানুয়ারি এর দ্বারোদঘাটন হয়। আর্ট গ্যালারির কাফেটি যাত্রীদের ক্রান্তি মেটাতে অনবদ্য। ছুটির দিনগুলিতে বন্ধ থাকে গ্যালারি।

যাদুঘর পেরুতেই অতীতের Wellington Circle আজ হয়েছে S P Mukherjee Chowk. তবুও লোকে তাকে Regal Chowk বলে থাকে আজও। অতীতে Royal family বায়ু সেবনে এসেছে সকাল-সাঁঝে। আর আজ ব্রিটিশের অবর্তমানে Royal লোপ পেয়ে সদাই ব্যস্ত সাধারণে। সামনে তার মুম্বাই পর্যটকদের অবশ্য দ্রষ্টব্য গোটওয়ে অব ইন্ডিয়া। জলপথে বিদেশ থেকে ভারতে আসার প্রবেশদ্বার এই গোটওয়ে অব ইন্ডিয়া। ১৯১১য় রাজা পঞ্চম জর্জ ও বানী মেরী দিল্লীর দরবারে অংশ নিতে ভারতে আসেন এই পথেই। তাঁদের সম্মানে তৈরি হয়েছিল শ্বেতভোবণ। ব্রহ্মবতীকালে সেই ঘটনাকে বরণীয় করে তুলতে ১৯২৪ খ্রিস্টাব্দে ষোড়শ শতকের হিন্দু ও মুসলিম স্থাপত্যের সমন্বয়ে গ্যালারির Arc de Triomphe-এর আদলে ম্যুরিশ শৈলীতে তৈরি হয় পাকাপোক্ত ২৬ মি উঁচু এই মিনার। ঘটনাচক্রে ফেব্রুয়ারি ২৮, ১৯৪৮-এ শেষ ব্রিটিশ যৌজও এই তোরণ দিয়েই ভারত ছাড়ে। সূর্যোদয়ে ও সূর্যাস্তে রং-এর প্রতিফলন নানাভিরাগ। ইন্ডিয়া গेट থেকে আরব সাগর ও মুম্বাই হারবারের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। এক ঘণ্টার লঞ্চ সফরে সাগর বিহারও করে নেওয়া যায়। এলিফান্টা গুহারও লঞ্চ যাচ্ছে এই ঘাট থেকে। পরিবেশকে আরও মহিমাযিত কবে তুলেছে ১৯৬১তে তৈরি ষোড়ার পিঠে মারাঠা বীর শিবাজী মহারাজ ও স্বামী বিবেকানন্দর মূর্তি। সূর্যোদয়ে ও সূর্যাস্তে মধুরও ধরে গোটওয়ে। লাগোয়া শিবাজী উদ্যান।

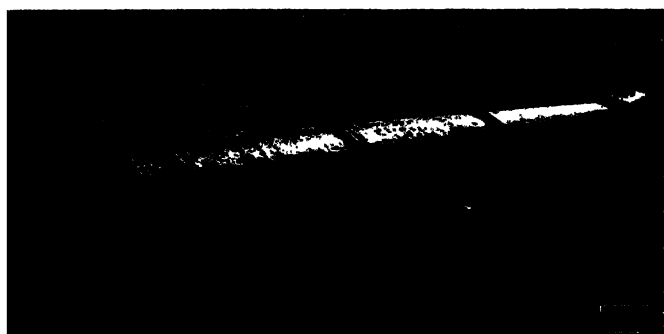
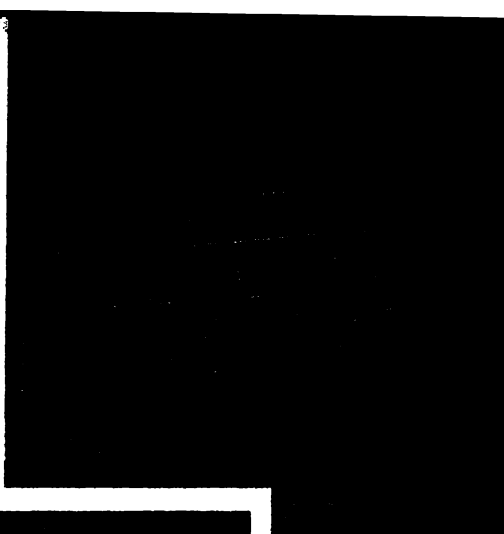
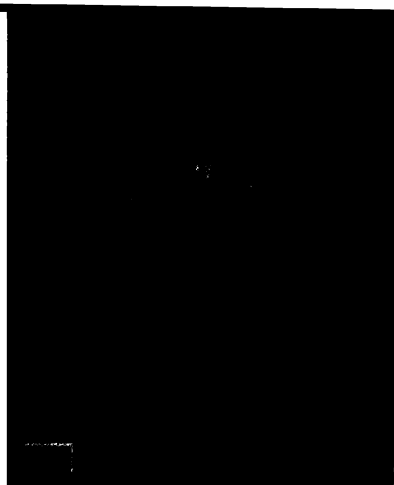
বিপরীতে ভারতীয় পার্সি শিল্পপতি টাটা গ্রুপের হোটেল তাজ ইন্টারকন্টিনেন্টাল। পাশ্চাত্য ও ওরিয়েন্টাল শৈলীতে গড়া তাজ থেকে গোটওয়ে ও বন্দরের শোভা রমণীয়। দুইয়েরই অবস্থান অতীতের কোলবা দ্বীপে। আরও বামে শহীদ ভগৎ সিংহ রোড, অতীতের Colaba Causeway দক্ষিণে গিয়ে মিলেছে সমুদ্র তথা ১.৫ কিমি দূরের Sasoon Dock-এ। ১৮৩৮এ সিদ্ধ ও ১৮৪৩এ আফগান যুদ্ধে নিহত ব্রিটিশ সৈনিকদের স্মারকরূপে ১৮৪৭এ তৈরি গথিক শৈলীর লেটিন জমস বা আফগান চার্চ অর্থাৎ মানমন্দির, লাইট হাউস, গির্জা, প্রাক্তভূমি কোলাবা পয়েন্টে। সারি দিয়ে বাড়ি—আজও এসের মাঝে ৮ শতকের শুজরাটি শৈলীর কাঠখোলাই-এর নিদর্শন দেখতে মেলে। সাধারণ হোটেলও নানান এলাকা জুড়ে।

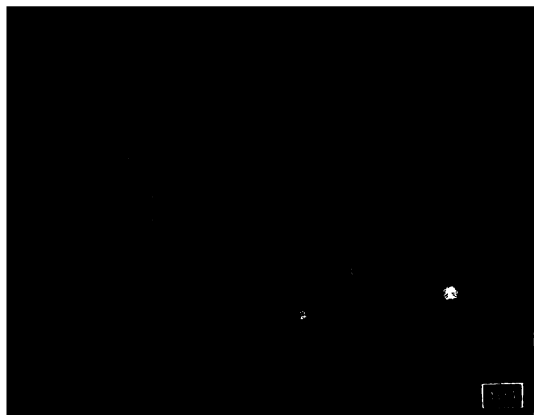
ডান-হাতি M G Rd/Madame Cama Rd মিনিট দশেকের পথে নরিম্যান পয়েন্ট পেরিয়ে মিলেছে গিয়ে আরব সাগরে। ব্যাক-বে সাগরবেলার কাঁধে ভর দিয়ে ডাইনে বাঁক নিয়েছে অর্ধচন্দ্রাকার মেরিন ড্রাইভ। বাঙালির গর্ব, বাংলার গর্ব, অতীতের মেরিন ড্রাইভের নাম হয়েছে নতুন করে নেতাজী সুভাষ রোড। মুম্বাই বেড়িয়ে এসেছেন কিন্তু মেরিন ড্রাইভের হাওয়া খাননি এমন পর্যটক খুঁজে মেলা ভার। যেমন মসৃণ তেমনই প্রশস্ত রাজপথ—শেষ হয়েছে মালাবার হিলসে। মালাবারের শিরে মুকুট হয়ে ব্রিটিশের গড়া রাজভবনে আজ গভর্নর প্যালেস হয়েছে। পথশোভারও তুলনা হয় না। একপাশে আকাশচুম্বী বাড়িঘর, অপরপাশে অস্বহীন নীল আরব সাগর। সান্ধ্য-ভ্রমণের মনোরম পরিবেশ। ১৯২০ খ্রিস্টাব্দে সাগর বুজিয়ে গড়ে তোলা হয় এই এলাকা।



মুম্বাই পর্যটকদের কাছে আর এক আকর্ষণ তারাপোর-ওয়াল অ্যাকোয়ারিয়াম। সামুদ্রিক ও মিষ্টি জলের মাছের সংগ্রহ রয়েছে এখানে। সমুদ্র থেকে পাইপ লাইনে জল এনে সামুদ্রিক মাছের অ্যাকোয়ারিয়ামে দেওয়ার ব্যবস্থাও হয়েছে। ১৯৫১ খ্রিস্টাব্দে তৈরি, খরচ পড়ে ৮ লক্ষ টাকা। মাছের সঙ্গে রয়েছে সমুদ্রজাত নানান সংগ্রহ। সোম ছাড়া ১১—২০-০০টায় খোলা দর্শকপ্রিয় এই অ্যাকোয়ারিয়াম। টিকিট ২। ১২৩ ক্রুটের বাস যাচ্ছে মেরিন ড্রাইভের অ্যাকোয়ারিয়াম হয়ে।

রাতের আঁধারে মেরিন ড্রাইভের চারপাশে স্নেকসকি-ঘরের আলো এখন ছোঁরা নেন, যদে হয় কেন মালাপগরেছে পাহাড়। তাই একে কুইনস স্নেকসেস বলে। কল্যাণ সেহর পার্ক থেকে





এই কুইনস নেকলেস অপরূপ দেখায়। ১২৩ রুটের বাস যাচ্ছে মেরিন ড্রাইভ বা নেভাজী সুভাষ রোড ধরে।

মহান করেছে মহারাষ্ট্রকে

৭২০ কিমি দীর্ঘ ভটরেখা মহারাষ্ট্রে। সৈকত নগরীও তাই নানান। মুম্বাই থেকে ৩৭৫ কিমি দূরে মুম্বাই-গোয়া সড়কে Gunaputrule. ১৬৫ কিমি দূরে Murud-Janjira. অজীতের রাজধানী শহর ঝাউ-নারকেল-পানে ছাওয়া জাঞ্জিরার সাগরবেলাটি খুবই সুন্দর। ৩০০ বছরের প্রাচীন দীপাকার জল দুর্গ ছাড়াও টিলার টঙে ভগবান দত্তত্রায়ার মন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য—মূর্তি হয়েছে ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বরের। অদূরে Nandgaon ও Kushid আরও দুই সাগরবেলা। মুম্বাই থেকে রেল পানডেল পৌঁছে চলা যেতে পারে। ১২০ কিমি দূরের গৈটওয়ে থেকে ১১ ঘণ্টার বাটে Kihni. কিহিমের অদূরে Nagaon Beach-গুলির যথেষ্ট প্রশস্তি। ১৪৫ কিমি দূরে ১৭ কিমি ব্যাপ্ত সাগরবেলা Dahamu-Bordi-র আর এক প্রশস্তি Meccan of the Zorastrians বলে। মন্দিরও হয়েছে হাজার বছরের পুত অগ্নির। মুম্বাই-গোয়া সড়কে মুম্বাই থেকে ৬০ কিমি দূরে কার্নালা বার্ড স্যান্ডচুয়ারি, নাগপুরের ১৩৭ কিমি দূরে Tudora NP-ও পর্যটন মানচিত্রে উল্লেখ্য।

১৭৫টি দুর্গও রয়েছে মহারাষ্ট্রে—১১১টি তার মারাঠা বীর শিবাজী মহারাজের তৈরি। তবে, কালের আবর্তে কিছু লোপ পেয়েছে—কিছু-বা ধ্বংসের কাল গুনেছে।

দ্বাদশ জ্যোতির্লিপির পটের অবস্থানও মহারাষ্ট্রে: (১) মুম্বাই থেকে ৫৭৯ কিমি দূরে Aundha-Nagnath, (২) মুম্বাই-র ৫০০ কিমি দূরে Parali-Vajjmath, (৩) মুম্বাই থেকে ১৮০ আর নাসিকের অদূরে Trimbakeshwar, (৪) মুম্বাই থেকে ২৬৪ কিমি দূরে Bhimashankar, (৫) মুম্বাই-এর ৫০০ কিমি দূরে Grishneshwar-এর অবস্থান।

ডেমনাই অষ্ট-বিনায়ক অর্থাৎ আট গণপতি রয়েছেন মহারাষ্ট্রে, স্বয়ত্ত্ব এরা—(১) পুনে থেকে ৬৪ কিমি দূরে Morgaon-এ ১৪ শতকের মন্দিরে ময়ূরেশ্বর, (২) লাগোয়া Theur-এ পিতার সিদ্ধিলাভের আরক রূপে চিত্তামণি দেবের গড়া মন্দিরে চিত্তামণি গণপতি, (৩) Ranjangaon-এ ১০ ও ৩৩২র ২০ বছর বিরাটাকার মহাগণপতি, (৪) Ahmed-nagar-এ অহল্যাবাই হোলকারের তৈরি শ্রী সিদ্ধি বিনায়ক, (৫) Ozhar-এর গণপতির প্রসিদ্ধি ১৮৩৩-এ তৈরি মন্দিরের দীপমালা অর্থাৎ আলোর মালায়—মন্দিরের গম্বুজটিও সোনার তৈরি, (৬) ২৮০ সিদ্ধি উঠে কুড়কি নদীর পাড়ে Lenyadri-র গণপতির জনকৃতি—শিবজীয়া পার্বতী পূজা গণেশের জন্ম দেন এখানে, (৭) Puli-তে বালেশ্বর—১৭৭০-এ নানা ফড়নিবিশের তৈরি মন্দিরে সুখিঠাকুর বিবুরেশ্বরের অবস্থান (মার্চ ২১ ও সেপ্টেম্বর ২৩) ও কিরণ বিকিরণ করেন দেব-শরীরে, (৮) রায়গড় জেলায় Madh বা মাহাডে শিব বিনায়কের অবস্থান। অবস্থান এদের পুনে-কোম্বি। আর আছে অসংখ্য ওহামশিপুর মহারাষ্ট্রে। অজন্তা-ইলোরা—সে তো বিখ্যাত আজ্ঞা অনন্য দ্রষ্টব্য। ডেমনাই আছে ঠরনরায়ণ ওহা, কনহেরী ওহা, এলিখাটা ওহা, নাসিকের অদূরে পাতুলনো ওহা, কারলা-ভাজা-খালসা-বেডসা ওহা পুনের অদূরে লোনাভালাকে ঘিরে। ৪ জাতীয় উদ্যান ও ২৫-এরও বেশি স্যান্ডচুয়ারি গড়ে উঠেছে মহারাষ্ট্রে।

আরব সাগরের পাড়ে ১৯৫২ খ্রিস্টাব্দে মালাবার হিলসের ঢালে ধাপে ধাপে তৈরি হয়েছে কম্বলা নেহরু পার্ক। প্রথম প্রধানমন্ত্রী জওহরলাল নেহরুর স্ত্রীর নামে নাম। যদিও এটি শিশু উদ্যান, তবে, বিদেশী অভ্যাগতদের সংবর্ধনা দেওয়া হয় এই পার্কে। হিতলসম উচ্চ বিরাটাকার ওল্ড লেডিস সুা বা চায়ের কাপে ওঠানামায় মজার সাথে কৌতুক উপভোগ করে আবালবৃদ্ধবনিতা। প্রজাতন্ত্র দিবস ও স্বাধীনতা দিবসে আলোর মালা পরে পার্ক। সন্ধ্যার পর এখান থেকে মেরিন ড্রাইভ, কুইনস নেকলেস ও চৌপাটির দৃশ্য সুন্দর দেখায়। এরই বিপরীতে হ্যান্সিং গার্ডেন।

নামে হ্যান্সিং গার্ডেন অর্থাৎ বুলন্ত উদ্যান হলেও আসলে মালাবার হিলসের চূড়ায় ৩টি জলের ট্যাকের উপর ১৮৮০তে তৈরি। আর সন্ধ্যার সাথে আধুনিকতা পায় ১৯২১এ। এখান থেকে সূর্যাস্ত সুন্দর দেখায়। গাছ ছেঁটে তৈরি জীবজন্তুর মডেলগুলিও বুলন্ত উদ্যানের আর এক আকর্ষণ। তবে নামান্তর ঘটে ফিরোজশাহ মেটা উদ্যান হয়েছে হ্যান্সিং গার্ডেন। শহর থেকে দূরত্ব ৫.৬ কিমি। ১০২, ১০৬, ১৮১ রুটের বাস যাচ্ছে।

৭৪৫এ পারস্য থেকে আগত পার্সিদের মুম্বাই তথা ভারতীয় ব্যবসায় কৃতিত্বের কথা সর্বজনবিদিত। বুলন্ত উদ্যানের পাশেই ১৬৭৫এ ১ কিমি ব্যাপ্ত চত্বরে হয়েছে বৃত্তাকার পাথরের বেদী অর্থাৎ পার্সিদের মৃতদেহ রাখার ফিউনরল টাওয়ার অব সাইলেন্স। পার্সিরা তাদের মৃতদেহ সমাধিস্থ বা দাহ না করে জীব হিতার্থে উৎসর্গ করে। পক্ষীকূলের আহাৰ্যরূপে রেখে দেয় টাওয়ারে। বিধবাদের ভেতরে যাওয়া কঠোরভাবে মানা। এর একটি মিনিরেচার মডেল প্রিন্স অব ওয়েলস যাদুঘরে দেখে নেওয়া যায়।

অদূরেই আগস্ট ক্রান্তি ময়দানে মণিভবন। ১৯১৭-৩৪ জাতির পিতা মহাত্মা গান্ধী মুম্বাই অবস্থানকালে এই ভবনে বাস করেন। সেই স্মৃতিতে গান্ধী মেমোরিয়াল তথা ছবি, বই ও গান্ধীজীর ব্যবহৃত জিনিসপত্রের প্রদর্শনী বসেছে। আগস্ট ৮, ১৯৪২ এই ময়দানের এক জনসভায় প্রথম আওয়াজ ওঠে—ইংরেজ ভারত ছাড়ে, করছে ইয়ে মরেসে—গান্ধীজীর মুখে। ৯-৩০—১৮-০০ টায় খোলা। দশনী ২। ৮২, ৮৫, ৮৬, ১২৩ রুটের বাস যাচ্ছে মণিভবন হয়ে।

মেরিন ড্রাইভ ধরে মালাবার হিলস-মুম্বাই উত্তরে লন্ডনের হাইড পার্কের মতো মুম্বাইবাসীদের কাছে চৌপাতি বীচ। তবে নানের কোনো ব্যবস্থা নেই—সান্ধ্যভ্রমণের মনোরম জায়গা চৌপাতি। আবার রাজনৈতিক দলগুলি মাতিয়ে তোলে এর বেলাতুমি তাদের সভা বসিয়ে। ব্রিটিশরাজ অহীন করে বন্ধ করে সভা। তারই সাক্ষ্য বহন করছেন লোকঅন্য তিলক ও সর্গার বনভভাই প্যাটেল মর্মরে। আবার মুম্বাইবাসীদের সেব-সেবীর ভাসানও হয় এই চৌপাতিতে। আগস্ট-সেপ্টেম্বরের পূর্ণিমায় ১১ দিন স্থাপী উৎসবে গণেশ চতুর্ভাষ ভাসান খুবই আকর্ষণীয়। ৫-৬ হাজার শেখবুর্ডি

(গণেশ) আসে মিছিল করে—কোনো কোনো মূর্তি উচ্চতায় ৯ মি। প্রতি সন্ধ্যায় হঠাৎ গোপীরাও দৃষ্টি আকর্ষণ করে নানান ধর্মী শারীরিক কসরতে। তেমনই ডেলকিরও জমজমটি আসর বসে চৌপাট্রী বীচে। যাত্রী আসেন শহর ভেঙে বেলাভূমি ছাড়িয়ে ডেলপুরী, চানা-বাটোরা ও কুলকি মালাই-এর দোকানগুলিতে। ঘোড়া ও খচ্চর মেলে পিঠে চাপার জন্য। ১০১, ১০২, ১০৩, ১০৬, ১০৭ ও ১২৩ রুটের বাস যাচ্ছে চৌপাট্রী হয়ে।

শহর থেকে ২১ কিমি উত্তরে আরব সাগরের বুকে জুহু বীচ অর্থাৎ বেলাভূমি। বিখের বৃহত্তম বীচগুলির মধ্যে জুহু অন্যতম। এখানকার বালির রঙ রূপালি। সমুদ্র-স্রোতেরও সুন্দর ব্যবস্থা; অক্টোবর থেকে মে মাস সমুদ্র-স্রোতের মনোরম সময়—তবে জল নোংরা। বিনোদনের নানান ব্যবস্থা জুহু বীচে। মুম্বাই-এর বিমানবন্দরটি বীচের অদূরে জুহুতে। চার্চ গেট থেকে লোকাল ট্রেনে ১৮ কিমি দূরের সান্ডাফ্রুজে পৌছে ১৮২, ২৩১, ২৫৩ রুটের বাসে আরও ৩ কিমি গিয়ে জুহু। বাস/ট্যাক্সিও যাচ্ছে শহর থেকে জুহু। থাকারও নানান হোটেল জুহুতে।

পুরো মুম্বাই শহরটাই গড়ে উঠেছে আরব সাগরের পাড়ে। তাই বীচ অর্থাৎ সমুদ্র সৈকতও রয়েছে আরও বেশ কয়েকটি মুম্বাইকে ঘিরে। মাধ, মার্ভে, মনোরী, আকসা, মহিম ও শেরসোভা—এগুলি তত জনপ্রিয় নয়, পর্যটক আকর্ষণও কম। মাধ ও মার্ভে বীচে স্নানও সাবধানতা পড়ে পড়ে। শহর থেকে দূরত্ব—মাধ ৪৪.৮, মার্ভে ৩৮.৪, মনোরী ৪০ কিমি। রেলো মালাড পৌছে ২৭২ রুটের বাস বা ফেরিতে যাওয়া চলে মার্ভে ও মনোরী বীচে। অবস্থানও এদের পাশাপাশি। থাকার জন্য *Manorbel H* ও *H Dominula* আছে মনোরীতে। আকসা বীচেও বাস যাচ্ছে ২৭২ রুটের মালাড থেকে। আর জুহুরই প্রান্ত-বেলাভূমি ভেরসোভার দূরত্ব ২৩ কিমি। আন্ধেরী হয়ে চলা যেতে পারে। বীচটি কর্ঘ্য। আন্ধেরীর আর এক আকর্ষণ রেল স্টেশনের কাছে যজ্ঞেশ্বরী গুহা। তেমনই মহিম-এর আকর্ষণ আরব থেকে আসা মুসলিম পীর *Makhtum Fakh Ali Paru*-র দরগা। ১৪৩১এ সেহ রাখেন পীর সাহেব এই মহিমে। সেই স্মৃতিতে সেপ্টেম্বরের সপ্তাহব্যাপী উরস উৎসবে দূর-দূরান্ত থেকে ভক্তের দল আসেন।

মুম্বাই পর্যটকদের আর এক আকর্ষণ শহর থেকে ৪০ কিমি দূরে ৫০০০ একর জমিতে ১৯৪৯এ গড়ে তোলা কানহেরী জাতীয় উদ্যান। নতুন করে নাম হয়েছে এর কুলকিরি উপকন (জাতীয় উদ্যান)। মনোরম প্রকৃতি—সবুজ কবাক্ষী আর রক্ত পাহাড়ের সমন্বয় ঘটেছে উদ্যানে। নানান ধর্মী জলচর পাখিও দেখতে মেলে। পাহাড়ভূঁড়োয় হয়েছে বৌদ্ধ-বৈশ্যীতে গাধী মন্দির। সারানিদের ছুটি কটাঘার মনোরম পরিবেশ। চতুর্ভুজের উত্তম জাগরণ। কটেজও ভাড়ার মেলে চতুর্ভুজের জন্য। প্রবেশপথের অদূরে সানানসাকারি পার্ক।

বিশেষধর্মী গাড়ি বাচ্ছে সিংহ দেখাতে যাত্রী নিয়ে। আর চলছে ডাঙায় টার ট্রেন, জলে বোট। সোম ছাড়া ৯—১৭-০০টায় খোলা। মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে ট্রেনে বরিভিলি পৌছে ৩ কিমি দূরে এই জাতীয় উদ্যান। তেমনই বরিভিলির ১ কিমি দূরে সঞ্জয় গাধী ন্যাশানাল পার্কটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন চলার পথে। বন্য ভান্ডুক, প্যাংগার, চিত্রা ছাড়াও নানান প্রজাতির হরিণের জন্য এর প্রশস্তি। বরিভিলি (Borivli)-র আর এক আকর্ষণ পর্ভুগিজ চার্চে রূপান্তরিত হিন্দু গুহামন্দির। ট্রেন বা বাসে মালাড বা বরিভিলি পৌছে মালাড থেকে ২৭২ বাসে বা বরিভিলি জেটি ঘাটে ফেরি পেরিয়ে দেখে নেওয়া যায় অ্যামুজমেন্ট পার্ক তথা Esselworld দেশ-দেশান্তরের নানান সংস্থা পসরা সাজিয়েছে। ১০—২০-০০টায় বয়সের ব্যবধানে টিকিট ৩৯ থেকে ৮৯ টাকা, ৩ ৪৯২০৪৭। আর আছে শহরের উপকণ্ঠে Fantasy land. আন্ধেরী ইস্টে পিংকি টকিজ বাস স্টপ থেকে ৪৪২ রুটের বাসে চলা যেতে পারে। Fantasy land ৩ ৪৩৬৫৪৩-তেও টিকিট মূল্যে ব্যবধান আছে বয়সের তারতম্যে।

কানহেরী জাতীয় উদ্যানের অন্দরে ৭ কিমি যেতে কানহেরী গুহা। ২ থেকে ৯ শতকে তৈরি হীনযানধর্মী ১০৯টি বৌদ্ধ চৈত্য ও বিহার রয়েছে। এর কোনো কোনোটির কাজ অসম্পূর্ণ, আবার কোনো কোনোটি ধ্বংসের কাল গুনছে। পাহাড়ের গায়ে খাঁজ কেটে কেটে তৈরি হয়েছে এই চৈত্য। সিঁড়ি উঠেছে পাহাড় বেয়ে। অপূর্ণ এর নির্মাণকৌশল। সংস্কার হয়েছে সম্ভ্রুতি। তবে প্রতিটি গুহা দেখা সম্ভব নয়। চৈত্য গুহা-৩-এর শিক্ষকর্ম সুন্দর। গুহাগুলির মধ্যে অন্যতম প্রধান ১১, ৩৪-এর শিক্ষকর্ম, ২৩-এ চার হাত ও এগারো মুখের বুদ্ধ, ৪১-এ এগারোমুখী অবলোকিতেশ্বর, ২৯—৩৫, ৪২—৪৪, ৭৩—৭৭, ৯৮ ও ৯৯-এ জাতক কাহিনী, ৫০-এ সপ্নমাথায় পদ্মাসীন বুদ্ধ, ৬৭-তে স্থাপত্য, ৯০ ও ১০১ দেখে সাক্ষ্য করা যেতে পারে কানহেরী গুহা দর্শন।

বৃহত্তর মুম্বাই শহরের মধ্যে লেক রয়েছে নানান। আর এইসব লেক থেকেই জল এনে শহর চলছে মুম্বাই-এর। শহর থেকে ১০৩ কিমি দূরে তানসা লেক। দূরত্ব হেতু পর্যটক সমাগম কম। তবে মুম্বাইবাসীদের এই লেকই জল দেয় বেশি। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা ভুলসী লেক-এর দূরত্ব শহর থেকে ওয়েস্টার্ন এক্সপ্রেস হাইওয়ে ধরে আরো মিক কলোনি হয়ে ৪১ কিমি। চলাপাথে মিক কলোনি ও টিলার টঙ থেকে দীপভূমি সুন্দর দেখে দেওয়া যায়। আর জাতীয় উদ্যানের পথে পাশাপাশি অবস্থান পোরাই ও বিহার লেকের। দুয়ের মাঝে ব্যবধান মাত্র ২ কিমি। বিহারের জলে প্রচুর কুমির আছে। আর আছে বোটিং-এর ব্যবস্থা বিহারে। ১৪০০ একর জমি জুড়ে বিহার লেক। সুন্দর বাগিচাও হয়েছে লেকের পাড়ে। মনোরম প্রকৃতির মাঝে চতুর্ভুজের সুন্দর পরিবেশ। ছুটির দিনগুলিতে মুম্বাই ও বরিভিলি রেল

স্টেশন থেকে বেস্ট-মার্কা বাসের বিশেষ সার্ভিস থাকে। অন্যদিকে মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে রেলের বরিভিডিলি পৌছে ট্যাক্সিতে লেকে চলায় সুবিধা। আবার শহর থেকে MTDC-র প্যাকেজ টুরেও সেবে নেওয়া যায় কানহেরী। পোয়াই-এর বিপরীতে Amusement Park-টিও অনবদ্য।

নীল (আরব) সাগরের সবুজ টিপ এলিফ্যান্টা দ্বীপ। মুম্বাই-এর মূল পর্যটন কেন্দ্রও এলিফ্যান্টা দ্বীপ। অ্যাপোলো বন্দর থেকে ১০ কিমি উত্তর-পূবে এলিফ্যান্টা। গেটওয়ে অব ইন্ডিয়া থেকে লঞ্চ যাচ্ছে ৮—১৬-০০টার, এক ঘণ্টার জলপথ; যাতায়াত—ডিল্লার লঞ্চ ৫০ সাধারণ ৩৫, শিশু ৩০/২৫ ও 2026364/2023585। MTDC-র লান্সারি লঞ্চও যাচ্ছে ৯-০০ ও ১৪-৩০টায় এলিফ্যান্টায়। এমনকি দিনে একবার Ajanta-র বিলাসবহুল ক্যাটামারান লঞ্চও চলেছে। তবুও যাত্রী সমাগমে কিছুটা যেন নির্ভরশীল লঞ্চ সার্ভিস। মনসুনে খুবই অনিয়মিত এস ফর। লঞ্চঘাট থেকে ১২০ সিঁড়ি উঠে শুহামুখ। ডুলিও মেলে যাতায়াতে।

১৫৩৪ খ্রিস্টাব্দের কথা—পর্তুগিজদের দখলে আসে এই দ্বীপ। ধ্বংসও পায় অংশ পর্তুগিজদের হাতে। আয়তনে ইলোরা ব্যাপক হলেও ভাস্কর্যে এলিফ্যান্টা অনবদ্য। ব্রাহ্মণ্য স্থাপত্যের অপূর্ব নিদর্শন এই এলিফ্যান্টা। এলিফ্যান্টা নামটিও পর্তুগিজদের দেওয়া। সেকালে বিরাটাকার পাথরের হাতি ছিল জাহাজঘাটায়। ১৮১৪র ভেঙে পড়া হাতি ১৮৬৪তে ভিক্টোরিয়া গার্ডেনে স্থানান্তরিত হয়ে জোড়া লাগে নতুন করে ১৯১২য়। ঘোড়াও ছিল এক মর্মরে। ১ শতকে সিলারা বংশের রাজধানী ছিল—নাম ছিল তার অগ্রহরপুরী। কালে কালে ঘরাপুন্নী দুর্নগরী।

পাহাড় কেটে ৪৫০—৭৫০ খ্রিস্টাব্দে হিন্দু রাজা দ্বিতীয় পুলকেশীর তৈরি শুহামন্দিরে শিব উপাসা দেবতা। তবে, জৈন ও বৌদ্ধ প্রভাবও মেলে এর ভাস্কর্যে। নয়টি শুহা মন্দির এলিফ্যান্টায় : (১) তাণ্ডব নৃত্যে শিব, (২) দৈত্যবধে শিব, অর্থাৎ রুদ্ররাসী চতুর্ভুজ দেবতা—নরকঙ্কালের মুকুট মাথায়। এক হাতে অঙ্ককে বধ করছেন, আর এক হাতে পাত্র যাতে অঙ্ককের রক্ত মাটিতে না পড়ে। তৃতীয় হাতে হস্তিচর্ম আর চতুর্থ হাতে খোলা তরোয়াল। (৩) শিব-পার্বতীর বিয়ে, ঘটক তার নারদ। ত্রুপদে এগিয়ে আসছেন কন্যাসহপতি হিমালয়। লাজুক-লাজুক মুখে পার্বতী। আর শিব হাস্যমুখে—এক হাতে নিজ কটিবাস ধরে অন্য হাতটি বাড়িয়ে দিয়েছেন পার্বতীর দিকে। পিছে পুরোহিত ব্রহ্মা বসে। তার পিছে স্বয়ং নারায়ণ দাঁড়িয়ে। (৪) গঙ্গার অবরোধ, (৫) ৪০x৪০মিটারের শুহা পাঁচ মূহেশমূর্তি রূপে শিব। একটি পাথর কেটে তৈরি এই মূহেশমূর্তি বা ত্রিভূতি। ভাইনে ব্রহ্মা, বামে শিব আর মাঝে বিষ্ণু অর্থাৎ স্রষ্টি, স্থিতি ও লয়ের তিন দেবতা। হিমডে, তপঃপুঙ্খ, অধোঃ এবং বামদেব—শিবেরই তিন রূপ এই ত্রী। ত্রিমূর্তির মাথার উচ্চতা ৬ ফুট করে আর মূর্তির উচ্চতা ১৮ ফুট।

মূল শুহার পাশে ছোট শুহাটিও কম আকর্ষণীয় নয়। অষ্ট-মাতৃকার মূর্তি রয়েছে এর দেওয়ালে। আর রয়েছে দু'পাশে কার্তিক ও গণেশ মূর্তি। (৬) একদিকে নারী অপরদিকে পুরুষ অর্থাৎ অর্ধনারায়ণ রূপে শিব ও পার্বতী। ভাইনে আয়না হাতে পার্বতী, বাঁয়ে সাপ হাতে শিব। মাথার উপরে ব্রহ্মা-বিষ্ণু-ইন্দ্র-বরুণদেব, নিচে কার্তিক। (৭) কৈলাসে শিব ও পার্বতী, (৮) দানব রাজা রাবণ শিবকে লঙ্ঘার নিয়ে যেতে বাড়িসমেত কৈলাস তুলছে, পার্বতী ভীত আর নিশ্পুহ শিব পায়ের আঙুল দিয়ে পিছু চেপে ঠায় বসে। রাবণের ব্যর্থতায় দেবতারা পুষ্পবৃষ্টি করছে—নন্দী ও ভৃগু দু'পাশে দাঁড়িয়ে। (৯) যোগীরূপী শিব।

MTDC-র ক্যান্টিন ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল হয়েছে এলিফ্যান্টায়। দিনভর (৯—১৭-০০) অবস্থানে MTDC-র Holiday Resort, Dist- Raigadh, ও 2848323, ৫ বেডের ২টি ঘর ২০০। ছুটির দিনগুলিতে স্থানীয়দের ভিড় পড়ে এই দ্বীপে। মুম্বাই পর্যটকদের অবশ্যই দেখে নেওয়া উচিত হবে। সোমবার বন্ধ থাকে এলিফ্যান্টা। যেমনই ফেব্রুয়ারির এলিফ্যান্টা ফেস্টিভ্যালও যথেষ্ট খ্যাতি পর্যটক মহলে। তেল মিলেছে আরব সাগরে—বসেছে শোধানাগার। সে কর্মকাণ্ডও দেখে নেওয়া যায় যাতায়াতের পথে লঞ্চে বসে। পাশেই ট্রাঙ্ক-এর আণবিক গবেষণা কেন্দ্র। অনুমতি নেই নামবার।

এছাড়া মুম্বাইতে রয়েছে আরও একাধিক দৃষ্টিনন্দন বাড়িঘর যা পর্যটকদের বিমোহিত করে। গেটওয়ে অব ইন্ডিয়ার সামনে সুপার ৫ স্টার হোটেল ডাঙ্ক ইন্টার-কন্টিনেন্টাল। স্বচ্ছন্দে এর স্বাচ্ছন্দ্য ও বৈভব দেখে নিতে পারেন। ভারতে অনন্য কোলাবায ওয়ার্ল্ড ট্রেড সেন্টার অর্থাৎ বিশ্ব বাণিজ্যিক কেন্দ্রটিও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে মুম্বাই পর্যটকদের। ভারতে জাত নানান পণ্যের সাথে দোকানপাটের সাজসজ্জাও রমণীয়।

ক্রস মাদানের বিপরীতে কে বি প্যাটেল মার্গে ১৮৭৪এ তৈরি গথিক শৈলীর ইউনিভার্সিটি বিল্ডিংটিও সুন্দর। আরও সুন্দর তার লাইব্রেরির শিরে অষ্টকোণী ৮০ মি উঁচু রাজাভাইরক্কটওয়ার। খ্রিষ্ট স্থপতি স্যার গিলবার্ট স্কটের নকশায় ১৮৮০তে বানিক শেঠ প্রেমচাঁদ রায়চাঁদ ৬ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ফ্রেঞ্চ গথিক স্থাপত্যে মারের স্মারকরূপে তৈরি করেন। সর্বালোক আসার জন্য রাশিক্রম অলঙ্কৃত রঞ্জিত কাচের ১২টি জানলাও অনবদ্য। তবে, বেল ও ঘড়ি ২ বছর পরে নতুন করে সংযোজন। মহারাষ্ট্রের ২৪ উপজাতীয় ২৪টি মূর্তিও মূর্তি হয়েছে টাওয়ারে। অনুমতি সাপেক্ষে উপর থেকে দেখে নেওয়া যায় চারপাশ। এরই নিচে ১৮৭৮এ খ্রিষ্টাব্দ গথিকশৈলীতে তৈরি ১৮০ ফুটের হাইকোর্ট ভবন। ২টি অষ্টকোণী টাওয়ারও হয়েছে। অদূরে সচিবালয়—মহারাষ্ট্র সরকারের নানান দপ্তরতথা মহারাষ্ট্রের রাষ্ট্রপতি বিল্ডিংস-ও দর্শনীয়। বিপরীতে বিধানসভা। নরিয়ান

পয়েন্টের এয়ার ইন্ডিয়া, সুপার ১ স্টার হোটেল ওবেরয় শেরাটন, নির্মল, স্টেট ব্যাঙ্ক অব ইন্ডিয়া, টুলসনানি চেম্বার, দালামল টাওয়ার, শিপিং কর্পোরেশন অব ইন্ডিয়া, LIC, এক্সপ্রেস টাওয়ার—আকাশচুম্বী বাড়িগুলি পর্যটকদের চোখ ধাঁধায়। কথায় বলে আলোর গোড়ায় আঁধার থাকে—তেমনই ভারত রাষ্ট্রের দরিদ্রতম লোকদের ঠাই দিতে নিচু মানের বস্তিও গড়ে উঠেছে মুম্বাই মহানগরীতে। এশিয়ার বৃহত্তম বস্তিও মুম্বাই-এর Dharavi-তে। মাফিয়া প্রভাবও যেন শহর-গঞ্জে প্রকট। রাজনীতি ও ধর্ম জাতিগত বিভেদ সৃষ্টিতে সদাই সচেষ্ট।

নরিম্যানের বামে ধনুকের জ্যা-এর মতো গড়ে তোলা হয়েছে মালাবার হিলস। কেবল গভর্নর হাউস আর মুখ্যমন্ত্রীর বাড়িই নয়—মুম্বাই-এর বিপ্লব এসে গরবিনী কবে তুলেছে এলাকাকে। যেমন আকর্ষণীয় পথঘাট, তেমনই অত্যাধুনিক ইমারত-শিল্প মূর্ত হয়ে উঠেছে মালাবার হিলসে। মালাবারের পথেই পড়ে বালুক্ষেত্র-এ ওয়াঙ্কেশ্বর শিবমন্দির। নতুন করে মন্দির হয়েছে ১৭১৫য় অতীত বিনষ্টের পর। প্রবাদ, অযোধ্যা থেকে শ্রীলঙ্কার পথে সীতা উদ্ধারে যেতে বালি দিয়ে শিব গড়ে পূজা করেন শ্রীরাম। বিপরীতে রামেবই তীরে খোঁড়া বাণগঙ্গা পুকুর। এপথেই আরও যেতে মালাবার হিলে ১৯০৩এ তৈরি শ্বেতাশ্বর জৈন মন্দির। শ্বেতমর্মরে গড়া দ্বিতল মন্দিরে বিগ্রহ হয়েছে জৈন তীর্থঙ্কর ঋষভদেব ও পার্শ্বনাথের। তীর্থঙ্করদের জীবন-আখ্যানও চিত্রে রূপ পেয়েছে দেওয়ালময়।

মালাবার হিলস থেকে নামতেই উপকূল ধরে স্বল্প যেতে মহালক্ষ্মী মন্দির। বাঁধ দিতে গিয়ে বারবার ভেঙে যেতে স্বপ্নাদিষ্ট রামলক্ষ্মী মন্দির গড়েন ব্রিটিশের অর্থনৈতিকুল্যে। স্বপ্ন মতো সমুদ্রের জলে হৃদিসও মেলে ঐশ্বর্যের দেবী মহালক্ষ্মীর। কিংবদন্তী, অতীতে মন্দির ছিল মালাবার হিলসের উত্তরে লক্ষ্মী, সরস্বতী ও কালী দেবীত্রয়ীর। হানাদারদের হাতে মন্দির ধ্বংস পেতে দেবী কাঁপিয়ে আশ্রয় নেন সমুদ্রে। মুম্বাই-এর প্রাচীনতমও বটে এই দেবমন্দির। নবরাত্রির উৎসবে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। অদূরে বিশ্বের অনন্য সুন্দর মহালক্ষ্মী রেস কোর্স। আজও রেসের আসর বসে নভেম্বর থেকে মার্চের রবি ও ছুটির দিনে। লাগোয়া উইলিংডন ক্লাব দুইয়ের মাঝে সমুদ্রের জলে খেত গম্বুজ শিরে হাজি আলির মসজিদ। জলে ডুবে মৃত্যু ঘটে ফকির সাহেবের—স্মারকরূপে সমাধি সৌধ হয়েছে মুসলিম ফকির হাজি আলির। ভাটায় সীকো ধর্মী পথে চলাও যায় মসজিদে। ট্রেন বা বাসে চার্চ গেট থেকে মহালক্ষ্মী পৌঁছে দেখে নেওয়া যেতে পারে ত্রয়ী। বাস যাচ্ছে ৮১, ৮২, ৮৩, ৮৪, ৮৫, ৮৬, ৮৭, ১৩২, ১৩৩ রুটের।

হাজি আলির অদূরে ওরলিতে ড. অ্যানি বেসান্ট রোডে নেহরু মিউজিয়াম/গ্ল্যান্টেরিয়াম বসেছে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ইংরেজি, হিন্দী ও মারাঠি ধারাবাহ্যে প্রদর্শন, টিকিট

৬ হারে; ৩ ৪৭২০১১০। এমনকি ফ্লোরা ফাউন্টেনের অদূরে চার্চগেট রেল স্টেশন বাড়িটিও কম আকর্ষণীয় নয়। পশ্চিম রেলের লোকাল ট্রেন যাচ্ছে চার্চগেট থেকে। আধুনিক বিজ্ঞানের অবদান আয়ারবিয়ান নাইটসের আলিবারার গুহার প্রতিরূপ দেখে নেওয়া যায় চার্চগেটের সাবওয়েতে নেমে। অদূরেই ওয়াংখেড়ে স্টেডিয়াম। জুহুর পথে সামান্ত্রাজ্য বিমানবন্দরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

মুম্বাই শহরের আর এক আকর্ষণ বাইকুমায় ডিম্বাকার ভিক্টোরিয়া গার্ডেন। ১৮৭২এ গড়া ৪৮ একর ব্যাপ্ত ভিক্টোরিয়ার নতুন করে নাম হয়েছে বীরমাতা জীজাবাই ভৌসলে উদ্যান। মুম্বাই-এর জু-ও এই জীজাবাই উদ্যানে। আর্থ আছে ভিক্টোরিয়া মিউজিয়াম ও অ্যালবার্ট মিউজিয়াম। ১৬৬১ থেকে ১৯৩১ পর্যন্ত মুম্বাই শহরের পরম্পরা তুলে ধরা হয়েছে ছবি, ফোটা, ম্যাপ, কয়েন ছাড়াও নানান সম্ভারে। উদ্ভিদ ও প্রাণীর সংগ্রহ-ও উল্লেখ্য। এমনকি ১৮৬৪তে এলিফ্যান্টার মর্মরের হাতিটিও স্থানান্তরিত হয়েছে মিউজিয়ামের কাককর্মময় প্রবেশদ্বারে। বৃহবার ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা থাকে মিউজিয়াম। তবে, চিড়িয়াখানা সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা।

তেমনই দর্শনীয় শিবাজী পার্কটিও দাদারে। ১৯২৭ খ্রিস্টাব্দে ছত্রপতি শিবাজীর ৩০০তম বর্ষপূর্তিতে অতীতের মহিম পার্কের নামান্তর ঘটে নতুন করে হয়েছে শিবাজী পার্ক। ১৯৪৬এ মহাত্মা গান্ধী এখান থেকেই দেশবাসীর উদ্দেশ্যে ভাষণ দেন। এমনকি ১৯৫৫য় সংযুক্ত মহারাষ্ট্র আন্দোলনের গুরুও এই শিবাজী পার্কে। আর আজ শিবসেনার সদর দপ্তর বসেছে পার্কে। লাগোয়া প্লে হাউস।

বাসেইন দুর্গ: ভূতুড়ে দুর্গ বাসেইন। পর্ভুগিজ আক্রমণ রুখতে গুজরাটের সুলতান বাহাদুর শাহর হাতে দ্বীপাকার বাসেইন দুর্গের পত্তন। আর সুলতানের কাছ থেকে দখল নিয়ে পর্ভুগিজরা নতুন করে দুর্গ গড়ে ১৫৩৪এ। মজবুত দেওয়ালে ঘেরা পরিকল্পিতভাবে গড়ে তোলা দুর্গ-নগরীতে অতীতে ৩০০ পর্ভুগিজ আর ৪০০ ভারতীয় খ্রিস্টান পরিবারের বাস ছিল। আর ছিল সেন্ট জোসেফ ক্যাথিড্রাল, ১৩টি গির্জা, ৫টি কনভেন্ট। দাস ব্যবসারও রমরমা ঘাঁটি ছিল দুর্গে। Court of the North বলেও খ্যাত ছিল পর্ভুগিজ কালে বাসেইন-এর। ১৭৩৯এ মারাঠা জেনারেল চিমনজী আঙ্গার সাথে ৩ মাসের যুদ্ধে বিধ্বস্ত হয় দুর্গ। দখল যায় দুর্গের পর্ভুগিজ থেকে মারাঠাদের হাতে। নামান্তরিত হয়ে বাসেইন হয় বাজীপুর—বাজীরাও পেশোয়া থেকে। আর ১৭৮০তে ব্রিটিশের বোম্বায় ক্ষতিগ্রস্ত দুর্গ বাসেইন ১৮১৬য় পুনে চুক্তিবলে ব্রিটিশের দখলে যায়। তবে, আজও পর্যটক আসছেন ইতিহাসের সাক্ষীরূপে দুর্গের অর্ধচন্দ্রাকার খিলান, বিশাল স্তম্ভ, আঁকাবাঁকা সরু সরু সিঁড়ি দেখতে। *পোর্টো দি টেরেরার* হা হা করা খোলা কপাট আজও যেন অতীত ফিরে

পায়। পালাবদলের সেই সব অলৌকিক পাত্রপাত্রীরা আজও নাকি ফিরে ফিরে আসে দুর্গে রাতের মজলিশে। মুম্বাই থেকে ট্রেনে ৭৬.৮ কিমি দূরে দুর্গ। সেট্রাল থেকে দাদার হয়ে সুরাটগামী প্যাসেঞ্জারে ভাসাই রোড (বাসেইন রোড) নেমে বাসে ১১ কিমি গিয়ে দুর্গ। সকালে গিয়ে সন্ধ্যায় ফেরাও যেতে পারে মুম্বাইয়ে।

আকর্ষণে উদ্বেগ না হলেও অত্যাশ্চর্যীরা New Ferry Wharf থেকে ফেরি লঞ্চে ১১ ঘণ্টায় Revas পৌঁছে ৩০ কিমি বাসে গিয়ে আব এক পর্ভুগিজ দুর্গ দেখে নিতে পারেন টোল-এ। ১৫২২এ পর্ভুগিজ দখলে যেতে দুর্গের পত্তন। আর পতন ঘটে মাবার্গাদের হাতে ১৮ শতকে।

বাজরেশ্বরী হট প্লিং : ভাসাই রোড রেল স্টেশন থেকে বাসে ১ ঘণ্টায় ৪১.৬ কিমি দূরে আকলোলী অর্থাৎ বাজরেশ্বরী চলুন। থানে হয়েও পথ গিয়েছে বাজরেশ্বরী। এছাড়া ট্রেনে কল্যাণ গিয়ে কল্যাণ থেকেও বাসে বাজরেশ্বরী যাওয়া চলে। যাতায়াতে সুবিধাও এই পথ। মুম্বাই থেকে দুবছ ৮৬ কিমি। চলাব পথে কল্যাণ থেকে ট্রেন বা বাসে উরাসনগব হয়ে ১০৬০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি অশ্বরেশ্বর শিব মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পাবেন উৎসাহীরা। দাক্ষিণাত্যের মন্দির স্থাপত্যের নিদর্শন মেলে কালো মর্মরের এই মন্দিরে। কার্কাব্য সন্দর্ভ।

পাশাপাশি ৩টি গ্রাম— আকলোলী, বাজরেশ্বরী ও গণেশপুরী। মোট ২১টি গবম জলের প্রস্রবণ রয়েছে। জলে সালফার আছে। বাও ও নানান চর্মরোগেব উপশম মেলে প্রস্রবণের জলে। বিখ্যেব সবচেয়ে গবম জলের প্রস্রবণও এই আকলোলীতে। আধুনিক স্নানাগারও হয়েছে। পাশেই শ্রীরামেশ্বর মহাদেবেব প্রাচীন মন্দির। বিপরীতে রাম লক্ষ্মণ-সীতা কুণ্ড—তিনেব জলেব ভাপে ভাবওমা আছে। আব প্রস্রবণ থেকে ১.৫ কিমি দূরে বজ্রাবমুখী বাস স্ট্যাণ্ডেব অদুবে বাসেইন দুর্গ জয়ের পব ১৭০০ খ্রিস্টাব্দে চিম্নজী আপ্লাব প্রতিষ্ঠিত মন্দিরে পূজা হয় দেবী বাজরাবাসি মাতার আজও। দেবীর নাম থেকেই জায়গার নাম বাজরেশ্বরী। চৈত্র পূর্ণিমার উৎসবে দূর-দূরান্ত থেকে যাত্রী আসেন।

থাকাব জন্য আছে MTDC-ব Holiday Resort, Akoli Dist-Thane, ০ (02522) 61371-এ ৬টি ২ বেডের কটেজ ৩৯০,

৬টি ২ বেডের ৫৯০, ২টি ২ বেডের সাইট ৮৯০, ৪টি ৮ বেডের সাইট ১০০০; Ghodbunder, Dist-Thane, ০ 8112185-এ ১টি ২ বেডের ১৫০ ৪টি ২ বেডের ২০০; আর গণেশপুরীতে আছে ৬টি ২ বেডের বাথসলেন A type ১৫০, ৬ বেডের ডব্লিউ ৪০ কবে। অব MTDC, Express Towers, 9th Floor, Nanman Point, Mumbai-400021, ০ (022) 2024482.

গণেশপুরীতে সমাধি আর আশ্রম হয়েছে সদগুরু নিত্যানন্দ মহারাজ ও মুক্তানন্দ মহারাজের। থাকারও আশ্রয় মেলে আশ্রমে। এমনকি ছুটির দিনগুলিতে মুম্বাই থেকে সরকারি বাসের বিশেষ ব্যবস্থাও থাকে বাসেইন দুর্গ ও বাজরেশ্বরী হট প্লিং বেড়িয়ে আনার। পর্যটকদের উচিতও হবে এই বিশেষ বাসের যাত্রী হওয়া। অদূরে মন্দ্যারি পাহাড়। অতীতে আগ্নেয়গিরি ছিল। পরন্তরাম এই পাহাড় হয়েই কোঙ্কন উপকূলের মহেশ্বরগিরি গিয়েছিলেন; সেই স্মৃতিতে মন্দির হয়েছে পরন্তবামের।



মুম্বাইতে হোটেলের অভাব নেই। হোটেল বয়েছে হাড়িয়ে-ছাড়িয়ে সাবা শহরময়। তবে বাড়িগুলি তাদের যেমন আকাশচুম্বী, খবচ-খবচাও তেমনই মধ্যবিহেব নাগাল ছাড়া। তেলেব দেশেব শেখেরা এসে জাঁকজমকেও ঠাঁট বাড়িয়েছে। কলকাতাবথানাব চিম্নি থেকে টাকা উডছে মুম্বাই-এব আকাশে-বাতাসে। সবই যেন ডাই মধ্যবিহেব নাগালের বাইরে। CST থেকে বেরুতেই বামগতি দক্ষিণে সমুদ্রস্রোতা Colaba Causeway, আব উত্তর এব নাম হবেছে Colaba আবও উত্তরে যেতে Fort ফোর্টেব পশ্চিমে Back Bay অর্গৎ সাগরবেলা মিলেছে মেবিন ড্রাইভে। পথেব শেষ মেরিন ড্রাইভ হাড়িয়ে পাহাড় চড়ে মালাবাব হিলসে। সাধারণ হোটেলের সমাবেশ ঘটেছে Colaba Causeway-তে অর্থাৎ Sahid Bhagat Singh Marg-এ। ১৫০ থেকে ৩০০ টাকায় ডাবল বেডের ঘবও মেলে এদেব কছে। তবে, জানালাব অভাব এসব ঘরে। দুইয়েব মাঝে ব্যবধান— সেও পাটিশনে। ডাক্তারও অবস্থান এই কোলাবাব। ৩৫০ থেকে ৮৫০ টাকায় ঘবেব ব্যবস্থা নিয়ে মধ্যমানের হোটেল গড়ে উঠেছে নেতাজী সুভাষ রোড অর্থাৎ অতীতের মেরিন ড্রাইভকে ভব কবে মাদাম কামা রোডের আশপাশে। আর তাবকাখচিত লাক্সারি হোটেল মেলে ১৫০০— ১৫০০০ টাকায় সাবা শহর জুড়ে। তেমনই বিমানবন্দরকে ভর করে জুই বীচেও নানান লাক্সারি হোটেলের অবস্থান। তবুও জানুয়ারি-ফেব্রুয়ারির পিক সিজনে স্থানভাব ঘটে চলে মুম্বাই-এর হোটেল। এমনকি

বেনারসী • সর্বভারতীয় সিন্ধু • হ্যান্ডলুম কটন ও
ফ্যাক্সী শাড়ী পাওয়ার একমাত্র ঠিকানা

উৎসবে
উপহারে
অপরিহার্য

সুনীতা

শ্রীতাতপ
নিয়ন্ত্রিত

১১৩/১১৪, রাসবিহারী এডিন্স, ফ্রিকোন পার্কের বিপরীতে,
কলকাতা ৭০০ ০২৯, ফোন ৪৮৬-৩৭১৫

নিচু মানের হোটেলগুলির ব্যাপারে পর্বতিন দপ্তরের অসীম ব্যক্তি-
করে—ভারতবর্ষে হোটেল নির্মাণ ব্যক্তি এরা। ট্যাক্সি/অটো
চালকদের সঙ্গে কবিশন প্রধারণ চল আছে সাধারণ হোটেলের।
ডাই উদ্ভিত হুব এককভাবে হোটেল গিয়ে ঘর নির্বাচন করা।

Mumbai CST অর্থাৎ Chhatrapati Shivaji Terminal-
কে বিয়ে মধ্যমানে নানান হোটেল Mumbai, STD 022, PC-
400001-এ। CST থেকে বেরতেই বাঁয়ে GPO, বিপরীতে City
L, 121 City Terrace, WH Marg, S ৩২৫ D ৪৫০ ডিলার S
৫৫০ D ৬৫০ A/c D ৭৫০; Empire Hindu H, ৩০৪২৭৮৯,
AP প্রধার DCB ২২৫ DAB ৩৫০ ডর্মি বেড ১২৫; Modern
GH, ৪১ Modi St, DAB ২০০-৩২৫; GPO বেশ হতেই বামহাতি
PD Mello Rd-এ: H Mamata, H Regal, S ১৫০ D ২৫০ T
৩০০; H Manora (243), ৩ 261745, S ২৭৫ D ৩২৫ A/c
S ৪৫০ D ৬৫০ T ৫০; Ship H (219), Fort-38, ৩ 2615465,
DCB ২২৫ DAB ৩৫০ A/c D ৬০০; H Manama (221),
DCB ২০০ DAB ৩০০ A/c D ৪০০; H Sealord (167),
৩ 2615785, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c S ২২৫ D ৬৫০;
*H Rupam, ৩ 2618298, A/c S ৬৫০ D ৭৫০; *H Embassy,
opp Dock Yard Rd, A/c S ৪৫০ D ৬৫০।

ডানহাতি Bhagat Singh Marg-1-এ—Welcome H, S
৪০০ D ৬০০; পাশেই H Victoria, DCB ২০০-২৫০; Punjab
Amritsar H (263), ৩ 2613555, DAB ৩২৫ A/c D ৪৫০;
H Oasis, ৩ 2697886, DAB ৩৫০-৪৫০ A/c D ৬০০।
পাশেই Railway H, 15/17 Raja Rammohan Roy Rd-4,
৩ 3821028, SAB ১৫০ DAB ২৭৫ সুইট ৪২৫
A/c S ৪৫০ D ৬৫০; লাগোয়া একই নামে Railway H, 249 P
D Mello Rd-38, ৩ 2620775, D ৭০০-৮৫০ A/c D ৮০০-
১০৫০ সুইট ১২৫০; অদূরে H Tourist, Prince H, GPO-র
বিপরীতে বিজার্ড ব্যাকমুখী Popular L, D ২০০-৩০০;
National Hindu H, DCB ১৭৫-২৭৫। Nrishinha Hindu
L, 177 Dada Bhai Nauroji Rd-1, Fort, S ১৫০ D ২৫০ ডর্মি
১০০; Paras GH, 203 Bazar Gate St-1, Fort: Vijay Niwas
L, 17 Dwardas Lane, Fort, SCB ২২৫ DCB ২২৫; Shell
H, 23 Manohar Das St, opp CST, DCB ১৭৫ DAB ২৫০।

C S T থেকে ডানহাতি মিনিট সাতকের পারে হাঁটা পথে
Dada Bhai Nauroji Rd, Sitaram Building, near Crawford
Market, Mumbai-400001-এ—New Bengal L,
৩ 3431951, বর্তমানে মালিকানা ঘটিও অবাভালিগ, তবে
অতীতে এটি বাজালির হোটেল ছিল। সেকারণে বাজালির সমাপন
ঘটে চলেছে আজও। তবে, ঘর অতি সাধারণ মানের, আলো-
হওয়ার অভাব—SCB ১৪০ DCB ২২০ SAB ২৫০ DAB
৩২৫ ডিলার S ৩২৫ D ৩৭৫ ডর্মি বেড ৫০, A/c-র জন্য ১০০
অতিরিক্ত; এদের কল বুকিং: হোটেল নিউ বেঙ্গল, 10 Govt Place
(E), 3rd Floor, Cal-69, ৩ 2486664, গোয়া ব্যাংককেও আছে
এরা। একই বাড়িতে ৩য় তলে Capital L, ৩ 3441971, DCB
১৫০-২৭৫ ও New Star L, G Block, ৩ 3444073, DCB
২০০ DAB ২৫০। চলার পথে H Imperial, opp Hain House,
D ২৫০-৩৫০। H Sadananda, Lokmanya Tilak Marg-3,
opp Crawford Mkt, ৩ 3445503, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S
৬০০ D ৮০০; Sardar Griha, 198 Lokmanya Tilak Marg-

2, CST 1, Central 5, AP-S ২০০-৩২৫; New Basanta
Ashram L, 232 Lokmanya Tilak Marg-2, ৩ 2080226,
DCB ২০০; Great Punjab H, opp Metro Cinema, DAB
৩০০; অদূরে New Metro GH, 78/80 1st Cross Lane,
৩ 2068880, DAB ৩৫০ A/c D ৪৫০; Metro Pole H,
Paltan Rd, Crawford Mkt-1, D ২২৫-৩০০ A/c D ৩৫০-
৪৫০ (B & B)।

C S T থেকে ২ কিমি দূরে Apollo Bunder তথা Colaba-
য় ভাঙ্গ ইন্টারকন্টিনেন্টালের পিছে 8 Best Road-এর একই
বাড়িতে ১ম ও ২য় তলে H Stiffles; ৩য় ও ৪র্থ তলে H Rex;
মান ও দাম একই এসের—ঘরও মেলে D ২২৫-৩৭৫ টাকার।
একই বাড়িতে Regent H, ৩ 2871854, A/c S ৭৫০ D ৯৫০
T ১২০০; *H Diplomat, 24-26 B K Boman Behram
Marg, Colaba-39, CST 2, ৩ 2021661, A/c S ৮৫০-১০৬০
D ১২০০-১৫০০; Salvation Army Red Shield Hostel, 30
Mereweather Rd-39, DAB ২৭৫ (B & B) ডর্মিতে AP-S
২০০; কলারবমুখর পরিবেশে *H Whalley's, 41 Mereweather
Rd-39, ৩ 2821802, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০ D
৬৫০ থেকে; Carlton H, 12 Mereweather Rd, ৩ 2020642,
D ২৫০-৩২৫। Henry Rd ও P J Ramchandani Rd সংযোগে
H Prosser's, ৩ 2841715, S ২০০ D ৩০০। আরও বাঁয়ে P
J Ramchandani Marg, Sea Face, Colaba-39-এ পাশাপাশি
অবস্থান—*Sea Palace H, ৩ 2841828, A/c S ৮৫০ D
১৫০০ সুইট ১৭৫০-২৫০০; Strand H, S ৫০০ D ৬০০
A/c S ৬৫০ D ৭৫০-৮৫০; Shelley's H, ৩ 2840229, A/c
S ৬৫০-৮৫০ D ৮৫০-১২০০।

Garden Rd, Colaba-39-এ—*Garden H,
৩ 2841476, A/c S ৯৫০ D ১২৭৫-১৫০০ সুইট ২৫০০;
লাগোয়া *Godwin H, ৩ 2872050, A/c S ১০৯০ D ১৫০০-
১৭৫০; *Ascot H (38), ৩ 280020, A/c S ৮৫০ D ১২০০;
অদূরে Bentley's H, 17 Oliver St-39, ৩ 2841474, DAB
৪৫০-৬৫০ A/c D ৮৫০। Arthur Bhandar Rd-5-এ—একই
বাড়ি কমল ম্যানসনে Sea Shore H, H Mukund, আর আছে
সাধারণ—Janata GH, 1/30 Kamal Mansion, SAB ২০০
DAB ৩২৫ TAB ৩৭৫; Imperial GH, India GH, Gateway
GH, Gulf H, Hotel Al-Hijaz, এসের চার্জ S ১২৫-২২৫ D
২০০-৩৫০। Norman's GH, ৩ 294234, A/c S ৫০০ D
৭৫০; বিপরীতে *H Apollo, 22 Lansdowne Rd-39,
৩ 2020223, A/c S ৯৫০ D ১২০০; *Astoria H, 4 J Tata
Rd-20, ৩ 2852626, A/c S ৬৫০ D ১০০০; Taj Mahal
Intercontinental, Apollo Bunder-39, ৩ 2023366, A/c S
২৮৫ D ৩০৫ US\$; লাগোয়া *Taj Mahal H, near Gateway
of India, ৩ 2023366, A/c S ২৪০-২৮৫ D ২৬০-৩০০ সুইট
৪৫০-৭৫০ US\$; *Fariyas H, 25 Off Arthur Bhandar Rd-
5, ৩ 2042911, A/c S ২৫০০ D ৩০০০ সুইট ৩৭৫০-৪৫০০;
Kerawalla Chembur GH, 25 P J Ramchandani Marg-
39, SAB ৪৫০ DAB ৬৫০ A/c D ৯৫০; Cowies H, 15
Watson Rd-39, ৩ 2834203, A/c D ৬৫০-৮৫০।

কোলোবা থেকে সরে বামুখের পিছে Lawrence H, Ashok
Kr Lane, D ৩০০-৪২৫; গেটওয়ে অব ইন্ডিয়ায় পথে Suba G

H, Shivaji Maharaja Marg, DCB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c D ৬৫০; H Elphinstone, SAB ২০০ DAB ৩৫০; The Dukes Retreat, Sadhana Rayon House, 6th Floor, D ৪৫০ A/c D ৬৫০; ফ্লোরা ফাউন্টেনের কাছে দক্ষিণ ভারতীয় H Sahayug, 13 Cawasji Patel St-1-এ AP-S ১৮৫-২৭৫ টাকার দক্ষিণ ভারতীয় আহার সহ থাকা।

অজীভের Marine Drive, নবতম Netaji Subhash Rd, Church Gate 400020-এ সমুদ্রমুখী প্রশস্ত ঘরের *Sea Green H, 145 N S Road, Church Gate-20, CST3, ৩ 2822235, S ৮০০ D ৬৫০ সুইচ ১০০০; লাগোয়া *Sea Green South H, ৩ 2821613, S ৫২৫ D ৭০০ সুইচ ৯৫০ A/c S ৮০০ D ৯৫০; H Delamar, 141 Sundar Mahal, ৩ 2042848, A/c S ৪০ D ৪৫ USS, *RtZ, 5 Jamshedji Tata Rd-20, ৩ 2850500, A/c S ২৭৫ D ৩৫০০ সুইচ ৪৫০০-৫০০০; *Ambassador H, Veer Narman Rd, Church Gate Ext-20, A23R1B5, ৩ 2041131, A/c S ১৩০ D ১৪৫ সুইচ ১৫০-২৭৫ USS; অ্যাথলান্ডার লাগোয়া *Chateau Windsor H, 86 Vir Narman Rd, Church Gate-20, ৩ 2043376, S ৬৫০-৮৫০ D ৮৫০-১২০০ A/c S ৮৫০-৯৫০ D ১২০০-১৫০০, হোটেলটি ভালই; *H Nataraj, 135 N S Rd-20, ৩ 2044161, A/c S ২২০০ D ৩০০০ সুইচ ৪৫০০; H Norman's, 2 Firdaus, ৩ 2034234, A/c S ৪৫০ D ৬৫০; *H Bombay International, 29 N S Rd-20, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইচ ১২৫০।

মুম্বাই CST থেকে ৬ কিমি দূরে Mumbai Central Rly Stn তথা বাস স্ট্যাণ্ডকে ঘিরে নানান হোটেল—H Top Top, 394 Dr Bhadkamkar Rd, Central-400004, SAB ২৭৫ DAB ৩৫০ A/c D ৬০০; H Regal Palace, Tata Rd, No 1, opp Roxy Cinema, Mumbai-4, ৩ 3634225, S ২৫০ D ৪৫০ A/c D ৬৫০ সুইচ ৮৫০; H Sahara, 35 Tribhuvan Rd-4, ৩ 3861491, SAB ২৫০ DAB ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; H Hira, 215 RRR Rd, opp Girgaum Church, Mumbai-4, ৩ 3868621, DCB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c D ৬৫০; Madhavashram, 18 Parekh St, Girgaum-4, ৩ 3822764, Central Rly Stn, S ২২৫ D ৪২৫; Heradiya Lodging, 407 Kalba Devi Rd-2, ৩ 311808, S ১৫০ D ২৫০ ডব্লিউ ৬০; Neel Kamal GH, opp Grant Rd Rly Stn-7, ৩ 3868894, D ৩৬০-৪৫০; R K Hotel, 379 Dr Bhadkamkar Rd-7, ৩ 3861471, SAB ২০০-২৫০ DAB ২৭৫-৩৫০ TAB ৩৭৫ A/c D ৫০০ T ৫৫০ সুইচ ৮৫০; H Anukool, 292 M S Rd, Grant Rd-7, R3, S ২৫০ D ৪৫০ সুইচ ৬৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; Sangam GH, opp Novelty Cinema, Grant Rd-7, DCB ২৯৫ DAB ৩২৫ A/c D ৪৫০ T ৫৫০ সুইচ ৬৫০; H Rahat, 422 Grant Rd-7, DAB ৩২৫ A/c A/c D ৪৫০; H Evergreen, 12 Shamrao Vitthal Marg-7, ৩ 3864214, SCB ১৭৫ DCB ২৫৫ SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; National H, 337 Grant Rd-7, SCB ১৫০ DCB ২৫০ TCB ৩০০; *H Sahil, 292 J B Behram Marg-8, ৩ 3081421, A/c D ১১০-২২০ সুইচ ৪১০০; H Bahwas, 323 M Shaukatali Rd, opp Best Bus Depot, Central-8,

৩ 3081481, DAB ৮০০ A/c D ১০৫০-১৫০০; H Gulistan, 196 Dr Bhadkamkar Marg-7, close to Rail Stn, ৩ 3081461, DAB ৫০০ A/c D ৬৫০-৯৫০; H Grant, 44 Proctor Rd, near Grant Rd Bridge (E)-7, ৩ 3871491, DAB ৪৭৫ A/c S ৬৫০ D ৬৫০-৮৫০ সুইচ ১০০০; হ্যাডাও নানান।

মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে ৬ আর CST থেকে ৯ কিমি দূরে Dadar Station, দাদার থেকে প্রতি ২ মিনিট অন্তর ট্রেন বাজে মুম্বাই সি এস টি ও সেন্ট্রাল স্টেশন। রেলো দাদার থেকে মিনিট পনেরোর পথ। সরকারি কস্ট মার্কা বাসও বাজে সি এস টি, সেন্ট্রাল হ্যাডাও শহরের নানান প্রান্তে লিনরামি জুড়ে দাদার থেকে। শহরের ভিড়-ভাড়া এড়িয়ে বন্ধ ব্যয়ে অধিক বজ্জে দাদারেও অবস্থান করতে পারেন মুম্বাই পর্যন্ত। হোটেলও আছে নানান: Dr Ambedkar Road, Mumbai-400014—H Aroma, ৩ 4111761, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; Sri Joshi Lodging House; Star of Cochun, ৩ 4143434, SCB ১৫০ DCB ২৫০ A/c D ৫০০; H Shantidoot, opp Hindmata Cinema, ৩ 4113051, D ৫২৫ A/c D ৭৫০; H Avon Ruby, 87 Naigaum Cross Rd-14, Dadar-E, near Rly Stn, ৩ 4114591, A/c S ৮৫০ D ১০৫০ সুইচ ১৮৫০; H Staywel, 385 N C Kelkar Rd-28, ৩ 4220762, S ৩২৫ D ৪৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০; *H Park Lane, 95 Dadasaheb Phalke Rd-14, ৩ 4114741, SAB ৪৫০ DAB ৫৭৫ A/c S ৬২৫ D ৭৫০-৮৫০ সুইচ ১০০০; Dadar GH, S ১৫০ D ২৫০।

Shivaji Park-400028-এ: Bharat Green GH, Ranade Rd Extn, ৩ 458069; New Shrikrishna Boarding House; Ramniwas L, Ranade Rd; Siddhartha GH, D Phalke Rd-14, ৩ 4113636; একই পথে Dilbahar GH-14, ৩ 4113732; H Amrita, D L Vaidya Rd-28, ৩ 4306692; Novelty GH, Dadar-CR-14, ৩ 4110203; Milan GH, L G Rd, S P-28; Shalimar GH, 155A, D Phalke Rd-14; Ashwini GH, Shivaji Park-28; Mother India H, Gokhale Rd, opp Portuguese Church-28; Nirmal GH, 89 S K Bole Rd-28; Eswar GH, L N Rd-14, opp Dadar Rly Stn, ৩ 4144474—এদের কাছে SCB ১০০-১৭৫ DCB ১৫০-২২৫ SAB ১৫০-২৭৫ DAB ২২৫-৩৫০ টাকার মেলে। শীতাতপ ঘরও মেলে এই সব গেস্ট হাউস তথা হোটেল। *H Parkway, Ranade Rd Ext, Sivaji Park-28, ৩ (9122) 4453361, (B&B) A/c S ৭০০ D ৮৫০ সুইচ ১২০০; H Amigo, 289 Vir Savarkar Marg, Shivaji Park-28, A/c S ৭৫০ D ৯০০; H Ameya, Gokhale Rd-N, Shivaji Park-28, DAB ৪৫০ A/c D ৬৫০; H Red Rose, Gokuldas Pasta Rd-14, Dadar-E, ৩ 4137843, D ৮৫০ A/c D ৯৫০ সুইচ ১২০০; *H Midtown Pritam, Pritam Estate-14, ৩ 4145553, A/c S ১২৫০ D ১৫৫০ সুইচ ২৫৫০; H Hill Top, 960 Ranade Rd, Sivaji Park-28, A/c S ৬৫০ D ৮৫০।

ডেমনই সেন্ট্রাল থেকে ৩৫ কিমি দূরে আর এক শহরতলি Chembur, Mumbai-400071-এও হোটেল মেলে নানান। Rajhans H, opp Chembur Rly Stn, ৩ 5564055, A/c S

৮৫০-১২০০ D ১১০০-১৫০০; রেল স্টেশনের বিপরীতে *Satkar L*, @ 5554858 DCB ২২৫ ডর্মি বেড ৮০-১০০; *Highway L*, 1 Shantiniketan, near Rly Crossing, DCB ২০০; *Bharti L*, 2 Govandi Rd-71, S ১৫০ D ২৫০ A/c D ৪৫০; *Ameer GH*, Plot C/20, Sona 1st Rd-71, DAB ৩০০ A/c D ৪৫০; *H Neel Kamal*, S T Rd-71, DAB ২৭৫ A/c D ৪৫০; *Chembur GH*, N G Acharjya Marg-71, SCB ১২৫ DCB ২০০ SAB ২২৫ DAB ৩০০; *Bharat H*, 2 N G A Marg-71, @ 5553273, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৪০০; *New Lodging House*, N G Acharjya Marg-71, DCB ১৫০ DAB ২৫০-৩২৫; *H Broadway*, Sion-Trombay Rd-71, DAB ২৫০ A/c D ৪৫০; *H Annapurma*, 70-H, Central Avenue Rd-71, @ 5557124, SAB ১৫০ DAB ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; *H Maharana*, V N Purav Marg-71, DAB ২৫০ A/c D ৩৫০-৫৫০ সুইট ৭৫০; *H Tilak Palace*, 403K, Sion-Trombay Rd-71, SAB ২২৫ DAB ৩৫০ A/c D ৫০০; *H Royal*, 83-A, N G Acharjya Marg-71, @ 5550343, SAB ৪০০ DAB ৫৫০ A/c S ৪৫০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০; *H Pearl*, Plot-8, D K Sandu Marg-71, @ 5564025, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৭৫০-৮৫০; *H Diamond*, 70F, SS-III, Central Avenue, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; *Subhas L*, 72 Hirabaug, S ২০০ D ৩২৫; *Prakash L*, N G Acharjya Marg, S ১৫০ D ২৫০; *H Plaza*, 70 Central Avenue, A/c D ৭০০; *Jewel of Chembur H*, 1st Rd, near Natraj Cinema, @ 5552702, A/c S ৫২৫ D ৮৫০ সুইট ১০০০।

সেন্ট্রাল থেকে ১৩ কিমি দূরে Santacruz (East)-400054 ও Santacruz (W)-400055-এ হোটেল মেলে নানান। *H Welco*, Station Rd-54, @ 6492005, S ২০০ D ৩৫০ A/c D ৪৭৫; *Yatri H*, Behind BEST Bus Std-55, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c D ৪৫০; *H Airport Palace*, Bulls Royce Colony Rd, Vakoba Bridge-55, DAB ৩০০-৪৫০ A/c D ৬০০; *H Rangmahal*, Stn Rd, Santacruz-W, @ 6490303, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c D ৬৫০; **H Galaxy*, 113 Prabhath Colony (E)-55, @ 6144980, D ৬০০ A/c D ৭২৫-৮৫০; *H Regency Park*, 7th Rd, Khar Subway-55, DAB ৩৫০ A/c D ৫৫০; *H Milan International*, 1st Rd, near Milan Subway, close to Santacruz Rly Stn, @ 6147666, A/c S ৬৫০ D ৮০০ সুইট ১৫০০; *H Apsara*, 7 Swami Vivekananda Rd, Santacruz-54, @ 6491241, A/c D ৫৫০ সুইট ৬৫০; **H Accord*, 32 J N Rd-55, @ 6145624, A/c S ৭৫০ D ৮৫০-১০০০; *H Midland*, J N Rd, Santacruz (E) 55, @ 6110413, S ৬০০ D ৭০০ A/c S ৭০০ D ৮৫০; *H Lovely*, J N Rd-55, (B&B), S ৪০০ D ৫৫০ A/c S ৬০০ D ৮০০।

মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে ১৮, লাদার থেকে ১২, আর সি এস টি-র ২১ কিমি দূরে Andheri-400069-এ: *H Imperial Palace*, 45 Telly Park Rd, Andheri (E), Bombay-69, S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০ A/c ৭৫০/ ৯৫০/ ১০৫০; *H Ras International*, Vaikunth Park Rd, close to Andheri Rly Stn, @ 8348118, A/c S ৭০০ D ৮০০-৯৫০; **H Samraj*,

Chakala Rd-99, @ 8349311, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০; *H Highway Inn*, Andheri-Kurla Rd-69, DAB ৬০০ A/c D ৮৫০; *Host Inn International*, Andheri-Kurla Rd, Andheri (E)-59, @ 8360105, A/c S ৯০০ D ১২০০ সুইট ১৫৫০; **H Metro International*, Andheri-Kurla Rd-72, @ 8387264, A/c S ৬৫০ D ৮৫০-১২৫০ সুইট ১৫০০; **H Silver Inn*, near International Airport, Marol Maroshi Rd, Andheri (E)-59, A/c S ৮০০ D ৯০০ সুইট ১০২৫; *H Ruina Mahal*, Sahar-Chakala Rd-99, Andheri E, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৫০০ D ৭০০; **H Tunga International*, B-11 Central Rd-93, A/c S ৭৫০ D ৯০০ সুইট ১২৫০-১৫০০; *H Ashwin*, Marol-Marushi Rd-59, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০; *H Sahar International*, opp Andheri Rly Stn-69, A/c S ৬০০ D ৮০০; **H Airport Kohinoor*, Andheri-Kurla Rd-59, @ 8348548, A/c S ১১০০ D ১৫০০ সুইট ৩২৫০-৪৫০০; *H Sun-N-Shell*, 318/41 Kakad Corner-59, A/c S ৫০০ D ৭৫০; **Leela Kempinski*, Sahar Rd-59, @ 8363636, S ২২৫-২৭৫ D ২৬০-৪৫০ সুইট ৪২৫-১৩৫০ US\$; **H Sureshu*, Dr Karanjia Rd, Chakala-99, Andheri-E, @ 8321198, A/c S ৬৫০ D ৮৫০।

মুম্বাই শহর থেকে ২১ কিমি দূরে আবব সাগরের পাড়ে Juhu Beach, Mumbai-400049-এও উচ্চ ও মধ্যমানের নানান হোটেল: *Juhu H*, @ 6184012, A/c S ১২০০ D ১৫০০ ১৭৫০ সুইট ২৫০০; **Centaur H*, Juhu Beach-49, @ 6113040, A/c S ৪৭৫০ D ৫৫০০ সুইট ৭৫০০ থেকে; **Palm Grove H*, A/c S ৯৫০ D ১২০০ সুইট ১৭৫০; **Sim-N-Sand H*, 39 Juhu Beach-49, @ 6201811, A/c S ৩২০০ D ৩৭০০ সুইট ৪৫০০-৬০০০; **H Sandu*, 39/2 Juhu Beach, @ 6204511, A/c S ১২০০ D ১৬০০ সুইট ২৫০০; **H Sea Princess* (959), @ 6117600, A/c S ২৫০০-৩২৫০ D ৩২০০-৩৭৫০ সুইট ৫৫০০; **Sea Side H*, (39/2), @ 6200293, A/c S ৮৫০ D ৯৫০-১২৫০; **H Riviera*, A/c S ৪৫০ D ৭৫০; **H Sea View*, @ 6123244, D ৪০০ A/c D ৫৫০; *H Golden Manor*, opp Juhu Church-49, @ 6149281, A/c S ৬০০ D ৮৫০; *H Beach Garden*, A/c D ৫০০; **H Ajanta* (8), @ 6183047, A/c D ১৭৫০ সুইট ২২৫০-৩৫০০; **Citizen H* (960), @ 6117273, A/c S ১২৯৫ D ২০০০ সুইট ৩২৫০; **H Horizon* (37), @ 6117979, A/c D ২২৫০ সুইট ৩০০০-১১৫০০; **Ramada H*, Juhu Beach-49, @ 6112323, A/c S ১২৫ D ১৬০ সুইট ১৮৫-২৬০ US\$; **Holiday Inn*, Balraj Sahani Marg-10, @ 6204444, A/c D ১৯০-২৬০ সুইট ২৪০-৭৫০ US\$; *H Gayland*, @ 6147041, Juhu Tara Rd-49-এ: **H Royal Garden*, Santacruz-W, @ 6130252, A/c S ৮০০ D ১০৫০; *H Beach View*, D ৫৫০ A/c D ৭৫০ সুইট ৮৫০; **H Seaking* (5), @ 6141329, A/c S ৭৫০ D ৮৫০ সুইট ১৫০০; *H Atlantic* (18/B), @ 6122440, A/c S ৯৫০ D ১২০০ ডিল্লি ১৫০০; **H Juhu Continental*, @ 6124049, A/c S ১২০০ D ১৫০০ সুইট ২২৫০; **Kings H*, 5 Juhu Tara Rd-49, @ 6149775, A/c S ৮৫০ D ১০০০; *South*

End H (11), ① 6125213; *Iskcon Ashram*, Hare Krishna Land, ① 626860

অদূরে **Santacruz** বিমানবন্দর তথা **Vile Parle**-তেও নানান হোটেল: **H Damji's*, V M Ghanekar Rd-57, ① 6152922, A/c S ৩০ D ৪০ সুইচ ৭৫ US\$, *H Nest*, 22 Vallabh Bhai Rd-56, *H Rupali*, Vile Parle-W, S V Rd-56, ① 8362790, A/c S ৫৫ D ৬০০-৮৫০; *H Classic*, 31 S V Rd-54, ① 6491456, S ৬৫ D ৮০০ A/c S ৮৫ D ১০০০; **Centaur H*, Santacruz Airport-99, ① 6116660, A/c S ৩২০০ D ৩৭০০ সুইচ ৯৫০০; *H Columbus*, 344 Nanda Patkar Rd-57, ① 6145717, A/c S ৭০০ D ১০০০; *H Aircraft International*, 179 Dayaldas Rd, Vile Parle (E), ① 6123667, A/c S ৫৫ D ৭৫০, **Air Link*, 75 Nehru Rd, near Airport-99, ① 6184200, A/c S ৯৫ D ১২০০ সুইচ ১৭৫০; **Kanani's Plaza*, 70C Nehru Rd, Vile Parle (E)-99, ① 6123390, A/c D ২২৫০ সুইচ ২৭৫০; *Airport International*, 5/6 Nehru Rd, Vile Parle (E)-99, ① 6122883, A/c S ১০০০ D ১২৫০, **H Jal*, Vile Parle (F)-57, *H Transit*, Nehru Rd-99, A/c S ১২৯৫ D ২০০০ সুইচ ২৭৫০; **H Parle International*, Agarwal Market, Vile Parle (E)-57, A/c S ১০০০-১২৫০ D ১৪০০-১৭৫০ সুইচ ১৫০০-২০০০, *H Satellite*, 213 Dixit Rd, Vile Parle (E)-57, ① 6117452, A/c S ৬৫ D ৮৫০, T ৯৫০, *H Airport Plaza*, 70-C, Nehru Rd, Vile Parle (E)-99, A/c S ৮৫ D ৯৫০ সুইচ ১৫০০, **H Avion*, Nehru Rd, near Airport-57, ① 6121348, A/c S ৯০০ D ১২০০ সুইচ ১৭৫০; *H Ramkrishna*, 148 Nehru Rd-57, close to Vile Parle Rly Stn, A/c S ৫৫০-৬৫০ D ৭০০-৮৫০, **H Anthi*, 77 A B, Nehru Rd, Vile Parle (E)-99, ① 6116124, A/c S ১৫০০ D ১৮৫০, *H Jayashree*, opp Santacruz Airport, A/c S ৮০০ D ৯৫০-১২৫০, *Purnima GH* Juhu-49, DCB ২৫০ DAB ৪০০, *H Meenas* Juhu Rd-49, A/c S ৬০০ D ৮৫০।

মুম্বাই শহর থেকে ৩০, এয়াবপোর্ট থেকে ১৬ কিমি দূরে **Thane**-তে—**H Prayad International*, Western Express Highway-401104, ① 8118210, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪০০ D ৬৫০, *H Natwar*, Main Rd-400604, ① 5320409, *H Golden Palace*, Old Agra Rd, Thane (W)-400601, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৪৭৫ D ৫২৫ সুইচ ৪৫০/৬৫০।

Khar, Mumbai-400052-এ—*H Amardeep*, 3rd Rd, D ৩০০ A/c ৫৫০; *H Guru*, 3rd Rd, DAB ৪০০ A/c D ৬৫০; *Simla GH*, 3rd Rd; **H Linkway*, 519/A, V P Patel Rd-52, ① 6496008, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইচ ৭০০-৮৫০; **H National*, Plot-17, 4th Rd-52, ① 6494406, DAB ৪৫০ A/c ৫৫০-৭৫০; **H Singh's International*, 3rd Rd-52, near Khar Rly Stn (W), ① 6496806, A/c S ৬০০ D ৭৫০ সুইচ ১০০০-১২৫০; *H Samrat*, 3rd Rd, Khar (W)-52, close to Khar Rly Stn, ① 6485441, A/c S ৪০০-৫৫০ D ৫৫০-৬৫০ সুইচ ৭০০-৮৫০; *Jewel Palace H*, 5th Rd Corner, ① 6492924, A/c S ৬৫০ D ৮০০; *H Oscar*, 12 Pali Hill-

52, A/c S ৫৫০ D ৬৫০; *H Sunways*, 534 Linking Rd-52, ① 6480511, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইচ ৯৫০; **H New Castle*, 355 Linking Rd-52, ① 6480491, A/c S ১২০০ D ১৭৫০-২০০০ সুইচ ২৫০০; **Royal Inn*, near Khar Telephone Exchange, ① 6495151, A/c D ৬৫০ সুইচ ৯৫০; **H Mayura*, 352 Linking Rd-52, ① 6494416, A/c S ৭০০ D ৮৫০, *H Castle*, 355 Linking Rd-52, A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইচ ৯৫০; *Ciadel H*, 757 S V Rd, A/c S ৪৫০ D ৬৫০; **H Oriental Palace*, 746 Khan Pali Rd-52; **H Caesars Place*, 313 Linking Rd-52, A/c D ৬৫০; *H Shubhangam*, 711 First Rd, Khar (W)-52, ① 6460382, A/c S ১২৫০ D ১৭৫০ সুইচ ২৫০০; *H Pali Hills*, 14 Union Park-52, ① 6492997, A/c S ৮০০ D ৯৫০ সুইচ ১২৫০; *H Neelkanth*, 354 Linking Rd, Khar (W)-52, ① 6495566, A/c S ৬৫০-৮০০ D ৭৫০-৯৫০ সুইচ ১০০০-১২৫০।

আব আছে ছড়িয়ে ছিটিয়ে সারা শহরময়: *H Airways*, 333 L B S Marg, Ghatkopar (W)-86, ① 5149855, S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৪৫০-৫৫০ D ৫০০-৬৫০, *Arya Niwar H*, Kalbadevi Rd-2, S ২৭৫ D ৪৫০; *H Bandra*, Hill Rd, Bandra-50, *Benazeer H*, 16 Gunbow St, Fort-1, S ৩৫০ D ৪৭৫ A/c D ৬০০ সুইচ ৭৫০, *H Broadway*, Di E Moses Rd, Worli 18, S ২৫০ D ৪০০, **H Central Park*, Worli-18 A/c S ৬৫০ D ৮৫০, *H Chandragupta*, Juhu Tara Rd-49, A/c S ৬৫০ D ৮৫০, **H Charwanis International*, Vaikunth Park Rd Andheri-69, *H Claidge*, 8th Floor, Tardeo A/c Mkt-34, S ৩০০ D ৪৭০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০; *H Comfort*, 36 Sion Rd (W)-22 ① 4091645, S ১৮৫-২৫০ D ২৫০-৩২৫; **H Commando*, 331 Dr Ambedkar Rd, Bandra Rly Stn-50, ① 6490227 A/c D ৮৫০ সুইচ ১২০০; *Fernandes GH*, Ballard Estate-38, S ১৫০ D ২৫০; *H Fortview*, Plot-12 near Sion Rly Stn-22, **Grand H*, 17 Sport Rd, Ballard Estate-38, ① 2618211, A/c S ৯৫০ D ১২৫০ সুইচ ১৫০০, *Girgaum L*, opp Majestic Cinema, S ২৫০ D ৪০০; **H Heritage*, Sant Savta Marg, Byculla-27, ① 3714891, A/c S ১১৯০ D ১৪৯০ সুইচ ১৬৯০-১৮৯০, **H Hilltop*, 43 Pochkhanwala Rd, Worli-25, ① 4930860, A/c S ৬৫০-৮৫০ D ৮৫০-১০০০; *H Hiranani*, Dr Ambedkar Rd-12, A/c S ৫০০ D ৬৫০-৮৫০; *Host Inn*, Andheri-Kurla Rd, Andheri (E)-59, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইচ ১২০০-১৫০০; **H Kemps Corner*, 131 August Kranti Marg-36, ① 3634646, A/c S ৬৫০ D ৯৫০; *H Kumkum*, 165 Dr Bhadkamkar Marg, opp Minerva Cinema-7, ① 3072010, D ৪০০-৫৫০ A/c D ৬৫০-৮৫০; *H Kyoto*, 16 Amrapali, V L Mehta Marg-49, A/c S ৪৫০ D ৬৫০-৮৫০; *H Lawrence*, K Dubash Marg-20, (B-B) S ২৫০ D ৪২৫; *H Lords*, 301 Mangalore St, Fort Mkt-1, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c D ৭৫০; *H Manali*, Mandlani Rd, Melad E-64, ① 8899810, S ২০০-৩৫০ D ৩০০-৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; **H Raig Sharda*, K C Marg, Bandra Reclamation, Bandra (W)-50, ① 6401919,

A/c S ১৪০০ D ২০০০; *H Metro Palace, Bandra (W)-50, ⑥ 6427311, A/c S ৯৫০ D ১২৫৫ সুইট ১৭৫০; H Minerva, opp Minerva Cinema, Dr Bhadkamkar Rd-4, S ২২৬ D ৪২৬ A/c D ৬৫০; Mirabelle H, 33-A, New Marine Lines-20; *H Nagina, 55 Dr Ambedkar Rd, Byculla-27, CST-4 Central-2, ⑥ 3717799, A/c S ৬৫০-৮৫০ D ৭৫০-৯৫০ সুইট ১৫০০; H Nalanda, C P Rd, Kandivali (E)-400101, ⑥ 8876538, S ২৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০-৮৫০; Nirai Motels, 17C-1, Ashawiran, Linking Rd Extn, Santacruz (W)-54, D ৪৫০ A/c D ৬৫০; Norman's GH, 127 Marine Drive-20, A/c S ৪৫০ D ৭৫০; *H Oberoi, Nariman Point-21, ⑥ 2025757, A/c S ২৭৫-৩০৫ D ৩০০-৩৩০ সুইট ৪৫০-১২৫০ US\$; *Oberoi Towers, Nariman Point-21, ⑥ 2024343, A/c S ২২৫-২৫৫ D ২৫০-২৮০ সুইট ৪৭৫-৭৭৫ US\$; Pals H, Kala-chowk, Reay Rd-33, S ২০০ D ২৫০-৩৫০ A/c D ৪৫০-৬০০; *H Poonam International, Dr A B Rd, Worli-18, A/c S ৮৫০ D ১২৫০; H Premier, A P Marg, near Metro Cinema-2, ⑥ 2062965, A/c S ৬৫০ D ১৫০; তাজ গ্রুপের পাঁচ তারা *H President, 90 Cuffee Parade, Colaba-5, ⑥ 2150808, A/c S ১৯৫ D ২১৫ সুইট ২৭৫ US\$; H Rajdhani, 361 Sheikh Memon St-2, ⑥ 3426919; *H Rajdoot, 19 Jackeria Bunder Rd-33, ⑥ 8514442, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৪০০ D ৬০০; H Rahat Palace, Dr E Moses Rd, Worli-18, A/c S ৬৫০ D ৮৫০-১৫০০; Regency H, 73 Nepean Sea Rd-6, ⑥ 3630002, A/c S ৭৫০ D ১৫০০; Regency Inn, 18 Lansdowne House, M B Marg-39, ⑥ 2020292, A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১৫০; *The Resort, 11 Madh-Marve Rd, Malad (W)-95, ⑥ 8823331, A/c S ১৮৫০ D ২৭৫০ সুইট ৪২৫০-১২০০০; *H Rosewood, A/c Market, 99-C, Tulsi Wadi-34, ⑥ 4940320, A/c S ৭৫০ D ১৫০০; *Shalimar H, August Kranti Marg-36, ⑥ 3631311, A/c S ১০৫০ D ১৫০০ সুইট ২০৫০; *H Siddhartha, 368 S V Rd, Bandra (W)-50, ⑥ 6427697, D ৬০০ A/c S ৭৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০; *Welcomgroup Sea Rock, Lands End, Bandra-50, ⑥ 2042286, A/c S ১৯০-২১৫ D ১৬০-২৩০ সুইট ৩৫০-৩৭৫ US\$; *Kumaria Presidency H, Andheri East-59, A/c S ৫০ D ৫৫ US\$; *West End H, 45 New Marine Lines-20, ⑥ 2039121, A/c S ১৪০০ D ২০০০ সুইট ২৭৫০; *H Highway View, Plot 3, Near Mafco, Mumbai-Pune Rd, Vashi Rly Stn-2, ⑥ 7672195, A/c S ৬৫০-১০০০ D ৭৫০-১২৫০; Anand Resort, Laxmi Bag, Bordin, Thane-401701, ⑥ 4949343, DAB ৩০০-৪৫০ TAB ৪০০; H Vivaco, 136 Anne Besant Rd, Worli-4, ⑥ 2616686, A/c S 2; H Tirupati, Plot 1248 Marol Village, Mumbai-400059, ⑥ 8370203, A/c S ৭৯০ D ৮৯০ সুইট ১২৯০; H Manuvarov, Turner Rd, Bandra (W)-50, ⑥ 6009925, S ২৫০ D ৪০০; *New City H, Plot 78-79, Sep-17, Vashi, New Mumbai, ⑥ 7682252, A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ১২৫০; *The Retreat, Erangal Beach,

Madh-Marve Rd, Malad (W)-61, ⑥ 8825335, A/c S ২০০০ D ২৭৫০ সুইট ৪৫০০-১২০০০।

১০ টাকায় সাময়িক সদস্য হয়ে ক্যামিলি নিয়ে থাকারও ব্যবস্থা মেলে YWCA-র International G H, 18 Madame Cama Rd, Cooperage-1, ⑥ 2020445, (B-B)-S ২০২ E ৩৮৭। এদের সুনাম যথেষ্ট। সদস্যবর্গা ফুলও থাকে গেস্ট হাউস। আর মুম্বাই সেম্ভারের কাছে 18 YMCA Rd (Wode House Rd), ⑥ 2020079-এ YMCA International GH; এদের সদস্য চাঁদা ৪০; ঘরের ভাড়া একইরকম। তবুও ঘর মেলা দুধর এদের কাছে। রেলের রিটার্নিং রুম-ও আছে মুম্বাই C S T ও মুম্বাই সেম্ভার স্টেশনে। চার্জ—ডার্লি বেড ৯০ DAB ৩০০ A/c S ৪০০। ডোমেস্টিক এয়ারপোর্টেও রিটার্নিং রুম মেলে।

ধরমশালাও রয়েছে—B S N C Pooranchandji Trust, 381-A, Kalbadevi Rd-4; Hargovan Anandji Desair Charities, 199-211, Corner Panjrapole St-4, Seth M M Dharamshala, C P Tank Rd; P Jivandas Charity Trust, 23 Doongershy Rd; Oswald Baug Musafirkhanna, Hazgaon; D Singhania Dharamshala, Anantwadi, 5th Flr-2. আর আছে থাকার ব্যবস্থা নিয়ে রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম, খারে। তেমনই হয়েছে শহর থেকে দূরে ভারত সেবাশ্রম সম্ভ, 291-92 G E S Vashi Village, Vashi, New Mumbai-400703, ⑥ 7662782-এ।

আহার্যেও বৈচিত্র্য আছে মুম্বাই-এর হোটেল-রেস্তোরাঁয়। তারকাখচিত হোটেলগুলিতে দেশী-বিশেষী নানান মেনু—তবে, দামে আধিক্য লাগে। কোলাবায়ে তাজের পিছে বড়ে মিরার ফুটের কাক্সেস কাবার ও ডিম-কুটির বাদ নেওয়া যেতে পারে। ইন্ডিয়া গেটের কাছে কোলাবা নাল্পার রেস্টুরেন্ট দু'টিরও যথেষ্ট প্রশস্তি স্বল্প মূল্যে আহার্য পরিবেশনে। জাহাঙ্গীর আর্ট গ্যালারির সমবার-এরও (১০—১৯-৩০) যথেষ্ট সুনাম আহার্যে। কামাথ হোটেলটিও নিরামিষ আহার্যে যথেষ্ট খ্যাত। তেমনই নাভাল ও মিলিটারি রেস্টুরেন্ট-এরও যথেষ্ট সুখ্যাতি স্বল্প মূল্যে আহার্য পরিবেশনে। শিবাজী মহারাজ মার্গে নানকিং চীনা রেস্টুরেন্ট (১২—১৫-০০, ১৮—২২-০০)-এ চীনা আহার্য; দামে কিছুটা আধিক্য লাগলেও মাস্টারিন-এরও যথেষ্ট সুনাম। লাগোয়া হংকং-এরও প্রশস্তি চীনা ডিশে। GPO-র বিপরীতে ২০৪ দাদাভাই নওরোজী রোডে কোহিনুর, শহীদ ভগৎ সিং মার্গে শের-ই-পাঞ্জাব (১১—২৪-০০)-এ পাঞ্জাবী মেনু; ওয়েলিডেন সার্কেলে শাকাহারী ভাতারও স্বল্পমূল্যে নিরামিষ আহার্য পরিবেশনে যথেষ্ট খ্যাত।

রিগ্যাল সিনেমার বিপরীতে শীতাতপ দিল্লী দরবার রেস্টুরেন্ট (১২—২৪-০০)-এর বিরিয়ানির সাথে পিভা কুলফির যথেষ্ট সুনাম। অদূরে লেপার্ড কাক্সে-তে দেশী-বিশেষী নানান মেনু; ২৩ অগাস্ট ক্রান্তি মার্গে চীনা গার্ডেন (১২—১৫-০০, ১৯—২৪-০০)-এ চীনা ডিশ; রিগ্যাল সিনেমার পিছে Ling's Pavilion-এ চীনা প্রশাসীতে মাছের রকমরি; কোলাবাবেরি কটন এক্সপ্লোরের বিপরীতে সাধারণ পরিবেশে ওজরাটি ও রাজহানী খালির জন্য রায় ক্লাব; ল্যাগোয়া থ্যাকারস ক্লাব বা ফ্রেডস ইউনিয়ন, বোম্বাই ক্লাব—এদেরও যথেষ্ট সুনাম যাত্রী পরিবেশায়। ১৪৫ মহাশা গান্ধী রোডে খাইবার রেস্টুরেন্ট (১২—১৫-০০, ১৯-৩০—২৪-০০)-এ মোগলাই খানা; ৬৯ এম জি রোডে হোয়াইট হাউস রেস্টুরেন্ট (১১—২৪-০০)-এ ভারতীয় ও

পাশ্চাত্য মেনু; ৭৭ এম জি রোডে প্রাইভেট অব ইন্ডিয়া (১১—১৫-০০, ১৯—২৩-৩০)-র চীনা ও ভারতীয় আহার্যে যথেষ্ট প্রশংসা।

গোয়া পৌরস্বত্ব মুম্বাই হয়ে

মুম্বাই থেকে গোয়া যাবারও সুন্দর ব্যবস্থা রয়েছে। Bhaucha Dhakka, New Ferry Wharf, Mallet Bunder, Mumbai-400009, 03743737, Fax 022-3743374 থেকে Damania Catamaran Service-এর শীতাতপ Speed Launch চলছে মুম্বাই ও পানাজির মাঝে। রাত ২২-৩০এ মুম্বাই ছেড়ে পানাজি যাচ্ছে পরদিন ৬-৩০এ। ফেরে ৯-০০টার পানাজি ছেড়ে ১৭-০০টার মুম্বাই-এ ৮ ঘটটার এই সার্ভিসের ভাড়া ১০০০/১১০০ টাকা। ট্রেনও আছে মুম্বাই-এর CST থেকে ৮-৪৫এ Koyna Exp, ১৭-৪৫এ Sahyadri Exp, ২০-২৫এ মহালক্ষ্মী এক্স, 23 67 দিন ২২-৪০এ ব্যাঙ্গালোর এক্সে মিরাজ পৌঁছে ট্রেন বাসে গোয়ার Vasco-Da-Gama-র। তবে গড় কিছুকাল মিটারগেজ রেল ব্রডগেজ রূপান্তর হতে গিয়ে লোভা থেকে ডাকোর ট্রেন সার্ভিস অনিয়মিত। ১৯৯৮ এর প্রথম দিকেই নবতম কোচন রেল সম্পূর্ণতা পেয়ে ট্রেন চলবে ঘণ্টা আটকে মুম্বাই থেকে পানাজি। চলছেও ট্রেন কারলা থেকে রত্নগিরি হয়ে সামন্তওয়াদি। সামন্তওয়াদি থেকে বাস আছে ২½ ঘটটার পানাজি। এছাড়া সাধারণ, লাক্সারি ও শীতাতপ বাস আছে মুম্বাই সেট্রাল থেকে গোয়ার রাজধানী পানাজিতে। গোয়া পর্বতনের দপ্তরও বসেছে মুম্বাই সেট্রাল রেল স্টেশনে। পানাজির সড়ক দূরত্ব ৫৯৪ কিমি, ভাড়া ডিলাক্স বাসে ২২৫-২৭৫। MTDC, কম্ব ট্রান্সপোর্ট বা মুম্বাই সেট্রাল রেল স্টেশনের বিপরীতে মহারাষ্ট্র স্টেট ট্রান্সপোর্ট কর্পোরেশন (MSRTC, 0374272) ডিউপাতে যোগাযোগ করুন। প্রাইভেট বাসও আছে এপথে। তবুও গোয়া যাবার পক্ষে জাহাজই সুবিধার।

মেরিন ড্রাইভে—১৩৫ এন এস রোডে নটরাজ হোটেলের কাবাব কন্সি (৭—১৫-০০, ২০—২৪-০০)-এ ভারতীয় ও পাশ্চাত্য; নরিয়ান পয়েন্টে Air India লাগোয়া শীতাতপ উডল্যান্ডস রেস্টুরেন্টে সদাই ব্যস্ত দক্ষিণ ভারতীয় আহার্য পরিবেশার; অদূরে রশোলী রেস্টুরেন্টেরও আহার্যে যথেষ্ট প্রশংসা; মেরিন ড্রাইভের ১৪৩ সোনা মহলে ঢক ঢক বাঁ টাউন রেস্টুরেন্ট (১১—২৪-৩০)টিও যথেষ্ট খ্যাত ভারতীয় ও কন্টিনেন্টাল ডিশে। তেমনিই গুজরাতি খালি ও দক্ষিণ ভারতীয় আহার্যে ২০৮ রিজেন্ট চেম্বার্সের স্টার্টাস রেস্টুরেন্ট (১১—২২-৩০)-টিরও যথেষ্ট সুনাম। বলওয়াস রেস্টুরেন্ট (৯-৩০—২৩-০০)টিও মোহালী, পাঞ্জাবী ও চীনা আহার্য পরিবেশার সদাই ব্যস্ত।

চার্টার্ড রেল স্টেশনের বিপরীতে নিরামিষ আহার্যে সংকার ক্যাটারিং-এর যথেষ্ট প্রশংসা। অদূরে জে টাটা রোডে সফট রেস্টুরেন্ট (১২—২২-৩০)টিরও গুজরাতি ও পাঞ্জাবী আহার্যে যথেষ্ট সুনাম। চার্টার্ড গেষ্টের ইন্ডিয়ান সামার যথেষ্ট খ্যাত ভারতীয় আহার্যে। তেমনিই বাঙালি আহার্যের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে দামাডাই নবরোজী রোডের নিউ বেঙ্গল লজ-এ। আর বন্ধ মূল্যে CST রেল স্টেশনের রেল ক্যাটিনাও আদরশীল হবে আশিষ ও নিরামিষ উভয় মিলে। লিকফ ও ডলার উঠে এদের ক্যাটিন।

আর টোপটো সাপারবেলার রাফা, ভেলপুরী, পাওজরিক স্বাদ নেওয়া একান্তই উচিত হবে। এমনকি পানি টিশ Dhamshak অর্থাৎ ডিকেন বা মটন ফার্নেড রাইসের বন্ধ নেওয়া যেতে পারে

দিল্লী দরবার ছাড়াও কোলাবার নানান হোটেল-রেস্তোরাঁর। ক্রফোর্ড মার্কেটের বিপরীতে বাসনা ফালুডার সাথে মিক শেক ছাড়াও নানান থম্বা ঠাণ্ডা পানীয়ের জন্য খ্যাত। এছাড়াও রয়েছে হোটেল-রেস্তোরাঁ চলতে-ফিরতে মুম্বাই শহরের অলিতেগলিতে নানান। তেমনই উচিত হবে মরসুমে মুম্বাই ভ্রমণে অ্যালফানসো আমের স্বাদ নেওয়া।

বাস আছে CST থেকে Route No 1, L6, L7, 103, 124 কোলাবা অর্থাৎ Electric House হয়ে; মুম্বাই সেট্রাল থেকে বাস মেলে 43, 73, 124; CST থেকে সেট্রাল যাচ্ছে 124 রুটের বাস। ২-৫ মিনিটের ব্যবধানে ৪-৩০—২২-৩০টার বৈদ্যুতিক ট্রেন আছে সেট্রাল থেকে চার্টার্ড ও দাদারে। এমনকি দূরত্ব থেকে আসা ট্রেন বারীসের মুম্বাই সেট্রালের টিকিট চার্টার্ড চলা গ্রাহ্য।

কেনাকাটা: L8, L7, L6 রুটের বাস আছে দাদারে। কেনাকাটার জন্য রয়েছে আপনা বাজার, ব্রডওয়ে শপিং মার্কেট। L3, L6, L8-এ যেতে পারেন কোলাবার মিনা বাজারে। CST থেকে কোলাবার যাচ্ছে L, L6, L7, 103, 124; সেট্রাল থেকে কোলাবার আসছে 43, 70, L124. আর ভাওকা ডাকা জেটি হয়ে যাচ্ছে 43 রুটের বাস কোলাবার। ওরলিতে রয়েছে সেফুরি হ্যাপি-হোম। রকমারি শাড়ি কাপড় মেলে। বাস আছে L83, L84, L90. কুইন রোডেও শাড়ি দেখা যেতে পারে। গ্রান্ট রোড পেরিয়ে মৌলানা শওকত আলি রোডের চোরাবাজারে জুয়েলারির সাথে নানান অ্যান্টিক দেখা ও কেনা যেতে পারে। CST স্টেশনের উত্তর-পশ্চিমে ক্রফোর্ড মার্কেট রকমারি জামাকাপড় ও ফলের কেনা-বেচায় আজও অগ্রগণ্য। ক্রফোর্ড পেরিয়ে আরও যেতে অ্যাশোলোভাতার। যিশি পথ-ঘাট—মন্দির-মসজিদ-দোকান পাটে ঠাসা। ক্রফোর্ডের উত্তরে আব্দুল রহমান স্ট্রিট রেখে জাভেরী বাজার। সোনা-রূপোর সাথে নানান মণি-মুক্তার পসরা সাজিয়ে বসেছেন দোকানী। অদূরে কোলবাসেবী রোডে ব্রাশ বাজার। পদশোভাও বাড়ানো যেতে পারে কোলাবার রিজেন্ট সিনেমাকে ঘেরা জুতোর দোকানে। কোলাবার আর এক আকর্ষণ S B Singh Rd-এ ফুটের দোকানপাট। বিশেষী বসনের পসরা সাজিয়েছেন দোকানী। আবার ওরলিতে Cuffe Parade-এর কাছে ওয়াশট ট্রেড সেন্টারেরও চলা যেতে পারে—সারা ভারত থেকে নানান রাজ্য সরকার এম্পো-রিয়াম খুলেছে। রবিবার বন্ধ থাকে ট্রেড সেন্টার। সঠিক চিনে কেনার দামে সুবিধা মেলে। নানান মিল থেকে বাতিল হওয়া আন্তর্জাতিক মানের ভারতীয় বসনও বিকোছে ধরে-বিথরে। তেমনিই মিলতে পারে নিজেরই হারিয়ে যাওয়া নানান কিছু কুখ্যাত চোরাবাজারে।

গণপতিপুন্ডে

মুম্বাই থেকে ৩৭৪, পুনে ৩৩২, কোলাহাপুর ১৪৪ আর রত্নগিরি থেকে ৪৫ কিমি দূরে মুম্বাই-কোচন-গোয়া NH 17-র গণপতিপুন্ডে। কয়লু সেবতা যথেষ্ট গণপতি থেকে পাছাড়ের নাম গণপতিপুন্ডে। পাছাড়ী অধিবাসন, ১০০ মি

উচ্চতম মন্দির—পাহাড়টাই কর্ণ নিয়েছে দেবতা গণেশের।
পথ উঠেছে পাহাড় ঘূরে অর্থাৎ দেব-প্রদক্ষিণ করে। ছত্রপতি
শিবাজীৰ আবাধ্য দেবতা—দেবতার অধিষ্ঠান মাথাঠাসেব
হাতে ১৬০০ খ্রিস্টাব্দে। পর্বতভীকালে পেশোয়ারদেব হাতে
সংক্রান্ত হই মন্দির। কেবল কিংবদন্তীতে ঘেবা মন্দিরই
নয়, এই শাস্ত্র কপোলি বেলভূমিটিও পূর্ণাঙ্গী তথা
পর্যটকসেব আকৃষ্ট করে। সূর্যও যেন নেমে এসে মিতালি
গড়ে সাগববেলাব সাথে। মুম্বাই-পানাজি ক্যাটামাবান লক্ষে
বহুগিৰি পৌছে বাসে গণপতিপূলে বা মুম্বাই থেকে সবাসবি
বাসে চলা যেতে পারে গণপতিপূলে। মুম্বাই গণপতিপূলে
বাসেব অপ্রতুলতায় বহুগিৰি হয়ও চলা যায় বাসে বাসে।
নবতম কোঙ্কন বেলে দাদাব বহুগিৰি প্যা ১৫ ৩০এ দাদাব
কাবলা-সামন্তওয়াদি এক্স ২৩ ১০এ কাবলা ছেদে বহুগিৰি
যাচ্ছে ২২-৫৫ ও পবদিন ৫ ৪৫এ। বাস যাচ্ছে পানাজি
মহাবালেশ্বৰও গণপতিপূলে থেকে। মবসুমে প্যাকজ টাবে
যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে মুম্বাই থেকে MTDC

ধাকাব জন্য গণপতিপূলে য় ধবমশালাও MTDC ব
Holiday Resort Dist Ratnagiri ৩ (02357) 35248 এ ৪
বেডেব সুইট ৬৫০ ২ বেডেব ৩৫০ ৪০০ ৫০০ ৫৫০ A/L D
৬৫০ কটজ ১০০০ Lmt Resort ৩ 35348 D ১২৫ ১৫০
F ২২৫ ২৫০ ২৭৫ আছে আব প্রাইভেট হোটেল অভিবেকও
মগ্বক-এ D ২০০ ৩৫০। বহুগিৰিতে আছে H Vihar Deluxe
Shivajinagar D ২০০ A/L ৩০০।

পূবে সবুজ ছাওয়া পশ্চিমঘাট পশ্চিমে নীল অতলাস্ত
আববসাণব—দুইয়েব মাঝে বিস্তীর্ণ এলাকা জুড়ে কোঙ্কন
উপত্যকা। সাবা উপত্যকা জুড়ে নয়নাভিবাম নানান
বেলাভূমি, মনোবম পাহাড়ী শহব প্রকৃতিও বমণীয়। নবতম
কোঙ্কন বেলেও গড়তে চলেছে কোঙ্কন উপত্যকা চিবে। পথ
চলেছে বহুগিৰি ৩৫৫, গণপতিপূলে ৩৭৪ আষোলি
পাহাড়ী শহব ৫৪৯ কিমি দুবে মুম্বাই থেকে। মহাবাস্তুব
অন্যতম বহু সমুদ্র তীরে কোঙ্কন উপকূলে বহুগিৰি। সুন্দব
প্রকৃতিব মাঝে প্রাচীন দুর্গ, প্রাসাদ, ভগবতী মন্দির আছে
বহুগিৰিতে। তেমনই অ্যালফানসো আমেবও প্রসিদ্ধি
আছে বহুগিৰিব। একান্তই উচিত হবে কোঙ্কনী বন্ধন
প্রণালীতে সুখাদু প্রন ও পমফ্রেট মাছেব স্বাদ নেওয়া আব
নিবামিবভোজীসেব Kokam kadu সেও এক অতুলনীয় মেনু
কোঙ্কন জুড়ে। তেমনই লোকমান্য তিলক, গোখল, এস
কে পাতিল ছাড়াও নানান মনীষীব জন্মও এই বহুগিৰিতে।
আব মালভান সৈকতের অদূবে দ্বীপাকাব ভূমে শিবাজী
মহাবাজেব তেবি লিঙ্ক দুর্গ। থাকাবও ব্যবস্থা মেলে MTDC-
ব Holiday Resort Amboli, Dist-Ratnagiri, ৩ (02363) 76239, D ৩০০ ৪২৫ T ২৭৫ FR ৬০০, আব
আছে Holiday Resort, Bhatye, Dist-Ratnagiri, ৩ (02352)
2096৫, চার বেডের ঘব ২০০ ২৫৫।

মুম্বাই-গোয়া MH 17-র মুম্বাই থেকে ২১০ আর
গণপতিপূলে ১৬৫ কিমি দুবে প্রাচীন মাঝ দুবে আর

সাগবেব পাড়ে অল্প বিছানো হবিহবেশ্বৰও ক্রত কর পাছে
পর্যটন কেন্দ্রে। শাস্ত্র-প্রশাস্ত্র এব প্রকৃতি—মিষ্টি-মধুব
সমীৰণ, মিহি বালুকা—সতাই নয়নাভিবাম। চাব স্বয়ম্ভু
দেবতাও বয়েছেন হবিহবেশ্বৰে। বিষ্ণুবও নাকি পৃথিবী
পবিমাপকালে দ্বিতীয় পদক্ষেপ ঘটে হবিহবেশ্বৰে। মুম্বাই
থেকে বাস বা মুম্বাই গোয়া সড়কে ৬০ কিমি দুবেব
গোবেগাও থেকে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। থাকাবও ব্যবস্থা
আছে MTDC ব Holiday Resort Hariharashwar Dist
Raigad ৩ (02168) 26036 ২০টি ২ বেডেব ১২৫ ৪টি ২
বেডেব ২৫০ ১০টি ৪ বেডেব ২২৫।

হবিহবেশ্বৰ-মুম্বাই পথে মুম্বাই থেকে ৮০ কিমি দুবেব
কার্নালা বার্ড স্যান্ডচুয়ারিটিও বেড়িয়ে নিতে পারব-
উৎসাহীবা। শীতে পবিযায়ী পাখি আব মনসুনে শব্দেব
প্রজাতিব পাখিব সাথে প্যাছাব লাসুব অ্যান্টিলোপস
দেখতে মেলে ৪ ৪৮ কিমি ব্যাপ্ত কার্নালায়।

মুকুড-জাজিবা

মুম্বাই থেকে ১৬৫ কিমি দুবে Murud Janjira বাস যাচ্ছে
মুম্বাই থেকে আলিবাগ হয়ে মুকুড। সবাসবি বাসব অমিলে
মুম্বাই থেকে কার্নালা হয়ে ১২০ কিমি দুবেব আলিবাগ
পৌছে ৪৫ কিমি দুবেব মুকুড চলায় বাসেব আবিকা মেলে।
বাস মেলে কল্যাণ থেকেও সবাসবি মুকুড জাজিবা। বাস
আসছে পুনে থেকেও আলিবাগ হয়ে মুকুড। সবুজ নাবিকেল
বীথিকায় ছাওয়া সোনালি বালুব সৈকতস্বেপায় (হোটেলও
আছে নাগান আলিবাগে।

আবাব মুম্বাই থেকে ট্রেনে নিকটতম বেল স্টেশন
পানভল পৌছেও বাসে চলা যেতে পারে মুকুড জাজিবা।
তবুও যেন মুম্বাই গেটওয়াব অব ইন্ডিয়া থেকে ক্যাটামাবান
লক্ষে আলিবাগ পৌছে গাসে ৪৫ কিমি দুবেব মুকুড চলায়
সুবিধা। পশ্চিম মহাবাস্তুব বায়গড জেলায় পাহাডেব কোলে
আববসাণবেব তীরে মুকুড। মুকুড থেকে বাসে ৫ কিমি
শিয় সৈকতগন্যী জাজিবা। ঝাউ নাবকেল পানে ছাওয়া
জাজিবা সাগববেলাটি খুবই সুন্দব। তবুও যেন জাজিবা
প্রসিদ্ধি আববসাণবেব জলে ২২ একব ব্যাপ্ত দ্বীপাকাব ভূমে
৩০০ বছরেব প্রাচীন অজয়ে জল দুর্গেব জন্য। ফেবি বোটে
পাৰাপাব। আব আছে টিলাব টঙ্গে ভগবান দত্তাত্রায়াব
মন্দিবে দেবতা ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বৰ। অদূবে ভার্ভরময় নবাব
প্রাসাদ। অনুব্রতিতে দর্শন মেলে। তেমনই সেবে নেওয়া যায়
মুকুড থেকে একে একে দিনে দিনে নিবালা-নির্জনে মনোবম
সাগববেলা কিহিম, কাশিড, নাগাঁও, আকসি।

ধাকারও হোটেল মেলে মুকুডে—হোটেল বরাসিকা, হোটেল
ক্লিনার, এসের চার্জ DAB ২০০-২৭৫, পোকলিনে বিসর্জ, DAB
৭৫০-১২০০, MTDC-র Murud Janjira Tokrat Resort,
Dist-Raigad, ৩ (021447) 4078, DAB ৪০০ ৬০৫ চার
বেডের ঘব ৮০০ ছয় বেডের ঘব ১৫০০। কিহিম, কাশিড,
জাজিবাও হোটেল আছে নানান।

মাথেরন

মুখাই থেকে ১০৮, পূনের ১২৬ কিমি দূরে ৮০৩ মি উঁচুতে মুখাই-এর নিকটতম পাহাড়ী শহর পশ্চিমঘাট পর্বতে মাথেরন। অর্থ তার জঙ্গলের শিরে। মাথেরনের রেল সংযোগকারী স্টেশন ২১ কিমি দূরে মুখাই-পুনে বেলপথের নেরাল। মুখাই CST থেকে কারজাত লোকাল, লোনাতালা, পুনের ট্রেন যাচ্ছে নেরাল হয়ে। সব এক ট্রেনের স্টপ নেই নেরালে। ৬-৩৫এ ডেকান, ৮-৪৫এ কম্বা এক্স, মুখাই-কারজাত এমু লোকাল ২ ঘণ্টায় মুখাই CST থেকে নেরাল জং হয়ে যাচ্ছে। ST বাসও যাচ্ছে মুখাই থেকে নেরালে। আর নেরাল থেকে ৮-৪০, ১০-১৫, ১১-০০ ও ১৭-০০টায় ১১০৭এ গড়া ন্যারোগেজ রেলের ট্রেন যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় মাথেরনে। গহ্মিন বন, বনচরদের সপ্রাষণ বোমাঙ্কিত করে এপথে। পশ্চিমঘাট পর্বতের গা-বেয়ে ধীরে ধীরে কুলকিচালে পাহাড় চড়ে লেল। পথশোভা মনোরম—বোমাঙ্কিত ভবা এপথে চলা। একদিকে পশ্চিমঘাট, অপরদিকে পাহাড় ও উপত্যকা। বর্ষায় বন্ধ থাকে এই রেল। হোটেলও বন্ধ থাকে বর্ষাকালে মাথেরনে। মিনিবাস, ট্যাক্সিও যাচ্ছে নেরাল থেকে আধ ঘণ্টায় মাথেরনে। শোয়ারেও ট্যাক্সি যাচ্ছে যাত্রী ভাড়া ৫০ হাবে। তবুও সেন ট্যাক্সি চালকদের রটনা এড়িয়ে উচিত হবে ট্রেনে চলা। ট্যাক্সি ও মিনিবাসের চলা শেষ হয় সিটি সেন্টার তথা রেল স্টেশনের ২ কিমি আগে। Dasturi Naka-য় মাথেরনে। আবার ১১.৩ কিমি ট্রাক করেও যাওয়া চলে নেরাল থেকে মাথেরনে। যাত্রী টোল লাগে ৭ হাবে মাথেরনে। গ্রীষ্মে ৩০°, শীতে ১৫° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। আর বৃষ্টি সারা বছরে ৫২৪২ mm বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মে মাস।

ব্রিটিশের খুব প্রিয় ছিল মাথেরন। আবিষ্কারও ১৮৫০ খ্রিস্টাব্দে থানের তদানীন্তন ব্রিটিশ কালেক্টর Hugh Malet সাহেবের। রেল স্টেশনকে বড়ি করে ৭.৩৫ কিমিতে উত্তর থেকে দক্ষিণে ব্যাপ্ত ছোট ছিমছাম পাহাড়ী শহর মাথেরন—তিন দিকে তিন রাস্তা রেল স্টেশন সংলগ্ন বাজার থেকে বন ফাঁড়ে সংযোগ গড়েছে। জলবায়ু স্বাস্থ্য প্রদ। রেল স্টেশনের ভাইনে প্যানোরমা পয়েন্ট আর বাঁয়ে ওয়ান ট্রি পয়েন্টে শহরের বিস্তার। আরণ্যক পরিবেশ। বৃক্ষরাজি ছাতা ধরেছে সারা মাথেরনে। টানা-রিকশা চলেছে, ঘোড়াও মেলে শহর পরিক্রমায়। পথশোভাকেই দেখার ব্যবস্থা শহরের প্যানোরমা, পার্ক ইউ, মানকি, খাম্বালা, লুইসা, আলেকজান্ডার হাড়াও নানান ভিউ পয়েন্ট থেকে। এমনকি মুখাই শহরের আলোকমালাও দেখে নেওয়া যায় মাথেরনের উত্তরপশ্চিমের পোর্চুপাইন বা লুইসা থেকে। সূর্যাস্তও দৃশ্যমান পোর্চুপাইনে। তবুও যেন উত্তরের প্যানোরমা আকর্ষণে অনন্য। পশ্চিমে পোর্চুপাইন বা লুইসা অর্থাৎ ক্যাথিড্রাল রকস থেকে নেরালও দৃশ্যমান। রেসকোর্স আর লেকও আছে মাথেরনে। রামবাগ রেখে আরও যেতে পার্সিদের টাওয়ার অব সাইলেন্স। ট্যুরিস্ট অফিস বসেছে রেল স্টেশনের বিপরীতে M G Marg-এ। আর ভ্রমণের আরকরাণে সঙ্গী করুন বেত ও চামড়াভাত নানান কিছু। আর কঙ্গ নেয় মাথেরনের লাল মাটি পর্বতদের বসন-ভূষণ।



অক্টোবর থেকে জুন মাস খোলা থাকে মাথেরনের হোটেল। মরসুম এদের অক্টোবর ১ থেকে জানুয়ারি ১৫, আবার এপ্রিল ১৫ থেকে জুন ১৫; বাকি সময়টা অফ-সিজন। চেক আউট টাইম এদের সকাল ৭-০০টা, রেটও মূলত থাকা-খাওয়া নিয়ে। রেলস্টেশনের বামে: M G Marg-401102, STD 02148-এ—*Lords Central H. 30228, Mumbai 2018008, AP-S 3000-১২৫০; Giri Vihar H, AP-S 8২৫-৬৫০; H Rangoli, AP প্রথায় ৩৫০ প্রতি জনা; Khan's H, S ২৫০ D 8০০; একই মানে একই নামে Hope Hall H, Laxmi H, DAB ৩৫০-৪৫০; Tourist Towers, D ৩৭৫-৬০০; Alankar H, D ৩০০; Kasturba Rd-এ—*Royal H. 30275, AP-S 3000, ডিলাক্স রুম প্রভি ২ জনা ৮৫০-১০০০; H Meghdoot, AP-S ৩৫০ D ৩০০; Regal H, 3024৭, AP-D ৮৫০ A/c ১২০০-১৫৫০; Premdip L; Janata Happy Home, Acharya Atre Marg-এ—Silvan H, AP-S 8৫০ D ৮০০; লাগোয়া West End H. মান ও দামে সিলভ্যান ভূলা। Bright Lands Resorts, 30244, Mumbai 6423856, S ৯৫০ D ১৫০০ A/c D ১৭৫০ সুইট ২৫০০। Moulana Azad Rd-এ—Gujarat Bhavan H, AP-S 8৫০-৬৫০; লাগোয়া Royal H Mathernan, AP-S 8০০-৬০০। Madhabji Rd-এ—শহরের দক্ষিণে মনোরম আরগাক পরিবেশে H Alexander, 30251, AP প্রথায় ৮৫০ ১৫০০; Pandey Rd-এ—Shrini H, AP প্রথায় ৩০০-৪৫০ প্রতি জনা; H Lake View, Silver H, Mathernan Darbar L, Cosmopolitan L. আর রেলস্টেশনের বিপরীতে ডানহাতি—H Prasanna, AP-D 8৫০-৬৫০; H Divadkar, DAB ৩২৫-৬০০। Cutting Rd-2-এ—H Bombay View, AP-S ২৭৫ থেকে। রেল স্টেশনের শিরে V K Rd-2-এ—Rugby H. 30291, AP-D ১৬৮০ A/c ১৮৫০-২২৫০। Chinmoy Rd-এ—H Woodlands, AP-D 8৫০-৬৫০; Cecil H. আর আছে *The Byke, R1, 30365, AP-D ২০০০ A/c ২৫০০/৫০০০; Maldoonga Resort H, Malet Rd, 30204, AP-S ২৫-৩০ D 8৫-৬০ US\$; Ashoke H, Mallet Rd, Kaku Group of Hotels, Guru H, West End H, Near Police Stn; H Woodside, Shalimar হাড়াও নানান হোটেল মাথেরনে। ১২৫-২৫০ টাকায় কিছু প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়া মাথেরনে। এছাড়া রেলস্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে MTDC-র Holiday Resort, Mathernan, Dist-Raigadh, 02148 30277-এ ১২টি ২ বেডের ২০০, ২২টি ২ বেডের ৪০০, ৪টি ৮ বেডের A-type ৬০০, ১টি ৪ বেডের ২০০ ডব্লিউ বেড ৪০ করে। রিসর্ট যাত্রীদের আগের স্টেশন আমন লজ নেমে যাওয়া সুবিধা। তেমনই আছে রেল স্টেশনের ২ কিমি দক্ষিণে Maneklal Terrace থাকা ও আহাৰ্যের ব্যবস্থা নিয়ে মাথেরনে। ছুটি ও উইক এন্ডে উল্লিখিত রেটে ঘর মেলে এখানে। আর সপ্তাহের মধ্যভাগে বা অফ-সিজনে রীতিমতো নরদারি চলে মাথেরনের হোটেলে। খাবারের জন্য রেলের ক্যান্টিনটি ভালই মাথেরনে। আর আছে M G Marg-এ—Alankar, বিপরীতে Pramod Restaurant; ভেজ ও ননভেজ দুই-ই মেলে এদের কাছে। পোস্ট অফিসের বিপরীতে Relax Inn যথেষ্ট খ্যাত-শ্রদ্ধ বিল পরিবেশনে। মাথেরনের চিকিৎসা পেসেন্টস হাউস নিতে পারেন

সোফানপাটে। মাথেরনের মধু ও নানান হস্তজাত পণ্যেরও প্রগতি আছে।



সময় বহুতায় মুম্বাই CST থেকে ৭-১৫র কারজাত লোকালে ঘট্যদুয়েকে বা ৬-৩৫এর ডেকান এক্সে, ৮-৪৫এর কয়না এক্সে CST ছেড়ে ৮-১৯/১০-৩৩এ নেরাল পৌছে ৮-৪০ বা ১০-১৫ বা ১১-০০টার ট্রেন ট্রেনে ২ ঘট্যর মাথেরন পৌছান। ১ দিনে মাথেরন বেড়িয়ে দ্বিতীয় দিন ৫-৪৫, ১৩-১০, ১৪-৩৫, ১৬-২০-এর ট্রেনে মাথেরন থেকে নেরাল ফিরে নেরাল থেকে ৮-১৯ বা ১০-৩৩এর ট্রেনে ১১ ঘট্যর ৪১ কিমি দূরের লোনাভালায় পৌছান। পরদিন লোনাভালা থেকে ৫ কিমি দূরের খাম্বালা, ১১ কিমি দূরের কারলা, বিপরীতে ভাজা সেবে পিনাতে পুনে চলুন। লোনাভালা থেকে রেল/বাস বা শ'দুয়েক টাকায় অটোর বেড়িয়ে নেওয়া যায় লোনাভালা-খাম্বালা-কারলা-ভাজা।

লোনাভালা

সহ্যাদি পর্বতমালার পশ্চিম ঢালে ৬২৫ মি উঁচুতে মহারাষ্ট্রের পুনে জেলায় অতীতের Lanavli আজ হয়েছে লোনাভালা। সংস্কৃতে অর্থ তার নানান শুহায় ঘেরা শহর। ছোট্ট ছিমছাম শহর—জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ। লেকের নামে নাম। নির্মল বাতাসের সাথে শান্ত স্নিগ্ধ জলবায়ুর গুণে ৩ মাস দীর্ঘ মনসুন ছাড়া সারা বছরই যাত্রী সমাগম ঘটলেও অক্টোবর থেকে মে মাসে মুম্বাইবাসীদের উইক এন্ড ট্যুরের মনোরম পরিবেশ। হলিডে ডিলাও গড়েছে মুম্বাই থেকে এসে বিদ্বানবানো। রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি যেতে পুনে-মুম্বাই জাতীয় সড়ক। বাস স্ট্যান্ড জাতীয় সড়কে। হোটেলগুলিও গড়ে উঠেছে জাতীয় সড়ককে ভর করে। বামহাতি রাইপার্ক রেখে এগুতেই লেক, আরও যেতে টাইগারস লিপ পাহাড়। আর ডানহাতি ১৯১১-১৩তে তৈরি ১৩৫৬.৩৬ মি দীর্ঘ ওয়ালওয়ান (Valvan) বাঁধের পরিবেশও সুন্দর। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। বাঁধের পথেই কৈবল্যধাম যোগ আশ্রমটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আর আছে বুশী (Bushy) ডাম। লোনাভালার আর এক আকর্ষণ তার চিক্কি (Chikki) ও চিড়া (Chiwda)। শুড়, চিনি ও বাদাম সহযোগে তৈরি টফি জাতীয় সুস্বাদু চিক্কিমিঠাই ন্যাশানাল বা মগনলাল বা কিংস থেকে পরখ করা যেতে পারে। নানান ধরনের বরফিও খুবই মুখরোচক লোনাভালায়। তবুও কারলায় সংযোগকারী স্টেশনরূপে লোনাভালা অধিকতর খ্যাত।

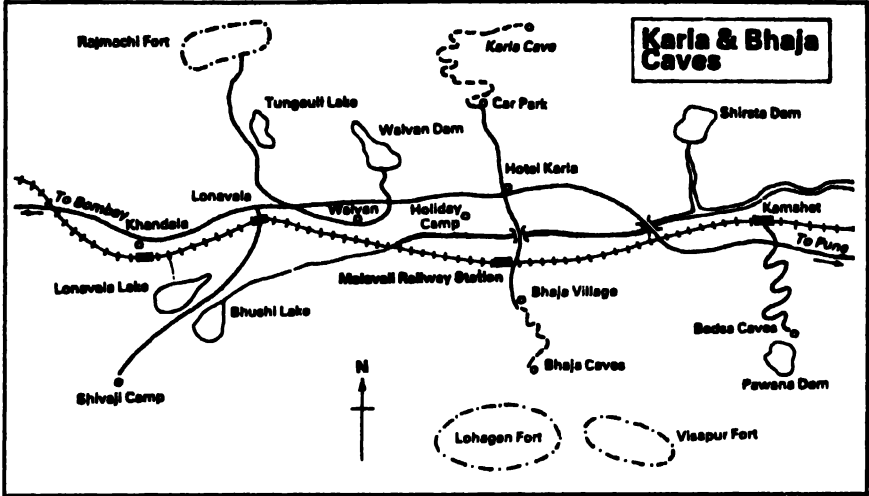
আর হতে যাচ্ছে সাহারা ইন্ডিয়ায় উদ্যোগে ৪৫০০ একর জমি জুড়ে লেক সিটি। ৯ কিমি দীর্ঘ ব্রুমে স্পিড বোর্ডে বাতারাউ—খোলাধুলার নানান ব্যবস্থা। এমনকি মুম্বাই থেকে বাতারাতে গতি বাড়াতে হেলিকপ্টারও চালাবে সাহারা ইন্ডিয়া।



Lonavala-410401, STD 02114, NH-17-
৭—H Kadamb Sahaydri, DAB ৪০০;
Maharaj Inn, DAB ৩২৫; H Ashoka, Pinks
L, Highway L, Grand L, Girikunj, SAB ১৫০ DAB ২৫০-

৪৫০; বিপরীতে Janata H, H Nicky, DAB ৪০০-৬৫০;
H Dinesh, Plot-12, C-Ward; Matruchhaya, DAB ৩৫০
থেকে; H Shalimar, H Checking, H Dipak, H Viswa
Bharat, Kohinoor Holiday Home, H Purohit, Shahani
Health Home, D ২২৫-৪৫০; Shamiana L, Anuradha L,
Laxmi L, Pitale L, H Regal. Shivaji Rd-401-এ—Adarsh
H, D 72353, DAB ৫৫০-৮০০ সুইট ৮৫০; H Chandralok,
SAB ৪০০ DAB ৬৫০; H Woodlands, DAB ৬০০ ডমি
১০০। Highland Resort, Mumbai-Pune Rd-1, D 71191,
S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১২০০; H Dhiraj,
NH-17, DAB ৬৫০-৮৫০; Valleria, M-P Rd, D ৬০০
A/c D ৮৫০-১২৫০; Nagraj, M-P Rd, D ৪৫০-৬০০;
*Fariyas Holiday Resort, Frichley Hill, D 73852, A/c S
১২৯৫ D ২৫৯৫ সুইট ৩৭৫০; H Swiss Cottage, near S T
Stand, SAB ২৭৫ DAB ৪২৫ A/c D ৬০০ ডমি ৮০; Lions
Den H, Tungarli Lake Rd-410403, R24B2, D 72954, D
৪৫০-৬০০ A/c D ৬৫০-৮৫০; Span Hill Resort, Tungarli,
D 73685, A/c D ১২৫০ সুইট ২৫০০; Bijis Hill Resort,
Lonavala, D 73025, New Tungarli Rd, S ৪৫০ D ৮০০
A/c S ৬৫০ D ৮৫০ চার বেডের সুইট ১৭৫০; Bijis Kumar
Resorts, D 73091, অব্: Pune D 648639, Mumbai
D 6483506; H Star Regency, Justice Telang Rd-1,
D 73331, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৮০০ D ১০০০ সুইট
১৭৫০; H Annapurna, Gawli Wada, DAB ৬০০;
Savshanti Resorts, Rye-Wood Park, D 72253, D ৬০০-
৯৯০ A/c কটেজ ১২০০; *Quality Inn Rainbow Retreat,
opp Valvan Dam, Mumbai-Pune Rd, D 73445, A/c S
১২৯০ D ১৪৯০ সুইট ২২৫০; Valvan Village Resort,
DAB ৮৫০-১৫০০; ছাড়াও হোটেল আছে নানান লোনাভালায়।
আর আছে জাতীয় সড়ক থেকে দূরে রেল লাইন পেরিয়ে MTDC-
র Ryewood Retreat, Ryewood Park, D 71138, দুই বেডের
কটেজ ১০০০ তিন বেডের ১০৫০ ১২০০ চার বেডের ১৪৫০
১৮০০ ছয় বেডের ২১০০; মুম্বাই বুকিং: D 2870566.
Municipal RH, PWD IB ও সিক্কেস্বর ধরমশালা লোনাভালায়।
খাবার হোটেলও নানান লোনাভালায়। মুম্বাই-পুনে রোডে নিরামিষ
আহার্যে কামাথ, রাজা রেস্টুরেন্ট, লোনাভালা রেস্টুরেন্ট ও
বাজারে হোটেল গীরাঙ্গ আকর্ষণে সেরা। আইসক্রিম ও ফাস্ট
ফুডে-৩ গীরাঙ্গ যথেষ্ট খ্যাত। কামাথ লাগোয়া পাঞ্জাবী আহার্যও
মেলে। হোটেল আদর্শেভেজ মিল আর হোটেল নিউ তাজে চীনা-
মোগলি-কন্টিনেন্টালের সাথে পার্শ্ব মেনুও মেলে।

যানবাহন: মুম্বাই-নেরাল-পুনে রেলপথে মুম্বাই CST থেকে
১২৮ কিমি দূরে লোনাভালা। আর লোনাভালা থেকে পুনের দূরত্ব
৬৪ কিমি। মাথেরন থেকে ট্রেনে নেরাল হয়ে লোনাভালা পৌছান।
আর লোনাভালা থেকে রেল, বাস, ট্যাক্সিতে জেলা সদর পুনে বা
রাজধানী শহর মুম্বাই চলা যেতে পারে। খোশোশিতে বোরখাট
রোড ধরে শেয়ার ট্যাক্সিও চলে এগাবে। তবে, বাস ও শেয়ার
ট্যাক্সিতে সিট মেলা দুকর লোনাভালায়। লোকাল ট্রেনও চলাছে
লোনাভালা থেকে পুনে। আবার পুনে থেকে ৬-৩০/৮-০০টার
লোকালে দেড় ঘট্যর বা ৭-১৫র ডেকান এক্সে, ৭-৪৫এর প্রগতি
এক্সে বন্ধাকমে ৮-১০/৮-৪২এ লোনাভালায় পৌছে শ'দেড়ক



টাকায় অটো নিয়ে ঘণ্টা পাঁচকে কারলা/ভাজা/লোনভালা/খান্দালা বেড়িয়ে মিনাস্তে (১৭-৪৫/১৮-৫৫) পুনে ফেরা যেতে পারে। বাসও যাচ্ছে রেল স্টেশন থেকে ঘণ্টায় ঘণ্টায় কারলায়। বা লোনভালায় রাত কাটিয়ে পরদিন ৭-২৫এর সহায়ি এঙ্গে ৯-৪৮এ কারলা এঙ্গে ১½ ঘণ্টায় নেমাল পৌছে মাথেরন চলুন খেলনা রোলে। আর মুম্বাই CST থেকে মুম্বাই-পুনে ইক্সপ্রেস ৫-৪৫, ডেকান এক্স ৬-৩৫, শতাব্দী এক্স ৬-৪০, উদ্যান এক্স ৭-৫৫, কমনা এক্স ৮-৪৫, হায়দ্রাবাদ এক্স ১২-৩৫, চেমাই এক্স ১৪-০০, সিংহগড় এক্স ১৪-৩৫, কল্যাণুমারী এক্স ১৫-৩৫, প্রগতি এক্স ১৬-২০, ডেকান কুইন ১৭-১০, সহায়ি এক্স ১৭-৪৫, মহালক্ষ্মী এক্স ২০-২৫, কোনার্ক এক্স ১৫-০০, হুসেন সাগর এক্স ২১-৫৫, ২৩ ৬ ৭ দিন ব্যঙ্গালোর এক্স ২২-৪০, চেমাই মেল ২৩-২০, সিদ্ধেশ্বরী এক্স ২২-০৫; আর দাদার থেকে চেমাই এক্স ১৯-৪৫, তিরুপতি/তিরুভনন্তপুরম/নাগেরকয়েল এক্স ১২-২৫এ; কারলা থেকে ২০-২০এ নেত্রবতী এক্স ঘণ্টা তিনকে লোনভালা পৌছে পুনে হয়ে যাচ্ছে। কারলা-ব্যাঙ্গালোর এক্স লোনভালায় না থেমে পুনে যাচ্ছে।

কারলা গুহা

লোনভালা থেকে পুনে-মুম্বাই NH-17 ধরে ৯ কিমি যেতে বামহাতি আরও ২ কিমি গিয়ে কারলা গুহা। ৩৬৫ ধাপের সিঁড়িপথে ৫০০ মি উঠে গুহার ফটক। খ্রিস্ট জন্মেরও ১৬০ বছর আগে ৬৫০ মি উঁচুতে বৈজয়ন্তীর শ্রেষ্ঠী ভূতপালের তৈরি বৌদ্ধ চৈত্য-গুহার জন্য কারলার প্রশস্তি। হীনযান বৌদ্ধগুহা এটি। ভাস্কর্যময় ১৬ মি উঁচু ৪৫x১৫ মিটারের চৈত্যহাটটি সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত; কার্টিং-এর কাজও সুন্দর। বৌদ্ধচৈত্যগুলির মধ্যে বৃহত্তমও বটো। প্রবেশদ্বারে গুহারও আশে তৈরি ১ ভক্ত ও ৩ সিংহের মূর্তি। আর অন্তরে কারুকার্যময় ৩৭টি পিলার, পিলারের

মাথায় নতজানু হওয়া যুগল হাতি, নারী ও পুরুষ মূর্তিও মূর্ত হয়েছে। সেগুনের কড়িকাঠে ছাদ। তেমনই সুন্দর বিরাটাকার অর্ধ-গোলাকৃতি জানালা দিয়ে সূর্যালোক প্রতিফলনের ব্যবস্থা। সেওয়ালে বিরাটাকার হাতি, নর্তক-নর্তকী ছাড়াও ৬টি মানব-মানবী মূর্ত হয়েছে। হিন্দু-দেবী শ্রীএকবিরা রয়েছেন গুহার তোরণদ্বারে পরিবেশের সঙ্গে বেমানান নতুন গড়া মন্দিরে। পর্যটকবিমুখ হয়ে বিহারধর্মী গুহা রয়েছে আরও ১০টি কারলায়। ২টি তার ত্রিতল, ১টি দ্বিতল। যাত্রী সমাগম উল্লেখ্য না হলেও ছুটির দিনগুলিতে ভিড় করে মুম্বাই ও পুনেবাসী চড়ুইহাতির আকর্ষণে। মহারাষ্ট্র ট্যুরিজম থেকে রক ক্লাইমিং কোর্স শিক্ষার আসর বসছে কারলায়।

নিকটবর্তী রেল স্টেশন ৪ কিমি দূরের মালাভলি থেকে যানাবাব হেতু লোনভালা থেকেই অটো/ট্যাক্সিতে বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। লোনভালা রেল স্টেশন থেকে বাসও মেলে ঘণ্টায় ঘণ্টায় কারলায়।

ধাকার জন্য জাতীয় সড়কে MTDC-র *Holiday Resort, Karla*, (02114) 82230, ৪ বেডের সুপার ডিলাক্স ৪৫০/৬০০/৬৫০, ২ বেডের ২২৫/৩০০ A/C কটেজ ৭৫০/১০০০; আর আছে বিপরীতে *রেস্ট হাউস* ও *H Karla* কারলায়। উৎসাহীরা কারলা থেকে ৬ কিমি দূরে ১৮ শতকের কিলা লোহাগড়ও বেড়িয়ে নিতে পারেন।

ভাজা গুহা

কারলা দেখে ভাজায় চলুন। জাতীয় সড়কের বিপরীতে ৩ কিমি যেতে ভাজা। মালাভলি সেঙ্গে ক্রসি পেরিয়ে পথ গিয়েছে, মালাভলি রেল স্টেশন থেকে দূরত্ব ১.৬ কিমি। বাসের চল নেই, পায়ে পায়ে চলা। তাই লোনভালা থেকে

অটো নিয়ে কারলা ও ভাঙ্গা বেড়িয়ে মালাভলি থেকেই লোকাল ট্রেনে চলা যেতে পারে পুনে বা লোনাতালা। রেল স্টেশন থেকে ৮/৯টার বাসে কারলায় গিয়ে কারলা দেখে ৫ কিমি পায়ে হেঁটে ভাঙ্গা পৌছে ভাঙ্গা থেকে আবার হেঁটে ১.৬ কিমি দূরের মালাভলি ফেরা যেতে পারে।

খ্রি পূ ২ শতকে তৈরি কারুকাবহীন হীনযানপন্থী ১৮টি গুহায় চৈত্যশৈলীর সমন্বয় ঘটেছে। ১১ নম্বর গুহায় ১৪টি স্থপ, কারলারই প্রতিচ্ছবি ১২ নম্বরের চৈত্য গুহায় ভগ্নাবস্থায় কিছু ভাস্কর্য আজও দৃশ্যমান। সর্বদক্ষিণের গুহার ভাস্কর্য সুন্দর। নৃত্যরত যুগল মূর্তিটি অভিনব। আরও দক্ষিণে ঝরনা নামছে পাহাড় থেকে। দূরে ভাঙ্গার শিরে শিবাজী মহারাজের ভিসাপূর্ণ দূর্গও দৃশ্যমান ঝরনা থেকে। বসতির মাঝ দিয়ে বন্ধুর পথ। কারলা থেকে সিঁড়ির সংখ্যা আধা হলেও কারলা দর্শনের পর বৈচিত্র্যহীন ভাঙ্গার আকর্ষণ কম।

খান্দালা

লোনাতালা থেকে বিপরীতমুখী ৪ কিমি দূরে খান্দালা স্টেশন। মেল বা এক্স ট্রেন থামে না খান্দালায়। লোকাল ট্রেন যাচ্ছে। বাসও যাচ্ছে ঘাট রোড ধরে লোনাতালা থেকে খান্দালায়। লোনাতালা থেকেই বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। পশ্চিমঘাট পর্বতের এই পাহাড়ী শহরের জলবায়ু ও উচ্চতা লোনাতালারই মতো। বর্ষায় সৌন্দর্য বাড়ে খান্দালার। মনসুনে মেঘেরা আকাশ ছেড়ে নেমে এসে মুড়ে রাখে খান্দালাকে। ৩০০ ফুট উঁচু থেকে পড়া খান্দালার জলপ্রপাতটি খুবই চিত্তাকর্ষক। ব্যক্তিগত সংগ্রহের চিড়িয়াখানা *নাগফুঙ্গি* অর্থাৎ সাপের ফণার মতো ডিউকস নোজ, রাজমহী পয়েন্ট তথা দূর্গ—এদেরও সমাদর আছে পর্যটক মহলে। সূর্যাস্তেরও প্রশস্তি আছে খান্দালায়।



হোটেলও আছে Khandala-410301, STD 02114-এ—H Bawa International, Rajmachi Point, D ৮৫০-১০৫০; *Mount View Resort, Mumbai-Pune Rd, 0 72335, S ৬৫০ D ১২০০ A/c S ৮৫০ D ১৫০০; Bijis Radison Inn, Mum-Pune Rd, অব: Pune 0 648639/Mumbai 0 6483506; *H Dukes Retreat, 0 73826, Mumbai 0 (022) 2613293, DAB ২২৫০ সুইট ২৭৫০; H Mayur, H Girija, Mumbai-Pune Rd, 0 72062, D ৪০০ A/c ৬০০; H Khandala, El-Taj, H Fun-N-Food, 61 Hill Top Colony, 0 73117, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১৫০০; Hotel on the Rocks, Govt GH ছাড়াও নানান।

বেডসা গুহা

প্রথম শতকে তৈরি বেডসা গুহার নির্মাণকৌশল দর্শকদের মুগ্ধ করে। পিলারগুলির কারুকার্যও সুন্দর—হাতি, ঘোড়া, বাঁড় উৎকীর্ণ। ২৬টি পিলারে ভর করা ছাদটিও চিত্রিত ছিল অতীতে। ট্রেনে লোনাতালা থেকে ১৬ কিমি

পুনেমুখী কামসেত পৌছে বাসে ৩ কিমি গিয়ে শেষ ৩.৫ কিমি পায়ে হাঁটা পথ আজও দুর্ভাষ করে রেখেছে পর্যটন মানচিত্রে বেডসাকে। পথ দুর্গম হলেও আকর্ষণে অনন্য বেডসা। পুনের দূরত্ব ৬৪ কিমি।

পুনে

ঈয় বুদ্ধিমত্তায় নিরঙ্কর ছত্রপতি শিবাজীর স্বপ্নে গড়া কুইন অব ডেকান ব্রিটিশের পুনা আজ হয়েছে পুনে। অসুরের পুণ্যেশ্বর মন্দির থেকে পুনে নামকরণ। দ্বিমতে প্রাচীনকালের পুণাপুর থেকে পুনে হয়ে থাকবে। এই পুনেকে ঘিরে আমৃত্যু (১৬৮০) এই মারাঠা বীরের হাতে গড়ে উঠেছিল সারা মহারাষ্ট্রে মারাঠা সাম্রাজ্য। দোর্দণ্ড প্রতাপশালী মোগল সম্রাটকেও বার বার পর্যদন্ত হতে হয় গেরিলা যুদ্ধে বিশারদ হিন্দু সাম্রাজ্যের পুজারী সূচতুর শিবাজীর কাছে। শিবাজীর পুত্র শম্ভাজীর মৃত্যু ঘটে ঔরঙ্গজেবের হাতে। আর ১৭৬১তে পানিপথে আহম্মদ শাহ দুরানীর হাতে পেশোয়া বাজীরাওয়ের পরাজয়ে মারাঠা সাম্রাজ্যের পতন ঘটে। হুভগৌরব নতুন করে পুনরুদ্ধার করেন নানা সাহেব পেশোয়া ওই শতকের শেষভাগে। *যব তক নানা তব তক পুনা*—আজও পুনের আকাশে-বাতাসে শুনতে মেলে। বার বার বিদ্রোহ দমন করে ১৮১৮য় কারেগাঁও—এর যুদ্ধে পেশোয়ারাজের পরাজয়ে ব্রিটিশের দখলে যায় পুনে। আর জলবায়ুর গুণে পুনে হয় মুম্বাই প্রতিপদের বর্ষাকালীন রাজধানী। এমনকি লোকমানা তিলক, দেশবরণে রাণাড়ে, মহামতি গোমেল, অধ্যাপক কার্ভের স্মৃতিতে পুনে আজ গর্বিত।

৫৫৯ মি উঁচুত মুখা ও মূলানদীর তীরে সহাদ্রি পাহাড়ে ছবির মতো শিল্পকেন্দ্রিক বাণিজ্যিক শহর পুনে। ক্যান্টনমেন্ট নগরীও বটে। মহারাষ্ট্রের সাংস্কৃতিক পীঠস্থান পুনের আধুনিক শহর রূপে যেমন খ্যাতি তেমনই অতীতদিনের কীর্তিকলাপের নিদর্শনও ছড়িয়ে রয়েছে পুনেকে ঘিরে। পুনের গণেশ চতুর্থী ও পালকি উৎসবের পর্যটক আকর্ষণও কম নয়।



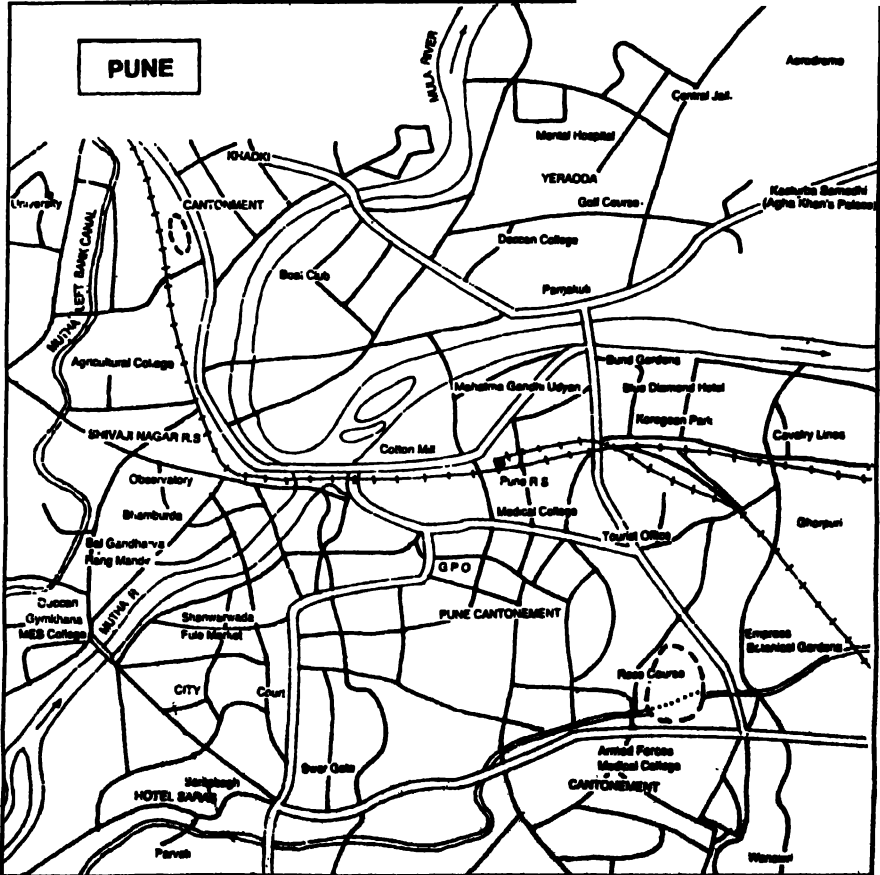
মুম্বাই ছত্রপতি শিবাজী টার্মিনাল (CST) থেকে ১৯২ কিমি দূরে মুম্বাই-চেন্নাই রেলপথের জংশন স্টেশন পুনে। মুম্বাই (CST) থেকে লোনাতালার প্রতিটি ট্রেন পুনে আসছে। তবুও যেন যাতায়াতে শতাব্দী এক্স, ডেকান কুইন, প্রগতি এক্স, ডেকান এক্স ও ইন্দ্রাণী এক্স আদরনীয় হবে। ইন্দ্রাণী ৫-৪৫, ডেকান এক্স ৬-৩৫, শতাব্দী ৬-৪০, সিংহগড় এক্স ১৪-৩৫, প্রগতি এক্স ১৬-২০, ডেকান কুইন ১৭-১০৫ মুম্বাই CST ছেড়ে পুনে পৌছায় ৯-৩০, ১১-১৫, ১০-০৫, ১৯-০৫, ২০-০৫, ২০-৩৫। মুম্বাই যাচ্ছে পুনে থেকে সিংহগড় এক্স ৬-০৫, ডেকান কুইন ৭-১৫, প্রগতি এক্স ৭-৪৫, ডেকান এক্স ১৫-১৫, শতাব্দী এক্স ১৭-৩৫, ইন্দ্রাণী এক্স ১৮-৩০৫, লোকাল ট্রেনও চলছে ৬৪ কিমি দূরের পুনে থেকে লোনাতালায়। এছাড়া দিনরত শেয়ার টাক্সি যাচ্ছে ৫/১০ মিনিটের ব্যবধানে মুম্বাই (পাদার) ও পুনের মাঝে লোনাতালা হয়ে। রাত্তি ভাড়া ১৫০ করে।

আর পানাজির যাত্রী নিয়ে ১৩-৫০এ কয়না এক্স, ২২-৪৫এ সহায়ী এক্স, ১-২০এ মহালক্ষ্মী এক্স, ১৩৪৭ দিন ব্যাঙ্গালোর এক্স, ১৭-৩০এ গোয়া এক্স ছাড়াও প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে পুনে থেকেই কোলহাপুর-মিরাজ হয়ে। সরাসরি ডাকো যাচ্ছে গোয়া এক্স পরদিন ৭-২৫এ। ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ২০ ঘণ্টায় ১২-২০এ উদ্যান এক্স, ২-৩৫এ কারলা-ব্যাঙ্গালোর এক্স; হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ১৩ ঘণ্টায় ১৭-১৫য় মুম্বাই-হায়দ্রাবাদ এক্স, ২-০৫এ হুসেন সাগর এক্স; ১৯-৪০এ ভুবনেশ্বর যাচ্ছে ১১ ঘণ্টায় সেকেন্দ্রাবাদ পৌছে মুম্বাই-ভুবনেশ্বর কোণার্ক এক্স; চেমাই যাচ্ছে ২২ ঘণ্টায় ৪-০০টায় মুম্বাই-চেমাই মেল, ১৮-৪০এ মুম্বাই-চেমাই এক্স, ২৩-৫৫য় দাদার-চেমাই এক্স; ২০-১৫য় কন্যাকুমারী যাচ্ছে মুম্বাই-কন্যাকুমারী এক্স; ১৩৪৭ দিন ৩-৩০এ ব্যাঙ্গালোর এক্স, ১১-৩৫এ নিজামুদ্দিন-ব্যাঙ্গালোর এক্স; ০-৩৫এ নেত্রবতী এক্স যাচ্ছে কোচি/মাদ্রাসার, ১৬-৪৫এ যাচ্ছে তিরুপতি/ তিরুভনন্তপুরম/ নাগেরকয়েল; আমোলাবাদ যাচ্ছে ৩১৫ দিন পুনে-আমোলাবাদ অহিন্স এক্স, রবিবার

কোচি-রাজকোট এক্স, শনিবার নাগেরকয়েল-গান্ধীবাম এক্স, বুধবার সেকেন্দ্রাবাদ-রাজকোট এক্স, শুক্রবার তিরুভনন্তপুরম-রাজকোট এক্স ছাড়াও সোলাপুর, কোলহাপুর, নাগপুর, ওলবর্গা যাচ্ছে নানান ট্রেন। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে পশ্চিম ও দক্ষিণ ভারতের দিকে দিকে পুনে থেকে। কলকাতার যাচ্ছে শুক্রবার ১৬-০৫এ পুনে ছেড়ে ৩৭ ঘণ্টায় ১০২৭ আজাদ হিন্দ এক্স। আর গোয়া যাত্রার উচিত হবে গোয়া এক্স বা ১৩৪৭ দিন ব্যাঙ্গালোর এক্সে লোডা পৌছে বাসে পানাজি চলা।



দিন-রাতি জুড়ে ২ ঘণ্টা অন্তর ৫ ঘণ্টায় এস টি ও এশিয়াড বাস যাচ্ছে ১৬৩ কিমি দূরের মুম্বাই (দাদার/সেইদা) ছাড়াও রাজ্যের নানান শহরে পুনের তিন বাস স্ট্যান্ড থেকে। শোয়ার গেট থেকে যাচ্ছে—সিংহগড়, পুরন্দর, শিবপুর, বাণেশ্বর, মোরগাঁও; শিবাঙ্গীনগর থেকে—নাসিক ২০২, ওরঙ্গাবাদ ২২৬, সির্ধি, জলগাঁও, লোনভালা, নানডেড, আহমেদনগর, অমরাবতী,



বেলগাঁও; রেল স্টেশন থেকে—পানাজি, কোলহাপুর, সোলাপুর, সাতারা, মহাবালেশ্বর, পাঞ্চগনী, রত্নগিরি, বেলগাঁও ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে। বাস যাচ্ছে নাগপুর, হামদ্রাবাদ ৫৪৮, গোয়ার রাজধানী পানাজিতেও পুনে থেকে। এমনকি মুম্বাই-ওরঙ্গাবাদ (অজন্টা/ইলোরা), মুম্বাই-পানাজি (গোয়া) বাসও পুনে হয়ে যাচ্ছে। উচিতও হবে পুনে বেড়িয়ে শিবাজীনগর বাস স্ট্যান্ড থেকে এসে টি বাসে ৬ ঘণ্টায়, এশিয়াড বাসে ৪ ঘণ্টায় ওরঙ্গাবাদ বা ১০ ঘণ্টায় ৪৫৮ কিমি দূরের পানাজি চলা। ট্রেনও যাচ্ছে ৬৭৬ কিমি রেল দূরের ডাকো-ডা-গামা, সেকেন্দ্রাবাদ ৬০৯, চেন্নাই ১০৯২, দিল্লী ১৫৮০, কলকাতা ২২৫৯ কিমি কল্যাণ হয়ে। ট্যাক্সিও যাচ্ছে পেমারে পুনে থেকে মুম্বাই।



IAC-র বিমান ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন ১৬-০০টায়, রবিবার ১৪-০০টায় দিল্লী ছেড়ে ২ ঘণ্টায় পুনে পৌঁছে দিল্লী ফেরে ১৮-৪৫/১৬-৪৫এ/১৪ দিন ১৩-৪৫, ৩ ৫ ৭ দিন ১২-০০টায় পুনে ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে চেন্নাই যাচ্ছে। পুনে আসছে ১০-১৫য় চেন্নাই ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর হয়ে ১৩-০০টায়।

প্রাইভেট বিমান Jet Airways প্রতিদিন ১ ঘণ্টায় মুম্বাই; East West Airlines প্রতিদিন মুম্বাই-পুনে-মুম্বাই ও ফ্লাইট; Damania Airways প্রতিদিন পুনে-মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর ২ ফ্লাইট; NEPC Airways প্রতিদিন মুম্বাই ২ ফ্লাইট, প্রতিদিন ব্যাঙ্গালোর, চেন্নাই, ওরঙ্গাবাদ, ২ ৭ দিন কেশোদ-পোরবন্দর, ৩ ৫ ৭ দিন ডাবনগর-জামনগর, ১ ২ ৪ ৬ দিন রাজকোট, ১ ৪ দিন কাম্বালা যাচ্ছে। ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে। শহর থেকে ১২ কিমি দূরে বিমানবন্দর। IAC-র দপ্তর বসেছে হোটেল লাগোয়া Connaught Rd; Jet Airways @ 637181; East West Airlines @ 665862; Damania @ 640814; NEPC, 17 M G Rd-1, @ 637441এ।

আর শহরে চলেছে ট্যাক্সি, অটো ও বাস। রেল স্টেশন লাগোয়া বাস স্ট্যান্ড থেকে Route No 4 বাস যাচ্ছে শিবাজীনগর হয়ে বোয়ার গটে। সবকিছুই মারাত্মক ভাষার লেখা। তবে সাদৃশ্য মেলে হিন্দী সাথে। মারাঠি ৪ দেখতে বাংলা ৪ তুল্য। তবে উপরের অংশ সন্মোহন।

কনডাক্টেড ট্রার: মিউনিসিপ্যাল ট্রান্সপোর্ট আরোজিত কনডাক্টেড ট্রারে অংশ নিয়ে পুনে দর্শন সেরে নেওয়া যায়। ৩১ ঘণ্টার এই সফরের ভাড়া ৪৩.৫০। ৩ দিন আগে থেকে বুকিং এদের। রেল স্টেশনের পাশেই বাসস্ট্যান্ড থেকে ডিলার বাস ছাড়ে প্রতিদিন ৮-০০টা ও ১৫-০০টায়। আর MTDC, I-Block, Central Building, Pune-411001, @ 668867 ডেকান জিমনারী থেকে ছেড়ে পুনে দর্শন করিয়ে আনে। রেল স্টেশন বৃথ ও স্ট্যান্ড বিশিষ্ট-এ (রেল স্টেশনের বিপরীতে সোজা গিয়ে বাঁয়ে) বুকিং এদের। এছাড়াও MTDC পুনে থেকে ৩ দিনে অজন্টা-ইলোরা, ৫ দিনে মোরা, ১ দিনে মহাবালেশ্বর, ১ দিনে করলা-দোনডালা-খান্দালা বেড়িয়ে আনে। MTDC-র A/c বাস যাচ্ছে মুম্বাই, আর ডিলার বাস যাচ্ছে মহাবালেশ্বর, পানাজি ও ওরঙ্গাবাদ পুনে থেকে। ফোঁদাবার মনোরম সময় সেপ্টেম্বর থেকে মার্চ মাস। গরমের আবহাওয়া না থাকলেও বর্ষা চলে জুন থেকে সেপ্টেম্বর। এছাড়াও গান্ধী প্রাইভেট ডিলার বাসও যাচ্ছে পুনে থেকে মুম্বাই, পানাজি, অজন্টা-ইলোরার ব্যাঙ্গী নিয়ে ওরঙ্গাবাদ,

ব্যাঙ্গালোর, হামদ্রাবাদ, ব্যাঙ্গালোর ছাড়াও সারা পশ্চিমে। তবে, একান্তই উচিত হবে দালাল পরিহার করে সরাসরি টিকিট কাটা। তেমনই উচিত হবে দূরপাল্লার যাত্রায় সরকারি বাস এড়িয়ে প্রাইভেট বাসের ব্যাঙ্গী হওয়া। শহরে চলেছে অটো, ট্যাক্সি ও মিউনিসিপ্যাল ট্রান্সপোর্ট বাস।

বাসস্ট্যান্ড থেকে রওনা হয়ে জয়প্রকাশ নারায়ণ রোড, বি জে মেডিক্যাল কলেজ, ড. আশ্বকর উদ্যান, কালেক্ট-রেট অফিস, সঙ্গম ব্রিজ, ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজ, শিবাজী রোডে ছত্রপতির প্রথম মূর্তি **শিবাজী পুতলা** দেখিয়ে বাস যাচ্ছে শানওয়ারওয়াধার পথে। শানওয়ারওয়াধা, পুনে বিশ্ববিদ্যালয়, এম ফুলে মিউজিয়াম, বৃন্দাবন গার্ডেনের ধাঁচে তৈরি—সয়স বাগ-এ ঝরনার মিষ্টি-মধুর তান, ব্লেক পার্ক (বৃহবার ছাড়া), মূলা ও মুখা নদীর দক্ষিণ পাড়ে বান্দ গার্ডেনস তথা গান্ধী উদ্যান, মহাদজী সিন্ধে ছরী, আগা খাঁ প্রাসাদ, এম গান্ধী গার্ডেন দেখিয়ে বাস ফেরে রেল স্টেশনে। ৩ ঘণ্টায় প্রায় ৫০ কি মি পর্যটনে পুরো পুনে শহরটাই দেখে নেওয়া যায়।

পুনে শহরের ৩১ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ২৬১ ফুট উচ্চ পাহাড়ী টিলায় রয়েছে ৬ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৭৫৩-য় তৈরি পার্বতী মন্দির। আর রয়েছে গণপতি, সূর্য, বিষ্ণু, কার্তিক ও দুর্গা স্ব স্ব মন্দিরে। ৩ বা ৮ রুটের বাসে যাওয়া চলে, অটো বা ট্যাক্সিতেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় পেশোয়া রাজপরিবারের কুলদেবী সোনার দেবী পার্বতীর মন্দির। ১০৮ খাড়া সিঁড়ি উঠে মন্দির থেকে চারপাশের দৃশ্যও সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। কনডাক্টেড ট্রারের বাস দূর থেকে দৃষ্টবল মন্দির দেখিয়ে দেয়।

এরই পাদদেশে ৩০ একর জমি জুড়ে রূপ পেয়েছে পেশোয়া উদ্যান অর্থাৎ মনোরম বাগিচা। উদ্যানের মাঝে কারুকর্মযুক্ত ১৭ শতকের চতুর্ভুজ গণেশ মন্দির। সামান্য পশ্চিমে সীহিবাবার মন্দির। অদূরে বরেন্দ্ৰ সাহিত্যিক শরদিন্দু বন্দ্যোপাধ্যায়ের কুঠি বাঙালির আর এক তীর্থ।

দিনকর কলেক্টর আজ লোকজরিত হলেও নতুন এক জগতের সন্ধান দিয়েছেন তিনি তাঁর একক সংগ্রহের মিউজিয়ামে। রাজহানী স্থাপত্যে গড়া নতুন বাড়িতে বসেছে রাজা কেলকার মিউজিয়াম। হাজার দুয়েক বছরের অতীত স্থান পেয়েছে এর ৩৬টি বিভাগে। প্রাসাদ-শিল্প, রূপবতী নর্তকী মস্তানির মহল, মন্দির ভাস্কর্য থেকে শুরু করে পোড়ামাটির কাজ, নানান বাদ্যযন্ত্র, সমরাস্ত্রের সম্ভার, জাঁতির রকমভেদ, আদ্যোপ বৈচিত্র্য, তালাচাবির শুলোচুরি, রকমারি ছিলিম, হাবির সম্ভার, নানা ফড়নবিশের ২২ হাত লম্বা ঠিকুজি বায়ু করে রাখা দর্শককে। শোনা যায়, সংগ্রহের এক-চতুর্থাংশও প্রদর্শিত হতে পারেনি জায়গার অভাবে। প্রদর্শিত হচ্ছে পালা করে ঘুরে ফিরে। এটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে পুনে ভ্রমণার্থীদের। ৮-৩০—১২-৩০ ও ১৫—১৮-০০টায় প্রতিদিন খোলা, দশমী ২।

৬৫ হেক্টর জুড়ে উদ্যানের মাঝে ইতালীয় স্থাপত্যে গড়ে তোলা আগা খাঁ প্রাসাদ ভারতের স্বাধীনতা সংগ্রামের নীরব সাক্ষী হয়ে দাঁড়িয়ে। ১৯৪২-এ “ব্রিটিশ ভারত ছাড়ো” আন্দোলনে বন্দী হয়ে এই বাড়িতেই অবস্থান করেন মহাত্মা গান্ধী, কন্সরবা গান্ধী, সরোজিনী নাইডু, মহাদেবভাই দেশাই ও আরো অনেক জাতীয় নেতা। মারাও যান বন্দী-কালে কন্সরবা ও মহাদেবভাই—শ্বেতমর্মরে সমাধি হয়েছে প্রাঙ্গণে। পার্শেই গান্ধী মিউজিয়ম—বাংলায় লেখা একটা চিঠিও প্রদর্শিত হয়েছে। ১৯৬৯-এ ভারত সরকারকে দান করা হয় প্রাসাদ। নামেরও বদল ঘটেছে, আগা খাঁ প্রাসাদ আজ হয়েছে গান্ধী জাতীয় মিউজিয়ম। ৯—১৬-৩০টায় খোলা, টিকিট ২।

সঙ্গীর্ণ গলি শনিবার পেট অর্থাৎ পথে ১৭৩৬ খ্রিস্টাব্দে শনিবারে পেশোয়া বাজীরাও ১-এর দারুতে তৈরি ৭ তলা দুর্গাকার রাজপ্রাসাদ Shaniwar Wada বা শনিবারবাড়া। প্রাচীরে ঘেরা, হাতির আক্রমণ প্রতিরোধ করতে গজাল লাগানো উত্তরমুখী সিংহদরজা—নাম তার দিল্লীগেট। ১৮২৭ খ্রিস্টাব্দে বিষ্ণুসী অগ্নিকাণ্ডে বিনষ্ট হয় প্রাসাদ। অতীতের শিশমহল, মণ্ডানি মহল, গণেশমন্দির, চীমাজী বাগ, হাজার সুরমা ফাউন্টেন, কোবাগার, নাচঘর, হামাম সবই আজ বিধ্বস্ত। সিঁড়ি বেয়ে উপরে উঠতেই নগরখানা অর্থাৎ প্যালেস অব মিউজিক। আওনের লেলিহান শিখা একে অক্ষত রেখে যায় আজকের পর্যটকদের জন্য। এর জায়গির কাজ প্রশংসনীয়। আর হয়েছে সুন্দর বাগিচা ২ হেক্টর জুড়ে শনিবারবাড়ায়। অদূরে পথিমধ্যে পেশোয়ারাজরা হাতির পায়ে পিষে মারত অপরাধীদের। এরই পূর্বে ব্রিটিশের ক্যান্টনমেন্ট নগরী।

শহরের আর এক আকর্ষণ ঘোড় দৌড়ের মাঠ। ঘোড়ার দৌড়ের রঙিন স্বপ্ন দেখেন যাঁরা তাঁদের কাছে পূনের রেস কোর্স-এর খ্যাতি আছে। ভিড়ও করে জুন থেকে অক্টোবরে শনিবারের বারবেলায় দুর্-দুরাঙ্গ থেকে এসে খেলোড়ের দল। তেমনই ভাতারকর ওরিয়েন্টাল রিসার্চ ইনস্টিটিউটের পুথির সংগ্রহও পূনের আর এক গৌরব।

মন্দির রয়েছে শহরের প্রাণকেন্দ্র শিবাজীনগরে জ্বলী মহারাজা রোডে পাটালেশ্বর। জনক্ৰান্তি, ৮ শতকে এক রাতে এক পাহাড় কেটে তৈরি হয় পাটালেশ্বর অর্থাৎ শিব মন্দির। এর আর এক বৈচিত্র্য ঘণ্টার আওয়ার। এটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে চলার পথে।

আর রয়েছে রেল স্টেশনের পূর্বে কোরেগাঁও পার্কে ভারতীয় গুরু বিধের বিতর্কিত ভগবান রজনীশের রজনীশ-ধাম আশ্রম। ভগবান যুদ্ধের অবতাররূপে দাবিবারও ছিলেন বিতর্কিত গুরু রজনীশ। ৪২ বছর আমেরিকায় বাস-কালে প্রভাভগার জড়িয়ে ৪ লক মার্কিন ডলারে প্রতিষ্ঠিত গুরু ভারতে ফিরে ১৯৮৭ থেকে পূনের অবস্থান করেন। উপা-সন্যাসনান বিবর্তন। ধ্যানেরও রকম আছে উল্লেখ্য। ১৯৯০-

এর জানুয়ারিতে ৫৮ বছর বয়সে পুনেতে গুরুর মৃত্যু। গুরুর অবর্তমানে ভক্তজনদের সমাগমে রজনীশ ধাম আজও মুখরিত। তবে, দেশী থেকে বিদেশী ভক্তের সংখ্যাধিক।

আর আছে রেল স্টেশনের পূর্বে টাইবাল মিউজিয়ম, ১০—১৭-০০টায় খোলা; এমপ্রেস বটানিক্যাল উদ্যান—অদূরে মিনি চিড়িয়াখানা, হিন্দু ও মুসলিম তীর্থ মূলানদীর সঙ্গম, মুঠার পাড়ে শেখ সলাহর দরগা, মুঠা ও মুলার সঙ্গমে ১৮৭৫ খ্রিস্টাব্দে তৈরি ১৫০ মিটার ওয়েলেসলি ব্রিজ, নানান সূচ্যুর অভিনেতা ও কলাকুশলীর শিক্ষাদাতা ফিশ্ব সোসাইটি, তিলক স্মারক মন্দির, মোলেডিনা রোডে ১৮৬৭তে লাল ইটে গথিক শৈলীতে তৈরি পূনের অন্যতম সুন্দর সিনাগগ লাল দেবল, মহাদজী সিন্ধ্যাছত্রী, নাটকের নানান প্রদর্শন ছাড়াও নানান কিছু পর্যটক দ্রষ্টব্য পুনেতে। তেমনই আগস্ট-সেপ্টেম্বরে ১১ দিন ব্যাপী গণেশ চতুর্থী উৎসবেরও পর্যটক আকর্ষণ অদম্য। উৎসবকালে নানান সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান চলে শহর জুড়ে। ১১শ দিনে মূল্য ও মুখা নদীতে ভাসান মিছিলের জৌলুসও উল্লেখ্য।

সিংহগড়: শহর থেকে ২৪ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ১২৯০ মি উচ্চে ভুলেশ্বর পর্বতমালায় সিংহগড়। শিবাজীর জেনারেল সিংহবিক্রম তানাজীর স্মৃতিতে অতীতের কোন্দানার (১৩২৮-এ মহম্মদ-বিন-তুঘলকের আক্রমণ প্রতিরোধে কোলী সর্দারদের বীর নায়ক কোন্দানা-যমজ ভাই) নামান্তর ঘটান শিবাজী মহারাজ। রাতের আঁধারে ১০০০ ফুট পায়ে চড়ে, বাকি ১০০০ ফুট কোমরে দড়ি বেঁধে গিরগিটির মতো বৃকে হেঁটে খাড়া দেওয়াল পেরিয়ে অতর্কিতে গড়ে পৌছান পাঁচ মাওয়ালী সৈন্য নিয়ে ছত্রপতির জেনারেল তানাজী। প্রবেশদ্বার খুলে শতিনেক সৈন্য ঢুকিয়ে অতর্কিত আক্রমণে এক রাতের যুদ্ধে বিজাপুর কৌজকে ১৬৭০ খ্রিস্টাব্দে এখানেই জয় করে নেয় মারাঠা বাহিনী। যুদ্ধে জয় হলেও তানাজির মৃত্যুতে শোকভিত্ত শিবাজী বলেন, *Gad aala pan sinha gela!* (The fort is won but the lion is gone). আর ১৮১৮-র এপ্রিলে ব্রিটিশের কামানের গোলায় সিংহগড় শুড়িয়ে যেতে গড় ভেট দিয়ে পেশোয়া আব্বাসমর্গ করে ব্রিটিশের কাছে। আগাছার ঘেরা দুর্গে যুদ্ধে নিহত তানাজীর নতুন করে গড়া স্মারকসৌধ, পুরানো ম্যাগাজিন আজও তিন শতাধিক বছরের অতীত রোমন্থন করায়। আর আছে শীতল জলের পুকুর—তার পাড়ে তানাজীর ব্যবহৃত কামান, শিবাজীর কনিষ্ঠ পুত্র রাজারাম-এর সমাধি (১৭০০) ও ভাড়াটেরা ভবানী মন্দির। TV টাওয়ারও বসেছে দুর্গ শিরে। আর আছে বেশ কয়েকটি বাগেলা হাউসে-হাউসে। শাখাজীও ১৯১৫য় লোকমান্য তিলকের সঙ্গে সাক্ষাৎ করেন গড়ের শিরে তিলক ব্যাংকোরে।

রেল স্টেশন থেকে ৪ বা ৫ মিনিটের বাসে শহরের দক্ষিণে বোরার পেট পৌছে লাগোরা বিখ্যাত মন্দিরঘর

থেকে ৫-২৫—২০-০০টায় আধ ঘণ্টা অন্তর ৫০ রুটের সিটি বাস ১ ঘণ্টায় সিংহগড় পাহাড়তলি (Donaj) যাচ্ছে। ঝাড়া পাহাড়, গেটের পর গেট—কখনও সিঁড়ি কখনও চড়াই বেয়ে ঘণ্টা দুয়েকে দু'হাজার ফুট চড়ে সিংহগড়। দোকানপাটের অভাব পাহাড়ে। উচিত হবে আহাৰ্য সঙ্গে আনা পুনে থেকে। তবে, ভোরের একমাত্র বাস পুনে গেট দিয়ে পাহাড় চড়ে গড়ে পৌছায়। অটো/ট্যাক্সি করেও বেড়িয়ে ফেরা যায় গড়। হোটেলও হয়েছে নিচুর বাস স্ট্যাণ্ডে—থাকা ও আহাৰ্য মেলে। আর MTDC-র ৩০ বেডের Sinhad Lodge, ৩ (0212) 321996, DAB ২২৫ ডর্মি বেড ৫০, পুনে বুকিং: (0212) 643860. আর ১৬ কিমি দূরে আছে MTDC-র Panshet Lake Resort, ৩ (0212) 631408, DAB ৮০০ ১০০০ ১২০০ FAB ১৪০০ A/c ১৫০০। নানানখরী জলক্রিমার ব্যবস্থা মেলে রিসর্ট অবস্থানে।

সিংহগড়-পুনে পথেই পুনে থেকে ১৮ আর সিংহগড়ের ৬ কিমি দূরে বিশ্বের অন্যতম সামরিক শিক্ষাকেন্দ্র ন্যাশানাল ডিফেন্স একাডেমিও দেখে নেওয়া যায় চলার পথে Khadakvasla-য়। প্রবেশদ্বারে ১১ ফুট উঁচু মূর্তি হয়েছে মর্মরে দ্রোণাচার্যর। লেকও রয়েছে নানান এপথে। তেমনই শীতে পরিযায়ী পাখিরাও উড়ে এসে জুড়ে বসে এইসব লেকে। পাখাল লেকটি এদের মধ্যে উল্লেখ্য।

আবার উৎসাহীরা পুনে থেকে একে একে বেড়িয়ে নিতে পানেন—ছত্রপতির প্রথম জ্বর রা পাহাড়ি দুর্গ তোর্না সেকালের প্রট্রাঙ্গড়। তবে, ভৌগোলিক প্রতিকূলতা হেতু তোর্না ছেড়ে দুর্গ গড়েন রাইরি পাহাড় অর্থাৎ রায়গড়ে (১৮৬৪-৮০) ছত্রপতি শিবাজী। যাতায়াতের দুর্গমতা হেতু ব্রিটিশের মুখে রায়গড় ছিল পূর্বের জিরালাটার। ১৬৭৪-এ রায়গড়েই রাজ্যভিষেক হয় ছত্রপতি শিবাজীর। ৪০ কিমি দূরে পশ্চিমঘাট পর্বতে ১৩৫০মি উঁচুতে পুরানদার দুর্গে সম্প্রতি NCC-র দপ্তর বসেছে। ৯৪.৫ কিমি দূরে শিবনেরী। শিবাজীর জন্ম এই শিবনেরীতে ১৬২৭এ। দুর্গের অধিষ্ঠাত্রী দেবী শিবাই থেকে শিবাজী নামকরণ। পিতা শাহজী আহমেদনগরের রাজকর্মচারী, মাতা জীজাবাই। পিতৃস্নেহে বঞ্চিত—লালিত হন দাদাজীর কাছে। শিবনেরী দুর্গের আর এক আকর্ষণ মসজিদ আর পাহাড়ের পাদদেশে ৫০-এরও বেশি বৌদ্ধগুহা।

তেমনই পুনের শিবাজীনগর বাস স্ট্যান্ড থেকে ঘণ্টা-চারেকে চলা যেতে পারে ৯৫ কিমি দূরে আর এক শৈবভীর্বভীষ্মাশঙ্করদর্শনে। মানচর হয়ে পথগিয়েছে। কলো পাথরের মন্দিরে পঞ্চমুখী দেবতা। আদিবাসী অধ্যুষিত সহ্যাদ্রি পাহাড়ে ১০৩৪ মি উচ্চে কৃষ্ণার শাখানদী ভীমার দেবে আর্য্যক পরিবেশে ঝালপ জ্যোতির্লিঙ্গের অন্যতমও এই দেবতা। কিংবদন্তী, ভীল উপজাতির আদিপুরুষ ভীলের আবিষ্কার এই স্বয়ম্ভু দেবতা। মন্দিরও গড়েন ভীল। আর ১৮ শতকে নানা ফড়নবিশ নতুন করে মন্দির গড়েন আর

এক। শিবরাত্রির উৎসবে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায় পুনে থেকে। পশ্চিমঘাটের পাহাড়ী ঢালে অভয়ারণ্যও হয়েছে ভীমাশঙ্করে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে MTDC-র Holiday Resort, Bhimashankar, Dist-Pune, ৩ (0212) 480659, ৪টি ২ বেডের তাঁবু ১০০ ২টি ৪ বেডের ৪৫০ ৪টি ৬ বেডের ৬৬০ ১০ বেডের ১০০০; ছাড়াও মন্দির কমিটির যাত্রীনিবাস, সরকারি নিশ্রাম ভবন, PWD-র ডাক বাংলো-য় তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় চলার পথে ইন্দ্রাণী নদীর ধারে আলাদিতে ১৭ শতকের কবি-সন্ত তুকারামের মন্দিরও সমাধি। আর এক কবি-সন্ত খ্যানেশ্বরের মন্দিরও হয়েছে। আর আছে ৬৪ কিমি দূরে স্বয়ম্ভু গণেশ মন্দির মরগাঁও-এ।

তেমনই মুম্বাই-আহমেদনগর সড়কে মুম্বাই থেকে ১৫৪, আহমেদনগর ১০১ আর পুনের ১৬৪ কিমি দূরে মালসেজ ঘাট-ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। বাস যাচ্ছে ত্রয়ী থেকে। তেমনই কল্যাণ বাস স্ট্যান্ড থেকেও আমমেদনগর, শিবনেরি বা ভীমাশঙ্করের বাসে চলা যেতে পারে মালসেজঘাট। চারপাশে সহ্যাদ্রি পাহাড়, ধারা নামছে জলপ্রপাতের—তারই মাঝে সবুজ উপত্যকা। প্রতি বছর আগস্ট-সেপ্টেম্বরে যাবাবরী ফ্রেমিংগো পাখিরা পরিবেশ রমণীয় করে তোলে। আর আছে MTDC-র Holiday Resort, Malshej Ghat, Dist-Pune, ৩ 2042583, DAB ৩০০ ১৪টি ৪ বেডের ঘর ৪০০ ৮০০।



Waswani Rd, Pune-411001, STD 0212-এ রেল স্টেশনের সামনেই মেলা বসেছে হোটেলের—H Dreamland, ৩ 622121, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; *H Shalimar, A8R0, ৩ 629191, D ২৫০ সুইট ৩৫০; *H Ashirvad, ৩ 628585, DAB ৮৫০ A/c D ১২৫০ সুইট ১৫০০; *H Gulmohar, ৩ 622773, S ২২৫-৩৫০ D ৩২৫-৪৫০ সুইট ৬৫০ A/c S ৬০০ D ৮০০; *H Amir, 15 Connaught Rd-1, ৩ 621840, DAB ৮৫০ ১০৪৫ ১২৫০ সুইট ১৭৫০; Metro L, D ১০০-১৫০; National H, DAB ২২০-৩২৫ TAB ২৭০-৩৫০; পুরাতন কাঠের বাড়িতে H Ritz, DAB ১৫০-২৭৫।

এদের পিছনে Wilson Garden, Motilal Talera Marg-411001—Badshahi L, Shree Mathura L, D ১৫০-২০০; Milan L, DCB ১৫০-১৭৫ DAB ২৭৫-৩৫০; H Jinna Mansion, SAB ১৫০-২৫০ DAB ২৫০-৩০০; H Samrat, D ১২৫-১৭৫; Green H, ৩ 625229, DCB ২০০ DAB ২২৫-২৫০; H Satkar, ৩ 620484, S ২৫০ D ৩০০; H Alankar, ৩ 620484, SAB ১৭৫ DAB ২৫০ সুইট ৪৫০; Central L, S ৬০-১০০ D ১২৫-২০০; Sardar L, D ২২৫; Agarwala L, D ১২৫ T ১৫০; H Homeland, ৩ 623203, SAB ৩০০ ৩৫০ DAB ৩৫০ ৪৫০ A/c S ৫০০ D ৬০০; Madhu L ছাড়াও নানান। এদের কাছে S ৬০-১২৫ D ১০০-২২৫ টাকার মেলা।

আরও যাক্ষাঙ্ক নিয়ে রয়েছে রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে মনোরম পরিবেশে নবতম H Sagar Plaza, 1 Bund Garden

Rd, A/c S ৬৫০ D ৮৫০-১০০০। Swargate Bus Stand-এ—H Avanti, বাস যাত্রায় থাকার পক্ষে ভালই; *H Sundervan, 19 Koregaon Park-1, next to Rajneesh Ashram, R4B3, ৬24949, SAB ১৫-২০ DAB ২২-৩০ সুইট ২৫-৩৫ US\$; *H Blue Diamond, 11 Koregaon Rd-1, ৬25555, Mumbai ৬222474, A7.5R2.5, A/c S ১৪০০-১৮৫০ DAB ১৭৫০-৩২০০ সুইট ৪০০০-৭২০০; Metbuild H, Tara Baug, 285 Koregaon Rd-1, ৬20227, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; Travel Inn, 12 Galaxy Gardens, Koregaon Park-1, ৬25580, S ২৫০ D ৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; H Green Plaza, 120 Koregaon Park-1, S ১৫০ D ২৫০; H Shreyas, 1242-B, Apte Rd, D G-4, ৬322023, S ৩২৫ D ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮০০; H Pathik, 1263/4B, Jungli Maharaj Rd, D G-4, ৬322085, S ২৭৫ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; Amer-Al-Asian, 15 Connaught Rd-1, R4B2, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৪০০ D ৪৫০-৬৫০; H Ashiyana, 1198 F C Rd, Shivajinagar-4, ৬326541, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫৫০ সুইট ৬৫০; H Marina, 77 MGR Rd-1, R2, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০; H Meru, Ladtatwadi Rd-1, SAB ১৭৫ DAB ৩০০; *H Woodland, 5 B J Rd-1, near Pune Rly Stn, A8R1, ৬26161, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৫৫০-৭৫০ D ৬০০-৮৫০; *H Shree Panchratna, 7, Tadiwala Rd-1, A7R0.5, ৬663908, S ২৯০ D ৩৫০ A/c S ৩৫০-৪৫০ D ৬০০-৮৫০; H Manasi, 1255 Madhav Niwas, DG-4, S ২২৫ D ৩০০ সুইট ৪০০; H Parveez, 8A, Salisbury Park-1, ৬53019, S ২২৫ D ৩০০ সুইট ৪৫০ A/c ৩৫০-৫৫০-৭০০; H Vandana, opp Sambhaji Park, D G-4, A10R1, S ১৭৫ D ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; H Safari, opp Shivajinagar ST Stand, Pune-5, ৬326522, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; H Ketan, 917/19A, Shivajinagar, Fergusson College Rd-4, S ২৫০ D ৩০০-৩৫০ A/c D ৪৫০ সুইট ৬৫০; H Dwarka, 365/11 Shivajinagar-5, ৬22424, S ১৭৫ D ২৫০ ডিলাক্স S ২২৫ D ৩০০; *H Poonam, 657-A, Shivajinagar; *H Citizen, *H Madhuban, *H Suyash, 1547-B, Sadashib Peth-39, A11R4, ৬439377, S ২৫০ D ৩০০-৩৫০ A/c D ৪৫০-৬৫০; H Rajdoot, Pune-Satara Rd-37, S ২০০ D ২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪০০ সুইট ৪৫০; H Raviraj, 790 Bhandarkar Rd, Shivajinagar-4, ৬339581, S ২৫০-৩৫০ D ৩৫০-৪৫০ A/c S ৩৭৫-৪৫০ D ৪৫০-৬৫০; H Ranajeet, 870/7 Bhandarkar Rd, Shivajinagar-4, A17B2, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫০০; H Aswini, 720/A, Navi Peth-30, S ২০০ D ২৭৫; *H Aurora Towers, 9 Moledina Rd-1, ৬31818, A10R2B1, A/c D ১২০০-১৭৫০ সুইট ২২০০-২৭৭৫; H Ajit, 766/3 Deccan Gymkhana-4, ৬339076, S ২২৫ D ২৫০-৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪০০ সুইট ৬০০; *H Kohinoor Executive, 1246 Apte Rd, D G-4, ৬321811, A/c S ১০৫০ D ১২৫০ ডিলাক্স ১৭৫০; *H Nandanvan, Shivajinagar, DG-4, ৬321212, SAB ৩০০

DAB ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫০০; *H Gauri, near Chinchwad Rly Stn, Mumbai-Pune Rd-19, ৬775588, SAB ১৭৫ DAB ২৫০ TAB ২৭৫; H Panchashil, C/32, near MIDC, Telco Rd-19, ৬772012, S ৪২৫ D ৬০০ A/c S ৬২৫ D ৮০০ সুইট ৮৫০; H Mayur, Chinchwad-19, S ১৫০ D ২০০-২৭৫; H Ellora, 2156 Sadashib Peth; Bharat L, 573/2 J M Rd-4, D ২৫০; H Pearl, 1286-B, Shivaji Nagar, J M Rd-5, ৬324247, S ২৭৫ D ৩৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬০০; H Sahara, Senapati Bapat Marg-16, ৬345405, DAB ৩২৫-৪০০ A/c D ৬০০ সুইট ৮০০; *H Sutej, 917/49-A, Shivajinagar-4, S ১৭৫-২৭৫ D ২৫০-৩৫০; H Swaroop, Prabhath Rd, Lane-10, Pune-4, ৬332662, S ২৫০-৩৫০ D ৩০০-৪৫০ A/c S ৩৫০-৪৫০ D ৪০০-৬৫০; Pune GH, 100 Budhwar Peth, Luxmi Rd-2, S ১৭৫ D ২৫০; Mobo's H, 20 Bund Garden Rd-1, S ১৫০-২০০; Farmers Inn, Uruli-Kanchan, Pune-36, ৬816516, SAB ২২৫ DAB ২৭৫ A/c D ৪৫০ সুইট ৬০০; Hotel-7 Loves, Shankar Sheth Rd-2, DAB ২৫০-৩২৫ সুইট ৪০০-৬০০ A/c D ৩০০-৪৫০ সুইট ৫২৫-৬৫০; *H Pride Executive, 5 University Rd, Shivajinagar-5, A11R3, ৬324567, Mumbai ৬2872552, A/c S ১১৯৫ D ১৪৯৫ ১৬৯৫ ১৭৯৫ সুইট ২৭৫০; *H Regency, 192 Dhole Patil Rd-1, A7R1B2, ৬29411, A/c S ১১৯৫ D ১৫৯৫ সুইট ৩০০০; *H Deccan Park, Fergusson College Rd, Shivajinagar-4, ৬356511, A/c S ৩০০ D ৭৫০ সুইট ১০০০; H Chetak, 1100/2 Model Colony-16, ৬352681, S ৩২৫ D ৪০০; H Jagannath, 426-B, Somawar Peth-1, opp SBI, S ১৭৫ D ২৭৫ সুইট ৪০০ A/c S ২৭৫ D ৩৭৫ সুইট ৬০০; H Kapila, 174 Dhole Patil Rd-1, ৬661272, D ৩৫০ A/c D ৬০০; H Rupam, Apte Rd, DG-4, A8R1B1, ৬321919, S ১৫০-২০০ D ২২৫-৩০০; *H Sagar Plaza, 1 Bund Garden Rd-1, ৬22622, A/c S ১২০০ D ১৫০০ সুইট ২৫৫০; *H Sriman, Bund Garden Rd-1, A8R1B3, ৬22369, S ৩৫০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; H Prince, 36/2 Shankar Sheth Rd-37, SAB ১৫০ DAB ২০০ A/c D ৩২৫; *H Sanman, 1205/2-8 Shivajinagar-1, S ১২৫ D ২০০ A/c D ৩০০; Silver Inn, 1973 Gaffer Baug St-1, S ১৭৫-২০০ D ২২৫-৩২৫ সুইট ৪২৫-৬০০ A/c সুইট ৬৫০; H Natraj, 199/1B, Chinchwad, Mumbai-Pune Rd, near Chinchwad Rly Stn, S ১৫০ D ২০০; H Choice, 613 Nana Peth, near Parsi Agyari-2, ৬200669, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫০০ সুইট ৬০০; H Span Executive, Plot 1170/31/5 Revenue Colony, Shivajinagar-5, S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৪০০-৪৫০ D ৪৫০-৬৫০; H Tourist, 448 Mangalwar Peth, Stn Rd-11, R4B1, S ১৫০-২৫০ D ২২৫-৩০০ সুইট ৪৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; H Swati, 1234 Apte Rd; H Sapna, 573/7 Jungli Maharaj Rd, SAB ২০০-২৭৫ DAB ২২৫-৩০০; H Tej Regency, 5 MGR Rd-1, S ২৮৫-৩২৫ D ৩৫০-৪২৫ A/c S ৪২৫ D ৫২৫ সুইট ৬২৫; H Jawahar, 1302 Tilak Rd-2, SAB ৩০০ DAB

৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫৫০ সুইট ৬৫০; H Parichaya, Farguson College Rd, ৩21511, S ২২৫-২৭৫ D ২৭৫-৩২৫ A/c S ৩২৫ D ৪০০।

MTDC-র H Saras, Nehru Stadium, ৩430499, DAB ২০০ ২৫০ A/c D ৪০০। তবে এদের সবাইকে ছাড়িয়ে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে রেল স্টেশনের বিপরীতে Seth Morarjee Gokuldas (Poona) Sanatorium Dharanashala. ৩০ টাকার থাকা যায়। আয়োজন ভালই। সঙ্গে বিছানা থাকলে ধরমশালার বিছানা ভাড়া নিতে হয় না। বাসনপত্রও মেলে, আবার পাশের হোটেলের আহারও সারা যায়। এদের মুখাই বুকিং: Prospect Chambers, D N Rd, Mumbai-400001; রেলের রিটার্নিং রুম; Western India Turf Club, Sholapur Rd; Pune Club, 6 Bund Garden; YWCA, Gurudwara Rd ছাড়াও নানান হোটেল ও ধরমশালা আছে পুনেয়।

তবুও থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে রেল স্টেশনের বিপরীতে—অলঙ্কার, ন্যাশনাল, আমের, ড্রিমল্যান্ড ভালই। আর রেল স্টেশন থেকে ১০-১৫ টাকার অটোয় বা বাসে রোয়ার গেট লাগেয়া MTDC-র H Saras, H Avanti পুনেয় থাকার পক্ষে আজও রমণীয়।

খাবার হোটেলও নানান পুনেয়। দেশী-বিদেশী নানানধর্মী আহার্যও মেলে পুনের হোটেল। দামে মুখাই-এর থেকে কম হলেও মানে উত্তম। তবুও যেন কন্ট রোডে Neelam Restaurant, H Preetnam আদরণীয়—ভেজ ও ননভেজ দুইই মেলে; হোটেল মেট্রো বিপিন্ট-এ H Madhura-র খালি মিলের সঙ্গে লসি; আরও যেতে নিরামিষ আহার্যের Saveria Restaurant; 7 Moledina Rd-এ The Sizzler-এর আমিষ আহার্যেরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। M G Rd-এর পারিবারিক পার্সি হোটেল Marzori-এ কোন্ড কফি ও Coffee House টি সদাই ব্যস্ত রসনা মেটোতে। আর চীনা আহার্যের জন্য Blue Diamond H-টিও যথেষ্ট খ্যাত। তেমনই তন্দুরী ও চিকেন শিলের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে ইস্ট স্ট্রিটের Latif বা Kwaliti Restaurant-এ। রেল স্টেশনের কাছে Dreamland Hotel-এ শুজরাটি খালি; আমির হোটেলের Kabab Corner-এ তন্দুরী; তেমনই Dorabji-র পুনে খ্যাতি আছে বিরিয়ানি ও কাবাব পরিবেশায়। তবুও যেন পুনে ভ্রমণে একান্তই উচিত হবে Shrewberry ও Chivda-র স্বাদ নেওয়া। রীতিমতো লাইনও পড়ে সকাল ৭টায় ইস্ট স্ট্রিট সূখাত বেকারী Kakari-র লোকোনে।

মহাবালেশ্বর

১৩৭২ মি অর্থাৎ মহারাষ্ট্রের সবচেয়ে উঁচুতে পশ্চিমঘাট পর্বতমালায় সহ্যাদ্রি পাহাড়ে তেঁদ্রা লেকবক ঘিরে ১০ বর্গ কিমি জুড়ে পাহাড়ী শহর মহাবালেশ্বর। ১৩ শতকে যাদব রাজা সিংহন কৃষ্ণার জল জমাতে জলাধার গড়তে শহরের গোড়াপত্তন। আর নবরূপে আবিষ্কার Sir John Malcolm-এর ১৮২৮এ। এমনকি ব্রিটিশরাজ মুখাই প্রেসিডেন্সির গ্রীষ্মাবাসও গড়ে মহাবালেশ্বর পাহাড়ে। গাছগাছালিতে ছাড়াবা এর শাদ রিক্স রূপ খুবই পর্বতকপ্রিয়। মার্চ-জুনে পিঙ্গল ভামাটে রঙ, আর মনসুনে (মধ্য-জুন থেকে

সেপ্টেম্বরের মাঝামাঝি) প্রকৃতি সবুজের গালিচা পাতে পাহাড়ছুমে। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ, দেব মাহাঘোষ্যও উদ্দেশ্যে মহাবালেশ্বর। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে জুন হলেও মার্চ থেকে জুন ও অক্টোবর-নভেম্বর মাস রমণীয়। শীতের আধিকা নেই, হাল্কা উলেনই যথেষ্ট। তবে, মনসুন (জনের প্রথম থেকেই আরব সাগরীয় মৌসুমি বায়ু) বিষয় ঘটায় ভ্রমণে। এমনকি অধিক বৃষ্টির জন্যে মনসুনে Kulum গাছে বাড়ি-ঘরের ছাদ ঢেকে রাখা হয়। বৃষ্টির গড় 6635 mm. মারাঠি, হিন্দী ও ইংরাজি—ত্রয়ীরই চল আছে। অতীতে কেবল হিন্দুদেরই প্রবেশাধিকার ছিল মহাবালেশ্বর পাহাড়ে। ১৮২৪এ জেনারেল লোডউইক ব্যতিক্রম ঘটান এ-প্রথার।

যদিও বিধবস্ত তবে আকর্ষণ কম নয় প্রতাপগড় দুর্গ-র। শহর থেকে ২১.৫ কিমি দূরে ১৬৫৬য় শিবাজীর হাতে তৈরি। ৪৫০ সিঁড়ি ভেঙে পথ উঠেছে ১৩০ মি উঁচু দুর্গে। মাঝপথে শিবাজীর আরাধ্যাদেবী ভবানীর মন্দির, আর রয়েছেন শিব দুর্গশিগরে। মাটির নিচে গুপ্তপথ আজ লুপ্ত। নতুন করে মূর্তি হয়েছে শিবাজী মহারাজের ১৯৫৩র ৩০শে নভেম্বর। সেকালে এই দুর্গ ছিল অজ্ঞেয়। পশ্চিম দিকের এক জায়গা থেকে কয়েদিদের দু'হাজার ফুট নিচু কোকন উপত্যকায় ফেলে দেওয়ার কল্পিত দৃশ্য আজও শিহরন জাগায়। এই দুর্গের পথেই আহমেদনগরের সুলতানের দূত আফজল খাঁর সঙ্গে সাক্ষাৎ ঘটে শিবাজীর। শর্ত—অস্ত্র নেওয়া চলবে না, খোলা মনে খালি হাতে সাক্ষাৎ ঘটবে দুইয়ের। লজ্জন করে উভয়েই। আফজল লুকিয়ে রাখা ছোরা দিয়ে আঘাত হানে শিবাজীকে। প্রত্যুত্তরে শিবাজীও বাঘনখ দিয়ে বধ করে আফজলকে। সমাধি হয়েছে মৃত্যুস্থানে আফজল ও তার দেহরক্ষীর। আর হয়েছে টাওয়ার, মুন্ডু যেখানে সমাধি করা হয়েছিল আফজলের।

আর আছে রবারস কেড। জনশ্রুতি, অতীতে দৈত্যপুত্রী ছিল। পরবর্তীকালে শিবাজীর জেনারেল তানাজী আশ্রয় নেন এখানে।

শহর থেকে ৫.২ কিমি দূরে মহাবালেশ্বরের দ্বিতীয় আকর্ষণ ১৩ শতকের কৃষ্ণাবাস্তি মন্দির। যাদবরাজ সিং-হান-এর তৈরি। নানান রাজা-মহারাজা এমনকি শিবাজী মহারাজের হাতেও সংস্কার হয় মন্দির। তবে, পঞ্চগঙ্গা মন্দির নামে সমধিক খ্যাত। ৫টি ধারায় জল আসছে গো-মুখ থেকে। নাম তারের—কৃষ্ণা, বৈষ্ণা, কোরনা, সাবিত্রী, গায়ত্রী। প্রবাদ, ৫ নদীর নিঃসৃত জলই এর উৎস। আর আছে সরস্বতী—৬০ বছর অস্তর, ভাগীরথী—১২ বছর অস্তর জল মেলে। খুবই পবিত্র এই জল, নানে পূণ্য হয়। মহাশিবরাত্রি জাঁকালো উৎসব।

এবং নিচুতে অতিবালেশ্বর ও মহাবালেশ্বর মন্দির। মন্দিরের নাম থেকে শহরের নাম মহাবালেশ্বর। অতিবল আর মহাবল দুই দৈত্য ভাই। এদের অত্যাচারে ব্রাহ্মণরা জজরিত। বিষ্ণু এলেন বধ করতে দৈত্যভাইদের। সহজেই

মারা পড়ে অতিবল বিষ্ণুর হাতে। মহাবলের বিক্রমের কাছে বিষ্ণুর মায়্যও ব্যর্থ হতে মহাবল বেছয় আশ্বসমর্পণ করলে তাকে মেরে ফেলার জন্য। সে ইচ্ছা পূরণ করেন বিষ্ণু। আর সেই যুদ্ধকে বরণীয় করে তুলতে যুদ্ধক্ষেত্রই গড়ে ওঠে মন্দির—অতিবালেশ্বর ও মহাবালেশ্বর। লোকশ্রুতি, আজও নাকি মহাবালেশ্বর মন্দিরের শয্যায় প্রতিরাত্রে দেবতার আবির্ভাব ঘটে। এদের নিচুতে রামেশ্বর মহারাজের মঠ।

শহরের আর এক আকর্ষণ ৩০-এরও অধিক ভিউ পয়েন্ট। ১২.৪ কিমি দূরে ১৩৪৭.৫ মি উঁচুতে আর্থার সিট বিল্ডিং স্ট। আর্থার সিট থেকে জানালায় মতো এক চিলতে ফাঁক দিয়ে দৃশ্যমান কোঙ্কন উপত্যকার শোভা মুগ্ধ করে। হাঁটাপথেই পড়ে সাহেবদের অতীতের শিকারভূমি হান্টিং পয়েন্ট। কায়না ভ্যালিও সুন্দর দৃশ্যমান। সাবিত্রী নদীও দেখে নেওয়া যায়। লাগোয়া ইকো পয়েন্টে ধ্বনি ফিরে আসে প্রতিধ্বনিত হয়ে। পাশেই ম্যালকম পয়েন্ট। অদূরেই টাইগার স্ট্রিং। লোকশ্রুতি, বাঘেরা আজও আসে জল খেতে। বাজার থেকে ২ কিমি দূরে উইলসন পয়েন্ট-এরও প্রশস্তি প্রাকৃতিক দৃশ্যের জন্য। মহাবালেশ্বরে উচ্চতমও (১৪৩৫.৬০ মি) উইলসন। সূর্যোদয়ও সুন্দর দেখায় উইলসন থেকে। অদূরেই মাঞ্চিক পয়েন্ট। নামের মাছাখ্যা—চোখ-কান-মুখে হাত তিন বাদরের মতো তিন পাছ। ক্যাসেল রক, সাবিত্রী পয়েন্ট, মারজোরী পয়েন্ট, আন্সটন পয়েন্ট থেকেও দেখে নেওয়া যায় মহাবালেশ্বরের প্রকৃতি। ৪.৬ কিমি দূরে ১২৯৪ মি উঁচু মুম্বাই পয়েন্ট থেকে সূর্যাস্তের দৃশ্য নয়নাভিরাম। প্রতাপগড়ও দৃশ্যমান।

প্রকৃতির পূজারী ব্রিটিশের অবদান ভিউ পয়েন্টরয়েছে আরও নানান মহাবালেশ্বরে। ৪.৮ কিমি দূরে ১২৩৯ মি উঁচুতে লোডউইক পয়েন্ট—১৮৪২-এ মহাবালেশ্বরের প্রথম ব্রিটিশ জেনারেল লোডউইকের স্মারকরূপে মনুমেন্ট হয়েছে। ৯.৬ কিমি দূরে এলফিনস্টোন পয়েন্ট থেকে কোঙ্কন উপত্যকার দৃশ্য; ৩.২ কিমি দূরে কায়না ভ্যালির দৃশ্য ও চীনায়ান ফলস-এর জন্য বেব্বিংটন পয়েন্ট; কৃষ্ণা ভ্যালির সৌন্দর্যের সাথে হাড়ির মাথারগী পাছাড়ের জন্য ৬.৮ কিমি দূরে কেটাস পয়েন্ট, ইকোও হচ্ছে প্রতিটি শব্দ—বয়ে চলেছে রিবনের মতো কৃষ্ণা নদী; পাঞ্চগনীর পথে ৬ কিমি যেতে মহাবালেশ্বরের অন্যতম বৃহত্তম লিঙ্গমালা ফলস; কৃষ্ণা ও কায়নাভালির প্রকৃতির জন্য ৩.৮ কিমি দূরে ১৩৯৫ মি উঁচু কন্ট পিক; ৩.২ কিমি দূরে হেলেনস পয়েন্ট; ২.৪ কিমি দূরে ভেরা লেকে ফিসিং ও বোটিং; কর্নার পয়েন্ট; ফোকল্যান্ড পয়েন্ট—এদেরও প্রসিদ্ধি আছে। আর ভ্রমণের স্মারকরূপে সঙ্গী করুন জ্যাম ও জেলি মহাবালেশ্বরের থেকে। তেমনিই কৃষ্ণা নদীর ব্যাক ওয়টারে গড়া ২৫ কিমি দূরে মহাবালেশ্বরের মিনি কান্দীর তাপোলা-ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া।

কনজাকটেড ট্যুর : MTDC হলিডে রিসর্ট থেকে ৭-০০টায়

প্রতাপগড়, ১৪-৩০টায় মহাবালেশ্বর, ১১-০০টায় পাঞ্চগনী যাচ্ছে পৃথক পৃথক ট্যুরে। প্রতি ট্যুরের ভাড়া ৫৫ করে। রাষ্ট্রীয় পরিবহণেরও ব্যবস্থা আছে প্রতাপগড় ও শহর দেখাবার। আর যাচ্ছে ট্যুরি—প্রতিটি সফর ১৫০ হারে।



রেল ও বিমান যাত্রীদের ১২৩.৭ কিমি দূরের পুনে পৌঁছে বাস বা ট্যাক্সিতে ৩১ ঘন্টার মহাবালেশ্বরে চলা উচিত হবে। পুনে রেল স্টেশন লাগোয়া বাস স্ট্যান্ড থেকে রাষ্ট্রীয় পরিবহণের বাস ও শেয়ার ট্যাক্সি যাচ্ছে মহাবালেশ্বরে। আবার মুম্বাই থেকেও ৭ ঘন্টার ট্যাক্সি/বাস/MTDC-র লাক্সারি কোচ আসছে ২৩৭.৭ কিমি দূরের মহাবালেশ্বরে মাহাড হয়ে। ৭-০০টায় ছেড়ে মহাবালেশ্বরে পৌঁছায় ১৩-৩০টায়, মুম্বাই যাচ্ছে ১৫-০০টায় ছেড়ে ২১-৩০এ। বাস আসছে নিকটতম রেল স্টেশন পুনে-কোলহাপুর সড়কের ৫৭.৩ কিমি দূরের সাতারা জেলার সদর ২৩০০ ফুট উঁচু সাতারা থেকে ১ ঘন্টার। বাস আসছে পাঞ্চগনী ১৯.৪, মাহাড ৬০.৪, কোলহাপুর ১৯৫.৪ কিমি থেকেও। আবার সাতারা/কোলহাপুর হয়ে চলা যেতে পারে ৪৩০ কিমি দূরের পানাজিতেও। পাঞ্চগনী-পানাজি বাসও যাচ্ছে মাঝে মহাবালেশ্বরে ছেড়ে ১৩ ঘন্টার পানাজি।

অত্যাশ্চর্য পুনে-মহাবালেশ্বরের পথে মহাভারতের ওয়াই-ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। কৃষ্ণর বাঘ পাড়ে গণেশ, শিব ও লক্ষ্মীর প্রাচীন মন্দির রয়েছে ওয়াই-এ। ওয়াই-এর ৬ কিমি উত্তর-পশ্চিমে পাণ্ডবগড়।



শহরের কেন্দ্রস্থলে বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে রূপ পেয়েছে হোটেল মহাবালেশ্বরে। AP ও EP উভয় প্রথাতেই ঘর মেলে। সিজন ও অফ-সিজনও আছে মহাবালেশ্বরের হোটেল। এপ্রিল থেকে জুন ও সেওয়ালী সিন্ধন আর বাকি বছরই অফ-সিজন অর্থাৎ রোট নামে আখ্যায়। মনসুনে বন্ধ থাকে নানান হোটেল। Mahabaleshwar-412806, STD 02168-এ বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে—H Rajesh, AP-S ১৭৫-৩২৫; H Blue Heaven, S ২০০-২৫০; H Anupam, Relax L, Savoy H, AP-S ২৭৫-৩২৫; Dave H, Frederick H, ৫ 60665, AP-D ১৭৫০; Dind H, AP-S ৩৫০-৪৫০; H Ananda-Van-Bhuvan, Dutchess Rd-412806, ৫ 60030, AP-D ৬০০-৮৫০।

বাস স্ট্যান্ডের পিছনে—Dreamland H, ৫ 60228, AP-S ৬৫০ D ১০০০ সুইট ২৫৫০; H Panoram, Poonam Chowk, D ৬০০-৮৫০ সুইট ১২০০-২০০০। বাঁ হাতি Mahad Rd-412806-এ—H Bombay Vihar, Executive Inn, L C D Souza; H Regal, ৫ 60001, AP-D ৮৫০-১৫০০ সুইট ২৫০০-৩৫০০; H Satkar, AP-S ৩২৫-৪৫০; Grand H, AP-S ২৫০-৩৭৫; Fountain H, near Paris Gymkhana-4, ৫ 60227, AP-D ৮৫০-২০০০; Belmount Park Hill Resort, Wilson Point, ৫ 60414, AP-S ৬০০, ৮৫০, ১০৫০; Paradise H, Shreyas H, Apsara H, Holiday Resort Rd, S ৩২৫-৪৫০। ডান হাতি Dr Sabane Rd-6-এ—Sangam L, Shri New Vyankatesh L, S ২২৫ D ৪২৫ FR ৬০০; Deluxe/ Super Deluxe, DAB ২৭৫-৪২৫; Agaprasad L, Ajantha L, S ২০০ D ৩২৫; Ratnadeep L, Shivgar L, H Kanti, H Poonam, D ২৭৫-৪৫০; হাড়াও হোটেল রয়েছে নানান।

আর রয়েছে মহাবালেশ্বরে Valley View Resort, near Market, Valley View Rd-6, ৬ ৬০০৬৬, AP-D ২০০০, A/c ২২৫০-২৫০০ সুইচ ৩৭৫০; H Sashi, near Mkt; Dina H; H Saraswati, Marie Peth, D ৪৫০-৬০০; H Krishna, opp Holiday Resort, ৬ ৬০২৫৩, S ৬০০ D ৮০০ T ৯০০, সুইচ ১৫০০; Blue Park H, Lodwick Point Rd, AP-S ৪৫০; H May Fair, Maytt Rd-6, AP-S ৬৫০; H Lake View, Satara Rd-6, ৬ ৬০১৬০, DAB ৬৫০-১২৫০ A/c ১৭৫০; H Tree Shade, near Holiday Resort, AP-S ৬৭৫-৪৫০; Brightland Holiday Village, Kates Point Rd, অব: Mumbai ৬ ২৪৭২৫৯০, D ১২৫০ সুইচ (চার বেডের) ২০০০ A/c ২৫০০; Giri Vihar H, S ২৫০-৪২৫; Shalimar H, S ২২৫; Aram H, AP-S ২৭৫-৪২৫; Anarkali H, Kasam Sajjan Rd-6, ৬ ৬০৪০০, DAB ১২৫০-২০০০ সুইচ ২৭৫০-৩০০০, এদের মুম্বাই বুকিং: ৬ ৪২২১৫৩৬, Pubala Sadan, opp Century Bazar, Mumbai-25; Shanti Sadan H, Marie Peth; Nells H, Ripon H, Tribeni L, Modern H, Bharat H, Race View, Ritz, Green Lands, Strawberry Country, ১৭/১৮, B-2, Metgutad, Panchgani-Mahabaleshwar Rd, DAB ৮০০ ছাড়ও নানান হোটেল আছে মহাবালেশ্বরে।

আর আছে হলিডে হোম, রেস্ট হাউস, গুন্ড গভর্নমেন্ট হাউস এস্টেট, হিরদা-ফরেস্ট বাংলা, VIP লিঙ্গমালা ফরেস্ট রেস্ট হাউস ও বাস স্ট্যান্ড থেকে ২ কিমি দূরে MTDC-র Holiday Resort, Mahabaleshwar, Dist-Satara, ৬ ৬০৩১৮, ৩৪টি ও বেডের সুইচ ৪০০, ১টি ৪ বেডের কটেজ ৭০০, ৪টি ৪ বেডের গার্ডেন সুইচ ৬৫০, ২৮টি ও বেডের A-type কটেজ ৫০০, ২টি ও বেডের ৪০০ ৭০০, ২৭টি ২ বেডের গার্ডেন সুইচ ৩০০, ২ বেডের কমন বাথ ২০০, ৩০০ ডর্মি ৫০, বিছানা ছাড়া ২০। তবে মিড অক্টোবর থেকে মিড জানুয়ারি পিক সিজনে রেন্ট বাড়়ে দেড়ারও বেশি।

আর আহার্যে বাজার পয়েন্টে শের-ই-পাঞ্জাব-এর ননভেজ মিলের যথেষ্ট প্রশস্তি। তেমনই হোটেল আছে আরও নানান ভেজ ও নন ভেজ মিলের ব্যবহা নিয়ে মহাবালেশ্বরে।

কেনাকাটা: স্মারকসাপে সঙ্গী করুন সুদৃশ্য ছড়ি ও মধু মহাবালেশ্বরের দোকানপাটে।

পাঞ্চগনী

দাজিলিং পাহাড়ের যেমন কার্শিয়াং, সিমলার যেমন সোলন, উটর যেমন কুন্নুর, তেমনই মহাবালেশ্বরের পাঞ্চগনী। Mecca of Maharashtra বলে থাকে লোকে পাঞ্চগনীকে। পুনে-মহাবালেশ্বরের পথে পুনে থেকে ১০২, মহাভারতের ওয়াই থেকে ১১ আর মহাবালেশ্বরের ১৯.৪ কিমি আগেই ১৩০৪ মি উঁচুতে মহারাষ্ট্রের আর এক পাহাড়ী শহর পাঞ্চগনী। পুনে-মহাবালেশ্বরের বাস যাচ্ছে পাঞ্চগনী হয়ে। এটা পাহাড় নিয়ে ৬.৭৭ কিমি জুড়ে শহর—নামও তাই পাঞ্চগনী। সিলভার ওক আর বাউয়ে ছাওয়া প্রাকৃতিক পরিবেশ সুন্দর। জলবায়ুও মনোরম। তবে, বৃষ্টির আধিক্য আছে—চেরাশুঞ্জির পরেই এর স্থান।

১৮৫০ খ্রিস্টাব্দের কথা—প্রথম ব্রিটিশ John Chesson বসতি গড়ে, ১৮৮২তে সংখ্যা বেড়ে দাঁড়ায় ২৪। সঙ্গে আসে মুম্বাই থেকে পার্সি সম্প্রদায় পাঞ্চগনীতে। জলবায়ুর গুণে T B (Bel-Air) Sanatorium হয়েছে। পাঞ্চগনীর মধুরও প্রশস্তি আছে। তেমনই প্রশস্তি পাঞ্চগনী মিউনিসিপ্যাল গার্ডেন, চিলড্রেন পার্ক, ফুল বাগিচা। এমনকি পাঞ্চগনীর ফুলের প্রেমে পড়ে অনেক মহাবালেশ্বর যাত্রীর পাঞ্চগনীতেই যাত্রায় বিরতি ঘটে। বাস স্ট্যান্ড থেকে মহাবালেশ্বরমুখী ১ কিমি দূরের পার্সি পয়েন্টের নৈসর্গিক শোভার তুলনা হয় না। ১৫ কিমি পূর্বে শহরের শিরে টেবল ল্যান্ডও আর এক সুন্দর ভিউ পয়েন্ট। শহর থেকে সিডনি পয়েন্ট ১, হারিসন পয়েন্ট ৪, রাজপুরী গুহা ৬, গ্রোভস পয়েন্ট ৬, বেবী পয়েন্ট ১৫, কচবাওয়ানী পয়েন্ট ১, মেহেরাবা গুহা ১, ডেভিলস কিটেন ১৫ কিমি দূরে—সুবিধামত এগুলিও দেখে নেওয়া উচিত হবে পাঞ্চগনী পর্যটকদের। বেড়াবার মরসুম মহাবালেশ্বরেরই মতো।



Chesson Rd-412805, STD 02168—Aman H, S ১৫০-৩২৫ D ২৭৫-৪৫০; Ananda Bhawan H, H Enfield, Panchgani G H. Main Rd-এ—Garden H, DAB ৩০০-৪৭৫ ডর্মি ৬০/১০০; Gujarat L; Prakash H, Purohit Holiday Home. Ring Rd-এ—Prospect H, AP-S ৪৫০ করে; Jerroz H, DAB ৬০০ FAB ৮০০; H Palazzo. Dr Billimoria Rd-এ—H Ambassador; Western H, DAB ৪৫০-৬২৫। Dr Ambedkar Rd-এ—Sonu Palace. S T Stand-এ—H Sinla, S ১৭৫-৩২৫ D ২৭৫-৪২৫। আর আছে Mount View H, DAB ৪০০ FR ৬০০; Yazdan H, Suvidha L, H Gitanjali, H Apsara, H Nataraj, H May Flower, H Silver Oak, Malas G H ছাড়ও নানান। MTDC-র H Five Hills, ৬ ৪১০৪৬, DAB ৫৫০ ৮০০ সুইচ ১৪০০।

আর আছে গুজরাটি ধরমশালা, অব: Panchgani Stores, Panchgani; এদের মুম্বাইতে বুকিং: Sri A P Gurodia, Takiwala Building, 102 Banian Rd-400003.

পুনে-পাঞ্চগনী পথের আর এক আকর্ষণ গীর সাহেবের দরগা। পুনে থেকে ঘণ্টাখানেকের পথে NH 4-এ ইচ্ছা-পুরণের জন্য এর প্রসিদ্ধি। আর আছে অলৌকিক পাথর। এক নিশাঙ্গে গীরবাবার নাম করে ১১ জন পুরুষের আঙুল স্পর্শে শূন্যে ওঠে এই পাথরখণ্ড। আবার মহাবালেশ্বরের থেকে ৬৪, মুম্বাই-এর ১৮৩ কিমি দূরে মহাবালেশ্বর-মুম্বাই পথে মাহাড়-এর পর্যটক আকর্ষণও কম নয়; পুনের দূরত্ব ৯৯ কিমি। মাহাড়ের মূল আকর্ষণ ২৭ কিমি দূরে ছত্রপতি শিবাজীর রাজধানী তথা রায়গড় দুর্গ। ১৬৬৪ থেকে ১৬৮০ শিবাজী মহারাষ্ট্রের রাজধানী ছিল রায়গড়ে। এছাড়াও রয়েছে মাহাড়কে ঘিরে ৫ কিমি দূরে উষ্ণ জলের প্রস্রবণ, ৩ কিমি দূরে বৌদ্ধগুহা—চলার পথে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। MTDC-র Holiday Resort, Raigad, D ১০০ F ২০০, বিছানা ছাড়া ডর্মিতে ২০ টাকার থাকার ব্যবস্থা মেলে।

সাতারা

পুনে-কোলহাপুর-পানাজি পথে মহাবালেশ্বরের ৫৭.৩ কিমি দূরে ১৭০৭ থেকে ১৭৪৯এ ছত্রপতি শিবাজীর নাতি শাহ মহারাজের রাজধানী তথা আজকের জেলাসদর সাতারাও বেড়িয়ে নেওয়া যায় চলার পথে। কোলহাপুরের দূরত্ব ১২৮ কিমি। নানান মন্দির ও শহরের দক্ষিণে দুর্গও (Wasota Fort) আছে সাতারা। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে শিবাজী মহারাজ মিউজিয়াম। শিবাজীর বসন, ভূষণ, তরবারি এমনকি বাঘ নখটিও প্রদর্শিত হয়েছে নতুন প্রাসাদ-সংলগ্ন প্রদর্শনশালায়। হোটেলও আছে নানান সাতারা। তেমনই Karad-এ আছে *H Sangam, P B Rd, S ১৭৫ D ২৫০, A/c S ৩৫০, D ৪০০, সুইট ৬৫০। মহাবালেশ্বর থেকে পানাজি যাত্রায় সহজতম পথও সাতারা হয়ে। মুম্বাই-কোলহাপুরের প্রতিটা ট্রেন সাতারা হয়ে যাচ্ছে। বাসও চলে মুম্বাই এপথে। বাস যাচ্ছে মুম্বাই, পুনে, কোলহাপুর, পানাজি ছাড়াও রাজ্য ও প্রচৈবশী রাজ্যের দিকে দিক্‌সাতারা থেকে।

কোলহাপুর

পঞ্চগঙ্গার দক্ষিণ পাড়ে মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর-গোয়া জাতীয় সড়কে ৫৫০ মি উঁচুতে মারাঠা রাজার রাজধানী কোলহাপুর শহর। তীর্থযাত্রীদের কাছে কোলহাপুর অতি পবিত্র স্থান। ৫১ পীঠের এক পীঠ—সতীর তৃতীয় নয়ন পড়ে কোলহাপুরে। অতীতে নাম ছিল করবীর। দক্ষিণ ও পশ্চিম ভারতের কাশী নামেও খ্যাত এই কোলহাপুর। স্বাভাবিক জায়গা রূপেও এর প্রশংসি আছে। তেমনই প্রশংসি কোলাপুরী চম্বলের। ৯ শতকে তৈরি কোলহাপুরের কারুকার্য-মণ্ডিত মহালক্ষ্মী মন্দির-টি খুবই সুন্দর। ছোট-বড় অসংখ্য স্তম্ভের উপর মন্দিরটি দাঁড়িয়ে। উত্তর-দক্ষিণ ও পূর্ব-পশ্চিমে সুবিশাল তোরণ। দক্ষিণমুখী দেবী মহালক্ষ্মী মূল মন্দিরে। আরও নানান সেবতা রয়েছে মন্দিরে। এছাড়াও বিনখাষা গণপতি মন্দির, ব্রহ্মেশ্বর মন্দির, খোল খোন্দবা, তেঞ্চলাই, জ্যোতির্লিং মন্দিরগুলিরও প্রসিদ্ধি সারা দক্ষিণ জুড়ে। কোলহাপুরের জৈন মন্দির, জৈনবাধী মঠ, শঙ্করচাৰ্য মঠ, বুজামল দরগার আকর্ষণও তীর্থযাত্রীদের কাছে কম নয়।

৬৩৪এ চালুক্যরাজ কর্ণদেবের তৈরি মহালক্ষ্মী মন্দিরের পাশে ২০০ বছরের প্রাচীন রাজোয়াড়ায় আজ স্থল বসেছে। আর আছে মারাঠাদের উপাস্য দেবতা দেবী ভবানীর মন্দির। রণকলা লোকটির পরিবেশ সুন্দর। উত্তর পাড়ে শালিনী প্যালেস। এছাড়া টাউন হল, কোটিতীর্থ—তীর্থযাত্রী ও পর্যটক দুইয়েরই কাছে আকর্ষণীয়। শিবাজীর কনিষ্ঠ পুত্র রাজারামের বংশধর এরা। সর্বশেষ মহারাজা মেজর জেনারেল শাহজী ছত্রপতি দ্বিতীয়র মৃত্যু ঘটে ১৯৮৩তে।

কোলহাপুরের আর এক মাহাত্ম্য ব্রহ্মপুত্রী টিলার গারে পঞ্চগঙ্গার ঘাট—নানে পুণ্য হয়। অদূরেই শিবাজী মহারাজ

ও শজাজীর সমাধি, ছত্রীশ হয়েছে। আর আছে কোলহাপুরে নতুন ও পুরাতন রাজোয়াড়া অর্থাৎ রাজপ্রাসাদ। পুরাতনে অষ্টভুজাকার ক্লক টাওয়ার, জমকালো দরবার হল ছাড়াও রয়েছে শাহজী পরিবারের নানান সংগ্রহ নিয়ে শাহজী ছত্রপতি মিউজিয়াম। তেমনই আছে বাঘের পায়ের আশট্রে, হাতির পায়ের কফি-টেবল, অস্ট্রিচ পাখির পায়ের তৈরি বাতিলান মিউজিয়াম। W R Waghela-র আঁকা তৈলচিত্রের নারী আজও তাকিয়ে আছে আপনার পানে—ছবিটি বিশেষভাবে লক্ষণীয়।

টুরিস্ট হোটেল থেকে ৬৫ টাকায় ১০—১৭-৩০টায় জ্যোতিবা, পানহালা সহ কোলহাপুর দর্শন করিয়ে আনার ব্যবস্থা আছে। MTDC-ও রাষ্ট্রীয় পরিবহণ ও ব্যবস্থা রেখেছে কোলহাপুর দর্শনের। আবার অটোয় বা বাসে বাসেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় কোলহাপুর তথা পানহালা। মুম্বাইও যাচ্ছে MTDC-র লাক্সারি কোচ ২১-০০টায় ছেড়ে ১০½ ঘণ্টায়। রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ড ১ কিমির ব্যবধানে কোলহাপুরে।



পুনে থেকে ২২৫ আর মিরাজের ৪৮ কিমি দূরে পুনে-মিরাজ রেলপথে কোলহাপুর স্টেশন। ট্রেন আসছে মুম্বাই, পুনে, মিরাজ, চেন্নাই, নাগপুর থেকেও কোলহাপুরে। বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে পশ্চিম ভারতের দিঘিদিগের সঙ্গে কোলহাপুর থেকে। বাস যাচ্ছে পুনে, মহাবালেশ্বর, সাতারা, রত্নগিরি, বিজাপুর, বেলগাঁও ছাড়াও নানান দিকে। অগ্রিম টিকিটও মেলে এসব বাসে। মুম্বাই ৩৯৫-পানাজি ৩৭৫ কিমি বাসও যাচ্ছে কোলহাপুর হয়ে। গোয়া থেকে ফেরার পথে কোলহাপুর বেড়িয়ে সাতারা হয়ে ঘণ্টা পাঁচেকে মহাবালেশ্বর বা পুনে আবার মুম্বাইও চলা যেতে পারে বাসে। কলকাতা যাত্রীসর সরাসরি যাত্রায় দালারে ট্রেন বল করে মুম্বাই CST থেকে ৮-৪৫এ কয়না এক্স, ১৭-৪৫এ সহ্যাদ্রি এক্স, ২০-২৫এ মহালক্ষ্মী এক্সে যথাক্রমে ৯-০০, ১৭-৫০, ২০-৪০এ দালারে বা ১৩-৩০, ২২-২৫, ১-০০টায় পুনে-য় চপে কোলহাপুর চলাই সহজতম পথ। সরাসরি ট্রেনও যাচ্ছে সাপ্তাহিক আজাদহিন্দ এক্স হাওড়া থেকে পুনে।

আবার কোলহাপুর থেকে ২৫ কিমি দূরে ব্রহ্মপুত্রী টিলার পারে পঞ্চগঙ্গার সেতু পেরিয়ে মনোরম শৈলশহর ২৭৩ ফুট উঁচু পানহালা-য় রাজা ভোজ (১১৯২) দ্বিতীয়ের ঐতিহাসিক দুর্গ, অদূরে পাওয়ালা ওহাও দেখে নিতে পারেন। তেমনই ১১২ কিমি দূরের বিশাল গড় দুর্গও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। জনশ্রুতি, মুনি পরাশরের বাসও ছিল পানহালায়।

কোলহাপুর থেকে ৮০ কিমি দূরে সিদ্ধ দুর্গও কোলহাপুর জেলার সীমান্ত জুড়ে রাখান গরী ডাম। শান্ত-শ্রদ্ধ পরিবেশে ডামের নীল জলে লেক—লেককে ঘিরে ৩৫১ বর্গ কিমি জুড়ে দাজিপুর বাইসন স্যান্ডফ্লারি। ডিসেম্বর থেকে জুন মাসে গৌর তথা বাইসন দেখতে যাত্রী আসেন ৪৯০ কিমি দূরের মুম্বাই থেকে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে MTDC-র Dajipur Resort, Dist-Volapur, © (02321) 34080, DAB ১৫০ ডর্মি ৪০ চার বেডের তাঁবু ১৫০ টাকায়; নিরাশ্রিত আহার মেলে ক্যান্টিনে।

পানহালাতে MTDC-র Holiday Resort, Panhala, Dist- Kolhapur, ☎ (02328) 35048, DAB ২০০ চার বেডের ৩০০, তাঁবু ১৫০ ডমিতে ৫০ ছাড়াও নানান হোটেল ও লজ মেলে।



Kolhapur-416001, STD 0231-এ রেল স্টেশনের বায়ে Station Rd-1-এ—H Amir, H Gokul, SAB ১৭৫ DCB ২৫০ DAB ৩০০, TAB ৩৫০ ডরি ৫০; H Panchali, 517A/2, Shivaji Park, ☎ 660660, S ৩৫০-৪৫০ D ৪০০-৬৫০ A/c D ৬০০-৮০০, সুইট ৮৫০; Ambassador, Shreyas L, Niagara L; আর জনহাতি ৫ মিনিটের পথে, বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে—New Shahupuri-1-এ—H Samrat, S ১৭৫-২৫০ D ২২৫-৩৫০, A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *Tourist H, 204E, New Shahupuri, Station Rd, ☎ 650421, S ২২৫ D ২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০, সুইট ৬৫০; H Sahyadri, D ২০০-৩২৫; H Ananda Malhar, D ২০০; H Maharaja, SAB ১০০ DCB ১৫০ DAB ২৫০, FR ৩৫০; H Girish, S ১৫০ D ২৫০; H Pathik; বাস ও রেল থেকে ৫ কিমি দূরে লেকের পাড়ে প্রাচীন প্রাসাদ বাড়িতে *H Shalini Palace, Rankala, A Ward-10, ☎ 20401, S ২৫০, D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০-৮৫০; H International, D ২২৫, সুইট ৩৫০ A/c D ৩২৫; H Tapasya, Kawala Naka, S ১০০, D ১৭৫; *H Pearl, ☎ 650451, SAB ৩৫০ DAB ৫২৫, A/c S ৫৫০ D ৬৫০-৮০০।

এছাড়াও হোটেল রয়েছে সারা শহরময়—*Hotel R R Sheratan, 1608 A-Ward, Tarabai Rd-1; H Rajhansha, 1098-C, Bindu Chowk, R1 B1, SCB ৬০, SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০; *H Woodlands, 204-B, E Ward, Tarabai Park-1, ☎ 650941, S ২৫০-৩৫০ D ৩০০-৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; H Opal, 2104-E, Pune-Bangalore Rd-1, D ১৫০-২৫০ সুইট ২৭৫-৩৭৫; *H Baishali Delux, 39A-2, Tarabai Park-3; H Parag, 597-E Ward, Shahupuri-1; H Lishan, 482/D, Ward E, S ২০০ D ৩০০ A/c S ৩৭৫ D ৪৭৫; Meghna, H Anand, H Danat, New Mkt Yard; Sangam L, Laxmipuri. আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম, CH, RH, অবু: EE, Kolhapur. এছাড়াও সাধারণ হোটেল, লজ ও ধরমশালা আছে নানান শহর তথা ভবানী মণ্ডপকে ঘিরে কোলহাপুরে।

আবার কোলহাপুর থেকে ১৫২, গোয়া ১৩০, রত্নগিরি ২২০, মুম্বাই ৫১০, আর বেলগাঁও-এর ১৬৪ কিমি দূরে রত্নগিরি জেলায় মালভান সামুদ্রিক শহরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাশ্চর্য। ঝাউ-নারকেল-কাঁঠাল-আমে ছাওয়া রুপোলি বাসুকাবেলা। ২ কিমি দূরে লাইট হাউস, শ্রীদেবী ও রামেশ্বর মন্দিরও আছে মালভানে।

মালভান-এর আর এক আকর্ষণ ১২ কিমি দূরে ১৬৬৫ ব্রিস্টলে দীপাকার শৈলশিখরে শতাধিক পর্তুগিজ বিশেষজ্ঞের সহায়তায় শিবাজীর গড়া সিন্ধুদ্রবং বা ওশন কোর্ট। রাজধানীও হয় শিবাজী মহারাজের ১২ ফুট চওড়া, ৩০ ফুট উঁচু, ২ কিমি দীর্ঘ প্রাচীরে ঘেরা ১৮ একর ব্যাণ্ড জগাটাল। তবে, অতীত আজও অমলিন। শিবাজীর পুত্র রাজারাম-এর তৈরি শ্রীশিবচরুপতি মন্দিরে শিবাজী

মহারাজের পূজা হয় আজও। মূর্তি হয়েছে কালো মর্মরে শিবাজী মহারাজের। আর আছে মাকুতি, মহাদেব, জরিমাদি, ভবানী মন্দির ছাড়াও সাগরবেলা ও প্রাচীন দুর্গ সিন্ধুদ্রবং। তেমনই ৩ কিমি দূরে মারাঠা নেভির জাহাজ কারখানা পদমাগড়; ৩ কিমি দূরে সারেকজকোট অর্থাৎ পোতাশ্রয় তথা কালভলি ঝাড়ির মুখে টিলার টঙ্গে জাহাজ তৈরির আর এক কারখানা দেখে নেওয়া যায়।

জলগাঁও



হাওড়া-মুম্বাই, দিল্লী-মুম্বাই ও দিল্লী-চেন্নাই রেলপথের এক গুরুত্বপূর্ণ জংশন স্টেশন জলগাঁও। নাগপুর-মুম্বাই বিদ্রুত এক্সপ্রেস, নাগপুর-দাদার সেবাগ্রাম এক্সপ্রেস, মহারাষ্ট্র এক্সপ্রেস, চেন্নাই-আমোদাবাদ নবজীবন এক্সপ্রেস, আগ্রা/এলাহাবাদ-কারলা এক্সপ্রেস, পুরী-আমোদাবাদ এক্সপ্রেস, পুরী-ওখা এক্সপ্রেস, দাদার-গোরক্ষপুর এক্সপ্রেস, তাম্রী-গঙ্গা এক্সপ্রেস, পাঞ্জাব মেল, অমৃতসর-দাদার, কুশীনগর এক্সপ্রেস, বেরিলি-দাদার এক্সপ্রেস, বিলামা এক্সপ্রেস যাচ্ছে জলগাঁও হয়ে। মুম্বাই মেল ১৯-২০, কারলা এক্সপ্রেস ১০-৪৫, আমোদাবাদ এক্সপ্রেস ২০-৩০এ হাওড়া ছেড়ে পরদিন যথাক্রমে ২৩-৩০, ২০-৫৫, ৩-৪৫এ জলগাঁও যাচ্ছে। গীতাঞ্জলির স্টপ নেই জলগাঁও-এ। দ্রুত কলকাতা থেকে ১৫৪৯, মুম্বাই ৪১৯ কিমি। উচিত হবে মুম্বাই-এর পথে জলগাঁও নেমে অটো বা টাঙ্কায় বাস স্ট্যান্ডে গিয়ে বাসে-বাসে অজ্ঞাতা ও ইলোরা দেখে চলা। জলগাঁও রেল স্টেশন থেকে অজ্ঞাতা গুহার দূরত্ব ৫৯ কিমি, বাস যাচ্ছে ২ ঘণ্টায়। তবে জলগাঁও-ওরসাবাদ সার্ভিস (ঘণ্টায় ঘণ্টায়) বাস গুহা থেকে ২ কিমি দূরে জাতীয় সড়কে নামিয়ে দেয়। তাই অজ্ঞাতা গুহা যাত্রীদের উচিত হবে অজ্ঞাতার বাসে চড়া। আর ১২-২৫এ হাওড়া ছাড়া গীতাঞ্জলির যাত্রীরা ১৩-৩৫এ জলগাঁও-এর ২৫ কিমি আগে ভূসুয়ালে নেমে ভূসুয়াল থেকেই বাসে ফর্দপুর হয়ে ৩ ঘণ্টায় ৮০ কিমি দূরের অজ্ঞাতা পৌঁছে যান। রবিবার ১৫-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে সান্ডাছিক হাওড়া-পুনে আজাদ হিন্দ এক্সপ্রেস পরদিন ১৮-২৫এ ভূসুয়াল পৌঁছে পুনে যাচ্ছে। 3003 হাওড়া-মুম্বাই মেল ভায়া এলাহাবাদ ২০-০০টায় হাওড়া ছেড়ে পরের পরদিন ২০-৫৫এ জলগাঁও পৌঁছে মুম্বাই সিএসটি যাচ্ছে ১১-৩৫এ। সন্দের জিনিসপত্র গুহামুখের ক্রোকরুম বা ঝুণ্ডির দোকানপাটে রেখে অজ্ঞাতা থেকে নতুন করে বাসে চলুন ওরসাবাদ। এপথের দূরত্ব ১০৩ কিমি, ১ ঘণ্টা অন্তর বাস; ৩ ঘণ্টার পথ। ট্যাক্সি ও ট্রিস্টার ট্যাক্সিও মেলে এপথে। ওরসাবাদে রাত কাটিয়ে পরদিন ইলোরা ও ওরসাবাদ বেড়িয়ে মনমদ হয়ে সিঁথি/নাসিক বেড়িয়ে মুম্বাইও যাওয়া যেতে পারে। বা ওরসাবাদ থেকেই বাসে ২২৬ কিমি দূরের পুনে চলুন। পুনে থেকে মহাবলেশ্বর বেড়িয়ে সাতারা হয়ে গোয়ায় পৌঁছে যান। সরকারি ও বেসরকারি বাস যাচ্ছে পুনে/সাতারা থেকে পানাজি। ট্রেনও যাচ্ছে মুম্বাই থেকে আসা মিরাজ এক্সপ্রেস ও হজরত নিজামুদ্দিন থেকে আসা গোয়া এক্সপ্রেস হয়ে; আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন ছাড়াই পুনে থেকেই। গোয়া বেড়িয়ে পানাজি থেকে লক্ষে ৭ ঘণ্টায় মুম্বাই। তেমনই সরাসরি মুম্বাই পৌঁছে মুম্বাই-গোয়া-মহাবলেশ্বর-পুনে-ওরসাবাদ-অজ্ঞাতা বেড়িয়ে জলগাঁও পৌঁছে সাদ করা যেতে পারে-এ-সবর। আবার জলগাঁও থেকে ৭৯ কিমি দূরে মধ্য প্রদেশের বারহানপুর বেড়িয়ে খাণ্ডোয়া হয়ে ইন্দোর বা ইটারলি হয়ে ভূপাল অর্থাৎ মধ্য প্রদেশেও চলা যেতে পারে।

**Delhi-Agra-Gwalior-
Indore-Nasik-Mumbai**

| | | |
|--------|--------------------------|--------|
| 0 Km | Delhi | |
| 89 " | Hodal | |
| 147 " | Mathura | |
| | To Vrindaban | 10 km |
| | " Dig | 31 km |
| | " Bereilly | 204 km |
| 203 " | Agra | |
| | To Bharatpur | 56 km |
| | " Jaipur | 232 km |
| 263 " | River Chambal | |
| 321 " | Gwalior | |
| 330 " | Road Jn | |
| | To Jhansi | 94 km |
| 379 " | River Parvati | |
| 417 " | Satanwara | |
| | Shivpuri N P begins | |
| 426 " | Shivpuri N P ends | |
| 433 " | Shivpuri | |
| | To Sawai Madhopur | 189 km |
| 468 " | Lukwasa | |
| | To Sanchi | 234 km |
| 627 " | Binora | |
| | To Jhalawar | 137 km |
| | " Kotah | 225 km |
| 737 " | Maksi | |
| | To Ujjain | 39 km |
| 772 " | Dewas | |
| | To Bhopal | 151 km |
| 807 " | Indore | |
| | To Mandu | 97 km |
| | " Ujjain | 55 km |
| | " Chittor | 328 km |
| | " Burhanpur | 200 km |
| 874 " | Road Jn | |
| | To Mandu | 42 km |
| | " Dhar | 47 km |
| 885 " | Dhamnod | |
| | To Maheshwar | 13 km |
| | " Mandhata (Omkareshwar) | 74 km |
| 932 " | Julwania | |
| | To Bagh | 91 km |
| 975 " | MP/Maharashtra Border | |
| 1005 " | Road Jn | |
| | To Burhanpur | 148 km |
| 1066 " | Dhulia | |
| | To Nagpur/Nasik/Surat | |
| 1118 " | River Gima | |
| | To Manmad | 34 km |
| 1158 " | Chandore | |
| | To Manmad | 25 km |
| | " Aurangabad | 155 km |
| 1222 " | Nasik | |
| | To Trimbak | 28 km |
| | " Pune | 202 km |
| 1230 " | Road Jn | |
| | To Pandulena Caves | 1 km |
| 1311 " | Road Jn | |
| | To Tansa Lake | 13 km |
| 1350 " | Road Jn | |
| | To Kalyan | 10 km |
| 1383 " | Ghatapur | |
| | To Trombay | |
| 1407 " | Mumbai | |



Jalgaon-425001, STD 0257-এ নানান

হোটেল—MTDC-র Jalgaon Travellers' L

৩ 225192, D ১৭০ ২১৫ ২৬৫ FR ২৫০ ৪০০

A/c D ৪৩০ সুইট ৭০০; H Moraku, 346 Navi Peth-1,

৩ 26621, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৪৭৫ সুইট ৫৫০;

H Crazy Home, NH-6, near Akashwani Chowk-1, R2,

৩ 23275, SAB ২০০ DAB ২৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০;

Natruj H, Nehru Chowk; Sewashram L, 339/1 Navi Peth,

Stn Rd-1, SCB ৮৫ DCB ১৫০; Tourist H, R1, S ১২৫ D

২২৫; গুলমার্গ, গুজরাট বোর্ডিং লজ, বম্বে লজ, আদর্শ লজ,

অজন্তা গেস্ট হাউস, অমর গেস্ট হাউস, বিশ্রাম ঘর, বিশ্ব লজ,

সদানন্দ লজ, রেল স্টেশনের কাছে আর্থ নিবাস বিশেষভাবে

খ্যাত। এদের কাছে ১০০-২২৫ টাকায় ডাবল বেডের ঘর মেলে।

আর আছে ধরমশালা, রেলের রিটার্নিং রুম, ট্রাভেলার্স বাংলা,

PWD-র RH, ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার জলগাঁও-এ।

অজন্তা

জলগাঁও ৫৯, ভূসুয়াল ৮০, ঔরঙ্গাবাদের ১০৩ কিমি
দূরে অজন্তা গুহা। নিয়মিত বাস মেলে ত্রয়ী থেকে। প্যাকেজ
ট্যুরেও আসছে ঔরঙ্গাবাদ থেকে MTDC ও ITDC ছাড়াও
নানান প্রাইভেট ট্রাভেল এজেন্ট। পর্যটন মানচিত্রে তাদের
পরেই ভারতে আজ অজন্তার স্থান। আগ্রার তাজ খ্যাত তার
মর্মরে গড়া প্রেমের সৌখে, অজন্তার খ্যাতি তার গুহাচিত্রে;
তেমনই মহান ভাস্কর্য মহীয়ান করেছে ঔরঙ্গাবাদের ইলোরা
গুহাকে।

খ্রিষ্ট ২০০ থেকে খ্রিস্টোত্তর ৬৫০ অর্থাৎ ৮৫০ বছর
ধরে সহ্যাদ্রি পর্বতে গড়ে উঠেছে এই বিশ্বায়কর বৌদ্ধ গুহা
মন্দির। ইন্দ্রিয়াদি পাহাড়ের ঢালে ফুলের মালা হয়ে ২৭৫ মি
উঁচুতে পাহাড় কেটে তৈরি, রূপ তার অর্ধচন্দ্রাকার অক্ষকুরের
মতো। মোট ২৯টি গুহা অজন্তায়। তবে, ধারাবাহিকতা নেই
গুহা নির্মাণে। মধ্যভাগে প্রাচীনতম হীনযান গ্রুপের ১০, ৯,
৮, ১২, ১৩; আর বাকি চব্বিশ মহায়ান গ্রুপের—তৈরিও
হয়েছে দু' প্রান্তে ক্রমশ পরে। হীনযান গ্রুপে বুদ্ধ অনুপস্থিত—
উপস্থিতি তার প্রতীকে। নির্মাণ কৌশল এমনই অভাবনীয়
যে ভাবতেও বিশ্বয় লাগে। দিনের প্রতিফলন সূর্য তার আলো
বিচ্ছুরিত করছে প্রতিটি গুহার সামনে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে
সুন্দরী ছিপছিপে পাহাড়ী নদী বাঘাড়া।

বৌদ্ধধর্ম লোপ পেতে সত্বে বছর লোকচক্র অগোচরে
ছিল অজন্তা। নতুন করে আবিষ্কার ১৮১৯ খ্রিস্টাব্দে একদল
ব্রিটিশ শিকারীর চোখে। আর কলারসিক জেমস ফার্সনের
উদ্যমে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি ১৮৪৪এ সেনাধ্যক্ষ রবার্ট
গিলকে পাঠালেন অনুসন্ধানের কর্তব্যে অজন্তা গুহাচিত্রের।
দীর্ঘ ২০ বছরের একক শ্রমে অঙ্কিত ৩০ খানা ফ্রেস্কো চিত্রের
২৫ খানা ১৮৬৬তে সিডেনহাম প্রাসাদের এক প্রদর্শনীতে
পুড়ে গেলেও ৫ খানা আজও কেনসিংটন প্রাসাদে অবিকৃত
অবস্থায় অজন্তার সাক্ষ্য বহন করেছে। ব্রিটিশরাজের

পৃষ্ঠপোষকতায় ছাত্রবলে বলীয়ান হয়ে জর্জ গ্রিফিথ এলেন ১৮৭৫। আবার অনুলিপি করে বিশ্বের দরবারে পৌছে দিলেন অজস্তার বিস্ময়কে। এলেন একে একে নানান গুণীজন সারা বিশ্ব থেকে অজস্তার ফ্রেস্কোয় মোহিত হয়ে। এলেন নন্দলাল বসু, অসিত হালদার অনুলিপি করতে অজস্তায়। লুঠেরাও পণ্য করল অজস্তাকে। অবশেষে ১৯০৩এ আইন হল অজস্তা রক্ষার। ইতিমধ্যে অজস্তা হারিয়েছে তার অমূল্য রতন। ১৯২০-২২এ হায়দ্রাবাদের নিজামের অর্থে সংস্কারে হাত পড়ল ইতালি থেকে বিশেষজ্ঞ এনে। তবে পরিতাপের বিষয়—বার বার অনবধানতায় রঙের আন্তরগ্ন লাগিয়ে আরও যেন দুরাশিত করা হয়েছে অজস্তার ধ্বংস। কালে কালে নষ্টও হয়েছে অজস্তার নানান ফ্রেস্কো। গুহারও বেশ কয়েকটি আজ ধ্বংসের কাল গুনছে।

নির্মাণশৈলী অনুযায়ী এই বৌদ্ধ-গুহা মন্দিরকে দু'ভাগে ভাগ করা যায়। চৈত্য বা চ্যাপেল অর্থাৎ ছোট ভজনালয় আর বিহার বা মনাস্তি অর্থাৎ সন্ন্যাসীদের বাসের জন্য ছোট ছোট খুপরি। চৈত্যের সংখ্যা পাঁচ—৯, ১০, ১৯, ২৬, ২৯; আর বাকি চব্বিশ বিহার। ইলোরার মতো কেবল প্রস্তর খোদিত ভাস্কর্যই নয়—দেওয়াল-চিত্র ও ভাস্কর্যের অপূর্ব সমন্বয় ঘটেছে অজস্তার প্রতিটি গুহাতে। জাতকের গল্প অর্থাৎ বুদ্ধের অতীত জীবনের নানান আখ্যানের সাথে তৎকালীন সমাজজীবন তুলে ধরা হয়েছে ছবি একে ও পাথর কুঁড়ে। ১, ২, ৯, ১০, ১৭ নম্বর গুহাতে ছবির প্রাচুর্য চোখে পড়ে। ৫ টাকার টিকিটে বিশেষ ব্যবহার বৈদ্যুতিক আলোয় গুহা ৫টি দেখারও ব্যবস্থা হয়েছে। উচিতও হবে দর্শনার্থীদের আলোর সুযোগ নেওয়া। আর স্থাপত্যের জন্য ১, ৪, ১৭, ১৯, ২৬ গুহাগুলি দেখে নেওয়া উচিত হবে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ৯—১৭-৩০টায় খোলা; টিকিট লাগে অজস্তা দেখতে।

গুহা-১: এটি বিহারধর্মী গুহা। অবস্থানে সর্বপ্রথম হলেও ৬০০-৬৪২ খ্রিস্টাব্দে মহাযানকালে তৈরি। অলিন্দে পরিয়ে ৬৪ ফুটের বর্গাকার এক হল ভাস্কর্য ও ফ্রেস্কো চিত্রের সমন্বয় ঘটেছে। জাতকের নানান আখ্যান চিত্রিত হয়েছে ফ্রেস্কোয়। পেছনের দেওয়ালে বোধিসত্ত্বের ফ্রেস্কো চিত্রটিও সুন্দর। মূর্তিও হয়েছে রাজমুকুট শিরে পদ্মাসনে বুদ্ধের। বৈচিত্র্য আছে মূর্তিতে—ডাইনে হাস্যময়, বাঁয়ে বিবাদময়, সামনে থেকে ধ্যানময়। আর আছে চার হরিণের এক মাথা, যুযুধান বশুদ্র, জোড়া হাতি, বড়ভুজ বামন ছাড়াও নানান ভাস্কর্য ও ফ্রেস্কো চিত্র গুহা ১-এ। পদ্মহাতে পদ্মপাণি, নাগরাজা ও নাগরানী, রাজপুত্রের অভিষেক, বুদ্ধের ধ্যানভঙ্গে বড়রিপুর কারিকুরি, কামাত্তরা সুন্দরী রমণীর প্রলোভন, কৃষ্ণ ও রাজকুমারী, রাজধারে মহাভিকু, চম্পেয়া জাতক ফ্রেস্কো চিত্র-গুলিও অনন্য করে তুলেছে ১-কে। সিলিংও কাল্পকার্যময়।

গুহা-২: অবস্থান হিসাবে একের পর, আর তৈরিও এটি একের সমসময়ে। তবে, আকারে একের থেকে ছোট হলেও

আকর্ষণে অনবদ্য। ১২টি স্তম্ভের উপর দাঁড়ানো গুহা দু'য়েতেও ছবির প্রাচুর্য ঘটেছে। সিলিংটিও চিত্রিত। তবে, ধ্বংসও হয়েছে ফ্রেস্কো চিত্রের অংশ গুহা দুইয়ে। জাতকের আখ্যান ফ্রেস্কোর মুখ্য উপজীব্য। মহারাজা শুদ্ধাধন ও মায়াদেবীকে সভা-পণ্ডিতের স্বপ্ন ব্যাখ্যা, ভাবাবিষ্টা মায়াদেবী, অপরাধীর বিচার, বুদ্ধ-সহ নানান কিছু, ইন্দ্রপ্রস্থে পাশাখেলা, নাগলোকে বিধুর, ২৩টি হাঁসের নয়নাভিরাম চিত্র ছাড়াও নানান ফ্রেস্কো চিত্রে শোভিত গুহা দুই।

গুহা-৪: অসমাপ্ত ও পেরিয়ে অজস্তার বৃহত্তম বিহার-ধর্মী গুহা চার। ২৮টি পিলারে ভর করে রূপ পেয়েছে। এটিও অসম্পূর্ণ। তবে এর ভাস্কর্য সুন্দর। সিংহ, হাতি, সাপ, অগ্নি, আঁট আধিভৌতিক শত্রুতে বেষ্টিত মর্মের মানব-মূর্তি। ভগবান তথাগতের স্মরণ নিলে ত্রাণ মেলে এইসব আধি-ভৌতিক থেকে সেই মর্মকথাই ব্যক্ত হয়েছে। স্তম্ভগুলিতেও অভিনবত্ব আছে। বিহারের সামনে বারান্দার দুই প্রান্তে দুই গর্ভমন্দির। আর আছে বেশ কয়েকটি গর্ভগৃহ। মূল মন্দিরে মূর্তি হয়েছে ধ্যানস্থ বুদ্ধের।

গুহা-৬: অসম্পূর্ণ ৫ রেখে অজস্তার একমাত্র দ্বিতল বিহার গুহা ছয়। তবে একতলাটি ভীষণভাবে বিধ্বস্ত। একতলায় অভয়মুদ্রায় আর দ্বিতলে ধর্মচক্রমুদ্রায় মূর্তি হয়েছে বুদ্ধের। ছোট ছোট মন্দিরও হয়েছে দ্বিতলে—প্রবেশপথ ফ্রেস্কো চিত্রে অলঙ্কৃত। প্রস্তরমূর্তিও আছে নানান দ্বিতল এই বিহারে। দ্বিতলের পিলারে আওয়াজ করলে মৃদঙ্গ ও পাখোয়াজের সুর মেলে।

গুহা-৭: বৈচিত্র্য আছে বিহারধর্মী সাতে। সামনে জোড়া বারান্দা। গর্ভমন্দিরের প্রবেশদ্বারে মকরবাহিনী দুই নারী মূর্তি। মূল মন্দিরে দেবতা বুদ্ধ, দু'পাশে চামরবাহী দুই বোধিসত্ত্ব। আর আছে উড়ন্ত গন্ধর্ব মূর্তি।

গুহা-৮: জেনারেটিং-এর সাজ-সরঞ্জামের স্টোর বসেছে। দ্বারও রুদ্ধ।

গুহা-৯: চৈত্যধর্মী গুহা নয়ের প্রবেশ পথের উপরে সূর্য-গবাক্ষ, অলঙ্কৃত সমুখভাগ অর্থাৎ ফসাদ। ভেতরে ১৩.৭মি লম্বা হলে দু'পাশে দুই সারিতে ২১টি স্তম্ভ, মাঝে তার উপাসনাস্থল। চিত্রিত স্থপণ্ড হয়েছে অন্দরে। তৈরি এটি হীনযান কালে হলেও বুদ্ধমূর্তি, বোধিসত্ত্ব, পদ্মপাণি ও বজ্রপাণি মূর্তির সংযোজন ঘটেছে ৬ শতকে মহাযানকালে।

গুহা-১০: অজস্তার প্রাচীনতম চৈত্য গুহা দশ—নবমীতে ব্রিটিশ শিকারীদের প্রথম আবিষ্কারও এই দশ। তৈরি এটি খ্রি:পূ ১৫০-এ। প্রকারে ৯-এরই তুল্য হলেও আয়তনে ২৯x২২.৫ মি, উচ্চতায় ১১ মি। ৩৯টি অষ্টকোণী স্তম্ভ পৌঁছে দেয় স্থপে। তবে পরিতাপের বিষয়, অতীতের নাগরাজার শোভাযাত্রা, বড়সড় বা ছদ্মস্ত জাতকের অনবদ্য কাহিনী চিত্র, শ্যাম-জাতক ছাড়াও অতীতকালের আরও অমূল্য সব চিত্রস্রাবের আজ লুপ্ত। ফাসাদটিও বিধ্বস্ত।

গুহা-১১: চতুষ্কোণ পাদপীঠ, অষ্টকোণী মধ্যাংশ আর

চওড়া শীর্ষপীঠের বিহারধর্মী গুহা ১১ খ্রিস্টোত্তর ১—৫ শতকে তৈরি। নানান ভাস্কর্য ও ছবিতে চিত্রিত মূল মন্দিরে দেবতা বুদ্ধ।

গুহা-১২: নিকব কালো ক্ষুদ্রে ১২ ঘরের বিহারধর্মী গুহা বারোয় বৌদ্ধ ভিক্ষুদের বাস ছিল সেকালে। খ্রিস্টপূর্ব যুগের ১৩, খ্রিস্টোত্তর কালে মহাযান যুগের বিহারধর্মী অসম্পূর্ণ ১৪ ও মহাযান যুগের ১৫-র আকর্ষণ কম।

গুহা-১৬: অজন্তার অন্যতম সুন্দর ফ্রেস্কো চিত্রের জন্য গুহা বোলোর আকর্ষণ। ৪৭৫—৫০০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি বিহারধর্মী গুহার প্রবেশপথে যুগল হস্তী দর্শক অভ্যর্থনায় ঠায় বসে, এণ্ডতেই উপবিষ্ট নাগরাজা ও নাগরানীর ভাস্কর্য মূর্তিতে অভিনব আছে। প্রশস্ত অলিন্দ পেরিয়ে স্তম্ভশীর্ষে বামন মূর্তি। বুদ্ধের জীবন ইতিহাস—মহর্ষি অসিতের নবজাতক দর্শন, চতুষ্পাঠীতে শিক্ষা, শুদ্ধোধনের সমস্যা, সিদ্ধার্থের গৃহত্যাগ, উরুবিশে সিদ্ধার্থ, সূজাতার পায়ের নিবেদন, ত্রপুষ্য ও ভল্লিক, বিশ্বাসীরের আমন্ত্রণ প্রত্যাখান, নন্দের প্রব্রজ্যা গ্রহণ, কপিলাবস্ততে বুদ্ধ, নন্দের কেশকর্তন, নন্দের মর্মবাখ্যা, ডাইং প্রিলেস—স্বামীর প্রব্রজ্যা গ্রহণের সংবাদে বুদ্ধের ভ্রাতৃবধুর মূর্তি ও মৃত্যু; হস্তিজাতক, যুগ-নয়ন, যুগনয়নী বুদ্ধের ধর্মপ্রচার, বুদ্ধ সমীপে অজাতশত্রু, বুদ্ধের আলোখ্য ছাড়াও নানান ফ্রেস্কো চিত্রে সে শোভিত। ডাইং প্রিলেস ছবিটিও অনবদ্য। তেমনই বাগেড়া নদীও সুন্দর দৃশ্যমান বোলো থেকে। অতীতে মূল প্রবেশপথও ছিল এই ১৬ হয়ে।

গুহা-১৭: তবুও যেন অজন্তার অন্যতম আকর্ষণ তার গুহা ১৭। অনন্য ছবির সম্ভার বরণীয় করে তুলেছে সতেরোকে। সবচেয়ে রক্ষিত এই গুহামন্দির তৈরি ৪৭০-৪৮০ খ্রিস্টাব্দে। ছবির সম্ভার ও বিষয়বস্ততেও বৈচিত্র্য আছে। অতীত জন্মে বুদ্ধ অর্থাৎ জাতক কাহিনী মুখ্য উপজীব্য। ১৯.৫ মিটারের চতুষ্কোণ কেন্দ্রীয় হল—এ ২০টি স্তম্ভ। অলিন্দ থেকে প্রথমেই আছে ঘড়ির মতো চিত্রে মণ্ডিত বিরাটাকার সৎসারচক্র, গর্ত মন্দিরে যুগাবের বুদ্ধমূর্তি, প্রবেশপথের তোরণের উপর ৮ মানুষী-বুদ্ধ, তার নিচে খুপরিতে ৮ জোড়া মিথুন-চিত্র, অলিন্দের সিলিংয়ে ছয় নর্তকী, দ্বারের দুই প্রান্তে বুদ্ধের অলৌকিকত্ব নলগিরিদমন। এই দেওয়ালেই শূন্যে আকাশপথে ভেসে চলেছে কৃষ্ণ-অলরা। সঙ্গী-সাথী সমভিব্যাহারে প্রসাধনরতা রাজকন্যা, প্রেম নিবেদনরত যুবক-যুবতী, কৃষ্ণের মর্তে আগমন, মহাকপি-জাতক, ষড়দন্ত-জাতক, যুগ-জাতক, সারা পূব দেওয়ালে জম্বুদ্বীপের বশিকপুত্র সিংহলের রাক্ষসীদের দেশ তাম্রদ্বীপ অভিযান, রাক্ষসীদের ছলাকলা, তুমুল যুদ্ধ, তাম্রদ্বীপের পতন ও সিংহল নামকরণ, সূতসোম জাতক, হংস জাতক, গোপা ও রাহুল, গোপা-রাহুল-জাতক, বিখ্যাতের জাতক কাহিনী, সারিগুত্তর পরীক্ষা, শিবি জাতক, পৃথ্বী ও মাদ্রীর কাছে বিখ্যাতের বিদায় গ্রহণ চিত্রগুলি অনন্য

করে তুলেছে। এছাড়াও চিত্র রয়েছে আরও নানান গুহা ১৭-র।

আকারে ছোট হলেও ভাস্কর্য ও ফ্রেস্কো চিত্রের সমন্বয় ঘটেছে চৈত্যা গুহা ১৯-এ। উনিশের ফাসাদ তথা সম্মুখ-ভাগে গুপ্তযুগের অন্যতম সুন্দর শিল্প নিদর্শনও বটে। দু'পাশে দুই গন্ধর্ব মূর্তি ছাড়াও নানান মূর্তি শোভিত। প্রবেশদ্বারের সামনে বারান্দা অর্থাৎ পোটিকো। পোটিকো রেখে আবার অলিন্দ, তার বাইরে একসারি স্তম্ভ। আর ভেতরে বুদ্ধ ও বোধিসত্ত্বের নানান মূর্তি। প্রবেশপথের উপরে অশ্ব-ক্ষুরাকৃতি সূর্য-গবাক্ষ। ভেতরে স্তূপ, দু'পাশে দু'সারিতে ১৫টি স্তম্ভ। স্তম্ভের শিরে বুদ্ধ, বোধিসত্ত্ব, নাগ ও গন্ধর্বের মূর্তি খোদিত। আর গুহার বাইরে পশ্চিমে সাত ফণাওয়ালা গোখুরার মুকুটে নাগরাজা ও এক ফণার মুকুটে নাগরানীর ভাস্কর্যও অভিনব আছে।

গুহা-২০: বিহারধর্মী গুহার এক ডজন গর্তগুহা হয়েছে। মূল গর্তমন্দিরে ধর্মচক্র মূর্তি বুদ্ধমূর্তি। চরণতলে হরিণ শিশু। গর্তগুহার ডাইনে রাজা ও রানী ভাস্কর্য মূর্তি হয়েছেন।

খ্রিস্টোত্তর ৬ শতকে তৈরি গুহা ২১-এর বর্গাকার হল—এ ১২টি স্তম্ভ—কারুকার্যমণ্ডিত। গর্তগুহের সংখ্যা ১৪। কেন্দ্রীয় গর্তগুহে পদ্মাসনে ধর্মচক্র মূর্তি বুদ্ধ মূর্তিটিও সুন্দর। ৬ শতকে তৈরি বিহারধর্মী গুহা ২২-এর মূল গর্তগুহায় বসা অবস্থায় বুদ্ধ। অতীতের ফ্রেস্কো চিত্রগুলি আজ বিবর্ণ। আর অসমাপ্ত অবস্থায় পরিত্যক্ত হয় ২৩-তম গুহাটি। তবে, ১২টি স্তম্ভ আছে ২৩-এর অন্তরে। গুহা ২৪-ও অসম্পূর্ণ অবস্থায় পরিত্যক্ত হয়। সম্পূর্ণতা পেলে অজন্তার সর্ববৃহৎ (২৩×২৩মি) বিহার হত এটি। আর গুহার নির্মাণশৈলী উচিত হবে চক্ৰবিশে দেখে নেওয়া।

বর্গাকার বিহারধর্মী গুহা ২৫ পরিত্যক্ত। পথও রুদ্ধ আজ পটিশের। ৭ শতকে তৈরি চৈত্যা গুহা ২৬ অজন্তার শেষ গুহা—ভগ্নাবস্থায় ফাসাদ অর্থাৎ সম্মুখভাগে বিভিন্ন মূর্তি নানান বুদ্ধমূর্তি। অতীতের ফ্রেস্কো চিত্র আজ বিবর্ণ। তবে, চৈত্যের বাম দেওয়ালে অজন্তার বিশালতম ব্যাস রিলিফে কুশীনগরে হিরণ্যবতী নদীর তীরে দুই শালবৃক্ষের মাঝে এক ছায়ে মাথা রেখে উত্তর দিকে মুখ করে যুগাবতার বুদ্ধের মহাপরিনির্বাণের দৃশ্য রূপ পেয়েছে। দেবতারও নেমে এসেছেন স্বর্গ থেকে, পদপ্রান্তে ভিক্ষু আনন্দ; ভক্তও এসেছেন নানান। আর রয়েছে ব্যাস রিলিফেই ধ্যানী বুদ্ধের ধ্যান ভাঙার ব্যর্থ প্রচেষ্টা মারের। বোধিবৃক্ষতলে ভূমিস্পর্শ মূর্তি বুদ্ধ বসে। মারের লাস্যময়ী তিন কন্যা—তষ, রতি ও রত্ন বুদ্ধকে প্রলুব্ধ করতে সদাই ব্যস্ত। মারের দস্যুবাহিনী দ্বারা বুদ্ধ পরিবৃত। অবশেষে ছলাকলায় ব্যর্থ মার বুদ্ধের পদতলে লুপ্তিত।

বিহারধর্মী ২৭-তম গুহাটিও অসম্পূর্ণ। আর চৈত্যা-রূপী ২৮ অসম্পূর্ণ অবস্থাতেই পরিত্যক্ত হয়। পথও রুদ্ধ আজ আটাশের। গুহা ২৯-এর অবস্থান যেমন সরে

গিয়ে উপরের ধাপে, পথও ততোধিক দুর্গম ২৯-তম গুহা বিহারের।

এছাড়াও, আবিষ্কৃত হয়েছে নতুন করে এক গুহা (৩০) ১৬-র নিচুতে। স্থপ ও বিহারের সমন্বয়ে গঠিত এই গুহা খ্রিস্টপূর্ব ২ শতকে হীনযান যুগে তৈরি। পাঠোদ্ধার সম্ভব না হলেও একটি শিলালিপি আবিষ্কৃত হয়েছে।



খাকারও ব্যবস্থা হয়েছে অজন্তা গুহায়। গুহার প্রবেশদ্বারে MTDC-র *Ajanta Travellers L. Ajanta, Dist-Aurangabad-431117, ☎ (02438) 4226, D ২০০, ডার্মি ৫০; আহার্যেও এদের সুনায আছে। ডাইনে ২ ঘরের ফরেস্ট রেস্ট হাউস। আর আছে আহার্যের সুব্যবস্থা নিয়ে গুহা থেকে বাসপথের ফার্মপারে MTDC-র *Ajanta Holiday Resort, Fardapur, ☎ (02438) 4230, ১০টি ২ বেডের ঘর ২০০ ৩০০, ৫০ বেডের ডার্মিতে শয্যাছাড়া ২০ করে, অব্: ম্যানেনজার বা ঔরঙ্গাবাদের মতোই। রিসর্টের পেছনে ট্রাভেলার্স বাংলাদেশও ঘর মেলে খাকার, অব্: EE (B & C), PWD, Padampura, Aurangabad. সোকানপাট হয়েছে বাস সড়কে। আহার্যও মেলে রিসর্ট লাগোয়া প্রাইভেট হোটেলে *Vihara Restaurant*-এ—থালি প্রথায় অগ্নিম অভ্যর্জের কেবল রাতে। বাসও চলে ফার্মপূর থেকে অজন্তা গুহায়।**

ঔরঙ্গাবাদ



অজন্তা গুহা থেকে ১০৩ কিমি দূরে ঔরঙ্গাবাদ শহর। মুম্বাই থেকে দূরত্ব ৩৭৫ কিমি, ৮-৯ ঘণ্টার পথ। কলকাতা থেকে সরাসরি ঔরঙ্গাবাদ পৌছবার সহজতম পথ মনমদে গাড়ি বদল করে ঔরঙ্গাবাদ চলা। মনমদ থেকে ১১৪ কিমি দূরে মনমদ-জালনা ব্রডগেজ সিউথ-সেন্ট্রাল রেলে ঔরঙ্গাবাদ স্টেশন। ১৪-২০, ১৮-২০, ২২-৪০এ মনমদ ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় ঔরঙ্গাবাদ যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। আর যাচ্ছে ৬-১০এ মুম্বাই CST ছেড়ে 7617 মুম্বাই-নানডেড তপোবন এক্স, ২১-২০এ 1003 মুম্বাই-নানডেড দেবগিরি এক্স যথাক্রমে ১১-৪০, ৩-০০টায় মনমদ ছেড়ে ২ ঘণ্টায় ঔরঙ্গাবাদ পৌছে জালনা-পার্বনী-পূর্ণা হয়ে ৪২ ঘণ্টায় নানডেড। মুম্বাই ফেরে ১৪-৫৫ ও ২১-৪০এ ঔরঙ্গাবাদ থেকে। ১৪-২০এ মনমদ ছেড়ে ঔরঙ্গাবাদ-জালনা-পার্বনী-পূর্ণা-নানডেড হয়ে মুদখেন্ড যাচ্ছে 7587 মনমদ-মুদখেন্ড এক্স। ফেরে ৪-৩০এ মুদখেন্ড থেকে একইভাবে মনমদে। কটিগুদা যাচ্ছে ১৯-৩০এ ঔরঙ্গাবাদ ছেড়ে জালনা ২০-২০, পার্বনী ২২-৪৫, পরগনি ৯-০০টায় সেকেন্দ্রাবাদ পৌছে ৯-৩০এ কটিগুদার 7663 মনমদ-কটিগুদা এক্স। ঔরঙ্গাবাদ ফেরে ১৯-০০টায় কটিগুদা/১৯-৩০এ সেকেন্দ্রাবাদ ছেড়ে পরগনি ৮-১০এ। সাগুখি (7) নাগারসোল-সেকেন্দ্রাবাদ এক্সও যাচ্ছে এপথে। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ১৪-১৫য় ঔরঙ্গাবাদ ছেড়ে পরগনি ৫-২০এ কটিগুদার। প্যাসেঞ্জার ফেরে ২০-৩০এ কটিগুদা থেকে। 136 সিন ৮-৩০এ নানডেড ছেড়ে ঔরঙ্গাবাদ ১২-২৫, মনমদ ১৫-০০, ভূসুয়া ১৭-৪০, ইদারলি ২২-৩৫, ভূপাল ০-৩০; বাঁসি ৪-৫৫, অল্লার ক্যান্ট ৮-৩৫, নিউ ব্রি ১৩-২০এ পৌছে অমৃতসর যাচ্ছে 2715 নানডেড-অমৃতসর এক্স; নানডেড ফেরে অমৃতসর থেকে 13 সিন ৫-৫৫য় ছেড়ে পরগনি ৮-১০এ মনমদ পৌছে ১২-৩০এ ঔরঙ্গাবাদ ছেড়ে ১৬-৩০এ। তবে, মুম্বাই-ব্রি

ও মুম্বাই-কলকাতা সেন্ট্রাল রেলের জলগাঁও নেমে অজন্তা বেড়িয়ে ঔরঙ্গাবাদ চলা উচিত হবে উত্তর-পূর্ব ভারতপথটকসের। দিনভর বাসও চলছে অজন্তা থেকে ঔরঙ্গাবাদ। ঘণ্টা তিনেকের পথ। ট্যাক্সিও মেলে এপথে।



সড়ক পথে রাজ্যের রাজধানী মুম্বাই (সেন্ট্রাল) ছাড়াও নানান শহরের সঙ্গে কমলা-হলুদ রঙের রাজ্য পরিবহণ অর্থাৎ এস টি ও সাপা-সবুজ রঙের এশিয়াড বাস সংযোগ গড়েছে ৫১৩ মি উঁচু ঔরঙ্গাবাদের। ২০-০০টায় MTDC-র A/C বাস ঔরঙ্গাবাদ ছেড়ে পরগনি ৭-৩০টায় মুম্বাই যাচ্ছে। আসছেও মুম্বাই-এর এক্সপ্রেস টাওয়ার থেকে একইভাবে। ভাড়া ২২৫, শিশুর আধা। ITDC-র বাসও চলেছে মুম্বাই-ঔরঙ্গাবাদের মাঝে। ১০ ঘটায় নানান প্রাইভেট ডিলাক্স, সুপার ডিলাক্স, Video কোচও চলে এপথে। ভাড়াও কম প্রাইভেট বাসে। সিঁথি, নাসিক, মুলে, পুনেন্ডেও বাস যাচ্ছে ঔরঙ্গাবাদ থেকে। বাস আসছে প্রতিবেশী রাজ্যের নানান শহর থেকেও ঔরঙ্গাবাদে। ৫৩৬ কিমি দূরে হায়দ্রাবাদেও ট্রেন ও বাস যাচ্ছে ১৪ ঘটায়।



আর IAC ☎ 24864-র বিমান 135 দিন সার্ভিস গড়েছে মুম্বাই-ঔরঙ্গাবাদ, 246 সিন মুম্বাই-ঔরঙ্গাবাদ-উদয়পুর-দিল্লীর মাঝে; ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে। দপ্তর এদের রাজেন্দ্রপ্রসাদ মার্গে। আর যাচ্ছে প্রাইভেট বিমান Jet Airways, ☎ 487091 প্রতিদিন মুম্বাই-ঔরঙ্গাবাদ-মুম্বাই; Skyline NEPC মুম্বাই-ঔরঙ্গাবাদ-মুম্বাই; East West Airways, ☎ 29672 মুম্বাই-ঔরঙ্গাবাদ-মুম্বাই-এর মাঝে প্রতিদিন। শহর থেকে ১২ কিমি দূরে বিমানবন্দর। বাস, অটো ও ট্যাক্সি চলছে শহরে।

কনডাক্টেড ট্রার : MTDC, Holiday Resort, Stn Rd. Aurangabad-431001, ☎ (0240) 331513 বা ITDC, Aurangabad Ashok, আয়োজিত কনডাক্টেড ট্রারে অংশ নিয়ে ঔরঙ্গাবাদ বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার। রেল স্টেশন থেকে সকাল ৯-৩০টায় গিয়ে ১৭-৩০এ ফেরে বাস। ভাড়া ১১০। গাইডও থাকেন গাড়িতে। আবার সোম ছাড়া প্রতিদিন সকাল ৮-০০টায় ঔরঙ্গাবাদ থেকে ১৪০ টাকার MTDC যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে অজন্তা দেখাতে। প্রতিদিন ১৫-৩০—২১-৩০এ পৈঠান, শনিবার ৭—১৯-৩০টায় সিঁথি, প্রতি মাসের ১ম, ৩য় শুক্র ও ২য়, ৪র্থ শনিবার ১৪-০০টায় গিয়ে ২১-৩০এ ফেরে পাইথন বেড়িয়ে MTDC. শিশুদের রিবেট মেলে টিকিট। নির্ধারিত গাড়ির পরে যাত্রীর সংখ্যা দশের অধিক হলে বিশেষ গাড়িও ব্যবস্থা করে এরা। এব্যাপারে যাত্রীদের উদ্যোগ নিতে হয়। তবে কলকাতার যাত্রীদের জলগাঁও পৌছে বাসে অজন্তা বেড়িয়ে নতুন করে বাসে ঔরঙ্গাবাদ চলাই উচিত হবে। একাধিক প্রাইভেট কোম্পানিও কনডাক্টেড ট্রারে অজন্তা/ইলোরা দেখিয়ে আনে। এমনকি রেল স্টেশনের কাছে বাসস্ট্যান্ড থেকে মরসুমে রাজ্য পরিবহণের বাসও যাচ্ছে ইলোরা, অজন্তা দেখাতে। যাত্রীবাস, ট্যাক্সি ও টুরিস্ট ট্যাক্সিও মেলে শ'পাঁচেক টাকার এপথ পরিক্রমায়। বাস যাচ্ছে ২ ঘণ্টা অন্তর ইলোরা, ২ ঘণ্টা অন্তর অজন্তা, ঘণ্টায় ঘণ্টায় জলগাঁও ঔরঙ্গাবাদ থেকে। মুম্বাই, পুনে, নাগপুর ও গোরা থেকেও MTDC-র শীতাতপ ও লাগারি কোচ প্যাকেজট্রারে ভ্রমণরাস এসে সোমবার করে ইলোরা-অজন্তা দেখিয়ে। বেলুখার মনোরম সমর অক্টোবর ও নভেম্বর ধর্ম। নির্বেদ আকাশ, তাপমাত্রা ৭০-৮০° ফা। তবে, ফেব্রুয়ারি ধর্ম আবহাওয়া মনোরম, মাঠ থেকে গরমের শুক।

জুন থেকে সেপ্টেম্বর বৃষ্টি হয় ৮০০ মিমি। তবুও সারা বছর ধরেই পর্যটক সমাগম ঘটে অজন্তা-ইলোরায়।

| উরলাবাদ থেকে সড়ক দূরত্ব | কিমি | ৪৩১০০-১০০ |
|-----------------------------|------|-----------|
| আহমেদনগর | ১০৯ | ৪৩১০০-১০০ |
| পুনে | ২২৯ | ৪৩১০০-১০০ |
| মহাবালেশ্বর | ৩৬৩ | ৪৩১০০-১০০ |
| পানাজি | ১২২ | ৪৩১০০-১০০ |
| মুম্বাই মনমদ | | ৪৩১০০-১০০ |
| হয়ে | ৩৭৫ | ৪৩১০০-১০০ |
| অজন্তা | ১০৩ | ৪৩১০০-১০০ |
| মনমদ | ১১৪ | ৪৩১০০-১০০ |
| নাসিক | ২২১ | ৪৩১০০-১০০ |
| সিবি | ১৩৬ | ৪৩১০০-১০০ |
| নানডেড | ২৭৭ | ৪৩১০০-১০০ |
| হায়দ্রাবাদ | ৫৩৬ | ৪৩১০০-১০০ |
| সুরাট | ৩৭৯ | ৪৩১০০-১০০ |
| মাণ্ডু | ৩৯০ | ৪৩১০০-১০০ |
| ইন্দোর | ৪৫৯ | ৪৩১০০-১০০ |
| উদয়পুর | ৮৮৬ | ৪৩১০০-১০০ |
| জয়পুর | ১০১৩ | ৪৩১০০-১০০ |
| আমেদাবাদ | ৬২৩ | ৪৩১০০-১০০ |

পাঁচাত্ত প্রথায় শহর থেকে বিমানবন্দরের পথে—*Ajanta Ambassador H, Chikalthana, Jalna Rd-431210, ASR7B5, A/c D ২৩৫০-২৫০০, সুইট ২৭৫০-৬৫০০; পাশেই Welcomgroup-এর *Ruma International, A/c S ৩৭৭-৪৫ D ৭৫-৯৫ US\$; Taj Regency, 8-N-12, CIDCO-3, ৩ 333501, A/c S ৪৫ D ৬০ US\$; H Rajdoot, Jalna Rd-1, A6R3B2, D ৪৫০-৬০০ A/c S D ৭০০-৮৫০, থাকা ও আহাৰ্য্যে অনবদ্য; H Amarpreet, Jawaharlal Nehru Marg-1, S ৪২৫ D ৫০০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০ সুইট ১২৫০; বাস স্ট্যান্ড ও পোস্ট অফিসের মাঝে H Neelum, Jubilee Park-1, SAB ১৭৫ DAB ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪০০ FR ৩৫০; Printravel H, Stn Rd, SAB ১৫০ DAB ২৫০, মধ্যমানে থাকার পক্ষে ভালই। H Oberoi, Osmanpura-1, R2B2; H President Park, R-7/2 MIDC Area, Airport Rd, ৩ 486201, A/c S ১৫০-১২০০ D ১২৫০-১৫০০ সুইট ২২৫০, মুম্বাই বুকিং: 267692; Centrally A/c ITDC-র *H Aurangabad Ashok, Dr Rajendra Prasad Marg-1, A10R3, S ১২৯৫ D ২০০০; De Manore H, Kranti Chowk, ৩ 334772, DAB ৫৫০-৬৫০ A/c D ৮৫০; H Raviraj, Dr R P Marg-1, S ৪০০ D ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ৮৫০; *H Khemi's Inn, 11 Town Centre-3, ৩ 484868, A/c D ৬৫০।

Kamakshi L, behind City Police Stn, R4B2, SCB ৮০ SAB ১০০ DCB ১৫০ DAB ১৭৫, H Shibshakti, Bus Std, S ৮৫-১২৫ D ১৫০-২০০; সামান্য পুবে H Ajinkia, ৩ 335601, DAB ২০০-৩৫০ A/c D ৪৫০ সুইট ৬৫০; H Safar, D ১৭৫ ২০০ A/c ৫৫০; H Ellora, Tilak Rd,



Aurangabad-431001, STD 0240-য় নানান-ধর্মী হোটেল। রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ড—মুম্বাইয়ের মাঝে অবস্থান এদের। তবুও যেন রেল স্টেশনকে ভর করে শহরের দক্ষিণে স্টেশন রোডেই সাধারণ হোটেল-রেষ্টোরাঁর সমাবেশ। আর স্ট্যান্ডার্ড হোটেলের অবস্থান রেল স্টেশন থেকে বিমানবন্দর ও বাস স্ট্যান্ডমুখী উভয় সড়কে। মহারাষ্ট্র পর্যটন উন্নয়ন দপ্তর ৩ 331513 বসেছে স্টেশন রোডে। ভারত সরকারের Tourist Office স্টেশন রোডের পশ্চিমে। স্বল্পদামে সাধারণ মানের খাবারের নানান হোটেল ও মেসে স্টেশন রোডে। আর উত্তরে বিখ্যাত পুরাতন শহরে বাস স্ট্যান্ড ওরলাবাদে।

৩ 337378, D ১৫০-২২৫; H Shangrila, Nehru Place, opp ST Bus Stand-1, ৩ 334943, SAB ১৫০ DAB ১৭৫-৩৫০; পাশেই H Modi Samrat, ৩ 333547, S ১০০-১৫০ D ২২৫-৩০০ A/c ৬০০-৬৫০; অপুরে H Green, ৩ 335501, DAB ১৫০-২০০ TAB ২৫০; H Karikaya, S ১২৫ D ১৬০-২২৫; বিপরীতে H Debapriya, D ১৭৫-২২৫; পাশেই H Manas, ৩ 330727, DAB ২০০-২৫০; H Devagiri, Airport Rd; H Guru, Paithon Rd; ইয়ুথ হোটেল লাগোয়া H Panchabati, Padampura, SAB ১০০ DAB ১৫০-২২৫, হোটেলটি ভালই, চেক আউট টাইম ২৪ ঘণ্টার; Sakuntala L, Jubilee Park; Dipali L, Milk Comer, D ১৫০-২২৫; Jagadamba L, Milk Comer, D ২০০।

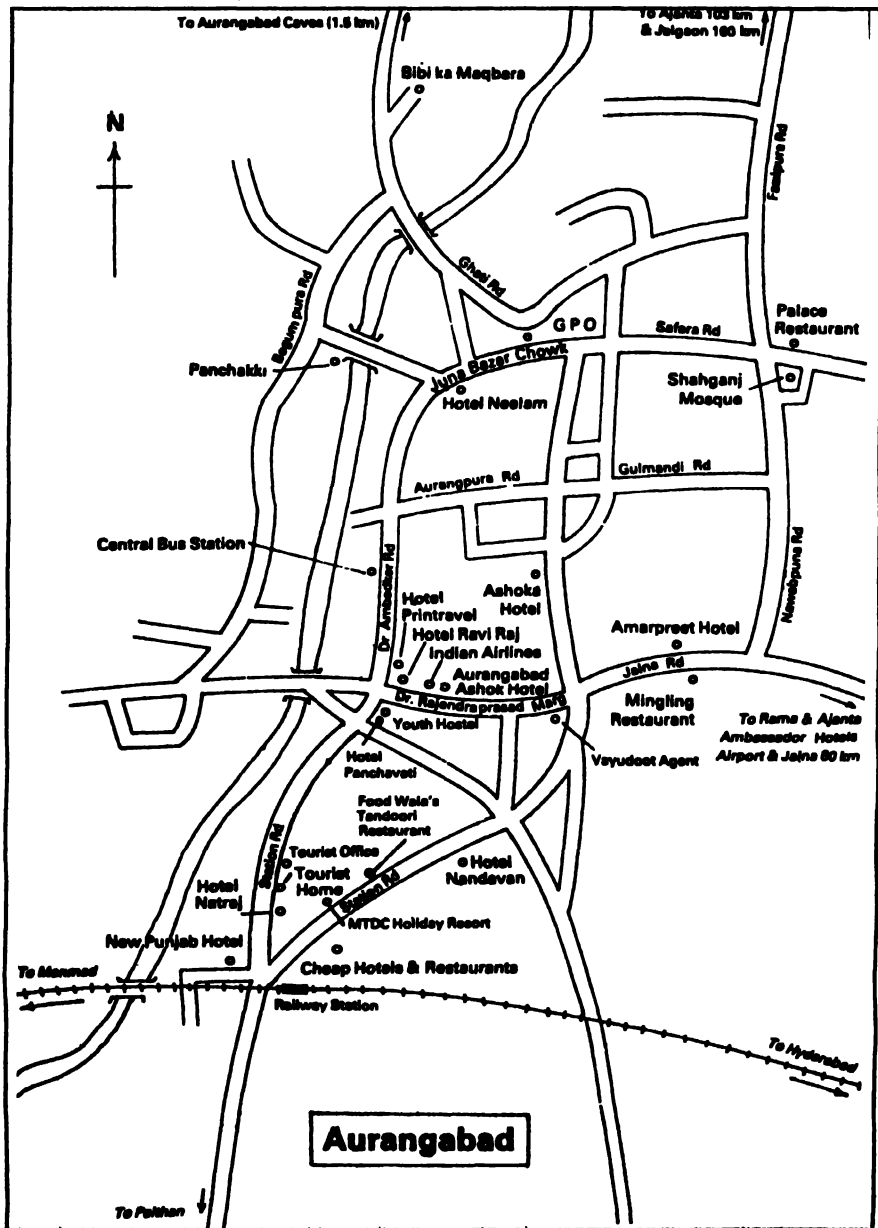
স্টেশন রোডে—*H Rajdhani, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮০০; Quality Inn, Vadant; Holiday Resort, D ২৫০ A/c ৪৫০; Nataraj H, D ১৭৫-২৫০; Ashoka L, Ambika L, New Punjab Lodging, R4B3, DCB ১২৫ DAB ১৭৫; Aurangabad G H, ৩ 330179, D ১২৫-১৭৫; টুরিস্ট অফিসের পাশে Tourist Home, R4B2, SCB ৬৫ SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ১৭৫ ডরমি ৪৫; *H Nandanvan, Rly Stn Rd-1, R1, S ১২৫ D ২০০ সুইট ৩২৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০। এছাড়া H Ranjini, near RTO, DAB ২০০; H Great Punjab, ৩ 336482, D ৩০০ A/c ৪২৫; H Ashok, Tilakpath; Empire H, Juna Bzr, Osmanpura; Samarth L, Samarth Ngr; H Palace, Sahaganj-1, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫; Punjab National H, Pandariba; Gitanjali G H, behind GPO-1, DAB ১২৫-২০০; সরাসরি, ডিউ কাক, উদীপী, পুর্নিমা, সবেরা, হোটেল পুনম, পরিমল লজ, বৈভব লজ, হোটেল অক্ষমেধ ছাড়াও আরও নানান হোটেল আছে ওরলাবাদে; S ৬০-১৫০ D ১২৫-২২৫ টাকায় মেলে এদের কাছে।

আর আছে সার্কিট হাউস, অব: EE; মিউনিসিপ্যাল ট্রাভেলার্স বারো, স্টেশন রোড, অব: Municipal Engineer; MTDC-র Holiday Resort, Stn Rd, ৩ 331513, A10R4B6, ১২টি ২ বেডের অজন্তা সুইট ২৫০, ৬টি ২ বেডের A/c ৪০০, ১৪টি ২ বেডের ইলোরা সুইট ২২৫, ১৬টি ৪ বেডের কমন বাথের ২০০ শয্যা ছাড়া ডরমি ২০। মহারাষ্ট্র টুরিজমের দপ্তরও বসেছে হুপিডে রিসর্টে। অব: Senior Executive, Regional Office, MTDC, Station Rd, Aurangabad-431001-কে টকল সহ duplicate চিঠি পাঠিয়ে লিখুন। কলকাতা-তে ট্যার ও মুম্বাই-এর বাস টিকিট Senior Executive-কে মাসাফিকল আইন MO-তে টকল পাঠিয়ে বুক করা যায়। আবার MTDC, Express Tower, Nariman Point-কেও লেখা যেতে পারে বুকিং-এর জন্য। আর আছে রেল স্টেশন থেকে ১১ বাস থেকে ১ কিমি দূরে পদমপুরার ৪০ বেডের Youth Hostel, মেলে ও মেয়েদের পৃথক পৃথক ডরমিটে থাকার ব্যবস্থা; ১টি ৩ বেডের ঘরও আছে এদের। আহাৰ্য্য মেলে রাতে। রেলের রিটার্নিং কন্ড আছে ওরলাবাদে। ধর্মপুর্নাল আছে রেল স্টেশনের বিপরীতে—সারনাথ, বালারী মন্দির ও ঐতিহাসিক; পুরাতন বাজার বাস স্ট্যান্ডে জৈন।

খাবার হোটেলও আছে নানান ওরলাবাদে। রেল স্টেশনের কাছে স্টেশন রোডে নামে সজা হলও—মেহু, পুর্নাল ও পঞ্চাৎ হোটেল-এ আহাৰ্য্য ভালই। ডেমাই তরুণী রেষ্টুরেন্ট-এর পাঞ্জাবি

ডিশ বা প্রিন্ট্রাভেলের বিপরীতে কুড ওয়ালার ডোজ-এর থালি প্রথায় নিরামিষ আহাৰ্যে যথেষ্ট সুনাম। দক্ষিণী আহাৰ্যও মেলে

ডোজে। স্টেশন রোডে (পূব) হলিডে রিসর্টের শিহেও শাখা আছে ডোজের। জালনা রোডে হোটেল অমরপ্রীতের বিপরীতে



‘Nanking Chinese Restaurant’ (১১—২৬-০০) বা ‘Nanking Chinese Restaurant’-এর চীনা ডিশের যথেষ্ট প্রশংসা বা ‘Shaoen Chinese Restaurant’ (১০—১৫-০০, ১৯—২৪-০০)-এরও যথেষ্ট সূখ্যতি চীনা ডিশে।

ঔরঙ্গাবাদ শহরের প্রতিষ্ঠাতা মালিক অম্বর আজ ইতিহাস বিস্মৃত নাম। ছেলের নামে অজৈতের খিড়কি হয় ফতেনগর। তবে, প্রতিষ্ঠাতার নামের সঙ্গে সঙ্গে শহরের পুরাতন নামটিও আজ বিস্মৃতির অতলে তলিয়ে গেছে। ঔরঙ্গজেব মোগলী দরবারের দক্ষিণ ভাবতীয় ভাইস রিগ্যালের মূল দপ্তর বসান। নাম করেন তার ঔরঙ্গাবাদ—নিজ নামে নাম। প্রাচীরে ঘেরা ছিল শহর। মুসলিম কৃষ্টির ছাপ রয়েছে ২২০০ বছরের প্রাচীন ঔরঙ্গাবাদে। লাখ ছয়েক লোকের বাস। পাঁচমিশেলীর বাস হলেও সংখ্যায় মুসলিম আধিক্য।

শহর থেকে ১৩ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ইলোরার পথে পিরামিড ধর্মী পাহাড়ে দৌলতাবাদ দুর্গ। ১১৮৭তে যাদব রাজা ভিল্লমার তৈরি। তখন নাম ছিল এর দেবগিরি অর্থাৎ দেবতাদের বাসভূমি। ১২৯৪এ আলাউদ্দিন খিলজির দখলে যায় দেবগিরি। তবে অধীনতা স্বীকারে দুর্গ ফিরে পান যাদবরাজ। ১৩০৬এ দ্বিতীয় আক্রমণ আলাউদ্দিনের সেনাপতি মালিক কাফুরের। আর ১৩১৭য় রামচন্দ্রের পরাজয়ে দৌলতাবাদের দখল যায় আলাউদ্দিনের হাতে। তারও পরে ১৩৩৮এ মহম্মদ বিন তুঘলকের দখলে যেতে তিনি রাজধানীও স্থানান্তরিত করেন সুদূর দিল্লী থেকে দেবগিরিতে। ফরমান বলে প্রজারাও সঙ্গী হয়ে তার। আর নামেরও বদল ঘটে—দেবগিরি হয় দৌলতাবাদ অর্থাৎ সৌভাগ্যের নগরী। ১৭ বছর পর ফিরে যান মহম্মদ দৌলতাবাদ থেকে দিল্লী। তারও পরে ১৬৩১এ ১০ লক্ষ টাকা ঘুষ দিয়ে দৌলতাবাদ দখল করেন শাজাহান। আর ১৬৩৬এ হিন্দু রাজাদের প্যাতিভিলিয়নটি শাজাহানের প্রিয় আবাস হয়।

চারপাশের সমতলে ৫ কিমি দীর্ঘ মজবুত প্রাচীরে ঘেরা ১৬৬মি উঁচু এক পাহাড় চূড়ায় সেকালের দুর্ভেদ্য এই দুর্গের একপাশ পাহাড় আর অপরপাশ গড় বা পরিখায় পরিবৃত। এর নির্মাণকৌশলে অভিনবত্ব আছে। ঘনাককার দীর্ঘগথে শক্তনাশের প্রথাটিও অভিনব। যিমুখী পথের (মক্কা ও রোজা) একটি মিলেছে গরম তেলে, দ্বিতীয়টি হিঙ্গে কুমিরে আকীর্ণ গভীর পরিখার জলে। পরিখার সেতুটিও সেকালে গুটিয়ে নেওয়া যেত দুর্গ থেকে। দেউড়িতে তালি দিলে তার আওরাজ পৌছার পাহাড় চূড়ার দুর্গে। দুর্গের ৬০মি উঁচু চাঁদ বিনারটি দক্ষিণ ভারত জয়ের স্মারকরূপে ১৪৩৫ খ্রিস্টাব্দে তৈরি করেন আলাউদ্দিন বাহমনি। বিপরীতের মসজিদটি জৈন মন্দিরের ধ্বংসাবশেষের উপর গড়ে উঠেছে। সর্বোচ্চ নীলাভ টালিতে তৈরি জীর্ণ চিনি মহল প্রাসাদ। গোলকুণ্ডার শেষ নবাব আবুল হাসান শাহ-র

সময় সঙ্গী : ৯৭-৯৮/৩৩

আমৃত্যু বন্দীজীবনও কাটে (১৩ বছর) চিনি মহলে। সবশেষে ঔরঙ্গজেবের নামাঙ্কিত ৬মি লম্বা ৫ ফাটর মিশ্রণে তৈরি কামানটি আর এক দৃষ্টব্য। আরও বেতে ফুলফুলিয়া—মৃত্যুদণ্ড প্রাপ্তদের ফুলিয়ে এনে ফেল দেওয়া হত গভীর খাদে। সর্বোচ্চ যাদব রাজাদের তৈরি বিকুর পাদপদ্ম। এক কোণে বারুদ ঘর। চারপাশও সুন্দর দৃশ্যমান দুর্গ থেকে। সম্প্রতি একটি শিবমন্দির আবিষ্কৃত হয়েছে খননে। শিবলিঙ্গের থেকেও প্রাচীন জৈন তীর্থঙ্করের একটি মূর্তিও মিলেছে। তবে, প্যাকেজ ট্যুরের ব্যতীতের নির্ধারিত সময়ে দুর্গ দেখে ওঠা অসম্ভব হয়ে পড়ে।

আর রয়েছে ৭ কিমি দূরে শহরান্তে দক্ষিণাভ্যন্তর বাকাতক রাজাদের অর্ধনুকূল্যে তৈরি ঔরঙ্গাবাদ গুহা। ৭ শতকের মহাবানপন্থী বৌদ্ধ চেতা ও বিহার এটি। সংখ্যায় ১২, ২টি ভাগে গড়ে উঠেছে। ওয়েস্টার্ন গ্রুপে ১-৫-এর অবস্থান। বর্গাকার গুহা ৩ সুসজ্জিত, ১২টি স্তম্ভে ভর করে দাঁড়িয়ে। জাতকের কাহিনী সম্বন্ধ করেছে গুহাটিকে। গুহা ৪ এদের মধ্যে চেতাধর্মী, বাকিগুলি বিহারধর্মী। ১ কিমি দূরে ইস্টার্ন গ্রুপের ৬-১০-এর অবস্থান। স্থপত্যে ও ভাস্কর্যে ৬ ও ৭ নম্বর গুহা দুটি অনবদ্য। গুহা ৬ আজও অটুট। বুজের সাথে হিন্দুর দেবতা গণেশও মূর্তি হয়েছেন ৬-এ। বেশ বিন্যাস ও অলঙ্করণে নারী মূর্তিটি উল্লেখ্য। তবুও যেন গুহা ৭-এর ভাস্কর্য অভিনবত্বে ভরা। ৭-এর বামে মুক্তির সন্ধানে বোহিসস্থ। মূর্তি হয়েছে অটি রিপু—fire, sword of the enemy, chains, shipwreck, lions, snakes, mad elephants, demon. বাকিগুলির অবস্থান আরও পূর্বে—আকর্ষণে উল্লেখ্য নয়। প্যাকেজ ট্যুরে ঔরঙ্গাবাদ গুহা অচ্ছুৎ। উৎসাহীদের এককভাবে অটো বা ট্যাক্সিতে দেখে নেওয়া উচিত হবে।

শহর থেকে ৫ আর গুহার ৩ কিমি দক্ষিণে ঔরঙ্গজেবের প্রথমা সমাজী রাবিয়া-উদ-দুয়ানীর সমাধি বিবি কা মকবারার আকর্ষণ কম নয়। এই সমাধির উপর আগ্রার তাজের অনুকরণে গরিবের তাজমহল গড়েন শাজাহান—পূর্বে ঔরঙ্গজেব ১৬৫৭-৬৯এ। হিম্মতে, ঔরঙ্গজেবের পুত্র আজম তৈরি করেন মায়ের সজ্জিত ধনে এই সমাধি সৌখ। খরচ পড়ে ৬৬৫২৮৩ টাকা ৭ আনা। এটি দক্ষিণ ভারতের তাজ নামে সমধিক খ্যাত। তবে সৌকুমার্য বা গরিমার আগ্রার তাজের থেকে যথেষ্ট নিম্নত। পরিমিতিবোধেরও অভাব সারা স্থাপত্যে। তবে, জালি, ফুল-লতা-পাতার ইন-লে অলঙ্করণ সুন্দর। তেমনিই সুন্দর হিন্দু মন্দির স্থাপত্য-শৈলীর নিদর্শন মকবারার পেতলের দরজার অলঙ্করণ। সূর্যোদয় থেকে ২০-০০টা পর্যন্ত খোলা, টিকিট লাগে দর্শনে। শুক্রবার ফ্রি। আর নবতম আকর্ষণ প্রতি অক্টোবরে MTDC-র Bibi Ka Maqbara উৎসব।

নল বেয়ে জল নামছে পাহাড়ী স্রনা থেকে। আর সেই জলের স্রোতে চাকি ঘোরানো হতো শস্য পেহার। নামটি

তাই পানি চাকি। তবে জলাভাবে চাকি বন্ধ আজ। ১৬২৪ খ্রিস্টাব্দে চাকির বঁটা মুসলিম ফকির ঔরঙ্গজেবের ধর্মগুরু বাবা সাহী মুজফফর শাহীর সমাধিও রয়েছে চক্রে। চক্করের বাগিচাটি সুন্দর, মাছও আছে জলাধারে।

ইলোরার পথে ২৫ কিমি যেতে খুলদাবাদ তথা স্বর্গীয় বাসভূমে ঔরঙ্গজেবের সমাধি। ১৭০৭এ মৃত্যু হতে সম্রাটের ইচ্ছায় নিজ শ্রমে (কোরান থেকে কপি) উপার্জিত অর্থের রূপ পেয়েছে। আলমগীর দরগার অঙ্গনে নীল আকাশের নিচে সৌখীন অনাড়ম্বর সমাধি ঘিরে পাথরের জালির সংযোজন ঘটেছে হায়দ্রাবাদের নিজামের হাতে। লাগোয়া কারবালায় শায়িত রয়েছেন মালিক অধ্বর ছাড়াও ইতিহাসের নানানজনা। পয়গম্বর মহাম্মদের একটি আঙুরাখও রয়েছে এখানে। অদূরে মোগল বাগিচা—রানী বেগম কা বাগ। খুলদাবাদ থেকে আরও ১৪ কিমি দূরে মহিষমল। চড়ুই-ভাতির মনোরম পরিবেশ। থাকার জন্য MTDC-র হলিডে রিসর্ট আছে।

ইলোরা গুহা: ঔরঙ্গাবাদ শহর থেকে ২৮ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে অর্ধচন্দ্রাকারে দাঁড়িয়ে আছে ভারতের তৃতীয় আশ্চর্য ইলোরা গুহা। শহর থেকে প্যাকেজ টারে বা বাস স্ট্যান্ডের ৪ প্ল্যাটফর্ম থেকে সার্ভিস বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। অজস্তার মতো আলোর কোনো ব্যবস্থা নেই ইলোরায়। সঙ্গে টর্চ থাকা ভাল। তবে গুহাগুলি পশ্চিমমুখী হওয়ায় দিনের শেষার্ধে সূর্যালোকে যথেষ্ট আলোকিত হয় ইলোরা। উচিতও হবে বৈকালীন সফরে ইলোরা দেখে নেওয়া। তেমনই উচিত হবে একই দিনে অজন্তা ও ইলোরা না দেখা। নিখরচায় গাইডও মেলে প্রকৃতপক্ষে দপ্তর থেকে অজন্তা ও ইলোরায়।

ইলোরার গুহাগুলিও পাহাড় ঢালে ৭ থেকে ১২ শতকে বৌদ্ধধর্মের পড়ন্ত-বেলায় ‘বাসলট রক’ কেটে উত্তর থেকে দক্ষিণে ২ কিমিরও অধিক ব্যাপ্তিতে তৈরি। এটি বিহার বা মনাস্তুধর্মী গুহামন্দির। মন্দিরের সংখ্যা ৩৪। আর্কিও-লজিস্টরা বলেন ২ লক্ষ টন পাথর বেরিয়েছিল এই গুহামন্দির তৈরি করতে। ৭০০০ শ্রমিকের ১৫০ বছরের নিরলস শ্রমে তৈরি। অজস্তার মতো ছবির অভাব থাকলেও এর ভাস্কর্য অতুলনীয়। ১০ম শতকে আরবদেশীয় ভূতাত্ত্বিক মাসুদির কাছে ইলোরার প্রথম উল্লেখ মেলে। আর স্যার জেমস ফার্ডিনান্দ বলেছেন—ইলোরা ভারতীয় কলাশিল্পের এক বিশ্ময়কর নিদর্শন। দর্শকদের বিষয়ে অভিভূত করে এর অনুপম ভাস্কর্য। হিন্দু, বৌদ্ধ ও জৈন ধর্মের সমন্বয় ঘটেছে এর ভাস্কর্যে। দক্ষিণমুখী প্রথম ১২টি বৌদ্ধ, মাঝের ১৭টি হিন্দু আর উত্তরমুখী শেষ ৫টি জৈনধর্মী। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ৯—১৭-৩০টা খোলা থাকে ইলোরা। ছবি তোলায় ফ্ল্যাশ ব্যবহার বা ভিডিও স্যুটিং-এর জন্য অনুমতি লাগে—Supdt Archaeologist, Sion Fort, Mumbai-400022, ☎ 4071102 থেকে।

বৌদ্ধগুহা (৬০০-৮০০) ১—১২: দক্ষিণী ১ নম্বর গুহাটি স্ফাবতই প্রাচীনতম। ৫ নম্বর বিহারধর্মী ১১৭x৫৬ ফুটের গুহাটি বৌদ্ধ গ্রুপে বৃহত্তম। ভিক্টোরের ক্রাসদ্বর ছিল সেকালে। ২৪টি পিলারে ভর রেখেছে সিলিং। ৬-এ হিন্দুর দেবী সরস্বতী—বিমতে, বৌদ্ধ মহামায়ুরী হয়ে থাকবেন ইনি। ভাস্কর্যময় মন্দিরের গর্ভগৃহে বুদ্ধ। বৌদ্ধ শ্রমণদের বাসের জন্য গড়া অনাড়ম্বর ৭।৮-এর গর্ভগৃহে পার্বদ পরিবৃত হয়ে বেদিতে বসে বুদ্ধ। বুদ্ধের ডইনে চতুর্ভুজ পদ্মপাণি। বামে অনুচরসহ বজ্রপাণি দাঁড়িয়ে। প্রদক্ষিণ পথের দেওয়ালে দেবী সরস্বতীর মূর্তিটিও সুন্দর। ১০ নম্বর গুহাটি একমাত্র বৌদ্ধ ভজ্ঞালয় অর্থাৎ চেতা গুহা। খোদাই করা কড়িকাঠ হয়েছে সিলিং-এ। ধর্মচক্র মুদ্রায় বিরাটাকার বুদ্ধমূর্তি; সুপ হয়েছে ৯মি উঁচু। আলো আসছে অশ্বকুরাকার অলিন্দ থেকে। হিন্দু দেবদেবীরও সমাবেশ ঘটেছে গুহা দশে। বিশ্বকর্মার নামে উৎসর্গিত, নামটিও তাই দশের বিশ্বকর্মা বা কাপেটসিঁস কেড। ১১তে দূতল অর্থাৎ ষি-তলিকা। ১২তে তিন তল অর্থাৎ ত্রি-তলিকা মঠ। সহজ সরল বহির্ভাগ, ৫০ ফুটের মতো উঁচু; বিরাটাকার উপবিষ্ট বুদ্ধমূর্তি। ভাস্কর্যের প্রাচুর্য ঘটেছে অন্দরে। দেওয়ালও চিত্রিত। হিন্দু-তাত্ত্বিক প্রভাব প্রতীয়মান।

হিন্দু গুহা (৯০০) ১৩—২৯: প্রথম গুহা অনাড়ম্বর ১৩টপকে ১৪য় পৌছান। ১৪তে হিন্দু পুরাণের দেবদেবীদের অভিনব সমাবেশ ঘটেছে। সারা গুহাময় শিব—তিনি কখনও দৈত্যবধ করছেন, কখনও মহিষাসুর বধের আনন্দে তাণ্ডব নৃত্যে মগ্ন; আবার কখনও-বা স্ত্রী পার্বতীর সঙ্গে পাশা খেলছেন। দুর্গারূপে পার্বতীর উপস্থিতি ঘটেছে। সদাশয় বিষ্ণু ধ্যানমগ্ন, বরাহ অবতার মূর্তিতেও মূর্ত হয়েছে বিষ্ণু। বিষ্ণু-জায়া লক্ষ্মীদেবীও পৌছেছেন গুহামন্দিরে। ছেলের দল খেলেছে শিবের বাহন নন্দীর সঙ্গে। হাতির পিঠে ইন্দ্র, গণেশ ছাড়াও নানান দেবতা, শম্ভুমাতৃকারাও হাজির গুহায়। এতসবের মাঝে রাবণ কৈলাস তুলতে ব্যস্ত। গুহা ১নম্বর ১৫ অর্থাৎ দ্বিতল গুহায় দশ অবতার—নানানরূপে শিবঠাকুরের উপস্থিতি ঘটেছে। শিবঠাকুর ও পার্বতীর বিয়ের দৃশ্যও মূর্ত হয়েছে প্যানেলে। শিবের বাহন নন্দী আধুনিকতার প্রতিচ্ছবি হয়ে মূর্ত। শিবের কোলে পার্বতী, পদ্মহাতে বিষ্ণু, চতুর্ভুজা ভবানী, তপস্যারত দেবী কালীকী, অর্ধনারীশ্বর ছাড়াও নানান ভাস্কর্যে মণ্ডিত ১৫। বিষ্ণু ৫ ফণার সর্পসজ্জায় বিশ্রামরত। বামনও নৃসিংহরূপে উপস্থিতি ঘটেছে বিষ্ণুর। কুমির থেকে বিষ্ণুর হাতি উদ্ধারের দৃশ্যটিও অভিনব।

১৬ অর্থাৎ কৈলাস গুহাও স্থাপত্যে, ভাস্কর্যে ও গঠন সৌন্দর্যে অভিনব গুহা। আকারে যেমন বৃহত্তম, অন্যতমও বটে ইলোরার এই মনোনিবিষ্ট কৈলাস গুহা। গুহা ইলোরার কেন বিশ্বের বৃহত্তম আর সর্বোৎকৃষ্ট ভাস্কর্যের গুহা-মন্দিরও এই কৈলাস। আকারে যেমন বৃহত্তম, অন্যতমও বটে ইলোরার এই মনোনিবিষ্ট কৈলাস গুহা। গুহা ইলোরার কেন বিশ্বের বৃহত্তম আর সর্বোৎকৃষ্ট ভাস্কর্যের গুহা-মন্দিরও এই কৈলাস। আকারে যেমন বৃহত্তম, অন্যতমও বটে ইলোরার এই মনোনিবিষ্ট কৈলাস গুহা। গুহা ইলোরার কেন বিশ্বের বৃহত্তম আর সর্বোৎকৃষ্ট ভাস্কর্যের গুহা-মন্দিরও এই কৈলাস।

(প্রথম)-র হাতে ৮ শতকে ৭০০০ শিল্পীর অনলস শ্রমে ১৫০ বছর ধরে তৈরি শিবঠাকুরের গ্রীষ্মাবাস—মাউন্ট কৈলাস। দৈর্ঘ্য-প্রস্থ ৮২৪৭ মি, উচ্চতা ৩০ মি। কাজ হয়েছে উপর থেকে নিচে। ২ লক্ষ টন পাথর বেরিয়েছে কৈলাস গড়তে। সামনেই প্রবেশপথে হাঁটু ভেঙে বসে বিরাটাকার পাথরের দুই হাতি, দু'পাশে ৫০ ফুট উঁচু দুই ধ্বজস্তম্ভ। রাবণ কৈলাস পর্বতকে মাথায় তুলে বিক্রম দেখাতে ব্যস্ত। আত্মভোলা শিব পার্বতীকে সঙ্গে নিয়ে ঠায় বসে। নিচুতে চাপা পড়েছে দাণ্ডিক রাবণ। অদূরে নন্দী। নৃসিংহ অবতাররাণী বিষ্ণুও হাজির। শ্রীরামের লক্ষাবিজয়, কুরুক্ষেত্রের যুদ্ধ, চতুর্ভুজ নারায়ণ, চতুর্ভুজ ব্রহ্মা, চতুর্ভুজা অমরপুর্ণা, নন্দীপৃষ্ঠে চতুর্ভুজ শিব, অর্ধনারীশ্বর, সপ্তমাতৃকার পদতলে কালভৈরবের রুদ্রমূর্তি ছাড়াও পৌরাণিক চিত্র, নানান দেবদেবী ও জীবজন্তুর মূর্তিকে প্রাণবন্ত করে তোলা হয়েছে পাথরকূঁড়ে কৈলাসে। ৬৪ ফুট দৈর্ঘ্যের ডুমারলেনা অর্থাৎ গুহা ১৭য় শিব ছাড়াও নানান দেব-দেবী মূর্তি হয়েছেন। ১৮র দেওয়াল, স্তম্ভ, তোরণ, গর্তমন্দির অনাড়ম্বর। ১৯ বিধস্ত। ২০তেও দেবতা শিব—দরজার ভাস্কর্য অনবদ্য। ২১ অর্থাৎ রামেশ্বরেও শিব-পার্বতীর বিয়ের দৃশ্য মূর্তি হয়েছে ভেতরের দেওয়ালে। পাশা খেলছেন শিব-পার্বতী। আর আছে নন্দী; মকরবাহিনী অর্থাৎ কুমিরপিণ্ডে গঙ্গা-যমুনারও উপস্থিতি ঘটেছে। ২২ অর্থাৎ নীল-কণ্ঠেও নানান দেবতা। গর্তমন্দির গাড় নীল রঙ। আকর্ষণে মান গুহা ২৩ ও ২৪ দুটিই ভাস্কর্যহীন। গুহামন্দির কুণ্ডওয়াড়া অর্থাৎ ২৫-এ সপ্ত অশ্চালিত রখে সূর্যদেব। নদী নামছে পাহাড় থেকে মর্ত্যে জলপ্রপাতের মতো। ২৬ উন্মেষ্য না হলেও ২৭ অর্থাৎ গোয়ালিনী গুহায় নানান দেব-দেবীর ভাস্কর্যে অভিনবত্ব আছে। ২৮-এর গর্তমন্দিরের দেওয়ালে সুন্দর অষ্টভুজা দেবীমূর্তি মূর্তি। নানান দেব-দেবী শোভিত ২৯ অর্থাৎ সীতা নাহালী যেন এলিফ্যান্টার প্রতিচ্ছবি। শিব এখানে ধ্বংসের দেবতা। মূর্তি ও মন্দির দুইই বিশালাকার।

জৈন গুহা (৮০০-১০০০) ৩০—৩৪: আরও উত্তরে সর্বশেষে তৈরি ইলোরার জৈন গুহা। জৈন গুহাগুলি আকার ও আয়তনে উন্মেষ্য না হলেও ভাস্কর্যে অতুলনীয়। গুহা ১৭ অর্থাৎ কৈলাসেরই প্রতিরূপ গুহা ৩০ অর্থাৎ অসম্পূর্ণ ছোট কৈলাসের ভাস্কর্য নিচুমানের। ইক্সসভা সংলগ্ন ৩১-ও অসম্পূর্ণ। সম্ভবত, অতি কঠিন পাহাড়হেতু পরিত্যক্ত হয়। গুহা ৩২ অর্থাৎ ইক্সসভার ভাস্কর্য সুন্দর। ২০০ ফুটের এক পাহাড়কূঁড়ে তৈরি দ্বিতল এই মন্দিরে স্বর্গের দেবতা দেবরাজ ইন্দ্রের বিধানসভা বসেছে। অনাড়ম্বর একতলা পেরিয়ে দ্বিতলে উঠতেই পার্শ্বনাথ, গোমতেশ্বর, জৈন তীর্থঙ্করের উপস্থিতি উন্মেষ্য। আর আছে মন্দিরে জৈন ধর্মের প্রবর্তক ২৪তম তীর্থঙ্কর উপাধি বর্ধমান মহাশ্বর। ভাস্কর্য ও সিলিং-এর চিত্র অনবদ্য। আর ৩৩-এ বসেই অগ্নিগোত্র সত্তা। বরিশেরই রুমকোডে অগ্নিগোত্র সত্তার ভাস্কর্য সুন্দর। নানান ভাস্কর্যমণ্ডিত ৩৪ আকারে হোট হলেও আকর্ষণে উন্মেষ্য।

আর পাহাড়কূঁড়ে মূর্তি হয়েছে ৫মি উঁচু পার্শ্বনাথ স্বামী।

তবে, সময় ও ক্লাসিতে প্রতিটি গুহামন্দির দেখা সম্ভব নয়—তাই ৬, ১০, ১১, ১২, ১৪, ১৫, ১৬, ২১, ২৯, ৩২ ও ৩৪ নম্বর গুহাগুলিতেই ইলোরার দর্শনের স্বাদ মিটিয়ে নিতে পারেন পর্যটকরা। ইলোরার নবতম আকর্ষণ মার্চের তৃতীয় সপ্তাহে MTDC আয়োজিত ইলোরার ফেস্টিভ্যাল।

ইলোরার সামান্য উচ্চে কৈলাসের শিরে নতুন করে ২৮টি গুহা আবিষ্কৃত হয়েছে। আশা জেগেছে আরও গুহা আবিষ্কারের। তৈরি এগুলি ৯-১৩ শতকে। তেমনই আবিষ্কৃত হয়েছে ইলোরাতে খ্রি:পূ ২ থেকে খ্রিস্টাব্দ ৫-এর নগরী। আবিষ্কৃত হয়েছে সাতবাহন রাজাদের কালের নানান নিদর্শন ইলোরার মাটির নিচে। আর নির্জনতা যারা ভালবাসেন তাদের থাকারও ব্যবস্থা আছে গুহার কাছেই *Kaulash H, ৩ কিমি দূরে Khuladabad State GH ও Local Fund Travellers Bungalow-য়, আহাৰ্যও মেলে; অবু: MTDC, Aurangabad বা Mumbai.

ইলোরা গুহা থেকে ১ কিমি দূরে ভেলুর গ্রামে পবিত্র হিন্দুতীর্থ গৃধ্রলেশ্বর। দ্বাদশ জ্যোতির্লিংগের মধ্যে প্রাচীনতম। অতীত মন্দির ধ্বংস পেতে ১৮ শতকে মহারাষ্ট্রের রানী অহল্যাবাই হোলকারের নতুন গড়া মন্দিরে জ্যোতির্লিংগ শিব দেখে নেওয়া যেতে পারে। মহিলাদের প্রবেশ অবাধ হলেও পুরুষদের উর্ধ্বাঙ্গ অনাবৃত রেখে প্রবেশের রীতি। কনডাকটেড ট্যুরে বাস যাচ্ছে মন্দির দেখাতে। গৃধ্রলেশ্বর উদ্যানটিও আর এক দৃষ্টব্য। তবুও যেন কিছুটা স্তিমিত ইলোরা ও অজন্তার ভিড়ে গৃধ্রলেশ্বর।

কেনাকাটা: এছাড়া অতীতের হস্তশিল্প হিমরু আজ লুপ্ত হলেও ঔরঙ্গাবাদের আর এক আকর্ষণ ঔরঙ্গাবাদী কিংখাং সিন্ধু তথা বয়নশিল্প। তেমনই সোনা ও রূপোর কারুকার্যখচিত পাইথন শাড়িও কিনতে পারেন ঔরঙ্গাবাদের দোকানপাটে। বাঙালি ললনার বেনারসীর মতো মহারাষ্ট্রীয় মেয়েদের শাড়ির অঙ্গ এই পাইথন শাড়ি। অতীতে হুকা ও রেকাবীতে ব্যবহৃত হলেও আজ ব্যাপকতা পেয়েছে বিদ্যী শিল্প। বিদ্যীর আভরণও উন্মেষ্য। কোম্পানির শো-রুমে কিনে ঔরঙ্গাবাদ ভ্রমণের স্মারকরূপে সঙ্গী করা যেতে পারে।

পাইথন : ঔরঙ্গাবাদ থেকে বাসে ৫১ কিমি দক্ষিণে সাধক একনাথের জন্মস্থান পাইথন বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। খ্রি:পূ ২ থেকে খ্রিস্টাব্দ ২ সাতবাহন রাজাদের রাজ্যপাট ছিল পাইথনে। ৫টি ছোট পাহাড়, বয়ে চলেছে গোদাবরী নদী সর্পিণ গতিতে। পরিবেশ সুন্দর। সাথকের জন্মসূত্রে মঠ হয়েছে। সুন্দর কারুকার্যময় মন্দিরও রয়েছে বেশ কয়েকটি পাইথনে। আর আছে কিংখাং সিন্ধু কারখানার নরনগোভন সোনা ও রূপোর জরি খচিত পাইথনী শাড়ি। প্রকৃতি প্রেমিকদের কাছে জরুরি গুহাগুলি বীথটিও আর এক দৃষ্টব্য। চেনা-অচেনা নানান ধর্মীয় মেলো বসে নাথসাপরে।

আহমেদনগর: উৎসাহীরা ঔরঙ্গাবাদ-পুনে সড়কে পুনে থেকে ৮২ আর পাইথনের ৮৭ কিমি দূরে আর এক অতীত রোমহুনে করে চলতে পারেন। বাহমনি রাজ্য ভেঙে যেতে বিজাপুর, বিদার, গোলকুণ্ডা, গুলবর্গার সাথে ১৪৯০ খ্রিস্টাব্দে আহমেদ নিজামশাহীর হাতে গড়ে ওঠে আহমেদনগর দুর্গ ও আলমগীর দরগা। শিবাজীও আমুল সংস্কার করেন দুর্গের। ১৭০৭এ ঔরঙ্গজেবের (৯৭ বছরে) মৃত্যুও ঘটে এখানে। আরও পরে ব্রিটিশ কারাগার গড়ে দুর্গে। এমনকি জওহরলাল নেহরু ডিসকভারি অব ইন্ডিয়া গ্রন্থে ১৯৪২এর বন্দী জীবনে ব্রিটিশের এই কারাগারে। ৯ কিমি দূরে চাঁদ বিবি মহল, ফারাবাগ ও দশনিয়া। বাস চলে ঔরঙ্গাবাদ ও পুনে থেকে আহমেদনগর।



হোটেলও আছে নানান আহমেদনগরে—*Motel Suvidha*, Nim Gaon Jali, via Loni, Ahmednagar-414001, S ১৫০ D ২২৫ সুইট ৩০০; *Ashoka Tourist H*, King's Gate, Ahmednagar-1, ৩2607, S ১৭৫ D ২৭৫ সুইট ৪০০ A/c D ৫৫০; *H Nataraj*, Nagar-Aurangabad Rd., ৩26576, D ১৫০-২২৫ A/c ৩৫০; *H Sablok*; *H Sanket*, Tilak (Station) Rd, Ahmednagar-1, ৩28701, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮০০। আর আছে MTDC-র হোটেল মাছের।

নানডেড



মনমদ-ঔরঙ্গাবাদ-জালনা-পার্বনী পূর্ণা ব্রডগেজ রেলের ঔরঙ্গাবাদ থেকে ২৬৬ কিমি দূরে নানডেড স্টেশন। ঔরঙ্গাবাদ থেকে ১৭-৪৫এ মনমদ-মুডখেন এক্স, ১০-১০এ ঔরঙ্গাবাদ-নানডেড প্যাসেঞ্জার, ১৩-৪০এ মুম্বাই-নানডেড তপোবন এক্স, ৪-৪৫এ মুম্বাই-নানডেড সেবগিরি এক্স, ২ ৪ ৬ দিন ১২-৩০এ অমৃতসর-নানডেড এক্স ৫ ঘণ্টায় নানডেড যাচ্ছে। আবার প্যাসেঞ্জার ট্রেনে পার্বনী পৌছে নতুন করে পারলি-নানডেড প্যাসেঞ্জারেও চলা যেতে পারে নানডেড। মনমদ-সেকেন্দ্রাবাদ/ কাচিগুদা এক্সও যাচ্ছে পারলি-পার্বনী হয়ে। আবার প্যাসেঞ্জারে নানডেডের ২৩ কিমি দূরের মুডখেন পৌছে মুডখেন জং থেকে ৬-৩০এ অজন্তা এক্স, ১৪-১৫এ সেকেন্দ্রাবাদ প্যা, ১-৪০এ আজমের লিঙ্ক প্যা, ২০-২৫এ ফাস্ট প্যা, ২৪-৩০টায় মুডখেন-সেকেন্দ্রাবাদ এক্স ২৭২ কিমি দূরের সেকেন্দ্রাবাদ যাচ্ছে ৬: (৮২ প্যা) ঘণ্টায়। আবার পূর্ণা থেকে ৬-৩০এ জয়পুর যাচ্ছে ৩০:৫ ঘণ্টায় ৭৭৭০ পূর্ণা-জয়পুর এক্স। নানডেড থেকে মনমদের দূরত্ব ৩৭৯, মুম্বাই ৬১১, পূর্ণা ৩০, কাচিগুদা ১৮০ কিমি। বাসও চলে এপথে। বাস আসছে ৬৪ কিমি দূরের আর্থুথ থেকে জেলা সদর নানডেডে।

গোদাবরী নদীর তীরে শিখ সম্প্রদায়ের ১০ম বা শেষ গুরু গোবিন্দ সিংয়ের স্মৃতি বিজড়িত নানডেড পবিত্র শিখ-তীর্থ। ১৫ম শিখ গুরু তেগবাহাদুরের পূর্ব ১০ম গুরু গোবিন্দ সিং ৪১ বছর বয়সে (১৬৬৬-র ২৬শে ডিসেম্বর পটিনায় জন্ম) দাক্ষিণাত্য ভ্রমণে বেরিয়ে বৈরাগী সাধু মাধো দাসের ডেরায় আশ্রয় নেন নানডেডে। উত্তরকালে খালসা ধর্মদীক্ষা

নিয়ে শিখ গুরুর বান্দা হলেন মাধো দাস। সেই থেকে আমৃত্যু বাস করেন গুরু এখানে। ১৭০৮এর ২রা অক্টোবর শির-হিন্দের নবাব ওয়াজির খাঁর দূত গুল খাঁর হাতে হুকিরবিদ্ধ হয়ে গুরুর মৃত্যু ঘটে ৭ই অক্টোবর। শিখদের অভাব মেটাতে মৃত্যু পথযাত্রী গুরু গোবিন্দ সিং দশজন শিখ গুরুর মুখ নিঃসৃত অমর বাণীগুলিকে অর্থাৎ হাতে লেখা *গ্রন্থসাহিব*-কে শিখ ধর্মের চিরন্তন গুরু রূপে অভিষিক্ত করেন। রেল স্টেশন থেকে ১২ কিমি দূরে পবিত্র সমাধিভূমে কারুকার্যমণ্ডিত স্বর্ণমন্দিরের আদলে শ্বেতমর্মরে সচ্চরিত্র গুরদ্বার্য গড়েন ১৮৩৭এ পাঞ্জাবকেশরী রণজিৎ সিং। পবিত্র শিখ তীর্থ—প্রধান পাঁচ তখতের এক এই সচ্চরিত্র *শ্রীহৃদ্বর আবহালনগর সাহিব*। গুরু সোনার তরবারি, সোনার ডাগার, তীর-ধনুক ছাড়াও নানান স্মারক রয়েছে গুরদ্বার্য। হোলির পরদিন হোলা খুবই আকর্ষণীয় উৎসব।

এছাড়াও গুরদ্বার্য রয়েছে আরও চার নানডেডে—নাগিনাঘাট সাহিব, হীরাঘাট সাহিব, সঙ্গত সাহিব, শিকার-ঘাট সাহিব। সচ্চরিত্র থেকে ১০ টাকায় ঘণ্টাচারেকের সফরে বেড়িয়েও আনে লাঞ্চারি বাস। থাকা ও আহার্য মেলে প্রতিটি গুরদ্বার্য। তবে, সচ্চরিত্রের তিন শতাধিক ঘরের যাত্রী নিবাসের ব্যাপক ব্যবস্থাপনা সুন্দর। তেমনই ভূজিয়াবাদের *মারোয়াড়ি ধরমশালা*-টিরও প্রশস্তি আছে যাত্রীমহলে। এছাড়াও আছে নানান ধরমশালা ও *Hotel J K, Apsara, Deepak, Rajesh* ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল নানডেডে। চলার পথে জালনাতেও *H Amber*, Post Office Rd, Jalna-431203, ৩21295, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ২৫০ D ৪০০ সুইট ৬০০ ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল মেলে।

শুশিখতীর্থই বা কেন—জনশ্রুতি অতীতকালে হিন্দুর দেবতা বরুণ যজ্ঞ করেন এই পুণ্যভূমিতে। মহামুনি ভৃগুর জন্ম হয় ব্রহ্মার হৃৎকমল থেকে এই নানডেডেই। ভৃগু-পুলোমার সন্তান চ্যবন ও কালে কালে আরও নানান মুনি-ঋষির জন্ম হয়েছে এই পুণ্যভূমে। নাম ছিল জয়গার নওদণ্ডি সেকালে। নানাদেডে নামটি নওদণ্ডিরই রূপান্তর। নামের সাথে সাথে অতীতও লোপ পেয়েছে। নানডেড থেকে বাসে শ্রীদত্তারের জন্মভূমি মাছের-ও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। একাধিক মন্দির ও অতীতকালের দুর্গের জন্য মাছের প্রশস্তি।

আর্থুথ-নাগনাথ

মনমদ/ঔরঙ্গাবাদ-নানডেড/কাচিগুদা রেলপথে ঔরঙ্গাবাদ থেকে ১৭৮ আর নানডেডের ৫৯ কিমি আগেই পার্বনী, আরও ২৯ কিমি গিয়ে পূর্ণা স্টেশন। মনমদ-নান-ডেড ট্রেন যাচ্ছে জালনা-পার্বনী-পূর্ণা হয়ে। পার্বনী বা পূর্ণা থেকে ট্রেন বা বাসে চলা যেতে পারে আর্থুথ-নাগনাথ। বাস আসছে ৬৪ কিমি দূরের নানডেড থেকেও আর্থুথে। বাস আসছে ২১০ কিমি দূরের ঔরঙ্গাবাদ থেকেও। ১৫০০ ফুট

উঁচু আয়ুর্ধনাগরাজ বাসুকির সুরম্য নগরী আজ পৌরাণিক গাথা হলেও নাগরাজের প্রতিষ্ঠিত জ্যোতির্লিঙ্গ আজও বিদ্যমান। দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের প্রাচীনতমও এই নাগনাথ। তবে, মতান্তরও আছে। বন আর পাহাড়, পাহাড় শুধু পাহাড়, চারপাশই পাহাড়ে ঘেরা—শান্ত-শিথিল-সুমধুর পরিবেশে নাগনাথের সুবিশাল মন্দির। অগ্নি শিল্প-সুখমামণ্ডিত মন্দিরটি নাকি সাড়ে পাঁচ হাজার বছরের প্রাচীন। বনবাস-কালে পাণ্ডবরাও এসেছেন আয়ুর্ধে। আর মন্দিরটি নাকি যুগিতির তৈরি খ্রিস্ট পূর্বকালে। দেবতা প্রতিষ্ঠা পান ধ্বংস-ক্লপ থেকে নতুন করে মন্দিরে। উত্তরকালে ঔরঙ্গজেবের কোপানলে ধ্বংস হলেও রানী অহল্যাবাদি সংস্কার করেন আবার। সত্য-দ্বাপর-কলি তিন যুগের স্থাপত্যের নিদর্শন মেলে এর ভাস্কর্যে। উপরিভাগে সত্য, মধ্যভাগে দ্বাপর আর নিচে কলি যুগের প্রভাব। সত্যযুগের অর্ধনারীশ্বর ও ভগবান বিষ্ণুর মূর্তি, তিন জন্তুর চার পা—দু'টি ঢাকতেই মানব মূর্তি, অনবদ্য। মন্দিরও রয়েছে আরও নানান নাগনাথে। কালো কষ্টি পাথরের বিষ্ণু মূর্তিটিও সুন্দর। সামনে তার অমর-লোকের পুণ্য-সলিল অমরোদক পুণ্যকূপ। থাকার ঘর মেলে মন্দির কমিটির যাত্রীনিবাস ও রেস্ট হাউস-এ। আর আছে জিলা পরিষদের রেস্ট হাউস, MTDC-র ২৫ বেডের Holiday Resort, Aundha-Nagnath, Dist-Parbhani-431118, DAB ১৫০ ডর্মি বেড ৪০ শয্যা ছাড়া ১৫ আয়ুর্ধে। তবে আয়ুর্ধ আজ স্থানীয়দের কাছে শুভা নামে খ্যাত।

পারলি-বৈজনাথ

আয়ুর্ধ থেকে পারলী ফিরে ট্রেনে চলা যেতে পারে ৮৫ কিমি দূরের পারলি-বৈজনাথ। ২ ঘণ্টার পথ, ট্রেন যাচ্ছে ব্রড গেজে ৫-৪৫, ১২-৪৫, ১৮-১০, ২০-৩০, ২২-১০, ২৩-০৫-এ পারলী থেকে। ট্রেন আসছে সেকেন্ডাবাদ ৩৫১, ডিকরাবাদ ২৬৮ কিমি, নানডেড, ঔরঙ্গাবাদ, ব্যাসালোর থেকেও পারলি। তবে, সরাসরি বাসও মেলে ৬-০০ ও ১০-০০টার ১০৪ কিমি দূরের আয়ুর্ধ থেকে পারলি-বৈজনাথের। ঘণ্টাচারেকের পথ। ঔরঙ্গাবাদ থেকে ২৩০, নানডেডের ১০৯ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ১৫০০ ফুট উঁচুতে মহারাষ্ট্রের স্বাস্থ্যনিবাস পারলি।

শহরান্তে মেরু পর্বতের গা ছুঁয়ে মন্দির হয়েছে প্যাভেলের রাজা বাসুকির কন্যা পারালির পুজিত বৈজনাথ অর্থাৎ দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের (৫ম)। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা সুবিশাল এই মন্দিরে দেবতা রয়েছেন নানান। তবে, আজকের মন্দিরটি ১৭ শতকে ইন্দোরের রানী অহল্যাবাদিদের তৈরি। শিবরাত্রিতে জীকালো উৎসব হয়, মেলা বসে; লক্ষ লক্ষ ভক্তজনেরা আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। শ্রাবণেও আর এক উৎসব, বসে মেলা—ভক্তের দল মেরু পর্বত প্রদক্ষিণ করেন। দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের মন্দির আছে মেরু পর্বতের প্রদক্ষিণ পথে। পারলির আর এক আকর্ষণ তার জিজা মাতা উদ্যান, ১৫—২১-০০টায় খোলা। শঙ্কর ভগবানের মূর্তিটিও সুন্দর। তেমনই গগনচুম্বী পারলি ধার্মিক

—সেও আর এক দ্রষ্টব্য। থাকার ব্যবস্থা মেলে মন্দির কমিটির ঘরমালা, মিউনিসিপাল গেস্ট হাউস, সরকারি রেস্ট হাউস, সাধারণ হোটেল ও লজে। ৬০-১০০ টাকায় আগরওয়ালা লজ থাকার পক্ষে ভালই।

নাসিক

ঔরঙ্গাবাদ থেকে সরাসরি বাসে বা ট্রেনে মনমদ হয়ে নাসিক চলুন। দূরত্ব ২১৮ কিমি, ঘণ্টাপাঁচেকের পথ। গোদাবরী নদীর তীরে ৫৯৮ মি উঁচুতে নাসিক শহর, পবিত্র হিন্দুতীর্থ। গোদাবরীর অপর পাড়ে আর এক হিন্দুতীর্থ পঞ্চবতী। পশ্চিম ভারতের কাশী এই নাসিক। পৌরাণিক ও ঐতিহাসিক মাহাত্ম্য এর অপরিণীম। সত্যযুগে ভগবান ব্রহ্মা পদ্মাসনে বসে সৃষ্টির রু-প্রিন্ট তৈরি করেন—নাম ছিল সেকালে পদ্মনগর। ত্রেতাযুগে অরুণ্যময় নাসিকে খর, দুষণ ও ত্রিশির রাক্ষসদের বাস ছিল—নাম ছিল তার ত্রিকটক। দ্বাপরে যজ্ঞ করেন জনকরাজা—সেই থেকে নাম হয় জনকস্থান। আর ত্রেতাযুগে শ্রীরামচন্দ্র পিতৃসত্য পালনের তরে বনবাসের কিছুকাল এই নাসিকে কাটান। শুখন রাবণ রাজার বোন শূর্ণগা লক্ষ্মণকে বিয়ে করতে চায়। লক্ষ্মণ ক্ষিপ্ত হয়ে শূর্ণগাখার নাক অর্থাৎ নাসিকাটি কেটে দেয় শহর থেকে ৮ কিমি দূরে আজকের পঞ্চবতী থেকে আরও ৩ কিমি গিয়ে তপোবনে। আর সেই নাসিকা থেকেই শহরের নাম হয়েছে নাসিক। সাম্রাজ্যের রচয়িতা মহামুনি কপিলের তপস্যাভূমি তপোবনে কপিল ও গোদাবরীর সঙ্গম ছাড়াও আছে অষ্টতীর্থ। নাসিকের মাহাত্ম্য এখানেই শেষ নয়। জলজ্বর মূনির পত্নী বৃন্দার শাপে হরি অর্থাৎ বিষ্ণু, আর ব্রহ্মহত্যা শাপগ্রস্ত হর অর্থাৎ শিব উভয়েই নাসিকের পঞ্চবতী তীর্থে পুণ্যতোয়া গোদাবরীতে স্নান করে পাপমুক্ত হন। তাই হরির ক্ষেত্র বলেও প্রসিদ্ধি আছে নাসিকের। মন্দিরও হয়েছে সেতুর মুখে বিষ্ণু অর্থাৎ সুন্দর-নারায়ণের। গোদাবরীর দৃশ্যও সুন্দর নাসিকে। কৃত্রিমভাবে স্রোতবতী করে তোলা হয়েছে দক্ষিণ বাহিনী গোদাবরীকে। গৌতম মূনির সারনায় মর্ত্যে আগমন ঘটে গোদাবরী। তাই গৌতমী-গঙ্গা নাম হয়েছে গোদাবরী। মূর্তিও হয়েছে গোদাবরী ও কোলাখিকার গঙ্গাঘারে পাশাপাশি দুই ওয়ায়। সামান্য উঠতেই শহরের প্রাচীনতম লিঙ্গহীন কপালেশ্বর মহাদেব মন্দির। অপুরেই কালারাম মন্দিরে গোদাবরীতে পাওয়া কষ্টিপাথরের রাম-লক্ষ্মণ-সীতা। রামভক্ত হনুমানও এখানে কালোপাথরের। মন্দিরের শিখর সোনার মোড়া। একশ' (৯৬) পিলারের সভামণ্ডপ হয়েছে। পঞ্চবতীর সর্বশ্রেষ্ঠ মন্দিরও এই কালারাম। সংস্কার করেছেন পেশোয়ার সর্দার শ্রীওটেকরজী।

অপুরেই রামচন্দ্রের পর্বকুটির, বিপরীতে সীতাহরণ গুপ্তা। কথিত আছে, এখান থেকেই রাবণ সীতাসেবীকে হরণ করে। পাশেই রামায়ণের পাঁচ ঘটবৃক অর্থাৎ পঞ্চবতী

বন। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও তিন শতাধিক পঞ্চবটীতে। ভারত ভেঙে তীর্থযাত্রীরা আসেন পূণ্যস্থানে গোদাবরীতে। স্নান চলে সারা বছর ধরে। আর ১২ বছর অন্তর বসে কুম্ভমেলা নাসিকের পূণ্যতোয়া গোদাবরীর তীরে। এছাড়া সেপ্টেম্বর-অক্টোবরে নবরাত্রি, মার্চ-এপ্রিলে রামনবমী ও মহাশিবরাত্রি নাসিকের উল্লেখ্য উৎসব। বাস যাচ্ছে নাসিক রেল স্টেশন ও ১০ কিমি দূরের শহরের সেট্টাল বাস স্ট্যান্ড থেকে পঞ্চবটীতে। অটো ও ট্যাক্সিও চলে এপথে। থাকারও নানান ধরমশালা/মেলে পঞ্চবটীতে। রেল স্টেশনের বামে ১ কিমিরও কম দূরত্বে মুক্তিধাম মন্দির। পিঙ্করঙা মার্বেল পাথরের সুন্দর এই মন্দিরে মূল দেবতা—রাম-লক্ষ্মণ-সীতা। এছাড়াও নানান হিন্দু দেবতার সমাবেশ ঘটেছে মন্দিরে। দ্বাদশ জ্যোতির্লিং রয়েছে। সাঁইবাবার মূর্তিটিও সুন্দর। এদের গেস্ট হাউস-এ থাকারও ঘর মেলে। ব্যবস্থাপনা ভালই। আর আছে নারায়ণ মন্দির ছাড়াও আরও নানান মন্দির নাসিকে।

নাসিক রোড থেকে ৩৭ কিমি দূরে ৭১১.৪ মি উঁচুতে পঞ্চকুড়োর ব্রহ্মকেশ্বর মন্দির। ১৭৫৫য় শুরু করে ১৬ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৭৮৫তে নবরূপে মন্দির গড়েন বালাজী বাজীরাও। শিব-বিক্র-ব্রাহ্মার সমন্বয়ে চতুমুখী দেবতা শিব—দ্বাদশ জ্যোতির্লিংয়ের অন্যতম। মন্দিরের পিছনে কুণ্ড, স্নানে পূণ্য হয়। তারও পিছনে ৭৫০ সিঁড়ি বেয়ে পথ উঠেছে ব্রহ্মগিরি পাহাড়ে। কিছুটা সহজ বিকল্প পথও উঠেছে মন্দির থেকে বাঁহাতি ডাকবাংলোর পাশ দিয়ে ব্রহ্মগিরি পাহাড়ে। নিখর, নিষ্পদ ছোট্ট এক কুণ্ড।

আর আছে গৌতম মুনির গুহার রানী অহল্যা প্রতিষ্ঠিত ১০৮ শিবলিঙ্গ ও গোদাবরী মন্দির ব্রহ্মগিরি পাহাড়ে। মন্দিরেরই এক গোমুখ থেকে নির্গত গোদাবরী কুণ্ডে সঞ্চিত হয়ে পাহাড়ের ভেতর দিয়ে অন্তঃসলিলা জলধারা গঙ্গাধারে দৃশ্যমান হয়ে শিবলিঙ্গকে স্নান করিয়ে সমতলে নামছে। সেও এক কিংবদন্তী—চলার পথে গোদাবরীর প্রবাহ দেখতে গৌতম মুনি পিছু ফিরতেই লুপ্ত হন গোদাবরী। মুনির ইচ্ছায় বিষ্ণু সূদর্শনচক্রে পাহাড় কেটে আবার মুক্ত করেন গোদাবরীকে চক্রতীরে। অদূরে উৎসের কিছুটা নিচুতে পাহাড়ের গায়ে শিবের জটার ছাপ আজও দৃশ্যমান।

থাকার জন্য MTDC-র Holiday Resort, ① (0253) 30143, D ২৫০ ৩০০ ডর্মি ৪০; Govt R H ও মিউনিসিপ্যাল রেস্ট হাউস ছাড়াও নানান ধরমশালা আছে এখানেক। বাস যাচ্ছে মুম্বই শহর থেকে।

আর আছে শহর থেকে ৮ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে নাসিক-মুম্বাই রোডে ব্রহ্মক পাহাড়ে ব্রিস্টলপূর্ব ১ থেকে ২ ব্রিস্টলে তৈরি পাণ্ডুলেনা অর্থাৎ বৌদ্ধগুহা। ২৩টি গুহা রয়েছে হীনযান ও মহাযান কালের। সময়ভাবে ৩, ৮, ১০, ১৭, ১৮, ২০ গুহাগুলি দেখে সাঙ্গ করা যেতে পারে পাণ্ডুলেনা দর্শন। বিহারধর্মী গুহা ৩-এর ভাস্কর্য সুন্দর। গুহা ১০ নম্বর ৩-এরই প্রতিরূপ। চৈত্যা গুহা ১৮তে সুন্দর ভাস্কর্য রূপ

পেয়েছে। বিহারধর্মী বিরাটাকার গুহা ২০-র কারুকার্যও সুন্দর। কারলা গুহারই সমসাময়িক পাণ্ডুলেনার এই গুহা। জৈন গুহাও রয়েছে পাণ্ডুলেনার ৬ কিমি দূরে। শহর থেকে ১২ কিমি দূরে ভারতে প্রথম মাটির তৈরি গঙ্গাপুর বাঁধটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। তবে, আজকের নাসিক সমধিক খ্যাত তার শিল্প-কারখানার জন্য। ভারত সরকারের সিকিউরিটি প্রেস, এয়ার ক্রাফট কারখানা গড়ে উঠেছে নাসিকে।

নাসিকের আর এক আকর্ষণ তার আঙুর। পথপাশে লতানো মাচা থেকে থরে থরে ঝুলে থাকে আঙুরের থোকা। তবে The grapes are sour আপ্তবাক্যকে স্মরণ করে প্রবোধ দিন মনকে।

আবার সিটি বাস স্ট্যান্ড থেকে কলবনের বাসে ঘণ্টা-দু'য়েকে ৪৮ কিমি দূরের নান্দুরি পৌঁছে নতুন করে বাস বা মিনিবাসে সহায়ি পাহাড়ে ৫২৫০ ফুট উঁচু সপ্তশৃঙ্গী গড়ে জাগ্রতা দেবী সপ্তশৃঙ্গী দর্শন করে দিনে দিনে নাসিকে ফেরা যেতে পারে। পাহাড়, পাহাড়, পাহাড়—চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা ছোট্ট এক সমতলে বাসের চলা শেষ। দোকানপাট, ধরমশালাও আছে মন্দির ট্রাস্টির। তোরণ পেরুতেই রেলিং-এ ঘেরা ৪৭২ ধাপের সিঁড়ি বেয়ে ১৮ ফুটের এক গুহা রূপ পেয়েছে মন্দিরে। ৮ ফুট উঁচু ১৮ ভুজা দেবীমূর্তি নানান রণসাজে সজ্জিত। দেবীর পূজা অর্থাৎ অভিষেক পর্ব—সেও বৈচিত্র্যময়। ত্রিগুণাস্বাক এই দেবী মহাকালী, মহালক্ষ্মী ও মহাসরস্বতীর বীজে সৃষ্ট। ভীমাসুরকে বধ করতে দেবীর আবির্ভাব। কিংবদন্তী, স্বপ্নাদিষ্ট মার্কণ্ডেয় মুনির প্রতিষ্ঠিত এই দেবী। অদূরে দেবীর ভৈরব। আর আছে ৮টি কুণ্ড ও ৩০ ফুট উঁচু মৎসেন্দ্রনাথের সমাধি। মহারাষ্ট্রের সাড়ে তিন পীঠের আধা পীঠ বলে এর প্রসিদ্ধি। সতীপীঠ বলেও দাবি করেন শ্রীময়রা।

সিঁড়িপথে রামকা টঙ্কা। প্রবাদ, বনবাসকালে লক্ষ্মণ ও সীতাদেবী সহ দেবদর্শনে এসে এখানেই অবস্থান করেন শ্রীরাম। দুরারোহ চার পায়ে হাঁটা পথও এসেছে নান্দুরি থেকে দুরাহ রোদতুণ্ড অর্থাৎ রোদন ভরা চড়াই বেয়ে। একান্তই উচিত হবে পায়ে হাঁটা পথ পরিহার করে বাসে বাসে চলা।



হাওড়া/মনমদ-মুম্বাই ও দিল্লী/মনমদ-মুম্বাই রেলপথে নাসিক রোড স্টেশন। মুম্বাই থেকে দূরত্ব ১৮৮, কলকাতা ১৭৮২, মনমদ ৭৩ কিমি। আর সড়কপথে পূনে ২০২, ঔরঙ্গাবাদ ২১৮, সির্গি ৯৮ কিমি। নিয়মিত বাস যাচ্ছে। বাস যাচ্ছে বন আর পাহাড়ী ঘটি রোড ধরে মুম্বাই ছাড়াও রাজ্যের দিকে দিকে নাসিক থেকে। MTDC-র লাক্সরি কোচও যাচ্ছে ৬-৩০টায় মুম্বাই ছেড়ে ১১-৩০-এ নাসিকে, ফেরে ১৩-৩০টায় নাসিক থেকে মুম্বাই; তাড়া ১২৫। এমনকি ৮২ কিমি দূরে গুজরাতের পাহাড়ী শহর সপ্তাঙ্গার-ও বেড়িয়ে নেওয়ার সুবিধা নাসিক থেকে। তবে, কেন যেন অপরিস্রব শহর নাসিক, অসহযোগিতাও পড়ে পড়ে। হাওড়া-মুম্বাই মেলে ২-৪৮৫, হাওড়া-কারলা এলে ০-৩৫৫, হাওড়া-মুম্বাই ডায়া এলাহাবাদ এলে ৬-২১৫ নাসিক পৌঁছে দিনে দিনে নাসিক বেড়িয়ে পরদিন সির্গি হয়ে পূনে বা মুম্বাই চলা যেতে পারে বাসে। গীতাঞ্জলির স্টপ নেই

নাসিকে। আর মুম্বাই CST থেকে ৬-১০৫ মুম্বাই-নানডেড এন্ড, ১৮-৪৫৫ মুম্বাই-মনমদ পঞ্চবতী এন্ড যথাক্রমে ১০-০৫/২২-৪৫৫ নাসিকে পৌছে নানডেড/মনমদ যাচ্ছে; ফেরে ১৮-২২/৬-৫৪৮ নাসিকে ছেড়ে ২২-৫০/১১-১০৫ মুম্বাই সি এস টি। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান মুম্বাই-দিল্লী/ হায়দ্রাবাদ/নানডেড শাখার দিন-রাত্রি জুড়ে নাসিকে/ মনমদ হয়ে। সারা উত্তর-পূর্ব ভারতের ট্রেনও নাসিকে হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে। রেল স্টেশন থেকে ৮ কিমি দূরে নাসিকে শহর। বাস/ট্যাক্সি/অটো চলছে শহরে। MTDC, T/1, Golf Club (Old Agra) Rd, Nasik-422002, ০ (0253) 70059 থেকে ৭-৩০—১৫-০০টায় ৭৫ টাকায় নাসিকে দর্শনের ব্যবস্থাও মেলে।



রেল স্টেশনকে ভর করে শহরমুখী Nasik Rd-422001, STD 0253-এ—H Nalanda, D ১৭৫-২৭৫; Muktidham, H Kailas, DAB ১৫০-২২৫; H Vasco, Shakuntala L, H Pavan, H Raj, DAB ২০০ A/c D ৩২৫ ডর্মি ৫০; H Gupta, opp Rly Stn, S ৮৫ D ১৫০ A/c D ৩০০; H Darpan. City Central Bus Stand-2এ—Rajmahal L, SCB ৭০ DCB ১২৫ SAB ১০০-১৭৫ DAB ১৫০-২২৫; H Padma, H Baseru, SAB ১০০ DCB ১৫০ DAB ১৭৫-২২৫; H Rajdoot, DAB ২০০; H Samrat, ০ 577211, S ২৭৫ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ TAB ৬৭৫; Samir L, H Gokul, H Zankar, Gunjmal, Deolali Naka-1এ—Dwarka Tourist H, SAB ১৫০ DAB ২৫০ FR ৩০০ A/c D ৪৫০; H Sun Flower. Shivaji Rd-এ—Shulimar H, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ১৭৫-২২৫ FAB ৩০০ A/c D ৪২৫; এরই পিছে *H Holiday Plaza, Shivaji Rd, ০ 73521, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০ চার বেডের সুইট A/c ৮০০; H Baseer. Old Agra Rd-2এ—Hotel VIP, DAB ১৫০-২০০ A/c ২৭৫-৩৫০; H Mazda Cafe. H Sabel; H Airways, Sinnar-422103.

আর রয়েছে H Darshan, Jail Rd; H Sangrilla, H Radhika, H Sidhartha, Nasik-Pune Rd-1, near Airport; H Silpa, MG Rd, SAB ১৫০ DAB ২৫০ FR ২৭৫-৩২৫ A/c D ৪০০; H Cicil, opp PTC, DCB ১২৫ DAB ১৭৫ A/c ৩২৫; H Ravindra, H Kabera, *Holiday Cottages, Mumbai-Agra Rd-10, ০ 23010, D ৬০০ A/c ৮০০ সুইট ৮৫০; H Durgesh, New Mumbai-Agra Rd-1, D ৩৫০-৪৫০; H Surya, Mumbai-Agra Rd-9, ০ 383057, S ৩৫০ D ৪০০ A/c S ৪২৫ D ৫৫০ সুইট ৬৫০; *Wasan's Inn, Old Agra Rd-2, ০ 77886, A6R9B1, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০; H Royal, H Manali, Gole Colony; H Swastik, MIDC-10, S ১০০ D ১৫০-২২৫ A/c D ৩২৫; *H Panchavati, 430 Vakilwadi-2, A6R10B1, ০ 75771, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০৫০; লাগোয়া *Panchavati Yatri Niwas, ০ 71273, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৫৫০ সুইট ৬০০; *Panchavati Elite Inn, Trimbak Rd, ০ 79031, S ৩৫০ D ৪৭৫ A/c S ৫২৫ D ৬৫০ সুইট ৮৫০-১০০০; Green View H, 1363 M I, Trimbak Rd-2, ০ 572231, D ৪২৫ সুইট ৬০০ A/c D ৬০০; *Hotel VGS, 47172, MIDC, Satpur-7, R20B7, ০ 351211, S

৩৫০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৫৫০ সুইট ৬৫০; Liberty হাড়াও নানান। এদের কাছে দুই বেডের বাথসলোয় ঘর ১২৫-২২৫ টাকায় মেলে। আর আছে MTDC-র Tourist Bungalow, near Golf Club; Govt Rest House, রেলের রিটার্নিং রুম, অজব ধরমশালা নাসিকে। আর, ব্যাপক ব্যবস্থা নিয়ে সিঙ্গানিয়া হাড়াও নানান ধরমশালা আছে পঞ্চবতীতে।

আবার নাসিকে থেকে ৯০ কিমি দূরে নাসিকে-মুম্বাই গথের ইগাৎপুরী হয়ে ৭৫০ মি উঁচু হিল রিসর্ট ভাণ্ডারদারা বেড়িয়ে নেওয়া যায়। উইলসন ড্যাম, লেক আর্থার, ১১ কিমি দূরে রাঙ্কা ফলস, লেকের জলে ৮ কিমি বোট অমৃতেশ্বর মন্দির, শিবাজীর কেল্লা রতনগড়ও দেখে নেওয়া যায় নাসিকে।



থাকার জন্য MTDC-র Holiday Resort আছে Bhandardara, Dist-Ahmednagar, ০ (02424) 51632, ১৬টি ৩ বেডের ১৭৫, ৪টি ৪ বেডের কটেজ ৩০০ ডর্মি বেড ৪০ শয্যা ছাড়া ২০। আর Igatpuri-422403, STD-02533-তে আছে H Ambassador, Dak Bungalow Rd, A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮০০; Munas H, Village Talegaon, D ৬৫০ A/c D ৮৫০ সুইট ১২৫০ ছাড়াও নানান হোটেল।

সির্ষি

ভারতের পর্যটন মানচিত্রে নতুন করে স্থান পেয়েছে সির্ষি। আহমেদনগর জেলার ছোট্ট এক গ্রাম সির্ষি। স্থানীয়দের বিশ্বাস, গুরু দত্তায়েয় নতুন করে মানবজীবন নিয়েছেন সইবাবার মাঝে। নির্বাণও লাভ করেন সইবাবা সির্ষিতে। সইবাবাকে নিয়ে গড়ে উঠেছে সঞ্জ। সজের মূল দপ্তর এই সির্ষিতে। সজের কার্যকলাপ আজ সারা ভারত জুড়ে। অতীন্দ্রিয় সিদ্ধপুরুষরূপে তিনি আজ সুবিদিত।

বাস থেকে নামতেই বিপরীতে রিসেপশন সেন্টার। সজের ক্রোকরুমে জিনিস রাখার ব্যবস্থা আছে। মিনিট পাঁচকের পথে সির্ষির মূল আকর্ষণ সমাধিমন্দির। ৫-১৫, ১২-০০, ১৮-০০, ২২-০০টায় আরতির কালে দর্শন বন্ধ। তবে, ক্রোজ সার্কিট টিভি-তে দেবারতি দেখতে মেলে। আর ৭—১১-৩০, ১৯—২৩-৩০টায় মন্দির খোলা। মূর্তিও হয়েছে ষ্ঠে মর্মরে সইবাবার। বাবার ব্যবহৃত জিনিসের প্রদর্শনীও বসেছে। সইবাবার নির্বাণ লাভের দিন বৃহস্পতি-বার বিশেষ পূজা হয়। সমাধিহুও হন ১৯২৮-র দশেরার গুণ্যদিনে। যাত্রীও আসেন দূর-দুরান্ত থেকে রামনবমী, গুরুপূর্ণিমা ও অশোরায় সইবাবা দর্শনে। অদূরেই বাবার প্রথম পদক্ষেপ স্থানে শ্রী খান্দোবা মন্দির। আর আছে সইবাবার গুরুর শ্রীওরুহান মন্দির, শ্রীবারকামজি মন্দির, চাউদি লেনদি বাগ, মারুতি মন্দির ও আবুলবাবার নানান স্মৃতি সির্ষিতে।

নাসিক শহর থেকে সির্ষির দূরত্ব ৯০ কিমি, আর সির্ষি থেকে আহমেদনগর ৮৪, ওরলাবাগ ১৩৬, মুম্বাই ২৭১, মনমদ ৫৮, পুনে ১৯৫ কিমি দূরে। বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে। MTDC-র লাক্সরি বাসও আছে মুম্বাই থেকে নাসিকে হয়ে সির্ষি। পুনে থেকে বাসে সির্ষি পৌছে সির্ষি থেকে নাসিকে বেড়িয়ে নাসিকে রোডে

কলকাতাগামী ট্রেনও চড়া যায়। তবে সিঁড়ির নিকটতম রেল স্টেশন ১৯ কিমি দূরে কোণারগাঁও। মনমদ-সোভ শাখা রেলের মনমদ থেকে ৪২ কিমি দূরে কোণারগাঁও স্টেশন। আবার সিঁড়ি থেকে বাসে ৩১ ঘটায় ওরলাবাদও চলা যেতে পারে ইলোরার ও অজন্তা দর্শনে। অজন্তা দেখে জলগাঁও কিরে চড়া যেতে পারে কলকাতার ট্রেন।



থাকার জন্য Shirdhi-423109, STD 02423-এ নানান হোটেল। তেমনই সঁই বাবার সত্ত্ব আয়োজিত গেস্ট হাউস—শাভিনিবাস, ভক্তি-

নিবাস, নিউ ভক্তিনিবাস ও ধরমশালা আছে; ব্যাপক ব্যবস্থা—আয়োজন ভালই। ভক্তিনিবাস যাত্রীদের নিবরণায় আশ্রম থেকে বাসও মেলে যাওয়াতে। বুকিং: Executive Officer, Saibaba Sangha, Shirdhi-423109. আর আছে MTDC-র ৫০ ঘরের The Pilgrims Inn, ৫ 55194, D ৩২৫ ৪২৫ A/c D ৬০০, অব্: Manager, Shirdhi, Dist-Ahmednagar-423109; H Ashoka L, ৫ 55012; *H Sai Leela, Pimpalwadi Rd, ৫ 55139, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c ৪৫০/৬০০, সুইট ৮৫০; *H Goradia's, Taluka Kopargaoan, S ৪০০ D ৫০০ A/c S ৬৫০, D ৮০০; *H Nakki Palace, Shirdhi-Rahata Rd, opp IIT, ৫ 55239, S ২০০ D ২৭৫ সুইট ৪৫০ A/c ৩৫০/ ৪২৫/ ৫০০; H Sai Plaza, Nagar-Manmad Rd, ৫ 55190, D ২৫০ A/c D ৪০০, সুইট ৬০০। Opp Bus Std: H Saichhatra, ৫ 55101, DAB ২৭৫; Guruprasad L & H, ৫ 55066, DAB ২০০; H Kalpataru, near Saibaba Temple, ৫ 55315, DAB ৩০০ A/c ৪৫০; Swapna L, DCB ১০০-১৫০; H Saikripa, near Municipal Office, ৫ 55018, DAB ২৫০-৩৫০ A/c ৪৫০; Jiban H, ৫ 55167, D ২০০; Punam L, D ১৫০; Rajkumal GH, D ১৫০-২২৫; H Swapnil, ৫ 55099, DAB ২২৫-৩০০; Sharan H, Pimpalwadi Rd-9, D ৩০০ A/c ৪৫০। ১—১৪-৩০ আবার ১৯—২১-৩০টায় সঁই প্রসাদ বাড়িতে কুপন প্রথায় জলপান ও অন্নভোগের ব্যাপক ব্যবস্থাও সুন্দর।

সেবাগ্রাম

মুন্ডাই থেকে নাগপুর হয়ে কলকাতাগামী রেলপথে ওয়ার্ধা স্টেশন। নাগপুর থেকে ওয়ার্ধার দূরত্ব ৭৭ কিমি, মুন্ডাই ৮১৯ আর কলকাতা ১২১০ কিমি। ওয়ার্ধা থেকে ৫ কিমি দক্ষিণ-পূবে সেবাগ্রাম। নামেই তার পরিচিতি। গান্ধী আশ্রমের জন্য সেবাগ্রামের প্রসিদ্ধি। ১৯৩৩এ গড়া এই আশ্রমে বাসও করতেন গান্ধীজী। সেই থেকে স্বাধীনতা প্রাপ্তি (১৯৪৭) পর্যন্ত ভারতীয় রাজনীতির কেন্দ্রবিন্দু হয়ে দাঁড়ায় আশ্রম। হাতেকলমে শিক্ষার ব্যবস্থাও রয়েছে আশ্রমে। গান্ধী মিউজিয়ামও বসেছে গান্ধীজীর ব্যবহৃত নানান স্মারক নিয়ে। পর্যটকদের জন্য রয়েছে—আদি নিবাস, বাপু কুটির, আখিরী নিবাস, ময়দানে ভোর ৪-২০ ও সন্ধ্যা ১৮-৩০টায় প্রার্থনা, গান্ধীজীর হাতের (১৯৩৬) পিপুল গাছ, কস্তুরবার হাতের (১৯৪২) বকুল গাছ, মহাদেব কুটির ছবিতে গান্ধী প্রদর্শনী, শাভিভবন, কস্তুরবা হাসপাতাল, নই তালিম, পৌনার ছরী, গান্ধী স্তম্ভ ছাড়াও নানান।

সেবাগ্রাম থেকে ৮ আর নাগপুর থেকে ৬৯ কিমি দূরে নাগপুর-ওয়ার্ধা বাসপথের পৌনার গ্রামটিও আজ নতুন করে প্রসিদ্ধি পেয়েছে। ১৯৫২য় ভূদান যজ্ঞের হোতা আচার্যজী আজ আর নেই। তবুও গান্ধী শিবা, বর্তমান ভারত রাষ্ট্রের রাজনীতিতে বিরাট পরিবর্তনের পথিকৃৎ, ভূদান নেতা আচার্য বিনোবা ভাবের আশ্রমের জন্য পৌনারের প্রশস্তি। ভূস্বামীদের কাছ থেকে ভূমি সংগ্রহ করে ভূমিহীনদের মাঝে বন্টন করাই ভূদান যজ্ঞ।

তেমনই ওয়ার্ধার আর এক আকর্ষণ বোর নদীর বাঁধে রক্তবেরঙের পাখি, প্যাছার, ঋথ বিয়ার, শম্বর, চিতল, বার্কিং ডিমার ছাড়াও নানান অরণ্যচরদের নিয়ে গড়া উপনিবেশ। সেবাগ্রাম ও পৌনার দুই আশ্রমেই থাকার ব্যবস্থা আছে। অব্: PRO বা Secretary. আর ওয়ার্ধার আছে H Annapurana, Anandashram ও MTDC-র Holiday Resort, Near Bus Stand, Wardha, Dist-Nagpur, ৫ (07152) 3172, DAB ১০০ ১৬০ ডর্মি ৫০। আর আছে GoCST RH, CH, রেলের রিটায়ারিং ক্লব Wardha-য়।

তাড়োবা জাতীয় উদ্যান

ওয়ার্ধা থেকে বাসে চলুন মহারাষ্ট্রের উত্তর-পূব সীমান্তে তাড়োবা জাতীয় উদ্যান দর্শনে। আবার ওয়ার্ধা থেকে দিল্লী-চেন্নাই রেলপথের চন্দ্রপুর স্টেশনে পৌছেও বাসে চলা যেতে পারে জাতীয় উদ্যান। নিয়মিত বাস চলে চন্দ্রপুর থেকে জাতীয় উদ্যানের। মুহূর্ত্ত বাস আসছে নাগপুর, ওয়ার্ধা, আকোলা, অমরাবতী থেকেও চন্দ্রপুরে। চন্দ্রপুর থেকে জাতীয় উদ্যানের দূরত্ব ৪৫ কিমি। আর ওয়ার্ধা থেকে (১১৯+৪৫) ১৬৪, নাগপুর ১৫০ কিমি। উদ্যান অন্দরে ঢোকান আগেই বনদপ্তরের অফিস। পাশেই বনদপ্তরের মিউজিয়াম।

কানহার দক্ষিণ-পশ্চিমে পশ্চিমঘাট পর্বতমালায় টিকে ছাওয়া ধ্যান গম্ভীর আরণ্যক পরিবেশে ১১৬.৫ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে তাড়োবা জাতীয় উদ্যান। জিপ বা মিনিবাসে বিশেষ ধরনের আলোয় বাঘ, লেপার্ড, প্যাছার, গৌর, নীলগাই, শম্বর, চিতল, লাস্কুর, হয়েনা, চার শিঙের অ্যান্টিলোপস, হরিণ, বাইসন ছাড়াও নানান বন্যজন্তু দেখার সুন্দর ব্যবস্থা। নিজস্ব ব্যবস্থায় জিপে চলা যায় অরণ্য বিহারে। তেমনই পারে হেঁটেও চলা যায় গাইড সঙ্গী করে অরণ্য অন্দরে। মরসুম নভেম্বর থেকে জুন হলেও জন্তু দেখার পক্ষে গ্রীষ্মের প্রত্যুষ ও গোখুলি উত্তম। গ্রীষ্মে পিপাসার্ত হয়ে বনচররা আসে কৃত্রিম লেকের জলে তৃষ্ণা মেটাতে। আর আছে সপ্ট লিক অরণ্যময় নানান। তেমনই আছে লেকের জলে কুমির ও কচ্ছপ আর পাড়ের বৃক্ষাশ্রয়ে নানান প্রজাতির পাখি। গবেষণা চলছে কুমির নিয়ে। মাচানও হয়েছে জন্তু দেখার জন্য লেকের পাড়ে। নভেম্বর ও ডিসেম্বরের রাতে গৌর ছাড়া অন্যান্যদের দর্শন মেলে। শীতের আধিকা নেই তাড়োবা। আর রয়েছে অচলেশ্বর, মহাকালী, মুরলীধর মন্দির, গণ্ডোরাঙ্গাদের সমাধি চন্দ্রপুরায়।

খাকার জন্য আছে জাতীয় উদ্যানের অন্তরে কোর এলাকার মধ্যমণি হয়ে—হলিডে হোম, সার্কিট হাউস, গেস্ট হাউস, রেস্ট হাউস, নিরীক্ষণ হাউস ইয়ুথ হোস্টেল। ২৪ ঘণ্টার অগ্রিম অর্ডারে আহার্যও মেলে। অব: Dy Conservator of Forests, Tadoba National Park, Chandrapur, Maharashtra-কো লিখুন। অগ্রিম বুকিং ছাড়া অরণ্যে চলা উচিত নয়। আর হঠাৎ যাত্রায় নানান হোস্টেল মেলে শিকুনগরী চন্দ্রপুরায়।

মেলঘাট ব্যান্ড প্রকল্প

বিদর্ভের আর এক দ্রষ্টব্য ৮৯টি বাঘের বসতভূমি মেলঘাট ব্যান্ড প্রকল্প। অমরাবতী জেলার মেলঘাট তহসিলে সাতপুরা পাহাড়ের দক্ষিণ ঢালে ১৫৭১ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত ব্যান্ড প্রকল্পের কোর এলাকা ৩১১ বর্গ কিমি। টিক আর বাঁশে ছাওয়া অরণ্যভূমে বাঘের গর্জন শুনেতে মেলে চলতে-ফিরতে। তেমনই দর্শন মেলে গৌর, নীলগাঁই, শম্বর, চার শিঙের কুম্ভসার মুগ ছাড়াও নানান জন্তুর সঙ্গে শতাধিক ধর্মী পাখি মেলঘাটের গাছের শাখে। MTDC জঙ্গল সংকারিতে Navegaon, Nagzira, Ramtek-এর সাথে জুড়ে Melghat-ও যাচ্ছে প্যাকেজ ট্যারে। নিকটতম রেল স্টেশন ১০০ কিমি দূরের অমরাবতী থেকে বাস সংযোগ গড়েছে মেলঘাটের। বাস আসছে নাগপুর থেকেও।

অদূরে মহাভারত খ্যাত কীচক বধের পুণ্যভূমি বিদর্ভের একমাত্র পাহাড়ী শহর Chikhaldara। ভীম কুণ্ড আজও রয়েছে। Gavialis, Barodes, Gonds, Madias, Kolams অর্থাৎ Korkus উপজাতিদের বাসভূমি সবুজে ছাওয়া সাতপুরা পাহাড়ের অধিত্যকা চিখলদারায়। নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে মেঘেরা এখানে চাঁদোয়া ধরে চিখলদারার শিরে। মিউজিয়ম, বটানিক্যাল গার্ডেন, শিবমন্দির, লেকও হয়েছে—বোটিং-এরও ব্যবস্থা মেলে লেকের জলে। তেমনই আকর্ষণ বাড়়ে MTDC-র বার্ষিক ট্রাইবাল ফেস্টিভালে। কোর্কদের বিয়ের নাচ Bihawoo, গোন্দদের Dhensa, কোলামদের শাস্ত্রীয় নৃত্য Gaubandhani, মাদিয়াদের Relo নৃত্যও দেখে নেওয়া যায় ফেস্টিভালে। খাকারও ব্যবস্থা মেলে MTDC-র Chikhaldara Resort, ☎ (07220) 20215. ডাবল বেডের সুইট ২০০ ৪০০ ৫০০ চার বেডের ২৭৫ তাঁবু ১০০।

নাগপুর



মুম্বাই-কলকাতা ও দিল্লী-চেন্নাই রেলপথের জংশন স্টেশন নাগপুর। মুম্বাই মেল, গীতাঞ্জলি, কারলা এক্স, আমেদাবাদ এক্স, সাপ্তাহিক (7) আজাদ হিন্দ এক্স হাওড়া ছেড়ে নাগপুর-ভুসুয়াল-জলগাঁও হয়ে যাচ্ছে। কম বেশি ২০ ঘণ্টার পথ, দূরত্ব ১১৩৯ কিমি। মুম্বাই যাচ্ছে ১৫-০০টায় 1006 বিদর্ভ এক্স, ২২-১০এ 1440 সেবাগ্রাম এক্স, প্যাসেঞ্জার ছাড়াও দূরত্বের নানান ট্রেন। ট্রেন যাচ্ছে হাওড়া-আমেদাবাদ এক্স, কোলহাপুর-গোয়া এক্স, 247 দিন বিলাসপুর-

ভূপাল মহানগরী এক্স, 13457 দিন বিশাখাপতনম-বজ্রভদ্র নিজারুদ্দিন এক্স, বিলাসপুর-অমৃতসর ছত্তিশগড় এক্স, সাপ্তাহিক (7) গম্মা-নাগপুর দীক্ষাভূমি এক্স, 25 দিন বারাগসী-সেকেন্দ্রাবাদ, সাপ্তাহিক (3) বারাগসী-কোটি এক্স, 46 দিন পটনা-চেন্নাই, সাপ্তাহিক গোরকপুর-সেকেন্দ্রাবাদ/ ব্যাঙ্গালোর/কোটি ছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে জলগাঁও, দুর্গ, গোভিন্দা, টাটা, বরায়ুনি, নিউ দিল্লী, জম্মু, অমৃতসর, কন্যাঙ্কুমারী, চেন্নাই, ব্যাঙ্গালোর, ইন্দোর, জম্মুপুর ছাড়াও ভারতের দিকে দিকে। রেল ও বাস স্টেশন দুইয়েরই অবস্থান কাছাকাছি নাগপুরে। ভাড়োবা থেকে চন্দ্রপুর হয়ে ট্রেনে চলুন নাগপুর। বাসও যাচ্ছে নাগপুরে। দূরত্ব ১৯৫ কিমি। নাগপুর থেকে নাগপুর কোডে কলকাতায় ফেরাও সুবিধার।



IAC-র বিমান প্রতিদিন ১½ ঘণ্টায় ৭-৩০ ও ২১-০০টায় মুম্বাই, ২০-৩৫এ ছেড়ে ১½ ঘণ্টায় দিল্লী, ৪০ মিনিটে রায়পুর, 136 দিন ১৮-৫৫য় নাগপুর ছেড়ে ভুবনেশ্বর হয়ে ১½ ঘণ্টায় কলকাতা, 136 দিন ১৯-৫০এ হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ১ ঘণ্টায়; রায়পুর যাচ্ছে প্রতিদিন ১৮-১৫য় ছেড়ে ৪০ মিনিটে; ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে নাগপুরে। আর বায়ুদূত যাচ্ছে পশ্চিম ভারতের দিকে দিকে নাগপুর থেকে। আর প্রাইভেট বিমান Skyline NEPC সার্ভিস গড়েছে। 246 দিন ব্যাঙ্গালোর, ঔরঙ্গাবাদ, বরোদা, কলকাতা, দিল্লী, ইন্দোর, চেন্নাই, মুম্বাই-এর সাথে নাগপুরের।

অমরাবতী ১৫৫, নাসিক ৬৪৩, মুম্বাই ৮২৯, পুনে ৭৪৮, ঔরঙ্গাবাদ ৫১১, ওয়াশা ৭৪, জলগাঁও ৪৩২ কিমি ছাড়াও ভূপাল, জব্বলপুর, পিণারিয়া, এলাহাবাদও বাস যাচ্ছে মহানগরী ও মধ্য প্রদেশ রাজ্য পরিবহণের নাগপুর থেকে।

নাগ নদীর পাড়ে নাগপুর শহর—নদীর নামে নাম। ১০২৫ ফুট উঁচু নাগপুর তার কমলালেবুর জন্য খ্যাত। এর ঐতিহাসিক গুরুত্বও কম নয়। ১৮ শতক পর্যন্ত আদিবাসী গোন্দ সম্প্রদায় রাজত্ব করে। তারপর রাজ্য যায় ভৌসলে-দের হাতে। আরও পরে ব্রিটিশের দখলে যেতে সেট্রাল প্রভিন্সের রাজধানী বসে নাগপুরে। তারও আগে এই নাগপুরই ছিল অতীতের বিদর্ভদেশ। ১৮৮৩ খ্রিস্টাব্দে এক বিধ্বংসী অগ্নিকাণ্ডে পুড়ে যায় ভৌসলে রাজাদের প্রাসাদ অর্থাৎ দুর্গ। কোনওভাবে রক্ষা পায় প্রাসাদের জলসার।

বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি, তবে কমলার মরসুম মার্চ থেকে মে মাস। রিকশা, অটো, ট্যাক্সি, বাস বা টাঙায় দেখে নেওয়া যায় মহারাজা বাগ, সেট্রাল মিউজিয়ম, দ্বি-শতাব্দিক বছরের পুরানো গান্ধীসাগর, গান্ধীবাগ, চিড়িয়াখানা, সতী মন্দির। আর আছে শহরের মাঝে সীতাবলদি পাহাড়ের দুই চুড়োয় ১৮১৮য় তৈরি দুর্গ—আজ সেনানিবাস বসেছে। সাধারণের প্রবেশ নিষেধ হলেও নগরখানাটি দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। IMTDC-র বাস যাচ্ছে শহর দেখাতে। দপ্তর এদের 96 Booty Rd, Deshmukh House, Sitabuldi, Nagpur-440012, ☎ 533325.

উৎসাহীরা Nagzira WLS-তে বাঘ, বাইসন, প্যাহার, অ্যান্টিলোপ, মাউস ডিয়ারও দেখে নিতে পারেন নাগপুর

থেকে। ভাণ্ডারদার হুয়ে পথ গিয়েছে। পাছাড়ে ঘেরা সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ভাণ্ডারদার লেকটিও নয়নাভিরাম। অদূরে Nawegaon. কোলু প্যাটেল কোলির তৈরি সাত পাছাড় অর্থাৎ Sat bahini-তে ঘেরা লেককে ঘিরে জাতীয় উদ্যানে নীলগাই, চিক্করা দেখতে মেলে।



Nagpur-440001, STD 0712-তে নানান হোটেল। Central Avenue-18-র opp Mayo Hospital : H Bluemoon, R1B1 (129-A), 726061, SAB ২০০ DAB ৩২৫ A/C S ৩৫০ D 8৫০; H Midland (129), 726131, S ১৭৫ D ২৭৫ A/C S ৩৫০ D 8৫০ সুইট ৬০০; H Blue Diamond (113), R1B1, S ১৫০-২০০ D ২২৫-২৭৫ A/C S 8০০ D 8৭৫; H Skylark (119), 724654, S ১৫০ D ২২৫ A/C S ৩২৫ D 8২৫ সুইট ৫৫০-৬৫০; H Pal Palace, (25), S ২০০-২৫০ D ২৪৫-৩৭৫ A/C S 8৫০ D ৫৫০-৬৫০; H Pritam, Gandhibag-2, A12R2B0, S ১৭৫ D ২৫০ A/C S ৩২৫ D 8২৫; H Grand, Mayo Hospital Rd, near Ice Factory, A12R1, 728650, S ১৭৫ D ২৭৫ A/C S ৩৫০ D 8৫০; *H Centre Point, 24 Central Bazar Rd-10, 520910, A5R2B1, A/C S ৭০০-৮৫০ D ১০০০-১২৫০ সুইট ১২৫০/১৭৫৫; Mount H Annexe, Mount Rd Ext-1, S ১০০ D ১৭৫ A/C D ৩০০; H Upavan, 64 Mount Rd-1, 534704, S ১৭৫ D ২৫০ A/C S ৩৫০ D 8৫০; *H Jagson Regency, opp Airport, Wardha Rd-25, 228111, A/C S ৮৫০ D ১০০০ সুইট ১৭৫০-৪৫০০; *Rawell Continental, 7 Dhanolti, Wardha Rd-12, 525611, A6R1B1, A/C S ৬০০ D ৮৫০; H Radhika, Wardha Rd-12, 522011, R1B0, SAB 8৫০ DAB ৬০০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০৭৫।

আর শহরের কেন্দ্রস্থলে: H Shyam, Pandit Malviya Rd-12, SAB ১৫০ DAB ২৭৫; *H Jugsons, 30 Back Central Avenue, A13R2B4, 728611, S ২০০ D ৩০০ A/C S 8০০ D ৬০০ সুইট ৮০০; H Hardeo, Dr Munje Marg, Sitabuldi-2, 529115, A6R1, A/C S ৭৫০ D ১০৫০ সুইট ১৭৫০; H Chanakya, 3 Modi Lane, Sitabuldi-12, 522915, A5R1B0, S ১৭৫-২২৫ D ২৫০-৩০০ A/C S ৩২৫ D 8৫০; H Dua Continental, Kamptee Rd-1, A8R1B1, 520801, A/C S 8৫০-৭৫০ D ৬৫০-৯৫০; *H Royal Palace, Central Bazar Rd, A6R2B1, 535454, A/C S ৬০০-৭৫০ D ৮০০-১০৫০ সুইট ১২৫০-১৫০০; H Saurabh, Civil Lines-1, A8R1B0, A/C S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ১০৫০; H India Sun, 1235 C A Rd, A10R3, S ২৫০ D ৩২৫ A/C S 8০০ D ৫৫০ সুইট ৭৫০; H Darshan Towers, near Rly Stn, 60 Central Avenue, 726845, A/C S 8৫০ D ৬৭৫-৮৫০; Tuli International, Residency Rd, Sadar-1, 534784, A/C S ৮৫০ D ১০৫০ Suite ১৫৫০-২০০০; Bharatiya Niwas L, Siddhartha Inn, Satkar H, Neeado's H, Munjechowk, Sitabuldi, R2B2, SAB ১৭৫ DAB ২২৫-৩০০; Sheesh Mahal, S ১০০ D ১৫০-২০০ FR ২৫০; H Ananda Ashram, S ১০০ D ১৭৫;

H Woodland, Central Ave-18, 726223, S ১২৫ D ১৭৫ A/C S ৩০০ D 8৫০; Shri Gurudeo L, Sitabuldi-12, R1B1, SCB ৭৫ SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ১৭৫ ডর্মি ৪০; Hill Top L, Agarwala L, Gujarat L, H Vishal, Main Rd-12, R1B2, SCB ৬৫ DCB ১২৫ SAB ১০০ DAB ১৭৫; M P Cottages, M L A Hostel, YMCA, C H, Baldeo Dharamshala, Modi Lane, opp Shree Cinema; Jamunadkar Poddar Dharamshala, Mayo Hospital Rd ছাড়াও ধরমশালা আছে আরও নানান। রেলের রিটার্নিং রুম-ও আছে নাগপুরে।

১৫ দিনে মহারাষ্ট্র ও গোয়া ভ্রমণ

হাওড়া-মুম্বাই মেলে রাত ২৩-৩০এ জলপাই পৌছান। সকাল হতে বাসে চলুন অজুড়া দর্শনে। অজুড়া দেখে আবার বাসে ঔরঙ্গাবাদ পৌছে রাতের বিশ্রাম। দ্বিতীয় দিন কনজাকটে টারে ইলোরা ও অন্যান্য দেখে রাতের বাসে পুনে চলুন। উৎসাহীরা নানডেড বা নাসিক-সির্খিও বেড়িয়ে নিতে পারেন ঔরঙ্গাবাদ থেকে মনমদ হয়ে নাসিক রোড পৌছে। ভোর রাতে বাসে পৌছে তৃতীয় দিনে পুনে বেড়িয়ে চতুর্থ দিন সকালের বাসে চলুন মহাবলেশ্বর। আবার সোনাডালা-কারলা-ভাজাও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা পুনে থেকে। ষষ্ঠ দিন সকালের বাসে রওনা হয়ে সাভারা হয়ে সন্ধ্যায় পৌছান পানাজি। ট্রেনও যাচ্ছে মুম্বাই CST ছেড়ে আসা ৮-৪৫এ করনা এক্স, ১৭-৪৫এ সহায়ক এক্স, ২০-২৫এ মহালক্ষ্মী এক্স যথাক্রমে ১৩-৫০/২২-৪৫/০১-২০এ পুনে ছেড়ে মিরাজ যাচ্ছে ১৯-৪৫/৪-৩৫/৭-০৫এ। মিরাজ থেকে বাসে পানাজি। আর ১৫-০০টায় হজরত নিজামুদ্দিন ছেড়ে আসা 2780 গোয়া এক্স আগ্রা ৭-৩০, ডুপাল ১-২৫, ডুসুয়াল ৮-০৫, মনমদ ১০-৫৫, পুনে ১৭-৩০এ ছেড়ে ২২-৪০এ মিরাজ পৌছে বেলগাঁও-লোণা হয়ে সরাসরি ডাকো যাচ্ছে ৭-২৫এ। সময় ও ধরল দুই-ই বেশি এগুবে। গত কিছুকাল কোঙ্কন রেলের কর্মক্ষেত্রে ডাকোর ট্রেন সার্ভিস বিঘ্নিত হয়ে পড়ায় বাসই শ্রেয় পানাজি যাতায়াতে। জানুয়ারি ১৯৯৮ থেকে কোঙ্কন রেলের স্বাভাবিকতার সম্ভাবনা প্রবল। সেক্ষেত্রে সরাসরি ট্রেনও চালু হবে মুম্বাই থেকে গোয়ার। এখনই ট্রেন যাচ্ছে নবম কোঙ্কন রেল ২৩-১০এ কারলা ছেড়ে পানভেল-রুদ্রগিরি হয়ে পরদিন ৯-০৫এ সামন্তওয়ারদি রোড। বাসে ঘণ্টা তিনেকের সামন্তওয়ারদি থেকে পানাজি। কারলা ফেরে ১৮-৫৫য় সামন্তওয়ারদি থেকে KR-0112 এক্স। সপ্তম/ অষ্টম/নবম অর্থাৎ ৩ দিনে পানাজি দর্শন সেয়ে দশম দিন Damania's Catamaran Service-এর Speed Launch-এ ৮ ঘণ্টায় মুম্বাই পৌছান। জাহাজের অমিলে ট্রেন বা বাসে চলুন। ৩ দিনে মুম্বাই বেড়িয়ে ত্রয়োদশ দিন ২০-১৫য় হাওড়া মেলে ওয় সন্ধ্যা ৮-২০এ বা চতুর্দশ দিন সকাল ৬-০০টায় গীতাঞ্জলি এক্স চলে পরদিন ১৫-৪০এ বা কারলা থেকে ২১-৫০এর কারলা-হাওড়া এক্স পরের পরদিন ১৬-২০এ হাওড়ায় পৌছান। আর ২১-১০এ মুম্বাই সি এস টি ছেড়ে জলপাই-এলাহাবাদ হয়ে পরের পরদিন ১৩-১৫য় হাওড়া যাচ্ছে মুম্বাই-হাওড়া মেলে।

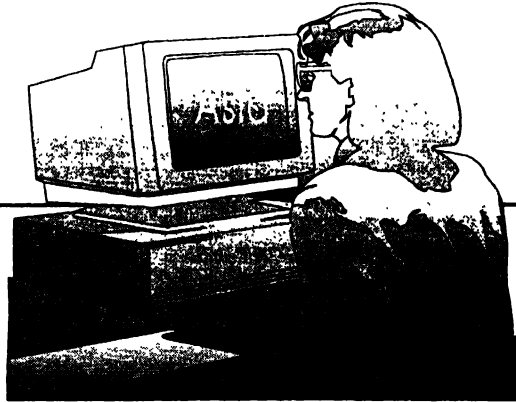
রামটেক

নাগপুরের ৪২ কিমি উত্তর-পূবে নাগপুর-রামটেক শাখা রেলের শেষ স্টেশন রামটেক। ৫-৪৫, ১২-৩০, ১৮-৪০এ ট্রেন যাচ্ছে, ঘণ্টা দুয়েকের পথ; ফেরে ৭-৫০, ১৪-৫০ ও ২০-৩০এ। বাসও যাচ্ছে এপথে। ৫০০ সিঁড়ি উঠে রামগিরি পাহাড়ে লঙ্ক। অভিযানের পথে শ্রীরামচন্দ্র অবস্থান করেন। নামকরণ শ্রীরাম থেকে—কালে কালে রামগিরি হয় রামটেক। মহাকবি কালিদাসের স্মৃতিও জড়িয়ে রয়েছে রামটেকের সাথে। কথিত আছে রামটেকের

নৈসর্গিক শোভায় মুগ্ধ হয়ে মহাকবি মেঘদূতম রচনা করেন। ২৭টি মন্দিরও আছে ব্রাহ্মণিক্যাল ধাঁচে গিরিশিখরে। ১৪০০ খ্রিস্টাব্দের লক্ষ্মণ মন্দিরটি এদের মধ্যে অন্যতম। নভেম্বরের শেষভাগে পক্ষকালব্যাপী মেলায় আকর্ষণও কম নয়। রামসাগর লেকটির পরিবেশও সুন্দর। আর এক বিস্ময়—পাহাড়ের পাথর ভাঙলে রঙ তার রঙভা দেখায়।

থাকার জন্য ৬ কিমি দূরে MTDC-র হলিডে রিসর্ট, Ramtek-441106, ☎ (07265) 55213-এ D ১২৫ ১৫০ ২০০ ডমিতে ৫০; ছাড়াও সেচ দপ্তরের রেস্ট হাউস আছে।

for prompt
& smart service



Any SORTS Of DTP Job

A P C LASER

61 Mahatma Gandhi Road
Calcutta-700 009 ☎ 241 4608

গোয়া

ভারত রাষ্ট্রের কনিষ্ঠতম (২৫) রাজ্য গোয়া। শুধু কনিষ্ঠতম নয়—ক্ষুদ্রতমও এই সুন্দরী গোয়া রাজ্য। উত্তর-দক্ষিণে বিস্তার ১০৪ কিমি, আর পূর্ব থেকে পশ্চিমে ৫৯ কিমি মাত্র। পশ্চিমে আরব সাগর, পূর্বে সহ্যাদ্রি রেঞ্জ, উত্তরে মহারাষ্ট্র আর সারা পূর্ব ও দক্ষিণ জুড়ে কণাটিক। আয়তনে ছোট্ট হলেও এর প্রকৃতি অনুপম। আকার অর্ধচন্দ্রাকার। কোঙ্কনীদের বাস। অতীতের আদিবাসী কাসাডিগ আর আর্থজাতির মিশ্রণে কোঙ্কনজাতির উদ্ভব। নাম ছিল সেকালে Govapuri বা Govarashtra, কালে কালে Gomantaka. গোমন্ডকও পরশুরাম-ক্ষেত্রের অন্তর্ভুক্ত ছিল। জনশ্রুতি, বাণ হুঁড়ে জল সরিয়ে সমুদ্র থেকে উদ্ধার করেন পরশুরাম। দান করেন ভূমি পঞ্চগৌড় (বঙ্গদেশ) থেকে ব্রাহ্মণ এনে—গড়ে ওঠে বসতি।

কিছুকাল আগেও কেন্দ্রের শাসনাধীনে ছিল গোয়া-দমন-দিউ এই তিন জেলা নিয়ে গঠিত গোয়া-দমন-দিউ রাজ্য। ১৯৮৭র ৩০শে মে পূর্ণ রাজ্যের মর্যাদা পেয়েছে ১টি তালুক নিয়ে গড়া অতীতের গোয়া জেলা। বাকি দুই জেলা দমন ও দিউ কেন্দ্রের শাসনাধীনে আজও। এরা পরস্পর পরস্পর থেকে বিচ্ছিন্ন ছিল অতীতকালেও। স্থল বাজলপথে সংযোগ নেই পরস্পরে। ভাষারও দল ঘটেছে—দমন ও দিউ জেলায় গুজরাতি ভাষার চল বেশি। গোয়া রাজ্যের রাজধানী পানাজি (অতীতের পাঞ্জিম) থেকে মুম্বাই হয়ে দমন-এর দূরত্ব ৭৮৭ কিমি। আর দিউ-এর দূরত্ব আরও বেশি—মুম্বাই-আমদাবাদ-ভাবনগর হয়ে ১৫২৩ কিমি। পশ্চিমঘাট ও সহ্যাদ্রি পর্বত থেকে নামা নানান নদী আর আরব সাগরে ধোয়া, কাজু আম কাঠাল আর নারকেল গাছে ছাওয়া ঘন সবুজের দেশ গোয়া। খনিজ সম্পদেও যথেষ্ট বলীয়ান—লৌহ, ম্যাঙ্গানিজ ও বক্সাইট প্রচুর পরিমাণে রয়েছে গোয়ার মাটিতে। মাথাপিছু আয়ে পাঞ্জাবের পরেই গোয়ার স্থান ভারত রাষ্ট্রে। জলবায়ুও বৈচিত্র্যে ভরা। প্রাকৃতিক সৌন্দর্য নয়নাভিরাম। ট্রপিক্যাল ক্রাইমেটের স্বর্গরাজ্য গোয়া। শীত নেই বললেই চলে। ডিসেম্বর-জানুয়ারির সন্ধ্যায় সাধারণ সৌর্যোদয়ই যথেষ্ট। গরমেরও আধিকা নেই। শরৎ আরও মধুময় হয়ে ওঠে গোয়ায়। গোয়ার শাস্ত-সমাহিত রূপটি বছরের পর বছর দেশী-বিদেশী পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে। উত্তর গোয়ায় ১০৫ কিমি দীর্ঘ কোস্ট লাইন জুড়ে বিশ্বসেরা সী বাঁচ—Calangute, Benaulim, Arambol, Baga, Vagator, Chapora, Anjuna আর দক্ষিণ গোয়ায় Colva, Betul, Palolem-এর সোনালী বালুকাবেলায় রূপালি সূর্যালোকে অবসর বিনোদনে ভারত রাষ্ট্রে আজ অধিতীয়। সারা ভারত থেকে গোয়া স্বতন্ত্র। আইনের বিধানে গোয়ার

বিবাহিতা নারী স্বামীর সম্পত্তির ৫০% অংশীদার। উৎসব-অনুষ্ঠানপ্রিয় গোয়াবাসী। বছরের ৯ মাস জুড়ে উৎসব চলে গোয়ায়। তবুও যেন প্রতি ১২ বছর অন্তর ওম্ড গোয়ায় Basilica of Bom Jesus-এ সেন্ট জেভিয়ারের মৃত্যুদিনে *Exposition of the unembalmed miraculously preserved body of St Francis Xavier* দর্শন অনাতিম। তেমনই মীরামার বীচে প্রতি বছর নভেম্বর মাসে Food & Cultural Festival-এরও প্রশস্তি আছে। খ্রিস্টোৎসব Lent-এর ধাঁচে আনন্দোৎসব গোয়ার কার্নিভ্যাল—সেও আর এক পর্যটক প্রিয়।

গোয়ার ইতিহাস আরও বৈচিত্র্যময়। দীর্ঘ ৪৫১ বছর পর ১৯৬১ খ্রিস্টাব্দের ১৯শে ডিসেম্বর তদানীন্তন শাসক পর্তুগিজ সরকারের হাত থেকে ক্ষমতা হস্তান্তরিত হয়ে ভারতের অন্তর্ভুক্ত হয় গোয়া-দমন-দিউ। ক্ষমতার দ্বন্দ্ব চলেছে দীর্ঘকাল ধরে বছরের পর বছর গোয়ার দখল নিয়ে ডাচ, ইংরেজ আর পর্তুগিজদের মাঝে। ১৫১০ খ্রিস্টাব্দে আফেনসো ডে আলবুকার্ক মাত্র ২০টি জাহাজে ১২০০ সৈন্য নিয়ে অসীম সাহস আর বীরত্বের সঙ্গে যুদ্ধ করে বিজাপুরের আদিলশাহীদের হারিয়ে Pearl of the Ancient গোয়া দখল করে। আর সেই থেকে গোয়া হয়ে ওঠে পূর্ব-পশ্চিমের অবাধ বাণিজ্যভূমি। পশ্চিমঘাট পর্বতের মশলা যেত বিদেশের বাজারে আর বিদেশী পণ্য বিকোত গোয়ার দোকানপাটে। ব্যবসায়ীদের সঙ্গে সঙ্গে আসেন ধর্মযাজকরা। এঁদের মধ্যে সেন্ট ফ্রান্সিস জেভিয়ার (১৫৪২-এ আগমন) বিশেষভাবে স্মরণীয়। এঁদেরই উদ্যম আর উদ্যোগে প্রসার পায় খ্রিস্টধর্ম। ভারতে প্রথম বইটি পর্তুগিজ ভাষায় ছাপাও হয় ১৫৫৭য় এই গোয়াতেই।

গোয়ার ইতিহাস আজকের নয়।—*all world was water*। সেই পৌরাণিক যুগ থেকে গোয়া সারা বিশ্বের স্বর্বার বস্তু। এসেছে পর্তুগিজ, ব্রিটিশ, ফ্রেঞ্চ, ডাচ ছাড়াও নানান বিশ্ববাসী গোয়ায়। কেউবা তাদের দুঃসাহসকে ভর করে পর্যটনে, কেউবা এসেছে মুনাকার লালসায় বাণিজ্যের তরে, আবার কেউবা এসেছেন মানব সেবার ব্রত নিয়ে গোয়াত্মে। রামায়ণ, মহাভারত ও পুরাণে উল্লিখিত হয়েছে গোয়ার কথা। অতীতকালে প্রাচ্যের রানী বলে খ্যাত ছিল এই গোয়া। খ্রিস্টপূর্ব ৩ শতকে মৌর্য সাম্রাজ্যের অংশ ছিল গোয়া। কোলাহাপুরের সাতবাহনরাও রাজত্ব করে গেছেন খ্রিস্টপূর্ব ২ থেকে খ্রিস্টোত্তর কালের গোড়ার দিকে গোয়ায়। ১ শতকের ভূ-পর্যটক টলেমির লেখাভেও গোয়ার উল্লেখ মেলে *Gouba* নামে। বাদামীর চালুক্যরাজদের দখলে থাকে ৫৮০-৭৫০ পর্যন্ত গোয়া। আর ১১ শতকের মধ্যভাগে কদম্ব রাজাদের কালে (১০০৮-১৩০০) বসতি গড়ে ওঠে ওম্ড গোয়ায়।

রাজধানী তাদের স্যালসেট তালুকের চন্দ্রপুর বা চান্দোর-এ। কদম্ব রাজাদের কাছ থেকে গোয়া যায় মুসলিম দখলে ১৩১২য়। আর ১৩৭০এ মুসলিমদের হঠিয়ে বিজয়নগরের রাজা হরিহর ১ দখল নেয় গোয়ার। দখল থাকে শতাধিক বছর। আর ১৪৭০এ গোয়া যায় বাহমনি সুলতানদের দখলে। বাহমনি সাম্রাজ্য ভেঙে যেতে গোয়া থাকে বিজাপুরের আদিলশাহীদের ভাগে। রাজধানী বসে এলা অর্থাৎ পর্তুগিজদের ভেলহা-য়। তখন থেকেই গোয়া বিদেশীদের লক্ষ্যবস্তু হয়ে পড়ে। ১৪৯৮এ উত্তমশা অভ্যরীপ ঘুরে মালাবার উপকূলে ভাস্কো-ডা-গামার আগমন ঘটলেও ১৫১০এ পর্তুগিজ Alfonso de Albuquerque এলেন গোয়ায়। দখলও করেন ওন্দ গোয়া বিজাপুরের সুলতানকে হটিয়ে। কালিকটের জামোদিন রাজা ও প্রবল প্রতিদ্বন্দ্বী তুর্কিদের সঙ্গে সংঘাতে ১৬ শতকের মধ্যভাগে বারসেজ ও সালসেট তালুকও দখলে আসে পর্তুগিজদের। আর ১৫৩৪এ দিউ, ১৫৫৯এ দমন দখল করে পর্তুগিজরা। দীর্ঘ পরে ১৭৬৩তে Ponda, Sanguem, Quepem ও Conacona আর ১৭৮৮তে Pednem, Bicholim, Satari তালুকের দখল পেতে রূপ পায় আজকের গোয়া। কালে কালে তুর্কিরাও হঠে যেতে পশ্চিমঘাটের মশলার একচ্ছত্রাধিপতিও হয় পর্তুগিজরা। আর গোয়ার ভাগ্যও সুবর্ণযুগ নেমে আসে মশলার সৌলতে পর্তুগিজকালে। এমনকি প্রাচ্যের পর্তুগিজ সাম্রাজ্যের জন্য ভাইসরয়ের দপ্তরও বসে ওন্দ গোয়ায়।

আর স্বাধীনোত্তর কালে ১৯৬১র ১৯শে ডিসেম্বর ভারতভুক্তির পর সংঘাত দেখা দেয় অবস্থান নিয়ে। প্রশ্ন ওঠে মহারাষ্ট্র আর গুজরাটের সঙ্গে জুড়ে সেবার গোয়া-দমন-দিউকে। ১৯৬৭র জানুয়ারিতে গণভোটে গোয়া-দমন-দিউ হয় কেন্দ্রের শাসনাধীন অর্থাৎ ১৯৬৩র সিদ্ধান্তই বহাল থাকে। অবশেষে ১৯৮৭র ৩০শে মে স্বতন্ত্র রাজ্য হয়েছে গোয়া। তবে, আজও যেন গোয়ার আকাশে-বাতাসে পর্তুগিজ পরশ মেলে। বাক খাওয়া সুরু রাজপথ, ঝোলানো বারান্দা, লাল টালির ছাদ; এমনকি পর্তুগিজ ভাষায় সাইনবোর্ডও চোখে পড়ে চলতে-ফিরতে গোয়ার পথেঘাটে।

পানাজি

পাহাড়-পর্বত, নদ-নদী আর সমুদ্র—এই তিন নিয়ে গোয়া। ১০৫ কিমি ব্যাপ্ত ভটরেখায় শ্যামল-সবুজ ছোট ছোট পাহাড়ের কোলে অপরাপ সুন্দর ৪০টি সোনালী বীচে সী-বাথ ও সান-বাথ রমণীয়। বিধেয় অনভ্যত সুন্দর সাগরবেলাও এই গোয়ায়। দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ার অন্যতম সুন্দর ম্যানগ্রোভ অরণ্যও এই গোয়ায়। শতাধিকধর্মী পাখি কুজন শোনায় গোয়ায়। সোনালী কালার সাজিয়ে রেখেছে পাম, আম, কাঠাল, নারকেল, কাছ, দারচিনি পানাজি তথা সারা গোয়ায়। বাড়ি-ঘরও গড়ে উঠেছে স্পেন ও পর্তুগালের ধাঁচে পানাজি শহরে। শহরের বুক চিরে সমান্তরালভাবে

৩টি রাজপথ গিয়েছে। পূর্ব থেকে পশ্চিমে গিয়ে বিলীন হয়েছে এরা শীলাভ আরব সাগরের জলে। এদেরই দু'পাশে রূপ পেয়েছে রাজ্যের রাজধানী তথা উত্তর গোয়ার জেলা সদর পানাজি শহর। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে রাজ্যের দ্বিতীয় বৃহত্তম নদী মাণ্ডোভী। অপরপারে বেতিম। বেতিকের উত্তরে মণুসা শহর, আর পশ্চিমে কালানওটে সাগরবেলা। মাকড়সার জালের মতো সারা রাজ্য জুড়ে জলপথ ছড়িয়ে রয়েছে পানাজিকে ঘিরে। অতীতে ছিল ধীবরদের বাস, আজ নতুন করে বসেছে রাজধানী শহর ইলহাস তালুকের পানাজিতে। বাড়ি-ঘর উঠছে নতুন নতুন। দূরে মাণ্ডোভীর অপরপারে সবুজ পাহাড়ের কোলে ১৫৫১য় তৈরি রাইস মাগোস দুর্গ।

গোয়া □ রাজধানী: পানাজি। আয়তন: ৩৭০২ বর্গ কিমি। লোক সংখ্যা: ১১৬৯৭৯৩। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.১৩%। পুরুষ: ৫৯৩৫৬৩। নারী: ৫৭৫০৫৯। ১৯৮১-৯১-এ লোকসংখ্যার বৃদ্ধি: ১৬০৮৭৩। বৃদ্ধির হার: ১৫.৯৬%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৩১৬। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৬৯। ৩৮% খ্রিস্টান, ৬০% হিন্দু, অন্যান্য ধর্মাবলম্বী মিলে ২%। সাক্ষরের হার: ৭৬.৯৬%। প্রধান ভাষা: কোঙ্কনী; সঙ্গে চলে মারাঠি, হিন্দী, ইংরেজি ও পর্তুগিজ। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৬৯৩৯.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)।

স্থান ভেদে সমুদ্র পৃষ্ঠ থেকে ১০২২ মিটার উঁচুতে গোয়ার অবস্থান। জলবায়ু নাতিশীতোষ্ণ। শীতে ৩২.২—২১.৩°, আর গ্রীষ্মে ৩২.৭—২৪° সেণ্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। বৃষ্টি: ৩৫০ সেমি জুন থেকে সেপ্টেম্বরে।

পর্বতনে ভারত রাষ্ট্রে গোয়ার আকর্ষণ দুর্নিবার। ১৯৯৫-এ যাত্রীও পৌঁছেছেন গোয়া ভ্রমণে ৮.৭৮ লক্ষ দেশী আর ২.৩০ লক্ষ বিদেশী সারা বিশ্ব থেকে। বেড়াবার মরসুম: সেপ্টেম্বর ১৫ থেকে জুন ১৫ হলও নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মনোরম। তবে, জুন থেকে সেপ্টেম্বরের বরষা সবুজের গালিচা পাতে গোয়া সারা পশ্চিমঘাটে—এরও পর্বটক আকর্ষণ অনবদ্য। মহারাষ্ট্র বা কর্ণাটকের সঙ্গে জুড়ে দিন-পাটকে গোয়া বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে।

মাণ্ডোভীর বুক (দক্ষিণ পারে) বিজাপুরের সুলতান আদিল শাহর বোড়া ও হাতির আঙাবল ১৬১৫য় পর্তুগিজদের হাতে ভাইসরয়ের বাসস্থানে রূপান্তর ঘটে। আরও

পরে ১৭৫৯এ ওন্ড গোয়া থেকে এসে পর্তুগিজ ভাইসরয় সংসার পাভেন ইডালকে প্রাসাদে। ১৮৪৩এ গোয়া-দমন-দিউ পর্তুগিজ রাজ্যের রাজধানীও হয় পানাজি। স্বাধীনোত্তরকালে মহাকরণ বসেছে। মহাকরণের বিপরীতে প্যালেস কোয়ারে আবে ফারিয়ার মূর্তি গোয়ার এই পাত্রী সাহেব বিধে হিপনটিজম চালু করেন। অদূরেই জাহাজঘাটা। বিপরীতে পৌর উদ্যান আজাদ ময়দানে Memorial to the Martyrs তৈরি হয়েছে ১৯৭৩এ। বিপরীতে পাহাড় ঢালে জোড়া চূড়া মাথায় নিয়ে Church of the Immaculate Conception অর্থাৎ গির্জা। উচিত হবে মহালক্ষ্মী মন্দিরটি পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া। মহাকরণকে পিছনে রেখে ঝাউ, বট আর গুলমোহরের মিষ্টি ছায়ায় আকাশবাণী ভবনের দিকে এগুতেই অ্যালাটিনো পাহাড়। পানাজি শহরের প্রাণকেন্দ্রে শহরও প্রসার পাচ্ছে অ্যালাটিনো পাহাড়ে। পাহাড়ের নবতম আকর্ষণ Patriarch Palace—ভারত সফরে এসে ১৯৮৬তে গোপ জন পল দ্বিতীয় অবস্থান করেন। শহরের দৃশ্য ছবির মতো সুন্দর দেখায় এই পাহাড় থেকে। আর পানাজি মিউজিয়াম অব দি আর্কিহিউ অব গোয়ায় চিত্রকলা ও ভাস্কর্যের নানান নিদর্শনও দেখে নেওয়া যায়।

পানাজি শহরের আর এক আকর্ষণ Salim Ali Bird Sanctuary: মাথোড়ীর জলে ঘেরা দ্বীপ Chorao-এর পশ্চিম প্রান্তে ১.৭৮ বর্গকিমি জুড়ে ম্যানগ্রোভ অরণ্যে দেশী-বিদেশী নানান পাখি সেখতে মেলে। Chief Wild Life Warden, Forest Dept, Junta House, Panaji-র অনুমতি নিয়ে ফেরিতে রিবাণ্ডার থেকে কোরাও পৌঁছে চলা যেতে পারে। নানান প্রাইভেট ট্রাভেল এজেন্ট শহর থেকে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে সেলিম আলি পক্ষী আলয় দর্শনে। ছোট্ট শহর পানাজি, তবে রূপে অতুলনীয়।

চার আর মন্দির দর্শনের একঘেয়েমি দূর করে ডোনা পাওলা। পর্তুগিজ গভর্নরের কন্যা ডোনা পাওলা প্রেমে পড়েন গোয়ানিজ ধীর যুবকের। অসম মিলনে ডোনার পারিবারিক বাধা। প্রেমের জ্বালা জ্বড়ান আরব সাগরের সলিলে ডোনা। স্মারকরূপে নাম। শহরের ৭ কিমি দূরে পশ্চিমপ্রান্তের ডোনা পাওলা থেকে আরব সাগরের বৃকে সূর্যাস্ত দেখবার সুন্দর ব্যবস্থা। বাঁয়ে জুয়াড়ী নদী, ডাইনে

মাডোডী আর সমুখ জুড়ে আরব সাগর। দ্বিমতে, পর্তুগিজ ভাষায় ডোনা অর্থ কুমারী—আরব সাগরে কুমারী বাল্য ডোনার মতো নিজেকে উজাড় করে দিতে চায় জুয়াড়ী। শহরও প্রসার পাচ্ছে ডোনা পাওলার পথ জুড়ে।

| | |
|---|----------|
| In Panaji : | |
| Directorate of Tourism, Tourist Home, | |
| Patto, Panaji, Fax : 2228819 | ☎ 225583 |
| Tourist Information Counter : | |
| Panaji Inter-state KTC Bus Terminus : | ☎ 225620 |
| Vasco Tourist Hotel | ☎ 512673 |
| Dabolim Airport | ☎ 512644 |
| Margao Tourist Hotel | ☎ 722513 |
| Mapusa Tourist Hotel | ☎ 262390 |
| Goa Tourism Development Corp'n Ltd, | |
| Trionora Apartments, | |
| Dr Alvares Costa Rd | ☎ 226515 |
| Goa CST of India Tourist Office, | |
| Comunidade Building, Church Sq | ☎ 223412 |
| Karnataka Tourism Development Corp'n, | |
| Velho Filhos Building, | |
| Municipal Garden Sq | ☎ 224110 |
| Air India Ltd, | |
| Hotel Fidalgo, 18th June Road | ☎ 224081 |
| Indian Airlines, Dempo House, | |
| IAC, Dayanand-Bandodkar Marg : | ☎ 223826 |
| IAC, Airport : | ☎ 512788 |
| Daman Airways Ltd | ☎ 220056 |
| East-West Airlines, Hotel Fidalgo, | |
| 18th June Rd : | ☎ 224108 |
| Jet Airways (India) Pvt Ltd, | |
| 102 Rizvi Chambers, 1st floor, | |
| Caetano Albuquerque Road : | ☎ 221472 |
| Modiluft Airbourne, | |
| Dr Atmaram Borkar Rd, | ☎ 225924 |
| Skyline NEPC Airlines, Bernard | |
| Guedes Road, Panaji | ☎ 220056 |
| Sahara India Airlines, Hotel Fidalgo | ☎ 226291 |
| Catamaran Service by | |
| Frank Daman Shipping (I) Ltd : | ☎ 228711 |
| Travel Division, Goa Tourism Department | |
| Corp'n Ltd, Trionora Apartments : | ☎ 226515 |
| For Tourist taxis & other vehicles : | |
| Karnataka State Road Transport | |
| Corporation | ☎ 225126 |
| Maharashtra State Road Transport | ☎ 226853 |
| Kadamba Transport Corporation | ☎ 222634 |
| Automobile Association-WIAA, | |
| Tourist Hostel, Panaji : | ☎ 226572 |
| General Post Office, Panaji : | ☎ 223706 |
| Panaji STD Code No 0832 | |

চির নতুন।। চির সবুজ।। চিরদিন

গোয়া
EXPRESSION

17 Justice Dwarkanath Road, Calcutta 700 020, Phone : 4754502, Fax : 033-475-7456

সমগ্র পূর্বভারতে সব থেকে বেশি
ভ্রমণার্থীর সেবায় নিয়োজিত—
গোয়া ট্যুরিজম ডেভেলপমেন্ট
কর্পোরেশনের অনুমোদিত সেলস
এজেন্ট—সমস্ত অনুসন্ধান, সংরক্ষণ
ও বাতিল-এর জন্য ভ্রমণের ১ বছর
আগেই যোগাযোগ করুন—

ডোনা পাওলার পথে ১ কিমি আগে আরব সাগর আর মাজোভীর সন্মুখে পায়ে ছাওয়া গাসপার ডায়াস অর্থাৎ মীরামার বীচ। শহরের নিকটতম বীচও এই মীরামার। পূর্বাঙ্গী ভাষায় *মীরামার* অর্থ সমুদ্র দর্শন। এখানকার বলির রঙ রূপালি আর মিহিও বটে। সাম্রাজ্যশেখের সুন্দর পরিবেশ। শহরের আকর্ষণ বাড়তে মীরামারে সায়েন্স পার্ক, মিউজিক্যাল ফাউন্টেন ফিশারিজ অ্যাকোয়ারিয়াম গড়তে চলেছে। তেমনই হচ্ছে টুরিজম হাউস অর্থাৎ একই বাড়িতে পর্যটনের A to Z—১৮টি তথ্যকেন্দ্র, ১৫টি হস্তশিল্প এস্পেরিয়াম, নানান বিমান সংস্থা, ট্রাভেল এজেন্ট, গোয়া ও ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর ছাড়াও নানান রাজ্য সরকারের পর্যটন দপ্তরও বসছে। বাস স্ট্যান্ড থেকে মুহূর্তে বাস যাচ্ছে ডোনা পাওলায়। ট্যুরিস্ট হোস্টেল হয়ে শহর ডিঙিয়ে মীরামার পেরিয়ে যাচ্ছে বাস। নিয়মিত ফেরি লঞ্চ সার্ভিসও রয়েছে—ডোনা পাওলা থেকে অপরপারের ভাস্কোর। সড়কপথে দূরত্ব এর ৩১ কিমি। ট্রেন আর বিমানও পৌঁছেছে গোয়ার এই ভাস্কো-ডা-গামায়। পানাজির আর এক রেল সংযোগকারী স্টেশন ৩৩ কিমি দূরের শিল্পনগরী মারগাঁও। বন্দর নগরীও এই মারগাঁও। পানাজির পর্যটন আকর্ষণ সারা ভারতে আজ অস্বীকার্য।

কনডাক্টেড ট্যুর : Goa Tourism Development Corpn Ltd, 1st Floor, Kadamba Bus Stand Complex, Panaji, Goa-403001-এর আয়োজিত কনডাক্টেড ট্যুরে অংশ নিয়ে গোয়ার রূপ-রস-মধু উপভোগ করে নেওয়াই উচিত হবে পর্যটকদের। প্রতিদিনই ডিলাল কোচ যাচ্ছে ট্যুরিস্ট হোস্টেল থেকে এদের। ট্যুরিস্ট হোম ও ট্যুরিস্ট হোস্টেলেও টিকিট মেলে। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেলে এদের কাছে।

Tour No. 1 : ৯-৩০—১৮-০০টায় ৭৫ টাকায় (A/c ১০০) সাউথ গোয়া অর্থাৎ Panaji / Old Goa / Sri Manguesh / Sri Shantadurga / Margao / Colva Beach / Marmugao / Vasco / Pilar Seminary / Dona Paula / Miramar Beach দেখিয়ে আনে।

Tour No 2 : ৯-৩০—১৮-০০টায় ৭৫ টাকায় (A/c ১০০) যাচ্ছে নর্থ গোয়া অর্থাৎ Panaji / Altino / Mayem Lake / Sri Datta Temple / Arvalem WF / Mapusa / Vagator / Anjuna / Calangute / Aguada Fort দেখাতে।

Tour No 3 : পিলগ্রিম স্পেশ্যালে যাচ্ছে ৯-৩০—১৩-০০টায় ৬০ টাকায়—Basilica of Bom Jesus / Se Cathedral / Sri Manguesh / Sri Mahalsa / Sri Ramnath / Sri Shantadurga মন্দির দেখাতে।

Tour No 4 : ১৫-০০টায় গিয়ে ১৯-০০টায় ফেরে ৬০ টাকায় বীচ স্পেশ্যালে Calangute / Anjuna / Vagator দেখিয়ে।

Tour No 5 : বন্ডলা স্পেশ্যালে ৯-৩০টায় গিয়ে ১৮-০০টায় ফেরে ১০০ টাকায় Bondla দেখিয়ে। আবার Island Special ও Tincol-ও যাচ্ছে পৃথক পৃথক ট্যুরে ২০০টাকায় এরা।

Tour No 6 : Island Special-এ যাচ্ছে ৯-৩০—১৮-০০টায় ৭০ টাকায়।

Tour No 7 : দুখসাগর যাচ্ছে ১ রাতের অবস্থানে জলপ্রপাত

ও মলম স্যাঙ্কচুরি দেখাতে ৪০০ টাকায়। পানাজি থেকে ১০-০০টায় গিয়ে পরদিন ১৮-০০টায় ফেরে শহরে।

Tour No 8 : কালানগুটে, মপুসা, মারগাঁও, কোলবা ও ভাস্কো থেকেও GTDC দুটি পৃথক ট্যুরে নর্থ গোয়া ও সাউথ গোয়া সফরে যাচ্ছে। ১০-০০টায় গিয়ে ১৮-০০টায় ফেরে প্রতিটা ট্যুর পৃথক পৃথকভাবে, ভাড়া ৮৫ প্রতিটা ট্যুরের। দুখসাগরও দেখিয়ে আনে মারগাঁও থেকে ৩০০টাকায় এরা।

তবে, ১ ও ২ বেড়াবার পর অন্যান্য ট্যুরের আকর্ষণ নিস্তাভ হয়ে পড়ে। পাঁচের অধিক বয়সের শিশুদের পুরো ভাড়া লাগে। ব্যবস্থাপনা ভালই, গাইডও থাকেন গাড়িতে।

| পানাজি থেকে দূরত্ব : | | নানান প্রাইভেট সংস্থাও |
|----------------------|---------|-------------------------|
| মারগাঁও | ৩৩ কিমি | যাচ্ছে কনডাক্টেড ট্যুরে |
| ভাস্কো-ডা-গামা | ৩০ " | গোয়া দর্শনে। উত্তর ও |
| মপুসা | ১৩ " | দক্ষিণ গোয়া দু'টি পৃথক |
| কালানগুটে | ১৬ " | পৃথক ট্যুরে দেখিয়ে আনে |
| ডাবোলিম এয়ারপোর্ট | ২৯ " | এরা। এমনকি মহাবাহু |
| কোলবা বীচ | ৬৯ " | পর্যটন দপ্তর থেকেও |
| তিরাকোল | ৪২ " | কনডাক্টেড ট্যুরে গোয়া |
| মারগাঁও রেল স্টেশন | ৩৪ " | দেখাবার ব্যবস্থা আছে। |
| ভাস্কো রেল স্টেশন | ৩০ " | আবার সন্ধ্যায় মুখাই |

সিঁমার জেট থেকে GTDC আর ট্যুরিস্ট হোস্টেলের বিপরীত থেকে ৬০টাকায় গোয়া সি ট্রাভেলস পৃথক পৃথকভাবে জলবিহার অর্থাৎ সানসেট ক্রুজ যাচ্ছে ১ ঘণ্টার সফরে ১৮-০০টায়। সান ডাউন ক্রুজ যাচ্ছে ১৯-১৫য়; ৫ঘণ্টার মেক্সার ক্রুজ যাচ্ছে ১০-০০ ও ১৫-০০টায় লঞ্চ। লাঞ্চ ও সফট ড্রিংস সহ টিকিট ৩০০। গোয়ার লোকসঙ্গীত ও লোকনৃত্যও পরিবেশিত হয় জলযানে। উচিতও হবে গোয়া ট্যুরিজমের Santa Monica, ৩ 230496-এর যাত্রী হয়ে বেড়িয়ে নেওয়া। আর যাচ্ছে পূর্ণিমা রাত্রে ১০০ টাকায় ২০-৩০—২২-৩০টায় নীল জলে চাঁদ থেকে বরা অংশ দেখাতে GTDC. ২ ঘণ্টার জলযানে ১৭-০০টায় ৩০০ টাকায় আইল্যান্ড মেক্সার ক্রুজ মাজোভী ও জুমুড়ি নদীবিহারেও যাচ্ছে GTDC.

তেমনই ট্যুরিস্ট হোস্টেলের বিপরীত থেকে নামমাত্র পরসায় ফেরি লঞ্চে চেপেও ঘটাতিনেকের সফরে মাজোভীর জলে ঘেরা দ্বীপ থেকে দ্বীপে বেড়িয়ে জলবিহার করে নেওয়া যায়। ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরও বসেছে Comunidade Building, Church Sq-এ। তেমনই নানানধর্মী ওয়টার স্পোর্টস—হোভারক্রাফট, অ্যাকোয়াবাইকস, রোয়িং, প্যাডেলবোটেও জলক্রীড়া সাঙ্গ করা যায় পানাজি অংশে। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়ার মেলে গোয়া টুরিজম থেকে।

উত্তর গোয়া

Calangute : বিশ্বখ্যাত বীচগুলির মধ্যে গোয়ার বীচগুলির প্রশস্তি আজ জগৎজোড়া। তাদেরও মধ্যে **কালানগুটে বীচটি** যেন মহারানী। বীচ জুড়ে কাউবাইথি, আরও দূরে পাহাড়সারি। পানাজি থেকে ১৫ কিমি দূরে ৭ কিমি ব্যাপ্ত কলুনকি কালানগুটে ও কলোদীমিটুইনবীচ। সোনালি বাগিতে মোড়া কালানগুটের সূর্যোদয়ও মনোরম।

প্রাকৃতিক সৌন্দর্যনয়নাভিরাম। কিছুকাল আগণও হিপিসের মকানগরী ছিল কালানগুটে। ডিসেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে বিশেষী পর্যটকদের ভিড়ও বেশি কালানগুটে। ট্যুরিস্ট অফিস, পোস্ট অফিস, ব্যাংকও বসেছে বীচের অদূরে গ্রামমুখী বাগা পথের সংযোগে। কনডাক্টেড ট্যুরে বা সার্ভিস বাসে কালানগুটে বেড়িয়ে দিনে দিনে ফেরা যায় পানাজিতে। থাকারও নানান ব্যবস্থা—GTDC-র ট্যুরিস্ট রিসর্ট/কটেজ, হোটেল, এমনকি প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়া। তবুও যেন কোলবার মতো পামের বাতাস কোলাচুমিকে আন্দোলিত করে না—বালিতে যেন লালমাটির মিশ্রণ।

Vagator: কালানগুটের ২ কিমি উত্তরে বাগা বীচ-এরও প্রশস্তি আছে পর্যটক মহলে। পেছনে বাড়া পাহাড়, মৃদু-মধুর বাতাস; দৃষ্টি জুড়ে নীলে নীল আরব সাগর। ঢেউ এসে আছড়ে পড়ছে রকি শোরে। অদূরে পাহাড়ের গায়ে ছোট ছোট ঝরনা ধারা। পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায় বীচ বা সড়ক ধরে। সান বাথ ও সমুদ্র স্নান দুইয়েরই আকর্ষণে বিদেশীদের খুব প্রিয় বাগা বীচ। পানাজি-কালানগুটের কোনো কোনো বাসও যাচ্ছে বাগায়। অদূরেই আশুয়ালা বীচ।

Anjuna: বাগা থেকে ১.৫ কিমি দূরে ১০ মিনিটে পায়ের হাঁটা উত্তরে *আবোড অব হিপিস* আঞ্জুনা বীচটিও নভেম্বর থেকে পালক সারা বিশ্বের মিলনতীর্থের রূপ নিয়েছে আজ। কালানগুটে থেকে বিভাড়িত হয়ে হিপির ডেরা বাঁধে আঞ্জুনা। আগমনও ঘটে চলে ছাপোরারই মতো দীর্ঘকালীন অবকাশে বিদেশীদের। নয়দেহে সানবাথ তথা উদ্ভাস সমুদ্র-স্নান ঘটে চলে নারকেলে ছাওয়া লালপাথুরে বালির সৈকত ভূমে। আর চলে হাসিস সেবন। তবে, আঞ্জুনার বীচটিও মনোরম। ১৯২০এ গড়া অষ্টকোণী চুড়া, ম্যাসালোর টাইলসের ছাদওয়ালা আলবুকার্ক ম্যানসনিও অভিনবত্বে ভরা। আঞ্জুনার আর এক আকর্ষণ তার বৃথবারের Flea Market. দেশ-দেশান্তরের নতুন-পুরানো নানান পণ্যের পসরানিয়ে হিপিসাজ্জে সেকানি বাসে। দামেও সম্ভা মেলে। এও যেন আঞ্জুনার একান্তই আপন। পূর্ণিমা রাতে রীতিমতো মেলা বসে হিপি-সাম্রাজ্যে। তবে, গত কিছুকাল জনরোষে বন্ধ আছে ফ্রি মার্কেট। ব্যাংক অব বরোদার শাখাও বসেছে আঞ্জুনা।

অন্যান্য বীচের মতো হোটেলের অভাব। তবে, আঞ্জুনা বীচে—Nobel Nest & Rest, Vales Happy Holiday Home, White Negro ছাড়াও ঘর মেলে ভাড়া সাধারণ বাড়িঘরে আঞ্জুনা। আহারেরও নানান রেষারেষি আঞ্জুনা বীচে। Rose Garden Restaurantটির প্রশস্তি লোক মুখে মুখে। ডেমনিই Gragory's Star of Anjuna-র দূর-দূরান্ত থেকে সী-ফুড খেতে আসে লোক। আঞ্জুনার অদূরে Haystack Restaurantএ প্রতি শুক্রবার সন্ধ্যায় Goan Buffet অর্থাৎ শ'দেড়েক টাকায় নাচ-গান-বাজনার আসর বাসে। বীচ দর্শনে আগ্রহীরা পানাজি বা কালানগুটে থেকে বাসে বাসে মপুসা হয়ে বেড়িয়ে নিতে পারেন।

ঘন্টার ঘন্টার বাস মেলে মপুসা থেকে। ট্যাক্সি, মোটর বাইকও যাচ্ছে মপুসা থেকে।

Agunda: পানাজি থেকে ১৮ কিমি দূরে আর কালানগুটের ৯ কিমি দক্ষিণে মাভোভী নদী আরব সাগরে মিলেছে। নদীমুখে ১৬০৯-১২য় পর্ভুগিজদের তৈরি দুর্গ আশুয়ালা ফোর্ট। পর্ভুগিজ ভাষায় *আশুয়া* অর্থ জল। নামকরণের সার্থকতা—একদা ৭টি প্রবণ ছিল, সমুদ্রে চলার পথে জাহাজ ভিড়ত মিষ্টি জল নিতে এখানে। আজ আর দুর্গ নেই, রূপান্তরিত হয়েছে সেম্বাল জেলে। তবে বীচটিদেখে নেওয়া যায় দুর্গ থেকে। অনুমতি-সাপেক্ষে জেল দর্শনেরও ব্যবস্থা মেলে। সামুদ্রিক জলখানকে নিশানা দেখাতে লাইট হাউসও হয়েছে। ১৬—১৭-৩০টার লাইট হাউস চড়ারও ব্যবস্থা আছে। আর হয়েছে হোটেল—দুর্গের এক অংশে। দূরে পাহাড়চুড়োয় রাজভবনও দৃশ্যমান।

Mapusa: বড়াদেশ—পর্ভুগিজ ভাষায় বারডেজ তালুকের সদরদপ্তর বসেছে মপুসায়। স্থানীয় মুখে মপসা। সুন্দর সুন্দর বাড়িঘর আর বাগিচার জন্যও খ্যাতি আছে মপুসা। মপুসার পুরাতন চার্চটির পর্যটক আকর্ষণও কম নয়। প্রতি শুক্রবার হাট অর্থাৎ Friday Market উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। বাস যাচ্ছে মুম্বই ১৩ কিমি দূরের পানাজি থেকে মপুসা। ২ ঘন্টার পথ। কালানগুটেরও বাস মেলে মপুসা থেকে। মুম্বই-ম্যাসালোর ওয়েস্ট কোস্ট হাইওয়েটি মপুসা হয়ে যাচ্ছে। বাসও মেলে নানান দিকের মপুসা থেকে।

মপুসার পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও অপ্রতিদ্বন্দ্বী দুই সাগরবেলা আঞ্জুনা ও ছাপোরা বেড়িয়ে নিতে পারেন মপুসা থেকে। পানাজি থেকেও সরাসরি বাস মেলে আঞ্জুনা ও ছাপোরা। মুম্বই বাস, ২ ঘন্টার পথ।

Chapora: নারকেল বীথিকায় ছাওয়া ছাপোরা বীচটি যেমন সুন্দর তেমনই রয়েছে পাহাড়-পাহাড় ছাপোরার পাহাড়ী টিলায় আর এক সুন্দর পর্ভুগিজ দুর্গ। ১৭১৭র দুর্গ থেকে চারপাশ সুন্দর দৃশ্যমান। সমুদ্রও যেন সারা উত্তরে পাহাড় শুড়িয়ে খাড়ির রূপ নিয়েছে। জেলেনদের গ্রাম ছাপোরা আর এক আকর্ষণ শুক্রবার রাতে নীলাকাশের নিচে নাচ-গান-বাজনার আসর। সঙ্গে চলে আহার ও বিহার সারা রাত ধরে। ছাপোরা থেকে ৩ কিমি উত্তরে নির্জনে মনোরম সাগর বেলা Vagator. পর্যটন কেন্দ্রের শিরোপা না মিললেও প্রকৃতির গুণে পর্যটক মন জয় করেছে ভাগাটো।

Arambol: নবতম রাজ্যের নতুনতম আবিষ্কার ছাপোরার উত্তরে আরামবোল সাগরবেলাটিও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে মপুসা থেকে ঘন্টা তিনেকের বাসে। ট্যাক্সি মেলে যাতায়াতে। জেলেনদের বাস সুন্দরী আরামবোলে। আঞ্জুনা থেকে বিভাড়িত হয়ে হিপিরও পৌঁছেছে আরামবোলে। পর্যটক পৌঁছালেও ব্যবস্থাপনা যথেষ্ট নয়। সৈকত শেষে সবুজাকীর্ণ পাহাড় সাগরে

মিলেছে। Alex Fernandes, Anthony Cardozo, Lizzy's GH, Utta n, Maria, Bella ছাড়াও হোটেল আছে নানান। আর খেলে স্থানীয়দের বাড়ি ঘরে ১০০-১২৫ টাকায় সাজসজ্জাহীন অতি সাধারণ ঘর আরামবোলে। আহাৰ্যও মেলে চায়ের দোকানপাটে।

Moyem : পানাজির ৩৫ কিমি উত্তর-পূবে চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা সবুজ ছাওয়া প্রকৃতির মাঝে মনোরম ময়েম লেক। লেকের জলে বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে। চড়ুইভাতির মনোরম জায়গা। রেষ্টোরাঁও হয়েছে লেকের মাঝে। ২ নম্বর টারে দেখে নেওয়া যায়। থাকার জন্য আছে GTDC-র ময়েম লেক রিসর্ট, ৩ (91-832) 362144, D ২০০, A/c D ৩০০, ৩৫০ ডর্মি ৫০।

সাউথ গোয়া

পানাজি থেকে ২২ কিমি দূরে গার্ডেন অব গোয়া—পোভা তালুকের মঙ্গেশি গ্রামে ৪০০ বছরের পুরাতন শিবমন্দির Shri Manguesh. অনুষ্ঠ টিলার টঙ্গে—চারপাশ সবুজ পাহাড়ে ঘেরা। প্রবেশদ্বারে দক্ষিণ ভারতীয় মন্দিরের মতো গোপূরমের খাচে সফেদরঙা অষ্টকোণী টাওয়ার। তীর্থযাত্রীদের থাকারও ব্যবস্থা আছে ধরমশালা অর্থাৎ মন্দিরের অগ্রশালায়। জন্ম যদিও ইন্দোরে, তবে সঙ্গীত শিল্পী লতা মঙ্গেশকরের আদিবাস এই শ্রীমঙ্গেশে। ২০টি ভারতীয় ভাষায় ৩০ হাজারেরও অধিক গানের রেকর্ড করে বিশ্বরেকর্ড গড়েছেন শ্রীমতী লতা।

শ্রীমঙ্গেশের ১½ কিমি দূরে মারদোলের মন্দিরে Shri Mahalsa অর্থাৎ বিষ্ণু আরাধ্য দেবতা। হিমতে দেবী কালীই হলেন শ্রীমহলসা। আর পোভা থেকে ৫ কিমি দূরে কাভালমে রয়েছে গোয়ার সবচেয়ে ধনী দেবতা শ্রীরামনাথ-জীর মন্দির। এর সভামণ্ডপটি অমৃতসরের স্বর্ণমন্দিরের আদলে তৈরি।

শ্রীমঙ্গেশ মন্দিরের পথে পানাজি থেকে ১৯ কিমি দূরে কাভালমে ১৭১৩ খ্রিস্টাব্দে তৈরি শ্রীশাঙ্কাদুর্গা মন্দির। দোলা-পুর রাজ পরিবারের উপাস্য দেবী শাঙ্কাদুর্গার মন্দির ছিল অতীতে ভেলহাতে। পর্তুগিজদের হাতে মন্দির ধ্বংস হতে দেবীর স্থানান্তর ঘটে। শিব ও বিষ্ণু পূজিত হচ্ছেন মন্দিরে। কথিত আছে, একদা শিব ও বিষ্ণুর মাঝে দ্বন্দ্ব হতে ব্রহ্মার ডাকে শান্তির দেবী শাঙ্কাদুর্গা এলেন দ্বন্দ্ব মেটাতে। তাই দেবী এখানে শান্তিময়ী চতুর্ভুজা জগদম্বা। প্যাণোভাধর্মী চূড়োও হয়েছে মন্দিরে। ডিসেম্বরের যাত্রা বরণীয় উৎসব। আগ্রহীদের উচিত হবে কনডাকটেড ট্যুরে বা পোভার বাসে মন্দির দেখে ফেরা।

Margao : অতীতের Salcete তালুকের রাজধানী তথা দক্ষিণ গোয়ার সদর—রাজ্যেরও দক্ষিণে মারগাঁও। পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও রেল, বাস ও ভ্রমণপথ—ত্রয়ীর সংযোগ পেয়ে গুরুত্বপূর্ণ বাণিজ্যক্ষেত্রে রূপ পেয়েছে।

বসতির ঘনত্বেও মারগাঁও অন্যতম— ৭২০০০ লোকের বাস মারগাঁও-এ।

ভারতীয় রেলও যাচ্ছে মারগাঁও হয়ে ভাক্সোয়। পানাজির নিকটতম রেল সংযোগকারী স্টেশনও ৩৩ কিমি দূরের মারগাঁও। উচিতও হবে রেল যাত্রীদের মারগাঁও পৌঁছে বাসে ১½ ঘণ্টায় পানাজি চলা। ভোর থেকে রাত ২০-০০টায় ১ ঘণ্টা অন্তর বাস। সুন্দর সুন্দর বাড়িঘর আর বাগিচার জন্যও খ্যাতি আছে মারগাঁও-এর। বাড়িগুলিতে ল্যাটিন স্থাপত্যের ছাপ, মেক্সিকোরই প্রতিচ্ছবি যেন। ওস্তাদ মারগাঁও চার্চটিও উচিত হবে চলতে ফিরতে দেখে নেওয়া। তেমনই আর এক আকর্ষণ শুক্রবারের বাজার।

মারগাঁও শহর থেকে ১, ভাক্সোর ৪ কিমি দূরে পশ্চিম ভারতের অতি আধুনিক বন্দর মারগাঁও-এর Mormugao Harbour. সারা বিশ্ব থেকে যাত্রী জাহাজ ও মালবাহী জাহাজ নোঙ্গর করে গোয়ার মারমার্গাঁও হারবারে। সুন্দর বাস সংযোগ গড়ে উঠেছে মারগাঁও থেকে গোয়া তথা দক্ষিণ ও পশ্চিম ভারতের নানান দিকের। Colva Beach-এর বাস যাচ্ছে Benaulim হয়ে ৭-৩০—২০-০০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায়। কশটিক সীমান্তে Gokarn Beach বা আরও দক্ষিণে কশটিকের কারওয়ার যাচ্ছে ৪½ ঘণ্টায় মারগাঁও থেকে দিনভর বাস। গোয়া টুরিজমের অফিসও বসেছে মিউনিসিপ্যাল গার্ডেন লাগোয়া সেক্রেটারিয়েট বিল্ডিং-এ। কদম্ব বাস স্ট্যান্ড থেকে ১½ কিমি দূরে শহর। অটো, ট্যাক্সি চলছে শহরে।

মারগাঁও-এনবতম, এশিয়ায় প্রথম হয়েছে দ্য মিউজিয়াম অব ক্রিস্টিয়ান আর্ট। শহর থেকে ১২ কিমি দূরে দক্ষিণ গোয়ার সালসেট তালুকের সেমিনারিতে ১৯৯৪-এর ২৪শে জানুয়ারি অতীত গোয়ার নানান সম্ভার নিয়ে রূপ পেয়েছে। সোম ছাড়া দেখে নেওয়া যায়।

Colva Beach : ডাবোলিম বিমানবন্দরের দক্ষিণে, মারগাঁও থেকে ৬ আর পানাজির ৪০ কিমি দূরে সালসেট তালুকে কিং অব দ্য বীচেস—কোলবা বীচ। কালানুগুণের প্রতিদ্বন্দ্বী। এরও প্রশস্তি প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের জন্য। কোলবার রূপালি বেলাতুমি, তাল-তমাল-নারকেল ঝালর টাঙিয়েছে বীচ জুড়ে। কিছুকাল আগেও তালপাতায় ছাওয়া কুঁড়ের আশ্রিতা গাড়ে বিদেশীরা সান বাথ ও সি বাথ উপভোগ করত কোলবায়। একের গ্রহণে নতুন এসে দখল নিত কুঁড়ের। তবে, আইন করে হিপিসের দৌরাভ্য বন্ধ করা হয়েছে আজ। ক্রত গাড়ে উঠছে পর্যটক বিনোদনের নানান পসরা প্রকৃতির লীলাভূমি কোলবায়। সুনীল সাগর আর নীল আকাশের মোহময় রূপ পর্যটকদের মুগ্ধ করে। কিন্নকও মেলে কোলবায়। ৭-৩০—২০-০০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে মারগাঁও থেকে কোলবায়। স্নান ঘণ্টার পথ। বাস আসছে পানাজি থেকে ১½ ঘণ্টায়—সকাল থেকে সন্ধ্যায় ১ ঘণ্টা অন্তর। ট্যাক্সিও মেলে এপথে। হোটেলও আছে নানান কোলবায় (হোটেল অংশে দেখুন)।

কোলবার ২ কিমি দক্ষিণে আর এক শাঙ-সুমধুর বেনৌলিম বাঁচাটও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বেনৌলিমের ১০ কিমি দক্ষিণে Varca, আরও ৭ কিমি দক্ষিণে Cavellossim Beach. থাকা ও আহার্য দুইই মেলে ত্রয়ীতে। বাস যাচ্ছে মার-গাও থেকে কোলবা/বেনৌলিম/কেভলোসিম ও ভাকায়।

আরও দক্ষিণে ছবির মতো মৎস্যবন্দর বেটুলও বেড়িয়ে ফেরা যেতে পারে। পায়ে পায়ে বা রিকশায়। এমনকি, Johnney's Restaurant প্রতি বুধবার প্যাকেজ টারে আঞ্জুনার Flea Market-ও বেড়িয়ে আনে বেনৌলিম থেকে।

Vasco-da-Gama: পানাজি থেকে ৩০ আর মারমাগাঁও বন্দরের ৪ কিমি দূরে গোয়ার দীর্ঘতম নদী জুয়াড়ির বুক গড়ে উঠেছে অতি আধুনিক শহর ভাস্কো-ডা-গামা। রেল, বাস, হোটেল-রেস্তোরাঁ সবেরই অবস্থান স্বল্প ব্যবধানে ভাস্কোয়। ভাস্কো-ডা-গামা পানাজির রেল সংযোগকারী স্টেশনও বটে। ভারতীয় রেলের চলাও শেষ ভাস্কোয়। গোয়ার একমাত্র বিমানবন্দরটি রূপ পেয়েছে ভাস্কো শহরান্তে ডায়েলিম-এ। বাঙালির দুর্গাপ্রজ্ঞাও পৌঁছেছে গোয়ার দ্বিতীয় বৃহত্তম শহর ভাস্কোয়। সাতশোরও অধিক বাঙালি পরিবার কার্যব্যপদেশে প্রবাসজীবন যাপন করছেন ভাস্কোয়। ডোনা পাওলা থেকে ফেরি লঞ্চেও ভাস্কোয় যাওয়া চলে। আবার করটালিস সেতু দিয়ে জুয়াড়ি পেরিয়ে যাত্রী বাস যাচ্ছে পানাজি থেকে ভাস্কোয় মুহূর্মুহ। স্বচ্ছন্দে লঞ্চ বা বাসে এসে দিনভর ভাস্কোয় কাটিয়ে ফেরা যায় পানাজি।

Pilar : পানাজি থেকে ১১ কিমি দক্ষিণে ব্রিস্টান মিশ-নারীদের ধর্ম ও শিক্ষাকেন্দ্র পিলার। পাহাড়ডুডোয় সবচেয়ে উঁচুতে অতি আধুনিক চার্চ পিলার। রঙিন কাচের টুকরোয় তৈরি যীশুর ছবিগুলি সুন্দর। স্যালোকে রঙের বর্ণালী নয়নাভিরাম। ছাদ থেকে জুয়াড়ি নদী ও মারমাগাঁও বন্দরের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়।

Old Goa : পানাজি থেকে ৯ কিমি পূবে ছিল অতীতের গোয়া অর্থাৎ এলা শহর। বসতির সূত্রপাত যদিও কদম্ব রাজাদের কালে তবে, ১৫ শতকের শেষভাগে মুসলিম নৃপতি আদিলশাহের হাতেই গড়ে ওঠে শহর। রাজধানীও স্থানান্তরিত হয় বিজাপুর থেকে আদিলশাহীদের। পরিখাবৃত দেওয়ালে ঘেরা ছিল সেকালের প্রাসাদ-নগরী। নানান মন্দির, নানান মসজিদ এলায়। তবে, আজ আর অস্তিত্ব নেই তার। পরবর্তীকালে পর্তুগিজদের হাতে নতুন সাজে সেজে ওঠে শহর। নামান্তরও ঘটে পর্তুগিজদের হাতে—এলা হয় ভেলহা (Velha)। রাজ্যপাটও বসে পর্তুগিজদের ১৫১০এ A fonso de Albuquerque-এর নেতৃত্বে। ধ্বংস পায় একে একে হিন্দু দেবদেউল, মুসলিম মসজিদ; মাথা তোলে শতাধিক চার্চ পর্তুগিজদের হাতে। রমরমা ভেলহা *রেম ইন ইন্ডিয়া* বলে প্রসিদ্ধিও পায় সেকালে। ১৯ শতকের গোড়ায় গোয়া দমন দিউ অর্থাৎ পর্তুগালের পূর্ব-সম্রাজ্যের প্রশাসন দপ্তরও বসে ভেলহায়। ১৬০৩এ ডাচ, আরও পরে ইয়োরোপে

Napoleonic War চলাকালে ব্রিটিশ ও ফরাসিরা দাবিদার হয়ে ওঠে পর্তুগিজদের জলসম্রাজ্যের। তারই সঙ্গে বার বার ১৫৪৩, ১৬৩৫ ও ১৭৩৫এ গোয়ায় শ্লগমহমারীরূপে দেখা দেয়। দুই লক্ষাধিক (বসতির ৮০%) লোক মারা পড়ে দুরারোগ্য ব্যাধিতে। তদানীন্তন পর্তুগিজ সরকার দুশ্চিন্তায় পড়ে—স্থানান্তরিত হল রাজধানী ১৮৪৩এ নোভা গোয়া অর্থাৎ নতুন গোয়ায়। তাই যেন বিষাদের সুর বাজে মিউজিয়ম নগরী Rome of the Orient ওস্ত গোয়ার আকাশে-বাতাসে। চূনাপাথরের শ্রলৈপ লাগানো অতীতের ল্যাটারাইট পাথরে চ্যাপেল অব সেন্ট ক্যাথারিন, শে ক্যাথেড্রাল, বম জেসাসের ব্যাসিলিকার পর্যটক আকর্ষণ অনবীকার্য। তেমনিই উচিত হবে দি আর্কিওলজিক্যাল মিউজিয়ম ও পোর্ট্রেট গ্যালারিও দেখে নেওয়া। তবে, সেকালের রাজধানী আজ খ্যাত ওস্ত গোয়া নামে। শহর থেকে প্যাকেজ টার বা সার্ভিস বাসে বেড়িয়ে ফেরা যায়। পোভার বাসগুলিও যাচ্ছে ওস্ত গোয়া হয়ে। আধঘণ্টার পথ। আবার ট্যুরিস্ট হোস্টেলের বিপরীত থেকে নিয়মিত লঞ্চ যাচ্ছে ফেরি সার্ভিসে।

| পানাজি থেকে দূরত্ব | | ১৫৯৪এ শুরু হয়ে |
|--------------------|----------|--|
| কোলহাপুর | ২৪৬ কিমি | ১৬০৫এ গ্রানাইট শিলা ও |
| সাতারা | ৩৬৩ " | বেলে পাথরে ডোরিক |
| পুনে | ৪৭১ " | শৈলীতে গড়ানো Basilica of |
| মুম্বাই | ৫৯৪ " | Born Jesus গোয়া তথা সারা |
| কারওয়ার | ১০৩ " | বিশ্বের ক্যাথলিক ধর্মীদের |
| ম্যাসালোর | ৩৭১ " | কাছে অন্যতম পবিত্র ধর্মস্থান। |
| হসপট | ৩১৫ " | ৯—১৮-৩০টায় চটকদার |
| লোভা | ১০৬ " | ব্যাসিলিকা অব বম জেসাস- |
| হবলি | ১৮৪ " | এর অভ্যন্তরের কারুকর্ম |
| বেলগাঁও | ১৫৭ " | দেখে নেওয়া যায়। গিলটি |
| মালভান | ১৫০ " | করা বেদী অর্থাৎ উপাসনা- |
| গুন্টাকল | ৪৪৫ " | আসরটি পর্যটকদের মোহিত |
| মহেশ্বর | ৬৭৭ " | করে। সেন্ট ফ্রান্সিস |
| রত্নগিরি | ২৬৩ " | জেভিয়ারের টাকায় তৈরি |
| বাসালোর | ৬৩২ " | এটি। শেষ হবার ৬ মাস |
| চোমাই | ৯২০ " | আগেই খ্রিস্টধর্ম প্রচারে গিয়ে |
| গুরমাবাদ | ৭০৬ " | জাপান থেকে ফেরার পথে |
| আমোবা | ১২৩৪ " | অসুস্থ হয়ে পড়েন চীনের |
| হায়দ্রাবাদ | ৭৪৩ " | সাক্ষীয়ান (Sancian) ঘাঁপে |
| দমন | ৭৮৭ " | সেন্ট জেভিয়ার। মৃত্যু হয় |
| দিউ | ১৫৬৬ " | ১৫৫২র ৩রা ডিসেম্বর ৪৬ |
| ত্রিভুজনতপুরম | ১০৪৬ " | বছর বয়সে পাক্সী সাহেবের। |
| দিব্রী | ১৯০৪ " | সাক্ষীয়ানে সমাধিস্থ সেন্ট |
| কলকাতা | ২৪০০ " | জেভিয়ারের মরসেহ মালাকা ঘুরে ১৫৫৪য় গোয়ায় পৌঁছায়। |

সেন্ট পলস কলেজে অবস্থান করে মরসেহ। অবশেষে যাজকীয় ভূষণে স্থানান্তর ঘটে ব্যাসিলিকায় ১৬৯৮এ। শায়িতও রয়েছে উপাসনা হল-এ সেন্ট জেভিয়ারের মরসেহ

ফ্লোরেন্সে গড়া এক রূপোর কফিনে। মুক্তা খচিত ছিল সেকালে কফিনে। তবে, আলো-আধারি পরিবেশ কিছুটা ভীতির উল্লেখ ঘটায়।

প্রতি ১২ বছর অন্তর সেন্ট জেভিয়ারের মৃত্যুর দিনে দেহ প্রদর্শিত হয়। সারা বিশ্ব থেকে তখন ভক্তের দল আসেন শ্রদ্ধা জানাতে। ২০০৬ খ্রিস্টাব্দের ৩রা ডিসেম্বর আগামী দর্শন। তবে, অক্ষত নেই দেহ আজ আর। পায়ের একটি আঙুল ১৫৫৪য় এক পর্ভুগিজ মহিলা স্মারকরূপে পেতে কামড়ে নেয়। একটি খসে পড়ে আপনা থেকে—সেটিও রাখা হয়েছে ক্রিস্টাল বক্সে। ডান হাতের একটা অংশ রোমে যায় ১৬১৫য়, বাকি অংশ পাঠানো হয় নাগাসাকির ক্যাথলিক সম্প্রদায়ের উদ্দেশ্যে ১৬১৯এ। এছাড়াও, স্মারকরূপে টুকরো গিয়েছে বিশ্বের দিগ্বিদিকে ক্যাথলিক সম্প্রদায়ের কাছে। দেহও আজ সঙ্কুচিত। যাত্রীদের থাকার সাময়িক ব্যবস্থাও গড়ে ওঠে বিশেষ দর্শনের উৎসবকালে। বিশেষ লঞ্চও চলে উৎসব-কালে পানাজি থেকে ওস্ত গোয়ায়। আর মৃত্যুবাহিনী পালিত হচ্ছে সেন্ট জেভিয়ারের প্রতি বছর ৩রা ডিসেম্বর। ভক্তের দল আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। পানাজির হোটলে ঘর মেলা দুকর হয়ে পড়ে উৎসবকালে ডিসেম্বরের প্রথম সপ্তাহে। লাগোয়া আর্ট গ্যালারি।

আলেকজান্দ্রিয়ার নাস্তিক উত্তরকালে খ্রিস্টধর্মে সমর্পিত প্রাণ সেন্ট ক্যাথারিনের শিরচ্ছেদ ঘটে ২-শে নভেম্বর। আলবুকার্ক এ একই দিনে জয় করেন গোয়া। দুইয়েরই স্মারকরূপে পর্ভুগিজরা চ্যাপেল অব সেন্ট ক্যাথারিন বা বিজয়-ভোরণ গড়ে যুদ্ধজয়ের স্থলে।

বম জেসাসের বিপরীতে ১৫৬২তে শুরু হয়ে ১৬১৯এ শেষ হলো সম্পূর্ণতা পায় ১৬৫২য় এক মসজিদের উপর গড়া গোয়ার বৃহত্তম সে ক্যাথিড্রাল (Se Cathedral)। সেন্ট ক্যাথারিনের উদ্দেশ্যে উৎসর্গীকৃত। পর্ভুগাল ও গথিক স্থাপত্য—বহির্ভাগ তাসখণ্ডী, অন্দর করিছিয়ান শৈলীতে তৈরি। কারুকার্যে হিন্দু-মুসলিম স্থাপত্যের নিদর্শন মেলে। মৌহিত করে ক্যাথিড্রালের কারুকার্য তথা অলঙ্করণ। দেওয়ালের ম্যুরালে সেন্ট ক্যাথারিনের নানান কর্মকাণ্ডও রূপ পেয়েছে। এই চার্চ থেকেই গোয়ার অন্যান্য চার্চ নিয়ন্ত্রিত হয়। অতীতে ২টি চূড়া ছিল সে ক্যাথিড্রালে। দক্ষিণেরটি ১৭৭৬এ ভেঙে পড়ে। ৫টি বেল অর্থাৎ ঘণ্টাও আছে চার্চে। একটি তাদের গোল্ডেন বেল। উত্তরের চূড়ায় এই গোল্ডেন বেল কেবল গোয়ার মধ্যেই বৃহত্তম নয়—সারা বিশ্বে অনন্য এটি। ৯—১০ কিমি দূরেও এর আওয়াজ পৌঁছায়। সহ্যাদ্রি পর্বতে পাওয়া হোলি ক্রসটিও ক্যাথিড্রালের আর এক সম্পদ।

ওস্ত গোয়ার একমাত্র মহিলা মঠ Nunnery of Santa Monica কনভেন্ট। ১৬০৬এ শুরু হয়ে শেষ হয় ১৬২৭এ। তবে, ১৬৩৬এ ধ্বংস পায় সেটি বিধ্বংসী এক অগ্নিকাণ্ডে। গড়ে ওঠে নতুন করে আবার। Royal Monastery নামে

পরিচিতিও ছিল সেকালে। আর ১৯৬৪তে Mater Dei Institute-এ *নান* অর্থাৎ সম্মানসিনেদের মঠ বসেছে। দুর্গাকারে তৈরি বৃহত্তম মঠের প্রাচীর চিত্র দেখবার মতো। বাইবেলের আখ্যানও চিত্রিত হয়েছে চ্যাপেলকার এই মঠে।

১৫১৭তে গোয়ায় এসে ৮ খ্রিস্টান ভিক্টর রোমের সেন্ট পিটার ব্যাসিলিকার আদলে গড়ে তোলে Convent & Church of St Francis of Assisi। আর ১৬৬১তে নবসাজে রূপ পায় আজকের অ্যাসিসি। ওস্ত গোয়ার অন্যতম আকর্ষণও বটে এই অ্যাসিসি। কিছুটা জবরজং হলেও গিলটি করা অলঙ্করণ, কাঠখোদাই করা কারুকার্য, ম্যুরালে সেন্ট ফ্রান্সিসের জীবনগাথা অনবদ্য। অ্যাসিসির পেছনে প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের মিউজিয়াম। পর্ভুগিজ সম্ভারের সঙ্গে অতীতকালের চালুক্য ও হায়সলী শৈলীর হিন্দু মন্দিরের নানান স্থাপত্য দেখে নেওয়া যায়। ১৫১০এর Afonso de Albuquerque-এর যুদ্ধ জাহাজের মডেলটিও বৈচিত্র্যময়। শুক্র ছাড়া ১০—১২-০০ আবার ১৩—১৭-০০টায় খোলা।

আর ১৬৫৫য় রোমের সেন্ট পিটার ব্যাসিলিকার আদলে করিছিয়ান শৈলীতে গড়ে ওঠে St Cajetan Church. পোপ আর্বান ৩-এর দূত ইতালীয় ভিক্টর খ্রিস্টধর্ম প্রচারে এসে গোলকুণ্ডায় ঠাই না পেয়ে গোয়ায় পৌঁছান ১৬৪০এ। গড়ে তোলেন সেন্ট ক্যাজেটন ওস্ত গোয়ার ফেরিঘাটে। Catacombs-এর জন্য বিশেষভাবে খ্যাত এই সেন্ট ক্যাজেটন।

এছাড়াও চার্চ রয়েছে ওস্ত গোয়ায় আরও নানান। তৈরি হয়েছে পর্ভুগিজ শাসনের সুবর্ণ যুগে এরা। তবে, পর্যটক আবেদন উল্লেখ্য নয় এদের। আর আছে সরু সরু গলিপথ, দু'পাশে বাড়িঘর—পর্ভুগিজ শৈলীতে বুল-বারান্দা, লাল টালিতে ছাদ। তারই মাঝে চলতে-ফিরতে ছোটখাট বার, চায়ের পাট। সাইনবোর্ডগুলি আজও এদের পর্ভুগিজ ভাষায় দেখতে মেলে কারো কারো। এমনকি আজও এদের মাঝে গ্রি-পিস স্মুট পুরা, টাই বোলানো, জুতো-মোজা পায়, হ্যাট চাপানো *escrivao* অর্থাৎ গোয়ানিজ সাহেব দেখতে মেলে। পানাজি থেকে কনডাকটেড ট্রায়ে বা সার্ভিস বাসে বা ফেরি লঞ্চে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। পোন্ডার বাসও যাচ্ছে ওস্ত গোয়া হয়ে। মুহূর্ত্ত বাস চলে এপথে।

ডিওয়ার দীপের মূল মন্দির পর্ভুগিজদের হাতে ধ্বংসের পর পানাজি থেকে ৩৭ কিমি দূরে নাভেতে নতুন করে গড়ে ওঠে শ্রী সপ্তকোটেশ্বর মন্দির। কদম্ব রাজাদের কালের মন্দিরে রাজপরিবারের গৃহদেবতা সপ্তকোটেশ্বর অর্থাৎ শিবের পূজা হয়। পবিত্র হিন্দুতীর্থ। ছত্রপতি শিবাজী ১৬৬৮তে সংস্কার করেন মন্দির। দেবতা এখানে পলকাটা ধারালিঙ্গ।

পানাজি থেকে ৪০ কিমি দূরে গোয়ার দক্ষিণে কানাকোনায় হ্রাবিড় বংশের হাবুর্নাজার হাতে ১৬ শতকে তৈরি শ্রীমালিকার্জুন মন্দিরটিও তার সৌন্দর্যের জন্য পর্যটন

তালিকায় স্থান করে নিয়েছে। কাঠের তৈরি পিলারগুলির কার্ভিং-এর কাজ সুন্দর। ৬০এরও বেশি দেবমূর্তি রয়েছে মন্দিরে। ১৭৭৮এ সংস্কার হয় মন্দির। ফেব্রুয়ারির রথসপ্তমী বরণীয় উৎসব।

পানাজি থেকে ৬০ কিমি দূরে কানাকোনো তালুকে পানাজি-ম্যাসালোর NH 17 থেকে ৩ কিমি সরে গিয়ে গহন অরণ্যে গোয়ায় তিনের মধ্যে দ্বিতীয় বৃহত্তম (১০৫ বর্গ কিমি) Catigao Wildlife Sanctuary-টিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া।

মোগল বাহিনী ও মারাঠা শাসক শাস্তাজীর মিলিত শক্তি ১৬৮৩তে পর্তুগিজদের যুদ্ধে হারায়। যুদ্ধজয়ের স্মারক রূপে দিনের বাদশাহ ওরঙ্গজেবের পুত্র আকবর নামজগা গড়েন।

পানাজি থেকে ৩৫ কিমি দূরে ১৫৬০এ ইব্রাহিম আদিল শাহ-র তৈরি পোভা তালুকের ধ্বংসপ্রাপ্ত সাক্ষা মসজিদ তার উল্লেখযোগ্য গঠনশৈলী নিয়ে আজও পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে। এর স্থাপত্য পর্যটকদের মুগ্ধ করে। ইদ-উল-ফিতর ও ইদ-উজ্জ-জোহা সাড়ম্বরে পালিত হয়।

তেরেখোল দুর্গ

গোয়ার উত্তর-পশ্চিমে তেরেখোল। একদিকে তেরেখোল নদী অপরদিকে অঙ্গুহীন আরব সাগর—দুইয়ের মাঝে সবুজের উড়নি গায়ে পাহাড়ী অধিত্যকা তেরেখোল। ১৮ শতকের গোড়ায় মারাঠাদের হাতে গড়ে ওঠে দুর্গ। আর পর্তুগিজ দখলে যায় ১৭৪৫। ১৭৯৪এ স্বল্পকালের জন্য দখল ফেরে মারাঠাদের হাতে। ১৮২৫এ তদানীন্তন গোয়া-নিজ গভর্নর জেনারেল ড. বার্নাডো পেরেস দ্য সিলভার বিদ্রোহ দীর্ঘস্থায়ী না হলেও ১৯৫৪য় আবার স্বাধীনতার স্বপ্নে বিভোর হয়ে ওঠে তেরেখোল। গণ-পদযাত্রার সংগ্রামী মিছিল আসে ভারতের নানান প্রান্ত থেকে। নেতৃত্বে ছিলেন বাংলার ত্রিদিব চৌধুরী। ১৯৫৫য় সত্যগ্রহীর মৃত্যু দ্বারাধিত করে স্বাধীনতাকে। সেই স্বাধীনতার নানান উত্থান-পতনের সাক্ষী তেরেখোল দুর্গ তার নৈসর্গিক সৌন্দর্যের জন্যও আজ পর্যটকপ্রিয়। নিয়মিত বাস যাচ্ছে পানাজি থেকে ৪২ কিমি দূরের তেরেখোলে। আবার মপুসা থেকেও বাসে কুইরম পৌঁছে ফেরিতে চলা যেতে পারে তেরেখোল।

খাকার জন্য দুর্গে বসেছে GTDC-র Tiracol Fort Heritage, ☎ (91-2366) 68248, Terekhol, DAB ৮০০ ৮৫০ A/C D ১৭৫০ ১৮০০। আর আছে—Hill Rock Bar & Restaurant, D ১৭৫-২৫০; Lobo's Serene Private Resorts, H Palm ঝড়াও নানান হোটেল তেরেখোলে।

বডলা

পানাজি থেকে ৫০ কিমি দূরে হাজার তিনেক ফুট উচুতে পশ্চিমঘাটের ঢালে ৩৫ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে বডলা

ফরেস্ট—প্রকৃতির গড়া বটানিক্যাল গার্ডেন, মৃগ উদ্যান ও চিড়িয়াখানা তথা ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি। ফরেস্টের পূর্ব ধরে বয়ে চলেছে রাগাডো আর উত্তর গিয়ে মিলেছে মাটেল নদীতে। অতীতে কদম্ব রাজাদের ক্রিয়াকর্মে মুখরিত বডলাকে আজ বাইসন, বন্য শুয়ার, হরিণ, চিতাবাঘ, সরীসৃপ ছাড়াও নানান প্রজাতির পাখিরা মুখর করে রেখেছে। পিকনিকের আদর্শ জায়গা। বৃহস্পতিবার ছাত্র বন্ধ থাকে ফরেস্টের।

চলার পথে ১৫৬০এ আলি আদিলশাহের তৈরি গোয়ার একমাত্র Safa Shahouri Masjid টিও দেখে চলা যেতে পারে পোভায়। তবে মূল মসজিদ পর্তুগিজদের হাতে ধ্বংস পেতে মসজিদ হয়েছে নতুন করে।

খাকারও ব্যবস্থা মেলে বনদপ্তরের ট্যুরিস্ট কটেজে। অবু: Chief Wildlife Warden, 3rd flr, Junta House, Panaji. খাঁচায় ভরা বন্যজন্তুর থেকেও প্রকৃতির আকর্ষণে GTDC-র কনডাকটেড ট্যুরে বা বনদপ্তরের বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আহাৰ্য মেলে ক্যান্টিনে। ওস্ত গোয়া/পোভা হয়ে পথ গিয়েছে বডলার। আবার পোভার সার্ভিস বাস এসেও ট্যাক্সিতে চলা যেতে পারে বডলায়।

দুধসাগর জলপ্রপাত

মিরাজ থেকে ভাস্কোগামী রাতের ট্রেনের যাত্রীদের মুম ভাঙায় এই নয়নাভিরাম জলপ্রপাত। কোলেম রেলস্টেশন থেকে ১০ আর পানাজির ৬০ কিমি পূর্বে ৬০৩ মি উচু থেকে পড়ছে জলের ধারা। জলের রঙ সাদা, দুধের মতো—নামও তাই দুধসাগর জলপ্রপাত বা ওশন অব মিল্ক।

ভোরের আলোর সাথে ট্রেনেরও উদয় ঘটে দুধসাগর স্টেশনে। স্টেশন পেরুতেই পাহাড়ের বুক বেয়ে চলতে থাকে ট্রেন। ছোট-বড় নানান টানেল। চলন্ত ট্রেনে বসেই দেখে নেওয়া যায় সুন্দর নৈসর্গিক পরিবেশের মাঝে প্রাকৃতিক জলপ্রপাত। ট্রেন ঘুরছে পাহাড়ী পথে, ঝরনাও পড়বে ডাইনে-বামে—বার বার। খুবই চিত্তাকর্ষক এই দুধসাগর। কনডাকটেড ট্যুরে যাচ্ছে পানাজি থেকে দুধসাগর দেখাতে GTDC। তবে, বাস যাত্রায় বঞ্চিত হবেন দুধসাগর দর্শন থেকে গোয়া যাত্রীরা।

ভগবান মহাবীর ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি

পানাজি-বেলগাঁও জাতীয় সড়কে পানাজি থেকে ৬০ কিমি দূরে ঘণ্টা দেড়েকের পথে দুধসাগর লাগোয়া সীমান্ত জোড়া পশ্চিম-ঘাটের ঢাল বেয়ে ২৪০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত গহীন অরণ্যানী জুড়ে গোয়ার বৃহত্তম মলেম বা মহাবীর বন্যজন্তু সংগ্রহালয়। পক্ষী প্রেমিকদেরও স্বর্ণ এই মলেম। গোয়ার পথে ট্রেন যাত্রায় দুধসাগরের সঙ্গে ট্রেনে বসে চলতে চলতে মলেমও উপভোগ করে নেওয়া যায়। GTDC-র Forest

Resort, Molem, ☎ (91-834) 600238, D ২০০ পাঁচ বেডের ঘর ৩৫০ বেড ৫০ A/c D ৩৮০ আছে মলেমে। আহাৰ্যও মেলে অগ্নিম অর্ডারে।



হোটেলের অভাব নেই পানাজিতে। ১৮০০০ বেডের সঙ্কলন মেলে গোয়ার হোটেল। তবে, সরকারি বলতে ১০%-এরও কম, ১৫০০ হব। বাস স্ট্যান্ড থেকে জাহাজঘাটা—মিনিট পনেরোর পায়ে হাটা পথে হোটেলগুলির অবস্থান পানাজিতে। অক্টোবর ৪ থেকে জুন ১৫ সিজন—বাকি সময়টা অফ সিজন। তবুও যেন সিজনটা দু'ভাগ হয়েছে গোয়ার হোটেল; ডিসেম্বরের ১৫—জানুয়ারির ৩১ পিক সিজন, ফেব্রুয়ারি ১—জুন ৩০ সিজন। রেটেও হেরফের ঘটে—পিক সিজনে পিকে উঠলেও সিজনে ১৫—২৫% রিভেট মেলে। আর অফ সিজনে রেট নামে আধায় গোয়ার হোটেল।

আজও পানাজিতে সেরা কদম্ব বাস স্ট্যান্ড থেকে ৭-৮ মিনিটের পথে শহরে ঢুকতেই মাণ্ডোভী নদীর পাড়ে GTDC-র Tourist Hostel, Panaji-403001, ☎ (STD 91-832) 227103, DAB ৩২০ A/c D ৫০০ ৫৫০ ৬০০ TAB ৫৫০ আর ৩০ বেশি দিয়ে একজন অতিরিক্ত থাকা যায় প্রতিটি ঘরে; এদেরই Patto Tourist Home, Patto, ☎ 225715, TAB ৩২০ ডর্মি প্রথায বেডেও করে। আহাৰ্যও সুনাম আছে এদের কাটিনেন।

আর আছে বাস স্ট্যান্ডে—Rego's H, DAB ১৫০ FR ২০০; Inn Side, H Swapna, D ১৫০-২০০; H Brindavan, DAB ৩০০, TAB ৪০০। পুল পেরিয়ে বামহাতি Qurem নদী ধরে পথ Rua de Qurem-403001 এ—H Sona, ☎ 222226, DAB ২৫০-৩৭৫ TAB ৩২৫; Park Lane L, S ১২৫ D ১৫০-২৫০; অদূরে Maureen L, Punam L, পার্কেরই তুল্য এগুলি; *Goa Woodland H, Loyola Furtado Rd, ☎ 721121, S ২০০ D ২৫০ A/c S ৩২৫ D ৩৫০ সুইট ৫৫০। H Flamingo, ☎ 224765, DAB ১৭৫; H Avanti, H Dunhill Palace, S ১০০ D ১৭৫ A/c D ২৫০; Tourist Home, GPO-র পাশে—Central Lodging, D ১৫০-২২৫; Bharat L, D ১৫০-২০০। বিপরীতে—La Visita L, D ১৫০-২২৫; Corina L, SCB ১০০ DCB ১৫০; H Ajantha, H Imperial, near GPO, D ১৭৫। বামহাতি Da Luz Lodging, D ১৫০-২২৫। 3rd January Rd এ—H Venite, ☎ 225537, SCB ১০০ DCB ১৫০ পরিবেশের শুণে থাকার পক্ষে ভালই; লাগোয়া, Udipi Lodging, DCB ১৫০ DAB ২০০; অদূরে Elite L, মান ও দামে উদীপনী-র তুল্য; পাছড় ঢালে এলিটমুখী Casa Pinto, ☎ 224193; Orlando's Nest, এদের কাছে D ১০০-১৭৫; অদূরে Everest L, মান হিসাবে দামে আধিক্য, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২৫০; Orov's GH, D ১৭৫-২২৫; Mandovi Pearl GH, behind Tourist Hostel, S ১২৫ D ২০০ T ২৫০। Jose Faleno Rd এ—H Republica, opp Secretariat, ☎ 225630, DCB ১০০-১৫০ DAB ১২৫-২০০; মাণ্ডোভীও দৃশ্যমান এদের নানান ঘর থেকে; লাগোয়া Palace H, SCB ৬০ DCB ১২৫ DAB ১৫০; Satkar L

জাহাজঘাটার বিপরীতে—Kiran Boarding & Lodging, S ১০০ D ১৫০; গোয়ার প্রাচীনতম *H Mandovi, D B Bandedkar Marg-1, ☎ 224405, A/c S ৮৫০-১২৫ D

১২০০-২২৫০ সুইট ১৫০০-২৭৫০; Campal Beach Resort, Near Indoor Stadium, ☎ 223984, DAB ৪০০-৬০০ A/c D ৬৫০-৮০০; H Madhavashram, D ১২৫-১৭৫; Goa L, opp High Court, D ১৫০-২২৫; H Vistar, ☎ 225411, S ১৫০ D ২২৫ A/c D ৩০০-৪৫০; পাশেই Safuri L, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫; Punjab H, Ambika H, near Church Sqr, DAB ২৫০ A/c D ৪৫০; Clask H, Church-side L, বেড ৫০ করে। Swami Vivekananda Rd-এ—*Keni's H, ☎ 224581, DAB ৪০০ সুইট ৬০০ A/c D ৬৫০ সুইট ৮৫০; *H Fidalgo, ☎ 226291, A/c S ৮০০ D ৯৫০-১২৫০ সুইট ১২৭৫-১৫০০; H Summit, Menezes Bragonza Rd-1, ☎ 226734, D ২৫০-৩২৫ A/c ৩৫০-৪৫০।

মিউনিসিপ্যাল পার্কের ঘিরে—H Aroma, Cunha Riveira Rd, ☎ 223519, D ২৭৫ A/c D ৪৫০ সুইট ৬০০; *Mabai H, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A/c S ২২৫ D ৩০০ সুইট ৩৭৫ A/c ৪৫০; Matruchaya L, Sanmarg L, D ১৭৫। মিউনিসিপ্যাল পার্কেটে—Kismet L, D ২৭৫-৩২৫; Sundar L, DCB ১২৫ DAB ১৭৫; Minerva L, near LIC, D ১৫০। আজাদ ময়দানে—H Park Plaza, ☎ 222601, S ৬৫০ D ৮৫০ A/c S ৮৫০-১০৫০ D ১০০০-১২৫০ সুইট ১৫০০-১৭৫০; Prakash L, D ১৫০-২২৫; Garden View H, opp Municipal Garden, ☎ 223731, S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; H Manvin's, opp Garden, S ৩০০ D ৫৫০ A/c D ৬০০।

31st January Rd-এ—Delux L, D ১৫০ T ২০০ F ২৫০; Elite L, D ১২৫-১৫০; Lilia Dia and Conceicao, S ৮০ D ১৫০; Orav's GH, D ১৫০-২২৫।

আর রয়েছে সারা শহরময়—Panjim Inn, near Cathedral, SAB ৩৭৫ DAB ৪৫০ A/c S ৫০০ D ৬৫০; Panjim Inn, Annexe, D ৪৫০। *H Nova Goa, Dr Atmaram Borkar Rd-1, ☎ 226231, A/c S ৭৫০-১০৫০ D ১০০০-১৭৫০ সুইট ১২৫০-২৫০০; H Golden Goa, Dr A B Rd-1, ☎ 227231, A/c S ৮০০-৯৫০ D ১০০০-১২৫০; *Leela Beach H, Mobor, Cavelossim, ☎ 246373, A/c D ২২৫-৪৫০ US\$, মাসভেদে রেটে তারতম্য ঘটে লীলার; *H Delmon, Caetano de Albuquerque Rd, ☎ 225616, SAB ৩৭৫-৪২৫ DAB ৪২৫-৪৫০ A/c S ৫৫৫ D ৬৫৫; *H Noah's Ark, Varem Reisi-403114, DAB ৪০০ সুইট ৬০০ A/c D ৬৭৫; H Rajdhani, Dr Atmaram Borkar Rd, ☎ 225362, S ৩০০ D ৩৫০ T ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ T ৬৭৫; নর্দগিজ শৈলীর বাড়িতে H Palacio de Goa, Dr Gama Pinto Rd, ☎ 224289, D ৪০০ A/c D ৫৫০; H Arcadia, M G Rd, ☎ 226727, S ১৭৫-২২৫ D ২৫০-৩২৫; Panjim GH, Swami Vivekananda Rd, ☎ 225855, S ১২৫ D ১৭৫; H Yatre, near Sports Complex, S ১৫০ D ২২৫; H Manoshanti, Dr Gama Pinto Rd, ☎ 224824, D ৪০০ A/c ৬০০ সুইট ৬৫০; H Samrat, Dada Vaidya Rd-1, ☎ 223318, S ২৫০-৩২৫ D ৩৫০-৪৫০ সুইট ৪৫০-৬০০; H Sunrise, 18th June Rd, ☎ 223960, S ২৫০-৩২৫ D ৩৭৫-৪৫০ A/c D ৫৫০-৬০০; H 4 Pillars, Rua de Qurem, ☎ 225240, D ২০০

A/c ৩৫০; *Barrenton H*, Luis Menezes Rd, ② 226405, D ৩০০-৫৫০; *H Amey*, M G Rd (Ext), ② 226133, D ২৫০ A/c ৪০০; *H Rohma*, D B Rd, ② 225952, S ২৫০ D ৩২৫ A/c D ৪২৫; *H Neptune*, Malaca Rd, B₁, ② 227747, DAB ২২৫-৩০০ A/c D ৩৫০-৪৫০; *May-fair H*, Dr Dada Vaidya Rd, near Mahalaxmi Temple, ② 225772, SAB ২৫০ DAB ৪০০ A/c S ৪২৫ D ৫৫০; *Guimaka G H*, near Samrat Theatre, S ১০০ D ১৭৫। Rua de Ormuz Rd-এ—*H Riviera*, D ২০০; *Roshan G H*, D ১৫০ বেড ৩০/৪০; *Indira Niwas*, opp Cine El Dorado, S ১৫০ D ২২৫; *Gleamar L*, D Antau de Noronha Rd, Near National Theatre, S ৮৫ D ১২৫-১৭৫, *Liberty GH*, near Don Bosco School, S ১২৫ D ১৭৫; *H Campal*, near Campal, ② 224532, B₁¹, DAB ৩০০-৩৫০ A/c D ৪৫০; *H Dunhill Palace*. Bandodkar Marg-এ—*H Solinar*, ② 226555, B₃, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c D ৯৫০ সুইট ১৫০০; অদূরে মীরামার বীচ। *Olympic G H*, D ১৫০-২২৫।

আর ৬ কিমি দূরে *Miramar Beach*-এ *Youth Hostel*, ② 225433, ছাত্র ও সপস্য ডর্মি বেড ১৫ সাধারণ ২৫ DAB ১৭৫ ২৫০ ৩৫০; অর্ড: Warden, YH, Miramar; GTDC-ও হোটেল গড়েছে *Miramar Beach Resort*, ② 227754, D ৩৫০ A/c D ৫০০ ৬৫০। পশ্চের বীকে *Belvila*, L, S ১২৫ D ২০০; *H Goa International*, Panjim-403002, ② 225804, DAB ৩৫০-৪২৫ A/c D ৬০০; *H Mayur*, SAB ৮৫ DAB ১৫০ A/c S ২০০ D ২৭৫; *H Magsons Centre*, D B Marg, ② 226856, S ২৫০ D ৩৫০-৪২৫; *H Libdoran*, ② 223297, D ২০০-২৭৫ A/c D ৩২৫-৪৫০; *Sohni Holiday Inn*, Youth Hostel Rd, ② 223174, DAB ২২৫ A/c ৩৫০; *Gateway H*, ② 224470, DAB ২০০-২৭৫; *H London*, ② 226017, DAB ২৭৫-৩২৫; *H Bela*, ② 224575, DAB ৩৫০-৪৭৫; *Palm Holiday*, ② 228673, A/c D ১৪০০-২২৫০; *H El Paso*, Campal Colony, ② 224898, DAB ৩২৫-৪৫০; *Riomar Beach Resort*, D B Marg, ② 226193, D ৩০০ A/c ৪৫০; *Royal Beach H*, H No 818, Ward 13, S ১০০ D ১৭৫; *Belo Horizonte*, S ২৫০ D ৩৫০ T ৪২৫; *Meeramar GH*, D ১৭৫; *Royal Beach H*, Puja Holiday Home, near Dempo College, ② 225641, DAB ১৭৫-২২৫।

মীরামার থেকে আরও ১ কিমি গিয়ে *Dona Paula-403111*-এ—ম্যুরিশ শৈলীতে তৈরি Welcomgroup-এর **Cidade De Goa*, Vainguinim Beach, ② 221133, A/c D ১০০-১৬০ US\$; *Dona Paula Beach Resort*, ② 227955, D ৪৫০ A/c D ৬৫০; *Villa Sol Hill Resort*, Dona Paula-403004, ② 225045, A/c D ৫৫০-৬৫০; *H Sea View*, opp NIO-4, ② 223327, D ২৫০-৩২৫, কল বুকিং: জ্যোতি ট্যুরস ② 2425883; *H Gopika International*, St Mary's Colony, D ২৭৫ A/c D ৩৭৫; *J S F de Souza*, 13 Bay View, ② 226163, D ২০০; *Silsea*, NIO Post Office-4, DAB ২৫০; *Reagon H*, near NIO, D ১৫০; *Johnson GH*, H No 260V15, S ৬০ D ১০০; **Prairina Cottage*,

② 224162, D ৬৫০-৮৭৫ A/c D ৮৫০-১০৭৫ সুইট ১০৫০-১২০০; *Mirabel Resort*, DAB ১৭৫০-২২৫০; *Swimsea Beach Resort*, Caranzalem Beach, ② 227028, DAB ৮৫০-১২০০; *H Sangam*, Mala; Mormugao সাগরমুখী যথেষ্ট পপুলার *Green Valley Beach Resort*, Bambolei Village, D ৬৫০ A/c D ৮৫০।

পানাজি থেকে ৯ কিমি দূরে Old Goa-য়—*H Dolphin*, DAB ২২৫-২৭৫ A/c D ৪০০; *H Juliet Inn*, Casa Vorela, D ১৭৫-৩০০; *Our Own Den*, D ১২৫-১৭৫; *H Missel*. আর হয়েছে GTDC-র *Old Goa Tourist Hotel*, ② (91-832) 286127, DAB ২৫০ ৩০০ A/c ৩৫০।

পানাজি থেকে ৩০ কিমি দূরে *Ponda-403401*-এ—*H Pearl*, SAB ১৫০ DAB ২৭৫; *H Padnavi*, S ৮০ D ১২৫; আর আছে লজি হাউস—*Brave*, *Geetashram*, *Navayug*, *Prushal* ছাড়াও *H Atish*, Farmagudi, ② (08343) 313224, S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫৫০; *H President*, Super Market Complex, D ২৫০ T ৩০০; *H Musafir*, D ১৫০; *H Hill View*, Sadar, S ৮০-১২৫ D ১০০-১৭৫; *Central Tourist Home*, Khadpaband Rd, S ১০০ D ১৫০; *Julie's Inn*, near Municipality, S ৬৫ D ১০০; GTDC-র *Farmagudi Hotel Resort*, Farmagudi, ② (91-834) 312922, S ১৫০ D ২২০ ২৬০ FAB ৩০০ ডর্মি ৪০ A/c D ৩০০ ৪০০।

পানাজি থেকে ১৫ কিমি দূরে *Calangute-403516*-এ—নিভানতুন বাড়িতে হোটেল হচ্ছে নানান। এমনকি, বসন্ত বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়া কালানন্তরে। GTDC-র *Calangute Tourist Resort*, ② (91-832) 276024, DAB ২৪০ ৩০০ TAB ৪১০ ডর্মি বেড ৫০ A/c D ৪৮০ ৫৫০ ৭০০; লাগোয়া *Meena's H*, D ২০০-৩২৫; অদূরে *Varma's Beach Resort*, ② 276077, S ৪০০-৭৫০ D ৫৫০-৮৫০ A/c S ৬০০-৯৫০ D ৭০০-১০৫০; জুন থেকে সেপ্টেম্বরে বন্ধ—ধাকা ও আহায়ে কালানন্তরে আজও সেরা ভাড়া। বাস স্ট্যান্ডের বামে *Tourist Hostel*, বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে *Tourist Dormitory*, বীচের ডাইনে *Conche Beach Resort*, ② 276551, DAB ১৩৫০ A/c D ১৮৫০, এদেরও যথেষ্ট সুনাম। অদূরে *Angela P Fernandes GH*; আরও যেতে *Calangute Beach Resort*, ② 276063, D ৩২৫ A/c D ৫৫০ সুইট ৭৫০; *Sun Shine Beach Resort*, International G H, Alfa G H, সাগরপারে *Souza Lobo H*, জানালাহীন DCB ৫৫০; গথ-পাশে *H Orfil*, D ২৫০-৪০০; *Calangute Guest Paradise*, ডানহাতি পাশে *Coco Banana*, D ১৭৫। বাসের বিপরীতে *Hotel A Canoa*, DCB ১০০-১৫০, DAB ১৫০-২২৫। *Villa Goesa Beach*, DAB ৪৫০ A/c ৬৫০; *H Goan Heritage*, ② 276253, A/c D ৮৫০-১০৫০; *H Hacienda*, Santavado, D ১৬০-২৭৫; *Green Field Cottage*, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৩২৫ D ৩৫০-৪৫০; *O Camarao Beach Resort*, D ২০০-৩২৫; *Villa Lodovici*, দুইয়েরই আহায়ে যথেষ্ট সুনাম।

H Bonanza, ② 276010, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৫০০ D ৬৫০; *Falcon Beach Resort*, Golden Palm Complex, ② 277327, DAB ২২৫০ সুইট ৩৫০০; *Paradise Village*

Beach Resort, D ১৭৫০-২২৫০; Golden Eye, Gaura Vaddo, S ২৫০ D ৩৫০; Casa Domani, Porba Vaddo, S ৩০০ D ৪৫০; Cavala H, Saunta Vaddo, S ২০০ D ২৭৫; H Mira, Umta Vaddo, S ২০০ D ২৭৫।

কালানগুটে থেকে Baga যেতে ২ কিমি দীর্ঘ পথ জুড়ে নানান হোটেল আর গেস্ট হাউসের অবস্থান। বামহাতি গলিপথে Oseas Tourist Home, মূলপথে ফিরে আবার বাঁয়ে Chalston H, লাগোয়া Johnny's H, D ২০০; মূলপথের ডাইনে Stay Longer G H, যখন যেতে Saahi H, Vinar Holiday Home, বিপরীতে Sunshine Beach Resort, D ৩৫০-৫৫০; H Bonanza, D ৪০০-৫০০ A/C D ৫৫০-৬৫০; Captain Lobo's Beach Hideaway, ক্রিচেন সহ দুই ঘরের সুইট ৬০০-৮৫০; Colonia Santa Maria, ৩ 272571, DAB ৬৫০-৮৫০, মান হায়ে দামে অধিকার; সাগরপানে Ancora Beach Resort, D ২০০-৩২৫; যখন যেতে Ronil Beach Resort, D ৮৫০-১২৫০ A/C D ১২৫০-২২৫০; বিপরীতে সাগরমুখী Villa Bomfim, ৩ 276105, D ৪৫০-৬০০ A/C ৬৫০; সাগরবেলায় Sea View Cottage, D ২৫০-৩২৫; পাশেই Julma Beach Resort, D ১৫০-২৭৫; Shelsia Holiday Resort, D ১৭৫; মূলপথে Miranda Beach Resort, কাছেই Sea Wolves H, এদের কাছে S ২৫০ D ৩৫০ থেকে। যখন যেতে স্টে লসারের বিপরীতে বলিয়াড়িতে Estrela do Mar, D ৩৫০-৫২৫। বাগা বাঁকে নারকেল বাঁধিকায় ছাওয়া পপুলার হোটেল Villa Fatima Beach Resort, D ২৫০-৩২৫; আরও যেতে ডাইনে Covala Motel, D ৪৫০ A/C ৬০০ সুইট ৬৫০; H Riverside, ৩ 276062, D ৩৫০-৪৫০; বাগিচার সুশোভিত বাঁচ লাগোয়া Villa Goesa Beach Resort, ৩ 278182, D ৪৫০-৬৫০; সব শেষে সাগরে মিলেছে সুন্দর ব্যবস্থাপনার *H Baia Do Sol, ৩ 276084, D ৯৫০-১২৫০ A/C D ১৫০০, অব: গোয়া ট্রাস, পানাজি। H Linda Goa, Baga Rd, ৩ 276066, D ৬০০-৭৫০ A/C D ৮৫০; Cavala H, Sauntavaddo, ৩ 276090, S ২০০ D ২৭৫; H Casa Domini, Porba Vaddo, ৩ 227716, S ২৫০ D ৩৫০-৪৫০; International GH, Sun Set Cottage, Sea Breeze Cottage, H Azavedo, Alfran H, Resorts Paraíso de Paria, Resorts de Santo Antonio ছাড়াও হোটেল আছে আরও নানান কালানগুটে ও বাগায়। তবুও থাকার জন্য Sunshine, Verma, Villa Bomfim, Ancora Beach Resort, Bonanza, Ronil, Sea View, Estrela do Mar, Calangute Tourist Resort আঙ্গুও রমণীয়।

খাবার হোটেলও আছে নানান কালানগুটে ও বাগায়। আর আছে Bar ও Restaurant চলতে ফিরতে ডাইনে-বাঁয়ে বাগা ও কালানগুটে। সী-ফিশের অধিকা এইসব হোটেলে—মাংসও মেলে, ভেজ মেনুর অভাব। তবুও যেন কালানগুটে বাঁকের ডাইনে Sovza Lobo Restaurant-এ আহার্যের সঙ্গে সুবাসিত ও সুন্দর দৃশ্যমান। তেমনিই বাদ নেওয়া যেতে পারে সী-ফুডের Dinky Bar & Restaurant-এ। GTDC-র ট্যুরিস্ট রিসোর্টের রেস্তোরাঁ-টিও যথেষ্ট খ্যাত আহার্য পরিবেশায়। তেমনিই আছে বাগা পথে ট্যুরিস্ট অফিসের কাছে Oceanic Restaurant, আহার্য পরিবেশায় যথেষ্ট সুনাম। H Riverside, Verma's Resort, Sunshine Beach Resort—এদের ক্যান্ডলিমওলিও যথেষ্ট খ্যাত।

থাকার জন্য মণুসায় আছে GTDC-র Mapusa Tourist Hotel, ৩ (91-832) 262694, S ২০০ D ২৫০ চার বেডের ঘর ৩২০ ছয় বেডের ৩৬০ A/C D ৩৫০, ৪৫০। আর আছে H Bardez, ৩ 262607, D ১৫০-২৭৫; Sattyheera H, near Bus Std, ৩ 262849, D ২০০-৩৫০ A/C D ৪৫০-৬০০; H Shalini, ৩ 262324, DCB ১৫০-২০০ DAB ২৫০-৩৫০; H Trishul, D ২০০-২৫০; H Vilena, ৩ 263115, DAB ২৫০-৪৫০ A/C D ৫৫০-৬৫০; Sumant L, Janki Shankar L, H Trimurti DAB ২৫০-৪০০ A/C ৪৫০-৬০০ ছাড়াও নানান।

শহর থেকে ৭ কিমি দূরে (মণুসায় না গিয়ে) Chapora 403522-এ *Vagator Beach Resort, ৩ 273275, A/C D ১৭৫০; সাধারণ সঙ্গে Dr Lobo's House, Noble Nest Restaurant & Boarding, opp Church, D ২০০-২৭৫; Chalston, Cobro Vaddo; H Vilena, D ২২৫-৪৫০ A/C ৪৫০-৬৫০; Bamboo Motels & Hotels, D ৩৫০ কটে ৪২৫। আবার দীর্ঘকালীন অবকাশে এসে নারকেল বাঁধিকায় চাঁদোয়া-তলে ছাপোয়া স্থানীয়দের বাড়িঘরেও ৮০-১০০ টাকায় ঘর মেলে থাকার। আগমনও ঘটে বিদেশীদের বেশি ছাপোয়া আর আহার্যে সাগরবেলায় রবিবার ছাড়া Lobo's, লায়ে Lily's ও গ্রাম অশ্বরে Julie Jolly's-এর যথেষ্ট প্রসিদ্ধি সী-ফুড পরিবেশনে।

শহর থেকে ১৭ কিমি পশ্চিমে Candolim-403515 র—Coqueiral Holiday Home, D ৩৫০-৫২৫; Ludovici Tourist Home, D ৩০০-৪৫০; Holiday Beach Resort, D ২৫০-৩৫০ A/C D ৪০০-৫২৫ সুইট ৬৫০; Aldeica Santa Rita Resort, D ৩৫০-৪৭৫; Dona Alcina Resort, opp Health Centre, D ৪০০-৬৫০; Alexandre Tourist Centre, D ২০০-৩৫০ A/C D ৪৫০; Marbella GH, H No 77, D ৬৫০-১১০০; Sea Shell Inn, opp Canara Bank, D ২৫০-৩২৫; Village Belle, D ২৫০; Ave Maria GH, D ২৫০-৩৫০; Xavier Beach Resort, D ৪৫০-৬০০; Altrude Villa, Murad Vaddo, D ১৭৫-২৫০; ১৯৮০-র কমনওয়েলথ সম্মেলনে অতিথিদের বাসের জন্য তৈরি কটেজধর্মী *Aguada Hermitage, Sinquerim, ৩ 276201, ভিলাধর্মী ঘর, A/C S ২২৫-৪০০ D ৩২৫-৫০০ US\$; *Fort Aguada Beach Resort, Sinquerim, Bardez-403519, ৩ 276201, S ১২৫-১৮৫ D ২২৫-১৮৫ সুইট ২২৫-৪৫০ US\$; Comfort Inn, *Whispering Palm Beach Resort, Candolim-403515, ৩ 276140, A/C S ২২৫০ D ২৭৫০ সুইট ৩২৫০; *The Taj Holiday Village, Sinquerim, ৩ 276201, DAB ১১৫ A/C ১২৫-২০০ US\$.

পানাজি থেকে ৪০ কিমি দূরে Colva-403708, STD 0834-এ বাস থেকে ডাইনে সমুদ্রমুখী GTDC-র Colva Cottage, ৩ 722287 (Margao), DAB ৩০০ TAB ৪১০ ডর্মি বেড ৫০ A/C D ৪৮০, থাকার পক্ষে আঙ্গুও বরণ্য। অদূরে অজীতের হোয়াইট স্যান্ডল নবরাণে Colmar H, ৩ 721253, DCB ২২৫ DAB ৩৫০-৪৫০; এরই পাশে একই মানে একই দামে Longinhos Beach Resort, ৩ 722918, S ৪৭৫ D ৬৫০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০; H Paulino, Ava de Saudes, D ২৭৫ A/C D ৪০০; Sunaina H, Fator da Margao, D ১৭৫-৩৫০; H Central, Old Market, D ১৫০-২২৫; Santosh Resort,

Cortorim, D ৩৫০-৪৫০; *Silver Sands Beach Resort*, ৩ 721645, D ৫২৫, A/c D ৬৫০; *H Colva Plaza*, ৩ 733647, S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৬০০; *La Ben*, D ৩৫০, A/c D ৪৫০; *D'Souza GH*, Sernabatim, S ১৫০ D ২২৫; *Roiz Cottages*, Colva 4th Ward, S ১০০ D ১৭৫; *Maria GH*, 4th Ward, S ১০০ D ১৫০; *Goodman*, 4th Ward, S ১২৫ D ১৭৫; *A Concha Resort*, 4th Ward, Cross Rd, ৩ 723593, D ৩২৫, A/c ৪২৫; *Sea Queen Resort*, Salcette-403708, ৩ (834) 220499, A/c D ৯৫০ সুইট ১২৫০; *Blue Diamond Cottage*, Vincy H, *H La Ben*, এসের রেট DAB ২২৫-৩৭৫। সমুদ্রের পারে *Lucky Star Restaurant*, D ২২৫-৩৫০। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে নবলাজে *Vincy H*, ৩ 722276, DAB ২২০-২৭৫; স্বল্পদূরে *Mar E Sol H*, পথের বাকি **Silver Sands H*, Salcette, ৩ 721645, S ৬০০ D ৬০০ A/c S ৮৫০-১২০০, D ৯৫০-১৫০০, মাস ভেঙ্গে রেটে হোমস্টেয়ে ঘটে এসের; *Non A/c Golden Cottage*-এও ঘর মেলে; থাকার পক্ষে কোলবার সেরা *পিলভার স্যান্ডস* বিচমুখী প্রশস্ত লন, পটুগিজ শৈলীর বাড়িতে আর এক উত্তম *Pent House Beach Resort*, ৩ 731030, S ৭০০ D ৮৫০ (ব্রেকফাস্ট সহ)। অদূরে *Sukhsagar Beach Resort*, ৩ 721888, D ৩৫০-৪৫০, A/c D ৪৫০-৬৫০; বিপরীতে বীচ লাগোয়া *Jimmi's Cottage*, DAB ২০০-৩২৫; বাস থেকে বায়ে বীচেরও দূরে *Colva Beach Resort*, ৩ 721975, DAB ৩৫০-৪৫০, A/c D ৪৫০-৬৫০; বামহাতি যেতে *Skylark Cottage*, DAB ২৭৫, A/c D ৪৫০; বাস সড়ক ও সমুদ্র থেকে দূরে কোলবা গ্রামে *Tourist Nest*, D ১৭৫-২৭৫; বাসপথে *William's Resort*, ৩ 221077, D ৩৫০, A/c D ৫৫০। আর আছে **Goa Renaissance Resort*, ৩ (0834) 745208, A/c S ১২৫-২২০ D ১৪৫-২২৫ সুইট ২২৫-৩০০ ডিলা ৩১৫-৪৫০ US\$, মাস ভেঙ্গে রেটে তারতম্য ঘটে; *Vailankani Cottage*, D ১৫০-২২৫; *Summer Queen Cottage*, D ২২৫-৩৫০ ছাড়াও আছে নানান হোটেল কোলবার। আবার বীচের অদূরে কোলবা গ্রামে প্রাইভেট বাড়ি-ঘরও ভাড়া মিলে।

Benaulim-403716-এও নানান হোটেল—*L Amour Beach Resort*, DAB ৩০০-৪৭৫; বিপরীতে *O Palmar Beach Cottage*, *Carina Beach Resort*, S ১৫০ D ২৫০, A/c D ৩৫০; আর বীচ থেকে মিনিট পনেরোর দূরত্বে গ্রামে—*Britto's Tourist Home*, D ১২৫-২৫০; *D'Souza GH*, *Furiado GH*, *Tanoy Tourist Cottages*, *Garden Cottages*, *Lites Cottages*, *Green Garden Tourist Cottages*, *Palm Grove Tourist Cottages*, *Caravan Tourist Home*, এসের কাছে ১৭৫-৩২৫ টাকার ঘর মেলে। তবুও থাকার জন্য *L' Armour Beach Resort*, *Britto's Tourist Home* ভালই। আর আহার্যে *Amour Beach Resort*-এর যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। এছাড়াও হোটেল ও রেস্টুরেন্ট আছে বেশোমিমে নানান।

পানাজির ৩৫ কিমি দূরে রেল স্টেশন ও মিউনিসিপ্যাল পার্কের মাঝে Station Rd, Margao-403601, STD 0834-এ সাধারণ হোটেলের অবস্থান। রেল স্টেশনের বিপরীতে: *Milan Kamat H*, সম্মানের একই নামে *Sunrit H*, ৩ 721226, S ৮৫-১২৫, D ১৫০-২৫০; পাশেই *Centaur Lodges*, অদূরে *H Mohini*,

S ১২৫ D ১৭৫-২৫০ FR ৩০০। রেললাইন পেরিয়ে Benaulim-এর বাকি *H Annapurna*, ৩ 722760, D ১৫০-২৭৫; *H Sal*, D ১৭৫। Station Rd-এ—*Rukrish H*, opp Bank of India, S ৮৫-১২৫, D ১৫০-২২৫; *H Poanam*, Stn Rd, S ১৫০ D ২০০-২৭৫ T ২৫০-৩০০; *Sunayana H*, D ২০০-৩৫০। মিউনিসিপ্যাল পার্কের উত্তরে *Mabai H*, ৩ 721658, D ১৭৫-২৫০ A/c ৩৫০-৪৫০ সুইট ৩৭৫, A/c ৫৫০। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে **Goa Woodlands*, ৩ 720374, S ১৭৫ D ২৫০-৩৫০, A/c D ৪৫০; শহরের প্রাণকক্ষে **H Metropole*, ৩ 721169, Avenida Conceicao, SAB ১৭৫ DAB ৩০০, A/c S ৩২৫ D ৪০০ সুইট ৬০০; শহরের মধ্যমণি বাজারের কাছে GTDC-র *Tourist Hotel*, Margao, ৩ 721966, SAB ২০০ DAB ২৫০ ৩০০ ছয় বেডের ঘর ৬৬০ A/c D ৩৫০; আর আছে *Twiga L*, ৩ 720049, 413 Abade Faria Rd, S ৮৫ D ১৫০; *H La Flor*, ৩ 721591, Erasmo Carvalho St, D ২৫০-৩৫০, A/c D ৪৫০-৬০০; *H Gold Star*, ৩ 721861, S ২৫০ D ৩০০, A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *Hill View H*, near Pondva Chapel, ৩ 725212, D ২৫০-৩৫০, A/c D ৩০০-৪৫০; *Vishranti L*, *H Apsara*, *H Green View*, *H Shezar* ছাড়াও নানান; এসের রেট D ১৫০-৩০০।

আহার্যেরও নানান ব্যবস্থা মারগাঁও-এর হোটেল। মিউনিসিপ্যাল পার্কে *Kandeei*-এ গোয়ালি ডিশের নানান মেনু। পাশেই *La Marina Cafe*-দুইয়েরই যথেষ্ট সুনাম। তেমনই আছে মিউনিসিপ্যাল গার্ডেনের বিপরীতে Station Rd-এ স্বল্পমূল্যে ভেজ মিলের *Kamat Milan H*. *Bombay Cafe*-টিও যথেষ্ট পণ্যের আহার্য পরিষেবা।

পানাজি থেকে ৩১ কিমি দূরে *Vasco-da-Gama-403801*, STD 0834-এ শহরের কেন্দ্রমণি GTDC-র *Vasco Tourist Hostel*, ৩ (91-834) 513119, SAB ২০০ DAB ২৫০ ৩০০ চার বেডের ঘর ৩২০, A/c D ৩৫০। *H Gladstone*, near old Bus Stand, D ২৫০-৩০০, A/c D ৩৫০-৪৫০; *H Vasco*, D ২৭৫-৪৫০; *Maharaj H*, DAB ২৫০-৩৫০, A/c D ৪৯০-৬৫০; *H Nagina*, D ২৫০, A/c D ৪০০; **H La Paz Gardens*, Swatantra Path-2, ৩ 512121, A4½ B½, A/c S ২২৫ D ৮৫০ সুইট ১২০০-১৫০০; **H Zuari*, Swatantra Path, ৩ 512121, Tel-Jose-Mar Tourist RH, near Rly Stn, DAB ১৭৫-২৭৫, A/c ৩২৫-৪৫০। আর আছে: *H Bismark*, near Rail & Bus Std, SCB ৮০, SAB ১০০ DAB ১৫০ TAB ২০০; *Hospitalidade de Costa*, opp St Andrew Church, S ৯৫০ D ১৬০০; *Sultan L*, S ১২৫ D ১৭৫; *J S Lodge*, near MPT Hospital, D ১২৫-১৭৫; *H Annapurna*, Dattatraya Deshpande Rd, DAB ১৫০-২২৫; *H West End*, DAB ২০০-২৭৫, A/c ৩৫০; *H Pravasi*, *H Ripon*, *H Manish*, *Satkar*, *Indira L*, *Adarsha L*, *Monalisa*, *Gangotri*, *Adarsha*, *Sanman*, *H Marcel*, *Udipi L*, *H Oorbashi*, *Meghdoot L*, এসের কাছে S ৮৫-১৫০ D ১৫০-২২৫, A/c D ২৫০-৩৫০ টাকার মেলে।

খাবার হোটেলও নানান ভাস্কোর। তবুও যেন রেল স্টেশনের পূর্বে *Nanking Chinese Restaurant* বা *H Zuari* অনবদ্য। *H Annapurna*-রও সুনাম যথেষ্ট স্বল্পমূল্যে আহার্য পরিষেবা।

অর্থচক্ষাকার Bogmalo Beach-403713-তে—*H Bogmalo Beach Resort, ৩ 513291, A2R7, S ১৪০-১৮৫ D ১৬০-২০০ US\$; Chikalim Tourist Resort, D ২৫০; Petite GH, D ৩৫০; *Majorda Beach Resort, Majorda-403713, ৩ (0834) 730204, A/c S ১২৯৫-৪২০০ D ২৫৫-৭৫০০; The Citadel, Pa Jose Vaz Rd, ৩ 513190, D ৪০০-৬৫০, A/c ৭৫০; Kakoda Tourist Resort, S ১৭৭ D ৩০০; Maharaja H, ৩ 513075, SAB ৩৫০ DAB ৪০০-৪৫০ A/c S ৫৯০ D ৬০০-৮৫০; H Rukmini, DD Rd, SAB ২০০ DAB ২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; H Rebelo, opp New Bus Stand, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৭৫-২২৫ A/c S ৩০০ D ৩৫০; H Blue Bay, Caranzalem Beach, Ilhas-403002, A30R32B4, S ৩০০-৪৫০ D ৪০০-৬৫০।

Salcette Taluka-403731, STD 0834-এ: The Old Anchor, Cavelossim Beach, ৩ 246337, S ১২৫০ D ২৫০০, সুইট ৪৫০০-৬৫০০; Resort Dona Sylvia, ৩ 246321, কন্টিনেন্টাল প্লানে A/c D ১৭৫০-৪৫০০, মাস ভেঙ্গে রেটে বদল ঘটে এদের; *Nanu Resort, Betalbatim Beach, ৩ 733029, DAB ৮৫০ A/c D ১৭৫০ পিক সিজনে রেট বাড়বে এদের; *Holiday Inn Resort Goa, Cavelossim Beach, ৩ 746303, D ৩৭৫০-৪৫০০, সুইট ৬৫০০-৭৫০০; Goa Penta H, Utorda, Majorda, A/c S ১৫০০ D ২৫০০; *Resorte De Goa, Teen Murti, Fatrade-Varca-403721, ৩ 245066, A/c D ১৩০০, সুইট ২২৫০; The Regency Travelodge Resort, Utorda, PO-Majorda, ৩ (0834) 754180, A/c S ১৫০০ D ২২৫০, সুইট ৩২০০।

এছাড়াও হোটেল আছে আরও নানান পানাজি তথা গোয়ায়। তবুও পানাজি ভ্রমণে ৩ মাস আগেই পুরো টাকা—Manager, GTDC's Tourist Hostel, Panaji-403001-কে পাঠিয়ে যে কয়দিন থাকতে চান জানিয়ে টুরিস্ট হোস্টেলে ঘর বুক করে যাওয়াই শ্রেয়। তেমনই এক্সপ্ৰেশন, ১৭ জাস্টিস স্বরকানথ রোড, ভবানীপুর, কলকাতা-২০, ৩ 4754502 থেকে ১ বছর আগেই গোয়া টুরিজমের লজ ও প্যাকেজ টুর বুকিং-এ সহযোগিতা মেলে। ট্র্যাভেল মেকার্স, ৩৪-এ, শরৎ বসু রোড, কল-২০, ৩ 4746879 থেকেও বুকিং মেলে। Tourist Hostel আজও অবস্থানে অনন্য, ব্যবস্থাপনা ভাল। এদেরই Tourist Home ও মীরাবায়ের Yatri Niwas দুটিও থাকার পক্ষে ভালই। তেমনই, তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে H Aroma, H Sona, Keni's H, Republic H, H Solmar, Panjim Inn থাকার জন্য ভালই।

আর আছে সার্কিট হাউস পানাজিতে, রেলের রিটায়ারিং ক্লব মারগাঁও ও ভান্কা-ডা-গামায়। ধরমশালাও মেলে—Shri Damodar Vidya Bhavan Hall, Margao; Shri Mahalaxmi Dharamshala, Ponda; Shri Monguesh, Pirol; Shri Ramnathi, Ponda; Shri Shantadurga, Kovelem, Ponda.

খাবার হোটেল নানান পানাজি শহরে। GTDC-র Tourist Hostel-এর ঝিলে Chit Chat Restaurant-এ নীল আকাশের নিচে বারান্দায় বসে (৭—১১-০০ ও ১৫—১০০টায়) মাডোভী মশনের সাথে নানানধর্মী আহাৰ্যের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। তবে, টুরিস্ট হোটেল থেকে মিউনিসিপ্যাল গার্ডেন

লাগোয়া ঝিলে Punjab H বা New Punjab Restaurant বা Sher-e-Punjab, 18th June Rd, ৩ 247975-এও পাঞ্জাবী ডিশের সাথে নানানধর্মী আহাৰ্য মেলে। নিরিমির আহাৰ্যের জন্য Bihar L, Udipi Boarding and Lodging, near GPO বা উদীপীর পশ্চিমে H Venite, 31 January Rd আজও স্বল্পমূল্যে গোয়ানিজ ও সী-ফুড পরিবেশায় যথেষ্ট খ্যাত। আজাদ মরানা Kamat H, 5 Church Sqr (8—21-30hrs) স্বল্পমূল্যে নিরিমির আহাৰ্যে ভালই। ঠিক তেমনই Afonso Albuquerque Rd-এর Shalimar নন ভেজ ও লাগোয়া Tajmahal Restaurant ভেজ মিলে যথেষ্ট খ্যাত। আর চীনা মেনুর জন্য Just opp Dr Dada Vaidya Rd-এর Goenchin (12-30—15-30 ও 19—23-00)-এ চলা যেতে পারে। আর Menezes Braganza Rd-এ H Summit লাগোয়া Chittiya Restaurant-এর ভেজ-ননভেজ-মোগলি মিলা যথেষ্ট খ্যাত। অরোমার ক্যান্টিনটিরও সুনাম আছে তন্দুরী পরিবেশনে। অবশ্য আরও কম খরচে খাবার হোটেল পানাজিতে রয়েছে অজ্ঞাত। তেমনই গোয়ানিজ ডিশের স্বাদ নিতে পারেন মাডোভী হোটেলের Rio Rico রেস্টুরেন্টে। পটুগিজ আহাৰ্যেরও স্বাদ মেলে নানান স্টার হোটেলে। সোনা পাওলার O' Pescador বা La Paz ও Zuari H-গুলিরও আহাৰ্য পরিবেশায় যথেষ্ট প্রশংসিত। শুয়োরের মাংসেরও চল আছে গোয়ার হোটেল-রেস্তোরাঁয়। গোয়ানিজদের অতি প্রিয় pork vin daloo, Goan sausage—Chourisso বা pork liver-এ তৈরি Sarpotel-ও চেষ্টা দেখতে পারেন। তেমনই নারকেলের প্রলেপ পেওয়া বাগদা চিংড়ি ফ্রাই; চিকেন বা মটনে তৈরি Xacuti গোয়ানিজ ডিশেরও যথেষ্ট সুনাম। চাল জাত Sanna কাপকেক, Alebele-র নারকেল পুরের পিঠারূপী পানকেক; Dodol, Bebinca মিঠাই-এরও যথেষ্ট সুনাম। তেমনই গোয়ানিজদের আর এক প্রিয় মানসুরাদ আম। আবার গোয়া অবস্থানে কাজু, নারকেল, ডাল বা আপেল তৈরি ফেনী বিয়ারের স্বাদ নিতে পারেন উৎসাহীরা। যথেষ্ট খ্যাত আর দামেও কম গোয়ায় জাত ফেনী। তবে রবিবার লোকনপাট মায় খাবার হোটেলও বন্ধ থাকে পানাজিতে।



গোয়ার একমাত্র বিমানবন্দর বসেছে পানাজি থেকে ৪৫ কিমি দূরে ভান্কা-ডা-গামার ডাবোলিমে। মুম্বাই যাচ্ছে ১ ঘণ্টায়; কোচি যাচ্ছে ১-১০ মিনিটে; দিল্লী যাচ্ছে ২২ ঘণ্টায় গোয়া তথা ডাবোলিম থেকে প্রতিদিন IAC-র বিমান ২ ৬ টি ৫৫ মিনিটে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে IAC-র উড়ান ডাবোলিম থেকে। ফেরেও এরা নিরিমিত একইভাবে ডাবোলিমে। Jet Airways-এর বিমান যাচ্ছে গোয়া-মুম্বাই, গোয়া-দিল্লী প্রতিদিন; East-West Airlines যাচ্ছে ২ 4 67 দিন মুম্বাই-গোয়া; Skyline NEPC-র বিমান প্রতিদিন সার্ভিস গড়েছে গোয়ার সাথে ব্যাঙ্গালোর, উরঙ্গাবাদ ও মুম্বাই-এর; Modiluft দৈনিক সার্ভিস গড়েছে গোয়া-মুম্বাই-গোয়া; UB Air গোয়া-ব্যাঙ্গালোর-গোয়া; Damania Airways যাচ্ছে প্রতিদিন মুম্বাই-পুনে-কলকাতা-ব্যাঙ্গালোর; ফেরেও এরা নিরিমিত একই দিনগুলিতে। বিমান যাত্রীদের যাত্রায়েত কলঙ্কট্রান্সপোর্টের বাস ও ট্যাক্সি মেলে বিমানবন্দর থেকে শহরের। দপ্তর এদের: IAC, Dempo House, D Bandodkar Marg, R 238226 E512788; Vayudoot-এর এক্সেল্ট Alcon Travels, Hotel Delmon. Damania ৩ 229233; Jet Airways ৩ 221472; NEPC Airlines ৩ 229233.



অক্টোবর থেকে মে মাসে প্রতিদিন মুম্বাই-এর Bhaucha Dhakka, New Ferry Wharf, Mallet Bunder Rd, Mumbai-400009, ৩ 3743737-9, Fax 022-37433740 থেকে রাত ২২-৩০এ ছেড়ে Catamaran Service (A/c) by Frank Shipping formerly Damania Shipping(I) Ltd পরদিন ৬-৩০এ পানাজি পৌঁছে ৯-০০টায় Fisheries Building থেকে পানাজি ছেড়ে ১৭-০০টায় মুম্বাই পৌঁছায়। ভর্তি করার সাথে পশ্চিমবঙ্গ পর্বতকে সমান্তরাল রেখে ক্যাটামারান ভেসে চলে আরব সাগরে। ভাড়া Y class ১১০০ C class ১৩০০ হারে। আহারও মেলে পৃথক দামে ক্যাটামারানে। Expression, 17 Justice Dwarakanath Rd-20, ৩ 4754502/Travel Makers' ৩ 4766879 থেকেও Catamaran Service-এর টিকিট মেলে। প্রয়োজনে Damania Airways, Suksagar, 2/5 Sarat Bose Rd, Calcutta, ৩ 4759652-এ যোগাযোগ করা যেতে পারে। এদের দিনে ২ বার বিনাম ও যাচ্ছে Calcutta-Mumbai-Calcutta সার্ভিসে।



বাস আসছে Kadamba, MTDC, নানান প্রাইভেট ও মহারাষ্ট্র রাষ্ট্রীয় পরিবহণের (এস টি ও এশিয়াড) মুম্বাই ও পুনে থেকে পানাজিতে। সাধারণ, লাক্সারি, Video ও A/c বাস আসছে মুম্বাই-এর সেন্ট্রাল রেল স্টেশনের কাছে: opp Azad Maidan, near Cama Hospital, Dhobitalao ও near Flower Market, Senapati Bapat Marg, Dadar থেকে। পানাজি পৌঁছায় ১৬ ঘটায়। সময় ও কোম্পানির ব্যবধানে ভাড়া (১৭৫-২৭৫) তারতম্য ঘটে। পুনে রেল স্টেশনের পাশে MSRTC বাস স্ট্যান্ড থেকে সকাল ৩ সীকে ১০ ঘটায় পানাজি আসছে MSRTC, কলম্ব ও নানান প্রাইভেট সংস্থার বাস। এশিয়াড বাসে ভ্রমণ আরাম প্রদ—গতির সঙ্গে ভাড়াও বেশি (১৪১) এশিয়াডে। অগ্রিম টিকিটও মেলে এইসব বাসে। ৭—১২-০০ ও ১৪—১৭-০০টায় কদম্বের কাউন্টার খোলা।

আর পানাজি থেকে মুম্বাই যাচ্ছে Kadamba Transport Corpn ১৫-০০টায় L, ১৫-১৫য় A/c Video, ১৫-৩০এ SL, ১৬-০০টায় L; Maharashtra State Road Transport ১৫-৪৫, ১৬-০০, ১৬-৩০, ১৭-০০টায়; Maharashtra Tourism Development Corpn যাচ্ছে ১৫-০০টায়। যাতায়াতে আদরণীয় হবে MTDC-র লাক্সারি বাস। পুনে যাচ্ছে ১২ ঘটায় কদম্ব ৬-১৫ ও ১৯-০০টায়; MSRTC ১৫-৩০, ১৬-০০এ; Sohrah Tours Travels, Moledina Rd-এর Video বাস। কোলহাপুর, রয়গিরিও যাচ্ছে MSRTC-র বাস। ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ১৬ ঘটায় ১৭-৪৫এ কদম্ব; ১৪-১৫, ১৭-০০টায় কণ্টিক স্টেট রোড ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন। ম্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ১৪ঘণ্টায় ১৬-১৫য় কদম্ব; ৭-০০ ও ২০-৩০এ KSRTC. যোগ হয়ে ১৬ ঘটায় মইশুর যাচ্ছে ১৭-০০টায় KSRTC. বেলগাঁও যাচ্ছে ৬-৩০, ১৩-০০টায় কদম্ব; ৭-৩০, ১১-৩০এ KSRTC. আর ১৩-০০টায় হুনোভার; ৩১ ঘটায় কারওয়ার যাচ্ছে ৬-০০, ৮-১৫, ১১-০০টায় কদম্ব ছাড়াও প্রাইভেট বাস; ৯-৩০, ১৫-৩০ ও ১৭-০০টায় হবলি যাচ্ছে KSRTC-র বাস পানাজি থেকে। ফেরেও এরা নিয়মিত। এছাড়াও নানান প্রাইভেট সংস্থার নানানধর্মী বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে মুম্বাই, পুনে, ম্যাঙ্গালোর, ব্যাঙ্গালোর ছাড়াও পশ্চিম

ভারতের নানান শহরের সঙ্গে পানাজির। রাতভর জার্মিতেও বাস যাচ্ছে পানাজি থেকে মহারাষ্ট্র ও কশটিকের নানান শহরে। তিক তেমনই বাসে পোন্ডা পৌঁছে আরসিকের হয়ে ট্রেন বা বাসে চলা যেতে পারে মইশুর বা কশটিকের নানানদিকে। আবার বাসেই ঘণ্টা সাতকে মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর রেলপথের হবলি পৌঁছেও ট্রেন বা বাসে হসপেট (৪½ ঘ), হাম্পি, বাদামি, বিজাপুর, বেলগাঁও যাবেনা যেতে পারে। মারগাঁও থেকেও বাস মেলে সারা দক্ষিণের।

আর পানাজির কদম্ব বাস স্ট্যান্ড থেকে কদম্ব ছাড়াও নানান প্রাইভেট বাস যাচ্ছে—১ ঘটায় ভাকো-ডা-গামা (via Agassaim and Cortalim), ১½ ঘটায় মারগাঁও; বিকল্প পথে পোন্ডা হয়ে সময়ের আধিক্য লাগে। ½ ঘটায় ওস্ত গোয়া, ½ ঘটায় কালানওটে, ½ ঘটায় মপুসা (মপসা), ছাপোরায় যাচ্ছে বাস মপুসা হয়ে। দিনভর মুম্বাই সার্ভিস এদের। তবে, গাড়ির চলায় যেন কিছুটা অস্থিরতা, ছাড়তেও কেমন যেন বিমুগ্ধতা; কন্ডাক্টরের হাঁক-ডাকে ছুটে গিয়ে দখল নিতে হয় বাসের আসন। এমনকি এককোয়ারিটে লোকাল সার্ভিসের ব্যাপারে সদুত্তর মেলা ভার। তাই উচিত হবে সঠিক বাস ঝুঁজে পেতে স্থানীয়দের সহযোগিতা নেওয়া।

নদীপথে ফেরিলকেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় গোয়ার দিঘদিক। গোয়া ভ্রমণে জলপথের স্বাদ নেওয়া একান্তই উচিত হবে যাত্রীদের। টুরিস্ট হোস্টেলের সামনে থেকে ফেরি লঞ্চ যাচ্ছে। তেমনই ডোনা পাওলা থেকে ফেরি লঞ্চে (সেপ্টেম্বর থেকে মে মাসে) চলা যেতে পারে মারগাঁও। ভাকো-ডা-গামাতেও ফেরি লঞ্চ যাচ্ছে ডোনা পাওলা থেকে। একক চলায় শেয়ার টাক্সি, মোটর বাইকেও যাত্রী হওয়া যেতে পারে পানাজি তথা গোয়ার পথে। নানান প্রাইভেট গাড়ি ভাড়া খটিছে পানাজির পথে। তেমনই মোটর বাইক ও বাইক ভাড়া মেলে গোয়া রাজ্যে।



কাসল রকে সমতল ছেড়ে পশ্চিমঘাট পাহাড় চড়ে রেল পৌঁছায় ১১০ কিমি দূরের ভাকোয়। ছোট-বড় নানান টানেল—নয়নাভিরাম প্রকৃতি। তবে, কোঙ্কন রেলের অসম্পূর্ণতা হেতু মুম্বাই থেকে গোয়া যাতায়াতে সরাসরি ট্রেনের অভাব। কলকাতা তথা পূর্ব ভারত যাত্রীদের ১৯-২০এর ৪০০২ হাওড়া-মুম্বাই মেলে ৬-১৫য় কল্যাণ পৌঁছে, ৮-৪৫এ মুম্বাই CST ছেড়ে আসা 7307 কয়না এসে ৯-৫৮য় কল্যাণে ঢেপে ১৩-৫০এ পুনে ছেড়ে মিরাজ পৌঁছান ১৯-৪৫এ। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে মুম্বাই CST থেকে ১৭-৪৫এ সহাদ্রি এক্স, ২০-২৫এ মহালক্ষী এক্স পুনে হয়ে মিরাজ। 2367 দিন মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর এক্স ২২-৪০এ সি এস টি ছেড়ে পুনে-মিরাজ-লোভা-হবলি-আরসিকের হয়ে ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে। তবে, ১৭-৩০এ পুনে ছেড়ে মিরাজ-লোভা-কাসল রক-কুলেম হয়ে পরদিন ৭-২৫এ ভাকো যাচ্ছে 2780 নিজামুদ্দিন-ভাকো গোয়া এক্স। ব্যাঙ্গালোর-ভাকো যাচ্ছে 7310 এক্স; ভাকো-বিজয়ওয়াড়া যাচ্ছে 7226 অমরাবতী এক্স। আর বিলাসবল্ল প্যালেস অন হইলস মুম্বাই থেকে গোয়া ১৯৯৮তেই চলার প্রতীক্ষা। সপ্তাহের ৬ দিন ৬ ঘটায় প্যালেস অন হইলস পৌঁছাবে মুম্বাই থেকে ভাকোয়।

কলকাতা থেকে গোয়া যাত্রার গীতাঞ্জলি ও কারলা এক্সও আসছে মুম্বাই-এ। সাপ্তাহিক (7) আজাদ হিন্দ এক্স আসছে হাওড়া থেকে পুনে। আর দিল্লী থেকে 2780 গোয়া এক্স হজরত নিজামুদ্দিন

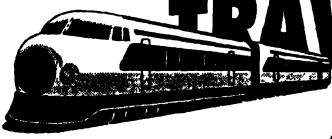
১৫-০০, আশ্রা ক্যাট ১৭-৩০, ভূপাল ১-২৫, ইউরেনি ৩-২০, ভূসুয়াল ৮-০৫, মনমদ ১০-৫৫, পুনে ১৭-৩০, মিরাজ ২২-৫৫, লোভা ৩-১০, কাসল রক ৪-০০টায় ছেড়ে জর্কো যাচ্ছে ৭-২৫এ। নিজামুদ্দিন ফেরে ১৩-৩০এ ডাকো ছেড়ে গোয়া এল।

আর, মিরাজ থেকে ট্রেন যাচ্ছে কশিটকের দিকে দিকে। ৭-৪৫এ মিরাজ-হবলি ২৩-৫০এ মিরাজ-হবলি এক্স, ১৫-৩০এ মিরাজ-ব্যাঙ্গালোর রানী চেমামা এক্স, ২ ৩ ৬ ৭ দিন মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর এক্স, মঙ্গলবার নিজামুদ্দিন-ব্যাঙ্গালোর ফর্জয়তী এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন বাটপ্রভা ৮০, বেলগীও ১৩৮, লোভা ১৮৯ কিমি হয়ে ২৮০ কিমি দূরের হবলি যাচ্ছে। তবুও যেন হবলি থেকে ট্রেনের আধিক্য মেলে মুম্বাই, ব্যাঙ্গালোর, ও কর্ণাটকের নানানদিকের। ১৪৪ কিমি দূরের হুসপেট যাচ্ছে ৮-০০টায় প্যা, ১২-০৫এ অমরাবতী এক্স, ১৭-০০টায় হবলি-ব্যাঙ্গালোর হান্সী এক্স, ২৩-০৫এ হবলি-শুশ্টুর প্যা। স্রুততম Inter City Exp-ও যাচ্ছে হবলি থেকে ব্যাঙ্গালোরে। তেমনই গোল গম্বুজ এক্সে হবলি ছেড়ে হরিহর/বিরুর/ আরসিকের হয়ে মহীশূরও চলা যেতে পারে। লোভা ছাড়া মেল ট্রেনও যাচ্ছে একইপথে মহীশূরে। সেকেন্দ্রাবাদ তথা হায়দ্রাবাদও সরাসরি বগি যাচ্ছে লোভা থেকে। রেল পানাজি না পৌঁছালেও রিজার্ভেশনের ব্যবস্থা নিয়ে রেলের Out Agency Booking পৌঁছেছে কদম্ব বাস স্ট্যান্ডের ৫ নম্বর ঘরে, ৩ ২৫৬০১। ছুটি ছাড়া ১০—১৩-০০ ও ১৪—১৬-৩০টায় খোলা। তবুও, মুম্বাই যাত্রীদের জাহাজই সুবিধার। ভাড়ায় আধিক্য লাগলেও Catamaran Service-এর Speed Launch যাতায়াতে আদরগীর হবে। লঞ্চ অমিল হলে যাতায়াতে বাসই সুবিধার। তেমনই কশিটক ভ্রমণার্থীদের মিটারগেজ রেলে সময়ের আধিক্য হেতু ট্রেন পরিহার করে ব্যাঙ্গালোর, মহীশূর, ম্যাসালোর,

বোণাথ ব্যাঙ্গালোর থেকে বাসে মারগাঁও হয়ে পানাজি চলা উচিত হবে।

তবে, অতিক্রান্ত সাউথ-সেন্ট্রাল জোনের মিটারগেজ রেল ব্রডগেজে স্নাগান্তর পর্ব সাস হতে চলেছে। ১৯৯৮-এর প্রথম দিকেই নবতম কোস্টাল ব্রডগেজ রেল গড়ে উঠছে গোয়াকে বিনীর্ণ করে। কোস্টাল ব্রডগেজ রেল চালু হলে ভারতের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে গোয়া যাতায়াতে রেল বদলের ঝুঁকি থেকে অব্যাহতি মিলবে—সময়ও সাশ্রয় মিলবে গোয়া যাতায়াতে। নবতম ব্রডগেজে এখনই ট্রেন যাচ্ছে ২৩-১০এ মুম্বাই (কারলা) ছেড়ে পানভেল-ব্রহ্মগিরি হয়ে পরদিন ৯-০৫এ সামন্তওয়াদি (Sawantwadi) রোড। সামন্তওয়াদি থেকে বাসে ২½ ঘণ্টায় পানাজি। কারলা ফেরে সামন্তওয়াদি থেকে ১৮-৫৫য় KR-0112 এক্স।

পানাজি ভ্রমণার্থীদের কাছে গোয়ার কচ্ছপের খোল ও আইভরির তৈরি কুটির-শিল্পের আকর্ষণ কম নয়। দারুচিনি ও কাজুবাদামও পর্যটকদের লোলুপ দৃষ্টি আকর্ষণ করে। এমন ভ্রমণার্থী খুবই কম মিলবে যিনি গোয়া ভ্রমণ শেষে দারুচিনি সঙ্গী করেননি। দামেও সস্তা এই দারুচিনি। তবে, কৃত্রিমতা এদেরও পেয়ে বসেছে আজ। আর রয়েছে গোয়ার মাছ, যাকে খাবার টেবিলে পাওয়া ছাড়া সঙ্গী করা মুশকিল। সামুদ্রিক মাছে যারা অভ্যস্ত তাদের স্বর্ণরাজ্য এই গোয়া। এমনকি রন্ধনশিল্পেও গোয়ানিজদের পারদর্শিতার কথা আজ বিশ্ববন্দিত। তেমনই সঙ্গীতেও যথেষ্ট পটু গোয়ানিজরা। যথেষ্ট আমোদ-প্রমোদপ্রিয় আর অতিথি-বৎসলও বটে এরা।



TRAVEL TIPS

INDIA

NEPAL

BHUTAN

Over 200 Maps & all sorts of tips to travel

ASIA PUBLISHING COMPANY

A/132 College Street Market ☎ 241-2386/241-4608 Calcutta - 700 007

গুজরাট

পর্বত মানচিত্রে গুজরাট কিছুটা দুয়োরাণীর ভূমিকা নিলেও পর্বতক আবেদন তার অনস্বীকার্য। উচিতও হবে মুম্বাই বা রাজস্থান ভ্রমণপথে গুজরাট বেড়িয়ে নেওয়া। আকর্ষণও তার নানাবিধ। গুজরদের দেশ গুজরাট। কালে কালে গুজর রাষ্ট্রই নামান্তরিত হয়ে গুজরাট হয়েছে। গুজরাট আজকের নয়। খ্রিঃ ৩ শতকে মৌর্য সাম্রাজ্যের অধীনে ছিল গুজরাট। জুনাগড় শিলালিপিটি আজও সস্রটি অশোকের রাজ্যজ্ঞা কীর্তন করে। ৫ শতকে হুনদের আক্রমণে মৌর্য বংশ ধ্বংস পেতে গুজরদের আগমন ভারতের উত্তরাঞ্চল থেকে। আর পুরাতাত্ত্বিকেরা বলেন ৫০০০ বছর আগেও গুজরাট ছিল ভারতীয় সভ্যতার পীঠস্থান। খ্রিস্ট জন্মেরও ৩০০০ বছর আগে গুজরাটের নর্মদা উপত্যকায় সভ্যতা প্রসার পেয়েছিল। প্রাগৈতিহাসিক যুগের নানান নিদর্শন মিলেছে গুজরাটের মাটির তলায় আমেদাবাদের সমীকটে লোখালে। এমনকি মহাভারতের ভগবান শ্রীকৃষ্ণের স্মৃতি বিজড়িত আরব সাগরবিধৌত দ্বারকা হিন্দু তীর্থ-যাত্রীদের কাছে এক পবিত্র তীর্থ। আরও দক্ষিণে সোমনাথ আর এক হিন্দু তীর্থ। মথুরার সূর্য মন্দির, পালিতানা ও গিরনারের জৈন মন্দিররাজিও তীর্থযাত্রী ও পর্যটক দুইয়েরই কাছে সমান আকর্ষণীয়। তাই গুজরাট আপন মহিমায় ভারত ইতিহাসে গুরুত্বপূর্ণ স্থান দখল করে রয়েছে।

বার বার বিদেশীরা এসেছে পণ্যের লোভে গুজরাটের বন্দরে বন্দরে। এসেছে গ্রিক, রোমান, ফরাসি, ব্রিটিশ, ডাচ, পর্তুগিজ গুজরাটের মাটিতে। এমনকি ভারতীয় পার্সি সম্প্রদায়েরও আগমন ঘটে গুজরাটের সঞ্জম-এ ৭৪৫ খ্রিস্টাব্দে আর ১০ শতকে চালুক্য সম্রাট মুলরাজ সোলাঙ্কির হাতে আধুনিক গুজরাটের গোড়াপত্তন।

প্রথম মুসলিম হানা গজনির সুলতান মামুদের ১০২৬-এ গুজরাটে। কালে কালে মোগল ও মারাঠার দ্বন্দ্বের রণক্ষেত্রের রূপ নেয় গুজরাট। গুজরাটের দখলও যায় মোগল বাদশা আকবরের হাতে ১৫৭২-৭৩-এ। ব্রিটিশ (স্যার টমাস রো) ভারতে ব্যবসা-বাণিজ্যের সনদ নেয় ১৬১৭য় দিল্লীর শাহজাহানের কাছ থেকে গুজরাটেরই আমেদাবাদে। অবশেষে তৃতীয় মারাঠা যুদ্ধের পর দখলও যায় গুজরাটের ব্রিটিশেরই হাতে ১৮১৭য়। আর নিজ অস্তিত্ব হারিয়ে মিলে যায় গুজরাট তৎকালীন বোম্বাই-এর সাথে। রাজধানীও তখন বম্বে অর্থাৎ আজকের মুম্বাই-এ।

ভারতের স্বাধীনতায় গুজরাটের অবদান অনস্বীকার্য। জাতির জনক মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধীর জন্ম গুজরাটের পোরবন্দরে। পোরবন্দরও আজ আর এক ভারততীর্থ। তেমনই আর এক গান্ধীতীর্থ আমেদাবাদের সবরমতী

আশ্রম। হিন্দু-পুরাণের নানান আখ্যানের সাথে সাথে ইতিহাসের ঘনঘটায় গুজরাট যথেষ্ট গুরুত্বপূর্ণ। ১৯৬৬ লক্ষ হেক্টর অরণ্যে ৪টি জাতীয় উদ্যান, ১১টি স্যাঙ্কচুয়ারির অবস্থান গুজরাটে। এশিয়ায় সিংহ-র জন্য যেমন গিরের অরণ্য তেমনই রঙচঙে যথাবরী জীবনযাত্রা আজও দেখতে মেলে গুজরাটের রান অব কচ্ছ। তেমনই মনোরম গুজরাটের সাগরবেলা—চোরবাদ, আমেদপুর-মাণ্ডভী অতুলনীয়। ১৬৫০ কিমি দীর্ঘ সমুদ্র-তটরেখা তিন দিক জুড়ে কোমরবন্ধ হয়ে রয়েছে গুজরাটের।

ভারতীয় শিল্প-বাণিজ্যে পার্সিদের অবদান উল্লেখ্য। পার্সি ও জৈনদের উদ্যোগ আর উদ্দীপনায় গুজরাট আজ অগ্রণী শিল্পপ্রধান রাজ্য। ১৩২৮টি বয়ন-শিল্প মিলে ১৩০০০ শিল্প-কারখানা সারা রাজ্য জুড়ে। অতীত গৌরব কিছুটা ক্ষুণ্ণ হলেও বয়ন-শিল্প গুজরাট আজও ভারত রাষ্ট্রে অগ্রগণ্য। পর্যাপ্ত তেলও মিলেছে গুজরাটের ক্যাম্বেয়। তেমনই সবরমতী, মাহী, নর্মদা, তান্ত্রী ছাড়াও নানান নদ-নদী বিধৌত গুজরাট তামাক পাতায় দ্বিতীয় হলেও তুলো আর চীনাবাদাম উৎপাদনে ভারতে প্রথম স্থানে। ভারতে দুগ্ধজাত ডেয়ারি প্রোডাক্ট-এর ৬৩%, নুন ৬০% তৈরি করছে গুজরাট রাজ্য। কর্মবাপদেশে বিদেশে অবস্থানেও ভারতীয়দের মধ্যে গুজরাটি আধিক্য উল্লেখ্য।

সারা গুজরাটই নেচে ওঠে তার বলমলে সাজে রাস উৎসবে। রাস এদের জাতীয় উৎসব। ঠিক তেমনই সেন্টেম্বর/অক্টোবরের নবরাত্রি জুড়ে মাতা অম্বা দেবীর উৎসবে মেতে ওঠে গুজরাট। এদের লোকনৃত্য—গোপী-বালা সহ শ্রীকৃষ্ণ আখ্যানে উপজীব্য *গরবা*-ও দেখে নেওয়া যায় উৎসবকালে। আর এক ঐতিহ্যবাহী *পঙ্খীরা* নৃত্যও পরিবেশিত হয় উৎসবে। নবরাত্রির পরদিন দানব রাজা রাবণকে রামচন্দ্রের যুদ্ধে হারাবার বিজয়োৎসব *দশেরা* অর্থাৎ দুষ্টের দমন আর এক আকর্ষণীয় উৎসব। ঠিক তেমনই জানুয়ারি/ফেব্রুয়ারিতে মহরমের *তাজিয়া* মিছিল সুরাট বা আমোশাদে দেখে নেওয়া উচিত হবে। জানুয়ারির মধ্যভাগে *মকর সংক্রান্তি*তে অন্ধাশ ঢেকে ঘড়ির প্রতিযোগিতাও গুজরাটের এক আকর্ষণীয় উৎসব।

স্বাধীনোত্তর ভারতে ১৯৫৬য় কাথিয়াবাড়ের ২০২টি স্বাধীন দেশীয় রাজ্যও সামিল হয় তৎকালীন বোম্বাই-এর সঙ্গে। আর মে ১, ১৯৬০-এ ভাবার ভিত্তিতে রাজ্য গড়তে মুম্বাই থেকে গুজরাট-ভাষী অঞ্চলের সাথে অতীতের কাথিয়াবাড় জুড়ে জন্ম নেয় গুজরাট প্রদেশ আমেদাবাদকে রাজধানী করে। তবে, আজকের গুজরাট নতুন রাজধানী গড়েছে আমেদাবাদেরই অদূরে পরিকল্পিত শহর

গান্ধীনগর-এ। ভৌগোলিক পরিবেশ তিন প্রকৃতিতে গড়ে তুলেছে গুজরাটকে। (১) মূল ভূখণ্ডে: সুরাট, ডাদোদরা ও আমোদাবাদ শিল্পকেন্দ্রিক বাণিজ্যিক শহর; (২) মূল ভূখণ্ড থেকে কচ্ছ উপসাগরে বিচ্ছিন্ন অতীতের কাথিয়াবাড় বা সৌরাষ্ট্র উপদ্বীপ; (৩) কচ্ছ উপসাগরে সৌরাষ্ট্র থেকে বিচ্ছিন্ন কচ্ছ। উত্তর-পশ্চিমে রান অব কচ্ছ অর্থাৎ মরুভূমি শেষে পাকিস্তান।

গুজরাট □ রাজধানী: গান্ধীনগর। আয়তন: ১৯৬০২৪ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৪১১৭৪০৬০। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৪.৮৭%। পুরুষ: ২১২৭২৩৮। নারী: ১৯৯০১৬৭২। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৭০৮৮২৬। বৃদ্ধির হার: ২০.৮০%। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৩৬। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২১০। সাক্ষরের হার: ৬০.৯১%। প্রধান ভাষা: গুজরাটি। ইংরাজি ও হিন্দীও চলন আছে সারা রাজ্য জুড়ে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৫৪০৬.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। আয়তনে ৭ম বৃহত্তম আর লোকসংখ্যায় ১০ম স্থানে গুজরাট রাজ্য। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। তাপমান ৫৫-৯৫° ফা. গুঠানামা করে। এপ্রিল থেকে তাপমান বাড়তে থাকে—গরমেরও আধিক্য আছে এপ্রিল থেকে সেপ্টেম্বর মাসে। বৃষ্টিও বিঘ্ন ঘটায়, বিশেষ করে দক্ষিণ ও পশ্চিম গুজরাটে। আর উত্তর জুড়ে মরু অঞ্চল—Rann of Kach-এর অবস্থান। গুজরাটের সাথে দাদরা ও নগর হাভেলী, দমন-দিউ জুড়ে রাজস্থান বা মহারাষ্ট্র বেড়িয়ে ফেরা যায় একই ট্যারে। সেক্ষেত্রে—জুনাগড় ১ গির ১ সোমনাথ ২ ডিউ ১ চলার পথে পোরবন্দর দেখে দ্বারকা-ভেট দ্বারকা ২ ভাবনগর-রাজকোট ১ পালিতানা ১ মধেরা ১ আমোদাবাদ ২ ভাদোদরা ১ সুরাট ১ দমন ১ দাদরা ও নগর হাভেলী ১ + পথ চলায় ৪ দিন অর্থাৎ ২০ দিনে সাঙ্গ করা যায় গুজরাট-দাদরা ও নগর হাভেলী-দমন ও দিউ সফর। তবুও যেন মধেরা বেড়িয়ে রাজস্থানের আবু পর্বত বা দমন বেড়িয়ে বাপী থেকে মহারাষ্ট্রের মুম্বাই নগরী চলাতেও সুবিধা মেলে।

সারা গুজরাটেই মূলত নিরামিষ আহার। আধা ও পুরা মিলের প্রচলন আছে রাজ্য জুড়ে। আধা অর্থাৎ স্বাভাবিক পরিমাণ, আর পুরা বলতে পেট চুস্তি আহার। তবে লঙ্কার

আধিকা গুজরাটি রান্নায়। ১৫ থেকে ৫০ টাকায় খালি মিল মেলে গুজরাটের হোটোলে। তেমনই সারা গুজরাটেই ড্রাই এলাকা। এমনকি সমগ্র গুজরাট রাজ্যে সঙ্গে মদ বহন করাও নিষিদ্ধ। পান বা বহন দুয়েতেই ৫০০০ টাকা স্পট ফাইন হয়ে থাকে গুজরাটে।

আমোদাবাদ

ভারত রাষ্ট্রের পশ্চিমে সবরমতী নদীর তীরে দ্বিতীয় বৃহত্তম বয়ন-শিল্পনগরী আমোদাবাদ। গান্ধী, নেহরু, সুভাষ, সর্দার ও ইলিয়াস—সবরমতী নদীতে এই ৫ সেতু যোগসূত্র গড়েছে এপার-ওপারে। এই সেদিনও রাজ্যের রাজধানী ছিল আমোদাবাদ। কাজকর্মে সুবিধা পেতে রাজধানী স্থানান্তরিত হয়েছে ২৩ কিমি দূরে নতুন গড়ে তোলা পরিকল্পিত শহর গান্ধীনগরে। আমোদাবাদ আজকের নয়। বাঘেলা রাজবংশের শেষ রাজা কর্ণদেব ভীল সর্দার আসাকে হারিয়ে নামের বদল ঘটান—সেদিনের আসাবল বা আসাপল্লী হয় কর্ণবতী। আর কর্ণবতীকে হারিয়ে রাজ্য দখলের সাথে কর্ণবতী হয় রাজনগর। পালাবদল ঘটে চলে মসনদে বারবার গুজরাটে।

গুজরাটের শাসক জাফর-পৌত্র অলপ খাঁ রাজপুত ও মালবদের হারিয়ে আহমেদ শাহ নামে মসনদে বসে ১৪১১ খ্রিস্টাব্দে। নগরীর গোড়াপত্তন আহমেদ শাহর হাতে। তাঁরই নামে নগরের নামকরণ হয় আমোদাবাদ। এমনকি আহমেদ শাহর আগ্রহে নবীন ভারতের ম্যাগেফেস্টারের গোড়াপত্তনও বলা যেতে পারে। পরবর্তীকালে ১৫৭২এ আকবর জয় করেন গুজরাট। নতুন উদ্যমে প্রসার লাভ করে আমোদাবাদ। ১২টি তোরণে গড়ে ওঠে দেওয়াল—আমোদাবাদের চারপাশ ঘিরে। শহর প্রসারের চাপে দেওয়ালগুলি আজ লুপ্ত। শহরের বাড়ি-ঘরে হিন্দু-মুসলিম অর্থাৎ ইন্দো-সেরাসেনিক স্থাপত্যের নিদর্শন মেলে। জৈন প্রভাবেরও মিলন ঘটেছে। কালে কালে মোগল থেকে মারাঠাদের দখলে যায় আমোদাবাদ। পুনের পেশোয়ার কাছ থেকে ৫ লাখ টাকায় কিনে ভাদোদরায় গায়কোয়াড় ১৮১৭য় দাভয়-এর বদলে ব্রিটিশকে ভেট দেন আমোদাবাদ। আমোদাবাদে প্রথম পৌরসভাও গড়ে ১৮৩৩এ ব্রিটিশ। আর বয়নশিল্পের প্রথম মিলাট গড়ে ব্রিটিশ ১৮৫৯এ আমোদাবাদে। আধুনিকতার জয়যাত্রাও ব্রিটিশেরই হাতে আমোদাবাদে। আর স্বাধীনোত্তর ভারতে Manchester of the East আমোদাবাদ বক্তৃতিশ্লের জন্য সারা বিশ্বে আদৃত। তেমনই ইন্ডিয়ান স্পেস রিসার্চ অর্গানাইজেশন (ISRO)-এর উপগ্রহ তৈরি ও স্যাটেলাইটে TV সংযোগ কেন্দ্রও গড়ে উঠেছে আমোদাবাদে। স্বাধীনোত্তর আমোদাবাদে সবরমতীর পশ্চিম পাড়ে ফরাসি স্থপতি লে করবুসিয়েরের তৈরি নতুন শহরের পর্যটক আকর্ষণও কম নয়।

তেমনই গুজরাটের জাতীয় উৎসব সেপ্টেম্বর-

অক্টোবরে নবরাত্রির পর্যটক আকর্ষণও উল্লেখ্য। শক্তির দেবী অম্বা গুজরাটে বাংলার দুর্গাপূজা সম। সারা আমেদাবাদ সেজে ওঠে উৎসবের সাজে। গরবা নাচও দেখতে মেলে উৎসবে। আমেদাবাদের নবতম আকর্ষণ পৌষ সংক্রান্তিতে আন্তর্জাতিক ঘুড়ির উৎসব। মধ্য জানুয়ারিতে ৩ দিন ধরে প্রতিযোগিতা চলে সাহেববাগের পুলিশ স্টেডিয়ামে। দেশ-দেশান্তর থেকে প্রতিযোগীরা আসেন, ঢাকা পড়ে নীলাকাশ রঙবেরঙের বাহারি ঘুড়ির জৌলুসে। আমেদাবাদ পর্যটকদের কাছে এরও আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

জাহাঙ্গীর আমেদাবাদকে *গদাবাদ* অর্থাৎ *সিটি অব ডার্টবলে*ও তাঁর পুত্র শাহজাহান এর রূপে মুগ্ধ হয়ে বেগম মমতাজকে সঙ্গে নিয়ে বিয়ের পর এক বছর মধুচন্দ্রিমা যাপন করেন আমেদাবাদে। আর ভারতের সুন্দরতম নগরী বলেছেন আমেদাবাদকে ঔরঙ্গজেব। ব্রিটিশ ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির প্রতিনিধি স্যার টমাস রো ভারতে বাণিজ্যের সনদ (চাটার) গ্রহণ করেন আমেদাবাদেই। এমনকি ১৬১৫য় আমেদাবাদের রূপে মুগ্ধ হয়ে বিশ্বের অন্যতম নগরীও বলেছেন স্যার টমাস।

বেড়াবার মরসুম সারা বছর হলেও অক্টোবর থেকে মার্চ মনোরম। তবে, এপ্রিল-জুনের গরম এড়িয়ে চলা উচিত হবে ৫৩ মি উঁচু আমেদাবাদে। হিন্দু ও মুসলিম সমন্বয়ে মিশ্র জনবসতি আমেদাবাদে। লাখ তেত্রিশ লোকের বাস শহরে। সহজ-সরল এদের জীবনমান। তবে, কিছুটা যেন স্পর্শকাতর আমেদাবাদ। হিন্দু-মুসলিম বিরোধও তাই নিত্য-নতুন রূপ নেয় আমেদাবাদে। সম্প্রীতির সাথে সাথে রূপেও যেন ঘাটতি ঘটেছে বয়সের ভারে আমেদাবাদের। আঁকাবাঁকা গলিপথ, ঘিঞ্জি শহর—অপরিচ্ছন্নতাও চোখে পড়ে আমেদাবাদ-এ।

পর্যটকদের উচিত হবে থাকার জন্য রেল স্টেশন বা লাল দরোজায় হোটেল নির্বাচন করা। লাল দরোজা থেকেই বাস যাচ্ছে শহরের দিকে দিকে। মিউনিসিপ্যাল বাস টারমিনাসটিও এই লাল দরোজায়। তবে, দুয়পান্নার বাস যাচ্ছে শহরের দক্ষিণে বিবেকানন্দ রোড পেরিয়ে গীতা মন্দিরের অদূরে জগন্নাথজী রোড বাস স্ট্যান্ড ৩ 344764 থেকে। কেনাকাটার জন্য মানেক চক, তিন দরোজা, তিলক রোড ও ভদ্রাই শ্রেয়। গুজরাটের পাটোলা সিল্ক, বান্ধনী ও জরিখতি এম্বরয়ডারি শাড়ির যথেষ্ট প্রশস্তি পর্যটকদের মুখে মুখে। তেমনই উল্লেখ্য দারু ও ধাতুর ক্রাফটস জাত নানান সন্টার গুজরাটে। প্রবাসী বাঙালিরাও ক্লাব গড়েছেন বাসের পিছে হোম গার্ড গ্রাউন্ড লাগোয়া Bengal Cultural Association, Chainbhai House, Lal Darwaja, Ahmedabad-1। বসন ও ভূষণ দুইয়েরই পসরা নিয়ে দোকান মেলে সারা শহরময়।

তবুও যেন Relief Rd-এর Rewadi Bazar, Tranpal Rd-এর গার্মেন্ট বাজার বারো মাসের ফেরারের সাজে সম্বদ্ধ যেন। তবুও কেনাকাটার আশ্রম রোডে গুজরাট সরকারের গুজারিতে লা যেতে পারে। রবিবার ছাড়া ১০—১৯-০০টায় খোলা আমেদাবাদের দোকানপাট।

Delhi-Jaipur- Ahmedabad-Mumbai NH-8

| 0 | Km | Delhi | |
|------|----|----------------------------|--------|
| 113 | " | Haryana/Rajasthan Border | |
| 130 | " | Behror | |
| 152 | " | To Alwar | 50 km |
| | " | Kotputli | |
| | " | To Alwar | 68 km |
| 193 | " | Road Jn | |
| | " | To Sariksha G S | 46 km |
| | " | " Alwar | 77 km |
| 248 | " | Amber | |
| 258 | " | Jaipur | |
| 389 | " | Ajmer | |
| | " | To Pushkar Lake | 12 km |
| | " | " Bundi | 165 km |
| | " | " Kotah | 201 km |
| | " | " Shilpuri | 424 km |
| 390 | " | Road Jn | |
| | " | To Chitorgarh | 186 km |
| 443 | " | Beawar | |
| | " | To Jodhpur | 143 km |
| | " | " Bikaner | 390 km |
| | " | " Mt Abu | 303 km |
| 567 | " | Gomti Morh | |
| | " | To Ranakpur | 56 km |
| 597 | " | Kankroli | |
| 613 | " | Nathdwara | |
| 663 | " | Udaipur | |
| | " | To Chitor | 113 km |
| 666 | " | Udaipur City | |
| | " | To Ambaji | 99 km |
| 836 | " | Road Jn | |
| 915 | " | Ahmedabad | |
| 966 | " | Road Jn | |
| | " | To Dakor | 41 km |
| 1028 | " | Vadodara (Baroda) | |
| 1101 | " | Broach | |
| 1105 | " | Road Jn | |
| | " | To Surat | |
| 1214 | " | Road Jn | |
| | " | To Nasik | 180 km |
| 1277 | " | Road Jn | |
| | " | To Wapi | 2 km |
| | " | " Daman | 12 km |
| 1279 | " | Road Jn | |
| | " | To Dadra | 11 km |
| 1297 | " | Gujarat/Maharashtra Border | |
| 1300 | " | Road Jn | |
| | " | To Sanjan | 8 km |
| 1333 | " | Kasa | |
| | " | To Nasik | 180 km |
| 1421 | " | Road Jn | |
| | " | To Kanheri N P | 1 km |
| | " | " Kanheri Caves | 5 km |
| 1460 | " | Mumbai | |



1AC-র বিমান প্রতিদিন ৭-৩০ ও ১৯-২০এ, ১১ 5 দিন ২০-৪০, ২৪ 6 দিন ১৫-৩৫, ১৭ দিন ১১-৩০এ আমেদাবাদ ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে ১ ঘণ্টায়। 2 4 6 দিন ১১-৪০এ ছেড়ে ১৩-৩০এ অমৃতসর পৌছে চত্বীগড় যাচ্ছে ১৪-৩৫এ। দিল্লী যাচ্ছে প্রতিদিন ৮-২০, ২০-৪৫, 3 5 7

দিন ৪-৪৫৫ ছেড়ে ১ ঘণ্টা ২৫ মিনিটে। কলকাতায় যাচ্ছে ২৪ ৬ দিন ১৮-২০৫ ছেড়ে ২০-৫০৫ সরাসরি; ১৩৫ দিন ১৮-১০৫ ছেড়ে ১৯-১০৫ জয়পুর পৌঁছে ২২-০৫৫। চেন্নাই যাচ্ছে প্রতি বুধবার ১৭-৪৫৫ ছেড়ে ১৯-৪৫৫ ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে ২১-১০৫, ১৭ দিন ১৬-৩০৫ ছেড়ে ব্যাঙ্গালোর হয়ে ১৯-৫৫৫। হায়দ্রাবাদ যাচ্ছে ১৫ দিন ২-২৫৫ ছেড়ে ৪-৪৫৫। ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনগুলিতে আমেদাবাদে। বায়ুদূত ছেড়ে পশ্চিম ভারতের দিকে-দিগন্তের আমেদাবাদ থেকে। তবুও যেন সৌরাষ্ট্রের শহরগুলিতে সরাসরি যাত্রায় মুম্বাই অনেক আদৃত হবে। শহর থেকে ৮ কিমি উত্তর-পূর্বে বিমানবন্দর। অটো, ট্যাক্সি যাচ্ছে বিমানবন্দর থেকে শহরে। অফিস এদের: IAC, near Nehru Bridge, Tilak Rd. ☎ R-303061/E 140/141.

আর প্রাইভেট বিমান—NEPC Airlines, ☎ 6420462, সোম ছাড়া প্রতিদিন মুম্বাই যাচ্ছে ৫৫ মিনিটে; ঔরঙ্গাবাদ যাচ্ছে সোম ছাড়া প্রতিদিন; কোচি, ব্যাঙ্গালোর হয়ে চেন্নাই যাচ্ছে ২৪ ৬ দিন; ফেরেও একইভাবে একই দিনগুলিতে আমেদাবাদে। Damania Airways, ☎ 6426295, দিল্লী যাচ্ছে প্রতিদিন ১২ ঘণ্টায়; মুম্বাই যাচ্ছে প্রতিদিন ১ ঘণ্টায়; ১৩৫ দিন ১ ঘণ্টায় জয়পুর পৌঁছে কলকাতা যাচ্ছে; ২৪ ৬ দিন ব্যাঙ্গালোর পৌঁছে চেন্নাই যাচ্ছে। ফেরেও এরা একইভাবে একই দিনগুলিতে আমেদাবাদে। East West Airlines, ☎ 402519-ও সার্বিস গড়েছে আমেদাবাদ থেকে মুম্বাই-এর। Modilut Airways, 2 Russel St. ☎ 298437 যাচ্ছে কলকাতা থেকে দিল্লী হয়ে আমেদাবাদে। Jet Airways ☎ 6561290 দৈনিক সার্বিস গড়েছে আমেদাবাদ-মুম্বাই, আমেদাবাদ-দিল্লী ছাড়াও নানান।



শিল্পনগরী আমেদাবাদ ভারতের বিভিন্ন প্রান্তের সঙ্গে সরাসরি রেলপথে যুক্ত। দিল্লী-মুম্বাই ব্রডগেজ রেল ভাদোদরা (বরোদা) হয়ে চলাচল করলেও আমেদাবাদের অবস্থান ব্রডগেজ থেকে সরে আরও উত্তরে। তবে ব্রডগেজ ও মিটারগেজ দুইয়েরই প্রচলন আছে আমেদাবাদ থেকে। দক্ষিণ-পশ্চিম-পূর্বে ব্রডগেজ; আর উত্তরে দিল্লী যাচ্ছে রাজস্থান হয়ে মিটারগেজ রেল। ট্রেন যাচ্ছে ব্রডগেজে ২০-৩০৫ হাওড়া ছেড়ে টাটা-বিলাসপুর-নাগপুর-ভূসায়াল-জলগাঁও-সুরাট হয়ে পরের পরদিন ১৫-২৫৫ ২০৮৯ কিমি দূরের আমেদাবাদ ৪০৩৪ হাওড়া-আমেদাবাদ এক্স; ফেরে ৯-২০৫ আমেদাবাদ থেকে।

মুম্বাই সেন্ট্রাল যাচ্ছে ৭ থেকে ১০ ঘণ্টায়—২০-২০৫ আমেদাবাদ থেকে (১২-৩৫৫ জামনগর ছাড়া) সৌরাষ্ট্র জনতা এক্স, ২১-২০৫ আমেদাবাদ-মুম্বাই জনতা, ২২-০৫৫ গুজরাট মেল, ২২-৪৫৫ (ওখা থেকে আসা) সৌরাষ্ট্র মেল, ৭-০৫৫ গুজরাট এক্স, বুধ ছাড়া প্রতিদিন ৫-০০টায় রুতগামী কর্ণবতী এক্স, ৬-২০৫ (গোরবন্দর থেকে আসা) সৌরাষ্ট্র এক্স, ৩-১৫য় (গাঙ্গীধাম থেকে আসা) কচ্ছ এক্স। দূরত্ব ৪৯২ কিমি। মুম্বাই সেন্ট্রাল ছাড়ে ১৬-২৫৫ (বাক্সা) সৌরাষ্ট্র জনতা এক্স, ১৯-৩৫৫ মুম্বাই-আমেদাবাদ জনতা, ২১-৫০৫ গুজরাট মেল, বুধ ছাড়া ১৩-৪০৫ কর্ণবতী এক্স, ২০-২৫৫ সৌরাষ্ট্র মেল, ৪-৪৫৫ গুজরাট এক্স, ১৭-০০টায় কচ্ছ এক্স, ৭-৪৫৫ সৌরাষ্ট্র এক্স। আর ৩৬৬ ছাড়া প্রতিদিন ২০১০ শতাধী এক্স যাচ্ছে ১৪-৪৫৫ আমেদাবাদ ছেড়ে নলীয়াদ/আনন্দ/ভাদোদরা/বারুচ/সুরাট থেকে ২১-৪০৫ মুম্বাই সেন্ট্রাল। মুম্বাই ছাড়ে ৬-২৫৫ শতাধী।

মাহেন্দ্রাব ১২ ঘ/ আবুরোড ৪২ ঘ/ আজমের ১২ ঘ/ জয়পুর

১৫২ ঘণ্টায় পৌঁছে মিটারগেজে ১৭—২৪ ঘণ্টায় ৯৩৪ কিমি দূরের দিল্লী সরাই রোহিলা যাচ্ছে—৮-২০৫ দিল্লী মেল, ১৭-১৫য় রুতগামী আশ্রম এক্স; প্রতি রবিবার ১৩-৫০৫ নতুন দিল্লী যাচ্ছে আমেদাবাদ রাজধানী এক্স; ২৩ ৬ দিন ১১-৫৫য় নাগা/সওয়াই মাণেপুর/মথুরা/নতুন দিল্লী/আখলা হয়ে ব্রডগেজে জম্মু যাচ্ছে সর্বোদয় এক্স। ১২২২ কিমি দূরের আগ্রা যাচ্ছে ২২-৪৫৫ ফাস্ট প্যাসেঞ্জার এক্স + এক্স, প্রতি মঙ্গলবার ৫-৪৫৫ আমেদাবাদ ছেড়ে উজ্জয়িন/বান্দী/আগ্রা ক্যান্ট/লঙ্কৌ হয়ে গোরকপুর্ন যাচ্ছে ১০৪৫ এক্স। ৬২৬ কিমি দূরের জয়পুর যাচ্ছে ৮-২০৫ আমেদাবাদ-দিল্লী মেল, ১৭-১৫য় আশ্রম এক্স, ১৩-৫০৫ সাপ্তাহিক (৭) রাজধানী এক্স। আমেদাবাদ ফেরে দিল্লী সরাই রোহিলা থেকে ২২-১০৫ আমেদাবাদ মেল, ১৫-০৫৫ আশ্রম এক্স; নতুন দিল্লী থেকে শনিবার ১০-৫৫য় রাজধানী এক্স, ১৪ ৭ দিন ২০-৪৫৫ জম্মু-আমেদাবাদ/রাজকোট এক্স।

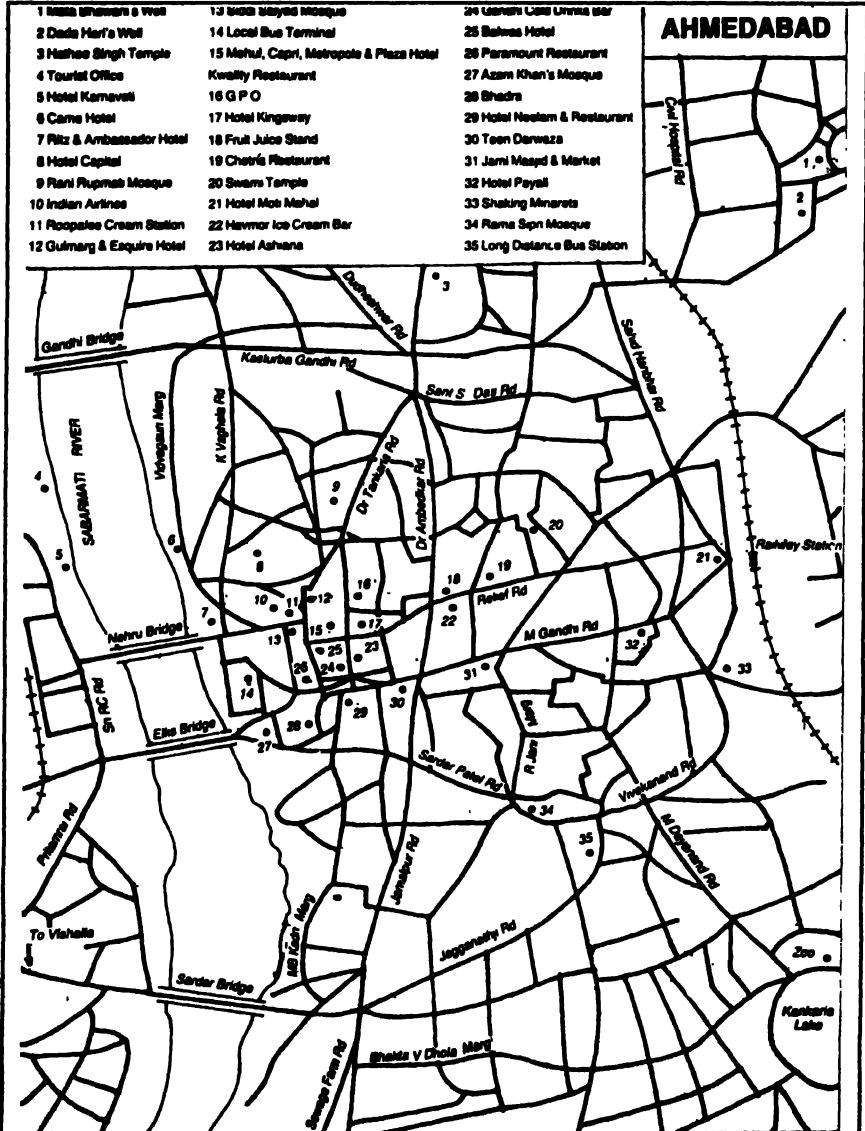
আবুরোড হয়ে ১১ ঘণ্টায় যোধপুর যাচ্ছে ৭-৫০৫ রণকপুর্ন এক্স, ২১-৫০৫ রুতগামী সূর্যনগরী এক্স, ২২-০০টায় আমেদাবাদ-যোধপুর এক্স। মারোয়াড় যাচ্ছে ৮-২০৫ আমেদাবাদ-দিল্লী মেল; আজমের যাচ্ছে ২২-৪৫৫ ফাস্ট প্যাসেঞ্জার+এক্স ছাড়াও জয়পুরের প্রতিটা ট্রেন। ১৮৬ কিমি দূরের আবুরোড যাচ্ছে ৫-৩০৫ আরাবলী এক্স, ৭-৫০৫ রণকপুর্ন এক্স, ৮-২০৫ দিল্লী মেল, ১১-২৫৫ আবুরোড প্যাসেঞ্জার, ১৭-১৫য় আশ্রম এক্স, ১৭-০০টায় দিল্লী এক্স, ২১-৫০৫ সূর্যনগরী, ২২-৪৫৫ আজমের ফাস্ট প্যাসেঞ্জার ছাড়াও দিল্লী/আগ্রা/আজমের/যোধপুরের প্রতিটা ট্রেন। উদয়পুর যাচ্ছে ২৩-০০টায় আমেদাবাদ ছেড়ে ৯ ঘণ্টায় ৭৬৪৪ এক্স, ৬-৪০৫ ফাস্ট প্যাসেঞ্জার; উদয়পুর হয়ে চিতোর যাচ্ছে ফাস্ট প্যাসেঞ্জার। ৭১৬৫ সর্বমতী এক্স ২০-০০টায় আমেদাবাদ ছেড়ে উজ্জয়িন/গুনা/বান্দী/কানপুর/লঙ্কৌ/ফৈজাবাদ হয়ে ১৪ ৬ দিন বারাণসী, ২ দিন ফৈজাবাদ; ১৩ ৭ দিন বরাবান্ধী/সাহাযগঞ্জ/মৌ হয়ে মজঃফরপুর যাচ্ছে সর্বমতী। আমেদাবাদ ফেরে বারাণসী থেকে ২ ১৭, ফৈজাবাদ থেকে ৪, মজঃফরপুর থেকে ১ ৩ ৬ দিন। ১৪ ঘণ্টায় ভূপাল যাচ্ছে ১৮-৫০৫ ১২৬৭ রাজকোট-ভূপাল এক্স। চেন্নাই সেন্ট্রাল যাচ্ছে ব্রডগেজে সুরাট/জলগাঁও/মনমদ/ওয়ারা/কাঞ্চী/বিজয়-ওয়ারা ছাড়ে ৬-৩৫৫ ৬০৪৫ নবজীবন এক্স। শনিবার ১০-১০৫ রাজকোট-তিরুভনন্তপুরম এক্স, সোমবার ১০-১০৫ রাজকোট-কোচি এক্স, বুধ-শনিবার ১০-১০৫ রাজকোট-সেকেন্দ্রাবাদ এক্স, রবিবার ১০-১০৫ গাঙ্গীধাম-তিরুভনন্তপুরম এক্স যাচ্ছে আমেদাবাদ ছেড়ে পুনে/শুটাকল হয়ে। ১৪ ৬ দিন পুনে যাচ্ছে ১৬-০৫৫ ছেড়ে পরদিন ৫-৩০৫ ১০৭৫ আমেদাবাদ-পুনে অহিন্সা এক্স; ১৪ ৬ ৭ দিন ১০-১০৫ নানান ট্রেন। ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে জলগাঁও/শুটাকল হয়ে বরিবার ১৮-০০টায় ৬৫০১ এক্স।

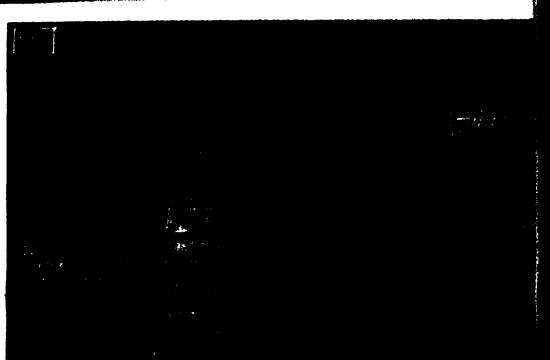
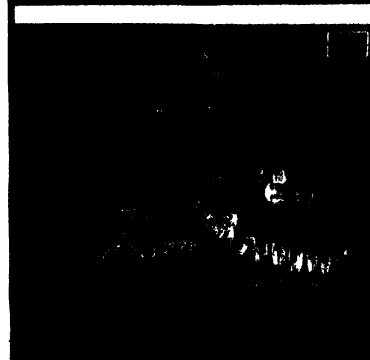
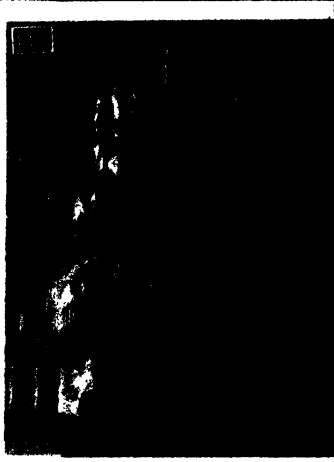
আমেদাবাদ থেকে ভেরাবল যাচ্ছে ১১২ ঘণ্টায় সোমনাথের যাত্রী নিয়ে মিটারগেজে থোলা/বিজাদিয়া/জুনাগড় হয়ে ২৩-০০টায় ৭৭২৪ সোমনাথ মেল, ২১-২৫৫ রুতগামী ৭৪৪৬ গিরনার এক্স; গিরনারের একটা অংশ ভাবনগর যাচ্ছে থোলা থেকে ৭৪৪৪ লিঙ্ক এক্স হয়ে। আর যাচ্ছে আমেদাবাদ-ভাবনগর ৭৭৩৬ এক্স ৭-০৫৫, আমেদাবাদ-ভাবনগর ৭৭১০ লক্ষ্মণ এক্স ১৭-০৫৫ আমেদাবাদ ছেড়ে বোটাড/থোলা/শিহোর হয়ে ৫২ ঘণ্টায় ভাবনগর।

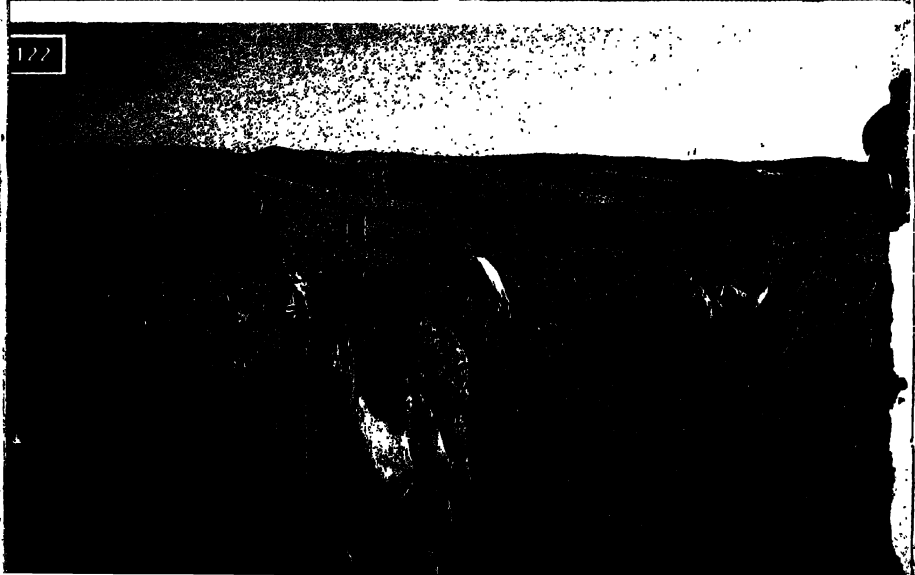
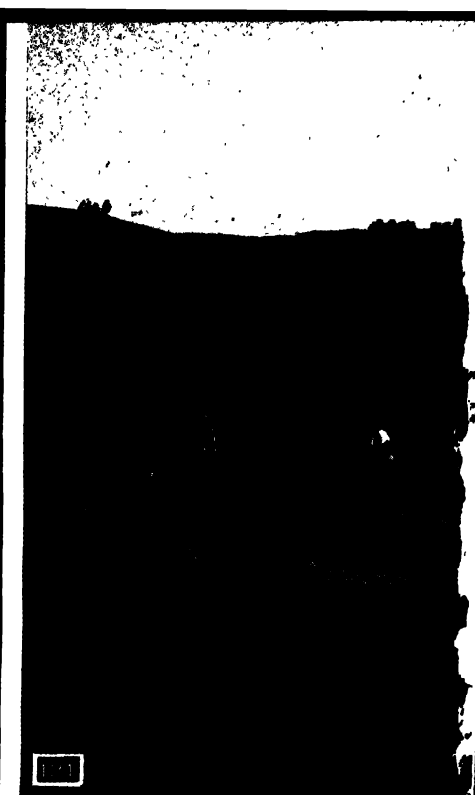
ওখা যাচ্ছে ৬-১৫য় ব্রডগেজে তিরামগম/রাজকোট/হাগ/

দ্বারকা হয়ে মুম্বাই থেকে আসা সৌরাষ্ট্র মেল; জামনগর যাচ্ছে ২-২৫এ রাজকোট/হাপা হয়ে বাহরা-জামনগর জনতা এক্স, সোম ছাড়া প্রতিদিন ১৮-১৫য় আমেদাবাদ-হাপা এক্স, হাপা/জামনগর হয়ে পোরবন্দর যাচ্ছে ২০-৩৫এ সৌরাষ্ট্র এক্স, সাপ্তাহিক পুরী-ওখা এক্স, সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১৮-১৫য় ৭১৫৩ আমেদাবাদ-

রাজকোট-হাপা এক্স; গান্ধীধাম যাচ্ছে ১-৫৫য় মুম্বাই-গান্ধীধাম ৭০৩১ কচ্ছ এক্স; সাপ্তাহিক নাগেরকয়েল-গান্ধীধাম এক্স, প্রতিদিন ১৪-১০এ ভাসোদরা ছেড়ে ১৬-৩৫এ ৭১০৩ গান্ধীধাম এক্স। হাপা হয়ে পোরবন্দর যাচ্ছে ২০-৩৫এ সৌরাষ্ট্র এক্স, ওখা যাচ্ছে ৭০০৫ মুম্বাই-ওখা সৌরাষ্ট্র মেল ৬-১৫য় দ্বারকার যাত্রী নিয়ে ভিরামগম/







রাজকোট/হাণা/জামনগর হয়ে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে—সুরাট, ভাদোদরা, আনন্দ, মাহেশানা, লোথাল, বোটাড, নিউ ভুজ, গান্ধী-নগর ছাড়াও রাজ্য তথা ভারতের দিকে দিকে আমেদাবাদ থেকে।



সড়কপথে সংযোগ গড়েছে গুজরাট স্টেট রোড ট্রান্সপোর্ট; Punjab Travels, Delhi Gate, Sahapuri, Eagles Travels, ছাড়াও নানান প্রাইভেট সংস্থার নানানধর্মী বাস আমেদাবাদ থেকে। বাস যাচ্ছে মুম্বাই-দিল্লী NH-৪ ধরে মুম্বাই, আবু পাহাড়, জয়পুর, আজমের, উদয়পুর, দিল্লী ছাড়াও মহারাষ্ট্র, গুজরাট, রাজস্থান, মধ্য প্রদেশের দিকে দিকে। এমনকি রাত্রিকালীন ভূজের বাসে শয়নের টিয়ারও মেলে। বাস যাচ্ছে Gujarat State Road Transport-এর: জুনাগড় ৪—২৪-০০টায় ঘন্টায় ঘন্টায়, সোমনাথ ৬-৪৫, ৮-৩০, ১০-৩০, ১৯-৩০, ২০-১৫, ২০-৩০, ২০-৪৫; দ্বারকা ৯-৩০, ২০-০০টায়; পালিতানা ৫-০০, ৬-০০, ৭-০০, ৮-৪৫, ৯-৪৫, ১৩-০০, ১৪-৩০, ১৫-৩০, ১৭-০০, ১৯-৩০, ২০-৩০; ভুজ ৫-০০, ৬-০০, ৭-০০, ১২-৩০, ১৮-৩০, ১৯-০০, ২০-৩০, ২১-৩০, ২২-০০, ২২-৩০; ছেড়ে ৮ ঘন্টায়; নল সরোবর ৭-০০, ১৪-৪৫; ডাকোর, ভাদোদরা, সুরাট, মাহেশানা, জুনাগড়, রাজকোট, অম্বাজী, জামনগর, পোরবন্দর, ভাবনগর, দিউ ছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিকে দিকে দিনরাত্রি জুড়ে। Rajasthan Road Transport-এর বাস যাচ্ছে: মাউন্ট আবু ৮-৪৫, ১১-৩০, ১৪-৩০, ১৬-০০, ২২-৩০; চিতোরগড় ৯-০০, ২১-০০টায়; আজমের ১৯-০০, ২১-৩০; জয়পুর ১৬-৩০, ২০-৩০; যোধপুর ৬-১৫; উদয়পুর ৫-০০টায় ছাড়াও রাজস্থানের দিকে দিকে। আবু পাহাড় যাত্রীদের উচিত হবে ট্রেন ছেড়ে বাসে ৭ ঘন্টায় পৌঁছে যাওয়া। বাস যাচ্ছে ৬ ঘন্টায় উদয়পুর, ১১ ঘন্টায় মুম্বাই। আর শহরে চলছে সিটি বাস, ট্যাক্সি, অটো ও রিকশা।

চিত্রসূচী: নয়

১১০ পালিতানার মন্দিররাজি ছবি পবন দত্ত
১১১ ক্রান্তিকাল ছবি চন্দনকুমার ঠাকুরতা ১১২ গৃহপথর
মন্দির ছবি মৃণাল দত্ত ১১৩ রাজগড় প্রাসাদ-খাজুরাহো ছবি
পবন দত্ত ১১৪ পৌরসভার জল ইকিয়া ছবি পবন দত্ত
১১৫ মহেশ্বর দুর্গত্যা প্রাসাদ ছবি পবন দত্ত ১১৬ মার্বেল
রক্স ছবি দেবপ্রিয় প্রামাণিক ১১৭ কামহার লোপাট ছবি
পবন দত্ত ১১৮ সিটি প্রাসাদ-উদয়পুর ছবি পবন দত্ত
১১৯ পুন্ডর বেলাল ব্রহ্মচন্দ্র ছবি পবন দত্ত
১২০ জয়ন্তত-টিফার ছবি নিখিলেশ সাহু ১২১ মরুর
দেশ ছবি পবন দত্ত ১২২ কপালকর বিক্রাম ছবি বিবেক
সান্নাধ্যবালকর্



রেল স্টেশন থেকে ডাইনে অতীতের Relief Rd
আজ হয়েছে Tilak Rd আর বায়ে Mahatma
Gandhi Rd—দুই সমান্তরাল পথ শহর মড়িয়ে
২ কিমি দূরের মিউনিসিপাল বাস স্ট্যান্ড তথা লাল দরোজা
পেরিয়ে সবারমতীতে গিয়ে মিলেছে। দোকানপাট, হোটেল, বাস

স্ট্যান্ড মায় শহর এই দুই সড়কের ডাইনে-বায়ে আমেদাবাদে। রেল
স্টেশনের সন্নিকটে তিলক রোডে সাধারণ মানুষের নানান হোটেল।
তবে, কলকোলাহল মুখর, বাতাসও ভারী এইসব হোটেল। উচিত
হবে ঘর দেখে নিবর্তন করা।

রেল স্টেশনের বিপরীতে যথেষ্ট পপুলার A One G.H. SCB
৮৫ DCB ১২৫-১৭৫ TCB ২০০ ড্রি বেড ৩০; ডাইনে H
Shakunt, Reid Rd-380002, ② 344615, SAB ২৫০-৪২৫
DAB ৪৫০-৬৫০ A/c D ৮০০; আরও ডাইনে Kapasia Bzr-
এ H Motimahar, ② 339091, SAB ৩০০, DAB ৪৫০
A/c S ৪৫০ D ৬০০ T ৬৫০।

| আমেদাবাদ থেকে সড়ক দূরত্ব : | আব লাল দরোজা |
|-----------------------------|---|
| লোথাল ৭৬ কিমি | মিউনিসিপ্যাল বাস স্ট্যান্ডের |
| ডাকোর ৯২ " | সামনে Advance Cinema/ |
| ভাদোদরা ১১৩ " | Electric House/GPO-কে |
| সুরাট ২৫৫ " | ঘিরে ৫ মিনিটের পথে Lal |
| বাপী ৩৬৪ " | Darwaja, Ahmedabad- |
| দমন ৩৭৬ " | 380001, STD 079-এ— |
| মুম্বাই ৫১০ " | Jali H Ashiana, Salapose |
| নল সরোবর ৬৪ " | Rd, ② 351114, DCB |
| রাজকোট ২১৬ " | ১০০, DAB ১৫০ চার |
| জামনগর ৩০২ " | বেডের কমন বাথ ২০০; |
| জুনাগড় ৩১৫ " | পাশেই H Mayur, |
| পোরবন্দর ৪১২ " | ② 351418, DAB ২২৫ |
| সোমনাথ ৪০৪ " | FAB ৩৫০ A/c D ৪৫০; |
| | H ButterFly, ② 355950, |
| | SAB ১৫০ DAB ২৫০ |
| | A/c S ২৫০ D ৪০০; H |
| মাণ্ডলী ৪১০ " | Sweet Dream, behind |
| শাসন গির ৪৪২ " | Advance Cinema, |
| ভাবনগর ২০৭ " | ② 350786, SAB ১৫০- |
| পালিতানা ২১৫ " | ২২৫, DAB ১৭৫-৩০০ |
| কাশলা ৩৫০ " | A/c S ৩২৫ D ৪০০ T |
| দ্বারকা ৪৫০ " | ৫২৫; H Cadillac, beside |
| মাহেশানা ৭৬ " | Advance, ② 352788, |
| মধোরা ১০৬ " | SCB ৬৫ SAB ১০০ DCB |
| অম্বাজী ১৭৭ " | ১২৫ DAB ১৭৫ ড্রি ৩০; |
| আবু রোড ২০০ " | H Relax, opp Advance, |
| উদয়পুর ২৫১ " | ② 354301, S ১০০ D |
| দিউ ৪৩৮ " | ১৭৫ T ২২৫ A/c S ৩০০ |
| ইন্দোর ৪০৭ " | D ৪৫০; H Venus, opp |
| ভূপাল ৫৭১ " | Advance, ② 353513, |
| দিল্লী ৮৮৬ " | SAB ১৬০-২২৫ DAB |
| কলকাতা ২০০৬ " | ২০০-৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫০০ T ৬০০। বামহাতি Electric |

House-এর বিপরীতে Hanuman Lane—Metropole H,
② 354988, SAB ১৫০ DAB ২০০-২৭৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০;
লাগোয়া বাড়িতে H Mehul, ② 352862, SAB ১৫০ DAB
২৫০; বিপরীতে H Good-Night, opp Sidi Saiyde Jali,
② 351997, SAB ৩০০ DAB ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ T
৭৫০। এসের পেছনে H Batwas, Relief Rd-1, SAB ২২৫

DAB ৩০০ ডিলাক্স S ২৭৫ D ৪০০ A/c S ৩৫০ ৪২৫ D ৪৫০ ৬০০; *Alita GH*, near GPO, S ৮০-১০০ D ১৫০-২২৫; *Rajasthan GH*, near Mosque, D ১২৫-২০০; *H Kingsway*, GPO Rd-1, 5501215, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০। রেল স্টেশনমুখী যেতে দোকান পাটে ঠাসা ভিসাল কমার্সিয়াল সেন্টারের বিতালে *H Prime*, Pattharkuva, 352582, SAB ২৫০ DAB ৪০০ A/c S ৪০০ D ৬০০ T ৬৫০।

রেল স্টেশনমুখী Relief Rd-এ — *H Capri*, 354643, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৩০০ D ৮০০; *H Uday*, opp Oriental Building, S ৮০ D ১০০-১৭৫ T ২০০ A/c D ৩৫০; *Shree Shivanurayan G H*; *H Gitanjali*, 385429, SAB ১৭৫-২৫০ DAB ২০০-৩৫০ A/c D ৪৫০; বিপরীতে Calico Dome-এর কাছে *Amber H*, 357092, SAB ২৫০ DAB ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; ক্যালিকো ডোমের বিপরীতে *H City Palace*, 386574, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *Imperial G H*; *H Naigara*, near Zakaria Mosque, SAB ১৫০ DAB ২২৫ TAB ২৫০ A/c D ৪৫০; বিপরীতে *H Alba*; *Sunny G H*; *H Anukul*, 383535, R₁ B1, D ২০০-২৭৫, ৬০ অতিরিক্তে রুম কুলার মেলে; *H Marvel*, opp Bhagawati Emporium, 359941, S ৩২৫ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; *H Metro*; *H Utamini*, 335201, S ১০০ D ১৭৫ T ২০০ ডরি ৫০; *Happy Home G H*, D ১২৫-২০০; এ গুয়ান গেস্ট হাউস মালিকানায় *Apna G H*, A7R₁ B1, 338631, SCB ৮০ DCB ১২৫ TCB ১৫০ ডরি ৩০; *Ashok Nibas G H*, SCB ৬০ DCB ১০০ DAB ১৫০ TAB ১৭৫ ডরি ৩০। আর আছে *H Plaza*, SAB ৮০ DAB ১৫০; *Chandra Bihar G H*, S ৮০ D ১৫০ T ২০০; *Embassy H*, Basanta Chowk, near Lal Darwaja Bus Stand, 5358473, A20R5, S ২৫০-৪০০ D ৪৫০-৬০০ A/c S ৪০০-৫৫০ D ৬০০-৮৫০; *H Tourist*, near Panchkuva Darwaja, R₁ B1, SAB ১০০ DAB ১৫০ ডরি বেড ৩০ করে।

Lal Darwaja-1 কে ঘিরে — *H Nataraj*, S ১০০ D ১৭৫ T ২০০; **H Roopalee*, A/c S ৩০০ D ৪৫০; *Ritz H*, S ২৭৫ D ৪২৫ A/c S ৪২৫ D ৬০০ সুইট ১০০০; *H Ambassador*, Khanpur Rd-1, 5502490, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০; **Cama H*, Khanpur Rd-1, A11R3.2B1, 5505281, A/c S ১২৫০ D ১৮৫০ সুইট ২৫০০-৩৫০০; *H Royal*, Balwas, Khanpur, 350105, A/c S ১৫০০ D ১৭৫০-২৫০০ সুইট ৪৫০০; *The Mascot*, Khanpur, 448747, A/c S ৮৫০ D ১২০০ সুইট ১৫০০; *Stay Inn*, Khanpur Gate, 354127, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০; *Alif International*, opp B M C Bank, Khanpur, S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; **Rivera H*, Khanpur Rd-1, 5504201, A/c S ৬৫০-৮৫০ D ৮৫০-১২৫০ সুইট ১৫০০; *Sabre H*, Khanpur Rd-1; *H Esquire*, opp Sidi Sahied Jali, S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; *H Bombay*, North of Sidd Saiyad's Mosque, K B Commercial Centre, 1st floor, 351746, SCB ১০০ DCB ১৫০ SAB ১৭৫ DAB ২৫০; *H Gulmarg*, S ১০০ D ১৫০ A/c S ২০০ D

৩০০; *H Kankavati*, Relief Rd, 361163, A15R₁ B₁, D ২০০-২৭৫ T ২০০-২৭৫ A/c D ৪০০ D ৬০০।

রেল স্টেশন থেকে ৪ কিমি দূরে Navrangpura Telephone Exchange-এর কাছে — **H Klassic Gold*, 42 Sardar Patel Marg-6, 445594, A/c S ৯৫০ D ১৫০০ সুইট ২০০০; *Nest H*, 37 Sardar Patel Ngr-6, 444340, A/c S ৩৫ D ৪০ সুইট ৬০ US\$.

আর আছে শহরময় — *H Capital*, Chandanwadi, Mirzapur-1, 304633, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইট ১০০০; *H Meghdoot*, near New Cloth Market-2, 313054, D ৪৫০ A/c D ৬০০-৮৫০ সুইট ১০০০; *H Dimple International*, Vandana Cloth Mkt-2, 2141849, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০-৬০০ D ৬০০-৮৫০; **Quality Suites Shalin*, Ellis Bridge-6, 426967, A14R8, A/c S ১৭৫০ D ২০৫০-২৭৫০ সুইট ৩৭৫০; *Gokul H*, near Regal Cinema, Pankore Naka-1, A/c S ৩২৫-৪৫০ D ৪০০-৬৫০; *H Paradise*, opp. Reserve Bank, Ashram Road, S ১০০ D ১৭৫; **H Karnavati*, Ashram Rd-9, 402161, A/c S ৯৫০-১২৫০ D ১২৫০-১৭৫০ সুইট ১৫০০-২৫০০; **H Nataraj*, Ashram Rd-9, near ITO, A/c S ৮৫০ D ১০৫০ সুইট ১৫০০; *H Siddharthur*, Shahibag, SAB ৩২৫ DAB ৪৫০ A/c S ৪২৫-৬০০ D ৬০০-৮৫০; *Priithvi H*, near L G Hospital, Maninagar-8, 340522, R3, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; *H Alankar*, opp Kalupur Rly Stn, Kalupur-2, SAB ১০০ DAB ১৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০; *H Ahmedabad International*, Norol Ngr, 832154, S ২২৫ D ৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *Grand H*, S ১০০ D ১৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০; *H Kanak*, opp Gujarat College, Ellis Bridge, A/c S ৬০০-৮৫০ D ৮৫০-১২৫০; *H Ellis*, near Town Hall; *H President*, Swastik Char Rasta, Navrangpura-9, 6421421, A/c S ৯৫০-১২৫০ D ১২৫০-১৫০০ সুইট ১৫০০-২৫০০; *H Pansikura*, beside Town Hall-6, 402960, A/c S ৬০০ D ৮০০; **H Nalanda*, Ellis Bridge-6, 426262, A/c S ৮০০ D ১০৫০-১৫০০ সুইট ২০০০; **Indor Presidency*, Ellis Bridge-6, 6425050, A/c S ১৫০০ D ১৭৫০ সুইট ২০০০-২৭৫০; *The West End*, Ellis Bridge-6, 462627, A/c S ৯৫০ D ১৪৫০ সুইট ২২৫০; **Holiday Inn*, near Nehru Bridge, 5505505; এছাড়াও হোটেল আছে নানান লাগ দরোজা ও রেল স্টেশনকে ভর করে আমোদবাসে। চার্জ ও এদের সাধারণ। তবে, ওজরাটের হোটেলের সরকারি লাভারি ট্যাক্সের আধিক্য ঘটে থাকে।

তারকাচিহ্নিত হোটেলগুলির সাথে সাধারণ মানের হোটেল — মেঘল, অলিভা, একোয়ার, ক্যাডিলাক, রিলাক্স, রিজ, বম্বে, এশিয়ানা থাকার পক্ষে ভালই। রেলের রিটারিং রুম, মিউনিসিপাল রেস্ট হাউস-ও আছে আমোদবাসে। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য ৪ ঘ ম্যানেজারদের লিখুন। আর ৭ কিমি দূরে সবরমতীতে TCGL-এর *Toran*, opp Gandhi Ashram, Ahmedabad-380027, 483742, DAB ৩৫০ A/c D ৫৫০, থাকা ও আহারের সুব্যবস্থা মেলে।

আহার্যও মেলে প্রায় প্রতিটা হোটেল। তবুও তিন দরোজায় নিলাম, প্যারামাউন্ট ও কোয়ালিটি রেস্টুরেন্টের সেনী-বিশেষী আহার্য পরিবেশনে যথেষ্ট সুনাম। এলিস ব্রিজে ডাউনটোউন ফাস্ট ফুড (১১-৩০—২৩-৩০)-এরও যথেষ্ট প্রশস্তি দক্ষিণ ভারতীয় ও মহাদেশীয় আহার্য পরিবেশায়। তেমনই সবারমতী তীরে কলেজের বিপরীতে কলেজিয়ান রেস্টুরেন্ট-এরও যথেষ্ট সূখ্যাত্তি তার পাঞ্জাবি মিলের জন্য। খালি প্রথায় গুজরাটি মিলের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে ভিলক রোডের চেতনা রেস্টুরেন্ট বা লাল দরোজায় পঞ্চায়েত বিন্ডিংসে আপনা রেস্টুরেন্ট বা সারবেজ রোডে ইউটেনসিল মিউজিয়াম লাগোয়া ভিসাল-এ। সদাই ব্যস্ত এরা। ব্যবস্থাপনা ভালই। খালি প্রথায় পেট চুস্তি আহার। গুজরাটি মিলের সঙ্গে গুজরাটি ফোক সেন্স-এরও আসর বসে ভিসালে। টাউন হল-এর কাছে গোপী, কামা হোটেলের বিপরীতে সবার—এদেরও যথেষ্ট প্রশস্তি। আশ্রম রোডে পডক রেস্টুরেন্ট (১২—১৪-৪৫ ও ১৯—২৩-০০)-এ ভারতীয়-চীনা-মহাদেশীয় আহার্য মেলে; আর এদেরই ঘূর্ণমান Angeethi and Thikana Restaurant (১২-৩০—১৪-৪৫ ও ১৯—২৩-০০)-এরও যথেষ্ট সুনাম মহাদেশীয় আহার্য পরিবেশনে। সীমিত (১২০) আসন, উচিত হবে ৩ ৭৭৭০৭/৭৭৪৯৯-এ বুক করে যাওয়া। যথেষ্ট সস্তায় রেল স্টেশনের ঝিলে Refreshment Room-এও ভেজ ও নন ভেজ মিল মেলে। এছাড়াও ১৫-৫০টাকায় গুজরাটি মিলের ব্যবস্থা নিয়ে হোটেল রয়েজে ছড়িয়ে-ছিটিয়ে সারা শহরময় আমোদবাসে। তেমনই স্বাদ নেওয়া যেতে পারে গুজরাটি মেনু—Khaman Dhokla অর্থাৎ নোনতা কেক; দুধ জাত মিঠাই Doodha Pak বা Sev; দই-এ তৈরি কারি Kadhji; দই ও ফলের মিশ্রণে জাত Srikhand, সেমাই-এর মিষ্টান্ন Suterpheni; পিস পোলাও, ভুণ্ডি রায়তা, উদ্দিয়া, পুরানপুরি, তরেলা কুটি ছাড়াও নানান কিছুর গুজরাটের হোটেল-রেস্তোরাঁয়। আর একান্তই উচিত হবে আমোদবাদ ভ্রমণে তিন দরোজায় Vadilal-এ আইসক্রিমের স্বাদ নেওয়া।

আর আছে খানপুর রোডে সদস্যদের জন্য WIAA রেস্ট হাউস, শাহীবাগে সার্কিট হাউস, গীতা মন্দির তথা দূরপাল্লার বাস স্ট্যাণ্ডে মিউনিসিপ্যাল বিশ্রাম গৃহ; ছাড়াও ধরমশালা—ভাটিয়া, বেচার দাস, দিগম্বর, মনেকলাল, রেবাবাসী, মুসলিম মুসাফির খানা opp Rly Stn, টাকশালি আমোদবাসে।

| | |
|--|------------------|
| Gujarat Tourism-এর দপ্তর বসেছে: | |
| Dhanraj Mahal, Apollo Bunder, Mumbai-400039, | ① (022) 2024925. |
| A/6, State Emporia Building, Baba Kharak Singh Marg, New Delhi-110001, | ① (011) 352107. |
| Mount Chambers, 2nd floor, 758 Anna Salai, Chennai-600002. | ① (044) 8251172. |
| Expression 17, Justice Dwarakanath Rd, Calcutta-700020, | ① (033) 4754502. |

শহর ছাড়তেই সারা গুজরাটে প্রায় প্রতিটা হোটলেই আধা ও পুরা মিল খাবার প্রচলন। সাধারণের পক্ষে আধা মিলই যথেষ্ট। আর পুরা মিল অর্থ পেটচুক্তি আহার্য। নিরামিষাণী এরা।

কনডাক্টে ট্যুর : Tourism Corporation of Gujarat Ltd, Tourist Information Bureau, H K House, near Times of

India, Ashram Rd, Ahmedabad-380009. ① 449683, Fax: 079-428183 (১০-৩০—১৬-৩০) থেকে (১) প্রতি গুজরার সকাল ৬-৩০টায় ৫ দিনের প্যাকেজে যাচ্ছে সৌরাষ্ট্র দর্শনে। টিকিট ডাবল বেডের ঘরে ১৫০০ ডমিতে ১২০০ প্রতিজন। ট্যুরে দর্শন: Rajkot, Jamnagar, Dwarka, Velavadar, Porbandar, Somnath, Gir, Junagadh, Palitana, Lohal, etc. (২) প্রতি শনিবার ৬-০০টায় ৫ দিনের ট্যুরে উত্তর গুজরাট ও রাজস্থানের উদয়পুর, চিতোর, হলদিঘাটা, নাথদার, রণকপুর, মাউন্ট আবু, অম্বাজী, কুজারিয়া, মথেরা বেড়িয়ে আনে, ভাড়া ১৬০০। (৩) প্রতি ২য় ও ৪র্থ শনিবার দক্ষিণ গুজরাট, অজন্তা-ইলোরাও যাচ্ছে TCGL ৬ দিনের প্যাকেজে। (৪) শহরও দেখিয়ে আনে TCGL প্রতি রবিবার সকাল ৮টায় গিয়ে ১৪-৩০টায় ফিরে। (৫) বালঘাত্রায় যাচ্ছে রবিবার ৮—১৩-৩০টায়। (৬) আর ১৩-০০টায় গিয়ে ২২-০০টায় ফেরে আদালজ ভাভ, সারবেজ রোজা, শ্রেয়স ফোক মিউজিয়াম, শেকিং টাওয়ারস, গান্ধী আশ্রম ও লাইট অ্যান্ড সাউন্ড শো দেখিয়ে TCGL থাকা ও যাতায়াত নিয়ে ভাড়া। পুরো টাকার অগ্রিম পাঠিয়ে টিকিট বুক করা যায়। নানান ধর্মী গাড়িও ভাড়া মেলে এদের কাছে। আরও প্রয়োজনে কলকাতায় Regional Office: Tourism Corporation of Gujarat, C/o Expression, 17 Justice Dwarakanath Rd, Calcutta-700020. ① 4754502.

আমোদবাদ মিউনিসিপ্যাল ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন, লাল দরোজা বাস স্ট্যান্ড আয়োজিত কনডাক্টে ট্যুরে অংশ নিয়েও আমোদবাদ শহর দেখে নেওয়া যায়। ৯-৩০ ও ১৪-০০টায় ডিলাল বাস যাচ্ছে ৪ ঘণ্টায় ৩৫ টাকায় শহর দেখাতে। অগ্রিম টিকিটের ব্যবস্থাও আছে এদের। Booking : 8—13-00, 13-30—17-30টায়, ① 352739. শহর দেখার জন্য আমোদবাদে থাকার খুব একটা দরকার হয় না। রেলের ক্রোকমে লাগেজ রেখে দিনে দিনে শহর দেখে সন্ধ্যায় চলুন নতুনদের অভিসারে।

কনডাক্টে ট্যুরে ভ্রম ফোর্ট, সিদি সৈয়দ জালি, শেঠ এস জে লাইব্রেরি, গুজরাট কলেজ, পলিটেকনিক, বিশ্ব-বিদ্যালয়, এটরি, সদর স্টেডিয়াম, আকাশবাণী, গুজরাট বিদ্যাপীঠ, ট্রাইবাল মিউজিয়াম, হিরজন আশ্রম, হাতিসিং জৈন মন্দির, শাহীবাগ এরিয়া, নিউ সিভিল হসপিটাল, শেকিং টাওয়ারস, গীতা মন্দির, কার্কারিয়া, কার্কারিয়া বনন ভেটিকা, শাহ আলম রোজা, চানদোলা লেক, মিউজিয়াম, কোচরবা আশ্রম, শেঠ ভি এস হাসপাতাল, টাউন হল, কংগ্রেস হাউস, সবারমতী আশ্রম চার ঘণ্টায় কখনও চলার পথে বাসে বসে, আবার কখনও নামিয়ে পুরো আমোদবাদ শহর দেখিয়ে আনে। গাইডও থাকেন গাড়িতে। আয়োজন ভালই। আবার অটো বা ট্যাক্সিতেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় আমোদবাদ শহর।

ভ্রম ফোর্ট অর্থাৎ দুর্গ—এককালে রাজপ্রাসাদ ছিল। সুন্দর বাগিচাও ছিল সেকালে। ১৪১১তে আহমেদ শাহর তৈরি। তবে ২০০ বছর পরে দুর্গ-শেবে আজম খাঁর তৈরি প্রাসাদে আজ ডাকঘর বসেছে। মসজিদও হয়েছে। আরও পরে মারাঠা কালে ভদ্রকালীর মন্দির হয় দুর্গে। সেই থেকে দেবীর নামে নাম। এর ঘড়িঘরাট আজও দর্শকদের

আনন্দ বর্ধন করে। তবে সরকারি দপ্তর বসেছে দুর্গময় আচ্ছ।

রেল স্টেশনের সামনে মহাত্মা গান্ধী রোড ধরে পশ্চিমে এলে দুর্গের সামনে তিন দরোজা অর্থাৎ একই তোরণে তিনটি পথ। সুলতান আহমেদ শাহর তৈরি। নির্মাণ শৈলীতে অভিনবত্ব আছে। ৩৭ ফুট উঁচু এই তোরণে বসে সুলতান রাজকীয় শোভাযাত্রা পর্যবেক্ষণ করতেন। তিন দরোজার পেছনে রমণীয় উদ্যান রয়্যাল স্কোয়ারের ভ্রমণে আসতেই সন্ধ্যাট বেগমকে সঙ্গী করে।

লাল দরোজার কাছে সবরমতী লাগোয়া তিলক (রিলিফ) রোডে সিদ্দি সৈয়দ জালি মসজিদটি ১৫৭২এ আহমেদ শাহর তৈরি। এর জানালায় পামবৃক্ষরূপী মর্মরের জালির কাজ নয়নাভিরাম। বিশ্বখ্যাত এই জালির মনোহারিত্ব কাঠের মডেলে নিউইয়র্ক ও কেনসিংটন মিউজিয়মে সযত্নে রক্ষিত হয়েছে।

গান্ধী রোডের পাশে মানেকচকে তিন দরোজার সামান্য পূবে জুম্মা মসজিদ। জৈন ও মুসলিম স্থাপত্যের সমন্বয়ে ১৪২৪ খ্রিস্টাব্দে সুলতান আহমেদের তৈরি। বিধ্বস্ত জৈন ও হিন্দু মন্দির থেকে উপকরণের সঙ্গে স্থাপত্যও এসেছে। ধনুকের মতো খিলানের কালো পাথরখণ্ডও জৈন মন্দিরের বৈদী হয়ে থাকবে। ২৬০টি পিলায়ে ভর করে ১৫টি গম্বুজ; আকারে যেমন বিশাল, নির্মাণ শৈলীতেও বিশ্ববন্দিত এই জুম্মা মসজিদ। ২টি শেকিং টাওয়ারও ছিল অতীতে। ১৮১৯-এর ভূমিকম্পে অর্ধাংশ আর ১৯৫৭-র ভূমিকম্পে বাকি অংশ বিধ্বস্ত হয়। শায়িত রয়েছেন আহমেদ শাহ মসজিদের পূব দরোজায় বাদশ্বা হাজিরোতে। আর রয়েছে সন্ধ্যার পুত্র ও নাতির সমাধি। পাথরের জালির কাজও সুন্দর। তবে মেয়েদের প্রবেশ মানা সমাধির মূল কক্ষে। বিপরীতে দোকানপাটে ঠাসা অতি দীনভাবে রানীখো হাজিরোতে বেগমদের সমাধি।

আমেদাবাদের আর এক আকর্ষণ তার নানানধর্মী মিউজিয়াম। শাহীবাগে সারাভাই-এর বাড়িতে ক্যালিকো মিউজিয়াম-এ অতীত ও বর্তমানের বসনের অভিনব প্রদর্শনী বসেছে। এমনকি বয়ন শিল্পের নানান যন্ত্রও প্রদর্শিত হয়েছে। লাইব্রেরিতেও বয়ন শিল্প সংক্রান্ত গ্রন্থের সস্তার উল্লেখ্য। বুধবার ছাড়া ১০—১২-৩০ আবার ১৪-৩০—১৭-০০টায় খোলা। লেকবুসিয়েরের তৈরি আর এক অভিনব বাড়িতে এন সি মেহতা মিউজিয়াম অব মিনিয়েচার-এ ভারতীয় মিনিয়েচার পেন্টিং দেখে নেওয়া যায়। সোমবার ছাড়া ৯—১১-০০ ও ১৬—১৯-০০টায় খোলা। ১৯৪৯ জন্ম বহুশিল্পের গবেষণা কেন্দ্রে এটিরা (ATIRA)-রও পর্যটক আকর্ষণ অনন্য। শ্রেয়স লোকশিল্প মিউজিয়ামটিও বৈচিত্র্যের সস্তার নিয়ে গড়ে উঠেছে। সারা রাজ্যের লোকশিল্প ও কলাশিল্প প্রদর্শিত হয়েছে শ্রেয়সে। সরে রয়েছে উপজাতি গবেষণা ও ফিলার্টেলিক প্রদর্শনী শ্রেয়সে। সারা

গুজরাট থেকে সংগ্রহ করা ২৫০০ বিভিন্নধর্মী বাসন-কোসন, জাতি, বৈক্য-র অভিনব প্রদর্শনশালা বেচার ইউটেনিসিল মিউজিয়াম-এর পর্যটক আকর্ষণও কম নয়। ৯—১১-০০ ও ১৬—১৯-০০টায় খোলা, বুধবার বন্ধ।

আর রয়েছে বিশ্ববিদ্যালয় চত্বরে ইনস্টিটিউট অব ইনডোলজিতে ভারতীয় ইতিহাস-সংস্কৃতি-সাহিত্য বিষয়ক সচিত্র পাণ্ডুলিপির সংগ্রহশালা। জৈন দর্শনও প্রদর্শিত হয়েছে। প্রতি বিকালে (১৫-০০) দেখে নেওয়া যায়।

দিল্লী গেটের বাইরে শাহীবাগ রোডে হাতিসিং জৈন মন্দির। জৈন ব্যবসায়ী কিশোরী সিংহ হাতি ১৮৫০এ ১০ লক্ষ টাকায় তৈরি করে ১৫তম জৈন তীর্থঙ্কর ধর্মানাথে নামে উৎসর্গ করেন। শ্বেতমর্মরে তৈরি, ৫৩টি গম্বুজ, মূর্তি হয়েছে ২৪ জন জৈন তীর্থঙ্করের, কারুকার্য সুন্দর। আর মন্দিরের সামনে হয়েছে হাতিসিংয়ের কীর্তিস্তম্ভ। পুরাতন শহরের কাল্পুরায় ১৮৭৮এ তৈরি স্বামী নারায়ণ মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন। এরই দক্ষিণে ৯টি কবরের Nau Gaz Pit.

আমোদাবাদ ভ্রমণার্থীদের কাছে *ঝুলতা মিনার* বা শেকিং টাওয়ারস আর এক অভিনব টাওয়ার। সিদ্দি বসিরের মসজিদ নামেও সমধিক খ্যাত। ১৪৫০ খ্রিস্টাব্দে মালেক শাহরঙ্গ শাহ এটি তৈরি করান। পাশাপাশি তিনতলা গোলাকার দুটি মিনার। সিঁড়ি উঠেছে ঘুরে ঘুরে। প্রথম তলার পর থেকে কারও সঙ্গে সংযোগ নেই কোনও। তবুও একটিকে দোলা দিলে অতি সহজেই দোল খায় দ্বিতীয়টি। একটিতে আওয়াজ করলে অপরটিতে প্রতিধ্বনি ওঠে তার। সংযোগকারী বারান্দা সে কিন্তু নিস্ক্র। ব্রিটিশ সরকার এর নির্মাণ কৌশল আবিষ্কার করতে গিয়ে ব্যর্থ হয়। কারও কারও মতে, ঐশ্বরিক শক্তি রয়েছে এর পিছনে। আতঙ্ক পেয়ে বসলেও চমক আছে, ভয়ের কারণ নেই, উঠতে ভুলবেন না। রেল স্টেশনের দক্ষিণে সারঙ্গপুর গেটে এই টাওয়ার। তবে গত কিছুকাল মিনার চড়া বন্ধ। এছাড়াও নানান মসজিদ আছে আমেদাবাদে। রেল স্টেশনের দক্ষিণ-পূবে Raj Babi Mosque-এও শেকিং টাওয়ার আছে। তবে, এটিও চড়া নিষেধ। আর রেল স্টেশনের উত্তরে মোগল ও মারাঠা যুদ্ধে বিধ্বস্ত মসজিদের ধ্বংসাবশেষ দেখতে মেলে।

শহরের নবতম আকর্ষণ গীতা মন্দির। ছবিতে গীতার আখ্যান চিত্রিত হয়েছে। শিল্পপতি বিড়লা সংস্থার তৈরি, তাই বিড়লা মন্দির নামেও সমধিক খ্যাত।

শহরের ৪ কিমি দক্ষিণ-পূবে ছিল হজ-ই-কৃতব, আজ তার নতুন নাম কাঁকারিয়া হুদ। সুলতান কৃতব-উদ্দিন ১৪৫১ খ্রিস্টাব্দে খনন করান কৃত্রিম এই লেক। সেকালে জাহাঙ্গীর/শাহজাহান অনেক অলস সন্ধ্যা কাটিয়েছেন বেগমদের নিয়ে হুদে। ৬০ মি দীর্ঘ ৩৪ দিক-বিশিষ্ট বহুতল হুদের মাঝে দীপ, তার নাম *নাগিনাওয়াহি*—সুলতানের গীতাবাস। সম্প্রতি মাছের অ্যাকোয়ারিয়াম হয়েছে বাগিচায় সুশোভিত দ্বীপে।

হুদের পাড়ে গড়ে উঠেছে চিড়িয়াখানা, বাল ভাটিকা, পক্ষীশালা, বোট ক্লাব; চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ।

কাঁকারিয়া হুদের পাড়ে পাহাড় ঢালে রূপ পেয়েছে বাল ভাটিকা। ১৯৫৬ খ্রিস্টাব্দে চিড়িয়াখানার অষ্টা ডেভিড রুবেন-এর তৈরি। শিশু মনস্তাত্ত্বিকদের পরিকল্পিত শিশু উদ্যান এটি। শিশু মনোবিকাশের নানান প্রচেষ্টার সাথে মনোরঞ্জন নানান ব্যবস্থা। টয় ট্রেন চলছে, রিকশা চলছে হরিণ ও ছাগলে টানা, অডিটোরিয়ামে সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান, লাইব্রেরি, নানান খেলনা ছাড়াও রয়েছে হল অব মিরর। নানান ধর্মী মিরর অর্থাৎ আয়নায় কিছুতুকমিকার নিজ মূর্তিটি দেখে নিন আপনিও।

যদিও এখন সরকারি দপ্তর, তবুও স্থাপত্যের নিদর্শন হিসাবে শাহীবাগ প্রাসাদ-এর আকর্ষণও অনস্বীকার্য। ১৬২২এ খ্রম অর্থাৎ উত্তরকালের সফট শাহজাহানের তৈরি। নববধু মমতাজকে নিয়ে কিছুকাল এই প্রাসাদেই অবস্থানও করেন শাহজাহান। এমনকি প্রথম ভারতীয় ICS সত্যেন্দ্রনাথ ঠাকুরও চাকুরি জীবনে কিছুকাল বাস করেন এই প্রাসাদে। সেই সুবাদে রবীন্দ্রনাথও আসেন (১৮৭৮) ভ্রমণে। ক্ষুধিত পাষাণের প্রেরণা পান এই প্রাসাদপূরী থেকেই রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। স্বাধীনোত্তর কালে রাজভবন হলেও আজ বঙ্গভাতি প্যাটেল স্মারক সংগ্রহশালা বসেছে।

তেমনই লাল দরোজার দক্ষিণে এলিস ব্রিজ সবারমতী পেরবার আগেই গাছী রোডে বাঁয়ে মানিক বর্জ আর ডাইনে ভিক্টোরিয়া গার্ডেনও উচিত হবে পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া। সঙ্গীত-নাটক-নৃত্য-কলা প্রেমিকদের উচিত হবে মুদলা সারাভাই প্রতিষ্ঠিত দর্পণা দেখে নেওয়া।

এলিস ব্রিজে সবারমতী পেরিয়ে শহর থেকে ৭ কিমি উত্তরে সবারমতী নদীতীরে মহাত্মা গান্ধী (১৮৬৯-১৯৪৮) গড়ে তোলেন সবারমতী আশ্রম। ১৯১৫ খ্রিস্টাব্দে কোচরাব পন্নীতে আশ্রমের সূচনা হলেও ১৯১৭র জুন মাসে এটি সম্পূর্ণতা পায়। সত্যাগ্রহ আশ্রম নামেও এটি সমধিক পরিচিত। ১৯৩০এ ব্রিটিশের লবণ আইনের প্রতিবাদে ডাণ্ডী পদযাত্রা এখান থেকেই শুরু হয়েছিল। দক্ষিণ আফ্রিকা থেকে ফিরে গান্ধীজী বেশ কিছুকাল এই আশ্রমের হৃদয়কুঞ্জে বাস করেন। ১৯১৫ থেকে দীর্ঘ ৩০ বছর ধরে এই আশ্রমটিই ভারতীয় স্বাধীনতা সংগ্রামে মুখ্য ভূমিকা নেয়। ১৯৩৩র ১০ই মে গান্ধী মিউজিয়ম বসেছে। আলোকচিত্রে গান্ধীজীর কর্মজীবন তুলে ধরা হয়েছে। গান্ধীজীর চিঠিপত্র, বই, ব্যবহৃত নানান জিনিস প্রদর্শিত হয়েছে। চরকায় সূতো কাটা ছাড়াও নানান ধর্মী কুটিরশিল্পের কাজও চলছে। গান্ধীজী সঞ্জন বইপত্রের বিক্রয়কেন্দ্রও বসেছে; ৮-৩০—১৮-৩০টায় খোলা। প্রতি সন্ধ্যায় আশ্রম প্রাঙ্গণে গান্ধীজীকে কেন্দ্র করে ভারতের স্বাধীনতা সংগ্রামের ইতিহাস *Light and Sound*-এ ১৯-০০টায় গুজরাটি; রবি, মঙ্গল, বৃহস্পতি, শুক্র ২০-১৫য় ইংরাজি; আর অন্যান্য

দিন ২০-১৫য় হিন্দী ধারাভাষে প্রদর্শিত হচ্ছে। থাকার জন্য আছে TCGL-এর *Toran G H, Sabarmati Ashram Rd-380007*, ☎ 483742, DAB ২৫০ A/c D ৩৫০। আহ্বারও মেলে তোরণে। শহর থেকে ৮১, ৮২, ৮৩ ও ৮৪ রুটের বাস যাচ্ছে আশ্রমে।

শহরের ৩ কিমি দক্ষিণ-পূবে ১৪২০ খ্রিস্টাব্দে আবুবকর হুসেনির তৈরি সিদ্ধ ফকির শাহ আলমের সমাধি তথা মকবারা। দরজা শ্বেত মর্মরে, মেঝে কালো পাথরে। ১৭ শতকের প্রথম দিকে সফাজী নুরজাহানের ভাই আসফ খান সোনা ও মূল্যবান ধাতু দিয়ে কবরের গম্বুজগুলি মুড়ে দেন। মকবারার ৩টি বড়, ১৮টি ছোট গম্বুজ তৈরি করেন সালে বাদাখসী। কারুকার্য সুন্দর। এরই পশ্চিমে জলাধার, নতুন করে নাম হয়েছে চান্দোলা লেক। এটি খনন করান তাজ খান নারি আলির বেগম।

ফরাসি স্থপতি লে করবুসিয়ের-এর পরিকল্পনায় ৬৪টি পিলারে ভর করে বঙ্গভাতি প্যাটেল মিউজিয়ম বাড়িটি দাঁড়িয়ে। গুজরাটের লোক-শিল্প ও সংস্কৃতির সংগ্রহ উন্মেষ্য।

আমেদাবাদের মসজিদগুলির মধ্যে ভদ্রার দক্ষিণ-পশ্চিমে আহমেদ শাহর মসজিদটি হিন্দু মন্দিরের উপর ১৪১৪ খ্রিস্টাব্দে তৈরি। পিলারগুলিতে হিন্দু ও জৈন স্থাপত্যের নিদর্শন মেলে।

শহরের উত্তরে মির্জাপুরে ১৪৩০-৪০এর মধ্যে হিন্দু ও মুসলিম স্থাপত্যে গড়া রানী রূপমতী মসজিদ। মহম্মদ বেগড়ার হিন্দু বেগমের নামে নাম। ৩টি গম্বুজ রয়েছে মসজিদে, প্রতিটি গম্বুজ ১২টি পিলারে ভর করে দাঁড়িয়ে। উঁচু গম্বুজ, আলো আসছে বেসমেন্টে। জালির কাজও সুন্দর। তবে, ১৮১৯-এর ভূমিকম্পে ক্ষতও হয়েছে নানান।

সামান্য দক্ষিণ-পূবে মানেকচকে গঠন সৌষ্ঠবে অনবদ্য মসজিদ-ই নাগিরা অর্থাৎ মসজিদের রক্ত রানী সিপরি মসজিদটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে। ১৫১৪য় পুত্রের স্মৃতিতে মহম্মদ বেগড়ার বেগম রানী সিপরির তৈরি। স্থাপত্যে হিন্দু ও মুসলিম প্রভাব বিদ্যমান। অদূরে দস্তুর খান মসজিদ। জামালপুরের কাছে হিন্দু ও মুসলিম স্থাপত্যের সমন্বয়ে গড়া হৈবতখানের মসজিদটিও অনবদ্য।

আর রয়েছে হাতিসিং-এর উত্তর-পশ্চিমে দরিয়া খাঁদের সমাধি। ১৪৫৩ খ্রিস্টাব্দে তৈরি গুজরাটের সর্বোচ্চ গম্বুজ এটি। ইট, চুন, বালি আর জলের মিশ্রণে তৈরি গম্বুজে সিনেন্ট বা লোহা ব্যবহৃত হয়নি। অতীত স্থাপত্যের নিদর্শন হিসাবে দ্রষ্টব্য। অদূরের ছোট্ট শাহীবাগ অর্থাৎ হায়রম থেকে জেনানারা আসতেন হাওয়া সেবনে। তেমনই রেল লাইনের পূবে সরসবাগে ঔরঙ্গজেবের হাতে মসজিদে রূপান্তরিত ১৬৩৮এ তৈরি জৈন মন্দির দেখে নেওয়া যায় আমোদগানে।

শহর থেকে ১৯ কিমি উত্তরে ১৪৯৯এ বীরসিংহের রানী উদাবাগি-এর তৈরি আদালজ ভাও বা বাগী অর্থাৎ কুয়া।

এই অভিনব কৃষাণ্ডজরার সম্পূর্ণ নিজস্ব। ঘুরে ঘুরে সিঁড়ি নেমেছে জলের স্তরে। শুধু সিঁড়িই নয়, মাটির নিচেতে হয়েছে বিশ্রামগৃহ, মাথার ওপরে গম্বুজ। তবে, সূর্যের অবস্থান হেতু ১০—১১-০০টায় ভাও দেখে নেওয়া উচিত। আর শহরের আসরবাতে ১৫০১ খ্রিস্টাব্দে তৈরি দাদা হরি ভাওটির নির্মাণ কৌশলও সুন্দর। আমোদবাদের আর এক পর্যটক আকর্ষণ ভাও-এর পিছনে দাদা হরি রৌজা ও মসজিদ। এর স্থাপত্যে অভিনবত্ব আছে। মসজিদের গবাক্ষে পাথর কুঁড়ে বৃক্ষাকার জালি কাজ অনবদ্য। তবে অবহেলিত, ১৮১৯-এর ভূমিকম্পে এরও দুটি চূড়া ভেঙে পড়ে। অদূরে মাতা ভবানী ভাও। আমোদবাদ থেকে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

গান্ধীনগর

ভাষার ভিত্তিতে রাজ্য গড়তে ১৯৬০এ তৎকালীন বম্বে ভেঙে গড়ে ওঠে মহারাষ্ট্র ও গুজরাট। সাময়িকভাবে গুজরাটের রাজ্যপাট আমোদবাদে বসলেও ১৯৬৫-তে জাতির জনক মহাত্মা গান্ধীর নামে আমেরিকার স্থপতি Le Corbusier, Louis Kahn ছাড়াও ভারতীয় স্থপতি Doshi ও Correa এদের পরিকল্পনায় নতুন রাজধানী শহর গড়ে উঠতে শুরু করে আমোদবাদ থেকে ৩২ কিমি উত্তর-পূর্বে গান্ধীনগরে। সবরমতী নদীর পশ্চিম পাড়ে ৫৯ বর্গ কিমি জুড়ে এই পরিকল্পিত স্বপ্ননগরী। গুজরাট সরকারের সেক্রেটারিয়েট সহ নানান সরকারি দপ্তর ১৯৭০এ স্থানান্তরিত হয়েছে গান্ধীনগরে। ৩০টি সেকটরে শহর। তবে সেকটর ১০-এর অভিনবত্ব পর্যটকদের বিমোহিত করে। লেকে ঘেরা বিলভাই প্যাটেল ভবনও, বিধানসভার স্থাপত্য অতুলনীয়। সর্দার ভবন, নর্মদা ভবন, এরাও তুলনাহীন। চিত্তবিনোদনের জন্য মিনি ট্রেন চলছে সেকটর ২৮-এর চিলাড্রেঙ্গ পার্কে। সেকটর ৯-এ রয়েছে পিকনিক স্বর্গ সরিতা উদ্যান; এরই লাগোয়া ডিয়ার পার্ক সব বয়সের সবার কাছে আদরণীয়। শহরের নবতম আকর্ষণ ২৩ একর জমিতে গড়া স্বামী নারায়ণ মন্দির কমপ্লেক্স। ৪ লক্ষ লোকের বাস শহরে।

গুজরাটের বিভিন্ন শহর থেকে বাস-সংযোগ রয়েছে গান্ধীনগরের। GSRTC-র বাসও নিয়মিত চলছে আমোদবাদ ও গান্ধীনগরের মাঝে। লাল দরোজা বাস স্ট্যান্ডের পিছে হোম গার্ড গ্রাউন্ড থেকে ২ ঘণ্টা অন্তর বাস যাচ্ছে। রেলপথেও গান্ধীনগর সারা ভারতের সঙ্গে যুক্ত। আমোদবাদ থেকে উত্তর ও পশ্চিমগামী প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে গান্ধীনগর হয়ে। আবার আমোদবাদ থেকে ৯-০০টায় ট্রেন যাচ্ছে সবরমতী হয়ে গান্ধীনগরে। এক ঘণ্টার পথ। দিনান্তে ১৮-৩০-এ ট্রেন ফেরে শহরে। ভারতের দ্বিতীয় পরিকল্পিত শহর দেখতে পর্যটক সমাগম আজ দুর্নিবার গান্ধীনগরে।

প্রাইভেট হোটেল প্রসার পায়নি গান্ধীনগরে। তবে, রাজ্য সরকারের ব্যবস্থাপনায়—Pathikashram, Sector 11; Youth Hostel, Sec 16; Rest House, Sec 21; Circuit House, 'J'

Road-এও পর্যটকদের থাকার ব্যবস্থা মেলে। আর হয়েছে *Haveli, opp Vidhan Sabha, Ch Road, Sector-11, Gandhinagar-382011, ☎ 24051, S 8৫০, D ৬৫০, A/c S ৬৫০-৮৫০, D ৮০০-১০৫০ সুইট ১২৫০।

ডাকোর

আনন্দ-গোধরা শাখা রেলের আনন্দ থেকে ২৭ কিমি দূরে ডাকোর স্টেশন। ৬-১০, ১০-১০, ১৪-২৫, ২০-৩০এ আনন্দ ছেড়ে লোকাল ট্রেন যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় আর আমোদবাদ থেকে ৯২, ভাদোদরা ৮৯ কিমি দূরে আমোদবাদ-ভাদোদরার সড়কের নাদিয়াদ থেকে পথ গিয়েছে ডাকোর-এ। দু'দিক থেকে ঘণ্টা দুয়েকের বাস পথ। মুহমুহ বাসও মেলে আমোদবাদ ও ভাদোদরা থেকে। বাস স্ট্যান্ড থেকে পায়ে বা টাঙায় বা অটোয় চলা যেতে পারে ১ কিমি দূরের মন্দিরে।

নানান কিংবদন্তিতে ঘেরা প্রশস্ত অঙ্গনের মাঝে ১৭৭২ খ্রিস্টাব্দে তৈরি কারুকার্যমণ্ডিত মন্দিরে দেবতা শ্রীকৃষ্ণ। দ্বারকার প্রথম মূর্তি এই শ্রীকৃষ্ণ—রণছোড়জি নামে খ্যাত। জনশ্রুতি, ভক্ত বোদানো-র সঙ্গে দেবতা আসেন দ্বারকা থেকে ডাকোরে। দ্বিমতে, ১২৬৯এ ডাকোরবাসীরা চুরি করে আনে রণছোড়জিকে। স্বর্ণ সিংহাসনে শঙ্খ-চক্র-গদা-পদ্ম হাতে দণ্ডায়মান কষ্টিপাথরের দেবতা। ৬-৪৫—১৩-০০ আবার ১৬—১৯-৩০টায় মন্দির খোলা। নবরাত্রিতে জাঁকালো উৎসব হয়।

থাকার জন্য পুনিত আশ্রম ধরমশালা ও গেস্ট হাউস আছে ডাকোরে। শতাধিক ঘরের পুনিত আশ্রমে আহার্যও মেলে। বাথ সলংগ ডাবল বেডের ঘর ৪০, মিল ৭ হারে। তবুও যেন আমোদবাদ-ভাদোদরার পথে বাসে বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার।

চলার পথে আনন্দ-এ রয়েছে ত্রিভুবন দাস প্যাটেলের উদ্যোগে ড্যানিস সহযোগিতায় গড়া ভারতে প্রথম সমবায় প্রথায় UNICEF-এর দুগ্ধ প্রকল্প আমূল।

ভাদোদরা/বরোদা

বারবার নামান্তরিত হয়ে বাগিচার শহর ইংরেজদের বরোদা আজ হয়েছে ভাদোদরা (Vadodra)—অর্থ তার বটগাছ। তবে, দীর্ঘ অতীতে নাম ছিল এর বীরক্ষেত্র বা বীরাবতী। ১৭০৬এ প্রথম আগমন ঘটলেও ১৭৩২এ মারাঠা আধিপত্যের সূচনা। ভাদোদরা হয় স্বাধীন মারাঠা রাজ্য। রাজধানীও তার ভাদোদরায়। উত্তরকালে গায়কোয়াড় স্টেটের রাজধানীও হয় ভাদোদরা। চাষীর ঘরে জন্ম হলেও দস্তকপুত্র সওয়াজী রাও-৩ নিজ নিপুণতায় সাজিয়ে তোলেন তাঁর রাজধানীকে। সুন্দর সাজানো শহর, প্রশস্ত রাজপথ—আধুনিক স্থাপত্যের বাড়ি-ঘর, ৩১টি বাগিচা, নানান সরোবর, মৃদু-মন্দ বাতাস—শিল্প ও সংস্কৃতি ভাদোদরার আকাশে-বাতাসে। তেমনিই প্রসিদ্ধি আছে সঙ্গীতের জলস্রাঘরে ভাদোদরা-ধরনার। বিশ্বমিত্র নদীর পাড়ে গড়ে উঠেছে ভাদোদরা শহর। কথিত আছে, বিশ্বমিত্র

মুনি তপস্যা করেন এই নদীর তীরে—ভারীই নামে নাম নদীর। এমনকি বাংলার ঋষি শ্রীঅরবিন্দ ঘোষের নানান স্মৃতিও জড়িয়ে রয়েছে ভাদোদরায়। বেশ কিছুকাল তিনি অধ্যাপনার সঙ্গে সঙ্গে রাজপরিবারের প্রাইভেট সেক্রেটারির পদও অলঙ্কৃত করেন। শ্রীঅরবিন্দ বাসও করেন ১৮৯৪-১৯০৬ ভাদোদরায়। বাসভূমে আজ স্মারক মন্দির বসেছে। নবরাত্রি জাঁকালো উৎসব ভাদোদরায়। তবুও যেন ভাদোদরানবোদ্যামে গড়তে চলেছে গুজরাটের শিল্প-বাণিজ্যের শিরোমণিরূপে।



রেল স্টেশন, দূরপাল্লার বাস ও সিটি বাস স্ট্যান্ড—তিনেরই মুখোমুখি অবস্থান ভাদোদরায়। হোটেলও নানান ত্রয়ী থেকে ২—১৫ মিনিটের পায়ে হাটা বাসে ভাদোদরায়। নানানধর্মী হোটেলও মেলে শহরে। লজ ও গেস্ট হাউসে ৮০—১৫০ টাকায়, মধ্যমানের হোটেলে ২০০—৪০০ টাকায়, আর উচ্চমানের হোটেলে ৬০০ টাকার উপরে ডাবল বেডের ঘর মেলে।

Vadodara (Baroda)-390005, STD 0265-এ Vadodara Municipal Corporation-এর Nagar Palika Pravasi Gruha, opp Rly Stn, S ৪০ D ৮০ T ১০০ হল ১২০, অব: Tourist Office, Nagar Palika Pravasi Gruha, opp Rly Stn, Vadodara, ৩ 329656; H Suren, DAB ১৭৫-২৫০; দোকানপাটের দ্বিতলে Garden L, একই বাড়ির ত্রিতলে National L, D ১২৫-১৮০; Travellers L, Luxmi L, DAB ১২৫-২৫০। ডানহাতি Sayajiganj, Vadodara-390005-এ: Apsara H, DAB ১৭৫-২৫০; H Ambassador, ৩ 327417, SAB ১৫৫-২২৫ DAB ২৫০-৩০০ A/C S ৪০০ D ৬০০; *Sayaji H, Kalaghoda-5, ASR0.50B0.75, ৩ 330088, A/C S ৪৫০-৭০০ D ৬৫০-৯৫০ সুইট ১৭৫০; *H Surja, Sayajiganj-5, ৩ 336500, SAB ৩৫০-৪৭৫ DAB ৪৫০-৬৭৫ A/C S ৬৫০-৮৫৫ D ৮০০-১৫০০; Surya Palace H, opp Parsi Agiari-5, ৩ 330011, A/C S ৮৫০ D ১২৫০ সুইট ২২৫০; *Best Western Rama Inn, ৩ 300131, D ৬০০ A/C D ৮০০-১০০০ Suite ১৪৫০-২০০০; H Chandan Mahal, ৩ 328134, S ১০০ D ১৭৫ ডিলাক্স S ১৫০ D ২৫০ A/C S ৩০০ D ৪৫০। এদের পিছে গলিপথে Jagadish Hindu L, DAB ১০০-১৭৫, ব্যবস্থাপনা ভালই; বিপরীতে H Vikram; H Som Galaxy, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A/C S ২৫০ D ৩০০; Vadodara GH, S ১২৫ D ১৭৫ F ২৫০; *H Aditi, Sayajiganj, ৩ 327722, R_১ S ৩০০ D ৪৫০ A/C S ৪০০-৬৫০ D ৬০০-১০০০।

রেল স্টেশনের পিছে নালা দিয়ে লাইন পেরিয়ে রেস কোর্সমুখী R C Dutta Road-390005-এ—Vijoy GH, ৩ 328339, S ১০০ D ১৭৫ T ২২৫; H Abanika, ৩ 326961, S ১৫০ D ২৫০ T ৩০০; Agarwal GH, DCB ১২৫ DAB ১৭৫; H Lotus; H Green, Race Course Rd, ৩ 323111, S ১০০ D ১৭৫; বিপরীতে Vishram Gruha—Circui House; বিপরীতে বামহাতি Sampat Rao Colony, Alkapuri-5-এ—H Sky Lab, SAB ১৫০ DAB ২৫০ A/C S ৪৫০; এদেরই Unit 2এ S ১২৫-১৭৫ D ২২৫-২৭৫ A/C S ৩০০ D ৪০০; H Rahi, S

১৫০ D ২৫০; H Nataraj, DCB ১৫০ DAB ১৭৫-২৫০; H Dhiraj, ৩ 325058, D ১৫০-২৫০ A/C D ৩৫০; H Sannan, ৩ 324119, S ১২৫ D ১৭৫ T ২২৫ F ২৭৫; H Royal, ৩ 326575, S ২০০ D ৩০০ A-C S ২৫০ D ৩৫০ A/C S ৪০০-৪৫০ D ৪৫০-৬৫০; H Stavel, S ১৫০-২৫০ D ২০০-২৭৫; H Koshni, ৩ 329728, S ১০০ D ১৭৫ A/C S ২২৫ D ৩০০।

R C Dutta Rd-5এ—H Kaviraj, ৩ 323401, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/C S ৪৫০ D ৬৫০, দিনের ১২ ঘণ্টার রিবেট মেলে। লাগোয়া H Savshanti Towers, Alkapuri, ৩ 334255, S ৩৫০ D ৪৭৫ A/C S ৪৫০ D ৬০০; Alka Inn, 2, Alkapuri, ৩ 322339, S ৩০০-৪৫০ D ৪০০-৬৫০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০; *Express H, ৩ 330960, A/C S ৮৫০-১২৫০ D ১২০০-১৭৫০ সুইট ২০০০-৩০০০; *Express Alkapuri ৩ 337899, A/C S ৮৫০-১২০০ D ১০৫০-১৭০০ সুইট ১৫৫০-২৫০০; Welcomgroup-এর H Vadodara, ৩ 330033, A/C S ৬৫-১৪০ D ৮৫-১৬০ সুইট ২৫০ US\$; H Kalyan, SAB ১৫০ DAB ২৫০ A/C S ৩২৫ D ৪৫০; H Gaurav, Station Rd-2, S ২২৫ D ৩০০ A/C S ৩৫০ D ৪৫০; H Sweet Dream, Fatchganj; Bombay Boarding House, ৩ 550192; H Airport, opp Hami Airport, ৩ 550294; H Sarita, Mandwa-391105, D ১৫০-২২৫ A/C D ৩০০-৩৭৫; *H Ulsab, Manek Rao Rd-1, ৩ 551686, A/C S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; H Rajdhani, Dandia Bzr-1, A6R34B0, ৩ 541184, D ৩০০ A/C D ৪৫০ সুইট ৬৫০; H Sagar, Sursagar (N)-1, A7R1, S ২২৫ D ৩২৫ A/C S ৪০০ D ৬০০; City Resort, NH-8 By Pass, Vemali, Fatchganj, Vadodara-390002, ৩ 480623, A/C D ৮০০ Suite ১২০০।

রেলের রিটার্নিং রুম-ও আছে ভাদোদরায়। আর আছে হোটেল আনন্দ নিবাস, কৃষ্ণ নিবাস, মনোহর লজ, জানকী নিবাস, গীতা নিবাস, শ্রীনিবাস হোটেল, বরোদা হোটেল, গ্যান্ড, করোনেশন ছাড়াও নানান হোটেল। ধরমশালাও আছে নানান ভাদোদরায়।

আহার্যেরও নানান হোটেল ভাদোদরায়। Sayajiganj-এর H Ambassador খালি মিলে যথেষ্ট খ্যাত। তেমনই Havnor Restaurant, Yash Kamal Building-এর (১১—২৩-০০) ভারতীয় ও মধ্যাশীয় আহার্য পরিবেশায় যথেষ্ট সুনাম। শিবাজী রোডের Ishwar Bhuvan (১১—১৫-০০ ও ১৯—২২-০০)-এরও শুজরাট-পাঞ্জাবি-চীনা মিলে প্রশংসি আছে। আর চীনা ডিশের জন্য R C Dutta Rd-এর Chung Fa-য় চলা ঝেঁতে পারে। তবুও যেন বল মূল্যে রেল স্টেশন রিক্রেশমেন্ট রুমের যথেষ্ট সুখ্যাতি ভাদোদরায়।



মুম্বাই-আমেদাবাদ-দিল্লী মিটারগেজ ও মুম্বাই কোটা-দিল্লী ব্রডগেজ রেল পথে ভাদোদরা স্টেশন। মুম্বাই থেকে আসা দিল্লী ও আমেদাবাদের প্রতিটি ট্রেন ভাদোদরা হয়ে থাকে। তেমনই আমেদাবাদ-মুম্বাই-এর প্রতিটি ট্রেনও ভাদোদরা হয়ে থাকে। আমেদাবাদ থেকে ১৮-১০এ ভাদোদরা ছেড়ে ২০-২৫এ ভাদোদরা-আমেদাবাদ এক্স, আমেদাবাদ ছাড়ে ১৪-৫০এ। ভালসাদ থেকে ১৭-৩০এ ভাদোদরা-ভালসাদ এক্স, ২০-২৮এ আমেদাবাদ-ভালসাদ ওজরাট কুইন ছাড়াও মুম্বাই-এর প্রতিটি ট্রেন। ট্রেন থাকে ভাদোদরা থেকে

২ ঘটায় ১০০কিমি দূরের আমেদাবাদ, ৬ ঘটায় মুম্বাই ৩৯২, ২১ ঘটায় সুরাট ১২৯, ১২ ঘটায় ব্রডগেজে দিল্লী ৯৯২ কিমি—মিটারগেজে ১৭১ ঘটায়। কলকাতার দূরত্ব ১৯৮৯ কিমি। পূব, দক্ষিণ ও পশ্চিমে ভারত থেকে আসা আমেদাবাদগামী ট্রেনগুলিও ভাদোদরা হয়ে যাচ্ছে। আমেদাবাদ-হাওড়া এক্স প্রাচীন নানান প্যাসেঞ্জার (৫-৪০, ৮-৪০, ১১-০০, ১২-০৫, ১৬-৫৫, ২৩-১৫) ট্রেন লেভে আমেদাবাদ থেকে আনন্দ/ভাদোদরা হয়ে সুরাটে। আর মুম্বাই সেট্রাল যাচ্ছে ৫-১৩য় কচ্ছ এক্স, ৭-৩০এ সয়াজী নগরী এক্স (বান্দ্রা), ২৩-০০টায় ভাদোদরা-মুম্বাই এক্স, ৯-৫৫য় সৌরাষ্ট্র এক্স, ০-৫০এ সৌরাষ্ট্র মেল, ২২-২৬এ সৌরাষ্ট্র জনতা এক্স; আমোদাবাদ থেকে ছাড়া ১৬-২০এ শতাব্দী এক্স (গুরু ছাড়া), ৬-৫৫য় কর্ণবতী এক্স (বুধ ছাড়া), ০-০৮এ গুজরাট মেল, ৯-১২য় গুজরাট এক্স, ২৩-৩০এ জনতা এক্স ছাড়াও আমোদাবাদ-মুম্বাই-এর প্রতিটা ট্রেন। ৫-১৫ থেকে ৭ ঘটায় পথ। ভাদোদরা ফেরে মুম্বাই থেকে ২৩-৩০এ ভাদোদরা এক্স, ১৪-৫০এ বান্দ্রা-ভাদোদরা সয়াজী নগরী এক্স, ১৭-০০টায় কচ্ছ এক্স, ৬-২৫এ শতাব্দী এক্স (গুরু ছাড়া), ১৬-২৫এ বান্দ্রা থেকে সৌরাষ্ট্র জনতা এক্স, ৭-৪৫এ সৌরাষ্ট্র এক্স, ২০-২৫এ সৌরাষ্ট্র মেল, ৫-৪৫এ গুজরাট এক্স, ১৯-৩৫এ আমোদাবাদ জনতা, ২১-৫০এ গুজরাট মেল ছাড়াও নানান।

নতুন দিল্লী যাচ্ছে রাজধানী এক্স (সোম ছাড়া), হজরত নিজামুদ্দিন যাচ্ছে অগাস্ট ক্রান্তি রাজধানী এক্স (বুধ ছাড়া), নতুন দিল্লী হয়ে অমৃতসর যাচ্ছে মুম্বাই-অমৃতসর গোন্ডেন টেম্পল মেল, পশ্চিমী এক্স; ফিরোজপুর যাচ্ছে মুম্বাই-ফিরোজপুর জনতা এক্স, মুম্বাই-দেবানু এক্স, ১ ৪ ৫ ৭ দিন মুম্বাই-জম্মু স্বরাজ এক্স। বান্দ্রা-ইন্দোর অবন্তিকা এক্স, ত্রিশাপাহিক সর্বোদয় এক্স হাপা/রাজকোট-জম্মু যাচ্ছে ব্রডগেজে ভাদোদরা-কোট-মথুরা-নিউ দিল্লী হয়ে।



আর IAC @ 329668-র বিমান প্রতিদিন ১৭-০০টায় ছেড়ে ৫৫ মিনিটে মুম্বাই, ৭-৪৫এ ছেড়ে ১ ঘ. ২৫ মিনিটে দিল্লী যাচ্ছে ভাদোদরা থেকে। ফেরেও এরা নিয়মিত। আর East West Airlines @ 335195, Jet Airways @ 337051 নিয়মিত সার্ভিস গড়েছে দিল্লী-ভাদোদরা-মুম্বাই-এর। INEPC Airlines প্রতিদিন মুম্বাই হয়ে পুনে, প্রতিদিন গোয়া, ব্যাঙ্গালোর, গুৱাহাটী, ইন্দোর; ৩ ৫ ৭ দিন ভাবনগর, জামনগর; ১ ২ ৬ দিন রাজকোট, ২ ৭ দিন পোরবন্দর, কেশোদ; ১ ৪ দিন কাশালা ছাড়াও চেন্নাই যাচ্ছে ভাদোদরা থেকে। ফেরেও এরা একইভাবে একই দিনগুলিতে।



মুম্বাই নানানধর্মী বাস যাচ্ছে গুজরাট রাজ্য পরিবহণের—ভাদোদর, সুরাট, আমোদাবাদ ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে ভাদোদরা থেকে। প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে বাস স্ট্যান্ডের চারপাশ থেকে। এমনকি ইন্দোর, মুম্বাইও যাচ্ছে প্রাইভেট নাইট সুপার। শহর চলছে সিটি বাস, ট্যাক্সি, অটো।

অটো রিকশা বা ট্যাক্সিতে ভাদোদরা শহর দেখে নিন। তবে, উচিত হবে রেল স্টেশনের বাইরে নগর পালিকা প্রবাসী গৃহ থেকে ভাদোদরা মিউনিসিপ্যাল কর্পোরেশন, @ 329656-এর আয়োজিত প্যাকেজ টুরে শহর বেড়িয়ে নেওয়া। মন্ডল/বুধ/গুরুবার ১৪—১৬-০০টায় ৩৫ টাকার EME Temple, Sayaji Garden, Kirti Mandir, Dairy, Fatch Singh Museum, Sri Aurobinda Society; শনি/রবি/সোমবার যাচ্ছে ১৭—২১-

০০টায় ৩০ টাকার Nimeta Picnic Garden, Ajwa-য় বৃন্দাবন গার্ডেনের মিনি সংকর গাছ দেখতে। শনি/রবি/সোমবার ১ ৩ ২ মিলিয়ে ১৪—২১-০০টায় ৬০ টাকার ৭০ কিমি পরিক্রমায় দেখে নেওয়া যায় ভাদোদরা।

শহর ভ্রমণে প্রথমেই চলুন সুরসাগর লেক। শহরের প্রাণকেন্দ্রে ১০০০x৬০০ ফুটের এই লেক। রাতের বেলায় লেকের শোভা মনোহর। বোটিং-এরও ব্যবস্থা মেলে সাথে। সুরসাগর লেকের পাড়ে নান্য মন্দির অর্থাৎ অতীতের বিচারসভায় জেলা আদালত বসেছে আজ। এরও কারুকার্য সুন্দর। মাছেরাও আকর্ষণ বাড়ায় আহার দিলে।

শহরের প্রাণকেন্দ্রে চিত্ত বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে সন্ধ্যা-ভ্রমণের রমণীয় পরিবেশ সওয়াজী বাগ। মিনি ট্রেন চলছে পার্কে ঘিরে। চিড়িয়াখানা, ১৯০৪এ গড়া ভাদোদরা মিউজিয়ম, আর্ট গ্যালারি/মিউজিয়ম—এদেরও অবস্থান সওয়াজী বাগে। এমনকি নতুন করে সর্গার প্যাটেল প্ল্যান্টেটোরিয়ামও বসেছে সওয়াজী বাগে। হিন্দী, ইংরেজি ও গুজরাটি ধারাভাষা প্রদর্শনীও চলছে প্রতি সাথে। মিউজিয়মের অমূল্য সংগ্রহের মধ্যে সংস্কৃত পৃথিবী সন্তার উল্লেখ্য। তেমনই মিনিয়োচারধর্মী মোগলী চিত্রসম্ভারও বরণীয় করে তুলেছে আর্ট গ্যালারিকে। বিশ্ববিদ্যালয়, লালবাগ-এরও অবস্থান সওয়াজী বাগে ঘিরে ভাদোদরায়। অত্যুৎসাহীরা আনানটিমি মিউজিয়মে নানান জীবজন্তুর সঙ্গে মানবদেহের আনানটিমিও চিনে নিতে পারেন রবি ও ছুটি ছাড়া ৯—১২-৩০ ও ১৪—১৭-৩০টায়, শনিবার ৯—১২-৩০টায় মেডিক্যাল কলেজে।

ভাদোদরার অন্যতম আকর্ষণ রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে ক্যান্টনমেন্টে EME Steel Temple. A F Eugene-এর উদ্যোগে Electrical Mechanical Engineering College-এর ছাত্র ও জওয়ানদের শ্রমে ব্রোঞ্জ ও রূপের মিশ্রণে গড়া ১৯৬৫র দেবতা দক্ষিণামূর্তির মন্দির হয়েছে অ্যালুমিনিয়ামে ১৯৬৬র ৫ই ডিসেম্বর। অভিনবত্ব আছে মন্দিরে। ৫টি বটবৃক্ষ পরিবেশকে আরও রমণীয় করে তুলেছে। শহরান্তের বট্যানিক্যাল গার্ডেনটিও আর এক দ্রষ্টব্য।

লক্ষ্মীকালী প্রাসাদ অর্থাৎ রাজপরিবারের বসতবাড়ি। সাধারণের কাছে খার রুদ্ধ। ১৮৯০এ মহারাজ সয়াজী রাও ৩-এর তৈরি গম্বুজ শিরে ইন্দো-সেরাসেনিক ধারায় গথিক শৈলীর এই প্রাসাদ। ভাস্কর্যমণ্ডিত প্রাসাদের অভিয়েল হলে দেওয়াল ও মেঝের মোজেরিক অনবদ্য। মণি-মুক্তা-রত্নের সংগ্রহও উল্লেখযোগ্য। অস্ত্রাগারের সংগ্রহও দর্শনীয়। সোম ও শুক্রবার ছাড়া ১৪—১৭-০০টায় দেখার অনুমতি মেলে।

তেমনই রয়েছে মহারাজা কৃতে সিং মিউজিয়ম প্রাসাদ চত্বরে। সারা বিশ্ব থেকে ছবি এসে বরণীয় করে তুলেছে একে। তিতান, রাফেল, ম্যারিলো—এদের ছবির সঙ্গে চীন-জাপান-ভারতীয় ছবির বিশূল সমগ্র উল্লেখ্য। সোম ছাড়া জুলাই থেকে মার্চ ৯—১২-৩০ ও ১৫—১৮-০০টায় আর এপ্রিল থেকে জুনে ১৬—১৯-০০টায় ৫ টাকার টিকিট

দেখে নেওয়া যায়। ভাদোদরায় ক্রিকেট আসরও বসে মিউজিয়াম লাগোয়া প্রাসাদ চত্বরে। প্রাসাদের ৫০ মি উত্তরে নওলাখি ভাঙ অর্থাৎ *কাওলি-টিং* ও আর এক ব্রহ্মবায়।

১১০ ফুট উঁচু গম্বুজ শিরে কীর্তি মন্দির অর্থাৎ রাজ-পরিবারের মিউজিয়াম। গায়কোয়াড় পরিবারের দেহাবশেষ রক্ষিত রয়েছে। বাংলার প্রখ্যাত শিল্পী নন্দলাল বসু এই ভবনের ৪টি পেইন্টাল চিত্রিত করেন। ১মটিতে রবীন্দ্রনাথের নটীর পূজা, ২য়টিতে মহাভারতের আখ্যান, ৩য়টিতে মীরা-বান্সি-এর সাধন-ভজন ছাড়াও নানান কিছু। খুবই মনোগ্রাহী এই শিল্পকর্ম। মূর্তিও হয়েছে সওয়াজী রাওয়ের। ১৭২১ খ্রিস্টাব্দে তৈরি নজরবাগ প্রাসাদের *স্টার জব দ্য সাউথ* মণিখণ্ড, পাথরখচিত এমব্রয়ডারি কাপড়, কীর্তি মন্দির তথা রয়াল মিউজিয়ামের আর এক আকর্ষণ।

শ্রী সওয়াজী সরোবর অর্থাৎ ১৮৯১এ শ্রীজগন্নাথ সদাশিবজীর পরিকল্পনায় ৪৩৯০ মি দীর্ঘ বাঁধে তৈরি ১৯০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত জলাশয়। বাঁধের উচ্চতা ১৭মি, নীৰ্বদেশ ৫মি চওড়া। বাঁধের নিচুতে মহীশূরের বৃন্দাবন গার্ডেনের ঢঙে বাগিচা হয়েছে Ajwa : Brindavan Pattern Garden. ধাপে ধাপে ৬ কিমি দীর্ঘ, সারি দিয়ে জলের ফোয়ারা; নানান রঙে আলোকিত। পরিবেশ রমণীয়। শহর থেকে দূরত্ব ২৫ কিমি। কনডাক্টেড ট্যুরে বা ST বাসে বেড়িয়ে ফেরা যেতে পারে। ট্যাক্সিও মেলে যাতায়াতে।

ভাদোদরা ডেমারিটিও প্যাকেজ ট্যুরে অংশ জুড়েছে। স্বাদ নেওয়া যেতে পারে দুগ্ধজাত নানান কিছুই। তেমনই গাড়ি যাচ্ছে প্যাকেজ ট্যুরে ভাদোদরা রেল স্টেশন থেকে ১৭ কিমি দূরে চুইহাতির মনোরম পরিবেশ Nimeta Picnic Garden-এ।

ভাদোদরা থেকে ২৭ কিমি দক্ষিণ-পূবে ১১ শতকের নগর স্থাপত্যের ধ্বংসাবশেষ দেখতে মেলে দাভয় (Dabhoi)-এ। মুসলিম, মারাঠা ও ব্রিটিশের গড়া দুর্গে হিন্দুর স্থাপত্যের নিদর্শন *ডায়মন্ড গেট* ওজরাটি শৈলীতে রূপ পেয়েছে। দেবী কালীরও মন্দির রয়েছে। মন্দিরের বৈচিত্র্যময় কার্ভিং-এর কাজ সুন্দর।

ভাদোদরার ৪১ কিমি উত্তর-পূবে অতীতের স্বাধীন রাজপুত রাজ্য চম্পানের-এর অবস্থান। ১৪৮৪তে সুলতান মামুদ বাগেড়ার দখলে যেতে রাজধানীও হয় (১৪৮৬-১৫৩৫) চম্পানের। নামাঙ্করও ঘটে, চম্পানের হয় Muhammadabad. দুর্গও গড়েন ইন্দো-সেরাসেনিক শৈলীতে বাগেড়া। আর ১৫৫৩য় মোগল সম্রাট হুমায়ুন দখল করেন চম্পানের। খাড়া পাহাড়, মনোরম পরিবেশে অতীতের দুর্ভেদ্য পাহাড়ী দুর্গ—জাহানপানা। দুর্গের জুয়া মসজিদটিও ওজরাটের অনন্য সুন্দর স্থাপত্যকর্ম। নিচুতে রাজপুত দুর্গের ধ্বংসাবশেষ আর উপরে আর এক রাজপুত কীর্তি—সাত মহিল প্রাসাদ। ভাদোদরা-গোদরা সড়কের হাঙ্গোল থেকে পথ গিয়েছে। সরাসরি বাসের অমিলে নানান বাসে হাঙ্গোল

পৌঁছে হাঙ্গোল থেকে অটোর চলা যেতে পারে চম্পানের। চম্পানের থেকে খাড়া পাহাড় উঠেছে পাওয়াগড়। কিংবদন্তী, লঙ্কার পথে হনুমান বাহিত গন্ধমাদনের টুকরো পড়ে সৃষ্ট ১৭০০ ফুট উঁচু *পাওয়াগড়* (এক-চতুর্থাংশ)। শৈল শহর রূপেও ভাদোদরাবাসীর প্রিয়। চম্পানেরের ১১ কিমি দূরে ৩ ধাপের দুর্গারূপী পাহাড়ের নিচুতে ধ্বংসস্থাপ—মাঝে দুর্গও প্রাসাদ, উপরে হিন্দু ও জৈন মন্দির, মসজিদও হয়েছে মন্দিরের উপর। ভাদোদরা থেকে বাসে বেড়িয়ে ফেরা যায়। রোপওয়েও চলেছে পাহাড় শিরে।

হোটেলেও ধরমশালা আছে পাওয়াগড়ে। আর ভাদোদরা থেকে ৪৯ কিমি দূরে ১৪৭১ ফুট উঁচু চম্পানের-এর মহি হাঙ্গোলীতে TCGL-এর H Champaner, Pavagadh-389360, DAB ১৫০ ২৫০, ডর্মি বেড ৩০ আছে।

উৎসাহীরা ভাদোদরা থেকে ৭০ কিমি দক্ষিণে নর্মদা ও সাগরের মোহনায় ব্রোচ-এ পৌরাণিক যুগের মুনি ভূতর আশ্রমটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। সেকালে নাম ছিল এর *ভুগু কচ্ছ*। কালে কালে Bharuch বা ব্রোচ। হাজার দুয়েক বছরের অতীত ইতিহাসেও ব্রোচের নামোন্মেষ মেলে। ১৭ শতকে ভাট ও ইয়েরজরা কারখানাও গড়ে ব্রোচ। ব্রোচ থেকে ১৬ কিমি পূবে নর্মদার পাড়ে আর এক তীর্থ শুক্লতীর্থও দেখে নেওয়া উচিত হবে। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা শুক্লতীর্থে বিষ্ণু মন্দিরটি দর্শনীয়। TCGL-এর Toran Holiday Home আছে শুক্লতীর্থে।

সুরাট

পর্যাপ্ত সময় থাকলে ১ দিন ভাদোদরায় থেকে পরদিন হীরক নগরী তথা বয়নশিল্প ও রাসায়নিক শিল্প-নগরী সুরাট বেড়িয়ে আমেদাবাদ চলুন। দিন-রাত্রি জুড়ে ট্রেন ও বাস দুইই আছে। ঘন্টা পাঁচকের পথ। এমনকি প্যাসেঞ্জার ট্রেনও চলেছে সুরাট থেকে ভাদোদরা হয়ে আমেদাবাদে। এছাড়া ভাদোদরা/আমেদাবাদের প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে সুরাট হয়ে। মুম্বাই থেকে ২৯৭ কিমি উত্তরে আর আমেদাবাদের ২৫৫ কিমি দক্ষিণে অর্থাৎ দুইয়ের মাঝ দূরত্বে তাম্প্রী নদীর পাড়ে বৃত্তাকার শহর সুরাট। সুরাট থেকে বাসে পাহাড়ী শহর সপুতারা বা কেস্জ শাসিত দমন ও দানরা-নগর হাঙ্গোলী বা মুম্বাই চলা যেতে পারে। ১৭-৫৫য় মুম্বাই সেম্বালি ছেড়ে 9021 Flying Rance ২২-২০এ সুরাট পৌঁছে মুম্বাই ফেরে ৫-৩০এ সুরাট থেকে। এছাড়াও যাচ্ছে আমেদাবাদ/ভাদোদরা-মুম্বাই-এর প্রতিটা ট্রেন সুরাট হয়ে। বাণী হয়ে ভলাই রোড, ব্রোচ যাচ্ছে নানান প্যাসেঞ্জার ট্রেন সুরাট থেকে। তেমনই সুরাট থেকে শীতাতপ জল ট্যারিতে ১০ ঘন্টার ভাবনগরও চলা যেতে পারে। নিকটতম বিমানবন্দর ভাদোদরায়।

বয়ন-শিল্পের জন্য সুরাটের প্রশস্তি। সুরাটের শিল্প, সূতি ও সোনা-রাপার ব্রোকেড শাড়ি, আইভরি, ডায়মন্ড কাটিং অতীতে বিদেশীদেরও দৃষ্টি আকর্ষণ করেছে। ৭৪৫এ সুরাটের ১০০ কিমি দক্ষিণে সঞ্জয় বন্দরে পার্সিদের আগমন, আর ১২ শতকে পার্সিদের প্রথম বসতির পত্তন সুরাটে। কালে কালে বার বার তিনবার পর্তুগিজরা লুণ্ঠন করে ছালিয়ে দেয় নগরী।

কৃষ্ণ আমোদবাদ শাসক মহম্মদ বিন তুঘলক ১৫৪৬তে গড়ে তোলেন দুর্গ। ১৮ মি গভীর পরিখা, পরিখা পেরুতেই মাটির প্রাচীর ১৮ মিটারের, তারপর ১০.৫ মি চওড়া উঁচু খুঁপ। আর মারাঠা দখলে যেতে মাটির বদলে ইটে গড়া হয় ৮ কিমি দীর্ঘ প্রাচীর। তাস্তী ব্রিজ লাগোয়া নদীর পাড়ে দুর্গের ধ্বংসাবশেষ অতীত রোমন্থন করায় আজও।

১৫৭৩এ সুরাট যায় মোগল সম্রাট আকবরের দখলে। মোগলকালে মুখ্য বন্দরও ছিল সুরাট, নাম ছিল সুবালি। শহর থেকে ২০ কিমি দূরে আরব সাগর। সেকালের গেটওয়ে টু মক্কা অর্থাৎ সুরাট থেকেই হজ করতে মক্কা যেত ভারতীয় মুসলিমরা। ভারতে প্রথম শিল্পও গড়ে ব্রিটিশ ১৬১২য় সুরাটে, ডাচরা ১৬১৬য়, ফরাসিরা ১৬৬৪তে। সুরাট তখন ভারতীয় শিল্প-বাণিজ্যের শিখরে। ১৬৬৪তে শিবাজীর মারাঠা বাহিনী পৃথুদন্ত করে সুরাটের মোগল বাহিনীকে। ১৭২০এ ডক নির্মাণের সাথে সাথে জাহাজ মেরামতি কারখানাও গড়ে তোলে সুরাটে ব্রিটিশ। ১৮০০য় ব্রিটিশের হাতে দখল যায় সুরাটের। ১৯ শতকে মুম্বাই দখল নেয় সুরাটের বয়ন-শিল্পের সমৃদ্ধি। আর বন্দর—সে তো আগেই লোপ পেয়েছে মুম্বাই-এরই কাছে। তেমনই লোপ পেয়েছে কালের আঘাতে নানান অতীত সুরাটে। তবে, মৌন রোডের কাতারাগামা গেটের গিছে আজও ব্রিটিশ ও ডাচ সমাধি দেখে নেওয়া যায়। তেমনই ব্রিটিশ, পর্তুগিজ, ফ্রেঞ্চ, পার্সিদের শিল্পকারখানারও অবস্থান ছিল অদূরে তাস্তী নদীর পাড়ে। আর আছে হিন্দু, জৈন, পার্সি, মুসলিম ও ডাচদের মন্দির ও মসজিদ সারা শহরে। গান্ধীবাগে নীলাকাশের নিচে মুক্তাপন, বাগিচা, সর্দার প্যাটেল মিউজিয়াম, ঘূর্ণমান রেস্তোরাঁ এরাও আজ দর্শকপ্রিয় হয়ে পড়েছে সুরাটে। সুরাটের মিষ্টিরও যথেষ্ট প্রশস্তি লোক মুখে। রাজা পর্যটনের দপ্তর বসেছে ১-৪৪৭ Athugar S, Nanpura. Surat-395001, @ 26586৫। এত সবেব মাঝেও পর্যটন মানচিত্রে সুরাটের স্থান ক্ষীণ থেকে ক্ষীণতর আজ। নগরী পুতিগন্ধময়—বাতাসও দূষিত কল-কারখানার ধোঁয়ায় সুরাটে। ১৯৯৪এ সুরাট থেকেই প্লেগ আতঙ্ক বিভীষিকা হয়ে দেখা দেয় সারা ভারতে।



রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ড দুইয়েরই অবস্থান পাশাপাশি Surat-395003, STD 0261এ। হোটেলও গড়ে উঠেছে নানান ঠাঁট রম্ভে সুরাটে। রেল স্টেশনের বিপরীতে: জৈন ধরমালা; H Alifa, @ 36839. SAB ১২৫ DAB ২২৫ TV সহ S ১৭৫ D ২৫০ A/c D ৪০০-৪৭৫; *H Sheetal Plaza, @ 29229, SAB ২৫০ DAB ৪০০ TAB ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ T ৬৫০; H Sheetal, @ 53621, A/c S ৬৫০-৪৫০ D ৪৫০-৬০০; Topaz GH; *H Dreamland, Sufi Baug, opp Rly Stn, @ 39016, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; Simla GH, DAB ২০০-২৭৫; H Amisha, Balwas GH; H Sakkar GH, S ১৫০-২২৫ D ২৫০-৪২৫; H Pushpanjali, Delhi Gate, Ring Rd, Surat-395003, @ 33872, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০; লাগোয়া H Batwas, @ 25762, A/c S ৪২৫ D ৬০০; Joy Vijoy GH;

Omkar & Bhaibav GH; Ajanta GH; Central H, S ১৫০, D ২২৫; Sarvajani Boarding, S ১৫০ D ২৫০; Vihar GH, Rupali GH, SCB ৬৫ DAB ১২৫-১৭৫; H Amar, S ১০০, D ২০০ T ২৫০, A/c D ৩৫০; H Yuvaraj, near Rly Stn-3, @ 53621, A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইট ১০০০।

রেল স্টেশন থেকে বামহাতি Ring Road ১৫ কিমি যেতে Tex Palazzo H, Surat-395002, @ 623018, কন্টিনেন্টাল প্ল্যানে A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১০৫০; বিপরীতে H Shalimar Palace, @ 620436, A/c S ৩০০-৪৫০ D ৪০০-৬৫০; Alankar H, Janata H, Ashoka H, Apsara H ছাড়াও নানান। আর আছে *H Oasis, Varachha Rd-395006, @ 641124, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; The Rama Regency, near Bharti Park, Athwa Line-7, A/c S ১৫০০ D ২০০০ সুইট ২৫০০; Holiday Inn, near Bharti Park, Athwa Lines-395007, @ 666565, A/c S ২২৫০ D ৩২৫০; H Rohit International, Lal Darwaja-3, @ 433994, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; Dhawalgiri G H, Athwa Lines-7, A10R5, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ১০০০; H Soffitel, Ambika Niketan Bus Stop, Athwa Lines-7, A4R4, A/c S ৬০০ D ৮৫০।

খাবার হোটেলও যত্রতত্র রয়েছে সারা শহরময় সুরাটে। থালি প্রথায় মিল, আবার A-la-carte প্রথাতেও আহার্য মেলে। রেল স্টেশনের সমীকটে সেন্ট্রাল হোটেলের পাশে Gaurav Restaurant-টির যথেষ্ট সুনাম দক্ষিণ ভারতীয় আহার্য পরিবেশায়। রেল স্টেশনের অদূরে Simla GH লাগোয়া পাঞ্জাবী মালিকানায় Hotel Ashoka'র যথেষ্ট সুনাম আহাৰ্বে। রিং রোডে Ajanta Cinema'র কাছে Sahkar Restaurant (১০—২৪-০০)-টিরও যথেষ্ট সুনাম ভারতীয়, চীনা ও মহাদেশীয় আহাৰ্বে। তবুও যেন উচিত হবে সুরাট ভ্রমণে Tex Palazzo'র শিরে যেকোনও বিকালে (১৬—২১-০০) Revolving Restaurantএ অভিনবব্ধের সঙ্গে ভারতীয়-চীনা-মোগলই আহাৰ্ঘের স্বাদ নেওয়া। পাশেই টেক্সটাইল মার্কেট। বাড়ির পর বাড়ি, হাজারখানেক দোকান মিলজাত বসনের পসরা সাজিয়ে বসেছে।

উৎসাহীরা সুরাট থেকে ১৬ কিমি দূরে ডুমাস (Dumas) হেলথ রিসর্ট, ২৮ কিমি দূরে ঝাউয়ে ছাওয়া হাজিরা (Hajira) সমুদ্রসৈকতও বেড়িয়ে নিতে পারেন। হাজিরার আর এক আকর্ষণ ১৫৮৫তে মরুর তৈরি কুতুবুদ্দিনের সমাধির জ্ঞানালার কারুকার্য। ২৯ কিমি দক্ষিণে নভসারি (Navsari)-তে ভারতীয় পার্সি সম্প্রদায়ের মূল দপ্তর। তেমনই দমনের পথে বাণীর ১০ কিমি উত্তরে Udvada-য় রয়েছে ৭৪৫এ পারস্য থেকে আনা দিউ হয়ে আসা পার্সিদের পুত্র অগ্নি। ৪২ কিমি দূরের উভরাত (Ubhrat) সৈকতবেলাটিও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে সুরাট থেকে। থাকারও ব্যবস্থা আছে TCGL-এর Toran Ubhrat, Ubhrat-396436, D ১৫০ ২০০ ৩০০ ডর্মি ৪০; হিল বালেয়ে চার বেডের ঘর ৬০০ টাকায়। আর হাজিরায় আছে ওজরটি টুরিজমের Holiday Home.

লোথাল

লোথ থেকে লোথাল। ওজরটি ভাষায় লোথমানে মৃত্যু। অর্থাৎ মৃত ইতিহাসের সন্ধান মিলেছে ডাবন গরমুখী

আমেদাবাদের ৭৬ কিমি দক্ষিণে লোথালে। পৃথিবীর ইতিহাসে মহেন-জো-দড়ো, হরপ্পা, চান হুডারো (পাকিস্তান), বনওয়ালি (হিরিয়ানা), কালিরঙ্গান (রাজস্থান)-এর সঙ্গে নতুন করে লেখা হল লোথালের নাম। ১৯৫৫-৬২ খ্রিস্টাব্দের খননে আবিষ্কৃত হয়েছে ১৬টি কবর লোথালের মাটির তলায়—৩টি এরই মধ্যে পরীক্ষিত হয়েছে। মিলেছে ১৯২৪এ আবিষ্কৃত মহেনজোদড়োর তুলা ১০"×৫"×২.৫" ইটে গাঁথা বিশাল এক চৌবাচ্চা তথা অতীতের ডকইয়ার্ড বা পোতাশ্রয়। প্রত্নতাত্ত্বিক বোর্ডে মেলে ৬০ টন ওজনের ৩০টি জাহাজ একসঙ্গে পোতাশ্রয়ে নোঙ্গর করতে পারত। আবিষ্কৃত হয়েছে—আর্থ সভ্যতা, প্রাচীরে ঘেরা বন্দর-নগরী, জলাশয়, বাজার-ঘাট, জলনিকাশী নালী, রাসার তৈজসপত্র, আভরণ, ওজন মাপক বাটখারা, সমাজ জীবনের নানান টুকটাকি, দাবা খেলার খুঁটি, দু'টি পোড়ামাটির মমি—একটি তার আসিরীয় অপরটি মিশরীয়। প্রাপ্ত সীলমোহর, টোটেম অর্থাৎ ধর্মীয় প্রতীক থেকে প্রমাণিত যে সে যুগে মেসো-পটেমিয়া (ইরাক), বাহরিন-এর সঙ্গে ঘনিষ্ঠ যোগসূত্র ছিল। ১০ ফুট উঁচু দেওয়াল—৭১০×১৬৬ ফুটের ইটে গড়া কাঠামোটিও এক অনন্য সৃষ্টি। প্রমাণিত হয়েছে এগুলিও সিন্ধু সভ্যতার (৪৫০০ বছর আগের) সমসাময়িক বলে। এমনকি হরপ্পা ধ্বংসের ৫০০ বছর পরও লোথালের সভ্যতা সজীব ছিল। এককথায় বলা যায় সভ্যতার সমস্ত নিদর্শনই মিলেছে লোথালে। মিউজিয়ামও বসেছে প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের অতীত নিদর্শন নিয়ে। ছুটি ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় খোলা। আমেদাবাদ থেকে TCGL প্যাকেজ ট্রারে বেড়িয়ে আনে। ট্যান্ড্রি, ট্রেন বা বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় আমেদাবাদ থেকে লোথাল। আমেদাবাদ-বোটাড মিটারগেজ রেল ৯৫ কিমি দূরে লোথাল-ভুড়খী স্টেশন। ট্রেন যাচ্ছে ৭-১৫, ১৫-২০, ১৭-৪০এ। ৩৬ ফুটের পথ। আর লোথাল থেকে আমেদাবাদ আসছে ৬-১০, ৭-১৮ ও ১৫-৫৩য়। স্টেশন থেকে ৮ কিমি পায়ে পায়ে অনিয়মিত বাসপথ পেরিয়ে খ্রিঃ ২০০০ থেকে ১৫০০ বছর আগে সামুদ্রিক জল প্রাবনে বিধ্বস্ত অতীত দেখে নেওয়া যায়। আমেদাবাদ থেকে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায় লোথাল। দিনের একমাত্র বাস সকাল ৭-০০টায় আমেদাবাদ ছেড়ে লোথাল যাচ্ছে। আবার পালিতানা বা ভাবনগরের নানান বাসে অরণেজ পৌঁছে অটোয় ১২ কিমি দূরের লোথাল চলা যেতে পারে। তেমনই অরণেজ থেকে পালিতানা/ ভাবনগর/রাজকোট যাওয়া যেতে পারে বাসে। যাতায়াত ব্যবস্থা আজও দুর্গম করে রেখেছে লোথালকে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে TCGL-এর Toran, Lothal-382230তে।

সপুতারা

সহ্যাদ্রি পাহাড়ে ৮৭২.৯ মি উঁচুতে নাগ রাজাদের স্বর্ণ—গুজরাটের শেলশহর সপুতারা। শান্ত-প্রশান্ত—গহন বন, আদিবাসীদের বাস। সূর্যজ, সূর্যোদয়, ইকো পয়েন্ট,

মিউজিয়াম, লেক, নাগেশ্বর মহাদেব মন্দির দেখে নেওয়া যায় পাহাড়ে। সপুতারা (Sarpaganga) নদীতে সপুতারা এসের জাঁকালো উৎসব। পায়ে পায়ে ট্রেক করে গীরা জলপ্রপাতটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আর আছে পূর্ণা অভয়ারণ্যে শব্বর, বন্য শুয়ার, নানান প্রজাতির হরিণ, ময়ূর ও আরও কত কি। প্রাকৃতিক দৃশ্য মনোরম। সারা বছর ধরেই যাত্রী সমাগম ঘটে সপুতারা। গ্রীষ্মে সর্বোচ্চ ৩২°, শীতে সর্বনিম্ন ১৬° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। আর বৃষ্টি ২৫৪০ থেকে ৩২০০ মিমি। তাই বর্ষাকাল এড়িয়ে যাওয়াই উচিত হবে সপুতারা।

অবস্থান গুজরাটের উত্তর-পূর্ব প্রান্তসীমায় হলেও সপুতারা যাতায়াতে মহারাষ্ট্রের নাসিক রোড আদরণীয় হবে। দূরত্ব নাসিক রোড ৮২, সুরাট ১৬৪ কিমি। নিয়মিত বাসও যাচ্ছে নাসিক ও সুরাট থেকে সপুতারা। উচিতও হবে নাসিক থেকে সপুতারা বেড়িয়ে নেওয়া। আর মুম্বাই-এর দূরত্ব ২৫৫, আমেদাবাদ ৪০০ কিমি।

থাকার জন্য TCGL-এর Toran Hill Resort, Saputara-394720, Q 226, DAB ২৫০ ৩০০ কটেজ ২৫০ ৩০০ ভ্যালী ভিউ ৩০০ ৪০০ ৫০০ মাউন্ট ভিউ ১৫০০ ডার্মি ৩০; CH, Panchayet RH, Forest Log Hut ছাড়াও প্রাইভেট হোটেল H Anundo, opp Lake, S ৪০০ D ৬৫০; H Chitrakoot, H Vaishali, Savshanti H, Saputara Lake, DAB ৮০০ সুইট ১০০০ আছে সপুতারা।

নল সরোবর

নল সরোবর অর্থাৎ পাখিরালয়। দেশ-বিদেশ থেকে পাখিরা এসে আস্তানা গড়ে নল সরোবরের বেটে থেকে বেটে। প্রকারে ৩০০ হবে। পেলিকান, ফ্রেমিংগো, সাদা সারস, হিরণ, এভোমেট, দীর্ঘ ঠোঁটের কারলিউ, নানান জাতের হাঁস, বক ছাড়াও নানান ধর্মী পাখি দেখার জন্য ডিসেম্বর থেকে মার্চ মাসে পর্যটকদের ভিড় পড়ে ১৮২ বর্গ কিমির নল সরোবরে। লেকের জলে রয়েছে বেটে অর্থাৎ দ্বীপ—সংখ্যায় ৩৬০, সাঁঝ-সকালে শালিত বিহারে পাখি দেখায় তৃপ্তি বাড়বে। পূর্ণিমা বা তারাভরা রাতে এর সৌন্দর্য পর্যটকদের ঘুম কাড়ে।

আমেদাবাদ থেকে (Via Sanand/Vinchhia/Aniali) ৬৪, আর ভিরামগম থেকে ৪০ কিমি দূরে নল সরোবর। বাস সংযোগ গড়েছে ত্রীণর মাঝে। উচিত হবে আমেদাবাদ বা ভিরামগম থেকে বাসে নল সরোবর চলা। অনুমতিও লাগে নল সরোবর দর্শনে ডেপুটি কনজারভেটর অব ফরেস্ট, গান্ধীনগর ডিভিশন, জি-১/১৯৮/২, সেক্টর ৩০, গান্ধীনগর থেকে। হলিডে হোমও জিপসি কটেজ হয়েছে সরোবরের পাড়ে। ২০০ থেকে ৬০০ টাকায় ঘর, ডর্মি বেড ৪০; অবু: আমেদাবাদ টুরিস্ট অফিস।

জুনাগড়

আমেদাবাদ থেকে ২১-২৫৫ ৭৭৪৬ গিরনায় এক্স বা ২০-০০টায় ৭৭২৪ সোমনাথ মেলে পরদিন ৬-১৫/৮-০২এ জুনাগড়

পৌছান। দিন-রাত্রি জুড়ে বাস যাচ্ছে আমোদবাদ গীতাভবন বাস স্ট্যান্ড থেকে ঘন্টায় ঘন্টায় জুনাগড়; ডিলাক্স বাসও যাচ্ছে আমোদবাদ থেকে জুনাগড়ে। দূরত্ব ৩৩৭ কিমি। আবার রাজকোট থেকেও ১১-১০এ রাজকোট-ভেরাবল মেল যাচ্ছে জেটালসর/জুনাগড় হয়ে। ৩৫ ঘন্টার পথ, দূরত্ব ১৩১ কিমি রাজকোট থেকে জুনাগড়ের। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে ৮-২০, ১৪-৪০ ও ১৮-২০এ রাজকোট হেড়ে জুনাগড়ে। জুনাগড় থেকে ৬-২০র প্যাসেঞ্জারে ১৫ ঘন্টায় ৪৩ কিমি দূরের ভিসাভাখার পৌছে ৭-৫৫য় জেটালসর-দেলওয়াদা প্যা বা ১০-৩৪এর বিজাদিয়া-ভেরাবল প্যাসেঞ্জারে ৯-০৬/১১-৪৫এ শাসনগির চলা যেতে পারে। ট্রেন ও বাস আসছে জেটালসর, দেলওয়াদা, শাসনগির থেকে জুনাগড়ে। ৭৯ কিমি দূরের সোমনাথ থেকেও ভেরাবল হয়ে ট্রেন ও বাস যাচ্ছে জুনাগড়ে। এছাড়াও বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিকে দিকে—আধ ঘন্টা অন্তর রাজকোট; ভেরাবল হয়ে সোমনাথ যাচ্ছে ঘন্টায় ঘন্টায়; শাসনগির ৮-৪৫, ১০-০০, ১২-৩০, ১৩-৩০; দিউ-র যাত্রী নিয়ে উনা যাচ্ছে ৫-০০, ৬-০০, ৭-০০; পালিতানা ৫-৩০; ভুজ ৫-৪৫, ৭-১৫য় জুনাগড় থেকে। শেয়ার ট্যাক্সিও যাচ্ছে জুনাগড় থেকে রাজকোটে। বৈভব হোটেল থেকে Raviraj Travels-এর ডিলাক্স মিনিবাস যাচ্ছে রাজকোট, আমোদবাদ, মুম্বাই, পোরবন্দর, জামনগর। এছাড়াও যাচ্ছে নানান প্রাইভেট বাস/মিনিবাস রাজ্য জুড়ে জুনাগড় থেকে। NEPC Airlines 27 দিন কোশল-পোরবন্দর-চেন্নাই-ব্যাঙ্গালোর-উত্তরপ্রদেশ সার্ভিস জুড়েছে। আর IAC-র নিকটতম বিমান রাজকোটে। শহরে চলছে টাভা, ট্যাক্সি ও অটো রিকশা। টাভা, অটো বা ট্যাক্সি করে জুনাগড় শহরটা দেখে নিন একদিনে। ৬০/৬৫ টাকায় পুরো শহরটা দেখিয়েও আনে টাভা। জুনাগড়ের মূল আকর্ষণ জৈন-তীর্থ গিরনার পাহাড়। তবে, পর্যটকদের কাছে গির অরণ্যের সংযোগকারী স্টেশন রূপেও প্রসিদ্ধি আছে জুনাগড়ের।

জুনা/অর্থ পুরাতন আর গড়হচ্ছে কেক্স। ১৪৭২-৭৩এ গুজরাটের সুলতান মহম্মদ বেগড়া রাজপুত রাজাকে হারিয়ে জুনাগড় দখল করে। আর মোগল কালে মোগল দরবারের সেনা শের খাঁ বারি মোগল শাসককে বিতাড়িত করে স্বাধীন নবাব হন জুনাগড়ের। শের-এর উত্তরপুরুষ জুনাগড়ের শেষ স্বাধীন নবাব মহম্মদ খাঁ রসুল খানজি স্বাধীনোত্তর ভারতে হিন্দু গরিষ্ঠ জুনাগড় রাজ্যসহ পাকিস্তানে যোগ দেয়। পাক পতাকা ওড়ে জুনাগড়ের আকাশে। তবে নবাবী অত্যাচারে, জনবৈর ১৪৭৭এর ৯ই নভেম্বর ভারত রাষ্ট্রের ইউনিয়ন অব সৌরাষ্ট্র-এর অন্তর্ভুক্ত হয় জুনাগড়। আর ১৯৬০এ নতুন করে গড়া গুজরাট প্রদেশে আসে জুনাগড়। জুনাগড়ের ইতিহাস আজকের নয়। খ্রি:পূ ২৫০ বছর আগের শিলালিপিও আবিষ্কৃত হয়েছে জুনাগড়ে।

জুনাগড়ের অন্যতম আকর্ষণ শহরের পূর্বে জুনাগড় ফোর্ট। ৯ শতকে উপারকোট পাহাড়ে রাজপুত রাজাদের তৈরি। ২০ মি উঁচু প্রাচীরে ঘেরা সুসজ্জিত ৩ তোরণ পেরিয়ে গড়ে প্রবেশ। বার বার ১৬ বার অবরুদ্ধ হয়েছে—দীর্ঘ ১২ বছর অবরুদ্ধও থাকে গড়; আর ৭—১০ শতকে পরিভ্রম্য থাকে। পরবর্তীকালে মুসলিম দখলে যায় গড়। শেষ স্বাধীন নবাব ১৪৭৭এ পাকিস্তানে উড়ে গিয়ে গুজর নেন।

গড়ে কিংবদন্তী আছে:

আড়ি বাড়ড়ি নওগড় কুয়া

যো না দেখা জিন্দা মুয়া।

অর্থাৎ জুনাগড় এসেছেন অথচ বাড়ড়ি বা কুয়া দেখেননি—তিনি বেঁচে থেকেও মৃত। দেখতে তুলবেন না। শোনা যায় এতি ও চেতি নামে দুই বানোর জীবনও দিতে হয়েছিল বাড়ড়িতে জল পাবার জন্য। ১২৭টি সিঁড়ি নেমে জলের স্তর। আরও যেতে নওখান কুয়া। ফোর্টের বৌদ্ধ ভিক্ষুদের গুহাগুলিও আকর্ষণীয়। সম্ভবত হাজার দেড়েক বছর আগে কারুকার্যময় সুন্দর কার্ভিৎ-এ সমৃদ্ধ বৌদ্ধবিহার ছিল উপারকোটে। তবে, অশোকের কালের গুহাও রয়েছে। দেওয়ালের গায়ে ছোট ছোট বুদ্ধমূর্তি আজও দৃশ্যমান। দুর্গটি আজ বিধ্বস্ত। তবে, রাজপুতদের গড়া হিন্দু মন্দিরের উপর নবাবদের তৈরি জামি মসজিদটি আজও অক্ষত রয়েছে। দুর্গের যুদ্ধকালীন স্টোর আজ জুনাগড় শহরে জল সরবরাহ করছে। দুর্গের আর এক আকর্ষণ ১৫৩১এ মিশরে তৈরি ৫মি দীর্ঘ নিলম কামান। নবাবের সাহায্যে পর্তুগিজদের বিরুদ্ধে ১৫৩৮এ দিউতে এটি ব্যবহার করেন তুর্কি আডমিরাল। আকারে ছোট হলেও কামান রয়েছে আরও এক—তার নাম কদনাল। তেমনই দুর্গ থেকে দূরবীনে গিরনারের মন্দিররাজিও দেখে নেওয়া যায়। দুর্গ দেখার জন্য গাইড মেলে।

জুনাগড়ের দ্বিতীয় আকর্ষণ গিরনারের পথে সোলাপুরী—সুন্দর সাজানো বাগিচায় ঘেরা মহাশ্মশান। পরিবেশ মনোরম। স্বর্গ থেকে দেবতারও নেমে এসেছেন এর আকর্ষণে। রূপ নিয়েছেন মর্মরে স্বর্গের দেবতারা। সামান্য এগুতেই ডাইনে অশোকের শিলালিপি। ২০ ফুট উঁচু 250 BC-র বিরাট এককণ্ড পাথরের গায়ে প্রজাদের প্রতি স্রষ্টা অশোকের ১৪টি রাজাজ্ঞা পালি ভাষায় খোদিত। 150 AD-তে রুদ্রাশ্মা ও 450 AD-তে শেষ মৌর্য স্রষ্টা স্কন্দগুপ্তর হাতে সংস্কৃত ভাষায় রূপ পেয়েছে। তবে আজ পাঠোদ্ধার দুরূহ। এরপর বাজেশ্বরী মন্দির। পাহাড়ের উপর দেবীর আদি মূর্তি, খুবই জাগ্রতা এই দেবী। ধাপে ধাপে সিঁড়ি উঠেছে মন্দির দ্বারে, নিচুতেও মন্দির হয়েছে নতুন করে। পথপাশে পবিত্র দামোদর কুণ্ড—আর জাগ্রত দেবতা বিষ্ণু রয়েছেন দামোদর মন্দিরে। বেশ কয়েকটি ছোট ছোট মন্দিরও হয়েছে গায়ে গা লাগিয়ে মূল মন্দিরকে ঘিরে। কোনো কোনো মন্দিরের প্রবেশপথ এত নিচু যে হামাওড়ি দিয়ে ঢুকতে হয়। প্রবেশও রয়েছে মন্দির লাগোয়া। কিংবদন্তী, যজ্ঞকালে সমস্ত তীর্থের জলে ত্রবার স্টু কুণ্ডে স্নানে পুণ্য হয়। স্থানীয়রা কুণ্ডের জলে মৃতের অস্থি বিসর্জন দেয়। মন্দিরের পাশে মূচকুণ্ড ওম্মা। আদুরে পথ উঠেছে গিরনার পাহাড়ের।

আর শহরের কেন্দ্রস্থলে দেওয়ান চক্রে রয়েছে ১৯ শতকের নবাবী প্রাসাদ—রঙমহল। সারমেয়-বিলাসী নবাবের ৮০০ কুকুরের জন্য পৃথক পৃথক কক্ষ রয়েছে।

দরবার হলের মিউজিয়মে নবাবী বেভেভ তথা অস্ত্রশস্ত্র, বর্ম, বসন, ভূষণ, হাওদা, সিংহাসন, বিলাসপণ্য, শিলেখানায় অস্ত্রের সম্ভার ছাড়াও রয়েছে নানান নিদর্শন। নবাব পরিবারের প্রতিকৃতির গ্যালারিটিও অনবদ্য। এমনকি সারমেয়দের বিয়ে-শাদিতেও ইতিহাস গড়েছেন নবাব। নবাবের সঙ্গীরাপে তার শ্রিয় সারমেয়দের ছবিও দেখতে মেলে। ৯—১২-১৫ ও ১৫—১৮-০০টায় বুধ, ময় ও ৪র্থ শনিবার ছাড়া দেখে নেওয়া যায়। তবে, আজ সরকারি দপ্তর বসেছে প্রাসাদে। ট্যুরিস্ট অফিসটিও প্রাসাদ লাগোয়া ডাইনে।

জুনাগড় নবাবদের সমাধিক্ষেত্র কারুকার্যময় মহবৎ মকবরারও আর এক দৃষ্টব্য—রূপোর দরজা, জালির কাজ অনবদ্য। রুদ্ধ দ্বার খুলিয়ে ঘোণাঘোঁ সিঁড়িপথে মিনারবেটি দেখে নেওয়া যায়। লাগোয়া মসজিদে চাবি মেলে মনসাবদার।

শহর থেকে ৩৬ কিমি দূরে রাজকোট রোডে ১৮৬৩০৬ নবাবের সৃষ্ট মনোরম উদ্যান শখের বাগও দেখে নেওয়া উচিত হবে। মিউজিয়ম বসেছে—ছবি, প্রত্নতত্ত্ব, পাণ্ডুলিপি, ন্যাচারাল হিস্ট্রি সংগ্রহ উল্লেখ্য। বুধ, ময় ও ৪র্থ শনিবার বন্ধ থাকে মিউজিয়ম। জুনাগড়ের চিডিয়াখানাটিও এই শখের বাগে। গিরের সিংহ, বাঘ, চিতাপাখ উল্লেখ্য। বুধবার টিকিট ছাড়া দর্শন। শহর থেকে ১, ২ ও ৬ রুটের বাস যাচ্ছে।

আর পর্যাপ্ত সময় থাকলে শহরের পূবে ১৫ শতকের মনীষী নরসি মেহেতার সমাধি, উইলিংডন ডাম, মুখোমুখি বিবেকানন্দ উদ্যান তথা নানান ঔষধির ন্যাশানাল পার্ক, দাতার পাহাড়ে মুসলিম তীর্থ তথা কুষ্ঠ রোগের চিকিৎসার জন্য খ্যাত মৌলভি জামেইল শাহর দরগা, সদরবাগের নবাব প্রাসাদে আয়ুর্বেদিক কলেজ তথা মিউজিয়ম, রূপায়তন হাফিৎ ক্রাফটস ইনস্টিটিউট দেখে নেওয়া যেতে পারে। আর আছে রণছোড়জী মন্দির, স্বামী নারায়ণ মন্দির, কৃষ্ণ মন্দির জুনাগড়ে।



থাকার জন্য আছে Junagadh-362001, STD 0285-এ স্টেশন থেকে বেরুতেই ডানহাতি সারদা লজ, DCB ১০০ DAB ১২৫-১৫০ ডর্মিতে ৪০; খাবার পৃথক। আর আছে মুরলীধর লজ, SAB ৮০ DAB ১২৫; এদেরই মুরলীধর গেস্ট হাউস ছাড়াও গীতা লজ, জয়লী গেস্ট হাউস, ট্রিস্টার গেস্ট হাউস, সরকারি রেস্ট হাউস, মনোরঞ্জন রেস্ট হাউস। যাতায়াতে অসুবিধা হলেও Kalwa Chowk—Lake GH, Capital GH—এ কমনবাথের ঘর—মান ও দাম একই। আর আছে H National, SAB ২০০ DAB ৩০০ থেকে। তবে, সবাই আগে রেলের রিটার্নিং কমপ্লেক্সে জুনাগড়ে; ব্যবস্থাপনা ভালই। বাস স্ট্যাণ্ডে আছে H Vaibhav, 31 State Highway, Junagadh-1, S ৮৫-১৫০, D ১৫০-২২৫ A/c D ২৫০-৩৫০; এপথেই আরও যেতে রেল লাইন পেরিয়ে H Anand, DAB ২২৫ A/c ৪৫০। বাস ও রেল থেকে হাঁটা দূরত্বে থাকার পক্ষে অনন্য H Relief, Dhal Rd, 320280, S ১০০-১৭৫ D ২০০-৩২৫ A/c D ৪০০, আহাৰ্বেও সুনাম আছে এদের; Dilaram GH, Panchayet RH, CH, অসু: EE, PWD, Junagadh. আর হয়েছে TCGL-এর H Girmar, Majewadi Darwaja-1, 321201.

DAB ৩৫০ A/c D ৪৫০। আর আছে Majico Do Mar, Ahmedpur Mandvi, Taluka-Una-362510, Dist- Junagadh, 0 (028758) 2216, D ৮০০ A/c Cottage ১৭৫০। জুনাগড় অবস্থানে একান্তই উচিত হবে মিক শেক-এ ফলজাত কেশোর মাঙ্গো ও চিকুর বাদ নেওয়া।

গিরনার পাহাড়: লটারিতে অর্থ তুলে ১৮৮৯—১৯০৮এ তৈরি পথে ৯৯৯৯টি ধাপের সিঁড়িতে ৬০০মি উঠে ১১১৮ মি উঁচু মহাভারতের বৈবতক অর্থাৎ আজকের গিরনার পাহাড়ে চড়া যেতে পারে। পাহাড়ের ৫ চূড়ায় ৫ জৈন মন্দির, ১২ শতকে তৈরি। জৈনদের কাছে খুবই পবিত্র তীর্থ এই গিরনার পাহাড়। মাহায্যে পরেশনাথের পরেই এর স্থান। ভক্তদের মধ্যে অনেকে বিয়ে করে প্রথম আসনে উচ্চতম ৩য় শৃঙ্গ অম্বাজী চূড়ার অম্বা (পার্বতী) মাতার মন্দিরে বিবাহ সুখময় হোক কামনায় কাপড় বাঁধতে। ১৮৯১-৯২এ স্বামী বিবেকানন্দও এসেছেন এই পুণ্যতীর্থে। আকারে বৃহত্তম আর বয়সে প্রাচীনতম রাজা সাম্প্রতের তৈরি ১২ শতকের নেমিনাথ মন্দিরে কালো পাথরের ২২তম তীর্থঙ্কর নেমিনাথের মূর্তি হয়েছে। ৭০টি কুঁঠুরি রয়েছে মন্দির চত্বরে। পাশেই ১১৭৭এ তৈরি খোলা হলে মণিমুক্তা-খচিত ১৯তম তীর্থঙ্কর মলিনাথের মূর্তি। রাজা কুমারপালের তৈরি অভিনন্দন প্রভুর মন্দির, সহস্র ফণার পার্শ্বনাথ মন্দির ছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান গিরনারে। তেমনই আছে ৪র্থ শৃঙ্গে গুরু গোরক্ষনাথ আর ৫ম শৃঙ্গে গুরু দত্তব্রহ্মের পায়েয় ছাপ। কার্তিক পূর্ণিমার উৎসবে দূর-দূরান্ত থেকে আসেন সাধু-সন্তের দল। দামোদর কুণ্ড রেখে ২ কিমি দূরে পথ উঠেছে গিরনার পাহাড়ে। ৩ বা ৪ রুটের বাসও যাচ্ছে ঘণ্টায় ঘণ্টায়। GPO থেকেও বাস মেলে ৫-০০, ৬-০০, ৭-০০টায়। অটোও মেলে শহর থেকে। ভোর থেকেই পাহাড় চড়া শুরু। মাঝে মাঝে বিশ্রাম নেবার ব্যবস্থাও মেলে পাহাড়ী বনপথে। দোকান পাটও বসছে সিঁড়িপথে—আহার্যও মেলে। ঘণ্টা তিনেকের পথ। ডাঙি আর চেয়ারও ভাড়ায় মেলে পাহাড় চড়তে। থাকার ব্যবস্থা আছে মন্দিরের ধরমশালায়। আর আছে শিবমন্দির পাহাড়তলীতে; ৫ দিন ব্যাপী উৎসব হয় মহাশিবরাত্রিতে। তেমনই মাঘ মাসের ভাবনাথ ফেয়ারেরও আকর্ষণ আছে পর্যটক মহলে। গুজরাতি লোকসঙ্গীতের সঙ্গে লোকনৃত্য দেখে নেওয়া যায় উৎসবে।

গির অরণ্য

পূর্বদিন সকাল ৬-২০এ জুনাগড় থেকে ডেলওয়াদা প্যাসেঞ্জারে ৭-৫৩য় ভিসাভাধার পৌঁছে ৭-৫৬য় জেটালসর-দেলওয়াদা প্যা বা ১০-৩৪এর বিজাদিয়া-ডেরাবল প্যাসেঞ্জারে যথাক্রমে ৯-০৬/১১-৪৫এ শাসনগিরি চলুন। দূরত্ব ৭৩ কিমি জুনাগড় থেকে কেশদ হয়ে গিরের। ডেরাবল-বিজাদিয়া শাখায় মধ্যবর্তী স্টেশন এই শাসনগিরি। ৪৩ কিমি দূরের ডেরাবল থেকে ৮-৪০, ১৪-০০টায় ছেড়ে ১৬ ঘণ্টায় ট্রেন আসছে গিরে। বাসও

যাচ্ছে ৮-৪৫, ১০-০০, ১২-৩০, ১৩-৩০এ জুনাগড় থেকে শাসনগির হয়ে ভেরাবল। শেয়ার টার্মিও মেলে এখানে। রাজকোট হয়ে আমোদাবাদের দূরত্ব ৪০০, মুম্বাই ৮৮২ কিমি। NEPC-র নিকটতম বিমান সার্ভিস জুনাগড়ের কেশোদে। আর IAC-র রাজকোটে। বিকেল তিনটোর মধ্যে গিরে পৌছান। টেনিশের পিছনে ১০ মিনিটের পক্ষে *Sinh Sadan Forest L, D ২০০ A/C D ৪০০-৬০০*, থাকার সুব্যবস্থা; আহার্যও মেলে পৃথক মূল্যে। লজের আর এক আকর্ষণ প্রতি সন্ধ্যা সাতটায় অরণ্য বিষয়ক ফিল্ম শো। অব: Sanctuary Superintendent, Sasan Gir-362135, Gujarat; অঙ্গুরে নদীর কিনারে * TCGL-র *Lion Safari L, Sasan Gir-362135, Q 21, R1, DAB ৩৫০* চার বেডের ঘরে ডর্মি প্রথায় বেড ৫০ A/C D ৫৫০, খাবার পৃথক; অব: মানেজার।

৫-০০ ও ১৫-০০টায় বুকিং শুরু হয় অরণ্য সফারির। টিকিট ও পারমিট মেলে। বনদপ্তরের অফিসটিও ফরেস্ট বাংলায়ে। ১ থেকে ৮ দশকদলের গাইড-চার্জ ১৫০, ৮-এর বেশি হলে জনা প্রতি ১৫ হারে। একক যাত্রায় ৭-১০-০০ ও ১৬-১৮-৩০টায় ৬ যাত্রীর জিপ মেলে কিমি প্রতি ৮ ভাড়া। এছাড়া কামেরা ও গাড়ির মান হারে টোল লাগে বনবিহারে। উচিত হবে সকালের জিপ সফারিতে ৩০-৫০ কিমি পরিক্রমায় বিহার করে নেওয়া। আবার ২ দিনের প্যাকেজ ট্যুরেও গির বেড়াবার ব্যবস্থা আছে Asst Director of Information, Rang-Mahal, Junagadh থেকে।

গিরের নতুন সংযোজন কুমির প্রকল্পটিও ইতিমধ্যেই পর্যটকপ্রিয় হয়ে পড়েছে। কুমিরে আকর্ষণ কমলেশ্বর লেকে বনচররও আসে জল থেকে। শাসন থেকে ৯৬ কিমি গির-অন্দরে তুলসীশ্যাম হট স্প্রিং-এ নানের সাথে ভীম ও কুন্তী মন্দির বেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাঙ্গসাহীরা। তবে, সহজতম পথ উনা হয়ে গিয়েছে তুলসীশ্যামে। TCGL-এর *Toran Tourist Camp*-এ ডর্মি প্রথায় থাকা; *প্রাইভেট হোটেল, ধরমশালা*ও আছে তুলসীশ্যামে।

বিকেল পাঁচটায় বনবিভাগের গাড়ি যাত্রী নিয়ে সিংহ দর্শনে যাচ্ছে। ১৯৬৯এ ১৫১৬ বর্গ কিমি জুড়ে এই সংরক্ষিত অরণ্য রূপ পেয়েছে। তবে, উত্তরকালে আয়তন বেড়ে ৫০০০ বর্গ কিমি হলেও কোর এলাকা তার ১৪৩২ বর্গ কিমি। এশিয়ান মধ্যে একমাত্র গিরেই সিংহ আছে। মে ১৩-১৯, ১৯৯৫-এর সেনসাস মতে ৩০৪টি সিংহ ঘর-সংসার পেতে বসেছে ১৫৭ মি উঁচু গিরে। আর চিতার সংখ্যা ২৬৮ গির অরণ্যে। এছাড়া প্যাছার, হায়েনা, চিতল, বন্য গুয়ার, শম্বর, নীলগাই (চার শিঙের অ্যান্টিলোপ), চিল্লারা মনের আনন্দে অবধা বিচরণ করে গিরে। তেমনই তোতা পাখি, মধুর, বাদরও দেখতে মেলে গির অরণ্যে। অবধ্য এরা। চলার পথে এদের দর্শন মেলা অস্বাভাবিক নয়। জন-কোলাহলকে ভয় পায় এরা। তাই উত্তেজনা বশে রেখে নীরবে গাড়িতে চলাই উচিত হবে।

আপনাকে অভিনবভাবে সিংহ দেখাবে গাইডরা। সিংহের অবস্থান বুঝতে পারে এরা। তাই স্বচ্ছন্দে ব্যুহ গড়ে সিংহকে বশে আনে গাইডরা। সামান্য দূরত্ব থেকে পশু-রাজকে দেখিয়ে দেয় দর্শকদের। তবে কেন যেন মন ভরে না

এই সিংহ দর্শনে। আর উচিত হবে রিসেপশন সেন্টারের কাছে ফরেস্ট মিউজিয়মে গির অরণ্যের নানান কিছু দেখে নেওয়া।

সিংহ দেখার পক্ষে মার্চ থেকে মে মাসের ভোর বা সন্ধ্যা মনোরম হলেও অক্টোবরের শেষ থেকে মে মাসের মধ্যভাগে খোলা থাকে গির অরণ্য। প্রতিদিন ৬-৩০-১১-০০ আবার ১৫-১৭-০০টায় খোলা থাকে গিরের প্রবেশদ্বার। গ্রীষ্মে ৩৩-৪৩° আর শীতে ৭-১৫° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। তবে অতিবৃষ্টি হেতু সময়ে তারতম্য ঘটা অস্বাভাবিক নয়। বর্ষাকালে অরণ্যে ঢোকা দুর্লভ। সময় স্বল্পতায় সিংহ দেখে ১৭-১৩র ট্রেনে জেটালসর বা একই ট্রেনে ভিসাভাধার ফিরে জুনাগড়; ১০-৩২ বা ১৫-৩৯-এর ট্রেনে খিজাদিয়া; ৯-০৬, ১১-৪৫, ১৫-৪৪এর ট্রেনে ঘণ্টা দু'য়েকে ভেরাবল পৌঁছে সোমনাথ চলা যেতে পারে। তবে, অরণ্যের মাঝে ডাকবাংলোয় রাত্রি যাপনে একটা অভিনব রোমাঞ্চ আছে। একরাত গিরে কাটিয়ে পরদিন সকাল ৯-০৬এর ট্রেনে ভেরাবল অর্থাৎ সোমনাথ বা ১০-৩২এর ট্রেনে ভিসাভাধার হয়ে জুনাগড় চলা যেতে পারে। তবে সোমনাথ যাত্রীদের বাসে চলায় সুবিধা। সরাসরি বাসও মেলে সোমনাথের।

চোরবাদ

আমোদাবাদ-জুনাগড়-ভেরাবল রেলপথে ভেরাবল থেকে ১৯ কিমি দূরে চোরবাদ রোড। চোরবাদ রেল স্টেশন থেকে ৮, কেশোদ বিমান বন্দর থেকে ৩৫ আর সোমনাথ থেকে ৩৬ কিমি দূরে ঝাউ আর নারকেল বাঁধিকায় ছাওয়া শান্ত-সুনিবিড় মনোরম বেলাভূমি চোরবাদও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। সরাসরি বাস যাচ্ছে সকাল-বিকাল ভেরাবল থেকে। বাস ও রেল আসছে ৭৮ কিমি দূরের জুনাগড় থেকে সাগরবেলায়। পোরবন্দরের দূরত্ব ১১০, গির ৭০ কিমি। আবার সোমনাথ থেকেও নানান বাসে সোমনাথ-পোরবন্দর-হারকা জাতীয় সড়কে ভেরাবল/গুণ্ডা হয়ে চোরবাদ মোড়ে পৌঁছেও অটোর চলা যেতে পারে ৫ কিমি দূরের সাগরবেলায়। শেষারে অটোও যাচ্ছে ভেরাবল বাস স্ট্যান্ড থেকে ৩০ কিমি দূরের চোরবাদে। উচিত হবে সোমনাথ থেকে দিনভব প্রোগামে চোরবাদ বেড়িয়ে ফেরা।

৫ কিমি দীর্ঘ সাগরবেলা। সারি দিয়ে দাঁড়িয়ে প্যালেস রিসর্ট। পশ্চিম জুড়ে কালো কালো পাথরখণ্ড। নীল সমুদ্রের সঙ্গে নীল আকাশ মিলেমিশে একাকার। সন্ফেন টেউ এসে আছে পড়ে রকি শোরে। সারি দিয়ে নারকেল আর পাম গাছে ছাওয়া ১৯২৮এ জুনাগড়ের নবাবের গড়া চোরবাদ ছাওয়া মহল তথা সামার প্যালেস। উত্তরে শিবমন্দির। পশ্চিমদিকে সমাধি রয়েছে নানান। সবার উপরে রয়েছে বর্ণময় সুবাসিত চোরবাদে।

থাকার জন্য ১৯২০এ গড়া জুনাগড় নবাবদের গ্রীষ্মাবাসে TCGL-এর *Palace Beach Resort, Chorwad-362250, Q (028768) 8558*; মূল প্রাসাদ *Royal Annexes D ৫০০, উপ-প্রাসাদ D ৩৭৫ কটেজ D ৩৭৫; Annexy General D ২০০, Sugarwada D ২০০* ছয় বেডের ডর্মিতে ৫০ প্রতিজনা। আহার্য পৃথক মূল্যে।

অত্যাংশহীরা চোরবাদ থেকে ১২০ আর দিউ-এর ১০ কিমি দূরে দিউ ও গুজরাত সীমান্ত জুড়ে আমেদপুর মাণ্ডভীর মনোরম বেলাভূমিটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে। গুজরাত ও দিউ—দুইয়ের সীমান্ত মিলেমিশে একাকার। জনশ্রুতি, অবস্থান মাহায়ে আফ্রিকার কেনিয়া-ইথিওপিয়া-সোমালিয়া থেকে আসা বাতাস বয় মাণ্ডভীর সাগরবেলায়। পামে ছাওয়া সাগরবেলা—বালির রঙ গোলাপী। ১৫ অক্টোবর থেকে ১৫ জুন নানানধর্মী ওয়াটার স্পোর্টসের ব্যবস্থা মেলে। বাস আসছে ৪১০ কিমি দূরের আমেদাবাদ থেকেও বেলাভূমে।



থাকারও ব্যবস্থা মেলে PWDর GH, জুনাগড় নবাবদের আর এক প্রাসাদ GTDCর Samudra Beach Resort, Ahmedpur Mandvi, via-Una, Dist-Junagadh, Pin-362510, ☎ (028758) 4216, D ৭৫০ A/C D ১১০০ চার বেডের কটেজ ২০০০ ডর্মি বেড ২০০। তবে, রিসোর্ট প্রাইভেট লিজে প্রাক্তন ক্রিকেটার ব্রিজেশ প্যাটেলের ব্যবস্থাপনায় চলছে। লাগোয়া কেন্দ্রশাসিত দিউ-এর যোথলায় আছে দিউ ট্যুরিজমের Tourist Complex-এ VIP সুইট ৪৫০ A/C D ৩৫০। ১৭৫ ছয় বেডের ঘর ৪০০, অব: দিউ ট্যুরিজম, মেরিন হাউস, দিউ-362520, ☎ (028758) 2653.

সোমনাথ



শাসনগির থেকে এক ঘণ্টার পথে ভেরাবল। সোমনাথের রেল-সংযোগকারী স্টেশনও এই ভেরাবল। গির থেকে সারাসরি বাস আসছে সোমনাথে। ২১-২৫-এ আমেদাবাদ ছেড়ে আসা ৭৭৪৬ গিরনার এক্স, ২৩-০০টায ৭৭২৪ সোমনাথ মেল ভেরাবল পৌঁছায় পরদিন ৮-১০/১১-০৫এ। ট্রেন আছে বোটাড, খোলা, জেটলসর, জুনাগড়, চোরবাদ হয়ে। ভেরাবল জং থেকে মন্দির তীর্থ সোমনাথের দূরত্ব আরও ৬ কিমি। মুম্বই GSRTC-র বাস, অটো, টাক্সা, ট্যাক্সিতে সোমনাথ চলুন। কলকাতা যাত্রীদের সরাসরি সোমনাথ যেতে আমেদাবাদ থেকে সোমনাথ মেলে চলাই সুবিধার, রিজার্ভেশনও মেলে সোমনাথ মেলে। ট্রেন আসছে রাজকোট থেকেও ১১-১০এ ৭৪৩৪ ভেরাবল মেল, ১৪-৪০এ ৩৪৪ ফাস্ট প্যাসেঞ্জার ৫ই ঘণ্টায় ভেরাবলে। ট্রেন যাচ্ছে দিউ-র যাত্রী নিয়ে ১৫-০০এ ভেরাবল ছেড়ে ডালালা/উনা হয়ে দেলাওয়ালা প্যাসেঞ্জার। NEPC-র নিকটতম বিমান ৫২ কিমি দূরে জুনাগড়ের কেশোদ।



আর, বাস যাচ্ছে রাজ্যের দিগ্বিদিকে ভেরাবল হয়ে সোমনাথ থেকে। বাস যাচ্ছে—অম্বাজী ৫-৩০; উনা ৭-১৫, ৯-১৫, ১০-০০, ১২-১৫, ১৪-১৫, ১৬-০০, ১৮-০০; দিউ ১০-০০; জামনগর ৫-৪৫, ১৪-৩০, ১৯-০০, ২০-৩০; রাজকোট ১১-০০, ১২-৩০; পোরবন্দর ৭-৩০, ৮-০০, ১১-০০, ১৩-৪৫, ১৫-৫৫, ১৮-৩০; ঝারকা ৭-০০, ১০-০৫, ১০-৪৫, ১৪-০৫, ১৪-৩০; আমেদাবাদ ৬-৩০, ৭-৪৫, ৯-০০, ১০-৩০, ১১-১৫, ২২-০০; সুরাট ১৩-৩০ ছাড়াও রাজ্যের নানান দিকে। দূরত্ব সোমনাথ থেকে দিউ ৮৪, গির ৪৬, ঝারকা ২৫০, পোরবন্দর ১২২, আমেদাবাদ ৪১৬, রাজকোট ২০০ কিমি।



মন্দিরকে নিয়ে সোমনাথ শহর আরব সাগরের বুক গড়ে উঠেছে। বাস স্ট্যান্ড তথা মন্দিরকে ঘিরে বি-শতাধিক ঘরের Sri Somnath Temple Trust-এ DAB ৩০ TAB ৪০ ২ সেটের সুইট ৬০ ৯ সেটের সুইট ১৫০ থাকার পক্ষে ভালই। আর রয়েছে মন্দির কমিটির ধরমশালা, প্রশস্ত ঘর ২০ ৮০ ১২০ করে। বিছানা ভাড়ায় মেলে। খাবারের ব্যবস্থাও আছে মন্দির কমিটির—আধা ও পুরা মিলের। এছাড়া জেলা পঞ্চায়েতের পঞ্চিকাশ্রম-এ খাটসহ ঘর মেলে। বেশ কয়েকটি প্রাইভেট লঙ্ঘও হয়েছে সোমনাথে। মন্দিরের পার্শ্বেই প্রভাস গেস্ট হাউস; বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Mayuran, Triveni Rd, DAB ২০০ TAB ২৫০; থাকার পক্ষে ভালই। আর আছে ডাটিয়া, সিংধানিয়া, গোবর্ধন ভবন, সংকার ছাড়াও নানান ধরমশালা সোমনাথে। বাস স্ট্যান্ডের পূর্বে ব্রহ্মশক্তির প্রশস্তি আছে আহার্যে। তেমনই রাম ভরসার আহার্যেও ভরসা রাখা যেতে পারে। ভবু আগে থেকে মন্দির কমিটির রেস্ট হাউসে ঘর বুক করে যাওয়াই উচিত হবে। অব: Manager, Somnath Temple Trust, Prabhas Patan-362268.

আর ভেরাবলে আছে—লাইট হাউসের কাছে সার্কিট হাউস; কলেজ রোডে TCGL-এর Toran H H, ☎ (07676) 20488, Veraval-362266, D ২০০ চার বেডের ঘর ১৫০ ছয় বেডের ঘর ২০০ ডর্মি ৩০; সৃষ্টিও সুন্দর দৃশ্যমান তোরণ থেকে। আর আছে H Shivam, DAB ২০০ TAB ২৫০ FAB ৩০০; H Park, Veraval-Junagadh Rd, R5, ☎ 22701, DAB ৬০০ A/C D ৮৫০ সুইট ১০০০; বাস স্ট্যান্ডের কাছে Satkar H, H Minaxi, Chetna, Arun Griha, H Moon, Ajanta GH. রেল স্টেশনে Chandrani GH, Sri Niwas GH; H Supreme, La Bela L, Liberty RH ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল। এদের রেট S ৪৫-৮৫ D ১০০-১৭৫ T ১৫০-২৫০ A/C S ৩০০-৪৫০ D ৩৫০-৬০০। আর আছে ধরমশালা, রেলের রিটার্নিং রুম ভেরাবলে। আমিষ আহার্যও মেলে ভেরাবলের হোটেল। আহারে বাস স্টেশনে সংকার, রেল স্টেশনে নিউ অঙ্গরা ভালই। তবে, শিক্ষাকেন্দ্রিক বাণিজ্যিক শহর ভেরাবল; অতীতের বন্দর-নগরী আজ হয়েছে মৎস্য-নগরী। সুরাটেরও আগে মন্ডা যাত্রায় ভেরাবলই ছিল নানা বন্দর। তবে, কারণে জাহাজ আজও যাচ্ছে মধ্য প্রাচ্যের নানান দেশে। শুটকি মাছ ভেরাবলের ঘরোয়া শিল্প। সারা ভেরাবলের আকাশে-বাতাসে গন্ধও মিশে রয়েছে শুটকি মাছের। তেমনই গুয়ারেরও আধিক্য ভেরাবলে। শ'তিনেক বাঙালি পরিবার কর্তব্যপন্থে ভেরাবলে বাস গড়েছেন। বাঙালির দুর্গা পূজাও হচ্ছে মহাখুমখামে বঙ্গলি অ্যাসোসিয়েশনের উদ্যোগে ভেরাবলে।

সোমনাথ আজকের নয়। মার্কে পোলোর ভারত বিবরণীতে সোমনাথের উল্লেখ মেলে। প্রশস্তি গেয়েছেন আরব্য ঐতিহাসিক আল বিরুণীও সোমনাথ মন্দির-এর। সত্যযুগে মন্দির ছিল সোনায় তৈরি, ত্রেতাযুগে রামায়ণের কালে লঙ্কার রাজা রাবণ গড়েন রূপা দিয়ে মন্দির; দ্বাপরে মহা-ভারতের কালে চন্দন কাঠের মন্দির করেন শ্রীকৃষ্ণ। আর কলি অর্থাৎ একালে মন্দির হয়েছে মর্মের ভীমসেবের হাতে। ৩০০ সঙ্গীতজ্ঞ, ৫০০ নর্তকী ছিল সেকালে দেব-মন্দিরে। ২০০০ পুরোহিত ছিলেন পূজার্চনার রত, পুরোহিতদের মন্তক মৃণ্মনের জন্য ৩০০ পরামাশিক; গঙ্গা থেকে জল আর কাম্বীর

থেকে ফুল এসেছে দেব-অর্চনায় সোমনাথে। ভারতের অন্যতম পবিত্র তীর্থতথা সম্পাদশালী মন্দিরও ছিল ৬ শতকে সোমনাথ।

গজনারী সুলতান মামুদ ১০২৬এ আঘাত হানেন সোমনাথে। ২ দিনের যুদ্ধে মন্দির ধ্বংস হয়, লুণ্ঠন করে সঙ্গে নেন এর ধনরত্ন তথা নানান সম্পদ মামুদ। জনহুঁসি, সোনার শিবলিঙ্গটি চার টুকরো হয়ে এক টুকরো মন্দির, এক টুকরো মদিনায়, দু'টুকরো গজনারীতে যায় তার সঙ্গে। এমনকি চন্দন কাঠের দরজাটিও সঙ্গে যায় মামুদের। বার বার ৫/৭ বার অক্রান্ত হয়েছে সোমনাথ মন্দির মুসলিম হানাদারদের হাতে। বিধ্বস্ত করেছে (১০২৬, ১২৯৭, ১৩৯৪, ১৭০৬) মন্দির, চূর্ণ হয়েছেন দেবতা। তবুও আনাদিকাল থেকে দেব মাহাত্ম্য অমলিন আজও। ১৭০৬এ দিল্লীর বাদশা গুরুজগৎজের হাতে পঞ্চমবার বিনষ্টের পর দীর্ঘ ব্যবধানে ১৯৪৭এর ১২ই মে সদর ব্রহ্মভাই প্যাটেলের প্রস্তাবনা মতো ১৯৫০এর ৮ই মে সাগর পারে অতীতের মূল মন্দিরের স্থানে বেলে পাথরের আদি ব্রহ্মশীলার উপর নতুন করে গড়ে উঠেছে ভাঙ্কের মন্দির। নাম তার মহামেষ্টি। স্থপতি সি সি সোমপুরা। সুন্দর ভাস্কর্যময় মন্দির। রূপোর দরজা। দেবতা প্রতিষ্ঠা পেয়েছেন উক্তর রাজেন্দ্রপ্রসাদেব হাতে ১৯৫১র ১২ই মে। দ্বাদশ জ্যোতির্লিংগের অন্যতম আর বৃহত্তম শিবলিঙ্গের (হয়ঙ) সঙ্গে বিগ্রহ হয়েছে (রূপোয়) দেবতা সোমেশ্বর মহাদেবের। শিরে ছত্রাকারে ফণা তুলে সর্পরাজ। আয়না দেখুন প্রতিবিম্বে—বামে মহিষাসুর মর্দিনী, ডাইনে সূর্যদেব। তাদের মাঝে মর্মরে দেওয়াল গায়ে দেবতা বিষ্ণু, ডাইনে নারায়ণ; বামে ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর। এখানকার পূজা পদ্ধতিতেও বৈচিত্র্য আছে। দেবতা সাধারণের ধরা-ছোঁয়ার বাইরে। দূর থেকেই দেবদর্শন সাজ করতে হয়। ১১, ২১, ৩১, ৫১, ১২১ টাকার পুজোয় প্রসাদ মেলে। সকাল ৭টা, দুপুর ১২টা, সন্ধ্যা ১৯-০০টায় আরতি দর্শনীয়। আর দ্বিতল ও ত্রিতল ছবিতে প্রদর্শিত হয়েছে অতীত সোমনাথ। সকাল ৬—২১-৩০টায় খোলা থাকে মন্দির।

পূরান মন্দিরগুলির আজ আর কোনো অস্তিত্ব নেই। কারুকার্যের কিছু নিদর্শন পাণের প্রভাস পাটন মিউজিয়মে স্থান পেয়েছে। এমনকি সাত সাগরের (Danube, Nile, St Lawrence, Tigris, Muray, Hobart, Newzealand-এর সমুদ্র) জলও স্থান পেয়েছে সংগ্রহে। বৃহৎ ছুটি ছাড়া ৯—১২-০০ আবার ১৫—১৭-৩০টায় খোলা। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে উত্তাল আরব সাগর। ডেউয়ের পর ডেউ এসে আছড়ে পড়ছে বেলাভূমি ধূয়ে মন্দিরের দেওয়ালে। এ দৃশ্যও নয়নাভিরাম। মন্দিরের প্রবেশ দিগ্বিজয় গেটে। প্রবেশ ঘােরে মূর্তি হয়েছে সদর ব্রহ্মভাই প্যাটেলের (১৮৭৫—১৯৫০)। তার পিছে ১৭৮৩তে অহল্যাবায়ীরের গড়া মন্দিরের স্মারকরূপে দ্বিতল মন্দির হয়েছে নতুন করে। নাম তার পুরাতন মন্দির। পাতালের গর্ভগৃহে সৌম্য পরিবেশে বিশাল সোমনাথ—

সাদা গৌরীপট্টে কালা শিবলিঙ্গ, সামনে সফেদ রঙা বাহন নন্দী। আর উপরে অহলেশ্বর শিব। পূজা হয় আজও। এছাড়া ১২ শতকের পার্বতী মন্দির, হমীরজী লাঠিয়ার দেবী, গজেন্দ্রপূর্ণ প্রাসাদ তথা চন্দ্রপ্রভ জৈন মন্দির ছাড়াও বেশ কয়েকটি মন্দির রয়েছে সোমনাথকে ঘিরে। কার্তিক পূর্ণিমা ও মহাশিবরাত্রি সোমনাথের অনন্য উৎসব।

অতীতে শহরের প্রবেশ ছিল জুনাগড় গেটে, সুলতান মামুদের হাতে বিধ্বস্ত হলেও ১ কিমি শহরমুখী যেতে দ্বিতীয় গেটে হিন্দুর দেবতা সূর্যমন্দিরের মসজিদে রূপান্তর আজও দৃশ্যমান। পরিবর্তন ঘটে মামুদের কালে। সহস্রাব্দিক সমাধিও রয়েছে মসজিদ চত্বরে। বাজার চত্বরের জুমা মসজিদটিও নানান হিন্দু মন্দিরের উপকরণ নিয়ে মামুদের গড়া। নানান মন্দিরের সংগ্রহ নিয়ে মিউজিয়ামও বসেছে সোমনাথে।

মন্দির থেকে পথ গিয়েছে ত্রিবেণী রোড—পায়ে হাঁটা ডানহাতি পথ। বাউ বাঁধিকার বন পেকতেই ডাইনে পড়বে পরশুরামের তপোভূমি। কুণ্ডও হয়েছে প্রভাস সলিলে। বিপ-ধীতে মহাপ্রস্থান। সুন্দর পরিবেশ। সামনে এওতেই বামহাতি শঙ্করাচার্যর মন্দির। আদি শঙ্করাচার্যর প্রতিষ্ঠিত চার মঠের এক—সারদা মঠ। নৃসিংহনাথ, শঙ্করাচার্য, দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গ ছাড়াও নানান দেবতার সমাবেশ ঘটেছে। বাঁয়ে পথ গিয়েছে প্রাচীনতম সূর্য মন্দির-এ। মন্দিরে রয়েছেন সূর্যদেব ও ক্রী সংজ্ঞাদেবী। পথের বিপরীতে নদী সরস্বতী দৃশ্যমান হলেও মিলন ঘটেছে কপিলা ও হিরণ্যের মিলিত ধারাব সঙ্গে। নানো তাই ত্রিবেণী সঙ্গম বা প্রভাস তীর্থ। মানে পূণ্য হয়। পুরাণ বলে, পঞ্চপাতিত্বের লোকে দুষ্ট সোম অর্থাৎ চন্দ্র যখন ঋগুর প্রজাপতির শাপে নিপ্ত হইয়ে পড়েন তখন আধার দক্ষেরই পরামর্শে চন্দ্র এই সঙ্গমে এসে স্নান করে শিবের আরাধনায় বসেন। তুষ্ট হন শিব। চন্দ্র তার জ্যোতির্ম্মরে পান। সেই থেকে নাম হয়েছে এর সোমনাথ পাটন বা প্রভাস পাটন। আর ব্রহ্মার নির্দেশে মন্দির গড়েন সোম সোমনাথের। পাশেই পাণ্ডব গুহ। শ্রীমদ্ভাগবতে মেলে, মহাশ্মা বিদ্রুণও প্রভাস-তীর্থে নিজ দেহ বিসর্জন দেন। এমনকি বনবাসকালে যুধিষ্ঠিরও এসেছেন—তর্পণ ও তপস্যা করেছেন প্রভাসতীর্থে।

এবার পথের শেষ গাঁতা ভবন-এ। অতীতে এই জায়গা ছিল জঙ্গলাকীর্ণ। শ্রীকৃষ্ণ একদা বৃক্ষশাখায় বসে বিশ্রাম-রত। এমন সময় দূর থেকে জরা নামে এক ব্যাধ হরিণ ভ্রমে তীর ছোঁড়ে। তীর বেঁধে শ্রীকৃষ্ণর পায়ে। আর তাতেই মারা যান শ্রীকৃষ্ণ। বৃষ্টি আজও কালের বেড়া জাল পেরিয়ে দাঁড়িয়ে। বেদী করে ঘিরে রাখা হয়েছে। তবে, দ্বিমতে, ভালুকাতে তীরবিদ্ধ শ্রীকৃষ্ণকে স্বর্গের দেবতার। নিয়ে আসেন, আর শেষ নিশ্বাস ফেলেন এখানে শ্রীকৃষ্ণ। দাহ করেন অর্জুন, শ্রীকৃষ্ণ ও বলরামকে ত্রিবেণী ঘাটে। সেই স্মৃতিতে দেহোৎসব বেদী। সামনেই হিরণ্য নদী। কালে কালে গড়ে উঠেছে গাঁতা মন্দির—খ্যেত মর্মরের মন্দিরে দেবতা লক্ষ্মী-নারায়ণ, পাশেই বলরাম মন্দির, নাগস্থান, ব্রহ্মভাচার্য

তথা মহাপ্রভুজীর বৈঠক ছাড়াও নানান মন্দির। একটি গুহাপথও এসেছে পরশুরামের তপোভূমির সামনে থেকে গীতা মন্দিরে। লোকশ্রুতি, এই গুহাপথ দিয়েই হানাদারদের হাত থেকে মন্দিরের ধনরত্ন রক্ষার চেষ্টা হয়েছিল।

পুরোটিই পায়ে হেঁটে দেখে নেওয়া ভাল ঘটনা ৩/৪ সময়ে। অটো/টাঙাও মেলে ৬০/৫০ টাকার চুক্তিতে। সোমনাথ থেকে কোদিনার ৪০৮ কিলোমিটার ৩৭ হায়ে বাসে বাসে কেশ্রপাসিত দিউ বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে উৎসাহীদের। শ'হুয়েক টাকায় ট্যাক্সিতে সোমনাথ থেকে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায় দিউ। দূরত্ব ৮৭ কিমি।

সোমনাথ-ভেরাবলের মাঝপথে মহাভারতের কাম্যক-বন তথা ভালুকাতে গড়ে উঠেছে ভালুকা তীর্থমন্দির। সোমনাথ থেকে ভেরাবলের পথে টাউন বাস, অটো বা টাঙায় দেখে নেওয়া যায় এই কৃষ্ণমন্দির। কৌরবমাতা গান্ধারী তথা নানান মূর্তি-ঋষির শাপে যদুবংশ ধ্বংস পেতে শ্রীকৃষ্ণও এসেছেন প্রভাস তীর্থে। কিংবদন্তী, একদা বিশ্রামরত শ্রীকৃষ্ণ এখানেই তীরবিদ্ধ হন জরা ব্যাধের হাতে। মূর্তিও হয়েছে ব্যাধ ও শ্রীকৃষ্ণের। আর রয়েছে কুণ্ড। শুক্লা দ্বাদশীতে স্নানে স্বর্গবাস হয়। তীরবিদ্ধ শ্রীকৃষ্ণ রক্তাক্ত চরণ ধুয়েছিলেন এখানে। তাই পদমুকুণ্ডও বলা হয়ে থাকে একে। পূর্ণাবর্ষিত কিংবদন্তীর তিন নদীর অভাব ভালুকায়; সাবুজা মেলে প্রভাস তীর্থের সাথে।

পোরবন্দর

সোমনাথ থেকে বাসে চলুন ১২২ কিমি দূরের পোরবন্দরে। ঘটটা চারেকের পথ। আর ট্রেন যাকে ব্রডগেজ রেলো মুম্বাই থেকে আসা ৯২১৫ সৌরাষ্ট্র এক্স ২৩-৩৫এ আমেদাবাদ, ১-৫০এ রাজকোট পৌঁছে ৩-২৫এ হাপা ছেড়ে পোরবন্দর যাচ্ছে ৬-৩৫এ। রাজকোট থেকে আসছে ৬ ঘটায় ১৩-১৫য় ছেড়ে হাপা-জামনগর হয়ে ফাস্ট প্যাসেঞ্জার। এছাড়া রাজ্য পরিবহণের বাস যাচ্ছে দ্বারকা, জামনগর, রাজকোট, ভেরাবল, দিউ ছাড়াও রাজ্যের নানান শহরে পোরবন্দর থেকে। প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে সারা পশ্চিমে। NEPC Airlines ২৭ দিন পোরবন্দর-মুম্বাই-চেন্নাই-ব্যাঙ্গালোর-ওরঙ্গাবাদ সার্ভিস গড়েছে। আমেদাবাদ থেকে ৪৭৫, কোশা ১০৭ আর কলকাতা থেকে ২৫৬৪ কিমি দূরে পোরবন্দর।

সৌরাষ্ট্রের এক স্বাধীন দেশীয় রাজ্য পোরবন্দর—শুধু নামে নয় আসলেও বন্দর এক। বন্দরের জেটিঘাটটির (Wharf) আধুনিকীকরণ হয়েছে। অতীতকালে সুদূর পারস্য উপসাগর ও আফ্রিকার সঙ্গে বাণিজ্যিক লেনদেন ছিল। আরব সাগরের বুকে অতি আধুনিক বাণিজ্যিক শহর এই পোরবন্দর। সমুদ্রের বেলাভূমিটিও মনোরম। রাত্তাঘাট খুবই সুন্দর। শহর প্রসারের মূলে রয়েছে জাতির জনক বিশ্বে শতকের শাস্তির দূত মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধীর জন্ম। তবে, অতীতে কৃষ্ণ-সখা সুদামার নামে নাম ছিল এর সুদামাপুরী। আজ সিমেন্ট, রাসায়নিক ও বয়ন শিল্পগরীর রূপ পচ্ছে।

স্বপ্ন সঙ্গী : ৯৭-৯৮/৩৬

শুটকি মাছ হচ্ছে পোরবন্দরে। গন্ধও মেলে তার পোরবন্দরের আকাশে বাতাসে।

১৮৬৯ খ্রিস্টাব্দের ২রা অক্টোবর যে বাড়িতে গান্ধীজীর জন্ম হয় তাকে অক্ষত রেখে নতুন করে গড়ে তোলা হয়েছে কীর্তিমন্দির। গান্ধীজীর জন্মস্থান (যান্ত্রিক চিকিৎসা), রিডিং রুম, শয়নঘর, সবেই পুরাতন অবস্থাকে অক্ষত ধরে রাখা হয়েছে। নানাজী কালিদাসের তৈরি নতুন মন্দিরটির উচ্চতা ৭৯ ফুট—গান্ধীজীর মৃত্যুকালীন বয়স ৭৯-কেন্দ্রীয় করায়। প্রতি সন্ধ্যায় ৭৯টি বাতিও জ্বালানো হয় মন্দিরে। প্রবেশ দ্বারের চারপাশের দেওয়ালে গান্ধীজীর জীবনের নানান আখ্যান খোদিত হয়েছে। আর হয়েছে গান্ধীজী বিষয়ক লাইব্রেরি, চরকাঘর, ছোটদের স্কুল, উপাসনা গৃহ। প্রতিটিই পর্যটকদের কাছে উন্মুক্ত।

কীর্তিমন্দিরের পথে শ্রীকৃষ্ণের বালাসখা সুদামার প্রাসাদ তথা মন্দিরটিও দেখে নেওয়া যায়। মেয়েদের স্কুল কন্যা-গুরুকুল বালিকা বিদ্যালয়—ভারতীয় প্রথাম শিক্ষাদানের জন্য ভারত ছাড়িয়ে সারা বিশ্বে আজ প্রশস্তি পেয়েছে। এই প্রথার আবিষ্কর্তা গান্ধীজী। শহরের উত্তরে Jynbeeli (অতীতের জুবিলি) ব্রিজ পেরিয়ে ভারত মন্দির। সুন্দর বাগিচার মাঝে দেবতার পরিবর্তে ভারতের বিশালাকার রিলিফ ম্যাপ স্থান পেয়েছে। আর দেবতারও এসেছেন হিন্দু পুরাণ থেকে মন্দিরের পিলারে ব্যাস রিলিফ প্রথায় সুন্দর চিত্রিত হয়ে। বারান্দার আয়নাগুলিতে (৬টি) কিছুত-কিমাণের মূর্তিও দেখে নিন নিজের। বিপরীতে নেহরু প্ল্যান্টেটেরিয়ামটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে সাথে।

দক্ষিণ-পূর্ব ভটরেখায় আরব সাগরের বুকে গড়ে উঠেছে শহর। আর শহরের পাদদেশে পোরবন্দর সাগর সৈকতটিও সুন্দর। তবে, সাগরবেলাটি আজ পূর্তিগন্ধময়। অতীতে নাম ছিল এর উইলিংডেন মেরিনা রীচ। আর আছে অতীতের প্রাসাদ হজুর প্যালেস সাগরবেলায়। এছাড়া, সোনা আর রূপার তৈরি সিগারেট কেস ও ভ্যানিটি ব্যাগের কারখানাটিও দেখে নিতে পারেন। দ্বারকার পথে ৩৫ কিমি দূরে কোয়েলা পাহাড়ে শ্রীকৃষ্ণের তৈরি হর্ষদমাতার মন্দিরে দেবী জগদম্বা। উৎসাহীরা চলার পথে একটা বাস ছেড়ে দেখে নিতে পারেন। পর্যাপ্ত সময় থাকলে সোমনাথমুখী ৬৫ কিমি দূরে শ্রীকৃষ্ণের বিবাহবাসর তথা মাধবপুর মন্দির, ৩৫ কিমি দূরে বিলেশ্বর শিবের মন্দিরটিও দেখে নেওয়া যায়। আবার উৎসাহীরা BDO, Porbandar-এর ব্যবস্থাপনা ৫ কিমি দূরে Degam, আরও ৯ কিমি দূরে Kuchdi গ্রামের লোকনৃত্যও দেখে নিতে পারেন। তেমনই ২০০ কিমি ব্যাপ্ত Barda Sanctuary-তে প্যাহার, নীলগাই, শম্বর ছাড়াও নানান জন্তু দেখে নেওয়া যায় পোরবন্দর থেকে।



বীতের উপর রয়েছে অভিনব বিশ্রামগৃহ—ভিলা।

প্রাক্তন দেওয়ান পাণ্ডুরঙ্গদাস বাসগৃহে জোজিধর

রেন্ট হাউস (PWD GH) এ ভারত পরিচালক

স্বামীজী দেওয়ানের অতিথিরাণে বাস করেন (৮-৯মাস)।

স্মারকরাণে স্থিতি মন্দির হয়েছে। ষিটল স্বামীজীর বাসগৃহে। Circuit House, অব: Deputy Engineer, PWD, Porbandar. TCGL-এর Toran, Chowpatty, Porbandar-360575, ৩ (0266) 22745, DAB ৩০০ A/c ৪০০ ডর্মি ৩০, অব: Regional Manager, TCGL, Rang Mahal, Dewan Chowk, Junagadh. নতুন ও পুরাতন দু'টি বাংলা আছে পোরবন্দরে। সৃষ্টি ও বন্দরের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান জোরগ টুরিস্ট বাংলা থেকে। অদূরে New Oceanic GH, A/c D ৩০০ T ৪০০; Lal Palace H, DAB ৩০০; Neelun GH, ST Rd, S ৬৫ D ১০০; লাগোয়া Dharani GH, D ১৫০; সাধারণ সাজে Rajkumal GH, MG Rd; Flamingo H, MG Rd, DAB ২২৫-৩৫০, A/c D ৫৫০; Sheetal H, Bus Stand, D ২৫০-৪৫০, মান হারে দামে আধিক; Roopalee, Ghayul L, Annapurna, Green L, Evergreen, Ashoka, Everest L, Dreamland, Gita L, Hinachal G H, DAB ২২৫ A/c D ৪০০। ধরমশালাও আছে নানান। আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম পোরবন্দরে।

পোরবন্দর শহর দেখার জন্য ৩/৪ ঘণ্টা সময় যথেষ্ট। পোরবন্দর বেড়িয়ে ঐদিনই পোরবন্দর থেকে দ্বারকায় চলা যেতে পারে। দ্বারকা ও সোমনাথের বাসগুলি ১ ঘণ্টার লাঞ্চ ব্রেক দেয় পোরবন্দরে। কন্ডাক্টরকে বলে অটো বা টাঙ্কায় চেপে এই সময়ের মধ্যেও স্বচ্ছন্দে কীর্তিমন্দির, সুদামা মন্দির, সাগরসৈকত ও চলার পথে শহর দেখে ঐ একই বাসে চলতে পারেন। ঘণ্টা চারেকের বাসপথ পোরবন্দর থেকে দ্বারকার। ট্রেন সেই ঘুরপথে গিয়েছে দ্বারকায়। পর্যটকদের যাতায়াতে বাসই সুবিধার।

দ্বারকা

অযোধ্যা, মথুরা, মায়া, কান্ধী, কাঞ্চি, অবন্তিকা।
পূরী, দ্বারাবতী চৈব, সপ্তৈতা মোক্ষ দায়িকা।।

দ্বার অর্থ দরজা—আর কামানে অনন্ত শান্তি, পরম বা ব্রহ্ম প্রাপ্তি। অর্থাৎ দ্বারকা অর্থ—ব্রহ্ম প্রাপ্তির দরজা। দ্বারকাবাসে কৃষ্ণাযুজ্য মেলে। স্থানীয়দের কাছে দ্বারকা আজ ধোয়ারকা হয়েছে। এমনকি রেল ও বাস দপ্তরেও দ্বারকা বললে সমস্যা দেখা দেয়। তাই ধোয়ারকা বলুন গুর্জরদের সাথে কথা বলতে গিয়ে। ধার্মিক আনন্দ দান্তিক পিতা শর্যাতির আশিষ্ট আচরণের প্রতিবাদে বিরাগভাজন হয়ে রাজ্য থেকে

বিতাড়িত হলে সমুদ্রতীরে এসে বৈকুণ্ঠনাথের স্মরণ নেন। স্বয়ং বৈকুণ্ঠনাথ বৈকুণ্ঠ থেকেই শত যোজন (যোজন = ৮ মাইল = ১৩ কিমি) ভূখণ্ড সমুদ্র থেকে উৎপাটন করে ভীমানদী সাগরে স্থাপন করেন। আর সত্যযুগে প্রজাপতি ব্রহ্মার সাথ হল সৃষ্টি—ব্রহ্মাণ্ডের পরিমাপ নেওয়ার। সমস্যা—কোথা থেকে শুরু হবে মাপ! স্থান নির্ধারণে একটি কুশ ছুঁড়ে দিলেন মর্ত্যে। কুশ এসে পড়ে যাত্রিদের পূত্র যদুর রাজ্যে। তাই কুশস্থলী বা দ্বারাবতী নাম হয় এর। আর দ্বারপ যুগে আনন্দ-পূত্র রৈবতের আমন্ত্রণে এই কুশস্থলীতেই যদুবংশের রাজধানী দ্বারকাপুরী গড়েন শ্রীকৃষ্ণ।



সোমনাথ বা পোরবন্দর থেকে বাসে চলুন লর্ড কৃষ্ণর সান্ত্বনা দ্বারকায়। পোরবন্দর থেকে দূরত্ব ১২৮, সোমনাথ ২৫০, রাজকোট ২১৭, হাপা ১৪২, জামনগর ১৩৭, আমোদাবাদ ৩৬৫ কিমি। বাস আসছে রাজ্যের নানান শহর থেকে দ্বারকায়। আর দ্বারকা থেকে বাস যাচ্ছে— আমোদাবাদ ৭-০০, ২১-০০টায়; ডাকোর ৭-০০; মাহেসানা (নাথদ্বার হয়ে) ২০-০০; সোমনাথ ৬-১৫, ৭-০০, ১০-১৫, ১৩-৩০, ১৫-৪৫, ২২-০০; জুনাগড় ৮-০০, ১১-০০, ১৪-০০; পোরবন্দর ৯-৩০, ১৪-১৫, ১৫-৩০; ওখা যাচ্ছে ঘণ্টায় ঘণ্টায়।



আর ট্রেন যাচ্ছে ২০-২৫এ মুম্বাই থেকে 9005 সৌরাষ্ট্র মেল ৬-১৫য় আমোদাবাদ ছেড়ে ভিরামগম ৭-২২, রাজকোট ১০-৪০, হাপা ১২-৫৫, জামনগর ১৩-১৫, দ্বারকায় ১৬-১০এ পৌঁছে ১৭-০৫এ ওখায়। আর প্রতি রবিবার পুরী-ওখা এক্স যাচ্ছে বিশাখাপত্তনম/জলগাঁও/আমোদাবাদ হয়ে একই পথে। আমোদাবাদ-ওখা ফাস্ট প্যাসেঞ্জার, ভিরামগম-ওখা ফাস্ট প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে ০-২০/৯-৫০এ হাপা ছেড়ে ৩-৪৫/১৫-২০এ দ্বারকায়। কলকাতা থেকে দূরত্ব ২৪৫৫ কিমি, মুম্বাই থেকে ১০০৭ কিমি।



নিকটতম বিমানবন্দর জামনগর। ২৪৬৭ দিন ১ ঘণ্টায় মুম্বাই-জামনগর-মুম্বাই বিমানও চলছে IAC-র। NEPC Airlines-ও সার্ভিস গড়েছে ১৫ দিন জামনগর-মুম্বাই-গুরঙ্গাবাদ-ব্যাঙ্গালোর-চেন্নাই-এর।



দ্বারকাতে মিষ্টি জলের অভাব—বুষ্টির জল জমিয়ে দ্বারকার চাহিলা মেটে মিষ্টি জলের। নানান হোটলে আজও নোনা জলের চল। পাশ্চাত্য প্রথায় হোটেলের অভাব দ্বারকায়। শহরে ঢোকান মুখে বাস পথে

বরনীয় লেখকদের স্মরণীয় লেখার সন্ধান:

স্ব স্ব খণ্ডে
সম্পূর্ণ

ছোটদের অমনিবাস

প্রতিটি বই-এর দাম:
১০০.০০ টাকা

যোগীন্দ্রনাথ সরকার □ অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ হেমেন্দ্রকুমার রায় □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য
□ শিবরাম চক্রবর্তী □ পরিমল গোস্বামী □ খগেন্দ্রনাথ মিত্র □ সুকুমার দে সরকার

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

Dwarka-361336, STD 02892-এ—H Meera, Sln Rd, SAB ৬৫-১০০ DAB ১২৫-১৭৫ TAB ২০০ FAB ২২৫; বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Radhika, R2, SAB ২২৫ DAB ৩২৫ TAB ৩৭৫; মন্দিরমুখী বন্ধ যেতে H Gunpreetana, DAB ১২৫-২০০ TAB ২২৫ A/C D ৩৫০ T ৩৭৫। থাকা ও আহার্যে ওরুপ্রেরণার প্রশস্তি জনমুখে। Gokul GH, DAB ২০০; Brishma GH, মান ও দামে গোকুল তুল্য। মন্দিরমুখী তিন বাতিকে ঘিরে সাধারণ সাজের হোটেলের অবস্থান দ্বারকায়। এদের কাছে কেবল থাকা D ১২৫-১৭৫ T ১৫০-২০০ টাকায় মেলে। থাকার জন্য—Trimurti G H, Sri Vrindavan GH, Muralidhar GH, Chetna RH, Banashidhar L, Braja Bhawan, Mahaluxmi L, Jamuna L, Uttam GH, Dwarakapuri GH আদরণীয় হবে। আর আহার্যে অতিথি ভবন, নটরাজ, তুলসী, ওরুপ্রেরণা, কাণ্ডা লজ, লোহানা, আরামনা, যমুনা ভালই। এদেরও আখা ও পুরা মিল প্রথা চালু। আর রয়েছে রেলের রিটারারিং রুম, সাগর পারে Panchayet Aram Griha, PWD RH—থাকার পক্ষে ভালই। আরাম গৃহের বুকিং: District Development Officer, Jamnagar; আর Dy Engineer, PWD, Khambalia, Jamnagar-কে লিখুন রেস্ট হাউসের জন্য। আর আছে TCGL-এর Toran, Q 34113, DAB ২০০ ৫/৭/৮ বেডের ডমিটরিতে ৩০ টাকায় বেড। এছাড়াও রয়েছে সাগর পারে গায়ত্রী শক্তিপীঠ অতিথি নিবাস, বিড়লা ধরমশালা; গোমতী নদীর কাছে—ভদ্রকালী, রামেশ্বর, বিকানীর, বিশ্বকর্মা, শ্রীরাম, প্যাটেল ভবন; বাস স্ট্যান্ডের কাছে—গোকুল ভবন, জনক ভবন, বিশ্বলিয়া; মন্দিরের কাছে বাঙ্গুর ধরমশালা, রাসবিহারী, সাগর ভবন, জয় রণছোড়জী, চান্দক; রেল স্টেশনের কাছে তোতাদ্রি আশ্রম, তোতাদ্রির কাছে স্টেশন রোডে ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘের অতিথিশালা দ্বারকায়। বাথ সলয় ঘরও মেলে তোতাদ্রি ও ভারত সেবাস্রমের অতিথিশালায়। বাঙালি যাত্রীদের ভিড়ও বেশি ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘ Sln Rd-36, Q (02892) 34157 ও তোতাদ্রিতে। ধরমশালা আছে আরও নানান দ্বারকায়।

কনডাক্টেড ট্রার: দ্বারকা, ভেট দ্বারকা, নাগেশ্বর ও গোপীতলাও দেখাতে যাচ্ছে নগর পঞ্চায়েতের বাস ৩৫ টাকায় দ্বারকা থেকে ৮—১৩-০০ ও ১৪—১১-০০টায়। বুকিং: বাঙ্গুর ধরমশালায় কাছে এদের অফিস থেকে।

দ্বারকা হিন্দুদের কাছে অতি পবিত্র তীর্থ। সপ্তপুত্রীর এক পুত্রী দ্বারকা (অন্য ছয়: বারাগসী, হরিদ্বার, উজ্জয়িন, মথুরা, অযোধ্যা, কাঞ্চীপুরম)। কংস বধের পর কংসের খণ্ডের প্রবল পরাক্রান্ত মগধরাজ জরাসন্ধ বার বার ১৮বার পরাজিত হয়ে কালযবনের সাহায্য নিয়ে শ্রীকৃষ্ণকে পুনরায় আক্রমণ করেন। জয় অনিবার্য জেনেও ১৯তম আক্রমণের রক্তক্ষয় এড়াতে আত্মীয়কুলপরিজনসহ মথুরা ছেড়ে গুজরাটে এলেন শ্রীকৃষ্ণ। নগরী গড়েন গিনিরের কাছে অনর্ভ নগরী। সঙ্গে কালো কাথিয়াবাড় পেনিনসুলার রাজা কুশাভিত্যের সঙ্গে মিত্রতা গড়ে বন্দরনগরী গড়েন কুশলীতে। অতীতের দ্বাদশ যোজন বিস্তৃত দুর্গটিকে সংস্কার করে গোমতীর সঙ্গমে যদুবংশের নতুন রাজধানী গড়েন শ্রীকৃষ্ণ। চারদিক সাগরে বেষ্টিত স্বর্ণ প্রাচীরে সুরক্ষিত দুর্গকে সামুদ্রিক প্রাবন থেকে

রক্ষা করতে বাঁধও দেন শ্রীকৃষ্ণ। ইন্দ্রপ্রস্থের পরেই সেযুগে ভারতের দ্বিতীয় জনাকীর্ণ জনপদ গড়ে ওঠে এখানে শ্রীকৃষ্ণের ৩৬ বছরের রাজত্বকালে। বিশ্বের অষ্টম অবতাররূপী ভগবান শ্রীকৃষ্ণর এই সময়ের কীর্তিকলাপ জড়িয়ে রয়েছে দ্বারকাতে। তবে, শ্রীকৃষ্ণর মৃত্যুর পর পাত্রমিত্রসহ ইন্দ্রপ্রস্থের উদ্দেশ্যে অভ্যুত্থানের দ্বারকা ত্যাগের সাথে সাথে সমুদ্র গ্রাস করে সবকিছু। অতীতের মন্দিরের কোনো অস্তিত্ব নেই আজ আর। তবে, সমুদ্রে বাঁধ দিয়ে সোনার দ্বারকাপুরী উদ্ধারের পরিকল্পনা গৃহীত হয়েছে গত কিছুকাল। তবে, দ্বিমতও আছে মূল দ্বারকাপুরীর অবস্থান নিয়ে। মূল দ্বারকার দাবিদার এগারো হলেও যুক্তিতর্কে জোরালো চার—(১) বর্তমান দ্বারকা, (২) দ্বারকা থেকে ৪০ কিমি দূরে বিশ্ববরা, (৩) পোরবন্দরের ৫৬ কিমি দক্ষিণ-পূর্বের মাধবপুর-গেদ অঞ্চল, (৪) কোদিনার। তবে, ১৯৭৯ খ্রি দ্বারকা মন্দিরের উত্তরদিকে মাটির তলা থেকে আবিষ্কৃত চিনেমাটির পাত্রকে খ্রি পূ ১৩০০ অর্থাৎ মহাভারতের কালের বলে রায় দিয়েছেন ঐতিহাসিকরা।

গাঙ্গীজীর চিতাভস্মও বিসর্জিত হয় দ্বারকায়। সেই স্মৃতিতে গাঙ্গীঘাট হয়েছে সাগরবেলায়। সম্ভ্রান্ত শিল্প নগরীতে রূপ পাচ্ছে দ্বারকা।

রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে গোমতীর পারে দ্বারকার মূল আকর্ষণ দ্বারকাধীশ বা রণছোড়জীর মন্দির। রণ ছোড়ে দ্বারকায় আসেন শ্রীকৃষ্ণ। মূর্তি হয়েছে মণি-মাণিক্যখচিত রূপার সিংহাসনে কষ্টিপাথরে ওঁহাত উঁচু—পাঞ্চজন্না শঙ্খ, সুদর্শন চক্র, কৌমুদীকী গদা ও পদ্মধারী চতুর্ভুজ প্রজাপালক রাজা শ্রীকৃষ্ণর। ক্ষণে ক্ষণে সাজবদল হয় দেবতার। তবে, মূল মূর্তি আজ ডাকোরে, দ্বিতীয় মূর্তিও চুরি গিয়ে স্থান পেয়েছে ভেট দ্বারকায়। এটি তাই তৃতীয়। মনোলিথিক পিলারে ১৭০ ফুট উঁচু, ৭২টি স্তম্ভের উপর গ্রানাইট ও বেলে পাথরে ৭ তলা রথাকৃতির মন্দির—গর্ভমন্দির, বিমানমণ্ডপ ও নাট্যমণ্ডপ তিন ধাপে গড়ে উঠেছে। চুড়োয় সুবর্ণ কলস। ১১ শতকে মন্দিরের ব্রহ্মা রাজা জগৎ সিং রাঠোর থেকে জগৎ মন্দির নামেও সমধিক খ্যাত। কিংবদন্তী, তারও আগে শ্রীকৃষ্ণর প্রপৌত্র অনিরুদ্ধ-পুত্র বজ্রনাভ 600 BC-তে মন্দির গড়েন হরিগৃহ। উত্তরকালে কৃষ্ণমন্দিরে রূপান্তরিত। কথিত আছে, এক রাতের মধ্যে রূপ পায় এই মন্দির। জনশ্রুতি, কৃষ্ণসাধিকা শ্রীরাবাই ১৫৪৬৫ চিতোর ছেড়ে দ্বারকায় এসে লীন হন শ্রীকৃষ্ণে। সমাবেশ ঘটেছে হিন্দু পুরাণ থেকে নানান দেব-দেবীর মন্দিরে। প্রবেশ স্বর্ণধারে আর প্রস্থান মোক্ষধারে।

মাতা দেবকী রয়েছে মূল মন্দিরের সামনে। চুক্তেই তোরাপে সিদ্ধিদাত্রী গণেশ—এগুঠেই ডাইনে কৃষ্ণেশ্বর শিব। আর রয়েছে—বাঁয়ে কালো পাথরের প্রদ্যুম্ন, সত্যনারায়ণ, অম্বাজী, পুরুষোত্তমজী, অনিরুদ্ধজী, মুনি দ্বর্বাশা, জাম্ববতী, শ্রীরাধিকা, লক্ষ্মীনারায়ণ, গোপাল, নাগ

অবতার বলদেবজী, সত্যভামা, লক্ষ্মী অর্থাৎ রুক্মিণী স্ব স্ব মন্দিরে। মন্দিরকে ঘিরে গড়ে উঠেছে বাজার-বাট-শহর। মন্দিরে প্রবেশাধিকার কেবল হিন্দুদের। ৬—১২-৩০ আবার ১৭—২১-৩০ টায় খোলা থাকে মন্দিরদ্বার। জন্মাষ্টমী, বসন্ত পঞ্চমী, দোলপূর্ণিমা জাকালো উৎসব দ্বারকায়। দুপুর ও সাঁঝে অন্নপ্রসাদও মেলে মন্দিরে। কুপন আগেভাগে সংগ্রহ করা বিধি। ১১ থেকে ১০০১ টাকার পুজোয় প্রসাদী ভোগ মেলে।

দ্বারকেশীশ মন্দিরের নিচ দিয়ে বয়ে যাওয়া গোমতী নদীতে ঘেরা দ্বীপে রয়েছে কৃষ্ণ মন্দির। দক্ষিণ দ্বারে বেরিয়ে ৫৬টি ধাপ নেমে গোমতী দেবীর মন্দির। তারও নিচে গোমতী নদী। ঋষিদের প্রার্থনায় স্বর্গের গঙ্গা এখানে নেমে আসেন গোমতী নামে। রান্নাে পূর্ণা হয়। অদূরে গোমতী মিলেছে সাগরে—নাম তার গোমতী-নারায়ণ সঙ্গম। সঙ্গমের ডাইনে কাঠের মন্দিরে দারু নির্মিত দেবতা চতুর্ভুজ সঙ্গমনারায়ণ। সঙ্গম থেকে ৩২ মহিল ব্যাপী নদীর দুই তীর চক্রতীর্থ নামে খ্যাত। চক্রের ছাপ আঁকা সাদা পোরাস ধরনের পাথর দ্বারাবতী শিলা চক্রতীর্থে আজও মেলে। লাইট হাউসও হয়েছে ১৫৬ ফুটের ১৯৬৩র ৭ই জানুয়ারি। বিকালে ১ ঘণ্টা দ্বার খোলা। লাইট হাউস ছাড়িয়ে আরও উত্তরে সান সেট পর্যন্ত। অপরপারে পঞ্চদ-তীর্থ—মিষ্টিজলের ৫টি কুরো, পঞ্চপাণ্ডবের নামে নাম। প্রতিটির জলে স্বাদের তারতম্য মেলে। সামান্য দক্ষিণে লক্ষ্মী-নারায়ণ মন্দির। অদূরে সমুদ্রতটে চক্র তিহ খোদিত চক্র-নারায়ণ পাথরখণ্ড। নৌকার পারাপার।

দ্বারকেশীশ থেকে ওখার পথে ২ কিমি যেতে রুক্মিণী মন্দির। শ্বেত মর্মরে কৃষ্ণপ্রিয়া দেবী রুক্মিণীর পূজা হয় মন্দিরে। পৌরাণিকআখ্যানের ছবিগুলি সুন্দর। মন্দিরথেকে আরব সাগরে সূর্যাস্ত সুন্দর দেখায়। রুক্মিণী দেখে ফেরার পথে শহরের মথোই পড়ে ভদ্রকালীর মন্দির। বিষ্ণুতীর্থ দ্বারকায় যাদবকুলের আরাধ্যা দেবী চতুর্ভুজা মহাকালী আজও পূজিতা হচ্ছেন। ৫১ পীঠের এক পীঠ। দুর্গাপূজাও হয় মন্দিরে। আর আছে সিদ্ধেশ্বর মহাদেবের মন্দির। জনক্ৰতি, সিদ্ধেশ্বরের ঋষিতীর্থ বা জ্ঞানকুণ্ড এবং শিবলিঙ্গটি স্বয়ং ব্রহ্মার প্রতিষ্ঠিত। আর হয়েছে ব্রহ্মাকুমারী ঈশ্বরীয় বিশ্ববিদ্যালয়; পাশেই কবীর আশ্রম। তেমনই দ্বারকার আর এক আকর্ষণ ১২৫০টি পুথির অমূল্য রতন নিয়ে গড়া বেদ ভবন—৯টি তার বিশ্বকর্মার স্বহস্তে রচিত।

সমুদ্রবেলায় ভ্রমরেশ্বর। এখান থেকে উপকূলভাগের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান। আচার্য শঙ্করাচার্য (৭৮৮—৮২০ খ্রি) প্রতিষ্ঠিত চার মঠের অন্যতম দ্বারকার জগৎগুরু শঙ্করাচার্য অর্থাৎ সারঙ্গ মঠ। আর আছেন মঠের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা চন্দ্রমৌলীশ্বর শিব। দেব বিগ্রহটি আচার্যের প্রাপ্তি গোমতীগঙ্গা ও আরব সাগরের সঙ্গমে। আরও পরে সারঙ্গ সরস্বতী ও শ্রীকৃষ্ণ আট মহিষীর বিগ্রহ প্রতিষ্ঠা করেন আচার্যদেব। তেমনই হয়েছে ১২০০টি শালগ্রাম শিলা, ১৩০০টি শিবলিঙ্গ,

৭৫জন শঙ্করাচার্যর ধাতুমূর্তি মঠে। আচার্যের মূর্তিও হয়েছে প্রস্তুতে।

দ্বারকা থেকে ওখার পথে ১৭ কিমি গিয়ে দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের অন্যতম নাগেশ্বর মহাদেব তীর্থ (হিমতে মহারাষ্ট্রে) বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। ওখামুখী আরও যেতে গোপী তালো। বৃন্দাবন থেকে গোপিনীরা শ্রীকৃষ্ণ সন্দর্শনে এসে এখানেই অবস্থান করেছিলেন। স্মারকরূপে ভক্তরা আজও তালো—এর মাটি সংগ্রহ করেন গোপীচন্দন রূপে। মীরাবাইয়ের মন্দিরটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। তেমনই এপথের আর এক দ্রষ্টব্য মিঠাপুর। টাটার নুনের কারখানার জন্য মিঠাপুরের প্রসিদ্ধি। কন্নীদের জন্য মডেল টাউনশিপও হয়েছে। মিষ্টি জলও আছে মিঠাপুর থেকে ওখায়।

ভেট দ্বারকা

দ্বারকা থেকে বাস ও ট্রেন আছে ওখায়। শ্রীকৃষ্ণের পৌত্র অনিরুদ্ধ বাস করতেন এখানে। বাণরাজার কন্যা উষা থেকে অতীতে নাম ছিল এর উষামণ্ডল—কালে কালে উষা বা ওখা। ওখা পশ্চিম ভারতের শেষ প্রান্তভূমি। দ্বারকা থেকে দূরত্ব ৩২ কিমি। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস। এক ঘণ্টার পথ। বাসে যাওয়াই সুবিধা। শহরে ঢুকবার মুখেই ভেট দ্বারকার ফেরি ঘাট। স্পিড বোট ও লঞ্চ আছে। যাতায়াত ১৬/২৫। আরব সাগরের বকে ভেসে ৫ কিমির জলপথ ভেট দ্বারকার। খুবই মনোহর আখ ঘণ্টার এই জলবিহার।

বালাসখা সুদামার আনা ভেট-ই নাকি দ্বারকার সঙ্গে অলঙ্কার জুড়ে হয়েছে ভেট দ্বারকা। হিমতে, গুর্জর ভাষায় বেট হচ্ছে দ্বীপ, দ্বীপময় দ্বারকা অর্থাৎ বেট দ্বারকা। স্থানীয়দের দাবি, ভেট দ্বারকাই শ্রীকৃষ্ণর মূল দ্বারকা। তবে, ভেট দ্বারকার উত্তরপ্রান্তে বালাপুরের তীরে কামানাদি রাখার ব্যবস্থা দেখে মনে হয় অতীতে পোতাশ্রয় ছিল। ভাটার কালে ৭মি লম্বা একটা দেওয়ালও দেখা যায়। চার স্তরের পাথর আছে দেওয়ালে। খননে মহাভারতের কালের নানান জিনিসও মিলেছে ভেট দ্বারকায়—সাদৃশ্য মেলে দ্বারকায় পাওয়া জিনিসের সাথে। সম্ভবত রানী নিবাস ছিল শ্রীকৃষ্ণর ভেট দ্বারকায়। সেই সুবাদে শ্রীকৃষ্ণ আসতেন ভেট দ্বারকায়। প্রধান মহিষী ছাড়াও ৫৬ জন শ্রীকৃষ্ণপত্নীর মন্দির আছে এখানে। মূর্তি হয়েছে কষ্টিপাথরে।

অতীতে শঙ্খাচার্য বেট দ্বারকার নাম ছিল শঙ্খোদ্বার তীর্থ। চুড়োহীন মন্দিরও হয়েছে রূপোর আসনে ঢাল-তলোয়ার হাতে কষ্টিপাথরে বগছোড়জী অর্থাৎ দ্বারকাদেশের। অলঙ্কার ভূষিত সুন্দর চতুর্ভুজ বিগ্রহ—চোখ দুটি খোলা। আর রয়েছে পটিরানী রাখারানী, রুক্মিণী, সত্যভামা, জাষবতী, দেবকী—নাটমন্দিরে। নাটমন্দিরের ছবিগুলিও আকর্ষণীয়। কিংবদন্তী, ব্রহ্মার বরে বলীয়ান শঙ্খচূড় অসুরের স্ত্রী সতী-সাংখী তুলসী অবত্যা। দেবতা বিষ্ণু ছলনা-ভরে শঙ্খচূড়ের বেশে সতীত্ব নাপ করে বধ করে তুলসীকে। অভিশাপ দেয় পরম্পরে। সেই থেকে বিষ্ণু তুলসীর শাপে পাথররাপী

শালগ্রাম শিলা, আর বিষ্ণুর বরে তুলসী রূপাঙ্করিত হন তুলসী গাছে। সুবাহু প্রসাদী লাভ্যু কিনতে মেলে মন্দিরে। এছাড়া ১ কিমি দূরে শঙ্খনারায়ণ অর্থাৎ কৃষ্ণ মন্দির ও শঙ্খতলাও রয়েছে ডেট দ্বারকায়। সকাল ৭—১৩-০০টা আবার ১৬—২০-০০টায় খোলা থাকে ডেট দ্বারকায় মন্দির। আলোও জ্বলছে সাতটা থেকে রাত বারোটায় জেনারেটরে। আর হয়েছে ডেট দ্বারকায় শ্রীসীতারাম ওজ্ঞারনাথ আশ্রম, হনুমান দাড়ী, পদ্মতীর্থ, রাম দ্বারকা, করমণি, সুধারাম ডেটহল, দরগা হাজি করমা। পারাপারের পথে ওখা বন্দরের ছবি দেখে নেওয়া যায়। চোখে দেখেই সান্থনা, ক্যামেরায় ছবি তোলা মানা। ডেট দ্বারকাতে কোনো হোটেল নেই, ধরমশালা আছে—শ্রীদ্বারকাধীশ মন্দির সমিতির ৩টি; পাণ্ডা ঠাকুরদের ২টি। আর ওখা বাজারে সাধারণ হোটেল মেলে। আমিষ আহার্যও মেলে ওখার হোটলে।

জামনগর



ওখা/দ্বারকা-হাণা রেলপথে জামনগর। দ্বারকা থেকে ট্রেন বা বাসে চলুন ভারতীয় মিলকেটের প্রবাস পুরুষ শ্রিল্প রণজীর জামনগরে। যুধীর্থ বাস মেলে। শেয়ার ট্যাক্সিও চলে জামনগর-রাজকোটের মাঝে। ১১-৩০এ ওখা ছাড়া ৭২১৬ সৌরাষ্ট্র মেলে ১২-১৫য় দ্বারকা ছেড়ে ১৪-৪৫এ ১৩৮ কিমি দূরে জামনগর পৌঁছে আমেদাবাদ হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে। ওখা-আমেদাবাদ ফাস্ট প্যাসেঞ্জার ২১-০০টায় ওখা, ২১-৪৫এ দ্বারকা ছেড়ে ১-২০এ জামনগর পৌঁছে রাজকোট/ভিরামগম হয়ে আমেদাবাদ যাচ্ছে। ওখা-ভিরামগম ফাস্ট প্যাসেঞ্জার ১২-০০টায় ওখা ছেড়ে দ্বারকা ১২-৪৫, জামনগর ১৭-৩৫, রাজকোট ২০-০৫এ পৌঁছে ভিরামগম যাচ্ছে ২-০০টায়। প্রতি বুধবার ৪৪০২ ওখা-পূরী এক্স ৮-০০টায় ওখা, ৮-৩৫এ দ্বারকা, ১১-২০এ জামনগর ছেড়ে আমেদাবাদ/জলগাঁও হয়ে পূরী যাচ্ছে। এমনকি ৯ কিমি দূরে হাণার সঙ্গেও নিয়মিত ট্রেন ও বাস সংযোগ রয়েছে। হাণা থেকে ট্রেনের আধিকা মেলে। প্রতি মঙ্গলবার জামনগর-জম্মু এক্স, বুধবার রাজকোট-জম্মু এক্স, হাণা-রাজকোট-আমেদাবাদ ৭১৫১ এক্স, বাক্সো (মুম্বাই) যাচ্ছে সৌরাষ্ট্র জনতা এক্স জামনগর থেকে। ৩ কিমি ব্যবধানে রেল ও বাসের অবস্থান জামনগরে। কলকাতা, দিল্লী ও মুম্বাই থেকেও ভিরামগম/রাজকোট/হাণা হয়ে ট্রেন যাচ্ছে জামনগর। এছাড়াও বাস সংযোগ রয়েছে পোরবন্দর ৩০৮ কিমি ছাড়াও রাজ্যের নানান শহরের সঙ্গে জামনগরের। প্রাইভেট বাসও চলছে রাজ্য জুড়ে। এমনকি ৭৮২ কিমি দূরে মুম্বাই যাচ্ছে ডিলাঙ্গ বাস জামনগর থেকে। আর ২ ৪ ৬ ৭ দিন মুম্বাই-জামনগর-মুম্বাই সার্ভিসে IAC-র উড়ান সংযোগ গড়েছে ১ যন্ত্রাণ। NEPC সার্ভিস গড়েছে ৩ ৫ ৬ দিন মুম্বাই-ওরসাবাদ-ব্যাঙ্গালোর-চেন্নাই-জামনগর-এর মাঝে।

জাঙ্গো রাজপুতদের দেশ জামনগর। প্রাচীরে ঘেরা শহর। জন্ম এর রাজপুতদেরই হাতে ১৫৪০এ, নাম ছিল তখন নবনগর। ১৯৪৭এ এই দেশীয় রাজ্যটিও অধুনা লুপ্ত সৌরাষ্ট্রের সঙ্গে মিলে ১৯৫৬য় বিশেষ যায় মুম্বাই প্রভিলে। ভাবার ভিত্তিতে রাজ্য গড়তে গুজরাটে আসে ১৯৬০এ।

উঁচু প্রাচীরে ঘেরা সোনালী রাজবাড়ির ভাঙ্কর্য ও স্থাপত্য অনবদ্য। তবে, সাধারণের কাছে এর দ্বার রুদ্ধ।

আধুনিকতা ও প্রাচীনতা—দুয়েরই সমন্বয় ঘটেছে জামনগরে। শহরের প্রাণকেন্দ্রে বিশালাকার সুরসাগর লেক। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। সুরসাগরের ঘাঁপে কোঠা ও লাকোটা দুই ভাসমান প্রাসাদ-দুর্গ, রাজ পরিবারের অতীতের গ্রীষ্মাবাস। পাথরের পূলে পারাপার। সম্প্রতি প্রত্নতত্ত্বের মিউজিয়ম বসেছে লাকোটা। পট্টাির ও ভাঙ্করের সংগ্রহ উল্লেখ্য। আর কোঠার মেঝের ফুটোয় যুঁ দিলে কৃপ থেকে জল মেলে আজও। বুধ ও ছুটি ছাড়া ১০—১২-৩০ ও ১৫—১৭-৩০টায় খোলা। লেকের একপাশে মাছভবন প্রাসাদ, আর লেকলাগোয়া পার্কটিও সুন্দর। স্থানীয়দের সাহ্য-ভ্রমণের মনোরম পরিবেশ। ১৬—২১-০০টায় উদ্যান জুড়ে ফোয়ারা পরিবেশকে রমণীয় করে তোলে। নতুন করে নাম হয়েছে এর ড. আশ্বেদকর উদ্যান। লেকের পথে দেবী কালীর মন্দিরটিও দেখে চলা যায়। লাকোটার দক্ষিণ-পূবে হনুমান মন্দির, লেক পেরিয়ে জৈন মন্দির, মানেক ভাই মুক্তিধাম অর্থাৎ শ্রাশানে, রবীন্দ্রনাথ, রামকৃষ্ণ, বিবেকানন্দ ছাড়াও নানান মনীষীদের মূর্তি ছাড়াও রামায়ণ-মহাভারত-গীতার আখ্যান মূর্তি হয়েছে, ৬ কিমি দূরে সামগ্রিক জীবজন্তুর মেরিন মিউজিয়ম, ১৬—২০-০০টায় সিটি লেকের আকোয়া-রিয়াম, ১০ কিমি দূরে রণজিৎ সাগরও দর্শনীয়। জামনগরের রাজবাড়িটিও সুন্দর। এর ভিত্তোরীয় যুগের ছবির সংগ্রহ দর্শকদের মুগ্ধ করে। অনুমতিতে দেখে নেওয়া যায় বাসে গিয়ে ২ কিমি দূরে প্যাঙ্গেল—প্রতাপ বিলাস তথা DKV College. Guinness Book of Records-এ উল্লেখ্য মেলে জামনগরে ভারতের একমাত্র আয়ুর্বেদিক বিশ্ব-বিদ্যালয়ে আয়ুর্বেদ শাস্ত্রের নানান গবেষণা চলছে। ভারতে একমাত্র আর বিশ্বের তৃতীয় (ফ্রান্স, সুইজারল্যান্ড ও ভারত) সৌর অর্থাৎ হেলিও থেরাপি প্রথার সোলারিয়াম হাসপাতালটিও হয়েছে এই জামনগরে। ঘূর্ণমান টাওয়ারে দিনভর সূর্য প্রতিফলিত হচ্ছে। ক্যান্সার, চর্মরোগ ছাড়াও নানান চিকিৎসা হচ্ছে টাওয়ারে প্রতিফলিত বিকেন্দ্রিত সূর্যছটায়। নির্মাণ মহারাজা রণজিৎ সিংজীর হাতে। জামনগরের বায়ুনি শাড়িরও যথেষ্ট প্রশস্তি আছে পর্যটক মহলে। নবরাতিতে (অক্টো-নভে) গরবা নাচ পর্যটক টেনে আনে দূর-দূরান্ত থেকে জামনগরে।



থাকার জন্য পুরাতন রেল স্টেশনকে ঘিরে সাধারণ দ্রোহ—Gita L, SAB ৮০, DAB ১২৫-২০০; Dreamland H, Palace GH, Grand H, Evergreen L, Jai Hind L, এদের কাছে S ৬০-১০০, D ৮৫-১৫০ টাকায় মেলে। শহরের মধ্যমণি সূপার মার্কেটের উপরে H Ashiana, ৩ ৭৭২১, New Super Mkt, S ৮০-১০০ D ১২৫-১৭৫, A/c S ২৫০ D ৩২৫, থাকার পক্ষে ভালই; বিপন্নীতে Shital GH, SAB ৬০, DAB ১০০; অদূরে Janki GH, Gokul H, মান ও নামে আশিরানার তুল্য এরা। বাস স্ট্যান্ডের কাছে সোফানপাটে ঠাঙ্গা মিত্তলে H Munal; H Kama; New Aram H, Nehru Marg-361008, R1/B2, SAB ১৭৫ DAB ২৫০, A/c S ৩০০

D ৪০০। Station Rd, Teen Batti-361001-এ—শহরের অন্য H President, ৩ 70516, A8R3, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৩০০ D ৮০০ সুইট ১০০০-১২৫০; H Chetna, DAB ১৫০ TAB ১৭৫; তেজনার বিপরীতে সাধারণ সাজে Everest L, Joshi GH, Janata GH, R K GH, Galaxy GH, H Punit, D ২৫০ A/c D ৩২৫-৪৫০। আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম, ভাটিয়া ধরমশালা, গোকুলদাস ধরমশালা, জোহরী মুসাফিরখানা, লাল বাগানো অর্থাৎ ১৯৩৯এ তৈরি রাজার অভিশিলায় সরকারি অতিথি গৃহ সার্কিট হাউস-এ D ৪০০, পরিবেশ রমণীয়; অব: Manager, Jamnagar.

আহারেরও নানান হোটেল জামনগরে। তিন বাতি চকে H Swati-র যথেষ্ট সুনাম নিরামিষ আহার্য পরিবেশায়। দামে কিছুটা অধিক। ঘণ্টলেও হোটেল প্রেনিডেন্টের 7 Seas Restaurant-টি অনবদ্য। তেমনই আয়ুর্বেদিক বিশ্ববিদ্যালয়ের কাছে Havmur Restaurant-এর আহার্যও সারা পশ্চিম জুড়ে যথেষ্ট খ্যাত। শাখাও আছে এদের গুজরাটের নানান শহরে।

তবে, জামনগরে থাকার দরকার হয় না। রেলের ক্রোকরুমে সন্দের জিনিস রেখে দিনে দিনে জামনগর বেড়িয়ে দিনান্তে বাস বা ট্রেনে হাপা হয়ে ২ ঘণ্টায় রাজকোট পৌঁছান। বাস যাচ্ছে আধ ঘণ্টা অন্তর। শেয়ার ট্যাক্সিও চলে জামনগর থেকে রাজকোটে।

রাজকোট



জামনগর থেকে ট্রেনে বা বাসে হাপা হয়ে রাজকোট পৌঁছান; দূরত্ব ৮৬ কিমি। ২ ঘণ্টার পথ, আধ ঘণ্টা অন্তর বাস। হাপা-হারকা-জামনগর প্রতিটি ট্রেন রাজকোট হয়ে যাচ্ছে। ট্যাক্সিও যাচ্ছে শেয়ারে এপথে। ২২৪ কিমি দূরের হারকা থেকেও জামনগর/হাপা হয়ে ট্রেন যাচ্ছে রাজকোটে। ট্রেন আসছে ভেরাবল ১৮৫, পোরবন্দর ১৫১, জুনাগড় ১০৩ কিমি থেকেও জেটলসর হয়ে রাজকোটে। ট্রেন আসছে ২৫৩ কিমি দূরের আমেদাবাদ থেকে আমেদাবাদ-রাজকোট/হাপা এক্স, বাজা-জামনগর সৌরাষ্ট্র জনতা এক্স, মুম্বাই-পোরবন্দর সৌরাষ্ট্র এক্স, মুম্বাই-ওখা সৌরাষ্ট্র মেল, সাপ্তাহিক পুরী-ওখা এক্স, ভূপাল-রাজকোট এক্স, সাপ্তাহিক রাজকোট-কোচি/তিরুভনন্তপুরম/সেকন্দ্রাবাদ এক্স, ভিরামগম হয়ে।



আর GSRTC-র বাস সার্ভিস গড়েছে রাজ্যের দিগ্বিদিকের সঙ্গে রাজকোটের। ভেরাবল থেকে ঘণ্টা পাঁচেক ডিলাক্স ও সাধারণ বাস দুই-ই আসছে রাজকোটে। বাস আসছে ১৬০ কিমি দূরের ভাবনগর থেকেও ঘণ্টায় ঘণ্টায়। বাস আসছে আমেদাবাদ ২১৬, সোমনাথ ৭৬, পালিতানা ১৬১, পোরবন্দর ১৭৮, লিউ থেকেও রাজকোটে। আর বাস টিকিটের অত্যধিক চাহিদা হেতু ১ টাকার রিজার্ভেশন শ্লিপ কেটে সিট বুক করে রাখা উচিত হবে যাত্রীদের। নানান প্রাইভেট বাসও চলেছে রাজকোট থেকে মাউন্ট আবু, উদয়পুর, মুম্বাই, লিউ ছাড়াও রাজ্যের দিকে দিকে।



১৩৫৭ দিন ৫০ মিনিটে মুম্বাই-রাজকোট-মুম্বাই সার্ভিস গড়েছে IAC-র উড়ান। আর NEPC Airlines যাচ্ছে প্রতিদিন রাজকোট-মুম্বাই-রাজকোট রুটে। বিমানবন্দর থেকে মিনিবাস যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে IAC-র ৩ অফিস স্টেশন রোডে।

১৮০৮এ ব্রিটিশের সঙ্গে চুক্তিমতো জাদেজা রাজপুত রাজাদের স্বাধীন রাজ্য রাজকোট। ব্রিটিশ ও পশ্চিম ভারতের সন্ধর দপ্তর বসায় রাজকোটে। স্বাধীনানোর ভারতে ১৯৪৭এ কাথিয়াবাড়ের ২০২টি স্বাধীন দেশীয় রাজ্য নিয়ে সৌরাষ্ট্রের জন্ম হয়। সৌরাষ্ট্রের রাজধানীও বসে রাজকোটে। মহাশা গান্ধীর ছেলেবেলার স্মৃতিও জড়িয়ে আছে রাজকোটের সঙ্গে। গান্ধীজীর পিতা ছিলেন সৌরাষ্ট্র স্টেটের দেওয়ান বা মুখ্যমন্ত্রী। ছবির মতো সাজানো শহর। শহরের প্রাণকেন্দ্রে জুবিলি গার্ডেনসএ ব্রিটিশের পলিটিক্যাল এজেন্ট(১৮৮৬-৮৯) জন ওয়াটসনের স্মারকরূপে গড়ে ওঠা মিনি যাদুঘর ওয়াটসন মিউজিয়াম-এর সংগ্রহও উল্লেখ্য। ব্রিটিশ মিউজিয়াম বললেও অত্যুজ্জ্বল নয় না একে। বৃথ ও ছুটি ছাড়া ৯—১১-৪৫ ও ১৫—১৭-৪৫এ খোলা। ১৮৫৬য় প্রতিষ্ঠিত দি লও লাইব্রেরিটিও বসেছে একই বাড়িতে। অদূরে জওহর রোডে গুজরাট ট্যুরিস্ট অফিস রেখে ১৮৭০এ জন্ম রাজকুমার কলেজটিও সুন্দর পরিবেশে রূপ পেয়েছে। কেবল রাজ পরিবারের ছেলেমেয়েরাই লেখাপড়া করত অতীতে। আজ সবার ভরসেই এর দ্বার খোলা। অপর প্রান্তে লেক ও পাবলিক পার্ক। রাজকোটের আর এক তীর্থমন্দির গান্ধীজীর বাড়ি। গান্ধীজীর ছেলেবেলা কাটে এই বাড়িতে। সেই স্মৃতিতে বালমন্দির অর্থাৎ ছোটদের নাসারি স্কুল বসেছে। আর হয়েছে অদূরে Yagnik Rd-এ বেলেড়ু মঠের রেলিকা হয়ে রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম রাজকোটে। মূর্তি হয়েছে ঠাকুরের। আগেভাগে যোগাযোগে থাকারও ব্যবস্থা মেলে আশ্রমের গেট হাউসে (Rajkot-I, ৩ 45200)। ভারতের একমাত্র দাতব্য পক্ষী হাসপাতাল শেণি স্মারক দাতব্য পক্ষী হাসপাতালটিও এই রাজকোটে। ভাবনগরের পথে ৮ কিমি যেতে মনোরম পরিবেশে আজি বাঁধ অর্থাৎ জলাধারটিও কম আকর্ষণীয় নয়। শহরের জল আসছে এই বাঁধ থেকে। তেমনই আছে সবুজ ইয়ার্ডের পিছে নিরলা-নির্জনে লালপরী লেক। লেকের জলে ছোট ছোট টিলা। শীতে হাজারো পাখির মেলা বসে লেককে ঘিরে। বাঁধের মুখে চিড়িয়াখানা; চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। তবে, রাজকোটও দ্রুত শিল্পনগরীর রূপ পাচ্ছে। রাজকোটের আর এক আকর্ষণ তার বাঁধুনি শাড়ি—সঙ্গী করতে পারেন স্মারক রূপে ধর্মেন্দ্র রোডের দোকানপাট থেকে। তেমনই কেনাকাটার ফাঁকে বিশ্রামের সাথে আইসক্রিমের স্বাদ নিন বিশ্রাম বা রেইনবো-য়।



বাস স্ট্যান্ড লাগেয়া Rajkot-360001, STD 0281-এ—Puresh GH, DAB ১২৫-২০০। Ashirvad GH, SAB ৮০-১২৫, DAB ১০০-১৭৫ TAB ২০০; H Jheel, opp Bus Stand, SCB ৬০, SAB ৮৫, DCB ১০০, DAB ১৫০, TCB ১৩০, TAB ১৭৫; H Samrat International, 37 Karanpara-I, ৩ 22275, R3, S ২৫০ D ৪২৫ A/c S ৪০০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০; H Ruby, Kanak Rd, Behind S T Stand, ৩ 31722, S ২৫০ D ৪৫০ T ৪৫০ A/c S ৪০০ D ৪০০।

বাস থেকে কি মিলি দূরে শহরের প্রাণকেন্দ্রে বাজারমুখী Lakhajiraj Rd-এ Sangarva Chowk, Babu Ka Baola, Rajkot-360001-এ মেলা বসেছে সাধারণ হাটেলের। এদের কাছে S ৬০-১২৫ D ১০০-১৭৫ টাকায় মেলাে দোকানপাটে ঠাসা শপিং কমপ্লেক্সের ওপরে Himalaya GH-এ SAB ৬০-৮৫ DAB ১০০-১৭৫, থাকার পক্ষে ভালই। বিপরীতে Vishram GH, ৩ 32183, S ১০০ D ১৭৫ A/c S ২৫০ D 8০০; পশ্চিমে Mehul GH, H Shivam, Jyoti GH, Ananda GH. বাস স্ট্যান্ডমুখী অশোক গেস্ট হাউস ছাড়াও সাধারণ মানের—রেইনবো, অ্যাংগাসডর, ভূপেন্দ্র, ধর্মরাজ, সাধনা, প্যালেস, তাজমহল, মহাকালী, কাথিয়াবাড় লজ, হোয়াইট ওয়েলজ, মনোহর লজ, গ্রীন লজ, মহাবীর হিন্দু লজ, রেল স্টেশনের বিপরীতে পথিক আশ্রম, সর্দার বাগ অতিথি গৃহ, সার্কিট হাউস, সিটি রেস্ট হাউস ছাড়াও প্যাটেল ও ভাটিয়া ধরমশালা আছে রাজকোটে।

আর আছে সারা শহরময়—*H Tulsi, 541 Kanta St-2, ৩ 31731, A4R3, S ৩০০ D 8০০ A/c S 8৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; রাজকোটে অনন্য Galaxy H, Jawahar Rd-1, ৩ 55981, R3B1, S ৩০০-৪৫০ D 8০০-৬৫০ A/c S ৪৫০-৬৫০ D ৬৫০-৮৭৫ সুইট S ১২৫০ D ১৮৫০; H Jayson, SVP Canal Rd-2, ৩ 26404, A4R3B2, S ৩০০ D 8৫০ A/c S 8৫০ D ৬৫০ ডিলাক্স ৮৫০; H Aditya, Bhupendra Rd-1, opp Rajashri Talks, ৩ 28177, S ৩০০-৪৫০ D 8৫০-৬৫০ A/c S ৪৫০-৮৫০ D ৬৫০-১০৫০ সুইট ১০০০-১৫০০; H Kavery, near GEB, Kanak Rd-1, ৩ 31107, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০; H Royal Inn, Phulchhab Chowk-1, ৩ 41670, S ৩০০ D 8৫০ A/c S 8৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; H Mohit International, Race Course Rd-1, R2B2, S ৩০০ D 8৫০ A/c S 8২৫ D ৬৫০; H Ratnadweep, MG Rd; H Koka, Yagnik Rd, ৩ 49951; H Sadhana, MG Rd, ৩ 22808; H Saurashtra, Rajkot-Jamnagar NH; Angel's H, Dhebar Chowk, D ১৫০-৩২৫।

আহার্যেও বৈচিত্র্য মেলে রাজকোটের হাট্টেলে। তবুও যেন Galaxy-র কাছে Havmor-এর ভারতীয়, চীনা ও মহাদেশীয় আহার্যে যথেষ্ট সুনাম। অদূরে নিরামিষ থালি মিলের জন্য Tuj Restaurant-টি যথেষ্ট খ্যাত। আরও স্বল্প মূল্যে অশোক লাগোয়া Vaibhav Restaurant-টিরও যথেষ্ট প্রশংসা নিরামিষ আহার্যে। তেমনি হিমালয়ার কাছে Rainbow Restaurant-টিরও সুনাম যথেষ্ট দক্ষিণী আহার্য পরিবেশায়।

তবে রাজকোটে থাকার দরকার হয় না। সময় স্বল্পতায় বা রাজস্থানের আবু পাহাড়যাত্রীরা ওখায় ১১-৩০ বা ধারকা থেকে ১২-১০এর 9006 সৌরাষ্ট্র মেলে ১৫-৩১এ হাপা ছেড়ে ২০-৫৫য় ভিরামগম পৌঁছে ভিরামগম থেকে নতুন করে ১৮-৩০টার প্যালেঞ্জারে মিটারগঞ্জে ২১-১০এ মাহেসানায় পৌঁছান। বাসও আছে ভিরামগম থেকে ৬৫ কিমি দূরের মাহেসানা। মাহেসানা থেকে ১০-২৫এ 9105 আমোদাবাদ-দিল্লী মেল-এ ১২-৪৫এ ১১৮ কিমি দূরের আবু রোড পৌঁছে বাসে আবু পর্বত পৌঁছান। আমোদাবাদ-দিল্লী রেলপথে মাহেসানা ও আবু রোড। তাই ভিরামগম থেকে সরাসরি আমোদাবাদ গিয়েও চড়া বেতে পারে ট্রেন। সুপার ফাস্টও মেলে আমোদাবাদ থেকে আবু রোডের। ১৭-১৫য় আমোদাবাদ ছেড়ে ২০-৫০এ আবু রোড যাচ্ছে 2915 আশ্রম

এক্স। আর ১৫-৪৫এ আমোদাবাদ ছেড়ে ১৭-২৮এ মাহেসানা পৌঁছে ১৯-৫০এ আবু রোড যাচ্ছে DMU 101 এক্স। আমোদাবাদ-আজমের প্যা যাচ্ছে ১-২৫এ মাহেসানা ছেড়ে ৫-২০এ আবু রোড পৌঁছে ফালনা-মারোয়াড় হয়ে আজমের। ট্রেন আসছে—ওখা, পোরবন্দর, রাজকোট, গান্ধীধাম থেকেও প্যালেঞ্জার ও এক্স। ভিরামগম হয়ে আমোদাবাদ/মুন্ড্রাই যাচ্ছে নানান ট্রেন। তাই, ভিরামগম পৌঁছে আমোদাবাদ, রাজস্থান, দিল্লী, মুম্বাই বা গুহাভিমুখী পথও ধরা বেতে পারে।

চলার পথে রাজকীয় বেডবে বিশ্রাম নিতে পারেন রাজকোট-আমোদাবাদ রেলপথের Wankaner-এর প্রাসাদপুরে। বাসও যাচ্ছে আধ ঘণ্টা অন্তর, দূরত্ব ৫০ কিমি; ১ ঘণ্টার পথ। থাকার ব্যবস্থা প্রাসাদ থেকে দূরে রমণীয় Oasis House-এ। ব্রিটিশ রেসিডেন্টের বসত বাড়ি প্রাসাদের অদূরে Royal GH-এও থাকার ব্যবস্থা মেলে। থাকা ও আহাৰ্য নিয়ে প্রতিদিন প্রতিজনা ১২৫০-১৭৫০।

আবার উৎসাহীরা রাজকোট থেকে ৬৮ কিমি উত্তর-পূর্বে হাপা-আমোদাবাদ রেলপথের থান জং পৌঁছে ৮ কিমির সড়ক দূরত্বে ত্রিনেত্রেশ্বর মহাদেব মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। রাজকোট থেকে ভিরামগমের দূরত্ব ১২১, আমোদাবাদ ১৯৬, জুনাগড় ২১০ কিমি। Chotila হয়ে পথ গিয়েছে রাজ্যের দিগ্বিদিকে। জনশ্রুতি, মহাভারতের দ্রৌপদীর স্বয়ম্বর সভায় লেই গড়ে উঠেছে এই মন্দির। মন্দির লাগোয়া কুণ্ডের জলে স্নানে পুণ্য হয়। লোকশ্রুতি, ঋষি পঞ্চমীতে গঙ্গা থেকে জল বয় কুণ্ডে। লক্ষ লক্ষ পুণ্যার্থীর সমাগমও ঘটে সপ্তেম্বরের বাৎসরিক মেলায়। লোক সংস্কৃতির নানান অনুষ্ঠান দেখে নেওয়া যায় Tarnetar Fair-এ। কান্সার্বারময় ছাতা মনমাতানো মেলার আর এক আকর্ষণ। সাময়িক যাত্রী কলোনিও গড়ে ওঠে কাথিয়াবাড়ি মেলাকালে। আমোদাবাদ থেকে TCGL ৩ দিনের প্যাকেজ ট্রারে আসছে মেলা দেখাতে।

ভাবনগর

আধুনিক বন্দর নগরী ভাবনগরও অতীতে ছিল এক দেশীয় রাজ্য। ১২৬০ খ্রিস্টাব্দে রাজপুতরা ভাবনগরে এসে রাজত্ব গড়ে। আর আধুনিকতা পায় ১৭৪৩এ ভাব সিংহরী হাতে। তবে, বন্দরটি ১৭২৩এ গড়ে ওঠে। ভারতের পশ্চিম উপকূলে অবস্থিত বন্দরনগরী ভাবনগর শিল্প ও বাণিজ্যক্ষেত্রে রাপেও যথেষ্ট খ্যাত। ভারতীয় তুলার সিংহভাগ এই ভাবনগর থেকেই বিদেশের বাজারে রপ্তানি হচ্ছে। প্রাকৃতিক সৌন্দর্যও মনোরম ভাবনগরের।

১৮৯৫এ প্রতিষ্ঠিত বার্টন লাইব্রেরি তথা মিউজিয়মে পুথিপত্রের মূল্যবান সংগ্রহের সঙ্গে প্রাচীনকালের অস্ত্রশস্ত্র, রশশস্ত্রাও মুদ্রার সংগ্রহ উল্লেখ্য। আর রয়েছে ছবিতে গান্ধী জীবনী, গান্ধীজী বিষয়ক নানান সংগ্রহ, পুস্তকাবলীর সন্ডার। ১৯৬৩তে পতিত জওহরলাল নেহরু উদ্বোধন করেন। গৌরীশঙ্কর লেক, বনমভাই প্যাটেল গার্ডেনের আকর্ষণও আলবুদ্ধবনিতার কাছে কম নয়। ভাবনগরের পুরাতন বাজারটিও বৈচিত্র্যে ভরা। ঝলমলে সাজে হাজারেরও বেশি

দোকান—ধরেবিথরে সাজানো পণ্যও তাদের সহস্ররকম। কাচ বসানো এমব্রয়ডারি করা চোলা বা *Kunjeri* সংগ্রহ করা যেতে পারে। শহর থেকে ৫ কিমি দূরে টিলার টেঙে তখতেশ্বর মন্দির। মন্দিরের আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও শহরের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়।

উৎসাহীরা কুসহরিগণও দেখে নিতে পারেন ভাবনগরের ৬৫ কিমি উত্তরে ক্যাষে উপসাগরের পশ্চিম লাগোয়া ভেলভাখার ব্ল্যাক বাক স্যান্ডচুয়ারিতে। এমনকি, দমন ও দিউ রাজ্যের দিউ বেড়িয়ে নেওয়ার সুবিধা ভাবনগর থেকে।



২১ কিমির ব্যবধানে বাস স্ট্যান্ড ও রেল স্টেশন ভাবনগরে। বাস স্ট্যান্ড নতুন শহর, আর রেল স্টেশন পুরাতনে। রাজকোট থেকে জেটলসর/খোলা হয়ে প্যালেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ভাবনগরে। দূরত্ব ২৫৮ কিমি। ট্রেন যাচ্ছে ২৭০ কিমি দূরের আমোদাবাদ থেকে ৭-০৫এ ৭৭৩৬ আমোদাবাদ-ভাবনগর এক্স, ১৭-০৫এ ৭৭১০ শত্রুঞ্জয় এক্স বোটিড/খোলা হয়ে ৫২ ঘণ্টায় ভাবনগরে। গিরনার লিঙ্ক এক্স যাচ্ছে ৩-৪৫এ খোলা থেকে ১ ঘণ্টায় ৫১ কিমি দূরের ভাবনগরে। ১৬৯ কিমি দূরের সুরেন্দ্র নগর থেকে ৯-১০এ ৭৯২৬ মেল: ৪৭ কিমি দূরের পালিতানা থেকে ৯-০০, ১৮-০৫, ২০-০০এ প্যালেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে শিহোর হয়ে ১২ ঘণ্টায় ভাবনগরে।



রাজ্য পরিবহনের বাসও সংযোগ গড়েছে বিভিন্ন শহরের সঙ্গে ভাবনগরের। বাস যাচ্ছে ২৪৪ কিমি সড়ক দূরত্বের আমোদাবাদে। রাজকোট থেকেও নিয়মিত বাস আসছে ভাবনগরে। বাস যাচ্ছে গুজরাট স্টেট ট্রান্সপোর্ট ছাড়াও নানান প্রাইভেট সংস্থার রাজ্য তথা প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে ভাবনগর থেকে। উনা হয়ে দিউ যাচ্ছে ৪২ ঘণ্টায় ৫-৩০, ৬-৩০, ৭-৪৫, ৮-০০ ছাড়াও নানান; পালিতানা যাচ্ছে ১২ ঘণ্টায় নানান বাস; দ্বারকায় যাচ্ছে ৭-৩০, ৮-১৫, ৮-৪০, ১০-৪৫, ১৩-০০, ২১-০০, ২১-১৫য়। বাস যাচ্ছে ৬ ঘণ্টায় আমোদাবাদ, রাজকোট, মুম্বাই ছাড়াও নানান। আর দিউ, গির, পালিতানা, সোমনাথ যাত্রীদের উচিত হবে ভাবনগর থেকে উনা হয়ে চলা। বাসের আধিক্য মেলে উনায়।



আর IAC-র বিমান ১২৪৬ দিন ১৩-০০টায় মুম্বাই ছেড়ে ৫০ মিনিট ভাবনগর পৌঁছে মুম্বাই করে ১৪-৩৫এ ভাবনগর থেকে INEPC Airlines ১৫ ৭ দিন ভাবনগর-মুম্বাই-ওরঙ্গাবাদ রুটে সার্ভিস গড়েছে।



*H Appollo, opp Central Bus Stand, Bhavnagar-364001, STD 0278, 0 25251, A6R1, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/c S ৪০০ D ৩০০ সুইট ৮৫০; Ajoy GH; Welcomgroup-এর Nilambag Palace H, Bhavnagar-2, 0 24241, A/c S ১৫০০ D ২৫০০ সুইট ২৭৫০-৩৫০০; *Jubilee H, behind Pil Garden, 0 20045, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৫০০ D ৭৫০; *H Blue Hill, opp Pil Garden-1, 0 426951, A5R1B1, S ৩৫০ D ৫৫০ A/c S ৩০০ D ৮০০ সুইট ১৫০০; Takhte Khurshed H, Waghawadi Rd; Shital H, Amba Chowk, S ৬৫-১০০ D ১২৫-১৭৫; অদূরে একই নামের একই নামের Vrindavan H; রেল স্টেশনের কাছে H Mini, Station Rd, S ১২৫ D ২২৫

A/c S ৩৫০ D ৪৫০; Geeta Lodging & Boarding; Nataraj GH, Diamond Market, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২০০; H Embassy; Mahabir L, near Rly Stn; Kashmir H, near Pathik Ashram; Ever Green GH, near Gogagate ছাড়াও নানান সাধারণ হোটেল, সার্কিট হাউস, স্টেট গেস্ট হাউস, পবিত্র আশ্রম, রেলের রিটায়ারিং রুম ও ধরমশালা আছে ভাবনগরে।

ক্যাষে

আমোদাবাদের দক্ষিণ-পশ্চিমে অতীতের বন্দর ক্যাষে। ব্রিটিশের আগমনের আগে ডাচ ও পর্তুগিজরা আসে—বসতির সাথে কারখানাও গড়ে। তবে, আজ ক্যাষে খ্যাত তার পর্যাপ্ত তৈল সম্পদের জন্য। অতি দ্রুত শিল্পনগরীতে রূপ পেতে চলেছে ক্যাষে। আমোদাবাদ থেকে ক্যাষের দূরত্ব ১৪০ কিমি। কলকাতা, দিল্লী বা মুম্বাই থেকে ভাবনগর হয়ে পথ গিয়েছে ক্যাষের।

পালিতানা

ভাবনগর-সুরেন্দ্রনগর শাখা রেলপথের শিহোর হয়ে ট্রেন যাচ্ছে পালিতানায়। ৬-৩০, ১৪-৪৫, ১৮-৪৫এ ভাবনগর ছেড়ে যথাক্রমে ৭-২৩, ১৫-২৭, ১৯-২৫এ শিহোর পৌঁছে পালিতানায় যাচ্ছে ৮-১০, ১৬-১৫, ২০-১৫য়। বাসও চলে মুম্বাই ভাবনগর থেকে শিহোর হয়ে পালিতানায়। দূরত্ব ৫১ কিমি, সময় নেয় ১২ ঘণ্টা। সরাসরি বাসের অমিলে উনা হয়েও চলা যায়। আর আমোদাবাদ থেকে ২১-২৫এ ছাড়া ৭৭৪৬ গিরনার এক্সের বগি যাচ্ছে ২-২০এ খোলায় পৌঁছে খোলা থেকে ৩-৪৫এ ৭৪৪৪ লিঙ্ক এক্সপ্রেস হয়ে ৪-৫৫য় ভাবনগরে। আবার শিহোরে বদল করেও চলা যেতে পারে আমোদাবাদ থেকে আসা এক্স ট্রেন ৯-১১ ঘণ্টায়। আর বাস যাচ্ছে ভোর থেকে সন্ধ্যা ঘণ্টায় ঘণ্টায় আমোদাবাদ (গীতা মন্দির স্ট্যান্ড) ছেড়ে ৫ ঘণ্টায় ২১৫ কিমি দূরের পালিতানায়।

গুরু পদলিপ্ত বা পলিপ্ত থেকেই নাগার্জুনের হাতে পালিতানার পত্তন। পালিতানার মূল আকর্ষণ রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে পবিত্র জৈন তীর্থশত্রুঞ্জয় পাহাড়। ঘোড়ার গাড়ি বা পায়ের পাহাড়তলি পৌঁছে ঘণ্টা দু'মুকে ২১ কিমিতে ৩৮১৬ সিঁড়ি উঠে ৬০২ মি উঁচু পাহাড়চূড়ায় মন্দিররাজি। শ'সেড়ে কটাকয় ডুলিও মেলে যাতায়াতে। কাপড়ের বা প্লাস্টিকের জুতো, লাঠিও মেলে পাহাড় চড়ে। উচিতও হবে সাত সকালে পাহাড় চড়ে সৌন্দর্যন সাঙ্গ করা। ৭-১৮-৩০টায় খোলা থাকে পালিতানার মন্দিররাজি। তবে, ২০শে জুলাই থেকে ২০শে অক্টোবর পূজাপতি বন্ধ থাকে মন্দিরে। পাহাড়ী মন্দিরে রাতে থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই। এমনকি পূজারীরাও নেশে আসেন পাহাড় থেকে সন্ধ্যা। শুদ্ধ বসনে মন্দিরে যাওয়া রীতি। জুতো, চামড়ার জিনিসও রেখে যেতে হয়। আহাৰ্য সঙ্গে নেওয়া মানা। অনুমতি ছাড়া ছবি তোলাও নিষেধ। কার্তিক ও চৈত্র পূর্ণিমায় বিশেষ উৎসবও হয় পালিতানায়।

৫ জৈন তীর্থের (গিরনার, আবু পর্বত, পরেশনাথ,

গোয়ালিয়র, পালিতানা) মধ্যে পালিতানা অন্যতম। জীবনে একবার পালিতানায় আসা জৈনদের কাছে মহাপুণ্যও বটে। সমাগমও তাই পর্যটকদের থেকে জৈন তীর্থযাত্রীর বেশি। ১১ শতকে শুরু হয়ে দীর্ঘ ৯০০ বছর ধরে খেতমর্মরে ৮৭৩টি মন্দির হয়েছে পাহাড়চুড়ায়। তবে, ১৪ ও ১৫ শতকের মুসলিম হানায় অতীত বিনষ্ট হতে নতুনভাবে গড়ে উঠতে শুরু করে পালিতানার মন্দির ১৫০০ খ্রিস্টাব্দে। স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে অতুলনীয় এই মন্দিররাজি দেখলে ঘেরা। ৯টি পিচুস্তুতিতে ১১শ শতকে পুত্রের গড়া প্রথম জৈন-তীর্থঙ্কর শ্রীআদিশ্বর মন্দিরটি জৈন-তীর্থযাত্রীদের কাছে পবিত্রতম। সুন্দরতমও বটে এর কারুকার্য। মর্মরে বিগ্রহ—নানান মনিমুক্তা খচিত স্বর্ণালিঙ্গারে মণ্ডিত আদিশ্বর। ১৬১৮য় তৈরি বৃহত্তম মন্দিরে চতুমুখী দেবতা ২৪তম তীর্থঙ্কর আদিনাথ (হিমতে, চার তীর্থঙ্করের মূর্তি)। ৯-১০০টায় অঙ্কি উৎসবে অভরণ পরেন দেবতা। ৯-৪৫এ স্নান, ১০-৪৫এ পূজা, ১৫-১০০টায় আবার অলঙ্কারে ভূষিত হন দেবতা। শহর থেকে Munimji, Anandji Kalyanji Trust-এর বিশেষ অনুমতিতে ৯—১৫-১০০টায় দর্শন মেলে দেবতার রত্নসম্ভারে। গহিড়ও মেলে এদের কাছে।

শুধু মন্দির নয়—শক্রঞ্জয় পাহাড় থেকে চারপাশের প্রকৃতিও সুন্দর দৃশ্যমান। সৌরাস্ট্রের বৃহত্তম সেচ প্রকল্পটিও দেখে নেওয়া যায় পাহাড় থেকে। বয়ে চলেছে শক্রঞ্জয় নদী। স্নানে শুধু পুণ্য নয়—শক্রঞ্জয়ের জলে নানান ব্যাধিরও নিরাময় হয়। আগ্রহীদের উচিত হবে বাসে গিয়ে স্নান ও প্রকল্প দর্শন করে ফেরা। নির্মিচ্ছ দিনে ভাবনগর ছাড়িয়ে Gulf of Cambay-ও দৃশ্যমান পাহাড় থেকে। আর আছে তাতেটি রাডে তখতগড় ধরমশালার সামনে জৈন ধর্মের প্রদর্শনশালা। বিশাল জৈন মিউজিয়ম তখতগড়ের পিছনে টেম্পল অব মিরর। ডোমটি রঙিন কাচে মোড়া। সিঁড়িপথের শুরুতে ভাইনে বৃত্তাকার সমেশ্বর গছাড়াও মন্দির রয়েছে নানান পালিতানায়।

আর আছে পাহাড়ে আদিশ্বর লাগোয়া মুসলিম ফকির অঙ্গার পীরের দরগা। সন্তান কামনায় মহিলারা আসেন—দোয়া মাগেন পীরের কাছে। ডালি দেন ছোট্ট দোলা। লোককৃতি, মনস্কামনা পূরণও হয় তাঁদের।

পালিতানার আর এক উল্লেখ্য হারমোনিয়াম তৈরির ঘরোয়া শিল্প। তেমনই উল্লেখ্য পালিতানার আর এক ঘরোয়া শিল্প হিরে কাটা ও কেন্দা-বেচা দেখা।



বাস ও রেলের সন্নিবিষ্ট স্টেশন রাডে TCGL-র Toran Sumeru, Stn Rd, Palitana-364270, ☎ (0284) 2372, DAB ৩০০ ডর্মি বেড ৩০ A/c D ৪৫; বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Shrivak, SAB ১২৫

DCB ১৫০ DAB ২২৫ TAB ২৫০ ডর্মি বেড ৪০। আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম, রেল স্টেশনের কাছে Pathik Ashram ছাড়াও মহাবীর লজ, রেভিনিউ গেস্ট হাউস।

তবুও যেন উচিত হবে টাকা পনেরোয় টাঙ্কায় বাস থেকে ১১ কিমি গিয়ে ঘরের সংস্থান করা। বাজার ছাড়িয়ে শক্রঞ্জয় পাহাড়মুখী Talati Rd, Palitana-364270-য় দেড় কিমি জুড়ে ধরমশালা-র উপনিবেশ। সারি দিয়ে বাড়ি—বিশাল বিশাল চত্বর, বৈভব তার রাজকীয়। বাথ সংলগ্ন ঘরও মেলে এদের কাছে। অসওয়াল এদের মধ্যে কুলীন শ্রেষ্ঠ। আর আছে—ধনাপুরা জিতেন্দ্রভবন, শক্রঞ্জয় বিহার, পালিতানা মহারাষ্ট্র ভবন, চন্দ্রদীপক, শ্রীনাথেশ্বর জৈন ভবন, শ্রীসুমন্তবিহার টাটা ভবন, শ্রীনাথেশ্বর বিহার টাটা বাড়ি, শ্রীজৈন ভবন, তখতগড় জৈন; গলিপথে সোনা-রাণা যাত্রিক গৃহছাড়াও শতাব্দিক ধরমশালা পালিতানায়। পরহিতার্থে ডোনেশন প্রথায় থাকার ঘর মেলে। আহাৰ্যে নিরাশ্রিত এরা—Paros ও Jain Bhayanshala ভালই। Toran Sumeru-রও যথেষ্ট সুনাম পাঞ্জাবী ও গুজরাটি আহাৰ্য পরিবেশায়।

পালিতানায় যাতায়াতের পথে শিহরে থেকে ২৪, পালিতানার ৫৫ কিমি দূরে অতীতের বনভীপুর অর্থাৎ আজকের ভালী শহরও বেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাংশহীরা। খ্রিস্টপূর্ব কালে কাথিয়াবাড়ের রাজধানীর নিদর্শনও মেলেছে ভালী। বিক্ষিপ্তভাবে পড়ে থাকা পাথর খণ্ড দেখতে মেলে। মিউজিয়মও বসেছে প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের।

তবে, পালিতানা থেকে একাঙ্কি উচিত হবে কেন্দ্র-শাসিত দমন ও দিউ রাজ্যের দিউ বেড়িয়ে নেওয়া। Palitana-Talaja-Mahuva-Unna হইয়ে পথ গিয়েছে দিউ-এর। পালিতানা থেকে গুজরাট রাজ্যের সীমান্ত শহর উনা-র সরাসরি বাস থাকিলে তালাজায় বদল করে চলা যেতে পারে। দিনভর বাস চলে এ পথে। ঘণ্টা পাঁচেকের পথ। চলার পথে তালাজা বাস স্ট্যান্ডের শিরে খেত-শুভ্র জৈন মন্দিরটিও দেখে চলা যায়।

আবার উৎসাহীরা তালাজা থেকে বাসে ২৪ কিমি দূরের গোপনাথ-ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। আরব সাগরের তীরে মনোরম পরিবেশে ৫০০ বছরের প্রাচীন শ্রীকৃষ্ণ মন্দির। আর আছে মন্দির লাগোয়া ভাবনগর রাজ্যের সামার পালেস হওয়া মহলের ধ্বংসস্থাপ। সমুদ্রও এখানে শান্ত—ভাটায় জল যায় সরে আর জোয়ারে নীলাকাশের সঙ্গে মিলেমিশে জল আসে কিনারে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে মন্দির কমিটির ২টি গেস্ট হাউসে। মোহান্ত গেস্ট হাউস-টি মন্দির থেকে সামান্য দূরে হলেও সমুদ্রকে নিবিড়ভাবে পেতে থাকার পক্ষে মনোরম। আর আছে ব্রহ্মচারী গেস্ট হাউস। প্রসাদও মেলে মন্দিরে। বাস যাচ্ছে ৬টা থেকে দিনভর ঘণ্টায় ঘণ্টায় তালাজা থেকে গোপনাথ-এ। গোপনাথ থেকে ৩০ কিমি দূরে বন্দরনগরী মাছবা।

ভুজ

অতীতে ভুজ ছিল জাসেজা রাজ্যের সামন্ত রাজ্য—বীপ ভূমি কচ্ছের রাজধানী। আর আজ কচ্ছের কেন্দ্রমণি

ভূজে জেলাসদর বসেছে কচ্ছের। নগরীর পত্তন ১৭২৩এ। মরুভূমি ও সাগরবেলার অপূর্ব সমন্বয় ঘটেছে গুজরাটের বৃহত্তম জেলা কচ্ছে। থর মরুভূমির অংশ কচ্ছ। কচ্ছ উপসাগর বিচ্ছিন্ন করেছে আর এক উপদ্বীপ কাথিয়াবাড় থেকে ভূজকে। উত্তরে বিস্তীর্ণ মরু অঞ্চল, তারও উত্তরে পাকিস্তান। গরমের আধিকা আছে—তবে সর্বাে তাপমান রিঞ্চ ও মনোরম। মে মাস থেকে মনসুন শুরু—সমুদ্রের জলে দ্বীপাকার নেয় কচ্ছ। গ্রীষ্মে কর্পমাত হয়ে থাকে কচ্ছ—বসতি নেই বললেই চলে। আর শীতে (ডিসেম্বর-ফেব্রুয়ারি) দূর-দূরান্ত থেকে সাদা ও শিষ্ণ রঙা ফ্রেমিংগো ও পেলিকান পাখিরা এসে ডিম পাড়ে Little Runn of Kutch-এর কচ্ছ উপসাগরে। বাতাসে নুন, মাটির স্তরেও নুনের প্রলেপ; চাষবাসের অযোগ্য—৪৯৫৩ বর্গকিমি জুড়ে কচ্ছের উত্তরে রানের নুন-ঢাকা ফাটা মাটির উপর বিরল প্রাণীর সহস্রাধিক গুড়খার অর্থাৎ বনা গাধার বাস বিশ্বের একমাত্র ওয়াইল্ড অ্যাস স্যাক্চুয়ারিতে। ১৯৭৩-এর আইনে অবধা এরা। ২০ সেমি উচ্চ ২১০ সেমি লম্বা ২৩০ কেজি ওজনের তৃণভোজী বাদামি-সাদা চতুষ্পদ দর্শনে নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মনোরম হলেও অস্ত্রীবর থেকে মে মাসে চলা যেতে পারে। দৌড়ের গতি এদের ঘণ্টায় ৭০-৮০ কিমি। গ্রীষ্মে ৪৭° আর শীতে ৪° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান।

সুরেন্দ্রনগর থেকে মিটার গেজে ৯-২৫ ও ১৯-৪০এ প্যালেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৩৫ কিমি দূরের ধানগাধা জং। বাসও যাচ্ছে নানান। ঘণ্টাখানেকের পথ। বাস বা ট্রেনে Dharangadhra গৌছে ২০ কিমি দূরে স্যাক্চুয়ারি। ১০০ কিমি দূরের আমোদাবাদ থেকেও ট্রেন ও বাস মেলে। এমনকি রাতের আমোদাবাদ-ভূজ বাসে শয়নের ব্যবস্থাও মেলে। বাস আসছে হারাকা থেকে ঘণ্টা নয়েকে। বনদপ্তরের যানাবাহ। প্রাইভেট ট্যাক্সিতে শ'পাঁচেক টাকায় ঘণ্টা পাঁচকে সাঙ্গ করা যায় স্যাক্চুয়ারি দর্শন। জিপের ভাড়া (১০০০) লাগাম ছাড়া। গাইড সঙ্গে নেওয়া ভাল। সাধারণ মনের ২টি রেস্ট হাউসও আছে ধানগাধারায়। অনুমতি লাগে স্যাক্চুয়ারি দর্শনের। থাকা-যান-দর্শনের অনুমতি—Sanctuary Superintendent, Wild Ass Sanctuary, Morbi Rd, Dhrangadhra-363310, © 2016, Gujarat থেকে।

দেওয়ালে ঘেরা ভূজ শহর। অতীতে ভূজিয়া পাহাড়ের দুর্গে শেখনাগের ভাই ভূজঙ্গ নাগের বাস ছিল। ভূজঙ্গ থেকেই নাম হয় ভূজ। আরও পরে কচ্ছপের খেলের বতো দেখতে বলে নাম হয়েছে কচ্ছ। কিছুকাল আগেও সূর্যাস্ত থেকে সূর্যোদয়ে প্রবেশদ্বার বন্ধ হত শহরের। সেকালে আলামপদ্মা দুর্গের ভেতর ছিল পুরাতন শহর। শহরের প্রাণকেন্দ্রে ১৮৬০এ মির্জা মহারাও প্রাগমলজী দ্বিতীয়ের তৈরি লাল বেলে পাথরের দরবার গড়—রাজমহল প্রাসাদ ছাড়াও নানান কিছু। তবে, নতুন শহর প্রসার পাচ্ছে দেওয়াল ডিঙিয়ে দুর্গের বাইরে। সরু সরু গলিপথ সারা শহরময়, সে যেন এক গোলকর্থা। উটে টানা গাড়ি চলেছে গলি নিয়ে সঙ্গীর্ণ গলিপথ ধরে। দু'পাশে দেওয়াল, মাঝে মাঝে খাঁজকাটা; কারুকার্যময় বাড়ির সেরেও বৈচিত্র্য আছে। চাকচিক্যময় ক্যাটা পোশাক পরে ভূজবাসীরা। ষষ্ঠাতিথিক গ্রামে

Rabaris, Ahirs, Meghwals, Vankars—নানান সম্প্রদায়ের আদিবাসীর বাস। অতিথি-পরায়ণ এরা। সোনা ও রূপের জালি এবং মিনাকারি ও কাপড়ের উপর আজরক ছাপার জন্যও ভূজের খ্যাতি আছে। তেমনই আরক রূপে সঙ্গী করা যেতে পারে কচ্ছের আর এক কৃষ্টি—কাচ বনানো সূচিশিল্পের চোখ ধাঁধানো সূচি এমব্রয়ডারি; দারু ও চর্মজাত নানান কিছু ভূজের Shroff Bazar-এর পোকানপাটে কিনতে মেলে।

ভারতীয় বিমান বাহিনীর বৃহত্তম তথা ব্যস্ততম এয়ার-বেসটিও বসেছে এই ভূজে। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের উত্তরে মহাদেব গেটের বিপরীতে হামিরসর হুদের তীরে গোলাপি মর্মরের কচ্ছ মিউজিয়ম। ১৮৭৭এ জন্ম মিউজিয়মের সংগ্রহে যেমন বৈচিত্র্য আছে তেমনই অভিনবত্বে ভরা। গুজরাটে প্রাচীনতম, অতীতে নাম ছিল এর ফাণ্ডসন মিউজিয়ম। বুধবার, ২য় ও ৪র্থ শনিবার ছাড়া ৯—১১-৩০ ও ১৫—১৭-৩০টায় খোলা। ইন্ডিস্ট্র খচিত দারুশিল্পের জাদুপুরী ১৮৬৫তে রাও প্রাগমলজীর তৈরি রাজপ্রাসাদে আজ সরকারি দপ্তর বসেছে। তবে, দরবার হলটি অব্যবহৃত। প্রতিকৃতিতে মহারাও রাজ পরিবারের বংশপরম্পরা দেখে নেওয়া যায়। প্রাসাদ লাগোয়া আকাশ ছোঁয়া ব্লক টাওয়ারটি অভিযান করে শহর তথা মরু অঞ্চলও দৃশ্যমান। খালি পায়ে, ২ টাকার টিকিটে মিউজিয়মের মতো একই সময়ে দর্শনের প্রথা। তবে, ছবি তোলার জন্য ক্যামেরার চার্জ লাগে। আর রয়েছে শহরের উত্তরে লেক, লেকের কাঁধে ডাচ ও কচ্ছ শৈলীতে তৈরি মহারাও প্রাসাদ—আয়না (Aina) মহল। ট্যুরিস্ট অফিস © 20004 বসেছে আয়না মহলে। নামকরণের সাধকতা—আলো জ্বললেই একটি আলো। এক লক্ষ প্রতিভাত হলে আয়না খচিত মহলে। এমনকি Maharao Sinha Madansinhji মিউজিয়মটিও বসেছে মহলে। একাধুই উচিত হবে নেটিভ স্টেটের মূদ্রার সংগ্রহ দেখে নেওয়া। তেমনই বৈচিত্র্য আছে মহলের আশ্চর্য ঘড়িটিতে। প্রাসাদের দ্বিতলে Fuvara ও Hira মহল দু'টির আকর্ষণও উল্লেখ্য। ফুবারা অর্থাৎ রঙমহলে বিনোদনে বসতেন মহারাও—নানান বাদ্যযন্ত্র। আয়নায় মোড়া মহলের মেনে হয়েছে ইতালি থেকে আসা স্থপতির হাতে সুন্দর টাইলসে। ফোয়ারা ও জল স্প্রে করে তাপমান ধরে রাখা হত। হীরা মহলের সূচিশিল্প, দারু ও আভির্ভূত খচিত দরজা খুঁবি সুন্দর। তেমনই ব্রিতলে ১৮৮৪তে মহারাও-এর বিবাহ বাসর তথা সোনার পালঙ্কে সোনার বিছানা, সোনার তৈজস, হীরা-মানিক খচিত ঢাল-তরোয়াল, ফটিকের বাসনাদি, রূপের মিনাকারি করা নানান কিছু মন্ত্রমুগ্ধ করে তোলে দর্শককে। রবি ছাড়া ৯—১২-০০ ও ১৫—১৮-০০টায় খোলা, দর্শনী ২।

লেকের পূবে সবুজের মরাদ্যান সুন্দর বাগিচার মাঝে ১৮৬৭তে তৈরি Sarad Bagh Palace-টিও আজ মিউজিয়মে রূপ নিয়েছে। মহারাও-এর ব্যক্তিগত সংগ্রহ প্রদর্শিত হয়েছে। এমনকি ১৯৯১এ ইয়োরোপে মৃত মহারাও-এর দেহ আনা কফিনটিও প্রদর্শিত হয়েছে। শুক্র ছাড়া ৯—১২-০০ ও

১৫—১৮-০০টায় খোলা। লেকের দক্ষিণে মহাদেব গেট, বাজারের কাছে সবার তরে খোলা বিলাসবহুল স্বামীনারায়ণ মন্দির, লেকের দ্বীপে পার্ক, লেকের পশ্চিমে হ্রদের কোল ঘেঁষে ছাশ্রী অর্থাৎ জাদেজা রাজপরিবারের স্মৃতি-মন্দির চলতে ফিরতে দেখে নেওয়া যায়। মির্জা মহারাও লাখার লাল বেলে পাথরের বৃহত্তম সমাধি সৌখিণ্ডিও আনানামহলের ঐষ্টা রাম সিং মালাম-এর তৈরি। কারুকার্যময় স্তম্ভে ভর করে গ্যালারি হয়েছে কেন্দ্রীয় গম্বুজকে ঘিরে। নিয়মিত বাস সংযোগ গড়েছে গান্ধীধামের সঙ্গে ভুজের।

বিরল প্রাণী ভারতীয় বন্য গাধা দর্শনে জাইনাবাদ (Little Rann of Kutch)

আমেদাবাদ থেকে ১১০ কিমি দূরে জাইনাবাদ। আর জাইনাবাদ থেকে ভিরামগম ৪৫, মাহেসানা ৮০, রাজকোট ১৭৫ কিমি। বাস সংযোগ গড়েছে ত্রয়ী ছাড়াও পশ্চিম ভারতের নানান শহরের সাথে ভিরামগম হয়ে জাইনাবাদের। অক্টোবর থেকে মার্চ মাসে পণ্ডপ্রেমিক Mr Shabbir Malik, Desert Coursers, Camp Zainabad, via Dausada, Gujarat, PC-38275। থেকে ভুজের উত্তর জুড়ে রান অব কচ্ছ গুডখার বা জলি গথিয়া অর্থাৎ বন্য গাধা (Gorkhar) দেখাতে প্যাকেজ ট্রারের ব্যবস্থা করেন। জাইনাবাদে থাকা, খাওয়া, জিপ ও উটে ঘোরা, দর্শনী, সব কিছু মিলে প্যাকেজ ডাড়া ৯৫০-১২৫০ প্রতিরাত প্রতিজন। শিশুদের ৫০% রিবেট মিলে। ৪০% টাকা Bank Draft on SBI, Zainabad অগ্রিম পাঠিয়ে বুক করবার প্রথা। বন্য গাধার সাথে দর্শন মিলে নীল গাই, চিচারা, নেকড়ে ছাড়াও নানান জন্তু লিটল রানের ভেত থেকে ভেটে। তেমনই দেখে নেওয়া যায় হবারা বাস্টার্ড, ফ্রেমিংগো, পেলিকান ছাড়াও নানান দুস্তাপ্য পাখি রানে। অবসর বিনোদনে VDO Film Show. আদিবাসীদের নানান সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান দেখারও ব্যবস্থা করে Desert Coursers. দিনে খরতাপ, রাতে তাপমান ৪-৫° সেন্টিগ্রেডে নামে। যথেষ্ট উলেন দরকার শীতের দিনে রানে। আমেদাবাদ থেকেও Desert Coursers, Ahmedabad, ০৪৪৫০৬৮ ছাড়াও নানান সংস্থা প্যাকেজের ব্যবস্থা করে।



রেল স্টেশনের বিপরীতে Puradise L, শহরমুখী স্টেশন রোডে—Prince H, ASR1, DAB ২৫০-৩৭৫ A/C D ৪৫০-৬০০; H Rutrani, S ৬০-১২০ D ১২৫-১৭৫; H Anam, S ১৫০ D ২৫০ A/C S ৩২৫ D ৪৫০। বাস স্ট্যাণ্ডে—Jay Bharat Lodging, Sagar L, SAB ৮০ DAB ১২৫-১৫০; H Ambassador, S ৬৫ D ১২৫। সবজি বাজারে City H, SCB ৬০ DCB ১০০ TCB ১২৫, স্বল্পমূল্যে ভালই। Lake View H, near Rajendra Park, সুইমিং পুলও আছে। বহিরাগতদেরও সুযোগ মেলে সাঁতার সেতুর ব্যবহারে। H Park View, Hospital Rd, ০23406, S ১৭৫-২৭৫ D ২০০-৩৫০; Garden View, Nityananda, Anand ছাড়াও নানান। আর আছে মিউজিয়ামের অদূরে সরকারি রেস্ট হাউস—Umed Bhawan ও সার্কিট হাউস ভুজ। আহার্য ও মেলা প্রায় প্রতিটা ছোট্টেই।

ভুজ থেকে কোটিখরের দূরত্ব ১৫২ কিমি, বাস যাচ্ছে। কোটিখর কচ্ছের মহানতীর্থ। মহাদেব মন্দিরের জন্য কোটিখরের প্রসিদ্ধি। এখানকার সাগর সৈকতটিও মনোহর। নারায়ণ সরোবরে

নারায়ণ মন্দির ও জলাশয়টিও উল্লেখ্য। লাল রঙের অ্যাটিলোপ বা চিচারাও দেখতে মেলে নারায়ণ সরোবরে। থাকারও ব্যবস্থা আছে নারায়ণ সরোবরে। তবে, দূরত্বের জন্য কোটিখরে পর্যটক বা তীর্থযাত্রীর সমাগম কম। তবুও যেন উচিত হবে বৈচিত্র্যময় কচ্ছ উপসাগর বেড়িয়ে নেওয়া।

ভুজের আর এক উল্লেখ্য ৬০ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে Mandvi. দেওয়ালে ঘেরা অতীতের বন্দর নগরী আজ বাঁচ রিসর্টে রূপান্তরিত। বাস যাচ্ছে ভুজ থেকে। থাকারও নানান ব্যবস্থা—Vinayak GH, Shital GH; এসের ডাবল বেডের ঘর ৮০-১৫০। শহর থেকে ২ কিমি দূরে Govt GH, D ১৫০। ভুজের উত্তর-পূর্বে পাক সীমান্ত লাগোয়া Dholavira-য় হরমী-মহেঞ্জোদাড়োর কালের সভ্যতার সন্ধান মিলেছে। খননে অনুসন্ধান চলছে প্রত্নতত্ত্ব দপ্তর থেকে। তবে, সীমান্ত হেতু যাতায়াতে নানান বিধিনিষেধ। বিদেশীদের পারমিট লাগে Collector Office, Bhuj থেকে। বাস যাচ্ছে ভুজ থেকে খোলাভিরায়ে। সাধারণ গেস্ট হাউসে রাত্রিবাসের ব্যবস্থা। তবে, চলার পথে ভুজ থেকে বাসে Lilpur পৌঁছে Gandhi Ashram-এ (থাকা ও আহার্য মেলে) প্রথম রাত কাটিয়ে দ্বিতীয় সকালে খোলাভিরায়ে চলা যেতে পারে বাসে। খোলাভিরা থেকে ১৫-০০টার বাসে ভুজ ফিরুন।

কান্দালা

ভুজ থেকে ৫৭ কিমি দূরে গান্ধীধাম। আর গান্ধীধাম থেকে কান্দালা পোর্টের দূরত্ব মাত্র ১২ কিমি। উত্তর-পশ্চিম ভারতের নতুন দিগন্ত খুলেছে কান্দালায়। গান্ধীজীর চিত্তাভ্রম্ব বিসর্জিত হয় কান্দালা ক্রিকে—সেই থেকে নাম হয়েছে শহরের গান্ধী-ধাম। ১৯৪৭এ দেশ ভাগে সিদ্ধ থেকে আসা উদ্ভাস্তদের আশ্রয় দিতে গান্ধীধামের উদ্ভব। কান্দালা বন্দরের পরিকল্পিত নগরীও গান্ধীধাম। এর ব্রু-প্রিন্ট তৈরি করেন আমেরিকা থেকে আগত নগর পরিকল্পনায় বিশেষজ্ঞ একটি সুসংবদ্ধ স্থপতির দল। পরিকল্পিত শহরের জন্য গান্ধীধাম পর্যটকদের আকর্ষণ করে। বন্দরটি খুব শিগগিরই ভারতীয় আমদানি ও রপ্তানি বাণিজ্যে মুখ্য ভূমিকা নেবে। এখনই এক মিলিয়ন টন পণ্য তোলা-নামার ব্যবস্থা আছে কান্দালায়। আর আছে গান্ধী সমাধিও শিবমন্দির। মন্দিরে দেবতা বিশ্বে নয়—স্মৃতি হয়েছে নির্বাঞ্ছের শিবের।



১৭-০০টায় মুম্বাই সেন্ট্রাল ছাড়া ৭০৩১ মুম্বাই-গান্ধীধাম কচ্ছ এক্স ১-৫৫য় আমেদাবাদ ছেড়ে ২-৫৬য় ভিরামগম পৌঁছে শাখা লাইনে গান্ধীধাম যাচ্ছে পরদিন ৮-০৫এ। ৭-৩৫এ ভিরামগম ছেড়ে গান্ধীধাম যাচ্ছে ১৬-৩৫এ প্যাসেঞ্জার। এছাড়া যাচ্ছে ১৪-১০এ ভাদোদরা ছেড়ে ১৬-১৫য় আমেদাবাদ পৌঁছে ২২-৩০এ ৭১০৩ ভাদোদরা-গান্ধীধাম এক্স, সাপ্তাহিক নাগেরকয়েল-গান্ধীধাম এক্স যাচ্ছে আমেদাবাদ/ভিরামগম গান্ধীধাম হয়ে। ভিরামগম ২৩৫, আমেদাবাদ ৩০০ আর মুম্বাই-এর দূরত্ব ৭৯২ কিমি গান্ধীধাম থেকে। ট্রেন আসছে মাহেসানা-আবু রেলপথের পালানপুর থেকেও গান্ধীধামে। আর গান্ধীধাম থেকে ৪-৪৫, ৮-১৫, ১০-৪৫, ১১-৪৭, ১৩-৫০, ১৭-৩১, ১৯-৫৫য় ট্রেন যাচ্ছে ষষ্ঠা দুয়েকে ৫৭ কিমি দূরের নিউ ভুজে। বন্দর নগরী কাপলাতেও ট্রেন যাচ্ছে ৭-১০, ৯-০৫, ১০-৪০, ১৫-০০, ২২-৫০এ ১২ কিমি দূরের গান্ধীধাম থেকে। আমেদাবাদ

যাচ্ছে ১৫-৫৫য় গাঙ্গীধাম থেকে নিউ ভূজ-আমেদাবাদ প্যাসেঞ্জার।
যোথপুর যাচ্ছে ৪-৪৫য় গাঙ্গীধাম ছেড়ে ২২-২০য় প্যাসেঞ্জার ট্রেন।



বাসও সংযোগ গড়েছে NH ৪-A ধরে রাজ্যের
নানান শহর থেকে গাঙ্গীধাম, ভূজ ও কান্দালার।
মুহূর্ত্ত বাস ও শেয়ার ট্যাক্সি চলছে গাঙ্গীধাম থেকে
ভূজ ও কান্দালার। এমনকি বাস ও ট্যাক্সি দুই-ই যাচ্ছে ভূজ থেকে
৫২ ঘণ্টায় রাজকোট। শেয়ার ট্যাক্সিও মেলে এপথে। রাতভর
জানিভে বাস যাচ্ছে আমেদাবাসে। গ্রাইভেট ডিলাক্স বাসে শয়নের
ব্যবস্থাও মেলে। এমনকি রাজস্থানের জয়সলমীরও চলা যেতে
পারে বাসে বাসে ২ দিনে ভূজ থেকে। বা ট্রেনে পালানপুর পৌঁছে
পালানপুর থেকে বাসে বারমের হয়ে ২৪ ঘণ্টায় চন্দন জয়সলমীর।



IAC-র উড়ান ১ ৩ ৫ ৭ দিন মুম্বাই-ভূজ-মুম্বাই
সার্ভিসে চলছে। দপ্তর বসেছে স্টেট ব্যাঙ্ক অব
ইন্ডিয়া লাগোয়া ভূজের স্টেশন রোডে। শহর থেকে
৬ কিমি দূরে বিমানবন্দর। মিনিবাস, ট্যাক্সি, অটো যাচ্ছে শহরে।



ধাকার জন্য রেলের রিটার্নস রুম, কান্দালা পোর্ট
ট্রাস্ট গেস্ট হাউস, PWD RH, ধরমশালা, আরাম
গেস্ট হাউস, এডওয়ার্ড গেস্ট হাউস, নিউ এয়ার
লাইনস হোটেল, H Shib, 360 Ward-12B, Gandhidham,
Kutch-370201, A9R1B0, ৩ 21297, S ৪৫০ D ৬০০ A/c
S ৬৫০ D ৬০০-১২৫০; H Madhuban, Plot 22, Sector 9,
Tagore Rd, opp KPT Office, Gandhidham-370201,
৩ 22216, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০-৬০০ D
৬০০-৮৫০ সুইট ১০০০-১২৫০; Business Inn, 29-30, Sec-
tor-9, ৩ 21921, ASR05, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০;
H Natraj, opp Bus Std; H Gokul, near Bus Std হাড়াও
নানান হোটেল আছে গাঙ্গীধামে।

মথেরা

ভিরাগম থেকে ১৮-৩০-এর প্যাসেঞ্জারে ২২ ঘণ্টায় বা বাসে
৬৫ কিমি দূরের মাহেসানায় চলন। দিল্লী-আমেদাবাদ রেলপথের
মাহেসানা থেকে ট্রেন যাচ্ছে ভারতের দিকে দিকে। মাহেসানা থেকে
নিয়মিত বাস যাচ্ছে ৪৫ মিনিটে ২৬ কিমি পশ্চিমের মথেরায়। ৪-
২৫, ৫-৪০, ১১-৪৫, ১৩-০০, ১৬-৪৫, ১৮-২৫, ২০-২৫, ২২-
৪৫ প্যাসেঞ্জার; ৮-২০, ১৫-৪৫ এ এক ট্রেন যাচ্ছে ৬৮ কিমি
দক্ষিণ-পূর্বের আমেদাবাদ থেকে মাহেসানায়। ঘণ্টা আড়াইয়ের
পথ। আর বাস যাচ্ছে আমেদাবাদ থেকে মাহেসানা হয়ে সরাসরি
মথেরায়। ২২ ঘণ্টায় ১১৮ কিমি উত্তরের আবু রোড যাচ্ছে ১০-
২৫ আমেদাবাদ-দিল্লী মেল, ১৭-৩০-এ আমেদাবাদ-আবু রোড
এক্স/গ্যা, ১-২৫ প্যাসেঞ্জার মাহেসানা থেকে। বাসও যাচ্ছে
মাহেসানা থেকে আবু রোড। আর বাস আসছে পশ্চিম ভারতের
দিখিকি থেকে মাহেসানা হয়ে মথেরায়।

বাস পথেই স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি আগে সোলাঙ্কি
রাজা ১ম ভীমদেবের হাতে ৮ শতকে তৈরি অনন্য শিল্পসুখমা-
মণ্ডিত মথেরার সূর্যমন্দির। তবে, ভিমতও আছে নানান
নির্মাতা নিয়ে। অপূর্ব কারুকার্যমণ্ডিত তোরণদ্বার পেরুতেই
১৫ বর্গ মিটারের সভ্যমণ্ডপ। মণ্ডপ শেষে মূল সূর্য মন্দির।
আর আছে প্রবেশপথে চতুষ্কোণ বিশাল গুপ্ত অর্থোজলাশয়।
ধ্বংসপ্রাপ্ত ১০২৪এ গজানীর সুলতান মামুদের হাতে
মথেরার।

একাদশ সঙ্গী

ব্রহ্মার মানসপুত্র, জন্মও ব্রহ্মার অন্তর্ভুক্ত থেকে—নাম তাই
দক্ষ। তবে, ভিমতও আছে। সেই দক্ষেরই কন্যা সঙ্গী—পতি তার
শিব। প্রজাপতি শ্রেষ্ঠ দক্ষ বৃহশ্পতি নামে এক মহাযজ্ঞ করেন।
যজ্ঞ ত্রিলোকের সবাই নিমন্ত্রিত। কেবল জামাতার আচরণে
অশুশি দক্ষের নিমন্ত্রণ থেকে বঞ্চিত শিবও সঙ্গী। নারদের কাছ
থেকে যজ্ঞের কথা শুনে পিত্রালয়ে যেতে পতির অনুমতি মাগেন
সঙ্গী। শিবের অসম্মতিতে পরমা প্রকৃতি সঙ্গী—কালী, তারা,
যোড়ঙ্গী, ভুলনেশ্বরী, ভৈরবী, হিমমতী, ধূমাবতী, বগলা, মাতঙ্গী
ও কমলা—দশ মহামায়ারূপ ধারণ করে বিভ্রান্ত করেন শিবকে।
বিহ্বল শিবের ছাড়পত্র পেয়ে সঙ্গী গেলেন যজ্ঞে রবাহত হয়ে।
পিতাদক্ষের মুখে পতি নিশা শুনে যজ্ঞস্থলেই দেহ রাখেন সঙ্গী।

সঙ্গীর মৃত্যুতে শিবের জটা থেকে সৃষ্টি বীরভদ্র শিব গেলেন
যজ্ঞস্থলে। গুপ্ত হল যজ্ঞ—মৃত্যুও ঘটে বীরভদ্রের হাতে দক্ষর।
আর সঙ্গী-শোক ক্রুদ্ধ শিব সঙ্গীর দেহ কাঁধে নিয়ে গুরু করলেন
প্রলয়নৃত্য। ভয়ঙ্কর সে নৃত্যে সৃষ্টি ধ্বংসের মুখে। দেবতারা প্রমাদ
গললেন। সৃষ্টি স্থিতি রাখতে নিরুপায় বিষ্ণু সুদর্শন চক্রে সঙ্গীর
দেহ খণ্ড-বিখণ্ড করায় ছিটকে গিয়ে পৃথিবীতে (ভারতে) পড়ে
৫১ টুকরো হয়ে। আর যেখানে যেখানে টুকরো পড়ে সেই সব
পৃথ্যস্থান মহাপীঠ বা সঙ্গীপীঠ অর্থাৎ সঙ্গীর আসন নামে খ্যাত।

একাদশ সঙ্গীপীঠ: (১) হিমুলা—ব্রহ্মরত্ন, (২) করবীর—
ত্রিনেত্র, (৩) সুগন্ধা—নাসিকা, (৪) কাশ্মীর—কর্কট,
(৫) জ্বালামুখী—জিহ্বা, (৬) জলন্ধর—স্তন, (৭) বৈদ্যনাথ—
হৃদয়, (৮) নেপাল—জন্ম, (৯) মানস বা মালব—দক্ষিণ-হস্ত,
(১০) বিরজাক্ষেত্র—নাভি, (১১) গণ্ডকী বা গণ্ডক—গণ্ড,
(১২) বাল্মীকী—বাম বাহু, (১৩) উজ্জয়িনী—কনুই, (১৪) চট্টল
—দক্ষিণ বাহু, (১৫) ত্রিপুরা—দক্ষিণ পদ, (১৬) ত্রিশোভা—
বাম পদ, (১৭) কামগিরি (কামাখ্যা)—মহামুদ্রা বা যোনি,
(১৮) যোগাধা—দক্ষিণ পদের বন্ধাসুলি, (১৯) কালীপীঠ
(কালীঘাট)—দক্ষিণ পদাসুলি, (২০) প্রয়াগ—হস্তাসুলি,
(২১) জয়ন্তী—বাম জঙ্ঘা, (২২) কীরীট—কীরীট, (২৩) মণি-
কর্ণিকা (বারাণসী)—কুণ্ডল, (২৪) কন্যাশ্রম—পৃষ্ঠ বা দৃষ্টি,
(২৫) কুরুক্ষেত্র—দক্ষিণ গুলফ, (২৬) মণিবৈন্দ—মণিবৈন্দ,
(২৭) শ্রীশৈল বা শ্রীহট—গ্রীবা, (২৮) কাঙ্কী—কঙ্কাল,
(২৯) কালমধব—বাম নিতম্ব, (৩০) নর্মদা, শোন বা শৈল—
দক্ষিণ নিতম্ব, (৩১) রামগিরি—স্তন, নাসা বা নাসা, (৩২)
বৃন্দাবন—কেশ, (৩৩) চুচি বা অনল—উর্ধ্বদন্ত, (৩৪) পঞ্চ-
সাগর—অধোদন্ত, (৩৫) কর-তোয়াভট—বাম কর্ণ, তল্ল বা
গুলফ, (৩৬) শ্রীপর্বত—দক্ষিণ কর্ণ, (৩৭) বিভাস—বাম
গুলফ, (৩৮) প্রভাস—উদর বা অধর, (৩৯) ভৈরব পর্বত—
অধোষ্ঠ, (৪০) জনহান—চিবুক, (৪১) গোদাবরী তীর—বাম
গণ্ড, (৪২) রত্নাবলী—দক্ষিণ ঋজু, (৪৩) নলহাটি—নাসা,
(৪৪) মণিলা—বাম ঋজু, (৪৫) মাগধ—মুণ্ড, (৪৬) বক্রেশ্বর
—মন, (৪৭) যশোর—পানি, (৪৮) অটহাস—উর্ধ্বদন্তি,
(৪৯) নম্বিপূর্ব—হার, (৫০) লঙ্কা—নৃপুত্র, (৫১) বিরাট—
পদাসুলি। (মতান্তরও আছে পীঠ নিয়ে নানা। তত্ত্বসার গ্রন্থে মূল
পীঠের সংখ্যা চার (জলন্ধর, উজ্জয়িনী, পূর্ণাগিরি ও কামরূপ)।
হলেও সাতটি প্রদেশ থেকে পুরাণের অষ্টাদশ অধ্যায়,
কুজিকাভ্রমে ৪২, জানানর্থভ্রমে ৫০। আর আছে উপপীঠ—
সংখ্যার ২৬।

নাগারাইশেলীতে ৫৬x২৬ ফুটের মন্দিরটি এমনই জ্যামিতিক ছকে তৈরি যে সূর্যের বিবুধেরাখ অবস্থান কালে উদিত সূর্যের কিরণ সরাসরি মন্দিরের বিগ্রহ সূর্য দেবতার উপর পড়ত। সেকালের মূল মূর্তি আজ আর নেই। তবে প্রাসাদের ভিতর দেওয়ালের কুলুসিতে ১২টি মূর্তি রয়েছে দেবতা সূর্যের। মন্দিরের বহির্ভাগও কারুকার্যময়। নানান ভঙ্গিমায় নরনারী, দেবদেবী, জীবজন্তু এমনকি মিথুন মূর্তিও মূর্ত হয়েছে। প্রবেশপথের ডাইনে প্রসবরতানারীমূর্তিতেও বৈচিত্র্য আছে। সভামণ্ডপের কারুকার্যও অনবদ্য; থাম, খিলান, কানিস, পিরামিডধর্মী ছাদ সবই কারুকার্যময়। দিলওয়ারাও কোণারকের সূর্যমন্দিরের সঙ্গে সাদৃশ্যও মেলে। মন্দিরের সামনে চতুষ্কোণ বিশালাকার সূর্যকুণ্ডকে ঘিরে ১০৮টি ক্ষুদ্রে মন্দির। স্থাপত্যকলার অপূর্ব নিদর্শন এইসব মন্দিরে, দেবতাও নানান। আর পেছন দিয়ে বয়ে চলেছে পুষ্পবতী নদী। থাকার জন্য PWD RH, Panchayet RH ও ধরমশালা আছে। তবে মথেরায় থাকার দরকার হয় না। ৮—১৮-০০টায় মন্দির দেখে মাহেসানায় ফিরে রেল বা বাসে ১১৮ কিমি দূরের আবু রোড পৌঁছে আবু পর্বতে চলুন বাদিনী বা আমেদাবাদ গিয়ে ট্রেন ধরুন ঘর পানের বা মথেরা থেকেই বাসে চলুন তারাসা/ অম্বাজী/ আবু রোড।

তবে উৎসাহীরা মথেরা থেকে আরও ১৭ কিমি বাসে গিয়ে কিংবদন্তীতে ঘেরা বেচারাজী মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। সাত দিনের প্রতীক সাত বাহনে দেবী এখানে দুর্গা। এক চাষীর কুড়িয়ে পাওয়া বেচারা দুর্গাই কালে কালে বেচারাজী। বক্ষা নারীরা আজও আসেন সন্তান কামনায় দেবী সকাশে। জনশ্রুতি, প্রতি রাতে আজও নাকি দেবী বিহারে বের হন ভক্তদের দুঃখ নিবারণে। আবার মথেরার ২৯ কিমি দূরে আর মাহেসানার ২৫ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ১০২৪এ গজনারী মামুদের হাতে বিধবস্ত অতীতের কঙ্কালসার রাজধানী অনহিলবাড়া পাটন-এ ১০৮টি জৈন মন্দিরও দেখে নিতে পারেন। আর আছে সহস্র জ্যোতির্লিঙ্গ মন্দির পাটনে। পাটনের পাটোলা সিদ্ধ শাড়িরও খ্যাতি আছে। তেমনি খ্যাত পাটনের বাড়িঘরে উড-কার্টিংএর কাজ। পাটন বাস স্ট্যাণ্ডে একমাত্র H Neerav-এ থাকার ব্যবস্থা মেলে D ১০০-১৫০ টাকায়।

আবার মাহেসানা থেকে বাসে ৫৭ কিমি পূর্বের তারাসা পৌঁছে নতুন করে বাসে পাছাড়ী পথের ৩ কিমি গিয়ে তারাসা হিলের ২য় জৈন তীর্থঙ্কর অজিতনাথ জৈন মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন পরদিন। বৌদ্ধদেবী তারাদেবীর নামে নাম। ট্রেনও

যাচ্ছে ১৮-৩০৬ মাহেসানা ছেড়ে ২১-৩৫এ তারাসা। আমোদাবাদ ফেরে প্রতিদিন ৬-২৫এ তারাসা ছেড়ে তারাসা-মাহেসানা-আমেদাবাদ প্যাসেঞ্জার। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে অপূর্ব সুন্দর ভাষ্কর্যমণ্ডিত মন্দিরে খেতমর্মরে মূর্তি হয়েছে অজিতনাথের। মিথুন মূর্তিও স্থান পেয়েছে। মন্দির দেখে মাহেসানায় ফিরুন। থাকও যেতে পারে দিগম্বর ধরমশালা-য় তারাসা হিলে।

থাকার জন্য মাহেসানায় আছে—গুজরাট লজিং অ্যান্ড বোর্ডিং হাউস, নটরাজ ও সত্যবিজয়/আর আছে সরকারি বিখ্যাত গৃহ অবু: EE (R & B), Mahesana ও রেলের রিটায়ারিং ক্লব। ধরমশালা-ও আছে মাহেসানায়। চলতে-ফিরতে মাহেসানায় অ্যাম্বুল্যান্সে পার্কটিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া।

মাহেসানায় অবস্থান করে ১ম দিনে মথেরা/ বেচারাজী দেখে ২য় দিনে তারাসা বেড়িয়ে ৩য় দিন তারাসা থেকেই বাসে চলুন ৪৫ কিমি দূরের অম্বাজী। অম্বাজী দর্শন সেরে আবার বাসে ২৩ কিমি দূরের আবু রোড পৌঁছান। অম্বাজী থেকে আবু পাহাড়েরও সরাসরি বাস মেলে। তবে অত্যাশঙ্কীরা মাহেসানা থেকে আবুর বিকল্প পথে ৪৩ কিমি উত্তর সরস্বতী নদীতীরে সিধপুরে ১০ শতকে ১৪ কোটি টাকা ব্যয়ে সোলাঙ্কি স্থাপত্যে রাজা মুলরাজের গড়া বিধবস্ত জৈন মন্দির রুদ্রমল দেখে চলতে পারেন। ১২৯৭এ আলাউদ্দিন খিলজীর ধ্বংসলীলার আর এক সাক্ষ্য এই রুদ্রমল মন্দির। আর মন্দিরের অংশে মসজিদ গড়ে ওঠে মোগল কালে। তবে, আজ মন্দির ও মসজিদ দুইয়েরই দ্বার রুদ্ধ। ৪টি পিলার আজও অতীত গৌরবের সাক্ষ্য বহন করছে। ব্রহ্মার সাত মানসপুত্রের অন্যতম কমিলমুনির জন্ম রেল ও বাস স্ট্যান্ড থেকে ১৫ মিনিটের পথে সরস্বতী নদীর তীরে এই সিধপুরে। মাতৃমুক্তির মানসে পিতৃদান করেন পরশুরাম—সেই থেকে কমিলমুনির আশ্রমে মায়ের বিদেশি আহার মুক্তির উদ্দেশ্যে পিতৃদান আর হর্ষবিন্দু সরোবরের জলে তর্পণ প্রথার প্রচলন। রেল স্টেশন থেকে আশ্রমের বিপরীতমুখী ১ কিমি যেতে রুদ্রমল শিব মন্দির। আর আছে রামমন্দির নদীর ধারে তপোভূমিতে। হোটেল বৈ—তবে, মশিকা ও পাঞ্চাল দুই ধরমশালা আছে সিধপুরে। আফিম চাব হচ্ছে আজ সিধপুরে। সিধপুর দর্শনার্থীদের উচিত হবে ৩য় দিন সাতসকালে সিধপুর বেড়িয়ে পালানপুর হয়ে অম্বাজী দেখে আবু চলা। তেমনি দিনক্ষণ জেনে হাজির হতে পারেন মাহেসানা-সিধপুর পথের Unjha-য়। প্রতি ১১ বছর অন্তর বিয়ের বাসর বসে Kadwakanbis সম্প্রদায়ের ছেলে-মেয়েদের। বৈচিত্র্যে ভরা এদের বিবাহপ্রথা।

দমন ও দিউ

১৯৮৭র ৩০শে মে গোয়া স্বতন্ত্র রাজ্য হওয়ায় গোয়া থেকে ছিন্ন দুই জেলা দমন ও দিউ থেকে যায় কেন্দ্রের শাসনাধীনে। সদর দপ্তর বসেছে দমনে। পরস্পর থেকে বিচ্ছিন্ন পরস্পরে। দমন থেকে দিউ-এর দূরত্ব ৮৪৩, পানাজি ৭৮৭, মুম্বাই ১৯৩, আমেদাবাদ ৩৬৭ কিমি। জলপথেও কোনো সংযোগ নেই দমন আর দিউর মাঝে। মুম্বাই-আমেদাবাদ জাতীয় সড়ক ৮এ গুজরাটের বাপী। বাপীর নিজস্ব আকর্ষণ উদ্বেগ না হলেও পশ্চিমে দমন আর পূবে আর এক কেন্দ্র শাসিত অঞ্চল দাদরা ও নগর হাভেলীর সংযোগকারী জংশন রূপে বাপীর খ্যাতি। বাপী হয়ে দমনের সড়ক সংযোগ গড়েছে অবশিষ্ট ভারতের সঙ্গে। বাপী থেকে গুজরাট-মহারাষ্ট্র সীমান্ত ১৪ কিমি, মুম্বাই-এর সড়ক দূরত্ব ১৯৩, সুরাট ৯০, আমেদাবাদ ৩৬২ কিমি। ট্রেনও যাচ্ছে পশ্চিম রেলের মুম্বাই সেন্ট্রাল-ভাসাই রোড-ভালসাড-বাপী-সুরাট-ভাদোদরা-আমেদাবাদ-তিরামগম হয়ে। দিন-রাতি জুড়ে নানান ট্রেন। মুম্বাই থেকে সুরাট-ভাদোদরা-আমেদাবাদের প্রতিটা ট্রেন, ভাসাই রোড-ব্রোচ/সুরাট স্যাটেল, EMU লোকালও চলছে পশ্চিম রেলওয়ের মুম্বাই-সুরাট রেলপথের বাপী হয়ে। রেল দূরত্ব বাপী থেকে মুম্বাই ১৬৮ কিমি, আর সুরাট ৯৪ কিমি। দিনভর নানান প্যাসেঞ্জার ট্রেন ৩-৬ ঘণ্টায় মুম্বাই, ২-২ ঘণ্টায় সুরাট যাচ্ছে বাপী থেকে। আর রেল স্টেশনের স্বল্পদূরে বাস স্ট্যান্ড থেকে গুজরাট রাজ্য পরিবহণের বাস যাচ্ছে ননী দমন। আর রেল স্টেশনের পশ্চিম থেকে মুম্বাই শেয়ার ট্যাক্সি যাচ্ছে ভোর থেকে গভীর রাতে ১০ ঘণ্টা ২০ মিনিটে। অটোও যাচ্ছে ৫০-৬০ টাকায়। বাপী থেকে ৪ কিমি যেতে Dabhel-এ দমনের সীমান্ত টোঁকি পেরিয়ে আরও ৭ কিমি গিয়ে ননী দমন বাজার তথা ট্যাক্সি স্ট্যান্ডে।



থাকার জন্য Vapi-396195, STD-02638-এ আছে Kamats Vapi H, NH-8, Vapi-396195, A14R1½, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; *Shalimar H, near Highway tool, Vapi, Gujarat, R6, A/c S ৪০০ D ৬০০; H Greenview, NH-8, Vapi, D 23120, R3B1.5, S ৪০০ D ৫০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ১০০০; Pritams Vapi H, NH-8, GIDC, D 21567, R½, S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইট ১০০০; Dipak GH ছাড়াও নানান হোটেল।

আর দিউ-এর অবস্থান সেও গুজরাটেরই সোমানাথের অনতিদূরে। প্রাকৃতিক সৌন্দর্যে দমনের থেকেও দিউ অনবদ্য।

দমন

পর্যটক আকর্ষণ উদ্বেগ না হলেও সমুদ্রে ঘেরা ১২ মি

উঁচু দমনের প্রাকৃতিক সৌন্দর্য সুন্দর। সহ্যাদ্রি পাহাড় থেকে এসে দমন গঙ্গা নদী টুকরো করছে দমনকে। রূপও পেয়েছে ২টি ভাগে দমন। আয়তনে ৭২ কিমি। লোক সংখ্যা ৬১৫১১। গোয়ার মতো দমনও ছিল পর্তুগিজ দখলে। ১৫৩১এ অংশবিশেষ পর্তুগিজরা দখল করলেও পূর্ণতা পায় ১৫৫৯এ গুজরাটের বাহাদুর শাহের বশ্যতা স্বীকারে। ১৯৬১র ১৯শে ডিসেম্বর, গোয়া, দমন ও দিউ ভারতের অন্তর্ভুক্ত হয়। Department of Tourism, Information Centre, 1st Floor, Nilkanth Building, Nani Daman, PC-396210-য়।

অতীতের স্বাগলারদের স্বর্গরাজ্য আজ নবোদ্যমে পর্যটক-স্বর্গে রূপ পাচ্ছে। উত্তরে ননী দমন অর্থাৎ ছোট দমন দুর্গ। বাজার-হাট, হোটেল-রেস্তোরাঁ, টুরিস্ট অফিস সবেরই অবস্থান ননী দমনে। প্রধান ডাকঘরটি মোতি দমনে বসলেও শাখা ডাকঘর মেলে ননী দমনে। বাস, ট্যাক্সিরও চলা শেখানী দমনে। রাজপথও সিম্মে গিয়ে অদূরে সাগরে মিলেছে। পৃথিবীজন্ম সাগরবেলা। শিশু উদ্যানও হয়েছে জেটি ঘেঁষে। ডাইনে ননী দমন দুর্গ। বিপরীতে স্বীপাকার মোতি দমন অর্থাৎ বড় দমন। সেতুতে দমন গঙ্গা নদী পেরুতেই দেওয়ালে ঘেরা ১৫৫৯এ পর্তুগিজদের গড়া বড় দমন দুর্গ অর্থাৎ মোতি দমন। সরকার অফিস-কাছারি বসেছে দুর্গ জুড়ে। আর আছে পর্তুগালের স্থাপত্য শৈলীতে গড়া ১৬০০ খ্রিস্টাব্দের শেখাখিল্লা চার্চ। পর্তুগিজ ফ্রেবারও যেন বাতাসে মেলে। তবে, দমনের দ্বিতীয় চার্চ আওয়ার লেডি অব দি রোজারিও বৈভবে অনবদ্য। নদীর ধানে জৈন মন্দিরটিও সুন্দর। দেওয়ালে মহাবীরের (500 BC) জীবন-আলেখ্য রূপ পেয়েছে ম্যুরালে ১৮ শতকে। আর আছে লাইট হাউস। হিলসা অ্যাকোয়ারিয়াম হয়েছে দুর্গে টুকতেই বায়ে। তবুও সবর উপরে সমুদ্রই সেরা আকর্ষণ গোয়ার মতো দমনেও। সমুখপানে নীলিমায় মিলে-মিশে আরবসাগর।

দুর্গ পেরিয়ে বসতি ছাড়িয়ে আরও দক্ষিণে দমনের আর এক আকর্ষণ ঝাউয়ে ছাওয়া জামপোর বাঁচ। বাস যাচ্ছে দুর্গ দ্বার থেকে জামপোরে। ট্যাক্সি বা অটোতেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় ননী দমন থেকে জামপোর সাগরবেলা। তবুও যেন ননী দমন থেকে ৩ কিমি উত্তরে নারকেল আর ঝাউয়ে ছাওয়া ডেবকা বাঁচ আকর্ষণে অনবদ্য। মনোরম শিশু উদ্যানও হয়েছে ডেবকা সাগর-বেলায়। কালো কালো বালুকা বেলায় ভীটায় জল যায় সরে সরে বহুদূরে। সূর্যাস্তে রমণীয় ডেবকা। পথশোভাও মনোরম। উচিতও হবে যে-কোনো সাঁঝে অটো বা ট্যাক্সিতে ডেবকা বেড়িয়ে ফেরা।



থাকার পক্ষে রমণীয় ডেবকা সাগরবেলা। হোটেলও আছে নানান Devka, Nani Daman-396210, STD 02636৬—H Summer House, DAB ২৫০ A/c D ৩২৫-৪৫০ সুইট ৬০০; H Shilton, DAB ৪০০-

৬৫০; H Dariya Darshan, ৩ 32476, DAB ৪৫০ FAB ৬০০ কটেজ D ৮০০ F ১০০০ A/c D ৬৫০ কটেজ ১২৫০; H Ashoka Palace, D ৪৫০-৬৫০; H Miramar, DAB ৬০০-৮৫০ সাগরমুখী চার বেডের A/c কটেজ D ১২৫০-১৬৫০; স্বয়ং যেতে H Sandy Resort, ৩ 32751, D ৪৫০-৬২৫ A/c D ৬৫০-৮৫০; একমাত্র হোটেল সাতার সেতু হয়েছো স্যান্ডি রিসর্টে। H Duke, ৩ 32251, AP-S ৩০০-৩৭৫।

দমন ও দিউ □ রাজধানী: দমন। আয়তন: ১১২ বর্গ কিমি। লোক সংখ্যা: ১০১৪৩৯। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.০১। পুরুষ: ৫১৪৫২। নারী: ৪৯৯৮৭। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ২২৪৫৮। বৃদ্ধির হার: ২৮.৪৩%। প্রতি ১০০০ পুরুষে: ৯৭২ নারী। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৯০৬। সাক্ষরের হার: ৭৩.৫৮%। প্রধান ভাষা—দমনে: গুজরাটি ও মারাঠি আর দিউতে: গুজরাটি। হিন্দীও চল আছে সারা অঞ্চল জুড়ে। আবহাওয়া সারা বছরই নাতিশীতোষ্ণ। বছরে বৃষ্টিপাতের গড় ২৫°। সর্বোচ্চ তাপমান ৩৮° সর্বনিম্ন ১১° সেন্টিগ্রেড।

গুজরাটের সাথে দমন ও দিউ বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। সুরাট থেকে মুম্বাই-এর পথে বাণী থেকে দমন আর গুজরাটেরই সোমনাথ থেকে দিউ বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে।

আর ট্যাক্সি স্ট্যান্ড তথা বাজারকে ঘিরে নানান হোটেল নদী দমনে। পথও সাগরে মিলেছে ট্যাক্সি স্ট্যান্ড থেকে ৫ মিনিট যেতে। Sea Face Road, Nani Daman-396201—H Pallavi, ৩ 32636, SAB ২২৫ DAB ৩০০ TAB ৩৫০; পল্লবী গির্জা শৈলীর বাড়িতে H Marina, D ১৭৫-২৫০; H Sweet Many, DAB ২০০; Natraj GH, D ১২৫-১৭৫; H Gurukripa, ৩ 35046, SAB ৩৫০ DAB ৪২৫-৫৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; H Dipak Jyoti, D ১৫০-২২৫; H Sovereign, ৩ 32823, SAB ১২৫ DAB ২২৫-৩০০ TAB ২৫০; সাধারণ হলেও সদাই ফুল H Brighton, D ১৭৫-২৫০; সাগরবেলায় PWD RH. বাঁহাতি পথে H Maharaja, D ৬০০, ৮০০, ১০০০; ট্যাক্সি স্ট্যান্ডের পিছে: H Paradise, D ২০০; লাগোয়া H Mangal, H Diamond, DAB ৩৫০ A/c D ৪৫০; H Holiday, D ২০০; একই বাড়িতে H Sonman, Teen Batti, D ২৫০ A/c D ৪৫০; H Natraj, D ১২৫-১৭৫ A/c ৪৫০; প্রত্যেকেরই অবস্থান এসের ট্যাক্সি স্ট্যান্ড থেকে ৫ মিনিটের পথে। আর হয়েছো নদীর ধারে H Sun-n-Sea, ৩ 32506, S ২০০ D ৩৫০ A/c S ৪২৫ D ৬০০; তবে কিছুটা যেন অব্যবস্থা, ছন্দাড়াও সদাই যেন সারা হোটেলময়।

এছাড়াও অতি সাধারণ হোটেল—Ganesh GH, behind Gurukripa; Dilip Jyoti, near Jetty; Cafe Elegant, H Sher-

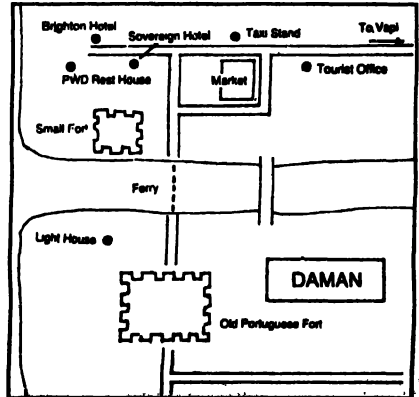
e-Punjab, Taxi St; H Metro, Navi Ori; H Gokul, Navi Ori; H Sukh Sagar, Navi Ori, DAB ২৫০ A/c D ৩৫০; H Ashirwad, D ১৭৫-২৫০; Goa GH; Khatkiwad; বাজারান্তে থানার পাশে H Rainakar, Khabardar Marg; এসের কাছে ১৫০-২২৫ টাকায় ডাবল বেডের ঘর মেলে। তবুও যেন থাকার জন্য H Gurukripa, H Sovereign, H Diamond, নির্বাচনে অগ্রাধিকার পাবে। আহারও মেলে এসের কাছে। সামগ্রিক মাছের নানান মেনু এসের খাদ্য তালিকায়। গলদা চিড়ি ও কাঁকড়া সোভেনীয় মেনুচার্টে। একাডমি উচিত হবে শীতের দিনগুলিতে ঝাল-নোনতা-মিষ্টি স্বাদের মটরগুটির পাগড়ি ভাজার স্বাদ নেওয়া। তেমনই কালু বা নারকেল থেকে তৈরি ফেনী ও তালের রস থেকে তৈরি তাড়ি এসের প্রিয় পানীয়। কিনতেও মেলে চলতে-ফিরতে পথেঘাটের দোকানপাটে। দামও সস্তা দমনের দোকানে। তবুও যেন প্রচারের অভাবে পর্যটক সমাগম কম দমনে আজও।

দিউ

অতীতের গোয়া দমন এবং দিউ অঙ্গরাজ্যের এক বিচ্ছিন্ন অঙ্গজেলা দিউ। গোয়া স্বতন্ত্র রাজ্য হওয়ায় দমন ও দিউ কেন্দ্রের শাসনাধীন—সদর দপ্তর বসেছে দমনে। পরস্পর পরস্পর থেকে বিচ্ছিন্ন। দমন থেকে আমেদাবাদ/রাজকোট/কোদিনার/উনা হয়ে দূরত্ব ৮৪৩ কিমি। আর নিকটতম রেল স্টেশন ৮ কিমি দূরে দেলওয়াড়া। ৪৮৩ কিমি দূরের আমেদাবাদ থেকে ভেরাবল হয়ে মিটারগেজ রেল যাচ্ছে দেলওয়াদায়। Khijadiya-Delvada প্যাসেঞ্জার যাচ্ছে শাসন গীর/জুনাগড়/ভেরাবল হয়ে ৪½ ঘণ্টায় ৯৬ কিমি দূরে দেলওয়াদায়। দেলওয়াদা থেকে বাস/অটো/রিকশায় ঘোঘলা সেতু পেরিয়ে দিউ পৌঁছান।

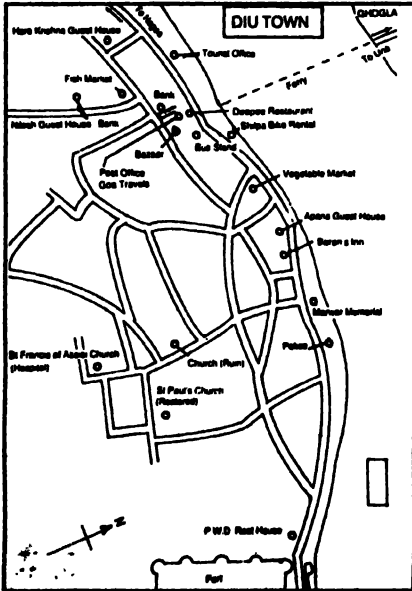


সোমনাথ থেকে বাস যাচ্ছে ৭-১৫, ৯-১৫, ১২-১৫, ১৪-১৫, ১৬-০০, ১৮-০০টায় উনায়। ঘণ্টা দু'য়েকের পথ। আর দিনের একমাত্র বাস পোরবন্দর থেকে এসে সকাল ১০-০০টায় সোমনাথ ছেড়ে



সরাসরি দিউ যাচ্ছে ২২ ঘণ্টায়। দূরত্ব সোমনাথ ৮৪, ভেরাবল ৮৭, কোমিনার ৪৫ কিমি। আর ১৫ কিমি দূরের উনা থেকে বাস যাচ্ছে গুজরাটের দিকে দিকে দিন-রাত্রি জুড়ে। বাস আসছে আমোদাবাদ থেকে রাজকোট/কোমিনার/উনা হয়ে দিউর। এমনকি গোয়া ট্রাভেলস-এর লান্নারি বাস ২০ ঘণ্টায় ২২৫ টাকায় দিউ থেকে ভাবনগর/আনন্দ/বাপী (দমন) হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে। এদের দমন-এ বুকিং: সতীশ জেনারেল স্টোর্স, নবী দমন; আর মুম্বাই-এ বুকিং: Hirup Travel Service, 358186, Khetwadi Back Rd, 12th Line, Mumbai-400004. ভেরাবল, জুনাগড় যাচ্ছে ৬-৩০, ১৪-০০, ১৮-৩০টার। উচিতও হবে গুজরাট ভ্রমণপথে সোমনাথ বেড়িয়ে সোমনাথ থেকে কোমিনার/ উনা হয়ে সরাসরি দিউ চলা। পালিতানা থেকেও বাস আসছে ভাবনগর/ তালাজা/মহাবা/ উনা হয়ে দিউ। উনা থেকে ঘোষলা ঘাটে ফেরিতে জলপথ পরিয়ে চলা যেতে পারে দিউ। GSRTC-র বাস ছাড়াও দিউ মিউনিসিপ্যাল কর্পোরেশনের মিনি বাসও যাচ্ছে ঘণ্টায় ঘণ্টায় উনা থেকে ঘোষলা ঘাটে সেতুতে আরব সাগরের ব্যাক ওয়াটার পরিয়ে ২৯ মি উঁচু দিউ। নিকটতম বিমান ১৫০ কিমি দূরে জুনাগড়ের কেশোদ বা ১৬৫ কিমি দূরে গুজরাটেরই ভাবনগরে। বায়ুদ্রুতও সহযোগ গড়েছে দিউর। অবস্থান আজও অন্তরায় করে রেখেছে পর্যটন মানচিত্রে-দিউকে। তবে, গোয়ার মতো হ্রিপসের দৌরাষ্ম্য নেই দিউতে। প্রকৃতি প্রেমিকদের স্বর্গরাজ্য দিউ। শীতে দূরদূরান্ত থেকে আসা পরিযায়ী পাখিরাও আকর্ষণ বাড়ায়। তেমনই নানান বৈচিত্র্যের মধ্যে sun and sand, sea and surf অনন্য করে তুলেছে দিউকে।

দমনের মতো দিউ-এর মূল আকর্ষণ তার প্রকৃতি।

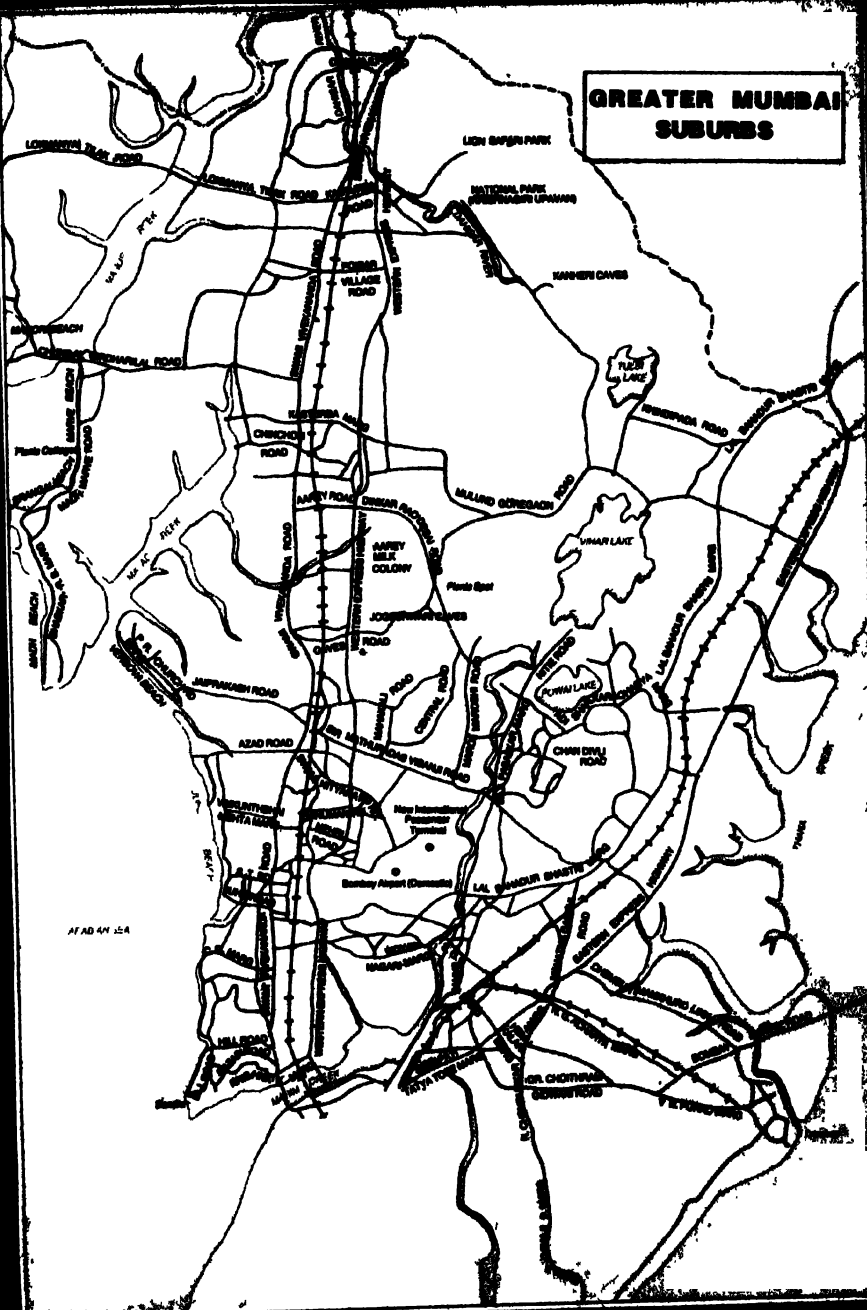


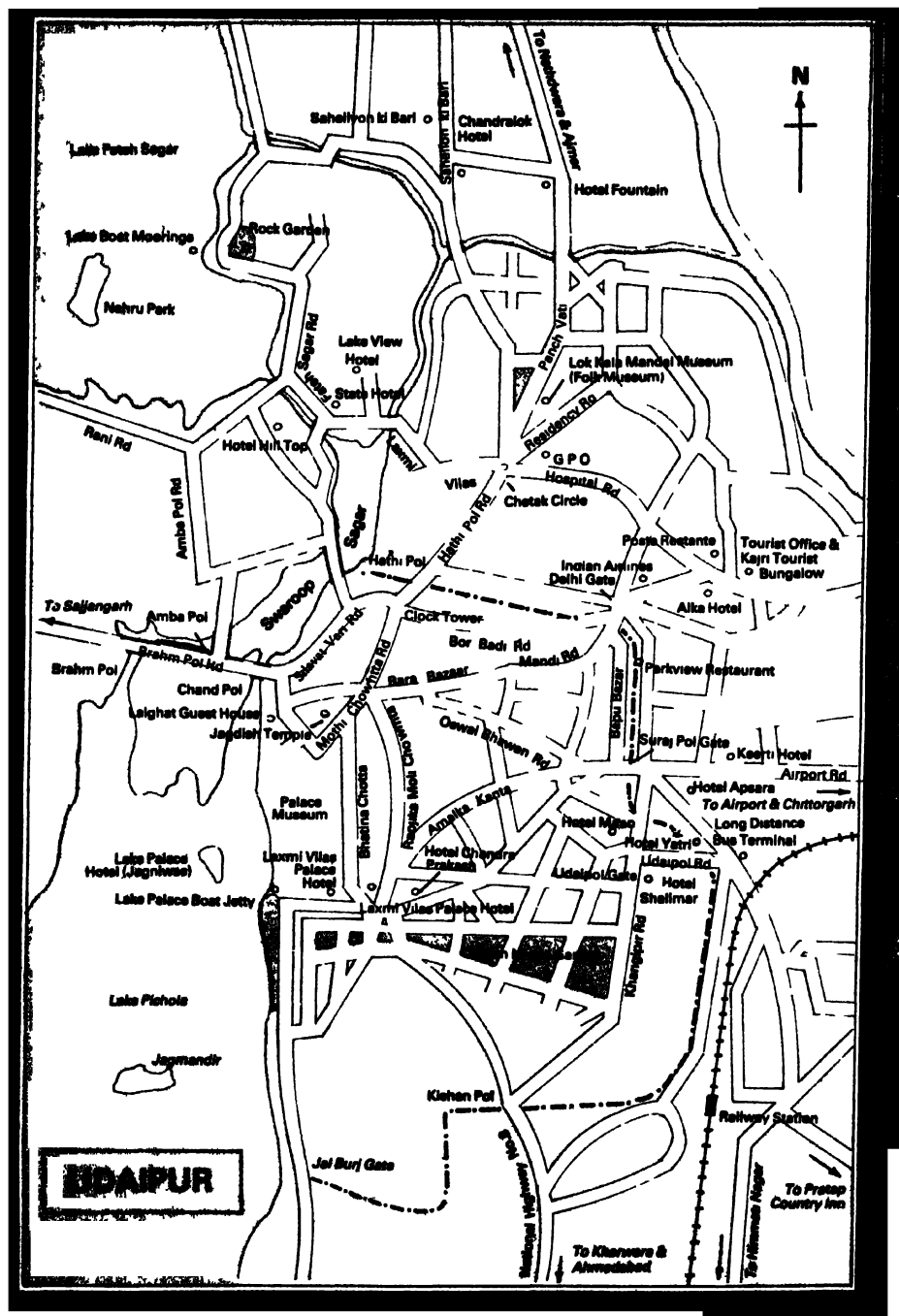
খাঁড়ির মতো যত্রতত্র ঢুকে পড়া সমুদ্রে সৌন্দর্য বেড়েছে। আর রাতে আলো জ্বলতে দিউকে মনে হবে সালঙ্কার রূপবতী নারী। তিন দিক আরব সাগর আর উত্তর ব্যাক ওয়াটারে ঘেরা কাথিয়াবাড় উপদ্বীপের দক্ষিণে সামুদ্রিক মুক্তো—দ্বীপাকার ছোট দিউ। অতীতে নামও ছিল দ্বীপ (সংস্কৃত), কালে কালে দিউ। তিনদিকে আরব সাগর আর সোনালী বেলাভূমি সুন্দরী দিউকে রমণীয়, সৌন্দর্যময়ী করে তুলেছে। আয়তনে ৪০ বর্গ কিমি, লোকসংখ্যা ৩৯৪৮৮।

তবে, দীর্ঘ অতীতে ৭৬৬ খ্রিস্টাব্দে ইসলাম থেকে ধর্ম বাঁচাতে জোরাখাষ্টিয়ানরা পারস্য ছেড়ে গুজরাটের দিউতে এসে উপনিবেশ গড়ে। আসে তারা পারস্য থেকে— ভারতে পরিচিতিও এদের পার্সি নামে। ১৩৮০তে বাঘেলা রাজপুতদের হাতিয়ে গুজরাটের মুসলিম সুলতানের দখলে যায় দিউ। আর ১৪ থেকে ১৬ শতকে দিউ ছিল অটোমান তুর্কিদের নৌবাঁটি তথা বাণিজ্যপথের বিশ্রামস্থল। ১৫৩১এ পর্তুগিজরা হানা দেয় দিউতে—তুর্কি নেভির সহযোগিতায় গুজরাটের সুলতান বাহাদুর শাহ পর্তুগিজদের হাতিয়ে দেয়। আবার দিউ আক্রমণ করে পর্তুগিজরা ১৫৩৪এ। হুমায়ুনকে হত্যা চক্রান্তের ব্যর্থ নায়ক মির্জা জামালকে আশ্রয় দেওয়ায় অসম্ভব দিল্লীর মোগল সম্রাটের সঙ্গে কলহে বিভ্রত বাহাদুর শাহ এবার পর্তুগিজদের সঙ্গে সমরে না গিয়ে সন্ধি করেন। আর বাহাদুর শাহ নিবাসিত হন মালোয়ায়। ১৫৩৯-এর সন্ধির সুবাদে ভাসাই দখলের সঙ্গে দুর্গও গড়ে ১৫৪৭এ পর্তুগিজরা দিউতে। আর পর্তুগিজ গভর্নর নিনো-ডা-কুনহার সঙ্গে মোকাবিলায় মানসে চলার পথে নৌকাডুবিতে মৃত্যু ঘটে বাহাদুর শাহের। ১৯১০এ গণতান্ত্রিক প্রজাতন্ত্র গঠিত হয় পর্তুগালে। আর ১৯৪৭এ ভারতের স্বাধীনতায় দ্বীপবাসীরা উদ্বেল হয়ে ওঠে ভারতভুক্তির মানসে। পর্তুগিজ দখলকালে রক্ত না বরলেও রক্ত ঝরে ভারতের স্বাধীনোত্তর কালে ১৯৬১তে অপারেশন বিজয়-এ। স্বাধীনতা প্রেমিক দ্বীপবাসীদের সহযোগিতায় এসে ভারতীয় বিমানবাহিনীও ক্ষতবিক্ষত করে নাগোয়ার কাছে দিউ-এর বিমান স্ট্রিপের। নানান বাড়িঘরের সাথে ১৬০১এ তৈরি মাত্রিজ গিজার ছাদটিও ধ্বংস পেড়ে ভারতীয় কোঁজি বাহিনীর গোলায় আঘাতে। অবশেষে ১৯৬১র ১৯শে ডিসেম্বর পর্তুগিজ শাসনের অবসান ঘটে ভারত রাষ্ট্রের অন্তর্ভুক্ত হয় গোয়া দমন ও দিউ।

সবুজে মোড়া, তাল অর্থাৎ হোকা (আফ্রিকা থেকে পর্তুগিজদের সঙ্গে আনা), নারকেল আর খাঁড়ির সমারোহ বেশি দিউতে। আর রয়েছে কলা, পেয়ারা, আতা সারা দ্বীপময়। তবে, মৎস্য ধরাই দিউবাসীদের মুখ্য জীবিকা। আর হচ্ছে লবণ ও সূরা দিউতে। রামও হচ্ছে আখ থেকে। যত্রতত্র মন্দের লোকান। দিউও দমনের মতো দুইভাগে গড়ে উঠেছে। ব্যাক ওয়াটার বিখণ্ডিত করেছে দিউকে।

GREATER MUMBAI SUBURBS





বোম্বায়ে সেন্ট পেরিয়ে বাস থেকে নামতেই সামনে জেটিয়ার, বাইরে টারিস্ট অফিস, আর ডাইনে ১ কিমি দূর ফোর্ট বোড। বামে তাব আরব সাগরের ব্যাক ওয়াটার—পার্শ্ব হয়েই পড়ে আকা ছবি মনোহর খাঁর গা। ডাইনে সারি দিয়ে বাড়ি হোটেলের সারি। পেরিয়ে শেষ ১৫৩৫-৩১ এ পূর্বাঙ্গিলের গড়া ২৯ মি উঠতে প্রাস-ডি-সিউ অর্থাৎ সাবা পূর্ব ভূতে প্রবী ইমে দাঁড়িয়ে দিউ দুর্গ। এখা বিশাল প্রাকার, দীর্ঘ পরিখা আর পেওয়ার্থের ফোর্স থেকে কামানের মুখ যত্রতত্র—সুবক্ষ্য অনবদ্য। সামনের পেওয়ার্থে টি বিশাল জানালাব পাখিবেষ গ্যালাবি। কালের কবলে, অনাদয়ে আখ সাময়িক ঘাত-প্রতিঘাতে প্রশিয়ার-অন্যতম ৫৬৭০৬ বর্গ মিটারের পূর্বাঙ্গিল দুর্গটি আজ বিধ্বস্ত। ক্রিমিয়ারের গোলা ইতস্তত ছড়িয়ে ছিটিয়ে। সর্বোপরি শেষ আঘাত অসে স্বাধীনতা আন্দোলনকালে ভাবতীয় ফৌজি মুহিবী ১৯৬১ ব অপারেশন বিজয়-এ। তবে, অবস্থান মহামারিত করে তুলেছে—তিন দিকে আব ব সাগর, আব পূর্ব ঘিবে ব্যাক ওয়াটারের জলে। লাইট হাউস চত্ব থেকে মৌনী আব ব সাগরের বন্যনাড়ি বাম মূণ্ডা আবুল করব তোলে। আব আছে প্রথম পূর্বাঙ্গিল গভর্নর Nuna da Cunha ব পূর্বাঞ্চব ব্রোঞ্জমূর্তি প্রবেশদ্বারে। সম্প্রতি জেল বসেছে একটা অংশ। মিউজিয়াম হয়েছে—দাব বর্জ দিনতর। ১—২২-২০ ও ১৪—১৭-০০টার মধ্যে নেওবা যায় দুর্গ।

লাইট হাউস ছিল আবও এক পূর্বাঙ্গিলের গড়া (১৫৩৫) দুর্গ দ্বারে ব্যাক ওয়াটারে জাহাজি উড়ে Fort de Mar বা পানিকোটা মিনি দুর্গে। যাতায়াতও ছিল সুডপথে সেকালে। তবে, আজ সবই বিধ্বস্ত। উৎসাহীবা নৌকাযে রেডিয়ে নিজে পাবেন বাস স্ট্যান্ডের জেটি থেকে। লোকশ্রুতি এক বাতে নির্মাণ হয় ফোর্ট-ডি-মার। কলা-কৌশল প্রকাশের ভয়ে প্রাণও দিতে হয় হুপতিকে। বাত আলোব সাজ পবে ফোর্ট-ডি-মার।

দুর্গব আধাপথে ১৯৬১ ব ১৯শে ডিসেম্বর অপারেশন বিজয়-এ নিহত বাজপুত বেজিমেন্টের স্মৃতিস্তম্ভের স্মরণার্থে তৈরি হয়েছে শহীদ স্মারক মাওয়াব। লাগোয়া মানাহর বাটিয়া। পেওয়ার্থে দেখা শহরব শুকও এই মাওয়াব থেকে বিস্তারিত সাবা উত্তর-পশ্চিম ভূতে প্রবেশের পথ সন্দেহ কালক্রমে।

বিপরীতে প্রাঙ্গণ গিয়েছে সেন্ট প্রিন্স চার্চ-এ। মোয়ার বম বেসমেন্টের স্মরণার্থে ১৬০১-১৭০৫ তৈরি চার্চের গম্বুজ শৈলীর বহিরাংশ খুবই সুন্দর। অভ্যন্তরে বামাণিকের কল্যাণ—এব কাল অতীত সুন্দর। অতীতের স্বর এক চার্চ আজ হিসপতিদা বসে।

পশ্চিমেই আরও এগিয়ে পড়ে আকা দীর্ঘতীর নৈসর্গিক সৌন্দর্যের আর এক প্রাঙ্গণ। শহর সেন্টের ৫ কিমি দূরে প্রাকার স্থাপনা বন্দ্রাময় চত্বারীকীর্ণি সুন্দর আরও যেন বণীর করে তোলে পরিকোকে। চলার

পথে ২ কিমি দূরে আর এক বীচ, লস্কর—সেও এক কামার। হাক্কর নামে নাম। বীচ নামে নাম। মোহাউ জাহাজ পূর্বের ক্রিমিয়ার। জাহাজে দেখা উক্তির স্মরণার্থে। থাকাও স্বকর। হাক্কর কামারের ৬০ ক্রিমিয়ার কামারের। তার আছে স্মারক হাক্কর জাহাজ। মুক্তবাগিনী আরও পর্ব। প্রতিবেদ হয়েছে টিলাব উত্তর টিলাব হাক্কর। বব প্রতিবেদ স্মৃতি হাউসটিও এতদেই শিবে বিবীত। হয়েছে পারিবরকে মহামারিত করে তুলেছে। গণপ্রান্তের অসহ্য ওভারহে আখ সাগর চাচিলী বাটে এ দৃশ্য সত্যই কবীর্ষ।

শহর থেকে ৪ কিমি দূরে বখি শোবে সের্বতা গর্ভের শিব। জোয়ারে টেট এসে অভিষেক করে সের্বতা। আব তীর্থ জল সবে যেতে কাঁড়ার সমাবেত হয়ে সাজ করে দেবতার পূজা। ২৫ মিটারের মূর্তিও হয়েছে নান্দাজীব। পরিকল্পন বণীর।

দূর-দূরান্তের সারা-সকলি জুড়ে দ্রাণাপাশবের পাহাড়, পাহাড়ি বাড়ি, মোমালি বালুকাবেলা (কোরহ, মধ্য বহর প্রকো-৮ কিমি দূরে শাভ-স্মিথ দ্রাণাপাশবের ১ কিমি দূর মোমোখা-বীচটিও উচিত হবে দেখিয়ে নেওয়া। নারিকেল ও অফ্রিকা-জাত তমাল অর্থাৎ হেফল (Myphalae Spd ১৯৫৫) পাঁচের কবর, সমুদ্রতীরে অনেক সুন্দর লোক-বাগোয়া। বাস যাচ্ছে স্বকর থেকে। সের্বতা-ও মোলে ৩৫ টাকায় বাসায়। কাকারও স্বকর মোলে মোমোখা কীতে: One Administration ৩ HAD ৩ বাসায়। সের্বতা-ও উত্তর কমেটিক্স। আর আছে মোমোখা, Serran H-১, ১০৭, D ১৭৫, FM ২৫৭, ক্রিমিয়ার স্বকর থেকে সাময়িক মোমোখা কমেটিক্স। মোমোখা মোলে, অফ্রিকা অফ্রিকা, গম্বুজ, সুন্দর। স্থানীয় বর্জিতেরও যেন মোলে-জাহাজ নাগোয়া। আর আছে Mombasa Bar & Restaurant নাগোয়া বীচে।

তেমনই শহর থেকে বাস-মিনিবাস-অটোয় বোম্বালা নেতৃত্বে ব্যাক ওয়াটার পেরিয়ে ৫ কিমি দূরে ওজরাট ও দিউ সীমান্ত জোড়া আবেদনশূন্য মাতঙ্গী বীচটিও উচিত। মোমোখা-ও মোমোখা। উনা থেকে ১৫ মোমোখায় ৩ কিমি দূরে এই সাগরকোষ। লাইট হাউস মোমোখা শাভ এই সাগরকোষ। সমুদ্রতীরে উক্ত কমেটিক্স। মোমোখা-ও মোমোখা মোলে তমাল অর্থাৎ হেফল (Myphalae Spd ১৯৫৫) পাঁচের কবর, সমুদ্রতীরে অনেক সুন্দর লোক-বাগোয়া। বাস যাচ্ছে স্বকর থেকে। সের্বতা-ও মোলে ৩৫ টাকায় বাসায়। কাকারও স্বকর মোলে মোমোখা কীতে: One Administration ৩ HAD ৩ বাসায়। সের্বতা-ও উত্তর কমেটিক্স। আর আছে মোমোখা, Serran H-১, ১০৭, D ১৭৫, FM ২৫৭, ক্রিমিয়ার স্বকর থেকে সাময়িক মোমোখা কমেটিক্স। মোমোখা মোলে, অফ্রিকা অফ্রিকা, গম্বুজ, সুন্দর। স্থানীয় বর্জিতেরও যেন মোলে-জাহাজ নাগোয়া। আর আছে Mombasa Bar & Restaurant নাগোয়া বীচে।

ডায়-362520, STD 028758-এ বাস মোমোখা বাসারের ওপর। মোমোখা-ও মোমোখা মোলে তমাল অর্থাৎ হেফল (Myphalae Spd ১৯৫৫) পাঁচের কবর, সমুদ্রতীরে অনেক সুন্দর লোক-বাগোয়া। বাস যাচ্ছে স্বকর থেকে। সের্বতা-ও মোলে ৩৫ টাকায় বাসায়। কাকারও স্বকর মোলে মোমোখা কীতে: One Administration ৩ HAD ৩ বাসায়। সের্বতা-ও উত্তর কমেটিক্স। আর আছে মোমোখা, Serran H-১, ১০৭, D ১৭৫, FM ২৫৭, ক্রিমিয়ার স্বকর থেকে সাময়িক মোমোখা কমেটিক্স। মোমোখা মোলে, অফ্রিকা অফ্রিকা, গম্বুজ, সুন্দর। স্থানীয় বর্জিতেরও যেন মোলে-জাহাজ নাগোয়া। আর আছে Mombasa Bar & Restaurant নাগোয়া বীচে।

Diu-20, @ 2340, DAB ২০০-৩২৫ TCB ২০০ পাঁচ বেডেৰ ঘৰ ৩৫০, লাগোয়া *Apna G H Fort Rd DCB ১৫০ DAB ২০০-২৭৫*, পাশেই প্ৰাইভেট লিজে মিউনিসিপাল গেষ্ট হাউস —*Fun Club Diu (Baron s Inn) DAB ১৭৫-৩০০*, আবও যেতে ফোঁট লাগোয়া পৰ্তুগিজ ভিলায় *PWD Rest House DAB ১৫০ A/c ৩০০-৪৫০*, আহাৰও মেলে অগ্ৰিম অডাৰে, আবু EE, PWD, Diu আব আছে *Nilesh GH @ 2319 DCB ১২০ DAB ১৫০-২৫০ TAB ২২৫-২৭৫, H Samrat Collectorate Rd, @ 2354 D ৩৫০ A/c D ৬০০ ডৰ্মি বেড ১০০, H Ankur Jethubai Marg Diu 20 DAB ৩০০-৪৫০ TAB ৪২৫ FR ৬০০ A/c D ৬৫০, Hare Krishna GH near Fish Market S ৮০-১২৫ D ১২৫-২২৫ FR ২৫০, Prince GH near Fish Market D ১৭৫-৩০০ FR ৪৫০, H Central near Bus Std, H Ashyana @ 2260 near Bus Std SAB ১২৫ DAB ২০০, PWD-ৰ *Tourist Complex Circuit House* তবুও যেন থাকিব জন্য *Apna GH Fun Club Diu ও PWD ৰ Tourist Complex* আজও বমলীয়া। আব আহাৰে *Apna GH ও জলপানে* বাস স্ট্যাণ্ডেৰ *Deepee Restaurant* টি আদৰণীয় হ'বে। *আপনায়* আমিষ-নিবামিষ আৰু দীপিতে নিবামিষ আহাৰ মেলে।*

দিউ শহৰেৰ মাদকতা গুণ আছে। ছেট্ৰ শহৰ, কংক্ৰিটে মোডা পথঘাট। বাডিগুলিও পৰ্তুগিজ ধাৰায় বঙবেবঙে বজ্জিত। পূবে দুৰ্গা, আব পশ্চিমে শহৰকে বেটন কৰে সিটি ওয়াল। মূল প্ৰবেশ তোবগটিও সুন্দৰ কাককাৰ্যময়। দিউৰ *St Pauls & St Francis of Assisi—গীৰ্জা দুটিও সুন্দৰ।* মাতবিজেৰ পাশে নতুন কৰে গীৰ্জা হৈছে। ছাদ থেকে শহৰেৰ দৃশ্যও সুন্দৰ দেখে নেওয়া যায়। এমনকি, ঘণ্টা গেট, গুপ্ত প্ৰয়াগ, দিউ বাজাৰ—এদেবও পৰ্টিক আকৰ্ষণ

কম নয়। পোষ্ট অফিস, ব্যাঙ্ক, গোবা ট্ৰাভেলস, এসেবও অবস্থান ধীপেব উত্তৰ-পশ্চিমেব বাসস্ট্যাণ্ডকে ঘিৰে।

সোমনাথ বা পালিতানা পৰ্যটকৰা বাসে বাসে বেড়িয়ে নিতে পাবেন দিউ। বছৰভৰ চলাও যেতে পাৰে দিউ ভ্ৰমণে। শীত-গ্ৰীষ্ম-বৃষ্টি কাৰোবাই আধিক্য নেই দিউতে। চটজলদি যাবীৰা সোমনাথ থেকে ৭-১৫ বাসে ২২ ঘণ্টায় দিউ পৌঁছে অটোয় শহৰ বেড়িয়ে উনা থেকে বাত ২০-০০টাৰ শেষ বাসে সোমনাথ ফিৰেও সাজ কৰতে পাবেন দিউ দৰ্শন। আাবাৰ শ'ছমেক টাকায় ট্যাক্সিতেও সোমনাথ থেকে দিনে দিনে বেড়িয়ে নেওয়া যায় দিউ।

| দিউ থেকে দূৰত্ব | দিউ থেকে GSRTC ৰ |
|-----------------|--|
| সোমনাথ ৮৪ কিমি | বাস যাচ্ছে রাজকোট ৬-০০, |
| কোদিনাব ৫২ " | সোমনাথ হয়ে পোবন্দৰ ১০-০০, ডেরাবল ১৬-০০টায়। |
| উনা ১৫ " | এছাড়া R R Travels এর |
| পালিতানা ১৯৫ " | ভিলায় বাস যাচ্ছে বাজকোট, |
| শাসন গাঁব ১২৮ " | পোবন্দৰ, মুম্বাই, আমেদাবাদ। |
| তুলসীশ্যাম ৪৫ " | Goa Travels Diu Travels |
| জুনাগড় ১৮৫ " | এব ভিলায় বাস মুম্বাই যাচ্ছে |
| দেলওয়ালা ৮ " | ২৪০ টাকায়। |
| বাজকোট ২৮০ " | তবুও যেন নানান বাসে বা |
| আমেদাবাদ ৪৮০ " | শেয়াৰ অটোয় উনা পৌঁছে চলা |
| দমন ৮৪৩ " | যেতে পাবে গুজৰাটেব নানান |

দিকে। উনাতে বাসেৰ আধিক্য মেলে। উনা থেকে দিউ যাচ্ছে বাস ৬-২০, ৬-৪৫, ৭-৪৫, ৯-০০, ৯-৩০, ১১-১৫, ১২-৪৫, ১৪-৩০, ১৫-৩০ ১৭-১৫, ১৮-০০, ২০ ০০টায়। হোটেলও আছে নানান উনাৰ। বাস স্ট্যাণ্ডেব বিপৰীতে *অশোক গেষ্ট হাউস, ককেশ গেষ্ট হাউস, পুৰোহিত লজ, PWD-ৰ বেষ্ট হাউস* ছাড়াও নানান।

| | | |
|-------------|------------|----------------|
| আবু পাহাড় | ১২১৯ মিটাৰ | বাজস্থান |
| কোন্টিকানাল | ২১৩৩ " | চামিলুনাডু |
| আপিনোড়া | ১৬৪৬ " | উত্তৰ প্ৰদেশ |
| মহাবালেশ্বৰ | ১৩৭২ " | মহাবাট্ট |
| রানীকোত | ১৮২২ " | উত্তৰ প্ৰদেশ |
| মুন্সীগঞ্জ | ১২৫৫ " | পশ্চিমবঙ্গ |
| বরপালা | ৮২৫০ " | হিমালয় প্ৰদেশ |
| পাঁচমাড়ী | ১০৬৭ " | মধ্য প্ৰদেশ |
| গ্যাংটক | ১৮৫০ " | সিকিম |
| মিরিগু | ১৮০০ " | পশ্চিমবঙ্গ |

দাদরা ও নগর হাভেলী

ভারতের পশ্চিম উপকূলে গুজরাট ও মহারাষ্ট্রের সীমান্ত জুড়ে দাদরা ও নগর হাভেলীর অবস্থান। দমন ও দিউ-এর মতো দাদরা ও নগর হাভেলীও টুকরো হয়েছে—বিচ্ছিন্ন ও পরস্পরে। দুইয়ের সংযোগকারী পথও গিয়েছে গুজরাটের উপর দিয়ে। জনশ্রুতি, দীর্ঘ অতীতে উপজাতিদের রাজা ভগবানের শ্রেষ্ঠ আশীর্বাদ ‘শান্তির প্রাসাদ’ গড়েন নগর হাভেলীতে। এদের বিশ্বাস আজও জুন-জুলাই মাসের মনসুনে নিদ্রায় যান ভগবান।

দাদরা ও নগর হাভেলী □ রাজধানী: সিলভাসা।
আয়তন: ৪৯১ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ১৩৮৫৪২। পুরুষ: ৭০৯২৯। নারী: ৬৭৬১৫।
১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধির হার: ৩৩.৬৩%।
ভারতের হারে লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ০.০১%। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৫৩। সাক্ষরের হার: ৩৯.৪৬%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ২৮২ জন।
প্রধান ভাষা: ভিলি, ভিলোদি, গুজরাটি ও হিন্দী।

দীর্ঘ অতীতে মারাঠাদের দখলে ছিল দাদরা ও নগর হাভেলী। ১৭৭৯তে মিতালি গড়তে মারাঠারা ১২০০০ টাকায় ইজারা দেয় পর্তুগিজদের। প্রশাসন দপ্তর বসে দমনে। আর ১৯৫৪য় গোয়া-দমন-দিউর সাথে দাদরা ও নগর হাভেলীও স্বাধীনতা পায়। ১৯৫৪-৬১ শাসনও চলে জনগণের রায়ে। সবশেষে আগস্ট ১১, ১৯৬১ ভারত রাষ্ট্রে যোগ দিতে কেন্দ্রের শাসনাধীনে থাকে দাদরা ও নগর হাভেলী। তবে, পর্তুগিজ ফ্রেবার মেলে আজও নগর হাভেলীর বাতাসে। জলাভাব আছে এলাকা জুড়ে। পর্তুগিজদের কাল থেকেই চাষবাসের সাথে শিল্পও গড়তে শুরু করে। তবুও কৃষি এদের মুখ্য জীবিকা।

নবোদ্যমে পর্যটনকেন্দ্রও গড়ে তোলা হচ্ছে রাজধানী শহর সিলভাসাকে বিরে। টুরিস্ট কমপ্লেক্স তথা মনোরম বাগিচা Van Vihar রূপ পেয়েছে খানাবল নদীতীরে। তেমনই দমন-গঙ্গা নদী তীরে Van Ganga, Vandhara Garden চড়ুইভাতির জন্য আদরপীয়।

এছাড়াও নানান পিকনিক স্পট হয়েছে দাদরা ও নগর হাভেলীর দিকে দিকে। দেবতাও রয়েছেন খাডকেশ্বর (Tadkeshwar) বৃন্দাবনে।

দমনের মতো সিলভাসার রেল সংযোগকারী স্টেশনও পশ্চিম রেলওয়ের মুম্বাই-সুরাট রেলপথে ১৫ কিমি দূরে গুজরাটের বাণী স্টেশন। মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে ১৬৮.৫৫... থেকে ৯৫ কিমি দূরে বাণী। সেন্ট্রাল থেকে ভালসাদ, সুরাট, ভালোদরা ও আমেদাবাদের প্রতিটি লোকাল-প্যাসেঞ্জার-এক্স প্রেন যাচ্ছে বাণী হয়ে। দিন-রাখি জুড়ে নানান প্রেন। তবুও যেন সেন্ট্রাল থেকে ১১ কিমি দূরের বাত্সা থেকে ট্রেনের আধিকা মেলে। বাত্সা-বাণী প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে ৯-১৫য় বাত্সা ছেড়ে ১৩-১০এ বাণী পৌঁছে ফেরে ১৭-০৮ বাণী থেকে। নানান Shuttle DMU/EMU লোকালও চলছে বাণী হয়ে। আর দিল্লী-জয়পুর-আমেদাবাদ-মুম্বাই জাতীয় সড়কে গুজরাট ও মহারাষ্ট্র সীমান্তের ১৭ কিমি আগেই গুজরাটের ভিলাড থেকে দূরত্ব ১১ কিমি মাত্র। বাস ও অটো যাচ্ছে ভিলাড ও বাণী থেকে সিলভাসায়। পথেই পড়ে ছোট্ট শহর দাদরা। নগর হাভেলীর মুখ্য শহর সিলভাসায় দাদরা ও নগর হাভেলীর রাজধানী বসেছে। আরতনে পশ্চিমবঙ্গের মালদহ সম। তবে, সুন্দর-পরিচ্ছন্ন, শান্ত-প্রশান্ত সিলভাসা। নানান বাগিচা শহর জুড়ে। মুখ্য এদের মধ্যে ইন্দ্রিরা গান্ধী উদ্যান।



হোটেলও হয়েছে নানান—*H Ras Resorts, 128 Silvassa-Naroli Rd, Silvassa-396230, Dadra & Nagar Haveli, ☎ (02639) 30373, A30RJ5 B1, A/c S ১২৫০ D ১৭৫০, সুইট ৩০০০, এদের মুম্বাই বুকিং: ☎ (022) 4948271; Kamala Holiday Resort, ☎ 2688, A/c D ৬৫০-৮০০; Kamal Hotel Resorts; Dan Tourist H, ☎ 2556, S ৩০০ D ৪২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; Dartz H, ☎ 2312; S ১৫০ D ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০; Chetan GH, S ১২৫ D ১৫০-২৫০; H Woodlands, ☎ 30708, S ৩০০ D ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬৫০-৮৫০; H Vanraj, S ২২৫ D ৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; ছাড়ও নানান। ২০ কিমি দূরে Vanvihar Tourist Complex, Chauda, Khanvel, D ২০০ A/c D ৬৫০, সুপার ভিলাজ ৬০০; Pink Rose Tourist H. আর আছে Govt Circuit House, Silvassa ও Madhuban-৫; Govt Rest House, Silvassa ও Madhuban; FRH, Khanvel-৫।

বাস বা অটোর সিলভাসার দেখুন—সিলভাসা গির্জা, বনখারা উদ্যান, বাল উদ্যান, মিনি জু, দাটা, তাড়কেশ্বর, মহাশিব মন্দির, বৃন্দাবন, মনুবন বাঁধ। আর আছে শহর থেকে দূরে— বাসগলা লেক ও উদ্যান, দমনরা বন বিহার টুরিস্ট কমপ্লেক্স (খানকেন)। আর বন বিহারে আছে—ককতি উদ্যান, টাইগ্যাল মিউজিয়াম, ডিম্বার পার্ক।

মধ্য প্রদেশ

চিহ্নমাত্র চব্বিশ ১৭ চন্দ্রাবল

ভাবতের বৃহত্তম বা
অবস্থানের পবিচয়। কার্য

জবলপুর্বেব কাছে শিহোর। ৭ বাজ্যে যেবা মধ্য প্রদেশের
উত্তরে উত্তর প্রদেশ আব বাজস্থান, দক্ষিণে মহাবাষ্টি, অঙ্ক
ও গুজরাট, পূর্বে বিহার, পশ্চিমে রাজস্থান ও গুজরাট। মধ্য
প্রদেশেই ইতিহাসও আয়তনের নব। নানান পৌরাণিক গ্রন্থে
অবস্তীই উল্লেখ মেলেন। মঙ্গল গ্রন্থে জন্মও হইছিল অবস্তী
নগরে সৈকালে। এমনকি সম্রাট বিন্দুসাব পুত্র অশোক-কে
উজ্জয়িন-এব শাসনকর্তা কপে অভিষিক্ত করেন। ইতিহাস
খ্যাত সুবর্ণযুগ এই মধ্য প্রদেশেই এসেছিল ও গু বাজ্যদেব
কালে। হুনদেব কাছে পবাজয়ের পব ও গু বাজ্যদেব বাজত
যাই। তাঁরও আগে মৌর্যদের যুগেরে শুকবা দখল নৈয় মধ্য
ভূবিভ। এমনকি সম্রাট হর্ষবর্ধনও ভাবতের এই মধ্যাঞ্চলে
শাসন করে গেছেন ৭ শতকের প্রথম ভাগে। ৯ শতকে
চালুক্য-বাজ্যদেব গৌরবগাথাও মইয়ান করে তুলেছে মধ্য
প্রদেশকে। তাঁদেরই কালে গড়ে ওঠে বাজ্যবাহুব মন্দির-
বাজি। বাজ্যবাহুর এই অমর ভাস্কর্য আজও বিশ্বনন্দিত।
১১ শতকের পাবমাব বাজ্য ভূজ-ও আব এক ইতিহাস
গড়েছেন। রাজ্যের বাজ্যবাহু ভূশীল নামটি এসেছে শূরবেব
ঐশ্বরী ভূজ থেকে। অনতিদূরে প্রভুবর্ষপের ও হাচিরের
চমৎকার নিদর্শন মেলেন তাম্রবৈটক্য ও হাচিরে। আব বৌদ্ধ
ধর্ম জীবন্ত হইবে বয়েছে সীচিগুর্গের অনুপম ভাস্কর্যে। তেমনই
পবটক মানচিত্রে অবহেলিত ইন্দোবের ১২৮ কিমি দূরে
নন্দন মন্দির মণ্ডপভাটায় সাতপুবা পাঁহাডেব সৌর্যমন্দির
চলুসিধিতে বিবেধ উচ্চতম (২৫.৬ মি = ৮৪ ফুট উচ্চতম
৫২ হাত) ব্রাহ্মণ গজাজি জেন মূর্তি। তার একপাশের কুঁদে
বিষ্ণুর উচ্চতম মনোলিখিক মূর্তি ৫৭ ফুটের স্ফুমতেশ্বর।

গু বঙ্গল হয়েছ ইতিহাসের। হানানার এসেছে বাস্তব
মধ্য প্রদেশে। যুদ্ধ চলেছে বিদ্রোহীদের সাথে মুসলমান
শাসকদের। ১৮৫৭-৫৮ খ্রিঃ সালে ভাটখোয়া-বানসোলের ও
খেরিগা-খুন্ডে সূত্রের আঁধারিতের ওয়া-আপবান শিবাজীর
সৈন্যেরে চব্বিশ থেকে নব্বাশ ছাউনে পড়ে মাথাটা সঁদাছা।
ব্রিটিশ শক্তিও পলাতক হই মাথাটের হাতে। কিন্তু গৌরা-
লিরইব সিদ্ধি। মাথাটের মৃত্যুর পব ভেঙে পড়ে মুরার
সাম্রাজ্য। টুকরা টুকরা হয়ে গড়ে ওঠে বেশ কয়েকটি স্বাধীন
বাজ্য। স্বাধীনোত্তব ভাবকে সৈন্যের রাজত্ব শাসন। এসেছে
মধ্য প্রদেশের সন্তোষ। ১৯৪৭-৪৮ খ্রিঃ ১৫ নভেম্বর নবায়ন
যত্নের সহ-স্বত্বেরে জল সত্তা ওয়াস।

১৯৫৩-৫৪ অব্দ জার মঙ্গলর আভিষ বস অমর-প্রদেশে।
এদের শিক্ষা-স্বাধীন-স্বত্বেরে বৈধ কংগ্রেস-সম্মতির প্রাতি
ভেদেই কংগ্রেসের মধ্য। পশ্চিমের অসুখান মনু প্রতীতি

মাগে থেকে আদিম মানুষেব
মধ্য প্রদেশের গিবিকন্দবে।

আজও ভাবতীয় উপজাতিব ৪০ শতাংশেব বাস এই মধ্য
প্রদেশে। মাতৃভাষা এদের একনয়। ৩৭৭ রকমের ভাষাভাষী
বাস করে মধ্য প্রদেশে। হিন্দীতে বগু এবা সবাই। ভাষ্টি
আব নন্দা বয়ে চলেছে পূব থেকে পশ্চিমে। আর চব্বল,
শোন, বের্তোয়া, মহানদী ও ইন্দ্রাবতী বয়ে চলেছে পশ্চিম
থেকে পূবে। হেরনই প্রাচীর গড়েছে পূব থেকে পশ্চিমে
সমাজবালভাবে বিদ্রুত উত্তর বিদ্যা, দক্ষিণে সাতপুবা
পূর্বতমালা। বিদ্রোব দক্ষিণে নন্দা আর সাতপুবা দক্ষিণে
তাণ্ডি—এই দুই নদীর অববাহিকা আব পূর্বেব ছত্রিশ গড়েব
সমতল ছাড়া মোটামুটি হাজব দেড়েক ফুট উচুত বিদ্যা ও
সাতপুর পর্বতমালায় মল-ভূমিকি-প্রদেশের অববাহিকা।
গ্রীষ্মে বতাসে আর্দ্রতা কম, গরমেব আধিক্য আছে। মনজ
সম্পদে যথেষ্ট সমৃদ্ধ মধ্য প্রদেশ। বাজ্যেব, অংশ অবগাম্য
এমনকি অতীতের সেটুল প্রভিন্স নামটিও জড়িয়ে বয়েছে
এব সি পি টিকেব সঙ্গে।

কানহা, বাজ্যগণ্ড অদর্শনে জাতীয় উদ্যান দর্শনও
অসম্পূর্ণ থেকে যায় ভারতেরে। আত্র। বাক-দর্শনাধীনেব বয়ে
বাজ্যগড়-অন্য-কোষত প্রধা সামা গ্রীষ্মেব দর্শনও মেলেন
বাজ্যগড়-কেন্দ্রনই ১২ কিলোমিটার কাবস্থিত। বাজ্যগড়ের আব
এক আকর্ষণ। দর্শন দূরই হলেও বিশেষ বিবল বাস্তব
বাফেলোর অবস্থানও মধ্য প্রদেশে। যদিও রূপাবহতা জ্ঞানে
কাংশে কম এসেছে তবুও গোয়ালিয়রের পশ্চিম জুড়ে অজি-
শত্রু চব্বল হাতছানি দেয় পর্যটকদের। বাজ্যের উত্তরে বাজ্য-
রায়ে, কেন্দ্রমণ্ডি জবলপুরের মার্বেল রক, গোয়ালিয়র, সীট,
ভূগাল, উজ্জয়িন, ইন্দোব, মাধু মহিমামণ্ডিত করে তুলেছে
মধ্য প্রদেশকে। প্রত্যাগীদের এক স্বপ্নরাজ্য মধ্য প্রদেশ।

বাজ্যবাহু

বাজ্যের নামবাষ্টি শব্দ বহির্ভূত হইবে বহুভাষ্যে। সুবিধার্থে
বাজ্যবাহু থেকে মধ্য প্রদেশ-সম্পদ গুল করা যাক। বিহার
বাজ্যবাহুর পৌরাণিক রেল যৌয়ান বাজ্যবাহু। নিকটতম
রেল স্টেশন হুগলপুবা হলেও কলকাতা-মুরারী-এলাহাবাদ
তথা পূর্ব ভাটত থেকে বাজ্যবাহুতে সাতনা হয়ে চলায় ইতিবা।
তেমনই দিলী-আহা-গোয়ালিয়র বা উত্তর-পশ্চিম-পশ্চিম ভারত
বাজ্যদেব উচিত হইবে বাসী হইবে সুখবাহু চলা।



এলাহাবাদ হয়ে মুম্বাইগামী প্রতিটি ট্রেন টেলিফোন
বেলের পাঁচজন ইক-আইন-সংসদমা থেকে
কলকাতা-মুরারী-বজ্রা ১৫৩ কিলোমিটার ৩৯১
কিলোমিটার সাতনা থেকে প্রায় ১৮০ কিলোমিটার কলকাতা
যাবে। নানান ট্রেনে সাতনার পৌছে রেল-কলিন থেকে বিদ্যায়

রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের নিষিদ্ধিক থেকে খাজুরাহোয়। আর খাজুরাহো থেকে বাস যাচ্ছে ৫-৩০, ৮-০০, ১১-৩০, ১২-০০ A/c, ১৩-০০, ১৫-৩০, ১৬-৩০টার বাসী; বাসী-গোয়ালিয়র হয়ে আশা ৯-০০; সাতনা ৮-৩০, ৯-৩০, ১৪-৩০, ১৫-৩০; মাহোবা ৭-০০, ৮-৩০, ১০-০০, ১২-০০, ১৩-০০, ১৪-০০, ১৭-০০, ১৯-০০; সাগর ১২-৩০; ১১ ঘণ্টার ভূপাল যাচ্ছে ১৯-১৫য়, ১৬ ঘণ্টার ইন্দোর যাচ্ছে ১৮-০০টার, ১০ ঘণ্টার জবলপুর ৭-৩০টার। রাতভর সার্ভিসে বাস চলছে খাজুরাহো থেকে জবলপুর, ভূপাল ও ইন্দোর। এমনকি ১৬-৩০-এব বাসে মাহোবা গিয়ে মাহোবা থেকে ২২-৩৭এ গোয়ালিয়র-বারাণসী ১১:০৭ মুম্বই-বল্লভ এন্ডে পরদিন ৬-১০এ এলাহাবাদ, ১০-২৫এ বারানসীও চলা যেতে পারে। তেমনই মাহোবা থেকে মহাকোশল এয়ে ২২-৩৬এ বাসী-গোয়ালিয়র হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন বা ১-৪৩এ মানিকপুর হয়ে জবলপুর চলা যেতে পারে।



বাণিজ্যিক শহর সাতনার হোটেলও আছে নানান—MPTDC-র Tourist Motel, Civil Lines, ⑤ 55471, SAB ২০০ DAB ২৭এ A/c S ৩০০ D ৩৫০, এসেরই H Bharhut, Civil Lines, ⑤ (07672) 55471, S ২০০ D ২৫০ A/c S ৩০০ D ৪০০ ডরি ৩০/৫০; এসেরই Tourist Bungalow-র SAB ২৫০ DAB ৩০০ ডরি বেড ৬০। আর বাস স্ট্যান্ডে আছে ডরি প্রধার নগরপালিকা বাক্সনিয়াস। রেল স্টেশনের কাছে H Khajuraho, Satna, MP-485001, ⑤ 3330, A-c D ৪৫০ A/c D ৬৫০; H Park, Rewa Rd-485001, R1, S ১০০ D ১৭এ T ২০০ A/c D ৩৫০; বাস স্ট্যান্ডের ঝিলে H Bussara, S ৮৫ D ১৫০-২২৫। H India, opp Bus Std, DAB ১২৫-২০০; H Rajdeep, Rewa Rd-6, ⑤ 3045, H Paryat, H Sahul, H Natraj, বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Safari, D ১০০-১৫০; H USA, H Star ছাড়াও রেলের রিটার্নিং রুম ও সার্ভিস হাউস আছে সাতনার।

মাহোবাও প্রাচীন শহর। ৮০০ খ্রিস্টাব্দে শহর প্রতিষ্ঠা কালের মাহোবাবেরই নামাজুর মাহোবা। মাহোবাবতেও বেশ কয়েকটি লোক ও মন্দির রয়েছে চান্দেলা রাজাদের কালের। মদন সাগর লোক এসের মধ্যে বৃহত্তম। এরই পাড়ে গড়ে উঠেছিল শহর। তবে সে আজ বিলম্বিত। টিলার টঙ্কর দুর্গটিও বিলম্বিত। ১২ শতকের জৈন ও বৌদ্ধ মন্দিরগুলিও ধ্বংস পেয়েছে। ৫ কিমি দূরের সূর্য মন্দিরটি মাহোবাব আর এক আকর্ষণ।

খাকারও হোটেল মেলে UPSTDC-র Tourist Bungalow ও MPTDC-র Tourist Bungalow-র। আহাঙ্ও মেলে ক্যান্টিনে। বাসী-মানিকপুর শাখা রেলের বাসী থেকে ১৩৮ কিমি দূরে মাহোবা; ছাওয়ারপুরের দূরত্ব ৫৩, বাপা ৪৯, বাসী ১৬১ কিমি।

মাহোবা থেকেও ঘরপানে ফেরা যেতে পারে। বাস যাচ্ছে ১০-৩০, ১৪-৩০টার খাজুরাহো থেকে ২৫ ঘণ্টার মাহোবা। আবার ট্রেন বা বাসে বাসীও চলা যেতে পারে মাহোবা থেকে। তেমনই IAC-র বিমান দৈনিক সার্ভিস গড়েছে দিল্লী-আগ্রা-খাজুরাহো-বারাণসী-মাহোবা। ফেরেও একই ভাবে IAC ভাবত পর্যটনে খুবই পণ্ডলাব এই উড়ান সার্ভিস—মবসুমে টিকিটের প্রচুর চাহিদা। বাত্মীতেও ভারতীয় থেকে অভ্যর্থনাও আধিক্য। তবুও চলায় বিলম্ব ঘটে থাকে এপথে প্রায়ই।

রূপসী ব্রাহ্মণকন্যা হেমবতী ও দেবতা চন্দ্রের মিলনে জাত চন্দ্রবর্মণের হাতে চান্দেলা রাজবংশের (৯—১৩ শতক) জন্ম। ৮ গটে প্রাচীরে ঘেরা ১৫০০ ফুট উঁচু খাজুরাহো ছিল চান্দেলা রাজপুত রাজাদের রাজধানী। নামও ছিল সেখানে Khajuravahka অর্থাৎ সুবর্ণ যুগের শহর (City of Golden dates)। স্বপ্নে দেখা মায়ের মিনতি রক্ষার্থে চন্দ্রবর্মণের হাতে শুরু হয়ে বংশের নানান রাজার কালে (৯৫০-১০৫০) শতাব্দিক বছর ধরে ইন্দো-আর্য স্থাপত্যে বেলে পাথরে ৮৫টি মন্দির গড়ে ওঠে খাজুরাহোয়। সংখ্যাধিক্য ঘটে রাজা যশোবর্মণের কালে। প্রাধান্যও পেয়েছে—সৃষ্টি রক্ষার দেবতা বিষ্ণু ও সৃষ্টি ধ্বংসের দেবতা শিব এই সব মন্দিরে। পারিবর্ষিক সহ দেবতার। হজির। তবে, মন্দিরের সবগুলি আজ আর নেই। কালের কবলে আর অনাদরে বিনষ্ট হয়েছে অতীত। ১১ শতকে মুসলিম হানায় যোদ্ধার জাত চান্দেলা রাজাদের রাজত্ব যায়—গরিমাও হান হয়ে পড়ে খাজুরাহোর। জল আর জঙ্গলে মাটি চাপা পড়ে লোকচক্ষুর অগোচরে ছিল ৬০০-রও অধিক বছর খাজুরাহো। ১৮১৯এ এলাকাকে সার্ভে করতে গিয়ে নতুন করে আবিষ্কার করে একদল ব্রিটিশ। আর খননের ফলে লোক সমকে আসে ১৯২৩এ খাজুরাহো। ২২টি মন্দির আজও সেইসব দক্ষ শিল্পীর অমর তাক্ষর তথা নাগারা শৈলীর মন্দির স্থাপত্যের অন্যতম নিদর্শন হয়ে পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে। প্রকাশ পেয়েছে মানুষের

স্বাধীনতার
৫০ বর্ষের
পূণ্য লাভে

ইংরেজ শাসনে
বাজেয়াপ্ত
বাই

কবিতা □ নাটক □ উপন্যাস □
স্মৃতিকথা □ প্রবন্ধের সঙ্কলন

সম্পাদনায় :

বিষ্ণু বসু

অশোককুমার মিত্র

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

না পাওয়ার অভাববোধ। প্রেম অর্থাৎ কামসূত্র এখানকার শিল্পের মুখ্য উপজীব্য। পাথর কূপে তৈরি মধ্যযুগীয় ভারতীয় শিল্পের এই সজীব মূর্তিগুলির তুলনা হয় না। নিখুঁত ভাস্কর্যে মিথুন মূর্তিও প্রাধান্য পেয়েছে খাজুরাহোর মন্দিরে। অলৌকিকত্বের সঙ্গে অম্লীলতা তথা উত্তেজক সৌন্দর্যে দুই যেন কোনো কোনো মূর্তি। কোনো কোনো মূর্তিতে যৌন ক্ষুধা পরিস্ফুট, কোনো কোনো মূর্তি বিবাদময়; আবার বোকা হাসিও ফুটে উঠেছে অনুচরদের নানান মুখে। তবে গার্হস্থ্য জীবন ভুলে দেবতার কাছে নিজেদের সঙ্গে দেওয়াই এর মূলে। শিব-পার্বতীর বিয়ের নানান ঘটনা মুখ্য উপজীব্য স্থাপত্যে। হিন্দু পুরাণের দেবদেবী, পরীরাও নেমে এসেছে স্বর্গ থেকে। নৃত্যরতা হরসুন্দরী, অঙ্গরা, নানান ভঙ্গিমায় সুন্দরীরাও সজীব হয়ে উঠেছে বেলে পাথরের ভাস্কর্যে খাজুরাহোয়। পাথর এসেছে ২০ কিমি দূরের কেন নদী থেকে। খাজুরাহো অদর্শনে অসম্পূর্ণ থেকে যায় ভারত দর্শন আজ। তবে, রাষ্ট্রপঞ্জের বিশ্ব ঐতিহ্য বলে স্বীকৃত খাজুরাহোর অনুপম শিল্পকীর্তি আজ সভ্যতার প্রভাব ও মানুষের অবহেলার শিকার হয়ে ধ্বংসের কাল গুনছে।

অবস্থান হিসাবে ৩ ভাগে ভাগ করা হয়েছে খাজুরাহোর মন্দিররাজি—ওয়েস্টার্ন, ইস্টার্ন ও সাদার্ন। ১৩ বর্গ কিমি জুড়ে এই মন্দিররাজি। তবে, পশ্চিমী গোষ্ঠীরই প্রশস্তি বেশি। আর এই পশ্চিম জুড়েই গড়ে উঠেছে পর্যটকদের খাজুরাহো। বাস স্ট্যাণ্ড, বাজারঘাট, ব্যাঙ্ক, ট্যুরিস্ট অফিস, হোটেল সবই এই পশ্চিমে। এমনকি খাজুরাহোর ধ্বংসপ্রাপ্ত মন্দিরের নানান মূর্তি ও ভাস্কর্য নিয়ে আর্কিওলজিক্যাল মিউজিয়ামটিও এই পশ্চিমে। মিউজিয়ামের ডায়ালিং গণেশ মূর্তিটি অনবদ্য। জন্ম এর নীলাকাশের নিচে ১৯১০এ W E Jardine-এর হাতে। শুক্র ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা। পশ্চিমের সঙ্গে ১ কিমি পূর্বের জৈন মন্দিরগুলি দেখে অধিকাংশ পর্যটক খাজুরাহো ভ্রমণ সাক্ষর করলেও সাত সকালে অটো, জিপ, ট্যাক্সি বা রিকশায় পূর্ব ও দক্ষিণ বেড়িয়ে বৈকালিক সফরে পশ্চিম দেখে নেওয়া উচিত হবে। আলোকিতও হচ্ছে রাতে পশ্চিমের মন্দিররাজি। খাজুরাহো পরিক্রমায় জিপ ২৫০ ট্যাক্সি ২২৫ অটো ১২৫ টাকায় মেলে। আবার মিনিবাসও আছে ৪০ টাকায়—পূর্ব ও দক্ষিণ দেখিয়ে পশ্চিমে নাহিয়ে দেয় মিনি। এমনকি সকালের বাসে সাতনা থেকে এসে ডরদুপুরে খাজুরাহো বেড়িয়ে ১৫-৩০টার বাসে ফেরাও যেতে পারে সাতনায়া। তবে, উচিত হবে একটা রাত খাজুরাহোয় অবস্থান করা। আর গ্রীষ্ম ও বর্ষা দুইয়েরই আধিক্য হেতু আগস্ট থেকে মার্চ খাজুরাহো বেড়াবার উপযুক্ত সময়। তাপমান গ্রীষ্মে ৪২-২১° আর শীতে ২৭-৪° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। মশার আধিক্য আছে খাজুরাহোয়। ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর ও স্টেট ব্যাঙ্ক অব ইন্ডিয়া'র শাখাও বসেছে পশ্চিমে।

বেলেপাথরে গড়া খাজুরাহোর মন্দিররাজি। চারপাশ ঘিরে প্রাচীর হয়ে পড়িয়ে বিদ্যুৎ পর্যন্ত। উচিতও হবে ভাস্কর্যে অনুপম পশ্চিমের কাণ্ডারীয় মহাসেব, লক্ষ্মণ, বিশ্বনাথ, চিত্রগুপ্ত ও দেবী জগদম্বা দেখে নেওয়া। *অভির্ভান* অর্থাৎ উঁচু ভিতের উপর উল্লস্কর্ষ অর্থাৎ শিবরথমী মন্দির। সাধারণত ৫ ভাগে রূপ পেয়েছে খাজুরাহোর মন্দির-স্থাপত্য। *অর্থমণ্ডপ* দিয়ে ঢুকে *মণ্ডপ* পেরিয়ে *মহামণ্ডপ*। এরপর *অভয়াল* অর্থাৎ উপপ্রকোষ্ঠ পেরিয়ে *গর্ভগৃহ* দেবতার অবস্থান। দেবতাকে ঘিরে *প্রদক্ষিণা* অর্থাৎ সংযোগরক্ষাকারী পথ। আবার কোনো কোনো মন্দির *মণ্ডপ* ও *প্রদক্ষিণা*র অনুপস্থিতিতে বাকি ৩ ভাগে রূপ পেয়েছে। তেমনই মন্দিরতীরের নবতম আকর্ষণ মার্চের খাজুরাহো ড্যান্স ফেস্টিভ্যাল। ক্র্যাসিক্যাল ড্যান্সের আসর বসে সপ্তাহব্যাপী প্রতি সন্ধ্যায়। শিল্পীরা আসেন সারা ভারত থেকে—আর দর্শক আসেন দেশ-বিশ্বস্তর থেকে উৎসবে।

পশ্চিমের মন্দিররাজিকে ঘিরে বাসস্ট্যান্ডের চারপাশে লোকনগাট, হোটেল-রেস্তোরাঁ গড়ে উঠেছে Khajuraho-471606, STD 07686-৪।

MPTDC-র H Jhankar, ৩ 2063, S ৩০০ D ৩৫০ A/c S ৫৪০ D ৫৯০, কল বুকিং: Linkage ৩ 2464485; Tourist Bungalow, ৩ 2221, S ২৫০ D ৩০০; H Rahil, ৩ 2062, S ১৭৫ D ২১০, ৭২ বেডের ডমিটরিতে বেড ৬০; H Payal, ৩ 2076, S ৩০০ D ৩৫০ A/c S ৫৪০ D ৫৯০; গ্রামের উত্তরে Tourist Village, ৩ 2128, S ১৯০ D ১৯০; অবু: Regional Tourist Officer, Khajuraho, Dist-Chhattarpur, MP-471606, ৩ 2051 বা Central Reservations, Marketing Division, MPTDC, Gangotri, 4th floor, TT Nagar, Bhopal-462003, ৩ (0755) 554340-43. ITDC-র * Khajuraho Ashok, ৩ 2024 S ১১৯৫ D ১৭০০, এপ্রিল-সেপ্টেম্বর ৯০০/১২৫০, অবু: Manager. * Oberoi Juss H, ৩ 2085, Byc Pass Rd, S ৪৫ D ৮৫ সুইট ২০০-২২৫ US\$; ব্যবস্থাপনায় অনন্য * H Chandela, ৩ 2054, S ৭৫ D ৮৫ সুইট ২২৫ US\$; H Lakeside, ৩ 2120, S ২০০-২৭৫ D ২৫০-৪০০; Holiday Inn, Clarks H.

পশ্চিম লাগোয়া বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে ভারতীয় প্রথম H Batika, S ১২৫ D ১৭৫-২৫০; H Temple, D ১৫০-২৫০ A-c S ২২৫ D ৩০০; H Sunset View, ৩ 2077, SCB ৬০ SAB ৬০ DCB ১০০ DAB ১২৫-২০০ ডমিটে ৩৫; Jain L, opp Westerngroup, SCB ৪৫-৮৫ DCB ১০০-১৫০ DAB ২০০ চার বেডের ঘর ২৫০; লাগোয়া H Sureya. Toni's GH, Link Rd, SCB ৮০ SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ২০০ ডমি ৩৫; Luxmi L, Apsara, Gupta. Jain Temple Rd-এ—H Harmanya SAB ১৭৫ DAB ৩০০; New Bharat L, Gupta L, H Apsara, H Hem, Sita L, Marcopolo H, H Vikram, Jogi L, H Nataraj, Yadav L, এদের কাছে S ৬০-১২৫ D ৮০-২২৫ টাকায় মেলে। আদিনিথ চব্বরে H Temple RH-এও থাকার ঘর মেলে। আর আছে *সার্কিট হাউস*, অবু: Collector, Chhattarpur, MP; SADA-র Paryatak H, S ৬০ D ১০০ ডমি ৩০ সুইট ১৫০ খাজুরাহো বাস স্ট্যান্ড।

The map shows the Kumbhariya area in Nepal. Key locations and landmarks include:

- Kumbhariya** (center)
- Chitragupta** (top left)
- Mahadevi** (bottom left)
- Lakshmana** (bottom center)
- Hanuman** (bottom right)
- Lakshmana Temple** (bottom center)
- Hanuman Temple** (bottom right)
- Chitragupta Temple** (top left)
- Gandaki River** (flows through the area)
- Road Network** (various roads connecting the locations)
- Inset Map of Nepal** (top right corner)

KHAJURAH

1. Khatwarah

2. Khatwarah

3. Khatwarah

4. Khatwarah

5. Khatwarah

6. Khatwarah

7. Khatwarah

8. Khatwarah

9. Khatwarah

10. Khatwarah

11. Khatwarah

12. Khatwarah

13. Khatwarah

14. Khatwarah

15. Khatwarah

16. Khatwarah

17. Khatwarah

18. Khatwarah

19. Khatwarah

20. Khatwarah

21. Khatwarah

22. Khatwarah

23. Khatwarah

24. Khatwarah

25. Khatwarah

26. Khatwarah

27. Khatwarah

28. Khatwarah

29. Khatwarah

30. Khatwarah

31. Khatwarah

32. Khatwarah

33. Khatwarah

34. Khatwarah

35. Khatwarah

36. Khatwarah

37. Khatwarah

38. Khatwarah

39. Khatwarah

40. Khatwarah

41. Khatwarah

42. Khatwarah

43. Khatwarah

44. Khatwarah

45. Khatwarah

46. Khatwarah

47. Khatwarah

48. Khatwarah

49. Khatwarah

50. Khatwarah

51. Khatwarah

52. Khatwarah

53. Khatwarah

54. Khatwarah

55. Khatwarah

56. Khatwarah

57. Khatwarah

58. Khatwarah

59. Khatwarah

60. Khatwarah

61. Khatwarah

62. Khatwarah

63. Khatwarah

64. Khatwarah

65. Khatwarah

66. Khatwarah

67. Khatwarah

68. Khatwarah

69. Khatwarah

70. Khatwarah

71. Khatwarah

72. Khatwarah

73. Khatwarah

74. Khatwarah

75. Khatwarah

76. Khatwarah

77. Khatwarah

78. Khatwarah

79. Khatwarah

80. Khatwarah

81. Khatwarah

82. Khatwarah

83. Khatwarah

84. Khatwarah

85. Khatwarah

86. Khatwarah

87. Khatwarah

88. Khatwarah

89. Khatwarah

90. Khatwarah

91. Khatwarah

92. Khatwarah

93. Khatwarah

94. Khatwarah

95. Khatwarah

96. Khatwarah

97. Khatwarah

98. Khatwarah

99. Khatwarah

100. Khatwarah

বিশ্বখ্যাত পত্রলেখা, সন্তান-স্নেহে নারী, আয়নায অভিসারিকা, সিদ্ধবসনা যুবতী, নৃত্যভঙ্গিমায় নারী মূর্তিগুলি স্বর্গের সেবদেবী ও পরীসেৱণ হার মানায়। দক্ষিণী বারান্দার কুলসীতে কাঁটা তুলছে স্বর্গের পরীমূর্তির ভাস্কর্যেও অভিনবত্ব আছে। মিথুন মূর্তিও রয়েছে মন্দিরে। আর রয়েছে ২টি শিলালিপি ও ত্রিমস্তকের ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর। মূল মন্দিরে সেকালের পান্নায় তৈরি বিশ্বনাথ মূর্তির অনুপস্থিতিতে অনিন্দ্যসুন্দর শিব মূর্তিটি অনবদ্য। একই চত্বরে বিশ্বনাথের মুখোমুখি ৬ ফুট উঁচু বাহন নন্দীর মন্দির। মূর্তির কারুকার্য সুন্দর।

পশ্চিম গোষ্ঠীর চত্বরের বাইরে লক্ষ্মণের দক্ষিণ লাগোয়া ৯০০-৯২৫এ গড়ে উঠেছে মতলেশ্বরের মন্দির। কারুকার্য ও ভাস্কর্যহীন। তবে, সে অভাব পূরণ করেছে ২½ মি উঁচু দেবতা। আজও নিত্য পূজা হয় দেবতা শিবের। ঘেরাটোপের বাইরে, টিকিট লাগে না এ-মন্দির দেখতে।

শিবসাগর লেকের বিপরীতে অতীত সাক্ষ্য হয়ে মুক মুখে দাঁড়িয়ে আছে গ্রানাইট পাথরে তৈরি খাজুরাহোর প্রাচীনতম (৮২০—৯০০) সৈষ্ণট যোগিনী মন্দির। ধ্বংসের দেবী বঙ্গী যোগিনী রূপে পূজা পেতেন অতীতে। ৬৪ জন যোগিনী দেবীসেবায় নিয়োজিতও ছিল সেকালে। নামটিও তাই চৌবাট যোগিনী মন্দির। পৃথক পৃথক কক্ষও হয়েছিল যোগিনীসেৱণ—যার ৩৫টি আজ দৃশ্যমান। আর ছিলেন দেবীত্রয়ী—ব্রাহ্মণী, মহেশ্বরী ও মহিষমর্দিনী। তবে, দেবতার স্থানান্তরিত হয়েছেন জব্বলপুরে। মূল মন্দিরও বিধ্বস্ত। পথেরও অভাব, শিবসাগরের জল ডিঙিয়ে চলা যায়।

আরও ১ কিমি পশ্চিমে গ্রানাইট ও বেলেপাথরে তৈরি লালকুঁয়া মহাদেব (Lalkuan Mahadev) অর্থাৎ শিব মন্দিরটিও আজ বিধ্বস্ত।

দক্ষিণ গোষ্ঠী : দুলাদেও আর চতুর্ভুজ এই দুই মন্দির নিয়ে দক্ষিণ গোষ্ঠী। দূরত্বের জন্য দক্ষিণীতে দর্শক কম। ঘণ্টাই থেকে ১ কিমিরও বেশি দক্ষিণে দুলাদেও মন্দির। দুলাদেও অর্থাৎ নববধু। সুন্দর একটি উপকাহিনীও আছে দুলাদেওকে ঘিরে। পূর্বমুখী এই শিবমন্দির পাঁচভাগে গড়ে উঠেছে। কিছুটা দক্ষিণী ছাপ থাকলেও স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে অনন্য। দেবী সরস্বতীও রয়েছেন অন্দরে। তোরণদ্বারে ছত্রচ্ছায়ায় গঙ্গা-যমুনা, অষ্টবসু, যমরাজ; মন্দিরদ্বারের ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর মূর্তি অনবদ্য। বিচিত্রধর্মী মিথুনমূর্তিও মূর্ত হয়েছে মন্দির গায়ে। মন্দিরটি ১১০০—১১৫০এ তৈরি হলেও মূল দেবতা দুলাদেও শিব নতুন করে রূপ পেয়েছে আরও পরে।

দুলাদেও থেকে ১½ আর পশ্চিম থেকে ৪ কিমি দূরে চতুর্ভুজ মন্দির। চতুর্ভুজ অর্থাৎ ৪ ভুজের ৩ মি উঁচু বিষ্ণু মূর্তি। বৈচিত্র্য আছে মূর্তিতে—পা থেকে কোমর পর্যন্ত কৃষ্ণ, কোমর থেকে নারায়ণ আর মাথার মুকুটে শিব। তবে, কেন যেন দীনতা ঘটেছে চতুর্ভুজের ভাস্কর্যে।

পূর্ব গোষ্ঠী : পশ্চিম তথা বাস স্ট্যাণ্ড থেকে ১ কিমি পূর্বে খাজুরাহো গ্রাম লাগোয়া পূর্বের মন্দিরগুলি গড়ে উঠেছিল সেকালে। ৩টি তার হিন্দু—গ্রামময় ছড়িয়ে, ৩টি জৈন একই চত্বরে। আরও ৩টি জৈন মন্দির রয়েছে, তবে বিধ্বস্ত। আর হয়েছে চত্বরের বাইরে নবতম মিউজিয়ম খাজুরাহোয়। মূর্তি রয়েছে ২৪ জৈন তীর্থঙ্করের। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্ত খোলা। আর পশ্চিম থেকে পূর্বের পথে নতুন করে মন্দির হয়েছে রামভক্ত হনুমানের। মন্দিরটি নতুন হলেও ২½ মি উঁচু বীর হনুমানের মূর্তিটি ৯২২ খ্রিস্টাব্দের। উচিতও হবে জৈন মন্দিরত্রয় দেখে রিকশা/টাঙা বা পায়ে পায় পূর্ব গোষ্ঠী দেখে নেওয়া।

ঘণ্টাই-এর পূর্বে জৈন গ্রুপের আদিনাথ। মন্দিরটি বিধ্বস্ত। তবে অতীতের গর্ভমন্দির আজও অক্ষত, সংযোজনও ঘটেছে নতুন করে। দেবতা এখানে কষ্টি পাথরের আদিনাথ। আর আছে হিন্দু দেবদেবীর মূর্তি, স্বর্গের পরী, মিথুন মূর্তি, ভ্রাগন ছাড়াও নানান জীবজন্তু মন্দির গায়ে। ভাস্কর্যে ও স্থাপত্যে হিন্দু মন্দিরের প্রভাব।

আদিনাথের দক্ষিণ লাগোয়া পার্শ্বনাথ মন্দির। জৈন মন্দিরগুলির মধ্যে শুধু বৃহত্তম নয়—সুন্দরতমও এই পার্শ্বনাথ। শিবরথনী হিন্দু মন্দিরের আদলে ১৮৬০এ তৈরি। হিন্দু দেবদেবীর সঙ্গে জৈন তীর্থঙ্কর ছাড়াও রয়েছে স্বর্গের পরী ও মানব-মানবীর মিথুন মূর্তি, শিব-পার্বতীর যুগল মূর্তি, পত্রলেখা, এক পতির দুই সতী, প্রসাদনরতা অভিসারিকা, কাঁটা তুলছে সুন্দরী, দাড়িম্ব স্বর্গের দেবতা—প্রতিটি মূর্তিই প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছে মর্মরে। খাজুরাহোর কিছু সুন্দরতম ভাস্কর্য রূপ পেয়েছে পার্শ্বনাথে। মূল বিগ্রহ কষ্টি পাথরের পার্শ্বনাথস্বামী। ভাস্কর্য অমরত্ব পেয়েছে পার্শ্বনাথের উত্তরের দেওয়ালে। আর জৈন তীর্থঙ্কর শাভিনাথের ৪½ মি উঁচু বিগ্রহটি পুরাকালের (১০২৮) হলেও আমূল সৎকার ঘটেছে মন্দিরের। পূজা হয় আজও এ-মন্দিরে। মিউজিয়মও বসেছে জৈন ভাস্কর্যের নানান সংগ্রহ নিয়ে শাভিনাথ চত্বরে।

পূর্বের জৈন গ্রুপ থেকে গ্রামমুখী পথে আর এক জৈন মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ দেখে নেওয়া যায়। মন্দিরটি বিধ্বস্ত হলেও স্তম্ভগুলি আজও সম্রাজ্ঞী দৃষ্টি আকর্ষণ করে পর্যটকদের। অপরাগ খোদাই, বৈচিত্র্যও আছে কারুকার্যে। প্রতিটি স্তম্ভের চারপাশে কীর্তিমুখ, মনি-মুক্তোর মালা; আর ঝুলছে ঘণ্টা। এই ঘণ্টা থেকে নাম হয়েছে এর ঘণ্টাই মন্দির। প্রবেশ পথে গরুড়ে আরাম জৈন দেবতা যক্ষ। মহাবীর জননীর ১৬টি স্বপ্নও রূপ পেয়েছে।

আর গ্রাম পেরিয়ে জবাল্লী মন্দিরে (১০৭৫—১১০০) রয়েছেন দেবতা চার বাহর বিষ্ণু। জাওয়্যার অর্থ বিষ্ণু মন্দিরটি আকারে ছোট হলেও কারুকার্য ও ভাস্কর্যে চিত্তাকর্ষক। স্বর্গের সেবদেবী, পরী, স্তনদানরত মা ও শিশু, মিথুন মূর্তি রূপ পেয়েছে এর দেওয়ালে।

জবাবীর ২০০ মি উত্তরে বামন মন্দির। ত্রোতা যুগে দৈত্যরাজ বলির অত্যাচার থেকে দেবতাদের রক্ষার্থে বামন অবতার (৫ম) রাপে বিষ্ণুর আবির্ভাব। মন্দিরটি ১০৫০—১০৭৫এ তৈরি। তবে বিধ্বস্ত হয়েছে বেশকিছু ভাস্কর্য। মিথুন মূর্তির অভাব মন্দিরে। সে-অভাব পূরণে নেমে এসেছেন স্বর্গ থেকে দেবদেবী ও পরীরা। মন্দিরের উত্তর দেওয়ালে লক্ষ্মী-নারায়ণ, পশ্চিমে ব্রহ্মা-সরস্বতীর যুগল মূর্তি। মন্দিরের স্তম্ভ চারটি ও সিলিংয়ের কারুকার্য সুন্দর। মূল মন্দিরে চাতুর্ভ-র প্রতিচ্ছবি ৪.৮' উঁচু বামন অবতার-রূপী বিষ্ণু।

নিম্নোক্ত তালিকা অর্থাৎ খাজুরাহো সাগরের দক্ষিণ-পশ্চিমে গ্রানাইট ও বেলেপাথরে ৯০০তে তৈরি ব্রহ্মা মন্দির। ছোট্ট মন্দির, শিখরচূড়ো পিরামিডের মতো। দেবতা নিয়েও দ্বিমত আছে। বিগ্রহ এখানে চতুমুখী ব্রহ্মার লিঙ্গমূর্তি, দ্বিমতে শিবচাকুর; বিষ্ণুও বলে থাকেন লোকে একে। আর গড়তে চলেছে ৪০০ একর জমি জুড়ে রিক্রিয়েশন পার্ক বা প্রমোদ উদ্যান খাজুরাহোয়।

সাজ হল খাজুরাহো দর্শন। এবার চলুন বাসে ঝাঁসী বা জবলপুর। তবে উৎসাহীরা সাতনা-জবলপুর রেলে সাতনা থেকে ৩-১৫, ৪-৪০, ৬-৩০, ৭-৩০, ১০-৩৫, ১৪-৫৫, ১৮-১০, ১৯-০০, ১৯-১৫, ২০-৪০র ট্রেনে আধ ঘণ্টায় ৩৬ কিমি দূরে মাইহার গিয়ে সঙ্গীতসাধক সরোদিয়া আলাউদ্দিন খাঁ সাহেবের সাধনপীঠ তথা তীর্থ মন্দির মণিমা ভবন বেড়িয়ে নিতে পারেন। খাঁ সাহেবের সরোদিয়া দেবরূপে অধিষ্ঠান করছে। তেমনই শিষ্যদের সাথে বংশ পরম্পরা তুলে ধরা হয়েছে ছবিতে। সমাধিস্থ ও রয়েছেন সঙ্গীত সাধক বাড়ির চত্বরে। ১০০০ সিঁড়ি বেয়ে সুউচ্চ মাহাশ্ব্যের অনুচ্চ বিদ্যাপর্বতের শিরে মনোরম পরিবেশে মন্দির হয়েছে সারদাদেবীর। জবলপুরের বাসও যাচ্ছে মাইহার হয়ে। আবার খাজুরাহো থেকে ঝাঁসীর পথে ৬৪ কিমি যেতে Dhubela দুর্গের ধ্বংসাবশেষের মাঝে চান্দেলা রাজাদের গরিমা দেখে নিতে পারেন মিউজিয়ামে। তেমনই খাজুরাহো থেকে ১৯৫, সাতনার ৭৫ কিমি দূরে চিত্রকূটশামও বেড়িয়ে আসতে পারেন বাসে বাসে। (বিস্তারিত উত্তরপ্রদেশ অংশে দেখুন।)

খাজুরাহোর ১০০ কিমি উত্তরে আর চিত্রকূটের ৬৭ কিমি দূরে বিদ্যাপর্বতের বৃন্দেলখণ্ডে (বৃন্দের) গুপ্তকালের অজ্ঞেয় কালীঞ্জর দুর্গটিও এপথের আর এক দর্শন। নিকটতম রেল স্টেশন ৩৮ কিমি দূরে ঝাঁসী-মাণিকপুর শাখা রেলের আটররা (Atarra)। গুপ্তকালের এই দুর্গের কথা Ptolemy'র লেখাতেও মেলে। তবে, ১০ শতকে চান্দেলা রাজা যশোবর্মণের দখলে যার দুর্গ। আরও পরে আকবর জয় করলেও ১৮১২য় ব্রিটিশের প্রস্থত্ব মেনে নেয় কালীঞ্জরের রাজা। আর ১৮৬৬তে ভেঙে ফেলা হলেও অতীতের দুর্গে পাতাল গঙ্গা, পাণ্ডু কুণ্ড, বুদ্ধিস্ট ভলাও,

রানী-কি-শুন্দা, রানী-কি-আমন, মৃগথারা, বরাহ অবতার, নীলকণ্ঠ মন্দির তথা শুন্দা আজও দেখে নেওয়া যায়। শিবের তপোভূমির মধ্যে অন্যতম কালীঞ্জর। এমনকি হিন্দু পুরাণের নানান আখ্যান, নানান ভাস্কর্যে মইয়ান হয়েছে কালীঞ্জর। জনশ্রুতি, খাজুরাহোর প্রেরণাও নাকি কালীঞ্জরের অনবদ্য ভাস্কর্য থেকে।

আবার খাজুরাহো থেকে ২৫ কিমি দূরে চন্দ্র রাজাদের তৈরি ১৫০ বছরের পুরাতন রাজগাঁও দুর্গও মন্দির দেখে ফেরা যেতে পারে বাসে বাসে।

তেমনই খাজুরাহো থেকে ৪০ কিমি দূরে পান্না জাতীয় উদ্যানও বেড়িয়ে নেওয়া যায় নভেম্বর থেকে জুনে। কেন নদীর পূর্ব তীরে ১৯৮১তে গড়া ৫৪৩ বর্গ কিমি জুড়ে টিকি গাছে ছাওয়া গহীন বন, গিরি সঙ্কট আর পাহাড়ী ঝরনায় শান্ত-সুখধুর পরিবেশে বাঘ, প্যাংগার, নেকড়ে, ঘড়িয়াল দর্শনও করে নেওয়া যায়। আর আছে অশ্বিনতি ব্রু-বুল, চিঙ্কারা ও শম্বর পান্নায়। শীতের অতিথি হয়ে চেনা-অচেনা নানান পাখিও আকর্ষণ বাড়ায় পান্নার। থাকারও ব্যবস্থা মেলে পান্নায় ফরেস্ট রেস্ট হাউসে; অবু: ডাইরেক্টর, পান্না ন্যাশানাল পার্ক, পান্না। পার্ক থেকে ৪ কিমি দূরে Majhgawan-এ এশিয়ার বৃহত্তম, ভারতের একমাত্র হীরক খনি পান্না ডায়মন্ড মাইনস। রবিবার ছাড়া ৯—১১-০০টার দেখার ব্যবস্থা। দর্শনের অনুমতিও মেলে National Mineral Development Corp Ltd, Diamond Mining Project, Panna-র প্রবেশদ্বারে। মন্দিরও আছে নানান অতীতের ছত্রশাল রাজাদের রাজধানী পান্নায়। পান্না থেকে ১৪, আর খাজুরাহোর ৩৪ কিমি দূরে পথেই পড়ে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে পাণ্ডব ফলস; আর পাহাড় ঢালে গুহা। জনশ্রুতি, অজ্ঞাত-বাস কালে পাণ্ডবরা এই গুহাপথেই পাহাড় পার হন। শহরমুখী আরও যেতে সুইস সাহেবের Tree Top Restaurant। দৃষ্টিনন্দন পরিবেশে গাছের উত্তরে রেস্টুরেন্টে আহার মেলে। ৩৪ কিমি দূরে কেন ও সিমরি নদীর সঙ্গমে গাজুয়া বাঁধ; ২৫ কিমি দূরে মণিয়াগড় পাহাড়ের পাদদেশে ১৫০ বছরের প্রাচীন রাজগড় প্যালেস; ১১ কিমি দূরে বৌসাগর বাঁধ; ২০ কিমি দূরে রাণে ফলস, ঘড়িয়াল স্যাকচুরারিও হয়েছে রানের কাছে কেন নদীতে; ২৩৭ কিমি দূরে বাজ্জ-গড় জাতীয় উদ্যানও বেড়িয়ে নিতে পারেন খাজুরাহো দর্শনার্থীরা।

ঝাঁসী

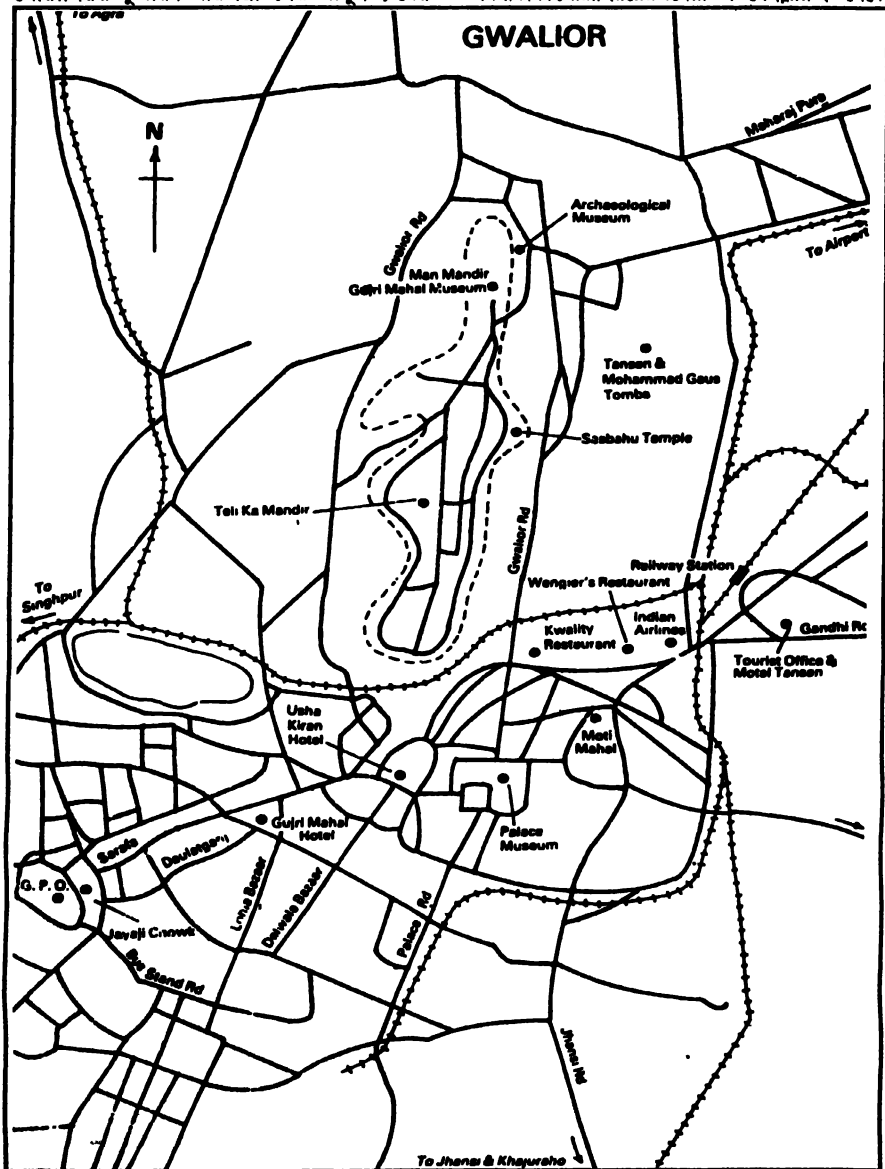
বৃন্দেলে হর বোলো কে মুঁই হামনে সুনি কছানি ধী
খুব লাড়ি মর্দানী উও তো ঝাঁসিওয়ালি রানী ধী



ঝাঁসীর ভৌগোলিক অবস্থান বলিও উত্তর প্রদেশে—তবে মধ্য প্রদেশ (সীমান্তে) ভ্রমণ পথে ঝাঁসী বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। খাজুরাহো যাতায়াতে মইন লাইনে দিন-রাত জুড়ে নানান মেল ও এক্স ট্রেনের

গোপাল পাহাড়ের কাছে পড়নস্থলে। মূর্তিও হয়েছে ছোট
অষ্টপুষ্ঠে উদ্ভেলিত তরবারি হস্তে রানীর। ব্রিটিশ জয়ও করে
গোয়ালিয়র দু'বার। আর ব্রিটিশের আনুগত্য নেয়

সিদ্ধিয়ারাজ। প্রতিদানে দখল যায় ১৮৮৫তে সিদ্ধিয়ারাজের
হাতে দুর্গের। প্রত্নতত্ত্বের দিক থেকেও গোয়ালিয়রের আকর্ষণ
অনসীকার্য। গোয়ালিয়রের দশেরা ও ডিসেম্বরের ২০ থেকে



বাৎসরিক মেলায়ও প্রশস্তি আছে পর্যটক মহলে। রেল স্টেশনের দক্ষিণ-পূবে MPTDC-র H Tansen, 6 Gandhi Rd, ৩ (0751) 340370 থেকে প্রতি শনি ও রবিবার ৯—১৪-০০টা গোল্ডালিয়র দর্শন-এর ব্যবস্থা আছে। আবার অটো/ট্যাক্সি/ ট্যাক্সিতেও দেখে নেওয়া যায় গোল্ডালিয়র। তবে, দুর্গ পরিক্রমার জন্য ট্যাক্সিই একমাত্র যান। ট্যাক্সি/ রিকশা দুর্গ চড়তে অক্ষম—নামিয়ে দেয় পাদদেশে।

মোগল সাম্রাজ্যের স্থপতি বাবরের মতে—*হিন্দুস্থানের উজ্জ্বল রত্ন গোল্ডালিয়র দুর্গ*। কুঠরোগাক্রান্ত সুর্য সেন রোগমুক্ত হন ৪২৫ খ্রিস্টাব্দে সাধু গোল্ডালিয়ার মন্ত্রপূত সুর্য কুণ্ডের জলে। রোগমুক্তির পর নামেরও বদল ঘটান সাধু—সুর্য সেন হন সুহন পাল। সাধুরই ভবিষ্যদ্বাণী এই পাল রাজারা অজ্ঞেয় থেকে রাজত্বও করবে গোল্ডালিয়রে। আর সাধুরই ইচ্ছামত ৫২৫ খ্রিস্টাব্দে তৈরি করেন এই দুর্গ সুর্য পাল। শহর থেকেও ৯১ মি অধিক উচ্চে বেলেপাথরের গোপাচল পাহাড় গড়ে ওঠে গোল্ডালিয়র দুর্গ। পরবর্তীকালে সুর্য পালের ৮৪তম উত্তরপুরুষ নামের বদল ঘটিয়ে হন তেজ করণ। ভাগ্যের পরিহাস— রাজাও যায় টোমারদের হাতে ১৩৯৮এ। টোমার বংশীয় রাজা মান সিংহ (১৪৮৬—১৫১৬) মহিমাবিত্ত করে তোলেন দুর্গকে। বার বার সংঘাতও ঘটে চলে মোগলে আর টোমারে। ১৫০৫এ দিল্লীর শিকারদের আক্রমণ প্রতিহত হলেও ১৫১৬য় ইব্রাহিম লোদীর অবরোধ কালে মৃত্যু ঘটে মান সিংহর। আরও পরে মোগল সবট বাবর জয় করে নেয় দুর্গ। আর ১৭৫৪য় দখল যায় মারাঠাদের হাতে। বারবার হাত বদলের মাঝে ব্রিটিশেরও দখলে যায় দু'বার দুর্গ। ১৮৫৭য় প্রথম ভারতীয় স্বাধীনতার সংগ্রামে গোল্ডালিয়রের সিদ্ধিয়া (মারাঠা) রাজ ব্রিটিশের আনুগত্য মেনে নিলেও ১৮০০০ সিপাহী ভারতের Joan of Arc ঝাঁসীর রানী লক্ষ্মীবাইয়ের নেতৃত্বে স্বাধীনতা রক্ষায় যুদ্ধ করেন ব্রিটিশের সঙ্গে। ১৮৫৮য় রণক্ষেত্রে লক্ষ্মীবাইয়ের মৃত্যুতে দুর্গের দখল যায় ব্রিটিশের হাতে। আনুগত্যের পুরস্কার স্বরূপ দুর্গ ফেরে ১৮৮৫তে ব্রিটিশ থেকে সিদ্ধিয়া রাজে। প্রতিরক্ষার দিক থেকে খুবই সুরক্ষিত ছিল এই দুর্গ।

৫ কিমি দীর্ঘ ১০ মি উঁচু প্রাচীরে ঘেরা বেলেপাথরের খাড়া পাহাড়ে গোল্ডালিয়র দুর্গ। দক্ষিণ-পশ্চিম ও উত্তর-পূবে দু'টি পথে দুর্গের প্রবেশ। অটো/ট্যাক্সিও চলেছে দক্ষিণ-পশ্চিম অর্থাৎ লজ্জার হয়ে। পথ দীর্ঘ, চড়াই-এরও আধিক্য। চলার পথে ১৪ শতকের মধ্য ভাগে পাহাড় কেটে তৈরি নানান জৈন তীর্থঙ্করের নানান মূর্তি, রত্নবেরঙের দেওয়াল চিত্রে জৈন মিথোলজি আকর্ষণ বাড়িয়েছে। ১৫২৭এ বাবরের সেনা দুর্গ ধ্বংস করলেও নতুন করে রূপ পায় আবার। উত্তর-পূবে আর্কিওলজিক্যাল মিউজিয়াম হয়ে পথ উঠেছে দুর্গের। ৫টি গেট বা মহল পেরিয়ে দুর্গ। নাম তাদের—প্রথম: ১৬৬০এ তৈরি ঔরঙ্গজেবের নামে নাম

আলমগীর গেট; দ্বিতীয়: সমকালে তৈরি গুজারী মহল বা বাদলগড়—বাদল সিংয়ের নামে নাম, হিন্দোল গেটেও বলে থাকে লোকে একে; তৃতীয়: *বানসুর বা আরচেরি* গেট আজ লুপ্ত; চতুর্থ: ১৪০০ খ্রিস্টাব্দে তৈরি গণেশ গেটের আকর্ষণও নানান—কবুতর খানা, সাধু গোল্ডালিয়ার ছোট্ট মন্দির, স্বল্প যেতে ৮৭৬এ তৈরি চতুর্ভুজ বিষ্ণু মন্দির; পঞ্চম: সবশেষে প্রাসাদের প্রবেশ ফটক হস্তী গেট। সেকালে রাজ পরিবারের যাতায়াতও ছিল হাতির পিঠে উত্তর-পূব ধরে। হাতি চলে আজও যাত্রী নিয়ে এপথে। উচিতও হবে সাত সকালে দক্ষিণ-পশ্চিম ধরে দুর্গে পৌঁছে উত্তর-পূব দিয়ে নেমে মিউজিয়াম ও মকবারা দেখে শহর পরিক্রমায় চলা।

উত্তর-পূব অর্থাৎ গোল্ডালিয়র গেট দিয়ে চুকতেই পাথরে মিনারওয়ালা প্রেমের সৌধ গুজারী মহল। গুজর বংশীয় প্রিয়তমা মহিষী মুগনয়নীর জন্য তৈরি করেন টোমার রাজ মান সিংহ ১৫ শতকে। নির্মাণকৌশল খুবই সুন্দর। সম্প্রতি রাজা প্রভুতত্ত্ব গবেষণা কেন্দ্র ও মিউজিয়াম বসছে। হিন্দু ও জৈন ভাস্কর্যের সঙ্গে বাঘ গুহার ফ্রেস্কো চিত্রের সংগ্রহ উল্লেখ্য। বিশেষ করে কিউরেটরের অনুমতিতে গয়ারাস-পুরের ট্রাগেডেস—*শালবনজিকা* উচিত হবে দেখে নেওয়া। সোম ও ছুটি ছাড়া ১০—১৭-০০টা খোলা।

সামান্য এগুতেই ৮৭৬-এর দেবতা চারবাহর বিষ্ণু রয়েছেন চতুর্ভুজ মন্দিরে। দুর্গের হস্তী গেটটিও মান সিংহর তৈরি। অতীতকালে কবুতর খানাও ছিল এই গেটে। আর ছিল সাধু গোল্ডালিয়ার ছোট্ট মন্দির।

হস্তী গেট পেরুতেই কন্দর্ঘর্মী ৬ গুণ্ড শিরে মান মন্দির প্যালেস। এটিও তৈরি করেন মান সিংহ ১৪৮৬-১৫১৭য়, আর সংস্কার হয় ১৮৮১তে। রত্নবেরঙের টালি বসিয়ে জলসাঘরের নানান নকশা ও জাকিরির কাজ অতুলনীয়। জনশ্রুতি, জাকিরির অন্তরাল থেকে রয়াল লেডিরা গানের তালিম নিতেন। ৬-তলা এই প্রাসাদের দু'টি তলা মাটির নিচে। মান সিংহর গ্রীষ্মাবাস ছিল সেকালে। আর ছিল ভূগর্ভস্থ অন্ধকার কারাকক্ষ, ফাঁসিঘর, স্নানঘর। ঔরঙ্গজেব ভাই মুরাদকে এখানেই বন্দী রেখে হত্যা করে।

বর্ষা ছাড়া প্রতি সন্ধ্যায় *Son-et Lumiere*-প্রদর্শনীতে অতীত দিনের আসর বসছে দুর্গে। ১ ঘণ্টার প্রোগ্রাম, টিকিট ১০। MPTDC-র মোটেল তানসেন থেকে ২৫ টাকায় গাড়িও মেলে যাতায়াতে।

বিপরীতে ৮০ গিলারের জহর কুণ্ড বা বাউড়ি। পরাজয়ের পর আত্ম বাঁচাতে জহর পালন করতেন রয়াল লেডিরা সেকালে। ১২৩২-এও অনুষ্ঠিত হয় জহর। করণ মহল বা কীর্তি মন্দির, জাহাঙ্গীর মহল দু'টিও দেখে নেওয়া যেতে পারে মান মন্দিরের পেছনে। তবে, অবশ্য আর অবহেলায় অতীতের জৌলুস আজ লুপ্ত।

অদূরেই পূব দেওয়ালে শাপ আর বর্ষা অর্থাৎ শাতড়ি ও বধুর পৃথক পৃথক মন্দির। জৈন বলে ধিমত থাকলেও

বাচ্ছে ২৬-০৫ ঘটায় 1159 চব্বল এক্স; গোয়ালিয়র হাউসে 123 7 দিন ৬-০০টায় চব্বল। বৃহৎপতিবার চব্বল বাচ্ছে হাওড়া থেকে গোয়ালিয়র হয়ে আগ্রা ক্যান্ট। কলকাতা যাত্রীসের চব্বল এক্সে বা কানপুর নেমে কাঁসী হয়ে বা দিল্লী/আগ্রা থেকে গোয়ালিয়র যাওয়াই সুবিধার। 8477 পূর্ণী-হজরত নিজামুদ্দিন উৎকল কলিজ এক্সও ১-০৫৫ খড়াপুর সৌছে টাটা/ রাউরকেল/ বিলাসপুর/ কটনি/ কাঁসী/গোয়ালিয়র/আগ্রা হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন বাচ্ছে।



আর সরকারি ও বেসরকারি বাস বাচ্ছে দিল্লী ৩২১, মথুরা ১৭৪, আগ্রা ১১৮, হরিদ্বার, লাক্কৌ, জয়পুর, কোটা, খাজুরাহো ২৭৮, ভূপাল ৪২৭, সাঁচী ৩৪৪, উজ্জয়িন ৪৫৫, ইন্দোর ৪৮৬, শিবপুরী ১১২ কিমি ছাড়াও রাজ্য ছাড়িয়ে উত্তর ও পশ্চিম ভারতের দিকে দিকে গোয়ালিয়র থেকে। বাস যাচ্ছে ৫-৩০, ৭-৩০, ২০-০০, ২০-৫০৫ ছেড়ে ১১ ঘটায় ভূপাল; ইন্দোর যাচ্ছে ৬-০০, ৮-৪৫, ৯-৩০, ১৬-০০, ১৭-০০, ১৮-০০, ১৮-৩০, ১৯-৩০৫; জব্বলপুর ৬-৪৫, ১৮-০০টায়; উজ্জয়িন ৬-০০, ৬-৩০, ৭-০০, ১১-৪০, ১৮-০০টায়; শিবপুরী যাচ্ছে ৬ ঘটায় প্রতি আধ ঘণ্টা অন্তর ৬-২৩-০০টায়; জয়পুর যাচ্ছে আগ্রা হয়ে ৬-৩০ ও ১১-০০টায়; খাজুরাহো যাচ্ছে ৮-৩০টায় ছেড়ে ৯ ঘটায়। এছাড়াও নানান বাস আসছে আগ্রা থেকে কাঁসী হয়ে গোয়ালিয়রে। আগ্রা থেকে বাসে গোয়ালিয়র যাত্রীরা চলার পথে চব্বলও দেখে নিতে পারেন। এমনকি আগ্রা থেকে এসে প্রাইভেট সুপার ডিলাক্স ১৯-০০টায় গোয়ালিয়র ছেড়ে ৪৮৬ কিমি দূরের ইন্দোর যাচ্ছে পরদিন ভোর ৬-০০টায়।



IAC-র বিমান 135 দিন সার্ভিস গড়েছে দিল্লী-গোয়ালিয়র-ভূপাল-ইন্দোর-মুঘাই-এর মাঝে। দপ্তর এদের রিজার্ভেশন ৩ 326872, উড়ান সংবাদ ৩ 368124. শহরে চলাছে রিক্সা, অটো, টেম্পো ও ট্যাক্সি। তবে ট্যাক্সি ও অটো মিটার ছেড়ে ক্রান্তিতে যেতে আর্থ্রী।



থাকারও নানান ব্যবস্থা Gwalior-474001, STD 0751-এ। MPTDC-র H Tansen, 6 Gandhi Rd-1, R₁, ৩ 340370, SAB ৩০০ DAB ৩৫০ A/c S ৫৯০ D ৬৫০ সুইট S ৮৯০ ৯৯০ D ৯৯০ ১০৯০, টুরিস্ট অফিসটিও বসেছে তানসেনে। *H Gujar Mahal, High Court Lane-474001, S ১২৫-১৫০ D ১৫০-২৫০ A/c S ২৭৫ D ৩২৫; Welcomgroup-এর *Usha Kiran Palace H, Jayendraganj-9, Lashkar, behind Joyvilas Palace, ৩ 323993, A/c S ৪৩ D ৬৮-৭৫ USS; H Safari, Sin Rd, Lashkar, A/c S ২২৫-২৭৫ D ৩০০-৪২৫ ডর্মি বেড ৬০; পাশেই H Fort View, S ১৫০-৩৫০ D ২০০-৪৫০; বদ্ব য়েতে H President, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ২৭৫ D ৩৫০; H Chundraloke, near Bus Std, S ১৫০ D ২২৫; H Grace, H Gwalior Regency, New Bus Stand Rd-2, near Rly Sin, ৩ 340670, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০৭৫; রেল স্টেশন থেকে বেকতেই অতি সাধারণ H Ashok, D ১০০-১৫০; H India, near Rly Sin, S ১২৫-২২৫ D ২০০-৪২৫; Regal H, M LV Rd, A7 R₁B₁, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A/c S ২৭৫ D ৩২৫; H Vivek Continental, Topi Bzr-1, ৩ 329016, S ২২৫ D ৩০০ A-c S ৩৫০ D ৪৫০; Man Mandir, High Court Rd, ৩ 474009, SCB ৬৫ SAB ১০০ DAB ১৫০-

২২৫ A-c S ২২৫ D ৩০০ FR ৩২৫; Super Star L, Jiyaji Chowk-1, SCB ৮০ SAB ৮৫-১২৫ DCB ১২০ DAB ১৫০-২২৫; H Meghdoot, ৩ 27374, D ১৭৫-২৫০; Metro H, Ganesh Bzr, near Gandhi Market-1, ৩ 25530, D ১২৫-১৭৫ সুইট ২৫০ A/c D ৩৫০; H Ambika, Tansen Rd, S ৮৫-১৫০ D ১৫০-২২৫; H Banjara, S ২২৫-৪৫০ D ৩৫০-৬৫০; H Shelter, opp IAC, S ৩৫০-৭৫০।

আর H Swagat, Lashkar, ৩ 22520; H Bhagawati, Nai Sarak; লাগোয়া Ranjit H, Hemson H, ছাড়াও আছে অলম্বার, সেয়াল, কৈলাস লজ, লক্ষ্মী লজ, রঞ্জিত, মহারাষ্ট্র লজ, মিডওয়ে অতিথি ছাড়াও নানান। এদের রেট S ৬০-১২৫ D ৮৫-১৭৫। আর আছে—সার্কিট হাউস, রেস্ট হাউস, বিভলা গেস্ট হাউস, রেলের রিটায়ারিং ক্লব, বাস স্ট্যান্ডের কাছে জীবিতচন্দ, অদুরের ওভার-ব্রিজের নিচে শ্রীকৃষ্ণ ছাড়াও নানান ধরমশালা ও বেশ কিছু সাধারণ হোটেল। তবে গজারী মহল (behind High Court) থাকে ও খাবার দুই-ই প্রশংসনীয়। তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে Motel Tansen, H India, H Safari এসেরও ব্যবস্থাপনা ভালই। আহাৰ্যেরও নানান হোটেল গোয়ালিয়রে। জিয়াজী চকে H Saraswati Mahal-এর খালি মিলের যথেষ্ট স্থাখ্যাতি। অম্বর রেস্টুরেন্টটিও যথেষ্ট খ্যাত। হোটেল ইন্ডিয়ান ইন্ডিয়ান কপি হাউসটির প্রশান্তি কফির সঙ্গে দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহাৰ্য পরিবেশায়।

শিবপুরী

আগ্রা-মুঘাই জাতীয় সড়কে গোয়ালিয়র থেকে ১১২ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে গোয়ালিয়র-ইন্দোর বাস পথে ১৪০০ ফুট উঁচু মালভূমিতে শিবপুরী শহর। গোয়ালিয়র থেকে বাসেই চলুন শিবপুরী, আধঘণ্টা অন্তর বাস; ৩ ঘণ্টার পথ। শহর থেকে ৮ কিমি দূরে জাতীয় সড়ক। টাঙা বা জিপে চলুন শহর থেকে উদ্যানে। গাড়িও মেলে বনবিহারে বনদপ্তর থেকে। অতীতে গোয়ালিয়রের সিজিয়া রাজাদের গ্রীষ্মকালীন রাজধানী তথা মৃগয়াভূমি ছিল আজকের জাতীয় উদ্যানে। নিকটতম রেল ও বিমান দুই-ই গোয়ালিয়রে। ১০১ কিমি পশ্চিমের কাঁসী থেকেও বাস আসছে শিবপুরীর। বাস যাচ্ছে ভূপাল ৫-০০, ১০-১৫, ২২-০০, ২৩-০০টায়; চান্দেয়ী ৮-০০, ১০-৩০, ১৪-৩০; কাঁসী ৫-০০, ৫-৪৫, ৭-৩০, ৮-৩০, ৯-৩০, ১১-৩০, ১২-৩০, ১৩-৩০, ১৪-৩০, ১৫-৩০, ১৮-০০; উজ্জয়িন, ইন্দোর, কোটা, বৃথী, সাঁচী ছাড়াও রাজ্যের সিঁধিদিচ্ছে শিবপুরী থেকে।

জাতীয় সড়ক ধরে শিবপুরী আসার পথেই পড়ে সুলতান-গড় ফলস। দুর্গম বেগে লাফিয়ে নামছে পার্বতী নদী। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে এ-দুশা আনন্দ বর্ধন করে যাত্রীর। এর ১০ কিমি দূরে কুমাং বাবার নয়নাভিরাম সৌন্দর্যও অত্যুৎসাহীরা দেখে নিতে পারেন। বাঘেরাও আসে নদীর জলে তৃষা মেটোতে আজও। তেমনই এগুথের আর এক আকর্ষণ Narwar।

শিবপুরী শহর থেকে ৮ কিমি দূরে অর্ধচন্দ্রাকার স্থাখা সাগর লেক তথা ষোট স্লব। রানীর নামে নাম, একটি প্রসবণও আছে। ১১ কিমি পরিধির এই লেককে ঘিরে ৩৬০ থেকে ৪৮০ মি উঁচুতে ১৫৬ বর্গকিমি জুড়ে অতীতের সিজিয়ারাজদের সামার

রিস্ট তথা মৃগয়াভূমি। তবে, তারও আগে মোগল দরবারের হাতি শিকারে আদর্শ ছিল এই শিবপুরী। গহীন অরণ্য—অরুণ্যচর প্রাণী ও বৃক্ষরাজি দুইয়ের আকর্ষণে শিবপুরী অনন্য দর্শন। ১৯৫৮য় জাতীয় উদ্যানের ভূখণ্ডে নাম হয়েছে তার মাখব জাতীয় উদ্যান। জাতীয় সড়কটিও চলেছে জাতীয় উদ্যানের পাশ কাটিয়ে। লেকের জলে নানান পাখি। শীতে পরিযায়ী পাখিরা আসে দেশ-দেশান্তর থেকে। এরাও আকর্ষণ বাড়ায় উদ্যানের। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে, কুমিরও আছে লেকের জলে। তেমনই অগুনতি হরিণ, শম্বর ৫৩১, চিতল ১৯৫৪, নীলগাই ৭৭৭, চিঙ্কারা ৬৬৫, টাউসিংহ ১৭৯, অগুনতি বন্য তরোর, চিতাবাঘ ৭, এমনকি বাঘেরও দর্শন মেলে জাতীয় উদ্যানে। তেমনই খাঁচায় বন্দী বাঘও রয়েছে। বেশ কয়েকটি অবজারভেশন টাওয়ারও হয়েছে বন্য জন্তু দেখার জন্য। সূর্যাস্তে উদ্যান তথা লেকের শোভা দর্শনে জর্জ কাসেলটি (মৃগয়ায় আসা পঞ্চম জর্জের বাসের জন্য জিয়াজী রাও সিঙ্ঘিয়ার তৈরি) অন্যতম। সম্ভ্রতি মিউজিয়ম বসেছে কাসেলে।

বসিও সারা বছর ধরে খোলা থাকে জাতীয় উদ্যান, তবে জুলাই থেকে সেপ্টেম্বরের বৃষ্টি এড়িয়ে চলা যেতে পারে বছরভর উদ্যান সফরে। তবুও, জন্তু দেখার মনোরম সময় বসন্তকাল। বসন্তের সমাগমে গাছে গাছে মোলাশ ফোটে, আসন লাগে সারা অরণ্যে পলাশের পোতাতে। আর তাপমান শীতে ৯—৩৪°, গ্রীষ্মে ২১—৪৩° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। রকমারি চার্জও লাগে বনবিহারে। সোম ছাড়া সকাল থেকে সাঁঝে খোলা।

সার্কিট হাউসের কাছে ১৯৫৭ খ্রিস্টাব্দে তৈরি ছবুত্র অর্থাৎ প্যাভেলিয়নটি এক করুণ ইতিহাসের স্মারক হয়ে গড়ে উঠেছে। সেদিনের ব্রিটিশরাজ প্রথম স্বাধীনতা (১৮৫৭) সংগ্রামের বীর সৈনিক ওঁতিয়া তোপীকে রাজবিরোধের অপরাধে ১৮৫৭তে ফাঁসি দিয়েছিল এখানে। নতমস্তকে শ্রদ্ধা জানাতে কশেকের তরে বাকরুদ্ধ হয়ে আসে।

মোগলী গার্ডেনের ধাঁচে গড়া বাগিচায় নানান ফুলে সুশোভিত, ভিক্টোরিয়ান বাতিতে আলোকিত, নয়নাভিরাম পরিবেশে সিঙ্ঘিয়ারাজদের ছত্রিশও আর এক দ্রষ্টব্য। লেকের পাড়ে মহারানী সখ্যারাজে সিঙ্ঘিয়ার *pietradura* শৈলীর ছত্রিশ অর্থাৎ সমাধিতে আজও প্রতিদিন বনন ও আহর্চর্যের সাথে অর্ঘ্যও দেওয়া হয়। মৃণ্মুখি শ্বেত মর্মরের ছত্রিশটি মহারাজা মাধো রাওয়ের। হিন্দু ও ইসলামিক স্থাপত্যে গড়া শিবরথম্বী চুড়ো, রাজপুত ও মোগলী প্যাভিলিয়নে অনবদ্য। রাস্তাে আলোরও সাজ গরে ২৮x১২ মিটারের এই সমাধিসৌধ। এমনকি প্রতি সাতই স্থানীয় শিল্পীরা গোয়ালিয়র বহরানর সঙ্গীতও শোনার রাজা-মহারাজাদের ছত্রিশে। ৮—২০-০০টার খোলা।

কলোনিয়াল স্থাপত্যের নিদর্শন সিঙ্ঘিয়ার রাজপরিবারের

গ্রীষ্মাবাস গোলাপি রঙা মাখববিলাস প্রাসাদটিও মুগ্ধ করে পর্যটকদের। মহল নামে খ্যাত প্রাসাদের মেঝে, থাম, চত্বর, গণপতি মণ্ডপ বিশেষভাবে উল্লেখ্য।



থাকার জন্য Shibpur-473551, STD 07492-এ—MPTDC-র Chinkara Motel, Bombay-Agra Rd, 0 31297, S ১৯০ D ২৫০; আর আছে উদ্যান সংলগ্ন এদেরই Tourist Village, near Bhadaiya Kund, 0 33760, কটজ ধর্মী SAB ৪৯০ DAB ৫৯০ চার বেডের ঘর ৬৯০ A/c S ৬৯০ D ৭৯০। এছাড়া Shibpur H, Deluxe, Harish L. CH, DB ছাড়াও বেশ কয়েকটি সাধারণ হোটেলে আছে জাতীয় সড়ক তথা শিবপুরী শহরে। আর জাতীয় উদ্যানে আছে Sakhya Sagar Boat Club, অব্ : Collector, Shibpur, MP-473551.

চান্দেদরী : উৎসাহীরা শিবপুরী-সাঁচি পথে শিবপুরী থেকে ১২৭ আর সাঁচির ১৬৯ কিমি দূরে গুণা জেলায় বুন্দেলা রাজপুত ও মালব সুলতানদের অতীত ভাস্কর্যের যাদুপুরী চান্দেদরীও বেড়িয়ে নিতে পারেন। আর চান্দেদরী থেকে ৯০ কিমি উত্তরে কাঁসী। ২০০ মি উঁচু পাহাড়ে মোগলকালে পাঠান স্থাপত্যে গড়া দুর্গ তথা মামুদ খিলজির তৈরি কোশক মহল (১৪৪৫ খ্রি), নানান যুদ্ধজয়ের স্মারক বাদল মহল গোট, গম্বুজশিরে জামা মসজিদ, শাহজাদী কা রৌজা, পরমেশ্বর তাল তথা মন্দির ও ছত্রিশ, ১৪৮৫তে সুলতান গিয়াসুদ্দিন শাহর তৈরি ৩২ ধাপের বাট্রিসি ভাবদি মাণ্ডুইই মতো আর এক অতীত। জৈন তীর্থ-রূপেও চান্দেদরী খ্যাত—মন্দিরও হয়েছে নানান ৯ ও ১০ শতকে পুরাতন চান্দেদরী শহরে। পাহাড়-বন-লেকে ঘেরা, খুনী দরওয়াজা দিয়ে প্রবেশ। তবে, আজকের চান্দেদরী তার ব্রোকেড ও মসলিনের জন্য সমধিক খ্যাত। থাকার জন্য সার্কিট হাউস ও রেস্ট হাউস আছে চান্দেদরী বাসস্ট্যান্ডের কাছে; অব্ : Assistant Engineer, PWD, Chanderi.

সারওয়ে : পরদিন সকালে শিবপুরী থেকে কাঁসীর পথে ২১ কিমি গিয়ে সারওয়েও বেড়িয়ে নিতে পারেন অভ্যুৎসাহীরা। অতীতের দুর্গ ও নানান ধ্বংসাবশেষ রয়েছে সারওয়েতে। এদের মধ্যে হিন্দু সন্ন্যাসীদের মঠটি উল্লেখ্য। আর রয়েছে ৩টি মন্দির অর্থধারায়। তবে, আজ জঙ্গলকাঁপ। সারওয়ে থেকে কাঁসী গিয়ে ট্রেনে ভূপাল বা শিবপুরী থেকে বাসে ইন্দোর চলুন। গোয়ালিয়র থেকেও সরাসরি ট্রেন ও বাস মেলে ইন্দোরের। তেমনই চান্দেদরী থেকে ৩৭ কিমি দূরের ললিতপুর পৌছে ট্রেনে ঘণ্টা চারেকে ভূপালও চলা যেতে পারে।

নল্লোরার : শিবপুরী থেকে ৪১ কিমি দূরে মহাভারত খ্যাত নল-নয়ময়ী অর্থাৎ রাজা নলের রাজধানী দেখে নেওয়া যায়। ৫০০ ফু উঁচু পাহাড়ী টিলার ৮ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত দুর্গটিতেও বৈচিত্র্য আছে।

কারেরা : তেমনই শিবপুরী-কাঁসী পথে ৪৫ কিমি দূরে কারেরা বার্ড স্যাঙ্কুয়ারিটিও দেখে চলতে পারেন। বাস্টার্ড পাখির জন্য কারেরা বার্ড স্যাঙ্কুয়ারির প্রশস্তি।

ইন্দোর

বয়নশিল্প ও বাণিজ্যিক শহর ইন্দোর। নানান কল-কারখানা। ভারতের ছোটো বোম্বাই বলেও প্রসিদ্ধি আছে ইন্দোরের। ১৮৫০ ফুট উঁচু মালভূমিতে সরস্বতী ও খান নদীর পারে গড়ে উঠেছে শহর। রেল ও বাসের অবস্থান পাশাপাশি ইন্দোরে—ফ্রাই-ওভার বিচ্ছেদ টেনেছে দুই-এর মাঝে। রেল লাইন বিখ্যাতও করেছে শহরকে। পশ্চিমে পুরাতন আর পূর্বে নতুন শহর ইন্দোরে।

১৭৩৩এ মারাঠা থেকে মালহর রাও হোলকার যৌতুক পান ইন্দোর। সতী হতে যাওয়া থেকে বাঁচিয়ে বিধবা পুত্রবধূ অহল্যা বাঈয়ের হাতে ইন্দোর সপ্নে পাণিপথের যুদ্ধে যান মালহর রাও। স্বামীহারা, অপ্রকৃতিস্থ পুত্রের অকালমৃত্যুতে ১৭৬৬তে রানী হলেন অহল্যা। ইন্দোরের গোড়াপত্তন তাই অহল্যা বাঈয়ের হাতে। নামটি এসেছে দেবতা ইন্ড্রেশ্বর থেকে। মন্দির ছবির মতো সাজানো শহর। পশ্চিমে পুরনো শহর আর পূর্বে গড়ে উঠেছে নতুন করে শহর ইন্দোরে। লাখ দশকে লোকের বাস। বাঙালিয়ানাও আছে শহরে। বেঙ্গলি ক্লাবও বসেছে। তবুও যেন মাণ্ডুর সংযোগকারী জংসন রূপে খ্যাতি এর অধিক ট্যুরিস্ট মানচিত্রে।

রাজবাড়ার অদূরে জওহর রোডে শহরের মূল আকর্ষণ কাচমন্দির বা শেঠ হুকুমচাঁদ মন্দির। দিগম্বর জৈনের মূর্তি হয়েছে মন্দিরে। পুতি, মণিমুক্তা, রত্নবেরণের পাথর ও কাচ দিয়ে তৈরি হয়েছে মন্দিরের দেওয়ান-মন্ডা-সিলিং। মন্দিরের অলঙ্করণ নয়নাভিরাম, তবে বহির্ভাগ অতি সাধারণ। নরকযন্ত্রণাও উপলব্ধি করে নেওয়া যায় এর দেওয়ালচিত্রে। আর দেবতা—রূপোর বেদীতে পদ্মাসনে তিন তীর্থঙ্কর—চন্দ্রপ্রভু, শান্তিনাথ ও আদিনাথ। দ্বিতলেও ব্রোঞ্জে তিন তীর্থঙ্কর। তবে আয়নায প্রতিটাই ২১ দফায় প্রতিফলিত—মনে হবে মূর্তি রয়েছে শত সহস্র। ১৩—১৭-০০টায় অজৈনদের জন্য খোলা থাকে মন্দির। ১৯৮৮ সংবৎ-এ হুকুমচাঁদ শেঠ তৈরি করান অভিনব এই কাচ মন্দির। কাচ মন্দির হয়েছে আরও এক নতুন করে ইন্দোরে।

শহরের আর এক আকর্ষণ কৈলাস পার্কেয় গীতা ভবন। ছবি ও মূর্তিতে পুরাণ কাহিনী তথা সর্বধর্মের সমন্বয় ঘটেছে। প্রকাশ পেয়েছে ধর্মের সারকথা—ঈশ্বর এক। এছাড়া কবি গবেষণা কেন্দ্র, শহরের উত্তরে MGRd-এ ব্রিটিশের বিদ্যো অর্থাৎ আজকের নেহরু পার্ক, কমলা নেহরু পার্কে চিড়িয়াখানার দৈন সংগ্রহ, পার্শ্বেই অব্যক্ত আর অবহেলায় লালিত গুপ্ত থেকে পারমার রাজাদের কালের প্রত্নতত্ত্ব তথা মুদ্রা, অস্ত্র ও বর্মের সংগ্রহ দেখে নেওয়া যায় সেউদাল মিউজিয়ামে (সোম ছাড়া ১০—১৭-০০টায়), খান নদীর পারে ছত্রীবাগে মারাঠাভাস্কর্য ও স্থাপত্যে হোলকার রাজাদের সমাধি অর্থাৎ ছত্রিশ, দশেরা ময়দানে মাদুরাই-এর মীনাকী মন্দিরের আদলে তৈরি অন্নপূর্ণা মন্দিরে দেবী অন্নপূর্ণা ছাড়াও মন্দিরে রয়েছেন কালভৈরব, হনুমান ও শিবঠাকুর। মূল

মন্দিরের দেওয়ালও পৌরাণিক আখ্যানে সুশোভিত। কাজুরী বাজারে ৩৫০ বছরের প্রাচীন রাজবাড়া অর্থাৎ অতীতের প্রাসাদে ছবিতে হোলকার পরিবার ও জলঘড়িট দেখে নেওয়া উচিত হবে ইন্দোর পর্যটনে। ৭তলা প্রাসাদের প্রথম ৩তলা পাথরে আর পরের ৪ তলা দারুতে তৈরি। বারবার তিন বার ভস্মীভূত হয়েছে মারাঠা-মোগল-ফরাসী শৈলীতে গড়া রাজবাড়া। তবে, ১৯৮৪র আগুনে কেবল ফাসাদ অংশ রক্ষা পেয়ে স্মারক রূপে দাঁড়িয়ে আজ। রাজবাড়া চক্কি রয়েছে ১৮৩২এ কুম্ভাবাঈ হোলকারের তৈরি গোপালমন্দির আর আর্ট গ্যালারি, বড় গণপতি মন্দিরে ৭ মোক্ষস্থলের (অযোধ্যা, মথুরা, মায়াজী, কাঞ্চি, অবন্তিকা, দ্বারকা) মাটি, ৭ তীর্থের জল, কর্দম এসেছে হাতি-ঘোড়া-গরুর আস্তাবল থেকে; ৫ ধর্মী রত্নচূর্ণ (হীরা-পদ্মা-মোতি-মণিক-পোখরাজ); শুভআর মেথির মিশ্রণে ১৮৭৫এ তৈরি বিশ্বের উচ্চতম (৮ মি) দেবতা গণেশ; ফ্রেমটি হয়েছে পঞ্চধাতুর (সোনা-রূপো-তামা-লোহা-দস্তা) ইন্দো-গোথিক শৈলীতে ১৯০৪এ তৈরি কিং এডওয়ার্ড হল ১৯৪৮এ মহাত্মা গান্ধী হল—এ নামান্তরিত হলেও টাইন হল নামে সমধিক খ্যাত। বছর জুড়ে প্রদর্শনী, আর আছে লাইব্রেরি, চিলড্রেন পার্ক, মন্দির—বিপরীতে চতুর্মুখী ব্রুকটাওয়ার। তাই ঘণ্টা ঘরও বলে থাকে লোকে একে। শহরের দক্ষিণ-পশ্চিমে সোম ছাড়া ১০—১৮-০০টায় আর এক যাদুপুরী ১৮৮৬তে টুকোজি রাও ১-এর হাতে শুরু হয়ে ১৯২১এ টুকোজি রাও ৩-এর হাতে রূপায়িত ২৮ হেক্টর ব্যাপ্ত লালবাগ প্যালেস। সিংহদ্বারটি তার বাকিংহাম প্রাসাদের রেমিক, আর দক্ষিণে ইটালীয় ভিলাধর্মী কারুকার্যময় মানিকবাগ প্যালেসও বেড়িয়ে নিতে পারেন চুক্তিতে ১২৫ টাকায় অটো নিয়ে ঘণ্টা পাঁচকে। রিকশা নেই ইন্দোরে।

আর উচিতও হবে ইন্দোর ভ্রমণের স্মারকরূপে ইন্দোরের কাঠের খেলনা সঙ্গী করা।

কনডাক্টেড ট্যুর : রেল স্টেশন থেকে নানান প্রাইভেট সংস্থা মাণ্ডু, উজ্জয়িন, ওঝারেশ্বর ও মহেশ্বর বেড়িয়ে আনে। আবার নানান প্রাইভেট সংস্থা ৫ ঘাণ্ডী নিয়ে জনপ্রতি ১৫০ টাকায় মাণ্ডু বেড়িয়ে আনে ইন্দোর থেকে। আর M P Tourism, R N Tagore Rd, behind Rabindra Natyagriha, ☎ (0731) 430653 থেকেও কনডাক্টেড ট্যুরে দিনে দিনে মাণ্ডু দর্শনের ব্যবস্থা মেলে সোম ছাড়া প্রতিদিন। উজ্জয়িন যাচ্ছে সোম-মঙ্গল-বুধ; ওঝারেশ্বর যাচ্ছে সোম-বৃহস্পতি-শুক্র; মহেশ্বর যাচ্ছে শনি ও রবিবার।



Indore-452001, STD 0731-এ—রেল ও সারবাতে বাসস্ট্যান্ডকে ঘিরে মেলা বসেছে সাধারণ হোটেলের। আর উঁচু মানের হোটেল রেল ও বাস থেকে ১ কিমির মধ্যে মহাত্মা গান্ধী রোডে। পাশ্চাত্য প্রধার—Central H, 70-71 M G Rd-7, ☎ 538547, R1B1, SAB ২২৫ DAB ৩০৫ A/c S ৪০০ D ৩০০; H Siddhartha, 564 M G Rd, S ১৫০-২২৫ D ২৫০-৪২৫; Amaltas International, A B Rd, Indore-8, ☎ 432631, S ৩০০ ৩৫০ D ৪২৫ ৫০০ A/c S ৫০০ D ৩৫০; H Suhag, Agra-

Mumbai Rd, A/c S ৫০০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; *H Mashal*, Pigdumber (near Rau), A-B Rd, A/c S ১২৯৫ D ১৫৯৫ সুইট ১৮৯৫ কটেন ২০৯৫-২৯৯৫; *H Kanchan*, Kanchan Bagh-1, ৩ 538501, A6R1½, SAB ৩০০ DAB ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০; *H Surya*, 5/5 Nath Mandir Rd-1, ৩ 537701, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c S ৪০০-৫২৫ D ৬০০-৮৫০ সুইট ১২৫০; **H Shrinmaya*, 12/1 RNT Marg-1, ৩ 534151, A8R1B½, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৫০০-৬২৫ D ৬৫০-৮০০; *H Crown Palace*, 2A, Kanchan Bagh, ৩ 434891, A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইট ১০০০; **Lantern H*, 28 Yashwant Niwas Rd-1, ৩ 535327, S ৪০০ D ৬০০ A-c S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬০০ D ৮০০; *H Samrat*, 18/5 M G Rd-1, R1½B1½, SAB ২৫০-৩২৫ DAB ৩০০-৪৫০ A/c S ৪৫০-৬০০ D ৬৫০-৮০০; *H Paras Regency*, Kamala Nehru School Rd, Kibe Compound-1, ৩ 460179, SAB ৩২৫-৪৫০ DAB ৪০০-৬৫০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০; *Indotels Manor House*, A-B Rd-8, ৩ 434862, R4B4, A/c S ৬৫০-১২৫০ D ৮৫০-১৫৫০ সুইট ১৮৫০-২৫৫০; **H Bahwas International*, 30/2 South Tukoganj, Behind High Court-1, ৩ 434934, A6R1B1.5, S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইট ১০০০; **Taj Residency*, Adjoining Meghdoot Garden-10, ৩ 557700, A/c S ৭৫-৮৫ D ৮৫-৯৫ US\$; *H Princes Palace*, 8-A1 South Tukoganj, ৩ 537940, A/c S ৫২৫ D ৬৭৫ সুইট ৮৫০; *H Sunder*, 17/2 South Tukoganj-1, ৩ 431052, A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮০০; *H Tulsi*, 11/4 Nath Mandir Rd-1, ৩ 434920, S ৩২৫ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; **H President*, 163 RNT Marg-1, ৩ 432858, A8R½, S ৫২৫ D ৬৫০ A/c S ৬২৫ D ৮০০ সুইট ১২৯৫-১৭৫০; *H Noorjahan*, H-2, Scheme 34, near Meghdoot Garden, ৩ 442472, A/c S ১২৫০ D ১৫৫০ সুইট ২০৫০।

ভারতীয় প্রথা—*Aram L*, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২৫০; *H Sheesh Mahal*, 91 S Huk Mg-2, S ৬৫-১০০ D ১২৫-১৭৫; *Chandralok H*, 10 Nasia Rd-1, S ৮০ D ১৫০; *Jahaz Mahal*, S ৮০-১২০ D ১২৫-১৭৫; *H Neel Kanai*, Ch C Toli-1; *H Chandra Niwas*, 91 Nagri Nig Rd-7, S ৬০-৮৫ D ৮০-১৫০; *H Crown*, 10/4 Chh Gwaltolli-1, S ১২৫ D ২২৫ A/c S ৩০০/৪৫০; *Ganesh Hind L*, Chh Gwaltolli, *H Ranjit*, near Patel Bridge, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২২৫ A/c S ২৫০ D ৩৫০; *H Neelam*, 33/2 Gwaltolli-1, (close to Rly & Bus), SCB ১০০ SAB ১৫০ DCB ১৭৫ DAB ২৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *H Rachana*, Gwaltolli, S ১০০-১৫০ D ১৭৫-২২৫; বিপরীতে *H Mayuri*, S ৮৫-১২৫ D ১৫০-২৭৫; লাগোয়া একই মানে একই নামে *Santa Plaza*, *H Dayal*, *H Goraw*, 16/4 S Tuko Gj-1. আর আছে *H Utsab*, *Satkar*, *Imperial*, *Vikram*, *Regency* ছাড়াও নানান।

Opp Sarwate Bus Std-1এ—*Standard H*, S ৬৫-১২০ D ১২৫-২৫০ A/c ২২৫/৩২৫; যথেষ্ট পণ্যের *H Ashoka*, 14 Nasia Rd-1, SAB ১৫০ DAB ২৫০ A-c S ২২৫ D ৩৫০; *Purohit Hindu L*, S ৮৫ D ১৫০ থেকে; *Janata H*, Dilip L,

H Apsara (Veg.), *Friends L*, *Chandra Nivas L*, 480/2 M G Rd-7, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৫০-২২৫; *H Sailendra*, opp Christian Hospital, S ১৫০ D ২২৫; *H Chandra Vihar*, opp M Y H, SCB ৮০ DCB ১৫০; *H Shalimar*, RNTagore Rd-Sarder Patel Rd Jn, SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২২৫ A-c ৩০০/৪৫০; *H Sagar International*, S ১৫০-২৭৫ D ২৫০-৩৭৫; নবতম *H Payal*, মান ও সাম ইন্টারন্যাশনাল ভূলা; হোটেল দুটির ব্যবস্থাপনাও ভাল। আর আছে *Gujarat L*, *Viram*, *Deluxe*, *Indore*. ছাড়াও নানান হোটেল; এদের কাছে S ৬৫-১২০ D ১২৫-২৫০ টাকায় মেলে।

এছাড়া আছে MPTDC-র *Tourist Bungalow*, behind Rabindra Natya Griha, ৩ 521818, S ৩০০ D ৩৫০ A/c S ৩৯০ D ৪৯০, কল বুকিং : Linkage ৩ 2465171. M P Tourism-র ট্যুরিস্ট অফিসটিও বাংলায়। আর আছে YWCA, opp GPO; *CH*, *RH*, *GH*, রেলের রিটারারিং রুম ইন্দোরে। *Gehisalal Modi*, *Gopikrishna*, *Onkarji*, *Chunnalaji*, *Hindu*, *Seth Tukaram*, *Nasia* ছাড়াও ধরমশালা আছে আরও নানান ইন্দোরে। তবে রেল স্টেশনের কাছে কল্যাণজী বিব্রাজি গৃহে বাথ সলেন্স ঘর মেলে, ব্যবস্থাপনা চলনসই।

আর খাবার হোটেল যত্নভর মেলে ইন্দোরে। তবুও বাস চত্বরের জনতা ও স্ট্যাভার্ড যথেষ্ট খ্যাত। ফাউন্টেনের কাছে *Janus Restaurant*-টির খালি প্রথায় রাজহানী ভেজ মিলের জন্য সুস্বাদু যথেষ্ট। তেমনিই MG Rd এ *Volga Restaurant*-এ ভেজ মিল ও *Indore Coffee House*-এ চায়ের সঙ্গে টায়ের যথেষ্ট প্রস্তুতি। আর উচ্চ মূল্যে *Surya* ও *Siddhartha*-র আহাৰ্য প্রশংসনীয়। তেমনিই চলতে-ফিরতে বাদ নেওয়া যেতে পারে ইন্দোরের আর এক কুটি *Namkin*-র।



হাওড়া থেকে ৩ 67 দিন ১৫-১৫য় ছেড়ে দুর্গাপুর/ধানবাদ/মোগলসরাই/এলাহাবাদ/সাতনা/ভূপাল/উজ্জয়িন হয়ে ৩৬½ ঘণ্টায় ইন্দোর যাচ্ছে 9306 শিপ্রা এক্স। ইন্দোর ছাড়ে ১ 45 দিন ১৯-২৫য় শিপ্রা। আবার এলাহাবাদ হয়ে মুম্বাইগামী রেলপথের খাণ্ডোয়া জংশনে নেমেও নতুন করে ট্রেনে ইন্দোর চলা যেতে পারে। সরাসরি ট্রেনও রঙগেজে ১৯-৩৫য় মুম্বাই (বাস্তা) ছেড়ে ১৪½ ঘণ্টায় ইন্দোরে 2961 অবন্তিকা এক্স; বাস্তা ফেরে ১৫-৪৫য় ইন্দোর ছেড়ে অবন্তিকা। হাওড়া-মুম্বাই ভায়া নাগপুর রেলপথের বিলাসপুর থেকেও কাটনি-জব্বলপুর-ভূপাল হয়ে নর্মদা এক্স যাচ্ছে ইন্দোরে। ভূপাল থেকে উজ্জয়িন হয়েও ট্রেন সংযোগ গড়েছে ইন্দোরের। ৬-০০টার ইন্দোর ছেড়ে ৭-২৫ উজ্জয়িন পৌছে ২৬৪ কিমি দূরের ভূপাল যাচ্ছে ১০-৩০এ 9303 ইন্টারসিটি এক্স; ১৭-৩০এ ভূপাল ছেড়ে ইন্দোর ফেরে ২২-১৫য় ইন্টারসিটি। ১৫-০০টার ইন্দোর ছেড়ে ২২-৪০এ ভূপাল পৌছে ইন্টারসি/জব্বলপুর হয়ে বিলাসপুর যাচ্ছে নর্মদা এক্স; ৬-১৫য় ভূপাল ছেড়ে ১০-৪৫এ উজ্জয়িন পৌছে ইন্দোর ফেরে ১৩-৩০এ নর্মদা। ৮০ কিমি দূরের উজ্জয়িন যাচ্ছে ৬-০০, ৬-১৫, ১৫-৪৫, ১৬-১৫, ১৬-৪০, ১৭-৩০এ এক্স ছাড়াও ৮-০৮, ১৩-৪২, ১৫-০০, ১৮-০০, ১৯-৩৮, ২১-০০টায় প্যাসেঞ্জার ট্রেন; মউ যাচ্ছে ৮-৪০, ১১-০৫, ১২-৪০, ১৬-৩০, ১৮-০০, ২১-০৫, ২২-১০এ ইন্দোর ছেড়ে ১ ঘণ্টায় উদয়পুর-টিতোয়ার-মউ-খাণ্ডোয়া প্যাসেঞ্জার।

১৬-১৫য় ইন্দোর ছেড়ে দিল্লী অর্থাৎ হজরত নিজামুদ্দিন যাচ্ছে ১৩২ ঘট্টায় ৪০০১ এন্ড; ইন্দোর ফেরে ২২-১৫য় ৪০০৬ হজরত নিজামুদ্দিন-ইন্দোর এন্ড। আর ১৬-০০টার ইন্দোর ছেড়ে উজ্জয়িন/ভূপাল/বিদিশা/বাকী হয়ে ১৯২ ঘট্টায় নতুন দিল্লী পৌঁছে জন্মু যাচ্ছে ৭৩৬৭ মালোয়া এন্ড; মালোয়া ফেরে ৮-৩০এ জন্মু ছেড়ে ১৮-৫৫য় নতুন দিল্লী পৌঁছে পরদিন ১২-৩৫এ ইন্দোরে। প্রতি মঙ্গলবার ২২-৩০এ ইন্দোর ছেড়ে সওয়াই মাধোপুর হয়ে জয়পুর যাচ্ছে ৭৩০৭ এন্ড; জয়পুর-সেকেন্দ্রাবাদ ৭৫৬৭ এন্ড, উদয়পুর-হরিশগড় ৭৬১৬ এন্ডও যাচ্ছে ইন্দোর হয়ে। প্রতি বুধবার অহল্যানগরী এন্ড যাচ্ছে ইন্দোর থেকে নাগপুর/চেন্নাই হয়ে কোচি। তেমনিই উচিত হবে পুরাতন শহর যাত্রীদের ৪ নম্বর, আর নতুন অর্থাৎ M G Rd মুখী যাত্রীদের ১ নম্বর গেট থেকে রেল স্টেশন ছাড়া।



আর IAC-র বিমান ১৩৫ দিন ৮-০৫এ ইন্দোর ছেড়ে ৮-৪০এ ভূপাল, ৯-৫৫য় গোয়ালিয়র পৌঁছে দিল্লী যাচ্ছে ১১-১৫য়। ২৪ ৬৭ দিন দিল্লী যাচ্ছে ৮-০৫এ ইন্দোর ছেড়ে ৮-৪০এ ভূপাল পৌঁছে ১০-২০এ। মুম্বাই যাচ্ছে ১৩৫ দিন ১৯-৫০, ২৪ ৬৭ দিন ২০-১৫য় ছেড়ে ১ ঘ ৫ মিনিটে। ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনে। আর Jet Airways প্রতিদিন ৮-২০এ ইন্দোর ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে ৯-২৫এ; ইন্দোর ফেরে মুম্বাই থেকে ৬-৪৫এ। Damania Airways-এর বিমান প্রতিদিন ইন্দোর থেকে মুম্বাই-ব্যাঙ্গালোর-কলকাতার সার্ভিস গড়েছে। Skyline NEPC-র বিমান প্রতিদিন মুম্বাই (২ ফ্লাইট), ব্যাঙ্গালোর, ঔরঙ্গাবাদ; ২৪ ৬ দিন ব্যাঙ্গালোর, ২৩ ৪৫ ৬৭ দিন চেন্নাই, ৩৫ ৭ দিন ভাবনগর, ২৪ ৬ দিন পুনে, ১২ ৪৬ দিন রাজকোট যাচ্ছে ইন্দোর থেকে। অফিস এদের : IAC, Indore Stadium, Dr Rosen Singh Bhandari Marg, Reservation ০৪৩১৫৯৫, Flight ০৪১১৭৫৮-এ। Damania Airways, ১০২ Rajani Bhavan, opp High Court, M G Rd, Indore-৪৫২০০১, ০৪৩৩৯২২. Jet Airways ০৪৩৯৪৩৭. NEPC, M G Rd, ০৪৩৩৯২২. শহর থেকে ১০ কিমি দূরে বিমানবন্দর।



বাসস্ট্যান্ডও দুই—সারবতে ও গাসোলী স্ট্যান্ড ইন্দোরে। বাস যাচ্ছে শিবপুরী হয়ে ১১ ঘট্টায় গোয়ালিয়র ৪৮৬, উজ্জয়িন ৫৫, খাণ্ডোয়া ১৩১, বুরহানপুর ২০০, বাঘ শুয়া ১৫৪, চিতোরগড় ৩২৮, আমোদাবাদ ৪০৭, ভাদোদরা ৪১৮, ঔরঙ্গাবাদ ৪০২, সীতা ২৫৪, ঘট্টায় ঘট্টায় ১৮৬ কিমি দূরের ভূপাল ছাড়াও রাজ্য ছাড়িয়ে প্রতিবেশী রাজ্যের দিঘদিগে ইন্দোর থেকে। এমনকি মুম্বাই ৬০০, নাগপুর ৫১০, কোটা/আজমের হয়ে জয়পুর ৭৩৭, আগ্রা ৬০৪ কিমিতেও বাস যাচ্ছে মহারাষ্ট্র, গুজরাট ও মধ্য প্রদেশ রাজ্য পরিবহনের ইন্দোর থেকে। খাজুরাহো ১৭-০০; পাঁচমাড়ী ২১-৪৫; সাতনা ১৪-১৫; উদয়পুর যাচ্ছে ১২ ঘট্টায়, অজন্তা যাচ্ছে সকাল ৫টা, ইন্দোরা যাচ্ছে সন্ধ্যায়, Video বাসও যাচ্ছে রাতভর জার্নিতে অজন্তায়। ঔরঙ্গাবাদের সন্ধ্যায় বাসে সিটের অমিল হলে খাণ্ডোয়া, বুরহানপুর, জলগাঁও বাস বদল করে চলা যেতে পারে অজন্তা ও ইন্দোরা দর্শনে ইন্দোর থেকে। প্রাইভেট বাস (নওলাকা বাস স্ট্যান্ড) যাচ্ছে ইন্দোর থেকে মুম্বাই, পুনে, নাগপুর, ঔরঙ্গাবাদ, গোয়ালিয়র, আগ্রা ছাড়াও পশ্চিম ভারতের নানানদিকে। আর MPIDC-র A/c বাস ৮-০০ ও ১৫-১৫য় ইন্দোর ছেড়ে ভূপাল যাচ্ছে; ভূপাল থেকে ছাড়ে ৮-

৪৫ ও ১৪-৩০এ। আর প্রাইভেট বাস যাচ্ছে মুম্বাই ৫ ঘট্টায় ইন্দোর থেকে ভূপাল। এমনকি মাথুও বেড়িয়ে ফেরা যায় সকাল ৮-০০টার বাসে গিয়ে দিনে দিনে ইন্দোর থেকে।

ইন্দোর থেকে খাণ্ডোয়ামুখী ৮ কিমি যেতে কস্তুরবাগ্রাম। গ্রামকে গড়ে তুলতে মহাশা গান্ধীর প্রতিষ্ঠিত কস্তুরবা গান্ধী ন্যাশনাল ট্রাস্ট ওয়ার্শ থেকে ১৯৫০এ স্থানান্তরিত হয়েছে এখানে। গ্রামভিত্তিক নানান ক্রিয়াকর্ম চলছে ট্রাস্টের। চলার পথে উচিত হবে দেখে নেওয়া। তেমনিই আছে শহর থেকে ৯ কিমি দূরে এয়ারপোর্ট লাগোয়া পাহাড়ী টিলায় অতীতের হোলকার রাজাদের অতিথিশালায় বর্ডার সিকিউরিটি আর্মস মিউজিয়াম। আর আছে ১৯২০এ তৈরি বিজ্ঞেন মাতার মন্দির Tekri অর্থাৎ টিলায়। সূর্যাস্তও সুন্দর দৃশ্যমান টিলা থেকে। এয়ারপোর্ট থেকে ১০ মিনিটের গাড়ি পথে গোমত-গিরি (Gomogiri)-তেও ২৪টি মন্দির হয়েছে মর্মরে—২৪ তীর্থঙ্করের। ২১ ফুট উচ্চ মূর্তিও হয়েছে শ্রবণবেলগোলার রেলিকা হয়ে বাঘবলের। থাকারও ব্যবস্থা মেলে মন্দির কমিটির ধরমশালাও গেস্ট হাউসে গোমতগিরিতে।

তেমনই ইন্দোর থেকে ১৭০ কিমি দূরে নর্মদা নদীর উপত্যকায় সাতপুরা পাহাড়ের সর্বোচ্চ শিখর ছলাগিরিতে বাওন গজাজী জৈন তীর্থও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাসে। বিশ্বের উচ্চতম ৫২ হাতের (২৫.৬মি=৮৪ ফুট) মূর্তি হয়েছে ঋষভদেবের খারগাঁও জেলার তহশীল সদর বারওয়ানীর ১০ কিমি দূরে। পাথর কেটে মূর্তি হলেও মনোলিখিক নয় এটি। চোখ তার ৩ ফুট, নাক ৪ ফুট, মাথার ব্যাস ২৬ ফুট। ১০০০ বছর আগে স্থানীয় ভাস্কর অর্ককীর্তির সৃষ্টি বাওন গজাজী।

তেমনই খারগাঁও থেকে ১৮ কিমি দূরে ওয়ান (Oon)-ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। সহস্র বছর আগে মালোয়ার পারমার রাজাদের পৃষ্ঠপোষকতায় উজ্জনখানেক হিন্দু ও জৈন মন্দির গড়ে ওঠে ওয়ানে। খাজুরাহোর সাথে সামঞ্জস্য মেলে মন্দিরভাস্কর্যে।

ওঙ্কারেশ্বর মন্দির

উৎসাহীরা দিনে দিনে ইন্দোর থেকে প্যাকেজ ট্যারে বা রেল স্টেশনের কাছে বাস স্ট্যান্ড থেকে ঘট্টায় ঘট্টায় সার্ভিস বাসে ৭৭ কিমি বা ১-৩০, ৪-৩০, ১১-৩০, ১৫-২০এর প্যাসেঞ্জার ট্রেনে ঘট্টা তিনেকে ইন্দোর-মউ-খাণ্ডোয়া রেলের ওঙ্কারেশ্বর রোড পৌঁছে ৯ কিমি দূরে দ্বাপশ জ্যোতির্লিংগের অন্যতম দুই জ্যোতির্লিংগ—ওঙ্কারেশ্বর ও মণিলেশ্বর মন্দির দুটি দেখে নিতে পারেন। মাথু দেখে মউ ফিরে প্যাসেঞ্জার ট্রেনে ২২ ঘট্টায় চলা যেতে পারে ওঙ্কারেশ্বর রোড। উজ্জয়িন থেকেও ইন্দোর হয়ে রেল আসছে মউ-এ। আবার হাতড়া থেকে মুম্বাই ভায়া এলাহাবাদ রেলের খাণ্ডোয়া জং পৌঁছে রেলো ৬০ কিমি দূরের ওঙ্কারেশ্বর রোড গিয়ে বাসে চলা যেতে পারে ৯ কিমি দূরে নর্মদাতীরে

মন্দিরতীর্থ ওঙ্কারেশ্বর। বাস আসছে ১৪০ কিমি দূরের উজ্জয়িন ছাড়াও ইন্দোর, খার, মট, মাভু, খাণ্ডোয়া থেকেও ওঙ্কারেশ্বর তথা মাক্কাতায়। সরাসরি বাসের অমিলে ১২ কিমি দূরের মরটকা মোড়ে বদল করেও চলা যেতে পারে। রাত্রিকালীন সার্ভিসে বাস থাকছে রাজস্থানের কোটা, চিতোর, জয়পুরও ওঙ্কারেশ্বর থেকে। বাসস্ট্যান্ড নর্মদার দক্ষিণ তীরে, মূল ভূখণ্ডে অতীতের ব্রহ্মাপুরী আর ওঙ্কারেশ্বর মন্দির উত্তর তীরের দ্বীপভূমে তথা শিবপুরীতে।

চলার পথে ধনীবালা দাদাজী দরবার, শিবাজীর আরাধ্যা ভবানী মন্দির দেখে চলা যায় খাণ্ডোয়ায়। এমনকি মুম্বাই চলচ্চিত্রের অশোক-কিশোর দুই বাঙালি শিল্পীর জন্মভূমিও এই খাণ্ডোয়া। থাকারও নানান ব্যবস্থা— *Grond H. ৩ 2020, S ১২৫-২৫০ D ২২৫-৩৫০ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; Motimahal, Darshan, Tripti L* আছে খাণ্ডোয়ায়।

নর্মদা ও কাবেরী নদীর সঙ্গমে ১২×১ কিমি ব্যাপ্ত হিন্দুধর্মের পবিত্রতম ও—স্নাপী দ্বীপে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে এই মন্দিররাজি। সেতুতে পারাপার, দু'পাশে মন্দিরময় বিদ্যাপর্বত মাথা তুলে দাঁড়িয়ে—তারই মাঝ দিয়ে বয়ে চলেছে কুলুকুলু তানে পূব থেকে পশ্চিমে নর্মদা। নর্মদা সেতু পেরুতেই বিজি গলিপথে সামান্য যেতে ওঙ্কার পর্বতের ঢালে মন্দির হয়েছে দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের অন্যতম স্বয়ম্ভু দেবতা শিব তথা ওঙ্কারেশ্বরের। সফট স্টোনে কারুকার্যময় মন্দির গড়েন পিতৃ গর্তে জাত সূর্য বংশীয় রাজা মাক্কাতা। তাই শ্রীওঙ্কার মাক্কাতাও বলে থাকে লোকে ওঙ্কারেশ্বরকে। তিন শতাধিক সিঁড়ি পথে গণেশ মন্দির—সেবতা পঞ্চমুখী। জনশ্রুতি, এখানেই সিদ্ধিদাতার দর্শন পান মাক্কাতা। আরও উঠতে অহল্যা বাঈয়ের তৈরি খেত পাথরের নন্দীর মন্দির রেখে ওঙ্কারেশ্বর মন্দিরের প্রবেশদ্বার। ১০১টি স্তম্ভের উপর ৫ তলা মন্দির। প্রথম তলে রাজা মাক্কাতার পূজিত ওঙ্কারেশ্বর জ্যোতির্লিঙ্গ, দ্বিতলে মহাকালেশ্বর, ত্রিতলে সিদ্ধনাথ শিব, চতুর্থ তলে ছোট্ট প্রকাণ্ডে শুপেশ্বর আর পঞ্চম তলে সোনায় মোড়া চুড়োর নিচে গোলাকার এক ছোট্ট প্রকাণ্ডে সুন্দর মাথানো এক ত্রিশূল অর্থাৎ ধ্বজাধারী বিজেশ্বর। চারপাশের প্রকৃতিও সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে।

ওঙ্কারনাথের বাঁয়ে ঢালু পথে শঙ্করাচার্য ওহা তথা আচার্য শঙ্করের সাধনপীঠ ও তাঁর আচার্য গোবিন্দপাদের সমাধি রয়েছে। কিংবদন্তী, এই ওহাতেই থানো বসেন আচার্য শঙ্কর—দর্শনও মেলে গোবিন্দপাদের। মূর্তি হয়েছে আচার্যর। আর আছেন খেত মর্মরে দেবী মহাকালী ওহামন্দিরে। ওহার পাশে কোটিতীর্থ ঘাট—সিঁড়ি নেমেছে ধাপে ধাপে নর্মদায়। তবে, ১১ শতকে গজনির মামুদ ধ্বংস করে নানন কিছু। আর মোগলকালে অরণ্যে হারিয়ে যেতে পূনের পেশোয়া দ্বিতীয় বাজীরাও নতুন করে মন্দির গড়েন নর্মদার দক্ষিণ পাড়ে ঈষৎ সবুজ রঙের বীরখালা পাখড়ে। সেবতাও অধিষ্ঠিত হন অমরেশ্বর বা মণিলেশ্বর। আরও

পরে ওঙ্কারেশ্বর খুঁজে পেতে দুই দেবতাই পূজিত হচ্ছেন—দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের অন্যতমও এই দুই দেবতা।

পূণ্যার্থীদের ১১ কিমি পরিক্রমার প্রথাও আছে ওঙ্কারেশ্বরে। পরিক্রমা পথে হিন্দু দেবদেবীর নানান মন্দির। তিন শতাধিক সিঁড়ি উঠে গৌরী-সোমনাথ মন্দির। সেবতা কালো রঙের লিঙ্গমূর্তি, নন্দী হয়েছে সবুজ পাথরে। পথ চলে ভাঙাচোরা ভাস্কর্যের মাঝ দিয়ে। তেমনই আছে রামভক্ত হনুমানের উপদ্রব সারা পাহাড়ভূমে। নদীর জলে কুমির আছে, স্নান নৈব নৈব চ। কিছুকাল আগেও পাহাড় থেকে নদীতে ঝাঁপিয়ে মৃত্যুবরণ পূণ্য বলে গণ্য হত। তবে, ১৮২৪এ আইন করে বন্ধ হয়েছে সে-প্রথা। এছাড়া ওঙ্কারজীর অদূরে নর্মদার উত্তর তীরে সিদ্ধকূট পাহাড়ে ধ্বংসস্তুপের মাঝে আছে বিষ্ণু ও নানান জৈন মন্দির। চন্দ্রগুপ্ত মৌর্যের কালে জৈন তীর্থস্বেপ এর প্রসিদ্ধিও ছিল। নানান সাধক সিদ্ধিলাভও করেন—নাম তাই সিদ্ধকূট। প্রকৃতিও সুন্দর। নৌকাবিহারে সাঙ্গ করুন সিদ্ধকূট দর্শন। এছাড়াও বিষ্ণু মন্দির আছে আরও এক—নর্মদা যেখানে দ্বি-ধারায় প্রবাহিত। বরাহ ছাড়াও বিরাতীকার ২৪টি মূর্তি হয়েছে সবুজ পাথরে বিষ্ণুর। আর আছে ১২ হাতের দেবী চামুণ্ডেশ্বরী, ৬ কিমি দূরে ১০ শতকের সপ্তমাদুকার মন্দিররাজি, ৯ কিমি দূরে সুন্দর প্রকৃতির জন্য কাজলরানী ওহা। শিবরাত্রি ও কার্তিক পূর্ণিমায় জাঁকালো মেলা বসে। থাকার জন্য মন্দির কমিটির *Holkar GH, Ahalyabai Charity Trust, FRH* ও জাঠ, রাজস্থানী ছাড়াও নানান ধর্মশালা, প্রাইভেট হোটেল আছে।

মহেশ্বর

ওঙ্কারেশ্বর বেড়িয়ে বারওয়া হয়ে ৬১ কিমি দূরের মহেশ্বরও চলা যেতে পারে বাসে বাসে। বাস আসছে নিকটতম রেল স্টেশন রতনাম-খাণ্ডোয়া মিটারগেজ রেলপথের বারওয়া ৩৯, ইন্দোর ৯১, খাণ্ডোয়া ১১০ কিমি থেকেও। রামায়ণ-মহাভারতের যুগের মহিষাতীহী আছ হয়েছে মহেশ্বর। প্রতিষ্ঠাতার নামে নাম। অতীতে শিক্ষা-দীক্ষা-রাজনীতির কেন্দ্রবিন্দু ছিল মহেশ্বর। ইন্দোর রাজ্যের রাজধানীও ছিল ইন্দোর গড়ার আগে মহেশ্বরে।

৭ শতকের অতীত গৌরবকে ১৮ শতকে ইন্দোরের হোলকার কুইন অহল্যাবাঈ নতুন করে পুনরুজ্জীবিত করেন নর্মদার পারে অশুনতি মন্দির গড়ে। অহল্যাঘাট, ফানাসে ঘাট, পেশোয়াঘাট, বাটের পর ঘাট নর্মদায়। দিনভর নানান হিন্দু উপাচার পালিত হচ্ছে ঘাট থেকে ঘাটে। তেমনই বাতাসকে ভারি করে তোলে মর্মরের সতী স্মারকগুলি—যাঁরা স্বামীদের চিতার জীবন্ত সমুহতা হন। মন্দিরগুলিও যেন নর্মদার জলে কুলুভ—কালেশ্বর, রাজারাজেশ্বর, বিঠলেশ্বর, ভাস্কর্যবর্তিত অহিলেশ্বর উদ্দেশ্য। তেমনই বাস স্ট্যান্ড থেকে ৩ কিমি দূরের দুর্গে আছে অহল্যাবাঈয়ের



প্রাসাদ তথা রাজওয়াড়া। এরই এক অংশে রাজগন্ধী বা জাঁকজমকহীন দরবারে রানী অহল্যাবাদিয়ের তৈলচিহ্ন। রাজওয়াড়ার দক্ষিণে ঠাকুরঘর অর্থাৎ দেবপূজায়—সোনার দোলনায় বালমুকুন্দ আসীন। হোলকার পরিবারের স্মারক মিউজিয়াম, পারিবারিক আসবাবপত্র, দশেরা তীর্থমণ্ডপ, সতী বুরুজ অনন্য দ্রষ্টব্য মহেশ্বরে। অহল্যার (১৭২৫-৯৫) ছবিশিটও দর্শনীয়। দশেরা বরণীয় উৎসব। আজও দশেরায় পালকিতে দেবী বের হন শহর পরিক্রমায় মহেশ্বরবাসীর আনুগত্য পেতে। শহরের উপকণ্ঠে সহস্র ধারায় বিভক্তও হয়েছে নর্মদা। আর স্মারকরূপে সঙ্গী করুন মনোলোভা মহেশ্বরের মহেশ্বরী শাড়ি।



Sanjoy L. Vijoy L. Ahilya Trust GH, Government RH, আর জৈন ছাড়াও নানান ধর্মশালা আছে মহেশ্বরে।

উৎসাহীরা মহেশ্বর থেকে ৫ কিমি দূরে নর্মদা তীরে মান্দলেশ্বরও বেড়িয়ে নিতে পারেন। প্রাসাদও আছে হোলকার রাজা টকোজি রাও দ্বিতীয়র। আর আছে মুসলিম কালের দুর্গ মান্দলেশ্বরে। ক্যান্টনমেন্ট নগরীও হয় ব্রিটিশের ১৮১৯-৬৪তে। আর আজ নিম্নর এজেন্সীর মূল দপ্তর বসেছে। প্রশস্ত ঘাটও হয়েছে ১২৩ ধাপের সিঁড়ি নেমে নর্মদায়। তবুও যেন বাণিজ্যিক নগরী রূপে সমধিক খ্যাতি Mandleshwar আজ।

বুরহানপুর

ইন্দোর ২০০, খাভোয়া ৬৯, ভূপাল ৩৩৭ আর ভূসুয়াল ৫৪, জলগাঁও থেকে ৯৯ কিমি দূরে ইটারসী/খাভোয়া-ভূসুয়াল রেলপথে বুরহানপুর। খাভোয়া ও ভূসুয়াল দুই-ই থেকে এক ঘণ্টার পথ। দিন-রাত্রি জুড়ে নানান ট্রেন। ইন্দোর থেকে খাভোয়া হয়ে রেল যাচ্ছে। বাসও সংযোগ গড়েছে ইন্দোর তথা রাজা ও প্রতিবেশী রাজ্যের নানান শহরের সঙ্গে বুরহানপুরের। কলকাতা যাত্রীদের ভূসুয়াল থেকে ৯-১৫র কাটনী প্যাসেঞ্জারে ১/২ ঘণ্টায় বা নানান এক্স ট্রেনে চলা সুবিধার। ভারত সম্রাজ্ঞী মমতাজের শেখ স্মৃতি বিজড়িত বুরহানপুর। ১৬৩১-এর ১৭ই জুন মৃত্যু হতে সমাধিস্থও হন সম্রাজ্ঞী এই বুরহানপুরে। তবে পরবর্তীকালে আগ্রায় স্থানান্তরিত হয় মরদেহ। তৈরি হয় তাজ মমতাজের সমাধিসৌধ রূপে। মির আলিগ শাহ ফারুকীর তৈরি দুর্গ ও প্রাসাদ আজকের বুরহানপুরের মূল আকর্ষণ। ইরানি স্থাপত্যে গড়া কাচ ও রঙবেরঙের টালির স্নানাগারটি খুবই সুন্দর, কারুকার্য বয়নাভিয়ার। ওজারেশ্বর বেড়িয়ে খাভোয়া হয়ে বা ইন্দোর থেকেই আবার জলগাঁও-এর পথেও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা।



H Pushpak, near Bus Stand; Sheel L. Nataraj Vishram Griha, Gandhi Chowk; H Anand, Sadar Bazar; ছাড়াও PWD-র RH আছে বুরহানপুরে।

অত্মসাহীরা ইতিহাস ও প্রত্নতত্ত্বের বাদপুরী আসিরগড় পাহাড় চূড়ায় উবা ও আহিরের তৈরি দুর্গটিও দেখে নিতে পারেন বুরহানপুর থেকে ২০ কিমি বাসে গিয়ে। ১০ শতকের মন্দিরও আছে দেবতা শিবের আসিরগড়ে।

মাণ্ডু

ইন্দোর থেকে প্রতি রবিবার Vijayant Travels ছাড়াও নানান সংস্থা আয়োজিত কনডাক্টেড ট্যুরে অংশ নিয়ে মাণ্ডু ও বাঘ শুভা বেড়িয়ে নেওয়া যায়। রেল স্টেশন থেকে সকালে গিয়ে সন্ধ্যায় ফেরে বাস। আর MPTDC O (0731) 521818 মল-বৃষ্-ওজ-শনি-রবিবার ইন্দোর থেকে সকাল ৯-০০টার গিয়ে ১৪৫ টাকার (আহার ও গাইড সহ) মাণ্ডু বেড়িয়ে সীকে ফেরে। এমনকি বর্ষায় মনসুন-ম্যাজিক দেখতে উইক এন্ড ট্যুরে মাণ্ডু যাচ্ছে ভূপাল ও ইন্দোর থেকে। আবার সকাল ৮-০০টার সার্ভিস বাসে ইন্দোর (পাগোলী স্ট্যান্ড) থেকে গিয়ে মাণ্ডু বেড়িয়ে ১৭-০০টার বাসে ফেরাও যেতে পারে ইন্দোরে। ৩ ভাগে ভাগ হয়েছে মাণ্ডুর দর্শন। বাজারের ডাইনে Royal Enclave, সোজা গিয়ে সর্ব দক্ষিণে ৫ কিমি দূরে Rewa Kund, দুই-এর মাঝে বসতিতে থিরে Village Group. মাণ্ডু দেখতে অটো মেলে শ'মড়ে টাকার, আর গাইড চার্জ ৬০। ফটোগ্রাফের দেখেও নেওয়া যেতে পারে মাণ্ডু। আবার যাতায়াতের চুক্তিতে ট্যাক্সি নিয়ে ইন্দোর থেকেও সাঙ্গ করা যায় মাণ্ডু দর্শন। তবে, ১ রাত মাণ্ডু অবস্থানে মাণ্ডুই বাড়ে। বেড়াবার মরসুম গ্রীষ্ম এড়িয়ে সারা বছর হলও অক্টোবর থেকে মার্চ মনোরম। তবে বর্ষায় মাণ্ডুরী বাড়ি মাণ্ডুর। সারা পাহাড়-খণ্ডে তখন সবুজ রঙ ধরে। যাত্রীও আসেন দূর-দূরান্ত থেকে ম্যাজিক-বৃষ্টি দেখতে মাণ্ডুতে। নীচে সাধারণ উলেনই যথেষ্ট মাণ্ডু ভ্রমণে।

মুঘাই-আগ্রা জাতীয় সড়কে ওজারি থেকে ১৯ আর ইন্দোর থেকে ৯৫ কিমি দূরে মাণ্ডু। সুন্দর সড়কপথে নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে। ইন্দোর থেকে NH 3-এ ২৩ কিমি যেতে ক্যান্টনমেন্ট নগরী মডি হয়ে বাস যাচ্ছে। বাস যাচ্ছে বিকল্প পথে ধার হয়েও ইন্দোর থেকে মাণ্ডু। বাসের আধিক্যও (ঘণ্টার ঘণ্টায়) মেলে ধার-এ বাস বদল করে মাণ্ডু যাতায়াতে। আর প্রাইভেট বাস যাচ্ছে অপুরে বৈকল্য মন্দিরের কাছে টোরাহা অর্থাৎ টোমাখা থেকে। আবার ৭-৮শ' টাকার গাড়িতেও সাঙ্গ করা যায় ইন্দোর থেকে মাণ্ডু দর্শন। রাজধানী শহর ভূপাল থেকেও ৭ ঘণ্টার বাস আসছে ২৮৫ কিমি দূরের মাণ্ডুতে। আর মাণ্ডু থেকে ৫-৬০০টার ভূপাল, ৭-১৫, ১১-৩০ ও ১৭-০০টার ইন্দোর, ১৫-০০টার উজ্জয়িন (১৪৬ কিমি) ছাড়াও নিয়মিত বাস যাচ্ছে ধারে। নিকটতম রেল স্টেশন মডি ৬৬, ইন্দোর ৯৫, রান্লাম ১০৫ কিমি। বাসও সংযোগ গড়েছে রেল সংযোগকারী দ্বারীরা সাথে। এমনকি ওজারার আমোদবাস ও ভায়োদবার সঙ্গেও বাস সংযোগ রয়েছে মাণ্ডুর ৩৫ কিমি দূরে আমোদবাস-ইন্দোর সড়কের ধার হয়ে। নিকটতম বিমানবন্দর ইন্দোরে।

বিদ্যা পর্বতের উপত্যকায় ২০০০ ফুট উঁচুতে ৪৫ কিমি দীর্ঘ দেওয়ালে গড়া যুগে ২০ বর্গ কিমি জুড়ে দুর্গনগরী মাণ্ডু। পাথরের বুক প্রেমের কবিতা মাণ্ডু। জাহাঙ্গীরের মতে Shadiabad অর্থাৎ সিঁচি অব জয় বা আনন্দনগরী

ছিল সুন্দরী মাণ্ডু। তবে আজকের পর্যটকদের কাছে মাণ্ডু এক ভূতুড়ে শহর। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা, বয়ে চলেছে পাহাড়ী নদী। বর্ষায় রূপসী মাণ্ডুর রূপ বাড়ে। জলচর পাখিরা সাথী খোঁজে লেকের পাড়ে। রাতের বেলায় বাঘের দর্শন না-মিললেও গর্জন শোনা অসম্ভব নয় শহর থেকে। খুবই সুন্দর মাণ্ডুর অতীত রোমন্থন। মধ্য প্রদেশ ব্রহ্মপাণী-দের একান্তই উচিত হবে মাণ্ডু বেড়িয়ে নেওয়া।

১০ শতকে হিন্দুরাজা ভূজের (১০১০-১০৪২) হাতে রিট্টট রাপে মাণ্ডুর পত্তন। ১১ শতকে পারমার রাজারা মালোয়াকে স্বতন্ত্র রাজ্য রাপে গড়ে তোলেন। রূপসী মাণ্ডু হয় তার রাজধানী। নাম ছিল তার মাণ্ডবগড়। তবে দীর্ঘ অতীতে ৫৯০ খ্রিস্টাব্দে আনন্দ দেও রাজপুত্রের গড়া মাণ্ডুপা ছিল সেদিনের মাণ্ডবগড়ে। ১৩০৪এ মালোয়া যায় ঘোরা ও খিলজী রাজাদের দখলে। আর দিল্লী যখন মোগলরা জয় করে ১৪০১এ তখনই মালোয়ার গভর্নর আফগান নায়ক দিলওয়ারা খান মাণ্ডুকে স্বতন্ত্র রাজ্য রাপে ঘোষণা করেন। মাণ্ডুর প্রগতিরও শুরু এই দিলওয়ারার কালে। গড়েও ওঠে বাড়িঘর আফগান স্থাপত্যে।

দিলওয়ারার পুত্র হোসাও শাহ ১৪০৫এ ক্ষমতায় বসে আবার রাজধানী ফিরিয়ে আনেন ধার থেকে মাণ্ডুতে। নিজের নামে অলঙ্কার জুড়ে হোসাও শাহ ঘোরা হলেন সম্রাট। ১৪০৫-১৪৩২এর শাসনকালে তৈরি দুর্গ নগরীর প্রবেশদ্বার ১২ হলো মুখ্য দিল্লী দরওয়াজা, জামি মসজিদ, নিজ-সমাধি, হোসাও শাহ-র শিখ প্রতিভার অনবদ্য সাক্ষর। এক বছরের শাসক হোসাও-পুত্র মুহম্মদকে বিবপানে হত্যা করে ক্ষমতায় এলেন মামুদ শাহ। ৩৩ বছরের শাসনকালে নানান সঙ্কটে লিপ্ত থাকেন মামুদ। আর ১৪৬৯এ মামুদের পুত্র গিয়াসুদ্দিন ৪৭ বছর বয়সে ক্ষমতায় বসে ভোগ-বিলাসেই কাটিয়ে দেন ৩১টি বছর। অবশেষে ১৫০০তে পুত্র নাসিরুদ্দিনের চক্রান্তে বিবক্রিয়ান্ন প্রাণ দেন গিয়াসুদ্দিন। জনশ্রুতি, পিতৃহত্যার দায়ে মারাও যান ১৫১০এ অপঘাতে নাসিরুদ্দিন। নাসিরুদ্দিনের পর সিংহাসনে বসেন পুত্র মামুদ। অভ্যন্তরীণ কলহের সুযোগে ১৫২৬এ গুজরাটের বাহাদুর শাহ জয় করেন নেন মাণ্ডু। আর ১৫৩৪এ মোগল সম্রাট হুমায়ুন বাহাদুর শাহকে হারিয়ে মাণ্ডু জয় করলেও দখল যায় শাহ রাজদের এক সামরিক কর্মীর হাতে।

অবশেষে নানান ভাগ্য বিড়ম্বনার মাঝ দিয়ে ১৫৫৪য় ক্ষমতায় বসেন সুজার পুত্র সঙ্গীতজ্ঞ মালিক বায়াজিদ। সিংহাসনে বসে নামাঙ্কর ঘটে বায়াজিদ হন বাজ বাহাদুর। রাজকার্য থেকেও সঙ্গীত ছিল তার প্রিয়। তেমনিই, সঙ্গীতজ্ঞা সুন্দরী হিন্দুকন্যা *লেডি অব লোটাস* রূপমতীর (মেঘ-পালিকা) প্রেমে বিভোর ছিলেন বাজ বাহাদুর। রূপমতীর রাপে মুক্ত আকরও মাণ্ডু জয় করেন ১৫৬১তে। মোগল বাহিনীর সাথে বৃদ্ধ এড়িয়ে বাজ বাহাদুর পালিয়ে যেতে ধ্বংসও পান নানান সৌধ মোগলী-যুদ্ধে। পরবর্তীকালে

মাণ্ডুর প্রকৃতি ও রাপে মুক্ত জাহাজীর প্রলেপ লাগান ক্ষতে। আবার ক্ষমতা বদল—মাণ্ডু যায় মোগল থেকে মারাঠা দখলে। রাজ্যপাট স্থানান্তরিত হয় মাণ্ডু থেকে ধারে। মাণ্ডু হয়ে পড়ে ভূতুড়ে শহর। তবে, চমকপ্রদ ইতিহাসের সঙ্গে সেযুগের কীর্তিকলাপে মাণ্ডু আজও গৌরবাবিহিত।

সেস্ত্রাল গ্রুপ : ৩টি (আলমগীর, দিল্লী ও ভাঙ্গী) দরওয়াজা গলিয়ে বাস পৌছায় পর্যটকপ্রিয় মাণ্ডুর বাজার অর্থাৎ Village Groupএ। বাস থেকে নামতেই পেছনে মামুদ শাহর তৈরি মার্বেল পাথরের বিধ্বস্ত আসরফি মহল। পারমার রাজাদের কালের সংস্কৃত স্কুল ১৪৪৫এ মামুদ রূপান্তরিত মাদ্রাসায় টাওয়ার বসিয়ে রূপ নেয় মেবারের রাণা কুন্তকে হারিয়ে চিতোরের অনুকরণে ১৫২ ফুট উচু ৭ তলা বিজয়স্তম্ভের। তবে আজ বিধ্বস্ত হয়ে প্রথম তলাটি দাঁড়িয়ে। আর ১৪৬৯-এ রূপান্তর ঘটে মামুদ শাহর সমাধি রাপে আসরফি মহল। *আসরফি* অর্থ স্বর্ণমুদ্রা। নূরজাহানের মাণ্ডু সফর-স্মৃতিও জড়িয়ে আছে জাহাজীরের এই নাম-করণে। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের পাশে ৯৫৭ সংবত-এ তৈরি রামমন্দির। তবে, অতীত ধ্বংস পেতে নতুন করে মন্দির হয়েছে ১৮২৩এ। দেবতা—রাম-লক্ষ্মণ-সীতা।

এরই বিপরীতে দামাঙ্কাসের Omayyed Mosque-এর রেন্নিকা হয়ে আফগান শিল্পের নিদর্শন ৮০ মি বর্গাকার জামি মসজিদ। হোসাও শাহর হাতে শুরু হয়ে শেষ হয় ১৪৫৩তে মামুদ শাহর হাতে। তবে, এর প্রবেশ দ্বারের ডোমটিতে হিন্দু-বৌদ্ধ-জৈন স্থাপত্য প্রতীয়মান। তাহি হয়তো-বা হিন্দু রাজার আমদরবারই রূপান্তরিত হয়েছে মসজিদে। এর কারুকার্য ও জালির কাজ সুন্দর। অগুনতি স্তম্ভ, গম্বুজ হয়েছে শিরে। ৮-৩০—১৭-০০টায় খোলা।

জামি মসজিদ লাগোয়া পাঠান স্থাপত্যে গড়া হোসাও শাহর সমাধি। আর আছেন বেগম ও দুই পুত্র, পাশে মেয়ে-জামাই সমাহিত। নিজের হাতে এর নির্মাণ শুরু হলেও শেষ হয় মৃত্যুর ৫ বছর পরে হোসাও-পুত্রের হাতে ১৪৪০এ। শ্বেতমর্মরে হিন্দু-মুসলিম শৈলীতে তৈরি ভারতে প্রথম সৌধও এই সমাধি। শিরে গম্বুজ, পাথর কূঁদে জালির কাজও সুন্দর। এর অভিনববৈশিষ্ট্য আকৃষ্ট হয়ে শাজাহান ওস্তাদ হামিদ ছাড়াও তিন স্থপতি পাঠিয়েছিলেন তাজ তৈরির আগে। তবে, স্মৃতিবত অতীতে ভূজের তৈরি শিবমন্দির ছিল এটি। আকন্দ, পদ্ম ও রুদ্ৰাক্ষের মালা আজও দৃশ্যমান। তোপ মিউজিকও শুনে নিতে পারেন চত্বরের তোপ তিনটিতে। অদূরে রামমন্দির।

রয়্যাল গ্রুপ : বামহাতি পথ ধরে সামান্য এগুতেই Royal Enclave গ্রুপের লোহাঙ্গী কেবলস। পথ গিয়েছে আরও এগিয়ে। অদূরেই মঞ্জ ও কাপুর ক্রিম দুই হ্রদের মাঝে ১২০x১৫ মিটারের জাহাজ বাড়ির প্রাসাদ বিভল জাহাজ মহল। কলনার রঙ লাগিয়ে পাথরে পড়া এই মহলের গঠননিপুণ্য পর্যটকদের অভিভূত করে। চম্বলোকে লেকের

জলে এর প্রতিবিম্ব—সতাই যেন জাহাজ ভাসে। তাবেলী মহল থেকে এ-দৃশ্য অতীব মনোহর। তবে তৈরি এটি গিয়াসুদ্দিনের হাতে হারেম মহল রূপে। হিমতে মালোয়া রাজ মুক্তদেবের কালে গ্রীষ্মাবাস রূপে গড়া হয় এই প্রাসাদ। উত্তরের বাথরুমের বিন্যাস এমনই যে মনে হবে হারেমের ১৫০০০ মোহিনী আত্মও সাধীর অপেক্ষায় দাঁড়িয়ে। বিপরীতে রাজদরবারের অশ্বশালা স্থিত তাবেলী মহল।

সামান্য যেতে প্রজাদের সঙ্গে রাজাদের মিটিং-হল বেলেপাথরের হিন্দোলা মহলটিরও তুলনা হয় না। গিয়াসুদ্দিনের তৈরি, দৌল্যামান মহল নামে খ্যাত এটি। জাফরির কাজ অনন্য করে তুলেছে একে। নানান হিন্দু দেবমূর্তিও দৃশ্যমান এর অলঙ্কারে। এমনকি দেবতা বিষ্ণুর মূর্তিটি উল্টে করে প্রোথিত। এর হলটি T আকারের, দেওয়ালগুলি ৭৭ ডিগ্রি কোনাকুনি তৈরি, প্রথম দর্শনে বুলন্ত মনে হবে। সম্ভবত সম্রাটের হাতির পিঠে স্থিতলে ওঠার জন্যই এর এই আকৃতি। জনশ্রুতি, নূরজাহান দোলনা চড়তেন হিন্দোলা মহলে।

ধ্বংসপ্রাপ্ত মহলগুলির মধ্যে লেকের উত্তরে রূপমতীর মহল অর্থাৎ চম্পা বাড়ি বিশেষভাবে উল্লেখ্য। নামকরণের মাহাত্ম্য—বাউড়ির জলে চম্পক ফুলের সুরভি মেলে। হিমতে, পনির নামে নাম বা ফুলের ঢঙে রূপ বলে। ভূগর্ভস্থ একটি রওও গিয়েছে এই মহল থেকে। ঠাণ্ডা ও গরম জল মিলত সেকালে। জল না-থাকলেও রূপমতীর হামামটি দর্শনীয়। এরই পাশে ১৪০৫ তৈরি দিলওয়ারা খানের মক্কাবা তথা মসজিদ। বামে মোগল ও রোমান স্থাপত্যের অনুপম নিদর্শন সম্রাট জাহাঙ্গীরের তৈরি বিধ্বস্ত জলমহল ছাড়াও রয়েছে নাহার বরোখা (টাইগার ব্যালকনি), উজালি (উজ্জ্বল) ও আঙ্কেরি (অঙ্ককার) ২টি বৃহৎ কূপ অর্থাৎ বাওলি, গদা শাহর দোকান ও বাড়ি।

রেওয়া কুণ্ড গ্রুপ: সাগর তালার পেরিয়ে বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫ কিমি দক্ষিণে আফগান স্থাপত্যে গড়া রূপমতী প্যাভিলিয়ন অর্থাৎ প্রমোদ নিকেতন। ২টি চবুতরা, গম্বুজের মতো। তৈরি যদিও শত্রু পর্যবেক্ষণের জন্য, তবে দূরে বহুদূরে (২৬ কিমি) নিম্নর উপত্যকায় প্রবহমান নর্মদা (মোক্কা) দর্শনে আসতেই মানসিংহ রাঠোরের কন্যা রূপমতী ৩৬৫মি উচুতে তৈরি মহলে। প্রকৃতি মনোহর। সূর্যাস্ত ও চন্দ্রালোক পরিবেশকে মধুময় করে তোলে।

লাগোয়া পাহাড় ঢালে প্রাসাদে জল পেতে বাজবাহু-দুরের তৈরি রেওয়া কুণ্ডের পাড়ে রাজহানী ও মোগলী শৈলীতে গড়া মাপুরাজ বাজ বাহাদুরের প্রাসাদ অর্থাৎ দুগটিও পর্যটকদের আর এক দ্রষ্টব্য। ১৫০৮এ তৈরি মাইক-হীন যুগের সন্নীত মহলটির অভিনবত্ব আছে। রূপমতী ও বাজবাহাদুরের গান ও তাদের মজলিশ বসত। এদের প্রমোদাখ্যান আজও গাথা হয়ে ফেরে ডাট-চারশদের মুখে। এমনকি রূপমতীর রূপে মুক্ত আকবর সেনাপতি আদম খাঁ-

কে পাঠান মাপু জয় করে রূপমতীকে পেতে। যুদ্ধ এড়িয়ে বাজ বাহাদুর পালিয়ে যেতে মাপু দখল হলেও আদমের নিষ্ঠুরতায় আহত রূপমতী বিষপানে আত্মহত্যা করেন।

অন্যান্য মনুমেন্ট: অভিনবত্ব আছে ১৬ শতকে রেড স্টোনে তৈরি নীলকণ্ঠ প্রাসাদের। খাপে-খাপে সিঁড়ি বেয়ে সর্গীর প্রবেশপথে ঝাড়া পাহাড়ী ঢালে অতীতের শিব মন্দিরের কাছে মোগল গভর্নর শাহ বাদগাহ খান আকবরের হিন্দু মহিষীর জন্য প্রাসাদ গড়েন। মাপুর গৌরব গাথাও উল্লিখিত হয়েছে দেওয়ালে। জাহাঙ্গীরেরও খুব প্রিয় ছিল সাগর তালার—এর জলে ঘেরা এই মোগলী প্রাসাদ। আর মাপু জয় করে ১৭৩২এ বাজীরাও ১-এর হাতে সংস্কারের সাথে হিন্দুর দেবতা শিব ঠাকুরের প্রতিষ্ঠা। আয়ীকা-জাত baobab গাছে ছাওয়া মন্দির। বানরেরা লাফিয়ে চলে গাছ থেকে গাছে। জীবন্ত সাপেরাও বিচরণ করে—এমনকি ফণাও ধরে দেবশিরে কখনো-সখনো। ধারা নামছে শিবের মাথায় আর শিবঠাকুরের কণ্ঠ নীল—নামটিও তাই নীলকণ্ঠ।

অদূরে নদী নামছে পাহাড় থেকে। স্বল্প যেতে পথের পূবে হাতি মহল অর্থাৎ হাতিশালা—হাতির পায়ের আদলে তৈরি পিলারে ভর করে গম্বুজ। পাশেই দরিয়া খানের সমাধি। নাহার বরোখা—নাহার অর্থ বাঘ, অর্থাৎ বাঘ শিকারের স্থান। জনশ্রুতি, জাহাঙ্গীরের তৈরি বরোখা থেকে প্রজাদের দর্শন দিতেন সম্রাট। আর রয়েছে সাগরতালার—এর পাড়ে শব্দের প্রতিধ্বনি ইকো পয়েন্ট। পাহাড়ে প্রতিধ্বনিত হয়ে বার-বার ফিরে আসে শব্দ কথাটি। আরও যেতে রয়্যাল এনক্রেন্ডের কাছে নিরাল-নিভুতে পাহাড়ের বৃকে সানসেট পয়েন্ট থেকে মাপুর প্রকৃতির সাথে সূর্যাস্তও সুন্দর দেখায়। আর আছে জৈন মন্দির একখাড়া ও চোরকোট। মাপুর নবতম আকর্ষণ শীতের শেষে মাপু বা মালব উৎসব। সাজ হল মাপু দর্শন। এবার বাসে ধার বা উজ্জয়িন চলুন। তবে উৎসাহীদের ধার ও বাঘ গুহা বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে মাপু থেকে বাসে ধারে পৌঁছে। মাপুতে স্টেট ব্যাঙ্কের শাখাও বসেছে সপ্তাহে ২ দিন ২ ঘণ্টা করে।



পহারে লুকতে Mandu-454010, STD : 07292এ
—MPITDC-র Travellers' L, near SADA
Barrier, ৩ 63221, S ২৯০ D ৩৭৫; বাস
স্ট্যান্ডের ডাইনে ১ কিমি যেতে Tourist Bungalow/Cottages,
Roopmati Rd, ৩ 63235, S ২৯০ ৪৯০ D ৩৭৫ ৫৯০ A/c
S ৬৯০ D ৭৯০; কল বুকিং : Linkage ৩ 2465171. বাস
স্ট্যান্ডে SADA-র পর্যটক নিবাস, PWD-র RH, FRH,
পঙ্কজদে, জৈন ও রাম মন্দির ধরমশালা; অতি সাধারণ H
Nandanvan; H Roopmati; ছাড়াও ১ কিমি দূরে জাহাজ
মহলের বিপরীতে প্রবৃত্ত বিভাগের ৪ ঘরের Tavali Mahal
RH, ৩ 63225এ ডাবল ফ্লোরের ঘর, খাঞ্চাও মেলে অগ্নিম
অর্ডারে। পূর্নিমা রাতে চন্দ্রালোকে অবগাহন করে King for a
night বনে বাওয়া অবাভাবিক নয় তাবেলী মহলে এক রাত
অবস্থানে। সামনে জাহাজ মহল, দিগন্ত বিস্তৃত ধ্বংসাবশেষ, দূরে

আরও দূরে চক্রাকারে ঘূহ গড়েছে পাহাড় জ্যেষ্ঠ। নয়নাভিরাম মাতুর আরও সুন্দর এর প্রকৃতি। আহার্যও মেলে প্রায় সর্বত্র। তবুও জামি মসজিদের বিপরীতে *Reluxe Point* ও *Khalsa Restaurant* ভেজি মিলে খণ্টে খাত।

ধার

মাণ্ড-উজ্জয়িন, ইন্দোর-আমেদাবাদ বাস সড়কে মাণ্ড থেকে ৩৫, আর ইন্দোরের ৬৪ কিমি পশ্চিমে জেলাসদর ধার। বাঘ গুহারও পথ গিয়েছে ধার হয়ে। বাস যাচ্ছে। পারমার রাজা ভূজের (১০০০-৫৫) হাতে ধারের গোড়া-পত্তন। বাঘ বার যুগে হেরে রাজা ছেড়ে অন্যত্র গেলেও ১৭৩২এ ধারে ফেরে পারমার রাজা। রাজত্বও করে পারমার রাজারা সেই থেকে ভারতের স্বাধীনতা পর্যন্ত। হিন্দু-আফগান-মোগল স্থাপত্যে গড়া ধারের দুর্গ অতীতের ভোজশালা অর্থাৎ ভোজের কালের সরস্বতী মন্দিরটিতে আখা জুড়েলাট (Lam) মসজিদ—সেবী মূর্তি দেশান্তরিত হয়ে লন্ডন মিউজিয়মে। মুসলিম ফকির কামাল মৌলার সমাধি ও লেকের জন্যও ধারের প্রশস্তি আছে। জনশ্রুতি, ধারের ৩ কিমি দূরে কালীস্থান—কালীদাসের সাধন ক্ষেত্র। আর আছে লক্ষ্মী মন্দির, ফাড়কে স্টুডিও ধারে। CH, PWD RH, Purnima H, Shankar ও Shriram L আছে ধারে।

বাঘ গুহা

বাঘানী নদীর পাড়ে ৮০০ ফুট উচুতে বিদ্যাপর্বতে লাল বেলেপাথরের পাহাড় কেটে ভৈরী হয়েছে হীনযান বিহারখর্মী বৌদ্ধ গুহা। সুন্দর ছবিতে অলঙ্কৃত। সম্ভবত ৫ থেকে ৭ শতকের হবে। ভারতের দ্বিতীয় অজন্তা এই বাঘ গুহা। অতীতের ৯টি গুহার মধ্যে ৫টি আজও পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে। বাকি ৪টি অনাদর আর অবহেলায় বিধবস্ত। এসের মধ্যে ৪ নম্বর অর্থাৎ রংমহল গুহাটির অলঙ্করণ বিশেষভাবে উদ্ভেদ্য। নানান আখ্যান মুরালে রূপ পেয়েছে। ক্রন্দনরতা শোকাভিত্ততা নারী চিত্রটি অনবদ্য। গুহার বাহিরের বিরাটাকার বম মূর্তিটিও আকর্ষণীয়। তবে পাহাড় চুইয়ে জল পড়ে পড়ে এরা আজ ধ্বংসের কাল শুনছে। এর অনুলিপি গোয়ালিয়র প্রত্নতাত্ত্বিক মিউজিয়মে দেখে নেওয়া যায়। পঞ্চাশতাব্দের গুহা বলেও প্রসিদ্ধি আছে এসের। যাতায়াতের সুব্যবস্থা না থাকায় যাত্রীও কম বাঘে।

ধার থেকে ভাদোদরাগামী বাসে ৯৭ আর ইন্দোর থেকে ১৫৮ কিমি দূরে গুজরাট সীমান্তে বাঘ গ্রাম। গ্রাম থেকে ৭ আর বাসসড়ক থেকে ৩ কিমি আরণ্যক পথে পায়ে গিয়ে গুহা। নিরমিত বানের অভাব শেষ ৩ কিমিতে। তাই ধার থেকে আলিরাজপুরের বাসে বা চুক্তিতে গাড়ি নিয়ে বা ইন্দোর থেকে প্যাংকেজ টুরে বেড়িয়ে নেওয়াই উচিত হবে। থাকার দরকার হয় না বাঘ গুহার। তবে PWD ও Archaeological Department-এর রেন্ট হাউস আছে। বাঘ

দর্শনার্থীরা একদিনে ইন্দোর বেড়িয়ে পরদিন বাঘ গুহা দেখে ধার হয়ে মাণ্ডতে রাত কাটান। তৃতীয় দিনে মাণ্ড বেড়িয়ে ১৫-০০টার বাসে সরাসরি উজ্জয়িন পৌছান রাত ২০-০০টায়।

উজ্জয়িন

মহাকবি কালিদাস, সম্রাট অশোক, ভগবান শ্রীকৃষ্ণের স্মৃতিধন্য অবস্ঠিকা কালে কালে উজ্জয়িনী আজ হয়েছে উজ্জয়িন। কিংবদন্তী, নর্মদাতীরে দানবরাজ ত্রিপুরীকে হারিয়ে অবন্তীর রাজা শিব নামের বদল ঘটান—অবন্তিপুরা হয় উজ্জয়িনী। সম্রাট অশোকের পিতা বিন্দুসারের রাজ্যপাটও ছিল সেকালের অবন্তিকায়। এমনকি চন্দ্রগুপ্ত ২ (৩৮০-৪১৪ খ্রি) পাটলিপুত্র থেকে সরে এসে রাজধানী গড়েন অবন্তিকাতে। চম্বলের শাখা শিপ্রা নদীর পাড়ে মালব মালভূমিতে ১৬১৪ ফুট উঁচু উপত্যকায় উজ্জয়িন শহর। তবে, পৌরাণিক আখ্যানে মেলে সমুদ্র মহানে সৃষ্ট নদী শিপ্রা। জয়ন্ত বাহিত অমৃতকুন্ডের অমৃতও পড়ে হরিদ্বার, প্রয়াগ, নাসিক আর উজ্জয়িনের শিপ্রা নদীতে। মর্ত্যধামের চারের এক কুন্তুযোগও ঘটে উজ্জয়িন-এর পুণাতোয়া শিপ্রা নদীর ঘাটে। মর্ত্যভূমিতে স্বর্গ নেমেছে উজ্জয়িন-এ। পর্যটকদের কাছে আধ্যাত্মিক, শিক্ষা-দীক্ষা ও সংস্কৃতিতে মহীয়ান উজ্জয়িন-এর আকর্ষণ বহুবিধ। বৌদ্ধ পৃথিতে মেলে ত্রিপি ৬ শতকে অবন্তীর রমরমার কথা। এমনকি অবন্তী, বৎস, কৌশল ও মগধ চার শক্তির রাষ্ট্র ছিল সেকালে। অতীতে চার শতাব্দিক বৌদ্ধবিহার ছিল উজ্জয়িন এ যা আজ লুপ্ত। মহাকবি কালিদাস এই উজ্জয়িনরাজ বিক্রমাদিত্যর সভাকবি ছিলেন। নগরীরও বর্ণনা মেলে তাঁর অমরকাব্য *মেঘদূতমে*। আরও পরে পারমার রাজা শিলাদিত্যকে হারিয়ে মাণ্ডরাজের দখলে যায় উজ্জয়িন। আর ১২৩৫এ ইলচুংমিসের ধ্বংসলীলার শিকার হয় উজ্জয়িন। ক্ষতে প্রলেপ লাগান বাজবাহাদুর। বাজবাহাদুর থেকে আকবরের দখলে যেতে প্রাচীরে ঘেরেন উজ্জয়িনকে। লুপ্ত প্রায় প্রাচীরের অবশিষ্টাংশ আজও অবশিষ্ট। আর ইতিহাসকে চমৎকৃত করে ঔরঙ্গজেব অর্থ যোগান হিন্দু মন্দির গড়ে তুলতে। মহারাজা জয় সিং (জয়পুর) মালোয়ার গভর্নর হয়ে নানান মন্দিরের সঙ্গে যন্তর-মন্তর গড়েন উজ্জয়িন-এ। জয় সিংহর পর মারাঠারা আসে দখল নিতে উজ্জয়িন-এর। অবশেষে ১৭৫০এ সিক্কারাজের দখলে যায় উজ্জয়িন। আর দৌলত হাও সিক্কারা ১৮১০এ নতুন রাজধানী গড়েন গোয়ালিয়রে। উজ্জয়িন-এর রমরমাও পৌঁপ পেতে থাকে সেই থেকে।

ষাঢ় জ্যোতিষিসের অন্যতম পুণ্য হিন্দুতীর্থ উজ্জয়িন। সপ্তপুরীর অন্যতমও উজ্জয়িন। ৫১ সত্যীশীঠেরও এক—সতীর কনুই পড়ে উজ্জয়িন-এ। তবুও বারবার ধ্বংস পেয়েছে পুরাকালের বিশ্বরাজি উজ্জয়িন-এ। মন্দিরও হয়েছে অতীতকে অন্ধুর রেখে উত্তরকালে নতুন করে।



ইন্দোর-বিলাসপুর, আমোদবাদ-বারাণসী, দিল্লী-ইন্দোর রেলপথে উজ্জয়িন। ভূপাল-নাগদা রেলওয়ে আছে উজ্জয়িন হয়ে। ২২-১৫৫ হাজারত নিজামুদ্দিন (দিল্লী) ছেড়ে ১২ ঘণ্টায় উজ্জয়িন যাচ্ছে 400৬ ইন্দোর এক্স; ১৯-১৫৫ নতুন দিল্লী ছেড়ে জম্মু-ইন্দোর মালোয়া এক্সও যাচ্ছে উজ্জয়িন হয়ে। 3 6 দিন 4309 সেরাদুন-উজ্জয়িন এক্স যাচ্ছে নতুন দিল্লী হয়ে। বিলাসপুর-ইন্দোর নর্মদা এক্স, ভূপাল-ইন্দোর এক্স, ইন্দোর-ভূপাল ইটারসিটি এক্স, 2 5 7 দিন জয়পুর-চেন্নাই এক্স, বৃথবার জয়পুর-ইন্দোর এক্স, ইন্দোর-কোচি অহল্যানগরী এক্স, আমোদবাদ-বারাণসী/ফেজাবাদ/ মজফরপুর সবারমতী এক্স, রাজকোট-ভূপাল এক্সও যাচ্ছে উজ্জয়িন হয়ে। ৫-০০, ৭-৩৫, ১১-২৫, ১৭-০৫, ২১-৫০, ১-১০৫ ট্রেন যাচ্ছে ৫ ঘণ্টায় ভূপাল; ২-০০, ৫-৫৫, ৭-১০, ৮-১২, ১০-১০, ১১-০০, ১১-০৫, ১৭-৫৫, ২০-২৫ ইন্দোর যাচ্ছে ২ ঘণ্টায়; ৬-১০, ১৪-০০, ২০-০০টায় মউ যাচ্ছে ৩ ঘণ্টায়; ৬-০০, ১১-০০, ১৭-১০৫ ছেড়ে নাগদায় যাচ্ছে ১ ঘণ্টায় উজ্জয়িন থেকে। আর হাওড়া থেকে সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে শিপ্রা এক্স 3 6 7 দিন ১৫-১৫৫ হাওড়া ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় উজ্জয়িন পৌছে ইন্দোরে। নিকটতম বিমানবন্দর ৫৫ কিমি দূরের ইন্দোরে।



বাস সংযোগ গড়েছে ইন্দোর ৫৫ (গঙ্গোয়াল বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫—১৯-০০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায় ছেড়ে ১ ঘণ্টা), মাথু ১৪৬, ধার ১১২, ভূপাল ১৮৮ (৫ঘ), গোয়ালিয়র ৪৫৫, ওঙ্কারেশ্বর ১২৯, পাঁচমাজী ৩৮৩ কিমি ছাড়াও উত্তর, মধ্য ও পশ্চিম ভারতের নানান শহরের সঙ্গে উজ্জয়িন-এর। ৯ ঘণ্টায় ২৬৭ কিমি দূরের রাজস্থানের কৌটা যাচ্ছে বাস উজ্জয়িন থেকে। শহরে চলাছে টাঙ্কা, অটো, রিকশা ও ট্যাক্সি। একটি অটো চেপে ঘণ্টা পাঁচকে ১৫০-১৭৫ টাকায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় উজ্জয়িন। আবার রাজ্য সরকারের বাস ২৫ টাকায় ৭-০০ ও ১৪-০০টায় উজ্জয়িন শহর দেখাতে যাচ্ছে। নেড়াবার মরসুম সেপ্টেম্বর থেকে মার্চ মাস।



শহর বিখ্যাত হয়েছে রেল লাইনে—উত্তর-পশ্চিমে বাজার, মন্দির, শিপ্রার ঘাট তথা পুরাতন শহর। আর দক্ষিণ-পূবে প্রসার পাচ্ছে নতুন করে শহর। হোটেলগুলিও রেল স্টেশনকে ভর করে গড়ে উঠেছে Ujjain, STD: 0734৫। MPTDC-র H Shipra, University Rd, ৫ 51495, S ৩০০ ৩৯০ D ৩৫০ ৪৯০ A/C S ৫৫০ D ৬৫০; এদেরই Yatri Niwas, near New Bus Stand, ৫ 554198, S ১৯০ D ২৫০ ডর্মি বেড ৬০। U P Tourism-এর দপ্তর বনোহে হোটেল শিপ্রায়। আর M P Tourism-এর দপ্তর রেল স্টেশনে, ৫ 442622। অদূরে রেল জংশন কাছে সিটি করপোরেশনের Grand H, RJB, SAB ১০০ DAB ১২৫ ১৫০ ২০০-২৫০। Opp Rly Stn : H Rama Krishna, SCB ৬০ SAB ৬৫-১২৫ DCB ১০০ DAB ১২৫-১৭৫; H Sagar, S ৬০ D ৮৫-১৫০; H Chandragupta, S ৬৫-১২৫ D ১২৫-২০০; H Surya, S ১৭৫ D ২৫০; Saveria H, S ৪৫-৮০ D ৮০-১৫০। Near Bus Std: Vihar L, S ৪৫ D ৮৫; Vikram H, S ৪০-৮০ D ৮৫-১৫০; Adarsha Gupta L, S ৪৫-৮৫ D ৮০-১৫০। Near Subhash Statue: Ram Niwas, হাড়াও রয়েছে Nataraj, Srinivas, Taj Mahal, Sher-E-Punjab, Vijay L, near Gopal Temple : H Atlas, H Surana Palace,

H Srimaya, H Ajoy, H Girmar, H Akshya. আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম ও সার্কিট হাউস। ধরমশালাও আছে নানান—Mahakal, Harsidhi, Parasram, Agarwal, Bachhraj, Khandetwal, Digambar Jain উজ্জয়িন-এ। তবুও থাকার জন্য Shipra H, Grand H, H Surya-র পরিবেশ ও ব্যবস্থাপনা ভালই।

আহারও মেলে উজ্জয়িন-এর নানান হোটলে। রেল স্টেশনের বিপরীতে Chunakya, Sudama Restaurant দুটি ভালই। হোটেল শিপ্রায় Navratna Restaurantটি আহারে আজও সেরা।

১৮৩৩ খ্রিস্টাব্দে সিন্ধিয়া রানী বৈজাবাই-এর তৈরি শহরের মধ্যমণি শ্রীধারকাশীপ অর্থাৎ গোপাল মন্দির। বিজি বাজারের মাঝে দোকানপাটে তাঁসা মারাটা শৈলীর মন্দিরে রূপোর মূর্তি হয়েছে শ্রীকৃষ্ণর। এমনকি মন্দিরের দরজা-গুলিও রূপোর। জনশ্রুতি, সোমনাথ থেকে লুণ্ঠিত হয়ে গজনী ঘুরে লাহোরে আসে দরজা। আর লাহোর থেকে উদ্ধার করে উজ্জয়িন আনেন মহাদেবী সিন্ধিয়া। ১৩—১৫-০০টায় মন্দিরদ্বার বন্ধ থাকে। নিচে রামঘাট আর সামনে মোতি মসজিদ। শিপ্রার অপর পাড়ে চিত্তামণি গণেশ মন্দির। মন্দিরে স্বয়ম্ভু দেবতা গণেশ—দুপাশে দুই সহচর ঋদ্ধি ও সিদ্ধি।

শহরের দক্ষিণে শিপ্রা নদীর পাড়ে উজ্জয়িন-এর মূল আকর্ষণ মহাকালেশ্বর মন্দির। শিখর উঠেছে আকাশ ফুড়ে। অতীতের মূল মন্দির ১২৩৫এ ইলতুমিশের হাতে ধ্বংস পেতে নতুন করে ৫ তলা মন্দির গড়ে সিন্ধিয়ারাজ। মাটির তলায় মূল মন্দিরে স্বয়ম্ভু দেবতা মহাকালেশ্বর শিব আর তারই উপরে ওঙ্কারেশ্বর শিব। আর এক অভিনবত্ব তত্ত্বমতে একমাত্র দক্ষিণমূর্তি দ্বাদশ জ্যোতির্লিংয়ের অন্যতম শক্তির উৎস এই মহাকালেশ্বর। আর আহুত পানীয়, গণেশ, কার্তিক—উত্তর-পশ্চিম-পূবে। আর নন্দী রয়েছে দক্ষিণে। সন্ধ্যারতির মাধুর্য আছে মহাকালেশ্বরে। কিংবদন্তী, সমুদ্রমহানের বিষপানে শিব যখন নীলকণ্ঠ তখন ব্রহ্মাই সৃষ্টি স্থিতি রাখতে শিবের সাধনা করে জ্যোতির্লিং প্রতিষ্ঠা করেন। এমনকি শ্রীরাম সব তীর্থের জল এনে গিড়গিড় দান করেছিলেন এই মহাকালেশ্বরে, সেই জলে হয়েছে কোটিগঙ্গা; স্নানে পুণ্য হয়। পশ্চিম দ্বারে বড় গণপতি, ঋদ্ধি সিদ্ধি, পঞ্চমুখী হনুমান ছাড়াও দেবতা রয়েছে আরও নানান মহাকালেশ্বরের অঙ্গনে।

অদূরে পাহাড় ঢালে ট্যাক্সের উপর বড় গণেশ মন্দির। দেবতা বিশালাকার গণেশ নানান রঙে রঞ্জিত। আর আহুত পঞ্চমুখী হনুমান মন্দির মাঝে। স্বল্প মেতে রামঘাট ভাল-বেতাল সিদ্ধ তান্ত্রিক রাজা বিক্রমাদিত্যর আরাধ্যা দেবী অন্নপূর্ণা বা হরসিন্ধি মাতার মন্দির। সিন্ধুরে চর্চিত দেবী—দুপাশে মহালক্ষ্মী ও মহাসরস্বতী। সহস্র প্রাণী ছলে নবরত্নের জাঁকালো উৎসবে। আর ১২৩৫এ বিধব আদি মহাকালেশ্বরের ধ্বংসোৎসব আজও দেখে নেওয়া যায় সিন্ধিয়া প্রাসাদের কাছে।

কাশীর গজার মতো উজ্জয়িন-এর শিপ্রা—নানান

সেবাচার চলছে প্রশস্ত ঘাট জুড়ে। বছর ভর হান চললেও প্রতি ১২ বছর অন্তর চৈত্রের পূর্ণিমায় শুরু হয়ে বৈশাখী পূর্ণিমা পর্যন্ত হানের সাথে মেলা বসে কুন্তের শিপ্রা নদীর রামঘাটে। লক্ষ লক্ষ পণ্যাবী আসেন দেশ-দেশান্তর থেকে কুন্তে। হান করেন পণ্য আহরণের তরে ত্রিবেণী বা শিপ্রার রামঘাটে। জলে কচ্ছপ আছে। গত কুন্ত এপ্রিল ১৭—মে ১৬, ১৯৯২ ঘণ্টে গেল উজ্জয়িন—এ। পাড়েই হয়েছে শ্রীরাম মন্দির। আর আছে প্রাচীনকালের বিশালাকার বটবৃক্ষ পবিত্র সিদ্ধবট শিপ্রা-তটে।

ভারতের ৫টি যন্তুর-মন্তুরের (Vedha Shalu) মধ্যে একটি হয়েছে উজ্জয়িন—এ। ১৭৩৩এ মহারাজা জয় সিংহ ২ শহরের দক্ষিণে শিপ্রা নদীর পাড়ে নতুন মানমন্দির অর্থাৎ যন্তুর-মন্তুর গড়েন। আকারে জয়পুর ও দিল্লীর পর হলেও সময়, সূর্য ও চন্দ্রের গ্রহণ ও গতিবিধি আজও নির্ভুল নির্ণয় করে এই যন্ত্র। নতুন করে টেলিস্কোপ ও প্ল্যানেটেরিয়ামও বসেছে। আকাশভরা সূর্য-তারা দেখে নেওয়া যায় টেলিস্কোপে। চলতে ফিরতে সিঙ্ক্রিয়া ওরিয়েন্টাল রিসার্চ মিউজিয়ামটি উচিত হবে দেখে নেওয়া। পথেই পড়ে আর এক মন্দির মাতা সন্তোষীর।

শহরের ৭ কিমি উত্তরে শিপ্রা নদী-তীরে ১১ শতকের ভর্ত্তহরি শুভ। মহারাজ বিক্রমাদিত্য একদা বৈমাত্রেয় লাভা ভর্ত্তহরিকে রাজ্যপাট সঁপে দেশভ্রমণে যান। পারিবারিক কারণে রাজ্যের প্রতি বিতৃষ্ণা এলে সম্রাট নিয়ে তপস্যায় বসেন এই শুভায় ভর্ত্তহরি। নাথ সম্প্রদায়ের মহান তীর্থ।

কালিদাসের বরদাত্রী দেবী কালীর বিশালাকার মূর্তিও দেখে নিন চলার পথে গড়কালিকার মন্দিরে। এই দেবীরই বরে অজ্ঞাত দ্বীভূত হয়ে ব্যুৎপত্তির প্রাপ্তি ঘটে। দুইয়েরই সম্মিলনে মনোরম পরিবেশে নাথ সম্প্রদায়ের গুরু মৎস্যেন্দ্রনাথের স্মারক রূপে গড়া পীর মৎস্যেন্দ্রনাথ। আর রয়েছে পারমার রাজা ভদ্র সেন প্রতিষ্ঠিত কালভৈরব। বহু পুরাতন এই মন্দির—স্বন্দপুরাণে উল্লেখ মেলে আট ভৈরবের অন্যতম কাপালিক ও অঘোরা সম্প্রদায়ের উপাস্য এই দেবীর কথা। তেমনই সন্ধান মিলেছে নানান হারানো অতীত প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের খননে।

শহর থেকে ১০ কিমি উত্তরে কালিয়াদহ প্যালেস। নানা কেটে শিপ্রা থেকে জল এনে আকার তার দ্বীপাকার। আর হয়েছে ১৬শ শতকে প্রাসাদকে ঠাণ্ডা রাখতে নাসিরুদ্দিনের কালো রক্তাক্ত, সূর্যকুণ্ড ছাড়াও নানান কুণ্ড প্রাসাদের নিচে। অতীতের সূর্যমন্দির ১৪৫৮য় মাহুদুল সুলতান মামুদ খিলজীর হাতে প্যালেসে রূপান্তর। মাঝের ডোমটি পারস্যিয়ান স্থাপত্যের প্রতিচ্ছবি। আকবর ও জাহাঙ্গীর এসেছেন প্রাসাদে। ভবন নতুন করে সূর্যদেবের মূর্তি বসেছে রাজমাতা সিঙ্ক্রিয়ার হাতে ১৯২০এ। পরবর্তীকালে মালায়ার সুলতানের দ্বীপাবাস হয় কালিয়াদহ। যন্ত্রের অভাব—তবে, পরিবেশ সুন্দর।

মঙ্গল গ্রহের দৃশ্য দেখার জন্য অতীতকালে খ্যাত ছিল মঙ্গলনাথ। মৎস্যপুরাণেও সে আখ্যান বিবৃত হয়েছে। মহাভারতের কালে ভারতীয় খণ্ডিদের হাতে মানমন্দির গড়ে ওঠে। ভারতের গ্রিন উইচ ছিল সেকালে মঙ্গলনাথ। আর খ্রি পূ কালে ভারতীয় জ্যোতির্গণনার মূল কেন্দ্রের রূপ নেয় মঙ্গলনাথ। মিরিডিয়াম-এর যাতায়াতও ছিল মঙ্গলনাথের উপর দিয়ে। যা আজ গ্রিন উইচ দাবি করে। মঙ্গল বা চন্দ্রেরও জন্ম অর্থাৎ প্রথম দর্শন মেলে এখানে। অতীত গৌরব হান হলেও ৮৪ ধাপ উঠে প্রতি মঙ্গলবার যাত্রী সমাগম ঘটে হরসিদ্ধির ভৈরব—দেবতা মঙ্গলনাথের (শিব) মন্দিরে। খুবই জাগ্রত এই দেবতা। শিপ্রা নদীর দৃশ্যও মনোরম দেখায় মন্দির থেকে।

শহর থেকে ৩.২ কিমি দূরে সন্দীপন আশ্রম। কথিত আছে ভগবান শ্রীকৃষ্ণ শ্রীমদ্ভাগবত ও সুদামাসহ নিয়মিত আসতেন কুলগুরু সন্দীপনীর কাছে ধনুর্বেদ ও আয়ুর্বেদ শিক্ষা নিতে। অদূরে গোমতী কুণ্ড, আরও যেতে শিপ্রার গঙ্গার ঘাট।

এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও শত-সহস্র উজ্জয়িন—এর পথে-প্রান্তরে। জৈনরাও কাচ মন্দির গড়েছে উজ্জয়িন—এ। মন্দির হয়েছে নবগ্রহের শিপ্রার ত্রিবেণী ঘাটে পৃথিবীর কক্ষস্থিত নবগ্রহের (সূর্য, চন্দ্র, মঙ্গল, বৃহ, বৃহস্পতি, শুক্র, শনি, রাহু ও কেতু) নামে উৎসর্গিত। অত্যাশ্চর্য্য হারি ওরিয়েন্টাল রিসার্চ ইনস্টিটিউটের বিক্রম কীর্তি মন্দিরে প্রত্নতাত্ত্বিক মিউজিয়াম, আর্ট গ্যালারি ও ইনস্টিটিউটে ১৮০০ পৃথির লাইব্রেরিটিও দেখে নিতে পারেন। তেমনই চলতে ফিরতে দেখে নেওয়া যায় রাজ্য সরকারের গড়া কালিদাস একাডেমি উজ্জয়িন—এ। দিনে দিনে উজ্জয়িন বেড়িয়ে ১৭-১৫-র ইন্দোর-বিলাসপুর নর্মদা এলেক ভূপাল পৌছান ২২-৩৫এ। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান উজ্জয়িন থেকে ভূপালে। বাসেও চলা যেতে পারে ঘণ্টা পাঁচেকের উজ্জয়িন থেকে ভূপালে। দিন-রাত জুড়ে নানান বাস।

ভূপাল

সকল কালের শ্রেষ্ঠ একাল

ভূ-ভারতের মধ্যে ভূপাল।

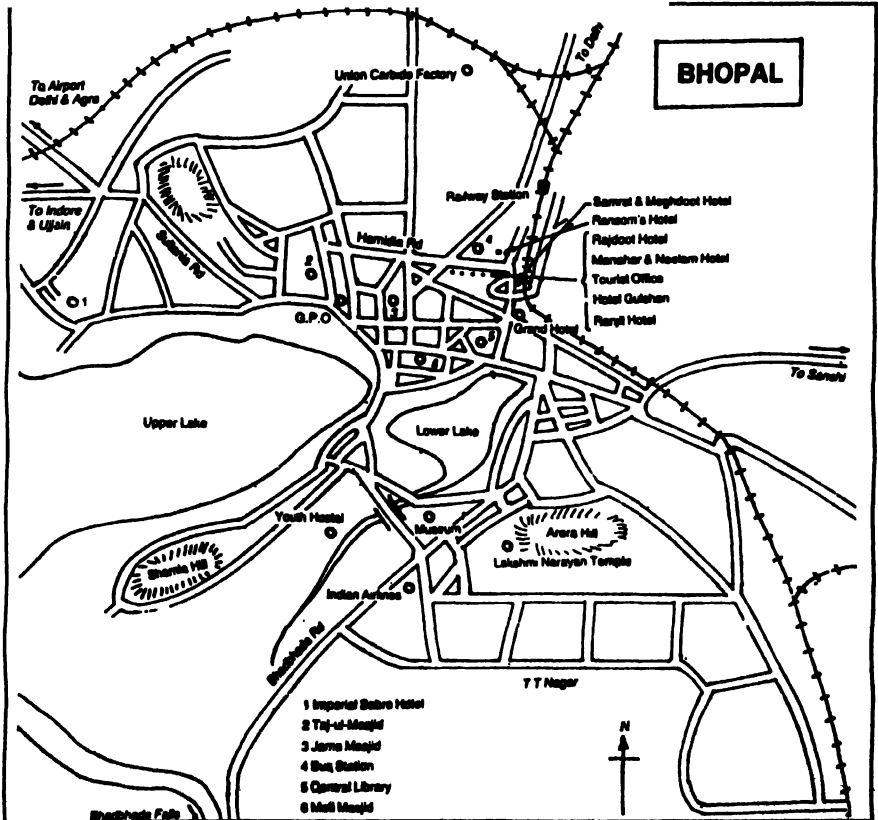


দিল্লী-মুম্বাই/চেন্নাই রেলপথে মধ্য প্রদেশের রাজধানী শহর ভূপাল। রেল বা বাসে চলুন উজ্জয়িন থেকে। দূরত্ব ১৮৪ কিমি। ৫২ ঘণ্টার পথ। ১৯৩৬ শিপ্রা এক্স ৩৬৭ দিন ১৫-১৫য় হাওড়া ছেড়ে ২৯ঃ ঘণ্টায় ১৯৪৯ কিমি দূরের ভূপাল পৌঁছে ইন্দোর যাচ্ছে। শিপ্রা ফেরে। ৪.৫ মিনি ১৯-২৫এ ইন্দোর ছেড়ে রাত ২-০০টায় ভূপাল পৌঁছে তারও পরের দিন ৭-৫৫য় কলকাতায়। আবার এলাহাবাদ-মুম্বাই রুটের ইটারসি-তে গাড়ি বদল করে বা নাগপুর/বিলাসপুর থেকেও ট্রেনে ভূপাল চলা যায়। নাগপুর থেকে দূরত্ব ৩৯০, ইটারসি থেকে ৯২ কিমি। আর দিল্লীর দূরত্ব ৭০৫, মুম্বাই ৮৩৭ কিমি। শ্রবতম ট্রেন ২০০২ শতাব্দী এক্স ৬-১৫য় নিউ দিল্লী ছেড়ে আগ্রা কাট/

গোমালিয়র/বীসী হয়ে ডুপাল পৌছায় ১৪-০০টায়। ১৪-৪০এ ডুপাল ছেড়ে নিউ দিল্লী ফেরে ২২-২৫এ শতাব্দী। ৬-০০টায় ইন্দোর ছেড়ে ৭-২৫এ উজ্জয়িন পৌছে ডুপাল যাচ্ছে ১৩-৩০এ ইটারসিটি এন্ড ইন্দোর ফেরে ১৭-৩০এ ডুপাল ছেড়ে ২০-১৫য় উজ্জয়িন পৌছে ২২-১৫য় ইটারসিটি। আর ১৫-০০টায় ইন্দোর ছেড়ে ১৬-৫০এ উজ্জয়িন পৌছে ডুপাল যাচ্ছে ২২-৪০এ ইন্দোর-বিলাসপুর নর্মদা এন্ড; নর্মদা ফেরে ৬-১৫য় ডুপাল ছেড়ে ১০-৪৫এ উজ্জয়িন পৌছে ১৩-৩০এ ইন্দোরে। হামিদিয়া রোড যাত্রীসের উচিত হবে ৪/৫ প্রাইফর্ম থেকে বেরিয়ে চলা।

আর যাচ্ছে দাদার-অমৃতসর এন্ড, মুম্বাই-কিরোজপুর পাঞ্জাব মেল, ২৪ ৭ দিন নানডেড-অমৃতসর এন্ড, পুনে-জম্মু বিলাম এন্ড, নিউ দিল্লী-তিরুভনন্তপুরম কেরল এন্ড, নিউ দিল্লী-ব্যাঙ্গালোর কর্ণাটক এন্ড, জম্মু-ম্যাঙ্গালোর/মাদ্রাসেই নবযুগ এন্ড, হজরত নিজামুদ্দিন থেকে ম্যাঙ্গালোর—জয়ন্তী জনতা ও মঙ্গলা এন্ড, বারাগসী-হাণা সবরমতী এন্ড, ইন্দোর-নিউ দিল্লী মালোয়া এন্ড, হজরত নিজামুদ্দিন-ডাকো গোয়া এন্ড, অমৃতসর-বিলাসপুর ছত্তিশ গড় এন্ড, ১ ৪ ৫ দিন হজরত নিজামুদ্দিন-বিশাখাপতনম সমতা এন্ড, গোরক্ষপুর-সেকেন্দ্রাবাদ/ব্যাঙ্গালোর/কোচি এন্ড, লঙ্কো/

বীসী/ডুপাল/ভূসমাল হয়ে গোরক্ষপুর-মুম্বাই কুশীনগর এন্ড, সাপ্তাহিক হিমসাগর এন্ড, হজরত নিজামুদ্দিন-তিরুভনন্তপুরম/চেন্নাই/ব্যাঙ্গালোর রাজধানী এন্ড, নিউ দিল্লী-চেন্নাই তামিলনাডু এন্ড ও জিটি এন্ড, মিসাপ্তাহিক চেন্নাই-জম্মু এন্ড, ডুপাল-রাজকোট এন্ড, বিসাপ্তাহিক দাদার এন্ড, লঙ্কো-মুম্বাই পুণক এন্ড, হায়দ্রাবাদ-নিউ দিল্লী এন্ড, বিলাসপুর যাচ্ছে ইটারসি/জব্বলপুর/কটনি হয়ে ডুপাল-বিলাসপুর এন্ড/প্যা, ইন্দোর-বিলাসপুর নর্মদা এন্ড ও হজরত নিজামুদ্দিন-বিলাসপুর এন্ড ডুপাল হয়ে। কোটা যাচ্ছে ফার্স্ট প্যাসেঞ্জার, জব্বলপুর/কটনি/অনুপপুর/বিলাসপুর হয়ে ১৬ঃ ঘণ্টায় দুর্গ যাচ্ছে ২ ৪ ৫ ৭ দিন অমরকটক এন্ড, বীণা যাচ্ছে ১ ৩ ৫ দিন পাঁচমাড়ী এন্ড, ছত্তিশগড় এন্ড, ডুপাল-বিলাসপুর এন্ড, ১ ৩ ৫ দিন রেওয়া এন্ড ছাড়াও নানান ট্রেন। আর যাচ্ছে ৬-২৫, ৭-৩০, ১১-৫০, ১৯-১১য় উজ্জয়িন যাচ্ছে ৫ ঘণ্টায়; ৩-১৫, ৬-২৫, ৭-৩০, ১ ২ ৫ দিন ২১-৪০, ২৩-৫৫, ১৭-৩০এ ইন্দোর যাচ্ছে উজ্জয়িন হয়ে ৬ ঘণ্টায়; ইটারসি, খাণ্ডোয়া যাচ্ছে দিন-রাত জুড়ে নানান ট্রেন ডুপাল হয়ে। রেলের সিটি বুকিং: ৫৫৩৫৯৭, রেল স্টেশন অনুসন্ধান ৩ ১৩১, স্মিয়ার্ভে শন ৩ ৫৪০১৭০।





বাসও যাচ্ছে রাজ্যের দিঘিদিগে ভূপাল থেকে। উজ্জয়িন, গোয়ালিয়র, ইন্দোর, জব্বলপুর যাচ্ছে নানান বাস। বাস যাচ্ছে সীচী, নিবপুরী, ৬ ঘণ্টায় পাঁচমাড়ী, ৬-৪৫৫ ছেড়ে ৭ ঘণ্টায় মাথু, ১৯-৩০৫ ছেড়ে ১১ ঘণ্টায় খাজুরাহো। এমনকি আমেদাবাদ, বরোদা, নাগপুর, জয়পুরেও বাস যাচ্ছে ভূপাল থেকে। M P Tourism-এর A/c বাস ৮-৪৫৫ বাস স্ট্যান্ড, ১৪-৩০৫ রেল স্টেশন থেকে শতাব্দীর যাত্রী নিয়ে ইন্দোর যাচ্ছে ৪ ঘণ্টায়।



আর IAC-র বিমান ১৩৫ দিন ৯-১০৫ ভূপাল ছেড়ে ৪৫ মিনিটে গোয়ালিয়র পৌছে দিল্লী যাচ্ছে ১১-১৫য়; ২৪ ৬৭ দিন ৯-১০৫ ছেড়ে সরাসরি দিল্লী যাচ্ছে ১০-২০৫। ১৩৫ দিন ১৮-৪৫৫ ভূপাল ছেড়ে ১৯-২০৫ ইন্দোর পৌছে মুম্বাই যাচ্ছে ২০-৫৫য়; ২৪ ৬৭ দিন ১৯-১০৫ ভূপাল ছেড়ে ইন্দোর হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে। ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনগুলিতে। দপ্তর বসেছে IAC-র Bhad Bhada Rd, TT Nagar-এ রিজার্ভেশন : ☎ 550480; ফ্লাইট সংবাদ : 521277/142. প্রাইভেট এয়ারলাইনসও সার্ভিস গড়েছে ভূপাল থেকে দিল্লী, মুম্বাই, ইন্দোর ছাড়াও নানান দিকের। শহর থেকে ১৫ কিমি দূরে বিমানবন্দর।

১১ শতকে পারমার রাজা ভুজের হাতে শহরের পতন। নামটিও তাই ভুজ + পাল অর্থাৎ ভূপাল। আর যোগল দরবারের সৈনিক আফগান নায়ক দোস্ত মহম্মদ খান (১৭০৮-৪০) খুন করে দিল্লী ছেড়ে ওভারসিয়রের চাকরি নেয় ভূপালের অদূরে। অল্প পরে রাজপুত রাজাকে মেরে, ভিলসার গভর্নরকে যুদ্ধে হারিয়ে বিজয়দর্পে ভূপালে আপ্যায়ন দোস্ত মহম্মদের। স্বামীর মৃত্যুতে গোপুত্রানী কমলাপতি সম্মুখ সমরে নামেন দোস্ত মহম্মদের। এই দোস্তেরই হাতে ১৬ শতকের শেষার্ধ্বে ভুজের রাজ্যপাটের উপর আঙ্গকের শহরের পতন।

একটি বৃহদাকার লেকের পাড়ে ভূপাল শহর। লেক আর বাগিচাই ভূপালের মূল আকর্ষণ। আজ লুপ্ত হলেও ভূপাল থেকে ২৮ কিমি দক্ষিণ-পূবে ভূপাল-ওবেদুগাও পথের ভোজপুরে এশিয়ার বৃহত্তম লেকটিও ভুজের (১০১০-৫৩) আর এক কীর্তি। মাটি দিয়ে ৪৪ ফুট ২৪ ফুট উঁচু ২টি বাঁধ গড়তে তৈরি হয় ৫০০ বর্গ কিমির কৃত্রিম এই লেক। মালোয়ার স্বার্থে বাঁধ কেটে ধ্বংস করেন সেটি মাথুর সুলতান হোসাও শাহ (১৪০৫-৩৪)। জনশ্রুতি—৩ মাস ধরে বাঁধ কাটে এক সৈনিক, জল সরে ৩ বছর ধরে; আর জল শুকিয়ে বাসযোগ্য হয় ৩০ বছর পরে। অতীতের লেকের কাছে ১১ শতকের ভোজেশ্বর শিবমন্দিরটি বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে ভূপাল পর্যটকদের। ৩২.২৫×২৩.৫ মিটারের কারুকার্যময় লাল বেলেপাথরের অসম্পূর্ণ মন্দিরে পূর্বের সোমনাথ বলে খ্যাত ২.৩ মি উঁচু মূল শিবলিঙ্গ একশও পাথর কুঁদে তৈরি। প্রবেশ ফটক ও গজেশ্বর ভাস্কর্যে অভিনবত্ব আছে। ভোজেশ্বরের কাছেই হয়েছে ভোজেশ্বরের সমকালে আর এক অসম্পূর্ণ মনোলিথিক জৈন মন্দির। বিগ্রহ হয়েছে ৩ জৈন তীর্থঙ্করের। ৬মি উঁচু মূর্তি হয়েছে মহাবীরের।

আবার, ভোজপুর থেকে আরও ৬ কিমি উত্তরে আশাপুরীতে আশা মাতার মন্দির, একাদশ রূপশিখও ৬ মি উঁচু বিষ্ণুমূর্তিও দেখে নিতে পারেন অত্যাশ্চর্য। ১১ কিমি দূরে বেরাসিয়া রোডে ইসলামপুর পাহাড় চূড়য়ে দোস্ত মহম্মদ খানের তৈরি প্রাসাদ ও বাগিচাও দেখে নেওয়া উচিত হবে। এমনকি সীচী ও ভীমবেটকাও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত ভূপাল থেকে।

ভবুও রাজ্যের রাজধানী শহর ৫২৩ মি উঁচু ভূপালে পর্যটক সমাগম কম। শহরের কেন্দ্রস্থলে ২টি লেক। শহরও গড়েছে পূব আর পশ্চিমে লেককে সীমান্ত করে। ছোট লেকের পাড়ে সঙ্গীর্ণ পথঘাট, নানান মসজিদ, নানান প্রাসাদ, দোকানপাটে ঠাসা বেগম সাহেবাদের (১৮১৯-১৯২৬) বিখিঁ পুরাতন শহর। এরই উত্তরে কলকারখানা, বস্ত্র এলাকা। আর পশ্চিমে বড় লেকের পাড়ে শ্যামলা পাহাড়ে নতুন করে গড়ে উঠছে আধুনিক শহর। মসৃণ পথঘাট, আকাশচুম্বী বাড়িঘর, গাছগাছালিতে ছাওয়া বসত এলাকা। ১০ লক্ষাধিক লোকের বাস ভূপাল শহরে। টাক্সি, অটো, রিকশা ও টাঙা চলেছে শহরে। শ'দৈড়েক টাকার চুক্তিতে অটোয় পুরো শহরটা বেড়িয়েও নেওয়া যায়।

সকাল-সন্ধ্যায় বেড়ান গ্রেট অর্থাৎ বড় লেকের পাড়ে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। শহরের দৃশ্য দেখুন লেকের পাড় থেকে। রাতের বেলায় লেকের জলে শহরের আলোকমালায় প্রতিবিম্ব খুবই মনোহর। এই বড় লেকের পাড়েই শ্যামলা মার্গে ১৩ই ফেব্রুয়ারি ১৯৮২তে স্ব পতি Charles Correa-এর নকশায় বসেছে অভিনব ভারত ভবন। আর্ট গ্যালারি—রূপঙ্কর, কবিতার গ্রন্থাগার, অডিটোরিয়াম, ফাইন আর্টের ওয়ার্কশপ, লোকশিল্প ও উপজাতীয় মিউজিয়াম ছাড়াও মনোরঞ্জন নানান পসরা নিয়ে গড়ে উঠেছে এই ভবন। লোকশিল্পের অন্যতম কেন্দ্র এই ভারত ভবন। রেস্তোরাঁ হয়েছে। সোম ছাড়া প্রতিদিন ১৪—২০-০০টায় খোলা। ৪৪৫ হেক্টর ব্যাপ্ত বনবিহার বা সফরি পার্ক অর্থাৎ চিড়িয়াখানাটিও এই গ্রেট লেক লাগোয়া পাহাড়ে। মঙ্গল ছাড়া প্রতিদিন ৭—১১-০০ আবার ১৫—১৭-০০টায় দেখার ব্যবস্থা। মুখ্যমন্ত্রীর বাংলাটিও ভারত ভবনের বিপরীতে। লেকের বৃক্কের দিয়ে বাঁধ বরাবর পথ গিয়েছে। আর বৃক্ক বেয়ে পথ উঠেছে শ্যামলা পাহাড়ে। শহরের দৃশ্য দেখার জন্য শ্যামলা পাহাড়ের আকর্ষণ। অদূরেই আরো পাহাড়ে বিড়লা গ্রুপের তৈরি পুরাতনের সংগ্রহশালা ও লক্ষ্মী-নারায়ণ মন্দির। আকারে ছোট হলেও আকর্ষণে অনন্য এই সংগ্রহশালা। মৌর্য ও গুপ্তকালের টেরাকোটার সাথে শিব ও বিষ্ণুর ভাস্কর্য মূর্তির সংগ্রহ উল্লেখ্য। সোম ছাড়া প্রতিদিন ৯—১২-০০ আবার ১৪—১৭-০০টায় খোলা। মন্দির চত্বর থেকে গ্রেট লেক, বিধান সভা ও পুরাতন শহরের দৃশ্য মনোরম দেখায়। তেমনিই শ্যামলা পাহাড়ের আর এক আকর্ষণ গ্রেট লেকের পাড়ে নীল আকাশের নিচে ৪০ হেক্টর জুড়ে ভারতীয় উপজাতিদের জীবনধারণের নিদর্শনশালা রাষ্ট্রীয় মানব সং-

গ্রহালয়ের ট্রাইবাল মিউজিয়ম (সোম ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৮-০০); টেগোর ভবনের সন্নিবেশগঙ্গারোডে প্রত্নতত্ত্বের সম্ভার নিয়ে স্টেট মিউজিয়ম (সোম ছাড়া ১০—১৭-০০); গান্ধীজীর ছবি ও নানান স্মারক নিয়ে গড়া আর এক মিউজিয়ম গান্ধী ভবনটিও শহরের আর এক দ্রষ্টব্য। শহরাঙ্কে ১০ কিমি দূরে বল্লভভবন—অর্থাৎ রাজা সরকারের সেক্রেটারিয়েট। ৪ কিমি দূরে পুরাতন শহরে প্রাচীরে ঘেরা দোকানপাটে ঠাসা খিঞ্জিচক এলাকায় অতীতের ভূপাল-রাজাদের দরবার হল সদর মঞ্জিলও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। অদূরে শওকত মহল—ফ্রান্সের বুরব রাজ-পরিবারের পরিকল্পিত পাশ্চাত্যের সঙ্গে স্থানীয় ইসলামিক শিল্প সুসম্মিলিত গড়া প্রাসাদ। প্রাচীন গ্রিক ও ল্যাটিনের সাথে গথিক শৈলীর সমন্বয়ে আকর্ষণ বেড়েছে। শওকতের পিছে গ্রেট লেকের পাড়ে হিন্দু ও মোগলী স্থাপত্য শৈলীতে ১৮২০এ খুদসিয়া বেগমের তৈরি গোহর মহলাটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। পর্যটক বিমোহিত বাগিচাগুলিও ভূপালের আর এক আকর্ষণ। বিধর্মীদের হাত থেকে আত্ম বাঁচাতে ছোট লেকের জলে উৎসর্গীত কমলা-দেবীর স্মারক কমলা পার্কের সৌন্দর্য পর্যটকদের বিশেষভাবে আকর্ষণ করে। আর রয়েছে অ্যাশ বাগ অর্থাৎ আনন্দের বাগিচা, নুর বাগ অর্থাৎ আলোর বাগিচা, আর ফহেরা তাফজা আনন্দবর্ধন করে দর্শকদের। তবুও ভূপালের মূল আকর্ষণ ৬ কিমি ব্যাপ্ত গ্রেট লেক ও লোয়ার লেকের নয়নাভিরাম সৌন্দর্য। রাতের বেলায় আরও মনোরম হয়ে ওঠে। একটি সেতু বিচ্ছেদ টেনেছে দুই-এর মাঝে। জলবিহারেরও নানান ব্যবস্থা গ্রেট লেক মেলে। ৪৪৫ হেক্টর ভূমি জুড়ে বন বিহার সফারি পার্কও হয়েছে গ্রেট লেকের পাড়ে। মঙ্গল ছাড়া ৭—১১-০০ ও ১৫—১৭-৩০টায় herbivorous and carnivorous জন্তু দেখে নেওয়া যায়। তেমনিই হয়েছে লোয়ার লেকের পাড়ে মীনরঙ্গী অ্যাকোয়ারিয়াম নানানধর্মী মাছের সংগ্রহ নিয়ে। সোম ছাড়া প্রতিদিন ১৫—১৯-০০টায় খেলা।

দূর্গের পিছনে পুরনো শহরে এশিয়ার বৃহত্তম তাজ-উল মসজিদ। নবাব শাহজাহান-বেগম (ভূপালের ৮ম শাসিকা ১৬৬৮-১৯০১) এর হাতে পিতৃ রক্ত এই তাজ-উল মসজিদ শুরু হয়ে শেষ হয় তাঁর মৃত্যুর পর। জলাধার হয়েছে চত্বরে। মূল প্রেয়ার হলটিও অনবদ্য—৪টি খনুকাবুতি খিলান, ৯টি সূঁচালা চূড়া, ২৭টি পিলারে ভর করে সিলিং, ১৮ তলা উঁচু অষ্টকোণী মিনার, কম্পরঙ্গী মর্মরের গম্বুজ, জাফিরির কাজ খুবই সুন্দর। প্রতিবছর ৩ দিনের Ijuma-র সমাবেশ ঘটে দূর-দূরান্ত থেকে। ২টি গোল গম্বুজ হয়েছে। সিঁড়ি বেয়ে উপরে উঠে চারপাশের দৃশ্যও দেখে নেওয়া যায়। দীর্ঘকালের অসম্পূর্ণ এই মসজিদটি ১৯৭১এ সম্পূর্ণতা পায়। দোকানপাটের ভিড়ে ১৮৩৭এ খুদসিয়া বেগমের তৈরি জামা মসজিদ-টিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। জনজটি, ১১৮৪তে হিন্দুনারী গড়া সভা মাঙ্গলা মন্দিরের উপর মিনারেট

বসিয়ে মসজিদ হয়েছে। স্থাপত্যে আজও তার নিদর্শন মেলে। আর ১৮৬০এ দিল্লীর জুমা মসজিদের অনুকরণে খুদসিয়া-তনয়া শিকার্দার জাহান বেগম তৈরি করান মোতি মসজিদ। আকারে ছোট, ২টি লাল মিনারেট—শিরে তার সোনালী স্পাইক। জুমা মসজিদের পথে হাতি মহল অর্থাৎ হস্তী প্রাসাদটিও দ্রষ্টব্য তালিকায় স্থান করে নিয়েছে। ১২ ফুট চওড়া পিলারগুলি দেখতে হাতির পায়েই মতো। নামটিও তাই হাতি মহল। ১২টি খিলান, গম্বুজ—রাজসভা বসত অতীতে। আরও উত্তরে দরিয়া খানের সমাধি। এরও কারুকার্য সুন্দর। তবে, ভূপাল আজ বিশ্ব-পরিচিতি পেয়েছে ১৯৮৪র ৩রা ডিসেম্বর ইউনিয়ন কারবাইডের গ্যাস দুর্ঘটনায় দ্বি-সহস্রাধিক লোকের মৃত্যুতে। পশু হয়েছে কয়েক সহস্র আর ৩ লক্ষেরও অধিক সরাসরি ক্ষতিগ্রস্ত। স্মারক সৌধ হয়েছে হামিদিয়া রোডের উত্তরে ইউনিয়ন কারবাইডের সামনে।

উৎসাহীরা ভূপাল-বেরাসিয়া (Berasia) রোডে ১১ কিমি দূরে বাগিচায় ঘেরা হিন্দু ও ইসলামিক স্থাপত্যে গড়া দোস্ত মহম্মদের প্রাসাদটিও দেখে নিতে পারেন। আর আছে হামাম ও দ্বিতল রানীমহল।

কনডাক্টেড ট্যুর : MPTDC প্যাকেজ ট্যুর—শহর, সাঁচী, উদয়গিরি বেড়িয়ে আনে। টিকিট রাজ্য পর্যটনের ট্যুরিস্ট অফিস (11-17-30hr), ৫ হামিদিয়া রোড, ভূপাল-১ বা MPTDC, Gangothri, T T Nagar, Bhopal-462003-এ মেলে। বেল স্টেশনেও দপ্তর আছে এদের। আবার অটোতেও শ'ঘরেক টাকায় দেখে নেওয়া যায় ভূপাল শহর। ট্যুরিও মেলে শ'পাঁচেক টাকায় ৫০ কিমি পরিক্রমায় ভূপাল দর্শনে। MPTDC সাঁচী ও উদয়গিরি-ও যাবে প্যাকেজ ট্যুরে ১—১৭-০০টায়। এপ্রিল থেকে জুনের গ্রীষ্ম এড়িয়ে চলাও লক্ষ্যে। যেতে পারে বছরভর ভূপাল ভ্রমণে।

| ভূপাল থেকে : | |
|--------------|---------|
| সাঁচী | ৪৭ কিমি |
| উজ্জয়িন | ১৮৪ " |
| মাণ্ডু | ২৮৫ " |
| ইন্দোর | ১৮৬ " |
| শিবপুরী | ৩০৮ " |
| গোয়ালিয়র | ৪২৮ " |
| পাঁচমাড়ী | ১৯৫ " |
| জব্বলপুর | ২১৫ " |
| ভীমবেটকা | ৪৬ " |
| বান্দগড় | ৪৮১ " |
| অমরকটক | ৫৭৫ " |
| চিম্বটু | ৫৫৯ " |
| কানহা | ৫৩৭ " |
| বাঙ্করাহা | ৩৮৭ " |
| বিলাসপুর | ৭৩৮ " |
| কাঁসী | ৪০২ " |
| আগ্রা | ৪৪১ " |
| দিল্লী | ৭৪১ " |
| নাগপুর | ৩৪৫ " |
| এলাহাবাদ | ৬৮০ " |
| কোটা | ৪৯১ " |
| ওরঙ্গাবাদ | ৫৮৮ " |
| উদয়পুর | ৭৬৫ " |
| অরপুর | ৭৩৫ " |
| আমেদাবাদ | ৫৭১ " |
| লক্ষ্মী | ৭০৩ " |
| কানকাজা | ১৪৫৭ " |

কেনাকাটা : তেমনিই সঙ্গী করুন স্মারকরূপে অরিখতিত বসনের সাথে রূপোর ভূষণ, কারুকার্যবর পার্শ, নানান হস্তজাত সম্ভার ভূপালের দোকানপাটে। এমনিচি চাবেরি, তসর, অম্বেরী শাড়ি, গুঁথির নানানকিছ কিনতে মেলে। কেনাকাটার চকের

সোকানপাট আদরপীয় হবে। তেমনই চলা যেতে পারে *M P Sales Emporium—Mriganayani*, 23 New Shopping Centre, ৩ 554162 বা *Avanti Handlooms*, G T B Complex, T T Nagar-এ।



Bhopal-462001, STD : 0755-এ রেল
স্টেশনের বিপরীতে রেল চত্বর ছাড়াতেই *L* শেপের
পথ হামিদিয়া রোড। হোটেলগুলিও জেট
বৈধেহে বাস স্ট্যান্ডকে কেন্দ্রমণি করে রেল স্টেশন থেকে ৭—
১৫ মিনিটের পায়ে ইঁটা দূরত্বে *Hamidia Road-1-এ। *H*
Ramsons, S ২০০ D ৩০০ A/c S ৪০০-৪৫০ D ৫২৫-৭৫০;
লাগোয়া *Taj H*, A-c S ৩৭৫ D ৪২৫ A/c S ৭৫০ D ৬৫০
সুইট ৮৫০; *Rama Tourist Home*, S ১০০ D ১৭৫ A/c S
১৭৫-২২৫ D ৩২৫-৪৫০; *H Deep*, S ১০০-১৫০ D ১৫০-
২২৫; *H Ranjit*, ৩ 534411, SAB ১২০ DAB ১৫০ ডিলাক্স
২০০ A-c S ২২৫ D ৩২৫ সুইট ৪৫০; *H Shrmaya*, S
১৫০ D ২২৫ A/c S ৩০০ D ৩৭৫ সুইট ৪৫০; *H Gulshan*,
SCB ৬০ SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২২৫ TAB ২০০; *H*
Manjeet, SAB ৮০-১২০ DAB ১৫০-২২৫ সুইট ৩৫০
A-c S ২০০ D ৩৫০; *Bharati H*, S ১০০ D ১৭৫; *H*
Pathik, S ৮৫-১৫০ D ১৫০-২২৫ A/c S ৩০০ D ৪০০; *H*
Raydoot, SAB ২২৫ DAB ৩২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০;
Ashoka H, SAB ৮৫ DAB ১২৫-১৭৫; বিপরীতে *Pagoda*
H, S ৮৫ D ১৫০; *Shalimar Deluxe*, SAB ৬০-১০০ DAB
১২৫-২০০; *H Siwalik Gold*, S ১৫০-২২৫ D ২২৫-৩০০
A/c S ৩৫০ D ৪৫০ সুইট ৬৫০; *H Red Sea Plaza*, S
১৫০-২২৫ D ১৭৫-৩২৫ A/c D ৪৫০; *H Meghdoot*, SAB
৮৫ DAB ১৫০ ডিলাক্স ২০০-২৫০ FR ২০০-২৫৫; *Grand*
H, SCB ৪৫ SAB ৬৫-৮৫ DAB ১২৫-১৭৫ A-c D ৩০০;
H Sanchi Regency, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২২৫; *H Capital*,
Reem, *H Crown*, S ৬০-১০০ D ১০০-১৭৫; *H Rainbow*,
SCB ৪৫ SAB ৬৫ DAB ১০০-১৫০; *H Jyoti*, SAB ১২৫
DAB ১৭৫; *H Samrat*, S ১২৫ D ২০০; *Delite H*, *H*
Rajshri, *Chandana*, *Gujarat Lodging & Boarding*, *H*
Vijoy, Stn Rd-10.

এছাড়াও হোটেল বয়েছে সারা শহরময়—ITDC-র **H*
Lake View Ashok, *Shamla Hills-2*, ৩ 541600, A11R4,
A/c S ১২৫ D ১৭৫/২২০০ সুইট ২৫০০; **Jehan*
Numa Palace H, 157 *Shamla Hills-13*, A12R5B2,
৩ 540103, A/c S ১০৫০-১২৫০ D ১৪৫০-১৭৫০ সুইট
২২৫০-২৭৫০, Annex S ৭৫০ D ৯৫০-১৫০০; *Motel*
Shiraj, D ৪২৫ A/c D ৪৫০-৬৫০; *H Mayur*, *Berastia Rd*,
৩ 540826, D ৪৫০ A/c ৬০০; *H Imperial Sabre Palace*,
A Bad-1, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ১৭৫০;
**The Residency*, 208 Zone-1, *Maharana Pratap Ngr-11*,
৩ 556001, A/c S ৮৫০ D ১২৫০ সুইট ১৬০০-২৭৫০;
Kwality's Motel Shiraz, *Shivaji Ngr-1*, ৩ 552513, D
২৫০ A/c D ৪৫০ সুইট ৬০০; **H Nisaraga*, 211, Zone-1,
M P Ngr-11, ৩ 555701, A/c S ৬৫০-১২৫০ D ৮৫০-
১৫৫০ সুইট ২০০০-২৭৫০; *H Kanchan*, *H President*
International-29, SAB ২২৫ DAB ৩২৫-৪৫০ A/c S ৪০০

D ৬০০ সুইট S ৭৫০ D ৯৫০; *H Palace*, S bad-1, SAB
৮০ DAB ১৫০-২২৫ A/c D ৩৫০; *H Sangam*, *Overbridge*
Rd-12, SAB ১০০, DAB ১৭৫ ডিলাক্স ২০০-৩২৫ A/c S
৩২৫ D ৪৫০; *H Tourist*, *Bal Vihar-1*; *Deluxe H*,
Kotwali-1; **H Amer Palace*, Zone-1, 209 M P Ngr,
৩ 557127, A/c S ৮২৫-৯২৫ D ১০২৫-১৫২৫; *H Arera*
Palace, 208 M P Ngr, Zone-1, ৩ 556001; *H Kings*,
Motia Park, *Sultania Rd-1*, ৩ 530689, A5R1, S ৩০০
D ৪৫০ সুইট ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; *Ajanta*
H, *Bal Vihar Rd-1*, SCB ৬০ SAB ৮৫-১৫০ DCB ১০০
DAB ১৫০-২২৫; *Nalanda H*, *Ibr Pura-1*, ৩ 542814;
Raj H, near *Laxmi Tik-1*.

আর রয়েছে T T Nagar-এ MPTDC-র *H Panchanan*,
New Market, ৩ 551647, A/c S ৫৯০ D ৬৯০; এদেরই
**H Palash*, near 45 *Bungalows*, ৩ 553006, A11R6,
SAB ৪৯০ DAB ৬৯০ A/c S ৬৯০-৮৯০ D ৭৯০-৯৯০,
অবু: Manager, বা MPTDC, *Gangotri*, T T Ngr, *Bhopal*,
462003, ৩ 554340-43 বা কলকাতায় : *Linkage*,
৩ 2465171; *CH*, অবু: Hospitality Officer, *Vallabh*
Bhawan; *MLA Hostel*, অবু: Caretaker বা EE, PWD; রেল
ও বাস থেকে যথেষ্ট দূরে লেকের পাড়ে *Youth Hostel*,
৩ 553670, S ২৫ D ৪০ ডর্মিটে ছাত্র ১৫ সাধারণ ২৫;
অবু: Warden, 45 *Bungalows*, TT Nagar, *Bhopal*. রেলের
রিটার্নিং রুমও আছে, ডর্মি বেড ও ঘর মেলে। আর আছে
ধরমশালা—*Jai Manu*, *Jain*, *Jayeswal*, *Neem Sarai*, *Sarai*
Sikandari, *Agarwal Birshramji*, *Shri Ganeshram Goel*,
Muhavir ছাড়াও নানান।

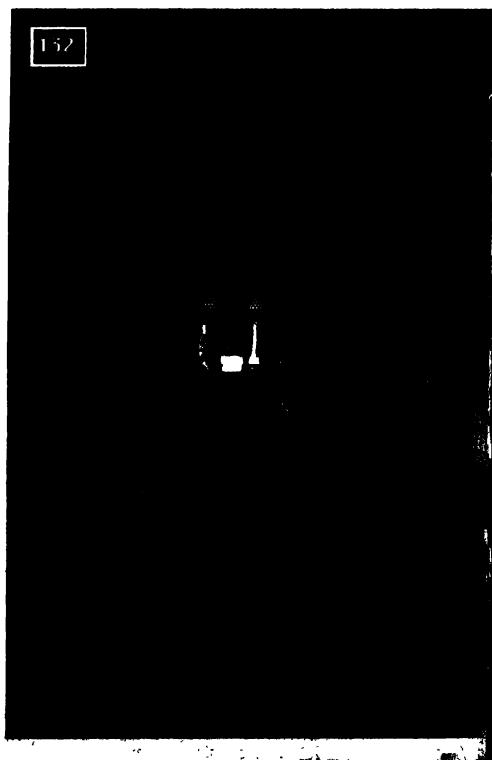
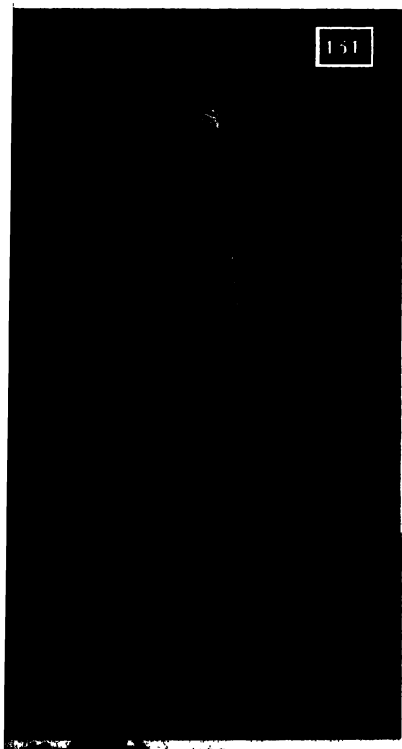
চিত্রসূচী: দশ

১২৩ নৃত্যের তালে তালে ছবি পর্যটন দপ্তর ১২৪ উট চলছে
মুখটি তুলে ছবি পর্যটন দপ্তর ১২৫ জরনলমীরের জাকরি
শিল্প ছবি পর্যটন দপ্তর ১২৬ তাজমহল ছবি বিজয় সেনগুপ্ত
১২৭ কানির গঙ্গা ছবি পর্যটন দপ্তর ১২৮ সারনাথের থার্ড
দুর্গ ছবি পর্যটন দপ্তর ১২৯ হ্রদ সারনাথ-বিলি ছবি
পার্বতী দপ্তর ১৩০ হরি কি পাখি-হরিণার ছবি নির্মলেন্দু
সাহু ১৩১ কুতব মিনার ছবি বিজয় সেনগুপ্ত
১৩২ লালকোয়ার হাট ছবি নির্মলেন্দু

তবুও বেন তারকাচিত্র হোটেলগুলির সাথে *গ্রান্ড*, *রীন*,
ক্রাউন, *দীপ*, *জ্যোতি*, *শালিমার*, *তাজ*, *সূর্য*, *শেরাটন*, *পথিক*,
শ্রীমঙ্গল এদের ব্যবস্থাপনা ভাগ্যই।

খাবার হোটেলও নানান ছুপাল শহরের বরভর। তবুও
হামিদিয়া রোডে—*Anjura*-য় আদিব আহার্য, আর *Manohar*
ও *Jyoti*-র নিরামিষ আহার্য ভালই। ক্রাউন লাগোয়া *Bagichu*
Restaurant-টিরও যথেষ্ট প্রশতি আহার্য পরিবেশায়। পাশেই
চীনা ডিশের জন্য *Dragon*-এ পরখ করা যেতে পারে। তেমনই
ডেরারী জাত প্রোডাক্টের বাদ নেওয়া যেতে পারে *মালায়া*





ডেরারী, হামিদিয়া রোডে। আর TT Nagar-এ Amaltas, Apsara, Mughal Mahal, India Coffee House—এদেরও যথেষ্ট প্রশস্তি। New Market-এ Top in Town, Ding Dong-ও যথেষ্ট খ্যাত। আর উচিত হবে চলতে-ফিরতে হামিদিয়া রোডে Marwa Diaryতে ডেরারী প্রোডাক্ট, Indian Coffee House-এ কফির সঙ্গে টকির স্বাদ নেওয়া। সোমবার সোকানপাট বন্ধ থাকে ভূপালে।

প্রথম দিন শহর দেখে দ্বিতীয় দিন সকালে ট্রেন বা বাসে সাঁচী চলুন। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস। ভূপাল-সাগর পথে ৪৫ কিমি দূরে রায়সেন, আরও ২০ কিমি গিয়ে সাঁচী, বিদিশার দূরত্ব আরও ৯ কিমি। তাই যাতায়াতের পথে একটা বাস ছেড়ে রায়সেন বাস স্ট্যান্ডের পাশে পাহাড়চুড়োয় মালোয়ারাজ রায় পূর্ণমলের ৬ শতকের বিখ্যাত দুর্গটি দেখে নেওয়া যায়। মন্দির, ৩টি প্রাসাদ, কামান, ১৫টি লেক বা পুকুর ও ৪০টি কুয়া রয়েছে রায়সেন দুর্গে। তবে, শেরশাহ তথা আকগান দখল যায় দুর্গ। থাকারও ব্যবস্থা মেলে CH ও PWD RH রায়সেনে। তবে, সাঁচীর বিকল্প বাসপথও গিয়েছে দেওয়ানগঞ্জ হয়ে ভূপাল থেকে। এপথের দূরত্বও কম—৪৭ কিমি মাত্র।

সাঁচী

দিল্লী-মুম্বাই ও দিল্লী-চেন্নাই রেলপথে ঝাঁসী-ইটারসির মাঝে সাঁচী স্টেশন। রাজ্যের রাজধানী ভূপাল থেকে ৪৭ কিমি উত্তর-পূর্বে এই বৌদ্ধতীর্থ। প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৮-০০, ৯-১৫, ৯-৫০, ১৪-২৫, ১৮-২০, ২০-১৫য় ভূপাল ছেড়ে ১ ঘণ্টায় সাঁচী। ভূপাল থেকে ৫-৫২, ৭-৪৮, ১০-৩০, ১৫-২৫, ১৬-৪০, ১৭-১৫য় সাঁচী থেকে। শিবপুরী থেকে বাসে ঝাঁসী পৌছে মুম্বাই ভায়া এলাহাবাদ, মুম্বাই-দিল্লী ও চেন্নাই-দিল্লী রেলের ট্রেনে সাঁচী চলুন। ঝাঁসী থেকে সাঁচীর দূরত্ব ২৪৭ কিমি। এত পর্যটক আকর্ষণ থাকা সত্ত্বেও মেল বা এক্স ট্রেন খালে না সাঁচীতে। বিদিশায় নানান এক্স ট্রেনের স্টপ আছে। তবে, শতাব্দী এক্স হাড়া অন্যান্য ট্রেনের প্রথম শ্রেণীর যাত্রীদের অনুরোধে প্রথা আছে সাঁচীতে গাড়ি দাঁড়াবার। তবুও ভূপাল থেকে বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার। কলকাতা যাত্রীদের উচিত হবে স্মি-সাপ্তাহিক শিপ্রা এক্সে ভূপাল পৌছে সাঁচী চলা। আবার বছে মেল ভায়া এলাহাবাদ ট্রেনে ইটারসিতে গাড়ি বদল করেও চলা যেতে পারে সাঁচী। এপথে কলকাতার দূরত্ব ১৪২৮+১৩৫ = ১৫৬৩ কিমি।

আর বাস সংযোগ গড়েছে ভূপাল, সাগর, ইন্দোর, গোয়ালিয়র হাড়াও রাজ্যের বিভিন্ন শহরের সঙ্গে সাঁচীর। নিরীকৃত্তম বিমানবন্দর ভূপালে। রেল ও বাস দুই-ই যাচ্ছে ভূপাল থেকে সাঁচী। সাঁচী রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি পায়ের হাঁটা দূরত্বে ৯১ মি উঁচু বিদ্যাপর্বতের এক অমিত্যাকার খ্রিস্টপূর্ব ৩ থেকে ১২ শতকে গড়া সাঁচীর বৌদ্ধতীর্থ। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা থাকে সাঁচী। রবিবার দশমী লাগে না বৌদ্ধতীর্থে।

সাঁচীর সঙ্গে সবটুকু অশোকেই জীবনের নানান ঘটনা জড়িয়ে। কলিঙ্গ যুদ্ধের রক্তক্ষয় বিচলিত সম্রাট যুদ্ধ পরিহার করে সম্রাসী উপভোগের কাছে দীক্ষা নেন বৌদ্ধধর্মের শ্রি ২৫৭তে এই সাঁচীতেই। সাল্লা বেশ জুড়ে

রাজধর্ম প্রচারে ব্রতী হন অশোক। সাঁচী থেকেই সম্রাট অশোক ছেলে মহেন্দ্র ও মেয়ে সম্ভ্রমিত্রাকে সুদূর লঙ্কায় পাঠান বৌদ্ধধর্মের বাণীপ্রচারে। স্থূপ (সমাধি) গড়েন ৮৪০০০টি সারা ভারত জুড়ে, ৮টি তার সাঁচীতে—যার ৩টি আজও সাক্ষ্য বহন করছে। বৌদ্ধধর্মের অবলম্বিত পর দীর্ঘকাল লোকচক্ষুর অগোচরে ছিল সাঁচী। বিভিন্ন রাজা মহারাজা আঘাত হানলেও ধ্বংস পায় গুরজ্জবেবের হাতে সাঁচীর বৌদ্ধতীর্থ। নতুন করে আবিষ্কার ১৮১৮য় ব্রিটিশ প্রত্নতত্ত্ববিদ ডাইরেক্টর জেনারেল জন মার্শালের নেতৃত্বে, সংরক্ষণের কাজ শুরু ১৮৮১তে; আর সংস্কার ১৯১২—১৯এ। তবে, এই দীর্ঘ ব্যবস্থানে সাঁচীর নানান সম্পদ লুণ্ঠের পণ্য হয়ে স্থানীয়দের শিকার হয়েছে।

সাঁচীর মূল আকর্ষণ তার বৃহৎ স্থূপ অর্থাৎ স্থূপ নম্বর-১। ১৬.৪ মি উঁচু আর ৩৬.৫ মি ব্যাসের বিরাটাকার এই স্থূপ মৌর্য সম্রাট অশোকের হাতে শুরু হয়ে শেষ হয় তার উত্তরপুরুষের হাতে খ্রি পূ ৩—২ শতকে। খ্রিস্টাব্দে, কুষাণদের গড়া স্থূপে পাথর বসান অশোক। অর্থাৎ অতীতের ইটে গড়া স্থূপে—আন্তরণ লাগে পাথরের। শিরোগরি রাজকীয় কীরিট পাথরের ছত্র। রেলিং ও অলিঙ্গও হয়েছে স্থূপকে ঘিরে পাথরে। পাথর এসেছে উদয়গিরি থেকে। ভারতে পাথরের প্রাচীনতম স্থাপত্যও এই স্থূপ। মৃত্যুর প্রতীকরূপী স্থূপে বুদ্ধের কোনো মূর্তি নেই। পদ্ম, পিপুল গাছ আর চক্রের মাঝ দিয়ে প্রকাশ ঘটেছে বুদ্ধের জন্ম, আলোকপ্রাপ্তি ও ধর্মেপদেশের। পায়ের হাপে প্রকাশ পেয়েছে বুদ্ধের নির্বাণ লাভ।

রেলিং-এ ঘেরা স্থূপের প্রবেশদ্বার অর্থাৎ ৮.৫ মি উঁচু তোরণ চারটি সাতবাহন রাজাদের কালে তৈরি। স্থূপের দীর্ঘ পরে সর্ব শেষে খ্রি পূ ৩৫এ তৈরি পশ্চিমদ্বারে—জাতক কাহিনী অর্থাৎ মানবরূপী বুদ্ধের সাতজন্ম কাহিনী। তবে, বুদ্ধ এখানে প্রতীকী। তৃতীয় জন্ম প্রকাশ ঘটেছে স্থূপে, চতুর্থ জন্মের প্রকাশ পিপুল বৃক্ষে; আবার কখনও বা অশ্বে অর্থাৎ যে ঘোড়ায় চাপতেন বুদ্ধ। নানানভাবে মার (Mara) দৈত্য প্রলুব্ধ করছে। দুট্টের দমনই প্রকাশ পেয়েছে বেলেপাথরের অভিনব কার্কে। ছাদস্ত্রজাতক আখ্যানও মূর্ত হয়েছে নিচে। মাঝের সারিতে সারনাথে বুদ্ধের বাণীপ্রচারের চিত্র। আর নিচের সারিতে বুদ্ধের বোধিসত্ত্বের আখ্যান। ১৫৫ খ্রিষ্টপূর্বে অশ্বের রাজা শশিপারীর তৈরি দক্ষিণদ্বারে—বুদ্ধের জন্মের প্রতীকী পদ্ম—পদ্মের উপর বুদ্ধজননী মায়াদেবী দাঁড়িয়ে। মস্তকে জল সিঞ্জন করছে দু'পাশে দুই হাতি। প্রাচীনতম দক্ষিণ তোরণে বুদ্ধের জন্ম, বৌদ্ধধর্ম গ্রহণের পর অশোকেব জীবন আখ্যান হাড়াও ছাদস্ত্র জাতক কাহিনীও রূপ পেয়েছে। দক্ষিণের অনুরে ভগ্নাবস্থায় ১২.৮ মি উঁচু ১০ নম্বর অশোক পিলার রায় উপরে ছিল সিংহ মূর্তি। সিংহ মূর্তি রয়েছে সারনাথও—এমনকি ভারত রাষ্ট্রের প্রতীকরূপে গৃহীত হয়েছে সারনাথের সেই মূর্তি বা আজ ভারতীয়

মুম্বায় দৃশ্যমান। আকারে ছোট হলেও ৬টি প্রতীকে বুদ্ধ-জীবন-আখ্যান বিবৃত হয়েছে পূর্বদ্বারে—মাতৃগর্ভে আসার প্রতীকহাতি, গৃহত্যাগের প্রতীকখোড়া, বোধিলাভের প্রতীক পিপুল বৃক্ষ, ধর্মপ্রচারের প্রতীক চক্র, জনহিতের প্রতীক দুটি পদচিহ্নের উপর ছাতা, মহানির্বাণ লাভের প্রতীকরাঙ্গী স্থূপ। মহামতী অশোকও নতজানু হয়ে প্রার্থনা মগ্ন, এমনকি গর্ভাবস্থায় বুদ্ধজননী মায়াদেবীর দেখা স্বপ্ন—চাঁদে হাতি দাঁড়িয়ে রূপ পেয়েছে। বাজু থেকে ঝুলন্ত যক্ষী মূর্তিতেও অভিনবত্ব আছে পূর্বের এই তোরণে। তৎকালীন স্থাপত্যে ও ভাস্কর্যে উৎকর্ষ উদ্ভূতদ্বারে—অক্ষ বৃক্ষতলে বুদ্ধ ধর্ম-বক্তৃতা দিচ্ছেন। তাঁর পা থেকে জ্যোতি বেরুচ্ছে, মাথা থেকে বইছে জলের ধারা। আর ড্রাম বাজিয়ে এই অত্যাশ্চর্য ঘটনা প্রচার করছেন দেবদূত। শ্রাবস্তিতে রাজা প্রসেনজিৎ-কে দেখান দিব্যজ্ঞানের অলৌকিকত্বও রূপ পেয়েছে। ভগ্নাবস্থায় ধর্মচক্রটিও রয়েছে উত্তরের শিরে। বানর মধুর পাত্র দিচ্ছেন বুদ্ধের উদ্দেশে। সত্যি অত্যাশ্চর্য এই বৃহৎ স্থূপ। কেবল সীচী নয় অন্যতম বৌদ্ধ শিল্পকলা রূপ পেয়েছে বৃহৎ স্থূপে। এতসবের মাঝেও কিন্তু বুদ্ধের আগমন ঘটেনি সীচীতে। আর রয়েছে নানান পিলার—সবেরই আজ ভঙ্গুর অবস্থা। তৈরিও এরা ৫ শতকে।

স্থূপ রয়েছে আরও বেশ কয়েকটি সীচীতে। এদের মধ্যে ১৫ মি উঁচু নিউ বিহার স্থূপ অর্থাৎ স্থূপ নম্বর ৬ বিশেষভাবে উল্লেখ্য। বৃহৎ স্থূপের উত্তর-পূর্বে আকারে ছোট তোরণ হয়েছে প্রবেশপথে। ৩ স্থূপের মাটির নিচে পাথরের বাস্ত্রে বুদ্ধ শিষ্য সারি পুস্ত ও মহামেগগাভানার দেহাবশেষ মেলে। ১৮৫৮য় লন্ডনে গেলেও দেহাবশেষ ১৯৫৩য় সীচীতে ফেরে আবার। পাথরের তৈরি বিরাট পাথ্রটিতে সেকালে ভিক্টোরিয়ানরা খোদিতব্য জমা করা হত। তখনকার চৈত্যা বা উপাসনা হলটিও দর্শনীয়। কিছুটা যেন এথেন্সের প্রাচীন গির্জার আদলে তৈরি। এরই পেছনে ছিল স্থূপ ৪—তবে, আজ সেটি বিনষ্ট। স্থূপ ১ ও ৩-এর মাঝে স্থূপ ৫-ও বিনষ্ট হয়েছে। তবে, ৫-এ বুদ্ধমূর্তি ছিল সেকালে, আজ মিউজিয়মে স্থান পেয়েছে।

বৃহৎ স্থূপের পশ্চিমে পাছাডালে সহজ-সরল-অনাড়ম্বর ৭ মি উঁচু স্থূপ নম্বর ২-এতেও বৈচিত্র্য আছে। তোরণের অভাব—চক্রাকারে ছোট স্তম্ভ, L শেপের চার প্রবেশ পথ; দেওয়ালময় অলঙ্কার। ফুল-জীবজন্তু-মানুষ-এমনকি পৌরাণিক আখ্যানও রূপ পেয়েছে। ২ নম্বর স্থূপের পথে অশোকের স্তম্ভের তৈরি মূল বিহারটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে।

এছাড়া সীচীর নতুন আকর্ষণ—১৯৫২র ৩০শে নভেম্বর সারনাথের আদলে সিংহলের বৌদ্ধ সমাজের গড়া নতুন বিহারে বুদ্ধ শিষ্যের দেহাবশেষ। এরই বিপরীতে ১৯৮৭তে সিংহলে থেকে আনা বোধিবৃক্ষ। আর হয়েছে সীচীর স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের সংগ্রহ নিয়ে প্রত্নতাত্ত্বিক মিউজিয়ম পাছাড়ের পাদদেশে। শুক্র ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় খোলা। বৃহৎ স্থূপের ডাইনে গর্ভগৃহ ও মণ্ডপের সমন্বয়ে ৪ শতকে

গুপ্তযুগে তৈরি মন্দিরও (৬ ও ১৭ নং) আছে সীচীতে। এছাড়াও রয়েছে অতীত কালের নানান মন্দির, নানান মনাস্থি ও বিহার সীচীতে। বুদ্ধের কেশ, নখ, অস্থি অর্থাৎ দেহাবশেষ পূণ্যধারে রেখে টিপির মতো মঠ গড়েছেন ভক্তের দল। তবে বিস্মস্ত এরা—অরক্ষণের পথে। গ্রিক প্রভাবও মেলে এইসব মন্দিরের থাম ও অলিন্দে। এমনকি উত্তরকালে খাজুরাহোর মন্দিররাজিও গড়ে ওঠে-এর আদলে। আর আছে পিলার, বিহার ও চৈতর নানান ধ্বংসাবশেষ বৌদ্ধতীর্থ সীচী পাহাড়ে।

অত্যাংসাহীর সীচীকে সেন্টার করে ৭.৫ কিমি ব্যাসে সীচী বৌদ্ধ প্রকল্প অর্থাৎ সোনারী-মুরানখুর্দ-আন্ধের-শতধারা দেখে নিতে পারেন। কালের ক্ষয়ক্ষতি থেকে বৌদ্ধ সম্পদ বাঁচাতে ব্যাপক কর্মকাণ্ড চলছে জাপানী অর্থে পুষ্ট ইউনেস্কোর। সম্প্রতি ইউনেস্কোর পুরাতাত্ত্বিকরা সীচীর মাটির তলায় ১৪টি মঠ ও ৩২টি স্থূপ আবিষ্কার করেছেন। আবিষ্কৃত হয়েছে নিচে ব্রাহ্মী হরফে-লেখা এক পাথরখণ্ডে গেরুয়া রঙের বুদ্ধদেবের প্রতিকৃতি। এদের বিশ্বাস আজও নানান অতীত আবিষ্কারের অপেক্ষায়। আর, পরিবেশ রক্ষা প্রকল্পের নানান কর্মকাণ্ড চলছে সীচী ও শতধারায়। সীচীর ১০ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে সোনারীতে ৮টি বৌদ্ধ স্থূপ, সীচীর পশ্চিমে বিপাশার পাড়ে সাতধারায় ২টি; আরও ৮ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে আঁধের-এর স্থূপ ৩টিও দেখে নেওয়া উচিত হবে।

সীচী থেকে বাস বা ট্রেনে বিদিশায় চলুন। সীচী থেকে ৯ কিমি দূরে বেতোয়া (কালিদাসের বেত্রবতী) ও বেস (বিদিশা) নদীর সন্ধিস্থলে বিদিশা নগরী। খ্রিস্ট জন্মেরও ৬০০ বছর আগে বাণিজ্যনগরী রূপে প্রসিদ্ধি ছিল বিদিশার। রামায়ণেও উল্লেখ মেলে বিদিশার কথা। রামের ভাই শত্রুঘ্ন যাদবরাজসের কাছ থেকে বিদিশা জয় করে ছেলেকে বসান সিংহাসনে। মৌর্য সাম্রাজ্যের পতনের পর সুঙ্গদের রাজধানী হয় বিদিশা। সম্রাট অশোক বিয়েও করেন বিদিশার কাছে চৈত্যাগিরির শ্রেষ্ঠী-কন্যা দেবীকে। মহাকবি কালিদাসের মেঘদূত-এও উল্লেখ মেলে বিদিশার কথা। উল্লেখ মেলে বিদিশার বিলাস ও সমৃদ্ধির কথাও। ৬ শতকে হারিয়ে গেলেও ৯ শতকে আবার বিদিশার প্রশস্তির কথা মেলে ভিলসা নামে। বিদিশার খ্যাতি গেয়েছেন বাংলা কাব্যে জীবনানন্দও। বিদিশাকে ঘিরে ২৭ কিমি জুড়ে বৃত্তাকারে সম্রাট অশোকের আনুকূল্যে গড়া ৬৫টি স্থূপ দেখে নেওয়া যায়। মিউজিয়মও হয়েছে রেল স্টেশনের কাছে—এলাকা থেকে প্রাপ্ত সূদ থেকে পারমার রাজাদের কালের নানান প্রত্নতত্ত্বের। ভূপাল-দিদরী রেলপথে সীচীত্ব শরের স্টেশন বিদিশা। নানান ট্রেন ও বাস আসছে ভূপাল থেকে সীচী হয়ে বিদিশায়। এক ট্রেনও বাঁড়ার বিদিশায়। আকারও হোটেল—আদর্শ লজ, বসন্ত লজ, লক্ষ্মী হোটেল ছাড়াও ধরমশালা আছে বিদিশায়।

বিদিশা লাগোয়া ভিলসা। বিদিশা থেকে ৪ কিমি দূরে বেরবানী নদী পেরিয়ে জঙ্গল ও মাঠ ডিঙ্গিয়ে শহরের প্রহরী রূপে পাহাড় দাঁড়িয়ে। পাহাড় ঢালে বেলে পাথরের উদয়-গিরিতে অতীতের দুর্গ ও ২০টি গুহা রয়েছে ৪-৫ শতকের। তদানীন্তন সমাজজীবন ও সমাজধারার বলিষ্ঠ প্রতিচ্ছবি মূর্ত হয়েছে। ১ ও ১৮ নম্বর গুহা দুটি জৈন সাধকদের, বাকি ১৮টি হিন্দুধর্মী। ৩য় গুহার চতুর্ভুজ নারায়ণ, ৪র্থ গুহার অন্দরে শিবলিঙ্গ আর প্রবেশদ্বারের বাইরে বিপুলাকার গণেশ মূর্তি, ৫ম গুহার বাইরে বিপুলাকার বরাহ অবতার মূর্তি খোদিত—মূর্তির মুখের মধ্যে ৫টি নারীমূর্তি আর শিরে ফগাধর অনন্তনাগ। বরাহরূপী বিষ্ণু দৈত্য সংহার করে সমুদ্রতল থেকে চুরি করে লুকিয়ে রাখা পৃথিবী তুলছেন, দু'ধারে দাঁড়িয়ে দেবাসুর, কংসবধ আখ্যানও উল্লেখ্য। ৭ নম্বর গুহাটি মৌর্য সম্রাট চন্দ্রগুপ্ত দ্বিতীয়র (৩৪২-৪০১ AD) ব্যবহারের জন্য তৈরি। সুন্দর একটি প্রস্ফুটিত পদ্ম সিলিং—এ আর দেয়ালে দেবী দশভুজা মূর্তি হয়েছেন। আকারে বৃহত্তম গুহা ৯-এ ৮ ফুট উঁচু স্তম্ভ, স্তম্ভে ভর করা বারান্দা ও হলঘর, বিশালাকার সিলিং দর্শককে অভিভূত করে। গুহা ১৩-য় অনন্তশয়নে ১৮ ফুটের বিষ্ণু। নাড়ি থেকে পদ্ম—তার উপরে ব্রহ্মা আর দেব-দেবীরা হাতজোড় করে স্তব করছেন। জৈন সাধকদের গুহা ১৮ অতি সাদামাটা। গুহা ২০-এর কার্ভিং-এর কাজ সুন্দর। পাহাড় চূড়ায় মন্দিরও হয়েছে গুপ্তযুগে।

উদয়গিরি থেকে ৩ কিমি যেতে বেসনগর। মুসলিমকালে অতীতের বিদিশাই হয় বেসনগর। হিন্দু মন্দিরের উপর গড়া গম্বুজ-কা-মকব্বারা, বিজামগুল মসজিদ, লোহাস্রী রক আজও অতীত কীর্তন করে। তেমনই বসুদেবের মন্দিরটি লোপ পেলেও বেসনগরে রয়েছে পাথরে গড়া (১৪০ খ্রি পূ) মনোলিখিক খাষা বাবা বা হেলিদোরাসের পিলার। দেখতে অশোকস্তম্ভের মতো হলেও আসলে এটি গরুড় স্তম্ভ। বিষ্ণুর নামে উৎসর্গিত। তৈরি এটি বিদিশার রাজা ভগভদ্রের দর-বারে ভকশীলা (পাকিস্তান)-র প্রিন্স রাষ্ট্রদূত দিয়নের পুত্র হেলিদোরাসের। বিদিশার রাজকন্যা মাধবিকা ও প্রিন্স যুবক হেলিদোরাসের প্রেমগাথাও মিলেমিশে রয়েছে খাষা বাবা পিলারের সাথে। এর নিচের অংশ অষ্টকোণী, ওপরের অংশ ষোড়শকোণী—তার উপর বক্রিণ পল তোলা কারুকার্য। আজও অক্ষত এই স্তম্ভে ব্রাহ্মী বর্ণমালায় প্রাকৃত ভাষার লিপি থেকে মেলে হিন্দু ধর্মের পরম ভাগবত নামে হিন্দু দেবতা বসুদেবের (বিষ্ণু) সম্মানে পিলার গড়েন হিন্দুধর্মে আকৃষ্ট বিষ্ণু ভক্ত হেলিদোরাস। ভারতে সিমেন্টের প্রথম ব্যবহারও ঘটে এই পিলারে। তবে, ভূতের পিলারও বলে থাকে প্রেক্ষা খাষা বাবাকে। এরই পাশে ভূতচূড়ে বটগাছ। আজও সোতি শনি ও মঙ্গলবার ভূত ঝাঁড়াতে আসেন স্থানীয়রা। এক তান্ত্রিক গজাল মেরে ভূত গাঁথেন বটগাছে।

তেমনই বিজয়মন্দির বা বিজয়মণ্ডলও উচিত হবে

দেখে নেওয়া। সিস্টের জন্মেরও হাজার বছর আগে শকরাজা উদয়াদিত্যর গড়া মন্দিরের উপর ১৬৮৬তে মোগলসম্রাট ঔরঙ্গজেব মসজিদ গড়েন। কারুকার্যময় মন্দিরটি নতুন করে লোকসমক্ষে আসে ১৯৭১-৭২-এর অতি ব্যুটিতে ধসে পড়তে।

ভূপাল থেকে বিদিশা হয়ে ৯০ কিমি, বারেখ রেল স্টেশন থেকে ৭ কিমি দূরে ভিলসার উত্তরে উদয়পুরেও রয়েছে ১১ শতকের নীলকণ্ঠেশ্বর অর্থাৎ শিবমন্দির। পারমার-রাজদের কালের সুউচ্চ শিখরময় লাল বেলেপাথরের নীলকণ্ঠেশ্বরের কারুকার্যও সুন্দর। গর্ভ গৃহ, সভা মণ্ডপ, প্রবেশ মণ্ডপের সমন্বয়ে ইন্দো-আর্য স্থাপত্য শৈলীর মন্দিরে উদিত সূর্যের কিরণ এসে পড়ে দেবতার মুখে। তেমনই আছে বিজামগুল, শাহী মসজিদ তথা মহল, শের খান-কি-মসজিদ, পিসনারি-কি-মন্দির উদয়পুরে।

অত্যাংসাহীরা সাঁচী থেকে সাগরমুখী ৪১ কিমি উত্তর-পূবে গয়ারাসপুরে ৯-১০ শতকের বিদ্বস্ত প্রাচীন মন্দিরের সুন্দর ভাস্কর্যময় কারুকার্যমণ্ডিত আটখাষা (৮) ও চৌখাষা (৪) পাথুরে পিলার, বিলান, পুকুর ও প্রাসাদের ধ্বংসস্থূপ দেখে নিতে পারেন বাসে-বাসে বা বিদিশাকে বড়ি করে টেম্পো, অটো, টাভায়। আর আছে ১০ শতকের বজরা মঠ ও মালা দেবী মন্দির গয়ারাসপুরে।

চলার পথে সাঁচী থেকে সাগরমুখী ৮২ কিমি দূরে রাহাংগড়ে মধ্যযুগীয় দুর্গ ও প্রহরখণ্ডের দেখে চলা যায়।



সাঁচীতে থাকার খুব একটা দরকার হয় না। ঘট্টা তিনেকে দেখে ফেরা যেতে পারে ভূপালে। প্রাইভেট হোটেল নেই সাঁচীতে। তবে, রেল ও বাস স্ট্যান্ডের কাছে MPDTC-র Travellers L. Sanchi-464661, ☎ (07592) 62723, SAB ২৫০ DAB ৩০০ এপ্রিল থেকে সেপ্টেম্বর মাসে রিবেট মেলে; স্থানের কাছে হয়েছে MPDTC-র Tourist Cafeteria, ☎ 62743, S ২০০ D ২৫০; রেল স্টেশনের পাশে Srilanka Mahabodhi Society RH, থাকার জন্য ভিক্ষু অধিকর্তা, মহাবোধি সোসাইটিকে লিখুন। আর আছে সার্কিট হাউস, অব্: Collector, Raisen; Sanchi RH; PWD RH, অব্: SDO, PWD (B&R), Raisen ও রেলের রিটার্নিং রুম/আর্কাইভ মেলে কাফেটেরিয়ার।

ভীমবেটকা

ভূপাল-ইটারসি-পাচমাড়ী সড়কে ওবেদুনাগঞ্জ পেরুতেই ভীমপুর। ভীমপুর থেকে রেলের লেবেল কলিং পেরিয়ে পূর্বমুখী পথে ৩১ কিমি যেতে পাহাড়ের কোলে রমণীয় পরিবেশে ভোজপুরের ২৮ কিমি দূরে আর ভূপালের ৪০ কিমি দক্ষিণে ভীমবেটকা। বাস ও ট্রেন আসছে ভূপাল থেকে ওবেদুনাগঞ্জ। তবে ইটতে বিষ্ণু যাত্রীদের ওবেদুনাগঞ্জ বাজারে বিশাল অ্যান্ড কোম্পানিতে ১৫০ টাকায় জিপ মেলে ভীমবেটকা বেড়িয়ে ফিরতে। ভূপাল থেকেও জিপ বা গাড়ি মেলে—'পাঁকে টাকার খাতায়'।

বিদ্যাপর্বতের দুরারোহ অধিত্যকায় ২২০০ ফুট উঁচুতে শাল ও টিকে ছাওয়া ভীমবেটকা। ১৯৫৭ খ্রিস্টাব্দে ডি এস ওয়াকানকর আবিষ্কার করেন পাথর কেটে তৈরি ধাপে ধাপে তিনধাপে ৭০০-রও অধিক গুহায় ভারতের প্রাচীনতম মানব-ইতিহাসের শ্রেষ্ঠ প্রত্নতাত্ত্বিক নিদর্শন ভীমবেটকায়। আর ১৯৭১ থেকে ৭৭ খ্রিস্টাব্দে পুরাতাত্ত্বিকদের খননে বিশেষজ্ঞদের রায়ে বিশ্বের আবিষ্কৃত প্রাগৈতিহাসিক মানবদের গুহার মধ্যে ভীমবেটকা অনবদ্য। উপরের ধাপের গুহাগুলি যেমন আকারে বড়—তেমনই সুন্দর ছবিতে অলঙ্কৃত। দীর্ঘকাল ধরে রূপ পেয়েছে এরা। এর কোনো কোনোটি নবপ্রস্তরযুগের বলে রায় দিয়েছেন প্রত্নতাত্ত্বিকেরা। বিষয়বৈচিত্র্য ও অঙ্কন রীতির তারতম্যে ৭ যুগের বলে রায় মিলেছে। প্রতিটা গুহাই লাল-সাদা বা সবুজ-হলুদ রঙের ছবিতে অলঙ্কৃত—গৌর, গণ্ডার, ভান্ডুক, বাঘ, বাইসন, অ্যান্টিলোপস, লিভার্ড, সিংহ, কুমির, ঘোড়া ও হাতিতে সওয়ার ছাড়াও নানান পশু শিকারের দৃশ্য, নৃত্যকলা তথা তদানীতন সমাজজীবন রূপ পেয়েছে। বিশেষ করে B-52, F-15, III C-30, III C-29, C-6, C-12, C-13, C-17, C-9, C-5A অডিটোরিয়াম গুহাগুলির আকর্ষণ অনবীকার্য। C-13-র বিরাটাকার মিথোলজিক্যাল/গৌরাগিক গুহাচিত্রে বৈচিত্র্য আছে। বুল রকে আঁকা সঙ্করজাত এই জন্তুটি সম্ভবত ওদের দেবতা হয়ে থাকবে। প্রকৃতিও সুন্দর ভীমবেটকার।

প্রবাদ, বনবাসকালে পাণ্ডবদেরও আগমন ঘটেছিল এই পাহাড়। বসন্তে ভীম অর্থাৎ ভীম বেটকা। ভীমপুরও নাকি ভীমপুরের নামান্তর। আর রয়েছে পাণ্ডবাস ও বেতোয়া নদী এই দুখণ্ডেই। পর্যটনের সুব্যবস্থা গড়ে উঠলে পরম বিশ্বাস্য ভরা ভীমবেটকায় পর্যটক সমাগম ঘটবে বিপুলহারে। দোকানপাটের অভাব ভীমবেটকায়।

অত্যাশীরা চলার পথে হোসান্নাবাদ থেকে বেতুল পৌছে আরও ৯৭ কিমি বাসে গিয়ে জৈনতীর্থ মুক্তগিরিও দেখে চলতে পারেন। পাহাড় কূঁদে মন্দির হয়েছে—সংখ্যায় ৫২। কার্তিক মাসে মেলা বসে। থাকার জন্য ধরমশালা আছে মুক্তগিরিতে।

পাঁচমাড়ী

পাঁচমাড়ী পাহাড়ের নিকটতম বিমানবন্দর ভূপাল ১৯৫, নাগপুর ২৫৮ কিমি। নিকটতম রেল স্টেশন ৪৭ কিমি দূরে পিয়ারিয়া। এলাহাবাদ/সাতনা/জব্বলপুর-ইটারসি/ভুসায়াল রেলপথে পিয়ারিয়া স্টেশন। হাওড়া-মুর্শাবৈ মেল ভায়া এলাহাবাদ, গোরক্ষপুর/ভাগলপুর/গুয়াহাটি-লালার এক্স, পাটনা-কারলা এক্স, বারানসী-মুর্শাবৈ মহানগরী এক্স, হারভাসা/মজফরপুর-কারলা এক্স, ১ ২ ৩ ৪ ৫ দিন বারানসী-সুরাট তান্ত্রী গঙ্গা এক্স, ২ ৪ ৫ দিন বারানসী-কল্লুলা এক্স, রবিবার পাটনা-সুরাট এক্স পিয়ারিয়া হয়ে যাচ্ছে। আর বাস যাচ্ছে পাঁচমাড়ী থেকে পিয়ারিয়া হয়ে ৫-০০, ৭-০০, ১৫-০০, ১৮-০০টায় ভূপাল; ৭-০০টায় উজ্জয়িন; ১৮-

৩০টায় ইন্দোর; ৮-৩০টায় ইটারসি; এছাড়াও পিয়ারিয়া যাচ্ছে ৭-৩০, ১০-০০, ১১-০০, ১২-৩০, ১৭-০০, ১৮-৩০, ২০-৩০টায়; নাগপুর যাচ্ছে ৭-০০টায়। জিপও যাচ্ছে শেষার পাঁচমাড়ী থেকে পিয়ারিয়ায়।

ভূপাল থেকে

প্রথম দিন শহর বেড়িয়ে পরদিন ট্রেনে/বাসে গিয়ে সাঁচী বেড়িয়ে বিদিশা দেখে বিদিশা থেকে ১৭-৪০র ছত্টিশগড় এক্স, ১৫-৩৮এ পাঞ্জাব মেল, ১১-৩৮এ গোরক্ষপুর-মুর্শাবৈ কুশীনগর এক্স চেপে ১৮-০০, ১৬-৪০, ১২-৪০এ ভূপাল পৌছে ইটারসি চলুন ২০-৪০, ১৮-৩০, ১৪-৫৫য়। ইটারসি থেকে ২ ৪ ৫ ৭ দিন দাদার-ভাগলপুর এক্স ২১-২০ বা প্রতিদিন ২১-৪০-এর দাদার-গোরক্ষপুর এক্স ২২-১৭/২২-৩৭এ পিয়ারিয়াতে পৌছান। এছাড়াও ট্রেন আসছে ইটারসি থেকে—১০-২০এ হাওড়া মেল, ১-৩৫এ ইন্দোর-বিলাসপুর নর্মদা এক্স, ২ ৪ ৫ ৭ দিন ১৮-১০এ ভূপাল-দুর্গ অমরকটক এক্স, ১১-৫৫য় কারলা-পাটনা এক্স, ১৩-০৫এ মুর্শাবৈ-বারানসী মহানগরী এক্স, ১ ৩ ৪ ৬ দিন ১৯-০০টায় কারলা-বারানসী/ফেজাবাদ এক্স, ২ ৭ দিন ০-৪৫এ কারলা-মজফরপুর/হারভাসা এক্স; ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন ১৯-৫৫য় সুরাট-বারানসী/পাটনা তান্ত্রীগঙ্গা এক্স, ৩ ৬ দিন ২১-২০এ দাদার-গুয়াহাটি এক্স, ১ ৩ ৫ ৬ দিন ০-২০এ হাকিবগঞ্জ-রওয়া এক্স, ১৬-০০টায় ইটারসি-বীণা বিজাচল এক্স। আর যাচ্ছে ৩-৩০এ ইটারসি-জব্বলপুর, ১৭-৫৫য় ভুসায়াল-কাটনী, ৮-৪৫এ ইটারসি-এলাহাবাদ প্যাসেঞ্জার পিয়ারিয়া হয়ে। পথের দূরত্ব ৬৭ কিমি, সময় নেয় কম-বেশি ১ ঘণ্টা। ইটারসি-এলাহাবাদ রেলপথেই পিয়ারিয়া। পিয়ারিয়া থেকে সড়কপথে পাঁচমাড়ী চলুন। তবে, বিদিশা থেকে ছত্টিশগড় এক্স চাপা উঠিত হবে। নতুন ইটারসিতে সংযোগকারী ট্রেনের অভাবে রাত কাটতে হয়। রেলের রিটার্নিং রুম ও ওয়েটিং রুম আছে ইটারসি ও পিয়ারিয়াতে। আর আছে Meghdoot H, near Rly Stn, Itarsi, Q 32858, S ১৫০ D ২২৫ A/C/D ৪০০ ও রেল স্টেশনের পিছনে MPTDC-র ৪ ঘরের Tourist Motel, near Rly Stn, Panchmarhi Rd, Pipariya, Q (07576) 22299, DAB ১২৫। PWD-র বাংলো আছে পিয়ারিয়ায়। ২টি করে বাথও মেনে পিয়ারিয়া থেকে হাওড়া মেনে কলকাতার। তবুও সাঁচী/বিদিশা বেড়িয়ে বিদিশা থেকে ১৭-৪০এর ছত্টিশগড় এক্স ১৮-৩৫এ ভূপাল ফিরে ভূপাল থেকে ২৩-০০টার ইন্দোর-বিলাসপুর নর্মদা এক্সে ৬-০৩এ সরাসরি পিয়ারিয়া যাওয়াই সুবিধার। বাসও মেনে ৫-৩০, ১৪-৩০ ও ১৬-৪০এ ভূপাল থেকে পাঁচমাড়ী পাহাড়ের।

পিয়ারিয়া থেকে রাজপথ গিয়েছে সবুজের ওড়না উড়িয়ে প্রথম আধায় সমতল ধরে দ্বিতীয় আধায় পাহাড় বেয়ে ৪৭ কিমি দূরের পাঁচমাড়ীতে। ঘণ্টা দুয়েকের পথ। বাসও যাচ্ছে ৫-৩০, ৭-০০, ১০-১৫, ১২-৩০, ১৬-০০, ১৮-০০, ২০-০০, ২০-৩০ ও ২২-৩০-এ পিয়ারিয়া রেল স্টেশন লাগেয়া বাসস্ট্যান্ড থেকে। ট্যাক্সিও মেনে এপথে। পথশোভা মনোরম। পথও ওঠে ৩৬৬৪ ফুট। একদিকে পাতালপাশী খাদ, অপরদিকে অকালচূরী পাহাড় দুয়েকাল পড়ছে। ঘাট মোড় ওরুতেই লেনুয়া নদীর ডিউ পয়েন্ট। এমনকি, চলার পথে বনচরদের কর্পন লাভও অস্বাভাবিক

নয় এপথে। শহরের ৮ কিমি আগেই অস্বামাতার মন্দির। আর আছে প্রাচীন চিত্রকলায় সমৃদ্ধ মোরারোপে গুহা।

সাতপুরা পর্বতমালায় সাতপুরা জাতীয় উদ্যান তথা পাঁচমাড়ী পাহাড়। দুই পাহাড়ের মাঝে গাঢ় সবুজ অরণ্যে ঘেরা পাঁচমাড়ীর মৌনী, গভীর, ধ্যানমগ্ন প্রাকৃতিক দৃশ্য মুগ্ধ করে। কুলকুল তানে বয়ে চলেছে অসংখ্য পাহাড়ী ঝোরা—জল তার স্বফটিক স্বচ্ছ। তেমনই পাহাড় ভেঙে অরণ্য চিরে আছড়ে পড়ছে ডজনখানেক জলপ্রপাত। পাঁচমাড়ীর আর এক সম্পদ তার প্রাগৈতিহাসিক গুহা। আর পাঁচটা পাহাড়ী শহরের মতো বরফে মোড়া চূড়ো নেই—বাড়িঘরও নেই ঢালে ঢালে পাঁচমাড়ী পাহাড়ে। পাঁচমাড়ী বেড়াবার মনোরম সময় মার্চ থেকে মে আবার অক্টোবর ও নভেম্বর মাস। তবে দশেরা ও সামারে যাত্রীর আধিক্য ঘটে পাঁচমাড়ীতে। MPTDC ৩ 2100/2102-এর মিনি/গাড়িতে বা এককভাবে ৬৫০/৭৫০ টাকায় জিপ নিয়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায় পাঁচমাড়ী পাহাড়। সকাল ৮-০০টায় প্রাইভেট জিপ/জিপসি যাচ্ছে, যাত্রীপিছু ভাড়া ১৫০। তেমনই পয়েন্ট টু পয়েন্ট অর্থাৎ এক থেকে আর এক বিউটি স্পটে যাচ্ছে নানান হারে জিপ। টাঙাও মেলে এপথ পরিক্রমায় শ'দুয়েক টাকায়।

১০৬৭ মি উঁচুতে সাতপুরা পাহাড়ের অধিত্যকায় চিরসবুজে ছাওয়া মধ্য প্রদেশের একমাত্র পাহাড়ী শহর পাঁচমাড়ী। ১৮৫৭তে এলাকার সিপাহী বিদ্রোহ দমনে বেরিয়ে পাঁচমাড়ীর প্রাকৃতিক সৌন্দর্যে মুগ্ধ Capt Forsyth-এর আবিষ্কার ২৩ বর্গ মহিল ব্যাপ্ত রেকাবির মতো পাঁচমাড়ীকে। ১৮৬২তে ফরসিথ এলেন স্যানাটোরিয়ামের ব্রু-প্রিন্ট গড়তে। গড়েও ওঠে স্যানাটোরিয়াম ও হিল রিসর্ট রূপে পাঁচমাড়ী ব্রিটিশেরই হাতে। সেন্ট্রাল প্রভিন্সের গ্রীষ্মাবাসও ছিল ব্রিটিশ ভারতে শান্ত-সুন্দর পাঁচমাড়ীতে। দুই লাল বেলেপাথরের পাহাড় সৌন্দর্য বাড়িয়েছে শহরের। সূর্যোদয়ে ধূপগড় আর সূর্যাস্তে মহাদেব পাহাড়ের নীলচে-লাল আভার প্রতিফলনে রুজ পরে সারা পাঁচমাড়ী পাহাড়। নর্মদা পারের বিষ্ণু পর্বতে এদৃশ্য আরও নরনাভিরাগ। তবে বছরের বেশির ভাগ দিন গোমড়ামুখে মেঘে ঢাকা থাকে পাঁচমাড়ীর আকাশ। প্রাকৃতিক সৌন্দর্যে অনুপম, পাঁচমাড়ীর গর্ব তার ভার্জিন ফরেস্ট। মেঘ আর রোদ্দুর খুনসুটি করে দিনভর। অসংখ্য জলপ্রপাত, বয়ে চলেছে কুলকুল রবে ছোটবড় ঝোরা। গাছে গাছে পাখি কুজন পোনায় দিন-রাত্রি জুড়ে। আর আছে জটাসঙ্কর, সেনানী ব্যারাক, লেক, ন্যাশানাল পার্ক, চিলড্রেন পার্ক, ৫০-এরও অধিক ভিউ পয়েন্ট, পঞ্চপাণ্ডবের গুহা, ১২০০ একর জমিতে গড়া সরকারি উদ্যান, রেস কোর্স, গলফ শিট পাঁচমাড়ী পাহাড়ে। পুরাতাত্ত্বিক সৌন্দর্যের ভাণ্ডারও পাঁচমাড়ী। ৫০০-৮০০ খ্রিস্টাব্দের নানান ছবিতে সমৃদ্ধ মহাবৈষ্ণব গুহা। কোনো কোনোটি ১০০০০ বছরের প্রাচীন। সর্কারী পারে হাঁটা পথ

চলে শাল, সেগুন, আম, জাম, মহুয়া, আমলকী ও বাঁশের গহীন বন বাড়িয়ে। তেমনই ৫০০ প্রজাতির ফাণ্ড ও রয়েছে সাতপুরা অরণ্যে। চেনা-অচেনা নানান ফুলের বর্ণালীও সৌন্দর্য বাড়িয়েছে শহরের। পুরো শহরটাই এখানে পর্ণমোচী বৃক্ষের বাগিচায় রূপ নিয়েছে। বৈচিত্র্য আছে আর পাঁচটা পাহাড়ী শহর থেকে পাঁচমাড়ীর। তবুও যেন পর্বতক কম ১৫ থেকে ১৮ কোটি বছরের প্রাচীন অর্থাৎ ট্রায়াসিক যুগেরও আগের পাঁচমাড়ী পাহাড়ে।

সরকারি উদ্যানের অদূরে পাঁচ মাধি অর্থাৎ পাঁচট কুড়ে, কালে কালে পাঁচ মাধি থেকে পাঁচমাড়ী নামকরণ। কিংবদন্তী, গুহা পাঁচটি পঞ্চপাণ্ডবদের। অজ্ঞাতবাসকালে বৌদ্ধ বিহারধর্মী ছবিতে অলঙ্কৃত এই গুহা পাঁচটিতেই নাকি অবস্থান করে পঞ্চপাণ্ডবেরা। তবে, ভূতাত্ত্বিকরা বলেছেন জৈন বা বৌদ্ধ গুহা এগুলি। গুহা সংলগ্ন নার্সারিটিও সুন্দর। গুহার উপর থেকে বা ৩ কিমি দূরের ল্যান্ডাউন পাহাড় থেকে শহরের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান। শহর থেকে ১৩ কিমি দূরে ভূমিকম্পে ফাটল হয়েছে পাহাড়ে। খাড়া পাহাড়, ৩০০ ফুটেরও অধিক গভীর খাঁদ, বয়ে চলেছে জলধারা। একটা ঢিল ফেলেলে পতনের আওয়াজ মেলে ৭ সেকেন্ড পরে। তবে কিংবদন্তী, সর্প ভয়ে ভক্ত আসা বন্ধ হতে রুগ্ন শিব ত্রিশূল ছুড়ে সাপকে বিধে ফেলেন পাহাড়ে। আর শিবের ক্রোধানলে হুদের জল শুকিয়ে রূপ নেয় রেকাবির, পাহাড় হয় হাঁড়ির মতো অর্থাৎ হাড়ি খো। মৌমাছি থেকে সাবধানতা পালনীয়। চারপাশের নৈসর্গিক শোভা দেখার জন্য অতীতের ফরসিথ পয়েন্ট আজ হয়েছে প্রিয়দর্শিনী পয়েন্ট। ১৮৫৭য় ক্যাপ্টেন ফরসিথ মুগ্ধ হন এই প্রিয়দর্শিনী থেকে পাহাড় দেখে। ১২ কিমি গাড়ির পথে মহাদেব পাহাড়ের সানুদেশে মহাদেব গুহার শিব। জল পড়ছে পাহাড় চুইয়ে। শিবরাত্রি জাঁকালো উৎসব। লক্ষাধিক সাধু আসেন—যাত্রীও আসেন দূর-দুরান্ত থেকে। আকারের তারতম্যে ছোটো ও বড় দুটি গুহা হয়েছে মহাদেবের। এছাড়াও রয়েছে মারাদেও গুহা—নানান গুহার কমপ্লেক্স। খ্রি পূ ১০০০ বছরের প্রাচীন গুহাচিত্রে তদানীন্তন সমাজজীবন পরিস্ফুট। চলার পথে কাগুরিয়া সহ অনুপম ভাস্কর্যে রূপ নিয়েছে পাহাড়। ডাইনে দেবী পার্বতীর গুহা। আরণ্যক পরিবেশ। FRH-ও হয়েছে মহাদেব পাহাড়ে। সামনে গিয়ে পথ গিয়েছে আর এক অভ্যাস্চর্য গুহা গুপ্ত মহাদেবের। একই পাহাড়ের মাঝে ফটিল—অন্ধকারাচ্ছন্ন। ৫০ ফুট অতি সর্কারী পথ, মোমবাতির আলোর এগুতে হয় শরীর বাঁচিয়ে। ৪/৫ জনের অধিক একত্রে প্রবেশ করাও উচিত নয় গুহার। সেবতা শিব। এই পথ ধরে আরও ৪ কিমি পায় যেতে চৌরগাড় পাহাড় শিরে শিবমন্দির। রাজেশ্বরজির অর্থাৎ রাজেশ্বর পাহাড়, সুন্দর সাধারণো বাগিচা। ভারতের প্রথম রাষ্ট্রপতি রাজেন্দ্রপ্রসাদের নামে নাম। শেষ ২ কিমি পায় হেঁটে শহর থেকে ৫ কিমি যেতে

যমুনা জলপ্রপাত বা বী ফলস। জলের ধারা পড়ছে কয়েকশ ফুট নিচুতে—নামতেও হয় ততোমিক। খুবই নির্জন এলাকা।

পাঁচমাড়ী পর্যটকদের কাছে ধূপগড়ের সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তের আকর্ষণও অনবদ্য। শহর থেকে দূরত্ব ১০ কিমি। তবে শেষ ২ কিমিতে ১১০০ ফুট চড়াই ভেঙে উঠতে হয় সাতপুরা পাহাড়ের সর্বোচ্চ শিখর ৪৪২৯ ফুট উঁচু ধূপগড়ে। শাল-মহুয়া-জামের সাথে বাঁশ-আমলকী-হরীতকী-কেন্দুর অরণ্যে চিতা, ভান্দুক, গৌর, লাস্কুর, শব্বরেরা চরে বেড়ায়। তেমনই ময়ূর, ঈগল, শঙ্খচিল ছাড়াও নানান প্রজাতির পক্ষীকুলও কাকলি শোনায় পাহাড়ে। পাঁচমাড়ী পাহাড়ের দৃশ্য সুন্দর দেখায় ধূপগড় থেকে। তেমনই সুন্দর দেখায় সূর্যাস্ত। PWD-র Rest House হয়েছে পাহাড়চূড়ায়। আরণ্যক পথ—পথ বন্ধুরও। জিপও গাড়ি যাচ্ছে ঘুরপথে। MPTDC-র জিপ চূড়ায় ওঠে প্যাকেজ ট্যুরে সূর্যাস্ত দেখাতে।

এবার বাসস্ট্যান্ডের বিপরীতে ২ কিমি দূরে শ'খানেক ফুট নিচুতে জটাশঙ্কর গুহাটিও দেখে নিন। স্ট্যালাগমাইট পাথর এখানে জটীর রূপ নিয়েছে। জটা পেঁচিয়ে বেণীর মতো আকার—নামও তাই জটাশঙ্কর। গুহার মাথায় জলের ধারা পড়ছে। এই ধারা থেকে জন্ম হয়েছে জম্বু দ্বীপ নদীর। জটাশঙ্কর মন্দিরের কাছে হার্পার্স কেভ বা বীণাবাদকের গুহাটিও আর এক দ্রষ্টব্য।

জলপ্রপাতের দেশ পাঁচমাড়ী—জৌলুসে ভরা দৃষ্টিনন্দন ডজনখানেক ফলস বা জলপ্রপাত পাহাড়ে। বেলেভিউ থেকে ভ্রান্ত নীড় মুখী ত্রিধারার ডাচেস ফলসের অপরূপ শোভা দেখতে অসংখ্য সিঁড়ি ভেঙে ৪ কিমি নামতে হয়। আকর্ষণে শিলং পাহাড়কে হার মানায়। আরও ২২ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে যেতে পাহাড়ে ঘেরা সুন্দর এক প্রাকৃতিক জলাশয়—সুন্দর কুণ্ড। সাতপুরা রাষ্ট্রীয় উদ্যানের মাঝে আরণ্যক প্রপাত বী ফলস-এর শোভা দেখতেও নামতে হয় ২ কিমি। তবে, উপরের ভিউ পয়েন্ট থেকেও দেখে নেওয়া যায় বী ফলসের জৌলুস। আর মিলিটারি ব্যারাক পেরিয়ে লিটল ফলস-এর ডাউনফল একান্তই উচিত হবে দেখে নেওয়া। ৩৫০ ফুট উঁচু থেকে নামা বিগ ফলস ছাড়াও ফলস রয়েছে আরও নানান। আর আছে বাস থেকে ১২ কিমি দূরে অঙ্গরা বিহার—শীর্ণা অথচ করতোয়া তটিনী গিয়ে পড়েছে অতলপর্শী খাদে। অঙ্গরার পথে ধুমধামেরে চিত্তবলিতোও বৈচিত্র্য আছে। অঙ্গরা থেকে ১০ মিনিটের পথে রক্ত প্রপাত পাঁচমাড়ীর আর এক রোমাঞ্চ। রক্তের শিরে বিগ ফলস। তেমনই আছে বেশ কয়েকটি কুণ্ড বা জলাশয় পাঁচমাড়ীতে। এদের মধ্যে ফেরারি পুল বা অঙ্গরা বিহার, রীচগড়ে লেডি আইরিন বসুর আবিষ্কার গুহা থেকে বেরিয়ে ঝর্নার মতো ঝরা ঝোরা—আইরিন পুল বা রামকুণ্ড উল্লেখ্য। তেমনই নানানধর্মী উদ্ভিদ ও স্টায় করা জীবজন্তুর সংগ্রহশালা রাষ্ট্রীয় উদ্যানের মিউজিয়ামটিও সুন্দর। ১৮৭৫এ তৈরি ক্রাইস্ট চার্চ, ১৮৯২এ ফ্রেঞ্চ ও আইরিশ

স্থাপত্যে গড়া ক্যাথলিক চার্চের স্থাপত্যশৈলীও অনুপম।

আর উচিত হবে ১৯৮১তে গড়া সাতপুরা ন্যাশানাল পার্কটি বেড়িয়ে নেওয়া। ৫২৪ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত শাল, বাঁশ ও টিকে ছাওয়া গহীন অরণ্যে বাইসন, বাঘ, প্যাংহার, বন্য ভান্দুক, চার শিঙের চিতল ছাড়াও নানান জন্তু চরে বেড়ায়। তেমনই উচিত হবে ১৮৬২তে গড়া পাঁচমাড়ীর প্রাচীনতম বাড়ি বাইসন লঞ্জে পাঁচমাড়ী পাহাড়ের উদ্ভিদ ও জীবজন্তুর মিউজিয়ামটি দেখে নেওয়া।



অন্যান্য পাহাড়ী শহরের মতো যথেষ্ট প্রাইভেট হোটেলের অভাব Panchmarhi, STD : 07578-তে। তবে PWD-র ভারতীয় ও পাশ্চাত্য প্রথায় রয়েছে হোটেল রুক—৪৮ ঘরের New Hotel ও ১২ ঘরের Old Hotel; খাবারও মেলে ক্যান্টিনে। আর রয়েছে বাসস্ট্যান্ড থেকে ৫/৭ মিনিট আগেই শহরে ঢোকান মুখে MPTDC-র ৪০ ঘরের Holiday Homes, ৩ 2099, Single Unit ২২৫ অর্থাৎ ২বেডের ঘর, সঙ্গে বাথ ও রান্নাঘর; Satpura Retreat, B3, ৩ 2097, S ৩৯০, ৬৯০, D ৪৯০, ৬৯০, A/C S ৯৯০, D ৯৯০, কল বুকিং : Linkage ৩ 2465171; Panchvati Cottages, ৩ 2096, B2, ডাবল বেডের কট্টেজ ৫৫০; Panchvati Huts, ৩ 2098, S ৩৫০, D ৪৫০; Amaltus B2, ৩ 2098, SAB ৩৭৫, DAB ৪২৫, ডিলাঞ্জ ৩৯০/৪৯০; D I Bungalow, DAB ১৫০; Prasthal Bungalow, B2; Sahakar Bungalow, ৩ 2098, S ৩৭৫, D ৪২৫; Amrak Bungalow, B2; Rock-End Manor, ৩ 2079, D ১৪৯০, A/C ১৭৯০, অব: ম্যানেজার বা MPTDC, Bhopal. ডর্মি প্রথায় ৫০ বেডের Youth Centre Panchmarhi Club-এও থাকার ব্যবস্থা মেলে; অব: SDO, PWD, Panchmarhi, M P-কে লিখুন। আর রয়েছে বাসস্ট্যান্ডেই ৮ বেড করে ২টি ডর্মিটরি; ব্যবস্থাপনা ভালই। বেশ কিছু প্রাইভেট বাংলোও ভাড়া মেলে; পেরিং গেস্ট হয়েও থাকা যায় পাঁচমাড়ী পাহাড়ে।

T V Relay Centre-এর কাছে পাহাড়চূড়ায় থাকার পক্ষে ভাল SADA-র Neelambar Cottage, DAB ২২৫; SADA-র Nandan Van Cottages, DAB ২০০-২৭৫; SADA-র H Vanasthali.

এছাড়াও আছে সাধারণ সাজে—হোটেল পাঁচমাড়ী, স্বপ্না, কুশল, খালসা, নিউ হোটেল, রুকসা হোটেল, পাঞ্জাব, মহারাজা, কৈলাস, গুপ্তা, তেওয়ারী লজ, রয়্যাল হোটেল, হোটেল মঞ্জুগ্রী, হোটেল সুখনিবাস, হোটেল মাউন্ট, হোটেল পাঁচমহল, হোটেল অভিল্যাস, এদের কাছে S ৮০-১৫০, D ১২৫-২৫০ টাকায় মেলে পাঁচমাড়ীতে তেমনই আছে Sri Gourishankar Bishramalaya, Civil Lines, behind Police Station; Naba Bharat Kutir, DAB ২০০-৩২৫। বাসস্ট্যান্ডেই H Meghdoot, D ১৭৫-২৭৫; অদূরে H Nataraj, D ৩০০-৩৫০ ৪০০ সুইট ৬০০, থাকার পক্ষে ভালই; H Safari, S ১৮০, D ৩০০; H Girishringa, S ১৫০, D ২৫০-৩২৫; তবুও আগেভাগে Holiday Homes-এ বর বুক করে পাঁচমাড়ী যাওয়াই যেন উচিত হবে পর্যটকদের।

জব্বলপুর

আরবি শব্দ জব্বল অর্থ পাথর অর্থাৎ পাথুরে অঞ্চল

জব্বলপুর। বিমতে, মর্যাদা আধাধ্যাপীর ব্রাহ্মী জাবালীর তপস্যাশ্রমে—নামটিও তাই জাবালী থেকে জব্বলপুর।



পাঁচমাড়ী থেকে পিয়ারিয়া ফিরে ট্রেনে জব্বলপুর চলুন নর্মদা নদীর খাতে রঙবেরঙের মর্মর দেখতে। কানহা জাতীয় উদ্যানের সহজতম পথও জব্বলপুর হয়ে। ইটারসি-এলাহাবাদ রেলপথে পিয়ারিয়া ও জব্বলপুরের অবস্থান। পিয়ারিয়ায় আসা প্রতিটি ট্রেনই যাচ্ছে জব্বলপুর। পিয়ারিয়া থেকে দূরত্ব ১৭৮ কিমি, ৩ ঘণ্টার পথ। আর কলকাতার দূরত্ব ১১৮৩ কিমি। 3003 হাওড়া-মুখাই মেল ২০-০০টায় হাওড়া ছেড়ে পরদিন ১০-৪০এ এলাহাবাদ পৌঁছে জব্বলপুর যাচ্ছে ১৭-১৫য়। আর যাচ্ছে 1448 শক্তিপূঞ্জ এক্স ১৪-৩০এ হাওড়া ছেড়ে দুর্গাপুর ১৬-৫০, ধানবাদ ১৯-০০, ডালটনগঞ্জ ৩-৩৫, চোপান ৮-১৫, কাটনি ১০-০০টায় পৌঁছে ১৯-০০টায় জব্বলপুর-এ। জব্বলপুর থেকে কলকাতায় ফেরে ১৪-১০এ হাওড়া মেল, ২৩-৪০এ শক্তিপূঞ্জ এক্স। 2457 দিন ১৬-০০টায় ভূপাল-দুর্গ অমরকটক এক্স, ২৩-০০টায় ইন্দোর-বিলাসপুর নর্মদা এক্স ভূপাল থেকে ইটারসি হয়ে ঘণ্টা ছয়কে জব্বলপুর আসছে সরাসরি। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান অতীতের ইস্ট ইন্ডিয়া রেলওয়ে ও স্টেট ইন্ডিয়ান পেনিনসুলার রেলওয়ের সংযোগস্থল জব্বলপুরে।

জব্বলপুর থেকেই যাচ্ছে—১৪-৩৫এ 1449 মহাকোশল এক্স সাতনা/মানিকপুর/বীসী/আগ্রা ক্যান্ট/মথুরা হয়ে ২০ ঘণ্টায় হজরত নিজামুদ্দিন, ১৫-০০টায় জব্বলপুর ছেড়ে বীণা হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন যাচ্ছে ১৬ই ঘণ্টায় গুণ্ডোয়ানা এক্স; ১৮-৪০এ জব্বলপুর ছেড়ে কাটনি/সাতনা/চিট্রকূট ধাম/কানপুর হয়ে লক্শ্মী যাচ্ছে পরদিন ১০-২০এ 5009 চিট্রকূট এক্স; 1356 দিন দুর্গ-ভূপাল অমরকটক এক্স; 247 দিন পাঁচমাড়ী এক্স, সাতনা হয়ে রেওয়া যাচ্ছে ৭-৩০এ প্যা, ইটারসি যাচ্ছে ৮-৪০ ও ১৮-০০টায় প্যা; ১-৩৭এ ভূসমাল প্যা, নারো গেজে ৪-২৫এ জব্বলপুর ছেড়ে ৯-২০এ নৈনপুর পৌঁছে ১২-৫৫য় গোতিয়া যাচ্ছে সাতপুরা এক্স; প্যাসেঞ্জার যাচ্ছে ৬-২৫ ও ১৮-১৫য় জব্বলপুর ছেড়ে ১০ই ঘণ্টায় গোতিয়া। বিসাপ্তাহিক দাদার-গুয়াহাটি এক্স, ইন্দোর-বিলাসপুর নর্মদা এক্স, 1357 দিন হাবিবগঞ্জ-রেওয়া এক্স, 13 দিন বারাগঙ্গী-চেমাই গঙ্গা কাবেরী এক্স, 46 দিন পাটনা-চেমাই এক্স, 25 দিন বারাগঙ্গী-সেকেন্দ্রাবাদ এক্স, পাটনা-কারলা এক্স, ইটারসি-বীণা বিজ্ঞাচল এক্স, দাদার-গোরক্ষপুর এক্স ছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান জব্বলপুর হয়ে। আর দিল্লী, মুম্বাই ও চেমাই আগত যাত্রীদের ইটারসিতে গাড়ি বদল করে জব্বলপুর চলায় ট্রেনের আধিক্য মেলে।



রেল থেকে ৩ কিমি দূরে বাস স্ট্যান্ড। বাস পথে MP State Road Transport রাজ্যের রাজধানী ভূপাল ৩৩৭, খাজুরাহো ২৭০, গোয়ালিয়র ৪৭৭, কানহা ১৭৫, অমরকটক ২২৪, বিলাসপুর, ইন্দোর, সাতনা, রায়পুর ছাড়াও নানান শহরের সঙ্গে সংযোগ গড়েছে জব্বলপুরের। বাস যাচ্ছে কানহা জাতীয় উদ্যানের প্রবেশ দ্বার কিসলী ৭-০০, ১১-০০টায়; কানহার আর এক প্রবেশদ্বার মুক্কী যাচ্ছে ৯-০০টায়। খাজুরাহো যাচ্ছে ৯-০০টায় ছেড়ে ১১ ঘণ্টায়। তবুও যেন খাজুরাহো যাত্রায় নানান ট্রেনে ৩ ঘণ্টায় সাতনা পৌঁছে বাসে যোগাযোগ সুবিধার। সুদূর বারাণসী, এলাহাবাদ, নাগপুর থেকেও বাস আসছে জব্বলপুরে। তবুও বেশ দূরপাল্লার যাত্রায়

প্রাইভেট ডিলাক্স বাসের যাত্রী হওয়া উচিত হবে। বারিকালীন সার্ভিসেও যাচ্ছে প্রাইভেট বাস।

১০ দিনে বেড়িয়ে আসুন

অমরকটক-বান্দবগড়-জব্বলপুর-কানহা-খাজুরাহো

কলকাতা-মুম্বাই ভায়া নাগপুর ট্রেনে বিলাসপুর পৌঁছান।

১৯-২০এ হাওড়া ছেড়ে ৪০০২ মুম্বাই মেল বিলাসপুর যাচ্ছে পরদিন ৭-১৫য়। বিলাসপুর থেকে ট্রেন যাচ্ছে ৯-০০, ১৩-৪০, ১৭-৪৫, ১৮-২৫, ২১-০০, ২২-৪০এ, বিলাসপুর-কাটনি ব্রড গেজ শাখা লাইনে পেড্রা রোড/অনুপুর/শাহসোল হয়ে। পেড্রা থেকে বাসে অমরকটক। ঘণ্টা চারেকের পথ বিলাসপুর থেকে অমরকটকের। সরাসরি বাসও যাচ্ছে বিলাসপুর থেকে অমরকটকে। আবার ঝড়াপুর থেকেও ট্রেন মেলে পুরী থেকে আসা কলিঙ্গ-উৎকল এক্স—টাটা/চক্রধরপুর/বিলাসপুর/পেড্রা/অনুপুর/শাহসোল/কাটনি/বীসী/গোয়ালিয়র/আগ্রা ক্যান্ট/হজরত নিজামুদ্দিন-এর। ২য় দিনে অমরকটক বেড়িয়ে ৩য় সকালে বাসে শাহসোল বা কাটনি পৌঁছে নতুন করে বাসে টালা অর্থাৎ বান্দবগড় জাতীয় উদ্যান চলুন। ঘণ্টা দশেকের বাসপথ অমরকটক থেকে টালায়। আবার দিনদৌরী/মাওলা হয়ে জব্বলপুর/কানহাতেও চলা যেতে পারে বাসে অমরকটক থেকে। ৪র্থ সকালে বান্দবগড় জাতীয় উদ্যান বেড়িয়ে ১৩-৩০টার বাসে কাটনি পৌঁছে ট্রেন/বাসে জব্বলপুর পৌঁছান রাত নাটায়। ৫য় সকালে চলুন কিসলি অর্থাৎ কানহা জাতীয় উদ্যান দর্শনে। ৬ষ্ঠ সকালে জিপে আর বিকালে হাতি সফরে উদ্যান বেড়িয়ে কিসলিতে রাতের অবস্থান। ৭ম দিন সকালের বাসে মাওলা হয়ে জব্বলপুর পৌঁছান। বিকালে ধুমধার, টোবাত যোগিনী ও মার্বেল রক্স বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে। ৮ম সকালে মাইহার/সাতনা হয়ে বাসেই চলুন খাজুরাহো। ৯ম দিনে খাজুরাহো বেড়িয়ে খাজুরাহো বা সাতনা ফিরে রাতের অবস্থান। ১০ম দিন সাতনা থেকে ট্রেন/বাসে মাইহার বেড়িয়ে মাইহার থেকেই বা সাতনা থেকে ১৭-১৫য় মুম্বাই-হাওড়া মেল বা ২১-৫৫য় শিপ্রা এক্স পরদিন ১৩-১৫/৭-৫৫য় কলকাতা। আবার সাতনা থেকে বাসে বাসে চিট্রকূট বেড়িয়ে মানিকপুর (১৩-৫০এ শিপ্রা/চম্বল এক্স) বা এলাহাবাদ পৌঁছেও ট্রেন ধরা যেতে পারে ঘর পানের। শক্তিপূঞ্জও কলকাতায় ফেরে ২৩-৪০এ জব্বলপুর ছেড়ে চোপান/ডালটনগঞ্জ/ধানবাদ হয়ে ২৯ ঘণ্টায়।



আর IAC-র Vayudoot বিমান সংযোগ গড়েছে দিল্লী, মুম্বাই, রায়পুর, ইন্দোর, গোয়ালিয়র ও ভূপালের সঙ্গে জব্বলপুরের। অফিস বসেছে Vayudoot-এর Hotel Siddhartha, Napier Town-এ।

অতীতের দৌর্য ও শুণ্ড রাজাদের জব্বলপুর ৮-৭৫এ দখল যায় কালচুরী রাজাদের হাতে। আর ১২ শতকে গোণ্ড রাজাদের দখলে যেতে জব্বলপুর হয় গোণ্ড রাজাদের আনন্দ নিকেতন তথা রাজধানী। বারবার মোগলী আক্রমণ প্রতিহত হলেও ১৭৯৯এ মারাঠা দখলে যায় পৌণ্ডয়ানা। আর মারাঠা হঠাৎে ব্রিটিশ সাম্রাজ্যে ১৮১৭য় জব্বলপুরে। আধুনিক শহরের জন্মও ব্রিটিশেরই হাতে সামরিক ও প্রশাসনিক কেন্দ্রস্থল। তবুও বহুমুখী আকর্ষণ রয়েছে জব্বলপুর-এর। আর

পর্যটকদের কাছে জব্বলপুরের মূল আকর্ষণ তাঁর মার্বেল রকস। প্রকৃতিও মুগ্ধ করে যাত্রীদের। লাল পদ্ম ফোটা জলের মাঝে ছোট ছোট পাহাড়ের গ্রানাইট পাথরের নুড়িগুলি দূর থেকে হাতির পাল বলে বিব্রম ঘটায় দর্শকদের। চম্ভালোকে এদৃশ্য প্রভূত আনন্দ বাড়ায়। অতীতের ঠগী *লুটপাট করে হত্যা করত* উৎপাত আজ আর নেই। তবে, বাঙালিয়ানা আছে শহরে। বাঙালির দুর্গাপূজার সঙ্গে রাবী ও দীপাবলী খুবই জাঁকজমকপূর্ণ উৎসব আজকের জব্বলপুরে।

১২৯০ ফুট উঁচু জব্বলপুরের পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য। রাজ্যের দ্বিতীয় বৃহত্তম শহর জব্বলপুর। লাখ নয়েক লোকের বাস। শহর থেকে ২৩ কিমি দূরে পর্যটক প্রিয় মার্বেল রকস। নর্মদা নদীর খাতে যত্রতত্র শতাব্দিক ফুট উঁচু খাড়া পাহাড় উঠেছে ম্যাগনেশিয়াম চূনা পাথরের। শিরা ফুটেছে কালচে সবুজ বা কালো আয়েম শিলায়—চম্ভালোকে শ্বেতমর্মর মনে হবে। সূর্যালোকও বিচ্ছুরিত হয়ে কখনও রূপালি কখনও সবজি-ধূসর রঙে তুণ্ড করে দর্শক নয়ন। কুমিরও আছে ৪০০-৭০০ ফুট গভীর নর্মদার জলে। বাস, টেম্পো, অটো ও ট্যাক্সি যাচ্ছে শহর থেকে ভেরাঘাটে। আর, নভেম্বর থেকে মে মাসে ভেরাঘাট থেকে নর্মদা নদীতে ৩ কিমির জলপথে নৌকায় বসে দেখে নিতে হয় মার্বেল রকস। পঞ্চায়েতের ব্যবস্থাপনায় নৌকা যাচ্ছে জলবিহারে, ৫/১০ প্রতি জন। এককভাবে ৫ জনার নৌকা ৭৫ থেকে।

দু'পাশে পাহাড়—তারই মাঝে নৌকা চলে তরতরিয়ে। পাহাড় যেখানে শেষ হয়েছে, নাম তার মানকিস লিপ। তারই আগে ডানহাতি দঙ্গায়ের মূনির গুহা। মহর্ষি ভৃগুও তপস্যা করেন এখানে। দুই-এর মিলন অর্থাৎ ভেড়া থেকে নাম হয়েছে ভেরাঘাট। তারও আগে এক পাহাড়খণ্ডে ইন্দোরের রানী অহল্যা বাঈয়ের প্রতিষ্ঠিত শিব-মূর্তি। জলস্রোতে ক্ষয়ে ক্ষয়ে গড়া জলপথের হাতির পা ও ঘোড়ার পা পয়েন্টগুলিও আকর্ষণীয়। পূর্ণিমা রাতে ২ ঘণ্টার এই নৌকাবিহার সত্যি মনোহর। রাতে ফ্লাড লাইটে বাহারী রঙের বর্ণালী মার্বেল রকের সৌন্দর্যকে আরও রমণীয় করে তোলে। আর আছে জৈন মন্দির ও কালী মন্দির ভেরাঘাটে।

MPTDC-র Motel Marble Rocks, Bhedaghat, ৩ (0761) 83424, SAB ২৯০ DAB ৩৯০। আর আছে Upper

RH ও Lower RH চেরাঘাটে, অব: SDO, Division No 4, Civil Lines, Jabalpur; H Samdariya ছাড়াও ধরমশালা। লোকানপাটও বসেছে ভেরাঘাটে।

মার্বেল রকের পথে নর্মদার পারে ভেরাঘাটের কাছেই ১০৮ সিঁড়ি বেয়ে পাহাড় চূড়ায় চৌষাট যোগিনী মন্দিরটিও দর্শনীয়। শিলালিপিতে মেলে ১০ শতকে কালচুরিরাজ শিবভক্ত কেমুর বর্ষের গড়া গোলাকার গোলকি মঠে দেবদেবীর সংখ্যা ২৯৮ হলেও মূল দেবতা নন্দীপুটে হরপার্বতী, সূর্যদেব, গণেশও বিষ্ণু উল্লেখ্য। তবে ক্ষয় পেয়ে লয়ের পথে ৯ ছাড়া বাকি দেবতার। দেবী কালীর সহচরীদের ৬৪টি যোগিনী মূর্তিও রয়েছে চত্বরে। যোগিনীরা এসেছেন খাজুরাহো থেকে। জনশ্রুতি, রানী দুর্গাবতী প্রাসাদের সঙ্গেও যোগসূত্র ছিল অতীতে মন্দিরের।

জব্বলপুরের আর এক আকর্ষণ তার জলপ্রপাত। সাধারণ জলপ্রপাতের মতো নয়—পুরো নর্মদা নদী এখানে শ'খানেক ফুট নিচুতে পড়ে দুর্গম বেগে ছুটে চলেছে। অতীব সুন্দর নদীর এই পতন দৃশ্য। পর্যটকমাত্রই মুগ্ধ হন। নর্মদার তীর ধরে মাইল খানেক যেতে এই জলপ্রপাত। ধূমের আকারে জলকণা বাতাসে ওড়ে—নামও তাই ধূমাধার। পথপাশে শতাব্দিক লোকানও বসেছে পাথর ও সাঁকি মাটির পশ্যের। তবে, মান ও দামে সতর্কতা বাঞ্ছনীয়।

শহর থেকে ৭ কিমি দূরে মার্বেল রকসের পথেই গোণ্ড রাজাদের রাজপ্রাসাদ অর্থাৎ মদন মহল দুর্গ তথা প্রাসাদ। বিশাল একখণ্ড গ্রানাইট পাথরের পাহাড়চূড়ায় ১১১৬য় রাজা মদন শাহ-র হাতে তৈরি ঐশ্বর্য নামে নাম। রানী দুর্গাবতীর প্যালেস বলেও এটি খ্যাত। কারুকার্যও আড়ম্বরহীন দুর্গের গবাক্ষ, ছাদ আর অলিন্দে অভিনবত্ব আছে। পাথরের পর পাথর বসিয়ে দেওয়াল হয়েছে দুর্গের। আকবরের সাথে যুদ্ধে পরাজয় নিশ্চিত জেনে শহীদও হন তেজস্বিনী রানী দুর্গাবতী গলায় অঙ্কুশ বিধিয়ে ১৫৬৪ খ্রিস্টাব্দে। পাহাড়ময় ছড়িয়ে ছিটিয়ে প্রাচীন দুর্গপ্রাসাদের নানান ভগ্নাবশেষ আজও মধ্যকালের সাক্ষ্য বহন করছে। দীর্ঘ অতীতে, প্রাক আর্য যুগেও গোণ্ডদের বাস ছিল পাহাড় খণ্ডে। মহল থেকে জব্বলপুর শহর সুন্দর দৃশ্যমান। দুর্গ-পাহাড়ে হাঁটা পথের আর এক আকর্ষণ ব্যালান্সিং রক—যুগ যুগ ধরে একের

১৯৩৩ সনিকাল এ নগর অত্যন্ত উন্নয়ন প্রাপ্ত হইয়াছে। এ পাথর পাথর শিল্পের চাকরানা উদ্রি

**হরর
অমনিবাস** ১০০.০০

সম্পাদনায় : শৈলশেখর মিত্র

**ফ্যানটাসি
অমনিবাস** ১০০.০০

সম্পাদনায় : শৈলশেখর মিত্র

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

পর আর এক পাথরখণ্ডের দাঁড়িয়ে থাকার অভিনবত্ব মুগ্ধ করে। বাস বা ট্যাক্সিতে পাহাড়তলী পৌঁছে পায়ে হেঁটে উঠতে হয়। তেমনই উচিত হবে মার্বেল রকস-এর পথে দুর্গ পেরুতেই মেডিক্যাল কলেজের পাশ দিয়ে গিয়ে আর এক টিলায় পিসান হরি জৈন মন্দিরটি দেখে নেওয়া। আর শহরে দেখুন মতিলাল পার্ক, স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের সংগ্রহশালা রানী দুর্গাবতী মেমোরিয়াল মিউজিয়াম, গোণ্ডরাজা সংগ্রাম শাহর (১৪৮০-১৫৪০) তৈরি সংগ্রাম সাগর, মঙ্গলা দেবীর মন্দির ও বজ্রনামঠ।

চুক্তিতে অটো/ট্যাক্সি নিয়ে ৫/৫/৪ ঘণ্টায় সাক্ষর করা যায় এই সফর, ভাড়া ১৫০/১৭৫/২৫০। তবে, রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরের সিটি বাস স্ট্যান্ড গিয়ে যাত্রী ট্যাক্সি (৭) ধূমধার পৌঁছে জলপ্রপাত দেখে পায়ে পায়ে টোবাট যোগিনী হয়ে মার্বেল রকস বেড়িয়ে রাত ২০-০০টার শেষ বাসে ভেরাঘাট থেকেই ফেরা যেতে পারে শহরে। উচিতও হবে এককভাবে দেখে নেওয়া। MP State Tourist Office (১০—১৭-০০) বসেছে রেল স্টেশনের ১ নম্বর প্লাটফর্মে, ৩ 322111।

শহর থেকে ৯ কিমি দূরে নর্মদা নদীতে তিলওয়ারা ঘাট। হিন্দুদের কাছে অতি পবিত্র, স্নানে পূণ্য হয়। নর্মদা সংলগ্ন তিলভাণ্ডেশ্বর শিব মন্দির। জনশ্রুতি, দেবতা শিব লিঙ্গ অনাদিকাল ধরে তিলে তিলে বেড়ে চলেছেন। নদীর জলে প্রচুর মাছ, খাবার দিলে দর্শন মেলে। গান্ধীজীর চিতাভস্ম এখানেও বিসর্জিত হয় নর্মদায়। সেই স্মৃতিতে গান্ধী স্মারক সংগ্রহশালা বসেছে। পথে পড়ে ত্রিপুরী গ্রাম। ত্রিপুরীও ইতিহাসখ্যাত। সূভাষচন্দ্র বসুর সভাপতিত্বে জাতীয় কংগ্রেসের অধিবেশন হয়েছিল ১৯৩৯এ এই ত্রিপুরীতে। অতীতে শহরও ছিল ত্রিপুরীকে ঘিরে। মহাভারতের উল্লেখ মেলে ত্রিপুরী রাজা Yayahaya-র আখ্যান। অত্যাৎসাহীরা বাগীর বাসে বেড়িয়ে নিতে পারেন।

আবার উৎসাহীরা জব্বলপুর-এলাহাবাদ পথে ৮৪ কিমি গিয়ে রূপনাথ শিব, জব্বলপুর-সাতনা পথে ১৫৭ কিমি গিয়ে মাইহারও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাস বা ট্রেনে জব্বলপুর থেকে।



রেল স্টেশন থেকে ১½ কিমি দূরে নয় ধারা অর্থাৎ *নওদা*। এই Naudra Bridge, Jabalpur-482002, STD: 0761-কে ঘিরে মেলা বসেছে হোটেলের। রিকশা চলেছে এপথে। জ্যোতি সিনেমার বিপরীতে রয়েছে বাজলির H Anand, SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২২৫ FR ২৫০-৩২৫; Rahul H, SAB ৬৫-১০০ DAB ১০০-১৭৫ A/c D ৩০০; Swayam H, SAB ৬৫ DAB ১২৫ A-c S ২০০ D ৩০০; Vijoy L, SCB ৫০ SAB ৭৫ DCB ১০০ DAB ১৭৫ চারবেডের ঘর-২৫০; Wardman H, SAB ৬৫-১২৫ DAB ১০০-২২০। Napier Town-এ H Samrat, Russel Crossing, A16R1B½, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৭৫-২৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০; H Maruti, S ১২৫ D ২০০ A/c S ৩০০ D ৪০০; H Blue Moon, S ১০০ D ১৭৫ থেকে; H Siddhartha, ৩ 27580, S ১৫০ D

২৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০; বাজলি মালিকানার H Roopali, opp I T Commissioner Office-1, ৩ 325568, SAB ২৫০, DAB ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ FR ৪৫০; স্বাক্ষরে *H Ambassador, R1B½, ৩ 21771, SAB ১২৫-২০০, DAB ১৭৫-২৫০ A/c S ৩০০ D ৩৭৫-৪৫০। Sawhney H, SCB ৫০ SAB ৬৫ DCB ১০০ DAB ১২৫ A-c S ২০০ D ৩০০; H Plaza; H Standard, SCB ৫০ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১৫০; H Neelam; Natraj; H Vaishalee, DAB ১২৫-১৭৫; Regal H, SCB ৫০ SAB ৮০-১২০ DCB ১০০ DAB ১৫০-২৫০ A-c D ৩৫০; H Kartik, SCB ৬০ SAB ৮০ DCB ১০০, DAB ১৫০-২০০ A-c D ৩২৫।

বাসস্ট্যান্ডকে ঘিরে Pawar H, SCB ৬০ SAB ৮০-১০০, DCB ১০০ DAB ১৫০-২২৫; H Mayur, SAB ৮০ DAB ১৫০; Janata L; Central L, 849 N Moh-2; Meenakshi L; Arya Niwas. অদূরে H Park, S ৪৫-৮৫ D ৮০-১৫০। আর রয়েছে সারা শহরময়: Saurashtra L; Ajanta L, Tch-2; Modern; Raj H, 1399 G K Pur-1; Punjab Hindu H, C Lines-1; Paradise L. H Maharani, near Municipal Office, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২৭৫।

পাশ্চাত্য প্রথায়: *Ashok H, Wright Town-2, R3, ৩ 22167, S ২২৫-৩২৫ D ৩০০-৪২৫ A-c S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; H Krishna, Napier Town, ৩ 315153, S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ১২৫০; H Samdariya, ৩ 22150, A/c S ৩২৫-৪৫০ D ৪৫০-৮৫০; *H Rishi Regency, Civil Lines, ৩ 321804, A-c S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৫৫০-৭৫০ D ৬৫০-৮৫০ সুইট ১২৫০-১৭৫০; *Jackson's H, C Lines-1, A15R1B7, ৩ 322320, SAB ২২৫ DAB ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮০০ A/c ১০০০। আর আছে MPTDC-র H Kalchuri, Civil Lines, near Rly Stn, ৩ 321491, SAB ২৯০ DAB ৩৯০ A/c S ৫৭৫ D ৬৫০, কল বুকিং: Linkage ৩ 2465171; নগরপালিকা নিগমের হোটেল মহারানী, near Nehru Park; ২টি CH, PWD RH, YMCA, Narmada Club, রেলের রিটার্নিং রুম, রেল স্টেশনের অদূরে রাজা গোবিন্দলাস ধরমশালা, আগরওয়ালা-কোতোয়ালি রোড; বিড়লা-মেডিক্যাল কলেজ; ছাড়াও নানান ধরমশালা জব্বলপুরে।

খাবার হোটেলও নানান জব্বলপুরে। হোটেল আনন্দের বাড়িতে Roopalic-তে নিরাশিষ, যোয়াম হোটেলের Goopa Restaurant-এরও যথেষ্ট প্রশংসা। তেমনই বাসস্ট্যান্ডে Rajbhog Coffee House-এ চায়ের সঙ্গে টা, Indian Coffee House-এ কফির সঙ্গে টফির বাদ নেওয়া যেতে পারে। যথেষ্ট পণ্ডার Yagi Darbar-এরও আহার্যে সুনাম আছে। এছাড়াও চলতে-ফিরতে নানান রেস্তোরাঁ, নানান হোটেল জব্বলপুরে।

মাওলা দুর্গ ও মাওলা ফরেষ্ট

জব্বলপুর থেকে কানহা বাবার পথেই পড়ে মাওলা। জোর ৫-০০টা থেকে ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস। জব্বলপুর থেকে ৯৫ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে, আর কানহা দুর্গ ৭৪ কিমি। মাওলা ফরেষ্ট-এরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। বাইসন, শম্বর, চিত্রল, হরিণ, প্যাহার ও বাঘ প্রচুর সংখ্যায় চরে বেড়ায়

মাণ্ডলায়। বনের মাঝ দিয়েই বয়ে চলেছেন নর্মা। আর রয়েছে শহর থেকে দূরে জঙ্গলে আকীর্ণ ১৭ শতকের গোণ্ড রাজাদের দুর্গ মাণ্ডলায়। ৩ দিকে নর্মা আর চতুর্থ দিক পরিখায় পরিবৃত। মন্দিরও আছে নানান নর্মদার পাড়ে মাণ্ডলার অদূরে। মাণ্ডলা থেকে ১৭ কিমি দূরে রামনগরে নর্মদা নদীর পাড়ে রাজা হির্দে শাহর তৈরি ১৭ শতকের বিখ্যাত ত্রিতল প্রাসাদটিও দর্শনীয়। আর আছে জলপ্রপাত—সহস্রধারা।

ধাকার জন্য বাসল্যাণ্ডে: *Ashoka H. Paradise, Girna L. Nataraj H., Chandan H. R K Hotel, Ekta L.* ছাড়াও সাধারণ হোটেল আছে বেশ কয়েকটি মাণ্ডলাতে। ঘরও মেলে S ৬০-১০০ D ১০০-১৫০ টাকায় মাণ্ডলার হোটেলে। *সার্কিট হাউস* ও *PWD-র রেন্ট হাউস*ও আছে মাণ্ডলায়।

মাণ্ডলা বেড়িয়ে মাণ্ডলা থেকে বাসে ১০৩ কিমি দূরের দিনদৌরী পৌঁছে নতুন করে বাসে ৮৭ কিমি দূরের অমরকটক চলে। ২৮৫ কিমি দূরের জব্বলপুর থেকেও সরাসরি বাস মেলে ৫-০০, ৮-০০, ১০-০০ ও ১১-০০ টায় অমরকটকের। ১০ ঘণ্টার পথ। আর রেল যাচ্ছে ঘুরপথে—জব্বলপুর-কাটনি-শাহদোল-অনুপপুর হয়ে পেন্ড্রা রোডে। তাই বাসই সুবিধার এপথে। আবার মাণ্ডলা থেকে ২৩০ কিমি দূরের বিলাসপুর পৌঁছে ঘর পানোও চলা যেতে পারে।

বিলাসপুর থেকে ৪৮ কিমি দূরে পালি (Pali)-তে কালাচুরী-রাজাদের কালের (১২ শতক) শিব মন্দির, ২৫ কিমি দূরে রতনপুরে কালাচুরী রাজাদের আর এক মন্দির মহামায়া, শিবও বিখ্যস্ত দুর্গ দেখে নিতে পারেন উল্টো সাহীরা। রাজ্যপাটিও বসে কালাচুরী রাজাদের রতনপুরে। ধ্বংসস্তুপ অতীত রোমন্থন করায়।

অমরকটক

মাণ্ডলা বেড়িয়ে দিনদৌরী হয়ে বাসে বাসেই অমরকটক পৌঁছান। আর কলকাতা থেকে নাগপুরগামী ট্রেনে ৭২০ কিমি দূরের বিলাসপুর পৌঁছে বিলাসপুর থেকে কাটনি শাখা রেল যাচ্ছে ৯-০০, ১৩-৩৫, ১৮-৫৫, ১৮-১০, ২১-০০, ২২-৪০এ। বিলাসপুর থেকে পেন্ড্রা রোডের দূরত্ব ১০১ কিমি, প্যােসজার ট্রেনে ২১ ঘণ্টার পথ। তবে, পুরী-হজরত নিজামুদ্দিন গামী ৪৭৭৭ উৎকল-কলিঙ্গ এক্স প্রাণপুর ১-২৫, টাটা ৩-৪৫, চক্রবর্তনপুর ৫-১০, বিলাসপুর ১৩-৩৫এ ছেড়ে পেন্ড্রা যাচ্ছে ১৫-৪৫এ। উৎকল-কলিঙ্গ ঘেরে ১০-১০এ পেন্ড্রা থেকে। আর স্টেশন থেকেই বাস যাচ্ছে ভোর থেকে সন্ধ্যা ২ ঘণ্টার ৪০ কিমি দূরের পূণ্যতীর্থ অমরকটক। পাহাড়ী পথ, পথ বন্ধুরও। *হোটেল সুরভি, হোটেল নর্মা, (1) ৮০-১৫০* ছাড়াও হোটেল আছে নানান পেন্ড্রায়। সরকারি/বেসরকারি বাসও আছে বিলাসপুর থেকে সরাসরি অমরকটক। তবে, চলার পথে এক ঝলকে রেলনগরী বিলাসপুর বেড়িয়ে ট্রেনে পেন্ড্রা পৌঁছে বাসে অমরকটক যাওয়াই উচিত হবে। ডেমনই বিলাসপুর-অমরকটক সড়কে অভ্যুৎসাহীরা বিলাসপুর থেকে বাসে কোটাঘাটও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বাঁধ পড়েছে, জলাধার হয়েছে, চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। ডেমনই বিলাসপুর-অমরকটক সড়কে ৫৫২ বর্গ কিমি জুড়ে শাল ও বাঁশে ছাওয়া অরণ্যভূমি Achankamar WLS-তে বাঘ, তিতাবাঘ, গঁড়, ভান্ডুক, বরাহ, হরিণ ছাড়াও নানান প্রাণী

বাস। বিলাসপুর থেকে ৬০ কিমি দূরে আচানকমার চেকপোস্ট, ১০ কিমি যেতে ছাপরোয়া; আরও ২০ কিমি গিয়ে লামনি স্যাঙ্কচুয়ারী—চেকপোস্ট বসেছে। লামনি থেকে ৩৫ কিমি দূরে অমরকটক। বাস যাচ্ছে অরণ্য চিরে জাতীয় সড়ক ধরে বিলাসপুর-কোটা-আচানকমার-ছাপরোয়া-লামনি-অমরকটক। মাঝে মাঝে গ্রাম আচানকমারে—বৈগা, গোপ, ওরাও উপজাতিদের বাস। চলার পথে বন্যজন্তু দর্শনের সাথে আদিবাসীদের দেবতা বৃক্ষরূপী শাল মহিলাই সেও আর এক দর্শন। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *লামনি ফরেস্ট বাংলোয়* আচানকমারে। সুপারিন্টেন্ডেন্ট, Achankamar W L Sanctuary, Kota, Kargi Rd, Dist-Bilaspur, M P থেকে। আহার্য নিজে ব্যবহার।

ট্রেন যাচ্ছে বিলাসপুর-ইন্দোর, বিলাসপুর-ভূপাল, সম্বলপুর-হজরত নিজামুদ্দিন মিসাপ্তাহিক হীরাবুদ এক্স, দুর্গ-বারাগানী এক্স শাখা লাইন ধরে। এই রেলপথেই পড়ে অমরকটকের তিন রেল সংযোগকারী স্টেশন পেন্ড্রা রোড ৪৩, অনুপপুর ৭৩, শাহদোল ১০৬ থেকে। বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে তিন রেল স্টেশনের সঙ্গে অমরকটকের। আবার মুখাই ভায়া এলাহাবাদ রেল সাতনা থেকে ৯৮ কিমি পেরিয়ে কাটনি পৌঁছেও পেন্ড্রা যাওয়া চলে। এপথের দূরত্ব ১০৯২+২১৭ = ১৩০৯ কিমি কলকাতা থেকে। বাস যাচ্ছে ৫-০০, ৬-০০, ৮-০০, ১৪-৩০ টায় অমরকটক থেকে জব্বলপুরের। এমনকি বিলাসপুর-এলাহাবাদ, রায়পুর-এলাহাবাদ নৈশ বাসও আছে অমরকটক হয়ে। চিত্রকুটেরও বাস মেলে অমরকটক থেকে।

বিস্ময়পূর্ণতের সর্বোচ্চশিখর ১০৬৫ মি উঁচু মেখল পাহাড়ে অমরকটক এক পূণ্য-হিন্দুতীর্থ। পুরাণ, মহাভারত, রামায়ণেও এর মাহাত্ম্যের কথা বর্ণিত হয়েছে। মার্কণ্ডেয় পুরাণে মেলে—সত্যযুগে দেবতা ও অসুরের যুদ্ধে *অমরাগাং কুট* অর্থাৎ হাজার দেব দেহের বিনাশ ঘটে। যুদ্ধের রক্তপাতে অমরনালায় সৃষ্টি। আর অমরাগাং কুট থেকে নাম হয় অমরকটক। আবার কালিদাসের মেঘদূতমে আশ্বকুট নামে উল্লিখিত হয়েছে অমরকটক। ধরে-ধরে পাহাড়, শালে ছাওয়া আরণ্যক পরিবেশ। বয়ে চলেছেন নর্মা নদী। প্রাকৃতিক দৃশ্য মনোরম। এমনকি মহাকবি কালিদাসের মেঘদূতও আশ্বগাছে ছাওয়া আশ্বকুট তথা অমরকটকের অনুপম সৌন্দর্য প্রাণ্ডি পেয়েছে। যুগ যুগ ধরে দেব-ঋষিদের সান্নিধ্যে মহিমাষিত হয়েছে এই পূণ্যতীর্থ। বাস স্ট্যান্ড রেখে বাজার পেরুকেই প্রাচীরে ঘেরা ২৭টি মন্দিরের টেম্পল কমপ্লেক্স অমরকটকের মুখ্য আকর্ষণ। ফুট তিনেক উঁচু কষ্টিপাথরে মূর্তি হয়েছে নর্মা মাদ্রি-এর মূল মন্দিরে। এক হাতে কমণ্ডলু, অপর হাতে বরাভয়। বিপরীতে দেবতা নর্মদেশ্বর অমরনাথ। বেণুবনে বাস তাই বেণেশ্বর মহাদেবও বলে থাকে একে। আর রয়েছেন শঙ্কর ও নর্মদার খুলমূর্তি উভয় মন্দিরে। মন্দিরের সামনে ছোট্ট হাতি। পাথরের হাতির পিঠে মুণ্ডহীন যাত্রী। জনশ্রুতি, হাতির চার পায়ের সর্দীর্ণ ফৌকর দিয়ে সাষ্টাঙ্গে গলে গেলে নিম্পাপের পরীক্ষায় উত্তীর্ণ। যাচাই করে নিন নিজেকে। এছাড়াও রয়েছেন মনশা, কার্তিকেয়, গৌরক্ষনাথ, রোহিণী, পার্বতী, বালাসুন্দরী, স্রীদুর্গা ঋষ মন্দিরে। চতুর্ভুজ দেবতাও রয়েছেন মন্দিরে। এসেই মাঝে মাঝে

থাপে সিঁড়ি নেমেছে এগারো কোণের মার্কেণ্ডেয় কুণ্ড তথা কোটিতীর্থে। বামে ছোট কুণ্ড—নর্মদার উল্লেখ। লাগোয়া বৃহৎ কুণ্ডে স্নানের ব্যবস্থা। মন্দিরও হয়েছে ছড়িয়ে ছিটিয়ে সারা কুণ্ডময়। প্রবাদ, তপস্বী মহাদেবের পা থেকে দেবী নর্মদার আবির্ভাব। সেই দেবীরই ঘর্মবিন্দু পশ্চিমবাহিনী এই নর্মদা নদী। ছোট কুণ্ডই তার উৎস। স্নানান্তে পূজা দিন নর্মদা মায়ের। মেখল পাহাড় থেকে সৃষ্টি, তাই মেখল কন্যাও বলে থাকে লোকে নর্মদাকে। শিবচতুর্দশী ও নাগপঞ্চমী সাড়ম্বরে পালিত হয় অমরকণ্টকে। যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে—আসেন সাধু-সন্তের দল উৎসবে। বর্ষা (জুন)র মধ্যভাগে থেকে সেপ্টেম্বর) এড়িয়ে বছরভর চলা গেলেও গ্রীষ্মে (মার্চ-জুন) তাপমান থাকে ৩৮-১৬° আর শীতে (অক্টোবর-ফেব্রুয়ারি) ২৫-৪° সেলসিয়াসে।

এখানেই শেষ নয় অমরকণ্টক, পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়—কপিলধারা, কপিলাশ্রম, দুগ্ধধারা, কৈলাস আশ্রম, মাই কি বাগিয়া, সোনমুড়া, চবুতরা। অটো, জিপ ও টাঙা যাচ্ছে ১৫০/২০০/১০০ টাকায় অমরকণ্টক দর্শনে। যাত্রীর আধিক্যে শেয়ারেও যাচ্ছে এরা।

বিড়লা মাইনস-এর পথ ধরে ৭ কিমি যেতে কপিলধারা। পুরো পথ অলস্কে এসে শ'দুয়েক ফুট নিচে সশব্দে আছড়ে পড়ছে পুণ্যতোয়া নর্মদা। খুবই সুন্দর এ পরিবেশ। নেহরুর চিতাভঙ্গ এখানেও বিসর্জিত হয়। সেই স্মৃতিতে নেহরু চবুতরা নামেও প্রসিদ্ধি আছে। আর রয়েছে কমণ্ডলুর মতো দেখতে গুহামুখী মহর্ষি ভৃগুর তপস্যাক্ষেত্র ভৃগু কমণ্ডলু। সেতু পেরুতেই কপিলমুনির আশ্রমের সামনে থেকে শবানেক সিঁড়ি ভেঙে কপিলাশ্রম। বামে কপিলধারা আর ডাইনে পথ গিয়েছে দুগ্ধধারার। ২ ফার্নে যেতে আবার বাঁপিয়ে পড়ছে নর্মদা দুগ্ধধারায়। স্নানও করবে নেওয়া যায় দুগ্ধধারার প্রপাতে। ঋষি দুর্বাসার গুহাও ছিল অতীতে প্রপাতের কাছে। দুগ্ধধারা পেরুতেই নর্মদা আবার অদৃশ্য হয়েছে পাহাড়ের বাকি। ১৩০৬ কিমি পরিক্রমা সেরে বিলীন হয়েছে গুজরাটের ভৃগুকক্ষে ক্যাম্বে উপসাগরে নর্মদা।

দ্বিতীয় পরিক্রমায় রত্নমহল মন্দিরের পিছনে বামহাতি পথে ১২ কিমি যেতে সোনমুড়া—সোন নদীর উৎস। ছোট কুণ্ড, নিথর নিস্তব্ধ জল। সামনে ভিউ পয়েন্ট, বয়ে চলেছে সোন নদী—জনশ্রুতি, শিব-তনয়া নর্মদার সাথে সোন নদের বিয়ে। সোনের পৌরুষে মুগ্ধ নর্মদার সহচরী নর্মদার রূপ ধরে হাজির হন বিয়ের বাসরে। দেখে শুনে অভিমানে ফেটে পড়ে ছুটে থাকে নর্মদা। কপিলমুনি প্রবোধ দেন কন্যাকে। কপিলমুনির বাধা উপেক্ষা করে এই কপিল ধারায় পাথরের উপর বাঁপিয়ে পড়ে ছুটে চলে পশ্চিমে নর্মদা। একথা পাঁচ কান হতে বিয়ে যায় ভেঙে। শোকে-দুঃখে সোনও চলতে থাকে উত্তরে। আর হয়েছে সোনমুড়া থেকে ফেরার পথে তান্ত্রিক মন্দির তথা ১০৮ মন্দিরের টেম্পল কমপ্লেক্স গুপ্তসেবানন্দের আশ্রমে। স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে অভিনবত্ব আছে। দূরে বহুদূরে দিগন্তবিস্তৃত পাহাড়শ্রেণী। পথেই পড়ে

পঞ্চমুখী গায়ত্রী মন্দির অর্থাৎ মার্কেণ্ডোয়াশ্রম। শঙ্করাচার্যর উপাস্য দেবতা পঞ্চমুখী শিবও রয়েছেন মন্দিরে। নানান মুনি-ঋষিও এসেছেন পুরাণ বিস্তৃত মার্কেণ্ডেয় ঋষির এই আশ্রমে। ফেরার কালে আরণ্যক পথ ধরে মাই কি বাগিয়া মন্দিরটিও দেখে নেওয়া যায়। প্রবেশপথে হনুমান মন্দির। চলতে-ফিরতে হনু থেকে সতর্কতা দরকার। লাগোয়া মাই কি বাগিয়া অর্থাৎ সুন্দর বাগিচার মাঝে দেবী দুর্গার মন্দির। পিছনে কৈলাস আশ্রম—শিবমন্দির। এখানকার এক সাধু গুগ্ধাবলি (গুগ্ধ) থেকে আরক করে চক্ষু-পীড়ার নিরাময় ঘটান। টাঙা যাচ্ছে মন্দিরের পিছু দিয়ে সীতারাম আশ্রম বরাবর ১২ কিমি পথে। আর রয়েছে শহরে চুকবার মুখে ৫ কিমি আগেই কবীর চবুতরা। বাসপথের কবীর গেট থেকে পথ নেমেছে—সমস্ত কবীর-এর সিদ্ধিস্থান, ছোট মন্দির; পাদুকা রয়েছে কবীরের।



প্রাইভেট হোটেলের অভাব অমরকণ্টকে। শহরে চুকতেই মণির থেকে ১২ কিমি আগেই হয়েছে SADA-র Tourist Cottage, DAB ১৫৫; অব্: Special Area Development Authority (SADA), Amarkantak, MP, PC-484886. এসেরই Sonamura GH D ১০০। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে অনুচ্চ টিলার চক্রে—সার্কিট হাউস, অব্: Collector, Shahdol; লাগোয়া PWD-র রেস্ট হাউস, অব্: SDO, PWD, Anuppur, MP. আর হয়েছে MPTDC-র Tourist Bungalow, Kapildhara Rd, ৫ 448, S ১২৫ D ১৫৫; এসেরই Holiday Home, ৫ 416, D ২৯০, A/c 8৯০; Prince Cottage D ১৫০; Sreerun T.L; Narmada L, SCB ৮০ ১০৫ DCB ১২৫ ১৫০। ধর্মশালাও আছে নানান—Ramkrishna Mandir, Kalyan Sava Ashram, Barphani Ashram, Rumbai, Gayatri, Ahalyabai, Kathari (opp Temple), Sree Gopal Ashram, Birju Seth, SADA Dharamshala, Kotnawali, Sitarumbai. গুরুনানক গুরদ্বারা ছাড়াও নানান অমরকণ্টকে। মন্দিরের ডাইনে-বামে ২ কিমির মধ্যে অবস্থান এদের।

বিলাসপুর/পেড়া পথে এসে অমরকণ্টক বেড়িয়ে সকাল ৮-১০টার বাসে শাহদোল চলুন। শাহদোল থেকে ১৩-৩০ বা ১৫-৩০টার বাসে উমারিয়া/কটনি হয়ে টালা পৌছান। ঘণ্টা আটকের পথ অমরকণ্টক থেকে টালা। টালা বাস স্ট্যান্ডেই বসেছে বাছবগড় জাতীয় উদ্যানের প্রবেশ তোরণ।

অত্যাশ্রয়ী উমারিয়া থেকে মেখল পাহাড়ের পাদদেশ জুড়ে ভ্যালেনটাইন বলের পদাঙ্ক অনুসরণ করে উদুকা, পাটপুরিয়ার মালভূমি, অমৃতধারা, চিলকা, কোড়িয়া-গড়ের গহীন অরণ্যে বাঘ-দেবতাকেও দেখে চলতে পারেন। তেমনই শাহদোল থেকে ৪ কিমি দূরে খাজুরাহোর আদলে গড়া সোহাগপুর বিরাটেশ্বর শিবমন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। থাকারও ব্যবস্থা মেলে হোটেল, রেস্ট হাউস ও সার্কিট হাউসে শাহদোল/ উমারিয়া/ কটনিতে।

বাছবগড় জাতীয় উদ্যান

বিলাসপুর-কটনি শাখা রেলের ত্রিমুখী ডিন রেল স্টেশন

শাহসোল ৬৭, উমারিয়া ৩৫, কটনির ১০২ কিমি দূরে শাহসোল জেলায় শাহসোল-সাতনা সড়কে টালা টালাতেই বসেছে বান্ধবগড় জাতীয় উদ্যানের প্রবেশভোরণ। বাস আসছে রেল সংযোগকারী তিন স্টেশন থেকেই। বাস আসছে প্রতি সকালে ১২০ কিমি দূরের সাতনা থেকেও ঘণ্টা চারেক সাতনা-উমারিয়া পথের টালায়। কলকাতা যাত্রীদের সরাসরি যাত্রায় ৩০০৩ মুম্বাই মেল ভায়া একলাহাবা ট্রেনে সাতনা বা কটনি পৌঁছে বাসে চলায় সুবিধা। আর জব্বলপুরের দূরত্ব ১৬৪, কানহা ২৫৭, খাজুরাহো ২১০, দিনদৌরী ৯৮, অমরকটক ১৭৩ কিমি। নিকটতম বিমানবন্দর জব্বলপুর।

শাল, বাঁশ, আমলকী, মহুয়া, কেশু, বহেড়ায় ছাওয়া ৪৪০ থেকে ৮১১ মি উঁচুতে শাহসোল জেলায় বিষ্ণুপর্বতের অধিত্যকার ৪৪৮ বর্গকিমি ব্যাপ্ত বান্ধবগড় জাতীয় উদ্যান। চারপাশে ঘন গাড়েই অনুচ্চ পাহাড়। অতীতে রেওয়া রাজাদের শিকারগড় অর্থাৎ মুগয়াভূমি ছিল ৪৪১ মি উঁচু টালায়। স্বাধীনও ছিল সেকালে রেওয়া রাজ্য। জনশ্রুতি, মহারাজা ভেক্টরমর সিং ১৯১৪য় ১১১টি বাঘ মেরে রেকর্ড গড়েন। স্বাধীনোত্তর ভারতে ১৯৪৭এ একীভূত হয় তদানীন্তন বিষ্ণু প্রদেশের সঙ্গে রেওয়া। উৎসাহীরা সাতনা থেকে বাসে ৪৫ কিমি দূরের জেলা শহর রেওয়া বেড়িয়ে নিতে পারেন। রেওয়ারও প্রশস্তি সাদা বাঘের জন্য। আর আছে রানীমহল, নাচমহল, প্রাসাদোপম দুর্গ ছাড়াও নানান মন্দির রেওয়ায়। হোটেল চন্দ্রালোক ছাড়াও হোটেল আছে নানান রেওয়ায়। রেওয়া-উমারিয়া বাস যাচ্ছে ৪৫ ঘণ্টায় টালা তথা বান্ধবগড় হয়ে। রেওয়া থেকে ১৯ কিমি দূরে NH 7-এ বিষ্ণু রাষ্ট্রের সামার ক্যাপিটাল গোবিন্দগড়ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। এমনকি ১৯৫১য় ভারতে প্রথম সাদা বাঘ (মোহন) ধরা পড়ে এই বান্ধবগড়ের গোবিন্দগড়ে। সেই থেকে আমৃত্যু দুর্গাকার গোবিন্দগড় প্রাসাদে বাসও করে মোহন। লেকের পাড়ের রাজপ্রাসাদে আজ পুলিশ ট্রেনিং স্কুল ও মিউজিয়ম বসেছে। লেকের দ্বীপেও প্রাসাদ হয়েছে। তবে, সাধারণের কাছে দ্বার রুদ্ধ দ্বীপ প্রাসাদের। থাকার কোনো হোটেল নেই গোবিন্দগড়ে। গোবিন্দগড় দেখে ১৯ কিমি দূরের রেওয়া বা ১২৩ কিমি দূরের বান্ধবগড় চলন বাসে। কালে কালে বিষ্ণু হয় মধ্য প্রদেশ। আর জাতীয় উদ্যানের শিরোপা পরেছে ১৯৬৮র ২৩শে মার্চ ১০৫ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত বান্ধবগড়। ১৯৮২তে আয়তন বেড়ে আকার নেয় ৪৪৮ বর্গকিমি। আর ১৯৯৪এ টাইগার রিজার্ভ হয়েছে বান্ধবগড়। ২২ ধর্মী স্তন্যপায়ী, ২৫০ প্রজাতির পাখি, নানানধর্মী সরীসৃপ দেখতে মেলে বান্ধবগড় জাতীয় উদ্যানে। গহন বন, গহীন জঙ্গল, ঘন ঘাস—মাঝ দিয়ে বয়ে চলেছে চরণগঙ্গা নদী। বোহেরা অর্থাৎ জলাশয়ও হয়েছে নানান। গ্রীষ্মের দাবদাহে বাঘেরা আসে জল খেতে। গতি এদের অবধি, মহারাজাদের মুগয়াও বন্ধ হয়েছে; অবধি আরা আজ।

১৯৮২র সেনসাস মতে ২২টি বাঘ, ১১ গৌর, ১৩৮ নীলগাই, ৪০৩ শব্বর, ১১০৫ চিতল, ২২২ বন্য শুয়োর,

চিহ্নারা, চিতাবাঘ, প্যাওয়ার, অজস্র বার্কিং ডিয়ার ছাড়াও নানান প্রজাতির হরিণ, ভাসুক, হায়নার সঙ্গে বিবিধ বন্যপ্রাণীর বাস বান্ধবগড় জাতীয় উদ্যানে। আয়তনে ছোট হলেও ভারতে বাঘ (৪০) ছাড়াও বন্যজন্তু দর্শনে বান্ধবগড় অনন্য। ভারতে বাঘের ঘনত্বও বান্ধবগড়ে বেশি। বিচিত্র সব পক্ষীকুলেরও আবাসভূমি এই বান্ধবগড়। হরিয়াল, ছাই রঙা ও সাদা-কালো ধনেশ, ফুলটুপি, চন্দনা, মুধরাজ আরও কত রকম-সকম পাখির কলতানে মুখর হয়ে থাকে বনভূমি। মিষ্টি সুরেলা গানে জলসা বসায় দোয়েল, টিয়া, কেশরাজ, পাগিয়া, বেনেবৌ, বসন্তবৌরী, হরবোলা। পক্ষী দর্শনার্থীদের উচিত হবে প্রত্যাখ্য বা সঁঝে বন অভিসারে চলা।

তবে, সাদা বাঘ আজ অমিল হলেও অল্প আয়াসে দেখে নেওয়া যায় নানান জন্তু বান্ধবগড়ে। গ্রীষ্মকাল বনচর দর্শনের মনোরম সময়। গ্রীষ্মে তাপমান থাকে ৪২°, শীতে নামে ৪°সেন্টিগ্রেডে; বৃষ্টির গড় ১১৭৩ মিমি। প্রত্যাখ্যে জিপ যাচ্ছে বন বিহারে MPTDC-র White Tiger Lodge থেকে, কিমি প্রতি ভাড়া ৯। ১০৫ বর্গকিমিতে দর্শকের গতি অব্যাহ হলেও ১৮ থেকে ৩৭ কিমির সফরে দেখে নেওয়া যায় বনচরদের। আর বিকালে হাতি যাচ্ছে বনদপ্তরের। ৪ যাত্রীর হাতি ঘণ্টা প্রতি ৫০ প্রতি জনা। তবে সময়ের মাপকাঠি নয়, বাঘের দর্শন মিললে নজরানা দিতে হয়। বাঘ দর্শনার্থীদের উচিতও হবে হাতির পিঠে সওয়ার হওয়া। বেশ কয়েকটি অবজারভেটরি টাওয়ারও হয়েছে জন্তু দেখার জন্য। ভদ্রশীলা এদের মধ্যে উল্লেখ্য। নভেম্বর ১ থেকে জুন ৩০ খোলা থাকে বান্ধবগড়। তবুও যেন ভেতর থেকে মে মাস জন্তু দেখার মনোরম সময়। প্রবেশমূল্যও লাগে—বাড়ি, গাড়ি ও ক্যামেরা ভেদে ভিন্ন ভিন্ন। ৩০ টাকায় গাইড সঙ্গে নেওয়া বাধ্যতামূলক।

আর আছে দুরারোহ এক পাহাড় শিরে (৮১১ মি) ২০০০ বছরের প্রাচীন দুর্গ, মন্দির, বেশ কিছু গুহা, চরণগঙ্গার উৎস-কুণ্ড বান্ধবগড়ে। দেবতা বিষ্ণুর ৩৫ ফু দীর্ঘ শায়িত মূর্তিও রয়েছে—পেছনে ঝরনা নামছে পাহাড় থেকে। সাধারণ সফরে দুর্গ অচ্ছিন্ন, তাই দুর্গ দর্শনার্থীদের উচিত হবে টাইগার লজের ম্যানেজারকে বলে জিপ বুক করে নেওয়া। পর্যটক সমাগম কম ঘটলেও পশু ও পক্ষী-প্রেমিকদের স্বর্গ বান্ধবগড় বিশেষী পর্যটকদের অতি প্রিয়।



থাকার জন্য ৪৪০ মি উঁচু টালা বাস স্ট্যাণ্ডেই রয়েছে প্রাইভেট মালিকানায অতি সাধারণ Tiger L, DCB ১৫০; H Baghela, Nalore Resort, বিপরীতে PWD-র বাসো। বাংলার মুকি: Divisional Engineer, PWD-Umaria, Shahdol, M. P. লাগোয়া Maharaja's L-এ থাকি-বাওয়া-অনিয়ার দেখা মিলিয়ে প্রতি জনা ১৮০০। বাস থেকে ৭-১০ মিনিটে পথ মপ্টড-র বন MPTDC-র White Tiger Forest L, Bandhavgarh NP, Tala, ☎ (07653) 65308, SAB ৩৯০ DAB ৪৯০ A/c S ৫৯০ D ৬৯০; আর আছে তাঁবু, দু'জনার

৮০। আহার্য মেলে লজের ক্যান্টিনে। *Tourist Forest Rest House*-ও বসেছে টালা বাস সড়কে। থাকার পক্ষে *হোয়াইট টাইগার ফরেস্ট লজ*টি রমণীয়। উচিতও হবে অগ্রিম বুক করে পায়ে পায়ে পৌঁছে যাওয়া।

বান্ধবগড় দর্শনান্তে বাসে কানহা পৌঁছে ট্রেনে জব্বলপুর চলুন। উৎসাহীরা চলার পথে কানহা থেকে কনমচাও সঙ্গী করতে পারেন। বাস যাচ্ছে টালা থেকে ৯-০০, ১৫-৩০ ও ১৬-০০টায় ছেড়ে ৩½ ঘণ্টায় কানহা। সাতনা যাচ্ছে ১০-৩০ ও ১৩-৩০টায়। উমারিয়া যাচ্ছে ৮-৩০, ৯-০০, ৯-৩০, ১২-৩০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৫-০০, ১৯-৩০টায়।

কানহা জাতীয় উদ্যান

বন্যজন্তু দেখার জন্য জব্বলপুর থেকে সকাল ৭-০০ বা ১১-০০টার বাসে কিসলি অর্থাৎ কানহা জাতীয় উদ্যান চলুন। দূরত্ব ১৬৫ কিমি, ৬½ ঘণ্টার পথ। জাতীয় উদ্যানের প্রবেশ তোরণ কিসলিতে বাসের চলা শেষ। পরদিন জানোয়ার দর্শনে প্রত্যুষ থেকে সকাল ১০-০০টায় রাজ্য পর্যটনের জিপে আর বিকাল ১৬-০০টা থেকে সূর্যাস্তে বন দপ্তরের হাতিতে চলা যায় উদ্যান অন্দরে। ছয় যাত্রীর জিপের ভাড়া কিমি প্রতি ৯, চার যাত্রীর হাতি ঘণ্টা প্রতি ৫০ প্রতি জনা, গাইড ৫০ টাকায় বাধ্যতামূলক। আর লাগে টিকিট—১০ হারে। জন্তু দেখার জন্য হাতি আদরণীয় হবে। তেমনই মাছত আবদুল সাবিরের হাতির সওয়ার হওয়ায় জানোয়ার দর্শনে প্রেস মার্ক মেলে। সূর্যাস্তে দ্বার বন্ধ হয় জাতীয় উদ্যানের। আবার নিজস্ব বাসেও চলা যেতে পারে অরণ্য অভিসারে। তবে, মান ভেদে টোল লাগে যান ও ক্যামেরার। প্রবেশ তোরণ বসেছে কানহা জাতীয় উদ্যানের আরও এক—কিসলির অপর প্রান্তে উদ্যানপথে ৩২ কিমি দূরে মুক্কীতে। বাস আসছে মালাজখণ্ডের জব্বলপুর থেকে ৯-০০টায় ছেড়ে মাণ্ডল/মোতিনালা হয়ে ২০৩ কিমি দূরের মুক্কী। আর বিলাসপুর ১৩২, রায়পুর ২১৩, বালানিচ ৮৮ কিমি দূরে মুক্কী থেকে। তবে ব্যবস্থাপনায় কিসলির আয়োজন ব্যাপক।

বন আর বন্যজন্তু দেখার জন্যে ভারতীয় সংরক্ষিত জাতীয় উদ্যানগুলির মধ্যে কানহা অন্যতম। বৈচিত্র্যের সাথে সংখ্যাধিক্যও ঘটেছে বনচরদের কানহায়। ২২ খণ্ডী স্তন্যপায়ী জীবের বাস এশিয়ার অন্যতম সুন্দর কানহায়। ১৯৩০এর ২৫০ বর্গকিমি ব্যাপ্ত হাম্রোল ও ৩০০ বর্গকিমির বানজারা দুইয়ে মিলে রূপ নেয় কানহা সংরক্ষিত বনাঞ্চল-এ। ১৯৫২য় স্যাক্সারিয়ার আর ১৯৫৫য় ৪৫০ থেকে ৯৫০ মি উচুতে মেখল পাহাড়ে ২৫০ বর্গকিমি জুড়ে শাল, বাঁশ, বহেরায় ছাওয়া গহন অরণ্যনীরে গড়ে ওঠে কানহা জাতীয় উদ্যান। ১৯৬২ ও ৭০এ প্রসার পেয়ে আয়তন আঁজ ১৯৪৫ বর্গকিমি। তবে কোর এলাকা কানহার ৯৪০ বর্গ কিমি। আর এই কোর এলাকা জুড়ে ১৯৭৪-এ গড়ে উঠেছে কানহা টাইগার রিজার্ভ। বয়ে চলেছে বানজার নদী। খেমিডা হাসের

বনরাস্তায় জিপ চলে অরণ্য ফুঁড়ে কানহায়। বাঘ, চিতাবাঘের জন্য কানহা উদ্যানের প্রশস্তি। হরিণের রকমভেদ সেও কানহার উল্লেখ্য। চিতলের অধিকাংশ ঘটেছে। তেমনই বিচিত্র কারুকর্মযুক্ত ৬+৬=১২ শিঙের অপরাপ সৌন্দর্যের বারশিঙ্গা হরিণ কানহার আর এক আকর্ষণ। তেমনই চলতে-ফিরতে পেশম তুলে পথ রোধ করে ঝাঁকে ঝাঁকে ময়ূর। ১৯৮৮র শুমারী মতে ১০০ বাঘ, ৬২ চিতাবাঘ, ১৮৫৩ শব্বর, ১৭০০০ চিতল, ৫৪৭ বারশিঙ্গা, ৬৭১ গউর ছাড়াও প্যাছার, চিক্কারা, হায়না, ব্লাক বাক, লাসুর, বার্কিং ডিম্মার, জলা হরিণ, চার শিঙের কৃষ্ণসার হরিণ, জংলি কুকুর, শূকর ছাড়াও নানান জন্তুর বাস। তেমনই দোয়েল, খঞ্জনা, বুলবুলি, সোনাবউ, হাঁড়িটাচা, বসন্তবোরি, কোকিল, পাগিয়া, ভীমরাজ, দুধরাজ, তিতির ছাড়াও দ্বিশতাধিক প্রজাতির পাখির সঙ্গে সারস, শকুনি, ঝুঁটিওয়ালা ঈগল পরিবেশকে মধুময় করে তুলেছে। বিশ্বের সরীসৃপ— চিত্তি, কেউটে, বেত আচড়া, চন্দ্রবোড়া, শীখামুটি আবাস গড়েছে কানহায়। বেড়াবার মরসুম নভেম্বর থেকে জুন হলেও ডিসেম্বর থেকে মার্চ মনোরম। উচিতও হবে প্রভুষ বা সাঁঝে হাতির পিঠে বা হুড খোলা জিপসিতে যাত্রী হয়ে জানোয়ার দর্শনে এলিফ্যান্ট ট্রাকিং ধরে অরণ্য অভিসারে চলা। গ্রীষ্মের সকাল ও বিকালে বাঘের দর্শন মেলা সহজ হয়—নাহিহে আসে জলাশয়ে তৃষ্ণার্ত বাঘেরা। ভালুকেরাও গ্রীষ্মের বিকালে মথুরার মৌতাতে বেরয়। তেমনই চলতে-ফিরতে যথেষ্ট সতর্কতাও দরকার—চিতাও ওৎ পেতে বসে থাকে গাছের শাখে শিকারের খোঁজে। তবুও যেন আকর্ষণে অনন্য সূর্যাস্তের সঙ্গে নানান জন্তু দেখার জন্য বামনী দাদার সানসেট পয়েন্ট। তাপমান গ্রীষ্মে ৪২-২৪° আর শীতে ২৪-১° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। জানুয়ারি-ফেব্রুয়ারি মাসে সূর্য থাকতে যথেষ্ট গরম। দিনের শেষে সূর্যাস্তে শীত নামে ঝুপ করে, তাপমান ০° তেও নেমে থাকে অহরহ। বর্ষায়, জুলাই ১ থেকে অক্টোবর ৩১ দ্বার বন্ধ থাকে কানহা জাতীয় উদ্যানের। ব্যাঙ্ক পৌছায়নি, দোকান পাটও নেই কানহায়। তাই উচিত হবে জব্বলপুর থেকে প্রস্তুতি নিয়ে কানহায় চলা। সরাসরি যাত্রায় হাওড়া-মুন্ডাই মেলে বিলাসপুর পৌঁছে SH 26 ধরে মুক্কী হয়ে কানহা চলায় সময়ে সাশ্রয় মেলে।

কানহার নবতম সংযোজন U S National Park Service ও Indian Centre for Environment Education-এর যৌথ উদ্যোগে ৩টি Visitor Centre অর্থাৎ প্রদর্শনশালা (৭—১০-৩০ ও ১৬—১৮-০০ টায় খোলা) Khatia, Mukki ও Kanha-য়। কানহার আটোতের রেন্ট হাউসে ৫টি গ্যালারীতে প্রদর্শন ছাড়াও রিসার্চ হল হয়েছে। তেমনই ইংরেজি ও হিন্দী ধারাভাষ্য *Light & Sound Show* অর্থাৎ গাছছায়ে *Encounters in the dark* দেখে নেওয়া একাডমি উচিত হবে যাত্রীদের। আর Film Show দেখার ব্যবস্থা মেলে কেবল খাটিয়ার।

প্যাকেজ ট্যুরে M P Temptations

অক্টোবর থেকে মে মাসে প্যাকেজ ট্যুরে মধ্য প্রদেশ ভ্রমণে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে ভারতের নানান শহর থেকে M P Tourism। যাত্রার ত-ধাকা-খাওয়া সবকিছু নিয়ে এদের প্যাকেজ। ব্যবস্থাপনা প্রশাসনীয়।

(১) ১৪ রাত ১৫ দিনের Magical Fortnight ট্যুরে কলকাতা ও মুম্বাই থেকে যাচ্ছে—Satna-Khajuraho-Orchha-Gwalior-Shivpuri-Ujjain-Indore-Mandu-Bhopal-Sanchi-Bhimbetka-Panchmarhi-Jabalpur দেখাতে। এ ট্যুরের ভাড়া: একক ঘরে ৮৬৯৯ ডাবল বেডের ঘরে শেষেরে ৬৮৮৯ শিশু (৫-১২ বছরের) ৫৮৯৯ টাকা।

(২) ৭ রাত ৮ দিনে কলকাতা/মুম্বাই থেকে ৫২১২/৪৪৯২/৩৭১৯ টাকায় Satpura to Malwa প্যাকেজে Panchmarhi-Bhimbetka-Bhopur-Bhopal-Sanchi-Ujjain-Mandu-Omkarewar-Maheswar-Indore বেড়িয়ে আনে।

(৩) ৬ রাত ৭ দিনে কলকাতা থেকে Call of the Wild প্যাকেজে Satna-Bandhavgarh-Kanha-Jabalpur-Marble Rocks দেখিয়ে আনে ৪৪৭৯/৩৭৭৯/৩০২৯ টাকায়।

(৪) ৬ রাত ৭ দিনে দিল্লী/মুম্বাই/কলকাতা থেকে ৪১৫৯/৩৭৮৯/৩১৪৯ টাকায় Call of the Wild অর্থাৎ Satna-Bandhavgarh-Kanha-Jabalpur বেড়িয়ে আনে।

(৫) ৬ রাত ৭ দিনে ৫২০৯/৪২৬৯/৩৮৮৯ টাকায় কলকাতা/মুম্বাই থেকে Down Memory Lane ট্যুরে যাচ্ছে—Satna-Khajuraho-Orchha-Shivpuri-Gwalior।

(৬) ৪ রাত ৭ দিনে কলকাতা থেকে ৪০৮৯/৩৬০৯/৩৩০৯ টাকায় Temple N Tiger ট্যুরে যাচ্ছে—Satna-Bandhavgarh- Amarkantak-Bilaspur।

(৭) ৪ রাত ৫ দিনের সফরে কলকাতা/দিল্লী/মুম্বাই থেকে Khajuraho Dance Festival দেখাতে (Feb-March) যাচ্ছে ৩০৮৯/২৫৭৯/২২০৯ টাকায়।

(৮) ১৩ রাত ১৪ দিনে ৫৫০৯/৪৪৮৯ টাকায় কলকাতা/মুম্বাই থেকে Enchanting Fortnight ট্যুরে Satna-Khajuraho-Bandhavgarh-Jabalpur-Panchmarhi-Bhopal-Bhimvetka-Bhopur-Ujjain-Mandu-Indore বেড়িয়ে আনে।

(৯) ২ রাত ৩ দিনে দিল্লী থেকে Medieval Tour-এ Orchha-Khajuraho-Ujjain যাচ্ছে।

(১০) ২ রাত ৩ দিনে দিল্লী থেকে Jhansi-Orchha-Shivpuri-Gwalior বেড়িয়ে আনে।

(১১) আমোদবাদের থেকেও নানান ধর্মী ট্যুরে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে M P Tourism মধ্য প্রদেশ দেখাতে।

M P Tourism Development Corpn,
Gangotri, T T Nagar, Bhopal-462003,
☎ (0753) 553006, Fax: 0755-552384.
Chitrakoot, Room No 7, 6th floor,
230A, A J C Bose Rd, Calcutta-700020,
☎ (033)2475855/2478543, Fax: 2475855.
204-205, 2nd Floor, Kanishka Shopping Plaza,
19 Ashoka Road, New Delhi-110001,

☎ (011)3321187 (Ext 277), Fax (011) 3327264.

74 World Trade Centre, Cuffe Parade, Colaba, Mumbai-400005, ☎ (022) 2187603, Fax (022) 2160614.

G-3, Hemkoot Complex, opp Capital Commercial Centre, Ashram Road, Ahmedabad-380009, ☎ (079)6420395.

তেমনই পর্যটন মানচিত্রে অনুমিত মুক্কী থেকে বিলাসপুরের পথে কাণ্ডওয়ার্থার আগেই ডানহাতী পথে ১৬ কিমি গিয়ে একাদশ শতকের মন্দির ছত্তিশগড়ের খাজুরাহো উচিত হবে দেখে নেওয়া। ভাস্কর্যময় পাথরে তৈরি মন্দিরে আদিবাসীদের দেবতা ভোরামদেও তথা শিব উপাসা দেবতা। অলঙ্করণে কামের প্রাধান্য। মন্দিরের পাশে দেবোৎসী তালগাও। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান। বিলাসপুরের দূরত্ব ১১৪ কিমি। আর রায়পুর ১১৭ কিমি কাণ্ডওয়ার্থা থেকে।



কিসলিতে প্রাইভেট হোটেলে নেই। থাকার জন্য কিসলি বাস স্ট্যাণ্ডে আছে MPTDC-র Baghira Log Huts, Kisli, Kanha NP, SAB ৪৯০ DAB ৫৪০; ডর্মি প্রথাও ৩ ঘরে ২৪ বেডের Tourist Hostel-এ ভেজ মিল সহ প্রতিজনা ১৯০; অব: ৫০% টাকা অগ্রিম পাঠিয়ে MPTDC, Gangotri, T T Nagar, Bhopal-462003 বা New Delhi: 2nd floor, Kanishka Shopping Plaza, 19 Ashok Rd, ☎ 3321187 বা Mumbai: 74 World Trade Centre, Cuffe Parade, Colaba বা Calcutta: Room 7, 6th floor, Chitrakoot, 230A, A J C Bose Rd, ☎ 2478543 বা ম্যানোজারদের ১০ দিন আগেই লিখুন। চলার পথে জব্বলপুর রেল স্টেশনে MP State Tourist Office-এও (ছুটি ছাড়া ১০ থেকে ৪ দিন আগে) বুকিং-এর ব্যবস্থা মেলে। আর আছে Forest R H কিসলিতে। আহার্য MPTDC-র ক্যান্টিন ও লগ হাউসের রেস্টুরেন্টে। কিসলির ৩ কিমি আগেই বাস সড়কের খাটিয়াতে আছে MPTDC-র অভিনব Jungle Camp, S ১৮০ D ৩৫৫; ভেজ আহার্য নিয়ে এদের রেষ্ট। থাকার পক্ষে ভালই। জিপও মেলে অরণ্য সফরের খাটিয়ায়। আর কিসলি থেকে ৭ কিমি অরণ্য অঙ্গরে কানহাতে আছে FRH, তবে, সম্প্রতি FRH-এর দ্বার রুদ্ধ।

আর আছে প্রাইভেট মালিকানায খাটিয়ায় সাধারণ মানের Machan Complex, D ৩২৫ ডর্মি বেড ৬০; Chandan Restaurant, S ১২৫ D ২০০; Motel Chandan, D ২২৫-৩০০। খাটিয়া রেখে জব্বলপুর মুক্কী Kipling Camp. এদের চার্জ থাক-আহার্য-বাস সহ প্রতিজনা ১৮০০; বুকিং: Tollygunj Club, 120 Deshapran Shasmal Rd, Calcutta-33. আরও ১ কিমি দূরে Indian Adventures, এদেরও চার্জ থাক-খাওয়া-বাস সহ প্রতিজনা ১৫০০; বুকিং: Indian Adventures, 257 SV Rd, Bandra, Mumbai-400050, ☎ 6422925 বা Chadha Travels, Jackson Hotel, Civil Lines, Jabalpur.

আর মুক্কীতে আছে Kanha Safari L. Kanha N P, PO-Mukki, Tah- Baihar, Dist- Balaghat, M P-481111, ☎ (07632) 56323, AP প্রথায় থাক-খাওয়া-জব্বলপুর সফারি জুড়ে ২৫০০ প্রতিজনা। একই ঘরে ৭২০ অভিরিক্তে একজনের ব্যবস্থা মেলে। প্রবেশ ভোজন থেকে ১ কিমি গিয়ে বাস সড়কে ছোট নদী

বানজারার কোল খেঁবে MPTDC-র *Kanha Safari L, Mukki-481111, SAB ৩৫০ DAB ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬২৫*; কল বুকিং : Linkage ০ 2465171. আর আছে *H Channan*—ডব্লি প্রথায় থাকা।



নিকটতম রেল স্টেশন দক্ষিণ-পূর্ব রেলের নৈনপুর-মাওলা ন্যারোগেজ রেলপথের Chiraidongri. তবে, হাওড়া-মুন্সাই ভায়া এলাহাবাদ রেলের জব্বলপুর হয়ে বাসে যাওয়াই সুবিধার। ৭-০০ ও ১১-০০টায় বাস যাচ্ছে জব্বলপুর থেকে মাওলা/খাটোয়া হয়ে ৬½ ঘণ্টায় কিসলি। আর কিসলি থেকে ৮-০০ ও ১৪-০০টায় ফেরে জব্বলপুরের বাস। মুন্সাইর বাস যাচ্ছে ৯-০০টায় জব্বলপুর ছেড়ে মাওলা/বৈহার হয়ে ৭½ ঘণ্টায়। তেমনই বিলাসপুর থেকে মাওলাগামী বাসে ১৬৭ কিমি দূরের বৈহারে নেমে ট্রাক বা জিপে ১৫ কিমি দূরের মুন্সাই চলা যেতে পারে। নিকটতম বিমান জব্বলপুর ১৬৯, নাগপুর ৩৩০ কিমি। আর মাওলা হয়ে বাস যাচ্ছে রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের নানান দিকে। বাস যাচ্ছে হাওড়া-মুন্সাই ভায়া নাগপুর রেলের বিলাসপুর, রায়পুর ও নাগপুরে মাওলা থেকে। তাই গৃহভিত্তিক মুন্সাইরা কানহা বেড়িয়ে ৭৪ কিমি দূরের মাওলা পৌছে মাওলা থেকে ২৩০ কিমি দূরের বিলাসপুর গিয়ে ১৯-১০এ মুন্সাই-হাওড়া মেল, ৩-১০এ গীতাঞ্জলী এক্স, ০-৩০এ কারলা-হাওড়া এক্স, ১৫-১৫য় আমোদাবাদ-হাওড়া এক্স, ১৩-০৫এ কলিঙ্গ উৎকল এক্সে চলা যেতে পারে ঘর পানে। এপথে কানহা থেকে কলকাতার দূরত্ব (৭৪+২৩০+৭২০) ১০২৪ কিমি।

চিরাগোট জলপ্রপাত ওয়ালটোয়ার অংশে

শিরপুর

মহানদীর পাড়ে রায়পুর থেকে ৭৭ কিমি বাসে গিয়ে অতীতের দক্ষিণ কোশল রাজদের রাজধানী বেড়িয়ে ফেরা যায়। ৬ থেকে ১০ শতকে বৌদ্ধপীঠ রূপে প্রসিদ্ধি ছিল শিরপুরের। এমনকি ৭ শতকে চীনা পরিব্রাজক হিউয়েন

সাঙ আসেন শিরপুরে। খননে সেকালের দুটি বৌদ্ধ মন্দিরও আবিষ্কৃত হয়েছে শিরপুরে। তবে অতীতের জৌলুস আজ লোপ পেয়েছে। আবার রায়পুর থেকে ৪৮ কিমি দূরে মহানদীর তীরে ওড়িশা সীমান্তের রাজীমও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। বাস যাচ্ছে। মহাকোশল স্থাপত্যে গড়া রাজীবলোচন অর্থাৎ বিষ্ণু মন্দিরের জন্য রাজীমের প্রসিদ্ধি।

ভিলাই

১৯৫৫ খ্রিস্টাব্দের ২রা ফেব্রুয়ারি তদানীন্তন রুশ সরকারের সহযোগিতায় ভারতীয় ইম্পাত শিল্পের দ্বিতীয় কারখানাটি গড়ে উঠতে শুরু করে ভিলাই-এ। সেদিনের ভিলাই ছিল এক অখ্যাত গ্রাম। আর আজ ভিলাই বিশ্ববন্দিত। ১৯৫৯ খ্রিস্টাব্দের ১২ই অক্টোবর উৎপাদন শুরু হয় ভিলাই-তে। গড়ে উঠেছে নতুন এক দুনিয়া— ইম্পাত কারখানা আর তার পরিকল্পিত শহর ভিলাই-তে। নাগপুর হয়ে মুন্সাইগামী ট্রেনে বসেও ভিলাই-এর শিল্প-সৌন্দর্য উপভোগ করে নেওয়া যায়। কলকাতা থেকে দূরত্ব ৮৫৪ কিমি। মুন্সাই যাবার কালে রায়পুরের ২২ কিমি পরে ভিলাই। বামদিকে পড়ে ইম্পাত কারখানা। তবে, ভিলাই যাত্রীদের ৬ কিমি দূরের দুর্গ-এ নামায় যাতায়াতে সুবিধা। কম করে ১ সপ্তাহ আগে General Manager বা P R O-কে লিখে ইম্পাত কারখানা দেখার ব্যবস্থাও মেলে।



Bhilai-490010, STD - 07742এ থাকার জন্য আছে *Ashoka Caterers & Hoteliers—Bhilai H, Sector 10, Bhilai-10, R8B8, SAB ৪৫০ DAB ৬৫০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০*; *Bhilai House, Durg-491002, R3B2, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০*; *Kwality Hoteliers; C H; R H* আর আছে *Dixit L, Vijay L, Tripti L, Samrat H* ছাড়াও নানান দুর্গ-এ।

Malayalam for Tourists : Selected Phrases

| | | | |
|----------------------|-----------------------|---------------------|--------------------------|
| Please come here | Dayavayi ivide varika | | manassilakunnu |
| Please wait a moment | Dayavayi kathunilku | I do not understand | Enikke manassilakunnilla |
| Please sit down | Dayavayi irikku | | |
| What is your name? | Ningalude pere | Shall I take leave | Poivarette? |
| | enthane? | of you? | Enikke |
| I am fine | Enikke sukham anc | Where can I get? | evidaennukittum? |
| Thank you | Nandi | | Gnan avide |
| Don't mention it | Saramilla | How do I get there? | engane pokum? |
| What is that? | Athe yenthane? | | Enikke..pokanam |
| I dont know | Enikke arinjukuda | I want to go to... | Enikke..venam |
| I understand | Enikke | I need | |

Greetings

| | |
|----------------|--------------------|
| Good morning | |
| Good night | Namasthe (General) |
| Goodbye | Pojivaruka |
| How do you do? | Sukhamano? |

রাজস্থান

রাজপুতদের দেশ রাজস্থান। শৌর্য আর বীর্যে ভরা এর আকাশ-বাতাস। এর বাতাসে যেমন মীরাবাদিরে ভজন, ঠিক তেমনই শোনা যায় রানাদের অস্ত্রের ঝনঝনি সারা রাজস্থানে। রাজপুতদের বীরত্বে গাথা রাজস্থানের ইতিহাস। তবে, সে আজ ইতিহাসই বটে। বাগ্না রাও, রানা কুন্ত, রানা প্রতাপ, ভীমসিংহ আজ আর নেই। তেমনই ধাত্রীপান্নার প্রভুপুরের জীবন বাঁচাতে ঘাতকের হাতে নিজ পুত্রকে সঁপে দেওয়া সেও এক ইতিহাস সৃষ্টি। তেমনই তাদের কীর্তিকলাপ সারা রাজস্থানের মাটিতে। সর্বশক্তি দিয়ে প্রতিরোধ গড়েও পতন যখন অবশ্যজ্ঞাবী পুরুষেরা জাফরানী রঙয়ের গাউন পরে প্রাণ দিয়েছে পতঙ্গের মতো যুদ্ধে ব্যাপিয়ে। আর মেয়েরা জ্বর অর্থাৎ জ্বলন্ত অমিতে আত্মাহুতি দিয়েছে নিজেকে। আর আছে প্রাসাদের পর প্রাসাদ—গড়ে ওঠে নানান রানার হাতে। স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের নিপুণতা পর্যটকদের কাছে স্বপ্নময় মনে হবে। রাজস্থানের অন্যতম আকর্ষণও প্রাসাদ তথা দুর্গের যাদুপুরী। প্রত্যেকেই যেন প্রত্যেকের থেকে বেশি সুন্দর। তবে, আজকের রাজস্থান আমাদের কাছে অধিকতর পরিচিত তার সুরথার বৈষয়িক বৃদ্ধির জন্য।

হোট হোট এলাকা নিয়ে রাজ্য ছিল এক-এক রানা অর্থাৎ রাজার—অতীতকালে। স্বাধীনচেতা এরা—প্রত্যেকেই এরা স্বাধীন। ১০০০ বছর ধরে রানাদের হাতে দখলও থাকে এলাকার। তবে, রানার-রানায় মিত্রতার অভাব। সেই দুর্বলতায় বহিঃশত্রুর আক্রমণও ঘটে বারবার। আলাউদ্দিন খিলজির আক্রমণ সে তো আজ কিংবদন্তী। আসে মোগল, পরে পরে ব্রিটিশও আসে রাজস্থানের মাটিতে। মিত্রতার সূত্রে রানাদের হাতে স্বাধীনতা ছেড়ে রাজপুতানা গড়ে ব্রিটিশ। পরোক্ষে দখল কয়েম করে উপমহাদেশের অর্থনীতিতে মোগলী পন্থায় ব্রিটিশরাজ।

বিংশ শতাব্দীর গোড়া থেকেই ব্রিটিশকে তুটু করতে বিলাস আর ব্যসনে মগ্ন হয়ে পড়েন রানারা। প্রতিদ্বন্দ্বিতায় পেয়ে বসে পরস্পর পরস্পরে। আমির-উমরাসহ দেশ-দেশান্তরে ভ্রমণ, পোলো খেলা, ঘোড়ার রেসে রাজকোষে অনটন দেখা দেয়। আর স্বাধীনোত্তর কালে ভারত রাষ্ট্রের কাছ থেকে ভাতা পেয়ে নিজস্ব স্বকীয়তা বজায় রাখতে মিত্রতা গড়ে ভারতের সাথে রানারা। তবে, অন্ধরজনহীন দীনতন প্রজ্ঞা সাধারণ সার্বিক প্রত্যাশা থেকে বঞ্চিত সারা রাজস্থানে। আর ১৯৭০এ শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধীর বলিষ্ঠ পদক্ষেপে প্রাক্তন আজমের রাজ্যের সাথে রাজপুতানার ২২টি দেশীয় রাজ্য জুড়ে দীর্ঘ ৮ বছর ধরে গড়ে ওঠে ভারতের বিত্তীয় বৃহত্তম রাজ্য রাজস্থান। রাজ্যের সঙ্গে ভাতা 'দোশে' আর্থিক সঙ্কট বাড়ে মহারানাদের। সঙ্কট দূরীকরণে

কেউবা মিউজিয়াম গড়লেন প্রাসাদপুরে, আবার হোটেলও খুললেন নানান রানা—নিজ নিজ বাসভূমে।

রাজস্থানে রয়েছে আরাবী পর্বত, আর আবু পাহাড় তার বিউটি স্পট। ১৭২৭ মি উঁচু শুক শিখর সর্বোচ্চ শৃঙ্গ রাজস্থানে। আর উত্তর-পশ্চিমে সোনার কেন্দ্রা—জয়সলমীর ব্যারিকেড গড়েছে বিস্তীর্ণ মরু অঞ্চল থরকে। তারও উত্তর-পশ্চিমে পাকিস্তান। মরুর জাহাজ উটেরাই একমাত্র যান এই থর মরু এলাকায়। তেমনই মরুতে মৌড়া কিংবদন্তীর শহর পিছোলার জলে খোয়া উদয়পুর ইতিহাস গড়েছে রাজস্থানে। রাজস্থানে আজ নানান জাতির বাস। অতীতের ভীল আর মীনা সম্প্রদায়ের সঙ্গে ব্রাহ্মণ, জাঠ, গুজর, মেওয়ারটিস, গাদরা, লোহার, প্যাটেল এবং অহিল জাতির লোক রয়েছে মিলেমিশে। কথিত আছে, রাজপুতরা রামায়ণ ও মহাভারতখ্যাত আর্যবংশীয় ডথা সূর্য ও চন্দ্র বংশোদ্ভূত। রাজস্থানের হাতের কাজেরও প্রশস্তি আজ সারা বিশ্বময়। হাড়ের কাঁজ, ব্রাসের কাজের জন্য শুধু জয়পুর নয় সারা রাজস্থানই খ্যাত। তেমনই যোধপুরের রকমারি বাহারী জুতো পর্যটকদের আকর্ষণ করে।

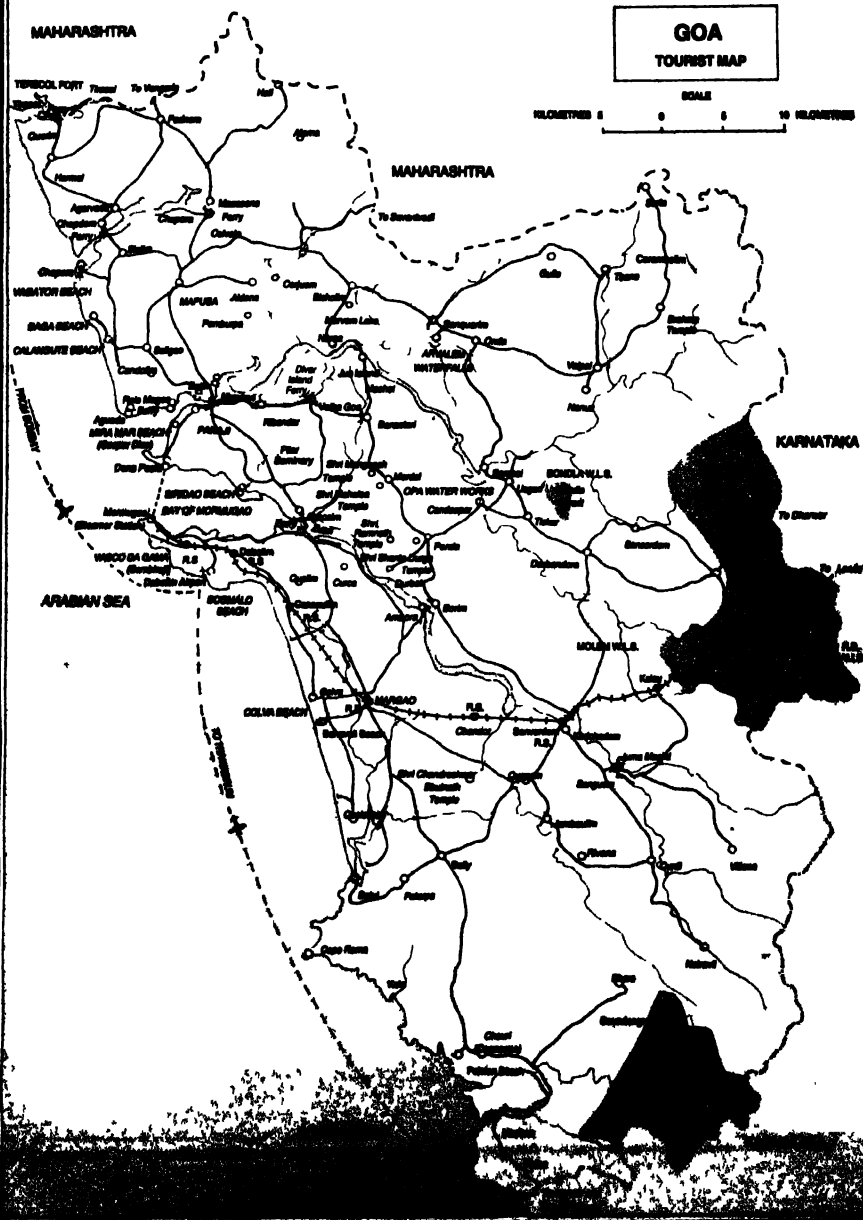
এদের বেশভূষাও বৈচিত্র্যময়। পুরুষরা পরেন ধুতির সঙ্গে বোতামবিহীন ফতুয়ার মতো পুরো হাতার জামা, মাথায় পোটিয়া। আর উৎসব অনুষ্ঠানে চুড়িগার পায়জামা, কুর্তা ও আচকান বা লম্বা কোর্টের সঙ্গে মাথায় ১৬ মি কাপড়ের পাগড়ি। পাগড়ি বাঁধার ধরন থেকে রাজস্থানীদের জাত ও সামাজিক অবস্থান প্রকাশ পায়। মেয়েরা পরেন ঘাঘরা, কাঁচুলি আর ওড়না—চোখে সূর্য, অঙ্গে মেহেন্দি, নাকে নোলক, কানে কুমকো, গলায় হাঁসুলি, পায়ে মল। কখনও কখনও ঘাঘরার কাপড় দৈর্ঘ্যে হয় ৩৭ মি। বিবাহিতা মেয়েরা হাতের দাঁতের বালা পরেন লাল বা সাদা রঙের।

আর রয়েছে সাত বার ন তেওয়ার—অর্থাৎ ৭ দিনে ৯ পার্বণ এদের সমাজ জীবনে। হোলি, দশেরা ও দেওয়ালা জাতীয় উৎসবের রূপ নিয়েছে রাজস্থানে। আর হোলির পরদিন (মার্চ-এপ্রিল) শুরু হয়ে ১৮ দিন ধরে চলে বসন্তের সমাগমে ঝলমলে মন রাজানো গাঙ্গুর অর্থাৎ ফসল তোলার উৎসব। জাতীয় সাজে সম্ভিত হয়ে মিছিল বের হয় মেয়েদের। অংশ নেয় হাতি ও উট। আর আসেন শিবজায়্য দেবী গৌরী মিছিলের পুরোহা হয়ে। প্রাসাদের আকর্ষণ বাড়তে ভূষণ হয়েছে পৌরাণিক আখ্যান—বিশেষ করে কৃষ্ণগাথা, নানান যুদ্ধবৃত্তান্ত, শিকার কাহিনীতে সমৃদ্ধ মিনিয়চার খনী ফ্রেস্কো চিত্রে। আগস্ট-সেপ্টেম্বরের তীজও আর এক মন রাজানো উৎসব রাজস্থানে। তেমনই জয়-সলমীর মরু উৎসব, আজমেরের উরস, বিকানীর

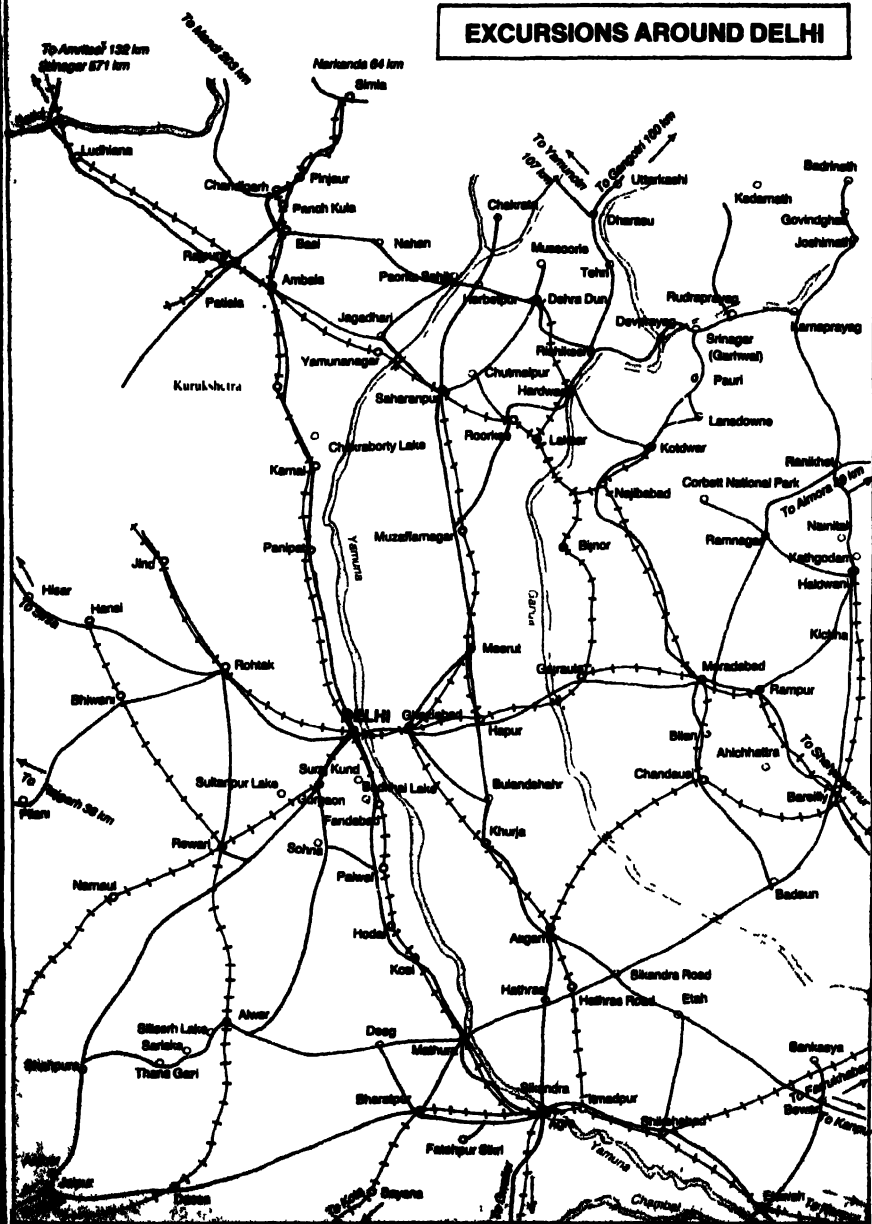
MAHARASHTRA

GOA
TOURIST MAP

SCALE
KILOMETRES 0 10 20 KILOMETRES



EXCURSIONS AROUND DELHI



কোলায়েং ফেরার, বলমলে পুন্ডর মেলার পর্যটক আকর্ষণও অনবীকার্য। মোগল কৃষ্টিতে সৃষ্টি হলেও আপন স্বকীয়তায় উজ্জ্বল রাজহানের অনবদ্য মিনিয়চার পেইন্টিং। গুজরাট ভ্রমণার্থীদের আবু পাহাড় দিয়ে রাজহান ভ্রমণে সুবিধা। আর রাজহান দিয়ে যারা ভ্রমণ শুরু করতে চান তাঁদের দিল্লী বা আগ্রা হয়ে রাজহান যাওয়াই উচিত হবে।

রাজহান □ রাজধানী: জয়পুর। আয়তন:
৩৪২২৩৯ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৪৮৮৮০৬৪০।
ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ৫.১৯%। পুরুষ:
২৭৯৩৫৮৯৫। নারী: ২০৯৪৪৭৪৫। ১৯৮১-
৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৯৬১৮৭৭%। বৃদ্ধির হার:
২৮.০৭%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ১২৮। প্রতি
১০০০ পুরুষে নারী: ৯১৩। সাক্ষরের হার:
৩৮.৮১%। প্রধান ভাষা: হিন্দী ও রাজস্থানী।
মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ২৯২৩.০০ টাকা
(১৯৮৯-৯০)।
শীত ও গ্রীষ্ম দুইয়েরই অধিক। আছে রাজহানে।
বছরভর রাজহান ভ্রমণে চলা গেলেও বেড়াবার
মনোরম সময় অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি মাস।
জুলাই থেকে সেপ্টেম্বরের বয়সি রাজহান ভ্রমণ কম
রমণীয় নয়। সবুজের গুড়না পরে পাহাড়,
লেকগুলিও কানায় কানায় টাইটুয়র বর্ষার জলে।
তবে অঞ্চলভেদে প্রকৃতিরও পরিবর্তন প্রকট হয়ে
দেখা দেয় রাজহানে। আর অক্টোবরের শেষ থেকে
শীতেরও পরশ মেলে সারা রাজহানে। হাফা উলেন
দরকার হয়ে পড়ে সাঁঝ-সকালে।
রাজহানের সঙ্গে দিল্লী-আগ্রা বা গুজরাটের অংশ
জুড়ে বেড়িয়ে নিন—বিকানীর ১ জয়সলমীর ১
যোধপুর ১ আবু পাহাড় ২ উদয়পুর ২ চিতোরগড়
১ আজমের ২ বুণ্ডী-কোট ১ সওয়াই মাথাপুর ১
জয়পুর ২ আলোয়ার ১ ভরতপুর ১ পথ চলায় ৫
দিন অর্থাৎ ২১ দিনে।

বিকানীর

মধ্যযুগের ভারতীয় কলা ও শিল্পের অন্যতম পীঠস্থান
বিকানীর। বিকানীরও মরু অঞ্চল, থরের মধ্যে পড়ে
বিকানীর। শোনা যায়, পৃথাতোয়া সরস্বতী নদী বিকানীর
হয়েই বয়ে যেত অতীতে। তবে, আজ আর অস্তিত্ব নেই
তার। আর এখানকার সমৃদ্ধি ও সমভাত্যও নাকি তখন
থেকেই। রামায়ণে *করুজঙ্গল* অর্থাৎ জঙ্গলাদেশ নামে উল্লেখ
মেলে বিকানীরের। মরুভূমির জাহাজ উটের ক্যারাবানও

যেত বিকানীর থেকে সেকালে। শহরের নামটি এসেছে
১৪৮৮ খ্রিস্টাব্দে প্রতিষ্ঠাতা—বোধপুররাজ বোধাজী বংশীর
ভাটি রাজপুত রাও বোধার দ্বিতীয় পুত্র বিকা থেকে। তিনশত
বছরেরও অধিককাল রাজত্বও করে বোধা রাজবংশ
বিকানীরে। আর ১৯ শতকে মিত্রতা গড়ে ওঠে ব্রিটিশের
সঙ্গে বিকানীর রাজের। সেই সুবাদে ১৮৫৭র স্বাধীনতা যুদ্ধে
ব্রিটিশের আশ্রয় মেলে বিকানীরে। ৫ গেটে ৭ কিমি দীর্ঘ
প্রাচীরে ঘেরা শহর ছিল সেকালে। রেল স্টেশন থেকে ১
কিমি দূরে বাস স্ট্যান্ড। বাস স্ট্যান্ডের পাশেই বিকানীরের
মূল আকর্ষণ দুর্গ। দুর্গের সামনে পাবলিক পার্ক। শেষ হতেই
গান্ধী ময়দান। পাবলিক পার্কে বসেছে জুলাজিক্যাল গার্ডেন।
আর আছে জেন মন্দির তুলসী। Tourist Office বসেছে দুর্গে।
কেনাকাটায় K E M Rd আকর্ষণীয়। বিকানীরের আর এক
আকর্ষণ তার মিঠাই—ছেচুটু বোশীর সোন্ধানে স্বাদ নিতে
পারেন। তেমনই রাজস্থানী ভূজিয়ার আদি নিবাসও এই
বিকানীরে। হলদিরাম এক বরণ্য পোন্ধন রসনা মেটাতে।
বিকানীরের নবতম আকর্ষণ জন্মারির *চোলা মারু* অর্থাৎ
ক্যামেল ফেস্টিভ্যাল। দেশ-দেশান্তর থেকে উট আসে।
সুসজ্জিত বেশে নানান প্রতিযোগিতায় অংশ নেয়। এরও
পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য। আগামী উৎসব ১৯৯৮এ ১১-
১২, ১৯৯৯এ ১-২, ২০০০এ ২০-২১ জানুয়ারি।



১৯-১৫য় হাওড়া ছেড়ে ২৩১১ কালকা মেল দিল্লী
এক সোঁছায় ১৯-৫০এ, আর দিল্লী সরাই রোহিলা
থেকে ৪৭৪৯ বিকানীর এক ৮-৩৫, ৪৭৭১ বিকানীর
মেল ২১-২৫এ ছেড়ে বিকানীর যাচ্ছে ১৮-৫০ ও পরদিন ৮-
২০এ। দিল্লী ফেরে ৮-৪০এ এক ও ১৯-৪৫এ মেল বিকানীর
থেকে। আবার ২৩-১০এ ৪৭০৭ দিল্লী-জয়পুর-শোখাবতী লিঙ্ক
এক্সপ্রেস অংশ যাচ্ছে ৩-১৫য় শোখাবতী সোঁছে ১০-৫০এ বিকানীরে।
৫-০০ টায় বিকানীর ছেড়ে ১১-৫৫য় জয়পুর যাচ্ছে ২৪৬৭
ইন্টারসিটি এক্স; বিকানীর ফেরে জয়পুর থেকে ১৫-২০এ। ১১-
৪০এ বোধপুর ছেড়ে ১৬-১০এ বিকানীর সোঁছে কালকা যাচ্ছে
পরদিন ৬-৫৫য় ৪৪৪৪ বোধপুর-কালকা এক্স; বোধপুর যাচ্ছে ১১-
৩০এ বিকানীর ছেড়ে ৫ ঘটায় কালকা-বোধপুর এক্স। বোধপুর-
জন্মু এক্সও যাচ্ছে বিকানীর হয়ে। ২০-৩০এ বিকানীর ছেড়ে ০-
৩০এ চুপ সোঁছে ৬-৫৫য় জয়পুর যাচ্ছে ৪৭৩৪ বিকানীর এক্স;
ফেরে ২১-০০টায় জয়পুর ছেড়ে ৭-০০টায় বিকানীরে ৪৭৩৭ এক্স।
৮-৪০এ বিকানীর; ৮-৫২, ১১-৫৫, ১৬-০০টায় ৪ কিমি দূরের
লালগড় থেকে ৫১ কিমি দূরের কোলায়েং যাচ্ছে ১৬ ২০ মিনিটে;
বিকানীর ফেরে ১০-২০, ১৩-১৫, ১৭-৩০টায় কোলায়েং থেকে।
প্যালেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে বিকানীর থেকে মেরতা জং, চুপ, রেওয়ারি
হাড়াও নানান। এমনকি কলকাতা থেকে ২৩-৩০এ হাওড়া ছেড়ে
সরাসরি বিকানীর লিঙ্ক এক্সে ২টি ক্রিশার ক্লাস বগি যাচ্ছে হাওড়া-
বোধপুর এক্সের সাথে সওয়াই মাথাপুর হয়ে ৭-৫১য় মেরতা
রোড সোঁছে ৩৬ ঘটায় বিকানীরে।



সিটি সেন্টার থেকে ৩ কিমি দূরে লালগড় গ্রাসাসের
মিশরীতে বাস স্ট্যান্ড থাকে বিকানীরে। ঘুরপথে রেল
চলার বিকানীর থেকে বসে জয়সলমীর বাগরই
সুবিধার। লড়কপথে দূরত্ব কম, বাসও যাচ্ছে ৮ ঘটায় ৬-০০,

৭-০০, ৮-০০টায়। আর ২১-৩০এ রাঠোর ট্রাভেলস, ৩ 26427 ছাড়াও নানান প্রাইভেট ডিলাজ বাস বিকানীর থেকে জয়সলমীর কাছে। এছাড়াও বাস আছে রাত ২০-০০টায় কোটা; ৫-০০, ৬-১৫, ১২-০০, ১৭-০০টায় জয়পুর; RTDC-র ডিলাজ কোচ আছে ২১-৩০এ বিকানীর হেডকোয়ার্টার হয়ে জয়পুর। ৬-০০, ৮-৪৫, ৭-৪৫, ৯-০০, ১০-৩০, ১২-৩০, ২০-০০, ২০-৩০, ২১-৩০, ২২-৩০এ হেডে নাগোর/ মেরতা হয়ে ৭২ ঘণ্টায় আজমের; ৫-৩০, ৭-০০, ৯-৩০, ১০-৪৫, ১২-১৫, ১৫-০০টায় যোধপুর। আর দিল্লী আছে ১২ ঘণ্টায় ৫-৫০ ও ৭-৩০এ বিকানীর থেকে। আগ্রা, উদয়পুরেও বাস আছে বিকানীর থেকে। নানান প্রাইভেট ডিলাজ বাসও আছে রাজ্যের সিকে সিকে দিনে ও রাতে বিকানীর থেকে। NH-৪ ও 11 (পাঠানকোট-জম্মু)ও চলেছে বিকানীর হয়ে। শহরে চলেছে বাস, ট্যাক্সি, অটো, টাঙা ও রিকশা।

জুনাগড় দুর্গ: বিকানীরের মূল আকর্ষণ শহরের কেন্দ্রমণি দুর্গ। জয়পুরেরই মতো লাল আর গোলাপী বেলেপাথরে ১৫৮৭-৯৩ খ্রিস্টাব্দে আকবরের প্রান্তন সেনাপতি রাজা রায় সিং-এর তৈরি। পরবর্তী শাসকদের (ওয়ার্ড, প্রতিহার, রাজপুত, চৌহান, ভাদ্রি, রাঠোর) কালেও ৩৭টি প্রাসাদের সংযোজন ঘটেছে দুর্গে। চারকোণা এই দুর্গ প্রাচীরে ঘেরা, ৩০ ফুট গভীর পরিখাও হয়েছে চারপাশে। ৯৮৬ মি প্রশস্ত এই দুর্গে ৩৭টি গম্বুজ, প্রবেশপথ দুটি। পশ্চিমের প্রবেশ পথে আবার দুটি গেট। সেকালে খুবই সুরক্ষিত, এমনকি বারবার আক্রমণ এলেও অজেয় ছিল এই দুর্গ।

মূল প্রবেশ পথ সুরষ পোল বা সান গেট দিয়ে। অভ্যন্তর অভিজ্ঞত করে দর্শকদের। দেওয়াল চিত্রের পাশাপাশি পটচিত্র ও পাথরের কার্ভিং অনন্য করে রেনেছে একে। দুর্গে চন্দ্র-মহলের কারুকার্যখচিত অলঙ্করণ, কাচ ও মার্বেল প্যানেল; গজ সিংয়ের তৈরি ফুলমহলের ফুলে বাস না মিললেও ফুল ও কাচের অভিনবদ্ব; গোলকুণ্ডার ধনরত্নে রাজা সুরথ সিংয়ের তৈরি অনুপমহলের রাজতিলক তথা *করোনেশন হল*, দেওয়ানি খাসে অন্তের সম্ভার, বাদল মহলের ছবি, মোগলী স্থাপত্যে গড়া ছবিতে অলঙ্কৃত বর্ণাঢ্য সুবনিবাস বা দরবার হল, সুন্দর অলঙ্কৃত দারুময় ছাদের গঙ্গা নিবাস ও দুর্গা নিবাস; ওরঙ্গজেবকে যুদ্ধে হারাবার স্মারকসম্পন্ন তৈরি করণমহল, শিশমহল, ছতরমহল, বিজলীমহল, রাজ-পরিবারের গৃহসেবতা শিবঠাকুরের হরমন্দির, হাজারি দরওয়াজা মিউজিয়মে রাজপরিবারের নানান স্মারক ও মিনিয়চার শেইখিং, রাজসিংহের মূল প্রাসাদ, চীনা ব্রুজ অর্থাৎ সবুজ আর সাদার মোড়া চীনা টাওয়ার, সুরষ পোলে সতীসের হাতের ছাপ, এসেরও পর্বট আকর্ষণ অনবীকার্য। দুর্গের দর্শনী গাইড-সহ ২০, ছবি তুলতে ২৫; ওড়বার ছাড়া ১০—১৬-৩০টায় খোলা। জুনাগড়েও হোটেল বসেছে প্রাসাদ অংশে।

গঙ্গা পোস্টেন মিউজিয়ম: দুর্গের বিপরীতে গান্ধী পার্ক পেরিয়ে RTDC-র টুরিস্ট বাতোর অদূরে বিকানীরের গঙ্গা পোস্টেন মিউজিয়ম। শুক্কালের টেরাকোটায় সজ্জা

কৃষ্ণ ও প্রাক-হরপ্রাকালের নানান সংগ্রহ সমৃদ্ধ করেছে মিউজিয়মকে। রাজা রাজসিংকে সফ্রি জাহাঙ্গীরের দেওয়া নজরানা সিঙ্কের পোশাকও স্থান পেয়েছে এর সংগ্রহে। এছাড়া সাদা মার্বেল পাথরের সরস্বতী মূর্তিটি ভাস্করের অতুলনীয় নিদর্শন হয়ে মিউজিয়মের গৌরব বাড়িয়েছে। শুক্র ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা; টিকিট ২।

| Agra-Bharatpur-Jaipur-Bikaner | | | |
|-------------------------------|----|----------------------|--------|
| 0 | Km | Agra | |
| 24 | " | Kiraoli | |
| | | To Fatehpur Sikri | 13 km |
| 35 | " | Road Jn | |
| | | To Fatehpur Sikri | 1 km |
| 44 | " | U P/Rajasthan Border | |
| 56 | " | Bharatpur | |
| | | To Town | 2 km |
| | | " Dig | 37 km |
| | | " Alwar | 114 km |
| | | " Mathura | 68 km |
| 57 | " | Road Jn | |
| | | To Keoladeo Ghana | |
| | | Bird Sanctuary | 2 km |
| 118 | " | Mahwa | |
| 180 | " | Daosa | |
| | | To Sowai | |
| | | Madhopur | 104 km |
| | | " Ranthambor | 114 km |
| | | " Shivpuri | |
| 232 | " | Jaipur | |
| 391 | " | Fatehpur | |
| | | To Churu | 35 km |
| 426 | " | Ratangarh | |
| 553 | " | Bikaner | |

লালগড় প্রাসাদ: শহরান্তে (২.৫ কিমি) মহারাজা গঙ্গা সিং (১৮৮১—১৯৪২) পিতা লাল সিংয়ের স্মারক রূপে স্যার সুইনটন জ্যাকবের নক্সায় গৈরিক রঙা বেলে-পাথরে লালগড় প্রাসাদ অর্থাৎ রেড ফোর্ট গড়েন। প্রাসাদে পাশ্চাত্যের বৈভবের সঙ্গে প্রাচ্যের কল্প রাজ্যের অলঙ্করণ ঘটেছে—বেলাজিয়াম বাড়লটন, কাট-গ্রাসের অলঙ্করণ, সুন্দর জালিকাজ, নকশা-কাটা কারুকার্য, ছবির সংগ্রহ, শিকার-করা স্টাফড জীবজন্তু, ফুলবাগিচা ও চিড়িয়াখানা দর্শনীয়। সম্ভ্রতি হোটেল বসেছে একটা অংশে, রাজপরিবার বাসও করছেন প্রাসাদের আর এক অংশে। প্রাসাদের দ্বিতলে বসেছে রাজ পরিবারের নানান সংগ্রহ নিয়ে মিউজিয়ম ও অমূল্য গ্রন্থের দুখ্যাপ সম্ভার নিয়ে অনূর্ণ সংকুল লাইব্রেরি। বুধবার ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা; টিকিট ৫।

জৈন মন্দির: শহর থেকে ৫ কিমি দূরে ১৪ শতকের জৈন মন্দির কমপ্লেক্স। ভাওখর ও সন্দেখর এসের মধ্যে উল্লেখ্য—দুই নির্মাতা ভাইয়ের নামে নাম। ভাওখর কাচ ও ফ্রেস্কো চিত্রে সুশোভিত। সন্দেখরের প্রশস্তি তার এনামেশন ও সোনার মোড়া দেওয়াল চিত্রের জন্য। রূপমতিত পতাকাপত্নী নিয়ে আপন মহিমায় মাথা তুলে দাড়িয়ে। অনন্য এই মন্দির ২৩তম তীর্থঙ্কর পার্শ্বনাথের নামে উৎসর্গিত।

১৫০৫এতেরি চিত্তামণি, নেমিনাথ, আদিনাথ মন্দিরগুলিও সুন্দর। ৬—১১-০০ ও ১৯—২০-০০টায় খোলা।

দেবী কুণ্ড সাধন: শহর থেকে ৮ কিমি দূরে বিকানীর শাসকদের ছত্ৰীশ অর্থাৎ *সেনাটাক* গড়ে উঠেছে দেবী কুণ্ডে। স্মৃতি স্তম্ভগুলির মধ্যে রাও কল্যাণমাসি স্তম্ভটি প্রাচীনতম। শ্বেতমর্মরে গড়া মহারাজা সুরথ সিংয়ের ছত্ৰীশটিও সুন্দর।

ক্যামেল ব্রিডিং ফার্ম: অটো বা ট্যাক্সিতে বেড়িয়ে আসুন এশিয়ায় অনন্য, শহর থেকে ১০ কিমি পশ্চিমে সরকার পরিচালিত শ'তিনেক উটের অভিনব ব্রিডিং ফার্ম। উটের পিঠে চাপা ও উটের দুধের স্বাদ নিতে পারেন ১৫—১৭-০০টায় ফার্মে।

করগীমাতা মন্দির: শহর থেকে ২৬ কিমি দক্ষিণে যোধপুর সড়কের দেশনক-এ করগী মাতার মন্দির। দেবী দুর্গার অবতার করগীজী এখানে দেবী। ভবিষ্যদ্বক্তা রূপে দেবীর সুনাম। বিতল মন্দিরের শিরে স্বর্ণছাতা, মার্বেল কার্ভিসে, মহারাজা গঙ্গা সিংয়ের তৈরি ভার্যমণ্ডিত রূপোর গেটটিও সুন্দর। মন্দিরের আর এক আকর্ষণ অসংখ্য ইঁদুর মন্দির চত্বরে, গায়ে চড়লে পুণি হয়। তেমনই ইঁদুর মারায় হয় পাপ। জনজ্ঞতি, পুণ্যার্থারাই নবজন্মে এই ইঁদুর হয়েছেন। শহর (গোগগেট বাস স্ট্যান্ড) থেকে ঘণ্টায়-ঘণ্টায় বাস আবার ট্যাক্সি, অটোতেও চলা যায় মন্দিরে।

গজনের প্রাসাদ: শহরের দক্ষিণ-পশ্চিমে জয়সল-মীরের পথে ৩১ কিমি যেতে হুদের পাড়ে অতীতের শিকার মহল প্রাসাদ। প্রাসাদের আসবাব, ছবি, কার্পেটের সংগ্রহ উল্লেখ্য। শিকার মহলেও আজ হোটেল হয়েছে; মিউজিয়মও বসেছে এক অংশে। গোলাপ বাগিচাটিও সুন্দর। এককালে রাজাদের জংলি কুকুর ও জংলি হাঁস শিকারের জন্য খ্যাত ছিল গজনের। নতুন করে ওয়াইল্ডলাইফ স্যান্ডচুয়ারিও বসেছে—নীল গাই, চিকারী, ব্র্যাক বাক দেখে নেওয়া যায়। বাসও সংযোগ গড়েছে শহর থেকে।



Bikaner-334001, STD-0151-এও নানান হোটেল। তবুও যেন সাধারণ হোটেলের অবস্থান রেল স্টেশনকে ঘিরে Station Rd-এ বিকানীরে।

**Lallgarh Palace* H, Bikaner, A14R3B2, A/c S ৬৫ D ১০৫ US\$; মান ও দামে একই মহারাজার *Karni Bhawan Palace* H, ও *Gajner Palace* H, *Lallgarh Palace*, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; *Thar H*, Hospital Rd, RIB1; SAB 8০০ ৫২০ DAB ৫৫০ ৬৫০ সুইট ৯৫০; *Marudhar Heritage*, Bhagwan Mahaveer Marg, ৩ 522524, Bikaner-1, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৩৫০ ৫০০ ৬০০ D 8৫০ ৬৫০ ৭৫০; RTDC-র *H Dhola Maru*, Puran Singh Circle, R2B2, ৩ 28621, S ১৭৫ D ২২৫ A-c S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S 8৫০ D ৫৫০ ৬৫০ ডব্লিউ বেড ৫০, কল বুকিং: Linkage ৩ 2465171; RTDC-র *Yatrika, Deshmokh*, ৩ 65332, S ২০০ D ২৫০ ডব্লিউ ৫০; *Haryana H*, SCB ৮৫ SAB ১২৫ DCB ১৫০ DAB ১৭৫-২৫০ A-c S ৩০০ D 8০০।

আর রেল স্টেশনের বিপরীতে হাটা দূরবে দিন-রাত্রি জুড়ে

কোলাহল মুখর স্টেশন রোডে—*H Shantiniwas*, SCB ৬০ SAB ৮০-২২৫ DCB ১০০ DAB ১৫০-২২৫ A/c S ৩০০ D ৩৭৫; বর দুই অতি সাধারণ *Indra L*, S ৬০ D ১০০; *Deluxe H*, ৩ 528127, SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১৫০ A-c D ২২৫; *Heritage Bhairon Vilas*, D ১8০০ কল বুকিং: Span ৩ 2801209; *Prince H*, ৩ 12396, S ১০০ D ২৫০; *H Akashdeep*, SAB ৬০-১০০ DAB ১২০-১৭৫ A-c D ১৫০; *Joshi H*, ৩ 61224, SAB ২২৫ DAB ২৭৫-৫২৫ A-c S 8৫০ D ৬৫০; *Green H*, SCB 8৫ SAB ৬৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫ A-c S ১৭৫ D ২২৫; *Grand H*, D ৮০-১৫০; *Roopam H*, S 8০-৮৫ D ৮০-১২৫; *Deluxe R H*, ৩ 528127, SCB ৫০ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১২৫-২০০ A-c S ২২৫ D ২৭৫; *Ananda H*, SCB ৬০ DCB ১০০ DAB ১২০-১৫০; *Delight H*, S 8০-৬৫ D ৮০-১২৫; *Santiniketan H*, SCB 8৫ SAB ৬৫ DAB ৮৫-১২০; *Sankhalia R H* ছাড়াও ধরমশালা রয়েছে *Mohata Motilal*, *Bishnoi* বিকানীরে। আর আছে *রেলের রিটার্নিং রুম*, CH, PWD D B, অব: EE, City Division, PWD, Bikaner. কমপক্ষে ১০ দিন আগে বুকিং-এর জন্য লিখুন। বাঙালি তীর্থ কালীবাড়িতেও অভিজ্ঞালা গড়তে চলেছে বিকানীরে।

| বিকানীর থেকে দূরত্ব | | আহার্যে স্টেশন রোডের | |
|---------------------|----------|---------------------------------------|--|
| নাগুর | ১০৬ কিমি | অম্বর রেস্টুরেন্টের যথেষ্ট | |
| আজমের | ২৩৪ " | প্রসিদ্ধি। অম্বর স্পেশাল <i>থোসার</i> | |
| গজনের | ৩১ " | স্বাদ নিতে পারেন। তেমনই | |
| পোখরান | ২১৯ " | <i>হোটেল মোশী রেস্টুরেন্ট-টিরও</i> | |
| জয়সলমীর | ৩৩০ " | যথেষ্ট সুনাম নিরামিষ আহার্য | |
| রতনগড় | ১২৭ " | পরিবেশব্যব; নানান মিষ্টির সঙ্গে | |
| দিল্লী | ৫১৬ " | লসিয়র যথেষ্ট সুনাম এসের। | |
| আগ্রা | ৫৫৩ " | দিনভর প্রোথ্রামে | |
| যোধপুর | ২৪৫ " | শ'আড়াই টাকায় অটোয় | |
| জয়পুর | ৮২১ " | দেখে নেওয়া যায় বিকানীর | |
| সওয়াই মাধোপুর | ৪৯০ " | শহর। একদিনে শহর দেখে | |
| | | পরদিন চলুন ৬-০০ এক্স, ৭- | |

০০, ৮-৩০টার সাধারণ বাসে ৮ ঘণ্টায় সোনার কোম্বা দর্শনে ৩৩০ কিমি দূরের জয়সলমীরে। প্রাইভেট ডিলাক্স বাসে ২১-৩০এ বিকানীর ছেড়ে ৭ ঘণ্টায় জয়সলমীরে। পোখরান হয়ে পথ গিয়েছে। জয়সলমীর-যোধপুর/বিকানীর পথও পৃথক হয়েছে পোখরানে। প্রাসাদও হয়েছে পোখরানের মরুভূমে হলুদ পাথরে অর্থাৎ সোনালিতে। রাজহানী শৈলীতে কারুকার্যমণ্ডিত প্রাসাদ। এমনকি ১৯৭৪-এর মে মাসে ভারতীয় পারমাণবিক বিস্ফোরণও ঘটেছিল পোখরানের মরুতে। RTDC-র *Motel Godavan*, Pokaran, ৩ (029942) 2275-এ DAB ৩০০ হাট ৩৫০ দিনের ৬ ঘণ্টার ভাড়া ১৭৫। আহারও মেলে ক্যান্টিনে।

শেখাবতী: জয়পুর-রিসাস-শিকার-বুনবুন-বিকানীর রেলপথে শিকার জং ও বুনবুন স্টেশন। জয়পুর থেকে ১০৭ কিমি দূরে শিকার, বুনবুন দূরত্ব ১৭১ কিমি। অর্থাৎ শিকার থেকে বুনবুন দূরত্ব ৬৪ কিমি। আর শিকার থেকে

বিকানীর ১৫০, দিল্লী ২৯৯, চুফর দুৱড় ৫২ কিমি। বাস ও রেল সংযোগ গড়েছে প্রত্যেকের সঙ্গে প্রত্যেকের।

অতীত রাজধানীর মিউজিয়াম নগরী শেখাবতী—আজকের শিকর। শেখা সম্প্রদায়ের বাস। নামটি এসেছে রাও শেখা (১৪৩০-৮৮) থেকে। ইতালিয়ান *buono* শৈলীর নয়নাভিরাম ফ্রেস্কো চিত্রে শেখা সম্প্রদায়ের নানান লোক-গাথায় সুশোভিত শিকারের প্রতিটি বাড়ি অর্থাৎ হাউসী। আর আছে সেনোট্যাপ, মন্দির, দুর্গ, কুপ শিকার-এ। শিকারেরই প্রতিচ্ছবি মেলে জেলাসদর খুনবুন-র টিবরি-ওয়াল, হোদী, ক্ষেদী মহল, বিহারিজী মন্দিরের ফ্রেস্কো চিত্রে।

থাকার জন্য শেখাবতীতে RTDC-র *Haveli Fatehpur, Shekhawati, D (0747) 32473, S ১৭৫ ২৫০ ৪৫০, D ২২৫ ৩৭৫ ৫৫০; Roop Niwas Palace, D ১২০০* ছাড়াও নানান হোটেলে আছে। আর *H Shiv Shekhavati* আছে খুনবুনতে।

গজনের থেকে ১৪ আর বিকানীর থেকে ৪৫ কিমি যেতে বিকানীর-জয়সলমীর বাস পথে পবিত্র হিন্দু তীর্থ কোলায়েৎ-ও বেড়িয়ে চলা যায় বাসে বাসে। স্থানীয়রা দাবি করেন সাগর ধীরেপেরও আগে কপিল মুনি আশ্রম গড়ে ছিলেন এই কোলায়েতে। আবার চলারপথে বাসের বিশ্রাম সময়েও সেরে নেওয়া যায় কোলায়েৎ দর্শন।

জয়সলমীর

জয়সলমীর ভারতের ৭৪ অর্থ ভার মৃতের আবাস। ধু-ধু করছে বালুরাশি—চারপাশে দিগন্ত বিস্তৃত মরুভূমি। তারই মাঝে আরব্য রজনীর পরিবেশ গড়েছে অতীতের ভাটি রাজপুতদের রাজধানী জয়সলমীর। অতীতে দেওয়ালে ঘেরা ছিল শহর। তবে, আজ লোপ পেতে বসেছে দেওয়াল। এখানকার বালির রঙ সোনালী হলুদ। মন্দির, দুর্গ, প্রাসাদ, সবই হলুদ বেলে-পাথরে তৈরি। সকাল ও সন্ধ্যাে (সূর্যের উদয় ও অস্তে) সূর্যালোকে সোনা ঝরে জয়সলমীরে। তাই সোনার শহর বলেও প্রসিদ্ধি আছে জয়সলমীরের। সূর্যাস্তের ঠিক আগে সোনা-হলুদ বালিরাড়ি গোলাপী রং ধরে। জয়সলমীরের *মীনা* অর্থাৎ জালি কাজ খুবই প্রশংসনীয়। অতীতকালে উটের পিঠে পণ্য যেত সারা মাধ্যপ্রাচ্যে ভারত থেকে জয়সলমীর হয়ে। এসেছে নানান পসরা জয়সলমীরে দেশ দেশান্তর থেকে। ধীরে ধীরে বাণিজ্য যায় মরু থেকে জলে। রুদ্রও হয় মরুপথ দ্বিতীয় বিশ্বসমরে। নেমে আসে অমানিশা জয়সলমীরের আকাশে। আর স্বধীনোত্তর ভারতে ১৯৬৫ ও ৭১-এর ইন্দো-পাক যুদ্ধে সীমান্তকে সুদূর করতে দুর্দম বেগে রেল ও সড়ক সৌঁছায় জয়সলমীরে। সঙ্গে পৌঁছায় সীমান্তরক্ষায় ভারতীয় জওয়ান জয়সলমীরে। বিস্মৃৎও পৌঁছায় সীমান্ত শহরে। গীর্য়াকালের অমানিশাও টুটেছে জয়সলমীরের। জলাভাবও দূরীভূত হয়েছে—ইন্দিরা গান্ধী (রাজধান) ক্যানাল জলও পৌঁছেছে জয়সলমীরে। পর্যটক চলেছেন আজ দেশ দেশান্তর থেকে

আরব্য রজনীর দেশে সোনার কেদারা দর্শনে। পর্যটক আসছেন মনকে রাঙিয়ে নিতে জয়সলমীরে।

সাধু *Escal*-এর নির্দেশ মতো লোধুবা থেকে রাজ্যপাট তুলে ১১৫৬ খ্রিস্টাব্দে রাওয়াল জয়সলের হাতে জয়সলমীর শহরের প্রতিষ্ঠা। প্রতিষ্ঠাতার নামেই নাম হয়েছে নবম রাজধানী শহরের। শ্রীকৃষ্ণর বংশজাত যাদব ও চন্দ্রবংশীয় ভাটি রাজপুত এরা। জয়সলমীরের বাতাস আজও অতীত বীরত্বের গাথা শুনিতে যাদু করে রাখে দর্শককে। তেমনই উপগ্রহ চিত্রের মাধ্যমে অ্যাটমিক রিসার্চ সেন্টারের নবতম আবিষ্কার পৌরাণিক নদী সরস্বতীর গতিপথ জয়সলমীরে। পর্যটকদের কাছে খুবই আকর্ষণীয় জয়সলমীর। তবে, গ্রীষ্মের দাবদাহের সঙ্গে *আধি* অর্থাৎ বালির ঝড় খুবই দুর্বিষহ। বেড়াবার মনোরম সময় অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। শীত ও গ্রীষ্ম দুইয়েরই আধিক্য। তাপমান—সর্বোচ্চ ৪৫° আর সর্বনিম্ন ৩° সেণ্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। হাজার চম্পিশ লোকের বাস শহরে। বৃষ্টি নেই ৭৯৩ মি উঁচু জয়সলমীরে।

Tourist Information Centre (৪—12-00 & 15—18-00 hr) D 52406, Moomal Tourist Bungalow থেকে RTDC মরসুমি যাত্রী নিয়ে প্যাকেজ ট্যুরে ৬০ টাকায় শহর দেখিয়ে আনে ৯-৩০—১২-৩০টায়ে। ৯০ টাকায় ১৫-৩০—১৯-৩০টায়ে ৬০ কিমি দূরে থর মরুভূমির রূপসী রূপ—সাম সাভ ডিউনস দেখিয়ে ফেরে। আবার চুক্তিতে ৪০০ টাকায় জিপে এককভাবেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় দিনভর প্রোগ্রামে। ১৭ কিমি দূরের লোধুবা অতীতকালের রাজধানী শহরও জিপ ট্যুরে জুড়ে নেওয়া যায়। অটোতেও শ'দেড়েক টাকায় সাস করা যায় শহর দর্শন। কলকাতা থেকে ইয়ুথ হোস্টেল অ্যাসোসিয়েশন, বেঙ্গল ইউনিট, নেতাজী ইন্ডোর স্টেডিয়াম, রুম নম্বর ১৭, কল-১ থেকে প্রতিবছর নভেম্বর মাসে ন্যাশানাল ডেজার্ট সফারির ব্যবস্থা করে।

শহরের উত্তর-পশ্চিমে লোধুবার পথে ৬ কিমি যেতে মরুভূমির বৃক মরাদ্যান অমর সাগর। তবে, উদ্যানটি আজ ধ্বংসের কাল শুনেছে। লেকটিতে জলাভাব। আর আছে কারুকার্যময় জৈন মন্দির—সংস্কার চলছে। অমর সাগর রেখে আরও যেতে জয়সলমীরের ১৬ কিমি উত্তর-পশ্চিমে অতীতের রাজধানী লোধুবার রাজপ্রাসাদ মায়ামহলের ধ্বংসস্তুপ আজও মুমল-মহেন্দ্রের প্রেমগাথা শোনায়। আর আছে অনুপম শিল্প-স্বমামণ্ডিত জৈন মন্দির—সংস্কারও হয়েছে ১৯৭০এ। মন্দিরে কল্লতরু বৃক মনস্কামনা বৃথা হবার নয়। তেমনই ভাগ্যবানরা প্রতি সন্ধ্যায় দেখে নিতে পারেন গর্ভ থেকে বেরিয়ে এসে নাগরাজের দুধ খাবার দৃশ্য। হোটেলও আছে লোধুবার। এপথেই ৯ কিমি যেতে ৩০২৫ বর্গ কিমি জুড়ে ডেজার্ট ন্যাশানাল পার্কে গ্রেট ইন্ডিয়ান বাস্টার্ড ডিগ, চিঙ্কারা, গ্যাংগেল, শিয়াল দেখতে মেলে। প্রবেশ দক্ষিণাও অনুমতি লাগে পার্ক দর্শনে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ন্যাশানাল পার্কে। শহর থেকে ৪০ আর সামের পথে

৯ কিমি পশ্চিমে চড়ুইভাতির স্বর্ণ মূল সাগর। বাগিচা ও জলাধারের সাথে খুখুরছে বালি, সামুদ্রিক ডেউ-এর মতো সোনালী বালির আন্তরণ। তবে, পাছাড়ের মতো বালিয়াড়িতে crevasse অর্থাৎ চোরাবালি সে এক দুর্বিষহ। শহরের সবচেয়ে কাছে এই স্যান্ড ডিউনস। এপথেই আরও যেতে সাম স্যান্ড ডিউনস। শহর থেকে দূরত্ব ৪২ কিমি। সামের সূর্যাস্ত—সেও এক অনবদ্য দর্শন। RTDC-র সাময়িক যাত্রী কলোনিও গড়ে ওঠে। দিশন্ত বিদ্যুত বালিয়াড়ি—বিশাল বিশাল টিলা মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। ফটোগ্রাফার্স প্যারাদাইস সাম আজ অনন্য দর্শন জয়সলমীরে।

আবার ৩-৪ দিনের প্রোগ্রামে ক্যামেল সাফারি অর্থাৎ উটের পিঠে চেপেও সাজ করা যায় এই সফর। দিনের আহার্য সহ দৈনিক ভাড়া ২০০-৩৫০। সময় স্বল্পতায় জিপে গিয়ে উটে ফিরে ২২ দিনেও সাজ করা যায় এ সাফারি। সেক্ষেত্রে ভাড়ায় আধিক্য লাগে ২০০। উচিত হবে Tourist Office বা হোটেল ম্যানেজারদের সঙ্গে কথা বলে উট নিবারণ করা। Mahendru Travels, C/o Hotel Swastika, Gandhi Chowk, ☎ 22483; Juissal Tours, C/o Narayan Niwas Hotel, ☎ 22397; Ramesh Bhatiya, Rama Hotel; Thar Safari, Gandhi Chowk, ☎ 22722; Arawali Safari Tours, near Patwa Haveli, ☎ 22632; সঙ্গে যোগাযোগ করা যেতে পারে ক্যামেল সাফারির জন্য। তবে, নিজস্ব উটের অভাবে মিডলস্যানের কাজ করে এরা। চলার পথে গরমিলও দেখা দেয় নানান। তাই উচিত হবে যাত্রার আগে উটের মালিকের সঙ্গে সরাসরি কথা বলে নেওয়া। থাকা-খাওয়া-চলা নিয়ে রেন্ট এদের। রেন্টের তারতম্যে পরিষেবায়ও ব্যবধান ঘটে। আবার প্রতিদ্বন্দ্বিতায় যাত্রী পেতে রেন্ট কমিয়েও বুক করে এরা। সেক্ষেত্রে চলার পথে নানান তারতম্য ঘটে চলে পরিষেবায়। সাফারি ট্যারে দেখেও নেওয়া যায়—Amar Sagar, Lodurwa, Mool Sagar, Bada Bagh, Sam Sand Dunes অর্থাৎ মরুভূমির রূপসী রূপ। হোটেল নেই এপথে। কেবল সামসে হোটেল মেনে সামের টুরিস্ট। আর আছে শহর থেকে ৪৫ কিমি দূরে Lodurwa Rd-এ RTDC-র H Samdhani, ☎ (02992)52392, অক্টোবর-মার্চে—D ২৫০ এপ্রিল-সেপ্টেম্বরে ২০০ ডর্মি বেড ৫০, অব: Manager, H Moomal, Jaissalmer. শীতের আধিক্য থাকলেও অক্টোবর থেকে মার্চ সাফারির মনোরম সময়। আর, পানীয় জল, সানস্ক্রিম, ফ্রিম, মাথা ঢাকতে টুপি, টর্চ সঙ্গে নেওয়া একান্তই উচিত হবে ক্যামেল সাফারি যাত্রায়। উচিতও হবে স্যান্ড ডিউনস বেড়িয়ে নেওয়া।

রাজধানের প্রতিটি শহরের মতো জয়সলমীরও গড়ে উঠেছে দুর্গ অর্থাৎ সোনার কেল্লাকে ভর করে। শহরের দক্ষিণে ৭৬ মি উচ্চ ক্রিকুট পাছাড়ে এই দুর্গ। সর্বোচ্চ ৪৫৭ মি, প্রস্থে ২২৯ মি। পাছাড়টির মূলদেশ ৪.৫ মি উচ্চ প্রাচীরে

বেরা বয়সে দ্বিতীয় প্রাচীন, চিতোরের পরেই (১১৫৬ খ্রি) এর স্থান। দুর্গের প্রতিরক্ষার ব্যবস্থাও প্রশংসনীয়; পরিবার অভাবহেতু ৯৯টি বৃদ্ধকার প্রাচীর বৃদ্ধ পাশাপাশি গড়ে উঠেছে। সর্পিলা পথে অক্ষয় পোল, গণেশ পোল, সুরয পোল, ভূটা পোল, হাওয়া পোল অর্থাৎ গেটে প্রবেশ। দুকেই পাঁচ মহলা—সাত তলা সিটি প্যালেস, রূপ তার ছাফার। সামনের চত্বরে আম দরবারে বসন্তেন মহারাজা। এমনকি অতিথি আপ্যায়নে বিনোদনের আসরও বসন্ত চত্বর জুড়ে। দুর্গের আর এক আকর্ষণ মহারাজা বারিসাল-এর গড়া বাদলবিলাস প্রাসাদের অংশ মেঘ দরবার বা টাওয়ার অব ক্লাউডস। প্রাসাদ শিরে মুসলিম স্থাপত্যের নিদর্শন তাজিয়া-মিনার। সতী পীঠ অর্থাৎ জ্বরব্রত নিত্য নারীরা; তেমনই দেওয়ান-ই-আমের পাথরের সিংহাসনটিও অনবদ্য। প্রাসাদের কাছেই নারায়ণ ও শক্তি স্তম্ভ।

হিন্দু ক্ষত্রিয় সূর্য বংশীয় রাওয়ালদের দুর্গে ১২-১৫ শতকের ৮টি জৈন ও ৪টি হিন্দু মন্দির—দেববিগ্রহ নৃত্য-রতা মূর্তি ও পৌরাণিক দৃশ্যে সুসজ্জিত। নানান রত্নখচিত জৈন তীর্থঙ্করের চোখের ভয়াবহতায় অভিনবত্ব আছে। পাল্লায় গড়া মহাবীরের মূর্তি অনবদ্য। মূর্তিও হয়েছে ৬৬৬৬টি নানান জৈন তীর্থঙ্করের। দিলওয়ারার মতো উচ্চাসের না হলেও পার্শ্বনাথ জী কা মন্দিরের কারুকার্য ভালই। রিখাবলি ও সম্ভবনাথও উন্মেষ। সকাল থেকে দুপুর ১২-০০টায় খোলা। সূর্যমন্দিরের বিপরীতে পথ উঠেছে শহর তথা মরু সেখার। মন্দির কমপ্লেক্সে জিনভদ্র সূরী জ্ঞান ভাণ্ডার তথা মিউজিয়মের অমূল্য সংগ্রহও পর্যটকদের আর এক আকর্ষণ। ১১২৬টি তালপাতার আর ২২৫৭টি কাগজের পুঁথি রয়েছে জ্ঞান ভাণ্ডারের লাইব্রেরিতে। এর কোনো কোনোটি ১২ শতকের। দীর্ঘতম তালপাতার পুঁথি ০.৯ মি অর্থাৎ ৩৩ ইঞ্চি লম্বা। এর কাঠের আবরণটিও সুন্দর। ৯—১১-০০টায় খোলা। দুর্গের আর এক বিশেষত্ব প্রাসাদ ও সাধারণের বাড়ি-ঘর মিলেমিশে গড়ে উঠেছে। হাজার তিনেক লোকের বাস দুর্গে। টিকিট লাগে দুর্গের অংশে দেখতে ৫ টাকার। ৮—১৩-০০ ও ১৫—১৭-০০টায় খোলা।

তবে, আজকের জয়সলমীরের আর এক অভিনব আকর্ষণ—পাথর-কুঁড়ে তৈরি সূক্ষ্ম জাকিরির কারুকার্য বা বিশ্বভূবনে অন্যত্র নেই। সিলিং-এ হয়েছে রঙিন অলঙ্করণ। অতীতে ব্যবসায়ীদের ধন আর দক্ষ শিল্পীর অলস সময়ের সমন্বয়ে রূপ পেয়েছে বেশ কয়েকটি হাডেলী অর্থাৎ বাড়ি দুর্গ থেকে বেরুতেই মূল বাজার মানেক চককে মধ্যমণি করে। সর্কারী গলিপথে ১৮ শতকের ৫-তলা পাটওয়ান কী হাডেলীর জাকিরির উৎকর্ষতা অতুলনীয়। সুন্দর ম্যুরালে অলঙ্কৃত, বাড়ির ছাদে উঠে দেখে নেওয়া যায়। বাড়িটি সরকারি অধিগ্রহণ করলেও পক্ষীকুল আশ্রান্য বৈশিষ্ট্যে এর অন্যর মতল। ১৯ শতকের শেষভাগে তৈরি সেকালের এক

প্রধানমন্ত্রীর বাড়ি নাথমলজী কী হাভেলী দুই শিল্পী ভাইয়ের দক্ষতার অনবদ্য নিদর্শন। পাথরে সূরের জাল বুনেছে, মিনিয়চার খর্মী ছবিতে দেওয়াল অলঙ্কৃত। ৩০০ বছরেরও অধিক পুরাতন আর এক প্রধানমন্ত্রীর বাড়ি সেলিম সিং জী কী হাভেলীর জাকরির কাজেও অভিনবত্ব আছে। বিলান যুক্ত ছাদ, ময়ূরের ঢঙে ব্র্যাক্টি, খুবই সুন্দর। অতীতে আরও ২টি তলা ছিল কাঠের। প্রাসাদ থেকে উচ্চতা বেড়ে যেতে দান্তিক রাজ্যমশায় ভেঙে দেন তলা দু'টি। রাজা কামহলের জাকরির কাজেও অনবদ্য। পর্যটকদের একান্তই উচিত হবে ১০-৩০—১৭-০০টায় হাভেলী দেখে নেওয়া।

জয়সলমীরের আর এক অতীত তার পানিহারা। কলসির পর কলসি বসিয়ে শহরের দক্ষিণে প্রাচীর ছাড়িয়ে ২ কিমি দূরের গদীসুর সরোবর থেকে দল বেঁধে রাজহানী সাজে মেয়েদের জল আনার দৃশ্যটিও সুন্দর। নানান মন্দিরও আছে গদীসুরে। সুন্দর কারুকার্যময় তোরণে প্রবেশ। কৃষ্ণ মন্দিরও হয়েছে তোরণ শিরে। আর শীতের দিনে জলচর পাখিরা ভেসে বেড়ায় সরোবরের জলে। সেও আর এক সুন্দর। থোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। গদীসুরের অদূরে রানাকে ভেট দেওয়া মুসলিম ভাস্করদের তৈরি ৫ তলা তাজিয়া টাওয়ার। তেমনই রামগড়মুখী বড়াবাগ ফল ক্রোতি, শহরাস্তে পথেই পড়ে টাগিয়ানী সতী রানী ছত্ৰীশ অর্থাৎ রাজকীয় সেনাটাক, উচিত হবে দেখে নেওয়া।

জয়সলমীরের হস্তশিল্পেরও যথেষ্ট প্রশস্তি পর্যটক মহলে। সূচিশিল্প ও কাচ বসানো নানান বসন, ভূষণ, পাথরের সামগ্রী, উলেন কব্বলেরও যথেষ্ট প্রশস্তি। ত্রিকুট পাহাড়ের নিচে সেন্ট্রাল মার্কেটে কিনতে মেলে। আবার পশ্চিমে অমর সাগর গেটের কাছেও নতুন প্রাসাদ, ব্যাঙ্ক, হোটেল ও দোকানপাট আছে। অদূরে দেওয়াল ছাড়িয়ে টুরিস্ট বাংলা তথা টুরিস্ট অফিস জয়সলমীরে।

জয়সলমীরের আর এক আকর্ষণ ফেরারির পূর্ণিমায় ৩ দিনের মক্কা উৎসব। নানানধর্মী নাচ-গান-বাজনায় মেতে ওঠে জয়সলমীর। ঝলমলে রাজ ঘরানার সাজে রাজহানী নারী ও পুরুষ মিছিলে অংশ নেয়। রক্তবেরঙের ট্যাবলোও চলে মিছিলে। উটেরাও অংশ নেয় রেস ও নাচে। রাজ্য ছাড়িয়ে দেশ-মেশান্তর থেকে দর্শক আসেন মক্কা উৎসবে। বিহুল হয়ে দর্শক দেখেন কাঠি নাচ, ভাঙা নাচ, গৌফের লড়াই, পাগড়ি বাঁধার প্রতিযোগিতা, লোক সঙ্গীত আরও কত কি। আতসবাজিও পোড়ে শেষের সেদিন মেলার আসরে। আগামী মক্কা উৎসব ফেব্রুয়ারির ৯-১১, ১৯৯৮এ। বিকিকিনি চলে নানান হস্তজাত শিল্প-সামগ্রীর উৎসবে। গড়ে ওঠে RTDC-র টুরিস্ট ভিলেজ মক্কা উৎসবে। তেমনই প্রশস্তি মার্চের হোলি উৎসবের জয়সলমীরে। মন্দির ও প্যালেসমকী ঘিরে নাচ-গান-বাজনায় মথিত হয়ে ওঠে জয়সলমীর। আবার ওড়ে আকাশ ছেয়ে জয়সলমীরের।

তিন সপ্তাহে রাজহান

প্রথম দিন ট্রেনে কাটিয়ে সন্ধ্যায় দিল্লী জং পৌঁছান। দিল্লী সরাই রোহিলা থেকে মিটারগেজ লাইনে ২১-২৫এ বিকানীর মেল বা ২৩-১০এ শেখাবতী লিঙ্ক এর চাপন। ২য় দিন সকাল ৮-২০/১০-৫০এ বিকানীর পৌঁছে দিনে দিনে শহর দেখে রাতের বিশ্রাম বিকানীরে। (আবার ২৩-৩০এ হাওড়া ছেড়ে যোধপুর এন্ডের বিকানীর বগিতে ৩য় দিন ১১-২০এ চলা যেতে পারে বিকানীরে।) ৩য় দিন ৬-০০, ৭-০০ বা ৮-৩০টার বাসে রওয়ানা হয়ে জয়সলমীর পৌঁছান ৮ ঘণ্টায়। ২য় দিন রাতের বাসেও চলা যেতে পারে জয়সলমীরে। ৪র্থ দিন Sands dune অর্থাৎ মরুভূমির মোহিনী রূপ দেখে জয়সলমীরে বিশ্রাম। ৫ম দিন জয়সলমীর বেড়িয়ে রাতের ট্রেনে রওয়ানা হয়ে যোধপুর পৌঁছান পরদিন উষাকালে। ৬ষ্ঠ দিনে যোধপুর বেড়িয়ে কাটান। ৭ম দিন ১০-২০র প্যালেসজার ট্রেনে মাড়োয়ার/আবু রোড হয়ে আবু পাহাড়ে পৌঁছান সন্ধ্যায়। মরুভূমির প্রতি বৈরাগ্য থাকলে ২য় দিনেই দিল্লী থেকে সরাসরি আবু চলুন। ৮ম দিন আবু পাহাড় দেখে নিন প্যাকেজ ট্যুরে। ৯ম দিন বেড়িয়ে-কাটিয়ে আবু পাহাড়ে বিশ্রাম। ১০ম দিন সকাল ৮-৩০র বাসে রওয়ানা হয়ে উদয়পুর পৌঁছে যান বিকাল বিকাল। ১১শ দিন সকাল-দুপুর ২টি প্যাকেজ ট্যুরে বা এককভাবে শহর দেখুন। ১২শ দিন সকালেই চলুন চিতোর। বিকালে গড় বেড়িয়ে নিন। ১৩শ দিন সকালের বাসে চলুন কোটা বা আজমের। ১৪শ দিনে কোটা বেড়িয়ে নিন। ১৫শ দিন সাত-সকালে বৃত্তী চলুন। ষষ্ঠা পাঁচকে বৃত্তী বেড়িয়ে বিকালের বাসে রওয়ানা হয়ে সন্ধ্যায় আজমের পৌঁছে যান। ১৬শ দিন সকালেই বাসে চলুন পুন্ডর—পায়ে পায়ে সাবিদী মণির দর্শন, পুন্ডর মন্দির, পূজা দিন ব্রহ্মা মন্দির। বিকালে আজমের বেড়িয়ে নিন। দর্শনে যাচিতি থাকলে ১৭শ দিন সকালে দেখে নিন আজমের। দুপুরে বাসেই চলুন জয়পুর। ১৮শ দিনে শহর বেড়িয়ে, ১৯শ দিনে কেনাকাটা ও বিশ্রাম। ২০শ দিনে ভরতপুর পৌঁছে যান বাসে। ২১শ দিনে পক্ষীআলয় দেখে দীপ বেড়িয়ে নিতে পারেন। উৎসাহীরা মথুরা/আগ্রায়ও যেতে পারেন বাসে বাসে। সময়ভাবে দিল্লী ফিরুন ভরতপুর থেকে ট্রেন বা বাসে। দিল্লী থেকে ঘরে ফেরার পালা। পূর্ব ভারত যাত্রায় ২৩-২০এ জয়পুর থেকে যোধপুর-হাওড়া এন্ডেরও ফেরা যেতে পারে।



Jaisalmer-345001, STD 02992এ—রেল স্টেশন রেখে শহরে ঢুকতেই RTDC-র হোটেল মুমল। টুরিস্ট অফিসটিও হোটেল মুমল-এ। আরও আধ কিমি গিয়ে বাস স্ট্যান্ড। আর ট্যাক্সি স্ট্যান্ড অমর সাগর গেটের সন্নিকটে। বাস স্ট্যান্ড থেকেই বাজার তথা শহর। হোটেলগুলিও গড়ে উঠেছে বানকে কেন্দ্রমণি করে। অক্টোবর থেকে মার্চের মরসুম ছাড়া বাকি সময়ে রেন্ট নামে নিতে জয়সলমীরে। পায়ে-পায়ে, রিকশা বা মিটারহীন ট্যাক্সিতে পৌঁছে যান হোটেল। তেমনই উচিত হবে দালাল পরিহার করে চলা। তবে, নানান হোটেল গাড়িও পাঠায় যাত্রীর খোঁজে রেল ও বাস স্টেশনে। নিবহারা বাতায়ত হোটেল অবস্থানকারীসে।

RTDC-র H Moomal, Jaisalmer-345001, 0 52392, R3B₁, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A-C S ৫০০ D ৬৫০ A/C S

৭০০ D ৮৫০; অভিনব হাট S ৩৫৫ D ৪৫০ ডব্লিউ ৫০; কল ব্রুকিং: Linkage @ 2465171; অদূরে শহরমুখী H Neeraj, @ 52442, DAB ৫০০-৮৫০; কল ব্রুকিং: Linkage @ 2465171. রেল স্টেশনের কাছে H Ashoka, S ৪৫০ D ৬০০; গাছীচকে H Mandir Palace, D ৭৫০-১৫০০; অদূরে H Nachna Haveli, @ 52110, DAB ৬৫০-১০০০; পুরাতন শহরের পিছে পাহাড়ী টিলায় *Narayan Niwas Palace, Malka Prol-1, near SBI, A5R3, @ 52753, A/c S ১৩৭৫ D ১৬৭৫; সুইট ২২০০ কল ব্রুকিং: Span @ 2801209; লাগোয়া H Sri Narayan Vilas, মান ও দামে নারায়ণ নিবাসেরই তুল্য। পুরাতন শহরের মধ্যমনি হয়ে—Narayan Vilas, S ১৫০ D ২২৫; Sunil Bhatiya R H, SCB ৮০, DCB ১২৫, SAB ১০০, DAB ১৭৫; Sun Ray H, near SBI, @ 22270, SCB ৪৫, SAB ৮০-১২৫, DCB ৮৫, DAB ১২৫-১৭৫; H Rama, Bhatia St, A-c S ২৫০ D ৪০০; রামার পিছে H Samrat, @ 53298, D ১২৫-২০০; H Swastika, near Amar Sagar Gate, opp SBI, @ 22483, SCB ৬০, SAB ১০০, DCB ১২৫, DAB ১৭৫; স্বস্তি যেতে একই পথে H Renuka, মান ও দামে স্বস্তিকা তুল্য। মধ্যমানের স্বস্তিকা ও রেনুকা অবস্থানে ভাই H Anand Vilash; H Pleasure, Gandhi Chowk, S ৮০ D ১৫০; H Haveli, opp Girls School, S ৮০-১৫০ D ১৫০-২২৫; Purohit R H, Gandhi Chowk, S ৬০ D ১০০; H Rajdhani, near Patwan Ki Haveli, SCB ১২৫, DCB ১৭৫, SAB ২৫০, DAB ৪০০। শহরান্তে অতীতের গেস্ট হাউসে Jawahar Niwas, @ 52208, DAB ১০০০-১৭৫০, কল ব্রুকিং: Span @ 2801209; বাজার পেরিয়ে দুর্গের দক্ষিণ-পূবে H Madhuvan, DCB ১২৫-২০০, DAB ৫৫০-১৫০; পাশেই H Anurag, মান ও দামে মধুন তুল্য; H Dholamari, Jaisalmer-1, @ 52863, A/c S ৪৫০ D ৫৯০ সুইট ৭৫ US \$.

দুর্গের প্রবেশপথে Fort View H, Gopa Chowk, DAB ১৫০-৩২৫, A-c D ৪৫০; লাগোয়া অতি সাধারণ H Flamingo; H Desert, R2; B1, S ৮০-১৫০ D ১৫০-২৭৫ ডব্লিউ ৪০; অদূরে Tourist H, S ৬০-৮৫ D ১০০-২২৫; New Tourist H, DAB ১২৫-২০০, ছাঙ্গে ২০ হারে; H Prince, S ১০০ D ১৭৫ ডব্লিউ ৪০। আর দুর্গে রয়েছে H Jaisal Castle, DAB ৭৫০-১২৫, TAB ৯০০-১৭৫০, হাউসলীখমী জয়সল অবদান মাধ্যম্যে অনন্য; Dipak R H, D ১৭৫-২২৫; H Srinath Palace, S ৩০০ D ৫০০, এদের ৯ ও ৮ নম্বর ঘর দুটি ভাই; H Paradise, DCB ১২৫-২৫০, DAB ১৭৫-২৫০; Rang Niwas, H Luxmi Niwas D ১৭৫-২৫০; H Ravwal, DAB ৪০০-৬৫০; Golden R H, Nayak Mahalla, DCB ১০০, DAB ১৭৫, A-c D ২৫০; পুরাতন হাউসলীতে Shree Giriraj Palace, @ 22266, DCB ১২৫, DAB ১৭৫-২২৫; বিলাসবল্য *H Heritage Inn, Sam Rd-1, @ 53038, A/c S ১৩৫০ D ১৭৫০, সুইট ৩০০০; H Prakash, Ramgarh Rd, S ৪২৫-৬৭৫ D ৬০০-৯৫০; *H Hinayatgarh Palace, 1 Ramgarh Rd, @ 52002, S ১২৯৫ D ২০০০, A/c S ১৪৯৫ D ২৫৫০; H Mangalam, H Pooja, Tuj Palace, Gorbundah Palace, Tourist Complex, Sam Rd-1, A2; R2, A/c S ১৭৫০ D ২২৫০ সুইট ২৫০০; H Sonu, @ 52468; ছাড়াও নানান হোটেল আছে জয়সলমীরে।

আর আছে ধরমশালা Bhatia, Barechi, Jain @ 52404, Maheswari Sewa Sadan, Sewa, Green, Suray, রেল স্টেশনের কাছে Kasirun Vyas @ 52529, জয়সলমীরে। সাক্ষি হাউস, PHED RH, ডাকবাংলো, R3B1-ও আছে জয়সলমীরে। তবুও থাকার জন্য তারকাখচিত হোটেলগুলির সাথে H Moomal, H Jaisal Castle, Rama GH, H Neeraj, Dipak R H, Swastika, Renuka, আজও রমণীয়। এমনকি জয়সল ও রমা থেকে দুর্গ, স্বস্তি ও সুবেদিয় স্মরণ দৃশ্যমান। আর আহার্যে হোটেল মুমলা; SBI-এর কাছে গেলড, কখনা, পুরোহিত, মনিকা রেস্টুরেন্টগুলি ভালই। ভারতীয় ও চীনা আহার্য মেলে এসের কাছে। অমরসাগর গেটে ট্রায়ে রও যথেষ্ট সুনাম আহার্য পরিবেশায়। লাগোয়া SBI-এর উপর Skyroom Restaurant-এ ভারতীয়, চীনা ও কন্টিনেন্টাল আহার্য মেলে। লসিয়রও যাদ নিতে পারেন চলতে-ফিরতে দোকানপাটে জয়সলমীরে। কোর্ট ভিউ-এর পিছে কাঞ্চনতীতে ১৮ ধরনের লসিয়ও মেলে।

জয়সলমীর বেড়িয়ে ব্রডগেজ রেল ৭-৩০টার প্যাসেঞ্জারে ২ঘণ্টায় পোখরান হয়ে ১৫-২০এ বা ২২-৩০এর এক্সে পরদিন ৫-১০এ বা ১১-৩০এ জয়পুরের বাসে ২৯৫ কিমি দূরের যোধপুর পৌঁছান। RTDC-র ডিলাপ বাসও আছে জয়সলমীর থেকে ৬-০০ ও ১৩-০০টায় ছেড়ে ৫২ ঘণ্টায় যোধপুরে। STC বাস আছে ৫-৩০, ৭-০০, ৯-৩০, ১৩-০০, ১৪-০০, ১৫-৩০, ১৭-০০, ২১-০০টায়। প্রাইভেট ডিলাপও আছে জয়সলমীর থেকে যোধপুরে। পোখরান হয়ে ৩৩০ কিমি দূরের বিকানীর বাসে ৬-০০, ১১-০০, ২০-০০, ২১-৩০এ ছেড়ে ৮ ঘণ্টায়। ৬৫৪ কিমি দূরের জয়পুর বাসে ৫-৩০ ও ১৭-০০টায়। সরাসরি জয়সলমীর যাত্রায় যোধপুর হয়ে চলাই সুবিধার। যোধপুর হয়েই পথ গিয়েছে উদয়পুর, আজমের, জয়পুর ও দিল্লী। আর চলাই বামুদুত ত্রিসাপ্তাহিক সার্ভিসে দিল্লী-জয়পুর-যোধপুর-জয়সলমীরের মাঝে। তবে, বাড়মের ভ্রমণার্থী-দের বাড়মের বেড়িয়ে যোধপুর যোগাই উচিত হবে।

বাড়মের

মরুভূমির রূপসী রূপ উপভোগ করতে জয়সলমীর থেকে ৬-৩০, ৭-৩০, ৮-৩০, ৯-৩০, ১১-৩০, ১২-৩০, ১৪-০০, ১৫-০০, ১৬-৩০টার বাসে চলুন বাড়মের। দূরত্ব ১৩৫ কিমি, ৪ ঘণ্টার পথ। চলার পথে জয়সলমীর থেকে ১৪ কিমি গিয়ে আরও ৩ কিমি দূরে ১৮০ মিলিয়ন বছরের প্রাচীন বৃক্ষের পাখররূপী কসিলও দেখে নেওয়া যায় কসিল পার্ক। হোটেল ছাড়াও মরুভূমির বৈচিত্র্যের সাথে বাড়মেরের হৃৎপিণ্ড-দাক, কার্পেট, এমব্রয়ডারির প্রশস্তি আছে পর্বতকম্বলে। যোধপুর থেকে ট্রেনে বাড়মের আসা চলে। তাই, যোধপুর থেকেও বাড়মের বেড়িয়ে জয়সলমীর চলা যেতে পারে। Agru R H, Station Rd, Barmer; ছাড়াও হোটেল ও ধরমশালা আছে বাড়মেরে। তাই উচিত হবে ৭-৩০টার বাসে জয়সলমীর ছেড়ে ১১-৩০টার বাড়মের পৌঁছে দিনে দিনে বাড়মের বেড়িয়ে ১৬-১৫ বা ২৩-৩০এর বাড়মের-যোধপুর এক্সে রিডিসপেক্স ট্রেনে যথাক্রমে ২০-৫৫ ও পরদিন ৪-৪৫এ ২১০ কিমি দূরের যোধপুর চলা। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও আছে সকাল ৫-৩০এ বাড়মের ছেড়ে ১২-২৫এ যোধপুরে। বাসও আছে ৭-০০ ও ১৭-০০টার এপথে। বাস আছে ওজরাটের পালানপুরও বাড়মের থেকে।

আবার অত্যাৎসাহীরা বাড়মের থেকে ৬-৪০এর প্যাসেঞ্জার ট্রেনে ৪ ঘণ্টায় ১১৯ কিমি দূরের মুন্সাবাও গিয়ে (BSF-এর অনুমতি সাপেক্ষে) পাক সীমান্তও চোখে দেখে নিতে পারেন। সীমান্ত পেরিয়ে পাকিস্তানের হায়দরাবাদ। মুন্সাবাও থেকে ট্রেন ফেরে ১১-২০এ।

তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যায় জয়সলমীরের ৪০কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে পাকিস্তান সীমান্তবর্তী খুরী। খুরীরও মূল আকর্ষণ স্যান্ড ডিউনস অর্থাৎ সোনালী বালির প্রবাহ। সুবাস্তে রঙের বগলী সেও রমণীয়। যোথা রাজপুতদের বাস। আজও এসের মধ্যে রাজপুত কুটির ছাপ বিদ্যমান। বাস যাচ্ছে জয়সলমীর থেকে, ২২ ঘণ্টার পথ। আবার জিপেও সাঙ্গ করা যায় এস-সফর। খুরীতেও হোটেল আছে। আবার স্থানীয়দের বাড়ি-ঘরেও থাকার ব্যবস্থা মেলে। AP প্রথায় ২৫০-৩২৫ প্রতি-জনা। ভগবান সিং-এর সাথেও যোগাযোগ করা যেতে পারে খুরী পৌঁছে। খুরী থেকেও কোমেল সাফরি ট্রাকের ব্যবস্থা মেলে। তবে পাক সীমান্তবর্তী এলাকা, নিরাপত্তাজনিত কারণে পদে পদে ভোগান্তি এপথে। আর বিদেশীদের কাছে রুদ্ধ এপথ।

যোধপুর

মরুশার মাহারো দেশ

মহানে ভালে লাগে জি

২৩৬ মি উঁচু বেলেপাথরের পাহাড়ে রাজ্যের দ্বিতীয় বৃহত্তম শহর (জয়পুরের পর) যোধপুর। ১৪৫৯ এ রাঠোর রাজপুত প্রধান রাও যোধার হাতে শহরের পত্তন। Baggy-light ট্রাউজার্স Jodhpurs থেকে শহরের যোধপুর নামকরণ। অতীতে রাঠোর রাজাদের মাড়োয়ার অর্থাৎ মরুদেশের রাজধানীও ছিল এই যোধপুর। রামায়ণের রামচন্দ্রর বংশধর এই রাঠোর রাজপুত বংশ। এমনকি রামায়ণেও নর্থান মাড়োয়ার নামে উল্লেখ মেলে যোধপুরের। অতীতের ক্যারাতান রুটটিও ছিল যোধপুর-জয়সলমীর হয়ে মধ্য-প্রাচ্যে। সেই সুবাদে ব্যবসার দৌলতে যোধপুরের সমৃদ্ধি। পরিচিতিও ছিল মাড়োয়ারি বলে এসের। যোধপুর ২টি দুর্গ আর জলাশয়ের জন্য পর্যটক প্রিয়। তেমনই প্রিয় টাই অ্যান্ড ডাই প্রিন্ট ও যোধপুরের জুতো। মরু অঞ্চলের ওরুও এই

যোধপুর থেকে। ১৬শতকে ৮টি গেটে ১০ কিমি দীর্ঘ এক দেওয়াল গড়ে মরুর গ্রাস থেকে শহর বাঁচাতে প্রাচীর দেওয়া হয় যোধপুরে। তাপমান গ্রীষ্মে ৩৬.৬—৪২.২° আর শীতে ১৫.৫—২৭.৫° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। বেড়াবার মনোরম সময় অক্টোবর থেকে মার্চ মাস।

অতীতের সুন্দর শহর যোধপুরের পর্যটক আকর্ষণ বহুবিধ। গুলাব সাগরের পাড়ে তাল হাতি-কা-মহল এবং রাজমহল প্রাসাদ দুটির সৌন্দর্য পর্যটকদের মুগ্ধ করে। সুন্দর চুড়ো মাথায় গঙ্গাশ্যাম মন্দির, মাণ্ডোরের পথে ২ কিমি যেতে ৮৪ স্তম্ভের নাথ সম্প্রদায়ের মহামন্দির, শৌর্বের প্রতীক মেহেরগড় দুর্গ, যশোবন্ত থারা, চিত্তাকর্ষক উমাইদ ভবনের সৌন্দর্যও মুগ্ধ করে দর্শকদের।



জয়সলমীর থেকে যোধপুর পৌঁছান রেল বা বাসে। নবতম ব্রডগেজ ৭-৩০এ জয়সলমীর ছেড়ে পোখরান/ গুশিয়া হয়ে ১৫-২০এ যোধপুর যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। আর এক্স যাচ্ছে ২২-৩০এ জয়সলমীর ছেড়ে পরদিন ৫-১০এ যোধপুরে। RTDC-র ডিলাক্স বাস ৬-০০ ও ১৩-০০টায় জয়সলমীর ছেড়ে ৫২ ঘণ্টায় যোধপুর যাচ্ছে। RTC ও নানান প্রাইভেট বাসও চলে এপথে। ব্রডগেজ ও মিটারগেজ রেলে মাড়োয়ার হরমও ট্রেন সংযোগ গড়েছে রাজ্যের বিভিন্ন প্রান্তের সঙ্গে যোধপুরের। ৭-৪০এ যোধপুর ছেড়ে 4827 রণকপুর এক্স যাচ্ছে মাড়োয়ার ১০-৩০, আবু রোড ১৫-১০, পালানপুর ১৬-৩৫, মাহেসানা ১৮-০৫এ ছেড়ে ২০-০০টায় আমেদাবাদে। ১৫-৩০এ যোধপুর ছেড়ে ১-০৫এ পালানপুর, ২-৫৫য় মাহেসানা পৌঁছে আমেদাবাদ যাচ্ছে ৪-৪৫এ 9966 যোধপুর-আমেদাবাদ এক্স। সূর্যনগরী এক্স যাচ্ছে ২১-০৫এ যোধপুর ছেড়ে ২-৩১এ আবু রোড পৌঁছে ৬-২০এ আমেদাবাদ। ১৯-৩০এ যোধপুর ছেড়ে ১১২ ঘণ্টায় দিল্লী সরাই রোহিলায় যাচ্ছে 2462 যোধপুর-দিল্লী মাতোর এক্স। দিল্লী রোহিলা ছাড় ২১-০০টায় দিল্লী-যোধপুর মাতোর এক্স। যোধপুর-উদয়পুর প্যাসেঞ্জার ১০-১০এ যোধপুর ছেড়ে মাড়োয়ার ১৩-৩৫, মাতলী ১৯-৩০এ পৌঁছে উদয়পুর যাচ্ছে ২১-৪৫এ; আর ২২-০০টায় যোধপুর ছেড়ে মাড়োয়ার ০-৪৫, মাতলী ৬-৩৫এ পৌঁছে উদয়পুর যাচ্ছে ৮-২৫এ। বাড়মের-জয়পুর এক্স, কোটা-জয়পুর এক্সও যাচ্ছে যোধপুর হয়ে।

এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে যোধপুর-জম্মু এক্স, যোধপুর-কোটা প্যা, যোধপুর-বিকানীর প্যা, যোধপুর-বিকানীর ইন্টারসিটি এক্স, দিল্লী-

বাংলার ঘরে ঘরে অপরিহার্য

ঘরোয়া চিকিৎসা

৭০.০০

সহজ আয়ুর্বেদীয় রীতিতে রোগ

নিরাময়ের বিশান

সম্পাদনা : অধ্যাপক সুধেন্দু দাশ শর্মা

বাঁচার জন্য খাওয়া—আর সেই খাওয়াকে

সুস্বাদু মুখরোচক করতে দেশ-বিদেশের

হাজারো রান্নার অমনিবাস

সুব্রতা দে

১০০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

আমেদাবাদ রেলের মাড়োয়ার ও জয়পুর যাত্বে নানান ট্রেন। নবতম ব্রডগেজে ৫-৫৫য় যোথপুর ছেড়ে ১০-৩০এ জয়পুর যাত্বে ২৪৬৬ ইটারসিটি এক্স; যোথপুর ফেরে ১৭-৩০এ জয়পুর থেকে ২৪৬৬ ইটারসিটি ২। ৩ ৫ ৭ সিন ৯-০০টায় যোথপুর ছেড়ে ফুল্ডারা ১৪-০০, জয়পুর ১৫-০০, আলোয়ার ১৭-৪৫, আগ্রা ফুল্টা ২১-৫৫, লক্ষ্মী ৪-২৫এ পৌছে বারানসী যাত্বে ৯-৪০এ ৪৪৬৪ মরুবার এক্স; মরুবার ফেরে বারানসী থেকে ১৩ ৪ ৬ সিন ১৭-২০এ। বাড়মের যাত্বে ৭-১০ ও ২৩-৩০এ এক্স, ১১-০০টায় প্যাসেঞ্জার। জয়সলমীর যাত্বে ৭ ঘটায় ২৩-০০টায় ৪৪১০ এক্স, ৮ ঘটায় ৮-৫০এ প্যাসেঞ্জার। সরাসরি জয়সলমীর যাত্রায় যোথপুর হয়ে চলা উচিত হবে। ১১-৪০এ যোথপুর ছেড়ে বিকানীর ১৬-১০, হনুমানগড় ২১-০৫, ভাটিগা ২৩-৩০, ধুরী ১-৫৮, আছালা ৪-১৫য় পৌছে কালকা যাত্বে ব্রডগেজে ৬-৫৫য় ৪৪৪৪ কালকা এক্স; ফেরে ২১-২০এ কালকা ছেড়ে একই পথে যোথপুরে। আর ১৭-১৫য় যোথপুর ছেড়ে জয়পুর ২৩-০০, সওয়াই মাথোপুর ১-৪০, কানপুর ১১-২০, এলাহাবাদ ১৪-১০, মোগলসরাই ১৬-৫০, গয়া ২০-৪৩, আসানসোল ১-১০এ পৌছে হাওড়া যাত্বে ৪-৪০এ ২৩০৪ যোথপুর-হাওড়া এক্স; একইপথে যোথপুর আসছে ২৩-৩০এ হাওড়া ছেড়ে ২৩০৭ হাওড়া-যোথপুর এক্স। রেল স্টেশনের অদূরে স্টেশন রোডে কম্পুটারাইজড রিজার্ভেশন কাউন্টার সোম থেকে শুক্রবার ৮—১০-৪৫ ও ১৪—২০-০০টা, রবিবার ৮—১০-৪৫এ খোলা মেলে।

| যোথপুর থেকে দূরত্ব : | বাসও যাত্বে রায়কা |
|----------------------|---|
| পোখরান ১৮৬ কিমি | বাস স্ট্যান্ড ৩ ৪৪৪৭ থেকে রাজধানী স্টেট |
| জয়সলমীর ২৯৫ " | রোড ওয়েজের ৭ ঘটায় আবু রোড |
| বিকানীর ২৪০ " | ৬-০০, ৬-৩০, ১০-৩০টায়; |
| মাড়োয়ার ১০৪ " | ক্রতগামী এক্স বাস আবু যাত্বে ৬- |
| মাউন্ট আবু ২৯৪ " | ৩০ ও ১৮-০০টায় ছেড়ে ছয় |
| কাঁকরোলী ৩০৩ " | ঘটায়; নানান প্রাইভেট বাসও |
| উদয়পুর ২৭৫ " | রাত্রীকালীন সার্ভিসে আবু যাত্বে |
| আজমের ২০৫ " | যোথপুর থেকে। আবার সরাসরি |
| জয়পুর ৩৪৩ " | বাসের অমিলে ৮৪ কিমি দূরের |
| দিল্লী ৬০২ " | পালিতে বাস বদল করেও চলা যায় |
| ভরতপুর ৫১৭ " | আবু; ৭ ঘটায় জয়পুর যাত্বে ৭- |
| আগ্রা ৫৭৭ " | ০০, ৯-১৫, ১১-১৫, ১৪-১৫, |
| কোটী ৪১৩ " | ১৬-০০, ২১-৩০, ২৩-০০টায়; ৯ |

কলকাতা ১৮১৫ ঘটায় উদয়পুর যাত্বে নাথবার হয়ে ৭-৩০, ১১-৩০, ১৯-০০টায়; RTDC ও প্রাইভেট ডিলার যাত্বে ৫১ ঘটায়, আর স্টেট রোড ওয়েজ যাত্বে ৮-১১ ঘটায় জয়সলমীর; ৭ ঘটায় বিকানীর যাত্বে ৭-১৫, ৯-৩০, ১০-৪৫, ১২-১৫, ১৪-০০, ১৭-৩০, ২০-০০টায়; ঘটায় ঘটায় ছেড়ে আজমের যাত্বে ৪১ ঘটায়; আমোদাবাদ যাত্বে ১২ ঘটায় ৬-৩০টায়; কোটা যাত্বে ৬ ঘটায় ৮-১৫, ১০-১৫, ১১-০০টায়। মিটারগেজ রেল হেতু রাজধানী আজও সময় আর পরসা দুয়েরই সাফল্য মেলে বাসে। এছাড়াও বাস যাত্বে রাজ্যের নিকে নিকে যোথপুর থেকে। আর যাত্বে নানানধর্মী প্রাইভেট বাস যোথপুর থেকে মাউন্ট আবু, জয়সলমীর, জয়পুর, উদয়পুর, আজমের ছাড়াও সারা পশ্চিমে।



২৪৬৬ সিন IAC-র দিল্লী-মুম্বাই উড়ান ১৩-৪০এ দিল্লী ছেড়ে ১৪-৪০এ যোথপুর পৌছে মুম্বাই যাত্বে ১৫-১০এ। ১৭-২০এ মুম্বাই ছেড়ে ১৮-৪০এ যোথপুর পৌছে দিল্লী যাত্বে ১৯-১০এ। East West-ও দৈনিক সার্ভিস গড়েছে যোথপুর থেকে মুম্বাই-এর। শহর থেকে ৫ কিমি দূরে বিমানবন্দর। অফিস এদের টারিস্ট বাংলায়। শহরে চলছে সিটি বাস, টাঙ্ক, মিটারহীন ট্যাক্সি, অটো, রিকশা।

কনজার্টেট ট্যার: RTDC, Ghoomar Tourist Bungalow, ৩ ৪৪১০ থেকে ৯-৩০—১৩-৩০ আবার ১৪—১৮-০০টায় ৫০ টাকায় Umaid Bhawan, Palace, Mandore Gardens, Mehergarh Fort, Jaswant Thada, Museum দেখিয়ে আনে। রাজ্য সরকারের টারিস্ট অফিসটিও (৪—১২-০০ & ১৫—১৪-০০) বসেছে টারিস্ট বাংলায়। অদূরে রায় কা বাগ রেল স্টেশন ও বাসস্ট্যান্ড। তবে, যোথপুর রেল স্টেশনটি ২১ কিমি দূরে। তবুও যেন রেলের ক্রোক রুম বা টারিস্ট অফিসে লাগেজ রেখে দিলে দিনে যোথপুর বেড়িয়ে রাতের ট্রেন বা বাসে জয়সলমীর/মাউন্ট আবু/উদয়পুর বা চলা যেতে পারে নতুনের অভিসারে। নানান প্রাইভেট সংস্থাও শহর তথা ভিলেজ সাফারিতে যাত্বে যাত্রী নিয়ে যোথপুর থেকে। আহার ও বিহার নিয়ে টিকিট এদের। আবার ট্যাক্সি/অটো ৩০০/২০০ টাকায় সাদ করা যায় শহর দর্শন।

শহর থেকে ৫ কিমি দূরে ১২ মি উচ্চ গোদাগিরি পাহাড়ী টিলায় যোথপুরের মূল আকর্ষণ মেহেরগড় দুর্গ। মাড়োর থেকে রাজ্যপাট তুলে ১৪৫৯ খ্রিস্টাব্দে প্রধান রাও যোথার তৈরি। চারপাশ প্রাচীরে ঘেরা। ৬ থেকে ৩৬ মিটারের মধ্যে প্রাচীরের উচ্চতা, আর প্রস্থও থেকে ২১ মি। প্রাচীরে গায়ে কোথাও গোলা আবার কোথাও বা চতুষ্কোণ গম্বুজ। দুর্গের পরিসর দৈর্ঘ্যে ৪৫৭ আর প্রস্থে ২২৮ মি। প্রতিরক্ষায় খুবই সুদৃঢ়। জনশ্রুতি, দুর্গের গোপনীয়তা প্রকাশের ভয়ে স্থপতিক জীবন্ত সমাধিস্থ করা হয়। এককালে প্রাশাদ, সৈন্যবাস, মন্দির ও আমলাদের গৃহে গৃহে কর্মমুখর ছিল মেহেরগড় দুর্গ। এমনকি মোগলদের কাছেও অজ্ঞেয় ছিল মেহেরগড়। মিত্রতাও গড়ে ওঠে মোগল দরবারের সাথে যোথপুরে। ১৬ শতকের মধ্যভাগে রাও উদয় সিংহ আকবরের সাথে ভগিনী আর জাহাঙ্গীরের সাথে কন্যার শাদিও দেন। শের শাহও এসেছে লুণ্ঠনের মানসে মেহেরগড় গড়ে। বিজাতীয় রোবে মন্দির ভেঙে মসজিদও গড়ে শের শাহ। ১৬৭৮এ ঔরঙ্গজেব জয়ের সাথে ধ্বংস করে নগরী। ঔরঙ্গজেবের এস্তেকালের পর ১৭০৮এ অজিত সিংহ পুনরুদ্ধার করেন রাজ্য। তবে, শতাব্দিক বছরের সংঘাতে জড়িয়ে পড়ে মারাঠাদের সাথে যোথপুর। আর ব্রিটিশ আশে ১৮ শতকে। মিতানীর সুবাসে নেটিভ স্টেট গড়ে সারা রাজপুতানা ছুড়ে ব্রিটিশ। আর স্বাধীনোত্তর ভারতে রাজ্য গেলেও রাজবাড়িটি আজও মহারাজার তত্ত্বাবধানে। তবে আজকের পর্যটকদের কাছে এর আকর্ষণ মিডিজিয়ম রূপে। ১৮টি ভাগে প্রদর্শিত হয়েছে অতীত সজ্জার ইতিহাসখ্যাত মেহেরগড় দুর্গ।

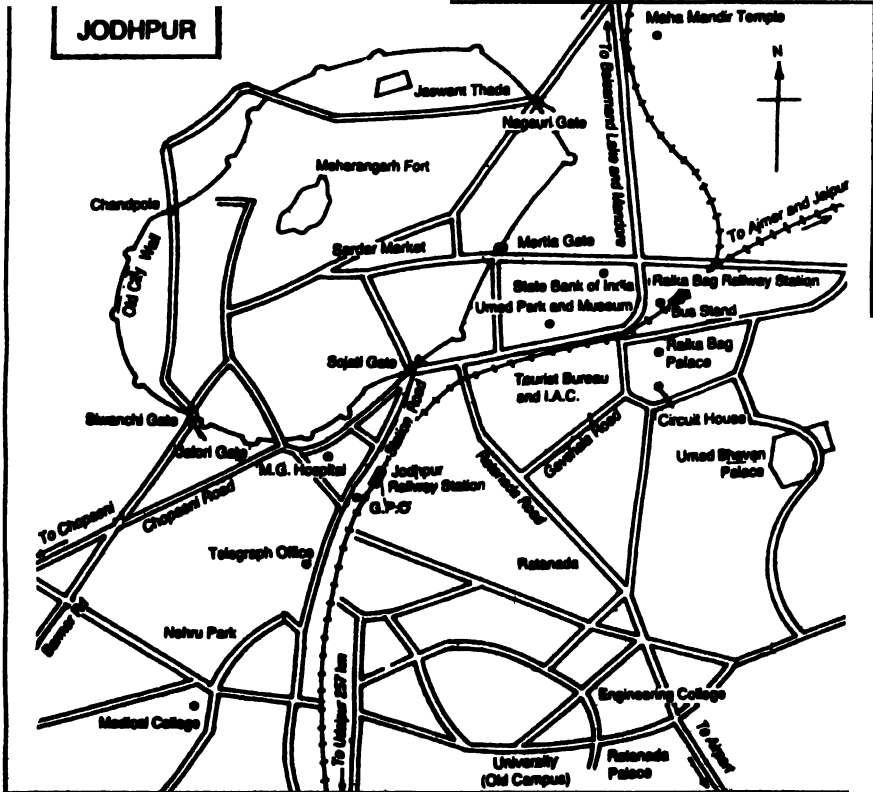
দুর্গে দুকতই বাবা সহকারে সঙ্গীতে রাজকীর অভ্যর্থনা। প্রথম পোনের গোলায় দাগ আজও তার অতীত বিক্রমকে স্মরণ করায়। দুর্গের উত্তর-পূর্বের জয় পোলাটি বিকানীর ও

জয়পুরের সম্মিলিত বাহিনী জয়ের স্মারকরূপে ১৮০৬এ মহারাজা মান সিংহের তৈরি। অদূরে জয়পুর মহারাজার আক্রমণে দুর্গ রক্ষী বাহিনীর পতনস্থলে স্মারক-রূপে ছোট গম্বুজওয়ালা সেনাট্যাক হয়েছে। আর পশ্চিমের ফতে পোল বা গেটওয়ায়ে অব ভিক্টরি তৈরি করেন অজিত সিং ১৭০৭এ মোগলদের যুদ্ধে হারাবার স্মারকরূপে। ১৮৪৩এ মহারাজা মান সিংহের চিতায় আত্মহুতি দেওয়া ১৫ জন রাঠোর রমণীর (সতী) হাতের ছাপ রয়েছে লোহা পোল অর্থাৎ শেষ দরজায়।

দুর্গেও মহলের পর মহল—নান্দনিকতায় মহীয়ান রাজকীয় বৈভবে আকর্ষণীয় মোতিমহল আর ৮০ কিলো সোনায় অলঙ্কৃত ফুলমহল অর্থাৎ দরবার হল উত্তরকালে মহারাজা অভয় সিংহের তৈরি। সোনালী থামের বাহার, সোনা রঙের ফুল খিলানের বাঁকে বাঁকে, ছাপেও নকশা কাটা ফুলের আকারে। শিলেখানায় রণসাজ ও অস্ত্রশস্ত্রের প্রদর্শনী, নানানধর্মী ছবি, ১৭ই কিলো ওজনের তাল, কিংখাবে মোড়া নানানধর্মী হাওদা, দোলনা, রম্মাল হারেম বা জেনানা মহলে জাকরির অভিনবত্ব, শাজাহানের সফরসঙ্গী বিলাসবহুল

তাবুর প্রাসাদ, অজিত বিলাসে বসনের সম্ভার, টেপে বালায়ন্ত্র পরিচিতিসহ লহরার আকর্ষণও কম নয় পর্যটকদের কাছে। তেমনই রানী ও গুলাব সাগর দু'টি তালো হয়েছ দুর্গে। দুর্গের দক্ষিণ রায়মপাটে কামানের সংগ্রহ ও কেন্দ্রার আরাখ্যা দেবী চামুণ্ডা অর্থাৎ দুর্গা মন্দিরটিও দর্শনীয়। পুরাতন শহরও সুন্দর দৃশ্যমান রায়মপাট থেকে। সহজেই চিনে নেওয়া যায় বাড়ির রঙ সবুজ দেখে যোধপুরের ব্রাহ্মণদের বাড়ি। দুর্গের স্থাপত্য, ভাস্কর্য, অলঙ্করণ, বৈভব, এমনকি জ্ঞানালয় ৩৬০ ধর্মী জাকরির কাজ অনবদ্য করে তুলেছে দুর্গকে। ৯—১৭-০০টার খোলা, গাইড সহ দুর্গ দর্শনী ১০, অভ্যর্থনায় ২০; ক্যামেরারও চার্জ লাগে মান হারে।

দুর্গের পাদদেশে যশোবন্ত খাড়া। শ্বেত মর্মরে ১৮৯৯এ বিধবা রানীর তৈরি। মহারাজা যশোবন্ত সিং দ্বিতীয়র স্মারকসৌধ এটি। সৌধ হয়েছে আরও তিন মন্দিরের ঢঙে। শিরোপরি চুড়ো-মাথায় খাতব কলস। পর্দারূপী সুক্ষ্ম মর্মরের চাদরে ফিস্টার হয়ে সূর্যালোক ভেতরে যেত অতীতে। যোধপুরের রাঠোর শাসকদের ছবিও রয়েছে অন্দরে।



যোধপুরের আর এক আকর্ষণ শহরাতে ইতালীয় শৈলীতে তৈরি গোলাপী মর্মরের উমাইদ ভবন প্যালেস। দুর্ভিক্ষে ত্রাণ দিতে ১৯২৯এ শুরু হয়ে দেড় কোটি টাকা ব্যয়ে মর্মর আর লাল বেলেপাথরে উমাইদ সিংজীর হাতে শেষ হয় ১৯৪২এ। H U Lancaster ও J R Lodge-এর পরিকল্পনায় জোড়হীন ইটারলকিং প্রথায় গড়ে উঠেছে অভিনব এই প্রাসাদপুরী। তবে, প্রাসাদের অংশ জুড়ে মিউজিয়ম—সেও এক অনন্য দর্শন। সোনায়ে মোড়া পৌরাণিক আখ্যান চিত্রিত দেওয়ানী খাস, দেওয়ানী আম, লাইব্রেরি ভবন, ঘড়ির রকম-ফের—টিকলিতে ঘড়ি, আংটিতে ঘড়ি, ঘড়ির আওয়াজে পাবির কুজ, মহারাজার মডেল বিমান, অস্ত্রশ্রেণী অভিনবত্ব আছে। ১৯৫x১০৩ মি ব্যাপ্ত প্রাসাদের কেন্দ্রীয় গম্বুজটি ৩২ মি উঁচু বিস্তরে রূপ পেয়েছে। রায়কা বাগ থেকে উঠে এসে আমত্যা (১৯৪৭) বাসও করেন উমাইদ সিংজী এই প্রাসাদ ভবনে। আজও মহারাজ পরিবার বাস করছেন প্রাসাদের এক অংশে। সম্প্রতি আর এক অংশে Umaid Bhawan Palace Hotel বসেছে। সাধারণের প্রবেশ মানা। তবে, ১২০ টাকার দশনী টিকিট বাশ চারে কটাকায় লাঞ্চার সাথে দেখে নেওয়া যায় প্রাসাদের বৈভব। ৯—১৭-০০টায় মিউজিয়ম খোলা, গাইড সহ দশনী ২০।

চ্যুরিস্ট বাংলা লাগোয়া হাইকোর্ট রোডে উইলিংডন অর্থাৎ উমাইদ পাবলিক গার্ডেনে সরদার যাদুঘর—পাঠাগার ও যাদুঘর বসেছে। স্থানীয় কলাশিল্পের সঙ্গে নানানধর্মী স্টাফড জীবজন্তুর সংগ্রহ প্রদর্শিত হয়েছে এই যাদুঘরে। পাখনাহীন মরুভূমির পাখিও দেখতে মেলে কাচের আধারে। আর রয়েছে কিরাডু, ওশিয়া ছাড়াও নানান স্থাপত্য তথা প্রভুত্বের সংগ্রহ। যোধপুরের চিড়িয়াখানাটিও এই পাবলিক গার্ডেনে। শুক্র ছাড়া ১০—১৬-৩০টায় খোলা।

যোধপুরের আর এক সৌন্দর্য তার জলাশয়। বেশ কয়েকটি জলাশয় রয়েছে শহর ঘিরে। ৭ কিমি উত্তরে মাঠোরের পথে ১১৫৯এ তৈরি বালসম্মদ হ্রদ। সুসজ্জিত বাগিচায় বেরা চারপাশ। প্রাসাদও হয়েছে গ্রীষ্মাবাসের ১৯৩৬এ লেকের পাড়ে। ৮—১৮-০০টায় খোলা, টিকিট ১। এমনকি নতুন গড়ে ওঠা সম্ভ্রান্তী মাতার মন্দিরটিও পর্যটক প্রিয় হয়ে উঠেছে। ১০ কিমি উত্তর-পূবে ১৮১২য় তৈরি মহামন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। প্রাচীরে ঘেরা কারুকার্যময় ৮৪ স্তম্ভে ভর করে মন্দির। কার্ভিং-এ যোগের নানান মূর্তা, সেবতা শিব। পর্যটক প্রিয় কৈলাশা হ্রদটি শহর থেকে ১০ কিমি পশ্চিমে যোধপুর-জয়সলমীর সড়কে। যোধপুরের হ্রদগুলির মধ্যে বৃহত্তমও এই কৈলাশ। চতুর্ভুজাতির মনোরম পরিবেশ। তেমনিই শহরের জল আসছে আর এক বৃহত্তম প্রতাপ সাগর থেকে।

শহর থেকে ৮ কিমি উত্তরে বালসম্মদ পরিষে মাড়োয়ারের অতীতকালের রাজধানী মাঠোর শহর। রাজ্যটি লুপ্ত হলেও সুসজ্জিত উদ্যান যোধপুর শাসকদের

দেবল অর্থাৎ মন্দিরের ঢঙে স্মৃতিস্তম্ভ হয়েছে। সুন্দর ভাস্কর্যের মাঠে মাড়োয়ারদের অতীত গৌরব সত্যে রক্ষিত রয়েছে আজকের পর্যটকদের জন্য। ১৫৯৫-১৬১৯এ তৈরি মন্দিরটিও আকর্ষণীয়। আর রয়েছে ফোয়ারা, মিউজিয়ম ও একবশ পাথর কুঁসে তৈরি ৩০ কোটি দেবমূর্তি শোভিত হল অব হিরোইজ। প্রতি অক্টোবরে মাড়োয়ার ফেস্টিভালের আসরও বসছে মাঠোরে। বাস, মিনিবাস বা ট্যাক্সিতে বেড়িয়ে নেওয়া যায় শহর থেকে।

আর উৎসাহীরা যোধপুর-বাড়মের পথে ৪৫ কিমি দূরে খাণ্ডা বন্যজন্তু সংগ্রহালয়টিও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে। কালা অ্যাটিলোপের বাস খাণ্ডায়।



Jodhpur-342001, STD 0291-এ যোধপুর রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে, আর রায়কা বাগ স্টেশনের অদূরে বাসস্ট্যান্ড। সাধারণ হোটেলগুলি মালা গেঁথেছে রেল স্টেশনকে ঘিরে। বিজি এলাকা, গাড়িখোড়ার বনঝনানি মিন-রায়ি জুড়ে। রেল স্টেশনের বিপরীতে Station Rd, Jodhpur-1-এ—H Adarsha Niwas, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৭০০ D ৮৫০, সাউথ ৭৫০/৯৫০; Shanti Bhawan L S ১৫০ D ২৫০-৩৭৫ A/c S ৩০০ D ৩৫০-৪৫০; পাশেই একই মানে একই নামে Charlie Bikmer L, Priithi H. D 624999, SCB ১০০ SAB ১৫০ DCB ১৭৫ DAB ২৫০ A-c S ২৫০ D ৩৫০; H Shiba, D 624774, D ২৫০; H Raj D 628447, D ১৭৫-২২৫; Kohinoor H. D 637082, D ১৫০-২২৫; Agarwala L, Ashoka H, Alpna H, Jaswant Sarai, Bombay L, Central L—এদের রেট S ৮০-১৫০ D ১২৫-২২৫।

রেল স্টেশন থেকে ১, বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি দূরে Sojati Gate-342001-এ—Arun H, D 621824, SCB ১২০ SAB ১৬০ DCB ১৬০ DAB ২৫০ A-c S ২০০ D ২৯০ D ৪০০ ডর্মি ৭০, কল বুকিং: Linkage D 2465171; Galaxy H, D 625098, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৫০-২৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০; Hazi Musafir Khana, S ৮০ D ১৫০। New Road-এ—Sonar H, 5 Nai Sarak, R¹B¹, SCB ৬৫ SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ১৭৫; Chandruluk H, S ৮৫ D ১৬০। Jalori Gate-এ—H, Luxmi Vilas, SCB ৬০ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০-২২৫ A-c S ২০০ D ৩০০; New Tourist H, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৭৫। বাস থেকে ৫ মিনিটের পথে Raikabag Rly Stn-এর কাছে H Akshay, A/c S ৪০০ D ৫০০ Non A/c ঘরও মেলে অক্ষয়ে; Marudhar H, Nai Sarak, S ১২৫ D ২২৫-৩৫০ A/c S ৩০০ D ৪৫০; H Poonam, SAB ১৫০-২৭৫-৩৫০ DAB ২৫০-৪০০; H Priya, Nai Sarak, DAB ৩০০-৬৫০; H Mayur, D ১৭৫-৩০০; H Gopikrishna, Nai Sarak, S ১০০ D ১৫০-২৫০; H Vijay, S ১৭৫-৩০০ D ২৫০-৪৫০; H Paradise, D ২৭৫-৬৫০; H City Palace, Nai Sarak, D ১৯০-১৫৫০; Rajputana Palace H, D ১০৫০; H Raj Basera, D ১২৫০; Shree Luxmi H, ব্লক টওয়ার ঘুমাই Nai Sarak, S ১২৫ D ২২৫ A-c S ২৫০ D ৩৫০।

High Court Rd-342001-এ RTDC-র H Ghannar, AS

R2B1, SAB ২২৫ DAB ৩২৫ ডিলাঙ্গ S ৪২৫ D ৫০০ সুপার ডিলাঙ্গ S ৬৫০ D ৭৫০ ডর্মি বেড ৫০, কল বুকিং: Linkage ৩ 2465171; থাকার পক্ষে ভালই। এমনকি রবি ছাড়া প্রতি সাত্বে লোকসংকুতির আসরও বসে হোটেল ঘুর-এ। ষার অব্যবহিত। টারিস্ট অফিসটিও বাংলায়। *Aji Bhawan Palace H, Air Port Rd-6, A4R2B3. কটেজখর্মী S ২৭৫ D 189৫ A/c S 1৭৫০ D ২৭৫০; এদেরও লোকসংকুতির আসর বসে সাত্বে। আর এক প্রাসাদে *H Ratunda Polo Palace, Residency Rd-1, A1R3B2, A/c S ২৭৫০ D ৩৭৫০ সুইট ৬৫০০; মহারাজার প্রাসাদপূরীতে বিলাসবাসনে অভিনব *Welcomgroup's রাজকীয় Ummid Bhawan Palace H, Jodhpur-6, ৩ 33316, A5R5B3, A/c S 1৫০-1৮৫ D 1৮০-২২০ সুইট ৩০০-৭৫০ US\$. H Kurni Bhawan, Defence Lab Rd, Ratunda, S ৮৫০ D 1২৫০ সুইট 1৭৫০। আর আছে Youth Hostel, Circuit House Rd, C H, near Raika Bagh; D B, near D S Rly Office, অব: EE, PWD (B & R); Hotel J K, Khariya Kuwa-1; রেলের সিটিয়ারিং রুমযোথপুরে। আর আছে রমুনাথ দাস ধরমশালা, রেল স্টেশনের কাছে; হাজী মুসাফিরখান, সোজাতি গেটে। শহর থেকে ১২ আর মাণ্ডোরের ৪ কিমি দূরে Nagaur-Bikaner NH৫ Rawlaji Resort, Jagdish Nagar, Sukhi Bzr, 9 Mile, Jodhpur-342304, ৩ (0910291) 44208, SAB ৩৫০ DAB ৬০০।

আর নন-ভেজ আহাৰ্বে রেল স্টেশনের সন্নিকটে আদর্শ নিবাসের কলিং রেস্টুরেন্ট বা স্টেশন রোডের অজয় ও ভারত ভেজ হোটেল ত্রয়ীই ভাল। তেমনই জলোয়ারি গেটে পঙ্কজ রেস্টুরেন্টেরও যথেষ্ট প্রশস্তি ভেজ মিল পরিবেশনে। টারিস্ট বাংলোর ক্যাফিনেরও সুনাম আছে আহাৰ্বে। হাইকোর্ট রোডে গ্যলারির বিপরীতে পুনম রেস্টুরেন্টেরও আহাৰ্বে যথেষ্ট সুনাম। রেল স্টেশনের ষিতলে রেল ক্যাফিনেরও ভেজ ও নন ভেজ মিলে সুনাম যথেষ্ট। আর যোথপুরের মাখন লসির বাদ নিতে ভুলবেন না সোজাতি গেটের কাছে লেট্টাল মার্কেটের গমিষাবের বা সদর বাজারের গেটে শ্রী মিজলাল হোটেল। উচিত হবে মেওয়া লাডু ও মেওয়া কুরির বাদ নেওয়া যোথপুর অবস্থানে। তেমনই জনতা সুইটসের মিটিচি (লক্ষা) পাকোড়া বাদে অতুলনীয়।

তেমনই সোজাতি গেট বা পুরাতন শহরের ক্লক টাওয়ার লাগোয়া সদর মার্কেটের লোকনগর্টে যোথপুরের অমরের মারকরাপে টাই অ্যান্ড ডাইট্রিটের বসন ও এমব্রয়ডারি করা রকমারি বাহারি জুতো বেনাকাটা করা যেতে পারে। যোথপুরের আশিকেরও যথেষ্ট প্রশস্তি পর্যটকমহলে। তেমনই যোথপুরের বালাগোষ ওজনে ইকেনিরও কম আর এক অনবদ্য সুভেনির। তবে, ১০০ বছরের প্রাচীন আশিক ক্রয় ও হানাত্তর দুই-ই আইন বিরোধী।

ওশিয়া

যোথপুর থেকে ৬৬ কিমি দূরে যোথপুর-জয়সলমীর/বাড়মের রেলপথে অতীতের বাণিজ্যিক শহর ধর মরুভূমির ওশিয়া। ব্রাহ্মণিক্যাল ও জৈনধর্মের ১৬টি মন্দিরের ধ্বংস-বশেষের জন্য ওশিয়ার প্রশস্তি। ৮-১১ শতকে তৈরি হরিহর, সূর্য, মহাবীর, শটীয়ামাতা ও জৈন মন্দিরগুলি মধ্যযুগীয় ভাস্কর্যের অপূর্ব নিদর্শন হয়ে আজও পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে। তবে বৈচিত্র্যে ভরা ২৪তম জৈন তীর্থঙ্কর মহাবীর

মন্দিরটি ওশিয়ার অন্যতম দ্রষ্টব্য। শটীয়ামাতাতেও সন্তান কামনায় দূর-দূরান্ত থেকে মহিলারা আসেন আজও।

যোথপুর থেকে ট্রেন বা বাসে বেড়িয়ে নিন ওশিয়া। যোথপুর থেকে ৮-৫০এর প্যাসেঞ্জারে ওশিয়া গৌছান ১০-৪৫এ। ট্রেন ফেরে ১২-৫৮য় ওশিয়া থেকে। রেল স্টেশনের কাছেই মন্দিররাজি। তবুও যেন যোথপুর থেকে বাসে বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার। বাস যাচ্ছে যোথপুর থেকে ৭-৩০, ৯-০০, ১০-০০, ১১-৩০, ১৪-০০, ১৫-০০, ১৯-৩০এ; ২ ঘণ্টার পথ। আর ৭-৩০, ১০-০০, ১২-০০, ১৩-০০, ১৫-০০, ১৭-০০টায়ে ফেরে ওশিয়া থেকে যোথপুরের বাস।

বীর অমরসিং রাঠোর আর কৃষ্ণসাধিকা মীরাবাইয়ের স্মৃতিরঞ্জিত নাগুর-মেরতাও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। যোথপুর-বিকানীর সড়কে যোথপুর ১৩৮, বিকানীর ১০৫, আর আজমেরের ১২৮ কিমি দূরে—রেল ও বাস সংযোগ গড়েছে ত্রয়ীর সঙ্গে।

অমর সিং রাঠোরকে শাজাহানের ডেট রাজপুত কৃষ্টির নিদর্শন নাগুর। শহরে ঢুকতেই নাগুর শৈলীর মুরালে শোভিত রাজকীয় সেনাট্যাফ অর্থাৎ স্মৃতিকুঞ্জ, ১২ শতকের দুর্গ, আকবরের তৈরি সুফি কা মসজিদ, বাজারঘাট ছাড়াও জানুয়ারি-ফেব্রুয়ারির সপ্তাহ ব্যাপী ক্যাটেল ফেয়ারের পর্যটক আকর্ষণ অনন্যীকার্য। উট, ঘোড়া, বলদ বিকিকিনি হয়। উটের দৌড় প্রতিযোগিতা ছাড়াও আসর বসে নানান কিছুর। তবুও যেন রাজস্থানের বৃহত্তম ক্যাটেল ফেয়ারটি ঘটে ১২৭ কিমি দূরের তিলওয়ারায়। লক্ষাধিক গবাদি পশু আসে। থাকার জন্য RTDC-র H Kurja, Nagaur, S ২২৫ D ২৭৫ ডর্মি ৫০ ছাড়াও ডাক বাংলা আছে। আর সাময়িক তাঁবু পড়ে ফেমার কালে। নাগুরের পথে যোথপুর থেকে ৭৪ কিমি যেতে সোয়ালাল শিব মন্দিরটিও দেখে চলা যেতে পারে।

অতুৎসাহীরা নাগুর থেকে ৭৬, আজমের ৮০ আর যোথপুর থেকে ১০৪ কিমি দূরের মেরতাও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে বাসে। ১৫ শতকের রাও যোথার তৈরি দুর্গ, চতুর্ভুজ মন্দির, বিধ্বস্ত শিব মন্দিরের উপর ঔরঙ্গজেবের তৈরি মসজিদ, দুধসাগর সরোবর, মৌনী বাবার আশ্রম, ছত্রিশের জন্য মেরতার প্রশস্তি। থাকার জন্য ডাক বাংলা ও ধরমশালা আছে।

তেমনই বিকানীর মুখী আরও যেতে যোথপুর থেকে ১৫১ কিমি দূরে পুরাণখাত সূজনগড়-এর অবস্থান। মরুভূমি লাগোয়া চুক জেলার সূজনগড়েও গোপুরমণ্ডিত মন্দির হয়েছে তিরুপতির ডেভটেশ মন্দিরের আদলে।

আবু পাহাড়

যোথপুর থেকে ১০-২০র উদয়পুর প্যাসেঞ্জারে ১৩-৫০এ মাড়োয়ার গিয়ে মাড়োয়ার থেকে ১৪-২৫এ আজমের-আমেদাবাদ প্যাসেঞ্জার ট্রেনে ২০-৩৫এ আবু রোড নৌছে বাসে আবু পাহাড়ে গৌছান রাত ২১-৩০টায়ে। এছাড়াও এক ট্রেন যাচ্ছে ১-১০, ৯-১৫, ১২-১৫, ১০-২৫এ মাড়োয়ার থেকে আবু রোড-এ। সরাসরি সুপার ফাস্ট 2907 সূর্যনগরী এক্স যাচ্ছে যোথপুর থেকে

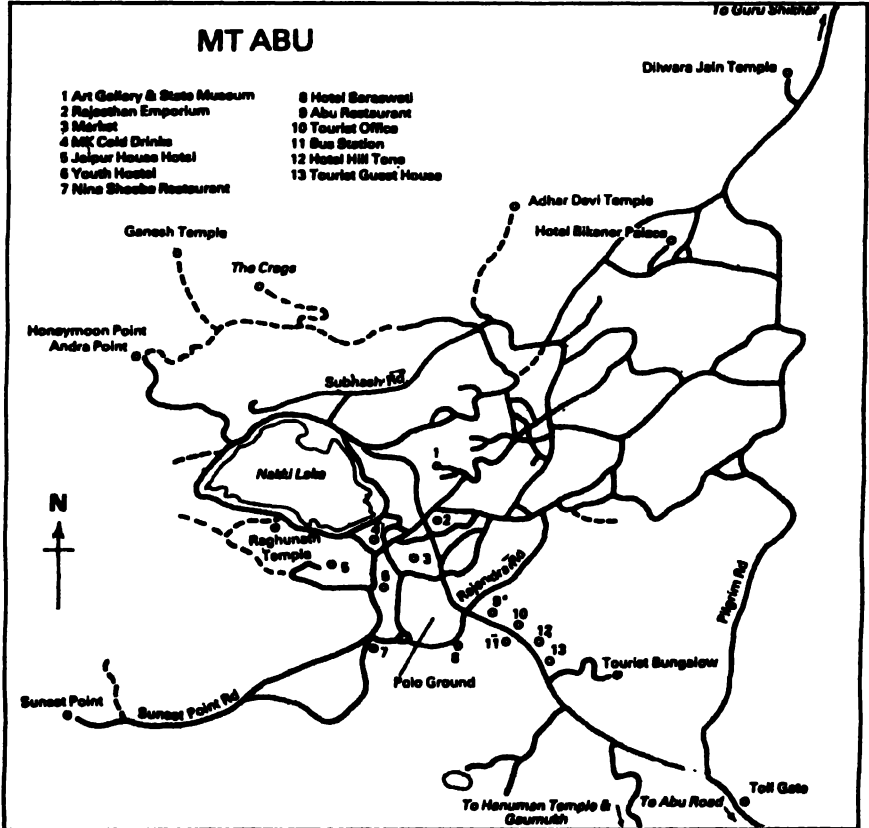
আবু রোড হয়ে আমেদাবাদে। আর ৪৮২৭ রণকপুর এক্স ৭-৪০এ যোধপুর ছেড়ে ১০-২৫এ মাড়োয়ার, ১৪-৫০এ আবু রোড, ১৭-৫৫য় মাহেশানা পৌছে আমেদাবাদ যাচ্ছে ২০-০০টায়। ১৭৩। আরাবলী এক্স ৯-১৫য় মাড়োয়ার ছেড়ে আবু রোড ১৩-৪৫, মাহেশানা ১৩-৪৮এ পৌছে আমেদাবাদ যাচ্ছে ১৯-২৫এ। তবে, এপক্ষেও আজ রেলের চলা ভীষণভাবে বিস্তৃত। নানান ট্রেনের সার্ভিস হ্রগিত। রেল সংযোগকারী স্টেশন আবু রোড থেকে বাস বা ট্যাক্সিতে ১ ঘণ্টার ২৯ কিমি সড়ক দূরত্বে আবু পাহাড়। সরাসরি বাসও আসছে যোধপুর থেকে দিন ও রাত্রিকালীন সার্ভিসে ৭ ঘণ্টায় আবু পাহাড়ে। নিকটতম বিমানবন্দর উদয়পুর। টোলকর লাগে ৫ হারে আবু পাহাড়ে।

আবু রোড থেকে সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে আমেদাবাদ, যোধপুর, আগ্রা, দিল্লী রোহিলা সরাই, আজমের, জয়পুর। আর গুজরাটের কচ্ছ বা কাথিয়াবার্য় যাত্রায় উচিত হবে ৫৩ কিমি দক্ষিণের পালানপুর বদল করে চলা।

কনডাক্টেড ট্রার: পায়ের হেঁটে আবু পাহাড় দেখে নেওয়া যায়। আবার টুরিস্ট বালো থেকে সকাল ৮—১৩-০০ বা ১৩-৩০—১৮-০০টায় RTDC আয়োজিত কনডাক্টেড ট্রারে দেখে নিতে

পারেন আবু পাহাড়। ভাড়া ৫০ করে। নানান প্রাইভেট কোম্পানিও যাচ্ছে আবু পাহাড় দেখাতে। ট্যাক্সি ও ম্যাট্রাডোর ও মেলে শতিনেক টাকায় আবু দর্শনে। আর রোড ট্রান্সপোর্ট বাস স্ট্যান্ড থেকে ৪০ টাকায় দেখিয়ে আনে আবু। রাজ্য পর্যটনের Tourist Information Bureau বসেছে বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে আবু পাহাড়ে। ৮—১১-০০ ও ১৬—২০-০০টায় খোলা। পোকানপটি তথা শহরও প্রসার পেয়েছে বাস স্ট্যান্ড ও নিক্কি লেকের মাঝে।

১২১৯ মি উঁচুতে আরাবলী পর্বতে বিচিত্র আকারের গ্রানাইট পাহাড় আর সবুজ বনানীতে ছাওয়া ২২x৫ কিমি ব্যাপ্ত উপত্যকা জুড়ে সুন্দর পার্বত্য স্বাহানিবাস। মধ্যযুগীয় ভারতীয় মন্দির ভাস্কর্যের জন্য আবুর আকর্ষণ অনস্বীকার্য। ভারতের শৈলশহরগুলির মধ্যেও আবু পাহাড় অনন্য। অতীতে প্রাক্তন মহারাজাদের গ্রীষ্মাবাস ছিল রাজহানের একমাত্র শৈলশহর গুজরাট লাগোয়া মাউন্ট আবু। প্রথম বিশ্ব-সমরে ক্যান্টনমেন্ট নগরীও গড়ে ব্রিটিশ। আর আজ গুজরাট ও রাজহানের অন্যতম পপুলার শৈলশহর আবু পর্বত।



দিলমানে মন্দির অর্থাৎ মন্দিরের দেশ আবু। শহর থেকে ৪ কিমি দূরে আবুর অন্যতম আকর্ষণ ও আমগাছে ছাওয়া পাহাড়ে দিলওয়ারা মন্দির। সিটি বাস, মিনিবাস, ট্যাক্সি যাচ্ছে। দুপুর ১২—১৮-০০টা খোলা থাকে পর্যটকদের কাছে দিলওয়ারা। মন্দিরে প্রবেশ ২০, আর ক্যামেরা ও চর্চাজাত পণ্যের প্রবেশ মানা মন্দিরে। তেমনই মন্দির চত্বরে ধূমপান, ছাতা খোলাও নিষেধ। চলতেও হয় পূত দেহ-মনে, খালি পায়ে মন্দিরে।

আদিনাথ/নেমিনাথ/মহাবীর/ঋষভদেব ও পার্শ্বনাথ এই পাঁচ মন্দির নিয়ে দিলওয়ারা। তবে, আদিনাথ বা বিমল বাসাহি ও নেমিনাথ বা লুনা বাসাহি তথা তেজপাল মন্দির দুটি বিশেষভাবে খ্যাত। নির্মাতার নামে সমন্বিত খ্যাত এরা। ১৩১১য় মোগলবাহিনীর হাতে ক্ষতিগ্রস্ত হলেও সংস্কার হয় ১৩২১এ লুনা বাসাহি তথা তেজপাল। লুনা বাসাহির অন্যতম আকর্ষণ রঙ্গমণ্ডপ। ১৬টি বিদ্যাদেবীর মূর্তি, গম্বুজের চারপাশে ৭২টি তীর্থঙ্কর সহ ৩৬০টি ক্ষুদ্র জৈন সদস্যার মূর্তি দেখতে মেলে।

গুজরাটের প্রথম সোলাঙ্কি রাজা ভীম দেবের মন্ত্রী বিমল শাহ ১০৩১এ ১৮কোটি ৫০লক্ষ টাকা ব্যয়ে ১৫০০ কারিগর ও ১২০০ শ্রমিকের শ্রমে ১৪ বছর ধরে গড়ে তোলেন ১৪০×৯০ ফুটের বিমল বাসাহি। বিমল বাসাহিতে রয়েছেন প্রথম জৈন তীর্থঙ্কর আদিনাথ। শোনা যায়, খোদিত পাথরের সমগ্র মায়ী রূপা পেয়েছিল পারিশ্রমিক হিসাবে বিমল বাসাহির শিল্পীরা। তেজপাল দিয়েছিলেন সোনা। সোলাঙ্কি শৈলীতে স্বেত মর্মরে তৈরি এই মন্দির মর্মরে খচিত স্বপ্ন সম। হাতির যুগ সারি দিয়ে দেবদর্শনে চলেছে। অদ্ভুত এর কারুকার্য, অলঙ্কারে ও ভাস্কর্যে অনন্য। ফলমূল-জীবজন্তু শোভিত অষ্টভুজাকার গম্বুজ; ৪৮টি পিলার সহ অলিঙ্গের স্থাপত্য, দেবতা সহ ৫২টি দেবকুটুরী, মর্মরে কার্ত্তিক, সিলিং-বৈদ্যে কারুকার্য মাতোয়ারা করে তোলে। আর ১২৫১য় বাস্তুপাল ও তেজপাল দুই জৈন ভাই তৈরি করান তেজপাল মন্দির ১২ কোটি ৫০ লক্ষ টাকায়। এরাও মন্ত্রী ছিলেন গুজরাটরাজ বীর খাওয়ানের কালে।

তেজপালেও অলৌকিক, অভাবনীয়, অবিশ্বাস্য ভাস্কর্য রূপ পেয়েছে মর্মরে। সেই কারুকার্যমণ্ডিত পিলার, পাথর কূপে খালর, সিলিংয়ে নাচের মুদ্রা, পদ্ম, জোরণ, চেন, অভুলনীয়। পাথর এখানে সজীব হয়ে উঠেছে দক্ষ শিল্পীর সূক্ষ্ম কারুকার্যে। মনে হবে জল থেকে তুলে এনে গম্বুজে লাগিয়ে দেওয়া হয়েছে পদ্ম। দেবতা তেজপালে ২১তম জৈন তীর্থঙ্কর নেমিনাথ। মূল মন্দিরের দু'পাশে দেওয়ারানী-জৈঠানীর কারুকার্যেও অভিনবস্থ আছে।

আর মহাবীর, ঋষভ ও পার্শ্বনাথ খুবই নিখুঁত তেজপাল ও বিমল বাসাহির পাশে। ঋষভে পঞ্চাধার মূর্তি হয়েছে ৪ মেট্রিকটনের। দিলওয়ারার বহির্ভাগ অতি সাধারণ, হয়তো-বা বিরাগও দেখা দিতে পারে মন্দিরে ঢুকতে। তবে, অভ্যন্তর

মুগ্ধ করে দর্শকদের। তাজেরও আগে তৈরি, খরচও পড়ে বেশি তাজের থেকে দিলওয়ারা নির্মাণে।

সফরের দ্বিতীয় স্টাটী শহর থেকে ১৫ কিমি দূরে রাজস্থানের উচ্চতম (১৭২২ মি) গুরুশিখর। মনোরম পরিবেশে রোমাঞ্চকর পাহাড়ে মন্দির রয়েছে ব্রহ্মা-বিশ্ব-মহেশ্বরের। আর আছে মন্দিরের শিরে অত্রি ঋষির মন্দিরে গুরু দত্তাশ্বয়ের পায়ে ছাপ। চারপাশের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান অত্রি থেকে। দূরবীনে দেখে নেওয়া যায় আবু পাহাড়।

শহর থেকে ১১ কিমি দূরে গুরুশিখরের সন্নিকটে আরাবলী পাহাড়ে দুর্ভেদ্য কেন্দ্রা অচলগড় অর্থাৎ দুর্গের ধ্বংসাবশেষ। ৯ শতকের শেষদিকে তৈরি। চৌহান রাজাদের রাজধানী ছিল অতীতে। পরবর্তীকালে রানা কুস্তের দখলে যায়। আজ বিধ্বস্ত। গড় থেকে নিচে অচলেশ্বর শৈবতীর্থ। ৮১৩-য় তৈরি মন্দিরে দেবতা শিব এখানে লিঙ্গে নয়—পাথরের বুদ্ধাঙ্গুল দেবতার প্রতিভূ। আরও বৈচিত্র্য দেবতার স্বপ্নাদেশে স্টুপ পাথরের কুণ্ডে দেব উদ্দেশ্যে নিবেদিত জল সরাসরি পাতালে যাচ্ছে। আর নন্দী হয়েছে ব্রাসে। তেমনই আছে চামুণ্ডা দেবীর মন্দির। মানসিংহের সমাধি, *ধি কা তলাও* অর্থাৎ মন্দাকিনী কুণ্ড; মহিষরূপী তিন অসুর, তীর মারছেন রাজা—সবই মর্মরে। প্রবাদ, এই অসুরত্রয় নাকি ধি খেয়ে যেত কুণ্ডের প্রতি রাতে। ১৪ ধাতুর মূর্তিও হয়েছে গড়ের জৈন মন্দিরে। চতুমুখী এই দেবমূর্তির গুজন ৫৭২ কুইটাল। সিটি বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে শহর থেকে।

শহরের জল আসে কোডরা ড্যাম থেকে। আর এই কোডরা ড্যামের পথেই ৩ কিমি গিয়ে অম্বারাদেবীর মন্দির। ২২০ সিঁড়ি উঠে পাহাড় কেটে তৈরি হয়েছে মন্দিরের প্রবেশদ্বার। যেমনই সন্নিধি তেমনই নিচু, হামাগুড়ি দিয়ে ঢুকতে হয় মন্দিরে। দেবী এখানে দুর্গা—অম্বা বা অম্বুদাদেবী নামে খ্যাত। এই দেবীর নাম থেকেই শহরের নাম হয়েছে আবু। শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে। ডুলীও মেলে পাহাড় চড়তে।

শহর থেকে ১০ আর আবু রোড থেকে আবু পাহাড় যেতে কোডরা ড্যাম ছাড়িয়ে ৬ কিমি দূরে গৌমুখ। আরও এগিয়ে বশিষ্ঠ আশ্রম, হনুমান মন্দির। এক হাজার সিঁড়ি ভেঙে পথ উঠেছে গৌমুখের। মর্মরের গন্ধর মুখ থেকে ধারা বইছে নদীয়া। আর আছে শিবের বাহন মর্মরে নন্দী মূর্তি ও বশিষ্ঠের যজ্ঞস্থল—অগ্নিকুণ্ড। প্রবাদ, বশিষ্ঠের যজ্ঞের হোমায় থেকেই বোদ্ধার জাত রাজপুত্রের জন্ম। কিংবদন্তী, একদা শিবভক্ত এক ঋষির গাভী কামধেনু পড়ে যায় পাহাড়ী গছুরে। সমুহ বিপদ, স্রবণ নেয় ঋষি শিবের। শিবও পাঠান হিমালয় তনয় নন্দীবর্নকে কিপ্রগতির সাগ জরুদ্বাকে বাহন করে—কামধেনু উদ্ধারে। সরস্বতীও ধারা বহিয়ে ভাসিয়ে তোলেন কামধেনুকে। উদ্ধার পায় কামধেনু—যুজিয়ে সেন গহুর নন্দীকেশ্বর। নামেরও বদল হয় জায়গার—বাহনের নাম থেকে অম্বুদা। কালে কালে অম্বুদা হয় আবু। আবু থেকে

একদিনের প্রোগ্রামে এগুলিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাস, টাক্সি বা পায়ে হেঁটে।

শহর থেকে পশ্চিমে ৩ কিমি দূরে পায়ে হাঁটা দূরত্বে উপত্যকা যেখানে আচমকা শেষ হয়েছে, সেখানেই তৈরি হয়েছে সূর্যাস্ত দেখার জন্য সানসেট পয়েন্ট। নিচে গভীর খাদ—আরাবল্লীর সানুদেশ। মনে হবে যেন টুপ করে খসে পড়ল আকাশ থেকে সূর্যটা—হাত থেকে পড়ে যাওয়া রেকাবির মতো। অতি নয়নাভিরাম সূর্যাস্তের এ-দৃশ্য। আর আছে নৈসর্গিক শোভা দেখার জন্য হনিমুন পয়েন্ট আবু পাহাড়ে। সূর্যাস্ত ও সূর্যোদয় দৃশ্যমান হনিমুন থেকে। শহর থেকে যোড়া যাচ্ছে ৩০. প্রোজ গাড়ি ১৫ টাকায় সানসেট পয়েন্টে। উটও যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে এপথে।

সানসেট পয়েন্ট থেকে বাজারমুখী পথে নক্কি লেক। শহরের প্রাণকেন্দ্রে চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা কৃত্রিম লেক এই নক্কি। অনেকগুলি ছোট ছোট দ্বীপ মাথা তুলে দাঁড়িয়ে লেকের জলে। পাশেই টোড হিল; অর্থাৎ একথণ্ড পাহাড়—আকার তার হাত-পা ছড়িয়ে ব্যাঙের মতো ঝাপিয়ে পড়ার। আর মেলে—নান রক, নন্দী রক বা ক্যামেলস্ রক। প্রবাদ, রাক্ষসদের অত্যাচারে জঞ্জির দেবতার ব্রহ্মার পরামর্শে আবু পাহাড়ে আসেন যজ্ঞ করতে। আর নখ দিয়ে খনন করেন এই লেক দেবতার। নামটিও তাই নক্কি লেক। লেকে জলবিহারও করা যায়—শিকারা ও নৌকা ভাড়া মেলে। যোড়াও যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে লেক চক্রে। গান্ধীজীর অস্থি এই লেকের জলেও বিসর্জিত হয়, আর সেই থেকে লাগোয়া পার্কটির নাম হয়েছে গান্ধী পার্ক। গান্ধী পার্কেই রয়েছে ১৪ শতকের মন্দির রঘুনাথজীর। গুরু রামানন্দ স্বামীর প্রতিষ্ঠিত দেবতা, পায়ের ছাপও রয়েছে রামানন্দ স্বামীর। স্বপ্ন দূরে মধুবন, ব্রহ্মাকুমারী ওয়ার্ল্ড স্পিরিটুয়াল ইউনিভার্সিটির ঐম শান্তি ভবন—পলার হীন বিশাল ধানকক্ষে আধ্যাত্মিক ধ্যান পাঠের শিক্ষাকেন্দ্র (৮—২০-০০)। মিউজিয়ামও বসেছে মধুবনে। আগ্রহীরা জয়পুর মহারাজার গ্রীষ্মাবাস থেকে লেকের শোভা দেখা ও ক্যামেরায় বন্দী করে নিতে পারেন।

রাজভবন রোডে দেখে নেওয়া যায় ৮—১২ শতকের প্রত্নতত্ত্বের নিদর্শন ও জৈন ভাস্কর্যের দুর্বল সংগ্রহ মিউজিয়মে। তবে, ডজন খানেক ছবির আর্ট গ্যালারিটি দর্শকদের বিকর্ষণ ঘটায়। শুক্র ও ছুটি হাড়া ১০—১৬-৩০টায় খোলা। অদূরে রাজহান এম্পোরিয়াম।

আমেদাবাদ-দিল্লী মিটারগেজ রেলপথে আবু রোড স্টেশন। আমেদাবাদ থেকে ১৮৬ কিমি, মাহেসানা হয়ে রেল আসছে। আরুদিল্লীর দূরত্ব ৭৪৯ কিমি। কলকাতা থেকে দিল্লী হয়ে আবু ২১৮৯, আমেদাবাদ হয়ে ২২৭৫ কিমি। রাজ্যের রাজধানী জয়পুর থেকে ৪৪০, যোধপুর ২৩৫, উদয়পুর ১৫৬, আর মুম্বাই-এর দূরত্ব ৭৫৩ কিমি। কলকাতা থেকে সরাসরি আবু যাত্রার জন্য দিল্লী জর পৌঁছে ১৫-০৫এ দিল্লী-আমেদাবাদ আশ্রম এক্স, ২২-১০এ আমেদাবাদ মেলে রওনা হয়ে

পরদিন বধ্যাক্ষমে ৪-১৫, ১৩-৪৫এ আবু রোড পৌঁছান। প্রতি শনিবার আমেদাবাদ রাজধানী এক্স ১৯-৪৫এ নতুন দিল্লী ছেড়ে পরদিন ৭-১৫য় আবু রোড পৌঁছে ১০-৫৫য় আমেদাবাদ যাচ্ছে। আবাব হাওড়া-যোধপুর এক্স ৩-৪৫এ জয়পুর পৌঁছে ৪-৩৫এর দিল্লী-আমেদাবাদ মেলে ১৩-৪৫এ আবু রোড চলা যেতে পারে। এছাড়াও ট্রেন ও বাস মেলে জয়পুর থেকে আবু। জয়পুর/আজমের/মোড়োয়ার হয়ে যাচ্ছে ট্রেন। যোধপুর-আমেদাবাদ সূর্যনগরী এক্স ও রণকপুর এক্স; মোড়োয়ার-আমেদাবাদ আরাবল্লী এক্সও যাচ্ছে আবু রোড/পালানপুর/মাহেসানা হয়ে। আজমের-আমেদাবাদ প্যা, আবু রোড-আমেদাবাদ প্যাসেঞ্জারও চলছে এপথে। আর আমেদাবাদ থেকে ৮-২০এ দিল্লী মেল, ১৭-১৫য় আশ্রম এক্স, রবিবার ১৩-৫০এ রাজধানী এক্স কম-বেশি ৩১ ঘটায় আবু রোড আসছে। আবু রোড থেকে ২৯ কিমির সড়ক দূরত্বে আবু পাহাড়। আবু রোড সমতলে হলেও ৬কিমি যেতে পথ ওঠে পাহাড় বেয়ে। একদিকে সবুজে মোড়া ঝাড়া পাহাড়, অপরদিকে খাদ নামে পাতালে। আবু রোড ও আবু পাহাড় উভয়দিক থেকেই সকাল ৬-০০ থেকে ২০-৩০টায় বাস ও ট্যাক্সি চলে যাত্রী নিয়ে। মরুভূমিতে বৈরাগ্য আছে যাদের তাদেরও উচিত হবে আবু পাহাড় দিয়ে রাজহান ভ্রমণ শুরু করা। ৫ হারে মিউনিসিপাল টোল লাগে শহরে ঢুকতে। রেল না পৌঁছালেও রেলওয়ে এক্সপ্রেস বসেছে আবু রোড থেকে চলা ট্রেনের রিজার্ভেশন কোটা নিয়ে হোটেল শিখরের কাছে H P Service-এ। ৯—১০-০০ ও ১৪—১৬-০০টায় খোলা।



আর সরাসরি বাস যাচ্ছে আবু পাহাড় থেকে ৮ ঘটায় আজমের, ১১ ঘটায় জয়পুর, ৬১ ঘটায় ৬-০০, ৭-০০, ৭-৩০, ১৪-৩০টায় আমেদাবাদ; ভালোদরা যাচ্ছে ৯ ঘটায় ৮-৩০টায়; অহালী ১২-২০, ১৪-০০টায়; ৫ ঘটায় রণকপুর যাচ্ছে ৭-০০টায়; উদয়পুর ৮-৪৫ ও ২০-৩০টায়। তবে উদয়পুরের রাতের বাসটি দেড়টা সময়ে তিনগুণ ভাড়া ২৭৫ কিমির ঘুর পথে পৌঁছায়। তাই সকারের বাসটির যাত্রী হয়ে উচিত হবে ৬ ঘটায় আবু পাহাড় থেকে উদয়পুর চলা। এছাড়াও মেইন রোড থেকে নানান ট্রাভেল একজেন্টের প্রাইভেট টিলাঞ্জ বাস চলছে আবু পাহাড় থেকে পশ্চিম ভারতের দিকে দিকে। ভাড়া আধিক্য ঘটলেও সময়ে সাফর মেলে প্রাইভেটবাসে। বাস যাচ্ছে ২৯৪ কিমি দূরের যোধপুরে ৯ ঘটায়, আমেদাবাদ যাচ্ছে ৬ ঘটায়, নিকটতম বিমানবন্দর ১৮৫ কিমি দূরের উদয়পুর যাচ্ছে ৫ ঘটায়। বেড়াবার মরসুম মার্চ থেকে জুন আবার সপ্টেম্বর থেকে নভেম্বর মাস, তবে সারা বছরই পর্যটক সমাগম ঘটে চলে আবু পাহাড়ে। মার্চ ও অক্টোবরে আবু ভ্রমণে সাধারণ উলেনই যথেষ্ট।



Mt Abu-307501, STD-02974-এর হোটেলের সিজন/অফ সিজন রয়েছে। এপ্রিল থেকে জুন আর সপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস সিজন, বাকি বছরটা অফ সিজন—রেট নামে আখ্য। তবুও যেন মে ১৫ থেকে জুন ১৫ ও নভেম্বর দ্বীপাবলীর ৭ দিন পিক সিজন আবু পাহাড়ে। রেটও ওঠে পিকে এই পিক সিজনে। বাস স্ট্যান্ড থেকে লেকের মাঝে পায়ে হাঁটা দূরত্বে আবুর হোটেল। পাচাতা প্রাথম—ব্রি-তারা সম *H Hillume, opp Bus Stand-1, ৩ 3112, ১৮৫০ D ১০৫০-১২৫০ স্টাইট ১৭৫০ কটজ ২০০০-২৫০০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; হিলেকের শিরে ডরতপুর মহারাজার



মনোরম গ্রীষ্মাবাসে * *Palace H*, D 3121, S ৮০০ D ১৫০ সুইচ ১৩৫০; *A/c S ১৫০ D ১২২৫*; পোলো গ্রাউন্ডের অদূরে *The H Mount View*, D ৩৫০-৪৫০; ব্যবস্থাপনা ভালিই; *Polo View*, D ৬০০-১২০০; রাজধানী বৈভবের সাথে বাগিচা ঘেরা *Mount H*, *Dilwara Rd-1*, SAB ৩০০-৪৫০ DAB ৪৭৫-৬৫০; *FAB ৬০০-৮৫০*; পাঁচতারার বিলাস নিয়ে *H Saveria Palace*, *Sunset Rd-1*, D ৮০০ সুইচ ১৫০০; *H Abu International*, opp *Polo Ground*, S ৩২৫-৪৫০ D ৪৫০-৮০০, পাঞ্জাবী আহার্যও মেলে এদের ক্যান্টিনে; *H Hillock*, S ১২০০ D ১৭৫০, কল বুকিং: *Span* D 2801209; যোধপুর মহারাজার গ্রীষ্মাবাসে *H Connauught House*, *Rajendra Marg-1*, S ১০০০ D ১৫০০ সুইচ ১৭৫০; *H Sheraton*, DAB ৪০০-৬৫০; *Najibun H*, near *Bus Stand-1*, SAB ৪৫০ DAB ৬৫০; একই বাড়িতে একই মালিকানায় *H Samrat International*, D ৬০০-৮৫০ FR ৮০০-১০০০ সুইচ ১৫০০; বিপরীতে *H Maharaja International*, DAB ৪৫০-৮০০; বিকানীর মহারাজার গ্রীষ্মাবাসে, সুন্দর পরিবেশে থাকার পক্ষে আদর্শ * *H Sunrise Palace*, S ৮৫০ D ১৫০-১২৫০ সুইচ ১৫০০, কল বুকিং: *Span* D 2801209; *Jaipur House H*, S ৪০০ D ৬০০; *Camu Rajputana Club Resort*, near *Circuit House-1*, S ১২৫০-১৫০০ D ১৬০০-২০০০ সুইচ ২৭৫০-৩৫০০; *Lake Palace H*, *Nakki Lake*, S ৬০০ D ৮৫০; *H Akushdwp*, D 3670, S ৪৫০ D ৬৫০ FR ৮০০; *Surchi Hill Resort*, S ৪৫০-৭৫০ D ৭৫০-১২০০; *H Banjara*, D ৪৫০ ৫৫০ ৬৫০, কল বুকিং: *Linkage* D 2465171; *H Maharana Pratap*, D ৮৫০; *H Chanaurya*, D ৬০০-৮৫০; *Chacha Inn*, DAB ১২৫৯, অবু: *Span* D 2801209.

ভারতীয় প্রথায়—ট্যুরিস্ট বাংলোর পথে মধ্যমানে যথেষ্ট খ্যাত *Tourist G H*, DAB ২২৫-৪৫০; বাস পথেই *H Vishram*, D ২০০-৩২৫; ট্যুরিস্ট স্ট্যান্ডের বিপরীতে *H Nataraj*, S ২৫০ D ৪৫০ T ৫৫০; বিপরীতে *Rajendra H*, রাজেন্দ্র রোড-1, S ২৫০ D ৪০০; *H Sheraton*, মেইন রোড, D ৩০০-৪৫০; অদূরে *H Madhuban*, DAB ৪৫০-৮৫০ সুইচ ২২৫০; বাস স্ট্যান্ডের পিছে *H Brindavan*, D ৩০০-৪৫০; *Bharati H*, S ১২৫-১৭৫ D ২০০-৩২৫; *Adarsh H*, S ১৫০ D ২৫০; *Ashoka H*, S ১০০ D ১৭৫; *Keshar Palace*, *Sunset Point Rd*, D ৩০০-৪৫০; *Bandemataram H*, D ১৭৫-৩২৫; *Surya Darshan H*, opp *Taxi Stand*, D ৪৫০-৬৫০; *Shital H*, S ৮৫-১২৫ D ১৭৫-২২৫; *Gujarat L*, D ১২৫-২০০; *H Sudhir*, DCB ১৭৫ DAB ২৭৫; *H Sudhir New*, near old *Bus Stand-1*, B, DAB ৪৫০ FR ৬০০; *Sriniketan*, S ১০০ D ১৭৫; *Santidev Nibas GH*, D 638031, D ১৫০-৩২৫; *Santisadan G H*, D ১৫০-২৭৫; *H Dev Nibas*, *H Saraswati*, *Bharat New G H*, *Ganapati L*, *Aravally*, D ৪০০ FR ৫০০ ডর্মি ৬০; *H Anand*, *H Nakki Vihar*, D ১৫০-২২৫; *Giriraj*, DAB ৩০০; *Arbud H*, *H Vinu*, *Ambika H*, opp *Polo Ground*, SAB ১৫০ DAB ২২৫-৩০০; *Charbhujia*, *H Punghat*, S ১৭৫ D ২৫০; লেকমুখী যথেষ্ট পণ্ডার *H Lake View*, DAB ২৫০-৪৫০; *শ্রীপেশ হোটেল*, *হোটেল রাজকীপ*, *লক্ষণ গেস্ট হাউস*, *চেতনা*, *পথিক*, *বিশ্রাম*, *রাভী* ছাড়াও আরও

নানান হোটেল আছে আবু পাহাড়ে। এদের কাছে S ৮৫-২২৫ D ১৫০-৩৭৫ টাকায় মেলে।

শহরে ঢোকার মুখে বাস স্ট্যান্ড থেকে ৭/১০ মিনিটের পথে পাহাড়ী টিলায় মনোরম পরিবেশে RTDC-র ১৮৮ বেডের *H Shikhar*, SAB ২০০ DAB ২৭৫ ডিলাক্স S ৩৫০ D ৪৫০ সুপার ডিলাক্স S ৪৫০ D ৬০০ কটজ ১০০০ ডর্মি বেড ৫০, অবু: *Manager*; কল বুকিং: *Linkage* D 2465171. আর আছে পোলো গ্রাউন্ডের বিপরীতে এদেরই ৪০ বেডের *Purjan Niwas*, ডর্মি প্রথা বেড ৫০ চার বেডের ঘর ২৫০। GTDC-ও হোটেল গড়েছে *Toran Mt Abu*, *Gaoumukh Rd*, D 3232, DAB ৩৫০ ৬০০ সুইচ ৮৫০ ডর্মি বেড ৫০।

এছাড়া *সার্কিট হাউস* রয়েছে রাজধান ও গুজরাট সরকারের পৃথক পৃথক। *Municipal G H*, opp *Bus Stand*, D ১০০-১৭৫, বুকিং-এর জন্য ১ দিনের টাক পাঠিয়ে ম্যানেজারকে লিখুন। *Dholepur House*, DAB ৪৫০, অবু: *Manager*; *Rajasthan Government Dilwara D B*, *Rajasthan Govt Oria D B*, *Govt Cottage*-এর অবু: *Deputy Secretary*, *GADR*, *Jaipur*-কে লিখুন। *CPWD Dak Bungalow*, অবু: *Sectional Officer*; *Govt Holiday Home*, অবু: *SDO*; *Youth Hostel*—ছেলেদের ও মেয়েদের পৃথক পৃথক ডর্মি প্রথা থাকে, অবু: *Head Master-in-Charge*. সরকারি বাস সংস্থার *রিটারিং রুম* ছাড়াও *ধর্মশালা*ও রয়েছে নানান আবু পাহাড়ে। ঘরের জন্য *শ্রীরঘুনাক্ষী*, *শ্রীজৈন দিগম্বর*, *শ্রীজৈন সত্যশ্বর* দেখা যেতে পারে।

আর খাবার হোটেল চলতে-ফিরতে নানান মিললেও শহরের মধ্যমণি কনক ডাইনিং হল-এ দক্ষিণ ভারতীয় বা *সফট হোটেলের* *জল* বা পোলো গ্রাউন্ডের বিপরীতে *বীণা রেস্টুরেন্টে* গুজরাটি খালি; বাণার লাগোয়া *অম্বিকা রেস্টুরেন্টে* দক্ষিণ ভারতীয়; *সাগর রেস্টুরেন্টে* ভেজ ও নন ভেজ; বাজারাকালে *শের-ই-পাঞ্জাব* ও বাসস্ট্যান্ডের *তরুণশিলা* পাঞ্জাবী বা *হোটেল মহারাজার* নানান আহার্যের যাদ নেওয়া যেতে পারে। ট্যুরিস্ট বাংলোর ক্যান্টিন-এরও দেশী-বিদেশী আহার্য পরিবেশনে যথেষ্ট সুনাম আছে।

আবু পাহাড়ের রেল সংযোগকারী স্টেশন আবু রোড। রেল স্টেশন লাগোয়া বাস স্ট্যান্ড। রেল ও বাস দুই-ই যাচ্ছে যোধপুর, আজমের, জয়পুর, উদয়পুর, আমেদাবাদ ছাড়াও পশ্চিম ভারতের দিঘিদিগে আবু রোড থেকে। থাকারও ব্যবস্থা আছে *রেলের রিটারিং রুম*, অদূরে *ভগবতী গেস্ট হাউস* ছাড়াও সাধারণ মানের নানান হোটেল।

তেমনই অত্যাশ্চর্যসাহীরা আবু রোড থেকে ৫ কিমি দূরে পারমার রাজাদের অতীত রাজধানী চম্বাবতীও বেড়িয়ে নিতে পারেন। পর্বতন মানচিত্রে উল্লেখ না হলেও ১৩ শতকে ধ্বংস পাওয়া মধ্যযুগীয় নগরীর লুপ্ত গরিমা রোমন্থন করে নেওয়া যেতে পারে।

অম্বাজী তীর্থ

ভৌগোলিক অবস্থান যদিও গুজরাটতে তবে আবুর পথেই বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে অম্বাচাল বা অম্বাজী তীর্থ। আবু রোড রেল স্টেশন লাগোয়া বাস স্ট্যান্ড থেকে ২ ঘণ্টা অন্তর বাস যাচ্ছে, ১ ঘণ্টার পথ; দূরত্ব ২৩ কিমি। পলাশে ছাওয়া পাহাড়ী পথ। আবু পাহাড় থেকেও বাস মেলে ১২-০০ ও

১৪-০০টায়। বাস আসছে ৪৫ কিমি দূরের মাথেরা, ৪৫ কিমি দূরের মাহেসানা, এমনকি আমেদাবাদ থেকেও অম্বাজী। থাকারও নানান ব্যবস্থা—*পূর্বরোত্তম* ছাড়াও *ধরমশালা* আছে নানান অরাসুর পাহাড়ের অম্বাজী তীর্থে।

মন্দিরকে নিয়ে পাহাড়ী শহর অম্বাজী। বিশালাকার মন্দির হয়েছে অতীতের মন্দিরস্থলে নতুন করে খেত মরমে। দেবী এখানে দুর্গা, খুবই জাগ্রতা; অবস্থান তার দ্বিতলে। তবে কোনো মূর্তি নেই দেবীর। চাচর অর্থাৎ নাটমন্দিরে বিশাল কটোয়ে অনাদিকাল থেকে অনিবার্ণ দীপশিখা জ্বলছে। বি-ও সিচ্ছেন ভক্তের দল দেবীর উদ্দেশে। মন্দিরের পেছনে পবিত্র মান সরোবর অর্থাৎ দেবীকুণ্ড। কুণ্ডের জলে স্নানান্তে দেবী দর্শনের প্রথা। সকাল ৮—১২-০০ আবার সন্ধ্যায় মন্দির খোলা।

আর আছে মন্দির থেকে ৫ কিমি দূরে অরণ্যময় পাহাড়ী পথে দেবীর মুখ্যপীঠ গহ্বর। ট্যান্সি যাচ্ছে শেয়ারে পাহাড়-তলীতে। কিংবদন্তী, মোচাকার অনুচর এক পাহাড় চূড়োয় নয়নাভিরাম এক প্রকৃতির মাঝে দেবী দুর্গা সহস্র বছর শিবের জন্য তপস্যা করেন। লোকশ্রুতি *বাঁয়া পের কী অঙ্গুলি গিরা থা* দেবীর। অর্থাৎ সতী পীঠের (৫২?) এক। ছোট মন্দির—দেবী এখানেও দুর্গা অর্থাৎ অম্বাজী। খাড়া সিঁড়ি—ডুলিও মেলে শ'দেড়েক টাকায় যাতায়াত। সিঁড়িপথের মাঝ দূরত্বে *দেবী কি বুলা*—পাহাড়ী ফটলে কান পাতলে আজও নাকি হর-পার্বতীর কথোপকথন শুনতে মেলে।

অন্যেই ৭ কিমি উত্তর-পূবে নির্জন পার্বত্য পথে কোটি তীর্থও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। বাস ও ট্যান্সি যাচ্ছে শেয়ারে অম্বাজী থেকে। অনুচর এক শৈলশিখরে কোটেশ্বর মহাদেবের প্রাচীন মন্দির। মন্দির লাগোয়া সরস্বতী কুণ্ড। ধারা নামছে কুণ্ড পাহাড় থেকে। কুণ্ড থেকে স্রোতস্বতী বেষণতী নদী সরস্বতীর উদগম। সরস্বতীতে স্নান সেরে পূজা দেন ভক্তের দল। আর আছে বাসস্ট্যান্ডের বিপরীতে বাম্বাকীর তপোবন। জনশ্রুতি, মুনি বাম্বাকী রামায়ণ লেখার আগে আশ্রম গড়ে কৃপা মাগেন দেবী সরস্বতীর এখানে। সেই স্মৃতিতে ছোট মন্দিরও হয়েছে রাম-সীতার।

কোটিতীর্থ আর অম্বাজীর মাঝপথে কুন্ডারিয়া পাহাড়-ঢালে জৈন মন্দিররাজিও উচিত হবে দেখে ফের। নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে দিলওয়ারার বৃষ্টি বিমল বাসাহির তৈরি কারুকার্যময় কুন্ডারিয়াজী মন্দিরকে স্থাপত্য ও ভাস্কর্য সুন্দর। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান কুন্ডারিয়ায়। কুন্ডারিয়া দেখে অম্বাজী ফিরে বাসেই চলা যায় আর এক জৈনতীর্থ তারাজা পাহাড়ে। তারাজা থেকে মথেরা, মাহেসানা বেড়িয়ে আমেদাবাদও চলা যায়। মুহূর্ত্ত বাস মেলে এপথে। তবুও যেন উচিত হবে অম্বাজী দেখে আবু রোড ফিরে রাজহানের উদয়পুর চলা। হোটেলও আছে Savshanti H, Kumbharia Rd, Ambaji, ☎ (027412) 3172, DAB ২০০।

দ্রবণ সঙ্গী : ৯৭-৯৮/৪১

উদয়পুর

আবু পাহাড় থেকে ৮-৪৫এর বাসে ৬৬ ঘণ্টায় সরাসরি চলুন *ডেনিস অব দি ইস্ট* অর্থাৎ উদয়পুরে। মনোহর হ্রদ, মর্মর প্রাসাদ, সুসজ্জিত উদ্যান আর প্রাচীন মন্দির এই নিয়ে গড়ে উঠেছে স্বপ্নের শহর উদয়পুর। প্রাসাদও হয়েছে পাঁচ—সিটি প্যালেস, জগনিবাস, জগমন্দির, লাক্ষ্মীবিলাস ও মনসুন প্যালেস। রাজপুতদের শৌর্য আর বীর্যে গাঁথা এর আকাশ-বাসা। প্রকৃতিও অতীব সুন্দর। বয়স এর বেশি নয়, আবু রের হাতে চিতোরের পতন ঘটতে ১৫৬৯ খ্রিস্টাব্দে আরাবর্মীর ঢালে ৫৭৭ মি উঁচুতে মহারানা উদয় সিং গড়ে তোলেন শহর। সূর্যদেবতা রামের উত্তরপুরুষ এরা। অতীতে মেবারের রাজধানীও ছিল উদয়পুরে। শহরের দক্ষিণ-পশ্চিমে গিছোলা লেক আর তিন দিক প্রাচীরে ঘেরা। ১১টি *পোল* বা দরোজা শহর জুড়ে। পূবে সুর্য, পশ্চিমে ব্রহ্মা, উত্তরে হাতি আর দক্ষিণে কৃষ্ণ এই চার মুখা পোল। তবে, শহর প্রসারের চাপে প্রাচীর লোপের সাথে ইতিহাস কিছুটা স্নান হলেও রানাদের গরিমা আজও অমলিন। মূল আকর্ষণও পোল পেরিয়ে ইতিহাসের উদয়পুরে।



রেল ও বাস দুইয়েরই অবস্থান প্রাচীর ছাড়িয়ে শহরের দক্ষিণ-পূবে। আর ট্যুরিস্ট বাংলা তথা ট্যুরিস্ট অফিসের অবস্থান আর এক প্রান্তে প্রাচীর পেরিয়ে উত্তর-পূবে। আবু রোড থেকে মাজোয়ার হয়ে রেল গিয়েছে উদয়পুরের। ১১-০০টায় আরাবর্মী এক্স, ১৩-০০টায় দিল্লী মেল, ২২-২৫এ দিল্লী এক্স, ৬-৪৫এ আগ্রা কোর্ট প্যা/এক্স, ১৩-০০টায় আমেদাবাদ-যোধপুর রণকপুর এক্স আবু রোড ছেড়ে মাজোয়ার পৌঁছায় যথাক্রমে ১৫-৪০, ১৬-০০, ২-৪৫, ১২-৫০, ১৭-৪৫এ; আর মাজোয়ার থেকে ১৪-০৫ ও ১-০৫এ ছেড়ে ১৯-৩০, ৬-৩৫এ মাতলী পৌঁছে উদয়পুর যাচ্ছে ৮-২৫ ও ২১-৪৫এ। তবে, প্যাসেঞ্জার ট্রেন দুটি ১০-১০ ও ২২-০০টায় যোধপুর ছেড়ে মাজোয়ার/মাতলী হয়ে উদয়পুর আসছে। এপথেও আজ ট্রেনের চলা ভীষণভাবে বিঘ্নিত।


দিল্লী সরাই রোহিলা থেকে ১৪-১০এ ৭৬১৫ ডেডক এক্স জয়পুর/আজমের/চিতোর হয়ে উদয়পুর পৌঁছান পরদিন সকাল ১০-০৫এ। ৭৬১৬ ডেডক দিল্লী ফেরে ১৮-০৫এ উদয়পুর থেকে। তাই ডেডক যাত্রীদের চিতোর বেড়িয়ে উদয়পুর যাওয়াই সুবিধা। গত কিছুকাল গরীব নওয়াজ ট্রেনটি হুগিড হয়ে আছে। ট্রেন যাচ্ছে ১৯-০০টায় উদয়পুর ছেড়ে ১-৫০এ হিমায়তনগর পৌঁছে ভোর ৪-৪৫এ আমেদাবাদ; আর আমেদাবাদ থেকে ফেরে ২৩-৪০টায় ৭৬৪৪ আমেদাবাদ-উদয়পুর এক্স। প্যাসেঞ্জারও চলে উদয়পুর-আমেদাবাদ হিমায়তনগর হয়ে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে মাতলী/নাখহার/কঁকরোলা/মাজোয়ার/লুনি হয়ে উদয়পুর-যোধপুর ফস্ট প্যাসেঞ্জার ৬-৩০, ১৯-০৫এ; চিতোর যাচ্ছে ৮-৪০, ১৮-০৫, ১৯-০৫এ উদয়পুর থেকে।

আবার, আবু রোড-মাজোয়ার/আজমের রেল পথের ফালনা জংশনে নেমে রণকপুর হয়ে যাওয়া চলে। ফালনা থেকে রণকপুরের দূরত্ব ৩২ কিমি আর উদয়পুর ৯৬ কিমি। বাসও আছে

ঘণ্টা ছয়কে আবু রোড থেকে সকাল ৮-০০টার রথকপুরের। আবাব উদয়পুর থেকে আজমের জাতীয় সড়ক ধরে বাসে এককিলোমিটার, নাথখার, হলদিঘাট, কাকরোলি, রাজসম্মল লেক বেড়িয়েও কুশলগড়, রথকপুর, ফালনা হয়ে টেনে আজমের চলা যেতে পারে। বা উদয়পুর থেকে বাসে ৫ ঘণ্টার রথকপুর পৌঁছে রথকপুর বেড়িয়ে আবাব বাসেই যোধপুর বা আবু রোড যাওয়া চলে দিনে দিনে। তেমনই রথকপুরের ৭ কিমি দূরের সদরি থেকেও আবু রোডের বাস মেলে। তবে, উৎসাহীদের চিতোরগড় এই পথ পরিক্রমার আগেই বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে।

| উদয়পুর থেকে দূরত্ব | তবুও আবু পাহাড় থেকে |
|---------------------|--------------------------------|
| জয়পুর ৪০৭ কিমি | বাসে উদয়পুর |
| আজমের ২৬৯ " | যাওয়া সুবিধা। বাসও চলছে |
| চিতোরগড় ১১৫ " | নানান—প্রাইভেট, MP, UP, |
| কাকরোলি ৬৩ " | Gujarat, Rajasthan, Haryana |
| রথকপুর ৮৯ " | সরকারের NH-৪ ধরে উত্তর ও |
| যোধপুর ২৭৫ " | পশ্চিম ভারতের দিকে দিকে |
| কোটা ২৮০ " | উদয়পুর থেকে। বাস যাচ্ছে ৩২ |
| মাইট আবু ১৮৭ " | ঘণ্টায় প্রতি আঘণ্টা অন্তর |
| "ফালনা হয়ে ২৭৫ " | চিতোর; ৯ ঘণ্টার জয়পুর যাচ্ছে |
| আমেদাবাদ ২৪৩ " | ৬-০০, ৬-১৫, ৭-০০, ৯-০০, |
| ভরতপুর ৫৯০ " | ২০-৪৫, ২১-৩০, ২২-০০টায়; |
| আগ্রা ৬৪৪ " | ৫২ ঘণ্টার আবু পাহাড় যাচ্ছে ৫- |
| দিল্লী ৬৫৮ " | ০০, ৬-০০, ১০-৩০, ১৩-০০, |
| মুঝাই ৭৩৯ " | ১৭-০০টায়; ৫ ঘণ্টার বুটী ৫- |

১৫৫; ১০ ঘণ্টার যোধপুর যাচ্ছে ৭-০০, ১১-৪৫৫; ৬ ঘণ্টার কোটা যাচ্ছে ৬-৪৫, ১২-৩০, ২১-৩০; ইন্দোর যাচ্ছে ৭-১৫, ১৯-৩০; ৮ ঘণ্টার আমেদাবাদ যাচ্ছে ১১ বাস। এছাড়া নানান প্রাইভেট ডিলাক্স বাস যাচ্ছে দিন ও রাত্রিকালীন সার্ভিসে—কোটা, যোধপুর, আজমের, জয়পুর, সওয়াই মাধোপুর, মাইট আবু হাড়াও রাজ্যের দিকে দিকে উদয়পুর থেকে। এমনকি Town Hall Rd থেকে নানান প্রাইভেট কোম্পানির বাস মুঝাই, দিল্লী, আগ্রা, আমেদাবাদ, ধারকা, ভূপাল, মথুরা, বৃন্দাবনও যাচ্ছে। উচিতও হবে দুর্গপাড়ার যাত্রার সাধারণ বাস ছেড়ে এক্সপ্রেস বাসের যাত্রী হওয়া। তেমনই সরকারি বাস (City Stn Rd স্ট্যান্ডের রিজার্ভেশন ও অনুসন্ধান ৩ ২৭১৭১, ৭—২১-০০টায়) থেকে প্রাইভেট বাসে (City Stn Rd Std-এ Mukesh Travels, ৩ ২৭৮৮৭; Punjab Travels, ৩ ২৬০২৩; Srinath Travels, ৩ ২৭৭৩৩) যাত্রাও অধিক আরামপ্রদ। আর রাজ্যের রাজধানী ৪০৭কিমি দূরের জয়পুরের সঙ্গে বিমান, রেল ও বাস সংযোগ গড়ছে উদয়পুরের।

 IAC-র বিমান ২৪৬ লিন ১৯-০০৫ উদয়পুর ছেড়ে ২০-০৫৫ গুন্ডাবাদ পৌঁছে মুঝাই যাচ্ছে ২১-৫০৫; ১ ৩ ৩ ৭ লিন ৮-১০৫ ছেড়ে মুঝাই যাচ্ছে ৯-২০৫ সরাসরি। ১ ৩ ৩ ৭ লিন ২০-২০৫ গুন্ডাবাদ ছেড়ে ২১-০৫৫ জয়পুর পৌঁছে দিল্লী যাচ্ছে ২২-১৫৫; ২৪৬ লিন ২০-২০৫ ছেড়ে জয়পুর হয়ে দিল্লী যাচ্ছে ২২-১৫৫। কেন্দ্রেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনগুলিতে। প্রাইভেট বিমানও চলছে দিল্লী-উদয়পুর-মুঝাই রুটে। শহর থেকে ২৫ কিমি দূরে Davok Airport. শব্দর বসেছে Delhi Gate-এর অনুরে, ৩ ২৪৩৩/বুকিং: ২৪৩৩৩. বাস স্ট্যান্ড ও রেল স্টেশনও শহরতে দক্ষিণ-পূবে।

Tourist Office, ৩ ২৩৬০৫ বসেছে ট্যুরিস্ট বাংলোর ঢালে শহরের মেওয়ার্ল পেরিয়ে উত্তর-পূবে শাস্ত্রী সার্কেলে। শহরে চলছে সিটি বাস, রিকশা, টাক্সি, অটো ও মিনিটারি ট্যাক্সি।



Udaipur-313001, STD 0294৫ ৪টি এলাকা ধরে গড়ে উঠেছে সাধারণ হোটেল। রেল ও বাসের সিরিকটে City Station Rd এলাকার হোটেলের আধিক্য। তবে, বিভিন্ন পথঘাট, জনকোলাহলের সাথে যন্ত্রণাকটের নিনাদ পরিবেশকে কলুষিত করে রেখেছে। শাস্ত্রী সার্কেলে ট্যুরিস্ট বাংলাও ট্যুরিস্ট অফিসের অবস্থান হলেও সাধারণ হোটেল সংখ্যা কম। তবে, পরিবেশ স্টেশন রোড থেকে ভাল। বাস স্ট্যান্ড থেকে সিটি প্যালেসের পথ জুড়েও নানান হোটেল—এদের অবস্থান Lake Palace Rd ও Bhattiyani Chotia-য়। তবুও যেন পরিবেশের গুণে জগদীশ মণিসকে বিচরে পায়ে হাঁটা দূরত্বের হোটেলরাজি থাকার জন্য অনুশয়।

রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি আর বাস থেকে ৫ মিনিটের হাঁটা পথে সাধারণ হোটেলের মেলা বসেছে City Station Rd-1-এ। শহরমুখী ডাইনে—H Yatri, DAB ১৭৫-২২৫ A/c D ৩৫০; H Apsara, R; B; ১, SAB ১২৫ DAB ২০০ A/c S ৩৫০ D ৫৫০ ডর্মি ৫০, থাকার পক্ষে ভালই; H Welcome, D ২০০-৩২৫ ডিলাক্স ২৫০-৪৫০; Raj H, SCB ৬০ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১২৫-১৭৫ A-c D ৩০০; Sonika H, Priya G H, এসের রোট S ৬৫-১০০ D ১২৫-২০০; H Sangam, মান ও দামে সোনিকা তুল্য। H Kalpana, SAB ৮০ DAB ১৫০; H International, DAB ১২৫-১৭৫; Tourist H, S ৪৫-৮০ D ১০০-১৭৫; H Sadhana S ৬০-৮৫ D ১০০-১৭৫; H Swagat S ৬৫-১০০ D ১২৫-২২৫ FR ২০০-২৭৫; New Jyoti, S ৮০ D ১৫০; Jyoti H, SCB ৬০ SAB ৮৫ DCB ১০০ DAB ১৫০-২২৫ FR ২৫০; Udaipur H, SCB ৬০ SAB ৮০ DAB ১২৫-২৫০ A-c D ২২৫-৩২৫। আর বাসে—Payal H, D ৪০০ A/c D ৫৫০-৭৫০; H Monika, S ৬০ D ১০০-১৭৫; Sri Gunesh H, SCB ৮০ SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ১৫০-২৭৫ A/c S ৩০০ D ৪৫০; Gitunjuli H; Lake City, opp Rly Stn, SAB ৮০ DAB ১৫০ A/c S ২০০ D ২৭৫; H Shulimar, Udaipole, near Bus Stand, SAB ৮৫-১৫০ DAB ১৫০-২২৫ A-c S ৩৭৫ D ৪২৫; H North Star, near CBS, S ১০০-১৭৫ D ১৫০-২৭৫। তবে, বিভিন্ন পথঘাট, গাড়িঘোড়ার নিনাদ পরিবেশকে কলুষিত করে রেখেছে।

RTDC-র H Kujri রয়েছে Ashoka Rd, Shastri Circle-313001, ৩ ৪১০৫০১, R4B3, S ২২৫ D ৩০০ A-c S ৩৫০ D ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ ডর্মি বেড ৫০, থাকার পক্ষে ভালই; আহারও মেলে ক্যান্টিনে। কল বুকিং: Linkage ৩ ২৪৬১৭১। Tourist Officeটিও কাজরী লাগোয়া। কাজরীর বিপরীতে—Alka H, ৩ ৪১৬১১, S ১৭৫ D ২৭৫ সুইট ৫৫০; Prince H, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫; Saraswati Vishranti Griha, Ashok H, ৩ ৪১১২৫, SCB ৮০ SAB ১২৫ DCB ১৫০ DAB ২০০-২৭৫; H Ankur, ৩ ৪১০৩৩৫, S ২২৫-৩৫০ D ৩০০-৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০; ছাড়াও হোটেল রয়েছে নানান সারা শহরময়।

Keerti H, Saraswati Marg, near Suraj Pole Gate, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২২৫ ডর্মি ৫০; এসের সুনীকে বেশাতি করে

বিভাৰিকৰ *Keerti Tourist H-ও* হুৱেহে অদূৰে। কীৰ্তিৰ পিছে
সলাই ফুল *Ghungghru G H*, College Rd, ১০০-১৫০ টাকায়
ঘৰ। সিটি প্ৰাসাদেৰ কাহে জগদীশ মন্দিৰেৰ পিছে লেকৰ পাড়ে
সুন্দৰ পৰিবেশে যথেষ্ট পপুলাৰ *Lalghat G H*, S ৮০-১৫০ D
১২৫-২০০; লাগোয়া ডাইনে *Ever Green G H*, DCB ১৫০
DAB ২০০-২৭৫; পাশেই *H Shambhu Vilas*, ১৫০ ও দামে
মহেন্দ্ৰ তুল্য; অদূৰে *Ranjit Niwas H*, S ১০০ D ১৫০ ডৰ্মি
বেড ৫০; লাগোয়া আৰ এক পপুলাৰ *Jugut Niwas*, D ২২৫-
৪৫০; যথেষ্ট পপুলাৰ *Badi Haveli*, ছাদ থেকে লেকৰ শোভা
সুন্দৰ দৃশ্যমান, DCB ১২৫-১৫০; লাগোয়া *Anjani H*, নানান
ঘৰ থেকে লেকৰ শোভা দৃশ্যমান, DCB ১৫০-১৭৫; *Lake
Ghat G H*, S ৮০-১০০ D ১২৫-২০০; এৰই পিছে *Shri Kami
G H*, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০; *H Monalisa*, City Palace
Rd, D ১২৫-২০০; সিটি প্যালেসেৰ অদূৰে ঘাটৰ পথে *H Sai
Niwas*, DAB ২৭৫-৬০০; জগদীশ মন্দিৰেৰ কাহে *H Raj Pal-
ace*, 103 Bhattiyani Chotta, D ২২৫-৬০০, ব্যবস্থাপনা
ভলিই; *H Fountain*, Sukhadia Circle-1, ৩ 560290, R3B1,
S ৩৫০-৫৫০ D ৪৫০-৬০০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০; কল বুকিং:
Linkage ৩ 2465171. *Tuk International*, S ৮০-১২৫ D
১৫০-২২৫; *Meghdoot H*, S ১৭৫-৪৫০ D ২৫০-৬০০;
Gokul Palace H, S ১৫০ D ২২৫; *H Paros*, ৩ 522068, S
২৫০-৪৫০ D ৩৫০-৬০০; *H Samrat*, D ১২৫ F ২৭০;
Jagadish L, outside Suraj Pole, S ৬৫ D ১২৫; *H City
Centre*, Bapu Bazar, S ১০০-২২৫ D ১৫০-৩০০ ডিলাক্স
৩৫০-৬০০; *Green View International*, A/C D ৮০০, কল
বুকিং: Span ৩ 2801209.

Lake Palace Rd-313001-এ—*Garden H*, opp Gulab
Bagh, R1B1, S ৮০-১২৫ D ১০০-১৭৫; *Bhagwati H*,
Gulab Bagh, DAB ২০০; *H Mahendra Prakash*, D ১২৫-
২০০ A/C ৩০০-৪৫০; *Chandru Prakash*, SAB ১০০-১৭৫
DAB ১৫০-২২৫ A/C S ২৫০-৩২৫ D ৩০০-৪২৫; *H
Ratnadeep*, R1B1, SAB ৮০-১৫০ DAB ১০০-১৭৫ A/C
S ২২৫-৩০০ D ৩২৫-৪০০; বাগিচায় ঘেৰা অতিথৈৰ প্ৰাসাদে
অতি পপুলাৰ *Rangniwas Palace H*, SCB ১৫০ DCB ২২৫
SAB ২০০-৩৫০ DAB ৩০০-৪৫০, নতুন বাড়িতৈ S ৬০০ D
৮০০ সুইট ১০০০; *H Suidarshan*, D ২০০-৪৫০ FR ৩০০-
৪৫০; ৰাজ্য সৰকাৰেৰ দেবস্থান দপ্তৰ পৰিচালিত *Devasthan
Vishruni Griha*, near Suraj Pole-1, R2B1, S ৬০ D ১০০
FR ১৫০।

Chetak Circle-1এ—*Chetna H*, R21/2 B2, SAB ৮৫-
১৫০ DAB ১২৫-২০০ FR ২৫০; *H Ashish Palace*, 125
Chetak Marg, ৩ 525558, S ৪৫০ D ৬৫০ A/C S ৬৫০ D
৮৫০। পিছোলা ও ফতে সাগৰেৰ মাথো ITDC-ৰ **Laxmi Vilas
Palace H*, Fatehsagar Rd-313001, A27R5, S ১৫০ D
২৫০০ A/C S ২৭৫০ D ৩৫০০ সুইট ৫০০০/৫৫০০; লাগোয়া
Govt of Rajasthan Undertaking—**H Ananda Bhawan*,
৩ 523256, A/C S ৬৫০-৮৫০ D ৮০০ ১২৫০; *Rajasthan
State H*, R5B5; *Island Palace H*, R5B5, S ১৫০ D ৩০০;
তৰুণমুখী **Chandraruk H*, Saheli Marg-1, ৩ 560011,
R4B1, A/C S ৮৫০ D ১০০০; *H Saheli Palace*, Saheli

Marg-1, A24 R4 B1, S ৩৫০ D ৫৫০ A/C S ৬৫০ D ১৫০।
H Damani, opp Telegraph Office-1, ৩ 525675, R3B2,
S ১৭৫-৩০০ D ৩০০-৪৫০ A/C S ৫০০ D ১৫০ সুইট ৮৫০;
**H Hilltop Palace*, Fatehsagar-1, A/C S ১৪৫০ D ১২৫০,
কল বুকিং: Span, ৩ 2801209; *Gulab Niwas H*, near Fateh
Sagar Lake, D ৪৫০-৮৫০; সিটি প্ৰাসাদেৰ অৰূপে নিশে
বিলাসবহল **H Lakend*, Fatehsagar Lake, Alkapuri-1,
৩ 29032, R4B2, S ৬০০ D ৮৫০ A/C S ৮৫০ D ১২৫০;
কীৰ্তি হোটেলৰ মালিকানায় *Pratap Country Inn*, Airport
Rd-1, R1B0, ৩ 83058, DAB ৮৫০ A/C D ১৫৫০ সুইট
১৭৫০।

Taj Group's **Shiv Niwas Palace H*, City Palace-1,
৩ 528016, A25R3B1, A/C D ৮০ সুইট ১৮৫-৪৫০ US\$,
কল বুকিং: Span, ৩ 2801209; লেকমুখী *H Fateh Prakash
Palace*, D ১৪০ US\$, কল বুকিং: Span, ৩ 2801209;
পিছোলাৰ নীল জলে খেত কমলেৰ মতো ভাসা বানাদেৰ
গীয়াবাসে উদয়পুৰেৰ সন্মত হোটেল *Taj Group's *Lake Pal-
ace H*, Pichola Lake-1, ৩ 527961, R3B2,
A/C S ১৬০-২২৫ D ২০০-২৫০ সুইট ৩৫০-৬৫০ US\$; **H
Shikarbadi*, Ahmedabad Rd-1, ৩ 583200, R4B5, A/C S
৪৫ D ৮০ US\$; *Grand H and Motel*, opp Sajjan Niwas
Garden, SAB ১২৫-২২৫ DAB ১৭৫-৩২৫ A/C S ৩০০ D
৪০০; **Lake Pichola H*, outside Chandpole-1, ৩ 410575,
R3B3, A/C S ১০০ D ১২৫০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209;
পাশেই *Lake Shore H*, নানান ঘৰ থেকে লেকৰ শোভা দৃশ্যমান,
S ১০০-১৫০ D ১৭৫-২২৫; *Ajanta H-1*, R2B1, SAB ১০০
DAB ১৭৫ চাৰ বেডেৰ ঘৰ ৩০০; *Oriental Palace
Resort*, Subhash Nagar, ৩ 412373, S ১০৫০ D ১৪৫০
সুইট ২৫০০-২৭৫০; *Lake View H*, near Saroop Sagar,
B31/3, SAB ১৫০ DAB ২২৫; *Bandari Darshak
Mandap* R31B3, SAB ১৫০ DAB ২৫০ FR ৩০০; *Naturaj
H*, R11, S ৮০-১২৫ D ১২৫-২৫০; *Riuraj*, D ১৫০-২২৫;
H Penta Hill, 18L, Ambagarh-1, R6B5, ৩ 28124, D
৩০০-৫৫০ ডৰ্মি ৬৫; *Rampratap Palace H*, D ৮৫০-১২৫০,
কল বুকিং: Span ৩ 2801209; *H Air Palace*, opp IAC Of-
fice, Delhi Gate, Navy Marg-1, ৩ 529611, S ৩০০ D
৪৫০; *H Vinayak*, S ২৫০-৪০০ D ৩৭৫-৬৫০ A/C S ১৭৫০
D ১৫০০; **H Rajdarshan*, Pannadhai Marg-1, ৩ 526601,
A34R4B3, A/C D ১৬৫০ ২০০০, কল বুকিং: Span
৩ 2801209; *Heritage Resorts*, opp SAS Bahu Temple,
Lake Bagela, Nagda-313202, ৩ 528628, S ১৫৫০ D
২৫৭৫ সুইট ৩৫০০। এছাড়াও হোটেল আছে আৰু নানান
উদয়পুৰে।

আৰ আছে *Udaipur Bungalow*, অবু: ম্যানেজাৰ; *Muni-
cipal R H*, D B, ৱেলৰ ৱিটাৰিৰ ৱেলউদয়পুৰে। আৰ আছে
ধৰমশালা—*Fateh Memorial*, Surajpole-1; *Champalal
Musafirkhana* (for Boras only), Dhan Mandi;
Champalal, Radhamudhab, এসেৰ কাহেও ঘৰ মেলে থাকল।
তৰুণ থাকলৰ জন্য ভাৰকথিত হোটেলগুলিৰ সাধে সাধল
হোটেল *Kajri Tourist Bungalow*, Alka H, *H Fountain*,

Rangniwas Palace H, Keerti H, Pratap Country Inn, H Ratnadeep ভাণ্ডাই।

উদয়পুরের আর এক আকর্ষণ পেয়িং গেস্ট প্রধায় শতাব্দিক ফায়ারিং সাথে থাকা। ১০০-৩৫০ টাকায় ঘরও মেলে। আগ্রহীদের উচিত হবে রাজ্য সরকারের ট্যুরিস্ট অফিসে যোগাযোগ করা। আর আহার্য সর্বত্র না মিললেও *Kajri Tourist Bungalow* ছাড়াও খাবার হোটেল আছে ফিরতে ফিরতে সারা শহরময়। ৪৫০ টাকায় *Lake Palace H*-এও একটা ডিনারের স্বাদ নিতে পারেন উদয়পুরে। ব্যালিশনের হ্যান্ডিং গার্ডেনের মতো সিটি প্রাসাদমুখী *Roof Garden Cafe*টির মূল্যে কিছুটা অধিক। ঘটলেও আহায়ে সুনাম যথেষ্ট। তেমনি চেকক সার্কেলে *Purus, Berrys Restaurant* বিপরীতে *Kwality* ছাড়াও *Rang Niwas H*-এরও যথেষ্ট সুখ্যতি স্বল্প মূল্যে আহায়ে পরিবেশনে। জগদীশ মন্দিরের বিপরীতে *Mayur Cafe*-টিও সদাই ব্যস্ত যাত্রী পরিবেশায়। রাজস্থানী *পিজার*ও স্বাদ নেওয়া যেতে পারে ময়ূরে। তেমনি *Natural Attic Restaurant*-টি সদাই ব্যস্ত স্বল্প মূল্যে আহায়ে পরিবেশনে। আর চীনা খাবার জন্য ফতেহ সাগরে *Rani Village* বা সাহেলিও-কি-বাড়ির *Feast*-এ চলা উচিত হবে। ভবুও যেন সারা রাজস্থানের মতো *Dal Bati Churma*-র স্বাদ নেওয়া উচিত হবে।

একদিনে উদয়পুর শহর দেখুন, সন্ধ্যায় বোটিং করুন ফতেহ সাগরে। ২য় সকালে বাসে রণকপুর বেড়িয়ে সন্ধ্যায় উদয়পুর ফিরুন। সময় স্বল্পতায় রণকপুর না গিয়ে একলিঙ্গজী দেখে নাথবার/হলদিঘাট/ কার্কারোলি/রাজসম্ম শহরিয়ে বাসে আজমেরও চলা যেতে পারে। নাথবার ও হলদিঘাট থেকেও চিতোরের বাস মেলে। RTDC কনডাক্টেড ট্যুরেও যাচ্ছে এ-পরিক্রমায়।

কনডাক্টেড ট্যুর: ট্যুরিস্ট বাংলা, শাহী সার্কেল, ৩ 23605 থেকে ৬০ টাকায় ৮—১৩-৩০টায় RTDC-র শহর দেখাবার ব্যবস্থা আছে। আর নাথবার, একলিঙ্গজী, হলদিঘাটও দেখিয়ে আনে ১৪—১৮-৩০টায়, যাত্রী প্রতি ৮০ টাকায়। রণকপুর, কুন্ডলগড় ও হলদিঘাটও যাচ্ছে একদিন অন্তর RTDC মিনিবোকে এ-ট্যুরের ভাড়া ২৫০ শিও ২০০। চিতোরগড় যাচ্ছে একদিন অন্তর মিনিবোকে ২৫০ শিও ২০০ গাড়িতে ৪০০ করে। আগস্ট থেকে এপ্রিল মাসে *Meera Kala Mandir*, ৩ 23976, Sector 11, Hiran Magari-তে ১১-০০টায় রাজস্থানী লোক নৃত্য ও সঙ্গীতের প্রোগ্রামটি উচিত হবে দেখে নেওয়া। তেমনি রাজ্য পর্যটন আয়োজিত সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানটিও দেখে নেওয়া যেতে পারে প্রতি শনিবার লক্ষ্মীবিলাস ও বুধবার সন্ধ্যায় আনন্দ ভবনে। ট্যুরিস্ট বাংলা, রেল স্টেশন (১ নম্বর প্ল্যাটফর্ম), ডাবোক বিমানবন্দর, চেকক সার্কেল শাখা বসেছে রাজ্য পর্যটনের। বুকিং-এরও ব্যবস্থা আছে প্রতিটি শাখা কেন্দ্রে।

রাজস্থানের বৃহত্তম রাজপ্রাসাদ মহারানার শীতকালীন আবাস সিটি প্রাসাদ। ১৬ শতকে গিছোলা লেকের পূর্ব পাড়ে গ্রানাইট পাথরে গড়া পুরো প্রাসাদটিই যেন বাদুপুত্রী গড়েছে। জনশ্রুতি, এক সাধুর ভবিষ্যৎ বাণীতে শত্রু হানায় অজ্ঞেয় হবার আশ্বাস পেয়ে দুর্গ গড়েন মহারানার উদয়সিংহ। ১৮১৮য় ব্রিটিশ জয় করলেও কমতা ফেরে মহারানার হাতে আবার। এছাড়া বিত্তীয় কোনো আক্রমণও ঘটেনি উদয়পুরে। উত্তরকালে নানান রানাদের হাতেও মহলের পর মহল গড়ে

উঠেছে সিটি প্রাসাদে। ১৭ শতকে জগৎসিংহ গড়েন অনন্য সব মহল। শোনা যায়, বিলেতের উইন্ডসর ক্যাসেলের সঙ্গে সাদৃশ্য আছে এর। উত্তরের বড়ি পোল (১৬০০) হয়ে ত্রিপোলিয়া গেট (১৭২৫) দিয়ে প্রবেশ। সকালে মহারানাদের জন্মদিনে মহারানার সম ওজনের সোনা বিতরিত হত প্রজাদের মধ্যে এই ত্রিপোলিয়া গেটে। প্রাসাদের শিশু মহল, কৃষ্ণ ভিলা, ভীম ভিলা, ছোট চিত্রশালি, দিলখুসমহল, মানকমহল, মোতিমহল, বড়িমহল—প্রতিটি মহলই কারুকার্যে অনুপম। মোরচকে মোজাইক করা ময়ূরের প্রতিকৃতি, মানক বা রুবিমহলে কাচ ও পোসেলিনের নানান মূর্তি, কৃষ্ণ ভিলায় মিনিমোচার, করণ সিংহের তৈরি জানালাইন জেনানামহলে ফ্রেস্কোচিত্র, মোতিমহলে কাচের কারুকার্য, চিনিমহলে অলঙ্কৃত টালির অলঙ্করণ অতীব নয়নাভিরাম। এছাড়া রাজস্থানের উত্থান-পতনের নানান আখ্যানও রূপ পেয়েছে চিত্রে। এমনকি যোধপুরের রাজকুমারী কৃষ্ণার আত্মহত্যাও চিত্রিত হয়েছে। সরকারি মিউজিয়ামও বসেছে সিটি প্রাসাদের অংশে। তেমনি বসেছে প্রাসাদের আর এক অংশে *H Shiv Vilas Palace* ও *Fateh Prakash H*। গণেশ দেউড়ি দিয়ে প্রাসাদের প্রবেশ। প্রাসাদ দেখতে গাইড নেওয়া ভাল। ৯-৩০—১৬-৩০টায় খোলা, টিকিট ২০; ক্যামেরার চার্জ মান হারে।

প্রাসাদের উত্তরে ইন্দো-আর্য শৈলীতে ১৫ লক্ষ টাকায় জগদীশ মন্দিরটি গড়েন মহারানা জগৎসিংহ ১৬৫১ খ্রিস্টাব্দে। তিনতলা মূল মন্দিরে কালো পাথরের দেবতা জগন্নাথরূপী বিষ্ণু। পূজা হয় আজও। সামনেই ব্রাসে মূর্তি হয়েছে গরুড়ের। রাস্তা থেকে ৩২ ধাপ উঠে মন্দির চত্বর। চত্বরের চারকোণে আরও চার মন্দির। দেবতা—শিব, শক্তি, সূর্য ও গণেশ। এরই নিচে ১৮ শতকের বাগোঁক কি হাভেলী। অতীতের গেস্ট হাউসে আজ ওয়েস্টার্ন জোন কালচারাল সেন্টার বসেছে। এর গ্রাফিক স্টুডিও, আর্ট গ্যালারিতে নানানধর্মী শিল্পকলার প্রদর্শনী দেখে নেওয়া যায়। রঙিন কাচের কারুকার্যও ইনলেই ওয়ার্ক অনুপম। ৯-৩০—১৮-০০টায় খোলা।

সিটি প্রাসাদের পথে গিছোলা লেকের গিছে একশো একর জুড়ে ১৮৫৯-৭৪ খ্রিস্টাব্দে মহারানা সজ্জন সিং-এর তৈরি সজ্জননিবাস বাগ বা গুলাব বাগ তথা প্রাসাদ কমপ্লেক্স। এখানে রয়েছে নওলাখা ভবন, ভিক্টোরিয়া হল তথা সরস্বতী ভবন, কমল তালো, ছোটদের মনোরঞ্জনর জন্য মিনি ট্রেনও চলছে। ছোট রেল স্টেশন লব-কুশ, অনতিদূরে চিড়িয়াখানা। অতীতের রাজকীয় সংগ্রহশালা সিটি প্যালেসে স্থানান্তরিত হলেও সরস্বতী সদনের গ্রন্থাগারের পুঁথিও বই-এর সংগ্রহ উল্লেখ্য। লাগোয়া দেশ-বিদেশ থেকে আনা অস্বাভাব্য গোলাপের গোলাপ বাগটিও (১৮৮১) দ্রষ্টব্য।

১৪ শতকের শেষভাগে ১০ বর্গ কিমি জুড়ে তৈরি হয়

কৃত্রিম লেক পিছোলা। বড়ি পোল বাঁধ গড়ায় নতুন করে আয়তন বাড়ড়ে উদয় সিংহর কালেও পিছোলার। ৪x৩ কিমি প্রশস্ত পিছোলার চারপাশ অনুচ্চ পাহাড়ে ঘেরা, মাঝে মাঝে দ্বীপ। দ্বীপগুলিতে গড়ে উঠেছে প্রাসাদ ও মন্দির। সিটি প্রাসাদটিও পিছোলার পূর্ব পাড়ে। প্রাসাদের দক্ষিণে মনোরম বাগিচা আর উত্তরে ঘাটের পর ঘাট—মানের ঘাট, ধোবী ঘাট। অনিন্দ্যসুন্দর এর প্রকৃতি। পূর্ণিমা রাতে এর রূপ পাগলপারা করে তোলে পর্যটকদের। সিটি প্যালেস (বংশীঘাট) জেটি থেকে ১ ঘণ্টার সফরে ৪০ হারে বোটিং-এর ব্যবস্থা মেলে দিনভর। লেক প্যালেস হোটেল থেকেও বিকেল পাঁচটায় ৭৫ টাকায় যাচ্ছে পিছোলা বিহারে। তবুও যেন বাতাস ভারি হয়ে ওঠে অতীত স্মরণে। জনশ্রুতি, শর্তাধীনে একদা এক নর্তকী দড়ির উপর দিয়ে নাচতে নাচতে পিছোলা পেরুবে—রাজ্যের আধা দেবেন মহারানা পুরস্কার রূপে তাকে। নর্তকী পৌঁছে যাচ্ছে অপর পারে—মন্ত্রী প্রমাদ গনলেন। দড়ি দিলেন কেটে, মারা পড়ল নর্তকী পিছোলার জলে পড়ে। স্মৃতিস্তম্ভ হয়েছে পিছোলার বুকে নর্তকীর। কথিত আছে পিছোলার জল খেলে তাকে আবার আসতে হবে উদয়পুরে। তবে রূপসী পিছোলার প্রেমে পড়ে বার বার আসা অস্বাভাবিক নয়।

১৭৫৪ খ্রিস্টাব্দে ৪ একর ব্যাপ্ত পিছোলার আর এক দ্বীপ জগনিবাসে জগনিবাস প্রাসাদ অর্থাৎ গ্রীষ্মাবাস গড়েন মহারানা জগৎ সিং ২। চারপাশে জল, পেছনে পাহাড়—মনোরম প্রকৃতি। পরবর্তীকালেও নানান সংযোজন ঘটে বিভিন্ন মহারানাদের হাতে প্রাসাদের। জলে তৈরি প্রাসাদ-গুলির মধ্যে এটি অনন্য হলেও প্রবেশাধিকার সীমিত। সম্প্রতি বিলাসবহুল লেক প্যালেস হোটেল বসেছে জগনিবাসে। অবস্থান সম্ভব না হলেও বোটে গিয়ে দেখে নেওয়া যেতে পারে বাগিচা, ফোয়ারা, সাঁতার সেতুতে স্বর্গের নন্দনকানন সম রমণীয় জগনিবাস। আবার শ'দুয়েক টাকায় ব্রেকফাস্ট/বেকালীন চা-টা, শ'তিনেক টাকায় লাঞ্চ/ডিনার সাজ করা যেতে পারে। সেক্ষেত্রে, হোটেল দর্শন ও যাতায়াত ফ্রি। তবে, কর্তৃপক্ষের পছন্দ নয় দর্শনাধী।

জগনিবাসের বিপরীতে পিছোলার দক্ষিণে আর এক দ্বীপ জগমন্দিরে হলদে বেলেপাথরের গোলাকৃতি বুরুজ মাথায় নিয়ে উৎসব অনুষ্ঠানের প্রাসাদ ৩-তলা জগমন্দির প্রাসাদ। ১৬১৫ মহারানা অমর সিং-এর হাতে শুরু হয়ে শেষ হয় করণ সিং-এর হাতে ১৬২২এ। উত্তরকালে সংস্কার করেন করণ-পুর জগৎ সিং (১৬২৮-৫২)। নামটিও তারই নামে প্রাসাদের। খুরম—উত্তরকালের সফট শাহজাহান, পিতা জাহাঙ্গীরের বিরুদ্ধে বিদ্রোহ করে সাময়িক আশ্রয় নেন (১৬২৩-২৪) এখানে। এমনকি তাজমহলেরও প্রেরণা পান শাহজাহান জগমন্দির থেকে। এখানকার বেলজিয়াম কাচের আসবাবপত্র খুবই সুন্দর। জগমন্দিরেও আইল্যান্ড হোটেল বসেছে।

পিছোলা লেকের উত্তরে আর এক কৃত্রিম লেক ফতেহ সাগর। খাল কেটে সংযোগ গড়েছে পিছোলার সাথে। ১৬৭৮এ মহারানা জয় সিং-এর গড়া বাঁধে সৃষ্ট লেক। অতি বৃষ্টিতে বিনষ্ট হতে ৬ লক্ষ টাকা ব্যয়ে নতুন করে খনন করান মহারানা ফতেহ সিং। হ্রদটি দৈর্ঘ্যে ২.৪ আর প্রস্থে ১.৬ কিমি, গভীরতা ২৫ ফুট। গাড়ির পথ গিয়েছে পিছোলার পাড় ধরে। ফতেহ সাগরের তীরে সঞ্জয় পার্ক ও আরাবল্লী ভাটিকা। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে ফতেহ সাগরে। কনট বাঁধ নামেও পরিচিতি আছে এর। পাশেই হয়েছে আর এক প্রাসাদ তথা রাজকীয় অতিথি ভবন—লক্ষ্মীবিলাস। তৈরি এটি রানা ফতেহ সিংহর কালে। এছাড়াও আরাবল্লী পর্বতে গড়ে উঠেছিল সেকালে ৫ম প্রাসাদ মনসুন প্যালেস।

পর্যটকপ্রিয় রমণীয় দ্বীপ-উদ্যান নেহরু পার্কটিও ফতেহ সাগরে। বৃন্দাবন গার্ডেনের ঢঙে সহেলিও কা বাগে রূপ পেয়েছে। ১৫০ ফুট উঁচুতে ওঠা জলের ফোয়ারাটি ভারতে অদ্বিতীয়। মোতি মাগরি ঘাট থেকে মোটর বোটে পারাপার। বিপরীতে মোতি (Pearl) মাগরি পাহাড়ের সুন্দর পরিবেশে ১৯৬৭তে গড়ে উঠেছে প্রতাপ স্মারক। মূর্তি হয়েছে ব্রোঞ্জে চেতক-পুঠে রানা প্রতাপের। মনোরম বাগিচায় টেলিস্কোপও বসেছে—চারপাশ দেখে নিতে। ৯—১৮-০০টায় খোলা। পথেই পড়ে জাপানিজ রক গার্ডেনস। সবেরই দর্শন টিকিটে।

চেতক সার্কেলের কাছে ৩রা মার্চ ১৯৬৩তে রূপ পেয়েছে ভারতীয় লোককলা মণ্ডল ৩ 29296. আন্তর্জাতিক মানের এই মিউজিয়মে ছবি, আবরণ, অভরণ, পুতুল, বাদ্যযন্ত্রে লোক সংস্কৃতির পরম্পরা তুলে ধরা হয়েছে। এমনকি পুতুল নাচের একটি মনোজ্ঞ অনুষ্ঠানও উপভোগ করা যেতে পারে এর অডিটোরিয়ামে। ৯—১৮-০০টায় খোলা। টিকিট ১০। তেমনই প্রতি মঙ্গল, বৃহস্পতি ও শনিবারের সন্ধ্যায় মীরা কলা মন্দির ৩ 23976, Sector 11য় রাজহালী নাচের অনুষ্ঠান দেখে নেওয়া যায়।

শহরের উত্তরে ফতেহ সাগরের পূর্ব পাড়ে বাঁধের নিচে রূপ পেয়েছে আর এক অভিনব বাগিচা সহেলিও-কি-বাড়ি (Saheliyon Ki Bari)। ১৮ শতকে দিল্লীর সম্রাট এটি নজরানা দেন মহারানা সংগ্রাম সিংকে। পরিবেশ রমণীয়। পদ্ম ভরা চার পুকুরের মাঝে রয়েছে নরম কালোপাথরের সুস্ব কাক্ষ্যকর্মশূণিত ছত্রিশ। একে ঘিরে হয়েছে বরনা অর্থাৎ ফোয়ারা। অভিনব স্বর্ন আছে এর ফোয়ারার—বুষ্টির আওরাজ মেলে রিমঝিমে, আর হচ্ছে বারিশবাদল ছাড়াই। বিন বাদল বরসাও-ও বলে থাকে লোকে একে। ১০ টাকার টিকিট লাগে ফোয়ারা চালু দেখতে। এত সুন্দর উদ্যানটি হয়েছিল সেদিন মোগল দরবার থেকে ভেট পাওয়া মুসলিম নর্তকীদের বাসের জন্য। বাগিচার দর্শনী ২.৫০, ৯—১৮-০০টায় খোলা।

চেতক সার্কেল থেকে ৬ কিমি দূরে শহরের উপকণ্ঠে ১৯৮৯এ রাজীব গান্ধীর হাতে উদ্বোধন তথা উদয়পুরের

নবতম আকর্ষণ রানী রোডে শিল্পগ্রাম (Shilpigram)। রাজহান, গুজরাট, গোয়া ও মহারাষ্ট্র থেকে শিল্পীরা এসে উপনিবেশ গড়েছে ৮০ হেক্টর এলাকা জুড়ে। প্রতিদিন ৯—১১-০০ ও ১৭—১৯-০০টার ১০ টাকার টিকিট হাতের কাজ দেখার ব্যবস্থা মেলে। যে কোনও বিকালে অটো বা ট্যাক্সিতে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। বিপরীতে রোস্তোরীও বসেছে। শহর থেকে ৩ কিমি পূর্বে শিশোদিয়া রাজাদের অতীত রাজধানী শহর আহার-এ বসেছে উদয়পুরের মহারানাদের সমাধি অর্থাৎ ছত্রিশ। মন্দির আর মিউজিয়ামও হয়েছে। ১০—১৭-০০টায়ে খোলা। উৎসাহীরা টাঙা বা অটো করে বেড়িয়ে নিতে পারেন। খননে অতীত নিদর্শনও মিলেছে আহার-এ।

চলতে-ফিরতে সুখাদিয়া সার্কেলে ফোয়ারাটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে। সাঁঝে আলোর সাজও পরে ফোয়ারা।

জয়সমন্দ লেক/অভয়ারণ্য

পর্বাণ্ড সময় থাকলে উদয়পুরের ৫৩ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ১৭ শতকে রানা জয়সিংহর তৈরি ১৪x৯.৫ কিমি বিস্তীর্ণ জয়সমন্দ বা ধেবর লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। এশিয়ার কৃত্রিম লেকগুলির মধ্যে এটি দ্বিতীয় বৃহত্তম। লেকের বুকে দ্বীপ—ভীল উপজাতিদের বাস। গোমতী নদীর ১০০ ফুট উঁচু বাঁধে তৈরি হয়েছে লেক। বাঁধের উপর শিবমন্দির ও মন্দিরে তৈরি ছত্রিশ। আর হয়েছে লেকের পাড়ে প্রিয়তমা রানীর গ্রীষ্মাবাসের জন্য জয়সিংহর তৈরি প্রাসাদ—রুবি রানী কি মহল।

লেকথেকে ৮ কিমি দূরে ৪৫ বর্গ কিমি জুড়ে জয়সমন্দ অভয়ারণ্য। হরিণ, বুনো গুয়ার, প্যাংঘার, চার শিংয়ের অ্যান্টিলোপ ছাড়াও নানান দেশী-বিদেশী পাখির জন্য এর প্রসিদ্ধি। ৫-৩০টায়ে প্রথম ছেড়ে ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে উদয়পুর থেকে জয়সমন্দ। থাকার জন্য লেকের পাড়ে RTDC-র H Jaisumand, ছাড়াও আছে Jaisumand Island Resort, ☎(02906) 2222, A/c D ২৫০০-৩৫০০ জয়সমন্দে।

আর আছে ১৫৫৯ বর্গ কিমি ১৫৬৫ ব্রিস্টল্দের মধ্যে মহারানা উদয়সিংহর কালে তৈরি শহরের ১৩ কিমি পূর্বে উদয়নাগর।

নাথদ্বার

উদয়পুর থেকে ৫০ কিমি দূরে উদয়পুর-আজমের সড়কে অন্যতম বৈষ্ণবতীর্থ ভারতে দ্বিতীয় সম্পদশালী মন্দির নাথদ্বার। শ্রীকৃষ্ণ এখানে শ্রীনাথজী নামে খ্যাত। কথিত আছে, ঔরঙ্গজেবের কোপানল থেকে রক্ষার্থে মথুরা থেকে মেবারের সরিয়ে আনা হচ্ছিল দেব বিগ্রহ। চলার পথে রথের চাকা বসে যেতে দেবজরীা বিধান দেলেন, এখানেই অধিষ্ঠিত হতে চান দেবতা। ১৬৬৯এ সেতভার প্রতিষ্ঠা। তবে, কালো পাথরের দেবমূর্তিটি আরও প্রাচীন, সম্ভবত

১২ শতকের। কালে কালে গড়ে ওঠে মন্দির। ৫—২২-০০টায়ে মন্দির খোলা। তবে, দেব-দর্শন ১৫-৩০, ১৬-৩০ ও ১৭-৩০টায়ে। অহিন্দুদের প্রবেশ নিষেধ, ছবি তোলাও মানা। জন্মাষ্টমী ও দীপাবলী জাঁকালো উৎসব।

নাথদ্বারে থাকার দরকার হয় না। তবে হোটেল ও ধরমশালা আছে বেশ কয়েকটি। H Utsab, NH-8, Nathdwara-313301, R11B1, S ৫২৫ D ৮৫০ A/c ৭৫০/ ১২৫০; H Vallabh Darshan, দুইয়েরই কল বুকিং: Span ☎ 2801209. RTDC-র ৭ ঘরের H Gokul, ☎ (02953) 30917, R12 B2, A-c S ২৭৫ D ৩৫০ চার বেডের ঘর ৩০০ ডর্মি ৫০। আর আছে প্রাইভেট Tourist L, Temple Rd-I, S ১০০ D ২০০ সুইট ২৫০ ডর্মি ৪০ টাকায়।

রাজ্যের নানান শহরের সঙ্গে নাথদ্বারের নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে। বাসে উদয়পুর যাতায়াতের পথে দেখে চলা যায়। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস। বাসসড়কেই মন্দির। উদয়পুর থেকে প্যাকেজ ট্যুরেও দেখে নেওয়া যায় নাথদ্বার-হলদিঘাটি-একলিজঙ্গী। নাথদ্বার দেখার জন্য ১ ঘণ্টা সময় যথেষ্ট। ট্রেনও যাচ্ছে উদয়পুর থেকে মালভি হয়ে মাড়োয়ার শাখা রেলের নাথদ্বারে। উদয়পুর থেকে ৬-৩০এ যোথপুর প্যাসেঞ্জার ৮-৩০এ মালভি ছেড়ে ৮-৫৫য় নৌঘাট নাথদ্বারে, আর ৯-২০এ কাঁকরোলি ছেড়ে মাড়োয়ার যাচ্ছে ১৩-৫৫য়। তবুও নাথদ্বার থেকে বাসেই চলুন হলদিঘাটি।

হলদিঘাটি অর্থাৎ পাস

মাটির রঙ থেকে জায়গার নাম হয়েছে হলদিঘাটি। নাথদ্বার থেকে ১৬ আর উদয়পুর থেকে ৫৬ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে আরাবল্লী পর্বতের এই হলদ মাটির দেশে রানা প্রতাপ বীরবিক্রমে বাধা দিয়েছিলেন দিল্লীশ্বর আকবরকে। ১৫৭৬ খ্রিস্টাব্দের ২১শে জুন হলদিঘাটির সে-যুদ্ধ আজ ইতিহাসখ্যাত। তবে, পরাজয় ঘটে রানার। আর যুদ্ধে ক্ষতবিক্ষত প্রভুকে নিয়ে পরিখা পেরুতে গিয়ে মৃত্যু হয় চেতকের। প্রভুভক্ত ঘোড়া চেতকের স্মৃতিতে চেতক স্মারক হয়েছে। আর হয়েছে ক্ষেত্রী গোলাপ বাগ সেদিনের যুদ্ধক্ষেত্রে। থাকার ব্যবস্থা মেলে RTDC-র Chetak RH, Haldighati, ☎ (02953) 30917, D ২৫০ ডর্মি বেড ৫০, আহারও মেলে ক্যান্টিনে। স্মারকরূপে সঙ্গী করুন হলদিঘাটির গোলাপজল। শহর থেকে প্যাকেজ ট্যুরে বা ৯-০০টার স্টেট বাসে বা ১১-৪৫, ১২-৩০এর প্রাইভেট বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

একলিজঙ্গী

উদয়পুর থেকে ২৫ কিমি উত্তরে কনডাকটেড ট্যুরে, ট্যাক্সি বা অনিয়মিত বাসে; আর নাথদ্বার থেকেও ২৫ কিমি অর্থাৎ দিল্লী-উদয়পুর-মুন্ডাই সড়কে দুই-ই থেকে সমদূরত্বে কৈলাশপুরীতে একলিজঙ্গী অর্থাৎ ৮ শতকের ১০৮টি মন্দিরের টেম্পল কমপ্লেক্স। পিরামিডধর্মী ছাদের কারুকার্য-ময় মন্দিরে মেবারের রানাদের গৃহদেবতা কালো পাথরের

চতুমুখী একলিঙ্গজী অর্থাৎ শিব। পশ্চিমের মুখটি ব্রাহ্মার দ্যোতক, উত্তরের মুখটি শ্রীবিষ্ণুর, পূর্বে সূর্য আর দক্ষিণেরটি রুদ্র তথা শিব। মার্বেল পাথরে ৭৩৪ খ্রিস্টাব্দে বাগ্না রাওয়েল-এর তৈরি ৫০ ফুট উঁচু মন্দিরটিও সুন্দর। আর আছেন ১০ মুখী কালী, পার্বতী, গণেশ ছাড়াও হিন্দুর নানান দেবদেবী। আধুনিকতা পায় মহারানা রায়মল (১৪৭৩-১৫০৯)-এর হাতে। ৫-৭-০০, ১০-১৩-০০ ও ১৭-১৯-০০টায় খোলা থাকে মন্দির। হোটেলও আছে বিলাস বহুল *Heritage Resort*, একলিঙ্গজীতে।

একলিঙ্গজী থেকে ২ আর উদয়পুরের ২৪ কিমি দূরে মেবারের অতীত রাজধানী নাগলায় রয়েছে ১১ শতকের শাশ-বর্ষ অর্থাৎ শান্তডী ও বধুরানীর মন্দির। মন্দিরের শিল্প ও ভাস্কর্য মেবারে অদ্বিতীয় করে রেখেছে একে। তবে আজ ধ্বংসের কাল গুনছে। চলার পথে অঙ্কুরজী জৈন মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে উদয়পুর থেকে।

কাঁকরোলি

১৬৬০এ মহারানা রাজসিংহের হাতে বাঁধ পড়ে রাজসম্ম লেকে। বাগিচা, ছত্রিশ মধুময় করে তুলেছে পরিবেশকে। অদূরে নাথদ্বার মন্দিরের অনুকরণে মন্দিরও হয়েছে লেকের পাড়ে। দেবতা শ্রীকৃষ্ণ দ্বারকাধীশ রূপে পূজিত হন মন্দিরে। হলদিঘাটি থেকে বাসে কাঁকরোলি পৌঁছান। বাস আসছে নাথদ্বার থেকেও। ট্রেনও যাচ্ছে ৬-৩০ ও ১৯-০৫এ উদয়পুর ছেড়ে নাথদ্বার হয়ে কাঁকরোলি। নাথদ্বার থেকে ১৬, আর উদয়পুরের দূরত্ব ৬৩ কিমি।

রাজসম্ম লেক

কাঁকরোলির অদূরে উদয়পুর-আজমের সড়কে রাজসম্ম লেক। উদয়পুর থেকে দূরত্ব ৭০ কিমি। দেড় কোটি টাকা ব্যয়ে ১৬৬০এ মহারানা রাজ সিং-এর সৃষ্টি ৭.৭ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত হ্রদের বাঁধে ২৫ খানা পাথরে রণছোড় ভট্টের লেখা সংস্কৃত কাব্যে রাজপ্রশস্তি। এত বড় শিলালিপি আর দ্বিতীয়টি নেই। এর জৈন মন্দিরটিও সুন্দর। আকারে ছোট দুর্গও হয়েছে বাঁধের পাশে। বার বার সংঘাতও ঘটে ওরাজজৈবের সাথে জয় সিংহের। বাসে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

কুন্তলগড়

উদয়পুর থেকে ৮৪ কিমি দূরে আরাবলী পর্বতের বজুর ঢালে ১০৮৭ মি উঁচুতে কুন্তলগড় দুর্গ। ১৪৫৮য় রানা কুন্তর হাতে তৈরি। বয়সে দ্বিতীয় প্রাচীন, চিতোরের পরেই এর স্থান। একবারই আক্রমণ আসে মোগল (আকবর), মেবার ও অন্ধরের বৌদ্ধ হানায়। ইতিহাস-খ্যাত খাত্রী পান্না মহান

করে তুলেছে একে। প্রভুপুত্রের জীবন বাঁচাতে নিজ পুত্রকে সঙ্গে দেন বাতকের হাতে খাত্রী পান্না। দুর্গের বাদলমহলেটি রানা ফতেহ সিংহের হাতে নতুন করে রূপ পেয়েছে। ১২ কিমি ব্যাপ্ত প্রাচীরে ঘেরা বাদলমহলের ৭ দরজা পেরিয়ে মেঘ দরবার। রাম পোলের কাছেই মন্দিরগুলিও দর্শনীয়। আর রয়েছে দুর্গের নিচে ২ শতকের বিধ্বস্ত জৈন মন্দির। অদূরে কালী মন্দির, ছত্রিশ অর্থাৎ রানা কুন্তর সমাধি ও নীলকণ্ঠ মহাদেব মন্দির। কুন্তলগড়ের মৃগয়াভূমিটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাংসাহীরা। মার্চ থেকে জুনে অ্যান্টিলোপ, প্যাছার, ভানুক, নেকড়ে ছাড়াও নানান জন্তু তৃক্ষা মেটাতে আসে লেকের জলে। দর্শনও তাই সহজে মেলে। মৃগয়াভূমি হয়ে বাসও যাচ্ছে রণকপুরে। আবার উদয়পুরের পথে রণকপুর দেখে কুন্তলগড় বেড়িয়েও বাসে চলা যেতে পারে উদয়পুর। ৭-৩০, ১১-০০, ১৫-৩০ ও ১৭-০০টায় স্টেট বাস যাচ্ছে উদয়পুর থেকে কুন্তলগড়ে। প্রাইভেট বাসও চলে এপথে। আর বাস পথ থেকে মৃগয়াভূমি-দর্শকদের পায়ে বা জিপে যেতে হবে। PWD-র R H; H Aodhi, Kumbhalgad, D ২৫০০।

রণকপুর

আজমের-আবু রোড রেল পথের ফালনা থেকে ৩২ কিমি, উদয়পুর থেকে ৮৯, যোধপুরের ১৬০ কিমি দূরে রণকপুর। বাস মেলে ত্রয়ী থেকে।

খাকারও ব্যবহা আছে RTDC-র H Shilpi, Ranakpur-306709, © (02934) 3674, S ২০০ D ২২৫ A-c S ২৭৫ D ৩২৫ ডর্মি কেড ৫০; H Maharuni Bagh Orchard, D ১২৭৫, কলা বুকিং: Span © 2801209 ও মন্দির কমিটির ধরমশালায় রণকপুরে। আহারও মেলে—সবই ডোনেশন নির্ভর।

নিতান্তই সময় স্বল্পতায় একদিনে উদয়পুর দেখে পরদিন সকালে চিতোর চলুন। উদয়পুর থেকে সকাল ৮-৪০র প্যাসেঞ্জার ১২-৪০এ, ১৮-০৫র চেতক এক্স ২১-২৫এ চিতোর যাচ্ছে। আবার দিনে দিনে উদয়পুর থেকে ১৯-০৫র প্যাসেঞ্জারে ২৩-৫৫র চিতোর যাওয়া চলে। তবে, পর্যটকদের উদয়পুরে একটা রাত কাটিয়ে যাওয়া উচিত হবে। উদয়পুর থেকে স্টেট ট্রালপোর্টের এক বাস যাচ্ছে রণকপুরে। রণকপুর থেকে দিনে ফেরাও যেতে পারে উদয়পুরে। তবুও যেন একরাত রণকপুরে অবস্থান করে পরদিন আবু পর্বত বা যোধপুর চলা যেতে পারে বাসে বাসে। বাস আসছে ৬০ কিমি দূরের মাউন্ট আবু থেকেও রণকপুরে।

রাজহানের দক্ষিণ-পশ্চিমে আরাবলী পর্বতের পশ্চিম ঢালে ১২ থেকে ১৫ শতকে গড়ে উঠেছে জৈন মন্দির রণকপুরে। গিলওয়ারারই তুল্য খেত মর্মরের কাব্য রণকপুর। ২০০ ফুট উঁচু প্রাচীরে ঘেরা, ৩৭২০ বর্গ মিটার জুড়ে খেত মর্মরে ২৯টি মন্দিরের কমপ্লেক্স রণকপুর। ১৪৩৮এ ৯৯ লক্ষ টাকা ব্যয়ে শ্রেষ্ঠী ধরন শাহর তৈরি ২৯ নম্বর চৌমুখ অর্থাৎ চৌমুখী ভগবান আদিনাথ মন্দিরটি বিশেষভাবে উল্লেখ্য। বৈচিত্র্যও আছে চৌমুখী আদিনাথে। শিল্প-সুসমায়

উজ্জ্বল ৪ প্রবেশ পথ। কার্যক্রম ১৪৪৪টি স্তম্ভে ভর করে ৬৭টি ভোম, ৮৪টি সেবকুলিকা হয়েছে মন্দিরে। প্রতিটি স্তম্ভ নবনব ভাস্কর্যে উদ্ভাসিত। যষ্টিও মূর্ত হয়েছেন, সেবতা আদিনাথ ভজনারত—দুর্কতেই বায়ের দ্বিতীয় সারির দ্বিতীয় স্তম্ভে। তেমনই হাতুড়ি-হেনি নিয়ে ভাস্কর রয়েছেন ডাইনে তৃতীয় সারির প্রথম স্তম্ভে। এছাড়াও মন্দির রয়েছে—নেমিনাথ ও পার্শ্বনাথের, অদূরেই সূর্যমন্দির। আর আছে ১ কিমি দূরে অম্বামাতার মন্দির। ভারতের ৫ জৈন তীর্থের মধ্যে মাউন্ট মাল্লীর মার্গী উপত্যকা আজকের রণকপুর আয়তনে বৃহত্তম, স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে অন্যতম। অ-জৈনদের কাছে ১২—১৭-০০টার মন্দির খোলা। চর্মজ ব্রব্য গেটে জমা রেখে মন্দিরে ঢোকা বিধি।

চিতোরগড়

গড় তো চিতোরগড় ঠাণ্ডার সব গড়ের।
রানী তো রানী পদ্মিনী ঠাণ্ডার সব গড়ের।।

তর্কে গিয়ে লাভ নেই। চিতোরের বাতাসে এই কথাটি প্রথমেই কানে ভাসে পর্যটকদের। চিতোরগড় হ'ল শিশোদিয়া রাজপুতদের প্রাচীন রাজধানী—তাদেরই শৌর্বে আর বীর্যে গড়া এই গড়। চারদিকের সমতল থেকে গাঙ্গী নদী পেরিয়ে আরাবমী পর্বতের এক অধিতাকায় মজবুত প্রাচীরে ঘেরা চিতোরগড় অর্থাৎ দুর্গ। ৭ শতকে মাওরি রাজপুতদের তৈরি। ১৫৬৮ পর্যন্ত রাজধানীও ছিল শিশোদিয়া রাজপুতদের চিতোর।

জনশ্রুতি, মহাভারতের পাণ্ডব শ্রাতা ভীমের হাতে দুর্গের পতন। তবে ইতিহাসেও মতান্তর ঘটেছে—মৌরী রাজপুত চিত্রাঙ্গদাই নাকি চিতোরগড়ের প্রতিষ্ঠাতা। নামটিও নাকি চিত্রাঙ্গদা থেকে চিত্রকূট—কালে কালে চিতোর। টডের অভিমত ৭২৮এ বাগ্না রাওয়েল মৌরী রাজকুমার থেকে দখল নেন দুর্গের।

বখনই চিতোরের উপর পরাজয় এসেছে, প্রয়োজন হয়েছে আক্রমণ বাঁচাবার, তখনই জহুর অর্থাৎ জুলন্ত অগ্নিতে আত্ম-বলিদানের যজ্ঞ (৩ বার) অনুষ্ঠিত হয়েছে দুর্গে। প্রাসাদ থেকে সুড়ঙ্গপথ এসেছে গোন্ধর মুখের মতো দেখতে গোমুখে। জলও এসেছে প্রবাহ থেকে। সুড়ঙ্গপথে গোমুখে এসে পবিত্র জলে স্নান করে আত্মাশুধি দিয়েছেন রাজ-মহিষীরা, রাজপুত রমণীরা, জয়জয়ন্তের সামনে বাঁধানো চাতালের জলস্ত অগ্নিতে।

বার বার তিনবার আক্রান্ত হয়েছে চিতোর। প্রথম আক্রমণ ১৩০৩এ পাঠান নায়ক দিল্লীর আলাউদ্দিন খিলজীর। আলাউদ্দিন খিলজীর প্রতিহিংসার ধ্বংসও পায় চিতোর, ক্ষমতাও যায় মুসলিম শাসকদের হাতে। বশ্যতা বা পরাধীনতা রাজপুতদের রক্তে নেই—নতুন করে ঝাপিয়ে পড়েন রানা। কুন্ত। দখল করেন চিতোর। গড়ে তুললেন জয়জয়ন্ত। আজও এই জয়ন্ত অতীত বিনের রাজপুত বিরাম

রোমহন করায়। দ্বিতীয় আক্রমণ আসে মহারানা উদয় সিংহের কালে ১৫৩৪এ গুজরাটের সুলতান বাহাদুর শাহর। ৩২০০০ রাজপুতের মৃত্যু ঘটে যুদ্ধে আর ১৩০০০ রাজপুত রমণী জহুর করে আত্মাহুতি দেয়। তৃতীয় আক্রমণ মোগল বাদশাহ আকবরের ১৫৬৮তে। দখলও করেন চিতোর আকবর, আর রানা উদয় সিংহ পালিয়ে গিয়ে রাজ্যপাট গড়েন উদয়পুরে। ৮০০০ রাজপুত পতঙ্গের মতো উড়ে গিয়ে বরণ করে মৃত্যুকে। আকবর রাজপুতদের বীরত্বে মুগ্ধ হয়ে হাতির পিঠে মূর্তি গড়েন জয়মল ও পাট্টার আগ্রা দুর্গের প্রবেশদ্বারে। রানা প্রতাপের কাহিনীও আজ ইতিহাসখ্যাত। ১৫৯৭এ মৃত্যুর কাছে বশ্যতা স্বীকারের আগে পর্যন্ত জীবনে কখনও বশ মানেননি প্রতাপ। পরাধীনতা বা বশ্যতা দুই-ই তাঁর কাছে ছিল অকল্পনীয়। আর ১৬১৬য় জাহাঙ্গীর রানাদের হাতে চিতোর প্রত্যাগণ করলেও রাজ্যপাট থেকে যায় উদয়পুরেই।



উদয়পুর থেকে বাসে চলুন চিতোরগড়। প্রতি আশ ঘণ্টা অন্তর বাস। এক্সপ্রেস বাসে ৩১ ঘণ্টার পথ, দূরত্ব ১১৫ কিমি। তাই উদয়পুর থেকে এসে চিতোর বেড়িয়ে ফেরাও যেতে পারে উদয়পুরে। ট্রেন আসছে ১৪-১০এ দিল্লী সরাই রোহিলা ছেড়ে জয়পুর/আজমের হয়ে ৬-১৫য় চতক এক চিতোরে। কলকাতা তথা উত্তর-পূর্ব ভারতের যাত্রীদের সরাসরি চিতোর যাত্রায় দিল্লী/জয়পুর/আজমের হয়ে যাওয়াই সুবিধার। চতক যাত্রীদের দিনে দিনে চিতোর বেড়িয়ে প্যাসেঞ্জার ট্রেন বা বাসে উদয়পুর যাওয়া উচিত হবে। এছাড়াও ট্রেন আসছে রাজ্যের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে চিতোরগড়ে। আজমের-খাণোয়া এক্স, জয়পুর-পূর্ণা এক্স, চিতোর-রাটলাম-ইন্দোর-মউ হয়ে যাচ্ছে। চিতোর-আজমের প্যা, খাণোয়া-রাটলাম প্যা, চিতোর-আমেদাবাদ প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে চিতোর হয়ে। Kota-Nimach ব্রডগেজ রেলও যাচ্ছে চিতোর হয়ে। বাসও যাচ্ছে রাজস্থান ও মধ্য প্রদেশের দিঘিদিকে চিতোর থেকে।



রেল স্টেশনের বিপরীতে Station Rd, Chittorgarh-312001, STD 01472-এ—
Shalimar H, ৩ ৪০৪২, SCB ৬৫ SAB ১০০
DCB ১২৫ DAB ১৭৫ চার বেডের ঘর ৩০০ ডর্রি ৫৫; H Sanvaria, SCB ৫০ SAB ৭৫ DCB ১০০ DAB ১২৫-১৭৫ A-c S ২০০ D ৩০০; H Meenukshi, ৩ ৪১৯৮৩, D ১৫০-২২৫; Keshab H, ৩ ৪০৪১২, S ৬৫ D ১২৫-১৭৫; H Chetuk, ৩ ৪১৫৮৮, D ২৫০-৪৫০, কল বুকিং: Linkage ৩ ২৪৬১১৭১। H Meera, ৩ ৪০২৬৬, D ৩৫০-৭০০; H Swaga, opp Aparna Cinema, S ৬০, D ১০০; Luxmi H, S ৬০, D ১০০; Aloke H, SCB ৪৫ SAB ৬৫-১০০ DCB ১০০ DAB ১২৫-১৭৫ ডর্রি ৪০; H Satkar, B1, S ৬০, D ১০০; Nataraj H, Bus Stand, S ৬৫ D ১০০-১৫০; H Ruchika, ৩ ৪০৪১৯, S ৭০-১৫০ D ৬৫-১৭৫; H Anand, S ৭০-১২৫ D ১০০-১৭৫; H Jag, S ৬০, D ১০০। শহরের কেন্দ্রে RTDC-র H Panna Chittor, R, ৩ ৪১২৩৮, S ১৫০ ২৫০ D ২০০ ৩৫৫ A/c S ৪৭৫ D ৫৭৫ ডর্রি বেড ৫০; এফএল ইন্টারন্যাশনাল গজ Motel Menal, opp Rail Station, S ১৭৫ D ২৫০; অ্যান্ড ট্যুরিস্ট ব্যুরো

চিতোরগড় বা কলকাতায়: Linkage @ 2465171. বাস ও পল্লার মাঝে H Prutap Palace, @ 40099, S ২৭৫ D ৪০০ A-c S ৪৫০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০; PWDD B, R1B1; অব: PWD-Roads, Chittorgarh; Irrigation I B, অব: Assistant Engineer; C H, R1B1; হাড়াও আছে রেলের রিটার্নিং রুম চিতোরগড়। ধরমশালাও আছে চিতোরে—Birla Surai, Jain, Bhunamal, Tulsi, Maheswari. আর আছে কেবল খাবারের ব্যবস্থা নিয়ে রেল স্টেশনের বিপরীতে পাঞ্জাবী হোটেল। পান্না টারিস্ট বাংলোর ক্যান্টিনটিও আহার্যে আদরণীয় হবে।

আর আছে রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে H Padmini, Chanderiya Rd, near Sainik School, Chittorgarh-312001, @ 41718, S ৬০০ D ৮০০ A-c S ৭৫০ D ১০০০ সুইট ১২৫০। কনভার্টেড ট্রাক: কম করে ৫ যাত্রী হলে রেল স্টেশনের বিপরীতে Janata Avas Grah-এ রাজ্য সরকারের Tourist Office, @ 41238 থেকে ৮—১১-০০ ও ১৫—১৮-০০ টায় কনভার্টেড ট্রাকের গাড়ি দেখাবার ব্যবস্থা করে। চিতোরগড় দেখার জন্য ভ্রমণার্থীদের এই প্রোগ্রামে অংশ নেওয়া সুবিধার। তবে, গত কিছুকাল টারিটি বন্ধ। তাই উচিত হবে চুক্তিতে অটো/টাক্স নিয়ে ১২৫/১০০ টাকায় গাড়ি দেখে ফেরা। ঘণ্টা চারেক সময় গাড়ি দেখার পক্ষে যথেষ্ট।

রেল স্টেশন থেকে ৩ কিমি দূরে চারপাশ সমতলে ঘেরা ১৫০ মি উঁচু এক পাহাড়চূড়ায় ৭০০ একর জুড়ে চিতোরগড় অর্থাৎ দুর্গ। পাহাড়টি উত্তর থেকে দক্ষিণে ক্রমশ সরু। মোট ৭টি পোল বা ফটক পরিয়ে দুর্গ। খুবই সুরক্ষিত ছিল সেকালে। পশ্চিমের প্রবেশ পথে পাথরের পাদল পোল; সুস্পন্দ ভাস্কর্য ও কারুকার্যমণ্ডিত। অদূরে ফলক—রাজকুমার বাঘ সিংহর মৃত্যুর স্মারক। শেষ ১ কিমির চড়াই পথে দ্বিতীয় ফটক ভৈরো পোলে জয়মল, আরও যেতে তৃতীয় ফটক হনুমান পোলে কান্না; চতুর্থ ফটক রামপোলে পট্টার পতন ঘটে। ১৫৬৮তে আকবরের সাথে যুদ্ধে এদের বীরত্বগাথার স্মারকরূপী গড়া ছত্রিশ পতনস্থলকে স্মরণ করায়। তবে; বিধবস্ত ভূতুড়ে এই দুর্গ আজকের পর্যটকদের অতীতদিনের রাজপুতদের শৌর্য আর বীর্যের স্মারক হয়ে অতীত রোমন্থন করায়। আর আজ নতুন করে শহর অর্থাৎ লোয়ার টাউন প্রসার পাচ্ছে পাহাড়ের পশ্চিমে।

১১ শতকের জৈন মন্দির সাত বিশ দেউড়ি। মন্দিরটি কারুকার্যময়। ওড়িশা ও বেলুড়ের মন্দিরের মতো এই মন্দিরেও বিভিন্ন ভঙ্গিমায়া হিন্দুর দেবদেবী ও নারীমূর্তি শোভিত। ৭২০ অর্থাৎ সাতাশটি মন্দিরও ছিল সেকালে। রানী পদ্মিনীর স্নানের কথা আজ বিশ্ববিস্তার। রানা ভীম সিংহের (বিমতে রতন সিংহের) মহিষী ছিলেন কবি স্নানবতী পদ্মিনী। আলাউদ্দিন খিলজীর লোলুপ দৃষ্টিতে পড়েন পদ্মিনী। তাঁকে পাবার লিলায় ছুটে আসেন আলাউদ্দিন। অবরোধ গড়েন চিতোরে। শতধিনে আয়নার প্রতিবিম্ব দেখেন পদ্মিনীর—গড়ের সর্ব দক্ষিণে মূল প্রাসাদের পাশে জলে ঘেরা রানী পদ্মিনীর মহল বা দীপ নিম্নলিখিত। অবরোধ ওঠে, শঠতার আশ্রয় নেন আলাউদ্দিন। তারই পরিণতি

চিতোরের ধ্বংস। চিতোর দখল হলেও জহর অর্থাৎ জুলন্ত অগ্নিতে আত্মহত্যা সেন পদ্মিনী। তবে, অবিখ্যাস্যভাবে আয়নাটি আজও অক্ষত। আর প্রাসাদের ব্রোঞ্জ গেটটি আকবর নিয়ে গিয়ে বসান আগ্রা দুর্গে। ৯—১৭-০০ টায় খোলা থাকে মহল।

আরও দক্ষিণে ডিয়ার পার্ক। দক্ষিণ যেখানে শেষ হয়েছে সেই প্রান্তরেখায় সর্কীয় খোলা জায়গা থেকে অপরাধীদের হুঁড়ে ফেলা হত মৃত্যুপুরীর অতল-গহ্বরে। পূর্বে সুরম্য পোল রেখে ১৫ শতকের নীলকান্ত মহাদেব অর্থাৎ শিবমন্দির।

জিজ্ঞা নামে এক জৈন ব্যবসায়ী ১২ শতকে কীর্তিস্তম্ভ (টাওয়ার অব ফেম) তৈরি করান। ২৪ জন জৈন তীর্থঙ্করের প্রথম হলেন আদিনাথ। তারই নামে উৎসর্গিত। সাত তলা এই স্তম্ভ নানান ভাস্কর্যে অলঙ্কৃত। তীর্থঙ্করদের দিগম্বর মূর্তিও স্থান পেয়েছে। জয়স্তম্ভের মতো এরও বেড় ৯ মি, তবে উচ্চতা ২২ মি। সিঁড়িও হয়েছে উপরে উঠবার।

ষ-মহিমায়া আজও মাথা উঁচু করে দাঁড়িয়ে আছে জয়স্তম্ভ। রানা কুস্ত মালোয়ার সুলতান মামুদ খিলজীকে হারিয়ে চিতোর পুনরুদ্ধার করেন ১৪৪০এ। আর জয়ের স্মারকরূপে জয়স্তম্ভ অর্থাৎ টাওয়ার অব ভিক্টরি গড়েন ১৪৫৮তে শুরু করে ১৪৬৮তে। তবে, গত কিছুকাল দ্বার বন্ধ। ৯০ লক্ষ টাকা ব্যয়ে তৈরি। ৯ তলা স্তম্ভটির উচ্চতা ৩৭মি। দেবেড় ৯ মি, গঠনশৈলী ও কারুকার্য খুবই সুন্দর। হিন্দুর দেব-দেবী, হাতি, সিংহ মূর্তি হয়েছে। তবে, এর গুহাজুতি বস্ত্রপাতে ক্ষতিগ্রস্ত হতে সংস্কার হয় গত শতকে। ১৫৭ সিঁড়ি উঠে উপর থেকে দেখে নেওয়া যায় চিতোরগড়। অদূরে ঝরনা। লাগোয়া মহাসতী অর্থাৎ রানাদের সমাধিভূমি। আর আছে নানান সতী স্টোন এলাকা জুড়ে।

বত্রিশ ধাপ সিঁড়ি বেয়ে ৮ শতকের চিতোরেশ্বরী কালীকামাতা মন্দির। দেবী এখানে কালী। কষ্টি পাথরের মূর্তি হয়েছে। খুবই জাগ্রতা এই দেবী। তবে, ৮ শতকের মন্দিরে অতীতে পূজা হতো সূর্যদেবের। আকবরের চিতোর আক্রমণের পর দেবতার এই পরিবর্তন।

ফতেহ প্রকাশ মিউজিয়াম লাগোয়া রানা কুস্তর হাতে ১৪৪৮এ তৈরি কুস্তশ্যামজী মন্দির। দেবতা এখানে বরাহ অবতাররূপী বিষ্ণু। মন্দিরটি কারুকার্যময়, ইন্দো-আর্য শৈলীতে রূপ পেয়েছে। এর পেছনে মীরাবাদিয়ের কুস্তমন্দির। অতি সাধাসিধে, ছোট্ট মন্দির। এর বেচিহ্ন—মন্দিরে কোনো কারুকার্য নেই। মূর্তিও নেই দেবতার। শিরামিডখমী ইন্দো-আর্য স্থাপত্যের নিদর্শন ওড়িশা শৈলীতে তৈরি নাটমন্দির, জগমোহন আর মূল মন্দির। মন্দিরটি কুস্ত সাধিকা কবি মীরাবাদিয়ের সরল জীবন-ইতিহাসের প্রতিচ্ছবি। মীরাবাদি ছিলেন রানা শম্ভের জ্যেষ্ঠ পুত্র ভোজরাজের মহিষী। মতান্তরে, কুস্তশ্যামজীই নাকি মীরাবাদিয়ের মন্দির। অদূরেই ১২ শতকে তৈরি জৈন মন্দির শৃঙ্গার টৌরি। আকাশে ছোট হলেও কারুকার্য সুন্দর।

তৈরি বদিও ৮ শতকে বাগাদিত্যর, তবে ব্যাপক সংস্কার হয় রানা কুন্তর হাতে ১৪৩০এ—নামটিও তাই রানা কুন্তর প্রাসাদ। প্রাসাদটি আজ ধ্বংসের মুখে। দুর্গে দুর্কেই ডাইনে রাজপুত স্থাপত্যের অনন্য নিদর্শন এই প্রাসাদ। হাতি ও ঘোড়ার আস্তাবল, একটি শিব মন্দিরও আছে। সুভঙ্গ পথ দিয়ে গোমুখের জলে স্নান সেরে এই প্রাসাদেরই নিচের এক ঘরে রানী পদ্মিনী প্রথম জহর পালন করেন। বিপরীতে প্রত্যন্ত দপ্তর ও মিউজিয়ম বসেছে ফতেহ প্রকাশ প্যালেসে। ১০—১৬-৩০টায় খোলা।

এছাড়া, গুজরাটের চালুক্য রাজ্যের চিতোর শ্রমণের স্মারক-শিলালিপি, গোমুখের দক্ষিণে পাট্টা প্রাসাদ, ১৩২৭-এর যুদ্ধে দখল করা বাবরের কামান, এগুলিও দ্রষ্টব্য। টিকিট লাগে ১৫ টাকার চিতোর দর্শনে।

চিতোরগড়ে থাকার দরকার হয় না পর্যটকদের। রেলের ক্রোকক্রমে সসের জিনিস রেখে গড় দেখে নেওয়া যায়। গড় দেখে এবার চলুন ১৮২ কিমি দূরের আজমের। ২১-৪০এর চেতক এবং আজমের শোঁছায় ২-১৫য়। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ২-১৫, ৫-১৫, ১৪-০৫, ১৫-০০টায়। আর বাস যাচ্ছে ৫-১৫, ৮-১৫, ১১-১৫, ১৩-৩০, ১৪-৩০, ১৬-১৫, ২১-০০, ২৩-১৫, ২৩-৪৫, ০-৩০এ চিতোর ছেড়ে ৫ ঘট্টায় আজমের পৌঁছে ৮ ঘট্টায় ৩২০ কিমি দূরের জয়পুরে। বাস আসছে উদয়পুর থেকে ৬-৪৫ থেকে ১৭-১৫য় ঘট্টায় ঘট্টায়, চিতোর হয়ে আজমের যাচ্ছে বাস। তবুও যেন উচিত হবে ১০-৩০, ১১-৪৫, ১২-০০, ১৬-১৫, ১৭-১৫য় বাসে ৩ ঘট্টায় আজমের চলা। তবে, বুতী/কোটা দর্শনাধীদের উচিত হবে ৬-০০, ৮-০০, ১০-৩০, ১৫-০০, ০-১৫য় বাসে ৬ ঘট্টায় ১৫৬ ঘট্টায় ঘট্টায়, চিতোর হয়ে আজমের যাচ্ছে বাস। ১৪-৫০এ চিতোর ছেড়ে Nimach-Kota Passenger ৬ ঘট্টায় কোটা। কোটা থেকে বুতী বেড়িয়ে বাসে ফিরন আজমের। বাসই সুবিধার এপথ পরিক্রমায়। হোটেলও হয়েছে চিতোর থেকে ৪০ কিমি দূরে চিতোর-কোটা সড়কে বাস-র আগে অতীতের বিজয়পুর প্রাসাদে হোটেল ক্যাসেল বিজয়পুর, S ৬০০ D ৮৫০। আবার চিতোর থেকে ট্রেন বা বাসে আজমের/ জয়পুর/ সওয়াই মাধোপুর/ ভরতপুর বেড়িয়ে দিল্লী গিয়ে ঘরপানোও চলা যায়। অল্প ও মধ্য প্রদেশেও চলা যেতে পারে ট্রেন বা বাসে চিতোর থেকে।

কেটা



চিতোর বেড়িয়ে ট্রেন বা বাসে রাজস্থানের শিখনগরী কোটা চলুন। ঘট্টা ছয়কের পথ। বাস আসছে উদয়পুর, চিতোর, আজমের, যোধপুর, বিকানীর, নাথদ্বার, জয়পুর, সওয়াই মাধোপুর ছাড়াও রাজ্যের নানান প্রান্ত থেকে কোটা। রাজ্য সীমান্ত পেরিয়ে মধ্য প্রদেশেও বাস যাচ্ছে কোটা থেকে। বাস যাচ্ছে কুপাল, গোরালিমর, ইন্দোর, উজ্জয়িন, শিবপুরী—কোটা থেকেই।



রেলও যাচ্ছে দিনের একমাত্র প্যাসেঞ্জার ১৪-৫০এ চিতোর ছেড়ে ২১-০৫এ ১৭০ কিমি দূরের কোটা। ট্রেন আসছে দিল্লী, জয়পুর থেকেও সওয়াই মাধোপুর হয়ে দিল্লী-মুঝাই ব্রডগেজ রেলের কোটা। রেল যাচ্ছে মুঝাই-

দিল্লী রাজধানী এবং অগাস্ট-ক্রান্তি রাজধানী এবং, মুঝাই-অমৃতসর গোভেন্দ চম্পল এবং, পশ্চিম এবং, হুশিয়ার মেল, মুঝাই-সেরানুন, মুঝাই-কিরোজপুর জনতা এবং, ইন্দোর-নিজামুদ্দিন এবং, বৃথবার রাজকোট-জম্মু, মল্লবার জামনগর-জম্মু, রবিবার আনন্দাবাদ-জম্মু এবং, ১৪৫৭ দিন মুঝাই-জম্মু বরাজ এবং ছাড়াও নানান কোটা হয়ে। জয়পুর-মুঝাই এবং, ২৫৭ দিন জয়পুর-চোমাই এবং, বৃথবার জয়পুর-ইন্দোর এবং যাচ্ছে কোটা হয়ে। আর কোটা থেকে চিতোর যাচ্ছে ৬-২০এ কোটা-নিমাক প্যা; ৭-০৫, ১২-১৫, ১৯-৩০এ কোটা-আগ্রা কোর্ট প্যা; সওয়াই মাধোপুর যাচ্ছে ৫-২৫, ২৩-২৫ ছাড়াও আগ্রা প্যাসেঞ্জার। কোটা থেকে সওয়াই মাধোপুর ১০৮, ইন্দোর ৩৬০, আগ্রা ৩৪৩, জয়পুর ২৪২, উদয়পুর ২৮০ কিমি। ১৫-০৫এ কোটা ছেড়ে ১৬-৪০এ সওয়াই মাধোপুর পৌঁছে ভরতপুর/মুঝাই হয়ে ২১-৪০এ আগ্রা কোর্ট গিয়ে পরদিন সকাল ৬-০০টায় লক্কৌ পৌঁছে গোরাকপুর যাচ্ছে ৫০৬৪ Bandra (Mumbai)-Gorakhpur Avadh Exp. তাই পূর্বভারতের যাত্রীরা কানপুর/লক্কৌ পৌঁছেও ট্রেন চাপতে পারেন ঘরে ফেরার। আর লক্কৌ ছেড়ে কোটা আসছে ২০-৫৫য় আয়ুধ। তেমনই সওয়াই মাধোপুর থেকে ২৩-২০এ ২৩০৪ যোধপুর-হাওড়া এক্সপেও চলা যেতে পারে ঘরপানো। শহরে চলছে রিকশা, অটো, টেম্পো ও বাস। বছছে ৭০-৭৫ টাকায় অটো চেপে সাঙ্গ করা যায় কোটা দর্শন। শীত ও গ্রীষ্ম দুইয়েরই আধিক্য আছে কোটা।

১৩৪২এ টোহান রাজপুত বংশীয় হারা সর্দার রাওদেও দখল করেন সেদিনের কোটা অর্থাৎ বন্ধুকানল বা হরবতীকে। তবে শহরের গোড়াপত্তন তারও আগে ১২৬৪তে। আর নামকরণ কিংবদন্তীর নায়ক ভীল সর্দার কোটিয়া থেকে। রাজধানী তার বুতী। আর ১৬২৪এ জাহাঙ্গীরের ফরমান বলে বুতীর শাসক-পুত্র রাও মাধো সিং পৃথক রাজ্য গড়ে শাসক হলেন কোটার। রাজস্থানের প্রতিটি শহরের মতো কোটাও প্রাচীর অর্থাৎ Kot-এ সুরক্ষিত। অতীতের চর্মবতী তথা আজকের চম্বল নদীর পূর্ব তীরে গড়ে উঠেছে কোটা শহর। শহরের মাঝে বাসস্ট্যান্ড, টুরিস্ট অফিস তথা বাংলা ছাড়াও সাধারণ হোটেলের অবস্থান; উত্তরে রেল স্টেশন আর দক্ষিণে চম্বল গার্ডেন, কোটা ব্যারোজ, পুরাতন সিটি প্যালেস তথা দুর্গ। আগ্রা ও দিল্লীর মোগলী দুর্গের আদলে ১৬২৫ থেকে ১৬৪৯এ রাও মাধো সিংজির তৈরি সিটি প্যালেস তথা দুর্গে সংযোজন ঘটেছে পরবর্তী রাজা-মহারাজাদের কালেও নানান। বারবার রক্তও ঝরেছে মোগলী মিত্র রাজ্য কোটা। আর ১৮০৪এ ব্রিটিশের হাতে দখল গেলোও দখল ফেরে কোটার আবার রাজপুতে। বাদল মহল, হাওয়া মহল, অর্জুন মহল, রাজমহল—মহলের পর মহল। দুর্গের ডাইনে রাও মাধো সিং মিউজিয়ম, শুক্রবার ছাড়া ১১—১৭-০০টায় খোলা; টিকিট ৫ ছাত্র ২। কোটা মিনিয়েচার, ফ্রেকো চিত্র, আবরণ ও আয়নার সংগ্রহ উদ্বেখ্য। দরবার হল-এর হস্তীদণ্ড-খচিত আবলুস কাঠের দরজা ও আয়নার কারুকার্য অনবদ্য। সরস্বতী ভাণ্ডারের কয়েক হাজার পাণ্ডুলিপি ও পুথির অমূল্য সংগ্রহও উদ্বেখ্য। দুর্গের প্রবেশ দ্বারে (নয়া দরওয়াজা) গভর্নমেন্ট মিউজিয়মে

দূর্বল সংগ্রহের কিছু প্রত্নতত্ত্ব স্থান পেয়েছে। শুক্র ছাড়া ১০—১৬-৩০টায় খোলা।

দুর্গের পেছনেই চম্বল নদীর ওপর ৩ কোটি ৮০ লক্ষ টাকা ব্যয়ে তৈরি কোটা বাঁধটির জন্যও কোটা শহরের প্রশস্তি আছে। সন্ধ্যায় চম্বল উদ্যানটি দেখে নেওয়া একান্তই উচিত হবে কোটা ভ্রমণে। উদ্যানের কুমির পুকুর, কলসি কাকে মর্মরের নারী, গাছ ছোট্ট জীবজন্তু, তোরণ ও আলোকসজ্জা নয়নাভিরাম। স্বর্ণ-সুখ উপভোগ করা যায় নিচু দিয়ে বয়ে চলা খরস্রোতা চম্বল নদীতে বোটিং করে। সামনেই থার-মাল পাওয়ার প্রোজেক্ট। আর আছে পৌর উদ্যান, গান্ধী উদ্যান, অথর শিলা অর্থাৎ ফকিরের সমাধি-গুহা। তবুও যেন শিল্পকেন্দ্রিক শহর কোটা অধিকতর খ্যাত—হাইড্রো-ইলেকট্রিক প্লান্ট, থারমাল পাওয়ার প্রোজেক্ট, এশিয়ার বৃহত্তম সার কারখানা ছাড়াও নানান শিল্প-কারখানার জন্য। তেমনই ক্যান্টনমেন্ট নগরীর আর এক প্রশস্তি তার কোটা শাড়ি। কোটার আর এক আকর্ষণ তার দশেরা উৎসব। জাঁকালো মেলা বসে, উৎসব চলে ৭ দিন ধরে দশেরার।

আর রয়েছে ট্যুরিস্ট বাংলোর কাছে বোটিং-এর ব্যবস্থা-সহ ১৩৪৬এ কোটা কিশোর সাগর। সাগরের মাঝে ছোট্ট দ্বীপে ১৭৪০এ রানীর তৈরি দ্বীপমহল মিনি প্রাসাদ—জগমন্দিরের দ্বার সাধারণের কাছে রুদ্ধ হলেও বোটে দেখে নেওয়া যায় চারপাশ। পরিবেশ সুন্দর—তবে, অয়েলো পরিবেশকে দূষিত করে তুলেছে। অদূরে বিজরাজ ভবন প্রাসাদ। আর আছে হুম্মান মন্দির ও চম্বল বাংলোর পথে জওহর বিলাস গার্ডেনে রাজাদের সমাধি অর্থাৎ ছত্রিশ।



Kota-324001, STD 0744-এ বাস স্ট্যান্ড তথা চারপাশ জোড়া অতীতের নয়াপুরা নতুন করে আজ হয়েছে স্বামী বিবেকানন্দ সার্কেল। মূর্তিও হয়েছে স্বামী বিবেকানন্দ। হোটেলও হয়েছে বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে সাধারণ মানের নানান। RTDC-র H Chambal Kota, Nayapura, Kota-I, ৩ 326527, A4R5B1, SAB ১৭৫ DAB ২২৫ A-C S ২৭৫ D ৩২৫ A/C S ৪৭৫ D ৫২৫ ডর্মি বেড ৫০; রাজস্থান গভর্নমেন্ট ট্যুরিস্ট অফিসটিও বাংলোয়। H Anand, Gumanpura, S ৮০-১০০ D ১৫০-২০০; চম্বলের পাড়ে বাগিচায় ফেরা সুন্দর পরিবেশে অতীতের প্রাসাদ তথা ব্রিটিশ রেসিডেন্সিও Brijraj Bhawan Palace H, Civil Lines, R6B5, ৩ 25203, A/C S ৮০০ D ১২০০ সুইট ১৫০০; H Plaza, Civil Lines, ৩ 22614, S ৩২৫-১০৫০ D ৪৫০-১২৫০; H Supreme Palace, Stn Rd, ৩ 324710, D ৮০০-৯৫০; *H Navarang, Stn Rd, near GPO, CL-1, A3R3B1, ৩ 323244, S ৩০০ D ৪৫০ A/C S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ১২৫০। রেল থেকে ৫ আর বাসের সন্নিহিত Nayapura-Iএর বিবেকানন্দ সার্কেলে H Maheswari, ৩ 324803; Punkaj H, ৩ 320577; H Shishmahal, ৩ 326253; Joy Hind H, H Prayag, H Payal, —এসের রুট S ৮৫-১৭৫ D ১২৫-২৭৫। H Marudar, 20 Jhalawar Rd, ৩ 326186, SAB ১২৫ DAB ৩০০ A-C S ৩৫০ D ৪৫০ A/C S ৪৫০ D ৬৫০; Bharat H,

Gumanpura-7, S ৬৫-৮৫ D ১০০-১৫০ A-C S ২০০ D ৩০০; Circuit House, Raj Bhawan Rd, R3B1; H Vandana, Gumanpura, S ১২৫-২৭৫ D ২২৫-৪৫০; Jagadish H, Laddpura-6, A5R8B2, SCB ৫৫ SAB ৮০, DCB ১০৫ DAB ১২৫-১৭৫; Chaman H, near Bus Std, Stn Rd, Nayapura-I, D ১০০-১৫০; Punjab H, R5B1, S ৮০ D ১৫০ A-C ২৫০; Gayatri H, Shopping Centre, S ৮০ D ১৫০; H Mayur, D ১০০-১৭৫। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Samrat, SAB ১২৫ DAB ২০০ A-C S ২২৫ D ৩০০; বাসে সাধারণ সঙ্গে H Parag, Chandan, S ৬০ D ১০০; Mayur, H Madras, H Meghraj, SAB ১২৫ DAB ২২৫ A-C D ৩০০; H Kanak, ৩ 27747, D ২২৫-৬০০; H Priya, ৩ 27367, D ২০০-৪৫০; ছাড়াও রয়েছে রেলের রিটার্নিং রুম; R V Road-এ ডাকবাংলো ও আর্থ সমাজ রোডে মিউনিসিপাল ধর্মশালা কোটার। তবুও থাকা ও আহার্যে চম্বল ট্যুরিস্ট বাংলো, হোটেল নভরঙ্গ, বিজরাজ ভবন আজও অনবদ্য। আর ইকোনমিক হোটেল—চমন, গায়ত্রী থাকার পক্ষে মানানসই।

বৃত্তী

জলস্পর্শ করব না আর চিত্তের-রানার পণ,
বুঁদির কেন্দ্র মাটির 'পরে থাকবে যতক্ষণ।

কোটা বেড়িয়ে বাসেই চলুন ৩৮.৫ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ছবির মতো সুন্দর এক গিরিবর্ষ—বৃত্তী। আধাবৃত্তী অন্তর বাস যাচ্ছে ৬-৩০—২২-৩০এ। এক ঘণ্টার পথ। বৃত্তীও গড়ে তোলেন চৌহান সর্দার রাওদেও ১৩৪২ খ্রিস্টাব্দে। নামটি এসেছে মীনা সর্দার বুণ্ডা থেকে। বৃত্তী শহরটিও প্রাচীরে ঘেরা। ১৫৭২ পর্যন্ত কোটাও ছিল বৃত্তী রাজ্যের অংশ। ১৯৪৭এ রাজস্থানের সাথে মিলে ভারতভূক্তির আগে পর্যন্ত স্বাধীনও ছিল বৃত্তী। মায়াপুরী গড়েছে ১৭ শতকের রাজপ্রাসাদ অর্থাৎ দুর্গ বা বৃত্তীর কেন্দ্র। কেন্দ্র থেকে দৃশ্যমান পাহাড় ঢালে নওল সাগর অর্থাৎ কৃত্রিম লেকের জলে জলাধিপতি বরুণ দেবতার আধা ডুবন্ত মন্দির। লোকের পাড়ে হস্তীদন্ত ও চন্দন কাঠে শোভিত রাজপ্রাসাদটি অভিনবভে ভরা। টড সাহেবও রাজস্থানের সুন্দরতম প্রাসাদ বলেছেন একে। বিভিন্ন রাজার হাতে ভবনের পর ভবন রূপ পেয়েছে। তবে, আজ মহারাজা ও বোনের শরিকি বিবাদের তালা বন্ধ প্রাসাদের মহলের পর মহলে। চিত্র মহল ও উমেদ মহল দু'টি সাধারণের কাছে খোলা। আর প্রচারের অভাব হেতু পর্যটন মানচিত্রে কোটা/বৃত্তী অবহেলিত যেন।

বাসস্ট্যান্ড থেকে টাঙ্কা বা পায়ে পায়েই পৌঁছে যান ১৩৫৪য় তৈরি তারা (স্টার) গড় দুর্গ ঘারে। সন্নিহিত পাথুরে পথ, দু'পাশের লোকানপাট ২ থেকে ২২ ফুট উঁচুতে বা দ্বিতীয় কোনো শহরে দেখা যাবে না। বাজারের উত্তর-পশ্চিমে সামান্য চড়াই বাইতেই দুর্গের প্রবেশদ্বার—হাতি পোল। অন্যদিকে পাথর কূঁদে বিশাল জলাধার, ভীম বর্জ অর্থাৎ তীর ও গোলাগুলি ছোঁড়ার ছিন্নবৃক্ষ ব্যালিমাট। উপরে কামান

আলাদা। তবে, বূর্জ থেকে বৃত্তী শহর সুন্দর দৃশ্যমান। প্রাসাদের ভিতলে উঠতেই অলিন্দে গড়া সেকালের সুশোভিত উদ্যান রক্তবিলাস। পেরুতেই দেওয়ান-ই-আম, চিত্রমহলের নিচে রতন দৌলত অর্থাৎ ঘোড়ার আস্তাবল। সারা প্রাসাদটাই বৃত্তীর নিজস্ব শৈলীর চিত্রে শিকার ও পৌরাণিক গাথা শোভিত। শ্রীকৃষ্ণের রাসলীলা ছবিটি অনবদ্য। চিত্র মহল ও ছত্র মহলে দৃষ্টিনন্দন ম্যুরাল ও মহারাজা ছত্রশাল নির্মিত সোনা এবং রূপার সিংহাসন, আধবশ্য অন্তর বেজে চলা জল ঘড়িটিও আকর্ষণে অনবদ্য। ওবেরয় গ্রুপ হোটেলও গেড়েছে ছত্রমহলে। অনিরুদ্ধ মহল, উমেদ মহল, বাদল মহলও আকর্ষণীয়।

| Ajmer-Chitor-Indore | | | |
|---------------------|----|---------------------|--------|
| 0 | Km | Ajmer | |
| 23 | " | Nasirabad | |
| | | To Kotah | 178 km |
| 134 | " | Bhilwara | |
| | | To Chitor | 56 km |
| | | " Kankroli | 87 km |
| 187 | " | Chitorgarh | |
| | | To Udaipur | 113 km |
| | | " Bundi | 136 km |
| 225 | " | Rajasthan/MP Border | |
| 245 | " | Neemuch | |
| | | To Gandhi Sagar Dam | 91 km |
| | | " Jhalawar | 164 km |
| 294 | " | Mandasor | |
| | | To Pratapggarh | 32 km |
| 378 | " | Ratlam | |
| | | To Indore | ... |
| 420 | " | Badnawar | |
| | | To Ujjain | 63 km |
| 444 | " | Nagda | |
| 446 | " | Road Jn | |
| | | To Mandu | 58 km |
| 472 | " | Labhad | |
| | | To Dhar | 21 km |
| | | " Ahmedabad | ... |
| 515 | " | Indore | |

আর আছে শহরান্তে GPO-র পাশে ১৬৯৯এ সোলাঙ্কী রাজা অনিরুদ্ধর স্ত্রী রানী নাথভাটিজীর তৈরি গুজরাটি শৈলীর ৪৬ মি গভীর রানীজী কী বাউড়ী। ধাপে ধাপে সিঁড়ি নেমেছে। কেন্দ্র থেকে ৫ কিমি উত্তর-পশ্চিমে রাজা ভোজের স্ত্রীর তৈরি ফুল সাগর প্রাসাদ। শহরের কেন্দ্রমণি চোগান গেটে নগর সাগর কুণ্ড অর্থাৎ জোড়া কুণ্ড আর এক শ্রষ্টব্য। লেক, বাগিচায় পরিবেশ রমণীয়। তবে, সাধারণের কাছে দ্বার রুদ্ধ প্রাসাদের। অতীতের শিকার ভূমিতে আজকের রাজ পরিবারের বাস। ৩ কিমি দূরের ক্ষারবাগে রাজ পরিবারের ৬৩টি ছত্রিশ, ছত্রশালের ঐতিহাসিক স্মৃতিস্তম্ভও অভিনবস্থ আছে। জৈন সাগর লেকটির পরিবেশও সুন্দর, বাগিচা হয়েছে। আর হয়েছে হোটেল অতীতের প্রাসাদ অর্থাৎ রাজা বিষ্ণু সিংহের তৈরি সুখমহল গ্রীষ্মাবাসে। কেন্দ্র থেকে এরও দূরত্ব ৩ কিমি। স্মৃতিস্তম্ভ, লেক আর বাগিচায় মধুময় করে তুলছে বৃত্তীকে। দুর্গ দেখে পারে, অটো বা টাটায় দেখে

নেওয়ায়ায় বৃত্তী। উৎসাহীরা কোটা-বৃত্তী সড়কের দেবপুরায় ১৬৮৬তে তৈরি ৮৪ স্তম্ভের চৌরাশি স্তম্ভ ছত্রিশটিও দেখে নিতে পারেন। আবার শেয়ার জিপ বা বাসে ২২ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে Keshoripatan-এ ১৬ শতকের কারুকার্যমণ্ডিত বিশাল বিষ্ণু মন্দির, জম্বু অর্থাৎ শিব মন্দির, স্বল্প দূরে ৭ শতকের জৈন মন্দির ও চব্বলের তীরে ছত্রিশ অর্থাৎ স্মৃতিস্তম্ভ দেখে নিতে পারেন বৃত্তী থেকে।



Bundi, STD 0747এ RTDC-র H Vrindawati, 32473, তবু S ২৫০ D ৩২৫। জৈন সাগরের

পাড়ে Phool Sagar Palace H; বাসস্ট্যাণ্ডে PWD-র ডাকবাংলো ও সার্কিট হাউস আছে। টুরিস্ট অফিসও বসেছে সার্কিট হাউসে। আর আছে Royal Retreat, Garh Palace, Bundi, A/c S ৬২৫ D ৮২৫; প্রাসাদের নিচে বৃত্তী কাফে ক্রাফটস-এর বাড়িতে Haveli Braj Bhushanjee, S ২২৫ D ৪০০ ডার্মি ৫০, থাকার পক্ষে ভালই। মাঝপথে Bundi Tourist Paradise, near Azad Park; H Shivrani, Manasa Ram, Muhavir, Rani-Ki-Dharamshala বৃত্তীতে।

তবে, বৃত্তীতে থাকার দরকার হয় না। ঘণ্টা পাঁচকে বৃত্তী বেড়িয়ে কোটায় ফিরন বা ৭-৩০, ১১-৩০, ১২-৩০, ১৫-১৫, ১৭-১৫র এক বাসে ৪ ঘণ্টায় ১৪২ কিমি দূরের আজমের চলুন। লোকাল বাসও যাচ্ছে ৬-১৫, ৮-৪৫, ৯-৪৫, ১১-১৫, ১৪-১৫, ১৪-৩০, ১৬-৩০এ। ডাড়া কম লাগলেও সময় নেয় ৬ ঘণ্টা। জয়পুর যাচ্ছে ৪-৩০, ৫-৩০, ৬-৪৫, ৮-১৫, ৯-১৫, ১০-১৫ এক্স, ১১-১৫, ১২-১৫ এক্স, ১৫-০০, ১৬-০০ এক্স, ১৬-৪৫এ সুপার ডিলাক্স, ১৮-০০টার এক্স বাস। প্রতিটা বাসই কোটা থেকে এসে বৃত্তী হয়ে যাচ্ছে। বাস যাচ্ছে চিতোরগড়ও বৃত্তী থেকে। ব্রডগেজ রেলও যাচ্ছে Kota-Nimach গ্যাসেঞ্জার বৃত্তী হয়ে চিতোরে।

বারোদী

কোটা থেকে মাত্র ৪০ কিমি দূরে প্রতাপ সাগরের পথে আরণ্যক পরিবেশে ৮ শতকে গড়া ৭টি মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ রয়েছে। এদের মধ্যে শিব মন্দিরটি অন্যতম। রাজস্থানের প্রাচীনতম মন্দিরও এই শিব মন্দির। ওড়িশি শৈলীতে তৈরি। এর গঠন প্রাণালী ও ভাস্কর্য আকর্ষণীয়। কার্ভিং-এর কাজ ও পিলারের নারী মূর্তিগুলি অতুলনীয়। এর কিছু নিদর্শন কোটা মিউজিয়মে দেখতে মেলে। বারোদীতে মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ দেখে ১০ কিমি দূরের প্রতাপ সাগর বেড়িয়ে কোটায় ফিরুন। প্রতাপ সাগরে দ্বিতীয় বাঁধ পড়েছে চষলে। কোটা থেকে সওয়াইমাধোপুর চলুন বা উজ্জয়িন হয়ে মধ্য প্রদেশেও চলা যেতে পারে কোটা থেকে।

উজ্জয়িন যাত্রীদের বাস পথে ঝালোয়াড় বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। ঝালোয়াড়ের পথে ৬০ কিমি দক্ষিণে যেতে কেল্লা পাটনে ১০ শতকের সূর্য মন্দিরের ধ্বংসাবশেষ দেখে চক্কর। ঠাকুর মণ্ডিত মন্দিরে সেবতা সূর্যদেব আজও সবদেয় রক্ষিত। আবার সুন্দর ভাস্কর্যে অলঙ্কৃত রাজস্থানের খাজুরাহো রামগড়ে ১১ শতকের ভীম দেওয়া

মন্দিরও বেড়িয়ে নেওয়া যায় কোটা থেকে ৬ কিমি জিপে গিয়ে। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান কোটাকে ঘিরে। শিব উপাস্য দেবতা। উৎসাহীরা কালামাড়া-এর পথে কোটা থেকে ৭৮ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে ১৯৫৫য় তৈরি দ্বারা অভয়ারণ্যটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। প্যাছার, চিতাবাঘ, নীলগাই, হরিণ, বরাহ, ভালুক ছাড়াও নানানধর্মী পাখি রয়েছে দারায়। তবে, উচিত হবে ৩৫ কিমি দূরের বুত্তী বেড়িয়ে বাসে বাসে আজমের যাওয়া।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে RTDC-র H Chandrawati, Jhalawar, ☎ (07432) 30015, S ১৭৫ ২৭৫ D ২০০ ৩২৫ টাকায় কালামাড়ে।

আজমের



বুত্তী বেড়িয়ে আজমের পৌছান। দূরত্ব ১৪২ কিমি। আর জয়পুরের ১৩৫ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে জাতীয় সড়ক-৮এ আজমের। চিতোরের দূরত্ব ১৯৫ কিমি। নিয়মিত বাস সংযোগ গড়েছে। এক্স, ডিলাল, নন স্টপ, লিমিটেড স্টপ, নানানধর্মী বাসের চলন। এছাড়াও বাস যাচ্ছে ৮½ ঘটায় ৫-৪৫ ও ১৫-৩০এ ৩৫০ কিমি দূরের আবু রোড; ৩০৩ কিমি দূরের উদয়পুর যাচ্ছে ৭-৩০, ৯-৩০, ১২-৩০, ১৫-০০, ২২-১৫, ২২-৪৫, ০-৩০, ০-৪৫-এ; ৩৯৫ কিমি দূরের দিল্লী যাচ্ছে ৯ ঘটায় ২০ বাস; ৩৮৫ কিমি দূরের আগ্রা যাচ্ছে ৭-৩০, ৮-০০, ১০-০০, ছাড়াও নানান; জয়পুর যাচ্ছে প্রতি ২০ মিনিট অন্তর, সাধারণ ও নন স্টপ সার্ভিস দুইই মেলে—২½ ঘটায় পথ। বাস যাচ্ছে ৪½ ঘটায় ১৯৮ কিমি দূরের যোধপুর, জয়সলমীর ৪৯০, বিকানীর ২৭৭, রণকপুর ২৩৭, ভরতপুর ৩০৫, ছাড়াও রাজ্য ছাড়িয়ে প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে আজমের থেকে। এমনকি নানান প্রাইভেট ডিলাল বাস কাছারি রোড (আজমের) থেকে উদয়পুর, জয়সলমীর, মাউন্ট আবু, যোধপুর, আমোদাবাদ, মুম্বাই, আগ্রা, দিল্লী যাচ্ছে।



কোটা ভ্রমণে অনুৎসাহীরা দিনে দিনে চিতোর বেড়িয়ে বাস বা ট্রেনে আজমের পৌছান। দিল্লী-জয়পুর-আমোদাবাদ রেল পথে আজমের জংশন। ১৮-০৫এ উদয়পুর ছেড়ে ২১-২৫এ চিতোর পৌছে আজমের যাচ্ছে রাত ২-১৫য় চেকত এক্স। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ২-১৫, ৫-১৫, ১৪-০৫, ১৫-০০, ২১-৪০এ চিতোর থেকে আজমেরে। প্রতি শনিবার ১৯-৪৫এ নিউ দিল্লী-আমোদাবাদ রাজধানী এক্স, ২১-১০এ দিল্লী-আজমের এক্স, ১৪-১০এ চেকত এক্স, ১৫-০৫এ আশ্রম এক্স, ২২-১০এ আমোদাবাদ মেল দিল্লী সরাই রোহিলা ছেড়ে ০-৪০, ৫-০০, ২২-০০, ২০-০৫, ৪-১৫য় জয়পুর পৌছে আজমের যাচ্ছে ২-৫৫, ৮-৩০, ১-৪০, ২৩-১০, ৭-১৫য়। আজমের থেকে আবু রোড হয়ে আমোদাবাদ যাচ্ছে রবিবার ৩-০০টায় রাজধানী এক্স, ৭-৩৫এ দিল্লী-আমোদাবাদ মেল, ২৩-১৫য় আশ্রম এক্স; জয়পুর-পূর্ণা এক্স; নাসিরাবাদ-আজমের; দিল্লী সরাই রোহিলা যাচ্ছে ১৯-৪৫এ আজমের-দিল্লী রোহিলা এক্স, ২-২৫এ চেকত এক্স, ২-১০এ আশ্রম এক্স, ১৯-২৫এ আমোদাবাদ-দিল্লী মেল; নিউ দিল্লী যাচ্ছে রবিবার ২২-১৫য় আমোদাবাদ রাজধানী এক্স, রবিবার ছাড়া প্রতিদিন ১৫-৪০এ আজমের-নিউ দিল্লী শতাব্দী এক্স ছাড়াও ২-১০, ৬-৪৫, ১০-৩৫, ১৯-২৫, ২২-১০এ

যোধপুর/আমোদাবাদ/উদয়পুরের প্রতিটা ট্রেন। আর যাচ্ছে রবি ছাড়া প্রতিদিন ২০১৬ শতাব্দী এক্স ১৫-৪০এ আজমের ছেড়ে জয়পুর ১৭-৫০, আলোয়ার ১৯-৪৬এ পৌছে ২২-১৫য় নিউ দিল্লী; নিউ দিল্লী ছাড়ে ৬-১৫য় ২০১৬ নিউ দিল্লী-আজমের শতাব্দী। প্রতি বৃহস্পতিবার ৫-৩৫এ আজমের ছেড়ে জয়পুর-দিল্লী হয়ে বেরিলী যাচ্ছে ৪৩১২ আলা হজরত এক্স; বেরিলী ছাড়ে বুথবার আলা হজরত। ৬-১৫ ও ১৪-০০টায় আজমের ছেড়ে ফুলেরা হয়ে জয়পুর যাচ্ছে ৯-৩৫ ও ১৬-২০এ; আজমের ফেরে জয়পুর থেকে ১১-৩০ ও ১৭-৩০এ এক্স। প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে আজমের থেকে ১৭-৪৫এ জয়পুর; ৬-১৫, ১৪-১৫, ১৭-৪৫এ নাসিরাবাদ; ১৯-১০এ আগ্রা ফোর্ট যাচ্ছে আগ্রা কোটা-আমোদাবাদ ফা প্যা-এক্স। ট্রেন আসছে আবু রোড, যোধপুর ছাড়াও রাজ্য তথা ভারতের দিগ্বিদিক থেকে আজমেরে। আজমেরের নিকটতম বিমানবন্দর জয়পুরে। শহরে চলছে ট্যাক্সি, অটো ও রিকশা।



Ajmer-305001, STD-0145-এ রেল স্টেশন আর বাস স্ট্যান্ড দুয়ের মাঝে ব্যবধান ২ কিমি। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে RTDC-র H Khadim, Sabitri Girls' College Rd, Ajmer-1, ☎ 52490, S ২২৫ D ৩০০ A-C S ৩৫০ D ৪৫০ A/C S ৫০০ D ৬৫০ সুইট S ৮০০ D ১১০০ ঘর বেডের ঘর ৭৫০ চার বেডের ঘর ৬৫০ ডর্মি বেড ৫০, থাকার পক্ষে ডালই; আবু: Manager. বা কম্পকতা Linkage ☎ 2465171; রাজ্য সরকারের Tourist Office, ☎ 20430-ও বার্মিংহাম বাংলায়। এসেরই H Khidmat, ☎ 52705, S ২৫০ D ৩৫০ ডর্মি ৫০।

রেল স্টেশনের বামে স্টেশন রোডে—Nagpal Tourist H-1, ☎ 21603, SAB ১৫০-২৭৫ DAB ২৫০-৩৭৫; KEM বা King Edward VII Memorial R H, SCB ৪০ SAB ৬০-৮৫ DAB ৮৫-১৭৫ FAB ১৫০ ডিলাল D ২০০ ডর্মি (বিছানা ছাড়া) ৫, অবস্থানে মুসলিম তীর্থযাত্রীর অধিকা Kem-এ। রেল স্টেশনের সন্নিকটে—H Raju, ☎ 23646, S ৬৫-১০০ D ১৫০-২২৫; H Punam, ☎ 31711, S ১২৫ D ১৭৫-৩৫০; Puzu H, ☎ 30085, D ১৫০-৩২৫। রেল স্টেশনের বিপরীতে মাদার গেটমুখী শিবাজী পার্কে Surya H, SAB ৮০ DAB ১২৫-২০০ A-C D ৩০০; H Sugandh, SCB ৬০ DCB ১০০; Luxmi H, SAB ৬৫ DAB ১২৫-১৭৫ FR ২০০; Ajanta H, SAB ৮০ DAB ১৫০ TAB ১৭৫ ডর্মি ৩৫; Shanti Mahul; H Ashoka, Chalsa H, Siraj H, S ৬০-৮৫ D ১০০-২২৫।

রেল স্টেশনের ডাইনে পৃথ্বীরাজ রোড-305001-এ—H Anand, ☎ 23099, D ১৭৫-৩২৫, কল বুকিং: Linkage ☎ 2465171; H Payal, ☎ 23497, D ১৫০-৩২৫; H Raju, S ৬০ D ১০০; H Rajmahal, ☎ 21347, S ৬৫ D ১২৫; Bhulanath H, S ৮০ D ১৫০; H Ratan, SAB ৬৫ DAB ১২৫; Bikaner H, SCB ৬০ DCB ১০০ FR ১৫০; ছাড়াও রয়েছে Tikkan Chand Jain, Ludha, Bengali ও Hindu ধরমশালা পৃথ্বীরাজ রোডে।

আর রয়েছে Prabasi Hindu H, near Rly Stn, D ১৭৫-৩৫০; Majestic H, S ৬০-১২৫; H Prithviraj, S ১৭৫ D ২৫০-৩২৫ A/C S ৩২৫ D ৪৫০; Khalsa H, S ৬০-১২৫; H Malwa, ☎ 23343, D ১৫০-২৫০। দিল্লী গেটমুখী পথে H Sovaraj, ☎ 23488, S ২৫০-৪৫০ D ৩০০-৬৫০; *H Re-

gency, Delhi Gate-1, ① 30296, S ৪০০ D ৫৫০ সুইট ৮৫০
A/c S ৭৫০ D ৯৫০; Bhula H, Agra Gate, ① 23844, S
১২৫ D ১৭৫ থেকে। রেল ও প্রাইভেট বাসের সন্নিবিষ্ট H
Samrat, ① 31805, S ২২৫ D ৩৫০ A/c D ৬০০; *H
Mansingh Palace, Vaishali Nagar-1, ① 425855, R3B1½,
A/c S ১৭৯৫ D ২৫৯৫ সুইট ৩০০০; Welcomgroup H
Ajaymeru, Annasagar-305001, ① 22103, R3; হোটেল
আখাশগড়, হোটেল আরাম; C H, R2B1; PWD IH, Civil
Lines, অব্: EE, CPWD; PWD DB, Kutchery Rd, অব্:
Collector; রেলের রিটার্নিং রুম ছাড়াও বেশ কয়েকটি সাধারণ
হোটেল; লেখা ① 20916; ঐতিহ্যবাহী নানান ধরমশালা আছে
আজমেরে। এমনকি বাজলির ধরমশালা ও বাজলির মন্দির
সোকার আছে আজমেরে।

আর খাবারের হোটেল যত্রতত্র মিললেও মান অতি সাধারণ
এসে। তবুও যেন নিরামিষ আহাৰ্যে Bhula Hotel টি ভালই।
তেমনই রেল স্টেশনের কাছে Kem-এর পাশে Honeydew বা
Elite Restaurant-এ স্বাদ নেওয়া যেতে পারে আহাৰ্যের।

কনজাক্টেড ট্যুর: RTDC, Khadim Tourist Bungalow,
opp Bus Sid থেকে ৪৫ টাকায় পুঙ্কর, দরগা, আড়াই দিন কা
ঝোপড়া, দুর্গ, আনা সাগর লেক, জৈন মন্দির ও মিউজিয়াম দেখিয়ে
আনে ৮—১৩-০০ আবার ১৪—১৮-৩০টা। টুরিস্ট বাংলা
থেকে ছেড়ে রেল স্টেশন হয়ে যাচ্ছে এসের বাস।

আজমের শহরটি আজকের নয়। পাহাড়বেষ্টিত, আনা
সাগরের পাড়ে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে রূপ পেয়েছে শহর।
ধর্ম, ইতিহাস আর স্থাপত্য—তিনেরই সমন্বয় ঘটেছে।
তেমনই সর্ব ধর্ম সমন্বয়ের মিলক্ষেত্রও এই আজমের।
৭ শতকে অজয় পাল চৌহানের হাতে গড়ে ওঠে শহর।
কারণ কারণ মতে ঐন্টার নাম থেকেই শহরের নামকরণ।
আবার কেউ কেউ বলেন, অজয়মের বা অজয় পর্বত থেকেই
শহরের নাম হয়েছে আজমের। দুর্গটিরও নাম ছিল অতীতে
অজয়মের দুর্গ। তবে আজ নতুন করে নাম হয়েছে তারাগড়
দুর্গ। ১১৯৩তে পৃথ্বীরাজ চৌহানকে হারিয়ে মহম্মদ ঘোরীর
দখলে যায় আজমের। সেই থেকে ক্ষমতা দখলের লড়াই
শুরু হয় মোগল আর রাজপুতে। ১৩৯৮এ তৈমুরের ঝটিকা
সমরের বিত্তীভিকারিত আজমের কিছুকালের জন্য মেবাবের
রাঁ। কুস্তর দখলে গেলেও ১৪৭০ থেকে ১৫৩১ আজমের
থাকে মালোয়ার সুলতানদের দখলে। এরপর দখল যায়
আজমেরের দিল্লীর বাদশাহ আকবরের হাতে। দুর্গও গড়েন
আকবর ১৫৫৬তে আজমেরে। বার বার পদার্পণ ঘটলেও
প্রথম আগমন ১৫৬১তে আকবরের। তার বেশ কিছু
কার্যকলাপ আজও পর্যটক আকর্ষণ করে চলেছে।
শাহজাহানেরও বেশ কিছু স্মৃতি অতীত রোমন্থন করায়
পর্যটকদের। শাহজাহানপুর দরার জন্মও এই আজমেরে।
এমনকি ১৬৫৯এই আজমেরের কাছে জোরালে ভাইসের
হারিয়ে ক্ষমতা দখল করেন ঔরঙ্গজেব। আরও পরে দখল
যায় সিদ্ধিরা রাজসের হাতে আজমেরের। আর ১৮১৮য়
হত্যাধরিত হয় ক্ষমতা ব্রিটিশের হাতে, কয়েম হয় ব্রিটিশ

শাসন আজমেরে। সমন্বয়ও ঘটেছে হিন্দু ও মুসলিম উভয়
সংস্কৃতির—আজমেরে। ঠিক তেমনই হিন্দু ও মুসলিম উভয়
সম্প্রদায়ের মহান তীর্থও এই আজমের।

রেল স্টেশনের বিপরীতে মাদার গেট পেরিয়ে ১০/১৫
মিনিটের পায়ে হাটা দূরত্বে পুরাতন শহরে আজমেরের মূল
আকর্ষণ দরগা খাজা সাহেব। এটি ইসলামধর্মীদের কাছে
ভারতের অন্যতম পবিত্র তীর্থ। খালি পায়ে মাথা ঢেকে ঢোকা
বিধি। তবে, বিসদৃশ লাগে চামরের পরশ লাগিয়ে
ডোনেশনের জ্বলম। দরজা সবার তরেই খোলা।

আকবরের ধর্মগুরু কিংবদন্তীর প্রবাদ পুরুষ খাজা
মইনুদ্দিন চিষ্টি (১১৪২-১২৫৬) মহম্মদ ঘোরীর সঙ্গে
১১৯২এ ভারতে আসেন। কিংবদন্তী, পারস্যের সঞ্জারে
১১৪২ খ্রিস্টাব্দে জন্ম মইনুদ্দিন মক্কা হয়ে খদিনায় যেতে
মহম্মদের দৈববাণী পেয়ে হিন্দুস্থানে আসেন ইসলামের
মাহাত্ম্য প্রচারে। অবস্থানও সেই থেকে আজমেরে চিষ্টি
সাহেবের, এস্তেকালও হয় আজমের-এ; সমাহিতও রয়েছেন
এখানে। আর, তাঁর মাজার অর্থাৎ সমাধিকে ঘিরে গড়ে
উঠেছে দুটি মসজিদ, একটি সম্মেলন কক্ষ আর রূপার
পাতে মোড়া বুলন্দ দরওয়াজা। পিতার সমাধিতে রূপার
পাতে মোড়া মূল সমাধি-সৌধ ১২৩৬এ মাহুদ সুলতান
মোহাম্মদ বিলজীর তৈরি। তবে, সম্পূর্ণতা পায় হুমায়ূনের
হাতে। আর প্রবেশ ফটকটি হায়দরাবাদের নিজামের গড়া।
আকবর গড়েন ঢুকতেই ডাইনের মসজিদ ও ২৩ মিউচ মূল
প্রবেশ পথের বুলন্দ দরওয়াজা। মসজিদ গড়েন জাহাঙ্গীরও।
আর কেন্দ্রীয় ডোমের সাথে ১১ ধনুকাকৃতি ঝিলানের খেত
মর্মরের জুমা মসজিদটি শাহজাহানের তৈরি। গম্বুজের চূড়ো
সোনার পাতে মোড়া। আজও প্রতি বছর রজব মাসের ১—৬
(মইনুদ্দিন চিষ্টির মৃত্যু দিবস) উরস পালিত হয়। ১২০ ও
৮০ মণ চাল রান্নার বৃহত্তম হাওা দুটিও দরগার আর এক
দ্রষ্টব্য। উরস উৎসবে বিরিয়ানী রান্না হয়। তারাক্ষ অর্থাৎ
প্রসাদ রূপে বিতরিত হয় ভক্তজনদের মাঝে। লোকশ্রুতি,
দরগা দর্শনাতে দিল্লীর নিজামুদ্দিন আলিয়ার দরগা দর্শন
করে ঘরে ফেরার বিধি।

দরগা থেকে ৫/৭ মিনিটের পথে ত্রিপোলিয়া গেট
পেরতেই ডাইনে আড়াই দিন কা ঝোপড়া। এটি ১১৯৮তে
মহম্মদ ঘোরীর কীর্তি। লোকশ্রুতি, কিংবদন্তী মতো তৈরি
হয়েছিল ১১৫৩তে সন্তোক্ত কলেজ ও সরস্বতী মন্দির রূপে
বিশালমেঘ বিগ্রহরাজ দ্বিতীয়র হাতে। ফরমান এল মহম্মদ
ঘোরীর—আড়াই দিনের মধ্যে এটিকে তার প্রার্থনা সভা
অর্থাৎ নামাজ ঘর করে দিতে হবে। যেমন আজা তেমনই
কাজ—রূপ পেল মসজিদ আড়াই দিনে। নামটিও তাই
আড়াই দিন কা ঝোপড়া। মতান্তরে অতীতে উরস উৎসব
হত এখানে। আর সে উৎসব চলত আড়াই দিন ধরে। তাই
১৮ শতকের শেষার্ধ্বে নাম হয়েছে এর আড়াই দিন কা
ঝোপড়া। ২০০৫-১৭ ফুটের চতুর্ভুজ অঙ্গন। সারি সারি ৫

সারি পিলার হয়েছে উপাসনা অঙ্গন জুড়ে। পিলারগুলিতে আজও হিন্দু দেবদেবীর (৩০টি মন্দির ভেঙে সংগ্রহ) মূর্তি শোভিত। এমনকি হিন্দু স্থাপত্যের অন্যতম নিদর্শন বলেও এটি পরিগণিত। সিলিং-এও সুন্দর কারুকর্ম, ১২৪টি খামে ভর করে ১০টি ডোম হয়েছে। মুসলিম স্থাপত্যের নিদর্শন জাফরি কাটা পাথরের পর্শা, ধনুকার আর্চ করা দরজা-জানালা, বহির্ভাগে ঝিলানের কারুকর্মও সুন্দর। প্রাঙ্গণ পেরুতেই মিউজিয়াম। হিন্দুর দেবদেবীরা স্থানান্তরিত হয়েছেন মিউজিয়মে।

ঝোপড়ার বিপরীতে ৩ কিমি দীর্ঘ খাড়া পথে ঘণ্টা দেড়েক ২০৫৫ ফুট উঁচুতে উঠে তারাগড় পাহাড়ে রাজ অসির পাশাপাশি রাজসিক শিল্পকর্মের যোগ্যী স্থাপত্যে তৈরি আকবর কা দৌলতখানা বা স্টার ফোর্ট অর্থাৎ দুর্গ। ম্যাগাজিনও বলে থাকে লোকে দুর্গকে। শহর থেকে আরও ৮০০ ফুট অধিক উঠে নানান ঐতিহাসিক যুদ্ধের সাক্ষী এই দুর্গ। তৈরি হয়েছে আকবরের হাতে ১৫৭০-৭২এ। মতান্তরে ১১০০য় অভয় পাল চৌহানের তৈরি দুর্গ এটি। বিশাল দরওয়াজায় (৮৪×৪৩ ফু) প্রবেশ। চতুষ্পাশ্বে দুর্গের প্রতিটি কোণে হয়েছে অষ্টকোণাকৃতি চার মিনার। প্রাচীরে ঘেরা চারপাশ, পরিখাও ছিল সেকালে দুর্গকে ঘিরে। দু'পাশে অলিন্দ। অলিন্দের শোভা দেখবার মতো। বাদশাহ আকবর এই অলিন্দে বসে দর্শন দিতেন প্রজাদের। ১৬১৬ খ্রিস্টাব্দের ১০ই জানুয়ারি ব্রিটিশ দূত স্যার টমাস রো এই দুর্গেই প্রথম সাক্ষাৎ করেন জাহাঙ্গীরের সঙ্গে। উত্তরকালে সিঁদ্ধিয়ারাও দখল করে আজমের। আর ১৮১৮য় ব্রিটিশের দখলে যেতে স্যানাটোরিয়াম বসে তারাগড়ে। দুর্গের কেন্দ্রীয় ভবনে মিউজিয়ম বসেছে। ব্রাহ্মী হরফ, মহেন-জো-দড়োতে পাওয়া সিল ও মুদ্রা প্রদর্শিত হলেও সংগ্রহ দুর্বল মানে। খ্রিঃ ২ বা ৩ দশকের ব্রাহ্মী হরফও দেখতে মেলে। পছন্দের উপর শায়িত নগ্নশিবের বৃকে ৫৪ হাতের দেবী কালিকার মূর্তিতে বৈচিত্র্য আছে। হাঁটু পর্যন্ত নরমুণ্ডমালা শোভিত। মস্তকও তার দশ—১টি মানুষের; বাকি ৯—কুকুর, শিয়াল, হাতি, শূকর, বানর, ঘোড়া, সিংহ প্রভৃতি। শুক্রবার ছাড়া ৮—১৬-০০টায় খোলা মিউজিয়াম। তারাগড় থেকে শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান।

আগ্রা গেট বা সুভাষ বাগের পাশে পৃথীরাজ মার্গে ১৮৬৫তে রূপ পেয়েছে লালপাথরের জৈন মন্দির। প্রথম জৈন তীর্থঙ্কর স্বভদ্রসেবের নামে উৎসর্গীত। তবে প্রতিষ্ঠাতা মূলচার্য সোনিজীর নামে নাম হয়েছে সোনিজী কিশোরী। সুন্দর কারুকর্মময় হল—এর এক অংশে গিলাটি করা কাঠের মডেলে মানবজন্মের ক্রমবিকাশ ও জৈন মিথোলজি তুলে ধরা হয়েছে। দু'টি পৃথক পৃথক রূকে রূপ পেয়েছে এরা—প্রবেশদ্বারও পৃথক। যাত্রীদের উচিত হবে দেখে নেওয়া। দলনী ১০।

দু'টি পাহাড়ের মাঝে দলনী নদীতে বাঁধ দিয়ে তৈরি হয়েছে

কৃত্রিম হ্রদ আনা সাগর। শ্রমের রক্ত মুছে দিতে ১১৩৫ থেকে ১১৫০ খ্রিস্টাব্দের মধ্যে এটি খনন করান পৃথীরাজের পিতামহ অননোরাজ বা আনাজী। প্রাকৃতিক সৌন্দর্য নয়নাভিরাম। সুবোধির ও সূর্যাস্তে রামধনু রঙ খেলে লেকের জলে। এমনকি জাহাঙ্গীর এর রূপে মুগ্ধ হয়ে লেকের পাড়ের স্বর্গীয় সুবমা দিয়ে দৌলত বাগ বাগিচাটি গড়েন। আর শাহজাহান সাজিয়ে দেন মর্মরের প্রাচীর ও ৪টি সুন্দর চতুষ্পাশ্বে গড়ে ১৬৩৭এ। পর্বতকরাও বিমোহিত হয়ে পড়েন এর সৌন্দর্যে বিশেষ করে সন্ধ্যাবেলায়।

পুষ্কার তীর্থ : আজমের থেকে ১১ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ১৫৩৯ ফুট উঁচুতে ব্রহ্মার যজ্ঞক্ষেত্র তথা নিবাস, বেদমাতা গায়ত্রীর জন্ম, নানান মুনি-ঋষিদের তপোভূমি-তীর্থওক পুষ্কার। বেদ, পুরাণ, রামায়ণ, মহাভারতেও উল্লিখিত হয়েছে পুষ্কার তীর্থের মাহাত্ম্যের কথা। স্নান, দান, ব্রাহ্ম, তর্পণ ও পারলৌকিক ক্রিয়ায় অক্ষয় ফল মেলে পুষ্কারে। অতীতে বৌদ্ধধর্মের পীঠস্থানও ছিল পুষ্কার। নাম ছিল পোখরা সেকালে। সাবিত্রী, গায়ত্রী, পাণমোচনী ও নাগ পাহাড়ে বেষ্টিত পুষ্কার—বিচ্ছেদও টেনেছে আরাবল্লী পর্বতমালায় নাগ (সর্প) পাহাড় আজমের থেকে পুষ্কারকে।

আজমের রেল স্টেশনের বিপরীতে গান্ধীভবন থেকে ১৫ মিনিট অন্তর বাস যাচ্ছে ৪০ মিনিটে পুষ্কারে। স্টেট বাস স্ট্যান্ড থেকেও বাস মেলে পুষ্কারের। বাস স্ট্যান্ডও দুই পুষ্কারের দুই প্রান্তে। উচিতও হবে রেল স্টেশন থেকে বাসে পুষ্কার চলা। টারি ও অটোও চলে এপথে। নাগ পাহাড় পেরুতেই ছোট পুষ্কার—মধ্যমণি তার ব্রহ্মা-বিশ্ব-মহেশ্বর অর্থাৎ ত্রিদেবের যজ্ঞস্থল পুষ্কার সরোবর। পথের শেষ ব্রহ্মা মন্দিরে। মন্দির রয়েছে আরও নানান—সংখ্যায় পাঁচ শতাধিক। আর রয়েছে ততোধিক ধরমশালা পুষ্কারে।



Pushkar-305022, STD-0145-A ভাকার নানান ব্যবস্থা। জয়পুর মহারাজার অতীতের প্রাসাদে RTDC-র H Sarovar, ৩ 72040, SCB ১২৫, DCB ১৭৫ SAB ২২৫ DAB ২৭৫ A-C ২৫০ D ৩২৫ ডিলাক্স S ৩২৫ D ৪৫০ ডরি বেড ৫০। মেলাকালে এদেরই ব্যবস্থাপনায় মেলা গ্রাউন্ডে ১৬০০ যাত্রীর থাক-খাওয়ার ব্যবস্থা নিয়ে সাময়িক ভাবুর কলোনি Tourist Village, ৩ 72074 গড়ে ওঠে। হোটেল-রেস্তোরাঁ-ডাকবর-টুরিস্ট অফিস সবেরই ব্যবস্থা মেলে ডিলেক্সে S ১৭৫ ২২৫ D ২২৫ ২৭৫; আর সারা বছরই ডিলেক্স-হাটে কেবল ভাকার ব্যবস্থা মেলে। এছাড়া আছে সাধারণ মানের H White House, DCB ১৫০ DAB ২০০; H New Park, Pushkar Inn; লেকের পাড়ে Pushkar Palace H, ব্যবস্থাপনা ভালই, ঘরও মেলে S ৭৫০ D ১০০০ A/C D ১২৫০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; লগেরো Prince H, মান ও দামে প্যালেস তুল্য; ব্রহ্মা মন্দিরের কাছে H Navratna Palace, D ৩২৫-৪৫০; Everest GH, D ১০০-১৭৫; Oasis H, D ১২৫-২০০; Ambika G H, Laxmi G H, Peacock Holiday Resort, ৩ 32093, S ৪০০ D ৬০০ A-C S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট-৮০০-১০০০; H Monalisa, D ১২৫-১৭৫; Nataraj G H,

H Brahma, Payal G H, Krishna Palace G H, Gopal R H ছাড়াও নানান। এদের কাছে S ৬০-১২৫ D ১০০-১৭৫ টাকার মেলে। জানালাহীন কোনো কোনো ঘর খাট-বিছানা ছাড়া, চারপাই সমল; বাথ রুম সাধারণ হোটেল। আজমের থেকেই বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে পুষ্কর তীর্থ পর্যটকদের। তেমনি *Sant Kanwar* ছাড়াও নানান ধরমশালাও আছে পুষ্করে।

খাবার হোটেলও নানান পুষ্করে। *Payal, Sarovar, Sanjoy, Shiva Restaurant, Shiva Shakti, Om Shiva, Rainbow, Krishna* এদের প্রশস্তি লোক মুখে মুখে। তেমনি *Sarovar Tourist Bungalow, Pushkar H, Peacock H*—এদেরও আহাৰ্যে সুনাম যথেষ্ট।

সকল তীর্থের সেরা হিন্দুতীর্থ পুষ্কর। শাস্ত্রমতে পবিত্রতম তীর্থও এই তীর্থপিতা পুষ্কর। পদ্মপুরাণ বলে, কলির প্রভাব থেকে জগৎ-সংসার বাঁচাতে স্বর্গের পবিত্র পুষ্করকে মর্ত্যে পাঠাবার মানসে পদ্ম হোঁড়েনে ব্রহ্মা পৃথিবীর উদ্দেশ্যে কলিহীন জায়গার অন্বেষণে। পৃথিবী পরিভ্রমণ কালে পুষ্করে একে একে ৩টি জায়গা স্পর্শ করে পদ্ম—আর এ ৩ জায়গা থেকেই বেরিয়ে আসে জল, রূপ নেয় সরোবর। ব্রহ্মাও স্বর্গ থেকে মর্ত্যে আনেন বৃদ্ধা বা ব্রহ্মা পুষ্কর, মধ্যম বা বিষ্ণু পুষ্কর ও কনিষ্ঠ বা রুদ্র পুষ্কর। মনস্কামনা পূরণ হতে ব্রহ্মার সাথ জাগে যজ্ঞ করবার। ৩৩ কোটি দেবতা সমভিভাষারে স্বর্গ থেকে ব্রহ্মা এলেন যজ্ঞ করতে পুষ্করে। বিধিমতে ত্রীসহ যজ্ঞ করবার প্রথা। স্বর্গের দেবীদের সঙ্গে আনতে গিয়ে ত্রী সাবিত্রীদেবী তখনও পৌঁছতে পারেননি। দেরিতে লগ্ন পেরুতে যায়। পুত্র নারদের নারদ-গিরিতে গোপবালা শোধন করে নামান্তরিত গায়ত্রীদেবীকে গাঙ্ঘর্বমতে বিয়ে করে কনিষ্ঠ পুষ্করে যজ্ঞে বসলেন ব্রহ্মা। সাবিত্রীও হাজির ততক্ষণে। সবকিছু দেখেওনে ক্ষুব্ধ, অপমানিত, রোষানলে শাপ দিলেন ব্রহ্মাকে দেবী সাবিত্রী। তাই আজ আর পূজা পান না ব্রহ্মা—মন্দিরও নেই ভারতে অন্যত্র ব্রহ্মার। শাপান্ত হলেন উপস্থিত দেবমণ্ডলীও বিবাহে মদত দানে। আর শোকে দুঃখে ঠাই নিলেন পাহাড়চুড়ায় দেবী সাবিত্রী।

১৫টি উল্লেখ্য হলও ৫২টি ঘাট রয়েছে বৃষ্টির জলে পুষ্ট পুষ্কর সরোবরে। তবুও যেন গৌতম, বরাহঘাট, রাজঘাট, স্বরূপঘাট, পঞ্চবীর ঘাট মাহাঘো অবর্ণনীয়। স্নানের মোক্ষলাভ হয় পুষ্কর সরোবরে। শুধু পূণ্যই বা কেন—চারধাম (পুরী, বদরী, হারকা ও রামেশ্বরম) দর্শনের পূণ্যও পূর্ণ হয় পুষ্কর স্নানে। ব্রহ্মার যজ্ঞের তিথি ধরেই কার্তিক মাসের শুক্লা একাদশী থেকে কৃষ্ণা প্রতিপদে (অক্টোবর-নভেম্বর) লক্ষ লক্ষ যাত্রী আসেন পূণ্যস্নানে। আসেন পর্যটক দেশেশাস্ত্রের থেকে। হুসের মাঝে হোটেলী—মন্দির হয়েছে শিবঠাকুরের। তবে, ঘাটে ছবি তোলাও ধুমপান কঠোরভাবে মানা।

নানার এই মহাযোগকালে সরকারি ব্যবস্থাপনায় ১০দিন ব্যাপী জাকালো মেলা বসে পুষ্করে। নাম তার পুষ্কর মেলা বা ক্যামেল ফেয়ার। বিকিকিনি হয় গবাদি পশু—

গরু, ঘোড়া, উট ছাড়াও নানান জন্তু। তেমনিই মেলে ইনামেল করা নানান সজ্জার, উটের চামড়ার নানান ব্রশা, বসন-ভূষণ ছাড়াও গৃহস্থালীর নানানকিছু। আসর বসে নানান সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানের ক্যামেল ফেয়ারে। সারা রাজস্থান তখন পুষ্করে। যথেষ্ট পপুলার পুষ্করের এই ক্যামেল ফেয়ার। মেলার সূচনা মোগল সম্রাট জাহাঙ্গীরের কালে পুষ্করে। আগামী ফেয়ার ১৯৯৮-১-৪ নভেম্বর, ১৯৯৯-২০-২৩ নভেম্বর, ২০০০ খ্রিস্টাব্দে ৯-১২ নভেম্বর।

তবুও যেন পুষ্করের মূল আকর্ষণ তার প্রাচীনতম কুণ্ডের পশ্চিমে ব্রহ্মা মন্দির। পথেরও শেষ এই ব্রহ্মা মন্দিরে। বিরাট তোরণদ্বার, তোরণদ্বারে হংস; ৪৩ খাপ সিঁড়ি উঠে দ্বার পেরুতেই মন্দির চত্বর। কেন্দ্রস্থলে ব্রহ্মামন্দির। শ্বেতমর্মরের মন্দিরে লাল মোচাকার চূড়ো। গর্ভমন্দিরে রূপোর আসনে শ্বেতমর্মরে স্থলকায়, রূপোর কিরীট শিরে রক্তবর্ণ চতুরানন হংসবাহন ব্রহ্মা। বামে গায়ত্রী দেবী। আর চত্বর জুড়ে—পাতালেশ্বর মহাদেব, নারদ, গণেশ, হস্তী পুষ্টে ধনপতি কুবের, পঞ্চমুখী মহাদেব, সূর্যদেব, সপ্তঋষি, সিংহবাহিনী অশ্বা স্ব মন্দিরে। দেবতারা হয়েছেন শ্বেত মর্মরে। বারবার বিনষ্ট হলেও শেষ আঘাত হানেন পরধর্ম বিদ্বেষী দিল্লীশ্বর গুর্জরজেব পুষ্কর তথা ব্রহ্মা মন্দিরে। নতুন করে মন্দির হয় ১৭১৯এ। সেটি বিনষ্ট হতে বর্তমান মন্দিরটি গড়েন ১৮০৯এ সিদ্ধিয়া রাজা গোবুলচন্দ্র পাঠেখ ১ লক্ষ ৩০ হাজার টাকার। মন্দির লাগোয়া বাজারটিও কেনাকাটার আদরণীয় হবে।

সরোবরের অপর পাড়ে সাবিত্রী পাহাড়। সাদা মন্দির টোপর হয়ে হাতছানি দেয় তীর্থযাত্রী ও পর্যটকদের। পূজা হয় মন্দিরে—সাবিত্রী দেবীর। শ্বেত মর্মরে দেবী মূর্তি আর আছেন বীণাহীন দেবী সরস্বতী মন্দিরে। তবে, কেবল মেয়েদেরই অধিকার এই দেবীপূজার। মিষ্টি স্বাদের শীতল জলও পান করা যায় মন্দিরের কুণ্ডে। দেবতা শিবও রয়েছেন লিঙ্গে। সাবিত্রী পাহাড় থেকে চারপাশের দৃশ্যও সুন্দর দেখা যায়। ৩ কিমি পথের ১ কিমি বালু, ২ কিমিতে ৩৬০টি খাপ উঠে পথ পৌঁছায় পাহাড়ী মন্দিরে। উচিত হবে সকালের দিকে বেড়িয়ে নেওয়া। নিচে নতুন করে মন্দির হয়েছে সন্তোষী মায়ের। বিপরীতে আর এক পাহাড়চুড়োয় গায়ত্রী মন্দির। পুষ্কর তীর্থের পরিক্রমা পঞ্চক্রোণী। তেমনিই আছে নানান কুণ্ড, নানান মন্দির (চার শতাধিক) পুষ্কর তীর্থে। তবে, পুষ্করের অতীতও গুর্জরজেবের হাতে বিনষ্ট হতে সেজে উঠেছে পুষ্কর নতুন করে পরবর্তীকালে।

বাস স্ট্যান্ড থেকে সামান্য এতুতেই ডান হাতি দেড় কোটি টাকা ব্যয়ে মাগনিরাম বাবুরের তৈরি রজনাক্ষের মন্দিরটি পুষ্করের আর এক দ্রষ্টব্য। দ্রাবিড় স্থাপত্যের নিদর্শন এই মন্দির। ১৮৪৪এ গড়া মন্দিরে দক্ষিণী শৈলীর গোপুরমও হয়েছে। আর চূড়োগুলি উত্তর ভারতীয় নাগারা স্থাপত্যে গড়া। মন্দিরে সেবতা—দণ্ডায়মান কাণো পাথরের

রজন্যাক্ষী অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ। মন্দিরের সোনার তালগাছটিও দর্শনীয়। মন্দিরটি বর্ণাঢ্য।

পায়ে পায়ে দরগা/ঝোপড়া/দুর্গ বেড়িয়ে টাঙার চলুন আনা সাগর, আর বাস বা ট্যাক্সিতে পুন্ডর বেড়িয়ে এই রাতেই ট্রেনে জয়পুর যাওয়া যেতে পারে। ৬-১৫য় ও ১৪-০০টার আজমের-জয়পুর এক্স, ১৫-৪০৫ শতাব্দী এক্স, ২-১০৫ আশ্রম এক্স, ১২-২৫৫ আয়েদাবান-নির্মী মেল, ২-২৫৫ চেতক এক্স, ১৯-৪৫৫ আজমের-নির্মী এক্স, রবিবার ছাড়া ১৫-৪০৫ শতাব্দী এক্স, বৃহস্পতিবার ৫-৩৫৫ আজমের-বেরিলি এক্স ছাড়াও দিন-রাত জুড়ে নানান ট্রেন যাচ্ছে আজমের থেকে জয়পুরে। দূরত্ব ১৩৫ কিমি, ঘণ্টা আড়াইয়ের পথ। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও যাচ্ছে আজমের থেকে জয়পুরে। আর যাচ্ছে বাস প্রতি ২০ মিনিট অন্তর আজমের থেকে NH-৪ ধরে ঘণ্টাচারেক জয়পুরে। নন-স্টপ সার্ভিসেও বাস চলে। ট্যাক্সিও যাচ্ছে রাস্তাচ্যুত থেকে ১০০ টাকার শোয়ারে। বাসেই চলুন রাজধানী শহর জয়পুর। আবার যোখপুরও যাচ্ছে পুন্ডর থেকে সরাসরি রুপি আজমের না গিয়ে মেরতা হয়ে ৮ ঘণ্টায়। সময়ের আধিক্য হেতু উচিত হবে আজমের গিয়ে এক্স বাসে ৪১ ঘণ্টার যোখপুর চলা।

উৎসাহীরা ২৭ কিমি দূরের কিষাণগড়ও বেড়িয়ে নিতে পারেন আজমের থেকে। শিল্প-সংস্কৃতির পীঠস্থান কিষাণগড়। শুভেলাও লেক, ফুলমহল প্রাসাদ, দুর্গ, কৃষ্ণমন্দির, মাঝেলা প্রাসাদ ছাড়াও কিষাণগড় কুল অব আটস-এর ছবির প্রশস্তি আজ সারা বিশ্ব জুড়ে।

রণথম্বোর দুর্গ/জাতীয় উদ্যান

কোটা থেকে ১৮০ কিমি দূরে, মুঘাই-নির্মী ব্রডগেজ রেল পথে কোটা ও ভরতপুরের মাঝে সওয়াই মাধোপুর স্টেশন। মুঘাই-এর দূরত্ব ১০২৭ আর নির্মীর দূরত্ব ৩৬১ কিমি। কোটা থেকে ট্রেনে ৪-৪৫, ৬-১৫, ৮-৪৫, ১১-২৫, ১২-৫৫, ১৫-০৫, ১৯-৪৫, ২১-০০, ২১-৫৫, ২২-৫৫, ২-২৫, ২-০৫ রওনা হয়ে সওয়াই মাধোপুর পৌঁছান ১১ থেকে ২ ঘণ্টায়। রাজ্যের রাজধানী জয়পুরের সড়কদূরত্ব ১৫৭ কিমি, রেলদূরত্ব ১৩২ কিমি। নতুন করে ব্রডগেজ রেল বসেছে সওয়াই মাধোপুর থেকে জয়পুর। ২৩-৩০৫ হাওড়া ছেড়ে বেরিলি হয়ে পরের পরদিন ০-৪৫৫ সওয়াই মাধোপুর, ৩-৪৫৫ জয়পুর সৌছে যোখপুর যাচ্ছে ১০-০০টার 2307 হাওড়া-যোখপুর এক্স। ৭-৫১য় মেরতারোড সৌছে মেরতা থেকে যোখপুর এক্সের অবশ্য যাচ্ছে বিকানীরে। ৬-১৫ প্যা, ১৩-৫০, ১৭-১৫, ২৩-২০, ২৩-৫৫য় প্যা জয়পুর ছেড়ে সওয়াই মাধোপুর রেল যাচ্ছে ৯-২০, ১৫-৪০, ২০-২০, ১-৪৫, ২-৩০৫। জয়পুর যাচ্ছে সওয়াই মাধোপুর থেকে ১-১৫, ০-৫৫, ৭-১০, ১০-২৫ ও ১৭-১৫য়। বাসেরও চল আছে জয়পুর থেকে সওয়াই মাধোপুরের। এ-ছাড়াও উত্তর ও পশ্চিম ভারতের সিঁথিনিক থেকেও ট্রেন ও বাস আসছে সওয়াই মাধোপুরে। আর মিনিবাস যাচ্ছে বাইরে। নিম্নে সওয়াই মাধোপুর রেল স্টেশন থেকে ১৪ কিমি দূরের রণথম্বোর জাতীয় উদ্যানে। মিশ্রাধারে নামতেই চাতালের বাঁয়ে রণথম্বোর ন্যাশানাল পার্ক তথা অভয়ারণ্যের ঘরপ্রান্ত যোগীমহল। আর ডাইনে পাহাড় চড়ে রাজকোয়ার প্রাচীন কেল্লা। নভেম্বর থেকে মার্চ আস বনবিহারের মনোরম সময়। জুন থেকে অক্টোবর বহু থাকে জাতীয় উদ্যান। গ্রীষ্মে ২৩-৩৭°, শীতে ৯-১১° সেলসিয়াসে ওঠানামা করে তাপমাত্রা। রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দক্ষিণে ওত্তার ডিরেক্টর নিচে Field Director, Project Tiger, Ranthombhore N P, Sawai Madhopur, Rajasthan-322001-এর অফিস। ট্যুরিস্ট অফিসটিও একই বাড়িতে। বনবাসের ঘর ও জিপ মেলে ভাড়া। আর চলার পথে যোগী মহলের প্রবেশ ঘরে ১০ টাকার টিকিটে উদ্যানের প্রবেশাধিকার মেলে। কাসেরারও চার্জ লাগে মান হয়ে। নিজস্ব ব্যবস্থায় জিপ চলার রুট পারমিটও মেলে এদের কাছে। তবে RTDC, Castle Jhoomar Boari, Tented Camp, Jogi Mahal থেকেই উচিত হবে জিপ বুক করা। ৬-৩০, ৮-৩০, ১৪-৩০ ও ১৬-০০টার ৪টি আরগ্যক পথ ধরে বেড় ঘণ্টার সফরিতে ৬টি খোলা জিপে (ক্যাপ্টার) যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে ৬৫ টাকার প্রতি জন। (সর্বনিম্ন ভাড়া ৩০০); পুরো জিপ ৬৫০। তবে ২৪টির বেশি জিপের একত্রে অরণ্যে প্রবেশ নিষেধ। গেরিও খোলা থাকে ৬-৩০—১০-০০ ও ১৪-৩০—১৮-০০টার। টিকিটের প্রচুর চাহিদা। উচিত হবে সকাল ও সাঁঝে ২টি সফরি বেড়িয়ে নেওয়া। শ'পাঁচেক টাকার জিপসিও যাচ্ছে অরণ্য বিহারে।

সওয়াই মাধোপুরের মুখ্য পর্যটক আকর্ষণ—পাহাড়ের উপর কেল্লা আর সিঁথে গিয়ে পাদদেশে জাতীয় উদ্যান। জয়পুর মহারাজদের মুগরাভূমি আরাববী ও বিশ্ব পর্বতে ঘেরা ৪৯২ বর্গ কিমি জুড়ে ১৯৭১এ গড়ে ওঠে বন্যপ্রাণী সংরক্ষণ ক্ষেত্র। ১৯৭৩এ শিরোপা চাপে প্রোজেক্ট টাইগারের, আর ১৯৮০তে পদোন্নতি ঘটে হয় জাতীয় উদ্যান। প্রায় অর্ধশত বাঘ, প্যাছার, লেপার্ড নীলগাই, চিত্রনা, শম্বর, চিতল, বন্য শুয়োর, হায়া, শিয়াল, বনবিড়াল, রয়েছে জাতীয় উদ্যানে। নীলগাই-এর জন্যও রণথম্বোরের প্রশস্তি। যত্রতত্র চরে বেড়ায় অরণ্যচারীরা। আয়তনে ছোট, খোলা জিপে বসে অল্প আয়াসে যোগীমহলের ১০-১৫ কিমি ব্যাসার্ধের মধ্যে দর্শনও মেলে বাঘের। এমনকি যোগী মহল থেকেও বনের রাজার দর্শনলাভ অস্বাভাবিক নয়। তবুও দুর্গ বলেই সমধিক খ্যাত রণথম্বোর আজও।

পদম, রাজবাগ ও মিলাক ৩টি তালাও অর্থাৎ লেক আছে রণথম্বোরের পাহাড়ী ঢালে। বনচরুরা আসে লেকের জলে ডুকা মেটাতে। পর্যটকদের নিরীক্ষণ ক্ষেত্রও এই তিন লেক। তবে পক্ষে ভরা পদমই আকর্ষণে অনন্য। শীতের নাম-না-জানা পাখিরাও উড়ে এসে জুড়ে বসে লেকের পাড়ে। কুমিরও আছে লেকের জলে। বন, ঝাড়া পাহাড় আর লেক—এই তিনে মিলে পরিবেশ মধুময় করে তুলেছে রণথম্বোরের। নদীও বয়ে চলেছে পাহাড় বিধরে। ভারতের তৃতীয় বৃহত্তম বটবৃক্ষটিও এই জাতীয় উদ্যানে। হনুনা মাতিয়ে বেড়ায় বটের ডালে। অরণ্যপ্রেমীদের স্বয়ংরাজ্য রণথম্বোর।

পদম লেকের সামনে যোগীমহল, তার পেছনে জাতীয় উদ্যানের শিরে ধাপে ধাপে সিঁড়ি উঠে ৭০০ ফুট উঁচু পাহাড় চূড়ার রাজপুত স্থাপত্যের অপূর্ণ নির্দর্শন, রাজপুত বীরদের গাথা পোঁথে গড়া ছবির মতো রণথম্বোরের দুর্গ। প্রতিরক্ষার বেড়া জাল বিষয়ের উদ্রেক ঘটায়। নানান উত্থান-পতনের

মধ্য দিয়ে ক্ষমতা দখলের লড়াই চললেও দুর্গ ফেরে ঔরঙ্গজেবের মৃত্যুর পর মোগল থেকে জয়পুরের মহারাজার হাতে। সামনে তার পথে ভরা লোক—পদম তালো। তৈরি এটি ৫ শতকে মহারাজ জয়ন্তর হাতে। তবে, বীর হামীরের দুর্গ বলেই সমধিক খ্যাত। বীর হামীরের মৃত্যুর সাথে ধ্বংসও পায় দুর্গ আলাউদ্দিন খিলজীর হাতে। মধ্যযুগে চৌহান রাজপুতদের মূল ঘাটি ছিল চারপাশ দুর্ভেদ্য জঙ্গলে ঘেরা, প্রচীরে সুরক্ষিত পাহাড়ী দুর্গে। ৪টি তোরণ পেরিয়ে কেল্লায় প্রবেশ। মূল তোরণ—বড়া দরওয়াজা। শুধু নামে নয় আকারেও বড়, আর বর্ণাঢ্যও। এর বুরুজ ও গম্বুজগুলিও দর্শনীয়। দুর্গটি আজ ধ্বংসের কাল গুনছে। তারই মাঝে হামীরের রাজপ্রাসাদ, রানীমহল, রানীদের স্নানের তালো, হিন্দু স্থাপত্যের নিদর্শন—বারোয়ানওয়াল, রঘুনাতজী, লক্ষ্মী-নারায়ণ, দিগম্বর জৈন মন্দির, কেল্লার শীর্ষে জাগ্রত দেবতা বিনায়ক (কল্লভরু) গণেশ, কালী মন্দির ছাড়াও নানান হিন্দু আর্জও পর্যটকদের প্রশংসা পাচ্ছে। গণেশ চতুষ্টী উৎসবে ভক্ত সমাগমও ঘটে দূর-দূরান্ত থেকে আঞ্জও। তেমনই আকবরের প্রতিষ্ঠিত মসজিদ তথা দরগাটিও যথেষ্ট জাগ্রত। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা ৫ কিমি দূরের অনন্তপুরে নীলকান্ত মহাদেব অর্থাৎ শিব মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

আর, উচিত হবে গম্ভীর নদীর তীরে মহাবীরজী জৈনতীর্থ বেড়িয়ে নেওয়া। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা খননে পাওয়া চক্ৰবর্তী জৈন-তীর্থঙ্কর মহাবীরের মূর্তিকে নিয়ে মন্দির। চৌকোণা মন্দিরের সামনে উঁচু স্তম্ভ ও বিশাল দালান। জাতকের কাহিনী মূর্তি হয়েছে মন্দিরের দেওয়ালে। মহাবীর জয়ন্তীতে মেলা বসে—দূর-দূরান্ত থেকে ভক্তের দল ও পর্যটক আসেন। দিল্লী থেকেও ট্রেন আসছে মহাবীরজী। রেল স্টেশন থেকে বাস বা উটের গাড়িতে মন্দির সৌজন। জয়পুর থেকেও বাসে চলা যেতে পারে ঘণ্টাচারেকে। থাকাও আহার্য মেলে মন্দির লাগোয়া ধরমশালায়। আর উৎসবকালে দেবতা নগর পরিভ্রমণ বের হন রথে চড়ে। যাত্রীদের থাকারও বিশেষ ব্যবস্থা গড়ে ওঠে উৎসবকালে। দুর্গ দেখে সওয়াই মাধোপুর ফিরুন। সওয়াই মাধোপুর থেকে এবার চলুন রাজ্যের রাজধানী জয়পুরে। তবে ভরতপুরেও চলা যেতে পারে কোটা থেকে আসা ট্রেনে সওয়াই মাধোপুর থেকে।



Sawai Madhopur-322001, STD-07462-এ ভাল হোটেলের অভাব। তবে রেলের রিটায়রিং ক্লব থাকার পক্ষে ভালই। রেল স্টেশন থেকে বেরতেই বাঁয়ে বাজারিয়া বাজার এলাকায়—H Samrat, D ১৫০-২২৫; অদূরে H Parikh, D 20619, D ১২৫-১৭৫; H Ashu Lodge, D ৮৫-১৫০; আরও যেতে Mansarovar H, D 20370, D ১০০-১৫০; Tiger Heaven; Swagat H, R4, D 20601; একই পথে H Vishal, D 20504, রেল ষ্টাইণ্ডভারের কাছে H Pink Palace, DAB ৩০০-৪০০; Bhanwar Vilas Palace, D ১২০০। শহর থেকে উদ্যানমুখী পথে The Cave,

R3, বাথ সলংস বাঁতে ১৫০ প্রতিজনা; বন্ধ যেতে *The Sawai Madhopur L, R34, D 20541, S ১০৫ D ১৪৫ US\$; অরণ্যমুখী আরও যেতে Ankur Resort, D 20792, S ৪৫০-৬০০ D ৬৫০-৮০০ থাকার পক্ষে ভাল, ভেজ মিলে যথেষ্ট স্নান্য এদের, কল বুকিং: Span-D 2801209; অদূরে Anurag Resort, Hamir Wild Life Resort—দুইয়েরই মান ও দাম অল্পের তুল্য। আর কিমি দূরে RTDC-র H Kandhenu, N.P.R.D, Sawai Madhopur-I, R5, D 20334, SAB ৪০০ DAB ৬০০ ডর্মি ৫০, ব্যবস্থাপনা ভালই; আহাও মেলে ক্যান্টিনে। এদেরই Vinayak Tourist Complex, Ranthambhore, D 211619, A/c S ৪৫০ D ৫৫০ সুইট S ৭৫০ D ৯৫০; গাড়িও ভাড়ায় মেলে অরণ্য সফারি ও স্টেশন থেকে কামধেনু যাতায়াতে। আর আছে রেল স্টেশন থেকে ৭ কিমি দূরে মহারাজার অতীতের অতিথিশালায় RTDC-র H Castle Jhoomar Baori, Ranthambhore, D 20495, SAB ৫৫০ DAB ৬৫০ সুইট S ৭০০ ৮৫০ D ৯০০ ১২০০। বামহাতি Sherpur-এ Indian Adventures, এদের থাকা-খাওয়া নিয়ে A.P. প্রথায় চার্জ। তবুও যেন অরণ্যের বাদ পেতে ৩ কিমি উদ্যান অন্তরে পথে ভরা পদম লেকের সামনে মহারাজার হাফিং লঞ্চে ৪ ঘরের Jogi Mohal থাকার জন্য অনবধ্য। এদের চার্জ AP প্রথায় থাকা-খাওয়া নিয়ে প্রতি জনা ৮৫০; অব্: Field Director—Project Tiger. অফ সিজনে রিবেট মেলে এদের কাছে। তবে গত কিছুকাল দ্বার রুদ্ধ যোগী মহলে। রেলের রিটায়রিং ক্লবও আছে সওয়াই মাধোপুরে। আর জলপানের জন্য বাজারে ব্রজবাসী মিষ্টান ভাতারের মিঠাই ও নোনতার প্রশংসা আছে।

জয়পুর

লাল আর গোলাপী বেলেপাথরে তৈরি প্রাসাদনগরী জয়পুর পর্যটকদের কাছে এক স্বপ্নরাজ্য। আরাবল্লী পর্বতে ৪৩১ মি উঁচু জয়পুর পিঙ্ক সিটি নামেও খ্যাত। তবে ঋতুভেদে, সময়ের ব্যবধানে পিঙ্ক থেকে অম্বর, অরঞ্জ, অকার হয়ে থাকে ক্রমে ক্রমে। ১৮৭৬এ প্রিন্স অব ওয়েলসকে অভ্যর্থনা জানাতে সাদা বর্ডারে শহর রঞ্জিত হয় গোলাপী রঙে। সেই থেকে আইন করে প্রতিটি বাড়িতেই গোলাপী রঙ করার প্রথা চালু—অর্থাৎ শহরও সেজে ওঠে গোলাপী রঙে। রাজস্থানী সংস্কৃতিতেও গোলাপী অর্থে আভিধেয়তা বোঝায়। সূর্যাস্তকালে এর মায়ানী রূপ পর্যটকদের অভিভূত করে। প্রশস্ত রাজপথ, দু'পাশে প্রাসাদোপম বাড়িঘর, জানালায় সুন্দর জারফির কাজ—শুধু ভারত কেন, সারা বিশ্বে এমনটি খুঁজে মেলা ভার।

১৬৯৯এ মাত্র ১৩ বছর বয়সে সিংহাসনে বসেন জয়সিংহ দ্বিতীয় (১৬৯৯-১৭৪৪)। দিল্লীর মসনদে তখন ঔরঙ্গজেব। প্রথমত বালক জয় সিংহে গেলেন রাজদর্শনে দিল্লীতে। বালকের বুদ্ধিমত্তার খুশি হয়ে সওয়াই অর্থাৎ এক নয়—সওয়া একগুণ খেতাব গিলেন সবটাই। রাজধানী তখন অম্বর পাহাড়ে। কাজকর্মের সুবিধার জন্য রাজধানী নিয়ে আসেন তিনি সমতলে। ১৮ই নভেম্বর, ১৭২৭-এর

শুভক্ষেণে শুরু হয়ে গড়ে ওঠে নতুন শহর নিজ পরিকল্পনায়, ব্লু-প্রিন্টটিও একান্তই তাঁর। সঙ্গে অবশ্য দোসর ছিলেন বাঙালি স্থপতি বিদ্যাদ্যর ভট্টাচার্য। তবে মোগলী ও জৈন প্রভাব মেলে স্থাপত্যে। শুধু নগর পরিকল্পনায় নয়, জ্যোতিষশাস্ত্রেও জয় সিংহ ছিলেন পারদর্শী। সম্রাটের নিজস্ব আবিষ্কার—মানমন্দিরের জ্যামিতিক যন্ত্রে বিশ্বব্রহ্মাণ্ডের অতীত-বর্তমান-ভবিষ্যৎ নির্ধারণ। সে ১৭৩৪এর কথা, রাজার নাম থেকে শহরের নাম হয় জয়পুর। আজকের শহরের উত্তর-পূর্বে দেওয়ালে ঘেরা রক্ষ পাছাড়ে বেষ্টিত ছিল সেকালের জয়পুর। আয়তাকার ৯টি সেকটরে বিভক্ত ছিল বিশ্বে একমাত্র শহর জয়পুর। ৮টি পোল বা প্রবেশ ফটক ছিল শহরের। দেওয়াল লোপ পেলেও পোলগুলি রয়েছে আজও। পূর্বে সুর্য পোল আর পশ্চিমে চাঁদ পোল অর্থাৎ সূর্য ও চন্দ্র বংশ থেকে নামকরণ। প্রতিরক্ষার দিক থেকেও খুবই সুরক্ষিত ছিল জয়পুর সেকালে। আজ নবরূপে প্রসার পাচ্ছে দক্ষিণ-পশ্চিমে শহর। তবে, জয়পুরের ট্যুরিস্ট স্পট সবেরই অবস্থান পুরাতন শহরে।



শহরের প্রাণকেন্দ্রে জয়পুর রেল স্টেশন। সওয়াই মাধোপুর থেকে ১-৪৫, ৭-১০, ১৭-১৫র প্যাসেঞ্জারে বা ১-০০টার ২৩০৭ হাওড়া-যোধপুর এক্সে বা ১০-৩০র মুম্বাই-জয়পুর এক্সে বা ৬-২৫এ ত্রিসাপ্তাহিক চেন্নাই-জয়পুর এক্সে জয়পুর চলুন। প্যাসেঞ্জারে ৩ এক্স ট্রেনে ২ ঘণ্টার পথ। বাসও আছে এপথে। ট্রেন আসছে বিকানীর, যোধপুর, বাড়মের, আবু রোড, উদয়পুর ছাড়াও রাজ্যের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে জয়পুরে। ৬-১৫ ও ১৪-০০টার আজমের ছেড়ে ৯-৩৫/১৬-২০এ জয়পুর যাচ্ছে আজমের-জয়পুর এক্স, ১৯-৪৫এ আজমের-দিল্লী এক্স, ১৫-৪০এ আজমের-নিউ দিল্লী শতাব্দী এক্স; ১৭-৪০এ আজমের-জয়পুর পাা, ১৩-৩৫এ পূর্ণা-জয়পুর এক্স, ২-২৫এ ৭৬১৬ চেন্নক এক্স, ১৯-২৫এ আমোদাবাদ-দিল্লী মেল, ২-১০এ আশ্রম এক্স, বৃহস্পতিবার ৫-৩৫এ আজমের-বেরিলি এক্স, ১৯-০৫এ আগ্রা ফোর্ট এক্স আজমের ছেড়ে জয়পুর যাচ্ছে ঘণ্টা তিনেক। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে আরও নানান। ট্রেন আসছে ভারতের দিগ্বিদিক থেকেও জয়পুরে। আমোদাবাদ-আজমের-দিল্লী সরাই রোহিলা মিটারগেজ রেল পথের এক জংশন স্টেশন জয়পুর।

২৩-৩০এ হাওড়া ছেড়ে জয়পুর যাচ্ছে বেরিলি/তুওলা/সওয়াই মাধোপুর হয়ে ২৩০৭ হাওড়া-যোধপুর এক্স। জয়পুরের দূরত্ব ১৬৯৭ কিমি, সময় নেয় ৩৬ ঘণ্টা। তেমনই ১১৪১ চমল

এক্স প্রতি বৃহস্পতিবার ১৫-১৫য় হাওড়া ছেড়ে আগ্রা ক্যান্ট যাচ্ছে পরদিন ২০-৪০এ; প্রতিদিন ৯-৪৫এ উদ্যান-আভা-তুফান এক্সে হাওড়া ছেড়ে পরদিন ১৫-০৫এ আগ্রা ক্যান্ট পৌঁছে বাসে বা আগ্রা ক্যান্ট থেকে ১৭-০০টার সুপার ফাস্ট এক্সে ২২-১০এ (সার্ভিস সাময়িক রহিত) বা ১৩৪৬ দিন ১৭-২০এ বারাগানী, ২৩-১০এ লক্ষৌ, পরদিন ০-৪৫এ কানপুর, ৩-৫০এ তুওলা, ৫-২৫এ আগ্রা ক্যান্ট ছাড়া লক্ষৌ-যোধপুর মরুদ্বার এক্সে ১২-২০এ জয়পুর চলা যেতে পারে। আবার দিল্লীর নানান ট্রেনে তুওলায় বদল করেও সওয়াই মাধোপুর বা আগ্রা হয়ে জয়পুর যাওয়া চলে। পূর্বা এক্স ট্রেনটি আদরণীয় হবে তুওলা/আগ্রা হয়ে জয়পুর চলায়। তবে, ট্রেন বদলের ধকল থেকে অব্যাহতি পেতে দিল্লী জং পৌঁছে দিল্লী সরাই রোহিলা হয়ে যাওয়াই সুবিধার। ৫-১৫য় দিল্লী-জয়পুর এক্স, ১৭-০০টায় ইন্টারসিটি এক্স, ১৫-০৫এ আশ্রম এক্স, ২-০০টায় মাণ্ডোর এক্স, ২২-১০এ আমোদাবাদ মেল, ১৪-১০এ চেন্নক এক্স, ২১-৪০এ আজমের এক্স, ২৩-১০এ শেখাবতী এক্স, দিল্লী সরাই রোহিলা থেকে জয়পুর যাচ্ছে। দিল্লী থেকে ঘণ্টা আটকের পথ।

আর নবতম ব্রডগেজ লাইনে রবি ছাড়া প্রতিদিন ৬-১৫য় নতুন দিল্লী ছেড়ে আলোয়ার ৮-৩১, জয়পুর ১০-৩০এ পৌঁছে আজমের যাচ্ছে ১২-৪০এ ২০১৫ শতাব্দী এক্স। প্রতি শনিবার আমোদাবাদ রাজধানী এক্সও যাচ্ছে ১৯-৪৫এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ০-৪০এ জয়পুর পৌঁছে আমোদাবাদে।

জয়পুর থেকে মিটারগেজে দিল্লী সরাই রোহিলায় যাচ্ছে—শেখাবতী ১৮-০৫, চেন্নক এক্স ৬-০৫, আমোদাবাদ-দিল্লী মেল ২২-২০এ, আশ্রম এক্স ৪-৪৫এ; ব্রডগেজে দিল্লী জং যাচ্ছে ৬-০০টায় ৭৭১৭ জয়পুর-দিল্লী ইন্টারসিটি এক্স, ১৬-৩০এ ২৪১৪ জয়পুর-দিল্লী এক্স, ০-৪৫এ ২৪৬২ মাণ্ডোর এক্স; নতুন দিল্লী যাচ্ছে রবি ছাড়া প্রতিদিন ১৮-০০টায় শতাব্দী এক্স।

বিকানীর যাচ্ছে ২১-০০টায় জয়পুর ছেড়ে ৪৭৩৭ বিকানীর এক্স মেরতা রাডে হাওড়া-যোধপুর এক্সের সাথে জুড়ে পরদিন ৭-০০টায় ২৩৪৭ লিঙ্ক এক্স হয়ে, ১৫-২০এ জয়পুর ছেড়ে ফুলেরা/মেরতা রাড হয়ে ২২-২০এ বিকানীর যাচ্ছে ২৪৬৪ ইন্টারসিটি এক্স; ৫-০০টায় বিকানীর ছেড়ে জয়পুর ফেরে ১১-৫৫য় ২৪৬৭ ইন্টারসিটি এক্স। ১২-৪০এ জয়পুর ছেড়ে মিটারগেজে আজমের ১৫-৫০, চিতোর ১৯-৪৫, ইন্দোর ৪-২০, মউ ৫-১০, বাণ্ডোরা ৯-৫০এ পৌঁছে পূর্ণা যাচ্ছে ২০-২৫এ ৭৭৬৭ এক্স। ফুলেরা, আলোয়ার ও লোহাক যাচ্ছে নানান প্যাসেঞ্জার ও এক্স জয়পুর থেকে। বারাগানী যাচ্ছে ২৩৫৭ দিন ৯-০০টায় যোধপুর ছেড়ে ১৫-০০টায় জয়পুর, ২০-৫০এ মধুরা, ২১-৫৫য় আগ্রা ক্যান্ট, ২২-৪০এ আগ্রা ফোর্ট পৌঁছে তুওলা/কানপুর/লক্ষৌ হয়ে পরদিন

শিশু সাহিত্যের বিশ্ব ক্যাসিন



গ্রিম ভাইদের রচনাবলী

১০০

লুইস ক্যারল রচনাবলী

১০০

হ্যাল অ্যান্ডারসন রচনাবলী

১ম খণ্ড

৪৫

২য় খণ্ড

৩৫

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি

এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮

৯-৪০এ ৪৪৬৪ মরুয়ার এল। মরুয়ারের অংশ যাচ্ছে কাশগঞ্জ কানপুর ট্রাকের হয়ে। ১৯-১৫য় জয়পুর ছেড়ে পরদিন ৮-১৫য় জীপদানগর যাচ্ছে ৭৭১১ এল; ২৬ দিন ১৯-১৫য় জয়পুর ছেড়ে পরদিন ১১-২০এ অনুভবের যাচ্ছে ৭৭৭১ এল। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে জয়পুর থেকে বিকানীর ১০ ঘ, যোধপুর ৮ ঘ, বাড়সের ১৭২ ঘ, চিতোর, উদয়পুর, আলমের, আবু রোড ছাড়াও ভারত রাষ্ট্রের নানান সিকে।



তবে, জয়পুরের পথে বাস দ্রুতগামী বান আজও। রাজস্থান স্টেট রোড ট্রান্সপোর্টের বাসও যাচ্ছে রাজ্যের লিখিতিকে জয়পুর থেকে NH ৪ (দিল্লী-মুঝাই) ও ১১ (আগ্রা-বিকানীর) ধরে। মুঝাই বাস যাচ্ছে ২২ ঘটায় আজমের, ৪ ঘটায় ভরতপুর, দিল্লী যাচ্ছে ৫২ ঘটায়—১৫ মিনিট অন্তর দিন-রাত্রি জুড়ে, ডিলাস যাচ্ছে ১ ঘটায় অন্তর; চতীগড় ১৮-৩০, ১৯-৩০; গোয়ালির ১৬-০০, ১৮-০০, ২১-২৫; কানাবন ১৫-৩০; মথুরা ৬-৪৫, ৭-৪৫; ৪২ ঘটায় আগ্রা ৩-৪৫, ১৫-৩০, ১৬-৩০; ৭ ঘটায় বিকানীর যাচ্ছে ৫-৪৫, ১৯-৩০, ২১-৪৫, ২৪-০০; ৭ ঘটায় যোধপুর যাচ্ছে ৫-০০, ১১-১৫, ১৫-৪৫, ১৬-০০; যোধপুর হয়ে ১৪২ ঘটায় জয়সলমীর যাচ্ছে ২২-৩০; ১০ ঘটায় উদয়পুর ৬-৩০, ৭-৩০, ১৫-১৫, ১৮-১৫, ২১-০০; আবু রোড ১৯-৩০; চিতোরগড় ৭-৪৫, ১৪-১৫, ২২-০০; ভূপাল যাচ্ছে ১৮-০০টায় জয়পুর থেকে। রাত্রিকালীন সার্ভিসেও বাস যাচ্ছে এইসব দূরপাল্লার পথে। দিল্লীর কাশ্মীরী গেট থেকে সাধারণ যাত্রী বাস ও ইন্ডিয়া গেটের কাছে বিকানীর হাউস থেকে ৫২ ঘটায় নানানধর্মী বাস আসছে জয়পুরে, ডিলাস

ভাড়া ৯৬ সাধারণ ৫০। দূরত্ব ২৫৯ কিমি কোটপুতলী হয়ে আর আলোরার হয়ে ৩০৮ কিমি দিল্লী থেকে।

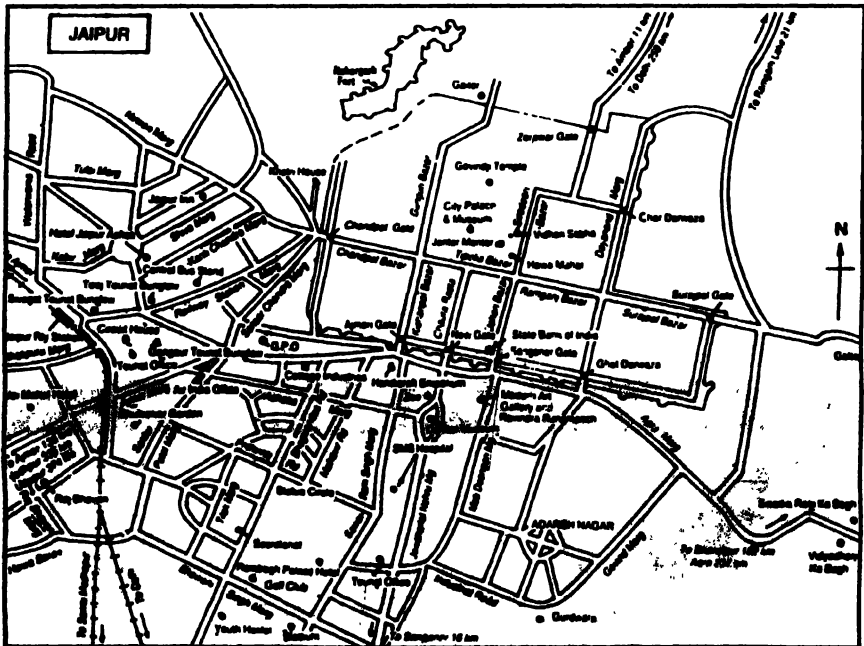
এছাড়াও হরিদ্বার

রোডওয়েজের বাস যাচ্ছে সেতাল বাস স্ট্যান্ডের সন্নিকটে হোটেল চন্দ্রগুপ্তর কাছ থেকে দিল্লী ছাড়াও উত্তর ভারতের নানান সিকে। নানান প্রাইভেট ডিলাস বাসও চলছে জয়পুর থেকে গুজরাট, মহারাষ্ট্র, মধ্য প্রদেশ, দিল্লী ও উত্তর প্রদেশের নানান সিকে। ছাড়াও এরা মতিলাল অটল বোডের হোটেল নিলাম-এর বিপরীত থেকে। Sindhi Camp Bus Stand : ০ Exp 363277, Deluxe ০ 375834.

| জয়পুর থেকে দূরত্ব | দিল্লী |
|--------------------|----------------|
| ২৫৯ কিমি | আগ্রা |
| ২২৮ | ভরতপুর |
| ১৭৬ | সরিকা |
| ১০৮ | আজমের |
| ১৩২ | চিতোর |
| ৩২০ | উদয়পুর |
| ৪০৭ | যোধপুর |
| ৩৪৩ | আবু পর্বত |
| ৫০৯ | জয়সলমীর |
| ৬৫৪ | বিকানীর |
| ৩২১ | সওয়াই মাথোপুর |
| ১৫৭ | আমেদাবাদ |
| ৬৬৪ | |



আর IAC-র বিমান দিল্লী যাচ্ছে ৪০ মিনিটে প্রতিদিন ২১-৩৫এ, দিল্লী ছেড়ে জয়পুর আসছে ২৪৬ দিন ১৭-৩৫, ১৩৫৭ দিন ৪-৪৫এ। কলকাতায় যাচ্ছে ১৩৫ দিন ১৯-৫০এ ছেড়ে ২২-১৫য়; ফেরে ১৬-০০টায় কলকাতা থেকে। মুঝাই যাচ্ছে ২৪৬ দিন ১৮-১৫য় ছেড়ে ১৯-০০টায় উদয়পুর, ২০-৩৫এ গুৱদাবাদ পৌঁছে ২১-৫০এ; ১৩৫৭ দিন ৬-৫৫য় ছেড়ে ৭-৪০এ উদয়পুর পৌঁছে ৯-২০এ; ১৩৫ দিন ১৯-



০০টার ছেড়ে ২০-০০টার আমেদাবাদ নৌদে ২১-৪০এ; জরপুর আসছে একই দিনগুলিতে একইভাবে। প্রাইভেট বিমান Damania Airways। 1357 দিন জরপুর-কলকাতা-মুম্বাই-মুম্বাই, 1357 দিন জরপুর-আমেদাবাদ-মুম্বাই-কলকাতা। East West, Tonk Rd, ৫12961 দৈনিক সার্ভিস গড়েছে মুম্বাই-জরপুরের মাঝে। Jet Airways-ও দৈনিক সার্ভিস গড়েছে মুম্বাই-জরপুর-মুম্বাই-এর।

IAAC-র সহযোগী বায়ুদপ্তর আছে দিল্লী থেকে জরপুর, যোশপুর, জয়সলয়ার, কোটা ও বিকানীরে। শহর থেকে ১ কিমি দূরে বিমানবন্দর। IAC-র কোচ, অটো ও ট্যাক্সি মেলে শহর যাতায়াতে। দপ্তর বসেছে: IAC, Tonk Rd, ৫14500; বায়ুদপ্তর দপ্তর গান্ধী ট্রিস্ট বালো-য়। শহরে চলছে রিকশা, অটো, টেম্পো, মিটারহীন ট্যাক্সি ও সিটি বাস। এদেরই মাঝে উটে টানা গাড়িও চলছে শহরে।



Jaipur-302001, STD-0141-এ রেল স্টেশন থেকে ১ ঘণ্টা পথ গিয়েছে—বারে স্টেশন রোড, আর ডাইনে মির্জা ইসমাইল অর্থাৎ M I Rd. হোটেলগুলিও মূলত গড়ে উঠেছে এই দুই রাজপথে। তবে মধ্যমানেসে হোটেলগুলিতে কমিশনের রাখা থাকে রিকশা ও অটোর সাথে। তারকাযুক্ত হোটেলগুলির সঙ্গে RTDC-র হোটেল ত্রয়ী, Jaipur Inn, Evergreen H, Arya Niwas, Atithi G H থাকার পক্ষে ভাড়াই। এদের কাছ থেকে কমিশন না মেলায় চালকরা বাস সাথে—এইসব হোটেলে যেতে। রেল স্টেশন আর বাস স্ট্যান্ড দুইয়ের ব্যবধান ১ কিমি। সংযোগকারী স্টেশন রোডের দুই প্রান্তে এরা। রেল স্টেশনের বিপরীতে Station Rd, Jaipur-302006-এ—RTDC-র H Swagatam, ৫00595, S ২৫০ D ৩০০ ডিলার S ৩৫০ D ৫০০ ৮ বেডের ঘর ৫০০ ডরমিটরি (ব্রেক ফাস্ট ও বেড টি সহ), কল বুকিং: Linkage ৫2465171. Station G H, Ashoka H, Asaam H, SCB ৬০ SAB ৮০-১০০ DCB ১২০ DAB ১৫০-২২৫; H Rawat, SAB ৮৫ DAB ১৬৫-২২৫, A-C D ৩৫৫; H Mamta, ৫378016, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৫০-২৫০ TAB ২৫০ A/C S ২৫০ D ৩২৫। শহরের দক্ষিণে ব্রিটিশ রেসিডেন্সিতে Raj Mahal Palace H, Sardar Patel Marg-1, A10R5B3, A/C S ৪৫ D ৮৫-১৫০ সুইট ১২৫-১৮০ US\$; H Mayur, H Rajhans, H Golden, opp Polo Victory, ৫66606, SCB ৮০ SAB ১০০-১৫০ DCB ১২০ DAB ১৫০-২২৫ A-C S ২২৫-৩০০ D ৩২৫-৪০০ ডরমিটরি ৫০; H Mahendra, SCB ৪৫ SAB ৬৫-৮৫ DCB ৮০ DAB ১০০-১২৫; H Mahabir, H Chandralok, SAB ৬০-৮৫ DAB ১২৫-১২৫; H Polo Victory, S ৮০ D ১৫০; Golden Inn, Viveknagar-6, R1½B1, SCB ৮৫ SAB ১৫০-২৫০ DCB ১৫০ DAB ২২৫-৩০০ A-C D ৩৫৫ ৪০০ ডরমিটরি ৫০।

বাসহাতি Matilal Atal Rd-1এ—Madras H, SCB ৫০ SAB ৮০ DCB ৮৫ DAB ১৫০ A-C S ২২৫ D ৩২৫; H Capital, H Ganesh, Rama H, SCB ৬০ DCB ১০০ DAB ১৫০-২০০; H Neelam, ৫72215, S ২৫০-৩২৫ D ২২৫-৩৫০ A/C S ৩৫০-৪২৫ D ৪৫০-৬৫০ সুইট ৮৫০; H Archana, SCB ৫৫ SAB ৮০ DCB ১০০ DAB ১৫০; বরোয়া পরিবেশ Atithi G H, ৫78679, I Park House Scheme, D ৩০০-৪৫০, খাল ও আশেপাশে প্রশস্তি আছে এদের; কল বুকিং: Linkage ৫2465171. আর দূরে রেল স্টেশন থেকে ৫ মিনিটের পথ Banerjee L, Power House Rd, Sen Colony, Jaipur-6, ৫313181.

RTDC-র কেন্দ্রীয় দপ্তর বসেছে হোটেল স্বাগতমে। কমপক্ষে ১০ দিন আগে অগ্রিম পাঠিয়ে রাখা জোড়া RTDC-র Tourist Lodge বুক করা যেতে পারে: Manager-Accommodation, RTDC, H Swagatam Campus, near Railway Stn, Jaipur-302006, ৫ (0141) 310586, Tlx: 0365-2479, Fax: 0141-316045 বা Sr Manager, RTDC, Bikaner House, New Delhi-110011, ৫ (011) 3383837, Tlx: 031-63142 RTDC—IN, Fax: 011-3382823 কে। এদের Mumbai ৫2044162, Calcutta ৫279051, Chennai ৫472093.

আর রেল স্টেশন থেকে বাসহাতি Sawai Jai Singh Highway অর্থাৎ বাণী পার্কে রেল ও বাস থেকে হাটা দূরত্বে—RTDC-র H Teerj, ৫374373, SAB ৪০০ DAB ৫০০ সুপার ডিলার S ৫৫০ D ৬৫০ ডরমিটরি ৫০; ITDC-র *H Jaipur Ashok-6, ৫75171, A14R1B1, A/C S ১১৫ D ২৩০০ সুইট ২৩৫, এপ্রিল-সেপ্টেম্বরে রিভেট মেলে; Jaipur Inn, ৫316157, A13 R1½B1, D ৩২৫-৬২৫ ডরমিটরি ৮০, ক্যাম্পিং-এরও ব্যবস্থা আছে; থাকা ও আহার দুইয়েরতেই প্রশস্তি এদের।

সওয়াই রাম সিং রোড শেষ হতে আন্ধারের গেটের ১ কিমি দক্ষিণে অতীতের দিল্লী ঠাকুরদের প্রাসাদ আর এক পল্লার Diggi Palace H, ৫373091, D ১২৫-৩২৫ A-C D ৪৫০-৬০০; ব্যবস্থাপনা ভালই—আহারেও সুনাম রয়েছে এদের।

Welcomgroup-এর *Rajputana Palace Sheraton, Palace Rd-6, ৫360011, A/C S ১২৫-১৮৫ D ১৫০-২২৫ সুইট ৩১০-২২৫ US\$; *H Mansingh, Sansar Ch Rd-1, ৫378771, A13R1½B1, A/C D ৩৫০০; *H Mangal, Sansar Ch Rd-1, ৫375126, opp Ambar Cinema, R1B1, SAB ২২৫-৩৫০ DAB ৩২৫-৪৫০ A/C S ৬০০ D ৮০০ সুইট ১০০০; H Mandawa House, Sansar Ch Rd-1, A15R1B0, ৫365398, A/C S ৪৫০-৬০০ D ৬৫০-৮০০। GPO-র কাছে ব্যবস্থাপনার ভাল *H Arya Niwas, S CRD-1, behind Amber Tower, ৫372456, H15R1½B1, S ৩০০-৪৫০ D ৫৫০-৬৫০ সুইট ১০০০; H Sikuri; বাগিচার বেরা H Bissau Palace, outside Chandrapole Gate-6, ৫310371, A15R1B1, S ৬০০ D ৮৫০ A/C S ১২৫০ D ১৫০০; H Megh Niwas, A-C D ৬০০ A/C ৮৫০ সুইট ১০০০; H Naturaj, near Polo Victory, R1½B1, S ২২৫-৩০০ D ৩৫০-৪২৫ A/C S ৬০০ D ৮০০; *H Khatri House, Chandrapole Gate-6, R1B0, S ৪০০ D ৬০০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ৮০০-১২৫০; National H, near Candrapole Gate, S ১০০-১৫০ D ১৫০-২৫০।

Civil Lines-6এ—Achrol L, A15R1½B2, ৫382154, A/C S ১২৫ D ১৫০০ সুইট ১২৫০; *Jai Mahal Palace H, Jaipur-6, A13R1½B2, ৫371616, A/C S ১৪০-১৬৫ D ১৬০-১৮৫ সুইট ২২৫-৪৫০ US\$; Man H, D ৪৫০; কালেক্টরের পিছে H Marudhara, D ৩০০; অদূরে H Mudhavan, A-C S ২৫০-৪০০ D ৩৫০-৬০০; হোটেল দুটির মান ও দায় দুইই আকর্ষণীয়। বিপরীতে Munal G H, Ajmer Marg, S ৩৫০ D ৪৫০।

Johari Bazar-3এ—*LMBH, A11R4B3, ৫565844, A/C S ৮২৫ D ১০২৫ সুইট ১২২৫, এদের রেজিস্ট্রারসিও ব্যবস্থা প্রশস্তি স্বরূপে; Kailash H, SCB ৮০ SAB ১২৫ DCB ১৫০ DAB ২২৫ A/C S ২২৫ D ৪৫০।

সেন্ট্রাল বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে Vanasthali Marg-1এ—
H Shalimar, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ২০০-৩২৫ A/c D ৩২৫-
৪৫০; H Kohinoor, S ১৭৫-২৫০ D ২৫০-৩২৫ A/c S ৪০০-
৫৫০ D ৪৫০-৬৫০; H Goyal, D ৩০০-৪২৫ সুইট ৬০০;
H Gaurav, H Kumar, H Sagar, H Purohit, H
Chandranahal, এদের কাছে S ২৫০ D ৩৫০ থেকে মেলে। H
Chandra Vilas, opp Bus Std, ৩ 376181, SCB ৮০-১২৫
DCB ১২৫-১৭৫, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ২০০-২৭৫ A/c D
৩২৫-৪৫০; বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে H Jai Mangal Palace,
৩ 378901, S ২০০-৩৫০ D ২৭৫-৪৫০ A/c S ৬০০ D ৮০০;
কল বুকিং: ডায়মন্ড ট্রাস, ৩০ যদুনাথ সে রোড, কল-১২,
৩ 2259639; H Chandragupta, H Indraprastha, H
Shekhawati, এদের S ১৫০-৩০০ D ২২৫-৩৫০ টাকায় মেলে।

MI Road-এ—ভক বাংলা, Circuit House, RTDC-র H
Gangaur, ৩ 371641, A/c S ৪৫০ D ৫৫০ A/c S ৬০০ D
৭০০; এদেরই Tourist H, R3B1, ৩ 360238, S ২০০ D ২৫০
ডিলার S ২৭৫ D ৩৫০ ডর্মি ৫০; RTDC-র H Durg Cafeteria,
Nahargarh Fort, ৩ 320538, DAB ৫০০। Evergreen H, opp
GPO, DCB ১২৫ DAB ২০০-২৭৫ ডর্মি বেড ৪৫ ব্যবস্থাপনা
ভলই; Savvy H, R3B2, SAB ১৫০ DCB ২০০ DAB ২৫০
A/c D ৪৫০; York H, R2B1, S ১০০-১৭৫ D ১৭৫-২৫০;
H Imperial, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; Chowdhury
H, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২৫০; বাগিচার মাঝে অতীতের রাজস্থান
স্টেট গেস্ট হাউস অর্থাৎ মিনি প্রাসাদে *H Khusa Kohli,
৩ 375151, A/c S ৭৫০ ৮০০ ১১০০ D ১০৫০ ১৩০০ ১৫০০
সুইট ২২৫০ ২৭৫০; Jaipur Emerald H, near Rly Stn,
৩ 378632, S ৪০০ D ৫৫০ A/c S ৬০০ D ৮০০; Kaiser-
Hind, near Rly Stn-6, SAB ২২৫ DAB ৩৫০ A/c S ৩২৫ D
৬০০।

এছাড়াও রয়েছে সারা শহরময়—*Ramgarh L, Jamuva
Ramgarh-9, ৩ 262217, S ৬৫ D ৮৫ সুইট ১৩৫ US\$; শহর
থেকে দূরে *H Clark's Amer, Jawaharlal Nehru Marg-18,
৩ 550616, A4R12B10, A/c D ১১০-১২৫ সুইট ১৪৫ US\$;
*H Mera Palace, Sawai Ram Singh Rd-4, ৩ 371111,
A/c S ১২৫০ D ১৭৫০ সুইট ২৭৫০; শহরের দক্ষিণে আর এক
প্রাসাদে *H Narain Nivas Palace, Kanota Bagh, Narain
Singh Rd-4, ৩ 561291, A/c D ১৫৫০ সুইট ২৫০০; বেডবে
অন্য মহারাজা মানসিংহ কিত্যায়র পোলা প্রাসাদে *Rambugh
Palace H, Bhawani Singh Rd-5, A11R4B2, ৩ 381919,
A/c S ১৬৫ D ১৮৫ সুইট ২৮৫-৬০০ US\$; H Shib Rani, C-
84, Prithviraj Rd, A10R5B4, S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S ৪০০
D ৬৫০; Luxoni Vilas H, A11R5B5, সওয়াই রাম সিং রোড,
৩ 381569, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০;
Deluxe Madhu Jamini, D ২৭৫-৪৫০; Ksheer Sagar, Pink
City H, S ১০০ D ১৫০-২৭৫; পুরাতন শহরের উত্তর-পূর্ব ২০০
বছরের প্রাচীন সামোথের রাওয়ালসের টাউন হাউসে Samode
Haveli, Gangapole, ৩ 540370, S ১২৫০ D ১৫০০ সুইট
২৫০০; Samode Palace, D ২২৫০-২৭৫০; *H Aditya, 2
Bhawani Singh Rd, near Udyog Bhawan-5, ৩ 381720,
A/c S ৮৫০-১২৫০ D ১২৫০-১৭৫০; *Jaipur Palace H,
Tonk Rd-15, ৩ 512961, D ২০০০ সুইট ২৭৫০। আর রয়েছে

Deluxe, Park H, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫; Rajdeep H,
Bapu Bazar, S ১২৫ D ২২৫ FR ৩০০ A/c ৪০০ থেকে; H
Samrat, Amber Rd, S ১০০ D ১৭৫; Hind, SMS Highway;
Sadhana H, D ১২৫-২০০; H Raj, near Sindhi Camp Bus
Stand, D ১৫০-২৫০; *H Broadway, Agra Rd-302004,
A16R8, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০; *Rajmahal
Palace Heritage, Sardar Patel Marg-1, ৩ 381757, S ৮৫
D ১০৫ US\$; ছাড়াও হোটেল আছে আরও নানান। এদের কাছে
৮০-২২৫ টাকায় সিঙ্গল আর ১৫০-৩৩৫ টাকায় ডাবল বেডের
ঘর মেলে। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য ম্যানেজারদের লিখুন।

৭ দিন ৮ রাতের মহারাজা

ভারতীয় রেলের সহযোগিতায় RTDC-র অভিনব ১৩
সেলুলে ১০৪ জন যাত্রীর ব্যবস্থা নিয়ে চলমান রাজপ্রাসাদ Pal-
ace-on-Wheels ট্রেন যাচ্ছে সেপ্টেম্বর থেকে এপ্রিলের প্রতি
বুধবার ৮ রাত ৭ দিনের সফরে নতুন দিল্লী থেকে জয়পুর-
চিতোর-উম্মেরপুর-সওয়াই মাথোপুর-জয়সলমীর, যোধপুর-
ভরতপুর-আগ্রা দেখতে। সবরকম ব্যবস্থা সহ ৫ তারা হোটেলের
বিলাস নিয়ে রাজস্থানী শৈলীতে অলঙ্কৃত ট্রেনের যাত্রী ভাড়া একক
থাকায় ৪২৫ US\$, দু'জন থাকায় ৩০০ US\$, তিনজন থাকায়
২৪০ US\$ প্রতিদিন প্রতিজনা। ৫-১২ বছরের শিশুদের আধা।
আর সেপ্টেম্বর ও এপ্রিলে ভাড়া যথাক্রমে ৩৪০/২৫০/২০০
US\$। ভারতীয়দের সম মূল্যের ভারতীয় টাকায় টিকিট মেলে।
বুকিং: সেন্ট্রাল রিজার্ভেশন অফিস, জনপথ, নয়া দিল্লী,
৩ 3321820, বা Sr Manager, Palace on Wheels, Tour-
ist Reception Centre, Bikaneer House, ND, ৩ 3351884
বা Sr Manager (Palace on Wheels), Rajasthan Tourist
Dev Corp Ltd, Hotel Swagatam, Jaipur, ৩ 319531

Vatika Resort, A/c D ১২৫০; Kanchandep, A/c D
১২৫০; Maya Inter Continental A/c D ২২৫০; Royal
Castle Palace, D ১৫০০। শহর থেকে দূরে ৬০ বেডের Youth
Hostel, behind SMS Stadium, A11R5B4, ৩ 67576, SAB
৪৫ DAB ৬৫ সভ্য ১০/ ১৫ ডর্মি ১২ / ৬, তবে দ্রুত হতে এড়িয়ে
চলেন লোক: অবু: Tourist Officer, রেলের বিটায়ারিং রুমও
আছে জয়পুরে। আর আছে ধরমশালা—Panchayati Damodar
Bhavan, Sattailvaonki, Bakshiji, Modiji, Jaulle-
Agarwala Bhavan, Soroaj Bhavan, Gerta Bhavan,
Gujarat Samaj, ঘরের জন্য এদের কাছেও দেখা যেতে পারে।

তেমনই সড়ক যাত্রায় আহার-বিশ্রাম-বিশ্রামের সুবিধা দিতে
RTDC Motel গড়েছে M Barr, Midway Barr, Jaipur-Jodhpur,
৩ (02937) 4224, S ১৫০ D ২০০; Jaipur-Udaipur NH
11য় M Deogarh, ৩ (02951) 52011, S ২০০ D ২৫০ দিনের
৬ ঘণ্টা ১৭৫; M Dholpur, Agra-Gwalior NH, ৩ (05642)
20006, D ২২৫ Cottage ২৫০; M Deeg, S ২৫০ D ৩০০
দিনের ৬ ঘণ্টা ২০০; M Mahuva, ৩ (07461) 4260, S ২২৫
D ৩২৫; M Sawan, Bhadon (Behror), Jaipur-Delhi NH 8,
৩ (01494) 20049, S ২০০-৪৫০ D ২৫০-৬০০ দিনের ৬ ঘণ্টা
১৭৫-২৫০; M Gulabpura, Jaipur-Bhilwara-Chittor,
৩ (01483) 23645, D ১৭৫; M Chinkara, Ratanagarh,
Bikaner-Jaipur NH, ৩ (01567) 22286, S ২২৫ D ১২৫; M
Ratanpur, Udaipur-Ahmedabad NH, ৩ (07461) 4260, S

১৭৫ ২৫০ D ২৫০ ৩০০; M Shahpura, Jaipur-Delhi NH ৪, ৩ (01422) 22264, S ২৭৫ D ৩৫০ দিনের ৬ ঘণ্টা ২০০; M Godawan, Pokaran, ৩ (029942) 2275, S ২০০ ২৫০ D ৩০০ ৩৫০ দিনের ৬ ঘণ্টা ২০০ অর্থাৎ প্রতিটি জাতীয় সড়কে।

জয়পুরে Paying Guest প্রথাও থাকার ব্যবস্থা মেলে। শতাধিক বাড়িতে ঘরোয়া পরিবেশে ২৫০-৪৫০ টাকায় দুইবেডের ঘর মেলে। আগ্রহীদের উচিত হবে রাজস্থান টুরিজম বা ভারত সরকারের টুরিস্ট অফিসে সরাসরি যোগাযোগ করা।

আহার: ননভেজ রাজপুত আর ভেজ মাড়োয়ারি—তাই হোটেলও হয়েছে ভেজ ও ননভেজ দুইয়েরই সমন্বয়ে জয়পুরে। স্বাদ নিতে পারেন রাজস্থানী কুষ্টিতে সৃষ্টি *Dal-Buti-Churma* বা ননভেজ মেনু *Soola-r*। তবে, ভারতীয়, চীনা ও কন্টিনেন্টাল আহারের নানান ব্যবস্থা নিয়ে চলতে-ফিরতে হোটেল-রেস্তোরাঁ হয়েছে জয়পুরের পথেঘাটে। Johari Bazar-এ শীতাতপ *LMV (Laxmi Mishthan Bhandar) Hotel টি বিশেষভাবে উল্লেখ্য। আহার্য এদের নিরামিষ। তেমনিই এদের মিষ্টির সাথে কুলফি মালাই-এরও প্রসিদ্ধি আছে। ৮—২৩-০০টা খোলা। 305.6 Johari Bzr-এ *Royal's Fast Food*-এরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি।

আর M I Road-এ শীতাতপ **Chanakya Restaurant* টি দুপুর ১২-০০ থেকে রাত ২৩-০০টা ভারতীয় ও কন্টিনেন্টাল আহার্য পরিবেশনে সদাই ব্যস্ত। GPO-র বিপরীতে *Kwality Restaurant* (মসলবার ছাড়া)-এর স্বল্প মূল্যে দেশী-বিদেশী আহার্য পরিবেশনে যথেষ্ট সূচ্যাত। তবুও যেন **Nirus Restaurant* টি তদুন্নী, মোগলাই, চীনা ও কন্টিনেন্টাল আহার্য পরিবেশনে স্থানীয় ও পর্যটক মহলে যথেষ্ট আদৃত। ৯-৩০—২৩-০০টা খোলা মেলে নিরোস। দামে কিঞ্চিৎ আধিক্য ঘটলেও মান যথেষ্ট ভাল। নিরোস লাগোয়া *Nataraj Restaurant* টিরও (৯-০০—২৩-০০) নিরামিষ আহার্য পরিবেশনে সূচ্যাত আছে। নানানধর্মী মিষ্টিও মেলে এদের কাছে। *Surya Mahal* আর এক নিরামিষ রেস্টুরেন্ট এদেরই পাশে। তেমনিই টিফিনের সাথে কফির স্থান নেওয়া যেতে পারে *Indian Coffee House* এ। আর চীনা ভিশের স্বাদ নিতে উচিত হবে নিরোসের পাশে গলিপথে *Golden Dragon Chinese Restaurant*-এ চলা।

তেমনই M I Rd ও Ajmer Rd সংযোগে *Hundi Restaurant /Bamboo Hut-*এ কাবাব ও তদুন্নির স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। আর রেল স্টেশনে রেলের *রিফ্রেশমেন্ট রুম* সদাই ব্যস্ত স্বল্প মূল্যে আহার্য পরিবেশনে।

Sansar Chand Rd-এ হোটেল মানসিংহ-এর **Shivir*-এরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি (১২-৩০—১৪-৪৫ ও ১৯-৩০—২৩-৪৫) ভারতীয় আহার্য পরিবেশনে; তেমনই হোটেল মঙ্গল-এর *Rituraj Restaurant*-টিও নিরামিষ আহার্য পরিবেশনে যথেষ্ট সূচ্যাত। বাস স্ট্যান্ডের কাছে স্টেশন রোডে চম্পুগু হোটেলের *Vaishali Restaurant*-এরও আহার্যে যথেষ্ট সূচ্যাত।

কনডাক্টেড ট্যুর: Rajasthan Tourism Development Corpn, Hotel Swagatam Campus, near Rly Station, Jaipur-302006, ৩ (0141) 310586, Tlx 0365-2479, Fax: 0141-316045 আয়োজিত দু'টি ট্যুরে শহর দেখাবার ব্যবস্থা আছে। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়ার মেলে এদের কাছে।

TNo —1: Hawa Mahal, City Palace, Museum, Observatory, Central Museum, Amber Palace দেখিয়ে আনে

৮—১৩-০০, ১১-৩০—১৬-৩০ ও ১৩-৩০—১৮-৩০টা; ভাড়া ৬০ করে।

TNo —2: জয়পুর, নাহারগড় যাত্বে সকাল ৭-০০টা সরানিদের সফরে ৯০ টাকায়।

TNo —3: রবি ও ছুটির দিনে জয়পুর ও রামগড় যাত্বে ৬০ টাকায় সকাল ১০-০০ টায়।

বুকিং: Tourist Officer, Rly Stn Platform No 1, ৩ 69714 (৬—২০-০০) বা RTDC, Transport Unit, ৩ 60239, M I Rd, opp GPO বা RTDC-র টুরিস্ট বাসোত্রী। এছাড়া Govt of India Tourist Office, Hotel Khasa Kothi ৩ 372200 (রাজস্থান স্টেট হোটেল, সোম থেকে শুক্রবার ৯—১৮-০০, শনিবার ৯—১৩-০০) থেকে ITDC, ৩ 368461-এরও একইভাবে শহর দেখাবার ব্যবস্থা আছে। এমনকি দিল্লী থেকে এসেও ITDC দিনে দিনে জয়পুর বেড়িয়ে ফেরে।

আর যাত্বে অক্টোবর থেকে মার্চে দিল্লী থেকে RTDC প্রতি সোমবার ৬ দিনের প্যাকেজে মেবার অর্থাৎ জয়পুর-চিতোর-উদয়পুর-রণকপুর-আজমের-পুঙ্কর দেখাতে ৪২০০ টাকায়, শিও ২৯০০। প্রতি মঙ্গলবার হাওয়া মহল ট্যুরে যাত্বে ৩ দিনের সফরে ২২০০, শিও ১৫০০ টাকায় আগ্রা-ভরতপুর-দীঘ-সরিকা-জয়পুর বেড়াতে। ১ম ও ৩য় বৃহস্পতিবার ১৫ দিনের ট্যুরে রাজস্থান প্যাকেজে যাত্বে ৮৯০০ টাকায়, শিও ৬২০০। প্রতি সোমবার ৭ দিনের প্যাকেজে যাত্বে ৪৮০০ / ৩৪০০ টাকায় ডেজার্ট সার্কিট অর্থাৎ বিকানীর-জয়সলমীর-ঝোথপুর-আজমের-পুঙ্কর সফরে। প্রতি বৃহস্পতিবার ৪ দিনের সফরে ৩০০০ / ২১০০ টাকায় যাত্বে সরিকা-রণকপুর-ভরতপুর-ফতেপুর দিল্লী-আগ্রা দেখাতে। প্রতি শুক্রবার ৩ দিনের সফরে Golden Triangle অর্থাৎ শিলিশেড়-সরিকা-জয়পুর-ভরতপুর-ফতেপুর দিল্লী-আগ্রা প্যাকেজে যাত্বে ২২০০ টাকায়, শিও ১৫০০। এমনকি LTC ব্যাটারের সুযোগ-সুবিধাও মেলে এদের ট্যুরে। তেমনই Rajasthan Tourism Development Corporation Ltd, Bikaner House, Pandara Rd, New Delhi-110011, ৩ 3383837, Telx: 031-63142 বা RTDC, Chandralok Building, 36 Janpath, New Delhi-110001, ৩ 3321820 বা Jaipur ৩ 317052 বা RTDC, 2 Ganesh Ch Avenue, 1st floor, Calcutta-700013, ৩ 279740 এদেরও যোগাযোগ করা যেতে পারে প্রয়োজনে।

কেনাকাটা: তবে, সিটি প্যালেস/স্বত্ব মন্ডর/হাওয়া মহল পাশাপাশি অবস্থান এদের; তাই এককভাবে রিকশা/টাক্সি/অটো/টারিডে সৌধে দেখে নেওয়া যেতে পারে ভ্রমী। প্যাকেজ ট্যুরের সময় বসন্তায় অসম্ভবও হয়ে পড়ে দেখে ওঠা। এরপর অবশ্র বান নতুন করে বাসে হাওয়া মহল থেকে। বাস যাত্বে যথার্থ, সময় নেয় আধঘণ্টা। আর হাওয়া মহলের ডাইনে জহরী বাজার (অলঙ্কার), সামান্য এণ্ডেই বাপুজী (সুগন্ধী দ্রব্য ও টেক্সটাইল জাত), ব্রিপোশি (ব্রাস ও কার্ভি জাত পণ্য) অর্থাৎ পুরাতন জয়পুরের শপিং সেন্টারও দেখে নিতে পারেন পায়ে পায়ে। আর নতুন করে প্রসার পাচ্ছে শহর জয়পুরের দক্ষিণ-পশ্চিমে M I Road-এ। আধুনিক সাজের নানানধর্মী দোকানপাটও পসরা সাজিয়েছে নানান পেশার মিজ। ইসমাইল রোডে। এনামেল করা পট্টাশ্র ও কুন্দন ও বাহুরে লারির নানান জিনিস, বিদ্যরী কাকর্বাধর নানান সন্ডার, ব্রক ট্রিট ও বাধুন শাড়িরও যথেষ্ট প্রশস্তি জয়পুরে। উচিতও হবে রত্নখচিত অলঙ্কারের জন্য জহরী

বাণীবেশ Haldion Ka Rasta বা Gopalji Ka Rasta-র সেকানপাট চলা। তেমনই M I Rd-এ Rajasthan Government Emporium-এও চলা যেতে পারে যে কোনও রাজহানী পণ্য সংগ্রহার্থে। এদের মান ও দাম দুয়েতেই নির্ভরতা বেশী। ১০-৩০—১৯-৩০টার খোলা। রবিবার বন্ধ থাকে জয়পুরের সেকানপাট। আর উম্মেখা GPO-র বিপরীতে State Bank of Bikaner and Jaipur শাখায় ১৪—১৮-০০টার ব্যাকিং কাজকর্মের সুবিধা মেলে।

প্রাসাদ তো নয়—রীতিমতো ছোটখাট এক শহর জয়পুরের নগর প্রাসাদ বা সিটি প্যালেস। মূল শহরের এক সপ্তমাংশ ছুড়ে রাজহানী ও মোগলী স্থাপত্য শৈলীতে গড়ে উঠেছে এই প্রাসাদপুরী। চত্বর মহল নামেও সমধিক খ্যাত এই প্রাসাদ। চারপাশ দেওয়ালে ঘেরা। প্রবেশপথ এর দুই। মূল প্রবেশপথ—পূবে শিরে কি সেউড়ি, আর দক্ষিণে ত্রিপোলিয়া দরওয়াজা। ঢুকতেই দু'পাশে অফিস-কাছারি, লোক-লব্ধর। সওয়াই জয় সিংহর হাতে ১৭৩৪এ প্রাসাদ তথা দুর্গটি তৈরি হলেও, পরবর্তীকালে বিভিন্ন মহারাজার হাতেও নতুন নতুন মহলের সংযোজন ঘটেছে। এর মূবারক মহলটি ১৯০০য় সওয়াই মাধো সিং দ্বিতীয়র তৈরি। খেত-গুজ মূবারক মহলের পাথরের কারুকার্য সুন্দর। অতীতের গেস্ট হাউসে সেক্রেটারিয়েট বসলেও আজ রাজ পরিবারের আবরণ ও আভরণ প্রদর্শিত হয়েছে। আর হয়েছে রুক টাওয়ার। ডাইনে সিংহ পোল। মর্মরের হাতি পোল পাথরায় রত। আরও যেতে ব্যক্তিগত দর্শনের দেওয়ানী খাস—মর্মরের গ্যালারি। আর দেওয়ানী আসনে রয়েছে মহারাজার মূল্যবান চিত্রের সংগ্রহ ও দৃষ্টাঙ্গ পৃথিবী সস্তার। আকবরের সভাসদ আবুল ফজলের মহাবীরতের পার্সি অনুবাদ *রাজা মনাকং* সংগ্রহের মধ্যে উল্লেখ্য। ভূর্জপত্রে বাংলায় লেখা মহাবীরতও প্রদর্শিত হয়েছে।

এরই উত্তর-পশ্চিমে প্রাসাদের মধ্যমণি দুর্গ ধবল মার্বেল পাথরের ৭তলা চত্বর মহলে মহারাজার অতীত প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছে। পর্বটকপ্রিয় চত্বর মহলের প্রথম ও দ্বিতীয় তলায় সুন্দর সংগ্রহ নিয়ে মহারাজা সওয়াই জয় সিংহ ২ মিউজিয়ম বসেছে। হাতির দাঁতের হাওড়া, নৌকা-বিশেনী কার্পেট, অস্ত্রশস্ত্র ও রাজ পরিবারের বসনের সস্তার উল্লেখ্য। রাজহানী-মোগল-পারসীর শৈলীর ছবি ও নকশার এর প্রতিটি ঘর সুশোভিত। কাতে মোড়া দেওয়াল, গিলারে ভর-করা অর্ধবৃত্তাকার ফিলান; কারুকার্য নরনাতিরাম। সুন্দর জালি ঢাল গ্যালারি হয়েছে রাজ পরিবারের মহিলাদের সজা দেখার জন্য। প্রাসাদের শিরে মুকুট মন্দির। মন্দির থেকে দুর্গ ও চারপাশের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান। শিলেখানা অর্থাৎ অঙ্কণারের সংগ্রহও উল্লেখ্য। ৫ কিলো ওজনের মান সিংহের তরবারি, জাহাঙ্গীর ও শাহজাহানের তরবারি ছাড়াও নানান অস্ত্রের সস্তার রয়েছে শিলেখানায়। বাইরে বিশ্বের বৃহত্তম রূপোর জলাধারটিও সুন্দর। মহারাজার পানীয় জল বেত ইংল্যান্ড ভ্রমণে এই জলাধারে। ছুটি ছাড়া ৯-৩০—১৬-

৩০টা ৩০ টাকার টিকিট লাগে প্রাসাদ দেখতে, ছাত্রদের রিবেট মেলে; গাইডও মেলে ২৫ টাকার।

চত্বর মহল থেকে উত্তরে প্রাসাদ বাগিচায় গোবিন্দজীর মন্দির। ঔরঙ্গজেবের হাত থেকে রক্ষা করতে সওয়াই জয় সিংহ বৃন্দাবন থেকে গোবিন্দজীকে এনে প্রতিষ্ঠা করেন। সেই থেকে বাজলি গুজারীর হাতে গুজা পাহেচন গোবিন্দজী অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ। অর্পণ শ্রীমণ্ডিত কণ্ঠিপাথরে দণ্ডায়মান এই দেবমূর্তি। বাকি প্রাথম ১০-০০, ১১-৩০ ও ১৮-০০ টায় ১৫ মিনিটের দর্শন। মহারাজার উত্তরপুরুষ বাসও করছেন প্রাসাদের এক অংশে।

জ্যোতির্বিজ্ঞানী সওয়াই জয় সিংহর হাতে তৈরি ৫টি যন্ত্রর মন্দির অর্থাৎ মানমন্দির হয়েছে সারা ভারতে। বৃহত্তমটি হয়েছে সিটি প্যালেস চত্বরে ১৭২৮এ। বাকি চার—দিল্লী (১৭২৪), বারানসী, উজ্জয়িন ও মথুরায়। বিজ্ঞানের যুগে আবেদন কিছুটা কীর্যমান হলেও ১৯০১এ সংস্কার হয়ে আজও নিরুত্তভাবে স্থানীয় সময়, সূর্যের অবস্থান, দ্রাঘিমাংশ, অক্ষাংশ, দ্রবতারা, তারকা, উপগ্রহের গতিপথ, গ্রহণের নিখুঁত হিসাব ধরা পড়ে যন্ত্রর মন্দিরে পাথরের ১৮টি জ্যামিতিক যন্ত্রে। ক্রিম রঙা বিরটিকার সূর্যছড়ির কাটাটি ৩০ মিটার দীর্ঘ। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ৯—১৬-৩০ টায় মানমন্দির খোলা; টিকিট ৪ করে।

চত্বর থেকে বেরুতেই সেকানপাট রেখে সামনেই বায়ে হাওয়া মহল অর্থাৎ হাওয়ার প্রাসাদ। জয়পুরের আর এক আকর্ষণ নগর প্রাসাদের কাছে এই হাওয়া মহল। ১৭৯৯ খ্রিস্টাব্দে মহারাজা সওয়াই প্রতাপ সিংহ এটি তৈরি করান। তৈরি যদিও ৫৯৩টি পাথুরে পদার্য রাজ-মহিষীদের রাজপথ দেখার জন্য, তবে এর অর্থ অষ্ট-ভূজাকার ঝোলানো গবাক, জালির কাজ, ছাদ, গম্বুজ, সব কিছুতেই বৈচিত্র্য আছে। অদ্ভুত এর স্থাপত্য, পেছনের ৩৬০টি জনালি দিয়ে ঠাণ্ডা হাওয়া এসে মহলকে শীতল করেছে—যন্ত্র ছাড়াই বাতানুকূল ব্যবস্থা। পিক রঙা বেলে পাথরের ৫ তলা বাড়িটি দেখতে অনেকটা পিরামিডের মতো। সকালের সূর্যের আলোয় আরও বিমোহিত হয়ে ওঠে হাওয়া মহল। ২ টাকার টিকিটে ৯—১৬-৩০ টায় মহল শিরে উঠে শহর তথা চারপাশ দেখে নেওয়া যায়।

পুরাতন শহরের দক্ষিণে রামনিবাস উদ্যানে গড়ে উঠেছে জয়পুরের ঝাড়ুঘর। শ্রিল অ্যালবার্টের জয়পুর ভ্রমণকে স্মরণীয় করে তুলতে সওয়াই রাম সিংহর হাতে শুরু হয়ে শেষ হয় সওয়াই মাধো সিংহর হাতে মিউজিয়ম তথা অ্যালবার্ট হল। খরচ পড়ে ৪৯৪৫৪৪ টাকা। তবে তারও আগে ১৮৮১তে মিউজিয়মের জন্ম। নতুন বাড়িতে স্থানান্তর সেপ্টেম্বর ১৮৮৬ আর ষারোদশটন ফেব্রুয়ারি ২১, ১৮৮৭। বেলে পাথর আর খেত মর্মরে তৈরি ভবনটিও স্থাপত্য শিল্পের নিদর্শন হয়ে ঝাড়ুঘরের আকর্ষণ বাড়িয়েছে। ইন্দো-সেরাসেনিক শৈলীতে তৈরি। বৈচিত্র্য আছে এর ছাদ, গম্বুজ

ও অলিন্দে। প্রত্নতত্ত্বের অভাব ঘটলেও মহারাজাদের তৈল চিত্র, নানান চিত্রকলা, বসন-ভূষণ, মডেলে শতাধিক যোগী, স্টাফড জীবজন্তু, রাজহানী সমাজজীবন, হাতির দাঁতের নানান শিল্প, কার্পেট, ব্রাসের কাজের সংগ্রহ পর্যটকদের দেখে নেওয়া উচিত। শুক্রবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৬-৩০টায় খোলা, টিকিট ২।

মিউজিয়মের দক্ষিণে নেহরু মার্গ শেষ হতে ব্যক্তিগত সংগ্রহের ইনডোজিজি মিউজিয়ামটিও আর এক অনন্য দর্শন জয়পুরে। রাজহানী লোকগাথার নানান নিদর্শন, চালের উপর ভারতের মানচিত্র, ঔরঙ্গজেব ছাড়াও নানান পাণ্ডুলিপি, বসন, ভূষণ, ফসিল, ঘড়ি, মুহার সংগ্রহ উল্লেখ্য। প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় দর্শন, টিকিট ১০।

জয়পুরের চিড়িয়াখানাটিও বসেছে রামনিবাস উদ্যানে। পরিখায় ঘেরা নীলাকাশের নিচে বাঘ-সিংহ চরে বেড়ায়। আর আছে ক্রোকোডাইল ব্রিডিং ফার্ম। অদূরেই জয়পুরের আর্ট গ্যালারি। আর মুক-বধির স্কুল চত্বরে ডলস মিউজিয়ামটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। শহরের নবতম দর্শন মার্বেল কার্ভিং-এ অনবদ্য বিড়লা মন্দির।

শহর থেকে ৬.৫ কিমি দূরে ১৭৩৪এ জয় সিংহ দ্বিতীয়র তৈরি নাহার গড় বা সুন্দর গড় দুর্গ। শহরের প্রহরীও ছিল ৬০০ ফুট উঁচু খাড়া শৈলশিয়ার এই দুর্গ। ৪ তলা দুর্গের ২টি তলা মাটির নিচে। পর্যটক আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও চতুর্ভুজিত মনোরম পরিবেশ। সুব্যস্ত ও সুন্দর। অম্বর থেকে জিপ বা রিকশায় ১২ কিমি পাহাড় চড়ে ভ্রমণ করে আসুন নাহার গড় বা টাইগার ফোর্ট।

আর অম্বরের পথেই ৬২ কিমি যেতে নাহার গড় দুর্গের নিচে গৈতর অর্থাৎ মহারাজাদের সমাধিভূমি। মনোরম বাগিচার মাঝে ৫ চুড়োর স্মৃতিসৌধের কারুকার্যও সুন্দর। খোদাই করা ময়ূর শোভিত খেত মর্মরের জয় সিংহ দ্বিতীয়র সমাধিটি খুবই সুন্দর। পাশেই পুর শায়িত।

এরই বিপরীতে ১৭৯৯তে মানসাগর হ্রদের জলে প্রতাপ সিংহের তৈরি জল মহল অর্থাৎ গ্রীষ্মাবাস। লেকের মাঝে ৫ তলা বাড়ির ৪টি তলা জলের নিচে, ৫ম তলাটি জলের উপর দৃশ্যমান। সাকো-ধর্মী পথ হয়েছে যাতায়াতের।

শহরের ১০ কিমি পূবে গলভা। কথিত আছে গলভ খাবি তপস্যা করতেন এই গলভায়। পাশেই পাহাড়। সূর্যগেট থেকে ২২ কিমি পায়ে চড়ে পাহাড় শিরে মন্দির—সেবতা সূর্যসেব। মন্দির থেকে শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। তবে, চলার পথে বানর থেকে সতর্কতা বাছনীয়। সুযোগ পেলেই জিনিসপত্র এমনকি ক্যামেরাকেও কিডন্যাপ করে খাবার আদায়ের অহিলায়।

শহর থেকে ৮ কিমি দক্ষিণে আগ্রা রোডে ১৭৭৪এ গড়া শিখোদিয়া রানীর বাগান। বাগিচার মাঝে জয় সিংহের দ্বিতীয় স্ত্রী শিখোদিয়া (মেবারের) রানীর প্রাসাদ। সওয়াই জয় সিংহের তৈরি, ফোয়ারার সুশোভিত প্রাসাদের দেওয়ালে কুকগাথা ও শিকারের রঙিন ম্যুরাল চিত্র অনবদ্য।

তেমনই উল্লেখ্য সওয়াই মানসিংহের তৃতীয়া পত্নী গায়ত্রী দেবীর তৈরি মুক্তা বা মোতির মহল মোতিডুংগী।

শহর থেকে ১৬ কিমি দক্ষিণে জয়পুর-আজমের সড়কে সঙ্গানের। ১৫০০ খ্রিস্টাব্দের জৈন মন্দির, প্রাসাদ তথা অতীত শহর সবই আজ ধ্বংস। মন্দির প্রবেশেও বিধি-নিষেধ নানা। তবে, অভিনব পদ্ধতিতে ব্লক ছাপা ও হস্তকাজ কাগজের জন্য সঙ্গানেরের প্রসিদ্ধি। বিলাসবহুল কটেজ রিসর্ট হয়েছে বিমানবন্দরের কাছে সঙ্গানের-এ।

রানীর বাগানের বিপরীতে অদূরেই বিদ্যাধর জী কাশ্যাপ। বাঙালি স্থপতি বিদ্যাধর ভট্টাচার্য ছিলেন জয়পুর শহর পরিকল্পনায় জয় সিংহের প্রধান স্থপতি। স্মারক রূপে সুন্দর বাগিচা হয়েছে শহর থেকে ৭ কিমি দূরে।

তেমনই জয়পুরের ৪২ কিমি উত্তরে সামোদেও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। জয় সিংহ ২-এর অর্থমন্ত্রী সামোদে প্যালেসের জন্য সামোদের প্রস্তুতি। শেখাবনি শৈলীতে গড়া ৩ ধাপে প্রাসাদের দেওয়ানিখালের ছবি ও কাচের অলঙ্করণ অম্বর থেকেও সুন্দর। দেওয়াল সিলিং সবই চিত্রময়। চারপাশ ঘিরে বৃহৎ গড়েছে পাহাড়। তবে আজ হোটেল বসেছে অংশে—H Samode Palace, Samode-303806, S ১২৯৫-১৫০০ D ২০০০-২৫০০; আহারও মেলে পৃথক দামে; প্রশস্তিও আছে এদের আহারে। জয়পুর বুকিং: ৫ 540370.

শহরের আর এক আকর্ষণ আজমেরী গেট থেকে ১৯ কিমি দূরে Chokhi Dhani. আহার-বিহার, লোক সংস্কৃতির নানান পশরা নিয়ে মনোরঞ্জনের যাদুপুরী গড়ে উঠেছে। মিউজিয়াম হয়েছে রাজহানী বিশেষ করে জয়সলমীর ও মেবারের সাংস্কৃতিক বৈভবের। ঘোড়া ও উট চলছে যাত্রী নিয়ে। বোট-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। পুতুল নাচেও রাজহানী জীবন-মান প্রদর্শিত হয়েছে। দোকানপাটও বসেছে—হাতের কাজ দেখা ও কেনারও ব্যবস্থা মেলে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ডিলার্স কটেজে। বুকিং: জয়পুর ৫ 550118. টিকিট লাগে ৮০ টাকার যাদুপুরী দর্শনে—শিশুদের রিবেট মেলে। শহর থেকে ৩৩ কিমি দূরে রামগড় লেকটিও আর এক দর্শন। বাঁধ হয়েছে—বাঁধের জলে লেক। অতীতের রয়্যাল হাটিং লঞ্জে রামগড় লঞ্জে বসেছে। লঞ্জে জয়পুর বুকিং: ৫ 381919. আর হয়েছে RTDC-র Jheel Tourist Village, Ramgarh Lake ৫ (01426) 2370, ডাবল বেডের হাট ৩০০।

অম্বর: তবুও যেন জয়পুরের অন্যতম আকর্ষণ শহর থেকে ১১ কিমি উত্তর-পূবে জয়পুর-দিদী রোডে জাগীর অর্থাৎ অম্বর বা কাছাওয়া অম্বর। মাওটা লেকের পাড়ে আরাববী পর্বতের ঢালে সিলিয়ার রঙের পাহাড় শিরে প্রাসাদ বা দুর্গ। ১৭২৭এর ১৭ই নভেম্বর জয়পুরে হানাভরের আগে অম্বর ছিল কাছাওয়া রাজপুতদের রাজধানী। এমনকি দিদিয়ার বাঘনা আকবর এই বংশেরই রাজকন্যা, মানসিংহের যোন বোধাবদিকে শানি করেন। অতীতে নাম ছিল এর খুবদর রাস্তা, মীনা সান্দ্যারের বাস। অবাখ্যার রাজা জী রামচন্দ্রের কনিষ্ঠ

পূর কুশের বংশধর এরা। সম্ভবত গৃহদেবতা অধিকেশ্বর শিব বা অথোয়ার রাজা অশ্বরীষ থেকে শহরের নাম হয়ে থাকবে অশ্বর।

জয়পুর থেকে কনডাকটের ট্রাকে বাটান্সি/অটো/ বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। হাওয়া মহল থেকে মুহম্মদ বাসও যাচ্ছে আধ ঘণ্টায় অশ্বর। আর ১০০ টাকায় ৪ ঘণ্টার রাজকীয় হাতি যাচ্ছে বাস স্ট্যান্ড থেকে খাড়া ঢাল বেয়ে প্রাসাদ-দ্বারে; জিপও যাচ্ছে প্রতিজ্ঞা ২০ হারে। আবার পায়ে পায়েও পাহাড় চড়ে পৌঁছে যাওয়া যায় শ'পাঁচেক ফুট উঁচুও প্রাসাদ-দ্বারে। চলার পথে লাসুর বানরেরা স্বাগত জানায়। ৯— ১৬-৩০ টায় খোলা, টিকিট ১০ শিও ৫।

রাজপুত স্থাপত্যের এক অপূর্ব নিদর্শন এই অশ্বর প্রাসাদ। ১৫৯২এ মান সিংহর হাতে শুরু হয়ে শতাধিক বছর পর সওয়াই জয় সিংহর হাতে সম্পূর্ণতা পায় প্রাসাদ। দ্বিমতে, ৯৬৭ খ্রিস্টাব্দে রাজা ঢেলো রায়ের হাতে ক্ষেত্রার পত্তন। তবে, ১৫৯৯-১৬১৪য় মান সিংহর রাজত্বকালে সমৃদ্ধি আসে অশ্বরে। অতীত জলুস আজও অমলিন; মোগলী ছাপ রয়েছে এর স্থাপত্যে। বিশাল দরজা দিয়ে ঢুকে প্রাঙ্গণ পেরিয়ে সিঁড়ি বেয়ে উপরে উঠতে ডাবল দরওয়াজা—নাম তার সিংহ পোলা। আর এই সিংহ পোলে পেরুতেই প্রাসাদের শুরু। সিংহ পোলের পেছনে যশোরেশ্বরী অর্থাৎ বাংলার দেবী—কালী।

শিলাদেবী নামে,
ছিলা তাঁর নামে
অভয়া যশোরেশ্বরী

মথুরাতে কংসরাজার রসস্থলে শিলারূপে দেবীর অধিষ্ঠান। ছাপর যুগে কংস এই শিলাখণ্ডে দেবকীর সন্ধানদের আছড়ে মারত। তেমনভাবেই যোগমায়া বধ কালে শিলা থেকে অষ্টভূজা হয়ে দেবীর আবির্ভাব। আর বাংলার প্রতাপাদিত্য সেই শিলা থেকে দেবীমূর্তি গড়ে সঙ্গে নেন যশোরে। আরও পরে মান সিংহ বাংলা জয় করে দেবীকে অশ্বরে আনেন। সেই থেকে শক্তি সাধনার প্রতীক এই দেবী। সেকালে মেঘ-মহিষ-ছাগের সাথে নরবলিও হত দেবী সম্মুখে। রাজা সওয়াই জয় সিংহের বিধানে নরবলি বন্ধ হতে রুস্তৌ দেবী মুখ ফিরিয়ে নেন বামে। সেই থেকে বামে ছেলা দেবী। অতীত সুন্দর শ্বেত মর্মরের অষ্টভূজা এই দেবী মূর্তি, দর্শনে দেহ-মন রোমাঙ্কিত হয়, লোল জিভ নেই দেবীর—পদতলে শিবও অনুপস্থিত। ব্যাস-রিলিফ প্যানেলে শোভিত রূপার দরজা, মন্দিরটিও কারুকার্যময়।

সামান্য একওড়েই বাঁয়ে মির্জা রাজা জয় সিংহ প্রথমে তৈরি দেওয়ানী আম অর্থাৎ প্রজাদের সঙ্গে মহারাজার মিটিং হল। তিনদিক খোলা, ধূসর বর্ণের ছাদ দাঁড়িয়ে আছে সারি সারি ৪০ স্তম্ভের উপর। স্তম্ভের শিরে হাতির সূক্ষ্ম কারুকার্য সুন্দর। সারা হল—এই ঘটেছিল রাজপুত স্থাপত্যের অভিনব সমাবেশ। লস্ট জাহাঙ্গীর ইবাধিত হয়ে এই অত্যাশ্চর্য কারুকার্যের উপর আত্মগর লাগিয়ে বিনষ্ট করেন।

এরপর ১৬৩৯এ সওয়াই জয় সিংহর তৈরি গণেশ পোল। এটিও সুন্দর চিত্রে শোভিত। এই পোল বাদরওয়াজা দিয়ে অন্দরমহলের পথ গিয়েছে। সুন্দর জাফরি মতিত জেনানা মহলাটিও অনন্য। মনোহর বাগিচার চারপাশে গড়ে উঠেছে জয় মন্দির, শিশু মহল, যশ মন্দির, সোহাগ মন্দির, সুখ মন্দির। প্রস্তর ও মণি-মাণিকা খচিত জয় মন্দির তথা দেওয়ানী খাস ভি আই পি মিটিং হল। যশ মন্দিরের কাছে মোজাইকে অভিনবত্ব আছে। অভিনবত্ব আছে শিশু মহলেও। শিশু মহল অর্থাৎ কানের মহল এটি। চারপাশের দেওয়ালে, উপরে, নিচে এমনভাবে সবুজ-কমলা-রক্তিম কাচ অর্থাৎ আয়না বসানো যাতে একটি বাতিকে লক্ষ বাতি দেখাবে। এটি তৈরি করেন মির্জা রাজা প্রথম জয় সিংহ। সোহাগ মন্দিরের জালির কাজের তুলনা হয় না। এর জানালা দিয়েই রানীরা রাজকীয় উৎসব পর্যবেক্ষণ করতেন। আর সুখ নিবাস অর্থাৎ প্লেজার হল—এর দরজায় হাতির দাঁত ও চন্দন কাঠের সূক্ষ্ম কারুকার্য পর্যটকদের বিমোহিত করে। শ্বেত মর্মরের খাঁজ বেয়ে খরনার শীতল জলে সেকালের বাতানুকূল ব্যবস্থাতেও অভিনবত্ব আছে। আর মেলে নির্মল বাতাস জাফরি দিয়ে।

এরপর মান সিংহর নিজস্ব মহল—এটিও দর্শনে উল্লেখ্য। হাতির দাঁতের কাজ, পাথরের কাজ, পাথরের উপর পেন্ডিলে আঁকা ছবির অভিনব সংগ্রহ রয়েছে। খাবার ঘরের দেওয়ালে রয়েছে সমস্ত তীর্থের আঁকা ছবির সম্ভার। অপূর্ব সুন্দর এই শিল্পকর্ম।

এছাড়া মন্দিরের পাদদেশে রয়েছে রাজা বিহারীমলের কালের শহরের ধ্বংসাবশেষ। আজকের পর্যটকদের অতীত আখ্যান শোনাতে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে আছে জগৎ শিরোমণির বৈষ্ণব মন্দির ও গুরুদুর্গমন্দির। আর রয়েছে রাজপরিবারের কারুকার্যময় স্মৃতিস্তম্ভ। পিলার ও প্যানেলে ব্যাস-রিলিফ প্রথায় নানান পৌরাণিক কাহিনী, শিকারচিত্র, ঢোলামারুর উপাখ্যান চিত্রিত হয়েছে।

প্রাসাদের নিচে বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে মাওটা লেকের পাড়ে দিলারাম উদ্যানে রাজাদের অতিথিশালায় বসেছে পুরাতত্ত্বের সংগ্রহশালা। অতীতের রাজহানী শিল্পসম্ভারের সংগ্রহও রয়েছে এর আর্কিওলজিক্যাল মিউজিয়ামে।

আবার উৎসাহীরা অশ্বর থেকে পায়ে পায়ে জয়পুরের উত্তর-পশ্চিমে পাহাড় চুড়োয় ১৭২৬এ তৈরি জয়গড় অর্থাৎ দি কোর্ট অব ডিস্ট্রিক্ট বেড়িয়ে নিতে পারেন। দ্বিমতও আছে নানান জয়গড়ের নির্মাণ নিয়ে। রাজহানী শৈলীতে গড়া জয়গড় ছিল শত্রু পর্যবেক্ষণের ওয়াচ টাওয়ার। তেমনই সোওয়াই জয় সিংহর কোবাগারও ছিল এই জয়গড়। ৯—১৬-৩০টায় দেখে নেওয়া যায় জয়গড়ের অন্ধভাঙার, সেনানিবাস, ২০ ফুট লম্বা ২৫০ টনের বিশ্বের বৃহত্তম কামান, অস্ত্র তৈরির কারখানা, জলাধার, ধনাগার ছাড়াও নানান কিছু। গড়ের দিবা মিনার থেকে সারা উপত্যকাও সুন্দর দৃশ্যমান। দর্শনী ১০ করে।

জয়পুর থেকে ১১ কিমি দূরে জয়পুর-আগ্রা সড়কে হিন্দীতীর্থ বালাজীও উচিত হবে বেড়িয়ে চলা। ভারতপুর, দিল্লী থেকেও বাস আসছে বালাজী তীর্থে।

জয়পুরের আর এক আকর্ষণ তার ঝলমলে গান্ধুর উৎসব। হোলির পরদিন (মার্চ-এপ্রিল) শুরু হয়ে ১৮ দিন ধরে চলে এই উৎসব। ত্রিপোলিয়া গেট থেকে মিছিল বের হয়। শিবজায়া দেবী গৌরী পুরোহা হয়ে আসেন মিছিলের—চলেছেন বাপের বাড়ি থেকে শ্বশুরালয়ে। হোলির আর এক আকর্ষণ হাতি উৎসব। চৌগান স্টেডিয়ামে ঝলমলে সঙ্গে আবির্ভাব রঞ্জিত হয়ে প্রতিযোগিতার অংশ নেয় অর্ধ শতাধিক হাতি। রঙ দেয় একে অন্যকে। ঠিক তেমনই মনসুনে (জুলাই-আগস্ট) তীজ আর নভেম্বরের ২৭ পিঙ্ক সিটির জম্মোৎসব-এরও পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য। তেমনই আকর্ষণ রয়েছে ফেব্রুয়ারি-মার্চের এলিফ্যান্ট পোলো আর মুসলিম উৎসব মহরমের তাজিয়া মিছিলের। রাজ্য পর্যটন আয়োজিত প্রতি বৃষের সন্ধ্যায় জয়পুর অশোক ও শনিবার হোটেল খাসা কোটির সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানও উচিত হবে দেখে নেওয়া। এছাড়া নিয়মিত সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানের আসরও বসছে রামনিবাস বাগের রবীন্দ্র মঞ্চে। দুই দিনে জয়পুর বেড়িয়ে ভারতপুর বা আলোয়ার চলুন।

ভরতপুর



গত কিছুকাল মিটারগেজ রেল ব্রডগেজ রূপান্তর হতে গিয়ে জয়পুর থেকে ভারতপুরের মিটারগেজ ট্রেন সার্ভিস পরিত্যক্ত। তবে মুম্বাই-দিল্লী ব্রডগেজ রেলের সওয়াই মাধোপুর থেকে ৩-৫০এ পশ্চিম এক্স, ৪-৩০এ মুম্বাই-ফিরোজপুর জনতা এক্স, ১২-৫৫এ গোয়েন্দা টেম্পল মেল, ২১-৩০এ মুম্বাই-দেহাদুন এক্স, ০-২০এ ইন্দোর-নিজামুদ্দিন এক্স যথাক্রমে ৬-১০, ৭-৫০, ১৫-৩০, ০-৫০, ২-৪০ভ ভারতপুর হয়ে যাচ্ছে। রাউলপুর-হজরত নিজামুদ্দিন প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে ১৫-৫৫য় সওয়াই মাধোপুর ছেড়ে ৬ ঘটায় ভারতপুরে। দূরত্ব ১৮২ কিমি। ৮-০০ও ১৫-৩০এ আগ্রা ফোর্ট ছেড়ে ২ ঘটায় ভারতপুর আসছে আগ্রা ফোর্ট-বন্দীকুই প্যাসেঞ্জার; আগ্রা ফোর্ট যাচ্ছে ৯-১৫ও ১৬-৪০এ ভারতপুর থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেন।



বাসও আসছে নানান আগ্রা ফোর্ট ও দিল্লী জং থেকে মথুরা হয়ে ভারতপুরে। এছাড়াও ট্রেন ও বাস সংযোগ গড়েছে রাজ্যের বিভিন্ন প্রান্তের সঙ্গে ভারতপুরের। পূর্ব ভারত থেকে সরাসরি যাত্রার হাওড়া-যোধপুর এক্সে সওয়াই মাধোপুর পৌঁছে চলায় সুবিধা। দিল্লী-আগ্রা রোডে ভারতপুরের টুরিস্ট বাথোমাটিও বাস সড়কে। মুম্বাই বাসও যাচ্ছে ভারতপুর থেকে ১ ঘটায় মথুরা ৩৪ কিমি, ২ ঘটায় আগ্রা ৫৫ কিমি, ২½ ঘটায় আলোয়ার ১১৬ কিমি, ২ ঘটায় ফতেপুর সিকি ১৭ কিমি, ৪½ ঘটায় জয়পুর ১৭৬ কিমি, ৪½ ঘটায় দিল্লী ১৭৭ কিমি। তাই ভারতপুর থেকে মথুরা বেড়িয়ে আগ্রায় চলা যেতে পারে বাণীও বেড়িয়ে দিল্লী চলুন বাসেই। যাতায়াতে বাসই সুবিধার এপথে। নিকটতম বিমানবন্দর আগ্রা।

প্রাক্তন দেশীয় রাজ্য (জাঠ) ভারতপুরের রাজধানী শহর ২৫০ মি উঁচু ভারতপুরে। ১৭৩০এ মহারাজা সুরযমল

ভরতপুর শহর গড়েন। আর শহরের মধ্যমণি হয়ে দুর্গটি প্রতিষ্ঠা পায় ১৭৩৩এ। ১১ কিমি দীর্ঘ, দুই প্রস্থ প্রাচীরও ৫০ ফুট গভীর পরিখায় ঘেরা দুর্গের প্রবেশপথ ২টি—উত্তরে অষ্টপতি ও দক্ষিণে লোহিয়া পোল। লোহিয়া পোলের সোনা ও রূপোর কাজ করা মেহগনি কাঠের দরজাটিও আসে দিল্লী জয়ের স্মারকরূপে ১৭৬৫তে দিল্লী থেকে। তোরণের দু'ধারে গোল বুরুজ। মোট ৮টি বেষ্টিনী আছে কেল্লাকে ঘিরে। কঠিন, নিরেট আর দুর্বোধ্য বলে ইতিহাস খ্যাত দুর্গের নামও হয়েছিল লৌহগড়। আমজনতার হাতে অল্প দিলে রামদলও গড়েন বদন-পুত্র সুরযমল। সুরয-পুত্র জওহর সিং মোগলদের হারিয়ে স্মারকরূপে জওহর বুরুজ আর ১৮০৫এ ব্রিটিশ আক্রমণ প্রতিহতের স্মারকরূপে গড়ে ওঠে ফতে বুরুজ। তবে, পতনও ঘটে ৪ মাস অবরোধ গড়া ব্রিটিশেরই হাতে ১৮২৫এ। মিত্রতা গড়ে প্রথম নেভি রাস্ট্র ভারতপুরের সঙ্গে ব্রিটিশ (ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি)। দুর্গের দুর্ভদ্রাতা দেখে ব্রিটিশ নাম দেয় The fort of victory আর শহর হয় City of victory, বৃত্তীর ধরনে গড়া। তবে, আজ প্রাচীরলুপ্ত, অতীতের কারুকার্যও লোপ পেয়েছে; আর উপনিবেশ বসেছে দুর্গময়। আর বসেছে সরকারি দপ্তর দুর্গের মহলে মহলে। রেল স্টেশন থেকে ৪ কিমি দূরে ৯—১৭-০০টায় দশনী ছাড়া দেখে নেওয়া যায় দুর্গ। ১৯৪৪এ কিশোরী মহলে গড়া দুর্গের মিউজিয়ামটিতে কুবাণকালের সংগ্রহ প্রদর্শিত হলেও সুদামর কম পর্যটকদের কাছে। তবে, অন্তঃপুরে জাফরির কাজ অনবদ্য। শুক্রবার বন্ধ থাকে মিউজিয়াম। আর হয়েছে বর্ণাঢ্য লছনমজিকা মন্দির, গুপ্তামহারানী মন্দির, নেহরু পার্ক ও গান্ধী পার্ক লৌহগড় দুর্গে।

মোগল বিতীষিকা ভারতপুর আজ তার পক্ষী-আলয়ের জন্য WWF-এর Sight (1984) তালিকায় অন্যতম। রেল স্টেশন থেকে ৭, আর শহর থেকে ৩ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে ২৯ বর্গ কিমি উষর ভূমি জুড়ে জল জমতবসায়। বর্ষা শেষে জল যেত শুকিয়ে। সারা বছর জল পেতে খাল কেটে জল এল—সেই সাথে পাখিরা এল দেশ-দেশান্তর থেকে। মহারাজাও মেতে উঠলেন সপায়িষদ পাখি শিকারে। রেকর্ড গড়ে ১৯৩৮এ একদিনে লর্ড লিনলিথগোর নেতৃত্বে এক শিকার পাটির ৪২৭৩টি পাখি শিকার। কালে কালে পক্ষী-আলয়। কেওলাদেও শিবের নামে নাম হয়েছে কেওলাদেও ঘানা পক্ষী-আলয়। মহারাজাদের দীর্ঘ ২০০ বছরের শিকারভূমি ১৯৫৬-য় স্যাকচুয়ারি আর ১৯৮১তে জাতীয় উদ্যানের শিরোপা পরেছে। The Bird Man of India ড. সেলিম আলির উদ্যোগে শিকারও বন্ধ হয়েছে আইনের বিধানে ১৯৬৪তে। ২২৭৬মি বৃক্ষে ১২৭৬মি পরিব্যাপী নিয়ে ৩৬০ রকমের পাখির দর্শনও মেলে ভারতপুরের লেক আর বিলে। তবুও যেন ভারতপুরের কোহিনূর—সাইবেরিয়ার সাবস, শুধু পাখিই বা কেন—ভারতীয় কৃষ্ণসার মৃগ, ডিল, শীলগাই, বন্য ভান্ডুক, প্যাছারও সহ-অবস্থান করছে পক্ষী-আলয়ে।

সারস, বক, নানানধর্মী সামুদ্রিক পক্ষী, ডাঙ্ক, কাস্টেচরা, শামুকখোলা, সোনাডুবা, সাপা কাক, লাল কাক, পেলিক্যান, ৮০০খ্যী হাঁস ছাড়াও রক্তবেরঙের শতাবিক প্রজাতির পরিবারী পাখি সমূহ মধ্য এশিয়া, আফগানিস্তান, সাইবেরিয়া, তিব্বত, চীন থেকে শীতের শুরুতে এসে আশ্রয় নেয়, বাসা বাঁধে বাবলা গাছে এই কেওলাপেও ঘানায়। আর আসে ভারতীয় বাবাবরী পাখির দল। পক্ষী-প্রেমিকদের কাছে স্বর্গবিশেষ ভরতপুর।

মরসুম অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি মাস। তবে, ডিসেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারির প্রথম সপ্তাহের প্রত্যহ বা গোখুলি পাখি দেখার আকর্ষণীয় সময়। ৬—১৮-০০টায় খোলা। বহিনোক্লার সঙ্গে থাকায় পাখি চেনায় সুবিধা। লেকের জলে সূর্যাস্ত ও সূর্যর। বনে প্রবেশে যাত্রী প্রতি ভারতীয় ৫ অভ্যন্তরীণ ২৫, রিকশা ৫ টাঙা ১৫ গাড়ি ৭৫/১০০ মিনি বাস ৭৫ বাস ১০০ হারে লাগে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। এক ঘণ্টার সফরে ৪ জনের বোট ৪০ হারে। লেকের জলে বোট ভেঙ্গে বাবলা গাছে পাখিদের ঘর-সংসার দেখায় আনন্দের আনন্দ মেলে। আর মেলে পাখি চেনাতে গাইড ৪০ টাঙ্কার। গাইড না নিলেও বোট বেড়িয়ে নেওয়া একান্তই উচিত হবে যাত্রীদের। যথেষ্ট যাত্রী হলে ট্যুরিস্ট বাবলো থেকে প্রত্যহ ২০ হারে মিনিবাস যাচ্ছে বনবিহারে। আবার একক ব্যবস্থায় রিকশায় বা পায়ে পায়ে সাজ করা যায় এসফ। আর লাগে কামেরার চার্জ মন হারে। অটো, টাঙা ও রিকশা চলে শহরে।



Bharatpur, STD 05644-এ ভাল প্রাইভেট হোটেলের অভাব। তবে পক্ষী-আলোয় মহারাজার শিকারাবাসে ITDC-র *Bharatpur Forest L, ৩ 22760, R8, অক্টোবর থেকে এপ্রিল মাসে A/c S ১১২৫ D ২৩৯৫ মে-সেপ্টেম্বরে রিবেট মেলে। লজ থেকে বন দূরে Shanti Kutir Forest R H, SAB ৪০০ DAB ৬০০ A/c S ৬৫০ D ১৫০, আহার মেলে ক্যান্টিনে। অব: Dy Chief Wild Life Warden, Keoladeo National Park, Bharatpur-312001. বনদপ্তরের অফিসও বসেছে শান্তিকুটরে।

পক্ষী-আলয়ের প্রবেশ ফটকে—RTDC-র H Saras, Fatepur Sikri Rd, ৩ 23700, RS B1, S ৩০০ ৪৫০ ৬০০ D ৩৫০ ৫৫০ ৭০০ ডব্লিউ ৫০, থাকার পক্ষে ভালই; অব: Tourist Officer. সারসের পাশে H Spoon Bill, ৩ 23571, D ৩২৫ F ৪৫০। সারসের বিপরীতে Sanctuary Rd-এ—H Sun Bird, ৩ 24211, D ৪০০-৬৫০; Eagles Nest, ৩ 25144, DAB ৩০০-৪৫০; H Pelican, ৩ 24221, DAB ২২৫-৪৫০; H Pratap Palace, ৩ 24245, DAB ৩০০-৮৫০; মন হারে দাম অধিক এসে। Chandra Mahal Haveli, D ১৫৫০; বন দূরে Bambino G H, DAB ৩০০ ডব্লিউ ৫০ দু'বেড়ের তাঁবু ১৫০। আরও খেতে আগ্রা রোডে Gulbagh Palace H, ৩ 23349, S ১৫০-২২৫ D ২৫০-৩২৫; H Heritage, Luxurious Palace H, ৩ 25250, DAB ১৫০০-২৭৫০। পার্কের সন্নিকটে Neemda Gate-এ—H Paradise, ৩ 23791, S ২২৫ D ৩৫০।

আর সাধারণ সাজে বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে শহরে রয়েছে—H Nund Tourist, SCB ৮০ SAB ১২৫ DCB ১৫০ DAB ১৭৫-২২৫; H Tourist L, ৩ 23742, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A-c S ২৫০ D ৩৫০; Gobind Niwas GH; Kohinour H, DAB ১৭৫; H Park Palace, near Kumher Gate, ৩ 23222, DAB ৩০০ থেকে; H Alora, ৩ 22616, Kumher Gate, S ১২৫ D ২০০; H Avadh, ৩ 22462, Kumher Gate, S ১০০ D ১৭৫; Shagun Tourist Home, inside Mathura Gate, D ১৫০-২২৫; H Tourist Complex, Bharatpur Motel, Sainik Vishram Griha, CH, D B-৩৫০ ঘর মেলে যাত্রীর।

আর রয়েছে ধরমশালা—Kamsen, Kotwali Bazar; Agarwal Bhaban, near Kinni Ghat; Khandelwal Ki Dharamshala, Sunaron Ki and Brahman, near Kinni Ghat; Jain, near Basan Ghat ভরতপুরে।

দীপ

জয়পুর-আগ্রা জাতীয় সড়কে কিংবদন্তীর জ্যঠ রাজাদের রাজধানী দীপ। ভরতপুর-দিল্লী বাস যাচ্ছে দীপ হয়ে। নিকটতম রেল স্টেশন—ভরতপুর ৩৪, মথুরা ৩৫, আলোয়ার ৭৬, দিল্লী ১৫২ কিমি। নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে। ভরতপুর-মথুরা-আগ্রা থেকে বেড়িয়েও ফেরা যায় দিনে দিনে দীপ।

সবুজ বাগিচা, নীল জল—তারই মাঝে মনসুন প্রাসাদ অর্থাৎ দীপ দুর্গ। জ্যঠদের হাতে রিটিটারেপে গড়ে উঠেও ১৮ শতকের ক্যামিও এই দুর্গনগরী দীপ। মোগলী বাঁচে বাগিচা হয়েছে চারবাগ। শতাবিক রমণীয় ফোয়ারা বসেছে দীপ জুড়ে। উৎসব অনুষ্ঠানে চালু হয় আজও। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে গোপাল সাগরের পারে ১৭৫০এ রূপ পেয়েছে দীপের মূল আকর্ষণ মনোরম স্থাপত্যের নিদর্শন সুরম্যমল প্রাসাদ বা গোপাল ভবন। ১৯৭০ পর্যন্ত মহারাজারা বাসও করতেন এই ভবনে। আজও তার নিদর্শন মেলে ঘরে ঘরে রাজকীয় আসবাবপত্র। এর ব্যাঙ্কোরেট হল—এ দুস্তাপ্য জিনিসের নানান সংগ্রহ খুবই মনোগ্রাহী, পাথরের মৌলনাটিও দ্রষ্টব্য। বেঙ্গল চোয়ার, চেকরুম, কুইনস চোয়ারও অতুলনীয়। গোপাল ভবনের পূবে মর্মরে গড়া সূর্য ভবন, বিপরীতে গ্রীষ্মাবাস কেশব ভবন, রূপসাগরের দক্ষিণে পুরানা মহল, মক্কী ভবন, নন্দ ভবন, এদেরও অভিনবত্ব অনস্বীকার্য। এমনকি, ১৭৬২তে দিল্লীর লালকেন্দ্র আক্রমণ করেন মহারাজা। নানান জিনিসের সাথে একটি মর্মর প্রাসাদও লুট করে আনেন মহারাজ—বা আজও দীপের অন্যতম আকর্ষণ। ১৮—১২-০০ ও ১৩—১৯-০০ টায় দর্শনী ছাড়াই দেখে নেওয়া যায় প্রাসাদ। তবে, প্রচণ্ডের অভাবে যাত্রী সাধারণ কম দীপে। হোটেলের অভাব, ডাকবাক্স নেই। আর আছে RTDC-র Deeg Motel, S ২৭৫ D ৩৫০ দিনের ৬ ঘণ্টার বিশ্রাম ২২৫। দীপ বেড়িয়ে বাসেই চলুন আলোয়ার।

আলোয়ার



গত কিছুকাল ধরে মিটারগেজ রেল ব্রডগেজ রূপান্তর হেতু অতীতের মিটারগেজ ট্রেন সার্ভিস রহিত হয়েছে। তবে, নবমত ব্রডগেজ রেলো দিল্লী জং ও নতুন দিল্লী থেকে জয়পুরের প্রতিটা ট্রেন আলোয়ার হয়ে যাচ্ছে। দিল্লী জং থেকে ১৭-০০টার দিল্লী-জয়পুর ইন্টারসিটি এক্স, ২১-০০টার মাণ্ডোর এক্স, ৫-১৫য় দিল্লী-জয়পুর এক্স; নতুন দিল্লী থেকে ৬-১৫য় (রবিবার ছাড়া) শতাব্দী এক্স ২১ ঘট্টার আলোয়ার পৌঁছে জয়পুর যাচ্ছে। জয়পুর থেকে ফেরে যথাক্রমে ৬-০০, ০-৪৫, ১৬-৩০ ও ১৮-০০টার। ঘট্টা দুয়েকের রেলপথ জয়পুর থেকে আলোয়ারের। তাই জয়পুর থেকে আলোয়ার পৌঁছে আলোয়ার থেকেও ভরতপুর বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে। ১২৬ দিন ১৯-১৫য় জয়পুর-অমৃতসর এক্স, ২৩৫৭ দিন ১৫-১৫য় যোধপুর-বারাণসী মঞ্চার এক্স, মথুরা-আলোয়ার প্যা, জয়পুর-রেওয়ারি প্যা, আমেদাবাদ-দিল্লী আশ্রম এক্স, আমেদাবাদ-দিল্লী মেল, যোধপুর-দিল্লী মাণ্ডোর এক্স ও যাচ্ছে আলোয়ার হয়ে। তেমনই বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে সিরিকা অভয়ারণ্য। নিরমিত বাস চলে এগথে। বাস আসছে আগ্রা, দিল্লী থেকেও আলোয়ারে। দিল্লীর দূরত্ব ১৭০, আর জয়পুর ১৫১ কিমি দূরে।

অতীতের স্থানীন রাজপুত রাষ্ট্র আলোয়ার। দক্ষিণের জয়পুর, পূর্বের ভরতপুর—এমনকি মারাঠাদেরও বারবার প্রতিহত করে আলোয়ার। কাছওয়া রাজপুত মহারাজা রাও প্রতাপ সিংহ ১৭৭৫এ গড়ে তোলেন আলোয়ার শহর। পিছনে পাহাড়, সামনে জল—মনোরম এই পরিবেশে শহর থেকেও ৩০০ মিউচ ব্রিকোণ এক পাহাড়ভূড়ায় আলোয়ারের সিটি প্যালেস বা নগরপ্রাসাদ। রাজপুত ও মোগলী শৈলীতে তৈরি প্রাসাদ-ভবন। রেডিও স্টেশন বসেছে আজ প্রাসাদে। বিশেষ অনুমতিতে দেখে নেওয়া যায়। যাদুঘরও বসেছে প্রাসাদের আর এক অংশে। পাণ্ডুলিপি, মিনিরেচার পেইন্টিং ও অস্ত্রের সংগ্রহ উল্লেখ্য। হিন্দী, সংস্কৃত, আরবি ও ফার্সি ভাষায় ৭০০০-এরও বেশি পাণ্ডুলিপির সংগ্রহ মিউজিয়মের মর্যাদা বাড়িয়েছে। ২৪ মিলিয়ন সচিত্র ভাগবৎ ও লাল রঙের হরফে ফার্সি তর্জমা সহ আরবি ভাষায় কোরান এই সংগ্রহের আর এক সম্পদ। এছাড়া, শেখ সাবীর গুলিস্তানের সচিত্র নকল কপিটিও সংগ্রহের আর এক আকর্ষণ। বাবরের আত্মজীবনী বাবরনামাও মিউজিয়মের অন্য সম্পদ। শাহ আব্বাস, আকবর, জাহাঙ্গীর, শাহজাহান, দারা শিকোহ, নাদিরশাহ, ঔরঙ্গজেব—এদের ব্যবহৃত তরবারিও প্রদর্শিত হয়েছে অত্রাগারে। আর এক দূর্লভ সংগ্রহ রূপার ডাইনিং টেবিল। ৩০০০ হাতির আত্মবলটিও অনন্য। গুরু ছাড়া প্রতিদিনই ১০—১৭-০০টার খোলা। এছাড়া আলোয়ারের নিজস্ব শৈলীর আঁকা ছবির সংগ্রহ গুলীজনখানা; বখতিয়ার সিং হত্রিশ অর্থাৎ রাজার স্মৃতিসৌধ; হিন্দু ও মুসলিম সংস্কৃতিতে গড়া শাহজাহানের মন্দির কতেহ জং-এর সমাধি, শহরান্তে পাবলিক গার্ডেন—পূরজান বিহার তথা গ্রীষ্মাবাস, এওলিও দৃষ্টব্য।



Alwar-301001, STD-0144এ থাকার হোটেলও আছে নানান। Alwar G H, মানু মার্গ-১, R2B1, SAB ২২৫ DAB ৩০০ A/C S8৫০ D ৩০০ রেল স্টেশনের বিপরীতে মানু মার্গে—Ashoka H, ৩ 21780, S৮০-১৫০ D ১২৫-২০০ FR ৩০০; Tourist H SAB ১০০ DAB ১৫০-২২৫ A/C D 8০০; Alka H, Aravali H, near Rail Stn, D ১৭৫-২৫০; Alankar, S৮০ D ১৫০; RTDC-র H Meenal, ৩ 22852, S ৩৫০ ৫০০ D 8৫০ ৬০০। আর আছে সার্ভিস হাউস, অবু: য়ানেজার: PWD RH, opp Rly Stn, অবু: EE, PWD; ধরমশালা—Agarwal, near Hope Circus; Khandelwal, near Bus Stand; Sugana Bai, Stn Rd; ছাড়াও রেলের রিটার্নিং কম আছে আলোয়ারে।

সিরিকা

দিল্লী-জয়পুর পুরাতন সড়কে আরাবদী পর্বতে ছবির মতো সুন্দর মরাদ্যান সিরিকা অভয়ারণ্য। আলোয়ার মহা-রাজাদের মুগয়াভূমি ১৯৫৫য় ৪৭৯ বর্গকিমি জুড়ে রূপ পায় সিরিকা বন্যপ্রাণী সংরক্ষণ ক্ষেত্রে। তবে, কোর, বাকার ও টুরিস্ট জেনেভা ভাগে ভাগ হয়েছে সিরিকা। আর ১৯৭৯তে ব্যাঘ্র প্রকল্পের শিরোপা পরে সিরিকা। বাঁশ, খেজুর, বাবলা বনে বাঘ, শম্বর, নীলগাই, বন্য বিড়াল, বন্য ভাঙ্কর, নানান প্রজাতির হরিণের সাথে পাখিও রয়েছে নানান সিরিকায়। আর আছে নানান হিন্দু ও জৈন মন্দির, প্রাসাদ, দুর্গ ৮০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত অভয়ারণ্যে। তবে, কোর এলাকা ৪৯৮ বর্গকিমি। আলোয়ার থেকে দূরত্ব ৩৭, জয়পুর ১৪৬, দিল্লী ১৭০ কিমি। বাস সংযোগ গড়েছে ত্রয়ী থেকে সিরিকার। আর, দিল্লী-জয়পুর বাসও চলছে আলোয়ার হয়ে আধ ঘট্টা অন্তর। বছরভর চলা গেলেও জুলাই-আগস্টের বৃষ্টি এড়িয়ে যাওয়াই উচিত হবে। তবুও যেন নভেম্বর থেকে মার্চ মাস জানোয়ার দেখার মনোরম সময়। দশলী: ভারতীয় ১০ অক্টোবর ২০। আর লাগে ক্যামেরার চাক্র মান হারে। শনি ও মঙ্গলবার দশলী লাগে না। তবে, যাত্রীর আধিক্য জানোয়ার ঢোকে অরণ্য অনুরে। রাতে সফারি প্যাকেজে গাড়িও বাসে অরণ্যে। উৎসাহীদের উচিত হবে RTDC-র হোটেল টাইগার ডেন বা হোটেল সিরিকা প্যালেসে যোগাযোগ করা। ঘট্টা দুয়েকের সফারির ভাড়া ১০০ হারে। আবার একক ট্যুরে গাড়ি, স্পট লাইট, মিনিবাস, জিপও ভাড়ায় মেলে এদের কাছে। তবুও যেন অসন্তোষ জন্ম অর্শনে যাত্রীর মনে। বাঘ দশলীখাঁসের উচিত হবে দিনভর বেড়িয়ে নেওয়া বা ওয়াচ টাওয়ারে বসে বাঘের শিকার ধরা দেখে নেওয়া। তবে বাঘ দর্শনে সওয়াই মাথাপূরের প্রশস্তি পর্বটক্সে মুখে। ২২ কিমি অরণ্য অনুরে পাণ্ডবদের বনবাসের স্মৃতি বিজড়িত সিরিকার প্রাণকেন্দ্র পাণ্ডপোলে ওয়াচ টাওয়ার, ওয়াটার হোল, হনুমান মন্দিরও হয়েছে।

আবার সার্ভিস বাসে কালিগাটি রেঞ্জার পোস্ট গিয়েও দেখে নেওয়া যায় অরণ্যচরদের। জল খেতে আসে অরণ্য-

চরেরা ওয়াটার-হোলে। ওয়াচ টাওয়ারও হয়েছে কালি-গাটিতে। টাওয়ার অবস্থানে আহার্য ও পানীয় জল সঙ্গী করা একান্তই উচিত হবে।

তেমনাই দেখে নেওয়া যায় নানান দুর্গ, নানান মন্দির সরিষায়। গোট থেকে ২০ কিমি দূরে কনকওয়ারি দুর্গ—ঔরঙ্গজেব ভাই দারা শিকোহকে বন্দী রাখেন এখানে। ১৫০০ বছরের প্রাচীন নীলকণ্ঠ শিবমন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য।



খাকারও নানান ব্যবস্থা Sariksha-301022, STD-0144এ। Sariksha-Alwar জাতীয় উদ্যানের প্রবেশ ফটকে RTDC-র H Tiger Den, ৩ 41342, SAB ৫৫০ ৭০০ DAB ৬০০ ৮২৫ সুইট S ১৫০ D ১২০০ ডর্মি বেড ৫০, আহারও মেলে পৃথক মূল্যে; অব্: Tourist Officer, Sariksha-301022. আর আছে Tourist R.H. S ১৫০ D ২৫০; Forest R.H, বৃক্ষি: Game Warden, Sariksha Wild Life Sanctuary, Alwar. পার্কের প্রবেশ পথে ১৮৯২এ গড়া মহারাজাদের বৈভবে ভরা হাটিং লজে *H Sariksha Palace, ৩ 41322, S ৪২ D ৬০ সুইট ৮০ US\$, বার সহ ক্যান্টিনও আছে।

শিলিশেড় হ্রদ

শহরের ৮ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে আর আলোয়ারের ২০ কিমি দূরে আলোয়ার-সরিকা সড়কে ১০ বর্গকিমি জুড়ে রূপ পেয়েছে কৃত্রিম হ্রদ শিলিশেড়। বর্ষা দিয়ে তৈরি হ্রদ, অরণ্যময় তীরভূমি; চারদিকে পাহাড়—পরিবেশ রমণীয়। হ্রদের তীরে জল-জঙ্গল-পাহাড়ের মাঝে সুন্দর প্রাসাদ, তৈরি যদিও রানীর জন্য। তবে সম্প্রতি RTDC-র হোটেল বসেছে। লেকের জলে মোটর লঞ্চও আছে। কুমির থাকায় জলে নামা বিপদ। তবে, মাছ ও জলচর পাখিদের সহ-অবস্থান ঘটেছে শিলিশেড়ে। আর রয়েছে ছত্রিশ অর্ধে সমাধি সৌধ। চাঁদনী রাতে এর সৌন্দর্য নয়নাভিরাম।



Siliseth-301001, STD-0144এ—RTDC-র H Lake Palace, Siliseth-Alwar, ৩ 86322, SAB ৪৫০ DAB ৬০০ A/C S ৭৫০ D ৮৫০, এপ্রিল-জুনে অফ সিজন্ রিবেট মেলে; অব্: Manager, Siliseth-301001.

পিলানী

লোহরু থেকে ২৩ আর খিরাওয়া থেকে ১৪ কিমি দূরে পিলানী। বাস সংযোগ গড়েছে রাজ্যের বিভিন্ন প্রান্তের সঙ্গে। তবে, পর্যটকদের আলোয়ার থেকে বাসে পিলানী বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার। পিলানী হল ভারতের শিল্প পতি বিড়লাদের আদি নিবাস। এখানকার বিড়লা শিক্ষান্যাস প্রতিষ্ঠিত শিক্ষাকেন্দ্রের জন্যও পিলানীর প্রশস্তি আছে। এর

ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজটিও বিশেষভাবে উল্লেখ্য। আর আছে ভাস্কর্যে অনন্য নবনির্মিত সরস্বতী মন্দির। থাকার জন্য আছে গেস্ট হাউস, ডাক বাংলো ও রেস্ট হাউস। অব্: Administrator, Birla Education Trust, Pilani-333031.

নারায়ণী মাতা

পিলানী থেকে ১০০ কিমি দূরে ঠাণ্ডা ও গরম জলের প্রস্রবণ। বাস যাচ্ছে। আলোয়ার থেকেও বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় নারায়ণী মাতা।

বৈরাট

আলোয়ার থেকে বাসে চলুন বৈরাট। তবে, জয়পুর আরও কাছে, দূরত্ব ৮৫ কিমি। বৈরাটে বেড়িয়ে শিলিশেড় হ্রদ দেখেও আলোয়ার যাওয়া চলে। মহাভারতের কালে এই বৈরাটই ছিল বিরাটপুরী। পাণ্ডবেরা তাঁদের অজ্ঞাতবাসের ১৩তম বছরটি এই বৈরাটে অর্থাৎ বিরাটপুরী রাজ-দরবারে নানান কাজে কর্মরত ছিল। বৈরাটে অশোকের একটি শিলালিপিও আবিষ্কৃত হয়েছে। মাটি খননে, বৌদ্ধ মঠের ধ্বংসাবশেষও মিলেছে। একটি মন্দির, রৌপ্য মূর্তি, পোড়া-মাটির যক্ষীমূর্তি, মৃৎপাত্র, বৌদ্ধ সন্ন্যাসীদের নিত্য ব্যবহার্য নানান জিনিসও মিলেছে বৈরাটে। আজ তাই বৈরাটের পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

এছাড়াও সারা রাজস্থানে হড়িয়ে রয়েছে আরও নানান কিছু—হয়তো বা তার আকর্ষণও পর্যটকদের কাছে কম নয়। তবে, সময় স্বল্পতায় ভ্রমণার্থীদের রাজস্থানকে জানতে উল্লিখিত দ্রষ্টব্যই যথেষ্ট। এবার রাজস্থান ভ্রমণ সাঙ্গ করে বাসে বা ট্রেনে দিল্লী হয়ে ঘরে ফেরার পালা। আর রাজস্থান ভ্রমণকে স্মরণীয় করে তুলতে ভ্রমণার্থীদের একান্তই উচিত হবে রাজস্থানী হস্তজাত পণ্য সঙ্গী করা। পাথর ও হাড়ির দাঁতের কাঁচ, মীনা করা নানান সজ্জার, সোনালী বার্নিশ বা সোনা-রাপার ঝালরের কাঁচ, শিল্পে রুক প্রিট, টাই-ডাইং, পিছোয়াই অর্থাৎ কাপড়ে আঁকা ছবি, ময়রায়ডারি করা কারুকার্যময় বাহারী জুতো, দারুতে তৈরি লোকশিল্পের নানান মডেল, রাজস্থানী রেজাই তথা আঁধ কেজি ও জনের পাডলা লেপ, এদেরও বিশ্বপ্রশস্তি আছে। রাজস্থান গভর্নমেন্ট এস্পোরিয়াম হয়েছে : মীজা ইসমাইল রোড—জয়পুর, চেতক সিনেমার বিপরীতে—উদয়পুর, কাইজার গল্ড—আজমের, কাহারি রোড—যোধপুর, রেল স্টেশনের বিপরীতে—চিতোরগড়, তহশিল বিল্ডিং—আবু পাহাড়, এডওয়ার্ড মেমোরিয়াল রোড—বিকানীর ও কোটায়। তবে, জয়পুরই কেনাকাটার পক্ষে শ্রেয়। সারা শহর জুড়েই মোকানপাট, বাজারহাট। তবুও জহরী বাজার, ত্রিপোলিয়া বাজার, এম আই রোড থেকে কেনাকাটা করাই উচিত হবে।

উত্তর প্রদেশ

বৈচিত্র্যে ভরা রাজ্য উত্তর প্রদেশ। ১৯৩৫এ ব্রিটিশ ভারতে আগ্রা ও অযোধ্যা মিলে নাম হয়েছিল ইউনাইটেড প্রভিন্স। রাজ্যপাটও বসে তাজনগরী আগ্রায় সেকালে। আর স্বাধীনতার পর ইউনাইটেড প্রভিন্স হয়েছে ১৯৫০-এর জানুয়ারিতে উত্তর প্রদেশ। রাজ্যের উত্তরে নেপাল ও তিব্বত, উত্তর-পশ্চিমে হিমাচল প্রদেশ, পশ্চিমে হরিয়ানা, দক্ষিণ ও দক্ষিণ-পশ্চিমে রাজস্থান ও মধ্য প্রদেশ আর পূর্বে বিহার। আয়তনে ভারতের চতুর্থ বৃহত্তম রাজ্য (মধ্য প্রদেশ, রাজস্থান, মহারাষ্ট্রের পর) হলেও জনসংখ্যায় প্রথম স্থানে উত্তর প্রদেশ। অবস্থান তথা প্রকৃতিগত কারণে তিন পৃথক স্বকীয়তায় গড়ে উঠেছে উত্তর প্রদেশ—(১) রাজ্যের উত্তর জুড়ে পাহাড়ী অঞ্চল, (২) দক্ষিণে মালভূমি তথা উপগিরি, (৩) গঙ্গার অববাহিকা জুড়ে সমতল ভূমি। আবহাওয়া হিমালয় ছাড়া সারা রাজ্যে ক্রান্তীয়।

ভ্রমণার্থী ও তীর্থযাত্রীদের স্বর্গরাজ্য উত্তর প্রদেশ। নগাধিরাজ হিমালয়, আগ্রার তাজ ভারত ছাড়িয়ে বিশ্ববাসীকে আকর্ষণ করছে আজ। তেমনই আকর্ষণ করছে হিন্দু পুরাণের চার পুণ্য ধাম—বদরী, কেদার, গঙ্গোত্রী ও যমুনোত্রী। হিন্দুধর্মীদের মোক্ষলাভের সপ্তপুত্রী—বারাণসী (কাশী), অযোধ্যা, হরিদ্বার, মথুরা, চারের অবস্থান উত্তর প্রদেশে। তেমনই পুণ্যতীর্থ—বৃন্দাবন, প্রয়াগ (এলাহাবাদ), চিত্রকূট ও বিঠুর মহিমাষিত করেছে উত্তর প্রদেশকে। এমনকি মর্ত্যভূমের স্বর্গও বলে থাকেন গাড়েয়াল হিমালয়কে নানান জনে। সেকালে দেবতাদেরও বাস ছিল গাড়েয়ালের হিমালয়ে। ফুলে-ফলে ভরা সবুজে ছায়াটেহরি তার নন্দনকানন সম। স্বর্ণের দুই নদী গঙ্গা ও যমুনাও মর্ত্যে নেমেছেন উত্তর প্রদেশের গঙ্গোত্রী ও যমুনোত্রী দুই পুণ্যধামে। পাহাড় ছেড়ে মর্ত্যে নেমেছেন গঙ্গা উত্তর প্রদেশের হৃদয়কোশে। যাত্রী চলেছেন নানান পৌরাণিক ও নৈসর্গিক সৌন্দর্যের আকর্ষণে স্বর্গলোকের দিকে দিকে যুগ যুগ ধরে। পঞ্চকেদার, ভ্যালি অব ফ্লাওয়ারস, হেমকুণ্ড, শিতাবারী হিমবাহ, রূপকুণ্ড, হর-কি-দুন, সুন্দরডুঙ্গা, গোমুখী সবেরই অবস্থান উত্তর প্রদেশে। ভারতীয় তীর্থযাত্রীদের মানসপটে আঁকা কৈলাস ও মানস সরোবরের পথও গিয়েছে উত্তর প্রদেশের পিথোরাগড় হয়ে। এমনকি রামায়ণের কোশল রাজ্য ও মহাভারতের হস্তিনাপুরের অবস্থানও আজকের উত্তর প্রদেশে। ত্রি পুণিন্ডলিতে জৈনধর্মের প্রবর্তক মহাবীর ও বুদ্ধের স্মৃতিতেও ধন্য উত্তর প্রদেশ। স্বয়ং বুদ্ধই প্রথম বৌদ্ধধর্ম প্রচার করেন এই উত্তর প্রদেশের সারনাথে। এই উত্তর প্রদেশেই জন্ম আর কর্ম ভরদ্বাজ, যাজ্ঞবল্ক্য, বশিষ্ঠ, বিশ্বামিত্র, বাসীকী ছাড়াও নানান বৈদিক মুনিঋষির। আর ভাষার প্রসারতায় রামানন্দ,

মুসলিম শিষ্য কবীর, তুলসীদাস, বীরবল এদেরও অবদান অনস্বীকার্য। হিন্দুস্থানী এদের মুখের ভাষা। হিন্দীর সঙ্গে উর্দুর মিশ্রণে গড়ে উঠেছে নতুন ভাষা উত্তর প্রদেশে। রামনবমী, রামলীলা, মহরম এদের মূল উৎসব। ঠিক তেমনই লক্ষ্মী-এর সঙ্গীত ও নৃত্য সংস্কৃতিবানদের মন জয় করেছে। কথক নাচ, ঠুমরি সঙ্গীত আজ সর্বজনপ্রিয়। মোগলী স্থাপত্য, নবাবী কৃষ্টি এর আকাশ বাতাসে মিশে রয়েছে। কাশীর হিন্দু বিশ্ব-বিদ্যালয়, আলিগড়ের মুসলিম বিশ্ববিদ্যালয় সংস্কৃতিমানদের পীঠস্থান। তেমনই কাশীর কোশল, প্রয়াগের প্রয়াগী ও বৃন্দাবনের কৃষ্ণবাসী—যাত্রী উৎসাহীদের সাথে অর্থ হননে এদের তুল্য চতুর্থটি বিরল। পুণ্যতোয়া গঙ্গায় স্নাত উত্তর প্রদেশ বনজ সম্পদেও যথেষ্ট সমৃদ্ধ।

তেমনই ভারত তথা বিশ্ব জুড়ে সংবাদপত্রের শিরোনাম হয়েছে উত্তর প্রদেশেরই আর এক পুণ্যভূমি জীরাম-চন্দ্রের পবিত্র জন্মভূমি তথা বাবরী মসজিদ অযোধ্যা নগরীর। ৬ই ডিসেম্বর ১৯৯২ বিশ্ব হিন্দু পরিষদের কর-সেবকদের করে মসজিদ ধ্বংসের খবরে উদ্বেলিত হয় সারা বিশ্ব। রক্ত ঝরে উপমহাদেশ জুড়ে।

এমনকি ভারতীয় রাজনীতিতেও উত্তর প্রদেশের অবদান অনস্বীকার্য। ভারতীয় স্বাধীনতা সংগ্রামের সূত্রপাত উত্তর প্রদেশের মিরাতে ১৮৫৭য়। উত্তরকালে নেহরু পরিবারের বাসভূমি এলাহাবাদ ভারতীয় রাজনীতির প্রাণকেন্দ্র হয়ে ওঠে। এমনকি স্বাধীনোত্তর ভারতে বারো প্রধানমন্ত্রীর আট—জওহরলাল নেহরু, লাল বাহাদুর শাস্ত্রী, ইন্দিরা গান্ধী, চরণ সিং, রাজীব গান্ধী, বিষ্ণুনাথ প্রতাপ সিংহ, চন্দ্রশেখর, অটল বিহারী বাজপেয়ী নির্বাচিত হয়ে এসেছেন উত্তর প্রদেশ থেকে। এলাহাবাদের ঘটনাগ্রহাণু আজও ভারতীয় রাজনীতিতে চমকপ্রদ।

ভারত রাষ্ট্রের ভ্রমণ মানচিত্রে আজ উত্তর প্রদেশের স্থান সর্বাপেক্ষে। উত্তর প্রদেশ অদর্শনে ভারত ভ্রমণ অপূর্ণ থেকে যায় যেন। ভ্রমণার্থীদের সহযোগিতায় রাজ্য পর্যটনও সদাই সচেষ্ট। পর্যটনের সুবিধার্থে ৩টি টুরকো হয়েছে UP Tourism KMVN অর্থাৎ কুমায়ুন মণ্ডল বিকাশ নিগম-এ রাজ্যের পূর্ব হিমালয় অর্থাৎ কাঠগোদাম তার প্রবেশদ্বার; GMVN অর্থাৎ গাড়েয়াল মণ্ডল বিকাশ নিগম-এ পশ্চিম হিমালয়—প্রবেশদ্বার তার হরিদ্বার; আর সমতল জোড়া উত্তর প্রদেশ UP STDC-এর তত্ত্বাবধানে। টুরিস্ট বাসো প্যাকেজ ট্যুর, নানানধর্মী গাড়িও ভাড়াই মেলে এদের কাছে। ১২/এ, নেতাজী স্মাভাষন বসু রোড, ৩য় তল, কলকাতা-৭০০০০১, ৩ ২২০৭৮৫৫ থেকেও অগ্রিম বুকিং-এর ব্যবস্থা মেলে।

দপ্তর বসেছে :

UP State Tourism Development Corporation Ltd
3 Naval Kishore Rd, Lucknow-226001, UP.
☎ 228349/225165
Kumaoun Mandal Vikash Nigam Ltd
Secretariat Building, ☎ 3209/2656
Nainital-263001, UP.
Garhwal Mandal Vikash Nigam Ltd
74/1 Rajpur Rd, Dehradun-248001
☎ (0135) 656817, UP.

উত্তর প্রদেশ □ রাজধানী: লক্ষ্ণৌ। আয়তন: ২৪৪৪১১ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ১৩৮৭৬০৪১৭। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ১৬.৪৪%। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ২৭৮৯৯৯০৫। বৃদ্ধির হার: ২৫.১৬%। পুরুষ: ৭৩৭৪৫৯৯৪। নারী: ৬৫০১৪৪২৩। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৪৭১। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৮৮২। সাক্ষরের হার: ৪১.৭১%। প্রধান ভাষা: হিন্দী; ইংরেজি ও উর্দুরও চল আছে রাজ্য জুড়ে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ২৮৬৬.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)।

দফায় দফায় উত্তর প্রদেশ বেড়ান। ২১ দিনে: হরিদ্বার ১ হৃষীকেশ ২ বদরীনাথ ১ হেমকুণ্ড ১ নন্দনকানন ১ কেশদারনাথ ১ গঙ্গোত্রী ১ গোমুখ ১ যমুনোত্রী ১ মুন্সেরী ২ দেৱাদুন ১ পথ চলায় ৮ দিন। ১৫ দিনে: চার ধাম অর্থাৎ বদরী-কেশদার-গঙ্গোত্রী-যমুনোত্রী। ২১ দিনে: লক্ষ্ণৌ ১ পিওরী ১ রানীক্ষেত ১ আলমোড়া ১ নৈনীতাল ২ কৌশানী ২ করবোট ১ পথ চলায় ১২ দিন। ১৫ দিনে: রূপকুণ্ড ও হোমকুণ্ড। ১৫ দিনে সমতল উত্তর প্রদেশ: চিত্রকূট ১ এলাহাবাদ ২ অযোধ্যা ১ বারাণসী ২ লক্ষ্ণৌ ২ কানপুর-বিঠুর ১ আগ্রা ২ মথুরা-বৃন্দাবন ১ পথ চলতে ৩ দিন। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। তবে, এলাকাভেদে তারতম্য আছে সময়ে। পাহাড়ে বেড়াবার জন্য গ্রীষ্ম ও শরৎকাল মনোরম। শরতে পাহাড়ী শোভা অপরিস্রম। আর ফুলেরা রাঙিয়ে তোলে পাহাড়কে মে থেকে জুলাই মাসে।

এত সবার মাঝে বাতাসকে ভারি করে আওয়াজ উঠেছে পৃথক রাজ্য উত্তরাঞ্চল-এর উত্তর প্রদেশের পাহাড়ে। না পাণ্ডার ব্যাধি-বেদনা কুটিল রাজনীতির শিকার হয়ে শরিক হয়েছে আন্দোলনের। বরফ গলেছে বারুদের

ভাপে—রক্তও ঝরেছে রক্ত গুত্র বরফ রাজ্যে। যাত্রী তাই কিছুটা বেন বিধাষিত উত্তর প্রদেশের কুমায়ুন ও গাড়োয়াল ভ্রমণে আঁক। পরিতাপের বিষয় আন্দোলনকে নিশানা করে অদূর ভবিষ্যতে গড়তেও চলেছে কুমায়ুন ও গাড়োয়ালের ৯টি জেলা নিয়ে ভারতের ২৬তম রাজ্য উত্তরাঞ্চল—উত্তর প্রদেশ টুকরো হয়ে।

লক্ষ্ণৌ

উত্তর প্রদেশের রাজধানী শহর লক্ষ্ণৌ। আপন স্বকীয়তায় উজ্জ্বল। কথায় বলে *বেনারস কি সুবা ঔর লখনউ সাম*—অর্থাৎ বারাণসীর প্রভাত আর লক্ষ্ণৌর সন্ধ্যা। লক্ষ্ণৌ শহরের মাঝ দিয়ে বয়ে চলেছে গঙ্গার শাখা গোমতী নদী। একাধিক সেতু যোগসূত্র গড়েছে এপার আর ওপারে। সরষু-রঙ মিলন ঘটেছে গোমতীতে। ১৮৭৫এ লক্ষ্ণৌ নগরীকে উইলিয়ম হাওয়ার্ড রাসেল বলেছেন, *আমার দেখা এমন কোনো শহর নেই যা লক্ষ্ণৌ-এর সঙ্গে তুল্য। এর সৌন্দর্য মনকে বিমোহিত করে।* পুরাণ বলে, বনবাসের পর রামচন্দ্র ভাই লক্ষ্মণকে ইজারা দেন এই অঞ্চল। নাম হয় তার লক্ষ্মণাবতী; কালে কালে লক্ষ্ণৌ। ঝিমতে, শহর তৈরির স্থপতি লখনা থেকে লক্ষ্ণৌ নামকরণ। আর আজকের লক্ষ্ণৌকে রূপ দিয়েছেন উর্দু সয়ের-এর প্রতিপালক সঙ্গীত-শিল্প-সংস্কৃতির পূজারী অযোধ্যার নবাবরা। ১৭৭৫এ অযোধ্যার ৪র্থ নবাব আসফ-উদ-দৌলা (১৭৭৫-৯৭) ফৈজাবাদ থেকে লক্ষ্ণৌ এসে রাজধানী তথা নগরী গড়েন। তারও আগে নবাবের পূর্ব-পুরুষরা পারস্য থেকে ভারতে আসেন বাণিজ্য করতে। প্রথম নবাব বারহান-উল-মুলক (১৭২৪-৩৯)। আর ১৮৫৭র সিপাহী বিদ্রোহের এক বছর আগে কাব্য-নৃত্য-গীত বিশারদ শেখ (১০ম) নবাব ওরাজেদ আলি শাহ (১৮৪৭-৫৬)-কে অলস আর অমিতব্যয়িতার দায়ে দারী করে সিংহাসনচ্যুত করে ব্রিটিশ। রাজ্যের দখল যায় ব্রিটিশের হাতে। নবাবকে বছরে ১২০০০ পাউন্ড অনুদান দিয়ে কলকাতায় নির্বাসনে পাঠায় ধৃত ব্রিটিশ। মৃত্যুও ঘটে নবাবের কোর্ট উইলিয়ামের বন্দীবাসে। পরিগতি ভয়াবহতা নেয় সিপাহী বিদ্রোহে লক্ষ্ণৌতে। লক্ষ্ণৌ রাজধানী হয় ইউনাইটেড প্রভিন্সের। হিন্দু ও মুসলিম উভয় সংস্কৃতিই পাশাপাশি মিলেমিশে সাজিয়ে তুলেছে লক্ষ্ণৌকে। যার স্বাক্ষর আজও লক্ষ্ণৌতে বিদ্যমান। আজকের আধুনিক বিশ্বও জ্ঞান করতে পারেনি নবাবী সংস্কৃতিকে। নবাবী আদর্শ কায়দা লক্ষ্ণৌয়ের আকাশে-বাতাসে—যার ছাপ লক্ষ্ণৌবাসীদের চলাফেরায়, কথাবার্তায় অতি সুন্দরভাবে প্রকাশ পায়। তেমনিই সুবাস মেলে নবাবী কিসেনের লক্ষ্ণৌয়ের বাতাসে। স্নেহে নিত্য নতুন উদ্ভাবন সেও এক চমকপ্রদ। স্বাদ নেওয়া যেতে পারে লক্ষ্ণৌয়ের হোটেল-রেস্তোরাঁয়। সিঁদাখনী মুসলিমের আধিক্য। মহরম

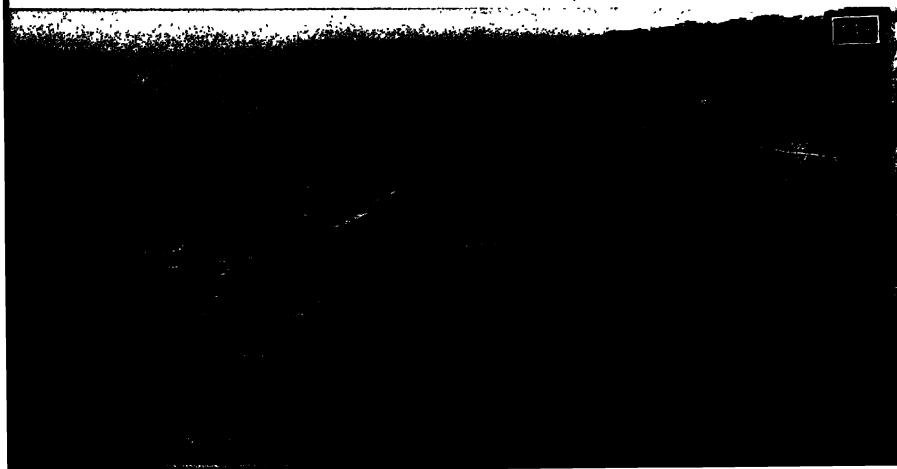
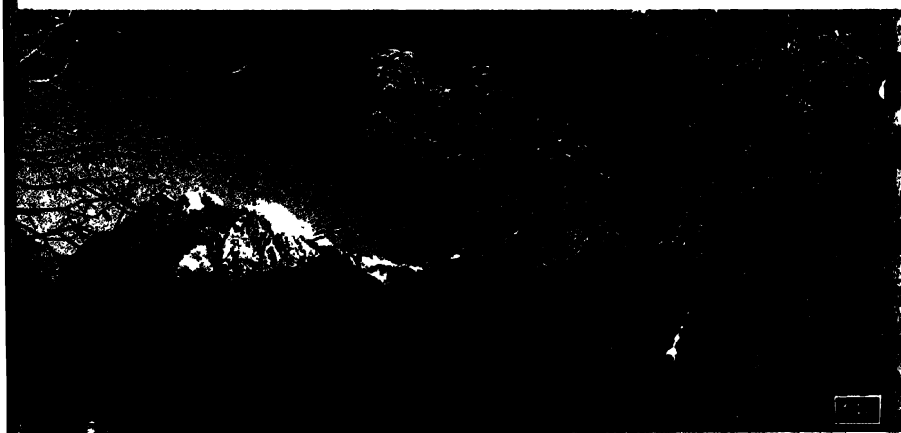
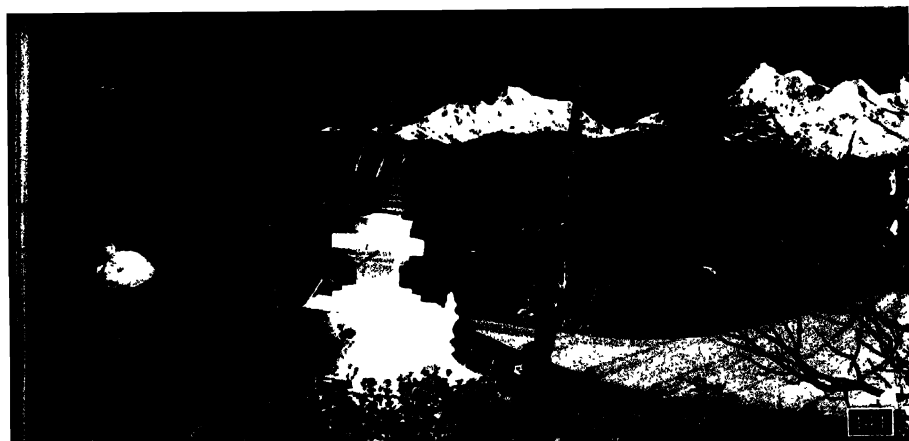
153

153

154

155

155



বরগীষ উৎসব লক্ষ্মীয়ে। লক্ষ্মীয়ের নবতম আকর্ষণ গুরু পুণ্ডনজাজী (Poonjaji)। আগ্রহীরা Carlton Hotel-এ খোঁজ নিতে পারেন গুরুর অবস্থান বিষয়ে।



IAC-ব বিমান ১৫ দিন ১৩-১০এ লক্ষ্মী ছেড়ে মুম্বাই যাচ্ছে ১৫-১৫য়; লক্ষ্মী আসছে ৮-৪এ মুম্বাই ছেড়ে ১১-০৫এ বারানসী পৌছে ১২-৩০এ। দিল্লী যাচ্ছে প্রতিদিন ৭-২৫এ ছেড়ে ৮-২০এ, ১৩৫৬ দিন ২০-২০এ ছেড়ে ২১-১৫য়; লক্ষ্মী ফেবে দিল্লী থেকে যথাক্রমে ৬-০০ ও ১৭-৩০এ। ১৩৫৭ দিন দিল্লী ছাড়া IAC-ব উড়ান ১৮-২৫এ লক্ষ্মী, পাটনা ১৯-৫০এ পৌছে কলকাতায় যাচ্ছে ২১-১৫য়। ফেবেও এরা একই দিনগুলিতে একইভাবে। আর প্রাইভেট এয়ারলাইনস প্রতিদিন ১২-৪এ দিল্লী ছেড়ে ১৩-৪০এ লক্ষ্মী পৌছে দিল্লী ফেবে ১৫-০০টা। শহব থেকে ১৪ কিমি দূরে Amais Airport দপ্তর বসেছে: IAC, Hotel Clarks Avadh, 8 Mahatma Gandhi Marg, ☎ 240927/135



উত্তব ও উত্তব-পূর্ব ট্রাক কটেব জংশন স্টেশন লক্ষ্মী। ব্রডগেজ ও মিটাংগেজ দুইয়েরই চল আছে। আর আছে লক্ষ্মী সিটি স্টেশন। ট্রেন যাচ্ছে লক্ষ্মী থেকে—দিল্লী ৬-২২ য, অযোধ্যা ৩ য, এলাহাবাদ ৪২ য, বারানসী ৪২-৬ য, গোরকপুর ৫-৬ য, কানপুর ১২-২২ য, মুম্বাই ২৭ য, কলকাতা ২০ ঘটায়।

কলকাতা থেকে নানান ট্রেন সরাসরি সংযোগ গড়েছে। হাওড়া থেকে ২৫৬ দিন ২৩-০০টায় ৩০৭৩ হিমগিরি এক্স, ১৯-২০এ ৩০০৫ অমৃতসর মেল, ১৩-১০এ ৩০৪৭ অমৃতসর এক্স, ২০-১৫য ৩০০৭ দুন এক্স, ২১-৪০এ ৩০১৭ কাঠগোদাম এক্স, শিমালাদহ থেকে ১১-৪৫এ ৩১১৫ জম্মু তাওয়াই এক্স বারানসী/লক্ষ্মী/মোরাদাবাদ হয়ে যাচ্ছে। কলকাতা থেকে দূরত্ব ৯৭৯ কিমি, সময় নেয় কমবেশি ২০ ঘট। কলকাতায় ফেরে ১২.৫ দিন ১৫-৫৫য হিমগিরি, ১৮-৪৫এ জম্মু তাওয়াই-শিমালাদহ, ১০-৪৫এ অমৃতসর-হাওড়া মেল, ১১-৪০এ অমৃতসর-হাওড়া এক্স, ৬-১৫য় কাঠগোদাম এক্স, ৮-৪৫এ দুন এক্স লক্ষ্মী থেকে।

লক্ষ্মী থেকে নিউ দিল্লী যাচ্ছে ১৫-২০এ সুপার ফাস্ট ২০০৩ শীতাতপ শতাব্দী এক্স, ২২-০০টায় লক্ষ্মী-নিউ দিল্লী মেল, রবিবার ছাড়া প্রতিদিন ৫-২৫এ গোমতী এক্স, ২২-২৫এ কাশী থেকে (১৬-০০) আসা বিশ্বনাথ এক্স, ২০-৩৫এ নতুন দিল্লী যাচ্ছে পাটনা থেকে আসা শ্রমজীবী এক্স, ১৮-৫৫য় মালদহ ছেড়ে পরদিন পাটনা ৬-০৫, যোগলসরাই ১১-০০, বারানসী ১২-০০, অযোধ্যা ১৬-০৭, লক্ষ্মী ১৯-৫০, তারও পরদিন ৬-৫০এ দিল্লী জং পৌছে ভিওয়ানি যাচ্ছে ফারাকা এক্স; ৩৭ দিন ৩-১৫য় পাটনা-রাজধানী এক্স; ৪৬ দিন মজফেরপুর-দিল্লী/ ১৩ দিন রয়্যাল-দিল্লী এক্স/ ২৭ দিন সুলতানপুর-দিল্লী এক্স ১৯-০০এ; ফারাকার অংশ তুগলা থেকে মুল্লুখা যাচ্ছে। বরাহুনি থেকে আসা বৈশালী এক্স ২২-০৫এ, ২৫৭ দিন বারভাঙ্গা-দিল্লী, সরযু যমুনা ১-০৫এ ছেড়ে দিল্লী জং, ২৪৫৭ দিন বারভাঙ্গা থেকে আসা শহীদ এক্স ১-০৫এ, ২৫৭ দিন ১৩-১৫য় পুরী থেকে আসা নীলাচল এক্স; শুয়াহাটি-দিল্লী যাচ্ছে আনু-অসম, দিল্লী-ভিক্রপুত্র ব্রাহ্মণ মেল; বারসোই থেকে আসা মহানন্দা এক্স ৯-৩০এ লক্ষ্মী ছেড়ে দিল্লী জং যাচ্ছে। দিল্লীর দূরত্ব ৫০৭ কিমি, সময় নেয় কটা আটেক। তবে শতাব্দী নতুন দিল্লী যাচ্ছে ৫২ ঘটায়।

দ্রব্য সঙ্গী: ৯৭-৯৮/৪৩

৪৮৬ কিমি দূরের আগ্রা যাচ্ছে ১৩৪৬ দিন ১৭-২০এ বারানসী ছাড়া মরফার এক্স লক্ষ্মী ২২-৫৫, তুগলা ৩-৫০, আগ্রা ফাস্ট ৫-০৫এ পৌছে জয়পুর হয়ে যোধপুর যাচ্ছে ১৮-২৫এ। ১৮-২০এ লক্ষ্মী ছেড়ে কানপুর/তুগলা/আগ্রা ফাস্ট/কোটা/রাটলাম হয়ে বাক্সা যাচ্ছে আনু এক্স।

চিকিৎসা: এগারো

১৩৩ জাতীয় বাকহারা ছবি বিজয় সেনগুপ্ত ১৩৪ বোল সেতুতে
পারাপার ছবি বিজয় সেনগুপ্ত ১৩৫ হারামসমূহে পাখি
ছবি উৎপল সেন ১৩৬ কোয়ানাক; ছবি নির্মলেন্দু রায়
১৩৭ বকরীবারান; ছবি নির্মলেন্দু রায় ১৩৮ কৈশিক
সুখাতি, ছবি ইন্দ্রনীল ঘোষ ১৩৯ টোবোরা ছবি ইন্দ্রনীল
ঘোষ ১৪০ নৈনিতাল ছবি ইন্দ্রনীল ঘোষ ১৪১ খোয়ালদা
বিশ্বল ছবি ইন্দ্রনীল ঘোষ ১৪২ মুল্লুখা/রিতে ছবি ইন্দ্রনীল
ঘোষ ১৪৩ খুরগাডাল থেকে ছবি ইন্দ্রনীল ঘোষ।

১৯-২৫এ লক্ষ্মী ছেড়ে কানপুর/বাসী/তুগলা/ভূম্মাল হয়ে ২৫২ ঘটায় মুম্বাই যাচ্ছে লক্ষ্মী-মুম্বাই সুপার ফাস্ট গুল্পক এক্স; ১৯-০০টায় গোরকপুর ছেড়ে ০-৩০এ লক্ষ্মী পৌছে ২৮ য ৫৫ মিনিটে মুম্বাই যাচ্ছে গোরকপুর-মুম্বাই কুশীনগর এক্স। মুম্বাই CST ছাড়ে যথাক্রমে ৮-১০ ও ২২-৩০এ। ঘট। পাঁচেকে গোবকপুর যাচ্ছে ২৩-০০টায় লক্ষ্মী-গোরকপুর এক্স, ৬-১৫য় কাঠগোদাম-হাওড়া এক্স, ৩-১০এ মুম্বাই-গোরকপুর কুশীনগর এক্স, ১৪-০০টা ফাস্ট/হায়দ্রাবাদ/ব্যাঙ্গালোর-গোবকপুর এক্স, ৮-৪৫এ নিউ দিল্লী-বরাহুনি বৈশালী এক্স, ১৫-৪৫এ লক্ষ্মী-বরাহুনি এক্স, ০-১০এ অমৃতসর-বরাহুনি এক্স, ২৪৫৭ দিন ৬-৩০এ দিল্লী-হারাভাঙ্গা শহীদ এক্স, ১৩৬ দিন ৬-৩০এ দিল্লী-বারভাঙ্গা সরযু যমুনা এক্স, ১৫-৫৫য় জম্মু-বরাহুনি/গোরকপুর/শুয়াহাটি এক্স, ১৮-০৫এ আনু-অসম ছাড়াও নানান ট্রেন। আমোদাবাদ যাচ্ছে ২১-৫০এ বাসী/উজ্জয়িন/ভাসোদরা হয়ে ২৫৭ দিন বারানসী, ৪ দিন ফৈজাবাদ, ১৩৬ দিন বরাহুনিতে মজফেরপুর থেকে আসা অংশ জুড়ে সবরমতী এক্স।

চিকিৎসা এক্স যাচ্ছে ১৭-৩০এ লক্ষ্মী ছেড়ে কানপুর/চিকিৎসা/ধাম/সাতনা/কাচি হয়ে জবলপুর; জবলপুর ছাড়ে চিকিৎসা ১৮-৪০এ। ৬-০০টায় লক্ষ্মী ছেড়ে এলাহাবাদ যাচ্ছে ৪২ ঘটায় সাহাবানপুর-এলাহাবাদ নৌচতী এক্স, ১৮-২৫এ লক্ষ্মী-এলাহাবাদ গঙ্গা গোমতী এক্স, ১৬-২৫এ লক্ষ্মী-শক্তিগর রিবেনী এক্স। ৫২ ঘটায় বারানসী যাচ্ছে ২৫৭ দিন ১৪-৪০এ নীলাচল এক্স, ২৩-০০টায় কাশী বিশ্বনাথ এক্স, ৭-৫০এ ফারাকা এক্স, ১৩৪৬ দিন ৪-৪০এ মরফার এক্স, ৩-২৫এ দিল্লী-মজফেরপুর/রয়্যাল/সুলতানপুর এক্স, ১৩৬ দিন ৬-৩০এ নিউ দিল্লী-বারানসী এক্স, ১৮-০০টায় লক্ষ্মী-বারানসী বক্সা এক্স, ২৪৭ দিন ৬-৩০এ সরযু-যমুনা এক্স, ২১-৫৫য় আমোদাবাদ যাচ্ছে সবরমতী এক্স।

২৫৭ দিন ছাপরা হয়ে মজফেরপুর যাচ্ছে সবরমতী। নতুন দিল্লী-বরাহুনি বৈশালী এক্স যাচ্ছে বকী/ছাপরা/ মজফেরপুর হয়ে বরাহুনি; ৩৭ দিন রায়-সাগর এক্স; ১৩৪৬ দিন শহীদ এক্স; ১৩৬৭ দিন জম্মু-গোরকপুর ছাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে উত্তর-পূর্ব

ভারতের দিকে দিকে লক্ষৌ থেকে। সাপ্তাহিক জম্মু-ওয়াহাটি লোহিত এক্স; দিল্লী জং থেকে এসে ১৮-০৫এ লক্ষৌ ছেড়ে গোরকপুর/মজফেরপুর/বরাঘুনি/নিউ জলপাইগুড়ি/রসিয়া হয়ে ওয়াহাটি যাচ্ছে আম্ব-অসম এক্স।

| | |
|-----------------------------|---|
| লক্ষৌ থেকে সড়ক দূরত্ব : | অমৃতসর যাচ্ছে ১৬-৫০এ হাওড়া-অমৃতসর মেল, |
| কানপুর ৭৭ কিমি | ১৫-৫০এ হাওড়া-অমৃতসর |
| কানপুর হয়ে দিল্লী ৪৯৭ " | এক্স। জম্মু যাচ্ছে ৩ ৬ ৭ দিন |
| আগ্রা ৩৬৯ " | ১৯-৩৫এ হিমগিরি এক্স, |
| বীসী ৩০১ " | ১০-০০টায় শিয়ালদহ-জম্মু |
| খাজুরাহো ৩২০ " | তাওয়াই এক্স, সাপ্তাহিক |
| বেরিলি ২৪৪ " | লোহিত এক্স। লক্ষার-হরিদ্বার |
| নৈনিতাল ৪০৭ " | হয়ে দেবাদুন যাচ্ছে ১৯-১৫য় |
| এলাহাবাদ ২৩৭ " | হাওড়া-দেবাদুন এক্স, ১৯- |
| বারাণসী ২৮৬ " | ৫৫য় বারাণসী-দেবাদুন এক্স, ১ |
| মোরাদাবাদ ৩৩৬ " | ৩ দিন ৩-১০এ গোরকপুর- |
| করবেট জাতীয় উদ্যান ৪৮০ " | দেবাদুন এক্স। ফিরোজপুর |
| দুধওয়া জাতীয় উদ্যান ২৬০ " | যাচ্ছে ১৪-৫০এ গঙ্গা শতক্র |
| অযোধ্যা ২২৮ " | এক্স। আঝালা ক্যান্ট যাচ্ছে |
| গোরকপুর ২৫৩ " | জম্মু ও অমৃতসরের প্রতিটা |
| পাটনা ৫৩২ " | ট্রেন। মোরাদাবাদ যাচ্ছে |
| হরিদ্বার ৫৯৫ " | ৬½ ঘণ্টায় জম্মু-অমৃতসর- |
| কলকাতা ১৬৬ " | দেবাদুনের প্রতিটা ট্রেন হাড়াও |
| মুখাই ১৩৭৪ " | নানান। বীসী যাচ্ছে কানপুর |
| চেন্নাই ২০১৭ " | হয়ে লক্ষৌ-মুখাই পূর্ণক |
| | এক্স, গোরকপুর-সেকেন্দাবাদ/ |
| | কোচি/ আমেদাবাদ এক্স, |

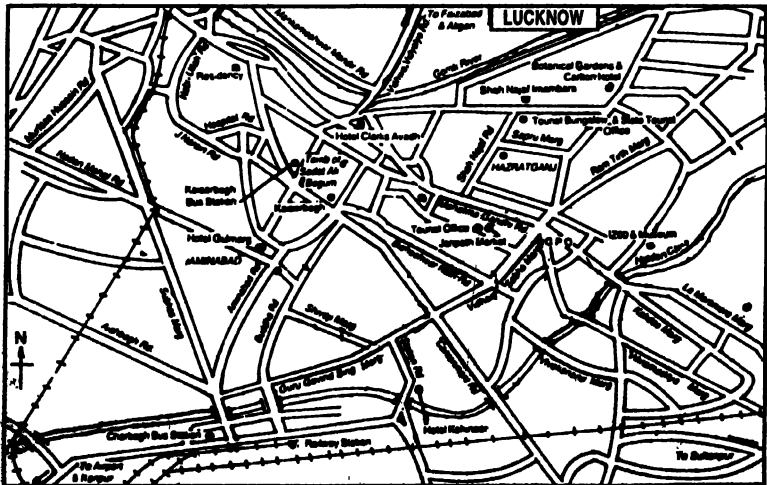
ছাপরা-গোয়ালিয়র এক্স, গোরকপুর-মুখাই কুশীনগর এক্স, সবরমতী এক্স, ১৬-১৫য় প্যাসেঞ্জার।

কুমায়ুন পাথারের যাত্রী নিয়ে ৭-৫০এ লক্ষৌ ছেড়ে ১৬-০৫এ

বেরিলি যাচ্ছে রেহিলাখণ্ড এক্স; ২১-১০এ লক্ষৌ ছেড়ে সীতাপুর/পিলিবিট/ভোজিপুরা হয়ে লালকুয়া যাচ্ছে পরদিন ৬-৪০এ নৈনিতাল এক্স; ১৮-৪৫এ লক্ষৌ ছেড়ে ভোজিপুরা/ বেরিলি/ কাশগঞ্জ হয়ে আগ্রা ফোর্ট যাচ্ছে মরুবার এক্স; ১৭-১৫য় লক্ষৌ ছেড়ে দুধওয়া যাচ্ছে ০০-২৫এ স্যাকচুমারি এক্স; কাঠগোদাম যাচ্ছে ২১-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে দুর্গাপুর ০-৫৭, মধুপুর ৩-১৮, শোনপুর ১১-৫৫, গোরকপুর ১৭-৩৫, লক্ষৌ ২৩-৫০, বেরিলি ৪-১০এ পৌছে ৮-৪৫এ ৩০১৭ হাওড়া-কাঠগোদাম এক্স। গোগা যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ও এক্স; ২২৭ কিমি দূরের জৌনপুর যাচ্ছে নানান ট্রেন। আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৪-১৫, ৬-০৫, ১২-৩০, ১৪-৩০, ১৯-০০টায় সীতাপুর; ৪-১৫, ১২-৩০, ১৪-৩০এ মইলানি; ১২-৩০এ পিলিবিট, আর মইলানি থেকে ৫-০০, ৬-৩০, ১১-২৫, ১৫-০০, ১৭-২০, ১৯-৩০এ ট্রেন মেলে পিলিবিট-এর; ৫-৫৫, ৮-৪০, ২৩-৫০এ হাড়াও নানান এক্স যাচ্ছে বেরিলি; কানপুর যাচ্ছে লক্ষৌ থেকে ৪-১০, ৫-০৫প্যা, ৭-২০, ৯-২৫, ১১-২০প্যা, ১৪-০০, ১৬-১৫ বীসী প্যা, ১৮-৩০টায় হাড়াও দুরাতের নানান ট্রেন; লক্ষৌ-বরাবাকি-ফৈজাবাদ-অযোধ্যা-জৌনপুর-বারাণসী শাখায় ১৩৫কিমি দূরের অযোধ্যায় যাচ্ছে ৩ ঘণ্টায় ৬-৩০, ৮-০৫, ৮-৪৫, ১২-০০, ১৮-৪০এ এক্স; ৫½ঘণ্টায় প্যাসেঞ্জার যাচ্ছে ৪-৪৫, ১৩-০০, ১৭-৩০, ২১-০৫এ। ৩২৪কিমি দূরের বারাণসী যাচ্ছে ৫½ঘণ্টায় ৪-১৫, ১১-০৫, ১৩-০০, ২১-০৫এ প্যাসেঞ্জার ট্রেন। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান রাজ্য তথা ভারতের দিগ্বিদিকে লক্ষৌ থেকে। তবুও উচিত হবে রেলের সর্বস্বত্ব খবর পেতে Lucknow Rail Enquiry ০ ১৩১কে যোগাযোগ করা।



জাতীয় সড়ক ২৪, ২৫, ২৮-এর সংযোগে লক্ষৌ নগরী। বাস স্ট্যান্ডও দুই লক্ষৌয়ে। বাস যাচ্ছে লক্ষৌ রেল স্টেশনের বিপরীতে চারবাগ বাস স্ট্যান্ড থেকে UP State Road Transport, ০ ৫০৭৪৪-এর উত্তর ভারতের দিকে দিকে। নানানধর্মী বাস যাচ্ছে মুম্বাই-বারাণসী ৯ঘ, গোরকপুর ৭ঘ, কানপুর ২ঘ, অযোধ্যা ৩ঘ, এলাহাবাদ ৬ঘ,



সোনোউলি ১১ঘ, আগ্রা ১০ঘ, দিল্লী ১২ঘন্টায়। আর যাচ্ছে বাস—খাজুরাহো, হাথীকেশ, দুধওয়া জাতীয় উদ্যান, মোরাদাবাদ, বেরিলি, কাঠগোদাম, নৈনীতাল, রানীক্ষেত হাড়াও নানান। আর শহরের প্রাণকেন্দ্র কাইজার বাগ (৩ ২৪২৫০৩) বাস স্ট্যান্ড থেকে বাস যাচ্ছে—বারানসী, গোরক্ষপুর, কানপুর, অযোধ্যা, এলাহাবাদ, আগ্রা, দিল্লী হাড়াও নানান স্থানে।

আর নেপাল প্রমণে ইচ্ছুক যাত্রীরা লক্ণৌ থেকে বিমান, রেল বা বাসে গোরক্ষপুর পৌছে আবার বাসে ঘণ্টা তিনেকে ভারত সীমান্তের সোনোউলি গিয়ে লাগোয়া উঁরোয়া (নেপাল সীমান্ত শহর) থেকে বাসে ঘণ্টা আটকে পোখরা, ঘণ্টা দশকে কাঠমাণ্ডুও পৌছে যেতে পারেন।

কনডাক্টেড ট্যুর : UP Tourism-এর দপ্তর বসেছে—Chitrarhar, 3 Naval Kishore Rd, Lucknow-226001, ৩ ২৪১৭৭৬/একই ঠিকানায় Directorate of Tourism, ৩ ২৪২৫৫৫/Govt of UP Tourist Reception Centre, Charbagh Rly Stn (Northern Rly), ৩ ৫২৫৩৩/10-4, Station Rd, ৩ ২৪৬২০৫-এ। নর্দার্ন রেল স্টেশন থেকে UPSTDC-র বাস প্রতিদিন সকাল ৯-০০টায় গিয়ে ১৩-০০টায় ফেরে শহর দেখিয়ে। ভাড়া ৬০ শিশু ৪০। প্রতি রবিবার সকাল ৮-০০টায় ৬ সপ্ত মার্গ থেকে গিয়ে নিমসার ও মিশ্রিক বেড়িয়ে ফেরে ১৯-৩০এ। রবিবার সকাল ৯-০০টায় ছাত্তারবাগ ও কাইজারবাগ থেকে গিয়ে ১৬-০০টায় ফেরে ৯ কিমি দূরের Kukrail Reserve Forest দেখিয়ে। যথেষ্ট যাত্রী হলে দিনে দিনে নৈমিষ্যবাগ, আর অযোধ্যাও যাচ্ছে প্যাকেজ ট্যুরে UPSTDC. এমনকি ৩ দিনের সফরে দুধওয়া, ৩ দিনের সফরে করবেট জাতীয় উদ্যান, ৪ দিনের সফরে কুশীনগর-লুখ্বিনী-কপিলাবস্ত-শ্রাবস্তী-অযোধ্যা, ৮ দিনের প্যাকেজে কাঠমাণ্ডুও যাচ্ছে লক্ণৌ থেকে UPSTDC. নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেনে এদের কাছে। বুকিং: UPSTDC, ৩ ২৪৪৩৪৭. আর Govt of India Tourist Office, Janpath Market, M G Marg, Hazratganj-এ। Wildlife Information Centre, 17 Rana Pratap Marg, ৩ ২৪৬১৪০-এ। শহরে চলছে মিটারহীন ট্যাক্সি, রিকশা, অটো, টাঙ্ক। রেল স্টেশন থেকে টেপোও যাচ্ছে যাত্রী প্রতি ৪-৫ টাকা ভাড়া—হজরতগঞ্জ, সিকান্দরগঞ্জ, কাইজার বাগ, চক হাড়াও নানান দিকে।

লক্ণৌ মিউজিয়াম-এ গুপ্ত ও মোগল যুগের মূদ্রা ও পাণ্ডুলিপির সংগ্রহ উল্লেখ্য। ছবিও অমূল্য সংগ্রহ রয়েছে মিউজিয়মে। হিন্দু, বৌদ্ধ ও জৈন স্থাপত্য, পোড়ামাটির কাজ, উপজাতীয় শিল্প, হাতের কাজ ও বাদ্যযন্ত্রের নানান সংগ্রহও দেখতে মেলে মিউজিয়মে। সকাল ৮—১১-০০, আবার ১৫-৩০—১৯-৩০টায় খোলা। বৃষ্ণ ও ছুটির দিনগুলি বন্ধ থাকে মিউজিয়ম।

নবাবের দুর্গের পাশেই বড়া ইমামবাড়া। ১৭৮৩ খ্রিস্টাব্দের মধ্যভাগে প্রজাদের আশ্রয় দিতে ১৭৮৪তে নবাব আসফ-উদ-দৌলা তৈরি করান। এর প্রশস্ত সম্মুখভাগ, শিলার হাড়া মূল হলু বিখ্যে বৃহত্তম (৫০x১৫ মি) খিলানাকৃতি অট্টালিকা। ইরানি স্থপতি খিয়ারাতুল্লাহ হাতে তৈরি ৪ তলা এই প্রাসাদপুরীর মাধ্যম বসেছে আর এক আশ্চর্য ভুলভুলাইয়া অর্থাৎ গোলকখাঁধা। ৫০০০ খিলান

আছে সারা বাড়িতে। পেওয়ালেরও কান আছে প্রমাণ মিলবে ভুলভুলাইয়ায়। শোনা যায়, গাইড ছাড়া পথের নিশানা মেলা অসম্ভব। শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান ভুলভুলাইয়া থেকে। তবে, প্রাসাদের সেকালের পাতাল-পুরীর পঞ্চতলি আজ রুদ্ধ। বাঁয়ে মসজিদ, বিপরীতে পাতালম্পর্শী কুয়ো। সমাধিস্থও রয়েছেন আসফ-উদ-দৌলা ও তাঁর বেগম। এরই পশ্চিমে ইমামবাড়ার প্রবেশ তোরণ রুমি দশওয়াজা বা টার্কিশ গেট। স্থাপত্যে অভিনবত্ব আছে। ইস্তামবুলের দরজার রেপ্লিকা রূপে বিশালাকার (৬০ ফুট) এই দরজা। এটিও ১৭৮৩-র দৃষ্টিকে ত্রাণ কাজের অঙ্গরূপে ১৭৮৪তে তৈরি করান আসফ-উদ-দৌলা। ১৮৫৭তে গণ-অভ্যুত্থানের কালে ব্রিটিশরাজ এটি ধ্বংস করে। প্রতি বছর সিয়াদখী মুসলিম ধর্মোৎসব মহরম পালিত হয়। রবিবার হাড়া ৬—১৭-০০টায় খোলা। টিকিট লাগে ১০ টাকার ভুলভুলাইয়া, ছোট ইমামবাড়াসহ ইমামবাড়া দেখতে।

ইমামবাড়ার মসজিদ থেকে অতীতের লক্ষণটিলাও দেখে নেওয়া যায়। সম্ভবত এই লক্ষণটিলাই হবে রামায়ণের লক্ষণাবতী। ১৫ শতকে গোমতীর দক্ষিণ তীরে লক্ষণাবতীতে লক্ণৌ নগরীর পত্তন। পরবর্তীকালে নাম হয় পীর মুহম্মদ কা টিলা আরও পরে আওরঙ্গজেব টিলা। পীর মুহম্মদ মসজিদ গড়েন এই লক্ষণাবতীতে।

বড়া আর ছোট দুই ইমামবাড়ার মাঝপথে ক্লক টাওয়ার। ১৮৮০তে শুরু হয়ে শেষ হয় ১৮৮৭তে নবাব নাসির-উদ-দিন হায়দরের হাতে। ম্যুরিশ শৈলীর ৬৭.৩ মি উঁচু চতুষ্কোণ এই ক্লক টাওয়ার তৈরিতে খরচ পড়ে ১১৭০০০ টাকা। অতীতে সোনায় মোড়া ছিল টাওয়ার।

বড়া ইমামবাড়া আর লাল ইটের প্রাসাদের কাছেই রয়েছে পিকচার গ্যালারি। মহম্মদ আলি শাহ তৈরি করান এটি বরাদদি অর্থাৎ গ্রীষ্মাবাস রূপে। দোতলার হলু ঘরে অযোধ্যার নবাবদের পূর্ণ দৈর্ঘ্যের প্রতিকৃতিগুলি আজও তাঁদের শৌর্য-বীর্যের কাহিনী শোনায। ১০—১৭-০০টায় খোলা।

মহম্মদ আলি শাহ ১৮৩৭এ সেকালের হসেনাবাদে তৈরি করান ছোট ইমামবাড়া। জনশ্রুতি, দৃষ্টিকের দুর্দিনে প্রজাদের রুটি জোগাতে ১০০০ শ্রমিক নিয়োগ করেন নবাব। আকারে ছোট হলেও স্থাপত্যে অভিনবত্ব আছে। শিরে গম্বুজ—১টি তার সোনার। পবিত্র কোরআনের আয়াত পেওয়ালময় উৎকীর্ণ। নানান রকম তাজিয়া ও দেশী-বিশেষী বাড়-লঠন মুক্ত করে দর্শকদের। মহরমে আলোকিত হয় প্রতিটি লঠন। সমাধিস্থ রয়েছেন নবাব মহম্মদ আলি শাহ ও নবাব জননী ছোট ইমামবাড়ায়। এরই পশ্চিমে নবাবের আর এক কীর্তি—ছুয়া মসজিদ। শিরাজের ঢঙে ৩টি ডোম আর হয়েছে আজান মিনার ২টি। তবে অসম্পূর্ণ অবস্থাতেই নবাবের মৃত্যু হতে বেগম মালিকা জাহানের হাতে সম্পূর্ণতা পায়। বিশ্বাসীদের প্রবেশ মন্য।

ইমামবাড়ার বিপরীতে ওয়াচ টাওয়ার—*Satkhandu* অর্থাৎ ৭ তলা টাওয়ার। তবে, ১৮৪০এ নবাবের মৃত্যুতে অসম্পূর্ণ ৪ তলাতেই থেমে যায় নির্মাণ।

ভারতের স্বাধীনতার অনেক উত্থান-পতনের নীরব সাক্ষী হয়ে শহর থেকে ২.৫ কিমি দূরে গোমতীর তীরে উঁচু চিপির ওপর ১৭৮০ থেকে ১৮০০তে তৈরি রেসিডেন্সি। অযোধ্যার রাজসভার ইংরেজ দূতদের বাসের জন্য মহম্মদ আলি শাহর তৈরি। তদানীন্তন ব্রিটিশ রেসিডেন্ট কর্ণেল স্মিথান-এর তদন্তে নবাবের অরাজকতার অভ্যুত্থানে নবাবী ক্ষমতা খর্ব করে সূচতুর ব্রিটিশের চুক্তিনামা স্বাক্ষরের প্রস্তাব নাকচ হতে ছলে বলে কৌশলে ১০ম বা শেষ নবাব ওয়াজিদ আলি শাহকে ১৮৫৬ খ্রিস্টাব্দের ৭ই ফেব্রুয়ারি নির্বাসনে পাঠায় ব্রিটিশরাজ। আর কার্যত প্রদেশের শাসক হয় ব্রিটিশ। ১৮৫৭র ১২ই মে ভারতময় সিপাহীদের স্বাধীনতা সংগ্রাম শুরু হতে সারা শহর থেকে ২৯৯৪ জন ব্রিটিশ নাগরিক আশ্রয় নেয় Sir Henry Lawrence-এর নেতৃত্বে রেসিডেন্সিতে। ব্রিটিশের আচরণে ক্ষুব্ধ নবাবের গুণমুগ্ধ প্রজারা ১৮৫৭ খ্রিস্টাব্দের সিপাহী বিদ্রোহে ৮৭ দিন ধরে অবরোধ করে রাখে রেসিডেন্সি। গুলি-গোলায় বিধ্বস্ত রেসিডেন্সিতে আগুনও লাগায় বিক্ষুব্ধ জনতা। সংঘর্ষে নিহত হাজার দুয়েক ব্রিটিশ সমাহিত রয়েছে রেসিডেন্সি চত্বরের বিধ্বস্ত চার্চ লাগোয়া। দ্বার আজ অব্যবহৃত। তবে, মডেল রুম ৯—১৭-০০টায় খোলা; কামানের গোলার ক্ষতিগ্রস্ত আজও দৃশ্যমান মডেল রুমের দেওয়ালে। এই বাড়িতেই ১৮৫৭র ২রা জুলাই কামানের গোলায় মৃত্যু ঘটে স্যার হেনরি লরেন্সের। দর্শনী লাগে মডেল রুম দেখতে, শুক্ৰবারি ফ্রি।

আর শহীদ মিনার হয়েছে ১৮৫৭র সিপাহী বিদ্রোহ অর্থাৎ স্বাধীনতার যুদ্ধে যেসব ভারতীয় প্রাণ দিয়েছিলেন তাঁদের স্মৃতিতে ১৫ই আগস্ট, ১৯৫৭য় রেসিডেন্সির বিপরীতে গোমতীর তীরে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে গোমতীর জলে।

হজরতগঞ্জে হোটেল গোমতীর অদূরে শাহনাজাফ ইমামবাড়া। অতীতে সোনায় মোড়া ছিল এর গম্বুজ—অন্দরে ঝাড়লঠন। আর অজব তাজিয়া—শহীদ ইমাম হোসেনের স্মরণে মিছিল বের হয় মহরমে। ১৮৫৭র স্বাধীনতা সংগ্রামী শাহনাজাফ সমাধিস্থ রয়েছেন অন্দরে। আর সমাহিত আছেন বেগমসহ বষ্ঠ নবাব গাজি উদ্দিন হায়দার (১৮১৪-২৭) শাহনাজাফ ইমামবাড়ায়। নামটি হয়েছে বাগদাদের নাজাফ নগরী থেকে। সিয়া সম্প্রদায়ের ধর্মগুরু হজরত আলি শায়িত রয়েছেন নাজাফ নগরীতে।

গিলাটি করা ছাতা থেকে ছায়ায় মঞ্জিল। বর্তমানে ক্ষেত্রীয় ঔষধ গবেষণাগার বসলেও নবাবদের নানান স্মৃতি-মণ্ডিত সুন্দর অলঙ্কৃত ও সুসজ্জিত অতীতের রাজপ্রাসাদটিও উচিষ্ট হয়ে দেখে নেওয়া।

লক্কা নগরীর আর এক আকর্ষণ ফরাসি মেজর জেনারেল রুড মার্টিনের প্রাসাদোপম বাড়ি কনস্টান্টিয়া। ১৭৬১তে পন্ডিচেরীতে বন্দী হয়ে ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানিতে যোগদান, আর ১৭৭৬এ নবাবের অধীনে চাকরি নিয়ে লক্কা আগমন রুড মার্টিনের। বাড়িটির অসম্পূর্ণ অবস্থায় (১৮০০খ্রি) মার্টিন মারা গেলেও তারই পরিকল্পনা মতো জোসেফ কুয়েরের উদ্যোগে ১ লক্ষ ৬০ হাজার পাউন্ড ব্যয়ে সম্পূর্ণতা পেয়ে ১৮৪০এ স্থূল বসে। বাড়িটির স্থাপত্যও অভিনবস্থ আছে—করিব্রিয়ান শৈলীর ১২ত ফুট উঁচু থামে গথিক স্থাপত্যের সমন্বয় ঘটেছে। সমাহিতও রয়েছেন রুড বাড়ির বেসমেন্টে। প্রিন্সিপালের অনুমতিতে দেখার ব্যবস্থা।

লক্কা বিনোদনের আর এক দুনিয়া পাড়ে রয়েছে বারাগানী বাগে। নীল আকাশের নিচে ১৯২১এ প্রিন্স অব ওয়েলসের ভারত ভ্রমণের স্মারক রূপে গড়া চিড়িয়াখানাটি মন্দ নয়। খাঁচা থেকে বাইরে বন্য জন্তুর দর্শনে রোমাঞ্চ আছে। সাপের সংগ্রহ উদ্ভেখা। মিনি ট্রেন চলেছে চিড়িয়াখানা তথা বটানিক্যাল গার্ডেনে। একই চত্বরে রূপ পেয়েছে Natural History Museum. ১০-৩০ থেকে ১৬-৩০টায় খোলা। এরই পাশে হয়েছে আকোয়ারিয়াম। সংগ্রহ অতি সাধারণ। অদূরে রাজভবন ও বিধানসভা।

চারবাগের চিলড্রেন মিউজিয়ামটিও দেখবার মতো। ১০—১৬-০০টায় খোলা, সোমবার বন্ধ।

এছাড়াও রয়েছে শহরময়—হজরতগঞ্জে ১৯২৮ খ্রি ১৮ লক্ষ টাকা ব্যয়ে নির্মিত বিধানসভা ভবন। ২ কিমি দূরে ১৮৫০এ তৈরি কাইজার বাগ বরাদরি অর্থাৎ মনোরম বাগিচায় লেকের মাঝে শেষ নবাবের সামার প্যালেস, হারেম মহল; ৫ম নবাব সাদাত আলি বেগমসহ এখানে শায়িত। নবাব ওয়াজিদ আলি শাহর তৈরি সিকান্দারবাগ অর্থাৎ গ্রীষ্মাবাসে আজ বটানিক্যাল গার্ডেন বসেছে। শহরের প্রাচীনতম সৌধ আকবরের নিযুক্ত প্রথম গভর্নরের (১৬০০) সমাধি নাদান মহল, ৫ কিমি দূরে মজিডভবন, ১ কিমি দূরে কাউপিল চেম্বার, ভিক্টোরিয়া পার্ক, গোমতীর উত্তর পাড়ে বাদশাহ বাগে বিশ্ববিদ্যালয়, সোম ছাড়া ১০-৩০—১৬-৩০টায় বারাগানী বাগে স্টেট মিউজিয়াম, ইব্রাহিম চিস্তির সমাধি, খোলা খাছা প্যাভিলিয়ন, খাসিয়ামণ্ডিতে বাঙালির দেবী শতাব্দিক বছরের কালী, এমনকি মহরমের তাজিয়া মিছিল লক্কা ভ্রমণে দ্রষ্টব্য। বিশালাকার তাজিয়া নিয়ে মিছিল বের হয়—বাজি পোড়ে মহরমের রাতে। তবুও যেন সবকিছুকে ছাপিয়ে লক্কা আজ অধিক আমোদিত হয় প্রতি বছর ফেব্রুয়ারির ১০ দিন ব্যাপী লক্কা উৎসবে। মিছিল বেরায় নগরীতে, নানানধর্মী সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানের সাথে ঘুড়ি ওড়ে আকাশ ছেয়ে। মোরগ-লাড়াইও উৎসবের আর এক দ্রষ্টব্য।

রেল স্টেশন চারবাগে আর বাস স্ট্যান্ড রেল স্টেশনের বিপরীতে চারবাগ ও শহরের প্রাণকেন্দ্র কাইজার বাগে।

রাজ্য পর্যটনের ট্যুরিস্ট অফিস তথা ট্যুরিস্ট বাংলা Hotel Gomoti-র অবস্থান রেল থেকে ৪½ বাস থেকে ৩ কিমি দূরে হজরতগঞ্জের ৬ সপ্ত মার্গে। অদূরেই ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর। শহরের উত্তর-পূর্বে চক এলাকাকে ঘিরে নবাবী সৌধ তথা পুরাতন লক্কৌ।

২৫০-৩০০ টাকায় চুক্তিতে মিটারহীন ট্যান্ডি নিয়ে এগুলি দেখে নিতে পারেন। সিটি বাসে চেপেও দেখে নেওয়া যায় এক এক করে প্রতিটা। অটো/টাঙ্ক/রিকশাও মেলে চুক্তিতে ১৭৫/১২৫/৮৫ টাকায়। আবার সময় স্বল্পতায় চক এলাকায় বড়া ইমামবাড়া, ছোট ইমামবাড়া, জুমা মসজিদ; হজরতগঞ্জের শাহনাজাফ—দুইয়ের মাঝে রেসিডেন্সি, বিপরীতে শহীদ মিনার; বারানসী বাগে চিড়িয়াখানা আর যাতায়াতের পথে শহর দেখে লক্কৌ দেখা সাজ করতে পারেন ঘণ্টা ৫/৬-এ। এমনকি লক্কৌ রেল স্টেশনটিও গড়ে উঠেছে ইমামবাড়ার রেলিকা হয়ে। বছরভর চলা গেলেও এপ্রিল থেকে জুলাই-এর গ্রীষ্ম এড়িয়ে যাওয়া উচিত হবে লক্কৌ ভ্রমণে। আর শীতের অধিকা ঘটলেও যেনো মন সময় অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। তাপমান গ্রীষ্মে ৩৬.৬°—২৫°সে, শীতে ২১.১°—১১.১°সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে ৭৯ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত ১২৩ মি উঁচু লক্কৌ-এ।

কেনাকাটা: লক্কৌতে পর্যটকদের জন্য রয়েছে লক্কৌ সুন্দরী চিকন। জরির নানান কারুকার্য খচিত লক্কৌয়ের চিকন শাড়ি ও পাঞ্জাবির সারা বিশ্বে সমাদর আছে। চক বাজার বা আমিনাবাদ কেনাকাটার পক্ষে সুবিধার। শুক্রবার চক বাজার আর বৃহস্পতিবার আমিনাবাদ বন্ধ থাকে। আর রয়েছে বনেদী বাজার—হজরতগঞ্জ, রবিবার বন্ধ। তেমনই লক্কৌয়ের আতরের সুবাস সেও যেন আমোদিত করে তোলে যাত্রীদের। তবুও যেন হজরতগঞ্জের গভর্নমেন্ট এম্পোরিয়ামের আবেদন সর্বাত্মে। নবাবী আমলের নানান অ্যান্টিক সাজিয়ে রেখেছে দোকানী লক্কৌয়ের দোকানপাটে।

ভোজন বিলাসী নবাবদের সৃষ্টি মুখরোচক নানান আহার লক্কৌয়ের কুটি হয়ে আজও মেলে হোটেল-রেস্তোরাঁয়। কেবল মেনুতেই রকমারি নয়—রন্ধন-প্রণালীতেও বৈচিত্র্য আছে। লসরখানার ভাপ বা বাষ্পের চাপ মোগল দরবারের বিরিয়ানির জন্ম দেয়। মোগলাই খানা—বিরিয়ানি, পোলো বা রুমালি রুটির সাথে মুগ মসুর আর কাকোরি কাবাবের স্বাদ নিতে পারেন হজরতগঞ্জের—রন্ধনা, কে এ ওয়াই কেজিকার্নার, রয়্যাল ককে, কোয়ালিটি-তে; আমিনাবাদের গুলমার্গে; লালবাগে সীম বা শিবাজী মার্গে মথুবন রেস্টুরেন্টে। চীনা ডিশের জন্য হজরতগঞ্জের হবক রেস্টুরেন্ট যথেষ্ট খ্যাত। তেমনই Marksman Cafe, মহাশী পাণ্ডী রোড বা Indian Coffee House দুইয়েরই প্রসিদ্ধি কবির জন্য। আর মশলা খোসার স্বাদ নেওয়া যেতে পারে Basanta Restaurant-এ। লক্কৌ জং রেল স্টেশনের রিস্টুরেন্ট রুমটিরও যথেষ্ট সুখাদি আহার পরিষেবার। আর উচিত হবে কলকাতা ও কলকাতার স্বাদ নেওয়া লক্কৌয়ের হোটেল-রেস্তোরাঁয়। তেমনই লক্কৌয়ের আর এক কুটি তার স্বাদ দশেরী আশ সৃষ্টি।



রেল স্টেশনের বিপরীতে Charbagh, Lucknow-226001, STD-0522-এ—Bengali H, ০ 455819, SCB ৭৫ ৮৫ SAB ১২৫ DCB ১০০-১২৫ DAB ১৬০-২০০, এয়ার কুলারের জন্য ৪০ অভিরিক্ত; New Sharna H, opp Rly Stn, SCB ৭০ SAB ১০০ DCB ১২০ DAB ১৫০-২২৫; H Mayur, ০ 451824, SCB ১২৫ SAB ১৫০-২৫০ DCB ১৬৫ DAB ১৬৫-৩০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; Kaveri L, ০ 456505, SCB ৭৫ SAB ১৪০ TV সহ ১৭৫ DCB ১৫০ DAB ২০০-২৭৫ TAB ২৪৫-৩০০ A/c D ৪০০; Gitanjali G H, H Hindusthan, ০ 455812, SCB ৬০ SAB ৮০-১২৫ DCB ১২৫ DAB ১৫০-২০০ A-c D ২৭৫; বামহাতি গলিপথে H Tulsii, Pandariba, ০ 51627, SCB ৮০ DAB ১৬০-২২৫ ডিলাল TV সহ ২০০-২৭৫ A/c D ৪০০-৪৫০; মূলপথে আরও যেতে রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে Naka Hindola-র রাজকীয় বাড়ি, বাথ সংলগ্ন ঘরের অভাব হলেও ৩০ টাকায় ঘর মেলে Shital Dharamshala-য়; লাগোয়া H Deep Advadh, 133/273 Aminabad Rd, A10R1B0, ০ 216521, DAB ২২৫ DAB ২৭৫ A-c S ৩০০ D ৩৭৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; H Amber, D ১৭৫। অদূরে বামহাতি গলিপথে H Yatri, Vijaynagar, ০ 249803, SAB ১২৫ DAB ১৭৫ A-c D ৩০০ TV সহ; Mohan H, Charbagh, ০ 454283, A-c S ২৫০-৫৫০ D ৬২৫-৪৫০ A/c S ৪৫০-৬০০ D ৬২৫-৮০০; বিপরীতে Prakash L. মূলপথে Gautam Budh Marg ঘরে আরও যেতে Nuresh H, H Apsara, S ১০০ D ১৭৫ A-c S ২০০ D ৩০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; পার্শ্বে H Amar Prem, D ১৫০-২০০ A-c D ৩০০ A/c D ৪২৫; Vaishali H, বিপরীতে Lucknow H. চারবাগ বাস স্ট্যান্ডে Baba Tourist L, Amaravati H, Guru Gobinda Singh Marg, R2B1, SCB ৮০ DCB ১২৫ DAB ১৭৫।

লালবাগে—H Ellora, S ১৭৫ D ২৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; Amin-ud-doulla Park-এ—Central H, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A-c D ৩৫০; Gulmarg, S ১২৫-২৭৫ D ২৫০-৩৫০ A/c S ৩০০ D ৪০০; Aminabad-এ—Kashmir; Rainbow, S ৬৫-১২৫ D ১০০-২২৫; Kaushala H, SCB ৪০ SAB ৬০ DCB ৮০ DAB ১২৫-১৭৫; Chowdhury L, 2 Vidhan Sabha Marg; Surajya; H Deep, 5 Vidhan Sabha Marg-1, ০ 216441, S ১৭৫ D ২২৫ A-c S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০; Raj H, 9 Vidhan Sabha Marg, S ১৫০-২২৫ D ২০০-৩৫০; Capoor's H, 52 Hazratganj-1, ০ 243958, A14R4, D ২৫০-৪০০ A/c ৬০০; H Charan International, R3B2, 16 Vidhan Sabha Marg-1, ০ 247221, SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c S ৪৫০ D ৬২৫ সুইচ ৭৫০-১০০০; H Tourist, B N Rd-1, R2.5B2.5, SAB ১০০ DAB ১৭৫। Hewett Rd-এ—Darpan H, Vishnu Gopal H, H President, 7 Rani Luxmi Bai Marg; Plaza H, Shivaji Marg, R2; H Awadh, 1 Ram Mohan Roy Marg, near Botanical, S ১০০ D ১৭৫; প্রতিটাই রাজ্য সরকার অনুমোদিত। এছাড়াও হোটেল আছে নানান লক্কৌতে। S ৬৫-১৫০ D ৮০-২২৫ টাকায় মেলে এদের কাছে।

পান্চাত্য প্রধায় : *H Kohinoor, 6 Stn Rd-226001, near Rly Stn, ৩ 237693, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০; H Chitrakoot; H Arif Castle, 4 Rana Pratap Marg-1, ৩ 231313, S ৮৫০-১২৫০ D ১০০০-১৬৫০; *H Clerks Avadh, 8 M G Marg, Hazratganj, ৩ 216500, A/c S ১৭৫০ D ২৫০০ সুইট ৩৭৫০; *H Carlton, Shahnajaf Rd-1, ৩ 24201, S ৮৫০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ১০০০ সুইট ১৫০০; Tujmahal H, Vipin Khand, Gautam Nagar-10, ৩ 393939, S ৯৫ D ১১০ US\$.

আর আছে উত্তর-পূর্ব রেলের সিটায়ারিং কুমলকৌ-এ। এছাড়া UPSTDC-এর H Gomoti, 6 Sapru Marg, Hazratganj, ৩ 220624, R4, A-c S ৮০০ D ৮৫০ A/c S ৬৫০ ৮৫০ D ৮৫০ ৯৫০ ডর্মি বেড ৬০। YMCA, Rana Pratap Marg, ৩ 247227 ও YWCA, Borrow Rd-এও থাকার ব্যবস্থা মেলে। DFO-র অনুমতিতে রানা প্রতাপ মার্গের FRH-এও ঘর মেলে থাকার। আর আছে ধরমশালা : Sheth Shankarlal; Sital; Vinayak, Naka Hindola, near Rly Stn; Cheddi Lal, Aminabad; Lala Bholanath, Chowk; Ganga Prasad, Chowk-এ। আর আছে কেশরবাগে শুভম সিনেমার বিপরীতে ঘাসিয়ারি মণি কালীবাড়ি লকৌ-এ। চারবাগ থেকে শোয়ার অটোয় শুভম পৌঁছে চলা যেতে পারে বাজালি তীর্থ কালীবাড়ি। তবে, বাড়িটি জীর্ণ হলেও বাজালি পর্যটকদের কাছে রেল স্টেশনের বিপরীতে Bengali H-টি বিশেষভাবে আদৃত। থাকা ও খাবার প্রশংসনীয়। এদেরই Calcutta Sweets-এর মিষ্টিরও যথেষ্ট সুনাম। একই মালিকানাধীন সংস্থা H Hindusthan—opp N F Rly Stn ও ৫ মিনিটের পথে H Yatri. থাকার জন্য HTulsi ও H Yatri ভালই।

কাঠগোদাম



নবতম ব্রডগেজ রেলের কলকাতা থেকে সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে 3019 হাওড়া-কাঠগোদাম এক্স। ২১-৮৫এ হাওড়া ছেড়ে বর্ধমান ২৩-৫০, দুর্গাপুর ০-৫৭, মধুপুর ৩-১৮, জসিদি ৩-৫৬, কিলড ৬-০৯, মজফরপুর ১০-৩০, গোরক্ষপুর ১৭-৩৫, গোড়া ২০-৩৫, লকৌ ২৩-৫০, বেরিলি ৮-১০, রামপুর ৫-৮৫, লালকুয়া ৭-১৭, হালদুয়ানি ৮-০২এ পৌঁছে ১৫১৩ কিমি দূরের কাঠগোদাম যাচ্ছে ৮-৮৫এ। হাওড়া ফেরে কাঠগোদাম থেকে ১৯-৩০এ 3020 হাওড়া এক্স। 530৮ নৈনীতাল এক্স যাচ্ছে ২১-১০এ লকৌ ছেড়ে মিটারগেজে সীতাপুর-মেলানি-ভোজিপুরা হয়ে পরদিন ৬-২০এ লালকুয়া। লকৌ ফেরে ২০-৮৫এ লালকুয়া থেকে। ট্রেন আসছে দিল্লী জং থেকেও ২৩-০০টায় নতুন দিল্লী ছেড়ে 5013 দিল্লী-কাঠগোদাম রানীক্ষেত এক্স ২-১৫য় মোরাদাবাদ, ৮-৩৫এ রামনগর পৌঁছে ৬-১০এ কাঠগোদাম। দিল্লী ফেরে কাঠগোদাম থেকে ২০-৮৫এ 5014 A লিঙ্ক এক্স মোরাদাবাদে 5014 রানীক্ষেত এক্স হয়ে পরদিন ৮-৫০এ। ২২-০৫এ আগ্রা ফোর্ট ছেড়ে মথুরা/কাশগঞ্জ/বেরিলি/ভোজিপুরা হয়ে লালকুয়া যাচ্ছে পরদিন ৮-৩০এ 5311 কুমায়ুন এক্স। লালকুয়া থেকে ট্রেন, বাস, পেয়ার অটো/ট্যাক্সিতে হালদুয়ানি হয়ে ১৮শটার কাঠগোদাম। তেমনিই ৭-৫০এ লকৌ ছেড়ে ১৬-০৫এ বেরিলি যাচ্ছে 5310 লকৌ-বেরিলি রোহিলাখণ্ড এক্স। বেরিলি থেকেও ট্রেন বা বাসে কাঠগোদাম লাগা যেতে পারে। কনিপুর থেকে ৬-৩৫এ কাঞ্চকুজ এক্স, ১১-০০টায় কাশগঞ্জ এক্স,

১৮-২০এ পবন এক্স, ২২-০০টায় এক্সে ৬ই শটায় কাশগঞ্জ পৌঁছে ট্রেন বা বাসে কাঠগোদাম। তবুও যেন ভারতের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে বেরিলি পৌঁছে ট্রেন বা বাসে ঘণ্টা তিনেক হালদুয়ানি বা কাঠগোদাম চলায় সময়ে সাশ্রয় মেলে।



বাসও যাচ্ছে লকৌ থেকে রাতভর জানিতে কাঠগোদামে। কাঠগোদাম রেল স্টেশন লাগোয়া বাস স্ট্যান্ড থেকে UPSRTC-র বাস, প্রাইভেট বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে নৈনীতাল ৩৮, রানীক্ষেত ৮৮, আলমোড়া ৯০ কিমি। আর কাঠগোদামের আগের স্টেশন হালদুয়ানি থেকে প্রাইভেট বাস যাচ্ছে কুমায়ুনের নানান দিকে। সমতল ভারত ও পাহাড়ী পথের বাস আধিক্য মেলে হালদুয়ানি থেকে।



থাকার জন্য KMN-এর Tourist Bungalow, ৩ 22245, DAB ১৫০ ২৫০ ২৭৫ ডর্মি ৫০; Amrapally, Nikhar ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেলে আছে কাঠগোদামে। আর হালদুয়ানিতে আছে H Saurabh Mount View, A20R2, ৩ (05946) 22371. DAB ৩৫০-৮৫০ ডিলাঞ্জ ৫০০-৭৫০ A/c ৮৫০; H Nataraj, Hotel OK, H Alankar, H Trishul, Manas Sarovar, Gold Star, Ashok Tourist H ছাড়াও নানান হোটেলে বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে।

গেটওয়ে অব কুমায়ুন ১৭৫৮ ফুট উঁচু কাঠগোদাম। শহর প্রসার পেয়েছে কাঠগোদাম থেকে হালদুয়ানি ৬ কিমি ব্যাপ্ত দুই স্টেশন জুড়ে। কাঠগোদামেও তুষারাবৃত হিমালয়ের নানান শৃঙ্গ দৃশ্যমান। ২ কিমি দূরে সুন্দর নৈসর্গিক শোভার মাঝে থনকরে থেকেও তুষারাবৃত শিখররাজির শোভা বাক-রুদ্ধ করে।

কাঠগোদাম যাতায়াতে দক্ষিণ ও পশ্চিম ভারতের যাত্রীদের আগ্রা বা ৩৯৭ কিমি দূরের মথুরায় কুমায়ুন ধরাই সুবিধার। ট্রেন যাত্রীদের লিঙ্ক বাসও মেলে প্রতিটি পাহাড়ী পথের রোহিলাখণ্ডের অতীত রাজধানী ১০৭ কিমি দূরের বেরিলি থেকে।



থাকারও নানান ব্যবস্থা Bareilly-243001, STD-0581-এ—Civil & Military H, Stn Rd, Civil Lines, ৩ 70879, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫ ডর্মি বেড ৫০; H Uberoi Anand, 46 Civil Lines-1, ৩ 476111, R3, S ২৫০ D ৩৫০ A-c S ৮০০ D ৫০০ A/c S ৮৫০-৬০০ D ৬২৫-৮০০ সুইট ১৫০০; H Uberoi Anand Annexe, 46 Civil Lines, Bareilly-1, ৩ 476111, S ৩০০ D ৮৫০ A-c S ৮০০ D ৫৫০ A/c S ৬০০ D ৬৫০ সুইট ১২৫০; ছাড়াও হোটেল আছে নানান বাণিজ্যিক শহর বেরিলিতে। আর আছে UPSTDC-এর Tourist Bungalow, A-c S ১৭৫ D ২০০ A/c S ৩০০ D ৩৫০।

পছনগর : বেরিলি থেকে কাঠগোদামের পথে পড়ে পছনগর। কৃষি বিশ্ববিদ্যালয়ের জন্য এর প্রসিদ্ধি। কৃষি গবেষণাকেন্দ্রেও বসেছে। উন্নত ধরনের বীজ তৈরি করে যথেষ্ট সুনাম অর্জন করেছে এই বিশ্ববিদ্যালয়। সপ্তাহের ১ 35 দিন আর মরসুমে প্রতিদিন IAC-র বিমান আসছে দিল্লী থেকে কুমায়ুন পাহাড়ের যাত্রী নিয়ে ৫০ মিনিটে পছনগরে। বাস যাচ্ছে কুমায়ুনের দিকে দিকে পছনগর থেকে।

নৈনীতাল

১৯৩৮ মি উঁচুতে কুমায়ুন পর্বতমালার শৈলশহর নৈনীতাল। কলকাতা থেকে দূরত্ব ১৪০২.৪ কিমি। একটি পাহাড়ী তাল অর্থাৎ লেককে ঘিরে গড়ে উঠেছে নৈনীতাল পাহাড়ী শহর। নৈনীতালের মূল আকর্ষণ তার ল্যান্ডস্কেপ। শীত বেশি উষ্ণতার হারে। তাপমান গ্রীষ্মে ২৬.৭°-১০.৬° আর শীতে ১৫.৬°-২.৮° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। মার্চ থেকে জুন আবার মাঝ সেপ্টেম্বর থেকে অক্টোবরের শেষ নৈনীতাল বেড়াবার মনোরম সময়।

কুমায়ুন: ইউফ্রেটিস নদী তীরের Kassite Assyrians-রা ৫০০ BC-তে হোমল্যান্ড Kumnah ছেড়ে ভারতে এসে উত্তরাঞ্চলে বসতি গড়ে। Kumnah-বাসীরা ভারতে এসে Koliyan Tribes রূপে গড়ে ওঠে। আর হোম ল্যান্ড Kumnah থেকে Kunaon নাম করে নতুন উপনিবেশের। ব্যবসা-বাণিজ্য ও খনিজ সম্পদে এদের ব্যুৎপত্তি অসাধারণ। এই বংশেরই কন্যা সিদ্ধার্থ-জননী মায়াদেবী। আরও পরে এদেরই উত্তরসূরী Kutuyi, Chand রাজারা যথেষ্ট প্রথিতযশা। চাঁদ রাজাদের হাতেই কুমায়ুন সাম্রাজ্যের আধুনিকতা। চম্পাবত থেকে রাজ্যপাট তুলে ১৭ শতকে কল্যাণচাঁদ নতুন করে রাজধানী গড়েন আলমোড়া। ১৮ শতকের শেষভাগে শতাব্দীর সাথে গোখরা দখল করে কুমায়ুন। ১৮১৫য় সাগাউলির সন্ধি-চুক্তি মতো ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি তথা ব্রিটিশের দখলে যায় কুমায়ুন। আর আজ প্রকৃতিপ্রেমিক পর্যটকদের দখলে কুমায়ুন সাম্রাজ্য। তুবারাচ্ছাদিত হিমালয়ের শিখর-রাজি দেখতে যাত্রী যাচ্ছেন—চৌকোবি, কৌশানি, পাউরি, পিথোরাগড়, বিনসার তথা কুমায়ুনের দিকে দিকে। গ্রীষ্মের দাবদাহে সাময়িক থিতু হতে নৈনীতাল, আলমোড়া, রানীক্ষেত আজও অনবদ্য। তেমনই ট্রেকারদের স্বর্গ রাজ্যও সুন্দরতম পাহাড় এই কুমায়ুন। হিন্দু পুরাণের নানান আখ্যানও ছড়িয়ে রয়েছে কুমায়ুনের গিরি-কন্দরে।

অতীতের চীনা আজ হয়েছে নায়না পিক ২৬৪০, আলমা ২৪৩২, শের কা-দাঙা ২৪০৫, লরিয়া কাঙা ২৪৮৫, আয়ারপাট্টা বা ডরোথি সিট ২৩২০, হাতি বৃন্দ ২১৭৯, দেওপাট্টা বা ক্যামেলস ব্যাক ২৪২২ মি উঁচু—আকাশচুম্বী সপ্তশৃঙ্গ বাহু গড়েছে লেক তথা শহরকে ঘিরে। সূর্য লুকাচুরি খেলে আকাশ আর পাহাড়ের সাথে—তারই প্রতিচ্ছবি ফোটে লেকের ইজ্জলে। শান্ত, শিষ্ণ, পপলার আর দেওদারে ছাওয়া শহর; ম্যাল ধরে চিনারের সারি। উত্তর প্রদেশ সরকারের গ্রীষ্মাবাসও নৈনীতাল। শহরের জন্ম ১৮৪২এ Pilgrim Cottage গড়ে ব্রিটিশ শিকারী P Barron-এর হাতে। পাহাড় আবিষ্কারও তিন বছর আগে শিকারে

বেরিয়ে পথ হারিয়ে ব্যারন সাহেবের। তবে, অতীত ধ্বংস পায় সপ্তাহব্যাপী বিধ্বংসী বৃষ্টির ধসে সেপ্টেম্বর ১৬, ১৮৮০। ধসের শিকার ১৫১ জন সমাধিস্থ হয় অ্যাসেম্বলি হল-এ—নবরূপে গড়ে ওঠে বিনোদন ক্ষেত্র অর্থাৎ আজকের ফ্লাটস। সেই থেকে দীর্ঘ শতাধিক বছর ধরে গড়ে উঠেছে শহর পর্যটকদের চোখের মণি নৈনী লেকের পাড়ে—থরে থরে পাহাড় ঢালে।



বাস পৌছায় লেকের পাড়ে ডালিতালে। বাস যাচ্ছে কুমায়ুনের দিকে দিকে ডালিতাল থেকে। রাত্রিকালীন সার্ভিসেও বাস যাচ্ছে নৈনীতাল থেকে লঙ্কো ও দিল্লী। এমনকি A/C Deluxe বাসও চলছে দিল্লী-নৈনীতালের মাঝে। রেলের সিটি বুকিং-ও বসেছে UPSRTC-র অফিস, ডালিতালে। আর বায়ুদূতের বুকিং KMVN-এর দপ্তর মাঝে। বাস যাচ্ছে বায়ুদূতের যাত্রী নিয়ে KMVN-এর ২২ঘণ্টায় নৈনীতাল থেকে পছনগরে।

নৈনীতাল থেকে বাস যাচ্ছে :

| | | |
|------------|--------------|--|
| দিল্লী | ৯ ঘ ৩৩৮ কিমি | ৮-০০, ৮-৪৫, ১৮-৩০ |
| দেহাদুন | ১০ ঘ ৩৮৫ " | ৫-৩০, ৬-০০ |
| লঙ্কো | ১০ ঘ ৪০১ " | ১৭-০০ |
| রামনগর | ৩ ঘ ১০১ " | ৫-০০, ৭-০০, ৭-৪৫, ১০-৩০, ১৫-১৫ |
| টনকপুর | ১৬৮ " | ৪-০০, ১৫-০০, ১৬-০০ |
| পিথোরাগড় | ৯ ঘ ১৮৮ " | ৭-০০ |
| হরিদ্বার | ৯ ঘ ৩০৫ " | ৫-০০, ৫-৩০, ৬-০০, ৬-৩০, ৭-৪৫ |
| হাবীকেশ | ১০ ঘ ৩২৩ " | ৫-০০, ৭-৪৫ |
| বেরিলি | ৫ ঘ ৪১১ " | ৭-১৫, ১৩-৩০, ১৪-৩০ |
| কৌশানি | ৫ ঘ ১১৩ " | ৭-০০ |
| রানীক্ষেত | ৩ ঘ ৬০ " | ৬-৩০, ৮-০০, ৮-৩০, ১২-৩০ |
| আলমোড়া | ৩ ঘ ৬৩ " | ৭-০০, ৮-০০, ৮-৩০, ১১-০০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৫-০০ |
| হালদুয়ানি | ১ ঘ ৪০ " | ৬-১৮-০০টায় আধ ঘণ্টা অন্তর |
| কাঠগোদাম | ১ ঘ ৩৪ " | হালদুয়ানির প্রতিটা বাস। |

বাস যাচ্ছে মোরাদাবাদ ১৬০, রামনগর-বিকলা হয়ে করবেট ১৫০, পছনগর ৭১, দেহাদুন ৩৫১, আগ্রা ৩৬২ কিমিও নৈনীতাল থেকে। সাং যাচ্ছে পিঠারীর যাত্রী নিয়ে প্রতি সকালে। গ্রাইন্ডেট বাসও চলছে উত্তর ভারতের দিকে দিকে নৈনীতাল থেকে। রাত্রিকালীন সার্ভিসেও বাস যাচ্ছে দিল্লী, মুম্বাই, হরিদ্বার, লঙ্কো ছাড়াও নানান নৈনীতাল থেকে।

বাস থেকে নামতেই লেকের পাড় ধরে বামে নৈনীতাল, শেষ হতেই মালিতাল। বাস স্ট্যান্ড, বাজারঘাট, দোকান-পাট ডালিতালে। পর্যটকদের শহর নৈনীতাল। আর খেলার মাঠ তথা পর্যটন বিনোদনের আসর বসেছে ফ্লাটস অর্থাৎ

মালিতালে। ৭০০মি দীর্ঘ কেবল কার চলছে ২২৮৭মি উঁচু স্লো ভিউ পয়েন্ট থেকে বরফে ছাওয়া হিমালয় দেখাতে মালিতালের হোটেল কুমায়ুন-এর পেছন থেকে। হোটেল-গুলিও ধরে বিখ্যে গড়ে উঠেছে লেকের দক্ষিণ পাড়ের পাহাড়ী ঢালে ১৫ কিমি দীর্ঘ ম্যাল রোডে। ম্যাল রোডের দু'প্রান্তে তালিতাল ও মালিতাল। পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায় পুরো শহরটা। সাইকেল রিকশাও চলছে ম্যাল রোড ধরে শহরে। টোকেন নিয়ে রিকশা চড়ার প্রথা। বুকিং কাউন্টার বসেছে ম্যালের উভয় প্রান্তে। ট্যাক্সিও মেলে শহর পরিক্রমায়। আর চলছে ঘোড়া যাত্রী নিয়ে শহরে। পশমজাত বসন, রূপোর ভূষণ, রডোডেনড্রন ফুলের ক্রোয়াশ সঙ্গী করা যেতে পারে স্মারকরূপে নৈনীতাল থেকে। তেমনই মোমজাত নানান ধর্মী মোমবাতিও স্মারক হতে পারে নৈনীতাল ব্রহ্মণের। ফ্ল্যাটসের তিব্বতী বাজার আদরণীয় হবে কেনাকাটায়।

পর্যটক বিনোদনের ঘাটতি নেই পাহাড়ী শহর নৈনীতালে। সঙ্গে বাড়তি পসরা হয়ে দাঁড়িয়ে আছে সিম আকারের নৈনী লেক। কিংবদন্তী, অত্রী, পুলক্সা ও পুলহ তিন ঋষির চীনাপিকে চড়তে ক্লান্ত-শ্রান্ত হয়ে পিপাসা দূরীকরণে মাটি খুঁড়ে জলের খারা আবিষ্কার—কালে কালে জলাধার, নাম হয় তার ত্রিখাষি তাল বা সরোবর। আরও পরে নৈনীতাল। মানস সরোবরের জল মেলে লেকে। দৈর্ঘ্যে ১৩৭০ মি, প্রস্থে ৩৬০ মি; আর জলের গভীরতা ২৮ মি। লেকের জলে রোয়িং, পেডাল বোটিং ও সাঁতারের ব্যবস্থা আছে। আবার নৈনীতাল ক্লাবের সাময়িক সদস্য (২০০) হয়ে ইয়টিং (Yacht) অর্থাৎ পাল তোলা হালকা নৌকায় ভেসে বেড়াতে পারেন লেকের জলে। সূর্যাস্তে ফেরারি ল্যান্ডের রূপ নেয় নৈনীতাল। লেকের পাড়ের চূড়োগুলিও সৌন্দর্য বাড়িয়েছে শহরের। তেমনই কাঠগোদামখুঁচি পায়ে পায়ে বা ঘোড়ায় দেখে নেওয়া যায় ৪ কিমি দূরে ১৯৫১মি উচ্চে স্টেট অ্যান্ট্রনমিক্যাল অবজারভেটরি থেকে দূর-দূরান্তের প্রকৃতি। পথেই (৩.২) পড়ে ১৯১৭মি উঁচু টিলিয় পর্বনপূরের মন্দির হনুমানগড়। নৈসর্গিক শোভা ও সূর্যাস্ত সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে। সঞ্জয় পার্ক তথা বটানিক্যাল গার্ডেনটিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া।

কনভালসেন্ট ট্যুর : Kumaon Mandal Vikas Nigam Ltd, Secretariate Building, Mallital, Nainital-263001, ৩ 33043/36209 থেকে প্যাকেজ ট্যুরে কুমায়ুন দেখাবার ব্যবস্থা আছে। এসেরই শাখা বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া Parvat Tours, Dandi House, Mall, Tallital, ৩ 35656 জগৎও নানান প্রাইভেট সংস্থা দর্শন, কাহিলার্ক, সূর্য, হিলটপ ট্রাভেলস-এর বাসও আছে কনভালসেন্ট ট্যুরে কুমায়ুন দেখাতে। UP Tourist Office বসেছে নৈনীতালের ম্যাল রোডে।

(১) নিনতর গ্রোহোমে সাততাল অর্থাৎ ভীমতাল, বোড়াতাল, নওকুচিরাটাল ও অন্যান্য দেখিয়ে আনে ডিলার বাস ১২৫ শিও (৫৮১.১ রুম্বর), ১৬৬ টাকায়।

(২) কৌশানি যাচ্ছে ২ দিনের প্যাকেজে ৩০০ টাকায়, শিও ২০০। চলার পথে ভাওয়ালা, কৈষ্কী মন্দির তথা আশ্রম, আলমোড়া, বৈজনাথ, রানীক্ষেত, চৌবাটিয়াও দেখিয়ে আনে এরা।

(৩) বরীনাথ যাচ্ছে ৪ দিনের প্যাকেজে ৬০০ টাকায়, শিও ৫০০। পথে কর্ণপ্রয়াগ, বরী ও কৌশানিতে রাতের বিশ্রাম দেয় গাড়ি।

(৪) ৩ ঘণ্টায় নৈনীতাল অবজারভেটরি ও হনুমানগড় মন্দির দেখিয়ে আনে ৪০ টাকায়, শিও ৩০।

(৫) ৪ দিনের প্যাকেজে কুমায়ুন দর্শন অর্থাৎ—লোহাঘাট, পিথোরাগড়, গঙ্গোলীহাট, পাতাল ভুবনেশ্বর, যজ্ঞেশ্বর, আলমোড়া, রানীক্ষেত যাচ্ছে KMVN. ভাড়া ৫০০, শিও ৪০০।

(৬) ভাওয়ালা, যজ্ঞেশ্বর ও রামগড় দিনে দিনে বেড়িয়ে আনে ১২৫ টাকায়, শিও ৮০।

(৭) যজ্ঞেশ্বর যাচ্ছে ২ দিনের সফরে ১৫০ টাকায়, শিও ১২৫।

(৮) ৩ দিনের ট্যুরে টোকোরি প্যাকেজে ভাওয়ালা-কৈষ্কী-আলমোড়া-কৌশানি-বৈজনাথ-বাগেশ্বর-বেরিনাগ-পাতাল ভুবনেশ্বর-গঙ্গোলীহাট বেড়িয়ে আনে ৩৫০/৩০০ টাকায়।

(৯) কোদার ও বদরী যাচ্ছে ৬ দিনের প্যাকেজে—ভাড়া ৭০০, শিও ৬০০।

(১০) উৎসবকালে পূর্ণাগিরি যাচ্ছে ২ দিনের প্যাকেজে ২৫০ টাকায়, শিও ২০০।

(১১) বিনসার যাচ্ছে ২ দিনের প্যাকেজে ২০০ টাকায়, শিও ১৭৫।

এছাড়াও দিনে দিনে নানক মট্টা, কালাডুসরী দেখিয়ে আনে KMVN. গাড়িও ভাড়া মেলবে এসের কাছে। নানান ট্রেক ট্যুরের আয়োজনও থাকে এদের। তেমনই নানান প্রাইভেট সংস্থাও কুমায়ুন দেখাতে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে শহর থেকে। এদের ট্যুরে করবেট জাতীয় উদ্যানও দেখে নেওয়া যায়। আবার এককভাবে চুক্তিতে গাড়ি নিয়েও বেড়িয়ে নেওয়া যায় কুমায়ুন পর্বত। মিটারহীন ট্যাক্সি মেলে শহর তথা কুমায়ুন দর্শনে।



Nainital-263001, STD-05942-এ ম্যালকে ভর করে মেলা বসেছে হোটেলের। মরসুম এদের মে ১ থেকে জুলাই ১৫, আবার সেপ্টেম্বর ১৫ থেকে নভেম্বর ১৫। অন্যান্য সময়ে অফ-সিজন, রিবেটও মেলে ২৫-৫০%। তবুও যেন নৈনীর হোটেল রেটের হেরফের ঘটে চলছে ক্রমে। মালিতালে কুমায়ুন মণ্ডল বিকাশ নিগম-এর ১৪৬ বেডের Tourist Reception Centre, ৩ 3374, B2, DAB ৫৫০, ৮০০ সুইট ১০০০ ডর্মি ৭৫; বাস স্ট্যান্ডে তালিতালে এসেরই ১২০ বেডের ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার ৩ 2570, DAB ৮০০ সুইট ১৫০০ ডর্মি বেড ৭৫; অব্: Incharge, 263002 বা KMVN, U P Tourism, 12 N S Rd, Calcutta-1, ৩ 2207855, ফ্রিডল থেকে।

Mall-263002-এ : H Elphinstone, DAB ৪৫০-৬৫০ সুইট ৮০০; H Pratap Regency, DAB ৬৫০-১২৫০, কল বুকিং: Diamond ৩ 276714; H Mansarovar, DAB ৩৫০ সুইট ৬০০; H Payal, DAB ২৫০-৩৭৫ সুইট ৩০০; H Lake View, DAB ৩৫০ সুইট ৩০০; H Punjab, D ৩০০-৪৫০; H Metro, D ২৫০-৩৭৫; H Gouri Niwas; H Meghdoot,

D ৪৫০; H Prashant, D ২২৫-৩২৫ সুইট ৩৫০-৪৫০; Paryatak H, D ৩৫০-৬০০; H Pyne Gardens, D ৩০০-৫৫০; H Ambassador, DAB ৩০০-৪৫০; সুইট ৩৭৫-৬৫০; Merino H, D ২৭৫-৪৫০; H Prince, কল বুকিং : Diamond ৩ 276714; H Regency Gopal; Evelyn H, D ৬০০-৮৫০ সুইট ৮০০-১০০০; India H, D ৩২৫-৬০০ সুইট ৬০০-৮৫০; Everest H, DAB ৮৫০ সুইট ১৭৫০; Alka H, D ৭৫০-১২৫০; H Sheela, DAB ৪০০-৬৫০ ডাবল বেডের হাট ৬৫০, কল বুকিং: Ramkrishna Travels, 39 M G Rd-9, ৩ 3509199; Lake Side Inn, DAB ৯৫০-১২৫০; H Ashiana, DAB ৩২৫-৪৫০; H Palace, DAB ৩৫০-৪৫০ সুইট ৬০০-৮৫০; H Siddhartha, D ৩৫০-৬৫০; H Shivraj, D ৩৫০-৫৫০; H Shalimar, D ৪৫০-৬৫০; H Gurdeep, D ৩০০-৪৫০; H Central, D ২৫০-৪০০; H Natraj, DAB ৩৫০ সুইট ৬০০; *Grand H, (B-B) D ৮৫০ সুইট ১২০০; H Channi Raja, DAB ৮৫০-১২৫০, TAB ১৫০০; এরই পিছে বাজলির Bengal H; H Sarovar, D ৩২৫-৫৫০; Capri H, D ৪৫০-৬৫০; Alps H, D ৩২৫-৪৫০; H Kumaon, DAB ৩২৫-৪৫০; H Satkar, D ৩২৫-৪৫০; H Anukul Plaza, near Aerial Express Stn.

এছাড়াও নানান হোটেল আছে ম্যালে—H Krishna Mount View, ৩ 36150; H Silvertown, D ৬৫০-৮৫০ সুইট ৮০০-১২৫০; Standard H, D ৩৫০-৫০০; Holiday Inn, Manu Maharani Estate, D ৩০০০ সুইট ৪৫০০; Nanak, Krishna, Jagati, Ahuja's, এদের কাছে ২২৫-৪৫০ টাকায় ঘর মেলে।

Mallital-263001-এ—H Royal, DAB ৮৫০- ১৫০০; *Swiss H, DAB ১০৫০-১৫৫০; Manu Maharani Lake Resort, A/c D ২৫০০-৪০০০; সুইট ৪৫০০, দ্বিধী বুকিং: ৩ 3329415; *Shervani Hilltop Inn, (B-B) DAB ১৫৫০-২০০০; *H Arif Castles, D ১৭৫০-২৫০০, কল বুকিং: Diamond ৩ 276714/ Span ৩ 2801209; H City Heart, D ৪০০-৬৫০; *Vikram Vintage Inn, T ১৫০০-২৫০০; *H Claridges, Ayarpatta, D ১৭৫০-৩০০০ (B-B), কল বুকিং: Span ৩ 2801209; Ajanta H; Aroma H, D ৫৫০-৮০০; *Belvedere H, D ৮০০-১০০০ সুইট ১২০০-১৫০০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; H Radha Continental, Head Post Office Rd, DAB ৮৫০-১৫০০; Broadway H, D ৩৫০-৬৫০; Armadale H, D ৪৫০-৬৫০, কল বুকিং:

৩ 2104815; H Coronation, D ৩২৫-৬০০; Rajnahal, D Metropole, Moon, Mayur, New Pavilion, Prensaravar, Madhuban, Tourist, Wood Land, Tower, Solar, Sikher, Sky Lark, Raju, Rama G H, Langdale Manor, Kohinoor, Kanak, Earl's Court, Basera, Amber, Arvind, Anupam, ছাড়াও নানান।

Tallital-263002-এ—Ashok H, Cantt Rd-2, D ৩২৫-৬৫০; Savoy H, D ৩০০-৬০০; H Samrat; Himalaya H, D ৩০০-৬০০; H National, D ৩২৫-৬০০; New Bharat H, D ৩০০-৫৫০; Asheesh H, D ৩০০-৬০০; Vikram H, D ৮০০-১৫০০; আর আছে Archana, Atulhi, Bliss, Empire, Hill View, Maharaja, Surya, Sangrila, Windsor, এদের কাছে S ১৫০-৩৫০ D ২৫০-৪৫০ টাকায় মেলে।

YWCA-এরও দু'টি শাখা আছে—The Mall ও Mallital-এ। মালিতালে ঘরের আধিক্য। আর আছে Youth Hostel, বেড ২৫ ঘর ২০০-৪৫০, বুকিং: Warden, Mallital, Naintal Club-এও সুইট, কন্ডেক্স ও ডমিটারি প্রথায় থাকার ব্যবস্থা মেলে; বুকিং : Caretaker. এছাড়া CH, PWD IH, Jal Nigam IH, MES IH, Hydel IH-ও আছে নৈনীতালে।



ধরমশালাও আছে নানান নৈনীতালে—পরমশালা শিবলাল শা, আর্বসমাজ মন্দির, গুরধারা, সিউ সমিতি, আধ্বমান-ই-ইসলামিয়া মুসাফিরখানা-তেও ঘর মেলে থাকার।

নৈনীতালে হলিডে হোমও গড়েছে নানান বাণিজ্যিক সংস্থা। তালিতালে হিমালয়ান হোটেলে Steel Authority of India Employees Co-operative Society, 2 Fairlie Place, Cal-1, ৩ 2211458 Ext 325; SBI Employees Co-operative, 8 Old Post Office St, 2nd floor, Cal-1, ৩ 2485075 at Elphinstone Hotel; NE Railway, State Bank of India, Bankura Steel Plant, Indian Oil, Bareilly Corporation, LIC, Allahabad Bank, IBP, Post and Telegraph, Bank of India ছাড়াও নানান বাণিজ্যিক সংস্থার হলিডে হোম আছে নৈনীতালে। আবার পেরিং গেস্টহাউসও থাকা যেতে পারে নৈনীতালে। ঘরের জন্য UPTourist Office-এ যোগাযোগ করা যেতে পারে।

আহার্যেরও নানান ব্যবস্থা নৈনীতালের হোটেল-রেস্তোরাঁর। মালিতাল বাজারে Sher-E-Punjab ও Sharna Kaishnek-এর খালি প্রধায় ভেজ মিল ভালই। তবুও যেন ভেজ মিলে ম্যালেদ Purohit Restaurant-টি সদাই বাস্তব। Flatiss-এরও খ্যাতি বয়েষ্ট

বেনারসী • সর্বভারতীয় সিন্ধ • হ্যান্ডলুম কটন ও ফ্যাশী শাড়ী পাওয়ার একমাত্র ঠিকানা

উৎসবে
উপহারে
অপরিস্রব

সুনীতা

শ্রীতাতপ
নিয়ন্ত্রিত

১১৩/১বি, দাসবিহারী এডিন্য়, ক্রিকোণ পার্কের বিপরীতে
কলকাতা ৭০০ ০২৯, ফোন ৪৬৬-৩৭১৫

সত্যায় আহার্য পরিবেশনে। তেমনই ম্যালের *Sher-e-Punjab, Merino Restaurant* দুটির যথেষ্ট সুনাম আহার্য পরিবেশনায়। লেকের জলে ঝুলন্ত *Kwality Restaurant*টিরও সুনাম যথেষ্ট আহার্যে; অবস্থান মাছাঘাও কোয়ারলিটি অনন্য। তেমনই একমাত্র বাঙালি হোটেল সদানন্দ গুহ মজুমদারের *Mouchak*, ৩ 35503-এ আঙ্গু ও আলু-পোস্ত ও মাছ-ভাত মেলে। তেমনই উচিত হবে নৈনীতালের মিষ্টি বালিমিঠাই-এর স্বাদ নেওয়া।

সাক্ষ্য ভ্রমণের জন্য শহরের বুকে মালিতালের ফ্ল্যাটস তথা একজিবিশন গ্রাউন্ডটি নৈনীবাসীদের খুবই প্রিয়। চিলড্রেন পার্ক, ব্যান্ড স্ট্যান্ড, বরনা ছাড়াও স্কেটিং-এর আসর বসছে। লেকের পাড়ে দুর্গারই একরূপ নৈনীদেবীর মন্দির। শহরের নামও হয়েছে এই দেবীর নাম থেকে। দুর্গা পূজোও হয় জাঁকজমকের সাথে। দ্বিমতে, সতীর বাম নয়ন পড়ে লেকের জলে—আর, নয়ন থেকে নয়নী; কালে কালে নৈনী। আর আছে শিব, কৃষ্ণ ও হনুমান মন্দির। স্বল্প দূরে গুরদ্বারা, মসজিদ ও ১৮৪৭এ গড়া সেন্ট জনস চার্চ। রাজভবনটিও দর্শনীয়।

নায়না পিক : লেকের পাড়ে দাঁড়িয়ে থাকা সেভেন পিকের মধ্যে নায়না তথা অতীতের চীনা পিক বিশেষভাবে আকর্ষণীয়। ফ্ল্যাটস থেকে পথ উঠেছে নায়নার। শহর থেকে ৬.৬৪ কিমিতে আরও ৬৭২ মি উঠে ২৬৪০ মি উঁচুতে নায়না। ঘোড়াও যাচ্ছে এ-পথে। এখানকার সূর্যোদয় খুবই নয়নাভিরাম। সূর্যোদয় দর্শনার্থীদের রাতে থাকা ভাল; লগ হ্রিট আছে নায়না পিকে। পিক থেকে তুষারধবল নন্দাঘুন্টি, ত্রিশূল, নন্দাদেবী, নন্দাকোট ছাড়াও নৈনীতাল শহর ও লেকের দৃশ্য মনোরম দেখায়। মন্দিরও হয়েছে নায়নায়, দেবতা—শিব-দুর্গা-রামচন্দ্র।

লরিয়া কান্ডা : নায়না পিকের মতোই বরফে মোড়া অতি মনোহর পাহাড়ী শোভা দৃশ্যমান। তবে নায়না এর স্বাদ মেটায়। উচ্চতা ২৪৮৫ মি, ফ্ল্যাটস থেকে দূরত্ব ৫.৬৪ কিমি।

টিকিন টপ : বরফে মোড়া পাহাড়ী দৃশ্য লরিয়া কান্ডার থেকে কাছে হলেও লরিয়া কান্ডা দেখার পর ২২৮০ মি উঁচু টিকিন টপ কিছুটা যেন বিস্মদ লাগে।

স্নো ভিউ : শহর থেকে ২.৪২ কিমি দূরে ২২৮৭ মি উঁচু পপুলার ভিউ পয়েন্ট স্নো ভিউ থেকে বরফে ছাওয়া হিমালয়ের নানান শিখর সুন্দর দৃশ্যমান। বাহিনোকুলার বসেছে—৭৮১৭ মি উঁচু নন্দাদেবীও দৃশ্যমান। পায়ের চলা যায়। আবার অস্ট্রিয়ার ভোয়েস্ট আলপাইনের সহযোগিতায় ১৯৮৫র মার্চ মাসে ৩ কোটি টাকা ব্যয়ে তৈরি এরিয়েল এক্সপ্রেস সার্ভিসের ৭০০ মি দীর্ঘ কেবল কার চলছে ১০-৩০—১৬-৪৫এ মালিতাল থেকে স্নো ভিউ শিখরে। টিকিট: যাত্রায় ৪৫ শিশু ২৫। KVMN-এর চার সুইটের *Tourist Bungalow*, কটেজ ৫০০ আছে স্নো ভিউতে।

আকর্ষণে উল্লেখ্য না হলেও লেকের পশ্চিমে ৪.০৩ কিমি হেঁটে ২৩২০ মি উঁচু ডরোথি সিটের অবস্থান। কুম্ভধ্বঙ্গগরে বিমান দুর্ঘটনায় নিহত ব্রিটিশ সেনানায়ক

কেলেটের মৃত্যু স্থান চিত্রকর ডরোথির স্মারকরূপে নামকরণ। মালিতালের পশ্চিমে ২৮৩৫ মি উঁচু দেওপাটী যথেষ্ট দুর্গম। ক্যামেলস ব্যাক নামে অভিহিত দেওপাটী ন্যাড়া পাথুরে চূড়ো।

ল্যান্ডস এন্ড : শহর থেকে ৪.০৮ কিমি দূরে ২৩৫২ মি উঁচুতে ল্যান্ডস এন্ড সুন্দর এক *ভানটিজ পয়েন্ট*। পাহাড় এখানে তড়িঘড়ি এবড়ো-খেবড়ো ভাবে সমতলে নেমেছে। খুরপাতাল লেকটি এখান থেকে পুকুরের মতো দেখায়।

ভীমতাল : নৈনীতাল থেকে ২২ কিমি দূরে সুন্দর পরিবেশে ১৩৭১ মি উঁচুতে নৈনীতালের বৃহত্তম লেক ২৬৫ মি লম্বা ভীমতাল। পান্না-সবুজ লেকের জল, মাথো দ্বীপ; দ্বীপে হোটেল। বোটো পারাপার। লেকের জলও উষ্ম—সাঁতারের উপযোগী। মন্দিরও আছে, উত্তরে শৈল শিখরে নাগ দেবতার, দক্ষিণে ড্যামের পাশে ভীমেশ্বর শিবের। জনশ্রুতি, মহাভারতের ভীমের তৈরি ভীমেশ্বর মন্দির। দ্বিমতে, পুরাণখ্যাত দময়ন্তীর পিতার তৈরি মন্দিরে আছেন—শিব, কালভৈরব, নবদুর্গা ও চণ্ডিকাদেবী।



খাকারও নানান ব্যবস্থা ভীমতালে। জেলা পরিষদে *DB & KVMN-এর ট্যুরিস্ট বাংলো*, DAB ২০০, ৩০০ কটেজ ৫০০, ৭৫০ ডর্মি বেড ৬০, আছে ভীমতালে। আর আছে **Country Inn, Mehraagaon*, ৩ (05942) 47120, S ৮৫০ D ১২৫০ T ১৫৫০। প্যাকেজ ট্যুর বা নৈনীতাল থেকে ৪৫০-৫০০ টাকায় ট্যুরিতে ডাওয়ালা, ভীমতাল ও নওকুচিয়া তাল বেড়িয়ে নেওয়া যায়। আবার, সার্ভিস বাসে ভীমতাল পৌঁছে ভীমতাল থেকে ৪ কিমি পায়ের গিয়ে উৎসাহীরা ১২১৯ মি উঁচুতে নয়-কোনা আর এক বৃহত্তম তথা গভীরতম তাল নওকুচিয়া বেড়িয়ে নিতে পারেন। বোটিং-ও করা যেতে পারে নওকুচিয়াতালে। খাকার জনা *KVMN-এব ট্যুরিস্ট বাংলো*, D ৪০০, ৬০০, ৮০০ ডর্মি বেড ৬০; *Eurotel Parachur H*, ৩ (05942) 47041, S ৬০০, D ১২০০ সুইট ১৬০০ আছে নওকুচিয়াতালে।

সাততাল: ভীমতাল থেকে ৫ আর নৈনীতাল থেকে ২১ কিমি দূরে ১৩৭১ মি উঁচুতে ওক গাছে ছাওয়া *সাততাল* অর্থাৎ সাতটি ছোট লেকের সমষ্টি। লেকতাল, নল-দময়ন্তী, লক্ষ্মণগাত ও সাততাল এদের মধ্যে উল্লেখ্য। আমেরিকার মিশনারি রেভারেন্ড স্টানলে জোনসের আশ্রম রয়েছে সাততালে, নাম তার সাততাল আশ্রম। বাস যাচ্ছে শহর থেকে। খাকার জন্য সাততালে প্রাইভেট লিজে KVMN-এর *ট্যুরিস্ট বাংলো* আছে।

খুরপাতাল : ১৬৩৫ মি উঁচুতে ৭ কিমি দূরে সুন্দর লেক খুরপাতাল। মৎস্য শিকারের জন্য এর আবেদন। তবে, D M, Nainital-এর অনুমতি লাগে।

জাওয়ালা : নৈনীতাল থেকে ১১.২৭ কিমি দূরে হালদুয়ানি-আলমোড়া পথে ১৭০৬ মি উঁচুতে পাইন ও ওক-এ ছাওয়া জাওয়ালা। জলহাওয়ার গুণে ভারতের অন্যতম T B Sanatorium গড়ে উঠেছে। তেমনই প্রশস্তি কুমায়নের ফলের জন্য ডাওয়ালা। নৈনীতাল থেকে ভীমতালের বাস

চেপে বাসে বসেই ভাওয়ালী দেখে ভীমতাল চলা যেতে পারে। তবে, স্যানাটোরিয়াম দর্শনার্থীরা একটা বাস ছেড়ে পরের বাসেও যেতে পারেন। থাকার জন্য FRH ও RH আছে। আর আছে KMVN-এর ট্যুরিস্ট বাংলো, D ২৫০ ৩৫০ চার বেডের সুইট ৬০০ ডর্মি ৫০; ছাড়াও প্রাইভেট H Tourist.

রামগড়: নৈনীতাল-মুক্তেশ্বর সড়কে ২৫.৭৫ কিমি দূরে ১৭৮৯ মি উঁচুতে কুমায়ূনের ফল বাগিচার জন্য রামগড়ের প্রশস্তি। আপেল হচ্ছে, জলবায়ুও সুন্দর। কবিগুরু রবীন্দ্রনাথের প্রিয় ছিল রামগড়। গীতাঞ্জলি ও সন্ধ্যাসঙ্গীত রামগড়েই রচনা করেন কবি। বাস যাচ্ছে শহর থেকে। থাকার জন্য জেলা পরিষদের বাংলো, IH, DB ও KMVN-র Tourist Bungalow, D ৪০০ ৬০০ ডর্মি ৬০ আছে।

মুক্তেশ্বর: নৈনীতাল থেকে ৫১ কিমি দূরে ২২৮৬ মি উঁচুতে নিজনি, বর্ণাঢ্য, আরগাক মুক্তেশ্বরের সৌন্দর্যে মুগ্ধ ব্রিটিশ ক্যান্টনমেন্ট নগরী বসায়। ১৮৯৮ থেকে ভারত সরকারের ভেটেরিনারি রিসার্চ ইনস্টিটিউট কাজ করে চলেছে। PWD-র বাংলো থেকে নয়নলোভন হিমশিখর সুন্দর দৃশ্যমান। থাকার জন্য ইনস্টিটিউটের Guest House, PWD DB, প্রাইভেট লিজে KMVN-র ট্যুরিস্ট বাংলো ও Mountain Trail Resort, DAB ৭৭৫-১০২৫, কল বুকিং: Span ৩ 2801209 আছে মুক্তেশ্বরে।

জেওলিকোট: কাঠগোদাম থেকে ১৯ কিমি যেতে ১২১৯ মি উঁচুতে জেওলিকোট। জেওলিকোট পেরুতেই পথ পৃথক হয়েছে—বাঁয়ে নৈনী আর ডাইনে আলমোড়া ও রানীক্ষেত। স্বাস্থ্যকর জায়গা। মৌমাছির চাষ হচ্ছে। চলার পথে (ছুটি ছাড়া) ১০—১৭-০০টায় দেখে নেওয়া যায়। জেওলিকোট থেকেও কাঠগোদাম ও নৈনীতালের গাড়ি মেলে।

কৈষ্কী আশ্রম: নৈনীতাল থেকে ২০ কিমি দূরে গরমপানির পথে কৈষ্কী বা কাঁইচি আশ্রম। কাঁচির মতো মিলন ঘটেছে ২টি পথের—সেই থেকে জায়গার নাম কাঁইচি। আশ্রম হয়েছে ঘাটের দশকের প্রথম এক সম্মানসীরা হাতে কৈষ্কীদেবীর। পাশেই আর এক গুহা মন্দির শবরীতে দেবতা লর্ড শিব।

রানীক্ষেত

রানীক্ষেত অর্থাৎ রানীর ক্ষেত। হিমালয়ের প্রেমে মুগ্ধ ঠান্ড বংশের রানী পশ্বিনী ছাউনি গড়েন। আজকের রানীক্ষেত ক্লাবটি গড়েও উঠেছে রানীর সেই প্রিয় ক্ষেতি অর্থাৎ ছাউনি স্থলে। রানীক্ষেতকে পাহাড়ের রানী বললেও অত্যন্তি হয় না। তুবারাচ্ছাদিত হিমালয়ের সৌন্দর্য মনোরম দেখায় রানীক্ষেত থেকে। পূর্বে নেপাল থেকে পশ্চিমে টেহরি গাড়োয়াল—এই শ তিনেক কিমি বিস্তীর্ণ হিমালয়ের মোহিনীক্লপ অতি সুন্দর দৃশ্যমান। সূর্যকরোচ্ছল দিনে

নীলকান্ত, কামেত, গৌরীপর্বত, হাতিপর্বত, নন্দাঘুন্টি, ত্রিশূল, নন্দাদেবী, নন্দাকোট, বিশ হাজারের অধিক উচ্চ শিখররাজি দৃশ্যমান। রঙেরও বদল ঘটে দিনভর।

১৮২৯ মি উঁচু

রানীক্ষেত শহরটি বেশি প্রাচীন নয়। ব্রিটিশের হাতে গড়ে ওঠে শহর। বৃষ্টি কম। সারা বছরে ৫০ ইঞ্চির মতো, অর্থাৎ নৈনীতালের আধারও কম। জলবায়ু যেমন স্বাস্থ্যকর তেমনিই মনোরম। গ্রীষ্মে তাপমান থাকে ৩২-২৮.০৪° আর শীতে ৭.০২-৩.০৩° সেটিগ্রেডে। রানীক্ষেতকে ভালবেসে ভারতের ব্রিটিশ ভাইসরয় লর্ড মেয়ো সিমলা থেকে ভারতের গ্রীষ্মাবাস সরিয়ে আনতে চেয়েছিলেন রানীক্ষেতে। যদিও কার্যকর হয়নি সে চাওয়া, তবে ১৮৬৯ খ্রিস্টাব্দে ব্রিটিশ বৌদ্ধি বাহিনীর গ্রীষ্মাবাস গড়ে ওঠে। কালে কালে কুমায়ূন রেজিমেন্টের সদর দপ্তর বসে। ঝাউ, ওক, সিডার ও সাইপ্রাসে ছাওয়া রানীক্ষেত বেড়াবার মরসুম মার্চ থেকে জুন আবার সেপ্টেম্বর থেকে নভেম্বর

Himalayan Peaks

| | |
|----------------|--------|
| Trishul | 7015 m |
| Hathi Parvat | 6628 " |
| Nilkanth | 6596 " |
| Kumling | 6006 " |
| Chaukhamba | 7138 " |
| Sumeru Parvat | 6331 " |
| Kharcha Kund | 6613 " |
| Kedarnath | 6961 " |
| Shringa | 6961 " |
| Bhagirupanth | 6772 " |
| Jaunli | 6632 " |
| Gangotri Group | 6599 " |
| Bandarpunch | 6315 " |
| Swargo Rohini | 6196 " |
| Nanda Devi | 7817 " |
| Mana | 7273 " |
| Kamet | 7756 " |
| Nandakote | 6884 " |
| Nandaghunti | 6488 " |
| Mecraghunti | 6857 " |
| Devidarshan | 6683 " |
| Gouriparvat | 6715 " |
| Panchachuli | 6905 " |
| Kedarnath Dom | 6802 " |
| Bhagirathi | 1 |
| " | 2 |
| " | 3 |
| Sudarshan | |
| Meru | |
| Shivlinga | |

মাস। রেল না পৌঁছালেও রেলের বুকিং অফিস বসেছে রানীক্ষেতে। আর ট্যুরিস্ট অফিস বসেছে বাস স্ট্যান্ডে।



ট্রেনে কলকাতা-লক্ষৌ-বেরিলি হয়ে কাঠগোদাম পৌঁছে কাঠগোদাম থেকে বাস বা ট্যাক্সিতে ৪ ঘণ্টায় ৮৪ কিমি দূরের রানীক্ষেত চলুন। বেরিলি ১৯০, কর্ণপ্রয়াগ ১৮৪, পিথোরাগড় ১৬৯, দিল্লী ৩৬১ (১২ ঘ), রামনগর ৯৬ (৫ ঘ), মোরাদাবাদ ১৮২ কিমির সঙ্গেও বাস সংযোগ রয়েছে রানীক্ষেতের। বাস যাচ্ছে লক্ষৌ, হরিদ্বার, বদরীনাথও রানীক্ষেত থেকে। নৈনীতাল থেকেও বাস আসছে ভাওয়ালী/ গরমপানি হয়ে ৬০ কিমি উত্তরের রানীক্ষেতে। মূল পথ থেকে ১ কিমি ব্যবধানে ম্যালের দু'প্রান্তে দুই বাস স্ট্যান্ড রানীক্ষেতে। বাস যাচ্ছে রানীক্ষেত থেকে ২২ ঘণ্টায় ৫০ কিমি পূর্বের আলমোড়ায়, ৩২ ঘণ্টায় ৬২ কিমি দূরের কৌশানিও। রানীক্ষেত থেকে আলমোড়া বেড়িয়ে দিনে দিনে কৌশানিও চলা যেতে পারে। আবার নৈনীতাল থেকে প্যাক্সেজ ট্রায়ে রানীক্ষেত, আলমোড়া বেড়িয়ে কৌশানিতে একমাত্র কাটিয়েও সাফ করা যেতে পারে এ সফর। রেল না পৌঁছালেও রিজার্ভেশনের কোটা নিয়ে

রেলের বুকিং কাউন্টার বসেছে রানীক্ষেতে। বায়ুদুতের নিকটতম বিমানবন্দর ১১৯ কিমি দূরের পছনগরে।

চৌবাটিয়া অর্থ তার চার রাস্তার সংযোগস্থল। রানীক্ষেত থেকে ১০ কিমি দূরে ৬৯৪২ ফুট উঁচুতে উত্তর প্রদেশ সরকারের আপেল বাগিচা ও গবেষণা কেন্দ্র বসেছে চৌবাটিয়ায়। ১৫০ রকমেরও অধিকধর্মী আপেল হচ্ছে। ক্যান্টনমেন্ট নগরীও এই চৌবাটিয়া। বরফে মোড়া হিমালয়ের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। শেয়ারে জিপ ও বাস যাচ্ছে শহর থেকে।

শহর থেকে ৭ কিমি যেতে পথের পড়ে ঝুলাদেবী অর্থাৎ দেবী দুর্গা। মর্মরের ছোট দেবী মূর্তির পাশে ঝুলে আছে অসংখ্য ঘণ্টা। পাশ দিয়ে সিঁড়ি উঠেছে শ্রীরাম মন্দিরে— দেবতা রাধা-কৃষ্ণ, কালিকা, রাম-লক্ষ্মণ-সীতা। আর চৌবাটিয়া থেকে ৩ কিমি পায়ে হাঁটা পথে সুন্দর এক কৃত্রিম লেক ভালু ড্যাম। মাছ ধরার ব্যবস্থা আছে।

রানীক্ষেত থেকে আলমোড়ার পথে ৫ কিমি যেতে উপতা (Upta)। পাইন আর ওক-এ ছাওয়া পাহাড়ে ঘেরা মনোরম নৈসর্গিক শোভার মাঝে নাইন হোল গলফ খেলার মাঠটিও সুন্দর। অংশ জুড়ে সামরিক ব্যারাক বসেছে। কাছেই নবতম মনকামনেশ্বর মন্দিরটিও সুন্দর।

উপতা থেকে ১ আর রানীক্ষেতের ৬ কিমি দূরে শহরের উপকণ্ঠে কালিকা। পাহাড়ের ওপর সুন্দর মন্দিরে জাগ্রতা দেবী কালী। ফরেস্ট নার্সারিটিও আর এক দ্রষ্টব্য।

রানীক্ষেত থেকে রামনগরের পথে ৮ কিমি যেতে তারিক্ষেত। প্রেম বিদ্যালয়, কুটিরশিল্প ও টেকনিক্যাল স্কুলের জন্য প্রশস্তি। গান্ধীজীও এসেছেন, কুটিরও রয়েছে তারিক্ষেতে। পথের পড়ে কো-অপারেটিভ ড্রাগস ফ্যাক্টরি—গবেষণা ও ওষুধ তৈরি হচ্ছে।

রানীক্ষেত-আলমোড়া পথের কাঠপুরিয়া থেকে পথ গিয়েছে ৫৫০০ ফুট উঁচু শীতলাক্ষেতের। দূরত্ব—আলমোড়া থেকে ৪৭, রানীক্ষেত ৩৫.৪, কাঠপুরিয়া ১০ কিমি। শীতলাক্ষেতের প্রসিদ্ধি তুষারাক্ষিপিত হিমালয়ের নৈসর্গিক শোভার জন্য। সূর্যোদয়ে উদ্ভিত সূর্যের বর্ণালী চৌখাষা, ত্রিশূল, নন্দাদেবী, নন্দাকোট, পঞ্চচুলীর শিখর-রাজিতে মন্ত্রমুগ্ধ করে। ফল-বাগিচায় ছাওয়া শীতলাক্ষেতে থাকার জন্য KMVN-এর ট্যুরিস্ট বাংলো D ১৫০ ২৫০ সুইট ৩০০ ডর্মি ৫০ ও FRH আছে। ৩ কিমি দূরে শাহী দেবীর মন্দির।

অ্যাডভেঞ্চার যাত্রী ভালোবাসেন তাঁরা ২১ কিমি দূরের তপোবন বেড়িয়ে আসতে পারেন। পায়ে-হাঁটা পাহাড়ী পথ, গরুড় হয়ে পথ গিয়েছে।

রানীক্ষেত থেকে কর্প্রয়াগ পথে ৩২ কিমি দূরে হারা-হাটের প্রাচীন মন্দিররাজিও দেখে চলা যেতে পারে। কাহারী রাজাদের স্মৃতি ৫৫টি মন্দিরের স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে ওজস্বী শৈল্পীর আদল মেলে। তেমনই হারাহাট থেকে আবার বাসে

২০ কিমি দূরে পবনদেব বাহিত পর্বতের টুকরো ডুনাগিরিও চলা যেতে পারে। বাস সড়ক থেকে ৫০০রও অধিক সিঁড়ি উঠে পাহাড়চূড়োয় দুর্গা মন্দির তথা পবন মহারাজের আশ্রম। থাকা ও আহার দুইয়েরই ব্যবস্থা মেলে আশ্রমে। আশ্রম থেকে হিমালয়ের নানান শিখরও দেখে নেওয়া যায়। এমনকি, রানীক্ষেত, আলমোড়া, কৌশানিও দৃশ্যমান। আলমোড়া ছাড়াও চৌকোরি-গোয়ালদাম পথের সোমেশ্বর থেকেও বাস মেলে হারাহাট হয়ে ডুনাগিরির। সোমেশ্বরেরও শিব মন্দির দেখে নেওয়া যায় কৌশী নদীর ধারে। কৌশানির দূরত্ব ১৭ কিমি সোমেশ্বর থেকে। ৪ কিমি দূরে রমনন-এও ছোট্ট এক গুহা মন্দিরে দেবী দুর্গা, ডাইনে হনুমানজী ছাড়াও ভক্তদের মনস্কামনা পূরণে বীধা অজস্র ঘণ্টা দেখে নেওয়া যায়।



*West View H, M G Marg, Ranikhet, AP-S ৩৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; Snow View, Mall; Nortons H, Mall; ক্রিতরকা সম Parwati Inn, Govt Bus Stand, D ৬০০-৮৫০; *Moon H, Sadar Bazar, SAB ৪০০ DAB ৬০০ সুইট ৮৫০, কটেজ ১০০০; H Rajdeep, Sadar Bzr, DAB ৩৫০-৪৫০; Meghdoot, Upper Mall; একই মালিকানাধীন Alka H ও H Natraj, Himalaya, Everest H, Main Bazar, opp PNB, D ২৫০-৩৭৫; H Tribhuvan, D ২০০-৬৫০, কল বুকিং: Diamond D 276714; Janata, Tourist H, এদের কাছে S ১২৫-২৭৫ D ২০০-৪৫০ সুইট ৪০০-৬৫০ টাকায় মেলে। খাবারও মেলে Tourist H ছাড়া প্রতিটিতে। আর রয়েছে— প্রশান্ত, গ্র্যান্ড, অপোকা, এদের কাছে ৮৫ থেকে ২২৫ টাকায় ঘর মেলে একক থাকার। এছাড়াও হোটেল আছে আরও নানান রানীক্ষেতে। বাস থেকে ৪ কিমি দূরে KMVN-এর ৫২ বেডের Tourist Bungalow, D 2297, DAB ৫৫০ সুইট ৮০০ ডর্মিতে ৬০; KMVN-এর আর এক সংস্থা Himadri Tourist RH, মান ও দাম একইরূপ; রানীক্ষেত ক্লাবে AP প্রথম ৪৫০ টাকায় দু'বেডের ঘরে ২ জনার থাকা-খাওয়া, অব্: Secretary, Ranikhet-263645; PWD IH অব্: EE, PWD, Almora; FRH অব্: DFO (West), Almora; ছাড়াও ধরমশালা আছে—Shiv Mandir Dharamshala, Balamiki Ashram, Musafir Khana, প্রতিটিই জুয়াড়ি বাজারে। তবুও যেন অবহান মাহাশ্য হোটেল মেঘদূত ভালই। হিমালয়ও দৃশ্যমান দুই বাস স্ট্যান্ডের মাঝের নানান হোটেল থেকে।

আলমোড়া

When there are places like Almora I wonder why people go to Switzerland.—Mahatma Gandhi.



৭-০০, ৮-০০, ৮-৩০টা ছাড়াও নানান বাস আসছে নৈনী থেকে আলমোড়ায়। ৩ ঘণ্টার পথ, দূরত্ব ৬৩ কিমি। নৈনীতালের মতো বর্ণময় না হলেও নৈসর্গিক শোভা অতুলনীয়। তবে, আধুনিকতার শিথিরে আছে নৈনী বা রানীক্ষেত থেকে আলমোড়া। নৈনী বা রানীক্ষেত থেকেও বেড়িয়ে নেওয়া যায় আলমোড়া। আলমোড়ার রেল সংযোগকারী স্টেশন ৯০ কিমি দূরের কাঠগোদাম। বাস আসছে কাঠগোদাম থেকেও

খেরানা হয়ে ৩৬ কন্টায় আলমোড়ায়। রানীক্ষেতের পথও পৃথক হয়েছে এই খেরানা থেকে। এমনকি হালদুয়ানি, সাং, রামনগর, লোহাঘাটেরও বাস সংযোগ রয়েছে আলমোড়া থেকে। নিকটতম বায়ুযুদ্ধের বিমান ১২২ কিমি দূরের পিথোরাগড়। রাজা পর্যটনের দপ্তর বসেছে ম্যালে। আর রেলের আউট এজেন্সী বসেছে আলমোড়ার বাস স্ট্যাণ্ডে। বেড়াবার মরসুম নৈনীর মতো হলেও শীত ও গ্রীষ্ম কোনোটারই আধিক্য নেই। গ্রীষ্মে সর্বোচ্চ ২৯.৪ আর শীতে সর্বনিম্ন ৪.৪° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান।

১৫৬০ খ্রিস্টাব্দের কথা। কুমায়ূনের রাজা কল্যাণ চাঁদ আবিষ্কার করলেন আলমোড়াকে। হিন্দু প্রভাবও তাই আলমোড়ায়। তবে, তারও আগে কুমায়ূনের চন্দ্রবংশীয় রাজা ভীষ্ম চন্দ্রের মৃত্যুর পর দত্তক-পুত্র কুমার বালকল্যাণ খাসিয়া দলপতি গাজোয়াকে হারিয়ে রাজা হয়ে অতীতের খাগমারাতে রাজধানী গড়ে নাম রাখেন তার আলমোড়া। পুরো শহরটা ত্রিশূল পর্বতের দিকে মুখ করে দাঁড়িয়ে। ব্রিটিশ দখলে আসে ১৮১৫য় গোঁরাখী যুদ্ধের সুবাদে নেপাল থেকে। সেদিনের ব্রিটিশরাজ জেলা সদরও বসান আলমোড়ায়। ব্লক টাওয়ারটি ১৮৪২য় ব্রিটিশের গড়া। স্কন্দ পুরাণে মেলে, কৌশিকী ও সালমেল নদীর মাঝে কাশ্য পাহাড়ে দেবতা বিষ্ণুর বাস।

কালে কালে ৫ কিমি প্রশস্ত অঞ্চল জিনের মতো এক রিজ়ে গড়ে ওঠে শহর। শহরের চারপাশ ঘিরে পাহাড়—আর প্রতিটা পাহাড়চুড়োয় মন্দির এক এক। পাইন ও দেওদারে ছাওয়া ১৬৪৬মি উঁচু আলমোড়ারও সৌন্দর্য বেড়েছে মন্দিরে। অতীতের চাঁদ রাজাদের দুর্গে আজ আদালত বসেছে।

আলমোড়ারও প্রশস্তি তার হিমালয়ের নৈসর্গিক শোভার জন্য। রিজ়ে দাঁড়িয়ে উদিত সূর্যালোকে তুষারচ্ছাদিত শিখররাজির নয়নলোভন দৃশ্য অতীব সুন্দর। প্রকৃতির ধ্যানে মগ্ন হয়ে বিশ্রামও নিতে পারেন আলমোড়ায়। বিশেষ করে দুর্বল ফুসফুসধারীদের কাছে আলমোড়ার জলবায়ু ওষুধের কাজ করে। বাস স্ট্যাণ্ডের বিপরীতে বাজারটিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া।

আলমোড়ার নবতম আকর্ষণ পটলদেবীতে আনন্দময়ী মার আশ্রম। আর বাস স্ট্যাণ্ড থেকে ত্রীগ্রামকৃষ্ণ মিশন ছাড়িয়ে ম্যালে অঙ্গে ১.৬ কিমি দূরের ব্রাইট এন্ড কর্নার—নন্দাদেবী, নন্দাকোট, পঞ্চচুলী, ত্রিশূল, চৌখাষা ছাড়াও নানান শৈল শিখরে সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তের মোহিনীরূপ দেখার জন্য ব্রাইট-এর আকর্ষণ। ক্ষুণ্ণে ক্ষুণ্ণে রঙের বদল ঘটে চলে দিনভর। ৩.৬ কিমি দূরের সিমিতোলায় আলমোড়ার রূপে মুগ্ধ উদয়শঙ্কর অল ইন্ডিয়া কালচারাল সেন্টার গড়েন। চড়ুইভাতিরও মনোরম পরিবেশ সিমিতোলা। আরও ১.৬ কিমি গিয়ে কালীমঠ—মাটির রঙ কাশো থেকে নাম হয়েছে কালীমঠটা বা কালীমঠ। হিমালয়ের নৈসর্গিক শোভার জন্য কালীমঠের প্রশস্তি। ডিয়ার পার্ক, সিই দেবী, বপিনী দেবী ও বিনসার পাহাড়ের দৃশ্য মনোরম দেখার। সুন্দর প্রকৃতির

মাঝে ৬ কিমি দূরে কালমাটিয়া পাহাড় শিরে কাসার বা কাত্যায়নী দেবীর প্রাচীন মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। স্বামী বিবেকানন্দও ধ্যানে বসেন এখানে।

| আলমোড়া থেকে বাস যাতায়ে | | |
|--------------------------|----------|--|
| লক্কৌ | ৪০০ কিমি | ১৪-৩০ |
| হরিদ্বার | ৩৫৪ " | ৮-০০ |
| পিথোরাগড় | ১২২ " | ৮-৩০, ১১-০০ |
| রামনগর | ১৪৩ " | ৮-০০ |
| ডুনাগিরি | ৯০ " | ৭-৩০ |
| দেবাদুন | | ১৬-০০ |
| লোহাঘাট | ১৩৫ " | ৬-০০, ৭-৩০ |
| কৌশানি | ৫২ " | ৬-০০, ৬-৩০, ৮-০০, ৯-০০, ৯-৩০, ১২-৩০ |
| চৌকোরি | ১০২ " | ৫-৩০, ৬-৩০ |
| নৈনীতাল | ৬০ " | ৬-৩০, ৯-০০, ৯-৩০, ১২-০০, ১৫-০০ |
| রানীক্ষেত | ৫০ " | ৬-৩০, ৭-০০, ৭-৩০, ৮-৩০, ১১-০০, ১৪-০০, ১৪-৩০, ১৬-০০ |
| হালদুয়ানি | ১০৩ " | ৬-৩০, ৭-৩০, ৭-৪৫, ৯-৩০, ১১-৩০, ১৩-৩০ |

এছাড়াও UPSRTC ও KMOU-এর বাস যাতায়ে বৈজ্ঞান্য ৭১, বাগেশ্বর ৯০, কাঠীগোদাম ৯০, দিল্লী ৩৭৮ কিমি ছাড়াও উত্তর ভারতের দিকে দিকে আলমোড়া থেকে।

বিনসার : আলমোড়া থেকে ২৯.৭ কিমি দূরে ২৪১২ মি উঁচুতে চাঁদরাজাদের গ্রীষ্মকালীন (৭-১৮ শতক) রাজধানী বিনসার পাহাড়। ওক, পাইন আর রডোডেনড্রোন ছাওয়া অরণ্যময় বিনসারে কেন্দারনাথ, চৌখাষা, ত্রিশূল, নন্দাদেবী, নন্দাকোট, পঞ্চচুলী, মীরাঘুন্টি, দেবীদর্শন শিখররাজি সুন্দর দৃশ্যমান। নির্মল আকাশে পশ্চিম থেকে পূবে ৩৪০ কিমি ব্যাপ্ত হিমালয়ের বরফাচ্ছাদিত শিখর-রাজির দৃশ্যও নয়নাভিরাম। দিনভর সূর্যালোকে তুষারাবৃত শৈলশিখরে সোনা রঙ ধরে। বাংলা থেকে ২ কিমি চড়াই পথের জিরো পয়েন্ট থেকে সূর্যাস্ত বিনসারের অন্যতম আকর্ষণ। সূর্যাস্তে রঙের বর্ণালী মনোহর। আর আছে বিনসার পাহাড়ের গহন বনে নাম-না-জানা শতাব্দিকধর্মী পাহাড়ী ফুল। অদূরে বনের বিজনে বিনেশ্বর (মহাদেব) মন্দির। আলমোড়া শহরও দৃশ্যমান বিনসার থেকে। দোকানপাটের অভাব—জলাভাব আছে, আধুনিকতা পৌছায়নি বিনসারে। আজও এর প্রিমিটিভ বিউটি উদাস করে তোলে। বাসেরও চল নেই—জিপ ৪৫০, ট্যাক্সিতে ৫০০ টাকায় আলমোড়া থেকে বিনসার যাতায়াত। যানের রাতের অবস্থানে অতিরিক্ত লাগে। তেমনই বাগেশ্বরসুখী বাসে পৌনে এক ঘণ্টার কালীমঠ হয়ে কাপড়খান পৌছে জিপে ২০০ টাকায় চড়া বেতে পারে ১৪ কিমি দূরের বিনসার পাহাড়ে। কাপড়খান থেকে বাগেশ্বরের দূরত্ব ৫৬ কিমি। থাকার জন্য টিলার টবে KVMN-এর ১৭

ঘরের Tourist Bungalow, DAB ২৫০৩০০ ডর্মি ৪০ আছে বিনসারে। আহাৰ্যও মেলে ক্যান্টিনে। আর আছে জিরো পয়েন্টের অদূরে Forest RH, অব: DFO, Almora.

পাহাড়ের দেখার শেষ নেই। সমুদ্রের প্রতিটি ঢেউ-এর মতো; পাহাড়ও প্রতি ক্ষণে ক্ষণে নব নব সাজে তার মোহিনী রূপ মেলে ধরে—আকর্ষণ করে ভ্রমণার্থীদের। সময়ে কুলোলে বাসে বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় :

| সিমিতোলা | ৩.৬ কিমি | সুন্দর প্রকৃতির মাঝে চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ |
|--------------|----------|---|
| মাটোলা | ৫.২ " | প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের জন্য খ্যাতি |
| চিতাল | ৬.৪ " | হিমালয়ের সুন্দর শোভা দৃশ্যমান |
| কাতারমল | ১৭ " | ১২ শতকের সূর্যমন্দির তথা নৈসর্গিক দৃশ্যের জন্য খ্যাতি |
| পানুয়া নৌলা | ৩০.৫ " | প্রাকৃতিক দৃশ্য খুবই মনোরম |



বাসস্ট্যাণ্ডকে ঘিরে ডাইনে-বামে Mall Road-263601-এ আলমোড়ার হোটেলরাজি। ডাইনে সাধারণ সাজে Alka H, D ২০০-৩২৫; Milan H, SCB ১০০ DCB ১৫০; Konark H; Ambassador DAB ২০০-৩৫০; Central Motel; H Vikash, DAB ১৭৫-২২৫; H Sikhhar, D 22253, DCB ২০০ DAB ৪৫০ ৬৫০ ৮৫০ FAB ৫৫০, কল বুকিং: Diamond D 276714; শহরান্তে H Sagar. আর বামে Ranjana H, D 22800, DCB ১৫০ DAB ২৫০; H Pawan, D 23253, DCB ১৫০ DAB ২০০-২৭৫ TAB ২৫০ FAB ৩০০; H Trishul, D ২০০-৩২৫; Roval H, D ১৫০-২০০; Renuka H, D 22860, DAB ৩০০-৪৫০ TAB ৩৫০ FAB ৪৫০; GPO ছাড়িয়ে Savoy H, D 22329, DAB ২৫০-৪৫০; লাগোয়া UP Govt Tourist Office. এপথে আরও যেতে আকাশবাণী পেরিয়ে ঐরামকৃষ্ণ মিশন আশ্রমতথা গেস্ট হাউস/অগ্রিম যোগাযোগে ভক্তদের থাকার ব্যবস্থা মেলে।

বাসস্ট্যাণ্ডের বিপরীতে চক বাজারে একই বাড়িতে Grand H, D ২০০-২৫০; Ashok H, মান ও ভাড়া গ্রাণ্ড তুল্য। আর আছে Mall Road-এ Himalaya H, S ১০০ D ১৭৫; Kailash H, DAB ১৫০-২২৫; Parvat H, Pandey H, (১০ বেডের হল), Thapa H (২০ বেডের হল), Tourist Cottage H, D ১৫০-২০০। Bright End Corner-এ Brighu End H; Lata Bzr-এ Anamika H; Paltan Bzr-এ Neelkanth H, D ১৫০-২৭৫।



এছাড়া মনোরম পরিবেশে KMVN-এর Tourist Bungalow, B1, D 22250, D ৩০০ ৬০০ সুইট ৬০০; বাংলো থেকে গোট পাহাড় রেঞ্জ সুন্দর দৃশ্যমান। আর আছে PWD IH, অব: EE, PWD, Almora; Zilla Parishad DB, অব: Secretary, Zilla Parishad, Almora; FRH, অব: DFO-West, Almora; Circuit House, অব: DC, Almora: আর আছে Huri Prasad Tamta Dharamshala আলমোড়ার মাঝে।

আহার্যও মেলে নানান হোটেলে। তবুও যেন বাস স্ট্যাণ্ডের কাছে হোটেল শিখর লাগোয়া Glory Restaurant খানাপিনা তালি। তেমনই উচিত হবে কীরের মিষ্টির খাদ নেওয়া আলমোড়ার।

যজ্ঞেশ্বর: আলমোড়া থেকে পিথোরাগড়ের পথে বাসে ৩৪ কিমি গিয়ে ১৮৭০ মি উঁচু যজ্ঞেশ্বরও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। পিথোরাগড়ের দূরত্ব ৮৮ কিমি যজ্ঞেশ্বর থেকে। দেওদারে ছাওয়া ৮ থেকে ৯ শতকের মধ্যভাগে কাভুরী রাজাদের পৃষ্ঠপোষকতায় গড়া শতাব্দিক দেবদেবীর ১৬৪টি মন্দিরের কমপ্লেক্স যজ্ঞেশ্বর। প্রবেশপথের দু'পাশে সারিবদ্ধ অতিথিশালা। সর্বত্র জীর্ণতার ছাপ, কোনো কোনোটি ভগ্ন ও পরিত্যক্ত। বাহির দর্শনে বৈরাগ্য ঘটলেও ভিতরের বৈভব আজও অতিভূত করে দর্শককে। শিব-মৃত্যুঞ্জয়-পুষ্টিদেবী এদের মধ্যে অন্যতম। বৌদ্ধশৈলীর মন্দিরে ভাস্কর্য ও স্থাপত্য সুন্দর। ব্রহ্মাকুণ্ডের জলে মানে পূণ্য মেলে। তেমনই ৩ কিমি পায়ে গিয়ে বড়া যজ্ঞেশ্বর ও দৃষ্টিনন্দন হিমসৌন্দর্য উচিত হবে দেখে নেওয়া। ১ কিমি দূরের দন্তেশ্বর মন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য। প্রভুতত্ত্ব দণ্ডুরের মিউজিয়ামও বসেছে নানান মন্দিরের নিদর্শন নিয়ে যজ্ঞেশ্বরে। দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গের এক বলেও দাবি করেন স্থানীয়রা যজ্ঞেশ্বরকে। থাকার ব্যবস্থা মেলে KMVN-এর ৩০ বেডের ট্যুরিস্ট বাংলোয়, D ২৫০ ৪০০ ডর্মি ৬০ টাকায়। আহাৰ্য ক্যান্টিনে।

পূর্ণাগিরি

কুমায়ুন হিমালয়ের জাগ্রতা দেবী মাতা পূর্ণাগিরি। লাংহা ভক্তের সমাগম ঘটে অশোকপট্টমী তিথিতে। লোকশ্রুতি, আজও দেবী সিংহপৃষ্ঠে বিচরণ করেন প্রতি রাতে। সতীর নাড়ি পড়ে নাকি পূর্ণাগিরিতে (খিমিতে, যাজপুুর)। তবে, মহাপীঠ এই পূর্ণাগিরি। পথ দুর্গম, দুস্তরও বটে।



লঙ্কৌ-লালকুয়া মিটারগেজ রেলপথের পিলিভিত থেকে শাখা লাইন গিয়েছে টনকপুরে। ট্রেন যাচ্ছে ৬-১৫, ১০-০৫, ১৭-২০এ মিটার গেজে ঘণ্টা দু'য়েকে। সরাসরি হ্রিয়ার ক্লাস ও সাধারণ যাত্রী বগিও আসছে লঙ্কৌ থেকে নাইনী এন্ড্রে—পিলিভিত থেকে প্যাসেঞ্জারের সাথে জুড়ে টনকপুরে। ট্রেন আসছে কাশগঞ্জ, শাজাহানপুর থেকেও পিলিভিত হয়ে টনকপুর। রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে পূর্ণাগিরির বাস স্ট্যাণ্ড। বাসও আসছে লঙ্কৌ (কেশববাণী), পিলিভিত, পিথোরাগড় ছাড়াও উত্তর ভারতের নানান শহর থেকে টনকপুরে। আর মোলাকালে বিশেষ বাস চলে কুমায়ুনের নানান শহর থেকে পূর্ণাগিরির। সারদা নদীতে বেষ্টিত ভারত ও নেপাল সীমান্তে টনকপুর। KMVN-এর ট্যুরিস্ট বাংলো D ১০০ ১৫০ ২০০ ডর্মি ৪০ ছাড়াও প্রাইভেট হোটেল Parvat L, India, Chand, Swarna আছে টনকপুরে। কলকাতা থেকে দূরত্ব (লঙ্কৌ ১০০২-পিলিভিত ২৬৩-টনকপুর ৫৩-ঠুঙ্গীগাড় ৬২) ১৩২৪২ কিমি। পিথোরাগড় থেকে এপথের দূরত্ব ১৬৪+৬২ = ১৭০২ কিমি।

চৈত্র মাসের অমাবস্যা থেকে পূর্ণিমা অর্থাৎ পঞ্চকাল ব্যাপী, আবার আশ্বিনের নবরাত্রিতে যাত্রী আসেন দুর্ন-মুরাস্ত থেকে। মেলা বসে, সরকারি ব্যবস্থায় (মার্চ ১৫ থেকে এপ্রিল ৩০) সাময়িক যাত্রী আবাসও গড়ে ওঠে। বাসও চলে মেলা-

কালে টনকপুর রেল স্টেশনের ১ কিমি দূরের বাস স্ট্যান্ড থেকে ঘন অরণ্যের মাঝ দিয়ে বন্ধুর পাহাড়ীপথে ৬২ কিমি দূরের পাহাড়তলী ঠুলীগাড়ে। ঠুলীগাড়েও মেলা বসে জাঁকালো, রাত্রিবাসের ব্যবস্থা মেলে চটির হোটেল। মহাপ্রস্থানের পথও গিয়েছে এই ঠুলীগাড় হয়ে। পূর্ণাগিরির মেলাকালীন যাত্রীদের পায়ে হাঁটা শুরু ঠুলীগাড় থেকে। সঙ্কীর্ণ গিরিপথ, গহীন বন; গহন অরণ্য—চড়াই ও উতরাই—এর সমন্বয় ঘটেছে সারাপথে। একদিকে আকাশ ছুঁই ছুঁই পাহাড়চূড়া, অপরদিকে পাতালম্পর্শী বিভীষিকাময় খাদ; বয়ে চলেছে সারদা নদী। বিপদ পদে পদে। তবুও নৈসর্গিক সৌন্দর্য ও দেবী মাহাশ্যে ভরকে জয় করে পৌছে যাত্বেন আট থেকে আশির তীর্থযাত্রী। প্রাণান্তকর চড়াইও পেরুতে হয় এপথে। ঠুলীগাড় থেকে ৫ কিমি গিয়ে ভৈরবতীর্থটুনসাসে পূর্ণাগিরি যাত্রীদের রাত্রিবাসের ব্যাপক ব্যবস্থা। ধরমশালা আছে নানান, আর হয় চটির হোটেল মেলাকালে টুনসাসে। বিজলী বাতিরও ব্যবস্থা হয় জেনারেটর চালিয়ে। পূজার ডালিও সঙ্গে নিতে হয় টুনসাস থেকে।

টুনসাস থেকে আরও ১২ কিমি গিয়ে পূর্ণাগিরি। রেলিং ঘেরা বিপদসঙ্কুল সিঁড়ি—চার কোণে চার পিলারের ওপর ছোট মন্দির। ফুট সাতকে উঁচু মন্দিরে দেবী অষ্টভুজা ভগবতী। দেবীর কাছে মনস্কামনা ব্যর্থ হবার নয়। স্বপ্নাসিদ্ধ কুমায়ূনের মহারাজা জ্ঞানচন্দ্র ১৬৩২ সৎবতেভৈরি করান খেত মমরে দেবীমূর্তি ও মন্দির। আর আছে পত্রহীন প্রাচীন এক বৃক্ষ—নাম তার *সাক্ষা দরবার*। যাত্রীরা বর মাগেন সাক্ষা দরবারে। মেলা ছাড়া এপথে চলায় বিপদ পদে পদে। জীবজন্তু, দস্যু-ভরুরের উৎপাত অমূলক নয়। যেতেও হয় একক ব্যবস্থায় টনকপুর থেকে পূর্ণাগিরি। থাকার সুব্যবস্থা মেলে KMVN-এর ৭৬ বেডের ট্যুরিস্ট বাংলায়ে ১০০ ১৫০, ২০০ ডর্মি ৪০ টনকপুরে। আর প্রাইভেট লিজে KMVN-র ট্যুরিস্ট বাংলা মেলে পূর্ণাগিরিতে।

মায়াবতী

দুই সুইস শিষ্য—সেভিয়ার দম্পতির উদ্যোগে অতীতের চা বাগানে ১৮৯৯-এর ১৯শে মার্চ ঠাকুর শ্রীরামকৃষ্ণের জন্মতিথিতে অষ্টৈত আশ্রমের প্রতিষ্ঠা হয় মার্গপেট অর্থাৎ মায়ের পীঠে। আর মায়ের পীঠ হয় মায়াবতী—নামকরণ স্বামীজীর। উদ্দেশ্য মহৎ—ওঠো! জাগো! জীবনের মূল লক্ষ্য না পৌছে থেয়ো না। আত্ম-নির্ভরতাই এর মূল মন্ত্র। স্বামীহারা মিসেস সেভিয়ারকে সাতনা দিতে স্বামীজীও আসেন। ১৯০১-এর জানুয়ারি ৩—১৮ অবস্থান করেন এই পুণ্যভূমে স্বামীজী। স্বামীজীর বাসগৃহে আজ লাইব্রেরি ও ধ্যানকক্ষ বসেছে। আশ্রম থেকে ৪ কিমি পাহাড় চড়ে আরও ৩০০ মি উঁচুতে ধরমগড়ের ধ্যান-গভীর মায়াময় পরিবেশে উপাসনায় বসতেন স্বামীজী।

আশ্রমের নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে শীর্ণকায়া সারদা নদী। নদীতীরে সাহেবের ইচ্ছামতো হিন্দুতে সংকার হয় ২৮শে অক্টোবর ১৯০০ খ্রি মৃত সেভিয়ারের। স্মারকরূপে মহান তীর্থ। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা, গহন বনের মাঝে ২০৭৩ মি উঁচুতে স্থিত আশ্রম। তুষারচ্ছাদিত হিমালয়ের নেপাল থেকে চৌখা ২৫০ কিমি ব্যাপ্ত প্যানোরামিক ভিউ আশ্রম থেকে দৃশ্যমান। সূর্যোদয়ে এ দৃশ্য নয়নাভিরাম। ফুলে-ফলে ভরা আশ্রম লাগোয়া হাসপাতাল, অদূরে গোশালা, মাদার কিচেন—চাষবাস হচ্ছে। পাহাড়-জঙ্গল-অমলধবল শৈল চূড়ার আকর্ষণও কম নয় স্বপ্নলোক মায়াবতীর। চেনা অচেনা হাজারো পাখপাখালি ও রঙবেরঙের পাহাড়ী ফুল মাতোয়ারা করে তোলে। এমনকি বনচরের অভিসারে বেরোয় মায়াবতীতে আজও। বাঘেরও দর্শন মেলে কখনও সখনও।



লোহাঘাট থেকে ২৫ কিমি দূরের ঘাট হয়ে পথ গিয়েছে বাঁয়ে আলমোড়া আর ডাইনে পিথোরগড়। লোহাঘাট থেকে বাস যাচ্ছে ১১৮ কিমি দূরের আলমোড়ায় ৬-৩০ ও ৮-০০টায়। বাস যাচ্ছে ৬৪ কিমি দূরের পিথোরগড়ও দিনভর নানান। নিকটতম রেল স্টেশন টনকপুর। ট্রেন আসছে ০-৪৫, ৫-২০, ৮-০০, ৮-০৫, ৮-১৫, ১১-১০, ১৩-৪৫, ১৭-৩০, ২২-০০টায় বেরিলি জং ছেড়ে ২ ঘণ্টায় ৫৮ কিমি দূরের পিলিভিত। পিলিভিত থেকে ট্রেন যাচ্ছে ৬-১৫, ১০-০৫, ১৭-২০এ ছেড়ে ২ ঘণ্টায় ৬৩ কিমি দূরের টনকপুরে। তবে ১৭-২০-এর প্যাসেঞ্জার ৯-৪০এ কাশগঞ্জ ছেড়ে বেরিলি/পিলিভিত হয়ে সরাসরি টনকপুর যাচ্ছে ১৯-৩০এ। আবার ২১-১০এ লক্ষ্ণৌ ছাড়া নৈনী এঙ্গে ভোর ২-৪৭এ পিলিভিত পৌছে ডোজিপুর্না হয়ে শাখা রেল ৬-৪০এ লালকুয়া গিয়ে ৮-৩৫এ টনকপুরে চলা যেতে পারে। সরাসরি ঝিগার ক্লাস ও সাধারণ বগিও মেলে নৈনী এঙ্গে লক্ষ্ণৌ থেকে টনকপুরের। এছাড়াও ট্রেন আসছে ৪-১৫, ৭-৫০, ১২-৪০, ১৮-২০এ লক্ষ্ণৌ থেকে পিলিভিত। পিলিভিত থেকে টনকপুর ৬৩ কিমি। রেল স্টেশন থেকে ১২ কিমি দূরে বাস স্ট্যান্ড টনকপুরে; টনকপুর থেকে বাসে লোহাঘাট ৯১ কিমি। এমনকি দিল্লী, বেরিলি, পিলিভিত, পিথোরগড়, রানীক্ষেত, আলমোড়া থেকে বাস আসছে ১৭০৬ মি উঁচু লোহাঘাটে বা Valley of blood. কুমায়ূন ভাষায় *লোহা* অর্থ রক্ত। চারিদিকে পাহাড়ের আবেষ্টনীর মাঝে লোহাঘাটও এক মনোরম উপত্যকা। লোহাঘাট থেকে দেওলার, ওক, পাইন, ফার আর রডোডেনড্রনে ছাওয়া পিচে মোড়া পথে ৯ কিমি দূরে মায়াবতী। জিপ যাচ্ছে ১৫০ টাকায়। আবার কুলির মাধ্যম মাল চাপিয়ে পাকদণ্ডী পথেও চলা যেতে পারে লোহাঘাট থেকে মায়াবতী। বোড়াবার মরসুম মার্চ ১৫—জুন ১৫, সেপ্টেম্বর ১৫—নভেম্বর ১৫।



আশ্রম থেকে ২ কিমি নিচে সেভিয়ারের বাংলাে লাগোয়া ডাবল বেডের ৮ ঘরের *আশ্রম পেস্ট হাউসে* মায়াবতীতে থাকার একমাত্র ব্যবস্থা। আহার্যও মেলে নিভর আশ্রমে। মাসাধিককাল আগেই লিখুন: The President Maharaj, Advaita Ashram, PO: Mayabati, Via-Lohaghat, Dist : Pithoragarh, UP, PC-262524 বা

Advaita Ashram, 5 Dehi Entally Rd, Cal-14, ☎ 2472898. তবে শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন আশ্রমের অনুমোদন অগ্রাধিকার পেয়ে থাকে। আলমোড়ায় শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন শাখা কেজেও গেন্ট হাউসের সন্ধান নেওয়া যেতে পারে। আর লোহাঘাটে আছে KMVN-এর ২০ বেডের ট্যুরিস্ট বাংলো, D ২০০, ২৫০, ডর্মি ৫০। লোহাঘাটে অবস্থান করেও জিপে বেড়িয়ে নেওয়া যায় মায়াবতী। প্রাইভেট হোটেলও আছে Deep, Kailash লোহাঘাটে।

লোহাঘাট থেকে পিথোরাগড়মুখী ৫ কিমি দূরে মাড়োরখান পৌছে ৩ কিমি ট্রেক করে ২০০১ মি উঁচু ওক, পাইনে ছাওয়া আবেকাট মাউন্ট থেকেও হিমালয়ের সুন্দর নৈসর্গিক শোভা দেখে নেওয়া যায়। সারি দিয়ে দাঁড়িয়ে— নন্দাদেবী, নন্দাখাত, পঞ্চচুলি, কামেট, ত্রিশূল। তেমনি উচিত হবে শিখতীর্থীরা সাহেব লোহাঘাট থেকে বেড়িয়ে নেওয়া।

শ্যামলাতাল: অতীতের শ্যাল্লা আর তাল—দুয়ে মিলে শ্যামলাতাল। নামকরণ স্বামী বিরজানন্দের। স্বপ্নময় পুণ্যভূমি গহীন আরণ্যক শ্যামলাতালেও অদ্বৈত আশ্রমের আর এক শাখা বিবেকানন্দ আশ্রম হয়েছে। দ্বিতলে স্বামী বিরজানন্দের ধ্যানকক্ষ। আর আছে যাত্রীনিবাস, চিকিৎসা কেন্দ্র, গোশালা, ৩টি তাল অর্থাৎ সরোবর শ্যামলাতালে। শ্যামলা নীক থেকে দেখে নেওয়া যায় ধ্যানগম্ভীর উপত্যকা। দূরে বহুদূরে বয়ে চলেছে সারদা নদী। নদী পারে পূর্ণগিরি দেবী মন্দির। টনকপুর-পিথোরাগড়, টনকপুর-লোহাঘাট বাসে সুখিডাঙ নেমে চড়াই পথে PWD-র সুখিডাঙ ডাকবাংলো; আহা! নিজ ব্যবস্থায়। বাংলোর বুকিং: EE, PWD IB, Champabat, Pithoragarh, UP. বিবেকানন্দ আশ্রমের যাত্রীনিবাসের বুকিং: প্রেসিডেন্ট মহারাজ, বিবেকানন্দ আশ্রম, শ্যামলাতাল, পোস্ট-চম্পাবত, জেলা-পিথোরাগড়, উত্তর প্রদেশ।

চম্পাবত

উৎসাহীরা মায়াবতী বেড়িয়ে লোহাঘাট থেকে আরও ১৪ কিমি গিয়ে অতীতের চাঁদ রাজাদের রাজধানী ১৬১৫ মি উঁচু চম্পাবতও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বাস আসছে ৭৫ কিমি দূরের টনকপুর, ৭৬ কিমি দূরের পিথোরাগড় থেকেও। পিলিভিত, বেরিলি থেকেও বাস আসছে চম্পাবতে। নিকটতম রেল স্টেশন টনকপুর।

কুমায়ূনের পূর্ব সীমান্তে বয়ে চলেছে সারদা বা কালী নদী—অপর পাড়ে নেপালের দোতি রাজ্য। তবে, অতীত গরিমা ১৭৪৪এ রোহিলা সর্গর আলি মহম্মদের হাতে বিনষ্ট হয়। ধ্বংস পায় চাঁদ রাজাদের অতীত। ১৯১৫এ নেপালের দখলে যায় কুমায়ূন। আর ১৮১৫য় দখল যায় ব্রিটিশের হাতে।

চাঁদ রাজাদের পাহাড়ী দুর্গে আজ তহলীল বসছে। দুর্গ লাগোয়া চম্পাবতের অন্যতম নাগনাথ মন্দির। কুমায়ূনি

শৈলীতে, ফ্রেট পাথরে প্যাগোডাধর্মী মন্দিরে দেবতা মহাদেব নাগনাথ। লাগোয়া সিঁড়ি পথে বিধ্বস্ত দুর্গের ফটক। বাজারের অদূরে জনবসতির কোলাহলে বালেশ্বর মহাদেব মন্দির ছাড়াও বেশ কয়েকটি প্রাচীন মন্দির— জীর্ণ অবস্থা এদের। বাদামী বেলেপাথরে মুখোমুখি ছোট দুই কারুকার্যময় মন্দিরে কুমায়ূনের অধিষ্ঠাত্রী দেবী চম্পাদেবী ও শিবচাঁকুর। মন্দিরের স্থাপত্যে ও ভাস্কর্যে খাজুরাহোর আদল মেলে। দেওয়ালে দেব-দেবী, মিথুন-মূর্তি, ঘরপাল, সুর-সুন্দরী, ফুল ও লতাপাতার শিকল। দারুণ তৈরি দরজার কারুকার্যও সুন্দর।

লোহাঘাটমুখী ৯ কিমি যেতে মানেশ্বর মহাদেব চম্পাবতের আর এক বরগিহা মন্দির। জিপ, বাস বা ট্রাকে চলা যেতে পারে। আবার ৫ কিমি চড়াই বেয়েও যায় যেতে পারে প্রাচীন মন্দির মানেশ্বর দর্শনে। কিংবদন্তী, কৈলাস ও মানসের পথে পঞ্চপাণ্ডবেরাও আসেন চম্পাবতে। আহিকের জল পেতে বাণ মেরে কৈলাসের পবিত্র বারি তোলেন অর্জুন, কালে কালে উষ্মজলের প্রশ্রবণ। দেবতা বাণেশ্বর শিবেরও প্রতিষ্ঠা নাকি পাণ্ডবদের হাতে। আরও পরে বাণেশ্বর হয়েছে মানেশ্বর। মন্দির হয়েছে নতুন করে রাম-লক্ষ্মণ-সীতা ও হনুর মানেশ্বর চত্বরে।



KMVN-এর ট্যুরিস্ট বাংলোয় D ২০০, ডর্মি ৫০ আছে চম্পাবতে। আহা! মেলে। আর আছে PWD IB ও Forest Bungalow চম্পাবতে। পাইস হোটেলও আছে নানান বাজারে—আহা! মেলে।

পিথোরাগড়

লোহাঘাট থেকে বাস যাচ্ছে ৬২ কিমি দূরে ভারত, নেপাল ও তিব্বত সীমান্তের পিথোরাগড়ে। বাস আসছে নিকটতম বিমানবন্দর পছনগর ২৪৯; আর রেল সংযোগকারী টনকপুর ১৫১, কাঠগোদাম ২১২, হালদুয়ানি ২১৮, বেরিলি ২৬৮ কিমি থেকে পিথোরাগড়ে। (মায়াবতী দেখুন) বাস আসছে দিল্লী ৫০৩, আলমোড়া ১২১, রানীক্ষেত ১৬১, নৈনীতাল ১৮৮ কিমি থেকেও পিথোরাগড়ে।

আর পিথোরাগড় থেকে বাস যাচ্ছে : দিল্লী ৬-১৫, ৯-০০, ১০-৩০; হরিদ্বার ৪-৩০, ৯-০০; আগ্রা ৫-০০; মোরাদাবাদ ৫-৩০; বেরিলি ৫-০০, ৬-৩০; হালদুয়ানি ৫-১৫, ৬-৩০, ৬-৩০; নৈনীতাল ৬-৩০; আলমোড়া ৫-০০, ৭-০০, ৯-০০, ১০-৩০; রানীক্ষেত ৫-০০, ৭-০০; মুন্সিয়াদা ৫-০০, ৬-৩০; পিলিভিত ৬-৩০; লোহাঘাট, গোমালদাম, টোকোরি নানান বাস।

১৯৬২তে আলমোড়া থেকে টুকুরা হয়ে পিথোরাগড় জেলার জন্ম। দিগন্তবিস্তৃত হিমালয়ের শৃঙ্গরাজি মহিমা-মণ্ডিত করে তুলেছে পিথোরাগড় জেলার সদর ৮×৫ কিমি ব্যাপ্ত ১৮১৫ মি উঁচু চির ও পাইনে ছাওয়া পিথোরাগড়কে। কাশীরের মিনি সংস্করণও বলে থাকে লোক পিথোরাগড়কে। সীমান্তবর্তী বাণিজ্যিক শহর পিথোরাগড়ের পূর্বে নেপাল আর উত্তরে তিব্বতের অবস্থান। কৈলাস ও মানস

যাত্রীরাও যাত্ৰেন পিথোরাগড় হয়ে। চাঁদ রাজাসের দুর্গে আজ তহশীল বসেছে, আর আছে নানান মন্দির ও অতীত কীর্তিকলাপের সাথে অনিন্দ্যসুন্দর নৈসর্গিক শোভা পিথোরাগড়ে। ট্যুরিস্ট বাংলা থেকে পঞ্চচুলী; আর ৫ কিমি দূরের চন্দক থেকে চৌখাখা, নন্দাদেবী, নন্দাকোট, নন্দাখাত দৃশ্যমান। বেড়াবার মরসুম এপ্রিল থেকে জুন আবার সেপ্টেম্বর থেকে নভেম্বরের মধ্য ভাগ। তাপমান ২০— ১৪.৫° সেণ্টিগ্রেডে ওঠানামা করে।



১ কিমি দূরে পাহাড় শিরে অপরাগ প্রকৃতির অনাবিল শান্তির মাঝে KMVN-এর ২৪ বেডের Tourist Bungalow, @ 2434, DAB ৩০০ ডর্মিতে ৫০; PWD IB, FRH, Zilla Parishad DB আছে পিথোরাগড়ে।

১৫ দিনে বেড়িয়ে আসুন কুমায়ুন হিমালয়

১ম দিন নৈনীতাল পৌঁছে বিজাম। ২য় সকালে ভীমতাল/নওকুচিয়াতাল/ ভাওয়ালী বেড়িয়ে নৈনীতালে অবস্থান। ৩য় দিনে দিনভর রানীক্ষেত বেড়িয়ে আলমোড়ায় পৌঁছে রাতের বিজাম। ৪র্থ দিন যজ্ঞেশ্বর বেড়িয়ে আসুন বাসে। ৫ম দিন কৌশানি পৌঁছে সূর্যাস্তে প্যানোরামিক ভিউ দেখুন হিমালয়ের। আরও একটা দিন বিজামও নেওয়া যেতে পারে বা ৬ষ্ঠ দিন কৌশানি থেকে ১৯ কিমি দূরের বেজনাখ দেখে আরও ২৪ কিমি গিয়ে রূপকুণ্ডের তোরণগার গোলদামে রাতের বিজাম। বিশাল সুন্দর দৃশ্যমান গোলদামে। গোলদাম থেকে ৬৬ কিমি বেতে কর্প্রাগ। কর্প্রাগ থেকে বদরী ১২৩, হরীক্ষে ১৭১ কিমিও চলা যেতে পারে বাসে। তবে উচিত হবে ৭ম দিনে গোলদাম থেকে বেজনাখ হয়ে বাগেশ্বর (৪৭ কিমি) দেখে বাসে বাসে চৌকোবি পৌঁছে যাওয়া। ৮ম দিনে: পায়ে পায়ে বেড়িয়ে-কাটিয়ে কর্ণে কর্ণে হিমালয়ের চৌখাখা থেকে পঞ্চচুলীর প্যানোরামিক ভিউ দেখুন চৌকোরিতে। সবচেয়ে কাছ থেকে হিমালয় দৃশ্যমান চৌকোরিতে। বা বাসে সাত সকালে গিয়ে পাতাল ভুবনেশ্বর দেখে চৌকোরি ফিরন দুপুরে বা গঙ্গোলীহাটে রাতের অবস্থান। তেমনই চৌকোরি থেকে বাসে মুন্সিয়াদীও চলা যেতে পারে মিলাম মেন্সিয়ার দর্শনে। ৯ম দিনে চৌকোরি থেকে পিথোরাগড় পৌঁছে রাতের অবস্থান। ১০ম দিনে পিথোরাগড় থেকে লোহাঘাট পৌঁছে জিপে মায়াবড়ী বেড়িয়ে আসুন। ১১-১৩শ দিনে পূর্ণাগিরি বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসবের কালে। ১৪শ দিনে টনকপুর। ১৫শ দিনে টনকপুর থেকে ট্রেনে লঙ্কৌ অর্থাৎ ধরপানে ফিরন। এপথে KMVN-এর ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস আছে—নৈনীতাল/ রানীক্ষেত/ আলমোড়া/ যজ্ঞেশ্বর/ কৌশানি/ মুন্সিয়াদী/ বেজনাখ/ গোলদাম/ বাগেশ্বর/ চৌকোরি/ পিথোরাগড়/ লোহাঘাট/ টনকপুর ছাড়াও নানান স্থানে। বুকিং-এর জন্য স্ব যানেজার-দের লিখুন। বাসও চলে পূর্ণাগিরি ছাড়া সারাপথে।



হোটেলও আছে নানান এসস্ট্যুন্ডের ডাইনে-বায়ো—H Samrat @ 2450, Anand @ 2563, Alankar @ 2475, Jyoti @ 2311, Ranjana @ 2269, Raja @ 2224, Trishul @ 2545, Kurki, Neelkantha, Ulka, Priyadarshini @ 2345; এদের কাছে

১০০-২২৫ টাকায় ডাবল বেডের ঘর মেলে। বাস স্ট্যান্ডে সন্ধ্যা ও বাজারে জলকার, প্রিন্সদর্শিনী হোটেল ত্রী ডালই। চন্দকেও টাবুর হোটেল রিদম ক্যাম্পে থাকে যেতে পারে। ক্যাম্পের বুকিং: Fast Travel Bureau, 45 Central Market, East Kidwai Nagar, New Delhi, @ 4641827.

মুন্সিয়াদী : পিথোরাগড় থেকে ২০৮ কিমি দূরের ৪০০০ মি উঁচু মিলাম মেন্সিয়ার-এরও পথ গিয়েছে মুন্সিয়াদী হয়ে পিথোরাগড় থেকে। ৫-০০, ৬-৩০টার বাসে ৯ ঘটায় ১৫৪ কিমি দূরের মুন্সিয়াদী পৌঁছে ৫৪ কিমি ট্রেক করে চলা যায় মিলাম। তেমনই চলা যায় ৪৫ কিমি দুর্গম পথ ট্রেক করে আর এক হিমবাহ মালাম। ২টি পৃথকপৃথক—দেবল বা ওগলা-দিদিহাট হয়ে বাস যাচ্ছে পিথোরাগড় থেকে মুন্সিয়াদী। জিপও মেলে মুন্সিয়াদী যাতায়াতে। কৈলাস ও মানসেরও পথ গিয়েছে ওগলা থেকে ধারচুলা, তাওয়াঘাট হয়ে। আর এক মহকুমা শহর দিদিহাটে হোটেল, KMVN-র Tourist Bungalow ও PWD-র IB মেলে।

ত্বিকবতী ভাষায় মুনঅর্থ তুবারকণা (snow flakes) আর পিয়াদী হচ্ছে ক্ষেত—অর্থাৎ তুবারের ক্ষেত। গৌরী গঙ্গার তীরে মহকুমা শহর মুন্সিয়াদীকে ঘিরে আকাশ ফুড়ে তুবারমৌলি পঞ্চচুলীর (৬৯০৪মি) পাঁচ চুড়ো সকাল-দুপুর-সাঁঝে সূর্যালোকে বিমোহিত করে। তবুও যেন সূর্যাস্তে সৌন্দর্য বাড়়ে সারা মুন্সিয়াদীর। শনু শনু হিমেল হওয়া। পরশও মেলে হাত বাড়ালে পঞ্চচুলীর। জনশ্রুতি, মহাপ্রস্থানের পথে ৫ চুম্রিতে ৫ স্বামীর জন্য রামার আয়োজন করেন দ্রোণদী। বাংলার অদূরে সুন্দর এক বৃগিয়ালে নন্দাদেবীর মন্দিরটিও আর এক দর্শন। বয়ে চলেছে তুবারগহ্বর থেকে বেরিয়ে নৃত্যরতা কম্বোলিনী গৌরীগঙ্গা। হিমবাহকে ঘিরে নীল আকাশ ফুড়ে দাঁড়িয়ে আছে নন্দাদেবী, হরদেউল, ত্রিশুলী ছাড়াও তুবারমৌলী নানান শিখর। গোটা উপত্যকা জুড়ে কস্তুরী মৃগের চারণভূমি ছিল অতীতে। ব্যাঙ্ক, পোস্ট অফিস, দোকানপাট, বাজার, ধরমশালা ও হোটেল মেলে মুন্সিয়াদীতে। মিলাম পথের পোর্টার-গাইড-বোড়ারেশনও মেলে। বাস আসছে ৫-৩০টায় আলমোড়া ছেড়ে বাগেশ্বর হয়ে ১২-০০টায় চৌকোরি পৌঁছে ৬ ঘটায় ৭২০০ ফুট উঁচু মুন্সিয়াদী। বাস আসছে হালদুয়ানি থেকেও মুন্সিয়াদী। বাসস্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি দূরে নয়নলোভন প্রকৃতির মাঝে PWD-র বাংলা আছে মুন্সিয়াদীতে। বাংলার বুকিং: EE, PWD-Didihat Division, Po-Didihat, Dist-Pithoragarh, Pc-262554. আর বাজারে আছে সাধারণ সাজে Himani L. KMVN-এর Tourist Bungalow, D ৩০০ ৪০০ ডর্মি ৫০ হয়েছে বাংলার হিতলে মুন্সিয়াদীতে।

কৌশানি

কুমায়ুন ভ্রমণে রূপবতী কৌশানি অবশ্যই দর্শনীয়। পাইনে ছাওয়া শহর। ১৮৯০ মি উঁচুতে প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের লীলাভূমি

কৌশানি। আলমোড়া থেকে বাস যাচ্ছে, দূরত্ব ৫২ কিমি। পথে পড়ে সোমেশ্বর—ত্রিশূল সুন্দর দৃশ্যমান, হোটেলও আছে সোমেশ্বরে। বাস আসছে কাঠগোদাম ১৫৫, কর্ণপ্রয়াগ ১০৯, নৈনীতাল ১২৯ (আলমোড়া হয়ে), বাগেশ্বর ৩৯, ভারারী ৬৮, শিখোরাগড় ১৯৭, গোয়ালদাম ৩৯, শ্রীনগর ২৯৭ কিমি থেকেও কৌশানি। এমনকি দিল্লী থেকেও বাস আসছে কৌশানির। নিকটতম রেল স্টেশন কাঠগোদাম ১৫৫, বিমান ১৮০ কিমি দূরে পছনগরে। সারা বছর ধরে চলা গেলেও মার্চ-মে ও সেপ্টেম্বর-নভেম্বর মাস মনোরম। গ্রীষ্মে ২৬—১০° আর শীতে ১৫—২° সেণ্টিগ্রেডে ওঠানো করে ভ্রাম্যমান। শীতেরও অধিকা আছে কৌশানিতে।



ধাকারও নানান ব্যবস্থা Kaushani-263639এ
—গান্ধী আশ্রমের Anashakti Yoga Ashram-এ
৩০—৪৫ টাকায় ঘর, পৃথক দামে নিরামিষ আহার,
স্পট বুকিং-এ ঘর মেলে; বুকিং: Manager, Anashakti Yoga
Ashram, Kaushani-263639. H Prashant, অব্ : Manager.
Sun and Snow Inn, D ৬৫০-৮৫০; Uttara Khund Tourist
L, SAB ১২৫-২০০ DAB ২২৫-৬৫০; তবুও আশ্রম সন্নিকটে
Krishna Mount View H, D ৬৫০-৯৫০ FR ১২৫০, থাকার
পক্ষে অনন্য; এদের নৈনীতাল বুকিং: ৩ 36150. H Sugar, D
৪৫০-৬৫০ FR ৮৫০; H Jeetu, D ৪০০-৬৫০, অব্ : Jeetu
Travels, Mall Rd, Nainital, কল বুকিং: Diamond
৩ 276714; Pine View H, New Pine H, Ashesh H, Ravi
H, Himalaya H, Neelkanth H, New Pine H, Shakti H, H
Hill Queen, Amar Holiday Home—এদের কাছে ২২৫-
৪৫০ টাকায় দু'বেডের ঘর মেলে। আর আছে UP Govt State
Bungalow, অব্: DM, Almora-East বা EE, PWD, Almora;
PWD IB; Zilla Parishad DB, অব্: Secretary, Zilla
Parishad, Almora; FRH, অব্: Conservator of Forest,
Kumaon Circle, Nainital বা DFO, Almora-East.

আর রয়েছে স্টেট বাংলোর কাছে KMVN-এর ১০৪ বেডের
ট্যুরিস্ট বাংলো, ৩ 4106, DAB ৩০০ ৫৫০ কটেক্স ৮০০, সুইট
৮০০ ডর্মি ৬০ করে; অব্: Incharge. তবুও যেন কৌশানি
যাত্রীদের গান্ধী আশ্রমের Anashakti Yoga Ashram-এ আগে
থেকেই ঘর বুক করে যাওয়া উচিত হবে। নিরামিষ আহার,
আয়োজন ও ব্যবস্থাপনা ভালই। বিশাল চত্বর জুড়ে রমণীয়
পরিবেশে আশ্রম। চত্বর থেকে হিমালয়ের অনুপম শৈল-স্বৰূপ
সেখতে জড়ো হন সারা কৌশানীর পর্যটক। গান্ধীজীর শিষ্য সরলা
বেন (ক্যাথেরিন হেইলবেন)—এর প্রতিষ্ঠিত আশ্রমের লাইব্রেরিটিও
আর এক সম্পদ। এছাড়া হিমালয়ের শোভার জন্য বাস স্ট্যান্ডের
মাঝার উপর উত্তরাঞ্চলের আকর্ষণও কম নয়।

স্টেট বাংলো থেকে তুষারাচ্ছাদিত দেবতায়া হিমালয়ের
নৈসর্গিক শোভার তুলনা হয় না। জাতির জনক গান্ধীজীও
কৌশানির প্রশান্ত রাপে মুগ্ধ হয়ে সুইজারল্যান্ডের সঙ্গে
তুলনা করেছিলেন কৌশানিকে। বাসও করেন ১৯২৯এ ১২
দিন অনাশ্রিত যোগ আশ্রমে গান্ধীজী। গীতার অনাশ্রিত
যোগ অধ্যায় এখানেই লেখেন গান্ধীজী। উজ্জল নীলাকাশ
—পাইনের মাথা ছাড়িয়ে আকাশে হেলান দিয়ে পাহাড়
ঘুমায়। কৌশানি থেকে টিল হোঁড়া দূরত্বে চৌখাখা, নীলকন্ঠ,

নন্দাঘুণ্টি, ত্রিশূল, মীরাঘুণ্টি, দেবীদর্শন, নন্দাদেবী,
নন্দাকোট, পঞ্চচুলী শিখররাজি হিমালয়ের অপার সৌন্দর্য
উদ্ভাসিত করে পরপর দাঁড়িয়ে। উদিত ও অস্তগামী সূর্যের
রক্তিম আভার প্রতিফলনে দিগন্তবিস্তৃত (৩৩৬ কিমি)
তুষারাচ্ছাদিত শিখররাজির মোহিনী রূপ অতুলনীয়। তবুও
যেন উষা থেকে গোখলির বর্ণালী মুগ্ধ করে দর্শককে। ক্ষণে
ক্ষণে রঙের বদল—সোনালী, কমলা, রক্তিম, সবশেষে
আগুন লাগে হিমালয়ের চূড়োয় চূড়োয়। নয়নলোভন এ-
দৃশ্য পাগলপারা করে তোলে। পায়ে পায়ে গান্ধীশিষ্য সরলা
বেনের কস্তুরবা গান্ধী আশ্রমটিও বেড়িয়ে নিন। এদের
হস্তজাত পণ্যের বিক্রয়েরও ব্যবস্থা আছে গান্ধী আশ্রম
লাগোয়া বিক্রয়কেন্দ্রে। আর আছে কবি সুমিত্রানন্দন পট্ট
স্মৃতি সংগ্রহশালা। অসংখ্য ঘণ্টার সম্ভার নিয়ে সোমেশ্বর
মন্দির কৌশানির প্রবেশ পথে। একটু নেমে পথের ডাইনে
কালী মন্দির।

বৈজনাথ

কৌশানি থেকে ১৯ কিমি দূরে ১ ঘণ্টার বাসপথে
হিমালয়ের কোলে গোমতীর তীরে প্রাচীন পার্বতীমন্দির
বৈজনাথ। জনশ্রুতি, বনবাসকালে পাণ্ডবরা মন্দির গড়ে
পূজা করেন দেবীর। ইতিহাস বলে, ভারতের একমাত্র
পার্বতী মন্দির গরুড় উপত্যকায় ১১২৫ মি উঁচু বৈজনাথে।
১৩ শতকে কাভ্যুরী রাজাদের তৈরি। কারুকার্যময়, দারুতে
দরজা-জানালা—৬ ফুট উঁচু দেবীর মূর্তি হয়েছে মর্মরে।
মন্দির রয়েছে আরও আট। দেবতাও রয়েছে—শিব,
গণেশ ছাড়াও নানান। কিংবদন্তী, লর্ড শিব হিমালয় কন্যা
পার্বতীকে বিয়ে করেন গোমতী ও গরুড় গঙ্গার সঙ্গমে।
উত্তরকালে পুত্র কার্তিকেয় সাম্রাজ্য গড়েন গরুড় উপত্যকার
বৈজনাথে। এমনকি কাভ্যুরী রাজ বংশের পশ্চিম কার্তিকেয়
থেকে। তবে, বারবার—১৩৯৮-৯৯এ তৈমুরলঙ, ১৬৯৫-
১৭০০য় ঔরঙ্গজেব, ১৭৩৯এ নাদির শাহর হাতে আক্রান্ত
হয়েছেন দেবতা—লুপ্তি হয়েছে খননস্থ মন্দিরের। দিগন্ত-
বিস্তৃত পর্বতমালা—ছোট-বড় রঙবেরঙের পাথরখণ্ড,
সিঁড়িও নেমেছে পুণ্যসলিলা গোমতীতে—স্নানে পুণ্য হয়।
মিউজিয়ামও হয়েছে অতীত সংগ্রহের। আর হয়েছে KMVN-
র Tourist Bungalow, D ১৫০ ২০০ বৈজনাথে।

চৌকোরি

বাগেশ্বর-শিখোরাগড় পথে বাগেশ্বর থেকে বাসে ঘণ্টা
তিনেক ৪৭ কিমি দূরের চৌকোরিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বাস
আসছে আলমোড়া ১০২, বৈজনাথ ১০৯, গোয়ালদাম ৯৭,
কৌশানি ৮৫ কিমি থেকেও বাগেশ্বর হয়ে। শিখোরাগড়ের দূরত্ব
১১০ কিমি। আর চৌকোরি থেকে বাস যাচ্ছে—কৌশানি ৭-১০,
৮-৩০, ৯-৩০, ১০-৩০, ১১-৩০; আলমোড়া ৭-৩০, ৮-৩০,
১০-৩০; গোয়ালদাম ১০-৩০, ১৩-৩০; শিখোরাগড় ৬-৩০, ৭-

০০, ৯-০০, ১০-০০; মূল্যায়ী ১২-০০টায়। আর পাখি ওড়া পথে তিব্বত সীমান্ত ১৪ কিমি দূরে।

২০১০ মি উঁচু চৌকোরির প্রশস্তি চৌখাষা থেকে পঞ্চচুলীর তুষারমণ্ডিত হিমালয়ের প্যানোরামিক ভিউর জন্য। পাইন, ওক ও রডোডেনড্রনে ছাওয়া চৌকোরিতে KMVN-এর ট্যুরিস্ট বাংলায় DAB ৫০০, সুইট ৬৫০, কটেজ ৬০০ ডর্মি ৬০, অবু: Manager, Chokoori-262511. আহাৰ্যও মেলে ক্যান্টিনে। আবার বাংলার বিপরীতে জনতা হোটেল-এও আহারের স্বাদ নেওয়া যেতে পারে অগ্রিম অর্ডারে।

প্রত্যুষ থেকে গোখুলীতে চৌকোরি ট্যুরিস্ট বাংলা থেকে নয়ন-মনোহর হিমালয়ের নৈসর্গিক শোভা খুবই সুন্দর। তবুও যেন উচিত হবে লাগোয়া চা বাগিচার পথপ্রাপ্ত থেকে সূর্যোদয় ও সূর্যাস্তে চৌখাষা থেকে অমলধবল পঞ্চচুলীর হিম-সৌন্দর্য দেখে নেওয়া। কৌশানির থেকেও আরও কাছে পাখি-ওড়া পথে ৩০ কিমি দূরে আল্লি, পঞ্চচুলী, নন্দাখাত, নন্দাকোট, নন্দাদেবী, নন্দাঘুন্টি, চৌখাষা, ত্রিশূল শিখর-রাজি উন্নত শিরে আকাশ ফুঁড়ে পর পর দাঁড়িয়ে। খুবই নয়নলোভন নীলিমায় নীল আকাশে তুষারের শুভ্র প্রলেপের এদৃশ্য।

চৌকোরির আর এক আকর্ষণ ১৯৭৬এ গড়া ভারতে তিনের (চৌকোরি, চামোলি, কুফরি) এক কস্তুরী ফার্ম বা মাক্স ডিয়ার রিসার্চ সেন্টার। চৌকোরি থেকে বাসে আধঘণ্টা গিয়ে এক ঘণ্টার ট্রেকপথে ৭৫০০ ফুট উঁচুতে ২২টি কস্তুরী মৃগের বাস। দুশ্চাপাতার সঙ্গে দুর্মূল্য হলেও ১৯৭২-এর আইন বলে লাল-গোলাপী স্ফটিকাকার ৩০ গ্রামের মতো ওজনের কস্তুরী মৃগের নাভি বা দাঁত-চামড়া কেনাবেচা বা শিকার কঠোরভাবে মানা। ফার্ম লাগোয়া গান্ধী শিষ্য সরলা বেনের আশ্রম।

পাতাল ভুবনেশ্বর: চৌকোরি থেকে পিথোরাগড়মুখী ৩০ কিমি দূরে গুপ্তুরী। গুপ্তুরী থেকে ৮ কিমি জিপে (১২৫-১৫০ টাকায় যাতায়াত) চলা যেতে পারে পৌরাণিক গুহা পাতাল ভুবনেশ্বর অর্থাৎ শেখনাগ ও শিব ঠাকুরের আপন বাড়ি। পাকদণ্ডী পথেও ৪ কিমি ট্রেক করে চড়া যায় পাহাড়ে। পাহাড় চুয়ে চুয়ে জল পড়ে পড়ে স্ট্র্যাটোরাইট চুনা পাথরের ওপর হিন্দু পুরাণের তেজিশ কোটি সেবতা মূর্তি হয়েছেন। মন্ডলিশে বসেছে পঞ্চপাণ্ডব, পাণ্ডবরা নাকি বনবাসকালে বাস করেছেন এখানে। অভাস্তরে—পাহাড়-টাই ফণা তোলা শেখনাগরাজপী; বিষ্ণুবাহনের বিশাল প্রস্তর মূর্তি; আবার কোথাও বা ঐরাবতের মতো দেখতে প্রাক-শিলা মূর্তি—গুড় থেকে জল ঝরছে; কোথাও বা শিবের জটা থেকে ঝরনার মতো জল পড়ছে অবিরত; আরও কত কি। গুহাময় পাহাড়ের গায়ে অনুপম দেবদেবীর এই সমাবেশ অভিজুত করে। গুহাময় বিচিত্র, অজুত সব কারুকার্য দর্শনে বিশ্বম্যবিস্ট হন যাত্রী। সঠিক জন্ম-বৃত্তান্ত অজানা হলেও অযোধ্যার সূর্যবংশীয় রাজা রিতুপুরা মৃগরায় বেরিয়ে আবিষ্কার করেন

এই যাদুপুরী। জেনারেটরে আলোর ব্যবস্থা হলেও সঙ্গে চিঠি নেওয়া ভাল। সঙ্গীর্ণ গুহা পথে উচুনিচু ধাপে শ'খানেক ফুট নেমে অসম অভ্যন্তর। সময় স্বল্পতায় সকালের বাসে চৌকোরি থেকে এসে পাতাল বেড়িয়ে ফেরাও যেতে পারে দুপুরে। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই পাতাল ভুবনেশ্বরে।

তবে, গুপ্তুরী থেকে বাসপথে ৬ কিমি আরও যেতে গঙ্গোলীহাটে PWD-র IB ও সাধারণ সাজের Sugara Tourist L, Tourist L, Paryatak Griha-য় থাকার ব্যবস্থা মেলে। দীর্ঘ অতীতের দেবী মহাকালী ছাড়াও নানান হিন্দু দেবদেবীও রয়েছেন গঙ্গোলীহাটে। খুবই জাগ্রতা এই দেবী মহাকালী। জনশ্রুতি, আদি শঙ্করাচার্যও এসেছেন—তপস্যায় বসেন সকালের গুম্ফা মন্দিরে। গঙ্গোলীহাটে এক রাত থেকেও শ'সেড়ে কটাকায় জিপে দেখে ফেরা যায় পাতাল ভুবনেশ্বর। গঙ্গোলীহাট থেকে বাসে ৭৭ কিমি দূরের পিথোরাগড় চলুন দ্বিতীয় দুপুরে।

করবেট জাতীয় উদ্যান

১৯৩৫এ করবেট জাতীয় উদ্যানের (ভারতে প্রথম) জন্ম। নাম ছিল তখন হেইলি ন্যাশানাল পার্ক। আর ১৯৫৭য় পশুবিদ জিম করবেটের স্মারক রূপে নাম হয়েছে করবেট জাতীয় উদ্যান। অবশ্য মাঝে কিছুকালের জন্য এরই নাম হয়েছিল রামগঙ্গা ন্যাশানাল পার্ক। আর World Wide Fund for Nature (WWFN)-এর যৌথ উদ্যোগে এপ্রিল ১, ১৯৭৩এ ব্যায় প্রকল্পের শিরোপা চেপেছে জাতীয় উদ্যানের শিরে।



কলকাতা-লঙ্কৌ-দিল্লী রেলপথের মোরাদাবাদ নেমে মোরাদাবাদ-রামনগর শাখা রেলে রামনগর। ২-৪৫, ৪-৩৫, ৭-০০, ১০-৪৫, ১৩-১০, ১৭-৪৫এ ট্রেন যাচ্ছে মোরাদাবাদ থেকে। ২½ ঘণ্টার রেলপথ। আর যাচ্ছে বাস সকাল থেকে সাঁঝে এপথে। কলকাতা থেকে মোরাদাবাদ ১৩০৫ আর মোরাদাবাদ থেকে রামনগর ৭৯ কিমি। লঙ্কৌ থেকে মোরাদাবাদ ৩২৬, আর দিল্লীর দূরত্ব ১৬১ কিমি। বাসও আসছে লঙ্কৌ ও দিল্লী থেকে মোরাদাবাদে। হাওড়া-জম্মু হিমগিরি (ত্রিসাপ্তাহিক), শিয়ালদহ-জম্মু এক্স, হাওড়া-অমৃতসর মেল ও এক্স, হাওড়া-সেরাদুন ডুন এক্স, ধানবাদ-সুধিয়ানা গঙ্গা শতদ্রু এক্স, বারাণসী-সেরাদুন এক্স, লঙ্কৌ-সাহারানপুর এক্স, জম্মু-গুয়াহাটী/বরানুনি, বরানুনি-অমৃতসর জনসেবা এক্স, গোতা-দিল্লী এক্স, আদ্বুধ অসম এক্স, মজঃফরপুর-দিল্লী শহীদ এক্স, দিল্লী-কাঠগোদাম এক্স, দিল্লী-মজঃফরপুর/সমষ্টিপুর এক্স, লঙ্কৌ-নতুন দিল্লী মেল, কাশী বিশ্বনাথ এক্স, পটনা-নতুন দিল্লী শ্রমজীবী এক্স, বেরিলি-দিল্লী এক্স, এলাহাবাদ-সাহারানপুর দৌচণ্ডী এক্স, এলাহাবাদ-সেরাদুন এক্স—প্রতিটা ট্রেন মোরাদাবাদ হয়ে যাচ্ছে। পুর মোরাদেবর নামে ১৬৩১এ সম্রাট শাজাহানের মোরাদাবাদ নামকরণ। শাজাহানের গড়া জুম্মা মসজিদটি আজও দৃষ্টব্য। তেমনই কারুকার্যময় পেডলের তৈজসপত্রের জন্যও মোরাদাবাদ খ্যাত।



রেল স্টেশনে *হিটারাফিং রুম; অদূরে UP Tourism-এর টুরিস্ট বাসে*, ৩ 310837, D ২৫০, A/c D ৪৫০; *Maharaja H, Stn Rd, ৩ 310123, S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৬০০ D ৭৫০ আছে। আর স্টেশন থেকে ধেরিয়ে ডানহাতি ৫ মিনিটের পথে চড়াই পেরিয়ে চকে—*Baseru, Rajan, Shere-e-Punjab, Chowla Regency, Paradise, Insaf, Prince, Munsarovar* ছাড়াও নানান হোটেল আছে মোরাদাবাদে।

আবার লক্কা থেকে মিটারগঞ্জে নৈনী এয়ে লালকুমা পৌছেও শাখা রেল চলা যেতে পারে কোশী নদী তীরের রামনগর। আর করবেটের নিকটতম রেল স্টেশন তথা শহর রামনগর-এ বন বিভাগের সদর দপ্তর বসেছে। রামনগর থেকে সড়কপথে ৪৯ কিমি দূরে থিকালা—অর্থাৎ করবেট জাতীয় উদ্যানের প্রবেশ তোরণ। রেল স্টেশনের ১২ কিমি দূরের বাস স্ট্যান্ড থেকে দিনের একমাত্র বাস যাচ্ছে ১৬-০০টার রামনগর ছেড়ে ঘণ্টা দুয়েকে থিকালায়। থিকালা থেকে ফেরে ৯-৩০টার। আর মেলে টাক্সি ৫৫০ টাকায় যাতায়াত। তবে, Kumaon Motor Owner's Union, Ramnagar-কে লিখে করবেট যাতায়াতে বিশেষ গাড়ির ব্যবস্থাও মেলে। নিকটতম বিমানবন্দর বায়ুদূত সংযোগকারী ১৩৫ কিমি দূরের পছননগর। আর রামনগর থেকে বাস যাচ্ছে আলমোড়া, রানীকুন্ড, নৈনীতাল, হালদুমানি, লক্কা, হরিদ্বার, দেবাদুন, মোরাদাবাদ ছাড়াও উত্তর ভারতের দিকে দিকে। দিল্লী যাচ্ছে বাস রামনগর থেকে মুম্বাই। তেমনিই নৈনী যাত্রীরা কাঠগোলাম/হালদুমানি হয়ে বাসেই পৌছে যান রামনগর তথা করবেট।



বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া Field Director, Project Tiger, Ramnagar, UP, ৩ 853189-এর দপ্তর। লাগোয়া Conservator of Forest—Corbett NP থেকে করবেট জাতীয় উদ্যানের পারমিট ও বনে অবস্থানের বুকিং মেলে। পাশেই Tourist Reception Centre ও KVMN-এর ৪৮ বেডের *Tourist Bungalow*, ৩ 85225, DAB ৩০০, ৪০০ ডর্মি বেড ৬০। আর আছে বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে সাধারণ সাজের *Bharat, Mayur, Everest, Banawari, Bangari, Govind* রামনগরে। এদের কাছে ৮০-১৫০ টাকায় ডাবল বেডের ঘর মেলে। তেমনিই হয়েছে শহর ছাড়িয়ে থিকালামুখী পথে *Corbett River Side Resort, Garjia, Ramnagar* ৩ 85373, Delhi ৩ 660665, AP-S ১২৫০ D ২৫০০ A/c S ২২৫০ D ৪০০০; *Tiger Tops Corbett L, Ramnagar* ৩ (05946) 85279, Delhi ৩ 6444016, AP-D ৫০০০, কল বুকিং: ৩ 2801209; *Quality Inn Corbett Jungle Resort, Kumeria Reserve Forest, Po. Mohan, Corbett N P, UP-244719*, ৩ 85520, Dhangarhi Gate 9, এদের চার্জ আহার সহ প্রতি দু'জনা ২৬০০; কল বুকিং: Span ৩ 2801209; *Claridges Hildway*, AP-D ৪০০০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209.

করবেট যাতায়াতে নানান বিধিনিষেধ। রামনগর থেকে থিকালা পথে ১৮ কিমি যেতে Dhangarhi Gate সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা থাকে। বাই সাইকেল, স্কুটার, মোটর সাইকেলের প্রবেশাধিকার নেই জাতীয় উদ্যানে। টোলও লাগে জাতীয় উদ্যানে—ভারতীয়দের প্রথম ৩ দিন ১৫, অভ্যর্থনাতী ১০০ ছাত্র ৫, পরবর্তী প্রতিদিন ১০/১৫/০

হারে। গাড়িরও রোড টোল লাগে ভারতীয়/অভ্যর্থনাতী একই হারে—হাফা গাড়ি ৫০ ভারি গাড়ি ১০০ করে। স্টিল ক্যামেরা ভারতীয়দের ফ্রি হলেও বিদেশীদের ৫০ হারে। মুক্তি ক্যামেরার অনুমতির সাথে টোলেও অধিকা লাগে। পারমিটও দেখাতে হয় ধান গড়ি গেটে। তেমনিই রিসেসপন সেন্টার থেকে clearance certificate সংগ্রহ করে ফেরার পথে ধান গাড়ি গেটে জমা দেওয়া বিধি। ডে ডিজিটরদের প্রবেশাধিকার নেই ধান গড়ি অর্থাৎ থিকালা রোডে। দিনে দিনে দেখে ফেরার প্যাকেজ ট্যুরে বা একক যাত্রায় যাত্রীদের আগে আসার ভিত্তিতে দিনে ১০০ জনের রামনগর থেকে ৩ কিমি দূরের আমদপাটা গেট দিয়ে ৭ কিমি অরণ্য অন্দরের বিজ্ঞানীতে প্রবেশাধিকার মেলে। তবে, বিজ্ঞানীতে অরণ্য আবাদনে কেন যেন ঘাটতি থেকে যায়।

কুমায়ুন ও গাড়োয়াল জেলায় ৩৮৫ থেকে ১১০০ মি উঁচুতে হিমালয়ের পাদদেশে ৫২৫.৮ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে করবেট বন্যপ্রাণী সংরক্ষণ ক্ষেত্র। তবে, অভয়া-রণ্যের আয়তন ১৩১৮ বর্গ কিমি। রামগঙ্গা নদী ঘিরে রেখেছে উত্তর ও পশ্চিম জুড়ে। সীমান্তও টেনেছে কুমায়ুন ও গাড়োয়ালের মাঝে এই রামগঙ্গা। আর দক্ষিণে কালাগুড় নদীতে বাঁধ দেওয়ায় সৃষ্টি হয়েছে রামগঙ্গা জলাধারের। শুধু আকারেই বহুতম নয়—এর প্রশস্তি আজ সারা ভারতে তার বাঘের জন্য। সারা রাজ্যে ৪৬৫ বাঘের মধ্যে শ'খানেক বাঘের বাস করবেটে। হাতিও রয়েছে করবেটে। এছাড়া ঘরিয়াল, হায়েনা, শিয়াল, চিতল, হগ-ডিয়াল, শুয়োর, ভান্ডুক, নীলগাই, শম্বর, চিতাবাঘও রয়েছে শিশু ও শালে ছাওয়া অরণ্যময় করবেটের ভূগভূমিতে। রামগঙ্গার জলের কুমির ও কচ্ছপও কম চিন্তাকর্ষক নয়। মাছ ধরারও ব্যবস্থা আছে করবেটে। ৫০এরও অধিকধর্মী স্তন্যপায়ীরা সঙ্গে ৫৮০ধর্মী পাখি নীড় বাঁধে করবেটে। আর আছে সর্পরাজ কোবরা করবেট জাতীয় উদ্যানে।

১৪টি অবজারভেশন টাওয়ার হয়েছে বন্যপশু দেখার জন্য। হাতির পিঠেও বন্যজন্তু দেখার ব্যবস্থা আছে সকাল ৬-০০ ও বিকাল ১৬-৩০টার। ৪ যাত্রীর হাতিতে যাত্রীপিছু ভাড়া প্রতি ২ ঘণ্টার জন্য ভারতীয় ৪০, অভ্যর্থনাতী ৭৫। ছাত্রদের প্রতি ৬ জনার দলের ১ ঘণ্টার ১টি মিনি সফরের ভাড়া ১০ হারে। নিজস্ব ব্যবস্থায় গাড়িও চলে অরণ্য অন্দরে। গাইডও মেলে থিকালায়। আর বনবিহারে বনাচার অবশ্যই পালনীয়। বসনের ক্ষেত্রে অলিভ গ্রিন বা খাকি রঙ পরিধান করুন। সাদা, লাল বা উজ্জ্বল রং বজনিয়। ধূমপানও বর্জন করে চলুন। *Walking can be suicidal* স্মরণে রেখে বিহার করুন করবেটে। উচিত হবে সূর্যোদয়ে বা সূর্যাস্তে হাতির পিঠে যাত্রী হয়ে জন্তু দেখে নেওয়া।

বেড়াবার মরসুম নভেম্বর থেকে মে মাস। খোলাও থাকে করবেট ১৫ই নভেম্বর থেকে ১৫ই জুন। আর ফ্রেব্রুয়ারি থেকে মে মাস পলাশ রাজিমে তোলে জাতীয় উদ্যানকে।

ফুল ফোটে নানান বর্ণের নানান ধর্মের। পরিবেশ মোহময় করে তোলে বনা ফুলের। এরও আকর্ষণ কম নয় পর্যটকদের কাছে। অবসর বিনোদনে লাইব্রেরি বসেছে, ফিল্ম দেখানো হয় নিখরচায় বন্যপ্রাণী সংক্রান্ত বিকালায়। মে মাসে দিনে গরম হলেও রাতে ঠাণ্ডা।

| Climate | Maximum | Minimum |
|----------------|---------|---------|
| Nov to Feb | 25-30°C | 4-8°C |
| March to April | 35-40°C | 9-13°C |
| May to June | 44-46°C | 19-22°C |

কনডাক্টেড ট্যুর: UP Tourism, 36 Janpath, Chanderlok Building, ND-1, ☎ 3322251 থেকে মরসুমে প্রতি মঙ্গল, শুক্র ও রবিবার ৩ দিনের প্যাকেজে ভারতীয় ১৫০০/১৭০০ শিশু ১৩০০/১৫০০ অভ্যর্থনায় ২০০০/২৫০০ শিশু ১৮০০/২০০০ টিকায় করবেট দেখাবার ব্যবস্থা আছে। আর আসছে লক্ষ্ণৌ থেকে ২ দিনের প্যাকেজে করবেট দেখাতে রাজ্য পর্যটন।



মূল প্রবেশ তোরণ ধানগড়ি গেট হলেও রামনগর থেকে ৩ কিমি গিয়ে করবেটের আমদণ্ডা গেট। আমদণ্ডা থেকে ৭ কিমি অরণ্য অন্দরে যেতে বিজ্ঞানী। তবে বিকালে আয়োজন ব্যাপক। বিকালে রয়েছে—*New Forest R H*, DAB ভারতীয় ১৫০ অভ্যর্থনায় ৪৫০, *Old FRH*; এদের বুকিং: Chief Conservator of Forest, Wildlife Preservation Organisation-UP, 17 Rana Pratap Marg, Lucknow-226001, ☎ (0522) 246140; ২ বেডের *Cabin-3*-এ ভারতীয় ২০০ অভ্যর্থনায় ৬০০, *New FRH Annexe*, এদের বুকিং: UP Govt Tourist Office, Chanderlok Building, 36 Janpath, New Delhi-110001; ২ বেডের *Cabin-1/3/4*, ভারতীয় ২০০ অভ্যর্থনায় ৬০০, ৩ বেডের *Tourist Hutment*, ভারতীয় ৮০ অভ্যর্থনায় ২৪০, ৪ বেডের *Green Hut*, ভারতীয় ৬০ অভ্যর্থনায় ১৮০ ছাত্র ৫ প্রতি জন।

২৪ বাডের *Log Hut*-এ ১৫ ৫০ ৫; এদের বুকিং: Field Director, Project Tiger, Ramnagar, Dist-Nainital, PC-244715, ☎ (05946) 85376, UP. তবে, *Log Hut, Green Hut, Tourist Hutment*—সাজ-শয্যাহীন। পৃথক মূল্যে বিহানা মেলে।

এছাড়া *Khinanauli*

FRH-এ সাইট ভারতীয় ২০০ অভ্যর্থনায় ৬০০,

অবু: Chief Conservator of Forest, Lucknow-1;

বিকাল থেকে ১৪ কিমি দূরে

Sarpauli FRH-এ সাইট

১৫০/৪৫০, বিকালার ১৯

কিমি দূরে *Gairal New &*

Old FRH-এ ১৫০/৪৫০,

রামনগর থেকে ১০ কিমি

দূরে *Bijrani FRH*-এ

১৫০/৪৫০, *Sultan FRH*

৫০/১৫০, *Kandu FRH*

৫০/১৫০ এদের বুকিং:

Field Director, Tiger

Project, Ramnagar-

244715; এমনকি UP Govt Tourist Office, The Mall,

Nainital-এ *Cabin-4* ও *Hutment*-এর আংশিক বুকিং মেলে

এপ্রিল ১৫—জুন ১৫য়। ঘরের জন্য ৫০% টাকা অগ্রিম পাঠিয়ে

(Bank Draft on SBI) ১ মাস আগেই লিখুন।

অতীতের জনতা খানা উধাও হলেও পৃথক মূল্যে আহার

মেলে বিকাল (New FRH) ও বিজ্ঞানীতে। তবে দামে কিছুটা

আধিক্য যেন। অন্যত্র নিজস্ব ব্যবস্থায় আহার। বিকালার ১টি

প্রাইভেট রেস্তোরাঁও আছে—আহার মেলে, দামও সস্তা নিউ

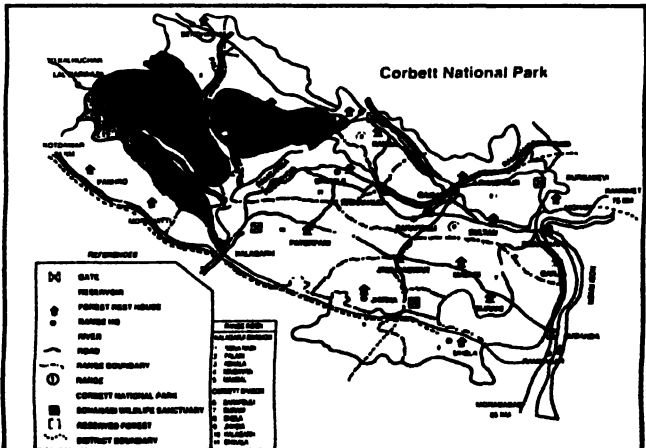
ফরেস্ট রেস্ট হাউস থেকে।

Wild Animals at Corbett N P (Buffer Zone) as per census 1992

| | |
|--------------|-------|
| Tiger | 92 |
| Leopard | 41 |
| Elephant | 307 |
| Chital | |
| Spotted Deer | 29158 |
| Barking Deer | 2127 |
| Hog Deer | 213 |
| Sambar | 5368 |
| Bear | 52 |
| Boar | 6763 |
| Ghoral | 175 |
| Mager | 70 |
| Ghariyal | 160 |
| Monkey | 6200 |
| Langur | 7500 |

করবেট জাতীয় উদ্যান
তথা বিকাল থেকে দূরত্ব

| | |
|------------|----------|
| মোরাদাবাদ | ১৩১ কিমি |
| ধানগড়ি | ৩১ " |
| কাশীপুর | ৭৬ " |
| রামনগর | ৪৯ " |
| হালদুয়ানি | ১০৪ " |
| নৈনিতাল | ১২৮ " |
| রানীক্ষেত | ১০৬ " |
| আলমোড়া | ১৮০ " |
| পাউরি | ১৭৪ " |
| প্রীনগর | ২০৪ " |
| দিল্লী | ২৯০ " |
| লক্ষ্ণৌ | ৫০৩ " |
| পাখনগর | ১৩০ " |



আবার, ঝিকাল থেকে ৮২, রামনগর থেকে ৩৩, হালদুয়ার ২৩ কিমি দূরে রামনগর-নৈনীতাল বাস সড়কে শালে ছাওয়া গহীন অরণ্যের মাঝে জিম করবেটের শীত-কালীন আবাস কালাধুসীর বাড়িতে জিম করবেট মিউজিয়মে স্টাফড জীবজন্তু দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা। বাসও করেন করবেট সাহেব ১৯০৭-৩৯ এই বাড়িতে। থাকার ব্যবস্থা মেলে কালাধুসীর Forest Rest House-এ।

দুধওয়া ন্যাশানাল পার্ক

লক্ষ্ণৌ-বেরিলি রেলপথে লক্ষ্ণৌ থেকে ১৯৫ কিমি দূরে মৈলানী জংশন। ২১-১০এ নৈনীতাল এন্ড, ১৮-২০এ ৫৩১৩ মরুঘার এন্ড, ৭-৫০এ ৫৩১০ রোহিলাখণ্ড এন্ড লক্ষ্ণৌ ছেড়ে মৈলানী যাচ্ছে যথাক্রমে ১-২৫, ২২-২৫ ও ১২-৩৫এ। আর ১৭-১৫য় লক্ষ্ণৌ ছেড়ে ২২-০০টায় মৈলানী পৌছে ২৩-১৮য় পালিয়া কালান পৌছে টিকুনিয়া যাচ্ছে ০-২৫এ ৫৩২০ লক্ষ্ণৌ-দুধওয়া স্যাঙ্কচুয়ারি এন্ড। লক্ষ্ণৌ ফেরে ২-৪৫এ টিকুনিয়া ছেড়ে দুধওয়া হয়ে ৫৩১৭ স্যাঙ্কচুয়ারি এন্ড। ট্রেন আসছে আশা থেকে গোকুল এন্ড, বেরিলি থেকে নানান ট্রেন মৈলানী জং-এ। আর ৬-৩০, ১০-৩০, ১৭-১৫য় মৈলানী ছেড়ে পালিয়া কালান ৩১, দুধওয়া ৪৩, টিকুনিয়া ৭৯ কিমি হয়ে নানপাড়া জং যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। পথ দিয়েছে লক্ষ্ণৌ থেকে সীতাপুর/ লখিমপুর/ মৈলানী/ ভাইরা খেরি/ নিঘাসন/ পালানি হয়ে ভারত-নেপাল সীমান্তে হিমালয়ের তরাই অঞ্চলের দুধওয়া জাতীয় উদ্যানে। মৈলানী থেকে ১ ঘণ্টার গাড়ি দুধওয়া জং। দুধওয়া থেকেও শাখা রেল ট্রেন যাচ্ছে ৭-০৫, ১৫-৩০, ১৮-০৬এ জাতীয় উদ্যানের বুক চিরে উত্তর-পশ্চিমে গৌরীকটায় ও উত্তর-পূর্বে চন্দনটৌকীতে। দুইয়েরই অবস্থান জাতীয় উদ্যানের প্রান্তরেখায় নেপাল সীমান্তে। দূরত্ব যথাক্রমে ২৪/১৩ কিমি। দুধওয়া রেল স্টেশন থেকে ১০ কিমি দূরে জাতীয় উদ্যান। অগ্রিম খবরে বনদপ্তরের গাড়িও মেলে রেল স্টেশন থেকে জাতীয় উদ্যানে যেতে। নিকটতম বিমান লক্ষ্ণৌ-এ। দুধওয়া থেকে দূরত্ব—লক্ষ্ণৌ ২৩৮, বেরিলি ২৬০, দিল্লী ৪৩০, পালিয়া ৫ কিমি।

১৯৫৮য় ৬২ বর্গকিমি বনভূমি জুড়ে গড়ে ওঠে সোনারী-পুর ওয়াইল্ড লাইফ স্যাঙ্কচুয়ারি। ১৯৬৫তে আয়তন বেড়ে হয় ২১২ বর্গকিমি। নামান্তরও ঘটে—সোনারীপুর হয় দুধওয়া। আর ১৯৭৭-এর ১লা ফেব্রুয়ারি জাতীয় উদ্যানের শিরোপা পরে দুধওয়া। ভারতের ১৬তম ব্যাঘ্র প্রকল্পও গড়ে উঠেছে দুধওয়ায়। আয়তনও বাড়ে জাতীয় উদ্যানে—৬১৩ বর্গকিমি। তবে, কোর এরিয়া ৪৯০ বর্গকিমি আর বাফার জোন ১২৩ বর্গকিমি।

| ভারারী | থেকে | লোহারকৈত |
|----------|------|--------------|
| লোহারকৈত | " | ঢাকুরী |
| ঢাকুরী | " | খাতি |
| খাতি | " | ষোয়েলী |
| ষোয়েলী | " | ফুরকিয়া |
| ফুরকিয়া | " | পিগুরী |
| | | জিরো পয়েন্ট |

হিমালয়ের পাদদেশে নেপাল সীমান্ত জুড়ে তরাই অঞ্চলে দুধওয়ার অবস্থান। শালে ছাওয়া গহীন বন গহন অরণ্য। বন্যপ্রাণী, সরীসৃপ আর নানান প্রজাতির পাখি বৈচিত্র্য এনেছে দুধওয়ায়। বয়ে চলেছে নানান পাহাড়ী নদী—কোথাও বা আকার তার ঝিলে কোথাও বা বিলে। সুহেলী নদী পরিখা গড়েছে। বাঘের জন্য দুধওয়ার প্রশস্তি। সন্তরেরও বেশি বাঘ অবাধে চরে বেড়ায় ১৫০-১৮২ মি উঁচু দুধওয়ায়। আর হয়েছে ভারতীয় গণ্ডারের নতুন উপনিবেশ দুধওয়ায়। তেমনই আছে স্টুলা শিংওয়ালা অজব বারশিঙ্গা অর্থাৎ জলচর বাজলা হরিণ (Swamp Deer)—গোণ্ডাও বলে থাকে স্থানীয় লোকে। ১৯৮২র সেনসাস মতে—বাঘ ৬৫, লেপার্ড ১০, বারশিঙ্গা ২৬০০, চিতল হরিণ ৯৮০০, হগ ডিয়ার ২১৫০, বার্কিং ডিয়ার ৬৭৫, শম্বর ৫৬০, গুথ ডাম্বুল ৬৫, নীলগাই ৬০০, বুনা গুয়ার ৩৩০০, গুণ্ডার ৭, হাতি ৫, কৃষ্ণসার হরিণ ২০, ভৌদড় ১৫, মেছো কুমির ৬, নানান জাতীয় সাপ ও অজগরের বাস দুধওয়া জাতীয় উদ্যানে। আর আছে চার শতেরও অধিক প্রজাতির পাখি জাতীয় উদ্যানের ছোট ছোট তাল বা সোনারীপুর ঝিলে। থাক উপজাতিদের বাস সোনারীপুর রেঞ্জ।

ওয়াচ টাওয়ারও হয়েছে জাতীয় উদ্যানে। আর হয়েছে Forest Rest House জাতীয় উদ্যানের Dudhwa, Sathiana, Bankkati, Sonaripur, Quila-য়। ঘর, সুইস কটেজ ও ডর্মি প্রথায থাকার ব্যবস্থা। তবে, আহার্য মেলে কেবল দুধওয়ায়। বিজলীও পৌছেছে দুধওয়ায়। থাকার পক্ষে দুধওয়াই শ্রেয়; সাথিয়ানা মন্দ নয়। এদের ঘর ৫০ অন্যত্র ২৫ হারে। বুকিং-এর জন্য Field Director, Dudhwa National Park, Po: Lakhimpur, Dist: Kheri, UP, PC-262701, @ 2106 বা Chief Wild Life Warden, 17 Rana Pratap Marg, Lucknow, UP, @ 246140-কে ১৫ দিন আগেই ৩০% টাকা অগ্রিম পাঠিয়ে লিখুন। ১০ ও ১৮ সিটের মিনিবাস, জিপ, গাড়িও মেলে দুধওয়ায় বন বিহারে। ভাড়া যথাক্রমে ১০/১৫/৭ কিমি প্রতি। আর মেলে হাতি, প্রতি ২½ ঘণ্টার সফরে ৪৫ প্রতি জন। আর লাগে প্রবেশ দক্ষিণা—ভারতীয়দের প্রথম ৩ দিন ১০ পরবর্তী দিনগুলি ৫ হারে। বিদেশীদের ৩৫/১২ করে। ক্যামেরাও চার্জ লাগে মন হারে। নিকটতম ব্যাঘ্র পাল্লিয়ায়। নভেম্বর ১৫ থেকে জুন ১৫ মরসুম হলেও ডিসেম্বর থেকে মার্চের প্রভাব বা গোখুলি জন্তু দেখার মাহেন্দ্রক্ষণ।

| ১৬ কিমি | ১৭৫৩ মিটার | PWD IB বা ট্যুরিস্ট |
|---------|------------|-------------------------------------|
| | বালোয় | রাতিবাস |
| ১১ " | ২৬২১ | " " |
| ৮ " | ২২১০ | " " |
| ১১ " | ২৭৩৪ | " বিজ্রাম বা " |
| ৫ " | ৩২৬১ | " " |
| | | বেড়িয়ে ফেরার পথে |
| ৭ " | ৩৩৫৩ | " ফুরকিয়াতে রাতিবাস |
| | | বা পাইলট বাবার আশ্রমে রাতের অবস্থান |

পিশারী প্রেসিয়ার

আডভেঞ্চার যারা ভালবাসেন তাঁরা হিমালয়ের হিম-সৌন্দর্য উপভোগ করে আসুন ৩৩৫৫ মি উচ্চ পিশারী গিয়ে। নন্দাকোট ও নন্দাখাত পাহাড়ের পাদদেশে ৩২২ কিমি ব্যাপ্ত এই হিমবাহ। কলকাতা থেকে হাওড়া-কাঠগোদাম এক্সপ্রেস ১৩৬২ কিমি দূরের হালদুয়ানি গিয়ে, বাসে ২০৫ কিমি দূরের ভারারী পৌছে ৫৮ কিমি পায়ে পিশারী জিরো পয়েন্ট। জিরোপয়েন্টের ডাইনে থেকে বাঁয়ে ডিহাকারে দাঁড়িয়ে—ভুলকিয়া, বরকাটিয়া, নন্দাকোট, পিশারী বা টেল পাস, নন্দাখাত, পানিদুয়ার, বলজৌরী, অনফোর বরফে মোড়া নয়নাভিরাম শৃঙ্গ আট।

কলকাতা থেকে ২১-৪৫৫ 3019 হাওড়া-কাঠগোদাম এক্সপ্রেস গোরক্ষপুর/লক্ষ্মী/বেরিলি/লালকুয়া হয়ে দ্বিতীয় সকাল ৮-০২এ কাঠগোদামের আগের স্টেশন হালদুয়ানি পৌছে রিকশায় ১ কিমি দূরের বাস স্ট্যান্ড। হালদুয়ানি থেকে ৮-৩০টায় দিনের একমাত্র বাস যাচ্ছে ভারারীর। কাঠগোদাম/ ভাওয়ালা/ গরমপানি/ আলমোড়া/ কৌশানী/ কৌশানি/ বাগেশ্বর/ কাপকোট হয়ে ভারারী পৌছায় রাত ২০-০০টায়। দূরত্ব ২০৫ কিমি। আর ৫৮ কিমি পায়ে-হাঁটা পথ ভারারী থেকে পিশারীর। অসময়ের যাত্রীর ২৪ কিমি দূরের বাগেশ্বর পৌছে দ্বিতীয় সকালে ১২ ঘটায় ভারারী গিয়ে যাত্রা শুরু করতে পারেন পিশারীর। তবে, আজকাল বাস যাচ্ছে সরষু পাড় ধরে আরও ১২ কিমি এগিয়ে সাং ভিলেজ পর্যন্ত। তবে, পথ গিয়েছে আরও এগিয়ে—জিপও অদূর ভবিষ্যতে ঢাকুরী পৌছাচ্ছে। উচিতও হবে বাগেশ্বর থেকে সাং-এ পৌছে পায়ে হাঁটা (৫৮-১২=৪৬ কিমি) শুরু করা। বাগেশ্বরের বাসও মেলে নানান লালকুয়া, হালদুয়ানি ও কাঠগোদাম থেকে। বাস আসছে বেরিলি ও দিল্লী থেকেও বাগেশ্বরে। বাস আসছে প্রতিদিন প্রত্যুষে নৈনীতাল থেকেও সাং। ফেব্রার পথে বাগেশ্বরের বাস মেলে ৭—১৬-০০টায়; আর কৌশানির শেষ বাসটি ছেড়ে যাচ্ছে দুপুর ১৪-০০টায় ভারারী থেকে। মূল্যায়ারও পথ গিয়েছে শ্যামা হয়ে ভারারী থেকে।

এমনকি GMVN ৬ রাত ৭ দিনে বাগেশ্বর-পিশারী-বাগেশ্বর প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে। থাকা-খাওয়া-যাতায়াত নিয়ে ভাড়া ১৯৮০/২৭০০। আগ্রহীদের সরাসরি Yatra Manager, GMVN, Muni-ki-Reti, Rishikesh, UP-কে যোগাযোগ করাই উচিত হবে।

আলমোড়া ৭৩, গোয়ালদাম ৪৩, কৌশানি থেকে ৩৯ কিমি দূরে আলমোড়া-পিথোরগড় পথে সরষু ও গোমতীর সঙ্গমের অদূরে ৯৭৫ মি উচ্চ বাগেশ্বরও এক পূণ্য শৈবতীর্থ। মাহাশ্যে কালী সম। কীপকায়া সরষুর তীরে প্রাচীন বেজনাথ আর সঙ্গমের কাছে লোকনাথ বাবার মন্দির ছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান। কিংবদন্তী, শিবের দেসার চণ্ডিসারের হাতে শহরের পঙ্কন শিবের বাসের জন্য।

আর, যাত্রীর বাসের জন্য KMVN-এর ট্রান্সিট বাংলা, D ১৫০ ২০০ ডর্মি ৫০; H Rajdoot, Bus Std হাড়াও নানান সাধারণ হোটেল আছে বাগেশ্বরে। এমনকি লোকনাথ মিশন

আশ্রমেও ঘর মেলে যাত্রীর। বাস যাচ্ছে আলমোড়া ৭৩, গোয়ালদাম ৪৩, কৌশানি ৩৯, টোকোরি ৪৭ কিমি বাগেশ্বর থেকে।

কর্মব্যস্ত জনপদ ভারারী। পথের দু'পাশে সারি দিয়ে বাড়ি—দোকান পাট, হোটেল; ব্যাক্তও পৌছেছে ভারারীতে। ভারারীতে Him Pindari H. H Glacier, Twari H ছাড়াও নানান চটির হোটেল ১০০-২২৫ টাকায় ঘর মেলে। আর বাসপথের কাপকোটে PWD-র বাংলামেলে। ভারারী থেকে ৫৮ কিমি হাঁটা-পথের শুরু। পাইন, ফার, রডোডেনড্রন আর বন্য ফুলেরা বাসর সাজায় এপথে।

হাঁটাপথে যাত্রীদের রাত্রি বাসের জন্য ৬টি ডাকবাংলো হয়েছে। সন্ধ্যা ২ ঘরের বাংলা, ঘর ১০০ করে। আর হয়েছে GMVN-এর ২ ঘরের ট্রান্সিট বাংলালোহারক্ষেত, ঢাকুরী, খাতি, ছোয়েলী, ফুরকিয়ায়—ডর্মি প্রথায় থাকা, ৫০ প্রতিজনা। কফল মেলে উভয় বাংলায়। GMVN-এর প্রতিটি ট্রান্সিট বাংলায় স্লিপিং ব্যাগও মেলে ভাড়া। আহাৰ্য মেলে বাংলায়—প্রাইভেট হোটেলও আহাৰ্য মেলে ২০-২৫ টাকায়। তবুও উচিত হবে রায়ান সঙ্গে নেওয়া।

বরফের উপর দিয়ে পথ—পথ বন্ধুরও। তবে বরফ আর প্রকৃতির সৌন্দর্য পথ চলার ক্রান্তি ডোলায়। ১ম দিনের ১৬ কিমিতে বসতি মেলে। সরষু নদীর পাড় ধরে পথ। চায়ের দোকানও মেলে পথপাশে। ডাকবাংলোর কাছেই পানিচাকি লোহারক্ষেত। আরও ১ কিমি গিয়ে গ্রামের শেষে খালিধার বাংলা। ২য় দিন ৯ কিমি পাইনে ছাওয়া পাহাড় পৌছানো খাড়া চড়াইয়েরে আরও ২ কিমি উত্তরাই নামতেই ঢাকুরী বাংলা। চারদিক ঘিরে ছোট ছোট পাহাড় বাহু গড়েছে। বিস্তীর্ণ অঞ্চল জুড়ে সবুজের মেলা। পাইন, দেওদার, ফার মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। সামনেই তুষারধবল হিমালয়। অন্তঃগামী সূর্যের আলোয় নন্দাখাত রমণীয়। সাথে কুলোলে পাহাড় চড়েও দেখে নেওয়া যায় নয়নাভিরাম হিমালয় গরবিনীকে ঢাকুরী থেকে। ঢাকুরী পেরুতেই সরষু ছেড়ে পিশার নদের সঙ্গ ধরে পথ। ৩য় দিনে খাতি—উত্তরাই ও চড়াই সমতা রেখেছে। খাতি বড়সড় জনপদ—এপথের জংশন। নন্দা হিমালয়ান হোটেল ছাড়াও সিংহদের ২টি হোটেল আছে খাতিতে। আহাৰ্যও মেলে হোটেল। আনুষঙ্গিক রায়ানও মেলে খাতির দোকানপাটে। ৪র্থ দিনে ছোয়েলী বাংলা। পথ গিয়েছে গহন অরণ্যের মাঝ দিয়ে। রডোডেনড্রন, পাইন আর চির বোলতার গুঞ্জনের সাথে কোরাস ধরে এপথে। গাছেরা ছাটা ধরে, সূর্যালোকেরও প্রবেশ মানা—নিচ দিয়ে বয়ে চলেছে খরসোতা পিশার নদ। কাফলীরও মিলন ঘটেছে বাংলার সামনে পিশার নদে। ৫ম দিনে ৫ কিমি চড়াইয়েরে ফুরকিয়া পৌছে যাত্রা। এপথের শেষ বাংলা এই ফুরকিয়ায়। ৬ষ্ঠ দিন ভোররাতে রওনা হয়ে ৭ কিমি গিয়ে সূর্যোদয়ে রূপসী পিশারীর মোহিনী রূপ উপভোগ করুন। অতীব নয়নাভিরাম জিরো পয়েন্টের এদৃশ্য। হিমালয়ের রূপে মোহিত হতে পিশারী জিরো পয়েন্টে পাইলট বাবার আশ্রমে ঘর মেলে থাকার। তবে, শীতের অধিকা হেতু উচিত হবে

নেমে চলা। তবে ৪ দিনে গিয়ে ৩ দিনে ফেরা অর্থাৎ ৭ দিনে সাল করা যেতে পারে এ সফর। সঙ্গে পাহাড়ী প্রকৃতি থাকা দরকার। পথে সবরকম ব্যবস্থাও সঙ্গে নিতে হয় ভারারী থেকে। কুলি ও খচ্চর মেলে এপথে। কুলি ৫ খচ্চর ১০ হারে প্রতি কিমি। বেড়াবার মরসুম মে, জুন, সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস।

আবার পথে ঢাকুরী থেকে সুন্দরডুঙ্গা হিমবাহও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। সুন্দর পাথরের দেশ সুন্দরডুঙ্গা। রঙবেরঙের পাথরের জন্য সুন্দরডুঙ্গার প্রশস্তি। ১ম রাত লোহারক্ষেত্রে, ২য় রাত ঢাকুরীতে কাটিয়ে ৪ কিমি পেরুতেই উমলা থেকে বামহাতি পথে পথ পৃথক হয়েছে সুন্দরডুঙ্গার। চলার কোনো পথ নেই—বোম্বার পেরিয়ে গাছ সরিয়ে এপথ। পথ খুবই দুর্গম। পাহাড়ী অভিজ্ঞতা ছাড়া সাধারণের জন্য নয় সুন্দর-ডুঙ্গা। ৩য় রাত খাতি থেকে ৭ কিমি দূরে ৮৫০০ ফুট উঁচু জাতোলীতে—জাতোলী এপথের শেষ গ্রাম। ভেড়া ও ইয়াকের সাথে চাববাস এদের জীবিকা। ভুজ গাছের ফাঁকে ফাঁকে পাহাড়ী ফুলের জলসা। এরই মাঝে পশ্চিম থেকে সুকরাম নালা আর পূর্ব থেকে মাইকতোলি নালা এসে মিলিত ধারায় জন্ম নিয়েছে সুন্দরডুঙ্গা নদী। PWD-র বাংলা, রূপ সিংহ ও পুন্ডর সিংহ-এর বাড়িতেও ঘর মেলে থাকার। ৪র্থ রাত ১০½ কিমি গিয়ে ৯৫০০ ফুট উঁচু ডুনিয়াচটে তাঁবুতে অবস্থান। সুন্দরডুঙ্গা নদীর পাড় ধরে পাহাড়ী সবুজ ঘন অরণ্যের মাঝ দিয়ে সন্ধ্যা পর্যন্ত ৬ কিমি গিয়ে ৫ম রাত ১০৫০০ ফুট উঁচু কাঁথালিয়ায় শেপার্ড হাট বা তাঁবুতে কাটিয়ে ৬ষ্ঠ দিনে ৮ কিমি জুনিপার ও রডোডেনড্রনের ঘন জঙ্গলের মাঝ দিয়ে প্রচণ্ড চড়াই পেরিয়ে ১৪৫০০ ফুট উঁচুতে ১½x১ কিমি আয়তাকার মাইকতোলি বেসিন অর্থাৎ সুন্দরডুঙ্গায় পৌছান। তিন দিকে প্রহরী হয়ে পাহাড় শ্রেণী সদর্পে মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। বরফ পড়ে সারা বছর। বাঁয়ে নেমেছে ২২৩২০ ফুট উঁচু মাইকতোলি শিখর থেকে মাইকতোলি প্রেসিয়ার। ডাইনে পানওয়ালিদুয়ার ২১৮৬০, বালজৌরীকল ১৯৮৫৭ ফুট। তার সামনে রকি পিক। খুলন্ত প্রেসিয়ার নেমেছে এদের মাঝে রকি পিকের কাঁধ ব্যববাব—বার প্রেসিয়ার। সত্যই যেন স্বপ্নে গড়া কল্পলোকের গল্প-গাথা হেন। খুবই নয়না-ভিরাম। ২৫ কেজি বহনের কুলিও মেলে এপথে, ৮ কিমি প্রতি। এবার ঘরে ফেরার পালা। আরও দুর্গম পথে দেবীকুণ্ড হয়েছে ও ফেরা যেতে পারে। তবে পিণ্ডারী যাত্রীদের জাতোলী থেকে খাতির পথে এগিয়ে যাওয়াই উচিত হবে। ঢাকুরী থেকে সুন্দরডুঙ্গার দূরত্ব ৪৩ কিমি।

আবার ছোয়েলী থেকে জুলাই-অক্টোবর মাসের সকালে গিয়ে দিনে দিনে কাঞ্চনী হিমবাহও বেড়িয়ে ফেরা যায়। এরও সৌন্দর্য অতুলনীয়। এপথের দূরত্ব ১২ কিমি, যাতায়াতে ২৪ কিমি। কাঞ্চনীর বাম তীর ধরে, চড়াই-উৎরাইয়ের পরম্পরা পেরিয়ে পথ চলে এগিয়ে। চির-গাইন-

ওক-রডোডেনড্রনের ঝালরে ছাওয়া আরণ্যক কাঞ্চনী। জুলাই-আগস্টে চেনা-অচেনা ফুলের সমারোহ মধুময় করে তোলে এপথ। তবে, পথ দুর্গম—পদে পদে সাবধানতা পালনীয়। ১২৫০০ ফুট উঁচুতে হিমবাহের ধারে স্ট্রাউটের ভেতর থেকে বেরিয়ে আচ্ছাদে কাঞ্চনী নদী। শ্যাওলা আর চূর্ণশিলায় সবুজরঙা দেওয়ালে ঘেরা—অবিরাম পড়ে চলেছে ছোট ছোট বরফের টুকরো। তিরতির জলধারা পেরিয়ে চলাও যায় হিমবাহের মুখে। গোমুখেরই দৃশ্যান্তর—তবে, আরতনে বড়। ভয়ঙ্কর সুন্দর হিমবাহের পিছে দুগ্ধবল বনকাটিয়া (২১২৩০ ফুট), অদূরে নন্দাকোট—নয়নলোভন এদৃশ্য। থাকারও ব্যবস্থা মেলে মাঝ পথের খাটিয়ায় ট্রেন্স হাটে, আহারও মেলে হাটে। নিজস্ব ব্যবস্থায় তাঁবুও ফেলা যেতে পারে কাম্পিং গ্রাউন্ডে। দিনে দিনে ফেরাও যেতে পারে ছোয়েলী।

তবে ইঁটার তারতম্যে রাত্রিবাস নির্ভর করে। যতটা পারা যায় সকালের দিকে এগিয়ে চলুন—দুপুর থেকে পাহাড়ী আবহাওয়া খারাপ হতে শুরু করে। আজকাল ডাকবাংলোগুলির আগ্রিম বুকিং তুলে দেওয়া হয়েছে। ডমিটির প্রথায় জায়গা মেলে বাংলায়। তবে, VIP সফর এড়িয়ে চলুন। কারণ, তখন বাংলাতে জায়গা মেলা দুষ্কর। প্রয়োজনে EE, PWD, Bageswar, UP বা কাপকোট-কে লিখুন। আর জাতোলিতে রূপ সিংহের বাড়িতে থাকার জন্য ঘর মেলে যাত্রীদের।

রূপকুণ্ড ও হোমকুণ্ড

কলকাতা থেকে ট্রেনে লক্কা/বেরিলি হয়ে কাঠগোদাম। আগের স্টেশন হালদুয়ানি থেকেই বাস যাচ্ছে কাঠগোদাম/কৌশানি হয়ে গোয়ালদামের। ১৯৮ কিমি বাস পথের শেষ এখানে। ৬৩ কিমি ইঁটাও শুরু গোয়ালদাম থেকে রূপকুণ্ডের। খুবই দুর্গম এপথ। সাধারণের জন্য নয় রূপকুণ্ড। তবে প্রাকৃতিক সৌন্দর্য হাতছানি দেয় অভিযাত্রীদের। রঙবেরঙের ফুলের সাথে ব্রহ্মকমলও ফোটে এপথে। যাতায়াতে ৮-১০ দিনের আহার, কুলি ও তাঁবু সঙ্গে নিতে হয় ১৮২৯ মি উঁচু গোয়ালদাম থেকে। গাইডও সঙ্গে নেওয়া দরকার। এদের রেট: ২৫ কেজি মাল বহনের কুলি ৭৫ গাইড ১০০ দিন প্রতি। গোয়ালদাম ও ওয়ানে মেলে। তাঁবু নিজ ব্যবস্থায় নিতে হয়। পথে মেলে না। তবে সেবল, সোয়ারজাং, ওয়ান-এ টুরিস্ট রেস্ট হাউস হয়েছে। সেবলে ঘর মিললেও অন্যত্র ৬০ টাকার ডর্মি প্রথায় থাকা।

কর্ণপ্রয়াগ থেকেও বাস আসছে ৬৬ কিমি দূরের গোয়ালদামে। বাস আসছে শিখোরাগড় থেকেও গোয়ালদামে। আকর্ষণে অনন্য—সারা গোয়ালদামেই ত্রিশূলী দৃশ্যমান। বাস স্ট্যান্ডের অদূরে চক থেকে ত্রিশূলীর বাঁয়ে নন্দাদেবী আর ডাইনে নন্দাবুষ্টি সুন্দর দেখে নেওয়া যায়।

পথেই পড়ে Forest RH—পর্যবেশ রমণীয়। বাস স্ট্যাণ্ডে GMVN-এর ট্রাভেলার্স রেস্ট হাউস-এ DAB ২০০.৩৫০ ডর্মি বেড ৪৮.৬০; আর আছে H Trishul, ৩ (01372) 84744; Gold Star, Vijay, Gwaldam-246441-এ। প্রকৃতি পূজারীদের উচিতও হবে গোয়ালদামে ত্রিশূলী দেখে নেওয়া।

গোয়ালদাম থেকে ১২ কিমি গিয়ে ১১১৮ মি উঁচুতে নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে সৌন্দর্যের খনি দেবল—মণি তার নন্দাঘুণ্ডি ও ত্রিশূল। ১ কিমি পূবে কোয়েল ও পিণ্ডার নদীর সঙ্গম। GMVN-এর ট্রাভিস্ট রেস্ট হাউস (D ১৫০.২০০ ডর্মি ৭৫), FRH, ধরমশালা ছাড়াও প্রাইভেট হোটেল—সৈনিক, নন্দাদেবী, কিরণ, রাউডওয়ায়ে দেবলে। বাসও চলে রূপকুণ্ডের যাত্রী নিয়ে পিণ্ডারের পাড় ধরে গোয়ালদাম হয়ে দেবল। দিল্লী, হরিদ্বার, হালদুয়ানি, পিছোরা-গড়ও বাস যাচ্ছে দেবল থেকে। ১ম রাত দেবলে কাটিয়ে পরদিন দেবল পেরিয়ে বগরিগড়ে FRH রেখে আরও ১৫ কিমি চড়াই ভেঙে ১৫ কিমি গিয়ে ২১০০ মি উঁচু লোয়ারজাং (মান্দোলী) ট্রাভিস্ট রেস্ট হাউসে ২য় রাত্রিবাস। জিপও চলে মান্দোলী পর্যন্ত।

৩য় রাত ২৪০০মি উঁচু ওয়ান গ্রামে। এপথের দূরত্ব ১৪ কিমি মান্দোলী থেকে। পথে জল ও আহার দুয়েরই অভাব, সঙ্গে নিতে হয় গোয়ালদাম থেকে। TRH, FRH ও PWD-র বাংলা/আছে ওয়ানে। আর আছে মন্দির বাংলার কাছে—লাটু মহারাজের। ওয়ানেই এপথের শেষ বসতি। ওয়ান থেকে ৩টি পৃথক পথ গিয়েছে রূপকুণ্ডের। তবে, সহজতম পথে দশ হাজার ফুট উঁচু তিখাকথর পেরিয়ে ৩৩৫৪ মি উঁচু ১০ কিমি দূরের বেদিনী বৃগিয়াল অর্থাৎ চারণভূমিতে শেফার্ড হাট, ট্রেকার্স হাট, ধরমশালা বা Forest Log Cabin-এ ৪র্থ রাত্রিবাস। কথিত আছে, বেদবাস এই বেদিনীতে বসেই বেদ রচনা করেন। মন্দিরে রয়েছেন অষ্ট-ধাতুর দেবী দুর্গা। রূপকুণ্ড যাত্রীদের ভেড়া বলি দেওয়ার প্রথাও আছে মন্দিরে। ভাদ্র মাসে মেলা হয়। এমনকি বেদিনী থেকে ত্রিশূল, নন্দাঘুণ্ডি, নীলকণ্ঠ, চৌখাষা ছাড়াও নানান গিরিশিখর সুন্দর দৃশ্যমান।

৫ম রাত কাটান ৮ কিমি গিয়ে ৪০০০ মি উঁচু বগুয়া-বাসায় তাঁবু খাটিয়ে। পথে পড়ে পাথরনাচুর্নী। একটি করুণ কাহিনী আছে পাথরনাচুর্নীকে ঘিরে। রাজা চলেছেন তীর্থযাত্রায়। সঙ্গে লোকলঙ্কার। এম প্রাকৃতিক সৌন্দর্য মুগ্ধ করে রাজামশায়কে। তীর্থের কথা ভুলে আমোদ-প্রমোদে ডুবে যান নর্তকীদের নিয়ে। দেবতা রুষ্ট হন। গুরু হয় প্রাকৃতিক দুর্যোগ। স্বপ্নানিষ্ট রাজা সবেই ফিরে পান। রাজার রাগ গিয়ে পড়ে নাচুর্নীসের উপর। জীবন্ত কবর দেন তাদের রাজামশায়। কালে কালে পাথর হয়ে যায় নাচুর্নীরা। জায়গার নামও তাই পাথরনাচুর্নী। পাথরনাচুর্নী থেকে ১৫ কিমি যেতে কৈলুবিনায়ক। ষারপাল গণেশের দর্শন মিলাবে কৈলুবিনায়কে। কৈলুবিনায়ক থেকে ৩ কিমিতে

৫০০ ফুট উঠে বগুয়াবাস। ট্রেকার্স হাট, তাঁবু বা শুভাতে রাতের আশ্রয়, পথ খুবই দুর্গম; প্রাণান্তকর চড়াই এপথে। রডোডেনড্রন, ব্রহ্মকমলের সাথে রকমারি পাহাড়ী ফুল পঞ্জাব্রাতি ভোলায় যাত্রীদের। তেমনই ত্রিশূল, নন্দাঘুণ্ডিও সঙ্গ নেয় এপথে।

বগুয়াবাস থেকে ৪ কিমি যেতে ৫০২৯ মি উঁচুতে প্রকৃতির দান ডিম্বাকার লেকের পাড়ে রহস্যময়ী রূপকুণ্ড। সম্ভবত তুষার ঝড়ে মৃত পথ-পাশে বিকিণ্ডভাবে ছড়িয়ে থাকা ঘোড়া ও নরদেহগুলির আচ্ছন্ন স্থান মেলেনি। সারা বছরই বরফে ছাওয়া পাহাড়চূড়ো চক্রাকারে প্রহরায় রত। পাশেই দাঁড়িয়ে ত্রিশূল আর নন্দাঘুণ্ডি। ওদের নিখাস ঢেউ তোলে লেকের জলে। মন্দাকিনীর জন্মও এই হিমবাহ থেকে। প্রতি ১২ বছর অন্তর Raj Jay Yatra উৎসবে মিছিল চলে কর্ণপ্রয়াগের কাছের নৌটি গ্রাম থেকে। রূপোর পাক্ষিতে সোনার মূর্তি নন্দাদেবীও অংশ নেন মিছিলে।

| বেরিলি-কাঠগোদাম-রানীক্ষেত-গোয়ালদাম-কর্ণপ্রয়াগ সড়ক | | |
|--|------|-------------------------------|
| ০ | কিমি | বেরিলি |
| ৪৬ | " | বাহেরী |
| ৮০ | " | লালকুয়া |
| | " | থেকে পছননগর ১১ কিমি |
| ৯৬ | " | হালদুয়ানি |
| | " | থেকে রামনগর ৫৬ কিমি |
| ১০১ | " | কাঠগোদাম ১৭১৮ ফুট |
| ১১১ | " | জেওলিকোট ৪৩০০ ফুট |
| | " | থেকে নৈনীতাল ১৫ কিমি |
| ১৩৮ | " | ভাওয়ালী ৫৫০০ ফুট |
| ১৫৭ | " | খেরানা ৩০০০ ফুট |
| | " | থেকে আলমোড়া ৩৫ কিমি |
| ১৮১ | " | রানীক্ষেত ৬০০০ ফুট |
| ২৪৪ | " | সোমেশ্বর ৪৭৫০ ফুট |
| ২৫৬ | " | কৌশানি ৬০৭৫ ফুট |
| ২৭৫ | " | বৈজনাথ ৪০০০ ফুট |
| | " | থেকে বাগেশ্বর ২৩ কিমি |
| | " | " কাপকোট ৪৭ কিমি |
| | " | " পিত্তারী ব্রেসিয়ার ৯৪ কিমি |
| ২৯১ | " | গোয়ালদাম ৬৬৪০ ফুট |
| | " | থেকে রূপকুণ্ড ৬২ কিমি |
| ৩৬৫ | " | কর্ণপ্রয়াগ ২৬০০ ফুট |
| | " | থেকে বদরীনাথ ১২৩ কিমি |
| | " | " হাথিকেশ ১৭১ কিমি |

রূপকুণ্ড থেকে ১০ কিমি উত্তরে শিলা ওপর দিয়ে নেমে আর এক সমতল ভূখণ্ডের নাম শিলাসমুদ্র। সামনেই ত্রিশূল পর্বত থেকে নামা শিলাসমুদ্র ব্রেসিয়ার। শিলাসমুদ্র থেকে আরও ৫ কিমি দূরে হোমকুণ্ড। উচ্চতা ৪০০০ মি। কথিত আছে, পার্বতী হোম করেছিলেন এই ভূখণ্ডে শিবকে ভূত করে কৈলাসে ঠাই পাবার জন্য। নামও তাই হোমকুণ্ড।

ত্রিশূল তীর্থও বলে থাকে লোকে হোমকুণ্ডকে। হোমকুণ্ড থেকে ২১ কিমি উত্তরাই নেমে দোদাং পাস (১৪২০০ ফু) বেড়িয়ে নেওয়া যায়। শিলাসমুদ্র থেকে দোদাং-এর দূরত্ব ১২ কিমি। সারা পথের নৈসর্গিক শোভা অতীব সুন্দর। এবার ঘরে ফেরার পালা। ৪ দিনে ফিরন গোয়ালদামে।

অত্যাশ্চর্য রূপকুণ্ড থেকে জিওনারগলি পাস, হোমকুণ্ড বা দোদাং থেকে ৫৮৮৪ মি রকিও অভিযান করে আসতে পারেন। আবার হোমকুণ্ড থেকে ৯ কিমি দূরে সুটোল, আরও ২৬ কিমি গিয়ে ঘাট পৌঁছে বাসে ১৯ কিমি দূরের নন্দপ্রয়াগ অর্থাৎ হাবীকেশ-বদরী বাসপথে পৌঁছে যেতে পারেন।

Yatra Manager, Garhwal Mandal Vikas Nigam Ltd, Muni-ki-Reti, Rishikesh, UP বা Trek-o-Tour, G B Pant Marg, Nainital, UP বিশেষ ব্যবস্থায় ট্রাকের আয়োজন করে। উৎসাহীদের সরাসরি যোগাযোগ করাই শ্রেয়। আর, গাইড ও কুলির জন্য : Ranjit Singh Bishn, Kanol, Dist-Chamoli, Via-Ghat, PC-246435: Khelap Singh, Vill & P O-Ghas, Dist-Chamoli; Kawar Ram, Vill-Gwaldam; Tribhuan Chouhan (গাইড), Vill & P O-Talwan, Chamoli; Ganga Singh, Vill-Purna, P O-Deval; Inder Singh, Vill-Wan, P O-Mandoli; Ganashyam Singh Bishn, PO+Vill-Wan, Dist-Chamoli, Via Ghat, PC-246427, Ranjit Singh, Vill-Didna, P O-Mandoli, Dist-Chamoli, Via Gwaldam, UP-কে সরাসরি যোগাযোগ করা যেতে পারে। তবে, গোয়ালদাম থেকে রওনা হবার আগে Regional Tourist Officer, Garhwal Region, Pauri, Dist-Garhwal, UP-র কাছ থেকে পথের সর্বশেষ অবস্থা জেনে চলা উচিত হবে যাত্রীদের।

কানপুর



কলকাতা-গয়া-পাটনা-বারাণসী-এলাহাবাদ-দিল্লী রেলপথে কলকাতা থেকে ১০০৭, দিল্লীর ৪৩৪ কিমি দূরে কানপুর সেম্ভাল স্টেশন। আর লক্ষ্ণৌ থেকে ৭৭ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে NH-2 ও 25-এ গঙ্গার তীরে আধুনিক শিল্পনগরী তথা ফৌজি শহর কানপুর। হাওড়া-বারাণসী-এলাহাবাদ-দিল্লীর প্রতিটা ট্রেন কানপুর হয়ে থাকে। দিন-রাত্রি জুড়ে নানান ট্রেন মিললেও কানপুর থেকে লক্ষ্ণৌ-নতুন দিল্লী সুগার ফাস্ট শতাঙ্গী এক্সে ১৬-৫০৫ ৫ ঘটয়া নতুন দিল্লী বা ১১-৩০৫ ১১ ঘটয়া লক্ষ্ণৌ চলায় সুবিধা। রবিবার ছাড়া গোমতী এক্সও থাকে লক্ষ্ণৌ থেকে কানপুর হয়ে (৭-২০) নতুন দিল্লী। নতুন দিল্লী ছাড়ে ১৪-২০৫ গোমতী এক্স। ট্রেন থাকে—কলকাতা ১৮২ ঘ, মুম্বাই ২৪ ঘ, আগ্রা ৬ ঘ, কান্দী ৪২ ঘ, ভূপাল ৯২ ঘ, গোরক্ষপুর ৭২ ঘ, পূরী ৩০ ঘ, এলাহাবাদ ৩ ঘ, বারাণসী ৬ ঘ, চিত্রকুটধাম ৬২ ঘ, জব্বলপুর ১৪ ঘ, গয়া ১০ ঘ, লক্ষ্ণৌ ১১-২২ ঘ, দিল্লী ৬-৭২ ঘ, বিহু ১১ ঘটয়া কানপুর থেকে। এছাড়াও ট্রেন থাকে ভারতের দিকে নিকে কানপুর সেম্ভাল থেকে। কানপুর সেম্ভাল থেকে লক্ষ্ণৌ থাকে প্যাসেঞ্জার ৬-৩০, ৯-১০, ৯-৪৫, এক্স ৭-৩৫, এক্স ১১-৪৫, ১৪-০০, ১৬-১০, ১৮-০০, ২০-০৫, ২১-১৫ ছাড়াও দুপুরের নানান ট্রেন; কান্দী থাকে ৫-২০, ১৮-৩৫

প্যাসেঞ্জার, ৮-৫০, ১২-৩৫, ২১-০০, ২৩-৪৫, ২-৫০এ এক্স; আগ্রা থাকে ৮-২৫এ উদ্যান আভা, ৯-৩৫এ মরুদ্বার, ১৪-৩০এ কানপুর-আগ্রা প্যা; বান্দা জং থাকে ৬-৫৫, ১৫-৩০এ প্যাসেঞ্জার, ১৯-২০এ এক্স; কাশগঞ্জ, ব্রহ্মাবর্ত, এলাহাবাদ, ভূতলা থাকে নানান প্যাসেঞ্জার ও এক্স ট্রেন।



বাসও সংযোগ গড়েছে রাজ্যের প্রতিটি শহর ছাড়াও উত্তর ভারতের দিগ্বিদিকের কানপুর থেকে। নানানধর্মী বাস। নন স্টপ সার্ভিসে মুম্বাই বাস থাকে কানপুর থেকে লক্ষ্ণৌ। বাস থাকে আগ্রা ২৬৯, কান্দী ২২২, এলাহাবাদ ১১৩, ভূপাল ৩৬৯, খাজুরাহো ৩৯৮, দেবাদুন ৫৯৪, মোরাদাবাদ ৪১৫, বারাণসী ৩১৫, দিল্লী ৪৩৪ কিমি ছাড়াও নানান দিকে। শহরে চলছে সিটি বাস, রিকশা, অটো, টেম্পো ও ট্যাক্সি।

ভারতের ম্যাফেস্টার কানপুরের বস্ত্র, উল, চর্মশিল্পের যেমন প্রসিদ্ধি, ঠিক তেমনই প্রসিদ্ধি আছে সিটি অব কুশ্ব বলে। তেমনই সিপাহী বিদ্রোহের নানান স্মৃতি মণ্ডিত কানপুর। ১৮৫৭য় স্বাধীনতা সংগ্রামের দীর্ঘ প্রতিরোধে রসদের সাথে জীবনহানির ক্ষয়ক্ষতিতে ব্রিটিশের গ্যারিসন আত্মসমর্পণ করে নানা সাহিবের কাছে। ব্রিটিশ সেনানীদের স্মারকরূপে *অল সোলস মেমোরিয়াল চার্চ* গড়ে ওঠে ১৮৭৫এ। রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি দূরে অতীতের মেমোরিয়াল আজ হয়েছে মিউনিসিপ্যাল গার্ডেন। এছাড়াও প্রয়াগনারায়ণ, রামনারায়ণ, গুরুপ্রসাদ মন্দির, কালীবাড়ি, কুইনস পার্ক, চিড়িয়াখানা—প্রতিটাই দর্শনীয়। ১২৬ মি উঁচু কানপুরের নবতম আকর্ষণ শ্বেত মর্মরের মন্দিরে কাচের মূর্তি শোভিত জে কে টেম্পল, IIT ও রামকৃষ্ণ মিশন। কেনাকাটায় নবীন মার্কেটে সৃষ্টি বস্ত্র আর মাটিন রোডের দোকানপাটে চর্মজাত পণ্য ও জুতো দেখা যেতে পারে। মান ভাল, দামেও সস্তা কানপুরে। বিদেশেও পাড়ি দিচ্ছে চামড়া-জাত নানান দ্রব্য। তাপমান গ্রীষ্মে ৪৪-৩০° আর শীতে ২৪-৪° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে।

বিহুড়ী: কানপুরের ২৭ কিমি উত্তর-পশ্চিমে আর এক পূণ্য হিন্দুতীর্থ বিহুড়ী। সৃষ্টির দেবতা ব্রহ্মা ব্রহ্মাও সৃষ্টির পর অশ্বমেধ যজ্ঞ করেন গঙ্গার পাড়ে ব্রহ্মাবর্ত ঘাটে। যজ্ঞের ঘোড়ার পায়ের ছাপ আজও দৃশ্যমান। কার্তিক পূর্ণিমায় মেলা বসে আজও। এমনকি বাস্মিকি মূনির আশ্রম ১ কিমি দক্ষিণে বিহুড়ীতেই। রামায়ণও লেখেন মূনি এই আশ্রমে বসে। সীতা দেবী আশ্রয়ও নেন অযোধ্যা ছেড়ে এসে তপোবনে। লব আর কুশের জন্মও এই আশ্রমেই। অদূরে রামধাম—শয্যা-দীন ঘরও মেলে থাকার। রেল স্টেশনের কাছে হরিধাম। ১ কিমি দূরে রুব টিলা অর্থাৎ ধাম। আর আছে গঙ্গার অপর পাড়ে ৬ কিমি হাঁটা পথে সীতার পাতাল প্রবেশের স্থান পরিহার। তবে, পরিভ্রমণের বিষয় ১৮৫৭র স্বাধীনতার যুদ্ধে ধ্বংস পায় অতীত। এমনকি নানা সাহিবের প্রাসাদটিও যুদ্ধে বিধ্বস্ত। স্মারক সৌধ হয়েছে নানা সাহিবের—তারও নাম তপোবন। শেষ পেশোয়া বাজীরায়-এর নির্বাসিত জীবনও কাটে বিহুড়ীতে। কানপুর (Anwarganj Stn) থেকে ৫-২০ ও

১৭-৫০০ মিটারগেজে ডিজেল চালিত রেল যাচ্ছে বিঠুর অর্থাৎ Brahnavart-এ; ফেরে ৭-২০ ও ১৯-৩০এ। এক ঘণ্টার পথ। বাস যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে বড়া চৌরাস্তা থেকে। অটোও মেলে কানপুর বাস স্ট্যান্ড থেকে রেওয়ান-পুর বা শঙ্করপুরের। দুইই থেকে টেম্পো মেলে বিঠুরের। থাকার জন্য PWD IB আছে টেম্পো স্ট্যান্ডে বিঠুরে।

তবুও যেন পর্যটনে বিঠুর আজও অবহেলিত। স্থানীয় যানের অভাব। পায়ে পায়ে সাঙ্গ করতে হয় ৩ কিমি পরিক্রমায় বিঠুর দর্শন। হোটেল নেই, দোকানপাটেরও অভাব বিঠুরে। উচিত হবে কানপুর থেকে সকালে গিয়ে দিনভর বিঠুর বেড়িয়ে ১৯-০০টায় টেম্পো বা ১৯-৩০এর ট্রেনে কানপুরে ফেরা। ফেরার সকালের ট্রেনটি কানপুর স্টেশনাল যাচ্ছে।



হোটেলও আছে নানান Kanpur-208001, STD-0497-এ। রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই সিটিমুখী Halsey Road, Kanpur-1-এ স্টেশন চত্বর লাগোয়া Central Dharamshala. সামান্য বামে H Agamun, SAB ৬৫ DAB ১০০ A-c D ২০০; বিপরীতে গলিপথে H Arjyabarta; আরও যেতে ডিহনে H Kanchan, ৩ 268349, S ৮০-১২৫ D ১২৫-১৭৫ সুইট ২২৫-৩০০; বিপরীতে Sitaram Das ji ka Dharamshala. আরও যেতে Latochi ও Station Rd সংযোগে Mulganj Chowrastha-র: H Naman, SCB ৬০ SAB ৮০ DAB ১২৫-২০০; একই মলিকানায় H Himaneel, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০; H Ashirvad, SCB ৬০ DCB ১০০, H Saket, S ৬৫-১২৫ D ১০০-১৭৫; H Royal India, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০। Station Rd-এ: H Himalaya, SCB ৬০-৮৫ DCB ৮৫-১২৫ DAB ১৫০; Stylu GH, SCB ৬০ DCB ১০০ DAB ১৫০।

*H The Landmark, 10 The Mall, ৩ 317601, A/c S ১৫০০ D ২২৫০; H Meghdoot, 17/3/B, The Mall, ৩ 311999, A/c S ১০০০-১২৫০ D ১২০০-১৫০০ সুইট ১৭৫০-২০০০; *H Prithviraj, 63/7-A, The Mall-4, ৩ 317807, A10R1B0, A/c S ৩০০-৪৫০ D ৪৫০-৬৫০; Mira Inn, The Mall; H Ganges, 51/50 Nayagunj, ৩ 352966, A6R1, S ১৫০-২৭৫ D ২০০-৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; H Gaurav, 18/54 The Mall-1, ৩ 318531, A6 R1, S ৩০০ D ৪২৫ A/c S ৫৫০ D ৭৫০; H Sarvodaya Plaza, 3A, Sarvodaya Ngr, ৩ 217126, A15R7, A/c S ৫৫০-৭৫০ D ৬২৫-৮৫০ সুইট S ৮৫০ D ১০৫০; H Godawari, 3A, Sarvodaya Nagar, A16 R6; H Pandit, 49/7 General Ganj-1, ৩ 318413, S ১৫০ D ২২৫ A/c S ২৭৫ D ৪৫০; H Ashoka, 24/16 Birhana Rd-1, ৩ 312742, S ১৫০ D ২০০-৩২৫; H Parivar, 26/84 Birhana Rd, S ৮৫ D ১৫০; H Saurabh, 24/54 Birhana Rd-1, A8R2, ৩ 267971, A/c S ৩০০-৪২৫ D ৪৫০-৬০০ সুইট ৮৫০; *H Kanala International, S MRd, Kanpur-1, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; H High Place, Sadhooh Building-1, S ৮০ D ১৫০ A/c D ৩০০; H Yatrik, 65/58A,

Circular Rd, ৩ 260373, A7R1B1, A-c S ১৫০-২২৫ D ২০০-৩৫০ A/c S ৩২৫ D ৬০০; H Kanpur; Geet H, opp Phool Bagh-1, ৩ 211024, R1, A/c S ৩০০-৪৫০ D ৫০০-৬৫০; *H Swagat, 80 Feet Rd, R4B1, ৩ 541923, S ২২৫ D ৩০০ A/c S ৩২৫-৪০০ D ৪৫০-৬৫০; Mahul, Orient, Station View, near Post Office; Barkley House, Civil Lines, DAB ৩০০-৪৫০; Grand Trunk H, G T Rd; Vaishali H, Matson Rd; ছাড়াও নানান হোটেল। আর আছে রেলের রিটারারিং রুম কানপুর স্টেশনালে। UP Tourism-এর দপ্তরও বসেছে পোস্ট অফিসের বিপরীতে 26/51 Birhana Rd, Kanpur-এ।

কানপুরের ৮১ কিমি পশ্চিমে আর সংকাস্যের ৫০ কিমি পূর্বে আর এক হারানো অতীত রোমন্থন করে নিতে পারেন হর্ষবর্ধনের রাজধানী কনৌজ বা কাঞ্চকুজ বেড়িয়ে। কানপুর-আগ্রা ফোর্ট মিটারগেজে ৩-৪৫, ৬-৩৫, ৯-৪৫, ১১-০০, ১৩-৩৫, ১৮-২০, ২২-০০টায় সেম্ভাল থেকে আর ৭-৩০, ১৭-১৫য় আনোয়ারগঞ্জ থেকে ২ ঘণ্টায় ট্রেন যাচ্ছে কনৌজ-এ।

গজনির সুলতান মামুদের লুণ্ঠনের পর মুসলমান আক্রমণে বিনষ্ট হয় অতীত। এমনকি, ১৫৪০এ এই কনৌজে শেরশাহর কাছে যুদ্ধে হেরে ভারত ছেড়ে পারস্যে যান হুমায়ুন। তবে অতীতের সুবাস না মিললেও আজকের কনৌজ তার আভরের জন্য খ্যাত। থাকারও ব্যবস্থা মেলে UPSTDC-র Tourist Bungalow, Kannauj-এ A-c D ১৫০ A/c ২৫০ ডর্মি ৫০ টাকায়।

মিরাট

দিল্লী-দেরাদুন রেলপথে দিল্লী থেকে ৭১ কিমি উত্তর-পূর্বে মিরাট জং। গাজিয়াবাদের দূরত্ব ৫১, দেরাদুন ১৭১ কিমি। মুহম্মদ বাস যাচ্ছে দিল্লী থেকে মিরাট। উত্তর ভারতের বৃহত্তম গ্যারিসন নগরী মিরাটেই ১৮৫৭র স্বাধীনতা সংগ্রামের সূত্রপাত। আজকের বাণিজ্যনগরী মিরাট অতীতে ছিল মায়ারাপ্ত। মালোখারীর পিতা মায়ার হাতে শহরের পতন। পর্যটক মানচিত্রে উল্লেখ্য না হলেও চলার পথে ১৮৫৭র স্বাধীনতা সংগ্রামীদের শহীদ স্মারক, অদূরে সেন্ট জনস চার্চে শায়িত কলকাতা মনুমেন্টের নায়ক General Ochterlony, জুমা মসজিদ, বিলেক্বর মন্দির, সুর্যকুণ্ড, ওশ্ড শাহীপুর গেটে মোগলি সমাধি পীর সাহেবের দরগা দেখে নেওয়া যায়। সবুজ বিল্লবও সমৃদ্ধ করেছে মিরাটকে। তবুও যেন মাঝে-মাঝে সাম্প্রদায়িক মোতাতে বাতাস ভারি হয়ে ওঠে মিরাটে।

থাকারও নানান ব্যবস্থা : H Navin Deluxe, Abu Lane, Meerut, ৩ 540125, S ৩৫০ D ৫৫০ A/c S ৬০০ D ৬৫০-৮৫০; Begum Bridge-এ H Shaleen, Anand H; নিশাত সিনেমার বিপরীতে Mayur H ছাড়াও নানান হোটেল আছে মিরাটে।

চলার পথে দিল্লী থেকে ২২ কিমি যেতে আর এক শিল্পনগরী গাজিয়াবাদও বেড়িয়ে চলা যায়।



গাজিয়াবাসেও নানান হোটেল—UPSTDC-র Hindon Motel, © (01187) 8730241, D ৩৫০, A/c D ৫০০; H Samrat, near Civil Court; H Skylark, Navyug Market; H Rainbow, Railway Rd, near Ghanta Ghar; *Best Western Mela Plaza, C-3 Raj Nagar, © 8722255, A/c S ১২৯০ D ১৭৫০ সুইট ৩০০০; *The Kenilworth, Ambedkar Marg, © 8716563, A/c S ৫০০ D ৬৫০; একই মানে একই নামে Shipra H, A-8A, Ambedkar Marg, Ghaziabad-201001, © 8714165, A/c S ৫৫০ D ৭৫০।

এলাহাবাদ

গঙ্গা, যমুনা আর সরস্বতী এই তিন নদীর সঙ্গমে এলাহাবাদ শহর। জরীর মিলনস্থল এলাহাবাদের এই সঙ্গম পবিত্র হিন্দুতীর্থ। প্রতি ১২ বছর অন্তর কুম্ভমেলা আর ৬ বছরে অর্ধকুম্ভ মেলা বসে। তখন লক্ষ লক্ষ পুণ্যার্থী পবিত্র সঙ্গমের জলে স্নান করে পুণ্য অর্জন করে। প্রমাণ আর ত্রিবেণী নামেও খ্যাত আছে এলাহাবাদের। নানান পৌরাণিক আখ্যানও জড়িয়ে আছে প্রমাণ নামের সাথে। বারণাসবত নাম ছিল পৌরাণিক যুগে এলাহাবাদের। বয়স এর ৪৪৩৯ বছর। ব্রহ্মা নাকি প্রকৃষ্ট যজ্ঞ করেছিলেন সেকালের প্রমাণে। আর্য কালেও প্রমাণ নামে খ্যাত ছিল এলাহাবাদ। রামায়ণেও উল্লেখিত হয়েছে এই প্রমাণের কথা। এমনকি কোশলরাজ হর্ষবর্ধনের কালেও প্রমাণ ছিল সংস্কৃতির গীর্জা। এই প্রমাণের জলে স্নান করে হর্ষবর্ধন নিজের সর্বশ্রম দান করে দিতে প্রজাদের মাঝে। আর ইলবাস অর্থাৎ দেবতার আবাস গড়েন ইক্ষ্বাকু বংশের রাজা প্রমাণে। নামও হয় সেই থেকে ইলবাস। আধুনিক শহরের স্থপতি ১৫৭৫এ মোগল সম্রাট আকবর। আর ১৫৮৬তে যমুনার পারে দুর্গ গড়ে নামান্তর ঘটান—প্রমাণ হয় ইলবাস অর্থাৎ ভগবানের আলয়। আর ব্রিটিশকালে ইলবাস হয় এলাহাবাদ। আরও পরে পাঠানদের হাটিয়ে মারাঠা দখলে যায় এলাহাবাদ। আর ব্রিটিশ (ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি) আসে ১৮০১এ বশ্যতার প্রতিদানে অযোধ্যার নবাবদের কাছ থেকে এলাহাবাদ ভেট পেয়ে। ১৮৫৮য় ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানি ভারত হস্তান্তর করে ব্রিটিশ রাজকে এলাহাবাদের মিটো পার্কে। ব্রিটিশের ইউনাইটেড প্রভিন্সের সদর দপ্তরও বসে এলাহাবাসে।

এতসবের মাঝেও ভারতীয় রাজনীতিতে এলাহাবাদ বার বার শিরোনাম হয়েছে। প্রাক স্বাধীনতার দিনগুলিতে মতিলাল নেহরু, জওহরলাল নেহরু, জওহর ভদ্রা ইন্দিরার বাস ছিল এলাহাবাসের আনন্দবনে। এসেরই ঘিরে ব্রিটিশ ভারতে স্বাধীনতা সংগ্রামের কেন্দ্রবিন্দু হয়ে ওঠে এলাহাবাদ। ১৯২০এ কংগ্রেসের জাতীয় সম্মেলনে অহিংসা

আন্দোলনের মন্ত্র উচ্চারণ করেন গান্ধীজী। ঠিক তেমনই ১৯৮১তে আলোড়ন তোলে ভারত তথা সারা বিশ্বে তদানীন্তন প্রধানমন্ত্রী ইন্দিরা গান্ধীর বিরুদ্ধে এলাহাবাদ হাইকোর্টে একটি রায়। আবার শিরোনাম হয়েছে এলাহাবাদ ১৯৮৮র অন্তর্ভুক্তি নির্বাচনে। নানান প্রত্নতাত্ত্বিক সম্পদেও সমৃদ্ধ এলাহাবাদ। ৮২ লাখ লোকের বাস ৯৮ মি উঁচু এলাহাবাদ শহরে। গ্রীষ্মে ৪২.১—২৬.৬° আর শীতে ২৯.০—৯.১° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান।

১০ দিনে এলাহাবাদ

১ম দিন এলাহাবাদ বেড়িয়ে ২য় দিন মুম্বাই মেলে ১১-১০এ এলাহাবাদ ছেড়ে ১৪-১০এ সাতনা পৌঁছে বাসে খাজুরাহো পৌঁছান সীতবেলায়। উৎসাহীরা চলার পথে ১২-৪৬এ মনিকপুর নামে বাস বা ১৫-৫০এর বান্দা প্যাসেঞ্জারে ১৬-৩২এ চিত্রকূট-কারভী পৌঁছে চিত্রকূটগমও বেড়িয়ে যেতে পারেন। চিত্রকূট থেকে বাসে বাসে সাতনা হয়ে খাজুরাহো পৌঁছে যান পরদিন। ৩য় দিনে খাজুরাহো বেড়িয়ে বিকলের বাসে কাঁসী। ৪র্থ দিন কাঁসী বেড়িয়ে রাত ১৯-৫০এর সবরমতী এক্সপ্রেস/২০-৩৫এর কুশীনগর এক্সপ্রেস লঙ্কো পৌঁছান পরদিন ভোর ৮-৪৫/৩-০০টায়। ৫ম দিনে লঙ্কো বেড়িয়ে ১৮-৪৫এর জম্মু জাওয়াই-শিয়ালদহ এক্সপ্রেস লঙ্কো-মোগলসরই (ফেজাবাদ লুপ) রেলের রাম রাজহু অযোধ্যায় পৌঁছান ২১-৩০এ। সবরমতী এক্সপ্রেস চলা যেতে পারে ৪-৪৫এ লঙ্কো ছেড়ে ১০-০০টায় অযোধ্যায়। সবরমতী বারাণসী যাচ্ছে ১৪-২০এ। ৬ষ্ঠ দিনে অযোধ্যা বেড়িয়ে ৯-১২র সরমু-যমুনা এক্সপ্রেস, ১০-০০টায় সবরমতী, ১১-০০টায় গঙ্গা-যমুনা, ১১-৪০এ ডুন এক্সপ্রেস, ২১-৩৪এ জম্মু-শিয়ালদহ, ১৫-০৪এ শতদ্রু এক্সপ্রেস, ০-৪৫ ও ১৭-৪২এর প্যাসেঞ্জারে বিশ্বনাথ দশনে চলুন বারাণসী। ঘণ্টা চারেকের পথ। ৮ম দিন বারাণসী/রামনগর/সারনাথ বেড়িয়ে ৯ম দিন বিষ্ণুচাল/ফুনাব দেখে আসুন বাসে বাসে। ঘরপানে ফিরুন ১০ম দিন বারাণসী থেকে। আবার গোরক্ষপুর-লুধিয়ান হয়ে বিশেষ ভ্রমণও করে আসা যায় নেপাল বেড়িয়ে বারাণসী থেকে বাসে। বা পাটনায় গিয়ে বৈশালী, গয়া, বুদ্ধগয়া, রাজগীর, নালন্দা, পাণ্ডয়াপুত্রী বেড়িয়ে বখতিয়ারপুর থেকে ট্রেন ধরুন ঘরে ফেরার।



কলকাতা-দিল্লী মেইন রেলপথে এলাহাবাদ জংশন। বেশকিছু রয়েছে আরও দুই এলাহাবাসে। জ্ঞ থেকে ৩ কিমি দূরে সিটি স্টেশন। ট্রেন যাচ্ছে বারাণসীর সিটি থেকে। আর কানপুর ও লঙ্কো-এর ট্রেন যাচ্ছে প্রমাণ থেকে। হাওড়া থেকে সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে ১৪ থেকে ২০ ঘটায় ৮১৪ কিমি দূরের এলাহাবাসে। ৬২৭ কিমি দূরের দিল্লী যাচ্ছে ১০ থেকে ১২ ঘটায়। ১৩৭৩ কিমি দূরের মুম্বাই যাচ্ছে ২৪ ঘটায়, লঙ্কো যাচ্ছে ৩২ ঘটায় ১২৯ কিমি, সাতনা যাচ্ছে ৪৮ ১৮০, বারাণসী যাচ্ছে ৩-৪৮ ১৩৭ কিমি।

প্রতিদিন নতুন দিল্লী যাচ্ছে রাজধানী এক্স, তুফান উদ্যান আজা এক্স, ৩ ৪ ৭ দিন ২৩৪১ পূর্বা ও ১ ২ ৫ ৬ দিন ২৩০৩ পূর্বা এক্স; দিল্লী জং যাচ্ছে কালকা মেল, হাওড়া-দিল্লী জনতা এক্স, শিয়ালদহ-দিল্লী লালকোরা এক্স—প্রতিটি ট্রেনই এলাহাবাদ হয়ে যাচ্ছে। হাওড়া থেকে ৩০০৩ মুম্বাই মেল, ২৩০৭ বোধপুর এক্স, ৩ ৬ ৭ দিন শিপ্রা এক্স, ১ ২ ৪ ৫ দিন চম্পল এক্সও এলাহাবাদ হয়ে যাচ্ছে।

১৪৬ দিন ছাপরা-করলা (মুঝাই) এক্স, বারাণসী-করলা এক্স, ২৪৫ দিন রয়গিরি এক্স, ২৩৫৭ দিন ভাগলপুর-করলা এক্স ছাড়াও মুঝাই যাচ্ছে মহানগরী, বারাণসী-দাদার এক্স এলাহাবাদ হয়ে। লক্কাই যাচ্ছে ৪-১০এ রিক্কাই এক্স, ৬-০০টায় গঙ্গা-গোমতী এক্স, ১৭-০০এ নৌচণ্ডী এক্স, ২০-০০টায় এক্স ছাড়াও নানান প্যাসেঞ্জার, ঘট্টা তিনেকে বারাণসী যাচ্ছে নানান ট্রেন; টাটা-অমৃতসর এক্স ও হাতিয়া-কালকা এক্স যাচ্ছে এলাহাবাদ/কানপুর/নিউ দিল্লী/আখালা হয়ে; পুরী থেকে ঝড়াপুর/গঙ্গা/এলাহাবাদ হয়ে নতুন দিল্লী যাচ্ছে পুরুষোত্তম ও নিউ দিল্লী এক্স; পুরী যাচ্ছে পুরুষোত্তম ও নিউ দিল্লী-পুরী এক্স; ডিমাপুর যাচ্ছে পাটনা/মালদহ/নিউ জলপাইগুড়ি/গুয়াহাটি হয়ে ব্রহ্মপুত্র মেল, নিউ দিল্লী-গুয়াহাটি যাচ্ছে নর্থ ইস্ট এক্স এলাহাবাদ/পাটনা/বরায়ুনি হয়ে; বারাণসী-গুয়াহাটি এক্স যাচ্ছে কাটিহার হয়ে; মহানন্দা এক্স যাচ্ছে এলাহাবাদ হয়ে দিল্লী-কাটিহার, মহানন্দার লিঙ্ক এক্স যাচ্ছে NJP; এলাহাবাদ-শোনপুর ফা. প্যা. যাচ্ছে বারাণসী/ ছাপরা হয়ে; গোরকপুর যাচ্ছে বারাণসী হয়ে পূর্বাচল ও রিক্কাই এক্স; সাতনা/জব্বলপুর/ইটারসি/নাগপুর/বিজয়গড়/মুন্ডা হয়ে চেন্নাই যাচ্ছে গঙ্গা-কাবেরী; মগধ-জয়ন্তী জনতা যাচ্ছে মজফরপুর থেকে নিউ দিল্লী; সুন্দলখণ্ড এক্স যাচ্ছে গোয়ালির থেকে বারাণসী; সারনাথ এক্স যাচ্ছে বারাণসী থেকে এলাহাবাদ/ মানিকপুর/ কাটনি/বিলাসপুর হয়ে দুর্গ-এ। আর এলাহাবাদ থেকেই ট্রেন যাচ্ছে ২১-১৫য় প্রয়াগরাজ এক্স এলাহাবাদ-নতুন দিল্লী; ১৫-২৫এ এলাহাবাদ-আখালা এক্সও যাচ্ছে নতুন দিল্লী হয়ে; এলাহাবাদ-মিরটি যাচ্ছে ১৭-১৫য় সঙ্গম এক্স; লক্কাই যাচ্ছে ৬-০০টায় গঙ্গা-গোমতী এক্স; ট্রেন যাচ্ছে সাতনা, জব্বলপুর, পাটনা, বারাণসী, মাগলসরাই, কানপুর, তুওলা, মথুরা, আগ্রা ছাড়াও ভারতের দিকে দিকে এলাহাবাদ থেকে।

আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন ৪ ঘট্টায় চুনার যাচ্ছে বিজ্ঞাচল/মির্জাপুর হয়ে ৭-১০, ১৮-১০এ; জৌনপুর যাচ্ছে ৫-০০, ১৭-১০এ; ফৈজাবাদ অর্থাৎ অযোধ্যা যাচ্ছে ৩-৪৫, ৮-০০, ১৮-১০এ; কাঁসী যাচ্ছে ৩-৫০এ এলাহাবাদ থেকে।



NH-2 ও 27 সংযোগ গড়েছে ভারতের দিঘিদিকের সঙ্গে এলাহাবাদের। বাসও যাচ্ছে উত্তর ভারতের দিকে দিকে এলাহাবাদ থেকে। UPSRTC-র বাস আছে Civil Lines, ৬ 602114, Zero Rd ও 50192 ও Leader Rd ও 601257 ও স্ট্যান্ড থেকে; প্রাইভেট বাস যাচ্ছে Ram Bagh ও Leader Rd থেকে এলাহাবাদের। বাস যাচ্ছে চিত্রকুট ১২৮ (৪ঘ), কৌশাম্বী ৫৭ (৩ঘ), লক্কাই ২৩৭ (৫ঘ), বারাণসী ১২৫ (৩২ ঘ), অযোধ্যা ১৬৫ (৪২ ঘ), গোরকপুর, লুখনি ৪০৬, খাজুরাহো ২২৫, জব্বলপুর ৩৫১, গয়া ৩৫৬, পাটনা ৩৬৮, কাঁসী ৩৭৫, কানপুর ১৯৩, বেরিলি ৪৮১, আগ্রা ৪৩৩, দিল্লী ৬৩৩ কিমি ছাড়াও নানান। কলকাতা ৭৯৯, নাগপুর ৬১৮, চেন্নাই ১৭৯০ আর মুঝাই-এর দূরত্ব ১৪৪৪ কিমি এলাহাবাদ থেকে। সাতনা অর্থাৎ খাজুরাহো, ভারত-নেপাল সীমান্তের সোনেন্ডিলি যাচ্ছে নেপালের যাত্রী নিয়ে বাস এলাহাবাদ থেকে। শহর চলছে অটো, রিক্সা, টাঙ্কা, ট্যাক্সি ও বাস।

প্রয়াগ : রেল স্টেশন থেকে ৮ কিমি দূরে গঙ্গা, যমুনা আর সরস্বতী এই তিন নদীর সঙ্গম অর্থাৎ মিলন ঘটেছে এলাহাবাদে। এই মিলনস্থল হল প্রয়াগ। প্রয়াগ তীর্থরাজ। এখানে যুক্তবেদী—গঙ্গা-যমুনার সঙ্গম, সরস্বতী আন্তঃ-

সলিলা। পবিত্র হিন্দুতীর্থ এই প্রয়াগ। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত মনোরম। প্রতি বছর মাঘ (জানু-ফেব্রু) মাসে মেলা বসে। নাম তার মাঘী মেলা। সারা মাঘ মাস ধরে চলে এই মেলা আর স্নান। সারা ভারত থেকে তীর্থযাত্রী আসেন মাঘ মাসে প্রয়াগে স্নান করে সর্ব পাপ ক্ষম করতে। সম্ভবত হর্ষবর্ধনই এই স্নানপর্বের উদগাতা। আর প্রতি ১২ বছর অন্তর এই প্রয়াগে বসে কুম্ভমেলা। ৬ বছরে অর্ধকুম্ভ। সে বছরের মাঘী মেলা কুম্ভমেলায় রূপ নেয়। ছাউনি পড়ে, সেজে ওঠে রঙবেরঙের বলমলে সাজে প্রয়াগ; গড়ে ওঠে কুম্ভনগর। নেমে আসেন পাহাড়-পর্বত থেকে সাধু-সন্তের দল। লক্ষ লক্ষ তীর্থযাত্রী আসেন সারা ভারত ভেঙে। আর আসেন পর্যটক দেশ-দেশান্তর থেকে। ১৯৮৯এ ১৫ মিলিয়ন যাত্রীর সমাগম ঘটায় বিশ্বরেকর্ড গড়েছে কুম্ভ। তবুও যেন অজানা বিপদ পদে পদে। ৫০-এর প্রথম পাশে পদমলিত হয়ে মৃত্যু ঘটে ৩৫০ তীর্থযাত্রীর সেবারের কুম্ভে। থাকা ও আহার্য দুইয়েরই ব্যবস্থা গড়ে ওঠে কুম্ভনগরে। আগামী কুম্ভ ২০০১ খ্রিস্টাব্দে। বাকি ও কুম্ভ পর্যায়ক্রমে ৩ বছর অন্তর বসে নাসিক, উজ্জয়িন ও হরিদ্বারে। ২ কিমিরও বেশি প্রশস্ত গঙ্গা সঙ্গমে। স্বচ্ছ বেশি যমুনার নীলাভ জল। তেমনই হয়েছে পাড়ে—বড় হুনমার, শঙ্করাচার্য ছাড়াও নানান মন্দির।

আকবরের দুর্গ : ১৫৭৫এ সম্রাট আকবর আসেন প্রয়াগে। প্রতিরক্ষার গুরুত্ব উপলব্ধি করে প্রয়াগ পাটনাই যমুনার পশ্চিম কিনারে সরস্বতীর তীরে ১৫৮৩তে দুর্গ গড়েন প্রস্তরে মোগল বাদশাহ আকবর। মজবুত বুরুজ আর লাল পাথরের ৭মি উঁচু প্রাচীরে ঘেরা, প্রবেশ দ্বার তিন। চার মহলা দুর্গের প্রথম মহলাটি ছিল সম্রাটের নিজস্ব ব্যবহারের জন্য, দ্বিতীয় মহলাটি বেগমদের আর তৃতীয় আত্মীয়-পরিজন-অতিথিদের, চতুর্থটি সেনাদের। আকবরনামায় মেলে—৫টি কুয়ো, ২০টি আস্তাবল, ৭৭টি ভহখানা, ১টি বাওলিও ছিল দুর্গে। ১৭৩৯এ মারাঠা, ১৭৫০এ পাঠান, ১৮০১এ ব্রিটিশের দখলে যায় দুর্গ। আর ১৮৩৮এ সংস্কারের সাথে যমুনামুখী দুটি দরজা বন্ধ করে ব্রিটিশ। ৬২৩২০২২৪ টাকায় তৈরি দুর্গের অতীত আজ নিব্বাট। অতীতের কাম্য-কূপ অর্থাৎ কাননা করে কূপের জলে প্রাণ দিলে পূরণ হত পরজন্মে সে কামনা। একটি সুন্দর উপকাহিনীও আছে কাম্যকূপ আর অক্ষয়বট নিয়ে। কিংবদন্তী, মুকুন্দ ব্রহ্মচারী দিল্লীশ্বর হবার কাননা করে কাম্যকূপে মৃত্যু বরণ করেন, নবজন্ম ঘটে দিল্লীশ্বর আকবর রাগে ব্রহ্মচারীর। উত্তরকালে কুপটি ভূজিয়ে ফেলে দুর্গ গড়েন দিল্লীশ্বর আকবর। কুপটি লোপ পেতে লাগেয়া অক্ষয়বট থেকে যমুনার ঝাঁপিয়ে স্বর্ণপ্রাপ্তির মোহে আত্মাহুতির প্রথা চলতে থাকে। সত্যতা মেলে হিউয়েন সাঙ-এর (৬৪৪ খ্রি) ভারত বিবরণীতে। অন্ধ সংস্কার থেকে জীবন বাঁচাতে বৃক্ষটিও কেটে ফেলেন দিল্লীশ্বর। চারযুগের এই বট বৃক্ষ ছিল কোমার হাত বিশেষ নিচে আধারী পরিবেশে দুর্গ অন্দরে। প্রথমটি রেখে আরও

হাত বিশেক যেতে মূল বটবৃক্ষের অবস্থান। গাছটি অতীতে ছিল পূব দেওয়ালের দরজা দিয়ে যেতে যমুনার পাড়ে। সুন্দর অলঙ্কৃত, নানান দেবদেবীর মূর্তি খোদিত প্রাচীনতম এই মন্দিরে শ্রীরামও এসেছেন বনবাসকালে। Commandant, Ordnance Depot, Fort-এর বিশেষ অনুমতিতে দেখার প্রথা। উৎসাহীদের উচিত হবে দিন পনেরো আগেই চিঠি লেখা। তবে, নাও ঘাটের (পূব) দরজা দিয়ে গিয়ে দুর্গের একটা অংশ দেখে নেওয়া যায়। দুর্গের পাतालপুরী মন্দিরে বাঁয়ে ২টি বটবৃক্ষের গুড়ি সম্বন্ধে রক্ষিত—তারও নাম অক্ষয়বট। গুড়ি দু'টিতে যত্রতত্র ডালপালা বেঁধে সজীব করার (ব্যর্থ) প্রচেষ্টা। পূজারী প্রাপ্তির আশায় বসে। এরাই মূল বটবৃক্ষ—পূজারী বলে চলেছেন যাত্রীদের। কৃত্রিমতা দোষে দুষ্ট। হিন্দু পুরাণের নানান দেবদেবীরও সমাবেশ ঘটেছে। কালো পাথরে রাজা যুধিষ্ঠিরও রয়েছেন সিঁড়ি দিয়ে নামতেই। তেমনই আছে ঔরঙ্গজেবের তরবারির আঘাতে ফেটে যাওয়া খয়েরী রঙের সিদ্ধনাথ বা প্রয়াগেশ্বর শিব। বাঙ্গড়, শিবদয়ালছাড়াও নানান ধরমশালাও গড়ে উঠেছে সঙ্গম পথের ঘাট রোডে। শহর থেকে সিঁটি বাস, অটো ও রিকশায় ঘাটে পৌছে নৌকায় সঙ্গম। সঙ্গমের কোমর জলে স্নানের ব্যবস্থা। ১ ঘণ্টার যাতায়াতে ভাড়া ৪৫, তবে, মাষিদের দৌরায়া আছে; তেমনই সঙ্গমের পূজাতেও পাণ্ডা থেকে সতর্কতা বাঞ্ছনীয়।

দুর্গের প্রবেশ-ফটকের বিপরীতে অশোক গিলায়। খ্রিপূ ২৩২এ তৈরি ১০.৩ মি উঁচু বেলেপাথরের শিলালিপিতে সম্রাট আলোকের অনুশাসন ছাড়াও পরবর্তীকালে সমুদ্র-গুপ্তের (৩২৬-৩৭৫ খ্রিস্টাব্দ) বিজয়গাথাও খোদিত হয়েছে। ১৬০৫এ জাহাঙ্গীরও কিছু লিপিবদ্ধ করেন গিলায়ে। সম্ভবত কৌশাখী থেকেই স্থানান্তর ঘটে শিলালিপি। তবে দীর্ঘকাল পড়ে থাকা শিলালিপিটি নতুন করে প্রোথিত হয় ১৮৩৭এ। আজ অস্পষ্টও বটে লিপি। প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় সিকিউরিটি অফিসারের অগ্রিম অনুমতিতে দুর্গের সীমিত অংশ দেখার ব্যবস্থা মেলে। বিদেশীদের প্রবেশ নিষেধ।

খসরু বাগ: জংশন রেল স্টেশন লাগোয়া, ট্যুরিস্ট অফিস থেকে ৩ কিমি দূরে মোগল উদ্যান খসরু বাগ। জাহাঙ্গীরের জ্যেষ্ঠপুত্র পিতৃ রোবে ১৬০৮এ অন্ধ আর ১৬১৫র খুরম (শাহজাহান)-এর সিংহাসন প্রাপ্তি নিশ্চলক করতে হত খসরু সমাহিত। সুন্দর ছবি ও পার্সি কবিতায় অলঙ্কৃত। খসরুর দু'পাশে রাজপুত মাতা ও বোনের সমাধি। ৬—১৬-০০টায় খোলা।

আনন্দভবন: নেহরু পরিবারের বসত বাড়ি আনন্দ-ভবন। ইন্দিরার জন্মও এই ভবনে। ভারতের স্বাধীনতা সংগ্রামে ভবনটি ওতপ্রোতভাবে জড়িয়ে ছিল। ১৯৭০এ ইন্দিরা গান্ধী ভারত সরকারকে দান করেন মতিলাল, জও-হরলাল, ইন্দিরা ও রাজীব গান্ধীর স্মৃতিমথিত আনন্দভবন। নেহরু পরিবার তথা ভারতের স্বাধীনতা সংগ্রামের নানান

সম্ভার নিয়ে মিউজিয়ম বসেছে। আকর্ষণীয়ও বটে মিউ-জিয়মের দ্বিতল। সুপরিকল্পিত, ব্যবস্থাপনাও ভাল। টিকিট লাগে ২ টাকার দ্বিতল দর্শনে। গান্ধীজীও এসেছেন বারবার—অবস্থান করেছেন আনন্দভবনে। সোম ও ছুটি ছাড়া ৯-৩০—১৭-০০টায় খোলা। এলাহাবাদ ব্রহ্মগাথীদের অবশ্যই দ্রষ্টব্য। ১৯৭৯তে প্ল্যান্টেরিয়ামও বসেছে ভবন চত্বরে। ১ ঘণ্টার দর্শনী ৫। পাশেই স্বরাজ ভবন—১৯৩০ থেকে এটিও জাতীয় স্বার্থে উৎসর্গীকৃত। মতিলাল নেহরুর বাসভবন স্বরাজে শিশুভবন বসেছে। দর্শনী লাগে ৫ হারে।

এলাহাবাদ হাইকোর্ট : যদিও উত্তর প্রদেশের রাজধানী লক্ষ্ণৌতে—তবে হাইকোর্টটি রয়ে গেছে এলাহাবাদ সিভিল লাইনে। ভবনটির স্থাপত্যশিল্প খুবই সুন্দর। এই হাই-কোর্টেরই একটি রায় তৎকালীন প্রধানমন্ত্রী ইন্দিরা গান্ধীর বিরুদ্ধে গিয়ে সারা বিশ্বে চাঞ্চল্য আনে।

ভরহাজ আশ্রম : আজকের এলাহাবাদ বিশ্ববিদ্যালয়টি রূপ পেয়েছে রামায়ণে বর্ণিত ভরহাজ মুনির আশ্রম স্থলে। অতীতে শিষ্যদের পাঠ দিতেন মুনি—শিষ্যের সংখ্যা ছিল ১০ হাজার।

আলফ্রেড পার্ক : আর রয়েছে কমলা নেহরু রোডে ১৮৮ একর জমি জুড়ে শহরবাসীদের নয়নের মণি আল-ফ্রেড অর্থাৎ মতিলাল নেহরু পার্ক। ব্রিটিশের সঙ্গে সংঘর্ষে স্বাধীনতা সংগ্রামী চন্দ্রশেখর আজাদ এই পার্কেই শহীদ হন। সেই স্মৃতিতে পার্কটি তীর্থ বিশেষ। নিয়মিত খেলাধুলার আসর বসে। পুষ্প প্রদর্শনী, ডগ শো, টেনিস কোর্টও বসে শীতের দিনগুলিতে। বিপরীতে Rudyard Kipling-এর বাসভূমে বিশ্ববিদ্যালয়। বিশ্ববিদ্যালয়ের কৌশাখী মিউজিয়মের সংগ্রহশালায় বৌদ্ধ সম্ভার উল্লেখ্য। পশ্চিমে মেয়ো হল, ১৮৭৯তে তৈরি সেন্ট জোসেফ রোমান ক্যাথলিক ক্যাথিড্রাল, পাবলিক লাইব্রেরি, এলাহাবাদ মিউজিয়ামও বসেছে আলফ্রেডে। অমূল্য সব প্রাগৈতিহাসিক সংগ্রহ প্রদর্শিত হয়েছে মিউজিয়মে। নিকোলাস রোয়েরিকের আঁকা ছবির সংগ্রহ খুবই সুন্দর। রাজস্থানী মিনিয়োচার ও টেরাকোটার সংগ্রহ উল্লেখ্য। প্রাক্তন প্রধানমন্ত্রী জওহরলাল নেহরুর পুরস্কার পাওয়া নানান সম্ভারও প্রদর্শিত হয়েছে। সোমবার ছাড়া ১৫ এপ্রিল থেকে ১৫ জুলাই ৬-৩০—১২-৩০ আর ১৬ জুলাই থেকে ১৪ এপ্রিল ১০-৩০—১৬-৩০টায় খোলা থাকে মিউজিয়ম। আলফ্রেডেরই উত্তরে মিউনিসিপাল মিউজিয়ম। বিপরীতে শিশু চিত্র বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে সুমিত্রা নন্দন পছ বাল উদ্যান। এছাড়া, রেল ব্রিজের উত্তরে গঙ্গার পাড়ে পৌরাণিক নাগ বাসুকি মন্দির, মন-কামেশ্বর শিব মন্দির, সরস্বতী ঘাটে ১৯১০এ লর্ড মিটোর প্রতিষ্ঠিত মদনমোহন মালব্য অর্থাৎ মিটো পার্কও উল্লেখ্য। এই মিটো পার্কেই লর্ড ক্যানিং মহারানী জিওরিয়য়ার যোগাণপত্র পাঠ করে ভারতবর্ষকে ব্রিটিশ রাজের অঙ্গীভূত করেন। তেমনই এলাহাবাদের দশেরা উৎসবের পর্যটক

আকর্ষণও যথেষ্ট। নানান ধর্মী সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানাদির জন্যও এলাহাবাদ সুবিদিত। এদের মধ্যে হিন্দি সাহিত্য সম্মেলনও প্রয়াগ সঙ্গীত সম্মেলন বিশেষভাবে উল্লেখ্য। স্টেট সেন্ট্রাল লাইব্রেরি, সি ওয়াই চিত্তামণি মেমোরিয়াল লাইব্রেরি, লাইব্রেরি অফ দি হিন্দি সাহিত্য সম্মেলন, প্রয়াগ বঙ্গসাহিত্য মন্দিরও উল্লেখ্য।



এলাহাবাদ জং রেল স্টেশনের বিপরীতে শাভ-সুমধুর পরিবেশের Civil Lines-এ কেন্দ্রীভূত হয়েছে হোটেল Allahabad-211001, STD-0532এ। রেল স্টেশনের কাছে Royal H, 24 South Rd, Civil Lines, Allahabad-211001, SAB ১০০-১৭৫ DAB ১৮০-২৭৫ A/C S ৩২৫ D ৪৫০। MG Marg ও Sardar Patel Marg সংযোগে H Samrat, opp Indira Bhawan, 49/A, MG Marg-1, ৫ 604888, S ৪০০ D ৬৫০ A/C S ৬০০ D ৮৫০; পাশেই Mayur GH, 10 Sardar Patel Marg, Meena Bzr, ৫ 602760, SAB ১৫০ DAB ২৫০ A-C S ২৫০ D ৩০০ A/C S ৪৫০ D ৬৫০ ডর্মি বেড ৬০; H Ashoka, 4 N S C Marg-3, RJB, SCB ৬০ SAB ৮০-১২৫ DCB ১০০ DAB ১৫০-২২৫; H Yatrik, 33 S P Marg, Civil Lines, ৫ 601509, SAB ৪৫০ DAB ৬৫০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০-১২০০ সুইচ ১৭৫০; *H Presidency, 19-D, Sarojini Naidu Marg-1, R2B2, ৫ 623308, A/C S ৬২৫-৮০০ D ৭২৫-৮৫০; বাগিচায় সুশোভিত *H Allahabad Regency, Tashkent Marg, A10R1B1, ৫ 601519, A/C S ৭০০-৮৫০ D ৮০০-১২৫০; Prayag H, 73 Noorullah Rd, A9R1, ৫ 604430, SAB ২০০-৩৫০ DAB ৩০০-৪৫০ A/C S ৬০০ D ৭৫০। H Vilash, 22-C, S P Marg-1, R1B1, SCB ৬০ SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২২৫ A/C S ৩০০ D ৪৫০।

Zero Rd বাস স্ট্যান্ডের বিপরীত গলিতে H New Shanti, 7 Sheo Charan Lal Rd, R1, S ১৫০-৩২৫ D ২৫০-৪২৫ A/C S ৩৫০-৪৫০ D ৪০০-৬৫০। বামহাতি Satya H, 100 Vivekananda Marg, S ১২৫ D ২২৫ T ২৫০ F ২৭৫; H Surya, Vivekananda Marg, ৫ 401478, DAB ১৭৫-৩৭৫; লিডার রোডমুখী যেতে সাধারণ সাজে Luxmi H, H Atul, City H, SCB ৬০ SAB ১০০ DCB ১০০ DAB ১৭৫ FAB ২০০; পাশেই শ্রীমতী চামেলী দেবী ধরমশালা।

স্বামী বিবেকানন্দ মার্গ শেষ হতে রেল স্টেশনমুখী Leader Rd-211003এ Kailash H, Opp Rly Stn, SCB ৬৫ DCB ১২৫ SAB ১০০-১৭৫ DAB ১৪৫-২২৫; H Ashiana, Ramon H, New Sangam H, H Shanti, Hotel Lcee, Coco, Ananda Niwas, Standard, Gulab Mansion, Johnston, এদের কাছে ১২৫-২০০ টাকায় ডাবল বেডের ঘর মেলে। H Milan, ৫ 400021, S ২০০-৪৫০ D ৩০০-৫৫০; H Tweens, ৫ 401554, S ১২৫-২৭৫ D ১৭৫-৩৫০; Raj H, 6 Johnston Ganj, SCB ৬০ SAB ৮০-১২৫ DCB ১০০ DAB ১৫০-২২৫ TAB ২৫০ A/C D ৪৫০; H Bashistha, ৫ 400004, S ১৭৫-২৫০ D ২৫০-৩৫০ A/C S ৩৫০-৪৭৫ D ৪৫০-৬০০; পাশের বাড়িতে Ashoka H, SAB ৬৫-১২৫ DAB ১০০-১৭৫ TAB ২০০ FAB ২২৫; অদূরে H Vivek, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB

১২৫ DAB ১৭৫; কাছেই H Gangotri, Central H, near Clock Tower, D ১২৫-১৭৫; Continental H, Dr Kaju Rd, DAB ১২৫-২০০; GPO-র কাছে রেল স্টেশনের অদূরে H Tepso, Sardar Patel Marg, SAB ১৭৫ DAB ২৫০। H Harsha, 14 M G Marg-1, near Rly Stn, S ১০০-১৭৫ D ১৫০-২৭৫; H Finero, 8 Naya Marg.

তবুও থাকা ও আহার্যে বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া UPSTDC-র Tourist Bungalow, 35 MG Marg, Civil Lines, ৫ 601440, FAB ৪৫০ A-C D ৩৫০ A/C D ৫৫০ ৭৫০ ডর্মি ৫০, এলাহাবাদে অন্যতম। UP Tourism-এর দপ্তরও বসেছে বাংলায়, ৫ 601873.

আর আছে সাধারণ সাজে রামবাগে—শক্তি, ব্র-ডায়মন্ড, তারা; চকে—মান সরোবর, হিন্দু; জিরো রোডে—পাঞ্জাব হোটেল, তাজমহল; বিবেকানন্দ মার্গে—লক্ষ্মী, কাশ্মীর, সত্যম, জুতল, সিটি, সূর্য, রঞ্জিছাড়াও হোটেল আছে নানান এলাহাবাদে। এদের কাছে ৬৫-১২৫ টাকায় সিঙ্গেল, ১০০-২২৫ টাকায় ডাবল বেডের ঘর মেলে।

খাবার হোটেল সারা শহরময় যত্রতত্র মিলেও Tourist Bungalow, হোটেল টেনসোর Jade Garden বা MG Marg-এর Tandoor, Kwalitiy; বা রাজ পেরিয়ে Giza-য় স্বাদ নেওয়া যেতে পারে আহার্যের। আমিষ ও নিরামিষ দুই-ই মেলে এদের কাছে। দামে কিছুটা আধিক্য ঘটলেও চীনা আহার্যে El Chico-র প্রশস্তি সারা শহর জুড়ে। কেনাকাটার সিভিল লাইনস আদরণীয় হবে।



আর আছে YMCA, অব: Secretary, YMCA, 13 Sarojini Naidu Rd; YWCA, 9-A, Kamala Nehru Rd; Circuit House, PWD IB, রেলের রিটায়রিং রুম এলাহাবাদে। আর ধরমশালা আছে—Zero Rd-এ: Shri Purushottam Das Agarwal, Chini, Jain; Daraganj-এ: Rustogi, Sahu, Agarwal, Vanshidhar Gopal Das Rustogi, Bhargava, Paliwal, Sindhi; Katzu Rd-এ: Seth Sevaram Channalal Sidhiyana; Yamuna Bank Rd-এ: Seth Kanji Khetani, Lohna; Hewett Rd-এ: Smt Chameli Devi; Chowk-এ: Hindu; Gaughat-এ: Shri Gokuldas Tejwal; Shri Manwari, 30 Sammelan Marg; ভারত সেবাক্রম সঙ্ঘ, ৯৩ তুলারাম বাগ ও এম জি রোড ছাড়াও বাঙালির কালীবাড়ি এলাহাবাদে। থাকার ও ব্যবস্থা আছে কালীবাড়ির অভিধালায় অব: সেক্রেটারি, কালীবাড়ি, ১০২৩ মুরীগঞ্জ, এলাহাবাদ-২১১০০৩।

অত্যাশাহীরা এলাহাবাদ থেকে ১৭ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে যমুনার অপরপাড়ে কিংবদন্তীর শহর ভিটা বেড়িয়ে নিতে পারেন। ১৯১০-১১ মার্চি বৃষ্টি আবিষ্কৃত হয়েছে ত্রিপুর ২ থেকে ৫ ব্রিস্টলের মোর্য, কৃষ্ণাণ ও গুপ্তযুগের সমৃদ্ধ নগরী। দুর্গের মতো সুরক্ষিত ছিল সেকালে। মিউজিয়মও বসেছে খননে (১৯১০-১১) পাওয়া মুদ্রা, সিলমোহর ও টেরাকোটের সন্ধান নিয়ে। বারাণসীর নবতম প্রয়াস বারাণসী ও এলাহাবাদের মধ্যে নদীবক্ষে জলবিহার। তেমনই আকর্ষণ প্রতি ফেব্রুয়ারিতে সেশ-বিশেষ থেকে আসা লাল-হলুদ-সাদা কায়াক প্রতিযোগিতার গজা ওয়াটার র্যালির।

দুর্গের বিপরীতে যমুনার অপরপারে বারাগঙ্গী রোডে অতীতের প্রতিষ্ঠানপুর আজ হয়েছে খুসি। চন্দ্র ও গুপ্তযুগের শহর। সমুদ্রগুপ্তের নামাঙ্কিত কুণ রয়েছে। সাধু-সন্তের বাস। আবার এলাহাবাদ থেকে জব্বলপুরমুখী ৫০ কিমি দূরের গাভোলাও বেড়িয়ে নিতে পারেন। গাভোলাতে আছে দ্বিতীয় চন্দ্রগুপ্তর কালের মন্দির কমপ্লেক্স। ৮ কিমি দূরের শঙ্করগড় হয়ে পথ গিয়েছে গাভোলায়। শেষ ৩ কিমি পায়ে হাঁটা পথ। কারুকার্যময় মন্দির। কার্ভিং-এর কাজও সুন্দর। ১৬টি করে স্তম্ভ—ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর ছাড়াও নানান দেবদেবীর মূর্তি আজও অক্ষত। দুর্গের পশ্চিমে গাভোলা তাল।

কৌশাধী

এলাহাবাদ থেকে ৫৭ কিমি দূরে অতীতের কৌশাম আজ হয়েছে কৌশাধী। রেল স্টেশন লাগোয়া লিডার রোড থেকে প্রাইভেট বাস ৫-৩০—১৭-৩০টায় ঘণ্টায় ঘণ্টায় যাচ্ছে। ঘণ্টা তিনেকের বাসপথ। ফেরার শেষ বাসটি ১৭-৩০টায় কৌশাধী ছেড়ে এলাহাবাদ আসছে। ট্যাক্সিও মেলে যাতায়াতে। থাকার জন্য PWD IB আছে বাস স্ট্যান্ডে। অদূরে জৈন ধরমশালা। আহার্য চৌকিদারের হোপাজতে। তবে সকালে গিয়ে কৌশাধী বেড়িয়ে দিনান্তে এলাহাবাদ ফেরাই উচিত হবে।

বুদ্ধের স্মৃতি বিজড়িত কৌশাধী আজ ধ্বংসস্তুপে পরিণত। অজুনের পৌত্র পরীক্ষিতের ৬ কিমি ব্যাপ্ত দুর্গটিও লুপ্ত। মৎস্য রাজের রাজধানীও ছিল বুদ্ধের কালে কৌশাধীতে। খ্রিষ্ট ৪ শতকের কৌশাধী নগরীতে সম্রাট অশোকও ২টি পিলার গড়েন। ১টি তার স্থানান্তরিত হয় এলাহাবাদ দুর্গে, দ্বিতীয়টি ভগ্ন অবস্থায় আজও অতীত রোমন্থন করায়। আর ছিল বৌদ্ধ বিহার ঘোষিটারাম—যা আজ লুপ্ত প্রায়। ১ কিমি পশ্চিমে খেতগম্বুজ শিরে দিগম্বর জৈন মন্দির। জৈন মন্দির হয়েছে বাস স্ট্যান্ডেও নতুন করে। লোকাল যানের অভাব। বাস স্ট্যান্ড থেকে সিধে পিচ ঢালা পথে ৩ কিমি যেতে অশোক পিলার স্থল।

চিত্রকূট

মধ্য প্রদেশ ও উত্তর প্রদেশ সীমান্ত জুড়ে বান্দা জেলায় বিষ্ণুপর্বতের উত্তরে ত্রেতাযুগের চিত্রকূট অরণ্য। ৫০ মি উঁচুতে চিত্রকূট, অর্থ তার বর্ণময় পাহাড় আর বন—বয়ে চলেছে মন্দাকিনী নদী। কারভী, সীতাপুর, কামতা, কোহরী ও নরাগাঁও এই পাঁচ বিক্ষিপ্ত গ্রামকে নিয়ে চিত্রকূট। কোল, ভিল ছাড়াও নানান উপজাতির বাস। ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বরের স্মৃতি বিজড়িত চিত্রকূট অতি পবিত্র হিন্দুতীর্থ। জনশ্রুতি, জন্মও নাকি ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বরের চিত্রকূটে। মহাকবি কাশিদাসও মহান করে গেছেন চিত্রকূটকে—যশ্দের প্রেমোপাখ্যানকে রূপ দিয়ে। মহান করেছেন কবিতুলসীদাস ও আকবরের নবম রত্নের অনাতম রত্ন আবদুর রহিমও চিত্রকূটকে।



কাঁসী-মানিকপুর শাখায় কাঁসী থেকে ২৬১ আর মানিকপুরের ৩১ কিমি দূরে চিত্রকূটধাম কারভি। রেল স্টেশন থেকে রিকশায় ১ কিমি দূরের বাস স্ট্যান্ড পৌঁছে বাসে ৮ কিমি গিয়ে সীতাপুর। অটোও আছে শেয়ারে। 5009/5010 চিত্রকূট এক্স লক্টো-জব্বলপুর; 1107/1108 বুন্দেলখণ্ড এক্স বারাগঙ্গী-গোয়ালিয়র; কানপুর-বান্দা প্যাসেঞ্জার; 1449/1450 মহাকৌশল এক্স হজুরত নিজামুদ্দিন-জব্বলপুর; 1159/1181 চম্বল এক্স হাওড়া-গোয়ালিয়র/আগ্রা প্রতিটা ট্রেন চিত্রকূটধাম হয়ে যাচ্ছে। 1245 দিন ১৫-১৫য় হাওড়া ছেড়ে এলাহাবাদ ৬-০৫, মানিকপুর ৮-৪০, চিত্রকূটধাম-কারভী ৯-২৬এ পৌঁছে কাঁসী হয়ে গোয়ালিয়র যাচ্ছে। আর মানিকপুর থেকে ট্রেন মেলে ৯-০০, ১০-৪৫, ১৫-৫০, ১৮-১০, ২০-০৫, ২২-০০, ০-৫০এ চিত্রকূটের। নিকটতম বিমান খাজুরাহায়। খাজুরাহোর পথে ৭৮ কিমি দূরের সাতনা থেকেও বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় চিত্রকূট। খাজুরাহোর দূরত্ব ১৯৯, জব্বলপুর ২৩২, কাঁসী ১৩২ কিমি। বাসও আছে চিত্রকূট থেকে ৫-৩০—১৭-৩০টায় প্রতি ১ ঘণ্টা অন্তর সাতনায়। বাস যাচ্ছে ৬-০০—১৮-০০টায় ১ ঘণ্টা অন্তর ৪ ঘণ্টায় ১২৮ কিমি দূরের এলাহাবাদ (জিরো রোড); ২১০ কিমি দূরের কানপুর যাচ্ছে ৫-১৫, ৬-১৫, ৬-৩০, ১৪-০০টায়; বারাগঙ্গী যাচ্ছে ৯-৩০টায়; মির্জাপুর ১৪-৩০টায়; ১২১ কিমি দূরের মাহোবা যাচ্ছে নানান বাস চিত্রকূট থেকে।

সীতাপুর বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি রিকশায় রামঘাট অর্থাৎ মন্দাকিনী (গঙ্গা)-র ঘাটে সারি দিয়ে বাড়ি, লোকান-পাট, খাবার হোটেল, মন্দির। পূণ্য সলিলে ডুব দিয়ে সূর্য প্রণাম থেকে নানান হিন্দু উপাচার যাপন করছেন সকাল থেকে সাঁঝে পূণ্যার্থীর দল। গঙ্গা আরতিরও মাদুর্ঘ্য আছে রামঘাটে—প্রদীপ দানেরও প্রথা আছে সাঁঝে। দূরে পাহাড়-শ্রেণী, মন্দাকিনীর সাথে সমান্তরালভাবে বয়ে চলেছে। রামঘাট থেকে মন্দাকিনীর জলপথে ২ কিমি নৌকায় ৩০-৪০ টাকায় প্রমোদ বন অর্থাৎ লক্ষ্মীনারায়ণ, শ্রীরাম জ্ঞানকী ও কাচ মন্দির বেড়িয়ে নেওয়া যায়। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে জলবিহারে রোমাঞ্চ আছে। ঘাটের পরিবেশও সুন্দর। থাকার ব্যবস্থা মেলে রঘুরাজ ও মন্দাকিনী বিজ্রাম গৃহে। গাড়িও আছে স্থলপথে।

চারধাম বাস স্ট্যান্ড থেকে বাস-রিকশা-অটো-জিপে ৪ কিমি গিয়ে ৩৫০ সিঁড়ি উঠে খাড়া পাহাড়ে হনুমান ধারা অর্থাৎ রামের সৃষ্ট প্রস্রবণ বেড়িয়ে নেওয়া যায়। কিংবদন্তী, সীতার সন্ধানে গিয়ে লঙ্কা জ্বালিয়ে ফেরার পর শ্রীরাম এখানেই হনুকে শাস্ত করেন। স্মারক রূপে মন্দির। ধারা নামছে পাহাড় থেকে। চারপাশের দৃশ্যও মনোরম।

চারধাম বাস স্ট্যান্ড থেকে বাস, টেম্পো বা জিপে চারধাম জর্জাৎ গুপ্ত গোদাবরী, সতী অনসূয়া মন্দির, স্মৃতিশিলা ও জ্ঞানকী কুণ দেখে নেওয়া যায়। ঘণ্টা তিনেকে ১৫ টাকায় ৫৪ কিমি পরিত্রায়ায় সাজ করা যায় এ সফর। সাত... ১০ কিমি গিয়ে আবার ডানহাতি ৮ কিমি যেতে গুপ্ত গোদাবরী অর্থাৎ পাহাড় কুঁড়ে তৈরি প্রশস্ত গুম্ফা তথা সীতা কুণ। গোদাবরী নদী নাসিকে লুপ্ত হয়ে প্রকাশ পেয়েছে

এখানে। দশরথন্দন শ্রীরামচন্দ্র ভাই লক্ষ্মণ ও সীতাদেবী সহ বনবাসের একাদশ বছরটি চিত্রকূট অরণ্যেই অবস্থান করেন। সিংহাসনরূপী দুই শিলাখণ্ডে বসতেন শ্রীরাম ও লক্ষ্মণ। সীতাদেবীর পায়ের ছাপও রয়েছে পাথরে। লাগোয়া রামকুণ্ড—ইটুর অধিক জল শুষ্কাময়। সঙ্গীর্ণ পথ, পরিবেশ রমণীয়, বিজলীও পৌছেছে শুষ্কায়।

শুণ্ড গোদাবরী থেকে ১৪, চিত্রকূট থেকেও ১৪ কিমি দূরে নির্জন-নিরালায় পাহাড় ঢালে আরণ্যক পরিবেশে সতী অনসূয়া মন্দির। হিন্দু পুরাণের নানান দেব-দেবীরও সমাবেশ ঘটেছে মন্দিরে। ২৪ অবতাররূপী ভগবানরাও মূর্ত হয়েছেন। মন্দির শিরে সেকালে ছিল ঋষি অত্রি ও সতী অনসূয়ার আশ্রম। বাসও করতেন ঋষি ও পুত্র ও স্ত্রীসহ। কিংবদন্তী, ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বরের অবতাররূপী ঋষিপুত্রের তপস্যাও করেন এখানে। এমনকি অনসূয়ার ধ্যানলব্ধ মন্দাকিনী বয়ে চলেছে নিচু দিয়ে—আহার দিলে মাছের দর্শন মেলে। বনবাসের কিছুকাল এখানেও কাটে শ্রীরামের।

অনসূয়া থেকে শহরমুখী ১১ কিমি যেতে মন্দাকিনী তীরে স্মৃটিক শিলা—পাথর খণ্ডে শ্রীরাম ও সীতাদেবীর পায়ের ছাপ রয়েছে। কাক বেশে জয়ন্ত এসে চক্ষু দিয়ে এখানেই সীতাদেবীকে ঠোকার মারেন। রামনবমীতে উৎসব হয়। এপথেই আরও যেতে শহর ছোঁয়া জনকীকুণ্ড ও মন্দির। জন-শ্রুতি, সীতাদেবী বনবাসকালে জ্ঞান করতেন জনকীকুণ্ড তথা মন্দাকিনীর স্মৃটিক স্বচ্ছ জলে। রামঘাট থেকে ২ কিমি বাটে বারোড়ে চলা যায়। তেমনই রিকশা বা অটোয় ২ কিমি দূরের কামতানাথ বা কামাভগিরি মন্দির পৌছে খালি পায়ে ৫ কিমি পিরকুমায় আদি চিত্রকূটে ৩৬০টি মন্দিরও দেখে নেওয়া যায়। বনবাসকালে শ্রীরামকে অযোধ্যায় ফেরাতে ভরত আসেন চিত্রকূটে। আরকরূপে মিলনস্থলে ভরত মিলাপ মন্দির। আর আছে মন্দাকিনীর রামঘাটে পুণ্যানন, ১৭ কিমি দূরে ভরতকুপ অর্থাৎ নানান তীর্থ থেকে ভরতের আনা পূতবারির রিজার্ভার। পাহাড়ের কাছে কোটি তীর্থ অর্থাৎ কুণ্ড, কারভী রেল স্টেশন লাগোয়া গণেশ বাগ চিত্রকূটে।



সীতাপুর বাস পথেই UPSTDC-এর Tourist Bungalow, পর্যটক আবাস গৃহ, ① 06462, D ১২৫ A-cD ১৭৫ A/c ৩৫০ ডিন বেডের ঘর ২২৫ ডব্লিউ বেড ২৫, অব: Manager, Chitrakoot, UP-210204. আর চারধাম বাস স্ট্যান্ডের অদূরে মন্দাকিনী পেরিয়ে MPDTC-র Tourist Bungalow, ① (07672) 65326, S ১৫০ D ২০০, অব: Manager, Chitrakoot, MP-210204. আর আছে টুরিস্ট বাসপার পিছে Yatrika, Satna Rd, MP, DAB ৪০; কাছেই SADA-র Pramod Van. অদূরে Bagri Dharamshala; বাংলোর বিপরীতে Khairiya Dharamshala; Paul Dharamshala. রাম ঘাটে—রাণী কোঠী ধরমশালা, শ্রীরাম ধরমশালা, শেঠ পুত্র কিশোর অগ্রবাল, আশ্রা, মা কি ধরমশালা, নিতুভূতি ধরমশালা (বাস ও বাটের মাঝে)—কালবাসী ধরমশালা, গোয়কা ধরমশালা; বালস্ট্যাণ্ডে স্বর্ণকিশোর ধরমশালা; পর্যটক আবাস

সময় সঙ্গী: ৯৭-৯৮/৪৫

গৃহের সন্নিকটে জয়পুরিয়া গেস্ট হাউস। আর আছে প্রাইভেট হোটেল—Mandakini RH, Gahoi Bhawan, Nayaagaon; Radha L, Ramghat, D ১০০-১৫০, আহার্যও মেলে রাধা লজে। থাকার পক্ষে MP-র Tourist Bungalow মনোরম হলেও রাধা লজটি মানানসই। IB, FRH, রেলের রিটায়ারিং ক্লবও আছে রেল স্টেশনে।

বিদ্যাচল

এলাহাবাদ থেকে ৭-১০এ দিল্লী-হাওড়া জনতা এরে বা ৮-০০টায় বেরিলি-মোগলসরাই প্যাসেঞ্জারে ২ ঘণ্টার পথে বিদ্যাচল। ১০-২৫এ দিল্লী-শিয়ালদহ লালকেলা এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে বিদ্যাচলে। মেল ট্রেন থামে না বিদ্যাচলে। তাই ৭ কিমি দূরের মির্জাপুর হয়ে যাতায়াত ট্রেনের আধিক্য মেলে। থাকার জন্য মির্জাপুরে আছে UPTDC-র H Jahnvi, ① (05442) 63494/52603, A-c D ২৭৫ A/c D ৪৭৫। বাসও যাচ্ছে এলাহাবাদ থেকে ৮৩ কিমি দূরের বিদ্যাচলে। বারাণসীর দূরত্ব ৮৬ কিমি। ৫১ পীঠের এক পীঠও বিদ্যাচল। সতীর বাম পায়ের আঙুল পড়ে বিদ্যাচলে। অনুচ্চ পাহাড়ী-টীলায় মন্দির। মহিষাসুরকে বধ করে দেবী দুর্গা বিদ্যাপর্বতেই অধিষ্ঠিত হন। তাই দেবী এখানে বিদ্যাবাসিনী নামে খ্যাত। পরবর্তীকালে শুভ-নিশুভকেও বধ করেন এই দেবী। স্বাস্থ্যকর জায়গা বলেও প্রসিদ্ধি আছে বিদ্যাচলের।

অদূরেই সীতাকুণ্ড। বনবাস থেকে ফেরার কালে বিদ্যা-পর্বতে তৃষ্ণার্ত সীতাদেবীর তৃষ্ণা মেটাবার তরে তীর মেরে জলের ধারা বের করেন দেবের লক্ষ্মণ। সেই স্মৃতিতে রাম-লক্ষ্মণ-সীতা ও দুর্গা মায়ের মন্দির হয়েছে। জলপান করে আপনিও তৃষ্ণা মেটান। ৪৮ ধাপের সিঁড়ি উঠে সীতাকুণ্ড হয়ে পথ গিয়েছে আর এক অনুচ্চ পাহাড় চূড়ায় অষ্টভুজার মন্দিরে। নামে মন্দির হলেও আসলে গুহার দেওয়ালে দেবী মূর্তি। গুহার প্রবেশপথটি খুবই সঙ্গীর্ণ। বিদ্যাবাসিনী দুর্গাই এখানে অষ্টভুজা। লোকশ্রুতি, গুহাপথটি অনেকদূর পর্যন্ত প্রসার পেয়েছে। পাশেই রয়েছে আরও এক শুভামন্দির। এর প্রবেশপথ আরও সঙ্গীর্ণ। শরীর ও মাথা বাঁচিয়ে যাতায়াত। দেবতা পাতালকালী। একত্রে ৩-৪ জনের বেশি যাওয়ায় বিপদ। মন্দির রয়েছে আরও বেশ কয়েকটি বিদ্যাচলে। মহালক্ষ্মী ও মহাসরস্বতীর পূজার প্রথাও আছে এখানে। তেমনই রয়েছে ব্রহ্মকুণ্ড, অগস্ত্যকুণ্ড বিদ্যাচলে। কুণ্ডের জলে নানো পুণ্য হয়। আনন্দময়ী মায়ের আশ্রমও হয়েছে বিদ্যাচলে। আর থাকার জন্য বিদ্যাচলে রয়েছে PWD DB, জয়পুরিয়া গেস্ট হাউস ও সারবত ক্ষত্রী ধরমশালা। জয়পুরিয়ার বুকিং-এর জন্য বারাণসীতে জয়পুরিয়ার যোগাযোগকক্ষা যেতে পারে। প্রাইভেট বাড়িও ভাড়া মেলে। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস।

চলার পথে বিদ্যাচলের অংগী রোড থেকে ১.৩ কিমি

গিয়ে ডাকাত মাথা সিংহের ডাকাতে কাশীও দর্শন করে নেওয়া যায়। অতীতে নরমন্ড পেতেন দেবী তার হী করা মুখে—আর সে রক্ত নাকি যেত পাতালে। দেবীর সর্বাত্মক আবরণে ঢাকা কেবল মুখগহ্বর দৃশ্যমান।

চুনার



বিজ্ঞাচল থেকে ৪০ মিনিটের পথ চুনারের। ট্রেন ও বাস আছে। দূরত্ব ৩৮ কিমি। এলাহাবাদ থেকে জনতা এক্স, মোগলসরাই প্যা, লালকেলা এক্স এসে ২ ঘণ্টায় বিজ্ঞাচল দেখে ৯-৩০/১০-০৭/১১-৫৮য় বিজ্ঞাচল থেকে ১০-০২/১১-২৫/১২-৩২-৩২ চুনার পৌঁছান। চুনার দুর্গ দেখে চুনার থেকেই বা বাসে ৪২ কিমি দূরের মির্জাপুর থেকে ১৩-০৩এ মহানগরী, ১৩-০৫এ শিয়ালদহ-দিল্লী লালকেলা এক্স, ১৫-৩০এ জনতা এক্স, ১৮-১৯এ মোগলসরাই-বেরিলি প্যাসেঞ্জারে এলাহাবাদ ফিরন। বা চুনার থেকে বাসে বারাগসী চলুন। নিয়মিত বাসও মেলে এপথ পরিক্রমায়। তবুও যেন বারাগসী থেকে প্যাকেজ ট্যারে একই দিনে চুনার ও বিজ্ঞাচল বেড়িয়ে নেওয়ায় সুবিধা। আর কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রায় হাওড়া থেকে মুম্বাই মেল, শিপ্রা, চম্বল, ঢুফান, জনতা; শিয়ালদহ থেকে লালকেলা এক্সে ঘণ্টা পনেরোয় চলা যেতে পারে চুনার জং-এ। এছাড়াও ট্রেন আসছে নানান মোগল-সরাই ও বারাগসী হয়ে চুনারে। দূরত্ব:মোগলসরাই ৩৩, এলাহাবাদ ১২০ আর বারাগসী ৩৭ কিমি। গঙ্গার তীরে মির্জাপুরেও মন্দির আছে। আর আছে কাপেট ও পেতলের বাসন-কোসন মির্জাপুরে।

গঙ্গার দক্ষিণ তীরে অনুচ্চ পাহাড়ী টিলায় মজবুত প্রাচীরে ঘেরা চুনার দুর্গ। লাল সুরকির পথ গিয়েছে দুর্গ বরাবর। নিচ দিয়ে মন্দির গতিতে বয়ে চলেছে প্রোতখিনী গঙ্গা। বিবাহ-সূত্রে শের শাহ সূরী মালিক হয়েছিলেন এই দুর্গের। তবে, দুর্গের প্রকৃত নির্মাতার নামটি আজ বিস্মৃত। দুর্গের মূল প্রবেশ দ্বারে ১৯২৪এ কটন সাহেবের উৎকীর্ণ ফলকটিতেও এর উত্তর মেলেনি। যুদ্ধবিগ্রহে মালিকানা বদল হয়েছে বার বার—একে একে মহম্মদ শাহ, সিকান্দার লোধী, বাবর, হুমায়ুন, শের শাহ, আকবর ও অযোধ্যার নবাবদের দখলে গিয়েছে দুর্গ। সবশেষে ব্রিটিশের দখলে যায় চুনার। কিংবদন্তী—পৃথিবী পরিমাপের কালে ভগবান বিষ্ণুর দ্বিতীয় পা পড়ে চরওদাদিগড় অর্থাৎ আজকের চুনারে। টিলার আকারও তাই পায়ে পাতার মতো। আর যিশুখ্রিস্টের জন্মেরও ৫৬ বছর আগে উজ্জয়িনরাজ বিক্রমাদিত্যর বড় ভাই শ্রীরাজ বোণী ভর্তৃহরি জীবন্ত সমাধিই হন এই টিলার। স্মারক রূপে ১২ শতকে উজ্জয়িনরাজ বিক্রমাদিত্য দুর্গ গড়েন। এমনকি, ঔরঙ্গজেবের হস্তাক্ষর দেখে নেওয়া যায় দুর্গে। আর আছে ফাঁসি মঞ্চ, পাঠাল ঘর, গভীর ইদারা—গঙ্গার সঙ্গে যোগ-সূত্রও ছিল সেকালে। ঘড়িও মিলিয়ে নেওয়া যায় দুর্গের সূর্যবড়িতে। তবে সবই আজ অতীত—সম্মতি বিএস এফ-র ট্রেনিং সেন্টার বসেছে দুর্গে। দুর্গের ছাদ থেকে গঙ্গা ও চুনার শহরের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান। আর আছে ৩ কিমি দূরে দুর্গা মন্দির, ১ কিমি দূরে হজরত সুলেমানের সমাধি অর্থাৎ

দরগা চুনারে। ড্যামটির পরিবেশও মনোরম। আজকাল কলকাতা তথা নতুন নতুন শহরে চুনার থেকে পাথর এনে ইটের পরিবর্ত রূপে ব্যবহৃত হচ্ছে। এতসবের মাঝেও জলবায়ুর গুণে স্বাস্থ্যকর জায়গা বলে সমধিক খ্যাত চুনার। চুনারের জল উদরঘটিত ব্যাধিতে মহৌষধির কাজ করে।



চুনার দুর্গ PWD-IB আছে; বুকিং: EE, Mirzapur PWD, Fort Chunar, Dist-Mirzapur, UP. আর শহরে আছে Garden L. Joshi House, near Police Stn. Chunar-231304, ☎ (05443) 2466, R2, SAB ৮৫ DCB ১২৫ DAB ১৫০-২২৫ FR ২০০; H Plaza ও বাঙালির The New Sanatorium চুনারে। তবে, মনোরম পরিবেশে কটজখমী ঘরের গার্ডেন লজটি থাকার পক্ষে রমণীয়।

বারাগসী

পুণ্যতোয়া গঙ্গার অর্ধ চন্দ্রাকৃতি বাম তীরে বরুণা ও অসিনদীর সঙ্গমে বিশ্বের প্রাচীনতম চলমান শহর বারাগসী। সপ্তপুত্রীর এক পুত্রীও বারাগসী। উপনিষদেও তীর্থরাজ কাশীর নাম মেলে। পুরাণে আছে, খ্রিস্টের জন্মের ১২০০ বছর আগে সুহোত্র-পুত্র কাশ্য পত্তন করেন এই নগরী। কাশ্য থেকে নাম হয় কাশী। দ্বিমতে, সূর্যোদয়ে বারাগসীর আকাশ গোলাপী লাল অর্থাৎ কবায় (গৈরিক) রঙ ধরে। কবায় থেকে কাশী নামকরণ। আরও পরে কাশীরাজ বরুণা বারাগসী নামে এক দেবীর প্রতিষ্ঠা করেন। নামান্তর ঘটে কাশী হয় বারাগসী। আবার বামনপুরাণে মেলে বিষ্ণুর অংশসম্ভূত অব্যয় পুরুষের দক্ষিণ পদ থেকে সর্বপাপহরা মঙ্গলদায়িনী বরুণা ও বামপদ থেকে অসিনদীর উদ্যাম। দুইয়ের মিলনে বারাগসী। মধ্যযুগে কিছুকালের জন্য কনৌজের অধীনে ছিল কাশী। তারও পরে ৭ শতকে কাশী যায় বাংলার পাল রাজাদের দখলে। পাল রাজাদের পর কাশী যায় মুসলিম নৃপতিদের হাতে। মহম্মদ ঘোরী (১২ শতক), আলাউদ্দিন খিলজী (১৪ শতক), ঔরঙ্গজেবের (১৭ শতক) হাতে বিনষ্ট হয় নানান মন্দির বারাগসীর। অবশেষে ১৭৩৮এ হিন্দু-রাজ্য গড়ে ওঠে বারাগসীতে। আর ব্রিটিশ আসে ১৭৭৫এ।

বাঙালির সেকেন্ড হোম বারাগসী। তেমনই হিন্দুরা মানসপটে ছবি আঁকেন বার্ষিকের দিনগুলি বারাগসী বাসের। মন্দিরের অভাব নেই বারাগসীতে। পথে-ঘাটে-গলিপথে সাধারণ-অসাধারণ নানান মন্দির। কোনোটি বয়সের ভারে দীর্ণ, আবার কোনোটি মাহাঘ্যো ও জৌলুসে চোখ ধাঁধানো। তবে কাশীর রাস্তাঘাট সেও এক গোলকধাঁধা। ট্র্যাফিক ব্যবস্থা বেসামাল যেন। যত মানুষ, তত গলি, মোকানপাট তারও বেশী। অসংখ্য সাইকেল, অশুভিত্তিক রিকশা-অটো, মানুষের সঙ্গে পাশা দিয়ে ঝাঁড় চলেছে হেলেলুসে—সব মিলিয়ে জটপাকনো অবস্থা। পাভাসের উৎপাদন, গঙ্গার জল কলম্বিতে—তবুও কাশীর ঘাটে ভারতীয় বৈদিক ঐতিহ্য আজও অন্মান, অমলিন, অক্ষুণ্ণ। আজও সূর্যোদয়ের আগে নানান স্তোত্রপাঠ পরিবেশকে মন্ত্রমুগ্ধ করে তোলে।

| Varanasi-Lucknow-Bereilly-Delhi | | | |
|---------------------------------|----|-----------------|--------|
| 0 | Km | Varanasi | |
| 58 | " | Jaunpur | |
| | | To Ayodhya | 142 km |
| 109 | " | Badshahpur | |
| | | To Allahabad | 49 km |
| 148 | " | Dhupiah Morh | |
| | | To Allahabad | 56 km |
| | | " Faizabad | 103 km |
| 234 | " | Rae Bareilly | |
| 320 | " | Lucknow | |
| | | To Kanpur | 77 km |
| | | " Naimisharanya | 86 km |
| 403 | " | Sitapur | |
| 563 | " | Bereilly | |
| | | To Tanakpur | 115 km |
| | | " Lohaghat | 206 km |
| | | " Kathgodam | 101 km |
| | | " Nainital | 137 km |
| | | " Ranikhet | 181 km |
| | | " Kausani | 256 km |
| 659 | " | Moradabad | |
| | | To Corbett N.P. | 131 km |
| 728 | " | Garhmukteshwar | |
| 766 | " | Hapur | |
| | | To Meerut | 32 km |
| 798 | " | Ghaziabad | |
| 817 | " | Delhi | |

বারাণসীর বিশ্বনাথের মন্দির হিন্দুদের কাছে অতি পবিত্র তীর্থ। প্রবাদ—স্বর্গমর্ত্য পাচালে যত তীর্থ আছে—কাশীখণ্ডের গঙ্গা তাদের মধ্যে অন্যতম। পুরাণ বলে, গঙ্গাতীরে বাস করে মুক্তিলাভ করা যায়। এক গণ্ডুয় গঙ্গাজল পানে অশ্বমেধ যজ্ঞের ফল পাওয়া যায়। তিন রাস্তার গঙ্গাতীরে বাস করলে নরক যন্ত্রণা থেকে অব্যাহতি মেলে। তাই ছুটে আসেন পূণ্যার্থীরা দল গঙ্গার ঘাটে স্নান করে পূণ্য অর্জনের তরে। তেমনই একাম সতী পীঠেরও এক বারাগসী। দেবীর কুণ্ডল পড়ে মলিকর্ষিকা ঘাটে। কাশীর হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়ের খ্যাতিও আজ ভারত ছাড়িয়ে সারা বিশ্ব-ভূবনময়। কাশী ভ্রমণার্থীদের কাছে সারনাথ ও রামনগরের আকর্ষণও রয়েছে। সারনাথেই বৌদ্ধধর্মের উদ্ভব। তবে, সবেরই উর্ধ্বে ভারতীয় পর্যটন মানচিত্রে বারাগসী আজ মুখ্য ভূমিকা নিয়েছে। পর্যটকও আসছেন দেশ-দেশান্তর থেকে বারাগসীতে। ব্রিটিশের মুখে বেনারস নামে সমধিক খ্যাত হলেও স্বাধীনোত্তর কালে ১৯৫৬র ২৪শে মে সরকারি বিধানে বারাগসী বা কাশী নাম গৃহীত। শহরও প্রসার পাচ্ছে Raj Ghat (সেতুর কাছে) থেকে অসী ঘাট (হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়) পর্যন্ত। তবে, নবতম শহর বারাগসী জং-এর উত্তরে ক্যান্টনমেন্ট এলাকায় রূপ পেয়েছে। স্ট্যাণ্ডার্ড হোটেল, ভারত সরকারের Tourist Office টিও ক্যান্টনমেন্টে TV Tower কে ঘিরে। গ্রীষ্মের ঝরতাপ (৪৬.০১°-৩২.০২°সে.)

আর জুন থেকে সেপ্টেম্বরে মনসুন এড়িয়ে চলা যেতে পারে ৮০.৭১ মি উঁচু বারাগসী। জুলাই-আগস্টের মনসুনে ভয়াবহ আকার নেয় গঙ্গা। অক্টোবর থেকে মার্চ মাস বারাগসী বেড়াবার মনোরম সময়। শীতে তাপমান থাকে ১৫.৫-৫°সে।



এলাহাবাদ থেকে বিদ্যুতচল দেখে চুনীর বেড়িয়ে রামনগর হয়ে বারাগসী পৌঁছান। মৃৎস্থ বাস চলে এপথে। চুনীর থেকে দূরত্ব ৩৮.৬ কিমি। আর রেল সংযোগকারী স্টেশন কাশী, সিটি ও জংশন—তিন হলও বারাগসী জংশন মূল সংযোগকারী রেল স্টেশন বারাগসীর। এনকোয়ারি ৩ 131. ট্রেন যাচ্ছে হাওড়া থেকে 2381 পূর্বা এক্স সপ্তাহের 3 4 7 দিন, হাওড়া-গোরক্ষপুর এক্স 4, হিমগিরি এক্স 2 5 6, অমৃতসর মেল, অমৃতসর এক্স, ডুন এক্স, দেহাদুন জনতা ও শিয়ালদহ-জম্মু তাওয়ারি এক্স। কলকাতা থেকে দূরত্ব ৬৭৮ কিমি, ১০-১৫ ঘণ্টার পথ। আর ৭৬৭ কিমি দূরের দিল্লী যাচ্ছে ১৩ থেকে ১৬ ঘণ্টার বারাগসী থেকে ট্রেন। তবুও যেন মোগলসরাই হয়ে ট্রেনের আধিক্য মেলে বারাগসী যাতায়াতে। DMU লোকাল, বাস, অটো, শেয়ার ট্যাক্সি সংযোগ গড়েছে ১৫ কিমি দক্ষিণের মোগলসরাই থেকে বারাগসীর। ট্রেনও যাচ্ছে হাওড়া-দিল্লী 2301/2305 কলকাতা রাজধানী এক্স, 2303 পূর্বা এক্স, 2381 পূর্বা এক্স, 2311 কালকা মেল, 3007 উদ্যান আভা তুফান, 3039 জনতা এক্স, শিয়ালদহ-দিল্লী লালকোন্না এক্স মোগলসরাই হয়ে। আর 2307 হাওড়া-যোধপুর এক্স, হাওড়া-গোরক্ষপুর এক্স, 3133 শিয়ালদহ-মোগলসরাই এক্সও যাচ্ছে ২০-৫৫য় শিয়ালদহ ছেড়ে বোলপুর/ভাগলপুর (৬-৪৪) পটিনা (১২-৪০) হয়ে পরদিন ১৮-২৫এ মোগলসরাই। মোগলসরাই ছাড়ে ১২-০১এ শিয়ালদহ এক্স।

দিল্লী যাচ্ছে বারাগসী থেকেই ১৬-০০টায় 4257 কাশী বিশ্বনাথ এক্স; আর যাচ্ছে 1 3 6 দিন ৪475 পুরী-নিউ দিল্লী লীলাচল এক্স, দানাপুর-ভিওরানি গঙ্গা-যমুনা এক্স (মধুরা হয়ে), 2 5 7 দিন দানাপুর-ভিওরানি সন্ন্য-যমুনা এক্স যাচ্ছে বারাগসী/দিল্লী জং হয়ে। ৩০২ কিমি দূরের লক্ষৌ যাচ্ছে ৫-২৫এ বারাগসী ছেড়ে ১০-০০টায় 4227 বরুণা এক্স, ১৬-০০টায় বারাগসী ছেড়ে ২২-০৫এ 4257 কাশী বিশ্বনাথ এক্স, ৮-৫৫য় ছেড়ে ১৯-৩৫এ 4265 বারাগসী-দেহাদুন এক্স; এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে নানান ৫ থেকে ৬ ঘণ্টার বারাগসী থেকে লক্ষৌ। পুরী যাচ্ছে 2 5 7 দিন ২০-০৫এ লীলাচল এক্স; আর মোগলসরাই থেকে পুরী যাচ্ছে লীলাচল, নিউ দিল্লী-পুরী এক্স, পুরুষোত্তম এক্স। 1 1 3 6 দিন ১৭-২০এ যোধপুর যাচ্ছে বারাগসী-যোধপুর মরুভার এক্স। ৫৯৬ কিমি দূরের কাটিহার যাচ্ছে বারাগসী সিটি-ছাপরা-শোনপুর ভাগীরথী এক্স। ৪২ ঘণ্টার ১৩৩ কিমি দূরের গাটনা, ৩ ঘণ্টার ১৩৬ কিমি দূরের এলাহাবাদ যাচ্ছে নানান ট্রেন। জম্মু অর্থাৎ কাশীর যাচ্ছে শিয়ালদহ-জম্মু তাওয়ারি এক্স, 3 6 7 দিন হাওড়া-জম্মু হিমগিরি এক্স; সিমলা-কুলু-মানালী যাচ্ছে আখালা বা চাকি হয়ে জম্মু তাওয়ারি ও হিমগিরি; সিমলা যাচ্ছে কালকা মেল মোগলসরাই থেকে।

অমৃতসর যাচ্ছে বারাগসী থেকে হাওড়া-অমৃতসর মেল ও এক্স; গোরক্ষপুর যাচ্ছে বারাগসী-গোরক্ষপুর কুবক এক্স, দানার-গোরক্ষপুর কাশী এক্স, এলাহাবাদ-গোরক্ষপুর টৌরী টৌরা এক্স; দেহাদুন যাচ্ছে বারাগসী-দেহাদুন এক্স, হাওড়া-দেহাদুন দুই এক্স; আমোদাবাদ যাচ্ছে লক্ষৌ-বীসী-উজ্জয়িন-ভূপাল হয়ে 9166 সবরমতী এক্স; 4 7 দিন তিরুপতি যাচ্ছে এলাহাবাদ-জব্বলপুর-

নাগপুর-গুড্ডুর-রেনীওন্টা হয়ে বারাগণসী-তিরুপতি এবং; তৎপার কোচিন যাচ্ছে তিরুপতির অংশে রেনীওন্টা হয়ে; ১৩১নং এলাহাবাদ-জব্বলপুর-ইটারসি-নাগপুর-বিজয়ওরাদা হয়ে ২১৪৭ কিমি দূরের চেন্নাই যাচ্ছে ৪১ ঘটায় ৬০৪০ গন্না-কাবেরী এবং; ১১০৪ কুলেখণ্ড এবং যাচ্ছে এলাহাবাদ-মানিকপুর-আসী হয়ে বারাগণসী থেকে গোয়ালপুর; ৪২৬০ সারনাথ এবং যাচ্ছে বারাগণসী থেকে এলাহাবাদ-মানিকপুর-সাতনা-কাটনি-বিলাসপুর-রায়পুর হয়ে দুর্গ-এ; সুরাট যাচ্ছে ৩ ৭ দিন ৪২৪৬ তাপ্তি-গন্না এবং; এলাহাবাদ-সাতনা-পিপারিয়া-মনমদ-ভুসুয়ালা হয়ে ১৫০৯ কিমি দূরের মুম্বাই যাচ্ছে ২৭½ ঘটায় বারাগণসী-কারলা এবং, ২ ৪ ৫ দিন বারাগণসী-মুম্বাই রত্নগিরি এবং, বারাগণসী-মুম্বাই মহানগরী এবং, গোরকপুর-দাদার-বারাগণসী এবং, ২ ৪ দিন বারাগণসী-পুনে এবং ছাড়াও নানান ট্রেন ভারতের সিঁথিকি বারাগণসী ও মোগলসরাই থেকে। খাজুরাহো যাত্রায় উচিত হবে বারাগণসী-মুম্বাই এবং সাতনায় পৌঁছে বাসে খাজুরাহো চলা।

আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৬-৩০, ১১-৪৫, ১৭-৩০এ ছেড়ে ৩½ ঘটায় এলাহাবাদ সিটি; লক্ষ্ণৌ যাচ্ছে জৌনপুর-অখোধ্যা হয়ে ৩-০০, ৫-২৫এ ছেড়ে ১০ ঘটায়; অখোধ্যা যাচ্ছে ২-৫০ শিলালদহ-জম্মু এবং, ৩-০৫, ৫-২৫এ প্যাসেঞ্জার, ৬-৪০এ শতদ্র, ১০-৩০এ সবরমতী এবং, ১২-৩০এ ফারাক্সা এবং, ১১-৩০এ দুন এবং, ২১-৫০এ বেরিলি এবং বারাগণসী থেকে।



বাস টার্মিনাস মূলত চার বারাগণসীতে। বারাগণসী জং-এর সামনে কলকাতা-দিল্লী NH-2 অর্থাৎ GT Rdএ বসেছে দূরপাল্লার প্রাইভেট বাস স্ট্যান্ড। UPSRTC ০ ৪৩৪৭৬-র বাস স্ট্যান্ড কাটের শের শাহ সূরী মার্গে। MPSRTC-র বাস যাচ্ছে মধ্য প্রদেশের নানান দিকে কাণ্ট থেকে। গোথলিয়া থেকে নগর বাস ছাড়াও বাস যাচ্ছে—সারনাথ, রামনগর, হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়। GT Rd-এর গোলাগাছার কাছ থেকে ২০ মিনিট অন্তর বাস যাচ্ছে চুনার হয়ে মির্জাপুর। আর, বেনিয়া বাগ থেকে যাচ্ছে মোগলসরাই-এর বাস ও অটো। শহরে চলছে পয়েন্ট-টু-পয়েন্ট ভাড়া আর অটো ও টেম্পো।

বাস যাচ্ছে সকাল ৬-০০টায় বারাগণসী থেকে NH-29 ধরে গোরকপুর হয়ে নেপালের লুম্বিনী। পথের দূরত্ব ৩৯২ কিমি। আর নেপাল-ভারত সীমান্তে ৩১৪ কিমি দূরের সোনাউলি যাচ্ছে ৮ ঘটায় ৩-০০, ৪-০০, ৯-৩০, ২১-৩০এ; কুশীনগর ২৬৭ কিমি যাচ্ছে ৯-০০টায়। ½ ঘটায় অন্তর ৩½ ঘটায় বাস যাচ্ছে এলাহাবাদ ১২এ; ৬-০০ ও ৭-০০টায় ছেড়ে ৬ ঘটায় অখোধ্যা ২০০; ৭-১৫, ১৫-১৫এ ছেড়ে ৭ ঘটায় লক্ষ্ণৌ ২৮৬; ৬-৪৫, ১৫-৪৫এ যাচ্ছে জব্বলপুর ৪৫৫ কিমি; এলাহাবাদ হয়ে কানপুর ৩৩৬ যাচ্ছে ৭-০০, ৮-১৫, ১১-০০, ১৩-০০, ২১-০০টায়; রায়বেরিলি হয়ে কানপুর ৩৭৬ যাচ্ছে ৬-৩০, ১৮-৩০এ; জৌনপুর ৬১ যাচ্ছে ½ ঘটায় অন্তর ছেড়ে ২ ঘটায়; গোরকপুর ২১২ কিমি ৬½ ঘটায় যাচ্ছে ½ ঘটায় অন্তর। বাস যাচ্ছে গাটনা ২৪৬, গয়া ২৪৬, খাজুরাহো ৪০৬, মোরাদাবাদ ৬২২, আগ্রা ৫৬৫ কিমি ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে বারাগণসী থেকে। কলকাতার দূরত্ব ৬৭৬, আর দিল্লী ৮১৯ কিমি। আর জাতীয় সড়ক NH-7 চলছে কন্যাকুমারিকায় বারাগণসী থেকে।

নেপাল যাত্রীর সোনাউলির বাসে সরাসরি ভৈরোয়া বা গোরকপুরের বাসে ৬½ ঘটায় গোরকপুর গিয়ে নতুন করে বাস

চেষ্টা ৩ ঘটায় সোনাউলি পৌঁছে প্যার বা রিক্সার সীমান্ত পেরিয়ে ভৈরোয়া থেকে বাস চাপুন কাঠমাথু বা পোখরার। নানান বাস—দিনের শেষভাগে ভৈরোয়া ছেড়ে রাতভর জার্নি করে পরদিন সকালে কাঠমাথু পৌঁছায়। তবে, সরাসরি কাঠমাথু যাচ্ছে নানান প্রাইভেট সংস্থার ডিলাক্স বারাগণসী থেকে। ভাড়া আর আধিক্য, দীর্ঘ জার্নির ধূল এড়াতে উচিত হবে সোনাউলি বদল করে চলা। তেমনই উচিত হবে মিটারগেজ রেল পরিহার করে বাসেই এপথে চলা।

এমনকি বারাগণসীর আর এক রেল সংযোগকারী স্টেশন মোগলসরাই-এ নেমেও বাস, মিটারহীন অটো ও ট্যাক্সিতে বারাগণসী যাওয়া চলে। শেষা্রেও মেলে ট্যাক্সি ও অটো এপথে। মোগলসরাই থেকে বারাগণসীর দূরত্ব ১৫ কিমি। মোগলসরাই ছাড়াতেই গন্না—গাড়িতে বসে মালবা সেতু থেকে বামে কাশীর দৃশ্যও সুন্দর দেখে নেওয়া যায়।



IAC-র বিমান প্রতিদিন ১৩-১০এ বারাগণসী ছেড়ে খাজুরাহো ১৩-৫৫, আগ্রা ১৫-১০এ পৌঁছে দিল্লী যাচ্ছে ১৬-২০এ; প্রতিদিন ১৬-২০এ ছেড়ে সরাসরি দিল্লী যাচ্ছে ১৭-৩৫এ। ১ ১ দিন ১১-৪৫এ ছেড়ে ১২-৩০এ লক্ষ্ণৌ পৌঁছে মুম্বাই যাচ্ছে ১৫-১৫এ। কাঠমাথু যাচ্ছে IAC-র উড়ান প্রতিদিন ১২-৫০এ ছেড়ে ১৪-০০টায় ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে একই দিনগুলিতে বারাগণসীতে। শহর থেকে ২২ কিমি দূরে ববতপুর বিমানবন্দর। যাতায়াতে IAC-র বাস, অটো ও ট্যাক্সি মেলে। অফিস বসেছে হোটেল ডি প্যারিস-এর কাছে 52 Yadunath Marg. Cantt, ০ 45945এ IAC-র। আর প্রাইভেট বিমান Skyline NEPC কলকাতা ও বারাগণসীর মাঝে সার্ভিস গড়েছে প্রতি বৃষ্ণ ও শুক্রবার।

কনডাক্টর ট্রার : UPSRTC, টুরিস্ট বাংলা, প্যারেড কোঠি, ০ ৪৩৪৮৬ থেকে কনডাক্টর ট্রার শীতে ৬—১২-০০টায় গন্না, বিশ্বনাথ মন্দির, হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয় সহ নানান; আর ১৪—১৮-০০টায় সারনাথ ও রামনগর দেখিয়ে আনে। গ্রীষ্মে গাড়ি থাকে এসের ৫-৩০ ও ১৪-৩০এ। প্রতিটি ট্রার ৫০ হারে। মরসুমে সকাল ৭-০০টায় গিয়ে ২১-০০টায় ফেরে খাজুরাহো দেখিয়ে। নানানথর্মী গাড়িও ভাড়া মেলে UPSTDC ও ITDC থেকে। উত্তর প্রদেশ রাজ্য পর্যটনের দপ্তর বসেছে টুরিস্ট বাংলা ও রেল স্টেশনে; আর ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর IS/B, The Mall, Cantt, Varanasi, ০ 43744-এ। Foreigners' Registration Office বসেছে Srinagar Colony, ০ 62752এ।

আর New Varuna Travels, Anup Katra, Girtjaghar Crossing, ০ 359178; এসের এলাহাবাদ শাখা Maya Bazar. Civil Lines, ০ 624323 বা Varuna Travels, Pandey Haweli, ০ 323371; The Calcutta Travels, D/47/200-A, Ramapura, ছাড়াও নানান প্রাইভেট সংস্থা ৫০ টাকায় বারাগণসী, সারনাথ ও রামনগর; ১০ টাকায় গন্না থেকে ফৌকা খাজুরাহো; ৮০ টাকায় চুনার ও বিজ্ঞান; ১০০ টাকায় এলাহাবাদ; ৪ দিনের ট্রারে খাজুরাহো, মৈসার ও চিত্রকূট; ৩ দিনে অখোধ্যা ও লক্ষ্ণৌ; এমনকি কাঠমাথুও যাচ্ছে ৪ দিনের প্যাকেজে বারাগণসী থেকে।



বারাগণসী ব্রহ্মাণী আর তীর্থযাত্রী দুইয়েরই কাছে সমান আদরপূর্ণ। ভাই থাকুকও নানান যাবত গড়ে উঠেছে বারাগণসীতে। মূলত ৩টি ভাগে রূপ পেয়েছে বারাগণসীর হোটেলরাজি। বারাগণসী জংশন রেল স্টেশনের

পুরাতন শহরে; তাই উচিতও হবে রেল স্টেশন থেকে ৮-১০ টাকার রিকশায় গোখুলিয়া পৌঁছে গলাকে ভর করে হোটেল বেছে নেওয়া; তবে রিকশা, অটো বা টাক্সি থেকে সাবধানতা দরকার। চালকেরা নানান অজুহাতে আসের গছন মতো হোটেল আপনাকে নিয়ে যেতে আগ্রহী তারা। কমিশন মেলে নানান হোটেল থেকে এসে।

রেল বা বাস থেকে ৪ কিমি দূরে Dashaswamedh Road, Varanasi-221001, STD-0542-এ—H New Shivam, D ১২৫-২০০; Palace H, D ১০০-১৫০; Banaras L, D ১০০-১৭৫; দশাশ্বমেধ ঘাটমুখী যেতে Central L, SCB ৬৫ DCB ১০০ SAB ১২৫ DAB ১৭৫-২৫০; বিপরীতে H Ganges, SAB ১২০-১৭৫ DAB ১৭৫-২২৫ A/c S ৩০০ D ৪০০; Devi Bilas—Madras H; Vishram Griha; ঘাটমুখী আরও গিয়ে Sri Venkateshwar L, SCB ৬৫ DCB ১২৫ TCB ১৫০ TAB ২০০; H Sahu Varanasi, ৩ 323594, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৫০-২২৫ A/c S ২৫০ D ৩২৫; এলাকায় সেরা H Samnan, ৩ 322241, S ১০০-১৫০ D ১৫০-২০০ A-c S ২২৫ D ৩০০ A/c D ৪০০; Bel View L, D ১০০-১৫০; পাশেই বাজলির Dashaswamedh Boarding, ৩ 321701, SCB ৬৫ DCB ১২৫ SAB ৮৫ DAB ১৫০-২০০ ডর্মি ৪০, এসের পৃথকমূল্যে আহার বাধ্যতামূলক। বাড়িটি পুরাতন হলেও ঝাঝ ও আহার প্রশংসনীয়।

আর রয়েছে Godawlia-য় রিকশা অগম্য বিশ্বনাথ মন্দিরমুখী পায়ে হাঁটা সঙ্কীর্ণ গলিপথে Yogi L, D ৮৫-১২৫ ডর্মি ৪০, সাধারণ সাজে ঝাঝ ও খাবারের জন্য এসের যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। দেশী-বিদেশী আহার্যও মেলে এসের ক্যান্টিনে। Yogi-র সুনামকে বেসাতি করে হয়েছে New Yogi L, Jugi L; রিকশার সাথেও কমিশন প্রথা আছে এসের। যোগীর বিপরীতে Golden L, S ৮০ D ১২৫, মন্দ নয়। অদূরে Hotel KVM, D ১২৫-১৭৫; Palace H, H Binod, Tripti H, এসের ঘর, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৭৫, তবে পরিবেশ অপরিচ্ছন্ন। উত্তরমুখী মন্দির ছাড়িয়ে Trimurti GH, 35/12 Saraswati Phatak, DCB ১০০ DAB ১৫০। যোগীর পিছে Shani GH, পুরাতন শহর জুড়ে ঘাট এলাকায় Vishnu RH, বিবাহসূত্রে ভারতীয় হলেও জাপানি মহিলার তত্ত্বাবধানে Kumiko House, আরও দক্ষিণে Sun View GH, মনিকর্ণিকা ঘাটের কাছে Scindhia GH; এসের কাছে S ৬০-১২৫ D ১০০-১৭৫ T ১২৫-২০০। সাধারণ সাজে হোটেলগুলিও ভাল।

গোখুলিয়া থেকে রেল স্টেশনমুখী বায়ে Jagamwadi Rd-এ—Modern Boarding H; H Ellora; H Maharaja, D ১২৫-১৭৫। Luxsa Road-1এ—H Surjyodaya; সোকা-পাটের উপরে রিতলে H Anup, DAB ১২৫-২০০; H Empire; Ganga Tourist L; সাধারণ সাজে H Upawan, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB ৮০-১২৫ DAB ১২৫-১৭৫ A/c S ৩০০ D ৩৭৫; Varanasi RH; H Jamuna, ৩ 322300, DAB ২০০; Gungotri RH; Calcutta Vishram Bhawan, D47/174A, Luxsa Rd, SCB ৬৫ DCB ১০০ DAB ১৫০ FR ১৭৫; ঝাটের অদূরে New Imperial H, Hotel J K International.

স্টেশনমুখী আরও যেতে Sagra-য়—H Malti, ৩ 356844, S ২৫০ D ৩০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০ সুইট ৮৫০; H Ashok, Vidyapith Rd, RJB1, ৩ 350058, DAB ২৫০-৩০০ A-c D ৪০০ A/c D ৪৭৫; H Garden View, D-64/129 Vidyapith Rd, RJB2, SCB ৮০ DCB ১২৫ SAB ৮০-১২৫ DAB ১৭৫-২৫০; H Siddhartha, ৩ 358161, S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S ৪২৫ D ৬০০; GM GH, 1 Chandrika Colony, D ১৫০-২৫০; H Varuna, 22 Gulab Bagh-2, ৩ 358525, S ১৭৫ D ৩০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০।

গোখুলিয়া থেকে রেল স্টেশনমুখী ডিন পথের Nai Sarak-এ—Green L, R4B4, SCB ৬৫ DCB ১২৫ DAB ১৭৫; H Faran, D ১০০-১৫০; H Samrat, D ১২৫-১৭৫। স্টেশনমুখী পথে Chetganj-এ—*Pallavi International H, Hathwa Market-10, ৩ 356939, S ৩২৫ D ৪৫০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০ সুইট ৭৫০-১০৫০; H Sandeep, H Basant, C-67/222 Chetganj, D ১৫০-২২৫।

আরও এগিয়ে Lahurabir-এর Maldahia Rd-এ—H Ajaya, A21R1B1, SAB ১০০-১৫০ DAB ১৫০-২০০ A/c S ৩০০ D ৩৭৫; Modern L; H Vishal, S ৮০ D ১৫০ T ২০০; International H, D ১৫০-২২৫; H Puspanjali, D ১২৫-১৭৫; Garden L, D ১০০-১৫০; New Krishna I, D ১০০-১৫০; H Motinahal, D ১২৫-১৭৫; *Pradip H, Jagatganj-2, R1B1, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০; Gautam H, Ramkatora, ৩ 46239, R1, SAB ৩০০ DAB ৪০০ A/c S ৩৭৫ D ৫৫০ সুইট ৮০০, ঝাঝ ও খাবার দুইয়েতেই প্রশসিদ্ধ এসের।

বারাণসী জংশন রেল স্টেশনের বিপরীতে Parade Kothi, Cantt-এ মিনিট পাঁচেকের পথে UPSTDC-র Tourist



বারাণসীতে প্রথম ও অপ্রতিদ্বন্দ্বী একমাত্র বাঙালী পর্যটন সংস্থা

নিউ ব্রহ্মণ ট্রাভেলস্

অনুপ কাটরা, গিরিজাঘর চৌমাথা, বারাণসী

(ভারত সরকার অনুমোদিত ট্যুর অপারেটর এবং ট্রাভেল এজেন্ট)

শাখা : ২০ মামা বাজার, সিভিল লাইনস, এলাহাবাদ

ফোন : ৬২৪৩২৩, ফ্যাক্স : ০৫৩২-৬২৪৩২৩

ফোন : ৩৫২২৭৯ কার্যালয়, ৩৫৯১৭৮ নিবাস

Bungalow, DAB ২৫০ A-c D ৩৫০ A/c D ৫৫০ ডিন বেডের সুইট ৪৫০ ডর্মি ৪০; এদের আহার্যেও যথেষ্ট সুলভ—তবে নামে আদিক্য যেন। আর আছে চলার পথে—Amar H, SCB ৬০, SAB ৮৫ DAB ১২৫-২৫০, থাকা ও খাবারের ব্যবস্থাপনা ভালই। Satya Narayan L, DCB ৮৫ DAB ১২৫-১৭৫; H Rajkamal, SAB ৬০-৮৫ DAB ১২৫-১৭৫; H Diwan, SAB ৬৫ DAB ৮৫-১২৫; H Relax, SCB ৪৫ SAB ৬৫-৮৫ DCB ৮০ DAB ১২৫-১৭৫; H De Paul.

Calcutta-Varanasi-Kanpur-Agra-Delhi NH-2

| | | |
|-------|-------------------|--------|
| 0 Km | Calcutta | |
| 14 " | Bally Bridge | |
| 30 " | Road Jn | |
| | To Aithpur | 52 km |
| 34 " | Baidyabati Morh | |
| | To Tarakeswar | 34 km |
| | " Kamarpukur | 79 km |
| | " Jairambati | 85 km |
| | " Bishnupur | 117 km |
| 70 " | Panduah | |
| | To Nabadwip | 50 km |
| 92 " | Memari | |
| | To Nabadwip | 46 km |
| | " Tarakeswar | 44 km |
| 119 " | Burdwan | |
| 166 " | Road Jn | |
| | To Santiniketan | 46 km |
| | " Bakreshwar | 63 km |
| | " Massanjore | 110 km |
| 182 " | Durgapur | |
| | To Bankura | 47 km |
| | " Vishnupur | 81 km |
| 223 " | Asansol | |
| 234 " | Niyamatpur | |
| | To Maithon Dam | 15 km |
| | " Dumka | 118 km |
| 238 " | WB/Bihar Border | |
| | To Maithon Dam | 8 km |
| 240 " | Kumardhubi | |
| | To Maithon Dam | 6 km |
| | " Chittaranjan | 22 km |
| 242 " | Mugma | |
| | To Panchet Dam | 10 km |
| 274 " | Govindpur | |
| | To Giridih | 52 km |
| 270 " | Road Jn | |
| | To Dhanbad | 11 km |
| | " Ranchi | 178 km |
| 308 " | Topchanchi Lake | |
| 319 " | Nemiaghat | |
| | To Paresnath Hill | 12 km |
| 324 " | Dumri | |
| | To Madhuban | 22 km |
| | " Giridih | 43 km |
| | " Madhupur | 94 km |
| 350 " | Bagodar | |
| | To Hazaribagh | 53 km |
| | " Konar Dam | 24 km |

| | | |
|--------|----------------------|--------|
| 367 " | Road Jn | |
| | To Suraj Kund | 1 km |
| 400 " | Barhi | |
| | To Hazaribagh | 37 km |
| | " Ramgarh | |
| | " Ranchi | |
| | " Tilaiya Dam | 18 km |
| 460 " | Dhobi | |
| | To Bodhgaya | 22 km |
| | " Patna | 198 km |
| | " Nalanda | 109 km |
| | " Gaya | 30 km |
| | " Rajgir | 96 km |
| 519 " | Aurangabad | |
| | To Palamou NP | 117 km |
| 541 " | Dchri-on Son | |
| 560 " | Sasaram | |
| 666 " | Mughalsarai | |
| | To Chandraprava | |
| | Wild Life Sanctuary | 49 km |
| 681 " | Varanasi | |
| | To Gorakhpur | 212 km |
| 806 " | Allahabad | |
| | To Chitrakoot | 133 km |
| 821 " | Bamrauli | |
| | To Kausambi | 30 km |
| 1001 " | Kanpur | |
| | To Lucknow | 77 km |
| 1193 " | Etawah | |
| | To Gwalior | 109 km |
| 1287 " | Agra | |
| | To Bharatpur | 56 km |
| 1343 " | Mathura | |
| 1395 " | UP/Haryana Border | |
| 1470 " | Haryana/Delhi Border | |
| 1490 " | Delhi | |

রেল স্টেশনের বিপরীতে GT Road-এর বামে বাসমুখী মাঝ পথের Cantt-এ—H Mansarovar, SAB ১০০ DAB ১৭৫ A-c D ৩০০; H Vijay, Rajendra L, H Nar-Indra, SCB ৪৫ SAB ৬৫ DCB ৮৫ DAB ১২৫ A-c S ২০০ D ৩০০ A/c S ৩০০ D ৪০০। GT Road-এর ডহিনে Bihar Tourism-cum-Rest House, Sri Ramkrishna L, Amrita L.

এছাড়াও হোটেল আছে নানান সারা শহরময় ছড়িয়ে বারগসীতে। H Bharat Rest House, 24 Lajpat Nagar, RJB, SAB ৬০-১০০ DAB ১২০-১৭৫; Ajanta H, D 39/24 Khodai Chowki-I, R3B3, SCB ৬০ DCB ১০০ SAB ৮৫ DAB ১৫০ A-c D ২২৫; H Blue Star, S 14/84 G, Maldahiya-Church Compound, RJB, SCB ৬৫ DCB ১২৫ SAB ৮৫ DAB ১৫০; H Hot Park Villa, Rathayatra-221010, R3B3, SAB ৮০ DAB ১৫০; Tandon House L, Gaighat, near GPO, S ৮০ D ১৫০ ডর্মি ৪০; গঙ্গাও স্মরণ দৃশ্যমান হোটেল থেকে। জৈন মন্দিরান্নার শহরের মধ্যমণি H Barahdari, near GPO, D 330581, S ৩০০ D ৩৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০, ব্যবস্থাপনা ভালই।

জৈন স্টেশনের পিছনে ক্যাটে—H India, 59 Patel Nagar-

221002, SAB ২২৫ DAB ৩০০ A/c S ৩২৫ D ৪৫০, থাকার পক্ষে ভালই; লাগোয়া *H Vaibhav*, 56 Patel Nagar, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ সুইট ৬৫০, দিল্লী বুকিং: ⑥ 661051; *Manus L, Tulsi Manas Temple*, D ১২০-১৫০; *H Himalaya, Club Rd*, SAB ৮৫ DAB ১৫০ A-c S ২০০ D ৩০০; *Om L, Bansphatak; Kailash L, Rampura; Manvi G H, Sidhgiri Bagh; Phatra, Bulanala; Gimar, Hauz Katora; Kumars, Kabir Chaura; Chandra, Sonia-Sigra; Bandana, Senpura; Parvaj, Patel Ngr* আর *Dalmandi-তে Aman GH, Crown L, Eden, Star GH*, এদের কাছে S ৪৫-৮৫ D ৬৫-১৫০ টাকায় মেলে। রেলের *রিটারারিং ক্লব*, মিউনিসিপ্যালিটিও গেস্ট হাউস গড়ছে *Vikash Pradhikaran GH* বারাগসীতে।

খাবার হোটেল : আর আহাৰ্যে বাঙালির *জম্মী হোটেল* আছে গোখুলিয়ার অদূরে রামপুরায় মাজলা সিনেমার বিপরীতে পাড়ে ধরমশালার পাশের গলিতে। আর আছে আর এক বাঙালি হোটেল দি ক্যালকাটা ট্রাভেলস-এর *D/47/200A, Rampura-র বীরেশ্বর পাড়ে ধরমশালার প্রবেশপথে*। তেমনই, দশাধমেঘ ঘটি রোড শেষ হতে সরে গলিপথে *Keshuri-র* যথেষ্ট সুনাম আহাৰ্যে। লাক্ষ্মীবাৰী—*Winfa Restaurant, Poonam Restaurant, El Parador, Tulasi Restaurant-এ* চীনা ডিসের স্বাদ নিতে পারেন আগ্রহীরা। দক্ষিণ ভারতীয় আহাৰ্যের জন্য বেলাপুরের *Kerala Cafe*টিরও যথেষ্ট সুনাম। গোখুলিয়ায় দামে কিছুটা আধিক্য ঘটলেও পাতালের *El Chico* রেস্টুরেন্টের যথেষ্ট সুনাম দেশী-বিশেষী-চীনা ভেজ ও ননভেজ মিলে। ভেল্পুরায় ললিতা সিনেমার কাছে *Sindhi Restaurant*-টির নিরামিষ আহাৰ্যে সুনাম আছে। ক্যান্ট এলাকায় *টুরিস্ট ডাকবাংলোর* আহাৰ্যে যথেষ্ট সুনাম—তবে, মান হারে দামে আধিক্য। টুরিস্ট বাঙালো থেকে বেরুতেই *Mandarin Chinese Restaurant-এ* চীনা মিল, অদূরে *Most Welcome Restaurant*টিরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি আহাৰ্য পরিষেবা। তেমনই বারাগসী জং *Railway Restaurant*টির দামের তুলনায় আহাৰ্য ভালই। আর একাধিই উচিত হবে চলতে ফিরতে বারাগসীর *মাল্লাই* অর্থাৎ রাবড়ি ও *লঙ্গির* স্বাদ নেওয়া। বিশ্বনাথের গলিতে গুল্ল বংশ পরম্পরায় আজও কশী খ্যাত। আর সঙ্গী করুন কাশীর শ্যাড়া ঘরণানে। তেমনই স্বাদ নেওয়া যেতে পারে পাণ্ডে হাডেলীর *কীর সাগর* বা গোখুলিয়ার *মধুর জলপান গৃহ* বা *জলযোগে* মিষ্টি ও টফিনের। সবশেষে বারাগসীর পান সে-বাগ ও তুলবাগ নয়। বিশ্বনাথের গলিতে বাঙালি সেবেশের জর্জর স্বাদ নেওয়া যেতে পারে পানের।



আর আছে রেল স্টেশনের কাছে *New Cantonment* এলাকায় পাকাটা প্রধায়—*ITDC-র *H Varanasi Ashok, The Mall-221002, ④ 46020, A/c S ১১৯৫ D ২০০০ সুইট ২৩৯৫, এপ্রিল-সেপ্টেম্বরে রিবেট মেলে; *H Clarks Varanasi, The Mall-2, ④ 348501, A/c S ১২৫০-২০০০ D ২০৮০-২৫৮০; *H Diamond, Bhelupura, ④ 310696, S ৪৫০ D ৫৫০ A/c S ৬০০, D ৮০০; *H Taj Ganges, Raja Bazar Rd-2, ④ 345100, A/c S ৮৫-৯৫ D ৯৫-১১৫ সুইট ১৭০-২২৫ US\$; International GH, Hindu University, অবু:Registrar; *H De Paris, The Mall-2, ④ 46601, A20R4B4, A/c S ৭০০ D ১৫৫; Mint House Motel-Nadesar; H Joy Ganges,*

*Maldahiya-2, R1B2, SAB ২২৫ DAB ৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৪৫০; *H Hindusthan International, C-21/3 Maldahiya-1, ④ 351484, A22R1B1, A/c S ১২৫০ D ২২৫০; H Barahdari, Maidagin, ④ 330040, A22R3B1, S ৩০০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; Kanhaiya Vishram Mandir H; H Bombay International, Sonarpura-1, ④ 310621R4B4, SAB ২২৫ DAB ৩২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০ সুইট ৮৫০ ডরী ৬০; *H Best Western Ideal, S-20/51, 1A The Mall, Cantt-2, ④ 348250, A/c S ১২৫০ D ১৫০০; H Surya, The Mall, D ২১৫-৪৫০, স্বাধরাপনা জলি; H Varuna, 22 Gulab Bagh, Sigra-2, R2B1, ④ 354524, S-KAB ২০০ DAB ৩২৫ A/c S ৪০০ D ৬০০; H Avaneesh, C-K Lajpat Nagar, Maldahiya, R3B3, A/c S ৪৫০ D ৬০০।*



হলিডে হোম : হলিডে হোমও গড়ছে নানান বাণিজ্যিক সংস্থা বারাগসীতে। বুকিং এদের সদর দপ্তরে। *Union Carbide Employees' Recreation Club, Jeebandwip, 1 Middleton St, Cal-700071, ④ 296047* at Ramnivas, D 17 Bhuteswar Gali; *UCO Bank Office Congress, 16-A, Brabourne Rd, 3rd Floor-1, ④ 251778*, at Ramnivas; *The Calcutta Corporation Cooperative Credit Society, 1 Hogg St-13, ④ 2443471 Ext 542*, at Agastya Kund; *UBI Employees' Cooperative Credit Society, Calcutta Branch, 4th floor, 4 N C Dutta Sarani-1, ④ 2200841*, at Pandey Haweli; একই বাড়িতে *UBI Employees' Union, N S Rd Branch, 67-A, N S Bose Rd-1, ④ 2431714; Model Cooperative Credit Society Ltd, 4 Clive Row-1, ④ 2204351*, at Lahoritolla, near Viswanath Temple; *Syndicate Bank Staff Recreation Club, 3B, Lalbazar St, 2nd Floor, Cal-1, ④ 2486055* at CK-34/42 Lahoritolla; *LJC Employees' Unit, New India Cooperative Credit Society Ltd, Metropolitan Building, 7 Chowringhee Rd-13, ④ 2482779* at Pandey Haweli; *Bank of Baroda Employees' Association, Rubi House, 1st floor, 8 India Exchange Place-1, ④ 2426692*, at Bengalitolla; *SBI Employees' (Bengal Circle), 8 Old Post Office St-1, ④ 2485075* at Ahalyabai Ghat; *Canara Bank Staff Recreation Club, 2 Brabourne Rd-1, ④ 2254966*, at Gouriganj-Bhelupura; *Grindlays Bank Employees' Cooperative Credit Society Ltd, 6 Church Lane-1, at Rampura, opp Bireswar Parah Dharamshala; Andrew Yule Recreation Club, 8 Club Row-1, ④ 258210* at Godulia; *Shibpur Cooperative Bank Ltd, 173 Shibpur Rd, Howrah-711102, ④ 6602058* at D 4796 Rampura; *Reserve Bank Workers' Cooperative Credit Society, 15 N S Rd-1, 3rd floor, ④ 2208331 Ext. PDO*, at Dashaswamedh Ghat; একই বাড়িতে *RBI Supervisor Staff Cooperative Credit Society, RBI, 7th floor, ④ 2208331 Ext 167; Tata Sports Club, 43 J N Rd-71, ④ 2477051-Ext 2168* at Jangambari Math; *Bokaro Steel Employees Credit*

Society, 13 Camac St-17, ② 2478351 at Jangambari; Central Bank Employees Cooperative Society, 10 Lindsay St-87, ② 2446789; Standard Chartered Bank Recreation Club, 4 N S Rd-1, ② 2206902 at Godulia; Allahabad Bank Workers' Union, 14 India Exchange Place (2nd floor), ② 2208375-Ext 123, at Godulia; Allahabad Bank Employees' Recreation Society, 7 Red Cross Place-1, ② 2482823, at Pandey Haweli; ছাড়াও নানান।

আর আছে অজস্র ধরমশালা বারাগসীতে। গোখলিয়ায়—বীরেশ্বর পাণ্ডে ধরমশালা ② 320862, হরসুন্দরী, সিক্কে। রামপুরায়—তুলসী ধরমশালা, বেরীওয়াল্য অতিথি ভবন, শ্রীশ্রী-পুরুষোত্তম ভগবান। বুলানালায়—শ্রীকৃষ্ণ ধরমশালা, দুধবালা, শ্রীখুন কৃষ্ণী লক্ষ্মীবালা, ছোট্টোলাল কানোরিয়া। লক্ষ্মা রোডে—শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন অতিথিশালা, কারামাল সতী দেবী ধরমশালা, শ্রীঅন্নপূর্ণা তেলবালা। দশাশ্বমেধ ঘাটে—সড় উপরে, মহারান্নিয়া। কবীর টোরায়া—কানপুর। অজব্রিজ—সর্দার বলভভাই প্যাটেল স্মারক অতিথি ভবন। কালভৈরব-এর কাছে—পার্বতীয়া। ডাল-মণ্ডিতে—মুসলিম মুসাফিরখানা, জগদখা, নেপালি, ডালমিয়া অতিথি ভবন, শ্রীবিহারীলাল দিগম্বর জৈন, শ্রীমহেশ্বরী, রেওয়া-বাই, শেঠ আনন্দীরাম জয়পুরিয়া ধরমশালা ② 352674, আগরওয়াল্য, বিড়লা। লক্ষ্মণপুরায়—শ্রীতুলসীরাম লক্ষ্মীদেবী। কামাক্ষা রোডে—অন্নপূর্ণা তেলবালা, গুরুনানক গুরদ্বারা। তবুও থাকার জন্যে—বীরেশ্বর পাণ্ডে ধরমশালা, হরসুন্দরী ধরমশালা, সিক্কে ধরমশালা, অন্নপূর্ণা তেলবালা, তুলসী ধরমশালাগুলি ভালই। এছাড়া, আনন্দময়ী মার আশ্রম, শ্রীরামকৃষ্ণ মিশনের অতিথিশালা-তেও ভক্তদের থাকার ব্যবস্থা মেলে। আর আছে জৈন মন্দিরের কাছে বিদ্যাপীঠ রোড, সিগরায় ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘের অতিথিশালা বারাগসীতে।

কাশী বিশ্বনাথ মন্দির: হিন্দুদের কাছে পবিত্র তীর্থ। দশাশ্বমেধ ঘাট রেখে সামান্য এগুতেই ডানহাতি, আর গোখলিয়া বরাবর বামহাতি পথ গিয়েছে—বিশ্বনাথের গলি; সঙ্কীর্ণ গলি। গলি পথেই রয়েছেন হিন্দুর নানান দেবদেবী। পসরা সাজিয়েছেন দোকানীরা নানান পণ্যের। সামনেই মূল মন্দির—সেবতা কালোপাথরের বিশেষর। দিনভর পূজার্চনা, সন্ধ্যার আরতি দর্শনীয়।

১১ থেকে ১৭ শতকে বার বার মুসলিম হানায় বিনষ্ট হয়েছে মন্দির। সংস্কারও হয় প্রতিবার। ১৬ শতকে আকবরের রাজত্ব মন্ত্রী টোডরমলের সংস্কার করা আদি মন্দিরটি ঔরঙ্গজেব ১৭ শতকে ধ্বংস করে শ্রেষ্ঠ মন্দির অর্থাৎ মসজিদ গড়েন। আজকের মন্দিরের উত্তর-পশ্চিমে, মসজিদের পিছনে ছিল মূল মন্দির। তবে ধ্বংসাবশেষও বিনষ্ট হয়েছে ১৯৪৮-এর ভয়াবহ বন্যায়। ধ্বংসস্থলে পথ গিয়েছে বড় রাস্তা হয়ে দূরপথে। তবে, মন্দির স্থাপত্যের নানান নিদর্শন দেখতে মেলে মসজিদের ভিত ও পেছনের অংশে।

হিউ এন সাঙ-এর বিবরণীতে জানা যায়, সেকালের মন্দিরে বিগ্রহ ছিল একশ হাত উঁচু, রক্ত ছিল চামড়া। অতীত ধ্বংস হতে ১৭৬৫ ইশ্বোরে মহারানী অহল্যাবাই বর্তমান মন্দিরটি নতুন করে গড়ে তোলেন। আর

পাঞ্জাবেশ্বরী রণজিৎ সিং মন্দিরের শিখরগুলি তামার পাতে সোনা দিয়ে মুড়ে দেন ১৮৩৫এ। বিশ্বনাথ মন্দিরের মূলশিখরটিও সোনার। এর উচ্চতা ৫১ ফুট। মূল শিখরটির চারপাশ ঘিরে অনেকগুলি ছোট ছোট শিখর। ২২ মণ সোনা লেগেছিল শিখরগুলি মুড়তে। তাই গোয়েন্দা টেম্পলও বলে থাকে লোকে একে। মন্দিরের সুন্দর ঘণ্টাটি নেপালের মহারাজার দান। আর গলিপথে মন্দিরের বামে নব্বত-খানাটি ওয়ারেন হেস্টিংসের তৈরি।

জ্ঞানের কুপ জ্ঞানভাগী—পুরাণ বলে, রুদ্ররূপী ঈশান তাঁর ত্রিশূল দিয়ে খনন করেন এই কুপ। আর কুপের এক হাজার কলস জলে স্নান করান বিশ্বনাথকে। কালপাহাড় অর্থাৎ গোড়া ব্রাহ্মণ-সন্তান কালচাঁদ রায় ইসলাম ধর্মে ধর্মান্তরিত হয়ে কাশীতে আসেন মন্দির ধ্বংস করতে, তখন বিশ্বনাথ আশ্রয় নেন এই জ্ঞানভাগীতে। আর, জ্ঞানভাগীর মন্দিরটি তৈরি করান ১৮৩০এ গোয়ালিয়রের রানী বৈজা-বাই। আর আছে গলিপথেই অন্নপূর্ণা মন্দির। কার্তিক মাসের শুক্লা প্রতিপদে অন্নপূর্ণা মন্দিরে অন্নকূট উৎসবের অন্নভোগ—সেও দেখবার মতো। স্বর্ণ নির্মিত মূল দেবীমূর্তিরও দর্শন মেলে উৎসব কালে।

অন্যান্য মন্দির : শোনা যায় মন্দিরের সংখ্যা হাজার ছাড়িয়ে গেছে বারাগসীতে। এদের মধ্যে ৮ কিমি দূরে অসিতে ১৮ শতকে বাংলার মহারানী রানী ভবানীর তৈরি নাগারা শৈলীর গৈরিক রঙা দুর্গা মন্দিরটিতে বৈচিত্র্য আছে। ৫টি শিখর মিলেমিশে এক হয়েছে। অর্থ তার—পরম ব্রহ্ম লীন হয়েছে পঞ্চভূত। প্রচুর বানরের অবস্থান হেতু মাংকি টেম্পল নামেও সমধিক খ্যাত। তবে, সাবধানতা পদে পদে বানর থেকে। আর আছে কুণ্ড মন্দির লাগোয়া—রানৈ পুণ্য হয়।

অদূরে রামচরিত মানস ঐষ্টা তুলসীদাসের স্মৃতিতে ১৯৬৪তে তৈরি শিখর-ধর্মী তুলসী মানস মন্দিরটিও কাশীবাসে দর্শনীয়। মন্দিরে দেবতা—শ্রীরাম-লক্ষ্মণ-সীতা। দু'পাশে লক্ষ্মী, নারায়ণ, অন্নপূর্ণা, বিশ্বনাথ। বাসও করতেন তুলসীদাস হিন্দিতে অমরকাব্য রামচরিত মানস রচনাকালে এখানে। মৃত্যুও ঘটে এখানে তুলসীদাসের ১৬২৩-এ। ষষ্ঠ মর্মরে উৎকীর্ণ হয়েছে রামচরিত মানস অর্থাৎ হিন্দিতে রামায়ণের আটখণ্ড গৌহা। ভিতলে সচল পুতুলে রামায়ণ আখ্যান প্রদর্শিত হয়েছে। খুবই কৌতূহলোদ্দীপক। অদূরে তুলসীঘাটে রামচরিত মানস রচনা করেন তুলসীদাস। মন্দিরের দরজা সবার তরে খোলা।

বৈচিত্র্য আছে বিদ্যাপীঠ রোডের ভারত সঙ্ঘের মন্দির-এ। এটির ধারোদ্ঘাটন করেন জাতির জনক গান্ধীজী ১৯৩৬এ। দেব-দেবীর বদলে মর্মরে ভারতের রিলিফ দ্যাপ দেবতা এখানে। ব্রহ্মেশ অব্যাহ।

আর আছে, টাউন হল-এর কাছে কাশীর কোর্টাল—কালভৈরব তথা ভৈরবনাথের মন্দির, কুকুর ডার বাহন।

অদুরেই দণ্ডপাণির মন্দির ও কামরূপ। জনশ্রুতি, এই কুপের জলে নিজ মুখ দেখতে না পেলে মৃত্যু নাকি তার অনিবার্য। এছাড়া রয়েছেন গণেশ, অন্নপূর্ণা, শুক্রেস্বর, শনৈশ্বর। প্রবাদ, কাশী এলে গণেশ মন্দির—এ জানিয়ে যেতে হয় ফেরার কথা। যেমন আছেন পুরীতে সাক্ষী গোপাল। তেমনই সঙ্কটভাতা সঙ্কটমোচন রয়েছেন কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়ের কাছে। অদুরে হনুমান মন্দির।

কাশীর গঙ্গা: অতি প্রাচীন শহর বারাণসী—উত্তরবাহিনী গঙ্গার পশ্চিম পাড়ে রূপ পেয়েছে। শহরও প্রসার পেয়েছে সেতুর কাছে রাজাঘাট থেকে বিশ্ববিদ্যালয় লাগোয়া অসি ঘাটে। ঘিঞ্জি শহর, সঙ্কীর্ণ গলিপথ; গাড়ি-বোড়াও ঢুকতে অস্বস্তি কোনো কোনো গলিতে। সূর্যালোকেরও প্রবেশ মানা। তারই মাঝে ৩৬৫টি ঘাট হয়েছে কাশীর গঙ্গায়। ঘাটগুলি সেকালের রাজা-মহারাজাদের কীর্তি। দক্ষিণে হরিশ্চন্দ্র তথা মহাশ্মশানে ঘাটের শুরু আর শেষ হয়েছে উত্তরে মণিকর্ণিকায়। আর রয়েছে সারি দিয়ে বাড়ি—হেলে-দুলে, কখনও বা ঝুলে পড়ে গঙ্গার জলে স্নান সারছে যেন।

কাশীশব্দের গঙ্গার মাহাত্ম্যের কথা ভাষায় অবগনীয়। হিন্দুদের কাছে পবিত্রতার, পরিভ্রাতার প্রতীক এই গঙ্গা। বারাণসীর নবতম উৎসব গঙ্গামহোৎসব। এক কথায় বলা চলে, কাশীর গঙ্গায় স্নান করলে সর্বত্রোদয় হয়, সর্বপাপ ক্ষয় হয়। গঙ্গাতীরে তিন রাত্রি বাসে স্বর্গপ্রাপ্তি ঘটে। এক গণ্ডুখ গঙ্গাজল পানো অশ্বমেধ যজ্ঞের ফল মেলে। গঙ্গা ক্ষেত্রে দান করলে পুণ্য অর্জন হয়। আবার গঙ্গাতীরে দান গ্রহণও পাপের শাসিল।

পর্যটকদের কাছে কাশীর গঙ্গার ঘাটও আকর্ষণীয়। ৫ কিমি ব্যাপ্ত এই ঘাট সদাই ব্যস্ত। ছাড়া নিয়ে বসে আছেন পণ্ডিতের দল—জন্ম থেকে মৃত্যু নানান হিন্দু-উপচার পালিত হচ্ছে অবলীলাক্রমে। হঠাৎবাগীরাও দৃষ্টি আকর্ষণ করে তাদের শরীর চর্চায়। চলে কুস্তির কসরত, যোগব্যায়াম, প্রাণায়াম—আসর বসে কথকতার। তারই মাঝে আট থেকে অশি নানান বয়সের নারী-পুরুষ স্নান করছেন অতি নিলিপ্তভাবে। ব্রাহ্ম যজুর্বে থেকেই ব্যস্ততা শুরু হয় ঘাটের। স্নানান্তে উদিত সূর্যের প্রথম রশ্মিকে প্রণাম জানাতে আসেন শহর ভেঙে পুণ্যার্থীর দল। এদৃশ্যও বৈচিত্র্য মেলে।

তবে, ঘাটের মধ্যে অবস্থানে যেমন কেন্দ্রমণি মাহাত্ম্যও অন্যতম রেল স্টেশন থেকে ৪ কিমি দূরের দশাশ্বমেধ। কাশীর রাজা দিব্যোদাস ত্রাবার পরামর্শে রুদ্র সরোবরের তীরে দশাশ্বমেধ (যজ্ঞ) করেন। নামেরও বদল ঘটে সেই থেকে। দানের প্রত্যাশায় সারি বেঁধে বসে ভিখারির দল। ভিখারির গাউ অব অনার পেরুতেই ডাইনে দেবী শীতলার মন্দির। আর আছে দশাশ্বমেধেশ্বর ও ব্রজেশ্বর শিব মন্দির। স্নানে দশাশ্বমেধ যজ্ঞের ফল লাভ হয়।

দশাশ্বমেধের দক্ষিণে পর পর দাঁড়িয়ে প্রয়াগ ঘাট, শীতলা ঘাট, ইন্দোরের রানী অহল্যাবাই-এর তৈরি

অহল্যাবাই ঘাট, ধূলী ঘাট, দ্বারভাঙ্গা ঘাট, রানামহল ঘাট, চৌষটি ঘাট, দিগপতিয়া ঘাট, পাড়ে ঘাট, বালাজী পেশোয়ারাওয়ার তৈরি রাজ ঘাট, নারদ ঘাট, অম্বররাজ মান সিংহর তৈরি শিবের বাড়ি কৈলাস ও মানসের স্মরণে মানসরোবর ঘাট, কেশার ঘাটের শিরে কেশারনাথের মন্দির, স্নানে নানান ব্যাধি পরিরহ সোমেশ্বর (চন্দ্র) ঘাট, চৌকি ঘাট, লালী ঘাট, পুরাণ খ্যাত রাজা হরিশ্চন্দ্র-শেখা-কহিতাস্য স্মৃতিমণ্ডিত হরিশ্চন্দ্র ঘাট তথা মহাশ্মশানে দক্ষিণীবিহার শেষ। তবে, লোকালয় থেকে দূরত্ব হেতু শব আসছে কম হরিশ্চন্দ্রে।

আর দশাশ্বমেধের উত্তরে রাজেন্দ্রপ্রসাদ ঘাট, ১৬০০ খ্রিস্টাব্দে অম্বররাজ মান সিংহর তৈরি মানমন্দির ঘাট; ১৭১০এ মানমন্দির অর্থাৎ অবজারভেটরিও হয়েছিল জয়পুর-রাজ জয় সিংহর হাতে। লালুয়া ডোমের সুন্দর ইমারত, মীরা বাঈয়ের তৈরি মীরঘাট, অদুরেই বাৎসল্য প্রেমের নানান ভাস্কর্যমণ্ডিত গণ্ডপতিনাথ মন্দির—মন্দিরের চূড়োটি হয়েছে ১½ মণ সোনায়। আর আছে জলসেন ঘাট, ললিতা ঘাট, মণিকর্ণিকা ঘাট। খুবই পবিত্র আর মাহাত্ম্যে দশাশ্বমেধের পরেই মণিকর্ণিকার স্থান। প্রবাদ, শিব-জায়া পার্বতীর কুণ্ডল পড়ে এখানে। খুঁজে পেতে মাটি খোঁড়ায় রূপ নেয় কুণ্ড আর ক্লাস্ত শিবঠাকুরের ঘামই হয় কুণ্ডের জল। আর আছে কুপ ও ঘাটের মাঝে চন্দ্রপাদুকা—পাথর ফলকে বিষ্ণুর পদচিহ্ন। গণেশ মন্দিরও হয়েছে ঘাটে। শ্মশানঘাট রূপেও কাশীর অন্যতম এই মণিকর্ণিকা। ব্যস্ততা লেগে থাকে শবদাহের দিন-রাত জুড়ে মণিকর্ণিকায়।

দত্তাত্রেয় ঘাটটিও যথেষ্ট পবিত্র, পায়ের ছাপ রয়েছে মন্দিরে সাধকের। বিরাটাকার সিদ্ধিয়ার ঘাটটি ১৮৩০এ তৈরি—তবে, উত্তরকালে ভেঙে যেতে সংস্কার হয়েছে। জয়পুর মহারাজার তৈরি রাম ঘাট, উদয়পুরের রানার তৈরি রানী ঘাট, আর এক পবিত্র পঞ্চগঙ্গা ঘাট। অতীতকালে ৫টি নদী মিলেছিল গঙ্গায় এখানে। ঘাটের শিরে ১৭ শতকে বেণীমাধব রাও সিদ্ধিয়ার তৈরি বিষ্ণু মন্দির ধ্বংস করে ঔরঙ্গজেব হিন্দু ও মেগালি শৈলীতে আলমগীর মসজিদ গড়েন। মসজিদের ১৫০ ফুট উঁচু মিনার থেকে বারাণসী দেখে নেওয়া যায়। অসি ঘাটটিও আর এক পবিত্র ঘাট কাশীর। অসি নদী মিলেছে এসে গঙ্গায়। কিংবদন্তী, শুভ-নিশুভ বধের পর দুর্গার অসি পড়ে এই ঘাটেই। লাগোয়া তুলসীদাসের স্মরণে তুলসী ঘাট। জৈনরাও ঘাট গড়েছে—বেচরাজ ঘাট, ৩টি জৈন মন্দিরও হয়েছে ঘাটে। অদুরে জানকী ঘাটের কাছে বৈদ্যুতিক চুল্লীর শ্মশান। গাই ঘাট, ত্রিলোচন ঘাট, রাজ ঘাট ছাড়াও ঘাট রয়েছে আরও নানান—স্ব-স্ব মাহাত্ম্যে অনন্য এরা। তবে মাহাত্ম্যও পবিত্রতায় দশাশ্বমেধ, মণিকর্ণিকা, পঞ্চগঙ্গা, কেশার ও অসিঘাট আজও সেরা। স্নানে পুণ্য হয়। এমনকি পিতৃদানের প্রথাও আছে বারাণসীর এই পাঁচ ঘাটে।

গোধূলি বেলায় চলুন গোধূলিয়ায়—প্রদীপ দিন মা গঙ্গাকে। নৌকাবিহারেরও ব্যবস্থা আছে কাশীর গঙ্গায়। সাঁঝ-সকালে নৌকাবিহার খুবই মনোহর। উচিতও হবে ৬০/৬৫ টাকার চুক্তিতে এক ঘণ্টার সফরে নৌকায় বিহার করে ঘাট তথা কাশী শহর দেখে নেওয়া। তবে, ঘাটের ছবি তোলা মানা। শব্দবাহের ছবি নৈব নৈব চ।

কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়: ভারতীয় সংস্কৃতির পীঠস্থান কাশী। কালে কালে বহু মূনি ঋষি দার্শনিকরা কাশী এসেছেন জ্ঞান আহরণের জন্য। কেউ-বা এসেছেন শিষ্যের খোঁজে, তাঁদের কেউ-বা সমাজ সংস্কারক; কেউ-বা ধর্মগুরু। তাঁদের মধ্যে বুদ্ধ, শঙ্করাচার্য, রামানুজ, কবির, নানক, তুলসীদাস, চৈতন্য, ব্রহ্মসংঘাতী অন্যতম।

জন্ম যদিও অ্যানি বেসান্টের সেম্‌টাল হিন্দু কলেজে—তবে আজ দুর্গা মন্দির থেকে ১½ আর শহর থেকে ১১.২ কিমি দূরে ২০০০ একর জমিতে ৫ বর্গ কিমি জুড়ে গড়ে উঠেছে কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়। ভারতীয় শিক্ষা ও সংস্কৃতির প্রতি গণিত মদনমোহন মালব্যর শ্রদ্ধা ও অনুরাগ ছিল অপরিমিত। একক প্রচেষ্টায় তাঁর সেই অনুরাগ রূপ পেয়েছে আজকের কাশী বিশ্ববিদ্যালয়ে। প্রাচ্য ও পাশ্চাত্যের সমন্বয়ে জাতি-ধর্ম-বর্ণের সংকীর্ণতা থেকে মুক্ত প্রাচীন আদর্শবাদ পুনরুজ্জীবিত করার মানসে ভারতীয় ভাবধারায় ১১২টি বিষয়ে শিক্ষা দেওয়া হয় এখানে। বিশেষ করে ইনস্টিটিউট অব টেকনোলজি, এগ্রিকালচার ও মেডিক্যাল সায়েন্স-এর শিক্ষা-পদ্ধতি আজ ভারত ছাড়িয়ে বিশ্বের দৃষ্টি আকর্ষণ করেছে। প্রত্যেকটা বিষয়ের পৃথক পৃথক ভবন—সুন্দরলাল হাসপাতাল, সংস্কৃত ও আয়ুর্বেদ কলেজ, সঙ্গীত ও কলাভবন, গহিকোয়াদু লাইব্রেরি, মালব্য মন্দির, নতুন বিশ্বনাথ মন্দির ভ্রমণার্থীদের তৃপ্ত করে। ভারত কলা ভবনে মিনিয়োচার ছবি ও ভাস্কর্যের সংগ্রহ উল্লেখ্য। তেমনি হয়েছে গেট থেকে ৩০ মিনিট যেতে গণিত মালব্যর পরিকল্পনায় বিড়লা গ্রন্থপের ব্যবস্থাপনায় নতুন করে বিশ্বনাথ মন্দির—ধর্মপ্রাপ্ত মূল মন্দিরের রেকর্ডকা হয়ে। দেবতা লিঙ্গ শিব, দেওয়ালময় পুরাণ থেকে উৎকীর্ণ। মন্দিরটি সবার তরে খোলা। শহর থেকে কনডাকটেড ট্রারে বা গোধূলিয়া থেকে সার্ভিস বাস, ট্যাক্সি, টাভা বা রিকশাতেও যাওয়া চলে। অটোও যাচ্ছে শেয়ারে—লজ্জা হয়ে। নৌকায় অসি ঘাটে নেমেও কাশী বিশ্ববিদ্যালয় দেখে ফেরা যায়। রবিবার ছাড়া ১১—১৬-০০ আর মে ও জুন মাসে ৮—১২-০০টায় খোলা।

সংস্কৃত বিশ্ববিদ্যালয়: ১৭৯১এ ব্রিটিশরাজ সংস্কৃত শিক্ষার জন্য ডাড়াটে বাড়িতে কুইনস কলেজ স্থাপন করে। পরবর্তীকালে গথিক শৈলীর নতুন এই বাড়িতে উঠে আসে কলেজ। এখানকার সরস্বতী ভবন এবং বাসুদেব দর্শকদের তৃপ্ত করে। লনের অর্থনারীশ্বর মূর্তিটিও অনবদ্য।

বারাণসীর আর এক ঐতিহ্য তার সিদ্ধ ব্রোকেড—

বেনারসী। যানা হলে আজকাল বাঙালি ললনাদের বিয়েই হয় না। বেনারসী এখানকার এক ঘরোয়া শিক্ষা। এর প্রশস্তি আজ সারা দুনিয়ায়। GPO লাগোয়া উতিষের নিজস্ব বাজার Goleghar কেনাকাটার পক্ষে সুবিধার। গোধূলিয়াতেও দোকান রয়েছে নানান—দেখা যেতে পারে। তবে, কেনাকাটার দাগাল এমনকি হোটেল ম্যানেজমেন্টও পরিহার করে চলা উচিত হবে। কারণ ওদের কমিশন ২০-৩০% যোগ হবে জিনিসের দামে। তেমনি উচিত কেনাকাটার মান সম্পর্কে সচেতন থাকা। কাশীর প্যাড়া আর মালিই—এর মতোই মিষ্টি এখানকার হিন্দুহানী সঙ্গীত। ঠুংরি, তবলা, সেতার, সানাই অর্থাৎ মজলিসী গানে কাশীর খ্যাতি আছে। এমনকি বিশ্ব-বিস্তৃত সেতারবাদক রবিশঙ্কর আবাস গড়েছেন বারানসীতে।

রামনগর: দশাশ্বমেধ ঘাট থেকে নৌকায় বা গোধূলিয়া থেকে বাসে রামনগর চলুন—অটোও যাচ্ছে শেয়ারে। কনডাকটেড ট্রারের বাসও দেখিয়ে আনে ১৭.৭ কিমি দূরের রামনগর।

কাশী ভ্রমণে গঙ্গার অপর পাড়ে রামনগরে ১৭ শতকের রাজবাড়িটিও দ্রষ্টব্য। রাজবাড়ির রাজকীয় গেট—প্রহরী দাঁড়িয়ে। রাজবাড়ি তথা অস্ত্রাগার ও প্রাচীন সংগ্রহশালা দেখার জন্য ১.৫০ টাকার টিকেট লাগে। অস্ত্রের সংগ্রহও উল্লেখ্য। ১৮৭২এ B Mulchand-এর তৈরি ঘড়িটিও অতিনব। ঘড়িতে চন্দ্র ও সূর্যের অবস্থান, দিন-রাত-সময় সবই নির্ভুল মেলে আজও। আর রয়েছে রাজ-পরিবারের রূপের পালকি, হাওদা, অস্ত্রশস্ত্র ছাড়াও নানান সস্তার মিউজিয়মের অলঙ্কার হয়ে। বাসও করেন রাজ-পরিবার প্রাসাদ অংশে। দর্শনের সময় ১০—১২-০০ ও ১৪—১৭-০০টা।

রাজা জৈং সিং নির্মিত দুর্গামন্দিরটিও দেখবার মতো। সারি সারি প্যানেলে নানান মূর্তি, কোনো প্যানেল জীবজন্তুর, কোনোটা বা দেবদেবীর। মন্দিরে চতুর্ভুজা দেবী দুর্গার পূজা হয়। আশ্বিনে এক মাস ব্যাপী রামলীলা জাঁকালো উৎসব।

কাশী-রামনগর পথে পড়ে ব্যাসকাশী। আর রাজ-বাড়ির পেছনে গঙ্গার পাড়ে ব্যাসদেবের মন্দিরে অষ্টধাতুর তিনমূর্তি—মাঝে ব্যাসদেব, দু'পাশে শুকদেব ও বিশ্বনাথ। মন্দিরে ২৫০ বছরের প্রাচীন ব্যাসদেবের একটি (কল্পিত) তৈলচিত্রও আছে। প্রবাদ, ব্যাসকাশীতে মৃত্যু হলে পরজন্মে নাকি গাধা হয়।

সারনাথ

বুদ্ধ শরণ্য গচ্ছামি,
ধর্ম শরণ্য গচ্ছামি,
সম্ভব শরণ্য গচ্ছামি।

কাশী থেকে ৮ কিমি উত্তর-পূবে সারনাথ। বৌদ্ধধর্মের উদ্বেষ এই সারনাথে। লুণ্ঠনীতে জন্ম, বোধগয়ায় দিব্যজ্ঞান

লাভ (528 BC); আর সারনাথে সিদ্ধার্থ প্রথম মহাধর্মচক্র অর্থাৎ পরম শান্তি মহাজ্ঞান ও নির্বাণ প্রাপ্তির অষ্টমার্গের পথ বা বৌদ্ধধর্ম প্রচার করেন তাঁর ৫ শিষ্যের মাঝে। সেই থেকে ১২ শতক পর্যন্ত সারনাথ ছিল শিক্ষা-দীক্ষার পীঠস্থান। ১৫০০ ভিক্টর বাস ছিল সারনাথে। খ্যাতিও ছিল তার সারা বিশ্বময়। চীনা পরিব্রাজক ৫ শতকের ফা-হিয়েন ও ৭ শতকের হিউ এন সাঙ-এর বিবরণী থেকেও জানা যায় সে-আখ্যান। সেকালে নাম ছিল এর ঋষিপত্তন—ঋষিদের আশ্রম থেকেই নামকরণ। আর সারঙ্গ অর্থাৎ মুগ থেকে নাম এসেছে সারঙ্গনাথ বা সারনাথ। চরেও বেড়াচ্ছে মুগ নতুন গড়ে তোলা আশ্রম কাননে ছাওয়া মুগ উদ্যান। গোপবালা সুজাতার হাতে পায়ের গ্রহণে বুদ্ধের প্রতি রুচু হয়ে তার পাঁচ সাথী বুদ্ধকে ছেড়ে ধর্মচর্চার জন্য এখানে আসেন; বুদ্ধও আসেন তাঁদের খোঁজে। ৬০ জন শিষ্য নিয়ে রূপ পায় সংঘ। দিকে দিকে তাঁরাই গেলেন বৌদ্ধধর্মের বার্তা নিয়ে। আরও পরে অশোকের কালে গড়ে ওঠে বৌদ্ধ-বিহার। আর সারনাথের শেষ মনাস্তিটি গড়েন বারাগমীর রানী কুমারদেবী (১১১৪-৫৪)। কালে কালে বৌদ্ধধর্মের পড়ন্ত অবস্থা আর তারই মাঝে হনদের আক্রমণে প্রথম আঘাত এলেও ১১ থেকে ১৭ শতকে বার বার মুসলিম হানায় বিনষ্ট হয়ে হয়ে হারিয়ে যায় সারনাথ। ১৭৯৪ খ্রিস্টাব্দে বারাগমীর রাজা চৈত সিংহর দেওয়ান জগৎ সিংহর হারিয়ে যাওয়া সারনাথ আবিষ্কার। আর ১৮১৫ থেকে ১৯০৫এ ব্রিটিশ প্রত্নতাত্ত্বিকদের খননে নবরূপে উদ্ধাসিত হয় সারনাথ।

সারনাথে বাস থেকে নামভেঁই চোখ যায় চৌখম্বী স্থূপে। ছোট্ট পাহাড়ী টিলার মতো এক স্থূপের উপর ইটে তৈরি চারকোণা স্তম্ভ। এখানেই বুদ্ধকে অভ্যর্থনা জানান তাঁর পুরাতন ৫ সাথী। উত্তরকালে ধ্বংস পেতে বাদশাহ আকবর ১৫৮৮তে সংস্কারের সাথে স্মারক গড়েন পিতা হুমায়ুনের সারনাথ ভ্রমণকে বরণীয় করে তুলতে। আরবিতে সেকথার সাক্ষ্য মেলে এর এক দরজায়।

৪৬ মি উঁচু ধামেক স্থূপটি আজও অক্ষত অবস্থায় মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। ৫০০ খ্রিস্টাব্দের স্থূপের নিচের অংশ পাথর আর উপরের অংশ ইটে তৈরি। নিচের ব্যাস ৯৩ ফুট, মধ্যাংশ সরু—আকার তার অর্ধগোলাকার। গায়ের নকশা, ফুল, লতাগাভার কারুকার্য যদিও গুপ্ত যুগের তবে ব্যবহৃত ইট মৌর্যকালের (খ্রি পূ ২০০) বলে প্রমাণিত। জনশ্রুতি, স্থূপের মধ্যে ভগবান বুদ্ধের অস্থি রক্ষিত আছে। এরই পাশে ১৮২৪এ তৈরি জৈন মন্দির।

সম্রাট অশোকের তৈরি ধর্মরাজিক স্থূপটি গড়ে ওঠে আবিষ্কার পূর্ণিমায় বুদ্ধ তাঁর শিষ্যদের যেখানে প্রথম পাঠ দিয়েছিলেন সেই পুষ্পকুশে।

আর ছিল সম্রাট অশোকের পড়া ২০ মি উঁচু অশোক পিলার। একদিকে ব্রাহ্মী আর এক দিকে পালি ভাষায় বুদ্ধের

বাণী খোদিত। পিলার শীর্ষে অশোক চক্রের উপর ৪ সিংহ মূর্তি। তবে, ওটি দৃশ্যমান আর ৪র্থটি পিছে পড়ায় অদৃশ্য থেকে যায়। ভারত রাষ্ট্রের প্রতীক রূপে গৃহীতও হয়েছে চক্র সহ ৪ সিংহর এই মূর্তি। পিলারের নিচেও মূর্ত হয়েছে—নির্ভয়তার প্রতীক সিংহ, বুদ্ধ জননীর স্বপ্ন-হস্তী, ঘর ছেড়ে দিব্যজ্ঞানের সন্ধানে সিদ্ধার্থের বাহন অশ্ব ও বণ্ড মূর্তি। তবে, পিলারটি আজ ভগ্ন অবস্থায়, সিংহমূর্তিও মিউজিয়মে স্থান পেয়েছে।

বুদ্ধের একনাগড়ে তিনমাস ধ্যানের স্মারকরূপে গুপ্তরাজাদের গড়া মূল গন্ধকুটি বিহারের স্থলে ১৯৩১এ মহাবোধি সোসাইটি ৬১মি উঁচু মূলগন্ধকুটি বিহার গড়েছে নতুন করে। ধামেক স্থূপের কিছুটা দূরে গাছপালায় ছাওয়া বুদ্ধগয়ার ধাঁচে তৈরি। ১৯৩২-৩৬এ বিহারের দেওয়ালে বুদ্ধের জীবনগাথা সজীব করে তুলেছেন জাপানি শিল্পী Kosetsu Nosi. লাইব্রেরির সংগ্রহও উল্লেখ্য। দিব্যজ্ঞান প্রাপ্তির মূল শিপুল বুদ্ধ অর্থাৎ বোধিবৃক্ষের একটি চারা শ্রীলঙ্কার অনুরাধাপুরা থেকে এনে রোপিত হয়েছে। বৃক্ষতলে বেদীর ওপর বুদ্ধ মূর্তির সামনে—অশ্বজী, মহানামা, ভদ্রি, ওয়ালা, কোন্দানয় পাঁচ শিষ্যের মূর্তি। প্রতি বছর নভেম্বরের পূর্ণিমায় সম্মেলন বসে। দেশ-দেশান্তর থেকে আসেন ভক্তের দল।

চত্বরের বাইরে পূর্বে এগুতাই চীনা মন্দির। ১৯৩৯এ তৈরি মন্দিরে চিহ্নে বুদ্ধকাহিনী দেখে নেওয়া যায়। চীনা শৈলীর ছাপ রয়েছে, বুদ্ধ মূর্তিটিও সুন্দর। থাই, জাপান, তিব্বতীয় মনাস্তি ও বার্মিজ বিহার হয়েছে সারনাথে।

নীল আকাশের নিচে—সুন্দর সাজানো বাগিচায় বসেছে প্রত্নতাত্ত্বিক মিউজিয়াম। ৫-৬ শতকের নানান মুদ্রায় বুদ্ধ মূর্তি, ধর্মচক্রের উপর চার সিংহ ছাড়াও খননে পাওয়া মৌর্য, কুষাণ ও গুপ্তযুগের ভাস্কর্যের নানান সম্ভার দেখে নেওয়া যায়। ৯-১২ শতকের হিন্দু দেবদেবীরাও স্থান পেয়েছেন মিউজিয়মে। একটি পাথরের বাস্মও রয়েছে। জনশ্রুতি, এর মধ্যে এক সোনার পাশে বুদ্ধের দেহাবশেষ অর্থাৎ অস্থি মেলে। অস্থি গদায় বিসর্জিত হলেও সোনার পাত্রের আর হদিশ মেলেনি। শুক্র ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা।

আর আছে বৌদ্ধতীর্থ সারনাথে সারঙ্গনাথেশ্বর শিবের প্রাচীন মন্দির। সত্ত্বেশ্বর মহাদেবও বলে থাকে লোকে সারঙ্গনাথেশ্বর শিবকে।

বৈশাখ (মৈ) মাসের বুদ্ধ পূর্ণিমায় বুদ্ধের জাঁকালো জন্মোৎসবে বাড়ী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে সারনাথে। গোমুলিয়া থেকে রিকশা, টাক্সি, অটো, জিক্সি বা বাসে যাওয়া চলে; গোমুলিয়া ও লাহরীবাঁরা থেকে অটো ও টেম্পো বাহকে পেরোয়। আবার কনডাক্টর ট্রাকের বাসও দেখিয়ে আনে সারনাথ। পায়েসজোর ট্রেনও বাহকে সারনাথে। স্টেশন ভবনটিও সুন্দর।

খাকার জন্য আছে UPSTDC-র Tourist Bungalow @ 42515, D 1৫০, A-c D ২৫০ ডমিতে ৪০; *বিড়লা রেস্ট হাউস, মহাবোধি গেস্ট হাউস, ধরমশালা ও DB* আর আছে নানান ক্যাম্পটিন—আহার্য মেলে। তবে খাকার দরকার হয় না, সারনাথ সেখে বারানসী ফিরুন।

বারানসী থেকে ৭৯, যোগলসরাই-এর ৫৫ কিমি দূরে বিষ্ণুপর্বতের পূবে নভেম্বর থেকে জুন মাসে ৭৮ বর্গকিমি ব্যাপ্ত চন্দ্রপ্রভা বন্য প্রাণী স্যান্‌কুয়ারিতে সিংহ, চিতা, চিল্লার, বন্য শুয়োর, শম্বর, নীলগাই দেখে নেওয়া যায়। উৎসাহীরা Tourist Officer, Parade Kothi, Cantt, @ 42368, Varanasi বা DFO, Forest Division, Ramnagar, Varanasi, @ 2331-কে লিখুন।

তেমনই বারানসী থেকে ১৫ কিমি দূরে মির্জাপুর জেলায় আরণ্যক পরিবেশে টাণ্ডা জলপ্রপাত, ৯৩ কিমি দূরে উইনধাম জলপ্রপাত, ৮০ কিমি দূরে রাজদারি ও দেবদারি প্রপাত বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে বাসে।

অত্যাশীরা বারানসী থেকে ১১৬, যোগলসরাই থেকে ১০১ কিমি দূরে বিহারের সাসারামও বেড়িয়ে নিতে পারেন। বারানসী থেকে ৪-৩০এ আসানসোল প্যা, যোগলসরাই থেকে ৯-১৫য় বরকাকানা প্যাসেঞ্জারে ২২ঘণ্টায় সাসারাম পৌঁছে দিনভর দেখে শুনে ১৭-৪৪এর আসানসোল-বারাণসী প্যাসেঞ্জারে বারানসী ফেরা যেতে পারে। বাসও চলে এপথে। গ্রান্ড কর্ড লাইনে কলকাতা থেকে ৫৬০ আর ডেহরী অন শোন পেরিয়ে ১৯ কিমি যেতে সাসারাম। পাটনার দূরত্ব ১৪৭ কিমি। হাজার বর্গফুটের এক জলাশয়ের মাঝে আফগান স্থাপত্যশৈলীতে লাল বেলেপাথরে গড়া ৪৬ মি উঁচু গম্বুজ মাথায় সমাধি সৌধ হয়েছে ১৫৪৫এ মৃত আফগান নায়ক শের শাহ সুরীর। তবে, পদ্মফুল, ছাদ থেকে ঝুলে থাকা শিকল হিন্দু স্থাপত্যের কথা স্মরণ করায়। বিস্তার এর ২২মি—তাজের থেকেও ৪মি বড়। অষ্টকোণাকৃতি এই সমাধি সৌধ জীবদ্দশায় শের শাহরই তৈরি। শের শাহর পিতা ও পুত্রের সমাধিও এই সাসারামে। তবে, অবহেলা পরিবেশকে কলুষিত করেছে। আর রয়েছে শহরের পূবে চন্দন গীর পাহাড়ে অশোক পিলার ও মুসলিম তীর্থ চন্দন গীর দরগা সাসারামে। ১৭ কিমি দূরে ডেহরী অন শোন-এ শের শাহর তৈরি গ্রান্ড ট্রাঙ্ক রোড ও রেল ৩ কিমি দীর্ঘ সেতুতে গঙ্গা পেরুচ্ছে। ৩৮ কিমি দূরে পাহাড়ী টিলায় রোহ-তাস দুর্গ। খাকারও হোটেল আছে সাসারাম রেল স্টেশনের অদূরে, গ্রান্ড ট্রাঙ্ক রোডে Tourist L D ১২৫-২০০।

জৌনপুর : পর্যটক মানচিত্রে উল্লেখ না হলেও বারানসী থেকে ট্রেন বা বাসে ঘণ্টা দুয়েকে উচিত হবে জৌনপুর বেড়িয়ে নেওয়া। দূরত্ব—বারানসী ৫৮, এলাহাবাদ ১১৫, অযোধ্যা ১৪৪, লক্ষৌ ২৪০ কিমি। রেল সংযোগ রয়েছে প্রত্যেকের সঙ্গে জৌনপুরের। এমনকি হাওড়া-অমৃতসর, হাওড়া-দেবান্দুর, হাওড়া-জম্মু ত্রিসাপ্তাহিক হিমগিরি, শিয়ালদহ-জম্মু তাওয়াই, ফারাকা এক্সপ্রেস যাচ্ছে জৌনপুর

হয়ে। এলাহাবাদ-জৌনপুর, লক্ষৌ-জৌনপুর প্যাসেঞ্জার ট্রেনও চলেছে। খাকারও নানান ব্যবস্থা—PWD-র IB, H Gomoti, Marwari Dharanashala আছে জৌনপুরে।

১৩৬০ খ্রিস্টাব্দে ফিরোজ শাহ তুঘলকের হাতে শহরের পতন। রাজধানীও ছিল সেকালে। গোমতী নদীর উত্তর পারে পুরাতন শহরে ৩ বর্গ কিমি জুড়ে নানান হিন্দু-জৈন-বৌদ্ধ মন্দিরের ধ্বংসাবশেষের উপর গড়ে ওঠে ১৩৯৪-১৪৭৮-এ নানান মসজিদ। স্থাপত্যে হিন্দু ও মুসলিম শৈলীর সমন্বয় ঘটেছে। আর উল্লেখ্য রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে GPO-র কাছে ১৪০৮এ হিন্দু দেবী অটলা মন্দিরের উপর গড়া অটলা মসজিদ, ৫০০মি দক্ষিণে ১৩৬০এ ফিরোজ শাহর গড়া জৌনপুর দুর্গ, ১৫৬৪-৬৮র মধ্যে আকবরের গড়া আকবর ব্রিজ, সেতু থেকে ১ কিমি উত্তরে ১৪৩৮-৭৮এ গড়া বৃহত্তম জামি মসজিদ ছাড়াও নানান কিছু। শিকার্দার লোধীর ধ্বংসলীলায় মসজিদগুলি অক্ষত থাকে জৌনপুরের। আর ১৫৩০এ যোগল দখলে যায় জৌনপুর।

অযোধ্যা

অযোধ্যা মথুরা গঙ্গা কান্ধী কান্ধী অবস্থিকা।

পুরী দ্বারাবতী চৈব সঁপ্ততা মোক্ষদায়িকাঃ ॥

রামায়ণের নায়ক রামচন্দ্রের পিতা সূর্যবংশীয় (ইক্ষ্বাকু/রঘুবংশীয়) রাজা দশরথ রাজত্ব করেন মনুর সপ্ত অযোধ্যায়। ত্রৈতা যুগে বিষ্ণুর ৭ম অবতাররূপী রামচন্দ্রের জন্মও এই অযোধ্যায়। সরযু নদীর দক্ষিণ পারে সপ্তদীর্ঘের অন্যতম পুণ্য হিন্দুতীর্থ অযোধ্যা। ৪৮x৮ ক্রোশ ব্যাপ্ত অযোধ্যা নগরীর অতীত গরিমা লোপ পায় বংশ লুপ্ত হতে। গুপ্তকালে (২০০-৪০০খ্রি) বিক্রমাদিত্য অতীত পুনরুদ্ধারে ব্রতী হলেও সবই লীন হয় কালের কবলে। উত্তরকালে (১৭-১৯ শতক) অযোধ্যার নবাবেরাও ইতিহাসখ্যাত। তবে, নামান্তর ঘটে অযোধ্যা হয় আয়ুধ (Ayudh)। তবুও নানান মন্দির অযোধ্যার পথে ঘাটে।

বাস স্ট্যান্ড থেকে ১৫ কিমি দূরে সরযু নদী—হাজারো মন্দির অযোধ্যায়। ৫ কিমি দূরে বামঘাতি গলিপথে হনুমানগড়ি। বিশাল চত্বর জুড়ে দুর্গরূপী মন্দিরে দেবতা রাম-সীতা। রূপোর পাতে মোড়া দরজা। অদূরে টিকমগড়ের রাজার গড়া কনকভবন বা সোনে কা ঘরে সোনার দেবতা রাম-সীতা, বর্ণাঢ্য এই মন্দিরে দেবতা রয়েছে আরও নানান; বামদিকী আশ্রমে রামচরিত মানস; পাশেই সুমিত্রা ভবন; স্বর্ণদ্বার অর্থাৎ শ্রীরামের শেষকৃত্য স্থল; লক্ষ্মণঘাট, সীতাঘাট, সীতাদেবীর রসুইখানা, কৈকেয়ীভবন, ত্রৈতাকে ঠাকুর, আম্বরান মন্দির, জৈন মন্দির, ব্রহ্মকুণ্ড, ২ কিমি দক্ষিণে বুদ্ধের স্মৃতি বিজড়িত মণি পর্বত, কুবের পর্বত, সূর্য্য পর্বত, নাগেশ্বরনাথ শিব মন্দির পর্বতক ও তীর্থবাছী দুইয়েরই কাছে আদরণীয়।

তবুও যেন হনুমান গড়ির পিছে কিংবদন্তীতে ঘেরা রাম জন্মভূমির আকর্ষণ আজ অধিত্য। অতীতের মূল মন্দির ধ্বংস পেলেও প্রত্নতাত্ত্বিক খননে ৮৪টি থামসহ ইমারতের ধ্বংসাবশেষ মিলেছে। জন্মভূমিতে শ্রীরামের ছোট মন্দির। সকাল ৮-১০টা ঘর খোলে। সন্ধ্যা গলিপথে পুলিশের বেড়াডাল ডিঙিয়ে চলতে হয়। ৫০ মি দূরত্বে জন্মস্থান। ভারত তথা বিশ্ব জুড়ে সংবাদের শিরোনামও হয়েছে পূণ্যভূমি অযোধ্যা। রামমন্দির ও বাবরি মসজিদ বিতর্কে সারা বিশ্ব আজ উদ্বেলিত। কিংবদন্তী, শ্রীরামের জন্মস্থানে অতীতের মন্দির ভেঙে ১৫২৮এ বাবরের ফরমান বলে গড়ে ওঠে বাবরি মসজিদ। মসজিদটি রুদ্ধ, অলিঙ্গ (জন্মস্থান) পূজা হয় রাম-লক্ষ্মণ-সীতা দেবীর। নতুন করে প্রস্তুতি নেয় বিশ্ব হিন্দু পরিষদ ৫০ কোটি টাকায় শ্রীরামের জন্মভূমিটায় নবরূপে রামমন্দির গড়ার। ১৯৮৯-এর ৯ই নভেম্বর মসজিদের মুখোমুখি ২৭০ মি দূরত্বে শিলান্যাসও সম্পন্ন হয়েছে রাম মন্দিরের। মন্দির গড়তে ক্ষতির আশঙ্কায় আনালতের দ্বারস্থ হন বাবরি মসজিদ অ্যাকশন কমিটি। নানান ঘটনায় ঘনঘটায় অবশেষে ১৯৯০-এর ৩০শে অক্টোবর করসেবায় মন্দির গড়তে অংশ নেয় বিশ্ব হিন্দু পরিষদ। ভারত জুড়ে শ্রীরাম রথযাত্রার ঐতিহাসিক মিছিলের গতিরোধ হয় বিহার রাষ্ট্রে শান্তি শৃঙ্খলাজনিত কারণে। সরকার প্রতিরোধ গড়ে তোলে। আলোচনা ওঠে ভারত রাষ্ট্রের সংসদ ভবনে। পতন ঘটতে পি সিংহের নেতৃত্বাধীন ভারত সরকারের। সাময়িকভাবে স্তিমিত হলেও গবেষণা চলছে আজও শান্তি ও সস্ত্রীতি বজায় রেখে মন্দির-মসজিদ বিতর্কের সমাধান খুঁজে পেতে। তবে, ৬ই ডিসেম্বর ১৯৯২এ বিশ্ব হিন্দু পরিষদের করসেবকদের করে ধূলিসাৎ হয়েছে মন্দির-মসজিদের অতীত সৌধ। পরিণতি রূপে রক্তক্ষাতি হয় সারা বিশ্ব। প্রস্তাব উঠেছে— হিতাবস্থা বজায় রেখে নতুন করে মন্দির ও মসজিদ গড়ার। ৬৭ একর জমি অধিগৃহীত হয়েছে বিতর্ক এড়িয়ে মন্দির ও মসজিদ গড়ার জন্য। বিতর্কিত ২.৭৭ একর জমির দখল পেতে ধর্মনিরপেক্ষতার ঐতিহ্য বহাল রাখতে হিতাবস্থা বজায় রেখে আইনের মাধ্যমে সমাধান পেতে রায় মিলেছে (২০.১০.৯৪) সুপ্রীম কোর্টের। রামলালার মন্দির গড়ার মানসে অরাজনৈতিক সভ্যদের নিয়ে ন্যাসও গঠিত হয়েছে। আর হচ্ছে রাম-কি-পিমারীঘাট সরযুতে—যেখানে শেবকৃত্য সম্পন্ন হয় শ্রীরামের। স্নানেও পুণি মেলে সরযুর জলে। এরই দক্ষিণ-পশ্চিমে সঙ্কল্পঘাটে স্নান করছেন লক্ষ্মণ। আর আছে অজব লালমুখো হনুমান সারা অযোধ্যায়। তবে, রোব নৈই যাত্রীর প্রতি এদের। মার্চ-এপ্রিলে রামনবমীর জাঁকালো উৎসবে মেলা বসে অযোধ্যায়। আবার নৌদ্ব ও জৈন তীর্থরূপেও সমধিক খ্যাতি আছে অযোধ্যায়। নামও ছিল সাক্ষেত বৌদ্ধরূপে অযোধ্যায়। কথিত আছে, ১৪টি গ্রীষ্ম কাটান বুদ্ধ অযোধ্যায়। ৫ জন জৈন তীর্থঙ্করের জন্মও এই অযোধ্যাপুরীতে।



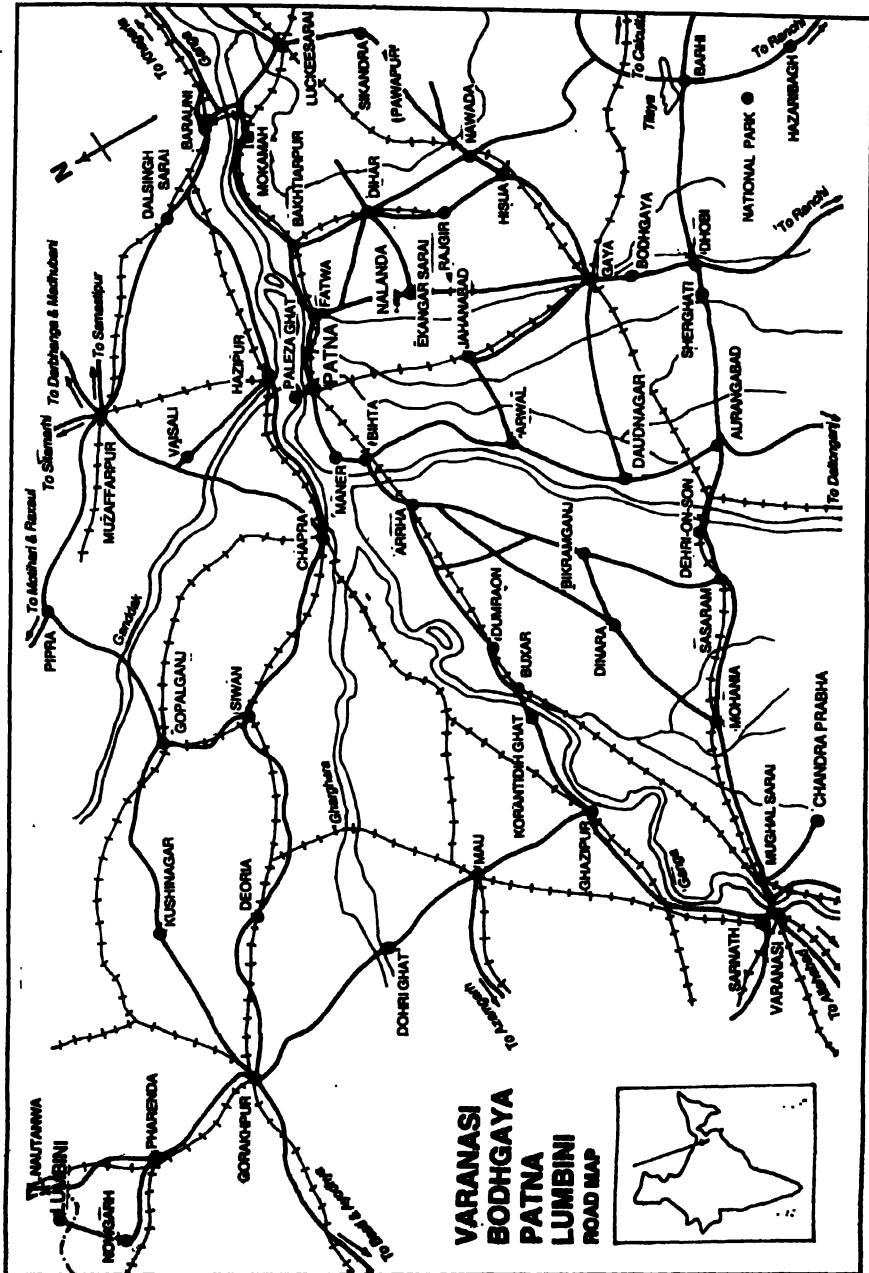
যোগসরাই/বারাণসী-লক্ষৌ-ফৈজাবাদ ব্রডগেজ লুপ রেলপথে অযোধ্যা। বারাণসী থেকে ২১৬ কিমি, লক্ষৌর দূরত্ব ১৩৪ আর ফৈজাবাদ ৭ কিমি মাত্র। নিয়মিত রেল ও বাস সংযোগ গড়েছে ত্রীীর সঙ্গে অযোধ্যার। বাস আসছে কানপুর ২২৮, এলাহাবাদ ১৭৫, গোরকপুর ১৩২, ারাবস্তী ১৩৯, দিল্লী ৬৪৩ কিমি ছাড়াও উত্তর ভারতের নিবিড়ক থেকে NH-28-এর অযোধ্যাপুরীতে। ১ কিমির ব্যবধানে বাস স্ট্যান্ড ও রেল স্টেশনের অবস্থান অযোধ্যায়। কলকাতা থেকে দিয়াপদহ-জম্মু এন্ড, হাওড়া-দেহাদুন দুই এন্ড, বারাণসী/অযোধ্যা (৬-১৭/১৫-৩২এ পৌছে) লক্ষৌ হয়ে যাচ্ছে। সবরমতী, শতক এন্ড, বারাণসী-লক্ষৌ প্যা, বারাণসী-বেরিলি এন্ড, মজ্জেরপুর-দিল্লী সদতাবনা এন্ড, ফারাকা এন্ড, তাপ্তি-গঙ্গা, সরযু-যমুনা, গঙ্গা-যমুনাও যাচ্ছে বারাণসী থেকে অযোধ্যা হয়ে লক্ষৌ-এ। পায়ে পায়ে বা অটোম বা রিকশায় সাদ করুন অযোধ্যা দর্শন।

| Gorakhpur-Ayodhya-Lucknow | | | |
|---------------------------|---------------|--------|--|
| 0 Km | Gorakhpur | | |
| 5 " | Road Jn | | |
| | To Varanasi | 207 km | |
| 66 " | Basti Jn | | |
| | To Sravasti | 144 km | |
| | " Lumbini | 98 km | |
| 71 " | Basti Town | | |
| 96 " | Hariya | | |
| 126 " | Katragundu | | |
| 120 " | River Saraju | | |
| 132 " | Ayodhya | | |
| 139 " | Fyzabad | | |
| 171 " | Mohammadpur | | |
| 239 " | Barabanki | | |
| | To Rumnagar | 27 km | |
| | " Balarnampur | 126 km | |
| 266 " | Lucknow | | |



রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই ডানহাতি UR Tourism-এর Pathik Niwas Saket, ৩ 71038, DAB ৫০০ ৮৫০ ১১০০ Hut ৮২৫; আহারও মেলে ক্যান্টিনে। অব্: Tourist Officer, Ayodhya. বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে Birla Dharamshala, ৬০-১০০ টাকায় বাথ সংলগ্ন ঘর, থাকার পক্ষে ভালই। আর আছে মানস ডবন, কনক ডবন, ওজরাট ডবন, জানকী মহল, জৈন, বাগিকী ডবন, চমনলাল, রামপেও, চন্দ্রেশ্বর, শ্যামসুন্দর ছাড়াও নানান ধর্মশালা; Chandra Bhawan GH, রেলের রিটারারিং রুম-ও আছে সাক্ষেতের পক্ষে অযোধ্যায়।

ফৈজাবাদ : অযোধ্যা ভ্রমণার্থীদের একান্তই উচিত হবে ৭ কিমি দূরে অযোধ্যা নবাবদের প্রথম রাজধানী আজকের জেলাসদর ফৈজাবাদ বেড়িয়ে নেওয়া। ঘর্ষরা নদীর দুই শাখায় ঘেরা ক্যান্টনমেন্ট নগরী ফৈজাবাদ। তৃতীয় নবাব Shuja-ud-Daula বাহ নেগমকে সিংহাসনে বসান। আর বাহ বেগমের মৃত্যুর পর নবাবীগৌরব স্নান হয়েপড়ে ফৈজাবাদে। ৪র্থ নবাব Asaf-ud-Daula ফৈজাবাদ ছেড়ে লক্ষৌ গেলে



রাজ্যপাট নিয়ে। শেরারে ট্যাক্সি, মুম্বাই বাস ও টেম্পো যাচ্ছে অমোঘা থেকে ফৈজাবাদে। বাস থেকে ২ কিমি দূরের ক্যাটে ১৪ই ফেব্রুয়ারি ১৯৬৫তে দ্বারোদঘাটিত ডোগরা রেজিমেন্টের মন্দিরে দেবতা রাম-সীতা। এছাড়াও দেবতা রয়েছেন ডাইনে— গায়ত্রীমাতা, রাধা-কৃষ্ণ; বামে—দুর্গা ও লক্ষ্মী-নারায়ণ। অষ্টধাতুর শিব-পরিবার, মহিষাসুর-মর্দিনীও রয়েছেন মন্দিরে। মন্দিরটি সুন্দর। মন্দির থেকে ১ কিমি দূরে ঘর্ষরা নদীতে গুপ্তার ঘাট—পরিবেশ রমণীয়। ঘাটের পাড়ে ৩০০ বছরের প্রাচীন মন্দিরে দেবতা রাম-সীতা। পথেই পড়ে পঞ্চমুখী উদ্যান। ফৈজাবাদের অন্যতম আকর্ষণ তার মকবারা। বাস স্ট্যান্ড থেকে ২ কিমি দূরে নবাব সূজাউদ্দৌলার তৈরি মকবারাটির স্থাপত্য ও বিশালত্ব অনবদ্য। শায়িত রয়েছেন বাঘ বেগম মকবারার। মকবারা থেকে ১ কিমি দূরে গোলাপবাড়ি। গোলাপবাড়িতে শায়িত রয়েছেন নবাব সূজাউদ্দৌলা— রঙবেরঙের হাজারো গোলাপ গাছ, মনোরম বাগিচার মাঝে মকবারা। চক এলাকার মসজিদ ৩টিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। তবে, প্রচারের অভাবে পর্যটন মানচিত্রে উপেক্ষিত ফৈজাবাদ।



থাকারও নানান ব্যবস্থা—রেলের রিটায়ারিং রুম; বাস স্ট্যান্ডের কাছে Tirupati H, H Amber, H Shuny Avadh, H Abgha, H Priya, ছাড়াও হোটেল আছে নানান ফৈজাবাদে। এদের কাছে D ১০০-১৭৫ A/C D ২৫০-৩৭৫ মেলে। ট্রেন ও বাসেরও আধিক্য মেলে ফৈজাবাদ থেকে উত্তর ভারতের নানান দিকের। বাস যাচ্ছে লক্ষ্ণৌ, গোরক্ষপুর, বারাণসী ও ঘট্টায়, এলাহাবাদ ৪ ঘণ্টায় ফৈজাবাদ থেকে। সোনালিলিরও সরাসরি বাস মেলে প্রত্যহলে।

নৈমিষারণ্য ও মিশ্রিখ

গোমতী নদীর তীরে অতি প্রাচীন তীর্থ। ব্রহ্মা দিব্যচক্রের জ্ঞান দান করেন তীসাপুর জেলার নৈমিষারণ্যে। ষাট সহস্র ঋষির তপোবন—সাধু-সন্তের বাস। পুরাণ বলে গৌরমুখ মুনী নিমেষে অসুর ভস্মীভূত করেন—সেই থেকে নাম হয়েছে নৈমিষারণ্য। গোমতীর জলে স্নানে পূণ্য হয়। বেদ-ব্যাসের মহাভারতও রচিত হয় নৈমিষারণ্যে বসে। আর আছে ব্যাস গদি, শুক গদি, হনুমান গদি, ললিতাদেবীর মন্দির ও আনন্দময়ী মার আশ্রমের পাশে কুপ নৈমিষারণ্যে। লোকশ্রুতি, পাণ্ডবদের তৈরি কুপ এটি। ৯ কিমি দূরের মিশ্রিখে আছে দধীচী কুণ্ড। প্রবাদ, দেবরাজ ইন্দ্রের অনুরোধে মহর্ষি দধীচী কুণ্ডের জলে স্নান সেরে দেহত্যাগ করে নিজ অস্থি সেন ইন্দ্রকে বজ্র গড়ে ব্রহ্মাসুরকে বধ করতে। বাস যাচ্ছে।

থাকারও নানান ব্যবস্থা—Tourist Bungalow, PWD ও Irrigation থালাসো; সাধারণ হোটেল ও ধর্মশালা আছে নৈমিষারণ্যে।

লক্ষ্ণৌ থেকে উত্তর রেল ৮৯ কিমি দূরে সীতাপুর। সীতাপুর-বালামৌ ব্রডগেজ শাখা রেলো নৈমিষারণ্য। সীতাপুর ক্যান্ট থেকে

১১-০০, ১৭-৫০এ ১ঃ ঘণ্টায় ট্রেন যাচ্ছে ৩৯ কিমি দূরে নৈমিষারণ্যে। লক্ষ্ণৌ থেকে দিনে দিনে ট্রেন, বাস বা ট্যাক্সিতে বেড়িয়েও ফেরা যায় সীতাপুর হয়ে। দিল্লী-গোথা এক্স যাচ্ছে সীতাপুর ক্যান্ট হয়ে।

হরিদ্বার



হাওড়া থেকে ২০-১৫য় ৩০০৭ দূর এক্সে পথে পড়ে হরিদ্বার। একটা সকাল ট্রেনে কাটিয়ে দ্বিতীয় সকাল ৫-০০টায় হরিদ্বার পৌঁছান। আসানসোল/খানবাদ/বারাণসী/লক্ষ্ণৌ/বেরিলি/মোরাদাবাদ হয়ে দূর যাচ্ছে। হাওড়া থেকে দূরত্ব ১৪৭২ কিমি, হরিদ্বার থেকে দেবাদুন আরও ৫২ কিমি। আবার হাওড়া-জম্মু/অমৃতসর রেলপথের লক্ষ্মারে নেমেও ২৮ কিমি দূরে হরিদ্বার যাওয়া চলে শাখা রেল বা বাসে। লক্ষ্মার থেকে ট্রেন যাচ্ছে ১-৩৫, ৪-৩০, ৫-১৫, ৫-৫০, ৮-২০, ১১-০৫, ১৩-৩০, ১৬-৪৫, ২০-০০টায় হরিদ্বারের। রেল যাচ্ছে আশালা, পাঠানকোট, জম্মু, অমৃতসরেও লক্ষ্মার হয়ে। আর ৮-৫৫য় বারাণসী ছেড়ে পরদিন ৬-২৫এ হরিদ্বার পৌঁছে দেবাদুন যাচ্ছে ৪২৬৫ বারাণসী-দেবাদুন এক্স; মুম্বাই সেম্বাল থেকে আসা দেবাদুন এক্স ৬-২৫এ নিউ দিল্লী, ৭-৪০এ দিল্লী জং ছেড়ে হরিদ্বার আসছে ১৪-৩৫এ; ১৩-০৫এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ১৬-৫০এ হরিদ্বার পৌঁছে ১৮-৩০এ দেবাদুন যাচ্ছে উজ্জয়িন-দেবাদুন এক্স, সোম ও শুক্রবার নতুন দিল্লী থেকেই ছাড়ছে উজ্জয়িন এক্স। আর দিল্লী জং থেকে ২২-২০এ ছেড়ে পরদিন ৫-১০এ হরিদ্বার পৌঁছে ৭-৪৫এ দেবাদুন যাচ্ছে ৪০৪। মুসৌরী এক্স। দেবাদুন-আলিগড়-এলাহাবাদ লিঙ্ক ৪১১৪ সঙ্গম এক্সও যাচ্ছে হরিদ্বার হয়ে। আর বৃহস্পতিবার ছাড়া প্রতিদিন ৭-১০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ৯-৪৫এ সাহরানপুর, ১১-০৯এ হরিদ্বার পৌঁছে ১২-২৫এ দেবাদুন যাচ্ছে ২০১৭ শতাব্দী এক্স; শতাব্দী ফেরে ১৭-০০টায় দেবাদুন, ১৮-০৪এ হরিদ্বার ছেড়ে ২২-২০এ নতুন দিল্লী।



আর বাস যাচ্ছে উত্তর ভারতের দিকে দিকে হরিদ্বার থেকে। UPSRTC ছাড়াও নানান প্রতিবেশী রাজ্যের ডিলাক্স, সেমি ডিলাক্স ও সাধারণ যাত্রী বাস সার্ভিস গড়েছে হরিদ্বার থেকে সারা উত্তর ভারতের। বাস যাচ্ছে মুম্বাই ৫-৩০ থেকে ২৩-৪৫এ ৫ ঘণ্টায় ২০৩ কিমি দূরে দিল্লীর কান্দীরি গেট হরিদ্বার থেকে; ৩৬৮ কিমি দূরে আগ্রা যাচ্ছে ১০ ঘণ্টায় ৫-৩০, ৬-৩০, ৭-৩০, ১৬-৩০, ১৮-৩০, ১৯-৩০, ২১-০০; ৩৫৮ কিমি দূরে মথুরা যাচ্ছে ৫-৩০, ৬-৩০, ৮-৩০, ২২-০০, প্রাইভেট ডিলাক্সও যাচ্ছে রাতে; বৃন্দাবন যাচ্ছে ২২-০০টায়; ২১০ কিমি দূরে আশালা যাচ্ছে ৬-০০, ৮-০০, ৯-১৫, ১১-০০, ১২-৫০, ২২-৫০; ৩৬৫ কিমি দূরে সিমলা যাচ্ছে ৬-০০, ৮-০০, ৯-১৫, ২২-৫০; ২৩৬ কিমি দূরে চণ্ডীগড় যাচ্ছে ৬-৫০, ৭-৪৫, ৮-৪০, ১১-৩০, ১২-৪০; মানালি যাচ্ছে ৪-০০টায়; পাঠানকোট যাচ্ছে ৫-৩০, ১০-৩০, ১৭-০০, ২০-৩০; কুশু ১৬-০০টায়, ধর্মশালা ৩-৩০; ৩৩৭ কিমি দূরে হালদুয়ানি যাচ্ছে ৯-০০, ১১-০০, ১৮-০০; ২৯৯ কিমি দূরে নৈনিতাল যাচ্ছে ৫-৩০, ৬-৩০, ৯-১৫, ১৮-৩০; গোয়ালিন্দর যাচ্ছে ৭-৩০; জয়পুর যাচ্ছে ৮-৩০, ১২-০০, ১৪-০০, ১৫-০০, ১৭-৩০; এছাড়াও বাস যাচ্ছে উত্তর ভারতের দিকে দিকে হরিদ্বার থেকে। বাস যাচ্ছে UPSRTC, DTC, হিমাচল, হুজুহান, পঞ্জাব ও

হরিদ্বার রাষ্ট্রীয় পরিবহণের। তবে, বেশির ভাগ বাস হৃদ্বীকেশ থেকে রওদানা হয়ে আসে। এ-ছাড়া বাস ও শেয়ার ট্যাক্সি যাচ্ছে সেরাদুন ৫২, মুসৌরী ৮৯ ও ২৪ কিমি দূরের হৃদ্বীকেশ হরিদ্বার থেকে। আর, GMVN-এর বাস মরসুমে (মে-অক্টোবর মাস) যাচ্ছে ১২৩ টাকায় বদরীনাথ, বদরী থেকে গৌরীকুণ্ড ৯২, গৌরীকুণ্ড থেকে হরিদ্বার ৯৫ টাকায়। নিকটতম প্রাইভেট বিমান Jagan-এর দিল্লী-সেরাদুন সংযোগকারী ৪২ কিমি দূরের Jolly Grant রেল ও বাস দুইয়েরই অবস্থান মুখোমুখি হরিদ্বারে। টুরিস্ট অফিস সামান্য উত্তরে রেল ও বাস থেকে। শহরে চলছে রিকশা, অটো, টাভা ও ট্যাক্সি।



ধরমশালা শহর হরিদ্বার। পাঁচ শতাধিক ধরমশালা আছে হরিদ্বারে। তবে, নামেই এগুলি ধরমশালা! আসলে হোটেল ব্যবসা চলছে ফুলে-ফেঁপে।

এমনকি রিকশার সঙ্গে কমিশন প্রদানের চল আছে এদের কারও কারও। রেল স্টেশন থেকে হর-কি প্যারীর মধ্যে বিস্তার এদের। ঘরে বসে গঙ্গার গোড়া দেখতে চাইলে ৮-১০ টাকায় রিকশায় হর-কি প্যারী যাটের যে-কোনও হোটলে পৌঁছে যান। টেম্পোও যাচ্ছে ৫ হারে শেয়ারে। ৮৫ থেকে ২২৫ টাকায় প্রশস্ত ঘরও মেলে। তবে যাত্রী সমাগমের উপর এদের রেটে হেরফের ঘটে। বিশেষ করে মে, জুন, অক্টোবরে রোট এদের লাগান ছাড়া। হরিদ্বার নিরামিবাণী। খাবারের জন্য বিষ্ণুঘাটে—দাদা-বৌদির হোটেল, বাঙালিসের কাছে অধিক প্রিয়। আর আছে টুরিস্ট অফিসের অদূরে চিটওয়াল হোটেল, খালি মিলের সাথে চীনা ও দক্ষিণী আহার্য মেলে। অদূরে হোটেল শিবলিক—এদেরও আহ্বারে যথেষ্ট সুনাম। এছাড়াও হোটেল ও রেস্তোরাঁ আছে হরিদ্বারে যত্রতত্র। হরিদ্বারের আর এক বিশেষত্ব বাঙালি যাত্রী আকর্ষণে বাংলা হরকে সান্নিধ্যবোধ।

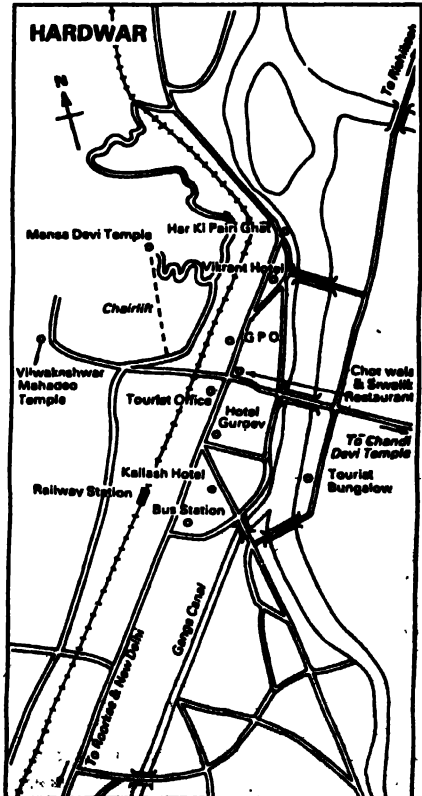
খাকার জন্য নানান ধরমশালা হরিদ্বারে। অবস্থান মাহাঘাটে বিষ্ণুঘাটে ভোলা গিরি আশ্রম-এ বাঙালির অনাগোনা ঘটে চলছে নানান যাত্রীর মনে কোভও নানান। ৫-৭ জন থাকার যায় এমন ঘর বাথ সংলগ্ন ৭১ কমন বাথ ৩৯; লাগোয়া গলিপথে শ্রীবহাবলপুর ভবন, পাশেই গণেশ ভবন—দুইয়েরই ব্যবস্থাপনা ভাল, এদের ঘর ৫০/৩০। রামঘাটে—জয়পুরিয়া গেস্ট হাউস-এ প্রতিজনা ৪০। বিপরীতে আনন্দীরাম; বাস স্ট্যান্ড ও রেল স্টেশনের কাছে দেওপুরায় ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘ; কনখল রোডে শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন; Main Rd-এ কালী কমলি; টুরিস্ট অফিসের বিপরীতে Lattaroa Bridge-এ গুজরানওয়ালা, বিষ্ণুভবন, মূলতান, চিত্রামণি, পরমানন্দ নিকেতন, সিক্তি পঞ্চায়েত—এদের ব্যবস্থাপনা ভালই। এছাড়া বিভূলা গেস্ট হাউস, মাতাজীরা বাড়ি, কলকাতা, আর্থ-সমাজ মন্দির, সেবা সমিতি, মাদ্রাজী, অমৃতসর-ওয়াসি, লক্টোওয়াসি, গঙ্গা নিলম, বিকানীর, গীতা ভবন, গোরক্ষনাথ মন্দির গেস্ট হাউস, শঙ্করচাঁদ, বাসন্তী দেবী, সুরবমল, মিত্র, গোয়েল, ডাউণ্ডওয়াসি ছাড়াও ধরমশালা রয়েছে আরও নানান হরিদ্বারে।

হোটেলও আছে নানান বিভিন্ন মানের বিবিধ দামের Hardwar, STD-0133৫। মে-জুন ও অক্টোবরে মরসুম এসে। রেটও তখন লাগান ছাড়া। বিষ্ণুঘাটে—H Sona, ৩ 426340, DAB ১২০-২০০; বিপরীতে Ganga Lahari, D ২০০ থেকে; H Raj, ৩ 427639, DAB ২০০-২৭৫; H Vikrant, ৩ 425532, DAB ৩০০, কল বুকিং: Diamond ৩ 276714;

প্রথম সঙ্গী: ৯৭-৯৮/৪৬

H Ahuja; H Raj Deluxe, Balla Rd, DAB ১৭৫-৩৫০। H Suriya, Barabazar, DAB ২০০। হরি-কি-পাড়ারী ঘাটে—New Royal H, ৩ 426315, DAB ১৫০-২২৫; H Alka, ৩ 427444, DAB ৩০০, TAB ৪২৫ A-c D ৪৫০, T ৫০০; H Teerth, ৩ 427111, A-c D ৩০০-৮৫০ A/c D ৯৫০; L Gyan Niketan, ৩ 425348, DAB ২৭৫-৪৫০, TAB ৩৫০-৬৫০, FAB ৫০০-৮৫০ A-c D ৪৫০-৬৫০; H Bharti, DCB ১৫০, DAB ১৭৫-৩২৫; H Shantiniketan, S ১২৫ D ১৭৫; থাকার পক্ষে ভালই H Mansarovar International, Upper Rd, ৩ 426501, DAB ৪৫০-৬৫০ A/c D ৮৫০, আহাৰ্যেও সুনাম যথেষ্ট, কল বুকিং: Dimond ৩ 276714; Mayur H, Upper Rd, D ২০০-৩২৫; Sankar Niwas H, Upper Rd, S ১০০, D ১৭৫, T ২৫০। হরি-কি-পাড়ারীর ডাইনে H Ganga Darshan; Brij L, ৩ 426872, DCB ১২০-১৫০, DAB ১৭৫-৩৫০।

রেল স্টেশনের বিপরীতে স্টেশন রোডে—H Bhaskar Yatri Niwas, ৩ 427837, DAB ২৫০ A-c D ৪০০, A/c D



৬০০ ডর্মি বেড ৬০; H Kailash, 427789, A-c D ৪০০ A/c D ৬০০; H Gurdev, ৩ 427101, DAB ২৫০ A-c D ৩০০ A/c D ৫৫০; ভানহাতি পলিগে H Samrat, Sadhubela Rd, ৩ 427380, DAB ২০০ ৩০০ A-c ৫০০ ৭০০, কল মুকি: Diamond ৩ 276714; বর ঘরে একই পথে Deep H, ৩ 427609, SCB ৬৫ SAB ৮৫ DCB ১২৫ DAB ১৭৫ ডর্মি বেড ৪৫; H Arti, D ২৫০-৪০০; H Gangotri, H Himalaya, H Shiva, DAB ২০০-২৭৫; H Mid Town, ৩ 427507, DAB ৫৫০ A/c D ৭৫০; শ্রাবণঘাটে—Ananda Niwas H, D ২২৫ সুইট ৩৫০-৫২৫; H Holiday Inn, ৩ 426037, S ১৫০ D ২৭৫ A-c S ৩০০ D ৪০০ A/c S ৫০০ D ৬৫০।

এছাড়াও হোটেল আছে H Earth, Subhash Ghat, ৩ 427092, DAB ৪৫০ A-c D ৬০০ A/c D ৭৫০ সুইট ৮৫০; H Darshan, Sabji Mandi, ৩ 425276, DAB ২০০ A-c D ৩৫০; Jain G H, near Vishnu Ghat, D ১৭৫-২৫০; Vishnu H, Vishnu Ghat, D ১৫০-২২৫; Purohit H, Siddhartha L, Golden H, Sin Rd, DAB ১৫০; H Pankana, DAB ১৭৫-২৫০ A-c D ৩৫০; Bansal G H, Ram Ghat, ৩ 426172, D ১৫০ T ২০০ F ২৫০; Sahni H, D ২০০-২৭৫; H Ashok, SAB ১০০ DCB ১৫০ DAB ২০০ A-c S ২৫০ D ৩২৫; H Ganges, SAB ৮৫ DAB ১৫০; Kalka H, Ajanta L, Abtar L, Vijay Luxmi L, Vikash H, Subidha L, Surprize H, Shiv Bishram G H, Sree Ram L, Sreenivas L, Tej H, Kamishkha H, Gagan Deep, Prakash H, Devlok, Dipak L, Himalaya H, Hari Niwas, Hans Niwas, Naturaj H, Umesh L, Yatri Niwas, এসের কাছে S ৬০-১৫০ D ১০০-২৫০ টাকায় মেলে। প্রাইভেট বাড়িতেও সাময়িকভাবে ঘর ভাড়া নিয়ে থাকা যায় হরিদ্বারে।

আর আছে রেল স্টেশন থেকে ২, হরি-কি-পাউরী থেকে ১ কিমি দূরে UPTDC-র Tourist Bungalow, Belwala, ৩ 426379, A-c D ৪৫০ A/c D ১০০ FAB ৫০০ ডর্মি বেড ৫০, নভেম্বর থেকে মার্চ রিবেট মেলে। শহরের ভিত্তাড়া এড়িয়ে গঙ্গার অপর পারে সুন্দর পরিবেশে থাকার পক্ষে মনোরম। রেল স্টেশন ও বাস স্ট্যান্ডের সন্নিকটে Rahi Motel, Railway Rd, ৩ 426430, A-c D ৩০০ A/c ৫৫০ সুইট ৭৫০ হরেছে এসের। Zilla Parishad IH, near Bus Std, ৩টি Canal IH, PWD IH, FRH, রেলের সিটিয়ারি কম-ও আছে হরিদ্বারে।



হরিদ্বারে ফ্রিক পুড়ে নানান বনিক্রিক সংস্থা হরিদ্বারে। Canara Bank Staff Recreation Club, 2 Brabourne Rd-1, ৩ 2254966 at Hotel Apna, Sabji Mandi; UBI Employees Cooperative, 4 N C Dutta Sarani-1, 4th floor, ৩ 2200841 at Luxmi Niwas, Sabji Mandi; Standard Chartered Bank Recreation Club, N S Rd-1, ৩ 2206902; Syndicate Bank Staff Recreation Club, 3-B, Lalbazar St-1, 2nd floor, ৩ 2486055 at Hotel Mayur, Upper Rd; Tata Sports Club, 43 J N Rd-71, ৩ 2477051 Ext 2168 at Sadhubela.

সিবিএল পাছফের পানপানে সাধারণপুর জেলায় ২২২.৭ মি উচ্চতর হরি-দ্বার অর্থাৎ হরিদ্বার বা হরিদ্বার—ভারতের সর্বপূরী অন্যতম; পবিত্র হিন্দুধর্ম। পুরানো

উন্নীত হয়েছে মায়াপুরী নামে। তারও আগে কপিলান্থান নাম ছিল হরিদ্বারের। গঙ্গাই হরিদ্বারের মূল আকর্ষণ। অতীতে নামও ছিল এর গঙ্গাদ্বার অর্থাৎ গঙ্গার দরজা। পাহাড় থেকে গঙ্গা নামছে সমতলে হরিদ্বারের হরি-কি-পাউরী ঘাটে। নানো পুণ্য মেলে। আদি গঙ্গার প্রবাহও বদল হয়েছে। ভীমগোদায় বাঁধ দিয়ে কৃত্রিম স্রোত তৈরি করা হয়েছে দৃষ্টি-নন্দন হরি-কি-পাউরী বরাবর ৩ কিমি ধরে যা আগন্তুকদের বিশেষভাবে তৃপ্ত করে। মন্দির হয়েছে গঙ্গার। এছাড়াও দেবতার রয়েছেন আরও নানান। এমনকি বিষ্ণুরও পদচিহ্ন অর্থাৎ হরি-কি-পাউরী রয়েছে ঘাটে। কিংবদন্তী, বৈশাখ মাসের ১৩ তারিখে জন্মগ্রহণ করেছিলেন অমৃত পড়ে হরি-কি-পাউরীর ব্রহ্মা কুন্ডে। এই বিশেষ দিনে নানো পুণ্যের সাথে স্বর্গবাসের পারমিট মেলে। কুশবর্ষ ঘাটে পিতৃদানে আত্মার মোক্ষপ্রাপ্তি ঘটে। জনশ্রুতি, মুনি দত্তাশ্রয় এখানে হাজার বছর ধরে এক পায়ে দাঁড়িয়ে তপস্যা করেন। তেমনই বিষ্ণুর তপস্যামূল বিষ্ণুঘাটেও আর এক পুণ্যতোয়া। ১২ বছর অন্তর কুন্ডমেলো বসে হরিদ্বারে; আর ৬ বছর অন্তর বসে অর্ধ কুন্ড। আগামী মহা কুন্ডের পুণ্য স্নান ফেব্রুয়ারির ১, ১১, ২৫; মার্চের ২৮; এপ্রিলের ৫, ১১, ১৩, ১৪ (মহা কুন্ড), ২৬, ২৯; মে ১৪, ১৯৯৮এ। ১৯৮৬র কুন্ডে ব্যাপক নিরাপত্তা সত্ত্বেও এক অবশ্যে ৫০ যাত্রী পদদলিত, ১২-রও অধিক জলমগ্ন হয়ে মৃত্যু ঘটে হরিদ্বারে। আবার হর অর্থাৎ মহাশয়ের মহিমারও অস্ত নেই সারা গাড়েয়াল হিমালয়ে। সে কারণে হর-দ্বারও বলেন নানান জনে হরিদ্বারকে।

পূর্বে চণ্ডী পাহাড়, পশ্চিমে মনসা পাহাড়, দুই-এর মাঝে হরিদ্বার শহর। ঘর থেকে বেরিয়ে আকাশ পানে চাইতেই দেখবেন বিশ্ব পর্বতের এক টিলার টপে মনসা দেবীর মন্দির। দুর্গারই প্রতিরূপ শক্তিরূপিণী দেবী মনসা। মনসামনা পূরণের জন্য দড়ি বাঁধারও প্রথা আছে মন্দিরে। টাঙা কিছুটা পথ এগিয়ে দেখ, বাঁকটা পায়ে হেঁটে যেতে হয়। তবে, ট্রলি অর্থাৎ রোপওয়েতেও চলা যায় মনসা মন্দিরে। ১৭৫ মি উচ্চত ৬০০ মি লম্বা রোপওয়ে ৮—১২-৩০ ও ১৪-৩০—১৮-৩০টায়ে চলে। যাতায়াত ২৩। বিকালে গঙ্গার ঘাটে বসুন, সূর্যোদয়ে দেখুন হরি-কি-পাউরীর ঘাটে সন্ধ্যারতি। ১০০৮ প্রদীপের গঙ্গারতি। ৬ জন পুরোহিত এক সঙ্গে আরতি করেন। সেই সঙ্গে ভজন—জয় জয় গঙ্গা মাতা। সন্ধ্যা প্রদীপ দিন মা গঙ্গাকে। দুলকি চালে ভেসে চলে হাজার হাজার সন্ধ্যা প্রদীপ গঙ্গায়। আত্মার মিলে মহালি মন্দিরের দর্শন মেলে। শহরের দক্ষিণ-পূর্বে শীর্ণকারা মূল গঙ্গা, স্থানীয়দের নীলধারার অপর পারে নীল পর্বতের চূড়ার (৬ কিমি) চণ্ডী মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন পায়ে পায়ে পাহাড় চড়ে বা ২৮ টাকার রোপওয়ে চেপে।

পরমনি সকালে টাঙা করে বেরিয়ে পড়ুন ৫ কিমি দূরে কলকল। অটো, টেম্পো, রিক্সাতেও বাওয়া চলে; বাসেরও চল আছে হরিদ্বার থেকে কনখলের। দুর্গা মন্দির, দক

প্রজাপতি মন্দিরে দশ অবতার মূর্তি, সতীকুণ্ড, শ্রীজগৎগুরু আশ্রমে কালী, রাধামাধব, রাজরাজেশ্বরী; মৃত্যুঞ্জয় মন্দিরে ১৫১ কেজি পারদে তৈরি লিঙ্গরূপী শিব, মানব কল্যাণে অর্থনারীশ্বর দেখুন একে একে। আনন্দময়ী মার আশ্রমটিও এই কনখলে। সমাধি মন্দির ও অথও জ্যোতি আঙ্গণে অনির্বাক্য। ভক্তদের থাকারও ব্যবস্থা আছে ভক্ত-নিবাসে। রাজা দক্ষ যজ্ঞ করেন কনখলের দক্ষপ্রজাপতি মন্দিরে। জামাতা শিব নিমন্ত্রণ থেকে বঞ্চিত। শিবের পত্নী দক্ষকন্যা সতী আসেন যজ্ঞস্থলে। পিতা কর্তৃক পতি নিন্দায় দেহ রাখেন দক্ষকন্যা সতী। ক্ষুব্ধ ক্রুদ্ধ শিব! তারই ক্রোধ থেকে জন্ম বীরভদ্র পণ্ড করেন দক্ষের যজ্ঞ। ক্রোধোন্মত্ত শিবকে শান্ত করতে বিষ্ণু সুদর্শন চক্রে খণ্ডন করে সতীর দেহ। ৫১ টুকরো হয়ে ছড়িয়ে পড়ে সারা দেশময় সতীর দেহ। যা আঙ্গণ একান্ন সতীপীঠ নামে খ্যাত। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে গঙ্গা। অদূরে হরিহর আশ্রমে পারদের শিবলিঙ্গ; রুদ্রাক্ষ গাছও দেখে নেওয়া যায় আশ্রমে।

হৃষীকেশমুখী ঝলমলে পবনধাম-এ হিন্দু পুরাণের দেবদেবীরা মূর্ত হয়েছেন। ভূমা নিকটতমের মূর্তিতে পৌরাণিক আখ্যান; ১ টাকার টিকিটে রামায়ণ মহাভারতের সজীব আখ্যানও দেখে নেওয়া যায়। ভারতমাতা মন্দির-এ ৫০ পয়সার টিকিটে লিফটে ৮ তলায় উঠে ছবি ও মূর্তিতে হিন্দু পুরাণের দেবদেবী, মুনি-ঋষি-মহাত্মা দেখে দেখে নিচেই নামা যেতে পারে।

এছাড়া আছে আর্থ বাণপ্রস্থ আশ্রম (৪), ভারত হেভি ইলেকট্রিক্যালস (রানীপুর), ভীমগোদা ক্যানাল হেডওয়ার্কস (২.৪), হিমালয়ের পথে ভীমের হাঁটু দিয়ে খোড়া ভীমগোদা ট্যাক্স (৩.২), বিড়লা টাওয়ার, রাজা মান সিংহ হুদী, গুরুকুল কাংড়ী বিশ্ববিদ্যালয়, বেদ মন্দির মিউজিয়াম—ফার্মেসি (৫.৬), রামকৃষ্ণ মিশন (১.৬), সপ্ত ঋষি আশ্রম ও সপ্ত সরোবর গঙ্গা সাত ধারায় বিভক্ত হয়েছে। এখানেই সপ্তঋষি তপস্যারত ছিলেন—স্মারকরূপে সপ্ত ঋষি আশ্রম (৫.৬ কিমি), হৃষীকেশমুখী ৫.৬ কিমি দূরে পরমার্থ আশ্রমে দেখুন সুন্দর দুর্গা মূর্তি।

রাজাজী ন্যাশানাল পার্ক: হরিদ্বার থেকে ৮ কিমি দূরে মতিচূড় স্যাঙ্কচুয়ারি, ৫ কিমি দূরে রাজাজী স্যাঙ্কচুয়ারি আর ৭ কিমি দূরে চিল্লা স্যাঙ্কচুয়ারি—তিনে মিলে ১৯৮৫তে গড়ে উঠেছে রাজাজী ন্যাশানাল পার্ক। সেরাদুনের দূরত্ব ২০ কিমি রাজাজী থেকে। প্রান্তন গভর্নর জেনারেল চক্রবর্তী রাজা গোপালাচারীর নামে নাম। প্রকৃতি-প্রেমিকদের স্বর্গরাজ্য ২৩৬৭১ হেক্টর আয়তন ৩১৫ প্রকার ভূগোষ্ঠীর বাসভূমি ৮২০.৪২ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত রাজাজী জাতীয় উদ্যান। দিল্লী-হরিদ্বার-সেরাদুন NH-45 এ মোহন থেকে হরিদ্বার পর্যন্ত ২৪৭ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত রাজাজী অভয়ারণ্য বাঘ, হাতি, চিতা, শব্বর, ভাস্কর, হরিণ ছাড়াও নানান খনচর দেখতে মেলে। খনেশ, গ্রাণ, ক্লাইক্যাকার,

মিনিভেট, ব্রু ম্যাগপাই ছাড়াও চেনা-অচেনা নানান পাখি মধুময় করে তোলে অরণ্যভূমি। হাতি যাচ্ছে সকালে-বিকালে জানোয়ার দেখাতে অরণ্য-বিহারে। থাকারও নানান ব্যবস্থা—FRH আছে বারিবারা, চিল্লা, রানীপুর, কাঁসরাও, মতিচূড়, কুম্ভাও, ফান্দোওয়ালা, সত্যনারায়ণ, আশারুদ্র-তে। আহার নিজ ব্যবস্থায়। এদের বুকিং: Director, Rajaji N P, 5/1 Ansari Marg, Dehradun-248001, ☎ 23794. হরিদ্বার বাজারেও বনদপ্তরের অফিস বসেছে—অনুমতি মেলে বনবিহারের।

চিল্লা স্যাঙ্কচুয়ারি: রাজাজী ন্যাশানাল পার্কের অংশ চিল্লা রেঞ্জ তথা চিল্লা ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্স। হৃষীকেশ থেকে হরিদ্বার হয়ে দূরত্ব ৩২ কিমি। চিল্লা জলবিদ্যুৎ প্রকল্প, চিল্লা বাঁধ, চিল্লা স্যাঙ্কচুয়ারি—এরীর মিলনে গড়া চিল্লা ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্সের পর্যটক আকর্ষণ আঙ্গ দুর্নিবার। চড়ইভাড়িরও মনোরম পরিবেশ চিল্লা। ১৯৭৭এ গড়া ২৪৯ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত পর্ণমোচী বৃক্ষের অরণ্যে হাতি ২৩০, বাঘ ৬, প্যাছার ২৯, নীলগাই ৬০, শব্বর ১০০০, হরিণ অন্তর্নতি, চিতা, গোরালা ছাড়াও তিন শতাধিক প্রজাতির জানোয়ারের বাস চিল্লায়। সাপও উদ্ভেদ্য চিল্লায়। আর আছে চেনা-অচেনা নানান পাখি, অজস্র ময়ূর ৩০২-১০০০ মি উঁচু চিল্লা অরণ্যে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে গঙ্গা আর সং নদী। নিজস্ব ব্যবস্থায় গাড়ি যাচ্ছে; আর মেলে ৪ যাত্রীর হাতি ২৫ টাকা হারে বনবিহারে। ওয়াচ টাওয়ারও হয়েছে। প্রবেশ দক্ষিণা লাগে প্রথম ৩ দিন ১৫, পরের দিনগুলি ১০টাকা হারে। ছাত্রদের রিবেট মেলে। গাড়িও ক্যামেরার চার্জ লাগে মান হারে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে FRH ও GMVN-এর ৮ ঘরের Tourist Bungalow-য়, DAB ৩০০.৩৫০ হাটস ২০০-৩০০ ডর্মি বেড ৪৮; অবু: Manager, Chilla Tourist Complex. গাড়িও মেলে ভাড়ায় GMVN-এর বাংলায়।

আবার Tourist Bureau, Lattarao Bridge, Hardwar থেকে কনডাক্টেড ট্যুরে বদরী, কেদার, গঙ্গোত্রী, গোমুখ, যমুনোত্রী ও হৃষীকেশ বেড়াবার ব্যবস্থাও আছে। Hardwar Taxi Union, opp Rail Stn, ☎ 427338 এদের কাছেও গাড়ি মেলে ভাড়ায় আট থেকে দশ হাজার টাকার চারধাম যাতায়াতের। এছাড়াও শতাধিক Travel Agent প্যাকেজ ট্যুরে যাত্রী নিয়ে কেদার, বদরী, গঙ্গোত্রী, যমুনোত্রী অর্থাৎ চারধাম ছাড়াও উত্তরাখণ্ডের নিকে নিকে যাচ্ছে হরিদ্বার থেকে। ট্যুরি ও নানানধর্মী বাসও ভাড়ায় মেলে এদের কাছে। এমনকি পৃথক পৃথক ট্যুরে হরিদ্বার ও হৃষীকেশ থেকে দিনে দিনে ১১০/৯০ টাকায় মুসৌরী-সেরাদুনও বেড়িয়ে আসে এরা। থাকা ও আহাৰ সব ট্যুরেই পৃথক। সরাসরি যোগাযোগের জন্য: ত্রিমূর্তি ট্রাভেলস, বশারাম রোড, ☎ 427989, হরিদ্বার-249401; রিক্রান্ত ট্রাভেলস, বিকুবাটি, ☎ 427930, Fax 426343, শক্তিবাণী ট্রাভেলস, বশারাম রোড; শর্মা ট্রাভেলস, বশারাম রোড; কোপার্ক

ট্রাভেলস, যশারাম রোড; ইন্ডিয়া টুরিস্ট, যশারাম রোড; অশ্বিনী ট্রাভেলস, রেলওয়ে রোড, @ 427125; সান্যাল ট্রাভেলস, রেলওয়ে রোড; যাত্রা ট্রাভেলস, @ 427787, রেলওয়ে রোড; বীপ ট্রাভেলস, সাধুবোলা রোড, @ 427609, হরিদ্বার-কে লিখুন।

গাড়োয়াল মণ্ডল বিকাশ নিগম লিমিটেডের যাত্রী প্যাকেজ ট্যুর।

[লাস্জারি কোডে যাতায়াত, অবস্থান ও গাইড চার্জ নিয়ে ভাড়া। খাবার প্রতি ট্যুরেই স্বতন্ত্র। তবে, পৃথক মূল্যে ৬০ হারে প্রতিদিন প্রতি জনা ব্যবস্থা করে এয়া।]

১। হৃদীকেশ থেকে : যে থেকে অক্টোবর মাসে সপ্তাহের প্রতি দিন হৃদীকেশ থেকে কোদার ও বদরী যাচ্ছে ৬ দিনের প্যাকেজ ট্যুরে ২৬৫০ টাকা, শিশু ২৩৫০।

২। প্রতি মঙ্গলবার বাসে ৪ দিনের প্যাকেজে বদরী যাচ্ছে ১৭৫০/১৫৫০ টাকা।

৩। প্রতিদিন যাচ্ছে যমুনোত্রী-গঙ্গোত্রী-কোদার-বদরী অর্থাৎ চারখাম। ১১ দিনের এ-সফরের ভাড়া ৪৩৫০ শিশু ৩৮৫০ করে। আর চারখামের সঙ্গে গোমুখ জুড়ে প্রতি মঙ্গল, বৃহস্পতি ও শনিবার যাচ্ছে ১২ দিনের সফরে ৪৫৫০ শিশু ৩৯৫০ টাকা।

৪। প্রতি শুক্রবার যমুনোত্রী-গঙ্গোত্রী-গোমুখ যাচ্ছে ৭ দিনের প্যাকেজে ২৮৫০ শিশু ২৪৫০।

৫। জুলাই-আগস্টের প্রতি সোমবার ও বৃহস্পতিবার ডালি জব ফ্লাওয়ারস-হেমকুণ্ড-বদরীনাথ যাচ্ছে ৭ দিনের ট্যুরে ২৯৫০/২৬৫০ টাকা।

৬। ৬ দিনের ট্যুরে কোদার-বদরী যাচ্ছে প্রতিদিন টুরিস্ট কারে ৪৭৫০ টাকা।

৭। ১০ দিনের ট্যুরে প্রতিদিন যমুনোত্রী-গঙ্গোত্রী-কোদার-বদরী যাচ্ছে টুরিস্ট কারে প্রতিজন ৭৫৫০ টাকা।

৮। দিল্লী থেকে : প্রতি সোম ও মঙ্গলবার দিল্লী থেকে বাসে যমুনোত্রী-গঙ্গোত্রী-গোমুখ-কোদার-বদরী যাচ্ছে ১৩ দিনের প্যাকেজে ৫০৫০ টাকা, শিশু ৪৩৫০।

৯। প্রতি শুক্রবার ডিলাজ ট্যুরে ১৯ সিটের বাসে চারখাম যাচ্ছে ১২ দিনের প্যাকেজে ৬৩৫০ শিশু ৫৬৫০ টাকা।

১০। সোম ছাড়া প্রতিদিন বাসে ৭ দিনের প্যাকেজে কোদার-বদরী যাচ্ছে ৩২৫০ টাকা, শিশু ২৭৫০।

১১। প্রতি সোমবার ১৯ সিটের বাসে ৮ দিনের ডিলাজ ট্যুরে কোদার-বদরী যাচ্ছে ৪৩৫০ টাকা, শিশু ৩৮৫০।

১২। সোম ছাড়া প্রতিদিন ৭ দিনের টুরিস্ট কার প্যাকেজে প্রতিজন ৫৬৫০ টাকা। দিল্লী থেকে যাচ্ছে কোদার ও বদরী দর্শনে। ১২ দিনের প্যাকেজে চারখাম যাচ্ছে টুরিস্ট কারে ৯৪৫০ টাকা। দিল্লী থেকে কোদার-বদরী যাচ্ছে A/C বাসে প্রতি শুক্রবার, A/C কন্টেন্সা কারে প্রতি সোমবার, A/C কন্টেন্সা কারে চারখাম যাচ্ছে ১২ দিনের প্যাকেজে মাসের ১৫ ও ৩০ দিল্লী থেকে, কারে প্রতিদিন চারখাম যাচ্ছে ১১ দিনের প্যাকেজে দিল্লী থেকে।

১৩। এমনকি মরসুমে ট্রেনিং ট্যুরেও যাচ্ছে GMVN. এদের ট্যুরে অংশ নিয়েও বেড়িয়ে নেওয়া যায়—সাপকুণ্ড, পঞ্চকোদার, হর-কি-দুন। আগ্রহীদের উচিত হবে যোগাযোগ করা।

ব্যবস্থাপনা ভলই। বুকিং-এর জন্য ১৫ দিন আগেই পুরো টাকার Garhwal Mandal Vikash Nigam Ltd -এর নামে ব্যাংক ড্রাফটে Dy General Manager—Tourism, Garhwal Mandal Vikash Nigam Ltd, Yatra Office, Muni-ki-Reti, Rishikesh-249201, @ (0135)431793-কে পাঠিয়ে লিখুন বা General Manager—Tourism, GMVN Ltd, Lansdown Marg, Dehra Dun-248001, @ (0135) 656817 বা PRO, GMVN, Uttarpradesh Tourism, Chandralok Building, 36 Janpath, ND-1, @ (011) 3326620 বা PRO, GMVN, UP Tourism, ১২-এ নেতাজী সুভাষচন্দ্র বসু রোড, কলকাতা-৭০০০০১, ৩য় ভল, @ 2207855 থেকেও এদের বুকিং-এর ব্যবস্থা মেলে।

বছরভর চলা গেলেও হরিদ্বার বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস। শীতে ২৮.৩°—১০.৬° আর গ্রীষ্মে ৩৫.৬°—১৬.৯° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে হরিদ্বারের তাপমান।

খিজির শহর হরিদ্বার। সঙ্গীর্ণ গলিপথ। কেনাকাটার জন্য বড় বাজার দেখুন। কষল ও উলেন যথেষ্ট মেলে হরিদ্বারে। মালাইয়ের সিঙ্গাড়া খান ঠাণ্ডা কুপের কাছে মথুরাবালার সোকানে। খুবই সুবাসু এই সিঙ্গাড়া। আর আছে ছেলে-বড়ো সবার জিতে জল খরানো কুলফি মালাই হরিদ্বারে। শর্মার কুলফি মালাই পরখ করা যেতে পারে। বুধবার বন্ধ থাকে হরিদ্বারের সোকানপাট। বীদরের বীদরামি থেকে সদা সতর্ক থাকবেন হরিদ্বারে। খাবার আদায়ের অহিম্মা চন্দ্রের কাপ থেকে বসন-ভূষণ সবই কিডনাগ করুন এরা। তেমনই দালাল থেকেও সদা-সর্বদা সতর্ক থাকা উচিত হবে হরিদ্বারে।

এছাড়া নানান প্রাইভেট সংস্থাও যাচ্ছে হৃদীকেশ থেকে চারখাম দেখাতে। আর যাচ্ছে যে থেকে অক্টোবর মাসে নিয়মিত সার্ভিস বাস সংযুক্ত রোড স্টেশন যাতায়াত ব্যবস্থা সমিতি, চন্দ্রভাগা, হৃদীকেশ, @ 430383 থেকে চারখামের পথে। ভাড়া হৃদীকেশ থেকে হনুমানচাট অর্থাৎ যমুনোত্রী ৯৫, গঙ্গোত্রী ১০৫, কোদারনাথ ৯০, বদরীনাথ ১২৩, এক শিঠের। আর যমুনোত্রী থেকে গঙ্গোত্রী ৯৫, গঙ্গোত্রী থেকে কোদার ১৪৫, কোদার থেকে বদরী ৯১ টাকা। কোদার ও বদরী দর্শনার্থীদের রিটার্ন টিকিটও মেলে এদের হরিদ্বার @ 426886, হৃদীকেশ @ 430383, রামনগর @ 236, কোটদ্বার বুকিং কাউন্টারে। কন্ট্রাস্ট বা চার্টার্ড সেমি-ডিলাজ বাসেরও ব্যবস্থা মেলে উত্তরাখণ্ড অর্থাৎ চারখাম দর্শনে GMOU থেকে। প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে GMOU ৭১০ দিনের ট্যুরে ৩৯৯ কিমি পরিক্রমায় ৪৬০ টাকা। হৃদীকেশ থেকে যমুনোত্রী, গঙ্গোত্রী, কোদারনাথ, বদরীনাথ। *৬ দিনের ট্যুরে কোদার ও বদরী যাচ্ছে ২৫৯ টাকা। ৭৫০ কিমি পরিক্রমায়। *৪ দিনের ট্যুরে ৬০২ কিমি পরিক্রমায় কেবল বদরী বেড়িয়ে আনে ২০৮ টাকা। ৫০% টাকা মানি-অর্ডার বা ব্যাংক ড্রাফটে Garhwal Motor Owners Union Ltd, Kotdwara, Pauri-Garhwal, UP, PC-246149 বা Station Incharge, GMOU, Hardwar, @ 426886 বা GMOU, Rishikesh, @ 430383-কে পাঠিয়ে অগ্রিম বুক করা যায়। প্যাকেজ ভাড়া—সেমি-ডিলাজ বাসে যাতায়াত, ডিনার প্রণয় থাকা নিয়ে এদের।

হৃষীকেশ

পাশ্চ্য বারি মনোহরি।

প্রায়শ্চিত্তের বিধানের রায়ভাষ্য স্বরিত কঠোর তপস্যায় তুষ্ট হয়ে দেবতা হৃষীকেশ (Hrishikesh)-এর দর্শন দান। দেবতার নামে জায়গার নাম। তবে, মায়াপুরী নাম ছিল অতীতে হৃষীকেশের। স্বর্গলোকের তোরণদ্বারও ৩৫৬ মি উঁচু হৃষীকেশ। তিন পাশ পাহাড়ে বেরা, অগুনতি আশ্রম; সাধুসন্তের বাস। হরিদ্বারের মতো লোকারণ্য নয় হৃষীকেশ—শান্ত-সুস্থের বাতাস বয় আজও। মাঝ দিয়ে বয়ে চলেছে স্বচ্ছ-সলিলা স্বর্ণের নদী গঙ্গা পাহাড় ছেড়ে মর্ত্যধামে। রাবণবধের প্রায়শ্চিত্ত করতে অনুজ সহ শ্রীরামও আসেন হৃষীকেশে। স্মারকরূপে রামমন্দির হয়েছে। এমনকি মহামতি বিদুরও কলেবর ত্যাগ করেছিলেন এই হৃষীকেশে। স্বর্গলোকের টার্মিনাল হৃষীকেশ। যাত্রীও যাচ্ছেন এক রাত হৃষীকেশে কাটিয়ে দুর্ভাগ্য তীর্থপথে কোদারনাথ, বতীনায়রণ, হেমকুণ্ড, গঙ্গোত্রী, গোমুখ, যমুনোত্রী—যুগের পর যুগ, বছরের পর বছর; চলেছেন সাধুসন্তের দল সন্ত রক্ষ বাধা বিপদকে উপেক্ষা করে হিমালয়ের আকর্ষণে। কখনও সে আকর্ষণ হয়েছে পৌরাণিক কখনও বা নৈসর্গিক শোভার। আদি অনন্তকাল ধরে গভীর পাহাড়, উপত্যকা, প্রোতবিনী নদী, নির্বরের টানে প্রতি বছরই সারা ভারতের অর্থেকেরও বেশি ভ্রমণার্থী ছুটে আসেন Yoga Capital of the World হৃষীকেশে। এগিয়ে চলেন দেবভূমি হিমালয়ের গিরিকন্দরে। তবে, গত কিছুকাল উত্তরাঞ্চ ও আন্দোলনে রক্ত ঝরেছে কুমায়ুন ও গাড়োয়াল পাহাড়ের দিকে দিকে। বাতাসে আজও যেন বারুদের গন্ধ মেলে। তাই উচিত হবে সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে এগিয়ে চলা।

হাওড়া বা দিল্লী জং থেকে লম্বার হয়ে হরিদ্বার পৌছে নতুন করে ট্রেন চাপুন হৃষীকেশের। হরিদ্বার থেকে ট্রেন যাচ্ছে ৫-০৫, ৮-৪৫, ১২-৩০, ১৭-১৫ ও ২-৪৫এ। দূরত্ব ২৫ কিমি, ১ ঘণ্টার পথ। শেয়ার ট্যাক্সি, অটো, বাস যাচ্ছে হরিদ্বার থেকে হৃষীকেশে। মুখরুহ বাস মেলে—বাসই সুবিধার যাতায়াতে। কলকাতা থেকে হৃষীকেশের দূরত্ব ১৪৭২+২৫=১৪৯৭ কিমি। সরাসরি বিগো যাচ্ছে দুই এক্সে। আর ১২-৩০এর ট্রেনটি সরাসরি আগ্রা ও ২-৪৫এর ট্রেনটি দিল্লী থেকে লম্বার হয়ে আসছে। হৃষীকেশ থেকেও DTC, UPSRTC, Rajasthan, Punjab, Himachal, Haryana Roadways ছাড়াও প্রাইভেট বাস যাচ্ছে বদরী বিশাল ২৯৪, গৌরীকুণ্ড ২১২, গঙ্গোত্রী ২৬০, হনুমানচট্ট ২২০, চণ্ডীগড় ২৫২, দেওয়ান ৪৩, দিল্লী ২২৭, আগ্রা ৬৪৪ কিমি, কোটদ্বারা, রামনগর, টেহরী, সিমলা, পাতিয়ালা ছাড়াও উত্তর ভারতের দিকে দিকে। বাস যাচ্ছে—দেওয়ান ১২ঘ, দিল্লী ৬২ঘ, রামনগর অর্ধাঘ করবট ৬ ঘ, নৈনীতাল ১০ ঘ, সিমলা ১১ ঘণ্টায় হৃষীকেশ থেকে। নিকটস্থ বিমানবন্দর হৃষীকেশের ১৮ কিমি দূরে দেওয়ান রোডের জলি গ্রাউন্ডে। প্রাইভেট বিমান ভ্রমণের সংস্থা সার্ভিস পাওয়ে ৫০ মিনিটে দিল্লী থেকে। UP Govt Tourist Office বসেছে Station Rd-এ।

ব্রহ্মণ আর সময় দুইয়েরই সুবিধার্থে এককভাবে বেড়াতে এলাকাটা দু'ভাগে টুকরো করে নেওয়া উচিত হবে। প্রতিটা পথেই তিন সপ্তাহ সময় রাখুন কলকাতা থেকে গিয়ে কলকাতার ফিরতে। মে থেকে অক্টোবর মাস এপথ পরিভ্রমণের মাহেস্তকপ। তবে জুলাই/আগস্টের বর্ষা এড়িয়ে চলাই উচিত হবে। ধস এপথের নিত্যসঙ্গী। বর্ষাকালে আরও দুর্গম হয়ে পড়ে পথঘাট। সঙ্গে পাছাড়ী প্রস্তুতি থাকা একান্তই দরকার।

(এক) বদরীনাথ, বসুধারা জলপ্রপাত, হেমকুণ্ড, লোকপাল, নন্দনকানন, আউলি, পঞ্চকোদার—কোদারনাথ, মদনহেখর, তুঙ্গনাথ, রুদ্রনাথ, কলম্বার, ত্রিযুগীনারায়ণ, হরিদ্বার।

(দুই) গঙ্গোত্রী, গোমুখ, যমুনোত্রী, মুসৌরী, দেওয়ান।



ধরমশালায় শহর হৃষীকেশ। তবে ধরমশালায় এলাজি যাবের—তাদের জন্য হোটেলও আছে নানান। শহরের খ প্রাণকেন্দ্রে Station Rd, Rishikesh-249201, STD-01364-এ—*H Inderlok, ৩ 30555, RJB, S 8৫০ D ৫৫০ A/C S ৬০০ D ৭৫০ সুইট ৮৫০; অদুরে H Gangotri, মানে ও দামে ইন্দ্রালোক তুল্য। H Mandakini International, Hardwar Rd-1, ৩ 31081, S ৫৫০ D ৬৫০ A/C S ৮০০ D ৯৫০ সুইট ১২৫০; H Ganga Kinere, Virbhadr Rd-1, ৩ 30566, A/C S ১২৫০ D ১৫৫০ সুইট ২০০০; The Baseera H, 1 Ghat Rd-1, ৩ 30720, S 8৫০ D ৬০০ A/C S ৭০০ D ৮৫০; H Natraj, Dehradun Rd. ৩ 31262, A/C S ১০৫০ D ১২৫০ সুইট ১৭৫০; H Sikhar, Laxman Jhula Rd, SAB ১৫০ DAB ২০০-৩২৫ FR ৩৫০; H Shaketi, H Shivlok, H Neelkanth, Green H—Swargashram. শব্দরাচার্য নগরে আছে মহেশ যোগীর The Academy of Meditation—থাকার ব্যবস্থা নিয়ে।

ভারতীয় প্রধায়—Tourist Home, Dehradun Rd; New Tourist L near Rly Stn, H Hari, Tourist & Travel Home, H Rajhans, H Tupoban, Joy Tourist L. হরিদ্বার বাস স্ট্যান্ড ঘিরে—H Ashoka, Gaurav, Vikram, Menka, Rana Bhawan ছাড়াও নানান হোটেল; এদের কাছে ঘর S ৬৫-১৭৫ D ১০০-২২৫ টাকায় মেলে। চম্ভভাগা বাস স্ট্যান্ড অর্থাৎ চারঘণ্টা বাস স্ট্যান্ড বা টেহরী বাস স্ট্যান্ডে—H Digbijoy, Adarsha H, H Suruchi; চম্ভভাগা ব্রিজ বদরী ও কোদারনাথ মন্দির কমিটির পেস্ট হাউস, FRH, PWD IB আছে। তবে, কালীকামলী ছাড়াও আরও নানান ধরমশালায় দৌরায়ে হোটেল ব্যবসা প্রসার পাচ্ছে না হৃষীকেশে। টাওয়ার আপনিও কালীকামলীর নতুন ধরমশালায় পৌছে যান। দলে ভারি হলে নতুন বাড়িতে ঘরও মেলে। কালীকামলীর নতুন বাড়ির ঘরগুলি প্রশস্ত, ব্যবস্থাপনাও ভাল। এদের কলকাতা দপ্তর : কল কামলী ধরমশালা, মনোহরদাস কল্লো, ২০৮ মহাভা গান্ধী রোড, কলকাতা-৭। পাশাপাশি রয়েছে পাঞ্জাব সিদ্ধ কেশ, গোপাল কুঠি, অমকেশ, অজ্ঞানপ্রদ, শিবানন্দ আশ্রম, জয়রাম অমকেশ, গীতা ভবন, জয়পুরওয়ালী, কানপুরওয়ালী, অবধূত আশ্রম, পরমার্থ নিকেতন, স্বর্গাশ্রম, পুত্র মন্দির, কলকাতাওয়ালী, তিরুপতি বাগা, ভজন আশ্রম, নেপালী, ব্রীজী সীতারামদাস ও কদারনাথ আশ্রম, আগরওয়ালী—স্টেশন রোড ছাড়াও নানান ধরমশালা হৃষীকেশে। অবস্থান মাথোড়ে মহোদয় শিবানন্দ আশ্রমের বুকিং: মি ডিভাইন লাইফ সোসাইটি, শিবানন্দ আশ্রম, শিবানন্দনগর, হৃষীকেশ, UP, ৩ 30040.

আর আছে রেল ও বাস থেকে ৩ কিমি দূরে GMVN-এর Tourist Complex Rishilok, Muni ki Reti, ৩ 30373.DAB ২৫০ ৩০০ ৪০০ ৫৫০।

হাটিকোশেও নিরামিষ আহার—হোটেল-রেস্তোরাঁও নানান। তবুও শিবানন্দ খুলায় চটিওয়ালাও লক্ষ্মী হোটেল দুইয়েরই সুনাম যথেষ্ট। বাট ঘাটে মাদ্রাজ রেস্টুরেন্টটিও খ্যাত মশলা পোশার জন্য। তেমনিই সেরাদুন রোডে *Kautilya Restaurant (১২—১৫-০০ ও ১৯—২৩-০০); ঘাট রোডে H Baseeru, H Indertok, Tourist Complex—Rishilok এদেরও সুনাম যথেষ্ট আহাৰ্য পরিষেবা।

দুপুরটা বিশ্রাম নিয়ে বেলা ১৫-০০টার মধ্যে বেরিয়ে পড়ুন বাস স্ট্যাণ্ডে। কলেরা ইঞ্জেকশনের সার্টিফিকেট সঙ্গে নিন। শহরের অপর প্রান্তে আগরওয়ালা রোড সংলগ্ন চন্দ্রভাগা অর্থাৎ চারখাম যাত্রার তেহরী বাসস্ট্যান্ড। বাস যাচ্ছে হিমালয়ের দিকে দিকে স্ট্যান্ড থেকে। টাঙা যাচ্ছে, অটো ও রিকশাও মেলে; তবে পায়ে পায়েই পৌছে যান মিনিট কুড়িতে। অফিসও এদের এখানে। ৮—১৩-০০ ও ১৭—২০-০০টায় অগ্রিম টিকিট মেলে। আর রেজিস্ট্রেশনের জন্য খোলা মেলে ৭—১২-৩০ আবার ১৫—১৮-০০টায়। একটা দিন বিশ্রাম নিন হৃষীকেশে। পরের দিন সকালের প্রথম বাসের (৪-৩০) টিকিট কাটুন। প্রথম বাস হৃষীকেশ ছাড়লে ঐ সন্ধ্যায় পৌছে যাবেন বদরীনাথ। এখানকার বাসে পাহাড়ী পথে কিমি প্রতি ভাড়া ৪০ পয়সা করে। ট্যাক্সিও মেলে চুক্তিতে এপথ পরিক্রমায়।

টিকিট কেটে শহর বেড়ান। সন্ধ্যায় চলুন বাজারের শেষপ্রান্তে গঙ্গার ত্রিবেণী ঘাটে। নীলাভ জল—হরিদ্বারমুখী বঁকও নিয়েছে গঙ্গা ত্রিবেণী ঘাটে। নৈসর্গিক শোভা মনোরম। আরতি দিন মা গঙ্গাকে। ৫০ পয়সা থেকে ৫ টাকায় সাজানো ডালি মেলে ঘাটেই। তেমনিই প্রত্যুষে দুধ দেয় লোকে মা গঙ্গাকে, আহাৰ দেয় মীন অর্থাৎ মাছকে। অদূরেই রঘুনাথ মন্দির, হৃষীকুণ্ড ও প্রাচীনতম ভারত মন্দির। জনশ্রুতি গঙ্গা, যমুনা ও সরস্বতীর জলের ধারা এসে মিলেছে কুণ্ডে।

পরদিন সকালে অটো, টেম্পো বা টাঙায় চলুন ৫ কিমি দূরের লছমনঝোলায়। স্বর্গের নদী গঙ্গা মর্ত্যে নামছেন এই লছমনঝোলায়। লছমনঝোলায় রাখাক্ষ, ঝোলায় মুখে ভারতের একমাত্র লক্ষ্মণ মন্দির, বিপরীতে ১১.৩ মি উঁচু মনোনিবিষ্ট শিব, বায়ে সত্য সাঁই আশ্রম। দ্রবঘাটে ঝোলাপুলে গঙ্গা পেরুতেই পূব পারে যোগ ট্রেনি সেণ্টার তথা ১৪ তলার কৈলাশানন্দ মিশন আশ্রম। স্বল্পযেতে কালো কয়লওয়ালা অর্থাৎ কালো কয়লী বা কালীকমলীর সমাধি মন্দির, রামেশ্বর মন্দির, লক্ষ্মীনারায়ণ, গীতা ভবন পরপর দেখে সেরে পায়ে পায়ে বা ৪ হারে গাড়িতে লছমনঝোলা থেকে ২ কিমি দূরের স্বর্গপ্রসঙ্গে পৌছান। স্বর্গপ্রসঙ্গে সাধু-সন্তের বাস, গীতাভবনে ছবিতে পৌরাণিক কাহিনী আর মূর্তিতে

পৌরাণিক কাহিনী দেখুন পরমার্থ নিকেতনে। ঘণ্টা চারেক ১২ কিমি ট্রেক করে স্বর্গপ্রসঙ্গের শিরে ১৬৭৫ মি উঁচু পাহাড় চূড়ায় নীলকণ্ঠ মহাদেব—সাগর মন্ডনকালে এখানেই গরল পান করে নীলকণ্ঠ হন শিব ঠাকুর। জাগ্রত দেবতা। পায়ে পায়ে বা গাড়িতে ঘুরপথে (২১ কিমি) শ'তিনেক টাকার যাতায়াত চুক্তিতে চলা যায় নীলকণ্ঠ দর্শনে। শেয়ারেও (৬০) গাড়ি মেলে এপথে। বাট দশকের জনপ্রিয় মহর্ষি মহেশ যোগীর আশ্রম, যোগ শিক্ষার আশ্রম ভেদ নিকেতন, ছাইবাবার আশ্রম, তপোবন, ভরত মন্দির, শঙ্করাচার্যনগর, শিবানন্দ আশ্রম দেখে নিন একে একে। কিংবদন্তী, লক্ষ্মণও পেরিয়েছিলেন রজ্জু দিয়ে পুল করে গঙ্গা লছমনঝোলায়। ১৯২৯এ রজ্জু থেকে ইস্পাতে রূপান্তর ঘটে পুলের। নতুন করেও ঝোলাপুল হয়েছে শিবানন্দঝোলা (রামঝোলা) গীতাভবনের সামনে স্বর্গপ্রসঙ্গে। উচিতও হবে লছমনঝোলায় নেমে ২ কিমি পরিক্রমা সেরে গাড়ি বা পায়ে পায়ে গীতাভবন অর্থাৎ স্বর্গপ্রসঙ্গে ভটভটি বা শিবানন্দঝোলায় তথা রামঝোলায় গঙ্গা পেরিয়ে হৃষীকেশ ফেরা। আর ধ্যানমূলক শিক্ষায় আগ্রহীদের উচিত হবে স্বামী শিবানন্দের Divine Society Ashram, Ved Niketan, Maharshi Mahesh Yogi Ashram, Yoga Niketan —Rishikesh-249201-কে যোগাযোগ করা। নানানধর্মী কোর্স, থাকা ও আহাৰ নিয়ে ব্যবস্থা এদের। হোটেলও হয়েছে গীতাভবনের কাছে GMVN-এর H Neelam. আর আছে PWD IB ও লক্ষ্মণঝোলায় মুখে কৈলাশানন্দ মিশন ধরমশালা। তবে, অতীতের ভাব-গভীর পরিবেশ আধুনিকতার জয়-যাত্রায় লোপ পেতে বসেছে লছমনঝোলায়। বীরভদ্রে দেখুন অ্যান্টিবায়োটিক প্রোজেক্ট। পরদিন বাস স্ট্যাণ্ডে যাবার অটো/টাঙা ঠিক করে রাখুন।

পঞ্চপ্রয়াগ

ভোর চারটের মধ্যে তৈরি হয়ে নিন। টট্টা হাতে রাখুন। বাস স্ট্যাণ্ডে পর্যাপ্ত আলোর অভাব। ৪০ কিমি যেতে কীর্তিনগর। হৃষীকেশ থেকে আসা মূল পথ পথক হয়েছে এখানে। পথ চলেছে বাঁয়ে যমুনোত্রী/গঙ্গোত্রী ও ডাইনে বদরী/কেশদার। সেতুতে গঙ্গা পেরিয়ে আরও যেতে সতোপছ থেকে আসা মন্দাকিনী ও অলকানন্দার মিলিত ধারায় গোমুখ থেকে আসা ভাগীরথীর মিলন ঘটেছে হৃষীকেশ থেকে ৬৯ কিমি দূরে ১৭০০ ফুট উঁচু কেবপ্রয়াগ-এ। প্রয়াগের পবিত্র জলে স্নানে পূর্ণা হয়। মাহাঘ্যে এলাহাবাদ প্রয়াগের পরেই এর স্থান। গঙ্গা নামের উৎপত্তিও ত্রি-ধারার এই মিলন থেকে দেবপ্রয়াগে। আর আছে কার্কাব্যময় মন্দির রঘুনাথজীর। প্রবাদ, রাবণ বধের পর শ্রীরাম পাপস্ফালনের তপস্যা করেন এখানে। ব্রহ্মারও তপস্যাক্ষেপে এই দেবপ্রয়াগ। দেবপ্রয়াগ নামকরণ সাধক দেবশর্মা থেকে। তেহরি গাড়োয়াল ও পাউরি গাড়োয়ালের সীমান্তও টেনেছে এই দেবপ্রয়াগ।

উৎসাহীরা দেবপ্রয়াগ থেকে ২৭ কিমি দূরে শ্বেত মর্মরে খুবই জাগ্রতা চতুর্ভুজা সিংহবাহিনী দুর্গারই এক রূপ দেবী চন্দ্রবদনী দেখে নিতে পারেন। মূল দেবী শিলাময়ী। সকাল ৭-০০ ও ৮-০০টার বাসে ১৮ কিমি গিয়ে জিপে ৭ কিমি পৌঁছে শেষ ১৬ কিমি পায়ে চলা পথ। তবে, দেবপ্রয়াগ থেকে সরাসরি জিপে সাজ করা যায় চন্দ্রবদনী দর্শন।

দেবপ্রয়াগ থেকে আরও ৭০ কিমি গিয়ে রুদ্রপ্রয়াগে মিলন ঘটেছে অলকানন্দা ও মন্দাকিনীর। দেবতা রয়েছেন রুদ্রনাথ ও চামুণ্ডাদেবী রুদ্রপ্রয়াগে। আজ আর দর্শন না মিললেও করবেট সাহেব চিতা মেরেছিলেন এই রুদ্রপ্রয়াগে। বাস চলেবে পঞ্চপ্রয়াগ অর্থাৎ দেবপ্রয়াগ, রুদ্রপ্রয়াগ হয়ে অলকানন্দা ও গিণ্ডার নদীর সঙ্গমে ১৭১ কিমি দূরের কর্ণপ্রয়াগ। মহাভারতের বীর যোদ্ধা কর্ণের শেষকৃত্য করেন এখানে শ্রীকৃষ্ণ—নামটিও সেই থেকে। মন্দিরও হয়েছে উমা ও কর্ণের কর্ণপ্রয়াগে। আর আছে সূর্যকুণ্ড ও কর্ণকুণ্ড মন্দিরের কাছেই। সূর্যদেব এখানেই কবাচ ও কুণ্ডল দান করেন কর্ণকে। কর্ণপ্রয়াগ থেকেই পথ গিয়েছে আদি-বদরী, গোয়ালদাম, কৌশানির। অলকানন্দা ও মন্দাকিনীর সঙ্গমে ১৯২ কিমি দূরে গোপালজীর মন্দির নন্দপ্রয়াগ-এ, ২৬১ কিমি পেরিয়ে অলকানন্দা ও যৌলী নদীর সঙ্গমে ৪৫০০ ফুট উঁচুতে বিষ্ণুপ্রয়াগ। কথিত আছে, মহর্ষি নারদ বিষ্ণুর তপস্যা করেন এখানে—আর সেই থেকে নাম। মন্দির, কুণ্ড-ও আছে নানান বিষ্ণুপ্রয়াগে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে প্রতিটি প্রয়াগে—মন্দির কমিটির গেস্ট হাউস, PWD RH ছাড়াও নানান ধরমশালা আছে প্রতিটি প্রয়াগতীর্থে। আর আছে GMVN-র ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস—দেবপ্রয়াগ, রুদ্রপ্রয়াগ, কর্ণপ্রয়াগ, নন্দপ্রয়াগ ছাড়াও এপথের শোনপ্রয়াগ ও শ্রীনগরে। এদের চার্জ D ২০০—৩৫০ টাকা।

ল্যাংলডাউন

শ্রীনগর-পাউরি-কোটদ্বার পথে এক নয়ন-লোভন প্রকৃতির মাঝে ১৯২০ মি উঁচুতে মনোরম পাহাড়ী শহর ল্যাংলডাউন। ১৮৬৫তে ব্রিটিশ বড়লটি লর্ড ল্যাংলডাউনের নামে নামাঙ্কর ঘটে অতীতের কালদণ্ড হয় ল্যাংলডাউন। শহরও ২টি ভাগে গড়ে উঠেছে। বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে সিভিল আর এদের শিরে ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস ছাড়িয়ে গোড়োয়াল রাইফেলস অঞ্চল। আর পাঁচটা পাহাড়ী শহরের মতো আধুনিকতা না পৌঁছালেও নৈসর্গিক শোভা সুন্দর। ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস থেকে ১ কিমি দূরের টিপ-ইন-টপ থেকে দেখে নেওয়া যায় মরালের মতো মাথা তুলে পাহাড় দাঁড়িয়ে—অসংখ্য গিরিশিরা। দূরে আরও দূরে নন্দাদেবী, ত্রিশূল, চোখাখা দৃশ্যমান। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত দুই-ই রমণীয়। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ। ল্যাংলডাউনের জলের ঐক্যজালিক ক্ষমতা আছে হজ্জের। গোড়োয়াল রেজিমেন্টের সদর দপ্তরও বসেছে ছবির শহর ব্রিটিশের ক্যান্টনমেন্ট নগরী ল্যাংলডাউনে। চলতে-

কিরতে দেখে নেওয়া যায় চার্জ, কলেবর শিব মন্দির, শাক্তরী মন্দির, রাইফেলস বাহিনীর মিউজিয়ম ল্যাংলডাউনে।

| Delhi-Meerut-Mussoorie Hardwar-Rishikesh | | | |
|---|----|---------------------|--------|
| 0 | Km | Delhi | |
| 65 | " | Meerut | |
| 116 | " | Muzaffarnagar | |
| 168 | " | Roorkee | |
| | | To Laksar | 18 km |
| | | " Dehra Dun | 67 km |
| | | " Mussoorie | 101 km |
| | | " Pipli | 134 km |
| 199 | " | Hardwar | |
| 224 | " | Rishikesh | |
| | | To Dehra Dun | 42 km |
| | | " Mussoorie | 34 km |
| 229 | " | Lachmanjyula | |
| 293 | " | Devprayag | |
| 327 | " | Road Jn | |
| | | To Lansdowne | 114 km |
| | | " Pauri | 29 km |
| | | " Kotdwara | 140 km |
| 363 | " | Rudraprayag | |
| | | To Gourikund | 73 km |
| | | " Kedarnath | 87 km |
| 395 | " | Karnaprayag | |
| | | To Adi Badn | 19 km |
| | | " Kausani | 106 km |
| | | " Ranikhet | 136 km |
| 416 | " | Nandaprayag | |
| 426 | " | Chamoli | |
| | | To Gopeshwar | 11 km |
| | | " Mondal | 32 km |
| | | " Ukhimath | 72 km |
| | | " Kund | 80 km |
| 444 | " | Pipalkoti | |
| 476 | " | Joshimath | |
| | | To Vabisya | |
| | | Badri | 22 km |
| 495 | " | Govind Ghat | |
| | | To Ghangaria | 14 km |
| | | " Hemkund | 18 km |
| | | " Valley of Flowers | 19 km |
| 497 | " | Pandukeshwar | |
| 508 | " | Hanuman Chatti | |
| 518 | " | Badrinath | |

ধাককা জন্য আছে বাস থেকে ৬ কিমি দূরে GMVN-এর Tourist Rest House, DAB ১৮০ ২৫০ ডলি বেড ৪৮ করে। বিপরীতে PWD-র IB. আর আছে বাস স্ট্যান্ডে সাধারণ অতি সাধারণ সাজে New Star Tourist H. H Mayur, Lansdowne-246155এ।

নিম্নতম রেল স্টেশন নার্সিবাবান-কোটদ্বার শাখা রেলের কোটদ্বার। কোটদ্বার থেকে বাস ও জিপ আছে ৪২ কিমি দূরের ল্যাংলডাউনে। বক্স দেফেন্সের পথ। হরিদ্বার ৮০, নার্সিবাবান ৬৭, মোহানাওয়াল ১০০, দিল্লী ২০১ কিমি থেকেও বাসে কোটদ্বার পৌঁছে চলা বেতে পারে ল্যাংলডাউন পাহাড়। GMVN-এর Tourist

Rest House, H Ambey, Sevak, Shiva ছাড়াও নানান হোটেল আছে কোটদ্বারে। কোটদ্বারের আর এক প্রসিদ্ধি ১৪ কিমি দূরের প্রাচীন Kamav Ashram। শকুন্তলার ভরত নামে পুত্রের জন্ম এই আশ্রমে। আর এই ভরত থেকেই নাম হয়েছে দেশের ভারতবর্ষ। তবে, ভিন্নতর আছে নানান ভিন্নতর নামকরণে।

তেমনই অত্যাশ্চর্য্য কোটদ্বার থেকে ৫৪ কিমি দূরে পালেন নদী তীরে করবেট লাগোয়া পাহাড় ও অরণ্যময় হিমালয়পূর্ণাও বেড়িয়ে নিতে পারেন। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ২ ঘরের ফরেস্ট বালোয়। বুকিং : Tourist Reception Officer, Corbett Tiger Reserve, Koldwar, UP থেকে।

বাস যাচ্ছে পাউরি ৮৫, শ্রীনগর ১১৯ কিমি ল্যাণ্ডাউন থেকে। ৩০৪ কিমি দূরের নৈনীতালও বাস যাচ্ছে সকাল ৬-০০টায় ছেড়ে ১১ ঘণ্টায় ল্যাণ্ডাউন থেকে। সরাসরি যাত্রায় কোটদ্বার হয়ে বা গাড়োয়ালের পথে শ্রীনগর থেকে পাউরি বেড়িয়ে চলা যায় ল্যাণ্ডাউন পাহাড়ে। সরাসরি বাসের অমিলে গুমখাল বদল করেও চলা যেতে পারে।

পাউরি

গাড়োয়াল হিমালয় নৈসর্গিক শোভার খনি। পাউরি ও ল্যাণ্ডাউন সেই খনিরই দুই মণি। দেবপ্রয়াগ-রুদ্রপ্রয়াগ পথে কীর্তিনগর পেরুতেই ডানহাতি কোটদ্বার সড়কে ৩০ কিমি যেতে ১৮-১৪ মি উঁচুতে ওক-দেওদার-পাইনে ছাওয়া ছোট্ট পাহাড়ী শহর পাউরি। পথ এসেছে শ্রীনগর, ল্যাণ্ডাউন ও কোটদ্বার থেকেও। পাউরি থেকে দূরত্ব—দেবপ্রয়াগ ৬৩, শ্রীনগর ৩৩, ল্যাণ্ডাউন ৮৬, কোটদ্বার ১৩৪ কিমি। নিয়মিত বাসও চলে এপথে। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্স থেকে ত্রিশূল, হাতিপর্বত, নীলকন্ঠ, কামলিং, চৌখায়া, সুমেরু পর্বত, চর্চাকুণ্ড, কেন্দারনাথ, ভৃগুপঙ্ক, জৌনলি, গঙ্গোত্রী গুপ, ভাগীরথী ভ্যালি, বন্দরগুহ, স্বর্গারোহিণী ছাড়াও নামহীন ভূষারে মোড়া হিমালয়ের নানান শিখররাজির দৃশ্য নয়নাভিরাম। উদয়কালে সূর্য ফাগ ছড়ায় শৈল-শিখরে—সূর্য যেন ঘুরছে চক্রাকারে অবিবাম।

তেমনই ফরেস্ট অফিসের পাশ দিয়ে মিলিটারি ব্যারাকের মাঝের সানসেট পয়েন্ট থেকে সূর্যাস্তও দেখে নেওয়া যায়। দূরবীনও বসেছে চারপাশের নৈসর্গিক শোভার সাথে হিমালয়ের শিখররাজি দেখাতে। কাণ্ডোলিয়া শিব মন্দির ২২, নাগদেবতা ৩ কিমিও দেখে নেওয়া যায় পাউরি থেকে।

খিরসু: পাউরি থেকে ১৯ কিমি দূরে ১৭০০ মি উঁচু খিরসু (Khirsu) থেকে হিমালয়ের দিগন্তবিস্তৃত শিখররাজি আরও কাছ থেকে দৃশ্যমান। বার্চ, ওক, পাইন, কাফল, খরসু, তুর, দেবদারুতে ছাওয়া নির্জন খিরসুতে দেখে নেওয়া যায় চৌখায়া, নীলকন্ঠ, ত্রিশূলের শিরা-উপশিরা। তবে, বেলা বাড়তেই মেঘেমেঘ দরবার বসে হিমালয়ের শিখর থেকে শিখরে। চেনা-অচেনা নানান ফুল ও ফলবাগিচা খিরসুর প্রকৃতিকে মায়াবী রূপ দিয়েছে। আর আছে ঘণ্টাকর্ণ

মন্দির—বিশাল বিশাল ঘণ্টা ঘণ্টা। তেমনই পাউরিমুখী ২ কিমি দূরের চৌপাট্টা বাজার থেকেও দেখে নেওয়া যায় নন্দাদৃশি, ত্রিশূল ছাড়াও নানান তুষারশৃঙ্গ। প্যারাগ্লাইডিং-এরও মনোরম পরিবেশ খিরসু। খিরসুতে কোনো প্রাইভেট হোটেল নেই। GMVN-এর Tourist RH-এ D ১৫০-২৫০ ডর্মি বেড ৩৫/৪৮ টাকায় মেলে। বাস যাচ্ছে প্রতিদিন সকালে পাউরি থেকে খিরসু। জিপও মেলে শেষারে পাউরি থেকে খিরসু যাতায়াতে।



FRH, PWD IH, CH, Municipal RH, District Council Bungalow, GMVN-এর Pauri Tourist Complex, DAB ১৫০ ২৫০ ৩০০ ডর্মি বেড ৪৮ আছে। আর আছে বাসস্ট্যান্ডকে ঘিরে প্রাইভেট হোটেল—H Himalaya, Luxmi Narayan Marg, Pauri-246001, DAB ২০০-৩৫০; Frontier H, SAB ৮০ DAB ১৫০; H Sun & Snow, SAB ৮০-১২৫ DAB ১৫০-২৫০; Bisht H, DCB ১০০ ডর্মি ৪০; H Shivalik, H Uttarachal, Subidha L, Sunan H, H Choukhanbu পাউরিতে।

হৃষীকেশ থেকে ১০৬ কিমি দূরে গাড়োয়ালের বড় বাণিজ্যিক শহর শ্রীনগর। ৪ কিমি আগে দৌরাতা-য় পৃথক হয়েছে হৃষীকেশ-গঙ্গোত্রী ও হৃষীকেশ-শ্রীনগরের পথ। অতীতে রাজ্যপাটও বসে গাড়োয়ালের শ্রীনগরে। তবে, গাড়োয়াল-রাজ গোখা তাড়ানোর পুরস্কার স্বরূপ হাজোর আধা ভেট দেয় ব্রিটিশকে। রাজধানীও স্থানান্তরিত হয় শ্রীনগর থেকে তেহরিতে। গাড়োয়ালও তাই স্থিতিশীল হয়ে নামাঙ্কিত হয় তেহরি গাড়োয়াল ও পাউরি (ব্রিটিশ) গাড়োয়ালে। দ্বিপ্রহাড়া উপত্যকা তেহরি। তেহরি আজ সমধিক খ্যাত তেহরি ডাম তথা বিশ্বের অন্যতম জলাধার ও চিপকো আন্দোলনের নেতা সুন্দরলাল বহুগার জন। তবে, গাড়োয়াল বিশ্ববিদ্যালয়টির অবস্থান শ্রীনগরে। আর আছে কমলেশ্বর ও কল্যাণেশ্বর মন্দির, শঙ্করাচার্য মঠ শ্রীনগরে। কমলেশ্বর মন্দিরেই শ্রীরামচন্দ্র সহস্র পয়ের অর্ঘ্য দেন শিবঠাকুরকে।

থাকার জন্য GMVN-এর Tourist Rest Complex, DAB ২০০ ৩০০ ৪০০ আছে; আর আছে H Prachi, H Rajhans ছাড়াও নানান হোটেল শ্রীনগরে। ধরমশালা আছে কালীকমলী ছাড়াও নানান শ্রীনগরে। আহরও মেলে বাস স্ট্যাণ্ডে চুপ্তি ছাড়াও নানান হোটেল।

যোশীমঠ

দিনদিক পাহাড়ে ঘেরা সুন্দর প্রকৃতির মাঝে যোশীমঠ। ৮ শতকের আদিগুরু শঙ্করাচার্যর গড়া চার জ্যোতির্মঠের এক যোশীমঠে। জ্যোতির্মঠ থেকেই জাগর নাম। হৃষীকেশ থেকে দূরত্ব ২৫৭, বদরী ৪২ কিমি; উচ্চতা ৬২৬০ ফুট। হৃষীকেশ-বদরী বাস ৯ ঘণ্টায় যোশীমঠ পৌঁছে বদরী যাচ্ছে। সারা পথেই সঙ্গ নেয় অলকানন্দা। গিষ্টি-মধুর তানে নিনাদ শোনায়। ইশো-মঙ্গোলিয়ান সম্ভ্রদারের ভূটিয়াদের বাস

যোশীমঠে। যাবার রাস্তা জীবন এদের। ইয়াক এদের সাথী। জীবিকারও মাধ্যম ইয়াকের দুধ-মি-মাংস। বদরীর বাস ৬—১৬-০০টার মধ্যে যোশীমঠ না পেরুলে রাত কাটাতে হয় এই যোশীমঠে। গট খোলে ৬-০০, ৯-০০, ১১-০০, ১৪-০০, ১৬-০০টা যোশীমঠ থেকে বদরী যেতে।

খাকার জন্য PWD IB, FRH, মন্দির কমিটির রেস্ট হাউস, বিড়লা রেস্ট হাউস ছাড়াও নানান ধরমশালা আছে। আর আছে GMVN-এর ২টি Tourist RH, DAB ২০০ ৩০০ ৩৫০ ডর্মি বেড ৬০। প্রাইভেট হোটেল—নন্দাদেবী, কামেত, নীলকণ্ঠ, শৈব, কৈলাশ, আনন্দ, জ্যোতির্লিঙ্গ, শিবালিক ছাড়াও বেশ কয়েকটি হোটেল আছে বাসস্ট্যাণ্ডে।

বাসস্ট্যাণ্ডের নিচে বিশ্বের ৪র্থ অবতাররূপী দেবতা নৃসিংহ-র মন্দির। শীতে বদরীর দেবপূজাও হয় এই মন্দির থেকে। নবদুর্গা ও অষ্টভূজ গণেশও রয়েছেন মন্দিরে। আর বাসস্ট্যাণ্ডের শিরে শঙ্করাচার্য গুম্ফা অর্থাৎ জ্যোতির্মঠে মূর্তি হয়েছে শঙ্করাচার্য ও তদীয় শিষ্য টোটকানন্দজীর। আর আছে কৈলাস থেকে আনা স্ফটিক শিবলিঙ্গ। ২৪০০ বছরের কল্পবৃক্ষটি দর্শনীয়। ৭৮১৮ মি উঁচু নন্দাদেবীও দৃশ্যমান যোশীমঠে। ৪২৬৮ মি উঁচু কুয়ারী পাস-এর পথ যাচ্ছে যোশীমঠ থেকে। তিব্বতে যাবার একটি পথও গিয়েছে এই যোশীমঠ থেকে।

আউলি

হরিদ্বার/হরীকেশ-বদরী পথের যোশীমঠ থেকে ১৬, হরীকেশের ২৬৮ কিমি দূরে আউলি। জিপ মেলে ২৫০ টাকায়। তবে পথকে সংক্ষিপ্ত করে (৪১ কিমি) পাকদণ্ডী পথে চলা যায় ঘণ্টা আড়াইয়ে ট্রেক করে যোশীমঠ থেকে আউলি। এশিয়ার বৃহত্তম আর বিশ্বের দ্বিতীয় বৃহত্তম ৩.৯ কিমি দীর্ঘ রোপওয়েও বসেছে ১৯৯৪-এর ফেব্রুয়ারি মাসে যোশীমঠ-আউলি-গড়সন-এর মাঝে। বাস স্ট্যাণ্ডের বিপরীত থেকে ১১০০ মি খাড়া এই রোপওয়ে ২৫ যাত্রী নিয়ে চলছে ৯—১৬-৩০টা। ১৫ মিনিটের যাত্রাপথ, টিকিট ১৫০ যাত্রায়। ২৫১৯-৩০৪৯ মি উঁচুতে ১৯৭৮এ ইতালীয় Alberto Re ও Ezio Laboria-র নেতৃত্বে গড়া হিমালয়ের ঢালে ৩ কিমি ব্যাপ্ত ২-৩ মি পুরু বরফের পাতে ডিসেম্বর থেকে মার্চ GMOU-এর ব্যবস্থাপনায় স্কি শিকার জন্য আউলির প্রশস্তি। ৭ ও ১৫ দিনের কোর্স চালু। পর্যটক বিনোদনের ব্যবস্থাও আছে ১৫ টাকায় ৪০ মিনিটে, ছাত্রদের ১০ টাকায়। তেমনই দিগন্তবিস্তৃত হিমালয়ের নানান শৃঙ্গ—বেথুয়াটলি, নন্দাদেবী, দুনাগিরি, বারমান, হাতি, হোডিচ, মানা, নর, কামেট, নীলকণ্ঠ, একে একে দৃশ্যমান। তাপমান ০° সেন্টিগ্রেডের নিচে অহরহ। দেওয়ারে ছাওয়া আউলির পাহাড়ী ঢালে দূরে-দূরান্তরে বসতি—ছুম চাষ হচ্ছে। চাঁদিনী রাস্তে আউলির মাঝারী রূপ সত্যই রমণীয়।

খাকার ব্যবস্থা মেলে GMVN-এর Tourist Complex-এ সাউথ ৬৫০ ৭৩০ ৮৫০ হাট ৪৮। আহাৰও মেলে ক্যান্টিনে।

উৎসাহীরা সরাসরি যোগাযোগ করুন: GMVN, 74/1 Rajpur Rd, Dehra Dun, UP, ৩ 26817 বা UP Tourism, 12-A, N S Rd, Calcutta-1, ৩ 2207855 বা দিল্লী/মুম্বাই/চেন্নাই-এ।

সপ্ত বদরী

আদিবদরী: কর্ণপ্রয়াগ থেকে সিমলি হয়ে ১৯ কিমি দূরে কর্ণপ্রয়াগ-রানীক্ষেত বাস পথে ৩২০০ ফুট উঁচুতে মন্দির হয়েছে আদিবদরী। জিপও মেলে শোয়ারে এপথে। ১৬টি ছোট ছোট মন্দির নিয়ে টেম্পল কমপ্লেক্স। ৭টি তার গুপ্ত যুগে তৈরি। মূল মন্দিরে দেবতা কালো পাথরের বহীনারায়ণ। অতীতে বদরীনাথ যখন অগম্য ছিল তখন এই আদিবদরী থেকেই প্রণাম জানাতেন ভক্তের দল দেব উদ্দেশ্যে। পরবর্তীকালে মন্দির, আর বিগ্রহ স্থাপন করেন শঙ্করাচার্য। চলার পথে সিমলিতেও দেখে নেওয়া যায় জয়চণ্ডীর মন্দির।

চারখাম: স্বর্গের নদী গঙ্গা মর্ত্যে নামছেন। গতি তার বিপুল। আশঙ্কা—তোড়ে ধ্বংস পাবে পৃথিবী। শিব এলেন জটাজালে গতি রোধ করতে। তবুও শঙ্কা কাটে না। গঙ্গা তাই ১২টি খারায় বিভক্ত হয়ে মর্ত্যে চললেন। খারা ১২ হলেও উল্লেখ্য এদের মধ্যে চার—অলকানন্দা, মন্দাকিনী, ভাগীরথী ও যমুনা। অলকানন্দার তীরে বদরীবাশালে দেবতা বিষ্ণু তথা নারায়ণ; আর মন্দাকিনীর তীরে কেশবদেব শিবচাকুরের বাস। তেমনই দুই দেবী রয়েছেন গঙ্গাত্রী ও যমুনোত্রীতে। গঙ্গাত্রী অর্থাৎ গঙ্গা যেখানে স্বর্গ থেকে মর্ত্যে নামেন সেই পুণ্যভূমে স্বর্গের দেবী গঙ্গার মন্দির। আর যমুনার উৎস মুখে সুবর্ণ-তনয়া তথা যমরাজের বোন যমুনার বাস। স্মরণাতীত কাল থেকে হিন্দু পুরাণের এই চার পুণ্যধাম চারখাম নামে খ্যাত। এদের প্রত্যেকটিরই অবস্থান ৩০০০ মিটারের উর্ধ্বে। মরসুম—মে থেকে নভেম্বরের প্রথম। শীতেরও আধিক্য আছে চারখামের দিকে দিকে। পৌরাণিক আখ্যান, নৈসর্গিক শোভা, প্রকৃতির দৃশ্য, দুর্গমতাকে জয় করার নেশা, সবকিছু মিলে-মিশে চারখাম আজ ভারত রাষ্ট্রের অনন্য ভীর্ষ।

খাকারও ব্যবস্থা আছে ধরমশালা, মন্দির কমিটির গেস্ট হাউস, PWD RH, FRH, ছাড়াও হোটেল—Khalsa, New Alka, Govind, Saurav, Alakananda ও GMVN-এর Tourist Complex. D ২০০ ২৫০ ৩০০ ডর্মি বেড ৫০ টাকা করে। বাসও চলে কর্ণপ্রয়াগ থেকে গোয়াললাম, টোকেরির। ১৩৬ কিমি দূরের রানীক্ষেতেরও পথ গিয়েছে কৌশানি ১০৬ হয়ে কর্ণপ্রয়াগ থেকে। বাসও চলে এপথে।

বৃদ্ধবদরী: যোশীমঠ থেকে হেলাওয়ারে বাস-পথে ৫ কিমি গিয়ে প্যারনি। পাহাড়ী গাঁও এই প্যারনি। নির্জন নিস্তর পাহাড়ী গায়ে গড়ে উঠেছে ছোট মন্দির—বৃদ্ধবদরী। স্থানীয়দের মুখে বুঢ়া বদরী। স্বয়ং নারদ এর প্রতিষ্ঠাতা।

শঙ্করাচার্য ও পূজা করেছেন কিছুকাল। জনশ্রুতি, দেবর্ষি নারদের তপস্যায় তুষ্ট ভগবান বিষ্ণু সোলচর্ম এক বৃদ্ধের বেশে দর্শন দেন। দেববাণীতে সন্তিত পেয়ে নারদই প্রতিষ্ঠা করেন তাঁর দেখা বৃদ্ধরূপী বিষ্ণু।

ধ্যানবদরী : এবার হেলাং পৌছে যোশীমঠে ফোরার দিনের শেষ বাসের সময় জেনে এগিয়ে চলুন ৬½ কিমি দূরের উর্গমে। পাণ্ডববাণীয়া পূরঞ্জয়ের পুত্র উর্ব্বাখির তপস্যাক্ষেত্র—নামও তাই উর্গম। জনশ্রুতি, শঙ্করাচার্য এখানেই কেন্দর-নাথের প্রথম মন্দির গড়েন। মন্দির আজও রয়েছে। আর হয়েছে ধ্যানবদরীর মন্দির ৬৩০০ ফুট উঁচু উর্গমে। মূল দেবতা বিষ্ণু; আর আছেন গণেশ, নারদ, কুবের ছাড়াও নানান। থাকার জন্য দেবগ্রামে কল্লেশ্বর হোটেলও আছে। পথ নির্জন, পথশোভা মনোরম। এপথ গিয়েছে আরও এগিয়ে তিব্বত সীমান্তে। এবার হেলাং হয়ে যোশীমঠ ফিরুন। তবে, উর্গম থেকে মাইল খানেকের দূরত্বে রয়েছে পঞ্চকেন্দরার অন্যতম কল্লেশ্বর। উৎসাহীদের কল্লেশ্বরের পথেই এগিয়ে যাওয়া উচিত হবে। চলার পথে পিপল-কোটিতে ধরমশালা, মন্দির কমিটির গেস্ট হাউস, GMVN-এর টারিস্ট রেস্ট হাউস, D ২৫০ ৪০০ ডর্মি ৬০; PWD IH ও নানান প্রাইভেট হোটেল রাতেই বিশ্রাম নেওয়া চলে।

আধবদরী: যোশীমঠ থেকে ডানহাতি ১৫ কিমির বাস দূরত্বে তপোবন। তপোবন থেকে সকাল ৯-০০ ও ১৫-৩০টার বাস যাচ্ছে আরও ৫ কিমি এগিয়ে সুবায়নে। এপথ গিয়েছে আরও এগিয়ে নিতিপাস পেরিয়ে কৈলাস ও মানস সরোবরে। তবে যাত্রীদের কাছে এপথ রুদ্ধ আজ। বাস স্বল্পতায় তপোবন থেকেই পায়ে হাঁটুন। ঋগিগঙ্গা আর ধৌলীগঙ্গার প্রয়াগ—রেনীর আগেই গরম জলের প্রস্রবণ পেরুতেই পাকদণ্ডী পথ উঠেছে সুবায়ন গ্রামের। প্রাণান্তকর চড়াই এপথে। দূরত্ব ৭ কিমি, উচ্চতা ৩০৪৮ মি। ছোট মন্দির, দেবতা বিষ্ণু নারায়ণের বিগ্রহটি আরও ছোট সুবায়নে। ইনিই হলেন আধবদরী। আধবদরী থেকে আরও ২.৪ কিমি চড়াই বেয়ে ৩৬০৬ মি উঁচুতে ভবিষ্যবদরী। মূর্তি রূপ নিচ্ছে পাথরের গায়। প্রবাদ—কলির শেষে বদরী-বিশাল যেদিন চাপা পড়বে নর আর নারায়ণ পর্বতে তখন দেব-পূজা হবে এখানে। যেমন দুরূহ তেমনই দুর্গম এপথ। থাকারও কোনো ব্যবস্থা নেই সারা পথে। তপোবনে সরকারি নিরীক্ষণ ভবন আর স্থানীয়দের পোকানপাট যাত্রীদের ভরসা। তাই সঙ্গে তাঁবু থাকলে রাত্রি বাসে সুবিধা এপথে।

যোগবদরী: বোশীমঠ-বদরী পথে ১৯ কিমি গিয়ে গোবিন্দঘাট, আরও ২ কিমি যেতে বদরীমুখী পথে পড়ে পাণ্ডুকেশ্বর। বদরীর বাসে যাওয়া চলে। বাসপথ থেকে ½ কিমি গাঁয়ের মধ্যে নেমে মন্দির হয়েছে ষোণবদরীর। দেববিগ্রহটি খুবই সুন্দর। কারও মতে ষোণগ্রন্থ রাজা পাণ্ডু বিষ্ণুর উপাসনা করেন এখানে। তাঁরই নামে নাম। ঝিমতে, পঞ্চপাণ্ডবদের নামে নাম হয়েছে পাণ্ডুকেশ্বর।

মন্দিরটিও পাণ্ডবদের গড়া। আর দেবতা ইন্দ্রকে ব্রাহ্মার দেওয়া নারায়ণ মূর্তি। আর ইন্দ্র যুধিষ্ঠিরকে মূর্তি দেন মন্দিরে প্রতিষ্ঠা করার জন্য। এবার বাসে চলুন বদরীবিশাল। মন্দির কমিটির গেস্ট হাউস, PWD IB ও ধরমশালায় থাকারও ব্যবস্থা মেলে।

বদরীবিশাল :

*Bahuni santi tirthani devi bhumo rasasu cha!
Badari sadrisya tirth na bhuta na bhavisyati....*

যোশীমঠ থেকে ৪২ কিমি দূরে বদরী আর হৃষীকেশ থেকে বদরীর দূরত্ব ২৯৪ কিমি। দিল্লীর দূরত্ব ৫১৮, কর্ণপ্রয়াগ ১২৩, রূদ্রপ্রয়াগ ১৫৫, দেবপ্রয়াগ ২২৫, হরিদ্বার ৩১৯, কোটদ্বার ৩৪৩ কিমি। বাসও আসছে নিম্নমিত হরিদ্বার, হৃষীকেশ, কোটদ্বার, কর্ণপ্রয়াগ, দিল্লী থেকে বদরী। নিকটতম বিমান ৩১৫ কিমি দূরে দেবাদুনের জলি গ্রান্ট। যোশীমঠ ছেড়ে পাণ্ডুকেশ্বর, পাণ্ডুকেশ্বর থেকে হনুমানচটি মাঝের এই পথটুকু সামরিক বাহিনীর তত্ত্বাবধানে—পথটুকুও একমুখী। অক্ষয় তৃতীয়া থেকে দীপাবলী (মেন-নভেম্বর) দেবতা থাকেন মন্দিরে। বাকি সময় যোশীমঠে পূজিত হন দেবতা। মন্দিরও রুদ্ধ, বরফে ছাওয়া থাকে বদরী। তাপমান গ্রীষ্মে ১৭.৯—৫.৬ আর শীতে ০° সেন্টিগ্রেডের নিচে অহরহ। বেড়ানার মনোরম সময় জুলাই-আগস্টের বৃষ্টি এড়িয়ে মে, জুন ও অক্টোবর মাস।

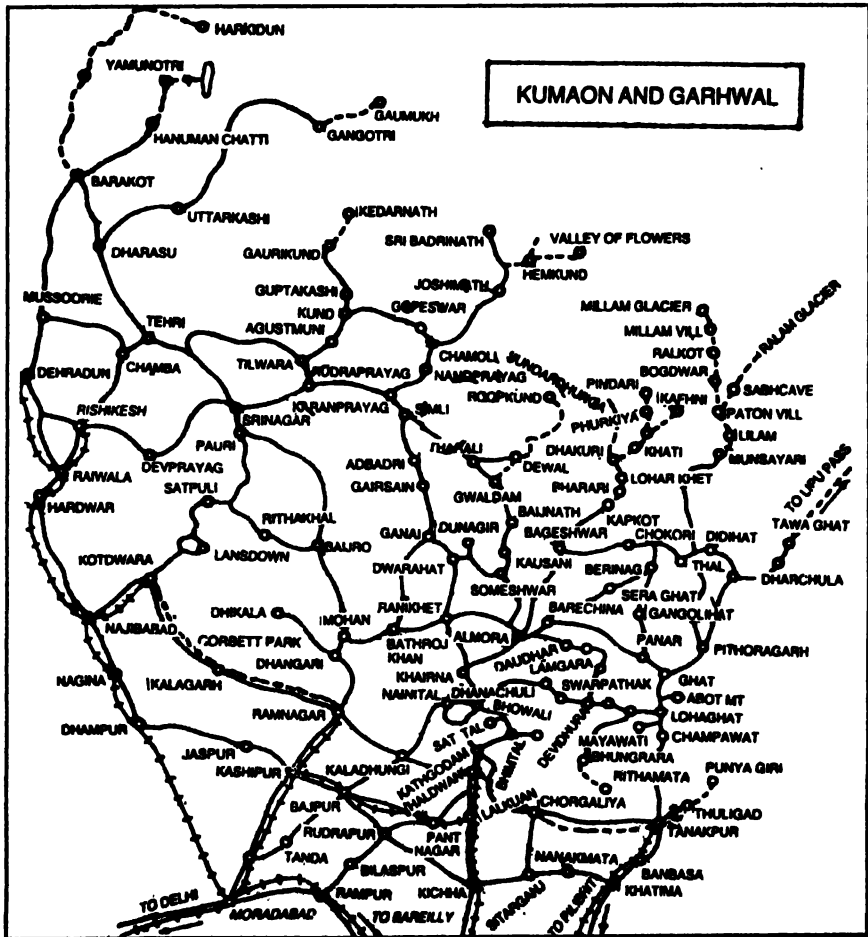
৩১৫৫ মি উঁচুতে বদরীনাথ। বাসও পৌছায় ৬৫৯৬ মি উঁচু নীলকন্ঠ পাহাড়ের পাদদেশে ঋগিগঙ্গা ও অলকানন্দা নদীর সঙ্গম বদরীনাথে। ছোট শহর, পায়ে পায়ের পৌছে যান হোটেল বা ধরমশালায়—কুলিও মেলে বদরীতে। সামনেই ষ্বেত-শুভ্র কিরীট শিরে নীলকন্ঠ পাহাড়—সূর্যোদয়ে এদৃশ্য নয়নাভিরাম। মন্দিরের দুপাশে প্রহরীর মতো দাঁড়িয়ে নর ও নারায়ণ দুই পর্বত। তারই মাঝে বদরীবিশাল। প্রবাদ—মহাভারতের কৃষ্ণ ও অর্জুন পূর্বজন্মে নারায়ণ ও নর ঋষিরূপে তপস্যা করেন। সঙ্গী তাদের নারদ। ঝিমতে, ধর্মের দুই পুত্র এই নর ও নারায়ণ।

৮ শতকে শঙ্করাচার্য বদরী আসেন। প্রাচীন দেবমূর্তি নারদ কৃষ্ণ থেকে উদ্ধার করে তপ্তকুণ্ডের কাছে গরুড় ও শ্মশ্রয় প্রতিষ্ঠা করেন আচার্যদেব। আরও পরে গাড়া-য়ালের রাজা বর্তমান মন্দিরটি গড়ে প্রতিষ্ঠা করেন দেবতা। আর ১৩ শতকে মন্দিরের শিখরটি সোনায়ে মুড়ে দেন ইন্দোরের রানী অহল্যাবাসী। পাথরের কারুকার্যময় মন্দিরের জাফিরির নকশা ও পাথরের বাতায়নগুলি সুন্দর। তবে বৌদ্ধ স্থাপত্যশৈলীর আদল মেলে মন্দিরে। মন্দির-সংলগ্ন গরম জলের প্রস্রবণ তপ্তকুণ্ডে দেবতা অগ্নির অবস্থান। স্নানে সর্বপাণ ক্ষয় হয়। স্নানান্তে পূজা দিন বদরীবিশাল অর্থাৎ বিষ্ণুর। ২১ থেকে ১০০১ টাকায় বিশেষ পূজার প্রথা। চত্বরে মনোতেই গরুড় করজোড়ে সন্তান্য জ্ঞানতে বাস্ত। উঁচু বৌদ্ধতে, মণ্ডিত ও অলঙ্কারে ভূষিত পদ্মাসনে কণ্ঠিপাথরে চতুর্ভুজ দেবতা—একহাতে সুদর্শন চক্র, দ্বিতীয় হাতে পাঞ্চজন্না শব্দ, তৃতীয় হাতে কৌমদকী গদা, চতুর্থ

হাতে পদ্ম; মস্তকে রত্নখচিত কিরীট, শিরোপরি স্বর্ণছাতা। ভক্তের বিপদভঞ্নে ধরাধামে বার বার (১০) আবির্ভাব ঘটেছে সেবশ্রেষ্ঠ বিশ্বর। এর শয্যা-অনন্ত, স্ত্রী-লক্ষ্মী, পুত্র-কামদেব, ধাম-বৈকুণ্ঠ, বাহন-গরুড়। প্রলয়কালে মনুষ্যদেহ ধারণ করে নারায়ণরূপে শেষনাগের উপর শায়িত। তার নাভি থেকে উদ্ভূত পদ্ম থেকে প্রস্থার আবির্ভাব। দর্শনে মোক্ষ লাভ হয়। আর রয়েছেন বামে নর ও নারায়ণ, ডাইনে কুবের; সামনে রূপার গরুড়। প্রাঙ্গণে দেবী লক্ষ্মীও রয়েছেন নিজ মন্দিরে। পূজারী এসেছেন কেবল থেকে রওয়াল নাছুরি সম্প্রদায়ের। মন্দিরের সামনে দিয়ে বয়ে চলেছে অলকানন্দ। মন্দির থেকে নামতেই ডান-হাতি পথ—দু'পাশে দোকানপাট, বাজার। পূজোর সাজসরঞ্জাম থেকে

সবই মেলে। জিনিসপত্রের দাম হ্রদ্বীকেশের মতোই। পি এন বি ও স্টেট ব্যাঙ্কের শাখাও বসেছে বদরীনাথে।

নানান কিংবদন্তী আছে বদরীবিশালকে ঘিরে। ক্ষুদ্রপুরাণে মেলে মুনি-ঋষিদের বাস ছিল অতীতকালে—নামও তাই বিশাল। তারও পরে নাম হয় এর কেশবপ্রয়াগ। কালে কালে বদরীবিশাল। বদরী অর্থাৎ কুল। দেবী লক্ষ্মী স্বয়ং বদরী অর্থাৎ কুল গাছ হয়ে ছত্রাকারে ছায়া সেন নারায়ণকে। নামের বিবর্তন সেই থেকে। আর আছে পঞ্চশিলা অর্থাৎ নারদ, নৃসিংহ, বরাহ, গরুড়, মার্কণ্ডেয়; তীর্থযাত্রীদের অবশ্যই দ্রষ্টব্য। তেমনই মূল মন্দিরকে ঘিরে পঞ্চতীর্থ ঋষিগঙ্গা, কূর্মধারা, নারদকুণ্ড, প্রত্নাদধারা ও তপ্তকুণ্ডে স্নান বিধেয়। ৩ কিমি দূরের চরণ শিলাও অভিযান



করে ফেরা যায়। বাঙালি নাগা বাবা সোমানাথজী আশ্রম গড়েছেন তপস্কুণ্ডের পাড়ে বদরীতীরে। মন্দিরের উত্তরে ব্রহ্মকর্ণাল—পিতৃপুরুষের পিতৃদানে বিষ্ণুলোকপ্রাপ্তি ঘটে।

পরদিন সকালে পায়ে, ষোড়া, গাড়ি বা জিপে বেরিয়ে পড়ুন বদরী থেকে ১০০০ ফুট উঁচু বসুধারা জলপ্রপাত দর্শনে। বদরী থেকে ৮ কিমি দূরে ধর্মশিলায় ধারা নামছে পাহাড় থেকে। জলোচ্ছাসে রামধনুর সাতরঙ খেলে; আর রয়েছে স্রেসিয়ার। বিষ্ণু-গঙ্গারও জন্ম বসুধারার জলপ্রপাতে—গিয়ে মিলেছে অলকানন্দায়। প্রবাদ, বশিষ্ঠ মূনির অভিষাপ মোচনের তরে দক্ষকন্যা বসুর আটপুত্র—অষ্টবসু ৩০ হাজার বছর তপস্যা করেন এখানে। তপস্যায় তুষ্ট গঙ্গা বসুধারা রূপে নেমে আসেন। কথিত আছে, পানীদের গায়ে বসুধারার জল পড়ে না। তবে, এপথ যথেষ্ট দুর্গম। পাহাড় কেটে পায়ে চলা সরু পথ। তবে কৈদারের গথ এ-দুশ্যের স্বাদ মেটায়। মাঝপথে মহাভারতের মানা গ্রাম। ইন্দো-মঙ্গোলিয়ান সম্প্রদায়ের বাস। তিব্বতের পথে শেষ ভারতীয় বসতিও এই মানায়। সমগ্র বেদ ৪ খণ্ডে সম্পাদনা করেন ব্যাসদেব মানার ব্যাস-গুহায়। মূর্তি হয়েছে ব্যাসদেবের। পাশেই গণেশ গুহা, অদূরে পাষাণদেবীর মাতা মন্দির, মহাপ্রস্থানের পথে দ্রৌপদীর সরস্বতী নদী পেরুবার জন্য ভীমের গড়া ভীম পুলও দেখে নেওয়া যায়। আর রয়েছে অলকানন্দা ও সরস্বতীর সঙ্গম—কেশবপ্রয়াগ।

সতোপস্হ তাল: বদরীনাথ থেকে পাণ্ডবদের মহা-প্রস্থানের পথ ধরে সতোপস্হ তাল অর্থাৎ স্বর্গের পথও অভিযান করে নেওয়া যায়। মানা গ্রাম থেকে বসুধারাকে ডাইনে রেখে নীলকন্ঠের পাশ দিয়ে পথ চলে চামতালী উপত্যকায়। তারপর লক্ষ্মীবন হয়ে ১৩ কিমি গিয়ে বাণধারে প্রথম রাতের বিশ্রাম। অর্জুন বাণ মেরে জল তুলে তৃষ্ণা নিবারণ করেন ১৩০০০ ফুট উঁচু বাণধারে। বাণধার থেকে ৮ কিমি দূরে চক্রাকার উপত্যকা চক্রতীরে ২য় রাতের বিশ্রাম। আরও ৫ কিমি গিয়ে সতোপস্হ তাল। খুবই দুর্গম এপথ। চড়াই-এর আধিক্য—তেমনই আছে চলতে-ফিরতে মরণ ফাঁদে অর্থাৎ ক্রিভাস। আভালাঞ্চ ও এপথে যখন-তখন ঘটে চলে। ৩০ কিমিতে ৫০০০ ফুট উঠতে হয় বদরী থেকে সতোপস্হে। ৩য় দিনে ১৮ কিমি পরিক্রমায় চক্রতীর থেকে গিয়ে সতোপস্হ দেখে রাতের বিশ্রাম বাণধার ফিরে। ৪র্থ দিনে মানা হয়ে বদরীনাথ ফেরা যেতে পারে। ৫ থেকে ৭ দিনের রেশন, তাঁবু, গাইড ও কুলি সঙ্গে নিতে হয়। ভারতীয়দের অনুমতি না লাগলেও ভারতীয় নাগরিকদের নিদর্শনপত্র সঙ্গে রাখা ভাল। তাল থেকে ১৫ কিমি দূরে ভারত-চীন সীমান্ত।

১৬০০০ ফুট উঁচুতে ১৫ কিমি ব্যাপ্ত সতোপস্হ তাল। পূর্ণাং বসে, ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর অবস্থান করেন ▲ ধর্মী ত্রিকোণা লেকের তিন কোণে। বালাকুল, চৌখামা, সতোপস্হ, স্বর্গারোহিণী, নীলকন্ঠ কাঁধে কাঁধ মিলিয়ে পরপর দাঁড়িয়ে।

বেড়াবার মরসুম মে মধ্য থেকে জুনের মধ্য ভাগ, আবার সেপ্টেম্বরের মধ্য থেকে অক্টোবরের মধ্য ভাগ।

তুষারবল নীলকন্ঠ পাহাড় আর মন্দির দেখে আরও এক দিন থাকুন বদরীতে। আবার ১৬ কিমি দূরের সতোপস্হ লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন ট্রেক করে। পথেই পড়ে সতোপস্হ ও ভগীরথ হিমবাহ থেকে সৃষ্ট অলকানন্দার উৎস। ব্যস্ততা থাকলে সকাল ৮-১০টায়ে ভূখ হরতাল বা নানান বাসে যৌশীমঠ/চামৌলী/গোপেশ্বর/ কুণ্ড/গুপ্তকাশী হয়ে ১০ ঘণ্টায় ৯১ টাকায় গৌরীকুণ্ড পৌছান; বা ১০-৩০টার বাসে রুদ্রপ্রয়াগ ফিরুন; বা ৬-৩০টার বাসে দিনে দিনে হরিদ্বার পৌছে যান। পরের বাসগুলি পথে রাত কাটিয়ে হরিদ্বার পৌছান দ্বিতীয় দিনে।



GMVN-এর H Deolok, DAB ২৫৫ ৩৫০ সুইট ৬০০, পুরাতন বাস স্ট্যাণ্ডে এদেরই Tourist Rest House-এ ১৫০ টাকায় ডাবল বেডের ঘর।

এছাড়াও রেস্ট হাউস আর ধরমশালায় রয়েছে নানান বদরীতে—বিড়লা মঙ্গল নিকেতন, তলকা, ডেক্টেশ্বর সদন, চাঁদ, বেঙ্গলি, বুনঝুনওয়ালা, কালীকমলী, বাজোরিয়া, ডজন আশ্রম, মোদী ভবন, মানবকল্যাণ, গীতা মন্দির, মহারাষ্ট্র ধরমশালা, তানপুরিয়া, পরমার্থলোক, বালানন্দ ব্রহ্মচারী আশ্রম, শ্রীকৃষ্ণ নিবাস, মন্দির কমিটির গেস্ট হাউস—বদরী সদন, PWD IB: নতুন বাস স্ট্যাণ্ডে—ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ; পুরাতন বাস স্ট্যাণ্ডে—ভোলা গিরি, বাসুর, পাঞ্জাব সঙ্ঘ: পাণ্ডা ঠাকুরদের বাড়িতেও আতিথ্য মেলে। বাঙালির পাণ্ডাঠাকুরের হীরালাল ভট্ট (ধীরেন ভট্টের ভাইও পুত্রো) বা পঞ্চভাই সুবোধচন্দ্র—এঁদের সঙ্গে যোগাযোগ করে পূজার ব্যবস্থা করা যায়। শ্রীভট্টদের ধরমশালাও আছে—শ্রীকৃষ্ণ নিবাস। বাথ সংলগ্ন ঘর এঁদের। আয়োজন ভালই। বাঙালি যাত্রীদের অবস্থানও বেশি শ্রীকৃষ্ণ নিবাস, ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ, বালানন্দ ও ভোলাগিরিতে। তেমনই হয়েছে মুখার্জী হোটেল, সারদেশ্বরী হোটেল বদরীতে। আর বাঙালি খাবারের ব্যবস্থা করেছে বালানন্দের বিপরীতে কলকাতার সুপ্রিয়া টার হোটেল করে। বাসস্ট্যাণ্ড ও ভোলাগিরির বিপরীতে সারদেশ্বরীতেও আহাৰ্যে বাঙালিয়ানা মেলে।

রুদ্রপ্রয়াগ: হাবীকেশ থেকে ১৩৯ কিমি দূরে—হাবীকেশ-কৈদার আর হাবীকেশ-বদরীর পথে ৬১০ মি উঁচুতে জমজমাট গঙ্গা রুদ্রপ্রয়াগ। বদরীর দূরত্ব ১৫৫, গৌরী-কুণ্ড ৭৩, টেহরি ১১০, দেবপ্রয়াগ ৭০ কিমি। পথও পৃথক হয়েছে রুদ্রপ্রয়াগ পেরুতেই—বদরী যাচ্ছে কর্প্রয়াগ/নন্দপ্রয়াগ/চামৌলী/পিপলকোট/যৌশীমঠ হয়ে; আর কৈদারের পথ গিয়েছে অগস্ত্যমুনি/কুণ্ড/গুপ্তকাশী/নাল/সীতাপুর/শোনপ্রয়াগ হয়ে। অলকানন্দা আর মন্দাকিনীও মিলেছে এই রুদ্রপ্রয়াগে এসে। সঙ্গমে দেখুন জগদম্বা মন্দির আর সঙ্গম শিরে টিলার টঙে প্রাচীন রুদ্রনাথ। আর আছে নারদ শীলা—লোকশ্রুতি, নারদ এই শিলায় বসে শীঘ্রা বজ্রাঘাতে। নারদের দর্প ভাঙতে রুদ্রের আগমন। পরদিন সকাল ৭-১০টার বাসে গৌরীকুণ্ড চলুন। ১১ ঘণ্টা আগে বুকিং কাউন্টার খোলে বাসের, অগ্রিম বুকিং-এর ব্যবস্থা নেই; তাই

আগেভাগেই হাফ্রি হতে হয় বুকিং কাউন্টারে। মন্দাকিনী পেরুতেই চেকপোস্ট—কেদার যাত্রীদের কলেরার সাটিফিকেট দেখানো বিধি।

রুদ্রপ্রয়াগ থেকে চোপড়ার বাসে ৫ কিমি দূরের কোটিম্বর শিব মন্দিরটিও বেড়িয়ে ফেরা যায়। জিপও যাচ্ছে এপথে। আবার ট্রেক করলেও এক ঘণ্টায় চলা যেতে পারে কোটিম্বর দর্শনে। পাহাড়ে ঘেরা শাস্ত-সুনিবিড় আরণ্যক পরিবেশে বিশাল চত্বরে মন্দির হয়েছে কোটিম্বর শিবের। ধরমশালাও আছে মন্দির লাগোয়া। মন্দির থেকে আরও নেমে গিরিগুহায় রঙবেরঙের নানান শিবলিঙ্গও দেখে নিতে পারেন অত্যাংসাহীরা। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে মন্দাকিনী। তেমনই রুদ্রপ্রয়াগের ৩ কিমি আগেই পথে পড়ে শুলাবরায় চটি। এই শুলাবরায় ১৯২৬এর ২রা মে ১২৬ জনকে হত্যাকারী নরখাদক বাঘটি বধ করেন জিম করবেট। মেলা বসে বাঘ হত্যার স্মরণে আজও। স্মৃতিফলক স্মরণ করায় সে আখ্যান।



GMVN-এর Mandakini Tourist Lodge এবং Tourist Complex ৪৮/৬০ টাকায় বেড, সুইট ৬০০ A/c ৭০০; ছাড়াও রয়েছে PWD IB ও ফরেস্ট বাংলা। এ-ছাড়া মন্দির কমিটির ধরমশালা, কালীকমলী, বদরীনাথ ধরমশালা, বিড়লা পেস্ট হাউস; প্রাইভেট হোটেল—হোটেল সঙ্গম, মন্দাকিনী ট্যুরিস্ট লজ, পুষ্পাঙ্গীপ আর্হে রুদ্রপ্রয়াগে। আমিষ আহাৰ্যও মেলে বাস স্ট্যান্ডের ট্যুরিস্ট হোটеле।

হেমকুণ্ড সাহিব ও ভ্যালি অব ফ্লাওয়ার্স

যৌশীমঠ-বদরী পথে যৌশীমঠ থেকে ১৯ কিমি যেতে ১৮২৯ মি উচুতে ১০ম শিখ গুরুর নামাঙ্কিত গোবিন্দঘাট। বদরীর দূরত্ব ২৩ কিমি গোবিন্দঘাট থেকে। বাস পথ থেকে ১ কিমি গিয়ে গুরদ্বারা। থাকা ও আহাৰ্যের ব্যাপক ব্যবস্থা। কফলও মেলে সাথে। আর আছে অতিরিক্ত জিনিস রাখার ক্লোকরুম ব্যবস্থা গুরদ্বারা। FRH অব: DFO, Gopeswar আছে অদূরে। গুরদ্বারাকে ঘিরে প্রাইভেট হোটেল—Bharat GH, Hem Tourist RH, Sapt Sringa Tourist RH; আর দোকানপাটও হয়েছে গোবিন্দঘাটে। গোবিন্দঘাট থেকেই হাঁটাপথের শুরু হেমকুণ্ড সাহিব ও ভ্যালি অব ফ্লাওয়ার্সে। ঘোড়া, কুলি, ডাণ্ডিও মেলে যাতায়াতে। মিলনও ঘটেছে অলকানন্দার সাথে ভূইন্দর গঙ্গার গোবিন্দঘাটে।

গোবিন্দঘাট থেকে ঘণ্টা সাতকে ১২১ কিমি গিয়ে ৩০৪৯ মি উচুতে পাইনে ছাওয়া ঘাংঘারিয়া। চড়াই ও উতরাই দুইয়েরই সমন্বয় ঘটেছে এ-পথে। গুরদ্বারার সামনে সেতুতে অলকানন্দা পেরিয়ে লক্ষ্মণ (ভূইন্দর) গঙ্গার পাড় ধরে পথ—আরণ্যক শোভা মুগ্ধ করে সারাপথে। ৯ কিমি যেতে ভূইন্দর ভ্যালি থেকে কাকভূষণ্ডির পথ গিয়েছে। আরও ৩১ কিমি চড়াই বেয়ে ঘাংঘারিয়া।



Ghanghariya-তেও গুরদ্বারা আছে। আর আছে GMVN-এর ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস D ৩০০ ৪৫০ ডার্মি ৯০; ফরেস্ট বাংলাও চটির হোটেল—Krishna L, Hemkunt Travellers L, H Valley View, H Nanda Devi, H Kuber, H Devibhumi, H Meheta আছে।

বিজলীও পৌছেছে ঘাংঘারিয়ায়। কফল, আহাৰ্য ও পোষার ঢালাও ব্যবস্থা মেলে বিশাল গুরদ্বারায়।

গোবিন্দঘাট থেকে রওনা হয়ে ১ম দিন ঘাংঘারিয়ায় পৌছে বিজ্রাম, ২য় দিন হেমকুণ্ড বেড়িয়ে রাতের বিজ্রাম ঘাংঘারিয়ায়; ৩য় দিন নন্দনকানন বেড়িয়ে দিনে দিনে গোবিন্দঘাট পৌছে রাতের বিজ্রাম নিন গুরদ্বারায়। অর্থাৎ ৬ দিনে অভিযান করে আসুন হেমকুণ্ড সাহিব ও নন্দনকানন। GMVN-ও প্যাকেজ ট্যুরে আসছে হাথীকেশ থেকে জুলাই-আগস্টে। তবে, পরিবেশ সংরক্ষণের স্বার্থে অনুমতি লাগে নন্দনকানন দর্শনের। টিকিটও লাগে ২ টাকার। ক্যামেরারও চার্জ লাগে মান হারে। সবই মেলে প্রবেশ ফটকে।

পরদিন সাত সকালে চলুন হেমকুণ্ড সাহিব-এ। এপথের দূরত্ব ৫১ কিমি। তবে, দুরাই চড়াই সারা পথে। অনেকেই হাঁটুর বলে ভরসা না পেয়ে ঘোড়ায় চাপেন, হেমকুণ্ড যাতায়াতের ভাড়া ১০০। ডাণ্ডি, কাণ্ডিও মেলে। অত্যধিক শীত ও উচ্চতা হেতু যাত্রীদের সাবধানতাও পালনীয়। শিখদের ধর্মগ্রন্থ গ্রন্থ সাহিবের উল্লেখিত হয়েছে, ১০ম গুরু গোবিন্দ সিংহী পূর্বজন্মে মেধস মুনি নামে বরফাবৃত সপ্তশৃঙ্গেরা নীল-সবুজ জলের সরোবরের তীরে তপস্যা করেন। দৈবদেশে শোনেন খালসা ধর্ম প্রচারের। সে নাকি এই হেমকুণ্ডে। ১৯৩৬এ হাবিলদার সোহন সিং আবিষ্কার করেন মেধস মুনির তপস্যা তীর্থ আজকের হেমকুণ্ড। কুটুর ও গড়ে ওঠে—প্রতিষ্ঠা পায় গ্রন্থ সাহিব ১৯৩৭এ। শিখদের পবিত্র তীর্থ। গুরদ্বারা হয়েছে ৪৩২০ মি উচু হেমকুণ্ডে অর্থাৎ বরফ লেকের পাড়ে। অতীত নয়নাভিরাম প্রকৃতিদণ্ড এই লেক। সারা বছরই বরফ ভাসে লেকের জলে। জানে পুণ্য মেলে। এপথ চলার মনোরম সময় জুলাই থেকে অক্টোবরের ১৫। থাকার ব্যবস্থা মেলে গুরদ্বারায়। চা ও প্রসাদও মেলে। তবুও যেন উচিত হবে দর্শন সেরে ঘাংঘারিয়ায় ফিরে চলা। পাশেই এক হিন্দু তীর্থ লোকপাল অর্থাৎ লক্ষ্মণ মন্দির। রাবণ বধের পাপস্থানে শ্রীরামের ভাই লক্ষ্মণ তপস্যা করেন এখানে। লক্ষ্মণ-গঙ্গা নদীর উৎসও এই হেমকুণ্ডে। গোবিন্দঘাট থেকে হেমকুণ্ডের সারা পথেই চায়ের দোকান মেলে স্বল্প ব্যবধানে। আর মেলে ব্রহ্মকমল হেমকুণ্ডের পথে। প্রকৃতিও সুন্দর পথপাশের।

প্রকৃতি রানীর আর এক অদ্ভুত খেলাঘর ঘাংঘারিয়া থেকে ৩১ কিমি দূরে ৩৫২৫ মি উচুতে ৫x২ কিমি প্রশস্ত ভূইন্দর উপত্যকায় অ্যালপাইনস ফুলের সমারোহ। উত্তরে নীলগিরি, দক্ষিণে সপ্তশৃঙ্গ আর পশ্চিমে রতাবন—বরফে মোড়া পাহাড়শ্রেণী প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। শোনা যায় ৩০০ রকমের ফুল ফোটে ভ্যালি অব ফ্লাওয়ারস অর্থাৎ নন্দনকাননে। রঙবেরঙের পটেনটিলা, অ্যাস্টার, জেরোলিয়াম, বাটারকাপ ছাড়াও নানানধর্মী ফুলের বর্ণালীর বাহার সভাই যেন মর্ত্যধামে স্বর্গের নন্দনকানন সম। ১৫ই জুলাই থেকে ১৫ই আগস্ট সবুজের গালচে পেতে আলপনা আঁকে নানান বর্ণের

নানান ধর্মের চেনা-অচেনা ফুল। তবুও যেন ১ মাস আগ-
লিখে চলা যেতে পারে ফুলের এই জলসাঘরে। তবে, বরফ
ও বৃষ্টি এই দুইয়ের উপর ফুলের ফোটা অনেকাংশে
নির্ভরশীল। পুষ্পবতী পাহাড়ী নদী ভূইশ্বর বয়ে চলেছে
উপত্যকার মাঝ দিয়ে। জন্ম এর নন্দনকাননের শিরে রতাবন
তথা ঘোরা খুন্সি স্রেসিয়ারে। তেমনই স্রেসিয়ারের শিরে টোপর
হয়ে দাঁড়িয়ে শিবলিঙ্গের মতো সুমেরু শিখর। আর আছে
উপত্যকার ডাইনে জুলাই ৪, ১৯৩৯ পা পিছলে মৃত লন্ডন
থেকে আসা পুষ্প প্রেমিকা ইংরেজ তরুণী জোয়ান মার্গারেট
লেগির সমাধি। ঘাংঘারিয়া থেকে ৬ কিমি গিয়ে লক্ষ্মণ-গঙ্গার
পুল পেরুতেই ভুগিয়াল থেকে বামহাতি পথ গিয়ে নন্দনকান-
কানন—স্থানীয়দের মুখে ফুলেী কী ঘাঁটা বামে নন্দনকানন
আর ডাইনে হেমকুণ্ড—অনেকটা ইংরেজি ১৮৭৫র মতো
দ্বিমুখী হয়েছে পথ ভুগিয়ালে। পরিবেশ সংরক্ষণের স্বার্থে
অনুমতি তথা টিকিট লাগে ২ টাকার নন্দনকানন দর্শনে।
ক্যামেরারও চার্জ লাগে মান হারে। স্বল্প যেতে পথ চলে
স্রেসিয়ারের উপর দিয়ে—পাতালস্পর্শী মরণখাদ ক্রিভাস
ডাইনে-বামে। সতর্কতার সাথে স্রেসিয়ার পেরিয়ে পাহাড়
ঘুরে গেট অব হেভেন অর্থাৎ ভ্যালি অব ফ্লাওয়ার্সের
প্রবেশতোরণ। ১৯৩১এ কামেত অভিযান করে ফিরতি পথে
গাড়েয়াল পর্বতমালায় পথ হারিয়ে Frank Smythe-এর
আবিষ্কার এই ফুলেী কি ঘাঁটা।

বদরী থেকে কেলারের বিকল্প পথ : অনেক সময় মালবাহী
ট্রাক হেমকুণ্ড-নন্দনকাননের যাত্রীদের গাণিবদ্যট থেকে নিয়ে
আসে যোগীমঠে। অন্যথায় বদরী থেকে আসা বাসের উপর
নির্ভর করতে হয়। আবার বদরী বা যোগীমঠে যথেষ্ট যাত্রী হলে
কেলারগামী বাসগুলি রুদ্রপ্রয়াগ না গিয়ে বদরী থেকে এসে
সরাসরি যোগীমঠ ৪২—চামোলী ৫৩—গোপেশ্বর ১০—
শুশুকালী ৩৯ কিমি হয়ে গৌরীকুণ্ড পৌছায়। নিয়মিত সার্ভিস
বাস ভূখ হরভাল ছাড়াও চলেছে নানান এপথে। বদরী থেকে
চামোলী/কুণ্ড হয়ে গৌরীকুণ্ডের দূরত্ব ১৮০ কিমি। ভাড়া ৯১।
আর রুদ্রপ্রয়াগ হয়ে দূরত্ব ২৩৬ কিমি। কেলার থেকেও বদরীর
যাত্রীরা গৌরীকুণ্ড হয়ে অনুরূপভাবে যেতে পারেন।
আবার হরীকেশ না গিয়েও বদরীনাথ চলা যায়। হাওড়া
থেকে ট্রেন লক্ষ্মী/বেরিকি/কঠগোদাম পৌছে কঠগোদাম
থেকে রানীকোট ৮৪, রানীকোট থেকে কৌশানী হয়ে রুদ্রপ্রয়াগ
৮৫, আর রুদ্রপ্রয়াগ থেকে ১২৩ কিমি দূরের বদরী পৌছান
বাসে বাসে। এছাড়া দুন এন্ডে হরিবারের আগেই পড়ে
নাজিবাবাদ রেলস্টেশন। গভীর রাতে দুন পৌছায় নাজিবাবাদে।
নাজিবাবাদ নেমে ট্রেন বা বাসে কোটবার পৌছে আবার বাসে
বদরীনাথ। শ্রীনগর হয়ে পথ গিয়েছে, দূরত্ব ৩২৮ কিমি। তবে,
দুটি পথের কোনোটিই ব্রহ্মাখীনের পছন্দ নয়। উচিতও হবে
হরীকেশ হয়ে বদরী যাওয়া।

১৯৮১তে জাতীয় উদ্যান-এর শিরোপা পরেছে ভ্যালি
অব ফ্লাওয়ারস। ৮৭.৫ বর্গ কিমি জুড়ে নানান জন্তু-
জানোয়ার, পশু-পাখির বাস। বরফচিটা ও কস্তুরী ঝুগ

এদের মধ্যে উল্লেখ্য। যে থেকে নভেম্বর মাসে চলা যেতে
পারে জাতীয় উদ্যান দর্শনে। রাতে থাকার কোনো ব্যবস্থা
নেই জাতীয় উদ্যানে।

পঞ্চকোদার

শিবের বয়স যত কেলার প্রাচীন তত। ভগবান নর-
নারায়ণ মাটি দিয়ে মূর্তি গড়ে পূজা করেন শিবের। দর্শন
দেন শিবঠাকুর। ভক্তের বাঞ্ছা পূরণে কেলারখণ্ডে বাসের
অনুরোধ রাখেন শিব সকাশে নর-নারায়ণ। সেই থেকে
শিবের বাস কেলারে।

চাঁদেও যেমন কলঙ্ক আছে তেমনই কলঙ্কিত হয়ে পড়েন
পঞ্চপাণ্ডব—কুরুক্ষেত্রের ধর্মযুদ্ধে আত্মীয়-পরিজন নিধনে
স্পর্শ করে পাপ। মহর্ষি বেদবাসের পরামর্শে পাপস্থলানে
হিমালয়ে গেলেন দেবাদিদেব মহাদেব দর্শনে পঞ্চপাণ্ডব।
দর্শন দিতে অনিচ্ছুক শিব পালিয়ে বেড়ান। নাছোড়বান্দা
পঞ্চপাণ্ডবও পিছু নেন শিবের। শিব তখন মহিষরূপ ধারণ
করেন। জাপ্টে ধরেন ভীম মহিষরূপী শিবের পশ্চাদভাগ
কেদারে। টুকরো হয়ে ছিটকে পড়ে মহিষরূপী শিবের অঙ্গ।
কেদারে—পশ্চাদভাগ, মদমহেখরে নাড়ি, তুঙ্গনাথে বাহু,
রুদ্রনাথে মুখ, কল্মষধরে জটা। গাড়েয়াল হিমালয়ের এই
পাঁচ পুণ্যভূমি পবিত্র হিন্দুতীর্থ—পঞ্চকোদার নামে পূজিত।
অনেক তীর্থযাত্রীর ধারণা পঞ্চকোদার অদর্শনে কেলার
দর্শনের পূর্ণ অর্পণ থাকে। লোকশ্রুতি, পাণ্ডবরাই নাকি এই
পাঁচ মন্দিরের প্রতিষ্ঠাতা। ১৭০০-১৮০ কিমি ট্রেক করে দেখে
নেওয়া যায়। তবে, চারপাশের মায়াবী প্রকৃতি পথপ্রান্তির
ক্লাস্তি দূর করে। আর, মহিষরূপী শিবের সম্মুখভাগ ছিটকে
গিয়ে পড়ে নেপালের পশুপতিনাথে।

কেদারনাথ : রুদ্রপ্রয়াগ থেকে সকাল ৭-০০টার বাস
গৌরীকুণ্ডে পৌছায় ১৩-৩০টায়, দূরত্ব ৭৩ কিমি, ভাড়া ৩৮;
উচ্চতা ৬৫০০ ফুট। দুপুরের আহার সারুন চটির হোটеле।
খাবার তৈরি না পেলে চটির হোটеле অর্ডার দিন—বানিয়ে
দেবে। আর হরীকেশ থেকে গৌরীকুণ্ড ১১২ কিমি; বাসের
ভাড়া ৯৫। গঙ্গোত্রী থেকে ৩৪৯ কিমি, ভাড়া ১৬০;
বদরীনাথ থেকে রুদ্রপ্রয়াগ হয়ে গৌরীকুণ্ড ২২৮ কিমি, ভাড়া
৯৯। আর চামোলী ১০৮—গোপেশ্বর ১২৮—কুণ্ড ৫৪
হয়ে বদরী ১৮০ কিমি। ভূখ হরভাল ছাড়াও নানান বাস
চলছে এ-পথে বদরীনাথ থেকে ১০ ঘণ্টায় গৌরীকুণ্ডে।
ভাড়া ৯১।

বাস যাচ্ছে কেলার যাত্রী নিয়ে গৌরীকুণ্ড পর্বত। কেলারের
হীটাপথেরও শুরু কেলারের সিংহভার গৌরীকুণ্ড থেকে। তবে
ডাঙি, কান্ডিতেও বাওয়া চলে, আর মেলে ঘোড়া এপথে।
ঘোড়ার সঙ্গে সহিষ থাকে। মালপত্র বেশি হলে খচ্চর বা
কুলি নিতে হবে। ভাড়া যাতায়াতে ২০ কেজি মালবহনের
কুলি ১৭০ আধিকো ২২৫, ঘোড়া ৪৫০/৫০০, খচ্চর
৩৫০, ডাঙি ১২৫০-১৬০০; আর লাগে শুক ১৭ হারে।

রাতের অবস্থানে কুলি ২৫ ঘোড়া ৪৪ খচ্চর ৬৩ ডাতি ১০০ ১৫০ ২০০ অতিরিক্ত। আবার ষাওয়া ও আসার চুক্তিতেও যাচ্ছে এরা। অতিরিক্ত লাগেজ রেলের লেফট লাগেজের মতো রেখে যান চটির হোটেল। রসিদ দেবে—লাগেজ প্রতি ভাড়া ২ করে। এদের সরলতাকে বিশ্বাস করে তারা ছাড়াই রেখে চলা যেতে পারে। সরকারি ব্যবস্থাও আছে। আর আছে বাস স্ট্যান্ডের মাথার উপর GMVN-এর ২৪ বেডের ট্রাভেলার্স লজ। কয়ল বিছানা সহ ডর্মি প্রথায় বেড ৭৫; আহাৰ্যও মেলে। এদেরই ট্যুরিস্ট লজে DAB ৩৫০ ৪০০। রান সারুন গরম জলের কুণ্ডে। কুণ্ডের পাড়ে গৌরীদেবীর মন্দির দেখে লজ্জে ফিরুন। পুরাণে মেলে, হিমালয়-দুহিতা দেবী গৌরী শিবকে পতিরূপে পেতে এখানে তপস্যা করেন। ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ ও মন্দির কমিটির ধরমশালাও আছে কুণ্ডের পাড়ে। এদেরও ক্রোকফর্ম ব্যবস্থা আছে। আর আছে বাঙালির রসনা তৃপ্তির জন্য কলকাতার সুপ্রিয় ট্যুরের খাবারের হোটেল গৌরীকুণ্ডে।

আরাম হারাম হায়—পরদিন সাত সকালে বেরিয়ে সকালের চা খান আরাম চটি টপকে ৪ কিমি এগিয়ে জঙ্গল-চটিতে। চায়ের সঙ্গে পাকৌড়া মেলে। আবার চলার শুরু। আরও ৪ কিমি গিয়ে রামওয়াড়া চটি। সকালের জলাহর রামওয়াড়াতে সারুন। রামওয়াড়ায় চটির সংখ্যাও বেশি। অদূর ভবিষ্যতে পাহাড় কেটে পথ এগিয়ে আসছে রামওয়াড়া পর্যন্ত। সেইসঙ্গে এগিয়ে আসছে বাসের চাকা কদারখাত্রীদের নিয়ে। তখন রামওয়াড়া থেকেই পায়ে হাঁটা শুরু হবে কদারের। রামওয়াড়া থেকে কদারের দূরত্ব মাত্র ৬ কিমি। গরুড় চটি পেরুতে হয় মাঝামাঝি দূরত্বে। চড়াই-এরও আধিক্য এপথে। তবে, পথ চলার ক্লান্তি দূর করতে চায়ের গ্রাস মেলে গরুড়ে।

গরুড় পেরুতেই স্বর্ণকলস শিরে মন্দিরের চূড়ো দৃশ্যমান। তার পিছে তুষারখল কদারনাথ পাহাড়। স্বল্প যেতে বাঁয়ে GMVN-এর ট্রাভেলার্স লজ ও হোটেল হিমলোক, থাকার পক্ষে ভালই; তবে মন্দির থেকে দূরত্ব বেশি। আনন্দময়ী মায়ের আশ্রমটি হিমলোকের সন্নিকটে। কাঠের সেতুপেরিয়ে বাজারঘাট, দোকানপাট সবই মন্দির লাগোয়া। একাধিক ধরমশালাও আছে মন্দিরকে ঘিরে কদারে। আর আছে বিড়লা মঙ্গল নিকেতন, মোদিভবন, মন্দির কমিটির রেস্ট হাউস, ঠাঁদ ভবন, আরতি ভবন, ডাবল স্টোরি বিড়লা ছাড়া বাকিদের বুকিং মন্দির কমিটি করে। এছাড়াও রয়েছে—ভজন আশ্রম, নেপাল ভবন, জে কে ভবন, যুগীলাল কমলপথ, মুন্ডাভবন, ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘ, যোগময়া আশ্রম। বদরী ও কদারনাথের সুসজ্জিত বিড়লা মঙ্গল নিকেতনে থাকার অগ্রিম বুকিং: Jayashree Charity Trust, 9/1 R N Mukherjee Rd, Cal-1. খাবারের হোটেলও আছে নানান। লেপ কয়লও ভাড়া মেনে প্রায় সর্বত্র।

কলকাতা থেকে হরীকেশ ট্রেনে ১৪৯৬ কিমি, হরীকেশ থেকে গৌরীকুণ্ড ২১২ কিমি বাসপথ আর গৌরীকুণ্ড থেকে ১৪ কিমি পায়ে হাঁটা পথে কদারনাথ। অর্থাৎ কলকাতা থেকে ১৭২২ কিমি দূরে ৩৫৮৪ মি উঁচুতে হিমালয়ের নয়নাভিরাম নৈসর্গিক শোভার মাঝে ২x১ কিমি ব্যাপ্ত উপত্যকায় বিরাজ করছেন কদারনাথজী। গঠনশৈলী, স্বাতন্ত্র্য ও মাধুৰ্য অনবদ্য কালো গ্রানাইট পাথরের মন্দিরে দ্বাদশ জ্যোতির্লিংগের (১১শ) অন্যতম কালো মর্মরের কদারনাথ। কদারনাথ পাহাড়ের পাদদেশে মন্দাকিনী উপত্যকায় পাণ্ডবদের হাতে তৈরি মন্দির। মন্দিরময় ভারতের মন্দিরগুলির মধ্যে এর গঠনশৈলী স্বতন্ত্র। ভেতরের দেওয়ালে নানান দেব-দেবী মূর্তি হয়েছেন। মন্দিরের চত্বর বেশ উঁচু। প্রশান্ত ভাবগম্ভীর পরিবেশ সারা মন্দিরময়। দুধগঙ্গা, মধুগঙ্গা, স্বর্ণদুয়ারী ও সরস্বতী—স্বর্ণের এই চার নদী এসে মিলেছে মন্দাকিনীর সলিলে। মন্দিরের পিছন থেকে নেমে আসছে এরা—দেখে মনে হয় উপবীত পরেছে পাহাড়। উজ্জল তাদের চলার ছন্দ। আওয়াজে শব্দ নিনাদ মেলে—মন্দির চত্বর ধুয়ে এগিয়ে চলেছে মর্ত্যভূমে। সাধারণত দীপাবলীতে দরজা বন্ধ হয় মন্দিরের, খোলে অক্ষয় তৃতীয়ায়। বছরের বাকি সময়টা বরফে ঢাকা থাকে কদার, মন্দিরও বন্ধ। শীতের দিনগুলিতে দেবপূজা হয় উষ্মীমঠ থেকে। কদার থেকে ৫৩ কিমি দূরে মন্দাকিনী পেরুতেই কুণ্ড হয়ে পথ গিয়েছে উষ্মীমঠের। কদার মর্শনের মরসুম মে-জুন আবার সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস। গ্রীষ্মে ১৭.৯-৫.৬° আর শীতে ০° সেন্টিগ্রেডে তাপমান থাকে।

মন্দিরের পিছনে দেখুন ৮ শতকে হিন্দুধর্মের বিজয় বৈজয়ন্তী ডিঙিয়ে হিন্দুধর্মকে সনাতন বৈদিক আদর্শে নতুন করে প্রতিষ্ঠা করেছিলেন যিনি সেই জগৎগুরু শঙ্করাচার্যর সমাধি। আর মন্দিরের সামনে—ডাহিনে সরস্বতী পেরুতেই হংসকুণ্ড, পাশেই ফলাহারী বাবার সমাধি। এদেরই কাঁখে পাহাড়চূড়ায় ভর করেছেন শীতের কদার প্রহরী বীরভদ্র ভৈরব মন্দিরে। চারটি কুণ্ডও রয়েছে কদারে—রেতঃ, উদক, ক্রম আর ঋষি। রেতঃ কুণ্ডে শিব, হাততালি দিলে জলের বুদবুদে বৈচিত্র্য আসে। প্রবাদ, মন্দিরের সামনের উদকের জলপানে পূর্ণজন্ম হয় না। সকালে নির্বাণ পূজা আর সন্ধ্যায় শৃঙ্গার পূজা ও আরতি দেখুন মন্দিরে। বিশেষ পূজারও প্রথা আছে ২৫ থেকে ৭০১ টাকার কোদারনাথের। পরদিন সকালে চলুন ৩ কিমি দূরে মন্দাকিনীর উৎস গান্ধী সরোবর। পথ দূর্গম না হলেও বরফ মাড়িয়ে প্রেসিয়ার পেরিয়ে গগনভেদী পর্বতে ঘেরা ১৪০০০ ফুট উঁচুতে অপারির্ব সৌন্দর্যের গীলাভূমি খেতগুস্ত বরফের সরোবর গান্ধী সরোবর। অ্যাডভেঞ্চার বারা ভালবাসেন ৮ কিমি পশ্চিমে ৪১৩৫ মি উঁচু বাসুকি তাল ও চোরাবাগি তাল বেড়িয়ে-নিতে পারেন। চৌখাখাও দৃশ্যমান বাসুকি তালে। তবে এপথও দূর্গম। যোড়ার ডিঙিয়ে পথ চলা, মোড়কিনী

মন্দাকিনীও পেরুতে হয়। সঙ্গে গাইড নেওয়া ভাল। মহাভারতের যুধিষ্ঠির এপথেই নাকি স্বর্গে যান। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা ভৈরো বাম্প বা ডুগপহুও ঘেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাংসাহীরা। স্বর্গের পানে না খেয়ে এবার ঘরে ফেরার পালা গৌরীকুণ্ড ফিরে বাসে। আর বদরী যাত্রীরা গৌরীকুণ্ড থেকে সকাল ৬-০০টায় ভূখ হরতাল বাসে গোপেশ্বর হয়ে ১০ ঘণ্টায় বদরী বা রুদ্রপ্রয়াগ হয়ে বদরী বা গঙ্গোত্রী যেতে পারেন।

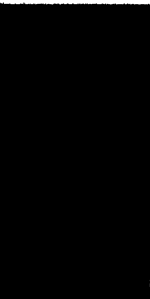
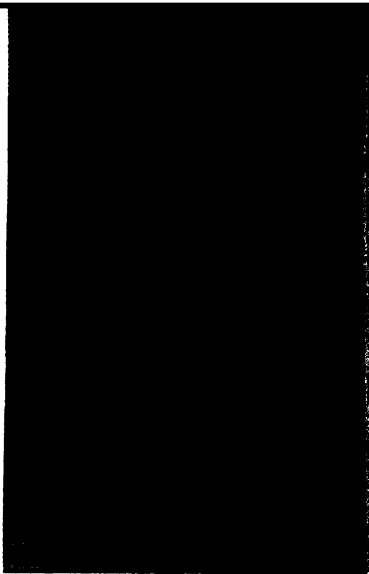
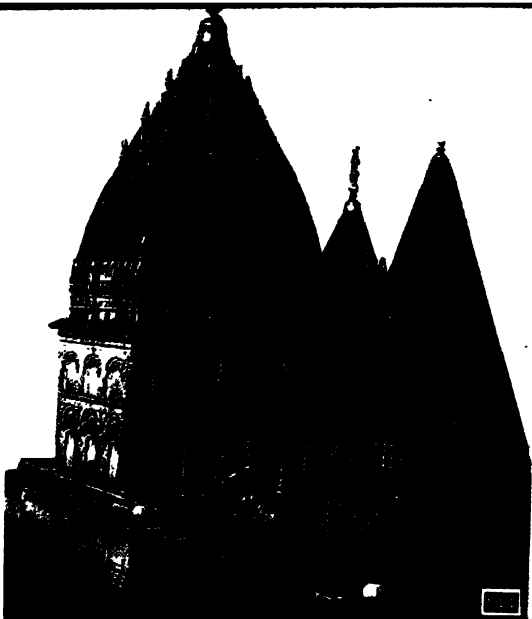
ত্রিযুগীনারায়ণ

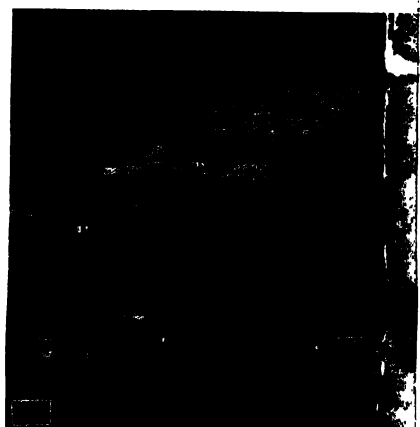
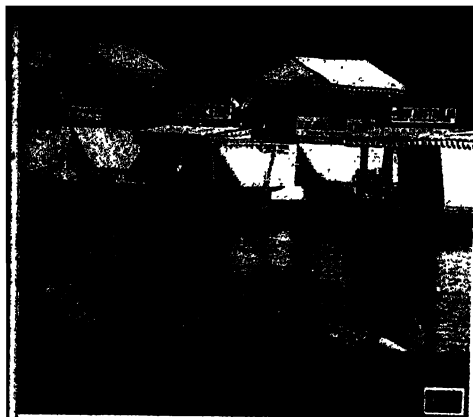
কোমার থেকে গৌরীকুণ্ড ফিরে আরও ৫ কিমি নেমে রাত কাটান ১৭০১ মি উঁচু শোনপ্রয়াগের চটির হোটেলে। GMVN-এর Tourist Rest House, D ৩০০ ৩৫০ ৫০০ ডর্মি বেড ৬০ ৮০ ছাড়াও PWD-র IH আছে শোনপ্রয়াগে। নিচু গিয়ে বয়ে চলেছে মন্দাকিনী। শোনগঙ্গা এসে মিলেছে মন্দাকিনীর সঙ্গে এই শোনপ্রয়াগে। পরের দিন আলো ফুটতেই বেরিয়ে পড়ুন ৫ কিমি দূরের ত্রিযুগীনারায়ণ দর্শনে। খাড়া পথ, চড়াইয়ের আধিক্য। ঘোড়া মেলে—যাতায়াত ১০০। আবার বাস পথের সীতাপুর নেমেও ৫ কিমি গিয়ে ত্রিযুগী বেড়িয়ে শোনপ্রয়াগে যাওয়া চলে। তবে সীতাপুরে কুলি বা ঘোড়ার অভাব, বাসও অনিয়মিত এপথে। পুরাণ বলে, নারায়ণকে সাক্ষী রেখে এই অগ্নিকুণ্ডে বিয়ে হয়েছিল হর-পার্বতীর। বিয়ের বজ্ঞের ধূনি ৩ যুগ ধরে আজও জ্বলছে। আর সেই থেকে সত্য, ত্রেতা ও দ্বাপর তিন যুগ ধরে নারায়ণের অবস্থান এখানে। নামও তাই জায়গার ত্রিযুগীনারায়ণ। অষ্টভাটুর চতুর্ভুজ মূর্তি হয়েছে নারায়ণের; আর আছে নক্ষত্রী, সরস্বতী ও শিব মন্দিরে। ব্রহ্মকুণ্ডে ও রুদ্রকুণ্ডে স্নানের বিধি, বিষ্ণুকুণ্ডে মার্জন, সরস্বতীতে পিণ্ড দান ও ধরমশিলা অর্থাৎ বিবাহ বেদিতে পূজার প্রথা ত্রিযুগীতে। উত্তম তপস্যাক্ষেত্র ত্রিযুগী। কালীকমলীর ধরমশালা আছে ৭৮০০ ফুট উঁচু ত্রিযুগীনারায়ণে। তবে, থাকার দরকার হয় না।

মদমহেশ্বর : কোমার দেখে ফেরার পথে গৌরীকুণ্ডে পৌঁছে বাস পথের নালা (২৯ কিমি) বা জুরানী বা গুপ্তকানী (৩১ কিমি) থেকে পায়ে হাঁটা ত্রিযুগী তিন পথ গিয়েছে মদমহেশ্বরের। কুলি মেলে এপথে। ৫ কিমি গিয়ে মন্দাকিনীতে মিলন ঘটেছে তিন পথের। অতীতে ৪৮৫০ ফুট উঁচু গুপ্তকানী থেকে কোমারের পায়ে হাঁটা শুরু হত। মন্দিরও আছে চন্দ্রশেখর মহাদেব, অর্ধনারায়ণ, স্বপ্ন পুষ্ঠে খেত পার্বতী ছাড়াও নানান। কোমার শিখর, চৌখাষা, মদমহেশ্বর গিরিশিখর সূন্দর দৃশ্যমান পাহাড়ে ঘেরা গুপ্তকানীতে। থাকারও নানান ব্যবস্থা PWD-র IH, GMVN-র Tourist RHA D ৩০০ ৩৫০ ডর্মি বেড ৯০ ছাড়াও প্রাইভেট হোটেলে—মন্দাকিনী ট্যুরিস্ট বাসো, নীলকন্ঠ ট্যুরিস্ট লজ, শিবনাথ পর্যটক বিশ্রাম গৃহ আছে গুপ্তকানীতে। পঞ্চকোমার

পরিক্রমায় গুপ্তকানী থেকে চলা যেতে পারে মদমহেশ্বর, রুদ্রনাথ ও তুঙ্গনাথ। মন্দাকিনীর অপর পারে আর এক পাহাড়ে পুণ্যার্থীউষীমঠ। শীতে কোমারও মদমহেশ্বরের থেকে দেবভারাও নেমে আসেন উষীমঠে। গুপ্তকানী থেকেও বাস মেলে হাথীকেশের। ৯৩ কিমি দূরের চামোলী হয়ে বদরীও যাচ্ছে বাস গুপ্তকানী থেকে। তবুও যেন মদমহেশ্বরের যাত্রায় উচিত হবে নালা বা জুরানী থেকে হাঁটা পথে মন্দাকিনী পেরিয়ে ৪ কিমি দূরের কালীমঠে বোনীপীঠ, মহাকালী, মহাসরস্বতী, মহালক্ষ্মী, ভৈরবনাথ শিব মন্দির দেখে আরও ৫ কিমি পেরিয়ে লেখতে রাতের বিশ্রাম নেওয়া। এপথের বড় গ্রামও এই লেখ। ৪০০০ ফুট উঁচু লেখ-এ স্থলবাড়ি ও অতিথি নিবাস আছে। লেখ থেকে আরও ৫ কিমিতে ২৪৬০ ফুট উঠে রীত বা ৭ কিমি গিয়ে বানতোলীতেও প্রথম রাতের বিশ্রাম নেওয়া যেতে পারে। উচিতও হবে চলার পথে রীত বা বানতোলী আর ফেরার পথে লেখ-এ রাতের বিশ্রাম নিয়ে চলা। রাকেশ্বরীর মন্দির রয়েছে রীত-তে। থাকা ও আহার মেলে মন্দিরে। আর আছে জনার্দন ভাটের অতিথিশালা রীততে।

রীত থেকে আরও ১৫ কিমি গিয়ে চৌখাষা পাহাড়ের নিচে ৩৫৮১ মি উঁচুতে মদমহেশ্বরের মন্দির। আশ্চর্য সবুজের দেশ মদমহেশ্বরের তিনদিকে রূপালি পাহাড়, অদূরে প্রশান্ত চৌখাষা শিখর। কোমারের মন্দিরের মতোই ছিমছাম নিরাভরণ—সহজ-সুন্দর মদমহেশ্বরের মন্দির। দেবতা কালো শিবলিঙ্গ, ঈশ্বর হেলানো, দ্বিখণ্ডিত—মহিষরাসী শিবের নাড়ি। মূল মন্দিরের পিছনে আরও ২টি মন্দির একটিতে শিব ও পার্বতীর যুগল মূর্তি, দ্বিতীয়টিতে পার্বতী। আর আছে ২ কিমিতে ৮০০ ফুট চড়াই উঠে বুঢ়া মদমহেশ্বর। মদমহেশ্বরের নদীও নামছে এই পাহাড় থেকে। মন্দিরও আছে ক্ষেত্রপালের ৩ কিমি দূরে খাডারা গ্রামে। খাডারা থেকে ৯ কিমিতে ৪৫০০ ফুট দূরত্ব চড়াই বেয়ে পাহাড় পৌঁচানো পথ পেরিয়ে মদমহেশ্বর। সারা পথে সাহস যোগায়—চড়াইসে নিরাশ না হো। অনুপম দৃশ্য আপকি প্রতীকামে হায়। চলার পথে অতুলনীয় নৈসর্গিক শোভা যাত্রীদের ক্লাস্তি ভোলায়। থাকার ব্যবস্থা আছে মন্দিরের ধরমশালায়। এছাড়াও থাকার ব্যবস্থা মেলে সারা পথে মদমহেশ্বরের। কালীমঠে টেম্পল কমিটির ধরমশালা, গোণ্ডারে স্থল বাড়ি আর বানতোলীতে হিমালায় প্রেমিক উমা প্রসাদ মুখোপাধ্যায়ের ধরমশালাটি আজ দীর্ঘ। বান-তোলী থেকে জলাভাবও দেখা দেয়। তাই প্রয়োজনীয় পানীয় জল সঙ্গে নেওয়া উচিত হবে। যেতে ২ দিন আর ফিরুন ১২ দিনে উতরাই নেমে উষীমঠে। চামোলী জেলার মহকুমা শহর, নিরালা নির্জন পাহাড়ী জনপদ উষীমঠ থেকে বাসে মনসুনা হয়ে যোগাসু পৌঁছেও মদমহেশ্বরের পায়ে হাঁটা শুরু করা যায়। উৎসাহীরা দেওরীতাল লেকটিও দেখে নিতে পারেন উষীর পথে।

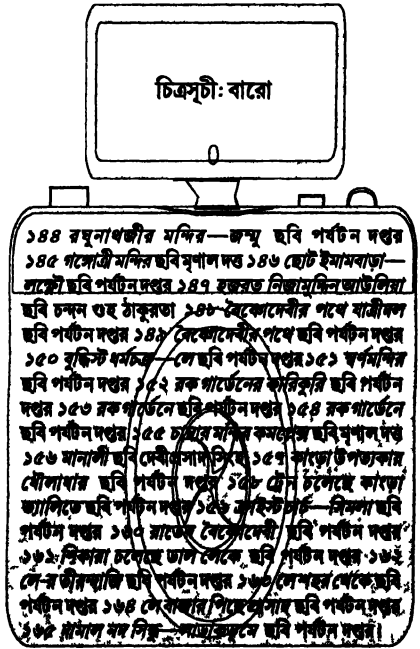




অত্যাংসাহীরা চলার পথে উষীমঠ থেকে যেখান পর্যন্ত বিস্তৃত Kedarnath Musk Deer Sanctuary-টিও বেড়িয়ে চলেতে পারেন। ১৯৭২এ অভয়ারণ্যের শিরোপা চেপেছে কেশদারনাথের শিরে। পঞ্চকেশদারের তিন—তুঙ্গনাথ, রুদ্রনাথ ও মদমহেশ্বরের অবস্থানও বৈচিত্র্যময় কেশদারনাথ জঙ্গলে। দপ্তর বসেছে চামোলীর জেলাসদর গোপেশ্বরে। শুণ্ডকালী, ফাণ্টা বা উষীমঠ থেকে চলা যেতে পারে বাসে। ৯৬৭ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত স্যাঙ্কচুয়ারিতে চিতা, বরফচিতা, কস্তুরীমৃগ ছাড়াও নানান প্রজাতির বন্যজন্তুর বাস। তবুও যেন আকর্ষণে অনন্য হিমালয়ের রঙবেরঙের পাখি।

তুঙ্গনাথ: মদমহেশ্বরের দেখে লেখ হয়ে উত্তরাই নেমে উষীমঠ পৌছান। উষীমঠের উচ্চতা ১৩১১ মি। সরাসরি যাত্রায় নালা থেকে ৫ কিমি ট্রেক করে চলা যেতে পারে। আবার কুণ্ড হয়ে বাসও যাচ্ছে উষীমঠে। বাণাসুরের কন্যা উষার নাম থেকে উষা মঠ—কালে কালে উষীমঠ। মন্দিরও আছে দেবী উষা ছাড়াও অনিৰুদ্ধ, চিত্রলেখা, গঙ্গা, মাক্কাতা, নবদুর্গার। তবে মূল মন্দিবে ওঙ্কাবেশ্বর শিবের অধিষ্ঠান। শীতে কেশদার ও মদমহেশ্বর থেকে সেবতারা নেমে আসেন উষীমঠে। বয়ে চলেছে মন্দাকিনী—অপরপারের শুণ্ডকালী। তুষাবশুত্র কেশদারশৃঙ্গ ও সুন্দর দৃশ্যমান উষীমঠে। GMVN-এর Tourist R H, D ১৮০ ২২০ ডর্মি ৪৮ আছে গোপেশ্বর ও উষীমঠে। ৮ কিমি উত্তর-পূর্বে ৮০০০ ফুট উঁচু পাহাড়ে ১ কিমি দীর্ঘ দেওরীতাল অর্থাৎ লেক। লেকের জলে রজত শুভ্র তুষারচূড়া দোলে। তুঙ্গনাথেরও পথ গিয়েছে এই উষীমঠ থেকে। পথের দূরত্ব ৩০ কিমি। তবে উষীমঠ থেকে কুণ্ড-উষীমঠ-গোপেশ্বর-চামোলী বাসপথের যাত্রী বাস বা লরি চেপে ৩০ কিমি দূরেব চোপতায় পৌঁছে চোপতা থেকে ৩ ৪ কিমি পায়ে হাঁটা পথে তুঙ্গনাথ চলা যেতে পারে। তুঙ্গনাথের গেটওয়ে ৯৬০০ ফুট উঁচু চোপতার প্রকৃতিও অনবদ্য। বরফে ঢাকা চোখাখা, সুমেরু, কেশদারনাথ, ডোম, যোগীন, বন্দরপুঞ্জ, গঙ্গোত্রী ছাড়াও নানান শিখর সুন্দর দৃশ্যমান। চোপতার ৬ কিমি দূরে পাসের বানাস কস্তুরী মৃগ প্রজনন ক্ষেত্রটিও আর এক দ্রষ্টব্য। গৌরীকুণ্ড থেকেও বাসে চোপতা পৌঁছে যাওয়া চলে—ঐতিহাসিক সৌন্দর্যের লীলাভূমি তুঙ্গনাথ। ঘণ্টা তিনেক ৪ ৫ হাজার পাঁচেক ফুট উঠে চম্পশিলা পর্বতে মন্দির। দেওদার, রডোডেনড্রন আর পাইনে ছাওয়া পথ। ৩৬৮১ মি উঁচুতে ভারতের সর্বোচ্চ মন্দির তুঙ্গনাথ। সেবতা এখানে মহিষরাসী শিবের বাহ। তবে, দক্ষিণাধ্ব শিব আর বামাধ্ব বিষ্ণুরূপে পূজিত হন সেবতা। লিঙ্গমূর্তির গিছে শঙ্করাচার্য ও ব্যাসসেবের বিগ্রহ। সামনে নিচে সোনার তেরি তুঙ্গনাথের মুখ, কেশদারনাথ-রুদ্রনাথ-মদমহেশ্বর-কলেশ্বর ও পার্বতী হয়েছেন রূপোয়। পঞ্চপাণ্ডব ও ভৈরব মন্দিরও রয়েছে প্রাঙ্গণে। পাশ দিয়ে খিলিক মেয়ে পাহাড় বেয়ে বরুনা নামছে আকাশপগা, ঢোনা-অচেনা নানান পাখির কুজন; পরিবেশ

সুন্দর—সার্থক তপোভূমি দেবাদিদেব মহাদেবের। এমনকি রজত শুভ্র পঞ্চচুলী, নন্দাদেবী, ধূলাগিরি, নীলকন্ঠ, কেশদারনাথ, বন্দরপুঞ্জ ও দৃশ্যমান তুঙ্গনাথ থেকে। কালী-কমলীর ধরমশালা ও মন্দির কমিটির রেস্ট হাউসে থাকারও ব্যবস্থা মেলে তুঙ্গনাথে। তেমনই অত্যাংসাহীরা তুঙ্গনাথ থেকে ১ কিমিতে হাজার ফুট চড়াই বেয়ে চম্পশিলাও দেখে নিতে পারেন। শ্রীলামের তপস্যা স্থল চম্পশিলা। নয়নাভিরাম হিমালয়ের সাথে অ্যালপাইন ফুলের শোভা চম্পশিলার আকর্ষণ। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত দুই-ই মোহিত করে। দর্শন সেয়ে চোপতায় ফিরে রাতের বিশ্রাম। ছোট্ট গঞ্জ চোপতা। দোকানপাট আছে—GMVN-এর ট্যাবিল্ট রেস্ট হাউস, চটির হোটেলও আছে চোপতায়। গঙ্গোত্রী, বন্দরপুঞ্জ, গৌরীশঙ্কর, কেশদার, ত্রিশূল ছাড়াও নানান শিখররাজিও দৃশ্যমান রেস্ট হাউস থেকে। এপথে চামোলীতে Darpan H ছাড়াও নানান হোটেল মেলে।



• রুদ্রনাথ: তুঙ্গনাথ থেকে চোপতার বা ৬.৫ কিমি দূরে বালখিলা নদীর পাড়ে মণ্ডল চাট পৌঁছে ধরমশালায় বা চটির হোটেলের রাতের বিশ্রাম। গাঙ্গোত্রাল হিমালয়ের অন্তর্গত ৫৫০০ ফুট উচ্চ সুন্দর বর্ষিক গ্রাম মণ্ডল। বাস ও জিপ মেলে চোপতা থেকে মণ্ডল যেতে। বাস আসছে হরিদ্বার থেকেও ৬-০০টায়ে ছেড়ে ১০ ঘটায় মণ্ডল-এ। মণ্ডল থেকে

২২ কিমি পাহাড়ী পথ রুহনাখের। খুবই দুর্গম এই পথ। সেতুতে অমর গঙ্গা পেরিয়ে ওটি পাহাড় ডিঙিয়ে পথ উঠেছে ৪৪২১ মি উঁচুতে। গহীন বনের মাঝ দিয়ে পথ—নাওলা পাসও পেরুতে হয় এপথে। তাঁবু ছাড়া মেঘপালকদের ঝোপড়িতে রাত কাটানো দরকার হয়ে পড়ে এপথে। সঙ্গে কুলি বা পহিড় নেওয়া উচিত। তবে, চামোলী বাস পথে ১১ কিমি দূরের গোপেশ্বর হয়ে বাওয়ায় সুবিধা। গোপেশ্বরেও মন্দির আছে শিবের। ত্রিশূলের সূর্যমূর্তি ও নানান প্রাচীন লিপি দ্রষ্টব্য। থাকার জন্য PWD IB আছে গোপেশ্বরে। গোপেশ্বর হয়ে পথের দূরত্ব ২৭ কিমি। এপথে একমাত্র মন্দিরে রাত্রিবাসের নামভাড়া ব্যবস্থা। ৩৫৫৮ মি উঁচুতে রুহনাখ গুহামন্দির। সেবতা এখানে মহিবরূপী শিবের মূখ। নিচে বৈতরণী তাল।

রুহনাখ থেকে ফেরার পথে মণ্ডলচাটার ৫ কিমি দূরে ৬৫০০ ফুট উঁচুতে সাহিগ্রাস গাছের নিচে দুর্বাসার মাতা অনসুয়া অর্থাৎ অত্রিমূনির পতিব্রতা সাধ্বী স্ত্রী সতী অনসুয়ার মন্দিরটিও উচিত হবে দেখে চলা। কিংবদন্তী, ব্রহ্মা-বিষ্ণু-মহেশ্বর সতীত্বের পরীক্ষায় বার বার আসেন অনসুয়া সকাশে। ললনার কাছে ছলনায় হেরে দেবতাদের স্বর্গেও স্বীকৃতি পায় অনসুয়ার সতীত্বের মহিমা। *যাত্রীনিবাস*ও আছে মন্দিরে। *বাঙালি ভবন* বা *ডেওয়ানি লঞ্জে*ও ঠাই মেলে যাত্রীর। আর আছে মন্দির থেকে ২ কিমি দূরে আরণ্যক পরিবেশে অত্রিমূনির সাধনকেন্দ্র অত্রিপাহাড় তথা গুহা। আরও উপরে, দুর্গমত। জয় করে পাহাড় চড়ে সঙ্গীর্ণ সুভঙ্গপথে অত্রিমূনির সাধনবেদিও দেখে নেওয়া যায়। রোমাঞ্চে ভরা, নৈসর্গিক শোভা অনবদ্য। তেমনিই মণ্ডলের আধাপথে পাথরের এক চাতালে পাথরকণী পঞ্চপাণ্ডব সহ শ্রৌণদীও দেখে চলা যায়। সরাসরি যাত্রায় চামোলী থেকে লোকাল বাসে গোপেশ্বর হয়ে মণ্ডলচাট পৌঁছে ৫ কিমি পায়ে গিয়ে অনসুয়া মন্দির। অনসুয়া দেখে গোপেশ্বর হয়ে চামোলীতে পৌঁছে যোশীমঠের বাসে চলুন কল্লেশ্বর। ১ম রাত পথে, ২য় রাত রুহনাখের আর ৩য় রাত অনসুয়া মন্দিরে কাটিয়ে ৩ দিনে সঙ্গ করা যায় এ সফর।

কল্লেশ্বর : চামোলী-যোশীমঠের বাস পথে গোপেশ্বর থেকে ৪৮ কিমি যেতে হেলাং। হেলাং থেকে ৯ কিমি পায়ে হাটা পাহাড়ী পথে কল্লেশ্বর। ৮০০০ ফুট উঁচুতে গুহা-মন্দির। মন্দিরে রয়েছেন মহিবরূপী শিবের জটা। তাই এটোরও বলে থাকে লোকে বল্লেশ্বরকে। পথ নির্জন। থাকার দরকার হয় না। মন্দির দেখে বদরীর পথে হেলাং বা যোশীমঠে পৌঁছে রাত্রিবাস করাই শ্রেয়। তবে মন্দিরেও থাকা ও আহ্বার মেলে।

গঙ্গোত্রী

হৃদয়কেন্দ্র পৌঁছে গঙ্গোত্রী যাবার বাসের অগ্রিম টিকিট কেটে রাখুন। সরাসরি বাস চলে হৃদয়কেন্দ্র থেকে ধরাসু-উত্তরকাশী-

গাভনানী-লঙ্কা-ভৈরববাটি হয়ে ২৪৯ কিমি দূরের গঙ্গোত্রী। ঘণ্টা বাসের পথ, ভাড়া ১০৫। গঙ্গোত্রীর ৪৫ কিমি আগেই গাভনানীতে উষ্ণ গওক জলের কুণ্ডটিও আর এক ক্রান্তিহর। গঙ্গোত্রীর ১০ কিমি আগে সেতুও হয়েছে লঙ্কা ও ভৈরববাটির মাঝে গঙ্গা অর্থাৎ জাহ্নবী নদীতে। দিনের প্রথম বাসে রওনা হয়ে সিনাভে গঙ্গোত্রী পৌঁছান। বাসও বাচ্ছে জাহ্নবী নদী পেরিয়ে গঙ্গোত্রী। তাই আচ্ছ আর থাকার দরকার হয় না লঙ্কা বা ভৈরববাটিতে। ভৈরববাটিতে ভৈরবনাথ মন্দির ছাড়াও থাকার জন্য *ট্রাভেলার্স লজ*, PWD IB ও *চট্টর হোটেল* আছে, ব্যবস্থাপনা ভালই। ১৯৯১-এর ভূমিকম্পের ভয়াবহতাও মিলিয়ে গিয়ে স্বাভাবিকতা পেয়েছে।

হৃদয়কেন্দ্র থেকে রওনা হতে সেরি হলে ১২০ কিমি দূরের ধরাসু পেরিয়ে আরও ২৮ কিমি গিয়ে অর্থাৎ হৃদয়কেন্দ্রের ১৪৮ কিমি দূরে ১১৫৮ মি উঁচু উত্তরকাশীতে রাত কাটিয়ে আসুন। গঙ্গোত্রীর দূরত্ব ১০১ কিমি উত্তরকাশী থেকে। বাস স্ট্যান্ডের পাশেই GMVN-এর ৫৪ বেডের *Tourist RH*, D ২০০ ২২৫ ৪০০ ডর্মি ৭৫ করে। আর আছে *বিড়লা*, *পাঞ্জাব সিন্ধু ফের*, *কালীকামলী* ছাড়াও নানান ধরমশালা; আর *হোটেল বিজয়রাজ*, *বিলাসবল্লভ ভাণ্ডারী*, *লক্ষ্মী* ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল। তবে, সোমবার বন্ধ থাকে উত্তরকাশীর দোকানপাট। তবুও যেন গঙ্গার ধারে GMVN-এর *Travellers L-E* D ২২৫ ৪০০ ৪৫০ ৫০০ ৬০০ থাকার পক্ষে রমণীয়।

উত্তর প্রদেশের নতুন জেলা উত্তরকাশীর সদরও উত্তরকাশী। ভাগীরথীর কূলে হিমালয়ের বৃক্শে শেষ আধুনিক শহরও এই উত্তরকাশী। ভাগীরথী এখানে কিছুটা পথ উত্তর-বাহিনী—নামও তাই উত্তরকাশী। রুদ্রপুরাণে বারগাবত নামে উল্লেখিত হলেও হিউ-এন-সাঙের বিবরণীতে ব্রহ্মপুর নামোন্মেষ মেলে উত্তরকাশীর। শহর থেকে ৫ কিমি দূরে শৈলশিখরে নেহরু মাউন্টেনয়ারিং ইনস্টিটিউট (NIM)। দু'পাশ দিয়ে বয়ে চলেছে বরুণ আর অসী-নদী। কালী, একাদশ রুদ্র, বিশ্বনাথ ও পরশুরামের মন্দির রয়েছে পাশাপাশি। ১ কিমি দূরে সাধু উপনিবেশ উজ্জালিও বেড়িয়ে নিন পায়ে পায়ে। কথিত আছে, শিবরূপী কিরা ত আপ অর্জুনের দ্বন্দ্বযুদ্ধ ঘটেছিল এই উত্তরকাশীতে। এমনকি মহাভারতের জরতৃগুহও তৈরি হয়েছিল নাকি উত্তরকাশীতে। ১৮৫৭র স্বাধীনতা সংগ্রামী নানা ফড়নবিশের স্মৃতি ধরে রাখা হয়েছে মিউজিয়াম করে। তেমনিই শহর থেকে ১৫ কিমি দূরে মানেরী বীধ প্রকল্পটিও উত্তরকাশীর আর এক দ্রষ্টব্য।

উত্তরকাশী থেকে গঙ্গোত্রীর বাস পথে ৫ কিমি যেতে ভাগীরথী; ও অসী নদীর সঙ্গমে ৩৬৫০ ফুট উঁচুতে গঙ্গোত্রী। ছোট্ট জনপদ, অতি সাধারণ *রিভার ডিউ গেস্ট হাউস* আছে গঙ্গোত্রীতে। গঙ্গোত্রী থেকে অসী নদীর পাড় ধরে পথ পৌঁছায় ১১ কিমি দূরের কল্যাণী। কল্যাণীও ছোট্ট পাহাড়ী জনপদ। কল্যাণী ছাড়িয়ে আরও ১ কিমি যেতে সঙ্গমচাট। সরাসরি বাস বাচ্ছে উত্তরকাশী থেকে ৬-০০, ৯-০০ ও ১২-০০টা। *কিশ*ও চলে উত্তরকাশী-সঙ্গম চাট। বাসের অমিলে ট্রাকেও চলা যায় এপথে। সঙ্গম চাট থেকে ৭ কিমি চড়াই পথে ২২৮৬ মি উঁচুতে আগোড়া। আগোড়ার *FRH* ছাড়াও

সাধারণের বাড়িতে ঠাই মেলে যাত্রীর। আর, *Bewarul, Annapurna* L আছে স্বল্পদূরে ভেঙড়া গ্রামে। আগেড়া থেকে ওক, পাইন ও দেবদারুতে ছাওয়া ১৭ কিমি পাহাড়ী পথ ঘণ্টা ছয়কে ট্রেক করে ৪০২৪ মি উঁচুতে ডোডিতাল *FRH*। মাঝপথে মাঝিতেও এক রাতের বিশ্রাম নেওয়া যেতে পারে নিজস্ব তাঁবু বা গুঁজরদের বাড়ি-ঘরে। তবে, পিসু পোকায় উপদ্রব আছে মাঝিতে। মনোরম আরণ্যক পরিবেশে ডোডিতাল। তুষারাবৃত পাহাড় থেকে নির্গত বরফ গলা জলে পুষ্ট ৬৫০ মি ব্যাপ্ত ডোডিতালের ১০০ ফুট গভীর ক্ষটিক স্বচ্ছ জলে সোনালী ট্রাউট মাছ হচ্ছে। রডোডেনড্রনে ছাওয়া লেকের পাড়ে চারচালা প্যাগোডাখর্মী দাক্ষর মন্দিরে দেবতা গণেশ। মরসুমে—এপ্রিল-মে ও মধ্য সেপ্টেম্বর থেকে মধ্য ডিসেম্বরে আহার মেলে এপথে। তবুও, উচিত হবে রেশন সঙ্গী করা। তাঁবু, গাইড, কুলি, খচ্চর সঙ্গে নেওয়া উচিত। আবার ডোডিতাল থেকে ৩০ কিমি ট্রেক করে কানসার বুগিয়াল, দারওয়া গিরিবন্থ, সীমা বুগিয়াল, কাভোলা ও নিশান গ্রাম হয়ে হনুমান চটি অর্থাৎ ভাগীরথী উপত্যকা থেকে যমুনা উপত্যকায় চলা যেতে পারে। তবে, সাধারণ ট্রেকারদের জন্য নয় এপথ। অসি নদীর উৎসও এই ডোডিতাল অর্থাৎ লেক থেকে। চারপাশের নৈসর্গিক শোভা অতুলনীয়। ২টি *ফরেস্ট রেস্ট হাউস*ও আছে ডোডিতালে। রেস্ট হাউসের বুকিং : DFO, Uttarkashi.

যমুনা উপত্যকা যাত্রীদের বৃক্কের ভর আর পায়ের বলকে সম্বল করে উচিত হবে ডোডিতালের ৪ কিমি পূর্বে ৩৯৫৩ মি উঁচু *Sonpara Pass* ফ্রাওয়ার বেড়ে তাঁবুতে রাত কাটিয়ে তৃতীয় দিনে হনুমান চটি বা কানসার বুগিয়ালে তৃতীয় রাত কাটিয়ে চলা। বন্দরপুঞ্জ সুন্দর দৃশ্যমান বুগিয়াল থেকে। তেমনই সুন্দর ফ্রাওয়ার বেডের ফুলের জলসা।

স্রমগাথীদের কাছে উত্তরকাশীর গুরুত্ব নানান। এই উত্তরকাশী হয়েই গঙ্গোত্রীর বাস যাচ্ছে। যমুনোত্রীও যাওয়া চলে উত্তরকাশী থেকে ধরাসু/বারকোট হয়ে। কেদার বা বদরীনাথ থেকে র্যারা গঙ্গোত্রী যেতে চান তাঁদেরও এই উত্তরকাশী হয়ে যেতে হয়। কেদার বা বদরী থেকে হৃষীকেশ ফেরার পথে পড়ে রুদ্রপ্রয়াগ। রুদ্রপ্রয়াগ থেকে বাস মেলে উত্তরকাশীর। সকাল ৭-১০টার বাসে রুদ্রপ্রয়াগ ছেড়ে ১৬-৩০টায়ে পৌছান উত্তরকাশী। অবশ্য রুদ্রপ্রয়াগ পেরিয়ে হৃষীকেশের দিকে আরও এগিয়ে শ্রীনগর থেকেও কেদার ও বদরী ফেরত যাত্রীরা উত্তরকাশী হয়ে গঙ্গোত্রী যেতে পারেন। এক রাত উত্তরকাশীতে কাটিয়ে পরদিন সকাল ৫-০০টার প্রথম ছেড়ে আধ ঘণ্টা অন্তর ছাড়া বাসে রওনা হয়ে হরালি/জঙ্গলচটি/লঙ্কা/ডেবরবাটি হয়ে ৩০৪৮ মি উঁচু গঙ্গোত্রী পৌছান ৬-১৫টায়ে, দূরত্ব ১০১ কিমি। গৌরীকুণ্ড থেকে গঙ্গোত্রীর দূরত্ব ৩৪৯ কিমি, ভাড়া ১৬০। যমুনোত্রীর দূরত্ব ২৩২, মুসৌরী ২৫০ কিমি।

বরাকবৃত সুন্দরনি, মাড় পর্বতশিখরে গড়া ব্যুহের মাঝে

পাইন ও দেওদারে ছাওয়া গঙ্গোত্রী। নীলাকাশে হেঁড়া হেঁড়া মেঘগুলো ভেসে বেড়ায় স্বর্গরাজ্যের ভেলা সম। প্রথম দর্শনেই আখ্যাতিক পরিমণ্ডলে দেহ-মন গভীর প্রশান্তিতে ডরে ওঠে। গঙ্গোত্রী পৌছেই ঘর ঠিক করুন *পাঞ্জাব সিদ্ধ, মণিবাবা, যোগনিকেতন, ডাণ্ডীবাবা, কালীকমলী* বা যেকোনও ধরমশালায়। মন্দিরকে বামে রেখে পুল পেরিয়ে ডাইনে বাঁক নিতেই সামনে ডাণ্ডীবাবার আশ্রম। ডাণ্ডীবাবার আশ্রমের আয়োজন ব্যাপক। দুপুর ও রাতে চিড়ি, চা পাবেন সকাল ও বিকালে; কব্বলও মেলে। তবে, দানের প্রতি নির্ভরতা হারিয়ে নির্ধারিত টাকার বিনিময়ে ব্যবস্থা এদের। বাকের মুখেই *FRH* ও *PWD IB*। আর আছে মন্দিরের বী-হাতি টিলার টঙে *GMVN*-এর *ট্রাভেলার্স লজ*, *D ২০০-৪৫০*; আর এদেরই *ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস*, ডর্মি প্রথায়ে বেড ৬০ করে। জেনারেটর চালিয়ে বৈদ্যুতিক আলো জ্বালানো হচ্ছে গঙ্গোত্রীতে। সরকারি বিশ্রামগৃহে বিজলী পৌছালেও ধরমশালাগুলিতে হারিকেনে জ্বলে আজও।

স্বর্গ ও মর্ত্যের সন্ধি লোক, ভাগীরথী গঙ্গার উৎস লোক গঙ্গোত্রী। পাহাড় ভেঙে আকাশ কাঁপিয়ে বাঁধন হেঁড়া গঙ্গা কাঁপিয়ে পড়ছে বিরাট শিলাখণ্ডের উপর স্বর্গ থেকে মর্ত্য ধামে। কলকল ছলছল রবে বয়ে চলেছে গঙ্গা অর্থাৎ ভাগীরথী। এই গঙ্গাকে নিয়েই গঙ্গোত্রী। শ্বেত-শুভ্র মন্দির হয়েছে গঙ্গা মায়ের—শিবের জটাবদ্ধ গঙ্গাজলে পার্বতী যেখানে স্নান করেন। মন্দিরের চত্বরটি প্রশস্ত ও সমতল। ১৮ শতকে নেপালের সেনাধ্যক্ষ অমর সিং থাপার তৈরি মন্দিরে সন্ধ্যায় পূজা-অর্চনা দেখুন গঙ্গা মায়ের। উত্তরকালে জয়পুর মহারাজার হাতেও সংস্কার হয়েছে মন্দির। মূল দেবী মূর্তি পাথরের—লক্ষ্মী, সরস্বতী, অন্নপূর্ণা ও শঙ্কর মূর্তিও স্থান পেয়েছে মন্দিরে। আর হয়েছে রুপোয় দেবীর প্রতিমূর্তি। মন্দিরের পাশেই ভৈরব বা ভগীরথ শিলায় রাজর্ষি ভগীরথ আরাধনা করেন গঙ্গা মায়ের। আর আছে গৌরীকুণ্ড। কথিত আছে, সগর রাজার বাট হাজার সন্তানের নন্দর দেখে প্রাণ সংহারের জন্য ভগীরথ গঙ্গাকে পশ্চিমবাংলার সাগর ধীপে কপিল মুনির আশ্রম পর্যন্ত পথ দেখিয়ে সঙ্গে আনেন। এই দীর্ঘ পথ পরিক্রমা শেষে উদ্দেশ্য সাধন করে গঙ্গা নিজেকে বিলীন করে সাগরে। এমনকি পাণ্ডবরাও এসেছিলেন কুরুক্ষেত্রের যুদ্ধে আত্মীয় নিধনের পাপ-স্বাধনের পূজা দিতে গঙ্গোত্রীতে। নিদর্শন মেলে ট্যুরিস্ট লজ ছাড়িয়ে চিরবনের মাঝ দিয়ে গিয়ে পাণ্ডবগুহায়। ১৫/১৬টি দোকান নিয়ে মন্দির লাগোয়া গঙ্গোত্রীর বাজার। স্রমগাথী আর শ'খানেক কুলি নিয়ে গঙ্গোত্রীর রোজনামচা। গঙ্গোত্রীর জলের মাহাত্ম্যও অবশ্যনিয়। দর্শনে ১০০ জন্মের, এক কৌটী জল পান ২০০ জন্মের পাপ ক্ষয় হয়; আর এক ডুবে ১০০০ জন্মের সর্বপাপ ক্ষয় পায়। এমনকি সুদূর রামেশ্বরমের দেব পূজায় বাচ্ছে গঙ্গোত্রীর জল। আর আছে বাজার থেকে ১৫ কিমি গোমুখমুখী গঙ্গার পাড়ে বলাহাঙ্গীরবাণী গঙ্গাশালীর কুটির। পায়ের পায়ে

বেড়িয়ে নেওয়া যায়। গঙ্গোত্রীতেও অক্ষয় তৃতীয়া থেকে দীপাবলী খোলা থাকে মন্দির। বন্ধকালীন সময়ে ২৫ কিমি নেমে মুখাওয়া গ্রামে অধিষ্ঠিত হন দেবী গঙ্গেশ্বরী। গ্রীষ্মের দিনগুলিতেও ভারি উলেন দরকার গঙ্গোত্রী ও গোমুখ ভ্রমণে।

গোমুখ

গঙ্গোত্রী থেকে যাত্রা শুরু গোমুখীর, দূরত্ব ১৯ কিমি। ভাগীরথী পাহাড়ের পাদদেশে ৪২৫৫ মি উঁচুতে গোমুখী। পুরো পথটাই পা-কে সম্বল করে চলা যেতে পারে। ঘোড়াও মেলে—যাত্রায় ৩৫০। আর মেলে কুলি ও গাইড। পথ দুস্তর না হলেও বন্ধুর। ১৯৬২তে তৈরি পথ প্রশস্ত হয়েছে। ডেড়াবার মরসুম জুন, সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস। তবে, গঙ্গার জন্মদিন গঙ্গা দর্শনায় যাত্রী সমাগমে আধিক্য ঘটে। তবুও যেন উচিত হবে জুন বা অক্টোবরে গোমুখ চলা। পথপাশের নৈসর্গিক শোভা রমণীয়। সুদর্শন শিখর সঙ্গী হয় সারা পথে। পায়ের নিচে বরফ, বরফ আশেপাশে—চারপাশে। সারা ভ্রমণটাই যেন মুড়ে দেওয়া হয়েছে বরফে। পিছু তাকাবার সময় নয়—থামবার উপায় নেই, থামতে গেলেই পা ভারি হয়ে পড়বে। চলার পথে পানীয় জলের অভাব। সঙ্গে নিতে হয় গঙ্গোত্রী থেকে। শুকনো খাবার সঙ্গে নিন। বিশেষ করে কিসমিস, হরিতকী, আমলকী সঙ্গে নেবেন জলের পরিবর্ত রূপে। কিছু হালুয়া-পুরিও সঙ্গী ককন গঙ্গোত্রীর বাজার থেকে।

| গঙ্গোত্রী হিমবাহ অঞ্চলের শিখরসমূহ: | | ১০ কিমি যেতে বিরাট |
|------------------------------------|-----------|--|
| চোখায়া | ২৩৪২০ ফুট | বিরাট পাথরের চাঁই বিক্ষিপ্ত-ভাবে ছড়িয়ে—তারই পাশে |
| কোলাবনাথ | ২২৭৭০ " | বসে বিশ্রাম নিন ১১৮৩০ ফু |
| সতপথ | ২৩২১৩ " | উঁচু চিরবাসায়। চির অর্থাৎ |
| শ্রীকোলাস | ২২৭৪২ " | পাইন ছিল অতীতে। সোকান- |
| বাসুকি | ২২২৪৫ " | পাটও বসছে চিরবাসায়। |
| ভূতপথ | ২২২১৮ " | চায়ের সঙ্গে টা মেলে। আর |
| চন্দ্রপর্বত | ২২০৭৩ " | আছে চলার পথের বেশ |
| শ্রেরপর্বত | ২১৫৫২ " | কিছুটা নিচে ২ ঘরের FIB |
| শিবলিঙ্গ | ২১৪৬৬ " | চিরবাসায়। অগ্রিম অনুমতিতে |
| কীর্তিস্তম্ভ | ২০৫১০ " | থাকার ব্যবস্থা মেলে। তবে, |
| মদানী | ২০৩২০ " | |

দরকার হয় না চিরবাসায় থাকার।

আবার পথ চলা শুরু—৬ কিমি গিয়ে ভূজবাসা। সুদর্শন সঙ্গ ছেড়ে সঙ্গী হয় মিশরীয় গিরামিডের ধাঁচে ভাগীরথী পর্বতমালায় তিন শিখর। বাঙালি শুরু বিষ্ণু দাস বাস্কজী আজ লোকান্তরিত। তাঁরই শিষ্য লালবিহারী বাবার আশ্রমে আজকের যাত্রা বিরতি ভূজবাসায়। দুপুর দু'টার মধ্যে পৌছালে ষিচুড়ি মিলবে আশ্রমে। রুটি মেলে আরও গরিতে গেলে। বিকেলে চা, রাতে আবার ষিচুড়ি, সঙ্গে

সবজি। ৩১ হারে প্রতি জন। পাশেই হয়েছে GMVN-এর ২০ বেডের ট্যুরিস্ট রেস্ট হাউস, D ২০০ ডর্মি বেড ৭৫ করে। আহার্যও মেলে ক্যান্টিনে। থাকার পক্ষে ভালই।

ভূজবাসা আজ আর দৃশ্যমান না হলেও ৩৭৮০ মি উঁচুতে 'U' ধর্মী উপত্যকায় ১২ ঘর নিয়ে লালবাবার দ্বিতল আশ্রম। হিমালয় প্রেমিক নানান সুধীজনের অবদান এর প্রতিটি পাথরে। চুনি জ্বলছে ৬—২১-০০টায় আশ্রমের। রাতের খাবার শেষ হতে ২টি করে কফল মেলে ডাডার ঘরে—একটি পাতুন অপরটি গায়ে চাপান, সঙ্গে নিজের-গুলি। বাইরে প্রচণ্ড শীত, ঘরে কিন্তু তত নয়। বিচিত্র গঠনশৈলী এই ঘরগুলির। পরদিন উনুন জ্বালবার আগে জল মিলবে না ভূজবাসায়। আগের রাতের জল বরফ হয়ে গিয়েছে। তবে কাঞ্চনে যেন আবদ্ধ হয়ে পড়েছেন অতীত খ্যাত লালবিহারী বাবা। তাই অসন্তোষ নিয়ে ফিরছেন নানান যাত্রী আশ্রম থেকে আজ।

৭-০০টার মধ্যে চায়ের গ্রাস শেষ করে এগিয়ে চলুন গোমুখীর পথে। ঘণ্টা দেড়েকের পথ ভূজবাসা থেকে গোমুখ; দূরত্ব ৩ কিমি। শেষ ১১ কিমিতে পথের অভাব—মোরামের উঁচু-নিচু বোম্বার। গঙ্গোত্রী থেকে পুরো পথটাই কলিচূনের নিশান দেওয়া। তবুও মাঝে মাঝে পথ ভুলের সম্ভাবনা প্রবল। তাই একা চলবেন না এ-পথে। গাইডও মেলে গঙ্গোত্রীতে—চার্জ ১৫০।

গাড়োয়াল হিমালয়ের বৃহত্তম হিমবাহ ২৪ কিমি দীর্ঘ, ২ থেকে ৪ কিমি প্রশস্ত গঙ্গোত্রী গ্রেসিয়ার। চোখায়া পর্বতের পশ্চিম ঢাল বেয়ে নেমে শেষ হয়েছে গোমুখে এসে। বরফের বিরাট চত্বর—হাজার খানেক ফুট নিচে নামতে হবে। ওঠার চেয়ে নামায় বিপদ বেশি। ঝুরঝুর করে ঝরে পড়ে পাথরে-মাটি। গিলা(ধসা) পাহাড়ে হাতের স্পাইক লাগানো লাঠিটা ঠুকে ঠুকে চলুন। সামনেই গ্রেসিয়ার পয়েন্ট গোমুখ। High Altitude Sickness যাত্রীভেদে দেখা দিতে পারে এপথে।

বরফ শুধু বরফ—চারপাশে বরফের পাহাড়। যেন বরফের প্রলেপ দেওয়া পাহাড়ী গোলাবাড়ি। বরফের রাজ্যে বিচরণ করুন ঘটখানেক। স্নানও করে নিতে পারেন। গঙ্গা এখানে প্রচণ্ড বেগবতী—নাম তার ভাগীরথী। বড় বড় পাথরের চাঁই ছড়িয়ে রয়েছে বিক্ষিপ্তভাবে। লম্বা লম্বা পা ফেলে এগিয়ে চলুন পাথরের উপর দিয়ে। তবে, বেশি এগুবেন না পাহাড়ের কোল বেঁধে। যেকোনও মুহূর্তে পাথর গড়িয়ে পড়তে পারে। অবিরাম পড়েও চলেছে কুড়ুমুড় শব্দে গিলা পাথুরে নুড়ি।

সামনেই সেই গুহামুখ—কল্প-চোখে মিলিয়ে নিন গো-মুখের সঙ্গে। বা—

‘নদী তুমি কোথা হইতে আসিয়াছ?’

‘মহাদেবের জটা হইতে।’

ষ্মিতে, গো অর্থাৎ পৃথিবীমুখী হয়েছে গঙ্গা—সেই থেকে গোমুখী কালে কালে গোমুখ।

ভয় আর চমক দুই থেকে সাবধান রাখুন নিজেকে। বেশি এতুবেন না শুভার দিকে। এই শুভা থেকেই গঙ্গার মর্ত্যে গমন। এমনকি এই হিমবাহের ৩ দিকে ৩ তীর্থ—ব্রহ্মতীর্থ গঙ্গোত্রী, বিষ্ণুতীর্থ বদরীশিখর ও মহেশ্বর তীর্থ কেশারনাথ—এর অবস্থান। কেন্দ্রের মণ্ডাকিনী আর বদরীতে অলকানন্দার উৎসও এই হিমবাহ থেকে।

তপোবন : গোমুখ থেকে দেখা যায় ভূপঙ্খ পাহাড়। আর তারই সোজা পুবে শিবলিঙ্গ বা মহাদেও কা লিঙ্গ। প্রকৃতই যেন লিঙ্গরূপী শিব এই শিবলিঙ্গের। এই শিবলিঙ্গের পাদদেশে ৪৩৫৪ মিটারেরও অধিক উচ্চে প্রকৃতির আর এক খোয়াল, হিমালয়ের পরম বিশ্বয়—সবুজে ছাওয়া বরফ-রাজ্যে সাধু-সন্তের তপোভূমি তপোবন। আর রয়েছে ভাগীরথী ১, ২, ৩ ও কেশারডোম পাহাড়চুড়ো তপোবনের শিরে ছাটা হয়ে। আরও দূরে বাসুকি পর্বত। শিবলিঙ্গের বাঁয়ে উকি মারে মেরু পর্বত। গোমুখ থেকে ৪ কিমি পায়ে হাঁটা পথ, পথ বিপদসঙ্কুল। অজস্র মৃত্যু-গহ্বর অর্থাৎ ক্রিডাস এড়িয়ে চলতে হয়। সঙ্গে গাইড নেওয়া উচিত। সাধারণ ভ্রমণার্থীদের জন্য নয় তপোবন। তবে, রঙবেরঙের পাথর, পাহাড়ী ফুল আর গিরিরাজ হিমালয়ের মোহিনী রূপ পাগলপারা করে তোলে যাত্রীদের। তপোবনেও থাকা ও আহাৰ্য মেলে মাতাজী ও সিমলাইবাবার আশ্রমে। এদের আতিথেয়তা—সেও আজ কিংবদন্তী। গ্রেসিয়ারের অপর-দিকে আরও ৪ কিমি যেতে ১৪২৩০ ফু উচ্চে নয়নলোভন ফুলের উপত্যকা। ভথা নন্দনবন। এরই কাছে চতুরঙ্গী গ্রেসিয়ার মিলেছে গঙ্গোত্রী হিমবাহে।

যমুনোত্রী

ফেব্রার পথে ভূজবাসায় রেখে যাওয়া জিনিসপত্র নিন। দুপুরের আহারও সাজ করুন। তবে, ১২-০০টার মধ্যে ভূজবাসা ছেড়ে নামতে শুরু করুন গঙ্গোত্রীর পথে। সূর্যাস্তের আগেই গঙ্গোত্রী পৌছান। তবে বৃকে বল আর পায়ে ভর থাকলে দিনে দিনে গোমুখ পরিক্রমা সাজ করা অসম্ভব নয়। রাত গঙ্গোত্রীতে কাটানো পরদিন বাসে উত্তরকান্ধী। গঙ্গোত্রীতে সমস্যা হতে পারে বাসের টিকিট পেতে। সিভিকিটের একটা কলকানুন চালু আছে—আগে স্থানীয়, তারপর যাত্রী। যাত্রী অর্থে ভ্রমণার্থী। অনেক সময় বাসের টিকিট না পেয়ে মাঝপথে রাত কাটাতে বাধ্য হন ভ্রমণার্থীরা। প্রতিবাসে কান্না হয় না। গাড়ির অপ্রতুলতাই নাকি এর জন্য দায়ী।

গঙ্গোত্রী থেকে বেলা ১২-০০টার উত্তরকান্ধীর শেষ বাস। পরের বাসগুলি মাঝপথে রাত কাটায়। যমুনোত্রীর যাত্রীরা বাসের অফিসে বোঁজ নিন হনুমান চটির কোনো বাস আছে কিনা। যাত্রীর অধিকো সরাসরি বাসও মেলে। সরাসরি বাসের অমিলে ১১২ কিমি দূরের উত্তরকান্ধী পৌছান ৬২ ঘটায় নানান বাসে।

পরদিন উত্তরকান্ধীতে হনুমান চটির বাস না মিললে উত্তরকান্ধী-হরীকেশ পথে ৩০ কিমি গিয়ে ১০৩৭ মি উঁচু ধরাসু থেকেও চলা যেতে পারে হনুমান চটি। ৬-১৫ ও ৭-১৫য় হরীকেশ ছেড়ে হনুমান চটির বাসও আছে ধরাসু হয়ে। ধরাসু থেকে যমুনোত্রীর দূরত্ব ১০৭ কিমি। হরীকেশ-গঙ্গোত্রী পথও পৃথক হয়েছে এই ধরাসু থেকে। বা বারকোট চলুন সকাল ৬-০০টায় দেবাদুনের বাসে। বারকোট থেকে বাস যাচ্ছে ৩৬ কিমি দূরের হনুমান চটি। এপথে হনুমান চটির দূরত্ব ২২২ কিমি। থাকারও নানান ব্যবস্থা বারকোটে মেলে। GMVN-এর ট্রাভেলার্স লজে D ২৫০-৪৫০; বাস স্ট্যান্ডের অদূরে এসেরই টুরিস্ট রেস্ট হাউসে DAB ২০০। আর আছে রাওরাত হোটেল, রানা হোটেল, রাফুড়ি হোটেল, তারা যাত্রী নিবাস ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল। তেমনই ধরাসুতে অবস্থান এড়িয়ে তেহরিতেও থাকা যেতে পারে। হোটেলও আছে নানান তেহরিতে। আর নানানধর্মী প্রাইভেট হোটেল আছে বারকোটে।

স্যানাচটি-তেও GMVN-এর ট্রাভেলার্স রেস্ট হাউস আছে। আর আছে চটির হোটেল। লজে স্থানান্তর ঘটলে চটির হোটলে থাকুন। খাবারও মেলে এই সব চটিতে। পুরির সঙ্গে হালুয়া বা সবজি আর পাবেন ভাত সঙ্গে ডাল ও সবজি। আপনার নির্দেশ পেলে আলু সেক্ধ করে দেবে। ঘি়ের সঙ্গে আলু সেক্ধ—অনেক উপাদেয় লাগবে সবজির থেকে। পরদিন যমুনোত্রী যাবার ব্যবস্থা করে রাখুন। কেন্দ্রের মতো ঘোড়া, ডাঙি, কাতি ও কুলি মেলে। পায়ে গেলে ২ দিন আর ঘোড়ায় ১২ দিন লাগে যাতায়াতে। তবে বাসপথ আরও ৪ কিমি এগিয়ে হনুমানচটি পৌঁছালেও বেশিরভাগ সময় পথ খারাপ থাকায় স্যানাচটিতে যাত্রায় বিরতি টানে বাস। স্যানাচটির মতো হনুমানচটিও চটির শহর। GMVN-এর ট্রাভেলার্স রেস্ট হাউস ছাড়াও সাধারণ মানের নানান হোটলে—ঘর ও আহাৰ্য মেলে হনুমান-চটিতে। ডাইনে হনুমানগঙ্গা ও বাম ধরে আসা যমুনার মিলনও ঘটেছে ২১৬৫ মি উঁচু হনুমানচটিতে। জলবিদ্যুৎ প্রকল্পও গড়তে চলেছে হনুমানচটিতে। ব্রিজ দিয়ে হনুমানগঙ্গা পেরিয়ে স্বল্প যেতে দ্বিমুখী হয়েছে পথ—সিধে পথে দোহিতাল আর বামহাতি পথ চলেছে যমুনোত্রী। যমুনার কাঁধে ভর দিয়ে ৩ কিমি যেতে নারদচটি, আরও ২ কিমি দূরে ফুলচটি। ২৪৫০ মি উঁচু ফুলচটি রয়েছে ১ কিমি যেতে পূন যমুনার কাঁধ বদল করে পথ পৌঁছাবে ২ কিমি দূরের জলকীচটি। অদূর ভবিষ্যতে গাড়িও পৌঁছাবে ২৫৯৫ মি উঁচু জলকীচটিতে। জলকীচটি থেকে পথও ওঠে চড়াই বেয়ে। গহন জঙ্গলে ছাওয়া, দু'পাশ দিয়ে প্রাচীর গড়েছে সুউচ্চ পাহাড়। আর নিচে সর্গীর্ণ গিরিখাণ্ডে বয়ে চলেছে যমুনা।



থাকারও নানান ব্যবস্থা মেলে যমুনোত্রীর সারাপথে। স্যানাচটিতে: GMVN-এর ১৮ বেডের Tourist RH-এ D ১৫০; H Shiv Kailas, H Himalaya, H Kalindi Tourist Lodge; রানাচটিতে: H Krishnaloke; হনুমানচটিতে: GMVN-এর ৩০ বেডের Tour-

ist RH, D ৩৫০ ডার্লি বেড ৮০; FRH, D ২৫০; PWD-র Bungalow, DAB ১৫০; হাড়াও Power L, Chowhan L (উপরে ও নিচে ২টি ইউনিট এদের), Ananda Bhawan, Rawat H, Kali Kamli Dharamshala, হাড়াও নানান। জনকীচর্চিতে: থাকার পক্ষে অন্যতম GMVN-এর ৫৮ বেডের Tourist RH, DAB ২৫০, ৩৫০ ডার্লি বেড ৮০; Birla Mangal Niketan, DAB ১০০, অবু: Jayashree Charity Trust, 9/1 R N Mukherjee Rd, Cal-1; Kali Kamli Dharamshala, Yamuna Nabin Ashram, Kalindi Mangal Niketan, H Ganga Yamuna, Yamuna View H, H Himalaya, Shova Ashraya, Santosh H, Aurobinda Ashram, Bhagirathi Mangal Niketan, Anju H, Ajoy Tourist L, Rowat H, হাড়াও নানান। যমুনোত্রীতে: মন্দিরের কাছে Yamuna Ashram, নিজস্ব জেনারেটরে বাতিও জ্বলে, থাকার পক্ষেও অন্যতম যমুনা। GMVN-এর ডার্লি প্রধায় Tourist RH-এ বেড ৩০; Kali Kamli Dharamshala, Sind Hanuman Temple Dharamshala, New Marowari Dhaba. জনকীচর্চিতে জেনারেটরে আলো জ্বললেও যমুনোত্রীতে বাতি ভরসা। তাই উচিত হবে যমুনোত্রী চলার পথে জনকী-বাগিচাে ঘর বুক করে ফেরার পথে জনকীবাগি-এ রাতের অবস্থান করা। মে-জুন মাস চারখামের নীক সিজন—ঘরের ভাড়াও লাগাম হাড়া (২৫০-৬৫০); সেপ্টেম্বর-অক্টোবর সিজন—ভাড়া নামে আধার। জুলাই-আগস্টের অফ-সিজনে আবার আধায় নেমে যায় ভাড়া।

হুথীকেশ থেকে যারা প্রথমে যমুনোত্রী যেতে চান সরাসরি বাসে আসুন নরেন্দ্রনগর/টেহারি/ধরাসু/বারকোট/ স্যানাচটি হয়ে হনুমানচটি। এ-পথের দূরত্ব ২২০ কিমি, সময় নেয় ঘণ্টা নয়েক, ভাড়া ১৫ টাকা। হনুমানচটি থেকে পায়ে হেঁটে ফিরেও আসা যায় যমুনোত্রী বেড়িয়ে দিনে দিনে। ঘোড়া, ডাতি, কাতি, কুলিও মেলে হনুমানচটি থেকে। বাতায়তে ভাড়া—ঘোড়া ২৫০, খতর ৩৫০, কাতি ৪৫০, ডাতি ১২০০। কুলি মেলে ৩০ কেজি পর্যন্ত বহনে ১২০। রাতের অবস্থানে অভিরিক্ত লাগে। পথের দূরত্ব ১৩ কিমি—বাতায়তে ২৬ কিমি। চড়াই ও উতরাই দুইয়েরই সমন্বয় ঘটেছে সারা পথে। শেষ পর্যায়ে রুডিকর চড়াইও পেরুতে হয়।

মন্দির দর্শনের সাথে যমুনোত্রীতে ৩ রাতের বাসে সব পাণ জ্বলে পুড়ে থাক হয়। তেমনই যমুনোত্রীতে নানো যমুনোকে গমন থেকে অব্যাহতি মেলে। তবে পিসুপোকার উপস্রব আছে ৩৩২২ মি উঁচু যমুনোত্রীতে।

রান করুন গরমজলের কুণ্ডে, পাশেই দিব্যালি। নানান্তে পূজা দিন দিব্যালিয়ার। দিব্যালিয়ার পূজাতে যমুনা মায়ে র পূজার বিধি। ৬৩৫১ মি উঁচু বন্দরপুত্রে র পাদদেশে ছোট মন্দির। ১৯ শতকে তৈরি করেন জয়পুরের মহারানী গুলারিয়া। বার বার ২ বার সেটি বিধ্বস্ত হতে নবরাপে পাথরের ওপর পাথর দাঁড়িয়ে রূপ নিয়েছে মন্দিরের। ভেতরে সূর্য-তনয়া যমের বোন যমুনার কলিত মূর্তি। ১৯৯১-এর ভূমিকম্পে ক্ষতিগ্রস্ত দেবীমূর্তি ১৯৯৪-এর ১৩ই মে নতুন স্ক্রার কালা পাথরে তৈরি হয়েছিল। পাশাপাশি তিনটি কুণ্ড যমুনোত্রীতে। একটার জল খুব বেশি গরম (190°F)—

নাম তার সূর্য কুণ্ড, টগবগ করে কুটছে— পূজারীর দেওয়া প্রসাদি চাল কাপড়ে বেঁধে চুবিয়ে রাখুন প্রসাদ হয়ে যাবে। রৌদ্রের তাপে শুকিয়ে সঙ্গে নিয়ে আসুন যমুনামায়ের প্রসাদ। দ্বিতীয়টা মাঝারি গরম। তৃতীয়টা রান্নের উপযুক্ত। উচিতও হবে শীতের দেশে তপ্ত কুণ্ডে রান্না সেয়ে দেহ-মনকে সতেজ করে নেওয়া। রান্নাে স্বগলোকের পারমিটও মেলে। তেমনই যমুনার জলে রান্নাে মৃত্যুঞ্জয়ী হওয়া যায়। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে বরগোতা যমুনা। উৎস তার আরও ১১ কিমি উপরে ৪৪২১ মি উঁচু কলিন্দা পর্বতের বরফ লেকে। প্রবাদ, স্ববি দেবলের আশ্রম ছিল অতীতকালে এখানে। গঙ্গা ও যমুনা র রান্না করতেন স্ববি প্রতিদিন। বার্ষিক্যে গঙ্গোত্রী যাবার অক্ষমতার গঙ্গারই একটি ধারা সরে এসে সাধ পূরণ করে স্ববি দেবলের।

এবার ঘরে ফেরার পালা। মন্দির দেখে ৫ কিমি নেমে ২৫৯৫ মি উঁচে জনকীবাগি চটিতে রাতের বিশ্রাম নেওয়া যেতে পারে। প্রাকৃতিক শোভাও সুন্দর জনকীচটি।

যমুনোত্রী থেকে যারা গঙ্গোত্রী যেতে চান বাসস্ট্যাণ্ডে খোঁজ নিন গঙ্গোত্রীর সরাসরি বাস যাচ্ছে কিনা। যাত্রী বেশি হলে বাসের ব্যবস্থা করে সিভিকিটে। বারকোট/উত্তরকাশী/ধরাসু/লঙ্কা হয়ে গঙ্গোত্রী যাচ্ছে বাস। দূরত্ব ২৩০ কিমি, ভাড়া ৯৫। নতুবা বারকোট ও উত্তরকাশী বদল করে যেতে হবে গঙ্গোত্রী। ৮১ কিমি দূরের মুসৌরী, হুথীকেশও যাচ্ছে বাস হনুমানচটি থেকে। মে-জুন, আবার অক্টোবর মাস এ-পথ পরিক্রমার মাহোৎসব। জুলাই থেকে সেপ্টেম্বরে বর্ষা আর বাকি সময়টা বরফে মোড়া থাকে চারখাম। মরসুমের দিনগুলিতেও যথেষ্ট শীত—পাহাড় ভ্রমণের প্রস্তুতি সঙ্গে থাকা দরকার।

শাক্তরী সঙ্গীত



সাহারানপুর থেকে ৪২ কিমি দূরে বেহট। হুটমলপুর/ কালসিয়া/ বীরকেত হয়ে ঘণ্টা দুয়েকে বাস যাচ্ছে শাক্তরী তীর্থে। ট্রেনও আসছে নানান সাহারানপুরে। হাড়াও থেকে অমৃতসর মেল, এন্ড, হিমগিরি ও শিয়ালপহ থেকে জম্মু তাওয়াই এন্ড যাচ্ছে ১৫৯৪ কিমি দূরের সাহারানপুর হয়ে। ট্রেন যাচ্ছে মুখাই-সেরাদুন, উজ্জয়িন-সেরাদুন, মুখাই-অমৃতসর, সেরাদুন-লঙ্কা, দিল্লী-মুখিয়ানা, বিলাসপুর-অমৃতসর, দিল্লী-জম্মু, দিল্লী-সাহারানপুর এন্ড, এলাহাবাদ-সাহারানপুর এন্ড, লঙ্কা-সাহারানপুর এন্ড হাড়াও নানান সাহারানপুর হয়ে। সাহারানপুর থেকে দূরত্ব—দিল্লী ১৬৬, লঙ্কা ৫৩, হরিদ্বার ৮১, সেরাদুন ১৪০, বেরিলি ২৮৪, মোরাদাবাদ ১৯৩, অমৃতসর ৩৩৩, লঙ্কা ৫১৯, বারাগঞ্জী ৮২০ কিমি। আর বাস মেলে হরিদ্বার থেকে শাক্তরী তীর্থে। এছাড়াও বাস আসছে উত্তর ভারতের বিবিদিক থেকে বীরকেতে।

শিবালিক পাহাড়ের পাদদেশে গিরি নদীর পাড়ে আরণ্যক পরিবেশে দেবী শাক্তরী মন্দির। ত্রিশূলা তীর্থ

নামেও খ্যাতি আছে এর। যাত্রী আসেন আশ্বিন মাসের শুক্লা চতুর্দশীর মুখ্য যোগে দূর-দূরান্ত থেকে। এছাড়াও যাত্রী আসেন ফাঙ্কনী সোল পূর্ণিমার ও চৈত্রের শুক্লা চতুর্দশী তিথিতে সারা উত্তর ভারত থেকে। বছরভর যাত্রী এলেও মেলা বসে উৎসবের দিনগুলিতে, যাত্রীও আসেন লাখো লাখো একান পীঠের অন্যতম পীঠ শাকম্ভরী তীর্থে। বিকটক্রমে খণ্ডিত সতীর মস্তক পড়ে এখানে।

কিংবদন্তী—মৌর্য সম্রাট চন্দ্রগুপ্তও আসেন দেবী সকাশে। মন্দিরও গড়েন চন্দ্রগুপ্ত। তবে সে আজ অতীত। আর ১৫১৫ সংবতে জঙ্গল কেটে তীর্থক্ষেত্রে রূপ দেন শাকম্ভরীর রানা সাহেব। বর্তমান মন্দিরটি আরও পরে তৈরি। স্বর্ণের সুবর্ণা দিয়ে গড়া সুন্দর নৈসর্গিক শোভার মাঝে ছোট্ট মন্দির। নীলাভা দেবী সিন্দুরে চর্চিত, পদ্মাসনে অধিষ্ঠিত। এক হাতে কমল, অন্য হাতে বাণ ও নানান ফুলাদি। দেবতা রয়েছেন আরও নানান—ডাইনে ভীমা অর্থাৎ দেবী মহামায়া। আর বামে শতচক্রর দেবী শতাক্ষী বা শীতলা। সম্মুখে দেবশ্রেষ্ঠ গণপতি। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা খুবই জাগ্রতা এই দেবী। দেবীর মাহাত্ম্যও অপরিসীম—অপুত্রের পূত্র হয়, সর্বকাজ সিদ্ধ হয় শাকম্ভরী তুষ্ট হলে। তেমনই ব্রহ্মহত্যার পাপও ক্ষয় হয় ভীমা দর্শনে। তবে, দেবী দুর্গাই ভিন্নরূপে বিরাজমানা শাকম্ভরী দেবী রাপে। ব্রহ্মার বরে বলীয়ার দুর্গম ঋষির ছল-চাতুরিতে সৃষ্টি যখন রসাতলু যেতে বসেছে তখন দেবতাদের আহ্বানে দেবী শতচক্র ধারণ করে অশ্রুধারায় সজীব করে তোলে ধরিত্রীকে। তেমনই শরীর থেকে শাক উৎপন্ন করে দেবতা তথা জীবের জীবনরক্ষা করেন দেবী। তাই শাকম্ভরী নামে খ্যাত এই দেবী।

এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান সারা বীরক্ষেত্রে—এ। অদূরে ছোট্ট পাহাড় শিরে দেবী ছিন্নমস্তার মন্দির। তেমনই রয়েছে বীরক্ষেত্রে দেবতা ভূরাসেব অর্থাৎ শিবের মন্দির। প্রথাও চালু ভূরাসেব দর্শন সেরে শাকম্ভরী চলা। আর আছে পতির চিতায় আত্মাখতি দেওয়া রানী ফুলন-দেবীর সতী বেদিকা শাকম্ভরী তীর্থে। খাদ্যের অনটন থাকলেও নানান আশ্রম ও ধর্মশালা হয়েছে বীরক্ষেত্রে। শঙ্করাচার্যর আশ্রমটি এদের মধ্যে ভাল।

হর-কি-দুন বা টনস জ্যালি

হর-কি-দুন অর্থাৎ শিবের উপত্যকা। স্বর্ণেরও পথ গিয়েছে ৩৫৬৬মি উঁচু হর-কি-দুন হয়ে। বামে হর-কি-দুন ডাইনে রুইসারা মাঝে তার ৬২৫৬ মি উঁচু স্বর্ণারোহিণী গিরিশ্রেণী, বিস্তার এর পশ্চিম থেকে পূবে। আরও ডাইনে ধুমধার। তমসা অর্থাৎ টনস—এরও জন্ম স্বর্ণারোহিণীর উত্তর পাড়ের পাদদেশে যমজ্ঞার হিমবাহের হর-কি-দুন নালা থেকে। তেমনই তমসার আরও এক শাখা স্টুট হয়েছে হর-কি-দুন বাংলোর সামনে উত্তরী বন্দরপুঙ্খ হিমবাহ থেকে

নিম্নস্তুত রুইসারা থেকে। প্রবাস, পঞ্চপাণ্ডবরা এই পথ ধরেই স্বর্ণারোহণ করেন। প্রকৃতিরানী তার সৌন্দর্যের ভাঁড়ার উজাড় করে সাজিয়ে তুলেছেন এই উপত্যকাকে। জ্বলাই-আগস্টে ফুলদল মধুময় করে তোলে এপথ। তুজ-বার্চ-দেওদার-রডোডেনড্রনের মিষ্টি ছায়া ক্রান্তি ভোলায়। নৈসর্গিক শোভার তুলনা হয় না। ১৯৪৮ খ্রিস্টাব্দে জে টি এম গিবসন প্রথম অভিযান করেন এই হর-কি-দুন।



সেরাদুন থেকে মুসৌরী বা যমুনাক্রিষ্ণুটি পৃথক পথ ধরে নিরমিত বাস বাহকে বারকেট পথের নওগাঁ হয়ে ১৬৭৭ মি উঁচু পুরৌলার। নওগাঁ থেকে পথও বেরিয়েছে বারকেট-যমুনোত্রীর। সেরাদুনের Highway Motor Transport, 69 Gandhi Rd থেকে বাস বাহকে ৭-০০টার ছেড়ে ৮ ঘট্টার পুরৌলা। দূরত্ব ১৩৭ কিমি, ভাড়া ৬০। আর ৬-০০টার ছেড়ে ১০ ঘট্টার বাহকে আরও ৪০ কিমি এগিয়ে সাক্ষীতে বাস। হরিদ্বার থেকেও বাস মেলে পুরৌলার। আর সাক্ষী আসছে বাস উত্তরকাশী থেকে। পুরৌলা থেকে লোকাল বাস বাহকে সাক্ষী। সাক্ষী থেকে পাছাড়ী ট্রাক মেলে তালুকর। অর্থাৎ তালুকর থেকে পায়ে হাঁটা ভ্রম—১ ম রাত সীমা (তালুকার ২কিমি নিচে), ২য় রাত হর-কি-দুনের FIRB-তে অবস্থান। তবুও যেন উচিত হবে ৭-০০টার বাসে সেরাদুন ছেড়ে ৮ঘট্টার পুরৌলা পৌঁছে ১ম রাত GMVN-এর Tourist RH, D ১৫০ ডর্মি ৩৫, PWD RH, FIRB বা সাধারণ হোটেলের কাটিয়ে থিটারী সকালে পুরৌলা-সাক্ষী লোকাল বাসে ঘট্টা তিনেক সাক্ষী চলা। কুলি ও গাইড মেলে সাক্ষী-হর-কি-দুন-সাক্ষী ৪৫০ টাকায়। এপথে যমুনোত্রী বাকার উচিত হবে সাক্ষী থেকে বাসে নওগাঁ গিয়ে আবার বাসে বারকেট হয়ে যমুনানগরী চলা।

পুরৌলা থেকে বাস/জিপ/মালবাহী ট্রাকে ১৬ কিমি যেতে জারমোলা, ১০ কিমি দূরে মৌরী, আরও ৯ কিমি গিয়ে নৈটয়ার পৌঁছান। মৌরী থেকে সামান্য এগুতেই যমুনার শাখা তমসা সঙ্গ নেয় এপথে। হিমাল চলেশের সিমলাতেও বাস বাহকে ৪৬০০ ফুট উঁচু নৈটয়ার থেকে মিনে দিনে। তবে, বড়ুতে বাস বদল করতে হয় সিমলা ব্যারায়। নৈটয়ার সমৃদ্ধ এলাকা। সুপিন ও রূপিন দুই নদীর মিলনও ঘটেছে নৈটয়ারে—নাম হয়েছে মিলিত ধারায় তমসা। পোপু দেবতার মন্দিরও রয়েছে সসমে। আর মাথার উপর FRH.

সরাসরি বাস চলায় বাস যাত্রীদের উচিত হবে সাক্ষীতে ১ম রাত অবস্থান করা। সাক্ষী থেকে ট্রেক করে ১৯ কিমি দূরের ১৬৭৭ মি উঁচু তালুকর পৌঁছে FRH-এ ২য় রাতের অবস্থান। নিচু নিচে বয়ে চলেছে সুপিন নদী। পথও চলে সাক্ষী পেরুতেই স্বেচ্ছিক বন্ধ জঙ্গ স্যাক্চুরারির মাঝ দিয়ে। ১৩০০-৬৩১৫ মি উঁচুতে ১৫০ বর্গ কিমি ব্যাথ স্যাক্চুরারির আখরোটের গাছে গাছে বান্দর, বেনুদ, কাঠবিড়ালীরা লাফিয়ে চলে। শঙ্করন দল কুম কুম পারেল বাজায়। স্নো লেপার্ড, হিমালয়ের কালো ভান্ডকের দর্শনও অসম্ভব নয় এপথে। আরগণ পথ, তাই উচিতও হবে দলবদ্ধ হয়ে এপথ চলা। তালুকরেও লোকনগরী আছে; তবুও কনোকাটার জন্ম নৈটয়ার বা পুরৌলাই সুবিধার। তালুকর থেকে ২২ কিমি পায়ে হাঁটা দূরত্বে হর-কি-দুন। উচ্চতার তুলনায় শীতের আবহা। ৩য় দিনে তালুকর থেকে ১০ কিমি পায়ে হেঁটে ২৫৬১ মি উঁচু তালুকর.

২ কিমি নিচে সীমা FRH-এ ওয় রাতের বিজ্ঞান। গঙ্গৌর থেকে নদীর ডাইনের পথ ধরে সীমা আর বামের পথে ওসলা। এপথের বসতিও ওসলায় শেষ। মহাভারতের কৌরবদের উত্তরসূরীদের বাস। মূর্খোদন উপাঙ্গ সেবতা উপত্যকা জুড়ে। মশিরও আছে নানান—দারু ও পাথরে তৈরি ওসলার মশিরটি উল্লেখ্য। কর্ণও পুজিত হচ্ছেন এলাকায়। ওসলা থেকে পথ হয়েছে বিমুখী—পুলে তমসা পেরিয়ে ডানহাতি পথ গিয়েছে হর-কি-সুনে। দূরত্ব ৯ কিমি। প্রাণান্তকর চড়াই এপথে। ৪র্থ রাতের বিজ্ঞান ৩৪১.৫ মি উঁচু হর-কি-সুনে FRH-এ। এটির কর্ণও ওসলার চৌকিদারের হেপাজতে। ঘরে বসে দেখা স্বর্ণারোহিণীর নৈসর্গিক শোভা পথের ক্লাস্তি ডোলায়। ৫ম রাতও হর-কি-সুনে কাটিয়ে ৬ষ্ঠ সকালে ঘর পানে ফেরার পালা।

আবার ওসলা থেকে বামহাতি যামদার হিমবাহও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। দূরত্ব ৩ কিমি হলেও প্রাণান্তকর চড়াই সারা পথে। আর রয়েছে অসংখ্য মৃত্যু গহ্বর অর্থাৎ ক্রিভাস। গাইড একান্তই দরকার এপথে।

তেরমই ওসলা থেকে যমুনোত্রীও চলা যেতে পারে ৪-৫ দিনে। দুরাহ পথ—Majhakanda Pass-ও পেরুতে হয় এপথে। গাইড একান্তই দরকার এপথ চলাতে।

FRH-এ যাত্রীদের ঘর মেলে থাকার। আর মেলে তৈজসপত্র ও বাসন। এপথ পরিক্রমায় দিন পাঁচেকের আহার্য সঙ্গে আনা উচিত নৈটয়ার বা পুরৌলা থেকে। ফরেস্ট রেস্ট হাউসের অগ্রিম বুকিং-এর জন্য The Divisional Forest Officer, Tons Forest Division, P O- Puroila, Dist-Uttar Kashi, U P-কে লিখুন। প্রাইভেট হোটেলও মেলে পুরৌলা, মৌরী, নৈটয়ারে। বেড়াবার মরসুম মে, জুন আবার সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস। এবার মৌরী থেকে বারকোট পৌছে যমুনোত্রী বা মুসৌরী চলুন বাসে।

মুসৌরী

২০০৫.৫ মি উঁচুতে পাহাড়ের রানী মুসৌরী। কলকাতা থেকে দূরত্ব ১৫৫৯ কিমি। ৩৪ কিমি দূরের দেরাদুনের সঙ্গে সুন্দর সভ্য সংযোগ রয়েছে মুসৌরীর। UP Roadways-এর ৬-৩০-এ প্রথম, আর ১৬-০০টায় শেষ বাসটি দেরাদুন ছেড়ে মুসৌরী আসছে। ঘন্টা সেড়েকের পথ। ট্যাক্সি বা যান্ধে শেয়ারে। বাস আসছে ৮ ঘটায় ২৭৮ কিমি দূরের দিল্লী থেকেও মুসৌরী পাহাড়ে। দিল্লী যাচ্ছে সকালে কুলরী, সন্ধ্যার লাইব্রেরি আর হোটেল বিমু প্যালেস থেকে DTC-র বাস।

আর ট্রেন, জগসন প্রাইভেট বিমান ও বাস আসছে ভারতের দিবিদিক থেকে মুসৌরীর যাত্রী নিয়ে সংযোগকারী স্টেশন দেরাদুনে। তেহরি যাচ্ছে ৪ ঘটায় নানান বাস—গঙ্গোত্রী, উত্তরকান্ধীও চলা যেতে পারে তেহরিতে বাস বদল করে। উত্তর ও পশ্চিম ভারতের রেল যাত্রীরা সাহ্যরানপুর পৌছে বাসে বাসে দেরাদুন হয়ে যেতে পারেন মুসৌরী। চলার পথে সাহ্যরানপুরে দেখে নেওয়া যায় কোম্পানির

বাগান অর্থাৎ ১৫০ বছরের প্রাচীন বোটানিক্যাল গার্ডেন। গঙ্গোত্রী-যমুনোত্রী যাত্রীরা বারকোট হয়ে বাসে যেতে পারেন মুসৌরী। বেলা ১৫-০০টায় মুসৌরীর শেষ বাসটি ছেড়ে আসে ৯৫ কিমি দূরের বারকোট থেকে। মিউনিসিপ্যাল টোল লাগে মুসৌরীতে। রেল না পৌছালেও রেলের সিটি বুকিং বসেছে মুসৌরী পাহাড়ে।



স্বয়ংগীর্ষদের জন্য মুসৌরী পাহাড়। হোটেলও হয়েছে নানান বিবিধ মানের বিভিন্ন দামের Mussoorie-248179, STD-0135এ। মূলত লাইব্রেরি বাজার আর কুলরী বাজারকে ভর করেছে রূপ পেয়েছে মুসৌরীর হোটেলরা। সিজন ও অফ সিজনের হোটেল রেটে তারতম্যও আছে। নীক সিজন: মে ২২ থেকে জুন ৩০; সিজন: মে ১—২১, জুলাই ১—১৫, অক্টোবর ১—১৫; বছরের বাকি সময়টুকু অফ সিজন মুসৌরীতে—রেটও নামে আধারও নিচে। Connaught Castle, The Mall-248179, মে-জুনে ক্রিসমস সহ চার বেডের ঘর ৮০০-১৫০০ দু'বেডের ৪৫০-৮৫০; *Haknans Grand H, The Mall, SAB ৫৫০-৭৫০, DAB ৮০০-১২৫০; Roselynn Estate H, The Mall, Library Bzr, 632201, S ৮৫০ D ১০০০ সুইট ১২৫০; H Howard International, The Mall, A/c S ৭৫০ D ৯৫০ সুইট ১২৫০-২০০০; H Midtown, The Mall, 632649, DAB ৮০০-১২৫০ সুইট ১৫০০-২০০০; Sun View, The Mall, 632766, D ৩২৫-৬০০; *Savoy H, The Mall-9, 632010, AP-S ১০৯৫ D ১৮৯৫ সুইট ২২৯৫; Garhwal Terrace, Mall Rd, D ৮৫০-১২৫০; *H Shiva Continental, 632980, D ১০৯৫-১৭৯৫ সুইট ২২৯৫; H Kasnanda, The Mall, 632424, D ১২০০-১৭৫০ সুইট ২৫০০; *H Solitaire Plaza, Picture Place, D ১৪৫০ ১৬৫০ সুইট ২৭৫০; Valley View H, The Mall-9, 632211 D ৬৫০-১২৫০; অতীতের মহারাজার ডিলাখর্দী প্রাসাদে H Padmuni Niwas, D ৮৫০-১২৫০; Honeymoon Inn, 632378, DAB ৮৫০-১২৫০, কল বুকিং: Span 2801209 বা Diamond 276714; *H Roan-Oke, S ৩২৫-৪৫০ D ৪২৫-৬৫০; H Nishina, B1, SCB ১৫০ SAB ২০০-৩৫০; DAB ৩২৫-৬০০; H Darpan, Mall, DAB ২৭৫-৪৫০; Nabha Resort Claridges, Barlowganj Rd, 631245, সকাল ও রাতের আহার সহ নীক সিজনে D ২৯৫০-৩৫০০, কল বুকিং: Span 2801209; H Shining Star, The Mall, opp Vasu Theatre-79, 632468 S ২২৫০ D ১৭৫০ সুইট ২২৫০-২৭৫০; Carltons Plaisance H, Happy Valley Rd, DAB ৬৫০-৮০০ সুইট ৮৫০-১২৫০; Naveen H, Kulri, SCB ১২৫-১৫০ SAB ২২৫-৩২৫ DAB ৩০০-৬০০; Shilton H, Gandhi Chowk, 632983, SAB ৭০০-৮৫০ DAB ১০৪৫-১৫৪৫ সুইট ২৫৯৫-৩৫৯৫; H Nandvilla, The Mall, B1, DAB ৪২৫-৬৭৫; Khayyam H, DAB ৩২৫ সুইট ৬০০; Raxy H, Kulri, DCB ২২৫ DAB ৩৫০-৪৫০; Raj H, Bus Stand, DAB ২৫০-৪০০; H Rock Wood, SAB ১২৫-৪০০ DAB ২২৫-৪০০; *H Dunsvirik Court, Baroda Estate, 631669, A/c D ২০০০-২৭৫০ সুইট ৪০০০; H Apsara, Mall, 632066, D ৩৫০-৬৫০; H Ashirwad,

DAB ৪০০-৬৫০ চার বেডের সুইট ৮৫০, কল বুকিং: Diamond ৩ 276714; Vikram H, Kulri, SAB ৩০০ DAB ৪৫০। H Wild Flower House, Kempty Rd, D ৮৫০ সুইট ১২৫০-১৫০০; H Brook Hill Resort, Kings Creig, ৩ 631190, কটজ ১২৫০-১৭৫০; H Classic Heights, Library Chowk, ৩ 632514, D ৮৫০-১৫৫০; Miltons, near Kulri Stand, D ৩৫০-৬০০; Sylverton H, D ১০০০ সুইট ১৭৫০; *Residency Manor, Barlowganj, ৩ 631800, AP প্রথম Standard ৩৫০০-৪৫০০ Executive ৪০০০-৪৮৫০ Suite ৬০০০-৭৭৫০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; Country Inn, Kincrtg, ৩ 631190, D ৮৫০-১২০০, দুয়েরই কল বুকিং: Span ৩ 2801209.

কুলরি বাজারে—Brent Wood, DAB ২৭৫-৪২৫; Amar H, D ২০০-৩২৫; The Claridges Connaught Castle, D ১২৫০-২০০০, T ২৭৫০; Heaven's Club, S ২৭৫ D ৪২৫; Doon View H, Mall, D ৩২৫-৬০০; H Deep and Mountain View, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ ডিলাক্স ৬০০; H Shipra, D ৮০০; H Broadway, Everest, Glen Villa, Hill View, Mansarover, Minerva, Moti Palace, New Grand, Naaz, New Bharat, Priya, Rama H, D ৩২৫-৪৫০; Regul, DAB ৩০০-৫৫০; H Mitson's, near Kulri Stand, ৩ 632907, D ৪০০-৮৫০; Ritu Kunj, Roop, Tourist, Vikus, H Walnut Grove, DAB ৩২৫-৬০০, কল বুকিং: ডায়মন্ড ট্যুরিস, ৩ 276714; *H Mussoorie International, Kulri, ৩ 632143, D ৬৫০-৯৫০ সুইট ১৫৫০; কল বুকিং: ডায়মন্ড ট্যুরিস, ৩০ যদুনাথ মে রোড, কল-১২ ৩ 276714.

লাইব্রেরি বাজারে—H Adarsh, SAB ২২৫ DAB ৩২৫, FR ৪২৫; প্রকৃতির আকর্ষণে H India, ৩ 632359, DAB ২২৫-৪২৫; স্বপ্ন দূরে H Eagle, Imperial, Library Club, Prino, DCB ১৭৫-৩২৫ DAB ৩০০-৪৫০; Kashmir H, Prince H, Snow View.

ক্যামেলস ব্যাক রোডে—Ajaya, Broadway, Uday, ৩ 631016; Mountain View, Naveen H, H Peak View, ৩ 632257, DAB ৮৫০-১৫৫০; *H Filigree, ৩ 632360, DAB অক্টোবরে ৬৫০-৮০০ মে-জুলাই ৯৫০-১৫০০; H Shaheen, DCB ২৭৫ DAB ৩৭৫; Tourist Hostel.

ল্যাভোর বাজারে—Anupam, ৩ 632296; Ganesh H, SCB ১০০ SAB ১৫০ DAB ২৫০-৩৭৫; Himalaya Club, ৩ 632762; Mullingar H, ছাড়াও S ১৫০-২২৫, D ২০০-৪২৫ টাকার হোটেল আছে আরও নানান মুসৌরীতে।

আর আছে GMVN-এর Tourist Complex, ৩ 632682, D ৬৫০, ৮০০ ডব্লিউ বেড ১০০; Mussoorie Club, Kulri-248179, DAB ২৫০-৪৫০; হরিয়ানা টুরিজমের Horn-Bill, D ৩২৫ সুইট ৬০০; YWCA-র Mount Rose Tourist Home; YWCA, Mall-এ ফ্যামিলি নিয়ে থাকার ঘর, ডব্লিউ কেবল মহিলা; অগ্রিম পাঠিয়ে বুকিং-এর প্রথা এসেছে। PWD IH, Charleville Rd; CPWD IH, Landour-এও ঘর মেলে থাকে। এরমপালাও আছে মুসৌরী পাছড়ে। লাইব্রেরি বাজারে: লক্ষ্মীনারায়ণ মন্দির, ওমহারী; ল্যাভোর বাজারে: টেন, আর্থ সনাজ, মুসাকিরখানা, সনাতন ধর্ম মন্দির।



হলিডে হোম গড়েছে মুসৌরী পাছড়ে কলকাতার Canara Bank Staff Recreation Club, 2 Brabourne Rd, Cal-1, ৩ 275306 হোটেল মুসৌরী ইন্টারন্যাশনাল, মাল্ল-এ; তবে রামার কোনো ব্যবস্থা নেই এদের। Standard Chartered Bank, 4 N S Rd-1, ৩ 2206902; Grindlays Bank Employees Union, 19 N S Rd-1; Syndicate Bank Staff Recreation Club-WB বাসের বাটা বিল্ডিং-এ, এদের বুকিং: 3B Lalbazar St (2nd floor), Cal-1, ৩ 2486055 থেকে।

আহার্যেরও নানান হোটেল মুসৌরীতে। কুরলীতে ভেজ মিলে Madras Cafe ও The Green দুইয়েরই খ্যাতি শহর জুড়ে। আর নন ভেজ মিলের জন্য ম্যালে President's Sanzi (11—23-00), Windsor's Whispering Windows, Kwaliti Restaurant (9—23-00) Kulri, প্রতিটারই যথেষ্ট সুনাম। তেমনি মিষ্টির সাথে স্ন্যাকস পরিবেশায় যথেষ্ট খ্যাত Luxmi Mithanna Bhandar মুসৌরী পাছড়ে। দামে আকর্ষণ ঘটলেও প্রতি ৯ মিনিটে এক পাক খোরার সাথে দুই খালির শোভা দেখা ও খানা-পিনা স্নাক করা যায় Howard Revolving Restaurant-এ।

পিকচার প্যালেস ও গান্ধীদ্বার—২টি প্রবেশ ফটক মুসৌরী পাছড়ের। বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে পিকচার প্যালেস থেকে হরিদ্বার ও দেৱাদুনে আর গান্ধীদ্বার থেকে দিল্লী। পিকচার প্যালেস থেকে শুরু করে ক্যামেলস ব্যাক রোড-গান হিলস রোড-লাইব্রেরি রোড-গান্ধী ফটক পেরিয়ে ম্যাল ধরে ঘণ্টা পাঁচেকে শহরটা দেখে নেওয়া যায় পায়ে হেঁটে। আবার গান্ধী ফটক থেকেও শুরু করা যায় এ পরিক্রমা। রিকশাও মেলে এ সফরে। তবে ক্যামেলস ব্যাক রোড-এ দুর্গা মন্দির বা পাবলিক স্কুলের পাশ থেকে আকাশ পানে তাকাতেই নামের তাৎপর্য মুগ্ধ করে। পাছড়াটা হব্ব উটের আকার নিয়েছে। খুবই সুন্দর এ দৃশ্য। চলতে চলতে হাওয়া ঘরে বিজ্ঞান আর সূর্যাস্তে চোখ ভরে দেখে নিন তুঘারাছাদিত মোহিনী হিমালয়। কেনাকাটা করুন ২ কিমি দীর্ঘ ম্যাল রোডের দু'প্রান্তে—কুলরি বাজার (পিকচার প্যালেস) বা লাইব্রেরি বাজার (গান্ধী চক) এ। আর আছে ল্যাভোর অর্থাৎ শিবাজী বাজার মুসৌরীতে। UP Tourism-এর অফিস Tourist Bureau, Near Jhulaghar, Mussoori, ৩ 632863-তে। Tourist Office থেকে GMVN মরসুমে কেমটি দেখাতে যাচ্ছে ৯-০০, ১২-০০ ও ১৫-০০ টায়। আর মুসৌরী-খানোলটি-সুরখণ্ডা দেবী-লেক বেড়িয়ে আন ১০০ টাকায়।

১৮২৭ খ্রিস্টাব্দের কথা। ব্রিটিশ ভারতের সামরিক অফিসার ক্যাপ্টেন ইয়ং প্রকৃতপক্ষে মুসৌরী পাছড়ের স্থপতি। ছুটি কাটাতে প্রথম ঘর তোলেন সাহেব—The Mulingar. আজ হোটেল বসেছে। সাহেবের দেখাশোনা সমস্তলের গরম এড়াতে পাছড়ে আসেন নানান সঙ্গী-সাথী—গড়ে তোলে গ্রীষ্মাবাস মুসৌরীতে। ১৮২৬-এ স্যানাটোরিয়াম আর ১৮৭৩-এ মিউনিসিপ্যাল বোর্ডও গড়ে ওঠে মুসৌরীতে। তবে, সেদিনের মসুরী গাঁহ সাহেবী মুখে মুসৌরী—আজ আবার হয়েছে মসুরী।

বেটিয়ে ভরা শহর মুসৌরী। সবুজ তরঙ্গের মতো পর্বতশ্রেণী, অজস্র রঙিন ফুলের সমারোহ, চেনা-অচেনা জীবজন্তু—সব মিলিয়ে পরীর দেশের শৈলাবাস মুসৌরী। আরতন ৬৪.২৫ বর্গ কিমি। লাল টালির কটেক ধর্মী বাড়ি-ঘর—তারই মাঝে তিব্বতীয় শ্রেয়স-স্নানাগ, মনাস্টি, সেন্টেন মাথা তুলে দাঁড়িয়ে। মুসৌরী ছাড়া অন্য কোনো পাহাড়ী শহরে এত কাছে তুষারচূড়ো নেই। মুসৌরীর উত্তর খোলা, নানান তুষারশৃঙ্গ ও সুন্দর দৃশ্যমান। শীতও বেশি মুসৌরীতে। তাপমান গ্রীষ্মে ২৯—৯০ আর শীতে ৭—১০ সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। বৃষ্টির গড় ১৭৭—২৮৮ সেমি। বেড়াবার মরসুম যে থেকে জুলাই আবার সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস। মরসুমে সাধারণ উলেন চললেও এপ্রিল ও অক্টোবরে শীতের দাপট আছে। ডিসেম্বর-জানুয়ারিতে বরফও পড়ে মুসৌরী পাহাড়ে।

সিটি বোর্ড আয়োজিত ঝাউমাঘর (ম্যাল) থেকে ৪০০ মি দীর্ঘ রোপওয়ে চেপে গান হিল বেড়িয়ে আসুন ১০—১৭-০০টায়, যাতায়াত ৩০। অঙ্গগামী সূর্যের আলোর বদরীনাথ, বন্দরপুঙ্খ ছাড়াও নানান তুষারশৃঙ্গ সুন্দর দৃশ্যমান। আবার মুসৌরী শহর ও দূন ভ্যালিও দেখে নেওয়া যায় গান হিল থেকে। অতীতে ব্রিটিশরাজ প্রতি দুপুরে সময় নির্দেশ করত পাহাড় থেকে কামান সেগে।

মুসৌরী পাহাড়ের আর এক আকর্ষণ তার কেমটি জলপ্রপাত। শহর থেকে ১৪ কিমি দূরে চকতা-বারকোট পথে ১৩৭২ মি উঁচুতে এই জলপ্রপাত। উপর থেকে জলের ধারা নামছে কয়েক হাজার ফুট নিচে। বর্ষাকালে এই ধারা নয়নাভিরাম। ভ্রমণার্থীদের মনোরঞ্জননের জন্য পার্কও হয়েছে পথ থেকে ১০০০ ফুট নিচে। GMVN-এর প্যাকেজ ট্যুর, বাস বা ট্যাক্সিতে যাওয়া চলে কেমটি জলপ্রপাত, শেয়ার ট্যাক্সিও বাচ্ছে শহরের লাইব্রেরি চক থেকে। যমুনাত্রী থেকে মুসৌরী আসার পথেও দেখে চলা যায় কেমটি জলপ্রপাত।

শহরের তিব্বতীয় উপনিবেশ পাইনে ছাওয়া হ্যাপি ভ্যালিও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। নানান সেন্টেন, শ্রেয়স-স্নানাগ, দোকানপাটে তিব্বতীয় অ্যান্টিক কেনার সাথে তিব্বতীয় খানা—মোমো, নুডলস-এর স্বাদ নেওয়া যেতে পারে। শহর থেকে ৪.৮ কিমি দূরে মুসৌরী পাহাড়ের সর্বোচ্চ চূড়া লালটিকা, উচ্চতা এর ২৬১০ মি। এই চূড়া থেকে হিমালয়ের অনিন্দ্য শোভা দেখে নেওয়া যায়। একে একে বন্দরপুঙ্খ, নীলাঙ্গ, শ্রীকান্ত, সত্যোপহু, কোদরনাথ, কামেত, বদরীনাথ—প্রায় প্রতিটি শৃঙ্গই চোখের দৃষ্টিতে ধরা পড়ে। নির্মেষ আকাশে আরও দূরে পূব দিগন্তের নন্দাদেবী, ত্রিশূল, শ্রোণগিরিও দৃশ্যমান হয়। লালটিকার কাছেই কাঠগোদাম টিকা, বরফে মোড়া হিমালয়ের শোভা দেখার জন্য এরও আকর্ষণ। পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়— গাড়িও বাচ্ছে, আর বাচ্ছে টানা রিকশা এগুথ পরিক্রমায়। ৬ কিমি দূরে পায়ে হেঁটে বেড়িয়ে আসুন মোসি জলপ্রপাত। চড়ুইভাতির

সুন্দর পরিবেশ। আর এক সকালে পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নিন ডাষ্ট্রী জলপ্রপাত। এরও দূরত্ব ৬ কিমি। প্যাকেট লাঞ্চ সঙ্গে নিতে পারেন। চড়ুইভাতির আদর্শ জায়গা ভাট্টা। পায়ে বা ঘোড়ায় ২ কিমি আর ওয়েভারলি কনভেন্ট রোড ধরে গাড়িতে. ৪-কিমি-দূরের মিউনিসিপ্যাল গার্ডেনও চড়ুইভাতির সুন্দর পরিবেশ। বাগিচার মাঝে কৃত্রিম লেক—বোটিংও করা যায় ১৮২৭-এ গড়া এই পার্কে। ৮ কিমি দূরের ২৩৪২ মি উঁচু বেনং হিল থেকেও প্যানোরামিক ভিউ দেখে নিতে পারেন পায়ে পায়ে ট্রেক করে। তেমনই শহর থেকে বাস বা গাড়িতে ৭ কিমি দূরের ঝারিপানি পৌছে আরও ১২ কিমি পায়ে গিয়ে ঝারিপানি প্রপাতটিও দেখে ফেরা যায়। আবার কার্ট ম্যাকোঞ্জি রোডে গাড়ি পথে ৬ কিমি দূরে নাগদেবতার মন্দিরটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া। দূন উপত্যকা ও মুসৌরী শহর সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে। দেবাদুন পথে ৬ কিমি যেতে মুসৌরী লেক। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে।

মুসৌরী থেকে ২৫ কিমি দূরে তেহরি রোডে ২২৮৬ মি উঁচুতে পাইন ও দেবদারুতে ছাওয়া সবুজে মোড়া ধানোলটিও প্রশস্তি তার হিমালয়ের নৈসর্গিক শোভার জন্য। পাহাড়ী ঢালে সূর্যাস্ত নয়নাভিরাম। চড়াই বেয়ে ভিউ টাওয়ার থেকে গাড়েয়াল হিমালয়ের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। থাকারও ব্যবস্থা মেলে প্রাইভেট হোটেলে—H Breeze, Flame Heritage, H Sher-e-Punjab, H Hermitage ছাড়াও FRH ও GMVN-এর Tourist R H, D ৫৫০ টাকায়। ধানোলটি থেকে বাসে বা ঘোড়ায় ৫ কিমি দূরে কাড্ডুখাল পৌছে আরও ২ কিমি পাহাড় চড়ে চলা যায় ৩০৪৯ মি উঁচু আর এক শৈলশিখরে সুরখণ্ডাদেবীর মন্দির-এ। মন্দির থেকে হিমালয়ের দৃশ্য নয়নাভিরাম।

ধানোলটি থেকে ৩১, মুসৌরীর ৫৬ কিমি দূরে ৭০০০ ফুট উঁচুতে আপেল ক্ষেত আর রডোডেনড্রন ফুলের জলসাঘর বসেছে ছাছায়। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা—অপরূপ নৈসর্গিক শোভার জন্য ছাছার প্রশস্তি। বসন্তে আপেলের রঙে লাল-সোনালী রঙ পরে সারা ছাছা। ছাছা ভ্রমণের স্মারকরূপে রডোডেনড্রন ফুলের স্কোয়াশ সঙ্গী করুন। দূরে-দূরান্তরে তুষারে ছাওয়া হিমালয়ের শিখররাজি। টুরিস্ট বাংলাও আছে ছাছায়। আর হয়েছে শহর থেকে ৩ কিমি দূরে শৈলশিখরে H Trishul Breeze, Arakot, Chhamba, Tehri Garhwal, D ৬৫০-৮০০ ছয় বেডের ডর্মিতে বেড ১০০ করে; অব্: Manager বা 71 Masjid Rd, Jangpura, New Delhi, ৩ 697754. মুসৌরী-তেহরি বাস যাচ্ছে ধানোলটি/ছাছা হয়ে। হাবীকেশও যাচ্ছে বাস ছাছা থেকে।

আবার চকতা-বারকোট পথে ২৭ কিমি দূরে যমুনা সেতুও বেড়িয়ে নেওয়া যায় বাসে মুসৌরী থেকেই। DFO-র অনুমতিতে মাছ ধরার আদর্শ জায়গা।

সেরাদুন



রাত ২০-১৫র 3009ন মন্থন এক্সেস হাওড়া হেডে বিজয় সফল ৭-১৫র সেরাদুন পৌঁছান। সেরাদুনেই দুই এক্সেস চলায় বিরতি। কলকাতা থেকে দূরত্ব ১৫২৪ কিমি। সফল ৮-৫৫য় বারানসী হেডে 4265 বারানসী-সেরাদুন এক্সেস যাবে পরদিন ৮-৫০এ। ৬-২৫এ নিউ দিল্লী, ৭-৪০এ দিল্লী জং হেডে মুম্বাই সেট্রাল থেকে আসা 9019 মুম্বাই-সেরাদুন এক্সেস ১৬-৪৫এ সেরাদুন আসছে। উজ্জয়িন-সেরাদুন এক্সেস ১৬-০৫এ নতুন দিল্লী হেডে ৩১৮ কিমি দূরের সেরাদুন পৌঁছায় ১৮-০০এ। আর সোম ও শুক্রবার ১৬-০৫এ নতুন দিল্লী থেকেই সেরাদুন যাবে উজ্জয়িন এক্সেস। আর ২২-২০এ দিল্লী জং হেডে পরদিন ৭-৪৫এ সেরাদুন যাবে 4041 মুম্বাই এক্সেস। বৃহস্পতিবার ছাড়া প্রতিদিন ৭-১০এ নতুন দিল্লী হেডে ১২-২৫এ সেরাদুন যাবে 2017 শতাব্দী এক্সেস; শতাব্দী ফেরে ১৭-০০টার সেরাদুন থেকে। 4113 এলাহাবাদ-আলিগড়-সেরাদুন লিঙ্ক এক্সেস নিরমিত সেরাদুন যাবে। দিল্লী, আগ্রা, অমৃতসর থেকে প্যাসেঞ্জার ট্রেনও আসছে সেরাদুনে।

তেমনই পূর্ব ভারত থেকে জম্মু, অমৃতসর, লুধিয়ানাগামী নানান ট্রেনে লজ্জার নেমে ৪-৪০, ৫-২০, ৬-৩০, ৭-৪৫, ১০-৫৭, ১৩-০৫, ১৬-১৫, ১৬-৪৫এর ট্রেনে ৬ ঘটায় চলা যেতে পারে ৭০ কিমি দূরের হরিদ্বার হয়ে সেরাদুনে।

ত্রিমুখী তিন রাজপথ গিয়েছে সেরাদুন রেল স্টেশন থেকে—উত্তরমুখী পথ রাজপুত্র হয়ে মুসৌরী পাহাড়, পূর্বমুখী পথ হরীকেশ/ হরিদ্বার আর পশ্চিম যাবে চক্রাভা হয়ে যমুনোত্রী/সিমলা পাহাড়। রেল ও বাস স্টেশন দুইয়েরই অবস্থান কাছাকাছি সেরাদুনে। রেল স্টেশন লাগোয়া পাহাড়ী বাসের আর আধ কিমিরও কম দূরত্বে ক্লক টাওয়ারকে ঘিরে সমতলমুখী বাসের স্ট্যান্ড গাঝী রোডে। আর প্রাইভেট বাস যাবে প্যারেড গ্রাউন্ড থেকে। বাস টার্মিনাস এনকোয়ারি: দিল্লী ০ 624787; সিটি বাস ০ 624237; মুসৌরী স্ট্যান্ড ০ 623435. বাস যাবে UPSRT ছাড়াও নানান প্রতিবেশী রাজ্যের রাষ্ট্রীয় পরিবহণ ও প্রাইভেট। বাস যাবে—নৈনীতাল ১১ ঘ, উত্তরকাশী ৭ ঘ, তেহরি ৪ ঘ, লক্কৌ ৬ ঘ, সিমলা ৯ ঘ, পুরৌলা ৮ ঘ, সার্কী ১০ ঘটায় ছাড়াও আগ্রা, মথুরা, কুল্লু, মানালি, অমৃতসর, আখালা, চণ্ডীগড়, নৈটমার, বারকোট, মোরী, নাহান, পোশপ্রগ্রাণ্ড, গোপেশ্বর, ছাচা, মোরালাবাদ, মিরাত, হালদুয়ানি, রামনগর, টনকপুর তথা উত্তর ভারতের দিকে দিকে সেরাদুন থেকে। এমনকি রাজধানী দিল্লীর সঙ্গেও বাস সংযোগ রয়েছে। ভোর ৫-০০টা থেকে গভীর রাতে বাস আসছে দিল্লীর কাশ্মীরি গেট থেকে ঘটায় ছয়েকে সেরাদুনে। হরিদ্বার থেকে বাস আসছে ভোর থেকে গভীররাতে ১ ঘটায় অপর সেরাদুনে। ট্রেন যাত্রা আরামপ্রদ হলেও বাসে সময় ও ভাড়ায় সাশ্রয় মেলে।

আর প্রাইভেট বিমান জপসন সংযোগ পড়েছে দিল্লী থেকে ৫০ মিনিটে সেরাদুনের। সেরাদুন-হরীকেশ পথে সেরাদুন থেকে ২৪, আর হরীকেশের ১৮ কিমি দূরে জলি গ্রাউট বিমান বন্দর। সিটি বাস, মিটারহীন ট্যাক্সি, অটো ও রিক্সা চলছে শহরে।

যেখেন্দ্র যাত্রী হলে রেল ও বাসের সলিকট UPSTDC, Hotel Drona, 66 Gandhi Rd, ০ 26894 থেকে সফল ৯-৩০টার গিয়ে Malsi Deer Park, Shahanshahi Ashram, Tapkeswar, FRI, Sahasradhara দেখিয়ে ১৬-৩০টার ফেরে

বাস। উচিতও হবে এদের টুরের অংশ নিয়ে দিনে দিনে শহর বেড়িয়ে নেওয়া। আবার শ দুইকে টাকার অটো বা শ তিকে টাকার চুক্তিতে ট্যাক্সি নিয়ে ৬/৫ ঘটায় শহরটা দেখে নেওয়া যায়। Garhwal Mandal Vikash Nigam তথা GMVN-এর মূল দপ্তর বসেছে 74/1 Rajpur Rd, Dehradun, ০ 26817এ। মরসুমে (May-October) নানান প্যাকেজ ট্যুরও যাবে GMVN Garhwal Himalaya-র দিকে দিকে। আর District Information Centre বসেছে 9 Ashley Hall, ০ 26508-এ।

আবার সেরাদুনে অবস্থান করে মুসৌরী পাহাড়ও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ১৫ থেকে ৩০ মিনিটের ব্যবধানে বাস যাবে সেরাদুন থেকে ১১ ঘটায় মুসৌরী। ট্যাক্সিও যাবে শেরাদুনে ৪০ হারে। ঠিক তেমনই হরিদ্বার/হরীকেশও বেড়িয়ে নেওয়া যায় সেরাদুন থেকে। ট্রেন-বাস-ট্যাক্সি চলে মুম্বাই তরীয়ার মাঝে। ঘটায় সেড়েফের পথ।



রেল স্টেশনের পাশে একাধিক ধরমশালা আছে Dehradun-248001, STD-0135এ। Gandhi Rd-এ আগরওয়াল ধরমশালাটি ঘরের জন্য মেঝেতে পারেন। পাশেই জৈন ধরমশালা; গাঝী রোডে শ্রীঅরবাল ধরমশালা; কৌশিন্দো সেরা রাজপুত্র রোডে কালুম ধরমশালা; সাহারানপুর রোডে শিবাজী ধরমশালা। হোটেলও আছে নানান রেল ও বাসের মাঝে—S ৪০-১২৫ D ৮০-২২৫ টাকার। রাজপুত্রের শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম, আনন্দময়ী মায়ের আশ্রমও ভক্তজনদের থাকার ব্যবস্থা মেলে।

| রেল স্টেশন, বাস স্ট্যান্ড ও ক্লক টাওয়ারের মাঝে সাধারণ হোটেল : Victoria H, opp Rly Stn, SCB ৬০-৮৫ DCB ৮০-১২৫ SAB ৮৫-১২৫ DAB ১৫০-২০০; H Nishima, near Rly Stn, SCB ৮০ SAB ১০০ DCB ১৫০ DAB ১৭৫-২৫০ ডার্মি ৫০; Central L, Clock Tower, SCB ৬০-৮৫ DCB ৮০-১৫০; Clock Tower-এর উত্তরে Vikash Tourist L, S ৬৫-১০০ D ১৫০-২২৫; H Meedo, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ২০০-২৭৫; বিপরীতে National H; Oriental H, 4 Darshani Gate, SCB ৬৫ SAB ১০০ DCB ১২৫ DAB ১৭৫; H Rangmahal, Gandhi Rd, ০ 652702, DAB ২০০-৩০০। | | সেরাদুন থেকে সড়ক দূরত্ব : | |
|---|----------|----------------------------|-------|
| দিল্লী | ২৫৫ কিমি | হরিদ্বার | ৫২ " |
| হরীকেশ | ৪৩ " | আগ্রা | ৩৮২ " |
| সিমলা | ২২১ " | যমুনোত্রী | ২৩৯ " |
| গৌরীকুণ্ড | ২৫৭ " | নৈনীতাল | ২৯৭ " |
| মুসৌরী | ৩৪ " | পুরৌলা | ১৩৭ " |

পাঁচাত্তপ্রথায় : *Motel Kwality, 19 Rajpur Rd, ০ 657001, S ৩০০ D ৫২০ A/c S ৩৪০ ৪১০ D ৫৮০, কল বুকিং: ডার্মমন্ট টুরিস, ০ 276714; *H Madhuban, 97 Rajpur Rd-1, ০ 654094, A26R3B1, A/c S ৪৫ D ৬৫ USS; *H Meedo's Grand, 28 Rajpur Rd-1, ০ 657171, S ৪০০ D ৫৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১২৫০; *H President, 6 Astely Hall, Rajpur Rd-1, ০ 27386, A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১৫৫০; H Inderlok, 29 Rajpur Rd, ০ 659256, S ৪০০ D ৫৫০ A/c S ৬৫০ D ১৫০ সুইট ১২৫০; *H Relax, 7 Court Rd-1, ০ 656608, RIB; S ৩৫০ D ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ১০০০, কল বুকিং: ত্রিমুখি ট্রাভেল, ৭৬-

বি, নেতাঙ্গী সুভাষ রোড-১, ৩ 2388678; একই মানে একই নামে H Himashri.

ভারতীয় প্রধায় Rajpur Road-248001-এ: *H Majestic, S ১২৫ D ২০০; Doon View H, S ৮৫-১২৫ D ১৫০-২৭৫; Park View H, S ৬৫-১০০ D ১২৫-১৭৫; H Priya, S ৬৫-১০০ D ১৭৫-২২৫; Metro H, Doon GH, Pasha H, India H, H Aketa, 113/1-2 Rajpur Rd-1, ৩ 24302, R4B1, S ৫৫০ D ৭০০ A/C S ৭৫০ D ৯৫০ সুইট ১২৫০, কল বুকিং: ত্রিমূর্তি ট্রাভেল, ৩ 2388678; H Nidhi, H Ajanta Continental, 101 Rajpur Rd-1, ৩ 29595, A/C S ৭৫০ D ১২০০ সুইট ১৫০০; Inderlok H, 29 Rajpur Rd, ৩ 28113, A/C S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১৪৫০; H Deep Siksha, Gandhi Rd-এ: H Tourist, R1B, SCB ৮০, DCB ১২৫ DAB ১৭৫-২২৫; H Dinex, S ১০০ D ১৭৫; Vishal Bharat L, S ৮০ D ১৫০; Royal H, Moti Mahal H, Sukhsadan.

Hardwar Rd-এ: *H Prince, near Rly Sin, ৩ 627070, S ১৭৫ D ৩০০; H Hilton, A/C S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০-১২৫০।

H Adarsh, Library Bazar, SAB ৮০-১৫০ DAB ১২৫-২২৫; H Aroma, 12 New Rd, SCB ৮০, SAB ১২৫ DCB ১৫০, DAB ১৭৫ ডর্মি ৪৫; *H White House, 15-A, Lytton Rd-1, SAB ৮০-১৭৫ DAB ১২৫-২৫০; H Niresht, Chakrata Rd, A/C S ৪৫০ D ৬৫০ সুইট ৯৫০; H Akashdeep, Tyagi Rd, RJB, SCB ৭৫, SAB ১২৫-১৭৫ DAB ২০০-৩২৫, A/C S ৬৫০ D ৫৫০ ডর্মি ৫০; H Shahenshu, 74-C, Rajpur Rd-1, ৩ 28508, A/C S ৮০০ D ১০০০ সুইট ১৭৫০; একই বাড়িতে Shipra H, ৩ 25086; H Ajanta Continental, 101 Rajpur Rd, A25R4B2, A/C S ৭৫০ D ৯৫০ সুইট ১৫৫০; H Regent, E C Rd; Connaught H, Chakrata Rd, SCB ১২৫ DCB ২২৫।

আর আছে PWD IH, Rajpur Rd; FRH, Chakrata Rd; CH, New Cantt Rd; YWCA, 4 Cantt Rd ও GMVN-এর Tourist Complex Drona, 45 Gandhi Rd-1, ৩ 652794, DAB ৩০০-৪৫০ A/C ৪০০-৮০০ ডর্মি ৬০ করে। এমনকি রেল দপ্তরেরও গেস্ট হাউস আছে সেরাদুনে।

জাহার : আহার্যও মেলে নানান হোটেলে। তবুও যেন লোকাল বাস স্ট্যান্ডের পিছে মতিমহল রেস্টুরেন্ট বা লাগোয়া সিঙ্ক-হারদ্রাবাদ রেস্টুরেন্টের সুনাম বেশি আহার্যে। তেমনই চীনা ডিশের বাদ নিন হোটেল মধুবনের কাছে ইয়েতি রেস্টুরেন্ট-এ। জৈন ধরমশালায় বিপরীতে বৈকুণ্ঠ রেস্টুরেন্টেরও যথেষ্ট প্রশস্তি আহার্য পরিসেবায়। আর স্টেশন চত্বরে Sammaan Veg Restaurant, Vishal, Kasturbi ইকোনমিক খালি মিলে যথেষ্ট খ্যাত। তবুও যেন Kumar-এর খ্যতি সারা সেরাদুনে জুড়ে ভেজ মিল পরিবেশনে। এদের গাজর হলুয়া—সেও আর এক সুবাস্ মিঠাই।

দুন অর্থ ভ্যালি অর্থাৎ উপত্যকা, আর দেয়া হচ্ছে সেনোটাফ। ছবির মতো উপত্যকা—এশিয়ার দ্বিতীয় বৃহত্তমও এই দুন উপত্যকা। পূর্ব ধরে বয়ে চলেছে গঙ্গা আর পশ্চিমে যমুনা। দূরে-দূরান্তরে পাহাড় চারপাশ ঘিরে

প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। উত্তর জুড়ে হিমালয় আর দক্ষিণে শিবালিক পর্বত। প্রকৃতি এর মূল সম্পদ। নিবিড় অরণ্যানী—সুমধুর তানে বরনা নামছে পাহাড় বেয়ে। অতীতে গাড়োয়ালের অংশ ছিল দুন। ১৮ শতকে গোখারী দখল করে। আর ১৮১৪য় নালাপানির যুদ্ধে গোখারীদের হঠিয়ে ব্রিটিশ দখল করে দুন উপত্যকা। আর ১৯০৩এ অমর সিং খাপার নেতৃত্বে গোখারী তেহরির সুদর্শন শাহকে হারিয়ে দখল করে দুন। ছাপর যুগে আচার্য দ্রোণ শিবালিক পর্বতমালা পেরিয়ে উদয়গিরি ও বহিগিরির মাঝে দেওয়ার পর্বতের ঢালে দেয়া অর্থাৎ অন্ধশিক্ষা শিবির গড়েন। কালে কালে আশ্রম—দ্রোণাশ্রম; আরও পরে দুইয়ে মিলে দেবাদুন। আজও ক্যান্টনমেন্ট নগরী দেবাদুন। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের অবদান অর্ডিন্যান্স ফ্যাক্টরি তৈরির সাথে শিক্ষাও মিলছে প্রতিরক্ষার নানান পাঠের ন্যাশানাল অ্যাকাডেমিতে। আর আধুনিকতা পায় ঔরঙ্গজেব কর্তৃক পাঞ্জাব থেকে বিতাড়িত উদাসী শিখ গুরু রাম রায়ের হাতে ১৭ শতকে। রেল স্টেশনের অদূরে তৈরি করেন গুরু দরবার সাহিব অর্থাৎ গুরদ্বারা ১৬৯৯এ। আজও প্রতিবছর হোলির ৫ দিন পর (মার্চে) শিখ উৎসব ঋতু মেলা দেবাদুনের বরণীয় উৎসব। বাহ্যিক জলবায়ুর গুণে গড়ে ওঠে আধুনিক শহর ৬৪০ মি উঁচু দেবাদুনে। তাপমান গ্রীষ্মে ৩৬.৬—১৬.৭° আর শীতে ২৩.৪—৫.২° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। বৃষ্টির গড় ১৭৭.৮—২২৮.৬ সেমি। বছরভর চলা যেতে পারে দেবাদুনে।

শহর থেকে ৫ কিমি দূরে চক্কাটা রোডে বিশ্বের অন্যতম, এশিয়ার একমাত্র দেবাদুনের ফরেষ্ট রিসার্চ ইনস্টিটিউট-টিও আর এক দ্রষ্টব্য। নানাজাতীয় বৃক্ষে শোভিত, ব্রিটিশের গড়া অতীতের হাসপাতালে বসেছে বিশ্বের অন্যতম ফরেষ্ট রিসার্চ সেন্টার। গবেষণা চলছে অরণ্য নিয়ে। আর আছে সেন্টার মিউজিয়মের ৬টি গ্যালারিতে উদ্ভিদ বিজ্ঞানের নানান সংগ্রহ—নানানধর্মী বৃক্ষের সাথে অরণ্যচররাও আকর্ষণ বাড়িয়েছে মিউজিয়মের। সোম থেকে শুক্রবার ১০—১৭-০০টায় দেখে নেওয়া যায়। তেমনই দেবাদুনের আর এক আকর্ষণ শহর থেকে ৫ কিমি দূরে Gen Mahadev Singh Rd-এ একক সংগ্রহের ওয়াদিয়া ইনস্টিটিউট অব জিওলজি। মিউজিয়ম বসেছে। নানানধর্মী প্রস্তর শিলা ও ফসিল সোম থেকে শুক্রবার ১০—১৭-০০টায় দেখে নেওয়া যায়। গবেষণাও চলছে ছবিয়া বিষয়ে। সামরিক শহর হিসাবেও দেবাদুন খ্যাত। তেমনই খ্যাত দুন স্কুলের জন্য দেবাদুন। শহর থেকে ৮ কিমি দূরে প্রেমনগরে সেরি কালচার সেন্টারে রেশমগুটির চাষও দেখা যেতে পারে। বাঙালির মিষ্টি দোকানও বসেছে ক্লক টাওয়ারের কাছে। কেশর কা হালুয়ার বাদ নেওয়া একাডমি উচিত হবে দেবাদুনে। তেমনই ভারত খ্যাত বাসমতি চাল, সোয়েটার, বাল্যপোশ, উলজাত বসনের যথেষ্ট প্রশস্তি—দামেও সস্তা

মেলে দেবাদুনে। ব্রাসের নানান জিনিসও মিলছে দেবাদুনের দোকানপাটে। মরসুমে লিচুরও যথেষ্ট প্রাপ্তি দেবাদুনে। তেমনই উত্তরকাশী ও গাওয়াল তেহরি থেকে আসা আপেল-জাত নানান কিছুই বাণিজ্যিক কেন্দ্রেও এই দেবাদুন। Paltan Bazar, Rajpur Rd, Astely Hall, Connaught Place আদরণীয় হবে কেনাকাটায়।

শহর থেকে ১৩ কিমি দূরে সহস্রধারা। গন্ধক জলের প্রস্রবণ আর ঝরনার জন্য প্রসিদ্ধি। সহস্রটি মুখ—ধারাও নামছে অবিরাম প্রতিটি মুখ থেকে, নাম তাই সহস্রধারা। চারিদিকে অজস্র লতাগুন্মের ভিড়, ঋতুর মরসুমে নানান ফুলের সমারোহ। শরতে ও বসন্তে নীড় বাঁধে হিমালয়ের নাম-না-জান্য রঙবেরঙের নানান পাখি। নামতেই ভাইনে নল দিয়ে পড়ছে গন্ধক জল—উদরাময়ে ওষুধের কাজ করে। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ সহস্রধারা। স্নানের সুব্যবস্থা, রেস্টোরাঁও হয়েছে সহস্রধারায়। শোনা যায়, জওহরলাল নেহরু সময় পেলেই বেড়িয়ে যেতেন সহস্রধারায়। রেল স্টেশনের কাছ থেকে যাত্রী বাস যাচ্ছে। থাকার জন্য PWD IH ও Tourist RH আছে সহস্রধারায়।

অতীতের শুভদ্রা কালে কালে তাপস আজ হয়েছে টনস। এই টনস (বিদ্যাল) নদীর পাড়েই শহর থেকে ৫ কিমি দূরে তপকেশ্বর শিব খুবই আকর্ষণীয়। সম্ভবত আচার্য দ্রোণ এই গুহাতেই তপস্যা করেন। স্বয়ম্ভু শিবলিঙ্গের মাথায় টপ টপ করে জল পড়ছে—নামটিও তাই টপকেশ্বর বা তপকেশ্বর। হিমতে, দ্রোণাচার্যের তপস্যা থেকে তপকেশ্বর হয়ে থাকবে। শিবের জন্মদিন শিবরাত্রিতে দূর-দূরান্ত থেকে যাত্রী আসেন। প্রবেশ দ্বারে দুর্গা মন্দির হয়েছে। আর আছে বান্দীকি গুহা। সিটি বাসস্ট্যান্ড থেকে বাসে গরহি পৌছে ৫ কিমি পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

শহর থেকে ৮ কিমি দূরে টনস নদীর কাছে রবার্স কেড। Guchu Pani-ও বলে থাকে লোকে একে। ডাকাতের দল নেই বটে, তবে নিরালা-নিভুতে শির-শির ভাব খেলিয়ে তোলে দেহ-মনে। এখানে জলপ্রবাহ লুকোচুরি খেলছে—হঠাৎ নড়ি পাথরের নিচু দিয়ে অদৃশ্য হয়ে বেশ কিছুটা দূরে আবার দৃশ্যমান হয়ে। শহর থেকে ৭ কিমি দূরে আনারওয়াল গ্রাম পর্যন্ত বাসে গিয়ে ১ কিমি পায়ে চলা যেতে পারে। তবে গাড়ি পাড়ি দেয় এপথ।

মনীষী এস আর দাস ভারতীয় সংস্কৃতি ও ঐতিহ্যের ধারায় বালকদের সু-শিক্ষা দেওয়ার জন্য গড়ে তোলেন বছর ত্রিশ আগে সামরিক বিদ্যালয়। মেয়েদের জন্যও বিদ্যালয় আছে পৃথক এক—তার নাম কন্যা গুরুকুল। রাজপুত্রের পথে ৯১৫ মি উঁচুতে সুন্দর পরিবেশে এই বিদ্যালয়। শীতের দিনে প্রবল শীত, আর গ্রীষ্মকাল রুদ্ধ। চারদিকের পার্বত্য শোভা মনোরম। সারা ভারত জুড়ে এর প্রশস্তি আজ।

শহর থেকে ৬ কিমি দূরে তপোবান—রাসের অনুজ লক্ষণ রাবণ বধের পাণের প্রায়শ্চিত্ত করেন এখানে।

মহাভারতের দ্রোণাচার্যও প্রায়শ্চিত্ত করেন তপোবনে। দেবাদুন-হাথীকেশ পথে ১২ কিমি যেতে লকসমন সিং—সাধু-সন্তের বাস ছিল অতীতে। স্মারকরূপে গড়া সন্ত লকসমন সিং-এর মন্দিরে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে প্রতি রবিবার।

চক্রগাতা : উৎসাহীরা দেবাদুন রেল স্টেশন লাগোয়া মুসৌরী বাস স্ট্যান্ডের কাছ থেকে বাসে ঘণ্টা চারেকের সিমলামুখী ৯১ কিমি দূরে কেলানা পর্বতমালায় ২১৫৩ মি উঁচুতে ফারে ছাওয়া চক্রগাতা বেড়িয়ে নিতে পারেন। গহন বনে নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে নির্জন শৈলাবাস চক্রগাতা। ১৮৬৬তে জলবায়ুর আকর্ষণে ব্রিটিশের ক্যান্টনমেন্ট তথা সামরিক গ্রীষ্মাবাস বসে চক্রগাতায়। নানান ভিউ পয়েন্ট, জিপ বা পায়ে ২ কিমি দূরে চিরিমিরি লেক, আরও ১ কিমি চড়াই উঠে থানাডাঙা, ৬ কিমি দূরে রামতাল গার্ডেন, ১৮ কিমি দূরে চুরানি থেকেও সুন্দর নৈসর্গিক শোভা দৃশ্যমান। এমনকি ২৮৬৫ মি উঁচু রিজ থেকে অরণ্যচরদের দর্শনও অস্বাভাবিক নয়। ৫ কিমি দূরে টাইগারস ফলস, ১০ কিমি দূরে দেওবন থেকেও তুষারমৌলী হিম-সৌন্দর্যের সাথে দূন উপত্যকার দৃশ্য চক্রগাতার আর এক আকর্ষণ। চক্রগাতা থেকে ৮২ কিমি দূরে টিউনি হয়ে ২১৪ কিমি দূরে সিমলাতেও চলা যায় বাসে। টিউনির পথে চির, পাইন, ফার, ওক, দেওদার, সাইপ্রাসে ছাওয়া বনভূমি—অজস্র পাখির কলকালিতে মুখরিত অনন্যা সুন্দরী ৭০০০ ফুট উঁচু কাথিয়ান থেকেও দিগন্ত-বিস্তৃত (১৮০ কিমি) হিমালয়ের তুষারশুভ শিখররাজি দেখে নেওয়া যায়। ৩ দিনে ট্রেক করেও চলা যায় চক্রগাতা থেকে কাথিয়ান। তেমনই চক্রগাতা পথে ৪৫ কিমি যেতে ডাকপাথার-এর প্রশস্তি যমুনা হাইডেল প্রোজেক্ট তথা বাঁধের নিচের মনোরম বাগিচার জন্য। মিলনও ঘটেছে যমুনার সঙ্গে তমসার এই ডাকপাথারে। চড়ুইভাতিরও আদর্শ পরিবেশ। আর দেবাদুন থেকে ৫৬ কিমি যেতে হরিপুর-এর প্রশস্তি হিমালয়ের নৈসর্গিক গোভার জন্য। হিমালয় ছেড়ে মর্ত্যে নামছেন যমুনা এই হরিপুরেই।

আর আছে ৩৫ কিমি দূরে লাখামণ্ডল গ্রামসদ। চক্রগাতা থেকে দূরত্ব ৬৫, মুসৌরীর দূরত্ব ৭৮ কিমি। মন্দির আছে নানান—শিব, পঞ্চপাণ্ডব, পরশুরাম উপাস্য দেবতা। জনশ্রুতি, পঞ্চপাণ্ডবকে পুড়িয়ে মারার জন্য কৌরবরা লাঞ্চার জটুগৃহ তৈরি করে এখানেই। দেবাদুন থেকে ৫১ কিমি যেতে হরিপুরের প্রান্তে কলিসিতে প্রাসাদও অশোকের শিলালিপি দেখে নেওয়া যেতে পারে। মিউজিয়ামও হয়েছে পুরাতত্ত্বের নানান নিদর্শন নিয়ে লাখামণ্ডলে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে বার্নি নদী—মিলেছে গিয়ে যমুনার সঙ্গে। সরাসরি বাসের অমিলে চক্রগাতা থেকে কুঁয়াসি/গোরাবাটি হয়ে চলা যেতে পারে। বাস যাত্রায় একরাত পথে অবস্থান অবশ্যজারী। আবার মুসৌরী-যমুনোত্রী পথের বার্নিগাড থেকে দুপুরের

একমাত্র বাসে লাখামগুল চলা যেতে পারে। আবার কেহাটি থেকে ১৫ কিমি দূরের যমুনাপুল গৌছেও থরা যেতে পারে বিকাশনগর-বানিগাড-সাখামগুল বাস। তবুও যেন মুসৌরী থেকে ৮৫০ টাকায় জিপে ঘটা আটকে লাখামগুল-যমুনাপুল-কেহাটি বেড়িয়ে ফেরার সুবিধা।



খাকার জন্য FIB, PWD IB, DB আছে চক্রাতায়। আর আছে Hotel Holiday Home, Sadar Bazar, DAB ২৫০-৩৫০; H Uttarayan, Sadar Bazar;

H Sher-e-Punjab, Sadar Bazar; H Snow View Guest House, H Himalayan Paradise, DAB ৩০০-৬৫০; Agarwala L ছাড়াও নানান হোটেলে চক্রাতায়। সেওবনে আছে FIB ও PWD IB; কাথিয়ানে আছে FRH; ডাকপাথারে Tourist Lodge; লাখামগুলে Raja Tourist H, D ৮৫-১৭৫।

আগ্রা

যমুনার পশ্চিম পুলিনে মোগল বাদশ্যদের আকবরবাদ উত্তর কালের আগ্রা আজ তাজের জন্য খ্যাত। শুধু আগ্রাই বা কেন—যলা যায় ভারত রাষ্ট্রের পর্যটন মানচিত্রে তাজমহল অন্যতম। বিশ্বে সবচেয়ে অধিকবার ছবিও উঠেছে তাজের। পৃথিবীর সপ্তম আশ্চর্য—১. ইজিপ্টের পিরামিড, ২. ব্যাবিলনের বুলন্ত উদ্যান, ৩. এপিসাসে আথেমিসের (ডায়না) মন্দির, ৪. হ্যালিকারনেসাসে মৌসোলাসের সমাধি, ৫. রৌডস নগরদ্বারে গ্রীক দেবতা সূর্যসেবের মন্দির, ৬. অলিম্পিয়ায় জিউস (রোমান দেবরাজ জুপিটার) মূর্তি, ৭. অলেকজান্দ্রিয়ায় ফেয়ারাস (লাইট-হাউস)—এর পরই ভারতের তাজ জায়গা করে নিয়েছে আপন মহিমায়। সাহিত্যের দরবারে তাজের মাহাত্ম্য কীর্তন করেছেন সাহিত্যরথীরা বার বার। শুধু তাজই বা কেন—মোগল স্থাপত্য ও ভাস্কর্যের লীলাক্ষেত্র এই আগ্রাকে ঘিরেই গড়ে উঠেছিল সেদিন। প্রথম রাজধানী স্থাপন ১৫০১এ আফগান নায়ক সিকান্দার লোদীরা হাতে আজকের সিকান্দ্রায়। তবে নগরীর গোড়াপত্তন তারও আগে ১৪৭৫এ রাজা বাদল সিং-এর হাতে। দুর্গও গড়েন রাজা আগ্রা দুর্গের কাছে বাদলগড়। আর বাবর জয় করেন ১৫২৬এ আগ্রাকে। আগ্রার প্রসিদ্ধি সেই থেকে। তাঁরই পৌত্র আকবরের হাতে আগ্রার প্রগতি। শিখরেও ওঠে আগ্রার অগ্রগতি ১৫৫৬ থেকে ১৬৫৮য় আকবর-জাহাঙ্গীর-শাহজাহানের হাতে। গড়ে ওঠে মোগলি কৃষ্টি নির্ভর আগ্রার সংস্কৃতি। এমনকি তামাক খাওয়ার স্বকোটিও মোগলি দান।

১৫৫৬তে ২৪ বছরের আকবর লাল বেলেপাথরে দুর্গ গড়েন যমুনার পাড়ে। ১৫৭০এ রাজ্যপাট নিয়ে ফতেপুর সিক্রি পেলেও ১৫৮৫তে আবার স্থানান্তর করেন ফতেপুর থেকে লাহোরে (পাকিস্তান) আকবর তাঁর রাজধানী। আর ১৫৯৯এ লাহোরে থেকে রাজ্যপাট নিয়ে ঘরে (আগ্রায়) ফেরেন আকবর। আমৃত্যু (১৬০৫) রাজ্যও চালান আগ্রা থেকে আকবর। আকবরের পৌত্র শাহজাহান রাজ্যপাট নিয়ে

দিল্লী গেলেও বিশ্ববন্দিত করে তোলেন শ্রমের সৌধ তাজ গড়ে আগ্রাকে। দুর্গও গড়ে তোলেন একের পর এক প্রাসাদ। মণি-মাণিক্য খচিত হারেম মহলটিও অনবদ্য। ৫০০০ পুরনারীর বাস ছিল মহলে। শাহজাহানের আর এক কীর্তি নয়নাভিরাম মোতি মসজিদ সৃষ্টি। ১৬৪৮এ রাজধানী দিল্লী গেলেও পুত্র ঔরঙ্গজেবের হাতে বন্দী হয়ে ১৬৫৮য় শাহজাহান ফেরেন আগ্রায়।

১৭৬১তে জাঁটদের দখলে যায় আগ্রা। অবাধে লুণ্ঠরাজের সাথে ধ্বংসও পায় আগ্রার নানান কিছু। মারাঠাদের দখলে যায় ১৭৭০এ। নামান্ডুরও ঘটে—আকবরবাদ হয় আগ্রা। আর ব্রিটিশ আসে ১৮০৩এ আগ্রায়। তবে, মহাভারতে সংস্কৃতির পীঠস্থান বলে উল্লিখিত হয়েছে শ্রীকৃষ্ণের কৈশোরের দ্বাদশ লীলাক্ষেত্রের অন্যতম হিন্দু রাজাদের অগ্রবন অর্থাৎ আগ্রা। তারও আগে আর্য গৃহ নাম ছিল আগ্রার। এমনকি আলেকজান্ডারের বিশ্ব-মানচিত্রেও স্থান পেয়েছে Agara নামে। পার্সি ও উর্দু কবি মির্জা আসা-দুদা খান গালিব (১৭৯৭-১৮৭০) ও উচ্চাঙ্গ সঙ্গীতে আগ্রা যুবানার জনক ওস্তাদ ফৈয়াজ খানের জন্মও এই আগ্রায়। ইউনেস্কোর ওয়ার্ল্ড হেরিটেজ সাইট তকমাও লেগেছে আগ্রার তাজ, দুর্গ ও ফতেপুর সিক্রীর ভালে।

দুর্গের উত্তরে সর্দার গলিপথে অতীতের ঘিঞ্জি শহর কিনারী বাজার, আর দক্ষিণে আধুনিক শহর ক্যান্টনমেন্ট নগরী।

আগ্রা ক্যান্টনের বিপরীতে ম্যাল রোডকে ভর করে পর্যটকদের শহর আগ্রা। ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর, জিপিও, হোটেল-রেস্তোরাঁ, দোকানপাট সেবাই অবস্থান এই ম্যালে। তবে তাজের দক্ষিণ লাগোয়া তাজগঞ্জেও হোটেল হয়েছে সাধারণ মানের নানান। ফোটের সমিধাটে ছিপটিলাতে ফোর্ট বাসস্ট্যান্ডকে ঘিরে সাধারণ মানের নানান হোটেল গড়ে উঠেছে। তাজ থেকে দূরে রাজা কি মাণ্ডি রেল স্টেশনকে ঘিরেও গড়ে উঠেছে সাধারণ হোটেল। ট্যুরিস্ট বাংলাটিও এই রাজা কি মাণ্ডিতে। তবুও উচিত হবে তাজ-প্রেমিকদের তাজগঞ্জেই হোটেল নির্বাচন করা। ব্যস্ততম আগ্রায় আধুনিকতার পরশ লাগলেও ১৮৫৭র স্বাধীনতা সংগ্রামী সিপাহীদের প্রতি ব্রিটিশের নৃশংসতা আজও ভারাক্রান্ত করে রেখেছে ব্রিটিশের ক্যান্টনমেন্ট নগরীর বাতাস।

কেনাকাটা: চামড়া জাত নানান কিছু, মার্বেল, আইভরি, সফট স্টোন ও নানান ধাতুর হস্তজাত পণ্য বিকোছে আগ্রার দোকানপাটে। মানে যেমন উন্নত তেমনই ভারতে ন্যূনতম দামে কিনতে মেলে আগ্রার দোকানপাটে। মোগলি শৈলীর নিদর্শনরূপে সংগ্রহ করা যেতে পারে।—তবে, কেনাকাটায় মান ও দামে সতর্কতা পালনীয়। কমিশন প্রথাও চালু আছে যানচালকদের সাথে দোকানপাটের। নানান কল্লর গল্প শুনিয়া দালালও সঙ্গ নেয় চলতে ফিরতে আগ্রার পথেঘাটে।

উচিত হবে দক্ষিণের ক্যান্টনমেন্ট নগরী তথা শহরের সদর বাজার, দুর্গের উত্তরে পুরাতন শহরের কিনারী বাজার বা তাজ কমপ্লেক্সের সোকানপাটে চলা। U.P Govt-এর গসেট্রী, Rajasthan Govt-এর রাজস্থালী, হরিয়ানা, কাশ্মীর ও কেরল সরকারও সোকান খুলেছে তাজ কমপ্লেক্সে। তেমনই তাজের পূর্ব গেটের ১ কিমি দূরে শিখগ্রামে নীল আকাশের নিচে এস্পোরিয়ামে সারা ভারতের শিখ বিকোচ্ছে। এদের দাম কিছুটা চড়া হলেও মান যথেষ্ট ভাল। আগ্রার নবতম আকর্ষণ ফেব্রুয়ারি-মার্চের ১০দিন ব্যাপী তাজ মহাৎসব তথা সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠান। তবুও যেন আগ্রার গর্ত—ওয়ার্ল্ড হেরিটেজ সাইট তালিকা করা আগ্রার তাজমহল, দুর্গ ও ফতেপুর সিক্রির স্থান লাভ। উৎসব-অনুষ্ঠানে ইঙ্গোৎসব, মহরমের তাজিয়া মিছিল উল্লেখ্য। তেমনই দীপাবলীর রাতে সারা আকাশ রাঙিয়ে আতশবাবুজি পোড়ে।



দিল্লী-মুম্বাই ব্রডগেজ রেলপথে আগ্রা ক্যান্ট। ট্রেন যাচ্ছে নানান দিন-রাত্রি জুড়ে এপথে। সকাল ৭-১৫য় 2180 তাজ এক্স হজরত নিজামুদ্দিন ছেড়ে ৯-৪৫এ আগ্রা ক্যান্ট পৌছে ১১-৫৫য় গোয়ালিয়র যাচ্ছে। তাজ ফেরে ১৬-৫৫য় গোয়ালিয়র ছেড়ে ১৮-২৫এ আগ্রা ক্যান্ট পৌছে ২১-৪৫এ হজরত নিজামুদ্দিন। আর সুপার ফাস্ট শীতাতপ 2002 শতাব্দী এক্স ৬-১৫য় নিউ দিল্লী ছেড়ে আগ্রা ক্যান্ট ৮-১০, গোয়ালিয়র ৯-৩০, বাসী ১০-৩৯এ পৌছে ভূপাল যাচ্ছে ১৪-০০টায়। শতাব্দী ফেরে ১৪-৪০এ ভূপাল ছেড়ে ১০-১০এ আগ্রা ক্যান্ট পৌছে ২২-২৫এ নতুন দিল্লী। আর যাচ্ছে ১৯-৩০এ 4004 হজরত নিজামুদ্দিন-আগ্রা ক্যান্ট ইন্টারসিটি এক্স ফরিদাবাদ/মথুরা/রাজা-কি-মতি হয়ে ২২-৪০এ আগ্রায়; 4003 ইন্টারসিটি আসছে ৬-০০টায় আগ্রা ক্যান্ট ছেড়ে ৯-২২এ হজরত নিজামুদ্দিন। দূরত্ব ১৯৫ কিমি। এ-ছাড়াও দিন-রাত্রি জুড়ে দূরান্তের নানান ট্রেন যাচ্ছে দিল্লী/নিউ দিল্লী/হজরত নিজামুদ্দিন থেকে আগ্রায়।

পূর্ব ভারতের যাত্রীরা 3007 তুফান উদ্যান আভা এক্সে সকাল ৯-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে ২৯ ঘট্টা ৩৫ মিনিটে ১২৬৪ কিমি দূরের আগ্রা ক্যান্ট পৌছান। মথুরা/পাটনা/মোগলসরাই/এলাহাবাদ/কানপুর/তুওলা/আগ্রা/মথুরা/নতুন দিল্লী হয়ে শ্রীগঙ্গা নগর যাচ্ছে তুফান। 2307 হাওড়া-যোধপুর এক্স ২৩-৩০এ হাওড়া ছেড়ে ভূভলা/আগ্রা ফোর্ট/সওয়াই মাধোপুর/জয়পুর হয়ে যাচ্ছে। আব যাচ্ছে 1181 চম্বল এক্স প্রতি শুক্রবার ১৫-১৫য় হাওড়া ছেড়ে ধানবাদ/এলাহাবাদ/বাসী হয়ে পরদিন ২০-৪০এ আগ্রা ক্যান্ট ফেরে সোমবার ৩-৪০এ আগ্রা ক্যান্ট থেকে চম্বল। এছাড়া শিয়ালদহ-দিল্লী লালকোয়া এক্স, হাওড়া-দিল্লী জনতা এক্স, কালকা মেল, পূর্বা এক্সেও আগ্রা যাওয়া চলে পথে তুওলা জংশনে গাড়ি বদল করে। তুওলা থেকে ২ ঘট্টায় বেলা যাচ্ছে ৩১ কিমি দূরের আগ্রা ক্যান্ট ৬-৫৫, ৪-১০, ৫-৪৫, ৮-২৫, ১৩-১৫, ১৪-৫৫, ১৮-৫৫য়। ৩ কিমি দূরের বাস স্ট্যান্ড থেকে বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে ভূভলা থেকে আগ্রায়।

আর যাচ্ছে ফিরোজপুর-মুম্বাই মেল, অমৃতসর-সলার এক্স; হজরত নিজামুদ্দিন-ম্যালাশোর-কেতি জয়ন্তী জনতা; চেন্নাই-নিউ দিল্লী দ্বি টি এক্স; হজরত নিজামুদ্দিন-মুম্বাইবাস এক্স; জম্মু-চেন্নাই জনতা এক্স; প্রতিটা ট্রেনই আগ্রা/বাসী/ভূপাল/ইন্টারসি হয়ে

চলাচল করে। ছড়িশগড় এক্স যাচ্ছে আগ্রা/গোয়ালিয়র/চিট্রকূট/ধাম/সাতনা হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন থেকে বিলাসপুর। উৎকল এক্স ও কলিঙ্গ এক্স পুরী যাচ্ছে হজরত নিজামুদ্দিন থেকে আগ্রা/বাসী/অনুপপুর/বিলাসপুর/টাটা/বল্লাপুর হয়ে। মহাকেশব এক্স যাচ্ছে আগ্রা/বাসী/চিট্রকূট/সাতনা হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন থেকে জব্বলপুর। শিলাম যাচ্ছে জম্মু থেকে নরসিমি/আগ্রা ক্যান্ট/ভূপাল হয়ে পুনে। 2480 গোয়া এক্স ব্রডগেজে ঢাকো যাচ্ছে হজরত নিজামুদ্দিন থেকে আগ্রা ক্যান্ট/বাসী/ভূপাল/ইন্টারসি/ভূসওয়াল/মানমাদ/পুনে/মিরাজ/সোতা হয়ে। কুমায়ুন এক্স যাচ্ছে আগ্রা ফোর্ট থেকে বেরিলি হয়ে কাঠগোলাম; আম্বা এক্স যাচ্ছে ফোর্ট হয়ে কোটা-সল্টো; সন্তাহে চারদিন বারাগণী-যোধপুর মরহাযা এক্স; ত্রিসপ্তাহিক গঙ্গা-যমুনা বারাগণী যাচ্ছে মথুরা থেকে আগ্রা ক্যান্ট হয়ে; আগ্রা ফোর্ট থেকে যাচ্ছে ভরতপুর/জয়পুর হয়ে ফাস্ট প্যাসেঞ্জার, আমেদাবাদ এক্স, যোধপুর এক্স ও জয়পুর এক্স। কানপুর যাচ্ছে ফাস্ট প্যাসেঞ্জার ফোর্ট থেকে। হৃষীকেশ, কানগঞ্জ, বেরিলিও যাচ্ছে প্যাসেঞ্জার ট্রেন। এ-ছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে ভারতের দিকে দিকে আগ্রা ফোর্ট, সিটি ও ক্যান্ট হয়ে।

তবুও যেন উচিত হবে একক যাত্রায় তাজ বা শতাব্দীর যাত্রী হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন/নতুন দিল্লী থেকে আগ্রা ক্যান্ট চলা। ভাড়া আধিক্য লাগলেও দিল্লী থেকে দিনে দিনে আগ্রা বেড়াতে শতাব্দী এক্স আদরবণীয় হবে। আর এক পপুলার ট্রেন হজরত নিজামুদ্দিন-আগ্রা ক্যান্ট ইন্টারসিটি এক্স। আগ্রা বেড়ান প্যাকেজ টুরে বা দিনভর চুক্তিতে ট্যাক্সি ৫৫০ অটো ৩০০ রিকশা ৭৫ টাকায়। তেমনই আগ্রা থেকেই বাসে ফতেপুর সিদ্ধি-মথুরা-বৃন্দাবন-ভরতপুর বা চলা যেতে পারে রাজস্থানের অস্তপুরে।



NH-2, 3, 11 সংযোগ গড়েছে সারা উত্তর ভারতের সঙ্গে আগ্রায়। দিল্লী থেকে বাসেও আগ্রা যাতায়াত চলে NH-2 হয়ে। দিল্লীর কাশ্মীরি গেট থেকে ডিল্লার ও সাধারণ বাস যাচ্ছে প্রতি ২ ঘণ্টায়। বাকী পাঁচেকের পথ। ফরিদাবাদ-বৃন্দাবন-মথুরা হয়ে পথ গিয়েছে। আর আগ্রার ইদগা বাস স্ট্যান্ড, ৬6132 থেকে বাস মেলে দিল্লী তথা দূরপাল্লার নানান দিকের। উৎসাহীরা মাথ পথে Modal-এ হরিদ্বারনা টুরিজমের আর্কিওলজিক্যাল ডাবচিক-এ DAB 2৫০ ২৭৫ সাইট ৩০০ হাট ১৫০ ক্যাম্পার হাট ২৪০ টাকায় একটা রাত বিশ্রাম নিয়েও যেতে পারেন। সুন্দর পরিবেশে এই ডাবচিক রিসর্ট। কল্পনায় রঙ লেগেছে এর ছাপড়ে।

২২ কিমি দূরের দিল্লী যাচ্ছে ইদগা বাস স্ট্যান্ড থেকে UPSRTC-র ২৫টি বাস ৫-৫০ থেকে ১৯-৫০এ ছেড়ে ৫ ঘট্টায়; ২৩৬ কিমি দূরের জয়পুর যাচ্ছে ভরতপুর হয়ে ১১টি বাস ৫-৩০—২২-৩০এ ছেড়ে ৬ ঘট্টায়। আর যাচ্ছে অদূরে আজমের রোডের শীতল লজের কাছ থেকে ২ ঘট্টা অন্তর ডিল্লার বাস; জয়পুর হয়ে আজমের যাচ্ছে ৮-৩০, ৯-০০, ২০-৪৫এ; নিকানীর যাচ্ছে ১১-০০টায় ছেড়ে ১২ ঘট্টায়; ৫৫ কিমি দূরের ভরতপুর যাচ্ছে ৫-৩০—২০-৩০এ প্রতি ২ ঘট্টা অন্তর ছেড়ে ১ ঘট্টায়; ৩৬ কিমি দূরের ফতেপুর সিদ্ধি যাচ্ছে ৬-৩০টা থেকে প্রতি ২ ঘট্টায়; আলোয়ার যাচ্ছে ৬-৩০, ৭-৩০, ৮-৩০, ১১-৩০, ১৪-৩০, ১৬-১৫য়; ৩০৪ কিমি দূরের ইলোরা যাচ্ছে ৬-০০টায়; ১৮ কিমি দূরের গোয়ালিয়র যাচ্ছে ১৪টি বাস ৮-১৫—১৮-০০টায়; উজ্জয়িন যাচ্ছে ৭-৪৫এ। আর কোর্ট বাস স্ট্যান্ড থেকে ৫৪ কিমি

দূরের মথুরা যাচ্ছে মুম্বাই; ৩৭৩ কিমি দূরের হৃদকৈশল যাচ্ছে ৬-৩০, ৮-৩০, ১০-০০, ১১-৩০, ১৯-৩০এ ছেড়ে হরিদ্বার হয়ে; ৩৬৯ কিমি দূরের লখনৌ যাচ্ছে ১৮-৩০ ও ১৯-৩০এ; ২৯০ কিমি দূরের কানপুর যাচ্ছে ৫-০০, ৫-৩০, ৭-০০, ৮-০০, ১১-০০, ১২-৩০এ; সেরদান যাচ্ছে ৫-৪৫, ৯-১৫, ১৬-১৫, ২০-০০টায়; দিল্লীও যাচ্ছে ফোর্ট থেকে ৫-৩০, ৬-৪৫, ৮-০০, ৯-০০, ১২-০০, ১৪-০০টায়। বাস যাচ্ছে যুবদান ৬৩, এলাহাবাদ ৪৮৩, বারানসী ৬০৫, কাসী ২২১, শিবপুরী ১১২, ৫-০০টায় ছেড়ে ১২ ঘণ্টায় ৪৪০ কিমি দূরের খাজুরাহো। এছাড়াও বাস যাচ্ছে উত্তর ও পশ্চিম ভারতের দিকে দিকে আগ্রা থেকে। বাস যাচ্ছে রাজহান রোডওয়েজ, হরিয়ানা রোডওয়েজ, মধ্য প্রদেশ রোড ট্রান্সপোর্ট ছাড়াও নানান প্রাইভেট ডিলাক্স আগ্রা থেকে। আর ITDC-র ডিলাক্স বাস ৭-০০টায় আগ্রা ছেড়ে ৫ ঘণ্টায় জয়পুর যাচ্ছে। ফেরেও এরা নিয়মিত। এমনকি ট্যুরিস্ট অফিসের চারপাশ থেকে নানান প্রাইভেট ডিলাক্স বাস যাচ্ছে দিল্লী ও জয়পুরে।



IAC-র বিমান প্রতিদিন ৯-২০এ দিল্লী ছেড়ে ১০-০০টায় আগ্রা, খাজুরাহো ১১-১৫, বারানসী ১২-৩০এ পৌছে, ফেরে ১৩-১০এ বারানসী ছেড়ে খাজুরাহো ১৩-৫৫, আগ্রা ১৫-১০এ পৌছে ১৬-২০এ দিল্লী। শহর থেকে ৮ কিমি দূরে খেরিয়া বিমানবন্দর আগ্রা। আর শহরে চলছে রিকশা, টাভা, অটো, ট্যাক্সি ও সিটিবাস।



পর্যটকদের শহর আগ্রা। তাই হোটেলও আছে বিভিন্ন মানের বিভিন্ন দামের Agra-282001, STD-0562এ। সাধারণ মানের হোটেল আগ্রা কাট থেকে ১ কিমি দূরে আগ্রা ফোর্ট লাগোয়া ছিপিটোলায়; আবার ক্যান্টনমেন্ট রেল স্টেশনের অদূরে সদর এলাকাতোও যথেষ্ট সাধারণ হোটেলের অবস্থান। তাজ রোড ও ম্যাল সমান্তরালভাবে বয়ে চলেছে সদর দিয়ে। পানেশি বালুগঞ্জও বেশ কিছু সাধারণ হোটেল হয়েছে। আর উচ্চ মানের তারকাখচিত হোটেলের অবস্থান তাজ রোড ও ফতেহাবাদ রোডে। মূলতঃ তাজ থেকে ৫ কিমি ব্যাসার্ধের মধ্যে গড়ে উঠেছে আগ্রার হোটেলরাজি। যান চালকদের সাথে কমিশন প্রথার চলও আছে আগ্রার সাধারণ হোটেলে।

পাশ্চাত্য প্রথায়—ITDC-র *H Agra Ashok, Fatehabad Rd-282001, R6B4Taj 1, ৩ 361223, A/c S ১১৯৫ D ২০০০ সুইট ২৩৯৫, এপ্রিল-সেপ্টেম্বর রিবেট মেনে; *H Mumtaz, Fatehabad Rd-1, ৩ 361771, A/c S ১২০০-১৬৫০ D ২০০০-২২৫০; *H Galaxy, Fatehabad Rd-3, A/c S ৬৫০ D ১৫০ সুইট ১৬০০; H Ganga Ratan, Fatehabad Rd-1, A6R4B2 Taj 0.5, ৩ 330329, A/c S ৬৩০ D ৭৩৫ ১০৫০, কল বুকিং: ডায়মন্ড ৩ 276714; *H Clarks Shiraz, 54 Taj Rd-1, ৩ 361421, A/c S ৮৫০-১১০ D ১৫-৫৫ সুইট ২১০ US\$; Oberoi Group's *Navotel Agra, near Taj, ৩ 368282, A/c S ৪৫ D ৮৫ US\$, অর্ধ: Delhi ৩ 4363030, Calcutta ৩ 2492323, Mumbai ৩ 2025757; H Agra Deluxe, Fatehabad Rd-1, Tourist Complex Area, ৩ 360110, S ৫০০ D ৬৭৫ A/c S ৬২৫ D ৮২৫ সুইট ১০০০; H Sunrise, Sector B1, Vibhav Nagar-1, ৩ 360616, A8R4B2, S ৬০০-৭৫০ D ৭০০-৮৫০ সুইট ৮৫০-১২০০; Colonel Bakshi's G H, 5 Lakshman Nagar,

near Airport, SAB ৫০০ DAB ৭০০, থাকা ও খাবার দুইয়েরই সুনাম আছে; H Shahunshah, Fatehabad, ৩ 360110, S ৩৫০ D ৫০০ A/c S ৫০০ D ৬৫০ সুইট ১০০০; Welcomgroup-এর *Mughal Sheraton, Fatehabad Rd-1, ৩ 361701, A/c S ১৭৫-২৬৫ D ২৩৫-২৮৫ সুইট ৭২৫ US\$; *H Sourabh, Fatehabad Rd-1, A/c S ৬৫০ D ৮৫০; *H Mansingh, Fatehabad Rd-1, ৩ 361771, A/c D ২০০০-২৭৫০; *Mayur Tourist Complex, Fatehabad Rd-1, ৩ 360302, SAB ৪৫০ DAB ৭৫০ A/c S ৬৫০ D ৯৫০ সুইট ১২৫০; *Lauries H, M G Rd-1, ৩ 364536, SAB ৫২৫ DAB ৬৫০; Upadhaya Tourist GH, Vibhav Nagar, Taj 1, S ২৫০-৩৭৫ D ৩৫০-৪৭৫, পরিবেশ ভালই; *Jaiwal H, 3 Taj Rd, ৩ 363716, A-c S ২৫০-৩৫০ D ৩৫০-৪৫০ A/c S ৪৫০-৬০০ D ৫৫০-৮০০; *Taj View H, Fatehabad Rd, ৩ 361171, A/c S ১২৫-১৪৫ D ১৪০-১৬০ সুইট ২৩৫-২৮৫ US\$; *H Aitih, Fatehabad Rd-1, ৩ 361474, A/c S ৮০০ D ৯৫০ সুইট ২০০০; *Grand H, 137 Stn Rd-1, near Cantt, ৩ 364014, R1B1, SAB ৫৫০ DAB ৭৫০ A/c S ৭৫০ D ৯৫০ সুইট ১২৫০, কল বুকিং: ত্রিমুখি টাভেল, ৭৬বি, এন এস রোড-৭, ৩ 2388678; *H Amar, Fatehabad Rd-1, ৩ 360695, Taj-2 R4B3, A/c S ৯০০-১১০০ D ১১০০-১৪০০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; কাছেই H Ratnadeep.

আগ্রায় :

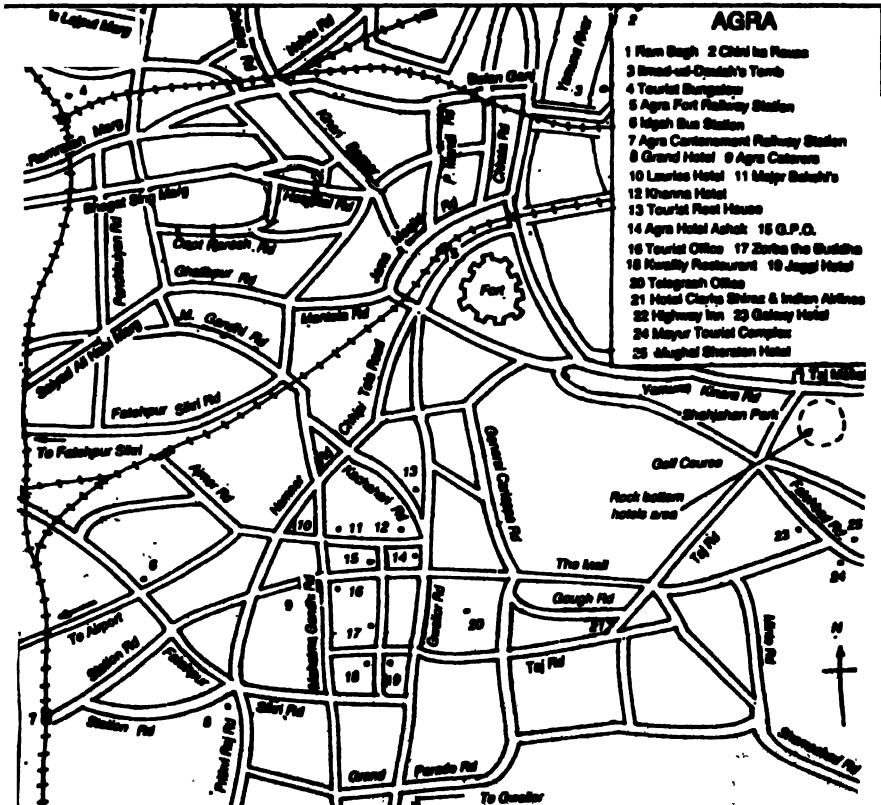
Govt of India Tourist Office, 190 Mall, ৩ 363377/363959.
ITDC, Hotel Agra Ashok, ৩ 361223.
Govt of UP Tourist Office, 64 Taj Road, ৩ 360517.
Govt of UP Tourism, Cantt Rail Station, PF No 1, ৩ 364439.
UP State Road Transport (UPSRTC)
6 Gwalior Rd, ৩ 72206.
Uttar Pradesh State Tourism Development Corp (UPSTDC).
Taj Khema, ৩ 360140.
Indian Airlines, 54 Taj Road, ৩ 360948/361421.
Agra Cantt. Rail Station,
Enquiries ৩ 72515/131.
Reservations ৩ 63787.
Agra Fort Rail Station, Enquiries ৩ 76161.
Agra Fort Bus Stand ৩ 364557.
Idgah Bus Stand ৩ 66124.

ভারতীয় প্রথায়—আগ্রা ফোর্ট রেল স্টেশন থেকে ১, ক্যান্ট থেকে ১, ইন্দগা বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি দূরে দুর্গের বিপরীতে বিজলী ঘরকে পিছে রেখে পথ চলেছে ছিপিটোলা। ঢুকতেই বিজলী ঘর তথা ফোর্ট বাস স্ট্যান্ড। সাধারণ সাজের হোটেল হয়েছে নানান ছিপিটোলায়। বামে Tourist Inn, DCB ১০০ DAB ১৫০; আর ডাইনে Tourist R H. ছিপিটোলায় চলতে ডাইনে H Shalimar, H Prince, H Kohinoor, Prabhat H, H Varun, H Indraprastha; এদের রেট D ১২৫-২২৫।

বিপরীতে বাজলির ব্যবস্থাপনার Devika H, 364328, SCB ৭০ DCB ১২৫ DAB ১৫০-২২৫ FAB ১৭৫-২৫০; বন বেতে এতিহ্যবাহী বাজলির Calcutta H, 364347, DAB ১২৫-১৭৫ TAB ২০০ FAB ২৫০, যেরোয়া পরিবেশে থাকা ও আহাৰ্যে আকর্ষণীয়; রিকশাকে কমিশন দেয় না এয়া—তাই ক্যালকাটাতে যেতে আগন্তু রিকশার। ডানহাতি গলিপথে জলের ট্যাঙ্কের বিপরীতে আর এক বাজলি হোটেল Bengali Tourist H, 65202, S ৬০-৮৫ D ৮০-১০০ T ১২৫ FAB ১৫০।

Agra H, 165 FM Cariappa Rd-1, 363331, D ২৫০ T ৩৫০ F ৩৭৫ সুইট ৩৫০ A/C D ৪৫০, থাকা ও আহাৰ্যে প্রশংসিত আছে, তাজ ও দৃশ্যমান এদের নানান ঘর থেকে; কল বুকিং: ডায়মন্ড ট্রাস, ৩০ যদুনাথ মে রোড-১২, 276714. *Ashoka H, Delhi Gate, R/B; DAB ১৭৫ A/C D ৩০০; Gobardhan H, R5B7, DAB ১০০-১৭৫; H Ranjit, 263 Station Rd, Agra Cantt-1, 364446, S ৩০০ D ৩৫০ A/C S ৪০০ D ৫৫০, কল বুকিং: ত্রিমূর্তি ট্রাভেল, 2388678; H Savera, 633 Sadar Bazar, Cantt 1, Idgah Bus Std 1, 361594,

SAB ১৫০ DAB ২০০; H Akbar Inn, 21 The Mall; Major Bakshi's G H, 33/83 Ajmer Rd, মূলতঃ অভ্যর্থনায়নের জন্য; H Basera, Ajmer Rd, DAB ৩৫০-৬৫০; H Tourist, The Mall-1, SAB ৮০ DAB ১৫০ A-C S ১৫০ D ২০০; Jai Hind H, Naulakha Rd, Sadar; Imperial H, M G Rd-1, 364500, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/C S ৫০০ D ৬৫০; H Gimar, near Royli Shiva Temple, M G Rd; Tourist R H, Baluganj, near Tourist Office, SAB ১২৫ DAB ২০০ ডরি ৪০, ব্যবস্থাপনা ভাল। পাঁচই হয়েছো অলঙ্কার জুড়ে New Tourist R H, উত্তিত হবে এড়িয়ে চলা; Colonel Duggal's G H, 155 Partabpura, near Tourist Office, DAB ২০০; অদূরে H Ajoy, S ১২৫ D ২২৫; H Khanna, 19 Ajmer Rd, SAB ৮৫ DAB ১৫০-২০০; H Supriya, Gwalior Rd, Baluganj-1, 363598, Cantt Rail Stn 2/ Fort 1; Idgah Bus 2 Taj 4, SAB ১০০ DAB ১৭৫-৩৫০, বাজলি ম্যানেজারের তত্ত্বাবধানে আহাৰ্যে ও বাজলিরানা মেলে সুপ্রিয়-তে; H Sarang, 63894, D ২০০-৩২৫। H Rose, 21 Old Idgah Colony-



1, behind Idgah Bus Std, ৩ 67049, SAB ১৫০-২৫০, DAB ২৫০-৪২৫ A/c S ৪৫০, D ৬০০; *Sheetal L, S ৮০-১২৫, D ১৫০-২০০; Dinesh L, Cantt; Sind Punjab H, Maharaja H* ছাড়াও হোটেল আছে নানান আগ্রাতে।

UPSTDC-র ট্যুরিস্ট বাংলো, ৩ 77035, opp Raja-ki-Mandi Rly Stn, DAB ৪৫০, A-c D ৬০০, A/c D ৭০০; এসেরই *H Tajkhema, Eastern Gate of Tajganj, ৩ 330140, SAB ১৫০, DAB ২০০, A-c D ৬০০, A/c D ৫৫০*, অব্ : Manager, ৩৩% টাকা ৭দিন আগে পাঠিয়ে অগ্রিম বুক করা যায়। তবে, থাকার পক্ষে রমণীয় হলেও ট্যুরিস্ট বাংলোর অবস্থান তাজ-দুর্গ-ইতমদলোমা জয়ী থেকেই যথেষ্ট দূরে বলে সময় স্বল্পতায় উচিত হবে ছিপিটোলা বা বালুগঞ্জ বা ফতেহাবাদ বা তাজের বিপরীতে হোটেল নির্বাচন করা।

বেশ কিছু সাধারণ হোটেলও আছে তাজ থেকে বেরুতেই সঙ্গীর্ণ গলি পেখে। এদের মধ্যে—*Shanti L, H Shah Jahan, H Siddhartha, Taj View L, Jehangir L, H Muntaz Mahal, India G H, Gulshan L, New Taj H*—স্বল্প ব্যবধানে অবস্থান এদের। ঘর মেলে S ১০০-১৭৫ D ১২৫-২৫০ টাকায়। আর আছে যথেষ্ট পপুলার *Safari H, Shamsabad Rd, S ১২০-১৭৫, D ২০০-২৭৫, T ২৫০-৩০০, F ৩৫০*, তাজও দৃশ্যমান এদের ছাদ থেকে। অদূরে মান ও দামে একই *Paradise GH, Fatehabad Rd. Youth Hostel*ও হয়েছে Sanjoy Place, M G Rd, ৩ 65812-এ। রেলের *রিটার্নিং রুম*ও আছে আগ্রা ফোর্ট ও আগ্রা ক্যান্ট স্টেশনে।

ধরমশালাও আছে আগ্রাতে। আগ্রা ক্যান্ট রেল স্টেশনের বিপরীতে—*গয়াপ্রসাদ বিহারীলাল*; সিটি স্টেশনে—*গয়াপ্রসাদ, বিশ্বভর*; ফোর্ট স্টেশনের কাছে—*জৈন*; রাজা কি মাণ্ডি স্টেশনের কাছে—*আগরওরালা, প্রতাপ চাঁদ, সুন্দরলাল জৈন ধরমশালা* দেখা যেতে পারে।

মোগলি শহর আগ্রা। আহায়েও মোগলাই মেনুর প্রতিপত্তি। কাবাবের সঙ্গে নান, তন্দুরী রুটি, পরোটা, তন্দুরী চিকেন, সিক কাবাব, বিরিয়ানি যথেষ্ট খ্যাত। তবে, চলতে-ফিরতে আগ্রার নিজস্ব সৃষ্টি অনন্য মিষ্টি *পেঠা*-র স্বাদ নেওয়া একান্তই উচিত হবে। আগ্রার ডালমুট-এরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। খাবার হোটেল যতদূর মিললেও রাজ্য সরকারের ট্যুরিস্ট অফিস তথা GPO-র কাছে তাজ রোডে *H Joi Hind* ও *H Jaiwal* ভালই। তেমনই দক্ষিণ ভারতীয় আহার্যের জন্য *Luxmi Vilas*, তাজ রোডে আরও যেতে *Prakash Restaurant* বা *Wdality Restaurant* দুটির চার্জ একটু বেশি হলেও আহায়ে সুনাম আছে। স্বল্প খেতে *Chung Wah*—চীনা ডিশের জন্য যথেষ্ট খ্যাত। বিপরীতে *Sabitri Restaurant*—Barbecue Kebab ও Chiken Tikka-র জন্য খ্যাত। তাজ রোড ও ম্যালেের মাঝে সদর বাজারে *Zorba the Buddha* রেস্তোরাঁটিরও আহায়ে যথেষ্ট সুনাম। আর বসেছে তাজের প্রবেশপথে ITDC-র *Cafeteria & Restaurant* সৈন্য-বিশেষী আহার্যের ব্যবস্থা নিয়ে। তেমনই আছে নানান *খাবার হোটেল* ফতেহাবাদ রোডে। পরিবেশ সুন্দর না হলেও স্বল্প মূল্যে আহার্য মেলে। তাজপথে *Sikander Restaurant*টির স্বল্প মূল্যে আহার্য পরিষেবা সুনাম আছে।

কনডাক্টেড ট্যুর : UPSTDC ও UPSRTC আরোজিত কনডাক্টেড ট্যুর প্রোগ্রামে অংশ নিয়ে ফতেপুর সিক্রি, আগ্রা দুর্গ

ও তাজ দেখে নেওয়া যায়। নতুন দিল্লী রেল স্টেশনে দ্বিতীয় শ্রেণীর যাত্রীরা, আর A/c ও প্রথম শ্রেণীর যাত্রীরা Northern Railway Reservation Office, Connaught Place, ND-1 থেকে কনডাক্টেড ট্যুরের অগ্রিম টিকিট কটিতে পারেন। আবার Agra Cantt Rly Stn, Platform 1, ৩ 66438বা UPSTDC-র Hotel Taj Khema, Eastern Gate-Taj Mahal, ৩ 360140 বা UP Tourism, 64 Taj Rd, ৩ 360517 থেকেও টিকিট মেলে। আগ্রা ক্যান্ট থেকে ১০-১৫য় গিয়ে ১৮-৩০টায় ফেরে বাস। আর UPSTDC-র গাড়ি সকাল ৯-০০টায় ট্যুরিস্ট বাংলো ছেড়ে ১০-১৫য় আগ্রা ক্যান্ট পৌছে একইভাবে যাচ্ছে। আর শতাব্দী অজের যাত্রী নিয়ে বাস যাচ্ছে ৮-৩০এ। ভাড়া ডিলাঙ্গ বাসে ৮৫ শিশু ৬৫। কেবল ফতেপুর সিক্রি বেড়িয়ে আনে ৬৫ টাকায় এরা। শুক্রবার দর্শনী লাগে না তাজ, ফোর্ট ও ফতেপুর সিক্রি দর্শনে। তবে ১৫ বছর বয়স পর্যন্ত প্রতিদিনই ফ্রি দর্শন। রাজ্য পর্যটনের দপ্তর বসেছে—UP Govt Tourist Bureau, 64 Taj Rd, ৩ 360517; Govt of India Tourist Office, 191 The Mall, ৩ 72377; আর ITDC, Hotel Agra Ashok, ৩ 361223-এরও ব্যবস্থা আছে এই ট্যুরের। দিল্লীর চান্দনী চক তথা ফতেপুরী থেকেও নানান প্রাইভেট কোম্পানি একদিনে আগ্রা; দুই দিনের প্যাকেজ আগ্রা, ফতেপুর সিক্রি, মথুরা, বৃন্দাবন দেখিয়ে ফেরে। শীত ও গরম দুইয়েরই আধিক্য থাকলেও বেড়াবার উপযুক্ত সময় নভেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাস। তবুও যেন পর্যটক আসছেন গ্রীষ্ম এড়িয়ে বছরভর ৬২বর্গ কিমি ব্যাস্ত ১৬৯ মি উঁচু আগ্রায়। তাপমান ৫০° সেন্টিগ্রেডে চড়ে বসা অসহ্যাবিক নয় গ্রীষ্মের দিনে আগ্রায়। তেমনই শীতের দিনে ভারি উলেনও দরকার আগ্রা প্রমণে। আর একক যাত্রায় আগ্রা থেকে মথুরা-বৃন্দাবন বেড়িয়ে ফতেপুর সিক্রি-ভরতপুর-জয়পুরও চলা যেতে পারে।

তাজমহল: মোগল সম্রাট শাহজাহানের অমর কীর্তি তাজ সৃষ্টি। সম্রাট তাঁর প্রধানা বেগম মমতাজের সমাধির উপর তৈরি করান প্রেমের এই সৌধ। সর্বকালের সর্বশ্রেষ্ঠ ইন্দো-পারসিক স্থাপত্যে গড়া শ্বেতমর্মরের এই সৌধটি আজ ভূদন বিখ্যাত। দেশ-বিশেষ থেকে পর্যটক আসেন তাজ দেখতে বছর জুড়ে। কোজাগরী (শারদ/অক্টোবর) পূর্ণিমাতে তাজ যেন সজীব হয়ে ওঠে, দর্শনাধীদের ভিড়ও উপচে পড়ে তাজ দেখার জন্য পূর্ণিমার রাতে। নরুদ্র আলোকিত রাতে বা উষাকালে তাজের সৌন্দর্য মুগ্ধ করে দর্শকদের। রুগে কণে রঙেরও বাল্য ঘটে উষাকালে। দুগ্ধবল রূপালি রঙ নেয় উষায়, রূপালি থেকে গোলাপি-লালে। চাঁদের আলোয় মনে হবে পরীর দেশের জাহাজ ভাসছে যমুনার জলে, আর বিদ্যারী চাঁদের পাণ্ডুর আলোয় তাজকে মনে হবে চলমান। সোনা রঙ ধরে তাজ সূর্যাস্তে। স্বর্ণ সম তাজের এই সূর্যমা মোহিত করে দর্শককে। পূর্বের লাল বেলে পাথরের গেট প্যাফিলিয়ন থেকে সূর্যোদয়ে আর পশ্চিমের মসজিদ থেকে সূর্যাস্তে তাজকে সুন্দর দেখায়। তেমনই মনসুনেও তাজের যেন রূপ বাড়ে।

বাংলার মেয়ে আর জুমান বানু উত্তরকালে ভারত সম্রাট শাহজাহানের দ্বিতীয় বেগম মমতাজ মহল ১৭ বছরের বিবাহিত জীবনে ১৪তম সন্তানের জননী হতে গিয়ে ৩৮

বছর বয়সে (১৭ই জুন, ১৬৩১) মারা যান। মৃত্যুর ৬ মাস পরে স্থানান্তরিত হন বেগম সাহেবা বুরহানপুরের সাময়িক সমাধি থেকে আগ্রায়। জনশ্রুতি, শাজাহানের নিজ পরিকল্পিত যমুনার অপর পারে গড়া কালো পাথরের সমাধির বদলে উত্তরকালে (১৬৬৫) পুত্র ঔরঙ্গজেব পিতাকেও সমাধিস্থ করেন মায়ের পাশে এই তাজে। কালো বাড়িঘরও দৃশ্যমান যমুনার পারে। তবে এগুলি তৈরি নাকি বাবরের কালে। মমতাজের মৃত্যুর এক বছর পর তাজমহল নির্মাণের কাজ শুরু করান শাজাহান। শেষ হতে লাগে ১৮ (১৬৩১-৪৮) বছর। কর্মীর সংখ্যা ছিল ২০ হাজার, খরচ পড়ে ৪০ লক্ষ পাউন্ড। টিটানস নামে এক স্থপতির নকশায় পারস্য থেকে আসা ওস্তাদ ইশা তৈরি করেন এই তাজ। বিশেষজ্ঞ এসেছেন বাগদাদ, ইতালি, ফ্রান্স থেকেও তাজ তৈরিতে। জনশ্রুতি, দ্বিতীয়টি গড়ার ভয়ে নির্মাতার হাত দুটি কেটে চোখও অন্ধ করে দেন শাজাহান।

২১১২৩৬ ফুটের লাল বেলেপাথরের তোরণে তাজের প্রবেশ। উৎকীর্ণ হয়েছে আরবিতে কোরান থেকে তোরণে। অতীতের রূপোর দরজা জাঠেরা খুলে নিতে দরজা হয়েছে পিতলে। আটকোণা ঘররূপী প্রবেশ দ্বারের শিরে ২২টি মিনার হয়েছে তাজ তৈরির ২২ বছরের দ্যোতক রূপে। ক্যান্ট তথা শহরমুখী এই পশ্চিমদ্বারের বাইরে শাজাহানের আর এক বেগমের স্মারকরূপী ফতেপুরী মসজিদ। তেমনই পূর্বের প্রবেশদ্বারের কাছে বেগম শিরিহিন্দিস সমাধি সৌধ, দক্ষিণ দ্বারে মমতাজের সহচরীর স্মারক সৌধ। প্রতিটি প্রবেশদ্বারই মোগলি স্থাপত্যে অনবদ্য। গেটেরিয়ে ভিতরে ঢুকতেই বাঁয়ে তাজ মিউজিয়াম। প্রশস্ত বাগিচায় ফোয়ারার সারি বেয়ে দেবদারু ও সাইপ্রাসের ছায়ায় পথ চলে এগিয়ে। চলতে চলতে ফোয়ারার জলাধারে তাজকেও দেখে নেওয়া যায় প্রতিবিম্বে। বসন্তে বর্ণালী বাড়ে নানান ধর্মী মরসুমি ফুলে। অলিন্দ দিয়ে ঢুকতেই সামনে যমুনা। মাঝের ৬০ ফুট ব্যাসের ৮০ ফুট উঁচু কেন্দ্রীয় ডোমটির চারপাশে হয়েছে চারটি ছোট ডোম। কেন্দ্রীয় ডোমের মাঝে ছিল কারুকাঁথচিত্র বাড় লটন। জাতিদের হাতে লুট হতে ১৯০০ খ্রিস্টাব্দে রোজের লটন ঝোলান লর্ড কার্জন। ২২ ফুট উঁচু ভিতের উপরে ১৩০ ফুট উঁচু ৩১৩ বর্গ ফুটের এই সৌধের দেওয়াল হয়েছে দাবার ছকে সাদা আর কালো মার্বেলে। পুরো কোরানটাই উৎকীর্ণ হয়েছে এর দেওয়াল গায়ে। রক্তবেরঙের ৩৫ রকমের দামি পাথর ব্যবহৃত হয়েছে এর কারুকার্যে। দেওয়ালের পপি, গোলাপফুলে বর্ণালী বাড়তে রক্তবেরঙের ৬৪ টুকরো পাথর জোড় লেগেছে। সহস্রাবধিক হাতির পিঠে পাথর এসেছে রাজস্থানের মাকরানি থেকে। *Pietradura* শৈলীর স্থাপত্য এতই নিখুঁত যে জোড় খুঁজ পাওয়া ভার। গঠনশৈলী এমনই জ্যামিতিক ছকে যে খেতপাথরের জালি পর্দার মাঝ দিয়ে আলো এসে পড়ে পাশাপাশি সায়িত সজট শাজাহান ও বেগম মমতাজের কবরে বেসমেন্টে। তবুও আলো আঁধারি

পরিবেশের জন্য বেসমেন্ট দর্শনে টর্চ সঙ্গে থাকা ভাল। ওপরেও অষ্টকোণী সেনাট্যাঞ্চ চোখারে কৃত্রিম কক্ষিন হয়েছে মর্মরে। যে কোনও ধ্বনি প্রতিধ্বনিত হয় ওপরের কক্ষে। আজকের খেতপাথরের জালির বদলে অতীতে ছিল মণি-মাণিকাখচিত সোনার বালর। পুত্র ঔরঙ্গজেবের হাতেই এই রূপান্তর। ১৯৮৪তে আততায়ীর গুলিতে ইন্দিরা গান্ধী শহীদ হতে সেই থেকে সূর্যোদয় থেকে ১৯-৩০টায়ে খোলা থাকে তাজের দরজা। তাজ দেখতে দর্শনী লাগে ৬-৮-০০ ও ১৬-১৭-৩০টায়ে ১০০, ৮-১৬-০০টায়ে ১০, শুক্রবার ফ্রি; ভিড়ের আধিক্য ঘটে শুক্রবারে। তবে, রাতে তাজ দর্শনের প্রস্তুতি চলছে নতুন করে।

আর, পরিতাপের বিষয়—বৈজ্ঞানিকদের আশঙ্কা জেগেছে মথুরায় কেমিক্যাল প্রোজেক্টের দূষণে ভারতের তাজ ধ্বংসের পথে এগিয়ে চলেছে। বিবর্ণও হতে শুরু করেছে খেত-শুভ্র তাজ।

আগ্রা দুর্গ: শহরের কেন্দ্রস্থলে তাজ থেকে ৩ কিমি উত্তর-পশ্চিমে যমুনা কিনারে ১৫৬৫-৭৩এ লাল বেলে পাথরে আকবরের হাতে তৈরি দুর্গ বা কিল্লা। প্রতিরক্ষার দিক থেকে খুবই সুরক্ষিত। তিনদিকে ২২ কিমি দীর্ঘ ২০ মি উঁচু প্রাচীর পেরুতেই ১০ মি ব্যাপ্ত পরিখা। আবার প্রাচীর ২০ মিটারের। বয়ে যেত খরশ্রোতা যমুনা অপরদিকে। প্রবেশ-পথ যদিও ৩টি, তবে আজকের দশকের জন্য একমাত্র দরজা দক্ষিণের অমর সিং গেট। ১৬৪৪এ গেটের পাশেই যোধপুরের মহারাজার মৃত্যু ঘটায় স্মারকরূপে নাম। মূর্তিও হয়েছে ঘোড়ার পিঠে মহারাজার। পরবর্তীকালেও নতুন নতুন সংযোজন ঘটেছে উত্তর-পূর্বদিকের হাতে দুর্গে। আকবর-জাহাঙ্গীর-শাজাহান—তিন পুরুষের স্মৃতিবিজড়িত দুর্গ সূর্যাস্ত থেকে সূর্যোদয়ে খোলা থাকে। দর্শনী ১০, শুক্রবার ফ্রি।

দুর্গের প্রবেশ-পথে হিন্দু ও মধ্য এশীয় স্থাপত্যের সমন্বয়ে গড়া জাহাঙ্গীর মহল। দুর্গের বৃহত্তম (২৫০x৩০০ ফুটের) এই মহল অর্থাৎ প্রাসাদ পুত্রের জন্য তৈরি করেন আকবর। অদূরে নুরজাহানের গোলাপ জলো নানের পাথরের কুণ্ড। পাশেই আকবরের রাজপুত-মহিষী জাহাঙ্গীর মাতা বোখাবাইয়ের মহল। উত্তরকালে এরই উত্তর অংশে গড়ে ওঠে শাজাহান মহল।

আর দুর্গের মধ্যমণি অতীতের দারু নির্মিত দেওয়ানি আম আমুল সজ্জার হয়ে নবরূপ পায় শাজাহানের হাতে ১৬২৭এ। এটি সাধারণের সঙ্গে সভাটের মিটিং হল। লাল পাথরে তৈরি এর মেঝে—মর্মর খচিত দেওয়াল, ছাদটিও লাল পাথরের; অভিনবস্থ আছে এর ঝিলানেও। ৪০ শিলারে ভর করা প্যাভিলিয়নে সভাট বসতেন প্রজাদের কথা শুনতে। ১৬০৯এ এই দেওয়ানি আমেই ছিল জেমস ১ম-এর প্রতিনিধি ক্যাপটেন উইলিয়াম হকিন্স জাহাঙ্গীরের সঙ্গে বোগসূত্র গড়েন। আর ব্যক্তিগত অ্যাপয়েন্টমেন্ট

রাখতেন সঘাট ১৬৩৬-৩৭এ তৈরি দেওয়ানি খাসে। জাহাঙ্গীরের পাথরের সিংহাসনটি ১৮৫৭য় ব্রিটিশের গোলায় চিড় ধরে। বিশ্বখ্যাত ময়ূর সিংহাসনটিও ছিল সেকালে দেওয়ানি খাসে। উত্তরকালে ঔরঙ্গজেব দিল্লীতে স্থানান্তর ঘটান। আরও পরে পারস্যে যায় নাদির শাহর লুণ্ঠের পণ্য হয়ে। দেওয়ানী খাসের ঝরাখাণ ও লতার কাজও সুন্দর। দক্ষিণে সিঁড়ি নেমেছে ডেহখানার যেখানে গ্রীষ্মে মাটির নিচে ঠাণ্ডা ঘরে থাকতেন সঘাট। বিপরীতে অঙ্গুরী বাগ অর্থাৎ আঙুর বাগিচা। অঙ্গনের উত্তর-পূবে শিশমহল অর্থাৎ বেগমদের গোসল ঘর। তুর্কি শৈলীতে তৈরি মহলের দেওয়াল ও ছাদ এমনভাবে কাচে মোড়া যে একটি বাতি সহস্র বাতি হয়ে দেখা দেয়।

দেওয়ানি খাস লাগোয়া বেগম মমতাজের জন্য শাজাহানের তৈরি মনি-মালিকাখচিত দ্বিতল মুসলমান বুর্জ বা অষ্টকোণী টাওয়ার। পূর্ব ঔরঙ্গজেবের হাতে বন্দী-পিতা শাজাহানের জীবনের শেষ ৮ বছর (মৃত্যু ১৬৬৬) এই ঘরে বসানো আয়নায় তাজের প্রতিবিম্ব দেখে দেখে কাটে। তাই প্রিন্সার্স টাওয়ারও বলে থাকে লোকে একে। কারুকার্যমণ্ডিত বুর্জের মোজাইক ও জাফরির কাজও অনবদ্য। তবে, টাওয়ারটি ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত। অদূরেই মোগল দরবারের মহিলাদের জন্য তৈরি আকারে ছোট খেত মর্মরের নাগিনা মসজিদ। নাগিনার দক্ষিণ-পূবে রঙিন মাছের মছি ভবন। মীনা বাজার বসত সেকালে দুর্গের মেয়েদের জন্য। আর আছে হিন্দু মন্দির মুসলিম দুর্গে। ১৬৪৬-৫৩য় শাজাহানের তৈরি মার্বেল পাথরের মোতি মসজিদ-এর শিল্পনৈপুণ্যও সুন্দর। সঙ্গীর্ণ সিঁড়ি পথে উঠে ছাদ থেকে দেখে নেওয়া যায় দুর্গ। দুর্গের অদূরে ফোর্ট স্টেশনের বিপরীতে ১৬৪৮এ বেগম জাহানারার তৈরি জামি মসজিদটিও সুন্দর।

ইংমদ-উদ-দৌলা: তাজ থেকে ৬.২, দুর্গের ১ কিমি উত্তর-পশ্চিমে যমুনার পরপারে জর্জি গিয়াসুদ্দিন বেগ ও বেগমের সমাধি। পারস্যে জাত জাহাঙ্গীরের ইংমদ-উদ-দৌলা উজীর (wuzir) অর্থাৎ বিশ্বস্ত প্রধানমন্ত্রী মির্জা বেগের রূপসী কন্যা জাহাঙ্গীরপত্নী নূরজাহান অর্থাৎ জগতের আলো বাবা ও মায়ের স্মারক রূপে মকব্বারা গড়েন। ১৬২২এ শুরু হয়ে শেষ হয় ১৬২৮এ। তাজের পূর্বসূরী এটি। আর মোগল বাদশাহদের হাতে খেতমরমে তৈরি সৌধ এটিই প্রথম। Pietradura শৈলীর দ্বিতল এই সৌধ আকারে ছোট হলেও কারুকার্যে অনুপম। চারকোণে অষ্টকোণাকৃতি চারমিনার—সিঁড়িও আছে উপরে ওঠার। ধনুকাকৃতি খিলান ও জানালায় সূক্ষ্ম জাফরির কাজ অতুলনীয়। পাথরে ইনলে শিল্পও সুন্দর। পারস্যের ছাপ রয়েছে এর ইন্দো-ইসলামি ছাপতো। হয়তো-বা তাজকেও রান করে দেয় ইংমদ-উদ-দৌলা। শাজাহান অনুপ্রাণিত হন তাজ তৈরিতে ইংমদ-উদ-দৌলা থেকেই। এরই রৈখিকা হয়ে রূপ পায় নূরজাহান-এর হাতে

জাহাঙ্গীরের সমাধি সৌধ পাকিস্তানের লাহোরে। বেসী তাজও বলে থাকে লোকে ইংমদ-উদ-দৌলাকে। দর্শনী প্রধায় সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে দেখে নেওয়া যায়।

চিনি-কা রৌজা : ইংমদ-উদ-দৌলা থেকে ১ কিমি উত্তরে চিনি-কা রৌজায় শাজাহানের প্রধানমন্ত্রী-কবি আফজল ষাঁ ও তাঁর বেগমের সমাধিও-বেড়িয়ে নিতে পারেন। ১৬৩৯এ লাহোরে মৃত্যুর আগে আফজল নিজেই তৈরি করান বর্ণাকার এই সৌধ। পারস্যীয় শৈলীতে এনামেল করা রঙবেরঙের টালিতে দেওয়াল মণ্ডিত। তবে, অব্যবহার অবহেলায় পর্যটন মানচিত্রে অবহেলিত।

রামবাগ: চিনি-কা-রৌজা থেকে আরও ২ কিমি উত্তরে মোগল উদ্যানের পথিকৃৎ রামবাগ অর্থাৎ উদ্যান। ১৫২৬ খ্রিস্টাব্দে বাবরের হাতে রূপ পায় রামবাগ। নাম ছিল তার আরামবাগ। জনশ্রুতি, কাবুলে স্থানান্তরের আগে সাময়িক সমাধিও হয় মোগল সঘাট বাবরের আরামবাগে। স্থানীয় ও পর্যটকদের আরাম বর্ধনে মনোরম। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা।

জামি মসজিদ: আগ্রা ফোর্টের অদূরে কিনারী বাজারের পথে ১৬৪৮এ শাজাহানের গড়া জামি মসজিদ। তবে, গেটের লিখনে নির্মাতা বলে শাজাহান-মুহিতা জাহানারার নাম মেলে। নির্মাতা যেই হন—পিতা ও কন্যার বন্দীজীবন কাটে ঔরঙ্গজেবের হাতে বন্দী হয়ে আগ্রা দুর্গে।

দয়ালবাগ : তাজ থেকে ৮ কিমি উত্তরে দয়ালবাগে স্বামী (সোয়ামী) বাগ মন্দির অর্থাৎ the Garden of the Supreme Lord বা পরম প্রভুর উদ্যান। ১৯০৪এ শুরু হয়ে আজও অসম্পূর্ণ। সাদা ও গোলাপি মর্মরে তৈরি মন্দিরের Pietradura শৈলীর অলঙ্করণ ইতিমধ্যেই পর্যটক মহলের দৃষ্টি আকর্ষণ করেছে। সবুজ, হলুদ ও নানান রঙের মোজাইক করা পাথরও ব্যবহৃত হয়েছে। তবে, কেমন যেন কৃত্রিমতার সঙ্গে জ্বরজ্বর সোবে দুষ্ট। দিলওয়ারা দর্শনের পর আরও যেন বিব্বাদ লাগে। ১৮৬১তে জন্ম রাখাগোবিন্দ সংসঙ্গ সম্প্রদায়ের সদর দপ্তরও বসেছে দয়ালবাগে। সম্প্রদায়ের প্রতিষ্ঠাতা শ্রীশ্রীস্বামী মহারাজের সমাধিও হয়েছে মন্দিরে। ৮—১৭-০০টায় খোলা।

সিকান্দ্রা : তাজ থেকে ১০ কিমি উত্তরে দিল্লী-আগ্রা সড়কের সিকান্দ্রাতে শায়িত রয়েছেন মোগল বাদশাহ আকবর। লাল-গেরিক বলে পাথরের চার প্রবেশ তোরণ। একটি তার হিন্দু, একটি মুসলিম, একটি খ্রিস্টীয় আর তৃত্বটি আকবরের সৃষ্ট বিশ্বজনীন শৈলীতে তৈরি। বাগিচা পেরুতেই ফতেপুর সিক্রির পাঁচমহলের আদলে ১০০ ফুট উচ্চ চারতলা সৌধ হয়েছে সমাধির উপর। চারপাশে ৯৩ খাপের চারমিনার। ভূগর্ভে মূল সমাধি। উপরে তারই প্রতিরূপ হয়েছে ৩০ ফুট উঁচু বেদিতে। আল্লা হো আকবর (God is Great) ছাড়াও ৯৯ ধর্মমতের সেবতাদের নাম উৎসর্গ হয়েছে সমাধিগায়ে। আকবরের হাতে এর নির্মাণ শুরু—সম্পূর্ণতা

পায় পুত্র জাহাঙ্গীরের হাতে ১৬১৩য়। হিন্দু ও মুসলিম স্থাপত্য শৈলীর সমন্বয়ে ১৫০০০০০ টাকা ব্যয়ে রূপ পেয়েছে সৌধ। কারুকার্য সুন্দর।

সিকান্দ্রা নামটি অবশ্য আরও অতীতের। ১৪৯২এ আফগান নায়ক সিকান্দার লোখী আসেন আগ্রায়। গড়ে তোলেন দুর্গ, আর হয় শহর দুর্গকে ঘিরে। তারই নামে নাম হয় শহরের। সমাধি বাগিচার Baradi Palaceটি সিকান্দারের তৈরি। তবে ইতিহাসের সে অধ্যায় আজ বিস্মৃত। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা থাকে সিকান্দ্রা। টিকিটও লাগে দেখতে। পর্যটকদের তাজ কনোর ভিড় গড়ে সিকান্দার সামনের দোকানগুলিতে। বাস, ট্যাক্সি ও অটো যাচ্ছে শহর থেকে সিকান্দ্রায়।

মরিয়মের সমাধি : আগ্রা-দিল্লী NH-২এ ১৩ কিমি দূরে আকবরের গোয়ানিজ বেগম মরিয়মের সমাধি। সুন্দর বাগিচার মাঝে লাল বেলেপাথরে ১৬১১য় তৈরি সমাধি সৌবের কার্ভিং-এর কাজ সুন্দর।

ফতেপুর সিক্রি

রাজপুতদের হারিয়ে ঈশ্বরকে ধন্যবাদ জ্ঞাপন অর্থাৎ *Shukriya* থেকে Sikri নামকরণ ব্যবহৃত। নামটি আজ থাকলেও ব্যবহৃত গড়া প্যাভিলিয়ন, বাগিচা সবই লুপ্ত সিক্রি থেকে। আর দীর্ঘ পরে ওজরটি জয়ের স্মারক রূপে *Fatehpur* ছুড়ে ফতেপুর সিক্রি নামকরণের সাথে রাজধানী গড়েন (১৫৭০-৮৬) আকবর। তবে অশান্তি ও উত্তর-পশ্চিমকে শাসন করত ১৫৮৫তে লাহোরে গিয়ে ১৫৯৯এ আগ্রায় ফেরেন সম্রাট আবার।

আগ্রা থেকে ৩৬ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ফতেপুর সিক্রি। নানান বেগম, ৮০০ পুরনারী—নিঃসন্তান আকবর। অবশেষে মুসলিম ফকির শেখ সেলিম চিষ্টির *দোয়ায়* পূত্রলাভের পর ফকিরের প্রতি কৃতজ্ঞতাবশে তাঁরই গ্রাম ফতেপুরের শিরে রাজধানী স্থানান্তর করেন আকবর। গড়ে ওঠে দুর্গ তথা রাজধানী শহর ১৫৬৯এ বাদশাহ আকবরের হাতে। তবে, জলাভাব হেতু ১৬ বছর পরে আবার স্থানান্তর ঘটে রাজধানীর। পুত্রের নামও রাখেন সেলিম—উত্তরকালে সম্রাট জাহাঙ্গীর।

মাইল দুয়েক লম্বা আর মাইল খানেক চওড়া এক শৈলশিখরে রূপ পায় প্রাসাদ। তিন পাশ দেওয়ালে ঘেরা, আর চতুর্থ পাশ কুড়ি মাইল ব্যাপ্ত কৃত্রিম লেকে ঘেরা ছিল সেকালে। খুবই আড়ম্বরপূর্ণ, হিন্দু ও মুসলিম স্থাপত্যে লাল বেলে পাথরের এই রাজধানী শহর আজ ভূতুড়ে নগরী।

পূবে শাহী দরওয়াজায় প্রবেশ। নহবতখানার নিচু দিয়ে ঢুকতে আডাল, টাকশাল, কোবাগার রেখে এতদেই বাণেশার বিচারসভা অর্থাৎ দেওয়ানি-আম। আরতাকার উদ্যান বেয়ে প্রতি প্রাতে শাহেনশা দর্শন দিভেন প্রভাষের। কথিত আছে, ক্রীতদাসী মেয়েদের খুঁটি করে উদ্যানের

কেন্দ্রস্থলে *Pachisi Courtyard*—বৃহদাকারের বোর্ডে দাবা খেলাতেন আকবর। অপুরে ইবাদতখানা অর্থাৎ ধর্মসভা। আকবরের নিজস্ব সৃষ্টি *দীন-ই-ইলাহী* ধর্মের প্রবর্তন এই ইবাদতখানা থেকে। এর অলঙ্করণে হিন্দুমান প্রকট। স্থাপত্যে অনন্য সম্রাটের মন্ত্রণাসভা—বিতল দেওয়ানি খাস-এর কারুকার্যমণ্ডিত পাথর-স্তম্ভ দুটিরও অভিনবত্ব আছে। উত্তরে দুর্গের বাইরে হিরণ মিনার বা হস্তী টাওয়ার—আকবরের প্রিয় হাতি হিরণ মৃত্যুদণ্ডে দত্তিত করেশীপের পিষে মারত। আবার কেউ কেউ মুক্তিও পেত হিরণের মর্জিতে। সেই হিরণের সমাধিতে স্মারকরূপে মিনার হয়েছে। ২১ মি উঁচু এই মিনার চড়ে হরিণ ও অন্যান্য জন্ত শিকার করতেন সম্রাট।

মসজিদের উত্তর-পূবে সোনার গিলটি করা আকবর-জননীর সুনহারা মহল বা *গোল্ডেন হাউস*, লাগোয়া আকবরের প্রিয় মহল হিন্দু মহিষী জাহাঙ্গীর-জননী ঘোষা-বাইয়ের প্রাসাদ, লাগোয়া গোয়া থেকে আসা আকবরের খ্রিস্টান বেগম মরিয়মের গোল্ডেন প্যালেস, রুমি সুলতানা বা তুরস্কের বিবি সুলতানা বেগম কোঠি, আকবরের রাজসভায় নবরত্নের অন্যতম রসজ পণ্ডিত বীরবলের বাড়ি, হিন্দু স্থাপত্যের স্তম্ভ ও মুসলিম শৈলীর গম্বুজের সমন্বয়ে তৈরি হাওয়া মহল—দেওয়াল হয়েছে পাথরে জাফরির; প্রতিটিই দর্শনীয়। দেওয়ানি খাসের দক্ষিণ-পশ্চিমে *আঁধ মিঠৌলী* যেখানে বাদশা-বেগমরা লুকোচুরি খেলতেন। তবে, টেজারি প্যাভিলিয়নও বলা হয় একে। সম্ভবত সম্রাটের রেকর্ড রুমও ছিল এই ভবনে। বৌদ্ধ বিহারধর্মী পারসীয় শৈলীর *Badgir* বা পাঁচমহল অর্থাৎ পাঁচতলা অভিনব এই বাড়ির আকর্ষণও কম নয়। গরম থেকে ত্রাণ পেতে হাওয়া আনতে প্রতিটি তলা ক্রমেই সঞ্চীর্ণ হয়েছে। নিচু তলায় পিলারের সংখ্যা ৮৪, তারপর কমে কমে ৫৬, ২০, ১২ আর উপরে মাত্র ৪—শিরে গম্বুজ। পিলারগুলিও একটি আর একটি থেকে স্বতন্ত্র। অতীতে দেওয়াল ছিল জাফরিময়। সম্ভবত বাদশার মজলিশ সভা বসত সেকালে। কষ্টসাধ্য অসম সিঁড়িতে উপরে উঠে পুরো দুর্গটিই দেখে নেওয়া যায়। সম্রাটের নিজস্ব মহল খাস মহলও স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে অনবদ্য।

এরই পশ্চিমে শৈলশিয়ার মন্ডার প্রতিরাপ হিন্দু ও পারসীয় শৈলীতে তৈরি জামি মসজিদ। বৃন্দ দরওয়াজা দিয়ে প্রবেশ। সম্রাটের ওজরটি জয়ের স্মারক রূপে ১৫৭৩এ তৈরি সিঁড়ি বেয়ে ৩৪ ফুট উঠে ভাস্কর্যে অনন্য ১৭৭ ফুটের বিখ্যাত বৃহত্তম কুলঙ্গ দরওয়াজাটি আজকের পর্যটকদের মূল আকর্ষণ। কোয়ার থেকে আয়াত :

The World is a bridge : pass over it, but build no house upon it. He who hopes for an hour may hope for eternity—খেরিত হয়েছে কুলঙ্গ দরওয়াজায়।

১০০০০ ধর্মাবী একত্রে নামাজ পড়তে পারেন জামি মসজিদে। মসজিদের অন্দরে সেলিম চিষ্টির দরগা তথা মসজিদ। ১৫৭১এ ৯২ বছর বয়সে ফকির সাহেবের মৃত্যু

হতে আকবরের নির্দেশ মতো বেলে পাথরে তৈরি হয় এটি। ফকিরের সোয়ার জম্ম জাহাঙ্গীর উত্তরকালে সংস্কারের সাথে মুড়ে দেন মর্মরে। এর অপরাপ নির্মাণ-শৈলী অনান্য করে রেখেছে। পাথরের জালি অর্থাৎ জাকরি খুবই সুন্দর। আজও সন্তান-হীনা মহিলারা দরগায় আসেন সন্তান কামনায়। উরস (মৃত্যুবাসিকী) উদযাপিত হয় প্রতি শীতে। এরই বামে গভীর কূপে আজও ছাদ থেকে ঝাপিয়ে পড়ে পরস্য কুড়ায় ছেলের দল। অদূরে আকবরের সভাসদ নবম রত্নের আর এক রত্ন আবুল ফজলের বাড়ি।

কনডাকটেড ট্রারে UPSTDC, ITDC ছাড়াও নানান প্রাইভেট সংস্থার বাস আসছে আগ্রা থেকে ফতেপুর সিক্রি। তবে, কনডাকটেড ট্রারের এক ঘণ্টায় ফতেপুর সিক্রি দেখে নেওয়া অসম্ভব হয়ে পড়ে। ট্রেনও চলে এ-পথে। আর চলেছে সার্ভিস বাস আগ্রা থেকে ফতেপুর সিক্রি। উচিত হবে ক্যান্ট থেকে ১ কিমি দূরে দুর্গের উত্তর-পশ্চিমে ইদগা বাস স্ট্যান্ড থেকে বাসে গিয়ে দেখে ফেরা। ঘণ্টা খানেকের পথ। বাস যাচ্ছে ৬-৩০টা প্রথম ছেড়ে প্রতি ৩০ মিনিট অন্তর। ১৮-৩০টা ফতেপুর সিক্রি ছেড়ে আগ্রায় ফেরে শেষ বাসটি। এককভাবে দেখার পক্ষে সার্ভিস বাসে গিয়ে দেখে ফেরাই সুবিধা। রেল ও বাস দুইয়েরই উত্তরে পাহাড় চূড়ায় দুর্গ। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা, টিকিট ১৫ করে। রেজিস্টার্ড গাইডও মেলেন দুর্গ দেখার। দুর্গ দেখা সেরে আগ্রায় ফিরে চুক্তিতে রিকশা, টাভা, অটো, ট্যাক্সি করে শহরের দ্রষ্টব্য দেখে নেওয়াই যুক্তিসঙ্গত। আবার ফতেপুর সিক্রি দেখে ১৭

কিমি দূরে ভরতপুর বা জয়পুরও চলা যেতে পারে বাসে।



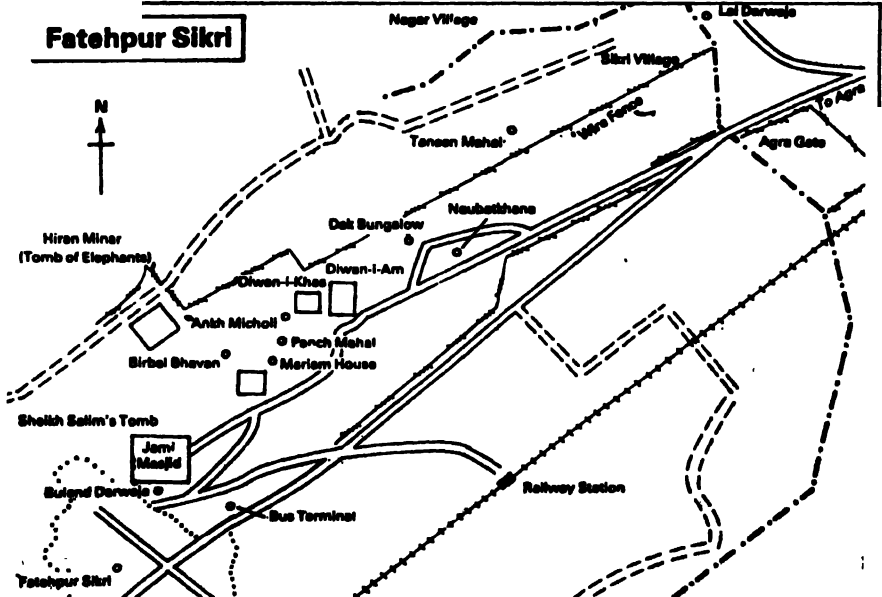
খাবার হোটেল বাস স্ট্যান্ডে নানান। ভেমনই ২৪ ঘরের হোটেল গড়েছে UPSTDC—H Gulistan Tourist Complex, ৩ ৪৪২৪০, D ৪৫০ A/c D ৮৫০ ডার্মি ৬০, আহাও মেলে ক্যান্টিনে। আর আছে Archaeological Survey RH, অবু: Archaeological Survey of India, ২২ The Mall, Agra, আর গ্রামে আছে Tourist GH, S ১০০-১৫০ D ১৫০-২৭৫।

মথুরা

আযোধ্যা, মথুরা, গয়া, কাশী, কাঞ্চি, অবন্তিকা।

পুত্রী স্বারাবতী ঠেব সঐগুতা মোক্ষদায়িকাঃ ॥

দিল্লী-আগ্রা NH-2-এ দিল্লী থেকে ১৪৭ কিমি দক্ষিণে আর আগ্রার ৫৪ কিমি উত্তরে যমুনার পশ্চিম কিনারে ভারতের অন্যতম বৈষ্ণব তীর্থ মথুরা। ভরতপুরের দূরত্ব ৩৪ কিমি। মুম্বাই বাসও চলে ত্রয়ার মাঝে। আগ্রা বিজলীঘর (ফোর্ট) বাস স্ট্যান্ড থেকে বাস আসছে মথুরার। বাস আসছে হরিদ্বার, হৃষীকেশ, তুওলা, কানপুর, বাসী, আজমের, জয়পুর, হাওড়া-দিল্লী রেলপথের হাথরাস ছাড়াও উত্তর ও পশ্চিম ভারতের দিগ্বিদিক থেকে মথুরায়। আর শতাব্দী এগ্ন মথুরায় না থামলেও তাজ ও ইন্টারসিটি এগ্ন যাচ্ছে ২২ ঘণ্টায় হজরত নিজামুদ্দিন থেকে মথুরায়। ট্রেন যাচ্ছে দিন-রাত্রি জুড়ে দিল্লী-আগ্রা শাখার নানান মথুরা হয়ে। কলকাতা থেকে তুফান এগ্ন মথুরা হয়ে দিল্লী যাচ্ছে। আর মথুরা থেকে বৃন্দাবন যাচ্ছে ৬-৩০, ১৫-৪০, ১৮-৫৫য় প্যাসেঞ্জার ট্রেন। প্যাকেজ ট্রারেও পর্যটক আসছে আগ্রা ও দিল্লী



থেকে মথুরা দর্শনে। নিকটতম বিমান আশ্রয়। একক ব্যায়াম উচিত হবে অটোর ৬০-৬৫ টাকায় বা টাঙ্কার মথুরাপুরী দেখে নেওয়া।

পুরাণ বলে, লবণাসুরকে বধ করে রামের অনুজ মথুরার পত্তন করেন। যাদব রাজধানী মথুরাপুরীই রূপান্তরিত হয়েছে মথুরামণ্ডলে—কালে কালে মথুরায়। ২ ও ৩ শতকে বৌদ্ধ কেন্দ্ররূপেও এর প্রসিদ্ধির কথা টলেমি ও ভারত পর্যটক ফা-হিয়েনের (401-410 AD) লেখায় মেলে। ২০টি বৌদ্ধ মনাস্ত্রিতে হাজার তিনেক বৌদ্ধের বাস ছিল সেকালে। তেমনই ১৯তম ও ২১তম জৈন তীর্থঙ্কর মল্লিনাথ ও নেমিনাথের জন্ম ও কর্ম এই মথুরায়। তাই জৈনতীর্থ রূপেও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি ছিল অতীতকালে। তবে, বার বার তিন বার আঘাত এসেছে মথুরায়। ১০১৭য় গজনীর সুলতান মামুদ লুণ্ঠন করে ছািলিয়ে দেয় মথুরানগরী। ধ্বংস পায় নানান হিন্দু ও বৌদ্ধ অতীত। আবার ধ্বংস সিকান্দার লোধীর হাতে ১৫০০ খ্রিস্টাব্দে। প্রলেপ লাগান ধ্বংসস্থপে মোগল সম্রাট আকবর ও জাহাঙ্গীর। সবশেষে ১৬৬৯এ ঔরঙ্গজেবের ধ্বংসলীলার শিকার হয় হিন্দু তীর্থ ব্রজভূমি মথুরা।

সপ্ততীর্থের অন্যতম মথুরা নগরীতে খ্রিস্ট জন্মেরও ১৫০০ বছর আগে মাতা দেবকী ও পিতা বসুদেবের বন্দী-জীবন কালে বিষ্ণুর অষ্টম অবতার রূপী শ্রীকৃষ্ণের জন্ম অত্যাচারী রাজা কংসের কারাগারে। দ্বিমতে, ২০০ মি.দূরে শ্রীকৃষ্ণের জন্ম হয় পোতার কুণ্ডের কাছে। বালা ও কেশোর কাটে শ্রীকৃষ্ণের মথুরাতে। আর সেই স্মৃতিকে ঘিরে গড়ে উঠেছে সহস্রাধিক মন্দির মথুরাতে। মথুরার কেন্দ্রমণি কেশব দেব মন্দিরটি এদের মধ্যে অন্যতম। অতীতের বৃক্শিষ্ট মনাস্ত্রির ধ্বংসস্থপের উপর উত্তরকালের কংস কেন্দ্রায় শ্রীকৃষ্ণের জন্মভূমে শাক্যরাজদের কালে গড়ে ওঠে ১ম কৃষ্ণ মন্দির। ২য় গড়েন চন্দ্রগুপ্ত বিক্রমাদিত্য—যেটি গজনীর সুলতান মামুদ ১০১৭য় ধ্বংস করে। ১২৫০এ মহারাজ বিজয় পালের গড়া ৩য় মন্দিরটি ধ্বংস পায় সিকান্দার লোধীর হাতে। ১৬১৩য় ওঠার রাজা বীর সিং দেও-এর গড়া ৪র্থ মন্দিরটি ১৬৬৯এ ধ্বংস করে ঔরঙ্গজেব। অতীতের ধ্বংসস্থপে তথা শ্রীকৃষ্ণের জন্মভূমে গড়া মকবারা অর্থাৎ লাল পাথরের জুম্মা মসজিদটি ঔরঙ্গজেবের সৃষ্টি। তবে, ১৯৮২তে অতীতের মকবারাকে অক্ষুণ্ন রেখে জন্মভূমের সামনে বিশালাকার মন্দির হয়েছে। কার্যকর্ময় মন্দিরের আকার যেমন বিশাল—বৈভবও তেমন উল্লেখ্য। সিলিং ও দেওয়ালে হিন্দু পুরাণের নানান আখ্যান মূর্ত হয়েছে। পূজাও পাচ্ছেন নানান দেবতা মন্দিরময়। নতুন মন্দিরের পিছে কংস কেন্দ্রায় শ্রীকৃষ্ণের জন্মভূমেও অতীতচারণ হচ্ছে। নতুন মন্দিরে সচল পুতুলে পুরাণ আখ্যানও উচিত হবে দেখে নেওয়া। Lit-ও বসেছে মন্দিরে। শীতে ৬—১২-০০ ও ১৫—২০-০০টায়, গ্রীষ্মে ৬—১২-০০ ও ১৬—২১-০০টায় মন্দির খোলা।

আর বিজ্ঞানি ঘাটের বন্ধ দূরে ১৮১৪য় গোয়ালিয়রের

শেঠ গোকুলদাসের হাতে নতুন করে মন্দির হয়েছে দ্বারকাধীশ-এর। নানান মণিমুক্তায় সুশোভিত দ্বারকাধীশের বৈভবও উল্লেখ্য। দেবতা রয়েছে দ্বারকাধীশ ছাড়াও মথুরানাথ, লক্ষ্মীনারায়ণ, মুরলী মনোহর একই মন্দিরে। আর হয়েছে ভাগবত ভবন মথুরায়। ১৬৬১তে তৈরি শহরের জুম্মা মসজিদটিও দর্শনীয়।

মথুরার নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে যমুনা। সারি দিয়ে একের পর এক মনের ঘাট—সংখ্যায় পঁচিশ। মধ্যমণি তার বিজ্ঞানি ঘাট। এই বিজ্ঞানি ঘাটে কংসকে বধ করে বিশ্রাম নেন শ্রীকৃষ্ণ। রান্নে বিকুলোকের পারমিট মেলে। তেমনই আছে দ্বাদশতীর্থ মথুরার ঘাটকে ঘিরে। অদূরে যমুনা কিনারে মায়ের স্মারক রূপে ১৫৭০এ জয়পুরের বিহারী মলের তৈরি ১৭মি উঁচু ৪তলা সতী বুরুজটি মৃত স্বামীর চিতায় আত্মাহুতি দেওয়া জয়পুরের রানীর কাহিনী স্মরণ করায়। সকাল-সন্ধ্যায় আরতি দর্শনীয়, মন্দিরও বিজ্ঞানি ঘাটে।

যমুনার উত্তর সীমায় কংস কেন্দ্রটিও সংস্কার করেন অম্বরের রাজা মান সিংহ। তবে, অতীতকালের দুর্গ আজ টিলায় রূপ নিয়েছে। জয়পুররাজ জয় সিংহ দ্বিতীয়র তৈরি যস্তর-মস্তরটিও ধ্বংস পেয়েছে।

মথুরার রাসলীলারও প্রশান্তি আছে তীর্থযাত্রী তথা পর্যটক-মহলে। মথুরার পাণ্ডাদেরও যথেষ্ট খ্যাতি যাত্রী উৎসীড়নে। তবে রাবড়ি, দই, প্যাঁড়া, খাজা ও পেঠার স্বাদ নেওয়া একান্তই উচিত হবে মথুরার দোকানপাটে।

ড্যামপিয়ার পার্কে মথুরার মিউজিয়ামটিরও প্রত্নতত্ত্বের সংগ্রহের জন্য যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। হিন্দু, বৌদ্ধ ও জৈন তথা ত্রিপুর দিনগুলির নানান সম্ভার প্রদর্শিত হয়েছে। দাঁড়ানো বুদ্ধ মূর্তিটিতে অভিনবত্ব আছে। সোম ও ছুটি ছাড়া জুলাই ১ থেকে এপ্রিল ১৫-য় ১০-৩০—১৬-৩০, এপ্রিল ১৬—জুন ৩০-এ ৭-৩০—১২-৩০টায় খোলা। ইন্ডনও মন্দির গড়েছে ডগবান শ্রীকৃষ্ণ ও ভ্রাতা বলরামের লীলাকেন্দ্র ১৮৭মি উঁচু বৃন্দাবনে। ৩৭৮০ বর্গকিমি ব্যাপ্ত মথুরায় ২.৩৩ লক্ষ লোকের বাস। তাপমান গ্রীষ্মে ৪৫—২১.৯° আর শীতে ৩১.৭—৪.২° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে।



Mathura-281004, STD-0565-এ—H Madhuvan, Krishnanagar-4. ☎ 404064, R3B2, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ৯৫০; H Geet Bhawan Tourist Complex, Mathura-Vrindavan Rd, D ৪০০-৬৫০; H Surjya International, near Bus Std, S ১৫০ D ২৫০; Mangaldam Tourist L, near Bus Std, S ৮০-১২৫ D ১৫০-২২৫ F ২০০-২৫০; Gaurav G H, Dampier Nagar, near Bus Std, D ১২৫-২০০ A/c D ৩৫০; H Nepal, Delhi Rd, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২০০ A-c S ২৭৫ D ৪০০; H Satyam, S ৮০-১২৫ D ১২৫-১৭৫; H Sanjoy Palace, S ৮০-১৫০ D ১২৫-২০০ T ১৭৫-২৫০; H Kwadiy, near Bus Std, S ৬০-১০০ D ১২৫-২০০; H Modern, near Rly & Old Bus Std, ☎ 404747, S ৮৫-১২৫

D ১৫০-২০০; Mohan H, Chatta Bazar-1, R24B, S ৬০-১০০ D ১২০-১৫০ স্টাইট ২০০-৩০০; Kaveri H, near Bus Std, S ৬০-৮৫ D ১০০-১৫০; Mayur Tourist L, Dampier Ngr, S ৬৫ D ১২০ T ১৫০; Kishan Bhawan, Dampier Ngr; International G H, near Janambhumi; Brajabasi G H, opp Old Bus Std; H Brij Bihar, Yamuna Mkt, R1B; SCB ৬০ SAB ১০০ DCB ১০০ DAB ১৭৫ FAB ২০০ A-৮ ২২৫-৩০০; Agra H, Bengali Ghat-1, R4B1, ৩ 403318, SAB ১২৫-২০০ DAB ২২৫-৩৫০ A/c D ৪০০, কল বুকিং: মিস্ত্রী ট্রাভেল, ৩ 2388678; Navanil Atithi Griha, near Bengali Ghat Police Chowki, D ১০০-১৭৫; H Rajmahal, Prem ছাড়াও রয়েছে নানান হোটেল মথুরায়। আর আছে মথুরা জংশনে রেলের রিটার্নিং রুম; UPSTDC-র পর্যটক আবাস গৃহ, near Collectorate, ৩ 407822, S ১২৫ D ১৫০ A-c S ২২৫ D ২৫০ ডমি বেড ৪০; FRH, PWD IB মথুরায়। তেমনই বেঙ্গলি ঘাট থেকে বিশ্রাম ঘাট ২ কিমি দীর্ঘ যমুনা পুলিনে সারি দিয়ে বাড়ি—সত্যিকার ধরমশালা আশ্রয় হোটেলের ডাইনে-বামে।

বৃন্দাবন

মথুরা থেকে ১০ কিমি উত্তরে বৃন্দাবন। রেল যাত্কে মিটার গেজে ৬-৩০, ১৫-৩৫, ১৮-৪৫ এ ৩ কটা। বাস, অটো, রিকশা, টাভাও যাত্কে মথুরা থেকে বৃন্দাবনে। বাস স্ট্যান্ড থেকে বেরুতেই অটো স্ট্যান্ড—শেয়ারেও অটো যাত্কে মথুরা থেকে বৃন্দাবনে। বাসও যাত্কে দিনরাত মথুরা থেকে বৃন্দাবন। তবুও যেন যাতায়াতে অটোই সুবিধার। এমনকি হরিদ্বার, দিল্লী, আগ্রার সরাসরি বাস মেলে বৃন্দাবন থেকে।

গোবিন্দের মুখমণ্ডল, গোপীনাথের বক্ষ আর মদন-মোহনের ঐতিহ্য দর্শনে গোবিন্দ দর্শনের পূর্ণতা লাভ হয় বৃন্দাবনে। এমনকি গোবিন্দ জীউ-এর পূজাভ্যে গোপীনাথ, মদনমোহন ও অন্যান্য দেবতার পূজার বিধি। পুরাণে বর্ণিত আছে, অসুরদের বিনাশ করে পৃথিবীতে প্রেমধর্ম প্রতিষ্ঠা করতে ভগবান শ্রীকৃষ্ণের আবির্ভাব। যদিও তাঁর মনুষ্যরূপ আর সেই রূপে তিনি আবদ্ধ, তবুও প্রকৃতপক্ষে তিনি অসীম ও সর্ববিশ্রাজ্ঞমান। তিনিই সৎ, চিত্র এবং আনন্দ অর্থাৎ পরমাপ্রকৃতি, পরমব্রহ্ম, ব্রহ্মানন্দ। বৃন্দাবনও শ্রীকৃষ্ণের স্মৃতিবিজড়িত বৈষ্ণব তীর্থ। শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণের বিহার স্থল—বৃন্দাবন। বাঁশির সুরে মোহিত গোপিনীদের সঙ্গে লীলা করছেন শ্রীকৃষ্ণ, এমনকি যমুনায় নাইতে নামা গোপিনীদের বস্ত্রও হরণ করেন শ্রীকৃষ্ণ এই বৃন্দাবনে। ৪০০০এরও অধিক মন্দির হয়েছে কৃষ্ণ প্রেমের গাথা নিয়ে বৃন্দাবনে। ব্রহ্মবৈবর্ত পুরাণের মতে, সত্যযুগের রাজা ক্লেদারের কন্যা কমলার অশেষরূপা, তপস্বিনী, যোগশাস্ত্রে বিশারদ বৃন্দার তপস্যাক্ষেত্র—নামটিও তাই বৃন্দাবন। হিমতে, বৃদ্ধা/অর্থাৎ তুলসী বন থেকে নামকরণ।

মথুরা-বৃন্দাবন পথে ৫ কিমি যেতে বিড়লা অর্থাৎ গীতা মন্দির। মন্দির স্থাপত্য ও শিল্পকলা সুন্দর। সমগ্র ভাগবৎ গীতাভাষ্য উৎকর্ষ হয়েছে গীতা মন্দিরের স্তম্ভে।

বৃন্দাবনে চুকেই বামে ১৫৯০এ অম্বরাধীশ মান সিংহের তৈরি ৭ তলা লাল বেলে পাথরের গোবিন্দ দেব জী-কা পুরাতন মন্দির। মন্দিরটি কারুকার্যময়, মধ্যস্থ গায় স্থাপত্যকলার অনন্য নিদর্শন। গ্রিক ক্রসের আকারে তৈরি মন্দিরের দেওয়াল গড়ে ১০ ফুট পুরু। ধনুকাকৃতি ছাদ হয়েছে ক্যাথিড্রালধর্মী মন্দিরে। ওরঙ্গজেবের ধ্বংসলীলায় ৪টি ভাঙা ভাঙতে মূল দেবতা জয়পুরে স্থানান্তরিত হন। আরও পরে মূর্তি হয়েছে নতুন করে গোবিন্দ মহাপ্রভু, নিত্যানন্দ ও শ্রীরাধার। তবে, মন্দিরটি আজ ভগ্ন অবস্থায় দাঁড়িয়ে। এরই পিছে শ্রীশ্রীরাধা গোবিন্দ জীউ-এর মন্দিরে দেবতা গোবিন্দ জীউ। অগ্রিম টিকিটে অন্নপ্রসাদ মেলে।

বাজারের ডাইনে সুউচ্চ গোপুরম শিরে ১৮৫১য় ৪ লক্ষ টাকা ব্যয়ে শ্রেষ্ঠ গোবিন্দ দাসের তৈরি শ্রীরঙ্গনাথ জী অর্থাৎ অনন্তশয়নে দেবতা বিষ্ণু। দেবী লক্ষ্মী, সৃষ্টির কর্তা ব্রহ্মাও রয়েছেন দক্ষিণী শৈলীতে তৈরি মন্দিরে। তবে, মূল প্রবেশ তোরণটি রাজস্থানী শৈলীর। আর আছেন স্বর্ণালঙ্কারে ভূষিত রৌপ্য সিংহাসনে রাম-লক্ষ্মণ-সীতা। গৌড় ধ্বজ স্তম্ভ অর্থাৎ ১৬মি উঁচু সোনার পাতে মোড়া তালগাছ, শিশুমহল, মিউজিয়ামও আছে মন্দিরে। পৌষ মাসের ১ম একাদশীতে ৭ দিনের উৎসবও বরণীয়।

সামনের গলিপথে স্বল্প যেতে ভক্তজন অশ্রম। ২০০০ অনাথ মহিলা ভক্তন করছেন সাকাল-সাঁঝে আহাযের বিনিময়ে। কিংবদন্তীতে ঘেরা মুক্তলতায় ছাওয়া শ্রীরাধিকা ও শ্রীকৃষ্ণের লীলাভূমি নিখিবন। লীলা শেষে আজও নাকি প্রতি রাতে বিশ্রাম নেন যুগলে। স্বামী হরিদাস মহারাজ শ্রীকৃষ্ণের দর্শনও পান এখানে। সমাধিও রয়েছে সাথকের। হরিদাস জয়ন্তীতে দূর-দূরান্ত থেকে গায়করা আসেন—আসার বসে গানের মহারাজ স্মরণে।

সুন্দর অলঙ্কৃত ইতালিয়ান পাথরে ১৮৭৬এ তৈরি শাহজী মন্দির—এ সোনার রাধারমণ মূর্তিটিও সুন্দর। কুলন ও রাস উৎসবে বাড়ি লঠনগুলি আলোকিত হয়। ফোয়ারাও চালু হয় উৎসবকালে। আরও যেতে যমুনায় বস্ত্রহরণ ঘাট। যমুনা সরে গেলেও কদম্ববৃষ্টি রয়েছে আজও। লাগোয়া কালীর মর্দন মন্দির। স্বল্প যেতে পিতা-মাতা সহ শ্রীকৃষ্ণ মূর্তি হয়েছে নন্দ ভবনে। আর গোপীনাথ জীউ-এর মন্দিরে শ্রীরাধিকা, সখী ললিতা ও বিংশাখা রয়েছেন। মীরাবাই মন্দিরে করতাল হাতে সাধিকা মীরাবাই, শ্রীজীব গোবামীর রাধা দামোদর জী মহারাজ মন্দিরে শ্রীরাধা দামোদর, রাধামাধব, বৃন্দাবন চন্দ্র ছাড়াও নানান মন্দির নানান দেবতা। ২টাকার গোবর্ধন শিলায় শ্রীকৃষ্ণের ডান পায়ে ছাপ, গরুর ছুর, বাঁশি ও লাঠি দেখে নেওয়া যায়। আর আছে শ্রীল কৃষ্ণাস কবিরাজ, শ্রীল জীব গোবামী, শ্রীরাগ গোবামীর সমাধি রাধা দামোদর চত্বরে।

নিকুঞ্জবন বা সেবাকুঞ্জ আজও রাতে লীলা বসে শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ। মন্দির হয়েছে সখী-সখা সহ রাধা-কৃষ্ণ। কুণ্ডও

আছে—বাঁশী দিয়ে খোঁড়া ললিতা কুণ্ড। সীতের পরে প্রবেশ মান। রেমেন রেতিতে ইন্ধনের শীশ্যম আশ্রম—বলমলে সাজে মন্দির, সেবতা শ্রীরাধা-কৃষ্ণ। তেমনই জাঁকাল সমাধি হচ্ছে ইন্ধন প্রতিষ্ঠাতা ১৪৭৭এ প্রয়াত স্বামী প্রভুপাদের। মহাপ্রসাদ কিনতে মেলে মন্দিরে। কালাঘাটের কাছে মদনমোহনজী মহারাজ মন্দিরের মূল সেবতা কারায়ুনিতে স্থানান্তরিত।

বহুবাহারী মন্দিরে ঝাঁকি প্রণয় সেবদর্শনের প্রথা। ১৯২১এ তৈরি মন্দিরে হরিদাস স্বামীর নিধিবনে পাওয়া বহুবাহারী সেবতা। ১৬২৬এ তৈরি রাখাবল্লভ, ১০২৭এ তৈরি যুগলকিশোর, অপরূপ শৈলীমণ্ডিত কাচের মন্দির, লালাবাবুর মন্দির, শ্যামসুন্দর মন্দির, অষ্টসখীর মন্দির, গোপীনাথ মন্দির চলচে-ফিরতে দেখে নেওয়া যায়। অবস্থানও এদের ৩ কিমির মধ্যে বৃন্দাবনে। আর আছে বাদরের বাদরামি বৃন্দাবনের পথে ঘাটে। উচিতও হবে পায়ে পায়ে বারিকশা-অটো-টাঙায় বৃন্দাবন দেখে নেওয়া। এমনকি বৃন্দাবনে অবস্থান করেও অটো বাটাঙায় ১০০ টাকায় মথুরাও বেড়িয়ে নেওয়া যায়।



বৃন্দাবনে থাকারও নানান ব্যবস্থা। রিকাইন্ড/ডাবল রিকাইন্ড ধরমশালা অর্থাৎ গেস্ট হাউস গড়েছেন নানান বাণিজ্যিক সংস্থা। সুসজ্জিত, ডাবল বেডের বাথ সংলগ্ন ঘর ৫০ থেকে ১২৫ টাকায় মেয়ে। এদের মধ্যে উল্লেখ্য: Jaipuria GH, Iskcons International GH, Bhattar Smriti Bhawan, Baladev Das Smriti Bhawan, Nandavan (near Iskcon), Radhakrishna Seva Sangha-Gurukul Rd, Sree Krishna Dham, Maheswari Seva Sadan, Phoglu Ashram, Manorama Goenka GH, Marwari Sevashram. তেমনই অতিথিশালা গড়েছে নানান ধর্মীয় সংস্থা বৃন্দাবনে: শ্রীরামকৃষ্ণ মিশন অতিথিশালা, ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘ, গৌড়ীয় মঠ আশ্রম অতিথিশালা, শ্রীহরি নিকুঞ্জ আশ্রম, ভেক্টেশ্বর মন্দির গেস্ট হাউস উল্লেখ্য। শতাব্দিক সাধারণ ধরমশালাও আছে বৃন্দাবনে: পটাসিয়া, মির্জাপুর, গোবিন্দ আশ্রম, পলিয়াওয়ালা, দিল্লীওয়ালা, অসমওয়ালা, অগ্রবাল, যুগলবিহার, রামযাত্রী নিবাস ছাড়াও নানান। তেমনই হয়েছে ITDC-র নবোদ্যোগ যাত্রীকা নিবাস, Near Police Stn, Vrindavan Kotwali-তে।

মথুরা থেকে রেল সেতুতে বা নৌকায় যমুনা পেরিয়ে যমুনা ব্রিজ থেকে বাস বা টেম্পোয় ১০ কিমি দক্ষিণে মহাবন পৌঁছে পায়ে ৩ কিমি পরিক্রমায় দেখে নেওয়া যায় মহাবন তথা গোকুল। প্রাচীনকাল থেকেই এই বনভূমি শ্রীকৃষ্ণের বাল্য লীলা-নিকেতন রূপে পুজিত হয়ে আসছে। কালের আবর্তে অতীত ধ্বংস পেতে ২ কিমি দূরে যমুনা-পুলিনে নতুন করে গড়ে ওঠে পুরাণ-খ্যাত গোকুল। ১৪৭৯তে বল্লভাচার্যের কালে গোকুলের সমৃদ্ধি। জন্মান্তরী, অন্নকুট, কার্তিক মাসের কৃষ্ণ চতুর্থাতে ত্রিনবত মেলায় যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে গোকুলে। নন্দবাসরে প্রবেশ—১ কিমি যেতে গোকুল পুরানী মহাবনে রয়েছে শ্রীনন্দ (কিন্না) ভবন। কসের হাত থেকে পরিত্রাণ পেতে শ্রীকৃষ্ণ ও বলরাম পালক

পিতা নন্দ ও মাতা যশোদার হাতে প্রতিপালিত হন এখানে। তেমনই আছে চৌরাশিখাষা, বলরাম ও বোগমহারার জন্মস্থান, তৃণাবৃত বধ, উৎসব বন্ধন, পুতনা বধ স্থল গোকুলে। ১২ কিমি ডানহাতি পথে নতুন গোকুল তথা রমন রেতিতে শ্রী উদাসীন কার্ণি আশ্রমে আছেন রমন বিহারী জী অর্থাৎ রাখাকৃষ্ণ।

মথুরা বাস স্ট্যাণ্ড থেকে UP Road Transport-এর বাস প্রতিদিন ৭-০০টায় ১৬০ কিমি পরিক্রমায় ৪৫ টাকায় ব্রজ দর্শনে যাচ্ছে। পথে গীতা মন্দির দেখিয়ে ৮-০০টায় বৃন্দাবন পৌঁছে ৮-৩০টায় বৃন্দাবন ছেড়ে ৫৬ কিমি দূরের নন্দগাঁও যাচ্ছে। টিলার টপে ১২ শতকের শ্রীনন্দবাবার মন্দির। শ্রীকৃষ্ণের পালক পিতা নন্দ ঘোষ ছাড়াও মা যশোদা, কৃষ্ণ-বলরাম মূর্তি রয়েছে। আর রয়েছে শ্রীকৃষ্ণের বাল্যলীলা নিকেতনের নানান স্মৃতি গ্রামময় ছড়িয়ে। অদূরে পান সরোবর—মন্দিরের ছাদ থেকে দেখে নেওয়া যায়। স্বল্প যেতে সংকেত বন অর্থাৎ শ্রীকৃষ্ণ ও শ্রীরাধার সংকেত লেনসেন স্থল। মন্দির হয়েছে, সেবতা—শ্রীরাধা-শ্রীকৃষ্ণ। অদূরে অতীতের ব্রহ্মসান্নিহ আছ হয়েছে বরসান্না—শ্রীরাধিকার জন্মভূমি। ২৫২ সিঁড়ি উঠে টিলার টপের মন্দিরে—শ্রীরাধা-শ্রীকৃষ্ণ। সুন্দর কারুকার্যময় মন্দির। পাহাড়ের চারদিক ব্রহ্মার চতুর্ভুজের প্রতীক। অদূরে প্রেম সরোবর—শ্রীরাধা-শ্রীকৃষ্ণের প্রথম দর্শনস্থল। চারপাশের প্রকৃতিও সুন্দর। দূরে বিলাসঘর, ভাইনে মাথা সিং-এর তৈরি আর এক মন্দির। ২০ কিমি দূরে গিরি গোবর্ধন অর্থাৎ ইন্দ্রের রোষানলে অতি বৃষ্টি থেকে সৃষ্টি বাঁচাতে ৭ দিন ৭ রাত শ্রীকৃষ্ণ গোবর্ধন গিরি উৎপাটন করে এক আতুলে ছাতার মতো তুলে জীবন বাঁচান ব্রজবাসীদের। মন্দিরও হয়েছে ১৫২০এ পাহাড়চূড়ায় আর ৪ কিমি দূরে বাজারের মাঝেও মন্দির হয়েছে বাস পথেই। চলার পথে কুসুম সরোবর। আরও যেতে রাখাকুণ্ড ও শ্যামকুণ্ড। পাশাপাশি দুই কুণ্ড—রানে পূণ্য হয়।

UP Tourism-এর পর্যটক আবাস গৃহ হয়েছে রাখাকুণ্ড, বরসান্না, গোকুল গায়ে।

তেমনই জন্মান্তরীর পরের একাদশীতে মহাপ্রভু শ্রীচৈতন্যের পার্বদ শ্রী সনাতন গোবামীর প্রচলিত মথুরা, বৃন্দাবন, গোকুল, বরসান্না, গোবর্ধন, বললেও, নন্দগাঁও দর্শন অর্থাৎ ৮৪ ক্রোশ বন পরিক্রমায় (২৬৯ কিমি) পায়ে হেঁটে ২২ দিনে টেম্পোয় ৯ দিনে ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘের ব্যবস্থাপনায় চলা যেতে পারে। কার্তিক মাসেও পরিক্রমায় ব্যবস্থা করে গৌড়ীয় মঠ ও মদনমোহন মন্দির (পুরাতন) থেকে। আর কুলনকালে নানান ব্রজবাসী ৮৪ ক্রোশ বন পরিক্রমায় যাচ্ছেন ২১ দিনে পায়ে হাঁটায় ১২০০ টাকায়। ১০ দিনে ঘোড়ার গাড়ি ২৫০০, ৫ দিনে গাড়িতে ৩০০০ টাকায় সাঙ্গ করা যেতে পারে এ সফর। ছুটিও মেলে অতিরিক্ত ধরচায়। প্রয়োজনে ভারত সেবাস্রম সঙ্ঘ,

বৃন্দাবন, উত্তর প্রদেশ বা শ্রীলক্ষ্মীনারায়ণ ব্রজবাসী, পুরাতন গোবিন্দ মন্দির পাড়া, বৃন্দাবন, উত্তর প্রদেশ, PC-281121, ৩ 442015কে যোগাযোগ করা যেতে পারে। এছাড়াও মন্দির রয়েছে সহস্রাধিক বৃন্দাবনে। সকাল ৭—১১-০০ আবার ১৬—১৯-০০টা খোলা থাকে বৃন্দাবনের মন্দির।

অগ্রহায়ণের শুক্লাদশমীতে কংসবধ লীলা আর এক বরণীয় উৎসব। বাল-বৃদ্ধ-যুবা মসের বেশে গুরসে গুরসে ধ্বনিত আকাশ-বাতাস মথিত করে বীরদর্পে কংসের ডামি বধ করে। কতই না তাদের লক্ষ্যবস্তু, কতই না হাঁক-ডাক—*কংস মারো মায়াপুরী আয়ো।* নৃত্যের তালে তালে কৃষ্ণ-বলরামকে কাঁধে নিয়ে মিছিল চলে। বিশ্রান্তি ঘাটে উৎসবের সমাপ্তি। *হিন্দোল* অর্থাৎ শ্রাবণ মাসের শুক্লা একাদশী থেকে পূর্ণিমা পর্যন্ত দোলন যন্ত্রে ভগবান শ্রীকৃষ্ণের দোলনরূপ খুলন, হোলি, জন্মাষ্টমী চমকপ্রদ উৎসব মথুরা-বৃন্দাবনে।

সংকাস্য

শ্রাবস্তীতে অলৌকিকত্ব দর্শনের পর তেত্রিশ কোটি সেবতার স্বর্গে যান বুদ্ধ মাকে ধর্মশিক্ষা দেওয়ার জন্য। স্বর্গে অভিধর্ম প্রচারের পর গৌতম বুদ্ধ সংকাস্যেই অবতরণ করেন স্বর্গ থেকে—সেই স্মৃতিতে আরক-সুপ হয়েছ। সেই থেকে বৌদ্ধতীর্থও এই সংকাস্য।

আগ্রা থেকে রেল সিকোহাবাদ পৌছে শাখা লাইনে ৭-২০ ও ১৬-০০টার ট্রেন ৩ ঘণ্টা পাখনা স্টেশন। পাখনা থেকে ১১.৩ কিমি দূরে সংকাস্যের এই বৌদ্ধতীর্থ। আবার কলকাতা থেকে নিম্নর পথেও সিকোহাবাদ হয়ে বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। দূরত্ব ১২০১+৮০+১১.৩ অর্থাৎ ১২৯২.৩ কিমি কলকাতা থেকে। থাকার জন্য PWD IH ও ধরমশালা আছে।

মহান বৌদ্ধতীর্থ:

বুদ্ধের মহাপরিনির্বাণ অর্থাৎ দেহাবসানের পর নশ্বরদেহ ভস্মীভূত হতে প্রিয় শিষ্য মহাকাশ্যপ বুদ্ধের চিতাভস্ম ৮টি স্বর্ণ কলসে ভরে ৮ জন শিষ্যকে দেন ৮ স্থানে ৮টি স্থপ গড়তে। কুশীনগর থেকে চিতাভস্ম যায় দেশের নানাদিকে। স্থপও গড়ে ওঠে—রাজগৃহ, বৈশালী, কপিলাবস্ত, অন্নকল্প, রামগ্রাম, বৈতীপ, পাবা এবং কুশীনগরে। *যা আজ বৌদ্ধতীর্থ রূপে সর্বজন বিদিত। তবুও যেন মহান চার বৌদ্ধতীর্থ—নেপালের লুম্বিনীতে বুদ্ধের জন্ম; বুদ্ধগয়ায় পিপুল বৃক্ষ তলে সিদ্ধার্থের দিব্যজ্ঞান বা বোধের নবোদয় লাভ; বারাণসীর অদূরে সারনাথ-এ প্রথম বৌদ্ধধর্মের উদঘোষ; আর গোরক্ষপুরের কাছে কুশীনগর-এ বুদ্ধের মহাপরিনির্বাণ অর্থাৎ দেহাবসান।*

সংকাস্য থেকে ৫০ কিমি পূর্বে আর কানপুরের ৮০ কিমি পশ্চিমে কানপুর-কাশগঞ্জ মিটারগেজ রেলের হর্বর্ধনের (৭ শতক) রাজধানী কসৌজ বা কাঞ্চকুজ বেড়িয়ে নেওয়া যায়। গজনীর মামুদ লুণ্ঠন করে ধ্বংস করে অতীতের রাজধানী

নগরী। আরও পরে ১৫৪০এ শের শাহর হাতে হুমায়ুনের পরাজয় ঘটে এই কনৌজে। আর্কিওলজিক্যাল মিউজিয়মে দেখে নেওয়া যায় অতীত। তবে, অতীত বিনষ্ট হলেও আতরের সুবাস দূর-দূরান্ত থেকে পর্যটক আকর্ষণ করে আজও।

থাকারও ব্যবস্থা মেলে UP Tourism-এর *পর্যটক আবাস* গৃহে A-C D ২৭৫ A/C D ৩৫৫ ডর্মি বেড ৬০ টাকা।

কাশিয়া

অতীতের কুশীনগর আজ হয়েছে কাশিয়া। কাশিয়া বাজার থেকে ২ কিমি ব্যবধানে বৌদ্ধতীর্থ। নেপালে কপিলাবস্ত রাজ্যের লুম্বিনীতে সিদ্ধার্থের জন্ম। পিতা শুদ্ধোধন, মাতা মায়াদেবী। ৩৫ বছর বয়সে কপিলাবস্ত থেকে সত্যারোহণের উদ্দেশ্যে তার জয়যাত্রা শুরু। শ্রাবস্তী ও বৈশালী হয়ে বোধিপ্রাপ্ত হন গয়া অর্থাৎ বোধগয়ায়। আর ৮০ বছর বয়সে কুশীনগরে হিরণ্যবতী নদীর পারে শালবীথিতলে মহামতি বুদ্ধের মহাপরিনির্বাণ লাভ। অতীতের পরিনির্বাণ চেতোর একটি শিলালিপিও আবিস্কৃত হয়েছে ১৮৭৬এ। আর আছে নির্বাণ মন্দির—এক স্থপকে ঘিরে। মূর্তি হয়েছে মন্দিরে ডানপাশ ফিরে হাতের উপর মাথা রেখে অন্তিম শয়নে শায়িত ভগবান তথাগতের। নানান ধর্মসাবশেষ আশপাশ চারপাশ জুড়ে। আর আছে পুরাতন আশ্রম, মঠ, মন্দির, কংওয়ার মাজার স্থান, বুদ্ধের শেষকৃত্যের স্মরণে তৈরি অঙ্গার চেতা বা রামাভর লীলা লাগোয়া আশ্রম। আর হয়েছে নতুন তৈরি চীন, বার্মিজ ও তিব্বতীয় বৌদ্ধ মন্দির। মিউজিয়মও হয়েছে অতীত সংগ্রহের। সাঁচীরই আদিকে স্থপ গড়েছে জাপান কুশীনগরে।



UPSTDC-র Travellers' Bungalow—Pathik Niwas, ৩ 71038, DAB ৫০০ ৮২৫ A/C D ৮৫০ ১১০০, এপ্রিল থেকে সেপ্টেম্বরে রিবেট মেলে; অব: Manager, Kushinagar, Deoria, U P-274403. আর আছে PWD IH, Mungadaw Arakanese RH, ছাড়াও বিড়লা, বুদ্ধ ও চীনা ধরমশালা। পোকাপাটের অভাব—২২ কিমি দূরে কাশিয়ায় হোটেল-রেস্তোরাঁ মেলে।

লঙ্কোর পথে কুশীনগর বেড়িয়ে নেওয়া যায়। পথেই পড়ে গোরক্ষপুর জংশন। কলকাতা থেকে ৮১১, লঙ্কোর দূরত্ব ২৭৮ কিমি। আর গোরক্ষপুরের ৫৩ কিমি পূর্বে কাশিয়া। বাস যাচ্ছে গোরক্ষপুর রেল স্টেশন থেকে ১২ ঘণ্টার কুশীনগর হয়ে কাশিয়া বাজার। বাস আসছে ৩৫ কিমি দূরের জেলা সদর দেওরিয়া থেকেও কাশিয়ায়।

আবার গোরক্ষপুর থেকে বস্তি হয়ে ১১৬ কিমি দূরে বুদ্ধ অর্থাৎ সিদ্ধার্থের জন্মস্থান নেপালের লুম্বিনীও বেড়িয়ে ফেরা যায়। এছাড়া গোরক্ষপুর-গোশা শাখা রেলের নওগড় স্টেশনে পৌছে ৩৩ কিমির বাস পথে কাকারওয়া হয়ে আরও ১১ কিমি দূরের লুম্বিনী যাওয়া চলে। বর্ষায় দুর্গম হয়ে পড়ে এপথ। বাসও অনিয়মিত এপথে। তাই উৎসাহীদের উচিত হবে গোরক্ষপুর থেকে বাসে ৩ ঘণ্টার

ভারত সীমান্তের সোনালি পৌছে ভৈরোয়া হয়ে লুধীনা বেড়িয়ে নেওয়া। বাসও চলে নিয়মিত গোরক্ষপুর থেকে সোনালি, সীমান্ত পেরুতেই ভৈরোয়া, ভৈরোয়া শহর থেকে লুধীনার বাস মেলে। পথের দূরত্ব (৯০+২+৩২+২২) ১১৬ কিমি। নেপালের গোখরা ও কাঠমাণ্ডুও চলা যেতে পারে গোরক্ষপুর, সোনালি, ভৈরোয়া হয়ে। নিয়মিত বাসও চলে এ-পথে। হোটেলও আছে নানান গোরক্ষপুর ও ভৈরোয়ায়।

সম্রাট অশোকের তৈরি ২০০০ বছরেরও প্রাচীন পিলারে খোদিত রয়েছে আজও—এখানেই বুদ্ধ জন্মগ্রহণ করেন। আর রয়েছে—পূণ্যপুত্র, মায়াদেবীর মন্দির, ত্রিপুরা থেকে ৪ শতকের নানান স্থপের ধ্বংসাবশেষ, মৌর্যকালের মনাস্তির ভগ্নাবশেষ, গৌতম বুদ্ধর মন্দির, তিব্বতীয় মনাস্তি, ইন্টারন্যাশনাল পিস ফ্রন্ট ও খেত মর্মরে মহেশ্ব স্তম্ভ লুধীনাতে। অতীতের ধ্বংসাবশেষের জন্য লুধীনার প্রসিদ্ধি। থাকার জন্য ধরমশালা ও Lumbini G H-এ DAB ভারতীয় ও নেপালীদের ৩০০ বিদেশীদের ৬০০ আছে। লুধীনার ২৭ কিমি পশ্চিমে আজকের Tilaurakot ছিল অতীতকালের কপিলাবস্তু।

শ্রাবস্তী

৮ বৌদ্ধতীর্থের অন্যতম শ্রাবস্তীও বেড়িয়ে নেওয়া যায় গোরক্ষপুর থেকেই। গোরক্ষপুর-গোশা শাখা রেলের বলরামপুর থেকে ১৮ কিমির বাস পথে শ্রাবস্তী। নিকটতম রেল স্টেশন Gainjaha. আর নিকটতম বিমানবন্দর লক্ষৌ থেকে গোশা হয়ে বেড়িয়ে ফেরা যায় এই বৌদ্ধতীর্থ। লক্ষৌ থেকে দূরত্ব ১৯৭, গোরক্ষপুর ২৫৩, অযোধ্যা ১৪৭ কিমি। বাসও সংযোগ গড়েছে ব্রহ্মীর সাথে। ইতিহাসখ্যাত কোশলরাজের রাজধানী শহর শ্রাবস্তী। ২৫টি বর্ষা ঋতু বাস করেন বুদ্ধ শ্রাবস্তীতে। এই শ্রাবস্তীতেই বুদ্ধ নাস্তিক কোশলরাজ প্রসেনজিতের বিশ্বাস গড়েন হাজার পাণ্ডুর পদ্মে বসে দিব্যজ্ঞানের অলৌকিকত্ব দেখিয়ে। বুদ্ধর বিশ্বজয়ের যাত্রা শুরুও এই শ্রাবস্তী থেকে। তবে, অতীত আজ লোপ পেতে বসেছে। নামও ছিল সেকালে সাহেথ-মাহেথ। জেতবন বিহারের পূর্বদ্বারে মহামতি অশোকের তৈরি নিনার দু'টিও লুপ্ত। নতুন করে মন্দির গড়েছে চীন ও বর্মিজ বৌদ্ধ সম্প্রদায় শ্রাবস্তীতে। আবার জৈন তীর্থধর মহাবীরও বার বার এসেছেন শ্রাবস্তীতে—সেকারণে জৈন তীর্থও শ্রাবস্তী। থাকার জন্য PWD IH. টীনা ও বর্মিজ টেম্পল রেন্ট হাউস ছাড়াও ধরমশালা আছে শ্রাবস্তীতে। আর বলরামপুরে হোটেল মেলে।

গোরক্ষপুর

রাষ্ট্রী ও রোহিনী নদীর পাড়ে ৭৭ মি উঁচুতে NH-28 ও 29-এ গোরক্ষপুর। অতীতে নাম ছিল এর রামগ্রাম। রাজধানীও ছিল কোলিয়াদের সেকালে। দীর্ঘ পরে যোগী

গোরক্ষনাথ থেকে জায়গার নাম হয় গোরক্ষপুর। তাপমান গ্রীষ্মে ৪৩.২—১৭.৬° আর শীতে ৩১.৫—৬.২° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। নিজস্ব আকর্ষণ উল্লেখ্য না হলেও উত্তর ও পশ্চিম ভারত থেকে নেপাল যাত্রায় জর্জেন স্টেশন গোরক্ষপুর। উত্তর-পূর্ব রেলের সদর দপ্তরও বসেছে গোরক্ষপুরে। ট্রেন যাচ্ছে দিল্লী ১৪২ ঘট্টায় ৭৮৩ কিমি, লক্ষৌ ৫২ ঘ ২৭৬, মুম্বাই ৩৫ ঘ ১৬৯০, বারাণসী ৫২ ঘ ২৩১। এমনকি কুমায়ুন পাহাড়ের যাত্রী নিয়ে নবতম ব্রডগেজ লাইনে কাঠগোদামও যাচ্ছে ট্রেন—হাওড়া-গোরক্ষপুর-কাঠগোদাম এক্স।

রেল, বিমান ও বাস আসছে ২৭৬ কিমি দূরের লক্ষৌ থেকে গোরক্ষপুরে। পথে পড়ে অযোধ্যা। অযোধ্যার দূরত্ব ১৩৬ কিমি। প্রতি আশ ঘট্টা অন্তর ২৩১ কিমি দূরের বারাণসী থেকেও বাস ও ট্রেন আসছে গোরক্ষপুরে। এলাহাবাদের দূরত্ব ১৩৯, দিল্লী ৭৮৩, আগ্রা ৬২৪ কিমি। তেমনই বাস যাচ্ছে বৌদ্ধতীর্থ শ্রাবস্তী, লুধীনা, ১২ ঘট্টায় কাশ্মির রেল স্টেশন থেকে, বারাণসী যাচ্ছে ৬২ ঘট্টায় কাছারি স্ট্যান্ড থেকে, এছাড়াও উত্তর ও পূর্ব ভারতের নানান দিকে গোরক্ষপুর থেকে।

কলকাতা থেকে ৩০১৭ হাওড়া-কাঠগোদাম এক্স প্রতিদিন ২১-৫০এ, ১৩৫৭ দিন ১৩-০০টার হাওড়া-গোরক্ষপুর ৫০৪৭ পূর্বাল এক্স হাওড়া ছেড়ে ঝাঁঝা/ মধুপুর/ বরায়ুনি/ সমষ্টিপুর/ মজফরপুর হয়ে ২০ থেকে ২২ ঘট্টায় গোরক্ষপুর যাচ্ছে। ট্রেন যাচ্ছে হাতিয়া-রাঁচি-গোরক্ষপুর মৌর্য এক্স, গোরক্ষপুর-বারভাঙ্গা-জয়নগর এক্স, গুয়াহাটি-দিল্লী আযুধ অসম এক্স, জম্মু-গুয়াহাটি লোহিত এক্স, নিউ দিল্লী-বরায়ুনি বৈশালী এক্স, দিল্লী-বারভাঙ্গা শহীদ এক্স, লক্ষৌ-বরায়ুনি এক্স, গোয়ালিয়র-ছাপরা মেল, অমৃতসর-বরায়ুনি এক্স, গোরক্ষপুর-দাদার এক্স গোরক্ষপুর হয়ে। আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ভাটনি, ছাপরা, সিওয়ান, বাম্বিকানগর, গোশা, বরায়ুনি ছাড়াও ভারতের দিকে দিকে গোরক্ষপুর থেকে।

বাস থেকে ১ কিমি দূরে রেল স্টেশন। বিমান বন্দরের দূরত্ব ৯ কিমি। ট্যুরিস্ট অফিস বসেছে রেল স্টেশন ও শহরমুখী পার্ক রোডে গোরক্ষপুরে। রেল স্টেশনের সামনে থেকে (৫—২০-০০টার) মুম্বাই বাস যাচ্ছে নেপাল সীমান্তে ৯৩ কিমি দূরের ভারতীয় সীমান্ত শহর সোনালি। সোনালিতে বাস মেলে ৫—১৯-০০টার প্রতি ২ ঘট্টা অন্তর ৩ ঘট্টায় গোরক্ষপুরের, বারাণসী যাচ্ছে সকাল-সাঁকে ৯ ঘট্টায়, এলাহাবাদ যাচ্ছে ১২ ঘট্টায়, লক্ষৌ যাচ্ছে ১১ ঘট্টায়।

সোনালিতেও থাকার নানান ব্যবস্থা—সীমান্ত থেকে ৭০০ মি দূরে UP Tourism-এর H Niranjana, Sunola, Maharajanji, A-C D ২২৫ ২৭৫ A/C D ৩৫০ ডর্মি ৫০, Sanju L আছে। ভবও অবস্থানে ভৈরোয়ায় হোটেলের আধিক্য মেলে। উচিতও হবে যাতায়াতের পথে ভৈরোয়ায় রাতে অবস্থান করা।

পায়ে পায়ে বা রিকশায় সীমান্ত পেরিয়ে নেপাল সীমান্তের ভৈরোয়া থেকে সকাল ৫—৯-০০ ও ১৫-৩০—২০-০০টার ঘট্টায় যাত্রা ছেড়ে ১২ থেকে ১৪ ঘট্টায় ৩৮৫ কিমি দূরের কাঠমাণ্ডু যাচ্ছে প্রাইভেট বাস। যাত্রীর আর্থিক বিশেষ বাস চলে। ১৮০ কিমি দূরের পোখরাও যাচ্ছে ৭ থেকে ৮ ঘট্টায় সকাল ও সাঁকে। আর নেপাল গভর্নমেন্টের SAJA বাস যাচ্ছে ভৈরোয়া

বাজারের ইয়েটি হোটেলের বিপরীত থেকে ৬-৩০, ৭-৩০, ১৮-৩০, ১৯-৩০। গতি এসের ফ্রন্ট, টিকিটের অভাবিক চাহিদা হেতু অগ্রিম বুকিং বাঞ্ছনীয়। গোরক্ষপুর থেকে যাত্রার উচিত হবে সকাল ৫-০০টার বাসে। গোরক্ষপুর ছেড়ে তৈরোয়া থেকে সকালের বাস ধরে দিনে দিনে কাঠমাণ্ডু পৌঁছে যাওয়া। পথশোভার আকর্ষণে দিনের বাস আদরশীল হবে। হোটেলও আছে নানান তৈরোয়ায়। আবার সীমান্ত থেকে ৩ কিমি দূরে তৈরোয়া শহর থেকেও দিনভর সার্ভিস বাস মেলে গোখরায়—বস্টা আটকের পথ।

আর এক বৌদ্ধতীর্থ ২২ কিমি দূরের লুধিনীরও বাস আছে তৈরোয়া সিটি থেকে ১ ঘণ্টায়। বিক্রম পথও গিয়েছে লুধিনীর ভারতের আর এক সীমান্ত নওগড়/কাকারওয়া হয়ে। এপথের দূরত্ব ১০৮ কিমি। তবে উচিত হবে চলার ঝাঁকে গোরক্ষপুর শহর থেকে ৫ কিমি দূরে নাথ সঙ্ঘদায়ের ধর্মগুরু গোরক্ষনাথের মন্দিরটি দেখে চলা।

গোরক্ষপুর-বস্তি/গোতা শাখা রেলো গোরক্ষপুর জং থেকে ৭-১০, ১৩-১৫, ১৩-৩০, ১৭-২৫, ১৮-২০এর প্যাসেঞ্জার ট্রেনে ১ ঘণ্টায় ২৭ কিমি দূরের মঘর (Maghar) পৌঁছে রেল স্টেশন থেকে ৫ মিনিটের পায়ে হাঁটা পথে সড়কবীরের সমাধিও দেখে নেওয়া যায়। কবীরের মৃতসেহ নিয়ে হিন্দু ও মুসলিম উভয়ের দাবি নস্য্য করে দেহটি ফুলে স্নানোত্তরিত হতে তিক্ততা ভুলে আধা ভাগ করে হিন্দুরা মন্দির আর মুসলিমরা মকবরা গড়ে সমাধিতে। তবুও প্রাচীর ব্যবধান গড়েছে মন্দির ও মসজিদের মাঝে। পবটনে উদ্বেগ না হলেও ভক্তজনেরা বেড়িয়ে নিতে পারেন। ফেরার ট্রেন মেলে ৮-০০, ১০-০৮, ১৩-১০, ১৮-১০ ছাড়াও নানান মঘর থেকে গোরক্ষপুরে।



থাকারও নানান হোটেল গোরক্ষপুরে। রেল স্টেশনের বিপরীতে Standard H, S ১২৫ D ২০০; T ২২৫; H Raj, S ১০০ D ১৫০; A/C D ৩০০; Gupta Tourist L, D ১২৫-২০০; H Siddhartha, S ১০০ D ১৭৫ T ২২৫; A/C S ২২৫ D ৩০০; Modern H, D ১৫০-

২২৫। রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে Nepal Rd-এ: H Upvan, S ১৫০ D ২৫০; লাগোয়া *H Bobina, Nepal Rd, Gorakhpur-273001, D 338677, S ২৫ D ৪৫ US\$। শহরের গোলধরকে ঘিরে—H President, S ১৭৫-২৫০ D ২২৫-৩০০ A/C S ৩২৫ D ৪৫০; H Marina, D ২০০-৩৫০, থাকা ও নিরামিষ আহার্যে অনন্য। H Amber, S ৮০ D ১৫০; H Kailash, D ১২৫-১৭৫; H York, D ২০০; H Ganesh, Punjab H, রেলের রিটায়ারিং রুমও আছে গোরক্ষপুরে।

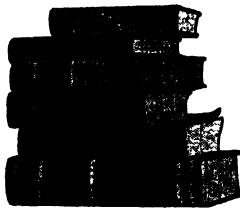
আলিগড় : আগ্রা ৮২, দিল্লী ১৩৫, কানপুর ২৯২, বেরিলি থেকে ১৭৪ কিমি দূরে আলিগড়। অতীতের কয়েল (Koil) ১৭৭৬এ নামান্তর ঘটে হয়েছে আলিগড় অর্থাৎ High Fort. শহর থেকে ৩ কিমি উত্তরে ১১৯৪এ তৈরি দুর্গ সংস্কার হয়ে আধুনিকতা পায় ১৫২৪এ। ঔরঙ্গজেবের মৃত্যুর পর আফগান, জাঠ, মারাঠা আর রোহিলদের সংঘর্ষে মালিকানা বদল হয় বার বার। ব্রিটিশের দখলে যায় ১৮০৩এ। তবুও যেন আলিগড়ের সমধিক খ্যাতি তার মুসলিম বিশ্ববিদ্যালয়ের জন্য। মুসলিমদের পাশ্চাত্য শিক্ষায় অনুপ্রাণিত করতে স্যার সৈয়দ আহমাদ গড়ে তোলেন বিদ্যালয়—কালে কালে বিশ্ববিদ্যালয়। বিশাল চত্বর জুড়ে বিশ্ববিদ্যালয়ের নানান শাখা, প্রতিটি শাখার পৃথক পৃথক বাড়ি—মোগলি শৈলীতে গড়া। এমনকি পাকিস্তান রাষ্ট্রের ব্লু-প্রিন্টও তৈরি হয় এই বিশ্ববিদ্যালয়ে।



*H Ruby, opp Roadways Bus Stand, G T Rd, Aligarh-202001, D 28443, S ২৫০-৩২৫ D ৩৫০-৪২৫ A/C S ৫৫০ D ৬৫০ ছাড়াও হোটেল আছে নানান আলিগড়ে। বাসও সংযোগ গড়েছে সারা উত্তর ভারতের সাথে আলিগড়ের। দিল্লী ও আগ্রা থেকে বাস মেলে মুম্বাই, ট্রেনও আছে দিকে দিকে আলিগড় থেকে।

ছোটদের মনোনিবাস

অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য □ শিবরাম চক্রবর্তী □ পরিমল গোস্বামী □
খগেন্দ্রনাথ মিত্র □ যোগেন্দ্রনাথ সরকার □ সুকুমার দে সরকার □ হেমেন্দ্রকুমার রায় □
বরণীয় লেখকদের
স্মরণীয় লেখার
স্বয়ং সম্পূর্ণ খণ্ড
প্রতি খণ্ড ১০০.০০



মুদ্রণ পারিপাট্যে অনবদ্য □
ডি টি পি কম্পোজ □
ম্যাগলিথো কাগজ □
রয়্যাল অস্ট্রেলো সাইজ □
অফসেট মুদ্রণ □
পাতায় পাতায় ছবি □

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি □ এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট
কলকাতা-৭০০০০৭ ☎ : ২৪১২৩৮৬/২৪১৪৬০৮

হরিয়ানা

১৯৬৬ খ্রিস্টাব্দের ১ নভেম্বর পাঞ্জাবের হিন্দিভাষী এলাকাকে নিয়ে নতুন করে রূপ পেয়েছে হরিয়ানা রাজ্য। উত্তরে হিমাচল প্রদেশ, পশ্চিমে পাঞ্জাব, দক্ষিণে রাজস্থান, পূর্বে উত্তর প্রদেশ। আর দিল্লীকে ঘিরে রেখেছে উত্তর, দক্ষিণ ও পশ্চিম জুড়ে হরিয়ানা। পর্যটন কেন্দ্র সীমিত হলেও অবস্থান এদের দিল্লীর পশ্চিম জুড়ে সমতল ও আরাবল্লী পর্বতে। পর্যটকদের মনোরঞ্জননের নানান ব্যবস্থা, গড়ে ওঠেছে অতি আধুনিক সাজের নানান ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্স হরিয়ানায়। দিল্লী-আগ্রা রোডে: সুরবকুণ্ড, বাদখাল লেক, হোদাল; দিল্লী-জয়পুর রোডে: সুলতানপুর, দমদমা লেক, সোহনা; দিল্লী-অমৃতসর রোডে: পাণিপথ, কুরুক্ষেত্র, কান্নয়া লেক, কালেশ্বর ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি, পিঞ্জোর গার্ডেনের অবস্থান। দিল্লী-চণ্ডীগড় রোডে: স্কাইলার্ক, পারাকীত, কিং ফিসার, ছাড়াও হোটেল, মোটেল, রেস্টোরাঁ হয়েছে প্রতিটি রাজপথে। পাণিসের নামে নাম। উড়েও বেড়ায় চেনা-অচেনা দেশী-বিদেশী নানান পাখি হরিয়ানার আকাশ ছেয়ে। এপ্রিলের মধ্যভাগে বলমলে দেশাঙ্গী জাতীয় উৎসবের রূপ নিয়েছে হরিয়ানায়। এরও পর্যটক আকর্ষণ অন্যকিছু।

হরিয়ান অর্থাৎ সেবলোক, এককালে পাঞ্জাবের এই অংশে সেবতারা বাস করতেন। মহাভারতখ্যাত কুরুক্ষেত্রের ধর্মযুদ্ধও ঘটেছিল আজকের হরিয়ানায়। আজও এরা যুদ্ধবিদ্যায় যথেষ্ট পারদর্শী। এমনকি ১৮৫৭র স্বাধীনতা সংগ্রামেও হরিয়ানার অবদান উল্লেখ্য। কৃষিতেও বিপ্লব এনেছে হরিয়ানা। জন্ম মৃত্তকের ঘটিতি পুরিয়ে আজ সে যোগান দিচ্ছে সারা ভারতকে। দুগ্ধ ও দুগ্ধজাত দ্রব্য উৎপাদনেও হরিয়ানা আজ ভারত রাষ্ট্রে অন্যতম। জাতীয় আয়ে পাঞ্জাবের পরেই ভারত রাষ্ট্রে হরিয়ানার স্থান। হরিয়ানার আর এক স্বরঙ্গীয় ঘটনা—একটি শিশু একটি গাছ পরিকল্পনায় বনমহোৎসব। ১৯৮১-৮২তে ৬ কোটি, ৮২-৮৩তে ১২ কোটি বৃক্ষ রোপণ করেছে হরিয়ানা। সরকারি পরিচালনাধীন হরিয়ানা রোডওয়েজের আড়াই সহস্রাবিধক বাস সড়ক সংযোগ গড়েছে সারা রাজ্য জুড়ে।

ভৌগোলিক অবস্থান পাঞ্জাবেরই মতো। রাজ্যের সদর দপ্তরও বসেছে পাঞ্জাব ও হরিয়ানার একসাথে চণ্ডীগড় শহরে। তবে, আবার ভাষার ভিত্তিতে রদবদল ঘটতে চলেছে পাঞ্জাব ও হরিয়ানা রাজ্যে।

চণ্ডীগড়: পাঞ্জাব অংশে চণ্ডীগড় দেখুন।

কনডাক্টেড ট্যুর: হরিয়ানা ট্যুরিজম, ১১১-১১৩, সেক্টর ১৭-৮, চণ্ডীগড়-১৬০০১৭, ☎ ৩১০২২ থেকে কনডাক্টেড ট্যুরে ৪০ টাকায় চণ্ডীগড়, ৬৫ টাকায় পিঞ্জোরসহ চণ্ডীগড়,

৪০ টাকায় ছাটীবীর দেখিয়ে আনে। শিশুদের রিবেট মেলে ভাড়া। নানানধর্মী গাড়িও ভাড়া মেলবে এদের কাছে। Chanderlok Building, 36 Janpath, New Delhi-110001, ☎ 3324911-তেও দপ্তর বসেছে হরিয়ানা ট্যুরিজমের। প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে হরিয়ানা দেখাতে দিল্লী থেকে এরা।

পিঞ্জোর উদ্যান

চণ্ডীগড় থেকে ২০, আঝালা ৫৫, কালকার ৪ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে আঝালা-কালকা NH-২২-এ ভারতের প্রাচীনতম স্বাদ্বীকৃত উদ্যান পিঞ্জোরে। বাস ও ট্যাক্সি যাচ্ছে সেক্টর ১৭ চণ্ডীগড় থেকে আর কালকা থেকে বাস আসছে রেল স্টেশন থেকেই। ঘন্টায় ঘন্টায় বাস। আবার হরিয়ানা ট্যুরিজম প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে চণ্ডীগড় থেকে পিঞ্জোর দেখাতে ছুটির দিনগুলিতে।

পাঞ্জাবের গভর্নর ফিডাই খানের (ঔরঙ্গজেবের পালিত ভাই) হাতে ১৭ শতকে ৭ ধাপে রূপ পেয়েছে পিঞ্জোর উদ্যান। প্রসার পেয়েছে উত্তরকালে পাতিয়ালা রাজাদের হাতেও। ধাপের পর ধাপ নিচে নামা, যোগল ও রাজস্থানী শৈলীর শিশমহল, এর নিচে রঙমহল, জলমহল—ভবনের পর ভবন, মনোরঞ্জনের নানান ব্যবস্থা। পিঞ্জোরের ফোয়ারাও (রবিবার চালু) আর এক অবিস্মরণীয় অভিজ্ঞতা। প্রবাদ, বনবাসকালে পাণ্ডবরাও কিছুকাল অবস্থান করেন পিঞ্জোরে। নামটিও পঞ্চপাণ্ডব থেকে পঞ্চপুর বা পাঁচপুরা ছিল সেকালে। কালে কালে পিঞ্জোর হয়ে থাকবে। আর হয়েছে শিশু উদ্যান, মিনি চিড়িয়াখানা, জাপানিজ শৈলীর বাগিচা পিঞ্জোরে। অদূরেই NH ২২-এ ৯-১১ শতকের ভীমা দেবী মন্দিরে দেবতা শিব ছাড়াও ছিলেন আরও পাঁচ দেবতা। এরও ভাস্কর্য তথা দেব আকর্ষণ কম নয় পর্যটকদের কাছে।

এমনকি, হরিয়ানার হিসার জেলার কুশাল গ্রামে প্রাক হরপ্পা কালের (৫০০০ বছর আগের) পরপর ৩টি পর্যায়ের হদিশ মিলেছে। পাওয়া গেছে সিলমোহর, ২টি রৌপ্য মুকুট, গলার হার, বালা, বাজু ছাড়াও নানান কিছু। খননে অনু-সন্ধান চলাছে ডুনা শহর থেকে ১২ কিমি দূরে সরস্বতী নদীর বামপাড়ে ৩০ একর জায়গা জুড়ে প্রত্নতত্ত্ব দপ্তরের ১৯৮৬ খ্রি থেকে আজও।



বেগম সাহেবাবের গ্লেন্সার রিসর্ট—রঙমহল, শিশমহল হরিয়ানা ট্যুরিজমের Yadavindra Gardens Budgetiger Motel, Pinjore, ☎ Kalka 455, DAB ৩০০-৩০০ সুইট ৫৫০-৭৫০।

কুরুক্ষেত্র

পুরা চ রাজর্বিবরণে ধীমতা, বহন বর্ষণ মিতেন তেজসা
প্রকটমেতৎ কুরুশা মহাশ্বনা, ততঃ কুরুক্ষেত্র জিতীহ পপ্রবে ॥
পর্বটক আকর্ষণ যথেষ্ট উল্লেখ্য না হলেও হিন্দু তীর্থ-
যাত্রীদের কাছে চারযুগের ধর্মক্ষেত্র কুরুক্ষেত্র এক পবিত্র
তীর্থ। ভারতীয় আর্ষজাতির সর্বপ্রাচীন ধর্মক্ষেত্রও এই
কুরুক্ষেত্র। পুরাকালে রাজা কুরু এখানে তপস্যা করেন—
জয়গার নামও তাই কুরুক্ষেত্র। কথিত আছে, মহাভারতের
১৮ দিন ব্যাপী ধর্মযুদ্ধ ঘটেছিল এই কুরুক্ষেত্রেই। বিশ্বের
বৃহত্তম যুদ্ধও কুরু ও পাণ্ডবদের এই ধর্মযুদ্ধ। যখন নিধনে
ব্যাকুল অর্জুন যখন যুদ্ধ থেকে বিরত থাকতে চান তখন
তার সারথি শ্রীকৃষ্ণ নিকাম কর্ম সম্পর্কে একটি নাতিদীর্ঘ
ভাষণ দেন জ্যোতিষ্মরে শিব সকাশে—যা বাণী হয়ে
ভাগবত গীতায় স্থান পেয়েছে। ভাগবত গীতাহিন্দুদের কাছে
অমৃত-সমান। স্মারকসঙ্গে সুসজ্জিত বাগিচা হয়েছে।
সূর্যগ্রহণের সময় এখানে এক বর্ণাঢ্য মেলা বসে। ঐ সময়
কুরুক্ষেত্রের সরোবরে স্নানে সহস্র অশ্বমেধ যজ্ঞের পুণ্য হয়।
এই বিশ্বাসে সারা ভারত থেকে তীর্থযাত্রীরা আসেন
সূর্যগ্রহণে কুরুক্ষেত্রে স্নান করতে। কথিত আছে, কুরুক্ষেত্রে
মৃত্যু হলে আত্মার মোক্ষলাভ হয়।

হরিয়ানা □ রাজধানী: চণ্ডীগড়। আয়তন: ৪৪২১২
বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ১৬৩১৭৭১৫। ভারতের
লোকসংখ্যার হারে: ১.৯৩%। পুরুষ :
৮৭০৫৩৭৯। নারী: ৭৬১২৩৩৬। ১৯৮১-৯১এ
লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৩৩৯৫৫৯৬। বৃদ্ধির হার:
২৬.২৮%। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৮৭৪। প্রতি
বর্গ কিমিতে বাস: ৩৬৯। সাক্ষরের হার: ৫৫.৩৩%।
প্রধান ভাষা: হিন্দী; পাঞ্জাবী ও ইংরেজিরও চল
আছে রাজ্য জুড়ে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়:
৮৬৯০.০০ টাকা (১৯৯১)।

১৫ দিনে বেড়িয়ে আসুন দিল্লী, পাঞ্জাব, হিমাচলের
সঙ্গে জুড়ে হরিয়ানা। বেড়াবার মরসুম—অক্টোবর
থেকে মার্চ মাস। মে-জুনে গরম, তাপমান ওঠে ৪৬°
সেন্টিগ্রেডে। আর মধ্য জুন থেকে সেপ্টেম্বর মাস
বর্ষাকাল। দিল্লীর সাদৃশ্য মেলে হরিয়ানার
তাপমানে। বৃষ্টি হয় শীতও—ডিসেম্বর থেকে
ফেব্রুয়ারি মাসে হরিয়ানায়।

১৩ মাইল ব্যাসার্ধের মধ্যে ৩৬৫ হিন্দুতীর্থ রয়েছে
কুরুক্ষেত্রে। অতীতকালে ব্রাহ্মা ছাড়াও নানান হিন্দু
দেবদেবীর বাস ছিল এই কুরুক্ষেত্র অর্থাৎ থানেশ্বরে।
এমনকি বিশ্বব্রহ্মা ব্রাহ্মা এখানে বসেই বিশ্বের রূপ দেন।

মনুস্মৃতিও লেখেন মনু কুরুক্ষেত্রে। পুণ্যতোয়া সরস্বতীও বয়ে
বেত কুরুক্ষেত্রের উপর দিয়ে সেকালে। সমুদ্র-সদৃশ ব্রহ্মা
সরোবারটিও আর এক পুণ্যস্থান। স্নানে পুণি মেলে। শিব
মন্দির হয়েছে সরোবরের মাঝে—সেতুতে পারাবার।
বিড়লা গীতা মন্দিরও হয়েছে সরোবরের পাড়ে। সরোবরের
আর এক আকর্ষণ—শীতে দূর-দূরান্ত থেকে পরিযায়ী
পাখিরা এসে নীড় বাঁধে। কুরুক্ষেত্রের আর এক দর্শন
কুরুক্ষেত্র ডেভেলপমেন্ট বোর্ডের শ্রীকৃষ্ণ মিউজিয়াম।
পট্টচিত্র, কাণ্ডো, মধুবনী, পিছাবনী শৈলীর ছবিতে শ্রীকৃষ্ণ
আখ্যান প্রদর্শিত হয়েছে। তেমনই পল্লব, চোল ও নায়ক
রাজাদের কালের ব্রোঞ্জ মূর্তিতেও শ্রীকৃষ্ণ আখ্যান, হাতির
দাঁতের বেণুগোপালরূপী শ্রীকৃষ্ণ অনবদ্য। এখানকার
কুরুক্ষেত্র, থানেশ্বর ও বাণগঙ্গা (শরশয্যায়া শায়িত মৃত্যু-
পথযাত্রী ত্রীশ্বের ইচ্ছাপূরণে বাণ মেরে অর্জুনের গঙ্গা থেকে
জল উত্তোলন) সরোবর তিনটিই অতি পবিত্র। আর রয়েছে
ভীষ্মকুণ্ড অর্থাৎ কুণ্ডের পাড়ে ভীষ্মের শরশয্যার স্থান,
লক্ষ্মীনারায়ণ মন্দির, গীতাভবন, সীতামাঈ, দুর্গামন্দির,
জ্যোতিষ্মর—তীর্থযাত্রী ও পর্যটক দুয়ের কাছেই সমান
আকর্ষণীয়। সংস্কৃত বিশ্ববিদ্যালয়ও হয়েছে কুরুক্ষেত্রে। আর
আছে ছোট্ট লাল মসজিদ ও সুন্দর এক সমাধি কুরুক্ষেত্রে।
হরপ্পাকালেরও নানান নিদর্শন মিলেছে কুরুক্ষেত্রে। Huyen
Tsang-ও হের্শের কালে কুরুক্ষেত্রে আসেন—তার ভ্রমণ
ডায়েরিতে কুরুক্ষেত্রের বৃত্তান্ত মেলে।

ও কিমি দূরের থানেশ্বরও আর এক হিন্দুতীর্থ। থানে-
শ্বরেও মন্দির, মসজিদ, সরোবর, শেখ চিদ্দির সমাধি দেখে
নেওয়া যায়। ৭ শতকে হর্বর্ধনের রাজধানীও ছিল এই
থানেশ্বরে। ১০১১য় গজনির সুলতান মামুদ ধ্বংস করে
থানেশ্বরের অতীত।



ভাল হোটেল নেই কুরুক্ষেত্রে, দোকানপাটেরও
অভাব। অতি সাধারণ দোকানে চায়ের কাপে ক্লাসি
দূর করতে হয় পর্যটকদের। থাকার জন্য PWD
RH—Pipli, Thanewar RH, বিড়লা মন্দির ও গৌড়ীয় মঠের
গেস্ট হাউস আছে। মঠের গেস্ট হাউসে থাকা ও ভ্রমণপ্রদান মেলে।
আর আছে জ্যোতিষ্মর ক্যানাল রেস্ট হাউস, পঞ্চায়ত ভবন,
আগরওয়ালা, কালী কমলিওয়ালী, রেল স্টেশনের কাছে ভারত
সেবাস্রম সঙ্ঘ ও ভারত সেবা স্রণ ধরমশালা কুরুক্ষেত্রে।
এছাড়াও হরিয়ানা ট্যুরিজমের Neelkanthi Krishna Dham
Yatri Niwas, NH 1, ৩ 31615, DAB ১৫০ A/C D ৩২৫ ছয়
বেডের ডমিটরিতে বেড ৩০ করে আছে। থানেশ্বরেও হোটেল
ও ধরমশালা মেলে।

ভবে, কুরুক্ষেত্রে থাকার দরকার হয় না। সিমলা থেকে ফেরার
পথে চণ্ডীগড় থেকে ৭-৪৫এর প্যাসেঞ্জার ট্রেন বা বাসে আশালা
ক্যাট হয়ে কুরুক্ষেত্রে পৌছান। দিনে দিনে কুরুক্ষেত্র দেখে রাতের
বাস বা ট্রেনে দিল্লী ফিরুন। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও বাচ্ছে ৫-৩৫, ৭-
৪০, ১২-৪৫, ২০-৫৮র কুরুক্ষেত্র হয়ে ৫ ঘটায় দিল্লী জা। আর
এক ডজন এক্স ট্রেন বাচ্ছে দিন-রাত্রি জুড়ে কুরুক্ষেত্র থেকে
৩ ঘটায় দিল্লী। শতাব্দীর স্টপেজ নেই কুরুক্ষেত্রে। হাওড়া-দিল্লী-

কালকা, নিউ দিল্লী-ভাতিগা, নিউ দিল্লী-কালকা হিমালয়ান কুইন, ভিওয়ানি-কালকা একতা এক্স, দিল্লী-জম্মু, নিউ দিল্লী-অমৃতসর এক্স, বরাহনি-অমৃতসর এক্স, টাটা-হাতিয়া-পাঠানকোট এক্স, দিল্লী-নান্নাল-উনা হিমাচল এক্স, পুনে-জম্মু-খিলাম এক্স, দাদার-অমৃতসর এক্স, মুখাই-অমৃতসর, দিল্লী-অমৃতসর ফ্লাইং মেল প্রতিটা ট্রেন কুরুক্ষেত্র/আখালা ক্যান্ট হয়ে যাচ্ছে। আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে দিল্লী জং থেকে ৭-৪৫, ১৫-০০টায়; নিউ দিল্লী থেকে ১৮-৩৭এ কুরুক্ষেত্রে। দিল্লীর দূরত্ব ১৫৬, আখালা ৪৭ আর চণ্ডীগড় ৮৮ কিমি। আবার বাসে হরিদ্বারও চলা যেতে পারে কুরুক্ষেত্র থেকে। এছাড়াও বাস সংযোগ গড়েছে রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের নানান শহরের সাথে কুরুক্ষেত্রের। কুরুক্ষেত্রে বাস স্ট্যান্ড দুই—দুইয়ের মাঝে ব্যবধান ৩ কিমি। বাস, অটো, রিকশা চলেছে। পিপলি (পুরাতন) স্ট্যান্ড G T Rd থেকে প্রতি ১০ মিনিটের ব্যবধানে বাস মেলে পঞ্জাব, হিমাচল ও জম্মুর; দিল্লী যাচ্ছে মুহম্মদ দুর-দুরাত্ত থেকে এসে নানান বাস। আর নতুন স্ট্যান্ড থেকে বাস যাচ্ছে—সিমলা ৭-৩০ঘণ্টায়, কাটাৱা ৮-০০ ঘ, হরিদ্বার ৮-০০ ঘ, জয়পুর ৮-৩০ ঘ, মথুরা ৪-৪০ ঘ, সুখা (কাণ্ডো) ৭-৩০ ঘণ্টায়; যমুনানগর যাচ্ছে ১৫ মিনিট অন্তর, দিল্লী যাচ্ছে ৩০ মিনিট অন্তর। এমনকি চণ্ডীগড়-দিল্লী A/C বাসও যাচ্ছে কুরুক্ষেত্র হয়ে।

তবে দিল্লী যাত্রীদের উচিত হবে কুরুক্ষেত্র থেকে ৫ কিমি দূরে NH-এ পিপলিতে হরিয়ানা টুরিজমের Parakeet Motel, Pipili, ৩ 30250, A/C D ৩২এ-৪৫০-তে রাত কাটিয়ে পরদিন শহর বেড়িয়ে পিপলি থেকে বাসে ৬৬ কিমি দূরের পাণিপথ চলা। পাণিপথের ঐতিহাসিক যুদ্ধক্ষেত্রটিও শিহরন জাগায় দর্শকদের। বার বার তিন বার রক্তনাত হয়েছে পাণিপথ। ১ম যুদ্ধে দিল্লীর সম্রাট ইব্রাহিম লোধিকে হারিয়ে বাবর মোগল সাম্রাজ্য পত্তন করেন ১৫২৬এ ভারতে। আরকরূপে যুদ্ধের দৃশ্যাবলী খোদিত করেট বসেছে। ১৫৫৬য় আকবরের কাছে পাঠান নায়ক হিমুর পরাজয় ঘটে ২য় যুদ্ধে। আর ৩য়— ১৭৬১তে আহম্মদ শাহ দুরানীর হাতে পরাভূত হয় সম্মিলিত মারাঠা শক্তি। তবে ইতিহাস রোমন্থন ছাড়া দেখার নেই কিছু পাণিপথে আজ। নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা মুসলিম ফকিরের সমাধিটি আর এক দ্রষ্টব্য পাণিপথে।



থাকার জন্য PWD RH ও হরিয়ানা টুরিজমের Sky Lark, Panipat, A/C D ৪৫০-৬০০ ডরি ৫০ আছে পাণিপথে। আর আছে *H Gold, G T Rd, ৩ 22284, A/C S ৪৫০-৬২৫ D ৫০০-৬৫০ সুইট ৮০০-৯৫০; H Mid Town, G T Rd, ৩ 32676, A/C D ৬৫০ সুইট ৯৫০; আখালা-কুরুক্ষেত্র-দিল্লী পথের পাণিপথ থেকে ট্রেন বা বাসে পৌঁছে যান ৮৭ কিমি দক্ষিণের দিল্লীতে।

আবার চণ্ডীগড়-দিল্লী NH-১এ পিপলি থেকে ৩১ কিমি গিয়ে স্বর্গস্থের স্বাদ নিতে পারেন কার্নাল লেক বেড়িয়ে। পাণিপথের দূরত্ব ৩৫ আর দিল্লী ১২১ কিমি কার্নাল থেকে। মনোরম প্রকৃতির মাঝে ধীর-স্থির জলরাশি, নিখর-নিষ্পন্দতা কার্নালের বিশেষত্ব। তারই মাঝে ভেসে চলেছে হংসবলকা। আপনিও ভেসে পড়ুন বাটে করে লেকের

জলে। লেকের পাড়ে গড়ে উঠেছে আর এক স্বর্গ হরিয়ানা টুরিজমের ডিলাক্স মোটেল, A/C D ৪৫০-৬০০। বিপরীতে প্রচণ্ড বেগে বহমান ওয়েস্টার্ন ফায়না ক্যানাল। আর হেরেছে *H Jewels, Kunjipura Rd, Karnal-132001. ৩ 255967, A/C S ৫৫০ D ৬৫০ সুইট ৮৫০। কার্নালের আর এক অতীত ১৭৩৯এ মোগল সম্রাট মহম্মদ শাহকে হারিয়ে নাদির শাহ দিল্লী থেকে ময়ূর সিংহাসনটি নিয়ে যান পারস্যে।

দিল্লী-মথুরা-আগ্রা পথে দিল্লী থেকে বাসে ২৫ কিমি গিয়ে ডানহাতি আরও ৪ কিমি যেতে ৭৬০ ফুট উচুতে আরাববীর ঢালে ২টি পাহাড়ী টিলাকে সংযোগ ঘটতে তৈরি হয়েছে ১২৭ একর ব্যাপ্ত বাদখাল লেক। ফরিদাবাদ রেল স্টেশন থেকে দূরত্ব ৫ কিমি। বাস, রিকশা, অটো যাচ্ছে। চড়ইভাতির মনোরম পরিবেশ। অক্টোবর থেকে মার্চ মাসে দেশী-বিদেশী নানান প্রজাতির পাখিরা ভেসে বেড়ায় লেকের জলে। মৃদু-মন্দ বাতাস ঢেউ খেলে চলে, সূর্যাস্তে রুজ লাগে সে ডেউ-এ। লেকের জলে বোটিং, সুইমিং পুল বিমোহিত করে দর্শকদের। নালিও বেরিয়েছে চারপাশে। দেবমন্দিরও হয়েছে—শিব ও হনুমানের। চারপাশে সবুজে ছাওয়া, রঙবেরঙের ফুলের জলসা—উট, হাতি ও ঘোড়া রয়েছে পর্যটক বিনোদনের জন্য।



Camper Hut-এ A-C D ২২৫; Minivet Hut-এ A/C D ৪৫০-৮৫০ সুইট ৮৫০-১২৫০। আর আছে ৮ কিমি দূরে মথুরা রোডে হলিডে ইন। অবঃ Manager, ৩ 216901 বা Haryana Tourism, No. 17, Sector 17-B, Chandigarh-160017.

দিল্লী-জয়পুর পথে দিল্লী থেকে ৫৪ কিমি দূরে সোনা পাহাড়ে গড়ে উঠেছে আর এক পর্যটক স্বর্গ। ফিরোজপুরের দূরত্ব ৫৯, গুরগাঁও ২৪, পালওয়াল ২৯, ভরতপুর ২১৫ কিমি। অতীতে সোনাও মিলত নদী চরের বালুবেলায় সারা শহর জুড়ে। চূড়ো থেকে চারপাশের প্যানোরামিক ভিউও সুন্দর দৃশ্যমান। ময়ূরেরা আজও আসে সোনা পাহাড়ে পর্যটকদের মনোরঞ্জন করতে।



থাকারও ব্যবস্থা হয়েছে পাহাড়চূড়ায় Sohna-র Camper Hut-এ, ঘর ২২৫; Barber Hut-এ A/C D ৪৫০-৬০০। এমনকি ৩ কিমি দূরের প্রসবর্ণ থেকে জলও এসেছে নলে হাটের বাধক্রমে। জলে সাংকফার আছে। নানান চর্মরোগের উপশম মেলে।

সুলতানপুর

দিল্লী-জয়পুর সড়কে নতুন দিল্লী থেকে ৪৬ কিমি দূরে ৪০০ একর জুড়ে লেকের বুকে গড়ে উঠেছে সুলতানপুর পক্ষী আলয়। আর রৈলে জলন্ধর-ফিরোজপুর শাখার সুলতানপুর স্টেশন। প্যাসেঞ্জারে ১১ ঘণ্টার পথ। বাসও যাচ্ছে দিল্লী, কুরুক্ষেত্র, জলন্ধর ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের সিথিখিক থেকে ১০ কিমি দূরের গুরগাঁও হয়ে

সুলতানপুরে। নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে শতাধিক প্রজাতির দেশী-বিদেশী পাখিরা নীড় বেঁধেছে লেকের পাড়ের বৃক্ষশাখে। অক্টোবর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে সুদূর ইউরোপ, সাইবেরিয়া থেকে ফ্রিমিংগো, পেলিক্যান ছাড়াও নানানধর্মী পাখি আসছে বছরের পর বছর প্রতি বছর।



থাকারও ব্যবস্থা মেলে লেকের পাড়ে হরিয়ানা টুরিজমের Rosy Pelican Complex-এ D ২২৫-৩৫০ A/C D ৪৫০ ও টুরিস্টগেস্ট হাউস-এ। ওয়াচ টাওয়ার বা মোটেলের ডিউ গ্যালারি থেকে চিনে নেওয়া যায়, সেখে নেওয়া যায় পাখিদের রোজনামচা। বাইনোকুলারেরও ব্যবস্থা আছে। আর আছে পাখি সক্রোধলাইব্রেরি ও মিউজিয়ম। দিল্লী-সুলতানপুর পথে ৩২ কিমি দূরে গুরগাঁও-তেও শ্যামা টুরিস্টগেস্ট হাউস, ও 20683, D ৩০০-৪৫০ হয়েছে হরিয়ানা টুরিজমের।

আখালা

আখালাও ক্যান্টনমেন্ট নগরী—বাহিন্যকেন্দ্রও বটে। আর আছে সির্কা, রেস কোর্সও পার্ক। রেল ও বাস সংযোগ গড়েছে উত্তর ভারতের বিভিন্ন শহরের সঙ্গে আখালার। কুরুক্ষেত্রের

প্রতিটা ট্রেনই আখালা হয়ে বাচ্ছে। নিউ দিল্লী-চণ্ডীগড় 2011 শতাব্দী এক্স, নিউ দিল্লী-কালকা 2005 শতাব্দী এক্স, চণ্ডীগড়-শ্রী গলা নগর 4711 ইন্টার সিটি এক্স, টাটা-পাঠানকোট এক্স, নিউ দিল্লী-অমৃতসর 2497 শানে পাঞ্জাব এক্স, পুনে-জম্মু কিলাম এক্স, কালকা-বোথপুর্ এক্স, ধানবাদ-সুবিয়ানা গঙ্গা শতরু এক্সও যাচ্ছে আখালা হয়ে। তবে পর্যটকদের কাছে এর আকর্ষণ সিমলা পাহাড়ের সংযোগকারী রেল স্টেশন রাশে। কলকাতা থেকে ছেড়ে যাওয়া হিমগিরি এক্স 3 6 7 মিন ভোর ৫-৩২, হাওড়া-অমৃতসর এক্স ৩-২০, হাওড়া-অমৃতসর মেল ৪-১৫য় আখালায় পৌছায়। শিয়ালদহ-জম্মু তাওয়াই আখালায় যাচ্ছে ২২-৫৫য়। আর বাস যাচ্ছে আখালা থেকে রেল যাত্রীদের নিয়ে ১৫০ কিমি দূরের সিমলা পাহাড়ে। কলকাতা যাত্রীদের সিমলায় যেতে সময়ের কিছুটা সাশ্রয় মেলে এথেকে।

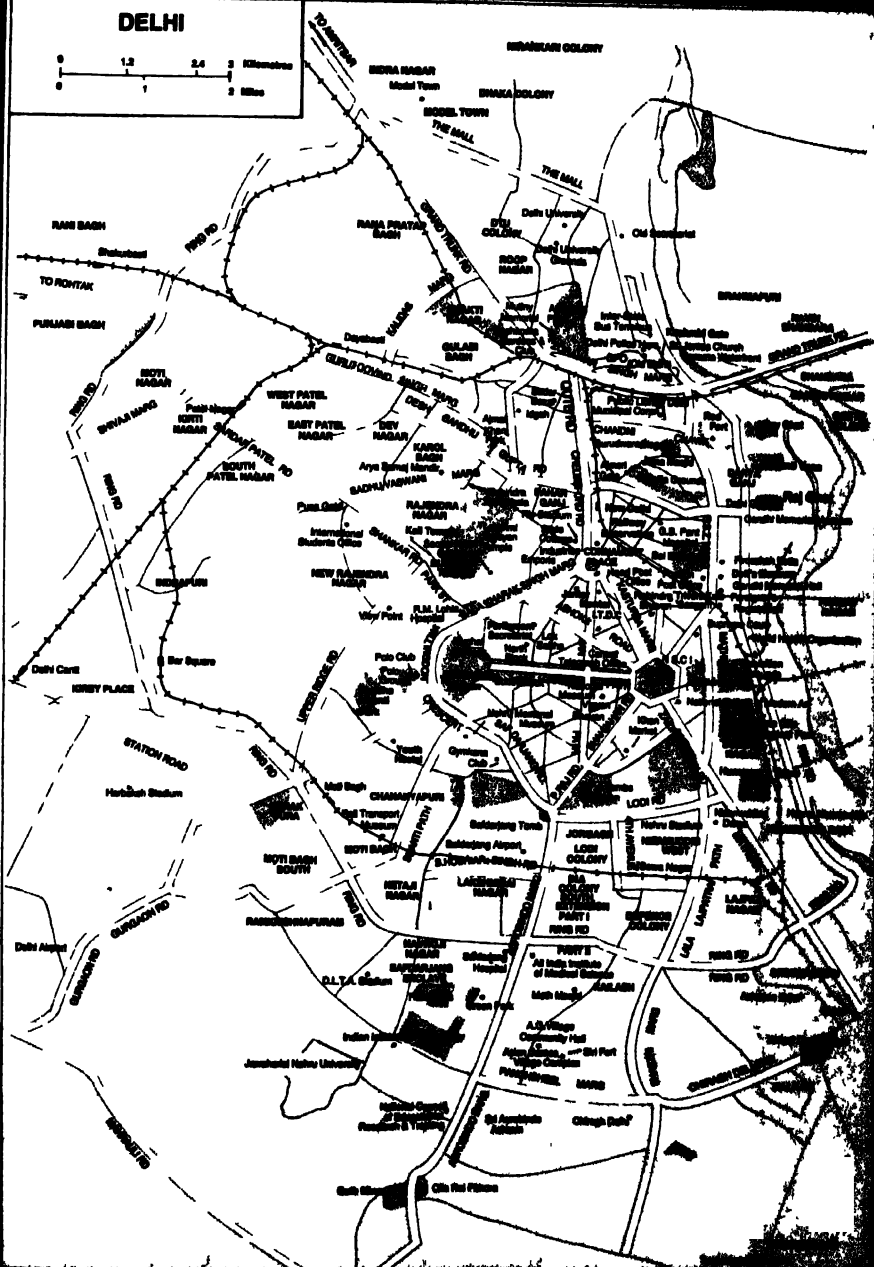
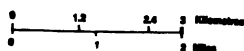


সিসিল, প্যারিস ছাড়াও নানানধর্মী হোটেল আছে আখালায়। আর আছে হরিয়ানা টুরিজমের King Fisher, Ambala, ও 58352, D ৪৫০-৮০০। এছাড়া ৬০ কিমি দূরে পাঞ্জাবের পাতিয়ালাও বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধা আখালা ক্যান্টন থেকে।

বঙ্গীনাথ, হেমকুণ্ড, পঞ্চকোষ, গঙ্গোত্রী, গৌমুখ, ময়ুনোত্রী, পিণ্ডারী, রূপকুণ্ড, মণিমনহেশ, অমরনাথ, কৈলাস ও মানস সরোবর যেতে আপনাকে প্রকৃতি নিতে হবে

* কলারার ইলেকশন দিয়ে সার্টফিকেট সঙ্গে নেবেন—ডিস্ট্রিক্ট বোর্ড, মিউনিসিপ্যালিটি বা কর্পোরেশনের হয়ওয়া চাই। প্রাইভেট ডাক্তার বা নার্সিংহোমের সার্টফিকেট গ্রাহ্য নয়। সঙ্গে সার্টফিকেট না থাকলে ইলেকশন নেওয়া থাকলেও চলার পথে আবার নিতে হবে। আইন ও নিজ স্বার্থে এটা করা উচিত। * একটা বা দু'টো পলিথিনের বড় মাপের শিট নিন যাতে দরকার মতো বিছিয়ে বিছানা করা যায় আবার চলার পথে বেড়িয়ে জড়িয়ে নিতে পারেন। * মড়ি বা সুতুলি নেবেন। * বর্ষাতি, টর্চ, মোমবাতি, দেশলাই সঙ্গে রাখুন। * পাহাড়ে চলার বিশেষ ধরনের স্পাইক লাগান লাঠি। * একটা সান শ্রাস—সূর্যের কিরণ থেকে চোখ বাঁচান। * ক্রিম সঙ্গে নিন। * জল থেকে হতে পারে এমন অসুখ বা পাহাড়ে চলতে গায়ের ব্যথা কমাবার ওষুধ সঙ্গে নিন। * ওকনো খাবার, কিসমিস, ওকনো আমলকী বিট নুন নেওয়া * খালি পেটে পাহাড়ে হাঁটা উচিত নয়। * কমপক্ষে ২টি কফল অথবা স্লিং ব্যাগ, হাত মোজা, পায়ের মোজা, মাড়ি ক্যাপ, ফুল উলেন ইনার, সোয়েটার, পুরো হাতা জ্যাকেট * উইন্ডচিটার * হকি স্ট্র, হাটের ব্যুকেডস * একটা থ্যান্ডিকের মগ * অতিরিক্ত ঠাণ্ডায় নিজেকে সতেজ রাখতে গোল মরিচ, মিষ্টির ও এক শিশি মধু বা এক শিশি ডবল থ্যান্ডি সঙ্গে নিন।

DELHI



দিল্লী

দিল্লী ভূ-অঙ্কের নয়। হাজার তিনেক বছর বয়স হবে। খ্রিস্ট পূর্বাব্দে। খ্রিস্ট জন্মেরও ১০০০ বছর আগে মহাভারতের পাণ্ডবরা রাজত্ব করে গেছেন আরাবব্দী রেঞ্জের বৃক্ক যমুনা কিনারের এই দিল্লীতে। তখন অবশ্য নাম ছিল এর **ইন্দ্রপ্রস্থ**—অবস্থানও ছিল আজকের পুরনো কেল্লাকে ঘিরে। উত্তর-দক্ষিণ-পশ্চিম জুড়ে আরাবব্দী পর্বত—পূর্বে বয়ে যেত খরস্রোতা যমুনা নদী। আর তার আগের কাহিনী ইতিহাসও ব্যর্থ হয়েছে ধরে রাখতে। তবে অতীতে আর্থ সভ্যতাও প্রসার লাভ করেছিল এই দিল্লীকে ভর করে। যুগ পালটেছে। যুগ বদলের সাথে সাথে নামেরও বদল ঘটেছে—**ইন্দ্রপ্রস্থ** হয়েছে আজ নতুন দিল্লী। শুধু নামই-বা কেন, বদলেছে রাজ্যপাট, বদলেছে শাসক—বার বার এই দিল্লীর মসনদে। শাসক এসেছেন দেশ-দেশান্তর থেকে। স্মৃতি রেখে গেছেন তাঁরা ভাবীকালের পর্যটকদের জন্য। দিল্লীর সূর্য কুণ্ডটি (অধুনা হরিয়ানা) রাজপুত রাজ্যের স্মারক হয়ে অতীত রোমন্থন করায় আজও।

ইতিহাস বলে ৭৩৭ খ্রিস্টাব্দে **দিল্লীকা** গ্রামে টোমর রাজপুত দলপতি অনঙ্গপাল **লাল কোট** নামে ১ম নগর গড়ে রাজধানীর পত্তন করেন। টোমর থেকে রাজ্য যায় চৌহান রাজপুতদের হাতে ১২ শতকে। এই বংশেরই শেষ শাসক রাজপুতরাজ পৃথ্বীরাজ ৩ প্রাচীরে ঘেরা ২য় নগরী **কিলা রায় পিথোরা** গড়েন কুতবের আশপাশে। ১১৯১এ বিতাড়িত তুর্কি হানাদারদের দ্বিতীয় আক্রমণে প্রাণ দেন পৃথ্বীরাজ পনের বছর। আর যুদ্ধ জয়ের স্মারকরূপে সুলতান কুতব-উদ্-দিন গজনির অনুকরণে বিজয়স্তম্ভ গড়ে নিজ নামে নাম রাখেন কুতব মিনার। শুরু হয় দিল্লীতে মুসলমান (দাস) শাসন। একে একে দাস বংশ, খিলজি বংশ, তুঘলক বংশের সুলতানেরা রাজত্ব করে যান দিল্লীতে। আর খিলজিদের দখলে যেতে ১২৯০এ আলাউদ্দিন খিলজি (১২৯০-১৩১৬) রাজ্যপাট গড়েন সিরিঅর্থাৎ আজকের হজ্জাখাসে। তুরস্কের ঘোর থেকে এসে ভারতীয় সংস্কৃতির সঙ্গে মিলে-মিশে ইন্দো-ইসলামিক স্থাপত্যে গিয়াসুদ্দিন তুঘলক ৩য় নগরী **তুঘলকাবাদ** গড়েন কুতবের ১০ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে আদিলাবাদে। গিয়াসুদ্দিনের পুত্র মহম্মদ বিন তুঘলক সাময়িকভাবে দাক্ষিণাত্যে গেলেও দিল্লী ফিরে ৪র্থ নগরী **জাহানপানা** গড়েন কুতবের কাছে। খিরকী গ্রাম লাগোয়া দক্ষিণে **কিলা রায় পিথোরা** থেকে উত্তরে সিরি পর্বত ব্যাপ্তি তার। ১৩৫১য় ৫ম নগরী **কিরোজাবাদ** গড়েন ৩য় তুঘলক কিরোজশাহ (১৩৫১-৮৮) আজকের পুরনো কেল্লায়। তবে কিরোজশাহ কোজা নামে সমধিক খ্যাত আজ। আবার রাজ্যপাট গড়ে সৈয়দ (১৪১৪) ও লোদী (১৪৫১) বংশ

অতীতের তুঘলকাবাদে। ১৪৯২এ সিকান্দার লোদী দিল্লী থেকে আগ্রায় যান রাজ্যপাট নিয়ে—গড়েন দুর্গ, নিজ নামে নাম হয় তার সিকান্দা। আবার শাসক বদল দিল্লীর মসনদে। বদল হয় রাজ্যপাট গিয়াসুদ্দিন তুঘলকের হাতে ১৩২১এ কুতবের ১০ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে তুঘলকাবাদে। তুঘলক কালেই (১৩৯৮) মৃত্যুর পরোয়ানা নিয়ে ষাটিকাফরে আসে তৈমুরলঙ। যমুনার জলকে লাল করে দিয়ে দেশেও ফেরে তৈমুর। সঙ্গে যায় তার ১২০টি হাতির পিঠে দিল্লীর ঘর-বাড়ি সহ নানান কিছু। স্থপতিও সঙ্গে নেয় তৈমুর—গড়ে তোলে মসজিদ সমরখন্দে।

| | |
|---------------------------|---------------------|
| এর পরেই আসেন | |
| বাবর—ধমনীতে তার | |
| চিসীজ ও তৈমুরের রক্ত। | বাবর ১৫২৭—১৫৩০ |
| ১৫২৬এ পানিপথের যুদ্ধে | হুমায়ূন ১৫৩০—১৫৩৮ |
| ইব্রাহিম লোদীকে হারিয়ে | ১৫৫৫—১৫৫৬ |
| পত্তন করেন দিল্লীতে | আকবর ১৫৫৬—১৬০৫ |
| মোগল সাম্রাজ্য। আগ্রাও | জাহাঙ্গীর ১৬০৫—১৬২৭ |
| জয় করেন বাবর। | শাহজাহান ১৬২৭—১৬৫৮ |
| স্থানান্তরিত হয় রাজ্যপাট | ওরঙ্গজেব ১৬৫৮—১৭০৭ |

দিল্লী থেকে আগ্রায় মোগল সম্রাটের। ১৫৩০এ বাবর-পুত্র হুমায়ূন নতুন করে রাজ্যপাট গড়েন **দিন পানাহ** ফিরোজাবাদের দক্ষিণে। আরও পরে আফগান নায়ক শের শাহ সুরীরা হাতে বাবরের পুত্র হুমায়ূনের পরাজয়ে সাময়িকভাবে দিল্লী যায় শের শাহের দখলে। গড়ে তোলেন নতুন রাজ্যপাট শের শাহ সুরী ইন্ডিয়া গেটের অদূরে পুরনো কিলায় ৬ষ্ঠ নগরী **শেরগড়**। দখল ফেরে হুমায়ূনের হাতে ১৫৫৫য় আবার। আর আগ্রা থেকে দিল্লী ফেরেন মোগল সম্রাট শাহজাহান ১৬৩৯এ। গড়ে তোলেন ৭ম নগরী **শাহজাহানাবাদ** অর্থাৎ আজকের **লালকেলা**। ফিরোজাবাদের উত্তরে। পিতা শাহজাহানকে বন্দী করে আগ্রা পাঠিয়ে মসনদে বসেন ওরঙ্গজেব। বৈভব বিষেষী গোঁড়া মুসলমান ওরঙ্গজেব ভিনধর্মীদের উপর আঘাত ছেনে মোগল সাম্রাজ্যের পত্তনকে দ্বারদ্বিষ্ট করে ১৭০৭এ মৃত্যুর সাথে সাথে। উত্তরসূরীদের দুর্বলতার সুযোগে পারস্য সম্রাট নাদির শাহ ১৭৩৯এ দিল্লী দখল করে। তবে, মসনদ ছেড়ে লুণ্ঠের মালে ভুট্ট নাদির মম্বর সিংহাসন, কোহিনূর মণি-সহ নানান ধনসৌলভ নিয়ে দেশে ফেরে। সবশেষে বাণিজ্যের **বোরখা** পরে ব্রিটিশ আসে ১৮০৩এ দিল্লীর মসনদে। তবে, রাজ্যপাট চলে ১৮৫৭ পর্বত লাল কেল্লায় মোগল দরবারের। আর, ১৯১১র ডিসেম্বরে কিং জর্জ ৫ম ভারতে এসে দরবারে বসে মোষণা করেন—কলাকাতা

থেকে রাজ্যপাট তুলে দিল্লী যাবার। সামরিকভাবে শাহজাহানাবাদের দক্ষিণে ব্রিটিশ ডাইস রিগায়লের দপ্তর বসলেও রূপ পায় ব্রিটিশের হাতে পরিকল্পিতভাবে গড়া ৮ম নগরী—নামও হয় তার *নতুন দিল্লী*। তবে, আনুষ্ঠানিকভাবে পত্তন হয় নতুন দিল্লী ১৯৩১এর জানুয়ারি মাসে। আজকের দিল্লী এই পট-বদলের স্মৃতিভারে গর্বিত। দিল্লী ভ্রমণার্থীরাও অভিভূত হয়ে পড়েন ইতিহাসের এই প্রেক্ষাপটে সৌছে।

সবশেষে ১৯৪৭-এর ১৫ই আগস্ট জাতীয় পতাকা উড়লো দিল্লীর লালকেল্লার দীর্ঘ ২০০ বছরের ব্রিটিশ-রাজের ইউনিয়ন অ্যাক্টে নামিয়ে দিয়ে। আর ১৯৫৬ সালের ১লা নভেম্বর কেন্দ্রীয় শাসনাধীনে যায় দিল্লী। ভারত যুক্তরাষ্ট্রের কেন্দ্রীয় দপ্তর বসেছে আজ দিল্লী অর্থাৎ ব্রিটিশের গড়া নতুন দিল্লীতে। প্রাক-স্বাধীনতার কালে মুসলিম অধ্যুষিত দিল্লীতে উর্দু প্রতিপত্তি আজ পাঞ্জাবি দখল নিয়েছে। দিল্লী থেকে মুসলিম আর পশ্চিম পাঞ্জাব থেকে পাঞ্জাবি পরস্পরে দেশান্তরিত হয়েছে। তাই পাঞ্জাবিয়ানা প্রকট আজকের দিল্লীতে।

২৬শে জানুয়ারি প্রজাতন্ত্র দিবসের বর্ণাঢ্য শোভাযাত্রার সঙ্গে সারা দিল্লী নগরীই সেজে ওঠে উৎসবের সাজে। আলোর সাজ পরে সারা শহর। অংশ নেয় শোভাযাত্রায় সারা ভারত থেকে আসা লোকনৃত্যের দল। দেশ-বিদেশ থেকে পর্যটক আসেন এই বর্ণাঢ্য শোভাযাত্রা দেখবার জন্য দিল্লীর ইন্ডিয়া গেটে।

তেমনই শহরের আর এক আকর্ষণ দর্শনা বা রামলীলা। ১০দিন ব্যাপী উৎসব চলে অক্টোবরে রামলীলা ময়দানে। আতসবাজি পোড়ে, নানান ধর্মী সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানের সাথে দিল্লীও সেজে ওঠে আলোকমালায়। রাবণও পোড়ে আকাশকে রাঙিয়ে দিয়ে। মুসলিম উৎসব বকরি ইদ ও মহরমও জাঁকালো উৎসব দিল্লী নগরীতে। তবে, হোলির উদ্‌যাদন কালে উচিত হবে দিল্লীর পথ এড়িয়ে চলা।

নতুন দিল্লীর নতুন আকর্ষণ উইলিংডন ক্রিসেস্টে ১৯৮২র ২রা অক্টোবর ৩৩.৮০ লক্ষ টাকা ব্যয়ে তৈরি শহীদ স্মৃতি অর্থাৎ *স্বাধীনতার পথে যাত্রা*। শিল্পী দেবীপ্রসাদ রায়চৌধুরীর শেষ ভাস্কর্য—২৬×৩ মি বেদিতে মিছিলের ধাঁচে ১১টি ব্রোঞ্জ মূর্তিতে রূপ পেয়েছে। পুরোভাগে তার জাতির জনক গান্ধীজী। এমনকি নবম এশিয়াডের রুজু আজও মোহেন দিল্লী নগরী থেকে।

ভারতের তৃতীয় বৃহত্তম শহর দিল্লী। আজকের দিল্লী গড়েও উঠেছে দুটি ভাগে। লালকেল্লার পশ্চিমে প্রাচীরে ঘেরা মোগল বাদশাদের শাহজাহানাবাদে ওল্ড দিল্লী—সর্বাঙ্গ গলিগথে বিজ্ঞি শহর। পুরনো দিল্লী নামে সমধিক খ্যাত হলো দিল্লীও বলে থাকে লোকে একে। দিল্লী জংশন রেল স্টেশনটিও পুরনো দিল্লীতে। সামান্য উত্তরে কাশ্মীরি স্ট্রিট ইন্টার স্টেট বাস টারমিনাসটিও পুরনো দিল্লীতে।

বাসও বাজে সারা উত্তর ও পশ্চিম ভারতের দিগ্বিদিকে কাশ্মীরি গেট থেকে। দিল্লী গেটের অদূরে বামহাতি যমুনা আর ডাইনে অরুণা আসফ আলি রোড শেষ হতেই নতুন ও পুরাতন দুই দিল্লীর সজ্জিহলে রামলীলা ময়দান। সীমান্তও গড়েছে কার্যত দেশবন্ধু গুপ্ত ও অরুণা আসফ আলি রোড নতুন ও পুরাতনের মাঝে।

দিল্লী □ রাজধানী: নতুন দিল্লী। আয়তন: ৪৯১ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা ৯৩৭০৪৭৫। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ১.১১%। পুরুষ: ৫১২০৭৩৩। নারী: ৪২৪৯৭৪২। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৮৩০। বৃদ্ধির হার: ৫০.৬৪%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৬১৩৯। সাক্ষরের হার: ৭৬.০৯%। প্রধান ভাষা: হিন্দি। পাঞ্জাবি-উর্দু-ইংরেজিরও চলন আছে। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৫৩১৫.০০ টাকা।

বেড়াবার উপযুক্ত সময়: অক্টোবর, নভেম্বর, ফেব্রুয়ারি ও মার্চ মাস। তবে, শীতের আধিক্য আছে। ব্যাপ্তিও বেশী শীতকালের—নভেম্বর শেষ থেকে মার্চের প্রথম। তাপমান থাকে ২৫.৪ থেকে ১০.৫° সেন্টিগ্রেডে। ডিসেম্বর-জানুয়ারিতে ০° সেন্টিগ্রেডেও নেমে থাকে তাপমান। সঙ্গে কনকনে হাওয়া দিল্লীর আকাশে। যথেষ্ট উলেন দরকার শীতের দিল্লীতে। আবার ঠিক তেমনই গরমেরও আধিক্য আছে এপ্রিল থেকে জুন মাসে—৪১.৮ থেকে ২৫.৬° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে তাপমান। জুনের রাতে তাপমান ৪১° থেকে বেড়ে ৪৫° সেন্টিগ্রেডে চড়ে বসেও অব্যাহত নয়। আর জুলাই থেকে সেপ্টেম্বরের শেষ মনসুন বিঘ্ন ঘটায় দিল্লী ভ্রমণে।

৫ দিনে দিল্লী বেড়ান সঙ্গে আগ্রা ও মথুরা জুড়ে। তবে উচিত হবে রাজস্থান বা হিমাচল প্রদেশ বা জম্মু ও কাশ্মীরের সঙ্গে জুড়ে ১৫ দিনে বেড়িয়ে নেওয়া।

আর ব্রিটিশের গড়া পরিকল্পিত শহর অর্থাৎ নতুন দিল্লীতে রাজধানী বসেছে ভারত রাষ্ট্রে। তবে, ব্রিটিশের গড়া রাজ-রানী-তান্ত্রিকদের মূর্তি অপসৃত হয়েছে শহর থেকে। পথেরও নামান্তর ঘটেছে—*কুইন ভিক্টোরিয়া রোড* হয়েছে *রাজেন্দ্রপ্রসাদ*, *কার্জন রোড* হয়েছে *কম্বুরবা গান্ধী* মার্গ, *ক্রাইড রোড* হয়েছে *ত্যাগরাজা*, *কুইনস ওয়ে* হয়েছে *রাজপথ*, *সার্কুলার রোড* হয়েছে *নেহরু মার্গ*, *কনট প্লেস*

হয়েছে ইন্দিরা গান্ধী, কনট সার্কাস হয়েছে রাজীব গান্ধী ছাড়াও নানান। মসৃণ পথঘাট, আধুনিক বাড়ি-ঘর, অফিস-কাছারি সবেরই যেন মাদকতা। গুণ আছে পর্যটক আকর্ষণের। নিউ দিল্লী রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই সামনে পাহাড়গঞ্জ আর দক্ষিণে চেমসফোর্ড রোড গিয়ে মিলেছে কনট প্রেসে।

নতুন দিল্লীর অন্যতম বাণিজ্যিক কেন্দ্র দিল্লীর চোখের মণি কনট প্রেস। সওদাগরী অফিস, দোকানপাট, সাধারণ হোটেল, দেশী-বিদেশী বিমান দপ্তর, নানান ব্যাঙ্ক ও ভ্রমণ সংস্থার দপ্তর বসেছে নতুন দিল্লীর কনট প্রেসে। পথও বেরিয়েছে কনট প্রেস থেকে উত্তর, দক্ষিণ, পূব, পশ্চিম, ঈশান, অগ্নি, বায়ু, নৈঋত, উর্ধ্ব ও অধঃ। বাম থেকে বিবেকানন্দ মার্গ, বরাখাথা রোড, কস্তুরবা গান্ধী মার্গ, জনপথ, পার্লামেন্ট স্ট্রিট, ষড়ক সিং মার্গ, ভগৎ সিং রোড, পাঞ্চকুইন মার্গ সবেরই প্রস্থান কনট প্রেস থেকে। আর, অধঃ অর্থাৎ পাতালে বসেছে শীতাতপ পালিকা বাজার। কনট প্রেসের দক্ষিণে রিগ্যাল সিনেমা, উত্তরে প্রাজা সিনেমা—বাস ও মিনি বাস চলছে এই দুই সিনেমাকে ছুঁয়ে নতুন ও পুরনো দিল্লীর দিকে দিকে। আর চলছে ট্যাক্সি ও অটো মিটারে। ২০ কেজির অতিরিক্ত লাগেজে মাশুল লাগে। তেমনই রাত ২৩-০০ থেকে ভোর ৫-০০টায় ভাড়া দেয় দেড়। যে কোনও সমস্যায় অভিযোগ করুন ৩ 3319334-এ। পয়েন্ট টু পয়েন্ট ভাড়াতেও ৪ যাত্রীর অটো চলে দিল্লীর রাজপথে। পুরনো দিল্লী অর্থাৎ চাঁদনি চক, কান্মীরি গেট এলাকায় রিকশাও চলছে। তবুও যেন কিছুটা বিস্মৃতি দিল্লীর পথে। ট্যাক্সি চালকের চাতুরীর শিকার হয়ে ঘুরপাক খাবার অভিজ্ঞতা যাত্রীমাত্রই নানান। পায়ে হাঁটতেও সতর্কতা পদে পদে।

চেমসফোর্ড কনট প্রেস পেরিয়ে আরও দক্ষিণে চলেছে জনপথ হয়ে। নতুন দিল্লীর আর এক ব্যস্ততম পথ এই জনপথ। ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর বসেছে ৮৮ জনপথে। সোম থেকে শুক্র ৯—১৮-০০, শনিবার ৯—১৩-০০টায় (রবিবার বন্ধ) পর্যটকদের সবরকম সহযোগিতা মেলে। জনপথ আরও দক্ষিণে মিলেছে গিয়ে রাজপথ-এ। রাজপথের পূবে ইন্ডিয়া গেট আর পশ্চিমে ভারত রাষ্ট্রের পার্লামেন্ট ভবন ও রাষ্ট্রপতি ভবন। আরও দক্ষিণে নয়া দিল্লীর অভিজ্ঞত বসতি এলাকা—ডিফেন্স কলোনি, সোথী কলোনি, গ্রোটার কৈলাশ, বসন্ত বিহারের অবস্থান। ইন্দিরা গান্ধী ইন্টারন্যাশনাল বিমান বন্দরটিও রাজপথ থেকে ডালহৌসী রোড/ সর্গার প্যাটেল মার্গ/ প্যারেড রোড হয়ে আরও দক্ষিণ-পশ্চিমে। পথে পড়ে দিল্লীর আর এক গর্ব সারা বিশ্বের বিস্তে গড়া দেশী-বিদেশী রাষ্ট্রের দূতাবাসপুত্রী ডিপ্লোম্যাটিক এনক্লভ চাঞ্চল্যপুত্রী। তারকাচর্চিতে নানান হোটেল এই চাঞ্চল্যপুত্রীতে গড়ে উঠেছে। তবে ঐতিহাসিক মোগলি স্মারক—লালকোন্না,

জুম্মা মসজিদ, চাঁদনি চক, সবেরই অবস্থান পুরনো দিল্লীকে ভর করে। দিল্লীর আকর্ষণ আজ ভারত তথা বিশ্ববাসীর কাছে কম নয়। এমনকি সারা উত্তর ও মধ্য ভারতের ভ্রমণ সূচীও তৈরি করছেন দিল্লীকে ভর করে দেশী-বিদেশী ভ্রমণার্থী আজ।

দিল্লী ভারতের রাজধানী—তাই সারা ভারত থেকেই প্রতিদিন এসেছেন দিল্লীর নগরজীবনে। যেমন বিচিত্র তাদের সাজসজ্জা, তেমনই বিচিত্র এদের মুখের ভাষা। আহাৰ্যেও রূপান্তর ঘটেছে এই ভিনদেশীদের মুখে। পাঞ্জাবি খাবারের সঙ্গে পাবেন দক্ষিণ ভারতীয় ইডলি-দোসা। পাবেন মুম্বাই-এর ভেলপুরির পাশে পুরো বাঙালিয়ানা। নান আর রুমালি রুটিরও যথেষ্ট প্রশস্তি দিল্লীর হোটেল-রেস্তোরাঁয়। ১৬ শতকে মোগলদের সঙ্গে পারস্য থেকে আসা প্রণালীতে তৈরি মোগলি খানার স্বাদও নিতে পারেন: *মোতি মহল*—M-30 গ্রেটার কৈলাশ বা নেভাজী সুভাষ মার্গ, দরিয়াগঞ্জ; অদূরে গোলচা সিনেমার গলিতে নিরামিষ আহাৰ্যের *সুবিধা শাকাহারী*; *নিরুলা*—বসন্ত বিহার; *দি হোস্ট*—এফ ব্লক, কনট প্রেস; *এছ্যাসী*—১১ডি কনট প্রেস-এ। বিরিয়ানির জন্য *এছ্যাসীর* যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। ঠিক তেমনই দক্ষিণ ভারতীয় নিরামিষ আহাৰ্যের স্বাদ নিতে পারেন জনপথের *সোনা রূপায়*। আর চীনা আহাৰ্য পরিবেশনে রিগ্যাল ব্লকের স্থিতলে ডিং ডঙ যথেষ্ট খ্যাত। তেমনই কনট প্রেসের ই-ব্লকে *ইউনাইটেড কফি হাউস*, *কাভেচটার্স* দুয়েরই যথেষ্ট প্রশস্তি নানান ধর্মী পানীয়ের সাথে আহাৰ্য পরিবেশনে; তবুও যেন কনট সার্কাসের L Block-এ *হোটেল নিরুলা* আকর্ষণে অদ্বিতীয়। দেশী, চীনা ও কন্টিনেন্টাল মিল পরিবেষণা খুবই সুনাম এদের। ফাস্ট ফুড থেকে শুরু করে ঠাণ্ডা পানীয়ও মেলে। সংসদ মার্গের *কোয়ালিটি রেস্টুরেন্ট*-এরও দেশী-বিদেশী আহাৰ্যের জন্য যথেষ্ট সুনাম। আর একান্তই উচিত হবে ২২ কস্তুরবা গান্ধী মার্গ, কনট প্রেস, ৩ 3721616-এর ঘূর্ণমান *পরিক্রমা রেস্টুরেন্ট*-এ আহাৰ্যের স্বাদ নেওয়া। *Potpourri*, এল ব্লক, কনট সার্কাস; *Chopsticks*, এশিয়ান গেমস ভিলেজ, সিরি ফোর্ট রোড; চীনা ডিশের জন্য দুইয়েরই প্রশস্তি। আর ফাস্ট ফুডের স্বাদ নিন— *Nizam's Kathi Kabab*, Plaza Building বা *Wimpy's*, N-5 Janpath/ Karolbagh/Greater Kailash/Lajpat Nagar-এর যে কোনও শাখায়। এছাড়াও হোটেল রেস্তোরাঁ রয়েছে নানান মানের কনট প্রেস তথা দিল্লীর পথেঘাটে। তেমনই আহাৰ্য মেলে দিল্লীর প্রায় প্রতিটি হোটলে। তারকাভূষিত হোটেলগুলিতে ভারতীয়, মোগলিই ছাড়াও নানান দেশী-বিদেশী ডিশ মেলে।



দিল্লীতে বিমানবন্দর দুই। শহর থেকে ২০ কিমি দূরে আন্তর্জাতিক বিমানবন্দর ইন্দিরা গান্ধী ইন্টারন্যাশনাল এয়ারপোর্ট। আর একই চত্বরে শহরমুখী ৪.৫ কিমি ব্যবধানে অন্তর্দেশী টার্মিনাল পালাম। দুইয়ের মধ্যে শটল কোচ সার্ভিস চালু। দুই টার্মিনালেই যাত্রী পরিবেষণা নন্দন

ব্যবস্থা। ইন্দিরা গান্ধী থেকে সারা বিশ্বের সঙ্গে বিমান সংযোগ রয়েছে দিল্লীর। বিমান আসছে এয়ার ইন্ডিয়া ছাড়াও নানান বিদেশী সংস্থার দেশ-দেশান্তর থেকে দিল্লীতে। আর IAC, Alliance Air, Vayudoot ছাড়াও প্রাইভেট বিমান যাচ্ছে পালায় থেকে ভারতের দিকে। বিমানও এদের—Airbus, Boeing, Dornier ছাড়াও নানানকারী। দুই টার্মিনাল থেকেই এক সার্ভিস মেনে এয়ার লিঙ্ক ট্রান্সপোর্ট সার্ভিস (EATS)-এর বাস শহরে যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে। চলার পথেও যাত্রী তোলা-নামা করে অনুরোধে। তেমনই দিল্লী ট্রান্সপোর্ট করপোরেশনের বাসও যাচ্ছে এয়ার যাত্রী নিয়ে নিউ দিল্লী, দিল্লী জং ও কাশ্মীরি গেট বাস স্ট্যান্ডে। যাত্রী বাস (780), ট্যাক্সি ও মেলে (মিটার প্রিপেড) বিমানবন্দর থেকে শহরে যেতে।

বিমান যাচ্ছে ২ ঘণ্টায় কলকাতা (৩ ফ্লাইট); ২ ঘণ্টায় মুম্বাই (৬ ফ্লাইট); ১১ ঘণ্টায় আমেদাবাদ (২ ফ্লাইট); ২১ ঘণ্টায় চেন্নাই (৩ ফ্লাইট); ২ ঘণ্টায় হায়দ্রাবাদ (২ ফ্লাইট); ২১ ঘণ্টায় ব্যাঙ্গালোর (২ ফ্লাইট); ১১ ঘণ্টায় পাটনা; তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে প্রতিদিন মুম্বাই হয়ে ৪১ ঘণ্টায়; ১ ১৫ ১৫ দিন ৪০ মিনিটে জয়পুর পৌছে উদয়পুর; ২ ৪ ৬ দিন জয়পুর, যোধপুর হয়ে ওরসাবাদ। প্রতিদিন ২ ঘণ্টায় পুনে; ২১ ঘণ্টায় গোয়া পৌছে কোচি যাচ্ছে ৪ ঘণ্টায় প্রতিদিন; ১ ১৫ দিন বাগডোগরা হয়ে গুয়াহাটি, ২ ৬ দিন ২১ ঘণ্টায় গুয়াহাটি পৌছে ইক্ষল যাচ্ছে ৩১ ঘণ্টায়; পাটনা হয়ে রাচি যাচ্ছে প্রতিদিন; প্রতিদিন ১১ ঘণ্টায় বারাণসী সরাসরি; প্রতিদিন ৩৫ মিনিটে আগ্রা পৌছে বাজুরাহা হয়ে বারাণসী; ১ ১৫ ১৫ দিন লক্ষ্ণৌ-পাটনা-কলকাতা; প্রতিদিন ভুবনেশ্বর; ১১ ঘণ্টায় জম্মু পৌছে শ্রীনগর যাচ্ছে ২১ ঘণ্টায় প্রতিদিন, ১ ১৫ দিন শ্রীনগর যাচ্ছে ১১ ঘণ্টায় সরাসরি; লে যাচ্ছে ২ ৪ ৬ ৭ দিন ১১ ঘণ্টায়, ১ ১৫ দিন ১১ ঘণ্টায় সরাসরি; ১ ১৫ দিন গোয়ালিয়র-ভূপাল-ইন্দোর; ২ ৪ ৬ ৭ দিন দিল্লী-ভূপাল-ইন্দোর; ভাদোদরা যাচ্ছে প্রতিদিন ১১ ঘণ্টায়; ২ ৪ ৬ দিন ৪০ মিনিটে চণ্ডীগড় পৌছে অমৃতসর; প্রতিদিন দিল্লী-নাগপুর-রায়পুর ছাড়াও বিমান যাচ্ছে IAC-র ভারতের নানান শহরে। আর এয়ার ইন্ডিয়া বা নানান বিদেশী সংস্থার বিমান ইন্টারন্যাশনাল ফ্লাইটে অংশদেয়ী যাত্রীও বহন করে চলার পথে।

বিশেষে উড়ান যাচ্ছে IAC-র দিল্লী থেকে। প্রতিদিন Kathmandu যাচ্ছে ১১ ঘণ্টায়, Muscat যাচ্ছে ২ ৪ ৬ দিন, Sharjah যাচ্ছে ১ ১৫ দিন, Bangkok যাচ্ছে ৪ ৭ দিন।

IAC-র দপ্তর বসেছে কনট প্লেসের অদূরে Kanchenjunga Building, Barakhamba Rd, ৩ ৩১২৫৬৭; Asaf Ali Rd, ৩ ৩২৭৪৬০৭; Ashok Hotel, ৩ ৬১ ১০১০১; Connaught Place, ৩ ৩৩১০১৫৭; Parliament St, ৩ ৩৭১১৬৮; Safdarjung Main Booking Office (7-00—21-00 hrs), ৩ ৪৬২০৫৬৬; Flight : ৩ General ১৪১/ Arr ১৪২/ Dep ১৪৩.

IAC-র সহযোগী সংস্থা বাদ্যুতও সার্ভিস গড়েছে—রবি ছাড়া প্রতিদিন দিল্লী-লুথিয়ানা-চণ্ডীগড়, চণ্ডীগড়-কুল, চণ্ডীগড়-সিমলা, ২ ৪ ৬ দিন দিল্লী-চণ্ডীগড়-ধরমশালা, ১ ২ ৩ ৪ ৫ ৬ দিন দিল্লী-চণ্ডীগড়-কুল, রবিবার দিল্লী-কুল, যোধপুর-জয়সলমীর, কানপুর-লক্ষ্ণৌ, রবি ছাড়া প্রতিদিন সেরাদুন, ১ ১৫ দিন গহনগরের সাথে দিল্লীর। এদের দপ্তর Malhotra Building, Janpath, ৩ ৩৩১২৫৮৭.

আর যাচ্ছে প্রাইভেট বিমান: Airways ৩ ৬৮৫৩৭০০

Flight Information ৩ ৩২৫৪০৪ সার্ভিস গড়েছে—

আমেদাবাদ, বাগডোগরা, ব্যাঙ্গালোর, কলকাতা (২ ফ্লাইট),

গুয়াহাটি, জম্মু, মুম্বাই (৫ ফ্লাইট), শ্রীনগর, গোয়া, পুনে, ম্যাসালোর,

চেন্নাই, কোচি, ওরসাবাদ ছাড়াও নানান। Sahara India Airlinesও সার্ভিস গড়েছে দিল্লী থেকে—মুম্বাই, চেন্নাই, ব্যাঙ্গালোর, লক্ষ্ণৌ, বারাণসী, পাটনা, গুয়াহাটি ছাড়াও নানান। Skyline NEPC প্রতিদিন চেন্নাই, মুম্বাই (২ ফ্লাইট), কোচি, ১ ৫ দিন আগাতি, রবি ছাড়া প্রতিদিন ত্রিটা, শনি ও রবি ছাড়া প্রতিদিন ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে দিল্লী থেকে। Damania Airways প্রতিদিন ১১ ঘণ্টায় আমেদাবাদ পৌছে মুম্বাই যাচ্ছে ৩ ঘণ্টায়, Delhi Reservation ৩ ৬৮৮ ১২২/ ৩৩২২৫২৫; Jet Airways যাচ্ছে প্রতিদিন ১১ ঘণ্টায় আমেদাবাদ, প্রতিদিন ব্যাঙ্গালোর যাচ্ছে ২১ ঘণ্টায়, প্রতিদিন গোয়া যাচ্ছে ২১ ঘণ্টায়, প্রতিদিন ১১ ঘণ্টায় বাগডোগরা পৌছে গুয়াহাটি যাচ্ছে ২১ ঘণ্টায়, Delhi ৩ ৩৭২৪৭২; East-West Airlines দৈনিক সার্ভিস গড়েছে দিল্লী থেকে ব্যাঙ্গালোর (২ ফ্লাইট), চেন্নাই, রবি ছাড়া প্রতিদিন কলকাতার, Delhi ৩ ৩৭২১৫১০/৩৭৫৫১৬৭. এছাড়াও City Link Services, Jagan Airlines, Modi Luft, ৩ ৬৪৩০৬৮৯; Jagson Airlines, ৩ ৩৭১১০৬৭ সার্ভিস গড়েছে ভারতের নানান শহরের সঙ্গে দিল্লীর।



রেল সংযোগও গড়ে উঠেছে দিল্লীর—দুই সংযোগকারী স্টেশন দিল্লী জং ও নিউ দিল্লীর সঙ্গে ভারতের বিভিন্ন প্রান্তের। দুইয়ের মাঝে ব্যবধান ৪ কিমি। রেল, বাস (No ৬), ট্যাক্সি ও অটো সংযোগ গড়েছে। নিউ দিল্লী থেকে ব্রডগেজ আর দিল্লী জং থেকে ব্রডগেজের চল থাকলেও মিটারগেজও আছে। মিটারগেজে ট্রেন যাচ্ছে রাজস্থানের দিকে দিকে ৪ কিমি দূরের আর এক রেল স্টেশন দিল্লী সরাই রোহিলা থেকে। দিল্লীর আর এক বেল সংযোগকারী স্টেশন হজরত নিজামুদ্দিন। রেল যাচ্ছে—আগ্রা, গোয়া, আমেদাবাদ, আজমের, অমৃতসর, গোয়ালিয়র, ব্যাঙ্গালোর, বিলাসপুর, ভূপাল, ভুবনেশ্বর, মুম্বাই, চণ্ডীগড়, নাঙ্গাল, কোচি, সেরাদুন, ভিহুগড়, ডিমাপুর, ফিরোজপুর, গোরক্ষপুর, গুয়াহাটি, সেকেন্দ্রাবাদ, জব্বলপুর, ইন্দোর, জম্মু, জয়পুর, যোধপুর, বিকানীর, কানপুর, লক্ষ্ণৌ, লামডিং, বারাণসী, এলাহাবাদ, চেন্নাই, মালদহ, ম্যাসালোর, মজাফরপুর, নাগপুর, পাটনা, পুনে, পুরী, রায়পুর, রাঁচী, সিমলা, শিলিগুড়ি, টাটনগর, তিরুভনন্তপুরম, উদয়পুর, ওয়ালটোয়ার তথা কাশ্মীর থেকে কন্যাচুমারিকা—ভারত রাষ্ট্রের রাজধানী থেকে।

শীতাতপ রাজধানী এক্সও যাচ্ছে নতুন দিল্লী থেকে মুম্বাই, চেন্নাই, ব্যাঙ্গালোর, তিরুভনন্তপুরম, ভুবনেশ্বর, হায়দ্রাবাদ, জম্মু, আমেদাবাদ, সেকেন্দ্রাবাদ, পাটনা, তিরুগড় ও কলকাতার মাঝে। প্রতিদিন ১ ৪৪ ১ কিমি দূরের হাওড়া যাচ্ছে ১ ৭১ ঘণ্টায়, ১ ৩৮ ৪ কিমি দূরের মুম্বাই যাচ্ছে দিনে দুই ১ ৭ ঘণ্টায়। ভাড়াৎ আধিক্য লাগলেও গতি এসের দ্রুত। আহর-সহ ভাড়া রাজধানী এক্সে।

ভারতের দ্রুততম ট্রেন শতাব্দী এক্স। চলছে বারো জোড়া নতুন দিল্লী থেকে। আর চলে ব্যাঙ্গালোর থেকে স্বলি, মহীশূর-ব্যাঙ্গালোর-চেন্নাই, চেন্নাই-কোয়েম্বাটুর, মুম্বাই-ভাদোদরা-আমেদাবাদ। আর হাওড়া থেকে রাউরকেলা ও হাওড়া থেকে বোকারোঁর মাঝে। শীতাতপ শতাব্দী এক্সে গতির সঙ্গে ভাড়াতেও বৃদ্ধি ঘটে। আহর-সহ ভাড়া শতাব্দীতেও। ২০০৩/২০০৪ শতাব্দী কানপুর হয়ে ৪৮৭ কিমি দূরের লক্ষ্ণৌ যাচ্ছে ৬-২০৫ নিউ দিল্লী ছেড়ে ৬১ ঘণ্টায়, ফেরে ১৫-২০৫। ৬-১৫৭ ২০০১/২০০২ শতাব্দী যাচ্ছে আদোলা-পালাছির-কাঁদী হয়ে ৭১ ঘণ্টায় ৭০৫ কিমি দূরের ভূপাল, ফেরে ১৪-৪০৫। ২০১৫/২০১৬ শতাব্দী এক্স ৬-১৫৭ নিউ দিল্লী ছেড়ে ব্রডগেজে আলোরায়/জয়পুর হয়ে আজমের যাচ্ছে

১২-৪০এ, ফেরে ১৫-৪০এ আজমের থেকে শতাব্দী। 2013/2014 শতাব্দী এবং ১৬-৩০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে লুথিয়ানা- জলন্ধর হয়ে ৪৪৩ কিমি দূরের অমৃতসর যাচ্ছে ২২-২০এ, ফেরে ৫-১০এ। 2011/2012 শতাব্দী যাচ্ছে ৭-৩০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ১০-৩০এ চণ্ডীগড়, ফেরে ১২-২০এ। 2005/2006 শতাব্দী যাচ্ছে ৭-১৫য় নতুন দিল্লী ছেড়ে আখালা ১৯-৩৩, চণ্ডীগড় ২০-১০এ পৌছে ১১-০০টায় ২৬৮ কিমি দূরের কলকাতা ফেরে ৬-০০টায়। 2017/2018 শতাব্দী যাচ্ছে বৃহস্পতিবার ছাড়া ৭-১০এ নিউ দিল্লী ছেড়ে ১১-০৯এ হরিদ্বার পৌছে ১২-২৫এ দেৱাদুন, ফেরে ১৭-০০টায়। তেমনি আর এক টুরিস্ট ট্রেন তাজ এবং ৭-১৫য় হজরত নিজামুদ্দিন ছেড়ে ২২ ঘণ্টায় আগ্রা পৌছে গোয়ালিয়র যাচ্ছে ১১-৫৫য়। দিনে দিনে একক যাত্রায় তাজ দর্শনার্থীদের উচিতও হবে শতাব্দী বা তাজ এক্সে আগ্রা চলা। ২০-১৮য় শতাব্দী, ১৮-৩৫এ তাজ এক্স আগ্রা ক্যান্ট ছেড়ে দিল্লী পৌছায় ২২-২৫/ ২১-৪৫এ। আর যাচ্ছে দিন-রাত্রি জুড়ে মধ্য-পশ্চিম-দক্ষিণ ভারতের নানান ট্রেন দিল্লী, নিউ দিল্লী, হজরত নিজামুদ্দিন থেকে আগ্রা ক্যান্ট/ফোর্ট হয়ে। আর এক পপুলার ট্রেন 4004/4003 ইন্টারসিটি এবং ১৯-৩৫এ হজরত নিজামুদ্দিন ছেড়ে আগ্রা ক্যান্ট যাচ্ছে ২২-৪০এ; দিল্লী ফেরে আগ্রা ক্যান্ট থেকে ৬-০০টায় ইন্টারসিটি।

রেল রয়েছে দ্রুতগামী, শীতাতপ, মেল ও এক্স নানানধর্মী। কলকাতার সঙ্গে সরাসরি রেল সংযোগ গড়েছে বিহার ও উত্তর প্রদেশের উপর দিয়ে। দূরত্ব ১৪৪৫ কিমি, সময় নেয় ১৭½ থেকে ৩৮ ঘণ্টা। দ্রুতগামী ট্রেন A/c 2301 রাজধানী রাজপুতাহের। 124 5 6 দিন ১৭-০০টায় হাওড়া ছেড়ে ধানবাং-গয়া-মোগলসরাই-এলাহাবাদ-কানপুর থেকে পরদিন সকাল ৯-৪০এ পৌছায় নতুন দিল্লীতে। কলকাতায় ফেরে নতুন দিল্লী থেকে 234 6 7 দিন ১৭-১৫-য়। আর 2305 রাজধানী এক্স 3 7 দিন ১৩-৪৫এ হাওড়া ছেড়ে মধুপুর-পাটনা-মোগলসরাই-এলাহাবাদ-কানপুর হয়ে ১০-০০টায় নতুন দিল্লী যাচ্ছে। ফেরে 1 5 দিন ১৭-০০টায় নতুন দিল্লী থেকে। 3 7 দিন 2421 ভুবনেশ্বর-হাওড়া-নতুন দিল্লী রাজধানী এক্সও যাচ্ছে ১৭-০০টায় হাওড়া ছেড়ে পরদিন ৯-৪০এ; ফেরে 1 5 দিন ১৭-১৫য় নতুন দিল্লী থেকে। আর যাচ্ছে 34 7 দিন ৯-১৫য় 2381 পূর্বা এক্স, 1 2 5 6 দিন ৯-১৫য় 2303 পূর্বা এক্স, প্রতিদিন যাচ্ছে ১৯-১৫য় 2311 কালকা মেল, ৯-৪৫এ 3007 তুফান উদ্যান আভা এক্স, ২১-০০টায় হাওড়া-দিল্লী 3039 জনতা এক্স, ২০-১৫য় শিয়ালদহ-দিল্লী 3111 লালকোয়া এক্স। গরব প্রত্যেকের দিল্লী হলেও পথ এদের ভিন্ন ভিন্ন। ২৬ ঘণ্টায় পূর্বা এক্স নতুন দিল্লী বা কালকা মলে ২৪½ ঘণ্টায় দিল্লী জংশন (পুরনো দিল্লী) যাওয়াই সুবিধার।

ভেনাই উচিত হবে জরপুর চলাপ থেকে ৫-৪৫এ দিল্লী সরাই রোহিলা (Delhi Sarai Rohila) ছাড়া 9617 গরিব নওয়াজ এক্সের যাত্রী হওয়া। গরিব নওয়াজ পৌছায় ১২-০০টায় জয়পুরে। গরিব নওয়াজ-এর একটা অংশ উদয়পুর যাচ্ছে (রবি ছাড়া) জয়পুর থেকে; আর ১৪-১০এ দিল্লী সরাই রোহিলা ছেড়ে ২২-০০টায় জয়পুর পৌছে জরপুর চলাপ থেকে ৫-৪৫এ উদয়পুর যাচ্ছে 9615 চৈতক এক্স। এছাড়া ২২-১০এ দিল্লী-আমেদাবাদ মেল, ১৫-০৫এ দিল্লী-আমেদাবাদ আশ্রম এক্স, ২৩-১০এ দিল্লী-শেখাবতী এক্স; ২১-১০এ দিল্লী সরাই-আজমের 9621 এক্স। আর নবতর ব্রডগেজে ৬-১৫য় নিউ দিল্লী-আজমের 2015 শতাব্দী এক্স, ৫-১৫য় 2413 দিল্লী জং-জয়পুর এক্স, ১৭-০০টায় দিল্লী জং-জয়পুর ৭760 ইন্টারসিটি এক্স, ১২-০০টায় 4311 বেরলি-দিল্লী জং

আজমের এক্স, ২১-০০টায় দিল্লী জং-যোধপুর মাতোর এক্স প্রতিটা ট্রেন জয়পুর/আজমের হয়ে যাচ্ছে।

বিকানীর যাচ্ছে ১২ ঘণ্টায় ৮-৩৫এ 4789 দিল্লী সরাই রোহিলা-বিকানীর এক্স, ২১-২৫এ 4791 বিকানীর মেল, ২৩-১০এ ছাড়া শেখাবতীর অংশও যাচ্ছে লোহাক হয়ে। যোধপুর যাচ্ছে ব্রডগেজে ২১-০০টায় দিল্লী জং ছেড়ে পরদিন ৭-১৫য় 2461 মাগোর এক্স। 2427 আমোদাবাদ রাজধানী এক্স প্রতি শনিবার ১৯-৪৫, আশ্রম এক্স ১৫-০৫, আমোদাবাদ মেল ২২-১০এ দিল্লী সরাই রোহিলা ছেড়ে মাউন্ট আবুর যাত্রী নিয়ে যথাক্রমে ৭-১৫, ৮-১৫, ১৩-৪৫এ আবু রোড পৌছে আমোদাবাদ যাচ্ছে।

সিমলা যাচ্ছে 4096 হিমালয়ান কুইন ৬-০০টায় নতুন দিল্লী ছেড়ে ১০-১০এ চণ্ডীগড়, ১১-০৫এ কালকা পৌছে নারো-গজের পাছাড়ী রেলে ১৭-২০এ। আর হাওড়া থেকে আসা কালকা মেল যাচ্ছে ২২-৪৫এ দিল্লী জং ছেড়ে চণ্ডীগড় ৩-৪০, কালকা ৫-০০টায় পৌছে ১০-১৫য়। দ্রুততম ট্রেন 2005 শতাব্দী এক্স যাচ্ছে ১৭-১৫য় নিউ দিল্লী ছেড়ে ১৯-৩৩ আখালা, ২০-১০ চণ্ডীগড়, ২১-০০টায় কালকা পৌছে পবদিন ৮-১০এ কালকা ছেড়ে ৯-২৫এ সিমলায়। চণ্ডীগড় যাচ্ছে আখালা ক্যান্ট হয়ে কালকার প্রতিটি ট্রেন ছাড়াও ৭-৩০এ নিউ দিল্লী ছেড়ে ৩ ঘণ্টায় 2011 শতাব্দী এক্স। আর প্যাসেঞ্জার ট্রেন ১৩-১০এ দিল্লী জং ছেড়ে আখালা ১৯-৫০, চণ্ডীগড় ২১-১০এ পৌছে কালকায় যাচ্ছে ২২-২৫এ। আর কালকা থেকে নারো গেজে ৫½ ঘণ্টায় ট্রেন যাচ্ছে সিমলায় ৮-০০ প্যা, ৫-৩০ সুপার ফাস্ট, ৬-২০ মেল, ৭-০০ এক্স, ১১-২০ রেলমটর, ১১-৪০ এক্স, ১২-১০এ এক্স। মুসৌরী পাহাড়ের যাত্রী নিয়ে দেৱাদুন যাচ্ছে ২২-২০এ দিল্লী জং ছেড়ে লন্ডার ৫-১০, হরিদ্বার ৫-৪৫এ পৌছে ৭-৪৫এ 404। মুসৌরী এক্স; ৬-২৫এ নিউ দিল্লী, ৭-৪০এ দিল্লী জং, ৯-২২এ মিরাত, ১৩-৩০এ লন্ডার, ১৫-০০টায় হরিদ্বার ছেড়ে ১৬-৪৫এ 9019 মুম্বাই-দেৱাদুন এক্স; ১৩-০৫এ নিউ দিল্লী ছেড়ে ১৬-৫০এ হরিদ্বার পৌছে ১৮-৩০এ 4309 উজ্জয়িন-দেৱাদুন উজ্জয়িন এক্স; বৃহস্পতি ছাড়া প্রতিদিন ৭-১০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ১১-০৯এ হরিদ্বার পৌছে দেৱাদুন যাচ্ছে ১২-২৫এ 2017 শতাব্দী এক্স। ফেরে যথাক্রমে ২১-৩০, ১১-৪৫, ৬-০০, ১৭-০০টায় দেৱাদুন থেকে।

১৬-৩০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে লুথিয়ানা/জলন্ধর হয়ে ২২-১০এ অমৃতসর যাচ্ছে 2013 নিউ দিল্লী-অমৃতসর শতাব্দী এক্স; ৬-৫০এ নিউ দিল্লী ছেড়ে অমৃতসর যাচ্ছে ১৩-৪৫এ 2497 শান-পাঞ্জাব এক্স; ১৩-১০এ নিউ দিল্লী ছেড়ে ২০-৩৫এ অমৃতসর যাচ্ছে 4659 নিউ দিল্লী-অমৃতসর এক্স; ১২-১০এ দিল্লী জং ছেড়ে ২১-০৫এ অমৃতসর যাচ্ছে 4647 স্নাইং মেল; মুম্বাই-অমৃতসর পশ্চিম এক্স, দাদার-অমৃতসর এক্স, মুম্বাই-অমৃতসর গোভেন্দ টেম্পল মেল, বিলাসপুর-অমৃতসর হস্তিশগড় এক্স, টাটা-হাতিয়া-পাঠানকোট এক্স, উৎকল কলিঙ্গ এক্স, নারোডে-অমৃতসর এক্স, বরাহাট্টা-অমৃতসর এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন যাচ্ছে দিল্লী হয়ে।

জম্মু যাচ্ছে প্রতি বৃহস্পতিবার ২০-২০এ হজরত নিজামুদ্দিন, ২০-৫০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে পরদিন ৫-৪৫এ 2425 রাজধানী এক্স, ২১-১০এ দিল্লী জং ছেড়ে 4033 জম্মু মেল, ২২-৩০এ 2403 দিল্লী জং-জম্মু জেওরাই এক্স, ১৬-১০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে 4645 শালিয়ার এক্স আখালা/লুথিয়ানা হয়ে পরদিন ১০-৩৫, ৮-১৫, ৬-৩০এ। আর যাচ্ছে পূর্বা-জম্মু বিলায় এক্স, 14 5 দিন সেরাই-জম্মু এক্স, সাপ্তাহিক হিমসাগর এক্স, 1 2 5 6 দিন মুম্বাই-জম্মু এক্স, এলাহাবাদ

অনু মালোয়া এক্স, মুখাই সেটাইল-অনু বরাজ এক্স, সর্বোদয় এক্স নতুন দিল্লী হয়ে। 4553 হিমালয় এক্স যাচ্ছে ২৩-২০এ দিল্লী জং থেকে কুরুক্ষেত্র-আখালা হয়ে পরদিন ৬-৫০এ নাসাল পৌছে ৭-৪০এ উনা।

| দিল্লী থেকে হাউস থেকে HSRTC থেকে ১০-০০ টি পরপর এক্স | |
|---|---|
| আয়া DTC (P-20) | : ১১-১০ |
| " UPSRTC | : ৪-৩০—১৯-৩০এ প্রতি ৩০ মিনিট অন্তর |
| " HSRTC | : ৯-০৫, ১০-২০, ১৪-৩৫, ১৫-৩০ |
| হরিদ্বার DTC (P-28) | : ৫-৪৫, ৬-৪৫, ৭-৪৫, ৮-১৫, ৯-৪৫, ১০-২৫, ১১-৪৫, ১২-২৫, ১৫-০৫, ১৭-০৫ |
| " UPSRTC | : ৫-০০ থেকে ২৩-৩০টায় ৩০ মিনিট অন্তর |
| লকৌ DTC (P-27) | : সুপার ডিলার |
| " UPSRTC | : ৬-৪৫, ৯-১৫, ১২-৩০, ১৪-১৫, ১৫-১৫, ১৬-০০, ১৭-০০, ২০-০০, ২১-০০ |
| সেরাঘন DTC (P-28) | : ৭-১৫, ৯-১৫, ১১-১৫, ১২-৩৫, ১৪-৩৫, ১৬-০০, ২১-৩০ |
| " UPSRTC | : ৫-০০, ৫-৫৫, ৬-৩৫, ৭-৩৫, ৮-৩৫, ৯-৩৫, ১০-১৫, ১০-৩৫, ১২-০০, ১৩-১৫, ১৫-১৫, ১৫-৩০, ১৬-৪৫, ১৭-৩০, ১৮-১০, ২০-৩০, ২২-৩০ |
| সুপার ডিলার | : ৭-৫৫, ১১-৫৫, ১২-৩৫, ১৬-১৫, ২০-৩০ |
| মুসৌরী UPSRTC (P-29) | : ডিলার ৫-১৫ |
| রানীকেত UPSRTC (P-32) | : ৫-০০, ১৯-০০, ১৯-৩০, ২০-১৫, ২০-৩০, ২১-০০ |
| নৈনীতাল DTC (P-32) | : ১১-০০ |
| " UPSRTC | : ৭-০০, ১৫-৩০, ২০-৩০, ২১-৩০, ২২-০০ |
| আলমোড়া UPSRTC | : ৬-০০, ২০-০০ |
| হালদুয়ানি DTC (P-32) | : ৮-০০ |
| " UPSRTC | : ৬-৪৫, ৭-৪৫, ৯-৪০, ১০-০০, ১১-০০, ১২-০০, ১৪-৩০, ১৫-২০ |
| মোরাবাদ DTC (P-26) | : ৭-২৫, ৮-৪০, ১০-২৫, ১১-৪০, ১৩-৪০ |
| " UPSRTC | : ৩-৩০, ৮-০০, ৯-৩০, ১০-০০, ১১-০০, ১১-৪৫, ১২-০০, ১২-১৫, ১৩-০০, ১৩-১৫, ১৩-৩০, ১৪-৫০, ১৬-০০, ১৮-০০, ২০-০০, ২২-৪৫, ২৩-৪৫ ছাড়াও কাঠগোদায়, রামনগরের নানান বাস |
| বেরিলি UPSRTC (P-32) | : ১১-১৫, ৬-৫০, ৭-২০, ৮-১৫, ১০-১৫, ১১-৪৫, ১৩-০০, ১৫-৫০, ১৮-৩০, ১৯-০০, ২০-০০, ২১-৩০ |
| " DTC | : ৭-২৫ |
| চতীপড় DTC (P-6) | : ১০-০৫, ১১-৩০, ১৩-৪০, ১৮-০০ |
| " PSRTC | : ৪-০০—২৪-০০টায় প্রতি ৩০ মিনিট অন্তর, A/C বাস ৯-০৫, ১১-৪০, ১৩-৩০, ১৪-১৫, ১৫-৩০, ১৬-৪০, ১৮-৩০ |
| ডিলার | : ৭-৪৫ |

| | |
|------------------------|--|
| " UPSRTC | : ১৩-০৫ |
| " RSRTC | : ১৩-০৮ |
| কুরুক্ষেত্র DTC | : ৮-০৮ ছাড়াও কালকা ও চতীপড়ের নানান বাস |
| কালকা HSRTC (P-11) | : ৩-৩০, ৪-৫০, ৫-৪৩, ১০-৪৫, ১১-১৫, ১২-১২, ১৩-২৫, ১৬-২০, ২২-৩০ |
| সিমলা HPSTC (P-6) | : ৮-০৫, ৯-২৫, ১৯-১০ |
| " HSRTC | : ৩-৩০, ৫-৩৫, ৭-৩০, ৯-৫৬, ১০-৫০, ২০-৩০, ২১-৫৫, ২২-০০ |
| ডিলার | : ৭-৩০, ৯-৩০ |
| নাসাল PSRTC | : ৬-২২ |
| " HSRTC | : ৫-৫০, ৭-২০, ১০-২১ |
| অমৃতসর HSRTC (P-7) | : ৮-২৫, ১২-১০, ২১-১৫ |
| " PSRTC | : ৫-০০ ডিলার, ১০-১২, ১২-২০ |
| পাঠানকোট HSRTC (P-7) | : ১০-৩৫, ১১-৫৫, ১৪-০০, ২৩-০০ |
| " PSRTC | : ৪-১০, ৬-৩৬, ১৮-৩০, ২২-১৫ |
| অনু PSRTC | : ৫-২০ |
| " HSRTC | : ৬-১৫, ৭-০৫, ৮-১০, ৯-৪০, ১৮-৪৫, ২১-৪৫ |
| কুল/মানালী HPSTC | : ডিলার ৬-৫০, ১৭-৪০, ১৮-৪০, ২১-১৫ |
| মধুরা HSRTC | : ৬-০০, ৮-৪৫, ৯-৩০, ১৪-০০, ২০-৩০ |
| বৈজনাথ HPSTC | : ২১-০৫ |
| জয়পুর DTC | : ১১-১৫, ১১-৩০, ১৬-২৯ |
| " HSRTC | : ৪-৪৫, ৫-১৫, ৮-০০, ৮-০০ (ডিলার), ৮-৫০, ৯-০০, ৯-১৫, ১০-০০, ১৩-০০, ১৩-২০, ১৩-৩০, ১৪-০০, ১৫-০০, ১৫-৩০ (ডিলার), ১৬-৪০, ১৭-০০, ১৭-০০ (VCR) |
| " RSRTC | : ১-০০, ৪-৩০, ৫-২০, ৬-০০, ৬-২০, ৬-৫০, ৯-১৫, ১০-৩০, ১১-০০, ১৪-০০, ১৪-২০, ১৬-০০, ১৮-০০, ১৮-৩০, ২০-৩০, ২১-০০, ২১-৩০ |
| " " via কটিপুতলী | : ডিলার ৬-৩০, ১০-৩০, ১৬-০০, ১৭-৩০, ১৮-৩০, ২০-০০, ২২-৩০, ২৩-০০, ২৪-০০, ০০-৩০ |
| " " বিকানীর হাউস থেকে: | : ৬-৪৫—১২-০০টায় প্রতি ৪৫ মিনিট অন্তর, এরপর ১৩-০০, ১৩-৪৫, ১৫-০০, ১৫-৪৫, ১৬-৩০, ১৭-৩০, ২২-০০, A/C ৭-৩০, ১৬-০০ |
| ভরতপুর DTC | : ৮-১৫ |
| " RSRTC | : ১১-৪৫, ১৬-৪৫ |
| " HSRTC | : ১১-১৫, ১৫-২০ ছাড়াও নানান |
| আলোয়ার DTC | : ৬-১০, ৯-৪৫ |
| " RSRTC | : ১৪-২৮, ১৬-১২, ১৭-৩০ |
| " HSRTC | : ৮-২৫, ১০-২৫, ১০-৫৬, ১২-০০, ১২-৪০, ১৩-৫৬, ১৫-৩০, ১৮-৩০, ২০-১৫ |
| পাতিয়ালা DTC | : ১১-৩০, ১৪-৪৫ |

আর যাচ্ছে : আজমের—DTC: ৭-৪০, ১২-২৫; RSRTC: ১১-৩০; HSRTC: ১৩-১০; যোধ্যপু—RSRTC: ৬-০০, ২০-০০; চিতোরগড়—RSRTC: ১৬-০০; উদয়পুর—RSRTC: ১৭-৩০; বিকানীর—DTC: ৬-২০; গোয়ালিয়র—RSRTC: ৭-০০, ৮-০০, ৮-৩০, ১০-০০, ১২-১৫; HSRTC: ১১-৩৫; কাটরা—HSRTC: ২৪-০০; চায়া—HPSTC: ২২-৩০; নাহান—HPSTC: ১৪-০০টায়। গজিয়াবাদ যাচ্ছে DTC ২০—৪০ মিনিট ব্যবধানে; মিরাত যাচ্ছে DTC/UPSTC ৫-০০ থেকে ২২-০০টায় ১০ মিনিট অন্তর; এছাড়াও বাস যাচ্ছে উত্তর, পশ্চিম ও মধ্য ভারতের দিকে দিকে দিল্লী থেকে।

লঙ্কো যাচ্ছে ৬২ ঘটায় ৬-২০এ ২০০৪ শতাব্দী এক্স, ১৪-২০এ ২৪২০ গ্যামতী এক্স (রবি ছাড়া) ৮ ঘটায়, ২২-০০টায় ৪২৩০ লঙ্কো মেল ৯ ঘটায় ছাড়াও ৫৭ দিন দিল্লী-রঙ্গোলা এক্স, ১৩৬ দিন ২১-০০টায় দিল্লী-দ্বারভাঙ্গা সরযু-যমুনা এক্স, ২৪৫৭ দিন ২১-২০এ দিল্লী জং-দ্বারভাঙ্গা শহীদ এক্স, ১৯-৪৫এ ২৫৫৪ বৈশালী এক্স, ২১-৪৫এ মালদহ-ভিওয়ানি ফারাকা এক্স, ১৩-২০এ শ্রমজীবী এক্স, ২৫৭ দিন ১৬-৩৫এ নিউ দিল্লী-পুরী নীলাচল এক্স, ২৪৫৭ দিন সম্ভাবনা এক্স, ১৬ দিন দিল্লী-সুলতানপুর এক্স, আয়ুধ-অসম এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন। এলাহাবাদ যাচ্ছে ২১-০০টায় ছেড়ে ৯ ঘটায় নিউ দিল্লী-এলাহাবাদ ২৪১৪ প্রয়াগরাজ এক্স, ১২৫ দিন ১৬-৩০এ পূর্বা এক্স, ১৩৪৬ দিন নিউ দিল্লী-পুরী এক্স, পুরুষোত্তম এক্স, মগধ-বিক্রমশিলা এক্স, পাঠানকোট-হাতিয়া এক্স, আখালা-এলাহাবাদ এক্স, কলকাতা রাজধানী এক্স; দিল্লী জং থেকে যাচ্ছে ১৫-৫০এ দিল্লী-মজদফরপুর এক্স, ৬-৪০এ দিল্লী-কাটিহার মহানন্দা এক্স, ৭-৩০এ কালকা মেল, ২০-০৫ লালকোরা এক্স, ২১-০৫এ দিল্লী-ভিক্রগড় ব্রহ্মপুত্র মেল, ২৫ দিন দিল্লী-বাঁচি এক্স, ১৫-৫০এ দিল্লী-মজদফরপুর লিঙ্কবি এক্স, সাহারানপুর-এলাহাবাদ নৌচতী এক্স ছাড়াও পাটনা-হাওড়া-পুরী-গুয়াহাটির নানান ট্রেন। বারানসী যাচ্ছে ১৬২ ঘটায় ১২-৩০এ ৪২৫৪ কাশী বিশ্বনাথ এক্স, ১৩৬ দিন ২১-২০এ ৪৬৫০ সরযু-যমুনা এক্স, ৪৭ দিন নিউ দিল্লী-পাটনা রাজধানী এক্স, ২১-৪৫এ ভিওয়ানি-দিল্লী জং-মালদহ ফারাকা এক্স ছাড়াও নানান ট্রেন। কাটিহার/ নিউ জলপাইগুড়ি হয়ে গুয়াহাটি যাচ্ছে নর্থ ইষ্ট এক্স, আয়ুধ-অসম এক্স, ত্রিশাণ্ডহিক রাজধানী এক্স; গুয়াহাটি হয়ে ভিক্রগড় যাচ্ছে ব্রহ্মপুত্র মেল। বরাহুনি যাচ্ছে বৈশালী এক্স; মালদহ যাচ্ছে ব্রহ্মপুত্র মেল ও ভিওয়ানি-মালদহ-ফারাকা এক্স; নিউ জলপাইগুড়ি যাচ্ছে মহানন্দার লিঙ্ক এক্স; কাটিহার যাচ্ছে মহানন্দা এক্স।

হজরত নিজামুদ্দিন থেকে ১৫-০০টায় ২৭৪০ গোয়া এক্স আগ্রা ক্যান্ট/ বাঁসী/ ভূপাল/ ইটারসি/ পুনে/ মিরাজ/ লোণা হয়ে ৪১২ ঘটায় ভাঙ্কে যাচ্ছে। রায়পুর/ নাগপুর/ ইটারসি/ আগ্রা ক্যান্ট হয়ে যাচ্ছে হজরত নিজামুদ্দিন-বিশাখাপতন এক্স। পুরী যাচ্ছে পুরুষোত্তম এক্স, উৎকল-কলিঙ্গ এক্স, ২৫৭ দিন নীলাচল এক্স, ১৩৪৬ দিন নিউ দিল্লী-পুরী এক্স, ১৫ দিন রাজধানী এক্স। চেন্নাই যাচ্ছে তামিলনাড়ু এক্স, জি টি এক্স, জম্মু তাম্রা-ই-চেন্নাই এক্স, ৫৭ দিন চেন্নাই রাজধানী এক্স, মঙ্গলবার তিরুভনন্তপুরম-রাজধানী এক্স। ম্যাসালোর যাচ্ছে নিজামুদ্দিন-ম্যাসালোর মঙ্গলা এক্স, নবমুগ এক্স। প্রতি রবিবার কল্যাণমুরিকা যাচ্ছে জম্মু থেকে আসা হিমসাগর। ব্যাসালোর যাচ্ছে কর্ণাটক এক্স, ৩৬ দিন

ব্যাসালোর রাজধানী এক্স। বিজয়ওয়াড়া হয়ে তিরুভনন্তপুরম যাচ্ছে কেরল এক্স, প্রতি মঙ্গলবার তিরুভনন্তপুরম রাজধানী এক্স, হিমসাগর এক্স, নবমুগ, মঙ্গলা ছাড়াও নানান ট্রেন। আগ্রা ক্যান্ট গোয়ালিয়র-বাঁসী-ভূপাল-উজ্জয়িন হয়ে ইন্দোর যাচ্ছে মালোয়া এক্স, কোটা হয়ে নিজামুদ্দিন-ইন্দোর এক্স; উজ্জয়িন যাচ্ছে সেরাদুন-উজ্জয়িন এক্স; গোয়ালিয়র-বাঁসী-ভূপাল-ইটারসী হয়ে যাচ্ছে চেন্নাই ও মুম্বাইগামী প্রতিটা ট্রেন, বিলাসপুর যাচ্ছে অমৃতসর-নিউ দিল্লী-বিলাসপুর হাতিশগড় এক্স ও কলিঙ্গ এক্স; জব্বলপুর যাচ্ছে আগ্রা ক্যান্ট/ গোয়ালিয়র/ বাঁসী/ চিত্রকূট ধাম কারভী/ মানিকপুর/ সাতনা হয়ে হজরত নিজামুদ্দিন থেকে ১৪৫০ মহাকোশল এক্স। খাজুরাহো যেতে ট্রেনটি আদর্শীয় হবে। তবুও যেন নানান ট্রেনে বাঁসী পৌঁছে খাজুরাহো চলায় সুবিধা। মুম্বাই যাচ্ছে মঙ্গল ছাড়া প্রতিদিন নিউ দিল্লী থেকে মুম্বাই রাজধানী এক্স, বৃহস্পতি ছাড়া প্রতিদিন হজরত নিজামুদ্দিন থেকে অগাস্ট ক্রান্তি রাজধানী এক্স, আর যাচ্ছে অমৃতসর-নিউ দিল্লী-মুম্বাই সেন্ট্রাল পশ্চিমী এক্স, গোপেন্ডেন টেম্পল মেল, জম্মু-মুম্বাই স্বরাজ এক্স, দেবাদুন-মুম্বাই, ফিরোজপুর-মুম্বাই জনতা এক্স দিল্লী হয়ে। গোরক্ষপুর যাচ্ছে আয়ুধ অসম এক্স, নিউ দিল্লী-বরাহুনি সুগার ফাস্ট বৈশালী এক্স, দিল্লী-দ্বারভাঙ্গা সরযু-যমুনা/শহীদ এক্স, অমৃতসর-বরাহুনি এক্স। কাঠগোদাম যাচ্ছে ২০-০০টায় দিল্লী ছেড়ে ২-১০এ মোরাদাবাদ পৌঁছে ৬-১০এ ৫০১৩ দিল্লী-কাঠগোদাম রানীক্ষেত এক্স; রামনগর যাচ্ছে রানীক্ষেতের সঙ্গে জুড়ে করমন্ডে লিঙ্ক এক্স। ৬ ঘটায় প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে ৪-০০, ৯-২০, ২৩-২০এ দিল্লী থেকে মোরাদাবাদ। নানান প্যাসেঞ্জার/ লোকাল যাচ্ছে দিল্লী থেকে আখালা, কুশকেশ্বর, পাশিপথ, রোয়াক, আলিগড়, ফিরোজপুর, বিন্দ, হরিদ্বার, হরিকেশ। এছাড়াও দূরত্ব থেকে আসা নানান ট্রেন যাচ্ছে দিল্লী/ নতুন দিল্লী/ হজরত নিজামুদ্দিন হয়ে ভারতের দিকে দিকে।



বাসপথেও দিল্লী শেখের বিভিন্ন প্রান্তের সঙ্গে যুক্ত। ভারত রাষ্ট্রের বৃহত্তম—ইন্টারস্টেট বাস টারমিনাস (ISBT), কাশ্মীরি গেট অর্থাৎ দিল্লী জং-এর উত্তরে অর্থাৎ পুরনো দিল্লীতে। বাসও যাচ্ছে Delhi Transport Corpn (DTC), Rajasthan State Road Transport Corpn (RSRTC), H P State Transport Corpn (HPSTC), Haryana State Road Transport Corpn (HSRTC), U P State Road Transport Corpn (UPSTC), Punjab State Road Transport Corpn (PSRTC) —সীতাতপ, সুগার ডিল্লার, ডিল্লার, এক্সপ্রেস ও সাধারণ। দপ্তরও এদের কাশ্মীরি গেটে। বাস যাচ্ছে ৫২ ঘটায় কাটপাটি হয়ে জয়পুর, আলোয়ার হয়ে জয়পুর যাচ্ছে ৮ ঘটায়, হরিদ্বার ৫২ ঘটায়, সেরাদুন ৬ ঘটায়, আগ্রা ৫২ ঘটায়, বৃন্দাবন ৪ ঘটায়, আজমের ৮ ঘটায়, ব্রীনগর ২৪ ঘটায়, চণ্ডীগড় ৫ ঘটায়, ধর্মশালা ১৩২ ঘটায়, সিমলা ১০ ঘটায়, মানালী ১৬ ঘটায় দিল্লী থেকে। আর ইন্ডিয়া গেটের অদূরে বিকানীর হাউস, ৩ ৩৮৩৬৬৭ থেকেও RSRTC-র NH ৪ ধরে ডিল্লার বাসের সার্ভিস আছে জয়পুরের। এমনকি Tourist Camp থেকে কাঠমাথুতেও বাস যাচ্ছে ৩৬ ঘটায় সরাসরি। আর যাচ্ছে সিটি বাস শহরের দিকে দিকে কাশ্মীরি গেট থেকে ৩ ২৫১৯০৪৩। ব্যাসালোর দিল্লী-রাও জুড়ে ক্রোকফর্ম, ফার্স্ট এড, অ্যাম্বুলেন্সের ব্যবস্থা মেলে, SBI, পোস্ট অফিস, পাবলিক ফোন (Local/STD/ISD)ও বসেছে ISBT-তে।

জরিও প্রয়োজনে

Govt of India Tourist Office

88 Janpath, ☎ 3320005-8

(সোম থেকে শুক্র ৯-১৮-০০, শনি ৯-১৮-০০, রবিবার বন্ধ)

নিউ দিল্লী, দিল্লী জং, হজরত নিজামুদ্দিন ও ইন্দিরা গান্ধী

ইন্টারন্যাশনাল এয়ারপোর্টেও দপ্তর বসেছে এদের।

India Tourism Development Corpn (ITDC) :

L-Block, 6 Connaught Place ☎ 3320331

New Delhi Rly Stn ☎ 350574

Delhi Jn Rly Stn ☎ 2511083

Nizamuddin Rly Stn ☎ 611712

Inter State Bus Terminal

☎ 2520290/2512181

Delhi Tourism Development Corpn (DTDC) :

Central Reservation Office,

Coffee Home, 1 Baba Kharak Singh Marg, ND-1,

☎ 3365358, Fax 3367322

N-36 Bombay Life Building, Middle Circle,

Connaught Place-1, ☎ 3314229/3315322

এদেরও দপ্তর বসেছে—

New Delhi Rail Stn ☎ 3732374

Delhi Jn Rail Stn ☎ 2511083

ISBT ☎ 2962181

International Airport ☎ 3291213

Domestic Airport ☎ 3295609.

Foreigners' Registration Office :

Hans Bhawan, near Tilak Bridge Rly Stn ☎ 3319489.

Students' Travel Information Centre :

Imperial Hotel, ☎ 344789

Indian Airlines :

Kanchenjunga Building

18 Barakhamba Rd ☎ 3310052 / 3313732 / 3312567

Indira Gandhi Airport ☎ 5452434

Main Booking Office at Safdarjung ☎ 141/4620566

Flight Information ☎ 142/143 (7—21-00 hrs)

City Booking

Asaf Ali Rd ☎ 3274609

Ashok Hotel ☎ 606559/600121

Connaught Place ☎ 3310517

Parliament St ☎ 3719168

Airport ☎ 3295166/3295433

142 (Arr) 143 (Dep) 141 (General)

Vayudoot :

Malhotra Building F-Block,

Janpath ☎ 3312779/3315768

Safdarjung Airport Enquiry ☎ 140 Arrival ☎ 142/141

Departure ☎ 143

Air India :

Jeevan Bharati Building

Connaught Circus ☎ 3311225

Jet Airways City ☎ 6853700 Airport ☎ 3295404

Jagson Airlines ☎ 3721593

Sahara India Airlines ☎ 3326851

Damania ☎ 6888951

East West ☎ 3755167

Archana Airways ☎ 6842001

Railway Enquiry :

General Enquiry ☎ 131/3313535

Reservation Enquiry ☎ 3348686

Auto Answering Reservation Enquiry ☎ 3717171

Computerised Auto Answering Information

Northern Railway 1336/1331

Eastern Railway 1337/1332

Western Railway 1338/1333

Southern Railway 1339/1334

New Delhi ☎ 3313535/3717171

Upper Class ☎ 3348686

Second Class ☎ 3348787

Delhi Junction ☎ 2513535

H Nizamuddin ☎ 4623333

Inter State Bus Terminus :

ISBT General Enquiry ☎ 2520290/2523145

Delhi Transport Corpn (DTC) ☎ 2518836

Rajasthan State Road Transport Corpn

ISBT ☎ 2522246

Bikaner House, Pandara Rd, ND-12, ☎ 383469

Himachal Pradesh Road Transport Corpn

ISBT ☎ 2516725

Haryana Roadways, ISBT ☎ 2521262

Punjab State Roadways, ISBT ☎ 2517842

U P State Road Transport Corpn, ISBT ☎ 2518709

Ajmeri Darwaza ☎ 3315367

Jammu & Kashmir Road Transport Corpn

Hotel Kanishka Shopping Plaza

19 Ashok Rd ☎ 3324422/3324511

State Government Tourist Information Centre

In Delhi :

Himachal Pradesh

Chanderlok Building, 36 Janpath ☎ 3324764

Madhya Pradesh

204 Hotel Kanishka Shopping Plaza, 2nd floor,

19 Ashok Rd-1, ☎ 3321187 (Ext 277)

Jammu & Kashmir

Chanderlok Bldg, 36 Janpath, ND-1, ☎ 3325373

Uttar Pradesh

Chanderlok Building, 36 Janpath, ND-1,

☎ 3322251/3711296

Garhwal Mandal Vikash Nigam Ltd

102 Indra Prakash Building

21 Barakhamba Rd, ☎ 3326620

36 Janpath ☎ 3322251

Meghalaya ☎ 3014417

Goa ☎ 4629967/9968

Sikkim ☎ 3015346/9640

Rajasthan

Chanderlok Building-1, ☎ 3322332/3712123

Rajasthan Tourism Development Corpn

Bikaner House, near India Gate, Pandara Rd-3

☎ 3383837

Haryana

36 Janpath, Chanderlok Building ☎ 3324910/3324911

Andhra Pradesh

1 Ashok Rd-1, ☎ 3381293

Bihar

216 Kanishka Shpg Plaza, ☎ 3723371

Kerala ☎ 3316541

Chandigarh

K Gandhi Marg-1, ☎ 3353559

Tourism Corpn of Gujarat Ltd

A-6, S E Rd, Kharak Singh Marg-1, ☎ 3734015

Tourist Aids Bureau

Aruba Asaf Ali Rd-2, Delight Cinema, ☎ 3275978

Baba Kharak Singh Marg-14 :

Punjab (C-6), ☎ 3323055

Maharashtra ☎ 345332/343773

Karnataka ☎ 343862

Assam (B-1), ☎ 343961/345897

West Bengal (A-2), ☎ 3732840

এছাড়াও দপ্তর রয়েছে ভারত সরকারের বিভিন্ন মন্ত্রণালয়ের নথি

বন্ধনের মন্ত্রণালয়ে।

আর শহরে চলাছে DTC-র City Bus. কনট গ্রেস থেকে চাপকাপুরী যাচ্ছে Bus Route 620; কৃতব মিনার যাচ্ছে 505; লালকেলা যাচ্ছে 29, 77, 104, 139; নতুন দিল্লী রেল স্টেশন থেকে কৃতব মিনার 505; লালকেলা 51, 760; কনট গ্রেস 10, 110; দিল্লী জং থেকে কালীবাড়ি 215; কৃতব মিনার 502; কনট গ্রেস 29, 77; ISBT থেকে কৃতব মিনার 503, 533; কনট গ্রেস 104, 139, 185, 271, 272; লালকেলা থেকে কালীবাড়ি 104, 139, 185, 271, 272. তেমনই লাগেজ-সহ রেল যাত্রীদের চলার জন্য নতুন দিল্লী ও দিল্লী জং থেকে বিশেষ বাসও যাচ্ছে শহরের নানানদিকে।

কনডাক্টেড ট্যুর : India Tourism Development Corporation, L-Block, 6 Connaught Place, N D-1, ① 3320331/ 3322336 (৬-৩০ থেকে ২২-০০টায় খোলা) বা Govt of India Tourist Office, 88 Janpath, N D-1, ① 332005/8 (৯-১৮-০০) থেকে টিকিট কেটে ITDC-র আয়োজিত কনডাক্টেড ট্যুরে অংশ নিয়ে Tour No 1 ও 2 সেখে নিন একই দিনে। গাইডও থাকেন এদের ট্যুরে। শীতাতপ গাড়িও যাচ্ছে ট্যুরে। ব্যবস্থাপনা ভালই।

T No 1 : যন্তর-মন্তর, ইন্ডিয়া গেট, গুৱাবারা বাংলা সাহিব, বাহাই মন্দির, সফদরজং টুথ, প্রগতি ময়দান, হুমায়ুন টুথ, কৃতব মিনার, লক্ষ্মীনারায়ণ মন্দির। ৮-৩০—১৩-৪৫ সফরের ভাড়া ৬৫ A/c ৮০।

T No 2 : ফিরোজ শাহ কোটলা, রাজঘাট, শাস্তি বন, বিজয়ঘাট, লালকেলা, জুয়া মসজিদ, নেহরু প্যাভিলিয়ন ১৪-০০টায় গিয়ে ১৭-১৫য় ফেরে; ভাড়া ৬৫ A/c ৮০। ১ ও ২ নম্বর একত্রে ১১৫/১৪০।

T No 3 : নেহরু মিউজিয়ম, জাতীয় মিউজিয়ম, চিড়িয়াখানা, ডলস মিউজিয়ম, গান্ধী মিউজিয়ম সেথিয়ে আনে প্রতি শনি ও রবিবার ৯—১৩-৩০টায়।

T No 4 : কেবল রবিবার গ্রীষ্মে ৭—১৩-৩০টা আর শীতে ১০—১৬-০০টায় বেড়িয়ে আনে ইন্ডিয়া গেট, তুঘলকাবাদ, সুরযকুণ্ড, বুদ্ধজয়ন্তী পার্ক, মোগল গার্ডেনস (ফেব্রুয়ারিতে সাধারণের জন্য খোলার পর থেকে)।

আর, Delhi Tourism Development Corporation, Central Reservation Office, Coffee Home, 1 Baba Kharak Singh Marg, ND-1, ① 3365358, Fax 3367322 (7—21-00 hrs/7 days a week) বা N-36 Bombay Life Building, Connaught Place (Middle Circle), ND-1, ① 3314229/ 3315322 (৭—২১-০০) ও Delhi Transport Corporation, Scindia House, Connaught Place, N D, ৮-১৫—১৩-৪৫ ও ১৪—১৭-০০টায় শহর দর্শনে যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে। এদেরও টিকিট একই হারে। আর রাতে ১৮-১৫—২২-৩০টায় ১০০ শিও ৮০ টাকায় শহর দেখাবার বিশেষ ব্যবস্থাও আছে DTDC-র। দিল্লী গেট লাগিয়া বাহাদুর শাহ জাফর মার্গের পার্শ্ব আক্ৰমণ স্থলে ① 3317631, ১৮-৩০—১৯-৩০টায় **জাপেস অব ইন্ডিয়া**ও সেখে নেওয়া যায় রাতের সফরে। বিক্রেত লালকেলার **Light and Sound Show** দেখাবার ব্যবস্থা এদের।

DTDC সোম শুক্র প্রতিদিন সকাল ৭-০০টায় গিয়ে ২১-০০টায় ফেরে A/c বাসে ৭০০ সাধারণ ৩৯৫ টাকার আগ্রা-ফতেপুর সিক্রি-মথুরা বেড়িয়ে; A/c বাস মেনে মঙ্গল-বৃহ-শনি-

শনি-রবিবার। প্রতি বুধ ও শনিবার যাচ্ছে ২ দিনের প্যাকেজে হরিদ্বার-হৃষীকেশ ৫৫০ শিও ৫০০; প্রতি মঙ্গল ও শুক্রবার ৭-০০টায় যাচ্ছে ৩ দিনের সফরে গোম্ভেন ট্রাভেল ট্যুরে জয়পুর, ফতেপুর সিক্রি ও আগ্রা দেখাতে। থাকা-বাতারাত-গাইড নিয়ে ভাড়া ২২৫০ A/c ২৪৫০। এমনকি মে-জুলাই মাসে DTDC-র A/c বাস প্রতিদিন হরিদ্বার হয়ে হৃষীকেশ; দিল্লী-সেরাধুন; দিল্লী-নৈনীতাল যাচ্ছে; ফেরেও এরা নিয়মিত। ভারত সরকারের পবিত্র দপ্তরেও টিকিট মেলে DTDC-র। এমনকি মরসুমে নানান আকর্ষণীয় ট্যুরেও যাচ্ছে DTDC দিল্লী থেকে—৫ দিনে নৈনীতাল, আলমোড়া, কৌশানি ও রানীক্ষেত ২৪০০/২২০০; ৫ দিনে করবেট ২১০০/১৯০০; ৫ দিনে বরীনাথ ১৯০০/১৭০০; ৮ দিনে কোদারনাথ ও বরীনাথ ২৮৫০/২৬৫০; ৮ দিনে সিমলা ও মানালী ৩৭৫০/৩৩৫০; ৪ দিনে মুসৌরী-হরিদ্বার-হৃষীকেশ; ১৪ দিনে চারখাম অর্থাৎ যমুনোত্রী-গোসাওরী-কোদারনাথ ও বরীনাথ; ১০ দিনে আজমের-পুন্ডর-চিতোর-উদয়পুর-বোধপুর-জয়সলমীর ৪১০০/৩৭০০; ১১ দিনে আমোদাবাদ-দ্বারকা-সোমনাথ ৪৭০০/৪৪০০ টাকায়; ৯ দিনে সিমলা-মানালী-ধরমশালা-ডালহৌসী ৪৬০০/৪১০০; ৮ দিনে ভাঙ্গি অথবা ষ্ট্রাওয়ারস-হেমকুণ্ড-বরীনাথ; ১১ দিনে কাঠমাণ্ডু যাচ্ছে ৪৯০০/৪৪০০; ৫ দিনে জয়পুর-উদয়পুর ২৫৭৫/২৩৭৫; ৮ দিনে উদয়পুর-মাউন্ট আবু-জয়পুর ৩৪৫০/২৯২৫; মধ্য প্রদেশও যাচ্ছে ৭ দিনের প্যাকেজে DTDC. নানানধর্মী গাড়িও মেলে এদের কাছে ভাড়া। কলকাতাতেও দপ্তর বসেছে—DTDC, Regional Tourist Office, 4 Shakespeare Sarani, Calcutta-700071, ① 2421402; এদের মুম্বাই দপ্তর—MTDC, Madame Cama Rd, Mumbai, ① 2026713. নানান প্রাইভেট সংস্থাও টার্নি চক ও দিল্লী জং রেল স্টেশনের পাশে ফতেপুরী থেকে দিল্লী-আগ্রা-ফতেপুর সিক্রি-মথুরা-বৃন্দাবন ছাড়াও নানান প্যাকেজ ট্যুরে যাচ্ছে।

আর বাঙালি সংস্থা শান্তিনিকেতন ট্র্যাভেলস, ২৪বি/৮ দেশবন্ধু গুপ্তা রোড, দেবনগর, নিউ দিল্লী-১১০০০৫, ① 5720742 থেকে ৯-৩০টায় গিয়ে ১৮-০০টায় ফেরে ৬০ টাকায় দিল্লী ও নতুন দিল্লী সেথিয়ে। ৬-০০টায় গিয়ে ২৩-০০টায় ফেরে ১৩০/১৬০ টাকায় একই দিনে আগ্রা যথুরা-বৃন্দাবন সেথিয়ে। আর ২ দিনের প্যাকেজে ২৬০ টাকায় আগ্রা-মথুরা-বৃন্দাবন-ফতেপুর সিক্রি বেড়িয়ে আনে এরা। প্রতিদিন ৬-০০টায় গিয়ে ২২-০০টায় ফেরে ২৫০ টাকায় জয়পুর বেড়িয়ে। প্রতি শুক্রবার ৩ দিনের প্যাকেজে মুসৌরী-হরিদ্বার-হৃষীকেশ; প্রতি বুধ ও শনিবার ২ দিনের প্যাকেজে হরিদ্বার-হৃষীকেশ যাচ্ছে শান্তিনিকেতন ট্র্যাভেলস। আর এক বাঙালি সংস্থা রিডস ট্র্যাভেলস প্রা: লি; ৩-১১ ভগ্ন সি: লেন, গোল মার্কেট, নিউ দিল্লী—১১০০০৩ থেকে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে নানানধর্মী প্যাকেজে।

এমনকি ITDC প্রতি বুধবার সকাল ৭-০০টায় ডিল্লার কাছে ৮ দিনের প্যাকেজ ট্যুরে দিল্লী থেকে গিয়ে কোদারনাথ ও বরীনাথ বেড়িয়ে আনে। প্রতি বুধ ও শনিবার যাচ্ছে ৫ দিনের প্যাকেজ ট্যুরে বরীনাথ। জয়পুর যাচ্ছে ৬-৩০টায়, দিনে দিনে ফেরিয়ে ফেরে রাত ২২-০০টায়। এক রাত জয়পুরে কাটরে বিস্তার রাত্রে দিল্লী কোদার সফরেও যাচ্ছে এরা। আগ্রা যাচ্ছে সকাল ৭-০০টায়—ভাট, ফোর্ট ও সিকাঞ্জা বেড়িয়ে দিল্লী ফেরে ২১-৪০টায়। সকাল ৬-৩০টায় যাচ্ছে হরিদ্বার/হৃষীকেশ—ফেরে ২২-০০টায়।

মুসৌরী যাচ্ছে ITDC সকাল ৭-০০টায় ছেড়ে ১৫-৩০টায়, ফেরেও সকাল ৭-০০টায় মুসৌরী থেকে।

পর্বটন বর্বে নতুন দিল্লীর নতুন অবদান আকাশবিহার থেকে জলবিহারের ব্যবস্থা নিয়ে রূপ পেয়েছে শহরের বুকে অ্যাড-ডেকার পার্ক। প্যারা-সেল ক্যানোপি চড়ে ১০০ মি উঁচুতে রোমাঞ্চকর ভ্রমণের সাথে অনবিল আনন্দ মেলে আকাশবিহারে। তেমনই জলবিহার করুন ক্যানু চেসে যমুনার জলে। আর হতে চলছে ফুড অ্যান্ড ক্র্যাফটস বাজার—বিভিন্ন রাজ্যের দুঃস্থ শিল্পীদের হাতের কাজ দেখা ও কেনার ব্যবস্থা নিয়ে। আঞ্চলিক আহার্যও মেলে এর সোকানপাটে। উৎসাহীদের উচিত হবে দিল্লী টুরিজম ৩ 3314229-কে যোগাযোগ করা।

এছাড়া Chanderlok Building, 36 Janpath, ৩ 3712123 বা Pandara Rd ৩ 383837 থেকে Rajasthan Tourism Development Corpn Ltd ৩ দিনের প্যাকেজ ট্যুরে সিরিকা, অম্বর, জয়পুর, ভরতপুর, দীগ বেড়িয়ে আনে প্রতি গুরুবার সকাল ৭-০০টায় গিয়ে। আহার্য ছাড়া টিকিট ২০০০ শিশু ১৫০০। প্রতি মঙ্গলবার ৩ দিনের হাওয়া মহল প্যাকেজে আগ্রা-ফতেপুর সিক্রি-ভরতপুর-দীগ-সিরিকা-জয়পুর বেড়িয়ে আনে একই ভাড়া। মেবার যাচ্ছে প্রতি শনিবার ৬ দিনের প্যাকেজে জয়পুর-চিতোর-উদয়পুর-রণকপুর-আজমের-পুন্ডর দেখাতে ৩৫০০/২৫০০ টাকায়।

আবার Chanderlok Building থেকেই U P Tourism, ৩ 3322251, প্রতি রবিবার ২ রাত ৩ দিনের প্যাকেজে ১৫০০ শিশু ১৩০০ টাকায়, ৩ রাত ৪ দিনের প্যাকেজে ১৭০০/১৫০০ টাকায় করবেট বেড়িয়ে আনে। অভ্যন্তরীণদের জন্য বিশেষ ট্যুরে যাচ্ছে মঙ্গল ও গুরুবার ২০০০/২৫০০ টাকায়। শীতে ৭ দিনের কুমায়ুন প্যাকেজে যাচ্ছে করবেট সঙ্গে জুড়ে গাড়িতে ৪৮০০ বাসে ৩০০০ টাকায় এরা। এছাড়াও কেশার-বদরী যাচ্ছে ৭ দিনের প্যাকেজে প্রতি বুধবার; কুমায়ুন-করবেট যাচ্ছে ৭ দিনের প্যাকেজে; হরিদ্বার-মুসৌরী-হৃষীকেশ যাচ্ছে ৪ দিনের প্যাকেজে; ১ রাতের অবস্থানে আগ্রা-ফতেপুর সিক্রি-মথুরা ছাড়াও নানান ট্যুরে যাচ্ছে U P Tourism দিল্লী থেকে।

Himachal Pradesh Tourism Development Corpn-এর দপ্তর বসেছে Himachal Bhavan, Sikandra Rd, ৩ 3717473-তে। এদেরও নানান ব্যবস্থা সিমলা-কুলু-মানালী-লে ভ্রমণের।

এছাড়া সময় আর সুযোগ করে পৃথকভাবে দেখুন—ডলস মিউজিয়ম, পার্লামেন্ট ভবন, রাষ্ট্রপতি ভবন, আকাশ-বাণী ভবন, রিজার্ভ ব্যাঙ্ক, পুরনো কেল্লা। উৎসাহীরা বার-খাশা রোডের ন্যাচারাল হিস্ট্রি মিউজিয়মে ফসিল, স্টাফড জীবজন্তু, নিশালাকার ডাইনোসর ছাড়াও পাখি চিনে নিতে পারেন; জয়পুর হাউসে ন্যাশানাল গ্যালারি অব মডার্ন আর্ট; চাগকাপুরীতে ভূটান হাউসের পেছনে রেলওয়ে ট্র্যাপোর্ট মিউজিয়মটিও দেখে নিতে পারেন। বৈচিত্র্য আছে এর সংগ্রহে। ১৮৫৫র লাম্পচলিত ইল্কিন থেকে ভারতীয় রেলের নানান সম্ভার প্রদর্শিত হয়েছে। এমনকি ১৮৯৪এ মেল ট্রেনকে আঘাত হানা হাতিটির খুলিটিও আকর্ষণ বাড়িয়েছে। প্রতিটাই সোমবার ছাড়া ১০—১৭-

০০টায় খোলা, দশমী ২। আর বসেছে চীনের তিব্বত দখলের পর লাসা থেকে আসা দালাই লামার সঙ্গে আনা হস্তজাত তিব্বতীয় পণ্যের সুন্দর সংগ্রহ নিয়ে ওবেরয় হোটেলের কাছে ১৬ জোঁরবাগে তিব্বত হাউসে টিবেট মিউজিয়ম। তিব্বতীয় পণ্য কিনতেও মেলে। রবিবার ছাড়া ৯-৩০—১৭-০০টায় খোলা। আর আছে এয়ারকোর্স মিউজিয়ম (মঙ্গল ছাড়া ১০—১৩-৩০) পালাম বিমান বন্দরে; শনি ও রবি ছাড়া ফিল্মটেলিক মিউজিয়ম সংসদ মার্গের ডাক ও তার ভবনে।

আর সাঁঝে ইংরেজি বা হিন্দি ধারাভাষ্যে মোগল যুগ থেকে ভারতের স্বাধীনতা প্রাপ্তি Son-et Lumiere অর্থাৎ শব্দ ও আলোয় দেখুন লালকেল্লায়। ITDC, L Block, Con Pl. ৩ 3320331 থেকে টিকিট ও তথ্যাদি মেলে। লালকেল্লার সামনে চাঁদনি চক, পার্লামেন্ট স্ট্রিট ও কন্ট সার্কাস পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নতুন দিল্লীর কর্মজগৎকেও দেখে নিন। নতুন দিল্লী প্রসার পাচ্ছে দিনের পর দিন। আধুনিক স্থাপত্যের নিদর্শন হয়ে গড়ে উঠেছে চাগকাপুরী। বিদেশী দূতাবাস-গুলিও এই চাগকাপুরী বা ডিপ্লোম্যাটিক এনক্রেড-এ রূপ পেয়েছে। বৈচিত্র্যে ভরা এর গঠনশৈলীর পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

লালকেল্লার বিপরীতে চাঁদনি চক (রূপোর সড়ক)। ১৬৪৮এ শাজাহান-কন্যা জাহানারা বেগমের হাতে গড়া ইতিহাসখাতা চাঁদনি আজ দিল্লীর অন্যতম বাণিজ্যিক এলাকা। কেল্লাকে পেছনে রেখে সামান্য এগোতে বাঁয়ে ১৫২৬এর দিগম্বর জৈন মন্দির। সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত মন্দিরে দেবতা পার্শ্বনাথস্বামী। জনমুখে পক্ষী হাসপাতাল বলেও এর পরিচিতি আছে। সেবাও চলছে পাখিদের। অদূরে শিশগঞ্জ গুরদ্বারা। দেশবাসীর মুক্তি আন্দোলনকে সমর্থন করায় রুস্ত গুরদ্বাজেবের বিধান ১৬৭৫এর ১১ই নভেম্বর ৯ম গুরু তেগবাহাদুরের শিরচ্ছেদ হয় শিশগঞ্জে। স্মারকরূপে গুরদ্বারা। অন্য শিখতীর্থ। আর মোগল সেনার চোখে ধূলো দিয়ে ছিন্ন শির দাহ হয় ৫০০ কিমি দূরের আনন্দপুরে। সেহ যায় নানান চাতুরী করে শাক-সবজি চাপা দিয়ে গরুর গাড়িতে চেপে রায়সীরা গাঁয়ের পাজাবি মহম্ময়। দাহও হয় বাড়ি সমেত গুরুর সেহ। কালে কালে মসজিদ গড়ে ওঠে দাহস্থলে। আরও পরে দিল্লী দখল করে মোগল দরবারের ফরমান পেয়ে মসজিদ ভেঙে দুমুখবল খেতমর্মরে গুরদ্বারা রাকাবগঞ্জ গড়েন সর্দার ভাগেল সিং ১৭৮৩তে। আজকের পার্লামেন্ট হাউসের বিপরীতে পছ রোডে সুন্দর বাগিচার মাঝে আধুনিক স্থাপত্যশৈলীর সৌধ, সেও ইতিহাসের আর এক গাথা। আরও যেতে ডাইনে প্রশাসন দপ্তর। এরই বিপরীতে ছিল ব্রিটিশের গড়া ক্লক টাওয়ার। কোতোয়ালি পুলিশ স্টেশন পরিসরেই সুনেদী মসজিদ। ১৭৩৯এ এই মসজিদের ছাদ থেকেই নাদির শাহ সৈন্য পরিচালনা করে। দু'পাশে দোকানপাট, যিঞ্জি পথঘাট; রিকশা

চলেছে যাত্রী সরিয়ে—ফুটপাথেও পণ্য সাজাচ্ছেন দোকানী।
তেমনই ফুলের দোকানপাট ফুল-কি-মাটী, পাশাপাশি আশাক
তথা শাদির বসন কিনারী-কি-গলি, আহা-বিহারে
পর্যটনগামী গলি, সুগন্ধী পারফিউমের নই সড়কপেরিয়ে
১ কিমি দীর্ঘ চাঁদনি গিয়ে মিছেছে শাজাহানের বেগমের
১৬০৫এ গড়া ফতেপুরী মসজিদে। ডানহাতি চার্চ মিশন
রোড গিয়েছে দিল্লী জং রেল স্টেশনে।

এছাড়াও রয়েছে দিল্লীর পথেঘাটে পর্যটক আকর্ষণীয়
নানান-কিছু। অতীত আজ কথা না কইলেও ঐতিহাসিক
গুরুত্ব এদের অপরিণীম। নতুন দিল্লীর প্রধান ডাকঘরের
কাছে বাংলা সাহিব গুরদ্বারাটি বিশেষভাবে বরণীয়।
জয়পুরের মিরজা রাজা জয়সিংহের অতিথিরূপে ৮ম গুরু
হরকিষণে কিছুকাল বাস করেন এখানে। স্মারক রূপে
গুরদ্বারা হয়েছে। শিখধর্মীদের পরমতীর্থ। অতীতের
ইদারাটি আজ পুরুরে রূপ নিলেও এর অমৃত-তুলা জলে
নানান ব্যাধির উপশম মেলে।

তেমনই আছে মোগল দরবারের সাথে ১০ম গুরু
গোবিন্দ সিং-এর ঐতিহাসিক সাক্ষাতের নিদর্শনরূপে
হুমায়ুন সমাধির সন্নিকটে যমুনা পুলিনে দমদমা সাহিব
গুরদ্বারা।

রিং রোডে মহারানী বাগ কলোনির বিপরীতে গুরদ্বারা
বালা সাহিব। মার্চ ৩০, ১৬৮৪তে ৮ম গুরু হরকৃষ্ণের
শ্মল পক্ষে মৃত্যু হতে দাঃ হয় যমুনা পুলিনে। স্মারকরূপে
গুরদ্বারা হয়েছে। যমুনা সরে গেলেও গুরদ্বারা রয়েছে
দাহস্থলে। নতুন ও পুরাতন দুই সৌধ। গুরু গোবিন্দর দুই
স্ত্রী মাতা সুন্দরী ও মাতা সাহিব কাউরও সমাধিঃ রয়েছে
বালা সাহিব-এ।

রিং রোডে শান্তিপথের অদূরে ১০ম গুরু গোবিন্দ সিং-
এর প্রথম দিল্লী সফরের স্মারক—গুরদ্বারা মোতি বাগ;
জে পি নায়ক হাসপাতালের পিছে আজমেরী গেটে ১০ম
গুরুর দুই স্ত্রী মাতা সুন্দরী ও মাতা সাহিব কাউরের সমাধিতে
গড়া গুরদ্বারা মাতা সুন্দরী ছাড়াও রয়েছে নানান গুরদ্বারা
দিল্লী নগরীতে। এদেরও পর্যটক আকর্ষণ অনস্বীকার্য।

তেমনই রয়েছে নতুন দিল্লী গড়ে তোলার আগে
আজকের কাশ্মীরি গেটে ব্রিটিশের ক্যান্টনমেন্ট নগরী।
১৮৫৭য় দ্বিতীয় দফায় দিল্লী দখল করে প্রথম স্বাধীনতা
যুদ্ধের সংগ্রামীদের নৃশংসভাবে হত্যাও করে ব্রিটিশ। অদূরে
১৮৩২এ ব্রিটিশ সৈনিক জেমস স্কিনারের একক প্রচেষ্টায়
তৈরি সেন্ট জেমস চার্চ। পশ্চিমে সবজি মণ্ডিতে রয়েছে
১৮৫৭য় নিহত ব্রিটিশ সৈনিকদের স্মরণে ব্রিটিশের গড়া
মিউটিনি মেমোরিয়াল। অদূরে ফিরোজ শাহ তুঘলকের
প্রাচীর অশোক পিলার। বাহ্মপুরের কাছে কালকাজির
কালী মন্দিরটিও পুরাণখ্যাত। অতীত লুপ্ত হলেও ১৮
শতকে রূপ পেয়েছে বর্তমান মন্দির। তবে দেবীমূর্তি দীর্ঘ
অতীতের।

সারা ভারতের পণ্য বিকোচ্ছে দিল্লীর দোকানপাটে।
ইলেকট্রনিকস থেকে শুরু করে বেলোয়াড়ি কাচের চুড়ি—
দামেও সুবিধা মেলে ভারত রাষ্ট্রের অন্যান্য শহর থেকে।
তবে আইভরির নানান জিনিস, চাঁদনির জুতো আর উলেন
পণ্যের খ্যাতি আছে পর্যটক মহলে। আর রয়েছে ঝলমল
সাজে কনট প্লেসে গভর্নমেন্ট সেলস এম্পোরিয়াম, পাশেই
শীতাতপ পালিকা বাজার, অদূরে জনপথে সেন্ট্রাল কটেজ
ইন্ডাস্ট্রিজ এম্পোরিয়াম ছাড়াও নানান দোকানপাট।
তেমনই অপরদিকে বাবা ঝড়ক সিং মার্গেও এম্পোরিয়াম
গড়েছে ভারত রাষ্ট্রের নানান রাজ্য সরকার। দিল্লীর লাড্ডুর
বাদ নিন চাঁদনির শিশুগঞ্জ গুরদ্বারা পাশে ঘণ্টাবালার
দোকানে। আবার কারোল বাগের আফজল খাঁ মার্কেটেও
কেনাকাটা করা যেতে পারে। জনপথে তিব্বতীয় মার্কেটেও
চলা যেতে পারে আবরণ ও আভরণের জন্য। অ্যান্টিক
কিনতে চলা উচিত হবে ড. জাকির হোসেন রোডের সুন্দর-
নগর মার্কেটে। তেমনই রিং রোডে লালকেন্নার পিছে দিল্লীর
চোরবাজারটিও আজ দিল্লী ভ্রমণে আদরণীয় হয়ে পড়েছে।
প্রতি রবিবার দিনডর বিকিকিনি চলছে নামমাত্র মূল্যে
সেকেডহ্যান্ড পণ্যের নানান কিছু। ৩ বা ৫ দিনে দিল্লী ও
আগ্রা ভ্রমণ সাজ করে চণ্ডীগড় হয়ে সিমলার পথে এগিয়ে
চলুন। আবার আগ্রা বেড়িয়ে রাজস্থানেও চলা যেতে পারে
ভরতপুর হয়ে।

তবে, রবিবার বন্ধ থাকে চাঁদনি, সদরবাজার ও কনট
সার্কাস; সোমবার বন্ধের তালিকায় কারোল বাগ, পাহাড়-
গঞ্জ, সবজি মণ্ডি, গান্ধী মার্কেট; মঙ্গলবার বন্ধ থাকে গ্রেটার
কেন্সাস; বুধবার তিলকনগর; শুক্রবার বন্ধের তালিকায়
করমপুরা, মতিনগর। আর সেলুন বন্ধ থাকে প্রতি মঙ্গলবার
সারা দিল্লী জুড়ে।

কুতব মিনার : শহর থেকে ১৪.৪ কিমি দক্ষিণে ৭২.৫
মি উঁচু বিজয়স্তম্ভটি দাস রাজা কুতব-উদ-দিন আইবকের
ভারত বিজয়ের স্মারক হয়ে দাঁড়িয়ে আছে। শেষ হিন্দু রাজা
পৃথ্বীরাজের বিধ্বস্ত দুর্গ কালো রায় পিথোরাতেই গজনির
অনুকরণে গড়ে উঠেছে এই মিনার। ১১৯৩ খ্রিস্টাব্দে কুতব-
উদ-দিনের হাতে নির্মাণ শুরু, শেষ হয় ১২৩৬এ কুতবের
জামাতা ইলতুৎমিসের হাতে। ধিমতে ১৩৫৭-৬৮তে শেষ
হয় কুতবের উত্তরপুরুষ ফিরোজশাহ তুঘলকের হাতে।
তবে, সংস্কার হয়েছে বার বার আফগান স্থাপত্যে গড়া
কুতব। ঘোরানো সিঁড়ি উঠেছে ৩৬৭ ধাপের সামান্য হেলে
থাকা কুতবে। আকারেও বৈচিত্র্য আছে—গোড়াতে ব্যাস
এর ১৪.৪০ মি. ক্রমশ সরু হয়ে শেষ হয়েছে ২.৪৪ মিটারে।
মিনারের নিচুতে ১১৯৭ খ্রিস্টাব্দে মসজিদ।

ভারতে উচ্চতম স্থাপত্যে অনুপম কুতব মিনারটি পাঁচ
তলায় গড়ে উঠেছে। প্রথম তলাটি লাল বেলেপাথরে
কুতবের হাতে, ২য় ও ৩য় তলা দুটি লাল বেলেপাথরে
ইলতুৎমিসের গড়া। আর ৪র্থ ও ৫ম তলা দুটি হয়েছে

বেলেপাথর ও মর্মরে ফিরোজশাহ তুঘলকের হাতে।
ব্যালকনিও হয়েছে প্রতিটি তলায়। বিমতে, জামাতার গড়া
(২-৪) ৪র্থ তলাটি সংস্কারের সাথে ৫ম তলাটির সংযোজন
ঘটিয়ে গম্বুজ গড়েন মিনার শিরে ফিরোজশাহ ১৩৬৮তে।
তবে ১৮০৩-এর ভূমিকম্পে সেটি বিধ্বস্ত হতে ১৮২৯এ
নতুন করে গম্বুজ তোলে ব্রিটিশ। আরও পরে সেটিকেও
মিনার থেকে নামিয়ে পাশের বাগিচায় জায়গা দেওয়া
হয়েছে। ১৯৮১র পদদলনে বেশ কিছু ছাত্রের মৃত্যু ঘটায়
৫তলা চড়া মানা হলেও অনধিক ৪ জন করে ১ম তলা পর্যন্ত
অভিযান করে নেওয়া যায় কূতব। সম্ভ্রতি আলোকিত
হয়েছে কূতব মিনার।

পাশেই রয়েছে ৪ শতকের চন্দ্রভার্মার তৈরি ৭.২০ মি
উঁচু লৌহ মিনার। মরচেহীন মিনারের সংস্কৃত উদ্ধৃতিটি
আজও অবিকৃত। এর গরুড় মূর্তি থেকে অনুমেয় কোনো
বিষ্ণুমন্দির থেকে তুলে এনে পঙ্কন করা হয়ে থাকবে।
সম্ভবত বিষ্ণুপাদ পাহাড়ে চন্দ্রগুপ্ত বিক্রমাদিত্য (৩৭৫-
৪১৩ খ্রি) স্থাপিত বিষ্ণুধ্বজা এটি। স্থানান্তর দিল্লীকানগরীর
ঐষ্টা টোমররাজ অনঙ্গপালের হাতে। প্রবাদ, পিছন ফিরে
দু'হাতের বেড়ে মিনারটি ধরতে পারলে রাজা তিনি হবেনই।
হয়তো সুযোগ মেলেনি কারুরই, তাই আজ দেশে রাজার
অভাব। সুযোগ নিতে ভুলবেন না।

কূতব সংলগ্নই হয়েছে ভারতের প্রাচীনতম কুওয়াত-
উল ইসলাম মসজিদ। কূতবের হাতে ১১৯৩এ মহম্মদের
মন্দির বাড়ির রেখিকা হয়ে হিন্দু মন্দিরের উপর গড়ে
উঠেছে। এর পিলারগুলিও এসেছে ২৭টি হিন্দু ও জৈন
মন্দির থেকে। পূর্বের প্রবেশদ্বারে উল্লিখিতও হয়েছে
সেকথা। সংস্কারও হয়েছে বার বার কুওয়াত। ১২১০-২০এ
কূতবের জামাতা ইলতুৎমিস চত্বর ঘেরেন দেওয়ালে।
আর ১৩০০ খ্রিস্টাব্দে কূতবের দক্ষিণ-পূর্বে আলাউদ্দিনের
হাতে লাল বেলেপাথরে তৈরি আলাই দরওয়াজা অর্থাৎ
প্রবেশ তোরণটিও অনবদ্য। সমাধিহীনও রয়েছে ইতিহাসের
নানান জনা আলাই দরওয়াজার ডাইনে-বামে।

আর রয়েছে কূতবের উত্তরে আলাউদ্দিনের অপূর্ণ স্বপ্ন
২৭ মি উঁচু আলাই মিনার। বাসনা ছিল যুদ্ধ জয়ের স্মারক
রূপে কূতবের ডাবল উঁচু মিনার গড়ার। তবে, মৃত্যু আর
উত্তরসূরির অভাবে অপূর্ণ থাকে সে দৃষ্টান্ত। ইলতুৎমিস ও
আলাউদ্দিন সমাধিহীনও রয়েছেন চত্বরে। সম্ভবত সমাধিটি
আলাউদ্দিনের নিজেরই গড়া।

কূতব লাগোয়া মেহেরৌলি গ্রামে আকবরের পালিত
ভাই আদম খাঁর অষ্টভুজ সূর্য্য সমাধিটিও আর এক দর্শন।
মাণ্ড দখলের পর রূপমণ্ডীর আশ্রয়তায় আকবর আদমের
উপর রুষ্ট হতে আশ্রয়তা করেন আদম। ভুলভুলাইয়া
নামেও সমাধিক খ্যাত। কথিত আছে সেখানে একটি
সুদৃশপথে সংযোগও ছিল লালকেন্দার সাথে।

মামুনের সমাধি : ভারতের প্রাচীনতম কবরটি রয়েছে

পালামের পথে কূতব থেকে ৪.০৮ কিমি পশ্চিমে। হিন্দু
ও মুসলিম স্থাপত্যের সমন্বয়ে ১২২৯এ তৈরি এটি।
ইলতুৎমিসের ছেলে মামুদ শায়িত রয়েছে এখানে। প্রচারের
অভাবে যাত্রী কম। অদূরে ৪র্থ দিল্লী নগরী জাহানপানার
ধ্বংসাবশেষ লাগোয়া ১৩৮০র খিরকী মসজিদ। স্বপ্ন দূরে
বেগমপুর মসজিদ।

তুঘলকাবাদ দুর্গ : শহর থেকে ১৫ আর কূতবের ৮
কিমি পূর্বে গিয়াসুদ্দিন তুঘলকের হাতে ১৩২১-২৫এ গড়া
৩য় দিল্লী নগরী তুঘলকাবাদ। বংশের নামে নাম। আকারে
যেমন বিরাট, তেমনই মজবুত ছিল ১৩ গেটের প্রাচীরে
ঘেরা তুঘলকাবাদ দুর্গ তথা রাজধানী। সম্ভবত জলাভাবে
১৫ বছর পর পরিত্যক্ত হয়। গিয়াসুদ্দিনের মৃত্যুর পর
পুত্র মহম্মদ বিন তুঘলকের হাতে নতুন করে গড়ে ওঠে
আদিলাবাদ দুর্গ। আবার স্থানান্তরও করেন রাজ্যপাট দিল্লী
থেকে দাক্ষিণাত্যের দেবগিরিতে মহম্মদ। দীর্ঘ ১১২০ কিমি
যাতায়াতে নানান ক্ষয়ক্ষতির সঙ্গে জীবনহানি ঘটে বিপুল
হারে। তবে লাগোয়া দুই-ই আজ বিধ্বস্ত। ধর্মগুরু নিজা-
মুদ্দিনের সাথে গিয়াসুদ্দিনের মতান্তর সেও এক কিংবদন্তী।
গুরুর আইন গড়ার কর্মী নিয়ে গিয়াসুদ্দিন মিনার গড়ায়
নিয়োগ করেন। ব্যথিত গুরু শাপ দেন—*দিল্লী দূর অন্ত!*
মৃত্যুও ঘটে আততায়ীর হাতে ১৩২৫এ গিয়াসুদ্দিনের।
ধ্বংসও পায় বেশ গুরুরই শাপে। তুঘলকাবাদ আজ ভূতুড়ে
শহর—জিপসিনের বাস। তবে, মেহেরৌলি-বদরপুর
সড়কে দুর্গের দক্ষিণ দ্বারে কৃত্রিম জলাশয়ের মাঝে
গিয়াসুদ্দিনের সূর্য্য সমাধিটি আজও মধ্যযুগীয় সাক্ষ্য হয়ে
পর্যটকদের অতীত রোমন্থন করায়।

সূর্য্য কুণ্ড : শহর থেকে ১৭.৭ কিমি দূরে দিল্লী-আগ্রা
রোডে কূতব ছাড়িয়ে হরিয়ানা রাজ্যের সূর্য্য কুণ্ড। রাজপুত
রাজাদের কীর্তি এটি। সম্ভবত ১১ শতকে টোমররাজ
সূর্য্যপাল কুণ্ডটি খনন করান দক্ষিণ-পশ্চিম দিল্লীর
জলাভাব মেটাতে। যদিও আজ আর জল নেই কুণ্ডে, তবে
সূর্য্যদেবতার মন্দিরটি রয়েছে আজও। মে-জুন বনফুলেরা
মনোরম শোভায় সাজিয়ে তোলে চারপাশ। মেলা বসে জুন
মাসে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *হরিয়ানা ট্যুরিজমের ডিলার*
মোটেল, ক্যাম্পার হাট ও হোটেল রাজহংস, Surajkund,
Faridabad-121009, ☎ 6810862, A/c D ৮০০, সুইট
৩১০০।

যাত্রীবাসে কূতব এসে এগুলি দেখে নেওয়া সুবিধার।
কনডাক্টেড ট্যুরে সময়-স্বল্পতায় মামুনের কবর, তুঘলকা-
বাদ ও মেহেরৌলি দেখা অসম্ভব হয়ে পড়ে। কনট্রেন্সের
দিল্লী ট্রান্সপোর্ট করপোরেশনের সামনে থেকে ৫০৫, দিল্লী
জংশন থেকে ৫০২, ISBT থেকে ৫০৩/ ৫০৩ রুটের বাস
বাঞ্ছনীয়। আর যাত্রে মিনি বাস সুপার বাজারের সামনে
থেকে। মৌর্যদের থেকে সূর্য্যাত খোলা থাকে কূতব, দিল্লী
লাগে; গুরুবার ফ্রি। থাকারও ব্যবস্থা আছে কূতব লাগোয়া

কৃতব রেস্ট হাউসে। চলার পথে জওহরলাল বিশ্ববিদ্যালয়, আই আই টি, বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

সফদরজং টুন্স : শহর থেকে ৯ কিমি দূরে কৃতবের পথে অরবিন্দ মার্গে হমায়ুন সমাধির অনুকরণে অবৈধাচার নবাব মির্জা মুকিম আবুল মনসুর খানের স্মৃতিতে ১৭৫৪য় তৈরি করেন সফদর জং-পুত্র নবাব সুজা-উদ্-দৌলা। মোগলি স্থাপত্যে গড়া ৪০ফুট উচু শেষ সৌধও এই টুন্স। চারপাশে চার মর্মর-খচিত আজান মিনার—বাগিচাও হয়েছে চত্বর জুড়ে। পাশেই মিনি এয়ারপোর্ট সফদরজং। ১৯৮০তে এই এয়ারপোর্টেই এক বিমান দুর্ঘটনায় সঞ্জয় গান্ধীর মৃত্যু ঘটে। অদূরে ১৫১৮য় লোধী স্থাপত্যে গড়া অষ্টকোণাকৃতি সিকন্দর শাহ লোধীর সমাধিসৌধ। শিরে গম্বুজ হয়েছে ৫৪ ফুটের।

লক্ষ্মীনারায়ণ মন্দির : কনট প্লেসের পশ্চিমে ওড়িশি শৈলীতে ১৯৩৮এ রাজা বলদেও বিড়লার তৈরি লক্ষ্মী-নারায়ণ মন্দির। বিড়লা মন্দির নামেও সমধিক খ্যাত। মন্দির মার্গের এই মন্দিরে দেবতা রয়েছেন লক্ষ্মী, নারায়ণ, দুর্গা ও শিব। মন্দিরের জাঁকালো কল্লকার্যও সুন্দর। পৌরাণিক আখ্যান চিত্রিত হয়েছে এর দেওয়ালে। সর্বধর্মের সমন্বয়ও ঘটেছে মন্দিরে—বৌদ্ধ ও শিখ ফ্রেস্কো, চীনা বুদ্ধিস্ট বেলও স্থান পেয়েছে।

কালীবাড়ি : লক্ষ্মীনারায়ণ মন্দির লাগোয়া মন্দির মার্গে কালীবাড়ির আকর্ষণ অনস্বীকার্য। দিল্লীবাসীদের কাছে মন্দিরটির প্রশস্তি মুখে মুখে। কালীবাড়ির গেট হাউসটি দিল্লী ভ্রমণার্থীদের খুবই আদরণীয়। আজও এদের ডর্মি প্রথায় ৪৫ টাকা খাকা ও খাওয়ার ব্যবস্থা ভালই।

বাহাই উপাসনা গৃহ : বিশ্ব এক—একতার মানব জাত। একই বৃক্ষের নানান বৃন্তে নানান ফুল, নানান শাখায় নানান পাতা। তবুও যেন ধর্মের অঙ্কতা, মানুষে মানুষে হিংসার হানাহানি কলুষিত করছে ধরাধামকে। সুন্দর এই পৃথিবীতে এক জাতি এক প্রাণ একতা এই মূলমন্ত্র রূপ দিতে ১৮৪৪এ পারস্যে উন্মেষ ঘটেছে বিশ্বের কনিষ্ঠতম ধর্ম বাহাই-এর। প্রবর্তক—বাহাউল্লাহ। আর ভারতে আগমন ১৮৭২এ ঘটলেও ২১ এপ্রিল ১৯৮০তে শুরু হয়ে ১৯৮৬র ২৪ ডিসেম্বর নতুন দিল্লীর কালকাজির বাহাপুরে হজ্জাখাসের উত্তরে এফ সাহাবার নকশায় মন্দির হয়েছে পদ্মাকারে। মনোরম বাগিচার মাঝে নতুন দিল্লীর এই নতুন আকর্ষণ ইতিমধ্যেই পর্যটকদের চিষ্ট জয় করেছে। সোমবার ছাড়া ঘর এর সবার তরে খোলা।

ইন্ডিয়া গেট : টুরিস্ট অফিস থেকে ২.০২ কিমি দূরে রাজপথের পূর্বপ্রান্তে ১৯২৩-এর ১০ই ফেব্রুয়ারি Duke of Connaught-এর ভিত্তে স্যার ল্যাথিয়েনসের নকশায় ১৯৩১এ তৈরি ৪২ মি উচ্চ ইন্ডিয়া গেট বা ভারতীয় তোরণ। প্রথম বিশ্বযুদ্ধে নিহত ৯০,০০০ ভারতীয় সেনার স্মৃতির উদ্দেশ্যে তৈরি ওয়ার মেমোরিয়াল আর্চ। নামও খোদিত

হয়েছে ১৩,০০০ সেনার। খাল কেটে জলপথে সংযোগ ঘটেছে মহাকরণ পর্যন্ত। বোটিং-এর ব্যবস্থাও আছে। আলোকোজ্জ্বল এই তোরণটি রাতের বেলায় সুন্দর দেখায়। ১৯৭১ খ্রিস্টাব্দ থেকে অমরজ্যোতি অর্থাৎ ৪টি শাখাত শিখা অভ্যুজানীর করে তুলেছে একে। এরই চারপাশ ঘিরে সেক্রেটারিয়েট, পার্লামেন্ট ভবন, রাষ্ট্রপতি ভবন।

রাষ্ট্রপতি ভবন : ভারতের রাষ্ট্রপতির বাসভবন। জন-পথের টুরিস্ট অফিস থেকে ১.০৬ কিমি দূরে রাজপথের পশ্চিমে ইন্ডিয়া গেটের বিপরীতে রায়সিনা পাহাড়তলীতে ৩৩০ একর জমি জুড়ে ৩৪০ ঘরের এই ভবন। ব্রিটিশের হাতে স্যার এডউইন ল্যাথিয়েনসের নকশায় মোগল ও পাশ্চাত্য ধারায় ব্রিটিশ ভাইস রিগ্যাল-এর বাসভূমি রূপে ১৯২৯এ তৈরি। দ্বন্দ্বের আকাশী রঙা তাম্র নির্মিত মূল গম্বুজটি বৌদ্ধ স্তূপধর্মী, অলিঙ্গ হয়েছে হিন্দু মন্দিরের ঢঙে। এর দরবার হল, অশোক হল সদাই ব্যস্ত রাষ্ট্রপতির নানান অনুষ্ঠানে।

নিজ বাসভূমির আদলে গড়া কৃত্রিম পাহাড়, বাগিচা, ঝরনা, জলাশয়ে ১৩০ হেক্টর ব্যাপ্ত ভবনের মোগল উদ্যানটিও রমণীয়। শীতে ফুলের বাহার মধুময় করে তোলে। ৪১৮ জন মালি উদ্যান পরিচর্যায় রত। পাখি তাড়াতে রত ৫০ জন তার। রাষ্ট্রপতির মিলিটারি সেক্রেটারির অনুমতিতে দেখার ব্যবস্থা। আর বিদেশীদের অনুমতি মেলে Govt of India Tourist Office থেকে। পর্যটকমাত্রই এই অনুমতি পেতে পারেন। তবে, জানু/ফেব্রুয়ারিতে একমাস সর্বসাধারণের কাছে খোলা থাকে এর দরজা। জাতীয় উৎসবের দিনগুলিতে আলোর সাজও পরে ভবন।

সংসদ ভবন : রাষ্ট্রপতি ভবনের এক পাশে রাজপথের উত্তর লাগোয়া সংসদ মার্গে (পার্লামেন্ট স্ট্রিট) স্যার হার্বট বেকারের নকশায় চক্রাকার পার্লামেন্ট হাউস অর্থাৎ সংসদ ভবন। কাউন্সিল অব স্টেট ও অ্যাসেম্বলি রূপে ব্রিটিশের গড়া ১৭১ মি ব্যাসের ভবনে আজ ভারতীয় পার্লামেন্ট অর্থাৎ রাজ্যসভা ও লোকসভা বসেছে।

যশ্বর মন্দির : এটি জয়পুরের মহারাজা সওয়াই জয়-সিংহ দ্বিতীয়ের সৃষ্টি। কনট প্লেসের অদূরে সংসদ মার্গে ১৭২৫এ তৈরি সেকালের পঞ্জিকা অর্থাৎ মানমন্দির—সূর্য, চন্দ্র ও গ্রহ-নক্ষত্রের গতিবিধি ও সময় পরিমাপক বস্তু। বিশালাকার প্রিন্স ডায়ালটি অনবদ্য। মানমন্দির হিসাবে জয়পুরের পরেই এর স্থান। উজ্জয়িন, বারানসী, মথুরাতেও যশ্বর মন্দির হয়েছে। সূর্যোদয় থেকে রাত দশটা খোলা থাকে। অদূরে হনুমান মন্দির।

জাতীয় মিউজিয়াম : রাজপথের দক্ষিণে জনপথে জাতীয় মিউজিয়াম অর্থাৎ জাদুঘর। অতীত দিনের নানান সংগ্রহ স্থান পেয়েছে এই মিউজিয়ামে। পাঁচ হাজার বছরের অতীত প্রদর্শিত হয়েছে। সিদ্ধসভ্যতা, ব্রাহ্মণিকাল, জৈন ও বুদ্ধ

স্থাপত্যের নিদর্শনও রয়েছে মিউজিয়মে। ম্যুরাল ও মিনিয়োচার থর্মী রঙিন চিত্রকলার সংগ্রহও উল্লেখ্য। যোগল, রাজপুত, ডেকান ও পাহাড়ীশৈলীর ছবির সম্ভার দেখবার মতো। এছাড়া *গীতগোবিন্দ*, সুন্দর অলঙ্কৃত মহাভারত, সোনালী হরফের ভাগবতগীতা, অষ্টকোণী কুঙ্গে কোরান, বাবরের হাতে লেখা *বাবরনামা*-র পাণ্ডুলিপি, নানানধর্মী বাদ্যযন্ত্র, নানান উপজাতীয় পোশাক মিউজিয়মকে সমৃদ্ধ করেছে। আর Sir Aurel Stein-এর আন্টিকের সংগ্রহও মর্যাদা বাড়িয়েছে মিউজিয়মের। মিউজিয়মের নবতম সংযোজন প্রাচীনকাল থেকে অধুনা পর্যন্ত অলঙ্কারের ক্রম বিবর্তন গ্যালারি। দিল্লী দর্শকদের কাছে এর আকর্ষণও কম নয়। শনি ও বুধ ১৪-৩০টায় ফিল্ম শো-ও প্রদর্শিত হচ্ছে মিউজিয়মে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় খোলা।

নেহরু মিউজিয়ম : রাষ্ট্রপতি ভবনের অদূরে তিনমূর্তি রোডে ব্রিটিশ সেনাপতির বাসভবন রূপে তৈরি বাড়ি ১৯৫৪য় রূপান্তরিত হয় ভারতের প্রধানমন্ত্রীর বাসভবনে। সেই থেকে ভারতের প্রথম প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত জওহরলাল নেহরুর বাসভবন হয় তিনমূর্তি। ১৯৬৪তে মৃত্যুর পর নেহরু-স্মারক মিউজিয়ম বসেছে। ব্যক্তিজীবন ও প্রধান-মন্ত্রীরূপে দেশ-বিদেশ থেকে পাওয়া পুরস্কারের সম্ভার প্রদর্শিত হয়েছে। লাইব্রেরিও বসেছে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় খোলা। প্রবেশ অবরিত। মরসুমে ১১-৩০, ১৩-৩০, ১৫-৩০, ১৬-৩০-এ নেহরুর কর্মজীবন তথা ভারতীয় স্বাধীনতা সংগ্রামের আখ্যান দেখে নেওয়া যায় Nehru Planetarium অর্থাৎ *Son-et lumiere*-এ তিনমূর্তিতে। টিকিট ১০ ও ৫, ও 3014504. গোলাপ বাগিচাটিও সুন্দর তিনমূর্তিতে। অদূরেই জহরজ্যোতি।

ইন্দিরা স্মৃতিসৌধ : ১ নম্বর সফররজং রোডের বাড়িতে প্রিয়দর্শিনী ইন্দিরার স্মৃতিতে আর এক জাতীয় মন্দির গড়ে তোলা হয়েছে যে ২৭, ১৯৮৫তে। এই বাড়িতেই শ্রীমতী ইন্দিরা শহীদের মৃত্যুবরণ করেন ৩১ অক্টোবর ১৯৮৪। কাচের আঁধারে ঢেকে দেওয়া হয়েছে জায়গাটিকে। আর হয়েছে গুলিবিদ্ধ হবার আগের মুহূর্তে হেঁটে আসা বাগিচাপথে চেক সরকারের শ্রদ্ধাঞ্জলি ইস্পাতের পাতে স্মৃতিকে দিয়ে গড়া ৩৩×২৫ মিটারের কৃত্রিম এক জলপ্রবাহ। তৈরিও এটি চেক স্থপতি জারোস্লাভ মিরিচের। ৩টি ঘরে বসেছে ইন্দিরার ব্যবহৃত জিনিসপত্রের প্রদর্শনী। এমনকি রক্তাক্ত বস্ত্রখানিও প্রদর্শিত হয়েছে মিউজিয়মে। আর দেখা যাবে অশ্রুস্রব-পড়ার ঘর, খাবার ঘর, দেওয়ানি আম, দেওয়ানি খাস। সোমবার ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা।

ফিরোজ শাহ কোটলা : যে কোনও খেলাপ্রিয়র কাছে ফিরোজ শাহ কোটলা গ্রাউন্ড বিশেষভাবে পরিচিত। ১৩৫৪য় কিছার উত্তর-পূবে মথুরা রোডে দিল্লী গেটের দক্ষিণে অতীতের সিরি নগরী তথা আজকের হজ্ঞা খাসে রাজ্যপাট

গড়েন ফিরোজ শাহ। জায়গার নামেরও বদল ঘটে—নিজের নামে নাম হয় ফিরোজাবাদ। নতুন রাজধানীর আকর্ষণ বাড়াতো ১৩ মি উঁচু (৩ শ্রি পু) মনোলিথিক অশোক পিলামিটও তুলে এনে পত্তন করেন। যদিও অতীত আজ লুপ্ত—তবে, সেকালের বিরাটাকার সরাবরটি খনন করান ফিরোজ। এরই পাড়ে লৌহী স্থাপত্যে ফিরোজের গড়া কলেজের কেন্দ্রস্থলে ছিল ফিরোজ শাহ-র সমাধি (১৩৯৮)। সুলতানা রিজিয়া-র সমাধিও এখানে। এমনকি ১৩৯৮-এ তৈমুর লঙ এখানেই মহম্মদ শাহকে হারিয়ে দখল নেয় দিল্লীর। তবে সবই আজ অতীত—১৭ শতকে শাজাহানের হাতে শাহজাহানাবাদ গড়ার কালে লোপ পায় ফিরোজাবাদ। শহর থেকে দূরত্ব ৩.২ কিমি।

ডলস মিউজিয়ম : সারা বিশ্ব (৮৫টি দেশ) থেকে ৬০০০-এরও অধিক পুতুলের সংগ্রহ স্থান পেয়েছে শঙ্করস ইন্টারন্যাশনাল ডলস মিউজিয়মে। বিশেষ করে জাপানি পুতুলের সম্ভার চমক লাগায় দর্শকদের। তবে সংখ্যাও অংশ ভারতীয়—ভারতীয় সংস্কৃতিও রূপ পেয়েছে পুতুলে। টিকিট ৫০ পয়সা। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১৭-৩০টায় খোলা। দিল্লী গেটের অদূরে বাহাদুর শাহ জাফর মার্গে ITO অফিসের পাশে নেহরু হাউসে এই মিউজিয়ম।

রাজঘাট : জনপথ থেকে ৪ কিমি দূরে ফিরোজ শাহ-র উত্তর-পূবে দিল্লী গেটের সম্মুখি রিং রোডে যমুনা কিনারে গড়ে উঠেছে নবভারতের অবিস্মরণীয় জাতীয় মন্দির। জাতির জনক মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধীর শেষকৃত্য হয় মৃত্যুর পরদিন ১৯৪৮-এর ৩১ জানুয়ারি এখানে। স্মারক-রূপে কালোমর্মের বর্গাকার সমাধিবেদি। খোদিত হয়েছে গান্ধীজীর শেষ উক্তি—*হে রাম*। সাধারণ-অসাধারণ, দেশী-বিদেশী দিল্লী ভ্রমণার্থীরা শ্রদ্ধা জানাতে আসেন জাতির পিতাকে। প্রতি শুক্রবার (মৃত্যুদিন) উপাসনা বসে। রাজ-ঘাটের আর এক দ্রষ্টব্য ছবি ও ফটোর গান্ধী দর্শন প্রদর্শন-শালা। পাশেই ব্যক্তি জীবনের সংগ্রহের গান্ধী স্মারক সংগ্রহালয়।

আর এক গান্ধী স্মারক—গান্ধী বলিদান স্থল, শহরের তিস জানুয়ারি মার্গে। ১৯৪৮-এর ৩০ জানুয়ারি ১৭-০৫এ বিড়লা ভবনে উপাসনায় যাবার পথে আততায়ীর গুলিতে গান্ধীজী যেখানে শহীদ হন তারই স্মারক রূপে তৈরি।

শান্তিঘন : রাজঘাটের উত্তর লাগোয়া শান্তিঘন। স্বাধীন ভারতের প্রথম প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত জওহরলাল নেহরুর শেষ-কৃত্য হয় এখানে ১৯৬৪র ২৭শে মে। এখানেও গড়ে তোলা হয়েছে সমাধিবেদি। পাশেই ১৯৮০র জুনে বিমান দুর্ঘটনায় নিহত নাতি (ইন্দিরা-ভ্রমণ) সঞ্জয় গান্ধীর স্মৃতিবেদি।

বিজয়ঘাট : এটি ভারতের বিতীয় প্রধানমন্ত্রী লালবাহাদুর শাস্ত্রীর সমাধিবেদি। ১৯৬৫র ভারত-পাক যুদ্ধ জয়ের পর শান্তি-সম্মেলনে গিয়ে রাশিয়ার তাসখন্দে মৃত্যু ঘটে প্রধানমন্ত্রীর। ১৯৬৬তে এখানেই তাঁর শেষকৃত্য সম্পন্ন হয়।

শক্তিমান : ভারতীয় জাতীয় সংহতির অমলিন প্রতিমা প্রিয়দর্শিনী ইন্দিরার স্মৃতিতে আর এক জাতীয় মন্দির গড়ে উঠেছে রাজঘাট ও শাস্তিবনের মাঝে। ৩১ অক্টোবর ১৯৮৪তে শহীদে মৃত্যুবরণ করেন প্রধানমন্ত্রী ইন্দিরা গান্ধী—আর ৩ নভেম্বর তাঁর নম্বর দেহ পুতায়িত্তে বিলীন হয় এই শাস্তিবনে।

বীরভূমি : অদূরে মায়ের কাছে তৈরি হয়েছে আর এক জাতীয় মন্দির ইন্দিরা-তনয় রাজীব স্মরণে। চেমাই থেকে ৪০ কিমি দূরে শ্রীপেরামবুদুরে ২১শে মে ১৯৯১ রাত দশটা বিশ মিনিটে ঘাতকের হাতে শহীদ হলেন ভারতের নবীনতম বিশ্ববরণে নেতা প্রাক্তন প্রধানমন্ত্রী রাজীব গান্ধী। আর ২৪শে মে পুতায়িত্তে বিলীন হয় তাঁর নম্বর দেহ এই পূণ্যভূমে। সেই স্মৃতিতে জাতীয় বেদি। এমনকি রাজীব হত্যার ঘোঁষাশায় ১৯৯৭-এর ডিসেম্বরে মন্ত্রীসভা তথা লোকসভার পতনও ঘটেছে ভারত রাষ্ট্রে।

পাশাপাশি গড়ে উঠেছে এই পাঁচ বরগীয়া স্মৃতি-মন্দির। দিল্লী ভ্রমণার্থীদের কাছে এদের আকর্ষণ অনবীর্ষ্য। লাগোয়া পার্ক—বিশ্ববন্দিত নানান VIP-র পৌতা বৃক্ষরাজিও মাথা নত করে দাঁড়িয়ে। সাম্রাজ্যপ্রমণের পক্ষেও পরিবেশ রমণীয়। আর হয়েছে কৃষকনেতা ভারতের পঞ্চম প্রধানমন্ত্রী চরণ সিংহের স্মরণে কিশাণঘাট রাজঘাটের অদূরে যমুনা-কিনারে। মে ৩১, ১৯৮৭তে এখানে শেষকৃত্য সম্পন্ন হয় চরণ সিংহের। আর হয়েছে রাজঘাটের বিপরীতে রিং রোডে যমুনা কিনারে দলিত নেতা ভারতের আতা এক প্রধানমন্ত্রী বাবু জগজীবন রামের স্মরণে সমাধি মন্দির।

লালকেলা: আগ্রা থেকে দিল্লী এলেন ৫ম মোগলি সম্রাট সাহাবুদ্দিন মহম্মদ কিরান শাহজাহান। গড়ে তুললেন মোগলি স্থাপত্যে লাল বেলেপাথরে কেল্লা বা দুর্গ। নামটিও তাই লালকেলা। ১৬৩৮এ শুরু করে ১৬৪৮এ কেল্লা নির্মাণ শেষ করেন সম্রাট। আর দীর্ঘ ৩০০ বছর পরে নানান ঐতিহাসিক স্মৃতিমণ্ডিত লালকেলায় ১৯৪৭র ১৫ই আগস্ট নেতাজী সুভাষের চলো চলো দিল্লী চলো—লালকেলা দখল করো স্বপ্ন রূপ পেল। ব্রিটিশের ইউনিয়ন জ্যাক নামিয়ে স্বাধীন ভারতের জাতীয় পতাকা তুললেন পণ্ডিত জওহরলাল নেহরু। ভাষণও দিলেন জাতির উদ্দেশ্যে লালকেলা থেকে। সেই থেকে প্রতি ১৫ই আগস্ট জাতির উদ্দেশ্যে ভাষণ দেন প্রধানমন্ত্রী।

দুর্গের নির্মাণশৈলীও অভিনব। ২২ কিমি ব্যাপ্ত দুর্গের চারপাশে ছিল ১১ মি গভীর পরিখা আর প্রাচীর ছিল যমুনার লিকে ১৮ মি. শহরমুখী ৩৩ মি উঁচু। সেকালে যমুনার ওপার থেকে কোনো শত্রুসেনার পক্ষে দুর্গ আক্রমণ যেমন সম্ভব ছিল না তেমনই যমুনার খর স্রোত পেরিয়ে আসাও ছিল অসম্ভব। তবে, আজ সরে গিয়ে ১ কিমি পূর্বে যমুনা। দুর্গের মূল প্রবেশপথ ছিল দক্ষিণে দিল্লী গেট আর পশ্চিমে লাহোর গেট। তেমনই দক্ষিণ-পশ্চিমে কাম্বীরি গেট—

গেটও ছিল মোট চোদ্দ সেকালে। ২টি হস্তীমূর্তিও হয়েছিল দক্ষিণী দিল্লী গেটে। মূর্তিবিরাধী ঔরঙ্গজেবের হাতে ধ্বংস পায় হস্তীবৃগল। উত্তরকালে ১৯০৩এ ডাইসরের লর্ড কার্জন নতুন করে হস্তীমূর্তি গড়ে আকর্ষণ বাড়ান। দক্ষিণের দিল্লী গেট (দরিয়াগঞ্জমুখী) হয়েই পথ গিয়েছে জুম্মা মসজিদের। এই লালকেলাকেই ঘিরে গড়ে উঠেছিল সেকালে শাহ-জাহানাবাদ অর্থাৎ শাহজাহানের রাজ্যপাট আজকের পুরনো দিল্লীতে।

লাহোর (পাকিস্তান)মুখী লাহোরী গেট অর্থাৎ টাটনি চকমুখী গেট দিয়ে ঢুকতেই সেকালের বাগদাদী প্রথার হস্তচক বা মীনা বাজারে সোফানপাট বসছে আজও। তবে, আজ আর কেবল মহিলা সোফানি নয়—নানান সম্প্রদায়ের সোফানি বসছে নানানধর্মী অ্যাটিক সাজিয়ে। প্রবেশদ্বারে অর্ধগোলাকৃতি খিলান ও মার্বেল পাথরের গম্বুজ। ঢুকতেই খোলা চত্বর পেরিয়ে দু'পাশে গ্যালারি ছিল অভ্যাগতদের বসার। তবে, ব্রিটিশ ব্যারাক বসাতে বদল ঘটে অতীতের। খিতল নৌবংখানা বা নহবতখানা—গান-বাজনার আসর বসত সেকালে।

আটকোণা বিশালাকার কিম্বা-ই-মুবারক। কিম্বা-ই-মুবারকের শিল্প-সৌকর্যে শ্রীত শাহজাহান পাঁচ হাজারি মন-সবদারে উদ্বীত করেন মূল স্থপতি মকরমাৎ খানকে। মুবারকের চত্বর পেরুতেই দেওয়ানি আম। প্রজাদের সঙ্গে সম্রাটের মিটিং হল। প্রজাদের অভাব-অভিযোগের কাহিনী শুনতে সম্রাট। দেওয়ালে চোরকুঠুরীর মতো তার আসনটি সেকালে মণিমুক্তায় খচিত ছিল। তবে, মণিমুক্তো লোপ পেয়েছে অতীতেই, আর ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত দেওয়ানি আম সংস্কার করেন লর্ড কার্জন ১৮৯৮-১৯০৫এ। দেওয়ানি আমের পেছনে অতীতের সুরভিত বাগিচা ও ছয় মহলের ধ্বংসস্বপ্ন—মাঝে তার বেহেস্তের নহর (Nahr-i-Bihisht) অর্থাৎ স্বর্গোদ্যানে নদী।

উদ্যানের পেছনে মর্মরে গড়া দেওয়ানি খাস অর্থাৎ বিশেষ অতিথিদের সঙ্গে মিলন কক্ষ। এর ভাস্কর্য ও কারুকার্য অনবদ্য। রত্নখচিত স্তম্ভে সজ্জিত দেওয়ানি খাসের শ্বেতমর্মরের জালির কাজ নয়নাভিরাম। দেওয়াল ছিল শ্বেতমর্মরের আর সিলিং হয়েছিল রূপোর। ধনুকার খিলানের উপরে উত্তর এবং দক্ষিণের দেওয়ালে পার্সি ভাষায় সোনালি হরফে লেখা:

অগর কিরদৌস বরকরে জমীনস্ত
ওয়া হমীনস্ত, ওয়া হমীনস্ত, ওয়া হমীনস্ত
অর্থাৎ বেহেস্তের নহর বা স্বর্গোদ্যানে নদী।
পৃথিবীতে—স্বর্গ যদি কোথাও থাকে
সে এখানে, সে এখানে, সে এখানে।

দেওয়ানী খাসের আর এক সম্পদ ৩ গজ লম্বা, ২২ গজ চওড়া, ৫ গজ উঁচু ময়ূর সিংহাসন। এটি আজ ভারত-মাদ্রাস। এর নয়নাভিরাম রূপে পাগলপারা নাদির শাহ ১৭৩৯এ

সঙ্গে নিয়ে যায় লুঠের মাল হিসাবে সমরখন্দে। তবে ভেঙে যেতে ধ্বংস পেয়েছে সেটি আজ। রঙবেরঙের মণি-মুক্তা বসিয়ে পেখম তোলা ২টি ময়ূররূপী সলিড সোনায় তৈরি সিংহাসনে পাল্লা কেটে পায়রা খোদিত। নমন-মুগ্ধ অপরূপ সৌন্দর্যের ময়ূর সিংহাসনের সেকালেই দাম ছিল ১,২০,০০০০০ পাউন্ড। আরও পরে ১৭৬০এ মারাঠারাও খুলে নেয় সিলিং থেকে রূপার আন্তরগ দেওয়ানি খাসের। এমনকি ১৮৫৭র সিপাহী বিদ্রোহে পর্যুপ্ত ব্রিটিশ নতুন করে নগরী দখল করে আর্মি ব্যারাক গড়ে লালকেল্লায়। ধ্বংস পায় নানান প্রাসাদ, আন্তরগ লাগে মোগলি ফ্রেস্কো চিত্রে। তবে, ব্রিটিশ ভাইসরয় লর্ড কার্জন সংবিধি ফিরে পেতে বন্ধ হয় ধ্বংসলীলা—ব্যারাক সরে রেস্ট হাউস বসে ব্রিটিশের।

হলু পেরুতেই মমতাজের মহল—রঙমহল। নয়না-ভিরাম রঙমহলের সৌন্দর্যও অতুলনীয়। অতীতে হস্তী-দন্তের ফোয়ারা ছিল মোঝেতে। উত্তরকালে পদ্মাকার মর্মেরে রূপান্তর ঘটে; সুগন্ধী জলও বইত সেকালে। রঙবেরঙের অলঙ্করণও আজ বিবর্ণ। তবে, একটি মোমবাতি নিদেন-পক্ষে দেশলাই কাঠির আলোর বিচ্ছুরণ দর্শকদের মুগ্ধ করে। প্রত্নতত্ত্বদপ্তরের মিউজিয়ামও বসেছে মমতাজ মহলে। সর্বদিক্ষিণে কাছে মোড়া মমতাজের শিশমহল। রঙিন কাচে আঁকা ছবি ও অমূল্য রত্নসম্ভারে কারুকার্যময় শিশমহলটিও অনবদ্য। *Pietradura* শৈলীতে গড়া রয়্যাল বাথ তথা হামামটিও অনুপম।

দেওয়ানি খাসের উত্তর-পশ্চিমে ১৬৫৯এ শাজাহান-পুত্র-শুভরঙ্গজের (৬ষ্ঠ বাদশাহ আলমগীর) তৈরি শ্বেতমর্মরের মোতি মসজিদ কেল্লার আর এক দর্শন। এটি সম্রাট তার নিজের ও পরিবারের মহিলাদের ৫ ওয়াফ নামাজ পাঠের জন্য তৈরি করান। সাদা ও ছাইরঙা ডোরা-কাটা কন্দরূপী মোতি মসজিদ আকারে ছোট হলেও কারু-কাঠে অনুপম। সারা দুর্গের সঙ্গে সমতা রেখে বহির্ভাগে স্বপ্ন রূপ পেয়েছে। আর অঙ্গর সাধাশিখে—যেন মন্টারই প্রতিরূপ এই মোতি মসজিদ। এরই পেছনে মোগল উদ্যান। আর আছে উত্তর-পূর্বে শাজাহানের ব্যক্তিগত অষ্টকোনি ও তলা শাহীবুজ ও সম্রাটের নিজস্ব মহল খাসমহল।

আজকের দিল্লী পর্যটকদের কাছে চাঁদনির বিপরীতে লালকেল্লার আকর্ষণ যদিও অপরিসীম, তবে প্রাচীরসর্বধি লালকেল্লায় অতীত আজ বিস্তৃত। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা, টিকিট ৫। শুক্রবার ফ্রি দর্শন।

লালকেল্লার আর এক আকর্ষণ সন্ধ্যায় *Son-et lumiere* প্রদর্শনী। শব্দ ও আলোয় মোগল যুগ থেকে শুরু করে ভারতের স্বাধীনতা প্রাপ্তি পর্যন্ত ৩৩০ বছরের ভারত আখ্যান সেখান হিন্দি বা ইংরেজি ধারাভাষ্যে। টিকিট ৩০ ও ২০। ITDC, L Block, Connaught Place @ 3320331/ 600121-Ext 2295 বা লালকেল্লায় @ 3274580-তে টিকিট মেলে।

| | | |
|-------------------|------------------------|----------------------|
| Feb 1 to April 30 | English 20-30 to 21-30 | Hindi 18-00 to 19-00 |
| May 1 to Aug 31 | "21-on to 22-00 | "19-30 to 20-30 |
| Sept 1 to Oct 31 | "20-30 to 21-30 | "19-00 to 20-00 |
| Nov 1 to Jan 31 | "19-30 to 20-30 | "18-00 to 19-00 |

জুম্মা মসজিদ : লালকেল্লার বিপরীতে ১৬৫০ থেকে ১৬৫৬ খ্রিস্টাব্দে ওস্তাদ খলিলের স্থাপত্যে ১০ কোটি টাকা ব্যয়ে আগ্রার মোতি মসজিদের আদলে তৈরি করেন ভারত সম্রাট শাজাহান। ভারতীয় মুসলিম সম্প্রদায়ের মর্মকেন্দ্রও এই মসজিদ। ৪ প্রবেশ দ্বার—পূর্বের বাদশাহি দ্বারে সম্রাটের যাতায়াত ছিল সেকালে। আর উত্তর ও দক্ষিণের দ্বার দু'টি সাধারণের জন্য। মঞ্চাকার উঁচু ভিতের উপর অত্যুচ্চ মসজিদের শিরে ৪০ মি উঁচু মিনার হয়েছে ২টি। ২ টাকার টিকিটে ১২২ খাপ উঠে দক্ষিণের মিনার থেকে লালকেল্লা তথা চারপাশ দেখে নেওয়া যায়। এর চত্বরটি ১০৭৬ বর্গ ফুট প্রশস্ত। একত্রে ২৫,০০০ ধর্মার্থী উপাসনায় বসতে পারেন এর চত্বরে। মূল উপাসনা কক্ষ ২০১×১২০ ফুটের, উচ্চতা এর ১৩৫ ফুট—লাল বেলেপাথর আর সাদা মার্বেলের সমন্বয়ে তৈরি। গম্বুজটি হয়েছে কালো ও সাদা মর্মেরে। ৫ বছর ধরে ৫ হাজার শ্রমিকের শ্রমে গড়া শাজাহানের শেষ কীর্তিও সুন্দর অলঙ্কৃত এই জুম্মা মসজিদ। ভারতে অন্যতম আর বৃহত্তমও বটে। তেমনই জুম্মা মসজিদের আর এক সম্পদ সযত্নে রক্ষিত হজরত মহম্মদের—দাড়ির একটি কেশ, পায়ের চটি, কোরাণের একটি অধ্যায়, সমাধি সৌধের চাঁদোয়া, পাথরে পায়ের ছাপ। এমনকি এর ইমাম পদটি অলঙ্কৃত করছেন বংশ পরম্পরায় শাজাহানের নিয়োগ করা ইমাম পরিবার। ১২-৩০—১৪-০০টায় অন্য ধর্মালম্বীদের প্রবেশ নিষেধ। ছবি তুলতেও টিকিট লাগে।

চিড়িয়াখানা : জীবজন্তু প্রেমিকদের উচিত হবে পুরনো কেল্লার দক্ষিণ লাগোয়া মথুরা রোডে দিল্লীর চিড়িয়াখানাটি দেখে নেওয়া। নানান জন্তু-জানোয়ারের সাথে ভারতে লোপ পেতে বসেছে এমনই কিছু জীবজন্তু আকর্ষণ বাড়িয়েছে। স্যান্ডাইকেবল মণিপুরে মেলে, সেই স্যান্ডাই রয়েছে এখানে। গুশুরকুলার মধ্যে প্রবীণ ৪০ বছর বয়সী মোহন, ভারতের প্রথম সাদা বাঘ-দম্পতি বাজা-রানীর বাসও এখানে। ৪ একর জমি জুড়ে গড়ে তোলা পাখির স্বর্গ—যেমন নাম-না-জানা পাখিদের আকর্ষণ করে তেমনই আনন্দ বর্ধন করে পর্যটকদের। গ্রীষ্মে ৮—১৮-০০, শীতে ৯—১৭-০০টায় খোলা, শুক্রবার বন্ধ। টিকিট ৫।

পুরনো কিলা : ইন্ডিয়া গেটের দক্ষিণ-পূর্বে ১৫৩০এ হুমায়ূনের হাতে শুরু আর সম্পূর্ণতা পায় হুমায়ূনকে হারিয়ে ১৫৩৮-৪৫-এর মধ্যে আফগান নায়ক শের শাহ সুব্রী হাতে মহাভারতের ইন্দ্রপ্রস্থ নগরীতে এই কিলা অর্থাৎ দুর্গ। নাম হয় ডার শের গড়া। তিনদিকে পরিখা আর পূর্বে বনুনা বয়ে যেত সেকালের। শিশু ও বড়ক থেকে প্রাক-মোগলকালে দুর্গও ছিল ইন্দ্রপ্রস্থে। নতুন করে দুর্গ গড়েন হুমায়ূন। অতীতের ইন্দ্রপ্রস্থ হয় *দিনপানাহা*। উঁচু প্রাচীরে ঘেরা দুর্গের

প্রবেশপথ ৩টি। চিড়িয়াখানা অর্থাৎ উত্তরের তালুক দরওয়াজা দিয়ে ঢুকতেই চোখে পড়ে শের মঞ্জিলের লাল বেলেপাথরের অষ্টভূজাকার চূড়ো। ১৫৪৮-এ শের শাহ সূরীর মৃত্যুতে অযোগ্য পুত্র ইসলাম শাহকে হঠাৎ ১৫৫৫য় হুমায়ুন আবার দিল্লীর বাদশা হন। আর শের মঞ্জিল হয় তাঁর লাইব্রেরি। একদা (১৫৫৬) মসজিদের মোয়াজ্জেমের আজান শুনে উপাসনায় বাবার কালে এই পাঠাগারের সিঁড়ি থেকে পড়ে আহত হুমায়ুনের মৃত্যু হয় ৩ দিন পরে।

শের মঞ্জিলের পিছনে পুরাতত্ত্বের অমূল্য সন্ধান নিয়ে গড়ে ওঠা মিউজিয়ামটিও কম আকর্ষণীয় নয়। খননে পাওয়া মোগল, সুলতান, রাজপুত, গুপ্ত, কুষাণ, সুস, মৌর্য, এমনকি খ্রিস্টপূর্ব দিনের সংগ্রহও স্থান পেয়েছে। ইন্দো-আফগান স্থাপত্যের সমন্বয়ে গড়া শের শাহের মসজিদটিও পর্যটকদের মুগ্ধ করে। তবে আজ ধ্বংসের কাল শুনেছে কিম্বা। বুক চিরে রাজপুত হয়েছে। এরই ডানদিকে চিড়িয়াখানা। অদূরে হজরত নিজামুদ্দিন রেল স্টেশন।

বামে ভারতীয় প্রগতির প্রদর্শনশালা অর্থাৎ প্রগতি ময়লা। তেরি ১৯৮২র এশিয়ান গেমস কালে। সারা বছরই ছুড়ে থাকে ট্রেড ফেয়ার প্রগতিতে। ভারত রাষ্ট্রের প্রতিটি রাজ্যের প্রদর্শনশালাও বসেছে পাকাপোক্ত মণ্ডপ গড়ে। ভারতীয় সংস্কৃতির স্মারক নিয়ে মিউজিয়ামও হয়েছে নানান। নেহরু প্যাভিলিয়ন, ইন্দিরা প্যাভিলিয়ন, এনার্জি ইজ লাইফ, বান-খাত-ব-দারু ও মুৎশিনের শিল্প-সুখমার নানান নিদর্শন নিয়ে গড়া ক্রাফট মিউজিয়াম ছাড়াও মনো-রঞ্জন নানান ব্যবস্থা সোমবার ছাড়া ৯-৩০—১৬-৩০টা এক টাকার টিকিট দেখতে মেলে প্রগতিতে। তেমনিই প্রগতির ৫ নম্বর গেটে শিশুদের মনোরঞ্জন নানান ব্যবস্থা নিয়ে গড়া Appu Ghar Amusement Park, ৩ 3318681, ১২—২০-০০টা উচিত হবে দেখে নেওয়া। এদের টিকিট ৪ শিশু ২। ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তর মুক্তাঙ্গন থিয়েটারও গড়েছে কিম্বায়। বিপরীতে সুপ্রিম কোর্ট।

১৭৩৯এ মোগল সাম্রাজ্যের দুর্বলতার সুযোগে পারস্যের সম্রাট নাদির শাহ দখল করে দিল্লীর মসনদ। অবশেষে, ১৮০৩এ অন্ধকবি বাহাদুর শাহকে ব্যাঘাত স্বীকারে বাধ্য করে পতনসময়টি করে রাখে ব্রিটিশ। আর ১৮৫৭র প্রথম স্বাধীনতা সংগ্রামে কিন্তু ব্রিটিশ শেষ মোগল সম্রাট বাহাদুর শাহকে বিতাড়িত করে নির্বাসনে পাঠায় রেজুনে। কামানের গোলায় ক্ষত-বিক্ষত করে সেদিনের নগরী। ইংরেজ সেনাপতি লে হডসন বাহাদুর শাহের ছেলে ও অন্যান্য পুরুষ বংশধরদের গুলি করে মেরে বুলিয়ে দেয় ফিরোজ শা কোটলার দিক থেকে পুরনো কিম্বার প্রবেশপথের দরজায়। সেই থেকে নাম হয়েছে এর খুদী দরওয়াজা।

হুমায়ুনের সমাধি : পুরনো কিম্বার দক্ষিণে মথুরা রোডের বামে ১৫৬৫তে খিটরী মোগল সম্রাট হুমায়ুনের

মৃত্যুতে হাজী বেগম স্বামীর মৃত্যুর ৯ বছর পর সমাধিতে ১৫ লক্ষ টাকা ব্যয়ে ৪৩ মি উঁচু অষ্টকোনি স্তম্ভ সৌধ গড়েন। পরবর্তীকালে বেগমও সমাধি হন এখানে। মনোরম মোগল উদ্যানের মাঝে পারসীয় ঢঙে কন্দরঙ্গী গম্বুজ শিরে ঈষৎ পীতাম্ব লাল বেলেপাথরের সাথে বহু রঙা মর্মরে গড়া এই স্তম্ভের সমাধি সৌধটি পর্যটকদের বিমোহিত করে। বিলানের জাফরির কাজও সুন্দর। বয়স ও স্থাপত্যে তাজের পূর্বসূরি এটি। উত্তরকালে তাজ তথা নানান মোগলসৌধ তৈরিতে প্রেরণাও যোগায় এই সমাধি। উঠতেই বামে—দারা, সুজা ও মুরাসের সমাধি। এমনকি পুত্র ও নাতি-সহ শেষ মোগল সম্রাট বাহাদুর শাহও শায়িত রয়েছেন এখানে। এছাড়া মদিনার অনুকরণে মসজিদও হয়েছে প্রাঙ্গণে ঢুকতে ডাইনে। দিল্লী থেকে আগ্রা যেতে ট্রেন থেকেও দৃশ্যমান। ট্যুরিস্ট অফিস থেকে দূরত্ব ৪.০৮ কিমি, সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা—টিকিটও লাগে দেখতে।

পথের বিপরীতে পুলিশ স্টেশনের পাশ দিয়ে সঙ্গীর্ণ গলিপথে লোহী স্থাপত্যে গড়া হজরত নিজাম-উদ-দিন আউলিয়া বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। চিন্তি সম্প্রদায়ের চতুর্দিক শেখ নিজাম-উদ-দিন ৯২ বছর বয়সে ১৩২৫এ মারা যেতে সমাধি হন এখানে। প্রতি শুক্রবার কাওয়ালি সঙ্গীতের আসর বসে শুক্র সমাধিতে। আর আছে বিশালাকার জলাশয়, বাইজেন্টিয়ান শৈলীতে গড়া আলাউদ্দিন খিলজির মসজিদ, উর্দু কবি মির্জা গালিব, আমির খসরু, হুগতি ঈশা খান ও শাজাহান-কন্যা জাহানারার সমাধি রাজকীয় সমাধিভূমিতে। অতীতের ইন্দ্র প্রস্থর উপর গড়ে উঠেছিল এই পবিত্র মুসলিম তীর্থ। উরস পাণ্ডিত হয় সাড়শ্বরে। প্রবাদ, আজমেরে দরগা খাজা সাহেব দর্শনান্তে আউলিয়া দরগা দর্শনের বিধি। অদূরে সুফী সম্প্রদায়ের ধর্মগুরু হজরত ইলায়েৎ খানের সমাধি।

বুদ্ধজয়ন্তী পার্ক : কারোল বাগ হয়ে পালামগারী রিং রোডে রূপ পেয়েছে সুন্দর সাজানো এই বাগিচা। মনোহারী ফুলের মেলা বসেছে। এর সৌন্দর্য ভ্রমণার্থী ও স্থানীয়দের অবসর বিনোদনে টেনে আনে শহর থেকে। বনভোজনের সুন্দর পরিবেশ।



বিশ্বের সিঁচনিক থেকে পর্যটক আসছেন সারা বছর ছুড়ে দিল্লীতে। তাই হোটেলও হয়েছে নানান মানের নানান দামের দিল্লীতে। দিল্লী জংশন রেল স্টেশনের বিপরীতে ও নিউ দিল্লী রেল স্টেশনের সামনে পাছাড়াগঞ্জে সাধারণ-মানের; শহরের প্রাণকেন্দ্র কন্ট্রোল থানা জনপথ ছুড়ে মধ্য-মানের আর বিলাসবহুল তারকাখচিত হোটেল রয়েছে সারা শহরময় ছড়িয়ে-ছিড়িয়ে দিল্লীতে। ভারতীয় রেলও হোটেল গড়েছে নতুন দিল্লী রেল স্টেশনে। আর ITDC ৫৫৮ বছরের ইকোনমিক হোটেল করেছে কন্ট্রোল মেসের কাছে ১৯ অশোক রোডে। দুটি হোটেলই দিল্লী ভ্রমণার্থীদের কাছে আজ আদরণীয়। আর নাচে বেশ কিছু গেস্ট হাউস বসন্তবাড়ির অংশ বিশেষে থাকার ব্যবস্থা

নিম্নে দিল্লীর প্রাণকেন্দ্র কনট প্লেসকে ভর করে। ধরমশালাও রয়েছে সারা শহরময় নানান। উচিতও হবে বহুকালীনের দিল্লী স্রমণে কনট প্লেসের খারে-কাছে হোটেল বেছে নেওয়া। এপ্রিল থেকে সেপ্টেম্বরে অফ-সিজন রিবেটও মেলে দিল্লীর হোটেল।

| সড়কপথে দিল্লী থেকে | দিল্লী জংশন (ওল্ড দিল্লী) |
|---------------------|----------------------------|
| আগ্রা ২০৪ কিমি | রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই |
| মথুরা ১৪৭ " | ডাইনে Shyama Prasad |
| গোয়ালিয়র ৩২১ " | Mukherjee Rd-110006, |
| কাঁসী ৪২০ " | STD 011-এ—*H Regal, |
| ভূপাল ৭৪১ " | (2) 2526197, A-c S |
| ভরতপুর ১৭৭ " | ৩০০ D ৪০০-৪৫০, A/c D |
| জয়পুর ২৫৯ " | ৬০০-৮৫০; Amrit H, S |
| উদয়পুর ৬৩৫ " | ১২৫ D ১৭৫-২৫০; New |
| যোধপুর ৬০২ " | Royal H, (1643) D ২২৫- |
| সিমলা ৩৬৮ " | ৩৫০; Sharma H, (894) |
| চণ্ডীগড় ২৪৬ " | 2517875, SCB ১০০, |
| অমৃতসর ৪৪৬ " | DCB ১৭৫ DAB ২৫০। |
| জম্মু ৫৮৬ " | Maharaja H, (1483) |
| জ্বীনগর ৮৭৬ " | 2519342, S ১০০-১৭৫ |
| হরিদ্বার ২৩৩ " | D ২২৫-৩০০ A/c D ৬০০; |
| মুন্সেরী ২৭২ " | New Frontier H, |
| ভারকা ড্যাম ৩৬৬ " | 2527332, SCB ১০০ |
| করবেট ন্যাশানাল | SAB ১৫০-২৫০, DCB |
| পার্ক ২৯০ " | ২০০, DAB ২৫০-৩৭৫ |
| কানপুর ৪৯০ " | A/c S ৪০০ D ২৫৫-৬০০। |
| লাহৌরী ৪৯৭ " | বামহাতি Fatehpuri-6এ— |
| নৈনিতাল ৩৩৮ " | Prince H, S ১৫০ D ২৫০, |
| খাজুরাহো ৫৯৬ " | এয়ার কুলার চার্জ ঘর প্রতি |
| কুলু ৫০১ " | ৪৫, অতিরিফ; H Taj- |
| মানালী ৫৩৯ " | mahal, SCB ১০০, SAB |
| মুন্সাই ১৪১৩ " | ১৫০, DCB ১৭৫, DAB |
| বারাণসী ৭৬৫ " | ২৫০-৩২৫; H Vikrant, |
| কলকাতা ১৪৯০ " | 2513121, SAB ১৭৫, |

DAB ২৫০ A/c D ৪৫০;
H Astoria, S ৮৫-১৫০, D ১৭৫-৩২৫; Green H, DAB
১৫০-২২৫ TAB ২৫০-৩২৫; Imperial H, 2525094, S
১২৫-২০০ D ১৭৫-২৫০ F ২৫০-৩২৫; H Park View,
2516543, S ১৭৫-২৫০ D ১৭৫-৪২৫ A/c D ৪৫০-৬৫০;
Gurdeep G H, 2917202, SCB ১২৫ DCB ১৭৫ SAB
১৬৫ DAB ২৫০ A-c S ৩০০ D ৩৫০; Satish H, (80) D
১৫০-২৭৫; Deepak H, (99) Fatehpuri, S ১০০ D ১৭৫;
Luxmi Bilas Marwari H, (178-79) S ৮৫ D ১৫০; Punjab
H, 2525045, SCB ১৫০ DCB ২৫০ SAB ১৭৫ DAB
৩০০ A-c D ৪০০; বিপরীতে লাল লক্ষ্মীনারায়ণ ধরমশালা;
Surri H, 8 Bagh Deewar, S ১২৫-১৭৫ D ১৭৫-২৫০; Stan-
dard H, Bagh Deewar, 2529930, S ১২৫-১৭৫ D ২০০-
২৭৫; H Ambar, 6477 Kala Baryan, SCB ৮৫ DCB ১৫০
SAB ১৫০ DAB ২৫০; Sheesh Mahal G H, 155 Kala
Baryan, S ১০০-২২৫ D ১৭৫-২৫০; Vaishnab H, Gandhi
Gali, 2528925, SAB ১২৫ DAB ২০০ TAB ২৫০; New

National H, SAB ১২৫ DAB ১৭৫; H Malabar, Bharat
H, H India, opp Delhi Jn Rly Stn, 2512706, SAB ১৫০,
DAB ২৭৫; Katoria H, Fatehpuri-6, SCB ১২৫ DCB ২০০,
DAB ২৫০; H Crown, DAB ২৫০-৩২৫।

New Delhi রেল স্টেশন থেকে বেরুতেই বিপরীতে
Paharganj, New Delhi-110055-এর ১ কিমি পশ্চিম জুড়ে
বাজার চক্রে সাধারণ মানের হোটেল হয়েছে নানান। ঘরও মেলে
এদের কাছে S ৬৫-১৭৫ D ১৫০-৩২৫ টাকায়। S B Guest
House, Shyam GH, H Neelam, H Prakash, Mayur,
Basanta H, Shalimar, H Kanishka, Kailash GH, Kiran
GH, H Vishal, Hare Krishna GH, H Pink City, H
Swapna, S/35 Main Bzr; H Satyam, H Vandana, H Tour-
ist, H Ekta, H Paras, Delhi GH, Sharma GH, Bombay
L, Milan H, Khanna GH, Tourist Inn, H Bright, ভানহাতি
গলিপথে H Namashkar, Camron L, H Relax, H Anand,
Upkar H, Tourist L, Rachna Tourist L, Sadar H, L Sweet
Home, Tourist Home, Shanti G H, H New Payal, Apna
G H, Sonu G H, Mukesh G H, H Rajan.

মধ্যমানে Paharganj, New Delhi-110055 এ: *H Air
Lines, opp N D Rly Stn, 7522677, SAB ২৫০, DAB
৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; *Venus H, 1566 Main Bzr, SAB
২০০ DAB ৩০০; *H The Nest, 11 Qutab Rd, Ramnagar-
55, 7528426, R1, S ৫০০, D ৬৫০ A/c S ৮০০ D ১০০০,
সুইট ১৫০০; *H Natraj, 1750 Chuna Mandi, 7522699,
A/c S ৩২৫-৪৫০, D ৪২৫-৬০০; *Metropolis Tourist
Home, 1634 Main Bzr, 7525492, S ৬৫০ D ৯৫০; *H
Paramount, opp N D Rly Stn, SCB ১৫০ DCB ২০০ SAB
২২৫, DAB ৩০০ A/c D ৪৫০; *H P S Palace, 3416 Hari
Mandir Marg, DAB ২৫০-৩২৫; H Chanukya, Rajguru
Rd, SAB ২২৫, DAB ৩০০ A/c S ৪০০ D ৬০০; H Chetak
Palace, 4390/14 Basant Rd, SAB ২০০, DAB ৩২৫ সুইট
৪৫০-৬০০; H Tourist, 7361 Ramnagar-55, 7510334,
SAB ৩৭৫, DAB ৫২৫ A/c S ৬৫০ D ৮৫০, সুইট ১৫০০।

পাহাড়গঞ্জের Ara Kashan Rd, N D-110055এ নানান
হোটেল: Maharani L (32), 7528439, SAB ২০০, DAB
২৫০-৪০০ A/c D ৬০০; H Soma (33), DAB ৩০০-৪২৫
A/c D ৬৫০-১০০০; যথেষ্ট পণ্ডার H Ajanta (36),
7520925, S ৩৫৫ D ৪৫৫ ৫৫৫ FR ১০৪৫ A/c D ৬৯৫,
কল বুকিং: Linkage 2465171/ Span 2801209/ Dia-
mond 276714; *H Kaber (4), 7521300, S ৪২৫
D ৫২৫ A/c S ৬০০ D ৮৫০; Krishna H (45), SCB ১০০
DCB ১৭৫ SAB ২৫০ DAB ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৫৫০; H
Dream Palace (44), SAB ২২৫ DAB ৩২৫ A/c S ৪০০ D
৬০০; H Marco Polo (8593/1), SAB ২২৫ DAB ৩২৫
A/c D ৫৫০; Apsara Tourist L (8126), SAB ২০০, DAB
৩২৫ A/c S ৩৫০ D ৫৫০; H Vīvek, 1534-50 Main Bzr,
7523015, S ১৭৫ D ২৫০ A-c S ২৭৫ D ৩৫০ A/c S
৩৫০ D ৫৫০ সুইট ৮৫০, যথাস্থানে কালী, অস্বাভাবিক যথেষ্ট
সুনার এদের; H Crystal (8501), SAB ২২৫ DAB ৩৫০
A/c S ৩৫৫ D ৪৫০; পাশেই H Syal, DAB ৩৫০-৬৫০; Arya

Tourist L (8526), SCB ১৫০ DCB ২০০ SAB ১৭৫ DAB ৩০০; *H Atlanta* (7971), SAB ২২৫ DAB ৩২৫; *Mallika Tourist Home* (8574), SAB ১৫০ DAB ২৫০ A/c D ৪৫০ ছাড়ও নানান। (বন্ধনীতে বাড়ির নম্বর।)

Karol Bagh, New Delhi-110005-এ : *H Empire*, ৪/41 WEA, opp Shastri Park, ৫ 5718750, SAB ২২৫ DAB ৩৫০ A/c D ৬০০; *Gurdev GH*, 13/18 WEA, Ajmal Khan Rd, ৫ 5716634, SAB ১৭৫ DAB ৩০০ A/c S ৪০০ D ৬০০; *H Qian Deluxe*, 6/85 WEA, Padam Singh Rd, ৫ 5752058, SAB ২০০ DAB ৩০০ A/c S ৩৫০ D ৬০০ সুইট ৮০০; *South Indian H*, 102/2 Ajmal Khan Rd, ৫ 5717126, SAB ৩৫০ DAB ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৫৫০-৬৫০; *First H*, Gurdwara Rd, DAB ৪০০-৫৫০ A/c ৬০০-৮৫০; **Sobu H*, 2397/98 Hardyan Singh Rd, ৫ 5729035, A/c S ৬৫০ D ৮৫০; *H Rajdeep*, 2632 Bank St, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৩০০ D ৯৫০; *Royal Garden GH*, 15/1-2 WEA; *H Sunshine*, 17-B/21 Devnagar-S, ৫ 5732842; *H Goutam Deluxe*, 2105 D B Gupta Rd, ৫ 5729162, S ৩২৫-৪৫০ D ৪২৫-৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০। নতুন দিল্লী রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে কনট সার্কাসকে ঘিরে মধ্য মানের হোটেল হয়েছে নানান। Connaught Circus, New Delhi-110001এ : *H Bright*, M-85 Con Cir, ৫ 3320444, SAB ৩৫০ DAB ৫৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০-৯৫০; **H Nirula's*, L Block, Con Cir, ৫ 3322419, A/c S ১৪৫০ D ২০০০-২৫০০ সুইট ৩০০০; **H Marina*, G-59 Con Cir-1, ৫ 3324658, A/c S ১৬৫০-২০০০ D ২২০০-২৫০০ সুইট ২৭৫০-৪৫০০; *Jukaso Inn*, L-1 Con Cir, ৫ 3324451, A/c S ১২৫০ D ১৫০০ সুইট ২০০০; *H Palace Height*, D Block, Con Cir, ৫ 3321419, S ২৫০ D ৩৫০-৪৫০ A/c D ৫৫০-৬৫০; **H Alka*, 16/90 Con Cir, ৫ 4632600, A/c S ১২৫০ D ১৫৫০ ভিলা ২০০০; **H Central Court*, N Block, Con Cir, ৫ 3315013, A/c S ৬৫০ D ৯৫০ সুইট ১২৫০; *South India Boarding*, M Block, Con Cir, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c D ৮৫০; **H York*, K Block, Con Cir, ৫ 3323769, A/c S ৮৫০-১২০০ D ১২৫০-১৭৫০; **H Metro*, N-49, Con Cir, ৫ 3313856, S ৫৫০ D ৭৫০ A/c S ৭৫০ D ৯৫০; *Prabhat H*, D-16 Con Cir, S ৪০০ D ৬০০; *Mudras Cafe*, C-33 Con Cir; *Blue H*, M-126 Con Cir, S ২২৫-৩০০ D ৩২৫-৪৫০; **H Fifty Five*, H-55 Con Cir, ৫ 3321244, A/c S ৬৫০-৯৫০ D ৮৫০-১২৫০; **Host Inn*, F-33 Con Cir, ৫ 3310431, A/c S ৮৫০ D ৯৫০-১২৫০; **New Delhi Hilton*, Barakhamba Avenue, Con Place-1, ৫ 3320101, S ৩০০-৪৫০ D ৩৫০-৫৫০ সুইট ৬০০-৮৫০ ছাড়ও নানান।

দিল্লী জং ও নতুন দিল্লী দুই রেল স্টেশনের মাঝ দূরত্বে ৮/১০ টাকার অটোর দিল্লী গেষ্টের অদূরে Netaji Subhash Marg অর্থাৎ দরিয়াগঞ্জ-110002এর সংযোগে গোল্ডা সিনেমােক ঘিরে— বাজলি মালিকানায় *Agra H*, 16 Daryaganj-2, ৫ 3278041 (2/3), DCB ১৭৫ DAB ২০০-৩২৫ TAB ২৫০ A-c ২৫ A/c ৩০ ঘর প্রতি বেশি; লাগোয়া *Castle GH*, 16 Daryaganj-

2 A/c S ৩৫০-৫২৫ D ৪৫০-৬৫০; নিগরীতে 3819/20 David St, Fng Market-এ—*H Delhi*, SCB ১০০ SAB ১৫০ DAB ২২৫ FAB ২৫০; *Vikrant GH*; *H Shukahari*, 1 Daryaganj-2, NS Marg-এ—*New Motimahal H*; *Duke H*, 8 NS Rd-2, DCB ২২৫ DAB ৩০০; **H Neeru*, 10 N S Rd-2, ৫ 3278522, S ৩০০ D ৩৭৫-৪৫০ A/c D ৬৫০; *S Star GH*, DAB ২৭৫; *Priya GH*, 3741 NS Rd-2, SAB ১৫০ DAB ২৫০; *Deepashukha GH*; **H Flora*, Dayananda Rd-2, ৫ 3273634, S ৩৫০ D ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০; *Sudarshan GH*, H Rex, 4/5 N S Rd-2, S ১৫০ D ২৫০; *Chetun GH*.

কনট প্রেসেব অদূরে ভারত সরকারের পার্টন উন্নয়ন নিগম ITDC-র **Ashok Yatri Niwas*, 19 Ashok Rd-110001, A 15R-ND2, ৫ 3324511, S ৫০০ D ৬৫০ চার বেডের ঘর ৭০০/৮০০; **Akbar H*, Chanakyapuri-21, A9R-ND10, **Ashok H*, 50-B, Chanakyapuri-21, ৫ 600412, A/c S ৬৫০০ D ৭৫০০, Suite ৯০০০-৩৩০০০; **H Janpath*, Janpath 1, A15 R-ND2, ৫ 3320070, S ২০০০ D ২৫০০, মে-জুলাই মাসে ১৫০০/২২০০; পাশেই **H Kanishka*, 19 Ashok Rd-1, ৫ 3324422, A15R-ND2, A/c S ৩৫০০ D ৪০০০ সুইট ৫০০০, এপ্রিল-আগস্টে ২৭০০/৩২০০; **Lodhi H*, Lala Rajpat Rai Marg-3, ৫ 4362422, A15R-ND8, S ১৬০০ D ২১০০, ২৫০০; **Qutab H*, off Sri Aurobindo Marg-16, ৫ 660060, A10R-ND15, A/c S ৩০০০ D ৩৫০০, এপ্রিল-আগস্টে ২২৫০/২৮০০; **H Ranjit*, Maharaja Ranjit Singh Rd-2, A21R-ND2 5, ৫ 3311256, S ৯০০ D ১২০০ A/c S ১১৯৫ D ১৭০০; **H Samrat*, Chanakyapuri-21, ৫ 603030, A/c S ৪০০০ D ৪৫০০ সুইট ১০০০০, এপ্রিল-আগস্টে ৩০০০/৪০০০; *Ashok Country Resort*, S ২০০০ D ২৫০০ সুইট ৩৫০০।

আর পরেই সাধা শব্দময় নানানধর্মী : **H Broadway*, 4/15 Aruna Asaf Ali Rd-2, ৫ 3273821, A/c S ৮৫০ D ১২৫০; **H President*, 4/23-B, A A Ali Rd-2, ৫ 3277836, A/c S ৫০০-৬৫০ D ৭৫০-৮৫০; *H Groves*, 3/17A A Ali Rd-2, S ৩০০-৪২৫ D ৪০০-৬২৫ A/c D ৬৫০-৮৫০; *H Mazdoor*, A A Ali Rd-2; **H Best Western Surya*, Friends Colony-65, ৫ 6835070, A/c S ২২৫ D ৩০০ সুইট ৩৫০-৮৫০ US\$; Welcomgroup's **Maurya Sheraton*, Sardar Patel Marg, Chanakyapuri-21, ৫ 3010101, S ২৬৫-৩৮৫ D ৩০০-৪৫০ সুইট ৪৫০-১০০০ US\$; *H Ambassador*, Sujana Singh Park-3, ৫ 4632600, A12R3B15, A/c S ১৫০০ D ২৩০০ সুইট ৩৭৫০ ক্ল বুকিং: ৫ 2801209, *H Asian International*, Janpath Lane-1, ৫ 3321636, A/c S ৮৫০ D ১৫০০ সুইট ২০০০; **H Siddhartha*, 3 Rajendra Place-8, ৫ 5712501, A/c S ১৪৫ D ১৭০ সুইট ২৬৫ US\$; **H Claridge's*, 12 Aurangzeb Rd-11, A12R6B4, ৫ 3010211, A/c S ৪৫০০ D ৫০০০ সুইট ৬৫০০-১০০০০, ক্ল বুকিং: ৫ 2801209; *H Continental*, G-74 S S Park-3; **H Diplomat*, 9 Sardar Patel Marg-21,

3010204, A/c S ২০০০ D ২৫০০ সুইট ৩৫০০; *H Rajdoot, Mathura Rd-14, 4699583, A/c S ১২৫০ D ২০০০ সুইট ২৫০০; *H Vasant Continental, Vasant Vihar-57, 678800, A6R13B10, A/c S ১৬০ D ২০০ সুইট ২৬৫-৩৭৫ US \$; *The Connaught Palace, 37 Shaheed Bhagat Singh Marg, ND-1, 344225, A20R4 B; A/c S ২২৫০ D ২৭৫০-৩৫০০ সুইট ৪০০০; *The Centaur H, Gurugao Rd, Indira Gandhi Airport-37, 5452223, A/c S ৩০০০ D ৩৫০০ সুইট ৮৫০০-১২৫০০; *H Sartaj, A-3 Green Park-16, 667759, A/c S ৮৫০ D ১০০০-১৫০০ সুইট ২০০০; *Madhuban Holiday Inn, B-71 Greater Kailash-1, S ৪৭৫ D ৬৫০ A/c S ৮০০ D ১০০০; H Wood Inn, 8 LSC, Kirti Nagar-15, 5439136, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০; Bright Star Inn, B-3 Greater Kailash Enclave-1, 6465454, A/c D ১২৫০-২০০০; Kumar Holiday Home, 33 Ring Rd, Lajpat Ngr-4, 6412535, S ৪০০ D ৫৫০ A/c S ৩০০ D ৮৫০; *H Oasis, HD-8, Pitampura-34, 7246869, A/c S ৬০০ D ৮৫০ সুইট ১০০০; *H Rajhans, Surajkund Tourist Complex, Badarpur-44; Maharani GH, 3 Sunder Nagar-3, A/c S ৬০০ D ৮৫০; Sodhi L, E-2, East of Kailash-48, 6431160, A/c D ৮৫০-১০০০; *H Hans Plaza, 15 Barakhamba Rd-1, 3316868, A/c S ৫০০০ D ৬০০০ ৬৫০০ সুইট ৮৫০০, কল বুকিং: 2801209; H Haribani, 70 MG Marg-24; *Holiday Inn Crown Plaza, Barakhamba Rd, Parliament St-1, 3320101, A/c S ২০০-২২৫ D ২৩০-২৭৫ সুইট ২৫০-৭৫০ US\$; *H Imperial, Janpath-1, 3325332, A/c D ৫০০০-৬৫০০ সুইট ১২৫০০, কল বুকিং: 2801209; *Park H, 15 Parliament St-1, 3732477, A15R1, A/c S ১৭৫ D ২০০-২৫০ US\$; *Le Meridien, 8 Windsor Place, Janpath-1, 3710101, A/c S ৭৫০০ D ৮০০০ সুইট ১২৫০০-২২৫০০, কল বুকিং: 2801209; *H Oberoi International, Dr Zakir Hsn Marg-3, A/c S ২৮৫ D ৩২০ সুইট ৪৬৫-৬৫০ US\$; *H Oberoi Maidens, 7 Sham Nath Marg-54, 2525464, A/c S ৮৫০ D ১২০ US\$; Jakosa Inn, 50 Sunder Nagar, ND-33, A/c S ৭৫০ D ১০০০ সুইট ১৫০০; H Satkar, R-2 Green Park-16, 664572, S ২৭৫ D ৪৫০ A/c S ৬০০ D ৮৫০; *H Tajmahal, 1 Man Singh Rd-11, 3016162, A/c S ২৬৫ D ৩০০ সুইট ৬৭৫-৮৫৫ US\$; *Taj Palace Inter Continental, 2 Sardar Patel Marg-21, 3010404, A/c S ২৪০ D ২৬৫ সুইট ৪০৫-১২৫ US\$; *Hyatt Regency Delhi, Bhikaji Cama Place, Ring Rd-66, 6881234, A/c S ৮০০০ D ৯২৫০ সুইট ১২৫০০-২৭৫০০; *H Vikram, Ring Rd, Laj Ngr-24, 6436451, A/c S ১২০০ D ১৭৫০ সুইট ২২৫০; Eastern Beauty L, B/12, Saf Enclave-29, SAB ২৫০ DCB ৩০০ DAB ৪০০ TAB ৫৫০; City H, 3990 Ajmeri Gate-6, 526459, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৪৫০ D ৬০০; *H Bhagirath Palace, Chandni Chowk, opp Red Fort, 236223, SAB ২৫০

DAB ৪০০ A/c D ৬০০; City L; New India H, Chandni Chowk, D ২২৫-৪৫০; Motel Centre Point, 13 Kasturba Gandhi Marg-1, 3324805, A/c S ৩৫০০ D ৪০০০, কল বুকিং: 2801209; Gaiety Palace, 9 Kasturba Gandhi Marg, A/c S ২৫৫ D ৭৫০ FR ১২৫০; Tourist Holiday Home, 7 Link Rd, Jangpura-14, 4618797, A/c D ৬৫০-১০০০; Woodstock Motel, 11 Golf Links-3, A/c D ৯৫০-১২০০; Janpath GH, 82 Janpath, near Tourist Office, S ২৭৫-৪০০ D ৪০০-৬৫০; International Inn, 9-A, MG Rd, Lajpat Ngr-24, S ৩৫০ D ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০; *Manor H, 77 Friends Colony-W, Mathura Rd-65, 6832171, A/c S ৪৫০ D ৬৫০ US\$; Laguna GH, 3 Scindia House, Janpath-1, A/c S ৪০০ D ৬৫০; *H Shielu, 9 Qutab Rd-55, 7516735, S ৩০০-৪২৫ D ৩৫০-৫২৫ A/c S ৫২৫ D ৭৫০; *Tera H, 2802 Bara Bazar, Kashmere Gate-6, 2521581, R3B0, SAB ২৭৫ DAB ৪০০ A/c S ৩৫০ D ৫৫০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০; Travel L, Kashmere Gate, A-c D ৩৫০।

এছাড়া আছে নানান গেস্ট হাউস কন্ট্রোল প্রেসকে ভর করে আশপাশ চারপাশে। Akshay Palace GH, 26/B, Main Pusa Rd-5, 5737361; Bright Star Inn, B-3, Greater Kailash Enclave-1, 6465454; Upkar Holiday Home, D-807 New Friends Colony-1, 6835051; Sheesh Mahal GH, A-28 N D S E-II, ND-49, 6443670; Maharani GH, 3 Sunder Nagar-3, 4693128; Royal Garden GH, 15-A/2 Saraswati Marg, W E A Karol Bagh-5, 5720805; Mohan Continental, S ২১১০ D ২৫১০, কল বুকিং: 2801209; Park H, S ৬৫০০ D ৭০০০, কল বুকিং: 2801209; Ringo GH, 17 Scindia House, 3312909, ব্যবস্থাপনা চালিই। কাছেই Sunny GH, 152 Scindia House; Asia GH, 14 Scindia House, শীতাতপ ঘরও মেলে, তবে মান হারে দামে আধিক্য; Gandhi GH, 80 Tolstoy Lane; Royal GH, 44 Janpath-1; R C Mehta GH, 52 Janpath-1; জনগণের পছন্দে Mrs Colaco's GH, 3 Janpath Lane-1; Mrs S C Jain's GH, Janpath Lane-1; Roshan Villa GH, 7 Babar Lane, Near Bengali Market; কন্ট্রোল প্রেসের অনুরে মনির আগ ও পাঞ্চবুইন রোডের সংযোগে Knight Boarding House; এদের কাছে S ১৫০-২৭৫ D ২২৫-৪৫০ টাকায় মেলে।

এছাড়া YMCA, Ashok Rd, 3324511, S ২৫০ D ৪০০ A/c S ৩৫০ D ৫৫০; শহরের কেন্দ্রস্থলে যত্নের মন্ডরের বিপরীতে *YMCA Tourist Hostel, Jai Singh Rd, near Regal Cinema, 3746668, R-ND2 B1, SCB ২৫০ DCB ৩৫০ SAB ৪৫০ DAB ৫৫০; YWCA-রও সুবিধা Unit আছে—International GH, 10 Samsad Marg-1, 311561, S ২৫০ D ৪৫০ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; YWCA Blue Triangle Family Hostel, Ashok Rd-1, 310133, SAB ২৫০ DAB ২৯০ A/c S ৪৫০ D ৫৫০ ডরি ৭০। ১০ টাকার সাময়িক সদস্য হয়ে ফ্যানিলি নিয়ে থাকারও ব্যবস্থা মেলে YMCA ও YWCA-র প্রতিটি ইউনিটে। এদের চার্জ ব্রেকফাস্ট সহ।

আর আছে India International Centre, 40 Lodhi Es-

tate, South New Delhi, ④ 4619431, সভ্যদের A/c S ৫৬০ D ৮২৫; সভ্যদের অভিবিয়াও থাকতে পারেন সেটায়ে। *Youth Hostel*, 5 Nyaya Marg, Chanakyapuri, ④ 3016285, ডর্মি প্রথার ব্রেকফাস্ট সহ সভ্য ২২ সাধারণ ৪০-৫০; *International Youth Centre*, Circular Rd, Chanakyapuri, ④ 3012631; *Puri Yatri Paying G H*, 3/4 Rani Jhansi Rd, near Connaught Place, ④ 7525563, অবস্থানও ব্যবস্থাপনা ভালই, S ৪৫০ D ৬০০, A/c S ৬০০ D ৮০০। *Vishwa Yuvak Kendra*, Teen Murti House, Circular Rd-1, near Chanakyapuri Police Station, ④ 3013631, SAB ৩২৫ DAB ৪৫০ ডর্মি ৬৫; সাময়িক সদস্য হয়ে থাকার পক্ষে ভালই। *Gandhi Peace Foundation, International Students Hostel*-এও থাকার ব্যবস্থা মেলে পর্যটকদের।

এছাড়া আছে আরউইন হাসপাতালের অদূরে কনট স্টেশনের ২ কিমি দূরে দিল্লী গেটের কাছে অরুণা আসফ আলি ও জওহরলাল নেহরু মার্গ—দুই এর মাঝে জওহরলাল নেহরু গার্ডেনে যথেষ্ট পনপুলার *Tourist Camp*, ④ 3272890; নিজস্ব তাঁবু ফেলে থাকায় ২৫, ঘরও মেলে ক্যাম্প—S ৮০-১৫০ D ১২৫-২০০। এমনকি অবসরপ্রাপ্ত সৈনিকদের চালনায় কাঠমাথুর সরাসরি বাস মেলে ক্যাম্প থেকে। কাশ্মীরি গেট ইন্টার স্টেট বাস টার্মিনাসের (ISBT) বিপরীতে *Qudsia Gardens Tourist Camp*, ④ 2523121, D ১৫০-২৫০; নিজস্ব তাঁবুতেও থাকার ব্যবস্থা মেলে। গাড়ি রাখারও ব্যবস্থা আছে ক্যাম্পে।

রেলের *রিটার্নিং রুম*ও আছে দিল্লী জংশন ও নতুন দিল্লী রেল স্টেশনে। আর হয়েছে নতুন দিল্লী রেল স্টেশনে রেল যাত্রীদের জন্য ২৪০ বেডের *Railway Yatri Niwas*, ④ 3313484, ডর্মি বেড ৭০ DCB ২১০ DAB ২৫০ A/c D ৫০০, ঘর বুকিং-এ রেলের টিকিট লাগে। বিমান যাত্রীদের জন্য ইন্দিরা গান্ধী ইন্টারন্যাশনাল এয়ারপোর্ট (পালাম)-এও *রিটার্নিং রুম* আছে।

আবার ২২ কিমি দূরে ফরিদাবাদে হিরিয়ানা ট্যুরিজমের ৪০ ঘরের *Holiday Inn*-এ থাকা যেতে পারে। *ট্যুরিস্ট বার্লো Magpie* ছাড়াও *ট্যুরিস্ট হাট* রয়েছে পাশেই বাদখালি লোকে; আর আছে *ডিলাক্স মোটেল*, ক্যাম্পার হাট ও H Rajhans, Sarajkund-এ, এদের বুকিং: Haryana Tourism, 111-113, Sec-17/B, Chandigarh.

আর বাড়ালি মালিকানায হোটেল রয়েছে—*পাণ্ডিনিকেতন গেস্ট হাউস*, 24/B-8, D B Gupta Rd, Debnagar, Ananda Parbat Bus Terminal, ND-5, ④ 5732022, R-ND3 Delhi Jn 4 B 4, SCB ১২৫ DCB ১৫০-২২৫, ৩০ টাকা অতিরিক্তে এয়ার কুলার মেলে, ডর্মিতে ৮৫/৯৫ টাকায থাক-খাওয়া প্রতি জন।; *মোহন লজ*, 3355 Saraswati Marg, opp Police Stn, Karol Bagh-5; *Basu Boarding House*, 13 Bhagat Singh Marg, Gole Market-1, R-ND2DJN8B8, SCB ৮০ DCB ১২৫ DAB ১৫০-২২৫ FR ২০০ ডর্মিতে ৩৫; *সেরাভিনী লজ*, 2707 Lothian Rd, Kashmere Gate, near Minerva Cinema, Delhi Jn-6, SCB ৮০ DCB ১২৫-১৭৫; *মোহিনী নিগাহ গেস্ট হাউস*, ১১৮৬ কাটালা লক্ষ সিং, টাননি চক-৩; *সুশান্ত নিকেতন*, House 6590, Lane-3, Block 9, Debnagar-5, near Khalsa College; *বাঙালি গেস্ট হাউস*, ডলি ওই, বি-৩২৫ চিত্তরঞ্জন পার্ক, দিল্লী-১৯, ④ ৬৪১৮০৬৩; *Basu L F 1086*

Chittaranjan Park, ND-110019, ④ 6430231; আর রয়েছে দিল্লী জং থেকে ৫ মিনিটের পথে রোয়া ফাউন্টেনের কাছে *অপোলো লজ*। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য ম্যানেজারদের লিখুন। এছাড়াও হোটেল রয়েছে রাক্ষসখাতে আরও নানান।



ডেমনিং ইলিডে হোমও গড়েছে নতুন দিল্লী রেল স্টেশনের সন্নিকটে পাহাড়গঞ্জ কলকাতার *UCO Bank Staff Club*, কল বুকিং: 10 Brabourne Rd, Cal-1, ④ 2254120-28 Ext 206. আর আছে 8/1/6480 Dev Nagar, Karol Bagh, ND 110005-এ *UCO Bank Officers Congress H H*, কল বুকিং: 16A, Brabourne Rd, 3rd floor, Cal-1, ④ 251778.

৮০০০ ফুট উচ্চত পালমোনারি ইডিমা

সমতলবাসীদের পাহাড় বিশেষ করে ৮০০০ ফুট উচ্চত ওঠবার কালে শারীরিক সুস্থতা ভেবে নেওয়া দরকার। অনেক সময় পাহাড়ে অনভ্যস্ত সমতলবাসীদের হাজার আটকে ফুট উঠতেই খাসকট দেখা দেয়। এমনকি খাসকট ছাড়াও কান্ধি, ফেনা ও হান্সা রক্ত মিশ্রিত থুতুও ওঠে যাত্রীদের। হৃদযন্ত্রের গতিও দ্রুততর হয়ে পড়ে। হৃদযন্ত্র টিকমতো কাজ না করার জন্য ফুসফুসের ছোট ছোট শিরা-ধমনীতে রক্ত চাপ বেড়ে যায় আর ফুসফুসের বায়ুর থলির ভেতর জল, অনেক সময় রক্তও জমা হয়। এরই রক্তমিশ্রিত ফেনাযুক্ত থুতুর আকারে কান্ধির সাথে ওঠে আসে। কারণ যদিও অজ্ঞাত তবে বৈজ্ঞানিকরা মনে করেন ফুসফুসের ভিতর অতি ক্ষুদ্র শিরা ও ধমনীর অতি সঙ্কোচই এর কারণ। ডাক্তারি শাস্ত্রে পালমোনারি ইডিমা (Pulmonary oedema) বলে থাকে একে।

এমনকি, উঁচু পাহাড়ে বসবাসকারীরাও কিছুকাল সমতলে কাটিয়ে উঠতে চলাকালে বা কায়িক শ্রমে পালমোনারি ইডিমায় আক্রান্ত হওয়া অব্যাহতক নয়। তবে, বলা যেতে পারে উচ্চতা হেতু অগ্নিজ্বরের অভাব এর কারণ নয়।

এছাড়াও হৃদযন্ত্রের নানান ব্যাধি যেমন Mitral বা Aortic Stenosis, Congenital Cyanotic Heart Disease, Chronic Congestive Cardiac Failure, Recent Myocardial Infarction, Ischaemic Heart Disease, Cardiomyopathy-তে আক্রান্ত ব্যক্তিদের কোনোমতেই উচিত হবে না ৮০০০ ফুটের উচ্চত যাওয়া।

৮০০০ ফুট পর্বত বাতাসে অগ্নিজ্বন মেলে—যা আমরা প্রতিদিনের প্রাণের সঙ্গে গ্রহণ করে থাকি। ৮০০০ ফুটের ওপরে যতই ওঠা যাবে বাতাসে অগ্নিজ্বনের স্রাব কমতে থাকে। তখন রক্তের হিমোগ্লোবিন অগ্নিজ্বনের অভাবে কার্বন ডাই-অক্সাইডের সাথে মিশে নীলাভ রঙের হয়। ফলস্বরূপ—নাকের ডগা, ঠোঁট, কান, জিভ, নখ, নীলাভ কাঁকলুতে রঙ নেয়। এমনভাবেই খাসপ্রকাশের গতি ও ফুসফুসের প্রসারণ বেড়ে যায়—কিন্তু খাসকটও দেখা দেয়।


তবে, Emphysema-র আক্রান্তদের ফুসফুস আগে থেকেই সর্বাধিক আক্রান্ত বেড়ে থাকার নতুন করে প্রসারণ বৃদ্ধি সম্ভব নয়। সে কারণে এদেরও ৮০০০ ফুটের উর্বে যাওয়া উচিত হবে না। এছাড়াও Pulmonary Fibrosis রোগীদেরও ৮০০০ ফুটের উর্বে যাওয়া নিরাপদ নয়।

ধরমশালা : ধরমশালায় মধ্যে বাঙালি তীর্থ কালীবাড়িরয়েছে মন্দির মার্গে। বাথ সংলগ্ন ঘর না থাকলেও ব্যবস্থা মন্দ নয়। ৪৫ টাকায় থাকার ও খাওয়া মেলে আজও কালীবাড়িতে। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য The Secretary, Kali Bari, Mandir Marg, N D 110001, ৩ 3363962-কে লিখুন। তবে ৩ দিনের বেশি থাকার অনুমতি নেই। নতুন দিল্লী রেল স্টেশন থেকে ১ কিমি দূরে গোল মার্কেট হয়ে পথ গিয়েছে। রিকশায় ৭-৮ টাকায় বা অটোয় ১০-১৫ টাকায় আপনিও পৌঁছে যান কালীবাড়ি। তবে যাত্রীর আধিক্য একই ঘরে নবাগতকে জায়গা দেওয়া রীতি এদের। আর, আয়োজনে ছোট হলেও দিল্লী জং-এর কাছে তিস-হাজারীতেও একটি কালীবাড়ি রয়েছে থাকার ব্যবস্থা নিয়ে। ১৮৫৭র দেবীমূর্তি নবরূপে প্রতিষ্ঠা পেয়েছেন বর্তমান মন্দিরে ১৯১১য়।

এছাড়া চিত্তরঞ্জন পার্কে কালীবাড়ি সংলগ্ন গড়ে উঠেছে শ্রীশ্রীবালানন্দ তীর্থপ্রম যাত্রীনিবাস, অব: শ্রীমতী রমা দত্ত, ম্যানেজিং ট্রাস্টি, শ্রীশ্রীমোহানন্দ ট্রাস্ট, ৩৮ এলগিন রোড, কলকাতা-২০, ৩ ২৪৭৩৪২ বা সেক্রেটারি, দেবীনিবাস চ্যারিটি ট্রাস্ট। আর রয়েছে ভারত সেবাশ্রম সঙ্ঘের মন্দির তথা যাত্রীনিবাস—থাকার ও খাবার ব্যবস্থা নিয়ে। যাত্রী নিবাস থেকে NDRI Stn 8, Delhi Jn 9, Hazarat Nizamuddin 4, Okhla 2, Kashmere Gate Bus 10km দূরে। মথুরা রোড হয়ে পথ গিয়েছে—রিং রোড, পুলিশ ফাঁড়ির বিপরীতে শ্রীনিবাসপুরী, ND-110065-এব সম্ভবত নতুন তথা হাতিওয়ালা মন্দিরে। অব: অধ্যক্ষ। এছাড়া প্রবাসী বাঙালিদের সংস্থা—বঙ্গীয় সংসদও আছে কারোল বাগে। আর Dy Secretary, PWD, Writers Building-এর বিশেষ অনুমতি পেলে ৩ হুইলি রোডে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের বঙ্গভবনেও থাকা যায়। তবে, ছাত্র-ইন্টারভিউ-চিকিৎসা যাত্রায় অগ্রাধিকার মেলে। তেমনই আছে ভারতের প্রায় প্রতিটি রাজ্যের গেস্ট হাউস অশোক হোটেলকে ঘিরে চাপকাপুরীতে।

এছাড়াও ধরমশালা রয়েছে দিল্লী মহানগরীতে আরও নানান।

মন্দির মার্গে দিল্লী কালীবাড়ি লাগোয়া Birla Mandir Dharanishala, ৩ 3343637—এদের কাছেও স্পট বুকিং-এ ৩ দিনের থাকার ব্যবস্থা মেলে। পাশেই আর্থ সমাজ মন্দিরও হিন্দু মহাসভা ভবন ৩ 3343105. নতুন দিল্লী রেল স্টেশনের বিপরীতে Lady Hardinge Sarai; অদূরে পাছাড়গঞ্জে Agarwal Panchayati Dharanishala, 178 Ghee Mandi-55, এদের কাছে বিছানা ছাড়া ঘর ২০ টাকায়। Marwari Dharanishala, 5754 Gali Jogi Wara. Nai Sarak-6, ৩ 7273441. এদের কাছে বাথ সংলগ্ন ঘর ৩ দিনের জন্য মেলে: Sindhi Panchayati Dharanishala, Church Mission Rd. 199 Fatehpuri-6, ৩ 231223; ৪৪ ঘরের Gurdwara Sis Ganj, Main Chandni Chowk Bzr-6, ৩ 3266589. এদের কাছে আহার ও থাকা দুই-ই বিনামূল্যে। Muslims Musafir Khana, 5139 Bali Maran, Chandni Chowk-6; Chimanlal Gadodiya Dharanishala, 126 Chatta Bhawani Shankar, Fatehpuri-6; Rai Bahadur Laxmi Narayan, Church Mission Rd, Fatehpuri-6, ৩ 2515885; Naval Kishore Khairatilal Dharanishala, 1237 Mali Wara. Nai Sarak-6; Jain Dharanishala, Bhoj Pura Mali Wara-6; Lala Jhabbanlal Dharanishala, 2342 Chowk Taliwara-6, ৩ 528044, Dr C P Chugh Dharanishala, 8 Udyan Marg, Gole Market -1, ৩৫ টাকায় বিছানা-সহ প্রতি জনা; Khandelwal Sewa Sadan, 4323 Basant Road, Paharganj-55, ৩ 7778867, এদের ঘর ৪৫/৬০; Shri Delhi Gujarati Samaj, 2 Raj Niwas Marg-54, ৩ 2520369, এদের ঘর S ৫০, D ১০০, আহার খালি প্রথায় ১৫; Ladakh Buddhist Vihar, Bela Rd-54, near ISBT, ৩ 2520455, এদের ঘর ২০; Swami Narayan Atithi Griha, 13 Bela Rd, Civil Lines-54, ৩ 2524703, তবে এদের ব্যবস্থা কেবল গুজরাতিদের জন্য।

| | | |
|--|-----------------------|-----|
|  | উপেন্দ্রকিশোর রচনাবলী | ১৫০ |
| | সুকুমার রায় রচনাবলী | ১৫০ |
| | আবোল তাবোল | ২৫ |
| | পাগলা দাশু | ২৫ |
| এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭০০ ০০৭ □ ফোন: ২৪১২৩৮৬/৪৬০৮ | | |

পাঞ্জাব

'Wahi Guru Ji Ka Khalsa,
Sri Wahi Guru Ji Ki Fateh

অর্থঃ Lord's is the Khalsa, Lord's is the victory.

অতীতে উত্তরাখণ্ড ধরে ভারতে প্রবেশের পথ ছিল এই পাঞ্জাব হয়ে। এই পাঞ্জাব দিয়েই শক-হুন-দল পাঠান-মোগল এসেছিল সেদিনের হিন্দুস্থানে। আর্যরাও আসে হিন্দুকুশ পেরিয়ে এই পাঞ্জাব হয়েই। পাঞ্জাবের সিদ্ধু নদের অববাহিকায় বিকাশ লাভ ঘটে তাদের আর্য সভ্যতা। তখন অবশ্য এই ভূখণ্ডের নাম ছিল সপ্তসিদ্ধু অর্থঃ সাত সাগরের দেশ। কালে কালে সরস্বতী শুকিয়ে যায়। প্রমাদ গগলেন পাঞ্জাবিরা। সিদ্ধুও তাদের পছন্দ নয়। অর্থঃ রইল বাকি পাঁচ—ঝিলাম, চেনাব, রাভি, বিপাশা আর শতদ্রু; এই পঞ্চনদের দেশ পাঞ্জাব। সিং অর্থঃ সিংহ—৫ সিংহের উপস্থিতির মাঝে গুরুর আবির্ভাব উপলব্ধি করেন এরা।

পাঞ্জাব নামটিও এসেছে ২টি ফার্সি শব্দ—*Pany* মানে পাঁচ আর *Aab* অর্থঃ জল থেকে। খ্রিঃ ৫২২এ পারস্যের দরায়ুসও দখল করে পাঞ্জাব। অংশও হয় পাঞ্জাব পারস্য সাম্রাজ্যের। খ্রিঃ ৩২২এ আলেকজান্ডারও পাঞ্জাবের উপর দিয়ে এগিয়ে চলেন ভারত অভিযানে। আর মৌর্য সম্রাট চন্দ্রগুপ্ত ম্যাসিডোনিয়ার গভর্নরকে হারিয়ে দখল করে পাঞ্জাব। ১০ শতকে মুসলমান দখলে যায় পাঞ্জাব। তবুও যেন হানাদারদের আগমন ঘটে চলে বার বার—রক্তস্নাতও হয় পাঞ্জাব। গুরু নানক (১৪৬৯-১৫৩৯) শিখধর্মের প্রবর্তন করে নবজাগরণ ঘটান পাঞ্জাবে। কালে কালে ১৫ ও ১৬ শতকে পাঞ্জাবিরা শিখ রাজ্য গড়তে কৃতসঙ্কল্প বন্ধ হয়। আর ১৭৯৯এ লাহোর দখল করে পাঞ্জাবে শিখরাজ্য গড়ে তোলেন রণজিৎ সিং। রণজিৎ‌র মৃত্যুর পর রণজিৎ-পুত্র দলীপ সিংহের কালে ১৮৪৯এ ব্রিটিশের দখলে যায় পাঞ্জাব। আর স্বতন্ত্র প্রদেশ রূপে গড়ে ওঠে ১৯৩৭এ পাঞ্জাব। ৫ সংখ্যাটি পাঞ্জাবিদের কাছে অতি পবিত্র। *Kesh*—চুল, *Kangha*—দাড় বা হাড়ের চিরুনি, *Kachha*—পাগড়ি, *Karu*—সিল কঙ্কন, *Kripaan*—কৃপাণ; এই ৫ *Kakkars*—পাঞ্জাবি পুরুষদের অবশ্যই ধারণীয়। বসন তাদের লুঙ্গি ও পাঞ্জাবি। আর মেয়েরা পরেন শালোয়ার কামিজ। অর্থঃ পাঞ্জামা ও হাঁটু পর্যন্ত জামা, সঙ্গে ওড়নি।

খ্রিস্টপূর্ব কালে আলেকজান্ডার পঞ্চনীতির ভিত্তিতে ভূখণ্ডের নাম রেখেছিলেন পেটোপোটোমিয়া। গুরু গোবিন্দ সিং তাঁর জন্মভূমিকে মঙ্গদেশ বললেও পাঞ্জাবিদের সমর্থন মেলেনি খুব একটা। পাঞ্জাব নামটি তাদের খুব প্রিয়, পাঞ্জাব নামে গর্বিত এরা, মুখের ভাষাও পাঞ্জাবি, ধর্মে শিখ। গুরু গোবিন্দ সিংহের (১০ম) নির্দেশিত ১০ জন ধর্ম গুরুর মুখ

নিঃসৃত বাণীর গাথা *গুরুসাহিব* পবিত্র ধর্মগ্রন্থ। স্বাক্ষাত্য-বোধও মহীয়ান করে তুলেছে এদের।

| 10 Gurus | birth | installation | death |
|-----------------------|------------|--------------|------------|
| 1. Guru Nanak | 15 4.1469 | [?] | 20 9.1539 |
| 2. Guru Angad | 31 3.1504 | 14 6.1539 | 29 3.1552 |
| 3. Guru Amardas | 5.5 1479 | 29 3.1552 | 1 9.1574 |
| 4. Guru Ramdas | 24 9.1534 | 1 9.1574 | 1 9.1581 |
| 5. Guru Arjan | 15 4.1563 | 1 9.1581 | 30.5.1606 |
| 6. Guru Hargobind | 14 6.1595 | 25 5.1606 | 3 3.1644 |
| 7. Guru Har Rai | 26 2.1630 | 8 3.1644 | 6.10.1661 |
| 8. Guru Harkishen | 7 7.1656 | 7.10.1661 | 30 3.1664 |
| 9. Guru Tegh Bahadur | 1 4.1621 | 20 3.1665 | 11.11.1675 |
| 10. Guru Govind Singh | 22 12.1666 | 11 11.1675 | 7.10.1708 |

বার বার খণ্ডিত হয়েছে পাঞ্জাব আমাদের বাংলার মতো। তাই আজ আর নদীর সংখ্যা পাঁচ নেই পাঞ্জাবে। দেশ বিভাগে দুটি কমে তিনে ঠেকেছে। ১৯৪৭এ স্বাধীনোত্তর ভারতে পাঞ্জাব এল নতুন করে খণ্ডিত হয়ে। সেই সঙ্গে এল ১০ লক্ষেরও অধিক শিখ ও হিন্দু পাকিস্তান ছেড়ে ভারতে। সমসংখ্যক মুসলিমও গেল ভারত থেকে পাকিস্তানে। তদানীন্তন রাজধানী শহর লাহোর গেল পাকিস্তানে। আবার টুকরো হয়েছে পাঞ্জাব ভাষার কৃপাণে। ১৯৪৮এর ১৫ই এপ্রিল পাঞ্জাবের ৩টি পাহাড়ী জেলা সরে গিয়ে গড়ে ওঠে হিমাচল প্রদেশ। সঙ্গে যায় স্বাধীন রাজ্যগুলি। টুকরো হয় আবার ১৯৬৬ খ্রিস্টাব্দের ১লা নভেম্বর। জন্ম নিল পাঞ্জাব থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে নতুন রাজ্য হরিয়ানা। তবে, একই শহরে বসেছে দুই রাজ্যের সেক্রেটারিয়েট। সীমান্তবর্তী শহর চণ্ডীগড় দুই রাজ্যের রাজধানী।

Holiest 5 Takhts

1. Akal Takht—Amritsar, Punjab
2. Keshgarh Sahib—Anandpur, Punjab
3. Sri Dam Dama Sahib—Bhatinda, Punjab
4. Harmandir Sahib—Patna, Bihar
5. Hazoor Sahib—Nanded, Maharashtra

পাঞ্জাবিদের ধর্মনীতিতে বইছে আর্থরক্ত। সারা ভারত থেকে সহজেই পৃথক করা যায় এদের। দীর্ঘাঙ্গী এরা—দীর্ঘায়ুও বটে। ভারতের গড় আয়ু ৫০ হলেও এদের আয়ুর গড় ৬৫ বছর। শৌর্যে বীর্যেও এদের খ্যাতি আছে। তেমনই খ্যাতি আছে এদের কষ্টসহিষ্ণু বলে। অতীতের ধর্মযুদ্ধ ঘটেছিল যেমন অখণ্ড পাঞ্জাব ভূখণ্ডের কুরুক্ষেত্রে তেমনই প্রতিকূল প্রকৃতির সঙ্গে সংগ্রাম করে উৎসাহ ও উদ্যমের সাথে দৈহিক শক্তির প্রয়োগ ঘটিয়ে ভারতীয় জন সংখ্যার মাত্র ২.৩৯% শিখ সমৃদ্ধ বিপ্লব ঘটিয়েছে ক্ষেত্রে-খামারে। কৃষিতে বিপ্লব এনেছে পাঞ্জাব। ভারতীয় উৎপাদনের ২২% গম, ১০% চাল হচ্ছে পাঞ্জাবে। আর দুখে রেকর্ড গড়েছে অংশউৎপাদন

করে। তেমনই পাঞ্জাবের আর এক উল্লেখ্য তার হিরো সাইকেল। ১৯৮৯এ সর্বাধিক সাইকেল উৎপাদনে বিশ্ব রেকর্ড গড়েছে। সারা ভারত জুড়ে ট্রান্সপোর্ট ও হোটেল ব্যবসাতেও এরা সর্পে দিয়েছে নিজেদের। যন্ত্রশিল্পেও পাঞ্জাবি দক্ষতা অনস্বীকার্য। অটো-ট্যান্ডি-বাস ও বিমান চালনায় খুবই দক্ষ এরা। জাতীয় আয়ে ভারত রাষ্ট্রে পাঞ্জাব আজ অন্যান্য রাজ্যকে আধার ও নিচের ফেলে অগ্রগণ্য। পাঞ্জাবের ঐতিহাসিক গুরুদ্বার প্রাকৃতিক শোভারও তুলনা হয় না। তবু কেন যেন আজ অশুভ বুদ্ধি ভর করেছে পাঞ্জাবের বাতাসে। ক্ষণে ক্ষণে তাই কলুষিত হচ্ছে পাঞ্জাবের আকাশ-বাতাস। ১৯৮৪র রক্তক্ষয়ী সংগ্রামে জঙ্গীদের হাত থেকে স্বর্ণমন্দির মুক্ত হলেও খালিস্তান-পন্থীদের অশুভ শক্তি আজও অব্যাহত। পাঁচেরও অধিক নানান পন্থী জঙ্গী সংগঠনও রয়েছে পাঞ্জাবে। ১৯৮২ থেকে জঙ্গী ক্রিয়াকলাপে পাঞ্জাব ভ্রমণও তাই বিধাষিত করে তুলেছে পর্যটকদের।

পাঞ্জাব □ রাজধানী: চণ্ডীগড়। আয়তন: ৫০৩৬২ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ২০১৯০৭৯৫। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ২.৩৯%। পুরুষ: ১০৬৯৫১০৬। নারী: ৯৪৯৫৬৫৯। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৩৪০১৮৮০। বৃদ্ধির হার: ২০.২৬%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৪০১। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৮৮৮। সাক্ষরের হার: ৫৭.১৪%। প্রধান ভাষা: পাঞ্জাবি। মাথা পিছু বাৎসরিক আয়: ৭০৮১.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)। ১৫ দিনে পাঞ্জাব ও হরিয়ানা ভ্রমণ—অমৃতসর ১ জলন্ধর ১ লুধিয়ানা ১ পাতিয়ালা ১ চণ্ডীগড় ২ পিজোর ১ কুরুক্ষেত্র ১ নাঙ্গাল ও ভাকরা ১ পাঠানকোট ১ পথ চলায় ৫ দিন। তবে দিল্লীর পথে বেড়িয়ে নেওয়ায় সুবিধা। আবার সিমলার পথে চণ্ডীগড়, নাঙ্গাল ও কুরুক্ষেত্র; কাশ্মীরের পথে অমৃতসর বেড়িয়ে সাক্ষর বায় পাঞ্জাব ও হরিয়ানা ভ্রমণ।

ওষু শৌর্য-বীর্য, সবুজ বিলব, গাড়ি আর মানুষকে সচল রাখতেই এরা স্টেট, তাই নয়—পাঞ্জাবিদের লোকনৃত্য আর লোকসংগীতের সমাদর আজ সারা ভারতে। পাঞ্জাবি ভাড়াটা নাচ ছাড়া নাচের আসরই জমে না আজ আর। পাঞ্জাবি সংস্কৃতির আর এক আকর্ষণ এদের বীড়ের লড়াই। যেমন উত্তেজক তেমনই কৌতুহলোদ্দীপক এই দুই বীড়ের লড়াই।

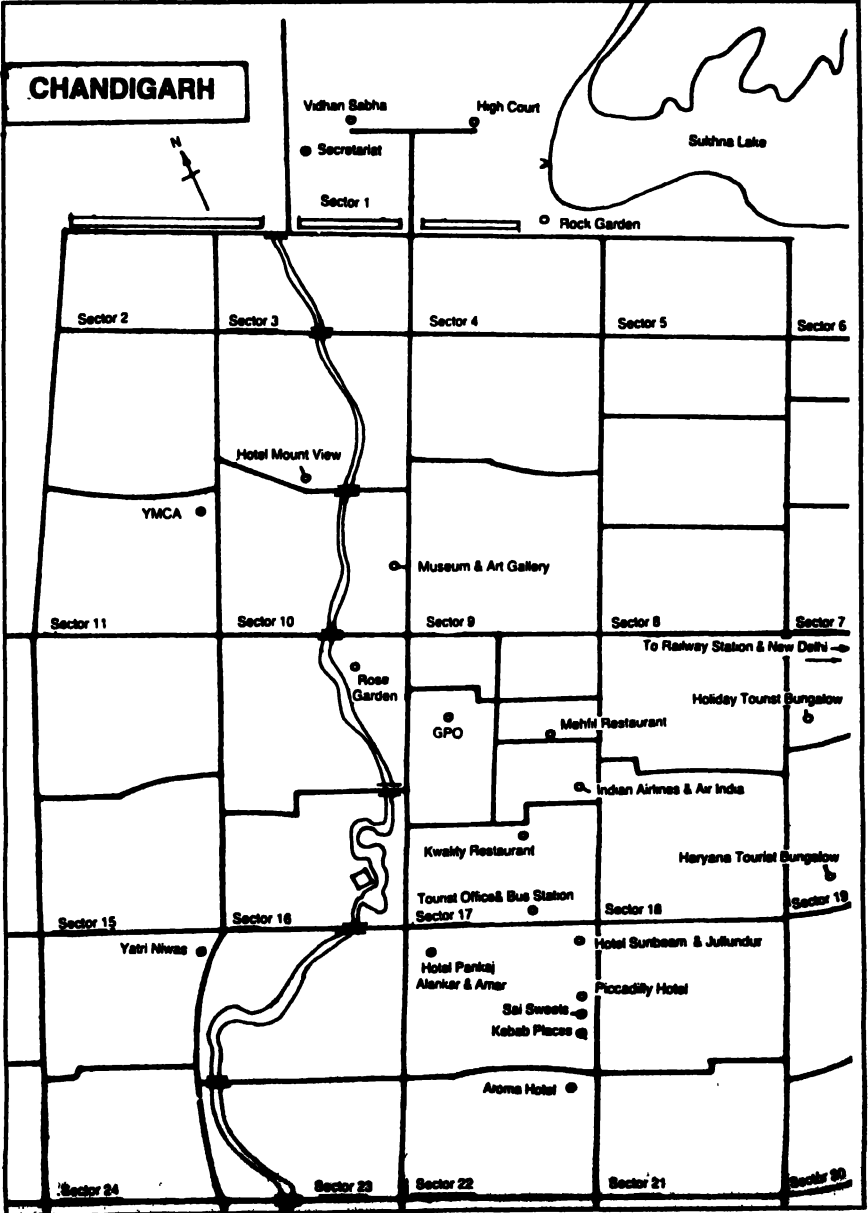
চণ্ডীগড়

রাজধানী ছাড়া রাজ্যপাট—পাঞ্জাব। সাময়িকভাবে দপ্তর হিমাচলের সিমলায় বসলেও প্রমাদ গণলেন রাষ্ট্রনায়কেরা। রাজ্য তো হল—রাজধানী কোথায়? ভার পড়ল ফরাসি স্থপতি *Le Corbusier*-এর উপর। তাই শিয়েরি জিনার্ট, ব্রিটিশ দম্পতি ম্যাক্সওয়েল ফ্রাই, সহযোগী করবু ও জেইন ডু; আর সঙ্গে কয়েকজন ভারতীয় স্থপতি নিয়ে গড়ে তুললেন হিমালয়ের সমান্তরাল শিবালিক পাহাড়ের পাদদেশে পাঞ্জাব ও হরিয়ানা উভয় রাজ্যের রাজধানী শহর চণ্ডীগড়কে। বিপ্লব ঘটল ইমারত শিল্পের স্থাপত্য ও ভাস্কর্যে। দুই রাজ্যের রাজধানী হলেও কেন্দ্রের শাসনাধীন চণ্ডীগড় শহর—জন্ম ১৯৫০-৫৩য়। শহরও রূপ পেয়েছে যেন মানবদেহের আসিকে। মাথায় পাগড়ি হয়ে সরকারি ভবন ও বিশ্ববিদ্যালয়, হৃৎপিণ্ড হয়েছে বাণিজ্যিক শহর দিয়ে; আর হাত ও পা রূপ নিয়েছে শিক্ষাঞ্চলে। আর ভাষার ভিত্তিতে ১৯৮৬তে পাঞ্জাবের অন্তর্ভুক্ত হওয়ার সিদ্ধান্ত হয়েছে চণ্ডীগড়ের। ৩৮০ মি উঁচুতে ১১৪ বর্গ কিমি জুড়ে অতি আধুনিক স্থাপত্যের নিদর্শন চণ্ডীগড় শহর। অভাগা ১৩ ছাড়া ৪৭টি সেক্টরে রূপ পেয়েছে শহর। প্রতিটি সেক্টরই স্বয়ংসম্পূর্ণ—রয়েছে বাজারঘাট, দোকানপাট। রাজ্য পরিবহনের বাস, অটো, রিকশা ও ট্যাক্সিতে যোগাযোগ গড়েছে সেক্টর থেকে সেক্টরে। তবুও যেন গাড়িনির্ভর-শহর চণ্ডীগড়। সেক্রেটারিয়েট ভবন, উচ্চ ন্যায়ালয় (মহাকরণ), বিধানসভা, স্টেট লাইব্রেরি, সুপার বাজার, শুকনা লেক, শান্তিকুঞ্জ, মুনলাইট গার্ডেন, বোগেনভিলা গার্ডেন, মিউজিয়াম, বিশ্ববিদ্যালয়, রোজ গার্ডেন, উত্তর-পূর্ব থেকে শুরু হয়ে দক্ষিণ-পশ্চিমে শহর জুড়ে ৮ কিমি দীর্ঘ লিনিয়ার (Linear) পার্ক বা লেজার ভ্যালি, শহীদ স্মারক, জিওমেট্রিক হিল, টাওয়ার অব শ্যাডো—প্রতিটিই আধুনিক ইমারত স্থাপত্য শৈলীর নিদর্শন হয়ে গড়ে উঠেছে। পণ্ডিত জওহরলাল নেহরুর ভাষায়—*Let it be the first large expression of our creative genius flowering on our newly earned freedom.*

মানবদেহের মতো চণ্ডীগড় শহরের হার্ট অর্থাৎ হৃৎপিণ্ড হয়েছে সিটি সেন্টার। জেলা সদর, ISBT বাস টার্মিনাস, শপিং সেন্টার, প্যারেড গ্রাউন্ড, অফিস, ব্যাঙ্ক, জেলা আদালত—সবেরই অবস্থান সিটি সেন্টারে। দিনের থেকে রাতে আলোর সাজে বর্ণালী বাড়ে শহরের। ফোয়ারাওলিও আলোকিত হয় সাথে। স্কিডিং অর্থাৎ জীবন ধারণের মাধ্যম অত্যাধুনিক ইমারত শৈলীর নিদর্শন ক্যাপিটল কমপ্লেক্স। সার্কুলেশন অর্থাৎ ৭৭১ প্রথার ক্রান্তগতি ও ধীরগতির বান চলাচলের পথ-প্রণালীতেও অভিনবত্ব মেলে। ভিসেরা অর্থাৎ বন্ধ ও উদরের মধ্যস্থ বংশ হয়েছে সবুজ ঘাসের জাজিম বিছানো মুক্ত বায়ুর আদর্শ স্থান-এ। বিচ্ছেদও

টেনেছে শিল্প ও বসতি এলাকা দুই-এর মাঝে এই ভিসেরা।
জাংস অর্থাৎ ফুসফুস হয়েছে চলতে-ফিরতে পথপাশে

নানানধর্মী ফুলের বাগিচায় সারা শহরময়। কবিকের
বিশ্রামে সতেজ হয়ে চলা যায়।



বৈচিত্র্য আর অভিনবত্বে ভরা নেকাাঁদের হাতে গড়া রক গার্ডেন চণ্ডীগড় পর্যটনে আজ অনন্য দর্শন। শহর থেকে ফেলা জঞ্জাল, নদী-নালায় পাওয়া নানান কিছু র সাথে শিবালিক পাহাড়ের রঙবেরঙের নুড়ি পাথর সাজিয়ে সেক্টর ১-এ ও একর জমিতে নীল আকাশের নিচে সাত (১৯৫৮-৬৫) বছরে গড়ে তোলা হয়েছে এই উদ্ভট যাদুপুরী তথা বিস্ময়কর গোলকধাঁধা। সেক্রেটারিয়েটের অদূরে শহরের উত্তরে সুখনা লেক লাগোয়া মুক্তাঙ্গন থিয়েটার, মুক্তাঙ্গন মিউজিয়ম, কৃত্রিম জলপ্রপাত, দরবার হল, প্যাভিলিয়নও হয়েছে রক গার্ডেনে। গ্রীষ্মে ৯—১৩-০০ ও ১৫—১৯-০০টায় আর অক্টোবর থেকে মার্চ মাসে ৯—১৩-০০ ও ১৪—১৮-০০টায় খোলা থাকে রক গার্ডেন। বাইরে থেকে দর্শনে অনীহা জাগলেও গার্ডেনের অন্দর অভিবৃত্ত করে।

চণ্ডীগড় ব্রহ্মাঙ্গণীদের কাছে আর এক আকর্ষণ রক গার্ডেন লাগোয়া সেক্টর ১-এ ও বর্গ কিমি ব্যাপ্ত শুকনা লেক। স্থানীয়রা সন্ধ্যাক্রমে আসেন এই কৃত্রিম লেকের পাড়ে। সোমবার ছাড়া প্রতিদিনই বোটিং-এর ব্যবস্থা মেলে।

লেক থেকে শহরের উত্তর-পূবে দুগ্ধবল চণ্ডীদেবীর মন্দির-এর চূড়ো দেখে নেওয়া যায়—পাহাড় ঢালের এই দেবীর নাম থেকেই নাম হয়েছে শহরের চণ্ডীগড়। ৩২ রুটের বাস যাচ্ছে শহর থেকে মন্দিরে।

ফরাসি স্থপতি লা করবুসিয়েরের স্থাপত্য দক্ষতার নিদর্শন হয়ে গড়ে উঠেছে Capitol Complex অর্থাৎ আধুনিকতার প্রতিচ্ছবি পাঞ্জাব ও হিরিয়ানা উভয় রাষ্ট্রের সেক্রেটারিয়েট, হাইকোর্ট এবং লেজিসলেটিভ অ্যাসেম্বলি ব্লক। চিরাচরিত ধারা থেকে সরে গিয়ে জ্যামিতিক ছকে নানান আঙ্গিকে গ্রানাইট শিলা ও কংক্রিট নান্দনিক রূপ পেয়েছে। ১০—১২-০০টায় ১৯৫৩-৫৯এ তৈরি সেক্রেটারিয়েট ভবনের ছাদ থেকে চণ্ডীগড় শহরও সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। ১ কোটি ৪০ লক্ষ টাকা ব্যয়ে সর্বোচ্চ (৪২ মি) সেক্রেটারিয়েট ও অ্যাসেম্বলি দেখার অনুমতি মেলে রিসেপশন ডেক থেকে। ৯—১৬-৩০টায় খোলা। এমনকি রবিবার ও ছুটির দিনও লিতেও দেখার অনুমতি মেলে। আর ১৯৫১-৫৭য় গড়া হাইকোর্টের দ্বার অব্যবহিত। ১৯ মি উঁচু ২টি খামে ভর করা প্যারাসল-এর মতো ডাবল ছাদে যেমন সূর্যালোক থেকে ত্রাণ মেলে তেমনই বিরাটাকার কঙ্কণের খোল বলে প্রতিভাত হবে দর্শকদের। শহরের উত্তরে শিবালিক পাহাড়ের পাদদেশে সেক্টর ১-এ পাশাপাশি অবস্থান এদের। অদূরে একতার প্রতিচ্ছবি: ওপেন টু গিড, ওপেন টু রিসিড চণ্ডীগড়ের প্রতীক বিশালাকার ওপেন হ্যাভ—অর্থাৎ ইম্পাতে গড়া হাতের তালু হাওয়ায় ঘুরছে। তেমনই জিওমেট্রিক হিল, টাওয়ার অব শ্যাডো, সবচেয়েই অভিনবত্ব আছে।

লা করবুসিয়েরের আর এক কীর্তি মিউজিয়ম ও আর্ট গ্যালারি ভবন সৃষ্টি। সেক্টর ১০-এ পাশাপাশি অবস্থান

এদের। গান্ধার যুগ থেকে নানান ভাস্কর্য, মডার্ন আর্ট ও মিনিয়চারখর্ষী ছবির সংগ্রহ আকর্ষণ বাড়িয়েছে গ্যালারির। আর, মিউজিয়মে নানান ফসিল চণ্ডীগড়ব্রহ্মাঙ্গণীদের দেখে নেওয়া উচিত। সোমবার ছাড়া প্রতিদিন ১০—১২-৩০ আবার ১৪—১৬-৩০টায় খোলা। তেমনই সেক্টর ১৭য় সেন্ট্রাল লাইব্রেরী ভবনে ন্যাশানাল পোর্ট্রেট গ্যালারিটিও উচিত হবে চলতে-ফিরতে দেখে নেওয়া।

চণ্ডীগড় ব্রহ্মাঙ্গণীদের কাছে আর এক আকর্ষণ পাঞ্জাব বিশ্ববিদ্যালয় ভবন। সেক্টর ১৪-তে এই বিশ্ববিদ্যালয়। উচ্চ-নিচু পাহাড়ী এলাকা, প্রাকৃতিক পরিবেশ সুন্দর। সারা চত্বর জুড়ে পার্ক আর জলাশয় পরিশেষে আরও রমণীয় করে তুলেছে। এখানকার গান্ধী ভবনটির সৌন্দর্য পর্যটকমাত্রই ক্যামেরায় বন্দী করেন। বিশ্ববিদ্যালয়ের লাইব্রেরি ভবন ও চক্রাকার স্টুডেন্টস ভবন দুটির অভিনবত্বও পর্যটকদের আকর্ষণ করে। স্টুডেন্টস ভবনের উপরতলার চিপ ক্যান্টিনে পর্যটকরাও স্বল্পমূল্যে খাদ নিতে পারেন আহাযেরে।

সেক্টর ১৬-য় ৩০ একর জমির উপর গড়ে তোলা হয়েছে এশিয়ার বৃহত্তম জাকির গোলাপবাগ। শুধু আকারেই নয়, গোলাপও ফোটে ৫০০০০ গাছে ১৬০০ রকমের। প্রকৃতি চলছে ২০০০ রকমের গোলাপ ফোটারানোর জাকির গোলাপবাগে। সকাল থেকে সন্ধ্যা খোলা থাকে। তবে ফুল দেখুন—তুলবেন না। লাগোয়া স্টেডিয়াম।

সেক্টর ১৭-তে হয়েছে আধুনিক সুপার বাজার অর্থাৎ শপিং সেন্টার সিনেমা হল নিলমকে ঘিরে। বিক্ষিপ্তভাবে গড়ে ওঠা বেশ কয়েকটি আকাশচুম্বী অট্টালিকা নিয়ে এই সুপার বাজার। কেনাকাটায় অনন্য। কোলিনো অভাব ঘটলেও কাশ্মীরি হাতের কাজের তুল্য যান্ত্রিক বোনা লুখিয়ানার শাল ও সোয়েটার অতুলনীয়। দামেও সস্তা—মেলেও চণ্ডীগড়ের দোকানপাটে সুপার বাজারে। নানান গভর্নমেন্ট এম্প্লয়রিয়া-ও বসেছে সেক্টর ১৭য়।



Chandigarh-160022, STD-0172-এ নানান হোটেল। পাশ্চাত্য প্রথা—বাসস্ট্যান্ডের বিপরীতে Udyogpath-এ: *H Pankaj, Sec 22-A, ① 709891, A8R6, S ৫০০ D ৬৫০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০; পাশে H Alankar, Sec-22A, Chandigarh-22, R7B3, SAB ৩০০ DAB ৪৫০; Amar H, Sec-22, R7B3, DAB ৩০০ A/c D ৬০০; *H Sunbeam, Udyogpath, Sec-22B, Chandigarh-160022, A10R7B3, A/c D ১০৯৫ ১১৯৫, কল বুকিং: Span ① 2801209; H Metro, DAB ১১৯৫ ১৩৯৫, কল বুকিং: Span ① 2801209. বাস থেকে ১০ মিনিটে পরে বাঁক ঘুরতেই Himalaya Marg-এ: *H Piccadilly, SCO 107B-85, Sec-22B, A8R6B0, ① 707571, A/c S ৩০০ D ৮৫০ সুইট ১০৫০; H Divyadweep, Sec 22-B, SAB ২০০ DAB ৩০০ A-c S ৩২৫ D ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬৫০; *H Regency, SCO-329-32, Sec-35/B, ① 604972, A/c S ৭৫০ D ১৫৫ সুইট ১৫০০; *H Maya Palace, SCO, 325-328, Sec-35B, ① 600৫৭7, A/c S ৬৫০-৮৫০ D ৮৫০-১৩৫০; *Aroma

H, Sec-22, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A/C S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০৫০; বাস থেকে ১০ মিনিটের পথে অবস্থান এদের।

H Jullundur, opp Bus Std, Sec-22-B, S ৩০০ D ৪০০; Maha-ruja Tourist L, Sec-21, সুইট ১৫০০ থেকে; Holiday Tourist Bungalow, Kothi 78, Sec-19, SCB ১৭৫ DCB ২৭৫; *H President, Sec-26, Madhya Marg, R4B1, A/C S ১৯৫ D ১১৯৫ সুইট ১৪৯৫, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; *H Rikhy International, SCO, 301-302, Sec-35B, ৩ 531733, A/C D ৫৫০-৭৫০; ক্রিকেট তাবকা কপিল দেবের H Kapil, Sec-35B, ৩ 533366, A/C S ৬৫০, D ৮৫০।

ভারতীয় প্রথা—H Samrat, Sec-22(D), DAB ২৫০-৩৭৫; H Tip Top, Sec 18, DAB ৩০০; বিপ্লবিত Tourist L; Sadyadweep, Sec-22; Eagle's Nest, Tourist R H, Sec-2; Sood Dharamshala, Sec-22-এ ঘর ও ডর্মি প্রণয় থাকা যায়; ব্যবস্থাপনা ভালই। আর আছে জৈন, চর্মান রাম, সেক্টর ১৫; ছাড়াও নানান ধরমশালা চণ্ডীগড়ে।

তবে সরকারি ব্যবস্থায় Panchayat Bhawan, Sec-18B-তে D ৮০-২২৫ ডর্মি ৩০, খাবার পুথক মূল্যে; ব্যবস্থাপনা ভালই। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য পুরো টাকা M O বা ব্যাঙ্ক ড্রাফটে পাঠিয়ে Manager, Panchayat Bhawan, Sec-18B, Chandigarh-কে লিখুন। বাস স্ট্যান্ডেও Tourist Rest House আছে। ৫ বেডের ঘরে ডর্মি প্রণয় থাকা। তবে, যাত্রীর কোলাহল ও যন্ত্র-শব্দকেবল নিম্ন পরিবেশকে ভারাক্রান্ত করে রেখেছে। বুকিং - Tourist Office থেকে। রেল স্টেশনেও রেলের রিটার্নিং রুম আছে চণ্ডীগড়ে।

আর আছে বাস থেকে মিনিট দশেকের পথে সেক্টর ১৫ ও ২৪-এর সংযোগে Chandigarh Industrial & Tourism Development Corp (CITCO)-এব ৬০০ বেডের ইকোনমিক ট্যুরিস্ট হোটেল—Chandigarh Yatriniwas, Sec-24, D ৩০০ A/C D ৪৫০-৬০০, রেস্টোরাঁও আছে যাত্রী নিবাসে। চণ্ডীগড় শহরের কেন্দ্রমণি এদেরই *H Shivalik View, Sec-17, ৩ 700001, A11R8B0, A/C D ১২৫০-১৭৫০ সুইট ২২৫০-২৭৫০; Chandigarh H, Sec-22C, ৩ 703690, D ৫৫০ A/C D ৭৫০; *H Mountview, A14R8B2, Sec 10, ৩ 544544, A/C S ১৪০০-১৬৫০ D ১৭৫০-২২৫০ সুইট ২৭৫০, এদের বুকিং: CITCO, 121-122, Sector 22-B, Chandigarh-160022, ৩ 704031, আর আছে হরিয়ানা ট্যুরিজমের Puffin G H, ৩ 540321, Kothi No 2, Sec-2, A/C S ৩৫০, D ৫২৫-৭৫০; Holiday Tourist Bungalow, Kothi 78, Sec-19, SCB ১২৫ DCB ২০০; Union Territory G H, Sec-6; MLA Hostel— Punjab, Sec-4; MLA Hostel—Haryana, Sec-3-এ; অব: Reception Officer; Indira Holiday Home, Sec-24-এ কেবল ছাত্রদের থাকার ব্যবস্থা; YMCA, Sec-11, ৭ দিনের বুকিং-এ ঘর মেলে এদের; YWCA, Sec-2, অব: Secretary এছাড়াও হোটেল রয়েছে আরও নানান ১২৫-২৭৫ টাকায় থাকা ও খাবারের ব্যবস্থা নিয়ে চণ্ডীগড়ে। Youth Hostel-ও আছে চণ্ডীগড় থেকে ১১ কিমি দূরে শিল্লোরে পথে Panchkula-য়। বাস যাচ্ছে মুক্ধুর। ভবুও থাকার জন্য Panchayat Bhawan, Chandigarh Yatriniwas, Sood Dharamshala আজও বন্ধ। বাস স্ট্যান্ডের অন্তরে ১০-১২

টাকায় রিকশায় গিয়ে Maharaja Tourist Lodgeটিও দেখা যেতে পারে।

| খাবার হোটেল ও নানান চণ্ডী-গড়ে—দেশী-বিদেশী নানানধর্মী আহায্য মেলে। ভবুও যেন পাঞ্জাবিয়ানার প্রাণনা চণ্ডীগড়ের হোটেল-রেস্তোরাঁয়। অবস্থানও এদের মূলত সেক্টর ১৭-য়। তবে, চীনা ডিশের জন্য সেক্টর ১৫য়, Dragon, চিকেন ডিশের জন্য সেক্টর ১৪য় Giza, সেক্টর ১৭য় Shangrila, সেক্টর ২৬ও হোটেল প্রেসিডেন্ট-এর Shaolin, সেক্টর ২২-এ হোটেল পজ-এর Noor, সেক্টর ২২-এ সানবিমের পাশে ট্রাফিক জাম-এ মশলা দোসা, সেক্টর ১৭-য় শপিং সেন্টারে ইন্ডিয়ান কফি হাউস, কোয়ালিটি রেস্টুরেন্ট, Mcfil রেস্টুরেন্ট আজও অনবদ্য। তেমনই পাঞ্জাবি মেনুর জন্য সেক্টর ১৪-র Tandoor যোগে খাত। আরও সস্তায় নানান রেস্টোরাঁ—Royal, Vinc e, Punjab রয়েছে বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে উদ্দগাণ পথে। | চণ্ডীগড় থেকে সড়ক দূরত্ব |
|---|---------------------------|
| জয়পুর | ৫১০ কিমি |
| আগ্রা | ৪৪৯ " |
| দিল্লী | ২৪৬ " |
| দেবান্দন | ২৪৬ " |
| অমৃতসর | ২২৩ " |
| জম্মু | ৩৬৩ " |
| আম্বালা | ৪৭ " |
| জলন্ধর | ৬৫ " |
| পাতিয়ালা | ৬৪ " |
| কুরুক্ষেত্র | ৮৮ " |
| সিমলা | ১১৭ " |
| মানালী | ৩০২ " |
| কুলু | ২৭০ " |
| নাসাল | ১০৩ " |
| ভাকরা | ১১৬ " |
| ধরমশালা | ২৪৮ " |
| ডলহাইসী | ২৫২ " |
| হয়াকোপ | ২৫৬ " |

চণ্ডীগড় বোড়োবার মনোরম সময় বসন্তকাল। গাছে গাছে ফুলেরা পাগড়ি মেলে শহরের বুক জুড়ে। পরিকল্পিত শহরের পথ-পাশ রাঙিয়ে তোলে নানান ফুল, রাঙিয়ে তোলে চণ্ডীগড়ের আকাশ-বাতাস। পাটল বর্ণের ক্যাসিয়া ফুলের রূপের যেন তুলনা হয় না। চণ্ডীগড় তখন সত্যি রমণীয় হয়ে ওঠে। যথেষ্ট যাত্রী (২০) হলে চণ্ডীগড় ট্যুরিজম দিনে ২ বার শহর দেখাবার ব্যবস্থাও রেখেছে, আর রবিবার পিল্লোর যাচ্ছে, প্রতি শুক্রবার ও দিনের প্যাকেজে বৈশ্বদেশী যাচ্ছে Chandigarh Tourism, Tourist Office, ISBT, Sector-17, Chandigarh-17, ৩ 544614/703839 থেকে। Himachal Tourism-এর দপ্তর বসেছে Sec 22, চণ্ডীগড়ে।

সিমলার পথে বা দিল্লী থেকেও চণ্ডীগড় বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে। চণ্ডীগড় দেখার জন্য একটা দিনই যথেষ্ট। চুক্তিতে অটো বা ট্যাক্সি নিয়ে শহর দেখে নেওয়াই উচিত হবে পর্যটকদের। তবে, চণ্ডীগড়ে ট্যাক্সি, অটো ও রিকশার হয়রানি থেকে সতর্কতা বাঞ্ছনীয়। রেল স্টেশন শহর থেকে ৮ কিমি দূরে। Chandigarh Transport Undertaking (CTU)-এর বাস যাচ্ছে রেলযাত্রী নিয়ে শহরে। বাস স্ট্যান্ড শহরের প্রাণকেন্দ্রে সেক্টর ১৭-য়। চণ্ডীগড় ট্যুরিজমের ট্যুরিস্ট অফিস ৩ 703839, ডাকঘর, রেস্টোরাঁ, ক্রোক রুম সার্ভিসও মেলে ISBT-র বাসস্ট্যান্ডে। রেলের সিটি বুকিং-ও যসেছে বাসস্ট্যান্ডের ঝিলে ও সেক্টর ২২-এ। চণ্ডীগড় যাত্রামতে বাসই সুবিধার।



কলকাতা থেকে সরাসরি রেল সংযোগ রয়েছে ১৭০১ কিমি দূরের চণ্ডীগড়ের। ১৯-১৫র হাওড়া ছেড়ে 2311 কালকা রেল পরদিন ১৯-৫০এ দিল্লী জং শৌখ ২২-৪৫এ দিল্লী জং ছেড়ে তারও পরদিন ৩০-৪০এ চণ্ডীগড় গিয়ে ২৪ কিমি দূরের কালকা যাচ্ছে ৫-০০টায়। আর নতুন দিল্লী ছেড়ে ৬-০০টায় দিল্লী ফেরে কালকা থেকে ১-০০টায় কালকা, ১৭-৪৫এ হিমালয়ান কুইন, ৬-৫০এ কালকা-দিল্লী শতাব্দী, ১২-২০এ চণ্ডীগড়-দিল্লী কালকা শতাব্দী এক্স। ১৭-০৭এ চণ্ডীগড় ছেড়ে ২৩-০০টায় অমৃতসর যাচ্ছে 4535 অমৃতসর এক্স; চণ্ডীগড় ফেরে অমৃতসর থেকে ২৩-৫৫য়। 4096 হিমালয়ান কুইন, ১৭-১৫য় 2005 দিল্লী-কালকা শতাব্দী এক্স, ৭-৩০এ 2011 দিল্লী-চণ্ডীগড় শতাব্দী এক্স ২৪৪ কিমি দূরের চণ্ডীগড় যাচ্ছে ১০-৩০/২০-১০/১০-৩০এ। চণ্ডীগড় থেকে শ্রী গঙ্গানগর যাচ্ছে 4711 ইন্টারসিটি এক্স, 4887 কালকা-যোগপুর এক্স; ডিওয়ানি-কালকা একতা এক্সও যাচ্ছে চণ্ডীগড় হয়ে। আর ৪৭ কিমি দূরের আখালা ক্যান্ট হয়েও সংযোগ গড়েছে ভারতের সিবিদিকের সঙ্গে চণ্ডীগড়ের। কালকা-আখালা, কালকা-দিল্লী জং প্যাসেঞ্জারও যাচ্ছে চণ্ডীগড় হয়ে। Chandigarh Transport Undertaking (CTU)-এর নানান প্যাসেঞ্জার ট্রেন ও বাস যাচ্ছে চণ্ডীগড় থেকে আখালায়। আর 6, 6A, 6B রুটের বাস, অটো, রিকশা ও ট্যাক্সি যাচ্ছে রেল স্টেশন থেকে ৮ কিমি দূরের শহরে।



Inter State Bus Stand (ISBT) শহরের প্রাণকেন্দ্র সেক্টর ১৭য়, ৩ 544382. মুহম্মদ বাস যাচ্ছে হরিয়ানা রোডওয়েজ ৩ 544014, পাঞ্জাব রোডওয়েজ ৩ 544023, হিমাচল রোড ট্রান্সপোর্ট ৩ 544015, চণ্ডীগড় ট্রান্সপোর্ট আডারটেকিং ৩ 544005, দিল্লী ট্রান্সপোর্ট করপোরেশনের চণ্ডীগড় থেকে দিন-রাতি জুড়ে। ৫ ঘটায় দিল্লী (কাশ্মীরি গেট)—শীতাতপ, ডিলাঞ্জ ও সাধারণ বাস; ৫ ঘটায় সিমলা, ১২ ঘটায় কুলু, ১৪ ঘটায় মানালী, ৬ ঘটায় অমৃতসর, ১০ ঘটায় ধরমশালা, ৭ ঘটায় পাঠানকোট, মুহম্মদ নাসাল, তথা ডাকরা, জয়পুর, আগ্রা, সেরাদুন, হরিবার ছাড়াও উত্তর ও পশ্চিম ভারতের দিকে দিকে। A/C বাসও চলেছে দিল্লী-চণ্ডীগড়ের মাঝে। এমনকি রাত্রিকালীন সার্ভিসেও বাস চলেছে দিল্লী থেকে চণ্ডীগড়ে।



246 দিন দিল্লী-চণ্ডীগড়, 246 দিন অমৃতসর, 246 দিন মুম্বাই, 246 দিন আমোদাবাদ প্রতি মঙ্গলবার লে যাচ্ছে IAC-র বিমান চণ্ডীগড় থেকে। ফেরেও এরা নিয়মিত একই দিনওলিতে। প্রাইভেট বিমানও সার্ভিস গড়েছে চণ্ডীগড় থেকে দিল্লী ছাড়াও নানানদিকের। শহর থেকে ১১ কিমি দূরে বিমানবন্দর। অটো, ট্যাক্সি, IAC-র মিনিবাসও যাচ্ছে সেক্টর ১৭ থেকে। অফিস বসেছে IAC, Sector 17, Reservation ৩ 704539; Flight. ৩ 656029.

নাসাল

চণ্ডীগড় থেকে বাসে ১০৩ কিমি দূরের নাসাল চলুন, ২২ ঘটায় পথ। মুহম্মদ বাস চলে এ-পথে। নাসাল থেকে ১৩ কিমি দূরে শতদ্রু নদীর উপর বাঁধ পড়েছে হিমাচল প্রদেশের ডাকরায়। ১১০০ ফুট উঁচু নাসাল ভ্রমণার্থীদের ডাকরাও দেখে নেওয়া উচিত। নাসাল থেকে নতুন করে বাস যাচ্ছে হিমাচল প্রদেশের ডাকরায়।

শতদ্রু বাঁধের টারবাইনগুলির মাঝ দিয়ে বেরিয়ে এসে নাসালের কাছে একটি খারাকে পৃথকভাবে কংক্রিটের সেওয়াল গড়ে শিবালিক পাহাড়ের মাঝ দিয়ে ৬৪ কিমি দূরে নিয়ে গিয়ে গান্ডওয়াল ও কোটলায় বিদ্যুৎ তৈরি হচ্ছে। ডাকরা বাঁধেরই অংশ বিশেষ এই নাসাল। এখানকার রাসায়নিক সারের কারখানাটিও উদ্ভেদ্য। শহরও গড়ে উঠেছে এদেরই ভর করে। রূপ পেতে চলেছে নতুন ভারত এই নাসালে।

নিকটতম বিমানবন্দর চণ্ডীগড়। আর রেল ২৩-২০এ দিল্লী জং ছেড়ে ৩-০৫এ আখালা, ৬-৫০এ ৩৫৬ কিমি দূরের নাসাল পৌঁছে হিমাচলের উনা যাচ্ছে 4553 হিমাচল এক্স। আর ১৫৮ কিমি দূরের আখালা ক্যান্ট থেকে ৬-০৫ ও ৯-৫০এ প্যাসেঞ্জার ট্রেন যাচ্ছে নাসাল। তবুও নাসাল যাত্রায় সড়কপথই সুবিধার। চণ্ডীগড় থেকে বাস বা ট্যাক্সিতে নাসাল চলা যেতে পারে। এছাড়াও বাস আসছে দিল্লী, আখালা, পাতিয়ালা, জলন্ধর, পাঠানকোট, ধরমশালা, মানালী থেকেও নাসালে।

খাকার জন্য সরকারি ব্যবস্থায় Tourist Dak Bungalow, Naya Nangal Hostel, VIP RH, GH আছে; অব: EE, Nangal Estate Division, Nangal Project. আর আছে Nazar H নাসালে।

ফেরার পথে নাসাল-চণ্ডীগড় সড়কে নাসাল থেকে ২৩ কিমি দূরে আনন্দপুর সাহিব বেড়িয়ে ৮০ কিমি দূরের চণ্ডীগড় পৌঁছান ২ ঘটায়। উৎসাহীরা চলার পথেই আনন্দপুর-চণ্ডীগড় সড়কের মাঝ দুরেছে রূপারও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ১৮৩১এ মহারাজা রণজিৎ সিং ও লর্ড উইলিয়াম বেন্টিনের ঐতিহাসিক সাক্ষাৎ ঘটেছিল এই রূপারে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে সুন্দর পরিবেশে ডাকবাংলোয়। আবার চণ্ডীগড় থেকে আনন্দপুর দেখে ডাকরা বেড়িয়ে নাসালে রাত কাটিয়ে পরদিন হিমাচল প্রদেশেও চলা যেতে পারে—ধরমশালা বা মানালীর বাসে। নাসাল থেকেই যাচ্ছে বাস।

আনন্দপুর সাহিব

নাসাল-আখালা রেলপথে নাসাল থেকে ২১ কিমি দূরে নায়না দেবীর পাদদেশে আনন্দপুর সাহিব। বয়ে চলেছে শতদ্রু। বাসও চলে এপথে। তবুও যেন চণ্ডীগড় থেকে বাসে ডাকরা, নাসাল, আনন্দপুর একই দিনে বেড়িয়ে ফেরা উচিত হবে। শিশু সম্প্রদায়ের কাছে আনন্দপুর সাহিব অতি পবিত্র তীর্থ। অমর সেবতার ৫টি তৃপ্ত অর্থীং সিংহাসনের অন্যতমও এই আনন্দপুর। প্রবাদ, বশিষ্ঠও ধ্যান করেছেন; রামায়ণও লেখেন বাণীকি মুনি এখানে। ১৬৬৪তে ৯ম গুরু তেগবাহাদুরের আনন্দপুর নামকরণ। গুরবার গড়ে তেগবাহাদুর। ১৬৭৫এ গুরু তেগবাহাদুরের শিরচ্ছেদ হয় দিল্লীতে; দাহ হয় Rengreta Guru Ka beta-র ছিন্ন শির আনন্দপুর সাহিবে। ১৬৯৯ খ্রিস্টাব্দের এপ্রিল মাসে (১লা বৈশাখ) Khande-Ki-Pahul উৎসবে তেগবাহাদুরের পূর্ব

১০ম গুরু গোবিন্দ সিং এজন শিখকে প্রথম দীক্ষা দেন এবং সিং অর্থাৎ সিংহ (Lion) নামে ভূষিত করে সামরিক সিংহগণের ভ্রাতৃত্বগণ গঠন করেন এই আনন্দপুরের কেশগড়ে। আর *খালসা* অর্থাৎ পবিত্র বলে অভিহিত করেন এসে। গুরদ্বারা রয়েছে আরও নানান আনন্দপুরে। তবুও কেশগড় গুরদ্বারাটি বিশেষভাবে উল্লেখ্য। এখানেই শিখরা দীক্ষা নিতেন আর শপথ নিতেন গুরুর কাছে—শরীরের কোনো কেশ অর্থাৎ চুল কাটবেন না....। গুরু গোবিন্দর ব্যবহৃত অস্ত্রশস্ত্রও রক্ষিত রয়েছে এই কেশগড়ে।

দুর্ধ্ববল সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত এই গুরদ্বারাটি দূর থেকে পর্যটকদের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। হোলির সময় আনন্দপুর ভ্রমণ আরও আনন্দের হয়ে ওঠে। হোলির একদিন পরেই শিখ *হোলা-মহলা* উৎসব অনুষ্ঠিত হয়। হোলার সময় গুরু কৃত্রিম যুদ্ধানুষ্ঠানের এক ঐতিহ্য স্থাপন করে যান। আজও নিহাং শিখরা সেটি পালন করে চলেছে। যুদ্ধসাজে সজ্জিত হয়ে প্রকাশ্যে চলাফেরা করে এরা। ভাঙড়া নাচও পরিবেশিত হয় এই হোলা উৎসবে। থাকারও ব্যবস্থা গুরদ্বারায় মেলে।

নায়না দেবী

নাসাল-আহালা রেলপথে আনন্দপুরের পরের স্টেশন কিরাতপুর সাহিব। আনন্দপুর থেকে দূরত্ব ৮ কিমি। আর কিরাতপুর থেকে বিলাসপুর সড়কে ১৪ কিমি গিয়ে বামহাতি পথে আরও ১৪ কিমি যেতে ৩০০০ ফুট উঁচু ত্রিকোণ এক পাহাড়ী ঢিলায় নায়না দেবীর মন্দিরটি বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে বাসে। কামনা পূরণের জন্য দেবীর প্রশস্তি। বিলাসপুরের দূরত্ব ৬৪ কিমি। নায়না দেবীর মন্দির থেকে আনন্দপুর সাহিব ও গোবিন্দ সাগরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। থাকার জন্য *RH, FRH, Tourist Inn* ও *ধরমশালা* আছে।

অমৃতসর

পাক সীমান্তবর্তী শহর অমৃতসর। ভারত থেকে পাকিস্তানের একমাত্র সড়ক সংযোগকারী পথও গিয়েছে অমৃতসর হয়ে। ২৫ কিমি দূরের আট্টারিতে সীমান্ত চেক পোস্ট বসেছে। ট্রেনও যাচ্ছে দল্টা তিনেকে অমৃতসর থেকে পাকিস্তানের লাহোরে। রাজ্যের রাজধানী চণ্ডীগড় হলেও শিখ ধর্ম ও সংস্কৃতির অন্যতম পীঠস্থান অমৃতসর। শিখধর্মের অন্যতম তীর্থও অমৃতসর। লাখ সাতেক লোকের বাস শহরে। এদের কর্মে উদ্যম ও কঠোর শ্রম বাংলার মতো উদ্বাস্ত সমস্যা কলুষিত করেনি সমাজ জীবনকে। তবে, নতুন সমস্যা আজ পাঞ্জাবে। বাগিছানোর দাবিদার উগ্রপন্থীদের মিনাকলাপে পাঞ্জাব আজ অশান্ত, জনজীবন শঙ্কিত। বাকীও তাই বিধাবিহিত পাঞ্জাব ভ্রমণে। ১৯৮০তে

মন্দিরেও ঘাঁটি করে শিখ চরমপন্থীরা। ১৯৮৪তে ভারতীয় সেনাবাহিনী মুক্ত করে স্বর্ণমন্দির। রক্তক্ষয়ী সংগ্রামের পর উগ্রপন্থা কিছুটা প্রশমিত হলেও অক্টোবর ৩১, ১৯৮৪ শহীদ হন তদানীন্তন প্রধানমন্ত্রী জীমতী ইন্দিরা গান্ধী নিজ বাসভূমে। ১৯৮৬তে আবার মন্দির বার চরমপন্থীদের দখলে। অবশেষে ভারতীয় সংবিধানও সংশোধিত হয়েছে ধর্মস্থানে রাজনীতি রোধে ১৯৮৮তে। সরকারও সচেষ্ট সারা দেশ থেকে উগ্রপন্থা হাটিয়ে শান্তির বাতাবরণ গড়ে তুলতে। তবুও উচিত হবে সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে অমৃতসর ভ্রমণে চলা।

রেল স্টেশনের দক্ষিণ-পূবে পুরাতন শহর। আর নতুন করে শহর বাড়ছে উত্তর-পূবে। রামবাগ, ম্যাল তথা অমৃতসরের পশ্চিম এলাকাও এই নতুন শহরে। তবে, স্বর্ণমন্দিরের অবস্থান পুরাতন শহরে। আর বাস স্ট্যান্ডের অবস্থান রেল থেকে ২ কিমি পূবে দিল্লী রোডে। ট্যুরিস্ট অফিস ও ৫১৫৪ বসেছে বাস থেকে ১ কিমি পূবে Youth Hostel-এ।

স্বর্ণমন্দির : ১৫৭৭এর কথা। আকবরের ফরমানে ৪র্থ শিখ গুরু রামদাসের হাতে গড়ে ওঠে শহর। রেল স্টেশনের দক্ষিণ-পূবে প্রাচীরে ঘেরা শহরে—১৮টি ফটক ছিল যাতায়াতের। সরোবরও খনন করান শহরের কেন্দ্রে-স্থলে গুরু রামদাস। তাঁরই নামে জায়গার নাম হয় গুরু রামদাসপুর। ৫ম গুরু সরোবরের মাঝে হরমন্দির গড়েন। ভিত্তিপ্রস্তর স্থাপন করতে লাহোর থেকে Muslim Saint Hazrat Mian Mir আসেন গুরু অর্জনের আমন্ত্রণে। আর সরোবরের জল শুদ্ধ করে হয় অমৃত তুল্য। নাম হয় অমৃতের সরোবর অর্থাৎ অমৃতসর। মর্মরে গড়া সেতুতে পারাপার। ১৬০৪এ ৫ম গুরু অর্জনের সঙ্কলিত শিখধর্মের মহান গ্রন্থ হাতে লেখা *Sri Guru Grantha Sahib* হরমন্দিরে স্থাপন করেন। আর ১০ম গুরু গোবিন্দ সিং মৃত্যুর আগে (১৭০৮) এই *গ্রন্থসাহিব*-কে শিখধর্মের চিরন্তন গুরু রূপে বরণ করেন। শিখ জাগরণের ডয়ে ভীত জাহাঙ্গীর ১৬০৬এ মৃত্যুদণ্ড দেন গুরু অর্জনের। আর অর্জন-পুত্র গুরু হরগোবিন্দ বার বার তিন বার পরাজয়ের পর ৪র্থ বৃদ্ধে ১৬২৯এ শাজাহানের মোগল বাহিনীকে পরাজিত করেন। কালে কালে শিখধর্মের পবিত্রতীর্থ হয় অমৃতসর। ১৭৬১তে আহম্মদ শাহ দুরানী জয় করে নেন অমৃতসর। মন্দিরটিও ধ্বংস করেন দুরানী। আবার গড়ে ওঠে মন্দির নতুন করে ১৭৬৪তে। আর ১৮০৩এ রণজিৎ সিং (১৭৮০-১৮৩৯) নতুন করে গড়ে তোলেন আজকের তিনতলা হরমন্দির মর্মরে। গম্বুজটি মুড়ে যেন তামার পাতে ৪০০ কেজি সোনা দিয়ে। রূপের দরজার সোনার পাতও লাগে—বিশেষ বিশেষ দিনে। সেই থেকে নামেরও বদল ঘটে হরমন্দির হয় স্বর্ণমন্দির। মন্দিরের দেওয়াল হিন্দু মন্দিরস্থাপত্যে *pietra dura* শৈলীতে ফুল ও জীবজন্তুতে অলঙ্কৃত। গম্বুজটি যেন ওষ্টারসো ককল। ফেওরাগী অমৃতসরের বয়সীর উৎসব। পুরো শহরটাই

আলোর সাজ পরে। মন্দিরের দীপসজ্জা ও আতসবাজি দেখার জন্য দূর-দূরান্ত থেকে পর্যটক আসেন। শিখ ইতিহাসের চাকল্যকর অতীত প্রাণবন্ত হয়ে উঠেছে প্রবেশ দ্বারে **ক্লক টাওয়ারের মিউজিয়ামে**। দ্বিতলের তোবাখানায় মহারাজ রণজিৎ সিংকে হায়দ্রাবাদের নিজামের দেওয়া উপহার মণিমাণিক্যচর্চিত চন্দ্রাতপ, মহারাজার নেকলেস, ১১২০ পাউন্ড চন্দনকাঠে তৈরি *Chouri*, অপরূপ শিল্প-সুসমার ময়ূর অনন্য সম্পদ। তবে, গুরু রামদাসের জন্মদিনেই কেবল দেখার ব্যবস্থা।

১৭০৮-এর ২রা অক্টোবর পাঞ্জাব থেকে দূরে মহারাষ্ট্রের নানডেডে ১০ম গুরু গোবিন্দ সিং ছুরিকাবিন্ধ হন শিরহিন্দ্রের নবাব ওয়াজির খাঁর প্রেরিত গুল খাঁর হাতে। শিরও নেমে যায় গুলের গুরুর তরবারিতে। আর ছুরিকাহত গুরুর মৃত্যু ঘটে ৭ই অক্টোবর। ইতিপূর্বেই গুরুর চার পুত্রের মৃত্যু ঘটেছে মোগলদের সাথে যুদ্ধে। ভক্তদের পরবর্তী গুরুর অভাব পূরণে মৃত্যুপথযাত্রী গুরু গোবিন্দই অতীতের দশজন শিখ গুরুর মুখ নিঃসৃত উপদেশবাণীর গাথা শ্রীগুরু গ্রন্থসাহিবেকে চিরন্তন গুরু রূপে অভিষিক্ত করেন। সেই থেকে শিখধর্মের মূল ধর্মগ্রন্থ—হাতে লেখা *গ্রন্থসাহিব* দেবজ্ঞানে পুজিত হচ্ছে স্বর্ণমন্দিরে। অথচ পাঠও চলছে গ্রন্থসাহিব থেকে মন্দিরে। দিনভর স্বর্ণমন্দিরে অবস্থান করে রাত দশটায় শোভাযাত্রা করে আকাল তখতে ফেরে গ্রন্থসাহিব। পরদিন ভোর চারটেই (শীতে ভোর পাঁচটা) আবার শোভাযাত্রা সহ স্বর্ণমন্দিরে প্রত্যাগমন ঘটে।

স্বর্ণমন্দির লাগোয়া সরোবরের ধারে স্বর্ণগম্বুজ শিরে পাঁচতলার *Akal Takht* অর্থাৎ চিরকালের দেবতার সিংহাসন ভবন। ১৬০৯এ ৬ষ্ঠ গুরু হরগোবিন্দের তৈরি আকাল তখতে গুরুর দেবব্যবহৃত অস্ত্রশস্ত্র প্রদর্শিত হয়েছে। শিখধর্মের পার্লামেন্ট হাউস এই আকাল তখত। যে কোনও ধর্মীয় বিধানও দেন শিরোমণি গুরদ্বার। প্রবন্ধক কমিটি। এরই জাঠেদার শিরোমণির স্পীকার। ১৯৮৪র *অপারেশন ব্লু-স্টারে* শিখধর্মের পীঠস্থান আকাল তখতের ক্ষত করসেবায় স্বাভাবিকতা পেলেও নবরূপে গড়তে চলেছে আকাল তখত।

মন্দিরের উত্তর-পূর্ব কোণে বাগিচার মাঝে ৪৫ মি উচ্চ অষ্টকোণাকৃতি ৯ তলা বাবা অটল সাহিব গুরদ্বার। ৬ষ্ঠ গুরু হরগোবিন্দের ৯ বছরের পুত্রঅটলের স্মারকরূপে তৈরি। গুরু নানকের জীবনের নানান ঘটনাও ছবিতে তুলে ধরা হয়েছে। লঙ্গরখানাও বসেছে। নিখরচায় আহার মেলে যাত্রীদের। থাকারও ব্যবস্থা মেলে গুরদ্বারায়। স্বর্ণমন্দিরের চারপাশের খিঞ্জিভাব কাটিয়ে পরিবেশকেও কলুষমুক্ত করে তোলা হয়েছে। মন্দিরও আজ পাঞ্জাব সরকারের তত্ত্বাবধানে। ক্লক টাওয়ার দিয়ে মন্দিরের প্রবেশ। মন্দির চত্বরে খালি পায়ে আর মাথা ঢেকে ঢোকা বাধ্যতামূলক। দর্শনীদের কম করে রুমাল দিয়ে মাথা ঢাকার প্রথা। মন্দির

চত্বরে ধূমপান নিষেধ। রেল স্টেশন থেকে টাঙা বা রিকশায় স্বর্ণমন্দির পৌছান।

জালিনওয়ালাবাগ : ব্রিটিশ রাজের বুলেটের ক্ষত গায়ে নিয়ে আজও বাকশক্তিবিহীন হয়ে বিষাদ মুখে দাঁড়িয়ে আছে এর দেওয়ালগুলি। তবে ভারতবাসীর কাছে অতি পবিত্র তীর্থ এই জালিনওয়ালাবাগ। চারপাশে বাড়িঘর, উঁচু দেওয়ালে ঘেরা—তারই মাঝে ময়দান। একমাত্র প্রবেশপথটি খুবই সঙ্কীর্ণ। ১৯১৯এ বৈশাখী়র দিন (১৩ই এপ্রিল) কয়েক হাজার ভারতীয়র সভা বসেছিল সামরিক আইন রাওলাট আক্টের প্রতিবাদ জানাতে এই ময়দানে। কৃথ্যও ব্রিটিশ জেনারেল ডায়ার কোনোরকম সতর্কতা ছাড়াই তার সেনাদল নিয়ে প্রবেশপথে দাঁড়িয়ে গুলিবর্ষণ শুরু করে নিরস্ত্র জনতার উপর। চলেও শেষ গুলিটি ফুরিয়ে না যাওয়া পর্যন্ত। মৃত্যুও ঘটে দ্বিসহস্রাধিক। আত্মরক্ষার্থে কূপের জলে ঝাঁপিয়ে প্রাণ হারায় সন্ত্রস্ত জনতার তিন শতেরও অধিক। সমগ্র জগৎ হতবাক হয়ে পড়ে এই নৃশংস হত্যাকাণ্ডে। শিকার জানায় সারা বিশ্ব। বাংলার কবি রবীন্দ্রনাথ ব্রিটিশের দেওয়া খেতাব *নাইটহুড* বর্জন করেন অন্যায়ের বিরুদ্ধে প্রতিবাদ করে। সেইসব শহীদে অমর স্মৃতির প্রতি শ্রদ্ধা জানাতে পরবর্তীকালে লাল বেলে পাথরের সুন্দর শহীদ স্মারক হয়েছে। কূপটিও দৃশ্যমান আজও। স্বর্ণমন্দির থেকে দূরত্ব ২ ফার্লং।

দুর্গিয়ানা মন্দির : রেল স্টেশন ও স্বর্ণমন্দিরের মাঝে স্বর্ণমন্দির থেকে মিনিট পনেরোর অলিগলি পথে ১৬ শতকের হিন্দু মন্দির দুর্গিয়ানা অর্থাৎ ঋত মন্দিরে দেবী দুর্গার মন্দির। আজও বাঙালি পুরোহিত বংশ-পরম্পরায় পূজার্চনায় রত। দীপাবলীতে এখানেও দীপসজ্জা ও আতসবাজি পোড়ে। আর সরোবরের মাঝে আর এক মন্দির—হিন্দুর দেবতা লক্ষ্মী ও নারায়ণের।

গোবিন্দগড় দুর্গ : শহরের দক্ষিণ-পশ্চিমে দুর্গিয়ানা রেখে পথ গিয়েছে গোবিন্দগড় দুর্গের। শহরের প্রহরী হয়ে দাঁড়িয়ে প্রথম শিখ দুর্গ গোবিন্দগড়। অতীতে ভাদ্রী সর্দারদের অধীনে ছিল গোবিন্দগড়, ১৮০২এ রণজিৎ সিংহের দখলে আসে; আর আজ ভারতীয় সেনাবাহিনীর দখলে।

রামবাগ উদ্যান: রেল স্টেশনের উত্তর-পূর্বে নতুন শহরের কুলীনা এলাকায় রামবাগ উদ্যান। প্রশস্ত উদ্যানে খেলাধুলার নানান সংস্থা, উদ্যানের ফুলের শোভাও মনো-রম। উদ্যানের মাঝে মহারাজ রণজিৎ সিংহ-র গ্রীষ্মাবাসে আজ মিউজিয়াম বসেছে। বুধবার বন্ধ। আধুনিকতার সাথে আভিজাত্যের ছাপও মেলে অমৃতসরের রামবাগে। ম্যালেরও অবস্থান রামবাগে।



রেল সরাসরি সংযোগ গড়েছে কলকাতা থেকে অমৃতসরের। 3005 অমৃতসর মেল রাত ১৯-২০এ হাওড়া ছেড়ে দুর্গাপুর-পাটনা-বারানসী-লক্ষৌ-মোরাদাবাদ-লজ্জার-আম্বালা হয়ে পরের পরদিন সকাল ৯-০৫এ অমৃতসর যাচ্ছে। 3049 হাওড়া-অমৃতসর এক্সপ্রেস যাচ্ছে ১৩-

১০এ হাওড়া ছেড়ে একই পথে পরদিন ৯-৩৫এ। ১২০৭ বরায়ুনি-অমৃতসর জনসেবা এক্স/ ১২০৭ বরায়ুনি-অমৃতসর এক্স যাচ্ছে গোরকন্থ-লক্ষ্মী-মোরাদাবাদ হয়ে। মুম্বাই স্টেশন থেকে ২১-৩০এ ২৭০৩ গোয়েন্দা টেম্পল মেল, ১১-৩৫এ ২৭২৫ পন্টিম এক্স ভাদোদরা-কোটা-মণ্ডা হয়ে যথাক্রমে ১৯-০০ ও ১০-৩৫এ নতুন দিল্লী পৌছে অমৃতসর যাচ্ছে ৫-৫০/১৯-১০এ। ১৪৫৭ দাদার-অমৃতসর এক্স যাচ্ছে ভূসমাল-ইটারসি-ভূপাল-বাসী-আগ্রা ক্যান্ট হয়ে ৫-০০টায় নতুন দিল্লী ছেড়ে ৯-০০টায় আশালা পৌছে ১৬-৩০এ অমৃতসর। ২৪৭ দিন ভূপাল-আগ্রা ক্যান্ট হয়ে ১৩-৩৫এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ২১-২৫এ অমৃতসর যাচ্ছে ২৭১৫ নানডেড-অমৃতসর এক্স।

আশালা ক্যান্ট ও সাহারান-পূর্বদুটি পৃথক পথে দিল্লী থেকে ট্রেন যাচ্ছে অমৃতসর। ১২-১০এ দিল্লী জং থেকেই যাচ্ছে ৪৬৪৭ ফাইং মেল ১৫-৩০এ আশালা ক্যান্ট পৌছে ২১-০৫এ অমৃতসর; ৬-৫০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ৯-৪০এ আশালা ক্যান্ট পৌছে ১৩-৪৫এ অমৃতসর যাচ্ছে ২৭৭৭ শানে পাঞ্জাব। ২০১৩ শতাব্দী এক্স যাচ্ছে ১৬-৩০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে লুথিয়ানা/ জলন্ধর সিটি হয়ে ২২-১০এ অমৃতসর। ১৪-৩০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ৪৬৪১ নিউ দিল্লী-জলন্ধর এক্স যাচ্ছে ৭; ঘটায়। ৪২৩৭ ছত্তিশগড় এক্স বিলাসপুর ছেড়ে রায়পুর, নাগপুর, ইটারসি, ভূপাল, গোয়ালিয়র, আগ্রা ক্যান্ট, হজরত নিজামুদ্দিন ২০-১৪, নতুন দিল্লী ২১-০৫এ ছেড়ে ২-৪৫এ আশালা পৌছে অমৃতসর

যাচ্ছে ৮-০৫এ। বরায়ুনি-অমৃতসর এক্স ৪-৪৫এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ৭-০৫এ আশালা পৌছে অমৃতসর যাচ্ছে ১২-৫৫য়। ২০-২০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ৩-৩০এ আশালা, ৫-২০এ অমৃতসর পৌছে পাঠানকোট যাচ্ছে ৮-২৫এ ৪১০১টাটা-হাতিয়া-অমৃতসর-পাঠানকোট এক্স। উৎকল-কলিঙ্গ এক্স যাচ্ছে পুরী থেকে যজ্ঞাপুর/টাটা/রাউরকেলা/বিলাসপুর/আগ্রা ক্যান্ট/হজরত নিজামুদ্দিন হয়ে অমৃতসর। পাঠানকোট যাচ্ছে ৪-৪০, ৬-২০, ১৩-৫০, ১৭-৩৫এ অমৃতসর ছেড়ে ৩ ঘটায় পায়েসজার ট্রেন; আর ৫-৫৫য় টাটা-পাঠানকোট এক্স, ৯-১০এ রাবি এক্স যাচ্ছে যথাক্রমে ৮-২৫ ও ১১-২০এ। ২২-৪০এ অমৃতসর ছেড়ে ১-১০এ পাঠানকোট পৌছে জম্মু যাচ্ছে ৪-০০টায় ৪৬১। এক্স ১২১-০০টায় অমৃতসর ছেড়ে জলন্ধর/লুথিয়ানা/আশালা/সাহারানপুর/লজার হয়ে দেবাদুন যাচ্ছে পরদিন ১১-৩০এ পায়েসজার ট্রেন। ২৩-৫৫য় অমৃতসর ছেড়ে লুথিয়ানা/আশালা হয়ে কালকা যাচ্ছে পরদিন ৮-০০টায় ৪১৩৬ অমৃতসর-কালকা এক্স। ১১ দিন অমৃতসর-জয়পুর এক্স, অমৃতসর ফেরে ২৬ দিন জয়পুর থেকে। আর যাচ্ছে ট্রেন

জম্মু, কুরুক্ষেত্র, আশালা, লুথিয়ানা, ডেরা বাবা ননক, শেখকরা, বাতারা ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের নিকে নিকে অমৃতসর থেকে।

এমনকি ভারত ও পাকিস্তান দুই রাষ্ট্রের সংযোগকারী একমাত্র ট্রেন ৪৬০৭ ইন্ডো-পাক সমঝোতা এক্স ৯-৩০এ অমৃতসর ছেড়ে আট্টারি/ওয়াগা হয়ে অবিতর্ক পাঞ্জাবের রাজধানী পাকিস্তানের লাহোর যাচ্ছে ১৩-৩৫এ। আট্টারি যাচ্ছে ১৮-১৫য় ছেড়ে ১৮-৫৫য় পায়েসজার ট্রেন। ৯-১৬-০০টায় সীমান্ত খোলা পারা-পারের। বাসও চল শহর থেকে সীমান্তে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে Punjab Tourism-এর Tourist Complex, Wagah-য়।



২৪৬ দিন চতীগড় হয়ে দিল্লী, ২৪৬ দিন আমোদাবাদ হয়ে মুম্বাই যাচ্ছে IAC-র বিমান অমৃতসর থেকে। ফেব্রু ও এরা নিয়মিত একই দিনগুলিতে অমৃতসরে। দপ্তর এদেব IAC. ০ 66433/142. 48 The Mall, Amritsar-এ।



আব রেল স্টেশন থেকে ২ কিমি পূর্বে দিল্লী রোডের বাস স্ট্যান্ড থেকে পাঞ্জাব, হরিয়ানা, হিমাচল রাজ্য পরিবহন ডাড়াও নানান বাস যাচ্ছে রাজ্য ছাড়িয়ে—দিল্লী ১০ ঘটায়, জম্মু ৫ ঘ, কাটা ৭ ঘ, পাঠানকোট ৩ ঘ, ডালহৌসী ৬ ঘ, মানালী ১০ ঘ, মাণ্ডী ৮ ঘ, হরমশালা ৬ ঘ, চতীগড় ৪ ঘ, সিমলা ১০ ঘ, দেবাদুন ১০ ঘ, কুলু ১১ ঘ, হরিদ্বার ছাড়াও উত্তর ভারতের দিগ্বিক অমৃতসর থেকে। আব মুম্বাই বাস যাচ্ছে পাঠানকোট ৩ ঘ, জম্মু ৫ ঘ, চতীগড় ৬ ঘটায়; A/C প্রাইভেট বাসও যাচ্ছে অমৃতসর থেকে চতীগড় ও জম্মু।



Amritsar-143001, STD-0183-তে নানান হোটেল। বাগিচায় সুশোভিত ঘরোয়া পরিবেশে—
*Mrs Bhandari's G H, 10 Cantonment-1, R3B4, A/c D ৬০০-৮৫০; *H Airlines, Cooper Rd, ৩ 227738, A-c S ৪০০, D ৫৫০ A/c S ৭৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০; বেল স্টেশনের পূর্বে যথেষ্ট পণ্যের Tourist G H, S ১৫০ D ২৫০ A/c D ৪৫০। এদের সন্মিলনে বেসতি করে H Tourist Bureau, near north entrance of Rail Stn, D ২৫০-৪০০; H Astoria, 1 Queens Rd-1, ৩ 66046, A10R3B0, S ৩০০-৪২৫ D ৪৫০-৬০০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০-৮০০ সুইট ৯৫০; *Amritsar International H, City Centre, ৩ 32234, A13R3B0, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০; H Blue Moon, The Mall-1, R1B1, SAB ২৫০, DAB ৪০০ A/c S ৫৫০ D ৬৫০; Hotel D Deon; Grand H, Queens Rd-1, opp Rly Stn, ৩ 62977, A-c S ৩০০ D ৫৫০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ১২৫০; *Mohan International H, Albert Rd-1, A13R1, ৩ 227801, A/c S ১২৫০ D ১৭৫০ সুইট ২২৫০; *Riz H, 45, The Mall-1, R3B1, ৩ 226606, A/c S ১১৫০ D ১৫৫০ সুইট ১৭৫০।

রেল স্টেশনের বিপরীতে Station Link Rd-এ—H Skylark, H Chinar, H Rosh, H 11, ৩৫৫, এদের কাছে ১৭৫ থেকে ৩৫০ টাকার ঘর মেলে দুই বেডে। গজা পর্যটনের টুরিস্ট অফিসটিও বসেছে হোটেল প্যালেসে। ৩ কিমি দূরে দিল্লী রোডে পাঞ্জাব সরকারের Youth Hostel, ৩ 48165-এ ডরমি প্রায় ৭০০।

| Delhi-Ambala-Pathankot-Jammu-Srinagar-Leh | | | |
|---|----|-----------------|--------|
| 0 | Km | Delhi | |
| 86 | | Panipat | |
| 121 | | Karnal | |
| 152 | | Pipli | |
| | | To Kurukshetra | 5 km |
| | | " Patiala | 80 km |
| 192 | | Ambala | |
| 197 | | Road Jn | |
| | | To Chandigarh | 41 km |
| | | " Kalka | 56 km |
| | | " Shimla | 146 km |
| 222 | | Rajpura | |
| | | To Chandigarh | 38 km |
| | | " Patiala | 25 km |
| 305 | | Ludhiana | |
| 358 | | Jullundur Cantt | |
| | | To Dharamshala | 158 km |
| | | " Kangra | 137 km |
| 476 | | Pathankot | |
| | | To Chakki | 11 km |
| | | " Dalhousie | 78 km |
| | | " Chamba | 127 km |
| | | " Varmore | 197 km |
| | | " Dharamshala | 87 km |
| | | " Mandi | 208 km |
| | | " Manali | 318 km |
| 503 | | Katua | |
| 583 | | Jammu | |
| | | To Katra | 48 km |
| | | " Vaishnodevi | 62 km |
| 644 | | Udhampur | |
| 682 | | Kud | |
| 690 | | Patnitop | |
| 701 | | Batote | |
| | | To Bhadarwab | 81 km |
| | | " Kishtwar | 109 km |
| 770 | | Banihal | |
| 789-91 | | Jawahar Tunnel | |
| 797 | | Road Jn | |
| | | To Verinag | 5 km |
| 826 | | Khanabal | |
| | | To Anantanag | 2 km |
| | | " Pahalgaoon | 44 km |
| | | " Amarnath | 92 km |
| 876 | | Srinagar | |
| | | To Gulmarg | 46 km |
| | | " Sonmarg | 81 km |
| | | " Amarnath | |
| | | via Baltal | 110 km |
| | | " Leh | 434 km |
| | | " Wular Lake | 48 km |
| | | " Pahalgaoon | 94 km |

শ্রীশ্রীশ্রীরামের ঘরে—H Temple View, Vikas G H, Majestic H, এসের ডাকল ভেডের ঘর ১২৫ থেকে ২২৫ টাকার মধ্যে। অর্থাৎ আছে H Imperial হাউস নানান হোটেল অমৃতসরে। CH, PWD RH, Canal RH-এও থাকার ব্যবস্থা মেলে।

শ্রীশ্রীশ্রীরামের গুরুদ্বারা পরিতালিত Sri Guru Ram Das Niwas ও Sri Guru Nanak Niwas. শ্রীশ্রীশ্রী রাম দাসে কমন বাথের ঘর—নিখরচায় ও দিন থাকার ঘর; শ্রীশ্রীশ্রী নানকে বাথ সলেনের ঘর মেলে—সবই ডোনেশন প্রদান। তবে, ফেরৎ বেগু ৫০ জমা রাখা কানুন এসের। নিখরচায় আহার মেলে Guru ka Langar-এ, পরহিতার্থে ডোনেশন কাম্য। এছাড়াও ধর্মশালা আছে ধনবত্ত কাউন্সর ছাড়াও নানান অমৃতসরে।

আর আহাযের জন্য রেল স্টেশনের কাছে Kundan De Dhawa; শ্রীশ্রীশ্রীরামের কাছে Keshar Dhawa নিরামিষ-আমিষ দুই-ই মেলে—ভন্দুরী, পরোটা, বাটাটা পুরি, টিকার সঙ্গে কাবাব, বিরিয়ানির ডিশে যথেষ্ট সুখ্যাতি এসের। আহাযের পরিপূরকরূপে ফ্রিম লসির হাদ নেওয়া একান্তই উচিত হবে অমৃতসরের হোটেল-রেস্তোরাঁর। Vaishno Dhawa, Cosy Restaurant; দুর্গিয়ারান্নর কাছে Kesar de Dhawa-র যথেষ্ট প্রশস্তি। রামবাগকে ঘিরেও নানান হোটেল-রেস্তোরাঁর অমৃতসরে। চার্জে কিছুটা অধিক লাগলেও নতুন শহরে Kwality, Napoli, Crystal রেস্টুরেন্টগুলিতেও হাদ নেওয়া যায় আহাযের।

তবে, অমৃতসরে থাকার খুব একটা দরকার হয় না। রেলের রিটার্নিং ক্রম অমিল হলে টিমার যাত্রীরা আপার ক্লাস ওয়েটিং রুমে বিজ্ঞান নিয়ে ক্রোকক্রমে লাগেজ রেখে দিনে দিনে শহর বেড়িয়ে নিন। বিকালের ১৩-৫০ বা ২২-৪০এর ট্রেনে বা বাসে ঘন্টা তিনেকের পাঠানকোট পৌঁছে হিমাচল প্রদেশ; বা ২২-৪০এর 461। এসে পাঠানকোট হয়ে জম্মু শৌহান ৪-০০টের বা বাসে ঘন্টা পাঁচেকের জম্মু পৌঁছে শ্রীনগর চলুন পরদিন। আবার ঘন্টা পাঁচেকের বাসে চতীগড় গিয়ে সিমলায়ও চলা যেতে পারে অমৃতসর থেকে। তবে, Taran-Taran ও Dera Baba Nanak দর্শনার্থীদের একদিন থাকতে হবে অমৃতসরে।

শহর থেকে ১০ কিমি দূরে রামতীর্থ। কিংবদন্তী, রামায়ণের নায়ক শ্রীরামের পুত্র লব ও কুশের জন্ম এই রামতীর্থে। নভেম্বরের পূর্ণিমায় ৪ দিন ব্যাপী উৎসবের পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। ২৪ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে গুরু অর্জনের বাস ভরণ-ভারণও আর এক শিশুতীর্থ। ৪র্থ গুরু রাম দাসের স্মারকরূপে মোগলি শৈলীতে ভরণ-ভারণ সাহিব গুরুদ্বারা গড়েন গুরু অর্জন। আর সরোবরটি খনন করান মহারাজা রণজিৎ সিং। জনকৃতি, সীতের সরোবর পেরুতে পারলে কুঠরোগী আরোগ্য লাভ করে। আর অমৃতসর থেকে ৪৪ কিমি দূরে গুরু নানকের শেষ জীবনের বাস ভরণ-পাক সীমান্তের গুরুদাসপুর জেলায় ডেরা বাবা নানক। ভূতুও ঘটে গুরুর নদীর অপর পারে কর্তারপুর গুরুদ্বারায়। তবে, আজ পাকিস্তানে। নতুন করে গুরুদ্বারা হয়েছে ভারতভূমির ডেরা বাবা নানকে ১৭৮৬তে। মক্কা ও মদিনা সফরে গুরু নানকের পরিহিত চোলা(পোশাক)-টিও রক্ষিত রয়েছে ডেরা বাবা নানকে। ১০-৪৫, ১৬-৫৫র প্যাসেঞ্জার ট্রেনে ২ ঘণ্টায় বা বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় ডেরা বাবা নানক। ট্রেন ফেরে ৫-৫০, ১৪-৩০এ।

১৫৮৭তে গুরু অর্জনের গঙ্গা হরগোবিন্দপুরের দখল নিয়ে সংঘাত বামে মোগল আরম্ভে ১৬৩০এ মোগলদের সাথে যুদ্ধ জয়ের স্মারকরূপে গুরুদাসপুর জেলায় বিপাশার

দক্ষিণ পাড়ে গড়ে ওঠে গুরদ্বারা দম দম সাহিব। পবিত্র শিখতীর্থ। অমৃতসর, গুরুদাসপুর বা বাতাল। থেকে বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধা।

অমৃতসরের কন্সল, উলেন বন্ড ও কার্পেটের খ্যাতি আছে সারা ভারতে। দামেও যথেষ্ট সস্তা অমৃতসরে। হিমাচলের ভেড়ার লোম লুথিয়ানায় পশম বুনে কাশ্মীর ও কুলুতে এমব্রয়ডারি হয়ে বিক্রী হচ্ছে অমৃতসরে। তবে লুথিয়ানায় মেশিন-জাত হলেও বিকোচ্ছে থরে-বিথরে। টেলিফোন এক্সচেঞ্জ বা স্বর্ণমন্দিরের বাজারের দোকানে কেনা যেতে পারে। শীত ও গ্রীষ্ম দুইয়েরই আধিকা। অমৃতসর বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস।

জলন্ধর

আম্বালা-অমৃতসর, আম্বালা-জম্মু রেলপথে অমৃতসর থেকে ৬৫ কিমি দক্ষিণ-পূবে জলন্ধর—রেল ও বাস যাচ্ছে। প্যাসেঞ্জার ট্রেনও চলে এপথে। এছাড়াও রেল ও বাস যাচ্ছে হোসিয়ারপুর, ফিরোজপুর, আম্বালা, সাহারানপুর, লুথিয়ানা, পাঠানকোট, জম্মু, কাটরা, চণ্ডীগড় ছাড়াও উত্তর ভারতের দিকে দিকে জলন্ধর থেকে। দিল্লী যাচ্ছে ৬ ঘণ্টায় নানান ট্রেন জলন্ধর থেকে। ৫ কিমির ব্যবধানে ক্যান্ট ও সিটি দুই রেল স্টেশন জলন্ধরে।

জলন্ধরও প্রাচীন শহর। হিন্দু রাজার রাজধানীও ছিল অতীতকালে। তবে, আজকের জলন্ধরের খ্যাতি তার খেলাধুলার সামগ্রীর জন্য। পাঞ্জাব আর্মড পুলিশের সদর দপ্তরও বসেছে মোগলি শহর জলন্ধরে। পর্যটক আকর্ষণ উদ্দেশ্য না হলেও অমৃতসর বা জম্মু যাতায়াতে বেড়িয়ে চলা যায় শিল্পনগরী জলন্ধর। তেমনই আছে জামি মসজিদ, ইমাম নাসিরের সমাধি ও হিন্দুতীর্থ দেবী ভলাও অর্থাৎ সরোবর।



পাণ্ডা প্রথায়—*H Skylark, Circuit House Rd, Jullundur-144001, @ 221002, R3 B1, S 800 D ৬০০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০; *H Plaza, Civil Lines-1, @ 225833, S ৩০০ D 800 A/c S 8৫০ D ৬৫০ সুইচ ৬৫০-১০০০; H Ramji Dass, Model Town Rd, A/c S 80০-৬৫০ D ৬০০-৮৫০; Surya H, 7 Cool Rd-1, @ 223344, R4, S ৩৭৫ D 8৭৫ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইচ ১৫০০; *H Kamal Palace, EH-192 Civil Lines, @ 58462, R3B1, A/c S ১৫০ D ১৫০০ সুইচ ২০০০; Green Park H, 36 Green Park, A/c S ৭৫০ D ৯৫০; H Jubilee ছাড়াও নানান।

জলন্ধর থেকে ২১ কিমি উত্তর-পশ্চিমে জলন্ধর-ফিরোজপুর শাখা রেল ১১ শতকের শহর কলপুরখালা। নওদ্বার রানা সিং এটি আবিষ্কার করেন। এখানকার রাজপ্রাসাদ, পাঁচ মন্দির, শালিমার গার্ডেন আর মুসলিম শৈলীতে তৈরি মসজিদটি দর্শনীয়। বাস ও ট্রেন যাচ্ছে জলন্ধর থেকে।

বল্লভ দত্ত: ৯৭-৯৮/৫১

হোসিয়ারপুর

জলন্ধর থেকে সড়কপথে ৬৫ কিমি দূরে হোসিয়ারপুর। এখানকার ঠাকুর ঘোয়ারাম টিটোয়ালি মন্দিরের সুন্দর ছবিগুলি খুবই দর্শকপ্রিয়। শ্রীকৃষ্ণ ও রাসলীলার আখ্যান চিত্রিত হয়েছে। হোসিয়ারপুরের বৈদিক গবেষণা কেন্দ্রটিরও খ্যাতি আছে। অলৌকিক হলেও অতি বাস্তব—নাম, জন্মস্থান ও সাল তিন জানা থাকলে রেল স্টেশনের কাছে ভূগু মন্দির থেকে অতীত, বর্তমান ও ভবিষ্যৎ অর্থাৎ তিন জন্মের কর্মবৃত্তান্ত আপনিও পড়ে নিতে পারেন আপনার নিজের। মন্দির রয়েছে এদের আরও দুই হোসিয়ারপুরেই। আর আছে পাশেই আর্থোথালিতে খাজা দেওয়ান চিহ্নির সমাধি। এরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ধরমশালা ও নানান হোটেল হোসিয়ারপুরে।

লুথিয়ানা

১৮৮০ খ্রিস্টাব্দে লোধী বংশের দুই শাহজাদার হাতে শহরের পত্তন। গুরু গোবিন্দ সিংহর নানান স্মৃতি জড়িয়ে রয়েছে এর গুরদ্বারাগুলিতে। তবে লুথিয়ানার অন্যতম আকর্ষণ তার রেশম, পশম ও সূতিবস্ত্রের পোশাক। হিরো সাইকেল কারখানাটিও এই লুথিয়ানায়। বছরে ৩০ লক্ষেরও অধিক সাইকেল তৈরি করে বিশ্ব রেকর্ড গড়েছে হিরো। পাঞ্জাবের সবুজ বিপ্লবে লুথিয়ানার কৃষি বিশ্ব-বিদ্যালয়টির অবদানও অনস্বীকার্য। পুরনো দুর্গে সরকারি হোসিয়ারি ইনস্টিটিউট ছাড়াও মন্দির রয়েছে পির-ই দস্তগির। তেমনই ভেলোরের মতো Christian Medical Hospitalটিরও যথেষ্ট সুখ্যাতি চিকিৎসা শাস্ত্রে। জলন্ধর থেকে দূরত্ব ৫৭ কিমি আর অমৃতসর থেকে ১৩৬ কিমি। রেল ও বাস যাচ্ছে। রেল ও বাস যাচ্ছে সারা উত্তর ভারতের দিকে দিকে লুথিয়ানা থেকে।



Ludhiana-141008, STD-0161-এ—H Elite, near Rly Stn; *H Grewal, 148 Ferozepur Rd, @ 400465, A12R2B2, A/c S ১০০ D ১২৫০ সুইচ ১৫৫০; *H City Heart, GT Rd, New Clock Tower, R1B0, @ 740240, S 8৫০ D ৬৫০ A/c S ৮৫০ D ১২৫০ সুইচ ১৫০০-২০৫০; H Gulmora, Ferozepur Rd-1, @ 401742, A/c S ১২৫০ D ১৫০০; H Shiraz, Ferozepur Rd-8, R1B0, A/c S ৬২৫ D ৮৫০; *H San Plaza, 15 Feroze Gandhi Mkt, @ 400568, A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইচ ১৫০০; *H Amaltash, Netaji Ngr-5, R8B7, S ৩২৫ D 8২৫ A/c S ৬০০ D ৮০০ সুইচ ১২৫০; H Nanda, Bhadaur House Mkt-8, @ 742618, R1B1, S 8৯০ D ৫৯০ A/c S ৬৯০ D ৭৯০ সুইচ ৮৯০; H Everest, Saharut H ছাড়াও হোটেল রয়েছে নানান লুথিয়ানায়।

পাতিয়ালা

অতীতের শিখ সাম্রাজ্যের রাজধানী পাতিয়ালায় প্রসিদ্ধি

তার দুর্গ ও প্রাসাদের জন্য। এ-দুইই আজ সরকারি তত্ত্বাবধানে। পাতিয়ালায় মোতিবাগ প্রাসাদটি পর্যটকদের কাছে খুবই আকর্ষণীয়। লাহোরের শালিমার গার্ডেনের অনুকরণে মহারাজা নারিন্দর সিং-এর তৈরি এই মোতি-বাগ। এর শিশমহলের কাঠের অলঙ্করণ ও বাড়-লঠনগুলি দর্শকদের মুগ্ধ করে। প্রাসাদের আর এক আকর্ষণ তার মিউজিয়ম। হাতে লেখা নানান পুঁথি, রাজস্থান ও কাংড়া থেকে আসা শিল্পীদের আঁকা ছবির সংগ্রহ সমৃদ্ধ করেছে মিউজিয়মকে। ছবির বিষয়বস্তুও মুগ্ধ করে দর্শকদের। মহারাজা ভূপিন্দর সিংহের সংগ্রহ হাজার চারেক পদক অর্থাৎ মেডেলের সম্ভারও স্থান পেয়েছে মিউজিয়মে। এনামেলের সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত তরবারি ও ছোরাগুলিও পর্যটকদের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। উচ্চাঙ্গ সঙ্গীতের জগতেও পাতিয়ালা ঘরানার অবদান অনস্বীকার্য। ওস্তাদ বড়ি গোলাম আলি খান, বিন্দু খান সমৃদ্ধ করেছেন এর জলসাহরকে। তেমনই ১৭৫৬য় তৈরি কিল্লা মুবারক ছাড়াও বারাদারি উদ্যান, মহাকাশী ও রাজেশ্বরী মন্দির আর দুঃখ নিবারণ সাহিব গুরদ্বারাটি পাতিয়ালা ভ্রমণার্থীদের অবশ্যই দেখে নেওয়া উচিত। নতুন করেও প্রাসাদ হয়েছে মোতিবাগে ১৯৬২তে। আর স্মারকরূপে সঙ্গী করুন পাতিয়ালায় জুতো ও পারান্দী অর্থাৎ টাঙ্গেল। তবে বুধবার বন্ধ থাকে পাতিয়ালায় প্রাসাদখানা।

আবার উংসাহীরা ৬ কিমি দূরের বাহাদুরগড় দুর্গটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ১৮৩৭এ মহারাজা করম সিংহের হাতে গুরু হয়ে দীর্ঘ আট বছর লাগে শেষ হতে। ৮৫ ফুট উঁচু প্রাচীরে ঘেরা ২১০০ মি ব্যাপ্ত এই দুর্গ।



*Green's H, Mall Rd, near Rly Stn, Patiala, ৩ 813070, S ৩৫° D ৪৫° A/c D ৬০০; New Carrer H, near Rly Stn; Standard H, The Mall; ছাড়াও হোটেল আছে নানান পাতিয়ালায়। আর আছে Baradari Palace G H, অবু: Controller; Civil R H, অবু: DC.



চণ্ডীগড় থেকে সড়ক পথে পাতিয়ালায় দূরত্ব ৬৪ কিমি। বাস আছে। আর কলকাতা থেকে সরাসরি যাত্রার অমৃতসর/জম্মু রেলপথের আখালায় নেমে আখালা-ভাতিটা শাখা রেল পাতিয়ালা যাওয়াই সুবিধার। আখালা ক্যান্ট থেকে দূরত্ব ৫৪ কিমি। ৬-২৫, ৭-৩০, ৯-২৫, ১২-৫০, ১৬-০৫, ১৮-১০, ১৮-২০, ২৩-৫০এ ট্রেন আছে। ঘট্টা সেড়েকের পথ। নিউ দিল্লী-ভাতিটা এক্স, দাদার-অমৃতসর এক্স, কানক-চণ্ডীগড় এক্সও আছে আখালা/পাতিয়ালা হয়ে। আর বাস সংযোগ পড়েছে অমৃতসর, আখালা, চণ্ডীগড় ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিঘলিকের সঙ্গে পাতিয়ালায়।

পাঠানকোট

অমৃতসর-রাউলপুর ট্যুরিস্ট জংশন পাঠানকোট। কিছুকাল আগেও কীলগরের রেলের একশেই চলা সাধ হত। তবে, রেলের ঢাকা

এগিয়ে গেলেও বাসের চল আজও আছে পাঠানকোট থেকে জম্মু। এছাড়া হিমাচল প্রদেশ, উত্তর প্রদেশ ও পাঞ্জাবের দিঘলিকে বাস আছে পাঠানকোট থেকে। ডালহৌসী ৩৬ ঘ, চাষা ৪ ঘ, ধরমশালা ৩ ঘ, কাংড়া, জ্বালামুখী যাত্রীদের পাঠানকোট থেকে বাসে যাওয়াই সুবিধার। মানসী, কুল্লু ও চলা যেতে পারে পাঠানকোট থেকে বাসে। অমৃতসর ও দিল্লীর সঙ্গেও সরাসরি রেল ও বাস সংযোগ রয়েছে পাঠানকোটে। জম্মুর প্রতিটি ট্রেনই পাঠানকোট হয়ে থাকে। রেল আছে জম্মু-তাওয়াই এক্স শিয়ালদহ থেকে পাঠানকোটে। হিমগিরি এক্স পাঠানকোটেরা থামলেও—৩ কিমি আগে চাক্কি নেমে রিকশা, অটো, ট্যাক্সি বা বাসে চলা যেতে পারে পাঠানকোট।

তেমনই টাটা-হাতিয়া-পাঠানকোট এক্স, নিউ দিল্লী-জম্মু শালিমার এক্স, দিল্লী-জম্মু তাওয়াই মেল, পুনে-জম্মু ঝিলাম এক্স, ম্যাঙ্গালোর-জম্মু, চোয়াই-জম্মু, কন্যাকুমারী-জম্মু হিমসাগর এক্স, ফিরোজপুর-জম্মু তাওয়াই এক্স পাঠানকোট হয়ে থাকে। আর পাঠানকোট থেকেই ৩ ঘট্টায় অমৃতসর ২-০৫, ৫-২৫, ৮-৩৫, ১২-০০, ১৫-৪৫, ১৬-৪৫, ১৭-২৫এ; কাংড়া/বৈজনাথ হয়ে যোগীন্দ্রনগর আছে ২-০০, ৯-৪৫এ ছেড়ে ৯ ঘট্টায়; জ্বালামুখী হয়ে বৈজনাথ আছে ৪-৩৫, ৮-৫০, ১৩-০০ ১৬-০০টায় ছেড়ে ৬ ঘট্টায়। জ্বালামুখী আছে ১৭-৪৫ ছাড়াও বৈজনাথের প্রতিটা ট্রেন। তবুও যেন Chakki Bank হয়ে যাতায়াতে ট্রেনের আধিক্য মেলে।

| সামরিক শহর পাঠানকোট। এশিয়ার মধ্যে বৃহত্তম জলবিদ্যুৎ প্রকল্পটিও গড়ে উঠেছে পাঠানকোট থেকে ৫ কিমি দূরে মালিকপুরে। চড়ুই-ভাতির সুন্দর পরিবেশ এই মালিকপুর। পাঠানকোট-জলন্ধর রোডে ৫ কিমি দূরের দামতাল মন্দিরটির পর্যটক আকর্ষণও কম নয়। মন্দিরের দেওয়ালে রামায়ণ ও মহাভারতের কাহিনী উৎকীর্ণ হয়েছে। তেমনই বেড়িয়ে | পাঠানকোট থেকে দূরত্ব | |
|--|----------------------|--|
| অমৃতসর | ১১২ কিমি | |
| জম্মু | ১০৭ " | |
| ডালহৌসী | ৭৮ " | |
| চাষা | ১২৭ " | |
| ধরমশালা | ৮৭ " | |
| জ্বালামুখী | ১২৩ " | |
| মানসী | ২০৮ " | |
| সিমলা | ৩৫৮ " | |
| মানসী | ৩১৮ " | |
| আখালা | ২৮৪ " | |
| চণ্ডীগড় | ২৮৪ " | |
| দিল্লী | ৪৭৬ " | |

নেওয়া যায় ১৩ কিমি উত্তরে সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ১৬ শতকের দুর্গনগরী সাহাপুরকাণ্ডী।



ধাকার জন্য Pathankot, STD-0186, Railway Rd— Tourist H, B/R, DAB ২২৫-৩০০; *Green H, Near Rail & Bus Std, S ২৫০ D ৩৫০ A/c S ৪০০ D ৬০০; H Airlines, Main Bz, R/LB, SAB ১২৫ DAB ২০০-৩০০ A/c S ৪০০ D ৬০০; Imperial, Standard, Embassy ছাড়াও হোটেল আছে নানান পাঠানকোটে। অল্প আছে রেল ও বাস থেকে ১ কিমি দূরে পাহাড়ী টিলায় Punjab Tourism Development Corp-এর *Gulmohar Tourist Bungalow, অবু: Tourist Officer, © 20292; Forest RH, অবু: DFO, Shimla, HP; FWD RH, অবু: E E, B & R Gurudaspur; ছাড়াও রেলের রিটার্নিং কন্স পাঠানকোট।

হিমাচল প্রদেশ

পুরাণ বলে মহাহিমবন্ত, আমরা বলি হিমালয়। কবে কিভাবে এই নামান্তর ঘটেছে সেটা তর্কাতীত। হিমালয় আমাদের কাছে হিমালয়। ভূতত্ত্ববিদরা বলেন—এর বয়স ৬ কোটি বছর। তাঁদের মতে হিমালয়ের ৩ অংশ আজও ভুগর্ভে। এই মহাহিমবন্তের শাখা-প্রশাখার শুরু ব্রহ্মদেশে। চীন, তিব্বত, অসম, বাংলা, নেপাল, কুমায়ুন, পাঞ্জাব, কাশ্মীর, হিন্দুকুশ, আফগানিস্তান হয়ে মধ্যপ্রাচ্যের প্রান্ত পর্যন্ত এর বিস্তার। হিমালয় দৈর্ঘ্যে ৫০০০ মাইল, প্রস্থে কোথাও ৫০০ মাইল কোথাও-বা বেশি।

হিমালয় জাদু জানে। সেই জাদুর আকর্ষণে হাজার-হাজার ভ্রমণার্থী আসেন বছরের পর বছর—প্রতি বছর ভারত তথা সারা বিশ্ব থেকে। পাঁচ ছয়-শ' বছর আগের কথা—পাঠান আর মোগল কালে হাজার-হাজার রাজপুত এসে আশ্রয় নেন হিমালয়ে। কালে কালে তারা স্থানীয়দের হটিয়ে নিজ নিজ বিদ্যা, বুদ্ধি, শৌর্য আর সুশাসনের গুণে গড়ে তোলে ছোট ছোট রাজপুত রাজ্য। প্রত্যেকেই তারা স্বাধীন—প্রত্যেকেই স্বতন্ত্র। তেমনই ৩০টি পাহাড়ী রাজ্য একীভূত হয়ে পাঞ্জাবের পাহাড়ী অংশের সাথে জুড়ে স্বাধীনোন্মত্ত ভারতে ১৯৪৮-এর ১৫ই এপ্রিল কেন্দ্রের শাসনাবধানে গড়ে ওঠে হিমাচল প্রদেশ। ১৯৫১য় 'গ' শ্রেণীভুক্ত হয় হিমাচল। ১৯৫৪য় বিলাসপুরও যুক্ত হয় হিমাচলে। ১৯৫৬য় রাজ্য পুনর্গঠন কমিশনের সুপারিশ—পাঞ্জাবের সঙ্গে হিমাচলের মিলন জনরোষে বাতিল হয়। ১৯৬৬তে ভাবার ভিত্তিতে রাজ্য গড়তে পাঞ্জাব থেকে সিমলা, কাংড়া, কুলু, লাহাঙ্গল ও স্পিতি জেলা ছাড়াও পাহাড়ী এলাকা এসে আয়তন বাড়ায় হিমাচলের।

ভৌগোলিক ও রাজনৈতিক নানান উত্থান-পতনের মাঝ দিয়ে রাজ্যের পুরো মর্যাদা পায় ১৯৭১-এর ২৫শে জানুয়ারি হিমাচল প্রদেশ। আয়তনে চতুর্দশ বৃহত্তম রাজ্য হলেও জনসংখ্যায় ভারতের অষ্টাদশ স্থানে হিমাচল। উত্তরে বোলাধার পর্বতশ্রেণী আর দক্ষিণে শিবালিক পাহাড় অত্যন্ত প্রহরীর মতো পাহারা দিচ্ছে হিমাচল প্রদেশকে। বোলাধার পেরুতেই কাশ্মীর, পশ্চিমে পাঞ্জাব আর পূর্বে মিলেছে গিয়ে চীনের দখলীকৃত তিব্বত। ট্রান্স-হিমালয়ান অঞ্চল লাহাঙ্গল ও স্পিতি সীমানা গড়েছে ভারত ও তিব্বতে।

বিশেষ মানবজাতির বস্তু মনু স্মৃতিতত্ত্বগীতে স্বর্ণ থেকে মর্ত্যে নামেন হিমাচলের মানালীতে। অপরূপা মানালীর হিমসৌন্দর্য ও পাগলপারা করে তোলে পয়টকদের। মানালীর নবতম আকর্ষণ বিশ্বের উন্নততম সড়ক ধরে লে (জুন-অক্টোবর) গমন। তেমনই কুলু ভ্যালির দশেরা দেখতেও পশ্চিম আসেন দেশ-বৈদেশিক থেকে। যেমন ভার

নয়নাভিরাম নৈসর্গিক দৃশ্য ঠিক তেমনই বনজ সম্পদে সমৃদ্ধ এই হিমাচল প্রদেশ। বসন্তে (জুন-সেপ্টেম্বর) হাজারো ফুল ও ফলের সৌরভে আমোদিত হয়ে থাকে কুলু, চাষা, কাংড়া উপত্যকা তথা সারা হিমাচল। প্রকৃতির গড়া চিড়িয়াখানা সারা হিমাচলের গিরিকন্দরে। চেনা-অচেনা নানান পাখি কাকলি শোনায়। তেমনই প্যাহার ও চিতার দর্শন মেলে আরণ্যক হিমাচলে। ব্রাউন বিয়ার, ব্ল্যাক বিয়ার, বরফ চিতার দর্শনও অস্বাভাবিক নয় হিমাচলের বরফ রাজ্যে। আর মৎস্য শিকারীরা ছিপ ফেলে বসে যেতে পারেন ট্রাউট মাছের সন্ধানে। পারমিটের সাথে গাইড লাইনও মেলে মৎস্য শিকারের যে-কোনও Tourist Office থেকে। ইরাবতী, বিপাশা, চম্পভাগা ও শতদ্রুর জন্ম হিমাচলের গিরি-কন্দরে। অতীতে দেবভূমি বলেও সমধিক খ্যাত ছিল আজকের হিমাচল প্রদেশ। আজও শিব, কালী ও বুদ্ধের প্রভাব সারা হিমাচলে বিদ্যমান। ট্রেকারদেরও স্বর্ণরাজ্য হিমাচল প্রদেশ। ৫০০০ মিটারেরও অধিক উচ্চের ১৩৬টি গিরিশিখরের উল্লেখ মেলে হিমাচলের পর্যটন দপ্তরে। ক্ষণে ক্ষণে রূপও বদলায় সূর্য ও চন্দ্রালোকে শিখররাজির। মের মধ্যভাগ থেকে অক্টোবরের মধ্যভাগে ট্রেকাররাও যাচ্ছেন হিমাচলের দিকে দিকে। এমনকি, Mountaineering Institute-এর শাখাও বসেছে হিমাচলের মানালীতে। তেমনই সরকারি ৪৮টি হোটেল ১৮০০ বেড মিলে ১১২২টি হোটেল ২৬৫৪৫ বেডের ব্যবস্থা হিমাচল প্রদেশে।

ধরমশালাতেও শাখা বসেছে মাউন্টেনয়ারিং ইনস্টিটিউটের। আগ্রহীদের উচিত হবে সরাসরি বোগাযোগ করা। তেমনই শীতকালীন মজার খেলা স্কি করতে যাত্রী আসছেন হিমাচলে। কাশ্মীর উপত্যকা আশান্ত হয়ে পড়ায় গুরুত্ব বেড়েছে সিমলা-মানালী-কুলু ভ্যালির।

দেব-মহাছোও হিমাচল অনন্য। দেবাদিদেব মহাদেব কাশ্মীরের অমরনাথ ছেড়ে আশ্রয় নেন হিমাচলের মণিমহেশে। এমনকি, তুবারের শিবলিঙ্গও আবিষ্কৃত হয়েছে হিমাচলের সোলাং উপত্যকায়। চাষার কার্ভিং-এর কাজে সমৃদ্ধ দারু নির্মিত নানান মন্দির, সতীপীঠের অন্যতম ছালামুখী, কুলুর দশেরা উৎসব, স্নিগ্ধালসরের পৌরাণিক আখ্যান ময়ূরান করে তুলেছে হিমাচলকে।

ব্রহ্মগেজ বা মিটারগেজ রেলের অভাবে ন্যারোগেজ রেল পৌঁছেছে হিমাচলের পাহাড়ে। কালকা থেকে সিমলা ও পাঠানকেই থেকে বোগানবনগর যাচ্ছে জৈনপুর জেলা। পাহাড় হুঁড়েটানেল গলে ট্রেন চলে—পতি তার ধীরে, সন্মরে, আর্থিক লাগে; তবে রোমান্স আছে এই পাহাড়ী রেলের। সাধারণ সার্ভিস বাসেরও চলায় কেমন কেমন রথ গতি।

যাত্রীর আধিক্যে সদাই দুরাহ ভিড়। তবে, হিমাচল পর্বতনের বাসে ভাড়াই আধিক্য লাগলেও যাত্রা সুখকর। আর মেলে টাক্সি রাজ্য ছুড়ে সর্বত্র।

হিমাচল প্রদেশ □ রাজধানী: সিমলা। আয়তন: ৫৫৬৭৩ বর্গ কিমি। লোকসংখ্যা: ৫১১১০৭৯। ভারতের লোকসংখ্যার হারে: ০.৬০%। পুরুষ: ২৫৬০৮৯৪। নারী: ২৫৫০১৮৫। ১৯৮১-৯১এ লোকসংখ্যা বৃদ্ধি: ৮৩০২৬১। বৃদ্ধির হার: ১৯.৩৯%। প্রতি বর্গ কিমিতে বাস: ৯২। প্রতি ১০০০ পুরুষে নারী: ৯৯৬। সাক্ষরের হার: ৬৩.৫৪%। প্রধান ভাষা: হিন্দি; সঙ্গে চলে পাহাড়ী, পাঞ্জাবি ও ইংরেজি। মাথাপিছু বাৎসরিক আয়: ৪০০৫.০০ টাকা (১৯৮৯-৯০)।

পুরো রাজ্যটাই পাহাড়ী—এলাকাভেদে ৪৬০ থেকে ৬৬০০ মিটারে অবস্থান। বেড়াবার মরসুম—এপ্রিল থেকে অক্টোবর মাস। আর নভেম্বর থেকে মার্চ মাস ছুড়ে শীতকাল। বরফের চাদর মুড়ি দেয় হিমাচল। তাপমান থাকে ১৮.৩৩ থেকে ৫.৫৫° সেন্টিগ্রেডে। তবে সিমলা, মানালী বা আরও উচ্চ তাপমান নামে ০ ডিগ্রিরও অনেক নিচে অহরহ। কুহকী সিমলার মোহিনী রূপ দেখতে ছুটে চলেন পর্যটকরা। তবে, যথেষ্ট গরম বস্ত্র সঙ্গে নেওয়া দরকার। বসন্ত আর গ্রীষ্মে সাধারণ উলেন চললেও শরতে ওভারকোট দরকার হয়ে পড়ে সিমলা ও মানালী পাহাড়ে। গ্রীষ্মে তাপমান থাকে ৩২ থেকে ১১° সেন্টিগ্রেডে।

হিমাচলকেও টুকরো করে বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। উচিত হবে দিল্লী-পাঞ্জাব-চণ্ডীগড়-জম্মু-বৈকোদেবী মিলে-মিশে ২ ভাগে বেড়িয়ে নেওয়া। তেমনই মণিমহেশ উচিত হবে স্বতন্ত্রভাবে বেড়িয়ে নেওয়া।

প্রথম ট্যুর: দিল্লী ২ চণ্ডীগড় ১ ভাকরা ১ সিমলা ৩ কিন্নর দেশ ৩ কুল ১ কাতরেইন-নগর ১ মানালী ৩ ধরমশালা ২ পথ চলতে ৪ দিন অর্থাৎ ২১ দিনে বেড়িয়ে আসুন। দ্বিতীয় ট্যুর: অমৃতসর ২ ডালহৌসি ২ চান্না ১ পাঠানকোট ১ জম্মু ১ বৈকোদেবী ২ পথ চলায় ৫ দিন। তেমনই উচিত হবে ত্রয়োদশ সপ্তকে ৭ দিনে ছুড়ে নিয়ে ভূবর্গ বেড়িয়ে ফেরা।

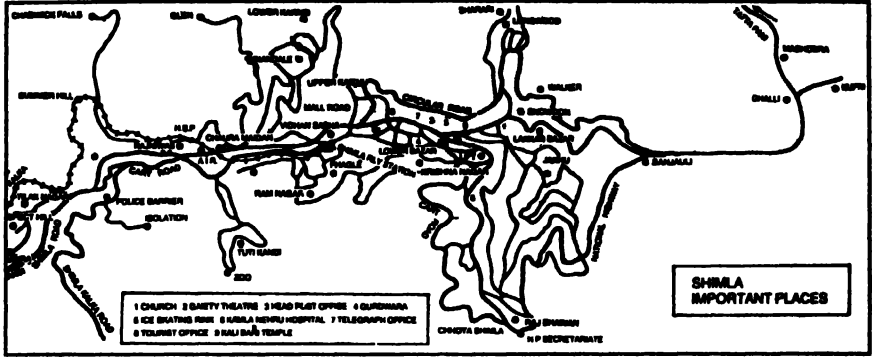
সিমলা

২২১৩ মি উচ্চতায় সুন্দর পাহাড়ী শহর হিমাচল প্রদেশের রাজধানী সিমলা। ভ্রমণার্থীদের কাছে পাহাড়ের রানী সিমলার আকর্ষণ অনবীকার্য। শান্ত-সুন্দর শুষ্ক বাতাস এর আকাশে। হিমাচলের উত্তর-পশ্চিমে ১২ কিমি প্রশস্ত অর্ধ-চন্দ্রাকার এক শৈলশিরায় সিমলা শহর। ঊনবিংশ শতকের প্রথম—নেপালের মহারাজার অধীনে সিমলা তখন। ১৮১৪র গোষ্ঠা যুদ্ধে ব্রিটিশের কাছে নেপালের পরাজয় আর যুদ্ধে সহযোগিতার সুবাদে ভেটপেলেন পাতিয়ালাব মহারাজা সিমলা। আর ১৮১৯এ যুদ্ধক্ষেত্রত ব্রিটিশ সৈনিকদের আবিস্কার সিমলা পাহাড়। প্রথম বাড়িও তোলেন মেজর কেনেডি ১৮২২এ সিমলা পাহাড়ে। ১৮২৮এ ব্রিটিশেরই হাতে স্যানাটোরিয়াম রূপে শহরের পত্তন। সম্ভ্রতি সরকারি দপ্তর বসলেও প্রথম গভর্নর জেনারেল লর্ড বেস্টঙ্ক ১৮৩২এ সিমলায় এসে ১টি গ্রীষ্ম কাটান কেনেডি হাউসে। আর সমতলে গ্রীষ্মের দাবদাহ থেকে অব্যাহতি পেতে ব্রিটিশও এসেছে সেদিনের পাঞ্জাব হেডে। সিমলার জলহাওয়ায় মাঝে নিজন বাসভূমির আদল খুঁজে পায় ব্রিটিশ। ১৮৬৪তে গ্রীষ্মকালীন রাজধানীও বসে ব্রিটিশ রাজের জুয়েল অব দি ক্রাউন—সিমলায়। ব্রিটিশের অবর্তমানে অতীতের সিমলা পাহাড় আজ যেন বিষাদগ্রস্ত। তবে বাড়িঘরে, রাস্তাঘাটে আজও যেন ব্রিটিশের পরশ মেলে।

অতীতে ব্রিটিশের গড়া টিউডর ও জর্জিয়ান শৈলীর কটেজধর্মী বাড়িগুলির পাশে নতুন করে প্রাসাদোপম অট্টালিকা গড়ে উঠেছে সিমলায়। ফার্স, গুরু, দেবদারু আর পাইনে ছাওয়া সবুজের সমারোহও বেশি সিমলা পাহাড়ে। সিমলার আর এক আকর্ষণ তার লিলি, রডোডেনড্রন ও নাম-না-জানা পাহাড়ী ফুলের সমারোহ। ডিসেম্বরের শেষে বরফ দেখতেও পর্যটকদের ভিড় পড়ে সিমলায়। সারা বছর ধরে পর্যটক সমাগম ঘটলেও বেড়াবার মরসুম মে থেকে অক্টোবর মাস। তবে, জুলাই-আগস্টের বৃষ্টি এড়িয়ে চলা উচিত হবে সিমলা পাহাড়ে। তবুও যেন দার্জিলিং বা শিলঙের মতো বিয় ঘটায় না সিমলা পাহাড়ের বৃষ্টি।



হাওড়া থেকে ১৯-১৫য় ছেড়ে ২৩১১ কালকা মেল দিল্লী জং পৌঁছায় পরদিন ১৯-৫০এ। আর, ২২-৪৫এ দিল্লী জং ছেড়ে পরদিন সকাল ৫-০০টার কালকা যাত্রে কালকা মেল। আর কালকা থেকে ন্যারোগঞ্জের পাহাড়ী রেল ৪-০০ প্যা, ৫-৩০এ সুপার ফাস্ট, ৬-২০এ মেল, ৭-০০টায় এক্স, ১১-২০এ প্রথম শ্রেণীর যাত্রী নিয়ে রেল মেটর, ১১-৪০এ এক্স, ১২-১০এ এক্স বারোগ/সোলন হয়ে সিমলা পৌঁছায় বধ্যাক্ষমে ৯-২০, ১০-২৫, ১১-৩০, ১২-৩০, ১৫-৪৫, ১৬-৫৫, ১৮-৫০এ। কলকাতা থেকে দূরত্ব ১৮০৫ কিমি, সময় নেয় ৪১½ ঘণ্টা। বাসও টাক্সিও আছে ৮৫৮মি উচ্চ কালকা থেকে ৯৬ কিমি দূরের সিমলায়। হোটেলও আছে নানান কালকার। আর



আছে কালকা থেকে ৬, চণ্ডীগড়ের ৩০ কিমি দূরে কালকা-সিমলা পথে পরওয়ানা। অভিযান-শ্রমিকের উচিত হবে ৭৫ টাকার যাতায়াতে কেবল কাব-এ খাড়া পাহাড় চড়ে টিষাব ট্রেল বেড়িয়ে নেওয়া। ৮ মিনিটের এই কোপওয়ে চড়া বোমালো ভরা। থাকাবও নানান ব্যবস্থা Parwanoo, HP-173220, STD 01792-এ। HPTDC-র H Shivalik, D 32295, DAB ৫৫০ ৬৫০ ৮০০ ১০০০ সুইট ১৪০০; *Timber Trail Resort, DAB ১২৫০ ১৫০০; সুইট ১৮০০; Windmoor, D ৪৫০ ৫৫০ ৬৫০; *Timber Trail Heights, মান ও দামে রিসর্ট তুল। কালকাতোও রেলের রিটার্নিং রুম ও হোটেল মেলে থাকার।

১৯০০র নভেম্বরে তৈরি কালকা থেকে সিমলা ন্যারোগেজ রেল। ৬৫৮মি থেকে ২০৭৫ মিটারে ৯৬ কিমি দীর্ঘ পথে ট্রেন চলেছে কালকা থেকে সিমলা পাহাড়ে। ২০টি রেল স্টেশন এপথে। ৮৬৯টি সেতুতে নদী-নালা-ঝোরা পেরুচ্ছে রেল। আঁকাবাঁকা পাহাড়ী পথ, পাহাড় কেটে রেল চলেছে—১০৩টি টানেল পেরুতে হয় এপথে। ১৫৩১মি উচ্চে বারোংগে ৩০ নম্বর টানেলে দীর্ঘতম (1143.61m)। পথশোভা যমোদ্য। ট্রেনে রোমঞ্চ থাকলেও সময় ও ভাড়ায় সাশ্রয় মেলে বাসে (৩২ ঘণ্টায়)। বাসও যাচ্ছে রেল স্টেশনকে পিছে রেখে ১২কিমি এগিয়ে কার্ট রোডে।

নতুন দিল্লী থেকে ৬-০০টার 4096 হিমালয়ান কুইন, ১৭-১৫য় 2005 শতাব্দী এক্স আখালা/চণ্ডীগড় হয়ে ২৩৮ কিমি দূরের কালকা আসছে যথাক্রমে ১১-০৫ ও ২১-০০টার। আবার হাওড়া থেকে 256 দিন ২৩-০০টার 3073 হিমগিরি সুপার এক্স পরের পরদিন ৫-৩২এ আখালা ক্যান্ট পৌঁছে আখালা থেকে বাসে সিমলা পাহাড় চলা যেতে পারে। বাসী/ কালকা হয়ে ৫ ঘণ্টায় নানানধর্মী বাস যাচ্ছে ১৫১ কিমি দূরের সিমলায়। HPTDC-র বাসও সিমলা যাচ্ছে আখালা থেকে। আর এ-পথে কলকাতার দূরত্ব ১৫৮৩ + ১৫১ = ১৭৩৪ কিমি, সময় নেয় ৩৫২ ঘণ্টা। এছাড়াও কলকাতা ছাড়া—শ্রীলঙ্ক-জম্মু ভাওয়ালি ২২-৫৫, হাওড়া-অমৃতসর মেল ৪-১৫, হাওড়া-অমৃতসর এক্স ৩-২০এ বৌদায় আখালায়। এমনকি ট্রেন আসছে সারা ভারত থেকে নতুন দিল্লী হয়ে ১৯৮ কিমি দূরের আখালায়। ছত্তিশগড়/টান-অমৃতসর এক্স এক্সপ্রেস/কানপুর হয়ে, কল্যাণ-আখালা এক্স, ইন্ডোর-অমৃতসর এক্স, বরানসি-অমৃতসর এক্স, দাদার-অমৃতসর এক্স, মুম্বই থেকে আসা পশ্চিম এক্স, মুম্বই-অমৃতসর পোন্ডেন ট্রেনাল মেল, পুনে-জম্মু

বিলাম এক্স, বিলাসপুর্ব থেকে আসা ছত্তিশগড় এক্স, 1256 দিন মুম্বাই-জম্মু ভাওয়ালি এক্স, নিউ দিল্লী-অমৃতসর এক্স, নিউ দিল্লী-লুধিয়ানা এক্স, নিউ দিল্লী-ভাতিগা এক্স নতুন দিল্লী/আখালা ক্যান্ট হয়ে যাচ্ছে। এছাড়াও ট্রেন যাচ্ছে দিল্লী জং থেকে ১২-১০এ ফ্লাইং মেল, ২৩-২০এ হিমাচল এক্স, যথাক্রমে ১৫-৩০ ও ৩-০৫এ আখালা ক্যান্ট পৌঁছে অমৃতসর/উনা। দিল্লী জং থেকে ২১-১০এ ছাড়া জম্মু ভাওয়ালি মেল ০৫-৫এ আখালায়; ১৬-১০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ২১-৫০এ আখালা পৌঁছে জম্মু যাচ্ছে শালিমার এক্স, ৬-৫০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে ৯-৪০এ আখালা পৌঁছে অমৃতসর যাচ্ছে ১৩-৪৫এ শানে পাঞ্জাব। আর যাচ্ছে নতুন দিল্লী থেকে ৭-৩০এ 2011 চণ্ডীগড় শতাব্দী এক্স, ১৭-১৫য় 2005 কালকা শতাব্দী এক্স যথাক্রমে ৯-৫০/১৯-৩০এ আখালা ক্যান্ট পৌঁছে চণ্ডীগড়/কালকায়। আখালা থেকে বাসে সিমলায়।

তেমনই ফেব্রার পথে ৯-৫৫, ১১-০০, ১২-১০, ১৪-৩০, ১৬-০০, ১৭-৪৫, ১৮-০০টার সিমলা থেকে কালকা যাচ্ছে ট্রেন। কলকাতা যাত্রায় ১৭-৪৫ বা ১৮-০০টার মেলে সিমলা ছেড়ে যথাক্রমে ২২-৪০/২৩-১০এ কালকা পৌঁছে ২৩-৩০এ কালকা-দিল্লী জং-হাওড়া মেলে (৬-২৫এ দিল্লী জং পৌঁছে); দিল্লী যাত্রায় ১১-০০টার এক্স বা ১২-১০এর রেল মোটরে ১৬-১০/১৬-৩০এ কালকা পৌঁছে ১৬-৫৫য় কালকা ছাড়া হিমালয়ান কুইন এক্স ২২-১৫য় নিউ দিল্লী চলা যেতে পারে। আর শতাব্দী এক্স যাচ্ছে ৬-০০টার কালকা ছেড়ে ৯-৫০এ নতুন দিল্লী। তবুও যেন বাসে চণ্ডীগড় বা আখালা পৌঁছে দিল্লী চলায় ট্রেনের আর্থিক মেলে।

আর বাস যাচ্ছে জম্মু, হরিদ্বার, দেয়াদুন, চাষা, ডালহৌসি, পাঠানকোট, ধরমশালা, কুল, মানালী, কোং, টাপরী ছাড়াও রাঞ্চ ও প্রতিবেশী রাইয়ের নিকে-নিকে সিমলা থেকে। সিটি বাসও চলেছে কার্ট রোড বাস স্ট্যাও থেকে শহরে। তবুও কেন জাতিকর চড়াই থেকে অব্যাহতি পেতে বাস স্টাডের সামান্য পূর্ব থেকে Tourist Lift সেং ম্যালে চড়া উচিত হবে।

আর ধরমশালা HPTDC-র A/c কোচ দিল্লীর জনপথ থেকে প্রতিদিন সকাল ৮-০০টার ছেড়ে ১০ ঘণ্টায় ৪০০ টরার ৩৫৪ কিমি দূরের সিমলা যাচ্ছে। আনালী যাচ্ছে প্রতিদিন ১৮-০০টার ছেড়ে ১৩ ঘণ্টায় A/c Video ৬৫০, Non A/c পার্সারি কোচ প্রতিদিন ৬-০০টার ছেড়ে ১৩ ঘণ্টায় ৪৫০ টরার। তেরেও এর

সিমলা ও মানালী থেকে প্রতিদিন। চণ্ডীগড় হয়ে যাচ্ছে এই বাস। আর চণ্ডীগড় থেকে মানালী যাচ্ছে প্রতিদিন সকাল ৮-০০টায় ছেড়ে ১০ ঘটায় ২৮০ টাকায়। দিল্লী থেকে চণ্ডীগড় যাচ্ছে ১৭৫ টাকায়; চণ্ডীগড় থেকে সিমলা যাচ্ছে ১০০ টাকায়। মানালী থেকে সিমলা যাচ্ছে প্রতিদিন সকাল ৮-০০টায় ছেড়ে ৯ ঘটায় ২৭৫ টাকায়; ফেরেও এরা একইভাবে। বৃকিং: দিল্লী—HPTDC, Chanderlok, 36 Janpath, ND-1, 3325320; মুম্বাই—World Trade Centre, Cuffe Parade, 2181123; চেন্নাই—28 Commander-in-Chief Rd, 8272966; চণ্ডীগড়—SCO 1048-49, Sector 22-B, 43569; সিমলা—Central Reservation Office, Hotel Holiday Home, 78302, Fax (0177) 3887; কলকাতা—HP Tourism, 1/1A, Biplabi Anukul Chandra St, Cal-72, 271792.

| সিমলা থেকে বাসে | | | |
|-----------------|----------|------|-------|
| গন্তব্য | দূরত্ব | সময় | নেয় |
| দিল্লী | ৩৫৪ কিমি | ১০ | ঘণ্টা |
| চণ্ডীগড় | ১১৭ " | ৪½ | " |
| মাণ্ডী | ১৫০ " | ৭ | " |
| কুলু | ২২০ " | ১০ | " |
| মানালী | ২৬০ " | ১১½ | " |
| কালকা | ৯০ " | ৩½ | " |
| দেরাদুন | ২৪৩ " | ১১ | " |
| হরিদ্বার | ৩১০ " | ১২ | " |
| কাসৌলী | ৮০ " | ৩ | " |
| বিলাসপুর | ৮১ " | ৩½ | " |
| ধরমশালা | ২৯৩ " | ১১ | " |
| আখালা | ১৫১ " | ৫ | " |
| টাগুরী | ১৯৮ " | ১০ | " |

রামিকালীন সার্ভিসেও বাস যাচ্ছে দিল্লী থেকে প্রতিদিন ১৮-০০টায় ছেড়ে ১৬ ঘটায় ৫৫০ টাকায় মানালী; সিমলা যাচ্ছে প্রতিদিন ২১-০০টায় ছেড়ে ১০ ঘটায় ২৮০ টাকায়; মানালী থেকে সিমলা যাচ্ছে প্রতিদিন ২০-৩০টায় ছেড়ে ৯ ঘটায় ২৮০ টাকায়; ফেরেও এরা নিয়মিত একইভাবে। এছাড়াও বাস যাচ্ছে দিল্লীর কারোলবাগ ও কান্দীরি গেট থেকে সিমলায়।

এমনকি লাক্সারি ট্যুরিস্ট ট্যাক্সিও যাচ্ছে দিল্লীর জনপথ থেকে সিমলা (৩০০০) ও মানালী (৪০০০) পাহাড়ে। আর দিল্লীর কান্দীরি গেট ইন্টার স্টেট বাস টার্মিনাস থেকে সারা রহুর Himachal Road Transport Corp (HRTC)-র বাস যাচ্ছে মানালী ও সিমলায়। আর ডালহৌসি যাচ্ছে পাঠানকোট থেকে HPTDC-র লাক্সারি বাস সকাল ৭-৩০টায় HRTC-র যাত্রীবাসও চলে এগণ পরিক্রমায়।



আর সিমলার নিকটতম বিমানবন্দর শহর থেকে ২৩ কিমি দূরে Jubbarhati. বায়ুযুক্ত সার্ভিস গড়েছে ১ ঘ. ১০ মিনিটে রবিবার ছাড়া প্রতিদিন দিল্লী-সিমলার মাঝে। আর ১.৩.৫ মিন সিমলা থেকেই রাষ্ট্রসেবক বিমান যাচ্ছে ধরমশালা হয়ে কুলু। ফেরেও এরা একই নিয়মিত একইভাবে। তবে সাময়িক সার্ভিস বন্ধ এসের। আর Jagson Airlines, 4 The Mall মাসাণ্ডাহিক সার্ভিস গড়েছে

সিমলা-দিল্লীর মাঝে। Archana Airways Ltd 252561-9 সার্ভিস গড়েছে দিল্লী-সিমলার মাঝে। এসের দিল্লী অফিস : 41A, Friends Colony (E), Mathura Rd, ND, 6842001-এ। আর IAC-র সার্ভিস মেলে ১০৭ কিমি দূরের চণ্ডীগড় থেকে। ৪ ঘটায় বাস ও ৩½ ঘটায় ট্যাক্সি দুই-ই যাচ্ছে চণ্ডীগড় থেকে সিমলায়। হিমাচল যাত্রায়ে চণ্ডীগড় থেকে বাসে চলায় সুবিধাও বটে। বাসও যাচ্ছে চণ্ডীগড় থেকে—সিমলা, মানালী, ধরমশালা ছাড়াও হিমাচলের দিকে দিকে।

কনডাক্টেড টুর : হিমাচল রোড ট্রান্সপোর্ট করপোরেশন ও HPTDC আয়োজিত কনডাক্টেড টুরে অংশ নিয়ে সিমলা পাহাড় দেখে নেওয়া যায়। ১০—১৭-০০টায় অগ্রিম বৃকিং : Tourist Information Office, The Mall, Shimla, 78311-এ।

Tour No 1 : প্রতিদিন যাচ্ছে ১০—১৬-০০টায় ১২০ টাকায় ৮৫ কিমি পরিক্রমায় Wild Flower Hall, Kufri, Indira Holiday Home, Fagu, Mashobra, Naldehra ; ৫ যাত্রীর গাড়ি ৭৫০।

T No 2 : প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায় ১২৫ টাকায় (১৩০ কিমি) Narkanda, Fagu, Matiana, Theog বেড়িয়ে আনে; গাড়ি ৭৫০।

T No 3 : Chail যাচ্ছে ১২৫টাকায় (১২০ কিমি) মরসুমে প্রতিদিন ১০—১৭-০০টায়; গাড়ি ৭৫০।

T No 4 : মরসুমে ১০—১৭-০০টায় ১২৫ টাকায় Naldehra/Taptapani (১১০ কিমি) যাচ্ছে HPTDC. ট্যুরিস্ট অফিসের পিছন থেকে পথ নেমেছে বাস স্ট্যান্ডের। Tourist Lift-ও চলেছে ম্যাল থেকে কার্ট রোড বাস স্ট্যান্ডে। Rivoli Cinema-র নিচু থেকে বাস ছাড়ে HRTC-র। তবে, ট্যুরিস্ট অফিস থেকে আধঘণ্টা আগেই টিকিট বাস নম্বর নিতে ভুলবেন না। আবার, কালকা-সিমলা ট্যাক্সি অপারেটরস ইউনিয়ন, সিমলা 782225, কালকা 2963; হিমাচল ট্যাক্সি অপারেটরস ইউনিয়ন; Span Tours & Travels, Mall, 201360 ছাড়াও নানান সংস্থা মারুতি ভ্যানে যাত্রী নিয়ে যাচ্ছে সিমলা পাহাড় দেখাতে।

সিমলা কালীবাড়ি : সিমলায় পৌঁছে কুলির পিঠে জিনিস চাপিয়ে বাঙালির পীঠস্থান কালীবাড়িতে পৌঁছান। তরা সিন্জন না হলে জায়গা পেয়ে যাবেন। তবুও, The Secretary, Kalibari, Shimla, H.P., 72964-কে একদিনের টাকা অগ্রিম পাঠিয়ে বুক করে যাওয়া উচিত হবে। সর্বাধিক ১০ দিন থাকা যায়। বাঙালিয়ার স্বাদ পেতে আপনিও কালীবাড়িতেই জায়গা নিন। শ্যামলা দেবীর পূজা হয় মন্দিরে। এই দেবীর নাম থেকেই পাহাড়ের নাম হয়েছে সিমলা। আর আছেন জরপুর থেকে আনা কালী ও দেবী চণ্ডী। সিমলার একমাত্র দুর্গাপূজাও হয় এই কালীবাড়িতে। লাইব্রেরিও আছে কালীবাড়িতে। বাস স্ট্যান্ডের শিরে ম্যাল লাগেয়া এই কালীবাড়ি। বাথ সলং বিছানাসহ ৪ জন থাকার ঘর ৫০, ৩ জন থাকার ঘর কমনবাথের বিছানা ছাড়া এমন ঘর অর্থাৎ সেটের ভাড়া ৩০; ডব্লিউতে ৯; সিন্ডর আহার্য পুষ্ক মূল্যে—বিল ৯ হারে। বিছানাও ভাড়া মেনে ১২ করে।



সিমলা পাহাড় পিকনিকের জন্য—হোটেলও হয়েছে তাই বিভিন্ন মানের বিবিধ দামের। মরসুম এদের এপ্রিল থেকে অক্টোবর হলেও তাপমানের সাথে সাথে রোটও ওঠানামা করে। আর জুন থেকে সেপ্টেম্বর পিক সিজনে সিমলা পাহাড়ে। রোটও ওঠে পিকের শিরে পিক সিজনে। এমনকি ঘর পাওয়াও দুষ্কর হয়ে পড়ে পিক সিজনে সিমলা পাহাড়ে। বছরের বাকি সময়টা অফ-সিজনে—রিটেট মেনে রোট। তবুও যেন ম্যালের হোটেল রোটের আধিক্য; তাই ম্যাল থেকে সরে হোটেল দেখা যেতে পারে সিমলা পাহাড়ে।

রেল স্টেশন থেকে ২ আর বাস থেকে ১১কিমি দূরে The Mall, Shimla-171004, STD-0177এ—টিউডরি শৈলীর বাড়িতে *H Oberoi Clarkes, @ 212991, AP-D ৩৫০০-৪০০০, কল বুকিং: Span @ 2801209; *H Oberoi Cecil, DAB ৩৫০০-৪২৫০, কল বুকিং: Span @ 2801209; শহরান্তে পাইনে ছাওয়া মনোরম পরিবেশে সিমলার অন্যতম Woodville Palace Resorts, @ 775139, R4B1.5, D ২০০০-৩০০০ সুইট ৩০০০-৪৫০০, কল বুকিং: Span @ 2801209; H Pulace Shimla, D ৩৫০ ৪৫০ ৫৫০ ৬৭৫ ৭৭৫ ৯৫০, কল বুকিং: Span @ 2801209; H White, A20R2, DAB ৪৫০-৬৫০ সুইট ৮০০-১০০০; H Samrat, @ 78572, DAB ৬০০-১২৫০ সুইট ১৫০০-২০০০। ম্যালের উত্তর-পূর্বে চার্চের সামনে—H Diplomat, S ২২৫-৩৫০ D ৩৫০-৫৫০; H Garmon, @ 201664, DAB ৪০০-৬৫০; H Ashoka, Ridge, D ৪৫০ ৫০০ ৬০০ সুইট ৭০০, কল বুকিং: Span @ 2801209; H Masonic G H, opp Ritz Cinema; H Bridge View; H Dalziel, Shimla-3, D ৩৫০-৫৫০ চার বেডের সুইট ৬০০-৮৫০, কল বুকিং: Diamond @ 276714/Linkage @ 2465171; Classic Inn, D ২৭৫-৪০০; ম্যালের পূর্বে H Shingar, D ১২৫০-২০০০, কল বুকিং: ডায়মন্ড @ 276714; H Shingar Residency, D ১০৫০ ১২৫০ ২০০০, কল বুকিং: Span @ 2801209, H Prashant, D ৩২৫-৪৫০; H Uphar, S ১০০-২২৫ D ২০০-৩২৫। ম্যালের উত্তরে Victory Tunnel-এর উপরে H Tashkent, SAB ২০০, DAB ৩৫০; H Mayur, S ২২৫ D ৩০০-৫৫০; পাশেই H Ridge View, DAB ৪০০ ৪৫০ ৫৫০; H Kwality, opp Lift, D ৩৫০-৬০০; H Marina, @ 77848, D ৩০০-৪৫০ সুইট ৬০০-৮৫০। অশোকার গণ্ডে পাহাড় চড়তে H Dream Land, D ৪০০-৭০০, কল বুকিং: Span @ 2801209; H Doyal, H Cosmos, D ৩২৫-৫০০; Green H, D ২২৫-৩০০; Balajee's H, D ৩৫০-৪৫০; Minerva H, D ৩০০; Rock Sea H, S ১৫০ D ২৫০; Everest H, D ২০০-৩৫০; Sangeet H @ 202506, D ৪৫০-৬৫০ সুইট ১০০০; H Honey Moon Inn, D ৮৫০ ১০৫০, কল বুকিং: Trimurti @ 2388678/ Span @ 2801209/Linkage @ 2465171; New Bridge View H, D ৩০০-৪৫০; Combermere H, opp Tourism Lift, @ 205080, D ১৭০০-২৩৯০; Pent House ৪৭৫০, কল বুকিং: Span @ 2801209/ Diamond @ 276714; Malhotra's, Prestige, Roxy, Continental; H Parsha, Choudi Malinda-4, R4B4, D ৫৫০-৯৮০, কল বুকিং: Span @ 2801209; H Pinewoods, Mythe Estate-3, R1B1, @ 201075, D ৬০০-১২৫০ সুইট ১৫০০-

১৭৫০; H East Bourne, Khalini-2, R5B4, @ 201234, D ১৭০০-২০০০ সুইট ২৩৯০-৩০০০, কল বুকিং: Span @ 2801209/Linkage @ 2465171; Alpine Heritage Inn, D ১২০০-১৫০০ সুইট ২৩০০, কল বুকিং: @ 2801209/ 276714.

Cart Rd-এ—H Vikrant, SCB ১৫০ DCB ২৫০ DAB ২২৫-৩৫০ FAB ৩৫০-৪৫০ ডরিতে ৫০; H Victory, @ 72600, D ৪৫০-৭৫০, কল বুকিং: Linkage @ 2465171/ Diamond @ 276714; H Thakur, Bus Std, @ 77545, S ১৫০-২২৫ D ২৫০-৩২৫ T ৩০০-৪২৫ সুইট ৩৫০-৪৫০; H Malabar, H Basant, D ২০০-৩০০, কল বুকিং: Linkage @ 2465171; H High Way L, গলিগণ্ডে Dosjah GH, এদের কাছে DCB ১৭৫-২২৫ টাকার মেলে।

Circular Rd-এ—*Himland H West, @ 277312, DAB ৭৫০-১২৫০ সুইট ১৫০০; H Himland East, @ 222901, DAB ৬৫০-১০০০, কল বুকিং: @ 2801209; H Surya, @ 78191, DAB ৫০০ ৬০০ ৮০০ ১০৯০, কল বুকিং: ডায়মন্ড, @ 276714/ Span @ 2801209; H Crystal Palace, near Tourism Lift, @ 77588, D ৪৫০-৮৫০ সুইট ১০০০; H Willows, DAB ২২৫; H Lords Grey, D ৬০০-৮৫০ সুইট ১০০০; Taraview H, D ৪২৫; H Capital, The Mall-3, D ৪০০-৬৫০ FR ৪৫০-৬৫০ ডরিতে ৫০।

Lakker Bazar-এ—H Auckland, S ৩০০ D ৪৫০-৬০০; H Chanakya, S ২০০-৩২৫ D ২৭৫-৪২৫ সুইট ৪৫০-৬৫০; Sharada H, D ৩৫০; Chapslee H, AP-D ৮৫০-৩৫০০; H Flora, D ৩২৫-৪৫০।

Bus Stand-এ—H Sun-N-Snow, D ৩২০ ৩৫০ T ৪২৫ F ৪৫০, কল বুকিং: Diamond @ 276714/Linkage @ 2465171; H Nagson, D ৩২৫ ৩৭৫ ৪৫০, কল বুকিং: Hindusthan @ 274893; H Bright Land, DAB ৩০০ ৪৫০ ৫০০ ৬০০ সুইট ৭০০-৯০০, কল বুকিং: Span @ 2801209/ Diamond @ 276714/Linkage @ 2465171; H Gulmarg Regency, The Mall-3, @ 253168, DAB ৬৫০ ৮৫০ ৯৫০ সুইট ১০৫০-১২৫০, কল বুকিং: @ 2801209 বা 276714; New Gulmarg H, D ৩০০ ৪৫০ ৫৫০, কল বুকিং: @ 276714/ 2801209/2465171; Apsara H, D ৩২৫; Anand H, Mathura H, Himachal H, Highway L, H Broadview, Sanjauli-6, D ৩০০-৪৫০; Sheel H, near Kalibari, D ৩২৫-৪৫০; *H Asia The Dawn, Ghora Chowk-1, Tara Devi-10, @ 221162, R4B4, D ১১০০-১৭০০ সুইট ১৮০০-২২০০, কল বুকিং: Span @ 2801209/Diamond @ 276714.

Jakhoo-তে—Palaise H, D ২২৫-৪৫০; H Amar Palace, D ৩৫০-৬০০; Unique H, near Revoli Cinema, D ৩২৫-৪৭৫; Simla G H, D ২৫০-৩২৫; H Ganga, D ৩০০-৪৫০; H Alakananda, D ৪৫০; Hilltop H, D ৩৫০-৭৫০; Sunny Perch H, near Ritz Cinema, D ৩০০-৫৫০; Harbana H, near Rivoli Cinema, D ৩২৫-৪৫০; Bawa H, near A G Office, S ২৫০-৩২৫ D ৪৫০-৬৫০; City Haat H, D ৩২৫; Hill Star H, D ৩০০; Brakes H, D ১৭৫-২৫০; Puneet H, below Ridge, D ২০০-২৭৫; Crystal Pul-

ace H, Circular Rd, 72062, near Tourism Lift, DAB ৬০০-৮৫০, কল বুকিং: Diamond 276714; New Malook, Middle Bzr, D ৩২৫-৪৫০।

আর আছে অতি সাধারণ সাজে Lower Bazar-এ—Pishori, Krishna, Luxmi; Middle Bzr-এ—Metro, Rajindra, Vijay, Poonam, National; Ram Bzr-এ—H Amber, opp UCO Bank, D ৪০০-৬৫০ সুইট ৬৫০-৮০০; Sharma, Phaguli, Kumar GH; এদের রেট \$ ৮০-১৭৫ D ১৫০-৩২৫। অগ্রিম বুকিং-এর জন্য Manager-দের লিখুন।

এছাড়া মূলত কেন্দ্রীয় সরকারের কর্মীদের জন্য হলেও রাজ্য সরকার ও ব্যাক কর্মীদেরও ঘর মেলে ম্যাল থেকে কালীবাড়ির পথে Grand H-এ। তবে ঘরের ভাড়াই ভারতীয় ঘটে। বুকিং: State Manager, Grand Hotel, Shimla-171001, 72587 থেকে। ম্যাল থেকে ১০ মিনিটের পথে HPTDC-র H Holiday Home, Cart Rd, 212890, DAB ৪৫০ ৭০০ ৮৫০ ১৫০০ ১৬৫০ ২৩০০ চার বেডের সুইট ৪০০০ (ব্রেক ফাস্ট-সহ); H Megh Doot, DAB ৮০০ ৯৫০ সুইট ২০০০; Govt GH, DAB ২৫০-৪২৫; অব্: Area Manager, Shimla-171001 বা কল বুকিং: Span 2801209 বা Diamond 276714. চার্জের শিরে YMCA, Ritz Cinema, 72375, DCB ১৫০ DAB ২৫০ (ব্রেক ফাস্ট সহ); YMCA, near Telegraph Office-এর সাময়িক সদস্য হয়ে থাকার পক্ষে ভালই। YWCA, Constantia, The Mall, Shimla-171001-এ ৫ টাকায় সদস্যপদ নিয়ে ফ্যামিলি-সহ থাকার ব্যবস্থা মেলে; এদের ভাড়া DCB ৮৫ DAB ১২৫, ডেজ ও নন ভেজ আহ্বারও মেলে, ব্যবস্থাপনা ভালই; অব্: Sumati Mehta, General Secretary. দালালের কাছনিক কাছিনীতে বিভ্রান্ত না হয়ে সরাসরি চলাই উচিত হবে। তাবকা-খচিত হোটেলের সাথে কালীবাড়ি, H Mayur, H White, Holiday Home এদেরও ব্যবস্থাপনা উত্তম। রেলের রিটার্নিং রুমও আছে সিমলায়।

Himachal Tourism, 1/1A, Biplabi Anukul Chandra St, Cal-72, 271792 বা Span Tours & Travels, 6/2A, AJC Bose Rd, Cal-17, 2801209 বা Diamond Tours & Travels, 30 Jadunath Dey Rd, Cal-12, 276714/Linkage, 124B, Lenin Sarani 2465171-কে যোগাযোগ করা যেতে পারে।

ধরমশালারও আছে সিমলায়—রাম মন্দির, বাস স্ট্যান্ড, জৈন, সিংধবাজার; পুরমল, বাটলি, কার্ট রোড; সুও কালীবাড়ি।

বাংলা হোটেলও আছে নানান সিমলা পাছড়ি। ম্যালে ট্যুরিস্ট অফিসের অনুরে HPTDC-র H Ashiana, নিচুতে Goofa, আশিরানার নিচে H Himani বা ম্যাল থেকে নামতে Alfa Restaurant, আরও বেতে Indian Coffee House-এও বাস নেওয়া যেতে পারে চারের সঙ্গে চারের। আর কাছেই কুলিনের্ড Shalimar, সিমলার ম্যালে। দামে কিছুটা অধিক বটলেও চীনা খিলের জন্য হসিটে হোমের Golden Dragon-এর খেপেট সুখতি; কালীবাড়িরও কাজলি আকর্ষণের ব্যবস্থা মেলে। ম্যালের নিচুতে প্রিন্স বাজারও নানান রেস্তোরাঁ—চীনা রন্ধন Chung Fa Chinese Food Shop, Kwon Tung Anity's Chinese Food Shop-এর খেপেট প্রসিদ্ধি। আর সোমার বাজারে ডেজ ও

নন ভেজ পৃথক ব্যবহার Sher-e-Punjab, Brothers, Metro-তেও চলা যেতে পারে।

ব্রিটিশের অবদান সিমলা পাছড়ি। শহরের প্রাণকেন্দ্র মেমসাহেবদের ম্যাল তার বিউটি স্পট। টেলিগ্রাফ অফিস থেকে ক্যামবারমেরে (cambermere) রিজ সকাল-সাঁঝে স্থানীয় তথা পর্যটকদের পায়ের-পায়ে বেড়াবার মনোরম আনন্দ-নিকেতন। পোকান পাট, বাজার ঘাট, হোটেল-রেস্তোরাঁ, ট্যুরিস্ট অফিস, রেলের সিটি বুকিং তথা পর্যটক বিনোদনের নানান পসরা নিয়ে গড়ে উঠেছে। রাতের আলোকমালায় রূপ বাড়ে ম্যালের। ঘোড়াও চলছে যাত্রী নিয়ে। এমনকি ম্যাল থেকে দূরে-দূরান্তে নানান গিরিশিখরও দৃশ্যমান। তবে, প্রথম বিশ্বযুদ্ধের আগে ভারতীয়দের প্রবেশাধিকার ছিল না ব্রিটিশের গড়া ম্যালে।

ম্যাল গিয়ে শেষ হয়েছে নিও-গথিক শৈলীতে ১৮৫৭য় গড়া অ্যাকলিসিয়ান ক্রাইস্ট চার্চে। সুন্দর কারুকার্যময় উত্তর ভারতের দ্বিতীয় প্রাচীন চার্চ এটি। চার্চের রঙবেরঙ-এর কাচের জানালা, ম্যুরাল চিত্র অনবদ্য। এর বেলাটি তৈরি হয়েছে শিখদের সাথে যুদ্ধে ব্রিটিশের দখল করা কামানের ব্রাসে। ম্যালের পূর্বে টিড্ডির শৈলীর গেইট থিয়েটার; ম্যাল ও রিজের সংযোগে লাজপত রায় চক তথা কিপলিঙের স্ক্যাডাল পয়েন্ট; স্কটিশ ও ব্যারনীয় শৈলীর মিউনিসিপ্যাল বিল্ডিং অতীত স্মরণ করায়। দেওয়ার ও পাইনের মাথা ছাড়িয়ে দূরে-দূরান্তের দিকচক্রবাল ঢেকে তুষারমৌলী হিমালয়ের নানান শিখর। তেমনি চার্চ থেকে ঘণ্টাখানেকের নেমে যাওয়া পথে চৌরা ময়দানে সিমলার মিউজিয়ামটির আকর্ষণও অনবীকার্য। সারা হিমাচলের মন্দির থেকে আহ্লাত দারুণ ও পাথরের ভাস্কর্য, মূর্তির সম্ভার, বসনভূষণ, বাসোলী ও কাণ্ডো শৈলীর মিনিয়েচার পেইন্টিং আকর্ষণ বাড়িয়েছে মিউজিয়ামের। সোম ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা।

রিজের পাশ দিয়ে ট্যুরিস্ট অফিসের সামনে দিয়ে পথ গিয়েছে সিমলার সবোচ্চ চূড়া জাকু হিলস-এর। রিজ থেকে ২ কিমি পূর্বে ২৪৫৫ মি উঁচু জাকু থেকে চারপাশের শ্বেতশুভ্র বরফে উদ্ভিত সূর্যের চিকমিকানি হাসি নন্দনাভিরাম। সিমলা শহরও সুন্দর দৃশ্যমান জাকু থেকে। জাকুর চূড়ায় হনুমান মন্দিরটিও সুন্দর। প্রবাদ, সঙ্গীবনীর সন্ধানে গঙ্গামান বহনকারী ক্লান্ত হনু বিদ্রোহ নেয় এখানে। মন্দির চত্বরে অসংখ্য বানর, সাঁবধানতা পদে পদে পালনীয়। এমনকি ১৯ শতকের সেনী শ্যামলার বাস্তব্য মূর্তিও আবিস্কৃত হয় জাকুতে। উত্তরকালে নানান অলৌকিকত্বের মাঝ দিয়ে স্থানান্তরিত হন সেনী বর্ডমানের কালীবাড়িতে। এক ফটায় পায়ের বা ঘোড়ায় বেড়িয়ে নেওয়া যায় ম্যাল থেকে।

শহর থেকে ৪ কিমি দূরে ১৮০০ মি উঁচুতে চতুর্ভুজাতির মনোরম পরিবেশ ঘেরা। নবীন বন, গুল্ম ফরস্ট, বরফ ঢলেছে পার্বত্যানন্দী—প্রাকৃতিক সৌন্দর্য অসামান্য। স্নোলেডি হাউস/সিলিলা হোটেলের পাশ দিয়ে পারের হিল পথ বিস্তৃত। ঘোড়াও

চলে এপথে। শহরের নিচুতে ৫ কিমি দূরে পাহাড়ের পাইন আর পেগোরে ছাওয়া আনানদেল। রেসকোর্স ভাড়া অতীতের ডুরান্ড ফুটবল গ্রাউন্ডে নানান খেলার আসর বসছে। ত্রিভুবনোদয়ের নানান পসরা নিয়ে সাক্ষ্যমণ্ডলের রমণীয় জায়গা আনানদে। তেমনই রয়েছে ৪ কিমি দূরে চিড়িয়া-খানা, সমদ্রতলে নববাহার পুষ্প উদ্যান সিমলা পাহাড়ে।

সিমলার শহরতলিতে সিমলা-কালকা রেল পথে সিমলার আগের স্টেশন সামার হিল। দূরত্ব ৫ কিমি, উচ্চতা ১৯৮৩ মি। জাতির জনক গান্ধীজীও সিমলা সফরে এসে অবস্থান করেন সামার হিলে রাজকুমারী অমৃত কাউরের জর্জিয়ান শৈলীর বাড়িতে। হিমাচল বিশ্ববিদ্যালয়টিও এই সামার হিলে। ছোট্ট পাহাড়ী ট্রেনে বা ছায়া ঘেরা পাহাড়ী পথের শোভা দেখে পায়ে পায়ে যাওয়া চলে। আরও ২ কিমি গিয়ে ১৫৮৬ মি উঁচুতে ৬৭ মি উঁচু থেকে নামা চাঁদউইক জলপ্রপাতটিও দেখে ফেরা যায়। মনসুনে এ-দৃশ্য নয়নাভিরাম। তবে চড়াই-এর আধিক্য এ-পথে।

শহর থেকে ৫ কিমি পশ্চিমে ২১৪৫ মি উঁচুতে, বয়লোগঞ্জ থেকে মিনিট পনেরোর পাহাড়ীপথে মনোরম চড়াইভাতির স্থান প্রসপেক্ট হিল। নৈসর্গিক সৌন্দর্যের জন্য এর প্রশান্তি। প্রসপেক্ট হিল থেকে সিমলা পাহাড়ের দৃশ্য, জুটোগ, সামার হিল, তারাদেবীর মন্দির, লোয়ার সহাসু, কামনাদেবীর মন্দিরও সুন্দর দৃশ্যমান। পুণিমার সন্ধ্যায় প্রসপেক্ট হিল থেকে একই সময়ে সূর্যোদয় ও চন্দ্রোদয় দেখা যায়; যেমনটি দেখা যায় কন্যাকুমারিকায়। আর পাহাড়-চূড়ায় কামনাদেবী অর্থাৎ ৩০০ বছরের প্রাচীন দুর্গার ছোট্ট মন্দির। পূজা হয় আজও। জনশ্রুতি, কামনা পূরণের প্রার্থনা ফলপ্রসূ হয় দেবী-সকাশে। দূরে, বেশ দূরে বয়ে চলেছে শতরু—রূপালি রিবনের মতো দৃশ্যমান।

শহর থেকে ৯.৬ কিমি দূরে রেল বা গাড়িতে গিয়ে দেখে নেওয়া যায় ১৮৫১ মি উঁচুতে তারা দেবীর মন্দির। শিব মন্দিরও রয়েছে পাহাড়চূড়ায়। সিমলা পাহাড়ও সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে। ক্যাউট-এর মূল দপ্তরটিও বসেছে এখানে। থাকার জন্য PWD RH আছে, অবু: ট্যুরিস্ট অফিস। সিমলার ৭ কিমি দূরে ১৮৭৫ মি উঁচুতে পথেই পড়ে দেবতা হনুর সঙ্ঘটমোচন মন্দির।

শহরের পশ্চিমে ১ কিমি দূরে রিজ শেব হতে অবজার-ভেটরি হিলে সুন্দর প্রকৃতিতে ঘেরা একটিলার ঢঙে মাসোব্রায় ব্রিটিশ ভারতের ভাইসরয়ের প্রাসাদোপম ৬ তলা গার্ডেন হাউস রিট্রিট। মার্বেল পাথরে বাড়ি—বার্ষিক টিকে সিলিং, সিঁড়ি হয়েছে দারুতে। কারুকার্যময় টিক প্যানেলের হল—কিশাল পুরী বিলাস-বন্দনে ময়। ১৮৮৪-৮৮তে তৈরি পাইনে ছাওয়া এই রিট্রিটে বৃষ্ণ গভিত জগদরলাল নেহরু ভারত ভাঙার সিমলা চুক্তি-সম্মত হন ১৯৪৭। এমনকি উত্তরকান্দে ভারত-পাকিস্তান শান্তিচুক্তিও স্বাক্ষরিত হয় এই রিট্রিটে। উত্তরাধিকারসূত্রে স্বাধীনতার ফারহের রাষ্ট্রপতির

গ্রীষ্মাবাস হয় রিট্রিট। আরও পরে ভারত ইতিহাসের নানান স্মৃতিবিজড়িত এই ভবন Indian Institute of Advanced Studies-এর উদ্দেশ্যে উৎসর্গ করেন রাষ্ট্রপতি ডক্টর সর্বপল্লী রাধাকৃষ্ণ। এর লাইব্রেরির সংগ্রহও উল্লেখ্য। ১৬—১৭-০০টায় ছারও খোলা। কিছুকাল আগে এক বিধ্বংসী অগ্নিকাণ্ডে ক্ষতিগ্রস্ত হয় এর ব্যাপক অংশ। টিকিট লাগে ৫ টাকা—গাইডও মেলে দর্শনে। পাশেই বটানিক্যাল গার্ডেন।

| Delhi-Ambala-Kalka-Shimla | | |
|---------------------------|-------------------|--------|
| 0 Km | Delhi | |
| 86 " | Panipat | |
| 152 " | Pipli | |
| 192 " | Ambala | |
| | To Chandigarh | 46 km |
| | .. Anandpur Sahib | 126 km |
| | .. Nangal | 149 km |
| | .. Hoshiarpur | 207 km |
| 224 " | Basu | |
| | To Chandigarh | 14 km |
| | .. Nahan | 68 km |
| 239 " | Panchkola | |
| | To Chandigarh | 2 km |
| 247 " | Pinjore Garden | |
| 275 " | Road Jn | |
| | To Kasauli | 12 km |
| 277 " | Dharampur | |
| | To Nahan | 70 km |
| 294 " | Solan | |
| 310 " | Kandaghat | |
| | To Chail | 27 km |
| 340 " | Road Jn | |
| | To Bilaspur | 78 km |
| | .. Mandi | 147 km |
| 343 " | Shimla | |
| | To Narkanda | 64 km |
| | .. Tapri | 198 km |
| | .. Manali | 260 km |
| | .. Dharamshala | 322 km |

শহর থেকে ১৩ কিমি দূরে কুফরীর পথে ২৫৯৩ মি উঁচুতে পাইনে ছাওয়া ওরাহিন্ড ক্লাবগার হল। বর্ষার পর চেনা-অচেনা পাহাড়ী ফুল মধুময় করে তোলে। তেমনই কুজন শোনায় নানান পাখি পাইনের সাথে ডান মিলিয়ে। এমনকি সিমলা শহর, নীরপাঞ্চাল পর্বতশ্রেণী, বদরী গিরিশিখরও দৃশ্যমান ওরাহিন্ড ক্লাবগার থেকে। প্যাকের ছারে বা বায়ীবাসে চলা যায় নিচুর বস স্ট্যান্ড থেকে।

ধাকরও ব্যবহা আছে ১৯৩৫ গড়া Commander-in-Chief Lord Kitchener-এর অসত্বরে HPTDC-র H Wild Flower Hall, Chharabra, ৩ 280239, DAB ৯৭৫ কন্ট্রোল (2 DRR) ১০০০ ১২৫০ ২০০০, অফ: The Area Manager, WFH, Chharabra, Shimla-171012.

ওরাহিন্ড ক্লাবগার থেকে ৩ আর শহর থেকে ১৬ কিমি দূরে ২৬৩৩ মি উঁচুতে কুফরী। হিমাচলের হারমশেই

কুফরীর প্রশস্তি তার নৈসর্গিক শোভার জন্য। ডিসেম্বর থেকে মার্চ মাসে কি খেলার আসর বসে। ভাড়াই কি-র সাজ-সরঞ্জামও মেলে। শীতকালীন ক্রীড়া উৎসবের আসরও বসে প্রতি ফেব্রুয়ারির প্রথম ভাগে। পার্ক, মিনি জু বসেছে—টিকিট ৫ করে। প্যাকেজ ট্যুরে বা যাত্রীবাসে বেড়িয়ে ফেরা যায়। বোড়া ও ইয়াকের পিঠেও চড়ার ব্যবস্থা আছে কুফরীতে। সকাল ও রাতের আহ্বার সহ থাকারও ব্যবস্থা মেলে Kufri Holiday Resort, ৩ 280300, DAB ২৩৯০, সুইট ২৭০০ দুই ঘরের কটেজ ৪৫০০। আর আছে Fortune Park Hotel & Resorts, Kufri-Chail Rd.

কুফরী থেকে আরও ৩ কিমি যেতে ইন্দিরা হিল্ডে হোম বা চিনি বাংলা। সেওয়ারে ছাওয়া নৈসর্গিক শোভার জন্য এরও প্রশস্তি। হিমালয়ান নেচার পার্কটিও উচিত হবে ৫ টাকার টিকিটে দেখে নেওয়া। ক্যামেরারও চার্জ লাগে মান হারে। বুকিং: ট্যুরিস্ট অফিস, সিমলা।

কুফরী থেকে ৬ আর সিমলার ২২ কিমি দূরে ২৫১০ মি উঁচুতে ফাগু। ফাগুরও প্রশস্তি তার নৈসর্গিক শোভার জন্য। আলু নিয়ে গবেষণাও চলছে ফাগুতে। প্যাকেজ ট্যুর যাত্রায় লাঞ্চ ব্রেক মেলে ফাগুতে।

ধাকার জন্য এসেই H Peach Blossom, Fagu, ৩ 285522, DAB ২৭৫ ৩৫০, অব্: Manager, Wild Flower Hall, Shimla-171012.

শহর থেকে গাড়িতে বা প্যাকেজ ট্যুরে ১৪ কিমি দূরে ২১৪৯ মি উঁচুতে পাইন ও আপেল বাগিচায় ছাওয়া বনভোজনের মনোরম জায়গা সাসোত্রা। জুন মাসের সিপি উৎসবেরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি সাসোত্রায়।

আরও ৩ কিমি যেতে ২২৭৯ মি উঁচুতে ক্রেগনানোর (Craignanor)-এ ওক আর পাইনের গহন বনে অ্যামুজ-মেন্ট পার্কে পর্যটক মনোরঞ্জনর নানান সত্ত্বারে অভিনবত্ব আছে। HPTDC, সিমলা মিউনিসিপ্যালিটি ও হিমাচল রোপওয়েজের যৌথ উদ্যোগে গড়া ২০ একর ব্যাপ্ত পার্কে পাহাড় চলেছে ঢেউ তুলে। ইয়াকও পনিও চলছে যাত্রী নিয়ে পার্কে। আর আছে মেরি-গো-রাউড, জায়ান্ট হেল, ম্যাজিক শো, ডগ শো, আরও কত কী। প্রতিদিনই ১০—১৮-০০টায় খোলা, টিকিট ১০। মুহম্মুহ ডিলায় মিনি বাস যাচ্ছে শহর থেকে ১৭ কিমি দূরের পার্কে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে HPTDC-র হিল্ডে হোমে, অব্: ট্যুরিস্ট অফিস, সিমলা; টিলার টেঙে Municipal RH বা H Black Rock ক্রেগনানোরে।

সিমলা থেকে NH 22-এ ৮ কিমি পূবে ঢালি হয়ে আরও ১৫ কিমি যেতে ২০৪৪ মি উঁচুতে চড়ুইভাতির মকা নলদেয়া। মুহম্মুহ বাঁক নিয়ে পথ নামে নিচুতে। মনোরম পরিবেশে পাহাড়টা যেন খোদাই করা—রাপ তার মোচার মতো। পথপাশে সেওয়ারের মিষ্টি ছায়া, নিচুতে গভীর খাদ; বয়ে চলেছে শতক্র নদী। খিষের প্রাচীনতম ৯ হোলের গলফ মাঠের জন্যও প্রশস্তি আছে নলদেয়ার। আর আছে মনির—সেবতা মাছ বাগ।

ধাকার জন্য HPTDC-র H Golf Glade, Naldehra, ৩ (0177) 287739, DAB ৫০০ ৬০০ ৭০০ লগ হাট ৮০০ ১০০০ ৩০০০ কিমেন-সহ ডাবল বেডের লগ হাট ৯০০-৩০০০। ক্যাপ্টেনেরিয়াও আছে নলদেয়ার। HPTDC প্যাকেজ ট্যুরেও দিনে দিনে বেড়িয়ে আনে নলদেয়া-তত্ত্বপানি।

নলদেয়া রেষে আরও নেমে ২৩ কিমি দূরে ৬৫৫.৩ মি উঁচুতে তত্ত্বপানি। বয়ে চলেছে শতক্র নদী। নদী তীরে গন্ধক জলের উষ্ণ প্রস্রবণের জন্য তত্ত্বপানির প্রসিদ্ধি। আকাশের নীল আর বনানীর সবুজ—পরস্পরে মাখামাখি। রুপোলি বালিয়াড়িতে রঙবেরঙের নুড়ি পাথর।

ধাকার জন্য তত্ত্বপানিতে আছে PWD-র RH ও HPTDC-র Tourist Inn, Tattapani, ৩ (0177) 286949, DAB ২০০ ৩০০ ৩৫০, ডরি বেড ৩০, বুকিং: Manager, Wild Flower Hall.

২১ দিনে হিমাচল দর্শন

হিমগিরির যাত্রীরা আশালা ক্যাটে নেমে ১ম দিনে চণ্ডীগড় শহর দেখে নিন। ২য় দিন আনন্দপুর সাহিব ও ভাকরা বেড়িয়ে নাসলে অবস্থান। ৩য় দিন নাসাল থেকে বাসে ধরমশালা বা চাকী নেমে পাঠানকোট হয়ে চান্দা পৌঁছে যান বাসে। ২য় দিন চান্দায় কাটিয়ে ৩য় সকাল ৭টার বাসে খাজিমারের উপর দিয়ে ডালহৌসি পৌঁছে যান। ৩য় ও ৪র্থ দিনে ডালহৌসি বেড়িয়ে ১৮-৪৫র বাসে ডালহৌসি ছেড়ে মানালী পৌঁছান ৫ম সকালে। ৫ম, ৬ষ্ঠ, ৭ম দিনে মানালী বেড়িয়ে ৮ম দিন সকালের বাসে কেল-চলুন রোটাং হয়ে। ৮ম, ৯ম ও ১০ম দিনে কেল ও উদয়পুর বেড়িয়ে আসতে পারেন অত্‌রাবসহীরা। ১১শ দিন বিকালের বাসে মানালী থেকে রওনা হয়ে রাতভর জার্নি করে সিমলা পৌঁছান ১২র সকালে। ১২শ, ১৩শ ও ১৪শ দিনে সিমলা বেড়িয়ে মাণ্ডী পৌঁছান ১৫র বিকালে। ১৬র সকালে রিওয়ালসর বেড়িয়ে মাণ্ডী থেকে বাসে যোগীন্দ্রনগর পৌঁছে যান ১৬র সন্ধ্যায়। ১৭শ দিনে 'হলওয়েজ ওয়ে ট্রিলি' ক্রেশে ব্রোট বেড়িয়ে বিকালের বাসে বৈজনাথ পৌঁছে মন্দির দেখে ধরমশালায় পৌঁছে যান ঐ সন্ধ্যায় পলামপুর হয়ে। ধরমশালাকে বৃড়ি করে ছালা-মুখী, কাণ্ডা বেড়িয়ে আসুন ১৮শ দিনে। ১৯শ দিনে ম্যাকলুয়েড গঞ্জ, ডাকসুনাথ, ট্রিও বেড়িয়ে নিন। ২০তম দিনে দেবী চামুণ্ডী দর্শনাভ্যে পায় পায় ধরমশালা বেড়ান। ২১শ দিনে বাসে আশালা, চাকী, পাঠানকোট বা জম্মু পৌঁছে ট্রেন ধরুন ঘরপানের।

কালকা ও আশালা হয়ে সমতল ভারতের সঙ্গে রেল সংযোগ গড়ে উঠেছে সিমলার। বাসও সংযোগ গড়েছে উত্তর ভারতের নানান শহরের সঙ্গে সিমলা পাহাড়ের। রেল স্টেশনের পাশেই বাসস্ট্যান্ড থেকে ছাড়ে এই বাস। অগ্রিম টিকিটও মেলে বাসের। ৩ থেকে ৫ দিনে সিমলা বেড়িয়ে বাসেই চলুন কিম্বর দেশ বা মানালী। ৩টি বাস যাচ্ছে প্রতিদিন সিমলা থেকে মানালী। ৫-০০টার বাসে রওনা হয়ে দিনে দিনে মানালী পৌঁছে যান। টিকিট আগে থেকে কেটে রাখুন, কুলিও ঠিক করে রাখুন বাসস্ট্যান্ডে যাবার। তবে কুলিদের কথার খেলাপ প্রায়ই ঘটে থাকে এত সকালের সিমলায়। দ্বিতীয় বাসটি ছাড়ে ৭-৩০টার। তৃতীয় যাচ্ছে সন্ধ্যায় রাতভর সার্ভিসে।

চৈইল

সিমলা থেকে কুফরী হয়ে ৪৫ কিমি দূরে চৈইল। আর সিমলা-কালকা পথের কাশাদাহর হয়ে পথের দূরত্ব ৬০ কিমি, কালকা থেকে ৮৪ কিমি। বাসও আছে সিমলা ও কালকা থেকে চৈইল-এ। সিমলা থেকে বিতাড়িত হয়ে পাতিয়ালার মহারাজা ১৮৯১এ আবাস গড়েন সেবদার, গুরু, রডোভেন-ড্রন আর পাহাড়ী হেমলকে ছাওয়া ২২৫০ মি উঁচু চৈইল-এ। বিকশিত তিন পাহাড়ে চৈইল। একটিতে ১৮৯৩এ তৈরি বিশ্বের সবচেয়ে উঁচুতে ক্রিকেট খেলার মাঠ, দ্বিতীয়ে ১৮৯১এ পাথরে গড়া সামার প্যালেস আর তৃতীয়ে শিখ মন্দির। হিমালয়ের প্যানোরামিক ভিউ-এর সঙ্গে রাতের কাসৌলীর দীপাবলীও সুন্দর দৃশ্যমান চৈইল থেকে। নিরাল-নিজনে ছোট পার্বত্য বাসানিবাসও এই চৈইল। লিটল মাউন-টেনস হেভেনও বলে থাকে লোকে চৈইলকে। অবহেলিত হলেও চৈইল অভয়ারণ্যটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ১৯৭৬এ রাজ্যের অতীতের শিকারভূমি অভয়ারণ্যে রূপ পেয়েছে। শহরের প্রবেশদ্বারে রেল অফিসে অনুমতি মেলে। ওয়াচ টাওয়ার থেকে দেখেও নেওয়া যায় লেপাও, মুনজাক, ঘোরাল, হিমালয়ান ব্ল্যাক বিয়ার, বন্য শুয়ার, চির ও কালিজ ফেজেন্ট ছাড়াও নানান কিছু।

মহারাজা ভূপিন্দব সিয়েব তৈরি বিলাসবহুল প্রাসাদপুরীতে HPTDC-র *Palace H ও R H বসছে। সুইট: চার বেডেব মহাবাঞ্জা ৪০০০ ডাবল বেডের প্রিন্সেস ২৩৭৫ শ্রি ২৩৭৫ DAB ৮৫০ ১৫০০ ২২০০ ২৩৭৫; Rajgarh Cottage (4DBR) ৬০০০, ঘর ১৫০০, কিচেন-সহ Monal Cottage (2DBR) ২৫০০, Wood Rose Cottage (3DBR) ৩৫০০, Honeymoon Cottage ১০০০, Log Hut ৭০০, Himneel H, DAB ৫০০, অব: The Manager, Palace H, Chail-173217, ৩ (01792) 48337 বা কলকাতার Span ৩ 2801209. ৩ টাকার টিকিটে প্রাসাদের বৈভবও দেখে নেওয়া যায়। সাধারণ হোটেলও আছে বাজার ঘিরে চৈইল-এ।

কাসৌলী

কালকা-সিমলা ন্যারোগঞ্জ রেল ধরমপুর স্টেশন। ১৬৩০ মি উঁচু ধরমপুর থেকে নিয়মিত বাস আছে ১২ কিমি দূরের কাসৌলীর। ৩৪ কিমি দূরের কালকা থেকেও কাসৌলীর সরাসরি বাস ও ট্যাক্সি মেলে। ৮০ কিমি দূরের সিমলা থেকেও ট্রেন ও বাস বেড়িয়ে নেওয়া যায় কাসৌলী। চট্টীগড় (৬১ কিমি) থেকেও বাস সংযোগ গড়েছে কাসৌলীর। আবার কালকা থেকে ১৫ কিমি ট্রেক করে চড়া যেতে পারে কাসৌলী পাহাড়ে।

নিরাল-নিভুতে গাছগাছালিতে ছাওয়া ১৯২৭ মি উঁচু কাসৌলী থেকে কালকার পাহাড়ী উপত্যকা আর পাঞ্জাবের সমতল সুন্দর দৃশ্যমান। সারা গ্রীষ্মে চেনা-অচেনা পাখির মেলা বসে কাসৌলীতে। জলাভক্ত রোসের চিকিৎসার জন্য হাসপাতালও ছয়ছে। কেবল মদলবার পর্বতকূলের কেন্দ্রীয় পবেষণাগার দেখার ব্যবস্থা থাকে। অন্যান্য দিন ডাইনিংয়ের

অনুমতিতে দেখার ব্যবস্থা। কলরা, টাইফয়েড, বসন্ত, সাপ ও কুকুরের কামড়ের ওষুধ তৈরি ও পবেষণা হচ্ছে এখানে। ১৮৪৭এ স্যার হেনরি লরেল প্রতিষ্ঠিত পাবলিক স্কুলটিও কাসৌলীর আর এক উদ্যেখ। এছাড়া ৪ কিমি দূরে খাড়া সিড়ি উঠে ৭৫০০ ফুট উঁচু মন্দির পয়েন্ট থেকে পাহাড় অব উপত্যকার সবুজ সমতল আর শতক্রনপীর দৃশ্য, ৬.৪ কিমি দূরের গিলবার্ট হিল থেকেও পাহাড় ও অরণ্যের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। প্রকৃতি প্রেমিকদের উচিত হবে সিমলার জনারণ্য এড়িয়ে কাসৌলী ও সোলনে ছোট অবকাশ কাটিয়ে যাওয়া।



পাশ্চাত্য প্রথায়—Alasia H, Kasauli-173204, ৩ (01793) 72008, D ৫৫০, সুইট ৮০০ ও কাসৌলী ক্লাব আছে। সাময়িক সদস্যপদ নিয়ে কাসৌলী ক্লাবে থাকা যায়, সম্পাদককে লিখুন। ভারতীয় প্রথায়—Maurice H, Kalyan H, Gian H, এসের কাছে D ১৫০-২৭৫ টাকার মেলে। আর আছে HPTDC-র H Ros Common, Kasauli, ৩ (01793) 72005, DAB ৭০০ ৭৫০ ৮০০ AC ১০০০ ১৪০০, Annexe, D ৯০০ F ৮০০, অব: Manager বা কল বুকিং: Span ৩ 2801209. PWD RH, DB ও Belmont House- এও ঘর মেলে যাত্রীর; অব: Tourist Office. তেমনই উইক এন্ডে যাত্রী বাড়ে কাসৌলী পাহাড়ে—আব বাড়ে ঘর ভাড়া। তবুও, যেন ঘর অমিলেব আশঙ্কা গ্রীষ্মেব উইক এন্ডে।

কাসৌলী থেকে ধরমপুর ফিরে কালকা-সিমলা পথে সোলন। কালকা ৪১, সিমলা ৪৯, চট্টীগড় ৫৮ আর কাসৌলী থেকে ৩১ কিমি দূরে ১৩৫০ মি উঁচুতে পাইনে ছাওয়া সোলন। সোলনী দেবীর মন্দির আছে—দেবীর নামে শহরের নাম। আর আছে শহর থেকে ৪ কিমি দূরে বাস সড়কে Mohan Meakin Co-র ডিস্টিলারি কারখানা সোলনে। ভারতে একমাত্র উদ্যান বিশ্ববিদ্যালয় Dyrw Parmar University of Horticulture and Forestry-র অবস্থানও সোলনে। সুস্বাদু এগ্রিকল্ট ফলের সৃষ্টিও এই উদ্যান বিশ্ববিদ্যালয়ে।



থাকার জন্য HPTDC-র Tourist Bungalow, Solan, ৩ (01792) 23733, DAB ১৫০ ২০০ ২৫০ ৩০০ ৩৫০ ডরিং বেড ৫০; আর Kiarighat-এ আছে Tourist Inn, DAB ৫৫০ ৬৫০; H Mayur, D ২৫০-৩৫০; Kumar H, D ২২৫-৩০০; New Khalsa H, D ৩০০; Raj H, D ৩২৫; Royal H, D ২৫০; H Himani Resorts, D ৩৫০ ৫৫০ ৬৫০ ৮০০; Ambusha Resorts, D ৪৫০ ৫৭৫, এসের কল বুকিং: Span ৩ 2801209; এছাড়াও নানান সাধারণ হোটেল। PWD-র RH, DB-ও আছে সোলনে। আর ধরমপুরে Rock Rose Resort DAB ৬০০ ৮৫০ ৯৫০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209; Mazdoor Dhawa-র ডরিং প্রার্থ থাকা ও আহার্য মেলে। রেলের রিটার্নরিং কক্ষও আছে সোলন ও ধরমপুরে।

নারকানা

সিমলার নিচু দিগে চলেছে কার্ট রোড। এই কার্ট রোডই রিজ শেরিয়ে শহর ছাড়িয়ে হয়েছে হিন্দুস্থান-টিবেট রোড। এই পথ ধরে ৪৪ কিমি যেতে ২৭০০ মি উঁচুতে নারকানা। অবিরাম বাক নিয়েছে এ-পথ। নারকানার স্থল আকর্ষণ

তার ৩৩০০ মি উঁচু হাটু পিক। বাসপথ থেকে ৮ কিমি পায়ে গিয়ে হাটু পিক থেকে ডুবারমৌলী হিমালয়ের নয়নলোভন শোভা সুন্দর দৃশ্যমান। ফি খেলার আসরও বসছে ডিসেম্বর থেকে ফেব্রুয়ারি মাসে নারকান্দায়। HPTDC ৭/১৫ দিনের কোর্স চালু। সিমলা ভ্রমণার্থীদের বেড়িয়ে নেওয়া উচিত। প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে HPTDC।
খাবার জন্য HPTDC-র H Hall, Narkanda, (01782) 8430, DAB ৯০০, অব্: Tourist Officer, Shimla আব আছে FRH ও PWD IB.

অত্যাংসাহীরা নারকান্দা থেকে ১৮ কিমি পূর্বে ২৬৪৮ মি উঁচু বাহী, আরও ১১ কিমি উত্তর-পূর্বে ২৯৮৭ মি উঁচু খাদরালাও বেড়িয়ে নিতে পারেন। তেমনিই নারকান্দার ১৮ কিমি উত্তরে আপেল ক্ষেতও দেখে নেওয়া যেতে পারে। রেস্ট হাউসও আছে এয়াতে। খাদরালা থেকে আরও ৩৬ কিমি পূর্বে রোহরুও বেড়িয়ে নিতে পারেন প্রকৃতির পূজারীরা। পাবর নদী বয়ে চলেছে। ১৩ কিমি দূরে চিরগাঁও-এ ট্রাউটের চাব হচ্ছে। আর আছে ১ মি উঁচু অষ্টভুজা সেবী দুর্গার মন্দির চলার পথে রোহরুর অদূরে হাকটোটিতে। স্বল্প বেড়ে হিমাচলের সীমান্ত গিয়ে মিলেছে উত্তর প্রদেশ ও হরিয়ানা।

কিমরদেশ

ধরাধামে ইন্দুকানন—কিমরদেশ। দেবতাদের বাস। দেবযানিসম্বৃত অর্থাৎ দেবতাদের উত্তরপূর্ব আজকের কিমরীরা। পাণ্ডবেরাও অজ্ঞাতবাসের বছরটি কিমরেই অবস্থান করেন। তবে, ভূসম্পত্তি ক্রয়ের অধিকার নেই কিমরী ছাড়া বহিরাগতদের কিমরে। সিমলা থেকে NH 22 হিমুহান-টিবেট হাইওয়ে ধরে নারকান্দা ছাড়িয়ে কিমরমুখী যেতে ১১৬ কিমি দূরে শতক্রুর পাড়ে রামপুর-বুশাহার। গেটওয়ে অব কিমরও বলা চলে অতীতের রাজপুত রাজ্য বুশাহারের রাজধানী ৩৮৬০ ফুট উঁচু রামপুরকে। মহারাজার পদম প্যালেসের স্থাপত্য মুগ্ধ করে রামপুরে। ভারত ও তিব্বতের বাণিজ্যকেন্দ্রে ছিল অতীতকালে রামপুর। বর্ষিষ্ণু এলাকা। নভেম্বরের সপ্তাহব্যাপী লাভীমেলার সাথে হিন্দু মন্দির ও বুদ্ধিস্ট গুম্ফা দেখে নিতে পারেন বাতায়তে। PWD IB, C H, Bhandari H, Bhanwani G H, Rama G H, Gopal G H, Ashoku আছে Rampur-172001-এ। অত্যাংসাহীরা কিমরমুখী না গিয়ে রামপুর থেকে বামহাতি পথে অর্সু, সারাহান (কুলু) হয়ে যাতায়াতে ৩ দিনে কশলাই পাসও অভিযান করে নিতে পারেন ট্রেক করে। PWD IB মেলে অর্সু ও সারাহানে।

রামপুর/চৌরা/সারাহান হয়ে শতক্রুর পাড়ে ভর দিয়ে বাস চলে এগিরে। কিমর জেলার গুরুও চোড় জড়ানো প্রকৃতির মাঝে বরফাবৃত শ্রীখণ্ড পর্বতমালার পাশদশে সজ্জ্ব ছাড়া নারকান্দা-এ। অতীতে রামপুর রাষ্ট্রের

রাজধানীও ছিল সারাহান। বৌদ্ধ ও তিব্বতীয় শৈলীতে গড়া ধ্রুপদী ভারতীয় কৃষ্টির ভীমাকালীর মন্দিরটিও সুন্দর সারাহানে। বিশাল চত্বর জুড়ে প্রাচীরে ঘেরা মন্দির। মন্দিরের দাক্ষর ভাস্কর্য অতুলনীয়। থাকারও ব্যবস্থা মেলে মন্দির কমিটির Temple GH-এ। আশপাশ জুড়ে আপেলক্ষেত। ৭৫০০ ফুট উচ্চে মোনাল পাখির প্রজনন কেন্দ্রটি সারাহানের আর এক দ্রষ্টব্য। দূরে চক্রাকারে বরফ মোড়া পাহাড়শ্রেণী।

HPTDC-র H Sri Khand, Sarahan-172102, ① (01782) 74234, DAB ৫৫০, ৭৫০ ডর্মি বেড ৫০; Annexে DAB ৩০০, ৪৫০, ৪৫০ ছাড়াও PWD/IB আছে সাবাহানে। পথে Barog-এও HPTDC-র ট্যুরিস্ট লজ—H Pinewood, ① (01792) 38825 আছে, D ৪০০, ৬৫০, ৯০০ সুইট ১০০০। আর আছে PWD-র IB ও CH সাবাহানে।

সারাহান থেকে ৪৩, রামপুর থেকে ৭৪ আর সিমলার ১৯০ কিমি দূরে বাস পৌছায় ৫৩৬১ ফুট উঁচু ওয়াংফু-তে। সেতু পেরুতাই চেক পোস্ট। অতীতের ILP প্রথার বিলোপ ঘটেছে ১৯৯৩-এ। তবে, সীমান্তবর্তী এলাকা—পুরো এলাকাটিই সেনা অধ্যুষিত। ভারতীয় নাগরিকদের নিদর্শন-পত্র সঙ্গে থাকা ভাল। ভারতীয় পর্যটকদের কোনো বিধি-নিষেধ নেই কিমরে যেতে। বিদেশীদের অনুমতি লাগে Ministry of Foreign Affairs, New Delhi থেকে। PWD IB-ও আছে ওয়াংফু-এ। ঢেকিং-এর পটি চুকতে বাসের চলা শুরু। ৮ কিমি যেতে টাপরী।

সিমলা (লব্ধর বাজার) থেকে সকাল ৭-০০টার মধ্যে বাস ধকন কল্লার। চট্টীগড় (ISBT) থেকে সাঁঝে Himachal Roadways-এর বাস যাচ্ছে সিমলা-নারকান্দা-রামপুর-বুশাহার-কারছাম-রেকং পিও হয়ে কল্লায়। ঘণ্টা দশকে বাস যাচ্ছে সিমলা থেকে টাপরী। টাপরীর উচ্চতা কম, শীতেরও দাপট নেই। চলার পথে প্রথম রাতের বিশ্রামও নেওয়া যেতে পারে ৪৯০০ ফুট উঁচু টাপরী অর্থাৎ কিমরী ভাষায় কুটিরে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে PWD IB, অব্: EE, PWD, Kalpa, FRH অব্: DFO, Kalpa. আর আছে প্রাইভেট মালিকানা H Him View, Standard Attang G H, Kalpa-172108. UCO ব্যাঙ্কের শাখাও বসেছে টাপরীতে। দৃষ্টিনন্দন আকর্ষণ টাপরীর উল্লেখ্য না হলেও পথ গিয়েছে উপত্যকার দিকে দিকে টাপরী থেকে। ত্রিমুখী তিন পথের মিলনও ঘটেছে টাপরীতে। মূল পথ যাচ্ছে সিমলা থেকে টাপরী হয়ে কল্লায়। রোগি হয়ে দ্বিতীয় পথটিও কল্লায় যাচ্ছে। তবে নতুন তৈরিতে দ্বিতীয় পথের আবেদন আজ স্থিমিত। আর তৃতীয় পথ যাচ্ছে নদী পেরিয়ে চোলহু, কিলবা হয়ে সাংলা ডালি।

টাপরী থেকে নতুন করে বাস চাপুন সাংলার। শতক্রকে ডাইনে রেখে ১০ কিমি যেতে কারছাম পরেট। শতক্রর বৃকে ঝাপিয়ে পড়ছে তুঁতে রক্ত বসপা নদী। হিমুহান-টিবেট রোড ছেড়ে গৌহ পুলা নদী পেরিয়ে বিজীবিকার পাখড়ী-খানের স্বর্গীয় চড়াই বেয়ে বাস ওঠে পাখড়ী-শিরে। কারছাম থেকে সাংলা—২২ কিমি পথ সেনা নিয়ন্ত্রিত; একমুখীও

বটে। পথে পড়ে রেকং পিও। সুউচ্চ পর্বত শিখরে ঘেরা আর এক সুন্দর শহর—আধ ঘণ্টায় সাঙ্গ করা যায় রেকং পিও দর্শন। থাকারও ব্যবস্থা আছে *IB, Mayur GH* ছাড়াও ২টি *প্রাইভেট হোটেল*। টাঙ্গরী থেকে ৩ ঘণ্টায় বাস সৌহার সাংলায়। বাস যাচ্ছে আরও এগিয়ে সাংলা হয়ে ৩০৫০ মি উঁচু রকছম-এ। বেশ বর্ষিষ্ণু গ্রাম রকছম—সুন্দর তার প্রকৃতি। *PWD-র IB* ও সাধারণ হোটেল আছে। তবে, পথ গিয়েছে আরও এগিয়ে তিব্বত সীমান্তের ছিংকুলে। ৩৪৫০ মি উঁচু ছিংকুলেও থাকার ব্যবস্থা মেলে *PWD-র RH* ও *হোটেল*। শীত ও ঠাণ্ডা বাতাসের দাপটও আছে ছিংকুলে। তুষারমৌলী নানান শিখর প্রাচীর গড়েছে ছিংকুলকে ঘিরে। অদূরেই নী-লা গিরিসঙ্কট পেকতেই তিব্বত। নী-লা থেকেই বসপার জন্ম।

কিম্বর দেশের নৈসর্গিক সৌন্দর্যের আকর ২৬৮০ মি উঁচু উষ্ম পাহাড়ের কোলে মনোরম উপত্যকা—দেবভূমি সাংলা। বয়ে চলেছে শতক্রনদী। ছোট ছোট গাঁও নিয়ে বসপা উপত্যকার প্রাণকেন্দ্র সাংলা। শ্যামল-সুন্দর উপত্যকা বসপা। ছিংকুল, বরুগ্রাম, আপেল, পিচ, বাদাম বাগিচার ঘেরাটোপে কিম্বারী গ্রাম—তিব্বতীয় স্থাপত্য শৈলীতে গড়া দারুণ তৈরি বাড়িঘর। বাড়ির ছাদে সাদা নিশান, পাহাড়ের ধাপে ধাপে পাহিন, ফার, চির গাছের মজলিশ। আর আছে মন্দির ও গুম্ফা। সহজ-সরল, ধর্মভীরু, অতিথিবৎসল সাংলার মানুষ-জন। দারু ও পাথরে তৈরি—স্বর্ণগুম্ফা শিরে মন্দির হয়েছে বেরী নাগের সাংলায়। ব্যাক্স, ডাকঘর, হাসপাতালও আছে সাংলায়। দ্বিতীয় কোনো যান নেই—পা-কে সম্বল করে রূপ-রস-মধু উপভোগ করুন সাংলার। সাংলা ভ্যালির কামরুও যথেষ্ট উন্মেষ জনপদ। কামরুতে চাষবাস হয়, বসতিও বেশি, প্রাকৃতিক সৌন্দর্যও অপরিমিত। রামপুরের রাজার গড়া ৫ তলার এক দুর্গও আছে কামরুতে। বিশেষ বিশেষ দিনে দুর্গের অস্ত্রাগার দেখার ব্যবস্থা আছে। দেবী কামাখ্যার মন্দির হয়েছে কামরু দুর্গে। রূপন ও সিগন অনিন্দ্যসুন্দর দুই পর্বত শৃঙ্গও সুন্দর দৃশ্যমান। এদেরই বিপরীতে কিম্বর কৈলাস আর এক নমনকোভন শৃঙ্গ। বাস থেকে বেশ কিছুটা নিচুতে বসপানদীর পাশ ঘেঁষে সিমলা থেকে ২২৬ কিমি দূরে সাংলা গ্রাম। সরাসরি বাস আসছে ১২ ঘণ্টায় সিমলা থেকে সাংলায়। *PWD IB, FRH* ছাড়াও *Bospa L, Trekkers L, Forest IB* আছে *Sangla-172106*। খাবারও মেলে বাংলায়। আবার আহাৰে কৈলাস হোটেলটিও মনন।

সাংলা থেকে আবার বাসে কৈলাসের কল্লোলক কল্লা চলুন। দূরত্ব ৫১ কিমি—ঘণ্টা পাঁচেকের পথ। ১৮৯৯ মি উঁচু কারছাম/ মিলিটারি ছাউনি পোয়ারী হয়ে হিন্দুস্থান-টিব্বট রোড ধরে পাকীনালা/পিউ ছাড়িয়ে পাহিন-ফার-দেবপারঙ্গ গাড়ে অব অনার লিগে চড়াই বেয়ে বাস সৌহার কল্লায়। ২২৪ কিমি দূরের সিমলা থেকেও ১২ ঘণ্টায় বাস আসছে টাঙ্গরী হয়ে কল্লায়। আর টাঙ্গরীর দূরত্ব ২৬ কিমি।

রামপুর-বুশাহার, টাঙ্গরী থেকেও বাস মেলে কল্লায়। ১৯৬০এর ১লা মে গড়া কিম্বর জেলার সদরও বসে ২৭৫৯ মি উঁচু অপরূপ শ্রীমণ্ডিত সুন্দরী কল্লায়। আকাশভরা সূর্য-তারার—তারই মাঝে চেনা-অচেনা নানান পাখি উড়ে বেড়ায় আকাশ চিরে। বৃষ্টি কম, বাতাস শুষ্ক; শীতের আধিক্য আছে। তাই শীত ও উচ্চতা, দুই-ই থেকে পরিত্রাণ পেতে ২২৯০ মি উঁচুতে পাহিন, ফার আর দেবদারু সমন্বয়ে গড়া—থরে থরে আপেল ও আঙুরের খেতি পিউ নামে নতুন এক নগরীর পশ্চন হয়েছে সাংলার পথে। কিম্বর জেলার সদর দপ্তরও স্থানান্তরিত হয়েছে কল্লা থেকে পিউ-তে। বাসের চলা কল্লায় শেষ হলেও পথের এখানে শেষ নয়—কুছ, সামথো হয়ে পথ চলেছে আরও এগিয়ে। দুঃসাহসিক অভিযাত্রীদের সেপথ হাতছানি দেয়, নিয়ে যায় শিপ-কি-লা ছাড়িয়ে তিব্বতে। আবার কিম্বরের শেষ সামথো থেকে তাবো, কাজা, বাতাল বা চন্দ্রতাল হ্রদের পাশ দিয়ে শিপিতি (অর্থ মধ্যবর্তী দেশ) উপত্যকার উপর দিয়ে পথ গিয়েছে মানালীতে। তবে, যেমনই দূস্তর তেমনই দুর্গম সেপথ। গত কিছুকাল কাম্বীর উপত্যকা অশান্ত হয়ে পড়ায় জুন থেকে অক্টোবরে গাড়িও যাচ্ছে মানালী থেকে কল্যাং হয়ে ৪৭৭.২৭ কিমি দূরের লে।

শিপিতি উপত্যকার সদর দপ্তর কাজা থেকে ৪৬ কিমি দূরে তাবো। ৩০৫০মি উচ্চ পাহাড়ের ঘেরা হিমাচলের শীতলতম উপত্যকা দুর্গম তাবোর অন্যতম আকর্ষণ বৌদ্ধ গুম্ফা। ১৯৬ খ্রিস্টাব্দে রিন-চেন-জ্যাস-গোর মাটির তৈরি গুম্ফা মাহাঘ্যো তিব্বতের থোলিং(Tholing)-ও লাডাকের হেমিসের পরেই স্থান। তবে, চুকতেই সামনে নতুন করে গুম্ফা হয়েছে দারুতে। পথপাশে তোরগদ্বার, মূল গর্ভগৃহে জ্যোতির্ময়ী দেবতা—ধ্যানরত বুদ্ধের বিশালাকার মূর্তি। গুম্ফাটি বর্ণময়—দেওয়ালে বুদ্ধের জীবনকথা তথা জ্ঞাতক কাহিনী বর্ণিত হয়েছে। ৯টি মন্দির, ২৩টি চোর্ডেন, ৩০টি থঙ্কাস গুম্ফার আর এক সম্পদ। আর আছে পালি ও ভোটি লিপির নানান পুঁথি, প্রাচীনকালের বাদ্যযন্ত্র ছাড়াও নানান কিছু। তেমনই আছে মঠ, বিহার, অ্যাসেস্খলি হল, ২টি বিদ্যালয় গুম্ফা চত্বরে। ১৯৯৬-এর জুন ২০—জুলাই ১০ গুম্ফার সহবৎ বৎসরের পূর্তি উৎসবও যাপিত হয়েছে মহা-সমারোহে। তাবোর আর এক আকর্ষণ তার মানুষজন—নাচ-গান প্রিয়, সংকুতিমনা; সহজ-সরল-অতিথিপরায়ণ। সাথো, বুচেন ও ছাম এদের প্রিয় নাচ। থাকারও ব্যবস্থা মেলে *PWD-র Rest House, Highland GH, Mount Kailash GH* ও সাধারণ হোটেল তাবোর।

উত্তরে তিব্বত, দক্ষিণে সিমলা জেলা, পূর্বে উষ্ম প্রদেশের গাডোয়াল—থরে চলেছে শিপিতি নদী। গিরে মিছেহে ৪০ কিমি দূরের কারছামে বসপা নদীতে। এদেরই মাঝে হিখালয় ও জঙ্কর পর্বতমালার কোলে কিম্বরদেশ। শিব ঠাকুরের আশ্রয় (শীতাবাস) ৬০৫০ মি উঁচু কিম্বর

কৈলাসও সুন্দর দৃশ্যমান। হাত বাড়ালে পরশও মেলে কন্না থেকে কিম্বর কৈলাসের। কিম্বর কৈলাসের ১৮০০০ ফুট উচ্চে তুষার মুক্ত ৬৫ ফুট উঁচু এক পাহাড় খণ্ড শিবলিঙ্গ বলে প্রতিভাত হয়। দিনভর চূড়ো থেকে বিচ্ছুরিত সূর্যছটায় রঙবেরঙের প্রতিফলন সত্যি নয়নাভিরাম। চলতে-ফিরতে নরনলোভন এ দৃশ্য অভূতলীয়। ভারত আর তিব্বতের মেলবন্ধনও ঘটেছে এই কিম্বরদেশে।

সাংলা থেকে ২৬ কিমি দূরে ৩৪৫০ মি উঁচুতে ভারত-তিব্বত সীমান্তে শেষ জনবসতি ছিংকুল। এপারে ভারত ওপারে তিব্বত অর্থাৎ চীন। কিম্বর কৈলাসের গিঠে ঠেস দিয়ে দাঁড়িয়ে নরনলোভন সবুজে মোড়া ছিংকুল মালভূমির শান্ত-সমাহিত-মোহময় রূপ পাগলপারা করে তোলে প্রকৃতি প্রেমিকদের। বিচিত্র বর্ণের প্রিমুলা আর পিপির সমারোহ। দেখে মনে হয় শিল্পীর ইচ্ছাে আঁকা বাজায় চিত্রকলা। থাকারও ব্যবস্থা মেলে PWD-র IBতে।

কন্নার দক্ষিণে গহীন বন গহন অরণ্য। নাম-না-জানা বিচিত্র সব পাহাড়ী পাখিরা গান শুনিতে যায় অবিরাম। অবাধে খেলে চলে বন্য হরিণের পাল। মাঝে মাঝে তিব্বত থেকে নেমে আসে ধূসর রঙের ভালকোরা। পাহাড়ী এলাকা—আপেলগের জন্য খ্যাত। সোনালি আপেলও হচ্ছে কিম্বরে। তেমনিই হচ্ছে আপেল থেকে মস্টি, আঙুর থেকে বেহমিও চুলিঅর্থাৎ কিম্বরী সুরা, এদের প্রিয় পানীয়। আর হচ্ছে চাববাস—কমলা, আঙুর, আখরোট, আলমশও, এপ্রিকট, চিলগোজা, বাদাম ছাড়াও নানান কিছু।

আরও বিচিত্র এদের সমাজজীবন। আগস্টে ফুলেখ এদের প্রিয় উৎসব। ঝলমলে বেশভূষার সাথে উৎসবানুষ্ঠানে ১০ কেজি পর্যন্ত সোনা-রূপোর অলঙ্কার পরে ঐশ্বর্যের দেশের কিম্বরীরা। নাচ আর গান কিম্বর দেশের আকাশে-বাতাসে। নেচে বেড়ায় কিম্বরীরা পথে পথে—সঙ্গে গেয়ে চলে গান। বাশি বাজায় সাথী। সাথী বদল করে নাচের, নাচের সাথী হয় জীবনসাথী। সাথী বদলে কোনো বিধিনিষেধ নেই এদের, নেই কোনো শরম তাদের। এদের বিবাহের সামাজিক প্রথাটিও বেচিরো ভরা। এক সতীর একাধিক পত্নী অর্থাৎ দ্বৈতপত্নী প্রথা এখন লোপ পেতে বসলেও রাক্ষস (বিচাঁতানির শাদি) বিবাহ প্রথার প্রচলন রয়েছে আজও। নভেম্বরের ফুলাইত উৎসবে ছেলেদের মেয়ে পছন্দ হতে জোর করে ঘরে আনলেও মেয়ের আচরণে সম্মতি প্রকাশের সুযোগ মেলে। অসম্মতিতে মেয়ে ফেরে বাপের ঘরে। আর সম্মতিতে মেয়ের বাপকে খরচ-খরচায় অর্থজোগায় ছেলে। কিম্বরীদের হাতের কাজেরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি আছে—প্রসিদ্ধি আছে কিম্বরের শালেরও। তেমনিই সাক্ষরতার খাদ পেয়েছে কিম্বরবাসী। ৩৬.৮৪ শতাংশ সাক্ষরতার হার কিম্বর জেলায়। জনশ্রুতি—সাংলা, রকফাম ও ছিংকুল থেকে নিরক্ষরতা দূরীভূত হয়েছে। ঘর-সংসার, ক্ষেত-খামারের কাজে মেয়েরাও যথেষ্ট পরিশ্রমী। আর পুরুষেরা কিছুটা নেশাশ্রম,

অলস আর শ্রমবিমুখও বটে। কন্না থেকে ঘিরে ছোট ছোট গ্রাম, ৩ কিমি দূরে বোধি।

| Shimla to Ship-ki-La Road Route | | | |
|---------------------------------|------------------|--|--------|
| 0 Km | Shimla | | 6810' |
| 14 | Kufri | | 8050' |
| 64 | Narkanda | | 8860' |
| 116 | Rampur-Busayar | | 3860' |
| 129 | Gaora | | 6518' |
| 147 | Sarahan | | 6713' |
| 161 | Choura | | 6600' |
| 169 | Tarandah | | |
| 185 | Nachar | | 7125' |
| 190 | Wangpu | | 5361' |
| 198 | Tapri | | 4900' |
| 204 | Urni | | 7900' |
| 206 | Kilba | | |
| 219 | Rogi | | 9361' |
| 224 | Kalpa | | 9238' |
| 235 | Pangi | | 8950' |
| 246 | Rarang (Morang) | | 7810' |
| | To Chitkul 80 km | | |
| | „ Sangla 104 km | | 11384' |
| | „ Tapri 130 km | | 8200' |
| 350 | Ship-ki-La | | 10600' |

কন্নাতে আছে HPTDC-র H Kinner Kailash, Kalpa, DAB ৫০০ চার বেডের সুইট ৫০০; CH ও PWD IB, অব: EE, PWD, Kalpa-172108; বাস স্ট্যাড থেকে ২ কিমি দূরে চিনি ফরেস্ট বাংলা। কিম্বর কৈলাসও সুন্দর দৃশ্যমান বাংলা থেকে। বাংলার বুকিং: DFO, Kalpa: Standard Attang GH, Ganga G H, Abtron G H ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেলও হয়েছে কন্না। আর আছে লাস্সারি তাঁবু কন্না। তাঁবুর বুকিং: Always Marketing & Trading, 1746 WEA, Karol Bagh, N D. প্যাকেজ ট্যুরেও যাচ্ছে দিল্লী থেকে এরা।

পরদিন বাসেই চলুন কুহু। কুহুতেও PWD-র IB আছে। কুহু থেকে আরও ১৭ কিমি গিয়ে সামথো। পথ চলে এগিয়ে আরও উত্তরে তিব্বত সীমান্তে। চলাও যেতে পারে ১১ কিমি দূরের ৮৯৫০ ফুট উঁচু পাংগি। সমৃদ্ধ বর্ষিকু গ্রাম। কিম্বর কৈলাস আরও সুন্দর দৃশ্যমান পাংগি থেকে। PWD-র IB-ও আছে পাংগিতে। পাংগি থেকে আরও ১১ কিমি উত্তরে ৭৮১০ ফুট উচ্চে রান্নাং। তিব্বত ও কিম্বরের বাণিজ্যক্ষেত্রও এই রান্নাং। ১০৪ কিমি দূরের সাংলা-র পথ গিয়েছে এই রান্নাং থেকে। বাসও চলে এপথে। PWD-র IB, FRH-ও আছে রান্নাং-এ। রান্নাং ছাড়িয়ে আরও যেতে জাম্বী ১১ কিমি, লিপি ২১, কানাম ৩১, লিপকী ৪৭, পু ৭২, নামগিয়া ৮৮, টাসিগাং ৯৪, শিপ-কি-লা ১০৪ কিমিও বেড়িয়ে নেওয়া চলে নিজস্ব ব্যবহার জিপ করে। চলার পথে ২টি বৌদ্ধ গুম্ফাও দেখে নেওয়া চলে পুতে। তাত্ত্বিক বৌদ্ধবান প্রভাব পূর্ণ জনমানসে। আর পুথেকে ৩২ কিমি দূরে লিপ-কি-লা অর্থাৎ গিরিপথের এপাশে ভারত অপরপাশে তিব্বত তথা চীন। তাই পূর্বে পূর্বে নানান বাধা, আর বিপত্তিও বেন কখন কখন মিত্যনদুর।

তেমনই দুঃসাহসিক অভিযাত্রীরা তুবারা কর্তৃক স্থাপন-সঙ্কলন যথেষ্ট কষ্টকর কিম্বদন্তী-কল্পাস শিখরটিও পরিক্রমা করে নিতে পারেন কল্পা থেকে দিনে দিনে ট্রেক করে। তবে, অজানা বিপদ এপথে পদে পদে। ১৬০০০ ফুট উঁচুতে স্রেসিয়ারও পেরুতে হয়। ধাপে-ধাপে ক্রিভাস (Crevasse) অর্থাৎ পদে পদে মৃত্যুফাঁদ পাতা বরফের ফাটল। তেমনই এপথে হিম-শীতল কনকনে বাতাস। তাপাঙ্ক ফ্রিজিং পয়েন্ট থেকেও ১০—১৫° সেন্টিগ্রেড নিচে দিনভর। সবশেষে গাইড একান্তই দরকার এপথে চলতে। তাই রায়ার থেকেই কল্পা, টাপরী হয়ে সিমলা ফেরা উচিত হবে সাধারণ ভ্রমণার্থীদের।

কুলু উপত্যকা

কান্দীর ভারতের ভূ-স্বর্ণ, চাষা হল *ভ্যালি অব মিক্স অ্যান্ড হানি* আর কুলু হচ্ছে *ভ্যালি অব গডস*। অতীতকালে দেবতা-দের আনাগোনাও ছিল আজকের কুলু অর্থাৎ সেকালের কুলুত উপত্যকা। রামায়ণ, মহাভারতেও কুলু-পার্শ্ব অর্থাৎ বসতির প্রান্তভূমি নামে উল্লেখ মেলে কুলুর। বেদব্যাস, বশিষ্ঠ, গৌতম, জমদগ্নি, পরাশর, ভৃগু, মনু, যোষা হাড়াও নানান মুনি-ঋষির বাসও ছিল কুলুতে। পাহাড়-পর্বতে ঘেরা, পাইন আর দেবদারুতে ছাওয়া ৭৬০ থেকে ৩৯১৫ মিউচু কুলু উপত্যকা। ১২×৩ কিমি ব্যাপ্ত কুলু জুড়ে বয়ে চলেছে শতদ্রু, বিয়াস, সেহ, তীর্থন, পার্বতী, সরোবরী, চম্ভা, ভাগা সব পাহাড়ী নদী। বিপাশার পাড় ধরে মাণ্ডি থেকে রোটাং জুড়ে উপত্যকা ব্যাপ্ত। আর পীরপাঞ্জাল ও হৌলাধার পর্বতমালা সমান্তরালভাবে কুলুতে দেওয়াল গড়েছে উত্তর থেকে দক্ষিণে। অর্ধেকেরও বেশি ভারতীয় আপেলের জন্ম ছোট্ট সুন্দর এই কুলু ভ্যালিতে। রক্তিম আভার আপেলের সাথে সোনালী আপেল ফলে কুলুতে। বিভিন্ন ঋতুতে কুলু ভ্যালি তার সাজ বদল করে আকর্ষণ বাড়ায় প্রকৃতিপ্রেমিক ভ্রমণার্থীদের। ছুটে চলেন হাজার হাজার ভ্রমণার্থী ঘর ছেড়ে স্বর্গের দেবতাদের ভ্যালি কুলুতে। বসন্তকালে কুলু ভ্যালিকে খরে খরে সাজিয়ে তোলা ভার পড়ে খুবানী, আগেল, নাশপাতি আর ঢেরীর উপর। গ্রীষ্মে ডাক পড়ে রক্তিম আভার রডো-ডেনড্রন ফুলের আর শরতে চাষীভায়েরা উপত্যকাকে সাজিয়ে তোলে ধান-গম-বয়ের সোনালী আভার। তারই পিছে খেতওস্ত কিরীট পরে মাথা তুলে পাড়িয়ে নানান গিরিশিখর। খুবই মনোরম ঋতু বদলের এই রঙ বদল কুলু উপত্যকার। এখানকার প্রকৃতিও রাপে রসে মগির, রামধনুর থেকেও বর্ণময়।

একান্তই কুলু-বকীরতায় তৈরি টুপি মাথায় পরে পুরুষেরা, আছে পট্টু। আর মেয়েরা পরে ঘরে তৈরি উলের হাটী-ঝোলা বস্ত্রমলে জামা; সঙ্গে রূপোর নানান সজ্জাও। কুলু শালেরও যথেষ্ট প্রসিদ্ধি পর্বত মন্ডলে। ভূটানবুখী ৮ কিমি দূরে সানসি-তেশাল জৈরি দেখা ও ফেলা যেতে পারে। সন্ধ্যাও কাল যেতে পারে কুলুর শাল ও টুপি বস্ত্রের দারক-রূপে। হুং (চালে তৈরি বিদ্যার) একে-প্রিয় পানীয়।

তিকত চীনের দখলে যেতে তিব্বতীয় উচ্চাঙ্করাও আশ্রয় নিয়েছে কুলু ভ্যালিতে। বেনিয়ার জাত এরা। লোকানপাট সাজিয়ে বসেছে কুলু ভ্যালি তথা মানালীতে এরা। আর রয়েছে গন্দীদের বাস—ভেড়া/ছাগল চরানো বাসের পেশা; সারা গ্রীষ্মে ভেড়া ও ছাগল নিয়ে চরিয়ে বেড়ায় উঁচু পাহাড়ের। নেমে আসে শীতে উঁচু থেকে নিচে অর্থাৎ কুলু ভ্যালিতে।

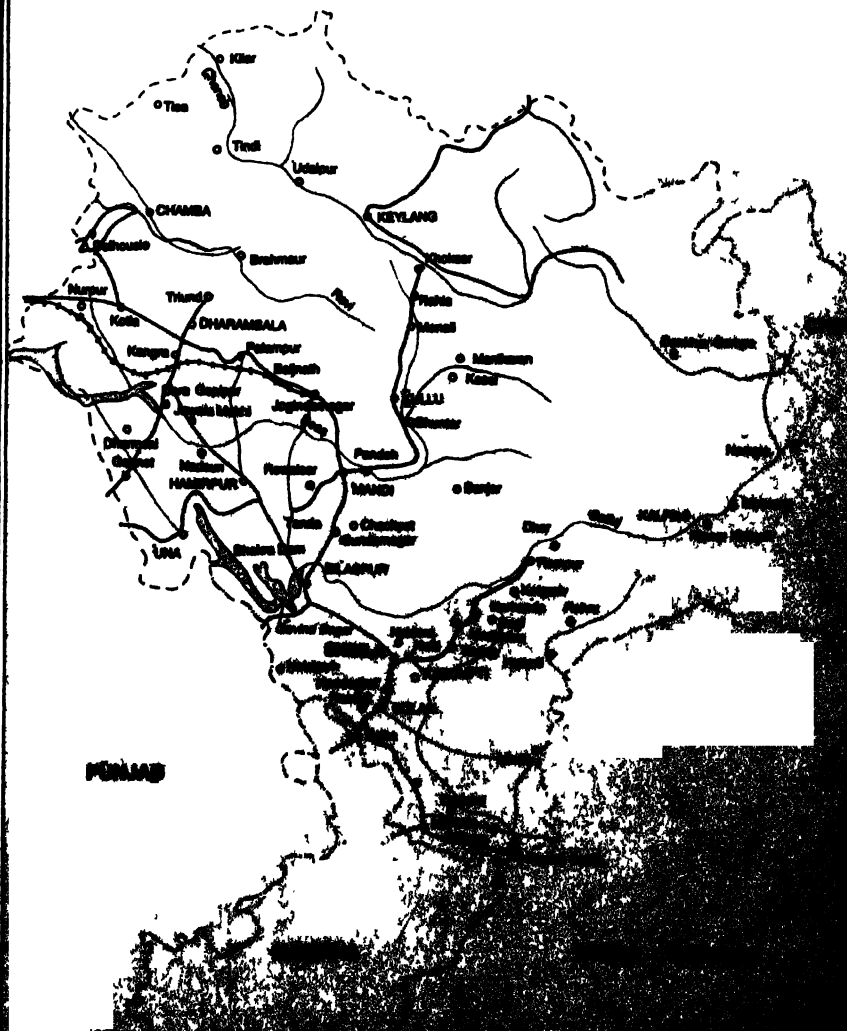
অতীতের স্বাধীন রাজা কুলু ভারতভুক্তির পর জেলায় রূপ পেয়েছে। সদর দপ্তর বসেছে বিপাশার পশ্চিম পাড়ে ১২১৯ মি উঁচু কুলুতে। পর্বতকূলের কাছে কুলুর থেকেও মানালী আকর্ষণীয় হলেও মেলা বসে দর্শনার—কুলুর প্রাণ পেওয়ার গাছের ছায়ায় ঢালপুর ময়দানে। তবে, বৈচিত্র্য আছে কুলুর দর্শনারায়। রাবণ গোড়েনা—বিজয়া দশমী অর্থাৎ দর্শনারাতে (অক্টোবর) নেমে আসে দূরের বহুদূরের পাহাড়ী গাঁ থেকে গ্রামবাসীরা তাদের জাতীয় সাজে সজ্জিত হয়ে। বিচিত্র সব বাজনা বাজিয়ে মিছিল করে আসে এরা। প্রত্যেকটি মিছিলের পুরোগামী হয়ে আসেন রথ চড়ে তাদের উপাস্য দেবতা। মানালী থেকে হিড়িখা দেবীও আসেন রথ চেপে উৎসবে। আসা-যাওয়া দুই-ই ঘটে সব দেবতার আগে দেবী হিড়িখার। আসেন দেবতা জমলুও মালানা থেকে। তবে, মেলায় নয়—ঠাই মেলে জমলুর নদীর অপর পারে ঢালপুর ময়দানে। শোনা যায়, কখনো কখনো এই দেবতার সংখ্যাগিরে পৌছায় ৬০০-এ। ক্ষণে ক্ষণে পরিক্রমায় বেরোন দেবতারা। গুণ্যার্থীরা রশি টানে দেবরথের। রঘুনাথ এদের মধ্যে কুলীনশ্রেষ্ঠ। মন্দিরও রয়েছে ১ কিমি দূরে শর্বরী বরনা পেরিয়ে রঘুনাথজীর। ১৭ শতকে কুলুরাজ জগৎ সিং দেবতা রঘুনাথজীর মূর্তি আনেন অযোধ্যা থেকে। মন্দিরটিও রাজার তৈরি। বিকেল পাঁচটায় মন্দির খোলে।

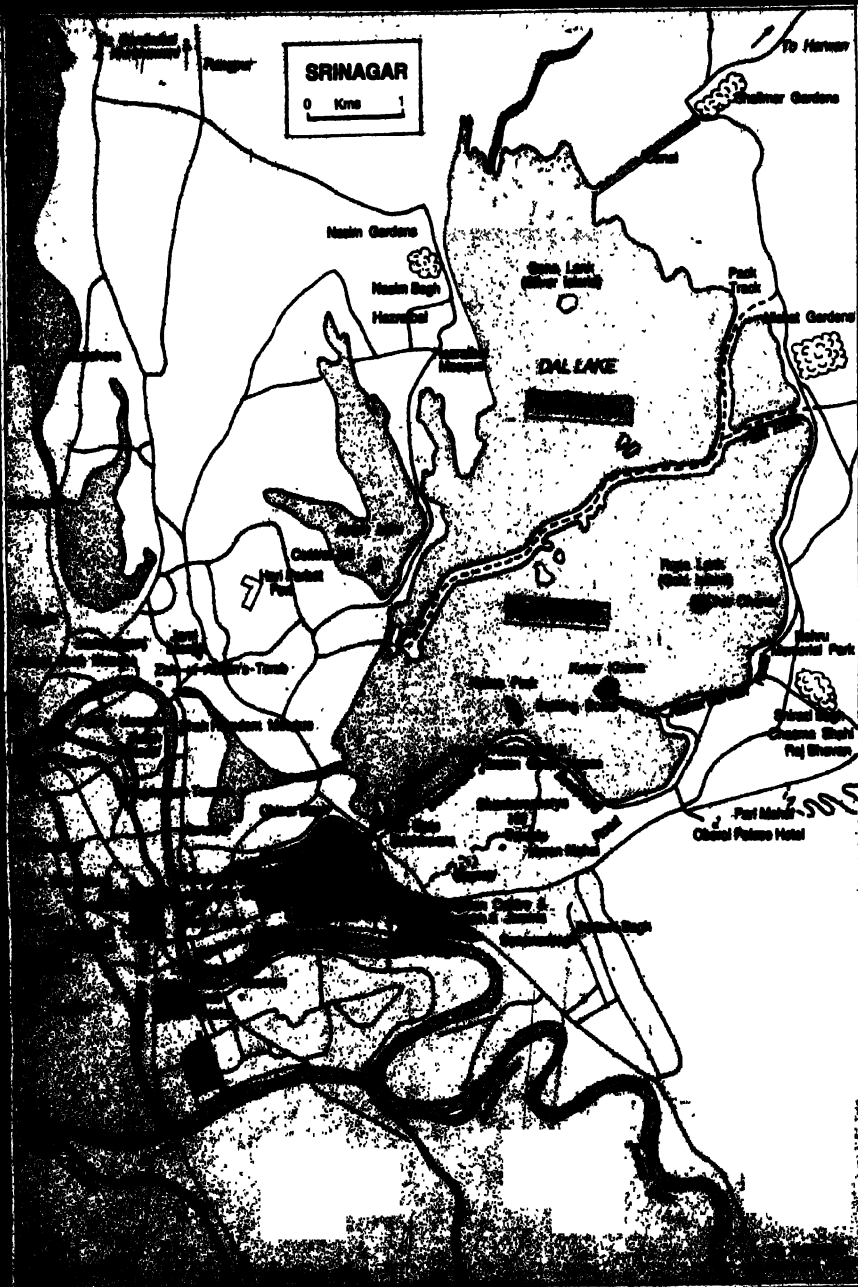
দেবতারাও অবস্থান করেন মেলাগ্রাঙ্গণে। অবস্থান করে ভক্তের দল দেবতাকে ঘিরে। যেমন সহজ-সরল এদের সমাজ জীবন, ঠিক তেমনই অঙ্কবিশ্বাস রয়েছে দেব-বিজে। পেশ করে অভাব-অভিযোগ দেবতার কাছে ভক্তের দল। দেবাসন ছুঁয়ে পুরোহিত মুখাভূমিকা নেয় দেব-বিশ্বাসের। মহিষ, ভেড়া, ছাগল, শূকর, মেরগ, মাছ ও ককড়া বলি হয় দেব উদ্দেশে। শেবদিনে মূর্তিতে নয়—প্রতীকরূপী বাসের ছুপে আওন ছালিয়ে রাবা পোড়ে অর্থাৎ ঘুঁটের দমন মন্টে নদী-কিনারে। আর বসে দেবতা দরবার শেবের সেদিন মেলাগ্রাঙ্গণে।

১৬ শতকে রাজা জগৎ সিংয়ের হাতে দর্শনা উৎসব শুরু হয়ে মেলা বসে আজও। বিজয়া দশমীতে শুরু হয়ে চলে ১০ দিন। ভাবু পড়ে, বলমলে সাজে সেজে ওঠে ঢাল-পুর ময়দান। বোতাকো চলে সিনরাভা জুড়ে। নেমে আসেন রাজামশায় কুলু উপত্যকার। মিছিলে অংশ নেন তিনিও। নেচে ওঠে সারা কুলু ভ্যালি—বাটা-গান-বাজনার মেয়ে ওঠে মেলাগ্রাঙ্গণে। কুলু নরতি অর্থাৎ লোকনৃত্যের অভ্যুদয় বসে। শিল্পীরা অঙ্গলন বেশ-লোকনরত থেকে। বিজয়ীরা গানবাজি করা। কুলুরাজ পৌরসভার দপ্তর কুলুরাজ হুংয়ের।

HIMACHAL PRADESH

JAMMU AND KASHMIR





D ৩০০-৪২৫; Fancys GH, D ২০০-৩২৫; Sidhartha, DAB ৪০০ ৫০০ ৬৫০, সাইট ৭৫০, কল বুকিং: Span ৫ 2801209; H Shobha, DAB ৫৫০ ৭৭০ ৯৩৫, কল বুকিং: Span ৫ 2801209/Diamond ৫ 276714

আর খাবার হোস্টেল নানান কুলুতে। বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে ট্যুরিস্ট অফিস লাগোবা HPTDC-র Monal Cafe বা অনুরূপে Prem Dhaba, বাস স্ট্যান্ডে ডিক্কাতির আহার্য Gaku Restaurant, ট্যুরিস্ট স্ট্যান্ডে Marigold Restaurant ভালই।

বাজার

মাণ্ডী থেকে কুলুর পথে, কুলুর ১৫ কিমি আগেই বাসপথ থেকে কিছুটা গিয়ে বিপাশার তীরে বাজারায় ৮ শতকের মন্দির বশেশ্বর মহাদেবের। গণেশ, বিষ্ণু, অসুরমর্দিনী দুর্গাও রূপ পেয়েছেন দেওয়ালে। প্রবেশদ্বারের দু'পাশে গঙ্গা ও যমুনার মূর্তি। ওড়িশি শৈলীতে তৈরি মন্দিরের ভাস্কর্য ও কার্ভিং-এর কাজ সুন্দর। তবে ১৭৬৯-৭০এ কাংড়ার রাজার হানায় ক্ষতিগ্রস্ত হয় মন্দির। কুলু আসার পথে মাণ্ডী পেরুতেই কভাকটরকে বলে মন্দির দর্শন করে নেওয়া যায়। আবার একটা বাস ছেড়ে পরের বাসেও চলা যেতে পারে কুলু বা মানালী। ফলের খেতির জন্যও বাজারায় খ্যাতি। PWD RH-এ থাকার ব্যবস্থা মেলে। অবু: Tourist Office, Kullu

মণিকরণ

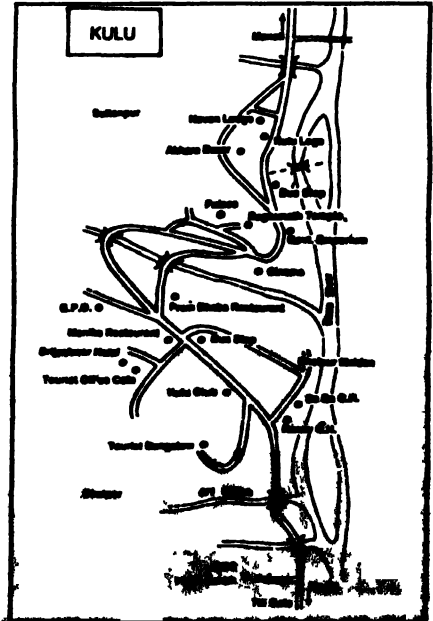
কুলু থেকে ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস। ২২ ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে ভুট্টার-জারি-কাসোল হয়ে ৪৪ কিমি দূরের মণিকরণ। পার্বতী উপত্যকায় পার্বতী নদীর তীরে ১৯০০ মি উঁচুতে মণিকরণ। কুলু-মাণ্ডী সড়কের ভুট্টারে NH 21 ছেড়ে সেতু পেরিয়ে পার্বতী উপত্যকায় খরসোতা পার্বতী নদীর বুকে ডর দিয়ে চলেছে। বিয়াস ও পার্বতী নদীর মিলনও ঘটেছে ভুট্টারে। সারাপথের নরনলোভন নৈসর্গিক শোভা মুগ্ধ করে যাত্রীদের। ৪ কিমি আগেই পার্বতী নদীর পাড়ে কাসোল-এর প্রকৃতিও সুন্দর। কাসোলেও HPTDC-র Tourist Hut DAB ২০০ মেলে। পথেই পড়ে পাইনে ছাওয়া পাহাড় টঙে আর এক সুন্দর জারি গ্রাম। লোকানপাট মেলে। পথের আকর্ষণে মানালী ভ্রমণে মণিকরণ বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। ৮৪ কিমি দূরের মানালী থেকে কনভাকটেড ট্যুরে HPTDC-র মিনিবাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ৩০ টাকার সার্ভিস বাসও আছে মানালী থেকে। ট্যুরিস্টেও চলা যেতে পারে মানালী বা কুলু থেকে মণিকরণে।

পশ্চিমে বিষ্ণুকুণ্ড, উত্তরে হরেন্দ্র পর্বত, পূবে ব্রহ্মনালা, দক্ষিণে পার্বতী গঙ্গা—এই বিস্তীর্ণ ভূভাগ জুড়ে মণিকরণ তীর্থ। কুলু জনপদ পার্বতী গঙ্গার উত্তর তীরে আর দক্ষিণে বাস স্ট্যান্ড—সেতুকে পারাপার। সাক্ষাৎ ব্রহ্মার স্বরূপ এই মণিকরণ। পুরাণে মেলে স্বর্গের সেক-সেকের বিহার হল কুলু-পাট অর্থাৎ মণিকরণে। মণিকরণকে দিয়ে একটি ঐতিহাসিক আত্মচরিত আছে। শিব মন্দির পার্বতী কোঠে

বেড়িয়ে হঠাৎ পার্বতীর কানের মণিকণ্ডল যায় পড়ে। শেবনাগ সেটি নিয়ে পালিয়ে যায় পাতালে। ফিরে পাবার আশায় শিব তপস্যায় বসেন—কঠিন তপস্যা। কৈপে ওঠে ব্রহ্মাও। শিবের তৃতীয় নয়ন থেকে জন্ম নায়নাদেবী পাতালে যান মণির খোঁজে। পাতাল হুঁড়ে বেরিয়ে আসে শেবনাগ মণি নিয়ে। সঙ্গে আরও নানান—শিবকে ভুট্ট করতে। ওঠে জল, হয় প্রবল। কলিযুগের প্রতি ঈর্ষাচিত নিলোভি শিব নিজেরটি রেখে বাকি মণিগুলিকে পাথর করে চাপা দেন প্রবল—এরই নাম মণিকরণ। জল যথেষ্ট গরম, জলে সালফার আছে; বিখের সবচেয়ে গরম জলের প্রবলও এই মণিকরণে। স্নানেরও ব্যবস্থা আছে পুরুষ ও মহিলাদের। কুণ্ডের পাড়ে মূল মন্দিরে দেবতা—শিব ও পার্বতী।

আরও পরে ১৫৭৪ খ্রিস্টাব্দে গুরু নানক আসেন—আবিষ্কার করেন পাথর সরিয়ে প্রবল নতুন করে। সেই স্মৃতিতে গুরদ্বারা হয়েছে মন্দির লাগোয়া।

ধাকধ ও আহার্য মেলে শুক্লারায়। আর হয়েছে পার্বতী নদীর পাড়ে HPTDC-র H Parvati, ৫ (01902) 73735, DAB ৩৫০, বাবাবের ব্যবস্থাসহ মণিকরণে। আর আছে Padma Family House ছাড়াও নানান। প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়া। কীরের হাদ নিতে পাবেন রেস্তোরাঁয়। আর মেলে মধু মণিকরণের সোফান পাটে। এছাড়া আছে বিষ্ণু, রঘুনন্দন ও রাম মন্দির মণিকরণে। ২৬ কিমি দূরে ৩৫০০ মি উঁচুতে কীর গঙ্গা, পিন পার্বতী ও পুলগা গিবিপথে হাটাপথও গিয়েছে মণিকরণ থেকে।



মানালী

কুলু ভ্যালির অন্যতম দর্শনীয় শহর মানালী। মহাশ্রলয়ের পর দিবা তরুণীতে স্বর্ণ থেকে মর্ত্যে নামেন আদি পিতা মনু এই মানালীতে। বাসও ছিল মানবব্রহ্মা মনুর অর্থাৎ মনুর আলয়, কালে কালে মানালী। মানব জন্মের শুরুও সেই থেকে বিপাশার তীরে মানালীতে। নামও ছিল সেকালে মানালসু। কুলু থেকে দূরত্ব ৪০ কিমি, উচ্চতা ১৯২৮ মি। কুলু ভ্যালিরও শেষ এই মানালীতে। পাহিন আর সেবাদারুতে ছাওয়া, তুষার-মৌলী পাহাড়ে ঘেরা শান্ত সুনিবিড় পাহাড়ী শহর মানালী। সবুজের সমারোহ বেশি মানালীতে। মানালী শহরের নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে বিপাশা আর অপরদিকে মানালসু নদী। শতবর্ষ আগে ব্রিটিশের হাতে আপেলের প্রথম আবাদ হলেও মানালীর আপেল আজ বিশ্বখ্যাত। রক্তিম আভার সাথে সোনালী রঙের সুবাসু আপেল ফলে মানালীতে। এছাড়া পিচ, চেরীও বিশেষভাবে উল্লেখ্য। আগস্ট-সেপ্টেম্বরে গাছ থেকে আপেল পড়ে পড়ে, জমে জমে পাহাড়ের সাথে পাল্লা দিয়ে মাথা তোলেন আপেল খেতে। গাছ থেকে পড়ে যাওয়া আপেল নেয় না গাছের মালিক। ঠিক তেমনিই গাঁজাও হচ্ছে যত্রতত্র মানালীতে আজ। পুলিশ সতর্কতাও চোখে পড়ে চলতে-ফিরতে। হোটেল হোটেলও হানা দেয় গাঁজার সন্ধানে পুলিশ। যাত্রীদের উচিত হবে গাঁজা কেনা-বেচা-সেবন থেকে বিরত থাকা।

পূর্ণিমার রাতে বিপাশার পার ধরে এগিয়ে চলুন—সেখবেন চাঁদের আলোয় পুরো মানালী শহর অভিসারিকার সাজে সজে উঠেছে। অতীব নয়নাভিরাম এ দৃশ্য। মানালীর প্রাকৃতিক সৌন্দর্যও সারা বিশ্বে আজ তুলনাহীন। তাই কুলু ভ্যালির ভ্রমণার্থীরা ছুটে আসেন মানালীতে। মানালীকে ভর করে উপভোগ করেন পুরো উপত্যকার রূপ-রস-মধু। এমনকি পাণ্ডবরাও মানালীর রূপে মুগ্ধ হয়ে বনবাসকালে এসেছিলেন মানালীতে। আপনিও মানালী থেকেই কুলু বেড়িয়ে নিন। মৃৎস্থ বাস যাচ্ছে মানালী আর কুলুর মাঝে।

তবে অতীতের নির্জনতা লোকারণ্যে লোপ পেয়েছে আজ। কান্দীর উপত্যকা অশান্ত হয়ে পড়ায় লাভাক যাত্রার মানালীও রক্ত-অপরিসীম। মানালীর মূল জীবিকা আপেল

খেতিতেও বাড়ি উঠছে আজ—গড়ে উঠছে হোটেল নিত্য-নতুন। পাহিন বৃক্ষরাজিও আজ লুপ্ত শহর থেকে। পাখিরাও কাকলি শোনায় না সকাল-সাঁঝে। বাস স্ট্যান্ডকে ঘিরে বাজারের দ্বিধি পরিবেশ, কলুষিত করেছে বিরক্তিকর নোংরার সাথে যাত্রিক শকটের যন্ত্র-নিদা। তেমনিই বাজারও বসেছে বাসস্ট্যান্ডের বিপরীতে মডেলটাউনে। তিব্বত থেকে আসা দালাই লামার মিশনের তিব্বতীয়রা দেশী-বিদেশী নানান পণ্যের দোকান সাজিয়েছেন। হিপিরিও আন্তানা গেড়েছে মানালীর গ্রাম-গঞ্জে। শহরের মূল সড়ক Mall Rd-এ বাস ও ট্যাক্সি স্ট্যান্ড। টুরিস্ট অফিসটিও এই ম্যাল রোডে। পাশেই হিমাচল ট্যাক্সি অপারেটরস ইউনিয়ন থেকেও ভ্যালী দর্শনে গাড়ি মেলে ভাড়া। নানান হোটেল-রেস্তোরাঁ-দোকান পাটও গড়ে উঠেছে ম্যাল রোডকে ভর করে।

মহাভারতে মেলে হিড়িম্বা রাক্ষসকে মেরে হিড়িম্বাকে বিয়ে করে ভীম। ভীমের পত্নী হিড়িম্বা রাক্ষসী হলেও মানালীতে তিনি দেবী। রিসেপশন সেন্টারের সামনে দিয়ে সার্কিট হাউসের বিপরীতে মানালসু হোটেল ভহিনে রেখে গিয়ে হাটা পথে শহর থেকে ১২ কিমি দূরে টুংরি পাহাড়ে দেব-দারুতে ছাওয়া হিড়িম্বা মন্দির। গাড়িও যাচ্ছে বিপাশার তীর ধরে মন্দির-দ্বারে। ১৫৫৩য় মহারাজা বাহাদুর সিং-এর হাতে ভৈরী, চার খাপের প্যাগোডাধর্মী কাঠের মন্দির; টুংরি মন্দিরও বলে থাকে লোকে একে। কারুকার্যময় সামনের ফটকে নাশান মূর্তি, মন্দিরের পাশাপবেদীতে দেবীর পায়ে ছাপ। মে মাসে উৎসব হয়। একটি করুণ আখ্যান আছে এই মন্দির ঘিরে। যে শিল্পী তৈরি করেন এই মন্দির তার ডান হাতখানি কেটে রাখেন মন্দির কমিটির লোকেরা। উদ্দেশ্য, দ্বিতীয় কোনো মন্দির যাতে না বানাতে পারেন শিল্পী। কিন্তু শিল্প থাকে রক্তে। তাই, শিল্পী বাম হাতেই দক্ষ হয়ে ওঠেন। ডাক পড়ে চাষা উপত্যকায়—মন্দির হয় ত্রিলোকনাথের। এই মন্দির যেন কথা বলে, হায় মানে টুংরি। ভয় পায় ত্রিলোকনাথের লোকেরাও—যদি তৃতীয় মন্দির আরও ভাল করে কেলেদন শিল্পী। তাই, আর বাম হাত নয়, মাথাটাই কাটা গেল শিল্পীর ত্রিলোকনাথে। গাড়ির পথে বিপাশা পেরুতেই আর এক দর্শনীয় মানালী ক্লাব হাউস। সেবাদারুতে ছাওয়া সুন্দর নৈসর্গিক পরিবেশে নানান ইনডোর গেমের ব্যবস্থা নিয়ে গড়ে উঠেছে। সাক্ষাতিক

হিমাচল প্রদেশের নয়নাভিরাম নৈসর্গিক সৌন্দর্যকে সম্পূর্ণ উপভোগ করতে ও ভ্রমণের ব্যবতীয় দায়িত্ব এভাবে LINKAGE একটি সেবা ঠিকানা।

LINKAGE

Tours & Travels

হোটেল বুকিং কল: দিনক—২০০-২০০০ টাকা • রাত্রি—২০০-২১০০ টাকা • জালুই—২৫০-২২৫০ টাকা • রাক্ষস—২০০-১৪০০ টাকা। এছাড়া হিমাচল টুরিজম পরিচালিত নৈসর্গিক হোটেল বুকিং-এর ব্যবস্থা। হিউন প্যাকজ—আপনার বাসেই অনুযায়ী আকর্ষণীয় ব্যবস্থা। আপনার মনের যত্ন করে তৈরি হোট-বড় নানারকম আকর্ষণীয় প্যাকেজ।

• Transport arrangement from Delhi, Chandigarh, Pathankot, Kalka.

Himachal Tourism Bus Booking :-

124B Lenin Sarani, Calcutta-13 (near Moylali)
Ph.: 246-5171/4485, 337-9970, Fax : 243-2766

অনুষ্ঠান হচ্ছে অভিটোরিয়ামে। ৫ টাকার টিকিট দেখে নেওয়া যায় অন্দর। শহরের আর এক আকর্ষণ তার মডেল টাউনে নবনির্মিত তিব্বতীয় মনাস্টি। তিব্বতীয় ছবির সুন্দর সংগ্রহ আছে। তেমনই তিব্বতীয়দের হস্তকৃত নানান সন্তার কেনার সাথে তৈরি দেখতেও মেলে মনাস্টিতে। মাউন্টনিয়ারিং ইনস্টিটিউটও বেড়িয়ে নেওয়া যায় পায়ে পায়ে। ট্যাক্সিও মেলে চুক্তিতে মানালী দর্শনে। রিসেপশন সেন্টারের পিছনে বিপাশা পেরিয়ে বাঁ-হাতি পথ গিয়েছে রোটাং-এর। ৩ কিমি যেতে বশিষ্ঠ বাথ বা আশ্রম তথা মন্দির। পুরাণ বলে, কুম্ভাব-পাদ রাক্ষসের হাতে শত পুত্রের মৃত্যুর পর শোকাক্ত পিতা প্রাণ বিসর্জনের জন্য পাহাড় থেকে বাঁপিয়ে পড়েন, মৃত্যু হয় না তাতে বশিষ্ঠের। তখন নিজেই রক্ত অর্থাৎ পাশবদ্ধ করে বাঁপ সেন নদীতে বশিষ্ঠ। নদীও তাকে পাশ অর্থাৎ বন্ধন মুক্ত করে কূলে পৌঁছে দেয়। তাই বশিষ্ঠ নাম দেন নদীর বিপাশা। কালে কালে ব্যাস বা বিয়াস। প্রবাদ, বশিষ্ঠ মূনি তপস্যাও করেছিলেন এখানে। গরম জলের কুণ্ড আছে। কিংবদন্তী, লক্ষ্মণের ছোঁড়া তীরের কুণ্ডের জলের উৎস, জলে সালফার আছে। পাইপে জল এনে পুরুষ ও মহিলাদের স্নানের আধুনিক ব্যবস্থাও গড়ে উঠেছে তুর্কি ঢঙের HPTDC-র হামামে ৭—১৩-০০, ১৪—১৬-০০, ১৮—২০-০০ টায় স্নানের জন্য খোলা। প্রতি ২০ মিনিটে (ব্যবহৃত জল সরিয়ে নতুন করে ভরা সহ) মাথাপিছু ১৫ Couple ৩০ হারে। এরই মাথার উপর ভূগুপ্ত পর্বতে বশিষ্ঠ গ্রামে মূল লেক—যেখানে ভূগুপ্ত মূনি তপস্যা করেন। লেকের জলেও স্নান করা যায়। ঠিক তেমনই ৫ কিমি দূরে গোশাল গ্রামে গৌতম ঋষির বাস ছিল সেকালে। আবার মানালসু নদী পেরিয়ে পায়ে পায়ে অতীতের মানালী গ্রামটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। আজকের শহর গড়ার আগে মানালী ছিল শহর থেকে ২ কিমি দূরে পাহাড় চড়ে সুন্দর নৈসর্গিক পরিবেশে। সতাই সুন্দর মানালীর এই প্রকৃতি। *Dharma, Janata, Sanam, Bhriugu* ছাড়াও নানান রেস্ট হাউস হয়েছে কুণ্ডকে ঘিরে।

কনডাক্টেড ট্রা: এমনকি HPTDC মানালী থেকে মরসুমি পর্যটকদের কনডাক্টেড ট্রারে ড্যালি দেখবার ব্যবস্থাও রেখেছে। ৭০ কিমি পরিক্রমায় নগর যাচ্ছে ১০০, ১৮০ কিমি পরিক্রমায় মণিকরণ ১৫০, ১১০ কিমি পরিক্রমায় রোটাং পাস ১০০ টাকায়। নামানবর্মী গাড়িও ভাড়া মেলে এদের কাছে। ৫ যাত্রীর গাড়ি—নগর ৩৫০ মণিকরণ ৯৫০ রোটাং ৭৫০। আর রোটাং পাস অঙ্গনা হলে বরফ দেখতে স্নো পয়েন্ট-ও যাচ্ছে এদের গাড়ি। হিমাচল রোডওয়েজ ৪০ টাকায় স্নো পয়েন্ট দেখিয়ে আনে। ফিল্ডে স্যাডভেকার, অহিবেল, হ্যারিসন ছাড়াও নানান ট্রাভেল এজেন্টও প্যাকেজ ট্রারে ড্যালি দর্শনে যাচ্ছে। আর মেলে ট্যুরিস্ট ট্যাক্সি—Tourist Office-এর কাছে-ম্যালে Taxi Operators Association-কে যোগাযোগ করা যেতে পারে। বেড়াবার মরসুম এপ্রিল থেকে নভেম্বর হলো মে-জুন

আবার সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাস রমণীয়। তাপমান ১২ থেকে ২৫° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। আর শীতে তাপমান থাকে ০° সেন্টিগ্রেডে অধরহ। বরফও পড়ে শীতে শহর জুড়ে মানালীতে। এমনকি মার্চের শেষেও বরফ দেখতে মেলে মানালীর পথেঘাটে। জুন-সেপ্টেম্বরে সাধারণ উলেন চললেও অন্যান্য সময় ভারি উলেন দরকার মানালী ভ্রমণে।



কূল থেকে আরও ৪০ কিমি গিয়ে মানালী। কুলুর প্রতিটা বাসই মানালী গিয়ে যাত্রায় বিরতি টানে। দুরাঙ থেকে কুলুর মতো এসে বাসে মানালী পৌঁছান। বিপাশার পশ্চিম পার ধরে পথ—পথও চলে বিপাশার কাঁধ বদলে—ডাইনে-বাঁয়ে। মুহূর্তে বাস—ঘন্টা দুয়েকের পথ। পুবেও পথ গিয়েছে নগর হয়ে। বাসও চলে ২টি পূর্ব ধরে নগর হয়ে মানালী। তবে সময়ে আধিক্য লাগে বাক খাওয়া পূর্বের পথে। কুলুর মতো মানালীর রেল সংযোগকারী স্টেশন—সিমলা ২৬০, যোগীন্দ্রনগর ১৩৫, পাঠানকোট ৩১৮, চণ্ডীগড় ৩১০, আশালা ক্যান্ট ৩৬৫ কিমি। বাস নিয়মিত সংযোগ গড়েছে প্রতিটি রেল স্টেশন থেকে মানালীর। বাস আসছে ৫১৮ কিমি দূরের দিল্লীর জনপথ থেকে HPTDC ও কান্মীর গিট থেকে HRTC-র মানালীতে।

আর মানালী থেকে হিমাচল ট্যুরিজম ট্যুরিস্ট মরসুমে প্রতিদিন ৬-০০ টায় ছেড়ে ২২-০০ টায় দিল্লী যাচ্ছে ৬৫০ টাকায় A/C Video লাক্সরি কোচ, non A/C Video যাচ্ছে ৪৫০ টাকায় একই সময়ে; প্রতিদিন ৮-০০ টায় ছেড়ে ১৭-০০ টায় সিমলা যাচ্ছে ২২৫ টাকায়; ধরমশালা যাচ্ছে ২০০ টাকায়; চণ্ডীগড় যাচ্ছে ৮-০০ টায় ছেড়ে ১০ ঘটায় ২৫০ টাকায়। মানালী আসছে একই সময়ে একই-ভাবে দিল্লী/সিমলা/চণ্ডীগড়/ধরমশালা থেকে। আর রাত্রিকালীন সার্ভিসে ১৮-০০ টায় মানালী ছেড়ে দিল্লী যাচ্ছে পরদিন ১০-০০ টায় ৪০০ টাকায়; ২০-৩০ এ ছেড়ে সিমলা যাচ্ছে ৫-৩০ টায় ২৫০ টাকায়; ধরমশালা যাচ্ছে ২৫০ টাকায়; ফেরেও এরা নিয়-মিত একই সময়ে একই ভাড়া। এমনকি সকাল ৯-০০ টায় মানালী ছেড়ে রিওয়ালাসর বেড়িয়ে ১৭-০০ টায় ফেরে ১৮০ টাকায়।

আর HRTC-র সাধারণ বাস যাচ্ছে—দিল্লী ১৪-৩০, ১৭-৩০ এ; সিমলা যাচ্ছে ১২ ঘটায় ৫-৩০, ৬-৩০, ১৯-৩০ এ; চণ্ডীগড় যাচ্ছে ১৪ ঘটায় ৫-০০, ৫-৩০, ৬-৩০, ৬-৪০, ৭-১৫-য়; পাঠানকোট যাচ্ছে ৪-৪০, ১৫-৩০-এ; হরিদ্বার ১১-০০ টায়; দেবাদুন ১৮-০০ টায়; ধরমশালা যাচ্ছে ৬-০০ টায়, ফেরা যাচ্ছে ৫-১৫, ৬-০০, ৭-১৫, ৮-০০, ১০-০০, ১৪-০০ টায়; উদয়পুর ৬-০০ ও ৭-০০ টায় মানালী থেকে। ফেরেও এরা নিয়মিত। বৃকিং: HRTC, Manali, ৩ 52323. গ্রীষ্মে বাস টিকিটের প্রচুর চাহিদা—তাই যথেষ্ট আশেপাশে অগ্রিম টিকিট কেটে বাত্মা সুসিদ্ধিত করা উচিত হবে। আর কুলু ও মাণ্ডীতে যাচ্ছে নানান বাস দিন-রাত্তির জুড়ে মানালী থেকে। নিকটতম বিমানবন্দর কুলুর ছুড়ীয়ে।

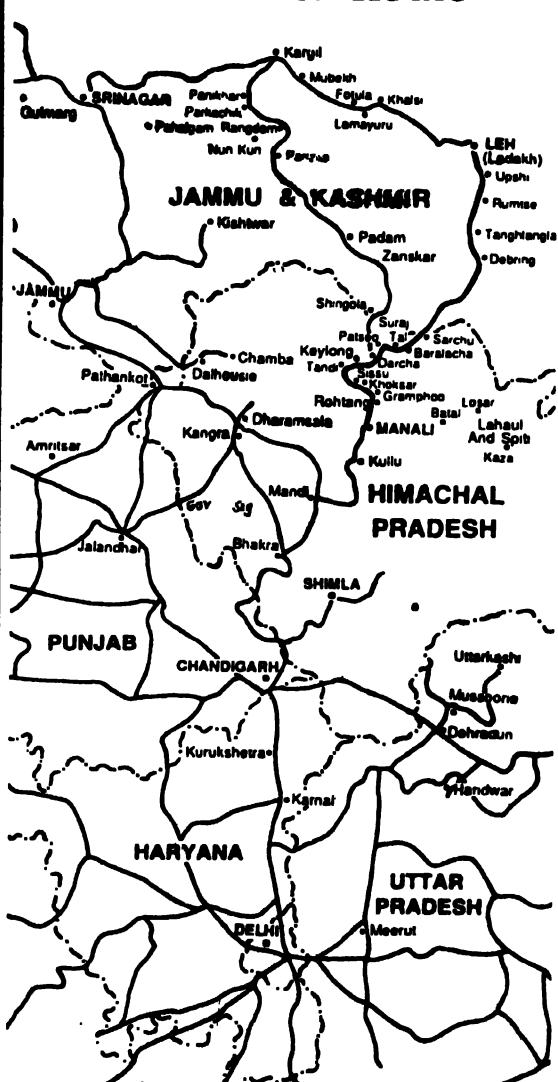


বাসকে ঘিরে হাটা দূরত্বে হোটেলের অবস্থান Manali-175131, STD-01902-এ। সংখ্যার বিশদাধিক হবে। বছরের নানান সময়ে রেটে এদের ভিন্নতর্য ঘটে। মে-জুন সিক সিজন, জুলাই-আগস্টের বর্ষার রেটে নামে নিচে; সেপ্টেম্বর-অক্টোবর মাসে সিজন। নভেম্বর থেকে এপ্রিলে বরফ পড়ে মানালীতে, তের-ই পড়ে বার রেটে, মানালীতে যেতে।

মানালী-লে সড়ক

মানালীর নবতম আকর্ষণ জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের লে-র বাস সংযোগকারী জংশন রূপে। ১৯৮৯তে জিপের চলন নিয়ে যাত্রী চলা শুরু হলেও গত কিছুকাল কাশ্মীর উপত্যকা অশান্ত হয়ে পড়ায় জুলাই থেকে অস্ত্রবরেন মধ্যভাগে মানালী থেকে নিয়মিত যাত্রীবাস যাচ্ছে লাডাকের জেলা সদর লে শহরে। সপ্তাহ ৪—৬-০০টার মানালী ছেড়ে সীমান্ত সড়ক সংস্থা GREF অর্থাৎ General Reserve Engineers' Force-এর নিয়ন্ত্রণাধীন বিশ্বের বিতীর্ণ উচ্চতম ৫৩২৮ মি উঁচু রাজপথ ধরে ২ দিনে ২৫—৩০ ঘণ্টায়। অবশিষ্ট ভারত থেকে লাডাক যাত্রায় মানালী-লে সড়ক আচ্ছন্ন ভূমিকা নিয়েছে। পথের দূরত্ব ৪৭৭.২৭ কিমি। বাস যাচ্ছে হিমাচল পর্বত ৮৫০, হিমাচল পরিবহণ ৫৫০, জে কে পরিবহণ ৫৫০; জিপ চলে ৯৫০০—১২০০০ টাকায় এগুবে। যাত্রার ১ দিন আগে সপ্তাহ ৯-০০টার অগ্রিম টিকিট বুকিং-এর প্রথা। তবে, যথেষ্ট চাহিদা হেতু আগেভাগে টিকিট কাটুট করে পৌঁছে টিকিট পেতে উদ্যোগ নিন। ৪টি পাসও পেরুতে হয়—রোটাং পাস ১৩৫০০ ফুট, বারালতা ১৬২৫০ ফুট, লাচুলাং লা ১৭৫২৮, বিশ্বের বিতীর্ণ উচ্চতম টাঙ্গোলা ১৭৫৮২ ফুট। বিপাশার কাঁধে ভর দিয়ে বাস চলে রোটাং, খোকসার, শিত হয়ে তান্তি রিক্সে চম্বাভাগা পেরিয়ে মরাদান অর্থাৎ ওয়েনিস কেলং, আরও বেতে ৩৩৫০মি উঁচুতে চারপাশ পর্বতশ্রেণী এগুনের শৈব গ্রাম দরচা; অসময়ের যাত্রীদের রাত্রিবাসের ব্যবস্থাও মেলে দরচার ক্যাম্প হোটেলে। পাছাড়ের গভির সঙ্গে প্রকৃতিরও বদল ঘটে—দরচা পেরুতেই রুক পাছাড়। পঞ্চও চলে পাছাড় বেয়ে ৪৮২১ মি উঁচু পটিসেও উঠে নেমে যায় ৪২৮৭মি উঁচু জিঞ্জিয়ারে। অদূরে 'ফটিক-বন্ধ বরকগা' জলের মনোহর হ্রদ সুরব-জাল রেখে বরকগাধিপতি ৪৮৭৭মি উঁচু বারালতা-লা অর্থাৎ পাস পেরিয়ে মানালী থেকে ২২২ কিমি দূরের সান্দ্রু-তে তাঁবুর ছোট্টে প্রথম রাতের বিশ্রাম। হিমাচল ট্যুরিস্টের Tourist Office'ও বসেছে সান্দ্রুতে। থাকার মানসি ব্যবস্থা—৭৫ টাকার ডাবিবেড, আহাৰ ৩০ ডেকে; মাসের জুলাইর নামের আধিকা দুই রুতেই। হাতলও হিমালয় সান্দ্রুতে। পঞ্চও চলে কখনও পাছাড়ের কোলে কোলে কখনও বা মাথার চড়ে।

Manali-Leh Route



LEGEND

- State Boundary
 River Reservoir/Lake
 Forest
 Major Road

সারচ থেকে লের দূরত্ব ২৫৫.২৭ কিমি। সেহু পেরিয়ে পাহাড় ডিঙিয়ে জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের গুরু। ১০০ মি যেতে কাশ্মীর খণ্ডেও তাঁবুর হোটেল মেলে। এদের কাছে আশা-মূল্যে ধাক্কা, বিছানাপত্র, আহার্য মেলে।

দ্বিতীয় দিনে সারচ পেরিয়ে ভাডিনালা। আবার পথ ওঠে ভয়াবহ চড়াই বেয়ে ৪৬৬৭ মি উঁচু গটালুপ দুরন্তগতির পার্বত্য হরিণ আইবেল্লের চারণভূমির মাঝ দিয়ে। চলার পথে ছোট সমতলে আর এক দর্শন ভারতে অনন্য হিমবাহ বাহিত ড্রামলিন (Drumlin) গঠিত Basket of Eggs relief অর্থাৎ ছোট ছোট ঢিপি ও গর ঘাসের চাপড়া। পথ চলে হুইকিনালা হয়ে পাহাড় চড়ে দিল্ল্যাড অব রোটাংগার-এর বাস অর্থাৎ তুষার-মরুপেরিয়ে ৫০৬৫ মি উঁচু লাচুলাং-লা গিরিবর্ষে। গিরিপথ ছেড়ে পথ চলে নেমে ৪৮৭৮ মি উঁচু তীক্ষ্ণ সূচালো বর্শাফলক তুল্য অজ্ঞেয় কাংলাপাল গিরিশিখর রেখে আসে এক সুন্দর প্রকৃতি—একপাশে প্রাচীর হয়ে পাহাড় শ্রেণী আর এক পাশে বরফগলা জলধারায় যুগ যুগ ধরে ক্ষয়ে ক্ষয়ে সৃষ্ট শিলার অসংখ্য ক্ষয়িত মূর্তি। আরও গিয়ে ব্রিজ পেরিয়ে শিলার অনবদ্য ক্ষয়িষ্ণু রূপ ইন্ডিয়া গেট হয়ে পাং-এর অবস্থান। পাং-এর তাঁবুর হোটেলে দ্বিতীয় দিনের লাঞ্চ সেবের (রাতিবাসেরও ব্যবস্থা মেলে পাং-এ) বাস ওঠে আবার চড়াই বেয়ে। সাড়ে পাঁচ হাজার মিটার উঁচুতে ৫০x১½ কিমি ব্যাস্ত গন্দীরের চারণভূমি জাগচূদঙ্গ-এ পার্বত্য গাখণ্ড দেখতে মেলে। চমরীগাই-ও চরে বেড়ায়—আর আছে বিশাল লেক জাগচূদঙ্গ-এ। তেহপাড়ারের মাঠ পেরিয়ে জাগচূদঙ্গ চারণভূমি পেরুতেই বাস ওঠে পাহাড় চড়ে বিখ্যের দ্বিতীয় উচ্চতম ১৭৫৮২ ফুট উট্টাংলা লায়। কনকনে বাতাস, শীতের আধিক্য—মন্দিরও আছে টাংলাং লায়। আরও যেতে রূপান্তর পড়ে রুক্ষতা কমে সবুজের আবরণ গড়ে রুমসে থাকেই। বস্তু যেতে ব্রিজ মহাসিন্ধুর ওপারে উপসি-র চেকপোস্টে অভ্যর্থনায়নের প্রচলিত রীতি নথিভুক্ত করাতে হয়। সিন্ধুর কাঁধে ভর দিয়ে আরও ৫০ কিমি গিয়ে বাস পৌষাঘাট লাডাক অর্থাৎ গিরিবর্ষের দেশের তুষার মরুশহর লে।

পথের আকর্ষণেও মানালী থেকে লে চলা উচিত হবে। আকাশ বিদীর্ণ করে পাহাড় উঠেছে—লাডাক ও কারাকোরাম পর্বতশ্রেণী। অনুর্বর বর্ণময় পাহাড়, শিরে তার শ্বেতশুভ্র তুষার ক্রীট। সূর্যালোককে ক্ষণে ক্ষণে রঙের বর্ণালী—সেও এক নয়নাভিরাম দৃশ্য। তবে, উচ্চতার আধিক্যে মাউন্টেন সিকনেস এ পথের নিভাসনী। তাই উচিত হবে বাসে চড়ার আগে রাত্রে একটি অ্যোডোমিন খেয়ে নেওয়া। তেমনিই অ্যোডোমিন/অ্যাসপিরিন সঙ্গীও করা দরকার এপথে। অবস্থার পরিপ্রেক্ষিতে লে পথের ০১৬০-কে ফোন করে ডাক্তারি সাহায্য নেওয়া যেতে পারে দিনরাত্রি ছুড়ে। সীমান্তবর্তী শহর লে, চলাকোরায় নানান বিবিন্দিবেশ। তাই উচিত হবে ভারতীয় নাগরিকত্বের নিদর্শনরাশী একটি পরিচয়পত্র সঙ্গী করা। তেমনিই ট্রেক করেও চলা যায়। মানালী থেকে লে—কোলা, পাদুম ও জাঁসকর উপত্যকা হয়ে।

লে-র নবতম আকর্ষণ হতে চলেছে হীটুং-বিজুং ভারতীয়দের দিল্লী-মানালী-লে হয়ে কৈলাস ও মানস সরোবর যাত্রা। এপথটি ভারতীয়দের কাছে যথেষ্ট আদরশীল হবে। লে থেকে যাত্রা শুরু করে ইতিহাসের কালের ক্যারাকোরাম রুট ধরে বাসে ২০০ কিমি গিয়ে ডেমচকে রাতিবাস। পরদিন আবার বাসে ভারতীয় সীমান্ত পেরিয়ে গায়টক হয়ে ২৩০ কিমি দূরের ভারতেন অর্থাৎ কৈলাসের

ট্রেক পয়েন্টে পৌঁছাবে বাস। আর ভারতেন থেকে ৪০ কিমি দূরের হোরে অর্থাৎ মানসের ট্রেক পয়েন্টেও বাস যাচ্ছে। ৪৫৫০ মি উঁচুতে ২ দিনে ৭০ কিমি পরিক্রমায় মানস সরোবর ও সম উচ্চত ৫১ কিমি পরিক্রমায় কৈলাস পর্বত পরিক্রমায় পৌরাণিক বিধি। তবে, ইমাক ও বোড়া মেলে কৈলাস ও মানস দুই পরিক্রমা পথেই। ভারত সরকারের ব্যবস্থাপনায় জম্মু ও কাশ্মীর পর্বতন দপ্তরের উদ্যোগে এ পথটি নিয়ে গবেষণা চলছে জোর ক্রমে। খুব শীঘ্র এ পথটির উদ্বোধন হওয়া অস্বাভাবিক নয়।

বাস স্ট্যান্ডের ডানহাতি রিসেপশন সেক্টার পেরুতেই আবার ডাইনে সেওদার বনে ঘেরা বিপাশার পাড়ে ৪ বেডের ৩২ ঘরের HPTDC-র Tourist L- এ ডমিটির প্রখ্যায় কমন বাথের ঘর; খাবারের ব্যবস্থা পৃথক। লাগোয়া H Beas, ৫2832, DAB ২০০ ২৫০ ৪০০ ৫০০ ৬০০; হিডিংমুখী ১০ মিনিটের পথে আপেল খেতের রমণীয় পরিবেশে H Rohtang Manalsu, ৫2332, DAB ৪০০ ৫০০ ৬০০ চার বেডের ঘর/সুইট ৬০০; ২ কিমি দূরে কিচেন সহ ২ ঘরের Log Hut, ৫2407, ২৫০০ ৩০০০ ৩৫০০; Hadimba Cottage, ৫2334, ১৫০০; Hamta Hut ১৫০০; আর হয়েছে টুরিস্ট অফিস লাগোয়া নবতম H Kungam, ৫3197, D ৮৫০ ১০৫০ ১৫০০; টুরিস্ট অফিসের শিরে ডমিটির প্রখ্যায় HPTDC-র Yatri Niwas; এদের বুকিং: Area Manager, Tourist Information Office, Manali-175131, ৫3531. বা কলকাতায়: Span ৫2801209/Diamond ৫276714/Linkage ৫2465171. অফিস সময়ের পর কেয়ারটেকার সে-রাতের মতো বুকিং দিয়ে থাকেন। ITDC-র H Manali Ashok, DAB ১৭০০ ২১৫০ সুইট ২৩৫০ ২৬৯৫ তাঁবু ১২৫০; বশিষ্ঠ কুন্তের পথে ৪০ বেডের Youth Hostel-এ বেড ২০ সভা ১০ করে। শহরে ঢুকতেই PWD-র রেস্ট হাউসেও ঘর মেলে যাত্রীর।

আর আছে অল্প প্রাইভেট হোটেল মানালীতে। বাস স্ট্যান্ড থেকে সামান্য শিছুতেই ডানহাতি Model Town. এই মডেল টাউনে তিব্বতীয় মনাস্ট্রিকে ঘিরে রূপ পেয়েছে নিম্ন ও মধ্যমানের নানান হোটেল—H Shivalik, ৫2322, D ৩৫০ ৪৫০ ৫৫০, কল বুকিং: Linkage, ৫2465171; H Shanggriila, D ২০০-৩২৫; Neel Kumal GH, D ২৫০-৪৫০, কল বুকিং: ক্লাসিক ট্রাভেলস, 2-3 Stephen House, Cal-1, ৫2483166; H Ajanta, D ২০০-৩৫০; H Karma, D ৩৫০; Central View Tourist H, D ৩৫০-৬৫০; Lhasa H, D ৩৫০-৬০০; Sky Lark GH, D ৩২৫-৪৫০; H Him View, DAB ৬০০ ৮০০ ৯০০ সুইট ১৩৫০, কল বুকিং: Linkage ৫2465171; Sagar H, D ২৫০-৪৫০, কল বুকিং: Tourist Corner, ৫2489049; Mount View GH, D ২৭৫-৪২৫; H Capital, D ২৭৫-৪২৫; H Aroma, D ৩২৫-৫৭৫; H Santiniketan, D ৩০০-৪৫০; Sun Flower H, D ২৫০-৪৭৫; H Premier, D ৫০০ ৬০০, কল বুকিং: Span ৫2801209; H Paramount, D ২৭৫-৪৫০; Chaman H, D ২৫০-৩৭৫; H Sun Flower, D ৩০০-৬০০; Greenland H, D ২৭৫-৪৫০; H Bulbul, Kiran Paying GH, Alpine H, Rock Sea, Diamond, Chelsea, Raj Palace, H Kilinga, H Shingar, Anuj GH, Monalisa, Park View, H

day Home, D ৪৫০-৬৫০; H Devbhumi, D ৪৫০ সুইট ৬৫০; Snow Valley Resorts, near Log Hut, D ৮৯০ ৯৯০ ১০৯০ ১২৯০ ১৭০০ ১৯০০ ২২০০, কল বুকিং: ① Span 2801209/Linkage 2465171; Honeymoon Inn, D ৬০০ ১১০০ ১৩০০ ১৫০০, কল বুকিং: ② 2388678/2465171/2801209, দিল্লী বুকিং: Travelcase, ③ 3711142; H Beas View, D ৭৫০ ৮০০ সুইট ১১০০, কল বুকিং: ④ 276714/2801209; Evergreen H, D ৬৫০ ৮৫০ সুইট ১২০০, কল বুকিং: Linkage ⑤ 2465171; Manali Castle, D ৬০০-৮৫০, কল বুকিং: ⑥ 2801209; H Manali Resorts, MAP প্রথায় D ৬২০০-৫০০ সুইট ৪০০০, কল বুকিং: NCS Travels, 225F, AJC Bose Rd-20 ⑦ 2474727; New Hope GH, DAB ৪০০ সুইট ৬৫০; Awasthi Cottage, SCB ১২৫ DCB ২০০ পাঁচ বেডের ঘর ৬২৫; Ambika GH, SAB ২০০ DAB ৩০০-৪৫০; White Rose GH, D ২৫০-৪২৫; H Gandharu, School Rd, opp Tourist Office, D ৩৫০-৬৫০ সুইট ৮০০; Him GH, D ৩৫০ ৪৫০ চার বেডের সুইট ৬৫০ ৭৫০, কল বুকিং: ⑧ 276714; H Silver Moon, D ৪৫০-৬০০ সুইট ৮০০, H Prashant, D ৬৫০-৮৫০, হোটেল দু'য়েরই কল বুকিং: Linkage ⑨ 2465171; Budh GH, D ২২৫-৩৫০; Negi Paldan Cottage, D ৩০০; Hill Top H, D ৩০০-৪২৫; Brightways H, DAB ৪৫০ সুইট ৮৫০; Kalpana H, D ৩০০-৪৫০; Neelam H, D ৩০০; Devi Dyar, B1½, D ৩৫০-৪০০; Shaleema Cottage, B1, D ২০০-৩৭৫; Shailja H, B½, D ২৭৫; Mid-Land H, Pujara Shiraj H, B½, D ২৭৫-৪৫০; H Meadows, D ৩০০-৪৫০; H Highway, D ৩৫০-৬০০; H Hill Queen; Woodlines H, D ২৭৫-৪৫০; Ambassador Resort H, Sunny Side, Mahal-175131, AP-D ৩৮৯৫ ৫২৬৪ ৫৫০০ ৬৫৯৯, কল বুকিং: ⑩ 276714/2801209/2389476; তবে যাত্রী সমাগমের উপর রেট ওঠানমা করে মানালীর সাধারণ হোটেল। নলে ঠাণ্ডা ও গরম জলের ব্যবস্থাও মেলে হোটেল বিশেষে। গিজারেরও প্রচলন আছে সাধারণ হোটেল।

Out Town H, DAB ১১৯৫ ১৪৯৫ ১৯৯৫ সুইট ৩৪৯৫, কল বুকিং: Span ⑪ 2801209, দিল্লী ⑫ 6181263, মানালী ⑬ 52375; Himani Resorts, Club House Rd, DAB ৬০০-১০০০ সুইট ১২৫০ ১৫৫০, অব্: দিল্লী-Himani, ⑭ 3323278; H Varsha, DAB ৫৫০ ৬৫০, কল বুকিং: ⑮ 276714/2801209; Manali Inn, D ১২০০ ১৪০০ ২২০০, অব্: দিল্লী

⑯ 7135171, মুম্বাই ⑰ 2006194; Dee Resorts, B1, D ২৫০০-৩০০০; Snow Crest Manor, D ২৩৯৫ ৩০০০ ৪৭৯০, কল বুকিং: ⑱ 2801209; Sagar Resorts, ⑲ 52555, D ২৪০০, কল বুকিং: ⑳ 2801209/294340, দিল্লী (011) 3355400.



নানান বাণিজ্যিক সংস্থা Holiday Home-ও গড়েছে মানালী পাহাড়ে। UCO Bank Officers Congress, 16-A, Brabourne Rd, 3rd Floor, ⑳ 2251778; Uco Bank Staff Club, 10 Brabourne Rd, Ground floor, ㉑ 2254120 Ext 206/234; PNB Employees' Union, 18 Brabourne Rd, Cal-1.

আর খাবার হোটেল নানান থাকলেও নীলকমলের আলভাতে/আলপোস্ত আজও বাঙালি ভ্রমণার্থীদের রসনা তৃপ্ত করে মানালীতে। মেইন রোডে আদর্শ রেস্টুরেন্ট, আশিয়ানা, আদর্শ, HPTDC-র চম্ভাভাল রেস্টুরেন্ট-এরও সুখ্যাতি আছে আহার্য পরিবেশায়। বাস স্ট্যান্ডের পাশে ম্যানালিসা, GPO-র পাশে চাইনীজ রুম-এর চীনা ডিশ; ব্রুড্রাগন আকারে ছোট হলেও আহার্য পরিবেশায় সুনামে যথেষ্ট বড় এরা। আর চীনা মিলের জন্য মেইন রোডের মাউন্ট ভিউ রেস্টুরেন্টের যথেষ্ট প্রসিদ্ধি। পাশেই গলিপথে ময়ূর রেস্টুরেন্টেরও যথেষ্ট সুনাম আহার্য পরিবেশায়। তবুও যেন বাঙালির আহার্যে হোটেল গীতাঞ্জলী সেরা আজ মানালীতে। তেমনি দিয়ে নরম হলেও যথেষ্ট গরম সেয় মানালীর শাল ও সোয়েটার।

রোটাং পাস

মানালী-কেলং জাতীয় সড়কে মানালী থেকে ৫১ কিমি দূরে ৩৯৭৮ মি উঁচুতে ১ কিমি ব্যাপ্ত রোটাং পাস। এপ্রিল থেকে জুন আবার সেপ্টেম্বর থেকে নভেম্বর মাসে প্রতিদিন ৯—১৬-০০টায় HPTDC-র লাঞ্চারি কোচ ১২৫, ৫ যাত্রীর গাড়ি ৮০০ টাকায় রোটাং পাস বেড়িয়ে আনে মানালী থেকে। অগ্রিম টিকিট ট্যুরিস্ট অফিসে মেলে। প্রাইভেট বাস আর ট্যাক্সিও (৭০০-৭৫০) যাচ্ছে এপথ পরিক্রমায়। জুন থেকে অক্টোবরে কেলং-এর বাসও যাচ্ছে রোটাং হয়ে। মানালী ভ্রমণার্থীদের কাছে বরফে ছাওয়া রোটাং অন্যতম আকর্ষণ।

অতীতের ইন্সকিলা আজকের দেওটিকা পর্বতে অর্জুন পাণ্ডপাত অস্ত্র লাভের মানসে ইন্সের তপস্যা করেন। বিপাশা পেরিয়ে বশিষ্ঠ ও ব্যাস ঋষির তপস্যাক্ষেত্র ব্যাসকুণ্ড ছাড়িয়ে

নিরালা-নির্ভানে নিপাশার পাড়ে একমাত্র বাঙালি হোটেল

ডিলাক্স রুম, ওয়াল-টু-ওয়াল কার্পেট, ঘরে ঘরে রঙিন টিভি

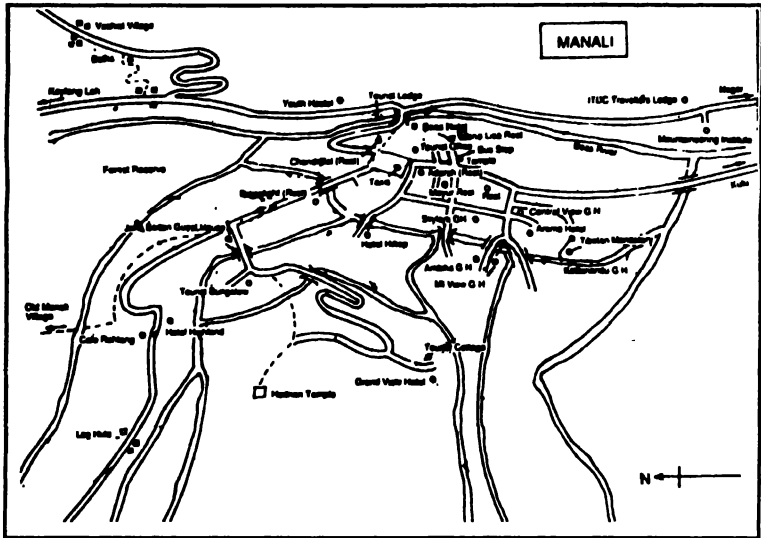
BEAS REGENCY

National Highway, Manali-175131, H.P., Ph.: (01902) 52194

Calcutta Contact : DIAMOND TOURS Ph.: 225-9639, 27-6714

Double Bed (14) : Rs. 450-500/- • Family Suite (3) Rs. 750/-

Off-season discount up to 50%



পথ হয়েছে উর্ধ্বমুখী। সুবিশাল পাইন, আর বার্চ প্রহরী হয়ে দাড়িয়ে এপথে। পথশোভা অতুলনীয়। মানালী থেকে রোটাং-এর পথে ৫ কিমি যেতে অভ্রূন গুফা, আরও ১ কিমি গিয়ে ঠাণ্ডা জলের প্রসবণ—নেহরুকুণ্ড তথা নেহরু পার্ক। পাশেই হনুমান মন্দির। আরও ৭ কিমি যেতে সোলাং ভ্যালি—চড়ুই-ভাতির সুন্দর পরিবেশ। সোলাং ভ্যালির নবতম আবিস্কার ৩৬ কিমি দূরে সোলাং নালার অপর পারে নীলাকাশের নিচে বৃত্তাকারে জলের ধারা পড়ে পড়ে স্বয়ম্ভু বিশালাকার (২৪ ফুট) তুষার লিঙ্গ। অতীতের কৃষ্টি পাথরের লিঙ্গ উধাও হয়ে রূপ নিচ্ছেন বরফে। চরিত্রে কাশ্মীরের অমরনাথের মতো হলেও সোলাং-এর ভূবার লিঙ্গের অগ্রভাগ নিটোল গোল। সোলাং থেকে মানালীর উত্তর-পশ্চিমে বরফে মোড়া গিরিশৃঙ্গও সুন্দর দৃশ্যমান। থাকার জন্য *Friendship H* আছে সোলাং গ্রামে। সোলাং থেকে ২ আর শহর থেকে ১৫ কিমি যেতে ৮০৩৯ ফুট উচু ছোট গ্রাম—কোটি। চারপাশ পাহাড় আর গ্রেসিয়ারে ঘেরা। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে সঙ্কীর্ণ গিরিখাদে বিপাশা নদী। *PWD RH* আছে কোটিতে। আর আছে চায়ের দোকান পাট, আহার্য ও মেলে। কোটি থেকে আরও ১২ কিমি গিয়ে রোটাং-এর পাদদেশে ৫০০ ফুট উঁচুতে পাহাড় গড়িয়ে ঝরনা নামছে—নয়নলোভন রহালা জলপ্রপাত। এপথে আরও যেতে বরফের ভুবন মারছি। মারহির মেদুর রমণীমতা, সুরম্য প্রকৃতি, অপর সৌন্দর্যময়ী মারহিতেও দোকান পাট হয়েছে—আহার্য মেলে। আবহাওয়া প্রতিকূল হলে মারহিতেই যাত্রায় বিরতি টানে প্যাকেজ ট্রারের গাড়ি। মারহি থেকে ১৬ কিমি দূরে সোনেপানি গ্রেসিয়ারের বিপরীতে লাহাঙ্কলের গেটওয়ে রোটাং। ক্লিক করা যেতে পারে—আবার

বিহারও করা যায় স্নেজ গাড়িতে বরফ রাজ্যে। ঘোড়াও চলছে যাত্রী বিনোদনে রোটাং-এ। প্রবল বাতাসের সাথে কনকনে শীত এপথে। বিপাশারও জন্ম রোটাং-এর বিয়াসকুণ্ড থেকে। প্রান্তরের উত্তর-পূর্ব ঘেঁষে পাহাড়ে ঘেরা কুণ্ড—স্বচ্ছ নীল জল। আলৌকিক হলেও সত্য—জলে নোংরা পড়ে না। জন-শ্রুতি, নানা পেরুলে অন্ধ হয়ে যাবে—তাই স্থানীয়রা কুণ্ডের কাছ ঘেঁষে না। ইগলু-র বাড়ির ধরনে বৃত্তাকার নাগজির মন্দির। বামে সরকুণ্ড—স্থানীয়দের বিশ্বাস সেন্টেব্রের ৪ তারিখ দিনান্তের মানে সবরকম ব্যাধির নিরাময় হয়। রোটাং-এর অনতিদূরে সোনেপানি গ্রেসিয়ারটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহীরা। দুপুর থেকে আবহাওয়া-বিজ্ঞাটও ঘটে চলে ক্ষণে ক্ষণে। মৃদু হিমালী প্রপাতও অস্বাভাবিক নয় রোটাং-এ। তাই দিনের প্রথমার্ধে উচিত হবে রোটাং বেড়িয়ে নেওয়া। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই রোটাং-এ। দিনে দিনে ফিরতেও হয় রোটাং বেড়িয়ে মানালীতে। তবে, মরসুমে চায়ের সঙ্গে টায়ের দোকান পাট বসছে রোটাং-এ।

লাহাঙ্কল ও স্পিতি উপত্যকা

লাহাঙ্কল ও স্পিতির গেটওয়ে রোটাং পাস। অতীত-কালে রোটাং বাণিজ্যপথ গড়ে উঠেছিল রোটাং/কেলং/স্পিতি/লাডাক হয়ে মধ্য এশিয়ায়। পথ বন্ধুর। দুর্গমতা আজও দুষ্টুর করে রেখেছে পর্যটক থেকে। তবে, নয়নলোভন নৈসর্গিক শোভা দৃঃসাহসিক অভিযাত্রীদের আকর্ষণ করে লাহাঙ্কল/স্পিতি উপত্যকায়। মানালী থেকে রোটাং/খোকসার হয়ে বাস যাচ্ছে লাহাঙ্কল জেলায় জেলাসদর কেলং ও উদমপুরে। জুন থেকে অক্টোবরে বাসও চলে এ-পথে।

৫-১৫, ৬-০০, ৭-১৫, ৮-০০, ১০-০০, ১৪-০০ টায় মানালী ছেড়ে কেলং যাচ্ছে ৬ ঘণ্টায়। দূরত্ব ১১৭ কিমি মানালী থেকে কেলং-এর। আর কেলং থেকে সাধারণ বাস মেলে ২ দিনের যাত্রায় লে-র। তবে দীর্ঘ পথ, পথও বন্ধুর—উচিত হবে মানালী থেকে আরামপ্রদ বাসে লে চলা। ১৯৭৭ থেকে দ্বারও মুক্ত হয়েছে সাধারণের কাছে লাহাঙ্গল ও স্পিতির। অতীতের পারমিট প্রথাও লোপ পেয়েছে ১৯৯৩ এ।

ভারত-তিব্বত সীমান্তে তেরো থেকে চোদ্দ হাজার ফুটের মধ্যে লাহাঙ্গল-এর অবস্থান। উত্তরে লাডাক, দক্ষিণে কুলু উপত্যকা, পশ্চিমে চান্না আর উত্তর-পূর্ব জুড়ে তিব্বত। পথে ভাঙিতে মিলনও ঘটেছে চন্দ্রা আর ভাগা দুই নদীর। পথও পৃথক হয়েছে ভাঙিতে। লৌহ-সেতুতে চন্দ্রভাগা পেরিয়ে ডানহাতি পথে কেলং আর সোজা উর্ধ্বমুখী পথ যাচ্ছে থিরোট হয়ে উদয়পুরে।

লাহাঙ্গল ও স্পিতি উপত্যকার প্রধান শহর ১০৯৮৩ ফুট উঁচু কেলং। মরাদ্যান অর্থাৎ ওয়েসিসও বলে থাকে লোকে কেলংকে। বাসস্ট্যান্ড থেকে নিচুতে নেমে আধুনিকতার প্রতিচ্ছবি কেলং শহর। হোটেল, ডিডিও হল, স্টেট ব্যাঙ্ক, দোকানপাট যথেষ্ট মেলে। কেলং থেকে পায়ে-হাঁটা পথ গিয়েছে উপত্যকার দিকে দিকে। বৈচিত্র্যে ভরা লাহাঙ্গল ও স্পিতি উপত্যকা। এখানকার পাহাড়ে বৃষ্টি নেই, গাছপালা কম, ন্যাড়া পাহাড়; উপত্যকা জুড়ে বরফ আর গ্লেসিয়ার। সূর্যের প্রথর কিরণ, কনকনে বাতাস; গ্রীষ্মের দিনও লিটেও শীতের আধিক্য লাহাঙ্গলে। সেপ্টেম্বর থেকে মে মাসে বরফও পড়ে উপত্যকা জুড়ে। গাড়ি চলাও বন্ধ থাকে শীতে। ১২ হাজার বর্গ কিমি ব্যাপ্ত লাহাঙ্গলে মঙ্গোলিয়ানদের উত্তর-পুরুষদের বাস। তিব্বতীয় তাত্ত্বিক বৌদ্ধ এরা।

৪৫০০ মি উঁচু কানজাম (Kunzam) পাস সংযোগ গড়েছে লাহাঙ্গল ও স্পিতি দুই উপত্যকার। স্পিতির সদর দপ্তর বসেছে স্পিতি নদীদ্বীপ বাম পাড়ে ১২৭০০ ফুট উঁচু কাজায়। সামান্য উত্তরে যেতে কিবার। বিশ্বের সবচেয়ে উঁচুতে (৪২০৫ মি) গ্রামের শিরোপা এই কিবার-এর শিরে। আর কাজার ২৪ কিমি দূরে সুউচ্চ গিরিশিখরে স্পিতির অতীত রাজধানী ধানখার। বৃষ্টিস্ত্র মনাস্টি হয়েছে। এছাড়াও রয়েছে নানান মনাস্টি স্পিতির দিকে দিকে। বৃহত্তম মনাস্টি ক্যে (Key)—দেওয়াল চিত্র, পাণ্ডুলিপি ও শিল্পকলায় সমৃদ্ধ। ৩০৫০ মি উঁচুতে টাবো গুম্ফাটি পবিত্রতায় অন্যতম। পাণ্ডুলিপি ও শিল্পকলায় টাবো সমৃদ্ধ। ছুন থেকে সেপ্টেম্বরে বাস যাচ্ছে কেলং থেকে। ঘণ্টা আটকের পথ।

স্পিতিতে বৌদ্ধদের বাস, লাহাঙ্গলে হিন্দু ও বৌদ্ধ আধাআধি। সমাজজীবনও এদের বৈচিত্র্যে ভরা। এদের সমাজে বাড়ির বড়ছেলে বিয়ে করে সংসার করে—সেই হবে উত্তরাধিকারী। বাকি ছেলেরা মঠে যাবে লামা হতে। বড় ভাই—এর মৃত্যু ঘটলে পরের ভাই ঘরে থেকে মঠ থেকে। তখন সেই হয় বড় ভাই—এর বিধবা স্ত্রী, সন্তান ও সম্পত্তির

উত্তরাধিকারী। অবিবাহিতা মেয়েরা যাবে কনভেন্টে। চরুর দুধ, মাখন আর বালির ছাতু এদের খাদ্য। স্পিতির মেয়েরা লোকনৃত্যে খুবই পারদর্শিনী। বলমলে সাজে নানান মনাস্টি অর্থাৎ গুম্ফাও আছে কেলং-এ। কেলং থেকে ৩.৫ কিমি দূরে লাহাঙ্গলের অতীত রাজধানী খার্পাং। ১২ শতকের খার্পাং মনাস্টিটি কেলং-এর শিরে মুকুট হয়ে দাঁড়িয়ে। নানান অতীত সংগ্রহ যাদুপুরী করে রেখেছে একে। উত্তরকালে Norbu Runpoche-এর হাতে সংস্কারও হয়েছে। ৩ কিমি দূরে শাশুর গুম্ফা, ৬ কিমি দূরে তায়াল গুম্ফা দুটিও ফ্রেস্কোচিত্রে অলঙ্কৃত। ১৬ কিমি দূরে চতলা ঠাকুর ক্যাসেল তথা গোঙ্গলা মনাস্টিটিও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে বাসে বা ট্রেক করে। তাগি হয়ে পথ গিয়েছে।

কেলং-এর নবতম আকর্ষণ ২৩ কিমি দূরে পাথর রূপে গৌতম বুদ্ধের নবজন্ম। রোমাঞ্চে ভরা এক পাথর খণ্ড কিছুতেই পরিকল্পনা মতো স্থানান্তর করা যাচ্ছে না—বার বার আপন খেলালে স্থানান্তর ঘটে চলেছে। তেমনই এক রাস্তাে স্বপ্ন দেখেন দালাইলামা—স্বয়ং বুদ্ধদেব বলছেন পাথরে তাঁর নবজন্মের কথা। স্বপ্নমতো গুম্ফাও গড়তে চলেছে, প্রতিষ্ঠিত হচ্ছেন, গৌতম বুদ্ধের প্রতিভুরূপে পাথরখণ্ড।



কেলং-এ আছে PWD IB ও HPTDC-র ট্যুরিস্ট বাংলো DAB ৩২৫ তাঁবু ১৫০ ডর্মি বেড ৫০; অব: Manager, Keylong বা Area Manager, HPTDC, Manali বা কল বুকিং: ০ 2801209/2465171। আর আছে H Ibbex Jispa, DAB ৪৫০ ৫০০, Lanna Yuru H. আহাৰ্যে স্নান আছে লামাঘর। কাজাতেও মে থেকে অক্টোবর মাসে HPTDC-র Tourist L-এ D ৩০০ টাকায় থাকার ব্যবস্থা মেলে।

নানান কিংবদন্তিতে ঘেরা পট্টন (Pattan) উপত্যকায় চান্না জেলার ত্রিলোকনাথও বেড়িয়ে নেওয়া যায় মানালী থেকে ৩ দিনে। চন্দ্রা আর ভাগা এই দুই নদীর মিলিত সলিলে চন্দ্রভাগা অর্থাৎ চেনাবেবর বুক বেয়ে পথ এসেছে মানালী থেকে। বাস যাচ্ছে ৬-০০ ও ৭-০০ টায় মানালী থেকে রোটাং/খোকসার/তাগি/থিরোট হয়ে উদয়পুর-এ। দূরত্ব ১২৯ কিমি। বাস আসছে কেলং থেকেও উদয়পুরের। আর উদয়পুর থেকে ৮ কিমি পায়ে-হাঁটা পথে গ্লেট পাথরে ছাওয়া দক্ষিণ ভারতীয় শৈলীতে দারুণত মন্দির হয়েছে ত্রিলোকনাথের। কারুকার্যময় বৌদ্ধমন্দিরে দেবতা অনাজগুরু বুদ্ধদেব। আর আছেন ষড়ভুজ, খেত মর্মরের নটরাজ শিব। মন্দিরের পূজারীও বৌদ্ধ লামা। মন্দিরটি শিল্পীর বাম হাতে গড়া। তাঁর ডান হাতটি আগেই কাটা পড়ে মানালীর হিড়িম্বা মন্দির গড়ে। তৃতীয় মন্দির আর যাতে না গড়তে পারেন ত্রিলোকনাথের লোকেরা তাই মাথাটি কেটে রাখে শিল্পীর। জনশ্রুতি, কাম্বীর রাজ ললিতাদিত্যর তৈরি এই মন্দির। বৌদ্ধ পুণিয়ার পাড়ি উৎসবে যাত্রী আসেন দূরদূরান্ত থেকে। উদয়পুরেও মন্দির রয়েছে ১০ শতকের—দারুণত কারুকার্যময় মন্দিরে দেবতা মুকুলা দেবী। লাম্বীরা কালী রূপে আর তিব্বতীয়রা ব্রজবরাহিরাপে পূজা করেন দেবী মুকুলার। ১ ম দিন মানালী

থেকে উদয়পুর পৌঁছে বিশ্রাম। ২য় দিন সাত সকালে মানালীর বাসে উজ্জান বেয়ে কুকুমসেরি অর্থাৎ আধা পথ এগিয়ে ডানহাতি পুলে চম্ভ্রভাগা পেরিয়ে বাকি আধা (৩কিমি) পায়ে গিয়ে ত্রিলোকনাথ দর্শন সেরে রাতের বিশ্রাম উদয়পুর PWD-র রেস্ট হাউসে/৩য় দিন মানালী ফিরুন বাসেই। আবার চাষা থেকেও পায়ে হাঁটা পথ এসেছে ত্রিলোকনাথের। তবে, দুর্গমতার জন্য চাষা-পথ পরিহার করে মানালী থেকে বেড়িয়ে নেওয়াই উচিত হবে।

কাতরেইন : মানালী থেকে ১৯, কুলু থেকে ২১ কিমি অর্থাৎ কুলু-মানালীর মাঝ-পথে NH 21-এ ১৪৬০ মি উঁচুতে কটরই বা কাতরেইন। শিরে তার কিরীট হয়ে ৩৩২৫ মি উঁচু বরাগড় শিখর। অদূরে বয়ে চলেছে বিপাশা। কাতরেইনের বাস মেলে, আবার কুলুর বাসেও যাওয়া চলে মানালী থেকে। মরসুমি পর্যটকদের মানালী থেকে HPTDC প্যাকেজ টুরে কাতরেইন, নগর ও জগৎসুখ বেড়িয়েও আনে। ফলের বাগান ও ট্রাউট মাছের চাষের জন্য কাতরেইনের প্রশস্তি। মক্ষিকা চাষও হচ্ছে। চলার পথে বাসে বসেও দেখে নেওয়া যায় কাতরেইন।



Govt Civil R H ও HPTDC-র H Apple Blossom, Katrain, ৩ (01902) 40136, DAB ২৫০ ৩০০ ডরি ৫০, বাংলা থেকে চান্দ্রেশ্বর পাসও সুন্দর দৃশ্যমান; এসেরই Cottage River View, স্যুইট (2DBR) ৬৫০; অবু: Tourism Development Officer, Kullu. আর আছে মানালীমুখী ৪ কিমি যেতে *Span Resort, Kullu-Manali NH, ৩ (01902) 83138, AP-D ৩৯৫০; *Apple Valley Resorts, Mohal, A4B5, NH, Kullu-175126, ৩ 66271, S ১৮০০ D ২৫০০; Royal H, H River Banks, AP প্রায় ৩২০০, ৩৫০০ কাতরেইন।

নগর: মানালী থেকে বাসে কাতরেইন পৌঁছে পাতালি-খুলে নদী পেরিয়ে নগর চলুন। কাতরেইনের শিরে আরও ৩৩০ মি উঁচুতে নগর। দূরত্ব কাতরেইন থেকে ৭ কিমি, বাস যাচ্ছে। তবে চড়াই বেয়ে দূরত্ব কমিয়ে পায়ে হেঁটেও চলা যায় চম্ভ্রখনি পাহাড়ের গায়ে দেওদার, চীল, পাইনে ছাওয়া কুলু রাজার দুর্গে। মনোরম দুর্গের নিমাণ-শৈলীও অভিনব। দুর্গের সামনে প্রশস্ত মাঠ, মাঠের শেষে পাথরে তৈরি অতীতের ক্যাসেল-এ HPTDC-র Castle H হয়েছে। প্রাসাদের এক অংশে মিউজিয়াম বসেছে। ১৬৬০এ কুলুতে স্থানান্তরের আগে কুলুরাজাদের রাজধানী ছিল নগরে। নাম ছিল তার সুলতানপুর। আধা-খুলত্ব পাহাড়চুড়োয় সেকালের রাজপ্রাসাদে সরকারি রেস্ট হাউস বসেছে। একটি করুণ কাহিনী আছে প্রাসাদ ঘিরে—একলা রাজমাংশায় রানীর কাছে জানতে চান রাজ্যে সবচেয়ে সুন্দর পুরুষ কে? রানী হিসিতে সেখান এক পালোয়ানকে। ক্রুদ্ধ রাজা কাসিতে লটকান পালোয়ানকে আর রানী মৃত্যুদণ্ড এড়াতে বাগিয়ে পড়েন নিচে প্রাসাদের উপর থেকে। প্রাসাদ ও টুরিস্ট বাসো Castle Hotel থেকে সারা উপত্যকা সুন্দর দৃশ্যমান।

নগরে একাধিক মন্দিরও আছে—প্রাসাদ অন্দরে ছোট্ট এক মন্দিরে জগতী-পাট অর্থাৎ দেবতাদের আসনটিও রয়েছে জগতের কেন্দ্রস্থল এই নগরে। কিংবদন্তী, স্বর্গের দেবতারা মৌমাছি হয়ে বয়ে আনে এই পাথরখণ্ড ইন্দ্রকিলা পাহাড় থেকে। বাজারের নিচুতে ১১ শতকের গৌরীশঙ্কর শিবমন্দির, প্রাসাদের বিপরীতে চতুর্ভুজ বিষ্ণুমন্দির, ঠাণ্ডা মন্দিরে রাধা-কৃষ্ণ, পাহাড়টতে প্যাগোডাধর্মী মন্দিরে ত্রিপুরা-সুন্দরী ছাড়াও নানান। আর জারি মন্দির থেকে সেকালে সুভস পথে মণিকরণের সংযোগ ছিল নগরের। ১৯০৫ খ্রিস্টাব্দের ভূমিকম্পে বিধ্বস্ত হয় সে-পথ। নগর থেকে তুবারাছাদিত রোটাং পাস ও জিফং পিকও সুন্দর দৃশ্যমান। নগরের আর এক দ্রষ্টব্য তার ফলের খেতি।

দুর্গ থেকে ১ কিমি দূরে পাহাড়চুড়োয় প্রকৃতিপ্রেমিক রুশ চিব্রিলী নিকোলাস রোয়েরিকের (১৯৪৭এ মৃত্যু) বাড়িতে আর্ট মিউজিয়াম বসেছে। নিকোলাসের পুত্র সোয়েংলভ নিকোলাস (১৯৯৩এ মৃত্যু) ভারতীয় চলচ্চিত্রের প্রখ্যাত শিল্পী ঠাকুরবাড়ির মেয়ে সেবকীরানীর (১৯৯৪এ মৃত্যু) স্বামী। পিতা ও পুত্রের আঁকা ছবির প্রদর্শনী বসেছে মিউজিয়মে। উপত্যকাও সুন্দর দৃশ্যমান।



Naggar-এ আছে PWD R H, FRH ও HPTDC-র Castle H, ৩ (019020) 47816, DCB ২৫০ ৩০০ DAB ৪০০ ৪৫০ ৮০০ ৮৫০ ডরি বেড ৫০, অবু: Tourist Officer, Kullu-175101; আর আছে Poonam Mountain L & Restaurant, opp Castle নগরে।

নগর-মানালী পথে নগর থেকে ১২ কিমি উত্তরে আর মানালীর ৬ কিমি দক্ষিণে বিপাশার পূর্বপারে কুলুর অতীত রাজধানী জগৎসুখও বেড়িয়ে নিতে পারেন। জগৎসুখের প্রসিদ্ধি তার ৮ শতকে পাথরে তৈরি শিখরধর্মী গৌরীশঙ্কর ও গায়ত্রী মন্দিরের জন্য। জগৎসুখেও থাকার জন্য H Woodlines আছে। অদূরেই গুরু গ্রামে দেবী শার্বলীর প্রাচীন মন্দির।

তেমনই জগৎসুখ থেকে ১ম দিনে খানোল ৮ কিমি, ২য় দিনে খানোল থেকে চিক্কা ৬ কিমি, ৩য় দিনে চিক্কা থেকে শেরি ৫ কিমি, ৪র্থ দিনে শেরি থেকে দেওটিকা ১৪ অর্থাৎ ৩০ কিমি ট্রেক করে জয় করে আসা যায় ৬০০০ মি উঁচুতে বরফের রাজ্য দেওটিকা। দেওটিকা থেকে আবার ৫ দিনে চলা যেতে পারে চম্ভ্রতাল বা চাঁদের হ্রদ-এ।

মালানা: নগর থেকে পায়ে হাঁটা সরু পথ গিয়েছে গুজরদের গাঁ চান্দ্রেশ্বরখনি, উচ্চতা ২১৩৪ মি। ৩৬০০ মি উঁচু চান্দ্রেশ্বরখনি পাস পেরুতেই মালানা গ্রাম। চান্দ্রেশ্বরখনি থেকে পূর্বে স্পিড লাগায়া বরফে মোড়া শৃঙ্গরাজিও সুন্দর দৃশ্যমান। তবে, দুর্গম এপথ। মার্চ থেকে ডিসেম্বর মাসে খোলা থাকে। অভুলনীর নৈসর্গিক শোভা সারাপথে। উঁচু পাহাড়, গভীর গিরিখাত আর ঘন জঙ্গলে ঘেরা বিখ্যাত প্রাচীনতম গণতান্ত্রিক গ্রাম মালানা। এখানকার সমাজতান্ত্রিক আজও বৈচিত্র্যে ভরা। সম্ভবত খ্রি পূ ৩২৫এ গ্রিক সম্রাট আলেকজান্ডারের দলটু সেনার দল বসতি পড়ে। গ্রামের মাঝে দৌট

পাথরের বেদি অর্থাৎ ১৯ জন প্রতিনিধির হরচা(আদালত) আজ্ঞা গণতান্ত্রিক প্রথায় যাবতীয় বিবাদের মীমাংসা করে। হরচা বার্থ হলে জমলুর উপর দায়িত্ব পড়ে। সেও আর এক বৈচিত্র্যের গাথা। ভাষা এদের সংস্কৃত, কিন্নরী ও তিব্বতী মেশানো কানশা। চলাফেরাতেও নানান বিধি নিষেধ। বীধানো পথ ছাড়া গ্রামের মধ্যে যত্রতত্র ইটো মানা। তেমনই মানুষজনও ছোঁয়া নিষেধ। দেবমন্দির বা পবিত্র কোনো পাথর ছুঁলে ১০০০ জরিমানা। বার্লি, জড়ি-বুটি, মধু ছাড়াও পর্যাপ্ত পরিমাণে চরস হচ্ছে মালানায়। খোলা মাঠের মাঝে হরিণের শিঙে সজ্জিত ছোট মন্দিরে এক পাথরখণ্ড মালানার অধিষ্ণুর জমলু/তবে, মূল দেবতার বাস দুর্গম পাহাড়। এদের বিশ্বাস, জমলুর থেকে বড় দেবতা ভূ-ভারতে নেই আর। চুরি ডাকাতি রাজধানি নেই এদের সমাজে। খোলাঘরে দেবতার নামে রাশি রাশি ধনরত্ন জমছে—না-আছে তালা, না-আছে পাহারা। আদিমযুগের অন্ধবিশ্বাস নিয়ে আধুনিকতা থেকে আজও এরা পিছিয়ে। সমাজ-সংসার এদেরই নিয়মে গড়া। বিবাহও এদের বৈচিত্র্যে ভরা। কোনও লাডো(ছেলে) বা লাডি(মেয়ে) পরস্পরকে সঙ্গীরূপে পেতে চাইলে জমলু দেবতাকে টাকা দিলেই পাট চোকে বিয়ের। বারবার বিয়েও করা যায় একইভাবে। মন্দিরে রূপোর হাতির পিঠে সোনার মূর্তিটি বাদশা আকবরের ভেট। ডিসেম্বর থেকে মার্চ ছাড়া নগর, চান্দেরখনি, মালানায় রাত কাটিয়ে দিন পাঁচেকে বেড়িয়ে ফেরা যায় মানালী থেকে মালানা। কাতরেইন থেকে দূরত্ব ৩০ কিমি। আবার মণিকরণ থেকেও ৩১৫০ মি উঁচু রসোই পাস পেরিয়ে পথ এসেছে ২২ কিমি দূরের মালানায়। কুলু থেকেও জিপে জারি পৌঁছে ১২ কিমি ট্রেক করে চলা যেতে পারে মালানায়। উৎসাহীরা নগর থেকে ট্রেক করে—১ম দিনে: নগর-রুমসু-স্টেলিং ক্যাম্পিং-গ্রাউন্ড ৬ ঘণ্টায়, ২য় দিনে: স্টেলিং-শ্বেত পাথর থাট-নেটটিপার-গুগতি ময়দান ৫ ঘণ্টায়, ৩য় দিনে: গুগতি-চন্দ্রখনি গিরিপথ-মালানা ৬ ঘণ্টায়, ৪র্থ দিনে: ৭ ঘণ্টায় মালানা থেকে মণিকরণ-কুলু বাসপথের জারি (১৫২০ মি) পৌঁছে সাঙ্গ করা যায় এ-সফর। অতঃসাহীরা চান্দেখনি পাস অভিযান করেও ফিরতে পারেন নগরে। তবে, সাধারণ পর্যটকদের জন্য নয় মালানা।

মাণ্ডী

NH 20 ও 21 এর সংযোগে শিবালিক পাহাড়ে ৮০০ মি উঁচুতে বিপাশার পাড়ে সুন্দর পাহাড়ী শহর মাণ্ডী। অতীতের রাজধানী শহরে জেলা সদর বসেছে। মানালী তথা কুলু উপত্যকার প্রবেশদ্বারও এই মাণ্ডী অর্থাৎ বাজার হয়ে। মাণ্ডী পেরুতেই লঞ্চও হয়েছে পাহাড়ী। পাঠানকোট-মানালী, সিমলা-মানালী বা চণ্ডীগড়ের যাত্রায়াত পথে উৎসাহীরা একটা রাত কাটিয়ে যেতে পারেন। হিমাচলের পূর্ব থেকে পশ্চিম, উত্তর থেকে দক্ষিণ প্রতিটি বাস যাচ্ছে মাণ্ডী হয়ে। মুহূর্ত্ত বাসও যাচ্ছে—পাঠানকোট ২০৮, ধরমশালা ১৪৭,

যোগীন্দ্রনগর ৫৬, ভূট্টার বিমান বন্দর ৫৯, মানালী ১০৭, সিমলা ১৫০, রোপার/বিলাসপুর হয়ে চণ্ডীগড় ২০৩, রিওয়ালসর ২৪ কিমি ছাড়াও রাজ্য ও প্রতিবেশী রাজ্যের দিকে দিকে মাণ্ডী থেকে। আর বাস যাচ্ছে ৪৩৪ কিমি দূরের দিল্লীতে চণ্ডীগড় হয়ে মাণ্ডী থেকে।

বাণিজ্যিক শহর মাণ্ডী। অতীতকালে বণিকেরা যেত মাণ্ডী হয়ে তিব্বতে। ৪০০ বছরের প্রাচীন শহর মাণ্ডীর ঐতিহাসিক ও পৌরাণিক আকর্ষণও কম নয়। বাস স্ট্যান্ড থেকে বিপাশা পেরুতেই ৫ মিনিটের পথে পুরনো বাস স্ট্যান্ডের শিরে তরুণা পাহাড়ে ১৭ শতকে রাজা শ্যাম সেন-এর গড়া সুন্দর কারুকার্যমণ্ডিত সোানাম অলঙ্কৃত মন্দিরে পাথর কুঁড়ে তৈরি শ্যামাকালী বা দেবী তরুণা। মিলোকনাথে রয়েছে স্বর্ণ-মর্ত্য-পাতালের অধিষ্ণুর ত্রিভুবনেশ্বর অর্থাৎ শিব। অর্ধনারীশ্বরে সৃষ্টির বিবর্ধনের প্রতীক—ডাইনে পুরুষ বাঁয়ে প্রকৃতি রূপে শিব। এছাড়াও মন্দির রয়েছে আরও নানান—বিপাশার তীর ও কলেজ রোড তথা মাণ্ডী শহরে। অমরনাথ গুহার রেলিকা রূপী মন্দিরে শ্রাবণী পূর্ণিমায় অমরনাথ দর্শনের পুণ্য মেলে। শিবরাত্রিতে সপ্তাহব্যাপী উৎসবে যাত্রী আসেন দূর-দূরান্ত থেকে মাণ্ডীতে। উচ্চতার তুলনায় শীতের অধিকা আছে। শীতে তাপমান নামে গ্রিজিং পয়েন্টের নিচে। গ্রীষ্মে হালকা বসনই যথেষ্ট মাণ্ডী ভ্রমণে।

তবুও যেন মাণ্ডীর অন্যতম আকর্ষণ ২৪ কিমি দক্ষিণ-পূর্বে রিওয়ালসর লেক। চারপাশে সবুজ পাহাড় ব্যুহ গড়েছে। শান্ত-নির্জন-সুমধুর পরিবেশে লেকের জলে পাহাড়ের প্রতিবিম্ব দোল খায়। কিংবদন্তী, লোমশ ঋষি লেকের জলে দাঁড়িয়ে তপস্যা করে ইস্তাসাধন করেন। তাঁরই মানসে স্বর্ণ থেকে এসে—ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব, হনু, দুর্গা, গণপতি, ধরমধারী অর্থাৎ লোমশ মুনি পর্বত হয়ে ভেসে বেড়ান আজও লেকের জলে। বেড়া বলে খ্যাত এঁরা। ভক্তের বাঙ্লাপূরণে দর্শনও দেন এসে আকাজিক ভাসন্ত বেড়া। এমনকি তান্ত্রিক পন্থ-সম্ভবা (গুরু রিমপোচে) বৌদ্ধধর্ম প্রচারের মানসে তিব্বতে যান এখান থেকেই। সেই স্মৃতিতে মনাস্থি হয়েছে। প্রতি ১২ বছর অন্তর Tso-Pema উৎসবে (মার্চ-এপ্রিল) ভক্তের দল আসেন দূর-দূরান্ত থেকে। আগামী উৎসবে ২০০৪ খ্রিস্টাব্দে। আর ১৭৫৮তে ১০ম শিখগুরু গোবিন্দ সিং ঔরঙ্গজেবের বিরুদ্ধে হিন্দুরাজাদের সম্মুখবদ্ধ করতে একমাস অবস্থান করেন এখানে। আর ১৯৩০এ মাণ্ডীর রাজা যোগীন্দ্র সেন স্মারকরূপে গুরদ্বারা গড়েন। তেমনই হয়েছে রিওয়ালসর বাস স্ট্যান্ডের পাশে লেক ঘিরে বৌদ্ধ মনাস্থি, লোমশমন্দির ও শিবমন্দির। লেকের জলে বানো পুণ্য মেলে।



থাকা ও আবহাওয়া মেলে গুরদ্বারার। HPTDC-র Tourist Inn Rewalsar, ☎ (01905) 80252, Rewalsar, D ২০০ ২৫০ T ৩০০, F ৪০০ ডর্রি বেড ৫০ করে। আর আছে সাধারণ সাজে Lomsh, Lake View, Shimla রিওয়ালসরে। দিনভর বাস যাচ্ছে মাণ্ডী থেকে, শেব বাসটি বিকেল ১৬-০০টার আর ফেরার শেব বাস ১৭-০০টার

রিওয়ালসর থেকে। নিজস্ব ব্যবস্থায় NH 21-এ মাণ্ডীর ১৬ কিমি দূরে নরচক থেকেও চলা যায় ১২ কিমি দূরে রিওয়ালসর। আর মরুমি যাত্রী নিয়ে HPTDC মানালী থেকে এসে রিওয়ালসর দেখিয়ে মানালী ফেরে একই দিনে।

মাণ্ডী বাস স্ট্যান্ডের শিরে টিলার টঙে HPTDC-র *H Mandav*, Mandi, ④ (01905) 35503, DAB ৪০০-৫০০, ৭৫০, লাগোয়া *ইকনমিক ট্যুরিস্ট বাংলায়* DAB ২০০, অব্: Manager, Hotel Mandav, Mandi. তবে কেমন যেন অগোছাল ভাব। সার্ভিসও ধীর-লয়ে। এমনকি প্রবেশ পথটিও সঙ্কীর্ণ, পুতিগঙ্কময়। আর আছে বিপাশা পেরিয়ে পুরনো বাস স্ট্যান্ডে প্রাইভেট মালিকানা—*Koyal H, Grand H, Anand H, Standard H*, অতীতের রাজপ্রাসাদে *H Raj Mahal, Adarsh H, H Sangam, Valley View H* মাণ্ডীতে। এসের কাছে SAB ৬০-১২৫ DAB ১২৫-২৫০ টাকায় মেলে। আর আছে *Munish Resorts*, DAB ৬৬০-৭৫০, কল বুকিং: Span ④ 2801209; *H Ashoka Holiday Inn*, DAB ৪৫০-৬০০। আহাৰ্যও মেলে নানান হোটেলে। তবে, *রাজমহলের* সুনাম আছে আহাৰ্য পরিষেবায়। রাজ্য পর্যটনও রেস্তোরা গড়েছে শহরের প্রাণকেন্দ্র গান্ধী চক *Cafe Siraz*.

আবার মাণ্ডী থেকে কুলুমুখী NH 21-এ ১৬ কিমি যেতে Pandoh Damটিও দেখে নেওয়া যায় চলার পথে বাসে বসেই। ঠিক তেমনই মাণ্ডী-সিমলা পথে মাণ্ডী থেকে ২২ কিমি দূরে সুন্দরনগরও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। পাহাড় চড়িয়ে মহামায়া মন্দির ও ৩৮৬ কোটি টাকা ব্যয়ে তৈরি বিপাশা-শতদ্রু লিঙ্ক প্রোজেক্টটিও দেখে চলা যায়। সুন্দরনগর থেকে ৪৩ কিমি সিমলামুখী যেতে সিমলার ৯০ কিমি আগেই চণ্ডীগড়-মাণ্ডী সড়কে বিলাসপুরও বেড়িয়ে নিতে পারেন চলার পথে। ব্যাস গুম্ফা, লক্ষ্মীনারায়ণ, রাধাশ্যাম মন্দির আছে বিলাসপুরে। আর আছে ৪০০০ ফুট উচ্চে নয়নাভিবীর মন্দির। এরিয়াল প্যাসেঞ্জার রোপওয়ে যাচ্ছে নানগাল রোড থেকে মন্দিরে। শ'পাঁচেক সিঁড়ি ভেঙেও চড়া যেতে পারে মন্দিরে। ৬০০মি দীর্ঘ মনোরেল যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে পাহাড় শিরে। এমনকি গোবিন্দসাগরও সুন্দর দৃশ্যমান বিলাসপুর থেকে। সম্প্রতি সোানও মিছেছে নাকি বিলাসপুরে।

হোটেলও আছে *Sagar View*, D ৩৫০-৫০০-৭০০-৮০০, ৯০০-১০০০, সুইট ১২০০, কল বুকিং: Span ④ 2801209; *Neelam, Anupam, Kwality, Banyal, Pal, Bias, Kailash* বিলাসপুরে।

যোগীন্দ্রনগর

মাণ্ডী-পাঠানকোট জাতীয় সড়কে মাণ্ডী থেকে ৫৬, বৈজনাথ ২১, পালামপুর ৩৮, ধরমশালা ৫৯ কিমি দূরে ১২২০ মি উঁচুতে যোগীন্দ্রনগর। মুহূর্ত্ত বাস যাচ্ছে মাণ্ডী থেকে যোগীন্দ্রনগর হয়ে বৈজনাথ, পালামপুর, ধরমশালায়। বাস যাচ্ছে বৈজনাথ, পালামপুর, কাংড়া, জ্বালামুখী, নুরপুর হয়ে ১৫৪ কিমি দূরে পাঠানকোটে যোগীন্দ্রনগর থেকে। আর যাচ্ছে ২৯৬ লক্ষ টাকা ব্যয়ে গড়া এপ্রিল

১৯২৯এ শুরু ন্যারোগেজ পাহাড়ী রেল যোগীন্দ্রনগর থেকে পাঠানকোট চা বাগানের পাশ কাটিয়ে অনন্য সূন্দরী কাংড়া উপত্যকার উপর দিয়ে রেল চলে এপথে। তবে ট্রেনের ধীরগতি ও দীর্ঘপথ হেতু উচিত হবে বাসেই চলা।

১৯২৫এ মাণ্ডী রাজ্য যোগীন্দ্র সেন হাইডেল পাওয়ার প্রোজেক্ট গড়েন শুকরাহাটি গ্রামে। কালে কালে রাজ্যের নামে নাম হয় জায়গার যোগীন্দ্রনগর। যোগীন্দ্রনগর তার Haulage ways-এর জন্য খ্যাত। পাহাড়ের এক পাশে জলবিদ্যুৎ তৈরির পাওয়ার প্রোজেক্ট অপর পাশে ৮০০০ ফুট উঁচু ব্রোটে উলী নদীকে বশে আনতে তৈরি হয়েছে জলাধার। আর হয়েছে কৃত্রিম জলপ্রপাত লামবাডাগ ও উলীর সঙ্গে। ১৫০০০ ফুট দীর্ঘ এক টানেল দিয়ে জল যাচ্ছে পাওয়ার হাউসে। ইলেকট্রিক ট্রলি যাচ্ছে বাংলা থেকে ১ কিমি দূরে শানন পাওয়ার হাউস থেকে ৮-০০ ও ১২-০০টায় ১১ কিমি দীর্ঘ চড়াই পথ বেয়ে ১৮৩০মি উঁচু ব্রোটে। ৫ টাকার ইনডেমনিটি বন্ড সই করে Resident Engineer-এর অনুমতিতে ট্রলিতে চেপে অভিনবত্ব আর অনিন্দ্যসুন্দর নৈসর্গিক শোভা উপভোগ করে নিতে পারেন। যাতায়াতে ঘণ্টাপাঁচেক সময় লাগে। বাসও যাচ্ছে সকাল ৯-০০ টায় যোগীন্দ্রনগর থেকে ঘণ্টাদুয়েকে ৪০ কিমি সড়ক দূরত্বের ব্রোটে। আর আছে UHL থেকে ৬ কিমি দূরে পবিত্র Macchhiyal Lake যোগীন্দ্রনগরে।



বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি দূরে মাণ্ডীমুখী বাস পথে HPTDC-র *Hotel UHL*, DAB ৩০০-৫০০, Joginder Nagar, ④ (01908) 22002; আর বাস স্ট্যান্ডে S ৬০-১২৫ D ১০০-১৭৫ টাকায় *Tourist H, H Adarsh & Himadaya H* আছে। আর আছে *বিজলী দপ্তরের রেস্ট হাউস* যোগীন্দ্রনগর ও ব্রোটে।

বৈজনাথ

হলেজ ওয়ের দর্শনাধীরা একরাত যোগীন্দ্রনগরে কাটিয়ে পরদিন ধরমশালা চলুন। চলার পথে যোগীন্দ্রনগর থেকে ২২ আর পালামপুরের ১৬ কিমি আগেই কাংড়া উপত্যকার শেষপ্রান্তে ১৩৬০ মি উঁচুতে ছোট্ট শহর বৈজনাথ। ৮০৪ খ্রিস্টাব্দে তৈরি মন্দিরে দ্বাদশ জ্যোতির্লিঙ্গর অন্যতম বৈদ্যনাথ শিব দর্শন করে চলুন। মন্দির রয়েছে আরও ১৬ একই চত্বরে। বাস স্ট্যান্ডের পাশেই কারুকার্য-মণ্ডিত মন্দিরে ওড়িশার আদাল মেলে। দেবমূর্ত্তিও সুন্দর। মন্দিরের প্রবেশ পথে গঙ্গা, যমুনা ছাড়াও নানান দেবদেবীর মূর্ত্তি। জনশ্রুতি, মন্দিরটি পাণ্ডব ভ্রাতাদের তৈরি। তবে, রাবণও এসেছেন—তপস্যা করেছেন সেবাদিসেবের এখানে। সন্দের জিনিসপত্র দোকানপাটে রেখে আধঘণ্টার মন্দির দেখে বাসেই চলুন ৫৬ কিমি দূরে ধরমশালা। সরাসরি বাসের অমিলে পালামপুর ব্যতীত ধরমশালায় পৌঁছান। থাকার জন্য আছে—*ধরমশালা, পার্বতী পেস্ট হাউস* ও টিলার টঙে *PWD IH* বৈজনাথে। ঘোঁসাধারও সুন্দর দৃশ্যমান IH থেকে।

পালামপুর

বৈজনাথ দর্শন সেরে পালামপুর বেড়িয়ে কাংড়া/ পাঠান-কোট বা ৪০ কিমি দূরের ধরমশালা পৌঁছান বাসে। মুহম্মদ বাস চলে এপথে। রেলও যাচ্ছে ৫৪ কিমি দূরের যোগীন্দর নগর-পাঠানকোট ১৯২ কিমি পালামপুর/কাংড়া ১৪৭ কিমি হয়ে। ট্যাক্সি ও অটো চলছে শহরে। *লটস অব ওয়াটার*—অর্থাৎ Pulum. পাইনে ছাওয়া ১২৬০ মি উঁচু পালামপুরের জলবায়ুও স্বাস্থ্য প্রদ। পালামপুরে কাংড়া উপত্যকাও মিলেছে খাড়া গিরিচূড়া ধৌলাধারে। পালামপুরের প্রকৃতিও সুন্দর। চা-বাগিচার জন্যও পালামপুরের প্রশস্তি। আর আছে টি ফ্যান্টারি, চার্চ অব সেন্ট জন, বুগলামাতার মন্দির পালামপুরে। নাসাল খাদ অর্থাৎ জল প্রবাহ বর্ষাকালে পাহাড়ের উপর থেকে বড় বড় পাথরের নুড়ি জলের তোড়েবয়ে এনে ৩০০ মি নিচুতে ফেলছে। অতীত দুষ্টিনন্দন ধারার এই পতন দৃশ্য। উৎসাহীরা ৩৫ কিমি দূরের বীর-এ বৌদ্ধ মনাস্তি দর্শন সেরে আরও ১৪ কিমি গিয়ে বিশ্বের অন্যতম সুন্দর বিল্ডিং-এ HPTDC-র ব্যবস্থাপনায় মজার খেলা হ্যাং গ্লাইডিং (Hang Gliding)-এ অংশ নিতে পারেন। তেমনই পালামপুর থেকে ১৪ কিমি দক্ষিণে সুন্দর নৈসর্গিক পরিবেশে শিল্পীদের গ্রাম Andretta-ও বেড়িয়ে নিতে পারেন। পাঞ্জাবি ড্রামার নানী Norah Richards, Sobha Singh, B C Sanyal ছাড়াও নানান চিত্র শিল্পীরা এসে ঘর বাঁধেন। আজও মাটি ও বাঁশে গড়া রিচার্ডের বাড়িটি অতীত রোমন্থন করায়। নানান মিউজিয়মে শিল্পীদের আঁকা ছবির সংগ্রহও উল্লেখ্য।



বাস স্ট্যান্ড থেকে ১ কিমি দূরে HPTDC-র *Hotel T-Bud*, DAB ৫৫০ ৬৫০ ৮০০ চার বেডের সুইট ৯০০, অব: The Manager, Palampur, ০ (01894) 31298; বাস স্ট্যান্ডে *Pine H, H Sawney, Palace Motel, Palampur GH*; স্ট্যান্ড থেকে ২১ কিমি দূরে *Silver Oaks Motel*, DAB ৮৫০-১৭৫০; *H Yamini*, DAB ৩০০ ৩৫০ ৪০০ ৬০০ সুইট ৭৫০; *Green Acre Cottage*, ডাবল বেডের কটেজ ৫৯০ ৬৯০ ৭৯০ ৮৯০, দু'রেই কল বুকিং: ০ 2465171. আর আছে পালামপুর থেকে ১১ কিমি দূরে *Taragarh Palace H, Taragarh, Kangra-176081*, ০ (018946) 3034, A/c D ১২০০ সুইট ১৫০০ জঙ্গল ক্যাম্প ৫৫০।

চামুণ্ডা দেবী

পালামপুর-ধরমশালা পথে পালামপুর থেকে ২৫ আর ধরমশালা থেকে ১৩ কিমি যেতে পথ গিয়েছে আরও ১ কিমি দূরের চামুণ্ডা দেবীর মন্দিরে। তিন সিক ধৌলাধারে ঘেরা পাহাড়ী গ্রাম—মন্দিরের জন্য এর প্রসিদ্ধি। দেবী খুবই জাগ্রত। মন্দিরের শিল্পে নবীকেশ্বর শিবের ওহা। ধৌলাধারের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। উৎসাহীরা চালা পথে বা ধরমশালা থেকেও দেখে নিতে পারেন বাসে বাসে। থাকারও ব্যবস্থা হয়েছে HPTDC-র *Yatri Niwas, Chamundaji*,

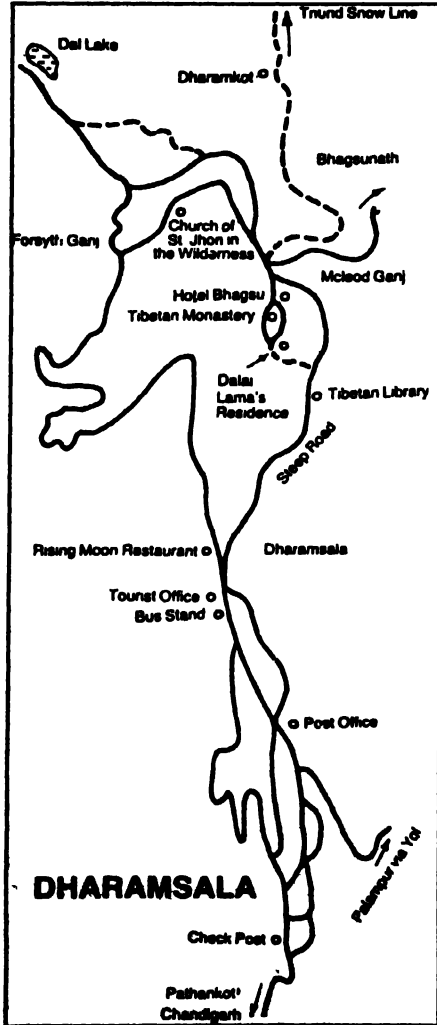
০ (01892) 36065, DAB ৪০০ সুইট ৫৫০ ডর্মি ৫০ করে।

ধরমশালা

পেওদার, ওক আর পাইনে ছাওয়া কাংড়া ডালির শাদ, স্নিগ্ধ পাহাড়ী শহর ধরমশালা। কাংড়া জেলার জেলাসদরও এই ধরমশালা। তিন সিক ধৌলাধারে ঘেরা আর সামনে থরে থরে উপত্যকা নেমেছে সমতলে। সিমলা ও মানালীর তুলনায় ধরমশালায় ভ্রমণার্থী কম। তাই বলে আকর্ষণে কম নয় ধরমশালা। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে সুব্যস্তও মনোরম। বৃষ্টির আধিক্য আছে। মার্চ থেকে মে ও অক্টোবর থেকে নভেম্বর মাসে ধরমশালা ভ্রমণের মনোরম সময়।

লোয়ার ও আপার অলম্কার জুড়ে ধরমশালা শহরটি ১০ কিমির ব্যবধানে দু'ভাগে গড়ে উঠেছে। ১২৫০ মি উঁচু লোয়ার ধরমশালায় ক্লেভোয়াসি বাজার তথা ব্যবসাবাগিচা, বসতি, বাস স্ট্যান্ড। ট্যুরিস্ট অফিসটিও বসেছে বাস স্ট্যান্ডের অদূরে হোটেল ধৌলাধার লাগোয়া। লোয়ারে কাংড়া আর্ট মিউজিয়ম—মঙ্গল থেকে শনিবার ১০—১৭-০০ টায় বসন-ভূষণের সাথে মিনিয়চার থর্মা কাংড়া পেক্টিং-এর সম্ভার দেখে নেওয়া যায়। শহরে দু'কতেই ওয়ার মেমোরিয়াল। দেবী মহাকালীর মন্দিরও হয়েছে অপরপ্রাস্তে। আর ১৭৭০ মি উঁচু আপার ধরমশালায় রয়েছে ব্রিটিশ ভারতের স্মৃতিবিজড়িত ম্যাক-লেড গঞ্জ ও ফরসিথ গঞ্জ। উচ্চতার ভারতম্যে তাপমানেও বদল ঘটে লোয়ার ও আপার ধরমশালায়। চীনের তিব্বত দখলের পর ভারতে আশ্রয়প্রাপ্ত লাসা থেকে আসা দালাই লামা ও তাঁর মিশন এখানেই *Gelugpa Monastery* গড়েছেন। বুদ্ধ, পদ্মসম্ভবা ও অবলোকিতেশ্বরের মূর্তি হয়েছে। রূপও নিয়েছে ১৯৬০এ 'ভারতে লাসার মিনি সংস্করণ' এই ম্যাক-লেড গঞ্জ। প্রতি মার্চ মাসে শিক্ষাদান করেন মহামানা দালাই লামা—দেশ-দেশান্তর থেকে ভক্তের দল আসেন। ধ্যানমূলক ক্রাশেরও ব্যবস্থা আছে এদের। বাড়ি-ঘরে রঙবেরঙের তিব্বতীয় প্রেয়ার ফ্ল্যাগ। শান্তির পথে তিব্বতকে মুক্ত করার জন্য তাঁর অনলস ত্যাগ স্বীকার বিশ্বের দৃষ্টি আকর্ষণ করেছে। এমনকি ১৯৮৯এ নোবেল শান্তি পুরস্কারে সম্মানিত হয়েছেন মহামানা দালাই লামা। আগ্রহী দর্শনার্থীরা মাসাধিককাল অ Private Secretary to His Holyness the Dalai Lama, McLeod Ganj-কে লিখতে পারেন। আপার ও লোয়ার দুই-এর মাঝ-পথে স্কুল অব তিব্বতীয় কালচার লাইব্রেরি—সংগ্রহে বিশ্বের অন্যতম। তিব্বতীয় ভাষা, শিল্প ও সংস্কৃতির গবেষণা চলছে। প্রতিবছর এপ্রিলের তৃতীয় শনিবার ১০ দিনের লোকনাট্যের আসরও বসে। খুদে মনাস্তিও হয়েছে। তবে, প্রেয়ার হুইলিং বিপ্লবাকর। তিব্বতীয় হ্যান্ডিক্রাফটস সেন্টার ছাড়াও প্রতি রবিবার *ফ্রু মার্কেটের* স্মারকরূপে তিব্বতীয় হ্যান্ডিক্রাফটস সংগ্রহ করা যেতে পারে আপার ধরমশালায় ফ্যানচারিট্রাস্ট। Tibetan Charitable Trust হস্তজাত পণ্যের সাথে তিব্বতীয় বৌদ্ধধর্মের নানান গ্রন্থের লোকান খুলেছে।

তেমনই দেখে নেওয়া যায় চীনের লাসা দখলের নানান চিত্র তিব্বতীয় ইনফরমেশন সেন্টারে। তিব্বতীয় মেডিক্যাল সেন্টারটিও তিব্বতীয় প্রথায় ক্যান্সার ছাড়াও নানান দুরারোগ্য ব্যাধির উপশম ঘটিয়ে সুনাম অর্জন করেছে। সারা বিশ্ব থেকে এসে হিপি সম্প্রদায়ও আস্তানা গেড়েছে আপার ধরমশালায়। আর রয়েছে ব্রিটিশেরই গডা লর্ড এলগিনস মেমোরিয়াল ম্যাকলেড গঞ্জে। ব্রিটিশ ভাইসরয় লর্ড এলগিনসের মৃত্যু ঘটে ১৮৬৩তে এখানে। সেন্ট জন চার্চটি



তাইই সমাধির উপর রূপ পেয়েছে। চার্চের জানালায় রঙিন কাচের কারুকর্ষও সুন্দর। মাউন্টেনয়ারিং ইনস্টিটিউটের শাখাও বসেছে ম্যাকলেড গঞ্জের ৬ কিমি উত্তরে।

কনডাক্টেড ট্যুর : মরসুমি পর্যটকদের HPTDC প্যাকেজ ট্যুরে ১০০ টাকায় ৬০ কিমি পরিক্রমায় ৯—১৭-০০টায় আপার ও লোয়ার ধরমশালা, পালামপুর, বৈজনাথ; ১০—১৯-০০টায় ১২৫ টাকায় ১৩০ কিমি পরিক্রমায় ধরমশালা, কাংড়া ও জ্বালামুখী বেড়িয়ে আনে। ট্যাক্সিও মেলে ধরমশালা তথা কাংড়া পরিক্রমায়। প্রয়োজনে ধরমশালা ট্যাক্সি অপারেটরস ইউনিয়ন, পুরাতন বাস স্ট্যান্ড, কোতোয়ালি বাজার ও ২২১০৫-কে যোগাযোগ করা যেতে পারে।



Dharamshala-176215, STD 01892-এব
প্রাণকেন্দ্র কোতোয়ালি বাজার তথা লোয়ার
ধরমশালায় বাস স্ট্যান্ড জুড়ে। হোটেলগুলিও ৫
মিনিটের পথে বাসকে ঘিরে ডাইনে-বাঁয়ে। বাসস্ট্যান্ড লাগোয়া
PWD-র *রেস্ট হাউস*। পাশেই HPTDC-র *H Dhauladhar*,
৩ ২৪২৬, DAB ৬০০ ৮৫০ সুইট ১৩০০, অব্ Manager,
Dharamshala-176215. মৌলখারের বিপরীতে *H Krishna*,
D ২০০-৫০০ চাব বেডের সুইট ৫০০, কল বুকিং Linkage
৩ ২৪৬৫১৭১, *Hill View H*, D ১৭৫-২৫০, *Simla H*, D ১২৫-
২০০। বাজারভাঙে বামহাতি *B Mehra H*, D ১৭৫-৩০০,
ডানহাতি *Rose H*, SCB ১০০, DCB ১৭৫, DAB ২৫০,
চাববেডের ঘর ২৭৫, শহুরে ঢুকতেই *Sun-N-Snow H*, DAB
২০০-৩২৫। শহুরেব দক্ষিণে এক শৈল শিবায় *Natraj Holiday
Resort*, DAB ৪৫০ ৬৫০ ৮৫০, কল বুকিং : ৩ ২৪০১২০৯/
২৪৬৫১৭১/২৪৬৭১৪; লাগোয়া একই মানে একই নামে *H Hill
Queen*, *Udeechee Hut*, কটেজ ৭০০ ৯০০ সুইট ১২০০,
কল বুকিং Span ৩ ২৪০১২০৯, *H Holiday Home*, D ৩৯৫
৪৯৫ ৫৯৫, কল বুকিং : ৩ ২৪০১২০৯/২৪৬৭১৪, *H Hunqueen*,
DAB ৭৫০ ১০০০ ১২৫০ ১৬০০, কল বুকিং : ৩ ২৪০১২০৯/
H Hungiri, DAB ৪০০ হাট ৮০০ ১০০০ ১২০০, কল বুকিং :
৩ ২৪০১২০৯; *H Surya Resort*, D ৮০০ ১০০০ ১২০০ সুইট
২০০০, কল বুকিং : ৩ ২৪০১২০৯/২৪৬৭১৪/২৩৮৪৬৭৮; *H
Aakriti*, DAB ৪৫০, কল বুকিং : Linkage, ৩ ২৪৬৫১৭১.

আর আপার ধরমশালা অর্থাৎ ম্যাকলেড গঞ্জে HPTDC-
র *H Bhagsu*, ৩ ২১১১৪, DAB ৬০০ ৭৫০ ১০০০ ১৩০০,
এদেরই *Kashmir House*, ৩ ২৩১০১, DAB ৫৫০ ৭০০ সুইট
(২ DBR) ৮০০, *Yatri Niwas*, ৩ ২৩১৬৩, DAB ৪৫০ ৫০০
৬০০, অব্ Manager, Dharamshala-176215. আর আছে
নানান তিব্বতীয় হোটেল—*Panaah GH*, D ২৫০, কল বুকিং :
৩ ২৪৬৭১৪/২৪৬৫১৭১; *Rising Moon, Tibetan United As-
sociation H*, *Dekyi Palber H*, *Minoo Cottage*, *Rainbow
H*, *Tibet H*, D ৫৫০ ৬০০ ৬৫০, কল বুকিং : ৩ ২৪৬৭১৪;
Friends Corner, *Tibetan Kailash H*, *Om H*, *Teopa H*,
Himalaya H, *Namgayal G H*, *Kalsang G H*, *Green H*,
Kokonoor H, *Dhangsur H*, *Paljor Gakyil G H*,
ShangriLa G H, *Ashoka G H*, *Drepung Laseling G H*,

এদের কাছে ২০০ থেকে ৩৫০ টাকায় ডবল বেডের ঘর মেলে। ধরমশালায় ভ্রমণার্থী কম আসেন। হোটেলও সংখ্যায় কম। আর সাজগোজও কেমন যেন অগোছালো। তবুও উচিত হবে ধরমশালায় থেকে কাংড়া ও জ্বালামুখী বেড়িয়ে নেওয়া। ধরমশালাও আছে পাহাড়ী শহর ধরমশাপাতে। ঘরের জন্য—*আর্যসমাজ মন্দির, সিংভাড়া গুরদারা, সেরাই, সনাতন ধরম মন্দির* দেখা যেতে পারে।

আর আছে খাবারের নানান হোটেল ও রেস্টুরেন্ট ধরমশালায় আবার ও লোয়ারে। ভারতীয় ও তিব্বতীয় আহার্য মেলে। লোয়ারে—*রাইজিং মুন, যৌলাধার*; আর আপারের হোটলে মেনুর বৈচিত্র্য উল্লেখ্য। তিব্বতীয় ও চীনা মেনুর রমরমা। *Mello Restaurant, Om, H Tibet, Tushi, Malabar, Shangri La, Green* ডালই।

কোতোয়ালি বাজার থেকে ঘটায় ঘটায় বাস যাচ্ছে ৪৫ মিনিটে বা মারুতি ভ্যান-ট্যাক্সিতে ২ ঘণ্টায় ম্যাকলেয়েড গঞ্জ পৌঁছে ১১ কিমি পায় হটা পথে ১৮৬০ মি উঠতে ভাগসুনাথ। দৈত্যরাজ ভাগসুনাতের নামে নাম। মনোরম পরিবেশে প্রাচীন শিবমন্দির, প্রস্রবণ ও জলপ্রপাত আকর্ষণ বাড়িয়েছে ভাগসুনাতের। চড়ুইভাতির সুন্দর পরিবেশ ভাগসু। ১১ কিমি দূরের ভাগসু বেড়িয়ে ম্যাকলেয়েড গঞ্জ ফিরে নতুন করে ৭ কিমি ট্রেক করে যৌলাধারের পাদদেশে ২৮২৭ মি উঠে সমতল পাহাড়ে ট্রিউভও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। ধরমকোট হয়ে পথ গিয়েছে, পথ বন্ধুর। পথে পড়ে গাল্‌সেবীর মন্দির। ট্রিউভ থেকে আরও ৫ কিমি গিয়ে লিয়াকা। লিয়াকা থেকে বরফ রাজ্যের শুরু। এত কাছ থেকে বরফে মোড়া শৃঙ্গ অন্যত্র দেখা যায় না। এমনকি তুষারশৃঙ্গের খাস-প্রখাস দর্শকদের চোখের পাতা কাঁপিয়ে তোলে। থাকার জন্য ৩৩০০ মি উচ্চ লিয়ারকায় *FRH* আছে। সাত-সকালে ধরমশালা থেকে বাসে ম্যাকলেয়েড গঞ্জ পৌঁছে দিনে দিনে দুই-ই দেখে ফেরা যায়। অত্যাশ্চর্য্য দেওদারে ছাওয়া ডাল লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন ৩ কিমি ট্রেক করে। গাড়িও যাচ্ছে শহর থেকে ১১ কিমি দূরে চড়ুইভাতির স্বর্গ ডাল-এ। আর আছে কোতোয়ালি থেকে ৫৫ কিমি দূরে ওক ও পাইনের সবুজ বনানীতে ছাওয়া ৩০৬৫ মি উচ্চ কারেরি লেক।



মানালী থেকে সকালের বাসে কুল/মাণ্ডী/যোগীন্দ্রনগর/বৈজনাথ/পালামপুর হয়ে বিকালে পৌঁছান NH 20 থেকে সরে গিয়ে ধরমশালায়। পথের দূরত্ব ২৪৪ কিমি। ভাড়া—সাধারণ বাসে ৯০, ডিলাক্স বাসে ১২৫। ৩২২ কিমি দূরের সিমলা থেকেও বাস আসছে মাণ্ডী হয়ে ধরমশালায়। এগুনের ভাড়া—সিনের বাসে ১০৫ রাতের বাসে ১২৫। বাস আসছে দিল্লী ৪৯৫, চণ্ডীগড় ২৪৮, আখালা ২৮৫, ডালহৌসি ১৬২, পাঠানকোট ৯২, অমৃতসর ১৯২, নাশাল ১৪৫, মাণ্ডী ১৪৭, যোগীন্দ্রনগর ৭৬, দেবাদুন ছাড়াও উত্তর ভারতের সিবিদিক থেকে ধরমশালায়। আর ধরমশালা থেকে দেবাদুন যাচ্ছে ২১-৩০ টায়; দিল্লী যাচ্ছে ১৪ ঘট্টা ৫-০০, ১৭-০০ ও ১৮-১৫; সিমলা ১০ ঘট্টা ৫-০০, ৫-০০, ৬-০০, ৮-০০, ১৮-০০, ১৮-১৫; মানালী ১২ ঘট্টা ৫-১৫, ১০-৪৫; চণ্ডীগড় ৯ ঘট্টা ৯ রোডওয়েজ, পাঞ্জাব রোডওয়েজ ও প্রাইভেট বাস চলেছে। মরসুমে HPTDC-এর ল্যামরি কোচ ১৯-৩০এ ধরমশালা ছেড়ে ৯ ঘট্টা সিমলা যাচ্ছে ১৫০ টাকায়; মানালী যাচ্ছে সিনের বাসে ২০০ রাতে ২২৫ টাকায়। ফেরেও এরা একইভাবে সিমলা ও মানালী থেকে।



কলকাতা থেকে সহজতম পথ হিমগিরি এক্সে চাকী বা শিয়ালদহ-জম্মু তাতওয়াই এক্সে পাঠানকোট পৌঁছে বাসে ধরমশালায় যাওয়া। মুম্বাই বাস, ৩২ ঘট্টার পথ, ট্যাক্সিও মেলে এগুণে। আবার পাঠানকোট-যোগীন্দ্রনগর ন্যারোগেজের রেল ৪-৫০, ৯-১০, ১১-০০, ১৩-১০, ১৫-৫৫, ২-১৫ ট্রেনে ৪ ঘট্টা কাংড়া পৌঁছে বাসে চলা যায় ১৮ কিমি দূরের ধরমশালায়। তবে, সময়ে আধিক্য লাগে ট্রেনে। ধরমশালা থেকেও হিমাচল ভ্রমণ শুরু করা যেতে পারে। দিল্লী জং থেকে বিলাম এক্স, জম্মু তাতওয়াই মেল, চেন্নাই-জম্মু তাতওয়াই এক্স; নতুন দিল্লী থেকে শালিমার এক্স, দিল্লী-জম্মু তাতওয়াই এক্স, মুম্বাই-জম্মু তাতওয়াই এক্স, মালোয়া এক্সও চাকী/পাঠানকোট হয়ে যাচ্ছে। আবার নানান ট্রেনে আখালা ক্যান্ট পৌঁছেও সড়কপথে চলা যেতে পারে ধরমশালা। বিশদ সিমলা অংশে যানবাহন দেখুন।



নিকটতম বিমানবন্দর অমৃতসর (১৯২) আর রেল স্টেশন পাঠানকোট (৯২)। তবে ন্যারোগেজ রেল সংযোগকারী ১৩ কিমি দূরের কাংড়ার সঙ্গে নিয়মিত বাস সংযোগ রয়েছে। তেমনি IAC-র বিমান সার্ভিস গড়েছে ধরমশালা (১৩ কিমি দূরে Gaggal)-র 135 সিমলা-ধরমশালা-কুল আর 246 দিন দিল্লী-চণ্ডীগড়-ধরমশালায় মাঝে। আর অর্চনা এয়ার লাইনসের বিমান যাচ্ছে কাংড়া, জ্বালামুখী, ধরমশালা, পালামপুর। জ্যাকসন এয়ার লাইনসও সার্ভিস গড়েছে দিল্লী-ধরমশালায় মাঝে। রেল না পৌঁছালেও রিজার্ভেশন বুকিং কাউন্টার বসেছে বাস স্ট্যাণ্ডে।

কাংড়া

মাণ্ডী থেকে উত্তর-পূর্বে পাঠানকোটের অদূরে শাহাপুর পর্যন্ত বিস্তীর্ণ এলাকা জুড়ে ছবির মতো সুন্দর নিসর্গের উপত্যকা কাংড়া। সবুজে ছাওয়া ওক পাইন আর ফলের খেতি—ভারই মাঝে কোরাস ধরে বোরা-নালা-পাহাড়ী নদী। সারা উত্তর জুড়ে যৌলাধার পর্বতশ্রেণী। পাঠানকোট-মাণ্ডী সড়ক চলেছে উপত্যকা চিরে। রেলও যাচ্ছে ২-০০, ৪-৩৫, ৮-৫০, ৯-৪৫, ১৩-০০, ১৬-০০ টায় পাঠানকোট ছেড়ে ৪ ঘট্টা কাংড়া পৌঁছে ন্যারোগেজে ১৬৪ কিমি দূরের যোগীন্দ্রনগর। সময়ে আধিক্য লাগলেও হিমাচলের অনন্য সুন্দরী প্রকৃতির মাঝে পাহাড়ী রেল চলায় রোমাঞ্চ আছে। ধরমশালা, জ্বালামুখী, বৈজনাথ, পালামপুর, যোগীন্দ্রনগর প্রত্যেকেরই জরহান কাংড়া উপত্যকায়। বাস-সড়কপথে গড়েছে কাংড়া থেকে—ধরমশালা ১৮, পাঠানকোট ৮৬, জ্বালামুখী ৩৬, যোগীন্দ্রনগর ৭৮, মাণ্ডী ১৩৪ কিমি ছাড়াও উত্তর ভারতের নানান নিকের। বাসদূত ও প্রাইভেট বিমান পৌঁছেছে Gaggal অর্থাৎ কাংড়ায়।

তবুও যেন উচিত হবে ১৮ কিমি দূরের ধরমশালা থেকে বাসে দিনে দিনে কাণ্ডা ও জ্বালামুখী দেখে ফেরা। তবে কাণ্ডা থেকেও বাস যাচ্ছে রাজ্য তথা উত্তর ভারতের দিকে দিকে।

কাণ্ডা শব্দটাই স্মরণ করায় পাহাড়ী শৈলীর সাথে মোগলি মিনিয়োরার ধর্মী কাণ্ডা পেইন্টিং-এর কথা। সারা বিশ্বের শিল্পরসিকদের কাছে কাণ্ডা পেইন্টিং বিশেষভাবে আদৃত। ১৮ শতকে রাজা সংসারচাঁদ দ্বিতীয় কাটোকের পৃষ্ঠপোষকতায় কাণ্ডা পেইন্টিং প্রসার লাভ করে, খ্যাতিও অর্জন করে স্বল্প সময়ে। শহরের পশ্চিম ও সংসারচাঁদের হাতে। ১৪০০ ফুট উঁচু কাণ্ডায় মন্দিরও আছে নানান। বজ্রেশ্বরীর মন্দিরটি বিশেষভাবে উল্লেখ্য। পাহাড়ভূমির চার কোনো মন্দিরের শিরে গম্বুজ। পিছে তার ঘোলাধার। বার বার হানাদারদের কোপ দৃষ্টিতে পড়েছে বজ্রেশ্বরী। সুলতান মামুদ (১০০৮), ফিরোজ তুঘলক (১৩৬০), তৈমুর লঙ (১৩৯৮) লুণ্ঠন করেছে মন্দিরের ধনদৌলত। আর, ১৯০৫এর ভূমিকম্পে মন্দিরটি ক্ষতিগ্রস্ত হতে নতুন করে গড়ে ওঠে বর্তমান মন্দির। এপ্রিল ও অক্টোবরে নবরাত্রির মেলা বসে।

এছাড়া পাহাড়ী-টিলায় ৪ কিমি দীর্ঘ প্রাচীরে ঘেরা কাণ্ডারাজ্যের প্রাচীন দুর্গের ধ্বংসাবশেষও পর্যটকদের আর এক দ্রষ্টব্য। ১৯০৫ খ্রিস্টাব্দের ভূমিকম্পে দুর্গটি ক্ষতিগ্রস্ত হয়। আর দুর্গের মন্দিরটি ধ্বংস করে সুলতান মামুদ তার ৪র্থ ভারত হনায়। জাহাঙ্গীরের দখলে যায় কাণ্ডা ১৬২০এ। জাহাঙ্গীরের তৈরি একটি মসজিদের ধ্বংসাবশেষ রয়েছে দুর্গে। এমনকি পাথরের গোলাকৃতি দেবী বজ্রেশ্বরীকেও রূপোর পাতে মুড়ে সেন জাহাঙ্গীর। পুষ্প-চন্দন-বসন-ভূষণে মণ্ডিত দেবীর স্বল্প সজ্জা ও মঙ্গলারতির পর স্নান অভিষেকে দেখে নেওয়া যায়। কাণ্ডার আর এক আকর্ষণ উপত্যকার সবুজ চা। বয়ে চলেছে বাণগঙ্গা নদী এরই মাঝ দিয়ে। কাণ্ডার ১৫ কিমি দক্ষিণে মসরুর (Masur)ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। মসরুরের প্রসিদ্ধি পাহাড় কেটে তৈরি ইন্দো-আর্য শৈলীর ১৫টি গুহা মন্দিরের জন্য।

ধাকার জন্য হোটেলও আছে বাস স্ট্যাণ্ডে—H Mayur; অন্যে H Preet, H Ashoka, Raj Bhawan H, Grand H, Jai H, Mount View H ছাড়াও নানান কাণ্ডায়। এদের কাছে ১২৫ থেকে ২০০ টাকার ঘর মেলে।

জ্বালামুখী



ধরমশালা থেকে বাসেই চপল জ্বালামুখী। কাণ্ডা হয়েই মুর্মূর্ষ বাস যাচ্ছে, দূরত্ব ৫৪ কিমি, সময় নেয় ২১ ঘণ্টা। আর কাণ্ডার দূরত্ব ৩৬ কিমি। পঠানকোট থেকে কাণ্ডার প্রতিটা ট্রেন ৩ ঘণ্টার জ্বালামুখী রোড পৌঁছে বাসে চলা যায় জ্বালামুখী দর্শনে। বাসও আসছে লিভী ৪৭৩, পঠানকোট ১২৩, মাটী ১৭১, মানালী ২৮১, সিমলা ৩২১ কিমি,

পালামপুর, যোগীন্দ্রনগর ছাড়াও উত্তর ভারতের দিহলিক থেকে জ্বালামুখী।

পঠানকোট থেকে ১১ কিমি দূরের চাকী, ২৩ কিমি দূরের নূরপুর হয়ে পথ গিয়েছে হিমাচলের দিকে দিকে। নূরপুর পেরুতে বামহাতি পথ গিয়েছে চাখা ও ডালহৌসির আর উর্ধ্বমুখী পথ যাচ্ছে ধরমশালায়; জ্বালামুখী হয়ে কাণ্ডা, পালামপুর, বৈজনাথ, যোগীন্দ্রনগর, মাটী। মাটী থেকে আবার পথ পৃথক হয়েছে সিমলা ও মানালীর। মুর্মূর্ষ বাসও চলে এপথে। সংখ্যায় ৪/৫ জন হলে একটি ট্যাক্সি বা জিপি ৭০০-৮০০ টাকায় চুক্তিতে নিতে পারেন ধরমশালায়—একই দিনে জ্বালামুখী, কাণ্ডা, পালামপুর, বৈজনাথ, যোগীন্দ্রনগর ও অন্যান্য বেড়িয়ে নিন। তবে একদিনে দেখতে হলে নূরপুর বাদ দেওয়া উচিত হবে দর্শনসূচী থেকে।

মন্দিরকে নিয়ে শহর। উত্তর ভারতের হিন্দু মন্দিরগুলির মধ্যে বিপাশা উপত্যকায় ৬১০ মি উঁচু জ্বালামুখী অন্যতম। কিংবদন্তী, দেবতাদের অত্যাচারে জ্বরিত স্বর্গের দেবতার ভগবান বিষ্ণুর নেতৃত্বে হিমালয়ে এলেন। বিক্রম দেখাতে দেবতাদের রোষানলে সৃষ্ট আলোক বর্তিকা তথা শিখা থেকে আদিশক্তির উদ্ভব। প্রজাপতি দক্ষের ঘরে পালিতা—শিব-জ্ঞান্য। পরমা প্রকৃতি আদিশক্তি তথা পার্বতী পতি নিন্দায় দেহ রাখেন। শিবের ক্রোধ থেকে সৃষ্টি হিষ্টি রাখতে বিষ্ণুচক্রে টুকরো হয়ে সতীর জিহবার পতন কালীধর পাহাড়ে। শতবর্ষ আগে কোনো এক রাখালের আবিষ্কার এই শিখা নতুন করে। আর মন্দির গড়েন রাজা ভূমিচন্দ্র। আজও সেই জিহা মন্দিরের মাঝের ছোট্ট কুণ্ডে অনিবার্ণ নীলাভ শিখায় জ্বলছে। শিখা রয়েছে আরও আট—মন্দিরগাৱের নানানদিকে। দেবীর কোনো মূর্তি নেই জ্বালামুখীতে। শিখাই দেবীর প্রতিভূ। ৫১ পীঠের এক পীঠও জ্বালামুখী। এখানেও এপ্রিল ও অক্টোবরে নবরাত্রির মেলা বসে। পদমাধব আকবর মন্দিরের চুড়োটি সেনায় মুড়ে সেন। আর রূপোর দরজাটি পাঞ্জাবের শিখ রাজাদের ভেট। তবে নতুন করে ঝিল মন্দির হয়েছে মূল মন্দিরকে ঘিরে। সমাবেশও ঘটেছে নানান হিন্দু দেবদেবীর মন্দিরে। শিখাও উঠেছে ঝিলে। কৃত্রিমতা সেবে দুটি ঝিলটি মূল মন্দিরের অতীত গাঠীর্ষকে ক্ষুণ্ণ করেছে। লঙ্গরখানাও বসেছে মন্দির লাগোয়া। আর আছে, দেবী মন্দিরের শিরে বাবা গোরক্ষনাথের মন্দির। ৫ কিমি দূরে রঘুনাথজী মন্দিরটিও আর এক দর্শন। জনশ্রুতি, পাণ্ডবদের তৈরি মন্দির। রাম-লক্ষ্মণ-সীতাও এসেছেন এখানে।

জ্বালামুখী থেকে ৩৫ আর পাঞ্জাবের হেসিয়ারপুর থেকে ৪২ কিমি দূরে ৯৪০মি উঁচুতে ছিন্নমস্তা দেবী তিষ্ঠাপুরনি। চরণ পড়ে সতীর—পুষ্য হিন্দুতীর্থ। দূরদূরান্ত থেকে যাত্রী আসেন—আশিস মাগেন দেবীর। থাকারও ব্যবস্থা মেলে মন্দির থেকে ২ কিমি দূরে HPTDC-র Yatri Niwas,

Chinipurni, HP-177109. ☎ (019766) 5234. D ২৫০ ৩০০ ড্রমি বেড ৫০।



গীতাভবন ধরমশালা ও সৈনিক রেস্ট হাউসে থাকার ঘর মেলে—জ্বালামুখীতে। আর হয়েছে H Mata Shree, D ৩০০ ৪৫০ A-c ৪৭৫ A/c ৬৫০, বাসস্ট্যান্ডে HPTDC-র H Jwalaji, ☎ (01970) 22280. 1) AB ৪০০ ৫৫০ A/c D ৭৫০ A/c Suite ১১০০ ড্রমি বেড ৫০ হাবে; অব্: Manager, H Jwalaji, Jwalamukhi, HP-17603। তবে, উচিত হবে যাতায়াতের পথে কাংড়া বেড়িয়ে ধরমশালায় ফেরা।

নূরপুর

ধরমশালা থেকে পাঠানকোটের বাসে ৬৯ কিমি দূরের নূরপুর চলুন। আর পাঠানকোট থেকে দূরত্ব ২৩ কিমি। ডালহৌসি পাহাড়েরও পথ গিয়েছে নূরপুর হয়ে। যোগীন্দর-নগর-কাংড়া রেলও যাচ্ছে নূরপুর হয়ে। চলার পথে একটা বাস ছেড়ে নূরপুর বেড়িয়ে চলা যেতে পারে পরের বাসে। পথপাশেই পাহাড়চূড়ায় রাজা বসুর তৈরি হাজার বছরের প্রাচীন দুর্গ ও বৈজ্ঞানিক মন্দির দেখুন নূরপুরে। দেবতা—কালো মর্মরে শ্রীকৃষ্ণ। জনশ্রুতি, খীরাবাসি—এর পুজিত এই দেবমূর্তি চিতোর থেকে আনা। নূরপুরের শালেরও প্রশস্তি আছে। নামকরণ ১৬২২এ বেগম নূরজাহান থেকে জাহাঙ্গীরের।

ডালহৌসি

যৌলাধার ও শিবালিক পর্বতে সবুজে ছাওয়া—Kathlog, Potreyn, Tehra, Bakrota, Balun এই পাঁচ ছোট পাহাড়কে নিয়ে ১৩ বর্গকিমি জুড়ে ডালহৌসি পাহাড়। বয়ে চলছে তিন খরস্রোতা নদী—চেনাব, রাবি ও বিপাশা ডালহৌসির বুক চিরে। সাহেবদের শহর ডালহৌসি। নিজ বাসভূমির আদল খুঁজে পায় ব্রিটিশ। প্রকৃতিতে ঝুটল্যান্ড সম—স্যানাটোরিয়াম গড়ে ব্রিটিশ। চাম্বা-উপত্যকায় ব্রিটিশ-ভারতের প্রাক্তন ভাইসরয় লর্ড ডালহৌসির গড়া ডালহৌসি পাহাড়। ১৮৫৩য় চাম্বারাজের কাছ থেকে কিনে সাহেবরাই স্বাস্থ্যনিবাস আর সেনানিবাস গড়ে ডালহৌসিতে। ব্রিটিশের ভারত ত্যাগের সাথে সাথে ডালহৌসিও রাজা ছাড়া রাজবাড়ির চেহারা নেয় যেন। ব্রিটিশের বদলে দখল নিয়েছে আজ তিব্বতীয় রিফিউজিরা ডালহৌসি পাহাড়ে। লাসার মিনি সংস্করণও বলে থাকে লোকে ডালহৌসিকে। স্মারকরূপে সংগ্রহও করা যেতে পারে তিব্বতীয়দের নানানধর্মী হাতের কাজ GPO Chowk লাগোয়া Tibetan Refugee Handicrafts Shop থেকে।

ফুল ও ফলে ভরা ওক-পাইন-দেবদারুতে ছাওয়া রূপসী ডালহৌসির নৈসর্গিক শোভাই মূল আকর্ষণ। ১৫২৫ থেকে ২৩৭৮-মি উচ্চ শান্ত-শিখর ডালহৌসি পাহাড়, কলাকোলাহল

কম। ডালহৌসির উত্তর জুড়ে তুষারমৌলী পর্বতমালা—একদিকে যৌলাধার, অপরদিকে কাশ্মীরের পীরপাঞ্জাল; আর দক্ষিণে পাঞ্জাবের সমতল ভূমি। আর পাঁচটা পাহাড়ী শহরের তুলনায় যাত্রী সমাগম কম। বেড়াবার মরসুম মার্চ ১৫ থেকে জুলাই ১৫, আবার সেপ্টেম্বর থেকে নভেম্বর মাস। তাপমান গ্রীষ্মে ১৬—২৩° আর শীতে ১—১০° সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে।

GPO চকে শহরের শুরু। তবে, বাস পৌঁছায় আরও এগিয়ে শহর পরিক্রমা সাস করে বাস স্ট্যান্ডে। বায়ে ট্যুরিস্ট অফিস আর ভাইনে ডালহৌসি ক্লাব। হোটেলও গড়ে উঠেছে থরে বিথরে বাসস্ট্যান্ডের শিরে। বাড়ি-ঘরে ঠাসা ঘিঞ্জি শহর সুভাষ চক; দোকানপাট গান্ধী চকে। চলতে ফিরতে শহরে দেখুন—শিব, বিষ্ণু, নারায়ণ মন্দির, নানান চার্চ ও মিউজিয়াম।

আকর্ষণে উদ্ভ্রম্য না হলেও শহর থেকে পুঞ্জপুন্নার পথে সর্দার অজিত সিং রোড ধরে ৪ কিমি যেতে ২০৩৯ মি উঁচুতে নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা সাতধারা। পথপাশে ৭টি নল বেয়ে জল আসছে—তবে একটি আজ ভাঙা। জল যেমন পবিত্র, তেমনই মিষ্টি। আরও ১ কিমি যেতে পঞ্চপুন্না জলপ্রপাত। খুবই নিজল, শান্ত, শিখর পরিবেশ। শহীদ স্মারক হয়েছে ভগৎ সিং-এর কাকা অজিত সিং-এর স্মরণে। রেস্তোরাঁও গড়েছে হিমাচল ট্যুরিজম। পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। গাড়িও মেলে যাতায়াতে। ৬ কিমি দূরে ২০৮৫ মি উঁচু বাকরোটা পাহাড় থেকে তুষারমৌলী হিমালয়ের দৃশ্য যেমন মনোরম দেখায় ঠিক তেমনই এর নেহরু টিঙ্কা থেকে শতদ্রু, বিপাশা, রাবি, চেনাবও দৃশ্যমান নির্মিথ দিনগুলিতে। আর বাকরোটা পাহাড়চূড়ায় ২ কিমি পায়ে হাঁটা দূরত্বে নামগোত্রহীন মুক মুখে দাঁড়িয়ে আছে আজও শিশু রবির (রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর) স্মৃতি বিজড়িত স্লো-ডন বাড়িটি। তবে, মালিকানা বদল হয়েছে—বাড়িটিও আজ অবহেলিত। তবুও বাঙালি পর্যটক-দের কাছে তীর্থবিশেষ। পায়ে পায়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়, আবার গাড়িও মেলে HPTDC-র শ-দু'য়েক টাকায়। ডা. ধরমবীরার অতিথিরূপে নেতাজী সুভাষচন্দ্র বসুও স্বাস্থ্যোচ্চারণে আসেন ডালহৌসিতে। স্মারকরূপে সুভাষ বাউলি অর্থাৎ স্বরনা হয়েছে বাস স্ট্যান্ড থেকে ৩ কিমি দূরে। খাজিয়াদের পথে ৮৫ কিমি যেতে ২৪৪০ মি উঁচু কালাটপও বেড়িয়ে নিতে পারেন। কালাটপের প্রশস্তি তার তুষারমৌলী হিমালয়ের নৈসর্গিক শোভার জন্য। স্মৃতিস্তম্ভ মনোহর। অনিয়-মিত বাস যাচ্ছে HPTDC-র। নয়নাভিরাম প্রকৃতির মাঝে কালাটপখাজিয়ার স্যাঙ্কচুয়ারিটিও দেখে নিতে পারেন। ১৯৪৯এ গড়া ৪৭ বর্গকিমি ব্যাপ্ত যৌলাধার পাহাড়ে বিরল প্রজাতির বন্যপ্রাণীর বাস। পথ চলে দেওদার, পাইন, উইলো গাছের ফাঁকে ফাঁকে অভয়ারগোশার মাঝ দিয়ে। থাকার জন্য FRH আছে; অব্: DFO, Chamba. ১৫ কিমি দূরে ৩০০০

মি উর্চু লকর মাণ্ডী হয়ে পথ। মূল পথ চলে খাজিয়ারে।
ডেমনই লকর মাণ্ডী থেকে পাকদণ্ডি পথে ১০ কিমি দূরে
২৭৪৫ মি উর্চু সবুজে ছাওয়া ডাইনকুণ্ড অতিথান করে ফেরা
যায়। লোকশ্রুতি, আজও পরীরা জলকেলি করে কুণ্ডের
জলে। বাতাসও তান ধরে গানের—তাই Singing Hill বলে
থাকে লোকে ডাইনকুণ্ডকে। অদূরেই ৩৩৩৫ মি উর্চু দেবী
পয়েন্ট—ডালহৌসি শহর ও নৈসর্গিক শোভা দেখে নেওয়া
যায়।



শিয়ালদহ থেকে জম্মু তাওয়াই এক্সপ্রেস পাঠানকোট
পৌছান। হিমগিরির ব্যারীদের চাকী বাঙ্ক নেমে
পাঠানকোট হয়ে চলাই উচিত হবে। পাঠানকোট
থেকেই বাস যাচ্ছে চাকী/নুরপুর হয়ে ডালহৌসি ও চাষার।
৩৬ ঘণ্টার পথ। ডালহৌসির ৮ কিমি আগেই বাণীখেত থেকে পৃথক
হয়েছে পথ—ডাইনে ডালহৌসি আর উর্ধ্বমুখী পথ যাচ্ছে চাষার।
ট্রেন আসছে জম্মুগাম্ভী দিল্লী, অমৃতসর, টাটা, মুম্বাই তথা ভারতের
সিধিকি থেকেও পাঠানকোটে। নিকটতম রেল স্টেশন ৮০ কিমি
দূরের পাঠানকোট। আর বিমান অমৃতসরে। বাস, ট্যাক্সি যাচ্ছে
অমৃতসর ও পাঠানকোট থেকে ডালহৌসি পাছড়ে।



আর ডালহৌসি থেকে বাস যাচ্ছে পাঠানকোট ৬-
৩০, ১২-০০, ১৩-০০, ১৪-২৫, ১৫-১৫, ১৬-
৩০, ১৬-৪৫; পাতিয়ালা ৭-০০; জলন্ধর ৭-৪৫;
অমৃতসর ৯-১৫, ১০-০০; জম্মু ১০-১০; ধরমশালা ৮-৩০;
চাষা ৬-৪৫, ৮-৩০, ১২-৩০; মানালী যাচ্ছে রাতভর জার্নিতে
১৮-৪৫এ ছেড়ে ১০ ঘণ্টায়। সিমলায় যাচ্ছে ১৫ ঘণ্টায়। তবে,
সিমলা যাত্রায় উচিত হবে পাঠানকোটে বাস বদল করে দ্রুতগামী
বাসে চলা। দূরত্ব দিল্লী থেকে ৪৮৫, চণ্ডীগড় ২৫২, অমৃতসর
১৮৮, ধরমশালা ১৬২ আর কলকাতা (১৯৫০+৮০) ২০৩০
কিমি। ভাঙ্গরওয়া হয়ে নতুন পথ হয়েছে ডালহৌসি থেকে জম্মুর।
বাসও যাচ্ছে সরলতম নতুন পথে পাঠানকোট না গিয়ে
ঘণ্টাচারেক জম্মু।



ডালহৌসি পাহাড়ী শহর। তাপমানের সাথে সাথে
রেটও গুণানামা করে; আর অফ সিজনে রিবেট
মেনে ৩০-৫০% Dalhousie-176304, STD-
01899-এর হোটেল। বাস স্ট্যান্ডে—Dalhousie Club H SAB
৪০ DAB ৬৫, শয্যা-সভার পৃথক মূল্য; Youth Hostel-এ বেড
২০, সভা ও ছাত্র ১০ করে। বাস স্ট্যান্ডের শিরে HPTDC-র H
Geetanjali, Dalhousie, ০ 42155, DAB ৪৫০ ৫৫০ চার
বেডের ঘর ৭৫০। বাস স্ট্যান্ডের ডাইনে *Grand View H,
০ 21194, D ১১০০ ১৫০০, কল বুকিং: ০ 2801209; লাগোয়া
Mount View H, DAB ৫০০ ৬৫০ সুইট ৪৫০, কল বুকিং:
০ 2465171; Glory H, S ১৫০ D ২৫০; Lal's H, D ২৫০-
৩২৫। ১ কিমি দূরের সুভাষ চক্রে—H Shivadi, DAB ৪৫০-
৬৫০; H Super Star, D ২০০-৩২৫; H New Metro's, D
২৭৫-৪৫০; H Crags, D ২৫০-৪০০; H Green, D ৩৫০-
৫২৫। যাল রোডে—*H Aroma-N-Claire, ০ 21199, D
৬০০ ৭০০ ৮০০ কটেজ ১০০০ ১২০০, কল বুকিং:
০ 2801209; Mehar's H, D ৪২৫ ৫৭৫ ৬৫০ T ৪৭৫ ৭৫০
F ৬৫০ ৯৫০, কল বুকিং: ০ 276714; H Jaspreet, D ৪০০

৫০০ ৬০০ ৭০০ ৮০০, কল বুকিং: ০ 2801209/276714; H
Chanakya, B1, D ৮৫০-১২০০ সুইট ১৫০০; H Surya, D
৬৯০-১৫০০ সুইট ২০০০, কল বুকিং: 2801209; লাগোয়া H
Him Dhara, DAB ৩৫০-৪৫০; Princes H, DAB ৮০০
৯০০ ১০০০, কল বুকিং: ০ 2801209; Gohar G.H, D ১৫০-
২৫০; Spring H, D ২০০-৩২৫; আর আছে H Shangrila,
GPO Chowk, D ৫০০ ৭০০ ৯০০ সুইট ১২০০, কল বুকিং:
০ 2801209/2465171; Fair View, B2, DAB ৬৫০-১২০০;
Kumars G.H, D ৬০০ ৭০০ ৮০০ ৯০০, কল বুকিং:
০ 2801209; H Hem Kunt, D ২০০-৩২৫; Fair View H,
D ২৫০ থেকে; Dalhousie Palace, D ৬০০ ৭০০ ৮০০
৯০০, কল বুকিং: ০ 2801209; Nanak Niwas, সুইট ১০০০
হাট ১৮০০, কল বুকিং: ০ 2801209; Bombay Palace, D
৬৫০ ৭০০ ৮০০ ৯৫০, কল বুকিং: ০ 2801209/2465171;
Mohan Palace, D ৭৫০ ৮০০ ৮৫০, কল বুকিং: ০ 2801209/
276714; Hingiri, D ৬৫০-১০৫০; Kings H, D ৩০০ ৩৫০
৪০০ ৫৫০ ৬৫০ কিচেন-সহ FAB ৭৫০; H Kohinoor; H
Raviview, DAB ৩০০ ৪০০ ৫০০ FAB ৮০০, কল বুকিং:
০ 2465171/276714; Alps Holiday Resort, D ১০০০
১৫০০ সুইট ১৮০০ ২০০০, কল বুকিং: ০ 2801209/276714/
2465171; H Highland, DAB ৩৫০ ৪৫০ সুইট ৬৫০। অগ্রিম
বুকিং-এর জন্য: Manager, Dalhousie 176304-কে লিখুন।
সার্কিট হাউস ও PWD-র রেস্ট হাউসও আছে ডালহৌসিতে।
তবে কম খরচে ঘর থেকে হিমালয় দেখতে ডালহৌসি ক্লাব ও
ইয়ুথ হোটেল আর কোলীনা অরোমা-এন-ক্রেয়ার, হোটেল
গীতাঞ্জলি ও হোটেল সাংগ্রিলা আদরনীয় হবে।

আহার্যেরও নানান হোটেল ডালহৌসিতে। জিপিও চকে
পাঞ্জাব রেস্টুরেন্ট, সুভাষ চকে শের-ই-পাঞ্জাব ধাবা, ডিলাল
রেস্টুরেন্ট সারাবছর খোলা মেলে। গান্ধী চকে কোয়ালিটি, লাভলি,
কাবাব কনরি রেস্টুরেন্টগুলিরও সুনাম যথেষ্ট।

খাজিয়ার

ডালহৌসি থেকে ২২ আর চাষা থেকে ২৪ কিমি দূরে
খাজিয়ার। আর রেল সংযোগকারী পাঠানকোটের দূরত্ব
১২০ কিমি। খাজিয়ারেরও প্রশস্তি তার নৈসর্গিক শোভার
জন্য। লর্ড কার্জন বলেছিলেন এমন সুন্দরটি আর দেখিনি।
১৯৬০ মি উঁচুতে ২ কিমি লম্বা আর ১ কিমি চওড়া
রেকাবের মতো ছোট্ট এক উপত্যকা। তারই মাঝে নীল
আকাশ, সবুজের বনানী আর ফিকে সবুজ ঘাস। পাইন আর
দেওদারে ছাওয়া শান্ত সুনিবিড় গহীন বনের মাঝে ছোট্ট
লেকের পাড়ে গলফ মাঠও হয়েছে। লেকের জলে ভাসন্ত
দ্বীপ। পরিভ্রমণের বিষয় লেকটি আজ মজতে বসেছে।
লাগোয়া ১২ শতকের মন্দির-টিও নানান কিংবদন্তীতে
ঘেরা। দারুণ কার্ভিং, সোনায় মোড়া ডোম। আর আছে
খাজিয়ারানগের মন্দির—মূর্তি হয়েছে দারুণত পঞ্চপাণ্ডবের।
মরসুমি পর্বটকদের HPTDC কন-ডাকটেড ট্যুরে ডালহৌসি
থেকে ৯—১৫-০০টার দেখিয়ে আনে খাজিয়ার। চাষা

থেকে ১৩-৩০ টার সার্ভিস বাসে এসে খজিয়ার দেখে ১৭-০০টায় ফেরা যেতে পারে। এমনকি চাষা থেকে ৭-০০টায় ছাড়া ডালহৌসির বাসটি খজিয়ার হয়েই যাচ্ছে। চলার পথে বাসে বসেও দেখে নেওয়া যায় খজিয়ারে প্রকৃতির উজাড় করা সৌন্দর্য।



খাকার জন্য HPTDC-র H Devdar, Khajjiar, (018992) 6333, DAB ৬০০ ৭৫০ ডর্মি বেড ৫০; Youth Hostel, CH, DB, PWD RH আছে খজিয়ারে। অব: Area Manager, HPTDC, Dalhousie. আর আছে H Amardeep, D ৬৬০ ৯৯০; Ghar Resort, DAB ৭০০ ১৪০০ হুটিস ৩০০০, ৩ 2801209; Mini Swiss, D ৮৯০ ১১৯০ সুইট ২২৯০; ২টিই কল বুকিং: Span ৩ 2801209; ছাড়াও সুইস হোটেল, সুনীল লজ খজিয়ারে।

চাষা

নিকটতম রেল স্টেশন পাঠানকোট থেকে চাকী/নূরপুর/বাণীখেত হয়ে পথ গিয়েছে চাষায়। নিম্নিত বাস চলে এ পথে। দূরত্ব ১২২ কিমি পাঠানকোট থেকে চাষা, সময় নেয় ৪ ঘণ্টা। ৪৯ কিমি দূরের ডালহৌসিরও পথ গিয়েছে বাণীখেত হয়ে। আর বিকল্প পথে খজিয়ার/কালটিপ স্যান্ডহুয়ারি হয়ে দূরত্ব ৪৬ কিমি। উভয় পথে বাস চলে চাষা থেকে ডালহৌসির।

আর বাস, ট্যাক্সি ও জিপ যাচ্ছে নিকটতম রেল স্টেশন পাঠানকোট থেকে চাষায়। সারা ভারত থেকে উচিতও হবে পাঠানকোট পৌঁছে চাষা চলা। বাস আসছে—জম্মু ২৪৫, সিমলা ৪২৬, যমুটী ৩৩৪, মানালী ৪৭০, কাড়া ১৮০, অমৃতসর ২৩২, দিল্লী ৫৮০, হরিদ্বার ৬১০ কিমি, ডালহৌসি ছাড়াও উত্তর ভারতের লিখিমিক থেকে চাষায়।



বাস স্ট্যান্ড থেকে মিনিট দশেকের পথে Chamba-176310, STD-018992-এ চাষার হোটেলরাজি। HPTDC-র H Champak, Chamba, ৩ 2774, DCB ১৫০ DAB ২০০ ডর্মি ৫০, এদেরই H Iravati, ৩ 2672, DAB ৫৫০ ৬০০ ৭০০। Municipal R H, D ১০০; L Chandra, DAB ১৫০-২২৫; H Akhunda Chand, College Rd, ৩ 6363, SAB ১৬০ DAB ২৭৫ সুইট ৪০০, দিনভর আহার্য প্রতি জনা ১০০। আর আছে Shiwulik H, D ২০০ ২৫০, কল বুকিং: Linkage ৩ 2465171; Super L: Krishna L, Rama L, Green, Deluxe, Sankar, Janata, Aziz, Himachal, Thakur, Lal's Rattan, Kiran, Champak L. এদের কাছে ১০০ থেকে ১৭৫ টাকায় দু'বেড়ের ঘর মেলে। PWD IB, Youth Hostel-ও আছে চাষায়।

আহার্যেরও নানান হোটেল। তবুও যেন GPO-র কাছে Gupta Dhaba-র সুনাম যথেষ্ট।

১০ শতকের কথা—কন্যার ইচ্ছায় ভারমোর থেকে রাজ্যপাট তুলে চাষায় এলেন (৯২০) সহিল ডামার। নামান্তরও ঘটে কন্যার নামে নতুন রাজধানীর—চম্পা বা চাষা। খৌল্যাখার পাহাড়ে ৯৯৬ মি উঁচুতে ৩ বর্গকিমি ব্যাপ্ত ছোট পাহাড়ী শহর চাষা। মাঝে তার ১ কিমি লম্বা-চওড়া চৌগান অর্থাৎ মহারাজদের প্রমোদ উল্যান। নিচুদিয়ে বয়ে

চলেছে রাবি, অতীতের ইরাক্তী নদী। আর চারপাশ ঘিরে প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে পাহাড়শ্রেণী। উচ্চতা কম, গরমেরও আধিক্য। দুধ আর মধুর জন্য চাষা উপত্যকার প্রসিদ্ধি ছিল অতীতকালে—তাই *ভ্যালি অব মিক্সড আন্ড হানি* বলে থাকে চাষাকে। প্রবণ, নদী আর মন্দিরের জন্যও চাষা খ্যাত। ঠিক তেমনই খ্যাতি আছে চাষার চরল, এম্বরডারি শিল্প জাত চাষা রুমাল, শাল ও চর্মজাত নানান পণ্যের। শিব আর বিষ্ণু চাষার উপাস্য দেবতা।

শহরে ঢুকতেই বাসস্ট্যান্ডের বিপরীতে পাহাড়চূড়ায় চামুণ্ডা মন্দির। কাঠের মন্দির, কারুকার্য সুন্দর। শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান মন্দির থেকে। আর শহরের অপরপ্রান্তে চৌগানকে ঘিরে বাজারঘাট, দোকানপাট মায় চাষা শহর। বাজারের ডাইনে লক্ষ্মী-নারায়ণ মন্দির। ৬টি মন্দিরের কমপ্লেক্স—৩টি তার শিব, ৩টি বিষ্ণুর। ১০—১১ শতকে তৈরি শিখরধর্মী মন্দিরে বিগ্রহ ষেত মর্মরে। এছাড়াও দেবতা রয়েছেন আরও নানান—রাধাকৃষ্ণ, চন্দ্রগুপ্ত মহাদেব, গৌরীশঙ্কর, ব্রাহ্মকেশ্বর, লক্ষ্মী-দামোদর, মহাকালী, স্ব স্ব মন্দিরে একই চত্বরে। বাজারান্তে হাসপাতালের বিপরীতে ভুরি সিং মিউজিয়মে চাষার অতীত গরিমা দেখে নেওয়া উচিত হবে। রবি ছাড়া ১০—১৭-০০টায় খোলা। কাংড়া পেইন্টিং ও বাসেলি স্কুল অব আর্টস-এর ছবির ভাল সংগ্রহ আছে। তেমনই চাষার আর এক অতীত সূক্ষ্ম সূচীশিল্পের চাষা রুমাল। মিউজিয়মে দেখে নেওয়া যায়। শিল্পীর তুলিতে যমরাজ্যের দরবারও দেখে নিতে ভুলবেন না মিউজিয়মে। স্বর্গারোহণের পথও মেলে *জ্ঞানচৌপড়* অর্থাৎ সাপ লুডায়। আগস্টে গন্ধীদের উৎসব মিঞ্জারের পর্যটক আকর্ষণও অনবীকার্য। মিছিল বেয়েয় বলমলে সাজে। দেবতা রঘুবীর ছাড়াও নানান দেবতা পাখী চড়ে অংশ নেন মিছিলে। রামলীলা আর এক বর্ণটি উৎসব।

লক্ষ্মী-নারায়ণের অমুরে অতীতের অঞ্চল চণ্ডী রাজপ্রাসাদে আজ কলেজ বসেছে। প্রাসাদ থেকে উপরের ধাপে রঙমহল অর্থাৎ জলসাঘর। অতীতের বৈভব আওনে লোপ পেয়ে আজ সরকারি দপ্তর বসেছে। পথেই পড়ে সুই দেবীর নতুন ও চামুণ্ডা দেবীর পুরাতন মন্দির। আর আছে চম্পাবতীর মন্দির চাষায়। সেও আর এক অতীত রোমহর্ষন করায়। ১০ পুত্রের পর ১ কন্যা—রাজা সহিল ডামার। পরম ভক্তিভক্তি কন্যা শাস্ত্র পাঠে যেতেন গভীর রাতে গুরুগৃহে। রাজামশায় অনুসরণ করেন সন্দেহবশে কন্যাকে। দৈববাণীতে রাজার ভুল ভাঙে—কন্যাও লীন হয়। কালে কালে মন্দির হয়েছে সেই গুরুগৃহে। দেবতা—মহিষমর্দিনী বা চাষা বা চম্পা।

দুঃসাহসিক অভিযাত্রীদের কাছেও চাষার আকর্ষণ অদম্য। ২ কিমি দূরে সুভাষ বাণ্ডলী প্রবণ। পায়ে পায়ে দেখে নেওয়া যায়। চাষা থেকেই পথ গিয়েছে ভারমোর হয়ে মণি-মহেশ্বরে। সাত সকালের বাসে চোপে দিলে দিলে

ভারমোর বেড়িয়েও ফেরা যায় চাষায়। কাশ্মীরের কিন্তুওয়ারেও যাওয়া চলে চাষা থেকে ভাদরওয়া হয়ে ট্রেক করে। আবার সচী পাস পেরিয়ে চাষার উত্তর-পূবে পোঙ্গী উপত্যকাও অভিবান করে ফেরা যায় চাষা থেকে। নৈসর্গিক সৌন্দর্যের সাথে বরফ-চিটা, নকুল, কাঠবিড়ালি দেখতে মেলে। মানালীও চলা যায় দুর্গম গিরিপথে চেনাবের পাড় ধরে। এক রাত খাজিয়ারে থেকে আরণাক পথে ট্রেক করেও যাওয়া চলে চাষা থেকে ২ দিনে ডালহৌসি। চাষা জেলার আর এক দিগন্তের বুদ্ধ মন্দির ত্রিলোকনাথেরও পথ গিয়েছে চাষা থেকে। মণিমহেশের পথে হাডসার পেরুতেই বামহাতি পথে কগতি পাস হয়ে চন্দ্রভাগা উপত্যকার ত্রিলোকনাথে যাওয়া চলে। তবে, খুবই দুর্গম এপথ। তাই মানালী থেকে বাসে বাসেই বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে ত্রিলোকনাথ। আবার ভারমোর হয়ে ৬ দিনে ৭৭ কিমি ট্রেক করে (Bharmaur to Chanota 22 km-Chanota to Kuarsi 13-Kuarsi to Chatta 13-Chatta to Lakagot 10-Lakagot to Triund 6-Triund to Dharamsala-13 km) ধরমশালায়ও চলা যেতে পারে।

মণিমহেশ

৪২৬৭ মি উঁচুতে চাষা উপত্যকায় অন্যতম হিন্দুতীর্থ মণিমহেশ। ভূয়ারমৌলী কৈলাস পর্বতের ঢালে নয়ন-লোভন প্রকৃতির মাঝে লিঙ্গমূর্তি, ত্রিশূল ও পতাকাদণ্ডের সমাবেশে মন্দিরহীন মণিমহেশ। ইরাবতী নদীর কাঁধে ভর দিয়ে পথ গিয়েছে। চাষা থেকে বাস যাচ্ছে ৫০ কিমি দূরের খাড়া মুখ হয়ে আরও ১৬ কিমি পেরিয়ে ভারমোর বা ব্রহ্মপুরে। জিপও মেলে এপথে। অর্থাৎ রেল পাঠানকোট পৌঁছে বাসে চাষা গিয়ে সে-রাতের বিশ্রাম। পরদিন ৪-৩০, ৬-০০, ৮-৩০, ১২-৩০, ১৪-৩০, ১৬-৩০এ চাষা থেকে বাসে খাড়া মুখ হয়ে ভারমোর পৌঁছান। তবে, ৬-০০টার বাসটি ভারমোর হয়ে সরাসরি হাডসার যাচ্ছে ৪½ ঘণ্টায়। খাড়ামুখ থেকেও ১টি বাস আসছে ভারমোর হয়ে হাডসারে। তবুও যেন কিছুটা অনিশ্চয়তা ভারমোর থেকে হাডসার বাস চলায়। বাসের অমিলে ভারমোর থেকে ৩৫ কিমি পায়ে-হাটাপথে মণিমহেশ। পথ দুর্গম, প্রাণান্তকর চড়াই এপথে। তবে সারা পথের নৈসর্গিক শোভা ক্লাস্তি ভোলায় যাত্রীর। কলকাতা থেকে দূরত্ব (১৮৬৬+১২২+৬৬+৩৫) ২০৮৯ কিমি। পথও উঠেছে উঁচুতে খাড়ামুখে। বৃড়াল নদীও মিলেছে ইরাবতীতে।

নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা ২১৯৫মি উঁচু ভারমোরের প্রাকৃতিক শোভাও নয়নাভিরাম। ভারতের সুইজারল্যান্ড বলেও প্রসিদ্ধি আছে ভারমোরের। অতীতে স্বাধীন চাষা রাজ্যের রাজধানীও ছিল ভারমোরে। গন্দীরে বাস—চাষ-বাস, আপেল হচ্ছে। চৌরাশিয়ায় মন্দির হয়েছে ৭-১১ শতকে মণিমহেশ, লক্ষ্মণাদেবী, গণেশ, নৃসিংহ, সূর্যমুখ

ছাড়াও চুরাশি শিবের। কারুকার্যময় শিবরথর্মী দারুতে তৈরি মন্দির। আর হয়েছে বিংশ শতকের মানবদেবতা নাগাবাবা অর্থাৎ মারাঠি সম্রাট জয়কৃষ্ণগিরির মর্মরমূর্তি। দেবতা জ্ঞানে পূজা পান গিরি মহারাজ। গিরি মহারাজের উদ্যোগে সংস্কারও হয় চৌরাশিয়ার মন্দিররাজি। তেমনই আছে মায়ের তৃষ্ণা মেটাতে গণেশের ছোড়া বাণে নানান তীর্থবারিতে পুষ্ট অর্ধগয়া কুণ্ড, স্নানে পূণ্য মেলে। দেবীর পছন্দ নয় মন্দিরের ছাদ। বার বার বজ্রাঘাতে ধ্বংস পেতে আজ তাই দেবীরই বিধান মেনে ছাদহীন প্রাচীন মন্দিরে নানান কিংবদন্তীর দেবী ভীষণদর্শনা, উগ্রস্বভাবা ব্রাহ্মণী রয়েছেন শহরান্তে। মণিমহেশ যাত্রীদের ব্রাহ্মণী ধারায় স্নান ও দেবীর পূজা দেওয়া বিধি। তেমনই বিধি আছে চৌরাশিয়ার আশীর্বাদ নিয়ে মণিমহেশ যাত্রা শুক্র। ভেড়াও উৎসর্গ করেন মণিমহেশ যাত্রীরা। চৌরাশিয়ায় থাকারও ব্যবস্থা মেলে প্রাসঙ্গের পঞ্চায়েত গেস্ট হাউস, ধরমশালা ও PWD RH-এ; অবু: EE, PWD)—Chamba. আর আছে মাউন্টেনিয়ারিং অ্যান্ড অ্যালায়েড স্পোর্টস সাব-সেন্টারে ২×১২ বেডের ডমিটির। গন্দীরে বাড়িঘরেও ঠাঁই মেলে যাত্রীর।

ভারমোর থেকে মণিমহেশের হাটা পথেরও শুরু। ৩৫ কিমি দীর্ঘ বন্ধুর পথ। প্রাণান্তকর চড়াইও পেরুতে হয় শেষ পর্যায়ে ৫/৭ কিমি। সবরকম পাহাড়ী প্রস্তুতি সঙ্গে থাকা দর-কার। শুকনো খাবার, যথেষ্ট গরম কাপড় ও তাবু সঙ্গে নেওয়া ভাল। পূজার অর্ঘ্যও সঙ্গে নেওয়া দরকার। অপ্রয়োজনীয় জিনিস ভারমোরে রেখে যান। কুলিও মেলে ভারমোরে। দৈনিক ৭০-৮০ হারে।

ভারমোর থেকে ৮ কিমি গিয়ে ক্রুঙ্গলা, আরও ৭ কিমি দূরের মাণ্ডীতে FRH-এ রাতের অবস্থান করা যেতে পারে। আর সাণ্ডি থেকে আরও ৩ কিমি যেতে হাডসার গ্রাম। ২৩১৭মি উঁচুতে এপথের শেষ বসতি, হাডসারেই প্রথম রাত কাটান।

হাডসার থেকে ৮ কিমি গিয়ে ধানছো। পুরো পথটাই চড়াই, যথেষ্ট বন্ধুরও বটে। তবে অতুলনীয় পথশোভা ক্লাস্তি ভোলায় পথশ্রান্তির। তেমনই ভক্তির শক্তি জোগায় এপথে। ১২০০০ ফুট উঁচুতে ধানছোতে সরাই আছে বনদণ্ডরের। দ্বিতীয় রাত সরাইতে বিশ্রাম নিন।

পরদিন ধানছো থেকে মণিমহেশ। এপথের দূরত্ব ৯.৫ কিমি। পথ উঠেছে খাড়া। প্রাণান্তকর ভৈরবঘাটি চড়াই ও প্লেসিয়ার পেরুতে হয়। ৮ কিমি যেতে ১৩৫০০ ফুট উঁচুতে গৌরীকুণ্ডের লেক। লেকে পূজার প্রথা, স্নানে পূণ্য হয়। আরও ১½ কিমিতে ৫০০ ফুট উঠে পূণ্যতীর্থ মণিমহেশ। কোনো মন্দির নেই মণিমহেশে—কয়েকটি ত্রিশূল আর আছে শিবলিঙ্গ বিক্ষিপ্তভাবে মণিমহেশ লেকের পাড়ে। লেকের জলে বরফ ভাসে। লেকের মাঝে ছোট এক শিব মন্দির। সামনে বরফাবৃত ৫৫৭৫ মি উঁচু কৈলাস শিবর,

শিবজ্ঞানে পূজা পান। অতুলনীয় তাঁর নৈসর্গিক শোভা। যাত্রীদের জন্য সরাইও আছে মাথা ঝুঁজবার। তবে, নয়ন ভরে সৌন্দর্য উপভোগ করে ঘরে ফেরার পথ ধরাই উচিত হবে যাত্রীদের। শীতেরও আধিকা আছে মণিমহেশে। তাই ধানছো ফিরে রাতের বিশ্রাম নিয়ে পরদিন ভারমোর পৌঁছে যান। অর্থাৎ ৫ দিনে স্নান করুন মণিমহেশ দর্শন।

সুন্দর একটি উপকাহিনী আছে মণিমহেশকে ঘিরে। কাশ্মীর উপত্যকা মুসলমানদের অত্যাচারে জর্জরিত। পালিয়ে আসেন শিব অমরনাথ ছেড়ে। আশ্রয় নেন মণিমহেশে। একদা এক গদী ভেড়া চরাতে গিয়ে দর্শন পায় শিবের। গদীর মনোবাঙ্খ পূরণ করেন শিব। শর্ত, শিবের কথা বলবে না কাউকে গদী। দিন যায়—একদা এক পথিক আসে মণিমহেশে যাবার। গদীকে ধরে, পথের সন্ধান বলে দিতে। পৌঁছেও নিয়ে যায় তাকে গদী। আজও এরাই নাকি শিবের শাপে পাথর হয়ে রয়েছে মণিমহেশে। সেই থেকে প্রতি বছর জন্মাষ্টমী থেকে রাখাষ্টমী (আগস্ট-সেপ্টেম্বর) পর্যন্ত যাত্রীরা চলেন মণিমহেশে। মিছিল আসে চাম্বার চপটনাথ মন্দির থেকে অমরনাথের ছড়ি মিছিলের মতো। গদীরাই মূলত অংশ নেয় এ-মিছিলে। বসে মেলা, আর বসেন পূজারী মণিমহেশ লেকের (৭০×৩০ মি) পূবপাড়ে চতুর্ভুজী শিবের মর্মর মূর্তি নিয়ে উৎসবকালে। পূজা হয় দেবতার। সাময়িক তাঁবু পড়ে মেলা কালে—ভারমোর, হাডসার, ধানছো, মণিমহেশে। প্রয়োজনে : DC, Chamba বা Sub-Divisional Magistrate, Bharmour, HP-কে লিখুন।

ভাকরা বাঁধ

পণ্ডিত জগদরলাল নেহরু বলেছিলেন ভাকরা বাঁধ নয়, জাগ্রত ভারতের মন্দির ভাকরা। চেহারাতেও যেমন এর বৈচিত্র্য আছে তেমনই আকারেও এটি অনন্য। ইংরাজি V হরফের মতো এই বাঁধটির উচ্চতা ২২৫.৫৫ মি, প্রস্থে ৫১৮.১৬ মি। অর্থাৎ কলকাতার শহীদ মিনারের পাঁচ গুণের মতো। ১৭৫ কোটি টাকা ব্যয়ে রূপ পেয়েছে বিশ্বের বৃহত্তম এই ভাকরা-নাঙ্গাল প্রোজেক্ট। টাকার অঙ্কে সবকিছু অনুমেয়। এই বাঁধ তৈরিতে যে পরিমাণ সিমেন্ট ও ইট ব্যবহৃত হয়েছে তাতে সারা পৃথিবী জুড়ে ৮ ফুট চওড়া এক রাজপথ তৈরি হতে পারত। তবে, পথ হয়েছে ৩০ ফুট চওড়া—বাঁধের উপর। স্বচ্ছন্দে পায়ে হেঁটে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। দুই-প্রান্তে দুটি এলিভেটর বসেছে। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে শতদ্রু নদী। শতদ্রুকে বশে আনতে তৈরি হয়েছে আধুনিক বিজ্ঞানের অবদান বিশ্বের উচ্চতম সিমেন্টের এই প্রাচীর। শতদ্রুর জলধারা সঞ্চিত হয়েছে ১৬৬ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত গোবিন্দ-সাগর জলাধারে। ১০ম শিখগুরুর নামে নাম। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে গোবিন্দসাগরে। পরিবেশ মনোহর। জমির প্রান্ত-ভূমিতে কীনা চুকিয়ে জলের চাপের সহ্যশক্তি বাড়িয়ে তোলা হয়েছে জলাধারের পাড় ধরে।

জল যাচ্ছে কৃষির কাজে, আর হচ্ছে বিদ্যুৎ। এছাড়া বিশ্ববাসী বন্যাকেও রোধ করা গেছে ১৭০০ ফুট উঁচুতে ভাকরা বাঁধ গড়ে। দিল্লী, পাঞ্জাব, হিমাচল প্রদেশ, হরিয়ানা, রাজস্থানের এক কোটি একর জমিতে সেচের জল যাচ্ছে, আর বিদ্যুৎ হচ্ছে ১০ লক্ষ কিলোওয়াট এই প্রকল্প থেকে।

যদিও ব্রিটিশ ভারতে ১৯০৮ খ্রিস্টাব্দে প্রস্তাব গৃহীত হয়েছিল বাঁধ গড়ে শতদ্রুকে বশে আনার; তবে, স্বাধীনোত্তর ভারতে উত্তর ভারতের স্বার্থে ত্বরান্বিত হল সেদিনের সেই নিষ্পল প্রস্তাবনা। ১৯৫১য় শুরু হয়ে ১৯৫৬তে রূপ পায় ভাকরা বাঁধ।



ভাকরা যদিও হিমাচল প্রদেশে তবে, প্রবেশপথ এসেছে পাঞ্জাবের উপর দিয়ে নাঙ্গাল হয়ে। নিকটতম রেল স্টেশন নাঙ্গাল ডাম। ২৩-২০এ দিল্লী জং ছেড়ে সাহারানপুর/ফুরুক্ষেত্র/আম্বালা হয়ে ৬-৫০এ নাঙ্গাল পৌঁছে ৭-৪০এ উনা যাচ্ছে 4553 হিমাচল এক্স। নাঙ্গাল থেকে বাস যাচ্ছে ভাকরা বাঁধের। নাঙ্গাল থেকে ভাকরার দূরত্ব ১৩ কিমি, চণ্ডীগড় ১০৩ কিমি নাঙ্গাল থেকে। তাই চণ্ডীগড় বেড়াবার পথে বাসে বাসে ভাকরা বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার। ট্যান্ডিও মেলেশ দেড়েক টাকায় নাঙ্গাল-ভাকরা-নাঙ্গাল যাতায়াত। ভাকরা বাঁধ দর্শনার্থীদের দর্শনী ছাড়া অনুমতি লাগে—

PRO, Nangal Township, Nangal থেকে। নাঙ্গাল থেকে রওনা হয়ে পথিমধ্যে এই অনুমতি (Red Pass) মেলে। আর এলিভেটর ব্যবহার ও প্রোজেক্ট দেখার বিশেষ অনুমতি (White Pass)ও নিতে পারেন PRO-র থেকে। সঙ্গের ক্যামেরা জমা রাখতে হয় চেকপোস্টে। প্রোজেক্টের ছবি তোলা কঠোরভাবে মানা।

থাকারও ব্যবস্থা আছে Tourist Bungalow-র কটেজে; অবু: In-Charge, Tourist Bungalow, Nangal.

পাণ্ডনটা-নাহান-রেণুকা

হিমাচল ও উত্তর প্রদেশ সীমান্তে রাজ্যের দক্ষিণে দেৱাদুনবাসী পথে শিরমুর জেলায় পাশাপাশি অবস্থান ত্রয়ীর। অবস্থান হিমাচলে হলেও দেৱাদুন থেকে বেড়িয়ে নেওয়া সুবিধার। বাসও মেলে নাহানের, দূরত্ব দেৱাদুন থেকে পাণ্ডনটা হয়ে ৯০ কিমি। আর পাণ্ডনটা ৪৭, রেণুকা ২২ কিমি নাহান থেকে। বাস যাচ্ছে রাজ্যের রাজধানী ১০০ কিমি দূরের সিমলাতেও নাহান থেকে। এছাড়াও ত্রিমুখী ভিন রেলসংযোগকারী স্টেশন—চণ্ডীগড় ৮২, কালকা ৯৭, আম্বালা ১০০ কিমির সঙ্গে বাস সংযোগ রয়েছে বাসী হয়ে নাহানের। নিকটতম বিমান চণ্ডীগড়ে। শান্ত ও স্নিগ্ধ নাহানের প্রকৃতিও মনোরম। বেড়াবার মরসুম অক্টোবর থেকে মার্চ মাস।

পাণ্ডনটা : দেৱাদুন-নাহান-বাসী সড়কে দেৱাদুন থেকে ৫১ কিমি দূরে পাণ্ডনটা সাহিব আর নাহানের দূরত্ব ৪২ কিমি পাণ্ডনটা থেকে। পথ এসেছে রেণুকা থেকেও গিরি নদীর পাড় ধরে পাণ্ডনটায়। অতীতের রাজপ্রাসাদটি আজ

বিধ্বস্ত। সুন্দর একটি আখ্যান আছে পাওনটাকে ঘিরে। এক নর্তকী নেচে নেচে গিরিখাত পেরুবে দড়ির উপর দিয়ে। রাজা তাকে অর্ধেক রাজত্ব দেবেন। শতধানে পার হয় নর্তকী। রাজা তখন শঠতার আশ্রয় নেন। আবার পেরুতে পারলে আখ্যান পুরো রাজ্যটাই দেবেন রাজা। নর্তকী রাজি, গুরু হল নাচ। দড়ি দিলেন কেটে রাজামশায়। মারা পড়ল নর্তকী। নর্তকীর শাপে রাজবংশও লুপ্ত।

এছাড়া ১০ম শিখগুরু গোবিন্দ সিংহর স্মৃতিবিজড়িত পাওনটা পুণ্য শিখতীর্থ। পাওনটা নামটিও বৈচিত্র্যে ভরা। *পাওনটা* মানে পা। স্বাস্থ্যকর জলবায়ু ও পাওনটার রূপে মুঞ্চ গুরু অমৃতসর ছেড়ে বাসের জন্য পাওনটায় এলেন। প্রথম যে পুণ্যভূমে ঘোড়া থেকে নেমে পা রাখেন গুরু—সেই স্মৃতিতে নামকরণ; গুরুদ্বারাটিও সেই পুণ্যভূমে। *গ্রন্থ সাহিবের* একটা বড় অংশও গুরু লেখেন পাওনটায়। দ্বিমতে, গুরু *পাওনটা* অর্থাৎ পায়ে অলঙ্কার পরে স্নানে যান যমুনায়। জলের তোড়ে অলঙ্কার যায় ভেসে। মেলেও আবার যমুনার তটে। তারই স্মারকরূপে গুরুদ্বারায় হয়েছে যমুনায়। গুরু গোবিন্দ সিংহর অস্ত্রের প্রদর্শনীও বসেছে ভাঙানীর গুরুদ্বারা-এ। *হোলা মহম্ময়* আজও *কবি দরবার* বসে যমুনার ডান পাড়ে গুরু যেখানে ৫২ কবির সঙ্গে দরবারে বসতেন। আর গড়েন পাওনটা দুর্গ ১০০ একর জমিতে গুরু। তবে ২৩ কিমি দূরে ভাঙানীর যুদ্ধে ২২টি পাহাড়ী রাজ্যের সম্মিলিত শক্তিকেহারিয়েও পাওনটা ছাড়েন বিমর্ষ গুরু। বৈশাখী ও হোলি আকর্ষণীয় উৎসব। হিন্দু মন্দিরও রয়েছে যমুনা, রামচন্দ্র ও শ্রীকৃষ্ণের। এতসবের মাঝেও পাওনটা আজ শিল্প-নগরীর রূপ পাচ্ছে।

নাহান: পাওনটা থেকে বাসীমুখী ৪৭ কিমি গিয়ে ৯৩২মি উঁচুতে শিবালিক পর্বতের এক পাহাড়ী শিরায় সুন্দর পাহাড়ী শহর নাহান। ৩৬৪৭ মি উঁচু চোরধার শিখর কিরীট হয়ে দাঁড়িয়ে নাহানের ভালে। পায়ে পায়ে অভিযানও করে ফেরা যায় চোরধার। চারপাশের প্রকৃতিও সুন্দর। পথ এসেছে আবালা থেকেও। আবালা ক্যান্ট-সাহারানপুর রেলের বারারা পৌঁছেও বাসে চলা যেতে পারে নাহানে। লেক, মন্দির আর বাগিচা নিয়ে শহর। রাজা করণপ্রকাশের হাতে ১৬২১এ শহরের জন্ম। রাজধানীও ছিল দেশীয় রাজ্য শিরমুরের সেকালে নাহান। সার্কিট হাউসে আজও তার নিদর্শন মেলে। বর্ষা শেষে বাওয়ান দ্বাদশীর উৎসব হয়। ৫২ দেবতার মূর্তি যায় মিছিল করে ১৬৮১র জগন্নাথ মন্দিরে। এরও পর্যটক আকর্ষণ কম নয়। শহরের প্রাণকেন্দ্রে

রানীতালে ১৫৭৩এ রাজা দীপপ্রকাশের তৈরি মন্দিরটিও সুন্দর। নানান কিংবদন্তীও আছে নাহানকে ঘিরে। *নাহান* অর্থ সিংহ। সিংহকে সঙ্গী করে বাস করতেন মুনি—নামটি নাকি সেই থেকে। ১৪ কিমি দক্ষিণে *শিবালিক ফসিল পার্ক*টিও বেড়িয়ে নেওয়া যায় নাহান থেকে। এশিয়ার প্রাচীনতম ফসিল পার্কে ফাইবার গ্রাসে তৈরি প্রাগৈতিহাসিক (১৮৫০ লক্ষ বছরের প্রাচীন) জীবজন্তুর মডেলে অভিনবত্ব আছে। ২৩ কিমি দূরের ত্রিলোকপুরে মহামায়া বালাসুন্দরী মন্দিরটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন ভক্তজনেরা।

রেণুকা: নাহান থেকে ৪৫ কিমি দূরে অরণ্যময় সবুজ পাহাড়ের ঢালে রেণুকা। বাজার তথা বাস স্ট্যান্ডকে পিছনে রেখে কাঠের পুলে ঝোরা পেরিয়ে ১ কিমি যেতে ছোট্ট লেক—লেক তো নয় মনে হয় যেন ঘুমিয়ে আছেন মহিলা এক। রেণুকা হলেন পরশুরামের মা, মুনি জমদগ্নির পত্নী। মুনির নির্দেশে পুত্র পরশুরামের কুঠারে খড় থেকে মাথা নামে মাতা রেণুকার। স্মারকরূপে মন্দির হয়েছে দেবী রেণুকার ১৮১৪য় গোখাঁদের হাতে। আর হয়েছে সেই স্মৃতিচারণে পরশুরামের মন্দির। সপ্তাহব্যাপী মেলাও বসে প্রতি বছর নভেম্বরে। মেলার অন্য-তম আকর্ষণ পাহাড়ীদের হস্তজাত পণ্যের সম্ভার। এছাড়াও মন্দির ও আশ্রম হয়েছে আরও নানান। গায়ত্রী মন্দিরটি এদের মধ্যে উল্লেখ্য। পঞ্চমুখী মূর্তি হয়েছে দেবী গায়ত্রীর। আর রয়েছেন—গণপতি, বিষ্ণু, শিব, ব্রহ্মা, ইন্দ্র, সবাই মর্মরে। শুধু-বা তাই কেন, লেককে ঘিরে নদী, পাহাড়, অরণ্য — নানান জন্তু, জলচর পাখিরা উড়ে বেড়ায় আকাশ ছেয়ে। তেমনই গড়ে উঠেছে লায়ন সফারি পার্ক ও চিড়িয়াখানা লেকের পাড়ে ৭ হেক্টর জুড়ে। আর হয়েছে ওয়াইল্ড লাইফ স্যান্ডচুয়ারি লেককে বেষ্টিত করে। বোটিং-ও করা যেতে পারে লেকের জলে।



পাওনটায় আছে—SFDA Bhawan, PWD Rest House, HPTDC-র H Yamuna, Paonta Sahib-173025, ও (01704)2341, DAB ৩০০ ৪৫০/ A/c D ৭০০; Onjees, Citizen, Gupta, Daulat, Ganga ছাড়াও নানান প্রাইভেট হোটেল। নাহানে আছে—PWD, Municipal, SFDA-এর *রেস্ট হাউস*, অবু: Area Manager, Tourist Information Office, SCO 1048-1049, Sector 22-B, Chandigarh. *ফরেস্ট বাংলো*, বেসরকারি *হোটেল*ও আছে নাহানে। আর আছে *ধরমশালা* ও *গুরুদ্বার* নাহান ও পাওনটায়। রেণুকাতে আছে—HPTDC-র H Renuka, Renukaji, ও (01702) 8339, DAB ৪৫০/ A/c D ৬০০; পুরাতন ব্লকে D ৩০০ ৩৫০/ A/c D ৬০০; Tourist Inn; Forest ও PWD RH.

জন্ম ও কাশ্মীর

কাশ্মীর ভারতের ভূস্বর্গ—পর্যটকদের আনন্দ নিকেতন। ১৫৮৫ থেকে ১৮২৯ মি উচ্চতায়, দৈর্ঘ্যে ১২৯ আর প্রস্থে ৪০ কিমির মতো আমাদের ভূস্বর্গ কাশ্মীর। চারপাশে হিমালয়ের তুষারধবল শৃঙ্গরাজি মাথা তুলে দাঁড়িয়ে—নৈসর্গিক সৌন্দর্য অতুলনীয়। পীরপাঞ্জাল গিরিশ্রেণী সমতল ভারত থেকে বিচ্ছিন্ন করেছে কাশ্মীরকে। উত্তর-পূবে লাডাককে দেওয়াল করে দাঁড়িয়ে আছে বরফে ঢাকা ৭৯২৫ মি উঁচু নান্গা পর্বত। সত্যি অপরাপ সৌন্দর্যের লীলাভূমি দৃষ্টিনন্দন কাশ্মীর পর্যটকদের কাছে নন্দনকানন সম। পীরপাঞ্জালের শুভ বরফকণা দেখে মহারাজ রণজিৎ সিংহর দেওয়ান কৃপারাম বলেছিলেন আকাশ অমৃত দান করেছে কাশ্মীরের মুখে।

নানান কিংবদন্তী আছে এই কাশ্মীরকে ঘিরে। পুরাণ বলে, প্রজাপতি কশ্যপ ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও শিবের সাহায্য নিয়ে জলোন্তর অসুরকে বধ করে কাশ্মীর রাজ্য গড়ে তোলেন। এবার জানা যায় অতীতে এই কাশ্মীর ছিল জলমগ্ন, নাম ছিল তার সতীসর অর্থাৎ সতীর সরোবর। সতীর নাম থেকেই নাকি এই নামকরণ। সতীসর ছিল দৈত্যপুত্রী। দৈত্যদের হাতে নিষ্পেষিত মানুষের দুর্দশা মোচনে এগিয়ে এলেন ভগবতীর বরে পুষ্টি ব্রহ্মার মানসপুত্র মরীচী ও কলার পুত্র মহামুনি কশ্যপ। একে একে দৈত্য মেয়ে গড়ে তুললেন লোকালয়। আর কশ্যপ মার বা কশ্যপ মীর থেকেই নাকি কাশ্মীর নামকরণ। মহামুনি কশ্যপ নাগরাজ তক্ষকের হাতে কাশ্মীর সমর্পণ করে ফিরে যান অযোধ্যা-পুরীতে।

সে যাই হোক, কাশ্মীর আজকের নয়। বহু পুরাকাল থেকেই কাশ্মীরের কাহিনী শুনে আসছি আমরা। মহাভারতেও কাশ্মীরের আখ্যান মেলে। রামের অনুজ ভরত আর শত্রুঘ্নও এসেছেন কাশ্মীরে। এ তথা মেলে রামায়ণে। কাশ্মীর একদা মৌর্যসম্রাট অশোকেরও করায়ত্ত হয়েছিল। কুবাণরাজ কণিষ্কও রাজত্ব করে গেছেন কাশ্মীরে। সেকালে বৌদ্ধধর্মের প্রভাব ছিল কাশ্মীরে। এমনকি তৃতীয় বৌদ্ধ কংগ্রেসও বসে ব্রিস্টলের জন্মকালে। কালে কালে বৌদ্ধধর্ম লোপ পেয়ে ৭ শতকে হিন্দু রাজারা হিন্দুধর্ম ফিরিয়ে আনেন। শঙ্করাচার্যও কাশ্মীরে আসেন এই সময়ে।

১৩ শতকের শেষভাগ—মুসলমানদের দৃষ্টি পড়ে কাশ্মীরের উপর। তিব্বত থেকে এসে রাজ্য গড়েন তিব্বতীয় মুসলিম রাজকুমার। ১৩৩৮এ রাজকুমারের মৃত্যুতে শাহ মীর রাজা হলেন—পত্তন হুয়া সুলতান বংশের। এই বংশেরই অন্তিম রাজা জৈন-উল-আবদীন (১৪২০-৭০) বাদশাহ নামে সমধিক খ্যাত। শিল্প ও সংস্কৃতির পূজারী ছিলেন তিনি। আজকের কাশ্মীরি হস্তশিল্পের জনকও এই

আবদীন। পারস্য ও সমরখন্দ থেকে শিল্পী এনে সূচনা করেন শূন্য সূচিশিল্পের শাল, কাপেট ছাড়াও দারু ও খাতুর নানান সস্তারের। ক্রমে বিদ্রোহ ঘোষণা করে স্থানীয় মুসলমানরা—রাজত্ব আসে তাদেরই হাতে। আরও পরে কাশ্মীর যায় মোগল বাদশাহ আকবরের দখলে ১৫৮৬তে। আকবর, জাহাঙ্গীর, শাহজাহান—মোগল বাদশাদের গ্রীষ্মাবাস তথা স্মৃতি বিজড়িত কাশ্মীর আজও ভ্রমণার্থীদের আনন্দ নিকেতন।

মোগল সাম্রাজ্য অন্তিমিত হতে কাশ্মীর স্বাভাব্যের স্বাদ পায়। এরপর (১৭৫৬-১৮১৯) কাশ্মীর যায় কাবুলের দখলে। তাদের হটিয়ে দখল নেন পাঞ্জাবের মহারাজা রণজিৎ সিং ১৮১৯এ। ১৮৪৬এ শিখ রাজাদের পরাজয়ে কাশ্মীর যায় ইস্ট ইন্ডিয়া কোম্পানির হাতে। অমৃতসর সন্ধির শর্ত বলে আর শিখদের সঙ্গে ব্রিটিশের যুদ্ধে নিরপেক্ষতার পারিতোষিক রূপে জন্মুর ডোগরা রাজা গুলাব সিংকে মাত্র পঁচাত্তর লাখ টাকায় বিক্রিয়ে দেয় কোম্পানি। একীভূত হয় জন্মু ও কাশ্মীর একই রাজ্যে।

আরও পরের কথা—১৯৪৭ খ্রি। ভারত সবে স্বাধীন হয়েছে দ্বিখণ্ডিত হয়ে। জন্ম নিয়েছে পাকিস্তান নামে নতুন রাষ্ট্র। ভারত আর পাকিস্তান এই দুই রাষ্ট্রের মাথার মুকুটে মণি হয়ে অবস্থান করছে স্বাধীন রাজ্য জন্মু ও কাশ্মীর। প্রমাদ গনলেন মুসলিম অধ্যুষিত রাষ্ট্রের হিন্দু মহারাজা হরি সিং। নাস্তানাব্দও তিনি পাক হানাদারদের হাতে। সহযোগিতা চাইলেন ভারত রাষ্ট্রের। যোগ দিলেন ভারত রাষ্ট্র মহারাজা ১৯৪৭-এর ২৬শে অক্টোবর। ভারত থেকে একমাত্র পথ লাহোর হয়ে, সে আজ অবরুদ্ধ, পাকিস্তানের অন্তর্গত হয়েছিল সে-পথ। অগত্যা ২৭শে অক্টোবর বিমান-পথে পাড়ি জমাল ভারতীয় ফৌজ কাশ্মীরে। এবার পিছু হঠার পালা পাক হানাদারদের। জোর কদমে এগিয়ে চলেছে ভারতীয় ফৌজ। দিল্লীর নির্দেশে থেমে পড়ল তারা। আর, UNO-র নির্দেশ মতো ১৯৪৯এর ১লা জানুয়ারি cease fire line অর্থাৎ যুদ্ধ বিরতি রেখাই আজ জন্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের সীমারেখা। তাই কাশ্মীরের এক তৃতীয়াংশ রয়েছে পাকিস্তানের দখলে, নাম তার আজাদ কাশ্মীর। আর ভারত রাষ্ট্রে দুই-তৃতীয়াংশের অবস্থান। দুই রাষ্ট্রেরই দাবি অবশিষ্টাংশের। নাগরিকদের ৬৮% মুসলিম জন্মু ও কাশ্মীরে। ভারতের প্রতি অনুগত্য যতটা না এদের তার থেকেও পাকিস্তান তথা মধ্য এশিয়ার প্রতি দরদী এরা। এদের শিক্ষা-দীক্ষা-সমাজ জীবন এমনকি আহা-বিবাহের ভারতীয় কৃষ্টির থেকেও যেন পাক প্রভাব প্রকট। এমনকি যাতায়াতও সহজতর ভারতের তুলনায় পাকিস্তান থেকে।

সমতল ভারতকে আজও এরা ইন্ডিয়া বলে। অসন্তোষও তাই নিতা-নতুন, রূপ নেয় সংঘাতে। ভূ-স্বর্গের ভূ পাকিস্তানে আর স্বর্গ ভারত রাষ্ট্রের অংশ হয়েও আপন স্বকীয়তায় সমৃদ্ধ ছিল জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্য। অবশেষে ১৯৫৭য় স্বায়ত্তশাসনের সত্তা হারিয়ে ভারত রাষ্ট্রের সঙ্গে একীভূত হয় জম্মু ও কাশ্মীর। তবুও ১৯৬৫ ও ১৯৭১এ যুদ্ধে জড়িয়ে পড়ে ভারত ও পাকিস্তান কাশ্মীরের দাবিতে। তেমনই মুখ্য সংগ্রামী পাক মদতে পুষ্ট Hizb-ul-Mujahidin. আজও পাক রাষ্ট্রের সঙ্গে যেতে আগ্রহী। আর ১৯৯১এ Jammu & Kashmir Liberation Front (JKLF) জেহাদ ঘোষণা করে আজাদী লাভের জন্য। ভারত থেকে বিচ্ছিন্ন হতে গেরিলা প্রথায় আক্রমণ হানে JKLF সারা রাজ্য জুড়ে। সরকারি সম্পত্তির প্রভূত ক্ষতিসাধনের সাথে রক্ত ঝরে সারা উপত্যকায়। আন্দোলন কিছুটা প্রশমিত হলেও আজও অব্যাহত। তাই একাত্তই উচিত হবে সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে কাশ্মীর ভ্রমণে যাওয়া।

কাশ্মীর উপত্যকায় ঋতু বদলের পালাটিও মনোরম। গ্রীষ্মে উপত্যকা সেজে ওঠে ঝলমলে সাজে। পিঙ্ক ও সাদা রঙের সরষে ফুল ও পপি সাজিয়ে তোলে সারা উপত্যকা। আর জাফরান আঙুন লাগায় উপত্যকায় তার স্বভাবসুলভ পীতভ হসির ঝলকে। চিনার রঙ বদলায় তার পাতায় ডাল-এর পাড়ে পাড়ে। শীতে বরফের রূপালি শাল মুড়ি দেয় সারা উপত্যকা। শিকারা অবসর নেয়, সাইকেল চলে ডাল-এর বৃকে। হাড়কাঁপুনি শীতের মাঝে বরফ রাজ্যের নয়নাভিরাম সৌন্দর্য উপভোগ করার পর্যটক খুঁজে পাওয়া ভার সারা উপত্যকায়। স্থানীয়রা নেমে আসেন বাগিচার পসরা নিয়ে সমতল ভারতে। রাজ্যপাটও স্থানান্তরিত হয় শ্রীনগর থেকে জম্মু শহরে।

তবে অবস্থান, প্রকৃতি আর ভাষাতে ৩টি পৃথক সত্তা খুঁজে মেলে জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যে। সমাজজীবনেও পরস্পর বিরোধী এরা। পাঞ্জাবের সীমান্ত জোড়া জম্মু—হিন্দু তথা শিখ ভোগরাদের বাস। কারাকোরাম, জাঁসকর ও পীর-পাঞ্জাল পর্বতে ঘেরা রাজ্যের প্রাণকেন্দ্র তথা মধ্যাঞ্চল ১৫০০ মি উঁচু ডিম্বাকার উপত্যকায় শ্রীনগর—মোগল বাদশাহের গ্রীষ্মাবাস আজ বিশ্বসেরা পর্যটন কেন্দ্র। কাশ্মীর ভূখণ্ডে মুসলিমদের অধিকা। আফগানিস্তান, পারস্য, মধ্য প্রাচ্যের প্রভাব মেলে এদের সমাজজীবনে। অতীতের সিদ্ধ রোডের প্রভাব হয়তো-বা এর মূলে। আর রাজ্যের উত্তরে চীন সীমান্ত ঘারে ৭০০০ মি উঁচু লাডাক ভূমে তিব্বতীয় বৌদ্ধ প্রভাব। বসতিতেও ভারতীয় থেকে তিব্বতীয়দের সংখ্যাধিক্য। এমনকি মিনি তিব্বতও বলে থাকে লোকে লাডাককে। ১৯৬২র যুদ্ধে চীনের দখল করা লাডাক অংশও মুক্ত হয়েছে। জম্মুর মতো লাডাকও আজ শান্ত। তাই, কাশ্মীর উপত্যকায় আন্দোলন চলতে থাকায় অতীতের জাঁসকর উপত্যকা হলে শাডাক যাতায়াতে বিপদের মাত্রা

বাড়ায় বিশ্বের দ্বিতীয় উচ্চতম রাজপথ ধরে ২ দিনে যাত্রী যাচ্ছেন মানালী থেকে লাডাক-ভূমে।

জম্মু ও কাশ্মীর □ রাজধানী: শ্রীনগর/জম্মু।

আয়তন: ২২২২৩৬ বর্গ কিমি। **লোকসংখ্যা:**

৭৭১৮৭০০*। **ভারতের লোকসংখ্যার হারে:**

০.৮৭। ১৯৮১-র সুমারি মতে জম্মু-কাশ্মীরে

বিভিন্নধর্মী মানুষের বাস—হিন্দু ১৯৩০৪৪৮,

মুসলিম ৩৮৪৩৪৫১, খ্রিস্টান ৮৪৮১, শিখ

১৩৩৬৭৫, বৌদ্ধ ৬৯৭০৬। প্রতি হাজার পুরুষে

নারী: ৯৫৩। সাক্ষরের হার: ২৬.১৭%। প্রধান

ভাষা: উর্দু। সঙ্গে চলে কাশ্মিরি, লাডাকি, ডোগরি,

বালতি, পাঞ্জাবি, হিন্দি ও ইংরেজি। মাথাপিছু

বাৎসরিক আয়: ৩৪২০.০০ টাকা (১৯৮৮-৯০)।

বেড়াবার মরসুম: মার্চের শেষ থেকে অক্টোবর

মাস। তবে এপ্রিল ও মে আবার স্টেটস্বর ও

অক্টোবর মাস মনোরম। তাপমান ১৩.৭ থেকে ২৭°

সেন্টিগ্রেডে ওঠানামা করে। আর শীতে তাপমান

থাকে ০.৯ থেকে ১২.১ সেন্টিগ্রেডে। মে-জুনে

সাধারণ সোয়েটার, মরসুমের অন্যান্য সময় মাঝারি

উলেন আর শীতে ভারি উলেনের সঙ্গে ওভার-

কোট দরকার ভূস্বর্গ বেড়াতে। বৃষ্টির গড় ১০৭

সেমি। আবার মাসে মাসে রঙ বদলায়—বদলায়

আকর্ষণও আমাদের ভূস্বর্গের।

২১ দিনে জম্মু ও কাশ্মীর : জম্মু ১ কাটার ১ শ্রীনগর

৩ গুলমার্গ ১ পহেলগাঁও ১ লে ২ ডালহৌসি ২

অমৃতসর ১ পথ চলতে ৯ দিন অর্থাৎ ২১ দিনে

কাশ্মীর, হিমাচল ও পাঞ্জাব বেড়িয়ে নিন।

*পরিসংখান ১৯৯১-এর প্রোজেক্টেড ফিগার।

জম্মু

জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের শীতকালীন রাজধানী শহর ডোগরাদের দেশ জম্মু। সংস্কৃত, পাঞ্জাবি আর ফার্সি সঙ্করজাত ডোগরি এদের মুখের ভাষা। সমতল আর পাহাড়ের সমন্বয়ও ঘটেছে ৩০০ মি উঁচু জম্মুতে। রাজ্যের দ্বিতীয় বৃহত্তম শহরও জম্মু। বাণিজ্যকেন্দ্র হিসাবে এর প্রশস্তি। তবে পর্যটকদের কাছে শ্রীনগরের তোরণদ্বার রূপে জম্মুর প্রসিদ্ধি। প্রকৃতির বিচিত্র খেলাল—গ্রীষ্মে তাপমান থাকে ৪০° সেন্টিগ্রেডে। তেমনই শীতের বছর আরও বেশি রাজ্যের দিকে দিকে। কারাগিলে তাপমান নামে -৪০°

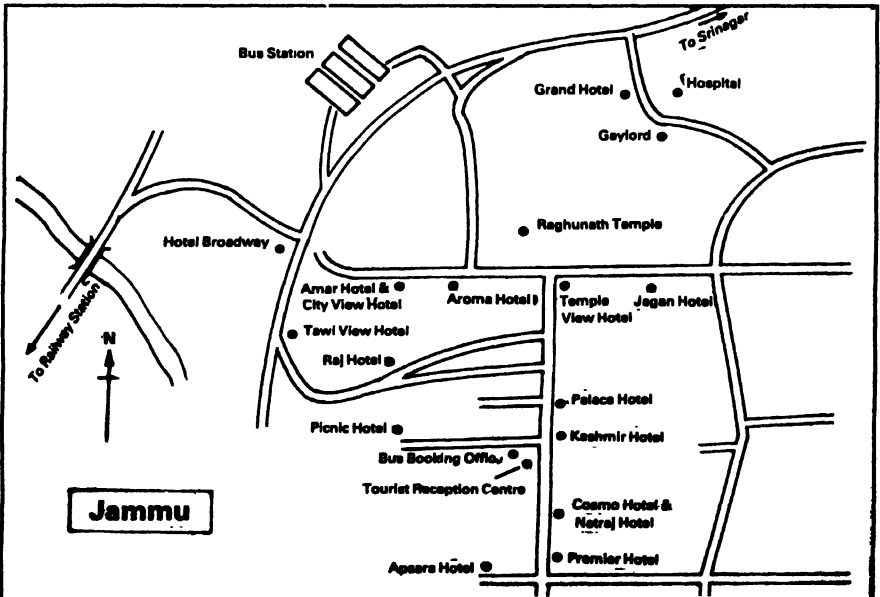
সেপ্টেম্বরে শীতের দিনগুলিতে। জন্মতে তাপমান ৫°সে শীতের রাতে। বৃষ্টি চলে জুলাই থেকে সেপ্টেম্বর মাসে। বেড়াবার মনোরম সময় অক্টোবর, ফেব্রুয়ারি ও মার্চ মাস।

মন্দির আর দুর্গের দেশও বলা যায় জম্মুকে। তাওয়াই ও চন্দ্রভাগা এই দুই নদী জম্মুকে ঘিরে বয়ে চলেছে। শহর থেকে ৪ কিমি দূরে তাওয়াই নদীর বাম পাড়ে শৈলশিখরে ডোগরা রাজা বালুলোচনের তৈরি ৩০০০ বছরের প্রাচীন বাহু দুর্গ। সূর্য বংশীয় রাজা ৯ শতকের জম্মুলোচন সংস্কার করেন। আর ১৭৩০এ ডোগরা রাজাদের দখলে যায় জম্মু। বাহু রাজাদের বিধ্বস্ত দুর্গে দেবী রয়েছেন ২০০ বছরের প্রাচীন কালী। আর আছে অজস্র বানর মন্দির চত্বরে। দুর্গের প্রবেশমুখে আকবরের তৈরি মসজিদ, লাগোয়া হিন্দু মন্দির—দেবী মহালক্ষ্মীর। নিচুতে সুন্দর সাজানো বাগিচা বাগ-ই-বাহু। সন্ধ্যায় আলোর সাজ পরে বাগিচা। বয়ে চলেছে তাওয়াই নদী নিচু দিয়ে। বিপরীতে ১৮২৪এ তৈরি মহারাজা হরি সিং-এর মুবারক মাণ্ডী প্রাসাদ। রাজস্থান, মোগল ও ইয়োরোপীয় শৈলীতে তৈরি মুবারক মাণ্ডি। শহরও সুন্দর দৃশ্যমান। সার্ভিস বাস, অটো, ম্যাটাডোর, ট্যাক্সিতে দেখে ফেরা যায় ত্রয়ী।

আর উত্তরে শ্রীনগরমুখী রামনগর দুর্গ। বাসোলী শৈলীর দেওয়াল চিত্রের জন্য এর প্রশংসা। রাজা কৃষ্ণদেবের তৈরি মসজিদটিও দুর্গের আর এক ঐতিহাসিক কীর্তি। তবে, দুর্গটি আজ বিধ্বস্ত। সেক্রেটারিয়েটের বিপরীতে গান্ধী ভবনে

১৯৫৪র ডোগরা আর্ট মিউজিয়াম-এ বাসোলী ও ডোগরা (পাহাড়ী) আর্টের ৬০০ ছবির সংগ্রহ, ভাস্কর্য, টেরাকোটা ছাড়াও নানান সস্তার একাডেমি উচিত হবে দেখে নেওয়া। গ্রীষ্মে ৭-৩০—১৩-০০, শীতে ১১—১৭-০০টায় খোলা, সোমবার বন্ধ থাকে মিউজিয়াম। শহরের উত্তরে ১৯০৭এ ফরাসি স্থাপত্যে গড়া অমরমহল প্রাসাদ-এর পারিবারিক মিউজিয়ামে ছবিতে রাজবংশের পরম্পরা, মিনিয়চার ছবির সস্তার, বই-এর সংগ্রহও উল্লেখ্য। মিউজিয়মের পাশে হরি সিং-এর প্রাসাদে আজ হোটেল বসেছে।

আর রয়েছে বাস স্ট্যান্ডের বিপরীতে—ট্যুরিস্ট বাংলোর বামে টিলার টঙে শহরের মধ্যমণি রঘুনাথজীর মন্দির। দেবতা মর্মরে—রাম-লক্ষ্মণ-সীতা। শহরের মূল আকর্ষণও এই রঘুনাথজী। ১৮৩৫এ আজকের শহরের প্রতিষ্ঠাতা মহারাজা গুলাব সিং-এর হাতে গুরু হয়ে ১৮৬০এ শেষ করেন পুত্র রণবীর। সোনায় মোড়া দেওয়াল, রঙবেরঙের মার্বেল পাথরের কারুকার্য ও দেওয়াল চিত্র রমণীয় করে তুলেছে। সূর্যাস্তে মধুময় হয়ে ওঠে। পিঠে পিঠ মিলিয়ে পাশাপাশি আরও বেশ কয়েকটি মন্দির। আর রয়েছে ১৮৮৮তে তৈরি পুরাতন মাণ্ডীতে ফ্রেস্কো চিত্রে সুশোভিত আরও এক মন্দির রঘুনাথজীর, ১৮৮৩তে তৈরি হাজার শিবলিঙ্গের রামবীরেশ্বর মন্দির—মূল দেবমূর্তির সামনে এক ডজন স্ফটিকের লিঙ্গমূর্তি, পির খো, গুহা মন্দির, ২ কিমি দূরের রণবীর ক্যানাল, রাজেন্দ্র পার্ক, হরি



সিং জেনানা পার্ক জম্মুতে। এতসব থাকতেও যাত্রীরা ব্যবহার করেন শ্রীনগরের সংযোগকারী জংশন স্টেশনরূপে জম্মুকে। রাজ্যের রেল তথা একমাত্র সড়কটিও গিয়েছে জম্মু হয়ে সমতল ভারতে।



শিয়ালদহ থেকে ১১-৪৫৫ রওনা হয়ে 3151 শিয়ালদহ-জম্মু তাওয়াই এক্স প্রেরে পরদিন সকাল ৯-২০এ জম্মু যাচ্ছে। ফেরে ১৯-৩০এ জম্মু থেকে শিয়ালদহে। আর যাচ্ছে 256 দিন ২৩-০০টায় হাওড়া ছেড়ে 3073 হিমগিরি এক্স ৩৭৬ ঘণ্টায় জম্মু। জম্মু ছাড়ে 147 দিন ২২-২০এ হিমগিরি। বারানসী/ লক্ষ্ণৌ/ মোরাদাবাদ/ আখালা/ পাঠানকোট হয়ে যাচ্ছে ট্রেন। দূরত্ব ১৯৬৭ কিমি। এছাড়াও বিশেষ ট্রেনের ব্যবস্থা হয়ে গ্রীষ্মে ও পূজায় কলকাতা থেকে। জম্মু রেল স্টেশন থেকে অটো, বাস, মিনি, টাঙ্কা টাঙ্গিতে চলন ১০ কিমি দূরে শেলশিখরের পুরাতন শহরে। মূল বাস স্ট্যান্ড শহর লাগোয়া হলেও রেল স্টেশন থেকেও সরাসরি বাস ও ট্যাক্সি মেলে শ্রীনগরের। আর, নতুন শহর প্রসার পাচ্ছে তাওয়াই নদীর পার ধরে রেল স্টেশনকে ঘিরে।

| | |
|--------------------------------|-------------------------------|
| When you are at Jammu : | আবার কলকাতা থেকে দিল্লী হয়েও |
| Jammu Tawai Rail Stn @ 30047 | কাশ্মীর যাওয়া চলে। |
| Rail Reservation @ 43836 | ১৭-৩৫এ পুনে ছেড়ে |
| Bus Stand Enquiries @ 47078 | ভুসুয়া/ ভূপাল/ আগ্রা |
| J K Roadways @ 47475 | হয়ে ২১-১৫য় নতুন |
| Punjab Roadways @ 42782 | দিল্লী পৌছে আখালা |
| J KTDC Office @ 546412 | হয়ে জম্মু যাচ্ছে পরদিন |

১১-১৫য় 1077 বিলাম এক্স। পুনে ফেরে ২১-৪০এ জম্মু থেকে। 1457 দিন মুম্বাই থেকে আসা 2471। মুম্বাই-জম্মু বরাজ এক্স কোটা হয়ে ৪-৩৫এ নতুন দিল্লী ছেড়ে জম্মু পৌছায় ১১ ঘণ্টায়। প্রতি শনিবার আমেদাবাদ, মঙ্গলবার হাপা, বুধবার রাজকোট থেকে আসা জম্মু তাওয়াই এক্স কোটা হয়ে ৪-১৫য় নতুন দিল্লী পৌছে জম্মু যাচ্ছে। ইন্দোর-জম্মু মালাওয়া এক্সও যাচ্ছে ভূপাল/গোয়ালিয়র/আগ্রা ক্যাট হয়ে ৮-১০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে। ত্রিসাপ্তাহিক 6031 চেন্নাই-জম্মু এক্স আসছে চেন্নাই থেকে নাগপুর/ভূপাল/ আগ্রা হয়ে 256 দিন ২৩-০৫এ নতুন দিল্লী, ২৩-৩০এ দিল্লী জং পৌছে পরদিন ১৫-০০টায়। ম্যাসালোর-জম্মু নবমুগ এক্সও যাচ্ছে নতুন দিল্লী হয়ে। আর নতুন দিল্লী থেকে ১৬-১০এ ছেড়ে 4645 শালিমার এক্স, দিল্লী জং থেকে ১১-১০এ ছেড়ে 4033 জম্মু মেল, ২২-৩০এ ছেড়ে সুপার ফাস্ট 2403 দিল্লী-জম্মু এক্স আখালা হয়ে ৫৮৫ কিমি দূরের জম্মু পৌছায় পরদিন ৬-৩০, ১০-৩৫, ৮-১৫য়। আর প্রতি বৃহস্পতিবার ২০-২০এ হজরত নিজামুদ্দিন, ২০-৫০এ নতুন দিল্লী ছেড়ে লুধিয়ানা থেমে পরদিন ৫-৪৫এ জম্মু যাচ্ছে 2425 জম্মু রাজধানী এক্স। আর যাচ্ছে ভারতের দীর্ঘতম (৩৭২৬ কিমি) রেল পরিক্রমায় জম্মু থেকে প্রতি সোমবার ২২-৩০এ 6318 হিমসাগর এক্স কন্যাকুমারিকায়, কন্যাকুমারিকা থেকে ছাড়ে ওরুবার ১২-৩০এ হিমসাগর। শুয়াহাটি যাচ্ছে লক্ষ্ণৌ হয়ে প্রতি বুধবার ২২-১০এ 5652 লোহিত এন। গোরকপুর/বরাহুনি যাচ্ছে জম্মু তাওয়াই এক্স 256 দিন লক্ষ্ণৌ/গোথা হয়ে। অমৃতসর যাচ্ছে ২৩-২০এ এক্স, পাঠানকোট যাচ্ছে জম্মুর প্রতিটি ট্রেন, ট্রেন যাচ্ছে ফিরোজপুর, লুধিয়ানা,

জলন্ধর ছাড়াও সমতল ভারতের নিকে নিকে জম্মু থেকে। ফেরেও এরা নিয়মিত জম্মু থেকে।



IAC-র বিমান প্রতিদিন দিল্লী থেকে সরাসরি জম্মু যাচ্ছে ১ ঘ ১০ মিনিটে। জম্মু থেকে শ্রীনগর যাচ্ছে ৩৫ মিনিটে প্রতিদিন। লে যাচ্ছে ১ ঘণ্টায় 47 দিন। আর ফেরেও এরা একই দিনগুলিতে একইভাবে জম্মুতে। শহর থেকে ৭ কিমি দূরে বিমানবন্দর। অটো ও ট্যাক্সি মেলে শহরে যেতে। দপ্তর বসেছে IAC-র Tourist Reception Centre, Veer Marg, @ 42735এ। বায়ুদূতের দপ্তর বসেছে Tourist Reception Centre, @ 49618-এ। এছাড়া Modiluft, @ 32972, Jet Airways, Damania Airways ছাড়াও নানান প্রাইভেট বিমানও সংযোগ গড়েছে কলকাতা, মুম্বাই, দিল্লী থেকে জম্মুর।



দিল্লী থেকে NH 1 এসে জলন্ধরে NH 1A হয়ে পাঠানকোট-জম্মু-কাটরা-শ্রীনগর-লে যাচ্ছে। আর J K Roadways-এর বাস যাচ্ছে জাতীয় সড়ক ধরে জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের নিকে নিকে জম্মু থেকে। বাস যাচ্ছে প্রতি সকালে জম্মু রিসেপশন সেন্টার ছেড়ে ১০/১২ ঘণ্টায় ২৯৩ কিমি দূরের শ্রীনগরে। ভিডিও কোচ, সুপার ডিলাক্স, এক্সপ্রেস, বি-ক্রাস, এক্সপ্রেস, মিনি কোচ—নানানধর্মী বাস। ট্যাক্সিও যাচ্ছে শেয়ারে জম্মু থেকে শ্রীনগরে। রেল স্টেশন থেকেও নানানধর্মী বাস মেলে শ্রীনগরের। আর বাসস্ট্যান্ড থেকে সাধারণ যাত্রী বাস যাচ্ছে জম্মু থেকে শ্রীনগর। বৈকোদেবীর যাত্রী নিয়ে ৪৮ কিমি দূরের কাটরা যাচ্ছে মুহুম্মদ। তেমনই প্রকৃতি প্রেমিকরা আখনুর, বানিহাল, ভদ্রা, ছাং, কাটরা, পুঙ্ক, রিয়ানী, রামনগরও বেড়িয়ে নিতে পারেন বাসে বাসে জম্মু থেকে। হিমাচল, হরিয়ানা, পাঞ্জাব রোডওয়েজ ছাড়াও নানান বাস যাচ্ছে সমতল ভারত তথা হিমাচলের পাহাড়ে। বাস যাচ্ছে জম্মু থেকে পাঠানকোট/ জলন্ধর হয়ে NH-1 ধরে ১৪ ঘণ্টায় ৫৮৩ কিমি দূরের দিল্লী; ৩ ঘণ্টায় ১০৮ কিমি দূরের পাঠানকোট যাচ্ছে মুহুম্মদ; ৫ ঘণ্টায় অমৃতসর ২৪৩, জলন্ধর ২২৫, আখালা ৩৯১, চণ্ডীগড় ৪২৬, দেহরাড ৫৮০, আগ্রা ৭৮৭, সিমলা ৪৮২, মানালী ৪২৬, ডালহৌসী ১৮৬ কিমি। তবুও যেন উচিত হবে হিমাচল যাত্রায় পাঠানকোট হয়ে চলা। বাসের আধিক্য মেলে পাঠানকোট থেকে হিমাচলের পাহাড়ী শহরের।



রেল স্টেশন থেকে ১০ কিমি দূরে শহরের প্রাণকেন্দ্র মীর চকে J&KTDC-র টুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার লাগোয়া গড়ে উঠেছে ৫০ ঘরের Tourist Reception Centre H, Veer Marg. @ (0191) 579554, DAB ২০০ ১৭৫ ১৫০ A-২৫০ A/C ৪৫০। লাগোয়া ক্যাটিনে খাবারের ব্যবস্থা, আয়োজন ভালই। আর রেল স্টেশনে এদেরই Tourist Reception Centre-এ DAB ১৫০; অব: Manager, J&KTDC, Tourist Reception Centre, Jammu-180001. আর আছে রেলের রিটার্নিং রুম জম্মু রেল স্টেশনে। জম্মু বাসস্ট্যান্ডেও রিটার্নিং রুম হয়েছে। এছাড়া সার্কিট হাউসও আছে জম্মুতে; অব: Tawaza Officer, Old Secretariat, Jammu.

শহরের প্রাণকেন্দ্র Ramnagar, Jammu-180001, STD 0191-এ অমলমহল প্রাসাদ লাগোয়া ITDC-র *Jammu Ashok, @ 576154, A9R8B3, S 9০০ ২ ১০০০ A/C S ১১৯৫ D ২২০০ সুইট ৩০০০; H K C Residency, DAB ১০০০ ১২০০ A/C D ২২৫০ ১৫০০ সুইট ১৫০০-২৫০০, কল বুকিং: Span

৩ 2801209; বাস ও রেল স্টেশনের মাঝে Welcomgroup-এর *H Asia Jammu Tawi, Nehru Mkt-1, ৩ 535757, A/c S ১৪৫০ D ১৭৫০ সুইট ৪২৫০; *H Hari Niwas Palace, Jammu-1, ৩ 543303, S ৮৫০-১২৫০ D ১০০০-১৫০০ সুইট ২০০০-৩৫০০।

প্রাইভেট হোটেলও আছে নানান জন্মতে। ট্যুরিস্ট বাংলার বিপরীতে Veer Marg-এ—H Cosmopolitan, A6R5, SAB ৩৫০ DAB ৫০০ A/c S ৬০০ D ৭৫০, দেশী বিদেশী আহার্যও মেলে এসের কাটিনে; কল বুকিং: Linkage ৩ 2465171; H Nataraj, D ২০০-৩৫০; H Premier, A5R5, SAB ৩০০ DAB ৪৫০ A-c S ৪৫০ D ৬০০ A/c S ৬০০ D ৮০০, চীনা ও কাশ্মীরি আহার্য পরিবেশনে এসের প্রসিদ্ধি আছে; H Tourist Home; H Apsara; H Standard, S ১২৫-১৭৫ D ১৫০-২৭৫; Amrit, D ১৫০-২৫০; H Kashunir, Narulla L, S ২০০ D ৩৫০; New Kwality, Palace H, Rajesh, এসের কাছে ১৫০-২২৫ টাকায় দু'বেডের ঘর মেলে। লাক্সারি হোটেল K C Plaza-র অবস্থানও বীর মার্গে।

বামহাতি মন্দিরের বিপরীতে Temple View H, H Mansar, Denis Gate, ৩ 543030, S ৪৫০ D ৬৫০ A/c S ৬৫০ D ৮৫০ সুইট ১০০০। আবার বামে Gumat Chowk-এ—New H, Surya H, Diamond H, SAB ১৫০ DAB ২৫০; H Samrat, H Vardan, H Broadway, R4B3, D ৩০০-৪৫০ A-c D ৫০০ A/c D ৬৫০, কল বুকিং: Span ৩ 2801209. Below Gumat, Municipal Mkt-এ—Town View H, Tawi View H, SCB ৮০ SAB ১০০ DCB ১৫০ DAB ২০০ A/c S ৩৫০ D ৫৫০; H Gulmohar, Sundar Singh Rd, SCB ৮০ SAB ১২৫ DCB ১৫০ DAB ২০০। Chand Ngr, Jewel Chowk-এ—*H Jewel's, beside Jewel Cinema, ৩ 547630, S ৪০০ D ৬০০ A/c S ৫৫০ D ৭৫০ সুইট ১০০০; Star H, D ১৫০-২০০; Kiran L, D ১২৫-১৭৫; Shalimar L; H City Centre; Indira L, H Maharaja, H Prince, Vimal, Green View, H Mohindra, Upper Gumat-এ—H Amar, H Raj, City View, Jagan, India Pride, Canal Rd-এ—H Air Lines, DAB ৩৫০-৪৫০; Priya, Below Gumat-এ—Amber L, City Top, Nagina L, New Fort View, এসের কাছে ১২৫-২২৫ টাকায় দু'বেডের ঘর মেলে।

আর আছে—Modern H, B C Rd, ৩ 43425, S ৩০০ D ৪২৫ A/c S ৪৫০ D ৬০০; Hotel JDA, above Bus Std, SAB ১০০ DAB ১৭৫; Ambassador, PN Bazar; H Jehangir, Shaheedi Chowk; H Madhuban, opp Hari Market; Picnic, near Idgah Rd; H Aroma, R N Bazar; Plaza, R N Bazar; Darpan, Talab Tilloo; Gem, Paj Bakhtar Rd; Grund H, অগ্রিম বুকিং-এর জন্য Manager-দের লিখুন।

আর মন্দির যেখানে তীর্থযাত্রীও সেখানে, তাঁদের জন্য থাকবে ধরমশালাও। জন্মতেও রয়েছে আগরওয়ালা, ব্রাহ্মণ সভা, ট্যুরিস্ট সরাই—প্রতিটাই প্যারেড গ্রাউন্ডে। আর রয়েছে জৈন হল, রত্ননাথ টেম্পল, রাজপুত্র সভা, সুন্দর সিং গুফার, বিনায়ক মিশ্র ধরমশালা ছাড়াও নানান।

আর আহার্যে ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার হোটেলটি মন্দ নয়। তবুও যেন সেন্টারের বিপরীতে বীর মার্গেই চীনা আহার্যে ড্রাগন;

দেশী বিশেষী আহার্যে কোয়ালিটি বা সিলভার ইনবুয়েরই যথেষ্ট প্রশংসা। একজিবিশন গ্রাউন্ডের ইভিঙ্গা কফি হাউসটির কফির সাথে দক্ষিণ ভারতীয় আহার্য পরিবেশনেও যথেষ্ট খ্যাতি। রেল স্টেশনেও আহার্য মেলে রিস্টোমেন্ট রুমে। কাশ্মীরি ও চীনা মিল পরিষেবায় প্রিমিয়ারেরও সুনাম যথেষ্ট। স্বল্পদূরের কসমো হোস্টেলটিরও সুখ্যাতি আছে আহার্যে। তেমনিই খ্যাতি আছে The New Jewel Fast Food Centre-এর।

তবুও গীক সিজনে জন্মুর হোটেল ঘরের অভাব প্রকট হয়ে দেখা দেয়। শ্রীনগর যাতায়াতে রাত কাটানো বাধ্যতামূলক হয়ে পড়ে জন্মতে। তাই উচিতও হবে জন্ম পৌছেই আগেভাগে ঘরের ব্যবস্থা করে শ্রীনগর বাসের টিকিট কেটে রাখা। সকাল ৮-০০টার পর জন্মু ছেড়ে যাওয়া বাসগুলি পথে রাত কাটিয়ে পরদিন শ্রীনগর পৌছায়। তাই পথে অবস্থান পরিহার করতে জন্মতে রাত কাটিয়ে পরদিন সকালের বাসে রওনা হয়ে দিবে শ্রীনগর পৌছে যাওয়াই উচিত হবে যাত্রীদের।

কেনাকাটা : সিন্ড ও উলেন বসন তথা এমব্রয়ডারি করা ফেরান, উইলো ও ওয়ালনাট কাঠের আসবাবপত্র, আখরোট, বাদাম ছাড়াও নানান শুকনো ফল কেনা যেতে পারে জন্মুর দোকানপাটে।

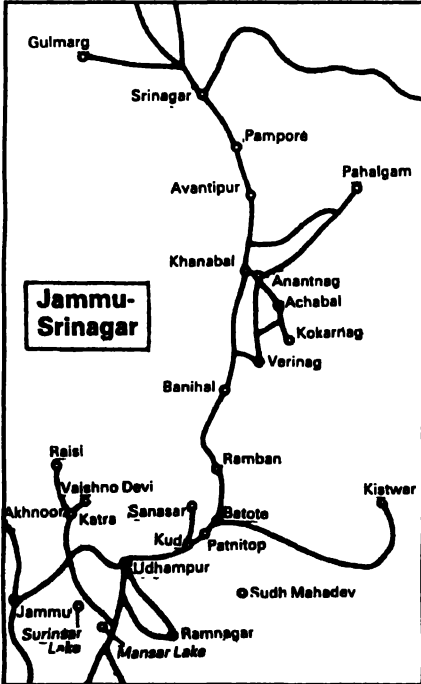
জন্মু থেকে ১৩২ কিমি পূবে হিমাচল সীমান্তের বাসোলীও বেড়িয়ে নিতে পারেন উৎসাহী পর্যটকরা। মোগলি ধারার সঙ্গে লোকশিল্পের সমন্বয়ে পাহাড়ী শৈলীর বাসোলী চিত্রশিল্পের জন্য বাসোলীর প্রশংসা। মন্দিরও আছে বেশ কয়েকটি বাসোলীতে। বাস যাচ্ছে পাঠানকোট ও জন্মু থেকে কটুয়া হয়ে বাসোলী।

আবার, জন্মু থেকেই সার্ভিস বাসে বেড়িয়ে নেওয়া যায় নির্জনে অবসর বিনোদনে রমণীয় ৮০ কিমি পূবের জন্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের মানস সরোবর অর্থাৎ মানসর। চারপাশ পাইনে ছাওয়া, পাহাড়ে ঘেরা ২ কিমি বিস্তৃত মানসর লেকের প্রাকৃতিক শোভা নয়নাভিরাম। লেকের পাড়ের শেখনাগ, মানসরেশ্বর শিব, নুসিংহদেব, দুর্গামন্দিরগুলিও আকর্ষণ বাড়িয়েছে। বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে লেকের জলে। থাকার জন্য J&KTDC-র ট্যুরিস্ট বাংলো, ট্যুরিস্ট হাট ও কটেজ আছে মানসরে। অত্যাশ্চর্য্য মানসর থেকে বাসে ১৬ কিমি গিয়ে আর এক প্রকৃতি-দগু হ্রদ সুরিনসরও বেড়িয়ে নিতে পারেন। হ্রদের মাঝে দ্বীপ—মনোরম পরিবেশ। জন্মু থেকেও সরাসরি বাস আসছে ৪০ কিমি দূরের সুরিনসর। থাকারও ব্যবস্থা মেলে J&KTDC-র ট্যুরিস্ট লজ সুরিনসর-এ।

বৈষ্ণোদেবী

জয় মাতা মী! ৭০০ বছরের অতীত। স্বপ্নাদিষ্ট ভক্ত শ্রীধর আবিষ্কার করেন জন্মু থেকে ৬২ কিমি দূরে ২১১২ মি উঁচুতে গুহা মন্দিরে দেবীর আবাস। দেবী পূরণের মতে, দেবী এখানে বৈষ্ণোদেবী—সৃষ্টি, স্থিতি ও লয়ের অধিষ্ঠাত্রী

অর্থাৎ পরাশক্তির এক রূপ। চোখে তাঁর চন্দ্র ও সূর্য, বসন তারকা-খচিত, বসন-প্রাপ্তে সবুজ পৃথিবী। মহিষাসুর ভৈরো বধে অস্ত্র দিয়েছেন দেবতার। দেবীর আঁট হাতে। আর বাহন অর্থাৎ সিংহটি হিমালয়ের ভেঁট। দৈত্য বধের পর আবাস গড়েন গুহায়—খুবই জাগ্রত। এই দেবী। আর রয়েছেন গুহামন্দিরে দেবীর তিন ভিন্ন রূপ—ডাইনে মহাকালী, বামে মহাসুরস্বতী আর মাঝে মহালক্ষ্মী। সংস্কারও হয়েছে ৪০৫৮২০.১৬ টাকায় ১৯৭৬-৭৭এ দেবমন্দির। ৩৯.৬মি দীর্ঘ, ১.৮২মি প্রস্থের গুহামন্দিরের প্রবেশদ্বার খুবই সঙ্গীর্ণ। চলতে হয় শরীর বাঁচিয়ে সামনে ঝুঁকে। জনা ১০/১২-র অধিক প্রবেশাধিকারও মেলে না গুহামন্দিরে একত্রে। পায়ের পাতা ডোবা হিমশীতল জল সারা মন্দিরময়। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে চরণগঙ্গা। পূণ্যাখীরা চরণগঙ্গায় স্নান সেরে দেবী দর্শনে যান। পূজার কোনো প্রথা নেই, ভক্তিভরে উৎসর্গ মুখ্য। প্রতি বছর নবরাত্রি থেকে দীর্ঘ আড়াই মাস ধরে লক্ষ লক্ষ তীর্থযাত্রী আসেন সারা ভারত থেকে। তবে, Tourist Reception Centre, Katra থেকে যাত্রা শ্রিপ নিয়ে যেতে হয় যাত্রীদের। কাটরার পথে এনডোর্স আর মন্দির অর্থাৎ দরবারে নতুন করে বদলি শ্রিপ ধরে দেবী দর্শনের প্রথা। দিন-রাত্রির দর্শন চললেও সকাল-সন্ধ্যায় আরতিকালে সাময়িক বন্ধ থাকে গুহা মন্দির। লাইনও দীর্ঘ



থেকে দীর্ঘতর হয় উৎসব-অনুষ্ঠানের বিশেষ দিনে। থাকার জন্য Dharmnath Trust, Shri Dhar Sabha, Vaishno Seva Sangha ধরমশালা আছে মন্দির অঙ্গনে। হাজার তিনেক যাত্রীর থাকার ব্যবস্থা, কন্সলও মেলে সঙ্গে।

এছাড়া দরবার থেকে ২.৫ কিমি আগে ৬৭৫০ ফুট উঁচুতে দুরারোহ সিঁড়ি পথের যাত্রীরা ভৈরো অর্থাৎ ভৈরবনাথ মন্দিরটিও দেখে নিতে পারেন। দেবী দর্শনের আগে পূজারও প্রথা ভৈরবনাথের।



জম্মু বাসস্ট্যান্ড থেকে শ্রীনগরমুখী NH-1A ধরে ২৮ কিমি গিয়ে বামহাতি পথে আরও ২০ কিমি যেতে ২৮০০ ফুট উঁচুতে কাটরা। দিনভর বাস চলে এপথে। ভবে দিনের শেষ বাসটি জম্মু ছেড়ে আসছে ২০-৩০টায়। আর কাটরা ছেড়ে জম্মু যাচ্ছে ২০-০০টায় শেষ বাস। ঘণ্টা দু'য়েকের পথ। জম্মু রেল স্টেশন থেকেও ডিলাঙ্গ বাস যাচ্ছে কাটরায়—ভাড়া ২৫। ট্যান্ডিও যাচ্ছে জম্মু থেকে কাটরায়। এছাড়াও বাস যাচ্ছে পাঠানকোট, পাতিয়ালা, অমৃতসর, চণ্ডীগড়, জলন্ধর, দিল্লী ছাড়াও উত্তর ভারতের দিকে দিকে কাটরা থেকে। শ্রীনগর যাচ্ছে—নানান শ্রেণীর বাস কাটরা থেকে। আর কাটরা থেকে ঘোড়া, ডাঙী বা পায়ে হেঁটে ১৪ কিমি গিয়ে বৈষ্ণোদেবী গুহামন্দির অর্থাৎ দরবার। ঘোড়া ৩৫০ ডাঙী ৮০০ কুলি ২০০ টাকায় যাতায়াত। পথ দুর্গম না হলেও বন্ধুর। চড়াই ও উৎরাই-এর সমন্বয় ঘটেছে সারা পথে। সিঁড়িও উঠেছে ধাপে ধাপে। রাতের বেলায় পথ চলা যেমন আরামদায়ক তেমন নিরাপদও। যাত্রী আনাগোনা চলে দিনরাত ধবে এ পথে। সরাই, পানীয় জল, আহাৰ্য, শৌচাগার, আলোরও সুব্যবস্থা সারা পথে। বাস থেকে প্রথম ২ কিমি সমতল গিয়ে, ৯ কিমি চড়াই বেয়ে সাজীছতে ২৮০০ মি (সবচেয়ে উঁচু) উঠে আবার ২ কিমি সমতল যেতে, শেষ ১ কিমি উৎরাই নেমে মন্দির।

নতুন করে গুহামন্দির হয়েছে আধা-পথে ১৪৬০ মি উঁচু আধকাবরীতে। দেবী এখানে জগদম্বা। তবে গুহাটি কৃত্রিমতা দোষে দুষ্ট যেন। দেবী দর্শনান্তে টেনে-হিঁচড়ে সঙ্গীর্ণ ফোকর গলিয়ে বের করতে হয় নিজেকে। আধকাবরীতে দোকানপাট, খাবার হোটেল, ধরমশালাও আছে।



কাটরা বাসস্ট্যান্ডে JKTDC-র Tourist Reception Centre H-এ ঘর ও ডর্বি বেড মেলে। আর আছে Youth Hostel; দরবারমুখী ১ কিমি দূরে JKTDC-র Tourist Bungalow থাকার পক্ষে ভাল। তাঁবুও ভাড়া মেলে। সঙ্গে অতিরিক্ত জিনিস রেখে যাবারও ব্যবস্থা আছে রিসেপশন সেন্টারে। অব: Asstt Director, J & K Tourism, Katra-182301, JK. আর আছে বাস স্ট্যান্ডেই Durga H, DAB ২০০-৩৫০; *H Ambica, Katra, @ (01991) 2062, Jammu @ 30924, S ৩৫০ D ৪৭৫-৭৫০ সুইট ৯৫০ A/c S ৫৫০ ৮৫০ ১২৫০; *H Asia Vaishnudevi, @ 2061, A/c S ১১৫০ D ১৫০০-১৮৫০; H Basera, DAB ৩৭৫ A/c D ৬৫০-৮৫০; Atul Regency, DAB ৭৫০; New Subash, D ৭০০-১০৫০; Shripati, D ৭৫০ A/c D ৯৫০-১৭৫০, হোটেল এটির কল বুকিং: Span, @ 2801209. H Trikuta, H Junta, National GH. বাংলোমুখী বাঁয়ে Hotel Three W, near

JK Bank, D ৪০০ T ৫০০। ধরমশালাও আছে Vaishno Seva Sangha ও Shri Dhar Bhawan কটরায়। প্রাইভেট বাড়িতেও ঘর মেলে ভাড়া কটরায়। লঙ্গরখানাও বসেছে বাংলা ছাড়িয়ে দরবারমুখী ১ কিমি যেতে, ঢালাও যাত্রী সেবার ব্যবস্থা। আহাৰ্য মেলে হোটেল রেস্তোরাঁয়ও—নিরামিষাশী এরা। যাত্রীদের উচিত হবে রিসেপশন সেন্টার থেকে যাত্রা শিপ করে মন্দিরমুখী ১ কিমি এগিয়ে ট্যুরিস্ট বাংলায় রাত কাটিয়ে কাকডোরে জয় মাতা দী নাম নিয়ে সিঁড়ি পথ পরিহার করে মূল পথ ধরে ঘণ্টা পাঁচকে পৌছে যাওয়া। রাতেও চলা যেতে পারে কটরা থেকে বৈষ্ণোদেবী দর্শনে। দিনান্তে কটরায় ফিরে রাতের বিশ্রাম নিয়ে তৃতীয় সকালে চলুন নতুনের অভিসারে। বছরভর চলা গেলেও মার্চ, এপ্রিল ও সেপ্টেম্বর থেকে নভেম্বর মাস মনোরম সময়। প্রয়োজনে Shri Mata Vaishnodaya Shrine Board, Katra বা Vaishnodaya কে লেখা যেতে পারে।

অত্যাশাহীরা কটরা থেকে ২১ কিমি দূরে রিয়াসী পৌছে সরল হাইডেল প্রোজেক্টটিও দেখে নিতে পারেন। রিয়াসীতেও বিধবস্ত দুর্গ রয়েছে জেনারেল জারোয়ার সিং-এর। থাকার ব্যবস্থা মেলে রেস্ট হাউসে। রিয়াসীর গুরদ্বারায় ছবির সংগ্রহও উল্লেখ্য। কটরা থেকে রিয়াসীর পথে ৮ কিমি যেতে অঘোর জিট্রো। মাহাঘো বাবা জিট্রোর পরেই অঘোর জিট্রোর স্থান। প্রতি বছর হাছার হাজার ভক্ত আনেন সারা উত্তর ভারত থেকে শ্রদ্ধা জানানো।

আবার কটরা থেকে ৭৮ আর জন্মুর ৩২ কিমি উত্তর-পশ্চিমে চেনাব নদীর পাড়ে আখনুর ফোর্ট। এই দুর্গেই গুলাব সিং রাজার খেতাব নিয়েছিলেন রণজিং সিং-এর কাছ থেকে। সম্প্রতি স্কুল ও সরকারি দপ্তর বসেছে দুর্গে। পথ গিয়েছে আরও উত্তর-পশ্চিমে নৌসেরা, ঝানগড় ও পুঞ্চ—যার আকাশ-বাতাস আজও পাক মদতপুষ্ট হানাদারদের (১৯৪৭) নিষ্ঠুরতার কাহিনী শোনায়। একে একে বারমুলা, কোট, নৌসেরা, ঝানগড় থেকে হানাদার হটিয়ে ভারত-মাতার সুযোগ্য সন্তান ব্রিগেডিয়ার ওসমান এই ঝানগড়ের মাটিতেই ১৯৪৭-এর ৪ঠা নভেম্বর শহীদ হন মৃত্যুবরণ করেন। পুঞ্চ থেকে রাওয়ালকোট হয়ে ডোমেল ও মুজফফরাবাদেরও পথ গিয়েছে। ঝিলামের পাড়ে এই দুই শহর। অপর পাড়ে পাকিস্তান।

পুঞ্চ থেকে উরি হয়ে বাস যাচ্ছে বারমুলায়। জন্মু-শ্রীনগর-উরি সড়কে বারমুলা। জন্মু থেকেও সরাসরি বাস মেলে বারমুলায়। উলার লেকের দক্ষিণ-পশ্চিমের বারমুলা হয়েই অতীতের ভারতীয় সড়ক রাওয়ালপিন্ডি গিয়েছে। পাক সীমান্তও অদূরে। জওয়ানদের আনাগোনা সারা বারমুলা জুড়ে। বারমুলায় মকবুল শেরোয়ানী ছিলেন প্রতিষ্ঠিত ব্যক্তি—গণ্যমান্য নেতা। ঐক্যেও শহীদ হতে হয় পাক হানাদারদের নিষ্ঠুরতার কাছে। শিখনারিদের প্রেক্ষেপশন কনভেন্ট হাসপাতালটিও রক্ষা পায়নি পাকহানাদারদের কবল থেকে সেদিন। এমনকি হানাদারদের হাতের বন্দুক কাপেনি গুজ্রাকারিণী থেকে রোগীর প্রাণ

নিতে। ভারতমাতার বীর সন্তান লেফটেন্যান্ট কর্নেল রণজিং রায়ও প্রাণ দেন এই বারমুলায়।

বৈষ্ণোদেবী দর্শন সেরে কটরায় ফিরে কটরা থেকে বাসে সরাসরি শ্রীনগর চলা যেতে পারে। আবার জন্মু-শ্রীনগর NH-1A-তে কটরা থেকে ৫৩ আর জন্মুর ৬১ কিমি দূরে ৭১৬ মি উঁচু উধমপুরও চলা যেতে পারে বাসে। ক্যান্টনমেন্ট নগরী উধমপুর। জন্মু-শ্রীনগর, কটরা-শ্রীনগর বাস যাচ্ছে। অদূর ভবিষ্যতে রেলও পৌছাবে জন্মু থেকে উধমপুরে। উধমপুরের ৮ কিমি উত্তর-পশ্চিমে ক্রিমচিও বেড়িয়ে নিতে পারেন চলার পথে। বাস, অটো, ট্যাক্সি যাচ্ছে। বাস আসছে ৪০ কিমি দূরের কটরা থেকেও ক্রিমচি। চারপাশ ঘিরে অনুচ্চ পাহাড়। গুপ্তযুগের বর্ষিকু নগরী। অতীত আজ লোপ পেলেও বেশ কয়েকটি মন্দিরের জন্য ক্রিমচির প্রশস্তি—খাজুরাহোর প্রতিচ্ছবি এরা। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই ক্রিমচিতে। উচিত হবে কুদ বা উধমপুর বা জন্মুতে ফিরে রাত্রিবাস করা।

তেমনই উধমপুর থেকে শ্রীনগরমুখী ৩৮ কিমি যেতে NH 1A-তে ১৭৩৮ মি উঁচুতে কুদ। চড়ুইভাতির মনোরম পরিবেশ। ১১ কিমি দূরে পাহাড়ী ঝরনাটিও আর এক দ্রষ্টব্য। হোটেল, ইয়ুথ হোস্টেল, রেস্ট হাউস, ট্যুরিস্ট বাংলা আছে। আরও ৮ কিমি গিয়ে ২০২৪ মি উঁচুতে পাটনীটপ। জন্মু-শ্রীনগর জাতীয় সড়কে বাস যাচ্ছে জন্মু থেকে। ট্যাক্সিও মেলে যাতায়াতে। পাহাড়ে ঘেরা ঘন সবুজ অরণ্যে ছাওয়া শান্ত-ব্রিঙ্ক মনোরম শৈলাবাস। বরফও পড়ে নীতে। JKTDC-র অনবদ্য ২টি ট্যুরিস্ট বাংলা, রেস্ট হাউস, ইয়ুথ হোস্টেল, প্রাইভেট হোটেল গ্রিন টপ, বর্নন রিসর্ট, ওয়েসিন রিসর্ট। ১৯৫০ ১১৫০ ১২৫০ ১৩৫০ আছে পাটনীটপে। ওয়েসিনের কলকাতা বুকিং: Linkage ৩ 2465171. পাটনীটপ থেকে বাঁহাতি ৮ কিমি যেতে ১২২৫ মি উঁচুতে সুদ মহাদেব। একটি ত্রিশূল ও একটি দণ্ড এখানকার উপাস্য দেবতা। প্রবাদ, দণ্ডটিনাকি পাণ্ডবকাতা ভীমের। শ্রাবণী পূর্ণিমায় দূর-দূরান্ত থেকে তীর্থযাত্রীরা আসেন। সুদ মহাদেবের ৫ কিমি দূরে মন তালাই—এ প্রভুতত্ত্বের নানান নিদর্শনও মিছেছে। তেমনই জাতীয় সড়ক থেকে পাটনীটপের ১৯ কিমি দূরে আর এক নৈসর্গিক শোভার লীলাভূমি সনাসার (Sanasar)-ও উচিত হবে বেড়িয়ে নেওয়া। সবুজে মোড়া, পাইন আর ফারে ছাওয়া ৭০০০ ফুট উঁচুতে কাগের মত বৃন্তাকার পশু-চারণক্ষেত্র। চারপাশ ঘিরে দেওয়াল হয়ে যুহ গড়েছে বরফাচ্ছাদিত নানান শিখর। চাষবাস হচ্ছে, সর অর্থাৎ লেক আছে। জলবায়ু স্বাস্থ্যপ্রদ। থাকারও ব্যবস্থা মেলে J&KTDC-র ট্যুরিস্ট বাংলা, ট্যুরিস্ট হাটও প্রাইভেট হোটেল। প্রচারের অভাবে দর্শক সমাগম উল্লেখ্য না হলেও রপে গুলফারকো হার মানায় সনাসার। বাস আসছে উধমপুর ও জন্মু থেকেও সনাসারে।

আর পাটনীটপ থেকে ১১ কিমি যেতে জম্মু-শ্রীনগর জাতীয় সড়কে বাটোট। ১৬৫০ মি উঁচু বাটোটের *হোটেল, ডাক বাংলো, ট্যুরিস্ট বাংলো* আছে। অরণ্যময় বাটোট থেকে ডানহাতি পথে ডোডা ব্রিজ হয়ে ডাইনে ভাদরওয়া, বামে কিস্তওয়ার। দূরত্ব যথাক্রমে ডোডা ৫০, ভাদরওয়া ৮১, কিস্তওয়ার ১০৯ কিমি। সবুজে মোড়া সুন্দর এই উপত্যকার নৈসর্গিক শোভা মনোরম। এখানকার প্রকৃতি বিদেশী পর্যটকদের অতি প্রিয়। ভাদরওয়ার পথে পাহাড়-খাদে ধান, আপেল, পীচও হচ্ছে। সবুজের ওড়না উড়িয়ে ঘন অরণ্যের মাঝ দিয়ে সর্বাঙ্গ পথ গেছে চেনাবের পাড় ধরে। গাছে গাছে নানান পাখি কাকলি শোনায়। সামনেই অশাপতি প্রেসিয়ার হাডছানি দেয় প্রকৃতি প্রেমিকদের। মন্দিরও আছে ৫০০০ ফুট উঁচু ভাদরওয়ায়। কাঠের তৈরি প্রাচীন মন্দিরে দেবতা কালো পাথরের বাসুকিনাগ। এই ভাদরওয়া মন্দির থেকেই অমরনাথের ছড়ি-বাত্রা শুরু হয়। এমনকি জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যে শিক্ষার প্রসারও বেশি ভাদরওয়া তথা *হোটেল কাশ্মীরে*। থাকার ব্যবস্থা মেলে *রেস্ট হাউসে*। ডোগরি ভাষায় *ভাদরওয়া* অর্থ সুখের উপত্যকা। ডোডা থেকে দূরত্ব ৩১ কিমি।

আ্যডভেঞ্চার প্রিয়রা ভাদরওয়া থেকে আরও ১৭ কিমি গিয়ে বাসুকি কুণ্ড বা কৈলাস লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। ১৪৪০০ ফুট উঁচুতে রাখী পূর্ণিমার পরের অমাবস্যা এই তীর্থদর্শনে পূণ্যলাভ হয়। লোকশ্রুতি, অমাবস্যার ঐ-রাত্রে সপ্তরাজ বাসুকিনাগ কুণ্ডের জলে ভক্তদের দর্শন দেন। জম্মু ও কাশ্মীরি হিন্দুদের পবিত্র তীর্থ।

সর্বাঙ্গ গিরিপথ—পথ নির্জন। সারাপথেই প্রাণান্তকর চড়াই। যাতায়াতে ঘোড়া মিললেও চড়াই ও উতরাই হেতু ঘোড়া থেকে নেমে হাঁটাই সুবিধাজনক। তবে উৎসবকালে যাত্রী চলে নানান। রাজিবাসের সাথে লঙ্গরখানাও গড়ে ওঠে ১৩ কিমি দূরের সুয়েজ খার-এ। বাকি সময়ে নিজস্ব ব্যবস্থায় চলতে হয় এপথ। অসম্ভব হয়ে পড়ে একই দিনে ভাদরওয়া থেকে গিয়ে কুণ্ড দেখে ভাদরওয়ায় ফেরা।

বরফ গলা নীলাভ জল কৈলাস কুণ্ডে। মন্দিরহীন তীর্থে নীলাকাশের নিচে পাথরের উঁচু বেদিতে শিব-বিষ্ণু-বাসুকির প্রস্তর মূর্তি। আর আছে শিবের ত্রিশূল এই দুর্গম তীর্থে। কৈলাস কুণ্ডের জলে তিন ডুব দিয়ে দেবার্চনার বিধি। উচিতও হবে সুয়েজ খার-এ প্রথম রাত কাটিয়ে দ্বিতীয় সকালে দেবদর্শন সেরে দিনান্তে ভাদরওয়ায় ফেরা।

ভাদরওয়া থেকে ডোডা ফিরে আরও ৫৯ কিমি বাঁহাতি গিয়ে কিস্তওয়ারও বেড়িয়ে নেওয়া যায় চলার পথে। সবুজে ছাওয়া স্বাস্থ্যকর পাহাড়ী শহর কিস্তওয়ার। কিস্তওয়ারের জল নানান ব্যাখির উপশম ঘটায়। আর তেমনই জলপ্রপাত-*হলিও* সৌন্দর্য বাড়িয়েছে কিস্তওয়ারের। চেনা-অচেনা পর্বতের কূজন, সেও আর এক কুহক সম। হাই আলটিচুড পার্কও হয়েছে কিস্তওয়ারে। থাকার জন্য *রেস্ট হাউসও*

আছে। প্রকৃতিপ্রেমিকদের কাশ্মীর থেকে সময় বাঁচিয়ে চলার পথে এই উপত্যকার সৌন্দর্য উপভোগ করে যাওয়া উচিত হবে। তেমনই উচিত হবে জম্মু ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার থেকে JKTDC-র ট্যুরিস্ট বাংলো, হাট, ইয়ুথ হোস্টেল বুক করে চলা। কিস্তওয়ার থেকে ট্রেক করে শ্রীনগর এমনকি জাঁসকরও চলা যেতে পারে।

বাটোট থেকে ৬৯ কিমি শ্রীনগরমুখী গিয়ে জাতীয় সড়কে বানিহাল। আরও ১৯ কিমি যেতে বানিহাল টানেল বা *জওহর টানেল*। জম্মুর দূরত্ব ২০৬ আর শ্রীনগর ৮৫ কিমি। অবিভক্ত ভারতে শ্রীনগরের মূল সড়কপথ ছিল লাহোর হয়ে। সে পথ আজ পাকিস্তানে। দ্বিতীয় পথ গিয়েছে পীরপাঞ্জাল পাহাড়ের ১০০০০ ফুট উঁচু দিয়ে। প্রবল হিমঝঞ্ঝা অর্থাৎ কাশ্মীরি ভাষায় *বানিহাল* লেগেই আছে এপথে। সারা বছরই থাকে বরফচ্ছাদিত। যাওয়া-আসায় বিঘ্ন ঘটে। তাই ৩২ কোটি টাকা ব্যয়ে, ৭২৫০ ফুট উঁচুতে পাহাড় কেটে টানেল হল। তবুও গতি রোধ হয় বার বার এই একমুখী টানেলে। চাহিদা মেটাতে টানেল হয়েছে আজ দ্বিমুখী। নামও হয়েছে এর নতুন করে *জওহর টানেল*। ২ কিমি দীর্ঘ, প্রবেশ ১৬৫ আর উচ্চতায় ১৮ ফুটের এই টানেল ২৯ কিমি দুর্গম পথও কমিয়েছে শ্রীনগরের। অতীতে কাশ্মীর উপত্যকার শুরুও ছিল এই বানিহাল থেকে। এই বানিহালেই বন্দী হয়েছিলেন দুই অবিসম্বাদী ভারতীয় নেতা পণ্ডিত জওহরলাল নেহরু ও শ্যামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়—সেদিনের কাল-কাননের বিরুদ্ধে প্রতিবাদ করে। মৃত্যুও ঘটে বন্দী অবস্থায় (১৯৫৩) শ্যামাপ্রসাদের শ্রীনগরের হরিপর্বতে। দেরিতে জম্মু ছাড়া শ্রীনগরের বাস রাতের বিশ্রাম নেয় বানিহালে। থাকার ব্যবস্থা মেলে *হোটেল, ডাকবাংলো, রেস্ট হাউস, J&KTDC-র Tourist Bungalow-র*।

ভেরিনাগ

জওহর টানেল থেকে শ্রীনগরমুখী ৬ কিমি যেতে NH-1A থেকে ডানহাতি পথ বেরিয়েছে ভেরিনাগের। এপথে ৫ কিমি যেতে ১৮৭৬ মি উঁচুতে ভেরিনাগ কাশ্মীর উপত্যকায় মোগল উদ্যানগুলির মধ্যে বয়োজ্যেষ্ঠ। আর আছে ঝরনা। উৎস এর ১৬১২ খ্রিস্টাব্দে সম্রাট জাহাঙ্গীরের তৈরি ১৫মি গভীর আটকোনা এক কুণ্ড থেকে, জল খুবই স্বচ্ছ। গ্রীষ্মে কুণ্ডের জল যেমন শুকোয় না—তেমনই উপচে পড়ে না ভরা বর্ষায়। প্রচুর ট্রাউট মাছ আছে এর জলে। বিলাম নদীরও উৎস এই কুণ্ড থেকে। জাহাঙ্গীরের খুব প্রিয় ছিল ভেরিনাগ। এই ভেরিনাগ থেকে ফেরার পথে রাজওয়ারী ভালাকে মারা যান সম্রাট। এমনকি সামরিকভাবে সমাধিহীন সম্রাট Chingas-এ। অদূরে শিবমন্দির।

সবুজের সমারোহ ঘটেছে কুণ্ডকে ঘিরে ১৬২০এ শাজাহানের তৈরি মোগল গার্ডেনে। নির্জন শান্ত সুনিবিড় এই বাগিচার শিরে পাহাড়। পাহাড়েরও নাম ভেরিনাগ।

প্রবাদ—বিরাটাকার এক নাগ অর্থাৎ সাপ বাস করত অতীতে। সাপের নামে নাম ছিল এর নীলনাগ। জম্মু থেকে অনেক সময় ঘেরিতে ছাড়া বাস পথে রাত কাটিয়ে পরদিন ভেরিনাগ দেখিয়ে শ্রীনগরে পৌঁছায়। শ্রীনগর থেকে পামপুর/ অবন্তীপুর/ খানাবল হয়ে দূরত্ব ৮৪ কিমি। কনডাক্টেড ট্রারে বাসও আসছে শ্রীনগর থেকে ভেরিনাগ দেখাতে। থাকারও ব্যবস্থা আছে রেন্ট হাউস ও J&KTDC-র টুরিস্ট বাংলোয়।

শ্রীনগর

জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের গ্রীষ্মকালীন রাজধানী শ্রীনগর রাজ্যের কেন্দ্রস্থলেই অবস্থিত। ডাল লেক আর বিলাম শ্রীনগরের দুটি হৃৎপিণ্ড। পর্যটকদের মনোরঞ্জনে সদাই ব্যস্ত এরা। ১৭৬৮ মি উঁচুতে ৩৭.৮ বর্গ কিমি উপত্যকা জুড়ে লেক ও বাগিচায় সুশোভিত অতি আধুনিক শহর শ্রীনগর। বিলামের দক্ষিণে প্রসার পাচ্ছে শহর নতুন করে, আর পুরাতন উত্তর-পশ্চিম জুড়ে। ৬½ লাখ লোকের বাস শহরে। রাজতরঙ্গিনীতে মেলে খ্রি পূ ৩য় শতকে কন্যা চারুমতীকে নিয়ে ধর্মযাত্রায় বেরিয়েছিলেন সম্রাট অশোক। ঘুরতে ঘুরতে এসে পৌঁছলেন ডালের পাড়ে। চারুমতী প্রেমে পড়েন ডালের। মেয়ের ইচ্ছায় বিহার গড়েন সম্রাট। সেই বিহারকে কেন্দ্র করেই গড়ে ওঠে জনপদ। আর এর অপরূপ সৌন্দর্যের জন্য নাম হয় শ্রীনগর অর্থাৎ *সিটি অব সিন*। দ্বিমতে অতীতের সূর্যনগর থেকেই নাকি শ্রীনগর নামান্তর। তবে, আজকের শহরের প্রতিষ্ঠাতা প্রবরসেন ২ (৭৯-১৩৯)। নামও ছিল তার প্রবরপুরা। বংশ ধ্বংস পায় ১৩৩৯এ। ক্রমে ক্রমে মুসলিম, মোগল ও শিখদের দখলে যায় কাশ্মীর। ভারত পর্যটক হিউয়েন সাঙ-এর (৬৩০-৬৪৩) বিবরণীতে মেলে সে আখ্যান।

কেনাকাটা : পলপারে (লোকমুখে *সকেদা*) ছাওয়া শ্রীনগর কাশ্মীরের শুধু প্রাণকেন্দ্র নয়, মূল বাণিজ্যকেন্দ্রও বটে। পর্যটন শ্রীনগরের মূল ব্যবসা। আর রয়েছে কিংবদন্তীর গাথায় গাঁথা সূচীশিল্পের সুব্রহ্মাণ্ডিত চর্চা ও পশমজাত নমনসোভন পশমিনা, শাল, সিঙ্ক, কার্পেট ও ওক কাঠের আসবাবপত্র। চোখ ধাঁধানো সুস্বাদু হাতের কাজ পর্যটক মাত্রেরই মন জয় করে। ডেমনই প্রশস্তি আছে শ্রীনগরের মধুর। পল্ল, জাফরান এমনকি গাজা ফুল থেকেও মধু হচ্ছে শ্রীনগরে। সুদূর অতীত কাল থেকে মধ্য এশিয়ার সঙ্গে কাশ্মীরের বাণিজ্য চলত সিঙ্ক রোড ধরে। তাসখন্দ, ইমায়রকন্দ, খোটান থেকে হিমালয় পেরিয়ে ব্যবসায়ীরা এসেছে শ্রীনগরে। বিলামের সপ্তম ব্রিজের আজও ইমায়রকন্দী সরাইটি তাদের আগমনে মুখর হয়ে ওঠে। আর এক কাশ্মীর সূপারী চিনারও এসেছে পারস্য থেকে। এমনকি কাশ্মীরিদের মধ্যে পারস্যিয়ান টি-এর প্রচলনও সেই থেকে। সম্রাটের গরম এড়াতে মোগল সম্রাটরাও রিট্রিট গড়েছেন। এসেছেনও

বারবার শ্রীনগরের শ্রীতে মুগ্ধ ও রিগ্ন হতে। মনোহর বাগিচাও গড়েছেন নানান মোগল সম্রাট।

এই শ্রীনগর থেকে বাস যাচ্ছে উপত্যকার দিকে দিকে। তাই শ্রীনগরকে ভর করেই তৈরি হয় ভ্রমণ তালিকা পর্যটকদের। যানবাহন, প্যাকেজ ট্রার, হোটেল, হাউসবোট সবেরই সুব্যবস্থা রাজ্য পর্যটন থেকে মেলে। আর কেনাকাটা কাশ্মীর গভর্নমেন্ট এম্পোরিয়াম, রেসিডেন্সি রোড; গভর্নমেন্ট সেন্ট্রাল মার্কেট, একজিবিশন গ্রাউন্ড-এ করা যেতে পারে। এদের দাম সরকার অনুমোদিত। আবার দাম সম্বন্ধে ধারণা গড়ে লালচক বা বুলেভার্ডের দোকানপাটেও সাদ্ধ করা যেতে পারে কেনাকাটা। তবে মান সম্বন্ধে সচেতনতা দরকার। সিঙ্ক বা উল ক্রয় কালে একটি সূতায় আগুন ছেলে নিরীক্ষা করা যেতে পারে। শিখাখীন ছলে যেতে ভালর দিশারী। ১০—১৭-০০টার দোকানপাট খোলা থাকে শ্রীনগরের।

তবে, গত কিছুকাল পাক মদতে পুঁট JKLIF ছাড়াও নানান উগ্রপন্থী সংগঠনের হিংসার রাজনীতির শিকার হয়েছে কাশ্মীর উপত্যকা। প্রতিরোধে ভারতীয় জওয়ানও তৎপর সারা উপত্যকা জুড়ে। তাই, চলাফেরায় নানান বিধিনিষেধ—বিপদও পদে পদে আজ কাশ্মীরে। যাত্রীদের একাঙ্কি উচিত হবে সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে শ্রীনগর ভ্রমণে চলা।



প্রতিদিন কলকাতা থেকে দিল্লী হয়ে জম্মু পৌঁছে ৪½ ঘটায় IAC-র বিমান যাচ্ছে শ্রীনগরে। ১৩৫ মিন সরাসরি শ্রীনগর যাচ্ছে IAC-র উড়ান। এ ছাড়া মরসুমে ১½ ঘটায় সরাসরি বিশেষ বিমান চলে দিল্লী আর শ্রীনগরের মাঝে। লে যাচ্ছে শ্রীনগর থেকে IAC-র বিমান প্রতি শনিবার। শহর থেকে ১৩ কিমি দূরে বিমানবন্দর। এয়ার লাইনস-এর বাস ও ট্যাক্সি মেলে বিমানবন্দর থেকে শহরে যেতে। দপ্তর বসেছে IAC-র রিসেপশন সেন্টারে।



আর শ্রীনগরের যাত্রী নিয়ে রেলের চলা জম্মুতেই শেষ। জম্মু-তাওয়ারই হয়ে রেল সংযোগ গড়েছে সমস্ত ভারতের নিধিবিদ্যের সঙ্গে শ্রীনগরের।

বিস্তারিত জম্মু অংয়ের যানবাহন দেখুন।

জম্মু রেল স্টেশন থেকে ১০ কিমি দূরে শহরের বীরমার্গের টুরিস্ট ডাকবাংলো লাগোয়া টুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার থেকে জে অ্যান্ড কে স্টেট রোড ট্রান্সপোর্ট কর্পোরেশনের বাস যাচ্ছে জম্মু থেকে শ্রীনগর। সকাল ৭-০০টা থেকে পরপর নানানধর্মী বাস। দূরত্ব ২৯৩ কিমি। সময় নেয় ১০/১২ ঘন্টা। ডিডিও কোচ, সুপার ডিলাক্স, এক্সপ্রেস, এক্সপ্রেস, মিনি কোচ, ট্যাক্সিও চলে এ পথে। পেরায়েও ট্যাক্সি মেলে জম্মু থেকে শ্রীনগর যাত্রারূপে। ৫০% টাকা এক সপ্তাহ আগে M O করে পাঠিয়ে অগ্রিম বুকিং-এর জন্য Manager, J & K State Road Transport Corp., Jammu-কে লিখুন। রেল যাত্রীদের জন্য রেল স্টেশন থেকেও নানানধর্মী বাসের ব্যবস্থা থাকে সকাল থেকে পূর্ব পর্যন্ত। গ্লোবালবোর্ডের বাইরে খিঁচায় শ্রেণীর রেল বুকিং-এর পাশেই দপ্তর এদের। তবে, বেলা ৯-০০টার মধ্যে জম্মু না ছাড়লে পথে রাত

কাটাণো অবশ্যাব্যবী হয়ে পড়ে। চালকরাও চান তাঁদের মনোমতো প্রাইভেট সরাইতে রাত কাটিয়ে পরদিন ভেরিনাগ দেখিয়ে শ্রীনগর পৌছাতে। পথে রাত কাটাবার অনিশ্চয়তার উপর না থেকে উচিত হবে প্রথম রাত জন্মতে কাটিয়ে দ্বিতীয় সকালে জন্ম ছেড়ে দিনে দিনে শ্রীনগর পৌছে যাওয়া। জন্ম বাসস্ট্যান্ড থেকেও সার্ভিস বাস যাচ্ছে শ্রীনগরে। তবে, পরিস্থিতি-জনিত কারণে জন্ম-শ্রীনগর বাস সার্ভিস ভীষণভাবে বিঘ্নিত গত কিছুকাল।

দিল্লীর কনট সার্কাস, এল ব্লক, নিউ দিল্লী থেকে জে অ্যান্ড কে রোড ট্রান্সপোর্টের লাক্সারি Video কোচ আসছে শ্রীনগর। তবে, ৩০ ঘণ্টার বাস চলা বেশ কিছুটা বিরক্তিকর যেন। পথ চলার আনন্দও বিঘ্নিত হয় চলার ক্রান্তিতে। বুকিং: 18 Kanishka Shopping Plaza, Ashok Rd. ND বা Rajpur Rd. Delhi বা Tourist Reception Centre, Sreenagar.

শহরে চলেছে অটো, টাক্সি, মিনিবাস ও বাস; জলে ছোট তরী শিকারা। এমনকি দ্বিতল বাসও ছুটে চলেছে শ্রীনগরের রাজপথে। তবে, শ্রীনগরের পথে চুক্তিতেই চলে টাক্সি ও অটো। মিটার থাকলেও ব্যবহারে গররাজি এরা।

আর গাড়ির যাত্রীদের জন্য সারা পথেই রয়েছে রাত্রিবাসের নানান ব্যবস্থা। টুরিস্ট বাংলা হয়েছে উৎসবপুর, কুদ, বাটো, রামবন, বানিহাল, ভেরিনাগ, কাজীকুও ও খানাবল-এ। খানাবল থেকে পথ হয়েছে দ্বিমুখী। ডাইনে ৪৪ কিমি দূরে পহেলগাঁও আর বামহাতি ৫০ কিমি যেতে শ্রীনগর। বাংলার বুকিং: Director of Tourism, Sreenagar-190001

জন্ম থেকে যাত্রী নিয়ে সরকারি বাস পৌছায় টুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার-এ আর প্রাইভেট বাস লালচক-এ। অর্থাৎ সরকারি গাড়ির যাত্রীদের ভূষণে প্রথম পদার্পণ ঘটে রিসেপশন সেন্টারে। সারি দিয়ে কাউন্টার, দিন-রাত যাত্রী সেবায় নিয়োজিত এরা। যাত্রীদের চাহিদামতো হোটেল/ হাউসবোট বুক করিয়ে দেয় এরা। মানের সঙ্গে দামে তারতম্য ঘটলেও সরকারি নির্ধারিত দামই ধার্য এ ক্ষেত্রে। কমিশন প্রথার জালেও যেন আবদ্ধ এরা। যোগাযোগ এদের সীমিত সংখ্যার মধ্যে। ব্যস্ততার নামে অইর্থও যেন এরা। সরাসরি চুক্তিতে অনেক সময় ভাড়া সুবিধা মেলে হোটেলে, বিশেষ করে হাউসবোটে। তেমনই রেশন কার্ড, একাধিক মোটর বাস কোম্পানির কাউন্টার, এয়ার লাইনস, রাজ্য পর্যটন দপ্তর, কাশ্মীর টুরিস্ট বাস, রাধাকিষণ কোম্পানির রেল-কাম-বাস বুকিং মায় সাইট সিয়িং-এর টিকিট সবই মিলবে এই রিসেপশন সেন্টার থেকে।

পর পর টিকিট কেটে রাখুন প্যাকেজ ট্যুরে উপত্যকা দেখার। ১ম দিন—গুলমার্গ, খিলেনমার্গ; ২য় দিন—মোগল গার্ডেনস (শিকারাতেও সাস্ক করা যায় এ সফর); ৩য় দিন—শোনমার্গ; ৪র্থ দিন—উলার লেক; ৫ম দিন—পহেলগাঁও; ৬ষ্ঠ দিনে শহর দেখা ও বিশ্রাম, পায়ে পায়ে লাল মাণ্ডীর পুরাতন প্রাসাদে শ্রী প্রতাপ সিং মিউজিয়ামটিও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত হবে। সোম ও ছুটি ছাড়া ১০-৩০—১৬-৩০টায়ে খোলা। রিসেপশন সেন্টারের পেছনে শঙ্করাচার্যের পাদদেশে দুর্গানাগের দুর্গা মন্দিরটিও আর এক দ্রষ্টব্য। ৭ম দিনে জন্ম বা লে চুলন বাস বা প্লেনে শ্রীনগর থেকে আরও ৭ দিনের প্রোগ্রামে।

কাশ্মীরিদের সততা সম্পর্কে যথেষ্ট খ্যাতি থাকলেও বাগেন সিস্টেম এদের রক্তে মিশে রয়েছে। দোকানপাট, হোটেল, হাউসবোট সর্বত্রই এই প্রথা। উচিতও হবে ডাল লেকে পৌছে শিকারা চেপে হাউসবোটে গিয়ে দেখে-শুনে নির্বাচন করা। আরও উচিত হবে প্রথমেই এক সঙ্গে অধিককালের টাকা অগ্রিম না দিয়ে বার বার দিনে দিনে পেমেন্ট করে চলা। সর্বোপরি দালাল পরিহার করে চলা একাডুই উচিত হবে শ্রীনগরের পথে ঘাটে। কল্লোলকের গল্প শুনিয়ে বিশ্বাস উৎপাদন করে দালালেরা। কমিশনও মেলে এদের। কমিশন পেয়ে দালালের প্রস্থানে গল্পকথার সাথে বাস্তবের সংঘাতে পীড়ন বাড়ে যাত্রীর। এমনকি রিসেপশন সেন্টার থেকে নিখরচায় যাত্রী নিয়ে হাউসবোট বা হোটেল দেখারও ব্যবস্থা করে এরা। সেক্ষেত্রে উচিত হবে গিয়ে দেখে খুঁটিনাটি কথা সেরে নির্বাচন করা। বাধ্য-বাধকতা নেই অপছন্দে ফিরে যেতে। আর অসময়ের যাত্রীদের একাডুই উচিত হবে প্রথম রাত হোটেল কাটিয়ে দ্বিতীয় দিনে দেখে শুনে হাউসবোট নির্বাচন করা। পরিস্থিতি-জনিত কারণে শ্রীনগরের নানান হোটেল ও হাউসবোট বন্ধ রয়েছে গত কিছুকাল। খোলা থাকা হোটেল/হাউসবোট-এ রেও তাই নিম্নমুখী।

কনডাক্টেড ট্যুর: লালচক থেকে একাধিক প্রাইভেট কোম্পানি কনডাক্টেড ট্যুরে উপত্যকা দেখাতে যাচ্ছে। তবে, টুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার থেকে টিকিট কেটে J & K Govt Transport বা ITDC আয়োজিত ট্যুর প্রোগ্রামে অংশ নিয়ে কাশ্মীর উপত্যকা বেড়িয়ে নেওয়াই সুবিধার। টুরিস্ট টাক্সিও ভাড়া মেলে এ-পথ পবিত্রময়। অভিযানপ্রিয়রা সাইকেলেও সাস্ক করতে পারেন শহর তথা মোগল গার্ডেন সফর। তেমনই দিনভর প্রোগ্রামে শ'দুয়েক টাকায় শিকারাত মেলে মোগল গার্ডেন সফরে। আর প্রাইভেট সার্ভিস বাস যাচ্ছে উপত্যকার দিকে দিকে লালচক থেকে। বাস যাচ্ছে পহেলগাঁও, শোনমার্গ Bhatmalu Bus Stand থেকে; মোগল গার্ডেন যাচ্ছে Eastern Bus Stand থেকে; গুলমার্গ, টাংমার্গ, উলার যাচ্ছে Western Bus Stand থেকে; মরসুমে লে যাচ্ছে রিসেপশন সেন্টার থেকে বাস।

Tour No. 1: ৪ ঘণ্টার সফরে সকাল ৮-০০টায়ে ও বিকাল ১৪-৩০টায়ে যাচ্ছে—চশমাশাশী, হরওয়ান, শালিমার, হজরতবাল মসজিদ, নাগিন, জুম্মা মসজিদ, নিশাত বাগ।

Tour No. 2: রবিবার ছাড়া প্রতিদিন সকাল ৮-৩০টায়ে বাস যাচ্ছে—আছাবল, কোকরনাগ, ডাকসুম।

Tour No. 3: ৮-৩০এ প্রতিদিন যাচ্ছে—অবতীপুর, পহেলগাঁও।

Tour No. 4: প্রতিদিন ৯-০০টায়ে গুলমার্গ ও খিলেনমার্গের যাত্রী নিয়ে বাস যাচ্ছে গুলমার্গে।

Tour No. 5: সোম, বুধ আর ওরুবার সকাল ৯-০০টায়ে যাচ্ছে পান্ডান, ওয়াটলব, বন্দীপুর, মানসবল, ক্ষীর ভবানী, গজরবল, উলার লেক।

Tour No. 6: মে মাসের মাঝামাঝি থেকে অক্টোবরে সকাল ৮-৩০টায়ে বাস যাচ্ছে শোনমার্গে।

Tour No. 7: মঙ্গল, বৃহস্পতি ও শনিবার যাচ্ছে যুসমাগ।

Tour No. 8: ডেরিনাগ যাচ্ছে বুধ ও রবিবার সকাল ৯-০০টায়।

আর যাচ্ছে জলবিহারে ব্লেভার্ড থেকে J&KTDC-র ৫০ সিটের Kung Posh ভাসমান রেস্টুরেন্ট ১২—১৫-০০টায় লাঞ্চ ও ১৯—২২-০০টায় ডিনার প্যাকেজে। অর্থাৎ ডালের জলে ৩ ঘণ্টা ভেসে আহ্বার ও বিহার। বুকিং রিসেপশন সেন্টার/বাদশা/লারাক্ক/কাফেটেরিয়া/নেহরু পার্ক-এ মেলে।

এমনকি Delhi Tourism Dev Corporation-এর সহযোগিতায় ৭ দিনের প্যাকেজে ভূ-স্বর্ণ সেখাবার ব্যবস্থাও রেখেছে J&KTDC দিল্লী থেকে। তবে, পরিস্থিতি-জনিত কারণে গত কিছুকাল খুবই অনিয়মিত হয়ে পড়েছে এদের সফরসূচী। তেমনই KMDA (Kashmir Motor Drivers' Association)-ও যাচ্ছে নানান ট্যুরে যাত্রী নিয়ে উপত্যকার দিকে দিকে। এদের সফরসূচীও পরিস্থিতির উপর নির্ভরশীল।

| হাউসবোট : ১০ থেকে ২০ | |
|----------------------|-------------------------------|
| শ্রীনগর থেকে দূরত্ব | ফুট চওড়া আর ৮০ থেকে ১২৫ |
| জন্ম শহর | ফুট লম্বা এই জলজ আবাসের |
| জন্ম রেল স্টেশন ৩০০ | নাম হাউসবোট। সংখ্যায় হাজার |
| দিল্লী | হবে। হাউসবোট শ্রীনগরের |
| লে | একাত্তই নিজস্ব। কার্পেট মোড়া |
| শোনমাগ | বাথ সংলগ্ন ঘর—লিভিং রুম, |
| শুনমাগ | ডাইনিং রুম, চারপাশে বারান্দা। |
| পহেলাগাঁও | হাসে বাগিচা—চোয়ার পাভা, সব |
| অমরনাথ | মিলিয়ে সুব্যবস্থা। তবে, |
| উলার লেক | তালচাচিবি প্রথা নেই |
| আহারবল | হাউসবোটে। এদের বিশ্বাসকে |
| যুসমাগ | সম্বল করে চলাও যেতে পারে |
| ডেরিনাগ | দরজা খোলা রেখে। বাছন্দ্যের |
| কাটরা | তারতম্যে এর লেগী বিন্যাস— |

ডিল্লার, এ, বি, সি, আর ডি (Doonga) ক্লাস। নামেতেও বাহার আছে প্রতিটি হাউসবোটে। বুকিং-এর জন্য লেখাও যেতে পারে : Kashmir House Boat Owners Association, opp Tourist Reception Centre, Sreenagar, J K-190001-কে।

ডিল্লার : Kashmir View House Boat, Lake Palace, Jeneva, White House, Switzerland, Nancy, New Simla, Floating Palace, New Lake Palace, Dawn Group, Little Sea Flower (বিতল হাউসবোট)।

এ-ক্লাস : Golden Hind, Star of Light, Washington, Green View, Golden Crast, Chinara, Maharaja Palace, Mount View, Moghul-E-Azam, New White House.

বি-ক্লাস : Mother India, Sun Beem, New Iran, Tajmahal, Golden Rod, Suncice, Lady of Life, Queen of Mountain, Golden Apple, Young Raja.

| AP প্রধায় | Deluxe | 'A' Class |
|---------------------|--------|-----------|
| Single | ৬০০ | ৪৫০ |
| Double | ৮৫০ | ৬৫০ |
| Children (6-11 yrs) | ৩২৫ | ২২৫ |
| For every Adl | ৪০০ | ২৫০ |

সি-ক্লাস : New Panama, Eden, New Life, Pride of India, Navy, Young May Flower, Ruby Palace, Moghul House, Air Plane, Benaf.

ডি-ক্লাস : Martanda, Morning Star, Hero of the Day, Young Duke-well, New Nancy, Young Narmundi, Bina Palace, New Golden Rod, Cherry's Stone, Ceiko.

বেড-টি থেকে ডিনার পর্যন্ত আহার্য ও বাসস্থান মেলে এদের কাছে। আহার্যে কাশ্মীরি খানার সাথে দেশী বিদেশী মেনু মেলে। আবার পুরো বাঙালিয়ানাও পাবেন হাউসবোটে। ভাল লেক, ক্রিলাম আর নাগিনেই অবস্থান এদের। সংখ্যায় ডালে বেশি, তারপর ক্রিলাম—আর কৌলিন্যে নাগিন। ক্রিলামে সাধারণ হাউসবোট—দামেও সস্তা। রক্তওয়ে পৃথক করেছে ডাল থেকে নাগিনকে।

শহর থেকে ৮ কিমি দূরে, ডাল লাগোয়া পশ্চিমে নাগিন লেক। নীল স্বচ্ছ জল, গভীরতা বেশি। নানান বৃক্ষরাজি প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। পরিবেশ দৃষণ থেকেও মুগ্ধ নাগিন। বোটগুলিরও অবস্থান পূর্ব তীরে—সূর্যাস্তের দৃশ্য মুগ্ধ করে। লেকের পাড়ে নাগিন ক্লাব—বার বসেছে, চা-ও মেলে। তাই বিদেশী পর্যটকদের ভিড় নাগিনে বেশি। শিকারায় যাতায়াত।

নেহরু পার্ক লাগোয়া বড়া ডালের বোটগুলিও মন্দ নয়। জন্ম এর ব্রিটিশকে ঠাই দেওয়ার জন্য। অতীতে কাশ্মীরি ভূখণ্ডে জায়গা ছিল না ব্রিটিশদের। তাই ছু থেকে সরে গড়ে ওঠে জলে এই আবাস ১৮৮৮তে। পাড়ের সঙ্গে সংযোগ এদের শিকারী নামক জলযানে। ইচ্ছা করলে বিহারেও বেরিয়ে পড়তে পারেন হাউসবোট নিয়ে। তবে সে ব্যয়বহুল। মালিক থাকেন সপরিবারে হাউসবোট লাগোয়া বোটে। শীত প্রধান দেশ—তাই অপরিচ্ছন্নতা এদের বসন ভূষণে। পরিধানে আলখালা, নিচুতে তার জ্বলন্ত অঙ্গারবস্ত্রি কাঙুরী। পানীয় জলেরও সঙ্কট আছে কোনো কোনো হাউসবোটে। ডালের জলই নিত্যকার ব্যবহার্য এদের। তেমনই বাধক্রম থেকে শুরু করে সবরকম নোংরাও সম্বিত হচ্ছে ডালের জলে। তবে নলও দেখিয়ে দেয় ছু-র সঙ্গে সযোগকারী শোণিত জলের নানান হাউসবোটে। কিছুটা সাবধানতা এ ব্যাপারে অবশ্যই পালনীয়। তবুও যেন কাশ্মীরি ভ্রমণে হাউসবোটে বাস বৈচিত্র্যের স্বাদ আনেন।

শিকারিতে পসরা সাজিয়ে বেরিয়ে পড়েন ব্যাপারী। চলন্ত শিকারায় বসে দোকানপাট, হাটবাজার মায় পোস্ট অফিস। ফুলওয়ালী আসে ফুলের পসরা নিয়ে, আসে ফলওয়ালী, শালওয়ালী, কার্পেটওয়ালী ছাড়াও নানান ব্যাপারী। একের প্রস্থানে অন্যের আগমন ঘটে চলে দিনান্তের ক্ষণে ক্ষণে হাউসবোটে। কেনাকাটায় কমিশন মেলে বোট মালিকের। এমনকি দোকানপাটেও এ প্রথার প্রচলন আছে যদি সঙ্গে বোটের লোক থাকে।

| | 'B' Class | 'C' Class | 'D' Class |
|--|-----------|-----------|-----------|
| | ৩২৫ | ২২৫ | ১৫০ |
| | ৫৫০ | ৩৫০ | ২২৫ |
| | ২০০ | ১২৫ | ১০০ |
| | ২২৫ | ১৭৫ | ১২৫ |



শ্রীনগরের হোটেল সিজন ও অফ সিজন রোটাল। এপ্রিল, মে, জুন, সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর সিজন; বাকি মাসগুলি অফ সিজন। সিজনে রোটালীকে উঠলেও অফ সিজনে রোটাল নামে নিচে। হোটেলও আছে নানান পর্যটক প্রিয় ভূষণ। পাঁচাত্ত প্রথা—JKTDC-র ৩২ ঘরের ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার হোটেল; রিসেপশন সেন্টার থেকে ১ কিমি দূরে লাল চক Badshah H, Badshah Rd; লাগোয়া Lulla Rukh H, Dala Chowk; Nageen Tourist Bungalow; এসের ও চশমাশাহী হাটের জন্য ঢাকা Manager (Reservation), J&KTDC Ltd, Tourist Reception Centre, Sreenagar-190001-কে J&K Tourism Development Corpn Ltd, Sreenagar-এর নামে ব্যাঙ্ক ড্রাফটে বা M O পাঠিয়ে অগ্রিম বুকিং-এর প্রথা। Youth Hostel-ও হয়েছে শ্রীনগরে মিউজিয়ামের কাছে হজুরি বাগে; অব: Warden বা Deputy Director-Tourism, Tourist Reception Centre, Sreenagar-1.

রিসেপশন সেন্টার থেকে ডানহাতি ৬/৭ মিনিটের পথে ডালগেট। কলকাতায় বুকিং-এর ব্যবস্থা নিয়ে বাঙালির হোটেলগুলিও এই Dalgate, Sreenagar-190001-এ—Dal Rim H, Maharaja R H, H Meghdoot, Aroma G H, New Regardon H, H Pacific, H Tourist, H Embassy, H Cathey, H Shabnam, H Claridges GH, H Rooma, H Manali, H Khybar, Metro H, H Riiz, H Apsara, বাগিচায় সুশোভিত Hill Skirt H, H Sultan, H Motimahal, Fayaz H, Abi Gazar, Sun Rayo G H, H Dreamland, Nishat.

১ নম্বর গেট থেকে শিকারায় গিয়ে ডালের বাঁশে—H Savoy, H Sundown, Lake Isle Resort, Lake Side H, Sea Face H, Green Hill H, ডালমুখী ডানহাতি ৫ মিনিটের পথে Durganag-1-এ—H Rocks.

ডালগেটের ডাইনে ডালের পাড় ঘরে ১০-২০ মিনিটের পথে মালা গেঁথেছে হোটেল Boulevard-এ—H Trambu Continental, H Shahensha Palace, H Parimahal, H Dawn, বাগিচায় ঘেরা H Hill Star, Dalgate, Buchwa Rd; Rubina G H, H Raj, Lion Star H, H Gulmarg, H Heemul, H Malik, H Sunshine, H Zamrud, Welcome H, Zabarwan H, বেড ও ব্রেকফাস্ট সহ সুন্দর ব্যবস্থায় H Pine Grove, Shah Abbas H, H Mazda, *H Boulevard, এরই পেছনে Asia Brown Palace, মধ্যমানে যথেষ্ট পপুলার Green Acre GH, Basu G H, Maharashtra H, *Nahuru's H, নয়নলোভন পরিবেশে মহারাজ হরি সিং-এর প্রাসাদপুত্রীতে *Oberoi Palace, বাগিচায় বসে ডিনারের যথেষ্ট প্রশস্তি এসের; পর্যটক খ্যাত H Paradise, *Centour Lake View, New Shalimar H, Ornate Nehrus H, H Rachna. নেহরু পার্ক ছাড়িয়ে Gagrival Rd-1-এ—H Kabir, H Madhuban, আহার্য না মিললেও কেবল থাকার জন্য Tibetan G H টি ডালই।

রিসেপশন সেন্টারের ডাইনে ডালের বিপরীতমুখী ৫-১৫ মিনিটের পথে Maulana Azad Rd-1-এ—যুগোপযোগী না হলেও প্রাচীনতম *Nedou's H, *Broadway H, *H Bizonze, Green View H, H City Centre. মৌলানা আজাদ রোড ঘরে ২০ মিনিটের পথে লাল চক অর্থাৎ Badshah Chowk-এ—H Taj, New Mahaluxmi Vegi L, Bombay Gujarat Vegi L,

Badshah L, H Kohinoor. আমির কদল পেরুতেই H Jehangir, TR 1; H Continental, Magarmal Bagh, Central Mkt-9.

রিসেপশন সেন্টারের বামহাতি শেরওয়ানি রোড পেরিয়ে Residency Rd-190001-এ—H Sabeena, H Odeon, Shruaj Palace GH, *H Pamposh, Grand H, Ahboo H, Labella H, Regina H, Surya H.

রেসিডেন্সি রোড শেষ হতে ১৫ মিনিটের পথে Lal Chowk-1-এ—H Juniper, H Naya Kashmir, H Gay Lord, H Punjab, H Kashmir Valley, H Majestic, Bharat Hindu H, H Standard, H Kumar, H Kashmir, Khalsa, Amir Kadal, H Neelam, H Orion, H Coromation, H Kapur, 1st Bridge, Old Hospital Rd-9, H Ashoka, H Crown.

শহরে ঢুকতেই রিসেপশনের বামহাতি ৫-১০ মিনিটের পথে Sonawar Bagh-এ—Shangrila H, H Chanakya, H Shaheen, H Venus, Kardar GH, Horizon H, Himalaya GH, H President. লাগোয়া Indira Nagar-এ—International H, Angels, Manoranjan H, Zero Inn, Gani GH.

আর আছে—H Ellora, 15 Nazir Bagh-8; New River View H, Nazir Bagh Bund; H Heaven, Nagin Rd; Chinari H, Lal Den Hospital Rd; Surti H, Lambert Lane; Lake Isle Resort, Nagin; Jawahar H, Lalmandi; Mayur H, Old Secretariate Rd; H Leeward, Ajunta, Bliss L, Crescent H, নাগিনের কাছে সুন্দর পরিবেশে H Dares Olam, H Kukhashan, Nowpora 3; Bhut G H.



এছাড়া আছে অজন্ত গেস্ট হাউসসারা শহরময়—কমলকুঞ্জ, ট্যুরিস্ট, হলিউড, নিউ সিরাজ, হেভেন, হীরা, লোটাস, নিউ মেট্রো, যাত্রী, জীবন, কাশ্মির, রাজ বাগ, ইন্ডিয়ান, লাইট, ফিরদৌস, হ্যাম্পটন, বু-ডায়মন্ড, রাজ, লতিফ, বিক্রম, অর্চনা, গ্রিন, গুলজার, সাইনিং স্টার, শালিমার, এসের কাছেও ঘর মেলে থাকার। রিসেপশন সেন্টার থেকে লোকেশনজেনে অমেষণ করা যেতে পারে। তবুও মধ্যবিস্তার থাকা ও যাবারের জন্য ডাল গেটের বাঙালি হোটেলগুলি আজও শ্রেয়। থাকা ও আহার নিয়ে অর্থাৎ AP প্রথায় রোট এসের। এমবাসি, ক্যাথে, হিল স্টার, মানালীর প্রশস্তিও যাত্রী মুখে মুখে। ডালের পাড়ে বুলেভার্ডের পাইন গ্রোভ, ওয়েলকাম, মাজন্দা, প্যারাডাইস হোটেলগুলিও ডালই। J&KTDC-র রিসেপশন সেন্টার হোটেল, লালচক, বাদশা হোটেল প্রতিটিই থাকার পক্ষে রমণীয়।

আর খাবারের হোটেল যত্রতত্র মিললেও রেসিডেন্সি রোডে Mughal Darbar কাশ্মীরি ও ভারতীয় আহার্যে ডালই। Alka Salka-র চীনা ও ভারতীয় আহার্য পরিবেশনে যথেষ্ট খ্যাতি। তেমনই Ahadoo-র প্রসিদ্ধি তার কাশ্মীরি আহার্য পরিবেশায়। আর রয়েছে বুলেভার্ড পেরুতেই তিব্বতীয় Lhasa Restaurant, চীনা ও তিব্বতীয় আহার্য পরিবেশায় যথেষ্ট সুনাম এসের। দক্ষিণ ভারতীয় ও গুজরাটি আহার্য পরিবেশায় প্যারাডাইস যথেষ্ট খ্যাত। ডালের পাড়ে বুলেভার্ডে Kashmir Darbar, ভেজ মিলে Shanyana Restaurant-এর সুনাম আছে। ডালগেটে গুহা-গুহা আধারি পরিবেশের ডাল রেকের চীনা, যোগলাই ও কাশ্মীরি আহার্যে সুনাম যথেষ্ট। তেমনই দোকানপাটে ঠাসা লালচকে পদ্মডিমার সিনেমার বিপরীতে পদ্মাব হোটেল অ্যান্ড প্রফুন্ডেট

তন্দুরী তথা পাক্কাবি ডিশ পরিবেশনে যথেষ্ট খাত। J&KTDC-র বাদশা হোটেলেরও যথেষ্ট সুনাম নানানবর্ষী আহার্যে। তবে রিসেপশন সেন্টার হোটেলটি আশানুরূপ নয়। আর রিসেপশন সেন্টারের পেছনে দক্ষিণ ভারতীয় রেস্টুরেন্টটি সদাই ব্যস্ত স্বল্প মুহুর্তে আহার্য পরিবেশনে। তবে, মাগেস তৈরি কাশ্মীরি বিশেষ খানা *Gushaba, Budam Pasand, Wazwan* বা *Rishta* খেতে ভুলবেন না। বিশেষ বিশেষ হোটলে একদিন অগ্রিম অর্ডারে মেলে। তেমনিই কাশ্মীরি গ্রিন টি *Kahwah*-রও স্বাদ নেওয়া উচিত হবে শ্রীনগরের হোটেল-রেস্তোরায়। স্বাদ নিতে পারেন *মোগলাই খানারও* শ্রীনগরের হোটলে।

ডাল লেক : রিসেপশন সেন্টার থেকে ২ কিমি পূর্বে কাশ্মীরি সুন্দরী ডাল—গাগরিবাল, লাকুতি ডাল, বড়া ডাল এই তিনের সমন্বয়ে ডাল লেক। নাগিনও ডালের অংশ বিশেষ। ভাসমান উদ্যান পৃথক করেছে এদের। এই ডালকে ঘিরে গড়ে উঠেছে পর্যটক বিনোদনের কাশ্মীরি ব্যবস্থা। দৈর্ঘ্যে ৬ আর প্রস্থে ৩ কিমির মতো। তবে, পুরাতন শহর ডালের উত্তর ও উত্তর পশ্চিমে আর নতুন করে শহর বাড়ছে ঝিলামের দক্ষিণে। ডালের পাড় ধরে Boulevard Rd—ঘাটের পর ঘাট, শিকারা যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে হাউসবোটে। আর ডাইনে সারি দিয়ে মিছিল করে দাঁড়িয়ে নানান হোটেল শ্রীনগরের। ডালের দক্ষিণে শঙ্করাচার্য আর পূর্বে হরি পর্বত প্রহরী হয়ে দাঁড়িয়ে। মোগল গার্ডেনগুলিও গড়ে উঠেছে এই ডালেরই পাড়ে উত্তর জুড়ে। আর পশ্চিমে হজরতবাল মসজিদ। এই ডালের জন্যই নাম হয়েছে কাশ্মীরের *প্রাচীর ভেনিস* পর্যটকদের জন্য রয়েছে জলজ হোটেল—*হাউসবোট* এই ডাল লেকেরই জলে পশ্চিম জুড়ে। জলও এর স্বচ্ছ। তবে, হাউসবোট এবং শহরের জঞ্জালও পড়ছে ডালের জলে। এর আর এক আকর্ষণ ভাসমান উদ্যান। দ্বীপাকার এই উদ্যানে চাষবাস হচ্ছে। বসতিও গড়ে উঠেছে দ্বীপ থেকে দ্বীপে। স্থানান্তরও ঘটে থাকে এই ভাসন্ত দ্বীপের। জন-জুলাই মাসে ডালের জলে পক্ষীর সাথে গুয়াটার লিলির শোভা মনোহর করি পর্যটকদের। সংযোগ ঘটেছে ঘুরে ফিরে ১ কিমি দীর্ঘ খালপথে ঝিলামের সাথে ডালের। আকার যেন দ্বীপের মতো। পসরা সাজিয়ে তর তর করে ছুটে চলেছে শিকারা বেয়ে দোকানি। এ দৃশ্যও ভুলবার নয়। শিকারা চেপে ডালে ভ্রমণ পর্যটকদের অনাবিল আনন্দ দেয়। এমনকি চাঁদের আলোও আভন ধরায় ডালের জলে—সেও আর এক নয়নাভিরাম দৃশ্য।

নেহরু পার্ক : শঙ্করাচার্য পাহাড়ের পাদদেশে বুলেভার্ড শেষ হতে ডালেরই অংশ গাগরিবাল দ্বীপে জওহরলাল নেহরুর কবীবাসের স্মারক রূপে গড়ে তোলা হয়েছে নেহরু পার্ক। সান্ধ্য ভ্রমণের রমণীয় পরিবেশ। রাতের আলোক-সজ্জা দুরূহ থেকে দুটি আকর্ষণ করে। তবে পরিবেশের মাঝে কিছুটা বিসদৃশ খেন আলোর এই রোশনাই।

চার চিনার : ডালের বৃক্ক আরও এক দ্বীপ। চারপাশে

জল—মাঝে ৪টি রাজকীয় বৃক্ক চিনার অর্থাৎ দরখতে ফজল গাছ। নাম তাই চার চিনার। রেস্টুরেন্টও হয়েছে দ্বীপে।

কবুতরখানা : পাশেই আর এক দ্বীপে মহারাজাদের গ্রীষ্মাবাসে কবুতর বা পায়রাদের খানা খেতে দেওয়া হত। তাই এই নাম। দূর থেকে দেখতে হয়—পাড়ে ওঠার অনুমতি নেই।

হরি পর্বত : শহর থেকে ৫ কিমি উত্তরে ডালের পশ্চিমে সরিকা পাহাড়ের হরি পর্বতের শিরে ১৫৮৬ খ্রিস্টাব্দে বাদশা আকবর দুর্গ গড়েন। হিমতে, দুর্গটি ১৮১২য় কাশ্মীরের পাঠান শাসক আট্টাখানের তৈরি। শহর থেকেও ১২২ মি উচুতে ৫ কিমি দীর্ঘ ১০ মি উঁচু প্রাচীরে ঘেরা, সজ্জী প্রবেশ ঘর। দেওয়াল চিত্র-বিচিত্র, পারসি ভাষায় উদ্ধৃতি উৎকীর্ণ, তবে আজ বিধ্বস্ত। বেশ কয়েকটি হিন্দু মন্দিরও ছিল সেকালে। আজ হয়েছে ফলের খেতি—বসন্তে ফুল ফোটে, পরিবেশ মধুময় হয়ে ওঠে চারপাশের। পুরাণ বলে, জলোদ্ভব অসুরকে বধ করতে পার্বতীর ছোড়া পাথরখণ্ডই রূপ পেয়েছে পাহাড়ে। তবে আজ সামরিক বাহিনীর তত্ত্বাবধানে। অনুমতি লাগে রাজ্য পর্যটন থেকে দুর্গ দেখতে।

হরওয়ান : পুরাণ বলে, অতীতে নাম ছিল এর কুণ্ড-লবণ বিহার। সম্রাট অশোকের আয়োজিত দ্বি-গ্রেট বুদ্ধিস্ট কাউন্সিল বসে এখানেই। চারপাশ মহাদেব পাহাড়ে ঘেরা ডালের উত্তরে সুন্দর এক সরোবর। এই সরোবর থেকেই জল যায় নলে ১৮ কিমি দূরের শ্রীনগরে। ট্রাউট মাছের চাষ হয় সরোবরে। সম্রাতি খননে ৩ শতকের বৌদ্ধ মনাস্তির নানান নিদর্শন মিলেছে হরওয়ানে। বাসও এখানে আধ ঘণ্টা বিশ্রাম দেয়।

গাগরিবাল পার্ক : ডাল গেট দিয়ে প্রবেশ করতেই গাগরিবাল—ডালের বৃক্ক ছোট দ্বীপ। সাঁতারের ব্যবস্থা আছে। বিশ্রামেরও মনোরম পরিবেশ গাগরিবাল।

চশমাশাহী : শহর থেকে ৯ কিমি দূরে ডাল লেকের পাড়ে রাজকীয় এই প্রবণ। প্রবণকে ঘিরে গড়ে উঠেছে তিন ধাপের উদ্যান জওহর বটনিক্যাল গার্ডেন। চিনার, বাউ আর নানান ফলের সমারোহ ঘটেছে পর্যটকদের মনোরঞ্জে। মোগল সম্রাট জাহাঙ্গীরের হাতে শুরু হয়ে শাহজাহানের হাতে ১৬০২এ শেষ হয় এর নির্মাণ। রাতের বেলায় আলোর সাজ পরে চশমাশাহী। চশমাশাহীর জলে নানান দুরারোগ্য ব্যাধির উপশম মেলে। জনশ্রুতি, পণ্ডিত জওহরলাল নেহরু নিরমিত এর জল পান করতেন। বাস আধ ঘণ্টা বিশ্রাম দেয় এখানে।

চশমাশাহীর শিরে শাহজাহান-পুর দারার প্রমোদবন পল্লী মহল। অতীতকালের মনাস্থিতে ১৭ শতকে সুকী কলেজ বসলেও আজ জ্যোতিষশাস্ত্রের স্কুল বসছে। বাগিচাও হয়েছে দীর্ঘকালের অনাদর আর অবহেলায়

বিশ্বস্ত পরীমহলে। ডাল লেকও সুন্দর দৃশ্যমান পরী মহল থেকে। পরী মহলের পাদদেশে দেবী পার্বতীর মন্দির। রান্নার ব্যবস্থা সহ থাকার জন্য আছে J&K TDC-র *Cheshma-shahi Hut*. আর আছে *The Centaur Lake View* চশমাশাহীতে।

নিশাত বাগ : চশমাশাহী থেকে ৪ আর শহর থেকে ১১ কিমি দূরে পাহাড় কেটে গড়ে তোলা হয়েছে নিশাত বাগ অর্থাৎ প্রমোদ উদ্যান। মোগল কালের বাড়িঘর, জাফিরি কারুকার্য সুন্দর। এটিও ডালের পাড়ের পাহাড় ঢালে ১২ ধাপে একই ধাঁচে গড়ে উঠেছে। ঝরনা, চিনার, সিঁদার, সাই প্রাস, ফুল আর ফলের বাগিচা রয়েছে নিশাতে। আগস্টে রঙ ধরে আপলে। তবে গাছ থেকে আপেল হেঁড়ার লোভ সম্বরণ করুন। আর জুন/জুলাই মাসে আনারকলি ভ্রমণার্থীদের আকুল করে তোলে। ১৬৩৩এ সম্রাজ্ঞী নূরজাহানের ভাই আসফ খানের নকশায় তৈরি বৃহত্তম (৫৪৮x৩৩৮ মি) মোগল বাগিচা এই নিশাত। বাস এখানে ২ ঘণ্টা সময় দেয়।

শালিমার বাগ : Abode of love অর্থাৎ প্রেমের আবাস নিশাত থেকে ৩ কিমি উত্তরে আর শহর থেকে ১৫ কিমি দূরে ধাপে ধাপে ৪ ধাপে গড়ে ওঠে শালিমার বাগে। ১৬১৬ খ্রিস্টাব্দে সম্রাট জাহাঙ্গীর এটি তৈরি করান *জগতের আলো* বেগম নূরজাহানের জন্য। চারপাশে চিনারের সারি, ঋতুভেদে রকমারি ফুলের মেলা বসে। ১৮২২এ৩৯ মি ব্যাপ্ত বাগিচার মাঝে প্রথম ধাপে শ্বেত মর্মরে গড়া প্যাভিলিয়নে সাধারণ, দ্বিতীয় প্যাভিলিয়নে ব্যক্তিগত, তৃতীয় কালো পাথরের প্যাভিলিয়নে হারেম আর চতুর্থটি সম্রাটের নিজস্ব রূপে গড়ে ওঠে। গ্রীষ্মে বাদশা আসতেন নূরজাহানের হাত ধরে তার শয্যের প্রেমের আবাসে। সারি দিয়ে ঝরনা—কেবল রবিবার ঝরনাগুলি খোলা হয় শালিমারে। এছাড়া মে থেকে অক্টোবরের সন্ধ্যায় ITDC আয়োজিত *Son et Lumiere* অর্থাৎ আলো ও শব্দে অতীতদিনের মোগল দরবার বসছে শালিমারে। আর বসেছে ক্যান্টিনে আজকের শালিমারে। বাস এখানে এক ঘণ্টার বিশ্রাম দেয়।

নাসিম বাগ : শালিমার থেকে ৫ আর শহর থেকে ১০ কিমি দূরে নিশাতের অপর পাড়ে ১৫৮৮ খ্রিস্টাব্দে সম্রাট আকবর তৈরি করান নাসিম। এখানে ঝরনা বা ফুল-ফলের গাছ নেই। সে অভাব পূরণ করেছে পারস্য থেকে আনা রাজকীয় বৃক্ষ চিনার। নাসিম থেকে ডালের শোভা খুবই মনোহর লাগে। সকালের দিকে নাসিমে মধুর বাতাস বয়। নামটিও তাই *নাসিম বাগ* অর্থাৎ সকালের বাতাস। প্রাচীনতম মোগল উদ্যান নাসিমে আজ ইঞ্জিনিয়ারিং কলেজ বসেছে।

ডাল গেট থেকে সার্ভিস বাসে বা কনডাক্টেড ট্যুরে বা সারাদিনের চুক্তিতে শিকারা নিয়ে মোগল গার্ডেনগুলি দেখে নেওয়া যায়। শিকারা যাত্রায় সঙ্গে প্যাকেট লাঞ্চ ও

পানীয় জল নিতে ভুলবেন না। হাউসবোটাই তৈরি করে দেয়। সূর্যোদয় থেকে সূর্যাস্তে খোলা থাকে মোগল গার্ডেন।

হজরতবাল মসজিদ : শহর থেকে ৭ কিমি দূরে নিশাতের বিপরীতে ডালের পশ্চিম পাড়ে মোগল ও কাশ্মীরি স্থাপত্যে ত্রিভুজের ছাদে সফেদরঙা অটোমান শৈলীর গম্বুজ মাথায় নিয়ে হজরতবাল মসজিদ। ভিতরে কাচের আধারে হজরত মোহাম্মদের শ্মশ্রুর একটি কেশ রক্ষিত আছে। ১৬৩০এ মদিনা থেকে ভারতে এলেও ১৭০০ খ্রিস্টাব্দে খাজা নিরউদ্দিন বিজাপুর থেকে এই কেশ সঙ্গে আনেন কাশ্মীরে। মুসলিম সমাজের কাছে খুবই পবিত্র এই কেশ। ১৯৬৩র ডিসেম্বরে কেশটি অস্তিত্ব হতে অশান্ত হয়ে ওঠে সারা উপত্যকা। তবে ৫ সপ্তাহ পরে অভাবনীয় আবিষ্কারে শান্তি ফেরে। কেশের ঘরে বিশ্বাসীদের প্রবেশ মানা। আবার সংবাদের শিরোনাম হয় ১৯৯৪র গোড়ায় জঙ্গী বাহিনীর দখলে যেতে হজরতবাল মসজিদ। দখলমুক্ত করে ভারতীয় সেনা জঙ্গীদের কবল থেকে মুসলিম তীর্থ হজরতবাল। অদূরেই কাশ্মীর বিশ্ববিদ্যালয়।

মিউজিয়ম : বিলাম নদীর দক্ষিণে জিরো ব্রিজ ও আমিরা কপলের মাঝে লালমাটিতে প্রতাপ সিং মিউজিয়মে কাশ্মীরের নানান সংগ্রহ উচিত হবে দেখে নেওয়া। সোম ছাড়া ১০—১৬-০০টায় খোলা।

শাহ হামদান মসজিদ : ডাল গেট থেকে ৬ কিমি দূরে বিলামের পাড়ে ১৩৯৫এ দারুতে তৈরি শাহ হামদান মসজিদ। প্রাচীন শহরের প্রাণকেন্দ্রে প্রাচীনতম এই মসজিদ। পারস্যের ফকির শাহ হামদানের স্মারকরূপে নামকরণ। লক্ষ লক্ষ হিন্দুকে মুসলিম ধর্মে ধর্মান্তরিত করেন ফকির সাহেব। এমনকি অতীতের হিন্দু মন্দিরের রূপান্তর নাকি এই মসজিদ। দেওয়াল ও সিলিংয়ের কারু-কার্য সে কথাই বলে। লৌহ ও পেরেকের কোনো ব্যবহার নেই। পিরামিডধর্মী বিরাট হল, ৩৮ মি উঁচু মোচাকার চূড়া। বিশ্বাসীদের প্রবেশ নিষেধ। বার বার ৫ বার আগুনে পুড়ে যায় শাহ হামদান।

বিপরীতে বিলামের পূর্ব পাড়ে সিয়া সম্প্রদায়ের জন্য ১৬২৩এ নূরজাহানের তৈরি পাথর মসজিদ। মহিলার তৈরি মসজিদ বলে কাশ্মীরিরা এটি বয়কট করে। নতুন করে নাম হয়েছে পাথর থেকে শাহী মসজিদ।

জুম্মা মসজিদ : শহর থেকে ৫ কিমি দূরে ইন্দো-সেরাসেনিক শৈলীতে দারুতে তৈরি মসজিদ। ৩ শতাধিক শালবৃক্ষ থাম হয়ে ভর রেখেছে ছাদের। লম্বা ও চওড়ায় ১৭মি, বর্গাকার রূপ। ৪টি বুরুজ হয়েছে শিরে। প্যাগোডা-ধর্মী ৩ মিনার থেকে আজান হয়। কাশ্মীরের বৃহত্তম এই মসজিদ ১৩৮৫তে সুলতান শিকান্দারের হাতে তৈরি। পুত্র জৈন-উল-আব্বাসেই সংস্কারের সাথে আয়তন বাড়ান ১৪০২এ। বার বার তিন-বার আগুনে ভস্মীভূত হলেও ১৬৭৪এর ধ্বংস, অতীতের ইন্দো-সেরাসেনিক ধারায়

সংস্কার হয় ডোগরা মহারাজা প্রতাপ সিং-এর কালে। ১০০০০ ধর্মার্থী একত্রে অংশ নেয় উপাসনায়। ইদ-উল-ফিতর জাঁকালো উৎসব।

বাদশাহ : শহর থেকে ৪ কিমি দূরে ঝিলামের পূর্ব পাড়ে পারসীয় স্থাপত্যের নিদর্শন ৫টি ডোমের সমাধি সৌধ। সম্ভবত রাজা প্রবরসেন ঝিটীরের তৈরি কোনো মন্দিরের উপর গড়া হয়ে থাকবে। বাদশা নামে সমাধিক খ্যাত ১৫ শতকের কাশ্মীর শাসক জৈন-উল-আবেদিনও সমাধিস্থ রয়েছেন, নামও তাই বাদশাহ। তবে আজ দীর্ণ।

শঙ্করাচার্য মন্দির : ডালের বুকে নেহরু পার্ক। আর পার্ক শেষ হতে বুলেভার্ডের পিছনে পথ উঠেছে শঙ্করাচার্য পাহাড়ের। সম্রাট অশোকের পুত্র ঝালুকা খ্রি পূ ২০০তে শহর থেকেও ৩০৫ মি উঁচুতে পাহাড়ের ঢালে মন্দির গড়েন দেবতা শিবের। Takht-i-Sulaiman অর্থাৎ সেলামনের সিংহাসন নাম ছিল পাহাড়ের সেকালে। আর বর্তমান মন্দিরটি জাহাঙ্গীরের কালে এক উৎসাহী হিন্দুর তৈরি। ৮ বছর বয়সে শঙ্করাচার্য সম্মান্য নেন শ্রীমৎ গোবিন্দ পাদাচার্যের কাছে। ভারত পর্যটনে বেরিয়ে কাশ্মীরেও আসেন এই জ্ঞানতাপস। তপস্যায় বসেন তখত-ই-সুলেমানে। সেই থেকে নাম হয় পাহাড়ের শঙ্করাচার্য পাহাড়। পাহাড় থেকে শহর তথা ১৩৪×৪০ কিমি ব্যাপ্ত কাশ্মীর উপত্যকা সুন্দর দৃশ্যমান। সভাই যেন— *ব্যানু ঢাকা বাঁকা তরোয়াল* ঝিলাম। এমনকি তুষারাচ্ছাদিত পীরপাঞ্জাল শৃঙ্গও দৃশ্যমান। ভোরের দিকে ডাল গৈট থেকে ২৪২ ধাপ সিঁড়ি বেয়ে বেড়িয়ে নেওয়া যায়। নতুন করে টিভি টাওয়ার বসেছে শঙ্করাচার্যের শিরে।

গুলমার্গ-ঝিলেনমার্গ

শ্রীনগর থেকে বারমুলার পথে মাইল দশকে যেতে বাম হাতি পথ গিয়েছে গুলমার্গে। পথও গিয়েছে ধান ও ছুট্টা খেতের মাঝ দিয়ে পীর পাঞ্জালের পাহাড় ঢালে। পপলার দু'পাশে গার্ড অব অনার দিয়ে দাঁড়িয়ে। দূরে-দূরান্তের বরফাচ্ছাদিত পাহাড়শ্রেণী। এমন সুন্দর পথশোভা বিশ্বদুর্ভবনে দ্বিতীয়টি নেই। বাসপথ গুলমার্গেই শেষ। JKSRTC-র সার্ভিস বাস চলছে শ্রীনগর-গুলমার্গ। নিকটতম বিমানবন্দর শ্রীনগর আর রেল জন্মু। শ্রীনগর থেকে দূরত্ব ৪৬ কিমি। উচ্চতা ২৭৩০ মি। কিছুকাল আগে গাড়ির চলা শেষ হত ৮ কিমি আগে টাংমার্গে। তবে, শীতে আচ্ছন্ন বাসের চলা শেষ হয় ২৫৩০ মি উঁচু টাংমার্গে। ট্যুরিস্ট বাংলাও হয়েছে টাংমার্গে।

অতীতে গুলমার্গের নাম ছিল মৌরীমার্গ। শিব-জায়া গৌরীর নামে নাম। ১৫৮১তে কাশ্মীরের সুলতান ইউসুফ শাহ এর নাম বদলে গুলমার্গ রাখেন। ফার্সিতে গুল মানে ফুল অর্থাৎ ফুলের উপত্যকা। গ্রীষ্মে ও বসন্তে দেশী-বিদেশী ফুলের সমারোহ ঘটে ৩ কিমি ব্যাপ্ত গুলমার্গে। ঋতুভেদে রঙও বদলায় গুলমার্গের। বিশ্বের সবচেয়ে উঁচুতে ১৮ পয়েন্টের সেরা গলফ কোর্সও হয়েছে গুলমার্গে। গলফ

খেলার আসরও বসে গ্রীষ্মে। সাময়িক সদস্য হয়ে অংশ নেওয়া যায় খেলায়। আর শীতে বসে কি খেলার আসর। স্কুলও আছে কি শিক্ষার গুলমার্গে। কি খেলতে আগ্রহীদের উচিত হবে S D Singh, Hut 209A-কে যোগাযোগ করা। এই খেলার মাঠকে ঘিরেই গড়ে উঠেছে শান্ত সুনীবিড় ছোট্ট পাহাড়ী শহর গুলমার্গ। পাইন আর দেওদারে ছাওয়া, নৈসর্গিক শোভার তুলনা হয় না। ৫ কিমি দীর্ঘ রোপওয়েও বসেছে পর্যটক বিনোদনের জন্য গুলমার্গ থেকে ঝিলেনমার্গের। *কেবল কারও* হয়েছে গুলমার্গে। আর ট্যুরিস্ট অফিস বসেছে গলফ কোর্সের বিপরীতে ব্লু-গ্রিন বিল্ডিং কমপ্লেক্সে। শীতেরও আধিক্য আছে গুলমার্গে। বরফ পড়ে নেভেবর থেকে সারা শীতে। বোড়াবার মরসুম মে ১৫ থেকে অক্টোবর ১৫।



গুলমার্গের হোটেলে কিছুটা সমস্যা আছে। মানের তুলনায় ভাড়ায় আধিক্য—সাধারণ হোটেল অতি নিকটমানের। নোংরা ও অপরিচ্ছন্নতা কিছুটা যেন কলুষিত করেছে গুলমার্গের হোটেল-পরিবেশ। উঁচুর দিকের হোটেলগুলিতে খরচ-খরচা যথেষ্ট উঁচু, সেই তুলনায় ব্যবস্থাপনা তুষ্ট হবার নয়। পাশ্চাত্য প্রথায়—**H Highlands Park, Gulmarg-193403; H Ornate Woodland*, বয়েসে প্রবীণ কৌলীন্যে সেরা **Medous H Park, Tourist H, New Panjabi H, Kingsley H, Gulmarg Inn, Green View, Zum-Zum H, Golf View H, Ymberzul, Hill Top, H City View, Mount View, Asia Gulmarg, H Apharwat, Pine Palace* ছাড়াও আরও নানান হোটেল আছে গুলমার্গে। আবার JKTDC-র নতুন ও পুরাতন ২টি ট্যুরিস্ট বাংলাও সুসজ্জিত হাটেও থাকা যায়। বুকিং : Manager (Reservation), JKTDC, Sreenagar-190001. প্রকৃতি প্রেমিকদের একটা রাত শ্রীনগর থেকে বাঁচিয়ে গুলমার্গ থেকে যাওয়া উচিত হবে। থাকার জন্য *Tourist Bungalow, Green View* দেখা যেতে পারে। আহাৰ্যেও সঙ্কট আছে গুলমার্গে। খাবারের হোটেল সংখ্যায় কম, মান সাধারণ হলেও দামে অসাধারণ। তবুও যেন বাসস্ট্যাণ্ডে *Ahdoo's* ভালই। শ্রীনগর থেকে বাসে গুলমার্গ পৌঁছে গুলমার্গ থেকে পায়ে হেঁটে, বোড়া বা ডাক্তীতে ঝিলেনমার্গ অর্থাৎ বরফের রাজ্যে পৌঁছান। ঝিলেনমার্গ যাওয়ার জন্য গুলমার্গে বরফে চলার ছুতো ভাড়ায় মেসে, স্পাইক লাগানো লাঠিও ভাড়াও পাবেন—সঙ্গে নিলে পথ চলায় সুবিধা। কনডাক্টেড ট্রারের বাস অপেক্ষা করবে গুলমার্গে। নির্ধারিত সময়ে গুলমার্গ ও ঝিলেনমার্গ বেড়িয়ে ফিরতে হয় যাত্রীদের। গুলমার্গ থেকে ৬ কিমি দূরে ১১০০০ ফুট উঁচুতে ঝিলেনমার্গ। পায়ে-চলা বন্ধুর পথ। বোড়াও যাচ্ছে। আর চলছে রোপওয়ে গুলমার্গ থেকে ঝিলেনমার্গে। বরফ শুধু বরফ; চারপাশে বরফ ঝিলেনমার্গে। নির্মেষ দিনগুলিতে বিশ্বের পক্ষম উচ্চ (৮১৩৭ মি) তুষারাচ্ছাদিত নাসাপর্বত, হরমুখ, গৌরীশঙ্কর, ত্রিশূল একে একে দৃশ্যমান হয়। এমনকি শ্রীনগরের ডাল, উলার, শঙ্করাচার্য পাহাড় আর ঝিলামও দৃশ্যমান ঝিলেনমার্গ থেকে। পথপ্রান্তির ক্লাভি দূর হয় এর

নয়নাভিরাম নৈসর্গিক সৌন্দর্যে। মরসুম চা-খাবারের লোকানও বসে নীল আকাশের নিচে।

আলপাথার লেক : বিলেনমার্গ থেকে ৮ কিমি তে আরও চার হাজার ফুট গিয়ে অর্থাৎ ৩৮৪৩ মি উঁচুতে আলপাথার লেক। খুবই নয়নাভিরাম নৈসর্গিক শোভার মাঝে প্রকৃতি-দত্ত আলপাথার লেক। আকারে তিন কোনা, জলের রঙ পান্না সবুজ; লেকের জলে বরফ ভাসে। আফারওয়াট পাহাড়ের নিচুতে নাগদেবতার নামে নাম। প্রাচীরও তুলেছে আফারওয়াট—আলপাথার ও বিলেনমার্গের মাঝে। ঘোড়ায় যাওয়া চলে বিলেনমার্গ থেকে। তবে, আলপাথার যাত্রীদের এক রাত গুলমার্গে থাকতে হয়। গুলমার্গ থেকেও পৃথক পথ গিয়েছে আলপাথারে। এপথের দূরত্ব ১৩ কিমি। ঘোড়াও চলে এপথে। তবে, সাধারণ যাত্রীদের জন্য নয় আলপাথার।

এছাড়া অভ্যুৎসাহীরা গুলমার্গ থেকে ৮ কিমি দূরে পাইন বনের মাঝ দিয়ে বয়ে চলা আফারওয়াট ও আলপাথার পাহাড়ের বরফ গলা জলের প্রবাহ নিঙ্গেল নালা বেড়িয়ে নিতে পারেন। সোপুর্বে গিয়ে মিলেছে ঝিলামের সাথে নিঙ্গেল নালা অর্থাৎ নদী। বেড়িয়ে নেওয়া যায় সেতুতে নিঙ্গেল নালা পেরিয়ে পায়ে হাঁটা পথে গিয়ে সবুজে মোড়া ময়দান লিয়েন মার্গও। ১৩ কিমি দূরের গুলমার্গ থেকেও পাইনে ছাওয়া পথ এসেছে। ফিরোজপুর নালারও পথ গিয়েছে গুলমার্গ থেকেই। নামে নালা হলেও আসলে বেশপতী পাহাড়ী নদী এক। ট্রাউট মাছের চাষ হয় নালায়। প্রাকৃতিক পরিবেশ মনোরম। কন্টারনাগের পথও এই ফিরোজপুর নালা হয়ে গিয়েছে। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ৪০৩৯ মি উঁচুতে কন্টারনাগ আর এক প্রকৃতিদত্ত হ্রদ। সম্ভবত নীলকান্তনাগ থেকে নাম হয়েছে কন্টারনাগ। গুলমার্গ থেকে ১৬ কিমি দূরে পথ বন্ধুর হলেও রয়েছে সুন্দরী কাশ্মীরের আর এক সুন্দর তোষ ময়দান—এর প্রকৃতি। ফিরোজপুর নালা হয়ে পথ গিয়েছে। ঘোড়াও যাচ্ছে এ-পথে। আর গুলমার্গের বাজার থেকেই পথ যাচ্ছে বাবোরিবি—জৈন-উল-আবেদিন—এর রাজ দরবারের সভাসদ ১৫ শতকের মুসলিম ফকির বাবা পামদিনের *জিয়ারং (Ziarat)* অর্থাৎ সমাধির। সমাধিসৌধের কারুকার্য সুন্দর। টাংমার্গ থেকেও পথ এসেছে। গুলমার্গ থেকে ৩ দিনে ৫০ কিমি পরিক্রমায় সাক্ষ্য করা যায় এ সফর।

আহারবল

শ্রীনগর থেকে ৫১ কিমি দূরে মোগল বাদশাহের বিশ্রামস্থল আহারবল। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে ২৪.৪ মি উঁচু থেকে নামছে জলপ্রপাত বিষভ নদীর আহারবলে। পায়ে বাবা গাড়িতে চলা যায়। সেতু পেরুতেই গভীর বাদবিভ নদীর। ৫ কিমি দূরের কাঙ্গওয়টিন সুন্দর পশতারণ ক্ষেত্রটিও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। গুর্জরদের বাস। প্রববণের জলে সালফার আছে। আরও ১১ কিমি পায়ে গিয়ে কৌনসারনাগ

লেক। জুনের শেষেও বরফ ভাসে লেকের জলে। কনডাকটেড ট্রারে বাস যাচ্ছে আহারবলে। থাকারও ব্যবস্থা আছে PWD RH ও J&KTDC-র ট্যারিস্ট বাংলাদেশ আহারবলে।

পহেলগাঁও

কাশ্মীর উপত্যকার সুন্দরতম পাহাড়ী শহর পহেলগাঁও। শ্রীনগর থেকে ৯৪ কিমি দূরে ২১৯৫ মি উঁচুতে রূপশী শহর পহেলগাঁও। আর ৪৪ কিমি দূরের খানাবল হয়ে জম্মুর দূরত্ব ২৮৭ কিমি। কনডাকটেড ট্রারে বাস যাচ্ছে শ্রীনগর থেকে জে কে ট্যারিজমের। এদের বাসে সিঙ্গল জার্নির টিকিটও মেলে। শ্রীনগরে অগ্রিম মিললেও পহেলগাঁও-এ বাস পৌছাতে ফেরার টিকিট মেলে দুপুরে। ঘন্টা তিনেকের পথ। JKRTC-র নিয়মিত যাত্রী বাসও চলে শ্রীনগর থেকে পহেলগাঁও-এ। ভাড়া কম হলেও সময় লাগে বেশি যাত্রীবাসে। ট্যাক্সিতেও বেড়িয়ে ফেরা যায় শ্রীনগর থেকে পহেলগাঁও।

পহেলগাঁও-এর পথে প্রথমেই পড়ে পামপুর। শ্রীনগর থেকে দূরত্ব ১৩ কিমি। বিশেষ মাত্র দু'জায়গায় স্পেন ও পামপুরে জাফরানের চাষ হয়। আখিন-কার্তিকে (অক্টোবরে) পীতভ সোনালী আভার ফুল ফোটে জাফরানের। বাস থামে না, চলতে চলতে দেখে নিতে হয় পথপাশের জাফরান খেত। তবে, দাম যথেষ্ট হলেও স্বাদেও বর্ষে রান্নায় অপরিহার্য। চলার পথে শহর থেকে ৩৫ কিমি যেতে সখ্রামায় থরে থরে সাজানো ক্রিকেট ব্যাটের পাহাড়ও দৃষ্টি আকর্ষণ করে যাত্রীদের। উইলো কাঠের এই লোকাল প্রোডাক্ট দামে সস্তা। আগ্রহীদের কেনারও সুযোগ মেলে বাস থামিয়ে।

পামপুর থেকে আরও ১৬ কিমি গিয়ে অবন্তীপুর। ৮৫৫—৮৮৬ খ্রিস্টাব্দে গড়া ২টি মন্দিরকে ঘিরে জনপদ গড়ে ওঠে সেকালে। আজ বিধবন্ত। উৎকল বংশের প্রথম রাজা অবন্তী বর্মাবন্তীস্বামী বিষ্ণুমন্দির ও অবন্তীশ্বর শিবের মন্দির প্রতিষ্ঠা করেন। দ্বিমতে, মন্দিরটি নাকি পাণ্ডবদের তৈরি। সুন্দর কারুকার্য ছিল সেকালে। বিষ্ণু মন্দিরের (৫২৪৫ মি) ধ্বংসস্থাপে আজও তার নির্দশন মেলে। লাগোয়া শিব মন্দির। এমনকি ৮৫৫—৮৮৩ খ্রিস্টাব্দে কাশ্মীরের রাজধানীও ছিল অবন্তীপুরে। পরবর্তীকালে রাজা প্রবরসেন অবন্তীপুর থেকে রাজ্যপাট তুলে শ্রীনগরে যান। কনডাকটেড ট্রারের বাস ১৫ মিনিট সময় দেয় ধ্বংসস্থাপ দেখে নিতে। অদূরেই বিজ্ঞ বিহারে কাশ্মীরের বৃহত্তম তিনার গাছটিও দেখে চলা যেতে পারে।

অবন্তীপুর থেকে ২১ কিমি দূরে খানাবল। জম্মু-পহেলগাঁও পথের মিলনও ঘটেছে খানাবলে। খানাবল থেকে পহেলগাঁওমুখী ১ কিমি গিয়ে ডানহাতি পথে আরও ১ কিমি যেতে অনন্তনাগ। পাহাড় থেকে নামছে বরলা, দু'পাশে দুটি কুৎ, মাঝে মন্দির; নাগের নামে জায়গার নাম—অনন্তনাগ। লোকশ্রুতি, বৃহত্তমটিতে বিষ্ণুর সজ্জা অনন্তনাগের বাস।

প্রচুর মাছ আছে কুণ্ডের জলে। একটির জল ঠাণ্ডা, অপরটির গরম। মন্দিরে পূজা হয় শিব ও রাধাকৃষ্ণের। বাঙালি পুরোহিত বংশ-পরম্পরায় পূজার্তনায় রত।

ঝরনার জল গন্ধক ও নানান খনিজ পদার্থের মিশ্রণে ঔষধির কাজ করে। ১৭ শতকে ঔরঙ্গজেবের কালে এই অনন্তনাগ হয় ইসলামাবাদ। আর ১৮৫০ খ্রিস্টাব্দে মহারাজা গুলাব সিং পুরোনো নামটি ফিরিয়ে আনেন—ইসলামাবাদ আবার হয় অনন্তনাগ। কনডাকটেড ট্যুরে ১৫ মিনিট সময় মেলে অনন্তনাগ দেখে নিতে।

বাদশা জাহাঙ্গীরের তৈরি আচ্ছাবল একটি মোগল উদ্যান। অনন্তনাগ থেকে ৮ আর শ্রীনগরের ৬৩ কিমি দূরে ১৬৭৭ মি উঁচুতে ধাপে ধাপে তিন ধাপে গড়ে উঠেছে চিনারে ছাওয়া আচ্ছাবল। আর আছে ঝরনা। নুরজাহানের খুব প্রিয় ছিল আচ্ছাবল। মতান্তরে, শাজাহানের কন্যা জাহানারা নাকি তৈরি করান এটি ১৬২০ খ্রিস্টাব্দে। আবার কারও কারও মতে, খ্রিষ্ট ৫ শতকে এটি কাশ্মীররাজ অক্ষবলের তৈরি। আচ্ছাবল নামটিও নাকি অক্ষবলের অপভ্রংশ। সে যাই হোক, বাগিচাটি মনোরম। লাগোয়া ট্রাউট হ্যাচারিটিও দর্শনীয়। ট্যুরিস্ট হাট ও ট্যুরিস্ট বাংলা আছে। প্যাকেজ ট্যুরে বাস যাচ্ছে ডাকসুমে।

অনন্তনাগ থেকে ৬৬ কিমি দক্ষিণ-পূবে কোকরনাগ। কোকর অর্থ মুরগি, আর নাগ হল সর্প। অসংখ্য মুরগির পায়ের ছাপ রয়েছে পাহাড়ের গায়ে। আর সেই ছাপ দিয়ে বেরিয়ে আসছে জলের ধারা। এই ধারার মিশ্রণে ঝরনা। জল মহৌষধির কাজ করে। আর রয়েছে সুন্দর গোলাপ বাগিচা। বাগিচায় রকমারি মরসুমি ফুল মুগ্ধ করে পর্যটকদের। ২ বৈভের ট্যুরিস্ট হাট ও FRH আছে ২০১২ মি উঁচু কোকরনাগে। প্যাকেজ ট্যুরের বাস ১ ঘণ্টার বিরাম দেয় কোকরনাগে। যাত্রী বাসও যাচ্ছে অনন্তনাগ হয়ে কোকরনাগে। ডাকসুমের বাস যাচ্ছে কোকরনাগ হয়ে।

আর আছে শ্রীনগর থেকে ৯০, কোকরনাগের ১৫ কিমি দূরে ২৪০৮ মি উঁচুতে কাশ্মীরের শৈলাবাস ডাকসুম। সুন্দর প্রকৃতির মাঝে RH ও Tourist Bungalow আছে। কিন্তুওয়ারের ট্রেক পথও যাচ্ছে ডাকসুম হয়ে। ৩৭৪৮ মি উঁচু সিনথন পাসেরও পথ উঠেছে খাড়া চড়াই বেয়ে ডাকসুম থেকে। শ্রীনগর থেকে আচ্ছাবল, কোকরনাগ ও ডাকসুম বেড়িয়ে নেওয়া যায় JKTC-র প্যাকেজ ট্যুরে।

অনন্তনাগ থেকে ১০ কিমি এসে বাস দাঁড়ায় ভাবন-এ। ভাবন থেকেই মার্ভও মন্দিরের হাঁটা পথের শুরু। আবার আচ্ছাবল থেকেও হাঁটা পথ এসেছে ১১ কিমি দূরের মার্ভও মন্দিরে। ভাবনেও মন্দির আছে, আর আছে কুণ্ড, মন্দির লাগোয়া। এই কুণ্ডের জলে স্নান করে শ্রদ্ধাদি করে থাকেন স্থানীয়রা। বাস রাস্তা থেকে পায়ে হাঁটা পাহাড়ী পথে ৩ কিমি গিয়ে মার্ভও মন্দির। পূজা হয় সূর্যসেবের। ইতিহাস বলে দু'হাজার বছরের প্রাচীন মন্দির (৬৭×৪৩ মি) এটি।

মহারাজা ললিতাদিত্য (৬৯৯-৭৩৬) সংস্কার করেন মন্দিরের। তবে আজ বিধ্বস্ত। চূড়োও ছিল অতীতে ৭৫ ফুটের। ৮৪টি স্তম্ভে ঘেরা চত্বর।

পথ পরিক্রমা সাজ করে ভাবন থেকে ৩৩ কিমি দূরে বাসের চলা শেষ ফার-এ ছাওয়া ভূয়ারাচ্ছাদিত ১২টি শৈলশিখরে ঘেরা ছোট পাহাড়ী শহর পহেলগাঁও-এ। অপরূপা পহেলগাঁও রূপে অতুলনীয়। পহেলগাঁও অর্থাৎ পয়লা গাঁও। জোজিলা পাস পেরিয়ে লাডাক হয়ে অমরনাথ দিয়ে কাশ্মীর আসার পথে পয়লা গাঁও পড়ে এই পহেলগাঁও। কোলাহাই গ্রেসিয়ার থেকে ইস্ট লিডার আর শেবনাগ ছাড়িয়ে হিমালয়ের অন্দরমহল থেকে আসা ওয়েস্ট লিডার দুই-এরই মিলন ঘটেছে পহেলগাঁও-এ। হেসে-খেলো নেচে-গেয়ে বড় বড় বান্ডারে থাকা খেয়ে কলকল ছলছল রবে পহেলগাঁও-এর সবুজ চিরে বয়ে চলেছে লিডার। লিডারের বুক বেয়ে পথ; আর পথের দু'পাশে দোকানপাট, বাড়ি-ঘর, হোটেল, মায় ট্যুরিস্ট অফিস নিয়ে গড়ে উঠেছে পহেলগাঁও শহর। ব্যান্ডের শাখাও বসেছে পহেলগাঁও-এ। বরফে মোড়া শৃঙ্গগুলি দূর থেকে হাতছানি দেয় পর্যটকদের। সারা বছরই এরা বরফে ছাওয়া। পহেলগাঁও-এর প্রাকৃতিক সৌন্দর্যের তুলনা হয় না। কাশ্মীর ভ্রমণার্থীদের কাছে পহেলগাঁও শহরের আকর্ষণ অনস্বীকার্য। একটা রাত পহেলগাঁও কাটিয়ে যাওয়া একান্তই উচিত হবে ভ্রমণার্থীদের। পহেলগাঁও-এর আর এক আকর্ষণ—ট্রাউট মৎস্য শিকার। আগ্রহীরা ৫০ টাকায় অনুমতি +২০ টাকা ভাড়াই হইল+২০ টাকায় গাইড নিয়ে ট্রাউট শিকারে বসে পড়তে পারেন। তেমনই আছে ৯ পয়েন্টের গলফ কোর্স পহেলগাঁও-এ।

লিডার পেরিয়ে ১১ কিমি দূরে ১২ শতকেরও আগে রাজা জয় সিংহের পাথরে তৈরি মমলেশ্বর—শিবের মন্দির। লাগোয়া প্রকৃতিদত্ত বর্ণাকার কুণ্ড ছাড়াও বাগিচা সহ চার পয়েন্ট বেড়িয়ে নেওয়া যায় ঘোড়ায় বা পায়ে পায়ে ঘণ্টা দুয়েকে। মন্দির থেকে শহরের দৃশ্যও সুন্দর দৃশ্যমান। বেড়িয়ে ফেরা যায় আকুও ঘোড়ায় বা পায়ে পায়ে দিনে-দিনে। তেমনই পায়ে হাঁটা পথ গিয়েছে হিমালয়ের দিকে দিকে পহেলগাঁও থেকে। অমরনাথ যাত্রার ছড়ি মিছিলেরও যাত্রা শুরু এই পহেলগাঁও থেকেই।

শহর থেকে ৫ কিমি দূরে আরও ১৫০মি উঁচুতে ভূগাচ্ছাদিত সুন্দর প্রকৃতির বৈশ্রণ। পাইনে ছাওয়া, বরফাচ্ছাদিত শিখররাজি প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে। পহেলগাঁও তথা লিডার ভালির দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান বৈশ্রণ থেকে। পায়ে পায়ে বা ট্রাউটে বেড়িয়ে নেওয়া যায়।

এপথে আরও ১১ কিমি যেতে ৩৩৫০ মি উঁচুতে তুলিয়ান লেক। যেমন সুন্দর চ্যার পথ তেমনই সুন্দর এর প্রকৃতি। চারপাশ ঘিরে বরফে মোড়া শিখররাজি। লেকের জলে বরফ ভাসে। দিনে দিনে ট্রাউটে অভিযান করে ফেরাও যায় বৈশ্রণ ও তুলিয়ান লেক।



বাস স্ট্যান্ড লাগোয়া রিসেপশন সেন্টার, দুই-ই থেকে ৫-১০ মিনিটের পায়ে হাঁটা দূরত্বে হোটেলগুলি Pahalgao-192126-এ। রিসেপশন সেন্টারের ডায়নে—Pahalgao L, Mount View H, Khalsa Janta H, *Pahalgao H, Central H, Volga H, *H Woodstock, H Regal, H Plaza, H Woodland, সুন্দর পরিবেশ ও সুব্যবস্থার জন্য যথেষ্ট খ্যাতি Aksa L.

রিসেপশন সেন্টারের বামে—River View H, Grand View, H Raj, Regent H, H Tajmahal, Hill View H, H Noormahal. বাসস্ট্যান্ডের বিপরীতে—Green Land H, H New India, Prince H, Apsara H.

আর আছে—H Hill Park, H Heaven, H Mansion, Nataraj H, Pine View H, Volga H, H Ornate Hill Park, H Windsor, Brown Palace, Oswal Huts, Uttam L, Poornima Gujarati H, New Pine View H, *H Senator Pine-N-Peak, Arun Rd: অগ্রিম বুকিং-এর জন্য ম্যানেজারদের লিখুন।

এছাড়া JKTDC-র ট্যুরিস্ট বাংলোর ট্যুরিস্ট হাট, আবার মরসুমে তাঁবুরও ব্যবস্থা মেলে এসে। ৬০ দিন আগে থেকে বুকিং শুরু। অব্: Director of Tourism, Govt of J & K, Sreenagar। এসেই শিরে Yoga Niketan-এও তাঁবু মেলে হঠযোগ শিক্ষার্থীদের। আর হয়েছে Kolahai Kobin দুই নদীর মাঝে পহেলগাঁও-এ। আহার্যে Lasha Restaurant, Khalsa, Janata, Kolahai ও Tabela-র যথেষ্ট সুনাম পহেলগাঁও-এ।

কোলাহাই হিমবাহ: পহেলগাঁও-এর উত্তরে পুল পেরিয়ে লিডারকে বাঁয়ে রেখে পথ গিয়েছে কোলাহাইয়ের। দূরত্ব ৩৬ কিমি, যাতায়াতে ৪ দিন লাগে কোলাহাই। পহেলগাঁও থেকে যাত্রা করে ১ম রাত আরুতে বিশ্রাম। ২য় দিনে আরু থেকে লিডারওয়াট পৌঁছে অবস্থান। ৩য় দিনে লিডারওয়াট থেকে হিমবাহ দেখে লিডারওয়াটেই অবস্থান। ৪র্থ দিনে পহেলগাঁও। ঘোড়াও আছে এপথে। ঘোড়ায় ৩ দিনে ফেরা যায় হিমবাহ দেখে পহেলগাঁও-এ।

পহেলগাঁও থেকে ১১.৬ কিমি দূরে ২৯৬০ মি উঁচুতে কোলাহাই-এর পথে আরু। পাহাড়ি গাঁ, গুর্জরদের বাস; প্রাকৃতিক শোভা মনোরম। আরুর কাছেই লিডার নদী অদৃশ্য হয়ে আবার ৩০ গজ দূরে গুরুখাষেতে দশামান হয়েছে। আরুতে সবুজের সমারোহ আর বরফে মোড়া পাহাড় দেখে ফেরা যেতে পারে পায়ে পায়ে বা ঘোড়ায় দিনে দিনে পহেলগাঁও-এ। গাড়িও চলে লিডার নদীর পাড় ধরে এ-পথে। থাকার জন্য Fimi H, Green View GH, Tourist Hut ও PWD RH আছে আরুতে। বৃকে বল আর পায়ে ভর থাকলে আরু থেকে আরও ১১.৩ কিমি এগিয়ে ৩০৪৮ মি উঁচু লিডারওয়াট পৌঁছে যান। তবে চড়াইয়ের আধিক্য আছে এ পথ দিয়ে। সবুজ কাপেটে মোড়া লিডারওয়াট—চক্রাকারে বাহ গড়েছে পাহাড়পেণী। PWD RH ও Paradise GH আছে লিডারওয়াটে।

লিডারওয়াট থেকে ১৩ কিমি দূরে ৩৩৫২ মি উঁচুতে

দুই পাহাড়ের মাঝে কোলাহাই হিমবাহ। হাফা বেগুনি আভা বিচ্ছুরিত হচ্ছে। লিডার নদীর উৎসও এই হিমবাহ। কোলাহাই-এর নৈসর্গিক সৌন্দর্য অতুলনীয়। পথশোভাও নয়নাভিরাম। তবে, হিমবাহ দেখে লিডারওয়াট ফেরা কষ্টকর। কোলাহাই-এ থাকতে হলে সঙ্গে তাঁবু নিতে হয়। ঘোড়াও নেওয়া যেতে পারে কোলাহাই যাতায়াতে লিডারওয়াট থেকে। আবার অত্যাশাহীরা লিডারওয়াট থেকে ১৬.৪ কিমি দূরে বরফে মোড়া পাহাড়ে ঘেরা ৩৯৬২ মি উঁচুতে ১.৬x০.৮ কিমি ব্যাপ্ত প্রকৃতিদণ্ড তারসর লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন। অতুলনীয় এর প্রকৃতি। পথপাশে বন্যফুলের সমারোহও দেখবার মতো। ২৪৩ মি উঁচু শেলশিরা পেরিয়ে আর এক লেক মারসর। বন্যজন্তু দর্শনে অত্যাশাহীরা শিকারগড় ওয়াইল্ডলাইফ রিজার্ভ, ট্রাউট শিকারে কোলাহাইয়ের ৭ কিমি দূরে ফিরিলাসানও পৌঁছে যেতে পারেন।

আবার অভিযানপ্রিয়রা লিডারওয়াট থেকে পহেলগাঁও না ফিরে লিডারওয়াট থেকেই ১০ কিমি দূরে ৩৪৩০ মি উঁচু শেকিবাস পৌঁছে যান ট্রেক করে, শেকিবাস থেকে ১১ কিমি দূরে ৩৬৫৯ মি উঁচু খেমসার পৌছান দ্বিতীয় দিনে, তৃতীয় দিনে খেমসার থেকে আরও ১০ কিমি গিয়ে ২৬২৬ মি উঁচু কুলান পৌছান। চতুর্থ দিনে কুলান থেকে বাসে বা পায়ে পায়ে ১৬ কিমি দূরের শোনমার্গ অর্থাৎ সিদ্ধ উপত্যকার পৌঁছে যান। তবে এ পথ পরিক্রমায় সঙ্গে তাঁবু থাকা দরকার।

অমরনাথ

পহেলগাঁও থেকে ৪৮ কিমি দূরে ৩৮৮০ মি উঁচুতে পবিত্র হিন্দুতীর্থ অমরনাথ গুহা। দেবাদিদেব মহাদেবের ত্রিশূলে পাহাড় কুঁদে তৈরি। দৈর্ঘ্যে ১৬, প্রস্থে ১৫ আর উচ্চতায় ১১ মি। গুহার ডাইনে প্রায় শেষ প্রান্তে দেবতা—বরফে তৈরি শিবলিঙ্গ। সারাবছর ধরে পাহাড়ী ফাটল চুইয়ে জল পড়ে পড়ে বরফ জমে রূপ নেয় শিবলিঙ্গের। কখনো কখনো ৮ ফুট উঁচু হয় এই লিঙ্গ মূর্তি। সুকঠিন, উজ্জ্বল বরফের লিঙ্গমূর্তি—রঙ তার ঈষৎ নীলাভ। এছাড়াও রূপ নেয় আরও দুই মূর্তি—শিবঠাকুরের নামে মহাগণেশ আর ডাইনে দেবী পার্বতী। সবাই এখানে বরফে তৈরি। আর আছে ২টি গুকপাখি অমরনাথ গুহায়। যুগ যুগ ধরে নাকি অবস্থান করছে এরা। গুহায় বসে পার্বতীকে শিবের সৃষ্টিকারিণী ভাষা অমরন্থের বাণী বলার একমাত্র সাক্ষীও নাকি এই গুকপাখি দুই দেব-অনুচর। শিবের শাপে গোলকধামের লীলাশুক রূপান্তর।

প্রবাদ, তক্ষকের কালে সত্যযুগে মহর্ষি ভৃগু সর্বপ্রথম এই তুষারলিঙ্গের দর্শন পান। সেই ভৃগুই তক্ষকে পাঠান অমরনাথ দর্শনে—সঙ্গে একটি দণ্ড দিয়ে। দণ্ড থাকলে বিপদ এড়ানো যাবে পক্ষে। দণ্ড যাচ্ছে আজও অমরনাথে প্রতি শ্রাবণী (জুলাই-আগস্ট) পূর্ণিমা—নাম তার ছড়ি

মিছিল। নামে ছড়ি হলেও আসলে এটি রৌপ্যদণ্ড। পহেলগাঁও থেকে যাত্রা শুরু হয় এই ছড়ি মিছিলের শ্রাবণ মাসের শুক্লা পক্ষের দ্বাদশী তিথিতে। কান্দীরের ধর্মার্থ সঙ্ঘের মোহান্ত নেতৃত্ব দেন এই মিছিল যাত্রার। পিছে চলে হাজার হাজার তীর্থযাত্রীর মানব মিছিল সারা ভারত থেকে। জাতি ধর্মের বিধিনিষেধ নেই অমরনাথজী দর্শনে। জগৎগুরু শঙ্করাচার্য প্রবর্তন করেন অমরনাথ তীর্থযাত্রা। আর তৃতীয় দফায় আবিষ্কৃত হন অক্রোমবাট মন্দির নামে এক মুসলিম মেসপালকের চোখে দেবতা অমরনাথজী।

শ্রাবণী পূর্ণিমার বর্ণাঢ্য ছড়ি মিছিলে ১০ থেকে ২৫ হাজার যাত্রীর সমাগম ঘটলেও যাত্রী চলেন গুরু পূর্ণিমা (আষাঢ়/জুন-জুলাই) থেকে শ্রাবণী পূর্ণিমা অর্থাৎ দীর্ঘ ১ মাস ধরে অমরনাথে। সরাসরি বাসও চলে এই এক মাস জন্ম থেকে বানিহাল/খানাবল হয়ে পহেলগাঁও-এর। পথের দূরত্ব ২৯১ কিমি, সময় নেয় ১০-১২ ঘণ্টা। সরাসরি বাসের অমিলে জন্ম থেকে শ্রীনগরের বাসে খানাবল পৌঁছে শ্রীনগর থেকে আসা বাসে চলা যেতে পারে পহেলগাঁও। মাঝ পথে গুঠানামার ধকল থেকে অব্যাহতি পেতে শ্রীনগর হয়ে চলাই উচিত হবে। শ্রীনগর থেকে খানাবল হয়ে দূরত্ব ৯৪ কিমি, ৩ ঘণ্টার পথ পহেলগাঁও-এর।

পহেলগাঁও থেকে অমরনাথ চলার পথে ২ রাত চন্দন-বাড়ি, শেখনাগ, পঞ্চতরঙ্গী আর ফেরার পথে ২ রাত পঞ্চ-তরঙ্গী ও শেখনাগে অবস্থান। তবে, পঞ্চতরঙ্গী থেকে রওনা হয়ে অমরনাথ দর্শন সেরে শেখনাগে রাতের বিশ্রাম নিয়ে পরদিন পহেলগাঁও পৌঁছে খাওয়াও অসম্ভব নয়। PWD-র সাধারণ মানের বিশ্রামগৃহ আছে—চন্দনবাড়ি, যোজীপাল, বায়ুমান, শেখনাগ ও পঞ্চতরঙ্গীতে। আর বসে অমরনাথ যাত্রীদের জন্য সাময়িক যাত্রী কলোনি। কয়েক হাজার তাঁবু পড়ে। সরকারি ব্যবস্থায় পারমিট প্রথায় রেশন অর্থাৎ চাল, ডাল, তেল থেকে শুরু করে রান্নার কাঠ পর্যন্ত মেলে। সঙ্গে যারা তাঁবু নেন তাঁদের তাঁবু ফেলার জমিনও মেলে। কুলিরাই সহকারীর মুখ্য ভূমিকা নেয় এ-ব্যাপারে। বিজলী বাতিরও ব্যবস্থা হয় এই একমাস প্রতিটি যাত্রী কলোনিতে। আর থাকে সারাপথে রাজ্য সরকার থেকে Medical Assistant, Guide, J K Police—যাত্রী সেবায় সদাই ব্যস্ত এরা।

আবার প্রাইভেট মালিকানায় তাঁবুতে থাকা ও খাবারের ব্যবস্থাও গড়ে ওঠে গুরু পূর্ণিমা থেকে শ্রাবণী পূর্ণিমা এই একমাস প্রতিটি যাত্রী কলোনিতে। নেয়ারের খাটিয়া, বিছানাও মেলে এদের তাঁবুতে। চন্দনবাড়ি/শেখনাগ/পঞ্চতরঙ্গী প্রতিটি বিশ্রামক্ষেত্রেই মেলে এ-ব্যবস্থা। খাটিয়া-বিছানাসহ থাকা-খাওয়া ২৭৫, মেঝেতে বিছানাসহ থাকা-খাওয়া ২২৫, বিছানা ছাড়া থাকা-খাওয়া ১৭৫ আর তাঁবুর মেঝেতে কেবল থাকা ১২৫ প্রতি রাত প্রতি জন। বিছানাও ভাড়া মেলে এদের কাছে পৃথকভাবে। সরকার অনুমোদিত নানান প্রাইভেট সংস্থা থেকে এ ব্যবস্থা গড়ে ওঠে। উচিত

হবে চলার পথে পহেলগাঁও থেকে বুক করে চলা। সরাসরি যোগাযোগও করা যেতে পারে: Indian Camping Agency, Amarnath Travel, Dhwar Camping—Pahalgaon, J&K, PC-192126-এ।

মিছিল চলে পায়ে পায়ে। যারা নিজের পায়ে ভরসা পান না, তাঁদের জন্য রয়েছে ঘোড়া/ভাণ্ডি/কাশি। তবে নিজের উপর ভরসা থাকলে ধীরে ধীরে পায়ে চলাই শ্রেয়। আর মেলে মাল বহনের কুলি ও খচ্চর। অপ্রয়োজনীয় জিনিস সরকারি ব্যবস্থায় রাখারও ব্যবস্থা মেলে পহেলগাঁও-এ। সবেবই ব্যবস্থা Assistant Director—Tourism, Pahalgaon-192126 থেকে মেলে। ৫০% টাকা MO বা Bank Draft-এ অগ্রিম পাঠিয়ে বুকিং-এর প্রথা। আবার ব্যক্তিগত মালিকানা থেকেও সঙ্গী করা যায় ঘোড়া/কুলি/ভাণ্ডি বা কাশি। ক্ষেত্রবিশেষে দামে কিছুটা সুবিধা মিললেও সরকারি ব্যবস্থায় স্বস্তি যেন বেশি।

দ্বাদশীর দিন ভোর ৪টায় ছড়ি মিছিলের যাত্রা শুরু পহেলগাঁও থেকে। যাতায়াতে (৪৮+৪৮) ৯৬ কিমি পায়ে হাঁটা পথ। আবার পহেলগাঁও থেকে শেখনাগ/পঞ্চতরঙ্গী হয়ে গিয়ে সঙ্গম থেকে রান্না/বালতাল পথে ফিরে ৩৫ কিমি লাঘব করা যায় হাঁটা। সরাসরি বাসও মেলে গুরু-পূর্ণিমা থেকে শ্রাবণী পূর্ণিমার এক মাস ধরে বালতাল থেকে শ্রীনগরের।

ছড়ি যাত্রা অর্থাৎ মিছিল চলে এগিয়ে। ছড়ি যেতে পিছে চলে সাধুসন্তের দল। নাগাসন্ন্যাসীরাও অংশ নেয় মিছিলে। তারপর তীর্থযাত্রীরা, পর্যটকরা, দুপুর গড়িয়ে বিকেল পর্যন্ত। ১ম দিনের চলায় বিরতি ১৬ কিমি গিয়ে চন্দনবাড়িতে। গাড়ি চলার উপযোগী এই পথ। সরকারি গাড়ি চলাচলও করে চন্দনবাড়ি পর্যন্ত। ২৮৯৫ মি উঁচু চন্দনবাড়িতে স্থায়ী দোকানপাট আছে। সাময়িক দোকানপাটও বসে—চা থেকে ভাতের হোটেল পর্যন্ত।

| অমরনাথ যাত্রার আনুমানিক খরচ | |
|---|-----------|
| ঘোড়া | ২২৫০ |
| মাল বহনের খচ্চর (৬০ কেজি) | ১৫০০ |
| কুলি (৩০ কেজি) | ৯০০ |
| ভাণ্ডি | ৫০০০-৬৫০০ |
| কাশি | ১২০০ |
| তাঁবুতে অবস্থান প্রতিজন | ৪৫০ |
| বিছানাও ভাড়া মেলে প্রতিটি বিশ্রামক্ষেত্র: | |
| পহেলগাঁও, চন্দনবাড়ি, শেখনাগ, পঞ্চতরঙ্গীতে। | |
| পৃথকভাবে তাঁবুও ভাড়া মেলে এদের কাছে। | |
| পহেলগাঁও থেকে দূরত্ব | ৪৮ কিমি |
| শ্রীনগর থেকে দূরত্ব | ১৪২ কিমি |
| জন্ম থেকে দূরত্ব | ৩৩৯ কিমি |

২য় দিনে চলার পথ ১৩ কিমি, তবে খুবই বন্ধুর এপথ। চন্দনবাড়ি থেকে ৩ কিমি যেতে পিসু চড়াই। ইয়েরজি ২

হরফের মতো পথ উঠেছে। ঘোড়াও অক্ষম হয়ে পড়ে যাত্রী নিয়ে চড়াই উঠতে। পিচ্ছলও এই প্রাণাঙ্কুর চড়াই পথ। তাই হাতের লাঠিতে ভর রেখে ধীরে ধীরে এগিয়ে চলাই উচিত হবে। পুরাণ বলে, দেবতার উপর থেকে পাথর গড়িয়ে নিচুতে দৈত্যদের পিষে ফেলত। নামও তাই এর পিসু। চড়াই বেয়ে ১২০০০ ফুট উঁচু পিসু টপে সামান্য বিশ্রাম। যাত্রী সেবারও ব্যবস্থা হয় পিসু টপে। আরও ৯ কিমি গিয়ে শেবনাগ।

শেবনাগ হ্রদের পাড়েই গড়ে ওঠে যাত্রী কলোনি। ৩৭১৮ মি উঁচু শেবনাগে ২য় রাতের বিশ্রাম। হ্রদটি আকারে ছোট, জলের রঙ পাল্লা সবুজ। প্রবাদ, সুশ্রবসনাগ এটি খনন করান। সেই থেকে হ্রদের জলে বাসও করছেন তিনি। চারপাশের তুষারাচ্ছাদিত চূড়োগুলি পরিবেশকে আরও রমণীয় করে তুলেছে। আবার বায়ুযানের বিশ্রামগৃহে বা কিছু আগে যোজীপালেও কেউ কেউ চলার উপর বিরতি টানেন ২য় দিনের।

৩য় দিনে ৪ কিমি গিয়ে মহাশুগাস—উচ্চতা ৪৭১৮ মি। ১ কিমি যেতে ওয়াবয়ান অর্থাৎ বায়ুযান। বাতাসের তাণ্ডব বেশি, তেমনই আছে শীতের প্রকোপ। সারাবছরই বরফে ঢাকা থাকে ওয়াবয়ান। খাসকষ্টও দেখা দেয় যাত্রীবিশেষে। এই বায়ুযানেই ১৯২৮ খ্রিস্টাব্দে প্রাকৃতিক বিপর্যয়ে পড়ে সেবারের ছড়ি মিছিল। তুষারঝঞ্ঝা প্রাণ হারায় সেবারের হাজার হাজার তীর্থযাত্রী। দিন বদলেছে—সাবধানতা আজ পদে পদে। তবুও বিপর্যয় ঘটে নিত্যনতুন নানান। ১৯৯৬-এর প্রকৃতির রোষে আবার ব্যাপক ক্ষয়-খতির সঙ্গে জীবনহানি ঘটেছে বিপুলহারে। তাই নানান বিধিনিষেধ আরোপ হতে চলেছে অমরনাথ যাত্রায়।

মহাশুগাস পাস পেরুতেই উৎরাই শুরু। ৩য় দিনের যাত্রা বিরতি আরও ৮ কিমি গিয়ে ৩৬৫৭ মিটারে নেমে পঞ্চতরঙ্গী। এটি পাহাড়ী নদী মিলেছে—নামও তাই পঞ্চতরঙ্গী। এরই পাড়ে গড়ে ওঠে যাত্রী কলোনি। স্থায়ী বিশ্রামগৃহও আছে পঞ্চতরঙ্গীতে।

৪র্থ দিনভোর ৪-০০টায় পায়ের হাঁট, ৬-০০টায় ঘোড়া আর ৭-০০টায় ডাণ্ডি ও কাণ্ডির যাত্রা শুরু। প্রথমে চড়াই উঠে ৩ কিমি দূরের সাধোস্ত টপ পৌঁছে উৎরাই হয়েছে পথ। আরও ৩.৪ কিমি যেতে ৩৮৮০ মি (১৩৫০০ ফুট) উঁচুতে পবিত্র অমরনাথ গুহায় পথের শেষ। নিচু দিয়ে বয়ে চলেছে অমরাবতী নদী, গিয়ে মিলেছে অমরগঙ্গায়। চারপাশে বরফের প্রাচীর। জল তার বরফ ঠাণ্ডা। নান করেন বহু যাত্রী অমরাবতীর পবিত্র জলে। তবে অমরাবতীর জল মাথাখ নিষেধও চলা যেতে পারে দেব দর্শনে। সার্থক পথ-শ্রম, দূর হয় পথের ক্লান্তি অমরনাথ দর্শনে। এবার ঘরে ফেরার পালা। ফেরার পথেও পঞ্চতরঙ্গী/শেবনাগ/চন্দন-বাড়িতে পথ চলায় বিরতি টানা যেতে পারে। তিথিভেদে সময়ের হেরফের হওয়া অস্বাভাবিক নয়। শোনা যায় স্থায়ী

বিবেকানন্দ ইচ্ছামত্ভার বর পেয়েছিলেন এই অমরনাথে।

যাঁরা সরকারি ব্যবস্থা ছাড়াই অমরনাথ যেতে চান তাঁদের জন্য জুন থেকে সেপ্টেম্বর খোলা থাকে এ পথ। সেক্ষেত্রে ১ম রাত শেবনাগ, ২য় দিনে শেবনাগ থেকে গিয়ে অমরনাথ দর্শন করে পঞ্চতরঙ্গীতে বিশ্রাম, ৩য় দিনে পঞ্চতরঙ্গী থেকে পাহেলগাঁও অর্থাৎ ৩ দিনে সাক্ষ্য করা যেতে পারে এ সফর। পথ দুর্গম, বিপদসঙ্কুলও বটে। সহায়ক ছাড়া যাওয়াও যুক্তিযুক্ত নয়। তবে এ পথের নয়নলোভন নৈসর্গিক শোভা হাতছানি দেয় প্রকৃতি-প্রেমিকদের। পায়ের নিচুতে বরফ, দু'পাশে বরফে ছাওয়া পাহাড়শ্রেণী; সারা ভুবনটাই যেন বরফে মোড়া এ পথে।

এছাড়া বিকল্প পথও এসেছে শ্রীনগর থেকে ৮৪ কিমি দূরের শোনমার্গ হয়ে অমরনাথে। শোনমার্গ থেকে লাডাক-মুখী ১৩ কিমি উত্তরে জোজি লা (Zoji La)-র পাদদেশে উপত্যকার সর্বশেষ গ্রাম ২৭৪৩ মি উঁচু বালতাল হয়ে যেতে হয়। বাসপথ থাকলেও যাত্রীবাস শোনমার্গেই শেষ। রিজার্ভ বাস বা ট্যাক্সিতে যাওয়া চলে শ্রীনগর থেকে শোনমার্গ/রাস্তা/বালতাল হয়ে আরও ২ কিমি এগিয়ে গিরিমার্গ-এ। আবার লাডাকের বাসে রাস্তায় নেমেও ৩১ কিমি পায়ের বা ট্রাকে চলা যেতে পারে বালতাল।

তবে, প্রাইভেট বাস চলে শ্রীনগর থেকে বালতাল গুরুপুর্ণিমা থেকে শ্রাবণী পূর্ণিমায়। এমনকি ভোর রাতে শ্রীনগর থেকে রওনা হয়ে অমরনাথ দর্শন করে সে-রাতেই শ্রীনগর ফেরাও অসম্ভব নয় এপথে। তবে, উচিত হবে শোনমার্গ বেড়িয়ে বালতাল/গিরিমার্গে রাত কাটিয়ে পরদিন অমরনাথজী দর্শন করে শ্রীনগর ফেরা। এপথে যাতায়াতে ৪ জনের ট্যাক্সি ৮০০-৮৫০, মিনিবাস ১০০০-১২০০। আর ঘোড়ায় বালতাল থেকে অমরনাথ দেখে বালতাল ফেরায় ভাড়া ৩৫০।

এছাড়া লালাজীর অমরনাথ যাত্রা নিখরচায় গাড়িরও ব্যবস্থা করে শোনমার্গ থেকে গিরিমার্গ যাতায়াতের। আয়োজনে ছোট হলেও গুরুপুর্ণিমা থেকে শ্রাবণী পূর্ণিমায় লালাজী বাবার সাময়িক লঙ্গরখানা ও যাত্রী কলোনি গড়ে ওঠে গিরিমার্গ ও সঙ্গমে। নিখরচায় থাকা ও আহাৰ্য মেলে। আর বসে JKTDC-র তাঁবুর কলোনি নাস্তা পর্বতের পাদদেশে বালতালে।

বালতাল থেকে ১৩ আর গিরিমার্গ থেকে ১১ কিমি দূরে পবিত্র গুহা অমরনাথ। গুহার ৪ কিমি আগেই সঙ্গমে মিলেছে গিয়ে পাহেলগাঁও-এর পথে এপথ। কুলু কুলু তানে বয়ে চলেছে পাহাড়ী নদী। অমরগঙ্গার কাঁধে ভর দিয়ে সঙ্কীর্ণ পথ, ন্যাড়া পাহাড়—পদে পদে পাথর গড়িয়ে পড়বার আশঙ্কা, চড়াই-এরও আধিক্য, গভীর শাদ পথপাশে। নৈসর্গিক শোভারও ঘাটতি ঘটে এপথে। তবে সময়ের সাক্ষ্য ঘটায় এপথও আজ যথেষ্ট গুরুত্ব পাচ্ছে তীর্থযাত্রী মহলে।

উলার

কনডাক্টেড ট্রায়ের বাস সকাল ৮-০০ টায় গিয়ে উলার লেক বেড়িয়ে আরও নানান জায়গা দেখিয়ে ১৩৭ কিমি পথ পরিক্রমা সেয়ে সন্ধ্যায় ফেরে শহরে। এ-পরিক্রমায় বাস প্রথমেই এসে দাঁড়ায় ১৫ মিনিটের জন্য শ্রীনগর থেকে ২৭ কিমি দূরের পাট্টান-এ। ৯ শতকের রাজা শঙ্কর বর্মা প্রতিষ্ঠিত ২টি বিধ্বস্ত মন্দির রয়েছে পাট্টানে—একটি শিবের, দ্বিতীয়টি সরস্বতীর। রাজধানীও ছিল তাঁর পাট্টান অর্থাৎ সেকালের শঙ্করপুরে। রাজার নামেই নাম। তবে সে আজ বিস্মৃত।

বাস পৌছায় বিতস্তার পাড় ধরে পাইন, ফার আর পপলারের ছায়া ঘেরা পথে উলার লেকে। শ্রীনগর থেকে ৫১ কিমি দূরে ভারতে মিষ্টি জলের বৃহত্তম লেক ১৯ কিমি দীর্ঘ ১০ কিমি প্রশস্ত ১৫৮০ মি উঁচুতে উলার। জলের গভীরতা ৩০ ফুট। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা, পরিবেশ মনোরম।

লেকের পশ্চিম পাড়ে বাবা শুকরদিন পাহাড়ের চূড়ো থেকে উলারের দৃশ্য সুন্দর দেখায়। পাহাড়ের নিচুতে হয়েছে ওয়াটলব বাংলা, থাকার ঘর মেলে। লেকের জলে বোটিং-এরও ব্যবস্থা আছে। তবে বিকালের দিকে বৃষ্টি ও ঝড় নিত্য সঙ্গী উলারে। তাই, বোটিং না করাই শ্রেয় বিকালে। উলারের পদ্মও পরিবেশকে মধুময় করে তোলে। লেকের পাড়ে পাড়ে নানান বসতি। বাকিপুর নালার মুখে দ্বীপটিও সুন্দর। অতীতের কাশ্মীররাজ জৈন-উল-আবেদিনের প্রাসাদটি আজ বিধ্বস্ত। ভেরিনাগের কুণ্ড থেকে বেরিয়ে শ্রীনগর শহরের উপর দিয়ে বয়ে গিয়ে বাকিপুরের কাছে বিলাম মিলেছে উলারের সঙ্গে আবার দক্ষিণে সোপুয়ে উলার থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে বারমুলার দিকে বয়ে চলেছে বিলাম। সোপুয়ের ৫ কিমি দূরে নিসেল নালা। বোটিং-এর ব্যবস্থা মেলে লেকের জলে। এমনকি সোপুয়ের কাছে সংগ্রাম হয়ে অতীতের রাওয়ালপিণ্ডি-শ্রীনগর সড়ক গিয়েছে। বাস আধ ঘণ্টা দাঁড়ায় উলারে।

উলার দেখার পর বিলাম উপত্যকার মানসবল লেককে গ্রামবালার পুকুর মনে হবে। লম্বায় মাইল খানেক আর চওড়ায় তার আধা। এক ছোট্ট পাহাড়ের পাদদেশে, শ্রীনগর থেকে ২৯ কিমি দূরে ১৫৬০ মি উঁচুতে এই লেক। লেকের জল গাঢ় নীল। শাজাহানের কন্যা রোশেনারার খুবই প্রিয় ছিল মানসবল। লেকের উত্তরে রোশেনারার তৈরি দারোগাবাগ কবরস্থার ধ্বংসাবশেষ আজও অতীত রোমন্থন করায়। গ্রীষ্মে পদ্মের মেলা বসে লেকের জলে। আর শীতে বসে পাখির মেলা মানসবলে। ১৫ মিনিট সময় দেয় মানসবল দেখে নিতে কনডাক্টেড ট্রায়ের বাস।

পুরাণ বলে, সতীর ৫১ গীঠের এক পাঠ কাশ্মীরে। আর সে এই তুমামুন্না গ্রামের জম্ভতা দেবী ক্ষীর ভবানী। পুরাণের

মতে, সীতা হরণের পর রাবণের আরাধ্যা দেবী পার্বতী লঙ্কা ছেড়ে চলে আসেন ক্ষীরভবানীতে। পাণ্ডারা বলেন, তাঁদের পূর্বপুরুষদের কাছে এক নারী এসে আহার্য ভিক্ষা মাগেন। ভিক্ষারী নারায়ণ তুল্য। গন্ধরূ দুধ ক্ষীর করে দেন নারীকে। সেই নারীই নাকি পার্বতী। চিনার আর আমলকী গাছে ছাওয়া ছোট্ট দ্বীপে গড়ে উঠেছে মন্দির। মন্দিরটিও ছোট, মার্বেল পাথরে তৈরি। মন্দিরের চূড়ো সোনার পাতে মোড়া। মন্দিরের সামনে একটি সপ্তকোনি কুণ্ড, অজস্র প্রস্রবণ, চারদিকে তার নালা—নাম ক্ষীরসাগর। কাঠের পাটাতন পেরিয়ে মূল মন্দিরে প্রবেশ।

শিব ও পার্বতী আরাধ্য দেবতা মন্দিরে। পার্বতী এখানে ভবানীরূপে পূজিতা। দেবীর মূর্তিটি কুণ্ডের জলে পাওয়া। আর মন্দিরটি মহারাজা প্রতাপ সিং-এর তৈরি। তীর্থযাত্রীরা কুণ্ডের জলে দুধ অর্ঘ্য দেন দেবীর উদ্দেশ্যে। ১৮৯৮ খ্রিস্টাব্দে পাশ্চাত্য থেকে ফিরে দেবী দর্শনে এসে স্বামী বিবেকানন্দ সেপ্টেম্বর ৩০ থেকে অক্টোবর ৬ এই মন্দিরে থেকে প্রতিদিন কুণ্ডে ২৩মণ দুধের পায়েরস ও বাদাম ভোগ নিবেদন করেন। কখনও কখনও কুণ্ডের জলের রঙেরও বদল ঘটে। পাশা পাশি মন্দির রয়েছে আরও বেশ কয়েকটি—দুর্গা, বুদ্ধ, মহাবীরের। থাকার জন্য ধরমশালা আছে ক্ষীর ভবানীতে। জ্যৈষ্ঠ মাসের শুক্লা অষ্টমীতে মেলা বসে। ১৫ মিনিট দাঁড়ায় কনডাক্টেড ট্রায়ের বাস। সার্ভিস বাসও যাকে শ্রীনগর থেকে, দূরত্ব ৪০ কিমি।

ক্ষীরভবানী থেকে শ্রীনগরের পথে ৫ কিমি যেতে লে সড়কের অদূরে শ্রীনগর থেকে ২১ কিমি দূরে সিদ্ধুতীরে ৫২০০ ফুট উঁচুতে গন্ধরবল। গন্ধরবল এক পাহাড়ী গ্রাম। সিদ্ধুভ্যালির সদর দপ্তর বসেছে। সিদ্ধু নদীও পাহাড় ছেড়ে উপত্যকায় নেমেছে গন্ধরবলে। এখানকার জল হজমির কাজ করে। তাই হাউসবোট নিয়ে স্বাস্থ্যসেবীর দল অবস্থান করেন গন্ধরবলে। গন্ধরবল থেকে সিদ্ধুভ্যালিও সুন্দর দৃশ্যমান। ১০ মিনিটের জন্য বাস দাঁড়ায়। জলপথে বিলাম হয়ে ঘন্টা ছয়কে বেড়িয়ে নেওয়া যায় গন্ধরবল।

হরমুখ পাহাড়ের নিচুতে ৫১৪৮ মি উঁচুতে গঙ্গাবল লেকটিও বেড়িয়ে নিতে পারেন অত্যাশ্চর্য। পবিত্র হিন্দু-তীর্থ। শ্রাবণ মাসে ১৯ কিমি পায়ের হেঁটে তীর্থযাত্রীরা আসেন গঙ্গাবলে। আমাদের গঙ্গাপ্রাপ্তির মতো কাশ্মীরি হিন্দুরা অহি বিসর্জন করে লেকের জলে। গন্ধরবল থেকে ওয়ানগট হয়ে পথ গিয়েছে। শোনমার্গ হয়েও পথ এসেছে বিসনসর ও কৃষ্ণসর লেক হয়ে গন্ধরবল ও গঙ্গাবলে। আবার ওয়ানগট থেকে ৮ কিমি পূর্বে নরেন নাগ প্রস্রবণের কাছে অতীতের হিন্দু মন্দিরের ধ্বংসাবশেষও দেখে নিতে পারেন উৎসাহীরা।

শোনমার্গ

শ্রীনগরের ৮১ কিমি উত্তর-পূর্বে ২৭৪০ মি উঁচুতে

শোনমার্গ। পুরো পথটাই খরসোতা দামাল নদ সিদ্ধুর বৃকে ভর রেখে ফার আর পাইন গাছের গা বাঁচিয়ে চলেছে একে-বৈকে। দূরে-দূরান্তরে পাহাড়শ্রেণী, পথশোভা মনোরম। পথের আকর্ষণেও বেড়িয়ে নেওয়া উচিত সিদ্ধুর এই উপত্যকা। পথ চলেছে আরও এগিয়ে শোনমার্গ হয়ে জোজি-লা পাস পেরিয়ে লাডাক ভূমে। অমরনাথের যাত্রীও যাচ্ছেন শোনমার্গ/রাসা/বালতাল/গিরিমার্গ হয়ে। চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা, সোনালী ঘাসে ঢাকা শোনমার্গ। প্রবাদ— উপত্যকার কোথাও এক কুপ আছে যার জলে সোনালী রঙ ধরে উপত্যকায়। নামও তাই শোনমার্গ অর্থাৎ সোনার বাগিচা। শোনমার্গের প্রকৃতি পর্যটকদের মুগ্ধ করে। জলবায়ুও স্বাস্থ্যপ্রদ। জওহরলাল নেহরুর অতি প্রিয় ছিল শোনমার্গ।

শোনমার্গ থেকে পায়ে পায়ে বা ঘোড়ায় চেপে দেখে নিন খাজিয়ার হিমবাহ। ৩ কিমি দক্ষিণে এই হিমবাহ। সিদ্ধু নামছে এই হিমবাহ থেকে। জন্ম যদিও তার আরও উত্তরে লাডাক ছাড়িয়ে তিব্বতে। বরফে মোড়া পুল দিয়ে সিদ্ধু পেরিয়ে পায়ে হেঁটে এগিয়ে চলুন হিমবাহে। পুল পেরুবে না ঘোড়া। এখানেই তার চলা শেষ। বড় বড় বোশ্ডারগুলি দেখে চলুন। প্রায়ই নড়ে চড়ে জায়গা বদল করে এরা। খাজিয়ারের হিমবাহ পর্যটকদের কাছে খুবই আকর্ষণীয়। জুন থেকে অক্টোবর মাসে চা-খাবারের দোকানও বসে হিমবাহের পথে নীলাকাশের নিচে।



থাকার জন্য J&KTDC-র Tented Colony, Tourist RH, Tourist Hut ও Tourist Bungalow আছে। আর হিমবাহের কাছে Alpine Hut আছে শোনমার্গে। FRH-ও আছে খাজিয়ারের পথে। International Himalaya Camp H, Sonamarg Glacier H ছাড়াও প্রাইভেট হোটেল আছে নানান। তবে, ভাড়ার তুলনায় ব্যবস্থাপনা সন্তোষজনক নয়। তাই টুরিস্ট রিসেপশন থেকে JKTDC-র হোটেলগুলি আগে থেকে বুক করে চলা উচিত হবে। শ্রীনগর থেকে কনডাকটেড ট্রারে বা নিয়মিত যাত্রীবাসেও দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায় শোনমার্গ।

শোনমার্গ থেকে ৬ কিমি দূরে বালটিকদের কলোনি নীলাগ্রাড-এ একটি পাহাড়ী নদী এসে সিদ্ধুতে মিলেছে। জলের রঙ রক্তিম। বালটিকদের ধারণা, নদীর জলে নানানরকম ব্যাধির উপশম ঘটে। প্রতি রবিবার সারা কলোনির লোকেরা আসে নদীর জলে স্নান করতে।

লেক হিমালয়ের দিকে দিকে—লেক রয়েছে শোন-

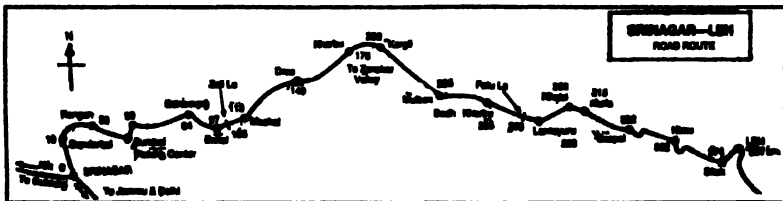
মার্গেও। শোনমার্গ থেকে নিচিনাই পাস হয়ে পথ গিয়েছে বিসনসর লেক-এর। নিচিনাই পাসের নদী পেরুতেই ৪০৮৪ মি উঁচুতে এই লেক। লেকের প্রাকৃতিক সৌন্দর্য নয়নাভিরা। এরই পাশে কৃষ্ণসর লেক। এর উচ্চতা ৩৮১০ মি। ট্রাউট মাছ আছে কৃষ্ণসরের জলে। একই দিনে খাজিয়ার আর কৃষ্ণসর বেড়িয়ে শ্রীনগরও ফেরা যেতে পারে।

ভূষর্গের নতুন আকর্ষণ অতীতের মৃগয়াভূমি— দহিগাঁও ওয়াইল্ডলাইফ স্যাক্চুরারি। শহর থেকে ২২ কিমি উত্তর-পূবে ১৬৯২ থেকে ৪২৮৯ মি উঁচুতে সুন্দর নৈসর্গিক শোভার মাঝে স্যাক্চুরারি। সর্পিলাকারে বয়ে চলেছে নদী। হরওয়ান বাসস্ট্যান্ড থেকে মিনিট পাঁচেকের পথে বন্যজন্তু সংগ্রহালয়ের প্রবেশদ্বার। লোকাল বাসস্ট্যান্ড থেকে ঘণ্টায় ঘণ্টায় বাস যাচ্ছে হরওয়ানে। এক ঘণ্টার পথ। তবে, রিসেপশন সেন্টার থেকে ওয়াইল্ডলাইফ ওয়ার্ডেনের অনুমতি লাগে স্যাক্চুরারি দর্শনে। ২০ টাকায় সহজেই লভ্য। প্যাথার, ব্র্যাক ও ব্রাউন-ভানুজ, হরিণ, হান্সুল অর্থাৎ কাম্বীরি স্ট্যাগ ও লাসুলদের বাস। জুন-জুলাই দর্শনের মনোরম সময়। রবিবার বন্ধ থাকে স্যাক্চুরারি। টিপসের বিনিময়ে গাইডও মেলে। থাকারও ব্যবস্থা মেলে ফরেস্ট রেস্ট হাউস-এ।

যুসমার্গ

সমগ্রাভাব না ঘটলে যুসমার্গও বেড়িয়ে নিন দিনে দিনে। সপ্তাহে ৩ দিন কনডাকটেড ট্রারে বাস যাচ্ছে যুসমার্গে। শ্রীনগর থেকে ৪৭ কিমি দক্ষিণ-পশ্চিমে ২৭০০ মি উঁচুতে পীরপাঞ্জাল পাহাড় ঢালে পাইন আর ফারে ছাওয়া সবুজে মোড়া এই উপত্যকা। সুন্দর পশুচারণ ক্ষেত্র। চড়ুই-ভাতিরও মনোরম পরিবেশ। যুসমার্গ থেকে নীলানাগ লেকও বেড়িয়ে নেওয়া যায়। থাকার জন্য JKTDC-র Tourist Hut, Tourist Bungalow ছাড়াও RH আছে যুসমার্গে। যুসমার্গের পথেই পড়ে ১০ কিমি আগে চারার-ই-শরিফ।

চারার-ই-শরিফ : শহর থেকে ৪৫ কিমি দূরে সুফি সন্ত শেখ নুরুদ্দিন ওয়ালির জিয়ারত অর্থাৎ সমাধির উপর ১৪৬০এ জৈন-উল-আবেদিনের হাতে দারুণত গড়া মাজার; মুসলিমধর্মীদের কাছে পবিত্র তীর্থ। বার বার আওনে ক্ষতিগ্রস্ত হলেও ১৯৯৫-এর ১১ই মে পাক মদত পুষ্ট জঙ্গীদের হাতে আওনে পড়ে ধ্বংস হয়েছে চারার। লাগোয়া খানখা মসজিদ ও সবুজ মসজিদ-ও ধ্বংস পেয়েছে আওনে। ব্যাপক ক্ষয়-ক্ষতি হয়েছে চারার শহর জুড়ে।



পরিভ্রমণের বিষয় সুফি সাধক শেখ নূরুদ্দিনের ৬১৭তম জন্মদিন তথা পবিত্র ইদের পূণ্য লগ্নে জঙ্গীসের শিকার হয় চারার শরিফ।

লাডাক

লা অর্থ গিরিবর্ষ আর ডাক হচ্ছে দেশ—অর্থাৎ গিরিবর্ষের দেশ লাডাক। হাজার হাজার বছর ধরে যাযাবর সম্প্রদায়ের বাস ছিল লাডাকভূমে। কালে কালে উত্তর ভারতের মন, বালতিস্থানের দর্দ ও মধ্য এশিয়ার মঙ্গোলীয়দের মিশ্রণে গড়ে ওঠে লাডাকি জাতি। নামাঙ্গুরও ঘটেছে বারবার লাডাকভূমের। ৭ শতকের চীনা পর্যটক হিউয়েন সাঙ-এর ভারত বিবরণীতে Ma-lo-phu অর্থাৎ লাল ভূমি বলে উল্লিখিত হয়েছে লাডাক। Kanchapa অর্থাৎ বরফের দেশ, Ripul বা পাঁহাড়ের দেশ বলেও উল্লেখ মেলে লাডাকের। আরও পরের Ladwak আজ হয়েছে Ladakh.

তেমনই শাসকেরও বদল ঘটেছে বার বার লাডাকভূমে। তাই শাসকদের অধীনে ছিল লাডাক অতীতকালে। ইতিহাসের পাতায় ৮৪২ খ্রিস্টাব্দে স্কিন লেডেডিমাগনের হাতে লা-চেন (La-Chen) রাজবংশের প্রতিষ্ঠা। স্কিনের মৃত্যুতে ৩ পুত্রের মাঝে ৩ টুকরো হয় রাজ্য। এদেরই মধ্যে পালজিমান কাশ্মীর ও ডিব্বত থেকে স্থপতি এনে গুম্ফা গড়েন নানান। আর ১১৫০এ নাগলুগ ক্ষমতায় বসে নানান প্রাসাদ গড়েন। নাগলুগের পর ১২৩০এ প্রথম বৌদ্ধধর্মের পৃষ্ঠপোষক ভিসিগিন ক্ষমতায় বসেন। পরবর্তী শাসক নোরুগবর্গের (১২৯০) কালে ১০০ খণ্ডের বৌদ্ধ পুঁথি Kandshur রচিত হয়। নোরুগের পুত্র গিয়ালপো রিনচেন কাশ্মীর উপত্যকা দখল করেন। মুসলিম-ধর্ম গ্রহণ করে সুলতান সদর-উদ্দিন নামে ১৩২৪-২৭ খ্রি রাজত্ব করেন। কাশ্মীরে মুসলিম শাসনের প্রথম প্রবক্তাও এই ধর্মান্তরিত রাজা। অবশেষে ১৫৩৩এ সোয়াং নামগ্যাল ক্ষমতায় বসে লে-তে রাজধানী গড়েন। রূপ পায় প্রাসাদ ও নানান মন্দির লে শহরে। প্রসার পায় রাজ্য, বালতিস্থান ছাড়িয়ে সুদূর লাসা পর্যন্ত সোয়াং-এর। গড়ে ওঠে পথবাট, সেতুও গড়েন নানান। ১৫৫৫য় সোয়াং-এর মৃত্যুতে তাঁর ভ্রাতা জামইয়াং নামগ্যাল ক্ষমতায় বসতেই আক্রান্ত হন স্কার্ফ মুসলিম শাসক রাজা আলি শের-এর হাতে। কাথু খাতুনও সঙ্গী হয় যুদ্ধে। অসি নয় প্রেমের বন্ধনে খাতুন শাদি করলেন নামগ্যালকে। আর নামগ্যালের কন্যার বিয়ে হল সুলতান আলির সাথে। যুদ্ধের দামামা থেমে গিয়ে লে সেজে উঠল আলোকমালায়। একই রাতে এই বিয়ের জৌলুস ইতিহাসেরও জৌলুস বাড়ায়। খাতুন হলেন আরগিয়াল নামগ্যাল। এদেরই পুত্র সিঙ্গে নামগ্যাল ১৬১০এ সিংহাসনে বসে বালতিক ও মোগলের যুগ্ম বাহিনীকে প্রতিরোধ করে। এই সিন্দের হাতেই হেমিস ছাড়াও নানান

গুম্ফা, চার্ভেন ও মনি ওয়াল গড়ে ওঠে। সুশাসনের জন্য রাজাকে টুকরো করে তিন পুত্রকে শাসক করেন সিঙ্গে। ১৬৮৫তে মঙ্গোলিয়ানদের কাছে হেরে যেতে তিব্বতের দখলে যায় লাডাক। তিব্বতীয় প্রভাব থেকে মুক্তি পেতে কাশ্মীরি সহযোগিতায় দখল ফেরে। প্রতিদানে লাডাক বাৎসরিক বৃত্তির বিনিময়ে অধীনতা মেনে নেয় কাশ্মীরের। জন্মু ও কাশ্মীরে শিশু সাম্রাজ্য গড়তে ১৮৮৪তে নতুন করে ডোগরাদের হাতে আক্রান্ত হয় লাডাক। মূলধেকে প্রতিহত হয়ে ওরুতে ষাঁটি গাড়ে ডোগরাবাহিনী। শাস্তিচুক্তি লঙ্ঘন করে জাঙ্করের উপর দিয়ে সিদ্ধ উপত্যকার স্পিটাক থেকে আক্রমণ হানে লে প্রাসাদে ডোগরা সেনা। আজও গুলির ক্ষত প্রাসাদ গাড়ে দেখতে মেলে।

লাডাক ভ্রমণে পালনীয়

সুবিধামতো সঙ্গে তাঁনু নিন। 'সান বার্ন' থেকে রক্ষা পেতে সান থ্রাস অবশ্যই ব্যবহার করুন। লোশন বা ক্রিম সঙ্গে নিন। দিনের বেলা যেমন সূর্যকরোজ্জ্বল, রাতে তেমনই বেজায় শীত। তবে, দিনের বেলাতেও তাপমানের হেরফের ক্রমে ক্রমে ঘটে চলে লাডাকভূমে। সূর্য মেঘে ঢাকা পড়তেই তাপমান দ্রিষ্টিগেয়েতে নেমে যাওয়া অস্বাভাবিক নয়। বৃষ্টি নেই বললেই চলে লাডাকে। সারা বছরে ৩° থেকে ৪° মাত্র। বিশেষ এমন দেশটি খুঁজে মেলা ভার।

সুমেরুদেশীয় (arctic) জলবায়ু লাডাকভূমে। যথেষ্ট গরমদায়ক একটি স্লিপিং ব্যাগ সঙ্গে নিন লাডাক ভ্রমণে। শরৎকালে অবশ্যই দরকার। যথেষ্ট গরম কাপড়ও সঙ্গে নেবেন। জুলাই থেকে সেপ্টেম্বরে গরমকাল লাডাকভূমে। তবুও সোয়েটারের সঙ্গে উইন্ডচিটার সঙ্গে রাখা দরকার। তাপমান সর্বনিম্ন ১০° সেন্টিগ্রেডে নেমে থাকে জুলাই-আগস্টে, জুনে সর্বনিম্ন ৭°; সেপ্টেম্বরে ৫-৭° সে। তখনো খাবার সঙ্গে নেওয়া ভাল। ওষুধপত্রও সঙ্গে নেওয়া উচিত। তেমনই উচ্চতা ও গুম্ফার পবিত্রতা রক্ষার্থে ধূমপান সাধ্যমতো বর্জন করুন। আর অত্যধিক উচ্চতা হেতু ফুসফুস সংকোচ ব্যাধি—বিশেষ করে Pulmonary oedema বা Pulmonary রোগীদের একাডুই উচিত হবে লে-যাত্রা পরিহার করা।

লামাদের যথাযথ সন্মান প্রদর্শন করুন। কাউকে কিছু দেবার বা নেবার কালে দু'হাত দিয়ে ধরুন। কোনো কিছু নির্দেশ করতে পুরো হাত বাড়িয়ে করুন। ধর্মীয় বই বা ছবি কখনও মেরেয় রাখবেন না। লাডাক সীমান্ত জেলা। চারপাশে রয়েছে ভারতীয় জওয়ান শিবির। চলোফেরায় নানান বিধি-নিষেধ। প্রতিরক্ষা বিষয়ক ছবি তোলায় মানা। ১০০ বছরের পুরাতন Antique ক্রম-বিক্রয় দুই-ই আইন-বিরোধী। লজ্জনে জেল ও জরিমানা উভয়রকম সাজা।

আর স্মারকরূপে সংগ্রহ করা যেতে পারে তিব্বতীয়দের হাতের কাপ, নানানধর্মী ছুরেলারি, সোয়ার থ্রাগ, তখা, কাপেট, চারের রকমারি বাসন-কোসন ছাড়াও নানানকিছু। তবে, লে-র লোকানপাটে দামে আধিক্য ঘটে। লোকানি আসছেন দিল্লী, শ্রীনগর, ধরমশালা থেকে পণ্য নিয়ে। তাই উচিত হবে মন ভরে 'স্থিতি ধরে কোকাটা শ্রীনগরে সেরে নেওয়া। প্রয়োজনে Tourist Officer, Sreenagar অথবা Leh-কে লিখুন।

নামগয়ালের পতনে কাশ্মীরের মহারাজা নানান গভর্নরের হাতে স্বায়ত্তশাসন ছেড়ে প্রতিরক্ষা কক্সায় রাখেন নিজের। অবশেষে ভারত স্বাধীন হতে পাকিস্তানও সদা জাগ্রত কাশ্মীর তথা লাডাকের দখল পেতে। ১৯৫৯এ চীনের তিব্বত দখলে চীনও পৌছায় লাডাক সীমান্তে। এমনকি ১৯৬২তে দখলও করে চীন লাডাকের অংশ। গড়ে উঠেছে পথঘাট দখলীকৃত চীন থেকে পাকিস্তানে। পথ হচ্ছে নিত্য নতুন তিন দেশের সীমান্ত জুড়ে। নানান ছলে চীন ও পাকিস্তান দাবি তোলে ভারত রাষ্ট্রের লাডাক-ভূমের। সাঁজোয়া গাড়ির ভারি আওয়াজ প্রকৃতিকে বিষয় করে তুলেছে লাডাকে। প্রাকৃতিক প্রতিকূলতা, দুর্গমতা ও সেনা আধারিত লাডাকে চলাফেরায় আজও নানান বিধিনিষেধ।

কাশ্মীর উপত্যকায় যেমন পাক প্রভাব তেমনি ভারতের জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের উত্তরাংশ লাডাকভূমে তিব্বতীয় প্রভাব বিদ্যমান। এদের সমাজ-জীবন-ধর্ম-প্রকৃতি সবই তিব্বতেরই প্রতিচ্ছবি যেন। এমনকি ১৯৫৯এ চীনের তিব্বত দখলের পর বিপুলহারে তিব্বতীয় দেশ ছেড়ে ভারতের এই লাডাকভূমে এসে বসতি গড়ে। অতীতে স্বাধীন রাজ্য ছিল লাডাক। লাসার গুরু লামা আধ্যাত্মিক তথা ধর্ম বিষয়ের প্রধান ছিলেন লাডাকেও।

অতীতকালে শহর ছিল প্রাচীরে ঘেরা। ৩টি ছিল প্রবেশদ্বার। শহর প্রসার পেতে লোপ পেয়েছে প্রাচীর। বাজার লাগোয়া কিংস গোটটি স্মারক হয়ে অতীত রোমন্থন করায় আজ।

লামাদের দেশ লাডাক। তান্ত্রিক মহাযানপন্থী বৌদ্ধ এরা। সিঙ্কু বৌদ্ধ মধ্যযুগীয় বৌদ্ধ সংস্কৃতির গীঠস্থানও এই লাডাক। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধ থেকে রুদ্ধ লাডাকের ১৯৭৪-এ ভ্রমণার্থীদের কাছে দরজা খুলেছে নতুন করে।

বৈচিত্র্যে ভরা লাডাকের প্রকৃতি। ভারত রাষ্ট্রের উত্তরে জম্মু ও কাশ্মীর রাজ্যের শিরে তিব্বতীয় অধিত্যকার পশ্চিমে ৯৭.৮৭২ বর্গকিমি ব্যাপ্ত লাডাক। জম্মু ও শ্রীনগর রাজ্যের ৭০ ভাগ লাডাকভূমি। সেই অনুপাতে লোকসংখ্যা খুবই কম। প্রতি বর্গকিমিতে ২.৩ জন মাত্র। ভাষা এদের লাডাকি— তিব্বতী ভাষারই নামান্তর। প্রকৃতিতেও তিব্বতেরই প্রতিচ্ছবি যেন। লিটল তিব্বতও বলে থাকে লোকে লাডাককে। উর্দু ও হিন্দিরও চল আছে। ভূখণ্ডের বিরাট অংশে বহুদূর পাহাড়। মনুষ্যবাসের অনুপস্থিত। বৃষ্টি নেই লাডাকভূমে। ঋতুও লাডাকে দুই—জুন থেকে অক্টোবরে গ্রীষ্ম, বাকি বছরটা জুড়ে শীত। পিঙ্ক রঙের গ্রানাইট পাহাড়ের মাথায় গাঢ় নীল আকাশী চাঁদোয়া, চপল সূর্যলোক, কনকনে বাতাস—যখন তখন কাঁপুলি ধরে, আর সবুজে ছাওয়া নদী-উপত্যকা সব মিলিয়ে মনোরম পরিবেশ গড়েছে লাডাক পর্বতকন্ডের জন্য। আর রয়েছে সমান্তরালভাবে বয়ে চলা উত্তরে কারাকোরাম পর্বত ও দক্ষিণে নগাধিরাজ হিমালয়। তেমনিই জাঁসকর উপত্যকা

ও সিঙ্কু উপত্যকাও চলেছে দক্ষিণ-পূর্ব থেকে উত্তর-পশ্চিমে। অতীত নয়নাভিরাম এর নৈসর্গিক শোভা। মনে হবে বৃষ্টি চন্দ্রলোকে পৌঁছে গেছি।

প্রতিরক্ষার দিক থেকেও লাডাকের গুরুত্ব অপরিসীম। উত্তর-পূর্বে চীন, আর উত্তর-পশ্চিম জুড়ে পাকিস্তান। দক্ষিণ গিয়ে মিলেছে পঞ্জাব ও হিমাচল প্রদেশে। সুউচ্চ হিমালয় বিচ্ছেদ টেনেছে হিমাচল ও লাডাকভূমের। চলতে-ফিরতে সামরিক ঘাঁটি। তাই চলাফেরাতেও নানান বিধিনিষেধ লাডাকভূমে। অতীতের বৃহত্তম জেলা লাডাক আঙ্গ টুকরো হয়েছে—লে ও কারগিল-এ। সিঙ্কু উপত্যকার মধ্যভাগ নিয়ে লে, আর সুরু ও জাঁসকর উপত্যকার সঙ্গে সিঙ্কুর অংশ জুড়ে কারগিল জেলা।

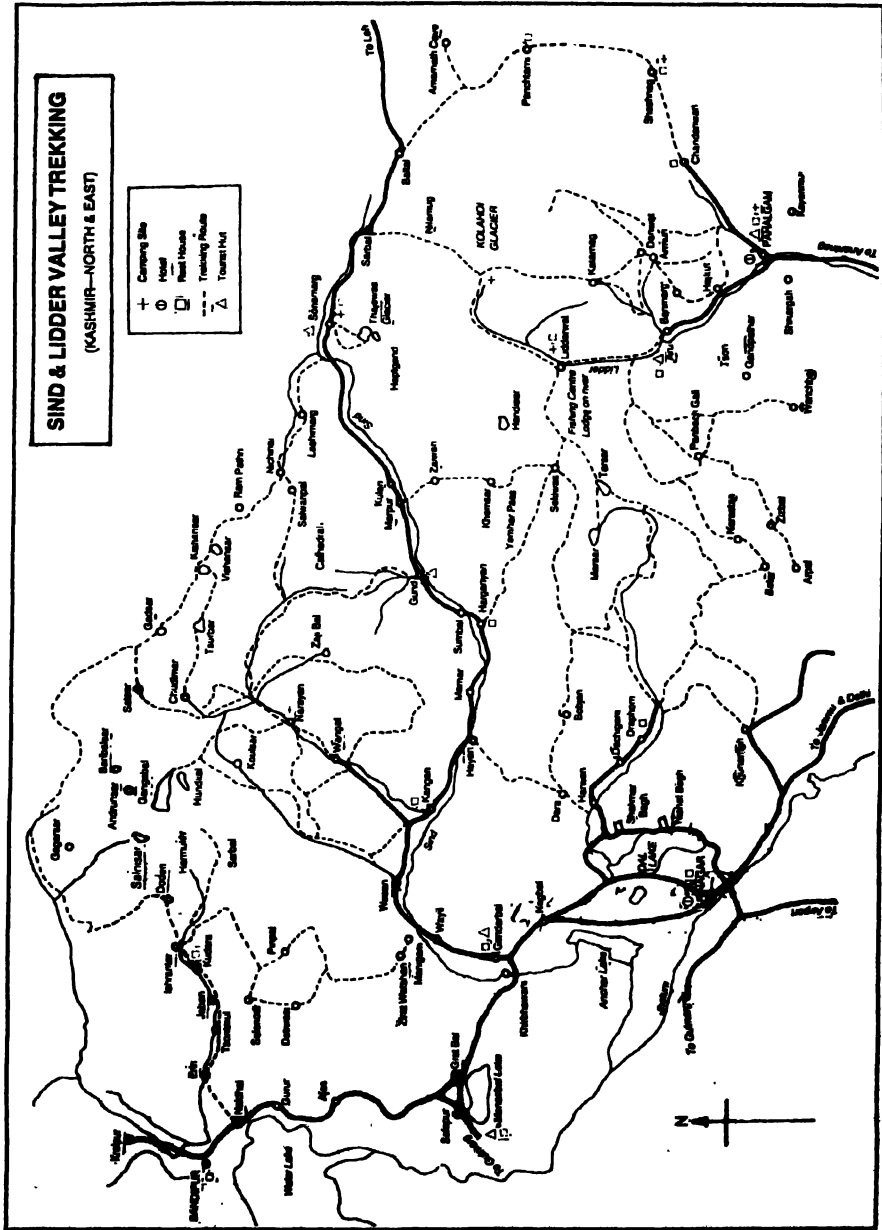
লে

শ্রীনগর থেকে ৪৩৪ কিমি দূরে কারাকোরাম পর্বতে ৩৫২১ মি উঁচুতে লাডাকের জেলা সদর লে শহর। চিত্ত-বিমোহিত প্রকৃতির মাঝে ঘোড়ার পায়ের মতো ছোট্ট এক *ওয়েসিস* লে। তেমনিই প্রকৃতির আর এক প্রতিদ্বন্দ্বী লে-র মনোহ্রি অর্থাৎ শুষ্ক। শহরের চারপাশ ঘিরে বাহ গড়েছে পাহাড়। হাজার ২২ লোকের বাস শহরে। ধর্ম বৌদ্ধ, নাচ-গান-আমোদপ্রিয় এরা। অতি অল্প সংখ্যায় *Argoos* (ইয়ারখতি ব্যবসায়ীদের উত্তরপুরুষ) ও খ্রিস্ট ধর্মীর বাস লে শহরে। পাহাড়ের গায়ে ঘননিবদ্ধ মোটাকের মতোই পাথরে তৈরি ঘর-বাড়ি। মূল রাস্তার দু'পাশে দোকানপাট, গলি-ঘুপটি, লাডাকি যুবতীরা পসরা সাজিয়ে বসেছে। বসন-ভূষণেও বৈচিত্র্য আছে লাডাকিদের। পুরুষেরা *গোচা* পরে অর্থাৎ জোব্বাধর্মী পোশাক, মাথায় রঙিন টুপি আর মেয়েরা পরে *কুনটপ*। মেয়েদের মাথায় কানঢাকা টুপি *পেরাক*। পেরাকের রকমফেরে বংশ গরিমা প্রকাশ পায়। আর বর্ণময় পোশাক-আশাক, সঙ্গে রূপোর রকমারি আভরণ। বেড়াবার মরসুম জুন থেকে অক্টোবরের প্রথম। গ্রীষ্মের এই দিনগুলিতে লাডাকে সূর্য ওঠে সাড়ে পাঁচটার আগে, আর অল্প যায় সন্ধ্যা আটটারও পরে। তবে, বসন্তে তীরন্দাজী উৎসবের পর্বটক আকর্ষণ কম নয়। সারা লাডাক মেতে ওঠে তীরন্দাজী উৎসবে। সঙ্গে চলে নাচ-গান-বাজনা-আহার ও বিহার। তেমনিই জুলাই চোগলামসারে লাডাকি বৌদ্ধদের মহামান্য দালাই লামার জন্মবার্ষিকী এক বরণীয় উৎসব। নাচ-গান-বাজনার সাথে খানাপিনা চলে দিন-রাতে। আজও যেন মধ্যযুগের কোনো এক শীতল মন্দির শহর লে।

বাসস্ট্যাণ্ড থেকে *Main Street* ধরে বাজার তথা শহর টপকে পথের শেষ ১৬ শতকে সিঙ্গে নামগয়ালের তৈরি লে রাজপ্রাসাদ-এ। লাসা (তিব্বত)-র পোতালা প্রাসাদের রেন্সিকা এই ৯তলা প্রাসাদ। তবে, ১৯ শতকের ভোখরা অভিযানে ক্ষতিগ্রস্ত হয় প্রাসাদ-বাড়ির। পাহাড়চূড়ার

SIND & LIDDER VALLEY TREKKING (KASHMIR—NORTH & EAST)

- + Camping Site
- Hotel
- Rest House
- Trekking Route
- △ Tourist Hut



প্রাসাদে চড়ে ছাদ থেকে চারপাশের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। জাঁসকর পর্বতও যেন স্নান সারতে সিঁদুর জলে নামছে। তবে, প্রাসাদটি অর্ধের বিনিময়ে ভারতীয় প্রজাতন্ত্র দপ্তরকে বিক্রয় করেছে রাজ পরিবার। ৬—৯-০০ ও ১৭—১৯-০০টায় প্রাসাদ দেখার ব্যবস্থা। প্রাসাদ শিরে টোপার হয়ে থাকা ১৪৩০এ তৈরি Tsemo অর্থাৎ রেড গুম্ফাটিও লে-র আর এক আকর্ষণ। বস! অবস্থায় ত্রিতল উঁচু অবলোকিতেশ্বর বুদ্ধের মূর্তিটিও সুন্দর। বাঁয়ে মঞ্জুশ্রী। পাণ্ডুলিপি ও ছবির সংগ্রহও উল্লেখ্য। ৭—৯-০০টায় খোলা। রাজ পরিবার বাস করছেন আর এক প্রাসাদ স্টক-এ।

তেমনই নামগম্বালের মুসলিম মাকে ডেট দেওয়া মেইন বাজারে তুর্কি ও ইরানীয় স্থাপত্যে ১৫৯৪এ তৈরি মসজিদ; সোনার বুদ্ধ মূর্তি-পাণ্ডুলিপি-সেওয়াল চিত্রে শোভিত নিউ মনাস্টি; রেডিও স্টেশনের পাশে ২ কিমি দীর্ঘ মনি ওয়াল-ও উচিত হবে পায়ে পায়ে দেখে নেওয়া। এয়ারপোর্টের পথে ট্যুরিস্ট অফিস, ব্যাঙ্কও বসেছে লে শহরে।



শ্রীনগর ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টার থেকে JKRTC-র বাস যাচ্ছে লে। বছরের জুন থেকে অক্টোবর মাস প্রতিদিন সকাল ৮-০০টায় ছাড়ে বাস। বছরের বাকি সময় বরফচ্ছাদিত থাকে এপথ। যাত্রায়তঃ তাই বন্ধ। তবুও যেন আবহাওয়ার উপর চলা এসের বেশ কিছুটা নির্ভরশীল। ৩-শ্রোণীর বাস যাচ্ছে। আর প্রাইভেট বাস যাচ্ছে লালচক থেকে লে। ধান ও ভূট্টা ক্ষেতের মাঝ দিয়ে গজরবল, কংগন, শোনামার্গ, রাসায় কাম্পীর উপত্যকা ছেড়ে শ্রীনগর থেকে ১১০ কিমি দূরে কাম্পীর-লাডাক সীমান্তের গুমরিতে ফলকে লেখা—*হোশ্ট ইয়ারে ব্রেথ, ইউ আর এনটারিং লাডাক*। অদূরে ৩৫২৯ মি উঁচুতে জোজি-লা-পাস হয়ে বিশ্বের বিত্তীয় শীতলতমস্থান (শীতলতায় প্রথম সাইবেরিয়ার ভারখায়ানকো) ডিসেম্বর-জানুয়ারিতে -৫৫° সেণ্টিগ্রেডেও নেমে থাকে তাপমান। রেন্ট হাউস, হোটেলও আছে হ্রাসে। জোজি-লা-পাস পেরুতেই প্রকৃতিতেও সুমেরুদেশীয় পরিবর্তন মেলে। ৩২৩০ মি উঁচু হ্রাস দার্দভূমি (যাত্রীদের পরিচয়লিপি দেখাতে হয় চেকপোস্টে) পেরিয়ে ২০৪ কিমি দূরের কারগিলে ১ম রাত কাটিয়ে ২য় দিন বিকালে ৪৩৪ কিমি দূরের লে-শৌয় বাস। এপথের আর এক বিশেষত্ব মাটিয়ান—স্রোপদী আজও নাকি স্নান করে স্রোপদীকৃতে। বিপরীতে নানান কিংবদন্তীতে ঘেরা পাঁচ শৃঙ্গ অর্থাৎ পঞ্চপাণ্ডব শৃঙ্গ। কারগিল থেকে ৪০ কিমি যেতে বৌদ্ধপ্রধান গ্রাম মুলবেক। আরও ১৫ কিমি চড়াই চড়ে ১২২২০ ফুট উঁচুতে মামিকা-লা। লাডাকি ভাষায় *মামি* অর্থ আকাশ, *কাহু*ছে সিঁড়ি আর *লামানে* পাস বা গিরিবর্ষ। পথ ওঠে আকাশ হুঁতে পাহাড় বেয়ে বোধিবর্ষ ১৫, হেমিসকাট ৯ কিমি পেরিয়ে আরও ১২ কিমি গিয়ে সবচেয়ে উঁচু (১৩৪৭৯ ফু) কাটি-লাম। এপথের আর এক আকর্ষণ গি গ্র্যান্ড ভিউ অব মুনশ্যাবু অর্থাৎ টামের মতো রূপ নিয়েছে হাফা হলসে মায়ের উঁচু-উঁচু খোরাই হিমি। সারা পথে কিছু নদীর কীধেভ মিয়ে ২ দিনে ২৪ ঘণ্টার বাস পৌছায় লে শহরের দক্ষিণে। ডাড়া A-class ১৬৫, B-class ১১৫ সুপার ডিলায় ২৫০। এ-ক্লাস বাসে কাচের জানালায় প্রকৃতি উপভোগের সাথে ৮-১১ যথেষ্ট আরামদায়ক।

আর যাচ্ছে ট্যাক্সি, জিপ ও জোঙ্গা। ৫ যাত্রীর ট্যাক্সির যাত্রায়ত ভাড়া ৫৫০০ টাকা। বাড়তি স্বাধীনতাও মেলে চলার পথে পথপাশ দেখে চলার—ট্যাক্সি, জিপ ও জোঙ্গা যাত্রীদের। যথেষ্ট চাহিদা এই সব বাস টিকিটের। অনেক সময় বাস টিকিটের অভাবে দিনের পর দিন লে ভ্রমণ বাতিল করতে হয় যাত্রীদের। ট্যাক্সি, জিপ ও জোঙ্গা একই দিনে পৌছেও যেতে পারে শ্রীনগর থেকে লে। তবে, পথ চলার ক্লাস্তিতে ভ্রমণের আনন্দ বিস্তৃত হয়। চলার পথে এক রাত বিশ্রাম নিয়ে যাওয়াই উচিত হবে। আর উচিত হবে Traffic Police Head Qrs, Maulana Azad Rd, Sreenagar থেকে এপথের সর্বশেষ পরিস্থিতি জেনে জুলাই, আগস্ট, সেপ্টেম্বরে লাডাক বেড়িয়ে নেওয়া। তবে, পরিস্থিতিজনিত কারণে গত কিছুকাল এপথে চলায় নানান বিঘ্ন হেতু সার্ভিস অনিয়মিত। যাত্রীও যাচ্ছেন মানালী থেকে ১৭৫৮২ ফুট উঁচু টাংলা-শা হয়ে ৪৭৭.২৭ কিমি দূরে লে-তে।



শহর থেকে ৯ কিমি দূরে স্পিটাকের কাছে বিমানবন্দর বসেছে লে-তে। চারপাশ পাহাড়ের ঘেরা ছোট বিমানবন্দরের লাউ গুলি আবও ছোট, রানওয়েট ৪০০মি লম্বা। বাস, ট্যাক্সি, জিপ সংযোগ গড়েছে বিমানবন্দর থেকে শহরের। ১৯৭৯ থেকে আকাশী বিমান যাচ্ছে শ্রীনগর থেকে প্রতি শনিবার জয়কর ও কারাকোরাম পাহাড় ডিঙিয়ে দিগন্তব্যাপ্ত তুষারগুহ গিরিমালার সাথে লুকাচুরি খেলে ৪৫ মিনিটে। বিমান আসছে ২৪৬৭ দিন দিল্লী থেকে ১২ ঘণ্টায় লে-তে। বিমান আসছে চণ্ডীগড় থেকেও প্রতি মঙ্গলবার ৫৫ মিনিটে। আর ৭ দিন দিল্লীর উড়ান জম্মু হয়ে চলে। ফেরেও একই একই দিনও লিতে। টিকিটের প্রচুর চাহিদা এপথে। আবহাওয়ার উপর বিমানের চলা অনেকটা নির্ভরশীল। তবে, এয়ারফোর্স সারা বছরই চণ্ডীগড় থেকে লে যাচ্ছে। সরাসরি দিল্লী বা চণ্ডীগড় থেকে বিমানে লে পৌছে উচ্চতা হেতু আবহাওয়া বলল ও অগ্নিজ্বলের তারতম্য সাময়িক বিভ্রান্তিতে পড়া অস্বাভাবিক নয়। আর, উড়ে যাবার থেকে গড়িয়ে যাওয়ায় আনন্দের সাথে প্রাপ্তিও বেশি এপথে।

মরসুমে (জুলাই ১৫—অক্টোবর ১৫) Himachal Pradesh Tourism Development Corpn প্যাকেজ ট্যুরে দিল্লী-মানালী-লে-দিল্লী সফরের ব্যবস্থাও রাখে। HRTC-র বাসও চলে জুন থেকে অক্টোবর। বিশেষত্বের কাছেও এপথটি আকর্ষণকারি। তবে, অনুমতি লাগে। আর ট্রেক রুটে কম করে ৪ জনের দলের (অভ্যন্তরীণ) অনুমতি মেলে—অনুমোদিত গাইডও সঙ্গে নেওয়া বাধ্যতামূলক।



বিবিধ মানের বিভিন্ন নামের হোটেল হয়েছে, পর্যটক যিনি Leh-194101, STD-01982-এ। পাণ্ডাচ্য প্রাথম থাকা-খাওয়া নিয়মে—এ-ক্লাস: SAB ৬০০-৮৫০ DAB ৮০০-১২৫০, সুইট ১২৫০-১৭৫০। A ক্লাসের হোটেল: H Oberoi Shambha La, Ambassador H, H Khangri, H Dragon, Chulung; H Horzy, Old Rd; Mandala, শহরের কেন্দ্রস্থলে Ga-Lden Continental, Tibet H, H Yak-Tail, H Sadnam. আর রয়েছে: Kangluchen, near Moraviar Church; বাসস্ট্যান্ডের পাশে সাধারণ সাজে Sia H; Lha ri Mo; H Tse Mo View, Temela; হেমিসের 'Indus.

B ক্লাসের হোটেল—রেট এদের SAB ২৭৫-৪৫০ DAB ৫০০-৮৫০ টাকায়: Lung-se-Jung, Re-Rub, H Rockwood, H Rockland, বিপরীতে Yasmin GH, Ibex. C ক্লাসের হোটেল: H Khardungla, Noor-Mahal, Chesker, H Himalaya, H Sangrila, Firdous H-Near Stadium; এদের রোট কেবল থাকা SAB ২২৫-৩০০ DAB ৩২৫-৫৫০ টাকায়। D ক্লাসের হোটেল: শহরের প্রাণকেন্দ্র জেনারেলের হাউসের কাছে Dreamland, Hills View, Khayul H, Barcha, Kangla, Khababs, Bimla, Indus, Deluxe, শহরের পথে H Kailash, রোট এদের কেবল থাকা D ২০০-৪২৫।

এছাড়া পেরিং গেস্ট হাউসেও থাকা যায় লে শহরে। এদের কেবল থাকা SCB ৬৫-১২৫ DCB ১৫০-২২৫ DAB ২০০-৩৫০ টাকায়—New Antelope GH, Sankar, Kangla, Snowview, Shangrila, Joldan, Moonland, Lasemme, Palace View, Kiddur H, Padunkhan, Pampesh, Phuntsegling, Parwana, Paul, Sheldon, Singela, Sabila, Shel-zim Khang, Shalimar, Two Star, Old Ladakh, Sea Iqun Ku-Bazar, Hemis, Rainbow, Tak, Green View, Stream View, Giri, Nazer View, Pyog, Iqbal, Star, Mansoor, Padma, শহরের কেন্দ্রস্থলে যথেষ্ট পপুলার Khan Manzil GH ছাড়াও নানান।

এমনকি বিবাহসূত্রে লাডাকি হলেও বাঙালির H Sadnam ও Model H রয়েছে—সেনগুপ্ত ও বর্মানশায়দের। এছাড়াও লে-তে আছে JKTDC-র Tourist Bungalow, Govt Guest House, CH ও DB। তাঁবুও ভাড়ায় মেলে। অব: Tourist Officer, J & K Tourism, Leh-194101.

তবুও যেন উচিত হবে আগেভাগে Tourist Bungalow বুক করে লে চলা। ট্যুরিস্ট অফিসটিও বাংলা লাগোয়া। K-Sar Palace, Bimla, Lang-se-Jung, Dragon, Khangri, Jorchung GH, Two Star GH, Khan Manzil GH থাকার পক্ষে ভালই।

আর খাবারের হোটেল যত্রতত্র মিললেও শহরের প্রাণকেন্দ্রে ড্রিমল্যান্ড রেস্টুরেন্ট, থামরি রেস্টুরেন্ট, ওম রেস্টুরেন্ট, পোডালা, মোল্যাড, হিল টপ আর গ্রীনগারমুখী শহরাত্তে ডিক্সি রেস্টুরেন্ট ভালই। তেমনই থুকপার হাদ নেওয়া যায় ভেজিটেবল মার্কেট ও SBI-এর মাঝের দেন্বী রেস্টুরেন্টে। চীনা ও পাশ্চাত্য মেনুর জন্য

La Montessori; ডিক্সি মিলের জন্য ট্যামি স্ট্যান্ডের কাছে Tibetan Friends Corner যথেষ্ট খ্যাত। ঠিক তেমনই লাডাকি ভ্রমণে বৈচিত্র্যপূর্ণ নুন-মাখনের ডিক্সি ও টপটপায়ের হাদ নিতে ভুলবেন না। যব থেকে তৈরি হাঙপানীয়ে (বিয়ার) হাদ নিতে পারেন উৎসাহীরা লে ভ্রমণে। ভাতের সাথে ডিক্সি আহার্য চাওমিন ধর্মী কোথেরও হাদ নিতে পারেন লে-র হোটেল। আর উচিত হবে সন্ধ্যা ২০-৩০টায়ে লে শহর নিখুম হবার আগেই হোটেল পৌছে যাওয়া।

লামাদের দেশ লাডাক—গড়ে উঠেছে বৌদ্ধ তীর্থ-মন্দির তথা গুম্ফা। প্রায় প্রতিটি গ্রামে গঞ্জের রয়েছে এই গুম্ফা। তাদের মধ্যে ১২টি বিশেষভাবে উল্লেখ্য। কোনো কোনোটি দেখতে অনুমতি লাগে। উচিত হবে জিপ-জোসা বা ট্যাক্সিতে একই দিনে হেমিস, থিকসে ও শো প্যালেস দেখে সন্ধ্যায় দেখুন শহুর গুম্ফা ও দোকানপাট। দ্বিতীয় দিনে বাসে বাসে স্পিটাক দেখে ফিরে দিনভর শহর পরিক্রমা। আরও একটা দিন সূর্যমা উপভোগ করুন লাডাকি ভ্রমের। চতুর্থ দিন ঘরপানে ফিরুন লে থেকে। লাডাকের আর এক আকর্ষণ তার ঝলমলে উৎসব। জুন-জুলাই মাসে হেমিস ফেস্টিভাল; বৃষ্টিস্ট ক্যালেন্ডারের ১১ মাসে লোসার; আগস্টে লাডাক ফেস্টিভাল বিশেষভাবে উল্লেখ্য।

HEMIS GOMPA : লে শহর থেকে ৩৫ কিমি দূরে লে-মানালী পথের কাছ থেকে হেমিসের পথ গিয়েছে। TCP চেক পয়েন্টের ডানহাতি পথে সিঙ্কু পেরিয়ে ৮ কিমি যেতে হেমিস। লাডাকের গুম্ফাগুলির মধ্যে বৃহত্তমও এই হেমিস। নানান মন্দির—নানান মূর্তি। গিলটি করা বেশ কিছু স্বর্ণ মন্দিরও রয়েছে। উপাসনা মন্দির অর্থাৎ Dukhang-এ হেমিসের আধ্যাত্মিক গুরু রিমপোচে রয়েছেন। সামান্য উঠতেই Lukung অর্থাৎ প্রথম মন্দিরের দেওয়াল চিড়ে অভিনবদ্ধ আছে। শাকামুনিল্লী বুদ্ধের মূর্তিও আছে, চারপাশে রূপোর চোতেন। বহুমূল্য ধাতুতে অলঙ্কৃত। ডিক্সিভের প্রধান লামার সহস্র হস্তের মূর্তিটিও দেখবার মতো। মূর্তির মুখের সংখ্যাও সহস্র। দণ্ডমুণ্ডের কর্তাও এই লামা মূর্তি। আর এর স্থপতি নানান ধাতুতে অলঙ্কৃত।

Some useful Ladakhi Phrases

1—Chig, 2—nyis, 3—sum, 4—dji, 5—nga, 6—tok, 7—dun, 8—gyet, 9—gu, 10—chu, 11—chu-chig, 19—chu-gu, 100—gya.

hello, welcome,
how are you etc
please
thank you
good
bread

—jullay
—katin chey
—thukjechey
—gella
—tagi

boy
girl
brother
sister
prayer flag

—nono
—chocho
—acho
—achay-laiy
—tarchan

Does this bus go to...?
What time does the bus go?
Is this the road to...?
How much does this cost?
Give me tea.
Give me food.
Give me hot water.
Please take tea.
Where is the hotel?
Where is the tea shop?
Where is the post office?
How far is it to...?

—tje bus po cha nog ga...?
—bus chuchot cham pey ka chat?
—tje lani bo tjenaggah...?
—tje bey rin cham in nak?
—nya chha sal.
—nya kharji sal.
—nya chu-stante sal.
—solja don.
—hotel kar wa yot?
—cha-hati kar wa yot?
—dakkhana-kaga yotkyak?
—thi na cham shik thak ring, yot...?

পাণ্ডুলিপির অমূল্য সংগ্রহও রয়েছে হেমিসের লাইব্রেরিতে। তেমনই রয়েছে ফ্রোল অর্থাৎ থাকাসের সম্ভার। বিধের বৃহত্তম থাকাস (কাপড়ে আঁকা ছবি)-টিও রয়েছে ১৬৩০এ সিন্ধে নামগয়ালের তৈরি হেমিসে। প্রতি ১২ বছর অন্তর উৎসবকালে এটি দৃশ্যমান হয়। আগামী প্রদর্শন ২০০৪এ। *Setchu* অর্থাৎ মেলা বসে প্রতি জুনের দ্বিতীয়ার্থে হেমিসে। ২ দিন ধরে চলে এই হেমিস ফেস্টিভ্যাল শুরু পদ্মসম্ভবা বা লোপন রিমপোচের জন্ম তিথিতে। দূর-দূরান্ত থেকে জাতীয় সাজে লামারা আসেন, ভিড় করেন তীর্থযাত্রীরা; আর আসেন পর্বটক দেশ-দেশান্তর থেকে। কলমলে মুখোশ নৃত্যোৎসবের আর এক আকর্ষণ। কথিত আছে, যিশু-খ্রিস্টের অকথিত বাল্যকাল এই হেমিস গুম্ফাতেই কাটে।

| শ্রীনগর থেকে লে সড়ক | | আরও ৩ কিমি |
|-----------------------|---------|---|
| শানমার্গ | ৮৪ কিমি | দুরারোহ পাহাড় চড়ে |
| সারবাল | ৯২ " | ৩০০ মি উঁচুতে |
| গুমরি (জোজি লা চুড়া) | | Gotsang Gompa. |
| ১১৫৭৮ ফুট | ১১০ " | হেমিসেরও আগে ১৩ |
| মিনিমার্গ | ১১৯ " | শতকে Gotsang-Pa-র |
| মাতারন | ১২৭ " | তৈরি। অদূরে এক |
| থাস (বিধের) | | গুহায় ধ্যানে বসেন |
| পীতলতম স্থান) | ১৪৭ " | গোৎসঙ-পা, সেই |
| থাসমার্গ | ১৭০ " | স্মৃতিতে তীর্থমন্দির। |
| চাবু | ১৮০ " | হাত ও পায়ের ছাপও |
| চাইতুও | ১৯৪ " | রয়েছে গোৎসঙ-পার। |
| সেরগিল (রাত যাপন) | ২০৪ " | এমনকি এই গুম্ফা |
| মূলবেক | ২৪৪ " | থেকেই ধর্মশাস্ত্র মুদ্রিত |
| মামিগ-লা (১২২২০ ফুট) | ২৫৯ " | হয়ে লাডাকের অন্যান্য |
| বোধিবু | ২৭৪ " | গুম্ফায় যাচ্ছে। |
| হেমিসকাট | ২৮৩ " | প্রতি দিন সকাল |
| কাট-লা (১৩৪৭৯ ফুট) | | ১০-০০টায় বাস যাচ্ছে |
| সবচেয়ে উঁচু) | ২৯৫ " | লে থেকে হেমিসে, ঘন্টা |
| সামান্দুর | ৩১০ " | দু'য়েকের পথ; ফেরে |
| খালসে | ৩৩০ " | ১৪-০০টায় হেমিস |
| সাসপোল | ৩৭২ " | থেকে শহরে। ঘন্টা |
| নিয়ো | ৪১৮ " | দেড়েক সময় মেলে |
| লে | ৪৩৪ " | গুম্ফা দেখার। এত অল্প সময়ে গুম্ফা দেখে নেওয়া অসম্ভব |

হয়ে পড়ে। তাই আগ্রহীদের উচিত হবে হেমিসে এক রাত কাটিয়ে দেবে ফেরা। হেমিস বাসস্ট্যাণ্ডে Rest House, Parachute ছাড়াও সাধারণ হোটেল আছে। আহার্যও মেলে। আবাস কাম্পিং-এর সুব্যবস্থাও মেলে। তবে, গাড়ি বা জিপে দিনে দিনে বেড়িয়ে ফেরা যায় লে থেকে হেমিস। উৎসবকালে গাড়ি ও রাত্রিবাসের বিশেষ ব্যবস্থাও হয় হেমিসে। মরসুমে বিশেষ ডিলাক্স বাস যাচ্ছে লে থেকে হেমিসে। টিকিট লাগে ১৫ টাকার গুম্ফা দেখতে।

THIKSEY GOMPA : লে থেকে ২০ কিমি দূরে

সিদ্ধুর বৃকে হেমিসের পথে পড়ে ৫০০ বছরের প্রাচীন লাল রঙের থিকসে গুম্ফা। পাহাড় চুড়োয় লাডাকের সুন্দরতম ১২ তলার এই গুম্ফা থেকে উপত্যকার দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান। বসাব্যবহার বৃদ্ধের মূর্তি; ৮টি মন্দিরও হয়েছে নতুন করে। মূর্তি আছে স্বর্ণমণ্ডিত নানান দেবদেবীর। স্থূপ, থাকাসও রয়েছে; দেওয়ালচিত্রগুলিও সুন্দর। এর লাইব্রেরির পুথির সংগ্রহ উল্লেখ্য। আর আছেন হলদে টুপির ৬০ জন লামা দৃষ্টিনন্দন স্থাপত্যের থিকসেয়। সম্মানীদের জন্যও মঠ আছে। সকাল ৬-৩০ ও দুপুর ১২-০০টার ধর্মীয় অনুষ্ঠানও আকর্ষণীয়। সবার উপরে Lamukhang Chape — কেবল পুরুষদের প্রবেশাধিকার মেলে। ভাগ্যানেনো নেংটি ইদুরের প্রসাদ খাওয়ার দৃশ্যও দেখে নিতে পারেন। তেমনই স্মারক রূপে পোটোল বুল স্ট্যান্ড সঙ্গী করত পারেন—কিনতে মেলে থিকসেয়। টিকিট লাগে গুম্ফা দেখতে ১৫ টাকার। বাস যাচ্ছে শহর থেকে। থাকারও ব্যবস্থা আছে Salzung Chamba H থিকসেয়।

TRAK TOK GOMPA : লে-মানালী সড়কের কাছ থেকে ১৫ কিমি দূরে Trak Tok Gompa. পথেই পড়ে Chemre Gompa. ব্রাগথোগ নামেও সমধিক খ্যাত নিঙমা বৌদ্ধদের একমাত্র গুম্ফা এই ব্রাগথোগ। ব্রাগথোগ অর্থাৎ পাথরের সিলিং গড়ে উঠেছে এই গুহাকে ঘিরে। জনশ্রুতি, ৮ শতকের পদ্মসম্ভবা গুরু রিমপোচে এই গুহাতেই ধ্যান ও বাস করেন। তন্ত্রের উপাসক রূপে মূর্তি হয়েছে পদ্মসম্ভবার। শতাব্দিক দেব-দেবীর মূর্তিও রূপ পেয়েছে দেওয়াল-চিত্রে। গুম্ফার লাখাং অর্থাৎ ভজনালয়টি শতাব্দিক বছরের প্রাচীন। তবে নতুন করে মন্দির হয়েছে ১৯৬৬তে। গ্রীষ্মে বাস যাচ্ছে কারু হয়ে লে-ব্রাগথোগ। ফেরার বাস পরদিন সকালে। দিনে একমাত্র বাস, ভিড়ও তাই বেশি এ বাসে।

তবে লোকাল বাসে বিভ্রম্বনা আছে চলায়। ডাহার দূর্বোধ্যতায় সঠিক বাস খুঁজে মেলা দুষ্কর। বাসে বেজায় ভিড়। ছাড়বার যথেষ্ট আগে ভাগে সিটের দখল নিয়ে বসে পড়ে যাত্রীরা। তাই উচিত হবে আগে থেকেই বাসে গিয়ে সিটের দখল নেওয়া। বাসগুলির উচ্চতা কম। যাত্রী বোঝাই বাসে দাঁড়িয়ে চলা আর এক বিভ্রম্বনা। তবে, পর্যটন মরসুমে JK Tourism বিশেষ সার্ভিস চালু রাখে। এ ব্যাপারে আগ্রহীদের উচিত হবে পর্যটন দপ্তরে যোগাযোগ করা।

STOK PALACE : লে থেকে শ্যোর পথে চোগ-লামসার-এসেতু পেরিয়ে সিদ্ধুর পশ্চিম পাড়ে ২০০ বছরের প্রাচীন রাজপ্রাসাদ। ১৯৭৪এ রাজার মৃত্যুর পর শুভদিনের প্রতীক্ষায় পুত্রসহ রানী আজও বাস করছেন। সাধারণের কাছে প্রাসাদ দ্বার রুদ্ধ হলেও ২০ টাকার টিকিটে মিউজিয়ামটি ৭—১৯-০০টায় দেখার ব্যবস্থা মেলে। অদূরে ফার্মা গুম্ফা। স্পিটাক থেকেও পথ এসেছে সিদ্ধু পেরিয়ে ফার্মা।

SHEY PALACE & GOMPA : শহর থেকে হেমিসের পথে ১৫ কিমি যেতে পাহাড় চুড়োয় ১৬৪৫এ

রাজা সিঙ্গে নামগয়ালের হাতে গড়ে ওঠে প্রাসাদ। অতীতে রাজপরিবারের গ্রীষ্মাবাস ছিল। এর বিজয়স্থূপের শীর্ষদেশে সোনায় মোড়া। তবে, প্রাসাদটি আজ বিধ্বস্ত হলেও কারুকার্যময় কাঠের বিশাল দরজা পেরিয়ে প্রাসাদের গুম্ফায় তামার উপর সোনার আন্তরগে লাডাকের বৃহত্তম (১২ মি) মূর্তি হয়েছে বুদ্ধ শাক্যমুনির। বহুমূল্য ধাতু ও নানান রত্ন খচিত মন্দিরের কারুকার্যও সুন্দর। ৭—৯-০০ ও ১৭—১৮-০০টায় খোলা, টিকিট ১০। তবে, লামাদের অনুমতিতে অন্য সময়ও দেখার সুযোগ মেলে। আর আছে শ্যের কাছে নীল আকাশের নিচে শতাধিক স্থূপ ও মণিওয়াল। থিকসেও দৃশ্যমান শ্যে থেকে।

SANKAR GOMPA : শহর থেকে ৩ কিমি উত্তরে হলুদ টুপি সম্প্রদায়ের শঙ্কর গুম্ফা। ধাপে ধাপে সিঁড়ি উঠে Dukhang অর্থাৎ উপাসনা হল। সোনায় তৈরি অসংখ্য মিনিয়চার মূর্তি, ছবির সংগ্রহও উল্লেখ্য। মুঞ্চ করে এর দেওয়াল চিত্রও। ১১ মাথা, ১০০০ হাতের অবলোকিতেশ্বর ও ১০০০ চক্ষু, ১০০০ হাত, ১০০০ পায়ের বুদ্ধ মূর্তিটি সুন্দর। বিদ্যুৎও পৌঁছেছে শঙ্কর গুম্ফায়। ছাদ থেকে চারপাশের দৃশ্য সুন্দর দেখে নেওয়া যায়। বাজার ছাড়িয়ে হিমালয় হোটেলের পাশ দিয়ে পায়ে পায়ে সন্ধ্যার পরও চলা যায় শঙ্কর দর্শনে। টিকিট ১০ করে। ছুটি ছাড়া ৭—১০-০০ ও ১৭—১৯-০০টায় খোলা।

ইকোলজিক্যাল ডেভেলপমেন্ট সেন্টার : Tsemo Hotel লাগোয়া লাডাকি পরিবেশ সম্পদ-সংস্কৃতির দপ্তর বসেছে। এমনকি সোলার এনার্জি নিয়েও গবেষণা চলছে। লাইব্রেরি বসেছে; রেস্টুরেন্টও আছে। প্রতি সোম-বুধ-শুক্রবার ১৫-০০টায় VDO ফিল্মে *লার্নিং ফ্রম লাডাখ* দেখাবার ব্যবস্থাও আছে এদের। তেমনই Cultural & Traditional Society (CATS) প্রতি সন্ধ্যায় হোটেল ইয়াক টেইল-এর বিপরীতে ৫০ টাকায় লাডাকি সাংস্কৃতিক প্রোগ্রামটিও উচিত হবে দেখে নেওয়া।

SPITUK GOMPA : শ্রীনগর-লে সড়কে লে-র ৯ কিমি আগেই বিমানবন্দর লাগোয়া অনুচ্চ এক পাহাড়-চূড়ায় ১৫ শতকের এই গুম্ফা। প্রাচীন গুম্ফাটির পাশে নতুন করে গুম্ফা হয়েছে স্পিটাকে। বেশ কয়েকটি আকর্ষণীয় থাঙ্কাসও রয়েছে। এটিও বিদ্যুতে আলোকিত। আর পাহাড়চূড়ায় পালদান লামো মন্দিরে রয়েছেন সহস্র বছরের আকর্ষণীয় তন্ত্রের দেবী অতিকায় কালো পাথরের বজ্রভৈরব ও ছয় হাতের মহাকাল ছাড়াও নানান ভয়াল মূর্তি। তবে, দেবীর মুখ সারা বছরই ঢাকা থাকে। বাৎসরিক মেলা হয় জানুয়ারিতে। তখনই দেবীর মুখের আবরণ উন্মোচিত হয়। এর অতীতকালের মুখোশের সংগ্রহও বিশেষভাবে চমকপ্রদ। মন্দির রয়েছে আরও দুই স্পিটাকে। পথ গিয়েছে আরও এগিয়ে লাল Latho মন্দিরে। এটিও আর এক দ্রষ্টব্য। তেমনই সুন্দর এর দেওয়ালচিত্র। আর

আছে থাঙ্কাস, প্রেয়ার স্ল্যাপ, বই-এর সংগ্রহ স্পিটাকে। চারপাশের দৃশ্য সুন্দর দৃশ্যমান স্পিটাক থেকে। দিনে ২টি বাস যাচ্ছে, টিকিট লাগে গুম্ফা দেখতে ১৩ করে।

PHIYANG GOMPA : শ্রীনগর-লে সড়কে ফিয়াং গুম্ফা। ১৬ শতকে তৈরি লাল টুপি সম্প্রদায়ের ফিয়াঙেও রয়েছে ৫টি গুম্ফা, নানান মূর্তি ও থাঙ্কাসের সম্ভার। ফিয়াং-এর আর এক আকর্ষণ তার মিউজিয়াম। ৯০০ বছরেরও অধিক প্রাচীন এই মিউজিয়ামে চীনা, তিব্বতীয়, মঙ্গোলিয়ান ছাড়াও নানান আমেরিকানদের সংগ্রহ উল্লেখ্য। সংস্কারও হয়েছে সম্প্রতি। অদূরেই ফিয়াং লেক। তেমনই ফিয়াং উৎসবেরও যথেষ্ট প্রশস্তি দেশ-দেশান্তরে। লে থেকে ১৭ কিমি যেতে শ্রীনগর-লে সড়ক থেকে ৬ কিমি গিয়ে পথ গিয়েছে ফিয়াং গুম্ফার। বাস যাচ্ছে, টিকিট লাগে ১০ টাকার গুম্ফা দেখতে।

দূরে-দূরান্তরে ধরেবিধরে রঙবেরঙের পাহাড় দাঁড়িয়ে। কখনও রঙ তার পিঙ্ক, কখনও বা ফিকে হয়ে রঙ পেয়েছে চকোলেটে—আবার কোথাও গ্রেটে। তারই মাঝে পাহাড়কে পাক খেয়ে পথ চলে একেবেঁকে। নিচুতে অশ্বত্থীন খাদ নেমেছে পাতালে। হাতছানি দেয় বরফে ছাওয়া পাহাড়-শ্রেণী। যাত্রীও দিশেহারা প্রকৃতির গড়া নিপুণ স্থাপত্যে। সত্যিই অপরূপা এ পথের নৈসর্গিক শোভা। কাকভোরে কারাগিলি ছেড়ে ৪০ কিমি যেতে তিব্বতীয়দের গী মূলবেকে। গৈরিক রঙা পাহাড়ের পাদদেশে সবুজে ছাওয়া মূলবেকেও ২টি গুম্ফা আছে। আর আছে পাহাড় কেটে তৈরি ২০০০ বছরের প্রাচীন কুষাণ যুগের নির্দশন মৈত্রেয় বুদ্ধের চতুর্ভুজ মূর্তি। পাশেই প্রার্থনাচক্র। ৯ মি উঁচু মৈত্রেয় বুদ্ধের মূর্তি। লে যাত্রীদের চলার পথে এটিও দেখে নেওয়া উচিত হবে। থাকার ব্যবস্থা মেলে মূলবেকে JKTC-র *ট্যুরিস্ট বাসলো* ও PWD-র *রেস্ট হাউসে*। প্রাইভেট *Paradise H-ও* আছে মূলবেকে। মূলবেক ছাড়াতেই পথপাশে পাহাড় কেটে মূর্তি হয়েছে ভবিষ্য বুদ্ধের—Chamba statue.

LAMAYURU : লাডাকের প্রাচীনতম গুম্ফাটি রয়েছে ৩৭১৮ মি উঁচু Mamika La ছাড়িয়ে পথ যেখানে সবচেয়ে উঁচুতে (৪০৯৪ মি) উঠেছে সেই ফট্টা-লা পেরিয়ে লে থেকে ১২৭ কিমি দূরে চারপাশ পাহাড়ে ঘেরা লামায়ুরুতে। উচ্চতার তুলনায় গীত বেশি লামায়ুরুতে। শ্রীনগর/কারগিল-লে বাস যাচ্ছে লামায়ুরু হয়ে। চলার পথেও দেখে নেওয়া যায় পাহাড় কেটে লাডাকি স্থাপত্যে গড়া ১০ শতকের এই গুম্ফা। তেমনই বাতাসের গতির সঙ্গে শক্তির নির্দশন দেখে নেওয়া যায় গুম্ফার চারপাশে ক্ষয়ে যাওয়া পাহাড়ে। লামায়ুরুর অল্প আগে মুলাল্যভ ভিউ পয়েন্ট থেকে ঢেউ খেলানো পাহাড়ের চমকপ্রদ দৃশ্যও দেখে নেওয়া যায়। গ্রামের প্রবেশ পথে সারিবদ্ধ চৈত্য ও মণিপ্রাচীর। আরও যেতে খালসে। খালসের আগেই জম্মু ও কাশ্মীরের ভোগরা রাজা ওলাব সিংহের রণকুশলী সেনাপতি জোরাবার

সিংহের তৈরি দুর্গের ধ্বংসাবশেষ আজও দেখে নেওয়া যায়। খালসের আর এক প্রসিদ্ধি তার খোবানি। বাসের লাঞ্চ বিরতি খালসেয় মেলে। সিদ্ধু ও অদৃশ্য হয়েছে খালসে পেরুতেই। থাকারও ব্যবস্থা মেলে হোটেল সিদ্ধু খালসেয়। তেমনই প্রাচীন আর্য অর্থাৎ হানু উপজাতিদের বাসভূমিরও পথ গিয়েছে খালসে থেকে। খালসের আর এক দর্শন মূল পথ থেকে কয়েক কিমি সরে গিয়ে Rizong-এ nunnery of Julichen আর monastery. থাকারও ব্যবস্থা মেলে মনান্ত্রিতে।

| টুরিস্ট সিন্জনে লে থেকে বাস সার্ভিস | | | |
|-------------------------------------|--------|------------|--------------|
| স্থান | দূরত্ব | বাস সংখ্যা | ভাড়া (টাকা) |
| Choglamsur | ৪km | 4 | 1 75 |
| Choshot | 25 " | 3 | 5 00 |
| Hemis | 45 " | 1 | 12 00 |
| Khalsi | 98 " | 2 | 25 00 |
| Matho | 27 " | 2 | 5 00 |
| Phyang | 22 " | 3 | 7 00 |
| Sabu | 9 " | 3 | 2 00 |
| Sakti | 51 " | 2 | 12 00 |
| Saspor | 62 " | 2 | 14 00 |
| Shey | 16 " | 5 | 3 50 |
| Spitak | 8 " | 5 | 2 00 |
| Stok | 17 " | 2 | 5 00 |
| Tikse | 20 " | 3 | 6 00 |

আরও প্রয়োজনে বাসস্ট্যান্ডে টাইম টেবল বোর্ডটি দেখা যেতে পারে।

ALCHI GOMPA : আর খালসে থেকে ৩৭, লে-র ৬৭ কিমি আগেই পাহাড় ছেড়ে নিচুতে হয়েছে আলচি গুম্ফা। লাডাক যাত্রীদের কাছে এক জাদুপুরী গড়েছে কাঠের তৈরি আলচির ৫ গুম্ফা মন্দির। কারুকার্য মণ্ডিত ২০ ফুট উঁচু সহস্র মাথা ও সহস্র হাতের অবলোকিতেশ্বরের মূর্তি। হাজার বছরের পুরাতন কাশ্মীর শৈলীর দেওয়াল চিত্র, কাঠের কারুকার্য খুবই আকর্ষণীয়। অদূরে প্রস্তর গহের দেওয়ালে বুদ্ধ ও হিন্দু দেবদেবীর নানান মূর্তি চিত্রিত হয়েছে। থাকারও ব্যবস্থা আছে আলচি ও সাসপোলের সাধারণ হোটেলে।

LIKIR GOMPA : তেমনই আছে আরও নানান গুম্ফা জাতীয় সড়কে। সাসপোল থেকে স্বল্প যেতে চড়াই পথে লিকির গুম্ফাটিও দেখে নেওয়া যায়। সড়কপথে লে-র সন্নিকটে বাসগো-র খ্যাতি তার বিক্ষিপ্ত দুর্গের জন্য। ১৬৮০তে নামগ্যাল রাজাদের সঙ্গে মোঙ্গলদের যুদ্ধ হয়। দীর্ঘ ৩বছর অবরোধ করে রাখে দুর্গ। গুম্ফাও হয়েছে—বৈচিত্র্য আছে বুদ্ধ মূর্তিতে। জিপ ও জোঙ্গা যাত্রীরা যাতায়াতের পথে দেখে নিতে পারেন।

আবার উৎসাহীরা লুবরা উপত্যকায় ৫৩০০ মি উঁচুতে খারদুং-শা বেড়িয়ে আসতে পারেন লে থেকে। পথ গিয়েছে বিশ্বের উচ্চতম ব্রিজ পেরিয়ে খারদুং-লা গিরিপথের মধ্য দিয়ে সিয়াচেন হিমবাহের প্রান্তে। চীনা বর্ডার খারদুং-লার মূল আকর্ষণ নৈসর্গিক শোভা। আর আছে শিব অর্থাৎ খারদুং-লা বাবার মন্দির। আপেল, খুবানি, আখরোট, তুতের চাঁষ হচ্ছে খারদুং-লায়। ইয়াক, ভেড়া ও ছাগল চরে

বেড়ায়। প্রতি রবিবার বাস যাচ্ছে। দূরত্ব ৪৬ কিমি, ঘন্টা পাঁচেকের পথ। তবে, Divisional Commissioner, Leh বা J & K Govt Tourist Office, Leh থেকে অনুমতি লাগে এ পথে যেতে। তেমনই খারদুং-লা তথা লুবরা উপত্যকার আর এক আকর্ষণ বিশ্বের উচ্চতম ৫৬০৬ মি উঁচুতে বেকন হাইওয়ে। পথও খোলা সেপ্টেম্বর ও অক্টোবর মাসে। তবুও যেন মাঝে মধ্যে বরফের ফসিল পেরুতে হয় এপথে। বিদেশীদের কাছে এপথ রুদ্ধ।

প্যাংগং সো : নয়নলোভন নৈসর্গিক শোভার মাঝে প্যাংগং সো অর্থাৎ সরোবরটি লাডাক ভ্রমণের আর এক দ্রষ্টব্য। হিসাপ্তাহিক সার্ভিসে বাস যাচ্ছে লে থেকে ১১৬ কিমি দূরের তাংসে। তাংসে থেকে জিপসি জিপে ৩৪ কিমি দূরের সরোবর। যাতায়াত ১৫০০। PWI-র বাংলা, হোটেল, দোকানপাট, গুম্ফা আছে তাংসে-য়। চাংপাদের বাস। সূর্যোদয় ও সূর্যাস্ত মনোরম। আহারও সঙ্গী করা দরকার। লে থেকে নানান ট্রাভেল এজেন্ট ৭০০ টাকায় প্যাকেজ ট্যুরে প্যাংগং সো দেখিয়ে আনে। আবার ২ দিনে ট্রেক করে তাংসে থেকে লুকুং হয়ে প্যাংগং সো চলা যেতে পারে। প্যাংগং ও চেনমো গিরিমালার মাঝে ১৪২৫৬ ফুট উঁচুতে ১৩৫ কিমি দীর্ঘ সরোবরের ৪৫ কিমি ভারত রাষ্ট্রে বাকি অংশ তিব্বত তথা চীনে। স্বচ্ছ নীল জল—সূর্যের আলোর বিচ্ছুরণে রঙ বদল হয় সরোবরের। জলের তলে রঙবেরঙের নুড়ি পাথর। চেনা-অচেনা পাখিও ভেসে চলে লেকের জলে। সারা আকাশটাও মুখ দেখে লেকের স্বচ্ছ জলে। আর আছে হাড়কাঁপুনি হিমেল হওয়া লেককে ঘিরে। থাকার কোনো ব্যবস্থা নেই প্যাংগং সো-য়। লেকে অবস্থানে তাঁবু সঙ্গে নেওয়া দরকার। তবে ২ কিমি দূরের লুকুং-এ আর্মি অফিসারদের VIP Guest House আছে। তবুও যেন উচিত হবে প্রথম দিনে লে থেকে তাংসে-র পৌছে অবস্থান করা। দ্বিতীয় দিনে তাংসে থেকে জিপসিতে প্যাংগং সো পৌছে দিনভর স্বর্ণের হ্রদে বেড়িয়ে কাটিয়ে দিনান্তে তাংসে ফিরে রাতের অবস্থান। তৃতীয় দিনে বাসেই ফিরন লে। তবে, লে থেকেও সরাসরি জিপসিতে ৬০০০ টাকায় ২ দিনে সাঙ্গ করা যায় প্যাংগং সো সফর। অনুমতি লাগে ড্রেপটি কমিশনার, লে থেকে প্যাংগং সো যাত্রায়। ভারতীয় নাগরিকদের নিদর্শন পত্র সঙ্গে থাকা ভাল।

তেমনই চলা যায় লে থেকে ১৮০ কিমি দূরের নুমায় কিয়াং অর্থাৎ বন্য গাধা দর্শনে। আরও ২০ কিমি যেতে লোমা। লোমা থেকে ৮০ কিমি দূরে তিব্বত সীমান্ত। অনুমতিও লাগে ডিভিশনাল কমিশনার থেকে। ছোট গ্রাম নুমা। সিদ্ধুর কাঁধে ভর দিয়ে পথ চলে। জিপ যাচ্ছে এপথে। পথশোভা মনোরম। শীতের আধিক্য আছে—তাপমান দিনে-রাত্রে লে-র থেকে নিম্নে থাকে। গুজরাটের মতো বন্য গাধার দর্শন মেলে। দোকানপাটও আছে। বিজলীও জ্বলছে সূর্যাস্ত থেকে সূর্যোদয়ে জেনারেলের। থাকার জন্য

ফরেস্ট বাংলাদেশে নুমায়: অবু: Wildlife Warden, Dept of Wildlife Protection, Leh-194101, Ladakh, J & K.

তবুও যেন অর্ধেকিছুটা আধিক্য লাগলেও যাতায়াত ভাড়ার চুক্তিতে—১ ঘণ্টায় পিটাক, ঘণ্টা ছয়কে শো-থিকসে-হেমিস বেড়িয়ে ফেরা যায়। মানালী যাচ্ছে এদের গাড়ি ৯২৫০, শ্রীনগর ৪৭৫০, কারগিল ২৫০০ টাকায়। উচিত হবে ট্যাক্সি স্ট্যান্ডে Ladakh Taxi Operators Union থেকে সর্বশেষ ভাড়া জেনে সরাসরি গাড়ির সঙ্গে কথা বলা। ডেমনই লাডাকের আর এক যান মালবাহী ট্রাক। গাড়ির অপ্রতুলতা হেতু চলার পথে নারী-পুরুষ-শিশু যাত্রী হতে পাবেন ট্রাকে। আব, নানান সংস্থা সিন্ধুব রূপালি জালে অভিযান-প্রিয়দের নিয়ে দিনভর প্রোগ্রামে Rafting-এ যাচ্ছে ৮৫০ টাকায় নানান সংস্থা লে থেকে।

কারগিল

শ্রীনগর থেকে ২০৪ আর লে-র ২৩০ কিমি আগে সুরু নদী পাড়ে ২৬৫০ মি উচ্চত নতুন গড়া নবতম কারগিল জেলার সদর কারগিল শহর। আয়তন ১৪০৩৬ বর্গ কিমি, লোকসংখ্যা ৬৫৯৫২ মধ্যযুগীয় আধুনিক শহর কারগিলে। শ্রীনগর-লে বাস যাতায়াতের পথে কারগিলে রাতের বিশ্রাম নেয়। যাত্রীদেরও রাত কাটাতে হয় কারগিলে। প্রত্যুষেই চলতে শুরু করে বাস কারগিল ছেড়ে গঙ্ঘব্যোম পথে। উইলো আর পপুলারে ছাওয়া, ফলবাগিচার জন্যও কারগিলের প্রশস্তি—গম, বার্লি, সবজি হচ্ছে কারগিলে। কারগিলের আর এক আকর্ষণ তুর্কি স্থাপত্যে গড়া ইমাম-বাড়া। মহরম উদযাপিত হচ্ছে মহা সমারোহে। সিয়া সম্প্রদায়ের মুসলিমদের বাস কারগিলে। ট্যুরিস্ট রিসেপশন সেন্টারও বসেছে কারগিলের ট্যাক্সি স্ট্যান্ডে। ট্রেকিং-এর নানান জিনিস ভাড়াই মেলে এদের কাছে। পোস্ট অফিস, স্টেট ব্যাঙ্ক ও জে কে ব্যাঙ্কের শাখাও বসেছে কারগিলে। ৩ কিমি দূরে সীমান্ত।

অতীতের ইন্ডো-তিব্বত-চীনের বাণিজ্যপথে জংশন ছিল কারগিলে। তবে, স্বাধীনোত্তর কালে কারগিলের গুরুত্ব শ্রীনগর-লে যাত্রীদের যাতায়াতের পথে এক রাতের বিশ্রামস্থল রূপে। নতুন করে আকর্ষণ বেড়েছে কারগিল-পাদুম পথ তৈরিতে জাঁসকর যাত্রীদেরও। দ্বি-সাপ্তাহিক সার্ভিসে বাস যাচ্ছে কারগিল থেকে Padumএ। বাস যাচ্ছে Mulbekh, Drass, Pannikar, Sauku কারগিল থেকে। ট্রেকারদেরও স্বর্গরাজ্য কারগিল। কারগিল থেকে পথ গিয়েছে জাঁসকর ও সুরু উপত্যকার দিকে দিকে নানান ট্রেকপথে। হোটেল ও দোকানপাট হয়েছে। পণ্যও মেলে নানান। বালতিক ও লাডাকির মিশ্রণে জাত Purig এদের মুখের ভাষা। উর্দু ও ইংরেজিরও চল আছে। ডেমনই আরবিও চলে কারগিলে।

ঘণ্টা খানেকের পথে Goma Kargil অর্ধাং আগার কারগিলও বেড়িয়ে নেওয়া যেতে পারে পায়ে পায়ে। প্যানো-রামিক ভিউ তথা কারগিলের গ্রাম্য বসতি দেখে চলা যায়।



সার্কিট হাউস, ডাক বাংলা ও J&K TDC-র ২টি ট্যুরিস্ট বাংলা আছে কারগিলে। একটি তার পাছাড়ী টিলায়, দ্বিতীয়টি সুরু নদীর ধারে। অবু:

Tourist Officer, Kargil, J & K. আর আছে H Siachen, Taxi Std; Caravan Serai, Welcomgroup-এর High Lands H, Hotel D Zojila, H International, PC-194103; H Scones. বাসস্ট্যান্ডের পেছনে Suru View; H Green Land. নদীমুখী Crown H, Nun Kun, H Broadway, Suru View; Evergreen, Lyta, Deluxe, Sushila, Puri, Punjab Janata, Popular Chacha, Yak Tail, Argala, New Light, Margina Tourist Home, Naktul View ছাড়াও নানান; এদের রেট ১৫০। ১২৫০ থেকে। তবে, রেটের তুলনায় হোটেলগুলির ব্যবস্থাপনা অতি নিচু মানের। সাধারণ হোটেল বার্গন হতেও দেখা যায় রেট নিয়ে।

থাকার জন্য ট্যুরিস্ট বাংলা, হোটেল স্কোনস, গ্রীনল্যান্ড, মার্জিনা, নাকটুল ভিউ ভালই। আর আহাযে—নাকটুল, মার্জিনা ট্যুরিস্ট হোটেল চীনা ডিশ পরিবেশনে যথেষ্ট খ্যাত। ডেমনই বাবু ও পপুলার চাচাও সদাই ব্যস্ত ভিড় সামলাতে।

এছাড়াও PWD, RH রয়েছে ড্রাস, বোধধর্ষু ও খালসে-তে। আর ট্যুরিস্ট বাংলা আছে ড্রাস, মূলবেক, পানিকার, পাদুম, জাঁসকরে। জিপ বা স্টেশন ওয়াগনের লে যাত্রীরা মূলবেক, বোধধর্ষু বা খালসেতে পৌছেও রাতের বিশ্রাম নিতে পারেন। তবে, আয়োজন কারগিলেই ব্যাপক।

জাঁসকর উপত্যকা

নতুন করে দরজা খুলেছে জাঁসকর উপত্যকার পর্যটক-দের কাছে। নৈসর্গিক সৌন্দর্যের জন্য জাঁসকরের বিশ্বপ্রশস্তি আছে। তবুও যেন পর্যটক থেকে ট্রেকারদের স্বর্গরাজ্য এই জাঁসকর উপত্যকা। Nun ও Kun যমজ দুই গিরিশিখর যেন জাঁসকরের আর এক দৃষ্টিনন্দন শোভা। দক্ষিণে কিস্তওয়ার ও মানালী, উত্তরে কারগিল ও লামাযুরু আর দু'পাশে প্রাচীর হয়ে দাঁড়িয়ে হিমালয় ও জাঁসকর পাছাড়শ্রেণী। বিশ্বের অন্যতম শীতল স্থান ৫০০ বর্গ কিমি ব্যাপ্ত জাঁসকর উপত্যকার সদর দপ্তর পাদুম। মনমানানো ঘন নীলাকাশের নিচে ধূসর বাদামি রঙের পাহাড়ে ঘেরা ৩৫০০মি উঁচু পাদুমে ১০০০ লোকের বাস—৩০০ তার সুম্মি মুসলিম, বাকি বৌদ্ধ। সারা শীতকালে -২০° সেন্টিগ্রেডে তাপমান থাকে জাঁসকরে। বছরের সাত মাস বরফও পড়ে। ৮ কিমি দূরের সানিওক্ষার আকর্ষণও কম নয়। আগস্টের পূর্ণিমা ২ দিনের উৎসবে লামা নৃত্য দেখে নেওয়া যায়। বর্ণাঢ্য জাতীয় সাজে তিব্বতীয় বাধ্যবস্ত্রের সঙ্গে ডাল মিলিয়ে জাতক-আখ্যানে পুষ্ট লামা-নৃত্যে অভিনবত্ব আছে।

১৯৮০তে তৈরি সড়কে জিপ যাচ্ছে কারগিল থেকে পানিকার হয়ে পাদুমে। যাতায়াতে ২ দিনের ভাড়া ৬৫০০। আর নির্ভরশীল না হলেও জুলাই থেকে অক্টোবরে দ্বি-সাপ্তাহিক সার্ভিসে বাস মেলে ঢাল বেয়ে কারগিল থেকে ২৪০ কিমি দূরের পাদুমের। আবার মালবাহী ট্রাকেও চলা যেতে পারে শখানেক টাকায় কারগিল থেকে পাদুম। পারে

পায়ে ট্রেক করেও যাওয়া যেতে পারে দিন সাতকে কারগিল থেকে পাদুম। পথঘাটের অভাব, ঘোড়া ও ইয়াকের পিঠেও যাত্রী চলে জাঁসকর উপত্যকার পাদুমে। ঘণ্টা দুয়েকে ট্রেক করে Karsha-য় ১৬ শতকের মনাস্টিরি দেখে নেওয়া যেতে পারে। আকারে কার্শা বৃহত্তম হলেও ১২ কিমি দূরে Burdan মনাস্টির নানানধর্মী সংগ্রহ উল্লেখ্য। তেমনই Phugtal ও Zong-khul-এর মনাস্টিরি দু'টিও জাঁসকরের আকর্ষণ। দোকানপাট, ট্যুরিস্ট অফিসও বসেছে পাদুমে। J K Tourism-এর Tourist Bungalow-প্রাইভেট হোটেল—Chora La, Haftal View, Ibex, Shapodokla

ছাড়াও প্রাইভেট বাড়িতে ঘর মেলে থাকার পাদুমে।

আবার মানালী-পাদুম-মানালী ভ্রমণ ২টি ভিন্ন পথে সপ্তাহ তিনেক ট্রেক করে সাজ করা যেতে পারে। তবে, পথ যথেষ্ট দুর্গম, পথও উঠেছে ৫৫০০ মি উঁচুতে। ঠিক তেমনই পায়ে পায়ে ট্রেক করে রূপসী লাডাকের রূপের খোঁজে পথ গিয়েছে কারগিল থেকে পাদুম, লে, ছাড়াও লাডাকভূমের দিকে দিকে। তবে, জাঁসকরের ট্রেক পথ খুবই দুর্লভ। সাধারণ ট্রেকারদের জন্য নয় জাঁসকর। তেমনই উচিত হবে ট্রেকপথের সবরকম প্রস্তুতি শ্রীনগর বা মানালী থেকে সঙ্গী করা।



পথ চলতে সঙ্গে রাখুন

(১) চলার পথে বমি-বমি ভাব দেখা দিলে—Reglan/Perinorm/Jomid/Avomine/Siquil ১টি ট্যাবলেট খেলে ৬ ঘণ্টার অব্যাহতি মেলে। তবে পাহাড়ী পথে আপনার দিন রাতে ১টি আর বাসে ওঠার ১ ঘণ্টা আগে ১টি Avomine/Dranamine বেশি ভাল কাজ করে। (২) চোঁট পাওয়া আবার কমাতে—Butaproxivon/Rumaremfort/Oxalglin/Suganril। (৩) গা-হাত-পা ব্যথা বা হৃদযন্ত্রভাব—Cupagin/Panalate/Dispirine খাবার পর ১টি করে ট্যাবলেট খেলে উপশম মেলে। (৪) অজীর্ণ—Arenzyme/Digeplex/Fluzyne/Ralcrizyme। (৫) অম্বলে—Dingene/Alludrox/Gellusile/Sodamint। (৬) হঠাৎ ঠাণ্ডায় সর্দি হলে—Cosavil/Vicks। (৭) খুঁস খুঁস কানিতে—Strepsil/Vicks। (৮) জল থেকে বা কোনো কারণে আমাশা হলে—Enteroguard/Forquinal/Mexaforn ২টি করে দিনে ৩ বার। (৯) দাঁত হলে—Streptomagma/Furoxime/Furalolin ৬ ঘণ্টা পর পর ২টি করে ট্যাবলেট, শিশুর ১টি করে; বেশিতে Chlorostep/Enterostep। (১০) জ্বরে—Crocin/Calpol ১টি করে। (১১) এলাজিডে—Phenergon/Avil। (১২) অনিদ্রায়—Calmpose/Paxum। তবুও উচিত হবে পারিবারিক চিকিৎসকের সঙ্গে আলোচনা করে হুঁড়াত সিদ্ধান্ত নেওয়া।

—না বলা কথা

ব্যক্ততার মধ্যে ভুলত্রুটি ঘটে থাকলে তার জন্য প্রথমেই অপরাধ স্বীকার করে রাখি। আনুমানিক ধারণা পাওয়ার সুবিধার্থে দূর পাল্লার বাস ও ট্রেনের সময়, ভাড়া, দূরত্ব দেওয়া হয়েছে। তবে, প্রগতির সঙ্গে সুর মিলিয়ে এদের অগ্রগতি অস্বাভাবিক নয়। সে কারণে, বিমান, রেল ও বাসের সময় ও ভাড়ার ব্যাপারে কর্তৃপক্ষের সঙ্গে সরাসরি যোগাযোগ করাই যুক্তিযুক্ত। তেমনিই টেলিফোন নম্বরেও কিছু বিভ্রান্তি ঘটে থাকা অস্বাভাবিক নয়। সারা ভারত জুড়ে টেলিকম সার্ভিসে নানান প্রগতির সঙ্গে নম্বরেও পরিবর্তন ও পরিবর্তন ঘটে চলেছে ক্ষণে ক্ষণে। হোটেলের নাম ও খরচ-খরচার ব্যাপারেও একই বক্তব্য। শুধু তাই বা কেন—সাধারণ হোটেল যাত্রীর আধিক্যে চাহিদার নিরিখে রেন্ট বদলের ঘটনা আশা করব অজানা নয় ভ্রমণার্থীদের। আরও পরিতাপের বিষয় মধ্যমানের হোটেলগুলি একের ব্যবহৃত বিছানা-পত্র নবাগতকে ব্যবহারে বাধ্য করছে। এমনকি নানান-রাজ্য সরকারের ট্যুরিস্ট লজ্জেও সংক্রমিত হচ্ছে এ ব্যাধি। 'চিহ্নিত হোটেলগুলি ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরের অনুমোদিত।

ভারত ভ্রমণে যানবাহন শিরোনামায় যাত্রী সেবায় ভারতীয় রেল ও বিমানের চলতি সুযোগ-সুবিধার কথা বলা হয়েছে। আর বাস, সে তো মাকড়সার জাল বুনে চলেছে সারা ভারত জুড়ে প্রতিনিয়ত। তাই ভারত পর্যটনে বাস আজ অগ্রগণ্য ভূমিকা নিয়েছে।

বই-এর মধ্যে বেশ কিছু সংক্ষেপিত শব্দ ব্যবহার করা হয়েছে : অব—অগ্রিম বুকিং, কল বুকিং—কলকাতায় বুকিং, মি—মিটার, কিমি—কিলোমিটার, ①—Telephone, S—সিসল, D—ডাবল, SAB—Single bedded attached bath, DCB—Double bedded common bath, DAB—Double bedded attached bath, TAB—Three bedded attached bath, FR—Family Room, A/c S—সীতাতপ সিসল, A-c—Air Cooled, H—Hotel, L—Lodge, RR—Railway Retiring Room, CH—Circuit House, FRH—Forest Rest House, IB—Inspection Bungalow, GH—Guest House, Ap—American Plan অর্থাৎ (খাণ্ডা + খাওয়া-সহ) Full Board, EP—European Plan অর্থাৎ কেবল ঘর ভাড়া, B-B—Bed and Breakfast, EE—Executive Engineer, প্যা—প্যাসেঞ্জার, এক্স—এক্সপ্রেস, ITDC—Indian Tourism Development Corporation, AI—Air Port 1km, RI—Railway Station 1km, BO—Bus Station 0 km, OS—Off Season, Opp—Opposite, ১—১.০০ টাকা, US\$—ইউ এস (মার্কিন) ডলার, ৫ ঘ—৫ ঘণ্টা, এ-ছাড়াও আরও এমন কিছু সংক্ষেপিত শব্দ ব্যবহৃত হয়েছে যেগুলি প্রতিনিয়ত ব্যবহারে আমাদের কাছে বিশেষভাবে পরিচিত। তাই তাদের উল্লেখের দীর্ঘ করে তোলা নিষ্ঠুরোক্ত মনে করছি এ-অধ্যায়।

দিনের ক্ষেত্রে বারের বদলে সংখ্যা ব্যবহৃত হয়েছে।

অর্থাৎ : ১—সোম, ২—মঙ্গল, ৩—বুধ, ৪—বৃহস্পতি, ৫—শুক্র, ৬—শনি, ৭—রবি। আর সময়—২৪-০০ ঘণ্টা হিসাবে, অর্থাৎ ১৩-০০টার ক্ষেত্রে দুপুর ১-০০টা নির্ণায়ক।

ফুট বা মিটার, কিলোমিটার বা মাইল এই দুই প্রথার ব্যবহারে হয়ত বা কিছুটা জগাধিচুড়ি পাকিয়ে তোলা হয়েছে। তবে, সাধারণ পাঠক বন্ধুদের স্বার্থে এটুকু না করলে নয়। বই-এর পরিসংখ্যান ১৯৯১-এর সেনসাস মতে দেওয়া হয়েছে। আর হোটেল, বিমান, বাস, ট্রেনের ভাড়া ও সার্ভিস অক্টোবর ১৯৯৭-এর নির্ধারিত মত উল্লিখিত হয়েছে ১৯৯৮-এর সংস্করণে।

হাস্য হয়ে পথ চলুন। লাগেজ এমনভাবে নিন—যাতে নিজেরই বহনযোগ্য হয়। একের পর এক ঘটনার ঘন ঘটায় যাত্রীরা যখন বিভ্রান্ত ঠিক তেমনিই দিনে ভ্রমণার্থীদের পাশে এগিয়ে এসেছে ন্যাশানাল ইনসিওরেন্স কোং লি. ভ্রমণ দীপ বীমার সুযোগ নিয়ে। ৩০ দিন ব্যাপী ভ্রমণ পথে দুর্ঘটনাজনিত চিকিৎসা, মালপত্র এমনকি জীবনহানির ক্ষতিপূরণের সুযোগ পেতে মাত্র ১৫০.০০+৫% সার্ভিস ট্যাক্স দিয়ে পলিসি-র সুযোগ নিতে Information Inc, 17 Justice Dwarakanath Rd, Cal-20, ① 4754502কে যোগাযোগ করা যেতে পারে।

পথ চলতে ক্যাশ টাকা সঙ্গে না নেওয়াই বাঞ্ছনীয়। আজকাল রাষ্ট্রীয় ব্যাঙ্কের শাখা পাবেন প্রায় সর্বত্র। ট্রাভেলার্স চেক (STB) নিন—এতে হাস্যের ৫ কমিশন লাগলেও নিরাপত্তা বেশি। শাখাও এদের ১২২০৩ সারা দেশ জুড়ে। দোকানপাট, হোটেলগুলিও ট্রাভেলার্স চেক গ্রাহ্য করে। নানান ব্যাঙ্কের ক্রেডিট কার্ডও সঙ্গী করতে পারেন ভ্রমণে।

কমপক্ষে ১০ দিনের সফরে বেশিরে সাধারণভাবে দৈনিক ২০০ টাকা হারে এককভাবে ষাটছন্দে ভারতের যে কোনও প্রান্ত বেড়িয়ে ফেরা অসম্ভব নয়। আর সংখ্যার তিন হলে দৈনিক খরচা জনপ্রতি ১৭৫ টাকা হারে যথেষ্ট। তবে, বিলাস ও কেনাকাটা স্বতন্ত্র।

খুবই আনন্দ সংবাদ—সম্প্রতি ভারত সরকারের পর্যটন দপ্তরের সহযোগী সংস্থা ভারতীয় যাত্রী আবাস বিকাশ সমিতি মধ্যবিত্তের পর্যটকদের জন্য বিরাট কর্মসূচির সূচনা করেছে নানান ধর্মস্থানে যাত্রী আবাস গড়ে। চিত্রকূট, মথুরা, অমরকন্টকে ইতিমধ্যেই যাত্রী আবাস খুলেছে। কর্মসূচি চলছে আরও নানান ভারতের বিভিন্ন স্থানে। তেমনিই ITDC-ও ইকোনমিক হোটেল গড়ছে ভারতের নানান শহরে। রেল বোর্ডও হোটেল গড়ছে নতুন দিল্লী ও হাওড়া স্টেশনে রেল যাত্রীদের জন্য।

বই প্রসঙ্গে যে কোন মতামত বা তথ্যগত সংযোজন/সংশোধন সাদরে গৃহীত হবে—যোগাযোগের ঠিকানা :

Gita Dutta ♦ Mrinal Dutta
VRAMAN SANGI
Asia Publishing Company
61 Mahatma Gandhi Rd
Calcutta-700009

① 2414608/2412386/5577966

এক মাসে কৈলাস ও মানস সরোবর

ভারতীয় তীর্থযাত্রীদের মানসপটে আঁকা *আবোড অব গডস*—কৈলাস ও মানস সরোবর। বিশাল এই সরোবর নাকি পিতামহ ব্রহ্মার মন থেকে সৃষ্টি—নামও তাই মানস সরোবর। কথিত আছে প্রাচীনতম মহাতীর্থ কৈলাসের চূড়ায় শিব ও পার্বতী অনন্তকাল ধরে বিরাজ করছেন। আর বৌদ্ধদের বিশ্বাস বোধিসত্ত্ব বাস করেন কৈলাসে। তেমনই নানান জৈন তীর্থঙ্কর নির্বাণপ্রাপ্তির মৌকম জায়গা বলে পছন্দ করেছেন কৈলাসকে। হিন্দু-জৈন-বৌদ্ধ ত্রয়ীরই পরম তীর্থ কৈলাস ও মানস সরোবর। তিব্বতীয় নাম *মাগাম সো* অর্থাৎ মানস আর *কাং রিনপোটে* অর্থ তুষার-রত্ন অর্থাৎ কৈলাস। সৌন্দর্য্যে এর কোন তুলনা হয় না। দীর্ঘকালের রুদ্ধতার নতুন করে খুলেছে ভারতীয় পর্যটক তথা তীর্থযাত্রীদের কাছে। দীর্ঘ ২০ বছর পর ১৯৮১র সেপ্টেম্বরে একটি ভারতীয় তীর্থযাত্রীদল কৈলাস ও মানস সরোবর বেড়িয়ে এলেন। জুন থেকে সেপ্টেম্বর মাসে অনধিক ৩০ জন যাত্রী নিয়ে ১৪টি দল যাচ্ছে সেই থেকে তীর্থযাত্রায় প্রতি বছর।

যেহেতু কৈলাস ও মানস আজ চীনা সাম্রাজ্য, সে-কারণে যাতায়াতে বিধিনিষেধ আছে নানান। পাসপোর্ট-ভিসা লাগে, অনুমতিও সেন ভারত সরকারের The Under Secretary (China), Ministry of External Affairs, South Block, New Delhi-110011 থেকে।

| Days | From | To | Distance | Mode of Journey | Altitude |
|---------|-----------|---------------|----------|-----------------|----------|
| 1st Day | Delhi | Kaushani | 452 Km | Bus | |
| 2nd " | Kaushani | Dharchula | 171 " | " | |
| 3rd " | Dharchula | Tawaghat | 19 " | " | |
| " | Tawaghat | Pangu | 7 " | Trek | 1009 M |
| 4th " | Pangu | Sirkha | 10 " | " | 2440 " |
| 5th " | Sirkha | Gala | 10 " | " | 2378 " |
| 6th " | Gala | Malipa | 9 " | " | 2018 " |
| 7th " | Malipa | Budhi | 9 " | " | 2740 " |
| 8th " | Budhi | Gunji | 13 " | " | 3250 " |
| 9th " | Gunji | Kalapani | 10 " | " | 3370 " |
| 10th " | Kalapani | Navidang | 9 " | " | 3962 " |
| 11th " | Navidang | Lipulekh Pass | 5 " | " | 5334 " |

Lipulekh Pass to Kailash-Manas Sarovar in 10 days, and then back to Lipulekh Pass on 21st day. Lipulekh Pass to Delhi in 9 days or on 30th day.

তবে প্রতি বছর ৩০শে এপ্রিলের মধ্যে ভারতীয় নাগরিকদের আবেদনপত্র পৌছানো বিধেয়। আবেদনপত্রের সঙ্গে স্ব স্ব রাজ্যের Directorate of Health Service-এর মেডিক্যাল সার্টিফিকেট অর্থাৎ জন মানববান্ধব বরফরাজ্যে ১৮৭০০ ফুট উচুতে আরোহণ ও ৩০০ কিমি হাঁটতে পারার সামর্থ্যের অনুকূলে হতে হবে। উচ্চ রক্তচাপ, ডায়াবিটিস, হাঁপানি, হৃদরোগ, মৃগী রুগীদের এপথ পরিহার করা উচিত। মেডিক্যাল সার্টিফিকেট ছাড়া কোন আবেদনপত্র বিবেচ্য নয়। পুরো নাম, বাবার নাম, পেশা, স্থায়ী ঠিকানা, টেলিফোন নম্বর, জন্ম তারিখ, ধর্ম, জরুরী ভিত্তিতে যোগাযোগের ঠিকানা, আগে কি কোন যাত্রায় যোগ দিয়েছেন, পাসপোর্ট—নম্বর, হ্যান ও সময়ের বিস্তারিত বিবরণ জানিয়ে খামের উপর 'Pilgrimage to Kailash-Manas Sarovar' লিখে পাঠাতে হয়। চলার পথে শুষ্কীভূত ও ডাক্তারী পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হতে হয় যাত্রীদের।

পথে সবরকম ব্যবস্থাও করে ২৫ কেজি মাল বহন-সহ ভারত ভূখণ্ডে ৭৫০০ টাকার বিনিময়ে উত্তর প্রদেশ সরকারের কুমায়ুন মণ্ডল বিকাশ নিগম আর চীনা ভূখণ্ডে ৫৫০ ইউ এস ডলারের বিনিময়ে চীন সরকার। আনুমানিক খরচ ৩৬০০০ টাকা। আর মেলে পৃথক ভাড়ায় প্রতিদিন ১৭০ হারে ঘোড়া, কুলি ৭০ হারে ও ৩৫০ হারে ডাণ্ডি ভারত ভূখণ্ডে। অতিরিক্ত মালের মাওলও পৃথকভাবে দিতে হয়। চলার পথে ভারত ভূখণ্ডে ছবি তোলার বিশেষ পারমিট লাগে। তোলা ছবির নেগেটিভও রেখে যেতে হয় কালাপানির ভারতীয় চেকপোস্টে। চীন ভূখণ্ডে অবশ্য ছবি তোলার বিধিনিষেধ নেই।

যাত্রার শুরু ও সমাপ্তি দুই-ই দিল্লী থেকে। নিম্ন ব্যবস্থায় যাত্রার ৪/৫ দিন আগে দিল্লী পৌছাতেও হয় যাত্রীদের। অতীতকালের পথ ২টি আচ্ছন্ন রুদ্ধ—বাস যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে দিল্লী থেকে মোরাদাবাদ/ বেরিল্লি/ টনকপুর/ লোহাঘাট/ শিখোরাগড়/ কৌশানি/ ধারচুলা হয়ে তাওয়াঘাটে।

লিপুলেখ পাস পেরুতেই চীন (তিব্বত) সীমান্ত শুরু। ১ কিমি চড়াই-উতরাই পেরিয়ে পথ হয়েছে সমতল। ৫ কিমি টাটুতে গিয়ে পরিত্যক্ত চীনা গ্রাম পালা—আরও ১৫ কিমি ট্রাক বা বাসে তাকলাকোট পৌছান একই দিনে। তাকলাকোট থেকে বাসে ২টি পৃথক পথে ৯০ কিমি দূরের ভারতের পৌষে কৈলাস; বা ৪০ কিমি দূরের হোরে পৌষে মানস সরোবর পরিক্রমার ব্যবস্থা। তাকলাকোট আধুনিকতাও পৌছেছে, বিজুলীবাতিও জ্বলছে জেনারেটর চালিয়ে। আর চলছে জিপ, ট্রাক ও বাস তাকলাকোটে। ৪৫৫০ মি উঁচুতে মানস সরোবর পরিক্রমায় ৪ দিনে ৭০ কিমি ও সম উঁচুতে কৈলাস পরিক্রমায় ৩ দিনে ৫৫ কিমি পায় হাঁটতে

হয়। খুবই কষ্টসাধ্য এই পবিত্রক্রমা। তবে, ইয়াক ও ঘোড়া মেলে পৃথক মূল্যে। ৬২০০ মি উঁচুতে দোলমা পাসও পেরুতে হয় কৈলাস পবিত্রক্রমার দ্বিতীয় দিনে। তাকলাকোট আহার মিললেও পবিত্রক্রমা পথে আহার নিজ ব্যবস্থায়। তবে, ফুয়েল ও ইউটেনসিল মেলে। তাবচেন থেকে হোবে (কৈলাস থেকে মানসের ট্রেক পয়েন্ট) ৪০ কিমি পথে বাস যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে। দিন সাতকে পবিত্রক্রমা সেবে বাসে তাকলাকোট অর্থাৎ গৃহপানে ফিকন। সময় করে খেচবনাথ মনাস্টিরিও দেখে নেওয়া যায় তাকলাকোট।

তেমনই নানান ট্রাভেল এজেন্ট মে ও সেন্টেব্ব মাসে কলকাতা থেকে কাঠমাণ্ডু হয়ে প্যাকেজ টুবে কৈলাস ও মানস সবোবব যাচ্ছে যাত্রী নিয়ে। এপথে হাঁটাৰ কোন ঝুঁকি নেই। কাঠমাণ্ডু থেকে বানোপা-খুলিখেল-বাবাবিসে-তাভোপানি হয়ে ১১২ কিমি দূৰে নেপাল-তিব্বত সীমান্তে কোভাবি। ফ্রেণ্ডিশ প্রিজ ভোটকোশী নদী পেরিয়ে তিব্বত তথা চীন। গাড়িতে নো-ম্যানস ল্যান্ড পেরিয়ে ৯ কিমি গিয়ে ঝাংমু থেকে ল্যান্ডক্রুজাবে ৪ দিনে কৈলাস ও মানস। এপথে ১ম বাত ১২৫০০ ফুট উঁচু নিয়ালমে, ২য় বাত সাগায়, ৩য় বাত পাবিয়াং, ৪র্থ বাত ৮১৭ কিমি দূৰেব মাযুম লা য়। হোটেল মেলে ঝাংমুতে। তবে, এপথে নৈসর্গিক শোভাব ঘাটিতি ঘটে—ন্যাডা পাহাড়, গাছপালাৰ অভাব তিব্বতৰ পাহাড়ে। অগ্নিজেনেবও তাই ঘাটিতি ঘটে। উচ্চতা হেতু—বমি, মাথাৰ যন্ত্রণা, খিদে বা ঘুম না হওয়া অতি সাধাবণ হলেও স্বাসকষ্ট বক্তচাপ, যুত্রাশয়েব ব্যমিতে একান্তই উচিত হৰে ডাক্তাবি পৰামর্শ মত ঔষধ সঙ্গে নেওয়া। তবুও যেন উচিত হৰে শেষ ত্রযীতে অক্লান্ত ব্যক্তিদেব ৭০০০ ফুটেব নিচুতে নেমে চলা। পথও চলে ১২ থেকে ১৭ হাজাব ফুট উঁচু দিয়ে। আন্তর্জাতিক পাসপোর্ট লাগে এপথে। বিশেষ পাবমিটও লাগে তিব্বত যেতে। দলবদ্ধ হয়ে, চীনা লিয়াজ অফিসাব সঙ্গে নিয়ে যাবাব বিশেষ পাবমিট মেলে চীনা দূতাবাস থেকে। ল্যান্ডক্রুজাব, তাঁবু, বায়্যাব গ্যাস, অগ্নিজেন, মালবাহী ট্রাক, আহাৰ্য সবোবই ব্যবস্থা কৰেন লাসা থেকে আসা লিয়াজ অফিসাব তথা পাহাবাবাব। কম বেশি ৬০ হাজাব টাকা খবচ পড়ে এপথে। City Line Travels, P 188/1 C CIT Scheme 7m Calcutta 700067, ☎ ৩77210-কে যোগাযোগ কৰা যেতে পাৰে এদেব প্যাকেজে যেতে। Delhi-Manali-Leh-Terchen হয়েও ভাবত থেকে নবতম পথে কৈলাস ও মানস যাত্রাব প্রবর্তি চলছে। এপথেও হাঁটাৰ কোন ঝুঁকি নেই।

ছোটদের মনিবাস

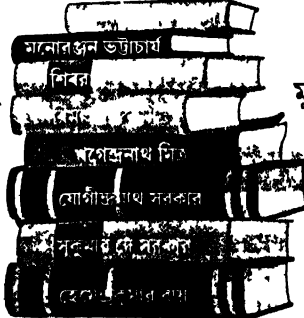
অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর □ মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য □ শিবরাম চক্রবর্তী □
পরিমল গোস্বামী □ খগেন্দ্রনাথ মিত্র □ যোগীন্দ্রনাথ সরকার □
সুকুমার দে সরকার □ হেমেন্দ্রকুমার রায় □

বরণীয় লেখকদের

স্মরণীয় লেখার

স্বয়ং সম্পূর্ণ খণ্ড

প্রতি খণ্ড ১০০.০০



মুদ্রণ পারিপাট্যে অনবদ্য □

ডি টি পি কম্পোজ □

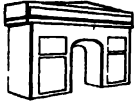
ম্যাপ্রিন্থো কাগজ □

রয়্যাল অক্টোভো সাইজ □

অফসেটে মুদ্রণ □

পাতায় পাতায় ছবি □

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি □ এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট
কলকাতা-৭০০০০৭ ☎ : ২৪১-২৩৮৬/২৪১-৪৬০৮



ইয়ুথ হোস্টেল

জন্ম যদিও জার্মানিতে ১৯১২ খ্রিস্টাব্দে তবে আজ সারা বিশ্বেই প্রসার পেয়েছে ইয়ুথ হোস্টেল অর্থাৎ যুব হোস্টেল। উদ্দেশ্য এর মহৎ—অল্প খরচে দেশকে জানো। নামে ইয়ুথ হলেও সদস্যপদ এর সব বয়সের সবার জন্যে। বয়স যাদের ১৮-র কম, তাদের সদস্য চাঁদা ১০। আর ১৮-র উপর যাদের বয়স তাদের সদস্য চাঁদা ৪০। আর আজীবন সদস্য চাঁদা ৭৫০। যে কোনও শিক্ষাপ্রতিষ্ঠানও সদস্য পদ নিতে পারে ইয়ুথ হোস্টেল অ্যাসোসিয়েশন অব ইন্ডিয়া-র। সংগঠনের ক্ষেত্রে সদস্য চাঁদা ১০০ করে। ৪টি Leader Card মেলে সংগঠন সদস্যের। প্রতি কার্ডে লিডার ছাড়াও ৪ জন করে ছাত্র অর্থাৎ ৫ জনের সুযোগ মেলে সংগঠন সদস্যে।

ভারতে ইয়ুথ হোস্টেলের শাখা হয়েছে—Port Blair, Naharlagan, New Delhi, Panaji, Vadodara, Gandhinagar, Ambala, Panchkula, Pipli, Dalhousie, Patnitop, Sreenagar, Leh, Jog, Mysore, Kochi, Tiruvananthapuram, Vellanad, Bhopal, Raipur, Aurangabad, Imphal, Shillong, Gopalpur-on-Sea, Puri, Pondicherry, Ropar, Jodhpur, Kankrolli, Namchi, Chennai, Agra, Nainital, Darjeeling-এ। এদের বুকিং-এর জন্য সরাসরি Warden-কে লেখা যেতে পারে। চার্জ অতি সাধারণ—১০ থেকে ২২ টাকার মধ্যে প্রতি জন।

সদস্যপদের জন্য মূল দপ্তরে লিখুন : National Secretary, Youth Hostel Association of India, 5 Nyaya Marg, Chanakyapuri, New Delhi-110021.

এদের পশ্চিমবঙ্গ দপ্তর : Youth Hostel Association of India, Netaji Indoor Stadium, Room No. 17, Calcutta-700 001-এ। সোম, বুধ, শুক্রবার ১৭-৩০—১৯-০০টায় দপ্তর খোলা এদের।

আর পশ্চিমবঙ্গ সরকারের ইয়ুথ সার্ভিসেস-এর ইয়ুথ হোস্টেলগুলিতে সদস্য না হয়েও জায়গা মেলে—সমতল ৫ পাঁহাড়ে ১০ হারে বেড, বিশেষ বিশেষ আবাসে ঘরেরও ব্যবস্থা মেলে। অব : যুব কল্যাণ অধিকর্তা, ক্রীড়া ও যুব কল্যাণ দপ্তর, 32/1, B B D Bag, 2nd Flr, opp Telephone Bhawan, Calcutta-700 001, ☎ 248 0626. এদের হোস্টেল রয়েছে—মুকুটমণিপুর [৩৩], মাইথন [২৪], দুর্গাপুর [২৪], বোলপুর [৮], মসানজোড় [৩২], দীঘা [৫০], শিলিগুড়ি [৩০], কালিম্পং [২৫], দার্জিলিং-স্টেশন [২২], দার্জিলিং-রয়ডিয়া [৩০], গঙ্গাসাগর [৫০], বক্সেধর [৭০], লালবাগ [৫০], মালদহ [৫০], রাজ্য যুব কেন্দ্র কলকাতা [৭০], যুবভারতী-বিধাননগর [১৭৪], পুরী [৩০], রাজগীর [২২], চেন্নাই নগরীতে যুব আবাস গড়েছে পশ্চিমবঙ্গ সরকারের ইয়ুথ সার্ভিসেস। শীতাতপ ও সাধারণ ঘর মেলে চেন্নাই ইয়ুথ হোস্টেলে। বেড ১০ A/c D ১০০ করে। সেন্ট্রাল থেকে ৩ কিমি দূরে চিদাম্বরম স্টেডিয়ামের কাছে এই যুব আবাস। বন্ধুত্বের মধ্যে শয্যা সংখ্যা।

YMCA/YWCA



ইংল্যান্ডে জাত আর এক আন্তর্জাতিক সংস্থা YMCA ও YWCA বিশ্বের ৯৭টি দেশে তার সভ্যদের স্বল্প ব্যয়ে থাকা ও আহ্বারের ব্যবস্থা গড়েছে Tourist Hostel করে। ভারত রাষ্ট্রেও এদের বহুমুখী কর্মপ্রণালীর ৪৩০টি সংগঠন সক্রিয়। ৪০টি Tourist Hostel-ও হয়েছে ভারতের নানান শহরে। নামে Young Men/ Women Christian Association হলেও সাময়িক সদস্য পদ নিয়ে যে কোনও বর্ণের যে কোনও ধর্মের বিশ্ব-মানবের কাছেই দ্বার এর অব্যাহত। এমনকি এদের ১৮৬০০ সভ্যের মধ্যে খ্রিস্টান নন তেমন সদস্য ১৬০০০। এদেরও ব্যবস্থাপনা যথেষ্ট প্রশংসনীয়। এদের যে কোনও টুরিস্ট হোস্টেলেই সাময়িক সদস্য ভুক্তির ব্যবস্থা মেলে।

ভারত ভ্রমণে যানবাহন

বাস্পীয় ইঞ্জিন আবিষ্কার ইংল্যান্ডে ১৮১৪য় জর্জ স্টিফেনসনের হাতে হলেও ভারতে রেলের সূচনা ১৮৫৩র ১৬ই এপ্রিল অথুনা মুম্বাই থেকে ৩৫ কিমি দূরের থানের মাঝে। আর কলকাতায় রেল চলে ১৮৫৪র ১৫ই আগস্ট হাওড়া থেকে হুগলি পর্যন্ত।

ভারত রাষ্ট্রে ভারতীয় রেল মুখ্য ভূমিকা নিয়েছে ভ্রমণে আঙ্গ। এশিয়ার বৃহত্তম আর বিশ্বের চতুর্থ বৃহত্তম রেলও ভারতীয় রেল। ১৬২৪১২১ কর্মী নিয়েগে বিখে প্রথম স্থান ভারতীয় রেলের। কান্মীর থেকে কন্যাকুমারিকা, ডিগবর থেকে ডেলওয়াদা—৬২০০০ কিমি রেলপথে ৭০০০ স্টেশন; ১১০০০ রেলগাড়ি প্রতিদিন ১ কোটি যাত্রী আনা-নেওয়া করে। সৃষ্ট পরিচালনার জন্য ১০টি জোনে বিভক্ত এই ভারতীয় রেল। রেলও যাচ্ছে নানানধর্মী—ব্রডগেজ (1676 mm), মিটারগেজ (1000 mm), ন্যারোগেজ (762 mm)। ট্রেনেরও রকমভেদ উন্মেষ্য : দ্রুততম (ঘণ্টায় ১৪০ কিমি) ট্রেন শতাব্দী এক্স। গতিকে আরও ত্বরান্বিত করতে ১৯৯২-এ প্রবর্তিত, ইউনিগেজ প্রকল্পে ভারতীয় রেলে দ্রুত পরিবর্তন ঘটে চলেছে নানান। সারা দেশ জুড়ে গেজ রূপান্তর অর্থাৎ ব্রডগেজ রুটের মাধ্যমে এক সূত্রে গাঁথার বিল্লব ঘটে চলেছে। ইতিমধ্যেই ৫০০০ কিমি রেলের রূপান্তরও ঘটেছে মিটারগেজ থেকে ব্রডগেজে।

আরও উন্মেষ্য একক বৃহত্তম রেল ৭৬০ কিমি দীর্ঘ কোঙ্কন রেলওয়ে জানুয়ারির ২৬, ১৯৯৮চালু হতে চলেছে পশ্চিমঘাট পর্বতকে বিদীর্ণ করে ব্রডগেজে গোয়া রাজ্যের মারগাঁও হয়ে ম্যাসালোর থেকে মুম্বাই। আর শতাব্দী চলছে নিউ দিল্লী-ভূপাল, নিউ দিল্লী-লক্ষ্ণৌ, নিউ দিল্লী-কালকা, মুম্বাই সেন্ট্রাল-আমেদাবাদ, চেমাই-মহীশূর, নিউ দিল্লী-চণ্ডীগড়, নিউ দিল্লী-অমৃতসর, নিউ দিল্লী-আজমের, নিউ দিল্লী-দেৱাদুন, ব্যাঙ্গালোর-হবলি, চেমাই-কোয়েম্বাটুর, হাওড়া-বোকারো, হাওড়া-রাউরকেলা—১৩ জোড়া পৃথক রুটে।

আর শীতাতপ রাজধানী এক্স সংযোগ গড়েছে নিউ দিল্লীর সাথে—হাওড়া থেকে প্রতিদিন, মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে প্রতিদিন ১ জোড়া, আর জম্মু, তিরুভনন্তপুরম, পাটনা, হায়দ্রাবাদ, ডিব্রুগড়, ভুবনেশ্বর, চেমাই, ব্যাঙ্গালোর ও আমেদাবাদ থেকে সপ্তাহের নানান দিনে। তেমনই ইন্টারসিটি এক্স যাচ্ছে দিল্লী-জয়পুর, জয়পুর-বিকানীর, জয়পুর-যোধপুর, ওয়াহাটি-ডিব্রুগড়, ছাড়াও নানান। ঝাঁকুনিহীন শতাব্দী ও রাজধানী দুইয়েরই ভাড়াইর আধিকা লাগলেও পুরো যাত্রাপথে আহার্য নিয়ে ভাড়া এদের। আর চলে দৈনিক প্যাসেঞ্জার, মেল, এক্সপ্রেস, সুপার ফাস্ট ছাড়াও নানানধর্মী ট্রেন ভারত জুড়ে। শ্রেণীতেও রকমভেদ আছে—A/c First Class, A/c 2-Tier Sleeper, A/c 3-Tier Sleeper, A/c Chair Car, First Class, Sleeper Class, Second Class. তবুও যেন অক্টোবর থেকে মার্চের প্রতি বৃষবার ভারতীয় রেলও রাজস্থান পর্যটন উন্নয়ন নিগমের যৌথ উদ্যোগে আয়োজিত Palace on wheels প্যাকেজ ট্রাের জয়পুর-চিতোরগড়-উদয়পুর-জয়সলমীর-যোধপুর-ভরতপুর-ফতেপুর সিক্রী-আগ্রা-দিল্লী ভ্রমণ বিলাস ও ব্যসনে অনবদ্য। বিদেশী পর্যটকদের কাছে খুবই আদৃত—ভারতীয়রাও অংশ নিতে পারেন প্যালেস অন হুইল ট্রাের।

বিদেশী বা বিদেশে বসবাসকারী ভারতীয়দের জন্য ভারতীয় রেলের আর এক সুযোগ দান Indrail Pass. ইউ এস ডলার বা ব্রিটিশ পাউন্ডে এক বছর আগে থেকে Dhaka, London, New York ছাড়াও নানান দেশে এজেন্টের মাধ্যমে Indrail Pass কিনতে মেলে। ভারতেও নানান রেল দপ্তরে Indrail Pass কেনার ব্যবস্থা মেলে। Indrail Pass যাত্রীদের যে কোনও ট্রেনে যত্রতত্র ভ্রমণের সুযোগও থাকে—চার্জ লাগে না অতিরিক্ত কোন। এমনকি রাজধানী এক্স ও শতাব্দী এক্স যাত্রাকালে আহার্যও মেলে।

| Period of Validity | Fare in US Dollars per Pass | | | | | |
|-----------------------|-----------------------------|-------|--------------|--------------------|---|-------|
| | A/c First Class | | First Class/ | | Sleeper Class Second Class (Non A/c) | |
| | | | A/c 2 Tier-3 | Tier-A/c Chair Car | | |
| | Adult | Child | Adult | Child | Adult | Child |
| 1 day | 86 | 43 | 39 | 20 | 17 | 9 |
| 7 days | 300 | 150 | 150 | 75 | 80 | 40 |
| 15 days | 370 | 185 | 185 | 95 | 90 | 45 |
| 21 days | 440 | 220 | 220 | 110 | 110 | 50 |
| 30 days | 550 | 275 | 275 | 140 | 125 | 65 |
| 60 days | 800 | 400 | 400 | 200 | 185 | 95 |
| 90 days | 1060 | 530 | 530 | 265 | 235 | 120 |

আর ভারতীয় যাত্রীরা রেলবোর্ডের নির্বাচিত চক্রপথের রেলরুট ধরে বা নিজের পছন্দ মত চক্ররুট গড়ে হ্রাস মূল্যে সার্কুলার টিকেট করে নিতে পারেন। এ ব্যাপারে চিফ কমার্সিয়াল সুপারিনটেনডেন্টকে যোগাযোগ করাই যুক্তিযুক্ত।

শিক্ষার্থীদের দেশ ভ্রমণে সিঙ্গল ভাড়ার ডায়াল জার্নির ব্যবস্থা মেলে ভারতীয় রেলে। ১৩ থেকে ৩৩ বছরের কমপক্ষে ১০ জনের দলে ১০০০ কিমির অধিক দূরত্বের ভ্রমণে এই সুযোগ মেলে। সংশ্লিষ্ট প্রধানের মাধ্যমে রেল দপ্তরে আবেদন করতে হয়। শিক্ষকদের জন্যও এই বিশেষ ব্যবস্থা আছে। তেমনই প্রতিবন্ধী, নানানধর্মী রুগীদের ক্ষেত্রে ৫০—৭৫% ছাড় মেলে কেবল দ্বিতীয় শ্রেণীতে। আর ৬৫ বা ততোধিক বয়সের দ্বিতীয় শ্রেণীর যাত্রীরা ৫০০ কিমির অধিক যাত্রায় ২৫% বয়স্ক-ছাড় পেয়ে থাকেন। এ ব্যাপারে স্টেশন মাস্টারকে যোগাযোগ করা উচিত হবে।

| শতাব্দী এক্সপ্রেসে ভাড়া : | | | | |
|--------------------------------|------------------|------------------|--------------------|--------------------|
| নতুন দিল্লী থেকে | A/c 3-Tier | A/c Chair Car | A/c First Class | |
| আগ্রা ক্যান্ট | | ৩০৫.০০ | ৫৮৫.০০ | |
| গোয়ালিয়র | | ৬৮৫.০০ | ৭৫৫.০০ | |
| কাশী | | ৪৩৫.০০ | ৮৭০.০০ | |
| ভূপাল | | ৬৫০.০০ | ১৩৭০.০০ | |
| কানপুর সেন্ট্রাল | | ৪৫৫.০০ | ৮৯৫.০০ | |
| লক্ষৌ | | ৪৯৫.০০ | ৯৯০.০০ | |
| অমৃতসর | | ৪৬৫.০০ | ৯২৫.০০ | |
| জলন্ধর সিটি | | ৪১০.০০ | ৮১৫.০০ | |
| আহালা | | ২৯৫.০০ | ৫৯০.০০ | |
| চণ্ডীগড় | | ৩৩০.০০ | ৬৫৫.০০ | |
| কালকা | | ৫৫৫.০০ | ৭১৫.০০ | |
| সেরাদুন | | ৩৮৫.০০ | ৭৫৫.০০ | |
| হরিশ্চর | | ৩৬৫.০০ | ৬৯৫.০০ | |
| জয়পুর | | ৩৮৫.০০ | ৭৫৫.০০ | |
| আজমের | | ৪৮০.০০ | ৯৩৫.০০ | |
| মোরাদাবাদ | | ২৬৫.০০ | ৫৫০.০০ | |
| কাঠগোদাম | | ৩৬৫.০০ | ৭১০.০০ | |
| হালদুয়ানি | | ৩৬৫.০০ | ৭১০.০০ | |
| নিউ দিল্লী থেকে দিল্লী ক্যান্ট | | ৩০৫.০০ | ৫৮৫.০০ | |
| হাওড়া থেকে | | | | |
| খড়াপুর | | ২৩৫.০০ | ৪৪০.০০ | |
| বোকারো স্টিল সিটি | | ৩৮০.০০ | | |
| ধানবাদ | | ৩৪৫.০০ | | |
| মুর্গাপুর | | ২৪০.০০ | | |
| রাউরকেলা | | ৪৪৫.০০ | ৯১০.০০ | |
| টানগর | | ৩৩৫.০০ | ৬৪৫.০০ | |
| চেন্নাই সেন্ট্রাল থেকে | | | | |
| সালেম | | ৩৮০.০০ | | |
| কোয়েম্বাটুর | | ৫২০.০০ | | |
| মাসালোব | | ৪১০.০০ | ৮১৫.০০ | |
| মহীশূর | | ৪৭৫.০০ | ৯৫৫.০০ | |
| মুম্বাই সেন্ট্রাল থেকে | | | | |
| আমোদাবাদ | | ৪৭৫.০০ | ৯৫৫.০০ | |
| ভাদোদরা | | ৪২০.০০ | ৮৪০.০০ | |
| (হি শি টা) পুনে | | ২৭৫.০০ | ৫৩৫.০০ | |
| মাসালোর থেকে | | | | |
| মহীশূর | | ২০৫.০০ | ৪০৫.০০ | |
| চেন্নাই | | ৪১০.০০ | ৮১৫.০০ | |
| সেকেন্দ্রাবাদ | ৮৩০.০০ | ১২৩৫.০০ | ২২৭০.০০ | |
| রাজধানী এক্সপ্রেসে ভাড়া : | | | | |
| নতুন দিল্লী থেকে | A/c Chair Car | A/c 3-Tier | A/c 2-Tier | A/c First Class |
| হাওড়া ভায়া পাটনা | | ১১৪৫.০০ | ১৯০৫.০০ | ৩৩১০.০০ |
| হাওড়া ভায়া গয়া | | ১১২০.০০ | ১৮২৫.০০ | ৩১৮৫.০০ |
| মোগলসরাই | | ৭৮৫.০০ | ১১৯০.০০ | ২২১০.০০ |
| এলাহাবাদ | | ৭২০.০০ | ১০৭৫.০০ | ১৯১০.০০ |
| কানপুর | | ৬২০.০০ | ৮৬০.০০ | ১৪৯০.০০ |
| নিউ জলপাইগুড়ি | | ১২২৫.০০ | ১৭৭০.০০ | ৩৪৪০.০০ |
| ভুবনেশ্বর ভায়া ধানবাদ | | ১২৯০.০০ | ২২১০.০০ | ৩৮৯৫.০০ |
| গুয়াহাটি | | ১৩৭৫.০০ | ২৩০০.০০ | ৪১০০.০০ |
| পাটনা | | ৯২৫.০০ | ১৩৯৫.০০ | ৪১০০.০০ |

| | | | |
|--|---------|---------|---------|
| বারানসী | ৭৬৫.০০ | ১১৭০.০০ | ২১৮৫.০০ |
| মুম্বাই (হি শি টা) | ৯১০.০০ | ১১০০.০০ | ১৭৮০.০০ |
| মুম্বাই থেকে | | | |
| কোটী | ৭২০.০০ | ৮৭০.০০ | ১২৯৫.০০ |
| ভাদোদরা | ৪৬৫.০০ | ৫৭৫.০০ | ৮১০.০০ |
| সুবাট | ৩৮০.০০ | ৪৬০.০০ | ৬৭০.০০ |
| হজরত | | | |
| নিজামুদ্দিন থেকে | | | |
| বাসান্দোল | ১৬০০.০০ | ২৫১০.০০ | ৪৬৩৫.০০ |
| ভূপাল | ৬১৫.০০ | ৭৮০.০০ | ১১৫৫.০০ |
| নাগপুর | ৩৮০.০০ | ৯৫০.০০ | ১৪৫৫.০০ |
| সেকেন্দ্রাবাদ | ১২০০.০০ | ২০২৫.০০ | ৩৪৮০.০০ |
| এর্নাকুলম | ১৮২৫.০০ | ২৭৩০.০০ | ৫৩২০.০০ |
| তিরুভনন্তপুরম | ১৯২৫.০০ | ২৯৩০.০০ | ৫৭০৫.০০ |
| জম্মু তাম্রাই | ৬৯৫.০০ | ১০০৫.০০ | ১৭৬০.০০ |
| হাওড়া থেকে | | | |
| পাটনা | ৬৮৫.০০ | ৯৮০.০০ | ১৬৯০.০০ |
| এলাহাবাদ | ৮২০.০০ | ১২৪০.০০ | ২৩৮০.০০ |
| ধানবাদ | ৪৬০.০০ | ৬৭০.০০ | ১০৮০.০০ |
| গয়া | ৬৩৫.০০ | ৮৯০.০০ | ১৫৪০.০০ |
| মধুপুর | ৪৮০.০০ | ৭০০.০০ | ১১৪৫.০০ |
| মোগলসরাই | ৭৪০.০০ | ১১১০.০০ | ১৯৬৫.০০ |
| ভুবনেশ্বর থেকে | | | |
| হাওড়া | ৬২০.০০ | ৮৬০.০০ | ১৪৯০.০০ |
| আসানসোল | ৮০০.০০ | ১১৪৫.০০ | ২৩৩৫.০০ |
| নতুন দিল্লী | ১২৯০.০০ | ২২০৫.০০ | ৩৮৯৫.০০ |
| চেন্নাই থেকে | | | |
| হজরত নিজামুদ্দিন | ১৪৪০.০০ | ২৩৭৫.০০ | ৪২৫৫.০০ |
| নাগপুর | ৮১৫.০০ | ৯৫০.০০ | ১৪৫৫.০০ |
| ভূপাল | ৯৭০.০০ | ১১৫০.০০ | ১৮৮০.০০ |
| এর্নাকুলম | ৭২৫.০০ | ১১০০.০০ | ১৯৮০.০০ |
| গুয়াহাটি থেকে | | | |
| নিউ জলপাইগুড়ি | ৫৭০.০০ | ৮১০.০০ | ১৪০৫.০০ |
| বরাবুনি | ৮৬৫.০০ | ১২৭৫.০০ | ২০৯০.০০ |
| পাটনা | ১০১০.০০ | ১৪২০.০০ | ২৭১৫.০০ |
| দুটি ট্রেনেই চলার পথের আহার নিয়ে টিকিট মূল্য। | | | |

১৯৮৭ খ্রিস্টাব্দের জুন মাসে কম্পিউটার চালিত রিজার্ভেশন আর ১৯৮৮তে নিউ দিল্লী, ১৯৮৯-এ চেন্নাই, ১৯৯০-এ মুম্বাই-এর সঙ্গে নেটওয়ার্ক সংযোগ গড়ে ওঠে কলকাতার। গত কয়েক বছরে লক্ষৌ, ভূপাল, গোরক্ষপুর, পাটনা, ধানবাদ, ভুবনেশ্বর, নিউ জলপাইগুড়ি, গুয়াহাটি, রানীগঞ্জ, বিশাখাপতনম ছাড়াও বিভিন্ন স্থানে নেটওয়ার্ক আরও সম্প্রসারিত হয়েছে। কলকাতা নেটওয়ার্কের আওতাধীনে ২৭টি কম্পিউটার-চালিত রিজার্ভেশন অফিস চালু। অর্থাৎ নেটওয়ার্কের আওতাধীন যে কোনও স্টেশন থেকেই ৩০৫টি যাতায়াতকারী ট্রেনের (রিটার্ন ও অনওয়ার্ড) রিজার্ভেশন ৬০ দিন আগেই বুকিং-এর ব্যবস্থা মেলে। তিন শতাধিক কম্পিউটারাইজড বুকিং কাউন্টার—নিউ কল্যাণাট (১৪ স্ট্রান্ড রোড), ওল্ড কল্যাণাট (জি পি ও-র পাশে), ফেয়ারলি প্রেস, শিমলাদহ স্টেশন, হাওড়া

ভারতীয় রেলের যাত্রীভাড়া

| দূরত্ব কিলোমিটার | শীতাতপ প্রথম শ্রেণী | শীতাতপ মিশ্র | প্রথম শ্রেণী | শীতাতপ প্রি টিয়ার | শীতাতপ চোয়াব কার | মিশ্র ক্লাশ | দ্বিতীয় শ্রেণী মেল/এক্স | সাধারণ |
|---------------------|------------------------|-----------------|--------------|-----------------------|----------------------|----------------|-----------------------------|--------|
| ১০ | ১৯৪.০০ | ১৪৬.০০ | ৮০.০০ | ৮০.০০ | ৮০.০০ | ৬৬.০০ | ১০.০০ | ২.০০ |
| ২৫ | ১৯৪.০০ | ১৪৬.০০ | ৮০.০০ | ৮০.০০ | ৮০.০০ | ৬৬.০০ | ১৩.০০ | ৪.০০ |
| ৫০ | ২২৬.০০ | ২০৩.০০ | ১০২.০০ | ৯৯.০০ | ৮০.০০ | ৬৬.০০ | ১৭.০০ | ৯.০০ |
| ১০০ | ৩৬২.০০ | ২৬২.০০ | ১৫০.০০ | ১১৮.০০ | ৯৪.০০ | ৬৬.০০ | ২৭.০০ | ১৪.০০ |
| ১৫০ | ৪৪৪.০০ | ৩১৭.০০ | ২০০.০০ | ১৬৩.০০ | ১৩০.০০ | ৬৬.০০ | ৩৮.০০ | ২২.০০ |
| ২০০ | ৫৪৫.০০ | ৩৭০.০০ | ২৪৬.০০ | ১৯০.০০ | ১৫১.০০ | ৬৬.০০ | ৪৯.০০ | ২৬.০০ |
| ২৫০ | ৬৫৮.০০ | ৪২৯.০০ | ২৯৩.০০ | ২৩৫.০০ | ১৮৭.০০ | ৮০.০০ | ৫৭.০০ | ৩২.০০ |
| ৩০০ | ৭৬৩.০০ | ৪৮৩.০০ | ৩৪১.০০ | ২৬৩.০০ | ২১১.০০ | ৯৫.০০ | ৬৮.০০ | ৩৬.০০ |
| ৪০০ | ৯৭৬.০০ | ৫৯৩.০০ | ৪০৫.০০ | ৩২২.০০ | ২৫৭.০০ | ১১৯.০০ | ৮৫.০০ | ৪৩.০০ |
| ৫০০ | ১১৫৩.০০ | ৬৭৪.০০ | ৫১১.০০ | ৩৭৯.০০ | ৩০০.০০ | ১৪২.০০ | ১০২.০০ | ৫০.০০ |
| ৬০০ | ১৩২৩.০০ | ৭৯২.০০ | ৫৮১.০০ | ৪২৮.০০ | ৪৩০.০০ | ১৬৩.০০ | ১১৭.০০ | ৫৪.০০ |
| ৭০০ | ১৪৯২.০০ | ৮৭১.০০ | ৬৫৭.০০ | ৪৭৮.০০ | ৩৮২.০০ | ১৮১.০০ | ১৩০.০০ | ৫৯.০০ |
| ১০০০ | ১৮৮৫.০০ | ১০৬৭.০০ | ৮৩২.০০ | ৫৭৮.০০ | ৪৬২.০০ | ২৩০.০০ | ১৬৬.০০ | ৭২.০০ |
| ১৫০০ | ২৫৪৮.০০ | ১৪১০.০০ | ১১১৬.০০ | ৭৭৩.০০ | ৬১৮.০০ | ২৮৬.০০ | ২০৭.০০ | ৮৯.০০ |
| ২০০০ | ৩১৬৬.০০ | ১৬৯১.০০ | ১৩৮৫.০০ | ৯৩৮.০০ | ৭৫০.০০ | ৩২৫.০০ | ২৩৫.০০ | ১০৬.০০ |
| ২৫০০ | ৩৭৮৬.০০ | ১৯৪০.০০ | ১৬৫৬.০০ | ১১০৮.০০ | ১০৮০.০০ | ৩৬৪.০০ | ২৬৩.০০ | ১২২.০০ |
| ৩০০০ | ৪৪০৭.০০ | ২১৮২.০০ | ১৯২৩.০০ | ১২৭১.০০ | ১০১৭.০০ | ৪০৭.০০ | ২৯৪.০০ | ১৩৯.০০ |
| ৫০০০ | ৬৮৮১.০০ | ৩১৬১.০০ | ৩০০৫.০০ | ১৯৪১.০০ | ১৫৫০.০০ | ৫৫৬.০০ | ৪০২.০০ | ২০৫.০০ |

স্টেশন, দমদম জংশন, সল্টলেক, চৌরঙ্গি, শেওড়াফুলি, যাদবপুর, বাগবাজার, মাঝেরহাট, টালিগঞ্জ, বালিগঞ্জ, বালি থেকে দূরপাল্লায় ট্রেনের টিকিট তথা রিজার্ভেশন ৬০ দিন আগে থেকে মেলে। ফরেন ট্যুরিস্ট রেলওয়ে বুকিং অফিস বসেছে বি বা দী বাগের অদূরে ৬ ফেয়ারলি প্লেসে। কম্পাউটারাইজড বুকিং-এ ট্যুরিস্ট কোটা মেলে। এয়ার পোর্টেও এয়ার ট্রাভেলার্স কোটা নিয়ে রেলের রিজার্ভেশন ডেস্ক বসেছে। বুকিং সময় : সোম থেকে শনিবার ৯—১৩-০০, ১৩-৩০—১৬-০০; রবিবার ৯—১৪-০০টায়। বুকিং কম্পাউটারাইজড হওয়ায় অতীতের কোটা প্রথারও রদ হয়েছে। বুকিং তথ্যের জন্য—কলকাতায় ১) ১৩৬/মুম্বাই ১) ১৩১, ১৩৫, ২০৯৫৯৫৯/দিল্লী ১) ১৩৩০ (Eng), ১৩৩৫ (Hindi), ৩৩৪৮৬৮৬/চেন্নাই ১) ১৩৬১ (Eng), ১৩৬২ (Hindi); আর ট্রেনের চলাচল—কলকাতায় ১) ১৩১, ১৩৩১/মুম্বাই ১) ১৩৪, ১৩৬, ১৩৭, ২৬৫৬৫৬৫/দিল্লী ১) ১৩১, ১৩৩০ (Eng), ১৩৩৫ (Hindi)/চেন্নাই ১) ১৩১, ১৩৩। তেমনই বুকিং তথ্য মেলে কলকাতায় ১) ২২০৩৫৩৫/২২০৩৫৩৮ রাউন্ড দি ক্লক; বা ২৪৮০৩৭০/২৪৮০৩৭১/২৪৮০৩৭২/২৪৮০৩৭৩/২৪৮০৩৭৪/২৪৮০৩৭৫/২৪৮০৩৭৬; বা হাওড়া স্টেশনে অটো অ্যানাউন্সিং: ১) ৬৬০৩৫৪২, ৬৬০২৫৮১, ৬৬০৫৮৮৬/ নিউ কমপ্লেক্স ১) ৬৬০২২১৭; ব্যক্তি দ্বারা চালিত : ৬৬০৩৫৪৪, ৬৬০৭৪১৪, ৬৬০৭৪১০ ডায়াল করুন।

এছাড়াও গুরুত্বপূর্ণ স্টেশনের বুকিং মেসেজ রিকোয়েস্ট দ্রুততর পদ্ধতিতে পাঠানো হচ্ছে—উত্তরও মেলে যথাসম্ভর। এমনকি কলকাতা থেকে ছেড়ে যাওয়া নানান ট্রেনে ফেরার পথেও সংরক্ষিত আসন বা টিয়ারের কোটা থাকে। ফেরার পথে বুকিং সুযোগও মেলে কম্পাউটারাইজড বুকিং কাউন্টার থেকে।

রেল যাত্রীরা মিশ্রার ক্লাশে টিয়ার বা সংরক্ষিত সিটের জন্য সারা পথের অগ্রিম বুক করতে পারেন। ৬০ দিন আগে থেকেই একই যাত্রায় থ্রু টিকিটের টিয়ার (২১—৬-০০টা) টেলিগ্রাফিক বার্তা পাঠিয়ে বুক করা যেতে পারে। তবে গরীব নওয়াজ, শতাব্দী এক্স, ভাঙ্গ এক্স, গোমতী এক্স, পিঙ্ক সিটি, শানে পাল্লাব, হিমালয়ান কুইন—এদের বুকিং ১৫ দিন আগে থেকে মেলে। আর বিদেশীদের ৩৬০ দিন আগেই বুকিং মেলে। আর উদ্যোগ চলছে বিশেষ বিশেষ ট্রেনে সার-চার্জের বিনিময়ে তাৎক্ষণিক রিজার্ভেশন প্রথার।

বুকিং কম্পাউটারাইজড হওয়ায় প্রতিটি এক্স ও মেল ট্রেনের নম্বর গাণিতিক-৪ অঙ্কে পরিবর্তিত হয়েছে। যেমন অতীতের A/c ৪১ UP নম্বরের বদল ঘটে নতুন করে হয়েছে 2381 Purba Exp. তেমনই রিজার্ভেশন মিশ্রে ট্রেনের নম্বর লেখা বাধ্যতামূলক।

টিকিট রিফাও অর্থাৎ যাত্রার ১-এর অধিক দিন আগে পর্যন্ত মিশ্রার ক্লাশে ২০, শীতাতপ ১ম শ্রেণীর ক্ষেত্রে ৫০, ১ম শ্রেণী-শীতাতপ 2 Tier-শীতাতপ 3 Tier-শীতাতপ চোয়াব কারে ৩০, সাধারণ দ্বিতীয় শ্রেণী ১০; ১ দিনের কম থেকে ট্রেন ছাড়ার ৪ ঘণ্টা আগে পর্যন্ত ২৫%; ৪ ঘণ্টার কম থেকে ট্রেন ছেড়ে যাওয়ার ৪ ঘণ্টার মধ্যে ৫০% ছাড় যাবে। প্রতি আগস্টমাসে ট্রেনের সময়ও পরিবর্তন ঘটিয়ে থাকে রেল বোর্ড।

Important Telephone Numbers :**Indian Airlines**

| | |
|--|-------------------------------|
| 39 Chittaranjan Avenue, Calcutta, PC-700012, Main Booking | ☎ 264433, 260870, 2204433 |
| Airport | ☎ 5529434, 140 |
| Recorded Information | ☎ 5529433 |
| Flight Information | 142 Arr/143 Dep |
| Great Eastern Hotel | ☎ 2480073 |
| Hindusthan Hotel | ☎ 2476606 |
| Delhi Main Booking | ☎ 4620566/141 |
| Airport | ☎ 3295166/140/142 Arr/143 Dep |
| A. Asaf Ali Rd | ☎ 3274609 |
| Ashok Hotel | ☎ 600121 |
| Connaught Place | ☎ 3310517 |
| Parliament Street | ☎ 3719168 |
| Mumbai Main Booking | |
| Nariman Point | ☎ 2023031/2023131 |
| Airport | ☎ 6112850/140 |
| Tele check-in | ☎ 6117983/142 Arr/143 Dep |
| Kala Ghoda | ☎ 2023031 |
| Chennai Main Booking | |
| Marshall's Road | ☎ 8553039/141 |
| Airport | ☎ 2343131/140 |
| Tele check-in | ☎ 2348483 |
| Flight Information | ☎ 8555204/142 |
| Broadway | ☎ 583321 |
| Mylapore | ☎ 8279799 |
| T. Nagar | ☎ 4347555 |
| Bangalore Booking Office | ☎ 2211914/141 |
| Airport | ☎ 5266233/140/142 |
| Hyderabad Booking Office | ☎ 599333 |
| Airport | ☎ 140 |
| Jet Airways | |
| Calcutta, Chitrakoot Bldg, 230/A, A J C Bose Rd, Calcutta-700020 | ☎ 2408192 / 2408079 |
| Mumbai | ☎ 8215080 |
| City Office : B-1, Amarchand Mansion, Madame Cama Rd, Mumbai-400029 | ☎ 2855788 |
| Delhi | ☎ 3724727 |
| Chennai | ☎ 8257914 |
| Bagdogra | ☎ 264252/21727 |
| Goa | ☎ 221472/221476 |
| Guwahati | ☎ 540061/540666 |
| NEPC Airlines | |
| Calcutta | ☎ 292471/291004 |
| Mumbai | ☎ 6107068 |

| | |
|---|------------------------------|
| Bangalore | ☎ 5585678/5596653 |
| Bhubaneswar | ☎ 413612 |
| Chennai | ☎ 458650/4344580 |
| Jet Airlines | |
| Calcutta | ☎ 2408192 |
| Airport | ☎ 5528836 |
| Mumbai | ☎ 8386111 |
| Airport | ☎ 2855788 |
| Bagdogra | ☎ 431130 |
| Ahmedabad | ☎ 467886 |
| Bangalore | ☎ 5586977/5261926 |
| Kochi | ☎ 369879 |
| Coimbatore | ☎ 212034 |
| Delhi | ☎ 3739920 |
| Airport | ☎ 3295404 |
| Chennai | ☎ 8555353 |
| Airport | ☎ 2340215 |
| Calicut | ☎ 355653 |
| Damania Airways | |
| Calcutta | ☎ 4759652/4757090 |
| Delhi | ☎ 3322523/3324510 |
| Guwahati | ☎ 560765/566093 |
| Chennai | ☎ 4344580/458650 |
| Mumbai | ☎ 6102525/6104671 |
| Pune | ☎ 617441/442 |
| Bangalore | ☎ 5588866 |
| Goa | ☎ 229233/229235 |
| East-West Airlines | |
| Delhi | ☎ 3716138-40 |
| Mumbai | ☎ 2620646 |
| Chennai | ☎ 477007 |
| Calcutta | ☎ 7451791/5180 |
| Archana Airways | |
| 41/A, Friends Colony East, Mathura Rd, New Delhi-110005, | ☎ 6847760/ 6842001/638197 |
| Delta Airlines | |
| Calcutta | ☎ 2475008/8140 |
| Sahara-India Airlines | |
| Calcutta | ☎ 2477062 |
| Modiluft | |
| 98, Nehru Palace, New Delhi-110019 | ☎ 6447819 |
| Delhi City | ☎ 6449266 |
| Mumbai | ☎ 2045141 |
| Janmru | ☎ 43674 |
| Calcutta, 2 Russel St, | ☎ 298437/8438 |
| Jagson Airlines Ltd | |
| 6 Pearey Lal Building (2nd Floor) 42 Janpath, ND-110001 | ☎ 3718059 |

গ্নিপার ক্লাশের বার্থ যাত্রীদের রেল স্টেশনে আপার ক্লাশ ওয়েটিং রুম ব্যবহারের অধিকার মিলেছে। তবে, নানান জনসন স্টেশনে টিমার যাত্রীদের পৃথকভাবে ওয়েটিং রুম হয়েছে। আর রয়েছে রেল যাত্রীদের ২৪ ঘণ্টার বিশ্রামের জন্য রিটারারিং রুম—ঘর ও ডর্মিটরি প্রথা।

বিতীয় শ্রেণীর যাত্রায় ৩৫ কেজি, গ্নিপার ক্লাশে ৪০ কেজি, শীতাতপ 3 Tier-শীতাতপ চেয়ার কারে ৪০ কেজি, প্রথম শ্রেণী বা বিতীয় শ্রেণীর শীতাতপ টিমারে ৫০ কেজি, শীতাতপ প্রথম শ্রেণীতে ৭০ কেজি আর হাফ টিকিটের ক্ষেত্রে আধা পরিমাণ লাগেজ বহণের অধিকারী প্রত্যেক যাত্রী। উল্লিখিত পরিমাণে অধিক্য ঘটলে অতিরিক্ত মাণ্ডল দিতে হয়। তবে সর্বমোট বর্থাক্রমে ১০৫, ১২০, ১২০, ১৫০, ২২০ কেজি লাগেজ বহন করতে পারেন রেল যাত্রায়।

রেলের ক্রোক রুম অর্থাৎ লেফট লাগেজে লাগেজ রাখতে হলে প্রতিটি লাগেজে তালী লাগানো বাধ্যতামূলক।

সারা ভারতেই রেল আজ বিপ্লব এসেছে। মিটারগেজ রেল রূপান্তরিত হচ্ছে ব্রডগেজে। কলকাতা থেকে নবপ্রবর্তিত ট্রেন বিশেষভাবে উদ্ভেদ্য। হাওড়া থেকে কুমায়ুন পাহাড়ের যাত্রী নিয়ে সরাসরি ট্রেন যাচ্ছে গোরক্ষপুর-লক্কা-বেরিলি হয়ে 3019 হাওড়া-কাঠগোদাম এক্স। আর হাওড়া থেকেই মধুপুর-পাটনা-মোগলসরাই-এলাহাবাদ-ভূগল-আগ্রা কোট-সওয়াই মাধোপুর-জয়পুর হয়ে যাচ্ছে 2307 হাওড়া-যোধপুর এক্স। এমনকি ২টি গ্নিপার ক্লাশ বার্থ যাচ্ছে হাওড়া-যোধপুর

এক্সের সাথে জুড়ে মেরতা রোডে পৃথক হয়ে বিকানীয়ে। সরাসরি যাত্রায় সময়ে সাশ্রয় না মিললেও ট্রেন বদলের ঝুঁকি থেকে অব্যাহতি মেলে। ১৪৪৪ শক্তিপূজ্ঞ এক্সের যাত্রাপথও দীর্ঘায়িত হয়ে হাওড়া থেকে জব্বলপুর যাচ্ছে। নেপাল ভ্রমণার্থীদের নিয়েও রেল যাচ্ছে হাওড়া থেকে রেল্লীল ৩০২১ মিথিলা এক্স। আর নবতম সাপ্তাহিক রাজধানী এক্স সার্ভিস গড়েছে আমেনাবাদ ও নতুন দিল্লীর মাঝে। তেমনি ভারতীয় রেলের ব্যবস্থাপনায় দিল্লী-মুম্বাই-চেন্নাই-কলকাতা এই চার মহানগরী থেকে সপ্তাহান্তিক ভ্রমণের ব্যবস্থা হতে চলেছে। যাতায়াত-থাকা-আহার জুড়ে টিকিট এই সফরসূচীর।

দূরপাল্লার সুপার ফাস্ট ট্রেনে ডাইনিং কার আর অন্যান্য ট্রেনে প্যাক্সী কারের ব্যবস্থা থাকে। নির্বাচিত মেনু বা A la Carte অর্থাৎ পছন্দমত মেনুর খাবার মিলবে। প্যাক্সী কারবিশীন গাড়িগুলিতেও অর্ডার মত খাবার দেওয়ার প্রথা চালু আছে। জনতা মিল ৪/ ক্যাসারোল ৮, ক্যাসারোল ভেজ মিল ১৬/১৮, স্ট্যান্ডার্ড নন ভেজ মিল ১৮/১৩, ব্রেক ফাস্ট ১০/১২। প্রতিক্ষেত্রেই সার্ভিস চার্জ ৫০ পয়সা। আর দক্ষিণ ভারতে আঞ্চলিক খাবারও মেলে ট্রেনে।

যে কোনও যাত্রী জরুরী ডাক্তারী প্রয়োজনে ট্রেনের গার্ড বা কনডাক্টরকে বলুন। পরবর্তী জংশন স্টেশনে রেলের ডাক্তার ও ঔষধের ব্যবস্থা মেলে।

১০০০ কিমি পর্যন্ত দূরত্বের যাত্রীরা ৫০০ কিমি পেরিয়ে সারা পথে এক দফায় ২ দিনের যাত্রা বিরতি করতে পারেন। ১০০০ কিমির অধিক দূরত্বের যাত্রায় ২ দিনের ২টি ব্রেক জারি গ্রাহ্য। তবে, রিটার্ন টিকিটের যাত্রীরা কেবল ফেরার পথেই এই সুযোগ নিতে পারেন।

আর লাগে সারচার্জ ভারতীয় রেলের বিশেষ বিশেষ সুপার ফাস্ট ট্রেনে—দ্বিতীয় শ্রেণীতে সিট ৫, স্লিপার ক্লাশ ১০, প্রথম শ্রেণী-শীতাতপ স্লিপার ক্লাশ-শীতাতপ চেয়ার করে ১৫, শীতাতপ প্রথম শ্রেণীতে ২৫ হারে। এছাড়া লাগে রিজার্ভেশন চার্জ : যথাক্রমে—১০ ১৫ ২০ ৩০ (কম্পিউটারাইজড) হারে। স্লিপার ক্লাশে ২১—৬-০০টায় শয়নের ব্যর্থও অতিরিক্ত লাগে : ৫০০ কিমি পর্যন্ত ১৫, ৫০১—১০০০ কিমি ২০, ১০০১ কিমির আধিক্যে ২৫ করে। তেমনি ব্যর্থের অভাব ঘটলে R A C অর্থাৎ Reservation Against Cancellation প্রথায় সীমিত যাত্রীর সিটের ব্যবস্থাসহ যখন বাতিল হবে অগ্রাধিকার ভিত্তিতে বার্থ পাবার ব্যবস্থা মেলে।

আর দ্রুততম যাত্রায় আকাশী বিমান ভারতবর্ষের প্রায় প্রতিটি শহরকেই গঁথে ফেলেছে দৈনন্দিন সার্ভিসে। সময়ে সাশ্রয় ঘটলেও ভাড়ায় অধিক্য লাগে আকাশী বিমানে। বিমান চলছে ভারত সরকারের পরিচালনাধীন Air India, Indian Airlines, সহযোগী Alliance Air ও Vayudoot-এর। বিমান চলছে—এয়ারবাস, বোয়িং, ফকার ছাড়াও নানানধর্মী। হেলিকপ্টার সার্ভিসও সংযোগ গড়েছে ভারতের নানানদিকের। আর চলছে প্রাইভেট বিমান ভারতের আকাশপথে—East-West Airlines, N E P C Airlines, Damania Airways, City Link Service, Moduluft, Jetwings, Archana Airways, Jet Airways, Sahara, Jagson Airlines ছাড়াও নানান সংস্থার। সময়ে তারতম্য না ঘটলেও ভাড়ায় কিছুটা সাশ্রয় মেলে প্রাইভেট বিমানে। এ-ব্যাপারে উচিত হবে স্ব স্ব সংস্থা বা অনুমোদিত যে কোনও Travel Agent-কে যোগাযোগ করা।

আর আঞ্চলিক যান রূপে বাস মাকড়সার জাল বুনেছে সারা ভারত জুড়ে। শুধু অঞ্চলই বা কেন—অঞ্চলের বেড়া ভেঙে প্রতিবেশী রাজ্যেও পৌঁছাচ্ছে বাস। ৬৪টি জাতীয় সড়ক ধরে ৩১৩৯৮ কিমি রাজপথে দিনরাত্রি জুড়ে বাসও চলছে কয়েক সহস্র। তেমনি জাতীয় সড়ক ছাড়াও স্টেট হাইওয়ে তথা গ্রামে গঞ্জেও অব্যাহত এদের গতি। বাসও চলছে নানানধর্মী—ডিলান্স, সুপার ডিলান্স, শীতাতপ, ভিডিও ও সাধারণ। তবে রাত্রিকালীন সফরে শয়নের ব্যবস্থার অভাবে পূণ্য থাক প্রথার আসন আছে তেমন বাসই নির্বাচন করা উচিত হবে। উচিত হবে নৈসর্গিক শোভার পূজারীদের চলার পথে ভিডিও বাস বয়কট করে চলা। ভিডিও-র নিনাদে ভ্রমণ বিরক্তিকর হয়ে ওঠে সময় সময়।

আর রয়েছে জলযান। আন্দামান, লাক্ষাদ্বীপ, গোয়া ভ্রমণে জাহাজের আবেদন অদম্য। তেমনি কেরল রাজ্যের ব্যাক ওয়াটারে বোট চলছে যাত্রী নিয়ে। কেরল ভ্রমণে একান্তই উচিত হবে ব্যাকওয়াটারে জলযানের স্বাদ নেওয়া।

IAC বিমানের সার্ভিস ও যাত্রীভাড়া :

কলকাতা থেকে— আগরতলা J Class ২০৮৫/ Y Class ১৪৩০ □ বাগডোগরা ৩৫৪৫/২৪০৫ □ আইজল.../ ২৩৭০ □ জোড়হাট.../ ২৭০০ □ গুয়াহাটি ২৮৫৫/১৭৭০ □ ইম্ফল ৩৪৩০/২৩২৫ □ শিলচর.../২০৮৫ □ তেজপুর.../২২৮৫ □ ডিমাপুর.../২৭০০ □ পোর্ট ব্লেয়ার.../৫৮৫০ □ রাঁচি ২৯০০/১৭৭৫ □ পাটনা ৩৭৯৫/২৫৭০ □ দিল্লী ৭৯৫৫/৫৩৪৫ □ মুম্বাই ৯২১০/৮১৮০ □ চেন্নাই ৯০৩৫/৬০৬০ □ ভুবনেশ্বর ৩৩৪৫/২২৭০ □ আমেনাবাদ ৯২১০/৬০৮০ □ ব্যাঙ্গালোর ১০৬৭৫/৭১৫৫ □ ডিব্রুগড় ৪২৩৫/২৮৬০ □ হায়দ্রাবাদ ৮৫৯০/৫৭৬৫ □ জয়পুর ৯০০৫/৬০৪৫ □ লক্কাই.../৪২২৫ □ নাগপুর ৬৭১৫/৪৫১৫ □ ঢাকা ২৮৩০/১৮৯৫ □ চট্টগ্রাম ৩০৪০/২৪২০ □ কাঠমাণ্ডু ২৭৭০/২১২৫ □

দিল্লী থেকে— আত্রা.../১৩১৫ □ জম্মু.../৩১০৫ □ শ্রীনগর ৪৮২৫/৩২৫৫ □ চণ্ডীগড়.../১৮২০ □ লে.../৩১৪০ □ অনুতসর.../২৫৪৫ □ ঝাড়ুরাহো.../২৬১৫ □ বারাণসী ৪৯১০/৩৩১৫ □ মুম্বাই ৬৮৫০/৪৫০৫ □ চেন্নাই:

১০৩৭০/৬৯৫৫ □ কলকাতা ৭৯৫৫/৫৩৪৫ □ ভুবনেশ্বর ৮৬৫৫/৫৮১০ □ ব্যাঙ্গালোর ১০২৯০/৬৯০০ □ বাগডোগরা ৮২৩৫/৫৫৩০ □ গুয়াহাটি ৯৫৬০/৬৪২০ □ ইম্ফল ১০৮৫০/৭২৭৫ □ ভূপাল.../৩০৬০ □ ঔরঙ্গাবাদ.../৪৫১৫ □ আমেদাবাদ ৫১৫৫/৩৪৭৫ □ গোয়া.../৬৩১৫ □ হায়দ্রাবাদ ৮১৩৫/৫৪৭০ □ জয়পুর.../১৬০০ □ উদয়পুর.../২৭৬০ □ গোয়ালিয়র.../১৭৪৫ □ ইন্দোর.../৩৫৪৫ □ ভাদোদরা.../৪০৬০ □ রায়পুর...৫২১০ □ পাটনা ৫৬২০/৩৭৮৫ □ রাঁচি ৭৪৯০/৫০৪০ □ পুনে ৮৩১৫/৫৫৮৫ □ নাগপুর.../৩৯৭৫ □ লক্ষৌ.../২৩৫০ □ কোচি.../৯০২৫ □ তিরুভনন্তপুরম ১৪৪৫৫/৯৬৭৫ □ যোধপুর.../২৭৬০ □ জয়সলমীর.../৩৮০৫ □ কাঠমাণ্ডু ৩৪৯৫/২৬৯০ □

মুম্বাই থেকে—গোয়া ৩২১০/২১৮০ □ ভাদোদরা ৩০১০/২০৫৫ □ ইন্দোর.../২৪০৫ □ ঔরঙ্গাবাদ.../১৮৭০ □ ব্যাঙ্গালোর ৫৪১৫/৩৬৫০ □ চেন্নাই ৬৪৭০/৪৩৫০ □ ভূজ.../২৯৭০ □ ভূপাল.../৩২৯০ □ ভাবনগর ২৭৪৫/১৮৭০ □ জামনগর.../২৬৭০ □ রাজকোট.../২২০৫ □ আমেদাবাদ ৩৩৭৫/২২৯০ □ জয়পুর ৬১৩৫/৪১৩০ □ দিল্লী ৬৮৫০/৪৬০৫ □ লক্ষৌ ১০০২৫/৬৭২৫ □ বারাণসী ৯৪২৫/৬৩২০ □ কলকাতা ৯২১০/৬১৮০ □ উদয়পুর.../৩২৩০ □ নাগপুর ৪৯৭০/৩৩৫৫ □ পুন্ড্রপুর্তি ৫৪৮৫/৩৬৯৫ □ হায়দ্রাবাদ ৪৬৬৫/৩১৫০ □ গোয়ালিয়র.../৪২৯৫ □ মাদুরাই.../৫০৪০ □ মাস্সালোর.../৩২৫৫ □ কোচি.../৪৫২৫ □ তিরুভনন্তপুরম ৭৭৪০/৫২০০ □ কোয়েম্বাটুর ৫৯৩০/৩৯৯৫ □ কালিকট ৬১৩৫/৪১৩৫ □ যোধপুর.../৩৯৭৫ □ ভুবনেশ্বর.../৬৫৬০ □ বিশাখাপতনম.../৫১৪৫ □ করাচি ৪৫০০/৩৪৫৫ □

চেন্নাই থেকে—পোর্টব্লোয়ার.../৫৯২০ □ ত্রিচি ২৯০০/১৯৭৫ □ মাস্সালোর.../২৭৩০ □ তিরুপতি.../১০১৫ □ পুন্ড্রপুর্তি ২৮০৫/১৯০৫ □ মাদুরাই.../২৩৬৫ □ কোয়েম্বাটুর ৩৬৬৫/২৪৮০ □ তিরুভনন্তপুরম ৪৬৯০/৩১৬০ □ কোচি.../৩০৯০ □ কালিকট ৩৬৬০/২৪৮০ □ ব্যাঙ্গালোর ২৬৬০/১৮২০ □ মুম্বাই ৬৪৭০/৪৩৫০ □ গোয়া ৫৪৫৫/৩৬৭৫ □ হায়দ্রাবাদ ৪০১০/২৭৭৫ □ বিশাখাপতনম.../৩০৩৫ □ ভুবনেশ্বর ৭৯২০/৫৩২০ □ কলকাতা ৯০৩৫/৬০৬০ □ দিল্লী ১০৩৭০/৬৯৫৫ □ আমেদাবাদ ৯৬১৫/৬৪৫০ □ পুনে ৬৯৬৫/৪৬৮০ □ কলম্বো ৩২৩০/২৪৮৫ □

গুয়াহাটি থেকে—আগরতলা ১৮২৫/১২৫৫ □ আইজল.../১৭৬০ □ ডিমাপুর.../১৬০০ □ লীলাবাড়ি.../১৬৮০ □ ইম্ফল ২০৮৫/১৪৩০ □ কলকাতা ২৮৯৫/১৯৭০ □ দিল্লী ৯৫৬০/৬৪২০ □

বারাণসী থেকে—আগ্রা.../২৮০৫ □ দিল্লী ৪৯১০/৩৩১৫ □ খাজুরাহো.../১৯৭৫ □ লক্ষৌ ২৫১০/১৭১০ □ মুম্বাই ৯৪২৫/৬৩২৫ □ কাঠমাণ্ডু ১৭১৫/১৩১৫ □

ব্যাঙ্গালোর থেকে—চেন্নাই ২৬৬০/১৮২০ □ কোচি.../২১০০ □ কালিকট ২৭৩০/১৮৬০ □ হায়দ্রাবাদ ৪০৮০/২৭৬০ □ গোয়া ৪০২৫/২৭২৫ □ তিরুভনন্তপুরম ৪৪৭৫/৩০২৫ □ আমেদাবাদ ৮৮৬৫/৫৯৫০ □ পুনে ৫৬০০/৩৭৭৫ □ মুম্বাই ৫৪১৫/৩৬৫০ □ মাস্সালোর.../১৯৭৫ □ দিল্লী ১০২৯০/৬৯০০ □ কলকাতা ১০৬৭৫/৭১৫৫ □

NEPC Airlines, Damania Airways, Jet Airways, East-West Airlines, Modiluft, Archana Airways, Sahara Airlines—ছাড়াও নানান প্রাইভেট বিমান সংস্থাও ভারতের আকাশ ছেয়ে সার্ভিস গড়েছে—কাশ্মীর থেকে কন্যাকুমারিকার।

| Important Rail Telephones | | | Howrah Station (New Complex) | |
|---------------------------------------|--|--|------------------------------|---------------------|
| Mumbai : | | | Incoming Trains | 6602217 |
| Chhatrapati Shivaji Terminal-CST (VT) | | | (Round the Clock) | 2203554 |
| Mumbai Central | | | Delhi : | |
| Dadar | | | General Enquiry | 3313535/131 |
| General Enquiry | | | Train Arrival Enquiry | 1330-34 |
| Reservation | | | Train Departure Enquiry | 1336-38 |
| Central Rail | | | Reservation | |
| Western Rail | | | Upper Class | E1330/H1335/3348686 |
| Train Arrival Enquiry | | | Second Class | 3348787 |
| Train Departure Enquiry | | | Chennai : | |
| Calcutta : | | | Central Station | 563535 |
| Howrah Station | | | Egmore Station | 566565 |
| Sealdah Station | | | Train Information | 567575 |
| Fairlie Place | | | General Enquiry | 131 |
| Kailashat St | | | Reservation Enquiry | E 1361/H1362 |
| Central Enquiry | | | Enquiry : Secunderabad/ | |
| Reservation Enquiry | | | Hyderabad/Kacheguda | 131 |
| Reservation | | | Madurai | 131/132 |
| General Enquiry | | | Thiruvananthapuram | 131/329246 |
| | | | Ernakulam | 131/132 |
| | | | Bangalore | 131/253965 |

৮৮২/অন্নপ সঙ্গী

| | | | | | |
|----------------------------------|----------|-----------------------|----------|------------------------------------|----------|
| কালানুগুণে বীচ | ৫২৭ | কোভেলঙ | ৩৪০ | গোকক জলপ্রপাত | ৪৩৩ |
| কালোহাতি | ৩০২ | কোবেছাটুর | ৩৬৩ | গোকর্প | ৪৩৮ |
| কালিকা | ৬৮৪ | কোরাপুট | ৩২১, ৪৬৪ | গোকুল | ১৪৮, ৭৬১ |
| কালিকট | ৩৯৯ | কোলাঘাট | ৮৫ | গোপালপুর-অন-সী | ৩০২ |
| কালিম্পং | ১০২ | কোলহাপুর | ৫০৫ | গোবিন্দ বন্যজন্তু স্যাকটুরারি | ৭৪৩ |
| কালীকোরা | ১৩৫ | কোলাবা বীচ | ৫২৯ | গোমুখ | ৭৪০ |
| কালীগঞ্জ দুর্গ | ৫৮৭ | কোলার বর্ণখনি | ৪৪৭ | গোয়ালপুর | ৪৮৯ |
| কালিয়া | ৭৬২ | কোন্ডাম | ৩৮৬ | গোরক্ষপুর | ৭৬৩ |
| কাশী | ৭০৬ | কোন্ডারং | ৬২৮ | গোলকুণ্ডা দুর্গ | ৪৪৪ |
| কাসৌলী | ৮১১ | কোলাহাই হিমবাহ | ৮৫৬ | গোসাবা | ১৫৫ |
| কিয়ারসেপ | ৮১২, ৮১৪ | কোহিমা | ২৩৪ | গৌড় | ১১৯ |
| কিরগতোল | ৪৬৫ | কৌশানি | ৬৮২ | গৌতমধাবা জলপ্রপাত | ২০৮ |
| কিরিবুক | ২১৩ | কৌশাবী | ৭০৪ | গৌরীকুণ্ড | ৭৩৪ |
| কিরীটেশ্বরী | ১০৩ | কায়ে | ৫৬৮ | প্যাটেক | ১৫৯ |
| কিসনি | ৬২১ | ক্রাসানোর | ৩৯৭ | | ঘ |
| কিত্তওয়ার | ৮৪৬ | কীরগ্রামে দেবী যোগালা | ১১৫ | ঘাটশিলা | ২১১ |
| কুইলন | ৩৮৬ | কীরভবানী | ৫২৯ | দুম | ৪৪২ |
| কুটিপুডি | ৪৭১ | | | | চ |
| কুতব মিনার | ৭৭৯ | বণ্ডগিরি | | চক্রাতা | ৭৪৯ |
| কুল | ৮৪৫ | ২৮৬ | | চক্ৰীগড় | ৭৬৫, ৭৯২ |
| কুম্বর | ৩৬৮ | খাজিয়ার | ৮৩৪, ৮৬০ | চন্দননগর | ৭৩ |
| কুমায়ুন | ৬৭৯ | খালুসাহো | ৫৮০ | চন্দনেশ্বর | ৮৬ |
| কুমায়ুন কোম ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্স | ৩৮৯ | খাটমা | ৬২২ | চন্দ্রকোণ্ডগড় | ১৫৬ |
| কুমিলি | ৩৮৯ | খাণ্ডোয়া | ৫৯৮ | চন্দ্রগিরি | ৩০২, ৪৬৭ |
| কুন্ডকোণাম | ৩৪৪ | খানাবল | ৮৫৭ | চন্দ্রগুতি | ৪২২ |
| কুন্ডলগড় | ৪৪৭ | খালসা | ৪৯৬ | চন্দ্রপুরা | ২০২ |
| কুরনুল | ৪৬৯ | খারদু লা | ৮৬৮ | চন্দ্রপ্রভা বন্যপ্রাণী স্যাকটুরারি | ১১৭ |
| কুরিসমুডি পাহাড় | ৩৯৮ | খাসপুর | ২৫৩ | চম্পাই | ২২৬ |
| কুরুক্ষেত্র | ৭৬৬ | খিচিং | ১১৬ | চম্পানেব | ৫২৩ |
| কুরুম | ২৯১ | খিরসু | ৭২৮ | চম্পাবত | ৬৮৮ |
| কুর্গ | ৪৩৩ | খিসেনমার্গ | ৮৫৩ | চম্বল | ৫৮৯ |
| কুন্ডলিয়া অরণ্য | ৩১১ | খুরপাতাল | ৬৮২ | চবাখণ্ড | ৩১০ |
| কুলীক পক্ষী আশ্রয় | ১২৩ | খুরী | ৬৩২ | চিইবাসা | ২১৪ |
| কুলু | ৮১৫ | খোনসা | ২৬৮ | চাকলা | ১৫৬ |
| কুশনিগর | ৭৬২ | | | চাঁদবালি | ৩৩৯ |
| কৃষ্ণগিরি উপবন | ৪৮২ | গঙ্গা | ৭২৬ | চাঁদপুর | ৩০৯ |
| কৃষ্ণনগর | ৯৪ | গঙ্গাবলী | ৮৫৯ | চান্দুখী লেক | ২৪৪ |
| কৃষ্ণরাজ সাগর বীথ | ৪১৩ | গঙ্গোত্রী | ৭৩৮ | চান্দেখী | ৫৪৪ |
| কৃষ্ণরাজ লেক | ৮৬০ | গঙ্গোত্রীহাট | ৬৯১ | চাপরামারি | ১০১ |
| কেইবল দামজাও জাতীয় উদ্যান | ২২৯ | গজেনর | ৬২৭ | চামুড়া দেবী | ৮২৯ |
| কেওনহাড় | ৩১১ | গঞ্জাম | ৩০১ | চামুড়া গহাড় | ৪১৩ |
| কেওলাসেও বনা পক্ষী আশ্রয় | ৬৬৭ | গণপতিপুন্ডে | ৪৯১ | চাথা | ৮৩৫ |
| কেওগ্রামে দেবীবল্লা | ১১৫ | গণেশপুরী | ৪৮৫ | চারখাম | ৭২৯, ৭৪২ |
| কোন্ডারনাথ | ৭৩৪ | গজরবল | ৮৫৯ | চারার-ই-শরিফ | ৮৩৩ |
| কেন্দুবিধ | ১১৩ | গয়া | ১৮০ | চিকমাগালু | ৪২০ |
| কেমটি জলপ্রপাত | ৭৪৬ | গয়ারাসপুর | ৬১১ | চিসেলপুট | ৩৩৯ |
| কেম্যান্ডাতি | ৪২০ | গরমপানি | ২৪৮, ২৬০ | চিতাল | ৬৩৬ |
| কেলাং | ৮২৫ | গরমারা স্যাকটুরারি | ১০১ | চিতোরগড় | ৬৪৮ |
| কৈলী আশ্রম | ৬৮৩ | গজিয়াবাস | ৭০০ | চিতরঞ্জন | ১০৭ |
| কোকরনাগ | ৮৫৫ | গাঙ্গিয়ার | ৮৪ | চিত্রকুটখাম | ৫৮৭, ৭০৪ |
| কোচবিহার | ১২৮ | গাঙ্গীধাম | ৫৭১ | চিত্রকোটে জলপ্রপাত | ৪৬৪, ৬৩৩ |
| কোচি | ৫১১ | গাঙ্গীনগর | ৫৫০ | চিত্রকোণা | ৪৪৪ |
| কোচিকোড় | ৩৯৯ | গারো হিলস | ২৬০ | চিত্রলদুর্গ | ৪২৭ |
| কোটহার | ৭২৭ | গালুতি | ২১২ | চিত্রাম্বরম | ৩৪৩ |
| কোটী | ৬৫০ | গির অরণ্য | ৫৫৭ | চিত্রা | ২৯৯ |
| কোটগিরি | ৩৬৮ | গিরনার পাহাড় | ৫৫৭ | চিত্রা ট্যুরিস্ট কমপ্লেক্স | ৭৩৬ |
| কোটসুর | ১১৮ | গিহিডি | ১৯৩ | চুংখাং | ১৬৬ |
| কোটেশ্বর | ৫৭১ | গিরি গোবর্ধন | ৭৬১ | চুনার | ৭৩৬ |
| কোটরাং | ৩৮৮ | গিরিমার্গ | ৮৬০ | চুয়াটপ্পুর | ২৬০ |
| কোটলাস | ৩৫৮ | গুপ্তেশ্বর | ৪৬৪ | চুয়াটপ্পুর | ৭৬১ |
| কোটলাসদুর্গ | ৩৬৭ | গুপ্তেশ্বর | ৩৬৮ | চুলালি | ১০৭ |
| কোশারক | ২৮৯ | গুপ্তেশ্বর | ৪২৭ | চুলালি | ৮১১ |
| কোশিকানাল | ৩৫১ | গুপ্তেশ্বর | ৪৩৩ | চুলালি | ৩২৩ |
| কোনাই জলপ্রপাত | ৪৬৮ | গুপ্তেশ্বর | ২৬৮ | চুলালি | ২৫৯ |
| কোনার | ২০২ | গুপ্তেশ্বর | ৫১৫ | চুলালি | ৬৩০ |
| কোণ্ডালি | ৪৭১ | গুপ্তেশ্বর | ৮৫ | চুলালি | ৫৮৮ |
| কোন্ডল বীচ | ৩৮৪ | গুপ্তেশ্বর | ১৬৯ | চুলালি | ৬৮৪ |

[illegible]

૪૪૪/અચળ ગુણી

[illegible]

৮৮৬/অন্নপ সঙ্গী

| | | | | | |
|----------|----------|-----------|----------|-------------------|----------|
| মিষ্টি | ৬৯৯ | রাবড্রেটস | ১৭০ | শিলা | ৯২ |
| মিষ্টি | ১৪৭ | রাবালো | ১৬৮ | শিলা | ২৪৪ |
| মিষ্টিপু | ৭০৬ | রাবালু | ৬৮০ | শিলিওডি | ১২৪ |
| মিষ্টি | ৭২০ | রাবালি | ৪৬৪ | শিলিওডি কুম | ৬৭০ |
| মিষ্টি | ৬৮৯ | রাবালি | ৪২০ | শিলিওডি গড় | ২৭৪ |
| মিষ্টি | ৪২৭ | রাবালি | ৬৯২, ৭১৫ | শিলিওডি গড় | ৪০০ |
| মিষ্টি | ৮০ | রাবালি | ১১৮ | শিলিওডি | ৩২২ |
| মিষ্টি | ৬২১ | রাবালি | ৭৯৮ | শিলিওডি সিক সেটার | ২৪৪ |
| মিষ্টি | ৬১২ | রাবালি | ৪৪৫ | শিলিওডি | ৮১ |
| মিষ্টি | ৬৮০ | রাবালি | ৪২৬ | শিলিওডি | ৬২৭ |
| মিষ্টি | ১৯৬ | রাবালি | ৪৪৮ | শিলিওডি | ১৮৭ |
| মিষ্টি | ৩৪০ | রাবালি | ৪২৯ | শিলিওডি | ৭০৬ |
| মিষ্টি | ৩৬৮ | রাবালি | ৪২৭ | শিলিওডি | ৮৫৬, ৮৫৯ |
| মিষ্টি | ৩৬০ | রাবালি | ৬০৯ | শিলিওডি | ৪১৯ |
| মিষ্টি | ৬০২ | রাবালি | ৮২৭ | শিলিওডি | ৭০৬ |
| মিষ্টি | ৬৮৭ | রাবালি | ১০৭ | শিলিওডি | ৪৮৮ |
| মিষ্টি | ৬৮৯ | রাবালি | ৮৪৫ | শিলিওডি | ৪২১ |
| মিষ্টি | ৪৭৪ | রাবালি | ৭০৭ | শিলিওডি | ৭২৮, ৮৭৭ |
| মিষ্টি | ৪১২ | রাবালি | ৭২৬, ৭২৭ | শিলিওডি | ১০৯ |
| মিষ্টি | ৯৮ | রাবালি | ১৬১ | শিলিওডি | ৩০৫ |
| মিষ্টি | ৭৪৪ | রাবালি | ৬৯৬ | শিলিওডি | ৪১৪ |
| মিষ্টি | ৮৬৭ | রাবালি | ৭৯৬ | শিলিওডি | ৩৪৯ |
| মিষ্টি | ২০২ | রাবালি | ৮০৮ | শিলিওডি | ৭০ |
| মিষ্টি | ৪১৭ | রাবালি | ৩১১ | শিলিওডি | ৪৭০ |
| মিষ্টি | ৪২১ | রাবালি | ৮২০ | শিলিওডি | ৬৮৮ |
| মিষ্টি | ৬৮৮ | রাবালি | ৬৭২ | শিলিওডি | ৮৬৬ |
| মিষ্টি | ২০০ | রাবালি | ৭২৬ | শিলিওডি | ৬৫৭ |
| মিষ্টি | ২৫৯ | রাবালি | ৩০৫ | শিলিওডি | ১৫০ |
| মিষ্টি | ৮২৯ | রাবালি | ৩০৭ | শিলিওডি | ৭০২ |
| মিষ্টি | ২০৬ | রাবালি | ৪০২ | শিলিওডি | ২৬৭ |
| মিষ্টি | ৪০৫ | রাবালি | ৪২৯ | শিলিওডি | ৪৮২ |
| মিষ্টি | ৬৮৬ | রাবালি | ১৬৬ | শিলিওডি | ১০৭ |
| মিষ্টি | ৭৪১ | রাবালি | ১০২ | শিলিওডি | ৪১৮, ৪৫৫ |
| মিষ্টি | ৩০৭ | রাবালি | ৮৬১ | শিলিওডি | ৭২৯ |
| মিষ্টি | ৭৪৪ | রাবালি | ২২৬ | শিলিওডি | ৩০৬ |
| মিষ্টি | ৮৬০ | রাবালি | ১১৬ | শিলিওডি | ৪৪৯ |
| মিষ্টি | ৪২১ | রাবালি | ১০৫ | শিলিওডি | ৭৫ |
| মিষ্টি | ৭০০ | রাবালি | ৮৫৬ | শিলিওডি | ৩০৬ |
| মিষ্টি | ৮২৮ | রাবালি | ৮০১ | শিলিওডি | ৬৫ |
| মিষ্টি | ৬০২ | রাবালি | ৭০২ | শিলিওডি | ৭০২ |
| মিষ্টি | ৩১৪ | রাবালি | ২২৬ | শিলিওডি | ৭৪৯ |
| মিষ্টি | ৭২৮ | রাবালি | ৩১৫ | শিলিওডি | ২২৬ |
| মিষ্টি | ৬৪৭ | রাবালি | ৮৬২ | শিলিওডি | ৫১৯ |
| মিষ্টি | ৬৪৭ | রাবালি | ৪৬৯ | শিলিওডি | ৬০৯ |
| মিষ্টি | ৩০৭, ৪১২ | রাবালি | ২২৯ | শিলিওডি | ২৯৯ |
| মিষ্টি | ৪১৫ | রাবালি | ৪৫৪ | শিলিওডি | ১৫০ |
| মিষ্টি | ২০৬ | রাবালি | ৪৫৪ | শিলিওডি | ৪৫০ |
| মিষ্টি | ৩২০ | রাবালি | ৬৮৮ | শিলিওডি | ৩০৫ |
| মিষ্টি | ৪৬৬ | রাবালি | ৪২৪ | শিলিওডি | ৬৮২ |
| মিষ্টি | ১৮০ | রাবালি | ১০৬ | শিলিওডি | ৪৮১ |
| মিষ্টি | ১৯৯ | রাবালি | ৬৮৭ | শিলিওডি | ৩০০ |
| মিষ্টি | ৭৬ | রাবালি | ৭২৭ | শিলিওডি | ৪০৫ |
| মিষ্টি | ১৯৮ | রাবালি | ৮৬৭ | শিলিওডি | ৬৬৬ |
| মিষ্টি | ২০২ | রাবালি | ৮৬ | শিলিওডি | ১০৬ |
| মিষ্টি | ৪৪১ | রাবালি | ৭৪২ | শিলিওডি | ১০২ |
| মিষ্টি | ৬৪৭ | রাবালি | ৩০২ | শিলিওডি | ৬৬৬ |
| মিষ্টি | ৭২০ | রাবালি | ১০৮ | শিলিওডি | ৪২৯ |
| মিষ্টি | ২৫১ | রাবালি | ৮৮ | শিলিওডি | ৪২৪ |
| মিষ্টি | ৪৭০ | রাবালি | ৪০৬ | শিলিওডি | ৭১৫ |
| মিষ্টি | ৬২০ | রাবালি | ৪০৬ | শিলিওডি | ৩০০ |
| মিষ্টি | ৭৭ | রাবালি | ২৪৮ | শিলিওডি | ৭১৭ |
| মিষ্টি | ৬৮০ | রাবালি | ১৮৮ | শিলিওডি | ৮১০ |
| মিষ্টি | ৩১৯ | রাবালি | ৬৮০ | শিলিওডি | ১৮৭ |
| মিষ্টি | ৮১ | রাবালি | ২৫২ | শিলিওডি | ১১২ |

| | | | | | |
|-------------------------|----------|-------------------------------------|----------|-------------------|-----|
| সিহেপড | ৪৯৯ | সৈদাখান | ১০২ | হলদিয়া | ১৪৯ |
| সিহেচলয় | ৪৬২ | সেজেবাখান | ৪৪৮ | হলপেট | ৪২৬ |
| সিকান্দা | ৭৫৬ | সেরা | ২৬৪ | হাজারী বাগ | ২০২ |
| সিদ্ধু শুয়া | ২৬১ | সেবাগ্রাম | ৪২০ | হাজো | ২৪৪ |
| সিধপুর | ৪৭০ | সোনালি | ৭৬০ | ইট পিক | ৮১২ |
| সিদ্ধি সাব কাথাবানা | ২০২ | সোনাই ও রূপাই কন্যাজন্তু সংগ্রহালয় | ২৫১ | হাতিবাড়ি | ৩১২ |
| সিপাহীজলা | ২১৮ | সোনা পাহাড় | ৭৬৭ | হাম্মাকোতা মন্দির | ৪৪৮ |
| সিনলা | ৮০৪ | সোমনাথ | ৪৪৯ | হাকলঙ | ২৫২ |
| সিমিলিপাল জাতীর উদ্যান | ৩১২ | সোমনাথপুর | ৪১৫ | হাম্পী | ২৪২ |
| সিমিতোলা | ৬৮৬ | সোলন | ৮১১ | হাম্মাবাদ | ৪৪০ |
| সিঁরি | ৪১৯ | সৌন্দরি | ৪০০ | হাসান | ৪১৭ |
| সিদ্ধল গেম স্যাডচুয়াবি | ১৪২ | সৌরট | ১৯৯ | হিজলি | ৮৭ |
| সিলভাসা | ৪৭৯ | শ্রীমন্দির | ৭২৭ | হিন্দী জলপ্রপাত | ২১০ |
| সিঁতি | ৮১০ | স্যানাচটা | ৭৪১ | হীবাফুস প্রোজেক্ট | ৩১৭ |
| সিঁটাক শুয়া | ৮৬৭ | | | হুদু ফলস্ | ২০৮ |
| সীতাপুর | ৭২০ | হ | | হুদলি | ৪৩৭ |
| সীতামাটা | ১৯৯ | হুদুমানটা | ৭৪১ | হুয়া | ৩১৮ |
| সুব মহাসেব | ৮৪৫ | হু-কি মুন | ৭৪০ | হুবাঁকেপ | ৭২৫ |
| সুন্দরভুসা | ৬৯৬ | হুসেলে পাহাড় | ৪৬৯ | হেতমপুর | ১১১ |
| সুন্দরনগর | ৮২৮ | হুবিঘার | ৭২০ | হেমকুণ্ড সাহিব | ৭০৩ |
| সুন্দরন জাতীর উদ্যান | ১৫০ | হুবিপাল | ৭৬ | হেমিস শুয়া | ৮৬৫ |
| সুন্দরকুণ্ড | ২০১, ৭৮০ | হুবিপুর | ৩১৫, ৭৪৯ | হোপেনাকলা | ৩৫০ |
| সুবাট | ৪৫০ | হুবিগঞ্জ | ৩১৯ | হোমকুণ্ড | ৬৯৬ |
| সুলতানগড় ফলস | ৪৯০ | হুবিহু | ৪২৭ | হোসিরাবপুর | ৮০১ |
| সুলতানপুর পক্ষী আলয় | ৭৬৭ | হুবিহু কের | ১৮৭ | হ্যালিডে বীপ | ১৫৫ |
| সুলতানস ব্যাটারি | ৪০১, ৪৩৫ | হুবিহু বৈশ্বর | ৪৯২ | হ্যালিডে | ৪১৯ |
| সেলিম আলি পক্ষী আলয় | ৫২৬ | হলদিঘাটা | ৬৪৬ | | |



বেনারসী
শাড়ী

রামকানাই
রমণীকান্ত পাল

(টেক্সটাইল ডিভিসন ইলেকট্রনিক্স ডিভিসন)

যেখানে বজায় আছে প্রাচীন ঐতিহ্য

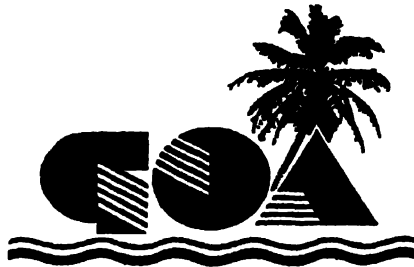
২১৩-এ, মহাত্মা গান্ধী রোড, কলিকাতা-৭০০ ০০৭

ফোন : ২৩৮-২৩০৩/২৩৫৩, ২৩১-১১১১

রামকানাই যামিনীরঞ্জন পাল প্রাঃ লিঃ-এর সহযোগিতায় সংস্থা

বেড়াতে যাবেনই যখন চলুন একবার চির সবুজ স্বপ্নের দেশে

গোয়া ভ্রমণ সহজতর হল। এক রোমাঞ্চকর রেলযাত্রা কোঙ্কন এক্সপ্রেসে মুম্বাই থেকে ১১ ঘণ্টায় ও ম্যাঙ্গালোর থেকে ৬ ঘণ্টার পথে চিরসবুজ স্বপ্নের গোয়াতে পৌঁছবেন। থাকুন ৭/৮ দিন উপভোগ করুন নিজেকে সইয়ে সইয়ে অবকাশের প্রতিটি মুহূর্ত। নানা দেশীয় ও বিদেশীয় খানাপিনার অটেল সম্ভার



—আর দাম আপনার সাথের মধ্যেই। ৪ দিন শুধু সকাল থেকে রাত্রি প্রমোদ ভ্রমণে চলুন —আর বাকি ৩/৪ দিন এক সমুদ্র কিনারা থেকে আরেকটি; আরেকটির থেকে আরেকটি। হাওড়া থেকে যেতে আসতে অন্য প্রতিবেশী রাজ্যের এটা ওটা দেখে নিজের অর্থ, সামর্থ্য ও শক্তির অপচয় করে ফেলবেন না। ধীরে সূছে গোয়ার রূপ রস মধু উপভোগ করে দ্রুতগতির বিলাসী জলখান ক্যাটারামারান চেপে রাতের ট্রেন ধরুন অথবা ফিরুন হায়দ্রাবাদ হয়ে বিকেলের ট্রেনে কলকাতা। ঘরে ফিরে স্বপ্নের দেশের স্মৃতিগুলো ক্যামেরা থেকে তাড়াতাড়ি বার করে আরেকবার ফিরে যান—রোমহুঁন করুন জীবনের কটা আনন্দের দিন। জেনে রাখুন এক বছর আগে গোয়াতে থাকবার বুকিং খুলে যায়। মনে রাখুন গোয়াতে থাকবার বুকিং ১ বছর আগে থেকে করা যায়।

অনুসন্ধান, বুকিং (সংরক্ষণ ও বাতিল), সুপারামর্শ ইত্যাদির জন্য যোগাযোগ করুন—

সুনির্মল চট্টোপাধ্যায় ও প্রীতি চট্টোপাধ্যায়



EXPRESSION

১৭ জার্সিস দ্বারকানাথ রোড, কলিকাতা-৭০০০২০
(ভবানীপুর মেট্রো স্টেশনের পূর্বদিকে)
ফোন : ৪৭৫-৪৫০২ □ ফ্যাক্স : ০৩৩-৪৭৫-৭৪৫৬

শর্মিষ্ঠা ঘোষ

IB-148 Sector III,
কলিকাতা-৭০০০১১
Tel : 334-7007

শম্পা ঘোষ

Travels & Tour Makers
P-45/1 নলীগোপাল রায় চৌধুরী
এডিনিউ, কলিকাতা-৭০০০১৪
Tel : 2442051/2047 (Res.)

বরণীয় লেখকদের স্মরণীয় লেখার সম্ভার ছোটদের মনিবাস

মুদ্রণ পারিপাট্যে অনবদ্য □ ডি টি পি কম্পোজ □ ম্যাপলিথো কাগজ □
রয়্যাল অস্ট্রো সাইজ □ অফসেটে মুদ্রণ □ পাতায় পাতায় ছবি

১৩৩০ সাল—মৌচাক
মাসিক পত্রে যকের ধন
উপন্যাস বেরুতেই শিশুমহলে
সাড়া পড়ে গেল। সরল সহজ
ভাষায় রহস্য, রোমাঞ্চ আর
আতঙ্ক তিন রাজ্যের সম্রাট
হেমেন্দ্রকুমার রায় আজও
শ্রেষ্ঠত্বের আসনে সমাসীন।
সেই হেমেন্দ্রকুমারের রচনার
সম্ভার খণ্ডে খণ্ডে প্রকাশিত
হচ্ছে—

**হেমেন্দ্রকুমার রায়
রচনাবলী**

১ থেকে ১৬ খণ্ড □ প্রতি খণ্ড ৫০

অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর ১০০.০০
মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য ১০০.০০
শিবরাম চক্রবর্তী ১০০.০০
সুকুমার দে সরকার ১০০.০০
যোগীন্দ্রনাথ সরকার ১০০.০০
পরিমল গোস্বামী ১০০.০০
খগেন্দ্রনাথ মিত্র ১০০.০০
হেমেন্দ্রকুমার রায় ১০০.০০
চোর ডাকাত বোম্বেটে
অমনিবাস ১০০.০০
ফ্যান্টাসি অমনিবাস ১০০.০০
হরর অমনিবাস ১০০.০০

ভারত নেপাল ভূটান বর্মণের
অপরিহার্য গাইড বুক

বাংলা □ ইংরেজি □ হিন্দি

ব্রহ্মসঙ্গী

সমগ্র ভারত : বাংলা ২৫০ / ২৭৫
ইংরেজি ও হিন্দি ২২৫ / ২৫০
বাংলা বর্জিত নিত্যকাজের কথার
অনেক-অনেক জায়গায় যাবার আগে
বা গিয়ে পৌঁছে ব্রহ্মসঙ্গীদে দৃষ্টিভঙ্গি-
দূর্বাবনা নিরসন করতে ব্রহ্মসঙ্গী
অপরিহার্য গাইড বুক।

উইক এন্ড ট্যুর ৫০
নেপাল ও ভূটান ৪০

সুন্দর মুখের জয় সর্বত্র
সেই সুন্দরের চাবিকাঠি
রূপচর্চা ৩০.০০

আরও বই :
পাগলা দাও ২৫.০০
আবোল ভাবোল ২৫.০০
মহাভারতের গল্প ২০.০০
সোনালী রূপকথা ২৫.০০
বীরবলের গল্প ২০.০০
পঞ্চাঙ্গনের হাতি ২০.০০

বাঁচার জন্য ঋণ—
আর সেই ঋণকে সুখদুঃখরোচক করতে
**হাজারো রান্নার
অমনিবাস ১০০.০০**

আরও নতুন নতুন বই :
চিরকালীন ভালবাসা
গল্প সম্বলন ২২৫.০০
কবিতা সম্বলন ১২৫.০০
ঘরোয়া চিকিৎসা ৭০.০০

স্বাধীনতার ৫০ বর্ষের
পুণ্য লয়ে

ইংরেজ শাসনে

কবিতা □ নাটক □ উপন্যাস □
ব্যতিকথা □ প্রবন্ধের সম্বলন

সম্পাদনার : বিষ্ণু কুমার অগাস্টাসের মিত্র

**বাজেয়াপু
কু**

১ম খণ্ড : ২৫০.০০
২য় খণ্ড : ছাপা চলছে

উপন্যাস বিশেষ রচনাবলী ১৫০.০০
সুখার রায় রচনাবলী ১৫০.০০
প্রিয় ভাইয়ের রচনাবলী ১০০.০০
লুইস কারল রচনাবলী ১০০.০০
ছবি ছড়ার দেশে ৫০.০০
রৌশনি ১০০.০০

এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানি □ এ/১৩২ কলেজ স্ট্রিট মার্কেট □ কলকাতা-৭ ☎ : ২৪১-২৩৮৬/৪৬০৮